

### PAIA-SADDA-MAHANNAVO

#### A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

complete references

BY

#### PANDIT HARGOVIND DAS T SHETH

Nyaya Vyakarana-tirtha Lecturer in Sanskrit, Prakrit and Gujrati
Calcutta University Author of "Haribhadrasuri Charitra
Late Editor of Yashovijaya Jama Granthamala ,

Jama Vividha Sahitya Shastra

mala etc etc.

GENERAL EDITORS

Dr V S AGRAWALA Banaras Hindu University

Pt. DALSUKH BHAI MALVANIA Lalbhai Dalpatbhai Vidya Bhavan Ahmedabad

PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

SECOND EDITION

1963

Published by
Dalsuke Malvania :
Secretary
PRAKRIT TEXT SOCIETY
VARANAS:-5

٠

# SECOND EDITION-1963 ALL RIGHTS RESERVED

Students Edition Rs. 20/-Library Edition Rs. 20/

#### Available from -

- 1 MOTILAL BANARASI DASS, NEPALI KHAPRA POST BOX 75 VARAHASI
- 2. CHOWKHAMBA VIDYABHAVAN CHOWK, VARANASI
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA GANDEI ROAD AEMEDARAD-1
- 4 SARASWATI PUSTAR BHANDAR RATAMPOLE, HATRIEBANA ARMEDABAD-1

Printed at
THE TARA PRINTING WORKS
VARABABI

प्राकृत ग्रन्थ परिपद् ग्रन्थान्त्र--७

# पाइग्र-सद्द-महग्गावो

(प्राकृत-शब्द-महार्णव )

बीबान फनेमालकी धीचन्दजी गीनेध्य जयपर दाशों की धीर से मेंट ॥

धर्यात

विविध प्राष्ट्रत मापाओं के रान्त्रों का संस्कृत प्रतिराष्ट्रों से युक्त, दिन्दी क्षर्यों से अस्टेक्टन, प्राचीन प्रन्यों के बनस्य अवतरणों कीर परिपूर्ण प्रमाणों से विभूष्ति कृहरकोप

क्तों—

गुजैरदेशान्त्रवैत-राभनपुर-भगर-भारतथः कस्कत्ता-विश्वविद्यालय के संस्कृत प्राइत भीर प्रवराति आया के सम्यापक "इरिसदपुरिवरित" के कर्ता "यरोतिवय-वैत-कत्वमामा" भीर 'वैत-विदिय-राहित्य राष्ट्रमामा" के मुत्रवृषे संगरक स्वाय-स्वाकरण-तीर्थ

स्व॰ पंडित इरगोविन्ददास श्रिकमचंद सेठ

संपादक

**बा**॰ घासुदेच दारण अग्रवाल प्राप्यापम, बाशी विश्वविद्यालय

पं॰ वससुम्ब भाई मासवणिया संवासक, सासमाई वसपतमाइ विद्यामयन, बाह्मदापाद-१

भराधिका

प्राक्तत प्रन्य परिषद्, धाराणसी-4

पिक्रम मेरन् २०२३ भैत्र गुरु पंपनी द्वितीय मंत्रस्य

ईस्पी सन् १६६३

मकारक दलसुख मालवणिया मन्त्री बाह्नत टेक्स्ट सोसायटी धाराणमी-४

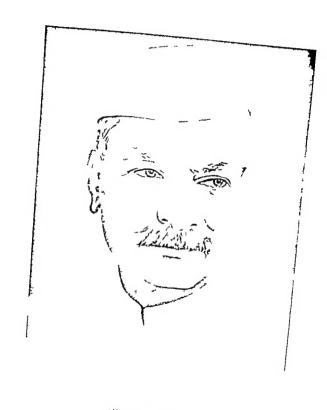
वितीय संस्करण-१९६३

#### सर्व स्वत्व संरक्षित

मूल्य—साबारव संस्कृत्व २०) पुस्तकावय संस्कृत्व ३०)

#### प्राप्ति स्थान

- १ भोरीनास बनारसीयास नेपाकी बनका पोस्ट बावस ७५, वारावधी ।
- २ जीखरवा विद्या सदत और वाद्यगरी।
- धूनौर प्रन्य एक कार्यामय गांधी मार्ग बहुमदाबाद—१
- प्रस्तिती पुस्तक मंद्रार, सामगोल हानीखाना, नव्यवाबाद-१



ढॉ० राजेन्द्रप्रसाद जी भी पाचार्वं विनवचन्त्र सान प्रण्याट वसपूर

# समर्पग्

#### बाकृत भाषा का यह महाकोश

स्वतन्त्र मारत के प्रयम राष्ट्रपति तया प्राकृत-प्रंप-परिपद् (प्रा॰टे॰सो॰) के संस्थापक एवं प्रपान संरक्षक, भारतीय संस्कृति के अनन्य श्रद्धाल देशरतन

स्व० हॉ० श्रीराजेन्ड प्रसाद जी

को सावर समर्पित है.

जिनकी अध्यक्षता में इस कोश के पून मुद्रण का निश्चय किया गया और जिनके करकमलों से इसका प्रकाशन समारोह सम्मन्न होना प्रस्तावित या, किन्तु दैवेच्छा से २८ फरवरी १९६३ को जिनका स्वगवास हो जाने के कारण अब परिपद की ओर से यह भदासति स्प में समर्पित किया जा रहा है।

---प्राकृत ग्रन्थ परिपव् के सदस्य

### प्रकाशककी स्रोरसे

प्रस्तुत महान् कोपके कर्ता स्य प श्री हरगोविददास विकमवन्य छेठका जन्म राधनपुर (गुजरात) में जैन कुटुम्बमे वि स १९१४ में हुआ था। बनारसमें आकायश्री विजयसमेंसूरि द्वारा स्थापित श्री यशोविजय जैन पाठशाका में संस्कृत और प्राकृतभायाका कथ्यवन तथा सिलोनमें आकर पालिमापाका अध्यवन उन्होंने किया था। कलकत्तेको न्याय-व्याकरणतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण करके कलकत्ता युनिविद्यिमें संस्कृत, प्राकृत और गुजरातीके मध्यापक नियुक्त हुए थे। उन्होंने यशोविजय जैन प्रत्यमालामें संस्कृत-प्राकृतमापाके कर्द प्र योंका सपादन कीशल्से किया है। प्रस्तुत पाइअ-साइ-माइण्याव्य-प्राकृत एव्यमहार्णेव कोपको रचना उन्होंने विना किसीकी सहायताके ककेले हो की थी और उसका प्रकाशन मी स्वर्थ ही किया था। उनका नियन वि से १९९७ में हुआ। उनकी सम्यक्तिका कुल अधिकार उनकी धर्मपन्नो

श्री पं हरगोविददासके संसारपक्षके छोटेगाई सुनिराज श्री विशासविजयजो तथा भानू भादि कई जैन तीर्योक्षे इतिहास प्रयोभे नेसक स्य सुनिराज श्री जर्यन विजयजो एव श्रीयधोविजय जैन प्रत्यमालाके मंत्री श्री भमयचन्द गांधीकी प्रेरणांसे भीर भपनी उदारतासे श्री सुमद्रावहनने प्रस्तुन प्रयक्ती कॉपीराइट मावनगरित्यत यधोविजय जैन मन्यमालाको समिपत कर दिया है। श्री सुमद्रावहनको हो प्रेरणांसे श्री पछोविजय जैन प्रायमालाको कार्मकारिणो समिति जीर मानाह मंत्री श्री बालाभाई बीरचंद देशाईन प्राकृत टेक्ट सोसायटीको प्रस्तुत द्विधीय भावांत्रिक प्रकृशनकी अनुमति दी है। में यहाँ श्री सुमद्रावहन तथा प्रत्यमालाका भामार मानता है।

प्रस्तुत कोपमे सीमिल्ति करनेके लिये पू मुनिराज श्री पुण्यविजयकाने कुछ शब्दोंकी सूची दी थी, जो इसमें पद्मास्थान दिये गये हैं। इस उदारताके स्थि मैं यहाँ उनका भाभार मानता है। प्रस्तुत कोपके मुद्रणका काय अस्वस्थ होते हुए भी जिस तत्परता से बाँउ सासुदेवशरण अग्रवाक्ष ने करवाया है उसके लिये भें उनका विशेषत कृतज्ञ हूँ।

their literally value has to be assessed apcoully from the point of view of new words and meanings incorporated in them. The interpretation of the texts already known when the first edition of the Dictionary was compiled has also progressed and the technical meanings of many words have been recovered. They need to be incorporated in a revised edition or in a new presentation of word material of the Präkrit language as recorded in its literature. The problem is no doubt west requiring stout organisation and finances but the work has to be done. The Govt, of India, various Universities Präkrit Institutes and the All-India Oriental Conference should put their heads together for evolving a scheme for the accomplishment of this task vis the preparation of an up-to-date dictionary on scientific principles of the Präkrit and Apabhraches hieratures which have contributed so much to the Middle Indo-Atyan languages and which truly hold the key to the problem of etymology and semantics relating to the many literary dialects of the medieval and modern period.

It is gratifying that a rich literature of such magnitude as that of Pratin has been preserved as our heritage and it is high time when we should take up to our responsibility. The Pratrit Text Scolety is keenly alive to this need but it has already committed itself to the publication of the ontical texts of the Agamsa and their commentances and therefore its resources for some years cannot be diverted to the needs however urgent they may be, of a fresh dictionary of Pratria language as envisaged above

I cannot close this short statement without making a special appeal to those friends who are engaged on an intensive study of the difficult texts of Old-Hindi Old Gujarati etc. They should cultivate the habit of going to the Prikrit and Apabhranias sources for recovering the meanings of the obscure vocabulry used in those texts which were written at a time when Prikrit and Apabhranias words found a predominant place in the linguistic consciousness of the people. I would give a few examples —

1 "ৰ্মো ছব কাৰ বং উজ"। (Padmävat 1494) The crux of the meaning of the simple line like this lies in the word para meaning to turn as ৰাজ্যতৈ of Stt. bhrama (বাহ = মুম্বি, Hemchandra, 4 16 Pasadda)—the earth and the sky both are turning like a mill

2. "Size with war glo that a use of the up what are the up what are the most difficult lines of the Padmävat and it had never been correctly understood by any previous translator. The secret of the meaning lies in the word war (wrongly translated previously as bonds) which as recorded in the Fasuda, denoted a naval morehant. The meaning is that to take a see faring merchant in the midst of the ocean and there to kill him as a mean thing, said Sarje (the Chief of Ahaddin). The meaning of this word is recorded in the Pamdäv with only one reference to Hambhadra Sur (8th contury), but I thought that its usage in the Pamävarat in the 16th century must be evident in the literature of the intervening period. My search proved froutful and I to und it in the Bhavayata Kahā of Dhunapala (di wa Reer un until angular sur with a single friend ward with the Bhavayata Kahā, 8 31 Baroda edition p. 82—then the sea merchants met together and began to dissues loyfully their problems of sale and purchase. The word (Pauma-chariu 317 1. Singhi Jain Granthamall). On an inscription from Anhilavada dated VS 1349 its Skt. form Nau-vittaka has been used (Indian Antiquary 1012 p. 21) and

Muni Chandra in his commentary on Haribhadra's Upadec-pada record a chiras as the Skk, form of Nayatta. This accomulation of evidence is the proper field of a dictionary and it is of value to show how our correct understanding of the old-texts may benefit from utilizing the Prakrit and Apabhranda sources. I should like to reinforce this point by drawing attention to some other words from the Avahatta text, Kirthata of which in the recently published Satifvant commentary much valuable assistance from the Paia-sadda-mahanqayo has been taken. To take another pointed example:

```
been taken
       १ दर्बड ≠ समोप करता है। से क्य+ ड>प्रा सवे सवि व्यास काला। सवेड क्यड (पासर )।
ŧŦ.
      १३ माच = कनभन करना जानना। श्री गामग्र । भाषा (पासार )।
      ३२ साहर—सं साप⇒का में करना>मा साह>क्य साहर (पासर )।
      ४ जन्मरि—से मा-ो-जन् (= बाक्रमण करना स्वाया ) का वारवाचेश क्या क्यारि = बाक्रमण करके ( पासर ) ।
 77
      ४६ सम्पदी—सं∗ सम्+वर्षम् = वर्षम् करना देशा > त्रा समय>वप सम्य सम्बर्धा (पासकः )।
       ६२. पेक्किल—संपूरम् (>पूराकरुना) का वास्त्रावेश लेका लेकार (पासह) । प्रकृत में लेका बालु के बार आ में हैं— १ सं सिन् का
            वात्माकेत देखा = फॅक्ना । २ सं प्रेटम् का वात्वादेश देखा = प्रेटित करमा । ६ सं वीक्रम् का वात्वादेश देखा = दवावा ।
            ⊻ सं पास का वात्वालेल केला≂ वरा करना गरना।
            क्र-चं कुठ>प्रा क्राव>वाप कृर=क्राक्ता मोटना (पासवा ) ।
       ६६ रिक्-से रिक>शा वन रिक्तः = रीमला प्रसन्न होना रिक्स ह (पासक्ष )।
      १२६ साहर ∞ सुन्तर। संश्लाबा (= कॉर्सियोमा )> प्रांसीमा (पासा )।
            विश्वरि--विश्वरे हए । सं विस्तु > प्रा० विस्वर = फैसाना बद्दाना (पासह )।
      124
             बारे—मबीते पविद्य प्ररमानी रोवदाव वाले । सं स्टब्बं>मा बद्द (पास्ट् )>वहु>बाद>वार + स = वारा धारे।
             विवासिक = निवट यथा पुरू नया । सं मूच् (= मूकना पुरूता ) का जा चालादेश शिवनत (पास्त्र )।
      2=5
             च्यार हे बाक्रम् का वारगावेश क्य ∞ बाक्रम् करणा दवाना (पासद्वा)।
      211
            सींह से मा-बाकात्रा कारवायेश सह हुतुन देना कायेश करना करनाना । सहस् (पासह ) ।
       १४१
             पद्ध-- में प्रकटम् का बालाकेत पन (पाठक ) से पत् का भी धम में पक बारवाकेत होता है ( = पहना विराम )।
      २६२
            मबाबद्धि—सं श्रा बातु का बात्याकेस एका, धकाण = पहचानवा (पासर )।
       210
             बरमाजिक = मॉस्ट, क्रिंगत । सं भवेंनु का बालावेदा थ्रा अप बरमक = क्रुणे करना बसना सक्षमा (पासद्वा )।
       241
            चर्ता—प्रा श्रव्ध (सं विष्यू का कारनायेश ) व्यक्तिमा शासना (वासह ) ।
       १५१
             थोसर-सं व्यक्तिकन थायु का नारकारेश मा बोस = सर्वाक्त करना बोहना। बोसर, बोसए (पासर )।
        YE
              सन = भाग्देशन शोर। सं तन्त्र 'नाग्येक' का प्रा भारतसंख मुझ (यसह )।
         49
             चान सं चन का वात्वादेश सन ≈ शीक्षणा शीमित करना (हे ४)१
              भोप-र्श यम् का नहवादेश जीता = वसना यमन करना ( शासा )।
         23
         इच कर्मता = पहुंचे हुए । प्रा कन्छ = पहुंचा कचारक करना, सं कुप् का बारमध्य करना कचारस करना (के
              vites पासक ) भोजपुरि में कहान कहाना कहानी वर्षाद गाँव स्वारण करो अभी तक कहा जाता है।
        १६१ पारद-र्थ राष्ट्रका प्राप्तत वास्त्राचेश पार = सकता समर्थ होता (हेम पादर)।
        १६६ वेद्रियर्ड-सं पूरम्कामा मालादेश वेद्वा = पूरमा सरना (पासका)।
        १७० भीत-- से विक्युका वात्याचेता वा अप स्टेस = विकास ।
        २२६ क्लप्प-र्स तप् का बारवादेश तक्काप = तपना, वर्म होता (पासह )।
        १७१ पमप्पद्र = कम्रोते लगा । सं प्रतन्तर का बारवादिश पर्यप = कम्रता बीतना । धर्यपप पर्वपद (पासह )।
        १७२ पापरे - बोड़े वर सम्राह क्सकर, बंध को काच से कम्पित करके । सं शंतालय का बालारेस पत्थार (पासर् ) ।
        रेटर नैरा-संक्रमण का बालावेरा मा संग्रह निक्क वैक्क अधिकता स्यासना ।
```

देवप वैम्म-बएड अबहारे भी भूती। सं नियस का बालारेश किया केया> केव्य = टेक सहारा (पासर )।

"अबहुत सरमार दोन करें हुन रखा का सामार है।" (Kirklatz 2.190 Sanjivani edition) In this line all seven words excepting the first depend on their meaning on a good Präkrit dictionary e. [

नरमद-चं नरक्यांत - ता चरमन, मरमन, मरानद् - वस्तु नरानद - वस्त्रपान king of bell;

Ou - to cause pain from danskrit root g-Praant unvite gu ( iemenandra 1.23)

unt-Skt. act-Prakrit unt ;

gw = hastily, in quick succession; defya Prükrit gw (Derinfima-mfili, 8,59, See Plasdda). Such a seemingly aimple word cannot be understood without the help of Prükrit, In Hindi it means a hand, but its Prükrit meaning was also as shown above, and that alone mila the context.

-an Avahatta form of Arabio Audus signifying Ausrut or showing the spirits.

en = shows ; from Skt. effe-Präkrit em-Avshutta es

चारको - spirits living in hell, from Skt, बारक> Prikert चारव (Pf. adds)

The line thus means—the Makhdum (religious priest) like the king of hell was frightening the people when quotily he was showing the spirits by performing hadas. This is an example which brings home how the problem of understanding the Middle Indo-Aryan hierature is closely connected with our understanding of the Prätt and Apabhranés literature. For this purpose the Päis-Sadda-Jabhanawu Dictionary will prove of inestimable help. With this hope it is now being affered in a becoud edition which the Prätris Text Scorety is making svaliable in an accessible form

The editors wish to record their grat ful thanks to thin Kapil Deva Giri Sahityacharya, Asstt, Research Scholar P T S and Ph. Madhvucharya, Parkatirtha Missandoulin; who have put in their best efforts in correcting the proofs of the ork ith praise orthy devotion.

24-8-1968.

Vasudmya S. Agrawala Professor Banaras Hirdu University

# सकेत—सूची

Ħ.	=	चव्यव ।	(4)	=	पैराजी मापा।
यह	-	सकर्गक वासु ।	प्रयो		भैरकार्थक ग्रियन्त ।
( सन )	=	घरभ रामापा।	व	=	वहवयन ।
(परमे)	=	घतोक शिवानेश्व ।	मङ	_	*
<b>ट</b> म	-	सक्त्रींक तथा प्रकारक बागु ।	मिव	_	मविष्यत्क्वदन्तः ।
कर्में	=	कर्मीख्-माच्य ।			म <del>विष्यत्मानः</del> ।
करङ	=	एमेंसि-वर्तमान-इतन्त ।	मुका	=	भूवरास ।
5	_	क्रम-प्रध्यपान्त ।	যুক্ত	=	मू <del>व-इत्स्त</del> ।
f#	=	क्रियानद ।	(मा)	=	मायकी भाषा।
शिवि	=	क्या विरोपस ।	पह	=	वर्तपान हत्क्य ।
3	=	प्रनराती ।	वि	=	विदेपस्य ।
( चूपे )	=	दुनिकापैराजी महना ।	( ਦੀ )	-	शौरवेशी भाषा ।
দি	=	तिसिङ्ग ।	8	=	सर्वेशम ।
[*]	-	देव-राख ।	<del>dy</del>	2	संबन्धक कुरन्त ।
FI.	-	नर्वुसर्वासञ्च ।	€#	=	सक्तरीय कालु ।
\$	0	पुँकिङ्ग ।	की	_	<b>श्मीसङ्ग</b> ।
पुन	=	वृत्तिक तथा नर्पुसन्तिक ।	क्येन		श्रीलय दया नर्रुसकतिञ्च ।
পুঞ্জী	=	पुनित तथा भीतित्त ।	(tr	-	हेलर्न हरन्छ ।

#### प्रमाण-प्रन्यी [ रेफरेन्सेज ] के संकेता का विवरण

<b>६वेष</b>		द्भव का मान	र्वस्करण यादि	विष्ठके श्रेक विष् एए हैं गड्ड
द्धव श्रीम इंस	# #	देविषण्या देशकृतिया देवपण्याचार्या	प्रतपृत्य प्रश्न परिवद्, बायराग्यी—१, १११७ हरतलिका । अ १ रॉक्स वृद्धियाटिक बीधाइटी चंत्रन, ११ ७	
64	-	44 14 1411	र शावभोदय-समिति बंबई १६२	93
म <b>न्द्र</b>	2	स <del>न्द</del> ुरायदार्थं स्रतिसर्गतिका	वायीविकास वेस महाव १०७२ स्थ-संपादित कलकता संबद्ध १६७	नामा - भ
यवि सरम	-	स्थानम्यात्यम् स्थापारमस्त्रप्रीचा	१ जीमन्तिह ब्राएक संवत् १८१६ २ वेश सारमान्य समा जाननवर	· #
ঘতু		ध्युपोश्यापुत्त	१ च्या धन्तरिर्धिक्वी बहादुर, श्वाकता र्धनद ११५६ ९ आसमोदन र्धमति ११९४ वस्माई	पत्र
মন্ত্র	-	स्र <u>कृत्तरीयमास्</u> यवसा	<ul> <li>ह १ रोक्न ग्रीडवाटिक श्रेसाइटी चंडल ११ ७</li> <li>१ प्रावधोरक-विमित्र बम्बई, १६२</li> </ul>	r∗ पश
चर्चि	_	व्यविद्यानगानुस्थल	विर्श्वयाचर प्रेंस वस्की १९१६	%
arte		द्यविमारक	विवेश्य संस्कृत स्थित	
कार	=	या उरम्बादासम्बद्धाः । स	१ वैत-वर्ध-स्थारक सभ्य मानगबर, पंक्त १६६६ २ सा. वालामाई ककलमाई स्वयूचरवार, पंक्त १६६२	नाचा ***
<b>ব্যক্</b>	9	१ माधस्यकक्षा व द्राह्मसम्बद्धाः	रूरतिविक्त स्ट. स्, स्कू <del>पेन् संपान्ति</del> , साहरविष्, १४१७	13
ग्रास्था	-	बाक्शनकर्माहकोत्त	<b>রান্তর ভন্ম গবিদ্য, গা</b> যান্তরী—ই	
धार्चा	-	লাখ্য <i>টক</i> বুৰ	<ul> <li>श्र. कराष्ट्र, श्रृतिय् लंगारितः बाहपतितः १८१</li> <li>+ २ क्षावयोगस्य-समितिः क्षावरी, १८१६</li> <li>३ क्षोः स्वतीन्वर्तं देवस्यक-वेपारिकः स्ववकेतः, १८ ६</li> </ul>	धनस्त्रमा प्रथ
<b>धावा</b> नि	=	धारायंत्र निष्	भावमोदन-समिति कार्या, १६१६	ৰাখ্য
ব্যস্থ	-	मानर <b>रक पूर्वि</b>	हरतीपविद्य	<sup>200</sup> स्टब्स्
धारम	=	ब्यक्संबीनपुषक	† इत्तमि <del>तीव</del> त	प्रवा
चालक् चारमञ्	_	स्रत्यक्ष्तिपर्वत-पुर्वक सरकार्त्वतारित-पुर्वक		et u
मानि मानि	_	0.80		£4

के ऐसी निवानी बाने लंकराओं में बातायीह बाप से स्वस्त नुनी क्षी हुई है, इतने ऐसे लंकराओं के द्वार प्रांत के मौत्रों का प्रत्येक मृत्य नेता में स्वता नहीं किया गया है, क्योंके बात्रक एवा सम्बन्धी था हो व्यवस्तित सम्बन्ध के स्वता नहीं तुर्गत पा बनते हैं। बादा कियी रिका माने में मौत्र के प्राप्त पा प्राप्त पा गरीत की हुई है, बादा पा नपी प्रकार में पात्रक प्रमुखा माने दिए क्या है, निवाने निवास की प्रत्येक प्रमुखा है।

<sup>+</sup> इन बॅल्स्प्यों के नुवास्त्रण स्वयन्त्र और वहेत के यह स्वयन होने पर वी तुनों के यह तिकनिता हैं। इच्छे इर बोर में तिव चेल्स्प्य से वी त्रण किया क्या है क्यों ना तुनाबु चार्त पर किया क्या है। और वी किसी ज्यों वहेत या सम्बद्ध के प्रथम बुत से स्वयन्त्र को वहें.

<sup>🛉</sup> ब्रह्मेंच बीहुत नेशनबाववाई हैमचन नीती, वी. ए वृक्त्यून, वी. हे प्राप्त

			· · ·	
संकेत		र्गम्य का नाम	संस्करण थारि	विसक्त और विद गए हैं वह
माप	=	माराजगापकरस्य	शा नासामाई कमसमाहि ग्रह्मदानाद, संबद् १८६२	गापा
भारा	~	भारावनासार	मानिकर्पंद-विगंबर-वैन-इंबमासा संबद् १६७३	п
बार	8	<b>धा</b> वस्यक्रमुम	इस्तिनिशिव **	
<b>धाव</b> टि	-	शाबस्यक टिप्पस	देवचन्द्र नामगार्दै	
बावदी	D <sub>0</sub>	द्यावश्यक पीरिका	विजयस्थानुदि संगमासा	
धावपना		शासरमञ्जूने पत्रे गाया	(हरिमर टीका)	
द्यादम	≈	बावस्मकपुत्र मसयागरि दीवा	<b>इ</b> स्वमि <b>बि</b> श	
effe.	=	<b>इन्द्रियाराज्यपात्</b> क	भीमसिंह मारोक, वंबई, संबद् १८६ <b>८</b>	यामा
एक	=	वि कोल्मोगाधी बेर् इंदेर	<ul> <li>डॉ. डक्स् किएफेल-कृत साक्ष्मिम १६२</li> </ul>	
वत	**	उत्तराम्ययनमूत्र	१ राय बनाविविष्ठ बहादूर, वसकताः संबद् १११	६ धन्ययन, नामा
		•	२ त्य-संपादित वसकता १६९३	
			+ व इस्टमिबिट	
रत	-	<del>प्रतास्थान सूच</del>	देशकार सामग्राई	
इस का	==	29	को जे कारवेटियर-संगवित १९९१	pe
<b>ৰ</b> ত্তদি	-	ধন্য শ্ৰেমাৰ দিয়ু কি	हस्त्रकित्रियं 🐃	
<del>पत्त</del> र	=	<b>उत्तरसम्</b> दित	निर्णयसापर प्रेस, कार्य, १६१६	828
चंप	=	<b>इपरेक्टा</b> ब	इस्त्रभिष्णित	गाद्य
इप दी	-	उपदेशपर थैंग	इस्तमिबित	मृत-गान्य
स्रपर्व	=	जपदेशां चान्तिका	† "	गाना
चप प		<b>बनदेश</b> पव	भेन विचा-प्र <b>चारक वर्ते पात्रीता</b> खा	<b>१</b> न्ड
<b>टर</b>	=	<b>प्रपंशास्त्र</b> माकर	देवणन्य नामभाई वृक्ततीयार छंड सम्बर्ध, १९१४	मंग तर्ग
24	=	<b>अ</b> ष्ट्रमाधाः	<ul> <li>व्ये प्रमृ पी. टैनेडोरि-संपाचित १६१३</li> </ul>	
समङ्	=	<b>चवदेश</b> दुसक	🕆 इस्त्रिक्षियव	वांचा
स्वर	=	षपरेहरहाय	नमनुकामाई मनुभाई, यहमदाचाड चॅनत् १६६७	rs - 17
स्या	_	उवास्थरसायी	<ul> <li>वृद्धियारिक श्रीसाइटी बंगाब क्लक्ताः १८६</li> </ul>	
54 -	_	<b>क्रम</b> मंग	विषय वर्ष क्षावस्थ	<del>~</del>
योष	_	धोषतितु कि	माननोयन समिति बम्बा, १९१६	~ सम्
धोप श	=	धोपनिषु कि-नाच्य	***	*
धीप	=	भी र राधिकपूष	a at & all-didition attitude face	**
at ca	=	करामूत्र	<ul> <li>वॉ, एच्, जकोबी-संवादित साहपनिय, १०७१</li> </ul>	
শস্ম	3	वर्षुरमध्यरी	क हाबद आरएक्टल् । वर्षान, इंटल्ड	
कस्य १	-	कर्मचेव पर्सा		१६१= गाचा
कम्पर सम्बद्ध	-	रूवच तीवच	* " "	1535
नग्न ६ नग्न ४	-	तास्य स्रीमा	* , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	****
4-4 9		pp = 1111	N	4544 M

<sup>+</sup> पुंचरीया समस्य प्रश्वजनहरू द्विश है विमुध्य यह असंस्थायन मूत्र की इत्य-निश्चित्र प्रति वासार्य अनिजय-नेपनृतिशै के संगर हे बर्जेय भीद्वत् के हैं, जोती हाए प्रत्य हुई थी दल प्रति के पत्र हन हुँ हैं।

<sup>🕇</sup> नदीव सीपूर् के में मोदी क्षाय मान्त ।

Grank star fast

		्रम्ब <b>का</b> नाम	संस्करता धार्षि	श्चितक प्रकास सर्वे शह	ч
ति ।			a	गुना	
		क्रॉडम्ब प्राचनी	१ जीर्माबह मारोक, बस्बई, संबद १६६व		
म् <b>र</b>	•	4000 0000	२ केल-वर्ग प्रसारक सवा चाववयर, संवत् १२६व		
	_	ू ब्रह्मी	- 444		
तम ६	=	क्रमेस्ट्रिय	केल-वर्ग-प्रधारक-सन्ता, शावनगर, १२१७	862	
रम्प	10.	करणानकायुवन -	ध्यस्मानन्त-वेत-समा वायनवर, १६१६	-	
eq.	=	<b>श्ले</b> गार	भिरेता-संस्कृत-सिरीय	-	
₹र्छ	-	बदु रर्गास्त (माय)	यास्वनात बोरिएस्टन विरोध में, व ११६८	ন ক্ষম	
कर्पूर	=	कर्त <u>र</u> चक	† <b>ब्</b> रत-विश्वित	-4-14	
कर्प	=	Elicatei-stage	धारवानम् समा		
क्राज्य	=	ales Elicaciones			
चा	#		<ul> <li>काँ, कस्त्यू, शुर्वि-संपादित चादपनिष, १६ ६</li> </ul>	-	
कर्त	-	(इरस्) कस्पप्तर	च्यारित		
<b>=€</b> 1	-	रहाक्यी	वाक्सानार्वहर शैकानुष्ठ सिर्ह्ययधानर प्रेस नामह	de	5
काम	•	क्ष्माम <b>्या</b>	<ul> <li>जी एक् चेक्नेजी-संपालित, सेव्-बी-दश-की</li> </ul>		
कार्य		रक्रकाचार्यक्रमायक	स्रोह केल १ वर्ग		
		المعالية الم	राज्यबाद सीरिएन्टब् सिरीच में क १६१व	gu,	5
শিক্ত	-	विद्यासूचीय (कारोप)	क्यक्तार चोरिएएल सिपेच १६२		
<b>5</b> 3	ø	कुमारपालप्रक्रिकीण	o क्षाई-बंटक्ट-विरोग ११	** "	
दुना	=	<u>रुवास्त्रज्ञ</u> स्ति	हथ-वेगरिय, क् <b>मक्</b> या १६१६	&c	4
द्रम्मा	98	<b>बु</b> ज्यापुत्तवरिष	केल बोरमस्य गोका महेपायाः १६१४		
दुसक		Znagań	ने कृत्यमितिस्य	479	चा
चा	=	MPROISE -	सीमांख्य बारोक, बंबई, बंबए १९६व		
कैस	2	बहुजेन्समाध	<ul> <li>शंबई-प्रस्कृत-विधीय १ वक्</li> </ul>		
यस्ड	2	वट दर्भा	१ इस्तिनिवर्ष	समिकार,	पाद्य
वस्त	=	क्ष्याकारमञ्जा	१ पहुलात बोहोत्राला गोठारी सहस्रातान,	र्चक्द १ च ू	D
			१ सेट अमनानार्ग जन्मादी सहमयानाद, १६९	٧ .	- n
			स्कार्यपादित कमञ्चा, धंनत् १६७व		" वि
শত	=		राज्य सम्पर्धाक्षम् महापुर, सम्बद्धाः १ वर्षर		
चरिष			क्ष वानगारा वा विश्वपुर परावर्षाः १ पन् कृष्ट श्रुष्ट विश्वपुर स्थापिश, बादपनिता १ वर्षः		D
ना	•	. शुक्तक्षण <b>व</b> री	२ क्रिलीयसामर प्रेष्ठ कम्मार्ट रहार		
		encounter de l'arreit	हम-संवादित क्यक्ता संवद १६७		n CPC
2		्र वृद्धातालय-स्मरम् -	ध्यात्रास्य योगर्थेयस्य सम्बद्धीः १११६		
হুত		= द्वराभुरावदुसंक	श्रीवास्ति गाणेक धन्यदै संगत् ११६१		। राषा
<b>पुष्प</b>		= पुरसम्बन्धस्य	व्यवस्थात् भाषाक कन्यवं समय इत्तर् इत्तर्	•	441

<sup>🕂</sup> बडेब के ही भोगी हारा हत्या।

<sup>.</sup> नारपंत्रपाने अंपराय पा नाम "स्थ्यकार देव हान है भीर वान्यपाने स्थानास्थ्यकों"। सन्य एक हो है, परन्तु इन्हर्ननाने संपर्द्य में बात राजां ने विकास के नरीय » वान्यों पाने हैं भीर साधानिकारों में तो में नंदर के क्षेत्र । एक है । एक है पा नो पाय पोता प्रति विकास है एक प्रवासों के पाने नहीं नहीं पड़ी को पार नंदर्स का मायानीस्था है। । ० के नाम पा मोर » के मेरूर की बहु सम्मान के समावर पाँच किया है वहु नंदर नेवस साधानिक्य है। के स्वास्त्र पा है।

-इतित		र्देश का नाम	संस्करण मादि		बितके श्रंक रिए गय हैं बह
324	20	যুহম ধরিতা চুক্তক	धौतासास गोवर्धेनदास सम्बर्ध १८६३		गाया
गीम	# K)	पौतमनुसक	भीमसिंह माणेक बम्बई, संबद् १८६४		,,
₹3	=	चरुपण्याच्या	१ कैल कर्ने प्रसारक-समा भावलगर, संबल् ११६६		
			र शा बालामाई वनसमाई महमदाबाद, सवत् १८६२		
चड	=	चउपननश्चापुरिसचरियं	प्राष्ट्रत-६य-परिवद्, बारागुश्ची४ ११६१	**	
चंद	=	प्राष्ट्रवसगरा	<ul> <li>प्रियारिक सोसामायरी बंगास कत्रक्ता १&lt;&lt;</li> </ul>	***	
चंद	28	পরণয়বি	हस्तनिमित्र		पाहुड
चार	=	चारवर्ष	विवेग्द्र-संस्कृत-सिरीज		928
नेत्रय	-	चन्दर्गदणसङ्घामास	वैन बाल्पानन्द संबं, भारतपद, संबंद ११६२		षाया
<del>पै</del> टम		नैरमक्त्रन प्राप्य	धीर्मीतह मारोक कम्बई, संबद्ध १९६२		p
at .	=	<b>बंड्डी</b> पत्रशित	१ देवचंद सामग्राई पूर्वत सम्बद्धी १६१	****	वसस्यर
•		•	१ इस्तमिश्रिष	***	ų
वय	=	क्यतिह्यस्यु-स्तीत	वैन प्रयासर प्रिटिय प्रेस- रतनाम प्रयमापृति		पाया
বিব	s	विनश्कास्यान	सियी बैन सिरीज		
मी	,	बीवविचार	वारमाना र वैन-पुरतक-अ <b>धारक-मंडण वापरा</b> संबद् ११।	<b>\$</b> 5	n
भीव	ø	<b>जीवकर</b> प	हस्यमिक्विय **	***	
वीव	=	<b>बीदानोदा</b> मियममुद	वेनचंद सासमाई पुस्तकोदार र्एड चन्नई, १९१६		श्रतिपत्ति
नीवस	#2	<b>भीवसमास्त्रकरस्य</b>	🕇 शुस्तविश्वित		याचा
वीवा	22	<b>की बालु शासन युवक</b>	र्धनाशास योवर्गनशास वस्त्रई, १८१६		80
वो	22	च्योदिष्कर <b>्</b> डक	इस्तचित्रत ** ***	***	पापुड
रि	===	+ टिप्पश (पाझन्तर)	44	***	
दी	#	‡ दीका		•••	
स्य		ठारांगमुख (स्वनांनमून)	शामनोरम-समिति कम्बर्स, १६१व-१६२०	***	<b>ভান্ত</b>
থাৰি	=	श्रीरसूच	र् इस्तिविधित	***	
			९ मानमोत्रम समिति नम्बई, १६२४	•••	पथ
खमि	-	श्रमिञ्ज्ल-समय्य	स्व-संपातित कसकता संवत् १२७८		भाषा
खाम्ब	-	<b>स्थानमम्बद्धानु</b> त्त	धापनीषय सामिति वस्मद्रै १६१६	p=0	युक्तमा प्रय
dg	=	र्वपुत्रवेवासियनवधी	१ इस्तमिषिय	94	
			२ वे ना पुरतनीक्षार प्रेष सम्बद्धि १६६२		पत्र
R	-	विजयस्थ	बैत-साल-प्रधारक-संबंध सम्बद्धि १६११		याग्र
विका	-	तित्त्रुरया <b>नि</b> यप्य <b>णी</b>	ह्स्वानावव	***	
वी	=	<b>डीचेंगर</b> ग	हस्तिविकात		वस्प
Pr	=	निनुस्सम् (प्रिम)	गायकवाड सीरिएएरक् मिरीज मैं च १६१८		123

<sup>†</sup> भड़ेंग कीपूद के में मीदी हारा भारत ।

<sup>+</sup> पारतस्तर बाले संस्करकों के जो पारतस्तर हमें उचादेव मानून पड़े ही अई वो दस बोध में स्वान दिया है और प्रपाश के पास टि' राज्य और दिया है मिगरे उन संस्थ नो कही स्वान के टियम का समझा चाहिए।

<sup>े</sup> बहुर पर प्रमास में देव-बीक्त और स्वान-निर्देश के प्रस्तर 'दी शब्द सिखा है वहाँ वह वंद के बड़ी स्थान की दीका के प्राह्मगांत की मतलब है।

संकेत		भ्रेष का नाम	<b>इं</b> स्करण भार्य <b>ः</b>	1	बसके बंक दिए वस है वह
ŧ	_	र्वरक्रमक्रमञ्	१ मिन-बान-प्रसारन-जेडस थम्बई, १६९१		याचा
•			२ बीर्मासङ्घासोड वस्वई, ११ व	***	n
44	-	क्रीनपुर्वि प्रकारत	<b>इ</b> स्तमि <b>व्य</b> त		वर्ष
बरामसस्य बरानेषु	} ~	क्रावेगाकिक स्थारव स्थितिय	PTS	***	
स्त	-	<del>शहर</del> ेकाविनशृष	१ क्रीवांस्त्र नालेक वाक्ष्यी, १६ २ व्हां चीवराज केलावाई, शहनवाचानः १६६९	**	स्राध्यम् ग
स्तर्	_	হত্তীকালিকসূমিকা	27 29 29		चूनिका
रवनि	=	बरानेकामिशक्ति विक	१ भीमाँगह माणेक कमाई १४ २ देवचन सामाभाई		सम्भवन नामा
रतीयक	-	रतनेकांक इस विकास	पुषित पूर्वित प्रयमनेत केसरीयम		
<b>9</b> 81	_	<b>क्ट्रा</b> स्टरसम्ब	इस्त्रीविकत	**	10
बीव	=	वैदयावरणनाचि	77	104	
<b>ৰু</b> ত	-	बूतक <sup>े</sup> रकम	त्रिवेन् -चंत्कुठ-किंचैव		13
i	=	देशीनाममा <b>मा</b>	कानई-संस्कृत-सिरीय १००		नर्वे दाना
Per .	-	<b>वितास्त्वप्रकीर्शंक</b>	इस्तांनिश्चत	•	
देशीयन	-	देवरिक नवानक			
देशेल	-	<b>सेन्द्र</b> नरनेन्द्रप्रकृपन	वैन घरमानन्य स्त्रा वास्त्रवर, १६२२		थाका
t	_	डेल्लीकड <b>े</b>	१ वैत-वर्ष-प्रशासक-एवा व्यवसमय् संवत् १६६		99
			२ रा नैशीर्थर तुर्पर, म्हेशन्सा ११ ६	944	77
<b>1</b> THE	-	<b>स्थित्</b>	वेष-वेष-एलाकर-कार्याकर क्षेत्रहे १६ ६		77
খন্ত	=	<b>ऋ</b> तनर्पचारिका	क्षम्बनमा शतम हुन्युक, स्वर्ध, १८१		
वस्य	-	वर्गराज्यकरण प्रतीक	१ केन विद्या-अभारक वर्ष शामीतारहा १६ ६	***	म <del>ुख-</del> प्रका
			१ इस्त्रमिष्टित	•	
वस्य	=	वन्निवर्ष्यः (वनुदेवव्रिती सन्त	र्यंत) धरमानन्द बधा		-
श्रमको	-	बागीवर्ष्णुशब	🕆 शुस्त्रीमधित		पत्था
कर्म	-	वर्गदेशम्	वैत-विका-संवारक-वर्ग प्राचीशास्त्रात् १९ १	***	विकार
वर्षर	•	क्षत्र र <del>ाजसा कुत्र</del> ाचि	श्रीतम्बन्द सम्बद्ध	-	MITH.
वर्मीव	=	क्मीविविश्वकरण स्थीक	वैद्यमाई कोटावास पुरारीया, सहस्रावास ११९४		990
वर्मध	_	वर्गर्वश्रद्धाः	वे का पुरस्कातार छेत्र, बंबई, १११६-१व		गुन वावा
वर्मा	=	वर्धानुका	केन दारमानाव समा खबनक १११		98
चाला	-	মায়তব্যস্থান্ত	प्रियम्ब्रिक बोसाइटी स्रोप बेनाब, १६२४		925 225
=	-	<b>भ्यातीक</b>	निर्यंपदानर प्रेयः संबर्ध		_
4000		staftfentill	P T o		*
क्षरण र	<b>0 0 0 0 0</b>	कारवर्तीयत (प्रक्रिके)	केन्द्रर संपानित		

निकोष की**मू**त के जी बीकी साथ प्राप्त ।

1	- 15	- 1

<b>र्व</b> न्द		द्रभ्य क्षा नाम	संस्करण धारि	f	बसके ईक विष् पर्देश
-सब	=	<b>मृत्रतरकप्रकर्</b> ण	१ आल्पानम् <del>। जैन-स</del> भा भावनगर		यामा
***			२ ब्राश्च-कैन वर्गे प्रवर्तक-सम्रा, सङ्गदानाद ११ ६		n
नाट	=	‡ नाटकीयमाञ्चरस्थापुर्वी			_
निष	=	किसीयचूर्यि	इस्तमिकित		<b>ध</b> रेश
निर	æ	निरमानसीसून	१ इस्तमिषित	,	थरी, सम्म
			२ भायमोवय-धनिति बभ्या ११२२		
निसा	==	निशा <b>विश्यमञ्</b> लब	🕇 हुस्त्रसिचित	***	गाया
निसी		निरीवसूत्र	<b>इ</b> स्समि <b>ष</b> ार	***	चहैरा
पडम	=	पञ्चनगरिष	वैन-वर्गे प्रसारक-समा भावनपर, प्रथमावृत्ति		पर्वे पाचा
पुरुष	-	पत्रमधरिय	प्राष्ट्रत-ग्रंब-गरिपम् बारायसी-४		
र्पण	=	पंचरंगा	१ इस्तविचित	-	द्वार, गामा
**		•	२ वैन धारमानम्ब समा भावगगर, १९१६		
र्वश्रम	-	पैचकराभाष्य	हस्त्रविकित		
पंचय	25	र्वजनस्तु	g <sup>2</sup>		TIT
पश्चा		पंचासक्त्रकरण	वैत-वर्ग-प्रशासकं संया भावनवर, प्रथमावृत्ति	***	प्रवासक
deg	=	पंचकरपद्गित	क्ष <del>्याविक्य</del> ा	***	
पीन	=	पंचनिप्रैन्दीप्रकरस	धातमानन्य-चैन सन्त भावनपर, शंबत् १६७४	***	नाना
वैध	=	र्वचराम	विवेश संस्कृत-विरीय	**	93
वंद्	-	पेषसूत्र	व्स्तविश्वित	••	सूत्र

्रे वेंद्रब लाहोंचे नहींच में स्थित एक प्राप्तप्र-हींग पुस्तक में पृत्तित निवके तुने मान में कमवीरसर का माहत स्थानराह थीर ठचर सन्दर्भ 'माहतास्थिताम' दैर्पक है करियम क्षेत्र हैं जन्द्रत माहत तकरों की एक खोटी थी पूर्वी खरी हुई है। इस पूर्वी में कम क्षेत्र के बो असित नान भीर द्वास्त्र स्थित वर्ष है के ही नाम तथा प्राप्त वर्षों के त्यो अस्तुत कोच में वी यवास्थान 'मार्ट' के बाद रखे मंत्रे हैं। क्ष्य पुस्तक में कर दोनों के क्षेत्रन नामों तथा खरूराही का निवस्त्य एक तरह है.—

माचढी	for	<b>याचित्रामाच्यम्</b>	Calcutta Edition of 1830
দীর	p	<b>वैधग्वचन्त्रीक्ष्मम्</b>	
विक		विकारीकेंग्री	_ 1880
साहिएय		सामित्यस्पंश	Edition of Asiatio Society
क्षर	**	<b>च्यररामगरित</b>	Calcutta Edition of 1881
SOUT THE STATE OF		शामां	1882
पुण्य		मृ <b>ण्यक</b> टिक	1689
भवा	24	মাস্ত্রমকার	Mr Cowell's Edition of 1854
υş	**	राषुण्यमा	Calcutta Edition of 1810
म <u>श्</u> नवि	29	भासविकारिनमित्र	Tulberg's Edition of 1860
मेरिए		वेधिसंश्रुप	Muktaram s Edition of 1855
पाम	12	र्थियसभारस्य प्राष्ट	वाष्मामः
महाची	,,	मझानीरपरितय	Trithen s Edition of 1848
ৰ্দিৰ		चिनम-	Ha.
🕂 सब्देव के. में बोधे शाय	া সাথ।		

- (	,	

सीव		इस्ट का नाम	सल्करण दानि	विस्केशक दिए
640				कर हैं पर
ব <b>ৰিছ</b>	3	ৰণি <b>ভ</b> দূপ	भीवसिंह मालोक कामडे संबद् १६६२	
1114	_	महायु <b>ण्याच्या</b> श्रियमा	शा बालाबाई करलमाई, प्रदूपरावाद, संबद् १६६ए	भाषा
प्री	-	र्वश्वतिकनकाश्वभ	१ वैश-आग-प्रसारक-चंद्रमा बस्बई, १६११	
413	_	1 Parento Ra	र भारतानम् <del>य वैश-पृत्तकः अवारक ग्रंबन</del> आयस १६२१	
	<b>=</b>	<b>ब्रह्मसञ्</b> ता	रास क्लाविसिंह बहापुर, बनारस संबत् ११४	पृष
परप		प्रश्नियाकरखनून	शायमीवय-समिति, बम्बई, १९६६	नुहासम्ब हार
रस्⊈ प्रका	*	प्रकृत्याख्याख्याख्य सर्वे स्थाप्ताख्याख्या	गोर्मास्य गरोक बन्गी, बंबद ११६९	~ शय
	-	प्रस्थातम् देशाः	१ विद्य १११४	+ 80%
मन	•	Medialicetic	२ वे जा पुरतानेकार फंड, काम है १६२२-२४	,
_	_	त्रज्ञानमोधा स्- तृतीक्यवर्षध्वर्ती	बारमान्य-वैत क्षत्र भावनवर, संबद् १६७४	ব্যব্য
पद	3	पहारमधीनाममंद्रा सहस्रकारीनाममंद्रा		
याञ्च याञ्चे		पार् <b>य प्रा</b> यान्य नामा	वातकतार ग्रोरिएएटच विशेष ते ४ १३१०	95
हिर नाम	<i>3</i>	नामार्थका कामेरिक वेषु प्राकृत स्थानाम्		~~ \$ <del>u</del>
দ বিশ	-	वास्तर पर्वास्त्र रवास्त्र वास्त्रमञ्जू	a विवादिक शोशास्त्री वैक्स, करकता १६ २	-
		ন্দ্ৰেগনক বিহুলিমু'ডি		· अस्तिः
भ्र	3	HEINE IN	२ हे या पुरवक्रीबार <b>चंद्र कानहै १८२</b> २	
		হিত্তিপু ডিগলে	is al Biamer, so such test	1
<b>रिक्स</b>	=		्रा कैन-में संस्कर-शंदत स्टेशस्त्रा, १६११	,
Ace	2	कुलमानावकरण प्रतिमानावक	विषय संस्तृत-विरोध	22
স্থতি মুখী	-	प्रतिकारणाहरू प्रतीकारणाहरू	निर्देश्तापर येत बस्बई, ११६	н.
प्रका समी	-	प्रतिकारीकारणका प्रतिकारीकारणका	विवेत्र-संख्य क्षिप्रेड	*
प्रमा प्रमा	_	ब्रहरूया-निवल-पूत्तक	† स्विधिक	<i>ग</i> गुल्ह
\$14 \$15	_	प्राह्मवर्त्तमस्य (मार्कपन्ताव)	विमायांगरण, विस्तासांगद्वस्य	
ALA.	-	क्रान्डमस्त् द्व विश्वास्त्र	<ul> <li>पंत्रास धुनिर्गोदरी सञ्चीर, १६१७</li> </ul>	88
#155	_	इस्टिश्नास	e र वा, कार्यम्-संपादित संद्रम, १ ३	
*104	_	allers . In	● २ वंबीय-साहित्य-परिषय् क्लाकसार् १६१४	
\$78t		शहरुमानीय <b>मेर</b>	• शाह इर्पेनम् मुधाकारै ननारस १९११	
हा <b>य</b>		श्राप्तरम् <b>यस्</b> पासमी	<ul> <li>वेड ननमुखनाई व्युनाई ध्यम्भवाकार, चेक्ट् ११६८</li> </ul>	
प्राप्	-	प्रस् <b>तत्त्वरण</b> ाना	केन विनिध-नाहित्य-नाश्चा सन्तर्थ १६१६	
- FRE		হালপথিত	विवेश-संस्कृत-सिरीय	भ्यम् भ्रम्
Ct.	_	शुस्तरकाव	इस्तिनिवार्यः	36
	12	धनुस्तीनुष	4 1 1	
.,		. ,	२ इस्त्रोतिकत	
			व व्यवमोक्य समिति बम्बई, १६१ दिश् ११११	रावक बहेरा
क्त	-	<b>न</b> तपरिक्तात्वहो	१ बैत-बर्ग-शसारक-समा सावस्थर, संबद्ध १६६६	17
			र का बालागाई करवनाई सहनताबाद, सन्द १६६२	वाचा
अस्तुरचा		<b>धरवा</b> रतावृत्तिस्था	geane uimmig	ju

<sup>+</sup> डार---प्राध्यक के पूर्व के बस्ताय के बिया 'पत' के काथ केवब नावा के सक पिए कर हैं। इं पत्रेंच पीतृत के से नोरी डास प्रात :

संदेव		धन्य का नाम	संस्करण थादि	विसके र्धक कि
_				ण्य हैं बह
मर्वि	=	म्प्रवस <u>त्त</u> कहा	<ul> <li>१ डा- एच् जेकोबी-संपादित १८१=</li> </ul>	• • •
			<ul> <li>२ गायकवाध धोरिएएटन सिरीच १६२६</li> </ul>	
माद	=	<b>भावपुराक</b>	र्मनामास गोवर्मनदास बस्बई १६१३	
मास	-	मापारहस्य	सेठ मनपुष्पमाई महुमाई सहुमदाबाद	वाना
मेल	-	मॅग <b>म</b> कुसक	🕇 इस्समिबित	77
मध्य	=	मच्यमब्यायोग	विषम्द्र-सस्कृत-सिरीज	
मन	-	मनोनिशहभावना	† इस्त्रविद्य <b>त</b>	<b>5</b> 8
मह्म	=	भारक्षकेष्याम्हे एरस्यानुंबन् इन् मक्षाराज्या	<ul> <li>श्री वा एच चेकोबी-संपादित नाइपविष १८व६</li> </ul>	गला
महानि	=	महानिशोषमुत्र	इस्टमिबित	
मा	=	मामविकारिन <b>िश</b>	निर्णयसागर प्रेस सम्बद्ध १९११	सम्बदन
मान	=	मालदीमाचव		22
प्रसि	=	पुनिसुवतस्वामि <b>वरित</b>	n :: इस्त्रिवित	n
हुत्रा -	=	नुरायक्स		ग्रम
नुष्य मुख्य	=	मुख्यकदिक	सम्बद्ध-संस्कृत-सिरीज १९१५ १ निर्णयसामर प्रेस कालाई, १९१६	93
•		•	र वान्यदै-संस्कृत-सिरीज १८१६	77
<del>ĝ</del>	_	मैक्तिकस्थारा	्रात्रिकारण के विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास्ति विश्वास	, n
मोड	_	मोहराजपराजय	माणिकपत्व-दियागर-वैत-प्रत्यमासा वानई ११७६	77
यदि		यदि रिद्धार्प वाशिका	श्चमक्याङ्ग बोरिएस्टल सिरीज में १ १११८ † हस्त्रीलिखत	,,
र्रवा	-	रंगानंबरी	<ul> <li>निर्णयसापर प्रेस कम्बई ३८ १</li> </ul>	नामा
रत	_	<b>धनम्बर्गक</b>	े शराविधित	n
रक्स	=	प्रस्केष्ट्रप्रियम्बद्धाः		पाया
धर	=	यमियानराजेन्द्र	स्व-संपादित क्वारस १६१८	18
राम	=	चयपदेखीपुत्त	<ul> <li>बैन-प्रमाकर प्रिटिन प्रेंस, रतज्ञाम</li> <li>इस्त्यमिक्ति</li> </ul>	
<b>क</b> रिम			र बायमोदय-समिति सम्बद्ध १९३५	पश्
स्थान सङ्	-	धनिमशी-इयल ( ईहामूम ) नपूर्वध्यक्ती	यायकवाड् बोधिएश्टन सिधेज औ 🐷 🕫 🕬 🗫	18
गड सहूब	-	गञ्जमम्बद्धाः गञ्जममिददानित स्थरता	मामासङ् मार्गक वस्वई, १६ ८	वट पाचा
ete.	_	गङ्गमानकसाम्य स्पर्का मीनप्रकाश	स्व-संपादित कलकता, सवत् ११७०	
यमा समा	_	पान अवन्त्रहा विकासम्बद्ध	दैनचन्द सालगाई	н
44	=	स्यवहारमूच समाध्य	प्तियाटिक सोसाइटी बैमाल क्षकता	28
•••	-	and freda dutest	१ इस्तानिकत	चरेरव
बगु	-	वनुरेवहिंगी	र सुनि मारोक संपादित सावनवर, ११२६	,,,,
•	_	- Daridas	१ हर्त्वनिश्चितः २ मारमानन्द सम्रा	"
वा	-	<b>माग्</b> यटकाम्यानुसास्त		
नाय	=	बायुस्यलकार	निर्णयसायर प्रेस कस्पई, १८१४	98
पि		विवयस्यावीरदेशपूक्तक	" १११६ † इत्त्रनिवित्त	,
			। इंस्तानाबात	प्रणा

<sup>†</sup> सदीव सीपूज के ही मीती हारा जात ह

संभेद		ध्यः वा नाम	श्रीसकरका धार्षि	किसके और पिए सर्वे नद
c	a	शिक्रमोगीय <u>ी</u> य	विश्वायनाम्य प्रेडः कम्बर्धः १६१४	93
विक्र विक	_	रिकार्राकी रेग	मारिकानक-दिवागर-वैत-प्रत्य-माता संबद् १६७२	
	=	विचारताधाकरता	धानमोदय-समिति जन्मई, १६२६	व्यप
PRATE		विपादम्बन विपादमान	स्य-संपाधित कसकता संबद् १६७६	स्ट्राहरूच सम्ब
निवास विकोर	=	विषेक्ष्मां कृष्टिया । विषेक्षमा कृष्टिया ।	रक-संपादित कनारस संक्ष्य १६७१-७६	गाचा
श्यद विदेश		विहेतावस्थकका <del>ण</del>	स्व-रोपवित बनारस गीए-संदत् २४२१	77
-	-		विर्धियसायर प्रेस सम्बद्ध, १८१%	 125
कृत वेक्टी	=	शृदमानुवाः वेशीसेनार	किर्णयसायर प्रेस सम्बद्ध १६१६	,,
वस्तुर क्षे	_	बराग्यरलक वराग्यरलक	वि <u>ष्ट्रमार्थ</u> ी भीतामार्थं पटेल अञ्चनवाणाः, १६२	,7 रहेवा
	-	सञ्ज्ञतिश्यक्षमृत्रवृति	वे सा पूरत्योजार ग्रंड बानई, १११६	मूलपाचा
मा मारक	2	मादश्यक्षीत मादश्यक्षीत	१ व्यापुत रेशनशासा हेमणन खगरित १३ १ २ मेन वर्गशासा	माना
q	2	य ठारकार	🕆 इस्तर्मिष्टित	,
पद	*	पद्मापाचन्त्रका	<ul> <li>बल्बई संस्कृत एग्ड् प्रकृत थिरीन १६१६</li> </ul>	~
8	3	समया चनहा	वृश्चिवादिक जीवाद्वरी बैनाम क्लकता ११ २३	92
ę	-	र्मबोष्पत्त दे	विद्रलकार्यं जीवासार्यं परेशः श्रह्मवाबादः, ११२	भागा
<b>प</b> रिंग	=	<b>स्तित</b> मार	१ हरतमिक्क	•
••••			२ संस्कृत होन क्रिगैनिक्सी नसकता, १०४६	58
र्संव		बृहरसंग्रहणी	१ जीवस्थि वालेक बानदी संबद्ध १६६८	व्यव
_			२ माल्यानस्य कैन समा भावनवर्, संबद्ध १६७३	
et c		<b>धैवाकारबाव्य</b>	<i>इस्तीवश्चि</i> त <sup>₽</sup>	मस्तान
धंग	-	रान्तिनामपरित (देवपनानृ		
सुनि	=	संदिनसन्तोत	१ मैत-शाय-प्रवारण-पत्रमा वावर्त, १८११	" प्राप्ता
			१ बारमानम्-जैन-पुस्तक-स्वारक-मीका बालरा ११२१	,,,,
र्धश	-	र्शनारपत्रवस्रो	१ <b>(स्ट</b> मिशिच	••
			२ जैन-धर्म-प्रचारक-सम्बद्धः ब्रायनका संबद्धः १९६६	
संबोध		संबोक्प्रक एक	वेत-धन्त-धनारमा-धना पहुनसमात १६१६	ল গুৰু
र्श्वरे	=	वं रेपयामिकापुलक	† हस्तनिबिद्य **	प्रस
श्रीम	-	विवर्तक्री	-	~ *
सर्दि	•	र्धादुनपरमध्य	१ स्म-धंपादिश यणारस १६१७ १ सत्यविजन-पेण-मण्यमामा नै. ६ सङ्ग्यायान, १६२४	
<del>ড</del> 7	-	धनारु नारपरित	<ul> <li>डॉ. एच. वैकोबी-बंगायित १०३१</li> </ul>	
€0	-	करदेशभागिका	वेग वर्ध-त्रकारक-समा ध्यानस्य, संबंध १८७६	याचा
नव	-	<b>भगवातीय</b> पूत्र	मामनीयम् समिति नामाई, १२१	- 98
43	-	State of fardall)	मानक्षाच सीरिएस्टब सिरीज में ॥ १०१॥	38
#FF		बम्पीतनुष	वैक-वर्गे प्रजारक-सम्बद्ध, भारतगर, तंत्रम् १६६६	- म नाच्य

<sup>ो</sup> चडेप कीपून के हैं. जी**रो** हारा तात ।

र्संद		ग्रम्थ का नाम	संस्करण धारि	जिसके मंक दिए
				गय हैं वह
सम्मत्त	-	सम्पन्तनसन्त्रति संटीक	वे सा पुस्तकोबार-कंड वस्तर्क, १९१६	प्र
सम्ब	=	सम्बन्धस्थकः पथीसी	र्धवासास गोवर्धनदास वस्वई, १८११	याचा
सम्पत्तको	=	सम्पन्नोत्पायविधितुत्तक	🕇 इस्तिपिक्कित	,,
सा	=	सामान्यगुक्षोपदेशनू सक	17	77
सार्थ	=	वसम्बद्धार्थशतकातकारस	बीहरो बुस्नोसाम पन्नासास बम्बद्ध १११६	
शिक्सा	=	रिशासन्दर्भ	† हरतिमिजित	,,
सिग्व	=	सिग्धमबङ्ग्ज-स्मरण	स्व-संगदित कमकता संबद् ११७८	n
सिरि	-	विविधिरवासकहा	वे सा पुन्तकीकार एंड बम्बर्ध १९२३	n
मुख	=	मुखनोबा टीका (बन्तराम्पयनस्य	) इस्त्रसिक्ति	श्रवस्थान गावा
मुख	-	<b>सुमग्रक्ष</b> ण्ड	धाममोत्य-र्मामित <b>बम्बई, १६१</b> ६	पाहुर
मुपा	=	सुपासनाहणरिक्ष	स्य-संपायित वनारस १११व ११	48
मुर	=	सुरसुंदरीवरिम	वैन-विचिय-साहित्य-सामा वनारम १९१६	परिच्छेत्र गाया
मूच	-	सुमगर्जनपुत	+ १ बीमसिंह मालेक अंबई ११६६	श्रुतलम् प्रमा
			२ वागनोदय-समिति वंबई, संबद् १९१७	
सूप्रति	=	मुमञ्जा हानियुँ कि	१ इत्समिष	भूतसम्ब
			२ बायमोदय-प्रमिति भंबई, संबद् ११७३	याचा
			के भी मसिंह मारोक n 🙀 १९३६	19
<b>मू</b> क	=	सूक्षपुत्रावनी	दे सा पुस्तकोद्यार श्रंड बंबई,१८२२	पश
सुवद्	=	বুস <b>ক্ত</b> রাগন্ধব্যি	PIS	
#	a	<b>0 पूर्व व</b>	निर्संबसमर प्रस चंदर १८१६	माधातक पन
स्वान	-	स्बेप्तवस्ववस्य	সিব্দু-র ক্তে-বিধীস	<b>TS</b>
हम्मीर	=	इम्मीरमदम्बन	मामकनाव मोरिएम्टल सिरीज में १ १६२	23
हास्य	#	हास्यचुद्दामिश (प्रश्वतम)	på	n
हि	=	द्वियोपचेराषुसक	† इस्त्रशिवित	याचा
हिच	=	हिचोपचेठसार <b>नु</b> सङ	p <sup>3</sup>	
ŧ		हैमंबाद-आइन्त-स्थाकरस	<ul> <li>१ वाँ धार् पिरोम्-संपर्धित १८०</li> </ul>	यर, सूच
			२ वंबर-संस्थात-सिरीम १६	79
हरा	2	्रैमक्ट-गामानुगासन <u>ः</u>	निर्णेवसापर प्रेस वंबई, १६ १	१७

<sup>🕇</sup> सबैप मीवृत के. है जोरी हास हारत ।

<sup>🛊</sup> देवी 'यस के मीचे वी टिमारी।

<sup>+</sup> चून के प्रेड दल वोगी में फिल किल हैं, बलुत बोद में बूचांक केवब बी, बा के चंदगरण के दिए प्ये हैं।

# प्रथम संस्करणा में लेखक का निवेदन

इसी बरने में भी राजेन्द्र स्टिश का व्यक्तिमंत्र नामक कोप का मंगन भाग प्रकारित हुया भीर अभी दो वर्ष हुए इसका क्रासिय भाग भी बाहर हो गया है। बड़ी बड़ी नात विक्रों में यह कीय समाप्त हमा है। इस संपूर्ण कीय का मुख्य २६ ) राये हैं वो वरियम और प्रमानिमाल में प्रविक मही कई का उकते । यदापि दल कीय की विस्तृत मालोदना करने की न ही यहां जाता है। न क्षाबारकाता ही तबापि यह क्षेत्र दिना नहीं रहा जा शकता कि इसकी संप्याधि में इसके कर्ता और उसके सहकारियों को समझम भार परिधान करना पढ़ा है और प्रकारन में कैन रवेतामार सेन को भारी जन-मध । परन्तु चेर के साव जहना पढ़ता है कि इसमें कर्ता के सक्ताता की धरेता विकासता ही घषिक मिनी है और प्रकारक के बनका बरब्यय ही विशेष हवा है। सक्ताता म निसने का कारण भी क्या है। इस क्षम को बोड़े पीर से देवने पर यह सक्षम ही। मादम होता है कि इसके क्या की ल ती। प्राक्त आवार्सी का पर्याप कान सा और स प्राप्त राज्य-कोप के निर्माण की छठनी प्रकल रूखा जितनो कैन-वर्शन-गाल और तर्छ-गाल के विषय में बारने वाधिप्रश्यप्रकापन की कन । इसी सन ने मंदने परिपन को योग्य विशा में से वानेसानो विनेक-बुद्धि का भी बास कर दिया है। यही कारता है कि इस कीप का निर्माख केनल पण्डलार से भी कम प्राष्ट्रण केन पुरवकों के हो, जिनमें सर्थमायसी के दर्शनविषयक शंगीं की बहुनशा है माबार पर किया गमा है भीर प्राष्ट्रत भी ही इंदर मुक्त ताबामी के तथा विभिन्न विपयों के अनेक बेन तथा किनेनर बच्चों में इक का भी जायोग नहीं किया मया है। इससे यह बोप ब्यारक न होकर प्राप्ति भाषा का एकरेसीय कोण हुया है। इनके निवा प्राप्ति तवा संस्कृत प्राप्ती के विस्तृत संसों को भीर कही-नहीं तो संगे-नहें संबूर्ण पन्न को है। अवतरण के का में जहबूत करने के कारण ब्रह-संकार में बहुत वहा होने पर भी राध्य-संस्था में इन ही नहीं महित बाबाए-पून पंत्रों में बाय हुए कहें "उपहुक्त शारों को छोड़ देने से और विशेशमें-हीन यदिशीयें सामासिक शस्त्री की घरती से बास्तरिक शम्बन्धका में यह बोज प्रतिन्तृत की है। इतना ही नहीं इस बोध में बादशे पुस्तकों की मनाववानी ही भीर प्रेम नी तो पर्यस्य प्रमुद्धियां है ही प्राष्ट्रत मात्रा के श्रतान से संकल रखनेवानी मुनों को भी वभी नहीं है। भीर सबसे बहुकर होय इस बोद में यह है कि बाबस्पत्य अनकारत अवधाना हा आएक, रस्ताकराबतारिया बादि केवल बंद्युत के बीट खेन इतिहास केवे

र कैये कियाँ राम्य की स्थानमा में प्रतिमाधानक नामक तरीक संस्तृत जन्म की मारि से लेकर सन्त तक अर्जुत किया नया है। इस क्षेत्र में भीक-संस्था करीन कीच हुआर है :

र सद≃ मई मा€ः

१ वेग धारीवन्त्रतीत धारपुरवन्तम बार्यवन्तरम्नीवन बाहुबन्नीवर्गणीत् बावर्शिशोजस्तरन्वरन्तरेत बाह्यम्(१)-वेद-एमण, सन्त वर्धावन्त्रपान्तरिक्य बन्दर्गणुवरिश्वित्वपतित बाहि। इन सम्बोधा दलके बदयर्थी की बनेता पूरा भी विशेष वर्ष मही है।

## प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाग के बात के लिए वह साथा का काकराए और कोड प्रवास साजन है। बाहुन लाया के प्राचीन स्माकराए सनेक हैं, जिनमें पंड का प्राह्मकराज्य सरक्षि का प्राह्मना प्रधान है। साहन साथा अपाईन का प्राह्मना संवेद थीर स्वस्थाप के पद्मापाचित्रका पुरुष हैं। और प्राव्याप सावकर सावकर हैंने पर भी स्वत्य वात्र में के प्राव्याप का प्राह्मन संवेद हैं वे पर भी स्वत्य वात्र हैं। यह सावकर के विषय में सुवित्य का प्राह्मन के प्राव्य के प्राव्याप कर कि प्राप्त के प्राव्य के प्राव्याप कर कि प्रवाद के प्रविद्या का प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रविद्या के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रविद्या के प्रवाद के प्रविद्या के प्रवाद के प्रवित्य के प्रवाद के के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के के प्रवाद के प्रवित्य के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवाद के प्रवा

इसी बरने में भी राजेन्द्र सरिजा का अधिमानराजेन्त्र नामक कीए का प्रवम भाग प्रकारित हुआ और सबी ही वर्ष हुए हतका क्रियम भाग भी बाहर हो नया है। बड़ी बड़ी माल जिल्हों में यह कीप समाप्त हुआ है। इस संपूर्ण कीप का मूक्य २६ ) उपने हैं को परिचन और धन्त-परिचाय में ध्विक नहीं कहे ना सकते । यदापि इस कोप की विस्तृत आसीवना करने की न तो महा बन्छ है न सारक्ष्यक्ता ही तथापि पत बड़े बिना गर्सी पता का सकता कि इसकी तप्यापी में इसके कर्जा और उसके सहकारियों की शबपन बोर वरिकार करना पक्ष है और प्रकाशन में बैन रनेतामार संग को मारी जन-मन्या। परन्तु और के शाय बहुना पहला है कि इसमें कहाँ की क्रफतना की सरेजा निम्हणता ही सांवक निनी है और प्रकाशक के बनका बाज्यव ही विशेष हथा है। शक्तता न मिलने का कारण भी स्तर है। इस प्रत्य को बोड़े मीर से देवने पर यह सहज ही भारत होता है कि इसके कर्ता की न तो प्राव्यत सायाओं का पर्यास सात का धीर न प्राप्त रकर-कोप के निर्माख की पतनी प्रवत रुख्या जितनो जैन-वर्शन-शास सीर तर्प-शास के विकास में सबसे वर्शनस्थापन ही धत । इसी बन ने घरने परिचय को योग्य दिछा में ने जानेशानी विकेत-नृति का भी दास कर दिया है। यही कारण है कि इस कीय का किर्मात केरल प्यहत्तर से भी कम प्राष्ट्रत मैन पुस्तकों के हो जिनमें प्रार्थनायती के वर्शनिवयक संबी की बहुतता है, मामाद पर दिया क्या है और प्राष्ट्रत की ही दवर बुकर साजामों के तथा निभिन्न निवर्ण के सनेक जैन तथा जैनेनर प्रस्थी में हम का भी उत्मोन नहीं किया क्सा है। इनसे वह कीय स्पानक न होकर प्राष्ट्रत प्राप्त का एकपेशीय कोप हुमा है। इनके शिक्षा प्राष्ट्रत तथा संस्कृत प्राप्तों के तिस्ट्रत यंगों को भीर क्हीं-कहीं हो यांगे-बड़े संपूर्ण प्रन्त को ही यनतरण के का में उदबंद करने के बारण बृह-सबदा में बहुत बहा होने पर भी राष-संस्था में रून ही नहीं, बारक बाबार-मुन वंचों में बाय हुए कई विवयुक्त शावों की छोड़ देने से बीए विशेषार्व-होन वितिर्धि सामाधिक कारों को भारतों से बास्तिक राज्य-संक्ता में यह कोड प्रतिनूत ती है। इतना ही नहीं इन बीच में बारश वृस्तकों की प्रशासनानी नी थीर प्रेष्ठ की तो पर्यक्त महादिया है ही प्राष्ट्रत मात्रा के धन्नान से संकल्प रखनेकली शुनों को को कभी लही है। और सबसे बढ़कर कोच इब बोर में यह है कि बाबस्पाय अन सारकायवनाका अपूक्त सनाकप्यवनारिका गाहि केवल संस्त्य के बीए क्षेत्र प्रविकास वैवे

र कीने विदर्भ राज्य की ब्यावना में प्रतिमाहत का नामक प्रतीक संस्कृत सन्य की साथि से सेकर सन्त तक उत्पूर्ण किया गया है। इस क्षेत्र की व्योक-संस्था करीय पांच हुनार है।

२ बद्ध= धर्म साहि।

<sup>।</sup> केत्र वारित्वन्तेष वार्युक्तन्त्रम्य धार्यवार्यक्रम्यनीवाव वारुवार-तीवनिवार्य धावनी(?)उरन्यरन्यरन्यतेष वार्यमा(!)-वीत-एवणा, वार्य-वार्यक्रम्याण्याः दिवय प्रमह्त्युवी(?)वनणीवय वार्यः। वर ग्राव्यं वर इनके वरवस्यं वी वारेन्यः दुव भी विदेन वर्षे मही है।

# प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई यो मापा के बात के सिए उड अपा का काकरण और को र मधान सावत है। बाहुन सापा के माधीन स्माकरण स्तेक हैं, तिनमें जंब का प्राह्मतास्थ्य प्रस्ति का प्राह्मतास्थ्य से कि स्वाहमत सापा के माधीन स्माकरण स्तेक हैं, तिनमें जंब का प्राह्मतास्थ्य प्रस्ति का प्राह्मतास्थ्य सीर क्ष्मायर की पढ्नापाणित्रका पुक्ष है। और सर्वाधीन प्राह्मत स्वाहमत हीने पर को कार्य करेंगी के प्राविक्ष माहत्व विकाश की पिराह का प्राहमताकरण वार्यके हैं को प्रतिवक्त की प्राविक्ष माहत्व की प्राहम के प्राविक्ष माहत्व की प्रविक्ष माहत्व माहत्व की प्रतिवाद माहत्व माहत्व की प्रतिवाद माहत्व माहत्व की प्रतिवाद माहत्व माहत

इसे घरते में थी राजेरनू सुरिका का अभिवानराजेरनू नायक कीय का प्रथम साथ प्रकारित हुया धार सभी दो वर्ष हुए हरका सम्तिम भाग भी बाहर हो गमा है। वही बड़ी नाठ किलों में मह कीप समात हमा है। इस संपूर्ण कीप का पूरूप २६ ) काम है वी करियम और प्रस्थ-परिमान में प्रक्रिक नहीं को बा सकत । यहाँप इस कोए की विस्तृत धालीवना करने की न दो यहां बाह है न मायायकता ही तबाजि यह बड़े बिना नहीं रहा जा सकता कि इसकी सम्मारी में इसके कर्ता और उसके महकारियों की संबंधन घोर वरियम करना पड़ा है और प्रकाशन में बैन खेलान्यर संग को भागी जन-मंग । परन्तु और के साथ कड़ना पड़ता है कि इसमें कर्ता की क्रवरता की क्षत्रेया निष्यनदा ही प्रविक मिनी है धीर प्रकारक के बनका सारव्यत ही। विशेष हथा है। सफनता न मिन्नने का कारण भी स्त्रप्र है। इस प्रान्त को बोड़े और से देखने पर यह सहय ही जानून होता है कि इसके क्यों की ल ती आहता आवाओं का पर्वाप्त सान का शीर म प्राप्तन शहर-कीय के निर्माण की उठनी प्रवत इच्छा जिठनी मैन बतन-शास और तर्द तास के विषय में परने पाणिकांगप्रकायन की कत । इसी कृत में अपने परिधम को मोध्य विशा में से वानेवालो तिवेड-वृद्धि का भी आस कर विमा है । यही कारण है कि इस कीए का क्रियांता केवल पणहत्तर से भी क्षम प्राक्तन मैन पुस्तकों के ही जिनमें अर्थनायधी के दर्शनविषयक होयों की बहुलता है आबार पर किया क्या है और प्राष्ट्रत की ही इयर मुक्त शाकाओं के तथा विभिन्न विषयों के शरीड़ जैन तथा कैनेतर धन्वों में एक का भी उपयोग नहीं दिया गमा है। इस्ते यह कोव स्थापक न होकर प्राष्ट्रण माना का एकदेशीय कोच हुमा है। बनक निवा प्राष्ट्रण धमा संस्कृत धन्मों के विश्वत श्रीतों को भीर क्यूनिक्यूनितो छोटे-को अंपूर्ण सन्द को ही सकतराए के का में अपूरत करने के काराए पूछ-सबसा में बहुत बढ़ा होने वर भी राज्य-संस्था में रून ही नहीं जरिक धाकार-भून यंकों में धाए हुए कई विश्वक शब्दों को धोड़ की से और विरोधक हीन धावधीय सामाधिक रान्यों की मध्यों से बारवरिक राज्य-संबंध में यह कोच प्रविद्युत भी है। इतना ही शहीं इम कोच में धारवी पुस्तकों की प्रशासकारी की भीर प्रेव की ही पर्छक्य प्रयुक्तियां हैं ही प्राइत जाया के सजान से संकल्प रक्तेवाली अनी ही भी बारी नहीं है। और सबने बढ़कर बोध इस बीप में यह है कि पा बस्परम अने अन्यावध्याता आहा है, रत्नाकराबदारिया बादि नेवल संस्ट्रत के बीट जीन इतिहास मैने

है भैमें 'चेदर' राज्य ही स्थानना में प्रतिमाहान्छ नामक सर्वेक चंतहत प्रत्य की साहि से मैकर प्रत्य तक बहुत्व किया प्रया है। इस प्रेंच की स्पीक्र-संस्था करीव वांच हुआर है।

२ यद≠ वर्गधारि ।

१ वेग पर-दिशवनीत्र धार-पुरवन्तम्य धार-विवान-प्रमानिवय प्रमुखन-नोवनिविद्यं वाचरीत्रीत्रधार-पर-परनेतः धारिमात्रीः वैद-रामणा, व्यव-व्य-विवायमण् दिवयं वाजरूरमुकोर्?श्व-वर्णवयं वर्षतः। इत ग्रम्ते ना इतके वयवर्षे तो व्यक्तानुद्य जी विदेव वर्षत्रे तृति है।

दूसरी पूक्य वर्दिनाई सर्थ-अप के बारे में थी। येरी आर्थिक सबस्ता ऐसी नहीं थी कि इस महान् चैय की तम्मारी के थिए पूरवर्गांद सावरण कार्यों के बेवल-वार्ष के धार्तिक प्रशासन का भार भी बहुन कर तहूँ। धीर प्रशास मनुष्यों के बेवल-वार्ष के धार्तिक प्रशासन का भार भी बहुन कर तहूँ। धीर प्रशास कि सावर सहस्ता में पर पत्र कर सहस्ता में पर पत्र कर सहस्ता में पर पत्र के सिए प्रशास आहर बनाने दी पांचन की पर विसर्ध कर प्रशास कर को पर विसर्ध कर प्रशास कर को पर विसर्ध के प्रशास कर का प्रशास कर को पर विसर्ध कर को पर विसर्ध कर को पर विसर्ध कर को पर विसर्ध कर को प्रशास मनुष्य की नहीं किन्तु कर मान्य के प्रशास कर को पर विसर्ध कर को प्रशास मनुष्य के प्रशास कर को प्रशास मनुष्य के प्रशास कर को प्रशास मनुष्य के प्रशास के प्रशास मनुष्य के प्रशास मनुष्य के प्रशास के प्रशास मनुष्य कर मनुष्य के

यक विधित्त में वेबल उन्हीं कारों को स्वान दिया कया है जो पूर्व-श्रंयह में न आवे क कारण एकरन नये हें या आने वर औ सिए या धर्म में पूर्वच्य कम की बरेका विक्रेशन रखते हैं। केवल रेकरेंस जी विक्रेशनता को सेकर किसी कार जो गिरिक्ट में पूनवाईणि नहीं की बर्द है।

१ "महिन-पाहक नुषी" का भेरा क्रितीय बेस्करता में नहीं परांता यथा है--बंदारक ।

<sup>2. &#</sup>x27;परितिष्ट' का लेक्षु संस एक दिवीय संस्कृत में वनास्थान समावेश कर दिया गया है—चैताहर १

ने इस सामुक्तित दुक्रपती धर्मों ने संमुख भीर पुरावती राज्यें पर हैं। गोधी किया करना है है। ने मोध हुए साइज राज्यों की इसमें मूस क्लिक्ट की बहे हैं, दिवसे इस कीव की मामाशिएका ही धुक्तप नहुं हो। वे ही। वे सीट सम्ब ध्योक सकत्य दोशों के मरस्य सामाय सम्बन्धी के किए एस नेटर का उससेप जिल्ला भागक भीर सर्वकर है, बिहानों के जिल्ला ही क्लेसकर है।

एन ताबू जाएत के शिवन कोरों और रिकारों के कैन तथा कैनेतर साहित्य के म्लैट कारों से संक्रतित सावस्वक सनतराओं से बुक्त गुज्र एवं आवर्तियक बीच वा नितानत सवार कारा है पहुर । इस समाज वी भूति के लिये किने सपने कक दिवार को कार्य-कर में रिस्पत बाजे का एह बीचन दिना की तथा कर साहित्य है। प्रमुख्य प्रोत के स्थान पाना नियका कम साहुत कोर के कर में बीचाई नहीं के कोर परिस्ता के प्रमुख्य करता पानों के साहित्य है।

क्षण्यत कार की सम्मादी में जो प्रतिक कक्षितात्यां मुक्ते केवती पड़ी हैं जनमें सक्ष्यका प्रावृत के शुक्र पुस्तकों के निधन में बी। प्रशास का रिकाल माहिरत-म्यूटार विविध-विययक ग्रेक-राजों से पूर्ण होने पर भी सावयक गृह क्येंट क्या में प्रकाशित ही नहीं हमा है । मीर इस्त-निर्मित पुन्तर हो बहुबा प्रजाब सेपकों के हाब है सिबी बारीके कारण प्राय प्रशुद्ध 🗗 हुया करती हैं, परानु प्रायतक जो प्राप्तत की कुनरें प्रतारित हुई हैं के की स्वृत्तिक परिमाण में बागड़िकों से कानी नहीं हैं। शतक पूरीर नी और इस देश की कुछ पुस्तक रेंगी बसम पर्यात में बरी हुई है कि किम्में बागुनियाँ बहुत ही बम हैं, चीर को हुछ रह भी वह है से उनमें टिप्पत्ती में लिए हए सम्ब शतियों के बद्धन ने नाथ ने तुमार्थ का तरनी है। परन्तु दुर्मान्य से ऐने संस्करतीं की संन्या कहत है। अन्तुम के सम्बद्ध को से की की सात है हि भारशेद मीर सास नर हमारे केन जिलान आपीन कुस्तरों के संतोचन में मांवक इस्तामिक पुस्तकों का कामीन करते ही और उनके दिप्रतिकत तारों को निकाली के बाकार म क्षूनत करने की एकसीफ ही नहीं उठाते । इसका नतीजा यह होता है कि संशोधक की दुनि में भी पाठ गुढ़ बाबूप होता है नहीं यह किर बाहे वह बालव में बाबूढ़ हो बयो न हो पाछकों को देखने की निमला है। प्राकृत के दूवर प्रतिक एनों को दो दह बुरंदर है ही परण्यु केनों के परिचलन बीर पति प्राचीन व्यावप-क्ष्मों को भी बड़ी प्रवस्था है। अई बड़ों के पहि स्थितीकार के प्रतिक पन-पूरेर एवं धनपतिनिक्की व्यापुर वे प्रनेक धायत-वन्त क्षिण-क्षिण स्थानों में विमानिक संदेशकाँ से संपादिन वार वर प्रकार के, विनन प्रविवास प्रजानों क्षरोपकों से सम्माद्धि होनेके कारण कृत ही प्रमुख को में । किन्तु पत्री कुस ही वर्ष हुए हमार्थ आगमाह्य समिति व पण्या चेड एवतित करके भी जी वादमी के बन्द बरवाये हूं है करवाड खराई तक्कर व्यक्ति वाह्य स्टिश्ट ही तनलार में नुमर होने पर भी गुद्धता के नियम में बहुबा पूर्वीक संस्थ का वृत्रकारित हैं है । स्वीकि न किसी में मासर्थ-स्टबर्स के पासरकर की न पुनर हो। हा बरियम हिस्से समा है, न पून और टीका के जाइन राज्यों की वैवदि की धीर क्यान दिया गया है, मीर न दो प्रकार की सावारण सर्गादयां मुकारी को नवीवित क्षेत्रिक हो को नई है। क्या ही कश्चा हो यदि बोझागनोक्यसमिति के कार्व-कर्तासों का स्थान इस स्थानी भारता हुए हो भीर वे ब्राइत के विकास भीर वरिश्वती विद्वानी से संपादित कहा कर सबस्त (ब्रवादिन और सप्रकास्ति) सावन-सन्धें का एक श्रेड (१ ा: 1) पंतारण प्रशासिक करें जिननी सनिवार्व सावस्वरता है।

दन वरंदू रण निर्माण और ब्रील आहण-तम्म अस्य अपूर्व होने के बारण आवस्यवस्त्रमुक्ता एकाविक हरण-विविद्य पुराशों वा प्राथ-तमें में बाहा मंदी गांजों ना बीर किना-तिम्म ग्रेस्टरणी ना सान्यामी के निर्मणण करके काने हे पुत्र महत्व करनी का एक व्हेस के एक के निर्मण नवार नवार पुत्र को का हो बहुं बहुण निया कर्या है ही पहिष्यों का यो बंदोक्त नवार कि तिहा कर में दन्न री हान-तिर्माण आहि मान क्षेत्र के बहुण के बहुए पात्र करा है उनके दंगे हुई यह पुराशों का यो बंदोक्त नवारति कि तम करते हैं के रीतीय ग्रेस्टरण क्षा में ही दन क्षा में काम दिवा नवार है। मान्याण सम्मों को व्हेस दर बहुत काम बहुत करते हों देगी प्रमुखियों का सम्मों स्था के रीत दन बहुत के मुद्द काम कारों में कामिया के बकोशन के पुत्र को स्थापना का स्थानका मान स्थानका का स्थानका काम क्षा का स्थानका काम के बहुत काम कारों में की हुई स्थाय व्यान विवास कर है। पुत्र वह समान्य तीना हुए है हि मेरे दश समान की स्थान वह दश की मान स्थान के मूसिया वर्ग के विवास कार्य

१ रेचा यापार वार्वाणाणात्रः वर्वाशास्त्रः वर्वतः लाक्तुरम्, यावद्यतिषु, बण्डलमानारित्तः याण्यस्त्रिषु, प्रायणस्त्रारित्तः, बस्ति त्यर्वेकार्ण्युनः वर्णेनस्वरसाय प्रदृति कारी हे नेतृति ।

र, देवों बनार करूप किए हुए एक वंशनीपक्ष प्रविशासी के रोक्स एक्सिसिट बोलाईसि के वर्तन में बगारिए औ, स्पूर्वन का प्रतिपत्त :

दूसरी मुक्त बक्तिनाई अर्थ-अव्या के बारे में थी। मेरी वार्षिक वयस्त्रा ऐसी नहीं थी कि इस महान् संब को सम्पारी के सिए पुरतगांद भाषरमक शावनों के भीर श्रहायक मनुष्यों के बेहन-बार्ष के मिटिएक प्रकारत का भार थी बहुत कर लहूँ। भीर गुन्त में किशी से माधिक शहायता देना में पश्चत वहीं करता था। इससे इस कठिनाई को दूर कठने के शिए महिम शहर बनाने की मोजना की मा निसमें उन भ्राहिम प्रकृषों को हर पंचीस कामें में इस संपूर्ण प्रम्म की एक कॉपी देने की स्थवत्या भी । इससे मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण दो नहीं किन्तु बहुत-हुछ कम हो गर्द । दम मोजना तो दतने दूर तक सफल बनाले का ग्रांकिक यम कसकला के जैन श्रेतास्वर-मीसंब के मध्यप्य केता भीनाम सेठ जरीचमानाइ केठानाइ को है जिन्होंने गुरू से ही इसकी संरक्षकता का भार वाको वर मेठे हुए पुन्ने हर तरह से इस कार्य में महायता हो है, जिसके किए में उनका विरक्तक हूँ । इसे तरह अहमदावाद-निवासी घडेप थीपून करायखाउँमाई प्रेमचन्त् सोनी बी. ए एस्एम् वो का भी में बहुत ही करहत हूँ कि किल्लीन की मुद्रित पुस्तरों में वी हुई प्राष्ट्रत धन्त-मुविमों पर से वस्त्रित किया ह्या एक बड़ा शनद-संग्रह मुखे विद्या बार इतना ही नहीं अस्ति समय समय पर प्राकृत की बानेक हस्त-मसित तथा पुरित पुस्तको का जोग्यह कर दिया था भीर उक्त धावना में प्राहक-सक्या बढ़ा देने का हार्रिक प्रयत्न किया था। प्रात स्मरणीय पुरम्याव प्रस्तर्य द्वितरात क्षांत्रसीषित्वयत्री महाराज पुरव केशकार्य थी पञ्जयमोहन सूरिजा ने दु. महारक वीजिनजारदान्म्(रजी तमा स्वतन सन्तारक विद्वर श्रीदुर अस्विकाससद्जी धात्वययी शाभी में इवन म जयकार मानवा हूँ कि विननों प्रेरणा वे कविम बाहकों भी इवि हारा मुद्ध इस काथ में सहायता मिनी है । एन महानुवारों को जिनके सुप्त नाम इस्ते प्रस्य में वन्यन की हुई सरिय-बाहर-मूनी में अकारिय फिय म्य हैं<sup>3</sup> धलेकालेंक जन्मकाव हैं कि जिल्होल सकारतिक सकार्विक संस्था में इस पुन्तक की कॉरियों सरीद कर मेरा यह कार्य सरस कर विया है। यह पर मेरे मित्र भीयूत् सेठ गिरवरस्थास शिक्सलाख और बीमान बाब झालवादला सिंधी के नाम विशेश उन्तेवनीय है। इन दोनों महास्त्र्यों ने प्रपनी अपनी शक्ति के बलुनार वर्षत्र संस्था में इस क्षेत्र की क्षतियां अस्तिन के शक्तियत मुक्ते इस कार्य के लिये समय समय पर विना सुंद ऋछ देन दी भी क्रम दी थी। यह पहने में कोई बार्युक्त नहीं है कि यब उक्त सब महानुभागों की यह सहामया मुक्ते प्राप्त न हुई होती तो इस नीय ना प्रकारन मेरे जिए सरिनस ही नहीं ससंबंध था।

सहा इस बाद का भी जल्लेक करना विश्व जान पड़ता है कि बाब से करीब रूप वर्ष पहुंचे सेरे खुरामारक पद्मेर प्रोरंगर सुरक्षीय सन्ती पून पून महानम ने और सेरे निमक्ष एक महानम निश्च एवंदिन का प्रकृत पहुंचे का स्वाव के सिंप स्वित के सिंप कर देन कि एक क्ष्य के सिंप का प्रकृत कर विशा बाद का सिंप एक कि स्वाव कर कि सिंप कर के सिंप कर कि सिंप कर कि स्वव मेरे रूप सार कर के सिंप कर कि से महान के सिंप कर के सिंप कर कर कि सिंप कर कि से महान के सिंप कर कर कि सिंप कर कि से सिंप कर के सिंप कर के सिंप कर के सिंप कर के सिंप कर कर के सिंप के सिंप कर के सिंप के सिंप कर क

यक विधित् में केमल उन्हीं शब्दों को स्वान दिया बना है जो पूर्व-संग्रह में न आने के कारण एकरन नमे हैं ना माने पर भी तिय मा समें में पूर्वापय शब्द की मनेता विधेयता रखते हैं। केमल रेकरेंस की विशेषता को लेकर कियी शब्द को विधित्य में पूर्वाप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में पूर्वाप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य की प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को विधित्य में प्राप्य को प्राप्य को प्राप्य के प्राप्य के

१ "महिम-बाहुक सूची" ना मेरा द्वितीय संस्थरता में नहीं सापा नवा है--संपादक ।

<sup>3. &#</sup>x27;परिविष्ट' मा संपूर्ण संग इत द्वितीय संस्टरता में यवास्थान समावेश कर दिया गया है-संगादक ।

प समन्त्र भागार्थे कथ्य रूप से ज्यवहरूत गर्दी होती. दूसी कारण ये सूत भागा (dead languages) कर्द्रकारी हैं। 'इह आदि सब मातार्थे जाये आपा के ब्यून्तांत हैं और हन्दी प्राचान कार्य आपायों में से क्रूबक क्रमग्रा रूपान्तरिक सार्थानक समन्त्र साथ आपार्थे करान दुई हैं।

प प्रार्थन माय भागारें कीन युग में किस रूप मं परिश्तित होन्स्र क्रमशः व्यासुनिक कष्ट्य मायाओं में परिवर्त मग्र मधिन विराप नीप दिया जाता है।

#### प्राचीन मारतीय भार्य मापाओं का परिणति अम

हार ब्रॉड प्रियमिन न चपना निश्चितर वह बाँच इतिया (Linguistic survey of India) नामक पुलक में दर्गीय समान आप भागायों क परिणाम का जो कम दिराया है उसके चतुसार विशिष्ठ माया वक्त साहित्य-मायाची है प्रार्थित है। इसका समय अनक विद्वानों क सन में दिल्लाकर होते है बाँचर वर्ष (2000 B C) और से या बोर भी कह महस्तुस्प क मत में दिल्लाकर मुर्च बाद्ध सी वर्ष (1200 B C,) है। वह वेद-माया क्रमण कंतर परिणाजिन होनी हुई बाह्य प्राप्तिक होनी हुई बाह्य से प्राप्तिक के निरक्त की माया में और बाद में पाणिनिक्सूति

कारत के स्माहलानुमा निविध्यत होत्र खोषिक संस्ट्रक में परिष्यत हुई है। पाणिति स्मादि के पद्भावति के रूप मंद्रारों को प्राप्त करने के बारण यह संस्ट्रत पहलाई। मुख्य क्य से 'संस्कृत' शहर का प्रयोग इसी प्राया गों में दिया जाता है। यह संस्ट्रत भागा पित्रक भागा से उस्तम होते से उसके साथ प्रतिस्थ सम्बन्ध राजने से बेद कि क्या में भी संस्ट्रत शहर बाद के समय से प्रयुक्त को कम गाया है। पाणिति के शहर संस्ट्रक भागा को खोकिक संस्ट्रत को इस संस्ट्रक माना को खोकिक संस्ट्रत के रूप में परिलत होने में—पाय के इस दूप से सा है। पाणित वा समय गोनहादुक्त के मत्र में सिस्ताव्य पूज्य सप्तम शावाब्यों कोर बोचर्सिक के मत्र में राष्ट्र-पूर्व पत्रुप्त शावाब्यों होने

बहाँ पर इस बार बा उन्नेज करना चायदय है कि वाँ हाँनिक चौर सर विवर्तन के व्यक्तव के ब्राह्मस आर्थ । यह अपनी पर पर दक्ष न वहाँ आहर सम्बद्ध में बार नवत थी। यह आपनी पर पर दक्ष न वहाँ आहर सम्बद्ध में बार नवत थी। यह आपनी पर पर दक्ष ने वार के अपने आहर सम्बद्ध में बार नवत थी। यह अपने वार के वहें पर इस मार कर नवत थी। यह अपने वार के प्रदेश कर इस दक्ष के वार के विवर्ध में किए कर इस दक्ष के वार के विवर्ध में किए कर वार के व

है आर्थ मोगों ने आदित बात त्यान में दिवत में आयुर्गित तिमानों में यहुए बरान्य है। होई स्वामोनेनेया हो होते विशे हो, कोई रोजान को बोर्ड (स्ती को होगें टॉगए प्रियम को, कोई बाव्य एरियम को आर्जी है आर्थित दिवान नृति नानी है हो कोर्देनों देशक और बरादीर हो है हि पुरिगेय और बुर्गित्य पानों में प्रवह क्लिकेर हुएगा। होते पुरिश्त के लाई होनेनेविका क्षेत्र रोजान बहुत जान बहुँ कीर पार्थ होते होते हैं। किन क्लिकेर हुएगा। होते पुरिश्त के लाई में होनेनेविका क्षेत्र रोजान बहुत जान बहुँ कीर पार्थ होते होते हुए कार्य करते हैं। कार्य कार के में तिर्मित्य रोगाई है हात्र कार में कार कार बात कर के बारागित्य के बीर होतर आयुर्गित के होते होते बात हिंदी कार कीर हिंदी हात्र कोर के प्रमुख कार कार कार कार के होता है है हुए बार्ग कोरों का रिश्त वार्षि कीर्मित बीर हिंदी है कार बीर रिप्युटनाव किया रिया है हिंदी कार कार कार कार कार कार कार कर करते होता है।

एक वेद मापा प्राचीन होने पर भी वह वेदिक युग में जन-सावारण की कच्य भाषा न थी, श्रापिन्छोंगों की साहित्य-मापा थी। उस समय जन-सावारण में वेदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषायें (dialosts) कच्य रूप से मचित्र थी। इन प्रादेशिक भाषायों में से एक ने परिमार्जित होकर वेदिक सादित्य में स्थान पाषा है। उत्तर वेदिक युग से प्राचन-वार्यों का प्रयम पूर्व कर में आप दुप प्रयम दर्क के दिन आपों के सम्बद्ध के चारों तरक के प्रदेशों में उपनवेशों भाषाओं ने प्रतिक क्षायों के सम्बद्ध के चारों करन के प्रदेशों में उपनवेशों भाषाओं ने प्रतिक क्षायों के सम्बद्ध के चारों अपने भाषा में स्वतिक क्षायों के स्थान के रचना नहीं की थी। इसते का प्राचीन क्यों का संपूर्ण खेप हो गया है। वेदिक कार्क की और इसके पूर्व के का मार्ची के स्वतिक कार्क कार्या सामार्थों के स्वतिक कार्य मापाओं के सामार्थिक मार्चिक साहित्य में प्राचन सामार्थों के स्वतिक कार्य मापाओं के स्वतिक कार्यों का सामार्थ कार्य-पूर्व के उपने प्रतिक कार्य विविद्ध किया गया है। इसके प्रयोग में प्रतिक कार्य मापार्थे के स्वतिक कार्य निर्देश किया गया है। प्रथम सामार्थ के से सामार्थ मार्ची कार्य-पूर्व २०० के कार्यों के स्वतिक विविद्ध किया गया है। प्रथम सामार्थ के स्वतिक कार्य निर्देश किया गया है। प्रथम सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ कर सामार्थ के सामार्थ कर सामार्थ कर

नहीं, विके पुरावेष ने बपना वपवेख संक्ष्म आपा में न विकार क्या माइन आपा में विकान के दिन वपने शिष्यों के बादरा दिया था। इस वपर माइन आपामों का कारण साहित्य की मापामों में परिणव होने का वपने शिष्यों के बादरा दिया था। इस वपर माइन आपामों का कारण साहित्य की मापामों में परिणव होने का वपना हुआ, जिसके एक क्ष्म कर परिष्म मापा से जैनों के प्रमित्त की की अप मापामी और पूर्व मापा से जैनों के पाने पुरावेश को कर करिएन साम मापामी और पूर्व मापामें में पाने पुरावेश को कर करिएन साम के सम्बन्ध में पार प्रपाद दें दिया के मापामें के प्रमित्त कर करिएन के सम्बन्ध में पार प्रपाद दिवा के कारण कर करिएन के सम्बन्ध में पार प्रपाद दिवा के कारण कर करिएन करिएन करिएन साम मापामों में स्वाव कर करिएन साम मापामों में स्वाव कर करिएन साम मापामों में स्वाव कर करिएन साम मापामों के स्वव कर करिएन साम मापामों के स्वव कर करिएन साम मापामों में साम मापामों के स्वव कर करिएन साम मापामों के स्वव कर करिएन साम मापामों में साम मापाम मापाम मापामों में साम मापाम मापामों में साम मापाम मापामों में साम मापाम मापाम मापामों में साम मापाम मापा

सर मिपसैन ने पह सिद्धान्त किया है कि बाधुनिक भारतीय बार्य भागाओं की करविष द्वित्रीय रनर की प्रावटन भागाओं से, आसकर वसके शेव भाग में मचकिव विशिष्य अपर्धात भागाओं से हुई है और बाधुनिक भागाओं को 'इतिय रनर की प्रावटन रनर की प्रावटन (Tortiary Präkrits)' कह कर निर्देश किया है। इन भागाओं की करवांच वा साइतिक कारतीय वार्य का समय जिससीय द्वारा शावांची है। इनका साधारण कहाज यह है कि इनमें काभिकांग कामार्थ की उत्तरित किया किया है। इनका साधारण कहाज यह है कि इनमें काभिकांग कामार्थ की अपने किसीय वार्य का समय जिससीय द्वारा शावांची की महति विश्वपित अपने का समय शावांची का अवस्था हुआ है। इससे ये पिरल्यगराधिक भागार्थ (Analytical Languages) कही आती हैं।

जिस मारेशिक अपऔर से जिस आधुनिक भारतीय कार्य मात्रा को प्रत्यत्ति हुई है उसस्य विवरण भाग 'अपऔरा' शीर्पक में दिया जायता ! सपारि मेदी आद्मारा जिली नहीं है तमारि नहीं एकमान भाष्यवर्ष की सर्वाविक व्यापक और वृक्षांक्ष राष्ट्र-प्राप्त के बेरम हैंने हैं वारत प्रदों भने के लिए विशेष उपबुक्त समग्री गई है।

क्या में बारों हे नेगर बाम्ने क क्षणी जाहक जानामों के विशिवनिषयक बैन वृत्ये बैनेतर माणीन दोगों के (किनकी क्षम कंपन बारें भी ने जी क्यार है) व व्यविद्याल क्षण पाँछ है. होतर महिलकों के विश्वेद करों के साम बालक प्रकारणों है और कुंदुई माम्मी है दिख्यों रह बुरूद माहक्तामों में महेट प्रावकाणा रवने नहीं को चो दुखा माहक्तवक्षक मुख्य कुटियां मा मुझे हुई हो बातकों दुखार के रिएए दिखानों है नक्ष मार्थन नरवा हुवा यह सामा रखता है कि के देखें कुनों के निवस में बुदे बहते करने वाहि हिल्लों के उत्पूष्ट हैं होटोबन मा वारों करन हो गु) । को विद्याल कि अमनजारों जी मालबिक ब्यारि के मुख्य हो, में करका दिवनुकार मुख्या

मरि वेरी इप इति हे आहमनाधिय के सम्बाद में वोड़ी की बहुमका पृद्धितों हो में बतने इस हो से-काल-स्वासी परिपत्त की सहस इस-के था।

> क्षपद्वता ता १३६८ }

**इ**रगोविन्द दास टि सेठ

# प्रथम संस्करगा का उपोद्घात

### मारतवर्ष की अवाचीन और प्राचीन मापाएँ और उनका परम्पर सम्बन्ध

मापातस्य के श्रातमार मारत्यय की श्राञ्चनिक क्रम्य मापामें इन पाँच मागों में विभक्त की जा सकती ह —(१) श्राचै (Aryan) (२) प्रावित्र (Dravidus) (३) मुण्डा (Munda) (४) मल्-यसेर (Mou-Ebiner) और (४) विवक्त श्रोता (Tibeto-Chinese).

मारत के बर्तमान भाषाओं में मधि बँगास काड़िया, विद्यार, दिन्ती, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी बीर बद्दमीरी मापा आर्थे भाषा से करण हुई हैं। यारमा तथा बंगेओं बर्मनी बादि बन क बाचुनिक युरापीय मापाकों की स्तरित मी इसी आप भाषा से हैं। मापानात साहरेश को देखार मापानस्था बाता को यह अनुमान है कि इस समय विश्वित बीर मुन्दुरार्थी भारतीय बार्थ-भाषा मापा समस्य बात्य की एक सुनुस्तराती भारतीय बार्थ-भाषा मापा समस्य बात्य की एक युरापीय भाषा भाषी-भाषा मापा समस्य काडियाँ कीर एक युरापीय भाषा भाषी-भाषा मापा समस्य काडियाँ की स्वर्ध करण हुई है।

तंत्रम्, तानिक भीर मक्ष्यात्म प्रसृति भाषाँ दाधिह साथा के कस्तर्गेत हैं। कोठ तथा सौंघाती साथा प्रण्डा साथा के कन्तर्गेत हैं। काती साथा अस्कोर आधा का बीर ओटानी तथा नागा भाषा तिक्वत-बीना भाषा का नितृतीन है। इन समस्त मापाओं को कर्यान्त किसी कार्य माथा से सम्बन्ध नहीं रिस्ती, बादधल वे सभी कान्ये मापार्थ हैं। वधिप व कानार्य भाषार्थ मार्थ के ही हिंसण, कन्तर और पूर्व भाषा में बाज जाती है तथाणि क्षेत्रेत्री आदि सुदूर्पर्यी माथाकों के साव दिन्दी कार्य माथाओं का जो वैद्याव एक्स कपळ्का होता है इन बानाय मापाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं कृता काला है।

समय सं समस आपार्य कप्प से स्वबहत नहीं होती. इसी घरण व सूत भावा (dond languages) कह्याती हैं। कट बेरिक आदि सब भावार्य कार्य आपा क चन्तरीत हैं और इन्हीं प्राचान चार्य भावाओं में से क्रीएड क्रमरा न्यान्तरित होकर अधुनिक समस्त चार्य आपार्य रूपक हुई है।

से प्राप्तन आये भागारें कीन पुग में किस रूप में परिवर्तित होकर कमशः वासुनिक कम्प मापार्जा में परिवर्त हुई इतका संक्षित विकरण तीपे दिया काता है।

### प्राचीन मारतीय आर्य मापाओं का परिचतिकम

सर बॉर्च मियसैन ने कपनो लिग्निस्ट वर्षे योढ हीच्या (Lingulatio survey of India) नामक पुराक में माराज्योंय समला जार्म यापाओं के परिणाय का जो कम दिखाया है उसके ब्युनार विदेक मात्रा दक्ष साहिस्य-मायावों में सर्केनार्योंना है। इसका समय जनक विद्वानों के मन में क्षिण्याव्य यूर्व हा इसरे वर्ष (270 B C) और ती केर-यादा शोर सीनेक्क केरल परिमार्थित होंगे। हुई महाक्ष उपनिषद् और साहक के निरक्ष की मात्रा में भीर बाद में पाणिनिन्य सुवि

बंधन क स्वाहरण-हारा नियमिका होकर क्षेत्रिक संस्कृत में परियन हुई है। पाजिनि साहि क पर्श्वसूति के नियम-स्व संस्कृती के मान करने के साल यह संस्कृत नहस्वही। सुक्य कप से संस्कृत ना प्रयोग इसी मापा के काई में किया जाता है। यह संस्कृत मापा बेंग्क मापा के काई में किया जाता है। यह संस्कृत मापा बेंग्क मापा करता होते से उद्यक्त साम प्रतिम्न प्रयोग इसी मापा का काई में भी 'संस्कृत' शास बात्र के समय से प्रयुक्त होने का गाया है। पाजिनि के बाद संस्कृत मापा का कोई स्वित्त का है। यह परिस्कृत होने में न्या मापा का सीक्षित संस्कृत के मप्त में परिस्कृत होने में न्या मापा का सीक्षित के साम में निस्तान्त न्यूच साम राजान्त्री होने में निस्तान्त्र न्यूच साम राजान्त्री सीर बोमस्तित्र के सत में निस्तान्त्र न्यूच राजान्त्री सीर बोमस्तित्र के सत में निस्तान्त्र न्यूच राजान्त्री हो।

यहाँ पर इस बात का उसकेल करना चातरक है कि डॉ हॉनिंस चीर सार मियर्सन के मान्यस्य के अनुसार आपें कारों के दा यह सिम्मन्सिक समय में मारवाचे में काय ये । पहले मार्चे क एक दक न वहाँ आहर सम्पन्तर में चपन वर्गनिवेश की स्पानना की थी । इसके कर सी वर्गे क सह आपों के हु पारे दक्का आरत में महेरा कर प्रथम दक के क्षेत्र में से वर्गक तनका आपों की मार्चेश की चारी आर समा कर इनके स्थान के अपन मिवनार में किया और सम्बन्ध्य को अपना चायन्यान वातम किया । वक्क विद्वानों को यह मत्यान रहिया से प्रदूष करना पड़ा है कि मत्याने के चारों पार्चे में स्थित देवाव सिम्ब गुजारन सम्बन्धान्त महाराष्ट्र व्योध्य किया, देवाव और उद्देशित महोदों की चार्चिन कार्य करण मार्गाजों में पराप्त जो निक्तन देवी जानी है तथा सम्बन्ध की आधुनिक हिन्दी मार्चा [ प्राक्षस्य दिन्दीं ] के साथ उन सब प्रान्ती की मार्चानों में को भर शाम जाता है वस निष्टा कीर सब्द क्र क्ष क्ष

ट्रे. आई तीयों के वाहिए बात-स्थान के स्थित में वाहुनिक दिशानों में बहुए वह जीव है। बोर्ड स्वाप्टोर्निया हो, कोई वाही हो जी 'रीवाइ की वाई हुएते को बोर्ड व्हिन्स परिवाद की कांद्र की वाही की प्रतिक निवाद-पृति वालों हैं। वह से वाही हो वाही हैं। वह स्वाप्ट के बार की निवाद की कि वाही हैं। है कि हुए प्रतिक के बार की कि के स्वाप्ट की कि वाही हैं। है हुए एक प्रतिक हुए हैं कि हुएते के बारों की निवाद करने हैं। वह वाह के वह वाह वह वह वह की कि वाहों में अपन कि वाह को हैं। वह वह वह की कि वाह के वह वाह वह की वाह की की का कि वाह की की कि वाह की वाह की कि वाह के वह वाह की वाह

एक बद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में अन-साधारण की कथ्य भाषा न थी. ऋषि-ग्रोगों की साहित्य-मापा थी । उस समय जन साधारण में बैदिक मापा के अनुरूप अनेक प्रावेशिक भाषाएँ (di sleet s) कथ्य रूप से प्रवक्ति थी। इन प्रावृशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। उत्पर पैदिक ग्रम से पूर्व काछ में आप हुए प्रथम वुल के जिन आयों के मन्मदेश के भारों धरफ के मदेशों में उपनवेशों प्राकृत-मानामी का प्रयम का इस्तेश किया गया है उन्होंने वैदिक यग अधवा उसके पूर्व काछ में अपने अपने प्रदेशों की कृष्य स्तर (विक्रत-पूर्व भाषाओं में वसरे वस के आयों की बेव-रचना ही तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। २० के विकास इससे वन प्रादेशिक धार्य मापाओं का वात्कालिक साहित्य में कोड़ निवर्शन न रहने से उनके पूर्व ६० ) प्राचीन ल्यों का संपूर्ण जोप हो गया है । वैदिक काछ की और इसके पूर्व की उन समस्त कच्य भाषाओं को सर प्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Präkrit ) नाम दिया है । यहि प्राकृत भाषा-समृह का प्रथम स्तर (P) st stage) है | इसका समय किस्त-पूर्व २००० से किस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है । प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत मापाएँ स्वर और व्यवस्थान खाति के उच्चारण में तथा विमक्तियों के प्रयोग में वैतिक धावा के अनकर मी । इससे ये मानार्धे विमक्ति-वहस्र (synthetic) कही जाती है ।

मही, बहिक पुढादेव ने अपना चपदेश संस्कृत आया में ने व्यित्रकार कच्य आकृत आया में क्षित्रने के लिए जपन शिर्पों की कादेश दिया था। इस वरह माकृत आपानों था कादग सादिय की आपानों में परिणत होने का नृत्रपात हुआ, जिसके एक सम्वर्का परिणत मान की सुन्त्रपात हुआ, जिसके एक सम्वर्का परिणत मान स्वीत के मानुत्रपात हुआ, जिसके एक सम्बर्का प्रदेश के आपानों की प्रवित्त के समें पुत्रकारों के अधिक प्रवित्त की आया कर करें। कि स्वीत स्वीत के सम्बर्का के सम्बर्का में पाइयाय दिवानों का जो अवभेद हैं स्वस्त प्रवित्त काने मानुकार के सम्बर्का में पाइयाय दिवानों का जो अवभेद हैं स्वस्त प्रवित्त काने मानुकार मानुकार से १५० वर्ष पहले समान में पाइयाय प्रवित्त काने मानुकार मानुकार मानुकार में सुद्वाय। इस काने मुद्रकार के स्वत्त के प्रवित्त काने मानुकार मानुकार

मार भियसैन न यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक आरतीय आर्थ आशाओं की स्थ्यीच द्वितीय स्नर की आहुन भाषाओं से, लासकर दससे रोप भाग में प्रचटित विविध अपभीश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को दसीय भारत भाषाओं का दुवीय स्वर वह भी आहुन (Torthary Prikrite) कह कर निर्देश किया है। इस भाषाओं से उत्तरीय का साहुनक स्वतीय कार्य सा साहुनक स्वतीय कार्य से सामन किसीय दशास शासारी है। इससे सामार्थ क्रमण यह है कि इनमें सामार्थ विभक्ति के स्वरोध

भाषायाँ नी बस्तति (चिस्तक्ष्य १.)

कोपक स्वनन्त्र दावर्षों का कावदार हुआ है। इससे वे विस्तेपनशील आपार्टे (\nalysteal Languages) करी जाती हैं। पपनेश से जिस कायुनिक आशीप आर्थ साथां की क्यांचि हुइ है इसस विवरण साग 'सपनेश'

जिस महरिक अपभेश से जिस बायुनिक भारतीय आर्थ माथा की करायि हुई है उसस विवरण आग 'अपभेस' शोर्षक में दिया जायता ! वा कृत्यम् किया इ वहीं भी शृत्य मध्य का कव द्वासाया दा हु । य सब क्या या आदिशाद भागरे निव्हनिव क्षी इति। मं श्राय मार्गो श्री श क्या मार्गे भी। इत माराजी का पंजाब और मध्यत्या की क्या मारा कस्रकम्म बंगों में प्रेन माराय या यम दिनी दिनी बंग में भन भी था। विस्त विस्त विस्त में नन भाराओं का पंजाब की यमन र्ध प्राप्त थाता क माथ भद्र या त्रममं म जिन विमार्शनम नामों न और धालकों न ध्वत्रतसाहित्य में साम प्राप्त ही है प्राप्तत के बार्गा का बहुय शक्त ।

प्रपृत देवाच्यों ने इन समस्य देख शब्दों में अनक नाम और धातुओं को संस्कृत मानी क और धारू है ह भार में भारतानुगा निव बाक नहपार्वभाग में अन्तरन किए हैं। यहां बारण है कि बाधार्य हमका न करे वैरिनावमाना में क्ष्म वैरों। नामी का दी मेंबर दिवा ह और वृग्ध भागूओं का अपने आहत-क्वाइरण में संस्पृत्य क खारराज्य में उस्तार दिया है क्यांप धारार्थ हम्पन क पूरवर्ती कर बंबाइरणों न इनकी राजना रक्षे बाहुनों है है री है । व गव नम और यानु मंन्यून क साथ और धानुआं क आव्छ-वप में निप्पन्त करन पर भी उद्गव की पर है गरम, क्वोदि संस्कृत क माथ इनदा बुद्ध भी महदूरव नहीं है ।

कोई कोई पामात्म मानानल्या का यह मन इ कि उक्त क्सी शास्त्र और मातु मिल-मिल केमों की इर्टिक प्रा कार्य मान्य भारती में किए गए हैं। यहाँ पर बह बहा वा महना है कि यदि आधुनिक अनार्य मायामी में दूर कि रार्गो और देशी-बानुभी वा प्रधान १९९० वह कहा वा भारता है। क बाद आधुनिक अनाव ना ना जिल्ला है। किन्तु समार्थ वह प्रमादित की हि वे देशी तर और भाग क्षण २५२२५ हा ता यह अनुसान करता वसमान नहां है। किन्तु समान वर्ष की कि वे देशी तर और भाग की मान सनावे भागभी में मचनिन हैं। तदनक वे देशी शब्द और भानुताहरीह की भागमी में है। मुरेल हुए हैं यह बदल है। अधिक मेगन प्रश्नित हाता है। इन अनाम भागमी में शंभक हैरेय एस और पानु धर्मान होने रह भी हे अनावे भागानों न हो पाहन भागानों में किए गए हैं वह अनाय माणामा में प्राप्त होता है। स्वीते के सही वे देश राष्ट्र और बातु अलार्द भाषाओं में राष्ट्र है यह अनुमान किया का सकती है। ही, जहाँ परा कर्न वरता क्षांभव हो वहीं हम वह वर्ष वार करन का लिए काध्य होंग कि 'य देख राज्यात किया का सकता है। है। अर्थ के साथ होंग है। बाहर में निए गर है। क्यों क बार कीर कनाथ य द्वार का य द्वार वाय्य कार आतु असम ना अन्यप शब्द और पानु वा जाय भागामी में ववश करना अमंभय नहीं है।

हों. का इबन (Cible ) प्रभृति क मन में मृद्धि और श्लीकि संस्टन में भी अनक शब्द हाविसीय मानुसे ा गुरीन दूच है। यह बान भी शीनाय ही है बसीडि झाविसीय साया के जिस साहित्य में ये सप शहर पार्य जाने हैं स व (रह मंत्रित क माहित ।) माधान मही है। हाम वेदिक सादित्व में य सव साव्ह प्राविद्या भाषा से प्रहार हैं। इम अनुसान की आक्रम आ अवर्ग की आगा सा ही अन्तर्यों की आगा से या सब साव साव हरू होता है कर अनुसान है रिग्म होड माप्स प्रशा है।

दिन महेरिक हैती भागाओं म व सब दशी शब्द ब्राइन साहित्स में मृहीत हुए हैं दे वृत्रीक प्रधन हर है

प्राप्त भागाओं क अनगण और जनी सप्तमायिक हैं। दिल्ल-पूर्व पष्ट राजान्त के बाल के m वैशीमात्रार्धे वर्षाक्य भी इसस्य मृश्य शब्द अप्राधीन मही, हिन्तु पत्ति ही प्रापीन है जिन्ते affen eine !

दिनीय न्तर की प्राहत माताओं की जरगति-विक्त गा मीविक संस्थत से नहीं, किन्तु

'तत्' राज्य का सन्तरभ संस्कर से स्थाप्तर इस मत का कानुसरण किया है'। ब्रश्यिष प्राकृत-स्थातरणों में प्राकृत शब्द स्युसचि इस तरह की गई है —

प्रहाति संस्कृतं तम समें तत यापतं ना भाहतम्' (क्षमन्त्र मा॰ म्या ) ।
'महति संस्कृतं तम ममें भावतम्यापी (माहतमसंस्कृ) ।
महति संस्कृतं तम ममें भावतम्यापी (माहतमसंस्कृ) ।
'महते संस्कृतं तम ममानात् माहते स्मृत्यां (माहतमित्रका) ।
'महते संस्कृतावास्नृ विकृति भाहती मता' (प्रमाणानित्रका) ।
'महत्रास्य स्व स्वीम संस्कृतं सीमां 'प्राहतसंस्कृति स्वी) ।

इन स्पुराचियों का दारप्य यह है कि माइन शब्द 'प्रकृति शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत मापा, संस्कृत मापा से को बसम्ब हुई है यह है प्राकृत मापा।

प्राकृत वैवादरणों की प्राक्त राज्य की यह ज्यावया अप्रामाणिक और अवशायक है। नहीं हैं, माया-करन से कार्यात मी हैं। अप्रामाणिक स्वतिक क्ष्मी सा करने हैं कि प्रकृत के किसी की से स्वान रायद कर वह सा करने हैं कि प्राकृत के किसी की से प्राप्त रायद कर यह अप वरकरम नहीं हैं जीर गीण या क्षमणिक अप वरकर नहीं किया जाता जावत कर किया में सा में रहते वर के सुक्त कर स्वाम अपया जान-सामाण जान में दिशी तरह का बाद में प्रश्न कर में स्वान ने प्राप्त कर कार्यात के स्वाम अपया जान-सामाण जान में दिशी तरह का बाद में सही हैं। इसने राय क्ष्मी के प्रव्या कर कार्यात के प्राप्त कर अपया जान-सामाण जान में दिशी तरह का बाद में सही हैं। इसने राय कर स्वान के प्रयुक्त कर के स्वान कर पूर्वी के सावता कर स्वान में स्वान कर प्रयुक्त कर के स्वान के प्रयुक्त कर सावता के सावता कर सावता कर सावता के सावता कर सावता कर सावता के सावता कर सावता कर सावता कर सावता के सावता कर सावता के सावता कर सावता के सावता कर सावता कर सावता के सावता के सावता कर सावता कर सावता कर सावता कर सावता कर सावता कर सावता के सावता के सावता कर सावता कर सावता के सावता कर सावता कर

पाणिनि ने संरहत साथा को जो छीजिक साथा कही है और पत्रकादि ने इत्तर जो शिष्ट-साथा का नास दिया है. इत्तर समस्य यह नहीं है कि एस समय प्राप्त साथा भी ही नहीं, परणु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्ति खेगों के आपस के बावीक्षय में, वर्तमान काल के परिवृद्ध खेगों में संस्कृत की तरह चीर विवाह देगों के साथ के क्यादार है। आपस के बावीक्षय में, वर्तमान काल के परिवृद्ध खेगों में है आप के क्यादार दिवाह मिला काल कर साथा की काल के स्वाद के क्याद साथा के बावीक्ष्य करते में जो संस्कृत कीत साथा कर साथा के उत्तर होती की साथ कर साथा के उत्तर होती है। इसकिय साथ है आप साथ से उत्तर होती है। इसकिय परिवृद्ध की साथ से प्राप्त के वर्तीक होती, बितन साथिक परिवृद्ध की स्वाद साथ से उत्तर होती है। इसकिय परिवृद्ध की साथ से प्राप्त की करतील हुई हैं इसकी अपेक्षा क्या विकेश संकृत कीर क्या सिक्क के साथा उत्तर होती है। साथ साथ की प्राप्त से करतील हुई हैं इसकी अपेक्षा क्या व्यक्तिक संकृत कीर क्या सिक्क के साथा उत्तर होते हैं। साथ साथ की प्राप्त से करतील हुई हैं वही सिद्धान्त परिवृद्ध की क्या को विकेश के साथा उत्तर होते हैं। साथ सिद्धान्त परिवृद्ध की स्वत्र की स्वत्र की साथ की

१ भारते संस्कृतासम्बर्ध आह्रात् (बाग्यटालेशस्टीका २ २); संस्कृतकामा प्रहृतेस्टालसम् प्राहृत्य (काण्यास्य की प्रेमकन्त्र वर्षकारीयन्त्र दीका १ ६६)।

२ 'प्रश्निर्वितिर्वित्ते । चीरामात्याशित्रेषु प्रश्नाम्यावस्यवयोः । प्रायान् पूर्ववशयोः च' (धनेशर्ययेत्रह् सः १००) । १ स्वास्प्रतायः नुष्ट्राचेन्यो पान्युर्ववत्तिते च १

चाम्बाद्वानि प्रदेववः शैचलां भैलवीतीत्रः । (वनिष्ठानीशनायांत्रः १ १७५) । 'भद् भागा'---वनात्वशास यीतस नीतृतं प्रहृतयः स्कृतः (स. वि. १ १७४ भी द्वैषा) ।

४ कोई बीई बायुनिक विद्रान् प्रणान बाका की सर्वात बीएक संस्था से मानते हैं, देशो 'वानी-सकारा' का अवेशक कुत के कहें।

### विवीय स्वर की शास्त्र भाषाओं का इतिहास

प्रसत क्रांप में द्वितीय स्तर की साहित्यक प्राकृत भावाओं के राष्ट्रों क्रो ही स्थान दिया गया है। इससे इन ज्ञाचाओं की करात्ति और परिवर्षि के सम्बन्ध में यहाँ पर कक बिस्तार से विवेशन करमा आवश्यक है ।

माजारणतः खोली की वही बारणा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आज़मिड मारतीय मापार्वे नरदश हुई हैं। बई प्राहृत-वैयाकरणों ने भी खपने प्राहृत-त्याकरणों में इसी मुद्र का समर्थन दिया है। परना पह गठ नहीं तक सरव है इसका विचार करने के पहले इन आपाओं के भेगों की जानने की आस्वत है।

अकृत ना बेस्हरू-काफेल आकृत वैवाध्यणों ने प्राकृत आयाओं के राष्य संस्कृत राष्ट्रों के साहरूव कीर पार्वकर के अनसार इन वीन मार्गी में विभक्त किय हैं --(१) वस्तम (२) वद्भव और (३) वेहस या वेशी !

- (1) जो राष्ट्र संस्कृत और शाह्य में विख्कुछ एक कप हैं बनेसे 'तस्सम या 'संस्कृतसम' फहते हैं वैसे---सम्बन्धि सारम हन्द्रा हैंद्र, बत्तम क्रस एरंड सीकुए, बिकूर, बान्ट पद्म सहाद, वित्त क्षत क्षत्र क्षत्रुप, हन्द्रुप, दिस्स क्षत्रह्म, वितिय, हत्र कत्त बीर परिमत प्रम बहु चार मरल रह बन बारि सुन्दर, हरि बच्छनि हरनि प्रस्ति ।
- (२) जो शब्द संस्कृत से बर्ण-क्रोप, वर्णांगम व्यवस वर्ण-परिवर्तन के द्वारा करनम हुए हैं वे 'दङ्गव' अवदा 'संस्थायम' स्टकाते हैं, वैसे--या कथाय धार्व = थारिय, स्ट = स्ट, हैमाँ = हिस, सहय = क्या क्या = करहा सर्हर -खान्तु, पर = क्य वर्ष = क्या चक्र = क्या कोय = क्षेत्र, यश = क्या व्याप = क्या केश = वंश वाच = स्वाद, विकास = क्रिया हें? = मिट्ट जामित = वस्पित वस्त्रात् = पत्त्वा वस्त्री = फेड वस्त् = बीट, सार्वी = मारिया वेत = मेड, सरएव = प्रस्तु केठ = सेट रेच = देश हरत = दिसस सर्वात = हवर, विमान = पिसर, पृच्चति = पृच्चर, स्कार्वीत् = सकारी, समिस्तीत = होस्टर इस्पानि |
- (व) जिन राष्ट्रों का संस्कृत के साथ क्षत्र भी सादरव नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, वनको देहर' का 'देशी' बोस्स जाता है। यदा--यात्य (देख), माम्मायव (पर्मात) इतन (हस्ती) हैंच (केवच), ज्यवित (प्रतम्य) कर्स्य (ल्यवात) एसमित (बराज्य, इरम) थोडन (परिनक्क) केरोह (कुनुव) कृत्वि (कुरा) व्यवसारक (विरक्ष) वह (सूर), चन्कर (कार्तिक) संतुर्व (कार्रीकक्कू), वन (हुएर) करूप (श्रीम), टेका (बहुर) क्रम (श्रामा) क्रेडर (शिक्षम क्रमी) श्रितीशर्यक्रम (हुटिक) जोनसी (क्रमा), बांनिस (मिस्सूर) वार्ति (तुन्छ), वन्त्र (मृद्द) विन्तुत (निवेश) गीक्सा (क्रोरिका) प्रदा (क्रिस्टन्स), बिहु (तुन) श्रुंव (तुन्छ) महा (वसलार) पति (बाता) क्षेत्र (१९१४) विश्वह (बपुद)- धनाम् (बीम) हुत (बिन्हुब) च्या (दारा), कुणह (विस्कारी) क्षित्र (स्ट्रास्ति) देखार, निमान्यह (सरवि) द्वारंग्ड (अस्ववि) कोन्यहड (अत्ववि) सहित्यहण्ड (वृक्कारि) सञ्चिति ।

उपर्युक्त विभाग प्राकृत के साथ संस्कृत के साहत्व और पायेक्य के ऊपर निर्मेर करता है। इसके सिवा संस्कृत और क्षाइन इ. ग्राचीन मन्वनारों ने प्राइन भाषाओं का बीर एक विमाग दिया है को प्राइन सत्वाओं के इसकि-स्थानों से संबद्ध

प्राष्ट्रण क राज्यात मन्यारात न आगाव आधावना क कार एक वक्षाण क्या है । यह धोनोहिक विज्ञात (Prographical Disselfcation) कहा जा छठता है । सरस-आरंध प्राराण नावार्य ना अर्थन कहे जाने ताराज्यात जो अंश नावार्य ना सामा करिया मा प्रतास कहे जो ताराज्यात जो अंश नावार्य ना अर्थनात्र कहे जो ताराज्यात जो अर्थनात्र कहे जो ताराज्य प्राप्त करिया मा प्रतास करिया म

१ "बानम्बर्गन्तमा शख्या सुरनेम्यर्वनान्त्री ।

बाहीचा क्षत्रिहालमा च सत्र वासाः वहीकिताः ।। (बाक्समाञ्च १ ४८)।

पैलिशिकां रलकोर्तनी' (प्रतातनप्रण ३ ३०)।

<sup>1 &</sup>quot;मार्गावरामो रनयोगीठी" (बाहरानाजल ३ ३०) ।

४ महाराष्ट्रापयां नार्वा बहुरे ब्राहतं विद् । भाषाः नृति स्थान्तं हेनुबन्दादि समान्त् ॥

शीरोधी च नीडी च बारी चल्चा च ताहती। वादि प्रदृतिकदेवं आवहारेषु बांत्रवित् ॥" (वास्थादर्श १ १४) ।

किया है और मार्कपेद्रय न अपने प्राकृतसारेष में प्राकृतविष्ट्रक के कतियय इसों को उद्भुत कर महाराष्ट्री, आपनी -रीरिसेनी, अर्थमागयी, याह्मीकी, मागयी, प्राच्या और हाशिणात्या इन बाठ मायाओं के, खह विभागाओं में द्राविक और लोकू इन हो विभागाओं के, प्राच्या पिताच मायाओं में कास्वादशीय, पाण्डम, पाण्डम, हिम मायह पिताच मायाओं के और सराहंस अपन्ता में मायह, प्राव्या मायह, विकास अपन्ता में मायह, प्राव्या मायह, विकास अपन्ता में मायह, प्राप्त मायह, प्राव्या मायह के और सराहंस अपना मायह मायह, प्राप्त मायह, मायह, प्राप्त मायह, मायह, प्राप्त मायह, प्राप्त मायह, प्राप्त मायह, प्राप्त मायह, मायह, प्राप्त मायह, मायह, प्राप्त मायह, मायह, मायह, मायह, प्राप्त मायह, मायह, प्राप्त मायह, म

पूर्व में प्राष्ट्रत भाराओं के शब्दां के जा बात मकार दिखाए हैं उनमें प्रथम मकार के वस्तम शब्द सीस्टर से ही सब देशों के प्राष्ट्रनों में विषे गय हैं। हुस्तरे मकार के शब्द नव शब्द से स्टरन से उत्पन्न होने पर भी प्राष्ट्रत वैयावव्यों के गत से कालका से निकासिक देश में मिकासिक रूप की प्राप्त हुत हैं और तासरे मकार के देशर शब्द स्थम प्रार्थ करों वैदिक स्थवा जीकिक सीस्टरन से स्टरन नहीं हुया हैं, किस्तु सिम्म्सिक हैरा में प्रचलित भागाओं से प्रकृषि से गृहित हुए हैं। प्राष्ट्रत वैयावव्यों का यही गत है।

#### देश्य धम्द

पहले प्राइत भाषाओं का जो भीगाविक विभाग बताया गया है, ये बुगोय प्रकार के देशीशब्द हमी भीगोविक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। यदिक आर खेकिड सैरहत माया पंजाब और मचबदेश में प्रविद्वत बिदक पूत कार्य की प्राइत भाषा से तत्कन हुद है। पंजाब और सब्बदेश के बाहर के अन्य प्रदृशों में वस समय आर्य कोगों की जो पादेशिक प्रकृत भाषाय प्रविद्वत की दन्हीं से य देशाराब्द गृहीत हुए हैं। यही

दारत है कि बंदिक और संस्कृत साहित्य में देशीयन्त्रों क अनुरूप कोई राज्य (प्रतिराज्य) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन कार में निमनिस्स प्रावेशिक प्राहर भागाएँ द्याव थी, इस बाव का प्रधान करास के महामारत, अरद क भाग्यशास श्रीर सस्त्यायन के काममृत आदि प्राचीन संस्कृत प्रम्यों में श्रीर जैनी के खाताबसेक्या, विश्वकमुत, श्रीरपादि कसूत्र तथा राजपदनीय आदि प्राचान प्राहत कर्या में भी भिक्ता है। इन प्रम्यों में 'नानाभाया' इस्त्रापा या 'देशीमाया' इन्द्र का प्रयोग प्रावेशिक प्राहत के अर्थ में ही क्या गया है। चंड ने अपन प्राहत क्याकरण में जहाँ देशीप्रसिद्ध प्राहत

```
१ व स्तीक पैकाकी बीर 'अरओश' के प्रकरण में लिए गए हैं।
```

गुरकेनोद्धवा भाषा शीरनेगीति नीयते ।

मन्द्रीत्पप्रमाणं दो मानवी संबद्धाने ।

रिशायकेटनियर्त पैराकोद्रितमें कोण् ॥" (यह्मायाक्त्रिका कुछ २) ।

६ जानावर्गमियवयमा नानाभागाव भारतः। मुशना वृज्ञभाषामु बशन्तोप्रयोग्यगीपरा<sup>ज</sup> (सहामारतः शन्यपर्व ४६ १ ६) । भारत कर्म्य बहस्यावि वेपमायाविकस्यनम् ।

<sup>&</sup>quot;चनशा च्यन्ततः नार्या देशभाषा प्रयोगप्रतिः" (तात्त्रशास १७ २४-४६) ।

<sup>&</sup>quot;मायाचे संस्टोरीय माम्याचे देशसायया । कवा सोप्टीपु कवर्गहोके बहुवती सरेप्" (कामसूत १ ४ १ ) ।

<sup>&#</sup>x27;ताच ए बारियमाने कावन्त्रमा लामं व्याचना होत्या ...अहुारसन्सीवानावितारमा" (विपाक्ष्युत पत्र २१ २२)।

वर ए व्हरमाणे वाल्.... अद्भारसद्स भासाविवाल् (बोलार्यक मूत्र, वेस १ १) । वर से वे व्हर्मातलो वाल्.....अद्भारसपिद्दिमाल्यारभासाविवाल् (सम्प्रतीयमूत्र वत्र १४८) ।

४ "निर्ध मार्थ नेवा विधवार अर्रात -- बेर्ड्डरोनि ... , वेर्ड्डवर्ष .... देशीनविद्ध तक्षेत्र इति क स्कृतिय"(पाटननमार १८८ १-२)।

हा बस्तेल किया है बहाँ भी नृशी राज्य का कार्य हैशीआया हो है। ये सब देशी या प्रावेशिक भाषाएँ निकर्नसम प्रदेशों के निवासी आर्य क्षेगों की ही कप्रय भाषाएँ थीं। इस भाषाओं का पंचाब और सम्प्रदेश की कप्पा भाषा के साब अनेक होती में अंक्ष साहाय या देसे किशी किसी कार्य में भद भी था। जिस जिस कोश में इस भाषाओं का पंचाब और सम्बदेश की प्राहुत भाषा के साब पद बा करते से जिल मिश्तरीक नायों ने और भाषाओं ने प्राहृतसाहित्य में स्थान पाया है में ही हैं माहुत के इसी वा देश सम्बद्ध

प्राहर-देवाकरणों ने "न समस्त देश्य शाकों में अनेक माम बीर बातुओं को संस्कृत नामों के और बातुओं के स्थान में आदेश-द्वारा सिद्ध करके बद्धव-विभाग में अन्तर्गत किए हैं। यही कारण है कि आवार्य हैमकमू ने अपनी देशीनाममाल में केशन देशी नाजों का ही संग्रह किया है और क्षेत्री आहुओं का अपने आहुत क्याइप्स में संस्कृत बातुओं क बादेश-स्प में कन्नेन दिवा हू कारणि आवार्य हमक्ष्म के पूर्ववर्ती कई वैपाकरणों ने हनकी गमना दुखे बातुओं में ही हो से सह बात और बातु संस्कृत के साम और धातुओं के आदेश-क्यों ने निम्मन करने पर भी तद्भव नहीं कई बा सहसे, क्योंकि संस्कृत के साम हमना हुक भी खादक नहीं है।

हों वाहब्देस (Caldrest) प्रकृति क प्रण में विदेक और सीचिक्र संस्कृत में भी कतक शब्द ब्राविक्षीय भाषामें स गृहीत हुए हैं। यह बात भी संबंदण ही हैं, क्योंकि ब्राविक्षीय भाषा के जिस साहित्य में य सब शब्द पाये जाते हैं वह विद्यु संस्कृत क साहित्य स आफीन नहीं हैं। इससे वैचिक्र साहित्य में य सब शब्द ब्राविक्षीय भागा से सूहोत हुए हैं इस महामान की अत्रेक्षा 'आपे खेगों की भाषा से ही क्षत्यों की भाषा में से सब शब्द क्षिय गए हैं' यह क्षतुमान ही विस्तर ठीक साहुम पहला है।

बिन प्रदेशिक देशी-भाषाओं से ये सब देशी शाम प्राह्म-साहित्य में गृहील हुए हैं है पूर्वेत्व प्रथम स्तर थी. सन्द प्राप्टन माणाओं क बन्नाल और बनाये समसाप्रदिक हैं। किस्त-पूर्व पश राशान्त्री के पहले ये सब देशीमाणार्थ प्रवक्ति की इससे व देश्य शब्द क्यांचीन नहीं किन्तु करत हो प्राचीन हैं जितने कि विक्त साहत

दिवीय स्वर की प्राष्ट्रत मापाओं की उत्पचि-अदिक या जीकिक संस्कृत से नारी, किन्तु

प्रथम स्वरं की प्राकृतों से

माहन के वैवास्त्रमनाम माहन राज्य की ब्युतांत से अकृति क्षण का लये संस्कर करते हुए माक्य भाषाओं की स्वर्यन्त क्षीरिक संस्कर स मानन है। संस्कृत कक्ष असंसर साखों के क्षीरावसी में भी तह्य और सरसम राज्यों में स्थित

र देवो हेमपान्याहराण के सितीय बार के रिक्ष हरते. १३४ १३६ १३ (४४) १४४ वरीरह तुम सीर पाने बार केंद्र १ ४ इ. १ ११ रह बाहुत तुम् १

रे, नने पार्टरप्टीपु परिता होत क्याहिस्पेयाहेटीहुठाः (हे. आ. ४ १) समीत् स्थय विद्यानी ने बण्यर पण्यर, हणान प्रवृति बाहुर्ये वा पार वेटी में दिया है, हो भी हसने लंडण पानु के सारेठन्य हैं है से स्ट्री बज़र हैं।

'तुन' शब्द का सम्बन्न संस्कृत से छगाउँद इस भव का अनुसरण किया है । कविषय प्राकृत-स्वाउरणों में प्राकृत शब्द की क्याराचि इस तरह भी गई है

'प्रकृति' संस्कृतं तम भने तत मामर्तना आहतन्' (हेमनम् प्रा न्या )। 'प्रकृतिः संस्कृत तत्र भवं प्राहतपुष्पते' (प्राकृतपर्वस्थ) । 'बर्गात' संस्था सब सवागाय प्रावृत्ते स्थयम्' (प्रावृत्तवस्थिका) । 'प्रकृतेः संस्कृतायास्त्र विकृतिः प्राकृती मता' (वर्त्रापाचन्त्रका) । 'प्राकृतस्य त् सर्वेमव संस्कृतं मोनि" (प्राकृतसंगीवनी) ।

इन स्पृत्यचियों का ताल्यमें यह है कि प्राक्षत राज्य प्रकृति शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत माणा. संस्कृत मापा से जा तरान्त हुई है यह है प्राकृत भाषा।

प्राक्त वेंबा रणों की प्राक्त राज्य की यह क्याक्या अप्रामाणिक और अक्यापक ही नहीं हूं, मापा-तर्य से असंग्रह मी है। अप्रामाणिक इसविए रही जा सकती हैं कि प्रकृति राष्ट्र का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं हाता-संस्कृत क किसी फोप में प्राकृत राष्ट्र का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है। जीर गीण या खासणिक अर्थ तबतक नहीं किया जाता अवतक मुख्य अर्थ में बाब न हा । यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अमया विन-साधारण सन में किसी तरह का बाब भी नहीं हो। इसमें उक्त ब्युरपत्ति क श्यान में 'महत्या स्वमानेन विश्व माहतवर' अथवा 'महतीना' वाबारखननानानिर माहतव' यही ब्युएरिच संगठ और प्रामाणिक हो सकते। हैं । लब्बायक कहन का कारण यह है कि प्राकृत क पूर्वीक वान प्रकारों में क्सम और बद्धम शन्दी की ही प्रनित उन्होंन संस्कृत प्राती है बीसर प्रकार के दश्य शब्दों की सही, अथस दश्य का भी प्राकृत कहा है। इससे पृथ्य प्राकृत में यह ब्युस्पत्ति खागू नहीं होता। प्राकृत की संस्कृत से असिव माया-तस्त्र के सिद्धान्त से भी संगति नहीं राजी, क्योंकि केदिक संस्कृत अगिर सीकिक संस्कृत ये दोनों ही माहिल की माजित मापाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अवभा रहना है। अशिक्षित कहा और बालक क्रेंग किसी कांक्र में साहित्य की भाषा का भ तो त्वयं व्यवदार फर सकत हैं और न समक ही पात हैं। इसिक्षण समस्य इसों में सर्वता ही अशिक्षित स्वारों के ठपनदार के सिए पर रूप्य भाग बाल रहनी है जो साहित्य की भाग से त्यनन्त्र—अलग होता है। शिक्षित स्पर्गों को भी श्रशिभित खेगों के साथ बातचीत के प्रसंग में इस कटन मापा का ही क्यबहार करना पड़ना है। यदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित भी । और जिस समय छोकिङ संस्कृत भाषा प्रचलित हुई प्रम समय भी साचारण छोगों की स्वतन्त्र बच्य भाषा विचमान थी। यह नाटक जादि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत मापी पात्रों के उस्केन से प्रमाणित होता है।

पाणिनि न संस्कृत भाग को जो झीकिफ साम कही है और पनम्बक्ति ने इस से जा शिए-भाग का नाम दिया है. उसस्य मन्डिंग यह नहीं है कि वस समय प्राष्ट्रन भाषा थी ही नहीं, परम्यु वसका क्षेत्रे यह है कि वस समय के शिक्षित स्रोतीं के आपस के पार्वीक्रप में, बतमान बाज के पविष्ठत क्षेत्रों में संस्कृत की तरह भीर शिमारेशीय क्षेत्रों के साथ के अवपदार Lingus France यी माफिक संस्कृत माया व्यवद्वत होती थी । किन्तु बाखक, स्त्रियों और अशिथित क्षेस ध्वसी मात भावा में बातपीत करते ये जा संस्कृत भिन्न साथारण बच्च भावा थी । साथारण बच्च मावा किसी धून में किसी बाड में साहित्य की मापा से गृहीद नहीं होती, बल्कि साहित्य भाषा है। जनसामात्य की कप्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए "संस्पृत से प्राप्त मारा की उत्पत्ति हुई है" इसकी अपेसा 'क्या को बेदिक संस्कृत और क्या सीकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राप्त मापाओं से अवम दुइ हैं। बड़ी सिद्धान्त किहोग युक्तिसीय है। आजक्त क मापा वस्तातों में इसी विद्वान्त का अधिक आहर पत्म जाता है। यह सिद्धान्त पारपारय विद्वानों का कोई मृतन आश्विण्यार नहीं है। सारतकों के

र भारते संस्तातावनं प्राप्तव (बाग्यवर्तनास्टीना २ २)<sup>.</sup> संस्कृतकराया प्रतिस्प्राप्तवात् प्राप्तवर् (बाग्यास्त्रं नी प्रेयकर **एर्रवापीय-इत दीश १ ३३)** ।

२ 'बहु तिवीं'निर्दालको । योगमाध्यापिनिषेतु पुरानास्थानमावयो । अध्याद् पूर्विकार्या व' (धनेकार्वसंबद्ध ८७१-७) ।

चारवाद्वाति प्रदेशवः वीचारा बेगुवोद्धीः च ॥ (ध्रीत्रवातिविश्वार्वात् ६ ६७६) । 'यत् कार्य'—सनतस्यानः पीराव श्रीहतः प्रश्तय समुता (स वि ३ १७० की सीवा)।

प कोई कोई कामुनिक दिक्षण बहुन करना की बन्दित बैदिक बेद्दत से सामदे हैं देवी 'मानी-अवस्तं का प्रवश्च प्र देव १४ देह /

ही प्राचीन भाषातरफाँ में भी वह सब प्रचृष्टित था यह निम्मीकृष्ट कविषय भाषीन मन्त्रों के अपरश्लों से स्पट प्रतीत होता है। इदल-कृत कारमासङ्कार के एक देशोक की क्यादया में जिस्त की न्यादवनी शतावां के जीन-विद्वान मिसायुः ते किया है कि---

प्रस्कृदेश । वनवनकरम्भूनां च्यावस्थातिकार्याहर्ग्यस्थार स्वत्ये वनकन्यामार अवृत्तिः सन् वन्ने सैन वर अस्त्यम् । 'व्यारे स्वत्यन्ते देश्वे केराले बन्दारस्य वर्ष्यां क्याविक्तमम् वा आमः पूर्वं कृति सम्बद्धं वस्त्यनिवर्षात्र्यकार्ये । व्यारम् स्वत्यनिवेष्ण्यस्य वर्षात्रे क्याविक्तमस्य संस्थानस्यात्रम्य स्वत्याविकरेशे स्व संस्थानस्याति । स्वत्यम सम्बद्धनारी विक्तं स्वत्यन्तिकार्यः स्वत्यन्तिकार्यः संस्थानस्यात्रम्यः स्वत्यात्रम्यः संस्थानस्याति । स्वत्यम

इस ब्याजना का तारपर्य यह है कि—'जाति कब वा यह है बीजों का व्याकरण शादि के संकारों से पहेब स्वापनिक परम-प्यतार करते करता परवा वहीं है प्रश्निय । करवा 'जक इस पर से जावत कर बना है, जरू इस 'जा यह है पहेबे किया नहां । स्वाप प्रीय-कर्मों में त्याच्या प्रीय करण परवे विध्य एवं है वीट का का शाद अनुनार्यों की स्वाप सार्य-कर्म में यह में प्रयोग की हुए रहे हैं की सत्तव निहता पारि को सुरीय—'जावन क्या है यीर को कब्द स्वकारों का दूस है। यह पर्यवासकों सुनार है महत्त्व है। यह आप अपने कर्म कर के प्रयोग करते. सन्दुख बत्त भी तासु पहले एक क्याना होने पर भी केट-नेत हैं और संस्थार करने से विद्या की स्थान हुआ हुए हुआ स्थान स्वापन स्वेती में परिवाद हुआ है वर्षोय क्यानकों अन्तव है बत्तक और प्रायम्य आहब प्रवासों की करतीत हुले है। इसी कायन से क्यान क्यान स्थान प्रायम क्यान स्थान क्यान से स्थान प्रायम से अन्तव स्थान स्थान स्थान प्रयोग के स्थान प्रयोग के स्थान हुल स्थान से क्यान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान प्रयोग के स्थान हुल सिक्सों के क्यान से क्यान स्थान से स्थान स्थान

महीवनसादुः देर्पनं को क्लिन्न धावादिन पापि ग्रापिते (हार्थितस्हार्विकाः १ १०) । ग्रह्मिमस्त्रानुस्ताः केती वाधकुणस्महे (" (हमकन्नसाध्यानुसास्त्र, १८ १) ।

क्क त्यों में मारण महास्वेद सिक्योन दिशकर और साचार होमचन्त्र चैसे समये विद्वामी का विमयेन की बानी हो 'क्रवृद्धिम' और सन्दर्भ भाग को 'कृतिम' ब्हाने का भी ग्रह्म जाति है 'क्रि प्रकृत कमसावारल की मात्रभाग होने के कारण क्रकृतिमा—सामाविक है और संस्कृत मागा स्थाकरण के संस्कार-कृत क्याक्टीएन से पूर्ण होने के हेत कविम है ।

क्होऽत्र वृदिवेही केग्रविशेषात्रपञ्च शः" (काव्यालीकार २ १२)।

र बायूचों महानंदर, निष्ठका मात हरियान है धीर नियान नीव्य पूर्व (मक्त्रका) ये शंसाय यापा में था। यह बहुत नाम ये तुत होन प्या है। क्यारी इतके निवरों का बंधिया नार्तक सम्माद्याकृत्व में है।

"बहुब्लारि पूर्वीस संस्कृतनि पूराक्ष्यम् ॥११४॥

प्रवादितनसाम्पर्यन वान्युन्त्रिकानि कालवः । धकुनैव्यवताञ्चर्यस्य पुवर्गस्यापिमापिवा ॥११६॥

बावक्रेयुरमूबादिकामुक्त्वाव छ । प्राक्ष्यां वामिक्रकार्ति (प्रवासकारितः इ १०-११)।

"पुर्यु रिवृत्रार्य वाकिनज्याविजनिक्दं सं । वीवानवायएएवं वास्पपुर्व विस्तृतरोहि ।।"

(धावाधिसका में अनुष्ठ आवीन खवा)। "सम्बद्धानसम्बद्धां हुं हा नारिकाधिकातः। स्टूबहुवं तत्त्ववे विकास्य अञ्चय हुं ते ।। (स्टर्सेकारिक क्षेत्रा एवं १ में इरिकाहिर हाय यौर कम्मामुखावन की समा हुं १ में सामाने हैपका हाय अनुष्ठ किया हुए। प्राचीन त्योकः)।

У "महर्तन प्रिया— मार्वाहातांत्र यह एवं कालूनि वार्याक्वातरि केलाति क्यांत्र प्रशासित निवहतें (वाल्यातृहासकीयां)। मार्यायं है एक में महर्ति केलाते हैं के काला प्रशासित केलाते हैं के काला प्रशासित केलाते हैं के महर्ति केलाते ने कालाव में है केलाते केलाते हैं केलाते केलाते हैं केलाते केलाते हैं केलाते केलाते हैं केलाते महर्ति केलाते महर्ति केलाते महर्ति केलाते महर्ति केलाते महर्ति केलाते महर्ति केलाते केलाते हैं केलाते महर्ति केलाते महर्ति केलाते केला

१ "प्राकृतकं स्कृतमानविभिन्द्रवन्। वास्त्र ही रहेती च ।

केरल जैन विद्वानों में ही यह सत प्रपब्तित न था सिस्त की आठवी खुवाक्षी के जैनतर महाकृषि वाक्पविराज ने भी अपने 'गावक्को' नामक महाकाव्य में इसी गत की इन स्पष्ट शक्तों में व्यक्त किया है ~

ं समसामी धर्म बावा विश्वति पत्ती म खेंति बायामी ।

र्रीत समूद्र विव सीति सायराधी विव वकाई ॥१ व॥"

क्षर्यान् एसे प्राकृत माण में सब मामार्य प्रवेश करती हैं सीर इस प्राकृत भागा से ही सब मामार्य निर्मेत हुई है बल (सा कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है सीर सपुत्र से ही (बाध्य का से) बाहर होता है। बाबराति के इस पदा का मार्ग यही है कि प्राकृत माना की करतित सम्म किसी माना से मार्गे हुई है, बल्कि संस्कृत साथि सब भागार्य प्राकृत से ही कराम हुई हैं।

क्षित्त की नवम प्रमाब्दी के जैनेतर कांवे राजवीन्यर ने भी कांदने 'बारुप्रामायण' में नीचे का स्टीक क्रियकर यही मत प्रकर किया है. —

"यद् योति किन सैस्ट्रतस्य मुदर्गा विद्वापु वन्योरते यत्र बीक्पपावतारिक बहुर्यापाञ्चराणां रहे ।

यसं कूर्णपरं परं रविपतेन्तत् प्राष्ट्रतं बङ्गवस्तांस्वाध्याननितान्ति परस कुरती हर्व्यनिमेक्कवम् ॥ (४८ ४६)।

जैन और जैनंदर विद्यानों थं एक वचनों से यह एपट है कि प्राचीन बाज क आरदीय जापातस्त्रहों में भी यह सब प्रबल रूप से प्रचक्रिय या कि प्राकृत को अंतरिस संस्कृत माण से मही हैं ।

प्राष्ट्रत मापा छीकिक संस्कृत से खराज नहीं हुई है इसका और भी पक प्रमाण है। वह यह कि प्राष्ट्रत के अनेक स्थान और प्रत्यों का छीकिक संस्कृत की अपका बेदिन मापा के साथ कविक मेज देखते में बाता है। प्राष्ट्रत भी अपका होने पर यह कभी संभय नहीं हो सकता। विद्या कि साहित में भी प्राष्ट्रत के अपुक्रत अनेक शब्द की प्रमाण के प्राप्त माणा है। इससे यह अनुमान करना किसी वच्छ असेनत नहीं है कि दैविक संस्कृत की प्रमाण में प्राप्त माणा में अपना करना किसी वच्छ असेनत नहीं है कि दैविक संस्कृत की प्राप्त ये दोतों ही पक भाषीन प्राप्त माणा से अपना हुई है और वहीं इस साहम का कारण है। विदेश माणा और प्राप्त के साहम्य के करियय बदाहरण हम नीचे बहुत करते हैं ताकि वच्छ क्यन की संस्थतों में कोई संदेश नहीं हो सकता।

### वैदिक माथा और प्राकृत में सादृष्य

- १ प्राकृत में जनेक काम संस्कृत म्हाकार के स्थान में स्कार होता है, तौसे—पून्त चतुन्त मातु= यह प्रवित्ती≠ प्रासी वैतिक साहित्य में भी पैसे प्रयोग पाय आतं है जैसे—हत = इत ( क्षाकेद १ ४६ ४ )।
- यः शाकृत में संयुक्त पर्णवास कह स्वानों में एक स्वानत का क्षेप होकर पूर्व के हरूर स्वर का दीर्थ होता है जैसे—दुर्जन = वृद्ध्य, विश्वन = वीसान, स्वर्ध = कास | बीविक सापा में भी वैद्या होता है, यदा—दुर्धम = वृद्धम (ब्रावेक ४ १, ८), तुर्जारा = वृत्यारा (श्वन्यकृत प्राविध्यक्य १ ४९)।
- १ संस्कृत स्थाजनात्व क्षण्यों के अन्य स्थाजन का शहरत में सर्वत्र और होता है, पीसे—तात्व्=तात्र यशस स्थान वितिक साहित्य में भी इस निषम का अभाव नहीं है पथा—पत्रात्≈पत्रा (सववंतिका १ ४११) तवात् स्वात् हवा (क्षितिसर्विता २, ११४) नीवात् स्वीता (क्षितिसर्विता २, १४४) नीवात् स्वीता (क्षितिसर्विता २, १४४) नीवात् स्वीता (क्षितिसर्विता १, १४४)।
- ४ प्राष्ट्र में संयुक्त र और य का क्षेप कोता हूं जैसे—प्राप्तम ≃पापमा, रुपामा ≃ सामा वैदिक साहित्य मैं सी यह पामा जाना है क्या—अ मगस्य ⇒ अपाहम (वैतिष्ठेवसंदिता ४ ६ ११) क्याच = त्रिच ( स्टप्तक्रांठ १ १ ६१):
- ५. प्राक्त में संयुक्त वर्ण का पूर्व त्या हुन्य होता है थया—पात्र चपत्र, रात्रि = रक्ति साध्य = मगरू हरवादि वैदिक माण में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोव्सीपा = रोव्सिया (क्षापेद १ वट, १) समाव = अपन्य (क्षापेद १९४)।
- ६ प्राकृत में संस्कृत व का क्षतिक जायह व होता है जैसे—व्यव ≈ वण्ड, वंस = वंस, वोज्य = कोग्रा, विवेच प्राहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्कम सही है जैसे —वुर्वभ ≈ वृद्धभ (वावक्षतिवृद्धिता १ १०) पुरान्तास-पुरोवारा (कृत-त्युन्तारिक्यन्य १ ४४)।

१ सक्या इदं भाषो विज्ञन्तीतरथ निर्वन्ति माथ । भागति समुद्रमेन निर्वन्ति सामरावेन कवानि ॥६६॥

ही प्राचीन मापातरण्यों में भी बह सब प्रचृष्टित था यह निम्नोब्यून कविषय शाचीन सम्बों के सक्तरणों से स्पष्ट मतीन होता है। हरद-मृत कान्यासहार के एक देखेक की ज्यापमा में जिस्त की न्यारहणी शताब्दी के जैन-विहान निमसाप ने किसा है कि:--

"बाहरीति । स्वसन्त्रमानुतो व्याक्तरहा।विधिरताहितर्कस्त्रारः बहुवीः वचन-स्वाराष्टः श्रष्टतिः तत्र वर्षे तैय वा प्रमुक्तम् । 'मारि दरवाने दिन्ने देवालं कारणका वालीं शकाविष्यतात् वा ताल पूर्व कृते तालातं वाल-महिवालि-सुवीर्य सम्बन्धायानिकामयसूर्य वयनपूर्णको । वैवनिष् करवानिवेतरवर्षा कोतः च वैक्रविकेयात् संस्मादकरक्षाण्य सवासनिविकेते वत् संस्कृतवातर्गित्रेतानाभोति । अत् एव सामकृता प्राप्तवनारी शिंदर्र दक्तु चंतरवारीति । पारिव्याविक्याप रहोतिवस्त्रकारकोन संस्करकार संस्करकारको ।"

इस क्याक्या ना तारपर्ये यह है कि—'बहरि रूक्य का क्यों है नोगों का व्याकरक मानि के ग्रंतकारों से प्रीत स्वानानिक बन्तम-ब्यासार करने बरसम बन्ता नहीं है मन्द्रत । बनना 'बन्त हुव' पर है बाहत सम्ब क्ना है, बान क्रव' का धर्म है 'सहसे किया क्या'। बारह धंसकारों में त्यापर धंद प्रत्य पत्ने विकृषय हैं बीर पन त्यापर सञ्जानाने की माना वार्य-वनन में--- क्षत्र में प्रत्येमानवी क्यों पर है वो बासक, महिला प्राप्ति को सुनीय---चहण-सम्ब ह<sup>ै</sup> और को शक्क मानाओं का सूत्र है। यह प्रवेमानवी धाना ही प्रमुख है। **वही** प्रमुख वेस-प्रक कर भी तरह बहुते एक क्लाकाना होने पर भी टेठ-मेद से बीट संस्कार करणे से निवता को बात करता हुया तासूत साबि स्वान्तर मिनेसें में परिवृत देश है सर्पत् वर्षमानयी अन्तत से संस्कृत भीर क्रायान्य प्राकृत भाषाची की जर्रात हुई है। इसी कारण हैं मूल सन्वराद (द्वार) वे प्राप्तत का पहने मीट संस्कृत साहि कार में निवेश विमा है। पारितृत्वावि स्थाकदानों में बदास हुए निम्मी के सामार संस्थार नहीं के काण्या संस्कृत क्वमाती है हैं

ध्यक्रियन्त्राक्षाकेरीनं कर्त्र विनेता कासादिक पासि वास्तिते (शाक्तिकाशका शिका शिका " अञ्चित्रस्तानुस्ता केनी वाचनुगरवदे । (हेमकन्त्रकाच्यानुसातक, क्षा १) ।

वक्त पर्यों में मनशः महाक्षमि छिद्रसंस दिवादर सीर भाषाय द्वेसचन्द्र बैसे समर्च विद्वानों का बिसदेव की वादी को 'बाकृतिम' और संस्कृत भागा को 'कृतिम' कहने का भी रहत्य वही है। कि प्रकट खल साधारण की सालुमाया होने के द्वारण अकृतिम-स्वामाविक है और संस्कृत भाषा क्वाकरण के संस्कार-स्य क्वाकरीयस से पूर्ण होने के हेत क्विम है।

१ "प्राप्तवसंस्कृतमानवरियाणनायान श्रीरतेनी च ।

क्योऽत्र बुरिनेदो केर्यानरेगावरझ'ता ।।" (काव्यालंकार २ १२) ।

२ बारहर्ग सङ्घन्तम, जिल्हा नाम इष्टिमार है सीर जिसमें मीम्बर पूर्व (सम्प्रत) थे संस्कृत याना में वा। स्वर्धहत कल से हुए हो क्या है। यद्यार इंडडे नियमों का श्रीयात वर्शन सनवासाञ्चलूक में है।

<sup>&</sup>quot;कारकारि पुर्वास्ति संस्थानि वृद्यासम् ॥११४॥

प्रवारित्यमाध्यप्रेन तानुष्यिमानि नावतः । यनुष्यस्याङ्ग्रास्ति सुवर्यस्याविवारिता ॥११शः वालक्षेत्रपूर्वारिनसम्बद्धान्य हः । प्रावृत्तां त्याविक्षानार्गीद् (प्रवासक्वरितः पु १०-११) ।

 <sup>&</sup>quot;इक्ट विद्विशार्य वास्तिव स्थानियंबरिद्धं सं । वीकावशानगुरुवं नामवपुरुवं निर्मारोह्यं ।"

<sup>(</sup>धावारिकार में क्वृत जाबीन बावा) ।

<sup>&</sup>quot;बातकोशन्त्रवृक्षां तृष्ठा पारित्रकासिकान् । अनुबद्दार्थं तरवश्चे विकास्य बस्तुत १७.॥" (स्तरेक्ट्रॉवक श्रेश वस १ में हरिकाश्रीर हाथ भीर काम्प्रमुखातव की श्रेष्ठ ६ १ में बाकार्य हेपकल हाथ लड़क रिया हमा बाबीन श्लोह)।

४ "च्यारिकाण्य-व्यक्तिकृतानि सङ्ग् एव स्वानृति कर्णाकसावादि पेछलानि प्रवानि स्वयावित विवाहः (कान्यानृतासन्धीका)। सावावी हैक पत्र भी 'स्मृत्तिक' हरून भी दून त्यह व्याख्या है प्रतीत होता है कि व्यवस्थ संगठ-स्थल-एउ में प्राहत और महति संस्कृत बर्ता विकास-निरायत के सथव से नहीं वरंतु धाने प्राप्त-स्थावरणा वी एक्का-रीमी के प्रश्तक में हैं, वर्गीक समी कारण माहर-स्वारक्ती की तथ् हेबक्फ बाहत-सारक्षत्र में की कीहत पर है ही जातक किया की प्रसाद की पाँ है और रम पड़ित में प्रपृति—पुण के रवान में बंशहत को स्थाय वानवारों 🖟 बाता है। धवना म्यू भी धनस्वर नहीं है कि स्वाकरण रभग के बदन करना बड़ी निटान्त रहा है। वो बाद में बहन गया ही थीर हम बरिवर्तित स्टिकन्त ना काश्यानुस्तन में प्रीरि पण्य दिया ही। बाध्यपुरातम की रचना व्यावस्त के बाद स्वकृत की है वह काम्यनुसारत की 'सम्बद्धान्तमंत्रीक नाव्यी वाची विदेशिया" (बह रे) दव बाँक के ही किस है।

केयक जैन विद्वानी में () यह मत प्रचक्कित भ वा स्थित की बाठवी क्षवार्थी के जैनतर महाकृषि पारपविराज ने भी भपने 'गडक्को' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन त्यष्ट शर्जों में व्यक्त किया है ---

ं स्थलामो इमं बाया विसंति एती व गुँति वामानी ।

एंति समुद्रं विव गाँति सायधेका विव वताई ॥११॥

क्षाचीन इसी प्राइत प्राप्ता में सब मायारी प्रवेश करती हैं बीर इस प्राइत प्राप्ता से ही सब मायारी निर्मेत हुई हैं जह (पा कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है भीर समुत्र से ही (बारन कर से) बाहर होता है। बारशति के इस प्रम्य ना मर्भे यही है कि प्राइत माया की इस्तित प्राप्त किसी भाषा से नहीं हुई है, बांकर संस्कृत कावि सब मायारी माइत से ही उत्पास हुई हैं।

क्षित्त की नवस शताब्दी के जैनेतर कवि राजदोशार ने भी खपन 'बास्सामायल' में नीचे का रखेक सिनकर यही सत

प्रकट किया है 🕳

"मन मोनि किस संस्थास्य मृश्यो बिहान्य व मोश्ते यम बोलपपायतारिक बदुर्मापालयाणां रस"।

मर्च पूर्णपर पर रिविपवेस्तत् श्राइतं यहणस्तात्मादाक्ताक्तांक्त परम नुवती हरदेनिमेपवतन् ॥" (४०, ४६) ।

चैन और वैनेसर विद्वानों के एक वचनों से यह श्वष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषावरूकों में मी यह सब प्रवष्ट रूप से प्रवस्थित या कि प्राचन की कराचि संस्कृत भाषा से नहीं है !

प्राइत सापा खेकिक संस्कृत से सरका नहीं हुद ह इसका और भी पक प्रमाण है। वह यह कि प्राइत के अनेक हान्य और प्रस्था का खेकिक संस्कृत की अपका पेदिक भाग के साथ अधिक मेळ वेसने में बाता है। माइन भाग साक्षाह प से जीकिक संस्कृत से सरका होने पर यह कभी संभय नहीं हो सकता। बेदिक साहित्स में भी माकृत के अदुरूप बनेक राज्य भीर प्रस्था के प्रयोग विद्याना है। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि देविक संस्कृत और माकृत ये दोनों हो यक प्राचीन प्राइत माण से सरका हुई हैं और यही इस साहरूप का करण है। पैदिक माणा और प्रकृत और प्राकृत के साहरूप के कविषय प्रशाहण हम नीचे चढ़त करने हैं ताकि क्षक क्यन की सरवत में खेद संदेद नहीं है। सकता।

## वैदिक मापा और प्राकृत में साद्य्य

- प्राष्ट्य में अनेक काह संस्कृत खड़ार के स्थान में कहार होता है, जैसे—हल = बुल, इस्तु = वड, पृथियी =
   पृथ्वी चैदिक साहित्य में भी एसे प्रथाग पाये जाते हैं, जैसे—हल = इत ( क्रायेव १ ४६, ४ ) ।
- ् प्राप्त में संयुक्त वर्णवाही कई स्थानों में एक ब्याइन का झोप होकर पूर्व क हुएम स्वर का होर्स होता है जैसे—बुक्त = बुक्त विमान = वीसान, स्वर्श = कास, विहेक मापा में भी वैसा होता है, यमा—बुक्त = बुक्त (धारेक प १,॥) बुर्णाय = दुर्णाय (पुल्लक्ट्र मानिकाल्य १ ४९)।
- रै र्सस्कृत स्थळनान्त क्षण्त्रों के अन्त्य स्थळन का शाकृत में सर्वत्र खोप कोचा है, जैसे—सामन्≃ताप पशसः = वसः पैदिक लाहित्य में भी इस नियम का अभाग नहीं है, प्या—प्रज्ञात्≈प्रधाः ( स्वयस्थितः १ ४११) कवान् = उवा ( हिन्दिमस्यितः २ ११) भीवान् = नीचा ( हिन्दिससीहतः १ २१४)।
- प्राक्त में संयुक्त र कीर व का छोप होता है, जीसे—प्राप्तम चपालम दयाला = सामा; वैदिह साहित्य में भी बह पावा काता है, यवा—अ प्राप्तम ≈ अ-पालभ (तैतिपीयविता ४ १.६१), इ-एस = प्रिप ( १०००वाह्मस्थ १ १ १ ११)।
- 4. प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर हरव होता है, यका -पात्र = पत्र, रात्रि = रिप, साध्य = सम्म इरवादि पित्रक माना में भी ऐसे प्रवान हैं, जैसे--रोव्सीता = रोव्सिता (ऋषेव १ ६० १) अमात्र = अमत्र (ऋग्वेद १ ६६, ४)।
- 6 प्राकृत में संस्कृत व वा जानक अग्रह व होता है जैसे—वृष्ट = वण्ड, वंस = वंस दोस्त = वास्त; पेतिक साहित्य में भी पैसे प्रयोग पूर्वम नहीं है, जैसे—हुवैम = वृद्धम (वाक्सनेतरिहता ३ ३३ ) पुरत्यास = पुरोबारा (कृत्त-वृद्धमास्त्रास्त्र ३ ४४ )।

सच्चा प्रदे वाचो विकासीतर्व निर्वित्त वाच । बाव्यति सपुरमेव निर्वित्त सापरादेव बार्वान ॥१३॥

 प्राकृत में व का ह होता है, कथा--विश्व = विश्विद, अ्यान - वाह वेद-भाषा में भा ऐसा पाया जाता है. बैस-प्रतिसंधाव = प्रविसंदाव ( योपनववान्त २ ४ )।

८ प्राकृत में स्रोतक राज्यों में संयुक्त अवक्रतों के बाव में स्वर का स्वागय होता €, जैसे--क्रिप्ट = किस्ट्रि स्व = सुप यन्ती = तजुकी वैदिक साहित्य में पेसे प्रथान विशव नहीं है वया-नगहस्त्र = स्वराह्मण स्वर्गान सुक्तां ( वैतिकीवर्षीक्ता ४ २, १ ): तन्तः = सनुबान्तः = सूत्रः ( वैतिकीवकारक्षण ७ २२, १ ६ ९, ७ ) ।

ह प्राकृत में अवस्थान पुंकिष्ठ करण के प्रवास के एक्सपन में यो होता है, वीम—चेको जिला सो हस्मादि। वैदिक माना में भी प्रयम्न के प्रवास में क्वीनकी यो देखा कारत है. यथा—संवस्तरो जनायत ( बानेक्सीहता १. १८

१ ), सो बिन् ( भागेर्सीहरा १ १६१ १०-१ ) ।

१० दक्षीया विमक्ति के बहुबबन में प्राकृत में देव जा दे सामरान्य शक्तों के रूप देनेही गंभीरेकि, लेड्डिंडि कारि होते हैं, वैदिक माहित्य में भी इस्रोके अनुका देवीया जन्मीनीमा, क्येप्टोमा आदि क्य मिकते हैं। ११ प्राकृत की तरह चेदिक आपा में भी बतुबों के स्वान में पट्टी विभक्ति होती है।

19. प्राच्या में प्रमान के प्रवचन में देवा क्या किया आदि कर होते हैं। वहिक सामित्र में भी इसी सरह के तथा नीचा यक्षा प्रभृति वक्कम्य होते है ।

पदा के क्या पाना कर किया है। १३ प्राकृत में दिवस्ता के स्थान में शहरपान हैं। होता है वैदिक माला में भी इस तदा के साने में प्रयोग मीजूर हैं मदा⊶ (मालस्त्री के स्थान में पुताबदमा 'मित्राबदनों का संग्रह 'मित्राबदनों 'भी सुरवी रविधानी विभिन्द्रशास्त्रिक्ती के ब्लब्रं 'वा सुरमा रवीतमा विवित्त्या अधिका' 'मरी है' के स्वक्र में 'वस है' आहि ।

इस तहर अनेक पुष्टि और प्रसानों से यह साबित होता है कि प्राकृत की समर्थित वैदिक अवदा सीकिक संस्था से नहीं किन्तु वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति जिस मध्य कार की मावेकिक माइन्ड माना से पूर्व में कही गई है वसीसे हुई है। इससे पहाँ पर इस बात का बहेना काना आवरवड है कि संस्कृत के अने क आई आरिडों ने और प्राकृत के प्रावा समस्त इससे पहीं पर इस पाठ का पहला करना आवादक हूं । इ सत्युव क सानक वाककार का नार गाइका के सिक्त है किया है कह किया तर सिकार में ते वर्ष गांकर से सेत्यून को केत्र वहार ग्रांकर का को अववहार सर्वत्ववार की में किया है कह किया तरह संत्र तरी हो सकता । इसस्य वहाँ वर्ष गांकर संत्यून में बेदिक आप के शाक्ष्य का ग्रह्म कर पहले का बाद परोग पिरिक काल के शाक्ष्य से जो सम्ब सत्यून में किया गया है कससे स्थान हों से में करवा चाहिए। संत्यून राज्य में ते प्रमुख बहुद्द गांवर इन होंगों का सामापाल मुख सेवह काल का मासून कार्यों प्रमुख सामाप्त मासून या प्रदास स्वतं का भाष्य है। इससे बार्ग पर सामाप्त मासून सेवह काल का सासून कार्यों हों किया पीरिक कार्य प्राच्छ से स्टबर्स यही समयना चाहिए।

## दिवीय स्वर की प्राष्ट्रत मानामों का उत्पचि-क्रम भीर उनके प्रधान मेद

बार एपयु क कमा के श्रद्धार मेरिक वारा क्षेत्रिक संस्कृत और समस्य मासूत भाषाओं का मुख पक हैं। है और बैरिक हमा सिकिट संस्कृत हितीय तर की सभी भारत भागाओं से भाषोत है वर बार बढ़ते की कोई आपदनकरा नहीं है कि द्वितीय सर की मासूर भागाओं के उपयोग कम का निर्णेश प्रकाश करी साहरव के वारतन्त्र पर निर्मेश करता है की हैं है । दुवान कर का नहुर नवान के कार्य कर कर कर कर कर का कार्य के व्यक्त कर की है । इसम संस्कृत और आदुत बहुन करों में बाबा बाता है । जिस मानूब मांघा के बहुन राज्यों का चौरिक और सैक्कि संस्कृत के साब विवास लिंकि साइरब होगा वह बनती ही आवीत और जिसके बहुन करों का इसम संस्कृत के साब जितमा अभिक मेर होता बह बतनी ही अवीचीन मानी जा सकती है, क्वोंकि अधिक मेर के फरफा होने में समय मी समित्र स्थाता है यह मिलिया है।

विश्रीय रुर की जिन प्राप्त भाषाओं ने साहित्य में अथवा शिकाकेकों में स्वान पाता है बनके सक्तों की बेदिक भीर धाकि संस्कृत के साथ उपयुक्त पक्षति से तुझना करने भर, जो मेर पार्यक्य) देलने में आते हैं धनके अनुसार कार आ 40 बारही के पान रहा के उकार पर अक्षा कर किया है से का से का है का का पान कर किया है का कि सुद्ध कर किया में बॉर्ट दिवीय शर की मारत माराओं के निम्नोंक मयान मेंद्र (मसर) होते हैं, में कम से इन तीन मुक्स करक विमानों में बॉर्ट या तरुगे हैं—(१) प्रवस युग—जिल्ल-पूर्व चार सी ये बेस सिद्धा के बाद यक सी वर्ष तक { 400 B C, to 100 Å. D. ), (२) मण्युग दिल के बाद यह सी से पॉच सी वर्ष वक्ष (100 Å C, to 500 Å D ); (३) ग्रेप पुग—किसीव

पॉप भी से एक इबार क्य हक ( 500 A. D. to 1000 A D )।

१ <sup>ल</sup>चनुष्यमें बहुर्स सम्बद्धि<sup>म</sup> ( पारिएक्टि-साफरास २, ३, ६९ )।

## प्रयम सुग ( स्त्रिस्त-पूर्व ४०० से स्त्रिस्त क बाद १०० )

(क) श्रीनयान वौद्धों के त्रिपिटक, मद्दार्यरा और आवक-प्रसृति प्रस्थों की पार्क्स मापा !

(श) पेशापी और पुरिवापेशापी।

- (ग) चैन शंग-प्रम्बें श्री अर्थेमागधी भाषा।
- ( घ ) अंग-मन्य सिम्न प्राचीन सुत्रों की और श्वस चरित्र का द प्राचीन प्रन्थों की सीन महाराष्ट्री भाषा ।

(क) बारोक-शिक्तलेखों की एवं परवर्तत-काछ के प्राचीन शिक्तलेखों की भाषा !

(च) अस्त्रपोप के नाटकों की भाषा।

### मध्ययुग (स्त्रिस्तीय १०० से ५००)

(क) त्रिनेन्द्रम् से प्रकारित सास-रिनंत कह जाते नाटकों की और वाह के शास्त्रास-प्रसृति क नाटकों की गौरधर्ना, सागधी और सहाराज्या साधार्षे।

(स) सेतुबन्य गापासप्यशती आदि कान्यों की महाराष्ट्री भाषा ।

 (ग) प्राइत क्याक्रलां में जिनके छन्नण और ज्वाहरण पाये बाते हैं वे महाराष्ट्री, शीरसेनी मागमी पैत्राची, चुळिन्नीताची भाषायें!

( घ ) दिगम्बर जैन प्रन्यों की शीरसेनी बीर पर्र्वात-बास के इवेताम्बर प्रन्यों की जैन महाराष्ट्री मापा ।

( क) चंड के क्याकरण में निर्देश और विकामोध्या। में प्रयुक्त सपन्न स भाषा ।

## शेष युग ( सिस्तीय ५०० से १००० वर्ष )

सिम-मिम प्रदेशों की परवर्ती काछ को अपन्न स मापाएँ।

अब इन तीन युगों में विसक्त प्रायेक भाषा का कक्षण और विद्येष विषरण, वक्त का के अनुसार (१) पाछि, (२) पैरापी (३) वृष्टिसपैरापी (४) अर्थनागर्था, (५) जैन महाराष्ट्री, (६) अशोकव्रिष, (७) शीरसेनी, (८) मागभी, (६) महाराष्ट्री, (१०) व्यवसंत्र इन शीर्षकों में क्रमशा विचा जाता है।

### (१) पाछि

हीनवान बीडों स वर्ष-नम्बों की वाया को पांड कहत है। कई विद्यानों का अनुमान है कि पांड कर 'पहलेट' पर से बना है' 'पहलेट' राष्ट्र कार्य है 'प्रेणी' '। प्राथीन बीड, लेकड अपने प्राथ में वर्ष-राष्ट्र की वचन-वहिक की वद्युव करन समय हमी पांड कार का प्रयोग करते थे, इससे बाद क ममय में पींड वर्ष गांडों की मापा पांडी नाम पांड कार का प्रयोग करते थे, इससे बाद क ममय में पींड वर्ष गांडों की मापा पांडी नाम पांड का माय विद्यानों का मत्र है कि पांडि कार पहले 'पर से नहीं, परलु 'पिंड' पर से हुआ। किरत मादि कार के मादि कार के मत्र में पींड कार कामक में संस्वत मही परन्तु प्राकृत है पांचि अपन अने के प्राकृत राज्यों की तद्य वह भी पीठे से संस्वत मन की पांडों की से कार्य अने के प्रावित अपन मोपा आधा है 'पिंड' पांड के मापा पांडा पांडों के पांडों कार मापा-माप्य मापा होता है। 'पहलि' पर से 'पांडि' होने की कम्पना जितनी कीरा साथ्य है 'पिंड पर से वांडि' होना जनना ही सहक-मेण है। इसमें होने

मही है। बॉक्ड महेरा निगव के मामों का वर्षह बाहरों का भी जन-माशस्य की यह भाषा थी। परन्तु अंतरण के झलन्य अक्ष र 'पड कि = पंकि = वींति = वींर = वींर = वींत = वींत = वींत = वांति चवंत पड कि = वींत = वींत = वांति = वांति = मेरोक दुर हो।

ण्डिसा मन 🏿 अभिक्र संगत मालूम होता है । 'पासि' केवल मानों की ही मात्रा भी इससे उसका यह नाम हुआ है यह बाद

६ देवो, निपारम् त (पत्र ३० ६१) ।

२ "हेन्सिर्व तन्तिराचीनु मानियं वानि कथ्यते" (व्यविधानप्रधीनवा ११६) ।

जाझजों की हा ओर से इस आया की तरफ अपनी खाआविक पूजा को व्यक्त करने के खिए इसका पह नाम दिवा जाना और अभिक प्रसिद्ध हो जाने के बारण पीछे से बीद्ध बिद्धानों का भी मागभी की सगह इस राज्य का प्रयोग करना सामार्थ-वातक मही जान पहला ।

एक प्राइट मापा-समृद् में पालि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का विषक साहश्य देशा जाता है। इसी कारण से वितीय कर की प्राकृत आपाओं में पाकि भाषा संत्रपिक्षा प्राचीन माजूस पहती है।

पाछि सापा के क्यक्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का सव-संद हैं। बीठ क्रोग इसी सापा को मागवी स्वतं हैं भार बनक मन में मन भाग का उत्पाचनमान माम के ही परता हुए गाया का मामी प्राकृत के साम कोई सीर बनक मन में नम भाग का उत्पाचनमान माम के ही परता हुए गाया का मामी प्राकृत के साम कोई साहरक मही है। वॉ कोमी (Iv Bone) और सर मियसैन ने इस माचा का पैशाणी मामा के साम साहरक दलकर पेशाची सापा जिस देश में अचित्र वी वसी देश को इसका संपत्ति-साम क्याया है.

यधिप पैक्षाची आधा के बत्सचिन्यान के विषय में इन बोर्नो विद्वानों का मतेष्य नहीं है। हों, क्षेत्रो स्त्यति-स्वात क सह में पैशाची भाषा का कार्याक स्थान विक्शाचन का विक्रम भेरेश है और सर प्रियसेन का मह यह है कि 'इसका उत्पत्ति-सान मारनवर्ष का उत्पत्निमा ग्रान्त हैं। वहाँ उत्पन्न होने के बाद संमव है कि डॉड्स-प्रदेश-पर्यंत इसका दिस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाकी भाषा की कराति हुई हो।' परस्तु पाकि मापा अशोक के सकात-महाराज्यत्व प्रवाद त्रिया हुं आहे । आहे वहाँ राज्य राज्य राज्य के राज्य हैं राज्य राज्य साथ स्थाप के शुक्रपत्व महेशा-रिवर तिरात्त के रिवर्क्षत्व के अनुकर होने के कार्या पढ़ साथ में नहीं कित्त मात्रपत्र के प्रवीम मात्र में राव्य स हुई है और वहीं से सिद्ध इंस में अ आह गई हैं वहीं सब विरोप संगव स्वीव होता है, क्योंकि निम्मीण क्रयहरूपों से पुष्टिमायां का गिरनार-शिक्षकेल के साम साहत्य और पूर्व-वान्त-शिवत भीकि (संबंगिर) शिक्षकेल के साथ पार्वकर बेन्य बावा है-

	रियस	वीकिशिस	गिरनार्य <b>ख्या</b>	षास्री	संस्कृत
	प्रिमे	क्यिने		र्धांतनी रम्पो	चाम
रतर की क्य क	4	42	कर्य	44	इतन्

इस क्रियर में डॉ मुलाविकुमार कटर्जी का क्यूना ह कि "बुद्धरेव" के समस्य क्यूबेरा मारावी मायसे बाद के समय इस विषय में डा मुनायकुमार बदमा का क्यान हाक पुकर के उनके कारण नाक्या भावस बाद के समय में मच्चवरा (Doob) की शीरसेनी प्राक्त में अनुकारित हुए थे और वे दी किस्तुन्ये मार वो सी वर्ष से पाकिन्यान के नाम स प्रानिक्त हुए हैं। किन्तु सब वा यह है कि पाकि भावा का शीरसेनी और समावी की बयसा पैदाको के साम ही अधिक साम्यय र जो तिम्हांक बराधावों से स्पय आमा साता है ।

पालि	पैचाची	धीरसेमी	समाधी
६ (बोर) ग (बन) च (बची) ख (स्त्रो) त (श्ते) १ (स्र	क (बोफ) ग (नम) भ (वधी) ज (प्रतः) व (नव) र	(बीच) (एका) (बर्द) (रसर) व(पर) र (कर)	(क्षेत्र) (क्ष्य) (क्ष्य) (स्पर) द (क्ष्य)
	क् (बोर) गु(बन) च(बक्री) ज(श्रमत) तु(श्रमत)	ছ(बोड) হ(बोड) গ্ৰেম) ন(বম) খ(হমী) খ(হমী) গ্ৰেমী ব্ৰেমী গ্ৰেমী ব্ৰেমী	ছ (बोड) হ (बोच) (बोच) ।।(का) ।।(तर) (छह) च (बची) च (बची) (बदी) ।।(तर) व (रहा) (धार) ।।(तर) व (रहा) (धार)

१ "लीकापनं दूजके च माइनं व चीनार्थ (इनेनैन्डवी नवति

2. The Origin and D

१ इत उत्पादली में प्रमय ने बाद बारेट में प्रणी

• रार इलों के मध्यरणी सबीक

Vol. I, page 57

में परिवर्तन होता है और सतर

संस्कृत	पास्त्रि	पेशाची	शीरसेनी	मागधी
श (वरा)	सः (वसः)	स (वस)	स (वस)	श्च (वरा)
ष (देष)	स (भैस)	स (येस)	स (येस)	श (मेरा)
स (बारस)	स (धारस)	स (साप्स)	स (सारत)	श्च (रामरा)
न (वदर्ग)	न (वयम)	न (भवन)	ण ( वप्रण)	वा (बाग्रस )
इ. (पह)	ष्ट्र (पृष्ट्र)	ξ( <b>4</b> ξ)	इ (पृष्ट)	स्ट ( पस्ट )
र्थे (यमें)	रय (शप )	स्य (चरप)	रय (प्रन्म )	स्थ (घरत)
स् ( इक् )	ओ (दनको)	ओ (दश्मी)	क्षो (सम्बो)	ए ( मुख्ये )

स्ै (इच ) ओ (शक्तो) ओ (शक्तो) शो (शक्तो) ए (प्रस्ते)
पाछि मापा की दरपित का समय जिल्ला के पूर्व पष्ट शावानशे कहा जाता है, किन्द्र यह काल बुद्ध रूप की सम
सानियक क्रम्य माणाची मापा का हो सकता है। पाछि क्रम्य माणा नहीं, परन्तु चीद्र धर्म-साहित्य
ध्र माणा है। संस्वत यह माणा जिल्ला के पूर्व चतुर्व या पश्चम शातावहीं में पश्चिम मारत में
स्रप्ता हुइ थी।

इस पासि-मापा से आधुनिक सिंहकी मापा की क्यप्ति हुई है।

प्राष्ट्र राष्ट्र से साबारणङ पाकि भिन्न अग्य मार्गायें हो समका जाती हैं। इससे, चौर पाकि आपा के अनक स्वतन्त्र क्षेत्र होन से प्रस्तुत कोप में पाकि मारा के शब्दों को स्वान नहीं दिया गया है। इसकिय पाकि आपा की विशेष आक्षेत्रना करने की यहाँ कायरकटना नहीं है।

## (२) पैम्नाची

गुणस्य ने बृहरस्य पैशाची भागा में किसी थीं जो सुन हो गई है। इस समय पैशाची भागा के दशहरण निकार निकार पाइनस्वार सामार्थ हैमचन्द्र का शहनदगाकरण, पहमापाचित्रका, बाहन-सर्वेख और सीक्षेत्रसार सादि प्राइत-स्वाहरणों में बाचार्थ हैमचन्द्र के कुनारपाछ-चित्र दया किस्पानुसासन में, मोहराव पराजय नामक नाटक में और हो-एक पह्मापारतोत्रों में भिजने हैं।

सरत के नान्यशास में पैशाका नाम का बलोन्य देखने में नहीं काता है, परसु इसके परवर्ती <sup>क</sup>रट, किसक मिन साहि संस्कृत के शास्त्रकारियों ने इसका बलोस किया है। पान्मन ने इस माना को <sup>क</sup>भूतमापित के नाम से कामिहित की है।

प्याग्सट तया <sup>र</sup>केशविमित्र न कम से मृत और पिश्वाच-प्रमृति पार्श्वों के किए और प्रद्मापा-विन्निकास्तर ने विभिन्नोप सम्बन्ध, पिशाव और नीच पार्शों के किए इस स्नाविनियोग वनकामा है।

१ वृक्तिय में ब्रथमा के एक वचन का प्रत्यम ।

र भाषार्थं अर्थोतन वी दुवनय-माना में व्यक्ती के काम्यावर्त में बाल के क्ष्यविक्त में पनध्यव के क्षाप्रवर्त में मुदन्तु की वासप्रवत्ता में और सम्याप्य प्राष्ट्रत-संबद्ध क्यों में वयस जम्मेल पाया जाता है। श्रीम्प्रकृत बृद्धक्यापान्य से सी सोवरिक्यू प्रणीत वयासिरमायर क्षा बृद्धक्या का संबद्ध्य प्रदूषक है। व्यवहुरक्या के ही निवनिक्त संज्ञों के सामार पर वाल पीहर्ष सब्दृति सावि संवर्त के सहस्वविदों की कारमधी एकावसी सावशीमायर-प्रसूति स्वेत संवर्तन की से एक्स की सी है।

<sup>1 93</sup> RRE: 288 1

<sup>¥</sup> नाम्यासनार र १२ s

र- चित्तृतं त्राहतं चैव पैराची सामनी तथां (समञ्जाद रोबर, १३ १) ।

६ 'संस्कृतं प्राप्टतं सम्यापभ्र स्त्रो भूतव्यक्तितन् (वाग्यवस्त्राह २ १)।

भर् मुत्रेष्टकाते विशिषत् तर्गीतिकार्मात रमूत्रम् (नाम्मदासन्द्वार २ ३) ।

८ 'पैराची तु निराचायाः बाहु" (धलद्वारतेखर, पूर १) ।

रे. रत्रापिरात्रमीतेषु पैरात्रीक्षिक्यं महेत् ।। ११।। (पर्मावान्तरिका १३ १)।

जाड़ाजों की हो ओर से इस माया की दाफ कपनी स्थामाधिक पूजा<sup>3</sup> को क्यांक करने के छिए इसका यह नाम दिया जाना और मधिक प्रसिद्ध हो जान के कारण पीछं से बीद्ध विद्यानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना आसर्व कारक नहीं जान पहला !

क्छ प्राकृत साया-समृह में पाति साया के साथ विषेक्ष संस्कृत का व्यावक साहरूप वृत्या बाता है। इसी कारण से द्वितीय कर की प्राकृत सायाओं में पाकि साया सर्वावेका प्राचीन सावत्य पनती है।

पांति भाग के उत्पश्चि-स्थान के बारे में विद्वानों का महन्मेद हैं। बौद्ध क्षेत इसी भागा की मार्गधी करते हैं क्षीर दनके मन से ज्या भागा का उत्पश्च-स्थान मगय देश है। पत्नु इस भागा का मार्गधी प्राकृत के साथ कोई साहदय नहीं है। वों कोनी (17 Kong) और सर प्रियसैन ने इस भागा का पैद्याणी मार्ग के साथ साहदय

हेलाइट पैसाची आपा किस रंध में प्रचित्र वी बसी देश के इसका टराजिन्सान बनाया है. क्योरिन्सन अधिप पेपाची आपा के क्योरिन्सान के विशय में इन होनों विद्वानों वा सर्वेच्य नहीं है। डॉ क्येनो

क सब में पैताची साथा का कर्यांत-स्वान विल्याचक का विश्व प्रदेश है और सर प्रियमित का नव कह है कि इसका क्रयांत-स्वान मारतकरों का उत्तर-सिक्षम प्राप्त है, वहाँ कराज होन के बाद संस्व है कि क्रेक्टर मेरेग-संस्व हक्त मेरिक्सर हुआ है जो बहु इस हो प्रक्रों का साथा की करिया है हो। ' परणु पाठि माथा क्ष्रोंक के प्रव्यान मेरेग-सिक्स गिरवार के गिक्सरेल के कानुकर होन के बारण यह समय में नहीं, किन्तु मारावर्ष के प्रविद्या मान्य में उत्तर मान्य में उत्तर का कि स्वाप्त का कि स्वाप्त का कि स्वाप्त का कि स्वाप्त का स्वाप्त की का कि स्वाप्त का स्वाप्त की स्वाप्त क

संस्कृत	पाकी	गिर <b>नार</b> िक्सा ३	<b>बीक्रि</b> शस
য়ঃ-	धीवनी, इसी	पर्छा	विनि
<b>इ</b> च्य	ed:	₩₫	क्रो

हा दिएन में हों मुनोविक्तमार चटर्जी का कहना है कि "चुहादेग" के समस्य रुपवेश मागयी भाषासे बाद के समय में मण्दरा (Dash) की ग्रीरिनेनी प्रावृत में अनुवादित हुए ये और वे ही किस्टान्यूचे प्राय: वा सी बचे से पाकि-माय के माम स प्रमित्त हुए हैं। किन्नु सब तो यह ह कि पाकि माया का ग्रीरिनेनी चीर मागबी की घरेका पैकाची के साथ ही कविक साहरत है या निमाण दशक्राणी से स्था बागा जाता है।

संस्कृत	पाखि	पैचाची	श्रीरसनी	भागपी
es (খাচ) en (পৰ) ew (বামী) ew (বামী) ew (মেনা) en (মনা) c (খামী)	क (चोक)	क (शोक)	(धीस)	(আম)
	ग (क्य)	स (शव)	(श्रम)	(তথ)
	च (क्यी)	च (त्रवी)	(धर्म)	০ (ফা)
	श्य (क्यी)	व (त्रवि)	(श्रम)	(ব্যৱ)
	य (क्यी)	स (त्रवि)	१(श्रम)	ফ (ক্য)
	१ (क्रा)	र (त्रव)	१(श्रम)	ড (ক্য)

१ "सीरायर्व दुवर्ड च शहर्व ओक्स्यायिकम् ।

न भीतम्पं त्रिकेनेत्रवर्गं नम्पति तत्र शिवन् (परस्तुपाल पूर्वज्ववर १० १७)।

t. The Origin and Development of the Bengalee Language Vol. I page 57

र राज्यम् को में बचन यह सदार दिया क्या है जिलता कर कम प्राप्त के दीवें लिए पर प्रप्रतों में निज्ञतेन होता है भीर संबद के बाद तारेट में क्यो प्रमारक्ता त्रम्य लहना के लिए सिना क्या है।

<sup>•</sup> त्रद वर्ती के मध्यवर्ती शहरूक कर्ती :

संस्कृत	पाछि	पैशाणी	शीरसेनी	मागमी
रा (परा)	सः (गसः)	स ( वस )	स ( वस )	লু(ৰহা)
प (मेप)	स (भेस)	स (येख)	स्म (मस्)	श (मेरा)
स (धारत)	म (सारस)	म (साध्य)	स (श्रारत)	श्च (रात्रच)
स (वयत)	न (वयम)	ন (খখন)	ण ( वचस)	व (वयरा)
इ (पट्ट)	इ (पट्ट)	₹(₫ᢓ)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पस्ट )
र्थ (धर्व)	रेप ( शस्प )	स्य (प्रत्य)	स्य (धन्द्र)	स्त्र (घरत)
स् (इप्रा)	ओ (श्रम्बो)	क्षो (समो)	ओ (स्मर्का)	ए ( दुस्ते )

पासि मापा को बरपित का समय जिल्ला के पूर्व पर राजाव्ही कहा जाता है, किन्तु वह काछ सुद्रहव की सम सामयिक करन मागाची मापा का हो सकता है। पासि करन भागा नहीं, परन्तु नीद घर्म-साहित्य की मापा है। संस्थित यह भाषा जिल्ला के पूर्व चतुर्य या पश्चम राजाव्ही में परिचम भारत में करनम हुइ थी।

इस पासि-भाषा से आधुनिक सिंहकी मापा की परपत्ति हुई है।

प्राकृत राज्य से सामारणत पाकि-भिन्न अग्य भाषायेँ हो समझ जाता हैं। इससे, मीर पाकि आपा के अनक स्पतन्त्र कोप होने से अस्तुन काप में पाकि आया के शब्दों को स्वान नहीं दिया गया है। इसकिए पाकि आया की विग्रेप कास्प्रेयना करने की यहाँ आसरपकना नहीं है।

## (२) पैन्नाची

गुणाक्य ने ैदूररुमा पैशाची आज में कियी थी. जो लुप्त हो तह है। इस समय पेशाची आज के दराहरण निकार प्राहत्यकारा, वाचार्य हैमचन्द्र का शासूत्रस्थारण, पहमापाविष्ट्रका, म्राहत-स्वरंत्र और संवितसार भार्ति प्राहत-स्वाहरणों में भाषार्थ हेमचन्द्र के इसारपास वरित तथा किन्यानुशासन में, मोहराज पराजय नामक नाटक में और हो-एक पहमापास्ताजों में मिकते हैं।

भरत के नात्पास में पेशाचा नाम का कहनेना देखने में नहीं चाता है परन्तु इसके परवर्ती केंद्रव, "केशव निम आदि संस्कृत के आउंभरिकी ने इसाम अहनेला किया है। बारमंद ने इस मापा को "मृतमापित' के नाम से चानिहत की है।

वाग्सट वर्षा व्हावसित्र ने कम से भून और विभावन्यस्थि वार्यों के किए और "पङ्भावान्यस्थि ने विभवेष यस्म, विसाव और नीच वात्रों के किंव इसका विनियोग करखावा है।

१ पुर्वित में प्रथमा के एक क्थन का प्रस्त्य।

र, भाषार्थं बहुदोतन वी दुवनव-माका में बगदी के काम्यारते में बात के हुपैबरित में बबरन्य के करकाक में, मुबन्दु की बातराता में भीर कम्यान्य आहुत-संस्कृत देवों में हजका उननेब पाया जाता है। ध्येनकहत बृहनकामञ्जये और सोवरिक दू प्रशीत नयातिस्मानर देती बहुतक्वा का संस्कृत प्रदूषक है। इस बृहनका के ही मिन्न-विश्व संतों के सावार पर बाल ध्येन् पक्तुति सारि संस्कृत के महाविधां की कारकते स्थानकों सावजीयावंद प्रसूति सनेक संस्कृत वेदों की एकता की माहित

र इह रहर रहा।

४ काम्यानीशाद २ १२ ।

४. 'संस्ट्रं प्राष्ट्र' वन पैरावी मागनी तवा' (शनचार रोसर, १३ १) ।

 <sup>&#</sup>x27;संस्कृतं प्राहतं हस्यापम्न सो भूतमापितन् (बारमञ्जनद्वार २, १) ।

ण यर भूतिरकाते विवित्त तद्वीतिविधानि वनुत्रम् (बारमणानद्वार २, ६)।

८ पैराची तु निराचाया प्राहुः (यसद्वारहेसर, बुद्ध १) ।

रतः शिराक्तीकेषु पैराक्षीतियाँ जरेत् ।।११।। (वर्मावा-क्षित्रम १३ १) ।

पद्भाषाविष्ट्रकारा पिताचन्द्रेसों की भाषा को ही पैशाची कहत हैं और पिशाचनेंद्रों के मिर्देश के क्रिए मीचे क्रांतिन्त्राप्त के स्मोची के बहुनूत करते हैं —

> नाएक्वरेकमबाहीक्यास्त्रेपासपुन्तमाः । बुक्रेयाबीकवान्यारहैक्कनोक्यास्त्रमा । एते रिशायरेकाः स्पूर्ण

ग्राईव्हेय ने अपन प्राहतसर्वल में प्राहतचन्त्रका क

'काबोरिक्केनप्रसम्बन्धे च पाठनालं नीड-मानवस् । सामवं दाविकारणं च शीरतेलं च नेक्यम् ॥ सामवं वावितं चैच स्वतंत्रता चिकानवाः ।

बरर्गिय ने शीरसेंनी प्राष्ट्रत को ही पैशाणी भागा का मूख नहा हैं। सार्यंप्येव ने पेशाणी भागा को कैकर शीरसेंग कीर बाघणात इन तीन महों में पिमाण नर संस्कृत कीर शीरसेंगी शमय को डैक्य-पैशाणी वर कीर केक्न-पैशाणी को शीरसेन पैशाणी का मूल नतसान है। वाघणात देशाणी के मूख वा बहोने निर्मेश हो। गई। किया है। किन्तु नहोंने हमछे जो देश (तेन) शेष सीकर्ष ( व्यवस्था) ये हो श्वाहत्स्य निर्मेश हमसे मान्यं होता है। कि इस पाराचाला प्राप्ति पीमाणी को केक्स-सीमाणी से रचार कीर कवार के कराया है करिसरफ क्षम कोई सेंग नहीं हैं। सुर्यं

महाय प्रशासन के करणान्या के तरात कार करात के क्यायत के बादारिक बाम कोई सेव नहीं हैं मुतर्य शीरमेन-मेशाबी की तरह पारन्याक मेशाबी की प्रकृति भी इनके मत से केक्स मैशाबी ही हो सकती हैं। यहाँ वर यह बहना कावरणक है कि सार्वणकेन में शीरसेन पैशाबी के जो सहाण दिए हैं बन पर से शीरसेन-मेशाबी का

ह बर्गमान महुरा और वायाहुमारी वे बावपान के प्रदेश ना भाव बारण पाम्यन हरेश वा मान वेरव, व्यक्तप्रीक्षणन के वर्ममान बानमानदानों मेरेश जा भाव बहीन चीमा चारण के प्रदेश वार्म का बाद बड़ा, वर्गेश के व्यवस्थित्यन के निवरकों देश वामा बुक्त वर्ममान बाहुत सीर देशावरपाने महेश ना प्राव कमार, दिमानव के निवस्त्रकों वर्गेश महेश विरोध ना कम देन बीर चीरण बहुरायन के वार्गेस प्रामन ना भाव वर्गोग है।

र "प्रश्रुति" सीरनेमी" (बाह्यक्रवाश १ २) ।

<sup>। &</sup>quot;साय रा "साव मी वर्षेत्र" "चवर्रावीर्ताकृत् व "इर्जाब्यु वसरूप" "बाव क्याँ "स्वर्धेवरूठे .हस्य राज", "सत्त्ववीः रा कर्म्य राज्य" वर्षे वर्षेत्रे (शिक्ष (बाइग्लर्गन) कुत्रु १९६) ।

शीरसेती मापा के साथ कोई भी संगव प्रतीव नहीं होता, वर्षीकि कैड्य-मैहागी के साथ छीरसेन-मैडागी के दो मेर् बन्होंने बरदाय हैं वे मानाकी मापा के ही अनुक्यहें, न कि शोरसेनो के । इससे इन हो शोरसेन-मैहानी न कर कर मान्य चिमानी बस्ता ही संगत कान परता है।

प्राप्तृत वैयाकरलों के मत से पैरााकी भाग का मृत्र शौरसेनी अथवा संस्कृत माया है, किन्तु इस पहले यह माध्यमीति विका कुछ है कि कोई भी प्राकृतिक कान्य माया संक्त अथवा अन्य मावेशिक माना से उत्पन्न नहीं है, परसु वह रही कन्य अववा प्राकृत माया से उत्पन्न कुई है तो वैदिक पुग में वस प्रदेश में प्रवक्तित थी। इस किप पैशाकी माया का भी मृत्र संस्कृत या द्वीरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत माया है। है जो वैदिक पुग में भारतकर्य के स्वर-पश्चिम प्रान्त की या अध्यासिकात के पर्य प्रान्त-कर्ती प्रवेश की करण माया है।

प्रथम मुत की पैक्षाची भाषा का कोई निवर्कन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाव्य की बुहरूमा संभवत हसी

प्रवस जुग की पैशाचा जापा में रची गई थी। किन्तु वह आजकल कपछल्य नहीं है। इस समय हम सपद। व्याकरण, नाटक और फारण में पैशाची मापा के को निवर्शन पाते हैं वह मध्यपुन की पैशाची मापा को मध्यपन की यह पैशाची मापा किस्त को विशोध सावान्त्रों से पौंचती सावान्त्रों पर्यस्त

अचितित ही।

पैशाची माचा का शीरऐनी माया के साथ बिस्ट-बिस्ट क्या में भेद है वह सामान्य क्य से नीचे दिया जाता है। इसके सिचा काय सभी अंशों में वह शीरऐनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के ज्ञाशण शीरऐनी के प्रकार से काने जा सकते हैं।

### वर्ण-मेद

- २. य और न के स्थान में न होता है, तैसे-नाुष ≈गुन कमक = कनक ।
- इ सीर द की सगढ़ प होता है। जैसे---सगवती = सगवती। खत = सत। सदन = सदन। देव=तेद ।
- ४ तमार कमें क्रावा है। यदा—सीख=सीक कुम वकुक।
- १ द्व के काम इ और दु होता है। जैसे- कुटुम्बर, कुटुम्बर, कुटुम्बर ।
- 4 महाराष्ट्री के अक्रम में वसंतुष्ठ-व्यञ्जन-परिवर्तन क १ से १३,१४ और १६ व्यक्ताले को नियम क्वाह्माए गए हैं वे गीरसेनी आपा में सागू होते हैं, किन्तु पैतानी में नहीं, यवा —क्रेक व्यक्त धासा = साह्मा, सट ~ सट सट नट, गर्सक = गरक, प्रतिभाश = परिवर्ता कर्माठ कराव = स्वयम चेरक = देक ग्रावत = सक्क ग्रहस् ~ यस कर्णाय = कर्माय, वाह = वाह !
- . बाहरा कावि क्षणी का इ परिणव होता है कि में। अबा -- बाहरा = वाविस सहस = सविस !

## माम-भिमक्ति

१ अकारम्य क्षम्य की पश्चमी का पक्ष्यचन वाता और वातु होता है। जैसे-किनायो, जिनातु ।

#### धासपात

- र शौरसेनी के वि और दे मस्यवीं की जगह वि सोर वे होता है, बवा-गव्ह्नवि गव्ह्ननं, रसवि, रसते।
- भविष्य-काक्ष में स्ति के बदसे प्रम झाता है। जैसे—सविष्यति = ह्वेटत ।
- भाष और कमें में ईम तबा इव के स्थान में इस्त होता है। यथा—पत्रपते ⇒ पठिस्तते हिस्मते !

#### कर्मन्त

्ला प्रत्यय के रथान में कही तुर और कहो लूर ओर खून होते हैं। भवा पठिला = पठिलून; सला ≈सन्तून मञ्जा = तस्कून, नक्षून; तब्द्वा = तस्कृत तक्षून ।

### (३) पृष्टिकापैद्याची

कांक्कापेशाची मांचा के क्षत्रण आवार्ष हेमवस्त्र ने अपन माहत-स्थाकरण में और पेडिट सक्सीकर से सपनी वह भागांचांत्रका में दिव हैं। श्राचार्य इंमचन्त्र के ब्रमारपास्त्रपति और काम्यानवासन में इस मापा क निवर म पाये काते हैं। इनके श्रांतिरिक इम्मीरमव्यवन मामक नाटक में और वान्यक ब्रोटे बोटे निक्**र**ौन यह मापासीजों में भी इसके कक्ष समृत एकत में बात हैं।

प्राकृतसञ्ज्ञ प्राकृतप्रकारा, संविद्यसार और प्राकृतसर्वस्य गोरङ् प्राकृत क्याकर्षों में और संस्कृत के कार्यपर प्रन्ते में चुड़िशारियानी का बोई संक्षेत्र नहीं है। अब न भाषायें हेमचन्द्र ने और ये क्यूनीवर ने चुहित्वपैशाची के को सदय विच है के च.स. बररुचि, इमर्शदेश और मार्कण्डेम प्रसृति वैदाकाओं ने पेशाची आया के लक्ष्मों में ही अन्वर्गत किए हैं।

इससे यह लग्न बाना बाता है कि बळ वैयाध्यवनाय बुक्तिशापैशाची को मैशाची मापा के बन्तमू व 🗊 मान्त्रे ये स्वतन्त्र यापा के क्य में नहीं । आवार्य हेमचन्द्र भी अपने अभियानिवनामित नामक संस्कृत क्रोप प्रन्य के याचा पद संस्कृताविका (शाय १ १६६) इस सचन क्रो 'संस्कृत मायका-गायका-गीरवैगी-धनसर्वत

देशान्समाराज्यसामा यह स्थापया करते हुए चुकि अपेशाची का चाक्रम करवेश तही करते । इससे सासूम पहता है कि अभी चूलि अपैशाची को पैशाची का ही एक मह मानतं हैं। हमारा भी वही मत है। इससे वहाँ पर इस क्यिय में पैशाना मापा के अनन्तरोक विकास से कुछ अधिक क्षित्रन की बायरवकता नहीं रहती। सिर्फ आवार्य हेमनम् ने और बन्हीं का पूरा अनुसरण कर ५० ध्यमीवर न इस मापा के जो श्रञ्ज दिए हैं वे तीचे कहु बूत किए जाते हैं। इनके सिवा सभी भेशों में नस मापा का पंशाची से कोई पार्वकम नहीं है ।

- १ को के तृतिन कीर चतुर्व क्षमार्थ के स्थान में कमग्र' प्रवस कीर वितीय होता है। समा-मगर = नकर, व्याग्र = बक्टर, राजा = राजा निर्मेर = निष्क्र र रहाग = स्टाव, इवा = टक्स सदन = सटन समुर = समुर बासफ - पासक, भागवती = परवारी ।
- २. र के स्थान में वैश्वतिषक स होता है। पथा-सह = सुद्द, स्ट ।

### (४) अर्धमासची

सामान महारीर अपना नर्मीवरेष कर्पमागरी माण में देते हैं ! इसी दबदेश के अनुवार उनके मसवामादिक गनवर का सुवसेषामी न बर्पमागरी माण में ही बाजायह सबूति शुरूनपूर्वों की रचना की थीं ! ये मन्त्र इस समय किसे कही गर व परानु दिन्त्र परम्पा से कस्ट-भाड हुए। संग्रेचन होते में ! दिगम्बर कैनी क सब से व समस्त प्रग्न किसुध्य हा गय है, परना स्वतान्तर बेन शिम्लारों के इस सन्तत्त्व से सहस्त नहीं हैं ! इमेदान्यरों के सत के क्राचील मैश लग्नी औ क्षा तथा है। पर हो पर प्रशासिक का प्र का प्रशासिक का प्रशासिक का प्रशासिक का प्रशासिक का प्रशासिक का क्रमा क्रमीयायकी वादियाचाड्) में आदर्वाद्वमध्ये झमान्रमण ने वर्तमाम आस्त्रार से खिरोबद किए। इस समय दिखे बात पर भी इन मन्त्रों की माया प्राचान है। इसरा पड़ कारण यह है कि जैसे माहच्यों में कम्छ-पाठ-द्वारा बहु-राताकी जात पर सा कर गर्या कर गर्था है। जन श्रांतची ने सी अपनी शिष्य-परत्यस्य से शुक्त-पाठ द्वारा करीब एक इकार पर्य वर्क प्रभाव बहु। का रहा का था वार का का व्यापना वा वा वारण है। या वारण है। या वारण है। या वारण वा वा वा वा वा वा वा अपने इन परित्र प्रमाने को बाहु राज था। दूसरा वह हैं कि जीन यारे में सूत्र-गाठों के सुद्ध कण्यारण के बिए खुब और दिवा भारत है। बहुत है अपने का अगर के भी अगुद्ध या विचित्र वच्चारण करने में द्वीर माना गया है। विस पर मी धुन मन्दी की माता वा शृक्त निर्देशन करन स इस बात का स्वीतार करना ही पहेंगा कि मानाव महापीर के समय की कर्म

१ सन्द नेवार एली के तर है का लिक्स राज्य के धारि के धकरों में बाध नहीं होता है (है। प्रा. ४ १२७)।

२ 'भवां च एं सहवाहीए सामाए वामनाएकाः" (अनवासाङ्ग सुत्र प्रव ६ ) । ेठए ठी ठमटी वर्डा महत्तीहे वृक्तियान रहती विक्रियानुसार " अञ्चलकार कारण जागा । " ' था दि य र्षं व्यवनान बाका तीन क्ष्मीन बारियमहारिकानुं क्ष्महो सम्मात् वरिकावेलुं वरिकाव्यं (बीरासिक सूत्र) ।

र भारते मानह सरिदा, मूर्ण संबंधित कतहार विकास (धारश्यत्विति) ।

भागभी भाषा के इन प्रन्यों में, लक्षातभाव से ही क्यों न हो भाषा-विषयक परिवर्तन अवस्य हुआ है । यह परिवर्तन होना असंगव भी नहीं है, क्योंकि ये शुत्र प्रत्य पेदों की तरह राज्य अभान नहीं, किस्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं बहित ये भन्द जन-साभारण के बोध के किये ही इस समय की कृष्य माणा में रचे गये थे और कृष्य माणा में समय गुजरने के माय-माय अवस्य होनेबाछे परिवर्तन का प्रमाय कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पहला अन्तत उस इस समय के जींगों को समम्बन के लहेश्य से भी, आअर्थकर नहीं है। इसके सिवा, माधा-परिवर्धन का यह भी एक मुस्य कारण माना जा सकता है कि भगवान सहाबार के निर्याण से करीब दो सी वर्ष के बाद (जिस्त-पूर्व ३१०) बन्द्रगप्त के रामस्य भाज म मगज देश में बारह वर्षों का मुदीर्ष अकास पढ़ने पर सामु होगों को निवाह के क्रिए समुद्र-तीर-वर्षी प्रदेश (बक्षिण देश) में जाना पदायां। इस समय वे शुत्र प्रश्नों का परिशीखन न कर सकन के कारण उन्हें मूछ से गए थे। इससे अन्यस के बाद पाटिएपुत्र में संघ ने एकत्रित होकर जिस-बिस सामु को जिस-बिस अब प्रत्य का जो-जो लंहा किस-जिस आकार में याद रहा गया था उस-उस से बस-उस अङ्ग-मन्त्र के उस-उस अंश को उस-उस रूप में प्राप्त कर रवारड अब-भरवीं का संकलन किया । इस घटना से जैसे अक्रमन्थों की भाग के परिवर्षन का कारण समक्त में था सकता है, वैसे इत मन्दों की वर्षमागधी मापा में मगध के पार वर्ती प्रवसी की भाषाओं की तुल्ला में दूरवर्ती महाराष्ट्रप्रदेश की मापा का को अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पना चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से वह बात सिद्ध है कि इसिए प्रदेश में प्राचीन काछ में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ वा तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि एक वीर्पेकादिक अकास के समय साधु खोग समुद्र-शार-पर्वी इस दक्षिण देश में ही गए में भीर वहाँ बस्टोंने उपदेश-द्वारा केन धर्म का प्रचार किया था। यह कहन की कोई आवश्यकता नहीं है कि एक साध्यों को विक्षण प्रदेश में एस समय जो भाषा प्रचक्कित थी। बसका खब्की तरह झात हो गया था, क्योंकि उसके विना स्पदेश हारा चर्म-प्रकार का कार्य ने कर ही सही सकते थे। इससे यह असंगव नहीं है कि वन सामुखों की इस नव-परिचित मापा का प्रभाव करने करूठ-स्वित सूत्रों की मापा पर भी पद्मा था। इसी प्रभाव को केटर बनमें से कईएक साधु-स्रोग पाटलिएक के एक सीवन में इपस्पित हुए ये जिससे अहीं के पुनः संकलन में उस प्रमाद ने न्यूनाधिक संश में स्थान पाया वा।

हक्त घटना से करीन बात सी वर्षों के बाद बस्त्री (सीराष्ट्र) और मधुरा में खेन प्रस्मों को सिर्प बद्ध करने के लिए मुनि-स्पेयन किए गए में, क्योंकि इन सून-मन्तों का और वस समय वक्त बस्य को जैन प्रस्म रचे गए ये उनका मी क्रमरा' विस्तरण हो जब वा और यदि वही वहा कुछ अधिक समय वक्त बालू खुरी हो समय जैन ग्राह्मों के स्नेप हो बाने का बर वा ला बालव में स्पा पा ! संमयत इस समय वक्त नि साधुओं का मारवार्ष में क्योंक प्रदेशों में विस्तार हो जुका था सीर इन समस समें से से कलाविक संस्था में आकर साधु खेगों ने इन संगठनों में योग-बान किया था। मिला प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो मन्य अववा मण्ड के क्या दिस क्य में प्राप्त हुखा वक्षी क्य में पूर्व सिर्प-बद किया गया। वक्त मुनियों के मिला-मिला प्रदेशों में चिर-कास तक विचारने के कारण वन प्रदेशों का निका-मिला प्रदेशों से

त्वसाजों द्वा और विभिन्न प्राप्तन माराजों के स्थाप्तां का कुक्क न कुक कालक्षित प्रमार बनके क्यान्तिया धर्म-मार्कों की मार्ग पर भी पढ़ना क्षतियार्थ वा। यही बारण है कि ब्रोन-सन्दों में, एक ही अङ्गम्भाव के क्षित्र सिक लेता में ब्रीट व्यक्ति की एक ही स्थान मार्ग के एक ही वाहम में परस्वा के प्रमार के एक ही वाहम में परस्वा आप के एक हो की भी भाषाओं के समान के स्वाप्त के स्वप्त के स्वाप्त के स्वप्त के स्वाप्त के स्वप्त के स्वप्त

बहाँ पर प्रसंत-बच्च इस बात व्य प्रक्रेल करना विशेष प्रशीत हांचा है कि समावार्यन सूत्र में निर्देश कंग-मम्प-सम्बन्धी विश्व कीर परितार का वर्गमान जहा-मन्त्रों में वही-बही को बाबा-बहुत कमरा विशेषार कीर हास पामा काल है जीर अह-मन्त्रों में हैं बात के बाबा हम्मों के और बाद की फिनाओं का वो बच्चेल हाहिमांबर हांचा है वसका समावान मी हानके करा सम्मोकनों की करनाओं से कव्यक्षी तवह पिक बाता है।

्रें सत्त्वाराह्म सूत्र क्वाज्याप्रकारि सूत्र कीपपालिक सूत्र कीर प्रकारचा सूत्र में तथा क्वाप्याय प्राचीन जैन प्राचों में विस्त भाषा के मनेमापानी नाम दिया गया है, स्वानाङ्गासूत्र और खतुष्पाङ्गास्त्र में तिस्त भाषा के 'ऋषिभाविता' क्या वक्ष्यान्यों और सर्थ (आदियों को भाषा ) संकार की है जह क्सुत पक की भाषा है क्यांस्त कर्षमानात्री, ऋषिभाषिका संद के कीर आपे वे तीनों एक ही आषा के मिकनियक स्वस है, विवसे साख्य क्रांसके इस्पीच-स्वान से और

और आपे वे तीनों एक ही आपा के निकर्नमां समा है, विवाने पहला करके करापि स्वान से और बादी के दो बस आपा को सर-प्रकार साहित्य में न्यान देनेबाओं से सन्तरण रकते हैं। जैन सूत्रों की साय यही शर्क सामती, न्युपिसापिता वा आपे हैं। जावार्च हेमजब्द ने अपने प्राकृत-स्वाक्त्य में जावे प्राकृत के को स्वयुप और स्वाहरण

१ सम्बाद्धाः सूत्र यत्र १ मे १२१।

```
्. 'चहा पसननाय कान्य वाहारहेलां ( सालकाशीत सुन १ १—नव १६ )।
श्रेणी स्थानित दृत तथ पृथ में गीवा विकासनाय ।
प्रेणी स्थानित दृत तथ पृथ क्षा कारमाय दृष्ट वर्षीय वीरपारित पृष्ट क स्था ।
प्रेणी स्थानित दि तथा प्रकास कार्यो । कार्या वा नाता वाहित कारों । विकासी १ केम्पा । क्ष्या सं सद्धाराह्य कार्या मानी कार्या कार्या कार्या कार्या कार्यो ( स्थानकारवित १ केम्पाराह्य कार्या मानी कार्या कार्या कार्या कार्या ( स्थानकार्या १ — व्यव १२) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ( कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ( कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या ) ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
प्रवाद कार्या कार्या कार्या कार्या ( कार्या कार्या ) ।
```

"वार्वोदयनार्वनुम्बं च विश्वयं बाहतं विदुर्ग (विश्वयव्यवश्चावीस्य शहा काम्यवर्वतीस्य १ ११ वें बसूत विश्व हुवा वर्वात है।

बरमंत्राप्टेन दिग्रश्ते नक्षण इस्तिमासिता ॥<sup>३</sup> (स्वातासुन्त ४—नव १६४ )।

वरमेरकीम किम्मेवे पक्षवा इसिमासिम्य ॥" ( स्मुकेक्प्राध्नुष, एव १६१ ) र

-बादमा नाममा चैम मलिएँयो होति बोर्टिश्य मा ।

६ देवो, देवचन्त्र-बाहतच्यापरश्च ना सूत्र ह ६।

बताय हैं जनसे जय" यत पर सी पृष्टि माल्यमाय (है प्रा ४ २००) इस सूत्र की क्वाक्या में जो वैपार वेशस्त्रमञ्जानर भाग्रामित्य इवद मुत्ती" हत्यानित बार्यस्य धर्मयावकायानियतत्वयानाम्य बुद्धेस्तर्यत्र प्रायोजस्त्रय विवागात, न कत्यमाल्यक्यस्य यह कद्मर तसी के अनत्यत् जो ब्राविक्षिक सूत्र से ज्यूत 'क्या यात्रक्यह, से जारित निवान्य" यह बवाहरण दिया है तससे कत्तर तमा निर्मियात निवाह होती है।

बॉ केब्रोमी ने प्राचीन जैन पूर्जों की भाषा के प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री नाम विना है।" बॉ विराह ने क्यने सुमिद्ध माइन्ट-क्याकरण में बॉ केब्रोमी की इस बात का सममाण आंवन किया है और यह सिद्ध किया है कि आपे शीर लवेमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है यद प्राचीन जैन पूर्जों की—गवा और पद्म दोनों की माया परस्परात्त मत्र के अनुसार क्येंमागधी हैं। परस्ती काल के जैन माइन्ट मन्यों की माया अरुपात में कार्यमागधी हैं। परस्ती काल के जैन माइन्ट मन्यों की माया अरुपात में कार्यमागधी की कीर अभिकांत में महाराष्ट्री की विरोपताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती हैं। परस्तु माचीन जैन सूर्जों की सापा के, तो गौरसेनी आदि मायाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक सास्य रक्तिती हुई मी, अपनी उन अनेक क्षासियतों से परिपूल है जो महाराष्ट्र शांवि किसी माइन्ट में हिंगा का पत्नी होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) माम नहीं दिया जा पत्ना

पंडित वेषरतास अपने गुजरावी माहत-क्यारहण की मास्तावना में जैन मृत्रों की अर्थमागभी भाग के माहत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की किष्क पेया करते हुए डॉ लेकोबी से भी हो करन आगे वह गय हैं, क्योंकि डॉ लेकोबी सन इस मापा को प्राणीन महाराष्ट्री स्वाहित्य-निक्क महाराष्ट्री से युरावन महाराष्ट्री स्वावत है विव पेयरहास महाराष्ट्री माणाओं के इतिहास बानने की तिनक भी प्रशाहन रक्षकर, आर्थाणन महाराष्ट्री से इस प्राणीन अर्थमागभी को अभिन्न सिद्ध करने या रोई हैं। पंडित वेषरहास ने अपने सिद्धान्त के समर्थन में सा

निष है इक्कें के श्रे के वे लिएकां में भारत संस्कारों से कराम होन के कारण क्का महत्त्व न रखती हुई भी क्ष्युट्य-अनक अवरय हैं। चन वक्षकों का सार्या पढ़ है.—(१) जर्बमाराची में महाराष्ट्री से मात्र वी बार क्यों के दी विदेशा। (२) आवाय इंमकान का इस मात्र के जिए खतन अवाकरण या शीरतेनी आदि की तरह अल्या अल्या सूत्र म बनाकर माहत (महाराष्ट्री) जा आये माहत में ही इसके अल्यात करना (३) इसमें मानची मात्र की करियम विदेशकारों का अमान। (४) निश्चेष्ठ क्षिणेकार के जर्बमाराची के होनों में एक नी ब्लाय की इसमें करनाति। (१) माचीन जैन मान्यों में इस भाग का भाइत अल्या है कि हैं। (६) नान्य-शास्त में आहरान क्याकरणों में निर्देश अर्थमाराची के साद्य प्रस्तुत करनेमाराची की अस्माराना।

१ मानकी मापा में श्रकारान्य प्रीतिम सम्ब के प्रकश के एकनचन में 'ए' होता है र

१. इतका सर्व यह है कि आचीन सावासों से "पुराना तुम अर्थमावयी आवा में लियत है" हरवानि क्वन-डारा आई वाला हो वी सर्वमावयी प्राचा नहीं है वह प्राचा मानवी माना के इसी एक एकारवानी विवाल को लेकर, न कि साथे कहे वालेपाले मायवी साथा के स्पन्न सक्तल के विवाल को लेकर।

है इसी बचन के बाधार पर जी, हानींस का चएक-हरा आहरतसराए के हन्द्रोडकरान ( १८ १४ ) में यह निश्चना कि हैमचन्त्र के मठ में 'पोप्पाय' सर्वे आहरत का एक नाय है, अब-दूर्ख है, क्योंकि यहाँ यह 'पोप्पाय' यह मुन का ही क्रियाय है, माचा का नहीं।

४ धावरबक्तून के गारिहाननिकामका ( है जा पू फंपव ६२८ ) में यह व्यूतं बाना इस तरह है — 'पुन्नावरपंत्रुतं वैरापकरें सत्तवर्गवर्धाः । योग्यायक्षमात्ह्यासारिकारं हवड पूर्त ।''

<sup>\*</sup> Kalpa Sutra Sacred Books of the Bast Vol. XII

Crammatik der Präkrit-Sprachen 16 17

वैदे याचार्य हैमका ने काने प्राहत-बाकरण में महावारी भाषा के को में प्राहत राज्य का अयोग किया है नेते वीवत वेबरदाश
 की काने प्राहत-बाकरण में जो केवल हैमावारों के ही प्राहत-ब्याकरण के बालार तर रचा बचा है सर्वक तर्महीतक महावारी के को ही प्राहत राज्य का व्यवहार किया है।

प्रवस वसीस के बचर में इसे यहाँ अभित्र अदने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त में महाराष्ट्री से कर्पमानची की किरोपवाओं की जो संविद्य सूची वी गई है वही पर्वाप्त है। इसके कविरिक्त हॉ कतारसीवास की 'क्षर्यमागर्या रीवर मुनि भीरत्नवभूजी की जैन-सिद्धान्त ब्रीमुदी' बीर वॉ पिशक का 'प्राकृत-क्याकरल' मीजूद है। विनर्ने क्रमरा' व्यपिकांचिक र्यवया में अर्थमागांची की विज्ञेचलाओं वा संबद् हैं। जानार्य हेमानम के ही प्राट्य-स्वाब्धण के 'जार्यम' मुत्र से इसकी स्वयः और सर्व-मेह-आही ज्यानक ब्यावमा से जीर जनह-जनह किए हुए आर्च के सोत्रहरण करकेवों से दूसरी रक्षेय की मिर्मुक्ता शिक्ष होती है। वहि बाचार्य हैमचन्त्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई हो-यक विदेशकार्जी के बारण चुडिअपैशाची अस्य भाषा मानी वा सकती है अववा आठ-इस विशेषताओं को सेअर शीरसेनी भागभी और पैराची मापाओं को सिम-भिन्न मापा स्थेतार करने में आपश्चि नहीं की वा सकती, तो कोई नजह नहीं है कि तसी वैपादरण के द्वारा प्रदरान्तर से व्यथन स्पन्न रूप से बताई तुई वैसी ही बतेक विदेशताओं के कारण आपे या वर्धमागयी भी निम माप्र न कही बार I वीसरी वृक्षेष्ठ की बड़ यह भाग्त संरक्षत है कि 'बही मापा वर्षभागमी कही जान याग्य हो सकती है जिसमें मागयी जाया का बाबा अंग्र हों। इसी भाग्य संस्कार क कारव बीधी वृक्षीत में सब्भूत निरीमवृधि के क्षर्यमागाची के प्रथम समय का सस्य और सीवा कर्ष मी कक्ष पंश्वितत्ती की समझ में नहीं लाया है ! इस भाग्त संस्थार स निराक्तम भीर निर्शतकार्णिकर द्वारा बनाय हुए अर्थमागर्थी के प्रथम क्रमण का और वसके बास्तविक सर्थ का लिएँस इसी प्रकरण में आगे चलकर आर्थमागयी के मूछ की आखायता के समय किया आयगा जिससे इम दोमों इसीक्ष्में क क्सरों के ने हरियों ने नार्या अवस्थिता नहीं है। पीचवी इस्तेष्ट भी प्राचीन साचारों के हारा जैन सूक-मन्दी के माया के बच्चे में प्रयुक्त वर्षों दुस्तर से आवस्थिता नहीं है। पीचवी इस्तेष्ट भी प्राचीन साचारों के हारा जैन सूक-मन्दी के माया के बच्चे में किस हुस समझ्य सम्बन्ध के 'महाराष्ट्री' के चार्च में सहादन से ही हुई है। आवस पहना है, मंडितकी ने चीचे अपन् म्बाइरच में 'प्राइत राष्ट्र का करक महाराष्ट्री के किए रिवर्ष कर रक्षा है वैश्व सभी प्राचीन काचार्यों के 'प्राइत' शुन्त को भी हे एकतात्र महाराष्ट्री के ही क्षये में मुक्तर किया हुआ समस्त बैठे हैं । परत्तु यह समस पस्त है। माहत क्षय का मुक्त कर्य है प्राहेरिएक करन माना – क्षेक माना। माहत शब्द की बहुतर्शन भी बास्तव में इसी बमें से संगति रहती हैं यह इस पहले ही अच्छा दरह प्रमाणित कर चुने हैं । जिस्त की पार शताब्दी के काशार्य दक्की ने अपने काव्यावसी से-

'वीरतेनी व बीसे व बासे नात्या व तारती । बादि त्राह्यपिक्षेत्रं व्यवद्वारेषु वंतिविन् । (१ ६४) ।

१ 'आर्पे प्रकृत' बहुर्षम्मति । त्रापेत स्वास्थानं कर्तनेष्यातः । आर्थे दि कर्ते दिवजो दिकस्थानो '(६ का १३)। १. देखो, हैमनवासाइत व्याप्तरक्षा के १ ४६। १ १६०११ वट ११९० १ १९८, १ १९८) १ ५९०० १

१९४० २ १७। य २१: २ ६ ७ १ १ १ १ ४ २ १४ १ १७४ ३ १९२ धीर ४ १०० पूर्व की व्याच्या । अलावा वा कलेबीमां वनस्मित्री आहर्य ज्ञानको मुख्य की स्मृत्या वास्त्र की स्मृत्या कार्य की स्मृत्य की स्मृत्य कार्य की स्मृत्य की समृत्य की स्मृत्य की समृत्य की स

४ 'महाराष्ट्रभगो धार्च तहर्ष्ट तहर्ष विश्व" (कामावर्ष १ ६४)।

सोक-माणा के ही अप में ही किया है। आचार्य वच्छी और हेमजन्द्र ही नहीं, बहिक खिल्ल की नवरी राजारति के किया सामाजिक , नामाजिक , न

"सम्बद्धा पावता चेव बुद्धा मण्डियो साहिया । सरमञ्जातिय पिक्चते पसला स्थितासिता ॥"

इसका राज्यार्थ है—"संस्कृत और प्राक्त के से प्रकार की कायार्थ कही करें हैं, याने काले स्वर-समूह (वर्ष-समूह) में कियारिया—पार्य काया प्रश्न है ।" यहाँ पर प्रकारण है सामान्यता गीत की माया का । कर्तमान समय की दाह वस समय मी सामी मायाजों के निर्मेश करता ही सुजकर को लाज़ित है है जो कहाँ ते संस्कृत—ज्वाक-पार्य इस सामा और प्राकृत—ज्वाक-पार्य इस सामा है ने सिंह करता है सुक्त हमाया इस हो प्रमार के सिंह के सिंह करता है सुक्त माया में पहले गीय की मायाजों के सामान्य कर से निर्मेश कर साम मायाजों में यो प्रमार में किया है । इस दाय कर सामान्य कर से निर्मेश कर सामान्य कर से मायाजों में यो प्रमार में यह किया का से निर्मेश कर सामान्य कर कर सा

बैसे वीद्यपूत्रों की मागधी (पाकि) से नात्य शाक या प्राक्ष्य-स्थाकरणों में निरिष्ट सागधी मिक है वैसे जैन सूत्रों की अर्थमागधी से नात्य-साक की या पाकृत स्थाकरणों की अर्थमागधी भी अक्षम है। इसमें बीद्यपूत्रों की मागधी माट्य-साक या पाकृत-स्थाकरणों की मागधी से मेल न रकते के कारण वैसे महाराष्ट्री न की बाकर मागधी की आणी है वैसे कैन सूत्रों की अर्थमागथी माथा भी भाष्य शाक्ष या पाकृत-स्थाकरणों की अर्थमागथी से समान म होने की बाक्ष से ही महाराष्ट्री न कही बाकर कर्यमागथी ही कही जा सकती है।

१ 'पस्तो सश्च्य-वंदों पाडम-वंदोवि होद सुत्रमारो' (कर्पुरमध्यरी शक्क १) ।

२, 'बूरकेम्परि प्राष्ट्रकारीन तमा प्राष्ट्रकोगापात रा: (काम्यासञ्चार-रिम्पल २, १२) ।

६ प्रविधानेन प्राप्तवायामा (-(काम्याक्ट्रेनीका १ ६६), 'वाहरीस्वर्गन केसनानोपनस्तिता सर्वा एव पाचाः प्राप्ततंत्रसीम्बन्ध इति पूचितम् (काम्याक्ट्रेनीका १ ६६)।

सरद-चित बड़े बाते नाटम खाझ में दिन सात आपाओं का बरलेल है सनमें एक अर्थमागनी भी है। हसी मान्यरास में शटकों के नीकर, राजपुत्र कीर कोई इन पाने के क्षिप इस आपा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है। इससे मान्यरास में शटकों के जो आपा है वह अध्यागायी बड़ी जाती है। परस्तु नान्हों की कांध्रेगापनी शीर जैन सूत्रों की माटकों में इन पानों की जो आपा है वह अध्यागायी कही जाती है। परस्तु नान्हों की कांध्रेगाएं सी सिंह करी अर्थमागार्थी में परस्पर समानता की अपांचा हतना लिक अन्ह है कि वह पक हमारे से सिंह करी

नारकोय वर्षमान्या स परस्पर स्थानना क्रमण क्रमण क्रमण से सामर्था आप के समय बताकर नहीं तरकोय वर्षमान्या नहीं कहे। जा सकती | माकेकेंद्र में से प्राप्त प्रकृत क्रमण क्रमण के समय बताकर नहीं क्रमण के पूर्व में वर्षमानाची आपा का यह सक्ष्य कर्षी है— तीरकेना बहुएचाहित्सनार्यमार्थी के तिहर है वर्षमाण के सिक्ट-वर्षी होने के क्रमण सामग्री ही वर्षमानाची है । इस स्थान के स्थाननार उन्होंने क्रक साम्य-शास्त्र के वस वसन को बहु पूर्व किया है, जिसमें क्रमानाची के प्रयागाहै

जस इस पहते वह जुड़े हैं, जेत पूजों के व्यवसायों में इतर आयाओं की अपका सहाराष्ट्री के कहण कािक हैं। किन्तु वह बार रकता वाहिए कि में कहा वाहिए का महाराष्ट्री से की व्यवसायों में तहीं आने हैं। इस अ करण वह है कि जेन पूजों की कांग्रेसायों आया खाहिए क सहाराष्ट्री आया से लिकि मार्चन हैं और इससे बहा वह की बही। (कोंग्रेसायों) अहाराष्ट्री का मुख्य कही का सकती है। है होती के तक कांग्रेसायों। अहाराष्ट्री का में करने का सकतायों के हैं। अहाराष्ट्री के सर्वस्थायों के हैं। अहाराष्ट्री की स्वावस्थायों का महत्त्र कहार इसीका परवर्श काल में स्वावस्थाय करने मार्चन में सामाराष्ट्री की सामार्चन का महत्त्र का

प्राचित है सीरसभी मायाओं का मूळ माना है। प्याचार्य हेमचन्द्र म चरात माइन्ट-ब्याइन्टण में महाराष्ट्री सम में इस प्राकृत कर सामान्य माना के एक माया के बच्चा दिए हैं तीर उनके बदाहरण सामान्य तीर से अर्थानीन महाराष्ट्री-सादित्य से कार्युव किन हैं। यरणु वहीं कार्यमायकी के प्राचीन तक मन्त्रों से बदाहरण किय हैं कहाँ इसके आर्थ माइन्ट का विश्व नाम दिया है। इसके मतीत होता है कि साचार्य हेमचन्द्र से भी एक हो भारा के मार्थन कर के आर्थ माइन्ट कीर सर्वाचीन रूप के महाराष्ट्री मानते हुए आर्थ माइन के महाराष्ट्री का सक स्टीकार किना है।

तारकीय कपमागणी में मागधी माग के कहन किकीश में वारे काते हैं इससे मागधी से ही कईमागधी मार्च की सपीत हुई है चार केत सुनों की माग में मागधी के कहन अधिक न तिकों से यह कर्ममागधी बहुकारे योग्य नहीं कर जो भाग संत्रार वर्द कोगों के सम में जमा हुआ है, सबस मुख है वर्षमागधी शाब्द की असमी सामा के अभीव

१ "प्रावस्परितातं प्राच्या तुरनेव्यवैद्यावयो । शाहीरा राविकाला च रूत वादा प्रवीविका<sup>त</sup> (१७ ४व) ।

१ चिटारी राजुनारहा पंक्षिणा वार्यकारथीं (भारतीय राजनाता निर्धायनारधीय तीवारहा १७ ६ )। बारोरहा ने साने स्वारण्य में रह विकार में तरहा का नाम चेत्र को नक्प अनुस्त किया है तरह रह तरहा है—"एक्फी-स्वे किनेन्द्रमार्थियोजार्थी देशी स्वयन्त अप सम्बन्धान का होता है।

३ आर्वकांत (इन्ड १ ३)।

<sup>¥</sup> संधितवार (क्षत्र वे≅)।

४, देवों सन्तर्गतर नह करी "बाररण" शीर 'स्वन्यकावर्ष' में ब्यातः वेद तथा वेदी की साथा शीर सूक्त के 'मुख्यक्रिक' में वेद शीर पारी करकरात वी मार्चा।

<sup>(</sup> It thus seems to me very elser that the Prikrit of Chands is the ARSHA or ancient (Forana) form of the Ardhamagadh Mahhrashtra and Baurasen;" (Introduction to Prikrita Lakshama of Chanda, Page XXX.

में महण करना, अर्थात 'बार्य सागभ्या' यह ब्युस्पत्ति कर 'जिसका अर्थाश मागवी मापा वह अर्थमागधी' ऐसा करना । मस्तुदः वर्षमागर्थी राज्य की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह वर्ष ही। अर्पमागर्थी शब्द प्रवेगावणी राज्य की की बास्तविक व्यास्तवि हैं 'अध्यमगध्यमेयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध केश के अर्थाश

की जो भारा वह कार्यमागकी'। यही बात जिस्त की सातवी शताब्दी के प्रत्यकार श्रीजिनदासगणि र्सगत-भूरमचि महत्तर ने निशायकुर्णि नामक घन्य में 'पोशाएगडमामहमासानिययं इवह मुर्त' इस एस्लेख के 'अर्घमागम' दाब्द की ब्यासमा के प्रसङ्घ में इन १पए शब्दों में कहा है - "मक्तुवनिधवशासानिवद चढनागह" आसान मागन देश के आर्थ

प्रदेश की भाषा में निक्य होते के कारण प्राचीन सत्र 'अर्थमागर्थ' कहा जाता है ।

परम्तु अर्पेमामाची का मूछ करवत्ति स्थान पश्चिम भगव अथवा भगव और शुरसेन का सन्धवर्ती प्रदेश (अयोध्या ) होते पर भी जैन वर्षभागधी में मागधा और शीरसेनी भाषा के विशेष क्रमण बन्तने में नहीं बाते । बहायाच्ट्री के साथ ही इसका अधिक साहरूप नजर आता है। वहाँ पर प्रश्न होता है कि इस साहरूप च कारण क्या है ? सर पियसैन न अपने प्राकृत सायाओं के भीगोकिक विवरण में यह रिवर किया है कि जैन अर्थमागमी सम्परेश वेत प्रयमानकी का (द्वरसेन ) और ग्राम के सम्मवर्ती कहा (अयोग्या ) की मापा थी एवं आधुनिक पूर्वीय हिन्दी समसे प्रतिति स्वात मीर इसमा हुई है। दिन्तु इस देवान हैं कि अर्थमागर्थी के बसुणों क साथ मानायी, शीरसेनी और प्रसका 'महाराष्ट्री' के आयुनिक पूर्वीय हिन्दा का कोई सम्बाध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्री प्राष्ट्रत और आयुनिक मराठी भाषा के शांच शाहरय का नायण साम वसका साहाय अधिक है। इसका कारण क्या ? किसीन अभीतक यह डीक्टडीक नहीं बनाया है। यह सम्मद है, जैसा इम पार्रासपुत्र के सम्मस्त क प्रसार में जपर कह भाव हैं, क्लूगृत के राजस्यकान में

( किस्त-पूर्व ३१० ) बारह बर्पों के लगाड़ के समय जैन सुनि-संघ पाटडीपुत्र से वृक्षिण की आर गया था ! इस समय बर्टो के प्राप्त के प्रसाय से अंग प्रन्यों की आपा का इस कुछ परिवर्षन हुआ था। यहां सहाराप्टी प्राष्ट्रन का आपे प्राक्त क साय साहरम का धारण हो शकता है।

सर आर. जि. भाग्डास्कर जन अर्थमागनी का करावित-समय क्रिस्तीय द्वितीय क्रवाच्यी मानते हैं। इनके मह से कोह भी साहितियर प्राकृत भाषा जिल्ल की प्रथम या द्वितीय शतान्त्री से पहले की नहीं है ! शायद इसी मत का अनुसास कर वॉ मुनीविद्यमार पटर्जी न अपना Origin and Development of Bengalee Language नामक प्रसाद में ( Introduction page 18 ) समस्त नारकीय प्राकृत भाषाओं का कीर जैन अर्थमागर्यी का उत्पत्ति

उत्प<del>त्ति-स</del>मय काल किस्तीय वृतीय शताच्या रिवर किया है। परमु जिनेग्द्रम् से प्रकाशित मास-एचित को साते नाटकों का निमान-समय अन्तर जिल्ल की धूमरी शताक्त्री के बाद का ल होन से और अध्योग-कर बीय-धर्म-विपाक माटकों के जो कविषय अंश हों क्युक्स न प्रश्निति किए हैं बनका समय किस्त की प्रथम श्रुताम्या निमित्र होन से यह प्रमाणित होता है कि इस समय भी जाटकीय प्राकृत आपाएँ प्रचक्ति भी ! और वॉ स्पूडर्स ने यह सीक्षर किया है कि अध्यपोर के लाटकों में जैन अर्घमागर्धी भाषा क निर्देशन है। इससे जैन अर्घमागर्धी की प्राचीनता का यह भी एक वियाल प्रमाण है। इसके अविरिक्त, डॉ न शेकी जैन सूत्रों की मापा कीर मकुए के शिलाकेंगों ( क्रिस्टीय सन ८३ से १७६) की मापा से यह अनुमान करते हैं कि कर अंग-मन्त्रों की अर्थमानकी का काल क्षित-पूर्व चतुर्थ शतान्त्री का रोप माग अधवा जिल-पूर्व वृतीय शतान्त्री का प्रथम माग इ। इस डॉ जेडीवी के इस अनुमान को ठीक समस्ते हैं जा पारसियन फे उस सम्मक्षन से संगति स्वता ह जिसस उद्धल इस वुर्वे कर खुक हैं।

संस्कृत क साथ महाराष्ट्री क जा प्रधान-प्रधान भव है, बनकी संशित सूची महाराष्ट्री के प्रकृत्य में हा जायता। यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्थमागर्या की को मुक्त-मुक्त किरोपताएँ हैं करता संश्वित सूर्था ही जाती है। उससे कर्य सागर्या क समुजी क साम अहाराष्ट्रा क समुजी की तुसना करन पर यह चप्या तरह ज्ञात ही सकता है कि महाराष्ट्री की अपना अधीमानधी की बेदिक और सीकिक संस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्थ मागर्पा की माचीनता का एक श्रेष्ठ मनाम कहा जा सकता है।

au-ir

१ दो स्वरों के मध्यपर्ती असंयुक्त क के स्थान में प्राय: सर्वत्र व और अतक स्थलों में व और व होता है जैसे---ग--जरूर = बदान बारद = बारद, बाराम = बायान जरूर = प्वारा बायद = सारव रिवर्गंड = विरुवन निरोत = सिनेदर सोक म सीवा धारति - धावर ।

- हा—साराज = स्वायहर (इंग्लेश्य जन ११७) बागारिक = वायरित (ठा १९२) विषुष्टिक = विगुष्टित (ठा १९२) विषेठ ज स्रीहर (ठा १९१) राष्ट्रीयक — सार्वाजत (ठा १६१) नेतरिक = सेरावित (ठा १६७) वीरावित = विरुक्तिण (ठा १६७) वर्षीय = वर्षीत (डा १६०) नेरियक = मेरावित (ठा १६६), ग्रीशेष = सीर्गतत (ठा ४२०) नरकार = मराति (डा ४१०) केर्युरीयक = क्षेत्र वित (ठा ४२६) सम्बुल्येस्स = सवस्त्र तेरी (निमाक्ष्य — च्या ४१०) मार्गत्रक = सार्वित (ठा ४२६) केर्युरीयक = क्षेत्र वित (ठा ४१६) सम्बुल्येस्स = सवस्त्र तेरी (निमाक्ष्य — च्या स्व — स्वर्गत क्षेत्र = नोति वर्गीय हो वर्गीय वर्गिय ।
- शे श्रेनों के बीच का कर्समुक्त प्रायः कायम रहता है। कर्मिन्यमें इसका ए और व बोता है। जेते—यात्म = यायम वास्त्रम = पायमछा राष्ट्रमानिक = पायुगानिय, सार्यनिक्यु = भागमित्स वापर = वापर, सवाणि = प्राणि, भवन्य = वापर परित = प्रतित (दा १९७) सावर = वापर ।
- कार्य प्रियम क्षारंत (छ. १६०) स्वार व्याय । व शास्त्री के बीच के कार्यमुख्य के और व के स्थान में त कीर थ कार्य की होता है। व के त्वाहरण, जीते—नायच = साराज (छ. ११०) कपक् - वर्षा (छ. १६ ४४.) अवचन = वावरण (छ. ४११) क्याबित = क्याटी विचा १ १ है-वावना = वामसा कर्मार = क्वाय ओव = कोश क्षाया है = क्यायित । व के कुछ निवरीन से हैं--- केविन - केविट (चूप २, ६ १) वक्त = विटा (छ. १३०) युवा । युवा (छ. १६०) प्रवेश -- प्रतीवर (छ. ४६०) वावनम = व्यावे (विचा ४ १८) प्रवाद = व्याव क्याव्याय कावन्यव्याय क्षाव्यात ॥ १९४२ ।
- श्री सक्तों का सम्यवर्षी ए श्रीवा वायम खारा है कही-कही इसका व होता है। यदा—वन्यों = वंबीर जमस्यित = नर्वेबीर, पद्भागारे = वन्युवाराति (त्रूम २ क निया—वन ६) नियोग्य = विविद्या (त्रूम २ ६ ६) यदाय = करति (त्रूम २ १ ६ ६) सक्ति = कर्यात (त्रूम २ १ ६ ६) सक्ति = कर्यात (त्रूम २ १ ६) योग्यात = वार्ति व्यक्ति = क्यात (त्रूम १ विव्यक्ति = क्यात (त्रूम १ विव्यक्ति = क्यात (त्रूम १ विव्यक्ति = क्यात (त्रूम १ व्यक्ति = क्यात व्यक्ति =
  - 4. वरों के बीच में लिए व कर व स्वीर त हो अधिक्रमा में देखा जाता है कहि-क्री म भी होता है, सैसे— इ—मध्यः = प्रियो (चाया) भेद = नेद, समास्ति = फर्लावर्ष (पूज २ ७), स्ता = वदराख करीत = स्वारित कम्पर = वस्पर-

(निपा पत्र ४) इस्तावि । य—जीवन्द्रासन = पविन्यकाल क्तुनार ≈ बङ्ग्यस वर्गसङ्ख ।

- इ. वो स्वरों के सम्बंधी लिखत व के स्वाल से प्राय सर्वत्र व वो होता है, यवा—सम्बंध अवस्त, संवर्षत्र = संवर्षत्र सेन्यार = सेन्यार, स्वित्रस्य अवस्थात करणीत = उन्होंन सम्बन्धन = सन्योत्वरस्य करवृत्य = जनहर स्वाहित्य = मार्नेष्य-सम्बन्धन व्यवस्थातिक व्यवस्थातिक प्रश्वासि ।
- स्वरों क मध्यपर्वी व प्राप कावम प्याचा है, बनड स्वानों में प्रसन्न व देखा जाता है। बैसे—

- ८ दो लारों क बीच के व के स्थान में व त. और व हाता है। जवा--
  - व---वास्त्र -- वास्त्र भीरत = वास्त्र प्रवित = कार्य, सनुविकित्स = सनुवीति (सुध्र १: १ व १९) इस्पावि ।
  - च—नरिवार = वरिवास कवि = विति (ठः चय व्यवहः १२० ११४) इत्यावि । स—वरिवर्तन = चरित्रहुण वरिवर्तका = वरित्रहुणा (ठः १४१) वरित्रह ।

- १० शास्त्र कं ब्याह सं, प्रस्य में और संयोग में सर्पेत्र ए की वर्ष्ट्र न भी दोता हूं। अस निश्चनई ब्राह्मन = नामक स्थाना च व्यवस्थान व्यवस्थ व्यवस्थान व्यवस्थान प्रकाण व्यवस्थान व्यवस्थान किया विस्तृ सर्वेद्ध व्यवस्थान १स्याह।
- ११ पर सामू क स्थान में साम द्वावा है। स्था—सामेर = बादेर कायेर = कायेर शिववेद = किलानेत प्रमेर = प्रामेद पूर्वेद = दुम्लानेत ११वादि ! १२, दोर्च स्टर प्रामाद प्राप्ति का स्थान में कि वा और द वा द्वावा है। जैस—एत्यह दिव वा = द्वाद कि वा द्वादे द
- १२. शर्म स्टर क बाद क रोज वा कर स्थान में कि वा और द वा दोता है। जैस— एउयह रिज वा ≪ रेटम है कि वा रेटम है। वा हरवादि।
- १३ यस चीर बारन शब्द ए व व से छोप और व दोनों ही इस्स जात हैं। जैसे-ध्वास्यात = धहरवाय यवाजात = धहाराय व्यक्तान = वहत्यावर वावस्था = वायस्य = वायस्य = वायसित ।

#### वर्गागम

 गय में भी अनद स्थानों में समान क उत्तर शब्द क पहल व आतम दोला है, यथा— निर्वालयों का कार कैहंतरर एन्ट्रन्तर कोलना आमाध्यमध्या अवर्ग्यनगृतस्य बहुत्त्वपुत्र आहि । बहुत्तापुत्रे क यथ में पादपूर्ति के लिए ही वहीं बही मुआगम हैर्य जाता है, तथ में नहीं ।

#### शहर-भर

- १ अभागापी में पनी प्रमुद शब्द हैं जिनका प्रयोग सहाराष्ट्री में प्रायः उपबन्ध नहीं होता; यथा—धरन्यीयर धरनीर बागा क्युपेति, भायबान, भावनेतन कारणाव्यु सारीकम कार्ट्य, केत्रताच दुण्ड, वर्षायिक्त वाडदुवर्ष दूर्यावीक्त सोरेक्ष बहुतिवहतित्वा वर्ष विका दृशादि ।

अभवारधा	मदाराष्ट्री	अपमागर्पा	महाराष्ट्री
যদিয়াল যাতিত	धारतसम् पात्रेपस्	तन्त्र (शन्त्र) तेर्गस्य	वण्य शिर्णाम
कारणां देश देश देख देश देख देशका भ्रम दिस्स स्व कारणा जिल्ला (कार) रितास (कार)	वधारता प्रदर्शि व्यवधि विशेषा वेश्य विष्य विष्य विषय विषय विषय विषय विषय विषय विषय विष	दुवन्तमंत्र शेष ति <sup>*</sup> ऽद निष्य पद्मिष्य पप्पेदस्य पप्पेदस्य प्राप्त प्रोपेद्य प्रोप्त प्राप्त प्रोप्त प्राप प्राप प्राप प्राप प्राप प प्राप प्र प्राप प प्राप प प प प प प प प प प प प प प प प प प	बारहेव द्वाप टिप्प (एधव श्रमु राग्छ श्रमु श्रम श्रम द्वाप द्वाप स्रम द्वाप स्रम द्वाप स्रम
	7.44	R-11-7	مماده

<b>अर्च</b> मागपी	म <b>श</b> ायप्ट्री	<b>वर्षे</b> मागभी	महाराष्ट्री
मिनल्यू, मेण्ड	मिसिन्ध्य	सीमाण पुतास	मधास
बर्ग्स	भाषा	नुग्रिक्श	<b>হি</b> নিশ্ব
बाइला ( ज्यान्द् )	चनासमा	सुक्षम सुक्षम	escrit.
सदेग्य	स्याच	वीधि	सुद्धि

भीर, इरामग बारत तेरन धारहाबीता नतीस परातीस इत्याल तेपानीस परावाल सक्ष्याल एकड्रि बावट्वि तेपद्धि, अन्दि हरबाँट श्रहतुर्गाट, बावतांट पर्वतांट, सतहतांट, तेवाबी, स्वयमेट, बावहर प्रभृति । संक्या-शब्दों के रूप अर्थमानाभी में मिनते हैं, सदाराज्य में पंसे मही।

#### नाम-विमक्ति

- १ अर्थमानको में पुंक्तिन मधाना उत्तर के प्रथम के एक्वचन में भाग सर्वेत्र ए और स्वक्ति से होता है। स्टि महाराष्ट्री में मो ही होता है।
- मजमी रा एक बचन स्ति होता है जब महाराष्ट्री में मित्र।
- चनुर्सी कं एक बचन में बाद वा बाते होता है। जैसे —देशए, चक्काव, बनसाव, बद्दाव, बह्वतते अनुसाते, सबसते (स पत्र १९०) इस्पादि महाएएटी में यह नहीं है।
- अत इ राष्ट्रों के तृत या के एक्वबन में सा होता है। यवा-नत्तवा, बववा कावना, बोक्सा बनता बन्दुवा महाराष्ट्री में इसके स्थान में कमरा मध्येण वर्ष्ण कारण बोकेल बचेख बच्चुला।
- ५. कम और पान शब्द के तुरावा के एक बचन में पाकि की तरह कमूचा और बम्बुका होता है, वह कि महाराष्ट्री में गम्मय भीर गमेख ।
- व्यर्थमागमी में दर शब्द के पद्मयी के बहुवबन में देनते कर भी देखा जाता है ।
- पुन्तर सन्दर्भ पठी का गरववन संस्कृत को तस्त् तर और यस्तद की पछी का बहुववन सामार्थ सर्वमागणी में पाना जाता है का महाराष्ट्री से नहीं है।

#### भाक्यात-विमक्ति

१ प्राचेमात्रचा मं सुनदास के बहुव वन में हेतु प्रत्यय है। जीते -पुण्यंतु, वर्ण्यंतु, वर्ण्याहतु इत्यादि । सहाराप्रदेशी में यह प्रयोग स्टब्स हो गया है।

#### यात-सम

धार्थमाग शे में भारत्वा, दुश्य पूर्व होत्वारे, दूश, सम्बद्ध होत्वा हुन्य, वहारेत्वा सार्व दुस्हर, विविधा, विधानर, स्ताप्ते, निज्या निज्ञा परिमंत्रमानि नारवाँ पेण्या वक्षण्याद्वि बाह्य अस्ति प्रमुख प्रयोगी में पानु की प्रकृति, मस्वय अपया य रोनों जिल तकार में पाने आते हैं, बहाराष्ट्री में वे किल विका प्रकार के देरी कार्त है।

#### षात्-सरपव

- १ अर्थमागर्थी में ह्या प्रत्यय क रूप धानक तरह के होत हैं --
  - (क) रहा जैस-न्दर्द्ध सद्दर्द्ध प्रसादि इत्यादि ।
  - (1) इता दगाः रगार्तं और दत्तालं यथा—नद्याः विश्वदृत्ताः, वाविताः, करेताः, वावितालं करेतालं स्रयावि ।
    - (ग) रक यथा<del>- दुर्शरूल बाँठल, वर्षिक प्रसृति ।</del>
    - (प) चा धेमे--शिचा राषा, शीवा, शीवा, शैवा परिद्र ।
    - (ह) इसे चया-शरिमांत्रस दुर्णहवा आहि ।
- (च) इत्तर प्रतिरिक्त विज्ञानत्रक निक्रम नविच चंबार, बच्चुतीति नवं, नवन्त चिन्ता इस्तादि प्रयासी में 'रस' क रूप भिन्न भिन्न तरह क पाय जात है। २. नुर प्रत्यव व स्थान में दृष्ण वा दृष्णे माव ब्रायन में ब्याना है। बीले-वरित्तत, व्यध्यतल, बंबुनितल, वरबानितते (निम
- - च्छारास्त्र चानु के त प्राप्य के श्यान में व होता है; अंगे--क्व वड चीतृह बावड छंडूव विवड विरवड प्रसृति है

वद्भित

१ वर प्रस्थय का क्यम क्रम होता है। यथा—धालहुतराष्ट्र, अव्यवचाए, बहुतचाए क्रवतराण् इत्यादि ।

२. मानतो पानतो योगी, हुमिन अववंता पूर्याच्या प्रवाचित्र धोर्यतो वीविद्योः गोरेष्य आदि प्रयोगों में महुर् स्रीर सम्य तदित प्रत्यवों के वसी रूप बीन सर्पमागणी म वस्त्र जाने हैं, महाराष्ट्री में वे मिस तरह के हात हैं।

महाराष्ट्री से जैन बर्पमाग्यी में इनके बांतरक बीर भी बनक पृक्ष मेंच हैं, जिनका वस्तम्य विस्तार-मय से यहाँ नहीं किए गया है।

### (५) जैन महाराष्टी

सैन सूक्ष्मान्त्रों के लिया इवेतान्त्रर सैनों के रचे हुध अन्य धन्त्रों की प्राक्त भाषा को 'वीन महाराष्ट्रा' नाम दिया सामन्तिर्हेत सीर गया है। इस भाषा में वीर्षकर और प्राधीन ग्रुनियों के चरिष्ट, क्यारें, दरौन, तर्क क्यो त्य, सूरोस,

शाहित्य स्तुति भावि विभयों का विज्ञास स्माहित्य विद्यामन है ।

प्राह्नत के प्राचीन वैवादरणों ने 'केन पहाराष्ट्री' वह नाम देवर किसी मिल माना का वस्त्रेक नहीं किया है। किसू बाहुनिक प्राव्यत्व विद्वानों ने क्याकरण, कारूम कीर नाटक मन्त्रों में महाराष्ट्री का की रूप देवां जाता है उससे देनेतान्वर बैतों के माने के आपा में दुख दुख पार्थवन देख कर ६एका 'यन महाराष्ट्री' नाम दिना हैं। इस भागा में माहत-क्याकरणो में बताये हुए महाराष्ट्री भागा के क्ष्मण किरोप हम से भीवृत होन पर भी कीन अर्थभागधी का बहुत-कुछ प्रभाव इस्ता जाता है।

र्जन महाराष्ट्री के कविषय प्रग्य भाषीन हैं। यह द्वितीय स्तर के प्रथम शुंग के प्राकृतों में स्थान पा सकती हैं। पयक्षा प्रग्य नियुक्तियों, पत्रमचरिक, वपदेशमाला अर्थति प्रन्य प्रयम युग की जीन महाराष्ट्री के बताहरण हैं। दृहरकृत्य भाष्य, व्यवहारमृत-भाष्य, विशेषावत्यक भाष्य निशीववृत्य धर्मसंगदणी, समग्रहच्चकहा प्रसृति प्राथ सन्य युग और

, ब्यवहारम् कारण, विशेषाध्यक आरण निशीववृष्य धर्मसंमदणी, समग्रवण्यक्श प्रवृति प्राप्त सम्य युग और ग्रेप-सुग में रावित होने पर भी श्वकी आपा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री क समा है । वश्या राजाकी क्षम के बाद रचे गये प्रययन-सारोद्वार, उपद्यापदरीका, अपासनाहचरिज, वरदेशाहस्य प्रसृति प्रस्ता सी

भाषा भी मार्ग ममस पुरा के की अन महाराष्ट्री के ही अजुरूप हैं। इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ए प्रमय आधुनिक काल में रिपेट होन पर भी धसकी भाषा संस्कृत की बराह, अविप्रापित काल में ही करना हुई भी और यह भी अजुनान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री अन्तर परिवृतित होकर सम्य-पुरा की क्याइन-स्नोप-बहुत महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई हैं।

अर्पनागरी के जो समय पहले बताने गए हैं इनमें से अनक इस आपा में भी पाये जाते हैं। ऐस अभवों में. जिल करा ये हैं —

क प्रस्थान में अनेक स्पन्नों में ब।

२, सम बयअनों के स्थान में यू।

३ राज्य के जादि और मध्य में भी ए की तरहता।

४ मण और मानन के स्थान में कमरा' बहा और काव की तरह बहा कीर बाद भी !

५ समाम में उत्तर पद के पूर्व में 'मू' का आगम ।

प पाप मान देतिन्दार, प्रमण्ण वादि गुहुन नुमिछ कादि राज्यों का भी वस वेस वेस्त्वाय कादि की सद्द श्यात ।

तृतीया के प्रश्वमन में कही कही का प्रत्यय ।
 पाइन्डम, कुन्य प्रमृति भातु-हथ ।

ह शोबा, किया बॅरिनु आदि त्वा प्रस्पय के रूप !

१ का बावर संदूर मर्थाद स-प्रत्ययाग्त अप ।

## (६) बच्चोक-लिपि

सम्राट अशोक ने भारतकों के सिम-शिश स्वानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिक्षाओं में सुद्धाये थे। ये सब त्रिकारोज बस समय में प्रचक्षित शिक्ष-शिक्ष प्रावशिक मापाओं में रचित हैं । मापा-साध्य की कृष्टि से ये सब शिक्षातेसाप्त प्रवासक इन सान भागों में विभक्त किये जा सकते हैं --

(१) पंजाब के शिक्राहेल । इनकी मापा संस्कृत के अनुकृष है । इसमें व का क्रोप नहीं देखा बाता ।

(२) वर्ष भारत के शिक्षकोल । इनकी बापा का मागणी के साथ साहरण देखने में बाता है । इनमें र के स्थान में सर्वेत्र स है ।

 (३) पश्चिम भारत के शिक्कानेला । ये पश्चिमिता की चस साथा में है जिसका पाछि के साथ अधिक समय है। इन तोनों प्रकार के शिशाक्षेत्रों के कबा बदाहरण नांचे दिए जाने हैं जिन पर से इनका शंव अच्छी तरह समस्र में भा स

क्ताहें।				
	संस्कृत	क्यक्तिहर (पंचान)	<b>पीकि (व्ही</b> श)	गिसनार ( <b>इवएत</b> )
	देवामधिकत	वेशलदिवध	bridger	देश में शिवन
	CET*	<b>ঘ্</b> টা	व्यक्ति	धनी जो
	Ent.	_	<del>पूर्वा</del> णि	NAME OF THE OWNER O
	नुष्या	<b>पुरू</b> श	द्वस्था	सुरेका
	न्त्रस्ति	नस्ति, वास्ति	व्यन्ति, गरिद, स्वरा	बासिस

इस शिक्सक्षेत्रों का समय किला-५वें २५० वर्ष का है।

इम शिक्कीकों भी माना की क्यांचि मनवान महानेद की एवं सन्मनता अवदेश की वपरेक्नमाया से ही हुई है।

### (७) सौरधेनी

संस्टब्द-नाट में में ब्राइट गर्बार सामान्य रूप से सीरसेनी भाग में किया गया है। बरवपोप के नाट में में पक ets की शीरसेनी के नदाहरण वाये वाते हैं, वो पाक और कशोक्षकिए की भाषा के अनुरूप सौर নিকৰ্মণ पिक्रते कात के माटकों में प्रयुक्त सौरधेनी की अपेक्षा प्राचीन है। मास के काविनास के बीर इनके बार के अधिक नाटकों में सीरसेती के मिसरीय देखे जाते 🖁 ।

वररुचि हेमचन्द्र कमदीसार, अस्तीयर और शार्कण्डेय वादि के प्राह्तर-माकरवाँ में सीरचेनी मापा के असम और

चहाहरण पाने व्यते हैं।

रच्डी, स्टूट भीर बारसट व्यक्ति संस्कृत के अब्बेम्नरिकी ने भी इस मापा का सरसेक किया है।

मत्त के माठ्यकास में सीरसेनी मांचा का बस्त्रेस हैं चन्होंने सदक में नाविका और सक्सियों के किए इस माण च्य प्रयोग वडाया 🖁 ।

मरत ने विष्यक की साथा शक्ता कही हैं। परस्तु मार्कण्डेम के व्वाकरण में प्राच्या मात्रा के की कडाव दिने गर हैं। धान्या माना होत्सेनो के बनसे और नाटकों में मुमुक्त विद्याव की आपा पर से यह मालूम होता है कि सीरसनो से इस माण्य (आच्या) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे इसने या प्रस्तुत क्षेप में बसका सकत सकत सकति म करके **धारतंत** सीरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

रियम्बर क्रेनों के प्रवचनसार, ब्रव्यसंग्रह प्रसृति प्रम्ब मी एक वर्ण, की चीरसेनी सांचा में ही दवित है। कह आया १वताम्बरों की कार्यमाराधी जीर माक्कन-व्याकरणों में चित्रिष्ट सीरसेमी के सिक्षण से बती बुई है (इस de electric भारा को 'जैन सीरसेनी नाम विधा गया है। धैन सीरसेनी सम्पत्ना की जैस सहाराप्टी की अपेशा जैन शरुमागयी से अभिक्र निकटता रसती है और मध्ययुग की बीम महाराष्ट्री से प्राचीन है।

१ "मानिरानां वर्षानां च पूरतेनाविधीक्ती" (काल्याना १ ११) ।

४ "बाल्या रियुपकादीमाँ (भारतवास १ प्र.१) ।

१ हाम ही में वॉ निवुष्त्रकाथ सहैएलंब ने पपने एक ब्रन्टायों तेन में सफेड जमाना चीर हुकियों से यह किस किया है कि मरीन है हम है। न हो । महुन्यक बहुर्य न काम पर हुए हराया जा न वाफ मानत बार हुए क्या व पह किस रेक्स के रिजाने की के बार वे प्रीव्य सिंपार्थक बारा हुए महिल के बहैं पातु के बनाद स्परित के कुरनाई हुए हैं। 2. dee Dr. A. B. Keith s Samskri Drams, Page 87

सौरसेनी सापा की शराचि " सुरसेन देश अर्थात् मधुए प्रदेश से हुइ है !

परस्थि ने अपने अपाकरण में संस्कृत को ही सीरसेनी मापा की मकृति समान् मूख कहा है । किन्तु यह हम पहले हो प्रमाणित कर चुक है कि किमी शाहत भाषा का उत्पत्ति संस्कृत से गई। दुह है । सुतर्ग, सोरसेना शाहत का मूक मी पिक्त या लेकिक संस्कृत नहीं है । सीरसेना और संस्कृत ये होनों ही पिक्त अग्र में प्रमादित सरसेन

प्रकृति पंतिक या लेकिक संस्कृत नहीं हैं। सीरसेना और संस्कृत ये दोनों ही पेत्रिक गुग में प्रवस्ति सुरसेत अवया मध्यदेश की कृष्य प्राकृत माणा से ही धरवझ हुई हैं। संस्कृत माणा पाणिनि प्रसृति के व्याकरण

द्वारा निवन्तित होने के कारण परिवर्तनहीन सुब भाषा में परिणंत हुए। बैंबिक कार का सारसेना ने प्राकृत-क्याकरण द्वारा नियन्तित न होन के कारण कमरा। परिवर्तित होते हुए पिक्के समय का सोरसेनी मापा का माक्षर बारण किया। पिक्के समय की यह मीरसेनी भी बाद में प्राकृत-क्याकरणों के द्वारा अबने आने के फारण संस्कृत की सरह परिवर्तन-सूत्य होकर मृत-मापा में परिणंत हुई है।

भारत्वाप के माटकों में जिस सीरसेनी भाषा के बताहरण मिसने हैं यह अहो अभिषे से सम-सामिषक कहा जा सन्म सन्म या दिवीय शांताकी मालम होता है।

महाराज्ये भाषा के साथ सीरसेनी भाषा था जिस जिस और में भर है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा सहाराज्ये भाषा के जो स्क्षण वतक मक्तण में दिया जायींगे वनमें महाराज्यों के साथ सीरसेनी का कोइ भंद नहीं है। इन भवों पर यह कात होता है कि जनेक स्वकों में महाराज्यों की वपेका सीरसेनी

न्य संस्कृत के साथ पाधनम कम और साहर्थ अधिक है ।

## वर्ज-भेद

- १ स्वर-वर्मी के सम्पवर्षी असंयुक्त व और व के स्वान में व द्वीता दं यथा —श्वत व रचन, वच = वदा ।
- २ स्पर्धे के बीच असंगुष्ठ न का इ ओर न दानों दात हैं। नीसे —नाव = छाव छाइ।
  - र्यके स्थान में स्य और व होता है। यथा—मार्थ≃ घस्य धवा तूर्य≃ सुरव नुवा।

#### नाम-विमक्ति

- पद्मनी क ण्ड्यपन में से और दु य दो ही प्रश्य हाते हैं और इनके योग में पूर्व के अक्षर का दोर्च होता हैं। मधा--दिवाद = विकारो, विवाद।
  - आस्पात
- १ कि और दे मत्ययों के स्थान में दि और दे होता है; जैसे—इवदि, हवदे, रवदि, रमदे।
- भविष्यरश्रक के प्रस्पय के पूर्व में न्य हगता है। बद्या—इविस्तिष, करिस्मिष ।

#### सरिष

१ अन्तर मनार कं बाद द कीर ए होन पर ए का वैक्रीलयक आयम होवा है। यहा—पुष्टम दर्श = ब्रुसे शिर्म- पुष्टमिनी एक्ट एक्ट्र = एवं छेडे, एक्टेंद ।

#### कुत्रस्थ

॰ त्या प्रत्यय के स्थान में का ⊈ख भीर चाकोते हैं। यथा—पश्चित्या≕पडिया,पश्चित्र पडिचा।

द समस्तानुम के "वीतियमस्या (गिर्व य) वैद्ये बीयकर्य विश्वनोतिया । महत्त्व मृत्येत्वा वाका भेषी य मावद्विरहृह् (पन ६१) । इस पाठ पर विश्विद्व शुक्तित्व बोतवर्य निक्कृत सीत्रीरेष्ठ मधुत मुहिनेत्व वाता महि(र हि)दू मावद्विरहृह एत सद्व प्रवस्ता परते हुए सापार्थ मार्थार्थर मृत्येत हैं से प्रत्यापति पाता नामकार स्वावकन के विहार मरेच नौ ही पूर्वण नहार है। वैधियमहर्ष दे साथ के प्रावक्ति के प्रत्य नामकार के वात्र मार्थार्थ मार्थार्थ मार्थिर से एत स्वाव है। विधियमहर्ष ने स्वाव में प्रतिक्रत कर में पर्दृत दिवा है। विधियमहर्ष नहार से वीतियनेत्र मूर्वि से पानार्थ मार्थिर कर स्वावया वी प्रतिव्यवहर्ष नहार, वट गून पाठ की स्वावस्त पर तथा कि स्वावस्त मार्थ पर प्रतिक्रमकार से एत स्वावस्त स्वावस्यस्त स्वावस्त स्वावस्त स्वावस्त स्वावस्

२ प्राष्ट्रवयसाय (१२,२)।

# (8) अधोक-छिपि

सम्राट् अशो ३ ने भारतवर्ष के सिम्न-भिन्न स्थानों में अपने घर्म के उपवेशों को शिक्षाओं में सुदवाने थे। ये सब प्रसम्भन बस समय में प्रचित्र भिन्न-भिन्न प्रावेशिक मापाओं में रचित्र हैं। मापा-साम्य की हिट से ये सब शिक्सनेला? भानन' इन तीन मार्गी में बिभक्त किये वा सकते 🖫 —

(१) पंजाब के शिलतेल । इनकी मापा संस्कृत के अनुरूप हैं । इनमें र का खोप गड़ी बेला जाता ।

(२) पूर्व सारत क शिस्तवात । शनकी सांपा का सागवी के साथ साहरप देखने में बाता है । इनमें र के स्थान में सर्वेद स है।

 पश्चिम भारत के शिक्सकेल । ये प्रक्रियना की वस मापा में है जिसका पासि के साथ अधिक साम्य है। इन दीनों प्रस्तर के शिजाक्षेत्रों के क्रम व्यावरण भाषे शिप जाते हैं जिन पर से इनका भव अच्छी द्वार समास में

६"। संसक्ट	कपर्वेतिरि (पंचाय)	चौकि (जीवा)	निस्तार (ड्रबयव)
देशमधीयस्य	वेचामधियस	वेगार्थीकास	वैनार्गधिक्य
তৰ"	रकी	शिली	কৌ, সৌ
बृका"	_	शुक्रमि	गण्डा
युव्यवा	<b>मुम्ब</b> रा	<b>पुरुषा</b>	पुनुसा
नारित	र्मास्त् वास्ति	वारि, गरि क्या	धारित

इन शिक्षानेलीं का समय किस्त-पूर्व २५० वर्षे का हैं।

इत शिक्सकेकों की मापा की करान्ति भगवान महाबीर की एएँ सन्भवतः बुद्धवेष की चपवेश-भाषा से ही हुई है।

# (७) मौरमेनी

संरक्त-नाट में में प्राप्तत गर्याय सामान्य रूप हा सीरसेनी आया में किया गया है। अस्वयोध के नाट में में पर तरह की सीरसेती के उबाहरण पाने जाते हैं. जो पाकि और अजोक्किप की साचा के अनुक्रम और किटर व पिक्रमें बाद के लाहरों में प्रयुक्त मीरसेनी की अपेशा प्राचीन है। मास के काविवास के और इनके बार के कविक मारकों में सीरसेती के निर्दर्शन वेसे बाते हैं।

यरनिव हेमबन्द्र कमदीरवर, अस्मीधर और मार्कण्डेय आदि के आकृत क्याकरणों में सीरसेती साधा के समय और

चत्राहरण पाने जाते हैं।

था सङ्गी

रण्डी. रहट भीर बारमट मादि संस्कृत के अल्बेकारिकों ने भी इस माया का सक्सेल किया है।

भरत के सान्यशास में सीरतेनी मांग का वन्त्रेस है। वन्होंने नाटक में नायिका और सक्षियों के क्रिए इस मांच

का प्रवोग क्लाया हैं। विविद्योग

भरत ने विरापक की मापा प्राच्या कही हैं परन्तु माईग्डेय के स्वाहरण में प्राच्या सापा के जो स्काय दिये गये हैं प्राच्या भारा तीरकेती के उनसे और माटरों में प्रमुक्त विद्वयक की आपा पर से वह मासूम होता है कि सीरसनी से इस आपा (प्राच्या) का छाउँ विदाय भन्न नहां है। इससे हमन मा प्रस्तुत कोप में बसाया अस्पा बस्तेल स कर<sup>क</sup> प्रकार्यन सीरसनी में ही कालामाँव किया है।

दिगम्बर जैनों के प्रवचनसार, ब्रव्यमंग्रह प्रसृति प्रव्य मी एक तरह को सीरसेनी मापा में ही रवित है। यह माण रवनाम्बरी की अध्यागधी बीर प्राकृत-स्याउरणों में निनिष्य सीरसनी के सिम्रण से बनी हुई है। इस देश की ऐसी मारा का 'जन शीरसर्ना' नाम दिया गया है। जैन सीरसेना सम्बद्धन की जैन सहाराज्यी की अपेसा जैन अध्यामधी से कविक निक्रवा स्तरी है और सम्बद्धा की जैन महाराष्ट्रा से प्राचीन है ।

१ द्वान ही में वो निवृत्तवाध महेरचंद ने बचने एक प्रमुख्ये बैंब में सनेक मनाए और ब्रुटिमों से यह सिक्स किया है कि महीने के रिजानेकों के नान के प्रविद्ध रिजानेस नामाद आसीड़ के बही परन्तु देन कमाद संप्रति के कुरनाम हुए हैं। 2. See Dr A B Keith's Sanskri Drama, Page 87

१ "मानिकानां वसीयो च पूरकेमावियोविती" (बाह्यसास १७ ११) । ४ "मान्या रिप्तकारीयाँ (बाह्यसास १ ११) ।

सीरसेनी भाषा की उत्पत्ति हरसेन देश अर्थात् मधुष प्रदेश से हुइ हैं।

वरहरि ने अपने अपाकरण में संस्कृत को ही धीरसेनी मापा की प्रकृति अपान, मूल कहा है । किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणिन कर चुक है कि किमी प्राष्ट्रन मापा का प्रश्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुवरी, सारसेना प्राष्ट्रत का मूल भी प्रकृत को नहीं है। सीरसेनी और संस्कृत से दोनों ही पैदिक युग में प्रचिक्त स्रसेन प्रवृत्ति के प्रयास प्रचार की करण प्राष्ट्रत मापा से ही वरसम हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणित प्रसृत्ति के व्याकरण हुएस नियन्तित होने के करण परिपत्तिन हीन हुंच पाल प्राप्त नियन्तित होने के करण परिपत्तिन हीन हुंच पुत्र भाषा में परिष्ठ हुं। विदेश स्त्र का सोरसेनी अपान का आक्षर प्राप्त किया। पित्रने समय की यह मोरसेनी अपान का आक्षर पार को स्वर्त्त का के स्वर्ण कर सारसेनी अपान का आक्षर पार को स्वर्त्त कान की वह मोरसेनी भी वाद में प्राष्ट्रत-का माणी के द्वारा जब्द को के प्रस्त्र संस्त्र के तरह परिवर्तन-वान्य होकर

स्व-भाग में परिणत हुई है। अस्वपाप के नाटकों में जिस सीरसेनी मापा के बवाहरण मिलने हैं यह अक्षेचिमी की सम-सामिक कही जा मध्यी है। भास के नाटकों की बीरसेनी का और दीन सीरसेनी का समय सन्मवत किसा का प्रयम पा दिनीय राजाकी माहम होता है।

महाराष्ट्री मापा के साथ सीरसेनी मापा का जिस-जिस औरा में भेर है यह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा करण महाराष्ट्री भाषा के को इस्त्रण उसक मकरण में दिया जातीये उनमें महाराष्ट्री के साथ सीरसेनी का करण के मन नहीं है। इन वेदों पर यह बात होता है कि बनक स्थलों में महाराष्ट्री की अपेड़ा सीरसेनी अब संस्कृत के साथ पायक्य कम और साहरण अधिक हैं।

## वर्ण-भव

- स्थर-वर्जी क सम्पवर्ती असंयुक्त त ओर र के स्थान में र होता हुं; थया —रन्छ = रसर, नत = परा ।
- २ स्वरों के बीच असंयुक्त व को हु और व दानों हात हैं, जैसे-नाव = छाव छाह । १ में के स्वान में प्य और च होता है, यहा-नामें = प्रस्य सबा तुमें = पुस्य सुका।

# ज्ञाय-विक्रक्ति

१ पद्मती क एडव्यमत में से और दु व दो ही मरवव हाते हैं और इनडे योग में पूर्व क अच्चर का दोषे होता है। क्या— कियत = विखाले, विखाह ।

#### भाक्यात

- १ कि और दे प्रस्वयों क स्वान में 🏗 बीर दे होता है। बीसे-इसरि, इसदे, रमरि, रमदे।
- भविष्यत्स्रस के प्रत्यम के पूर्व में रिए खगता है। यथा—इक्षिरिसरि, करिस्पिक ।

#### सरिय

श अन्तर मश्राद के बाद द कीर ए होने पर ए का बैकश्यिक आगम होता है। यजा—पुन्नर दश्य= कृतं छिनं कृत्विमां एक्स् एउद = एवं छेवं एक्मेवं ।

#### कुदन्त

रता प्राप्तय के स्वान में इम दूल और ता दोने हैं। यथा—पठिन्दा =पत्रिय, परिपूर्ण पत्रिता ।

१ समयलामूच के "लीलियमस्या (१ मई. य) नेती बीयमर्स निमुत्तीसीसाः महत्य स सूरनेला पाचा गंगी य सावपूरिकहा" (यन ६६)। इस पाठ वर चिट्ठियु गुक्तिस्था को तीयमं निम्नुपु शीकीरेष्ट्र ममूरा मुरनेलेष्ट्र यात. सहि (१ स्त्रि)पु साम्पुरिकहा" इन तयद स्वत्रसां करते हुए साम्प्रमें समार्थीत स्वर्गात्र के या राज्यसां स्वर्गात्र स्वर्गात्र के स्वर्गात्र स्वर्गात्र के स्वर्गात्र स्वर्गात्र के स्वर्गात्र के स्वर्गात्र के स्वर्गात्र के स्वर्गात्र के स्वर्गात्र कर में त्याप्त स्वर्गात्र के उत्पाद को प्रविक्रमण्य के स्वर्गात्र कर में त्याप्त की प्रविक्रमण्य के स्वर्गात्र कर में त्याप्त की स्वर्गात स्वर्गात्र स्वर्णात्र स्वर्गात्र स्वर्णात्र स

# (८) मागधी

मागधी माइट के सर्वे प्राचीन सिवरीन अशोक-साम्राज्य के बचर और पृत्र भागों के खाससी, मिस्ट, कीरिया ( Lauriya ), सहस्राम, सरकर ( Berthar ), समाह, चौंकि बीर खोगड़ ( Jangadha ) प्रवृति स्थानों के खराक किन्मकेलों में पाये आते हैं। इसके बाद नाटकीय माइलों में मागभी मापा के बदाहरण देखे जाने हैं। बारकीय मरापी के सबैजाबीन समूने अवयोप के बाटकों के खण्डव मंद्यों में भिम्नते हैं। भास के <u>निवर्श</u>य

प्यटडों में, बावियाम के माटडों में भीर स्वयद्भटिक भादि नाटकों में मागभी माथा के दवाहरण विद्यमान हैं ।

बरकि के प्राकृतप्रकाल, चण्ड के प्राकृत्यक्ष्मण, हेमधन्त्र के चित्रहेमचन्त्र (बाहम धाव्याय), क्रमहीचर के सीक्षा-सार, ब्हमीवर की पहमापाचित्रका और माकेण्येत के प्राकृतसर्वस्य आदि माया समस्त प्राकृत-स्थाकरणों में आगानी माण्य के अवद और स्वाहरण दिए गए हैं।

भरत के साठभग्रद में मागधी माण ना बहेल है और उन्होंने माटक में शवा के अम्तपुर में श्रानेवाले, सुरंग कोदनेदाले क्टबार, सम्पासक बगैरद पात्रों के किए और विपत्ति में पायक के किए मी इस मापा का प्रवीग करने की कहा हैं। परम्मु मार्डण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वत्व में डद्भव किये हुए कोइस के "एसर्डाम्युप्रमण्डणेयाचा

मन्त्री महः इस वचन से मात्म होता है कि मरत के बड़े हुए वक पानों के भतिरिक मिहा, हुएवक विवियोच आदि अप क्रोग मी इस भाग का स्पन्धार करते थे। स्त्रट, बाग्यट, हेमकन्द्र व्यदि आक्रंबारिकों में भी अपने अपने

श्राक्री में इस भाग का उद्वेस किया है।

सगम देख ही सागनी भागा का कराजि-स्थान है। सगम देख की सीमा के बाहर भी सकाक के शिक्षातीओं में की इसके निवरीन पाये बाते हैं बसका कारण यह है कि मागवी मापा कस समय शब-मापा होने के कारण मगम के बाहर सी इसना प्रचार हुआ था। सन्प्रका राज-पाया होने के कारज ही माटकों में सकत ही राजा के क्ष्मचि-स्वत अन्तपुर के क्षेमी के किए इस मापा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन मिह्न और क्षरण की मगय के ही निवासी होने से सनमय है जाटकों में इनकी माथा भी भागवी ही निर्देश की गई है।

बरर्फ़िक न अपने माहत ब्याकरण में मागर्पा की महाति-मृत होने का सम्मान सीरसेनी को दिवा है । इसीकी करासप्य इर माक्ष्याय न भी सीरसेनी से ही मागर्या की सिद्धि कही हैं । किन्तु मागर्या सीर सीरसेसी आव मारेशिक भाषाओं का भंद भरतेक के शिक्षतेलों में भी बला जाता है। इससे यह सिदा है कि ये सर् प्राद्शिक सह प्राचीन और समसामयिक है, एक प्रदेश की भाग से वृत्तरे प्रदेश में क्यम नहीं हुए हैं। असे सीरसंग्री सम्पद्धा ने प्रवक्ति वैदिक कुण की कृष्य आणा सं करपल हुई है पैसे मागभी ने भी वस कृष्य आणा

से समा-महण किया है को वेदिक सक में मगब बुंच में अवस्थित की।

सरोक्तरस्त्रे से भीर अध्योप के शरकों की मागनी भाषा श्रक्त युग की मागभी भाषा के निसर्गन है। भास के और परवर्ती बाद के अन्य नाटकों की और माइक स्वाकरणों की सागची सम्बन्धन की सागवी क्रम

मापा क स्वाहरण है।

गावारी शायांकी और शावरी वे तीन मापार्य मागर्थ के ही प्रकार-मेव-क्यान्तर है। घरत ने शावारी मापा का स्पन्नार सवर राक आदि सीर वसी महति के कान्य क्रोगों के लिए कहा है किन्तु मार्ककीय में राजा के साते की माना शाकारी बनावाई है"। अस्त पुक्क आदि कादिवों की व्यवकार-भागा को बाज्याकी और अंतारकार वसाय-

१ <sup>क</sup>मानवी द् बरेण्डाकाना-पुरनिवासिनाम्<sup>भ</sup> (बाटनदाना १७ ४ )।

<sup>&</sup>lt;sup>थ</sup>नर द्वाधनकारीमा गुरुवर रिक्सिसाय । व्यक्ते नाकानी त्यानारमस्तासु मानदी ॥ (दक्षणास १७ ३६) ।

र. "ब्रप्टी चीरतेनी" (बाहरायनस्य ११ २)।

मावदी सीरतेगीत" (ब्राइ-नर्गरन द्वा १ १)।

४ "रामपारी रात्राचेना वास्त्रमारण यो भवाः । राभाग्याचा योच्यमा" (शास्त्रसम् १७ ४३) ।

v. <sup>ब</sup>क्कारापैनं द्वाकारी सहारक

<sup>&#</sup>x27;राजोऽनद्याप्रादा स्थानस्विधवेदनप्र' ।

सरवर्षतारिकारी राजार प्रथि वृज्योग' स्पार्च स्थाखे:" (अञ्चलवर्षस्य 🙊 १ १) ।

राहारी पादि भागों भागों के मार्च करें हैं । इन दीनों मापाओं के जो छम्भण धीर बहाइएय मार्च के मार्च क्या हरण में और नाट में के कर पाओं की मापा में पाये जाते हैं उनमें सीर इटर प्राह्ण-स्था हरणों की मागधी भाग के छम्भण और उदाहरणों में तथा नाट कों के मागधी-साधा-माथी पात्रों की मापा में इटना कम मेद और इटना क्या के इस साथ है कि करू तीन मापाओं को मागधी से खड़ान नहीं सही जा सक्शी। यही कारण है कि इमने प्रस्तुत काय में इन मापाओं का मागभी में ही समाधश किया है।

स्वच्छान्दिक के वाज माधुर जीर हो ब्युवकारों की भागा को हककी नाम दिया गया है। यह भी मागभी भाग का ही एक स्वान्तर प्रतीत होता है। शाईण्डेय न 'हकी' को ही 'टाकी' नाम से निर्देश किया है, यह वनके महाँ पर प्रदृष्त किये हुए एक रहोक से हात होता है। मार्कण्डेय नं प्रतान में छ पुतीया के एक्सपन में ए. प्रक्रमी के बहुषणत में हुए हको वा कहीं बावा कहीं के इस माथा के उस्त्रण विष् हैं उन्तर से हममें स्वपर्भ श का ही विरोध साम्य नजर आता है। इस किए मार्कण्डेय ने वहीं पर जो जह कहा है कि 'इरिक्र' हुए माया को अपभ्र स मानता है'

मागबी भागा का सीरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा जग्य अंग्रों में मागबी बढ़्य भाग सावायाव सीरसेनी के ही जनुरूप है।

## वर्ण-मेव

- र दे स्थान में सर्देश व होता है। यदा-नर मणव कर = कन ।
- र. रा. व और स के स्थान में तास्क्रम स होता है। यथा शोकन = तोहर पृथ्य = पृथ्विशः सारह = स्क्रवर ।
- ३ संयुक्त व सीर स के स्थान में वृत्रय सकार होता है। यथा—नुष्य व शुरका कुट = करत स्वतत व स्वतारि वहस्पति = हुस्सिर ।
- इ और ॥ के स्वान में स्ट होता है। यथा—म्ह = पस्ट पुष्टु = युद्ध ।
- थ् स्व और वे क्री काह स्व होता है, जैसे -- व्यक्तित = व्यक्तित सार्व = क्रत
- ६ व स और स के बदले य द्वीता है। यज्ञा—शामाति = वालांवि दुर्गन = दुव्यस्य थय = सस्य सय = सस्य स्राठ = साहि, स्रय = स्रय ।
- u. स्य दय इ स्त्रीर स के श्यान में का होता है जया—सन्य = सका पूर्वय ⇒पुक्त प्रता = पक्सा सम्बन्धि = सम्बन्धि ।
- ८ अनादि स के स्थान में व होता है। पथा-नन्द = पथ पिन्तान = पिक्ति ।
- ८. इस्ताद् इ.स्थान स.च. हाता है। यथा—गण्ड = यथा पाण्यस = पायस २. इ.सी. तराह स्ट होता है ". जैसे—गक्षात् = सस्या यह = यस्य ।

# नाम-विमक्ति

- १ अज्ञरान्त द्विम्नान्त्र के प्रथमा के एक्यमन में ए होता है। यथा—किन = क्लि पुस्य = पुस्ति।
- २. अग्रयान्त वारत् के पछी का प्रकश्यन सा और बाह होता है। यथा-विमान = निरास विकास ।
- ३ असरान्त राष्ट्र के पछ के बहुबबन में बाख और बाई ये दोनों होते हैं। जैसे-विनानाद = विद्यारण निवाई ।
- ४ अस्मन् शब्द के एकनचन और बहुबचन का रूप इपे होता है।

१ "बाएडामी पुरस्ताविषु । संवारकरम्याकानां काञ्चयन्त्रीयजीविनाम् । मौज्या सवरजाया स्" (नास्वराख १७ ११ ४) ।

२ "प्रवृत्यते नाटमासै श्रेतातिस्यकारितिः ।

वरिष्युविषेत्रे देश तथातृतृश्च वर्षात्वत् (प्राह्मतत् वर्षः दह ११ )।

व "हरिवन्द्रस्टिवर्मा आयामग्रम् ॥ इतीब्द्रति" (प्राष्ट्रतम पुत्र ११ ) ।

Y मार्न-पोम यह नियव वैशीराक साम्रो हैं "रास को वा अवेत्" (प्राक्टास ० प्रत १ १)।

र. हैभवन प्राहत-माक्कण के मनुसार 'था' की वनह विद्वार्त्तनीय '≪क' होता है' देनो है। प्रा ४ २१६ ।

# (९) महाराष्ट्री

माहर बाज्य और तीवि की साथा महाराष्ट्री कही जाती हैं। संतुक्तर, गांधानप्तराती, गण्डकरों, हुमारपाड़बंदि प्रपृष्ठि मन्त्रों में इस साथा के निक्केन पाये जाते हैं। गांधा (गीवि-साहित्य) में महाराष्ट्री साहरा ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त भे बी कि बाद के नाटकों में त्या में सीरसेनी बोधनावालं पात्रों के लिए संगीत वा क्या में महाराष्ट्री मांथा निक्तने वा समस्वार करने का रिवाल सा बन गया था। वहीं कारण है कि कास्त्रिस से सेकर तसके बाद के

सभी नाटकों में पा में माथ महाराष्ट्रों भाग का ही व्यवसार देवा वादा है।

चंद ने सपने माहराज्याय में 'महाराष्ट्रों इस नाम का व्यक्तिय और इसके विदेश व्यक्षण न देवह भी आर्थ-महारा
स्वारा अर्थमानां के बीर जैन महाराष्ट्रों के स्वारां के शाव सामारण माव से इसके व्यक्षण दिए हैं। सप्तांच ने अपने
सादमा अर्थमानां के होंग स्वारा के महाराष्ट्रों नाम का व्यक्ति किया है और इसके विदेश व्यक्षण और प्रवाहण दिए हैं।
सादमार देवनां ने कपने व्याहरण में महाराष्ट्री नाम का निर्मेश न कर माहक' इस सामाराष्ट्र मान से महाराष्ट्री के हैं
क्वा कीर दशाहरण बचाय है। कमनीमवर का संविध्यक्षण विदेशका की माहकस्थाकरणसुम्बद्धि सम्मीय की
स्वाहण स्वाहण कार्य कर सामाराष्ट्रों में स्वाहण-स्वाहणों में इस माना के स्वहण कीर स्वाहरण माने कार्यों है । बेक्नीयक सभी माहक वैयाकरणों ने महाराष्ट्रों का सुक्य क्या के सहराष्ट्री के ही सीर सीरसेनी, मारामी प्रकृति

संस्कृत के कार्क्रमर-शास्त्रों में भी सिक्ष भिक्ष प्रकृत मायकों वा वस्क्रेस विकार है। सरह के नाहम-शास्त्र में 'वाक्षित्रास्त्रा' माया का निर्देश है किन्तु इसके किरोप ब्याव करी दिए गए हैं। संस्कृत व्यक्त महाराष्ट्री माया है। हो सब्दी है, क्लोंक मात से महाराष्ट्री का अक्ष्या वसकेत नहीं किया है। परस्तु माकेत्वेय के प्रकृतकर्वक में बहुबत माकृत्वसिक्र के क्ला में और प्रकृतस्तरेस के सुद माकृत्वेय के बचन में महाराष्ट्री और दाख्रितास का मिक्स मिक्स भागा के रूप में

रुखंब किया गया है। इच्छी कं काञ्यादरों के

'बहाराम्ड्रम्मनां जानां बहुमर्ट ब्राह्मर्ट सिङ्क्ष' । सागरः पृक्तिस्टानां स्मृतम्बर्धाः सम्बद्धः ।(" (१ १४) ।

इस रक्षांक में महायक्टी माम का और बचकी करूकता का राय बक्का है। इसकी के समय में महायक्टी मांक का हाना करूने हुआ वा कि इसके परवार्ती जाने के मनकारी ने केवल इस महायक्टी के ही वार्ष में इस प्राह्मत राज्य की महायक्टी के ही वार्ष में इस प्राह्मत राज्य की महाय का का मानकार को मानकार को मानकार का मानका

वाँ हॉर्निक के तर में महाराष्ट्री माचा महाराष्ट्र देशा में करना नहीं हुई है। वे मानत है कि महाराष्ट्री का वार्ष विशास राष्ट्र की माचा है जीर राजपुतान क्या सम्बद्धा महारि हसी विराख राष्ट्र के व्यक्तरेत हैं, इसीसे महाराष्ट्री इस्तावन्त्रम अपने कई । किन्दु इस्ती ने इस माचा को महाराष्ट्र देशा करेते भागा कही है। वर मिनस्त के मताराष्ट्र में महाराष्ट्री माजान से ही जाजुनिक सराठी भागा करना हुई है। इससे महाराष्ट्री माजान से हा जाजुनिक सराठी भागा करना हुई है। इससे महाराष्ट्री माजान

आचार्व हेमजप्त ने जपने व्यावस्त्र में महाराष्ट्र को ही आहत' शाम विचा है और इसकी प्रवृति संस्कृत कही है। इसी तद्ध वण्ड कहमीबर, माहैन्येस वालि वेशकरणों ने द्यावस्त्र कर से समी प्राइत याताओं का मूर्व (प्रवृति) संस्कृत कामा है। किन्तु हम यह पहले ही बच्ची तद्ध म्यानिक कर बाए हैं कि कोई मी आहत माप्य संस्कृत से करक नहीं हुई है, बविक वैविक काल में मिकसिक प्रदेशों में अवस्ति सामों की कुम्य मापानी

१ "रेर्न व्हाराच्येत्रव्" (शहरात्रकार १२, ६२) ।

२ "महाराष्ट्री रामानती तीरवेण्यांनामती । बह्वीकी यांच्यी प्राप्तरही ता वाविद्यासम्बद्धा ॥" (प्रा. व. इस्त २) । इ. केवी प्रस्तरामनेत्व राष्ट्रा २ छोर १ ४ ।

से 🖁 सभी प्राप्त भाषाओं के क्यपि हुइ है, सुवर्ग महाराष्ट्रा भाषा को क्यपि प्राचीन कड़ के महाराष्ट्र-निवासी आर्थों के कव्य भाषा से हुई है ।

कीन समय आयों ने महाराज्य में सर्थ-अयम तनास किया या इस बात का निर्णय करना कठिन है, परमु आरोक के पहले प्राकृत भाग महाराज्य हरा में अवस्थित थी इस विषय में किसीका मत मेन मही है। एस समय महाराज्य नरा में गेन विश्व अहत से अवस्थित थी इस विषय में किसीका मत मेन मही है। एस समय महाराज्य नरा में गेन विश्व अहत से कमान का किया वाह स्थीकर करना होगा ि महाराज्य मान का कर की तरा है से पहि हो ता वह स्थीकर करना होगा ि महाराज्य में का कान कि सहस्य मुद्दे ने कान कर की किस महाराज्य मान के उद्धान कानी में उपक्रत वर्णों के स्थेप की बहुक्या देखने से यह विश्व का स्थान गया था। बीट का महाराज्य मान है। वरकांच का अध्यक्त स्थान की स्थान पाया था। विष्क महाराज्य मान है। वरकांच का अध्यक्त स्थान की स्थान पाया था। विष्क महाराज्य प्राकृत का प्रमान का इमने पहले करने किया है। महाराज्य माना में रचित का स्था साहिष्य क्षम्य पाया बाता है क्समें ज़िल्त का बाद की महाराज्य के का स्थान की है। महाराज्य माना की साहिष्य क्षमा का से साहिष्य क्षमा महाराज्य के स्थान की स्थान की साहिष्य क्षमा माना की साहिष्य क्षमा महाराज्य की साहिष्य क्षमा माना की स्थान की साहिष्य क्षमान महाराज्य की साहिष्य क्षमान की स्थान के क्षमान का करने का सहस्य में स्थान की साहिष्य का कि स्थान के का का महस्य की साहिष्य का स्थान की साहिष्य का स्थान की साहिष्य का स्थान की साहिष्य का स्थान की साहिष्य का साहिष्य का साहिष्य साहिष्य का साहिष्य साहिष्य का साहिष्य की साहिष्य का साहिष्य का साहिष्य की साहिष्य का साहिष्य की साहिष्य का साहिष्य की साहिष्य करने के साहिष्य करने साहिष्य करने से साहिष्य करने से साहिष्य करने साहिष्य कर

सरत ने नाट्यराक में व्यक्ती और बाह् किये भाग का कल्केस कर नाटकों में वूर्ण पात्रों के किय आवश्ती कर सात्राची भीर बाह के लिए बाह किया का प्रयोग करा है। साईफेंबर ने अपने प्राहरता के कीर युवारी के किए बाह के की मान प्राहर है। साईफेंबर ने अपने प्राहरता के प्रयोग कर प्राहर है। साईफेंबर ने अपने प्राहरता के प्रयोग प्रहर्म कर सामास्त्राया ही। सिंदी मान निर्मेश कर इनका सीकिय कम्मान निर्मेश किया है। माइफेंबर ने आवश्ती माण के जा रवा है स्थान में दूध की स्वादन कर इनका सीकिय कम्मान निर्मेश कम्मान कराय हैं वि महाराज्यों के साथ प्रमास (आवश्ती का साथ के प्रयाग हैं। उनके दिय हुए कियर, वेदन पेन्द्रीय प्रमास की किया माण के जा प्रहर्म के प्रयाग के साथ प्रमास (आवश्ती का साथ क्ष्म माण का वाद की किया है। साथ प्रमास (आवश्ती का साथ क्ष्म माण का साथ का साथ की साथ है। इसके साथ क्ष्म माण का साथ की किया की किया है। साथ साथ की की साथ हमा साथ की का साथ की की साथ हमा साथ की की साथ हमा साथ की की साथ हमा साथ की साथ हमा साथ की की साथ हमा साथ की की साथ हमा साथ की साथ हमा साथ की की साथ हमा साथ की साथ हमा साथ की साथ हमा साथ की साथ हमा साथ की साथ कर की साथ की साथ कर की साथ की साथ

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भाषा के वे मेद शीचे दिए जाते हैं को महाराष्ट्री और संस्कृत के साथ अन्य प्राकृत कवल भाषाओं के साहरव और पार्वक्व की शुक्रना के लिए भी लिक वरपुष्ट हैं।

#### स्बर

- १ अनेक ब्राह्म किल स्वरों के स्थान में जिल्ल-मिल स्वर होते हैं। जैसे—समुद्रि = सार्थिक हैएन = क्षेत्र, अनि = क्षुत्र अस्ता = सेन्द्रा पथ = पोम्म स्वा = वह स्वा = सह, क्ष्यो = मील सार = द्वार क्ष्या = स्वा = वेन्द्र, सार्थी = स्वा चित्र क्ष्यों के स्व चारित्र = प्रा विकास = स्वा = क्ष्या चार = स्वा = क्ष्या = स्व = क्ष्या चार = स्वा = क्ष्या = स्व = क्ष्या = क्ष्या
- २. महाराष्ट्री में ऋ स स, वृ य त्वर सवधा सुध्य हो गय है।
- १ श्र. के स्थात में भिम्न-मिल स्वर एवं रि होता है। यथा—एए = क्य मुद्दक = माउनक, इमा = किया मातृ = मात्र मात्र-चृत्तल = बुक्त मुद्दा = मुद्दा मुद्दा मोता कृत ≐ विट, वेंट बोट ख्यु = कर रिज ख्यु कि टिक्कि ख्या = रिका सात्र = सर्थ = स्वर्थ । इन्छ = सरिय ।
- ८ म दे स्थान में इति होता है। जैसे-न्यंत = विनित्त नतल = विनित्त ।

जैन अर्धमाराची और सैन महाराष्ट्री में प्राचीन महाराष्ट्री मापा का साहदय रक्षित है है

A. ऐ का प्रयोग भी प्रायं महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यत ए और विशावत बाद होता है, पया— शैल = केल ऐपरण - एपरण विद्य - वेब, वेबच्य = वेहन्य केच्य = देवल सहस्य वैद्यास व्यवस्य व्यवस्था व्यवस्था विद्यास केच्य = दर्ग ऐसर्ग = ध्यादिय वैया = दर्गण । इ. मी अ स्ववेदार भी आप अहाराष्ट्र में नहीं है। बसके त्वान में सामान्यतः यो और विश्लेष स्वकों में व वा यर इन्स है। यथा—कीनुष्टे ≈ रोजुर्ड वीवन व कोव्यात वीवारिक = दुवारिय पीकोमी = पूर्वामी। कीरव = वजल नीव = पत्र नीव = सत्र ।

## बसंवृत्तः व्यक्तन

- १ वरों के सप्यवर्ती क सु व व स स, व इन कपक बनों का प्राव क्षेप कोगा है। जैसे क्षमश —कोक कोम नव व साथ श्रुवी = वर्ष एकत = प्रसाद क्यी जहाँ, प्राच क्षमा नियोध व विद्योध वावस्य = वास्म्यतः।
- २. इस्तों के शिव के व च व व और व के स्थान में इ दोशों हैं। यदा कैसरा —काबा क शक्का कावते वाहर नाय = साहर साल = बाह, सरा = स्था ।
  - । स्वरों क बीच केट का अपकोता है; यथा-चड ≔ घड कर = वड ।
- ४ स्वरों के बीच के क का क होता है। वैसे-नड = यह पठति पहड़ ।
- 4. स्टरी के बीच के ह का न प्राया होता है। यहा-मक्त = वक्त शताव = तताता ।
- ह स्टॉ के बीच के स का अनेक स्थल में व दाता है यदा—तिशागत = परिदात अपूर्त = पहार व्यापत = पराह, काला = पराहा ।
- व है स्वान में सर्वत्र ए होता है। यदा—कन्ड =क्छय वका = वस्तु नर एए, क्से व एई, सम्य = प्रस्तु हैम = वस्तु है
   को इसी के प्राप्यकी व के क्की-क्की न और नहीं औं बीप होता है। यदा—एस = स्वक एस न कम क्सर्य =
- ८ हो स्तरी के सम्पन्नों प का कहा-कहा व आर वहा आहा वाप शाग है। यथा—श्यम # स्वर्ष है साप व कार अन्तर म हरसार, दिच्च दिन, कृषि # वहा ।
- ह न्दरों के कोय के ब के स्थान में कहीं नकी म कहीं कही ह जोर कहीं नहीं ये होतों होते हैं। यजा—रेड = रेस, रिग्र = विकास नारक = प्रकार करवा = तक रहा जो रोक्सीयम = वेजाविया। वेप्सियम
- १ स्वरी के मध्यवर्गी व का व होता है। जेसे यसाहू = यसाहू, तस्त = शवस ।
- ११ अराहि कंद का व हाता है। यथा जम जम बत्तक = वस वारि बाद।
- १२. इत्यत के प्रतीय और य प्रत्यस के व का व होता हा। जस-करस्रोय व्यक्तिपाल पेय = देखा।
- १३ अनक जान्द्र र का थ होता हु, धना-वृत्तिः = इतिहर, वीतः = वीतहः वृतिहर = नहदितः संबार := इंपाल ।
- १८ रा और व का सर्वत्र स होता है। समा-रम्न =बह निमान = बीसाम पूका = प्रीस, सस्य = सास श्रेव = सेस ।
- र्रेष्ठ वही रही द. व भीर स स्था व होता है। बसं—धन व व्यव कहार च्या ।
- र वहा रहा के वारत का वाहावा है। सथा—धान का का स्तुर पहुँ पूर्ण कुद्वा।

  श. प्रांड राजों में तर सादिन क्यञ्जन का क्षेप होता है। यथा—धानपुर = पाठन सास्त = नाय कानस्त = कसाथ हुस्य =
  दिन पारतन = पारतक सात् = वा वनारव = वेष्ट्र स्वीतर = नी, वार = नी, वास = केब क्षित्रार = कर्यों, वार्षेत =
  वोद्या मार्य = नीप्ट ।

# संबुक्त व्यक्तन

- १ य के स्थान में प्राप्त व मोर कहीं-कहीं स जोर य हाना है। जीते—वय = वद नक्स = वनक्य वर्षण = प्राप्त संग्राण = कील मील।
- २. ल त इ.सी. रा कं रवान में करी करी कमशः च हा व सीर कं होता है। यथा --वाला = स्वता द्वमा विका विकास - विकास - विकास --विकास --विकास
- रे हुन्द दरर च परवर्गी ब्य. ब. ता कीर का क श्वान में स होता है। जैसे—प्या =प्वस, पवार व पव्या कवार = प्रवस्ति सन्तरा = सक्तरा :
  - र चंदर के 'सर्थि शार वा स्ट्राफरी में 'ऐ' होच है। प्रतंति किया कियो कियो के मत में 'ऐ' तथा 'सी' दा जी प्रवेष होया है- मैंदे—कैंदर = कैंग्रय नीरद ≃ वीरद (है पा है १)।
  - र परार्थि के ब्राप्त-भाकरत के जो ता बर्डम (द ४४) मुंब के ब्रमुवार बर्डम 'में का जा होता है। छेतुबल धीर कर्या-रण्याती में रूपी शर्द बारोंबर 'या' बासा बाता है। देवचक बार्डि वर्ड ब्राइन वेदावरणी के बढ़ से रूपसे के बारि के ब वा रिक्ताय के 'या' होता है बाया-नार्ट मार्टी, गर्दे बार मार्टी, या प्रकार में प्रकार का वेदनियह बताये केवा बाता है।

- ष्ट च स्म सीर म स्म कोता है¦ यथा⊷मध∞ सक्र काय ≃ अव कार्य ≕ कक्ष ।
- थ व्य और सका म दोता है। यथा-व्याव = माण शाव्य = तम्म, पुस = तुम्म शस = तम्म ।
- ६ र् दे झा शाय' ट झाता है, जैसे--शर्तकी एट्टई, केनतें = वेवट्ट ।
- ७ एकस्थान में ठ होता है; यथा-मृष्टि = मृद्धि पुट = पृद्ध काठ = क्ट दए = द्धः।
- ८. भ्य मा होता है। यथा-निम्म = छिएल प्रकृत = प्रमुएल ।
- ह अना ए चीर व दोता है वैसे--जान = खाल काल प्रजा = परला पन्ना।
- १० 📻 दान होता है। जैसे इन्त ≔ इत्य स्तोत्र ≔ योज स्तोक = योग ।
- ११ इम चीर क्य दा व दाता है। यया-पूरमण = बुंपस विवाली = विपाली।
- १२. व्य भीर सर का क होता है। यथा--पूण ≈ पूण्ड शमल = पंत्रए ।
- १३ शुकाव होता है, यथा—जिह्नाः= जिल्ला विश्वतः = विस्ततः। १८ स्य भीरस्य का यहाता है। जैसे—जल्लाइ = वल्य सनवय = सम्बह सुरस ≃ बुस्स किय = किस ।
- १५ श्र म स्म और हा का क् होता है, यथा-कारगीर = क्वहार, शीवन = निव्ह, विस्पत = निव्हत वाहाए = वाहए ।
- १६ झ. का क इ. हुः भीर रण के स्थान में एह होता है। यथा—प्रप्न चप्पट्ट, वच्या = उपह स्थान = यहाल वाह = विष्टु, प्रवाह = प्रवाह तीस्य = तिरह ।
- १७ ह का रह होता है यथा-प्रजाद = पात्राप वहार = रूदार।
- १८. संयोग में पूर्ववर्ती क त द व त त त व त ता व जीर स का नोत होता है, जैसे-पूल = कुत कुण = मुद्ध, पर्पर = छन्म
- चरण = पान, असन = एक्स पुर = मुख्य मृत जिल्ला = छिषण निप्पुर = छिद्दुर, स्वतित = एक्सि । १९ संयोग में परवर्ती म न और व वा छोप होता है। यथा--स्मर = मर, कान = नाम स्वाप = वाह ।
- ें संवाग में पूर्ववर्गी आरं परवर्गी अभी त व कीर र का काय होता है। यवा—स्वा = वहा विकार = विहर = विकार = वह, वह = वह समें = वह = वह = वह =
- २१ संयुक्त भक्षरों ए ध्यान में जो को कादेश ज्यर कहा ह उसका कीर संयुक्त स्थान है लोप होन पर जो जा स्याजन वाकि रहता है उनका यदि यह शब्द के आदि में न हो तो दिल्य होता है। जैसे—सरस करावा नय नमा कुछ- कुछ उन्ना-कका। परस्तु कह जादेश स्थाया श्रय व्याजन पदि वर्ग का द्वितीय क्याया प्रमुप्त प्रभार हो तो द्वितान हरेकर क्याये प्रमुप्त क्याया श्रय क्यायन के कानस्तर यूप व्याजन क्याया होता है यथा—स्याज न क्याया व्याप क्याया है।

#### विश्लपय

१ हैं से के मप्प में भीर संयोग में परकर्त न के पूर्व में स्वर का बागम होकर संयुक्त क्वजनों का विश्लपम किया जाना है। यमा—पर्देष = मद्द कप्दि, सद्दा बार्च = कार्याल, हुर्च = हरिका हिन्न = किस्तु।

#### **च्यत्**यय

९ अनद राष्ट्रों में व्यक्षत के स्थान का कार्यय होगा है। यथा—नरेगू = वरोग वानान = बाखार भगायण = बर्युट्ट हुरितार = हत्तियाद, बदुट = हुन्च ननार = खबन दुख = दुरह, बद्ध = बरह ।

#### प्रशिष

- ममास में की बढ़ी हुम्य स्वर के स्वान में हाथ और हम्ये के स्थान में हुस्य होना है; यथा—धन्तरीर=प्रकारित वीतम = परस्य, बहुत्तत = वीवतमा नरीलेज = रास्तेल ।
- २. स्तर पर रहन पर विश्वर का खोप होता है। जम-निरदेश = विमनीस ।
- संयुक्त स्पष्टन का पूर्व श्वर हुना होना है। जैसे—बास्य वस्त्र कृतित्र, कृती =कृत्रत् कोन्य वस्त्र व्यक्तिक्य, सीतीयत करितृत्वत ।

#### सम्पि-निर्मय

१ प्रमुख ( स्पापन वा क्षेत्र हान पर चवशिष्ठ रह हुए ) श्वर का पूर्व श्वर का साथ प्रायः सध्य प्रदी हार्वा दे। या-स्थानर = विकास, रक्षेत्र = रक्षाचित्र ।

- २. यक पर में स्वरों की समित नहीं होती हैं। जैसे —पाव = पान, वर्त ≕गड, वरर ≕ स्वयर ।
- १ ६ ६ चीर क की चसवान स्वर पर रहने पर, साम्य नहीं होती है। यथा-वायीव वववाती क्हावेरी।
- श्र कीर की की प्रवर्ती स्वर के साम समित नहीं होती है। यथा—को पावनी, पानीकामो एवित ।
- श्रास्थान के त्यर की सन्धि नहीं बोता है। वैसे—तेह वह ।

#### धारा-विश्वविद

- अस्तराज्य पृक्तिम शुरुष के प्रक्रमणन में को दोता है। औमे—निवर > निक्षी पृक्का = वच्छो ।
- २. पद्मती के एक्वबन में थी जो व. हि और तीर होगा है भीर ती-भिन्न अन्य प्रस्पतों के प्रसंग में आग्रर आ ध्यानर होता है। जैसे--विवाद = विकासो, जिलायो विकाद विसाहि विका ।
  - वकारी में बहुतकान का प्रस्वव तो हो न और वि होता है। एवं तो से अन्य प्रस्वव में वर्ष के ब का मा होता है में क प्रकार में द भी होता है। यथा – विखती विखानी, विलाव विखानि, विलेकि।
- प्रकार के ग्रह्मचन के प्रस्तुत के स्थान में दिया और बहुवबन के प्रस्ताय के क्यान में दिया और देश इन स्वतन्त्र गर्मी का भी प्रयोग होता है, यथा--विवान = विका दिती। निषेम्य = निका दिली, विके दिली, किया संती विके देती।
  - वटी के प्रश्रवन का प्रयुव का होता है। यथा -- विख्या वर्षका ।
  - अस्तान शास्त्र के प्रथमा के एकवचन के इस तम यांग्य यांग्य के है यह और बहर्व होता है ।
- थ. अस्तम शुरु के प्रथमा के बहुबक्त के कप चन्न, वन्ने, वन्ते, वो वर्ष बार वे बीता है ।
- ८ अस्मन राष्ट्र के पटी का बहुबबन से हो, परव, प्रमु, कई बाई बन्हों बनहता बनाव कार और परवास होता है। ९. याचान सारह के पाने का पक्रपका वह व वे तुनहें हुई, वह, वह तुन तुनी, तुनाह हि है, ह, यू सुनन दुनहें तुन्हें क्या बन्द पन्य कीर क्या होता है।

## **कि<del>श्र</del>-**स्वस्थय

- १ में महित में वा सन्द केवळ पुंक्ति है जनमें से वईपड सहराष्ट्रा में कोकिंग और तपुंसक लिंग भी है, समा----------बहुद्दी वच्छा पुरवृष्ट - प्रका पुरवृष्टी देश = देश देशायि ।
- अतं 3 जार सास्ति के स्थान में पुष्टिम दोता है, यदा-एल = दरमी, प्रावृद = पाक्ते, वियुता = विश्वृता :
- संस्थान क चानेक अध्वाज्या शब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुंखिन चीर ब्रोकिंग में भी होता है। यदा-करा = करे. तम्ब = बामो, वर्डि = वन्द्री कुठम = विद्री और्वव = भोरिया ।

- डि और वै प्ररक्षमों के व का साथ होता है, जैसे —हमांद = हमाद, हसरा रखते = रमद रसर ।
- २ परमिपद् और भागतपद का विमाग नहीं है, महाराष्ट्री में सभी पात बमयपदी की तरह हैं।
- भुत्रभाव के सम्मन अध्यान और प्राप्त विमाग न हाजर एक ही तरह के क्या होते हैं और मुख्यान में आक्यान की जगह त-प्रयमम्ब कुपूरत का है। प्रयोग अधिक होता है।
- मित्रपन्-वास के भी संस्ट्रत की तरह करतन और मित्रपन पेसे को विमाग सही है।
- श्रवि परमाध क प्रत्यभी क प्रदूछ हि होता है यमा-हनिव्यति = हतिहर, करिव्यति, = वरिक्रिक ।
- बनेतान बाउ के, मॉबन्बरहात के और विधिनींत्रम और आशार्थ के प्रत्यवों के स्थान में कर और क्या होता है, वया-दम्ब इतिप्यति इतेत् इत्या = इतेत्रव इतेत्रवा ।
- w. माथ भीर कर्म में देव और दल प्रत्यय होने हैं, बजा-इस्तते = हवीयह, हरिका ।

## क्रमण

- शोकायभैक तु-प्रश्वय क श्यान में दर होता है, यथा क्यु = व्यवर, नवनग्रीव = व्यविद ।
- दे शा-अस्पव क स्थान में नुष्य वृत्त नुष्यात और या हाना है असे--विद्या-विद्या-विद्या परित्रका परित्रकाल परित्र तरिश्य
  - १ तर प्रस्यय क स्थाम में स और करा झांना है, यथा---देवरव -- देवस, देवरात :

# (१०) अपमंश

स्वपन्न श्र मापा के निर्दान विक्रमोर्गकी वर्णानुष्य खादि नाटक-मन्यों में, हरिकानुष्य वक्रमार्गय (स्वयंमुदेपकृत)
किरोन केविकाकम् वेनवर्णनये वहापुष्य कीवर्णक काण्डुनारपंति काणकेत, पार्वेद्रस्य पुरस्तिकारिक
सर्वेद्रस्य कार्येद्रस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य कार्येद्रस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेह्यस्य वर्णदेशस्य वर्

बाँ, हॉर्नेलि के मत में जिस तह आये कोंगों की कथ्य आपाएँ क्षनाये कोंगों के मुक स नबारित हान के कारण हारि की समय है जीर समय कर को भारण कर पानी भी बहु पैराकी आपा है और यह कोई मी प्रावृश्चिक आपा कर पानी भी बहु पैराकी आपा है और यह कोई मी प्रावृश्चिक आपा कोंगे कि मान आपाओं के प्रभाव के जिन न्यान्यों के आप हुद वो वे हा सिक-मिन समय सा आपाएँ हैं और ये प्रशृश्चिक कराक्ष अधिक प्रभाव में किन न्यान्यों के आप हुद वो वे हा सिक-मिन सम्बार आपाएँ हैं और ये प्रशृश्चिक कराक्ष अधिक प्रभाव में किन न्यान्यों के अपार्थ मारित्य और स्थावरण में नियन्त्रित होकर जन-साभारण में अप्रवृश्चिक हान क करण जिन नृत्तन करण आपाओं की उत्पत्ति हुद या वे ही अपार्थ हा है। ये अपार्थ शा-सामार्थ रिक्तिय पद्धान कराव्य के हान कर सामार्थ है कर सामार्थ में क्ष्य हात कर सामार्थ है कर सामार्य है कर सामार्थ है कर सामार्थ है कर स

१ बीपैपियानो गानीयोँ "गोर्स नियानं" (लामा २ ४ १)।

<sup>&</sup>quot;एनएगरीमी" (निया १: २ वस १६) । "योजीय वीका" (न्यवहारमूच च ४) ।

र "मोर्श्वी" (प्राप्तवनाय २ १६) । ३ "मोलास्य" (हे आ २ १७४) ।

४ "बाबीचरिल्टः काब्देक्सब्र'श इति स्तुताः ।

राम दु चेन्द्रवारम्बराध्र शत्रवेतितत्" (१ १६)।

कार्य क्रय्य भाषार्गे हैं । इनका बराधि-समय जिला की मलवीं या इसवी शताबदी है । मुतर्ग, अपभाग्र भाषार्थ किता की मन्नम शताब्दी के पूर्व से क्रेक्ट नक्दी या दशकी शताब्दी पूर्वन्त साहित्य की मापाओं के रूप में प्रचटित की । इन बपभ स भागाओं की महति वे विभिन्न प्राहरु नागाएँ हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपन्न शों की उत्पत्ति के पूर्वप्रक्ष में प्रवस्थित थीं । भेव क्षपद्भेश के बहुत भेव हैं प्राकृतपन्त्रिका में इसके ये सताईस भेव क्वाये गए हैं }

"द्वाचरो बाटवेदर्गामुगनागरमानरी । वार्वराधनरमगठनाबटाव्यमालवकेवमा ।। ग्रीडोड्ट्रेक्सम्बरम्यर<del>्जकोत्यतवेँह्याः</del> । कासिक्ष्वान्यनासुटिकारुव्यस्पितवीर्नेयः ।। द्यानीरी मध्यवेशीयः सुवसमेवस्थानिकता । सन्तविशतकराम् रत्न वैद्यानाचिमयेवतः ।।

मार्कण्डेय ने बपने प्राष्ट्रस्थक्ष्य में प्राष्ट्रस्थान्त्रका से सताईस अपभ्रंशों के जो सम्रण और स्ताइरण स्ट्रपृत क्रिय हैं । वे इतने बपर्यात और वस्तार हैं कि सुद मार्फेडन ने मी इनसे सुस्म कह कर नगण्य क्वापे हैं और इनका पूजानुसम् क्रमण-मिर्देश म कर बच्च समस्त क्रपन्नेशों वा नागर जावड और बपन्नमर इन तीन प्रधान भेवों में ही अन्तमांव माना है । परना यह बाद मानने योग्य मही है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिल आपाओं का कर्याच-स्थान जिल्लामिल प्रदेश है भीर जिन्ही प्रकृति भी सिम्न-सिम्न प्रदेश की सिम्न-सिम्न प्राकृत भाषायें हैं तब वे अपश्रीम भाषायें सी सिम्न-सिम हैं। हो सच्ती हैं और बन सब का समावेश एक बूसरे में नहीं किया जा सकता। बालव में बात यह है कि वे समी क्षप्रमंत्रा भिम्न भिम्न होने पर भी साहित्व में निकह न होने के कारण पन सब के निर्दर्शन ही बनकम्ब नहीं हो सकते हैं। न्सीस प्राइटच द्रिस्स्यर त वतके त्या शचय ही इर पाये हैं और न तो क्याहरण ही अधिक है सके हैं। यही करण है कि मार्डियों ने भी इन मेही के सूक्त करकर टाक दिवे हैं। बिन कपार्थरा मापाओं के साहित्य-कियर होने से निहर्कन पार्थ बाते हैं बनके करूप और बहारण व्यावार्य हेमचन्द्र ने केवक अपधार के सामान्य नाम से और मार्ककाय ने अपभीरा के क्रीत क्षित्रंच मार्सी से बिये हैं। आजारी हेमजरह ने 'अपन्न क' इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने मानरापन्नेया' इस यान पारक करना को सामन और बराबरण विने हैं ने शांत्रस्थाना मानवार या रावपूर्णना तथा राज्याद प्रमेश में किए की सामिता है। कियो साम से जो ब्रासम और बराबरण विने हैं ने शांत्रस्थाना मानवार या रावपूर्णना तथा राज्याद प्रमेश में कारकीरा ह ही संक्रम राज्ये हैं। मानवारकीरा के नाम से सिम्थायेदेश के वार्यक्ष के क्षायण और बहुत्रस्थ प्राकृत्येथ ने क्षपने म्याकरण के दिये हैं आर चपतागर अपन्रेश का काह करूण न देवर चेवल नागर और जावह के सिमल की 'चपतागर अपन्रेस' कर है । इसके सिना सीरसेनी-अपन्रेश के निवसन मध्यवेश के अपन्रेश में पाये वाले हैं। अस्य बान्य प्रदेशों के समया महाराष्ट्री अर्थमागबी महाबी और पैदाणी भाषाओं के जो अवभ्रंत में बाब कोई साहित्य बपडम्ब त होत से केई निवर्शन भी नहीं पाने जाने हैं।

विक्र-विक्र अपन्न श जाया का करपत्ति-स्थान भी भारतवर्ष का मिक्र मिक्र महेरा है। स्तर ने सौर बाग्सर ने व्यपन अपने शब्दकार-प्रस्थ में यह बात संचंप में अयब स्पष्ट रूप में इस तरह बड़ी है --

"क्टोक मृरिनेधी देखनिरोपारपत्र"तः (कान्यासङ्गर २ १२)।

"मंत्रमं तर्नु वस्त्रम् वर्णाहेनु व्यक्तिन्" (गामस्याद्भार २ १)। क्रित्त की एक्पम राजाको के पूर्व से क्रेक्ट वरान स्वाब्दी पर्यन्त भारत के जिल्लानाम प्रदेश में कस्य भारामों के प्राथमिक बार्म कम्प कप में प्रचित्तत जिस जिस अपकास भाषा से मिल-मिल प्रदेश की को साञ्चलिक सार्य कम्प मानार्धी के बर्गत आपा (Modern Vernacular) स्त्यम हाई है समग्र विकास को है --

मानेदोगान्दर्भावः (श्रा ॥ १९७ १२२)।

१ वंशीवसाहित्यग्रीरक्त-पश्चित्रः १६१७ ।

२ "शहरो रशर मधानावरीयमानराविभ्योक्ष्यारातीययः । द्वांना मानगै । गारीबारताः शाम्याती । चारावा वेदर्ये । चंत्रीयमान्य सत्ये । देशपेरापत्रका चौदी । वर्गाना वैनेनी । धनाताका नीदी । उदारशहका कीन्द्रती । एवएप्रिटी के पाएका । प्रचाना सेंद्रती : विक्ता नानिया । अच्या तर्देशीयमायास्य । न(न)प्रतिसद्द्रनाठकोशी वर्तानिसर्देशाद स्टलाटी । यस्परेशीय तरेगोराक्स । चंत्रकाम्य च पीर्वेरी । चकाराई पुर्वेष्टरकमारायक्षत्र । साचित्रको स्वरदेश गामासा । रेच स्पर्वेन वाविदी । द्रशास्त्रका नेतानिनी । एगोनाता राज्यी । शेवा देशशासीनोतात ।'

के 'नावरी कामरबीरनावरहवेति ते नय । यश्च ता वरे बुक्मनेक्स्तात प्रवहः नता'" (त्राः सः प्रवहः ह)। 'पद्मवेदानगम ही'

सहाराष्ट्री-अपर्धरा से मराठी और कोंक्यी मापा l

मागधी अपन्नेत्र की पूर्व शासा से बंगछा तकिया जीर जासामी भागा ! मागधी अपनेत्र की बिहारी भागा से मैचिक, मगही और मोजपूरिया !

मागभी अपन्नरा की विद्वारी ज्ञाना स नायक, मगद्दा आर भाजपुरया । अर्घमागमी अपन्नरा से पूर्वीय हिन्दी मागाएँ कर्षाम् अत्रधी, वर्षेकी और छत्तीसगदी ।

धौरसेनी-अपस्था से मुन्तेची कन्नीजी, जबभापा बाँगरू दिन्दी या वर्ष ये पाबास्य दिन्दी सापाएँ

नागर अपर्धरा से राजस्थानी, मास्त्री, मेबाइ। जयपुरी, मारवादी वर्षा गुजराती मापा।

पाकि में सिंहची और साख्वीयन ।

शकी भवना दाका से सहपत्तां या पत्रिमीय पत्रानी ।

टार्क:-अपन्न श (सीरसेनी के प्रमाय युक्त) से पूर्वीय पंजाबी !

मापड अपर्धश से सिग्धी मापा।

पैशापी-अपनेश से घरमीरी मापा।

erent

मागर अपन्न स के प्रधान खराण ये हैं --

## वर्षे-परिवर्रं न

श्रीमनिम्म स्वरों के स्वान में शिक्ष क्षित्र स्वर होते हैं। यदा —क्ष्य क्षय व ववन विश्व वीष्ण वाहु = वाहु, वाहु: वाहु = वहां निष्ठ क्षया क्षया व विष्ठ वीष्ट वाहु = वाहु, वाहु: वाहु = वाहु, वाहु = वाहु

२ स्वरी ए सम्बद्धी असंबुक्त क व त, व थ ओर क के स्वान में प्राय कपरा व थ व व अशेर म द्दोवा है क्या— विच्येरकर = विच्योक्तर लड़ = स्व कवित = कविर, ताव = तवय तकत = त्राव !

अतादि भीर असंयुक्त म के स्वान में मैठल्यक सानुनासिक व द्वारा है। यया -- क्यह = क्यंच क्यच अवर = अवर, सन्तर ।

४ संयाग में परवर्ती र का विकाय से बोप हाता है; यथा—प्रिय = पिय प्रिया चन्त्र = चन्त्र ।

रे. यही-कही संबंगि के परवर्ती व का विक्रम्य से र हाता है। जैसे—स्वास = बाग बाग व्याक्टरण = बागरण वानरण । ६ महाराष्ट्री में तहीं गृह होता है बहीं अन्त्र श्री में भीर मह नोगों होने हैं। यथा— श्रीव्य = पिन्हा स्क्रेष्ट = विन्दा रिक्त ।

## नाम-विमस्टि

- १ विभक्ति के मसंग में हुन्य स्वर का दीभ और दाये का हुन्य प्राय होता है। पया—स्वायक = डायक खड्ना क्यायक हिंदु=चिद्विः पूर्वी = पृतिः।
- साभारतन माने त्रिमिक क ज प्रत्य है व न च दिय जात है। किंग में में और शब्द भद में अतेफ क्रियाप प्रत्य भी हैं की फिलाए-अब से बहाँ नहीं दिय गए हैं।

		प्रमुचन		ચદુવચન
	त्रवर्गा	र, हो		
	क्रिकीया			•
	<b>पु</b> तीया	4		হি
	বসুৰ্যা	पु. हो, ह्य		£ .
	पत्रचमी	t. s		· y
	व्ही	गु. ही स्मु		હે
	चतनी	ष वि		Τέ
			भाषपात-विभक्तिः	
		एकवधन		यपुरुषन
7	1 2	4		
	२ द्व	E <sub>t</sub>		ř
	1 10	₹, ₹		t fg

- २ सम्मम् पुरुप के एक्ष्यकर में आकार्य में इ. व भीर ए होते हैं यथा--दुव=करि, कर, करे।
- सविष्यत्काक में प्रत्य के पूर्व में क आगम दोता है; यदा—प्रविष्यति = होतह ।
- लाव-प्रयास के स्वान में इसकार एकार और वना होता है। वना—नर्राण = नरिएकार करेका ।
- क राज्यकु कराव कराव्यु । १ तुरस्तव के बारत एवं करा व्यव्यु वाव्याक्ष राज्य विश्वयुः विव, विश्वयु कोते हैं। यथा--क्यु व ∞ करेवं करात कराता कर
- एति, वर्षेण क्रेंटिन्यू वर्षेत्र करिया। ४ शिक्षणवेष स्थानस्य के स्थान में सहस होता है जैसे—क्ट्री = कराहम वार्यस्त = वारास्य ।

#### বহিব

१ ता और ता के स्थान में पाछ होता है। यदा—केल ≈ केप्पस खाला – वहुपाछ ।

हम पहले यह बह आने हैं कि बैरिक कीर कैस्कित के राज्यों के साथ हाजना करने पर जिस प्राष्ट्रत माण में वर्ग-केम महीत परिवर्तन जितना लिक प्रतीय हो, वह करती हो एवर्डी क्रक में करमा मानी जानी पाहिए। इस मिसस के स्वत्यार हम हेकते हैं कि सहाराज्यों माइत में म्वत्यान्य माइत के स्वत्यान्य किया हो है। पर कु अपन प्रती के स्वत्य हम स्वत्या है। पर कु अपन प्रती के स्वत्य माइत प्राप्ता के पीक्ष करात हुई है यहा बहु उपन किया जाता है। पर कु अपन प्रता में सहाराज्यों के सन्द हो करना हुई है तथायों माइत प्रती के स्वत्यान क्ष्य आता है, करात्र प्रता माइत प्रता क्ष्या करता है, करात्र प्रता माइत है कि स्वत्य क्षया क्षया के करात्र प्रता का किया है। इस कर हो स्वत्य क्षया क्षया के क्ष्या कर हो करात्र प्रता के स्वत्य क्षया क्षया के क्ष्या क्षया के क्ष्या क्षया के क्ष्या क्षया के क्ष्या क्षया है। इस पर से क्ष्य क्षयान क्ष्यों के क्ष्या क्षया के क्ष्या क्षया है। इस पर से क्ष्य क्षयान क्ष्यों के क्ष्या क्षया है कि वर्ग-केम स्वत्य की व्यव्य क्षया क्षयान क्ष्या क्षयान क्ष्या क्षया क्षयान क्ष्या क्षया क्षया क्षया क्षयान क्ष्य स्वत्य क्ष्य क्षयान क्ष्या क्षयान क्ष्या क्षया क्षयान क्ष्या क्षयान क्ष्या क्षया क्षयान क्षया स्वत्य क्षया क्षया क्षया क्षया क्षया क्षयान क्षया क्

करांता नहीं हैं कि बजैन्द्रोर की गाँव ने महाराष्ट्री माइन में अपनी करता संसात के गुँक कर बच्चे (महाराष्ट्री को आर्थ होत-माँस पिष्क की ताद स्वर-बहुक बाकार में परिषत कर दिया। बपका रा में बसोध प्रतिक्रिया हुए हुई और प्राचीन स्वर पर्व स्वरूपनी की फिर स्थान देकर भागा को निका बाहरों में गाँठित करने की बहा हुई। बस बेग्रा का हो गई एक है कि निक्को समय में संस्कृत-माथा का प्रभाव फिर प्रतिक्रिय होकर बाधुनिक बार्स करूप सायार्थ करफ हुई है।

\_\_\_\_

# शृष्ट्य पर संद्व्य का प्रमान

बैन बीर बीर्ड़ों ने संस्कृत आगा का परिलाग कर इस समय की करन भागा में क्रानेंपहेड की क्रियेस्टर करने की स्वाम मक्किर की ही। इससे को इस नमा आहित आगाओं का नमा हुआ वा वे बीम सुनों की कार्यमागाने और बीज-पर्यो प्रत्य के प्राप्त पाए है पराप्त के ए आहित्य-नागार्थ को राज्य आहत अल्डुल-नागार्थ से सक्त के प्रमाप को एक्टेपन नहीं कर सभी है। इस बाद वा एक प्रमाण को पह है कि इस समस्य आहत-नागार्थों में संस्कृत-मागा के आतंक प्रत्य प्रतिक्र कर में मूर्वित हुए हैं। में याद्य उसमा को को नाव प्रतिक्र कर में मूर्वित हुए हैं। में याद्य उसमा को बोज हैं। कार्या इस करना याद्यों में मन्स स्तर की प्राप्त मागार्थों से ही स्वाम का। में में नह सीक्ष्य करना है। होगा कि ने समस्य स्तर की प्राप्त मागार्थों से ही में नो अगरिएईस्ट क्षेत्र में सम्बद्ध होते थे कर संस्कृत-नावित्य का हो प्राप्त के साम हो। होगा कि ने सम स्तर की प्राप्त मागार्थों से ही में नो अगरिएईस्ट क्ष्म में स्वामद्ध होते थे कर संस्कृत-नावित्य का हो प्राप्त के हो होगा है।

इसके वाजिरिक संस्कृत के ही प्रमास से हैं हैंगे में एवं मिल प्रापा बराज हुई थी। महावालनीजों के सहावेतुम्य सृत्र-जामक व्यविरय मृत्र प्रमा है। व्यक्तिवित्तात, सबसे पुण्डरिक चन्द्रप्रशिष्त्त प्रमृति इसके अध्यानेत हैं। इस मेंगों के बन-बारा साथ में अधिकांत लग्द तो संस्कृत के हैं ही बनेज माहत व्यक्तों के बारो भी संस्कृत की विस्ताल क्यां-

कर उनमें भी संस्कृत के अनुरूप किये गय है। यस्त्राध्य करा क आगे भी संस्कृत की विभाग्त क्या-दिया है। परमु वहाँ पर यह करूना आवस्यक है कि इसका वह गावाँ यान कस्त्रात है, क्योंकि यह संस्कृतनिभित-आहर्ण का प्रयोग एक प्राची के केरल प्रयोगी में ही मही वर्षिक गावाँक में भी देखा जाता है। इससे इस संची की भावा की गायाँ म कहकर शहरतिमध्यस्त्रात्व यो पंतकृतिमानाकृत अवका संचीप में मिश्र-माया ही करता व्यक्ति है।

हों नक्त भीर हों राकेन्द्र सास्र मित्र का मत है कि संस्कृत मात्रा, कमशा परिवर्षित होती हुई मक्स शामा भाष क क्ष में भीर बाद क पासि-मात्रा के आधार में परिचल हुई है । इस तरह गावा मात्रा संस्कृत भीर पासि की सम्पर्की ोने के कारण इन दोनों के (संस्कृत भीर पालि के ) छहाणों से आकानत है।' यह सिखान्त सर्वेधा भान्त है, क्योंकि स यह पहते ही लक्की तरह प्रमाणित कर चुके हैं कि संस्कृत भाषा कमरा परिवर्तत होकर पाछि-भाषा में परिणत नहीं इन्हें किन्तु पाछि-भाषा चैदिक-युत की एक प्राह्मांश्वक भाषा से की करण हुइ है। थीर, ग्रामा भाषा पाछि-भाषा के रहते प्रमालत न भी, क्योंकि गाया भाषा के समस्त प्रमाण को रचना-चाठ हिस्त-पूर्व दो सी वर्षों से केर हिस्त स्वाह के रहताको पर्यन्त का है, इससे गामा-भाषा बहुत तो पाछि-भाषा की समकाक्षत हो सकती है न कि पाछि भाषा की पूर्वावस्था। यह माण संस्कृत के प्रमाण को काया स्काह विशेष मा प्राकृत आपाओं के मिम्नण से बनी है, इसमें सम्बेह नहीं है। यही काणा है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोप में स्थान नहीं दिया गया है।

गामा-भाषा का धोड़ा नम्ना सिविविक्तर से यहाँ बद्धत किया जाता है ---

"सामू वे विश्ववे राजकानार्थं नरमञ्जूषामा वाचि वाचित्र व्यूष्टि । विशिष्ठाच्यतं सञ्ज्ञीकाववे सक्तामुम् ववे स्वव विष्णु नते ॥ १ ॥ 'स्वव्यवत्रमञ्ज्ञाका क्रीय सम्मञ्जूषाः प्रशिवित्रम्व देशा विशिष्टोय स्वया । प्रतिकारसम्बागः सरमञ्जूष्टमास्यव स्वयापसमा विशिष्टाचित्रके ॥ १ ॥ " (ब्रह्म ए ४ ९ ६ )।

नुद्धदेव और इसके सारकी की कापस में बातकीत —

प्यां दि का पुत्यो करणांपमुदा धोणेनिय सुदुः किठो कामीयीता । बानुकरेन परिद्वार धानामुद्राः, कामांधमाने प्यांचक करेव साय ॥ कुश्यमे एव धानाय हि एवं माणांधि यमगांधि शर्वेवणठोत्स्य हर्षे कामायां। प्रीता भागांधि वमने वस्तुप्रेत्रेयत् पुत्या उपार्योग्ध योगि श्रीकापरियोग्ध ॥ नैतास वेश कुमाने न राष्ट्रकर्मे सर्वे बानस्य वर योगन वर्षयाति । तुम्मीत मातुरिवृत्तामान्वारित्यं कामा प्रमुख्य निष्ट्रं धारायपरिर्वास्य । विक्त सारी मातुरिवृत्तामान्वारित्यं कामा प्रमुख्य निष्ट्रं धारायपरिर्वास्य ।

# संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

भाव इस बाग्र इस यह ववाना वाहते हैं कि प्राष्ट्रत से ग फवस मेरिक और खीकिक संस्कृत सावार करना हो हुई हैं विक संस्कृत ने मृत होवर साहिरवन्सापा में परिणव होन पर भी अपनी बर्ग-पुति थे स्थिए प्राष्ट्रत से दी अनक एक्ट्रों वा सेन्द्र किया है। बरानेव काहि में प्रमुख बंध (बाह्र) वहूं (बाह्र), संह (बेध ) पुराण (पुरावन) वितर (बाह्मों), पर्वाह्र (बलेव) अपने प्राप्त कोर खीकिक संस्कृत में मबस्थित विवर (बह्मों) आपूर्व (धीकिकोर्ट ) सुर (पुत्र), गोस्त्र (बेध्य) अच्छा (बह्मों), अच्छा (बह्मों), प्राप्त (प्राप्त), गाहर (पुत्र), गोस्त्र (बह्मों), बह्मों के स्थान कार के स्थान क

रो ही कविषड रूप में गृहीत हुए हैं भीर मारिए (मात्र ) कहिएवसि (हारबंध ), सूमि (बबीम ) निमुज्यन (निस्तंत्र ), कुन्म (कुलर ) प्रसृति प्राप्तत्र के ही गृह राज्य गामिल कर सत्त्रुल में क्रिय गय हैं।

# प्राकृत-मापाओं का उत्कर्ष

होद भी करन माना बनी न हो, यह सर्वेश ही पारकात-डीज हांती है। खादिरय और स्माक्टाय उसका निरम के बायत में बावक्कर गति-शीन और व्यवस्थित के साथकिय सर है। उसका एक यह होता है कि साहिर्स की माना कमरा करना माना हो जिस हो बाती है जीर कर-साधारण में अपशक्तिय सर-माणा में परिलत होती है। साहिरस की हरकों माना कमरा माना एक समय की करन माना हो है। साहिरस की हरकों है। हे तब करम माना हो कि एक सीम साथक से साथ की साथ की सीहर मीहर की है। इस तहर एक समय की करन माना है हि वीहर मीर की कि सीहर से इस रहन है। हो तहर साथ में साथ की सीहर में साथ के साथ की सीहर मीहर की साथ की सीहर मीहर की साथ की सीहर में साथ प्रमाण है। साथ प्रमाण की साथ माना की साथ सीहर मीहर की साथ प्रमाण है। सीहर में साथ साथ माना है की सीहर माना में साथ साथ माना है। से साथ साथ माना है साथ सीहर माना है। सीहर माना माना है। सीहर माना माना है साथ माना सीहर मीहर माना सीहर मीहर माना है। सीहर माना सीहर माना सीहर मीहर माना है। सीहर माना सीहर माना सीहर माना है। सीहर माना सीहर माना सीहर माना सीहर माना सीहर माना सीहर माना है। सीहर माना माना सीहर माना सीहर माना माना सीहर माना माना सीहर माना सीहर माना माना सीहर माना सीहर माना सीहर माना सीहर माना सीहर माना माना सी

हरकोई माया का समैनकम नहेरव होता है कर्य-प्रकार। इसकिए जिस मापा के द्वारा जितने स्पष्ट ह्मप से और जितने जरूप प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जान वह करती ही उत्कृत भाषा मानी जाती है। इस हो आएजों के बार होकर ही मापा का निरस्तर परिवर्तन सामित होता है और निक्र-मिक्स काड में निक्र-मिक्स कप्ट सावाओं से समा-नपी साहित्य मार्चाओं की कराणि होती हैं। वैदिक संस्कृत कराव सुरा होतर क्षांकिक संस्कृत की स्वराधि तक दा कार्यों से हिंदू मार्चाओं की कराणि होती हैं। वैदिक संस्कृत कराव सुरा होत्य के क्षांकित करायों को बाद देकर को सहज से ही हुई भी। वैदिक सन्द-समृह क्षाप्तकृत होने पर वसके अन्तवस्तक सकृति और प्रत्यमों को बाद देकर को सहज ही समस्य म आ सके वसी शकति और प्रस्वनों का संबद्ध कर वैदिङ मापा से खैंकिक संस्कृत की करपत्ति हुई थी। र्थनिक मार्च के प्रशास के प्रशास कर के प्रशास के प्रशास के प्रशास के प्रशास के प्रशास के करण आप कराय है है। प्रमान मार्च के महत्व-मत्त्व के महत्व मार्चिक होकर का दुक्तकोष्य हो के देव कर सम्प्रास की करण आपानों से हो लाग्रायेक मुलाकारण-यान्य प्रशुर कीर केमक प्रकृति-भत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के क्षत्यास्त्रक दुर्वोच क्ष्यावास्त्रक क्द्रोर और करेरा प्रकृति-मरवय-सीध-समासों का वर्जन कर व्यवमागयी पाल और क्रम्यान्य प्राकृत-भाषाएँ साहित्य-मापाओं के रूप में व्यवहुठ होने छगी। यहि इन सब मूचन साहित्य मापाओं में संस्कृत की अपसा वर्ष-प्रमध भी अभिक शक्ति, अरुप आयास से और सुक्त से एक्कारण-गायवा अमृति गुण न होते तो वे कमें सी संस्कृत जैसी समूत्र भावा को सामित्य के सिद्दासन से वसून करने में समये न होती। आक्रकम से वे सब प्राकट-साहित्य-सावार्य सी क्य म्याभ्यम द्वारा नियम्तित हो ३२ अप्रचक्षित और जन-साधारण में हुर्वीय हो चन्नी तब तस समय प्रचक्कित पाहेशिक अपन्न ह मापाओं ने इनसे हटावर साहित्य भाषामी का स्वान अपने अभिकार में किया । यहाँ पर यह महन हो सकता है कि साहित्य की महत्त मापाओं की अपेक्षा इस कापन्न छ-मापाकों में कह कीत-सा गुण या जिससे ये खपने पहछ की प्राकृत-साहित्य मापाओं को परान्त कर उनके स्वाम को अपने अधिकार में कर सकी ? इसना बचर यह है कि कोई भी गुण चरम शीमा में पहुँच आने पर फिर बह शुण ही नहीं रहने पाता वह दोच में परिजल हो जाता है। संस्कृत की अपेसा माजल-सामाओं में यह राध्यं या कि इनमें संस्कृत के कर्करा बीर क्योच्चारणीय असंयुक्त और संयुक्त क्यानत क्यों के स्थान में सब क्षेत्रक भीर सुनोबारणीय वर्ण व्यवहरू होते ये । किन्तु इस गुज की भी सीमा है महाराष्ट्री माकुत में यह गुज सीमा का लविकम कर गत्रा वाहित कि संस्कृत के अने के व्यवसानों का एकहम 🗊 काप कर हमके स्थान में स्थर-कर्यों की परस्यरा-द्वारा समस्य राभ्य गरित होने सते । इससे इन राज्यों के वण्यारण सुस्त-साम्य होने के व्यक्त अविकार कदसाम्य हुए, क्योंकि सीच वीच में कारणानमार्गी से कारबीत म होका केनक स्वा-पारम्या का वर्त्वारण कराम कारका होता है। इस तरह प्राकृत-मार्ग -महाराष्ट्री-पाइन में बाहर जब इस चरम बदला में बपतीत हुई तक्से ही इसका पतन सनिवार्य हो बटा । इसकी प्रतिक्रियों संस्कृत की अपद्या माक्य-मायाओं में को करूप--गुण कपर बताये हैं वे बनेक प्राचीन प्रस्थावरों न पहले ही प्रवृत्तित किये हैं। बनके प्रस्थों से प्राकृत के बरूपे के संवरण में कुद्ध बचन यहाँ पर बत् युत्त किए बाते हैं --

ैन्द्र्सियं पाउप-कर्ण पवित्रं सेक्रें **न ने** स वार्णति ।

कामस्य तत-वॉर्ज क्रुगेरि ते क्क् ग्र वर्ण्यति ? ॥ (श्रम्य की ग्रामासङ्गती १ २) ।

अर्थात् को स्नेग समुरोपम प्राष्ट्रत राज्य को न दो पड़ना कानते हैं और न सुनना कानते हैं अवच कार-चरव की स्राठ्येचना करते हैं उनको शरम कर्यों नहीं मोडी ?

र्जीनमञ्जद सावर्त्तं पवय-महाबाए शक्य-पदार्तः।

सन्दर्भ-संदर्भक्त-रिस्टीस प्रवस्ति पहाची ।( (बाद्यदिस्त का नददवही ६४) ।

संस्कृत राज्यों वा व्यवण्य प्राकृत का खावा से ही रूपक होता है, संस्कृत मारा के उत्कृष्ट संस्कृत में भी प्राकृत का प्रमान वरक होता है।

े सन्दर्भनंतर्भनंतरणं संनिवेस-सिविरायो अंत-रिजीयो ।

धनिरम्मिण्यमो साप्तुक्छ-र्वनमिह छक्र पद्यमिन ॥ (गउद्यक्षे ७२)।

सृष्टि कं प्रारम्भ से सेकर बाजराक प्रचुर परिमाण में नृतन नृतन अर्थों का दर्जन और सुन्दर रचनावाकी प्रवस्य संपत्ति कहीं भी है तो वह केवस प्राकृत में ही ।

<sup>अ</sup>हरिय-विसेसी विमसावधी य मञ्जावधी य मण्डीया ।

सह बहि-हुत्तो भेतो-सूत्रो य हिमयस्य निप्युत्तः ।।' (गरहबहो ७४) ।

प्राह्त कच्य पढ़ने के समय हृदय के भीवर और बाहर एक ऐसा अभूत-पूर्व हुये होता है कि जिससे दोनों औँ के एक ही साम विकसित और मुद्रित होती हैं।

ैपस्तो सन्दर्भ-वंदी पात्रम क्योबि होइ सुत्रमारी।

पुरिय-महिनार्थं बेलियमिहंतरं तैतियमिमार्थं ।।' (रावशेवार की कर्प्रकारी चाबू १) ।

संस्कृत मापा कर्करा कीर प्राक्तत माथा पुरुषार है। पुरुष और महिका में जितना अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी सतना है। प्रमेद हैं!

१ समूर्त प्राष्ट्रते कार्य्य पठितु बोलु च वे न जानत्ति । नामस्यतस्यविकती पूर्वत्ति ते नवे न सरवस्ते ? ।।

२ कम्पोसित सावएम प्राकृतन्त्राममा संस्कृतपदानाम् । सस्त्रतसंस्वारोस्कर्येलेन प्राकृतस्यापि प्रमान् ॥

६ नवामार्थस्त्रीते संभिनेस्सिरिकस्य बन्धार्थेयः । स्तिरश्चित्रमाधुननवन्त्रमित् केवलं प्राष्ट्रते ।।

y हर्पविद्येको विकासको सुद्रशीकारवन्त्राक्ष्योः । वह बहिस्कोञ्चम् क्रम हृदयस्य विरुद्धसीत्र।

५, पृद्धकः संस्कृतकाकः प्राकृतकाकानु प्रथति सुकूमारः । पुरवनश्चिकारेपनिद्यान्तरं शाककायोः ॥

भार: पावा विष्याः प्रकृतिसभूराः प्राकृतिगरः । सामग्रीकास सः सरहरूपने मृतमामन् । (धानशेकार का मानरामामका १ ११) ।

संस्कृत माया भूनने थोग्य है, प्रकृत अया लगान-पहुर है, अपन्न ग माया सब्ब है और पैशाची-भाग क्री रचना

रस-पर्ने है ।

क्रमा अमाधानी केल न वाणीत मेर-कारीमा । सम्बासिक सह-बीवी हैसोनी पानपी रहन ।। राहरच-वेशि-रहियं जुलक्षित-मलीहि विरहमें रस्में । पायत-कमा कोए करस न हिनमें चुहानेव ?।। (महेरवरसूरि का प्रस्त्रमेगाहारान) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-अञ्च के सथ को समक्ष नहाँ पार्व हैं। इस स्वर यह मन्य सस प्राप्तत मापा में रका कावा के को सब होतों को सक्क बोध्य है।

गहाचैत वशी-शब्दों से रहित और सुककित पर्दा में रचा तथा सुन्दर माक्रम मान्य किसके हृदय की सली सदी बरता है

प्रस्तान सम्बद्धानमां सरका नमां च विभिन्नयं सेवा । वेस-१९ व पनित्तं सहयक्तहत्त्वर्थं कराइ ॥

(वण्यासाय (?) से यपन रामाध्यमधे को प्रस्ता 😸 ७६ में व्यक्त )।

सेक्कर राज्य को बोडो और जिसने संस्कृत साम्य की रचना की बसाझ मी नाम मत को क्नोंकि बहा (संस्कृत) कारते हुए बाँस के पर की तरह तह तह तह जा आधाव करता है-शदि रूट समता है ।

> वाराजन्त्रकारिय रही की बारत स्त्र व केट स्रीतर्वीत । क्रमास व वासिय-बीवकस्य दिस्ति क क्रमायो ।। संतिए अञ्चरमञ्चरम् चुमई-यस्-शक्को स-स्थितरे।

क्षेत्र पाइम-कम्मे को सम्बद्ध समार्थ परित्र ? श्रं (भगवास का समामान, पृत्र ६) प्रास्त-भाग की कविता में और विवृश्य के बचनों में जो रस जाता है कससे बासी और शांतन बस की दरा, दरि

नहीं होती है---मन बमी अवता नहीं है---अरक्ट्य निएनर बनी ही रहता है।

धन सुन्दर, मधुर, राह्वार-रस-पूर्व जार पुवतियों को प्रिय पैसा प्राष्ट्रत खन्न सीखद है तब संस्कृत पहने से

बीन काता है ?

१ - चंस्ट्रचराव्यस्यार्वे केन म कार्माना जनवृद्धयः । सर्वेदानपि शुक्रवीर्वे क्षेत्रेतं आहरी रविश्वयः ।। पुमर्पेश्वेचीत्तं मुल्लेखारलीविचीवतं रम्बन् । शाहतराच्यं शोके करव न हृदवं सुख्यति है ।। २. सम्बद्धां संस्कृतकाम्यं संस्कृतकाम्यं च निर्मितं वेन । वंद्यपृत्तिव प्रवीप्तं तस्त्वस्तुद्धप्तं क्रोति ।।

प्राप्तताच्ये रही यो काल्के तथा था केश्वास्ति । धरकस्य व वास्तिरसम्बद्ध वृति व क्ष्यामा ॥ बनिते बबुरायरके बुवरिजयवक्कने बन्द्रीयारे । सर्वि जाहरावास्य कः व्यवत्ते संस्तृतं वक्षितुत् 🕻 छ

# इस कोप में स्वीकृत पद्धति

- १ प्रथम काले टाएगों में कम से प्राकृत बावन, उसके बाद साथे टाएगों में उस प्राकृत सक्त के क्षिष्ट पारि का सीमाण निर्देश स्वस्त्र प्रमान करते क्षान करते क्षान साथे टाएगों में प्राकृत स्वत्र क्षान क्षान क्षान क्षान टाएगों में प्राकृत प्रकार काले प्रावस्त्र प्रविद्यालय, उसके क्षान्त्रत साथे टाएगों में बावेट में प्रमान रिक्त का उसने क्षान क्या है।
- २. उन्नों का क्रम नामरी वर्ण-मासा के ध्युतार इस तरह एका समा है स, भा ६, ई, स कर प्र, ऐ, यो भी से क का मारिश इस तरह के तरह ध्युतार के स्थान की माइत प्रस्तान की स्थान की
  - प्राह्मत प्रस्त का प्रतोव विरोज कर के वार्ष (वर्षनावयो) बोर सहाराज्यों जाया के धर्ष में बोर वामान्य कम वे सार्थ के किए मानज प्र मादा तक के सर्व में किया बाता है। प्रस्तुत कोय के 'प्राहत-कर-महाराज्ये' नाम में प्राह्मत-कर वामान्य वार्थ में ही मुहीत है। इसते सहार्य किया माता है। परन्तु प्राण्योंकता भीर वादित्य की स्वत मानकी देशाओं कुनिकारियाची तका बाता प्रधानामां के उनमें का संबद्ध किया माता है। परन्तु प्राण्योंकता भीर वादित्य की हिंदी का किया भागां में बार्य और महाराज्यों के स्वयं में है। इसते हम केती के ट्रम्प वहीं यूर्ण कर वित्य को है बीर श्रीरोक्ती वार्षित व्याचारों के माद्य क्लार कको के स्वतं दिया मात्री है भी मात्री प्राह्मत (भार्ष भीर महाराज्ये) वि विरोध मेव एकते हैं बचना विनक्त प्राह्मत करने हो या या या है की—"मेर्य" विवृद्ध 'वित्य इस्तं 'पंत्रमाधिर्यि' वर्षयह। इस वेद की शहिषान के बिए प्राह्मत के स्वतं आप के स्वतं मोर साक्ष्यत-करना के सात्रे साद्य द्वारा में के हो के कन क्षा बाता कर संक्षित्य शान-किये कर दिया गाया है के किये '(शी)' (गा) दश्यवि । वरन्तु वीरकेनी मार्ति में को को कम या बन प्राह्मत के शी वनान है बढ़ी में वेदन्यति किया नहीं विश्व वर्षी है।
    - (क) आर्प और महाराष्ट्री से लीखेली माबि भावाओं के जिल सक्तों में शामान्य (सर्व-सावारण) नेव है उनकी हस कोर में स्थान केवर कुरपारित-तार अच्ये के क्लेबर को निधेत बहाता हसीलए लीवत नहीं स्थान क्या है कि बहु सामान्य नेव आहत-भावाओं के सावारण धरमान्ती से यो सजात नहीं है और वह स्टेशेल्यात में यो तत क्या मान के लड़्या प्रस्कृत में विका निया क्या है निश्चेत यह सहज ही क्यान में वा सक्ता है।
    - (ब) मार्च मीर महाचन्द्री में भी परश्रत क्लेक्निनोय नेत्र है। तिय पर भी यहाँ क्लका मेर-निर्वेश न करने का एक कारण तो यह है कि इस बोनों में हरा भागाओं से बरोबान्द्रस समानता वर्षिक है: हुएए यहाँद की बरोबा प्रत्याचें में हैं, स्थित नेत्र हैं को मानत्वक से समान्य रखता है, कोच से नहीं दीवार की प्रवासों ने प्रवासों में मी सार्च प्रकार के प्रत्यों का प्रविश्व कर में समिक व्यवहार कर क्लारे व्यास्त्राव्यों का कर है हिंदा है.

१ वेबी प्राष्ट्रपत्रकारा, सुव ४ १४ १० हेमचन्त्र-वाष्ट्रय-वाष्ट्रपत्र सुत्र १ २० बीर प्राष्ट्रपत्रमेस्य सूत्र ४ २६ प्राप्ति ।

२ प्राहतकर्वस्य (द्वा १ १) बावि में इमसे प्रतिरिक्त और यो प्राच्या शाकारि बावि बावेक करवेश बताए वए हैं, विनन्ध समावेश बहुत होरकेनी बावि इम्हीं पुत्रम नेती में बचास्थान किया गया है।

इन सक्तिय नामों का विवस्त संकेत-सकी में बेकिए ।

४ इस्ते हे डॉ. रिस्स् साहित पासाय पिदालों ने पार्ट-किन केन प्राहर-संगों को सावा को 'वेन प्रहारक्यो' नाम दिया है। देखो में रिस्स् का प्राहरूक्यकरण और डॉ. टेमेटीरी की इनकेसमाना नी प्रस्तायना।

१ देगकर प्राकृत-भाकरत का स्व १ १८ ।

मुक्ताको दुनियाके विष् बावररशकानुवन वहीं पहीं देउँदेववाते तस्य के बाँके स्वान में 'या सीर 'वंशी वस्य 'से' सिम्स क्या है।

निया नाय के पार्च क्या है। यह विशेष स्वाप्त के बहुत ही पाना काता है जैसे पार्च (मन) के स्वान में पार्च पार्च (पार्च) के स्वान में पार्च पार्च (पार्च) के स्वान में पार्च पार्च (पार्च) के स्वान प्रतिक सार्व। ऐसे क्या में भी एक क्षेत्र में महूना पुत्रसम्बंध सम्बंध सम्बंध स्वाप्त स्वाप्त

- 4 संपुक्त कर्मों को करने विभन्न क्यान में अन्तर म देवर मूल (पूर्व आवनाने) उध्या के शीवर ही बदार प्रकासने उस्त अवस्थाने क्या के स्वाद करने में ति कर क्षेत्र कर है और स्वतंत्र के पूर्व (क्या है) क्या का बंदित करने में कि करने के लिए स्वतंत्र के किए स्वतंत्र करने के क्या के अन्य अपने करने के क्या के क्या के क्या के अन्य और क्या के क्या के
  - (क) इस संयुक्त राजों में चला कियो ---- से जिस राज्य को देखने को वहा क्या है वहां क्या राज्य के सिता क्या किया कार्य के सिता क्या के सिता कार्य कार्य के सिता कार्य के सिता कार्य के सिता कार्य के सिता कार्य कार
- त तक (क) या वा ( कक् ) अर वर, तक्तव (कर) ध्रम तम (क्य) आर्थ मुक्त और तक्ति-काकारण अध्ययाते क्यों में
   प्रस्त्यों को क्षेत्रक केनम पूक कम्म हो यहाँ मिए वर हैं। वच्नु कहाँ ऐते अवनों में वन धारि की स्थितका है वहां अध्य-स्थित
   क्रम के सित पर हैं।

बालुमों के तब कर हादे बादनों में और इक्ती के क्य काने टाइनों में बादु के बीतर दिए पर हैं।

- (क) बाद तथा कर्म-करीर करों का निर्देश की बाद के मीतर करों-- से ही किया क्या है।
- (स) वृत्र क्रक्त के रूप तथा सभ्य प्रस्थात तथा क्रक्त के विशिष्ट रूप बहुवा स्त्राय सन्त्र स्त्राम है निय् पर है।
- 4. जिन संस्करणों के रूक-संख्या किया गया है ज्यानें यहि हुई संपालन की बा जेत की पूर्वों को जुबार कर पुत्र राज्य हो नहाँ स्थि कर है। पारलों के जानार्थ सावारण पूर्वों की कोइनार विशेष पुरवान के पारले पार रेक्टर के स्वतंत्र के सावारण पूर्वों की कोइनार विशेष पुरवान के किये कर है भीर पुरवान काम की पूर्वित कीम में 'हे' (राज्यावित) के बाद बातवा की वाहि की केही कुल्यान काम पार्टि राज्य।
  - (क) नहीं शिक्ष किन नेती ने या एक ही चीन के जिला जिला रचलाने में या शंकरपत्ती में एक ही एक के सलेक शंकित करें पासे कर हैं और विकार पूछ का का मिछत कथा करिया चार पहा है नहीं पर ऐसे क्यान तह कर कहा कर किन में स्थानन सिंद कर है जिला है पहा पड़े किए ऐसे प्रतिकृत कर के कर का कर है किनो--- सिंख कर ठठर कर की स्थानन क्या है। कैठे केवी 'पुक्तकरिकास पोक्कलफिद्युक्य', 'पेस्टल, प्रतिकेश, प्रवासिक स्थापित करा।
- एक दी पंच के एक का तिल्ला क्षिण सरकराहों के समया किला किला क्षेत्र के साथ हुन क्ष्म एस कोच में स्वासकार किर कर हैं। केवे—परिस्कृतिस्य (जन्मतीसुन ११—१० ११) और परिकृतिस्य (तन ११ डी.—यन ११५) जिल्लावृत्र (की या, की सुनकाल १ २ १ १ १) और जिल्लावृत्र (का स. का सुनकात १ १ १ ११) परिस्कृतिय (सा स का अरक्षाकरण थे ६—नत ११) और विक्योदिक सित्तावाराक्ष्म का अरक्षाकरफ १ १) सामक्षाह (सम्वापित्य का १११) और स्विकृति
- - १२. जिल्लाविकोण्य बीमात राज्य प्राप्त राज्य है ही श्रेकव रावते हैं, संस्थान-सरिशान से सार्थ ।
    - (क) चड़ी मार्च-नेद में मिल्ल मानि पर जी तेर है वहां कह वर्ष के पूर्व में ही निवा किया मानि का मुनक राज्य है निवा कर्या है । चड़ा पैदा किस राज्य नहीं निवा है वहां उसके पूर्व के मार्च का बातों के स्थापन ही किया मानि समस्या पाड़िए।

१ देवीमायमस्य ६, ६५ वर शिका ।

- (ब) प्राइत में लिए-दिसि बुद ही अभियसित है। प्राइत दैयाकरणों ने भी बुध पति संक्षित राज्य के सामक दूतों के द्वारा दस बात का स्पष्ट प्रकारित किया है। प्राचीत पंजों में एक ही शब्द का निस्तित्व लिय में मोन वहां तक हमें दिश्योगर हुमा है, सस-क्यां लिय का निर्देश इस कीय में कर तक्य के पास कर दिया गया है। बहाँ लिय में विशेष विकास्त्राता पाद पर्द है वहाँ उस इंच का मरतराम की वे दिया गया है।
- (ग) बहां ब्रीविय का किरोप क्य पाया गया है वहाँ छस धर्ष के बाद 'बी— निर्देश करके रेकरेंस के साब दिया यमा है।
- (स) प्राष्ट्रण में फल्क संवों में सम्बाध के बाध विश्वक्षि का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे क्वालों में सम्बाध-सुवक 'स्व' के बाद प्राया जिस बोवक शक्त भी दिया गता है: वैसे कहतें के बाद 'स्व की = (सम्बय तथा की तिव)।
- 🔞 🐧 🕏 फून राजों के संस्कृत प्रतिशम्य के स्वान में केवस बेश्य का पंक्षिप्त क्य 'वृ' ही काबे टावरों में कोस में विया क्या है ।
  - (क) को कर्यु वस्तर में देख होने पर थी प्राष्ट्रत के प्रशिक-प्रसिक्ष व्यावस्त्यों में संस्कृत बालु के बानेश कह कर कहा बाता की प्राप्त कर कर का में कि मात्र के प्राप्त के प्र

  - (द) प्राचीन ६ में में जो राज्य देश्य कर थे माना मसा है परन्तु बस्ताव में जो देश्य न ह्याकर उद्भव हो प्रतीत होता है, ऐने राज्यें ना संस्टान-प्रतिशाख दिया नशा है सीर प्राचीन मात्र्यता बतताने के लिए संस्कृत प्रतिशब्द के तुने में 'बें' दिया एमा है।
  - (व) को रुप्य नास्त्र में देख हो है, परणु प्राचीन व्यावसाधारों ने उनको ट्रमून बनताते हुए उसके को परिमार्गित—दिस-द्यान रूप बनामे हुए संस्कृत—क्य रुपने होची में किंद्र हैं, परणु को संस्कृत-क्रेपों में नहीं पाने कार्य हैं, ऐसे संस्कृत-प्रतिक्रमों की प्राची स्थान न देवें हुए केनक 'हैं' हो दिया क्या है।
  - को राज्य देश्य क्य से संविष्य है स्तरके प्रतिसम्ब के पूर्व में 'क्' भी दिया है।
  - १४ प्राप्तेन व्याक्तारारों के दिने हुए सञ्चात-शतिराज्य से मो को व्योक स्थानतालाका संस्कृत प्रतिराज्य है बही वहाँ पर विसादया है कैसे 'व्यावित्य' के प्राप्तेन प्रतिराज्य स्वाधित के कसने 'स्वानित्य'।
  - ११, स्रतेत सर्पमले छन्ती के प्रयोज सर्घ १ २, ३ सावि शंजी के बाद क्रमशः विदे थये हैं सोर प्रयोक सर्थ के एक या प्रतेक रेक्ट्रेस वस सर्प के बाद कार्य क्रमेट में प्रिये हैं।
    - (क) बातु के निमानिय बनवाने एकरेंगों में बोन्नो प्रार्थ गुन्ने न्ये हैं वे श्रेष्ठ १ १ १ के प्रारंकों से देकर कमाएं नायु के धावसात तथा क्रमण के रूप दियों को हैं बीर उत्त-तक करवाड़े एकरेंग्र का उन्तरेख उत्ती कर के बाद बाकेंगों कर किया क्या है।
    - (4) दिस एक का यर्ष सालव में शामान्य सा ब्यापक है किन्तु प्राणीन बंदी में उसका प्रयोग प्रकास-रच नियोग सा इंकोर्ड़ धर्म में हुआ है, ऐसे राज्य का शामान्य सा ब्यापक धर्म हुँ। इस कोर्ड में दिसा परा है, यचा—कृतिकवर्ष का प्रकारत-क्या होता 'इस के बीवक धर्ममून्यां अब नियोग प्रवासित प्रवासित करें प्रकार करें प्रकार करायें यह सामान्य धर्म हो दिसा प्रयाहित एका करें प्रकार करायें प्रवासित प्रवासित करायें हो दिसा प्रयाहित प्रवासित करायें के लिए सी ग्रही नियम प्रवासित हमें हैं।
  - १६ राज-रूप चित्र वर्ष की कियेग्या या गुजायित की होंटे से बहुं बरतक्या केने की धानस्यक्षण प्रतीत हुई है बहुं पर बहु, पर्वांत संख में, क्यों के बाद बीर रेकरेंस के पूर्व में विचा नवा है।
    - (क) प्रमत्तरण के बाद कोड़ में जह घरेड़ रेतरेंगों का उन्हेब है वही पर केरन सर्थ-प्रवस रेतरेंस का हो सरतरण से बंक्य है, रोप का नहीं।
  - एक हो पंत्र के दिन सनेव लंकरफों का जनमेग बय कोग में किया गया है रेकरेंत में सावादण्या संस्करण निरोत का वन्तेव न करके केवल पंत्र का ही उन्नेव किया गया है। इसमें ऐमें रेकरेंगवाने श्राम का तथ संस्करणों का या संस्करण निरोत का तथमता निर्माण ।

रे. हैमपत्रश्राहरा स्वरूप सुच १ देव से देव ।

- (क) बहाँ पर संस्करण-विशेष के अलोब भी बास मानरकारा प्रतीत हुई है वहाँ पर रेकरेंस की संनेत-मुन्नी में दिये हुए संस्करण के १ २ मानि केक रेकरेंस के पूर्व में दिये हैं कैसे पैसस्य और पैससेस्य ककों के एकरेंस भावां के पूर्व में २ का संक साम्योगवनस्तिति के संस्करण का बीर १ का संक औ रजनी माहि के संस्करण का बोचक है।
- १ व बहुं नहीं प्रमुद्ध के किसी राज्य के क्या की सर्वे की सकता संयुद्ध राज्य बादि की समामता ना विरोधका के बिने प्राप्ति के की देवी राज्यराज्य की तुनना बराबाय कर्युक्त यात्र पढ़ा है वहाँ पर रेजरेंस के नाव नेबी— से यह राज्य को देखने की सूचना की नहें है।
- १६ ब्यां करी कियो' के बाद बाने दाशों में कि हुए प्राव्य दल्य के सननार छाते दाशों में हिस्साहित्योचक या संस्कृत-प्रतिशास रिया क्या है ब्यां करी किए पारियाने या स्वाव्य प्रतिश्वनकाने ही सकृत कर से अतान है, त कि बतान हतार प्रत्य कर की में के से पूर्वन कर की सीकृत हुवार ही प्रायम-पूत कर कर, की कि सारा कर किया कर किया है किया कर की किया है किया के किया की कर सारा कर किया की की कर सारा कर की किया है किया है किया के किया है किया कि कर सारा कर किया की कर सारा कर किया कर की किया है किया है किया है किया किया है किया है किया है किया कर सारा कर किया कर सारा कर की कर सारा कर सारा कर की कर सारा कर स

यक नियमों है मिलिएक दिश निवास का व्यामण्य हर कोए में किया क्या है वे माधुनिक दूरत पर्दात के संस्कृत आदि क्षेत्री के देवनेपानों हे परिचार और मुनम होने के काण्ड कुलाहे की बकता वहीं खाते ।

# पाइत्र्य-सद्द-महग्गावो ।

# ( प्राकृत-शन्द-महार्याव )

भीमान फतेलासमी भीचलमी गोसेख बयपुर बालों की बोद से मेंड ध

णासिम-नोस-समूर्दं, मासिम्नजेर्गतनाय-समिमस्यं। पासिम-सोआसोनं, वंदामि जिर्ण महावीरं॥१॥

तिश्चित्त-साउ-पर्यं, अइसइवं सचल-बॉण-परिणमिरं । बार्य अवाय-रहिमं पणनामि जिप्पित इवार्ण ॥ २ ॥

पाइल-मासामद्दशं अवजोदम सस्य सस्यमङ्गिततं। सर्-महण्यव-पानं, रपनि कोसं स-यण्य-दर्म।। १॥

# च्<mark>र</mark>्ज्ज् म. पानी बच (गे ११)। ५ शिचर, टॉव

मनर (दे १ १ प्रामा) । २ क्यां इप्य (年 2 2) 1 (दैफो भाग (भा १४ जी २, पडन ११३ १४ ५मा)। र [चे] देनों त्यः 'वंदी घं (शक्त ७६) । দ"ল [ফা] বিছ-বিভিব ঘৰী দিঁট মৰ-रल के धनुमार, रिसी एक की अवसानेशका मन्यय-१ निपेत्र प्रतिपेतः 'क्ष्मेन्नए' (वृष ७ २४) 'सम्प्रतिमेड् मग्रीप्रनारी (विमे १२६२)। २ विधेष बस्टारन धवस्य (गाया १ १ )। १ प्रयममञा ब्युचिनान अयामः (रडम २२ १) । ४ धनातः, बोहा-पन बदाए (पार) 'बदन' (सम ४ )। १ समार साँदचमानना 'सप्ट्राप्र' (नाउड)। ६ भार निम्नता 'धनागृहल' (गुडि) । ७ माहरव तुन्यताः सवस्त्रुहेमातु (सम्र १६) । ब मप्रसन्तरा दुसानः 'चप्राई' (बाह २६)।

'पूं⊠ि १ प्राइन्त वर्ल-माला वा प्रवस

१ ल कुल को क्रां फड़ र (दृह १) । "अर् दु[क] १ तूर्व सूरव (से ७ ४३) । २ क्रांत, क्रांग। १ बपूर, भोर (से १४३) । ४

(म १ ४ ४) । ६ मत्त्रक विर (वे १ १ व) ।
"का मि [ जा] ज्यास जावा (वा १ ७ १) ।
का कर्मार मि [ चे] स्त्रेह-पित सुवा (वे १
१३) ।
आजर रेको अंतर (गि १६१) ।
आजर रेको अंतर (गि १६१) ।
आजर से जो आंतर (गि १६१) ।
या का भूवक वन्त्रय (वे २ २ १ स्वर्ण ।
५ ) ।
आइ म [आंति] यह वास्त्रय नाम बीर वालु के व्याप से विर वालु के व्याप के विर वालु के विषय से वालु के वालु के

एक वो कृषिण करना है— ह धारितय धार्म रेण बारत्या वारतीं 'धार्मित्रत्य' (मा रेण बारत्या वारतीं 'धार्मित्रत्य' (मा रेण सा वारत्या वारतीं वारताय (दा थे) । ४ धारित्याम्य वारताय (दा थे) । ४ धारित्यम्य वारताय देश। वार्योव' सारतायां (भीत स्वात्य ११) । १ जिल्ला वार्णीय (इद १) । आदा [आति] वारत्येम्यक स्वयत्य 'धार बहुद्ध' (मूर १ २ व ३) ।

अइ.सक [का + इ] पायमन करना मा विरता चिद्रति नारावा (स १४६)। अबृद्ध की [अदिवि] पूनर्वमु नगन का पर्वि हाता देव (मूज १)। श्रद्भ धरू [अवि+द्र] १ उन्लंपन करना । २ नवन करना। ३ प्रवेश करना। बर्द्र अर्दन (बेद रद कप्प)। संक्रु आह्रच (तूम १७२८)। অত্তত্ন জি [অবিভূক্ত] মণিবদ সাধ (পুদ \* X 8 84)1 आक्ष सक [अदि + अक्ट ] १ द्रिभिषेत्र करना स्थानराध्य करना । २ कन्यंपन वरना । ३ धर दूर वाना (ने १३ व ६६)। आश्चित्र वि जिल्मश्चित । १ मार्जापना स्थानारम रिया हुमा (ने १३ व) । १ बर्ज्य चित्र चतिकास्त (ने १३ c) । ३ दूर यया ह्या (ते १३ ८६) । अर्थाद्व देखी अर्थ**च** (न १३ ८)। अर्डिज रेगो अर्डविश्र (ने १३ आईदाग न [टाम्पदान] १ सम्मंबन (ने ११ ३ )।२ धारचेलानीचार (मे **०८४)**।

आईन देनो अद्भु = चरि + " I

ş

(TE ?) 1

(मुप २१ १७)।

देव (किरव)।

क्लोसूल्युत्तमदे प्रदर्शस्थानं विवासाहि

श्रद्भवाइम वि [अविपाविक] विद्या करनेवासा

अङ्ग्रास पू [कारियार्थ] भगवान् बरनाव

के समकातिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्वकर

**अप्र**पास सक [स्रवि+ दरा] मिरियय

ध्वना सुब केवता । महरायद (तुम १ १ Y & ) 1 **धाइ**प्यांगे च [धावित्रया] पूर्व-प्रभात वड़ी सकेर (मुर ७ ७०)। काइएपमाज वि [कावित्रमाज] १ तृतन होता हुद्रा बोजन करनेवाला। २ श दीन बार से स्विक भावन (सिंड ६४७)। **अर्**ष्यसंग पूं [अविश्रसङ्ख्यो १ सरिपरिषय (पद्याः )। २ तर्व-शाक्त में प्रसिद्ध क्रीत-व्याप्ति-नामक शोप (स १६६ उकर ४८)। **अ**शुप्पर्मीरा वि [अवित्रसङ्ग्रिक] शक्तियाँग वापवाना (भरमः १ )। **आ**इटपहाच न [क्रातिप्रभाव] बड़ी सबेर (श बहुबस वि बिदिस्स र बिल्ह राष्ट्रि-शाली (बीप) । २ मू प्रांतराय क्ल क्रियेप सामध्ये । ६ बहा छील्प (हु४ ३३४) । ४ पूंपक राजा जो सपदाल ऋपमदेव के पूर्वीय अधुवै मन में निवादा पिटामह वा (बाबू)। ३ मरत चम्चर्तीका एक पीच (ठा ≈)। ६ भरत क्षेत्र में श्रामानी औभीभी में हालवाना पांचमा नामुरेप (सम १) । ७ राक्य ना एक मीदा (परम १६ २३)। **अइमदा की [अविभन्ना]** मनवान महावीर के प्रमान नामक ग्यारहर्वे यशकर की नाता (पाष्)। अइमुइ दें [अतिमृति] एक कॅन मृति, वा पंचम बामुदेत के पूर्व-जाम में गुरू से (प्रवस २ १७६)। भद्रमृमि की [क्रिनिभृमि] १ परम प्रकर्ते। २ महुत अमीन (से १४२) । १ पृहस्ती के घर का कह भाग जहाँ साबुधों का प्रवेश ।

करने की सनुका न हो, 'सहमूर्ति न सन्देशा गीयरम्भयो मुर्गी (वस ५ १ २४) । अर्मद्रिया भी [अतिमृत्तिका] भीवनती मही (जीव १)। अध्यक्त ) वि [सर्विमात्र] बहुत परिमाण अवस्थाय रे से समिक (उन टा रे)। आ<u>रम्</u>को पूर्वितिसूक, को १ स्वनाम बवात एक घन्तकुष् (उडी बन्म में मामुन - मुक्ति पानेवाया) वैन सुनि जो चार्युत्व वासासपुर के राजा विजय का पुत्र असुरा अस्मूसय) वा धौर विस्ने बहुत हाटी ही जब में भवनाम् सङ्ग्राचीर के पास शौचानी थी (धन्त)। २ वंस ना एक कोरा मार्च (मात)। ६ बुध-बिधेय (पतम ४२ ८) । ४ नायकी नदा (पाम स ११)। ३, म सन्तरकृतसा नायक धेय-प्रत्य का एक प्रथमन (यन्त) । (हे १ २६ १७० 🍴 २४६) । भारूप वि [अदिग] परिवान्त 'भन्दो प्रापः मिन पूर्व राज्य संबंध सान श्रुपिश्व (ह २२४)। २ करनेवासा कार्यादर्य (भीप)। **अहप वि [**कतिग] प्राप्त (धव ११४) । आर्थ के दिविदी १ प्रिय प्रीतिपान । २ दया-पात्र दया करते योग्य (मे १, ३१)। अत्यव केती आरमञ्जू । **अड्**यण न [सस्यव्न] बहुश **बा**ना श्रविक मोननक्ष्मा (वद २)। अवस्यय वि [अविगत] नवा कृषा (व 9 914 अप्रयर सक [मति ÷ चर्] १ कशंका करना। २ वर्षका दूषिन करना। वक्र अइपरंत (नुगा ४१४) । अद्याधक [अनि+या] बला पूजरना (वत २)। भद्रशाची [काजिका] वकरी छापी (ता 3 (alt आइयाची [द्यिता] और पली (न €

२ राजा वरीरह का अवर मादि में वृत्र-वाम सं अनेस करना (ठा ४) । काइवाय वि [छातियात] यया हुना गुक्य क्ष्या(स्ट २)। काइबार पू [काविचार]रुष्णका पांतक्रमण (मधि)। २ पृष्ठीत बत या नियम में दूपला शगाना (धा ६) । अपूर य [अभिर] बली सीय (लप्न ६७)। अद्दर न [अजिर] बोगन चौक (गाम)। अहर पूँ [ हं ] बाबुक्त गोरका राज-नियुक्त मुख्यमा (दे१ १६)। अद्दर्ग[दे अतर] देवी अद्यर्≃ प्रतर (मुका व )। अपूर वि [दे] यांत्रप्रवित (निष्ठ ४६ X48) 1 अइरलुमइ की (रे) नई वह दुसहित (दे १ अइरस पू अधियुत्र । भीषक विकि ज्याविय की विननी से को दिन अविक होता है वह (51 €) ℓ **बाइरक्त वि [अदिरक्त] १ गाद्य सन्त**ा २ विरुप एसी। कंबससिस, कंबसाबी िकम्बस्थितासा कम्बद्धाः] मेद पण्ड के प्रोड्ड बन में स्थित एक डिल्सा विमार विनक्षे का अन्यामिपेक किया आहा है (জান ৭)। **अश्य व [ अचिरान् ] रोप,** जल्हे (ने 2 (x) 1 अवस ) भी [अविद्यु] गांवने वज्यती और सोमहत्र धीपकर-वेन की माता (सम भाग्याणी। ११ पतम २ ४२) । कड्राणा भी [व] १ स्त्राणी। २ सोमान्य के निए न्त्राणी-वन करनेवानी औ (द१४ )। टाइराक्य प्रस्तिपन हिन्द्र का शामी(पाम)। अन्समय पू [एसमत] इन्द्र का हाथी(मनि)। अष्ट्रसहा भी [अविरामा]ं दिजनी - पासा (६३ ४४ ही। अद्गरित [अदिरि] बन या पुष्ण का सदि बामणुक्रभावता बनाव्य (पार्)। अप्ररिप पू (व् ) क्ष्मानन्त्र बावनीयः नद्दानीः अद्याण न [अनियान] १ वयन पुत्रस्ता : ।

(\$ \$ 2 E) 1

धाइरिक्त हि [छतिरिक्त] १ वका पृथा धव रिप्ट (पत्रम ११= ११६) । २ व्यक्तिक व्यवस्थ (स २, १) 'पश्चमाग्रा'रिचयुग्रिनमधे' (नार्व ६६) । सिजासिय वि शिष्या-सनिक समी नीही राज्या धीर वापन रहते-बाना (सामु) (धामु)। श्चमक्रम विकित्तिया १ मुनप मुझीन

(पत्रम २०११) । २ 🖞 मूछ-जातीय देर क्टिन (प्रथ्य १) । सहरहयदि अविरक्ति । स्वतेष-पुन्द, स्वति-प्रमुत्त (राप्त ४५ टा.)। अद्भार दे [अतिरेक] १ मानिका मनिकार,

'माइरेनफ्टूबामजामर्ग (ए।वा १ ३)। २ प्रांतराय (बीच १)। अभ्यज्ञ । स जिक्सिया विकास स्थाप अप्रदर्भ ∫ १६रे, पडन हरे, ४- डवर ४३) ।

अन्यव रेनी अहरत (शासा १ १)। भार्य म [अतीय] महित्य मानन किलं सन्द सईनै

विद्राप्त सम्बद्धीय तस्य वदलस्य । ता ते तक्षं मुप्रस्थ ! सपावर्त्तं करेणामु ॥ (मक्का)।

भन्दरूप त [अदिवर्द्धत] बच्चेत ग्राँड-इम्ल (द्राचा)। লায়্মত পদ [মারি+ছুক্] মরিভনত

क्लाः। सन्दत्तेः (वादा) । ब्बन्बचिय विश्वितिक्री श्रीतनना

कर्म्प्यन विद्यासमा हो बहु ≀ २ ज्रवल कृष्य । १ प्रस्पेवन करनेवाला (याचा) । अन्यय मक (अति + बृत् ) कल्पका करना ।

मंड अद्दर्शा (पूप २२६४) । भद्रपर मा [ब्रिटि+ ब्रज्जू] १*रून* कन शरता। २ मॅपूल भारतः। ३ प्रवेश रच्छा। भारतीर (साथ १) । यह जियमस्यती अप्रपर्धन पर्व मुमिली पर्यमनाली पडिवृक्काँ (ग्रामा १ १ क्यो ।

अन्यय एवं [अठि + यन् ] उन्नेबन करना। २ नम्बल्ब नग्ना। १ प्रदेश नरता। ४ शह मरना । । गिरवाना 'धारे रहा-सी<del>न श</del>ब-नच्या बंगामिन भाषांति (प्रश्रह १ ६)-भीवतका नेमारं धन्वयंति (पहत १३)। पर 'वर वा ठाउँरनव-विग्रानिश्चि ठाउँर । अञ्चलक एक [शवि + शा] मात परना ।

वा अञ्चयमानि निवारेनि (लाया १ )-अद्भवेत (रप्प) । प्रथा, अन्त्रापमाज (মাৰা হাড)।

भाष्यह सक अति + बद्द | बहुव करने में समर्व होना। मन्बद्ध (नुस १२३४)। भाषाप्र वि [ अतिपातिस ] १ हिस्द (सप १ ३) । विजलार (विमाण्यक) । आध्याहरू वि [अनिपानवितः] भारतैशाचा (ग ६, २)।

भक्तान्य वि [अनिपानिक] क्लर केते (मुख २ १)। अध्यापत्त् देश अन्धाहत्त् (म. ३)। अश्वावमाय रेची खन्यय = अति + पन् ।

अश्याय पुं [अतिपान] १ द्वित सापि शांत्र (पोष ४६)। २ विचारा- पार्या वाएर्ड (जाना १ १) । अध्याव पूं[अतिवान] १ ड=र्मदन। २ ऋ/ बर पर्वन, तुक्राम (कर ०६ टी) । अप्रवाह एक [अति+वाह्य] वीपाना, पुनारना 'सो मानाहेर दुन्नि रिनी' (वर्षनि

33) 1

मद्रविरिय दि [क्षतित्रीर्थ] १ वनिष्ठ महा-पराष्ट्रमी। २ र्ट्ट इस्ताकु वस का एक राजा (पडम १, १)। १ नन्यानतं नदर का एक यामा (पढम १७ १) । अइविसास रि [अविविद्यास] १ बहुत बहा विस्त्री ई १ र की यमप्रश्रमानक पर्वत के चीत्रस तरक की एक नमये (श्रीक)। अइस अप] वि [ईटरा] ऐना, इत तरह

97 (( Y Y %) 1 बन्सइ वि [अनिश्चित् ] बन्छिय नानाः विशिष्ट, भ्रामने कारक (नुपा २१७)। अवस्थान पि [अदिशयित] कार वेदी (राप)।

अइसंबण देवो अइसंबामः क्लिनागृति-धंकर्तन नामकर्व (पंथा ७ २१)। अवसंघान [अतिसंघान] छगाई, वंचना, भिन्नपाराश्चेवार्स सामयपुर्ती य क्वला व (पैचा )।

कारमञ्ज्ञमा की [अतिकारणा] सनेतन्त्र ब्रेरम्मा वडावा (निनी)।

बह 'पन्दमप अइसर्पता' (पान ह 2)1

अञ्चय प्रशिक्षित्रायी १ येहना, जनमा (इमा १ x)। २ महिमा प्रमाच 'कस्पा-"समी (बहा)। १ बहुत स्टमन (तुर १२ =१)। ४ चमच्चार (टर १ ३)। भरिष दि [ैसूत] पूर्ण, पूरा घरा हुबा (शम) । लाइसरिय न [गेट्रयर] बजब अंगीत ग्रीरव (£ t txt) 1

भडमाइ दि [अतिशाबिन"] १ धेष्ठ (बाय र्दी) । २ दूसरंको मात रस्तेवाना। बी. जी (नुपा ११४) । अन्मायत न [अतिशायन] स्थार्यः छन्दर्य (बह्म १६६)।

अन्सार पृ [अविसार] शंबहुर्णी राव, बडर ची व्यक्तिनिरोय (मङ्ग्य १३) । सन्मस र् [अतिदाय] १ वहिमा, प्रसार बाम्मानिक सामर्ग्य (सम १६) । २ ववा हबा, बनस्टिट (स ४ २) । १ प्रतिस वाना (विने ४१२)।

अन्संस वि [अदिग्रियम्] १ प्रवास्थानी वहिनर्धन्तर । २ मपुद्ध (राष) । अइससि वि अदिर्पापन् १ महिमानिदः।

२ लमुक कात स्प्रदि के स्पीत्रस्य स सम्पन्त (बर्डि ४० दी) । बन्सेमिव वि [अतिश्रपित] अपर की (यांच ३)।

अङ्संसिष दि [अदिश्रपित] इति जान ह्मा (पत्र १)। **जहरा पूं** [जितिमर] हर, सन्नति सर्यात्री वर्तीय को सामग्री ? (यक्तु २३)। अवद्यास की [प] विजनो, परना (वे दे

ly#

अडहिं पूं [अनिविष] विसके याने की टिवि नियत्त महो बहु पाष्ट्रब, यात्री मितुन साह (ष्यका)। सविसाग वृ ["संप्रिमाग]ना वी मोबन ग्रेडि वा निर्दोप दान (वर्म ६)। अर्ड् तक [रा∗] वाता, कान करना। स<sup>म्</sup>र (हे ४ १६२, हुमा); महीत (बउह) । अरजर्ग[ब्रीत] र मूतराम (र**वर**)। २ विको बीज प्रसार, पुत्रसङ्ख्या की ब बहेबा बिडा (पीर) । ३ स्टीकान (एड संस्थर पू [क] सहामता मदा (दे १ १)। शकान्य की [लङ्क्तनती] १ महानिष्ठ क्षेत्र के राम नामक विजय की राजवानी (ठा २)। मेद की पश्चिम विस्ता में बहती हुई सीतीया म हालकी की विकास किया में बतैमान एक वलस्कार पर्वत (ठा १ २)।

अधिकान विदेशीमानित (दे१११)। संकित वि सिक्रिया विकेश निरहनवाला (बीस) ।

अविश्व दं [वे] तर तर्जंड नववैदा (छाना 1 (1)

बंद्वार पुं[अक्कुन्ड] नाम्ब्लंड सूटी हास (वे १) ।

star १ [सक्क्रि] प्रदेह कृत्ये (वी १)। क्षेत्ररिव नि [अवनुदरित] धेकुर-पुक्त, जिसमें संबुद करना हुए हो वह (ध्या) ।

क्षंद्रस पूं [धादक्रया] १ प्रोक्सी लोहे का एक हविवार, जिससे हानी कराने बादे हैं. भिक्तेख कहा खासो कम्म संपश्चित्रहर्से (बत्त २२)। २ प्रद्व-विशेष (ठा२ ३)। ३ तीताकाएक पुत्र कुस (स्टम ६७ १६)। ४ सिमनदा करनेवाला, क्रमू में उक्तनेवाला (बद्ध) १ १ एक देव-विमान (राज) १ ६ धून. प्रस-बन्दन का एक दोष (पव २)।

**र्वा**इस पुर**ियहक्य**ि एक केन-कियान (रेमेनर १४) । र प्रे अंद्रकाकार **वृ**द्धि (यव ६७)।

**श्रेष्ट्रसद्**य न[दे अक्टूरिक] संदूरु के सकार बाली पीन (देर १० छ ६ ६६)। **बंद्ध**सम् प्रशिक्षक्षकः है स्को बंद्धसः । २

भीन्याची का एक स्थल-एशा विससे वह केन पूजा के मारते वृक्ष के परवानों की काटता है (धीप) ।

बंडुसा श्री [बहुदुशा] पीख्र तीवंडर श्री प्रतासनाम सम्मान् की शासन केनी (१४ २ )। संदुत्सिम नि [सङ्दुक्तित] बंदुत की तत्त्व मुका कुमा (ते १४ रेश) :

**जंदु**सी भी [अडडुरा] देशो अं<u>ड</u>सा (बंदि t )।

अंकृर केवो अंकुर का दुश विकामिता निवंदूरे विकेटेड (बुक्त ६१ हो) ।

अकिलाय न दिं] बोडा सादि को मारले ना बाहुक कोड़ा घाँची (में Y) 1

**श्रक्तिस**्य प्रीक्षेत्र मन्त्र (दे१ ७) । **अंक्रोड** पु**क्रिक्टो**ठ] मु<del>स्र-मिटे</del>स (दे१२)। और। व पूँ [बाक्क] १ इस नाम का एक थेए,

विसको मानका बिहार कहते हैं (गुर २ ६७) । २ रामका एक सुन्नद्र (पदम ११,३७)। १ न, धाचारीय सूत्र सावि बारह वैन धावय-चैव (बिपा २ १)। ४ वेदांव वेद के रिलावि बः बंग (बाबू)। ३ कारण हेनू (पव १)। ६ बाल्या जीव (स्वि)। ७ पून, राधेर (प्राप्त ६४)। य तरीएके मस्तक प्राप्ति भववव (कम्म १ ३४)। १ व मित्रताका साम न्यस सम्बोदन (स्प्य)। १ दलमानीकार में प्रमुख दिवा बाता सम्बद (ठा ४)। \$ 1 **ैबिन्** इस गमका एक पृहन्द विसने मयमान् पार-शाम के पात बीचा सी नी (निर) : इसि पूं िपि | चंपा नगरी का

काटा मना हो बद्ध (सूचन २ ६६)। आय पि <sup>\*</sup>आठी वचा श्लाका (उप ९४०)। द्वेको य= द(हा)। पविट्र न "प्रविद्ध] १ वास्त्र कैन संस्कान्धो में छे कोई मी एक (इस्प १६)। २ इस्ट-इंबोका बल (अ.२१)। बाहिर न

एक क्रांप (याक्र)। विकासिया । वी

"च्मिका] धन-धचो का परिश्तिष्ट (परिचा) :

**ैक्का**हिय वि [िक्किम्साहा जिसका संव

वास र वंग-रंबों के परितिक बैन पासर (भाष्)। २ मंग-वंदो से फिल वैन भावनो का शाय (ठा२)। संगम िङ्की **१ अंग-शन्दर** (धन)। २ इर एक स्थनम (वह्)। सैनिर

त ["मन्दिर] अभ्यानवरी का एक केर-पृष्ट (मन ११)। सद सदय पु मिर्द मर्ब् कु र शरीर भी चंदी करलेशाना मौकर।

२ वि सरीर को मलनेवासा चेरी करनेवासा (पुना १: व सक्त अस्य ११ १) । सः दी [व] रे बाजी नामक विद्यावरराज का पुत्र (पक्षम ११ १६ ३७)। २ त.

वासुस्य वेष्ट्रा (पर्स्या १४)। स वि ["ब] १ सरीर में उल्लाब २ दूं पुत्र

नक्रम (क्य १६४ टी)। वाक्टे विद्या कम्बापुत्री(पाध)। र**वस्त**ः र<del>वश</del>स्य वि

िरच. सप्रकी सरीएको एसाक्योजना (नुपा १२० ६६)। सम, सम द्रिया। शरीर में करतादिका वितेषत (पीपः वा १≼६)। "सम प्रीयाजी १ प्रेनदेश का राजा (तप ७११) । धंग देत का राजा कर् (लामा ११६ वेखी १४)। दिसि वेवो इसि। रुद्ध पि रिद्ध देशो स = व (नुपा ४१२ प्रतम ४६ ६२)। स्वा औ िरुक्षा पुत्री सबनी (तुपा १५ )। विज्ञा की विद्या र शरीर के स्कूरल का सुना-राम फन बरुवानेवासी विद्या (उत्त ≈)। २ वर्ग नाय का एक कैन पंद (उस्त =)। विद्यार ई ["विपार] देखो पूर्वोच्च वर्ष (उस १६)। संभूय वि ["संभूव] एउल, बना (का ६४०)। हारच प्र शिलको स्पेर हे यस्वयों के निमेप हाथ-यान (प्रति ६१)।

ीदाण न िदानी पुरुरेन्द्रिय पुरुर-निर्म (निसी) । क्षेत्र पू [ठाङ्ग] भगवान् व्यक्तितव के एक पूर का नाम (दी १४)। २ न स्नगातार कार्यः रिनो का जन्मास (इंदोध १८) । सा देखी च (वर्मीव १२६) : हर वि विरोधक वंशों का जानकार (विचार ४७३ )।

र्वादि [आक्र] १ रुपेर का विकार (स )। २ वर्षेर-**बंबेबी** स्वरीरिक (दुम ८ २)। ६ न तरीर केस्कुरहा मादि विना<sup>र्</sup> के चुनानुम पन को <del>राजानेवाला दावा</del> विकिए शान्त्र (सम ४६) ।

क्षंग वि चिक्की सूच्यु बनोहर (क्षेत्र)। बंगाइवा को [सञ्जविका] एक तनते तीर्न विशेष (सप ११२) ।

व्यैतियाम ५ [अङ्गातीमाम] प्रमेश-पान समित्रता 'संदेशीमावेश्य परिस्तृप्<del>युक्तवस्ति</del>' विरावस्ये (युपा २१)।

व्यंगण प [सङ्गक] संक्र, वीक (5<sup>र ६</sup>

# ( ) e क्शवा की [सहना] की, बीस (इर है

जँगविका देवो सङ्गद्रमा (तौ) ।

अंग्लब्ह्ज न [के] रोड, बीमारी (के फे X4) I

```
स्राविक्षक्र न [क्] राधर को मौक्ना (दे १
  43) I
कॉगार प्रक्रिक्टारी १ वनता हुन। कोयना
(हेर २७)। २ वैन समुद्धों के लिए जिला
  का एक दोव (पाचा) । सङ्ग पुं ["सर्वेक]
  एक समस्य कैन-प्राचार्य (उर २४४) । वर्षे
  सी विता | चुनुमार मगर के राजा कुन्धुगार
  की एक कत्या का नाम (वस्म = ही) ।
 अभारत ) पुं शिङ्गारको १-२ उपर रखो
र्जगारम र्रे (माँ २६१) । है . मंग्ल-प्रह (परह
        १ १) । ४ पहला सद्घाष्ट्र (ठा २) ।
        १ <del>राज्ञस-वेश</del> का एक राजा (पटन
        ¥ 242)1
 क्षांगारिय वि [काक्सारिय] कोक्से की संख्
  क्ता हमा, निक्यें (ताट धाका) ।
 श्रीतास देखो अगार, "निवर्षमाननिर्म" (निव
   Cuz) 1
 संगादमा देवी अंतारम (चन) ।
 कॉगास्त्रियन दिंदिक का हुकड़ा विश
   3=11
 संगासिय देखी अगारिय (माना) ।
 क्रोंगिप अिक्रिया १ प्रास्ती बीव (गरा

 द) । २ वि तरीरताला। ३ चंग-प्रन्तों का

   बला (क्य) ।
  अंगिरस न [अङ्किरस] एक योग भो गोतन
   मोन की दाखा है (ठर ०)।
  अंतिरस नि आक्रिएस र अविरस-मात्र में
   इल्पन्न (ठा ७)। २ पूर्व तलन (पडम ४
   E4) 1
  ब्रांगीक्डे वि[सङ्गीष्ट्रत] स्लैहर (ठा ४
  विशेष्य । सुरा १२६)।
  धंगीकर ) सक [काही + कृ] स्वीकार
  अंगोक्स्म । क्रमा । बंग्रेकरेड (महा भार) ।
   धवेडरीह (स १ ६) सह अंग्रीकरेकण
   (भिने २६४२)।
  भौगुभ पुं [क्ष्मुय] १ वृक्त-विशेष। २ व.
    रेक्कर बुध्य का फल (हे १ वह)।
  ऑगुट्र प्रिक्गुफ्ती बंद्रल (ठा १)
     पांसण पु [ प्रदेन] १ एक विचा। २
    'प्रश्न-स्थाकरण सूत्र का एक सुप्त सम्बद्धन
    (घर)।
   अंगुट्टी की [पे] सिरका परद्वन्तन, धूंबट
    (दे १ ६ छ २६४)।
```

```
औषो ध [अहा ] शर-मूचक सम्मम (प्रति १९,
र्धगुरवस्त्र म [चे] प्रेयुटी यंद्रशीय (दे १
                                         प्रयी २ ४)।
क्षंत्रकास वि [अङ्गाद्धव] संवान वचा
                                       अर्थयस्य [ऋपू] १ कोचना⊧२ मोतना
 (क्षप २६४) ।
                                         चासकरमाः ६ रेकाकरमा। ४ स्टामा।
भौगुम धक पुरस् ] पुत्ति करना पूरा
                                        धंबद (हे ४ १८७) । एक अबेड्सा (मान) ।
 करमा । श्रीपुगद्व (हू ४ ६८) ।
                                       अभिसक शिक्ष्य देशमा पुत्रामरसा।
                                        धेषए (मवि)।
र्अंगुमिय वि [पूरित] पूर्ण किया हथा
 (कुमा)।
                                       अधि सक [अज़्रा] पाना । संपति (पंपा
अंगुरि, ये भी (सक्त्युक्ति की विक्ती
                                        १६ २६) भाडुगइ प्रश्लमिम म
 (मा २७७) ।
                                        'सोबीए पारमंबद' (बृह ४)।
                                       अंबल पू [अध्यक्त] कपड़े का रोप भाग
अर्गुस्त न [काङ्गुख्ड] यथ के बाठ सध्यक्षण
 के बराबर का ऐक माप माल-विशेष (भ्रम व
 ण)। पाइचिय वि ["पूर्याक्तक] को से
                                       अधि प्रशिक्षा गमन बति (सन १६) ।
 मेकर नव बंद्रम तक का परिमाण बाला
                                       का वि प्रशिक्ष विशासन वाना (सा १५)।
                                       अधिय विकिश्चित दि प्रक सहित (गुर
 (जीय १) ।
                                        ४ ६७) १२ पूजिल (मुपा २१८) । १ मरस्त
अंगुद्धि की [धर्गुद्धि] उंग्ली (कुमा ।) ।
                                        श्रमणित (प्राप्तु १८) । ४ स. एक प्रकार का
  कोम प्रक्रियो भेगम-काल कारताना
                                        भूष्य (ठा४ ४० जीव ६)। ५ एक बार का
 (चम)। प्रशेषण म शिकोटनी प्रशासी
                                        थमन (मग १४)। यनि पू [कि] १
 फोक्ना कहाका करना (तेव) ।
                                        धमनाममन धाना-जाना (भग १६)। २
र्शग छ्ज
            ग [अक्नुखीयक] बंदुशी
                                        अंवानीचा होना (ठा १ )।
श्रमुख्यिक (१ १, १ कप पि ११२)।
                                      अंचियरिनिय न [अक्रिवरिमित] एक
र्मग स्टब्स
                                        तरह का नाटव ( राम १६)।
अंगु कियो की [वे] निवंत वृद्ध-विशेष (वे
                                       अंचिया की [अख्रिका] प्राकर्पण (सर २)।
 2 83)1
                                       अंद्र सक (इ.ए.) १ की मेगा 'शंद्रीत काम-
भंगुकी भी [अञ्चक्षी] रेनो अंगुहित (इव्य) ।
                                        वर्ष पगव्यवस्मि दिने धेर्च (विश्व ७१४)।
                                        २ अक सम्बाहोता। वड्ड ऑड्स्साम्प (विसे
             पून [जक्रमुखीयक] चंड्रती
र्धगकीय
                                        ७६५) । प्रयो, संस्थानेद (ग्राया १ १) ।
              (मूर १ ६४) पायबधि
अंग्रहीयग
                                      अंद्रण न [क्पेंप] श्रीनाव (परह २, ४) ।
              एख सामिय । समध्यको
धगुक्षियय
                                      अक्षिय वि वि] बाइट चींचा ह्या (दे
             धंगसीयधो तीएँ (वडम १४
भगुरुज्ञक
              ६ सुर १ १६२ वि २५२
                                        t (v) i
अगुक्रेयय
                                      नंब सरू [सस्त्र् ] प्रावता । इ. अंबियब्य
             परम ८६, १५)।
र्धगरीयग वेदा अंगुहायय (गुप्त २ २१) ।
                                        (# XYE) r
             न [सङ्गापाङ्ग १ शरीर के
                                      क्षेत्रण पुं [स्रस्टतन] १ इथ्ए पुरुष्त-विशेष
अंगुर्वग
संगोर्धग
          🕽 धनपत्र (पएए) २३)। २ नक्ष
                                        (पुज २ )। २ देव-विरोध (चिरि ६६७)।
  बगैप्द रारीए के हो?-सो? घषमच 'नहवेसमे
                                      अंअग र् [अञ्चन] र पर्वत-विशेष (द्य १) ।
 मुधंप्रवीमोद्धा बच्च धंगोबंगारिए (क्स ३) ।
                                        २ एक सोक्यान देव (ठा ४)। १ पर्वत-
  भाग न "नामन् शरीर के सक्यनों के
                                        विशेष का एक रिकार, जो विगहस्ती कहा
  निर्माण में कारण-मृत कमें विशेष (कृत्म १
                                        काटा है (हार ३८)। ४ क्ल-किरोप
  BY: YE 1
                                        ।बाव)। ४.ग. एक बावि का रतन (लावा
अंगोड्डिकी [व] सिरको शोक्कर बाकी
                                        १ १)। ६ वेशविमान-विरोध (सम ३४)।
  रारीर का स्नान (वर ५ २३)।
                                        ७ मात्रका गञ्जल (प्रामू ६ / । = जित्रका
```

सुरमा क्लाश है पैसा एक पार्विच अध्य (शी ¥)। इ. प्रीचको पाजना (नूप १ ६)। १ वैष मादि वे राधेर की मासित करता (एक) । ११ तेप (स ४०२)। १२ चलप्रसायकिनी के बर-कार्य का बरानों अंश-किशेप (ठा १)। किसिया को ["करिएक] वनस्परि-विशेष (भएए १७ एन)। बोग ई विला क्या-विरोप (कप्प)। दीव पुर्विद्वीप धीय-विशेष (१क)। पुरुष पू ["पुरुक] एक बादिका एक (ठा१)। २ पवत-विशेष माएक किवार (ठा )। व्यक्ताकी [भमा] नीना नरक-इक्ति इक)। विट्र प्रिष्ठि इन्द्र-विरोध (सम १ ६)। सस्या से ["शक्षक] १ केन दृतिको प्रतिहा । २ संपन भगानं की सनाई (सूछ १ १)। सिद्ध वि [\*सिद्ध] शक्त में श्रंबल-निरोप नमानार प्रदूरव होने की राजिकाला (निसी)। सुम्बरी सी ["सुन्बरी] एक स्टी भी इनुमान् की माता (पद्म १४, १२) » **संज्ञपद्**तिज्ञा हो दि दुस-विकेच स्थाम **उमाल का देव (दे १ ३७)** । **अंब**णई **से [दे] बार्ध-विरोध (फ्राए**ई) । अंत्रजईस न [दे] देवो अंजपश्चिमा ( t 1 20 1

भंजपग रेको श्रीतण । र्भवणा भ्ये [अंजन्त] १ स्तूमान की माता (पदम १ ६)। २ स्वताम-क्याच शीकी नरत-द्रविकी (ठा २ ४)। १ एक पुण्कविसी (वं ४)। वजन पुं [वनन] इक्सल (परम ४७ २ )। सम्वरीकी [<sup>®</sup>सन्वरी] कुमान् की याता (पडम १ १)। विजयाभा श्री [अञ्चलभा] श्रीकी तरक-इचिया (१४) । भेजांजभा स्वी [दे] रेको खंजजहरिसमा

( t 10) 1 भंतपीत्नी [अफ़र्ना] कमक्ष का बाबार नाम (मूस १ ४०६

श्रीबंधि, श्रीकृती [अञ्जलि] १ हाव का सपूर (इ.१.११) । एक वा दौनों सन्दृष्टित हानों नो सलाट पर स्वता, एकेंग वा दीहि षा मउ**बिएर्ड् १<sup>-वे</sup>र्ड्** स्टिश्लर्डक्टेर्ड्ड् संबती मएन्पि (निद्र)। १ वर-बंदुर, नमस्वार

रूप विनय प्रकाम (प्रानू ११ स्थप्न ६३)। स्क्र पुर्व दिन का संपूर (महा)। करण ग करण विनय-विशेष नमन (दे)। यसमाह् पुं [<sup>\*</sup>प्रमाह्] १ नगर, हाव भोक्ना (भग १४ १) । २ सँगो<del>य विशेष</del> (राष) । **अंत्र**स पि (दे) ऋतु, सरव (दे १ १४) । अधिकय वि [अधिका] सांवा ह्या श्रंबत-पूछ किमाक्रमा (सं६४)। र्जनुवि[ऋजु] १ छरम धकुन्सि 'चेतुसम वहातच्यं विखालं तह मुख्ये हमें (सूच १ १११४)। २ <del>वे</del>षम में तलाइ, धंमगी 'पुट्टोनि नाइक्सइ संबु' (दाका)। १ स्तरु व्यन्तः (पूच १ १)।

अंग्रुका स्त्री [अञ्च्या] धरवाल धनन्तुनाव नौ प्रकम रिप्या (सम १४२)। अंब्रुत्ती[अध्यु] १ एक सार्थनात्र्की कन्या (बिपा १ १)। २ विपालपूर्व का एक सम्बद्धन (विशा १ १)। ३ एक इन्द्रास्त्री (ठाव) । ४ 'जातावर्गक्या' सूव का एक बम्यक्त (खावा २)।

**अं**ठि पुंत [कासिद] ह्यौ इसम (यह) भक्तिमदरस्य धंदस्य अवोग्वसाए अएठी न भन्नीमवि (बाद ६)।

न [अवस ६] १ क्षेत्र (क्ष्या भीमें) । २ वह कीरा (महानि ४)। र्वहरा । ६ 'हाट्समर्गक्या' सूत्रे का पूर्तीय वष्यक्त (स्त्रमा ११)। इन्ह वि [ैंद्रत] को सर्दे से बनाया गना हो। 'मेनला भाइता एवे पाह सएडको वर्षे (भूस १ १)। बंध र् ("वन्ध] गण्डिर के क्रिकर पर रखाणाता क्ल्डाकार योका (नडड)। वाजिमस पुंिवाति-**बड**़े बरहो का व्यासारी (दिपा ₹ ₹) |

वि [अण्डम ] र सएडे से पैस र्वहरा ) शेनेबाने जेनुः पक्षीः साप मक्कनी वमैसह (ठा३,१३)। २ वेराम का बाका। ६ रैरामी वस्त्र (बत्त २१)। ४ रुए का दस्त्र

(नूष २,२)।

र्शहर

श्रीवय पुंचि, श्रवक्षत्र] मञ्जा मन्त्र (र 1 ( PS S बंदाइव नि [बरदाव] मएडे से पैसाहोते-

वाता (पडम १२ १७)। श्रंतर्द्र[जन्द्र] १ लक्य स्वयत् (दे ६ १व)। २ प्रान्तमाय (से € १व)। १ कीमा हद (वी. ११)। ४ निकट, वनकैड (विषा १ १)। ५ मग, विमास (विसे १४६४ चौ ४८)। ६ निर्ह्य निवय (ठा६)। **४** प्रकेश, स्थान (प्रकेतनेतमकक्षमक् (अस ६, २)। व राग भीर इ.गः 'दोईं सर्वेई व्यक्तिसमाओं (बाबा) । १ रोन बीमापे (विसे १४६४)। १ वि इनियों को प्रीट-कुल संपनेत्रक्ती चीज प्रमुखर, श्रीरत बस् (पर्या २, ४)। ११ मनोहर, मुन्दर (से १ १८)। १२ श्रीच सुद्र तुम्ब (क्य)। ४२ दि िंदरी उसी जन्म में मुक्ति गलेगला (सूच १ १६)। अस्य नि किस्म] नहार (पर्या१६)। असमा दं विश्वज्ञा । मृत्कुकाल । २ प्रसय काल (छे ६, ६२) । किरियास्थि [किया] युक्ति संतरश

सन्व रुवा (a ४१) । इस्त न [इस्र] पुत्र पुन (कप्प)। सद्ध वि विहन् ] स्रो बन्स में पुष्कि पानेशाला (हर ४५१)। गबद्धा स्मी ["कृद्शा] मैन अंपनामी में बाटको बंग-बंद (बहा १)। **ब**र वि िचर] मिला में श्रीरस पदानों की ही चीन करनेवाला (पराइ २ १) । र्वति [अल्प] प्रक्तिम प्रकाश (भएक १५)। क्सरिया स्त्री ["शहरिका] १ वास्त्री निविका एक सेव (पएस) १)। ९

क्वा-विरोप (क्य)। व्यंत न [बान्त्र] धांत (सुपा १०२, वा रवर )।

क्षेत स [अन्तर] सम्य में बीव में (हे रै १४) । बर न ["पुर] देवो संतेतर (शार) । करप्र चारण [\*करपा] वन कृष्य 'कव्यारसन्दरसर्वकरावेख' (का ६

टीनार)। सन्य वि सित] मध्यवर्ष गीपगलः (दे १ ६) । द्वाली पिं १ विशेषान । २ नास (मापू)। "द्वापान [बान] प्रकृत होना विशेष्टि होन्य (दर १३१ टी)। द्वाणी स्मी विमानी जिसमें मनुस्य हो सके ऐसी विचा (सूच २ २)। द्वाभुव वि विमृत् गट बिगत 'नरेसि वा बिगतेसि वा मंत्रबामुचेसि बाएगद्रा' (माक्)। प्यात्र पू िपाय धनार्माच नगावेश (हे २, ०७)। साथ प्र िमाव | समावेश (विमे)। सुहुत्त न िमुहती दूध सम मुहत्तं सूल मुहुत्तं (पा १४)। रद्वास्त्री वा ] १ तिरोवान। २ मारा पृथ्वी महत्त्वरहा (या ११)। रदा स्वी विद्या निष्य-काल बीच का समय (माचा)। रप्प प्र शिक्षामम् माना भीत (ह १ १४)। रहिय, छिदिव (शी) ति ["हत] १ व्यवहित संतरास-पुक (बाचा)। र प्रत झड्स्य (सम ३६ उप १६६ डी। समि १२ )। "विद्र पू विवि] राया और यसना के बीच का देश (कुमा)। औत वि [ कास्त] सुन्दर, मनोहर (मे है RE) 1

स्रोतस्र दि [आयान्] धाता हुम्स (ने ६, ४१)।

स्रोतः व [अन्दरा] पार-नामी पार-प्राप्त (शे १ १८)।

क्षंत्रश्रावि [अन्तव] १ व्यविमाणी वाधवः। २ जिल्ला सीमान हो बहु (सं १,१८)।

धांतज है ( धानाकों १ मनीहर, जुन्दर अंदारा है ( ह र का) । १ धानाकें । इस्ताकित ( हुम १ १ १) । १ धानाकें । एक प्राप्तिक प्राप्ता केंद्र पर विश्व प्राप्तिक प्राप्ता केंद्र पर विश्व प्राप्तिक प्राप्ता केंद्र पर विश्व प्राप्तिक प्रमुख ( कि र का विश्व १ १) । असर मुखु ( कि र का वर १ ६०) । जनायमें वंशति स्वनगरमं ( कृप १ ७) ।

र्श्वता वि [अस्ता] १ पार-गामी । २ कुण्यम वा विकार में स्टोश वा नके विकास सम्बद्ध समित निर्मेक्टो परिवार (सुम १ २)।

र्जनगर केते कांत माय (भव १)। जंतव न [गन्सम] बन्दन, निवन्तम् (प्रयी

भेगद्वाय वि [अस्तर्पात] तिरामान-नर्ता(विष १ )।

कांतकभाव केली अंत भाष (धम्फ १४२) । अंतर न जिन्दरी १ मध्य भीवछ 'गामैवरे पनिहोसी (उन ६ टी)। २ मेथ, विशेष फरक (प्राप्त १६८) । १ व्यवसद, समय (खाया १२)। ४ म्बदबान (व १)। प्रशासकारा अभारतम् (भग ७ ×)। ६ निवर, भिद्र (पाप) । ७ रजोहरस । = पात्र । **॥** पूँ बाबार, करन । १ सूत के कपड़े पहनने का भाषार, सीत करन (कप्प)। कृत्य पू िकम्प विन साच का एक वाल्पिक प्रशस्त बावरण (वंद्र) क्य ए विन्द्री कम की एक बाति वनस्पति-विदेय (पएए१)। करण न [°करण] यात्मा का शून सम्य-धमाय-विश्वा (पंच)। शाह न िग्रही श्यर कार्भात्रधी भागा २ को करों के बीच नायंतर (बहु६)। वहिल्मी जिल्ही क्षोग नवी (ठा ६)। बीय प्रिक्रीयी १ डीप-किरोप (की २३)। २ सबस्त समूत्र के बीच का द्वीप (पएछ १)। सन्त पू [ राष्ट्र] मौतरी राष्ट्र, काम-कोबादि (पुता 43)1

अंतर कर [अन्तरम्] व्यवपान करता बीच में बलना । संतरीह, संतरीम (विक्र १३९)।

अंतर वि [आन्तर] १ घष्मत्तर, गीतरी 'ध्य-वमुरागुरि शंतरो ध्याम्हो' (धन्तु २ः) । २ मानविक (अवर ७१) ।

अंतरंग वि [अन्तरक्क] शीतरा (विसे २२७)। अंतरंत्री हत्री [आन्तरक्की] नगरी-विशेष (विसे

र्णतर्रजी स्त्री [आम्वर्डी] नगरी-निरीप (वि २१ १) ।

अंतरपद्वा स्त्री [अस्तरपद्वां] यून स्त्रान से कार्र तम्पून की कृषि पर स्थित व स (ववक )। अंतरस्तुष्ट्व केतो अंत सुदुव्य (वंब २,१६)। अंतरा व [अस्तरा] १ मध्य में बीच में (वर ६९४)। २ वस्त्री वृष्टे में (कर्ष)।

अर्थतपञ्च न [आन्तरायिक ] १ कॉ-विरोर जो धान मादि करने में ग्रिम करना है (छ २)। २ विक्र ज्वावर (क्यूह २१)।

र्जनगर्धय न [अन्तरायीय] कपर केते (नुमा

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीवका मार्ग (गुक्त १ ११) ।

अंतराय पुन. [अन्तराय] देतो अंतराइय (ठा२ ४३ छ २३)।

अंतराळ वुं [अखराळ] मंतर, बीच का भाग (प्रचि दर )।

अंतरायम् पुर [अन्तरायथ] बुकात हर (बाद व)।

र्थतरावास पुं [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा काल (कप्प) ।

र्कंत १६का थुंग [अस्तरिक] यन्तराम पाकरण (मग १० १ स्वन्त ७ )। जाय वि [जात] बमीन के क्रमर रही हुई प्रमार, मंत्र बमीर बन्दु (साम १ १)। पासमाह थुं [पाच-मान] बानकेण में यक्तमा के राक्ष का एक कैंमनीच चीर बही बी भागार बीएसचेसाव वी सुद्धि (ती)।

श्रंवरिकस वि [सान्तरिकृ] १ माजार-संबंधी बारान्त का (बी १)। २ पहों के परस्पर दूब धीर भेद का फल बदसानेवाला तत्व (सम ४१)।

अंतरिका म [अन्तरीय] १ वस्त्र करहा।
२ राज्या का नीचना वस्त्र 'संतरिक' छाम
चित्रंवर्ण पर्वा संतरिक नाम सेकार हेट्टिक'
पोर्च (निष्क १४)।

अंतरिका न [व] करवती नटीमूम (दे १ वश् )।

भंतरिकाया स्त्री [झम्तरीया] वैतीय वेरावरिक पंचा की एक राज्या (कण)।

अंतरित ! वि [अन्तरित] स्पर्गहत संगर भागा (गुर वे १४३ के १ अंतरिय । २७)।

अंतरिया स्थी [ब्र] समाप्ति संत (वं २) । अंतरिया स्थी [अन्तरिक्र] साटा सन्तर, बाहा स्परकान (राव)।

अंतरीय न [अन्तरीप] हीर 'चररारीमांक-यने विगुपरागुं भागि भंतरीयं ब' (वर्गीव १४३)।

अंतरण म [अन्तरण] दिना निराय (उन्न

मुप्ता बनता है ऐना एक पावित्र हव्य (शी ४) । र माश्रको प्रोजका (नूप १ ६) । १ रैन पारिसे रुपैर की मानिस करता (यात) । ११ क्षेत्र (स ४८२) । १२ रज्यसः धूनिकी के कर-कामक का करूव औरत-किरोप (ठा १)। किमिया की विशिध्यी बननात-विशेष (भग्ण १० एव)। दागर् दिया क्या-विटेप क्य)। दीव पू द्विपी ध्रीनिविदेश (पर)। प्रस्तय व िश्रस्त हो एक माति ता एव (ग १) । २ पवत-विरोध नाएक टिकार (अन्द्र)। स्वद्यार्की [प्रमा] चौर्य गरक-पृतिकी इक)। विट्र र्दृ विरिष्ठ] इन्द्र-विरोध सन ३ ६)। सकाग की [शस्त्ररा] १ केन-वृतिकी प्रतिहा । र प्रेयन नवान की समाई (मूच १ प्राः । सिद्ध वि [सिद्ध] याच में यंत्रत-विदेश समावर बहुत्य होता की रुक्तिकाला (मिनी)। सुन्दर्ग हो ["सुन्दरी] एक सक्री की रहनम् बी माता (रडम १६, १२)।

श्री क्षण स्थाप हो हिंदू हुन्न विदेश रवाम ठमान वा पेर (दे १३) । श्री काद की हिंदू वर्षी निर्देश (परण्डर) । श्री करण मा हिंदू रुपो अंक्रपण्डिका (दे १३) ।

स्रोजपा देनी अंजप १ भंजपा थी [संजना] १ हतुमान वी भाजा (१३म १ ६)। स्वर्गस-स्वाद थीवी

(इस १ ६)। स्वत्यस्यात्र बीबी तरण-प्रविधी (ग ४)। १ तह पुलरिक्षा (४ ४)। तयद दुं दिनस्य हुम्मान् (इस ४० ४)। सुन्दर्श की (मुस्कृत) स्वतन्त्र की मता (इस १६, १)। क्षेत्रसम्मान्त्री [बज्रमामा] बीबी तहर

प्रविधी (न्यः)। स्रीमित्रप्रास्थी [वे] देवी अजिलासिका (दे १ ३३)।

अंत्रयान्त्री [अप्रती] रजन का बागर रात्र (नृष १ ४ ।

१९ (तुप १४) अर्जात्, श्री पूँची [अर्जाय] १ हत्व का नेंग्न (११ १४)। क्या वानी संपूर्णिय गांचा को तरार पर रूरता क्या वा वीह वा का रिप्ट हर्वेड रूपाराजीतिये विज्ञा क्या की रिप्ट हर्वेड रूपाराजीतिये व्यक्ति कर विरुध प्रशास (राष्ट्र ११ स्वन्त ६३)।
तक्ष थुं [पुन] इत्य का संदूर (महा)।
करण क [करण] विरुध-विरोध करण का
विरुण (रामह्य १ विप्रकृत होव बोहना (पन १४३)। र संनीय-विरोध (धन)।

र्वेत्रस वि (दे) ऋतु मान (दे १ १४)। अजिय वि [अधित] यात्रा हुसा, संत्रत-पुक्त विया हुया ( व ६ ४६ )।

अंतु वि [अर्थ] १ प्रस्य कर्तिन भंतुक्त्यं बहा राज्यं, विराह्यं कर्त्य मुख्ये में (मृत्य १ १३ १ ४ मा १ १ संबंध में राज्यः पंचनी भूतेषि भाज्यात संबंध्या। १ स्टट्ट ब्लय्ट (एव ११)। अञ्चला स्वी [अञ्चला] बलाना करनामा

नौ प्रत्य विष्या (जम १६०)। श्रीकृ स्त्री [अ.खू] १ एक पार्थनाह सौ कम्या (विसा १ १)। २ विस्तवपूर्व का एक सम्मान (तिसा १ १)। ६ एक स्वासी (ठा.४)। ४ चात्रावर्षनार्थ पूर्व का एक सम्मान (स्त्रास )।

अंडि पुन [अस्ति] हते हाम ( पर्)ः 'बहिष्मरूपम्य वंदम्म अनोग्नत्तप् ग्रम्प्री व वस्त्रीमर्दि (वार ६)।

अंड ) न क्रियह की १ थेण (क्या अंडम) वे प्राप्त १ १ थेण-मेश (प्राप्त १)। अंडम) वे प्राप्त प्राप्त १ १ १ १ इस विद्यास (ज्ञाचा १ १)। इस रि [हर्ग] में स्वप्त में नमस महा क्षेत्र भी (प्राप्त १)। अंद प्राप्त अंगे (प्राप्त १)। वंद प्राप्त वाला स्वाप्त स्वाप्त

आंद्रस ] रि(आ जिडा क्षेत्र के देख आंद्रस ] हैरेनेशने ना पत्ती, श्रीर, नक्षती चीरह (द्वावे हाल)। २ नेप्रमाना वाका ३ रहमी बहन (दुन देश)। ८ हस्प ना बहन (पुर स् रे)। अंडम पृष्टि अरडको सक्तरी सक्तर (र ११६):

जीवाज्य वि[अध्यक्त ] सरहेते पैछ होने-भाषा (प्रस्य १२ १७) । जीव पे अस्ति | १ स्वक्य स्वस्थव (११ १

जैत पूँ [अन्त] १ सक्य सम्बद्ध (से **८** १<)। २ प्रस्तिभाग (से €, १)। १ सीमा, इद (या ६६) । ४ निषट नक्दैक (निपा १ १)। १ मप पिनात (मिने १८६४ थी ४६)। ६ तिर्शय किंवय (ठा६)। ७ प्रच्या, स्थान 'एगंडमंडमबद्दमई' (यन ह २)। दशय बीर इ.व. 'दाईड सीईड व्यक्तिमालों (दाका) । 🛚 येव वीमार्थ (विष १४१४)। १ वि निक्रवों शो प्रति-कुल अपनेकारी चीज अस्पृत्व**,** श्रीरत राष्ट्र (मन्द्र ४)। ११ मनोब्र, मृन्दर (ने ६-१८) । १२ तीम शुद्र तुम्ब (कम) । वर दि [ क्या देशी कमा में बुद्धि परिणास (नूष १ ११)। बरज़ दि ["बरज] नलन (पण १९)। बाह्य पूँ विश्वती १ मुखुक्तर। २ प्रत्यक्तन (से १, १२)। **ॅकिरिया त्था जिल्ला** बुनि, संतार गा भवरणा(स४१)। इन्द्रन["इन्द्रे धुप्रकृत (रूप) । गइ रि (कुन् ] सी क्य वें हुकि पनेवाचा (ता ४६१) गहरूसा स्त्री हिन्दशा वित संपन्नें हैं बाठवा सं<del>प</del>-संव (स्त्युर)। **द**र्री िचर] सिन्ना में श्रीएत बदावीं भी 🐧 बीन

बरत्यात (शन्द् २, १)। और वि जिस्स्य धीनत, सन्त्र मा (सन्त्र १९)। कनारमा स्त्री [स्वरिता] १ क्याधिमिरित सार्यक्र से (सन्त्र १)। १ क्याधिमिरित (रुप्प)। और म [सन्त्र] धोड (पुता १८२, स १८९)।

र्जेद य [क्षस्तर्] मध्य में, बीच में (१.८. १४)। उरम [पुर] केले जीवर्र (तारे)। बरण काण [करत्र] गर-कुर- 'वण्णास्तरपर्वत्रपर्वत्र' वीवनार)। स्मन्न कि [गर] मध्यप्ते वीचनार। (१११)। द्वारनी [थी] १ विदेशन। २ नस्त्र (ब्यूर)। द्वारनी

[बान] बद्दाय होता, तिरोहित है व

जिसमें मनुरय हो सके ऐसी किया (सुध २,२)। द्वाभूञ नि धामूत नट बिगत 'नद्रेति वा बिगतेति वा घाँतळामुतेति नाप्पट्टा (प्राप्त्)। य्याञ्जर् िपाली मन्तर्माव समावेश (है २ ०३) । आस पु [भाष] समावेश (विने)। अहुक न िंसहर्वे देख कम मृहत्तं सून मृहत्तं (जी १४)। रद्धास्त्री [धा] १ तिरोवान । २ नाग 'द्राची सदयन्तरता' (या ११)। रद्वा स्त्री ["शद्वा] मध्य-कास वीच का समय (माना)। रत्य पू विश्वासमन् माना जार (इ १ १४)। रहिय, रिहिद (शी) नि [\*हित] १ व्यवहित अंतराम-पुरः (भाषा)। २ प्रत सक्तय (सन १६ः उप १९६ टी मिन १२ )। । वेद वृष्टिती र्वगा और यन्ना के बीच का देश (हुमा) । **अंद पि ["कान्त] मुल्द, मनाहर** (मे १ **1(3**% अंतभ वि [आयान्] प्राता हुवा (ने १ 48) 1 अंदञ्ज वि [अन्दगः] पार-गामी पार-प्राप्त (न € (a) i अनिम वि [सम्बद्ध] १ धविनासी साधन । २ निसनी सीमान हो नह (मे ६,१८)।

(वर १६६ टी) । द्वायी स्मी विमानी

क्षेतम वि [अस्तव ] र प्रविनाशी शाया।
र निवारी वीमा म हो नह (म १,१८)।
क्षेतम ] वि [अस्तव ] र मानेहर मुन्यर क्षेता ] (म १ १८)। र प्रत्यनंत्र क्षानि (मूच १ ११)। र प्रत्यनंत्र क्षानि (मूच १ ११)। र प्रत्यनंत्र क्षानि प्रवार के व्यक्ति आर्था माने व्यव विकासित स्वार्ण के व्यक्ति क्षानि (मूच १९)। भ मान मुद्ध (म १९)।
क्षेत्र माने क्षिति सम्मानम्बर्ध (मूच १९)।
क्षेत्र म विकासित हो स्वार-मानी । र

अर्जा वि (अन्ता) रे पार-पानी । २ कुन्स्यक का विस्ताई से छोड़ा का सके विवास स्टबर्स सोर्स निरवेश्को पन्त्रियस् (कुम र ह)।

भौतमय केने भौत साथ (वय १)। भौतम न [यम्सन] बन्तन नियन्तम् (प्रयी २४)।

२४) । अंतराण वि [अन्तर्भान] विशेषान-वर्त्ता(विष्ट ४. ) ।

अंतब्भाव देवो अंत भाव (धग्रह १४२) ! र्अंतर न जिल्डर रिमध्य भीतरः 'नामंतरे पनिद्रों सों (बर्ग ६ टी) । २ मेद, विशेष फल्क (प्रामु १६८) । ३ धनसर, समय (ग्राया १२)। ४ व्यवदान (व १)। १ मनकारा धन्तरास (भग ७ ८) । ६ निवर बिद्र (पाम) । ७ रजोहरए। **८ पाम। ह** पू माणार, करन । १ सूत के कपड़े पहलने का माचार, सीत कम्प (कम्प)। ऋष्प तू **िकरुप**] यैन साथु का एक मारिवक प्रशास्त्र भाषरण (पंडू) हर पं किन्दी धन्द शी एक जाति वनम्पति-विरोप (पएखर)। करण न ["करण] माना का शुन सच्य बनाय-विरोध (पंच)। । ग्रह् न िग्रह १ वर का भौनरी मान। २ को वरों के बीच का बीजर (शुरू ३)। आई स्वी ["नदी] द्धा<sup>नी</sup> नची (काइ)। दीव पु िँद्धीपा रैकीप-किरोप (भी २३)। २ सवरा समूह के बीच का द्वीप (पएए) १)। सन्तु पू राञ्ची भीतरी शहु, काम-काबादि (सुपा 22) t अंतर मक [अन्तरम्] ध्यापान करता वीच में बालना । प्रतिपेद्धि, श्रेतरेमि (विक १९६)। अंतर नि [मान्तर] १ मन्यन्तर, मीतरी संस-मनुष्णांनि बंडरो सनागों (बन्दु २ )।२

अंतर्रत कि [अन्तरङ्ग] भौतरी (विने २२७)। अर्थरीओ स्थी [आन्तरजी] नगरी-पिरोप (विने २१३)।

मानमिक (दबर ७१)।

श्रीतरपद्वा स्था (अस्यरपद्वा) मून स्थान स सर्व गम्मा नी दूरी पर भिन्न न न (पर०)। अंतरसङ्ख्य स्था अंत सुदुष्य (चन २१३)। अंतरा य [अस्यरा] १ सम्ब में बीच में (क ११४)। २ पहले पूर्व में (क्स्प)। अंतरा या व आस्यरायिक] १ नर्व-विरोध

नो बान बारि काने में निम्न करण है (टा २)। २ फिन, स्वान्त (पह्यू २१)। अनिसहय न [अन्तरापीय] करर देनी (नुस ६१)। र्जंतरापद प्रशिवस्तरापभी सस्ता का बीवना पाम (पुन १ ११)। जंगराय पुन, [अग्यराय] देवो जंगराइय (ज २ ४ न २ २)। कंतराक पु [अग्यराक] संतर, बीच का माग (बीम ८२)। कंतरावम पुन [अन्तरापभी कुकान हान

(बाद ६)।
अंतरावास ई [अन्तरवर्ष, अन्तरावास]
वर्ष-कम्म (क्य)।
अंतरक्ष वृत [अन्तरिष्कृ] सन्तराव पाकस्य (मर १०१ व्यन्त ७)। जाय वि [बाद] अमीन के करर एणे हुई प्रानत वंव साथ क्यू (पाचा २ १)। पानमाह द [पाक्तमा यानस्य में सहस्ता के

वास का एक वैन-शीच धीर वहाँ की मगवान धीपार्यनाच वी मूर्ति (ग्री) । खीतरिक्त कि [आत्तरिक्त] १ धाराय-धंवेधी सारमण का (वी १) । २ वहां क परण्या दुव बीर भेद का जन वजननेवामा साथ (मन ४१) ।

अंतरिक्ष न [अस्तरीय] १ नस्त्र कपहा। २ शस्या का मीचना बस्ताः 'संतरिक्षं ताम व्यवसर्थं करचा संतरिक्षं नाम सेकागः हेट्टिक्षं वोर्षः (निष्कृश्य)। क्षंतरिक्षः न [व] करमग्रे करीनृतः (३ १

| ११)।
| अंतरिजिया स्त्री [अल्वरीया] वैशीय
| वैश्वाणिक गण्ड की युक्त शासा (क्या)।
| अंतरित | नि [अल्वरित] स्वाहित संतर

अंतरिया। २०)। अंतरिया को [व] समाप्ति संत्र (अ'२)। अंतरिया को [व] समाप्ति संत्र (अ'२)। अंतरिया को [कास्तरिका] सोटा सम्तर

थोड़ा स्वाधान (राव)। अंतराय न [अन्तरीय] डीर 'गरकरिग्रंच याने जिल्लामणे सासि संतरीय न' (वर्गीक १४३)।

अंतरण म [अन्तरण] विना तिराप (उत्त १)। रें >
अंदरेस य [अन्दर्स ] दीन में सम्य में (स ७ १९) । अंदिक्ता देनो अंदिस्त्र (स्था १ १ चार ७) । अंदि केनो पंति (ते १ ११) । अंदि केनो पंति (ते १ ११) । अंदि केनो पंति (ते १ ११) । अंदिस में [अन्दिस] चरन केय करन (क १) । अंदिस में [अन्दिस] र समी निक्ट (स्व १) । यसनाम पंत्रा प्रमृतिसारका सामार्थनेन स्वीमा (स्या १ ६) विमास

सागरकेत संनिता (याना १ क) विशासन सरस (मूच २ ०)। अंतिहरी त्यां [स्तु हुगों (१ १ व१)। अंतामार्टित [सम्बद्धारित] सी व में समे-साता, बैचक (१ १ ६)। अंतारत में [सम्बद्धारित होने बेनारत में (सम्बद्धारित होने संत्राहित्या) स्वयुद्धार स्वाहित्या स्वयुद्धार से विश्व अंतिहरीया स्वयुद्धार स्वाहित्या स्वयुद्धार से विश्व अंतिहरीया स्वयुद्धार स्वाहित्या स्वयुद्धार से विश्व

इ)। २ रोगो दा नाममाप लेने से बतको म्बराम बनानेशानी एक विद्या (वर ६) । अनिही स्मी हि । सम्म श्रीव । २ जस् पेट (३ वालोच तर्व (३१ २४)। अंश्वामि रि [अग्श्वामिन् ] क्यि (गण)। र्भनेयर रेगा अनवर (इन १)। भीता च [अन्तर्]बीच जीतरः नार्वतो नालां (प्रा६ है। तुर ६ कर) । साहिया नी विश्विता नित्त व रानेशानी नेश्वा (मन ११)। तद्रषा स्मी विशिक्ता रशमात्र के जिल्लामने जाना 'सत्रशाल विश्वांग क्षेत्रीयाचाग तरहकार्यः (सूर १४, १६१) । तय वि [यत] मध्यत्रती मर्सार (स. ॥ ६ हो) । जिल्लामधी री विजयमना विकास का पहली रात्रकार (दूर ६)। बृह्यान [ १९२] १रवना (नंद्र) । सामात्र सः प्रवर्ष [ सध्यावसानिक] व्यक्तिय पारपार (स्त्र)। बुदुल न[बुनुर्स] **पर गू**र्नुट स्थित संबद्ध शहर

(कम)। बाहियी हमी [बाहिनी] सुर मधे (ठा २, ६)। बीसंत्र मुं [बिक्सम ने हर्मिक विषाध (है १ ६ )। सह न "रास्त्र] १ गीठते रूप्य बाब (ठा ४)। १ वपट मामा (तीप)। सास्य स्त्री [दास्त्र] बरका भीगते थान क्षेत्रक्रमीर्थ गीठीलागिहती बीहिया गीठिरं (ज्या वि ४११)। हुम्म मिं [स्त्रुस] गीठतं पंजाहर्म उनक्द काममुन्ते यो हर्मिक्तमीर्थ (ज्या वि

191) | श्रंगाहुस दि [दे] घरोपुर शौंदा गुंह दाला (दे१ २१)। अंत्रही (थर) स्वी [अन्यह] यात यांत्रो (ह ¥ YXX) I र्जर्व [चम्यू] १ चन्त्रमा चार पनुर इस्तो रासारलपविमानं विभीरिमृह्संद ( का १)। २ रपूर (मै ६, ४७)। राम र् ( सग) वनकाल मणि ( चे १, ४० )। अंदर्गाकररा] क्रम्य ( स १ 1 ( 08 अंदछ पुंकिन्दछ] कृत किरोग (ते **७** An) I अंदाय द (शे) रेगो अंदाबड़ (ह ४ 8 4 ) 1 भेंद्र १ स्त्री अन्द्री श्रृंतमा वंशीर

अंदुवा ं (सीर न १६)।
वरिष्ठ (सीर न १६)।
वरिष्ठ (सीर न १६)।
वरिष्ठ (सीर ने स्थान)
वरिष्ठ वर्षणा किया। १ वरिष्ठ होना होना वर्षा क्षा १९११।
वर्षणा १९११ १९११ होना हिमाना।
वर्षा अंशिक्ष (सुर १९७)।
वंशिक्ष वर्षा वर्षा होना।
वर्षा अंशिक्ष (सुर १९७)।
वंशिक्ष वर्षा वर्षा होना।
वर्षा अंशिक्ष वर्षा होना।
वर्षा अंशिक्ष वर्षा होना।

र्जशासन व [आस्त्रासन] १ दिवत्रा भूतना (तुर १२१)। २ जिसेसा १३ नार्जन्य (तुर १११)। श्रीसन्य केलो श्रीसना (तुर १ १०४)। श्रीसन्दित्त (तार्यस्य ] ज्विसेताला, वैसोरिता (तार्यस्य ]

| अंदोक्षिर नि [आस्दोक्षित्] मुसनेनला (नुपा थन ) । अंदोक्षय नेवी अंदाक्षय ।

अंदोह्नय केवो अंदाख्या । शंधा वि [अन्या] र सत्या, नेपूनीन (विचा ११) । र स्वानः सन्यादित एए वं संध्या वृद्धा स्वत्याद्वा (वर ७ ७)। "बंटरस्था न "क्यटकीन | येपहाय के बंटन एर समने के साहिक घरिकारीय रामन करणा (बाया)। तस न ["नसस्य] निशिष्ठ व्यन्-सार (वृद्धा ११)। पुर न [जुर] नगर

बार (बुब १ १) युर न विद्वा नगर विदेश (बुर ४)। कोब ई जिल्ला वाचनों नरक का बीना भारतेन्द्रर एक नरफ-स्थान (बेन्क्स ११)। कोब ई व जिल्ला हत नाम का एक केट (ब्वाब १८ ६७)। कोब कि (जाला) बाला केट वा एक्सामा (ब्वाब १९)।

र्जवंद्ध दृष्ट्री पून कुँसा (व १ १ १) । व्यवकार रेको जंबकार (वंद ४ । वंदम रेको जंबकार (वंद ४ । वंदम रेको हुक देह (सन १०, ४)! व व्यव्ह हुँ विद्विष्ट वंदम रोता (सन १० ४)। वव्दि हुँ [यहि] इस्त समित (सन १ ४)। वव्दि हुँ [यहि] इस्त समित (सन १०, ४)। वंदम हुँ (द्विप्त) त्रवृष्ट्रा वास्त प्रत सो उद्धारिवनार्य के सिता का वर्ष रोता ने व्यवस्त १ हुँ [बानका १ स्वास १०

वत ना एक पार दुमार (पत्रम ६ १ ६) । क्षेप्रसाद पुत्र मिल्या हो चित्रम संदग्तर (दण्ण व ४२६) । जस्त पु चिम्नी क्ष्ण्णात्र (मूक ११) । अध्यसारण न [अग्यसार] क्रनेश (क्षरी) ! अध्यसारित ति [अग्यसारित] वेपनार बाता (दे ११) । ६) । अध्यस्त्र हेति [अग्यस्त्र होसी, होसीन अध्यक्त हैति १००५ । १०११ ।

अध्यया हीव (पर्लाहर २)। २ वालर

अंधरक } रि [अरच] श्रेषा, निर्माण अंधक । (ना ० ४ र हे २, १७१) । अंध्यविद्धी स्था [अस्पविद्यो ] स्व बनाने बानी एक रिया (गुप्त ४२ ) । अंधर र्षु [अरच धर] संचेस (मीब १११

\*3 )1

जीपार सक [ अन्यश्चरय् ] क्लबकार-युक्त करता। कर्ने 'मेहण्याल मूरे वैदारिका न कि मुक्तुं (दुप्र १८७)। संघारिय वि [अन्यव्यक्ति] चंदकार वाना (मुना १४ सुर व २व )। अधाव सक [ अ घय् ] संवा करना । संवा वेद (दिक्र प्र४)। अधिक्र वि [अधित] सन्व बना हुमा (सम्यत्त 121)1 **डांधिआ स्त्री [अधिका] घट-विरोप (वे २,** श्रीभेशा स्त्री [आग्यका] चतुरिन्तिय वेतु शी एक पाति (सत ३६ १४७)। **डाँ।घट्टा वि [अन्ध] धन्या जन्यान्य (**पण्ह २ १ ) । लिखिय केवी अधिहरा। (रिंट १७२)। अधिकित (शौ) वि [सन्धीकृत] धेव किया इ्मा (सम्बद्ध ४६) । अंधु पू [बर्धु] पूप शूमा (प्रामान्वे ११०)। धंपक्षा देना अधिक्छम (पिएड) । अप प्रं [कम्प] रपन (स ४, ६०) । कांद पू [अम्ब] एक बात के परमावामिक देव मा नरक के जोवों को चुन देते हैं (श्रम २०)। अंदर्[आस] १ साम ना **रेट** । २ न मान माम-कन (११ ८४)। गहुवास्त्री दि याम नी याठी छठनी (निचू१६)। चायगन [दे] श्वान का देशा (निद् ११)। २ मान नी मूल (माना २७२)। बगस न [वे] धान का दुसड़ा (निष्क ११) बाइम न [र] मान का छोटा दुवका (पाचा २७२)। पैसियास्त्री [पिशिका] माम नामान्या न्यका (निपु १६)। भिक्त म [रे] यामना हुनजा (मिन्न १६) । आहता न [रे] मामशी दाम (निष् १४)। साल्यम न ["शास्त्रवन] नैत्य-विरोध (एय) । भंदन [अस्डे] १तक बहुा (वं ३)। २ गहा रत । ३ सट्टी चीज (दिन) । ४ डि. लिप्टर बबन बीमनगाना (बुद्ध १) । र्मनि [आस्तु १ बही दल्दुः २ महुते नेम्दर कीय (वं १)। **थंद**ि (अस्त) नान रहत्रालेखना (ने 1 17)1

अंक्यादेनो अच≓माम (मणु) °द्रियास्त्री िहिया बाव की गुरुषा (बागू)। अंबट पूं [काम्बप्त] १ बेश-विशेष (पडम ६८, ६५)। २ जिसका रिता बाह्मण थीर माता भैशय हो बहु (शूप १ १)। कांबड पू [अध्यद] १ एक परिवासक वा महाविदेश क्षेत्र में अन्य लेकर मोल जायगा (बीप) । २ मनवान् महाबीर का एक आवक को बातामी बीबीमी में २२ वा तीर्पहर होगा (ਨਾ ₹)। अंबद्ध वि [ये] कठिन (वे ११६)। अंबचाइ स्मी अम्बाधात्र ]बाई माठा (मुपा २६८) । श्रेबमसी रंगी वि किन भीर वासी वनिक ( \$ 7 \$ 3 ) 1 अंबय रखो जीव (गुपा ६३४) । अंबर पून [अम्बर] एक देव-विमान (देवेन्द्र \$XX) I अंबर न [अम्बर] १ प्राकाश (पाप) भग २ २)। २ वस्त्र वपदा (पायः निद्वार)। (शहर पू ["तिस्नक] पक्त-विशेष (बाब) । श्राम ("बस्रो स्वण्ड वस्य (कथा)। अंबरस पून [अम्बरस] बाकारा, पवन (भव २ २-- यत्र ७३१)। अविरिख पूर्त [अन्वरीप] १ मही आह (पर ६ ६) । २ मोलुक (जीव)। ३ पूँ गाएक-जीवों को कुन्स बनेवास एक प्रकार के परमा-भागिक देश (पन १०)। अवस्थित र् अम्बद्धपि १ क्रपर का सीवस वर्ष केलो (सम २०)। २ स्वासिनी नग्री का निवासी एक बाह्मए। (बाक्)। अंबर्रास क्या अंबरिम । अवर्रामि देशे अंवरिसि । अंवसमिमा } देवो अंदममी । अंबसमी अंबर्द्रेड स्थो [अम्मद्रुण्डी] एक देवी (भहानि २) । अंबा स्मी [अस्या] रेमाता मां(स्वय्न २२४)। २ मानाम् नेनिनाय की शामनदेशी (चेनि १ ) । १ बप्सो-त्रिदेश (पाए १) । अंबाह कर िगरण्य विषयना नेप करना 'चनक्रीत करणवान चेनामेति ति मूर्त नगति' (निसूप)।

अंबाड सक [सिरस्+कृ] ज्यानंग देता तिरस्कार करनाः 'तयो इस्कारिय भेगाविमा मणिया म (महा) १ अंबाह्य 🤰 [आग्रानक] १ मामना शा अश्रह्म र् (क्एए १) पडम ४२ ६)। २ न. ग्रामना का एम (धनु ६)। अंबाडिय वि [त्रिरस्ट्रत] १ विरम्हत (महा)। र जनसम्ब (स ११२)। कंबिजा स्वी [क्षस्थिका] १ भववान् नेमिनाव की शासनदेशी (ती १)। २ पांचके नामुदेव नीमाता (पतम २ १६४)। श्रमय पू<del>ँ</del> [ अमय] गिरमार पश्च पर ना एक तीर्थ स्पान (ती ४) । र्वशास्त्र न [आम्र] शानका कन (दे१ १५)। अवित पूर्विभागत र बहारम (मन ४१)। २ वि बटाई नाली भीन सड़ी बला (धोम ३४ )। ३ नामकर्म-विशेष (कम्म १४१)। र्अविक्रिया स्थी (अम्छिका) १ इमनी का पह (उर १ ११ टी)। २ इमसी का फल (पार)। र्ध्युव[ब्रम्बु]पती वप (पाय)। अ द न ["ज] रूमन पर्म (मणु ४१: पुना)। णाइ इं [नाम] समुद्र (रर ६)। रह न ["रह] कमन (गम) । तह पूं ["बह्र] मेच बारिस (बडड)। बाह प्रं विहा मैच बारिन (बडड)। अंबुपिसाअ पुं दि] चहु (या व ४)। अंबुस् पू दि पापर अन्य निरोप हिनक पशु-विशेष शरम (दे १ ११)। अविद्विधा १ श्री दि ] एक प्रकार का पूजा मुष्टि-धून (दे १ ७) अवसि वृं वि बार-क्षत्र बरवावे वा तत्ता ( 19) अंबोच्या स्थी [दे] हुनों वो विक्तेरामी स्थी (वे१ र भार)। अभि 🖠 [अस्पस्] पानी जन (मा १२)।

अंस् (धर) पूँ जिन्सम् ] पचर पाराण

अधोर्[अस्थस्]पा∂ करा शाह

िज दमन (देश है)। इगार**नी** 

[डिज़ी] नमनिती परिमती (म.११)। निर्मित्र [निचि] मनुः (या १२)।

(पर्)।

```
स्व न दिश् कमन पर्या कुमैनोक्स्टर
 जननिक्षितो, दिव्यविद्यास्य वस्त्र वस्त्र विद्यालया विकास
 (उप ६ टी)।
व्यमोदि प्रम्मिस्मोदि] समूद्र (कुट २७१)।
कीस प्रें चिंग्रें] १ मार धरवर चंड टुक्या
 (पाम)। २ मेच, विकास (विशे)। ३ पर्वाय
 घर्म इस्त (विने)।
श्रीस पूं [बारा] विचमल कर्मे सका-विका
 कर्म 'धंस इति संतकमां प्रवर्द' (क्रमा ६ १)।
  इर वि विरो मनीदार (इन१३ २२)।
र्थंस १९ [अंस] कल्च वंदा (ग्राया
संसद्धा १११ तंद्र)।
ऑसि केते अस ≈ अस् ।
श्रं सि स्पी [असि] १ कोल कोना (उप ह
  ६८)। २ वार, नोक (ठा ८)।
क सवास्ती [कंशाका] मल, विस्ता (इह
अंसिया स्वी [अर्रिका] १ वनावीर का रोन
  (भग १६,३)। २ नालिकाका एक रोप
   (निष् १)। १ क्रमधी फोड़ा (निष् १)।
 भंस प्रं [अंद्य] किरण (तहुप १) । मास्त्रि
  र्' ["माडिन्] दुर्ग पूरव (दम्स्ड १)।
 र्जसु देवो असुन = प्रतुक (वंद ६ ४ ) ।
 इमें सुव [इमेड्ड] किरए। संत अंत कि
  [सह] ( किरहासलाः २ ४ वृत्र्यं
   (प्रक्ता≉६)।
 व्यं सुन [व्यम्] ग्रांतु, वेष-प्रतः। संतः वंत
  वि [ सन् ] समुबाला (प्रस्कृष्ण)।
 भीतु १ ल [अभू] योगू नेत-वत (ह १
 र्मस्य । २६३ कुमा) ।
 संसुय न [बांशुक्र] १ वस्य क्यका (से १,
    २) । २ वारीक वस्त्र (शृह २) । ३ पोस्त्रक
   बेश (बच्द) ।
 भीसारम देशो धरसोरम (१९ ७४ ११२,
   3 R) 1
 भीइ पुन [आंध्स्] कत 'मकर्य व वाशियो
  नो निरहण छैल जनस्यक्ष्य (वर्गीव
   (Yt) I
 अहि पुं [अंह] शत पंच (रणु)।
 भक्क हैं। [अक्रिक] सर्गरकत सन्द (ठा
   1)1
 मन्द्र केरो सर्वद्र (स. ६६४)।
```

```
भक्तवस्थिम वि. दि र लेक् रहित । जिसने
 राधी न भी हो वह (दे १ ६ )।
आर्थपण पि [अरुस्पन] १ कंप चीहत । २
 पुँ रावस का वक पूत्र (से १४७)।
भक्षीय वि [अक्स्पित] १ कम्परीहत
  २ प्रथमम् महाबीर का बाठको क्लाबर
  (सन ११)।
ण कथा केवो ल क्य ≔ पहरूप ( चार )।
बरूप १ वि बिर्झ्यो ] १ कर्ण सीक्षा
भक्त । २ व पू. स्वनामक्वात एक धंध
 हींप बीर एसमें प्रतेशका (ठा ४ २) 1
अक्टर ५ [अक्टर] संशोध धाचार,
 शास्त्रोक विकि नर्याश से बाहर का ग्रावरात
 (कप्प) 1
भारूप वि [भारत्वय] बनावरखीय, रात्व
 निवित्र महार-वस्त्र शादि घडाम वस्त्
🗕 (यद १)।
अक्टियन पूँ [अक्टरिपक] निसको शास्त्र
 का पूरा-पूरा कान न हो ऐसा कैन साबु
 (वय १)।
अक्टियस देवी अक्टप - सक्टब (१५ १) ।
वस्म वि[लक्स] १ इन रीहाः २
 जिपि एक साम (कुमा)।
थकम्म ) न [अक्स्मेन, की श्वती
<del>व्यक्तमा∫ काशनाव (ब्रह्</del>र)।२ दं
 पुक्त शिक्ष जीन (धाना)। १ इन्नि सारि
 कर्मचीहा (देश समि वर्षे छह) (बी २४)।
  भूमग भूमग वि ["सूमक] सक्ते पूनि
 में उरपत्र होने वाला (बीव १)। भूमि
 मृमी ली [मृमि मृमी] वित पृषि व
 करा दृशी से ही धानस्थक वस्तुओं दी प्राप्ति
 होते से इपि वमैरङ् कर्म करले की बादरयक्ता
 नहीं है वह, धीय-मूमि (ठा ३ ४)।
  मुमिष वि ["मृमिस] पवर्ग-मूमि में
 ज्पक्ष (ठा३१)।
अक्रम्हा य [अक्स्सान्] धवलक निम्हा-
 रण (बुचा १६६)।
कक्य वि [अक्ष्य ] नहीं किया द्वारा (दूमा)।
  सुद्द वि ["सुका] बगळित मरिवक्तित (धा
 के)। स्थापि [भिष] श्रष्टकत् (नाट)।
जरून वि [अहता] १—२ करने के धर्मान्य
 या बरलका ३ व. बनुचित काम। कारि
```

```
धंमोहि—मध्य
   वि किरिय प्रमुख को करनेरला
   (पञ्च = ७१)।
  बद्भारम (मा) क्रमर वेबी (नाट)।
  लकरण न [बाक्ररण] १ नहीं करना (क्व)
   र मेंद्रुल 'कह सेवंति शकरतं पंकरहर्म
  वाक्षिय इति' ( वद ३ )।
 सञ्ज्य वि [सञ्चयिक] १ राधिक च्हा
  वे पीतः २ पूँपुकालग (अन्य ॥ २) ।
 अप्रमाप् [अञ्चम ] र प्रतिलक्षा (तुव
  ९ ६)। ए वि इच्चाणीव निकास
  (कृपा२ १) । जिल्लासास्त्री ["निश्रीय]
  कर्न-नारा की मनिक्दा से बुद्रमा मादि कहीं
  को आहत करना ( ठा४४)।
           🧎 [अञ्चमक] उत्पर 📢 ।
 अकामग
 जरामय <sup>5</sup> हे स्वा<del>द्धतीत एका</del> करने
  🕏 धनोष्ट (परहर र खामार १)।
 অভ্যমিষ বি [ধ্ৰত্ৰমিক] নিত্ত (বিয়
  1 () 3
 लकाय वि[अकाय] १ शरीरपीहर । २ 🎖
  मुक्तस्या (ठा २ ३)।
 अकार दूं [अकार] 'म' सवाद, प्रथम स्वर
  क्यों (बिसे ४६१)।
अकारत पुं [अकारक] १ वर्षाच मोजन की
  यतिच्यास्य स्प रोग (स्राया ११६)। २ नि
  सक्तौ (सुम ११) । बाद्रवि विवित्
  बारमा को निष्कित माननेवाला (नृष १
बकासि च [दे] तिनेव-तूचक प्रध्यव प्रतर
  यकासि समाए (वे १ )।
व्यक्तिषण वि [क्षकिक्षन] १ साहु सुनि
 मिलुक (पर्या २, ६)। २ परीय निर्मन
 चित्र (पाध) ।
अक्टिह वि [अष्टर] नहीं भोती हुई भगीय
 धिकिन्द्राय- (परम ३३ १४)।
अफिट्ट दि [लक्रिए] १ न्येक्टीहर, बाना-
 भेण्यामि तुलस वंत,
           चैयामे कहवपूत् दिनहेतु !
 म्बर् गावेका विशिक्षय
           रामेख ब्रास्ट्रिक्सोडॉ (परन
```

खबिरिय वि [अफिय] १ बानसी निरंतम । २ वस्तुस व्यापार से रहित (ठा ७)। 🤻 परलोक्त-विषयक किया को नहीं माननेवाणा नास्तिक (एदि) । य वि ["समम्] बान्या को निकिय माननेशना, सांस्य (नुच १ 1 ) i क्रकिरिया स्त्री [अफिया] १ किया का द्यभाव (भग २१ २)। २ वृष्ट क्रिया कायव ब्यापार (स्न ३ ३) । ३ नास्तिकता (रा ८) । बाइ वि ["वादिम्" परनोक-वियमक क्रिया | को सही मलनेवामा शान्तिक (ठा ४४)। अक्रीरिय देनी अक्रिरिय, 'जे केड गोयम्म बन्दीरियामा चलेख पुटा बूबमारियंति (भूम 1 ( ) 1 अक्ट्रमा स्त्री [अक्ट्रिका] रेको अक्ट्रम । **अकुआसम वि [अङ्गुतामय] विस्को किसी** सुरुक्त में समान हो वह, निर्मेश (प्राचा)। क्षाईठ वि [अकुण्ठ] प्राने काथ में निर्मुख (ग्डंड) १ अक्ट्रय वि [अक्टब] निवन निवर (निवृ १)। स्मी अकुइया (क्या) । **अस्ट्रे**च्य विशिक्षेत्रयी रस्य मुक्तर (पण्ड દ્ર∀)ા अध्याप पुदि । सपराच पुनाव (पङ्)। अक्रोस देनो अक्षाम = महीरा । काक्षेत्रार्थव वि [अक्षेत्रायमात] विक्नता हुए।, 'र्याक्रिएस्टरस्य गावित्यमकोमार्गत रसम दमीरविभञ्जामें (धीन)। अवार् [अर्थ] १ सूर्व शूरत (सुर १ २२३) । २ साक का वेड़ (प्राप्तु १६८) । ३ सुकर्ण, सीलाः 'बेस्र अन्तुप्रसरिती विदिशी रमसद्भीनोयो' (स्वस १४)। सदस्य का एक सूम्र (पन्न १६२) । "तूख ग["तूख] भाव भी एई (प्रमण् t)। तेस र् [तेसस्] विद्यागर वेश का एक धाना (पढम १,४६)। बोदीया स्त्री ['बान्दिका] वाही-विशेष

(करूगुर)।

( n n n n ) .

अकर् [दे] दूर्त संदेत-हारक (दे १६)।

\*अच्च देखीचक (गाइक मेर **४**)। अक्षम दि [सङ्ख] नहीं किया नेगा। पुरुष

वि ["पूर्व] जो पहले कमी न किया गया ही

अर्चाह रेची अरुष्ठ (यात १३)। अर्थात वि [आफारत] १ वसनाम् के हास दबाबाहुबा(शामा १८)। २ वेटाहुमा ग्रन्त (भाषा) । १ परान्त मभिमूत (मूम १ १ 😮)। 😮 एक जाति का निर्शीव मासू (ठा ४, ६)। ४ म. बाहमल उप्पोपन ( मय १ a)। दुक्तावि [दुन्त] दुन्ता स्वा ह्या(शूच १ं१४)। अक्ट वि दि विशाहमा प्रदेश (१११)। अर्द्धन वि [अद्भाग्त] धनिष्ट, धननिमरित, मन्तिमन्त (मूस १ १ ४ ६) । **अव्यक्त (आ + क**न्यू ] रोना विकास (प्रामा) । वह अस्तित (नुपा १७४) । अक्टर (धप) केवी अक्टम = अग्र + सम् । व्यक्ट्रहर संक्ष अव्यक्तिकण (संग्)। आकार पृ [आकार] रोवल विसाप विद्या-कर रोगा ( गुर २ ११४ )। अव्यंत्र वि वि । भाग करनेवाला, रखक (दे १ १४) । कार्द्रश्वणयः वि [आकृत्युक] स्वानवाता (भूमा) १ अव्यक्तिय न [आफ्रन्टिन] निनाप रोवन (छ ४ ६४ पक्ष्म ११ ४)। अक्रम सक [मा + फ़म्] १ शावमण करना बनाताः २ परस्त करताः बहु अन्दर्भव (पि ४०१)। चंद्र अव्यक्तिचा (पर्या ११)। अक्तमपुं [आक्रम] १ व्यामा प्रशासिकाता । २ परामव (मान) । अक्साण व [आक्रमण] १---२ ब्यर वेशी (से १४ ६६)। ३ पराक्रम (विते १ ४१)। ४ वि बाक्सरा करनेवाना (से १ १)। **अव्यक्तिम वेशी अर्थात** = प्राचान्त (काप्र १७२ भूपा १२७)। र्त्सना (खाया १ १६)। रुष्यसास्य रणी 🛊 🖁 र क्लान्कार, वनरहरती । अक्तेसिम वि [ आक्तेदिन ] क्टू दननों से **२ इन्यत्त-शी स्त्री (दे १ द**ह)। विश्वनी मर्चना नी नई हो वह (भूर ६ अकारी [क्] नीह्म (दे१६)। अवदास्पी [अवदा] पुरुषी पूर्वी (पुप १)। 798)I कवासी स्त्री [अवासी] व्यन्तर-अतीय एक अष्टोइ वि [अक्रोध] १ मन्द-वीवी (वे २)। केवी (बीट)। २ झीवरदित (प्रत २)। अक्सार् [अस्] रे बीव मामा(ठार)। श्रद्धिक नि [अक्टब] खुरीक्ने के धयोग्य (ठा

असिट्र वि [अक्रिप्ट] १ वनध-वनित (भीव ३)। २ वाचारहित (भग ३ २)। अक्तिट्र नि [अक्टर] धरिनिवित (मप १२)। अक्रिक कि [अ*फि*स्स] क्रियाचीत (विसे ₹₹ \$ ) 1 अक्कुट्ट वि [दे] सन्यासित समित्रित (वे t 1 (35 अक्कुस एक गिम् विकार मन्द्रमा (ह 8 168) I अक्टब्रम वि मिट्टक निष्कप गागाधीहर (स्प्र १ २)। अक्कूर पुं[अजूर] सीइप्या के चाचा का ग्रम (रशिम ४६)। अक्कूर वि [अकूर] क्रूतार्यहर बक्त (पव 216) t शक्कंज केंग्रे अक्तिज । अक्टेड्य वि [ ए हाकिम् ] प्रकेता, एकाकी (गम्)। काकोड र् [के] काग नकरा (दे ११२)। अक्षेडण न [आकाडन] इन्हा करना संबह करना (विनं)। अब्दास न [अब्द्रीश] विस दान के व्यवि नव दीक में सटकी श्वापद वा पर्वतीय नदी वादि का छपत्रव हो वह 'बेर्स बसमबसं वा इंडमस्पिव सकीसमद्रीत'। बाबाद्यांन्य चहोर्च धव्यावाचे सम्बद्ध वर्छे (48.4) ( बक्कोस सक [बा+कृष् ] मात्रीय करना। गक्त आव्यासित (सुर १२ ४ )। शक्येस ई [बान्धेश ] ब्हू वचन रात भरचेंना (सम 😮 ) । अक्ससन वि [बाफोश्चरू] बाहेश करनेराता (उत्त २)। अकोसवा स्थि आकाशना विभिन्नत निमे-

च बाबला को छक्त पत्र *(में* १४ केट)। के



क्रिस्टर्जत देखी अवस्था = दा + दया । क्रिक्स कि सिशिक्षा में तथा है मेरित (मिरि ३१६) । ।किस्त्रचाकि जिल्लितो १ व्यक्तमा २ जिम पर टीका की गई हो यह । ३ माकट, चौंचाहुमा (गुर३११४) । ४ सामर्थ्यं 🦹 निया हुमा (से ४ ११)। प्रक्रियत्त न [अचेत्र] मर्यास्ति सेन के बाहर

का प्रदेश (निष् १)। प्रक्रियामक [आा+चिप्] १ मालप करना टीका करना दोपारोप करना । २ रोक्ता । ३ तेवाता । ४ म्बलून करता । ३ फॅक्ना । ६ स्वीकार करना 'मस्बिक्द पूरि मगार (स्वर ४१)। हें अविस्ववित्र (लिर १ १)। 'तसी न जुत्तमिङ्कालम् अक्तियित्रं (स १ १ पि १७७) । कर्म, 'बक्तिपद यमें माली' (स २३) प्रामा)। अक्तिया मह [आ-|चिप्] पाकोरा करणा ।

मिक्नवंदि (सिरि =३१)। अक्टित्स्य न [आद्वेपन] म्याकुनता अव राहर (पराह १ ३)।

अवसीम वि [अभीम] १ **हास-सून्य** सक रहित प्रमूर (क्रप्प)। २ परिपूर्ण, शंपूर्ण (ब्रुमा) । सहायसिय वि ["महानसिक] शिनका निम्तीक संतीण महाननी ग्रान्ति प्राप्त हर्देश वह (पगह २ १) सहायसा स्त्री ["महानसा] वह बद्दुत वारिमक शक्टि जिल्ल बोड़ा की फिलाब दूसर सेकड़ों कोगों नो बानव्-कृति खिसाने पर भी वस्त्रक कम न ही अवत्र निराम समिवाला स्वयं वर्गन माय (वर २७)। महास्य वि "महास्य] जिनसे बोडी जगह में भी बहुत की में का ममार्थश हो तके ऐसी धार्युत बारिमक शक्ति सै पुनः (गध्यः २)।

শব্দ বি [সমূব] মশীত বুদি-সুদ্দ 'मन्त्रुपायारवरिला' (वडि) ।

अस्मृद्धिम वि [अद्यण्डित] संपूर्ण, यक्षण मुन्तिरहित 'चल्युनियो वल्युनियो दिवरानीवि सबलबुर्वजन्तर (मुपा१११) ।

अस्तुषम वि [अञ्चला] यो टूटा हवा न हो नविच्छिम (ब्रह्न १) ।

अक्सार विभिन्नद्वी १ मेगीर, घनुण्य (सम १)। २ वपासु, करुए (र्यचान)। व उदार (पंचा ७)। ४ सूक्य बुद्धिवासा (वर्गे२)।

अक्लाइ न [असीट्रच] स्ताताका धमाव (छप ११६)। कारस्पूरी हती [कास्युरी] नगरी-विशेष (एमा २)। अवस्तुक्रममाण वि [अक्ष्-यमान] जो कोच

को प्राप्त न होता हो (धन पूर्र)। असम्माभय देवो असमुद्धिय (एदि ४६)। अवस्तृहिस वि [अध्नुनित] क्षोपरहित मञ्जूष्य (प्रमु)। अवस्थान वि अञ्चल प्रतिपूर्ण 'भागराज्यस्थाङ्कराणं संपार्थतेता सम्बग्धनार्

(वर ७२६ दी) । अवस्त्रक देनो अस्त्रता = या + या । अक्सेव पू जिन्हेपी सीम्ता बन्धी (नुपा

१२६) । अवसेव र् [आसेप] र मार्त्यण बोब कर नाना (वरह १ ३)। २ सामध्ये **पर्य** की संगति के सिए अनुन्ध वर्ष की बतनाना (स्तर १२) । १ भार्यका पूर्वपञ्च (सग २१ निमे १४१६) । इ उपति 'दह्येण क्रमसेवे बङ्ग्मसंगी मने प्यशे' (जनर ४०)। अक्लेमग पूं [आस्पक] १ लीवकर नाने बाका प्राक्ष्यंकः। २ समर्थंकः वदः प्रबंधानित

के लिए धनुष्ट धर्म की बरुसानेवासा राज्य

(जन १११)। ३ वाफिप्यकारक (जनर १८८)।

अक्लेबजी स्त्री [आधुपत्रा] योतासों के

मन को धाकर्पंता करनेवाणी कथा (धीप) । अक्सेपि वि आक्रोपिम् । याक्ष्रेता करने-थाना सीवकर सानेवामा (पर्गा १३)। अक्**लांड** सरू [कुपू] स्वान में समकार की राधना बाहर करना। शस्त्रोत्तद् (हिंद १८०)। अक्टोड नक [भा + स्पोटम्] चोहा वा एक बार भटकता। सत्त्वीतिका। वह अक्सोटंन (रम ४) ।

अस्य ह पू [अक्षांट] १ प्रकार का वेष्ट्र । २ न चलरोट बुश्न का फल (पारल १७३ वालु) १ ६ राजपुर्व को दी जानी भूरण साहि की मेंन (वव १ टी) ।

कक्कोड पूँ [आस्फोट] प्रतिनेवन की क्रिया विशेष (पव ३)।

अक्लोडिय वि किटी लीवा हुमा बाहर निकला हुया (श्रद्य) (कुमा) । अवस्त्रीम | पृ [अञ्चाभ] १ शाम का अवस्त्रीम | वसाहर का समाव

अक्लोइ \ (शाया १ १) । र महुनंश के राज् सम्बद्धान्ति का एक पूत्र का भगवान् मेनि नाय के पास दीला नेकर राष्ट्र मध पर मीख वया का (बीच १ ७)। १ त. 'मन्तहर्शा' मूचकाएक सध्यमन (सैच १७)। ४ वि

क्षांमरहित सबस स्पर (परह २ र कुमा)। अक्नोइजिज्ञ वि [अक्रोमणोय] वा युक्त म स्थिम का सके (तुपा ११४)। अक्लाहिणी स्था [असीहिणी] एक वर्ध समा क्रिममें २१६७ हासी २१६७ रव ६१६१ चाहेभीर १ ८३४

अर्म्यंड वि [अक्षण्ड ] परिपूर्ण, लएउरहिन (पीप) । मतंद्रस र् [आक्रण्डच] इन्द्र (परम ४६ अरुविक्रिय विक्रिश्चिष्टिती नहीं टूटा हमा

हाते हैं (परम ४५ ७३ ११)।

परिपूर्ण (वं**चा** १८) ।

अरुपिय वि दि ] स्वच्या निर्मेश 'श्रायत साई। बार्सिक हरिति पूर्वे शबस्पले बनाले कवि' (मुपा ७४)। अन्यव्य वि [असाय] यो वाने भावक न हो (शावा ११६)।

अध्यक्त न [अञ्चात्र] शतिम-वर्ग के विश्व चूलूम 'यंपर विज्ञावनिया, धहर मनतं करेड भी हमें

(बस्म व टी) :

अम्यम देखो अवस्थम (बूमा) । अल्बरय पू चि ] सूच्य-विरोध एक प्रकार का शाम (पिष्ट १६७)।

अग्रतिअ रही। अस्त्रस्थिय = प्रस्तिति (कुमा) ।

अस्पारिम वि [अध्याध] बाते के प्रयोग्य यमध्य 'नुपोर् थार्थत यतारिमे सार्गत' (पूमा) ।

चन्दनक समुद्र में होतेशाना एक डी.जि.व

'राहणा हाहारवं करेवाफेल बहुयो सी मुल्बी मन्तराव्यलेखि (न २११) । माख स्प्री ["मास्प्री जरमना (परम ६६ ६१)। हमा स्त्री [ब्रह्मा] खत्व ही माना (है) । बचर्विया प्रवादा प्रकृती नौषी । महियत्त्रप्रसङ्ख्या एइ विदेश बडालगुरबे' (नुपा १४१) । अक्षप न [ बस्य] रराण की नामा (दे २ =t)। पांच पूर्विपाद] नैयापिक नत के अवतक मीतम ऋषि (रिने १६ )। बाह्रमा चूं [बाटक] धनाहा (शेर १) : सुत्तमाहा रभी ["स्थमास्य] कामाना (सगर)। अस्तर देते अस्तर्थ =ध्य+ध्या। बन्तर (नग)। भरगर्य रि [आस्थान] उन वर्षन (नग)। **भरगउद्दिमी रना अ**जनादिशा (बाह्य) । भरगंड रि [झगरण्ड] १ लंजूले । २ बर्गानस्य । ३ जिल्ला बर्गिन्द्रश्च अस्य गणायान्दि गहरीरपुरे वयी पुत्रदे ( गुरा 866)1 अवसंद्रय 🖠 [आस्तरहम] १७३ (पाध) । भग्गाहम रि [अग्राविहत] १ नेपूर्व गतः स्टा (ने ३ - १२) । २ व्यक्तिया निगार (शर १) । भवर्ग १ देनो अवसा = मा+ब्स । भागाः नर [भा+शस्तु] वास्तरा नाना 'जलकर सिंग श्विष स्टारी र्मानामानाम् (स.८४) । भागास्य व [द] संबेषुत कोटेन ।

यन जिनके निर्दीय ग्राधैर को पैन साथ अक्स्मणिआ स्था कि कि विषयेत मैक्स नोग न्यापनाचार्यं में रतने हैं (था १)। (पाम)। ४ पश्चिम नी पृष्ठी नीत (ध्येष ३४६)। ३ जक्तम विशिद्यम र धरापर्व (सुपा-भौमर का पामा (थए। ६२) । ६ विश्रीतर ३७)। २ मपुक मनुभित (ठा३ ३)। मोदा नाबुस (ने ६,४४) । ७ चार हाव अक्ताय वि [अक्त] १ वालरहित वरा शुन्ध बार्थ्यपुर्नो का एक गत्र (बर्गु (कुर २ ६६)। २ शकारिका संपूर्ण (सुर मय)। रद्राप (मए। १)। इ. न इन्द्रिय १ १११)। ३ पं व सन्तरप्र चावस (तिने ६१ । पछ ३२)। १ यन दूजा (नुपा ६२६)। (नै १ ४४) । चन्म न ["चर्मन] प्रजल ापार नि [ी**चार**] निर्शेष सावरश्**वा**चा ममर 'मान्तवान' बहुनीहरेन' (खाबा १ (वद ३)। ६)। पाडय न ["पार्क] नील नाटुनका अक्टबंब नि [अञ्चय] १ अय ना सदाव (ज्यर वर)। २ जिसका कमी भारान 🛍 बह (सम १)। "निश्चिष् पूर्व ["निश्चि एक प्रकार औ तरक्याँ (पद २७१) । तद्वया स्थी [°त्नीया] वैराख तुक्र तृतीया (धानि)। **अक्लर पूंत [अक्रर] १ एलर, वर्ल** (बुवा ६३३)। २ कान चेतना नास्परह प्रकृष यौनेनि मनगरं तो प विक्तामावी (विमे Y22)। ३ वि धरिनधर, निम्म (विसे ४२७)। रेव गुंधियों राज्यार्थ (श्रवि १११)। पुट्टिया स्त्री ["पुष्टिका] निर्मिन विरोप (नम ११) । समास वं ["समास] १ मगरीं का स्पृहः। २ मृत-बान का एक मेर (कम्प १७)। **अक्ल**क वं दि] १ प्रकारीर कृता २ व. क्सरोप्रदूध का कल (पण्छ १६)। अस्यास्थिय वि [क्] १ जिल्ला प्रतिसन्द कृषा हो बढ़ प्रतिमानित (दे १ २०)। रे बार्षस ब्यार्डन (नुर ४ वर) । व्यस्त्रासिय वि [अस्त्रस्ति] १ वरावित निग्यस (दुवा) । २ का गिरा न हो बहु, धर्मान (नार) । अस्य गया स्थी 👣 सिरा (दे १ ११)। अक्तानक [ध्या + समा] नर्ता वीतना । बर अस्ति (बला वर्ष ३)। बस अविराह्मत (मुर ११ १६३)। इ लस्मेन अस्माइनस्य (स्थि २६४०) बा १८२)। है। अस्तार्थ (स्नः नग 1(1)

अस्त्रास्था [आस्या] नान (सिटे 1 ( 1939 अक्लाइ वि जिस्यायिम् विश्वनेतनः उपवेशक 'घवम्म<del>गवा</del>ई' (छवा १ १वा निपा १ १)। व्यक्ताव न [बामगाठिक] क्रियारर, क्रिय-बावक राज्य (विसे)। अक्लाइय वि [अद्यिति के दिनकी क्लार, रास्त 'एवं ते धवियवम्हारुखा परहोतुमान-खपवता बेडीत सम्बाह्यबीएस समार्च कम्मवंबलेख' (पर्वा १ २)। भक्ताइया स्थी [आक्वाबिश्च] राम्यत्, वार्ता कहानी (कप्पुः मास ३)। अक्ताउ वि [आक्षात्] कर्नेशना (तूप ₹ ₹ ₹ **₹**₹}1 व्यक्तागर्वक्रियमाको स्तेषको भीएक पार्ति (सम १ १)। अक्लाइग ) वृ [अ**ञ्चन**ाटक] १ दुश <del>सरकाडव ∫ केत</del>ने ना श्र<u>म्न ।ः</u> २ मदान व्यायाम-स्वान (तर दूर ३)। ६ प्रेजको को बैठने का बासन (ठा४२)। अन्याय न (आक्यात<sup>)</sup> १ क्वन निवेश (क्रुमा) । २ वर्ला,क्राक्**मा (प**ढम ४६ 90) ( **অক্লাঅৰ ব [আন্থানড] হছ**দী ৰচী (दर ११७ टी)। **भरताय दि [आस्पाव] १ इ**तिपरि कविश्व (मुपा ३८१) । र म. क्रियापर (गार २ २)। जक्ताय न [असाद] हान्हे को प्राप्त के निए किया जना ददा खड़ा (काम) । अस्यावा स्त्री [क्षास्याता] एक प्रशार <sup>ही</sup> यैन यैनाः 'सन्ताक्ष्य नुर्वतालो सेट्टी बर्मिन' परिकोहिसी (वेषु)। अक्यि कि जिस्ती धान केत्र (दे १ U ३३: स २: १ ४ प्रायाः स्त्रन ६१)। अक्रिक्स वि [आभिक्र] शता में 🕊 सन्तेतातः चुमाही (देणः )। अविराज नि आस्या । प्रतिस्ति वर्षी (या १४) । अर्जियनतः न [ब्रह्मपुरर] यागः ना नोहर (रिया १ १) ।

धक्तिज्ञात केशो अकता = या + क्या । अविकास वि [आदिया] सव स्टब्स से प्रेरिक (मिरि ३१६) १

अक्रियत्त वि आिक्षिप्ती स्थालूम । २ जिस पर टीका की गई हो वह । १ माइट, व्यक्ति ह्या (मुर ३११५)। असमर्थ्यं से लिया हुम्स (से ४ ११)।

अविकास न [असेत्र] मर्पादित क्षेत्र ने बाहर का प्रस्त (निष्कृ १)।

अविन्तर सक [आ ÷ दिए] १ घालेप करना टीका करना दोवारीय करना। २ रोकता । ३ मेंबाता । ४ व्यक्ति करता । ३ फॅक्ना । ६ स्वीकार करना, धन्तिकह पृति सगार (स्वर ४६)। हेक अस्तिविधं (निर ११)। 'तमी न मुत्तमिह नालम् अविश्वविश्व (स १ १) वि १७७)। कर्म. 'बक्तिपद यमें काखी' (संदक्ष प्रामा)। अक्तिय नक [ आंशियू] पाकेश करना।

धिक्तवंति (सिरि ≤३१)। अक्टिसम्बन्धः न [आक्रेप्य] स्थानुनता वन-राहर (पएड १ ३)।

शक्सीज वि [अञ्चीत] १ हास-सून्य धन-र्राह्त पन्न (कम)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण (कृमा) । महाणसिय वि "महानसिकी जिमकी निम्नोक भर्तील महानती शकि प्राप्त हर्द हो बद्द (प्एइ २ १) सद्दाणसी स्वी [सद्दानसा] बह यद्युत वाल्मिक शक्ति जिसने बोड़ा की निकास हमरे शक् ें जॉसी को मानत-तृति जिनाने पर मी तनतक कम न हो। अन्तर मिनाम समिताला स्वयं उने व माथ (१४ २०)। महास्रम वि "महास्रयी त्रिक्ष्में भीड़ी अपहुर्ने भी बहुत सीवा का मर्मापरा हो सके ऐसी स्त्रुत मानिक शक्ति से पुक्त (नव्य २)।

अवस्था वि[क्षात] क्तील **प्र**िन्तूल 'मन्त्रपानारपरिचा' (पडि) ।

अस्मुहिभ वि [अलिविहत] संपूर्ण समाह बुन्सिहत "मस्बुहिमी पस्तुहिमी विवर्गनीति तमन्द्रदम्यो (मुपा११६) ।

असमुण्य वि [असुण्या] को हुन हुन। व हो। अविधियम (बृह् १) ।

शक्तुइ वि [अञ्चद्र] १ संगीर, घनुण्य (क्क्न ५)। २ क्यालु, कदरा (गैवा२)। व उदार (पंचा ७)। ४ सूतम बुद्धिवामा (वर्ग २)।

अक्तुइन [अङ्गीद्रय] सुरताका समाप (उप ११५)। क्षसम्पूरी न्त्री [अस्पूरी] नगरी-विशेष

(एमा २)। अवस्तुब्यमाण वि [अध्य ममान] वो बीम

को प्राप्त न होता हो (सरधू ६२)। अस्माभिय रेजी असमादिय (छीर ४६)। अक्स हैय वि [अधुमित] नोमर्रहत धसुम्ब (सए) ।

अवस्तुय मि [अश्चुष] पश्चुन, परिपूर्ण 'भायराज्यत्वाहरायं सेपार्वतेसा सम्बन्धार्यं

(उन ७२० टी) । धाकसाठा देखी अक्सा = धा + बमा। अक्तोत पू [अ+हेप] शोध्या पण्डी (सूता १२६) ।

अवस्तेष पुरिसाक्षेपी १ साक्ष्यंत कीच कर नामा (परह १ ६)। २ शामध्ये वर्षकी श्रेनति के लिए प्रमुक्त पर्य को बल्लाना (उर

१ २)। १ कार्चना पूर्वपञ्च (सन २ १ विते १४६६) । ४ जन्नति 'दहवेछ फान्धेन ब्रह्म्पर्धनो सने पवती' (उत्तर ४०) । अवसेत्रम पू [आइपक] १ बॉपकर ताने-नासा धाकर्षक । २ समर्थक पद, धर्वसंबंधि

कै लिए बनुका सर्वको नतनानेशासा राज्य (अन् १६१)। १ सामिष्यकारक (सन्द १००)। क्षमध्येषणी स्त्री आखेपया बीताची के मन को बाक्येंग करनेवानी क्या (बीप) ।

अक्सवि वि [आहोपिम] पाकर्पण करने-बामा, सीवकर मानवासा (पलह १ १)। धानकाष्ट्र सक [ कृप् ] स्थान 🎚 दनवार नी

थीलना बाहरकरना।शल्पोड६(ह४१८०)। **अश्लोड** तक [आ + स्फोटम् ] पोडा या एक बार ऋण्यमा । शस्त्रीनिया । बहु

अक्सोइंग (क्य ४) । अनगढ पू [अभ्रोत] १ वनरात का पह । २

न, सक्रपेट बृत का कर (परस्प १७ नस्)। वे सम्बद्ध की बी चलते मुदलें धादि की मेंग (थव १ टी)।

क्षक्तोड पूँ [आस्फोट] प्रतिसेचन की क्रिया-विशोग (पव ३)।

अक्सोडिय वि [६८] सीवा हुमा बाहर निकसा हुमा (बाड्न) (हुमा) ।

अवस्तोम | पुं [अकाम] १ बांत का अवस्तोइ | - बागाव ववराहर का समान (जादार ह)। २ यहुबंध के सर्वा क्रमक्ष्मृत्यित का एक पुत्र जो भगवान् नेनि नाय के पास बीजा सेकर शत्रु बय पर मीख यथा वा (यंत १ ७)। ३ म. 'मन्तरहारी' सुव का एक सध्ययन (श्रेष्ठ १ ७)। ४ वि क्षीमरहित सम्बर्गास्मर (पग्रह २ ३; कुमा)। अक्लोइणिज्ञ वि [भक्षोभणीय] वो धुक्य न किया का सके (सुपा ११४)।

अवसाहिमी ली [अद्योहिजी] एक वढ़ी सेना विसर्ने २१०७ हाबी २१०७ रण ६५६१ जोड़े और १ १६५ विस होते 🖁 (पराम इ.स. ७ ११) । अन्बंड वि [अलएड] पियुर्ण, बरडर्यहर

(मीप) । असाहस्र हुं [आसाग्डस्त] इन्द्र (पटम ४६ 44) I

अर्फंडिय वि [अस्रपिष्ठत] नहीं टूरा हुया परिपूर्ण (पंचा १०)।

अरुपिज वि [ च् ] स्वच्छा निर्मेतः शासव ताई। बार्रित हमिति पूर्व प्रबागाई बजाई वर्षि (सुपा ७४) ।

असळा वि [अस/च] को चले नायक नहीं (खाया १ १६) ।

अस्त्रचन [अञ्चात्र] शक्ति-वर्गके विद्या धुत्रुम 'धंपद विज्ञाननियो,

धहर परतं करेड शोर हमी

(धम्य व टी)।

अन्यम देना अक्तक्म (कुवा) । असरप पू [व] श्रु'य-विदेश एक प्रशास का

बाम (जिस १६०)। अमुख्य को अक्टबिय = प्रस्तुनित (पुषा) ।

भग्रादिम वि [भग्राय] वाने के प्रयोग्ध यमाया 'बूपडू बार्चत सनाहिमे शाहीत' (पुपा) ।

। (रि

न विस्नी बोटा वनान (पास) । करिस्स वि [सक्तिस्र] १ सर्वे सकत परिपूर्ण (कुमा) । २ बान माबि दुरहों से पूर्वं। किसले धरित्रे धर्यग्रह्मचारी (नूस १ ७)-। असुदू वि [वे] प्रमूट (पवि) । भमुद्दिभ नि [सतुद्धित] प्रकृत परिपृश् (इमा) । अनुविध देवो धक्तुविध (हुमा) । अवस्थ्य वि [अवस्य] धनुतन चानपुत्र (मुम ११)। अलाह देवी अवस्थेड + प्रास्थेट (पव २

असाय विश्विकाती हो दूरा हुमा। तछ ।

भतोदा भी [भद्रामा] विकानिरोप (प्रज । (थ्रम्भ स खरापू [असर] १ दुख पेड़ १२ पकत प्रताड (से १४१)ः 'तकामकाएकटुसंडिक' (क्रम्य)। अस्माइ स्त्री [असवि] १ तीच क्ति नरक स पयु-वौनि मंदनम (ठा२२)। ३ निद्याम (मचु ११)। भर ठिम न [अप्ररिषम] १ क<del>मी छ</del>व नेवा ( बहरे )। २ फत की फीक टुक्का (निक् **24**) ( धर्गहिरोह वि [दे] बीक्लेक्सर क्यानी से

कमत बना हुमा (दे १ ४ )। भर्गकृतगावि [सद्भण्डूमक] गृही बुक्ताने-वाना (नूस २ ३)। भगीय नि [अमन्य] १ कार्याहत । २ पूल्ही निर्दान केन सामू भाग करने अनुस्तामाधी एम माई पार्थ दे विश्वादिए (श्राचा) । धर्माचण पूं [अराज्यम] इन नाम नी शरी नी एक बानि निम्मति बंदर्व मोतु कुने बास । सर्ववर्ते (दस २) । क्षमञ्ज वृ [दे अवट] कृष दशरा (सुर ११

रा पत्र)। तह नि [वट] स्नाचना रिनाप (विदे)। इस पुंदिस् इस बाम ना एक राज्युमार (घरा) । वृद्दुर पू वितुर देश का मेरक संपन्न वह नकुछ जो बराना वर धीड़ बाहर न गया हो (खाना ₹ <) 1 भगइ पू [भवट] दूप दे नाम पतुर्धी के बस रीने N निए भी नध बनावा जाता 🖁 शह (क्व २ १)।

कागक विशिक्तत ] नहीं किया हुण ( नव ) बरगिय पूर्विमित्री बाव (गाँ६)। काम पू िकाय] समिन के भीव (सम ७१)। मुह पुरुष्ठा के केरता (बापू)।

सगजिञ्ज वि अगजित विभविष्ठत सप मानित (ना ४ ४) पत्रम ११७ १४ )। भगविकात वि [अगण्यमान] को मुखने में न भारताही जिसकी समृत्तिन की बाती हो भगितामंती नामे विका' (प्रामू ६६)। रेष् अगस्ति 🗲 र इस नाम अगरियय का एक श्राप । २ कुछ-विक्टेर (देव ११३: धनु) । ३ एक तारा धनाती सङ्ख्यहीं में १४ वी महायह (ठा २, ३) । धाराम वि [भागण्य] १ विसकी विनदी अ हो सके बहु (सर ७२८ टी)। अगस वि [अक्ष्म्ये] स्वी गुनने बाक्क शायव्य (मिन) 1 भगम पू [असम] १ दुल पेक 'दुमाय नामना स्तवा था (१ स) पमा निष्मित तक' (क्मनि १३१)। २ वि स्वाबर, नहीं क्वने वाना (महानि ४)।

**कारम न [कारम] बालारा,** गुरुन (बस २ अगमिय वि [लगमिक] वह शस्य विसर्वे एक सब्दा पाठ न हो। वा विसमें पाना वर्षेणा पद्य हो 'नामाह अपनिन' खनु कालियनुमें' (विमे ४४६)। व्यास्म वि [झास्स] १ वाने के धर्मस्य । २ स्त्री बौक्ते के क्योग्य मगिनी पर स्त्री

व्यक्ति (व्यक्ति सुर १२ १२ )। सामि कि [ गामिन् ] पर स्त्री को बोक्नेनावा, पार वारिक (परात्र १२)। भगय न [अगन् ] ग्रीयन श्वादै (पुपा xxa ) 1 अगय मूं [के] बेल्प कालम (दे १६)। क्षगर दुन [अगरु] सुनन्त्रि न ह-विशेष (पर्वह २ ३)। अगरक नि [बागरक] दुनिवक स्पष्टः 'प्रव-प्ताप् धमम्बर्गाए मानाए मासेइ (गीप) 1

**भगर केनी भगर (दुमा)**।

अगरुत्र नि [अगरुक] बड़ा नहीं कोग, नहु (भवष्र) ।

व्यारुख्यु वि [अगुरुख्यु] को भाषी भी व ही भीर हतका भी न हो वहा क्से भारात. परमञ्जू वर्गे ख् (विष्ठे)। जाम न "स्मानन्" कर्म-विदेश जिससे जीवों का शरीर अ मारी न हत्तका होता है (कम्म १४०)। अगळत्त्व र्⊈िक्षम**डब्त्त** ] एक <del>रवित-</del>पुत्र (महा) ! अगस्य वेषो सगर (धीन) ।

अग्रह्म पुदि] अग्राधिक एक ऐमे संक्राम के जोग भी माने की बोएड़ी में ही बाले-पैते का काम करते हैं (दे १ ३१)। बगहिस नि [अमहिस्र] जो भूतानि से पारिष्ट न हो संतानन (इर १६७ टी)। राय पूर्विका एक राजा जो बसराव में पानन न होने पर भी पानव-भना के धाकरा है

बनावटी पायस बना था (धी २१) । धगा**र वि** [समाध] समाह स्कृत स्कृत 'काळफरलेचु वि साविक्तमा' (सूच ११३)। बरवसिय वि [बामासिक] प्रानर्शक्त 'प्रवान निवाए अञ्जीए (धीम)। बरगर पूँ [अकार] 'म' मशर (मिसे ४०४)। अगार व [अगार] १ पृष्ट, घर (सम १७)। र प्री प्रहस्य गृही संसाधि (स्त १)। स्म रि [स्य] पृद्दी (राषा)। धस्म 🕏 [ धम ] वृद्धि-वर्ग नावक-वर्ग (श्रीप) । भगारग वि[शकारक] यनवाँ (मूमनि ६)। भगारि वि [ अगारिम् ] मृहस्य, गृही (मृष 3 (1)

व्यगारी स्वी [कागारिणी] मुहस्य स्वी (वर भगवस देवो समास (स. २)। अगाह वि [अगाम] एहरा वंभीर (पाय) । व्यक्तिथि केवो व्यक्ति (विद्य १२)। अगिसा स्यै [अग्सामि] च बचता, सलाई (ठा इ. १)। आगंध्य की [के] पनका शिएकार (के फे ( w) अनीय नि [अगीत ] साल्यो ना पूर्य होते

विसको न हो कैसा (कैन साबू) (का १६

धी)।

श्रामीयस्य ति [स्रामीतार्थ] अपर देगो ( वन

अस्यासहर वि दि ] युत्र बात को सवास्थि बरनेशना (दे १४१)। अगुत्र स्मो अरण (पि २६४) । अगुण दि [अगुपा] १ गुएर्गन निर्देश (१७३१)। २ वृं शाप दूगए (दम १)। अगुवामी हैनी वर्गुगामी (पर २४)। अगुणि दि [अगुदिन] दुए-वॉब्ट निर्मु ए (ग्बर) । अगुरु }पि [अगुर-] १ दश*न*ी मो. अगुरें अ रे प्रोटी सर्पे । र पून, नुपरिय नाउ रिधेप अमूर-बल्का 'पूरेण कि बतुरस्ती सिंदु बंगलेख" ( गण च्यम २११)। १ देनी अगुरुखदु (नम १६ भगुनमद्भा व ( )। अगुम देगो अगुरः नंगतिन्तिमागुर्जनगारी (निषु २)। लगान [अमर] प्रतर्ग (रत २ १५)। क्षमा (न दि) १ पिटाय । २ वर्णन (नींघ Y3) 1 झागद[अप्र] १ यमे दायल अस्तरना भप (कुमा)। २ पूक्षमप परने वा माग (निष् १)। १ परिमाछ 'बरर्व नि का गरि मार्ग विकारणहाँ (बालु १)। ४ विकाणान, भेट्ठ (नूरा २४०) । ३ प्रथम परता (मार t)। बरांच र् [रहम्ब] मेन का यद ऋष (ने ३ ४)। शामित हि [शासिक] चदग्ती बापे वातेगाता (म १४०)। ज रेनो व (दे ६ ४६) । अन्म ['अन्मन्त] रेलो य (का वर टी)। जाय ["जात] रेशो प (पाना) । जीहा मी [जिहा] भाव का का-मान । ताप, जे कि [फा] बाद्य, बुनिया लाज (राम राग)। नातम ई ['आपम] ऋतिशिक्ष का रूप (तुक रे)। वन["ार्थ] पूर्वारे (तित्र राग "पिंड र् ["पिण्ड] एक ब्रहार का जिलाय (बन्ता) । देवसार रि [दिहारिय] सारे ब्रहर कारेसाम (बाव है) बीच वि विक्री स्मिन के बार देश करत ही बेला है दा रिक्टी लालि वेल्बन कर

मान ही बाएगु होता है। जैसे भाग कोर्रटन बादि वनम्पति (बरग्र ११ ठा ४१) । साण पूँ ["मणि] बुक्त, थेह शिरोमिंग (उर ७२० दो) । सहिसी स्त्री विद्यी प रणी(नुपा४६)। यदि ["ज] १ मापे क्षणप्र होने काचा । २ पूर्व क्षप्रास्त । ३ वहा भाई। ४ मी बहो गरन (शर)। साथ पुं क्रिके वृक्तिस्यान निद्धि-क्षेत्र (बा १२)। इस्य पू [दिल] १ शव का यव मान (वडा) । २ हाच भर गरायम्बन नगरा (न ४ १) । ३ घेन्से (त्रत) । अग्गन [अम् ] १ प्रमृत बहु। २ उत्तरार (यानानि २८१)। भाषन [ भाष] यनिहा-मध्य वासीत (अंक्यूप १) । माहिसा देवी महिसी (उन्न १६ १)। अग्य वि [अप्य] १थ ह उनव (से ८४४)। २ प्रधान, मुख्य (उन १४)। भगमा व [अन्ननम्] नावने, धापे (नुमा)। अगोप रि [अग्रन्थ] १ पन्छितः। २ ४ वैत मापु (धीरा) । अगगरमंथ 🐧 [है] राप्तपृति वर बदमण (दे 2 84)1 भगास न [भगेस] १ तिवाह बन्द करन की नवडी यास्त (दम १२)।२ ई एक महा-यह (गुरू र )। वासय र्थ ["वाराक्र] विमर्ने संगान दिया बाता है वह श्यान (याचा २११)। यासाय 🛊 ["बामाच्] कर्रा मगर दिया जाना है बहु बर (राम) । असान हि [ क् ] प्रीतः भीता एकादश् (रिप) । अमाद्या ग्यो [अगुरा] धण्य हुम्बा(बाप)। अमार्कित्र रि [अर न्त्रित] जो बाग्त में बार रिया ग्या हो का (बूर ६ १ ) । अमारम र् [द] नदे बा पुर (दे १ २१) । अगाद र् [आयद] यग्र, १० समितिस (PU t t 1 4 xt1) : अगादन व [अगदन] १ ध्वन्त (बुर १२ ४६)। ३ मक्त क्षेत्र (त ११ ६८)। मगाइन न [र भयाव] दरार, धरण (देश के क्ष्य है)।

भगार्गापारथे [रे] गैन्सेन्द्ररा नर्दनन

के बाद विद्या जाना तथा गोनामु सीम् सन्दे

चती भाषा में 'सम्पद्रा' का है (गुग २१)। अन्यद्वि वि [आमहिन] भाष्टी हरी (मूप 2 (11) : क्षम्महिज दि 💽 १ निर्मित दिर्यवत्त । २ स्वीष्टतः वजून विद्या हुमा (पर)। अग्गाया वि [अम्मी] मुप्त प्रवान भावरा 'बिन्डभदयार निभी मन्यासी सपत्रातिय मध्यम् (बुर ६ १६८) । | अम्मारण न [बद्गारय] धमन बान्ति (धार क्षमग्रह वि [अगाध] बनाय यन्त्रेठ 'मीय बहिगुम्ब कावारा (गूब ४) । अग्गाहार पू [अमापार] प्राम-रिटेप ना नाम (मुरा ५४१) । अम्माहार र्र्य 🔄 अमाहार] उन जीरिंग (युग २ १३)। अस्मि 🛊 [अग्नि] तरहाराम-विदेश एक नरह-स्थान (देशेग २३) । सेन चेन वि [सन्]यन्तियाता (प्राप्तः १५) । हुन्यः वेगो हास (उन २४,१६) मुख २४,१६) । अग्यि पूरिनी [अग्नि] र बाय वृद्धि (प्रापू २२) 'रम पूछ कार्वि मसी' (क्रि. ६१)। २ इतिरा नगर वा मविद्यापर देव (द्य २ १) । १ सोरान्त्रिक देर-रिटेप (बारब) । आरिमा न्या [बारिश] मान्त्र-वर्ग होत (बार) । इस्ते मूं [पुत्र] रेस्तन धन के रण वैभेरर का राम (सम १६१)। वृद्धार र्षु [दुमार] चार्तात देश की एक यस लार वर्षा (पाग्र १)। क्या बु ["स्थ्रम] पूर्व और रूपा क बीच की लिए (सूर्ग १%) : अस पू [ यगभ ] रेत-सिंच (ध्य) । जाय पू [धा र] सारत् सम बीर का कुर्वेच बीचरे ब्राह्मण उत्तर बा बाब (दाप्र) । हु (र [श्य] या वें साह्य (१ ४ ४३१)। हास १ डिमी स्ट्रांतित (रि.१. १४६)। येथात्रीरनी (११४मनी) बाय की शरित की रोकरकारी तक विगा (च्या १११) । ५४ ( दिस) १ मानान् राष्ट्र नाम के नदस्तान है। राष्ट्र ११४ के रच ग्रंबंदर देव (निष्)। १ प्रकार

गौत की बन्ध मोत्र की स्त्रका है (इस ७)।

स्वामी का एक रिज्य (क्रम्) । दाग पू [दान] साठवें बामुदेव के दिला का नाम (बाम व १वर)। देव वं दिव देन-विरोग (धैव)। मृद् पुं मृति र मा-बान् महासीर कर दिनीक यदाकर (कथा) । २ भरवान् महाबीर का पूर्वीव फलारहर्वे बाह्मस्त-बम्प का नाम (ग्राक्) । साव्यव पूं ["साव्यव] धरिम्बुबार देशों का उत्तर-किया का इन्द्र (ठा २,६) । माठी स्त्री ["मार्स्स] एक स्त्राणी (दिर) । देस दूं [वेश्व] १ इन नाम का एक प्रतिक ऋषि (एंदि)। १ म्. एक नीव (रण) । "वेस पू ["वेश्मन्] १ चनुवैती निषि (त्रं) । दिस्स का बादरर मुहुने (केंद १)। बेसायम पुं ["बैश्यायन] १ समिनेक कपि ना पीन (गृहिः स २२३) । २ व्यक्तिदेशनोज्ञ में उत्पन्न (बल)। १ योगान सट दा एक दिल्ला (का १६)। ४ दिन का बाइमर्रो <u>मह</u>र्न (इस ४१) । सन्दार पुं िंसंस्कार] निधि-पुषक जनाता, कह वेता <sub>।</sub> (बारम)। सन्प्रमा स्त्री ["सप्रमा] का बान् बानुपुरम की दीहा समय की पालकी का बान (नन) । सस्म र्षु [ शर्मेन् ] एक মনিত্ৰ ভাদৰী বাজান্ত (ভাষা)। "মিছ্ পু िशाम र नानर बानुदेर था पिना (नम १४२)। २ म्हीनुमार देश ना दक्षिण रिखनास्त्र (ता३३)ः "निद् ["सिंह] एक देश मृति (का ८ ६)। मिहा बारव दू [कियाबार ४] ब्रॉक्टरिया बे निर्वादाया नमन वरते दी छक्ति दाना नाप (पर ६ ) । सीद् रुं["सिंह] नागर्ड बानु देश के रिमाना शाम (क्ष रे) । संख्र 🖠 [पित्र] ऐररा शंच के तीनरे बीर वार्टनी तीर्थर (निच सम १८३)। हाला न [ इ.प.] १ बाग्यापान, हीन (विने १६४ )। ६ नुं क्तागु (राज ११ ह) । हालवाह रि [ दाप्रपादिन ] होत में ती नार्व वी प्राप्ति बालनेराना (तृष १ ७)। दाश्चिय रि ["दाश्रिक] होय वरलेताना (नुगा ३ )।

पाइत्रसद्महण्डली अभिन्त दे [दे] इसकीय एक वातिका **पूर** मीट (दे १ १३) । २ दि मन्द (दे १ १३) । व्यग्गिमाय र् [ने] स्त्रगैप सुत्र कीट-विदेप ( यम् ) । अस्मित्र वि [आग्नेस] १ व्यक्ति-सम्बन्धी । र पूं कोकान्तिक देवों नी एक वार्षि (शाया १)। १ व. बोत्र-विक्तेय वो गीलम बीव की शाक्षा है (का ७)। अगिगबाभ न [ आग्नवाभ ] देव-वियान विरोध (सम १४)। अस्मित्रक्ष वि अपाद्य मेने के वयोग्य (परम \$ \$ XX) 1 र्जागाम वि [अधिम] १ प्रवय पहना (रप्पृ)। १ भें हु प्रवान कुष्प (गुरा १)। अस्मियय र् अभिनेयको इन नामे का एक धवरून (इप ६६३)। अगिगस देनो अगिगस = शरितम (नुभ २ )। अग्निगांक्षिय देनो अग्निगम (वंचन २) । अस्मित पूर्विमिक्षी एक बहायह (हा २ 8) I अगिगृह वि शि सम् ] यद्यार्थी (निरि ४ १)। श्चमाय देनी अगाय (इर ६४ )। अगीबय न दि ] पर का एक भाग (पक्क 24 4Y) I अग्रायद्वाति [वे] प्रतित निष्टि (पर्)। **इ**राग् स [अमे] माँग, पहले (पिक) । यक्त रिविनी अभे का पाने का (धारम)। सर दि [ सर] शगुपा प्रशिक्त, नायक (भार)।

**बूर्व रि**रा (बल १०)।

४ वरित-कोरा वसिए-पूर्व विशा (वरि)। अस्मीव्य त [अभोज्क] समुद्रीय देशा भी वृद्धि बीर हानि (बम ७६)। कार्यसङ [श्रज्] विश्वता शोभना चम क्ना । धामाई (हे ४१ )। कल्च सरु [का बा] भूक्ता। संक्रांकाचे कण (सम्मत्तः १४२)। करच धरू [ छह् ] योग्ब होता, सावक होना 'कर्न ए सन्दर्ध (रामा १ ६)। काय तक [अर्थ] १ सम्बद्ध सीमत ते बेचना । २ झावर करना सम्मान करना পাছিত্ত দুতা শতিৰ নুন্দাহি দিনি ! क्रिय स्वर्गमा। र्वतम्बं सो साहर, परित्रं बन्दिस्सए कर्ष (नुपा ६ १) । वड्ड आग्यायमाज (ए। ना 1 (3 3 ब्यस्य दू [अर्थ] १ एक देव विमान (देवेन्त्र १:२)।२ दूबा (एव१)। करव र् [अर्थ] १ मझ्नी हो एक पार्टि (नीन ३)। २ पूना-सामग्री (त्याया १ १६)। ३ पूरा में बनादि देना (बुमा) । ४ गूस्य मोन, वीमन (निदुर)। वस न [पात्र] पूत्रा का पान (पान्नव्र)। अस्य दि [अर्थ्य] १ दूना में दिया वाता चनारि इप्य (रप्पु) । २ कीमठी अहमूस्य (बाप) 1 बरपव वड [ पूर् ] पूर्व कला पूरा कला। बायरद (हे Y 48) । बाग्यविय रि [पूर्य] १ मध हुमा संपूर्ण। १ पूरा रिवा पशा (पूपा १ ६ हुमा)। अमोई स्थे (आम्नर्या) धीनकोल चीवनु कारप क्य रि [अधिन] पुनित तमन मम्मानित (मे ११ १६ महर)। अमाजिय न [अमायशीय] बूमरापूर्व बार अवया सङ [मा+ मा] त्रेनतः। नक् हरें जैनानम का दूचरा बरान् बाब (समरे६): कामाञ्चन अग्यायमाञ (ना १६१ गावा अस्ताती श्रेण अस्ताई (वास्त्र) । १ )। नगर भग्यादळमाच (पर्ल १ )। क्षामात्राय रेगो अमामिय (लॅडि) । अन्याद्धि [आग्रायम्] मूंबनेराना 'नब-श्चारत्र े राह्नव] वि न (बील) सम्बन्धी बराउवात्रानीत । बाध्यकामे । बर्ग्य द्रस्पिद् क्षरपाद्र वि [आधात्] मूंबनेवाला । श्री रा (गा वद६)। कारचाक सक [पूर्] पूर्वि करणा पूरा करता । मानावद (हे ४ १९१) । खरमा**र १५ वि.) इत्र-विशेष ग्रा**गाग

क्राधाहरा | विचया सटजीस (वे १ व पएस १)। अरमाण वि [दे] तुत्र संतुष् (दे १ १८)।

क्षम्याय वि [आद्रात ] सूंधा हुवा (पाय)। अरबायमाण को अरब = अर्थ । क्षरपायमाण स्नी करना ।

अनियय वि [राजित] विराजित तो कि (कुमा) ।

अरियय नि [अर्थित] १ बहुमूल्य कीमठी 'श्रविषयं नाम बहुमोरलं (निषु २) । २ पूजित ( t ( + o + 2 2 ) )

बाग्यादय न [अवींदक] पूत्रा का कल (धरि **११**८) ।

क्षय त अप देशय हुक में (कुमा)। २ वि शोषनीय शोध वा हेत्र 'धर्व बम्हणुमार्व' (प्रमीद)।

क्षमो देशो अही (माट)। अवस्य ग्रेन जिन्दास रे श्रीव के शिवाय

भाकी श्रीतार्यों कीर मन (कम्म १ १)। २ ग्रांख को ब्रोड वाकी इन्तिम और मन से होने-वाला सामान्य बान (वं १६) । १ वि श्रीवा मनहीन (कम्म ४)। देशया न [ब्छेन] बांब को बोह शही इतियां और मनते होने-बाला सामान्य बान (सन १६)। वैशायाचरक न [वर्शनावरण] सम्बद्धार्थन को धेरने-बाला कर्न (ठा ६)। फास प्रे "स्पर्शी बंबकार, बंबेय (शामा १ १४) ।

क्षत्रसम्भागि [अचासुप] को भीक है देशा म बा सके (पएह १ १)।

अषक्तुस्स वि [अष्धुध्य] निस्को वेवने का सन न चाइता हो (इड ३) ३

अपर वि अपर ] पूनिव्यावि रिवर पवार्थे स्थानर (वंस) ।

अवस्थापि अवस्था १ नियम स्विर (प्राचा)। २ पुं बहुर्वरा के चना धनवकृष्टिश के एक पूत्र का नाम (मैत १) । एक वश्रवेश म्म नाम (पचर १)। ४ पवत, पहाङ् (नजंड

१२)। ४ एक राजा, जिसमे रामभन्द्र के क्षो नाई के शाय कैन रीज़ा की यी (परम बार,४)। पुर म ["पुर] बद्धा-डीप के पास नाएक नगर (कम्प)। ध्यान ["स्मन्] इस्तप्रदेशिका को बध सामा से ग्रुएने वर बो र्शक्ता सरुव हा बहु, शन्तिम संबना (इक) । शाय पू [भातू] शवनात् महावीर का नवयी ग्रम्पर (कप्प)।

क्षत्रक पं अवस्त्र स्टब्स स पुरप (विवार 807) I

अभाक्षण कि दिश्वरः। २ वरका निकास भाग। १ वि कहा हुन्छ । ४ निष्ट्रोर, निश्य । इ. मीरस मूचा (दे१ इ.३) |

अवसारणी [अवसा] पूर्वणी। २ एक स्त्राणी (लावा २)। क्यचित्र वि (क्षिपिन्त्) निकिन्तः चिन्तारहितः। अचित रि अिजिस्य वितिर्वननीय जिसकी

किया थी न हो उन्हें वह धन्यूत (नहुय १)। **श**चिवणिका । वि [श्रचिन्दनीय] उसर काचित्रजील 🕽 देखी (धनि २ १ महा)। क्राचितिय वि क्रि**चितित**े पार्कस्मक धर्मभाषित (महा)।

अभिन्त वि अभिन्ती बीव-रहित वजेतनः 'वित्तमवित्ते था एवं सर्व समिन्ने विरहेका' (वस ४) ।

अभियंत १ वि [वे] १ मन्दि, क्योतिकर अभियत्त 🕽 (तूर्व रे २ पण्ड २,३)। २ न मग्रीपि इ.प (शोच २६१)। **अभिरञ्जनक केंद्रों काक्षर**क्षणक (वे १ १८ दी)।

काचिया केलो आह्या (पराग १७ १७)। अभिराभा स्मी [अभिराभा | निक्सी विक्त (प्रध्य ४२ ३२)।

अधिरेण देशो बाइर्ण (प्राक्)। अचेयक वि [धचेतम] चैतन्यधीतः निर्भीव

(परहर २)।

अचेल न [अचेल] १ वस्त्री का बगाव : २ बरग-मूहमक करन । ३ बीवा वस्य (सम ४)। ४ वि वस्त्र-पहितासम। इ. बीर्स वस्थ बाला । ६ धरप बस्य बाला । ७ कुरिसद वक बाला मेलाः 'तह बोब-बुध-कुरिवयनेते-प्रिणि मएएए धनेतीति' (निसे २६१)।

परिसाद, परीसाद र् [ परिवाद, वरीवाद]

बक्त के बागाव से प्रचवा जीखें, धरप मा मृत्यित बस होने से उसे भरीन भाव से सहन करमा (सम ४ भव ६ ६)। अभेक्षरा ) वि [अभेक्षक] १ व**क-**र्यहर

अभिक्षय ∫ नग्र । २ फटा-ह्टा वक्र वाना। ३ निति वज्ञान(सर) ४ धरुर वज्ञान(स) । ४ निर्वोप वस बाला- ६ सनियत स्प से वस वा उपमोन करनेवाला (ठा ६ ६)\* 'परिमुखनिएल-कुन्सियधोवानिय-

बलमोयभोर्पेई । भुणयो मुख्यारहिया एतिई धनेशमा हुंति (विसे २५६६)।

अञ्चलक अञ्चे देशना सत्प्रदकरना। सम्बद्ध (सीप)। सब (दे १ ११ टी)। नवक्र स्वविक्रतंत्र (सूपा ७०)। **इ. अव**णिका (एमा ११)।

**अब** पूं [अर्च्य] १ तन (कात-मान) का एक सेंब (कम्प) । २ वि पूजब, पूजनीय (हे है (00)

अर्थंग न (अर्थक्क) विकासिता के प्रकार श्रंग मोग के मुक्त शामन 'शान्त्रं ग्राण' क बोक्सो मार्च (वंका १)।

**कर्बंत वि [अस्यन्त] हर से ज्यादा यक्त**िक बहुत (चुर ९ २२)। यावर वि [°स्मावर] मनादि-काल से स्वाबर-वाति में यहा हुआ। (मापन)। दूसमा की ["दुष्यमा] केलो दूरसमदुस्समा (परम १ ७२)। अवंतिस वि शिरपन्तिको १ धन्यन

शक्तिक महिन्तियतः २ विसका मारा करी व क्षो बहु शास्त्र (सूम २, ६)। अवस्यामि (अ.च.क.) प्रश्वक (चैरव १२)। अषमास वि अस्योक्षे निरंदुरः, धनिवंतित

(योद्धादक)।

अन्यन न (अर्चन) पूका सन्मान (मुर १ १३ पस १२ छी)। अवना की किथेता । पूजा (प्रभू १७)।

अवजिया की [अर्थित स्त्र] सर्वत, प्रशा (राग

शकत वि [अस्यक्त] नहीं बोड़ा हुमा पर फिलक (करबर ७)। अवस्य वि [अस्यमें] १ मठिरावित महत निर्वादवसा गमन करने की स्त्रीच बाला साबू (पर ६०)। सीइ दु ["सिंह] नाथ वान् देव के तिताका नाम (ठा १)। सेला दे चित्र] एरस्य क्षेत्र के तीगरे और वार्श्वावें सीर्पर (तिचसम ११३)। ≰ांचन [\*दांश] १ धान्याचान, होन (शिने १६४ )। रे वं बाया ए (परम १४,१) । हो चावाह रि [ दोप्रवादित ] होन वे ही स्वयं नी प्राप्ति नाप्तनेतना (नूम १७) । ≰ोणिय रि ["दोनिक] होम नरनेताला (नुसक)।

भरिगञ्ज र् [अग्निक] १ बमचीन नामक युक

नाम (माड्र)। र कम्बड रोग, विस्ते को

पुष्त काय वह पुरुत 🗗 इतन ही जाता है

(पितारे १ विने २ ४ क)।

वि [तन] यागे का, प्रहमे का (सावन)। सर वि सिर] श्रृषा, पृथिया, शाक्क (मा २०)। अगोई हवी [आग्नेवी] धीनकोल दक्तिश-पूर्व फिला (बला १)। अग्गणिव न [अधायजीय] दूसरा पूर्व, बार हर्वे वैनायम का दूसरा महान् जाय (सम२६)। धारगंधी **देनो ज**रगोई (मादम) । **अ**ग्गेपीय **वेदां अ**ग्गेत्रिय (लंदि) । ब्बरमान नि [आरग्नेव] ग्रामिन (नौरा) सम्बन्धी (मणु २१४) । अस्तव वि [आप्नेय] १ धनिनसम्बनी धीन का (प्रस्म १२ १२६३ विने १६६ )। 1 (43 २ व. सम्ब-विरोग (बुर व, ४१) । ३ एक |

बन्धर एक [पूर्] पूर्त करना, पूरा करना। बाबरह (हे ४ ६१)। ब्बन्धविय वि [पूर्ण] १ वर्ष हुन्छ, संपूर्ण। २ पुरा किया गया (पुगा १ ६ कुमा) । অন্দৰ্ম ৰি [অফিলু] খুৰিত লগতে, ध्यमानिव (वे ११ ११ गुजर)। अस्यासक [भा+ प्रा] सूच्नाः यह बरपासन अरपावमाण (वा १९१, लस १)। क्यहः अग्याद्श्वमाण (पर्ल २)। अन्याद् वि [साप्रायित् ] श्वेत्रेत्रला, दर्भ मरपडमन्बाइरित ! बारिबबाये ! सङ्गु सन्त्र (439 MT) अग्यादम वि [आगात] नूंबा हुमा (व

अन्धार्जनाय केले अन्धा ।

क्षामाइर वि [आप्रात्] मूचनवानी । स्री रो (गा नव६)। सम्बाद सक [पूर्] पूर्वि करना पूरा करना। सम्बाहद (हे ४ १९२)। क्षरमाध १५ वि] बुल-विशेष अपामार्ग बान्धादय } विवृद्ध सटबीय (६१८ पएए १)। अनम्माज वि [वे] तृत संतुष्ट (वे १ १०)। धारधाय वि [साद्यात] मुंबा हुमा (पाम) । अग्यायमाण केत्रो अग्य = अर्थे । क्षरभागमान रेको अग्या । अभियय वि (राजित) विराजित योजित (दूमा) । श्चविद्य नि [अधित] १ बहुपूरव शीमती **धरिवर्ज ताम बहुमोर्क्स (तिचू २)** । २ पूजित (दे१ ७ वे २ २)। अन्नोक्य न [सर्चेदिक] पूजा का वस (प्रति ११व) । क्षम न [अघ] १ पाप कुकर्म (दुमा)। २ वि शोषनीय, शोक का हेतुः अर्थ वस्ह्लमार्व (प्रमी = )। भाषों केवी मही (शद) । अषक्य पून [सम्राह्म ] १ गाँव के विनाय बाकी इन्त्रियों और मन (काम ११)। २ मांच को कोड़ वानी इन्त्रिय भीर मन से होने बाला सामान्य ज्ञान (वं १६) : व वि अवा

भव्यक्रित (कम्म ४)। इसिय न विश्वेती मांब को बोड़ बाकी इन्द्रिया मीर ननने होने-नामा सामान्य बान (सम १६)। व्हेंसप्याचरण ह विश्वीनावरण विवासकार्थान को रोकने-बाबा कर्म (ठा १)। प्रास व शिपती पंत्रकार, प्रवेश (यामा १ १४)। **अव**क्सस वि [अवाध्यय] को श्रीब से केता म कासके (परहा १)।

अवक्लुत्स वि [अवध्युप्य] विसनी केनी

का भन न चाहता हो (बृह ६)। **अवर वि अवर** | पूर्विकावि स्थिर पहार्वे, स्कार (रंस) ।

अवज वि अवज १ निवध स्वर (मापा)। २ पू वर्षके के स्टना सम्बद्धित के एक पुत्र का नाम (भेत ६) । एक क्लावेब का नाम (पन २ १)। ४ यक्त, प्रहाड़ (सर्वड

१२)। प्रकाराजा, जिसने रामचन्द्रके क्यों? गाई के साम जैन रीखा भी भी (पर्चम सक्ष के शक्ति होते हैं हैं है पास के पास काएक नगर (रूप)। प्यान किस्सम्] हस्तप्रहेशिकाको यश लाख से पुरापने पर जो संख्या शत्य हा यह, घन्तिम संख्या (इक) । साय पूं भिन्नाको भनवान महाबीर का नवर्गं क्लबर (क्प्प) । क्षपञ्ज पुं [अपल] संत्रवी रत पुरप (विचार ४७२)। क्रमञ्जल कि दि दिवर । २ वरका विस्ता भाव। १ वि कहा हुमा। ४ निप्हुर, निर्देश। र नीरत मुक्ता (दे १ रहे) [ अच्छास्त्री जिच्छा । प्रविवीः २ एक इन्द्राणी (खाया २)। অবিব দি (গশিন্ত ] নিম্বিন্ত স্থিনতাৰ্যাট্ড। श्राचित वि अधिकस्य विनर्वजनीय जिसकी विन्दा भी न हो सके वह सर्क्ट (नहुम ६)। श्चिविषक्ति । वि [अचि-सनीय] क्रमर का चित्रणीका ) देका (प्राप्त २ व महा)। क्षचिविय वि [अचिन्तित] प्राप्तिमक मसंभाषित (शङ्का) । शक्तिस नि [अक्सि] बीव-रहित ध्येतन

विश्वमित्री वा श्रेष सर्व प्रक्रिको विश्हेका (इस ४)। काचित्रत ) वि दि । प्रतिद्ध प्रशीविकर **अभिमत्त** ) (मूम २ २, प्रश्न २ ६)। २ न, शरीति इ.प (घोष २६१)।

**अभिरमुबद्द वेको अद्दरजुबद्द (६ १ १८ टी)।** व्यक्तिया वेको छात्रुरा (पतन १७ १७)। धावियामा हवी [अविदामा] विक्ती विवृत् (पसम ४२ १२)। शिवरेण देशो शहरेण (शक)।

अचेवय वि [अचेतन] चेतन्वरवित निर्मीव (पल्कार २)। क्योश न [क्षांचेका] १ वस्त्री का प्रमान । २

श्रहण-मुख्यक वस्त्र । १ भोडा वस्त्र (सम ४) । ४ वि वस्त-पहिताकः । ३ वीर्यं नरम बाबा । ६ घरप भरत भारता। ७ कुरिसत वस भागा शैका 'तह मोन-यूफ्र-मृतिवयमेथे-विश्वि मएएए भवेजोर्डि (विशे २६ १)। वरिसह, वरीसह दे विरोगह, वरीयही

बस्र के धमान से संघवा चीर्ल धारा मा कुरिसत बड़ा होते हैं एसे मदीन मान से सहन करना (सम ४ भग = =)। अनेलग ) वि [अनेलक] १ वक-पहित अचे अर्थ ∮नप्रों २ फटा-टूटो वस वाला। ३ मसिन वज्ञानासाः। ४ मन्य वज्ञानासाः। ४ निर्दोच वज्र बल्ला ६ मनियत रूप से बज्र का क्यमोग करनेवासा (ठा 🌯 🌂) 'परिपुद्धविएए।-कुष्म्समबोबानिय-

यत्त्रभोगमोयेष्ट्रि'। मुख्यो मुन्दारहिया चंठेहि यवेसमा इंटि (विसे २५६६)। अवासक (अर्थे, ) पूजना सत्कार करना। धक्केड् (ग्रीप)। शक् (दे २ ३१ टी)। हक्क्ष भविकात (सूपा ७०)। इ. अविभिन्न

(जामा ११) । अब र् [अरुबे] १ तब (काश-मान) का एक भेद (कम्प) । २ वि पूज्य, पूजनीय (हे १ 1 (60)

अर्चग न [अस्पङ्क] विनासिता के प्रमान धेम भीम के मुक्त सावन 'मान्वेकारों क भोषयो मार्ग् (थंबा १)। **अर्थ**त वि [अस्पन्त] **इ**द से ज्वादा भरपविक

बहुद (बुर ६ २२) । यात्रर नि ["स्यावर] धनादि-काल से स्वाबर-जाति में पहा हुआ (भाषन) । दूसमा की ["दुष्पमा] केली दुस्समहुम्समा (पन्न १ 💆 ५२)। अवंतिम नि [आस्पन्तिक] १ मन्दर

गमिक मिरिक्सिट । २ विसका गारा कसी न हो बहु, थाप्रद (सूम २. ६)। ब्राच्या वि [अवक] पुत्रक (वैत्व १२)। अवगास वि [कारपर्गेस ] निरंत्र र, प्रतिसंवित

(मोद्या च७)। अवजन [अर्थन] पूत्रा सम्मान (सुर ३ १६ चत्त १२ टी)।

अवणा की [छार्चेना] पूजा (धनु १७)। अविषया वर्ष [अर्थनिया] धर्चन, पूजा (राव

काशन्त वि [धारवन्तः] नहीं क्रोहा कृपा प्रय-रिष्मक (अपद्रश्रक)। अबस्य दि [सस्यर्थे] १ व्यक्तिसम्बद्ध बहुत

(पर्याहरै १)। २ संधीर धव काला (राम)। ६ दिवि ज्यारा स्वयंत (सुर १७) । **अध**नमुख नि [अस्पन्द्रुव] नहा धानवं अनन

(प्रानु ४२)। भवय पू [अस्वय] १ विपरीत भाषरण (हा

६)। विनारः मरहा (उन)। अवय रि ब्रिचेक पूरक 'धलकाल' व मिरंतराखं महार्खं रस्बाखनदाखंति (विवे

७ हो)। अवर ) न आज्ञयी निस्तय काल्कार अवरिज (निक १४) मेंनो १७ रंगा अवि क्षपरीम रे नेह्र)।

भवद्रा वि [अरवसम] धवि ग्रीव (रुप्पू) । भवा की [अवाँ] पूजा राजार (गतह) । अवाद्य जिर्ची १ शरीद देह (नृब ११३ १७-११४१ २,२६ ठा १ पत्र १४)। २ नेटवा विच-वृत्ति (सूध ११३१७ १ १४,१४) । १ ऐपर्स (ठा ३ १-पथ ११७) ।

व्यवासम्बद्धं [अस्परान] पराका कार्यका दिल, हास्त्री विवि (सुझ १ १४) । जबासयया को [अत्यासनवा] जून केला, देर तक वा वार्रवार केना (ठा १) ।

भवासणया को [अस्पञ्चनता] पृत्र काना (छा १)।

सबासञ्ज १ न [अस्यासस् ] यति स्वीप भदासम ो नूरॅननदीक (सन ११ छना)। भवासार्य ) वि [भत्यासातिव] बनमा-अवामादिय | निवं हैरान दिया गया (ठा १ अस्य ६ २)।

अवासाय एक [अस्या + शातय्] भगमल करना हैरान करना। बहुः, अबासायमान (छ १)। हेट अवासाइचए (वस ६२)। भवादिशः } वि जिस्मादितः । सहस्योति क्षव हिंदू 🕽 वटा भगः २ मूटा, मनाव (स्वयः) ४३)। **१ ऐ**मा जन्मी कार्य जिसमें आस-हर्मन भी सम्बद्धनता हो (यमि ६७)।

भवित्री [ अर्थिस् ] १ नान्ति तेन (भन २ ६)। २ समित्र वीज्ञाना (पर्ग्छ १)। वे रिरण (सर)। ४ सेन की किया (जस ६)। १ त. नोपान्तिक देशों वा एक दिनात (भग १४)। शास्त्रि र्यु[साव्यिन्द्] १ मूर्व पीर (तूम १६) । २ दि. किरुही में बंधीका (राप) । व न. नोवान्तिक वेबी

काएक विमान (सम १४)। साइमी और | िमाक्सी १ चना भीर तुर्वे की सुतीय संस महिपी का नाम (ठा ४ १) । २ "कातासूत्र" के दिशीय सुशस्त्रक के एक सक्यमन का नाम (एतमा २) । ३ राजेन्द्र की तृतीय ध्रधमित्री भी शतवानीभानाम (ठा४२)। साक्रिकी

भी ["साबिनी] चन्द्र भीर सूर्य की एक ग्रह महिपीकाशास (मग १ ४ ६क)। अविकाषि [अर्थित] १ पृक्तिः सक्ततः (ना ११)। २ म. विमान-विकेष (कीव ६ पत्र ११७) ।

मिक्त देवो अवित्त (पोष २२) नुर १२. २७)। भवनिकर सक [अर्थी+क] १ प्रतीसा करना । २ चुतामर करना । **यक्करे**र । नक अवीकरंत (निष् १) ।

मवीकरण न [लर्चीकरण] १ कर्तसाः २ सुरामच. **'प्रचीकरहो रह**रो, इलस्कर्ण वं समासम्बद्धाः हविश्वः । वंतमसंतं च चहरू

पण्णक्यपर्यक्रवसम्बद्धः (शिक्षः १) । अवुक्ष पुं[अक्युन] १ विष्यु (सन्द्रूर)। २ नायाचा देवसोड (सम १) । १ ग्वायाचा भीर वास्त्रमां देवलोक का सन्त्र (अ.२३)। ४ सन्प्रत-वेषयोगमाती हैन 'र्थ वेष धारतु ण्डम बोहिएन्ग्राजेख पानंति' (विशे ६६६)।

नाइ पुं[िताथ] वास्त्रवा देवलीय का क्त (र्यान) । वह पूं ["विते] क्त-विशेष (तुपा ११) । बढिसग न शिवरंसकी विमान-विदोध का बाम (सम ४९)। सामा र् िस्वरों] बारहवा देवलोक (प्रवि) : भव्य पुर [अच्युत] एक अन-विमान

(ggat 54x) 1 अकुआ की [अवयुना] कर्जे धीर सनस्त्रें धीर्वकर की शासनदेशी (वंशिष्ट १)। अबुइंद पुं[अच्युनन्त्र] त्वायहवां शीर वार

इया देवलीक का स्वामी इत्त्र-विशेष (पत्रम {{\* w}} अनुवास वि [अरपुरक्त] धरकत स्व

(पाषम) । अव्यापि [आयुष] अपर देवो (पव १२४) ।

उच्च (क्य १ वर्ष ही)। व्यवृद्धिय वि [अस्युरियत] सकार्य करते को वैय्यार (पूच १ १४) । **क्ष्युण्ड** वि [कारमुष्टम] **यू**च गरम (ठा ६, 1 (8 अवृत्तम वि [अरथुत्तम] ग्राट बेह (कप्)। अजुद्य ल [करमुक्∓] १ वर्ध वर्षा (धोव 🤻 )। २ त्रमुख पानी (बीव ३)। अच्युवार वि [अरबुवार] सरकत क्यर

अच्चुच वि [अस्युच] सूर अंचा, विरोत

(84)1 ध्यन्तुमय वि [अस्युमत] बहुत छंत्रा (क्रम्प) । अच्युक्स व [अस्युद्धर] ग्रीर प्रका (धिष) । अच्चुबबार र्षु [अस्युपद्मर] महल् उपकार

अच्चुक्यार र्थं [अस्युपकार] विशेष छेवा-पुष्पा (बा ६१४) । भच्चुक्नाव वि [अस्पुद्वात] प्रस्कत बना हमा (बह १) ।

(य ११४)।

**सम्मु**तिय वि [शरमुक्त] सवित्र तरम (धावा २ १ ७)। अच्चे सक [अवि +इ] १ वविकाल होना हरणाः २ धन अर्थनः क्ला। यन्तेर

(उत्तर्व दर सूचर १३ व)। **अच्चे** एक [अस्वा + ह] त्याव करनाना । धन्देश (तुस १ २ १ ७) I जच्चेकर न [आश्चर्य] माचर्य विस्तर

(Frm (1)) अध्यक्ष प्रक [आस् ] वेळाः प्रभार (हे १ २१४)। यक अवस्थात अवस्थाप

(पुर ७ १३, छाना १ १) । इन अस्तिवा यस्य क्षयक्षेत्रस्य (पि १७ मुर १२ २१≈) । अच्छातक [का+बिद्द] १ काटना क्षेत्रता। २ वीचना। सच्चे (प्राचा ११२)

व)।तह अधिक्यु (यावक २२४) अध्यक्षेतु (Fre 14 ) 1 अन्यक् वि [अन्यक् ] १ समझ, निर्मेश (इमा) । २ थ्रं एसटिक राज (वड २७१) । व र् व बार्व देश-विरोप (पव २७१) ।

```
व्यच्छ प्रक्रिको रीख, मान् (मएहर
                                        व्यच्छरम प् जिस्तरको सम्या पर विद्याने
                                         का बन्ध-विरोध (ग्रामा १ १)।
  1 (5
च्यच्छ वि शिष्टक्षी सम्बद्धे देश में रूपक
                                        अच्छरमा ) भी [अप्सरस् ] १ शह भी
                                        भव्यद्वरा पटराणी (ठाट) । २ आसा-
  (पएए) ११) ।
क्षण्ड प्रविद्या सेव पर्यंत (गुज १)।
                                         वर्मकर्माका एक शब्दमन (सामा २)।
  २ न. तीन बार भीटा हुमा स्वच्छा पानी
                                         व देशी (पठम २ ४१)। ४ क्यमती की
  (पश्चि) ।
                                         (परहुर ४)।
अच्छान दि रिशयस्त विरोग । २ सीह,
                                        भच्छराधी [ये अध्यय] पुरकी पुरकी
  बक्दी (दे १ ४१)।
                                         कामानाव (सूध २२ ५४)।
"প্ৰক্ষে ৰি [জিফিব] আৰু পদ (বুনা)।
                                        अध्यस्तिविधाय पूं दि । पुरुषी : २ पुरुषी
ैअच्छार् [कम्ब्ह् ] १ ध्रविक प्रशोदाला
                                         बबाने में बितना समय सगना है बहु, शरदशा
 प्रदेश । २ संतामी का समूह । ३ मूछ जान
                                         धमव (पर्ग्यु १६) ।
  (દેદ ૪૭) ા
                                        अन्द्र्वरिम ) न [आह्रवे] विस्मय अस-
"अच्छा पुं[बृक्ष] बृक्ष पेड़ (से १४०)।
                                       जच्छ। (स्म | स्कार (हे १ ४ स्ट प्रयो ४२)।
सम्बद्धसर्थु [सद्यक] १ वहेक का वृत्र ।
                                       अच्चस न [अच्चस ] निर्धेत्वा धनपराच
  २ त. सक्त वस (से १, ४७)।
                                         (R ? ? ) i
अञ्चलतम [आद्यर्थ] विस्पय पर्मकार
                                       अच्छिति वि [अच्छिति] वैत-दर्शन में
  (कुमा) ।
                                         विचनो स्नातक नक्ते हैं वह जीवनस्तुनः
अन्दर्दि [अन्दर्न्द] को स्वाधीन संही
                                         षोधी (भय २४, ६)।
  पराधीन 'सम्बद्धा के ए। चूँजीव ए। से चाइति
                                       ब्यच्याविकर पूँ [अञ्चिष्टा] एक प्रकार
  हुन्द (दस २)।
                                         का मानसिक विकय (ठा व)।
लच्छक देवो अत्यक्क (बता) ।
                                       अच्छाइस्छ पूं [श्वस्त्रमस्त्र] रीख गान्
लच्छण न [कासन] १ बैठना (खाया १
                                         (पाम्प) ।
  १) । २ पामको वनैरह मुबासन (सीम ७८)।
                                       अच्छाक्षे [अच्छा] वरस देश की राव-
  घर न [*गृह्] कियाम स्वान (श्रीव १) ।
                                        बागी (पच २७१)।
अरुब्द्रगम 🔁 १ देवा ग्रुमणा (शृह ६) :
                                        अच्छा औ [क्या] धर्व ग्रमिमान (से १
  २ देखना अनसोकन (नव १) । ३ आहुमा,
                                        X#) [
  दवा (इस =) ।
                                       भप्तकाइ वि [आबद्धाविम्] बक्नेवाला,
अच्छपितर न [अवद्यतिकुर] शक्कति-
                                        ग्राम्बारक (स १५१) ।
 कुर्यन को चीराजी साथ से प्रापने पर जो
                                       अच्छायण न [आच्छात्न] १ दक्ता (दे
 र्षक्यानस्य हो वह (अ.२.१)।
                                        ४१) । २ वक्, कपहा (दाना) ।
अध्यक्तिररंग न [अध्यनिकुराहः] संस्था-
                                       अच्छायणां स्पे[साच्छादना] स्त्रमा प्राभ्या-
 विरोध नामन को चौराती बाब से पुस्तने
                                        विश्व करना (वन १)।
 पर जो संक्या सन्ब हो वह (ठा २,१)।
                                       अच्छार्यत नि [अच्छातान्त] तीक्या नार
व्यच्छ्ण्य वि [अच्छक] धतुष्ठ प्रकट (राष्ट
                                        बार (पाच) ।
                                       अधिकाति [अकि] यौत नेत (हे१३३
जञ्जसड र्' [ऋशमङ] रोड, मान् (दे १
                                        9X) I
  fer til t 3 300 tef
                                         चसळज न ["सस्रत] श्रांच का मसना (बृह
अच्छामङ पुदि] यश देव-विशेष (दे १
  10) |
                                       णिमीछिम न [निमीछित] १ गाँच को मुँदना
अच्छरका देशो अच्छरा (पर्)।
                                       मीचना। २ बॉब्ड मिचने में को धमय समे
```

वह, चन्द्रिशिमीनियमेत्रं खात्वि पूर्व दुन्धमव षण्डा । एरः छेदामार्च धरोत्तिसं पक् मार्खार्ख (भीव १)। यत्त न ["पत्र] मास का प्रकापपनी (सप १४ ८)। वैद्या पू विषय एक बनुधिन्तिय बन्तु, सूत्र जीव विशेष (उत्त १६) । राष्ट्रम पू िरोहकी एक बतुर्धिन्त्रय बन्तु, तुत्र सीट-बिशेप (उत्त १९)। स्सः वि ["सम्] १ घवा नासा प्राणी। २ चनुधिन्य बन्तु (उत्त ३६) । सञ्च पु निस्कु प्रश्चकामेन कीट्ट (निस्कृत)। अध्यित् एक [मा + बिद्] १ बोहा केर करना २ एक बार क्षेत्र करना । ३ बबातकार चे **क्षीन वीना। वहः अस्टिब्र्ट्मा**ण (सग □ ₹) | **अर्थिखद** पूँ [असीन्त्र] गोतासक के एक विरुचर (शिन्य) का नाम (मग १६) । अस्मिद्य न [आक्छेद्न] १ एक बार भेरता (निदूर) । २ स्रीतना । ३ मोहा क्षेत्र करना, बोबा काटना (सप १४) । अध्यक्षक वि [वे] शस्त्रहः, नहीं चुना हुना (वय १)। व्यक्तिमरुग्छ वि वि] वशीतिकरः २ पू वैश पोशाक (दे१ ४१)। अच्छिज नि [आच्छेच] १ नगळती वो इत्तरे से कीन निया काय (पिंड)। २ व् विन साबु के लिए मिशा का एक दोप (भाषा । अभिक्राचि [अच्छेच] वो बोहान वा सके (ठा १२)। अध्यिति की [अध्यिति] १ नारा का धमाच निरमता। २ वि नारा-रहित (विमे)। व्यय पू [ नय] निरमठा-बाब, बस्तु को नित्य मामनेबाबा पक्ष (पष) । अध्यक्ष इ. [अध्यक्षत्र] १ विक्र-रहित मिनिड गाइ (वें २)। २ निर्दोच (सन २ ६)। कारिकाण्य ∤ वि [आरिकास] १ वनस्कार अध्यक्ष में से सेताहमा र सेवाहमा वोदा हुचा (पस्प)। अधिकाण्य १ वि [अधिकास] १ नहीं तौहा व्यक्तिसम् ∮ हुमा यत्त्व नहीं किया हुमा (ठा १) । २ सम्बन्धित सन्तर-पीति (मस्त्र) ।

श्रवीर )देखो छाद्रका≓ घनीर्छ (वव १ प्रजीरय रे छामा ११६)।

प्रश्रीरण देखी छाद्दम = द्रामीर्छ (पिंड २७ बाला (बन १) । ४ पुत्रम मान्य (बिपा १ १) । १ पूँ. माताभङ्ग (निसी) । ६ पितामङ् पव १६१)। **লজীয় বু[নাজ য] লখবন** দি**ৰ্ল**ছ জড় (शाया १ ८)। ७ एक ऋषि का नाम परार्षे (नव २) । इत्रय पुं ["स्थ्रम] वर्गा (एवि)। ८ म. गोत्र-विशेष (श्रेषि)। 🛚 वैन स्तिकाय धारि घनीन पदार्थ (मन ७१)। साबू साम्बी चौर उनकी शाकाची के पूर्व में अञ्चय पुंचि दूस-विरोध सम्बद्ध, सतीना बहुराम्य प्रायः समता है, पैसे अञ्चलहर अक्र**पं**युजा अक्रपोमिसा (क्रप्प) । उत्त ( t 2 2 5) खजुञ न [अयुव] एठ इवार, 'रोरिन्य सहस्रा र्युप्ति । १ पवि मर्ता(शाउ)। २ मानिक का पूत्र (नार) । घास पू विषय मगवान रहार्स पंच बहुवारित ह्वान्तं (महा)। **अञ्च**त्रस्वण्य पूं[अञ्चगक्षपण] स्तीना (दे पार्थनाय का एक गरावर (छा ८) । सेंगु पू ि सङ्का रे एक प्रोचीन वैताचाय (साथ २२)। ₹४)। "शिरस वि ["शिक्ष] पूज्य मान्य (बाप्ति अञ्चयक्रमानी हि] इससी का पेड़ (वे ₹ ¥=} i १३)। समुद्द पुं[समुद्र]एक प्रनिद अजुक्त वि [अयुक्त] समोग्य समुचित बैताचार्यं (साचे २२) । (निवे) । कारि वि ["कारिम्] धवोग्य नार्वे अस्त्रच्या[काचा] साव (शुर २ १६७)। करनेकासा (सुपा ६ ४)। शांति शिल् प्रमुगतम प्राथकम का अञ्ज्ञतीय वि [अयुक्तिक] पृक्ति-रूप शन्यस्य (रंग)। चा की चा नाव कव (रूप)। (बर १२ १४)। व्यभिद्र म ["प्रमृति] मात्र से ने कर अजुब देवी अडम पेन प्रमुवान्ति ह्यानो एत (दवा) । कोडीमी पारवक्ताल' (तुब १ १)। अक्ट दूर्व [व] १ निनेत्र देन । २ बुद्ध देन (दे अपनेल वि[लवय] को कीतान का छ**के** १ हो। 'सो मतहस्माएपहानेए अनेचा नेम्हराया अकान [आव्य] यी पृत (पाप)। (महा) । शक्त देवो रि=ग्रः स्रक्षोग पुं[भयोग] मन वचन और कामा श्रक्षां≡िशची प्राव (गा≭द)ः के सब स्थापारों का बिखर्ने धमाब होता है लजीत कि [आयस् ] प्रामामी । स्त्रस्त व् बह मबीक्ट बोग शैकेग्री-करण (बीच)। (पाप) । विद्या काळ (पाप) अज्ञोग वि [अयोग्य] प्रयोग्य जावक नहीं अर्जाहिको य (अयदाः) पानस्म (सप पू मह (नीचु ११) । 844) 1 शकांगि पू [शयांगिन्] र प्लेन्ट्रिप्ट मान को भव्मश्रसित नि [अच्छाक्षिक] वानकत का प्राप्त कोगी । २ मुक्त ब्राप्टमा (ठा २,१ कम्म (मरा १५०)। Y YO X ) 1 शक्ता देवो सरक्षय ≔धर्मक भागगतस्मेत अक धक [बार्ज] पैश करना स्थार्जन रिवर्ग (सुरा १३)। ररता कमाना। सबद (दि४ १ व)। शंक्र अञ्चग केत्री अञ्चय = पार्वक (निर १ १)। अधिक्य (पिष)। अञाय स**र्क** ि अर्थे\_ ] क्यार्गन करना । शंक्र अञ्च वि [अर्थे] १ वरम । २ स्वामी मासिक अञ्जिषिका (पूज १ ३ २ २३)। (R 8 X) 1 अस्त्राय ) [अर्थन] प्रपानन, पेरा करना अञ्चर्ति[आर्थ] १ निर्तीर । १ सार्थ-मोण में अध्यापण रेशिय १२ वस १८) 'र≓ केरिस-बापम (एवि ४१)। १ सिट-जनोबित धारताई मेर्च करेलूबार्य तत्रक्रणुले' (ठर ७ टी) । बम्माई करेड् रार्व' (उत्त १६ ६२) । साइड भक्तम प् [भयेमन् ] १ पूर्व (पि अञ्चित्र वि [अर्थित] बराजित पैरा *तिरा* पुं [रिप्रपुट] एक बेन बानार्व (हुप्र ४४ ) । २६१) । २ देव-विशेष (म ७) । १ अलस ह्या (या १४) ।

वास्त्रामी नक्षत्र का वाचित्रायक देव (ठा २ ३) । ४ व. उत्तरा-कान्युनी नक्षत्र (ठा २ ञळाय पुं[मार्थेक] १ मा**उमह, मां**का वाप (पत्रम ६ २) । २ पितामह पिता का पिता (मग १ ३३) 'जी पूरा **समय-**गमय चण्यक्रियम् चग्रमध्ये दार्णं परमल्बम्रो क्रमेर्ड वर्षं तु पृश्चिमिमामील् (मूर १ २२ )। भव्यय वि [अर्वेष] १ क्यार्गन करनेवासा पैदाकरलेकासा (मूपा १२४)। २ पुँ बुक्त विरोप (पत्या १) । अक्राय प्रीहे । पुरमनामभ वृत्र । २ उटेक नामक वृत्त (दे १. १४) । ६ वता भास (निमू ११) । अव्यक्त (आर्यक्र) म्बेश्यों नी एक जाति (क्एल १)। **অকাৰ বিভানীৰ] দংলৱা বিজ**গতেৱা (नव २१)। सळाव (प्रा) येको अरुका≍ प्रार्थः संड पू [काण्ड] बार्यन्देश (ग्र्यंच)। अव्यवमा की [आर्जव] ऋबुता सरवता (प<del>रिच</del>) । अकावि वि [ बार्जविन् ] सका निकापट (धाषा) । अञ्चितिय न [कार्जन] सरवता (सूम १ ४ २ २१)। मज्याकी [भार्या] १ शामी (एम्बर)। २ वीरी पावेंती (दे१ ६)। ६ मार्गा अन्य (वै२)। ४ मनगद् मन्तिनाव की प्रथम शिष्या(सम ११२)। ५ माश्वा प्रस्थाकी (पि १ ६ १४३ १४१)। ६ एक हसा (धीप) । मकाची [बाहा] क्षादेश, इन्तम (हे २ अञ्जास वि [अञ्जात] सनुत्रमः "प्रजास<del>त्ति-</del> बरस्सवि एम सहरवो ति बुत्पई काए' (वर्मसे अकाप तक [ आ + क्रापय् ] बाजा करता, हदूम फरमाना । हः आज्ञानेयस्य (पूम

२ १) ।

٦8

**बो**। २ ताम्बी संन्यातिनी (सम. ६३८) पि ¥४०)। रेमाठा की माता (वस ७)। ४ फ्ति की माता (स २६६)। १ हो)।

श्रकि⊈ीक्ष वि दि] दश दिया हुमा(श्रंव व्यक्तिजय देवी अञ्चयम (एए १६४)।

सम्बीत देवी जडीन 'बस्सावस्ता पुरक्त नइ करतो ५४ होति धन्धवा (तव १)। अञ्च (सर) म [श्रय] यात (दे ४ ३४३ म्बीक स्थिती।

जन्जुम (रो) केरो शक = धार्य (नाट) । **प्रमुखा (री) देवो शका - वार्गी (**पि 8 X) 1

बन्दुज पू [अर्जुन] १ तीक्षचपाएडक (छाना १ १६) । २ कुळ-सिटेप (छात्रा १ ८ भीप) । ३ नोटहरूक के एक दिस्कर (दिस्स) का नाम (मन १४)। ४ न. स्वेद सुवर्श, स्केर सोगाः 'सम्बन्धुसम्बद्धान्यमई' (बीप)। ५ इस विकेप (पएका १) । ६ प्रचुन कुस का पुष्प (शामा १ १)। भव्युक्त रू [अर्जुनक] १-६ उसर केलो । भरकुमय ) ७ एक मानी का नाम (बंत १व) । धम्यू स्प [धार्या] सस क्य (हू १ ७७)। भज्ञोग देवी अजीग= प्रनोप (र्यच १)।

अस्वोगि देवी लखीगि (रेप १)। **अ**क्कोस्ट न [बे] बनस्पति-विदेश (पर्स्त १)। अवस्तरक नि जिन्मक । प्रविष्ठाता (कप्पु) । भागमा पु वि वि व्य (पुरूप मनुष्य) (वे १ R ) 1

भवसस्य देखो अवस्थाप (सूच १ २ २ १२)। कारमध्य वि [वे] मानद, माना हुवा (वे १ कारमध्य ) व जिम्मारम र कारमा ने सारम अवसम्पर्ध रे संबंधी आरम-विषयका (जरा १ बाचा) । २ मन में नन संबंधी मनी-विवयक (बरा६) तुम १ १६ ४) । ६ मन जिला 'धरमागतालकार्व' (दवनि १ २०) । ४ गुम-म्बान 'सरमाप-रार गुममाहि-सम्मा, गुरारक'व विमाण इ.व. त. निवनू (क्य. १.१)। इ.चूं मारमा (मीव ४४३) । जोग पू विशा बोक्फिटेय, वित्त की एकाइता (तुस १ १६

४) । बोस र् ["बाप] बाम्पारिमक बोप--को व मान मामा और लीन (सूध १६)। विश्वय नि ["प्रस्वयिक] निशः सुक मन ये ही अलग होनेवासारोक किया गादि (नुष २ २, १६)। विस्तोदि की िवस्तिति बारम-गुडि (योथ ७४१)। संबुद्ध वि ["संश्रुत] मनो-निष्क्षी मन को काबू में स्वाने-नाला (धाषा) । सुद्र की ["करि] सम्पारन

रतक, बारम-निद्या योष-शाक (पराह २ १) । स्विकी [ शुद्धि ] मन की गुद्धि (पाल् १)। सोदिनी [शुद्धि] मग-शुद्धि (बाद् **अस्मरिध**य नि [आध्यारिमक] शहम-विकक बारमा वा मण से संबंध रखनेवाला (विपा १ रमगगर)। **ब्राट्स्टर्नाम वेची शहरतिबय** (पन १२१) । अवस्थितम् वि [साध्यास्तिक] १ सम्बन्ध का काल्वार (धरुक २)। २ सम्यान्य सम्बन्धी (सुधनि १४)। व्यवसम्ब वि [वे] प्राठिवेरिनक पहोसी (वे १

अवस्थाय पुन [सम्मयन] १ राज्य, नाय (चंद १)। २ पड्ना अस्तास (विशे)। व वन्त्र नाएक और (विपा ११)। भरमज्ञाजि वि [ अध्ययनिम् ] पदने बाला धम्यापी (निसे १४६६)। अवसमाय सक [ अबि + आप् ] पदाना धीकामा ।। प्रथमनाविधि (विसे ११६६)। अभ्यत्त्वस सङ्ब्रिष्टक्य + सो ] विचार करना चित्रम करना । वक्त कारमावसीय (नुपा RER) I भरमावसण ) न [अध्यवसान] भिनान, **अम्मन**माण क्रिनार, माठर-परिकास ती कुमरेशं वरिएयं पुनिपूक्तः। समुहत्त्रमञ्जल र्छिपि । कि इनकार्ज सामद ?' (सुपा १९५)

शासु१ ४३ विपा१ २) । भग्ममसाम पुं [क्षम्बनसाय] मिचार, <sub>घारम-</sub> र्पारहाम मानसिक संकल्प (मामा-कस्म ४ **π**₹) ι

व्यवसम्बन्धिय वि [अध्यवसित] वि<del>वित</del> (मर्मेश ४२)।

चिन्छन विचार (प्रस्<u>य</u>)। अञ्चलसिय न [द] ग्रेंडा ह्या ग्रंह (दे र कारफ़सिय वि [वे] केवा हुया हुए हि १,

अग्रसम्बन्धिय वि [अन्ययसिष्ठ] १ विनना

चिन्तन किया क्या हो वह (धीर)। ९ व.

अम्मस्स एक [आ + मृञ्ज] बाहोत हरूद वभिराप केता। सम्प्रसद्ध (दे १ ११)। **अंग्स्**रहा ) वि[आक्रम]बित्त पर प्राप्नेत

अवस्थित ) रिया परा हो बहु (हे १ ११)। बाउम्ह्रीह्य वि [अध्यक्षिक] क्षत्रंत प्रतितः वित (महा)। अरम्य 🛍 [दे] १ प्रसती क्वाय । २ प्रकल की । १ नवोड़ा, <u>द</u>सक्ति । ४ द्वरती की । १ यह (की) विश् प्रश्ना वर्ष नमा ६४)। अरम्ब १ स**क** [अधि + इ] सम्मन नरस्य, करमाञ्च र पड्ना (सरमानिः (मुद्ध १ ११) ।

हेक धरम्बद्दं (मुक्त २ १३)। अरुखाञ तक [ अध्वापम् ] पहाच । कर्मः सक्ताह्बह (सुबा२ १३)। अवस्थाद्यस्य वि [सम्पंतस्य] पहते बोग्य, 'सुधं ने श्रीनस्तर ति शरुसारसम्बं सन्दं (दर eva): कारमञ्ज्य <u>व</u> [अच्याय] १ एळ५ सम्बद्धाः

(भार) । २ बन्ब का एक बंद (निसे १११५) माप)। भारमञ्ज्य पूर्व [कच्यास्त्रः] १ <del>वृक्ष वि</del>ग्रेर । २ कृतों के उत्तर बड़नेनाची सम्बीना राजा नवैष्यः (प्रएकः १) । भवनप्रयोव पूं [सम्मायेप] भारोप स्तवार (वर्गसं ११२) १११)।

लक्कारोषण व [बाध्वारोपण] १ **धारोत्त** 

कपर चढामा। २ पूजना प्रश्न करना (निर्दे ₹**₹**₹# ) 1 अवस्त्रचेत् र् [अच्याचेत्र] देशो अवस्त्रद्ध (इस२३७ १०,११)। अवस्थान केवी सहस्थान = प्रस्तापन् । बरुक्र-नैद (पुत्रा २ १६) । तक आस्मावकोत (हास्प

tty) i अवस्थानम् केवो व्यवस्थानम्(वस्त्रीतः ११८) ।

क्षप्रसम्बद्धान [अध्यापन]पटन (सिरि २०)। अवसम्बद्धानी (कम्म १६)।

कारमञ्जय वि [ अध्यापक ] पदानेवाला रिप्रक दुव (वसु सूर १ २९)।

साम्मानस परु [ सम्या + यस् ] खुना बाद करना । यह अगम्प्रवर्सत (उना) । साम्मास पु [अन्यास] १ उत्तर बैठना । २

तिबास-स्थान (मृपा २०) । क्षत्रम्यसमा भी [अन्यासना] सहन करना

(राज) । भारतम्ब्रसिक्ष वि [अन्यासित] १ वामित ब्रोमिक्षत । २ स्वापित निवेगित (नार) ।

क्षत्रमाञ्चय नि [अस्माइत] १ उत्तेतिक 'शीव-केलं पुरदिशंबर-ट्रियानंकेलं हुन्धी सरमाङ्गी बलं संगोध' (महा)।

कारमधिण वि [अझीण] १ सक्य स्पृतः। १ व सम्मयन (विते ११८) ।

अम्भुत्रवद्य देवी अवसोधवद्य (पि ७७ भीर)।

सन्मुन्यपण वेशो अवस्त्रीवर्षण्यः (विधा १ १) । सन्भुन्यस्य वेशो अवस्त्रीयवास(वर प्र२०१) ।

कारकृतिक वि [क्रम्युपित] मानित (पिड ४४.)। कारकृतिस वि [कारुपिर] विश्व-रहित (पोव

. ११९) । अप्रमेत्र वि. [ कम्बेट् ] पड्नेवालाः (विदे १४८४) ।

भारतेत्रकी भी [वे] बेम्हनेपर भी निस्ता बेम्हन हो सके ऐसी मैमा (वे १ ७)।

अस्मे मणा श्री [अस्पेपमा] प्रशिक प्रार्थना विशेष भावना (पत्र)। अस्मेप्रपरा ] पूँ [अस्पयपूरक] १ साबु के अस्मेप्रपरा ] विश्व प्रविक रसोई करना। २

सापु के नियं बढ़ाकर भी हुई रहोई (शीन पर ६०)। अस्मोद्विमा भी [वे] वस-स्वन के सापू-पछ में की बातो मोतियों को एवना है है

६६ ) । सबस्येवगमिय वि [आप्रमुपगमिक] खेळा वे खोडल (परण ६४) ।

कारमोजनात सक [अन्युप + पद् ] सम्बाधक होता पार्वक करमा । सम्योगनकाद (पि ७७) । पांत्रमान्योगनेविहिह (पीप) । कारमोजनात | पार्यक विचार र स्वाधि

क्षत्रमोत्रवसः । भासकः (निपा १२ सामा १ २ मान, पि ७७) । अक्सोनवास प्रै जिस्मुपपास् । भस्मत भास

च्छि, सङ्गीनता (पर्युः २ ४) । इस्साधना बेली खब्सप्रथमा; 'पत्रमो पस्तव प्रको विद्यासा समार्थम्बनसमूखनो: (संबोध २४) ।

बाट । सक [आद्] भ्रमण करना दूमना। श्रह । सब्द (पद् हे १ ११४) - परिस्रहृद (हे ४ २६ )। इस्ट्र सक [क्ष्म ] सम्ब करना। सहद (हे

४ ११६१ पड़ा गड़डो। शह शंक [शुप] पूचना कुन्क होता। शरीत मि ५ ६१)। शक्क व्यस्त सि १.

ब्रष्ट्रीति (में में ६६) । शक्क ख्राह्मि (में में ७६) । आहु मि [आर्ति] १ गीपिक कुण्यति (विशा ११) । २ व्यापनियोग्य नाहुन्योग्य विश्व-विश्वोत्, रोम-निवृत्ति सीर व्यवव्य के लिए मिनना करना (ठा ४ १) । "व्यव्य कि लिए

पीड़ित की पीड़ाका जाननेवाझा (यहूँ)। श्रद्ध कि [ऋष] यस प्राप्त (शामा ११ ४४ म १२२)। श्रद्ध पूर्व [आहू] १ कुतान क्रार्ट (या १४)।

२ महत्त के अगर का बर, बनाये (कुमा) । वे बाकाय (बाको २ र) । बाहु वि [वि] १ कुछ दुर्णसा २ वद्मा, महान्।

१ तिका बेरामा ४ पासती सुरता १ पूर शुक्त तोता । १ शब्द पासात्र । ७ ग. सुक्र । ४ पूर, पतानीकि (१ १ १ ) ।

भट्टह वि [वे] ज्या हुण नत (वे १ १)। भट्टहास दे [अट्टहाम] वेशो अट्टहास (वर)।

क्षहण व [अहून] १ व्यायाम क्यरत (धीप)। २ पृष्य नाम का एक प्रसिक्त सक्स (उन्त ४)। "साला की ["शास्त्र] व्यायाम-शामा

कसरत-रामा (धीर कप) । अष्ट्रण न [अटन] परित्रमण (नर्म १) । अष्ट्रणा न्ये [आनर्धना] प्रानुष्ट (प्राप्त ११) । बाहुसहू वि [वे] निर्यंक व्यर्ग, निकस्सा (पुकार व): काहुसहू पुं [वे] १ सामकान कियारी (हे २ १७४)। २ समास संकार-निकारण पाप-संवर्ष

क्ष्मक है है। इं कालवार उत्पाद (इं र १७४)। र समुग्न सेकान-विकटन पामसंबद्ध सम्बद्धित विचार 'क्स्मुबहिन मेखा बस्त स्वयं पहुनाई स्ट्रमहाई। से चितिर्य च न बहुद्द, सेचिगुद्द यपायकस्माई'

(उन)। सहस्य हुं [शहूक] र हाट, बूकान (धा १२)। २ पान के सिंद्र की बन्द करने में स्पद्धाः सन्दर्भकेष (बृद्द १)। अहरकक्कों की वि] कमर पर हान रहतार

चना फ्ता (पाय) । अहसास पुं [अहसास] बहुत ईसना विस-विसा कर ईसना (रि २७१)।

आहाजग रे पूर्व [अहाजक] महत्त का उत्तरि आहाजय | भाग सदारी (धन १६७ पटम २,१) । आहि जी [आर्ति] पीहा पुण्य (माना)।

सहित वि [सार्वित] ग्रोकारि से पोहित 'यहा सहित्रविका वह बीमा दुक्तसमारतुर्वेति' (धीर) । स्रोतित कि [सर्वित] स्राप्त स्वाप प्राप्त

कहिय वि [अर्दित] स्मानुत्त स्पष्टा प्रहुतुत् हिमवित्ता (श्रीप) ।

बाह तुं [कार्ये] संपम (तुम १ २, २ ११) । काह तुंग [बार्ये] १ वत्तु, पदावे (वता २, बन्यु) "बहुरेशों (तुम १ १४) 'बहुरे १ विकार्य (विकार) (तुम १ १) । २ विपय १ विकार्य (तुम १ १) । ३ व्यव्य का अविदेश बाज्य (तुम १ १) । ४ मतनक ताम्पर्य (विसा

ल को बायहरा विराजे धट्टेन याजाह ब्राह्मिक वेर (जह १२ ११) फाने उरमु ह्रस्तट्ट हुग्में (जुम ११ १) १ फानेकर हेन्द्र (क्षेत्र १३) = ब्राह्मिय क्षमा पट्टो पति १ व्यक्तिहुं हुंगा बहुते (जाया ११६ जन १) ८ जहेरच, क्षम्य (जुम ११२१) ६ धन वेदा (बाहरू) ब्राह्मी । १ फुर साम

२ १: भास १८)। इ. तस्य परमाई, 'तूबमे

चहुन्तालि विक्षेण्या शिष्ट्राणि व बक्राः (उत्त १)। ११ मोध्य मुक्ति (उत्त १)। इस पूँ [इस्]। १ संत्री। २ तिसित्त शास्त्र का निवान (ठा ४ ३)। जाय वि ["शादार्य] मन बारा (डा १)। प्रयाश्री ["पन्ता") एक इत धन-विरोप (पिम) पाइरिअवि शिह रिक] बाठ प्रदूर धंत्रेची (पूर १३, २१६)। भाष्या स्म ["मागिरा] तरत बन्तु नाको बाबसीम पनावर एक परिवरण (क्रहा)। सद ["स] तेचा नवातार तीन दिनों वा कारान (गुर ४ ११)। संगळ पुन "सङ्खी रप्रान्तर साहि साठ नानीरक बन्तु (राय)। मधत्तर्भूत ["अमक्त] हेना नन्धनार हीन र्शिय का उत्तराम (भागा ११) । संशक्तिय रि [ ममकिक] हैना नरतैराचा (दिना व t)। मी मी [मी] विभिन्तिक बहुनी (रिश १ १)। सुचि 🕻 [मूर्नि] बर्ग्डेर धिर (प्र t)। यात्र ति [ चल्पारिशन् ] भागनीत (वीं)। बस वि [पद्माशत्] नंगा-रिटेप पहारम, १ (राज १ १२) । वरिम वारिम रि [वारिक] बाद करें

में में हैं — नित्रा तारा बना दीआ, निवध कान्छ। त्रमा भीर पछ (सिरि ६२६)।

(पंचम २)।

भी भई हिला(छा ३ २)।

अट्टाय न [अरबान] १ वर्षात्व स्वान (ठा ६)

विवे बच्चर) । १ मुरितत स्थान वेस्पा का

पुरामा वनेष्यू (वन२) । ६ धनीस्य ग्रिस्मानवी

**शहुय न [अ**एक] बाठ ना समूह (दब १) । नक्षा भी [भए।] १ पुटि <del>भारति</del> वसूचि सोने करेद (वं १) छ १व२) । १ प्रद्वीवर चीव भट्टा भी [कास्वा] गरा विधात (गुध २ १)। अट्टाकी [अर्थ] निए शास्त्रे 'तदनाय सक्की रिष्यो समितियो जीवरमञ्जा' (सुर १ ६) क १ १)। दंड पु विषड ] नार्य के लिए

अट्टारह } देशो अट्टार (पद् । पिन) । काहु(बक्य ) जीन [ काग्रापक्काञ्चल ] संसी-काहुत्वज्ञ ) विकेष प्रवास और मारु, १४ (पि २६१, धम ७४)। अहुरवस वि [अष्टापञ्चारा] बळावनवी (पर-मध ११)। ब्बट्टाचय दु [ब्बग्रयपर] १ स्वनाम-क्वान वर्वतः विशेष वैतास (पर्यह १ ४) । २ तः वर्ष भावि का बुधा (पर्हि १४)। १ धृन-मन्तरः जिल पर भूमा सेला भावा है गए (नगर) ४)। ४ नुबर्ख धोना (बस्र ८)। सेम् ई बहाइम वि [काराबिरा] चडाईनवां (विव)। ["वीख] १ मेफ-गर्वत । २ स्वनाव-व्यात पर्वतः महाइस विशेष [अद्याविगति] सस्या-विरोप बड्डो भनवान् प्रताबदेत निर्वाण <sup>वाने</sup> अद्वार्दस र्रे विशेष बळाईन (विनानि ४४२)।

के 'जिम्ब तुर्ग श्रविवित्तो, बाय व विरुप्तान

संबयं वत्तो। ते सद्वारयनेका धीवायेना पिर

दुनल (बल )।

खट्टाबय म [कार्यपत्] पृहस्य (वस १४) । भद्रावय न सिधैपद्री प्रकेशक संपत्ति-राज (मुझर ाप्पाइर४)। सदाबीस लोत [अष्टाविश्वति] स्टाईन २० (BY YX YXX) 1 भट्टाबीसइ की [अप्टाबिशक्ति] रॉक्या-विशेष स्टब्स् २८। विद्वति विभी स्टब्स प्रसार का (वि ४३१) । अट्टावीसइम दि [अदावित] १ म्हाईनवी (पत्रम २० १४१)। २ न केव्ह दिनों के समातार उपनास (खामा ११)। भट्टासद्धि भी [अष्टापष्टि] संक्या-विशेष बठ-सड ६८ (विष)। भट्टासि ) की [अग्राशीवि] सक्या-विरोप अद्वासीर ) बढासी यद (विक सब ७६)। ब्बद्वासीय वि [अद्यशीत] महाशीवी (परम 44 YY) I सट्टाइ न [अप्टाइ] धाठ दिन (ग्रामा १ व)। अट्टाहिया भी [अटाहिक] १ याठ विनों काएक उद्धव (वैचा≈)। २ इन्छव (लाया १ <) । व्यक्ति विविद्यो प्राची यरम्याना प्राप्त-भाषी (धाचा) । काट्रि पुं [अस्यि] १ इत्ती हाड़ 'यम बद्धी' (नूस २. १ १६) । २ फन की प्रदी (रम ዲያ ወጻት ፣ कांट्र ) कीन [अस्थि क] १ इसी शास धादिता - (बुन्ता पण्ड १ १) । २ जिसमें अद्भिय श्रीय ज्यान हुए हों पैसा सन्तरि पस्य प्रम (बहु १) । ६ ई कापालिक भट्टी विज्ञा पुण्यियमिन्।' (इह १ वव २) । मित्राची [भिज्ञाहित के भौतर वास्प (अ १,४) । सरकत्त ( "सरजरक] नाम-तिक (वय ७) । स्रोधान विद्या १ वन्त मोत्र की शाध्यक्तपुर गोता २ कुँदल भोत ना प्रगर्वेक दूरन धौर छनती सन्तान (ना o) : अद्भिय रि [अर्थिक] १ गरह, बाचक प्राची (पूर्म १.२,६)। २ वर्षका कारण सर्व सम्बन्धी । ३ मोघ्र वा हेतु नोश वा वाग्गा-मुत्र 'पनमा नामाग्मीत रिजने महिये । सूर्य' (बत १)।

**अ**दिय वि [शार्विक] १ वर्षका काएए धर्य-सम्बन्धी । २ मीना का कारण (उत्त १) । **জা**ইুয় বি অিমিল অদিশ্যিত সাৰিত (उत्त १)। अहिय वि [अरियत] १ धष्यवस्थित पनि-र्योगत (पण्ड १ ३) । २ चंचस चपस (छ ર ૨૪) ા अद्रिय वि [शास्यिक] ह्यून-सम्बन्धी हार का 'कट्टियं रखं मुख्या' (मस १४९)। अद्रिय वि [आस्थित ] स्वित एता हुमा (वे १ ३४) । अद्भिष पू [अस्मिष्क] १ बुस-विशेष । २ म. फ्रस-विशेष भस्विक बूल का फल (रूम ६ १ ७३)। आंद्रक्षय पुं [अस्वि] क्य नी गुट्टी (विश ६ व)। अदद्भुत्तर वि [अष्टोत्तर] याठ वे पविक (बील)। सयन विक्रित्र एक की बीर बाठ (कान)। सय वि "शततमी एक धौ भ्राठन (परुष १८४)। अड ) वेका अह = यहन (निंग नि ४४२) अस् । १४६ मण सम ११४)। अब सक [अद्] भ्रमण करना किरना 'बर्'वि संगारे' (पराह ११)। यह श्राह्माण (लामा १ १४)। अह पूं [अवन] १ पूप इनाय (पाप)। २ बूच के पास पशुक्तों के पाली पीले के लिए वो मर्ज निया बाजा है यह (हे १ ६७१) । अक्टरेको तक्ष = तट (गा ११७- थे १ ११)। अक्टर् ) ह्ये [अटपि, यी] भयानक जैन्स अबर्ड वन (मूपा १०१ नाट)। भाइडांग्रस्य न दि विपरीत मैपून (दे १ Y7) I अश्वनम्म सम् [दे] संभाननः रत्रसः करना । कर्म 'बारकरिमान्जीति सर्वारमादि क्ले' (वे १ अहरान्मित्र वि विभागा हुना चीतत ( t t yt) i

महरू न [पटट] घरटोगं को जीएती

नाय ने पुराने पर को संबद्धा नस्य हो नह

(87 F 75)

काइब्रेंग न [अटटाइन] संस्थानियोग 'चुनियं' वा 'महामुदिन' को भीराधी - भाष से पूराने पर को संख्या सब्ध हो वह (ठा ३ ४)। अहण न [क्षटन] भ्रमण बूमना (ठा ६)। बाहणी की दि नार्ग रास्ता "१ १६)। अहपद्मा न हि नाइन-विशेष (नीब)। **अहयणा ) हो [वे] दूलटा व्यक्तिपारिसी** अख्या की (दे हैं दे पाप, या २ ४ ६६२, बजा ८६) । सहस्रात न कि प्रशंसा तायेफ (पएए) २) ३ ) क्षेत्र मिष्ट्रचत्यारिशस् विक-अख्याध्यम ) तानीम ४० की धंक्या (नीव ३ सम ७ ): सयन दिता एक सी बीर बठडासीन १४० (कम्म २ २६)। **अडवडण न दि**स्बमना स्ट-न्क बमना 'तरबादि परिन्तंता सहवहणं काठमारखा' (मुपा ६४%) । अडवि १ की [अटबि, बी] भवकर बंगर आडवी∫ यहचे वन (पर्हि रिमहा)। खडसाद्रि औ [बाष्टपरि] बङसङ (नि ४४२) । स वि विसी सङ्ग्रहवी (पटन ६० ५१)। अहाड र् हि] बसास्तार, वहरराती (दे 2 (c) 1 আহিলভ গুঁ[সেতিভ] एক বারি কাণলী (पएस १)। व्यक्तिस्था की [सहिता] धन्द-क्रिय (पिंग) । अवादिया की [अटोस्टिय] १ एक राज पूरी जो यूवराव की पूकी सीर गर्नमस्त्र की वहिम थी । २ सूपिना, पूरी (ब्ह १)। अहोबिय वि [ब्रटोपित] मरा ह्या (परार 2 3 1 अङ्गविदि] यो माहे माठा हो बीच में बावक होता ही बहा 'सी मोहाहमी धड़ी धावरियों (दश १४१ टी)। अहुक्स्य सक [िक्षिप्] चॅक्ना निराता। बहुमाद (हे ४ १४३) पह् )। अङ्क्षिरतय नि [क्षित] चॅना हुया (दुना) । अबुध्य व [अबुन] १ वर्गवस्ता। २ दाप चनवा 'नामुग्याएए)पदुगुद्धविद्यादासुद्यीत **एवरोच' (दुर २ १)** । अद्विश वि दि । भारीपित (वव १ श) । अद्भिषा भी [अद्भिषा] महाँ भी क्यानिरोत

(विने १११७)।

न्दंद १२६ महा)। कहर वि[आहर्य] १ संस्थ वेजव-शासी बनी (पाम उदा)। २ दुवः सहित (देवा १२)। १ पूर्ण, परिपूर्णः विदुलमदि दुशावर्वे (प्राप्त ७१)। अइराजनात्र्यी श्री हि देगी बहुयनक्षी ( t xx) 1

बहर देनो अद्ध = वर्ष (हे २,४१ वंद १ :

श्रद्भतः ति [बारस्य] गुरु निया ह्या प्रापन (4 22 4) 1 सद्दान्छ ) दि [सर्थतृतीय] दाई (सप अवदान्य ) १ राजुर १४४ मीर निस 88 831 अद्विष नि [हुन्ह] तीका हुमा (से १ ७२)। बाइट्ट वि जियेषस्यी माहे तीन, चाइक्ट ट्टाई नवाई (पि ४६ ) । भाइब्रज्ज न [भाइपस्य] वनीरन योगंगाई (# t ) | अहरूजा की [आहर्यमा] योमंत से रिया

ष्ट्रपायलार (ठा३)। सद्दारम ( (भर्यो स्ट) देन वर्णवयो के महत्त्री था एक बन्न (बोप ११५)। अद (मर) रेनो अट्ट = घट्टर (दि १७ ६ ४) YET YET! भड़ाइम (पा) नीत [बद्धपिस्रति] संस्था-विधेत मदादि, १ (ति ४४%)। भहारमग रेती जहारमग (शिव ४ २)। अदारसम रेगी अहारसम (अव १० छात्रा

1 ( ) ; मन व ["प्र अन्] देनो अर्थ (१०१६ म ११ ५४)। भग नर्द् अस्] १ संपाद रक्ता। १ लागः। १ वन्ता। ४ नगमना । यहाइ (दिन् 1 Y / 1) 1

भन पूर्शन है। इस साराज । २ नव⊲ र्गा (रिने १४४) । १ समाय क्षेत्र शाहर मराप्तं ब्यु शियो ११ ३) । ४ नानी, बाधरा बॉनरार (नेर्) । प्र.म., शार (बान्न १ १) । ६ दर्जे (याचा) । ७ जि. बूल्बिल बरव (भि २३६७ है) । भन र् [भन] रेगो सर्थशणुर्वधि (रम्ब र x 95 95) 1

द्यान दं [अप्तस्] राष्ट्र, धावी (वम २)। अप देखो अण्ज=धन्य 'धशक्रियमानि विषास् (वे ११ १६) । अग्र न शिक्षा १ करना श्राप्त (हे १ १४१)। २ कमें (बच १)। भारम वि भारको

बरक्तार, ब्रासी (सामा ११)। यस वि िबस्री उत्तमली अनदार (पराहर २)। भेजग वि "भक्तक विजिया (पर्य १ व)। 'धम रेनो गम (ते ६ ६६)। अन वेती कन। 'घरलं पहिलामलं रमंतरस' (ना ४४) 'प्रत्यालगरकत शिय कि (काप ६१) 'वानकताले' (पण्ड ३२) । अर्थ देवी सम (न ६ ६१)।

अगअरह देशो भवदस्य (मार)। अन्यदार वि [अनविचर] विभने बङ्ग्टर इत्य न हो वर्गीतम 'मन्द्रपपी' धलद्दरमोमचारक्वामो' (धीर) । अवद्वदि की अितिहरी अपृष्टि क्यों का समान 'बुल्मिल्बरमरबुम्मर्परईस्पर्वटी चलुड् क्ट्री व (इंदीव २)। অবর্ত্ত বি জিনারি জিনারের প্রদানি-

इत काउप है चहित 'घलई'पता' (बीप) । भार्यगा व [अतह ] १ वाम विषयाविकाय रमञ्ज्या (य १६: धार ६) । २ कामरेच मन्द्रम (या २३३ वटक बच्च)। ३०६ चटन **बुबार, वो पाक्क्यूर के राजा पीतारि वा दुव** वा (नव्द २) । ४ त. विश्व-पेतन के कुछ श्रमो के श्रीनरिक स्तन, पुति कुए शारि शंद (इ.स. २) । ५ वनावटी विष आदि (ठा ५ २) । ६ शए बंध-पन्धे है पित्र देन शास (लिं वर )। ७ वि सरीर-पॉल पंतनीत कुछ 'कहरद कह एए कर्लगो कह रह हिस्सीन वानुवा बाला' (बडर) 'धर्षकाने परदे वर्तनो र प्राप्ताली हु गई कर्मनो (नश्च ४०)। वरिशी थी ["गृहिक्यी] यी भाम<sup>क</sup>र को नहीं (भूगा ६६ )। बहिसवियी हो [विनियविका] बनवंदित रोति से रियर देश बरनेतानी औ (प्र २)। पविद्व विशेषात्री वास्त्र धंककरों ने जित्र वैत यन्त (दिन १२७)। बाम पुं विश्वम] काम के कन्तु (बा भर )। अषम १ विस्ती सन्तरमञ्जूषा

एक पुत्र, सब (पडम १७ १)। सर पू [ शर] भाग के बाख (मा t )। सेवाच "सेना । शास्त्र की एक शिक्सत गीतरा (गामा १ ४, १६) । अर्थंत र् [अतन्त] बाब् धवर्यारही रात है

चीताव तीर्वकर-देव विमत्तमस्ति व किये (प्रति) १ २ विष्णु कृष्ण (प्रतम १, १२२) । के शेप नाग (वे दे,बर)। ४ वितर्ने सम्ब बीब हों ऐडी ननस्पति कन्द-मून वर्षेख् (ग्रीन ४१) । इ. त. केवक-सात (लाबा १ ) । ६ থাকাত (সৰ ২ ২)। চৰি বাত-মীনত, शास्त (तुम ११४ परह १३)। वनि सैन क्शरियंतर असंस्थ से की कहीं सक्ति (निसे)। ६ प्रमुत, बहुत किलेप (प्रामु २६। हा ४१)। बाइय वि["अधिक]काल वोरवानी <del>वा</del>-स्पति कन्द-बूस भावि (वर्ग २)। काम ई ['काय] कर-पूत प्रादि यनम्य दौरवानी बनन्यति (पर्ख १)। सुचो म [ **१८वस्** ] धक्त बार (शे ४४) । बीव पू विमे देखो काइय (परंख १)। जीविन रि "बीविक] केते काइय (मग व १)। बाज न ["द्वान] क्रेनस-मान (स्तुर)। भाजि

वि [कातिन्] केवक-वानी सर्वत्र (तुप १ ६) । इसि वि ["इशिम्] वर्षेत्र (वस्प ४ १ ३)। पासि वि ["इशिन्] ऐराव होन के बीसर्वे विवन्देव (तिन्व)। विश्विसया की ['मिमिस] सार्वातम सारा का एक थेए। विश्वे सनन्त्रकाम से मिछ अलेक कान्यीत वे मिसी हु<sup>न</sup> सक्तकार को यो सक्तकार महुना (परख ११) । मीसय न ["मिनड] देगी ।मस्सिपा(छ १ )। रह्र दें ["रव] विकास धावा बरारव के बड़े काई का नाम (बजन २ १ १) : धिजय प्रे ["विज्ञव] नताने <sup>के</sup> २ व वे और ऐरान शेन के बीत व मानी कै कर पान्यम (नव १३४)। योरिवरि ["बीथ] १ प्रकन्न बन्नरामा । **१**५ प्र<sup>ह</sup> नेपनवली नुनिना नाम (पदम १४ ११ )। व एक ऋष्, जो शार्तश्रेत के तिला में (मार्ड १) । ४ वरप्रधन् के एक आरी डीर्चनर ना बाद (क्षे ११)। संसारिय रि ["संसारिक] यनम् बात वह भंबार य काब-यरत् वार-बाता(उन १ ४)। सम् द्रे ['सन] १ बीग कुससर (सम १४)। २ एक सन्ताहत् सुनि (संत १)।

अभतद्र पुं[अनस्तितित्] पानुकलके पौर-इसे जिन-केन (पडम १ १४८)। अर्धतत्। ११ देवी अर्थत (अ.१,१)। २ न

कायता ) १ रेका अर्थत (अ.१.१)। २ न रार्णत्य ) क्यान्सिरेट (योग ११)। १ पू ऐरवत क्षेत्र के एक विनदेव (सम १११)।

क्षप्रतिय न [क्षानन्तक] पत्र कपड़ा (पत्र ने)। व्यक्तंतर विकान-उरी र व्यवकान-पहित व्यक्त-बह्नि 'क्षणुंतर' पर्व चह्ना' (लाया १ प)। २ पुं क्ष्तंतन समय (ठा १ )। ६ जिनि बाद में पोछे (वितर १ १)।

कार्णनादिय वि [आनम्बाह्त] १ श्रम्यहरू व्यवपाल-रहित (पाचा) । २ सबीव समित वेतन (निषु ७) ।

अर्जनता च [अतन्तशस्] मन्च बार (वं ४१)।

अर्गताणुक्ति पूर्व [अनन्तानुप्रश्चिम ] यनन्त बान तरु बारमा की संवार में प्रमण कराने-बावे क्यामों की बार बीरुक्सो में प्रमण बीड्झे बनिप्रचंडकाब मान मध्याधीरलोक (नम १६)।

अर्णस वि [अर्नरा] प्रवएड (पर्मर्थ ७ १)। अर्णकः पू वि] १ एक स्तेन्द्र देशः। एक स्तेन्द्र जाति (पण्ड ११)।

कागस्य पुंदि ? रोप पुस्सा, कोव (मुरा १३११ ६१ मिन) । र सबा (व १७६) । अमस्यार न [कानकुर] युक्तमा का एक मर-वार्ड क विना संपर्ध के स्टीकमा जुल्ली बराता, पिर हिलाना सारि संदेश में दूसरेका महिमाय काला (संदि) ।

कामसार विश्व किसार है किसने घर-कार वाक दिया है किस का कुछ पछि पुनि (विशा है है अस कि है)। इस-विश्व विद्वाक भीनवैद्या (ठा ६)। इस्तु किस्तु के आही याववे देखीर दना एक पूर्वप्रशिव नाम (नम हैदेश)।

सुष व [भूव] 'पुत्रकाम' मूचवाएकधाय-यम (पूष २ १) । असमार वि[बारशर] १ करता वन्तेमानाः १ दुर रिप्य, प्राप्त (बन्त १) ।

क्षणयार वि [अनाकार] बाक्रीत-यूग्य माकार चीकः 'वयसंग्रन्थनहारामायमी मारणगारं व' (विशे ६१) :

अजगारि दे [अनगारिम्] सामु यति मुनि

(सम १७)। क्षणगारिय वि [आनगारिक] सापु-संबन्धी मुनिका (विसे २६७१)। क्षणगाळ पुं [अस्त्रस्तु] दुनिक्ष सकास

अजगाज पुंजिसक] दुनिस सकास (दृष्ट्र)। अजिनाम वि[जनम] १ को नवान हो वर्जी से साम्स्यादित। २ पुंच्यनपुत्र की एक वासि

भावस देश है (तंदु)। अगन्य देशो अनय (कृप १)।

अगस्य वि [ज्युगांको ज्यस्य-गराज वर्ध-गराज (वर्छ)। अगस्य ) वि[अतस्ये] र स्थूस्य बहुमूस्य अगस्य ) बीमती (बाब ४) 'रवाणां ब्रह्माचेत्री (वर्ष ४) 'रवाणां इर्ह्माचेत्री (वर्ष ४) र प्रकृति (वर र १८० टी च ८)। यहान् हुए। व उदम मेह 'ते भगवेत सम्बंध नियमपोए सल्यास-

सीप, सहारिम' (विने ६१) ७१) । अजय वि [अनय] गुड निर्मंत स्वच्छ (पंचर

ा। समयक्त देशो करिस = कृष्। सल्ब्स्स (ह ४१८७)ः

क्षणाण्यक्षशार वि [वे] व्यक्तिल नहीं छेवा कृषा (दे १ ४८) ।

अंगळाचि [अन्यान्य] सर्वान्य यो न्याय पुरुष्यि (पण्डु ११) ।

अण्यात्र नि [अनार्थ] सार्थ-सिन दुष्ट, सराव यापी (पण्ड १ १: याचि १२९) ।

अध्यक्त (वर) अपरथ्या । श्रंह पूं [श्रेषक्ष] समार्थ देश (प्रति ११२ २) ।

भणगम्बन्धाय पुं [अनस्पनसाय] संस्पष्ट ज्ञात, सर्वि सामस्य हात (निते ६२) । अणगमाय पुं [अनस्पाय] १ सम्पत्त ना समान। २ विनमें सम्प्रत्त निर्विद्ध है बहुवान (स्रष्ट)।

भगट्ट नि [अनाते] बाउँ-पान से धीर्व 'बपट्टा किंत पनप्' (उत्त १८, १ )। अजट प चित्रों रे क्यान क्यान

अन्तर्दु पू [चनर्थ] १ युवमल, इति (ग्राया १ ६। दग ६ टी) । २ अपोतन का समार (भाव ६) । ६ वि निकारण कृषा निष्कस (निवृश्य पण्डस् १)।

वह पूं [दिण्ड] निश्वारण हिंसा विना ही प्रयोजन बूनरे की हानि (सूच २ २)।

अमाह पुँदि] बार, क्यांति (दे १ १ तः यह )। अमाहदु वि [अनर्च] विभाय-रहित समाएड (ठा ६ ६)।

काणण है [अनन्य] है धर्मास प्रकारण कराया (भिष्क १)। २ मोझ-मार्च 'धन्नएण कराया के स्व क्ष्मण करायार (सामा)। ३ मान-बारण परितीय (नुता १०० हुर १ ७)। सुरुक्ष हि "सुक्ष्मी धर्मामारण क्षमुम्म (अन् १४० थे)। देसि हि [विशिन्] पत्रम को स्थन्य के मेलन्या (आप्त)। पर्स हि [वरम] संवम हिम्मय-निकहा सन्मण्डारम प्रणाणी खा प्याप क्यार्ट्स (सामा)। सन्म स्थाम हि [मनस्ह्री प्रकाष विकारण स्थाम (बिंग् परम १९)। समाम हि

िसमान] धनावारक पश्चिताम (इर ११७ वा)। अनक वि [अताक] धनुशीय प्रस्वोद्धव (अ २९)।

अजच वि[अनार्च] मरीडिट 'दम्बावदमाईमुं भत्तमण्डे तबेमणं दुणई' (वब १) ।

अपन्त वि[स्टमाच] ऋख दे पीड़ित (झ १४)।

श्चमत्त्र वि [अनाव्र] दु तकर, मुझ-महाक 'ऐएरपालं मेंगे ! कि भत्ता भोगक्ता स्त्युता वा' (भव १४ १) ।

अश्च न [क] निर्माण केन्द्रीम्बार हान्य (के १ १)।

अमस्य देवी अगह (रहम ६२, ४ मा २७) चरा)।

कामर्थत वह [ कविष्ठम् ] १ मारी स्त्वा हुमा १२ मस्त्र होता हुमा 'म्युपरे दिरस्यरे वो स्वय पर्यान्तहीर माहार' (पदन १४

नः चयर चरुत्महाथ बाहार (पदम १४ १६४)। मणका देखो अगण्य (पुरा १८१ तुर १

भ पतम ६ १३)। सम्प्रासिय केनो आसम्बित्सय (सम १ २)। समस्य दि [स्वनस्य] प्रांत करने के स्रयोग्य या स्वत्स्य (स्व. १)। क्षज्ञप्य वि [कासस्य] प्रविक बहुद (ग्रीम)। क्राज्यय पू [झनस्मन्] निक से किंव माला क्षेपरे (पदम ६७ २२) । आप वि [ हो ] १ निर्वोच पूर्वे। २ पाननः पूर्वाच्छ पराणीन (निष्कृ १)। बस्ता वि [ वशः] परकत पदाबीन (प्रजम ३७ २२)। क्षाज्य पं दि । चन्त उत्तरार (दे १ १२)। क्षणप्रिय वि[अनर्पित] १ नही विना हुआ। २ साबारक सामान्य महिरोदिन (ठा १ ) । द्मव पू ( सयो शायान्य-शादी पछ (श्रेरते)। अवस्थित विश्वितस्थलार विवर्धतरू को छो। बालनेवामा प्रस्य-प्रतिक 'व्यक्तने-क्य खू बन्हे मदलक्कन बूचेतस्य (स्रीत £ { } \$ क्षांक्रमिमाद्द्र विश्वनिश्च द्वे वेवा बल्दाः इत्यादि वयः निम्मान्य वरः एक मेव (मा ६) । अजिमिगाहिय न [अनिश्चमहिक] अन्य रेको (ठा२१)। ब्रणभिग्गहिब वि [अनिभगृहीत] १ क्या बह-कृत्य (था ६) । २ अस्तीहरू (उठ २×)। स्प्यमिण्य ) वि [स्प्तिमित्र] धवान, निवीव भजमिस । (मनि १७४ जुन १६०)। अर्जासस्य रि [जनभिस्तर्य] स्ट्रेनबेच नीय, भो स्पन से न यहालां सके (लहूच જો દ अप्यमिस वि [असिमिप] १ विक्लिट, विका इथा (तुर १ १४१) । २ विभेग-स्थित

ह्या (दूर १ १४)। २ विशेष-प्रीय करा-बनिव (दूरा ११४)। स्रणव दू [जारण] क्येतिंद, स्थान (वा २०-छ १ १)। स्थानार रेपो आध्यार (पटन ११ ७)। स्थानार रेपो आध्यार (पटन ११ ७)। स्थानार वो नीचे वे स्थान हुएन था (पटन १ ८०)। स्थान विश्व क्योरिंद (प्राप्त क्याप्त क्याप्

भगतमय र् [रे] बर्चन केली (वे र

थ्यः भर्दर) ।

अवताय वि[अराजक] राष-सून्य विसर्वे श्रामान हो यह (सह १)। ठाणसाह प्रे दि ] सिर में पहनी बाली रंग-विरंबी बड़ी (वे १ ५४)। अवस्थित वि वि अवकारा-रहित पुरसत-रहिष (वे१२)। २ रॉक और ग्रॉक गोरस भोज्य (निष् १६)। अव्यक्ति वि (यस्त्रे) यसोव्य नामायक भाजरम् । (कार्या १ रि) । का**ाक्षे स** [ कानकर्म् ] झसमर्चे (धाचा २ 2, 2 6) 1 अञ्चल पु [धानक] १ धरिन, याम (कुमा) ३ २ वि सहसर्वे ३ द समोग्य 'सरहती अप<del>य</del>-क्षोत्ति व होति क्रकोशे व एक्ट्रा (निष्, ११)। अध्यव दि [ ऋष्यंत् ] १ करक्या । पु रिक्ट का खमीतवाँ श्राप्तं (बंद) । अवबञ्च वि [धनपकुरा] विस्का प्रपत्तार न किया क्या क्षा नह (सर्व) । जनकारक वि (असकारकार) कानि-पहित 'सदूरस प्रस्तवस्थारत निवर्गबद्दसर बंदुरा एवे असासनीसाने एन पानुति हुन्ह' (ठा २ अयवन नि [अनपत्व] धन्तल-पहित निर्वेश (बुपा २११)। अभवज्ञन (अनवद्य) १ गाम का शहर क्मीकासमाव (सूम १ १)। २ वि मिनॉप, निमाप (पड्)। भजनम्ब वि [अयन्त्रभी] क्यार देशो (पिके)। भणवद्भाग वि [अनगरबाध्य] १ विसको किरने दीसा न दी जा सके देशा ग्रह सनसब वरनेवाला (बहु ४) । २ व. प्रदशायधिका वा एक मेद (बर १४)।

किस्ते वैका न वी ना सके देश पुत्र करायन करतेवाता (बहु थे)। २ व. युद प्रामिकत ना एक मेर (क्ष. वे थे)। क्षणकाद्वित वि [कानविकत] र कथार्याच्या व्यानतीमत (सातृ १३७ जुर ४ ७६)। २ वेचन व्यानका फराजद्वित न चित्ते (तुर १२. १३)। ३ गण्य-विदेश नार-विदेश (क्षम ४ ७६)। कानवियात वुँ [काजपानिक, अध्यविक] वानव्याद वेगी नी एक जाति (पद्याह १ ४) कार १ १)। अपनिविश्व वैद्यो आपनियम् (देरे)।
अध्यवनार वेद्यो आपन्यम् (दर १२६ वर्षः
१ १ प्रापः) ।
अध्यवनार वेद्यो आपन्यम् (दर १२६ वर्षः
१ १ प्रापः) ।
अध्यवसमाय का [आतम्बन्नत्] १ धन्नस्वरं वर्षः व्या हृद्याः २ स्वरं तर्पः
१ ।
आवस्य वि [आनंदरः] १ स्वरं तिरंगः
१ ।
आवस्य (सर्) ॥ [आनन्याहरा] स्वरंवर्षाण्य वर्षार्थः (स्वरं) ।
अवस्य (स्वरं) ॥ आनन्याहरा] स्वरंवर्षण्य वर्षार्थः (सुनः) ।
अवस्य स्वरं (कान्यसर्) स्वरंभवन् वर्षिणः

लिख (पार)।

अयावाह वि [अवाय] वाचा-पीहर निर्मात
(ज्ञा १९०)।

अयाविकेत्रय वि [अन्तरिक्कित] व्येषिय
विवक्तय वि [अन्तरिक्कित] १ निर्मात

अवाह विकारित (क्षातिकित) १ निर्मातिकित । व्यक्ति

अवाह विवक्तित्व विकारित । व्यक्तिकित । व्यक्तित्व विकारित विकारित विकारित विकारित विकारित विकारित विकारित ।

का जह वि[कारा] किसीन प्रतिन वि २०२१ वे १ १)। अजब वि[के] सम्रत व्यक्तियीरा विक कृष (वे १ ११ कृष १ १३ १८७)। लजह न [ अनमस् ] मूमि पृषिषी (से ६ क्रमहत्प्रमय वि दि प्रनष्ट, विद्यमान (वे १ Ys) 1 अप्रतस्यम्य वि वि विरुक्तः मस्त्रित (पइ)। छ। की अभूना इस समय (प्राप्ट )। अपादारय वे दि दि सह सता जिसका मध्य-नीचा हो वह वयीन (दे१ ३०)। अग्रहिजज वि [अहूदय] हुत्रय-रहित निप्रुर, निर्देव (प्राप्त या ४१)। क्रविस्पर कि जिन्नियत है स्त्री काना ह्या। २ प्रै वह सादु, जिसको शासींना ज्ञान न डा. घयोनार्व (वव १)। अवश्रिक्त देखी अमुभिक्त (प्राप) । अविद्यास वि (अनुष्यास) भगविष्ण सहम मही करनेवाला (उद) । छ महिङ् ) न [भगहिङ्क] पुत्ररात देश की लज़िक्क प्राचीन प्रजनाती को बादकत 'पाटन' नाम से प्रसिक्त 🕽 (सी २६ 🟋मा)। बाह्य म [पाटक] रेखी अमहिक (पु १ ) मुर्ति १ मनम्)। सम्बद्धीय वि जिन्नभीत् । स्रक्त सन्तरस (मैय १६१) । इसजहुहिन्छप वि [वे] विश्वका फल प्राप्त न | इया हो वह (मम्मच १४३) । क्षणाइ वि [अनादि] मावि-धीत निरंग (नग १२१)। जिह्नण निह्नज वि ["निधन] धायल-बाँबा शास्त्रत (वन भम्म ६१ धाव ४)। संतु चंद नि [सन्]धनादि । काल से प्रवत्त (पष्टम ११८ ६२) मणि)। अजाइक वि अनावेयी र भनुगवेय प्रकृत भएते के बसीरय । २ नाम-कर्म का एक मेद, जिसके उदय से जीव का बचन शुक्त होने पर भी पाद्य नहीं समभ्य बाता है (कम्म १ २७): অসাহ্য দি [অনাধিক] থাবি-খাঁৱে পিখ (नम १२१)। अगाइम रि [अद्यातिक] स्वतन-रहित भरेता (सप १ १)। अमाइव नि [अजादीत] पापी पापिह (मय 1 () 1

धागाइय व ऋणावाती संसार, कृतिया (मन १ १)। अणाइय वि अिताहती विसका मादर न किया बया हो वह (उस ८३३ टी)। कायात्रक वि जिल्लाचिक्वी १ वक्सपित निर्मश (पर्याह २ १)। लगाइक देशो अगाइम (ज्य १ ११ टी पि का बाड ी पूँ [का ना युग्फ] १ वित-वेश (सूध श्रणाउप है है। दे मुक्तमा चित्र (ध स्र गाउस वि सिनाक्षकी प्रमादन और (मूप १२ राखाया १ व)। अजाउन विभिनायकी राग्रेय-रूप वे श्याल यसावयान (यीत)। लमाएक रेखे अमाइक (स्व १६६)। भजागय र् [अनागरा] १ मध्य काल 'मरगागवमपरसंता पण्यपमगरेसमा । ते पच्छा परिप्रवर्गतः कोएं बार्डाम्म बोष्क्रांगे (मुध १६४) । २ वि व्यक्तिय में होनेशाला (बूस १२)। द्वा की [ीद्वा] मक्त्य काम (नव ४२) । बागागिक्य वि विनर्गकिनी नहीं रोना हवा (ভ**ৰা)** । अज्ञागब्धिय वि [अनाक्ष्मित्र] १ नहीं बाना हुमा मस्तित (शामा १६)। २ धारिमित 'मणामनियानिकाचेक्येम' सामक्रम विकास (बना) । अजागार वि [अनाकार] १ प्राकार-एक्टि. भाइति-शून्य (छ। १)। २ विरोपता-रहित (कम्म ४१२)। ६ न वर्शन सामान्य ज्ञान (सम ६४)। अजाजीय वि [अना नीय] १ वागीविता रक्षित । २ धानीनिका भी इच्छा नहीं रमन-बासा । ३ निःस्युद्ध, निरीष्ट् (बस ३) । अणाजीवि वि [अनाजीविन्] कार देखो 'यगिलाई थलाजीवी' (पीतः निष्कृ १) । अपाड पूं वि] बार, उराति (दे १ १×) । अजाविय वि[अनाश्य] १ विसका धावर ग विया यस हो वह तिरम्बद (बाव ६)। २ वृ

अम्बूडीय का समिहायक एक देश (का २,३)।

🤻 भी अम्बूडीप के समित्रायक वेद की राज-वानी (बीव ३) । अगणपामिय रि अनानगामिकी १ पीधे नहीं जानेशका (ठा ६,१)। २ न सर्वत्र-कान का एक भेद (शक्ति) । लपादि रेको समाप्त (म ६८३)। अपादिय ) धनो अपाइम (इक पराह १ १ अधजात्रीय ∫ ठा३१)। अपादक रेको अमाइक (पएड १ ३)। अग्राभिसद्धन जिलाभिष्या मिम्यान्त का एक मद (पंच हे २)। अशमाग दुं {अनामोग } १ झनुत्योग दे स्मानी बसानवानी (बाव ४)। २ म मिन्याल विशेष (कम्म ४ ११) । अयामिय वि अनामिकी १ नाम-प्रीवत । १ पुं प्रसान्य धैम (तंतु) । ६ व्ही करिष्ठांपुनी के कपर की श्रंप्रमी। अप्याय वि[अद्वाद] नहीं जला हुमा भगरि चित्र (पतम २४ १७)। अयाय पूँ [ब्यताक] मर्त्यमोक यनुष्य-सोक (8 8 8) अज्ञास पूँ [ब्राह्मसू ] धारम-च्रित्र घरमा से परे (सम १)। अणायम वि [अनायक] नावक-रहित (पटम 1 (03 अनायगरि [अज्ञात ठ] स्त्रम**-रहि**ठ प्रकेसा (निष् १)। क्रजायग वि [अक्षायक] प्रजान, निर्धेष (Fog. tt) a अन्यवन ) न अनायवनी १ वस्या पावि अणाययण ∫ नीचें नोमों का चर (वस ३,१)। जहाँ सकत पुरुषों का संसर्थ न होता हो वह स्वान (परक्र २ ४)। ३ पतित साम्रुपों का स्थान (पान ३)। ४ पशु नर्नुसक वर्षे रह क र्धंसर्वेदासा स्पतन (ग्रीम ७६६) । अभायच वि अिनायची पराधीन (बरम २६, २६)। अभावर पू [अनादर] ध-बहुमान धामान (पाप)। अजायरण न [अनायरथ] प्रनाबार, बराब धाषरण ।

(सम ७१)। व्यवासरिय देनो अलख्य = यनार्व (पर्वे १ रेश्यवम १४ ६ )।

ध्यमायार रेखो अजागार = धनाकार (विहे)।

व्यवस्थार पुं अनाचारी १ सम्बन्धिक बावरण (न १००) । २ वृहीत विवर्धों का

वान-इम्स कर उस्तीयन करना वत-मञ्ज (वस १)। अमारिय रेबो अपन्न = धनावं (चना)। स्रवारिस वि [अन्तर्य] वो ऋपि-त्रवीत व हो बह (पत्रम ११ = ) :

भव्यरिस वि [अग्यादश] दुनरे 🕏 वैसा (बार)।

अयासच वि जिनास्त्रीपत् सन्त्र, सक्वित नहीं दुनाया हुया (बना) । भागासवय पु [कानासपदा] मीन, नही बोलना

अयाय तर [मा + साययू ] संगताना अखा-वेनि (सिरि १४१)। भयावरण वि [अनावरण] १ बाहरसः-राहित। २ म. केनल-बान (तस्य ७१) । भागाविक वि [आनायित] भंगताया हवा

(Filt 42 #2 ): भयाबिद्धि | धी [अनाष्ट्रिति] वर्षो ना संस्था अमाबुद्धि | (पदम २ ७ सम ६ ) । ७ सम ६ )। भयाबिस विकिताबिस्री १ निर्मेत स्वच्छ (परा)। व्यनासंसि वि[अवाद्यंसिम्] व्यनिक् विस्तुह

(48 8): धनासम रेखो अवसम (नूम १ २,१ १०)। अणासय 🕯 भिनाश 🐒 धनशन वीजना-भारा 'बारस्य सौक्तन भ्रम्मानवृत्ते' (तुम १ \* (1):

भवासव विभिनामयी १ धापव-धित। २ 🛫 यापर का बाधार धंदर । ३ व्यक्तिः, दमा (中天 ₹ १)।

भक्तातिष [अर्नशन] क्या (तुस १ मभाइ (र [अमाय] २ टरए-रिन्स (निक् १)। १ स्वामि-र्गान, वर्धनव-रहिता । रंव

मणाहार पूँ मिनाशार] एक दिन क्षेत्र समास (संबोध १८)। व्यवादि ) विकिताधि, की मानितक अवाहियां पीता से सील सि व ४४ वि 1(225

ज्ञवाहिद्वि वृं [अनामृद्धि] एक धलक्क् पूर्वि (यन्त ३)। अणिक्य देवो अजिमिय (विचार २१)। व्यक्तिइय वि [अनिवत] १ धनियमित धव्य-

वस्वितः २ पूर्वं संसार (सव १ ३३)। अजिडंबिय वि [अनिकुश्चित] देहा नहीं किना ह्या स्टब्स (नक्ष्र)। रेको अञ्चल (र ₹c ह काणिउँचय ११७ क्रमा)।

खिष्य वि [अनियत्] धनियमित, सप्रति-बढ विक्रिते समिद्धे सखिएसचारी समर्थकरे भि<del>त्रम्</del> भरुप्रविभागा' (सूच १ ७ २ ) । अर्जिदिय वि [अनिन्दित] १ विसरी किया न नी नई हो बहु सत्तन (वर्म १) । २ पू विचर देव भी एक वादि (वस्छ १)। अर्जिदिय वि [अनिम्ब्रिय] १ **रजिस-रा**ह्य । २ ई मुळ बीच। १ क्रेनसामनी (छ १)। ४ वि घटीनियः, जो इंडिजों छे जाना न जा सके 'नम निकड़ तामझले विमंति सरिएस्विस-लमी (नुर१२४ स १६ विते १≈६२)।

व्यणिदियां और जिनिसिता किमी लीक में

अणिक वि [अनेक] एक संक्वाता (१४४३)।

ख्नेत्राची एक वित्तुमाधि देवी (का म)-1

ाचाइ वि [ बादिन] व्यक्तिवासी (ठा c)। अणि इत्त्री भी अनीकिनी ऐनी हैना जिसमें ११ अहावी २१वअरच दशदर बोड़े और १ १३४ व्हारे ही (परम ४६ ६) । अविकास वि [अमिक्सि] गरी क्षोहा [मा, बारियन प्रविधिक्षाः विलिश्चिति वरीर मोर्स धैनमेर्स वरता धनाम्यं नावेनासे रिदर्द (बना धीप) ।

अभागम रे १०)।

अभिगतः ) वैद्यो अपनिर्मा (जीउ ) तन

अपिमिस न [अनिमिप] फन-विजेप (स्ट 2 t we) i अजिमिस ) वि अनिमिष भेषी १ तिमेव

থচিচ (বৰুদ 💌 १३६)।

देवता (विसे १४०६) ।

(सम १५४)।

अधिवर्षः नि [अनियृत्ति ] १ निवृत्ति-र्यहर

अणियह दें [अनिवर्ष] १ मोस युक्ति (धावा १ ६१) । २ एक महाबह (ठा २, ६) । व्यक्षियद्वि दि । व्यक्तिवर्धिम् ] १ तिवृत्त न्ही होनेनामाः, पीछे गडी सीटनेनासा (धीर) । २ न तुक्कनमान का एक मेर (ठा ४१)। १९ एक पहाराह (चंच २ )। ४ धापामी बल्तिस्ती काम में होनैवासे एक छीवीकर देन वा बाव

खिय त हि] बार, यप्र-यान (परह २.२)। अणिय विकितिस्य विश्वर, समित्य (सर)।

अणिय न [अनीड] सैम्द, नरूर (इप)। ভাৰিৰ গুভিৰুৱ নিজৰ ভুত(গ্ৰাং)।

व्यवस्था-अधिका

व्यक्ति विक्रितिस्य निष्यः अस्त्रामी (स्त

२४३ प्रासु ११) । सावणा वर्ष सावमा

बांसारिक प्यानी की भक्तिका का कितान

(पथ ६७) । । गुप्पेश की जिसेका

व्यक्षिट वि [सनिस् ] क्योतिकर, हेम्स (ज्ये)।

अणिहिय वि [अनिहित] बसपूर्ण (बस्त्र)।

अधिदाद्ये दि अनिदा १ विनास्त्रत

किये की यहैं जिसा (ध्य १६ ४)। २ विश्व

की निरचता। ३ ज्ञानका सभान (मद १ २)।

अधिमा (औ [अधिमन् ] माठ सिकिसी

वें एक सिकि, करवाल कोटा का बाले ही

देवो प्रवॉद्ध धर्च (ठा ४ १)।

व्यापिय देशो धाणि रप्प (गार) ।

अभिनेस र क्या (नुर १ १७३)। २ ई मत्त्व, मक्ती (रस ६, १) । वे देन देवता (बच १३ वा १६)। समय प्रे [सबन] के

व्यकृति-वर्षित (रजे २, २) । २ नवर्ष पुरा-स्वातक (गर्म १)। करण व ["इरव] मान्या वर तिगुद्ध परिशाम-विकेष (बाना)। बाद्र न विवादर है गावां बुश-स्वानक। र नवर्षे द्रशास्त्रालक में प्रवृत्त बीब (याब ४) । अणिवय वैनी अयगिय (जीव ३) ।

क्षणु पूंचि वात-विरोप वानत की एक जाति

अणु भी [सनु] शरीर, 'मुमणू' (गा २६१)।

अध्यक्ष विकिही सवात मूर्व (ता १०४

अर्थ्य वर्ष कि १ माहति पारार। २ पुंची

अश्रुभ वि [अनुग] मनुसरण करनेवामा

अणुअ वि [अनुञ्जी १ पीछे स उपन्न। २ दू

स्रोटा भाई। ६ सी स्रोटी बढिन (समि ०२

बान्य-विरोध (वे १ १२: धा १८)।

'धषम्याण्य (विता १ १)।

सङ अणुअभिवि (भनि)।

पडम २८,१ )।

अधुअ केही अधु≈ मए (पाम)।

(R 2 X) (

Rat) i

स्वतिया को दि । बार, धद-माय गुजराती में

'मन्त्री' 'संवारिएयाइ यहमा' (बर्मीन १७)।

व्यक्रियय — अणुङ्ग्य

यक देशी है (ठा १)।

१४ मा १६१)।

इर् मृति (धन्त १)।

एक रिज्या (पत्र १)।

(मा २६२ प्राचु २६)।

लिया देवो अभिदा (विश) ।

मनुखी (मनि ४१ चार ६६)।

२ १ )। अभिवृद्धि दि] १ सहस्य तुस्य । २ न मुख ग्रेंब (दे १ ५१) ।

अभिदिश्व वि [दे] परनम्ब पराचीन । (काप्र अणिह्य वि अनिहृत वहत वहीं मारा हुमा। रिष्ठ पू [रिष्] एक बन्तहर मुनि ঝদিবৈ বি [অনুস] প্রয়ে-বরির ক্রয়েণ্ড (धन्त ३)।

अणीइस वि [सनीहरा] इस माफिट नहा व्यक्तिकृत्व दिश्वनिकृत्व देशानिकृत नहीं विमञ्जल (स ६ ७)। येम हुमा। (मूम १ १२)। २ एक धल-छणीय न [अनोक] सेना भरकर (घोप)। क्रजीयस पूँ [अनीयस] एक धन्तकर दुनि का व्यक्तिस्तु १ वसू, पवन (हुमा)। नाम (धन्त ३)।

अजुर्भव सक 🛚 अ दु 🕂 कृपू 🛚 पीसे श्रीवना । २ एक सर्वीत ती वैकर का शाम (किला) । ३ अणीस वि [अनीश] यसवर्षे (पनि ६)। पन्नम-वंशीय एक धना (पटम ० २९४)। अणीसकड रेको अणिस्तकड (वर्ग २) । अणिका को [अनिव्य] बाह्यहर्वे ठीवेकर की अधीवा रम वि अनिवारिमी प्रश्न धारि में होनेंबासा मध्य-बिरोप (मग १६ ६)। अधिरुक्त न [दे] प्रमात सबेरा (दे १११)। अणुध [अनु] आह् मध्यय नाम मीर पानुके मिलस न [अनिश] निरन्दर, सदा हमेशा ताब नगता है भीर गीचे के मर्पों में से फिसी एक की बतलाता है १ समीत नवधीक भणिसङ् १ नि [अनिस्ए] १ मनिश्चित । 'मातृबुंडल' (गर्नड) । २ बाबु, खाटा' 'पाणु मार्म (उत्त १)। १ व्या परिपाटीः फागपुर्व

इनका प्रयोग होता है, देशो 'घगुद्रम' 'घगु-

खणु वि [अणु] १ वीहा, कम्प (पल्ह २ ६)।

२ इदिन्य (भाषा)। १ दू परमाल (नम्स

१६६)। समावि [मित] उत्तम कृत श्रेत

नंश (कप्प) । "विरद्ध की "विरति देखी ।

इसविख (शम १ १८)।

अजिसिंह देशमें अन्तुकातः व ऐसी भिना जिसके मानिक समक हों सीर जो सब की (बृह १) । ३ में भीता प्रांतानत (महा) । म्दुनित से लीन गई हो सादु की निकाका ५ सक्य करना 'बालु जिएं घरारि संपीय' एक बोप (पिक बीप)। इरबीहिं (दूमा)ः 'घरणु बार' संबद्ध समीतिए भणिसम्ब दि [आंनशीम] राम-विरोप को तुह मसिम्मि स्वाधिया' (बढा) । ६ मोग्य मकारा में पढ़ा मा पढ़ाबा बाम (शाबम) । जीवत 'बस्पुबृत्ति' (सूच १ ४ १)। ७ बीव्सा 'धएपिए' (पूना)। व बीच का भाग 'भग् व्यक्तिसद्धाः वि [ अनिमीहरा ] विसं पर स्यों' (पि ४१६)। १ धनुरूम विवक्छ किनी क्षाम स्मक्तिका प्रविकार नहीं सबै **भागुनम्म (भूष १२१)। १ प्रतिनिनि** सामारका (बर्ज २) । 'धर्एपञ्जू' (तिश्व २)। ११ वीधे, बादा 'धर्गू अभिस्सा औ [अनिमा] बनागरिक, बार्याक सम्रातु (शतक)। १५ वष्ट्र सन्यन 'सम्पर्वक'

वरिष' ।

का सभाव (टन) । मिपितिसय वि [अनिभित्र] १ सनावक यापचिर्यादा (सूच १ १६) । २ प्रतिजन र्याहर, न्याबटरम्बर (स्म !) । ३ सनाधित दिनी के साहास्य की दल्या न रखनेशना (उत्त ११)। ४ तः ज्ञान-विरोध सन्दर्शनान ना एक नेट, को सिय या पुस्तक कै विभा ही

रोग है (स ६) । मिन्द्र वि [क्षानीह्] १ वीर, सहिष्णु (नुषः

खण्डौप सक किन्दु+ कम्प**ेरवा करना** । **इ. अजुडीपणिञ्ज (हास्य १४४)**। खजुर्जपा की [अनुकम्पा] बमा कस्पा (व 4 २४ वा १६६)। अजुर्जिप दि [अनुकस्पिम्] दवानु, रुक्षा करनेवासा (प्रभि १७३)। अजुअचय वि [अनुवर्चक] मनुरूप धावरण करनेवाना बनुसरण करनवाना (विश्व 84 5)1 अण्ञासि देनो अणुत्रसि (पूष्क ११)। अणुझर वि अनुचर र सहावताकारी वह चर (पास) । २ सेवक शीवर (प्रामा) । खणुश्चर वि [अनुवर] बनुगरण-धर्मा (इसय 2 **2 2 2 )** 1 अणुअक्ष न चि प्रमात मुबह (वे १ १६)। अञ्चला भी दि ] साठी (दे १ ६२)। अणुबार पुं [अनुदार] बनुबरण (नाट) । अणुआरि वि [अनुकारिम्] धनुकरण करन-(या ६२) । १६ मदरकाला सङ्गयताकरनाः बाया (तरः)। 'ब्रागुपिक्कारि' (ठा३४)। १४ निरर्थंक मी

> अणुइअ र्यु दि] याग्य-विटेव चना (र १ २१)। अणुश्च रेत्री अणुद्धिय । अणुर्व्य वि [अनुद्रीर्थ] र व्यात परा ह्या। २ वहीं विराहमा प्राविक भगाराखारता मणुक्ष्मणुपक्ता निबुधनखर्पहुरक्ता (बीग) ।

> अणुकास पूर्विनुदास] प्रपाद, विकास

(एगपा ११)।

ই বৃহত্য হয় (বহি ১৫)।
চাত্ৰুমাহাৰ কৈ [মৃত্যুখানিক] হৰ্মত সমূত্ৰ
দ্যানা কুমা (বিছি )।
চাত্ৰুমানা কৈই ভাতুখানা (কিই ই)।
চাত্ৰুমানা কুমা ভাতুখানা (কিই ই)।
চাত্ৰুমানা বুঁ আবুখানা বুলক (টু হুঙ)।
চাত্ৰুমানা বুঁ আবুখানা বুলক ভাতুখানা কুমানা বুলক ভাতুখানা কুমানা কুম

राज्य (एक)।
आपुर्वराय म [अतुवीबत] वंदचन बीहता
(स्थि ११ थ)।
आपुर्वर वरू [अतु+कस्यू] १व्याकणा।
२ व्यंत्र करता। १ (या करता। वह अधु-वंदेर (स्राट)। इ आपुर्वरिक्त अधु-कर्योज (स्राट) १ एक वृद्धिक्त अधु-कर्योज (स्राट १४)।
आपुर्वर रि अनुस्तस्य] ध्रुपक्त के नेग्य

अपप्रियंति (अनुस्थ्य) अनुस्था के नीम्य (१११)। अपुर्वयं १ ति अनुस्थ्य की १ क्यापुर अपुर्वयं १ ति अनुस्थ्य की १ क्यापुर अपुर्वयं १ त्यापुरं १ तेश्व तिस्थान्ति (अप्र (क्या)। व दिस्तर 'वास्त्रमु'रूप लामेने नो रस्पुर्वयंत्र (श ४ ४)। अपुर्वयंत्र में अनुस्थानी देशा हुमा(क्य १)। व नीक, वेता 'मास्मानीस्थानारे

है)। व बाँह, देशः आउक्रमणे स्टंग्स्ट (१७)। अनुदेश की [अनुक्रमण] कार केने (शास १ वे) पार्वरकपुर्वार रूपो कर्तात्वत स्थानों (पण्यो)। बाग व [बाम] मन्त्री ने पणेने के प्राप्त किंद्र प्रकृ बंगाकर्त नार्द्रात्व व परित्त विश्वर्यः (पर्व १)।

(ह १व१)। अणु इत्य पुं [अनुस्क्रम ] १ क्षेत्रकों के मार्च ना मनुष्यत् । २ वि महत्पुरवीं ना बनुष्यत् **४**रनेवाना 'खाराचयाक्यालं क्रमारिकाख वयुक्तित दुखर, वकुक्कर प्रश्वारी वर्गु-क्ष्म्यं तं नियासाहि (पंचयः)। जणुक्म वृं [अनुक्म] वरिवानी कर (भहर) र सो म [शस्] अन के परिपादी के (की २०)। अभुष्टर पर [बानु + क्व] धनुष्टरता करता नक्ष कला । ब्युक्ते (स ४३१) । अणुकरण व [अनुकरण] नकत (वद ३)। अणुक्द बन [अन् + क्ष्ययू ] क्षूत्रार करना **पीक्षे शेक्षता** । जञ्ज्ञास्य व [अनुकाम] यनुमार (तृप १ अणुकार पुक्षितुकार] श्रृक्तण भरत

अञ्चल (ई अनुकार) अनुकारण नवन (क्यू)।
आञ्चल के अञ्चल (क्यू)।
आञ्चल के अञ्चल के अञ्चलके अञ्चलके के अञ्चलके अञ्चलके के अञ्चलके के अञ्चलके के अञ्चलके के अञ्चलके के अञ्चल

हुमा । १ द्वेषा विवाहमा (निष् क) ।

काणुक्त वरु [कर्न + कृ ] कुकरण करता र कणुक्त कर्म काणुक्त (दे र र र श) । अध्यक्त कर्मा काणुक्त (दे र र र श) । अध्यक्त कर्मा ते कर्न । तम्मर्ग्न विद्वरणे विकायुक्त कर्मा ते कर्न । तम्मर्ग्न विद्वरणे विकायुक्त कर्म ते शुक्त र तम्मर्ग्न विद्वरणे अध्यक्ति कि [अद्यक्तितो मोदान (वेरोप १) । अध्यक्ति कि [अद्यक्तितो प्राप्ति कर्म कित (वाचा) । अध्यक्ति कि [अद्यक्तित] वाचरित, विद्वर कर्मुक्ति क्षा विद्वर कर्मा क्षा कर्मुक्ति वादरित विद्वर विद्वर क्षा

करणा। सक अञ्चलकार्येय (प्राय है र है ।

३)।

अञ्चलकार्य में बिंद्यकारणा समा मार्ग (ह्या है र है)।

अञ्चलकार्य म [अञ्चलकार्या समा मार्ग (ह्या है र है है)।

अञ्चलकार्य म [अञ्चलकार्या स्था मंदर्ग (ह्या है)।

अञ्चलकार्य है [अञ्चलकार्या स्था मन्दर्ग (ह्या है)।

अञ्चलकार्य है [अञ्चलकार्य (ह्या समा मन्दर्ग है)।

अञ्चलकार्य है [अञ्चलकार्य (ह्या है)।

अञ्चलकार्य है [अञ्चलकार्य (ह्या मर्ग हैना मर्ग्य हैना स्था है।

अञुक्टन सर्व [असु+क्रम्] प्रतिकार

क्षणुत हि [बातुन] स्मूचर, तीकर (१४ ६६)। कुणुत हि [बातुन] समुबरस्य-नर्ज (शब्द १ ११)। काष्ट्रांत्रक देशे अञ्चास - ध्यू + वद : क्षणुत्रीय ही [बातुक्रमा] शब्दा स्वा (१ १२८)। अञ्चातिय नि [बातुक्रमय] तिव पर स्टब्स से प्रदेशिय हो (१४४)।

बहुर्स (वा १२६)।

लणुतस्य देशो अजुनम = धनु + वप । सन-वन्द्रद वड अजुनस्यतंत अजुनस्यतमात्र (नारा सूध १ १४)। इनकः अञ्चलक्ष्यार्थकः (एतमा १ २)। इन अञ्चलक्ष्या (रूप)। अञ्चलक्ष्या (रूप)। अञ्चलक्ष्य देवो अञ्चलक (पुरुष ४ प्र)। अञ्चलक्ष्य १ (जन्मामिन् ) वसुनवस्य इतिकासा (मर्स्स)।

अधुगस्य सक [अनु+गर्जे] प्रतिस्तरि करना प्रतिसन्द करना।वङ्ग अधुगुरुजे साम (सामा ११८)।

अपुनास मङ [अनु + गम्] १ धनुषण्य करना पीक्षे-गीक्षे जला। २ धननता सम मना। १ धनस्या करना मृत्र के सर्वो का स्ट्यीक्ष्य करना। कर्म धनुपनमह (भिन्ने ११३)। वनक अपुनाममंत्र, अपुनस्मसाण्य (हर १ दी: मृत्या धन्य २)। यंक्र अपुनस्मसा (ह्या १ १४)। क अपुनिकस्य (हुर ॥ १७६ पण्य १)।

काजुम्म वृं जित्तुगम १ धनुवाया अनुवर्षन (१ ९ ११) १ बानना, ठीक-ठीक धनस्मा नित्त्व करणा (ठा १) १ सून की ध्वावधा वृत्त के प्रदेश स्त्र स्त्र को अध्यावधा (विश्व १६) १ स्वावधा डीच्य (विश्व १६) १ स्था स्त्रुवसमाद देखा (विश्व १६) येका सह्युवसमाद देखा ठीक क्यो व स्त्रुवस-योक बाह्युवसी । 'स्युवोयुक्कायो वा धी द्वावकारमण्युवार्य (विश्व १११)

अणुगमय 🗷 [अनुगमन] स्नर रेको ।

अणुगमिल वि [अनुगतं] सनुसर (कुप्र ४३)।

अणुगमिर वि [अनुगन्तु] बनुवरण करने बाता (दे ६: १२७)।

अनुमाय वि [अनुमार] १ धनुष्ट विसका सनुष्टिण विचा पता हो वह (परह १ ४)। २ जान वाना हुमा (विसे)। १ धनुष्ट को पूर्व सं वरावर वजा धाना हो (परह १ १)। ४ धनिशाल (विसे ११९)।

भणुगर केवो अञ्चरः। मणुगरेषः (स ११४)। वहः अञुगरितः (स १व)।

भणुगरण देवो अणुक्ररण (हुप्र १०१) । भणुगदेस सङ [ भगु + गदेप् ] बोजना

ग्युगम्सः सङ्घानम् । समुद्रम् । स्रोतना स्रोतना सनासः करना । समुद्रमेसः (कस्त) । नष्ट अणुगवेसेमाण (मग व १)। क्र अणुगवेसियञ्ज (नम)।

अणुगद्द केबो अणुगगद्द = धरु + धह् (नार)। अणुगद्दिअ केबो अणुगिद्दिअ (रे ८/२६)। अणुगाम पुं[अणुगाम] १ छोटा गर्वेद (उस १)। २ जगुपुर स्कृद के पास का गर्वेद (उा

२) । १ निविधित गाँव से बूसरा में 'गामाजुपार्म दुश्यमातो' (विपा १ १ बीपा गामा) ।

साथा)।

खणुगामि ) वि [खलुगामिन, मिक]
अणुगामिय ) १ वदुग्गामिन, मिक]
अणुगामिय ) १ वदुग्गामिन, सेकि गीवे बानेवाला (वीत)। २ निर्तेत केत्र कारण (ठा ६ ६)। ६ व्यविकान, का एक नेद (कमा १ क)। ४ वदुवर, वेवक (वृध

१२,३)। अनुगारि वि [अनुकारिम् ] धनुकरण करनेवाला नकामची (महा। वर्स-१) स

९६)। अणुगिद् श्री [अलुकृति] धनुकरण नकत

(मा १)। अणुनिष्द् देवो अणुनगद्ग = धनु + घह। वहुः अणुनिष्द्रमाण, अणुनिष्ह्रेमाण (तिर १

रंग्याचा १ १६)। मणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] समन्त वासकः, नोक्टर (सूस १ ७)।

अणुगिद्धि से [अनुगृद्धि] प्रथ्यार्थाक (वच १२)।

अपुगिस कर [इतु + गृ] भगतः करता। धंर अपुगिसिका (गावा १ ७)। कप्यतिकास विकासकारिको विकास के

अपुनिविधि वि [अनुगृहित] विस्त पर येह रवानों की नई हो वह (सं १४ १६६)। अपुनीय वि [अनुनीत] रेगीसे कहा हुसा

समृतितः। २ पूर्वं सम्बद्धारः के साथ के समृत्यः। विवा हुमा प्रवः साम्याना पाति (जस १६)। १ विगाकः बाग किया गया हो बहु, शीहितः वरितः। ४ म. साधाः गीतः। 'जसासे 'सस-निमास्परीर' (पदम १६, १४८)।

अणुगुण वि [अनुगुण] १ धनुष्य चित्र बेग्य (बाट) । २ तुस्य साश बुणवाया बाल सर्वकारसमी, विद्वती

महतेद देवि नहस्ता ।

विण्डाण्ड मिर्यकं दुसार वरिमा अगुपुरोषि' (यटक) ।

अधुगुरु वि [अनुगुरु] पुर-परम्पर के मनु-सार विश्व विश्वय का स्पवहार होता हो वह (बह १):

वणुगुरू वि [अनुसूत्र] यनुसूत्र (त १७८)। अणुगेरकः वि [अनुमाद्य] यनुवह के योग्य क्यान्यात्र (प्राप्त)। अणुगेष्कः केते अणुगाद्व स्वयु÷ बहु।

बणुनेवर्हन् (शि ११२)। अणुनाह यक [ अलु + मह ] इपा करता वेहरणनी करता। इ अणुनाहहरूक्क, अणु गमहिद्यक (शी) (ताट)।

अणुमाह पुं [अनुमाह] र इसा मेहरवाणी (इन्यू)। र जाकार (भीत)। व वि जिस पर धनुषह किया जाम वह (वत १)। अणुमाह पुं [अनवमाह] वैत साधुर्यों को

प्रते के निष्धान-निष्धा स्वान 'णो बोबरे को क्लबोरियमणे खो कद डुग्मेरिय म बन्ध मास्रो।

डुरमेर्वेत य वस्य माचो । नव्यक्तम मोरोहिन्दु जल्प कुगस्य स उनक्को सेवमयुगाही तुं (बहु ३)।

अणुमाहिक । वि [अलुगहीत] त्रिस पर अणुगाहीक । इसा की गई हो कह, सामारी अणुगाहीक । (महर पुता १२२, स १०) । अणुगाहीक । (अलुहातिक] १ महा प्राम-वित्र का एक मेर (स १४) । २ ति. महा-

प्राथमित का पात्र (छा १ ४)। अधुरमाइम वि [अनुद्वातिक] १ स्प्रुशातिक नामक महान्त्रापमित का पात्र (छा ३, १)। २ त कलांग्र-विगेग जिसमें स्नुर्गातिक

प्राथित का कर्तुंन है (परह २ १)। अणुग्धाय कि [अनुद्वात] रे उद्देशद-दिश्व। २ क निशीच सूत्र का कह प्राय, दिसमें सनु इयाविक मार्थावत का क्यार है। 'कवायस-सूत्र्याय भारोक्त किहाने निशीई तुं

(धार ३)। अणुरभाय न [अनुद्याद] ग्रस्प्रायमित (धर १)।

अणुम्पायण न [अजोद्धातन] कर्मों का नारा (प्राचा)।

अशुकाय वि [अनुसार] १ पीछे ने सरह।

अस्त्रविषिति (वस १८ १४) ।

२ सहरू, तुक्य 'वसमाल्याए' (मृष १२)।

तीकर, तेवका 'पर्याए विम यसभीविक्ता'

(सूत १६७ वक्तास १४६)। समान

बणुकुचि को [अनुयुक्ति] मेरमपूर्वि, व्यवन

अजुतेह नि [अनुत्रवेष्ठ] १ वर्गे के नवरीक

का (बालन) । २ स्त्रीटा चंडरता (वडम २२

बायुक्त वि [अनुवी] जनाह-परिव प्रमुणारी

अजुज्ज वि [अनाजरू ] देवरहिन, प्रीमा

अणुञ्ज वि [अनुष] वर्रेस वस्य (वर्षे १)।

अणुजा को [अनुका] मनुमति सम्मति (परम

वजुज्जा केरो अजोक्या (धाषा १ १६ १)।

अणुक्रिय हि [अमुक्रित] वस-रहित, निर्वत

व्यान करना । संद्र अध्युत्रमहाक्ष्मा (मानन) ।

अधुत्रोग देवा अधुत्रोत्र (हा १)।

'बलुबं रीलुस्क्लं स्ट्राटं' (रूप)।

िहर् बाधव श्रीकरी (पि १६७)।

कर्म बरायको (वर्गर्स २९३)।

न्यान (सम १ ३ ६)।

1 (30

इतम्य (कप्प) ।

RE RY) 1

(इस ६) ।

(पा ७ < १)।

(का प्र १४)।

बन्द्रान रहता । क्ष्मुचरेंद्र (मारा है) । यन-चर्रात (स ११ )। वर्ग जल्परिकाः (विने १११८)। वर अणुक्तत (पुण्ड ११४) मेर अनुवरिता (पर १४)। अमुबर को अमुभर (उठ २ )। अञ्चला वि [अनुचरक] हेना करनेवाना (पर ६६)। अञ्चलस्य रि [अनुबरित] स्तृष्टित विहित विका हुया (क्या)। अरुपि तर अनु+च्यी गरना, एक

भीवन कराना चित्राणे वा पार्त वा तारमें वा

भारते का शासूनकारिक का सम्पूराएक काँ

(निनी ७)। वर अणुग्यासीत (निष् ७) १

अञ्चय र् [अञ्चय] पैनाधर स्वर्ध करना

अधुपर तक [अमु+चर्] रे मेना वरेना ।

२ वीधे-वीधे बाला अनुसरण करना। ३

अव (धरा)। क्षण्यित नद [ अनु + विन्तृ ] विवासाः बार बरसा, नोचना । यागाँचन (नेवा ६६) । बद्द अगुर्वितसाम (ग्रामा ११)। वेद्व मणुपीर भणुपीति अणुदीर (बाबा नूब 1 ( 4 13 47 6); श्युचितय व [अतुचित्तत] नोच-दिचार, पर्यातीयन (भार ४)।

क्षम ते इसरे जन्म न जला । नेष्ट अणुनि

अगुर्विश **शे [अ**मुबिन्स] उत्तर रथी (बार अगुबिटू नर [अनु+स्या] १ धनुत्रान क्रमा । २ क्रमा । ब्रगाविट्टर । (अरा) । भण्निकत्र रि [सगुनीण] १ धर्नाहर शाक-रित शिन्ति भौतितित्वया बचना विस्ता शांग व यगानिरागी" (योच २४६) १० शांत वित्रा हुवा "बावमेहामबरगृबिररगु श्वरवा बागा बहाइया (बाबा) । व बहिन्याँवत (ईष १)। अमुचित्रयय रि [ अनुपीर्नेषन् ] जिन्त घरमञ्ज रिया 🗗 बर् (घरेका) । भवुभिन्न रेनी अनुस्पित्रत्र (दूरा १६३)

रक्ता कर पुरुष कर) ह

बाणुंचीप्र अनुर्चाति } देवी बाणुंचित्। अणुकीदस¥ [अनु÷बीव्] प्राथर राता। श्रमुख कि [अनुख] ≱का नहीं सीका। ौकुर्य वि [शुक्तिक] नौभी और मस्बर अप्यक्षीवि वि अञ्जीविम् ] १ गावितः राम्या बाद्या (क्या) । अञ्चादेव वि [अनुस्सहमान] एखाइ नहीं क्सता ह्या (परम १८ १८)। जलन्द्रक विश्व अनुदिश्वस ] गरी धोड़ा हुना, बणुर्देश कर [ अनु + मुख् ] प्रभ गता।

बन्पन्ड (यक्क २३८) । अज़िक्स विश्वित्ती १ वर्ष-प्रीक विनीत । २ सम्द्रीत समुद्र । ३ समान कन्नत सर्वीय 'पहिनदी नवर तुने नरिष्ठभद्र' प्रधान विवर्गप् । वहुबस्यम्यान्तिकते दुवेन्त्र परिवत्तह गर्षि (गउड) । अणु॰ इ⊈ारि [अनुतिस्स] धन्यक नदी

सोहा ह्या (या ४२६)। अणुत्र पुंक्षितुम् ] छोटा मार्ट (स १ )। अजुजल न [अनुपात्र] बाबा में 'घएलया स्मानतं मिन्नधो पेम्बर पुन्नियं पूर्वं (महा)। अणुजत्ता को [अनुयाश] निर्वय नि भरत्त (FIT 4x)1 अणुश्रा सक [अनु + या] कनुगरल करना पीचे बनमा । स्वयंत्राह (विमे ७१६) । अणु बाइ वि [ अनुयायिम् ] अनुवरत करी-वाना (नुसार ३)।

२ नदोग्मर-रिकेश श्ववाचा (बृद्ध १)। স্ত্ৰাত্মত বছ (হানু + ক্লা) অনুনাদ ইনা शम्मनि देना । यनुष्रक्षप्र (उर) । मुद्रा, ध्यात्राणिका (वि ११७)। हेर अणुत्रा मिचप (टा२१)। अणुबादन र [अनुबान] बसुदिन समिति (त्रव १ १) इ अणु अणाषण न [अनुसायन]धनुननि नेना 'बानप्रातातर्गार्गार्यार्था' (र्वबा ६, १३)।

अनुवाद । [अनुवाद] १ सर्वतः सनुवत

(नुग ५ ४)।

(31 \$\$ a 21) t

अणुबाइ ही [अनुवानि] धनुनरण (वर्ष-अणुरहुप रि [असुकुरू] यस्तन वह रही वि ४६) । अधुष्ठाम न [अनुयात] १ पीछ-पीछे चरता। ब्युप्ता रह [अनु + धा] क्लिन गर्मा अणुष्माय व [अनुष्पाम] विश्वत, विवार

(सरमन) ३ बर्णुसा रेगी अणुग्या। शृ अणुमा<sup>र ह</sup> (**१**मा) १ अजुम्बिक्स रैर [व] १ प्रयत प्रयमन्त्रीत । २ जालक नावबात (पर्)। अनुमिर्गित्रर वि [अगुक्तवित] चील हैले षाता (बक्रा १ २)। धणुवाचित्र [ा[अनुतान] भग्नत सन्तन

अणुद्र रि [अनुरच] नरी छा ह्या न्यि (योग ७ )। अजुहा वर [अनु+स्या] ( मनुहान वरना

क्षत्रोक दिशास बाग्या १ बाग्या इ अर्थी

हर्र)। अणुट्टाइ वि [अनुष्टायिन] धनुष्टान अस्ते-वासा (धावा)।

अणुद्वाम न [अनुद्वान] १ इति । २ शाकोक विवान (पाचा) । काणटाण न [अन्तरवान] क्रिया का धमान

कानुद्राप न [अनुस्वात] क्ष्मा का धमाव (उदा)। अनुद्रापम न [अनुप्रापन] धनुष्ठान कणना

(क्य)। कणुट्टिय वि [अनुश्चित] विवि से संपारित विदित्त निया हुमा (पर् मुर्प १९१)। कणुट्टिय वि [अनुत्यित] १ वेटा हुमा। २ मानसी प्रनासी (श्रामा)।

बामक्षा प्रमाद्य (क्षांका) । अञ्चर्द्वत्र को अञ्चर्द्वा । अञ्चर्द्वत्र म [ अर्द्वहृष्ण ] एक प्रक्षित्र संव भवनवरसम्बद्धार् प्रजूर्द्वत्राप्तं हर्वति वस स्वरुप्ता (दुस्त वेश्र्ष्ट) ।

अगुद्धेश्व देशो अगुद्धाः अगुज्ज देशा अगुद्धाः । अगुग्धदः (मनि) । अगुगंद देशो अगुद्धाः । अगुगंद देशो अगुन्धः । वित्तवः प्रावंताः (महाः

सञ्जय प्रं [अनुनय] वितय प्रार्वेगा (महा यदि ११९)। सञ्जयाह वि [अनुनाहिन्] प्रतिस्ति करते

कणुणाइ वि [अञ्चलाहिन्] प्रविव्वति करते बाना 'पन्निवश्वहस्य अपूरणाहणा' (करः) । कणुनाव पूँ [अञ्चल्याव] प्रविश्वति, प्रविक्वव (विसे ११ ४)।

अणुष्याय वि [अमुझाव] समुमत समुमोदित (वेच्)। अणुष्यास पुर्व [अनुनास] समुमापक को माकस कोना काता है वह सप्तर। २ वि

भाक सं बोना बाता है नह सकर। १ हि सनुस्ता, समुन्यार-पुक (ठा ७) कालसर बातुष्ता, समुन्यार-पुक (ठा ७) कालसर बातुष्ता सं (शीव १ टी)। अणुमासिक पूं [अनुनासिक] वेनो कारका

अणुजासिक पूँ [अनुनासिक] देवी कारका प्रशासर्वे (बजा ६)। अणुजी वक [अनु + ती] ६ धनुनय करता वितव वरता प्रार्थना करता। २ समझना

वित्तव वरणा प्रावेना करता । २ समझाना रिपाला केता सारच्या केता । वक्त अध्युर्थना पूर्वेष्ट्रवं से कममोजुर्धर्यं (क्ता १४ व्यवि) अध्युर्वेत्व (गा १ २) । करह अध्युर्धिप्रकृतं संध्युर्धियामाण अध्युर्धिमामाण (सुना १९४० से २ १९, ति १९६) ।

अणुप्रीक्ष वि [अनुनीय] निवस्त अनुनय किया पया हो वह (वे ट., ४८)। अणुण्य के अणुप्री। अणुण्यम वि [अनुसर्ग] रे नीवा नम (व्य १ १)। र मर्वेद्यन निर्णमानी प्रवर्ष

प्रशास कर्मचेहत निर्मानानी 'प्रशास देव निर्मा प्रमुख्य विश्वीत (गूम १९६)। व्यापुण्य वर्ष [ अनु + क्राप्य ] १ स्मृ मनि देता। २ श्रामा देना हुदूस देना। क्रम् अञ्चलक्षिक्ष (जना)। वह अणुण्यवेसाण (ज ९)। इ. अणुण्यवस्वत्व (याव १०२४

हों)। संक्ष्म अप्युज्यविक्ता, अप्युज्यविषय ह (काक्षम आका २ २ १)। अप्युज्यक्यया १ व्यक्ति हिल्लाका १ स्यु अप्युज्यक्यया १ व्यक्ति हिल्लाका १ स्यु अप्युज्यक्ययी की श्रिनुकापनी प्रमुप्ति-क्रक्त काला क्युतिकेक वा सक्य (ठा ४ १)। अप्युज्या की श्रिनुका १ स्वृत्यक्ति स्वृत्योक्ष्म (सूच २२)। २ साजा। स्टप्प श्रु व्यक्तिया केत सामुक्षे केतिय स्वन्याविक केते के विषय मं सामीया विचान ( क्या)।

प्राप्यत (वर १)।
अञ्चल्लाय वि [अनुसार] १ तिवर्ष प्राप्ता |
यो पर्त हो बहु । २ अनुसार प्रमुपेश्वर (ठा १ १)।
अञ्चलक्ष्म वि [अनुष्य] ठेडा, यो गरंग गही है
वह (रि ११२)।
अञ्चलक वृं [अनुस्य] ठेडा, यो गरंग गही है
वह (रि ११२)।
अञ्चलक वृं [अनुस्य] नेय, यवार्ष वा एक
न्यारि का प्रवस्रक वैस शंकर कोई को
हसीई से रोटने में स्टूर्टियर (विनगारी) वृषक

हुइ-माजा-विरोप (मणु १) । २ तून के यर्च का

होते हैं (ठा ५)। अध्यानक्षिया भी [असुतन्धि] १ कार देशी (पएल ११)। २ तनाच ब्रह्मादिका श्रेड (साम ७)। अध्याप्तप्य सक् [असुन्धम् ] धनुनान करना

वस्ताना । समुजग्र" (स १८४) । अधुनिष्प वि [अनुतायिम] ववातान करने-वस्मा (वव) । अधुनाव सक [ अनु + तायम् ] तपाना ।

अणुनाव सक [अनु+वापय्] वसन चंक्र अणुनाविचा (तृप २ ४१)। १८४)। अणुनावय वि [अनुतायक] पदाताप कराने बाना (मूच २ ७ ८)।

अणुनाव पुं [अनुवाप] पथातार (पाम' स

अधुनाषि केलो अधुनिय (का ४२८ टी)। अधुनाषि केलो अधुनिय (का ४)। अधुन्ति केलो अधुन्ति । अधुन्तिय केलो अधुन्तिय । अधुन्तिय किलोनिया । १ पूर्व गरिकाला किलानुमा सो परि

२ यूर्ण गरिस्ताना हिंग स्मृत्यां से सांव मन्यदेश्याकिनुस्स्यां (स्व २)। स्मृत्या हिंग्स्या १ समेर ह गर्योक्त (श्व १)। २ स्ट सर्वोक्त वेश्याक का नाम (क्वृ)। २ स्रोता 'मृत्या एक प्रविधी कार्य हुन्या की [मिया] एक प्रविधी कार्य हुन्य सीती मा निवास है (मूस १६)। गाजि वि [कानिन्य] वेश्याकार्य (मूस १ २, ६)। स्वेताण न [बिसान] एक सर्वोक्त स्व १३)। वेश्यास्य रिक्त १९)। विश्वास्य

करात (चतु) । व्यवद्वयत्ता की व [ पपानिकदशा] नवनो वैन संत-स्प (चतु)। अणुरवाय वेचो अणुद्धाय (स १४१)। अणुरवाप वि [अनुस्साह] इतिस्माह निपय (कुमा)। अणुरवा पूं [अनुसाच] मोन मे मोना जाने-माना स्वर (बहु १)।

अणुरव वृक्षितुर्वो १ त्राव का प्रमार। २ कर्मेन्द्रक के प्रमुक्त का प्रमार (क्रम २ १६ १४ १४)। अणुर्विक विद्वो प्रमान मुक्त (के ११)। अणुर्विक कि [अनुदिव] विमका करता

हुमा हो (यम)। अपुष्टिअस न [अनुनिवस] प्रतिष्टिन हमेगा (शत)। अपुष्टिपर्यत हि [अनुनायमान] दश्य में न याजा हुमा (स्त)।

जणुत्र्य न [अनुदिन] प्रतिनित इनेसा (हुमा)। अणुदिण्य | कि [अनुदिद] १ तस्य को अणुदिक | स्प्राय । २ धन-दान में शतुत्रस त्री) (क्या १ २,६), 'चरिष्स्य ≔ वर्षित' स्मा१ ४ ७ टी)।

शिक्षण्य १ म (अनुदिशिक्ष) १ निवर्षा द्वितिम । वदीरणा द्वर परिचय में हो। १ जिनमी बदीरणा मिल्य में न हो (मण १ १)।

णुष्त्य ति [अनुदिन] उत्प को बजात पिन्न्द्रने वनुदिनों ते वीर्ज अनुदिन्दे च वन वीर्ज (का १ वे डी)।

श्चित्रह् न [अनुद्विस] प्रतिन हेमेशा (तृर ११६)।

श्युरिक न [क] प्रमान प्राप्त नगर (यह)। प्रयुक्तिमा १ की [ अनुदिक ] स्तित्व अपुदिसी | दिवन नाग धारि निवेश (विने २३ टी नि ६८, ४१३, वर्म)।

अधुदिद्व दि [असुदिह्य] दिवस अहेरव न दिया यया हा नह (पट्ट २, १) । असुद्ध दि [असूर्य] ऊंका नहीं कीचा (दुमा)।

अणुद्वय रि [अनुद्वत] वरन भा निनयो (बा ७६० दे)।

मणुद्धिः पू [ मनुद्धिः ] एक ब्रुवः पन्तुः कृतः (क्ष्मः) ।

अर्जुद्धप रि [अतुरुपूर] है अपन्य दश्यः न दिया गया हो पर १२ बाहर गृही निशाला हुया, जि हुगुर आस्त्रान्य सम्माद्धव दश्यः नामपुरुषुर्व (या ४ )।

अगुर्युव रि [अनुर्यून] बगरेन्वक नही भौग ह्या (बन्द)।

स्युप्तस्य पूँ [स्युप्तरी गुरुन्नवर्ग (ति)। स्युप्तस्य पूँ [अनुप्तरी वदुष्त-जिनश् वर्ग 'कानप्रस्था चूँग्या परेच्या (सूव १२१) बारि रि [ बारित ] निक सर वर्ष व प्रमुखी वैकवर्ग (सूव १ २)।

अगुविस्तव रि [अनुपासिक] वर्व के दनु वृत्तः वर्गोवितः 'एवं नु यानवीनावं स्तव' (याना)।

अञ्चयाच नव [अनु + धाष् ] नेचे केला। वर अञ्चयार्थन (वे ४ २१)।

भगुपायन नर [अनुपायन] कीये वीहता (दुग १ ३)।

ब्रजुपाधिर वि [अनुपाधितः] गाँधे गौड़ने-बाना (उप ७२ टी) ।

खपुनाइ वि [अनुनादिन ] प्रतिपानि करने-बत्ना (कपा) । स्रामाद्य वि [अनुवात] प्रमान विवकी

अणुनाय वि [मनुषाय] यतुमत विस्की समुमति वी यहँ हो वहः 'साहबंदो भीवनयं समुनावाद् वर वाहं' (तुपा ४४७)।

अणुनास देनी अणुनास (और १ टी) । अणुनाद रेनो अणुन्यत्र । यह अनुसरीमाण

(ठा १, १)। इ. शणुक्षवेपव्य (क्य)। वृद्ध श्रणुक्षवेचा (क्य)।

क्षणुसम्मा रेको अगुण्यमया (वीम १६ गर)। अगुसम्मा रेको अगुण्यममा (अ.४.१)।

अणुमा देवो अणुष्या (शुर ४ ११६) शासू १८१) ।

अध्युकाय केवो अध्युज्जाय (योज १) महा)। अध्युपेश दु[अञ्चयश] १ नगीप का नार्य (क्य)।२ नाप के समीप एस्ता के पान (क्षर)।

क्षमुच्छ वि[अमुग्राप्त] प्राप्त निका हुवा (पुर ४ १११)।

अणुषस्र तै [अनुषस्र] यात (दुव ४ १)। अणुषस्र वि [अनुषद्यो अणुष्य धनुष्य (शहा)।

अणुपयाश म [असुप्रदात] शत मा बहरा ग्रीसङ्ग्र (भंगोब ६४) :

अगुपरिषद्द तक [अनुपरि + अद् ] प्रका वरिश्रमण वरसः । मेद्र अगुपरिषद्दिशायोः विश्व मे मेर्गिदश्य, पमुस्तावस्य (अय इंद्र सम्मारियद्दिगार्थं दृश्यमाणिकस्य (अय १ ०) । इं अगुपरिवद्दिनकद् (स्ताया १ ६) । ६१ अगुपरिवद्दिनकद् (स्ताया १ ६)

अनुवरिषष्ट्रभः [अनुवरि + बृत् ] विश्ला विश्वे प्रमा 'पुनान्त्रवेत वार्ट्ड वापुर्वास्ट्र-हुन'। (वार्या) । वहः अनुवरिष्ट्रमान् वार्या)। वृद्ध अनुवरिष्ट्यां (बीरा)। अनुवरिषष्ट्रमः व [अनुवर्षट्टर] वरिक्रवन्। (नृष ११)।

अगुपरिवष्ट्य व [अनुपरिवतन] परिवर्तन - विग्ना (वर्ग १-१) ।

बाधुपरिवट्ट देवो अणुपरिवट्ट = भेतुपरि+ बुर । वक्ट अणुपरिवट्टमाण (पि २०६) । अणुपरिवाडिः बी की [बातुपरियादि, दी]

अधुपरिवाक्षि की की [अनुपरिपाद, टी] शमुक्तम (से ११, ६६) पठम २ - ११ ३८, ११)।

(८)) अधुपरिद्वारि वि [ अधुपरिद्वारिन् ] 'परि-वारी' को यदद करतेवला व्यापी वृत्ति की चेता-गुपूरा करनेनाका (ठा १ ४)। अध्यपरिद्वारि वि [असुपरिद्वारिम् ] उपर

केवी (ठा १ ४) । अञ्चलका वि [अनुसरक] प्राप्त (वृष २

६ २१)। अनुपदायत्त वि [अञ्चयनाचनित्] पर्मने

वालाः, पाठवः स्थाप्यातः (ठा ६ २) । श्रृपुरवातः वेतोः अञ्चलकातः = स्मृतः + वाववः ।

अध्युपिक्ट्र मि [असुप्रक्षिप्ट] पीचे से प्रक्रि (शास्त्र ११ कप्र)।

अञ्चयविस कक [अञ्चय + विश् ] १ शीवें के प्रकेश करना १ प्रकेश करना नीतर बाना। धानुपरिकद (कप्प)। वह अञ्चय विस्ति (निद्म २)। शह अञ्चयविक्षिण

(१९९) । अनुप्रवेस दु [अनुप्रवेश] प्रवेट, ग्रीप्ट वागा । (विद्व ७) ।

अजुपरस सङ [अनु+हरा] पर्यतीका बरमा, विवेचना करना । सङ्कः अजुपस्सिव (मृष १ २ २)।

अणुपस्सि वि [ अनुद्दित् ] वर्यातीवर विवेचक (थावा)।

अणुसास वक धिनु + पात्रम् ] १ स्वृतं व वरमा । २ रावण क्रांगा । ३ मीमा वरम राव केनमा । स्वृत्ताचेद (सहा) व व 'साम-सोराव्य स्वृत्ताकेस्य (साम), अणुसास्य अणुसासेमात्र (बहा)। तक अणुसासेन्य अणुसासेमात्र (बहा)। तक अणुसासेन्य १९॥ ) ।

कपुरासन न [अनुपासन] राज गाँउ नामन (र्वचरा)।

जणुपासभा देनी अणुदासमा (रिने १८९१ ही) । अणुपाद्धिय नि [अनुपाद्धिय] चीत्रतः प्रति पालिक (ठा ८)। लगुपास देवो अजुपस्स। वह अजुपासमाण

(दसचूर)। अणुपिद्व म [अनुपूछ] यनुबन "मणुपिद्व

स्थिता (सम्म)। समुपिद्धा देखी समुपेद्धा (हम्प ३४) ।

अपूर्वज न [अनुपुक्क] मून तक चन्त-पर्वन्त **'भरपुर्वज्ञमावर्रदावि धावया तस्य क्रसवा हुंचि'** (পুস ३३)।

अधुपुरुष वि [अनुपूर्वि]क्मकार, शाकुक्षिक (झ.४.४) । क्रिये क्रमशः (याम्) । सो

[शस्] भनुष्म से (माना) । अणुपुरुष न [आनुपुरुये] सम परिपाटी बनु 🕶 (चप) ।

अगुपुरुवी 🛍 [आनुपूर्वी] उत्तर देखेर (पार्च) । रुणुपेक्का ही [अनुप्रेक्षा] नावना जिन्छन विचार (पडम १४ ७७)।

अणुपेड्ज म [बातुप्रेह्मज] क्रमर देखो (उन १४२ वी) ।

**अधुपेहा को [अनुप्रेका]** जनर केली (पि **१२१)** ।

ज्ञणुपेहि वि [जनुप्रेद्यम्] किन्न-कर्ण (धूम रंः ७)।

अभुप्पद्रम वि [अनुप्रकीर्ण] एक दूसरे हैं मिबा हुमा, निश्चित (क्य्य) ।

**अभू**प्पणी सरु [अतुप्र+जी] १ प्रणय करना। २ प्रसन्न करना। वह अञ्चल्पर्यंत (उप पृ?∈)।

अभुष्यगंद्र [अजग्रमन्त्र] सन्तोवी शल वरि मञ्जाला (ठा १)।

क्युप्पराध वि [बातुममन्द्र] अगर वेशी (ठा १)।

**अणुप्पण्य वि [बानुस्पद्म] चलिय**नान (गी**ष्** 

अपुष्पत्त क्यो अगुपत्त (कप्प) ।

**अणुप्पदा एक [अनुप्र+दा] रात केन** फिर किर देता । प्रणुप्परेद्र (क्स) । 😿 अगुरुष दावस्य (दम्) । देशः अधुप्पदार्थं (स्वा) । **अणुप्पदाज न [अनुप्रदान] कन फिर-फिर** चन चैता (मान ६)।

व्युप्पम् पू [अनुप्रम्] स्वामी के स्वानातम प्रतिनिधि (निधू २)।

खणुष्पया देखी अणुष्पदाः। प्रणुष्पदः (कस)। हुतः अणुष्यसर्वं (स्वा) ।

क्षणुष्पवाध थेको अणुष्पदाण (भाषा) । क्षवाप्यवस्य शक [ अनुम + बृत् ] प्रनुसरक

करना । हेक्क. अणुष्पवत्तप (विशे २२ ७)।

अजुष्पवाइन्तु ) वि [ अनुप्रवाचितः ] अजुष्पवापन्तु । यन्यापन पाठन पहानेवाना (ठा १ श पण्य १)।

अणुष्पबाद हुं [अनुप्रवाद] कदन (मूच २ 6 \$ \$ B **अगुप्पनाय सङ [ अनुप्र÷वाश्वय्**] पदाना ।

क्क अणुव्यवापमाण (व ३) I अणुष्पवास न [अनुप्रवाद] नवना पूर्व बार व्व**वे के**न क्षेत्र-यन्त्र का एक क्षेत्र-विशेष (ठा १)।

अणुव्यविष्ट केवो अणुपविष्ट (क्स) । अव्याप्यविचि की [अनुप्रकृषि] प्रमुप्रकेश धनुयम (विशे २१६ )।

खणुप्पविस के बजुपविस । प्रमुणविसद (क्या) । श्रष्ट अगुप्पवेसेचा (निष् १) । अयुष्पवेस स्टा अणुपवेस (नार) :

अजुप्पवेसवन [अनुप्रवेशन] वेको अजुद-बेस (गट)। अणुष्यसाद (ही) सक [ अनुम + सादय् ]

प्रश्वय करता । प्राणुप्पशादेवि (गाट) । अगुप्पसूच वि [ अनुप्रसूत ] क्लल फैत क्या द्वर्षा (भ्रामा) ।

अणुप्याद् वि [बनुपाविम्] प्रक, शंदक्र धंषत्वी (निच् १)।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुवृत्त रह (तृत्र अजुप्पेंच वि [अनुस्रयम्] दूर करता हटाया हुया

जम्म धविसएशिक्ष्यवत्तरोरा ते वारवं वसरशंति ।

र्श विसममणुष्पेंद्रो गच्याल विही बची होत् (पस्तः) ।

मणुष्पेषद्ध देशो अञ्जूषोद्दर उद्दूषिय किन कर्यन नाहरू

जेख ने समन्त्रीचि । एरिंह कि करम व कुरिनमीति बीश ! शराजिन्द्र (धन) । अजुप्पेसिय वि [अनुमेपित] पीने से भेजा क्षमा (नाट)।

अगुप्पेह सक अनुप्र + ईन्ह्र ने विन्तन करना विभारता धरपुष्पर्शित (पि १२१)। इ. छाणु-प्पेडियस्य (वस् १)। अणुप्पेहा को [अनुप्रेक्षा] कितन भारता विचार, स्वाम्याय विशेष (वत २१)।

लणुष्पत्रस र्षु [अनुस्पर्य] धनुभाव प्रधाक 'बोह्स्सेव बस्पुण्टासो नग्ने' श्रमगरामवि' (एम. ६)। अणुपुरसिय वि [अनुप्रीव्यित ] गाँचा हवा

साथ क्या हुमा (स १४४) । अणुर्वेष सक [अनु + व घ ] १ पनुसरस करता । २ संबन्ध वनामे रखना । असुबंबति (उत्तर ७१)। वहः, अणुर्वघंत (वेग्री १८३)। क्षक अणुर्वधीसमामा अणुर्वधिवसमाय (नाट)। हेड अगुर्वभिद्धं (शी) (मा ६)।

अजुर्वेच १ जिल्लाचा १ सत्तपन निरुद फ्ता विच्चोरका समान (ठा६३ स्वर १२६)। २ वीषत्व (च १६० मटड)। ६ कर्मों का धंबन्य (पंचा १६)। ४ कमों का विपाक परियास (जनर ४º पंचा १०)। १ स्तेष्ठ ब्रेम (स २७१)

भयणाणु पश्च वर्ज शहवा बजस्म

बहुसं किपि। यमुरियमगरोनि विष्टे धरपूर्वर्थ सास्ति कुरुवीते' (सूर ४ २ )। ६ शास के बारम्भ में कहने नामक समिकारी विषय प्रयोजन और संबाध (बाव १)। ७ निबैन्स बाबह (स ४६८)। अणुबंधक वि [अनुबन्ध है] सनुबन्ध हरने बापा (शःग)।

अणुर्वेषण न [अनुवन्धन] धपुषुस कलन (जस २६ ४% मुझ २९ ४१)।

अणुर्वपणा सौ [अनुव धना] अनुसन्धन विस्मृत धर्म का सत्वान (पंचा १२,४६)।

व्यणुविधि वि [अनुवन्धिन] सनुवन्धनामा धनुषन्त्र करतेवाना (वर्ग २) तः १२७) । अणुर्वधिकान [रे] हिसा-रोग हिम्परी (रे

5 AA) 1 बागुबंबेड वि [अनुबन्धिन] विन्धेत-पहित सनुगनपाना समितकार (का २३३)।

समिन्दार 'स्मुन्सिन्दिय योगरं केस्त्रं उद्देशित (च्यह र १) । ६ म्याप्त (म्याप्त १ १) । १ म्याप्त (म्याप्त १ १) । ४ म्याप्त (म्याप्त १ १) । ४ म्याप्त (म्याप्त १ १० व्यक्तियार्थ (म्याप्त १ १) । ६ करान्त (क्यार १ २) । म्युप्तस्य वि [मनुकदा] र मनुकत्त (चेवा ६ २०) । १ पीमे बेचा हमा (सिरि ४४४) । म्युप्तस्य की म्युप्तस्य । म्युप्तस्य की म्युप्तस्य । म्युप्तस्य की म्युप्तस्य । म्युप्तस्य विम्नुक्ता व्यक्तम्य

अणुकामः ) वि [अनुकदा] १ वैक हका

अप्रवा विकासि ११ ६)। २ एवत

(कर १) ।

अणुस्मृत्य वि श्विमुक् मृत्यो व्यवक्ट व्यवक्षा (त्राट) ।

अणुस्मव वर्षा आणुस्मव = व्यवक्षा (त्राट) ।

अणुस्मव वर्षा आर्थ्य = व्यवक्षा (त्राट) ।

अणुस्मव वर्षा आर्थ्य = मृत्यो हे व्यवक्षा व्यवक्षा (त्राट) ।

अणुस्मव वर्षा आर्थ्य । वर्षा अणुस्मविका ।

यात्रवर्षा (त्रि ४४६) । वह अणुस्मविका ।

तिका वर्ष्य १ १) । हेक अणुस्मविका ।

तिका वर्ष्य १ १) । हेक अणुस्मविका ।

श्राप्त १ १) ।

श्राप्त १ १) । हेक अणुस्मविका ।

ज्ञपुमधन न [अनुभवन] अनर देखी (यान

भारिते र ६ ) (

अगुमनि वि आह्मप्रियो अनुसर व फोकारा (सिसे १६६०)। अगुमन्य वि आहुमास्यो आन्त्र अध्य (वर्षोष १५)। अगुमाग र्यु आहुमागो १ स्थान वागास्य (मुप १६१)। १ तर्गित नामां (एएए १)। १ नवीं वा रिवार — रूप (मुप १६१)। वर्षो वा रूप वर्षो व प्रत्यक्ष वर्णो शे राम् काण प्रत्यक्ष वर्णो को स्वाप्त कर्णो शे राम काण प्रत्यक्ष वर्षो विच्यो वर्गे नुस्त्रको में प्रम प्राप्त वर्षो की राष्ट्रिय वा वर्षा (४) ४२)।

में कर बरोध करते थी ठाँठ वा बनना (ठा १ २)। सनुमाय १५ [अनुभान] १४ कार केने अनुमाय १६ हारू १२ का ११ नका वाला नव १)। १ मनीना कार वी नुबक बैठा, सेरा वीं गा वाला वरेन्द्र (जा)। १ हान बेरासीय (व १११)।

अणुमावन वि [अनुमानक] बोक्क तूपक (द्यादम) । अणुमास एक [बानू+माप् ] १ ध्युवार करना कही हाई बात को एसी शब्द में राज्या-न्तर में या पूछरी मता में व्यवसा। २ पिन्टन करना 'प्रश्रमासङ दुस्तवर्स' (धाषु ६) वय ६) । वह अणुसासर्वेत अणुभासमात्र (स १०४ विसे २६१२)। अणुमास्य व विज्ञायणी सन्दार, एक बात का कहना (शाद)। अणुमासवा की अनुमायणा कर देखी (का र ३ जिसे २४२ टी)। अणुमासय वि [अनुमाय ठ] प्रवृत्ताक प्रवृ बाद करनेवामा (विशे १२१७)। अणुमासर्वत रेको अणुमास। अ<u>णु</u>म्देव तक [अनु+भुद्र ] भीय करना। नर अजुर्म्जमाज (सं ११)।

ना अप्युर्धेवसाय (ई ११) ।
अप्युन्ध् की [अर्युन्धि] प्रमुक्त (विशे ११११)
अप्युन्ध के [अर्युन्धि] का निक्त (सहा)।
पुरुष कि [उपुन्धि] का निक्त (सहा)।
पुरुष कि [उपुन्धि] का निक्त करणा की नया हो पह (कारा १ १)।
अप्युन्ध के [अर्युन्धि] कुनिक करणा कीमित करणा। अप्युन्धिक (क्षि) (कार)।
अप्युन्ध के [अर्युन्धि] कुन्धेक्त करणा क्ष्मानिक के निज्ञास्त्र (विशे १६६)। अप्युन्धाम के [अर्युन्धिक] पूर्व विविचक्ती क्ष्मानकोचन कीमाइ (विश्व १४२ विविचक्ती क्ष्मानकोचन कीमाइ (विश्व १४२ व्या)। गामि वि [मामिन] वीकेनीक्रे मानका (विश्व १४)।

अणुपर स क क [ बार् + सरक ] विश्वार करना वंद अजुप अच्छा (बोदस्व १९६); अणुपारण | च्या जितु - सम् ] स्मृतिक सणुपार | च्या जितु - सम् ] स्मृतिक सणुपार क्या समुगीरत करना । सणु कार्लो स्मृतस्य (१९ १९० सहा) । वक्क अणुपार सामा (बार १९) । वक्क अणुपार सामा (बार १९) । वक्क अणुपार मान्य (वस १९११) । अणुपार स [ असु सम् ( १ सम्म) । वस्तु

हीना, वित के अरते में कर बाना 'जी केश

मणिहर (स १२२) ।
व्याप्तर सम् (स्तृत + सृ इम से मणा पेकेगोके मण्या, मृत्य वर्णपण्यां व्याप्तर स्वर्ण स्वर्णक्ष मण्या (स्तृत १०४) । व्याप्तस्य म (स्तृत्तमस्या) प्रश्चित (गव्य) । व्याप्तस्य सि [स्तृत्तमस्या] प्रश्चित मा स्वर्णमाण म [स्तृत्तमान] १ मध्य मा देव के सार प्रस्तुत स्तृत क्षित्र (ग १४१ । अञ्चाल म (स्तृत्तमान) १ स्वर्णक्ष स्त्रुत्तमान (वृत्त ११६२ ) । १ स्तृतार (वृत्त ११६३ ) ।

(बुब ११३,२)। २ बनुतार (तंदु २७)। करता । श्रेष्ठ अधुमाणहत्ता (स्व १) । अजुसाय वि [अगुपात्र] बहुत बीवा नीक् वरिमाखनामा (बब ६ २)। अणुसास यक [अनु+सास्त्] शोक्ति होना चमकना। संह अणुमाक्रिमें (पनि)। अजुमिज इक [अनु+सा] प्रश्वन है जानता । अमे यश्रमिक्तिक (वर्मेश्वे १२१६), भलमीनए (क्सनि ४३)। अणुमेश हि [अनुमेश] मनुमल के केरन (मै ७६) । अणुनेश को [अमुमर्यादा] मर्मारा हर (क्स) । अनुमोद्द दि [अनुमोदित] बनुमत धेमड. प्रतंतित (यातर, मवि) । अणुमाय स्ट [अनु + सुद्] प्रनुपति केर

(चंड १) ।
अणुमोस्मा वि [ब्रानुमाद इ] धनुमान वरदेवनमा (विते )।
अणुमोस्मा न [अनुमाद इ] धनुमान वरदेवनमा (विते )।
अणुमास्मा न [अनुमाद इ] धनुमान धम्मान
प्रदेश (क्या देवा १)।
अणुमास्मा वि [अनुमान देवा हो।
वित्र हुए १)।
अणुमास्मा विज्ञानसुकी घनुमा वित्र विद्राम वित्र विद्राम वित्र विद्राम वि

वर्षचा करता। प्रशुमीवह (स्व)। धकुमीएमी

अणुग्हाद वि [अलुग्हाल] धन्तेतुर वितर विषयं स्माप्त प्रकुर्मुद्दो विद्वर्यन ति (नेदा)। अणुष वै [अणुक्र] बाल्य-विदेश (पर १९९)। अणुर्येश देलो अणुक्रेश (नवर च ११४)। अज़ुबस देवो अज़ुबस = बनु + हुन् । अजु-धत्तर (मनि)। बर अगुयर्थत अणुयत्त भाग (पंचना विने १४६१) । संक अणु-धत्तिज्ञण (गउह)। अणुयस देनो अजुयस = प्रमुख (भवि) । अणुयलणा ध्ये [अपुपर्वता] १ बीमार की सेवा-गूप्रा वरता (बृह १) । २ धतुसरण् । ६ सनुरूप बतन (बीब १) । अणुपश्चिय रि [अनुपृत्त] धनुरूम किया ह्या त्रमादित (भूपा १६ ) । ध्रणुवरिय वि [अनुचरिष्ठ] ध्रावरिष्ठ चनु द्विन (ग्रामा १ १)। अणुपा रेगो अणुज्या (पूप २-१) । अणुयाय रेगो अणुनाष (न १=६)। अणुपास पू [अनुद्यश] विशेष विद्यात (ভাষা १ १)। अपुरंगा भी [दे] यही (हह १)। अगुरंगि वि [ अनुरद्भित् ] व्युक्तग्रन्थतां (नुक्र १ ८)। धणुरंगिय वि[अनुरद्भित] रंगा हवा (सर्वि)। अपुरंत्र सर [अनु+रक्षव्] भगुराणी गरना मीखित गरना। वह अधुरंकार्नन (बार)। धंद्र अगुरिजम (बार) । अपूर्वज्ञन [अनुरद्धन] एव वानकि (विष्ठे २१७७)। अगुर्रविष्ट्रय १ वि [अनुरक्षित् ] क्युरनः अगु(जिय े शिया हमा भनुस्तरी बनावा ष्ट्रमा (नी १ महा)। अगुरकारि [अनुरक्त] यनुरान-प्राप्त देव प्राप्त (नार)। अगुराज यर [अनु+रक्त्र् ] वनुरक्त हाना अनी होना फाइनीत धगोरी पुर्वाट प्राप्तेश पूरा शिरबंडि (महा) । क्षपुरन देगो अगुरब्द (ग्रावा १ १६) । अणुर्रासप रि [अनुर्रासप] बोजावा हथा मपुत्र (रहावा १ ६)। **ब्लुसद** } रि [ अनुस्तिन् ] क्युस्त-भाषा में बारा मेरी (स वह स्तरा मुर १३ १२ )। भागुराग र् [अनुराग] वन व्रीन्त (कुर ४ ₹8€) [

अणुरागय वि [अन्यागत] १ वीभी भावा | हुचा । २ डीक-डीक बाया हुमा । १ म. स्वापत (भग २ १)। अणुराधि रेको अणुराङ्ग (भहा)। अणुराय देखी अणुराग (प्रामू १११) । अणुराहा स्री [अनुराधा] मधत्र-विशेष (सम अजुरव वर [अनु+स्यू] १ पर्यंव करना। २ स्वीकार वरना। वै माना का पानन करना। ४ प्राचना करना। ५ मर वयीन हाता । वर्षे बलुदेशिका (है ४ २४० प्रामा)। अणुक्त हि [अनुस्प] १ योग्य उपित अणुक्तव } (वेट १६) । २ क्युर्स (नुज ११२) । १ महरु तुस्य (लावा १ १६) । ४ त. सवानता योग्यना (मम्प)। अज़रीह पूं [अनुरोध] र प्रार्थना 'ता ममा-शारोहेरा पूरव घरे निवसंत्र धार्वतच्ये (शहा) : २ बान्तिएय दिनागुता (पाम) । अणुरुद्धि नि [अनुरोधिम् ] धनुरोध करने-बाता (स १२१)। अगुस्मा रि [अनुस्प्र] शेघे नग ह्या (य १/१ मुर १ १२१ मृत्य ७)। अजुरुद्ध रि [अनुस्टब्ध] १ पीछे से मिमा ह्या। २ किर ने निमा हुया (नार)। धणुद्राय वं [अनुस्यप] धिर-चिर बीनना (रा ७) । अणुखिप इष [अनु+दिप्] १ गोतना नेत बरना । २ टिर ने पोतना । संह अणु-द्विपत्ता (रि ४६२) । हेर अणुद्धिपत्तव (FI RUC) 1 अणुश्चिपण व [अमुख्यन] सेर शोतना (पार अणुस्ति वि [अनुस्ति] नित्र पीता ह्या (१प)। अपूरिंद् वर [ अनु + सिंद् ] १ भारता । रे इना। यह अणुस्तिद्दंद (सम १३१): 'दक्ष्यवनमान्तिर्दर्भ' (बस्य ११ १२) । मणुक्षेपण व [अनुसंपन] १ केन योजना

(राप्त १४)। र दिर मै पील्या (पएछ २)।

1 (0 }

अपुषविश्र रि[अनुप्रजित्त] परुग्र (र्वता)।

अनुम्प्रीयन वि [अनुम्प्रीयन] नित्त बोडा हुन्छ

'बाराग्'नेविया शी' (गम द२ ॥द) ।

अणुडोम सक [अनुस्रोमय्] १ हम स रतना । २ धनुरूत करना । संर्वा अणुखेम इचा (टा ६)। अणुख्रोम न [अनुस्रोम] १ मात्रम यगारमः 'नत्वं युहारणुसीमेरण तह् य पिन्नोमधी मरे बन्दाँ (सुर १६ ४८)। अजुलोम वि [अनुस्रोम] धीवा, प्रतृप्त (# २)। अणुद्धा देखो अणुद्धय (नुग १६ १३ )। अणुद्दम वि [अनुस्त्रम] बनुद्रत बनुद्धर (45 t) i अणुद्धय पू [अनुद्धाः] एव शैन्तिय शुर अन्त्र (पत १६)। अणुद्धार र्षु [अनुद्धार] एएव ६५न हुए र्जद (ठा १)। क्षणुष पूँ [दे] बनारवाद, जबरच्छी (दे १ 1 (35 अणुपद्द वि [अनुपदिष्ट] १ य-वित य-व्यास्थात । २ जो पूर्व-यरम्परा स न प्राया ही 'मल्बाद्धः नामः वं खो धार्यरेकारंपचार्यः (शिंचू ११) । अणुपप्रच रि [अनुपमुक्त] धनारवान (विने) १ अणुवएम र् [अनुपदश] १ ध्योग्य स्तरेत (पंचा १२)। २ जास्य का समान । ३ स्तमात्र (छ २, १) । अणुप्रभाग रि [अनुप्रयोग] १ काबोद-र्शः न २ उरवीय का समार समारमानदा (बलु)। अणुपंड रि [अनुपक् ] यथेर कर बहुन देश 'बार बंगारमा रानि रिम बानुरंध परि वमर्थ गृ करेडि (मान ६२)। अणुर्धर्ण न [अनुवस्त्रम] प्रतिन्तमन प्रात प्रणाम (सार्थ ११) । अणुबद्ध रेजो अणुर्व इ (ति ७४)। अणुपतस्य रि [अनुपाद्य] नाम-पीरन धनि र्भवनीय (कुर १) । अगुवस्तर रि [अनुपन्तृत] संकारनीत (पाप) (निष् १) । अपूरव नव [अनु+अज् ] क्यूनान वरता वैक्षेतीये माता। क्यूचन (हे ४

अणुबद्द न [अनुपय] पीधे, पुमयपुगरेत

अजुनबीवि नि [अनुपत्रीविन्] १ वना-

शून में बाला (फिने ३६६ )।

```
सो सम्बो' (ठप । दी) ।
                                         (उपर १४«) I
 भित्र । २ मानीविका-पहित्र (पेका १३) ।
                                                                                बालुबाइया न [अनुपाइन] पहन, 'वर्गमहार्ल-
                                       अणुकत्तय केते अणुकत्तराः प्रदश्यकत्तरण्
अजवज्ञास वि विज्ञासको वसम्बाद
                                         बत्तमा (लामा १ ३)।
                                                                                 शुवासम्बद्धार (म् १३१)।
 स्माल-सम्प (पनि १९१) ।
                                        बजुबत्ति भी अनुबृत्ति । यनुबर्छ (व
                                                                                काणुबद्धय वि किन्युक्ती प्रविद्यारिय
क्षणुक्ता स्क [राम्] जाता। व्यकुक्ता (है
                                         ४१६)। २ वनुस्त प्रकृति । १ वनुबम (विधे
                                                                                  (चिंग्र)।
 ¥ $49)1
द्यपुष्ठ स्ट [दे] रेना-गृपया करना (दे
                                                                                अशुपद्धा की दिनेत्रोहा की पुत्रम्त (है
                                        अञ्चलि वि [ असुवर्षिम् ] धनुरूश प्रवृत्ति
                                                                                  8 85) I
  1 (11)
क्रजुबज्जण न [वै] ठैवा-मूच या (वे १ ४१) ।
                                                                                अञ्चाद वि [अञ्चादिन् ] १ प्रवृक्षरण
                                         करनेवाला, मक ग्रेवक
अपुविज्ञास वि हि विस्ती वैना-तृत्वया
                                          'तृह बंडि । यमशक्यतायुवतिको बह
                                                                                  करनेवाला (हा है)। २ सम्बन्ध राज्येताला
  भी गई हो वह (दे १ ४१)।
                                                               ख संबम्बिट ।
                                                                                  (सम १४)।
 अस्पुत्रक्रिकाक्ष कि दि] यत नया हमा (दे
                                          शैष्ट्रिश्क्रसंक्रियमजिस्त्रीरमालेश व वर्मश
                                                                                अञ्ज्याइ वि [अनुपादिस् ] भनुपार वरने-
                                                                                  बाला, उक्त वर्ष को बहनेबाला (सूच १
                                                                     (क्तड)।
  t 'Yt) i
                                        वणुविति वि [ अनुवर्तिम् ] अतर वेवो
 ख्युनट्ट केनो अयुक्त = ब्लू ÷ इत्। इ
                                                                                  १२१ वर्ष १४ हो।।
                                          (वर्तीव ६२ मोह १ २)।
  अणुषदृषीम (नाट) ।
                                                                                 अणुवाद वि [अनुवाचित् ] पहनेवाना
                                        लजुबस वि अनुपर्मी स्थमा-रहित, देशोड
                                                                                  सम्मासीः 'संकृतनीसन्दियो मत्त्राई सन्दु
 अगुवदि के अगुवति = अनुवर्ति (विशे
                                          यवितीय (या २७)।
                                                                                  वस्तं (बच १४ हो)।
   १४१७)।
                                        ध्युचमा की [अनुपमा] एक प्रकार का करा
 चणुत्रद्व पश्च [लनु÷ पन् ] वनिष्ठ होन्छ ।
                                                                                 वपुरायक वि [बनुपादेव] बहुए करी
                                          इच्य (श्रीय ३) ।
                                                                                  के प्रकोरका (घलान) ।
   समुबद्ध (स्वर ७१) ।
                                         मञ्जूषिय वि [अनुप्रतित] वेदो अञ्जूषम
                                                                                 अञ्चाद रेको अञ्चाय = अनुवार (निवे
 अपुषरिक मि [बानुपदित] पीके निरा क्या
                                          (बुग ६)।
                                                                                  1200) 1
   (इम्मीर १)।
                                         जजुन्न के अजुन्यद (एउम २ ५१)।
  क्युवस सब [ कतु + वृत् ] १ ब्लुसका
                                                                                 अणुवादि रेको अणुवादः सनुपातिन् (वर्ष
                                         अणुषय सक [अनु + वष् ] सनुवाद करना
   करताः २ देवा-दुल्यया करताः ३ अ<u>नु</u>पूत
                                          कहे हुए वर्ष को किर से कहना । वह काणु-
   बरदना । ४ न्याकरता साहि के पूर्व सुत्र के
                                                                                 व्याचाव ई (अनुपाद) १ अनुपास (१९ए७
   पद का सन्धन के बिए तीचे के सवर्ति
                                           बयमाज (शाषा) ।
                                                                                  १७) । २ इंकल्च संबोध (मग १२ ४) ।
    मना। सप्नवर (स ४२)। यह व्यक्तक
                                                                                  वे भावमत (वंबा ७)।
                                          अध्यक्त विशित्परवी १ वसका धनि-
                                                                                 अञ्जास वृ [अञ्चल ] १ धनुसूत पर्म
    সমূৰবাৰ সমূৰবাদাল (হাম বিট
                                           वहीं (अ. २, १)। २ किया निरुत्तर, स्वेस्य
    ११६ : तह)। 😈 अपुन्दृणील अपु-
                                                                                  (६४) । २ वि सनुभूत पत्रव वाना प्रकेत---
                                           (शक्त २१)।
    ৰভদীৰ অসুববিৰুদৰ (লগুজন १ ३१
                                                                                  स्वन (सः १६ ६)।
                                          अपुनस्रदि से जिल्लास्टियी १ प्रधान
    a)ı
                                                                                 अधुवाय वि [असुपाय] <del>साम-श</del>ीत निर
                                           धप्राप्ति। २ प्रमान-सानः 'वृत्तिहा सर्वानवरीव'
   अधुरच नि [भतुर्रूच] क्ट्रूपन (पिट
                                                                                  पान (इस पू १४)।
                                           (विशे १६ २)।
     2)1
                                                                                 अञ्चाय र्ड [अनुसाद] अनुसावक एक वार्त
                                          लपुनस्यमाण वि [स्तुपस्यमास] वो
   मधुमच वि [बनुकृष] १ धनुका वनुवत्।
                                                                                  को फिर से कहना (क्या दे १ १३१)।
                                           क्लाव्य न होता हो, जी जानने में त धाता
     ? सन्दर्भ दिना ह्या । ३ प्रमुत्त (मन २) ।
                                                                                 अणुनायज न [बानुपावन] अववारत वरा-
                                           श्री (च्हिन १)।
   भपुषका वि [बतुतर्वक] मनुब लावि
                                                                                   रना (वर्ष २)।
                                          अञ्चलका वि [अञ्चलकोपक] काहेप-स्त्रीत.
     क्लोबाला, क्या क्लोबाला (क्या) ।
                                                                                 अञ्चयय वि [अनुवायक] नहाेनलक
                                            व्यक्तिपत्त (पराह १२)।
    भपुगत्तग वि [बर्जुश्तेष] मृत्राप्त-नर्धा
                                                                                  व्यक्तिक पीत्रहरूरो स्वीए एल स्नातुः
                                          अपुषरांत वि [वसुपरास्त] बळाळ, पुनित
     (तूम १:२२ व२) ।
                                                                                  नानमी भरितमी (गुपा ६१६)।
                                            (बस १६) :
    अजुरचण ५ [बर्जुक्चेत] १ क्लूबरह (४
                                           अपुषसम पुं [अनुपराम] अपराम का समान
                                                                                 जपुरास रेची अगुपास । १५० अगुरास्त
      २३६) । २ मनुरूत प्रवृत्ति (का २६६) । ३
                                                                                   (स २३) । सं⊈- लायम्ब क्रिकल (स १ २) ।
      पूर्व भूग के वर का प्रस्तव के बिए श्रीके के
                                           मणुवसु वि [अमुबसु] रायवाचा प्रीतिवाला
                                                                                 अधुरास्त्र न [अनुपास्त] रहस परिपस्त
```

(पाचा) ।

(माना) ३

अणुपाटणा ध्ये [अनुपाछना] १ अपर हेपी (वंद्र) 12 करप पूं िकस्पी ताबुनारा के नायह की धक्रमान् मृत्यु हा जान पर करा भी रना के निष् शाबीय विवास (पंचमा)। अगुपानम नि [अनुपानक] १ रचक परि पारकार पूर्णाशायक के एक बक्त का नाम (मग २४२)। अगुपास गर [अनु+पासण्] व्यवस्था बरमा । अगुवानेज्ञामि (गावा) । अगुवास पूर्व [अनुवास] एक स्थान में बबूक नान तक रहतर दिन वही बाल करना (पंचमा)। अगुवासण न [अनुयासन] १ कपर रेगी । २ बन्द-डाय देन मारिको मत्तन ने पर में बहाता (छाया १ १३) । अणुवासणा ध्ये [जनुवासना] इतर देनो (पंचमा रामा १ १३) कप्प पू ["कल्प] बनुवास के निए शास्त्रीय स्परस्था (वेचमा)। अध्यासग रि [अनुपासक] १ वेज नही बरनेराता। २ पू जैनेतर गृत्स्य (निवृ x)। अणुवासर न [अनुपासर] प्रतिदेन, हम्ला (4x 1 2x1) 1 अगुपिचि स्त्री [अनुदृत्ति] १ प्रतृत्त वर्गन (कुमा)। २ धनुसरस्य (३२ ≤३३ (13 अगुविद्व रि [अनुविद्व] संबद्ध बुहा हुना | (मे ११ ११)। अगुविम नक [अनु+विन] होत बरता। मणुबिमॅर्ति (मिल्ला ७३) । अगुविद्यान न [अनुविधान] १ क्यूनरण । २ बनुसन्हा (स्थि २ ७) । अगुबाद स्वी [अनुबीबि] धनुस्तता विवा गारीई मा बार्सि बाल्बीरी जिताह से बुझी (तूप १ ४ १ १६)। अगुर्वाड ) व [अनुविधिन्त्व] विकार बद,पर्यानीयनाबर(गिश्टव अपूर्वाति | भाषा दव ७) । देलो अपूर भगुरीतिय चित्र। अपुरारम् १ रणे अनुपीद् (श्व १ १२ अनुसिय दिश्व १ १)। मगुर् पर [अनुन्धृत] ब्युगीना बरस प्रतेश बरमा। मानुनेह (बाव)।

अणुबृह्यु रि [अनुबृहित्] धतुनीयन करने बाना (स ७) । अणुबद सक जिल् + बेव्य विद्यासकाराः बर्रः अणुपद्यंत (नुध १ व १) । अणुबच १ वृं [अनुवेध] १ ध्युगम धन्यय अणुस्ह सम्बन्ध (पर्मेश ७१२ ७१४) । २ समियम (भित्र १६)। अणुबयात्र म [अनुबेदन] पत्र-मोग धनुसर [# ¥ 1) 1 अजु -- प्र [अनुबेख] निरन्तर, सत्त (गर्म)। अजुवर्क्षपर पं अनुबस्ययरी नाव-पुनार देशों का एक इन्द्र (मम ११)। अणुबंद रेको अणुष्यद्व । वष्ट अणुबद्दमाण (नूप १ १)। अणुध्यद्वयः वि [अनुग्रजिन] पनुग्नः ( म अणुब्दत्र सक [अनु+प्रज् ] १ सनुकरण ' करना । २ मामने जाना । यत्तुष्यत्रे (मूच १ \* ? \*) I अञुक्यम न [अञ्चयन] धौटा का साधुमी रे महादत्रों की घोला सबू बन जैन मुख्य के पात्रन गानियम (रा. १.)। अणुक्षय न [अनुसन्] उत्तर देनो (हा १, अगुस्यय वं [अगुरान] कारक-वर्ग (वंका अगुस्पयम र [अनुग्रजन] स्नुपयन (बर्वीर अपुष्पपप रि [अनुश्रवक] धनुषरम् बच्ने बाना, दिप्रमञ्जमगञ्ज्ञवा (गावा १ ३)। अणुष्यया रचे [अनुप्रता] वतिशता रची (उमा २ )। अनुध्यम विजिनुषद्यीयकोष, संयक्ष का नक्ते सराग्या वत्रयत्रमणुक्तमा (नूच १ 1 1 1 अनुस्थान रि [अनुशन] १ प्रनम्य गुता हुमा (उर २११ ही) - २ जिन्ह विदेशा पंचारा विविधासाम्बर विविध क्षेत्रम् व्यक्त्रें (धेप प्रवर्ध) । अपुष्टिया रि [अनुदृषित्र] कलित्र के र्णेष (म्मा१ द ना २०१)।

अजुब्बियाम न [अनुविपात्र] निराह है बतुनार, 'छर्च तिरिक्षेत्र मगायामुरेनु चत्ररेवराने तपलिकार्ग (श्रम १ १ २) । अजुक्योइय श्यो अणुयोइ (और) अणुमंहम सङ [ अनुमं + ऋम् ] प्रनुषएए करना । बालुमेश्मीति (उत्त १३ २४) । अणुर्मंग वूं [अञुपद्ग] १ प्रश्नेप प्रस्तान (प्रापू वद शक्ति। २ समर्थ मोजबक भारतर्जि पूर्ण एवर अन्तर येशे हुपन्ति पुर्ण-रोमा (महि २८ २७) । अणुसंगिध नि [अानुनिहरू] प्रामित्र (प्रवि १६)। अगुमंचर वर [अनुमं+यर्] १ परि अवागु करता । २ पीधे काला । यागूनकरह (याचा नुष १ १)। अणुसीन रका अणुसामा मन्तर्गरीत (पर अणुसंघ वर [अनुसं+ धा] १ सोजना बुंदना चनारा गरना। २ विचार गरना। **व पूर्वार का विनान करना । अशुर्मधिम** (रि.४.)। मेर अगुमीधियि (सीत)। अणुर्मधण ) व [अनुर्मधान] गरपणा अणुर्मधाय में नोज (मंगीय ४४)। २ पूर्यं-पर की मंद्रीत (पर्वत र 1)। अणुमंबय १ न [अनुमंशान] १ नीव अर्जुसंपान हे हो वें। २ दिनीय, विन्त चलागुर्वभक्तस्य मुमारका गरिना होत्<sup>र</sup> (बार्)। ३ पूर्वीर का निजन (गैका {**२)** । অগুৰ্যবিদ্যাল বি বিচারিক্স জিল সিল্ফে निवर्ग (दे १ ११)। अगुन्धर नद [अन् + स्मृ] यण वरना ।

ब्यानंबर६ (वर्तन ४ ११)।

अपूर्ववयम् व (अनुस्तरण्य) १ पीछे ग

अगुमंसर पर [अनुमं + मृ] एवन बरता,

अपूर्णमर कर [अनुर्ण + स्मृ] त्रात्र

बरमा, यार करना । मानुमेनरा (याचा) ।

भगुमध्य धर [अनु + संज् ] १ धरुनान

कार, पूर्व बार से बाराजार व सपुर्वत

भगगु करना "जो प्रमापी दिनची शा

पाननाः २ धनुसरं वरना (याचा) ।

विशिवादी हा मगावेशाई (धावा) ।

यन्दर्श (दद १)। करना, सभा देना । प्रत्युक्तसंदि (पि १७२) । भाइ- अणुसासीय (पि ११७)। क्या संगुसदू 🕅 [अमुरिष्ट] जिसको रिना सै अपुसासिजीत (बुपा १७१)। कृ अपुसा बर्दे हो बहु स्टिथ्डिट (मूर ११ २६)। सणिज्ञ (रूपा) । क्षेत्र अणुशासित (पि अणमद्भिति भिनशिष्टि । रिल्ला वीच

tof) t क्रादेश (छ ३ ३)। २ स्तुति रताचा अणुसासण १ जितुशासनी १ सीच 🖼 'क्रापृषद्वीय पुर ति एन्हां (दर १) । ३ केत (सुस १ ११) । २ बाजा, हुकून (सूस मात्रा परुवा सम्मदि 'इण्डामो प्रजृषट्टि १८३)। इतिचासवा(पंपार)। ४ पष्य बंदेर में अपर्थ (मुर ६ २ १)। धनुष्टम्मा बमाः 'बालुबंध वि वा बाव्यवानव्हंवि धणुसमय र [झनुमयय] ब्रह्माख (का वा एन्द्रा (पंचप्र)। 48 8)1 अणुसासणा श्री [अनुशासना] अगर देशी अणुसय पू [अनुराय] १ शरकातान केंद्र

मि २, १६) । २ वर्ष व्यक्तिमान (वन्) ।

क्लिन बरमा। बद्दा अप्यसर्ग (प्रकार ६६.

अगुमरम र अनुसरमी १ पेछा गाना ।

अणुमरण र अनुस्मरणी मनुष्टित यार

अञ्चमरि रेगा अञ्चमारि 'चललक परिलये

मनो मनीद परक्यागनचे'( संशेष ४) ।

अञ्चमरिष्ठ रि [ अनुरमर्जु] बाद क्लीताना

भगुम[रच्द्र ) वि [भगुमदरा] १ वनल

भगुमरिम ) तुन्य (गान १४ ७ )। १

माम नामक (न ११ ११६) वटन ४

भा]भार र् [अनुग्रार] १ वर्ग-रिटेप विश्वीत

२ वि सनुनानित वर्ग (विते ६ १) ।

) १ अणुमरियस्य (पात्रम्) ।

२ बनुवर्गन (रिम २१३) ।

बरना (बंबा १। स २३१)।

(पिन ६२)।

42)1

2 () 1

अधुसासिय वि [अनुरासित] विश्वित (उत्त अनुमास किनु + छी येख करत १ वि १७३) । मनुबंधन करना। जनुनद्द (न्छ)। बङ अणुसिविद्यार वि [अनुशिविद् ] शैक्तेवाचा अगुमर्(न (नहा)। इ. संगुमरिकम्म (स 'ने ने वरेडि के ने नंपनि यह कह तुमं विश्वचेति । भगुमर भर [अनु+स्वृ] याद करना

(जावा १ १३)।

तं वं ध्यविशिक्षयेए, शही रिप्यो ए वंपहर्' । (वा १७८)। बणुसिट्र देनो बणुसट्ट (नूच १ १ १)। अणुसिद्धि देवो अणुसद्धि (ग्रीव १७३ शह

शक्तर)। अणुसिज रि [अनुरत्र] गरत नहीं कह ध्या (रम १ ४६)। अणुमीस दक [अनु+ग्रीद्धव्] शतन रका रवस रत्य। अञ्चरीसद् (बस्)। अणुमुचि रि [दे] अनुगम (रे १ २१)। अणुमुमर सर [अनु + स्मृ] बार वरता।

सन्तनुमस्य (वर्षीत १६)। प्रयो-भ्रानुमस्यकेह (वर्वरि ६१)। अणुमुय बक् [ अनु + स्वप् ] संशे का धकु-व राज करता । सम्बद्धाद (तेतु १३) । अणुम् आ की दि रेशिय ही प्रवार व एने रानी रचे (दे १ ११)।

अधुमूच रि [बनुस्पृत] धर्नुस्त्र नित्त हुसा (नूष २,६)।

अणुन्तम रि [अनुन्यद] बागून की एव

महिना क्यवितीमा बर्डीट सामेटनमरेस् ॥ (दव १)। अञ्चरिक्ष की [अनुभेषि] १ सीवी शाना २ व. साइनसर (पि ६६३ ६ ४)। बणुक्षोय प [अनुस्रोतस् ] र मनुदर

प्रवाह (६३ ४ ४)। एवं समुद्रत भए-श्रीयगृही सीमी पश्चिमीया भाषमी मृत्रिक्षण्डे (श्लबु २) । १ न प्रवाह के सनुसाद, 'बनुस्रोमपट्टिए बहुवश्रम्भि पश्चिमयस्य सम्बद्धाः ।

परिक्षेपमेन ब्रप्पा, श्रामन्त्री होत्त्रगमेर्छ ।। (दसम् २)। अशुसीय एक [असु + हाच् ] धोषना,

चिन्ता करना अक्सोध करना । वह- वर्छ-सोधमाण (बुरा १३३) । अपुरसर देवो अपुसर – यत् + स्पृ। सैक. अञ्चरसरिचा (सुम १ ७ १६)। अधुस्तरदेशो अञ्चसर≃म्तु+४।ग⊀ अपुस्सरंव (स १४ )। वजुस्सरम म [बनुसारम] विकास करना

बार करना (तम स ११५)। खपुरसार र् [बनुस्वार] १ धनुस्वार, किरी। २ वि अभून्यारकाता धक्कर, धनुस्वार के साव क्लिका उच्चरत हो यह (होसि विते १ १)। मणुःसुव हि [अनुःसुक] क्लार्डा-धीर (लुक्द १ ३) । अणुरसुय हि [असुभूत] १ बावद्रीत (स्त

करात-सादि पुराण-शास (तुस १ ३ ४)। अणुहर वय [बानु + क्र] समुक्ररण करना नरम रस्ता । बणुहरङ (मि ४७७) । अणुइरिय वि [अनुद्वतः] त्रियवा अपूरण क्या पदा हो वह अनुकृतः 'बानहरियं बीर तुने चरियं नियसस

१) । २ लुताहुधा (नूस १ २ ३) । ३ त-

पुग्युरियस । मञ्ज्ञहानस्वरनो, विद्वल्पीरकराव-रिनितन

(बहा) ६ अणुर्व सर [ अनु + मृ ] सनुदा काना। चणुरुषः (ति ४७१)। वरः अणुरुषमाण (१९१ १७१) । इ. अगुर्श्वयस्य अगु-

भगुभार पुं [भनुभार] धपुनरछ धनुनर्तन (दाह भार)। २ मारित मुखारिक विद्या राष्ट्राच्ये बारमुप्तर्थ सुवरापुः तस्थै (कार्व tre) i

¥2

इयजीय (परम १७ १४) मुपा ४८१)। संइ-रुजुह्मेरुण अणुह्मिर्ड (शक पेमा २) । अणुद्रवण २ (स्तुसवत) धनुसर (स २०७)। अणुद्विय वि [अनुसूत] विशवः सनुसद क्या पदा हो वह (मुपा १) । वणुदारि वि [अनुदारिम्] मनुबस्य करने बाला नदानची (कुना) । कणुद्दाय देखी ललुमाय (ग ४ ३: ६१६)। अपुद्धियासण न [अल्लाप्ससन] वैर्यं से ख्रुन करना (वं २)। अलुहसक[अनु+भृ] अनुभवकरनाः। बह अजुहुद (परम १ ६ १६२)। अजुर्द न सक [अनु + मुझ्] मोव करना भौगना । बस्युडुंबद्र (मनि) । अजुहुन्त देखी अजुहुन्न (या ६५६) । अलुद्ध म वि [अनुभूत] १ विसका बनुभव किया मनाही वह (दूमा)। २ न क्यूमव (से ४२७)। खणुहासक [अनु+मृ] सनुसर करना। मगृहोति (पि ४७३)। बहु- धगुहोत (पटम १ ६,१७) । इनहः अणुहोद्दर्भव अणु-होइजंद, अणुहोइजमाण अणुहोइअमाण (पर्)। 🕊 अनुहोदस्य (ग्री) (यपि ₹₹**१)** 1 अज़्हण देवी अज़ुहण 'एतो केन्द्र मण्-कप्पे' (पंचमा) । अणुण वि [असूत] क्षम नहीं धविक (इमा)। अण्य १ पू [अनूप] यविक वसवासा वेरा अर्गुभे जिल-बहुबे स्वान (विश्व १७ १) बदे ४)। अणेश रि [अनेक] देखो अणेक (ग्रुया धरि RYR) I अजेक्ज्यस्था (हे) चद्यमः चपन (हे ह 3 ) F अणेश ) वि [अनेक] एक वे स्रविक नहुत अधेग 🕽 (बीमें प्राप्तु १९) । करण न िंदरण ने वर्धाय, अर्थ, वशस्या (सम्म १ १)। राष्ट्रय वि चित्रिकी यनेक एउँ। में होने-बाला धनेक रात संबन्धे (बन्द्रशायि) (क्ट)। सोष [शस्] धनेक नार (41 ty) 1

अधेगांत प्रशिक्षान्ती धनिषय भियम का समान (विशे)। वास प्रे विवादी स्थाताय, बैनों का मुक्य विज्ञान्त सन्त्र-पसन्त्र यादि धनेक विश्व पर्नों का भी एक वस्तु में सापक्ष स्वीकार. 'बए विका नोयन्त्रवि वनहारी सम्बद्धाः गनिष्यण्यः। क्षम भूक्षेद्रपुदश्री नमो घलेवंतवायस्य (सम्म १६६)। अणेगंतिय वि अनैअग्तिकी ऐकान्तिक नहीं धनिबित प्रनियमित (यम १ १)। क्राणेग्य**पाइ वि जिनक्**यादिन् | पश्चापाँ को श्रुवेषा धराय-धराग माननेषाना अक्रियागाइ यत का कनुवायी (ठा ८)। अणेष्ठंत वि [अनिच**ध्**तृ ] नहीं चाहता ह्या (क्य ७६८ हो)। क्रणेज वि [क्रनेज] निवन निव्यम (धारु)। अणेळा वि अज्ञाय] बानने के धयोग्य, बागने के सरास्य (महा) । अजेबिस दि [अनीटरा] **फ्**रान प्रशासका 'बे धर्म मुद्धमन्त्राति पडिपुएएमऐनिर्स' (नूम १ ११) ३ क्रणेवस्य वि अनेवस्स्य विस्तरण विवित्र 'अछेबंमुयी' वेयर्ग वेदति' (मप अजेस वेबो जण्णेस । १२ अजेसँव (गार) । क्रणेसण व [अन्ययंग] ब्रॉज तकारा (बदा) : अणेसमा 🛍 [अनपणा] पृष्का 🖭 धनाव (ਰਥਾ) । बणेसिणिका वि [अनेपणाय | बक्लावीय वैश सामुधीं के शिए धपास (शिसा-धारि) (ठा६,१ खामा १ १)। क्षण। बया की [अनुसुक्त] निसको ऋतु-वर्ग न भारत हो यह की (ठा ४, २)। भणोक्त वि [अनवकारत] विश्वका परासव न किया गया हो वह, शनित 'परवारीह

षरहोद्धंता' (धीप) ।

हृपा समाजित (एव)।

रनी संबद्दी वस्तीरवहीं (बृह १)।

काग का वि [अनवधा निशीय सूत्र (लामा 8 =) 1 छाणोऽअगा **४८ [अनवद्याक्त]** भपवान् महा बीर की पूकी का नाम (माबू)। अजात्मा स्था [अनवद्या] उत्तर देखी (कप्प) । खणोण असि (अनवनद्य) नहीं भूका **ह**या A t t) 1 अणोश्चरप रेको अणश्चम्य (पर ६४) । लगोम वि अनवमी क्षेत्र-रहित परिपूर्ण (पाचा)। अजामाज न [अनपमान] धनसर का यगाव सकार 'एवं सम्मन्तेमा विज्ञा पश्रीसक्या अयोगार्थ । मोहतियिच्छा य कम्रा विरियामारो य अणुविस्लो (भीव २४१) । क्षणारपार वि 💽 १ प्रहर, प्रमृत (मानम)। २ धनावि-धनन्त (पंचा १४ औ। ४४)। ३ धार्ति विस्तीर्ण (पर्वह १ ६) । अणीमस्मित्र वि [अनुद्वान] प्रशुक्त ग्रेसा (कुमा) । अणोख्य न [वे] प्रमात प्रावकान (वे १ भणोवणिद्विया श्री [अनीपनिधिकी] यानु पूर्वीका एक मेर जन-किरोप (मरा)। अणायजिहिया औ [अनुपनिहिता] अपर वेको (पि ७७)। अणोख विशिनाई] १ राज सुबाह्या (ना १४१) : सम नि ["सनस्क] धक्कण निष्ट्रर, निश्य (काप्र वह)। अणाबद्ग्या वि [अनवद्ग्य] **सनन्त** (शूप्र १ १२, ६)। अजोषम वि [अनुपम] एतमा-रहित यहि सीय (पत्रम ७६ २६ मुर ३ १३ )। अप्राथमिय वि अनुप्रसिद्धी क्यर वैश्वी (पतम २, ६३)। बाणोपसंसा की [अनुपसंदरा] धक्रत सन्य ज्ञान का समाव (सूध २ १२)। क्षणाविद्य वि [अनुपश्चिक] १ परिवह व्ययोगम् केशे अगुमम् = धनवप्रहः 'मान-पहित संतोपी । २ सरन सक्पटी (साना) । अज़ोबाइजग १ वि [अनुपानस्क] बुता भणाग्यसिय वि [अनवयर्पित] वहाँ विसा अजीबाहणय रे रहित जो बता न पहिता हो (धीप पि छ७)।

मस्त्रीति बीसीसमा,

व्ययोद्दीय दि जिनक्दीमी दीनता-गौरत भण्य सक [सुज्] धोषन करना चाला। म्प्छइ (वह )। क्षण्य स [काम्ब] दूसरा पर (प्राप्तु १६१)। रतियय वि [ विभिन्त, वृधिक] क्रम करीन का सन्दासी (सम ६) । स्ताइका न [भइप] १ नान के समय होनेवाला एक प्रनारका सुवादिकार। १ वं गलेकाला, धान्धनिक वनेदा (निष्कु १७) । स्वस्मिय वि िभार्तिको निसंदर्भवातः (भोद १३) । হাত্ৰ ব জিলা ইবাৰ বালল নাৰি মাক (सूम १ ४२)। २ मध्य पदावें (उत्तर्)। के सक्रात भीजन (सूम १२)। **इस्रा**व "गिस्मव वि "म्झ्यमङ] वासी क्षत्र को वानेराला (ग्रीय भन्न १६ ६)। निहि प्रभी विधि पक क्या (ग्रीए)।

अज्य न [अर्थास् ] पानी चन (उत्त ३)। भाष्य दि दि । १ मारोरित । २ विद्वत (पह)। मण्य देखो कम्मा=नर्श (वा ११४ क्ष्य)। भण्याम दें दि] १ क्लान तरहा : १ कुटी ब्या ६ सेनर (हे १ ११)। कण्याइञ्जल [वि] १ इस (६१ १६)। २ तम दिवसी में वृत, स्वर्शिन्त ( क्यू )। वण्त्रओ स [अस्वतस् ] दूसरे हे दूसरी दरङ (क्त १) । देवो अल्लाही । बाण्यक्य वि [अस्योस्य] नरहरद, शासन से ( **4**1) i भ्रणाण्य वि [श्रम्यास्व] ग्रीर ग्रीर, ग्रसग-'सप्त्रएकाई वर्रेना, र्वेदारवर्हम्य दिख्तत्वरण्यात् ।

वसम्द्रासम्बद्धाः (वटाः) । अञ्चल वा [अञ्चल ] इसरे में किस स्थल में (पा ६४१)। क्षण्यक्ति की दि] क्षण्या ध्यमान, निरामर (£ \$ \$w): क्षण्यत्तो देखो क्षण्यञ्जो (वा १३१) । भव्यास्य देशो ठाव्याच (विपा १ ३)। अञ्चलक वि विस्थरको इसरे (स्वान) में पाइपा(ना १६)। अण्यस्य वि **विश्वयर्थ** स्वार्थं स्वा नाम तका पुरा काका किंदमएएएखे उपक्रिक्त वेनच" (विशे) । कप्पाम**्य देवी स**ञ्चाच्या = सन्तोत्य 'स्ट्राय नरजमगुरवयां (शाया १ ३)। अध्यमय वि दि ] पुनस्क किर से कहा 🖪 मा (बे १ २८)। व्यव्यय केवी व्यक्तम (वर्नर्स १९२)। अण्णवर वि अन्यतर ] दो में ने नोई एक (क्य)। व्यञ्जया स जिम्मदा दोई समय में (सर भाष्यम प्रक्रियों । १ स्पूर । २ संसार, भरतवसि महोबीस एवे तिएछे बुस्तरे (क्ट १)। क्षण्यम् न [ ऋजवत् ] एक बोक्षोत्तर बुहर्श কাৰ্মন (আ° ৩)। भाष्याङ् न [भारत्वर] त्रतिस्ति, हमेराः (वर्ग क्षण्यम् देशो भन्यत्त ( पर् )। बण्जह ) व [बज्जवा] क्य प्रमार है, मञ्जाहा | विवरीन पीति व समक्षा ( पर् महा)। "साम पुं ["साम] वैपरीव्य, बसटा-पन (इह ४)। **अञ्जब्धि देवो अञ्**जल ( वह् )। जन्मा की [आहा] यात्रा, वादेत (ज. २६) यमि ६३३ मुत्रा १७)। बज्जाहरू वि [बज्जाविष्ट] वाव्यि, वित्तको व्यप्तेत दिना नया हो वहा प्रान्युखप् भावानारे मोग्गरपालिला **वन्त्रेशं धएछारट्टे धवाले**' (बंद २)।

₹**२**) । (प्राया) । (पर्)। \$2) t इति की बाद्या का काम (दी ३६)। इस्त

१४ १) । २ पराणीन, परवरा (स्प १० अञ्जाहस (घप) वि [अन्ताहस] वृत्तरे वे वैसा (पि २४%)। अण्याय न शिक्षानी १ स्त्राल धनानरायै मुक्ता (दे १ ७) । २ मिम्पद्र ज्ञान, पूरा कान (धन व २)। ३ वि. बाल-पीहर, मुर्ख (सन १ १)। अञ्जाय न दि दास विवाह सम्म में दश को अक्या बर को को बात दिया बाता है बह (दे१ ७)। खण्याणि वि ि स्क्रानिन् देशान चीत मुर्ख (सुध १ ७)। २ मिल्ला-कानी (र्गव १)। १ यज्ञान को ही सेककर माक्तेताला, प्रमान-नानी (सुम १: १२) । क्षण्याणिय वि [बाह्यानिक] १ प्रक्रानार्थ, यज्ञानबाद का बनुयायी (बाव ६) वन १ ६) १२ सूची सजानी (सूस १ १ २)। क्षण्याय वि [क्षजात] यविकित नहीं बना हुमा (पराह २१)। अण्यास प्रे [कारमास] त्यास का संसन (मा मण्जाय विदि∏ मात्रै योचा(से ४ ८)। क्षण्याच विशिवसम्बद्ध । न्यान वे जुर न्यान विकास के विश्वासीए प्रएकानमधी न से समे होद सर्वकारों (सम १ १३)। बण्याच्य (ती) क्ष्मर क्षो (मा २ )। अण्यारिषद्ध वि [अन्याहभा] दुवरे के भेड अञ्जारिस है [सम्बादरा] हुबरे के बैस (FT RYE) 1 **अञ**्गासय वि 📳 निस्तृत विश्वामा श्रूमा अध्यिकसाम देवो अध्ये । अञ्जिय वि [अञ्जिष] पुत्र, सर्वत (दुर्ग (१३ भार)। व्यक्तियाको [के] केवो धप्यति (देर अभ्यिया हो [सक्तिरा] एक निकास कैन

र्व [पुत्र] रूक विकास बैन दुनि (सी १६)।

अविबहु वि [अविषुत्त] १ व्यक्तिस्त । २

अभूण्याकी कि दिवेद की की।२ पर्छनी बहिन ननदे। १ क्रुग्न दिता की बहिन वि t xt) 1 छाण्य ) दि **(शह**] सवान, निर्दोश युक्ट भाष्युं अ } (पर् गारेद४)। अण्युष्य वि [अन्योग्य] परम्पर, बापस में (बरुष्ठ)। क्षण्या वि [अम्यून] परिपूर्ण (का प्र २२४)। अपग्रं सक अनु + इ] बनुभरण करना। मान्गोद्र(बिने २१२६)। मान्गेंदि (पि ४६६)। क्ष्यहः स्रिक्जिज्ञमाणः (धन्दीस्मान) (विपा 2 2) L छळोस नक [अनु+इप्] १ कोषना **ई**डना तक्कीकात करना । २ चाहना बोद्यमा । ३ प्रार्थमा करमा । सम्म्येमद (पि १६३)। वह अध्योसंत, अण्डेसञ्चत, खक्रोसमाय (महा कार्च) । भ्राकासण न [अन्यपंत्र] खोज दमारा, त्रह्मीमान (कर ६ दी) । चळोसणाच्ये जिम्बेपणा १ कोन व्य मीशाद (भाग)। २ प्राचेना (म्याचा)। ६ गृहस्य मे सै बाती निधाना प्रद्रूष (टा ६ ४)। अल्लोसय रि जिम्बेपडी परेपक (पर 1 (90 क्षण्णेमि रि [झ बेपिम्] चौत्र करनेवाना (মাৰা) ৷ क्षण्णसिय रि जिन्देपित विनदी धर्गी नान वी मई ही बह फेन्ग्लैसिया सम्बक्ती मुच्चे न वहिषि दिहाँ (सङ्गा) । भण्मोणम देशो अञ्जूष्य भर्गुरेन्त्रमण्ड-मद्धे शिष्यप्रयो मस्त्रियश्चितं तू (वैचा ६ म्बज १२)। अण्योसरिम वि वि प्रतिशन्त उन्नीयत ( R 7 10) 1 अल्युसम् [सुज्] १ काता क्षेत्रत गला। २ पापन करना । ३ धहुए। करना । धागुहर (दे ४ ११ । बद्) । बस्ता (बीत) । मराप् (दुवा) । **भण्ड् ग [अड्न**] दिनस्,डिन 'पूब्यानस्ट्र

रानदमर्वीमं (उरा) ।

अव्या 🤰 [आभव] कम-मन्य के कारण बनुगत व्याप्त भीसी पुहाए बसऐतिबट्टी अण्डय क्रियाचि (पर्छ ११४, धीप) । यविज्ञासको बन्धद सूत्तपन्त्रों (सूच १ %, अण्डा की जिल्ला हिमा व्यास (मा १३)। १ १२) । अण्डां अझ दि दि जान्त गुना हवा (दे १ खतिस्य न जितीधी १ तीम (चनुमिम सेम) २१) । का धभाव दोवें नी सनुपत्ति । २ वह नात अविद्या वि अविकित्ती १ ध्रीवन्तित मान-जिनमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका स्मिक 'बर्धनिकम्मन एरियं वसल्यहं पत्ता' मनाभ पता हो (पएछ १)। सिक्र भि (महा) । २ ठीव-ठीव नहीं देखा हवा वय िसिक्की मतीर्च कास में मी मुक्त हमा हो रिसर्वित (यव म) । १ विवि यत्तिकर्य बह बर्तिचरिका य मन्नेदी (नव १६)। विष्ठरियो रामहर्त्या (महा)। अविदि यसे समृद्धि । असब नि असटी चीटा किनारा 'बतरव अर्तागाङ् वि [अविगाङ] १ यवि-निविद । बाद्यों सी चैव मन्गों (बह १)। रांक्रवि धन्देत वहत 'द्यतीगार्डसीमी अवज्यास वि [अवुण्याक] कृष्का-पीत अक्कारिको (पदम = ११३)। नि स्पद्द (पण्यु १४) । अतुस्त्र वि असुद्धी प्रदूषम भगानारस अवश्व न [अवस्य] यसच्य मठ बैरच्यावधी (पएड १ १)। (उप ६ ६)। अतुस्तिय नि [अतुस्ति] द्यासापारण मंद्रि अवत्व दि [काञ्चरत] नहीं दय हथा निर्मीक तीय (मृति) । (क्या)। क्षत्त केवो अध्य = मालन् (सुर १,१७४ अतस्य वि [अदध्य] यमग्य, मूठा (धाषा)। सम १७ एवि)। इसम पू ["सम्म] स्वरूप अतर देखी असर (पन १ कम्म १) मिर्ग । भी प्राप्ति अलान्ति (कम्म २ २६)। अवध् पून [अवपस ] १ तपथर्म का समाव अस वि [आसी पीदित इ नित हैपन (बत्त २६)। २ वि वप-पहित (इह ४)। (पुर व १४६; जुमा)। अतब द [अस्तब] ध-प्रशंका निन्दा (बूगा)। अस वि [आस] १ गृहीत निवा हुमा (ग्राया भवसी वैदी भवसा (वएए १)। १ १)। २ स्नीहर्ट, अंडर किया हवा (ठा अवह वि [अवय] धटल, धनास्त्रविक २ ६)। १ दुंबानी मृनि (शृह १)। मुठा (शूच ११२: घाचा) । अनह वि [अवया] उम माध्य मही क्रच वि [भारत] १ तत्मादि-पुल-चेरम दुर्णा। 'बाबो बिय कायक उच्छाईति गरवाग २ यग-इ.प. वनितः वीतयमः । ३ प्रामितः किलीयो । वामी बिय मनह-रिज़्येक्डेल बनसँवि 'नालमारोलि प्रसारित बेल प्रसी द सी प्रने । विषयाई (यदार) । चपहोपाही हो न व न छा निनोहिए व्यक्षार वि [अनार] तरने को मधस्य (ग्रामा (वर १)। ४ मोल मुन्द्रि (सूप ११)। ₹ ₹ ₹Y) i इ. एकान्त हितकर (भग १४ ६)। ६ प्राप्त मिना हुवा (वव १ ) 'वत्यवरागुनेस्मे' अवारिम वि [अवारिम] क्रार देवी (नूध १ ३ २)। (उच १२)। भतितह यद [भवि + ह्यू ] १ पूर हूटना अच नि आप्र] दुन्न का नाग्र क्लोगता ट्रट माना। २ तम मन्यत से पुक्त होना। मुख का बन्पारक (भग १४ १)। यतिउद्गद्ध (सूच १ १४, ३) । अस्त म [अत्र] यहां इत्र स्थान में (नाट)। अतिबट्टनक[अति + कृत्] १ छानंबन सम दि [ समन्] पूरव जाननीय (मीन करना। २ व्यान्त होना। "निक्ट्र (नूच १ 18: 1 Ret) : १६ ६ दी। अन्तम देशो सवय = सयय (ब्राह २१)।

अश्वसम्म रि [भारमध्येम] १ विसने वर्म

बल्बन हो वह। २ पूँधाबाकर्मबीप (पिक £X) 1 कच्छ हि [बास्तार्थ] १ शल्यीय स्वकीय (वर्गर)। २ पुंस्वार्व 'छावामनियशस्य धत्तद्व सामस्यम्बद्धं (बत्त ८) । अरुट्यि नि (आस्मानिक) १ व्यत्मीन । २ को प्रश्ने शिए किया गया हो 'जनस्वार्ड चोमख माम्लाग् यत्तद्वि स्थिमहेग्यक्वी

(बत्त १२)। े **रेको** अप्य = बारमन् (मृ**न्क** असम अन्तजम । २१६)। केरक वि [धारनीय] निश्रीस्वनीय (नाट पि ४१) ३

अञ्चगत्र रू (शी) वि [आर्स्माय] स्वकीय भारतम्ह । भागां, निमंदा (पि २७० शह)। अर्चापञ्चिम दि [आरमीय] स्वरीय (हा 1 (9 #

भचणीम (शी) क्षप्र देशो (स्वय्न २७)। **असमाम केरो आवत्त = या + हुत् )** शत्तव पू (आसाज] पूत्र तरुरा। या श्री श्वा द्वि, सहशी (दिशा १ १) ।

अत्तरम् वि [अत्तरम] बले शतक, प्रत्य (নান) ঃ

व्यक्ताओं [कि] १ माता, मी (वे१ ४१ भादक)। र तातू (दे १ ४१ या ६३७-देश ६) १६ दुश। ४ स्ट्री (६१५१) । मचा देनो बचा (प्रति १)।

श्रताम देवो अत्य = ग्रावन्। (नि ४ १)। **अ**साम नि [अदाम] १ शका-पहित, स्तर-মনিত (বত্র १ १)। ব্রু কন্দ বং লাঠী रतरर पर्सराता बुद्धापर। ६ की-द्वी काहे पर्नर नुभाविये शलेशना बारी (बृह १)। भारत पू [अप्रि] इत नाम का एक ऋषि (बग्रह) ।

श्राति भी [शर्ति] पीश दुख (दूमा नूता १ १)। इर रि [हर] पीश-गठर दुःख **पा नारा परनेरामा (धनि १ ३)।** 

अस्टिट्री सी दि देता गमाचार बहुवाने-बारी भी (वर्)। अचौदर दर [भारती + हु] यमे वर्णन करता, वरा करता । शतीकरेड; वर्ड अर्थी ৰংগ (নিশু ४)।

असीकरण न [कार्त्सास्त्रण] सरन वरा बन्स (निषु ४) ।

धनुवारिस १ र्व [आरमोरकर्य] धाममान अनुब्रोस वर्ष कम्हा अनुबरितो धने-यन्ते अक्रतरोर्ण (सूध १ १३ सम ७१)। अनुकोसिय वि [आत्मोत्कर्पिक] वींबत प्रधिमानी (धीप)।

**श्रक्तेय पुं≅्यात्रेय**े १ वर्षि ऋषि कापूर (पि १ व ६)। २ एक वैन भूगि (निधे २५६ )।

भाषीय (अवस् ) १६८मे इत हेनू हैं (यबः)। २ व्या से (प्रामा)।

**धरथ वेलो काट्र≔धर्थ (भूगा ७**ग ७२≈३ बब्ध दी जी है। प्रांतु देश शतक)" अरोह मले पहिए विकासी' (ग्रेय ७)' 'सम्बद्धारी मुख्यार्थ (विदे १ ६६ १२४६)। क्रोपि की विक्रिति क्लोपार्डन का क्याब, शाय बाग रक्त का वर्ष-गीति (ठा ३ १)। जय पुंिनयी रुम्य को श्रोप धर्ष को ही मुख्य वस्तु माननेवाना पत्र (बाङ्)। सस्य व शिक्षा पर्व राज चंपति-राज (शाया १ १)। बद्द पुरिपति] १ वनी (२ कुमेर (वन +) । बाय दू ["बाद्"] १ पुजनर्तुन : २ चोय-निकास । १ इस्त-वाक्य स्टब्स । ४ बोध-नाचक शम्ब (विशे)। वि वि [ विल् ] मर्थे वा भागरार (पिक १ व्यः) । "सिद्धा पि "सिद्धा १ प्रमुख धनवल्या (थ ७) । २ 🖞 पैरवत क्षेत्र 🕏 एक गावी जिनवेन (दिस्त)। । क्रिय त [ांबीक] बन के लिए बस्तर बोलना (पराह १ २) । इस्रोयण ल [क्रोबन] नवर्ष का शामस्य क्रम (ग्राप् १)। स्त्रीयण न [ीस्रोकत] नगर्नका **ਰਿਪੈਜ਼**ਦ

'मत्नामीयल-तरमा इयरकईलं भगति बद्धीयो । क्रमण्येय निरास्कर्मेति द्वितरे कालाले॥" (नदश) ।

अस्य पुं [अस्त] १ वहां मूर्व शस्त्र होता है बहु पर्वेत (से १ १))। १ मेन पर्वेत (सम ६१) । ३ वि. धविधनान (सामा १ १९) । "गिरि र् ["गिरि] धारवांचन (पुर ३ रक्ष्ण पत्रम १६ ४२)। सोधार् [ शेस] कावायम (तुर १ १२१)। । वस र्ष [ीषध] धन्त्र-निर (धन्तु) ।

बार्ख न [बाक्ष] हथियार, बायून (परन न # @ \$Y 48):

बारब शक [ बार्चय ] गांपना पाचना करना, प्रार्थना करता विश्वति करता । घरनपर् (निष् ४) I

शस्य शक [स्वा] बैठना । सत्वद्र (श्राय **७१**) । कारका विको अध्य = धत्र (सम्म मि २८%) भारत ( १११ ) ।

शर्**व डिड** वि [अस्थिण्ड**ड**] राषुपाँ के प्रते के लिए बयोग्य स्थान, शुर बन्तुओं है स्वात स्थान (धोष १६)।

कारबंध बड़ [ कारतं यत् ] पस्त होता हमा (वका १२)।

अत्विकिरिया जी [अवैक्रिया] कर्नु का व्यापाए, पदार्थ से होनेजाबी क्या (वर्गर्ड MEE) I कारपञ्च न [दे] १ यकार्य सकरमार्थ है-समय (कर १६ ) से ११ २४ मा ६। व्यक्ति 'वलकार्याकामातकार्यक्रियां प्रदेश वार्था (ग १८६) । २ वि प्रक्रिय (क्या ६) । ६ किर्दि धनवरत हमेता (वर्ड) । **अत्याग्य वि दि** १ शम्ब-वर्ती वीच कार 'सक्य कल्पने ना बोइन्छोनुं क्छं प्टू (बीव १४)। २ धपाच चंगीर। ३ स. सम्बद्ध धायाम । ४ स्वान, वयह (दे १ ५४) । करचण न [कार्यम] प्राचना धावना (सर भरव दी) ।

जल्बजिकर पुन [अर्थनिपूर] देवी अच्छ चिंदर (बग्र ६६)।

अस्विकर्श पुन [धार्यनपुराज्ञ] देखे अच्छिपिवरीम (प्रणु ११)।

कारपरिय वि [कार्वाकिंच् ] वन वी दण्की-नक्सा (क्य १६१) ।

अत्यम चक [अत्यम् + इ] धारा होगा धार<sup>म</sup> होता। यस्पनद (पि ११)। श्रष्ट अस्पर्मी (पडमं च ९, ११) ।

अस्पराय न [अस्तरायन] प्रस्त होना प्रारम् होता (श्रोष ६ ७- के द हर, वा २०४)। अरबवाविय रि [अभ्यवापित] प्रस्त गर बाबा हुवा (बम्मतः १६१) । अल्बनिय वि [अस्तमित्र] । यस्त 💵

हुद एका धहरय हुमा (धोव ४ ७ महा: स्पा १११) । २ हीन, हानि-प्राप्त (ठा ४ ६) । शस्प्रयारिजा भी [वे] सकी वयस्वा (६ १ 25) I **शस्पर एक [आ+स्तू] विधाना रा**प्या करना पद्मारना । घतपरह (अव) । सेक्ट अस्परिक म (महा)। **ब्रास्यरण न [जास्वरण] १ विद्यी**ना *श*म्या (ने १४ ५)। २ विद्याना सध्या करना (विसे २३२२)। अस्परय वि [आस्तरक] १ याच्याका करने-बाला (राय)। २ प्रै निर्दाल के ऊपर का वस्र (सव ११ ११ वप्प)। भत्यस्य वि [अस्तरजरक] निर्मेत सुद्ध (भग 11 (11 15 अत्थवज देखो अत्थमण (मार्च) । अस्थिति ए अर्थिति वा का कार्वा दिवसे क्लमी विवि (पुन्न १ ६४)। स्तवा देवो अट्टा = प्रान्ता । बर्श्या १ सके [ब्लस्ताय्] बस्त होना, अत्याञ र दूव माना भहरत होना । अल्लाह, मत्बार् (परम ७३ १२) । मन्दार्यति (स ७ २६)। वह अस्यार्ज्य (ते 🗢 ६६) । अत्याभ वि [अस्तमित] यस्त हमा, ह्वा हम्छ 'तानचिम विवसमये मन्त्रामी विगयकि-रहासनामी (पनम १ ६६) हे ६,१२)। अरधात्रमा की दि] योद्यी-मएक्प (स १६) । अस्याण न [आस्मान] एक एक-स्थान (मूर१ = )। **भरयाणिय वि [ अस्यानिम् ] वैर-स्वान** में समा ह्या 'चन्दार्रिययसपर्वाई' (स्रीदे) । अखाजी की [आरबानी] समान्यान (दुमा)। अस्पानीम वि [कारधानीय] समान्यक्री (इप्र ७४) । भरपाम वि [अस्यामन्] वस-र्राह्न निर्वत (गामा ११)। धरबार पुँ [ब्रे] धहायता साहाय्य (१११ राज्य)। अस्थारिय र् [वें] गीकर, कर्मकार्ड (वव ६)। क्तभाषमाह केवी अत्युमाह (पर्ल ४) । अरवादति भी [अर्वोपत्ति] बनुक्त धर्व को धटकत से समस्त्रा युक्त प्रकार का समुगल-

बानः वैश्व 'बंगवत्त पुर है और विन में नहीं बाता है इस बारव से दिवस्त रात में बाता हैं ऐसा बनुष्ट धर्म का बाल (का ११८)। अत्याह वि जिल्लाम र प्रयाह वाह-रहित गंगीर (शाया १ १४)। २ मासिका के उपर का भागभी जिसमें भूव सके भतमा सहरा असाराम (इह ४)। ३ पूँ घरीत भौगीती में भारत में समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्पकर देश (पश्च ६) । करवाह वि दि देवो अत्याय वि १ १४. मिन)। अस्थि वि अधिन् दियाचक म गनेवाका (सूर १:१)। २ घनी चनवानाः (पैचा)। ३ मालिक स्वामी (विसे)। ४ गर**व**, वाहने-वास्ता' 'बलुझो बलुन्बियाएं कामन्वीलं क सम्बद्धामकरो । स्त्यापनागर्धयमहेळ जिए। देखियो बम्मो ॥ (महा)। अरिय न [अस्य] हार हृद्दी (महा)। अस्थि स [अस्ति] १ सस्य-मूचक्/मध्यय 🐌 'ऋचेक्ट्रमा श्रृंडा मनित्ता बगाराब्द्रो बत्तुगादिन पम्मारवा' (धीप) 'प्रत्नि एं स्ति । विभारताई' (बीब ३) । २ प्रकेट, समयकः 'बसारि द्यारच-कार्या (ठा ४ ४) । अवस्तव्य वि विश्वय क्तम्य विश्वमञ्जीका पांचना प्रज्ञा स्वक्रीय इच्य मार्दि भी मीला से विद्यमान और एक ही साथ नद्दने को अराज्य पदार्थ। 'सम्बद्धे साद्धो देशो देशो व समयहा अन्छ : र्व सन्वित्रवराष्ट्रं च होइ दक्षित्र विराज्यवर्गा (सम्म १६)। काय पूं ['काय] प्रदेशों का-सम्मन का सपूर (सम १)। धारधवात्तकम वि ["मान्स्यबक्तरूप] सामन्ती का शासकी भक्त स्वनीय प्रथ्यादि की संस्था से विद्यमान, परनीय हम्यादि की अपेक्षा से धविद्यमान धीर एक ही समय में दोनों बनों से बहने की मरापय पदार्थ 'सरमावास्त्रमाने देनो देगो स समग्रहा अस्प : र्वं सत्तिगुष्पवत्तव्ययं च ववित्रं विस्रप्यवता (तम ४)। त्त न ["त्व] सन्य विद्यमानता, ह्यानी

(बुर २ १४२) : साभी वितासन हवाती (सर ६ १७४)। खिनय पू विश्व नय | बन्धामिक सम (विमे ११७) । नहिन वि ["नास्ति] धतमङ्गी का तीनरा मङ्ग--प्रकार, स्वहस्मादि की सपेत्रा से विश्वमान बीर परकीय हम्यादि की बरेगा स महिच माम बस्तुः भाह बेसो सन्माने बेसोसन्मानपन्नने निधयो । र्तं दविषयरिवनरिय सं भाग्रसविशेषियं बन्हां (सम्म ३७)। नरिवय्पकाय न ["नास्तिप्रधाद] बारहरू बैन बङ्ग-बन्द का एक भाग, जीवा पूर्व (सम ₹\$) ( व्यरिवञ्च न [आस्तिक्य] धास्तिकता धान्मा-परलोक शाहि वर विभ्रास (मा ; पूज्क 1 ( 33 करियय देशो अस्यि = ग्रॅबन् (नहा' धीप) । श्रायिय वि [अर्थिक] बती पण्डात् (ह २ **₹**₹**€**) ( अस्थिय न [कस्थिक] १ इड्डी इतकः। २ पू बुश-विशेष । ३ श वह बीजवाला फल बिशेष (पएए १)। अस्पिय वि [आस्तिक] बाल्या परलोक बादि की ह्यांनी पर पढ़ा रखनेवामा (वर्गे २)। अरिवर केवी धाबिर (पंचा १२)। अरबीकर सक [सर्वी + कृ] प्राचैना नरना थाचना करता । यन्त्रीकरेड (तिन् ४) । बहु-अस्थीकरंत (निषु ४)। अत्भीकृत्य न [बार्यीकृत्य] प्राचेना वाचना (लिब्रु४) । बरधु सक [आ+स्टु] विद्याना राज्या करना । कर्ग. सन्तुष्पदः काइ. करशुरुवंत (तिम २१२१) । अरगुत्र वि [आस्तृत] विद्यामा हुवा (नाय-विमे ११२१)। अरधुरगद्द पुं [सथायपद्द] दन्त्रिय सीर मन हास होने रामा शान-विदेश निवित्रन्तर शान (मम ११ हा २ १)। अत्युमाहण न [क्षयायग्रहण] कर का निवय (मग ११ ११)। अस्थुड नि [द] सबू, घोटा (दे १ १)।

भारण न [खद्न] मीजन (रह १) ।

िभृति वृतीय इत (पर्सार ३)।

व्यवस केरो अहण्य (सिरि ६१ )।

मापेड रेवो बाह्य (छ २. ३)।

अविण्य देशो अदत्त (छ १)।

१)। २ महिल्क (मीव ३ २)।

मिष्स्य देशो आहित्स (सग ६

शरिम स्वी अवस्य (सम १)।

(\$\$\$) i

1 () 1

જો !

बाद (साबा १ १)।

धभाव (पाप्र)।

अवस्य वि [अवस्य] नहीं विया हुया (पएए)

१ १)। दार दि [ दार] बोर (दावा)।

हारि वि विशिवा ने चार (तथ १ ४.१)।

|वाज न विदान | चोरी (धन १ ) ।

(बाजवेरमण न शिवानविस्मण ] चौरी है

खन्यम वि छिन्द्रभी सन्तर बहुत (वे १)।

अपन वि [अप्त] निर्देश, निरुद्ध (विषु २)।

आविष्य वि [अद्यो १ वर्ष-प्रीत्त नम्न (ब्रह

व्यविद्वि औ [अकृति] धवीराई, वीरव का

अदीज वि जिदीनी शैनता-धीतः। सत्त

वृं किन्ने शिक्तापुर का एक चना (काना

अदुव [के] १ वा<del>ननर्</del>गनुषक सम्बयः सस

अद्वय **वि**} १ सम्बन्ध का (बूच १,४

र रेश वत ८, १२। रतपूर, १४)। र

सर्विकारान्तर का नुभक्त (तुस १ ४ क

भ<u>द</u>त्तरं य [दे] शा<del>क्तर्व गूचक शब्दा</del>, शब

सद्य न [सद्द त] म-शीप्र, बीरे-बीरे (तप

(भाषा)। र इससे (भूषा १ २, २)।

भारपूरिय वि दि आस्त्रते विकास हुमा (स २३ छ दे १ ११६) । शरधुवद्र न [दे] महातक विचाद कृत का

क्षत्र (देश २३) । करमेक्स र हि] बारस्मिक वर्षिनेत्रत (वे 22. xe) 1 बरह्यासम्बन्धाः क्यो खल्लुगाहः (स्य ११)।

करबोमाइण रेवा अञ्चयादयः (धव ११ **22)** (55 कानोडिय विदिधिक्ट, बीवा हमा करनोमय वि शिलोमकी 'कर' के शाहि

निर्श्वक राज्यों के प्रयोग से महार्गत (सूत्र) (83 t) t करबोबमाइ देवो छत्युगाइ (१ए७ ११)। खब्क न दि । प्रस्तद्व क्लबस्ट क्रक स्माद (पड्)। २ वि वस्तिवामा फैसभे-नाना (भूमा) ।

मयस्य रू [अवर्षय] बीवा वेद-ठाल (इम्प सावा १ १)। अपनिर वि जिरिक्दी १ चंका चला (इसा)। १ मिलम जिनपर (धुमा)। ३ भारक रिप्रीक्त (बीव) । ४ निर्वेच (वब २) । ५ मनपूर्वी से तही बैठा हुना तही जमा हुना (बाम्यान)ः प्रतिपत्त पुष्पपश्चित्तः वत्तका व क्क निरीकारों (जैवा ११)। बाम न नामम् नाम-कर्व का एक वेद (सम ६७)। अक् बरु [सद्] क्षाप्ट, बीवन करना ।

मक्द स्तर (पश्)। भर्तसम वेडी भईसण (वंश्रह)। मर्गसंत्र र्ष [वे] चोद गङ्ग (वे १ २६) पद्)। मर्रेसिना से [घर्रराष्ट्र] एक तकार शे मौद्री बीब (क्र्ल १७) : **अ१**क्टुवि [अदब्र] १ मही देखा ह्या । २

मधर्वेड (तूम १ २ ३) । बार्बस्यु वि [अरह्य] शक्युरः बहुतन (तूपरे २, ३)।

४ ४३ भाषा)। व्यवीक्षिर र्ड (दुन्म) । जर वि [चार्रे] १ योका औरगहुधा, शक-मंत्रुनि [बाटरव] १ नहीं केवनेनावा, दिन (द्वा)। २ द्वीदन क्याना एक

७३) वैषण न **वि**रनन} शेर्वका**क** मिएकमा (सुधा२ २) । अनुष }म पिरीयायवतासीरः क्रिकेन अबुवा ) पार्लमुबार, तने धरुव बावरे (बस अरोडि ) नि [अरोडिन] रिवर, निक्य

वि श्रेक्-एडिए ब्रह्म वर्षेग्ड (साठ) । **बहरूज रि [बार्डीय] श्वाह नुपार-बम्मणी।** 

चुपा

ब्रध्ययन (सुध २, ६) । (कुद १ १६३ मध्य)। (पंचा १)।

वैभिः बंद्यः सददेत्ता (बना) ।

(विदार ६)।

**ब्रह्मिय वि [ब्राह्**त] स्वा ह्या, स्वास्त्रि

२ इत ताम का 'सुक्कृताक्न' सूत्र ना रहे जर्रसञ व [जर्रोत] १ वर्रन का निषेत्र नहीं देखना (सुर ७ २४)। २ वि. परीव विचला बर्जन न हो। 'एक्सपर्याचन हाहिति मन्क सन्देत्या इतिई' (पुरा ६१७)≀३ नहीं केवनेपाला, सन्ता । ४ 'बीएकी' वा समय निवा बाला (यन्द्र १) पद १ ७)। शिमून) ीह्य वि [भूत] को सहस्व हुमा है कारण १ वि [के] सामुख ब्लाह्स (के र अरंक्या दिशांबह रा शिचू र ी। अइस रेलो अइम्म (तृब १ १४)। अइब वि ज्यादवी भना प्रया (बाद ६)। कार्थ्य न [कार्यय] यत्रातु, बल्दु ना यनान अदह तक [का+द्रह] क्यातवा पाने-वैन वरैदानो भूव गरम करना। आहेर मह

सुरथा औ ["सुरवा] कन्द-निरोग नागर आह कुंब [के] १ वरिहास । २ वर्छन (सीव जइ सक [अङ्] मारश फैटना (वय t.)।

आ दडकान (अञ्चेत) १ मेद का संचार । **९** 

र्ष भिरिष्टी कमल कौसा (बाबय)। 0 10 कद दू [बर्ब] ग्राफारा (पन १ 1 (ex

शोवा (ब २ ) । [सस्यात ["।सस्य] १ हरा बामला । २ पीतु-बुद्ध वी वसी (वर्ग २)। १ शत कुछ की कती (पर ४)। सिंह काइ पुॅं (अवर्] १ नेव वर्षवारित (**३** ८ **७१) । २ वर्ष संवरत् संवद् (तुर १३** 

शाबा । १ एक प्रशिव राजकुमार और गींबे वे

वैत्युति । ४ वि साहराना के पैठन । ३

नगर-विशेष (सम २ ६)। इमार प्र

['क्रमार] एक राजक्रमार धीर वाद में कैन सुनिः शहकुमाचे रङ्ग्यहारी मं (पीर)।

स्रद्वा की [आद्रा] १ नजक निरोध (सम २)। २ स्वक निरोध (सम)। स्वद्वा श्रुं [री] १ सारणे वर्गेश (११ १४) परण १२, निष्कु १३)। परित्र श्रुं [प्रमा] नेवा-निरोध विस्त्रो वर्गेश में देशा का साम मन होता है (ठा१)। विस्त्रा की [विद्या]

मन होता है (ठा १)। बिका की [बिधा] विकिता का एक प्रकार, निषये बीमार को वर्षण में प्रतिविधित कराने से वह नीरोग होता है (वन १)।

काहाइअ वि [के] मात्रर्शकाचा मान्नर्शके पवित्र (इह १)।

सहाग् [दे] केवो कहाल (सन १२६)। कहि पुं[लिद्रि] पहार पर्नत (नतः)। स्वद्रिद्र वि [सहस्र] १ नहीं केवा हसा (पुर

११७२)। २ इट्टॅंग का समित्रय (सम्म ६९)। स्वद्भिय कि [स्वर्ग्नित] मात्र किया हम्म

जिल्लासा हुम्म (बिक २६)। स्निहिस वि [सर्वित] पीटा हुमा पीमित

(तव १)। व्यक्तिस्य विविद्ययी देवने के सरोप्य या सरावय (सुर ६,१२ सुरा ८४ मा २७)। व्यक्तिस्थान ) वक्त (स्वत्रसमान्यी नवी

अहिस्संव } यह. [अहरयमान] वर्षे बाहिस्समाण | रिवास हुमा (सुण १३४ ४२७)।

आहीज वि [आहीज] क्षोतं को संग्रात सञ्चल निर्मीक (मरहर १)।

सहीण केवी सदीय (धोष ११७)। सहस्राम्य वि हि पूर्व, वटा हुवा (वड् )।

बाहेस वि [लाइस्य] केवने के सातव्य (स १७ )। काहेसीकारिणी की [लाइस्यीकारिणी] बारय

कारेसीकारियों की [अस्ट्रपीकारियों] महरव बनलेनाकी निचा (सुपा ४६४) । कारेस्सीकारण नि [बास्तपीकाय] १ महरव

करना । २ घरस्य करनेवाली विधा "किपुण विज्ञासिकस्य सहैस्तीकरणस्वस्त्री वार्वि (सुपा ४८६) । सहोदि वि [सहोदिन्] होत्र-सहित स्व

कडोडि वि [अड्रोडिन्] डोश्र-पॉहत ड वॉक्ट (वर्गंदे) ।

भद्र पुन [भर्य] १ माथा (हुना) । २ वएड मंख (रि ४ २) । करिस दु ["कर्य] परि-माए-स्टिन, फन का घळनी साम (संखु)।

"कुरुष, कुरुष पू ["कुरुष, कुरुष] एक प्रकार का चान्य का परिमाशा (गाय)। क्खेल न "लेज] एक बहोरान में चला के साथ दोग प्राप्त करनेवाचा नसव (चंद १) न्याहाकी किल्वाीएक प्रकार का बूता (बह १)। घडव पुं विटक] धावा परिमालुवाना वदा खोटा वहा (ज्या)। चंद्र पं चिन्द्री १ मामा चन्द्र (गा १७१)। २ यल-हरत गला पक्त कर बाहर करना (स्प ७२ व टी)। वे न एक हिम्बार (उप पू १११) । ४ धर्ष चन्द्र के शाकारवासे शोपान (शाया ११)। १ एक वया का बारा एसे तुह तिक्डेरा धीर व्हिशमि सद बॅरेल्' (पुर ८ १७) । बस्त्वास्त्र श िपञ्चसास्त्री वरि-विशेष (हा ७)। पश्चि र्ष [ चकिन् ] चक्रवर्ती एवा से सर्व विमृति काका राजा वामुख्य (कम्म १ १२)। च्छड़ बहु वि विष्ठ] यह वीच विष ४३ सम १)। इस वि शिष्टमी धाते वाष (ठा श)। जाराय न [ माराचा चीवा संक्रम स्टिए के हाड़ों भी रचना-क्रिय (बीव १)। पारीसर प्रिनारीचरी रिज महादेव (गण्य) । तह्य वि वितीय काई (वजन ४० ६१)। तरस वि श्रियो बरा] शाने नाच्ह (मग) । तैयस वि जिप क्यारा] शाहे वादन (सम १३४)। द्वा वि ["चि"] चीचा ग्राम पीचा (शह ६) । नषम कि "निवम विशेषाठ (पि ४३)। शास्त्रविको गासम (कम्म १ ३०)। पंचास वि "पद्धामी सक्षेत्र चार (सन १ २)। पश्चित्रं क विषये । पालन-विशेष (ठा ६, १)। पश्चर प्रं भिवरों क्योंतिय शास्त्र प्रसिद्ध एक कृयोग (क्या १=)। "वष्यर पु ["वर्णर] वेश-विशेष (पद्मम ९७ ५)। सामद्या आहि स्पी िमाराभी ] प्राचीन बैन सम्बद्धिय की प्राकृत भाषा जिसमें भाषणी भाषा के भी कोई व नियम का मञ्जूषा किया गया है 'पीएएए-मञ्जानक्षमासानियमं इषद सुर्ती (हे ४ २८७-पि १६ सम ६ फरम २३४)। सास 🗗 ["मास] पदा पनरहासिन (दे १)। मासिय नि "मासिक" पालिक पक्त-सम्बन्धी(महा)। येषु रेखी प्रीष्ट् (स्थ ७१० दी)। "रक्तिय नि ("राज्यिक) राज्य का बाबा द्विस्तेदार, धर्व धारम का मानिक (विपा १ ६) । "रत्त पू ["रात्र] मध्य राणि का समय मिशीय (मा २३१)। "वैयाखी स्त्री ["वैताछी ] विया-विशेष (भूम २, १) । संदासिया ली "सांस्रहियमा एक राज-कम्या का नाम (मान ४)। सम म विसा एक पूत्त अवन्य-विश्वेष (ठा ७)। हार प्रिहार] १ नवस्त हार (यस बीप)। २ इस नाम का एक दीप। ३ समूर विरेप (बीन १) । हारमह [<sup>®</sup>रारमङ्ग] सर्वेहार-द्वीप का समिद्वाता वेश (शीव वे)। हारमहासद पू [हारमहासद ] पूर्वोक ही वर्ष (बीच १) । द्वारमहाबर प्रे दिहर सङ्खावर] बर्वहार समुद्र का एक बर्विद्धायक देव (भीव ३) । हारवर प्र हिारवर ी १ डीप-विशेष । २ समुज्ञ-विशेष । १ उनका व्यविद्यापक देव (बीव ६)। हारवर्माह पू **डिएलरमञ्जी मन्द्रारवर द्वीर का एक** वविष्ठातः के (नीव ६)। हारवरमञ्जाबर प्र [ "हारवरमहावर] पर्यहास्त्रर संद्र्य का एक प्रकारता देव (बीव ३)। 'हारोसास व **ेंदारावमास**ी १ द्वीप-विशेष । २ समूर विरोप (बीव ६) । हारोमासभइ पूँ िहारा षमासमञ्जी सर्वेहायनमास नामक हीए का एक व्यविद्वाता देव (बीव ३)। हारोभास महासद पु हिरायवसासमहासद्र । पूर्वीक ही धर्य (श्रीष १)। हारोमासमहावर प्र [ हाराचभासमहाबर] भवेहाराचभास नामक समुद्रका एक मनिद्वाता देव (भीव ३)। हारोमासवर द्रं ['हारावभासवर] स्वी पुर्वोक्त धर्व (नीव १) । इस प्रीक्टी एक प्रकार कर परिमाल आहरू का भावा भाग (ठा३ १)।

प्रकार कर भागत अविक का साथा साथ (ठा १ १) । व्यद्ध पूं जिल्लामी मार्ग, एसता (महा साथा) । व्यद्धेत पूं चि है पर्यंत्य स्वत्र माग (११ १८० वे १, १२ पामा) म्यान्स्वतिख्यप्रदेशी (विक ११) २ पूंच कतिया, कर्माक (छ ११ २२) । व्यद्धकाण न चि है श्रायोक्ता करना एवं विका (११ १४) । २ वर्गमा करना (१

2 4x)1

```
भद्रक्तिअन्दि रिचंडाकरणा इरायः !
   करना संदेव करना (दे १ ३४)।
 মত দিলস বি [ধর্মাতিক] বিভাগ থাক
   नला (महानि ३)।
 सद्धांपा) को दि धर्मबङ्खा एक प्रकार
 अद्वर्जभी का चूता मोचक नामक चूता.
  विशे प्रवराती में भीवड़ी कहते हैं (देह
  11 7 XI 4 194) 1
 भववा थी हि भवावा] दिन क्वा राजि
  काएक साव (सच १ टी)।
 अञ्चपेदा भी [अभेपेटा] सम्दर्क के वर्ष माद
  कं भाकरवानी पहलीक में जिल्हाटन (क्ल
  1 (33 #
 जदर ई [अध्वर] क्षत्र बाय (पाछ)।
भद्धर वि [दे] प्रण्डम प्रवः 'तम्बः एकस्थ
  विद्वियमञ्जूष्ट्रीयो वेद पिक्कामि तथी राजा
  विभिद्वितवी (समात १६१)।
अंद्रिये आरंत दि] १ मएकतः त्रुपाः भा
 ⊈ण मजनियार (दे१ ४३) ३ २ मेडल
 कोटा मंत्रन (दे १ ४३)।
मदाशी (देशदा] १ दान समय क्छ,
 (स्र २,१ नद ४२)। २ चकित (सन १६
 ११)। १ सम्बन्धारिक-विदेश (विसे)। ४
 ब. तरबतः बस्तुतः । इ साबाद् प्रदेशक
 (रिंग)। ६ दिवतः । ७ दानि (सत्त १ टी)।
 रास र् [ र् कास ] सूर्व प्राप्ति की किया (परि
 जनल) है व्यक्त होनेवाना समय भूरकिरिया-
 विनिद्धो योच्छिक्किकानु निरनेस्को । शबा-
 गानो भाग्ताई (विमे)। "क्रेस दं ["केंद्र]
 त्तमम का एक कोटा परिमादा की माकतिका
परिभित्त कल (पैच)। प्रवस्त्राण न
["शरबाकधान] धमुक बमन के तिए कोई
चेत वा निवम करना (धाष्ट्र ६)। सीसय
न ["मिजक] एक बनार नौ करम-मुगा कावा
(झ १)। मीसिमा 🛍 ["मिमिता] क्लो
पूर्वीक धर्म (पहल ११) । समय वै
["समय] दर्श-नूरन कात (प्रस्त ४)।
দত্তাল 🛊 [অথৰণ্] নাৰ, ককো (আন্তঃ 🏌
१४ वर १ २१७)। सीसव व शिर्वकी
नार्वकासन सध्यो साहिता सन्त सान
(वर ४: वृद् १) :
```

```
क्षद्राण पूं [क्षम्बर्ग] मार्ग सस्ता 'हवह
                                            व्यमई (ती) [ध्यमिम्] १ हो । २ मीर
     क्वामें नरस्स पदार्थ (संब ४, १३)।
                                             क्या । ३ वरूर, धकरम (क्रम्) ।
      सीसय न िशीर्षकी बहु पर संपूर्ण सार्व
                                            अर्थय शिवस् तिचे (पि १४०)।
     के नोन धारी काने के लिए एकब हो वह
                                            अबट्ट वि [अब्रुष्टे] य-धैठ (कुमा) ।
     मार्ग-स्वान (धव ४)।
                                            अभूण वि अभून निर्मंत परीव
    जबाणिय वि जिमिनको पविक सुसाफिर
                                             'रमह बिहुबी विधेसं विद्रमेर्स बीमवित्वसे
     ( TE Y) :
    अद्वासिय वि [अव्यासित] १ व्यविहित,
                                                                          मार ।
                                             सन्बद्द शरीरमञ्जो होई बीए जिस सम्बो।।
     बामित (सुर ७ २१४ का २६४ टी)। २
     याक्द (स ६३)।
                                                                     (पचडा सम्र)
                                           अपनि नि [ अधनिम् ] वन-रहित निर्वन
   ভাৱি ইনা হৰিত
                                            (बा १४)।
    'बएए। बहिरंबरमा हे बिम्न बीमीह
                                           अवज्य वि [कार्यस्य] प्रकृतन्तं, निन्तः (१वर
                           मारामे बोए।
                                            (11
    य गुजीत क्षमस्मार्थ, प्रसारा प्रसि न
                                          अधम देवी अहम (तत १) i
                    केल्बीर्ट (गा ७ ४)।
                                          अवसञ्ज ) वि [कावसर्ज] करवदार, हेक्सर
  अदिइ सी [असृति] वीरव का धराव
                                          अधमक } (वर्गीव १४६ (१११)।
    मबीरन (पनग ११ ६६)।
                                          अधनम र् [अधर्म] १ पल-कार्य निर्वाह कर्य,
  अवृष्ट्रम वि [मर्वोदित] बोड़ा नहा ह्या
                                           धनीति 'सबस्मेल बेब बिक्ति बप्पेमाले बिह
    (P (Ex)
                                           च्हें (खाबा १ १व)। २ एक स्वतन्त्र सीर
  अद्भुग्याड वि [अवींद्याट] यावा कुवा
                                           चीन्द्र-व्यापी समीव वस्तु, को और वनैष्क् को
    'सकोग्नाडा वराना' (पटम १० १ ७)।
                                          स्चिति करने में सहाबता पहुंचाती है (हम २,
  अव्युट्ट वि [अधवतुर्ध] सम्रे तीन (सप
                                          नव ४) । ३ वि वर्ग-रहित पानी (विदा (
   t () fie sea) :
                                          १)। "केड र्र ["केस] पापित (जावा १
  मद्भुत्त वि [अर्थोक] बोहा कहा ह्या
                                          १८)। क्ला≴ वि <mark>कि</mark>माति] प्रतिक पानी
   (वस १)।
                                          (विपा १ १)। वस्ताइ वि विस्थायिक
 भव्युव वि [अग्नुत] १ वंचन श्रास्तिर
                                          परा का कपदेश केनेनल्या (सप १ ७)।
   विलबर (स १६८ वंचा १६) पदम २६,
                                          रिषकाय पूर्व [गरितकाय] स्रवस्म का
   । )। २ यनिका(भाषा)।
                                         इन्स धर्व केवी (सञ्ज)। बुद्धि वि ["बुद्धि]
 मद्वेजद्ववि [लर्भाष] १ द्विवा-मृष्य थे।
                                         वाची पारिष्ठ (क्य ७२ दी)।
  टुन्द्रेशना खरिक्त । २ किनि धावा-प्राचा
                                        अवस्मिह विकिथिमिष्ठी १ वर्गनी स्थि
  केते हो.
                                         करनेवाचा (नव १२ २)। २ महा-पानी
  'बरोपक्युडिया सहेपहण्डतस्यास्मिनेहा।
                                         पाषित्र (सामा १ १)।
 वनमञ्जयम्बितना सत्रोगतविक्षा वर्तति
                                       अवस्थितः वि [अवसीषः] सवसीप्रियः नास-
              महिक्या । (स ६ ६६) ।
                                         मिय (सन १२ २)।
भड़ोर ) देवो अव्होरुग (दे १ ४१) बोच
                                       अवस्मिट्ट वि [अवसीर] राविशे का प्याप
वहोस्म ( १७६)।
                                        (सर १२ २)।
अहोनमिय नि [ब्रह्मीपस्य ब्रह्मीपमिक]
                                      जनमियम देशो अहम्बिय (ठा ४ १)।
 नाव का नह परिमाल जो क्यम से बमकाना
                                      अवर देनी बदर (बनाः सुरा १६ ) ।
 ৰা লক্ষ্, পদ্ধীণৰ আহি জনবা-ৰাজ (চাই,
                                      असवा (शी) देवी कहवा (कृप्)।
                                      अथा की [अवस्] सरो-दिता, गीवबी दिशा
जप थ[अपस्] नीचे (धाना, नि १॥)।
                                       (घ६)।
क्षयं (सी) स्र [अव] सर नार (रप्पू)।
                                      व्यपि केनो अदि = पनि ।
```

```
श्रविद्व देशो अद्भित्र (गुपा ११६) ।
                                                                              वर्षातील धारमध्ये चेर कार्त करेस्प्रसि (भग
                                       (पत्रम ११४ २६)।
श्राधिकरण देवी अहिगरण (पण १ २) ।
                                      अनिषद्धि देशो अणिषद्धि (सम २६) कम्म
                                                                              (X) I
क्षचित वि विधिक विशेष व्यादा
                                                                             क्षकाण बजी अण्याण = महान (हुमा सुर
                                        रा नत ७१ टी) ।
 (17 1)
                                                                               १ १शः वहा जबर दशः काम ४ ६
                                      श्रनियय देशो अणियय (धीष २)।
अधिराम करो अद्विगम (वर्ष २) विन २२)।
                                      अनिरुद्ध देशो अणिरुद्ध (वंश १४)।
                                                                               1 (55
अधिगरण रेखो अहिगरण (लपू १)।
                                      अनिस रैलो अगिस (हे१ २०व दुमा)।
                                                                             अमाणि धेनो अक्जानि (उर मुपा १८८)।
श्रीधारणिया देनो अहिगरणिया (पण्छ
                                      अनिसह देवो अणिसह (ठा १ ४)।
                                                                             अझाणिय देखा अण्याणिय (प्रवस ४
  ₹१) €
                                      अनिहारिम । देनी अन्दारिम (भव ठा
                                                                              2011
अधिगार श्लो अहिगार (मुप्रलि १०)।
                                      अनीहारिम ! २ ४)।
                                                                             अमाय देनो पट्टमा चीर दूसचा अण्याय
                                       क्षन् (धाः) रेली अण्यहा (पूमा) ।
                                                                              (पुर ६, २ वृश २४६) नुर २ ८। २ २
अधिएत्र ) (बर) वि [अभीन] पावत
अधिम । परार (ति हरें। हे ४ ४२७)।
                                       अनुषुष्ण रेगो अणुङ्गुख (गुरा ४०४)।
                                                                              गम्ब ६६: मुका २६६: मुर २ ११६ मुका
 अधिमासत पुं [अधिमास इ] यथिक मान .
                                       अनुगाह देखो अमृगाह (पनि ४१) ।
                                                                              १ ८) भारता जंब निर्मं की सन्त महत्तो
                                       अनुचिद्रिय देन अगुद्रिय (म १५) ।
                                                                              त्तवन्यमञ्जामी 🗦 (इर ७१८ दी) ।
  (বিশু<sup>২</sup> ) ৷
 धक्तिरोविश्र रि अधिग्रपित् वार्गित्र
                                       अनुज्ञ्य रेनो अणु।सूच (पि ४७) ।
                                                                             अमारिम देवा अण्यारिम (हे १ १४२
  'मुनापिरोनियो नो' (वर्मीन १२७) ।
                                       अन्द्रय देशे अपृद्रय=धनु+भू । सू
 अधीगार रेगो अहिगार (मूर्पान १०)।
                                        अन्दर्भत (रंगा) ।
                                                                             अझाहुत्त नि [क्] पर्यहृष्ट्रन (मुक्ष २,१७)।
 अधीय रेनी अहीय (उत्त २ २२) ।
                                       क्षक्र केन्द्रो अपन्न (गुपा ६६ - प्रान्तु ४६ पणह
                                                                             अग्नि नि [अभ्यनीय] परशीय भानी वा
 अधीम रि (अधीरा) नावक अधिराति
                                        २१ हा ३ २
                                                         राव्य ६)।
                                                                              धनिक् (तूब २ २ ६)।
                                       अप्रदेश देशो अण्यह्य (वर्षि) ।
   (कुम्मा २१)।
                                                                             अभिज्ञमाण रेगो अष्टिगज्ञमाण (जारा १
                                       अमुओ रेटी अन्यज्ञा। हत्त्व विति विवयो
 अधूव रेगी अबूधूय (खाबा १ १ पतन
                                                                               1 (23
                                        इसरे सरफ (यूर व ११६)।
   EX YE) I
                                                                             असिय रैगो अणिय ।
                                       अमनो रेको अण्यका (दुमा)।
  अभी वर्गा अहा = यपस् (पि ३४ ) ।
                                                                             अभिवसुव र् [अभिग्रसुत] एक विस्यात
 अर्नीट सी अनिन्दि । समझन बाराना श्रे
                                       असस्य ) रेगी अन्यत्य (धाचा स १६ ।
                                                                              र्जन मृति (उद्य)।
                                       अमरर्थ 🕽 पूरा) ।
   मीगार सर्वदि' (समि ६७)।
                                                                             अभिया देवो अधितया (संग १६)।
                                       अमदो रेगी अण्यती (रूमा) ।
  अनम देशो अगश्म (दुमा) ।
                                       जनमध्य केटी अक्जमक्ज (जावा १ १)।
                                                                             अस्तुत्त्व स्त्रे [अन्दान्ति] सानियन्त्रिय
  अनय रेगो अजय (दुरा २७१)।
                                                                              एक बावद्वार (मोह ३७ सम्बद्ध १४३) ।
                                       अभ्रम रेपो अण्यान्य (महा: गुना) ।
  कानध बेगो अजन (हे १ ३२× कुमा)।
                                       अभय 4 शिम्प्रकी एक की सत्ता में ही इचरे
                                                                             अस्तुम १ रेगो अञ्जूष्य (हे १ १४६
  अन्यगय धरो अजागय (मन) ।
                                                                             अम्बुमस 🕽 🗝 ।
                                         भी रियमानका जैसे शरित भी इयानी में ही
  अनागार देश अगागार (मन)।
                                         पून भी सत्ता नियमित सम्बन्ध (६५ ४१६:
                                                                             अन्त्रा रि (अन्युत) धन्द्रेष (पर्मोर ११६)।
  अनाय रमी अज्ञाय (मुरा४० रि ६० )।
                                         स (११)।
  अनासंद (पूरे) वि [धनारम] पान-रांता
                                                                             अक्रेम रची अणास । वह अम्नरामाण
                                       मभयर रेगी अफगयर (नुस १०)।
    (बुबा)।
                                                                              (रा ६ दी) ।
                                       अभया देनी अवगया (बहा) ।
  अनाजंद (पूर्र) रि [अनासम्म] पर्दित्र
                                                                             बन्तसम देना अण्णामण (नूर १
                                        असप देशो अण्या (नुपा ८१: १२६) ।
                                                                              क्ल्) १
    दरानु (नुमा)।
                                       अमद्देशो अण्यद् (पुर १ १११ वृषा) ।
  अनिर्मिग रेगी अमिरिम (धम १७)।
                                                                             अन्तरा देवो अध्यक्षम् (छ १ ४)।
                                       अब्रहा रेलो अण्यहा (बर्व १
                                                                       30
   अनिदाया है ने अणिया (धन्य ६४)।
                                                                             असमय रि [अम्बेयरु] ग्रीयर श्रोप शरी-
                                         महा पूर १ १४६ जानू छै।
                                       असदि रेगी अण्डदि (रूपा)।
                                                                              बारा (स १३१)।
   अतिमित्ती भी [अनिमित्ता] निनिक्टेन
                                        असा स्त्री [वें] मात्रा, यनती (न्त्र ७ १६
                                                                             भारतीय ) रेलो अच्छारी (ति ११६)
    (fit v(v &)) 1
                                                                             जन्नमिय∮ घाषा)।
                                         24) 1
   अनिर्यामय वि [अनियमित्र] १ धवत ।
                                        अमारदूरि [अन्यादिष्ट] बाजन भूभे स्
                                                                             असोस रेवी अण्डाजन (हमा, यहा) ।
    न्दित्र। र पर्वतत्र प्रतिवर्ते का निष्टत् नही
                                         माउनी पालगा ! नर्म वर्षेत्रं धकार्यः हतारी
                                                                            अप की. व [अप्] पारी जा (राज
```

बरतेबाका 'गयो य नहर्य प्रतियमियणा'

धंतो सुन्हें मानाएं वितंबरगरिगयमधेरे सह

MINE -- MA

(वं रहे।
क्रमाहृत्य केवो क्रमाहृत्य (सात्ता, ठा ४
६)।
क्रमाहृत्य केवो क्रमाहृत्य (सात्ता, ठा ४
६)।
क्रमाहृत्य केवो क्रमाहृत्य (ते १ १०००-स्वान
क्रमाहृत्य केवो क्रमाहृत्य (ते १ १)।
क्रमास्य कि (क्रमाहृत्य (ते १ १)।
क्रमास्य कि (क्रमाहृत्य ) १ तिरहे, स्वस्य
क्रमाहृत्य (क्रमा २ १)। २ वं क्रमास्य
क्रमाहृत्य (क्रमा २)।
२ तिक्रमाहृत्य १ ते क्रमास्य सात्रा (क्रमा)।

क्षार्रहिक वि [क] च-न्छ निक्यान ( पत् )।
कार्यहिक [कार्याक्कत ] १ उत्पुद्धि-रिक्ष (इह
१) । २ पूर्व (क्ष्म् ६)।
कार्यक्र (हु हु (क्ष्म् ६) हाव (कार्य कश्क)।
कार्यक्र (हु (क्ष्म् ६) हाव (कार्य कश्क)।
कार्यक्र (हु (क्ष्म्पक्र) होने हिन्द कार्यक्र (हु (क्ष्म्पक्र) कार्यक्र (हिन्दा (क्ष्म १)।
कार्यक्ष (हु (क्ष्म्पक्र) कार्यक्र (हिन्दा (क्ष्म कार्यक्ष (हु (क्ष्म्पक्र) कार्यक्र (हु (क्ष्म कार्यक्ष (हु (क्ष्म) कार्यक्ष (क्ष्म कार्यक्ष (हु (क्ष्म) कार्यक्ष (क्ष्म) कार्यक्ष (हु (क्ष्म) कार्यक्ष (क्षम)

अपबार्क रि [अप्रत्यक्क] १ वावनये। २ प्रमोग्य (म्बू ११)। अपबार्क कि [अपबार्य] १ सन्द्रितकर (पत्र्य २ ७२)। २ तः नद्वी पत्रनेताला मीवन भेरेस्य प्रपत्र्यादेवरोग ग्रेड्स्य वर्शेव (तृता १३)।

क्यांच्याम नि [क्यांका] व्यंत्रक (वृत्तिः नामा कर १६४ थे)। अपक्रमः ] नि [क्यांका] १ अम्बांक, इपक्रमा। असमा (नक्ष) १ अम्बांक, (भ्यापनि पहुल करने नी श्रांत ने चील (य. १,१। व्यं ४)। नामा न जिन्नास्त्र

नाय-पर्वे का यक नेत् (तन ६७) : अपआयस्या पि [अपर्वेवस्तितः] र नाज-परित (कम्म ६१) । २ कत्य-व्यव्य (ता १) । अपर्वेवस्तितः वि[वे] वहन्त्रीतः पूर्वे (रे र ४१) ।

स्पितिका । प्रेष्ट्रिय निवस्तीका । प्रतिका-अपितिका । प्रेष्ट्रिय निवस्त्र-प्रेष्ट्रय (प्राप्ता) । २ एए-देण प्राप्ति कव्यतों से निवस्त्र । ३ ते। १ क्या की इच्छा ग एकंकर क्यु-साम करनेवामा निवस्ता भन्तेतु वा चावस्य-माह्य केंद्रे, एवं मुखीएतं क्याविक्यास्त्र (पूर्य १९)।

१९)।
क्याक्षियोत्त्राक वि [अप्रतियुद्धगळ] वर्षक
क्रिकेत (क्षिद्भ १)।
पश्चित्र व्यक्तिकेत (क्षिद्भ १)।
पश्चित्र वर्षक क्षाचित्रकेत १ प्रतिकल्पन
१ १)। १ व्यक्तिकेत व्यक्तिकेत (वव १ ४)।
व्यक्तिकात्र केती कार्यक्रिकाह (व्य १) व्यक्तिकात्र केती कार्यक्रिकाह (व्य १) व्यक्तिकात्र क्षाचित्र।
१६२। श्चित्र।
वर्षक्रियोक्षण क्षित्र (क्षाचित्रन) क्ष्यंक्र

वित्रिय यापि विश्वके वसूर्ये न हीं (छ । २)। अपविद्युद्ध छ [अप्रतिद्वारय] न वे कर (क्छ वह ने)। छप्पविद्य येको अप्यविद्य (छामा १ १९)।

लगकीकार के [कामतीकार] सनाव-सीवा क्याक-पीव (परार्ष १ १) कामकुरायका / कि किमासुमारका १ सन्वर्ध-अपकुरायका / मान वर्धन्यमान (सं१६६)। २ सीवपित में बन्द्रयक्त (वर १) कामपार्क के विभागती नाम को समाप्त (पुर ४ २४ )। अपन केबी कामपात (इह १) ठा १, १। तुन १ १९)।

मही करता हुमा (ग्र. ६००- वि ४००)। व्यक्तिक देवी: व्यव्यक्तिय (स्त. १६. १) वंता छ। व्यक्तिको व्यव्यक्ति (स्त. ७) वंता छ)। व्यक्तिको व्यक्तिका (स्त. ७) वंता छ। वंता रो। वंता रो।

अपरिभंत पर [अप्रतियत् ] विस्ताय

व्ययम्यः वेशीः कारमस्य (ग्रामा) । अपमाणः म [काममाणं] १ पूछः यक्तयः (ग्रा १२) । २ वि ज्यापा ग्रामिकः (क्यः २४) । व्ययमायः वि [काममाकं] १ प्रमाकन्मीयः ।

२ पुंप्रमाण का समाज साववानी (क्सू २ १)। अपन्य वि[अपन्य] १ पनि पहित, कुस प्रमा,

कायर स्त | कायर | र तार रहत, इस प्रस्त,
भूमि बहैद्ध रैर परिव बहुत (जाता र थ)।
२ पुँ पुराकाता भारतस्य धर्म शर्मा (धामा)।
३ पुन का एक बोत (इह र विवे)।
स्वाप्य तमी [काम्रस] कातारपित (इह र)।
अप्य तमी [काम्रस] कातारपित (इह र)।
अप्य तेनी स्वार्थ (मिह र)। र वैर्धानक

वर्शन में प्रशिक्ष प्रचानकर कामान्य (निष्ठे १४९१)। व्ययस्थ्य, नि [कापराधः] घटनस्थ गर्धस (पर्वतः १ वे)। व्यवस्था व्यवस्था (रुप्य)।

(प्राप्त १ व)।

कापरिकार और [आपपानिकार] इन्हर्नकरेंग
(प्रति वेश)।

कापरिकार और [आपपानिकार] इन्हर्नकरेंग
(प्रति वेश)।

कापरिकार कि [आपपानिकार] १ सन्तिप्तुत
(प्राप्त १ १)। १ प्राप्तिकार के प्रति वेश

का कार्या प्रतिकारपुरेश (प्राप्त १११)।

प्राप्त-पर्तिक के देवों की एक बार्ति (प्राप्त १)।

१ पत्त पहान्त्रपुरेश का एक प्रति (प्राप्त १)।

१ पत्त पहान्त्रपुरेश का एक प्रति (प्रता १)।

१ पत्त पहान्त्रपुरेश का एक प्रता (प्रता १)।

१ पत्त प्रता का एक प्रता (प्रता १)।

१ पत्त प्रता का प्रता विकार का एक प्रता (प्रता १)।

१ पत्तिकारपुरेश का स्त्रप्ती का प्रता (प्रता १)।

१ परिकारपुरेश का स्त्रप्ती का स्त्रप्त का प्रता (प्रता १)।

व्यापानिया को जनाइपा (ठा २ ३)। व्यापानिया को व्यापानिया १ प्रक्ता प्रकृतक की कीवा-विविद्या (विवार १२९)। १ वता की कार्या प्रज्ञ १ १४)। अपनियाद वि व्यापानिया १ वक्ताव्यापानियाद है प्रीव्य (व्याप्ट १ ३)।

ममता-रहित निमेम' 'बपरिग्यहा बखाएँमा जिल्लुतार्गपरिवर्ष (सूप ११४)। क्रपरिभाष्टा की [क्रपरिभद्दा] वेश्या (वव क्षपरिगादिआ भी [अपरिगृहीता] १ वेस्या, काया वरेरह अविवाहिता हो। (पत्रि)। २ परि-होनाकी विषया (धर्म २)। ३ धर बासी । ४ पनदारी । ३ दव-मृत्रिका, देवसा को मेंन की हुई कम्या (बाहु १)। क्षपरिच्छण्य ) वि (क्षपरिच्छम ) १ गर्धा अपरिच्छम । इका हुमा मनवृत्त (वव ३) । २ परिवार छड्डि (वव १)। क्षपरिणय वि [अपरिष्यत्र] १ क्रान्तर वो ध्याप्त (अ.२.१)। २. चैन सा<del>बु</del>की निज्ञा का एक दोप । (बाका) । अपरिच वि अपरीती सराधितः, सनन्त (प्रस्स १०)। अपरिसेस वि [अपरिद्येप] सर्व सङ्ग निज्ञेष (पर्छ १ २ पटम ३ १४)। कापरिहारिय वि जिपरिहारिकी १ बोपी का परिकार नहीं करनेनाचाः (शाना)। २ वं वैनेतर पर्धन का मन्यायी गृहस्य (निष् २)। अपवस्य पू [अपवर्षे] मोल मुख्य (मुर = १ ६ सत्त ११)। अपविद्ध नि [अपविद्ध] १ प्रेरित (त » ११)। २ म. प्रस्थान्दन काएक योग प्रक को बन्दन करके तुरस्त ही मान जाना (प्रमा२६)। ध्यपद्व विकिन्नमी निस्तेव (दे१ १६४)। ब्द्रपहरूब देवो अवहत्य (ग्रीव) : क्रपहारि वि [अपहारित्] अपहरेश करने-नासा (स २१७) । अपिक्य नि [अपद्वत] कीना हुमा (परान **₩8 %)** 1 कापहुरि [काममु] १ सस्पर्ध । ए नाव-र्ष्मित समाच (पस्प ११३४)। अपाइय नि [अपात्रित] पान-पहित भागत-वस्तिकः भी कप्पद्र निग्मेकीय् समाज्यास् होत्तप् (क्स) । व्यपादक वि [अपाद्वत] नहीं दका हुआ वक-रमित नम (का थ, १)।

द्यापाश्य न [धापानान] कारक-विशेष त्रिसर्गे पद्ममी विक्रिक लगती है विसे 285m)1 -**अ**पाण श [अपान] १ पान का समाव । (तर ६४६) । २ पानी भैसा ठवा पेव भरत-विद्येष । (भग १६) । ३ पूंत सपान कायू । ४ प्रदा(सूपा६२)। ३.वि ज<del>ल-व</del>र्जित निर्देस (धरनास) अट्ठेणे मतेणे घराणएगी (व २)। अपायावगम 🖠 [अपायापगम] विनश्य का एक मिरियम (संबोध २)। अपार वि अपार | पार-रहित मनन्त (नुपा अपारमाग पूं कि विमाम विमानि (दे १ 1 (88 अन्याव वि अिपाप दिनाप-रक्षित *(सूच* १ १ ३) । २ म पूर्व (४व) । अपाया की [अपापा] नग**ए**-विशेष **वहां** भगवान् महाबीर का निर्वाण क्षया था यह भावकत 'पानापूर्व' नाम से प्रशिक्ष है धीर विद्वार से बाठ नाईन पर है (राम) । अधिटुवि दि] कुनवन्त, फिरशे कहा ह्रया (पक्)। अपिय नि [अप्रिय] यपित्र (श्रीव १)। अपिष्ट् 🖩 [अप्रमन्द् ] ध-वित्र (प्रमा) । अपुगर्वभग ) वि [अपुनर्वन्यक] किर वे ध्युमर्वधय हे चक्का धर्मरूच नहीं करते **पाचा तील भाग ये पाप को नहीं करने** वाला (पंचा६ सप २१३) ३ ११) । अपुणव्यव पू विद्युनर्शव र फिर से नहीं होता। २ वि जिससे फिर बन्ध व हो बहु, मुख्यस्य (पर्याः २, ४) । क्य<u>ा</u>जक्याच वि [अपुनसाय] किर के नहीं क्षोनेवामा (वैच १) । व्यपुणसब देवी अपुणस्मव (हुना) । भवुणसम्म द्रे [अवुमसम्म] १ पुत्रः धान्याः कृषिः योजः (रतस् १) । अपुत्ररावचग १ दु [अपुनरावश्रद्ध] १ अनुगरावत्तव किन्तर्श पूमन वाचा नृष्ट माण्या। २ मोडा कृष्टि (पि ३८६) सीपः का ( १)।

अपुणराषचि पु [ अपुनरावर्तिम् ] मुक बाला (पि १४१) । **अपुणराविचि वृ [अपुनराष्ट्रचि]** मास मुख्ति (पश्चि) । खपुणरुच वि [अपुनरुक्त] फिर से सम्भित पुनरकि-रोप से प्रीत 'प्रपुक्तवेषि महा-विशेष्ट्रि चंत्रुएइ' (धम)। अपुष्पागम बेघो अपु गयागम (पि १४१) । अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से मही माना । २ किर में मनुष्यति "मनुष्या-पमणाय व र्श तिमिर्द छम्मृ**सियं रविला** (गਰਝ) । अपुण्य न [अपुण्य] १ पाप । २ वि पूर्य-चीर्त कम-मताब इत-माग्य (दिया १ ७) । अपूज्य वि [अपूर्ण] प्रदूष प्रतिपूर्ण (थिपा १ ७)। अपुण्य वि [दे] धाझन्त (पर्) । अपुत्तः } वि [अपुत्र, क] १ पूल-पहित अपुष्तिय 🕽 (सुपी ४१२ ( ११४) । २ स्वजने-रहित निर्मेग नि सुद् (प्राचा)। ब्बपुन देवो स्पृत्य (स्तवा १:१६)। अपुम न [ अपुंस् ] नपूंसक (ग्रीव २२६)। धपुद्ध देवो अप्पुद्ध (दंद्र) । अपुरुष वि [अपूर्व] १ तृतन, नवीन । २ पर्का प्रवर्गसरकः। ३ प्रवादारस मित्रितीय (हे ४२७ सर्द क्षेट्री)। **कर**ण न किरमी १ मध्याका एक ममूतपूर्व युम परिखाम (बाबा) । २ बाठवाँ द्वारा स्थानक (पथ २२४ कम्म २ ६)। अपूर १५ [अपूप] एक मन्य पदार्व प्रवा अपूर्व । पूरी (पीरी पएस ३६ ६१ १६४ 4 <1) i अपेक्स सर्व [ अप-| १३१\_] परेता करता, यह वैचना। इङ अपेक्सिट्र (सी) (गष्ट) । अप**च्या वि** [अप्रेस्त] १ वेत्रमे के *पराच्य*ा २ देखने के बर्गारम (स्त्र) । खपय वि [खपय] पीने के सबीग्य, नग शादि (दुमा) । कारय वि [कारेत] तथा इया नाट <sup>भारत</sup> चन्द्र (इट् १) । अपहर्य वि [अपवर्ष ] सोबा वरने रामा (mm 1) 1

अर्पविदय-अपविय **अप्यक्रिय वि जिल्पद्विकी बोही ऋदि** बाला सन्त वैसववासा (गुपा ४३) । द्याप्पण न जिपेण र मेंट, च्यहार, धन (भा २७) । २ प्रवान कर से प्रतिपादन (विसे 2=¥3) 1 काञ्चण देखो काञ्च ≔ बारपन् (धाचा उत १ मझा के ४ ४२२)। क्राप्पण वि [आत्मीय] स्वकीय विजका' नो क्ष्यणा परामा पुरुणो कद्मानि होति मुद्राखे' (सदि १ ४)। कारपण्य वि आस्मीय स्वकीय निकी (पत्रम १ १६) सूचा २७१ है २ ११६)। अध्यक्षा च [स्वयम् ] स्वयं, बाप निव कुद (पर्)। धप्पणिक ) वि आसीय विशेष ध्यप्पणिक्रिय र स्थीय (ठा १ धावन)। **धेरपनो म**िस्सम् । बार सुद, निज र्गबमसंदि मलगो वेब कमश्रस्थ हि २ ₹ 8) 1 **श्राप्तपान देवो अन्ता**स = श्रा + ऋम् । श्राप्तप्राह (সভে ৩৭)। **श**रपण्याञ्च देशो अप्पत्राणुहा = शास्त्रह करपञ्च (प्रशङ्ख १०) । ध्यप्यतिक्य नि क्षिप्रशक्ति विविद्या मसंग्रमित (स ६३ )। अप्यस प्रेन जिपान्त्री १ वरोत्यः नासासकः क्रपात 'सर्वेति इ क्याचा पर्यर्थेड ने<sub>य</sub> विसर्हार्त (सूर १ ४%, वा १४७) । २ वि माबार-पहित भावन-सून्य (सुर १३ ४१)। अध्यक्त वि (अभन्न) १ पता से एडित (अक्ट) (दुर १ ४३)। २ पांच हे रहित (पदी)

(सुम १ १४)। करपत्त वि [अप्राप्त] भत्तन्त्र धनवास (सुर ११ ४२। योग =६)। स्तरि वि विश्वरिक् बल्तु का जिना स्पर्ध किमे ही (बूद है) आन प्रतम करनेवाला 'सम्पत्तकारि सावत' (विदे) । अव्यक्ति की [अमाप्ति] नहीं पाना (तुर ४

भाष्यशिय पूर्व [सप्रस्यय] व्यविधास (स

अञ्चलिय न [अप्रीति] १ मधीति प्रेम का समान (ठा४ १)। २ कोम ग्रस्सा (सूध १ १ २)। ३ मानसिक पौड़ा (बाचा)। Y प्रपकार (निच १) । क्षप्पत्तिय वि विषात्रिकी यान-प्रतित, धाकार-विवेश (यम १६ ३)। ब्यव्यक्तियण न [अग्रस्ययन] व्यविधास ब्रम्यता (क्य ११२) । सम्परम वि शिप्राप्टर्ये । शार्वना करने के धयोग्य। २ महीं चाहुन सायक (मुपा ११६)। श्राप्यस्थाय न शिक्षार्थनी १ मगळा। २ धतिच्छा समाप्त (उत्त ३२)। करपत्चिय वि [लगार्थित] १ धरावित । २ धनक्रिरपित संगोष्टित (व ६) । परधय परिवास वि शिश्चेक, "विंक निरशानी गीत को चातुमेदाना 'कीस स्त्रं एस सम्मीचय-परवर्ष बूर्रंडपंडसम्बन्धे (भव ३ २ ग्राया १ ६ वि क्री । अटपरश्चय वि [कामस्तुत] प्रचेव के मनुष्युक्त, विषयान्तर (भूपा १ १) । अध्यवद्व विशिव्यक्तियो विस्पर हयन हो बह्न, प्रीतिकर (सोम ७४४) । अप्यवस्थामाण का जिप्रद्विप्यत् । ह प नहीं करता हुमा (बंद १२)। श्राप्य वि [अप्राप्य] प्राप्त करते के क्षताय (बिसे २६०७)। अध्यमाय न (अप्रसात**ी १ व**र्ग स्वेर । २ ৰি সভাত-বহুত কাল্ডি-ববিতা 'অৰু দুয়া क्यमाप् वयले' (पूर ११ ११ ) । अध्यक्ष विक्रिप्रभू देवसमर्थ (सन)। २ ्र माजिक से मिम शीकर वजेरह (वर्म ६) । अप्यमस्त्रिय वि [धप्रमार्शित] साद नहीं किया ह्रचा (चना)। अध्यमच वि [अप्रमच] प्रवाद-रहित साव बान, लायोपनाचा (पश्का २.६ क्वे १ २३१ समि १०६) । संख्य पृथ्वे विश्वती १ प्रमाव-रहित युनि । २ न. शातना प्रशा-स्वानक (सरदर्दी)। कप्पमाण **रेको अ**पमाण (बृह १ प**राह** २,३): 'बाद निया जिल्हानवालं, श्रेष्टि विका

पहाँति नार्गं चह विति हार्शं सम्बंधि (निष्ट १)। (Y 9 अप्पय रेकी लप्प (ज्वा सि ४ १)। हुवा कररिवृक्त (नुपा ११ )। विश्वमान (बा ६)। 1 (1 1 वर्षित (सुघ ११४)। नहीं करता हथा (धाषा) । 8x) I (बर्म १)। (पंचा २)। के बयोग्य (संद) । क्य । २ सहम करते के प्रमोगय (क्ष ७) । बाराव (ठा वे वे माग मा ४)। पुरिका (नुष १ ४ १)। (स्थाप) (उत्र १७)। 14 13) i त्तवमप्पमार्ग । यप्रसिद्ध (तुता १२१) ।

40 वेसि कममप्पमाएँ (सव २ )। अध्यसाय पू [अप्रमाद] प्रमाव का समाव अप्यमंग वि [अप्रमेय] १ विश्वकः माप न हो सके, बनन्त (पटम ७४, २३) । २ बिसका ज्ञान न हो सके (धर्म १)। ६ प्रमाण से विश्वका निवय न किया का एके वह (पराह अप्परिचल वि [अपरिसक्त नहीं बोहा अप्परिवर्षिय वि [अपरिपतित] मन्त्र. अप्य**बद्धम** नि [अप्रसन्तुक] महान्, बहा (स अप्पन्नीण वि [अप्रक्रीत] वर्ष**र**क्ष स<del>क्</del>र बाजकीयमात्र का [अप्रसीयमान] धासकि **अप्यविच वि [अप्रवृच्च] प्रवृत्ति-र**हित (पंचा अप्यविचि की [अप्रयुचि] प्रदृष्टि का समाव अप्यसंच वि [अप्रशान्त] प्रधान्त कृपित अप्पर्तसमिक वि [सप्रशंसनी थ] प्रशंस अप्यम्बम् वि [अप्रसङ्खा १ वहने के धर-कप्यसम्बद्ध वि [अप्रसन्न ] दशसीन (ताट) 1 अप्यसस्य वि [बप्रशस्त] प्रवाद, प्रमुखर, अध्यसत्तिय वि [अस्पसत्तिक] धन्य सरव बाला 'मुसमस्वाविसम'या बीरेटि प्रव्यविद्या अप्यमारिय वि [अप्रसारिक] निर्वत विजन अध्यह्वंत नक [अप्रमपत् ] समर्थे नहीं होता हवा नहीं पहुंच चक्या हवा (स अपर्पाइय वि [अप्रयित] १ प्रविस्तृत । २

₹₹₹) 1

नपारिसीय 🕽 ज्याचा परिमाश वाला, धनाव (लामा १ ३८ १४)। प्रपोरिसीय नि [कपीरुपेय] पुरव व नहीं बनाया हुम्म निस्य (ठा १ )। अपोद्र सकं स्थिय + उद्दी निश्चव करना, निवय क्य है बानना । यपोत्रुए विधे 251) 1 क्रमोइ पूं [अपोइ] १ नियय-ज्ञान (विधे ६१६) । २ वृष्टमान मिलवा (योष ३) । द्याप देखी अध्य अग्राप्त 'र्थानंत्रनिमित्ते प्रदेशस्त्र लाजन्त्रमण्डस्त वयसङ्ख्यान्त्रसेति वेर्नि (लामा १ १) ।

तपोशिसय ) वि [अपीशिपक] पुण्य वे

46

क्षाप दि [अस्प] १ बोड़ा स्तोत (नुपा २६ स्वयं ६७)। २ समाव (बीव ३ मद १४ १)। **अटप पूं [आस्मन] १ शतमा जीन जेतन** (जाबा १,१)। २ निज स्त बप्पणा धमाखी बम्मच्यां वरिताएं (लामा १ ३)। ३ देव. रुपीर (उत्त ३)। ४ स्वनाव स्वतप (ब्याचा)। याद्गवि [ यातिम् ] यान-इत्या करनेवाता (का ३१७ टी)। ग्रंद रि ["बद्राम्] संग्री सम्बन्धी (श ३६ टी। उद्धानि द्विती १ बाल्पल (इ. २.)। २ स्वाचीत (लिपु १)। क्योद 🙎 [ स्पोतिस् ] श्रानस्परन नियोग्स्में श्रीसी समब्देश कि लिक्टिंग

बीन (पाम परन १७ २२)। बहु पू विश्वी भारत-इन्ता, मानाठ (नूर २ १८६ ४, ११७) । बाइ वि विवित्ती धाला के संतिरिक दूवरे पशकें को नहीं भागनेपाता (गुर्दि) । भप्प (दि) तिता नाग (दे १ ६)। अप्य तक [अर्थ्य] बर्गत कला, ब्रेंट बरना। धनीद (हे १ ६३) । धणधद (नाट)। तंद्र क्षाप्पिञ (नुस २≪ )। 🖫 अधेषम्य (नृत १६२) ११६) । भएपञ्चास देनी अप्ययवस (बाह्र) । अरबद्धास बङ [ किय् ] मानिह्न करना । सनदान्द् ( वर् ) :

(विम)। "च्युनि ["इह] चारल-जानी

(पर्)ः इस विविधी लड्ण स्था-

अध्यद्भूतः पून [अप्रविद्यान] १ मोस | मुन्द्रि (ग्रामा)। २ शास्त्री नर्द्र-मूमिका बीक्स संकाब (सम २ धर ४, ६) । अव्यक्षरिक वि [ब्यमितिहित] १ धर्मत-बद्धाः २ धरारीरी शरीर-विश्व (पाणा २, १६ १२)। देखो व्यवहर्द्धिम । अध्यवस्थित वि शिषक्षीयमि । मही पकी हुई फल-एमहरी (स ६ )। श्राप्यजोजग वि [अप्रयोजक] व-गमक, ध-निवायक (हेत्) (धर्मेस् १२२३) । अप्यमरि वि (श्रास्मन्मरि) यरेमपेट्र स्वाची (स्थ ३७ )। अध्यक्ष्य वि शिक्षप्रक्रम्य विकल विक (81 t) i अप्पक्टर वि [आरमीय] स्वकीय निश्री (ज्ञामा) । भाष्यक्र वि [अपक्ष] नहीं एक हुमा कथा (मुपा ४१६) । अप्पन देवो अप्प (ग्राद ४० ग्राचा) । अप्यगास र् [अप्रदाश] प्रकाश का यमान क्ष्मकार (निष् १)।

अप्पर्याचा की दिने परित्रक, कीप पूरा (R ? 9e) 1 अप्पनापुत्र वि [अभगक्क] शाला का वानकार (शक् १८)। अप्पनाशुध नि [अस्पक्क] धवः नुर्व (प्राप्तः सप्परमः दि हि । भारम-करा स्वाबीन (दे ₹ ₹¥) ı अप्यक्रिजार वि [अमितिशर] ध्वाव-र्धात क्सम-पहैत (मा ४३)। अप्पडिश्रंटय वि [लगतिप्रम्थक] प्रतिपत्त रूच प्रतिशाचि-पीति (राव) । अप्पविक्रमा वि [सप्रतिकर्मम्] शंस्कार र्यहरू कीरणार-विवतः भुएएगानारे व क्रम हिषम्मे' (परह्न २, ६) । अप्पडियक्त वि [अपविद्यान्त] धैप वे

व्यतिकृतः, शतः विश्वम में क्षये इत दूकरती की क्लिने शुद्धि न नी हो बद्ध (धीप) । अप्यतिष्ठ वि अधितिष्ठ विभागित नहीं रोका हुमा (स १ ४) i

**প্ৰথেতিৰ্ভ বি [ধ্যৱিৰ্ক ] দক্ৰ**, यसमान (संबि) । क्रप्यडिज्य } देनो क्रपडिज्य (शामा)। क्रप्यडिस क्रप्यदिवंद दुं [अप्रतिकार) १ प्रतिका का समार्को २ वि प्रक्षितन्त्र-प्रिष्ठ (दुप्र अध्यक्तिकत देनी अपहिनद (ज्या २६ ति ९१=)। सप्पश्चित्र वि [नप्रतियुद्ध] १ वश्नाम्द । २ कोत्रल सङ्गार (यदि १६१)। अप्यक्रिम वि [अप्रतिस] क्यापारण म्ह पम (इप ७६८ टी) सुपा १६)। अप्पिक्तिक वि [अप्रतिकप] अपर हैगी (इप ७२ दी। (खम्मा १ १)।

ब्राप्यक्रिक्ट वि [अप्रतिक्रम] स्प्राप्त अप्पडिज्ञेस्स नि [अप्रिक्षेत्रय] प्रयागारण भन<del>ो प्र</del>चयका (ग्रीप) । चप्पश्चितेहण 🕾 [धप्रविश्वेसन] प्रपर्वि-क्षण अनुबन्धकन, नहीं श्रेष्टना (भार ६) । अप्यक्तिहमा भी [अप्रतिक्रकाता] क्राय विवी (क्य) । अप्यविश्लिष्ट्रेय नि [समितिश्लेति ] *पन्यी*र सिंद धनवनोषित नहीं देना हुया (उना)। अपविक्षेप वि [अप्रतिक्षीम] मनुदूत (स्त अप्पक्षिवरिय वृ [अप्रतिवृत] प्रशेष कर्म

१९. ७ समि २४)। (表 ()) व्यप्यविवाह वि विवाहियातिया १ विवाहा नारा न हो ऐसा, किय (सुर १४ १६)। र थनविज्ञान का एक सेद् और वेनल ज्ञान की क्या जलक क्ये भरी बाता (विसे) । ज्ञप्पविद्राम वि [ध्यप्रतिद्रात] शवगाप, मितिय (व ११ १२)। व्यव्यक्तिक विश्वविद्या १ क्यो से गरी दका हुआ। (परहु ६ १)। २ प्रवादिका वक्रविता 'कर्पाविक्रवसारते' (लागा १ १६) । ३ विसंपाय-पहित भागस्थितवरतास्परितरायः (वप ११)। अप्पडीबड रेग्री अपहिच्छा जिल्लामिए नाय निजनायैर्पि क्यामैरका' (संबा ६ )।

अप्पहित्य वि [अस्पर्दिक] बोही ऋदि बाला बस्य वैभनवाला (मूपा ४३ )। कारपत्र म [अर्पेज] १ मेंट क्पहार, दान (भा २७) । २ प्रचान रूप से प्रतिपावन (विसं \$45E) 1 हाटपुत्र केही अप्य = बारमम् (बाबा- उत्त श महा है ४ ४२२)। क्षाञ्च्या वि [आस्मीय] सकीय, निजका 'ने। सम्मसा परामा गुरुणो कदमाबि हॉरिट सुदाखें (सहि १ १)। क्राप्पाय वि आरमीय स्वकीय निशी (पत्रम १ १६) मुपा २७१) हे २,११६)। **अ**ष्टपणाच स्वियम् देशम निज क्द (पर)। भारत्यिक ) वि [बालीय] स्वकीय, ब्राप्पजिक्किय }स्वीय (ठा १ घावम) । क्षप्रयोग [स्वयम् ] यात कुर, निश "विमर्पंदि धप्पणी वन कननसर्ग हि २ 2 8)1 **अप्रपण्य देवो अक्टम = दा + क्रम् । स**म्पर्गहर (प्रक्तां ७३)। श्रप्पण्युत देवी अप्पताणुत = बालव सम्बद्ध (माङ्ग १८)। भाष्यविक्रिय वि [क्षप्रवर्षिक] व्यविवर्षिक यसंग्रावित (स १३)। अध्यक्त पूर्व [अपाच] १ प्रयोतन नालाकः कुमाकः 'ऋएवेनि ह **धम्म**ता पर्रार्थक नेम

निसप्ति (सुर ३ ४%) वा १%७)। २ वि भागार-परित भावन-कृत्य (मूर १३ ४१) । अप्पत्त विकिपत्र दिश्ला वे एडिट (क्या) (मूर ३ ४६)। २ पीक छे एक्टिच (पदी) (सुम १ १४)। स्रापत्त वि सिमाप्ती प्रतस्य धनवास (सर १९४३ धोष=६)। स्मरि वि विमरिन्

बस्पू का विना स्पर्श किये ही (हुए से) जान क्यम करनेवाका 'सम्पत्तकार शुक्राते' (विते) ( अप्यत्ति की [अप्राप्ति] नहीं पाना (नूर ४ २११)। भप्यत्तिय पुन [अपरयय] धविद्याम (श ६६७ मुना ११२)।

अध्यक्तिय न जिप्रीति । स्थीति प्रेम का धसाव (ठा४ ६)। २ कोम ग्रस्ता (सूध ११२)। ६ मानसिक पीड़ा (भ्राचा)। ४ बएकार (निष् १) । भारपश्चिम वि [अपात्रिक] पात्र-पहित धानार-वर्षित (भग १६ ६) । भव्यस्तियण न [अप्रत्ययन ] प्रनिप्राप्त क्रमदा (स्थ ३१२)। हाप्याच वि [अप्राध्ये] १ प्रार्थना करने के वयोग्य। २ शहीं चाहनं सायक (पुरा ११६)। क्षप्यस्वण ग जिमार्थेनी ३ भगाचाः २ धनिक्छा धषाइ (स्त १२)। क्राप्यतिक्रय वि [अप्रार्थित] १ वयाचित । २ मन्भिनपित भनोवित (व ३) । पत्त्वय परिवय वि [ प्रार्थक, "पिंक] मयगार्थी गीत को चाहनेवासार कीस स्र एस सम्पत्तिय-प्रमाप् **पुरंशपंतवक्षा**धे (भग **१** २ छामा १ (१७ मे ३ १ शप्पत्त्व्य वि [अपस्तुतः] प्रचंग के पनुष्पुत्तः, विषयान्तर (मूपा १ १) । अध्यक्षद्व विश्विमित्तिष्टी विस्पर इय व हो वह, ग्रीतिकर (ग्रीव ७४४)। अप्पद्धस्ममाण वष्ट [सप्पष्टिप्यतः] इ.प नहीं करता ह्रमा (भंत १२)। भाष्यका वि शिक्षाच्यी प्राप्त करते के भारतय (भिष्ठ २६८७) । ब्राप्यभाय न [काप्रभाव] १ वनी चनेर । २ দি সভাত-বালি কাল্য-কবিল 'মৰ বুড बजबार गमणे (मुर ११ ११ )। काप्पमु वि [अप्रमु] १ प्रतयर्थ (यग) । २ ्री मालिक से मिन्न नीकर बगेरा (वर्न ६)। भप्पमञ्जय वि [अप्रमाजित] राष्ट्र नहीं फिया ह्या (उवा)। अध्यमच वि विप्रमची प्रमत-पीत साद-भाग जागोनशाला (पराह २,४, हे १ २३१ मिंग १०४)। संभव पूंची सिंवती १ प्रमाद-रहित सुनि । २ ल. शासना क्ला-स्वानक (मग३३)।

पर्वति मार्ग शह विति बाग्रे, सम्मीप अप्पनाय प्रं [अप्रसाद] प्रमाद का समाद (तिष् t) t अध्यमेय वि [अप्रमेय] १ जिसका माप न 8 A) I अध्यय देशो श्राप्य (उन्हां पि ४१)। हुषा पर्राप्तुक (मुपा ११ )। विद्यमान (था ६)। 2 () t विविच (सूम ११४)। नहीं करता हुआ (भाषा) । अध्यविचि को [अप्रयुच्चि] प्रवृत्ति शा अग्रव (बर्म १)। क्यपर्मच वि [क्षप्रज्ञान्त] भरान्त दुवित (पंचार) : के प्रयोग्य (तंद्र) : अप्यक्षम् वि अभस्य र सहने के प्रय-थय । २ सहत करते के समीतम (वद ७)। बाराव (ठा व ३ मन्द्र मा ४) । पुरिसा' (तूच १ ४ १)। ष्यपमारिय वि [अप्रसारिक] निर्वत विजन (स्वान) (चर १७ )। **अ**प्यमाण **रेको अ**पमाज (बृह १ प्रशुह् २ १)ः ₹ X) î 'बारविता विखयनवार्ण, क्वेति तिन्व अर्प्याङ्य वि [सप्रयित] **१ प**निस्तृत । २ तवमपामार्थ ।

वेसि कयमन्यमणे (सत्त २ )।

हो सके धनन्त (पठम ७१, २३) । २ जिसका अलग न हो सके (वर्ष १) । ३ प्रमाण स

जिसका निध्य न किया जा सके नहु (पराह भप्परिचल वि अपरित्यकी नहीं छोड़ा अप्यरिषडिय वि [अपरिपष्ठित] बन्ध्र अप्पष्ठकुष्य वि [अप्रष्ठचुक्र] महान्, बना (से अप्पन्निण वि [अप्रद्धीन] वर्षव्द्र, सङ्ग-

बप्पश्चीयमाण क [अप्रक्षीयमान] बार्साक अप्पविच वि [अप्रकृत्त]प्रवृत्ति-पहिन (पंचा

बाप्यमंसणिज वि [अप्रशंसनीय] प्रशंस

व्यपसंच्या वि [अप्रसंग्र] धरासीन (नाट) । अध्यसस्य वि [अप्रशस्त ] सवार, समुन्दर, अप्पसचिय वि [अस्पसन्धिक] शहा शता वाला "पुरानत्वानिसमन्धा कीर्रति सप्परितया

अप्पद्रवेत वह [अप्रभवत् ] तमर्थे नहीं होता हुमा नहीं नहुंच सरता हुमा (स

मञ्जासिक (गुपा १२४) ।

<b>X</b> C	पाइबसहमहण्यको	গ্ৰন্মেস্বব্দি <b>- শন্ত</b>
अस्पाति सी हिं] अक्ट्रा बौल्युस्य	अध्यिष्टि मिडय [अक्पर्डिक] बारा संपत्ति शासा (सम पडम २ ७४)।	अक्काब्र तक [बा + स्काब्रयू] र मास्क्रे- छा करना हाम से मानात करना। २ ताला,
(Tre) 1	वाता (भव पर्स्म र ४४)। व्यक्तिएण सक [अर्पय ] धर्मस करना, भेंट	पीटना । ६ ताल ठोरमा । सप्यासे ६ (बहा) ।
सप्पाइड है [अप्राष्ट्रत] धनावस्त्रवित कन (सुप २ २)।	करना देश 'ध्यीरोहि बाधोश धन्तिकर	क्षकः अध्यत्रक्षित्रंत (धर्म)। संब्रः अध्यत
श्रदपात्रय वि [अस्यायुद्ध] श्रोहा ससु	(धाक)। धार्ष्यशामि (पि ११७)। मणि	क्षिकण (क्राप्त १वर्ध महा)।
नारा (द्वार वे परम १८ वे )।	र्यापि (भित्रे ७ टी) ।	क्ष्माक्षय म [कास्प्रक्रन] १ तान होतना।
क्राप्पाउरण वि अप्रायरण दिनन। २ म.		ए ताला सामाय (दा १४व) से १, ३१।
क्ला समाना ३ वक्क शही प्रकृते का		श्या ८४) ।
नियम (पंचा ४। पत्र ४) ।	अधिपणिविय वि [आसीय] स्वकीय	खरम्बरिय वि [जास्क्रस्ति] १ श्रव दे
अप्यात्र देवो अप्य = बालान् (नरह १ ९)		हाक्टि सङ्ग् (पि १११)। २ इन्हि मात
स्था र ब्राह्म ११ १६)। रक्तिय वि	अप्पिय वि [अपित] १ विवा ह्या से	বছর (ব্যশ)।
[ "रिचिन् ] प्रत्ना की रक्षा करनेत्राण	क्या ह्या (विचार २० हेर ६६)।	अर्फ्ट्रेट्ड [बा+क्रम्] १ माञ्नर
(क्त ४) ।	२ विवसितं प्रतिपादन करते की बहु, 'बहु	करना। २ कामा 'संस्थापमो 🝽 सई
अप्याबदु ) व [अस्पवदुखः] सूनवितता अप्याबदुव ) बमन्त्रेतीयन (तव १२, व	दवियमस्पियं हं तद्देव बव्विति प्रस्वनमस्त	शच्चेदह यसिम <b>र्शनपरं मुनुनरमें</b> (ते ९
		χw) 1
Y 7) 1	बमर्व विग्रेग्रो सामद्रमणुज्यिकम्बस्स (विश्वे)।	अञ्ज्ञिक्ष वेको हाकुक्षिय (अ २० वस ६)।
क्रप्रापय दि [सप्राकृत] १ वक्र-धेरैत		(अरङ्कल नि वि बाक्यन्त) <b>प्रामन</b> ्य
नेन्न (पद्दर्द)। २ श्रुनाह्मा बन	(सन ६ ६६ वरत १ १)। र न घन का	विवास हुआ। (३६४२४)।
न्द्री विचाहुमा (सूम १ ६,१) ।	ु दुवा १ वित को शंदा, यह शार्रिं व	[ब्रस्कुल्ला वि [अपूभ] अपूर्वः मनुष
अप्राविष नि [अर्पित] हैया हुमा (नुप	स्क्रीलं वा सम्पर्ध इट्ट एक्टा होति' (कस	(63X) 1

च्यन्यम बहुतु एमता **इ**गता (मुख 11()1 \$ Y \$ \$Y} I अप्याद् तर [सं+दिश] संदेश देना अप्पीइ की [अप्रीति] यप्रेम अर्थन (पुरा श्वद पर्दुवाना । सन्ताहद्व (बद् हे ४ 34Y) 1 १ )। प्रणादेश (बा ६६२)। बॉड-अप्नीकृष वि [अस्मीहन] बास्या वे **वंद**र बापाइट्यू, अप्याहिति (पि १७७) (पिसे) 1 महिंद) ।

शन्ता । प्रणान्द (बाह 💗 ) । भागाइ नक शिभि + आपय है बहाना मीपाना । दर्जे पर्पाद्धिका (मे १ ७४)। बर भएपाहॅम (म १ ७४) । हेम्र- भएपा K4 (# 345) 1 41 )1

अप्पाद्द एक [आ + आपू] धेवावख

क्षापादकी की [दे] मेरेस अधावार (शिव अप्पादकत न भित्रायास्यी तुम्यना का मनार मीलना (रेवा ६ जान ११) । भाषादिय वि [मंदिष्ट] बाँग्र दिवा ह्या (<del>4.</del>4) : अग्यादिव रि [अध्यापित] १ वाठित

रिधित (देश १ १४ ६१) । २ व

भीन वादेत 'माराद्वितरात्ते' (डा १६३

ð١

मध्युटु वि [अस्प्रष्ट] नहीं चूना हुना वर्स पुष्ट 'वं घरपुदा भारा ग्रीविकासस्य हेति पदस्या (सम्म ६१) । कप्पुटु वि [अपूष्ट] को वृक्षा हुया (नूपा (119) अप्पूष्ण दि क्रियापूर्णी पूर्ण (वह )। अप्युक्त रि आशमीयी धारमा में बरस्प्र (हिर १६३। बक्ट कुमा)।

अप्युव्य रेली अपुष्का 'क्युक्ती रहिनेसी कीविवनवि चयर बह नजते' (नुता १११) ।

अप्येयका हेनो आल्य ≖बर्द्यु।

अरच्छित्र रि [आस्प्रक्षित्र] धारपारित

भाएत (शिक्षे १६ २ थी) ।

अप्पेक्षि की [अध्यक्तिया] क्या कर पुनइये (बा २१) । **अ**थ्यात रि [दे] गोप-गोन, नदर (इह ६) ।

# £1} i

1)1

मुर हेवे १≡२}।

(पबर) । अप्छाहिय ) वि [बास्स्मेटित] ! पारम ∮ अप्पेदेसिय ∮ निर्वे बाइत । यू म. महम-लन भावात (पहडू १ ३; क्रप्प)। । ब्राप्तरेया ध्ये [ब्] धनलाई-विशेष (यब काण्योय वि [दे] कुछारि है ज्यान न्दर, निविष्ठ (बात १०) ।

अफड नि [अफस्] निचन निर्देश (ह

बार्फ्कण्या | वि. चि. बापूर्ण | पूर्वः वय

भाष्यक्रेमा 🕸 [दे] वनलक्षि-विकेष (परए

अप्योड स्ट्रिश + स्पोटय ] १ म<del>स्य</del>-

शत क्षण्या, क्षण 🖩 शाक्ष क्षोक्या । २ साहत

करना। नर् अपन्त्रेडंड (शासा र म

भएकोडण व [भारपोटन] शास्त्राच

पाम)- 'महमा पुत्तकोएएं सन्द्रमा

बारकुल देश राष्ट्र १

धमाणी (निर १ १)।

भजुक्षयं केनो खजुङ्ग (नरह) ।

क्षपत्रम पू [के] भूमि-स्टोट, बनस्परि-विदेश (पर्ए १)। क्षप्रस वि [अस्परों] १ स्पर्त-पहित्र (भग)। २ खराव स्पर्धनामा (सूच १ ६,१)। अफासुय वि [अप्रासुक] १ सवितः सजीव (मन १,६)। २ सदाहर (मिक्स) (ठा ६१)। अपुद्ध वि (अरपुट) सरपट, सन्यक (गुर ३, १ श २१६३ गा २१६३ उप ७२व टी)। अपुर्विक वि [अस्पुरित] संबर्धित नहीं ट्ट्य हुमा (डुमा) । बापुन्स नि [अस्यूर्य] सार्थ करने के स्रयोग्य (भग)। इपुन्तिय वि [अझान्त] भ्रम-ध्रित (हुमा)। अपुरस रेको अपुरस (ठा १ २) । क्षर्यम न [बाबदा] मैतुन, की-सङ्ग (परह १४)। बारि वि ["बारिन] बहुनर्ग नहीं पालनेबाला (पि ४ १, १११)। অৰত্নিৰ পু [অৰত্নিক] 'ক্ৰমীকা মালো हे सर्वे ही होता है, न कि कीर-नीर की तुरुद्ध ऐक्य ऐसा मामनेवाला एक निश्चन--वैनामासः। २ न उसका मद (ठा७ विसे)। द्यावस वि [द्यावस्त्र] बल रहित निर्वेस (परम XII (\$8) 1 कावस्त्र की [अवस्त्र] की महिला कनाना (पाम)। कावस पु [कावरा] वरवातल (से १ १)। अबहिटू न दि अबहित्य] मैकून धी-एक्न (सूब १ ६)। अवद्विम्मण नि [अवद्विमेनस्क] वर्गिष्ठ वर्ग-दलर (याचा)। द्यबद्धिस ) वि [अवद्वितेश्य] जिल्ली अवदिहोस्स ) विच-वृत्ति बाहर न बुगता हो संबद्ध (भन परह २ ४)। क्षवाधा वैको क्षत्राह्य (वीन १)। काबाइ पू [बाबाइ] देश-विशेष (इक) । श्रवाद्याच्ये [अवाया] १ वाच का ग्रमाध (स्रोध १२ मा, क्य १४ ६) । १ व्यवकान, मन्दर (सम ११)। १ वाध-स्मृत समय (भग)। भगादिर म [ भवदिस् ] बाहर नहीं गाँतर (डुमा) ।

क्षवादित्य वि [क्षवादा] मीतरी धाम्यश्वर (वस १) ह कावाहिरिय वि [सनाहिरिक] निसके विसे के बाहर वसचिन हो ऐसामीय या राहर ( **43** ( 1) 1 धानीय बेको अनीय (कप्प) । अध्यक्षमा च [अध्यक्षमा] नहीं जान कर, किसियि तमकाह संबुक्त गार्थ (सूच १ १३२)। क्षयुद्ध वि [अनुष] १ घणन, मुर्च । (दस २)। २ घविषेकी (सूध ११)। अयुद्धिय ) वि [अर्जुद्धिक] बुद्धि-र्राहत पूर्व अबुद्धीय । (काँगा र १७३ तुम १ २ १३ परमाय ७४)। अबुद्द वि [अबुध] १ धनान । (सूध १ २ १३ मी १)। २ मूर्ब, बेवरफ (परह १ t) 1 क्षबोह वि [अबोध] १ बोब-रहित सवान। २ पूँचान का समाव (सर्व १)। अवोद्दि पूंडी [अवोधि] १ ज्ञान का प्रशास (सूम २ ६)। २ वैन वर्म की ध्रमाप्ति। ३ वृद्धि-विरोप का प्रमाव (मग १ १)। ४ मिथ्या-बान 'समोद्धि परिमालामि बीस्ति स्वसंप-मार्मि (प्राप ४)। १ वि वीवि-रहित (मग)। अवोदिय न [अवोधिक] उसर रेको (रश पः समार १२)। अञ्बद्धाः वृद्धाः विष् कार्यम वेको कार्यस (सुरा ११ )। अर्वमण्य ) न [अञ्चयप्य] श्राप्य का कारमाम्बरण ) दानाव (नाट प्रायी ७३) । कारमीय देशो क्षत्रीय (वेदम ७३५)।

पन की प्राप्ति (दे १ ४२)।

गोरित (तंद्र ७)।

क्ष 'धानू' नाम से प्रसिद्ध 🖁 (राज) ।

२ वेद, बारच (ठा ४ ४ पान)।

सम्बो (सर्वा १,१ २ ३)।

खब्दांग सक [अभि + अञ्जू | तैन पावि से मर्थन करना भातिश करना। प्रवर्भवह, सक्तेपेड् (महा) । संहः अक्सीमार्थं, अर्मा गत्ता, अर्थ्सगिता (अ १ २६४)। हेक्क- अध्मरीचप (क्स)। खब्धांग र्थु [क्षभ्यक्ष] हैन-मर्बन मार्निछ (तिषु १)। अब्धंग्य न [अक्स्प्रान] ज्ञार देखी (स्त्राम १ १ मध्य) । अवसंगिपञ्चम ) नि [काम्यका | वैतादि से अक्सोंगिय 🔰 महित माधित किया हुमा (धोव द२ कम)। अक्संबर न [सम्यन्तर] १ भीवर, में (बा ६२६)। २ वि भीतरका भीतरी (सम महा)। ३ समीप का नवरीक का (सम्बन्धी) (बद)। ठाणिका दि[स्थानीय] शबरीक के सम्बन्धी कीटुम्बिक चीन (विपा १ ६)। तत्र पूँ[ तपस्] विनय वैदा-कृत्य प्रायमित्त स्थान्याम ध्यान भीर कामी-लागैक्य बन्तरंग क्य (स्न ६)। परिसा की [ परिपद्] मित्र बादि समान वर्नो की समा (चय)। "स्मिद्ध सी ["स्रविध] धववि कान का एक मेद (विसे)। स्रीयका औ की "शम्बुका किला की एक क्या, यदि विरोप (का ६)। "सगबुद्धिमा भी विश्वक-टोर्किका] कामोध्यर्ग का एक बोप (पन १)। अवमंतर वि [अम्यन्तर] मीतरी मीतर का (वे ७ ठार १ पएए) ३३) । अर्च्यांस वि [अर्घाशक्] १ प्रष्ट नहीं होने बाखा (नार) । २ मन्द्र (कुमा) । अवसक्ताइक देवी अवसक्ता *अक्रमसम्बद्धा न* [के] प्रकृति प्रप्रशाहि 2 42) i अन्युद्धसिरी भी चिं रण्या से भी समिल **अस्मकता तक [अध्या + क्या] पू**ठा बोप सनामा शोपाधेप करना। प्रव्यक्ताह अब्युय पूं [अर्थुव] पर्वत-विशेष को साव (मन १३ ७) । इ. अवसक्लाइटा (प्राचा)। क्रक्मश्काज न [क्रम्याक्यान] पूठा वर्षि-अब्युयव[बर्बुद] जना हुमा तुकसीर मोप सम्रत्व दोवारोप (पराह १२)। अस्मह केवो अस्मत्विय 'च(त्व)महुपरि ब्बब्ध न [अध्र] १ यासम्ब । (शहा पाध)। भार्य (पिंड २८१)। थब्स कड [था + सिक्] नेशन करता। अवसब च [के] पीचे बाबर (के ११५)। ब्रह्मणुजाज सर [ब्रास्यतु + हा , धनुमति

**क**ा सम्मति का। प्रकानुगरितस्ति (शी)

10

ह्यक्रमणुक्यम देशो जन्मणुण्जाम (सामा १ १ क्या सूर १ यह)। **ब्रह्मका न [श्रम्यर्थ ] १ तिरुट, नक्री**क । २ वि धमीपम्ब (परम १ व १ व)। "पुर

ल [\*पुर] नवर-विशेष (पक्रम १ ॥)। अध्यक्त नि [अभ्यक] १ तैनर्पर से गर्बन माचिष्ठ किया हुमा। २ सिक, सीवा हुमाः विदेशिक कामसमृत्यिकाचे पत्ती वासा-रखों (हर २.७)। अग्रस्थल्य कि किश्चनस्त्री पठित स्थितिक (मुपा ६७)। **बा**द्माल्य एक जिमि + अभ्यु ी १ छन्त्रार करता। २ श्राचैना करता। सरमत्त्रमङ् (पि ४७ )। एक भारताहरू छन्मत्वाहरू (मार) । ज अवसरवजीव (मधि ७ )। श्रद्भारवय न [ब्रास्थ्यमीत] १ एत्हार।

२ प्रार्थना (क्यु: हे ४ १ ४)।

कश्मरकमा ) स्त्री [बाहबबेना]१ प्रावद, भव्मस्थिता र स्त्रार (१ ४ ४)। २ प्रार्थना विश्वति (वैचा ११ शुर १ १६)। 'न सहद प्रश्नास्त्रियं यनद न्यास्ति भिट्टिमंबाद । रद्टूण मानुष्पुर कमधीई को स बीहेर्ड (क्या ११)। अवभरिवय वि [काम्बर्धित] १ का∘त सलामा २ प्रास्थित (सूर १: २१)। क्षरमञ्ज देशो शहमण्य (पाद्म) । मध्मपद्वत (वें) उत्थान्-विरोध शोधव

सम्रक समरक (क्ल ३६ ७१)। मस्भिपसाम र् [दे जन्निपशाच] सह (दे 2 ×3)1 सब्सय र्षु [कर्मक] बालक बचा (पात्र) । बरभय र् [बाझक] स्वन्त (वी ४) । मध्मरदिष वि [मध्यदिव] क्लारनात नीरनरामी (बह t) ।

श्रद्धश्रवहरिय वि [अभ्यवहत् ] प्रकः (पुत्र २. १७)। लब्स**बहार 4 शिरुपबहार** भोनन बाना (विदे १२१)। **अध्यावालया स्त्री वि** अभक का पूर्ण (प्रस १६ ७४)। सहस्रका हैवो असका असमार्थ सिंहा रांतप्रसा राज्या भन्या (पर्स ४)।

अवस्थास एक जिस्सि+कास ी शीक्षणा, बाध्याच राजा। यह खबमसीत (स ६ ६)। इ. अक्यसिय#व (पुर १४ ° १)। भारतसम्बन (अध्यसन) यात्रात (स्तरि अक्सिसिय वि [अध्यस्त] बीबा इया (पुर 2 tu 1 4 22)1 क्षकशहर पू कि पत्रक (र्गन के र )। अवस्थित वि अस्यविको विशेष, श्यादा (सम २० चुर १ १७)।

अध्यासच्छ वि [सम्बा+गम्] संबुक याना धामने याना । यब्नायन्बहर (यह ) । श्रवभाइक्त रेको अवसक्ता । सम्बद्धमन्द्र धक्तद्वचेना (शावा) । ब्यक्सानम् दु [क्रभ्यागम्] १ वपुत्राचनरः। २ धमीप स्विति (नियु २)। अक्सोगसिय हेवि [अद्यक्तरात] १ अपू-अध्यागय ∫ दायते। २ ५ पायन्तुक पा**ष्ट्रम मतिबि (सुम १२,३ पू**पा **१)** । **अब्सावन्त**्र) वि वि] प्रशास्त्र शास्त्र दावा **अस्थाक्तम**्रिका (वि. ११)। भाषमास पुं [बाइवास] प्रस्तार (पस् ७४) বিষ ৭২২)। ब्बब्धास न [ब्बद्ध्यास] १ निनट, नजरीफ (सं ६, ६ पाम्र)। ए वि सुनीपवर्ती पार्ल रिचत (पार्च)। ३. पू. रिज्या पड़ाई, सीचा। ४ शम्भित (यसर द्वार् १)। ≣ शास्त (ठा

४ ४) । ६ धा**वृधि से उ**न्पन्न संस्कार (वर्ग २) । ७ वरित्र का सकेत-किरोप (काम ४ **₩** 3 = **1**}-अवसास सक [असि + अस्] समास करता, घावत कलका: **भं सम्बद्धाद जीतो पुर्श न दोर्श भ** प्रवाजन्ममि ।

श्रे पावड पर-लोए, तेरा य यक्तास-मोरस्य (वर्ष १) वर्षि । **ब्रह्माहच नि (अप्रवाहत) धानार-मात** (महा) । कार्डमग्र केहो क्षप्रमीग् = ग्रीवंश्योग् । प्रवी-धर्षिमयाबेद (पि २६४) । खर्डियम देखो अर्थ्यम् = सम्बंद (शामा १ 26)1

व्यक्तिगाण देखो शब्द्यंगण (क्य) । अस्मितिय रेची अस्मितिय (रूप)। बर्बिमतर देवा अब्भेतर (क्या सं ७ पण्ड १ मालाया १ १६)। अध्यक्तरका च [अस्यन्तरतम् ] १ केतर से। ए मीतर में (बादम)। **अधिंमदरिय वि [आध्यान्दरिक] भीदर** का क्लारेन (सम ६७) कम्पा छाना t 1 (3 वर्षभवस्कि र् [बाध्यन्वरोधिन् ] नामेन स्तर्पकाणक क्षेत्र होनो पर के श्रीकर्तों को

मिनाफर भीर पुलिनों को बाहर छैताकर किया वाता ध्यान-विशेष (वेण्य ४०७) । व्यक्तिपद्भ वि [दे] संपर्ध सामन बाकर मिड़ा हमा हिली हजीए सर्ग ग्रहिन्द्री रहनपै च्य च्यूची (परम ६ १≈२ १≈ २७)। अध्यक्ष क [सं+शम्] संबंधि करवा मिलना। सम्मिक्ट (कुमछ हे ४ १६४)। व्यक्तिकपु (सुपा १६२) । व्य बसर्विका वि [संगत्त] संबत कुळ (गाम) £ ( w ) i व्यक्तिमंबिक वि [व] सार, मनवृत्त (दे र 86)1 **अवि**सण्य वि [कासिका] मेक्सीक्ट (बर्न २)। **ज**बसुभव केंद्रो अबसुक्ष (छ १४, १४, स 🛊 )। व्ययपुरुत यथ [श्रमि + ४६ ] रीवर करना । वङ्ग ध्यवसुक्त्रीत (वन्ता 🖘 ) ।

**अच्युक्तात्र व [बाध्युद्धाव]** स्वित करता विज्ञान (स १७६)। अब्युक्तजीया के [अम्युक्जीया] गौकर, बाताद, यनन 🛭 विस्ता कत्त (इह १)।

अस्तुसाय वि [बास्युद्रस] १ कात । २ वन्तव (सामा ११) । १ वैवा किमा हुमा

क्काबा इचा (चीव) । ४ नारी तरफ फैला

अस्भारतम वि [बाझोद्गत] क्वा जात

अस्तुराम वृं [सम्युक्तम] स्थ्य

48 ) 1

(सम १ १४)।

इध्य (चंद १८)।

(सप १२ १)।

कारमुख्य पुं [अभ्युष्य] समुख्य (नास 8X) 1 अध्मुखय वि [अध्युक्त] १ उत्तर ज्यान बुक्त (कामा १ १) । २ दैसार (कामा १ १ सूचा २२२)। ३ द्रं एकाकी विद्वार (भ्रम्म १२ डी) । ४ जिनवनियक युनि (पेचन ¥) 1 - अस्पुट्ट पत्र [अस्पुत्+स्या] १ यावर कले के लिए कहा होगा। २ शयल करना। ६ रीयाची करना । धनमूद्ठेड (महा) । नक्र अञ्जूद्रमाण (स ४१६) । श्रेष्ठ अञ्जूद्विन्ता (मग)। हेइ-अस्मृद्विचय (ठा २ १)। **इ अध्मुट्टेयब्ब** (घ द) । व्यक्तुहुम न [ब्रम्युस्यान] धारर के निए बाड़ा होना (से १ ११)। क्षमुद्रा की नस्पुद्र। अस्मृद्राण देशी अस्मृद्रुज (सब ११ मृपा 1 (7#5 अब्सुद्धिय वि [बास्युत्यिक] १ सम्यान करने के लिए की बढ़ा हुआ हो (ए।मा १ व)। २ क्वत वैवाठ प्रस्कृष्ट्रिएस् ग्रेष्ट्रेप् (एल्बर १ पवि)। अस्पुद्देतु [अभ्युरभाष ] धम्पुलाग करी-माला (ठा ५१)। अध्युष्प्रय वि [अध्युष्टत] १ जात जीवा (पएह १ ४)। सरमुष्ययंत सह [अञ्चलयत्] १ जेवा करता हुया। २ वसीवित करता सुमा तीएवि बसीर्ड धीववरितमञ्जूष्युक्तवीय् (मा 748) 1 अस्मुत्त भर्क [स्ता] लान करता । प्रापृत्ता (६ ° १४)। यक अस्मूर्यत (हुना)।

अच्युच पर [प्र+वीप्] र प्रव्यक्ति क्षव्यवस्य 📧 [अप्रयुप्तत ] १ स्तेष्ट्र (सूर ६ ३,४) । ३ समीप में गया हुमा (माणा) । होना । २ उन्तेनित होना । प्रश्नुत्तर (हे ४ अब्भुबबण्य वि [अभ्युपप**म] धनुवर्**मास १६२) । सम्प्रतप् (कुमा) । प्रयो-सम्पुर्तेति अनुमुबीच (मार्ट पि १६६ २७६) १ (के **४, ೩**९)। अस्मुषवित्तं की [अध्यूपपिति] समुपह क्षस्मृत्तिक वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशिय । २ जरोबित (से १४, **१**≈)। शक्रकानी (समि १ ४)। शब्दात्य हि [अप्रमुख] जराब "पुष्पमस्यु-अस्मृव सक [सप्रयुप + इ] स्वीकार करना। अस्भूभे आसि (ए। या '१६ टी पत्र २ ३)। रपरिखेशको' (यहा) । अवभो देखो अस्वो (पर )। श्राच्यात्यः ) देशी अस्मृहा । वह अस्मृत्यंत बारमुखा है (हे १२ १८)। वह अस्मू-अञ्भोषिक्य वि [अम्युद्धित] सिक्त सौंबा स्थिता (काल)। ्रध्या (ग्रुट १११)। ध्यन्मृत्य पुं [अध्युद्ध] र ज्वति अस अवमीळ वि [असाव्य] भीवत के स्म्योप्य (प्रयो २१)- श्राच्युयमुमन्त्रसम् लक्कुतं नच्यतं (विश्व १६ )। स्रीहर्म (उप ७६८ धे)। खब्मोय (थर) देशो आमीग (मनि)। शब्दादार यह (कान्युद् + श्रृ] उद्वार करना । अक्मोबगमिय वि [आइयुपगमिक] बन्द्रदर्शन (शीर) । स्त्रेच्छा वे स्त्रीहरू । (बी वि) स्त्रेच्छा वे स्मृद्धरण न [सम्मृद्धरण] १ स्थार (स स्वीष्ट्रत क्षप्रवर्धीर की बेदना (छ ४ ३)। १४१)। एकि जबार-कारक (है ४ ६६४)। अस्टिह देवो अस्मित । ग्रम्हिह (पर )। अञ्भूमय केहो अस्युष्पय (लाया १ t) । अब्दुत्त रेवो अब्भुत्त प्रमृतः (पर् )। अब्भुष्मव दि [बास्भुद्भट] समुद्भट विशेष **छदत्त** (अवि) । ब्यसम्म वि [अमन्न] १ म्ब्लिएवट मनुदित कारमुख न [कार्मुत] १ बाधर्य, विस्तव (उप (पडि)। २ इस नाम का एक चौर (विदा **७६**= दी)। २ वि बानर्य-सारक (रायः t () 1 नुपा ३९)। ३ वूं साहित्य शास प्रसिक्त श्रमच वि [श्रमक] १ मकि मही वरनेवला रहों में से एक (कुमा) । २ म. मोजन का ग्रमान (क्व ७) । विम्हमकरो बपुष्की अग्रुवपुष्को व वी ैह पूं ["भैं] करवास (शाक्ट पति मुपा रती होई। ३१७) । ट्रिय वि ["पिक] छ्रोपित हरिसनिसाउनासी अवस्थायो प्रत्युप्ये नाम विसने प्रापास किया ही वह (वेषव २)। असम न [लमय] १ मन का प्रमाव भैमें अस्मुक्तक्क सक [क्षस्मुप + तम्] १ (राम) । २ जीवित मराग्र का समाव (मुच क्षीकार करना । ने पास बाना । प्रकी- संक्र १६)। १ वि भय-रहित निर्मेच (शाचा)। अब्युषराचमाचिव (पि १६६) । ४ ई राजा श्रीतिक का एक विकास पुत्र और अस्मुबगच्छाविध वि [अध्युपगविदा] मन्त्री जिसने मनवान महाबीर के पास कीता स्नीकार कराया हुवा 'साहे कीई कुमारेडि सी भी (मनु १ स्त्रास ११)। इस्तार पू संबी मर्ज पाएला सम्बूषगण्याविको विगमगर्की [<sup>\*</sup>डमार] रेको सनम्बद्धक धर्म (पवि)। चित्रेष्ट्र (बाक पू ६ ) । व्य वि विद्यो यय-विनासक की विश्व वाता अब्युष्णम पुं [अञ्युष्णम] १ लोकार, (पडि) । दाण न [दान] जीवित-रान मङ्गीवार (का १४३३ त १७ )। २ तर्व (पल्ड २, ८) । दिस न दिसी करएक शास-प्रसिद्ध सिद्धान्त-बिरोप (बृह् १ सूध विश्वात वैनापार्व और बन्धरारों का नाम ₹ **₹**₹) i (पुलि १ = भाग ग्र. १४३ ती ४ ३ दार्थ अन्युवगमाणा की [अध्युपगमना] स्वीकार, च्याण न ["पदान] शीरित का मञ्जीकार (क्ल ४ १) । थान (सूध १६)। बच्च न विस्तृ निर्मयका

<b>£</b> 2	पाइअसर्महण्यको	क्रमयं≢रश्रमिगम
समय (नुस ta)। सम दु [सेन] एक	शामनै 'ध्रविमण्डरणमा' (श्रीप) । २ पारी	अधिमव हे स्वो अस्मीगव (नष्ट रंग)।
रावा बा नाव (रिंड)।	ग्रीर, क्ष्मणात्। 'प्रविशे' (स्त्रप्प ४२) । १	-14447
प्रमधंकर ति [अभयंकर] प्रमय केनेवानाः,	वसाभार, "समियोग" (वर्ष २) । ४ उद्घोषन,	अभिकृत एक [अभि +यह्स् ] स्प्य
धर्षिक (नूप १ ७ २ )।	विक्रमण "व्यवस्थ" (श्राचा) । ९ वश्यन्त	करता, श्राह्मा । धरित्रं केमा (माचा) । वह
अस्यवराधी [अस्यव्य] मणवर् धरि-	क्यारा 'अविदुष्पं (मूध १ ६ २)। ६	भभिनंदामाण (रह ६, ६)।
करत की दीया-रिविक्त (विकार १२१)।	नध्य "प्रमिन्नुहैं। ७ अस्तिरूर्व "प्रमिनार्य	सभिष्ठता को [अभिकास्का] परिनास,
अभया थ्री [अभया] १ इरीवनी हर्रे हरवहै	(याचा)। ८ विषरा । १ संघारना (निषु	श्च्या (प्राचा) ।
(निषु १३)। २ राजा वनिवानन की बी का	१)। १ निर्ध्वकं भी इत सम्यय का प्रयोग	समिक्षीत ] वि [समिकादिसम्] यी
माम (वी १४) ।	होता है, 'ध्रमिनंतिय' (पुर १६ ६२)।	अभिकेरिर ∮नापी इच्छुक (पि ४ श दुग
अभयारिद्व व [अप्रचारिष्ट] यथ-विधेय	अभिज्ञ दुं[अभिसन] १ दुन । २ जन्म-	494) t
(त्य १ म)।	वृषि (शार) ।	अभिकात वि [अभिकारत] १ पट मिर्ट- काला भाग्निर्दर्श व क्यू वर्ग पेक्सप्
अमर्गमिक्य ) पु [अभवमिक्रिक] पर्व,	अधिआवण्य वि [अध्यापम ] संबूध-गान्त	बाला चलास्त्रत व बाहुन्य क्याप्त (बाक्ष) । दक्षेत्रक सहा देशास्त्रवा ४
मभवसिद्धीत र बुँचि के तिये सर्वत्य जीव	(मप१४२)।	, ,
(ख २, ११ तंदि का १)।	अभिश्व ब्रिं [ अभिजिन् ] नतन-विरोध (श्र	क्लॉक्ट (धाना सूच २, ९)।
असदिय रे वि [असस्य] १ धनुन्दर, धनाव	इ. इ.)। अ। शर्का िवामावार ो स्थाननका (था	शमिश्चन दक [असि + कस्] १ पता
अभक्य ∫ (सिन)। २ वृं युन्ति के निये सर्वोग्य		्रवरमः। २ सम्बन्धे कला। <mark>१ कस्तंपन</mark>
मीत (रिने काम १२१)।	र्मासद्द नक (अधि + इ] सामने भागा, संपूर्ध	क्लाः ४ शुरू क्ला। वह अभिवसमाय
समाज रि [अभाग] स्त्वतः स्रोत्य त्यातः	वाना। मह क्यिईत (इन १४२ टी)।	(शाणा) । शहर अभिकास (नूम ११२) ।
(A A3)1	अभित्रं ब वेली अभिनुति । तोहः, अभि	विभिद्यपुर्व [अभिकृत] १ जल्लोचन । २
समाह दि [समाधित] समाया हत-नाग्य	र्रिजिय (छाने ४० दन १)।	शास्त्रम् । ६ चंद्रच-यक्तः ४ वक्तः गति
वजनगर (बार २६)।	विभिन्नात 👌 पूर्विभिन्नोगी १ बाक्स 🛭	(धारा) ।
समागमञ्ज रि[सभागपेय] कार रेगो	अभिजोग 🕽 हुदुन (बीप टा१)। २	कमिक्स ] य [अभीक्ष्म] बारवार (४१
(पदम १४ १)।	वराकार, विविधीने स कियोरे (श्रा १)।	अभिक्तमण है रेपेंग्री हार्थ वन है)।
समार्ष् [समाप] १ ध्रेन नारा (५३ १)।	१ क्तालार ते नीई श्री कार्य में समाना	अभिक्ता भी [अभिक्या] वान (निने
२ प्रश्चिमानता, स्कार (वैदादे)। दे	(यमें २) । ४ व्यक्तिमा परावर (दार ३) ।	{ ½ w}) t
मनक्षर (स्त्र १)। ४ मगून परिराल	े दशारंश-प्रमोद्ध बस्तोबस्या बस करने वा	अभिग•्द्र सक [अभि + गम्] प्राप्त
(बच १)।	चूर्णं या मन्द-गुरुवादि 'दुरिहो चनु चनिष्योगो दन्ते त्रति व	करता। समिनमाइ (दम ४ २१ २१ दे <sub>र</sub>
भभाषिय रि [भभाषित] वरोग्व स्तृषित	दुरग्हा चन्नु मात्रधामा दश्य नाम म होद नामभी।	( <b>१</b> १)।
(at 45)!	हार नामभा। सम्योग होई मोगी निज्ञा मंता व शासीन	अभिगच्छ सर [क्षिम+गम्] समनै
क्षभाषुग रि[अमायुक्र] दिसार दूनों ≶	(क्षेत्र ११७)।	पाना। यमिनस्पेति (त्रव १ ५)।
संग्रामी मन्द्रम् पृष्ट् तके बर ाहिन्द्रस्थणी		अभिगरस्त्रया भी [अभिगमन] संदूर्ण
मसापुरस्य बीरो ६ ब्यू ई हरूप' (बुरा	(शार)। भिष्कत्ति की क्रिकृति दिवा-	वशम (पीरा) ।
र र योष ४०३)।	Now tower a set, but suffering,	मधिगण्ड्या देशे अभिगच्छण्या (रा
धमासग्री रि [अमापक] १ केन्त्रे की		() t
सभामय ) रुद्धि जिल्लो जेपल प हुई हो		ं अभिगज धर [अधि + गर्जे,] पर्नेग
बर । २ नहीं बीजनेराला । ६ पूँ वेंचल स्वय्- रहिस्ताला, एवेदिक बीर । ४ कुल सम्मा		नूद बोर ने याराज करना। नह अभि
द्वाद्रकानाः, एताद्रकानासः अञ्चलः सन्तरः (द्वादे, अंबर्गसन्तरे ।	अभिभागी में [माभियोगी] चारना-रिधेश व्यन-रिटेश को समिरोनिक देर-तति (नीनर	गर्जन (लाय १ १वा मुर १३ १वर)।
		अधिगय रेपो अधिमस्य । इ महिन
क्षभ्रामा की [भ्रमारा] रेयन'व वयते। १ स'क्षरिचित्र सन्तव वयन (बा २३,३)।		गीय (ब ६७१) ।
स्य क किटिंग शिक्षानित करी वें वे		अधियम र् [अभिगम] १ वर्गन स्रोतार

श्रमित्राचग व [अभियाजन] रेखो अभि

भोग (धर क्या ३ )।

(प्रस्ति) । २ धारद बलार (जा १ ४)। ३ (इव का) काम्य बीख (लागा १ १)।

भ न भ [भ्रमि] निम्ननिरिंग वर्गों में है निर्मे दन में बनुत्रत्नेरास वसक-१ बेंबुक ·४ ब्राम्, निवास (पद १४१)। १ सम्स-क्ष का एक मेद (ठा २,१)। ६ मनेश (B = 99)1 अभिगमण न [अभिगमन] बनः केवी (स्वप्न १६ | सप्तमा १ १२) । अभिगमि वि [अमिर्गमन्] १ पावर करते नामा । २ उपयेशक । ३ तिबय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला १ स्वीकार करने बासा प्राप्त करने वाता (पएएए ६४) । **असिगय वि [असिगत] १ प्राप्त । २** सत्तर । १ उपविष्ट । ४ प्रविष्ट (इ.इ.१) । इ. ज्ञात निमित्त (ए। स्य ११)। अभिगद्दिय म [असिमहिक] मिच्याल क्रियेप (क्रम ४ ६१)। स्रामितिस्क सक [अभि + गृघ् ] बि सोन करना बासक होना । कह- व्यक्ति-निजनति (सूम १ २)। अभिगिण्ह् १ सक [अभि + बह् ] बहुए अभिगिन्दु करना, स्वीतारना। सनि-मिरहर (कम्प)। सं**ह. अ**भिनिति**न्**चा असिगित्रमः (पि ४ वर ठा २ १)। काभिगाइ पूं [अभिप्रह] १ प्रतिका नियम। (सोच ६)। २ वैत साधुर्मी का भावार विशेष (इह १) । ३ प्रश्याक्यान (लियम विरोप) का एक मेद (मान ६)। ४ नवा-। बहुह्ठ (ठा२,१)। ३. एक जनगरका शारीरिक विनय (वव १)। अभिगाहणी की [अभिग्रहणी] नापा का एक शेष, बसरम-मुपा बचन (संबोध २१) । लिममाहिय वि [अमिप्रहिक] योग्यह वासा (ठा२ १। पर ६)। अभिगादिय दि [अभिगृहोत] १ विसके विषय में मनिष्ठह किया क्या हो कह (क्ष्म पव ६)। २ त. सनवाएए। निवाय (क्एए ११)। अभिषद्द सक [अभि + षट्ट] देग से जाना : करक अभियद्विज्यभाज (राय) । अभियाय पुं [अमियात] प्रशुर, मार-गैट, दिशा (पराह १ १; दाह ४)। श्रमिचंद पू [श्रमिचन्द्र] १ यहुवंश के राजा सम्बद्धापिए का एक पुत्र जिल्लो बैन ह

समिएवर (स १९३)। क्टू- अभिर्णदेव दोसासी की (संत ३)। २ इस नाम का (भीप खामा १ र परम ६ १३)। एक दुसकर पुरप (परम १ ९३)। १ क्षकः अभिव्यविकामाय (हा श खाया मुक्तुने विशेष । (सम ११) । १ १) । अभि**व**ण **रेती अ**भिक्षण (स्वप्न २६) । अभिजीवय वि अभिनन्दित विसदा अभिजस न [ अभियशस्] धन नाम का स्मिनलान किया गया हो वह (सुपा ६१ )। एक बैन साधुमों का कुल (एक मानार्य की अभिजंदण न [अभिनन्दन] १ धरिनश्वन । श्वंति (कप्प)। २ वूं बर्टमान बनस्पिछीकास के बतुर्प समिकाइ सौ [अभिकाति] हुनीनता विनदेव (सम४३)। १ नोकोत्तर शावसमास । बागवानी (उत्त ११) । (सुवा १) । अभिखाण स**क [अ**भि + द्या] जानना । अभिगय पुं [अभिनय] राधिषः वेश के क्ट अभिखाणसाग (धाका)। डाय **इ**बय का मान प्रकारित करना नाट्य अभिजात पुं[अभिजात] पत्त का ग्यारक्षी क्रिया (स्र ४ ४) । दिल (सुका १ १४)। खिमाजन वि [अभिनव] दूतम्, मना (बीव अभिकाय वि[अभिजात] १ प्रत्य 'परि-R) t बासपुर्दो (उत्त १४) । २ क्रुसीन (एव) । [अभिनिष्कात्त] **अ**भिणिक्**रां**त ৰি कामिमुंब एक [अभि + युज् ] १ मण्ड-शिक्षित, प्रवनित (स २७८) । लम्बारि से करा करना। २ की ई कार्य में आभिजिगिज्य सक [अमिनि+मड्] संयाना । १ धार्मिनन करना । ४ स्वरण रोकमा, धटकामा । संह- अभिधिनिक्स कराना यात्र विचाना । चंद्रः स्वसिशुंबिय, (पि १११ ४८१)। काशिजुंजियाणं, कमिशुंजिता (यर २ क्रिभिजवारिया औ [अभिनिवारिया] इस्प्रदशकाचानगर्देश)। भिका के निए यदि-विरोध (वब ४)। काभिणिपना की [अभिनिप्रका] मनय-अमिजुक्त वि [अभियुक्त] १ वट-नियम में धलय रही हुई प्रजा (वव १)। जिसने पूपल न समामा हो यह (लामा १ अभिजिब्दस्य स्क [अभिनि+बुध्] १४)। २ कामकार, परिस्त (रादि)। बानना इन्द्रिय सादि द्वारा निवित्त 🕶 ये **व दुरमन से विराह्म्या (वेग्री १२**)। कान करना । धविशिकुरफर् (विसे = १) I अभित्रम्य की [अभिन्या] बोम कोन्द्रपता कमिजिबोह् पूं [अभिनिवाम] शत-विदेव सामकि (सम ७१ पल्हा१ ५)। मक्ति-जान (सम्म ८६) । अभिग्निम्हय वि [अभिन्यित] प्रामनपित अभिविषयहण न [अभिनियसन] पीछे वासिद्ध (पएए २८) । बीटना चापस बाना (माचा) । क्षियद्विक वि [अभीए] प्रक्रिपेत (बका अभिजिबेट वि अभिनिविष्ठी १ छोत्र (¥¥5) क्य से निविष्ट । २ घापड़ी (छत्त १४) । अभिट्रुय वि [अभिप्टुत] वर्णिय स्ता-अभिणियस पू [अभिनिवेश] पायह ह वित प्रशंकित (मान २)। (ए।पा १ १२)। अमिहहूय रेची अमिद्दुय (गूप १ २, अभिजिबेसि वि अभिनिवेशिय ] क्य पही (परम्द ११७)। जानजनत } देवो असिणी अभिणक्ष्मति } श्रमिणिनेह रू [अभिनिषेष] बनटा मताना (धाषम) । द्यमिणंद् सक [अधि + नम्द् ] १ प्रशंमा व्यक्तिविक्तागर वि दि व्यक्तिकर्वोद्धती करना, स्मृति करना । २ वासीवांव देना । मित्र परिवि चला वृक्तभूत्र (बर वरीरह) ३ प्रीति करना । ४ चुरी मनाना । १ चाहना (यस १, ६) । इच्छा करना । ६ बहुमान करना, भावर करना ।

अभिजिब्सट् धर [अभिनि+कृत्] रोक्ता प्रतियेश करनाः से मेहाकी श्रीम-लिक्टरेक्स कीई च मार्त च मार्व च सीमें च फेरबंच दोर्सच ग्रेष्टंच एको च कर्म च मारंच शर्यच तिर्धित कुच्चे वं (माना)। क्रमिजिञ्चर एक [अनिर्+वृत्] १ श्रंपादित करना निभाव करना । २ घरणा क्रजा। संह—अभिविञ्जक्तिचा (क्र X, Y) (

स्रमिनियह वि [समिनियु च] १ नियाधार करना 'छ बनुमत्तताय वेदि तेर्षि कृतेर्वि मन्त्रिएका मनिसंस्था गरि-संवादा मन्दिशाचडा मनिर्दद्वका यमिसंद्वा यभिनिवर्वटा अनुपूलेख महामुखी (माचा)। **अभिजिब्द्र वि [अभिनिर्वेत्त]** १ प्रक मीरत-प्राप्त (सूच १२१)। २ कान्छ मनुस्ति (भ्रापा) । १ पाप सं निवृत्त (सूध ₹ ₹ **()** 1 अभिजिसका 🛍 अभिनिपद्याः 🦣

ताबुधों के खुने ना स्वाल-विशेष (वन १)। भ्रमिजिसद् देवो अभिजिसिद् (न्त्रव १)। क्रिमिजिसिड वि जिभिनिस्छ । बळर निकला हुमा (बीव ६)।

भमिजिसेहिया भी विभिनैपेषिकी 🖣 साध्यों के स्वाध्यान रचने का स्थान-विशेष (वन १)।

भमिजित्सद यक [बमिनिर्+स्न] निरचनः । प्रविधिस्तर्गत (एम ७४) । समिपी एक [समि + नी] स्रीकार करता गाट्य करना । यह अस्मिणकोष ৬২)। কবর জনিসম্প্রের 422) I अभिश्म न [अभिनूस] नावा, क्यह (सुध 1 2, 2) 1

व्यक्तिक्य वि विभिन्नी जनकार, निम्स (इस १,४ ) । श्रमिक्त विकिमिन्नी १ धरुटित सनि-शास्ति मचरित्रय (उत्ता; येवा ११)। २ नेवर्द्भतः सङ्ग्रन्तुतः (वृद्धः ६) । मॅमिक्जपुर पू [दे] काबी पुविचा जीवो |

को हमने के लिए काइके जिसकी रास्ता पर (マッチ) 事情 (マット) श्वसिञ्जाज व शिसिकानी विराणी विक (भा १४) I

अभिण्याय वि अभिकाती जाना हमा विक्ति (पाना)। र्धामतम सङ [अभि + तर्शे ] शिवकार करना समन करना। वहः अधितव्योशाय (शाका १ १**व**)। अभिवत्त दि [अभिवस] १ एपका ह्या **बरन किया श्रधा (छ्छ १:४१ २७)** । अभित्व कर्ि अभि ÷तप् ] १ तपला।

२ वीका करना 'चलारि बयिखधी समार विता बेर्डि क्रकम्मा क्रिजिति वार्त (स्थ १ १, १ १६) । समझ- अभितरप्रमाण 'ते तत्व चिट्ठेरिमित्स्यमासा स**न्यः व शीर्ष** तुबधोतिन्छा (सुद्ध १ ६, १ १३) । अभिवाष एक [अभि + तापथ् ] १ दपाना बरम करना । २ पीमिट करना । बनिवासर्वेति (दूस १ ३, १ २१ २२)।

(सम १ ६, १ २ ६)। अभितास स**र्च[क्**मि + द्रास्**य्]** शस क्यबान्य भयत्रीत रुएता । क्टू अधिवासे माप्न (रामा १ १८)। भगित्यु वक [समि + स्तु] लुदि करता त्वामा करना वरोन करना । प्रक्रितालीय

अभिताव पृश्चिमितापी १ सक्र । २ वीवा

मिष्युरामि (पि ४१४ विसे १ १४)। वह समित्युवमाव (इप) । क्यू अभिरधुक्यमाण (घरह ९ )। अभित्युव वि अभिष्युद्धे स्तव स्तापित (संबा) । अभिभू वेशी अभिरद्य । वहुर, अभिद्युर्वेत (फाना १ १)। क्यक क्रांसियुम्बसाय (क्य, सर्)।

थमिदुगा कि [कथिदुर्ग] १ दुवोरपास्क स्वान । २ व्यक्तिवियम स्वान (सूच १ ६, १ {w} 1 कमिन्दो (धौ) व [अभिक्तः] चार्चे बीर है (स्वयं ४२)।

अभिद्रव दर्श अधि + ह ] पीता करना

कुळ क्यानाता हैरान करना 'नुवैधि वावादि व्यविद्वं शुद्धं (भाषा २ १६ २)। अभिद्विय वि [अभिद्रुत] उत्पुत हैएन किया क्या (तुर १२ ६७)। श्रमिबृह्य केही समिद्विय (छामा १ श्रम १६)।

लियाइ वि [ बिसिमायिम् ] वाच्छ, व्यक्तेवासा (विसे १४७२)। खमिश्रार एक [धमि + श्रारम् ] १ विकास करना । २ स्तर करना । अभिकारर (वस ६, २ २४ ७त २ २१): धनिवारतामी (तूप २,६ (६): वह असिधारकत (उत्तरि F) 1 ब्रिमियारक न [ ब्रिमियारम ] नारसा খিবুদ (বৃদ্ধ ३)।

लमिनेक रेपे [शमिनेय] पर्व गान्य क्रमिचेव रेप्युचे (विदे रेटी)। अभिनंद 🖦 अभियंद् । यक् अभिनंद भाग (क्य)। क्वइ- अभिनंदिकमाण (**ম্বা**) ৷ शमिनंदण देखो द्यमिणंदण (क्य)।

अभिनंदि की [अभिनंदि] यतन दुर्ख 'पानेच स नॉविप्रेशममिनॉर्व' (प्रति १७)। অমিনিক্রব **আ** অমিসিক্রব (দাবা)। अभिनिक्कम धक [अभिनिर्+कम्] कीता (संन्यास) देना रोबा देने की रूक करता, जुद्रकार 🖢 बाहुर मिकवता । वह-अभिनि<del>ष्</del>यमेत (पि ३३७)।

अमिनिरिष**् को म**र्सिजिरिष्य (प्रापा) । व्यमिनिष्टमः वेदो अभिविद्यस्य । ध्रमिनि पुरुष्ट्य (विसे १८) । अभिनिषद् आगे अभिनिषद् । तंद्र- अमि-

निवृद्धियो (मि ४६३)। व्यमिनिविद्व वेदो समिपिविद्व (वर्ष)।

व्यमिनिवेस इत [ श्रामिनि + वेश्रय्] १ स्वापन करना । २ करना । समिनितम् (बम ६३) ।

व्यमितिवेसिय न [स्रीमिनिवेशिक] निप्पा-लाका एक प्रकार, सन्द बस्तुका बाना होते पर थे क्ते नहीं मानने का बुराधह (मा ६) क्ष्म्ब ४ ६१)।

ध्यमिनिस्पर् थेलो अभिजिस्बर् (कणा धावा) । अभिनिव्यट्ट सक [ अभिनि + यूत् ] पृथ्क होता। वह स्मिनिक्वट्टमाण (सूध २ a (1) i अभिनिक्यट्ट सक [अभिनिर्+वृत् ] नींचमा । संक्र 'कोसायो प्रसि क्यमिनिस्य-हिचा (तुम २·१ १९)। अभिनिव्यागड वि [अभिनिव्योक्त] विभिन्न द्वार वाला (सकान)। (वद १ टी)। श्रमिनिक्तिरू वि [अभिनिर्विष्ट] चंबात रहपम (कृप्प)। **अ**भिनिन्दु**ड रेडो अ**भिपिन्दु**ड** (त २११)। अभिनिसद दि [अभिनि सट] विस्का स्तन्त्र प्रदेश बाहर निकत साथा हो बहु (मग १४, पच ६६२)। अभिनिस्सव देवो अभिजिस्सव धनि-निस्सर्वति (राम ७३)। अभिनिस्सव यक [अभिनि + स्तु] टाक्ना भ्रत्मा । समिनिस्सन्द (सन) । क्यमिन रेको अमिण्ग (प्राप्त)। स्मिनाज देनो कमिण्याण (भोष ४३८ सुर ७११)। अभिनाय देवो अभिण्याय (क्य)। सभिपद्याणिय वि [अभिपयोणित] सम्बा चेपित क्यर चता हुमा (कुमा)। व्यभिष्युद्ध वि [व्यभिष्युष्ट] वरता ह्या (याचा २ व १ १)। अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] समिप्राय सम्बन्धी मनकस्पित (प्रणु)। अभिष्पाय र् [अभिप्राय] बाराय मन परिसाम (धाषा स १४) शुपा २६२)। समिप्पेय वि [समित्रेत] १ए, समिनत (स २३) । अमिमम सक [अमि + मू] परामव करना परास्त करना । समिनवह (महा)। संह. समिमविय, अमिभूव (मन ६, १३) प्रमु १ २)। स्रभिमन पू [स्रमिभन] पराधन पराजय शिएकार (याचा दे १ ५७)। क्षमिमक्य न [अभिमक्त] उसर केनी (सपा ४७६)।

अभिमास एक [अभि + भाप् ] समापण करना। व्यक्तिमासे (पि १६६)। अभिमृद्द सी [क्षमिमृति] परामव यामिनव (g % ) t अभिमृत वि [अभिमृत] परामृत पराजित (बाबासर४ ७६)। क्षभिमंजु रेखो अभिमण्यु (ह ४ ३ ४)। अभिमेव सक [ अभि + मन्त्रम् ] मंत्रित करना मन्त्र से संस्थरना। संकृ स्रमि संवित्रण समिमंतिय (निष् १ बादम)। अभिमेरिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र हैं संस्कारित (गुर १६ ६२)। अभिमन सक [अभि + मन् ] १ वनि मान करना । २ सम्मद करना । समिनमङ् (सिवे २१६ २६३)। अभिमय वि [अभिमत] च्छ चित्रप्रेत (सूच अभिमाण पुं [अभिमान] धरिमान गर्व (मिच्र १)। अभिमार पु [अभिमार] वृश क्रिए(राव)। अभिमुद्द नि [अभिमुल] १ ६ पुच सामने स्वितः। २ जिनि धामने (मन)। क्रभिमुद्दिय वि [ब्रमिमुरिति] संपुत्र किया ह्मचा (सूमनि १४६)। अभियासम् व अभ्यासम् संपूत्र वागमन (सूम११६२)। अभियानम् वि अभ्यापम् संपूर्व प्राप्त (सम्र∜ २ २०)। व्यभिरक्ष की [अभिरति] १ एति चंत्रोग। २ प्रीति धनुषम (विसे ६२२६)। अभिरस यक खिसि + रम ी १ भीका करना क्षेत्रीन करना । २ प्रीप्ति करना । व तस्तीन होना भासकि करना। धनिरमद (गहा)। वह अभिरमंत, अभिरममण (सुपा१२ सामग**१२**४)। स्रसिर्मिय वि [स्रसिरमित] पनुरक्त किया हुमा 'ऋषिरमियकुमुयवस्तुसंड' प्रतिमंडल' पत्ती-शह (गुपा १४)। अभिरमिय नि [अभिरमित्त सेपुक, चेएा-पिरमियं परक्सरां (वर्गीवं १२८)।

व्यक्तिरमिंव ) वि [व्यक्तिरत ] १ व्युरक (गुपा

त्तवनियमश्रेषमाभिरमा (पटम १७ ११ स १२२) । अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोक्र्र (शाया १ १३ स्वप्त ४१)। अभिराम सरू ि अभि + रामय् ] तपरता से कार्य में सवाला। समियामगीत (दस ६, x () 1 अभिरुष्य वि [अभिरुष्यित] पर्यंद मन का समिनत (सामा १ १ जना मुना १४४ मद्या)। श्रमिरुष एक [श्रमि + रुच्] पर्धर पङ्गा दवना । मनियम् (महा) । अभिक्रवंसि वि [ अभिकृषिम् ] मुन्दर रूप बाबा मनोहर (बाबा २,४२ १)। अभिरुद् एक [कभि + स्द्र\_] १ येकना। २ क्यर वहना माधेहना । चेइ-'बलारि साहिए मासे बहुने पाल्यास्या सामम्म । प्रधिष्टम्स कार्य निष्ट्ररिस् मारुक्षिमा ए। तत्व हिसिमु (माना) । लिमरोहिय वि [अभिरोधित] वार्ष मोर से लिट्ड घेका हुमा (एपदा १ ६)। अभिरोहिय मि [अभिरोहित] उपर देखो 'परबद्धरावामराक्रिया' ('परबद्धरावेनापरसे व्यनुपरिनामिरीहिता' सबत' कुर्जनियेबा बा साववां टी) (सामा १ ६)। ब्राधितीय एक जिमि + स्टब्स् किता का करना । वक्क अभिक्षंप्रमाण (णाग 1 (1 3 अभिद्धाप वि [अभिद्धाप्य] क्वन-योग्य निभवनीय (माच् १)। अभिद्यस एक [ अभि + छप् ] बाहता भाज्यता । यद्वितसः (स्व) । लभिक्राम ) प्रजिमिखाप ] १ श≖ छासिस्सम् ∫ भाति (छ ३ १ मास २७)। २ संभाषण (खाया १ ८ विसं)। श्रमिक्षस पूं [अभिकाप] रूप्य पार् (लाया १ 💷 प्रयी ६१) । अभिद्यप्ति ) दि [अभिकापिन्] बाह्ते अभित्यसिय । बाला इस्कुड (वनू, स ६६४) अभिरम १४)। २ कालीन तलए सक् पजम वेश शेरेय)।

ब्यमिकासम् नि [अभिकापुक] व्यक्तिली (स्प १६७ दी) । समिस्रोयन न [अभिस्रोकन] वहाँ को एह कर दूर नी भीज देशी जाय बह स्वात (पबाह २, ४)। अभिन्येयण न जिभिन्नेचनी जार देखो (पराध्य २४)। अभिर्वत् एक [अभि + कस्तू] नमस्कार करना, प्रसाम करना। वह स्रभिवंदंव (फज्म २६ ६) इन ची साइको है अस्ति वंश्यिकमा' (पीय १४) अभिवंत्रिक (मिसे २१४६)। अभिवेदणा की [अभिवन्दना] प्रकार नम-स्टार (वेह्य ६६६) । अभिवंद्य वि अभिवन्दकी प्रशास करते बाला (घोप)। अभिवद्द पन [अभि + पृथ्] वहना वहा होता करत होता। श्रमिवहहासी' चुका यमिनस्थिता (क्य) । नक्र-अभिवद्य हेमाण (# w) i म भियदिह देशो मभिनुदिह (१७)। श्राभिषद्वित देवो अहिबहित (पुन १ १२ वि)। ध्वभिष्यद्वित्व वि [क्षिभिष्यित] १ वहासा हुसा । २ सचिक माम । ३ सदिक मास्त्राचा वर्ष (सम १६ चल्व ११) । स्रभिषद्दे एक [ समि + वर्षय ] वहाना । सभिष्टेरि (गुल ६) । नहः सभिवद्दशाय (सून ६)। संकृ जिस्मिक्द्रेता (सून ६)। অমিৰত দি জিমিকণ্ডী লাকিটি द्यमिवस्ति धी [कमिक्पकि] प्रादुर्भाव (कप २४)। ध्यभिषय एक [ध्यमि + क्रम ] शामन बाता । वष्ट अभिवर्गत (ए।वा १ )। धाभिवाइय वि [अभिवादिव] प्रख्त नग स्क्रम्ब (मूता ६१)। अभिवाद पू [कमिवाद] १ धामने का प्यतः। २ प्रतिपृतः (धरमया कक्क) प्रवय (मापा)। क्षभिवाद ) सक [ अमि + वादव ] अद्यान अभिवास करता नगस्तार करता । स्रीत-

बाएइ (गहा)। धनिवादमै (विशे १ ६४)। क्क अभिवासमाग (कावा) । 🛊 अभि बायणिक (गुरा १६)। व्यभिवाय 🐿 अभिवास (वाचा) । अभियायण ग अभियायनी प्रणाम भन-स्कार (प्राचा दसमू)। अभिपाहरण न [अभिज्याहरण] बुपहर, पुकार (वंशा २)। क्षभिषाहार पू किथिव्याहार प्रधेतर समाम-समाम (विशे १३१६)। क्षिमविद्धि पुंची [अभिविधि] भर्बादा व्याप्ति (पचा ११: विमे चक्ता) । व्यभिवृद्धि की जिमिवृद्धि वृद्धि, वर्षा (प्रज्ञा, श्रमिषुद्द देवो अभिषद्ध । चंद्र- अभि-बुद्दिण (धून १)। লনিৰ্ভিত কী [অনিতৃতি] ং বৃতি. बहार । २ उत्तरमात्रपद नदात्र का व्यविद्वारा केन (वंध)। अभियु**ष्ट रे**को अभिष**ष्ट** । संक अभि-बुब्हचा (धून ६) । अ(सबेदणा की [क्षश्विदना] क्षत्रक रीहा (सूम १ ४, १ १६) । अभिक्ष्यण न [अग्रिक्यक्कत] रेको अग्रि विचि (एम १११)। व्यक्तिकश्चाद्वार देखों अधिकाद्वार (विने 8483) 1 अभिसंक्य न [अभिराह्म] रांकः स्वन (पंगीय ४१)। मसिसका की [किश्रिशका] संतम सकेत (तुष १ ६ १ १<sub>४</sub>)। अभिसंकि वि जिभिज्ञक्ति १ व्हेन् वरने-बाला । २ और, बरनेकला 'सम्ब मारा-मिलंकी गराका पशुकति' (**धाका** स्ताया व्यक्तिसँग प्रं [अधिय्वज्ञ] पासीक (हर ₹ ¥) i अभिसंबाय वि [समिसंबात] करक (धाषा) । व्यक्तिसंयुष सक [अभिसं+स्तू] सृति करता, वर्शन करता। वक्त- अभिसंशुत्रमाण (लावा१)।

अभिसंघारण न [भिमिसंघारण] क्यां-गीयत विवास्ता (मापा)। अभिसंधि पूर्वी [अभिसंधि] पारम परि-भाग (छप २११ टी)। अभिसंधिय वि[अभिसंहित] नृहोत स्पाद (पाचा)। अभिसम्य वि [अभिसम्त] ज्या हार् भूँव (बाचा)। अभिसं<u>ज्</u>य वि [अभिसं<u>ग्य</u>] बल-बात, बीव-प्राप्त'(याचा) । अभिसंपुद्द वि [अभिसंपुद्ध] बहा हुमा क्रमत धवस्या की प्राप्त (ग्रामा)। अभिसमण्यागय रि [अभिसमन्द्रागत] असिसम्मागव १ अन्द्री धया वानो 🛮 पा पुनिर्णीत (प्रथ 📞 😮) १ २ व्यवस्थित (भूम % १)। १ प्राप्त सम्ब (भग १४) काछ रणपा १ ≪)। अभिसमानम एक [अभिसमा + गम्.] १ चामने बाला। २ प्राप्त करना। ३ फिछेंब करना ठीक-ठीक भारता। बंह अभिसमा बस्स (प्रत्याः इस १)। श्रमिसमागम र् [अभिसमागम] १ संदूर वमन । ६ प्राप्ति । ६ निर्छिय (ठा ६ ४) । लमिसम एक [अभिसमा+इ] क्यो अमि समागम = प्रांतनमा + वर । प्रवित्तमेर (ठा ४)। संइ अभिसमेब (बाबा)। अभिसर एक [अभि + सु] प्रिय के पाप बाता। वह अभिसरंत (मेंड् ११)। अभिसरण न [अभिसरण] १ सामने नामः, चंद्रमा रामन (पराह १ १) ि २ जिल के पाच वासा (कुमा) । अभिसद् (अभिष्व) १ मद्य ग्रादि ग बर्चाः र सथ सन्द बादि से मिनित चीज (पन ६) । व्यक्तिसारिका केली क्षत्रिसारिका (ग <98) I अमिसिच एक [धामि + सिच् ] प्रक्रिक करना । धर्मिसंपर्वत (क्या) । क्यक्र स्निम सिबमाण (क्य) । प्रयोत्त 😝 अभिसिबा विचय (रि १७६)।

व्यक्तिसिच वि [असिपिच्ड] विसका मर्थिः

वेक किया थया हो वह (गावम) ।

लामिरेज ) पूँ जिमिपेक ] र या यापायं स्वितिम ) साहिषय पर पाषक करमा (वेला महा) १ २ स्ताल-महोराज "विलामिरोवे" (ज्ञाप १) १ स्ताल (वैला स के दे)। ४ बहां पर प्रमिक्त किमा जाता है वह ब्याल प्राप्ताए देखि देखि हुन्देखि समिवेएए प्राप्त स्रोप्ताए के स्तेप्य (बह के)। ४ प्रमिथिका (लिन्न ११)। स्त्रामित्मा की जिमियेका है शाल्यों की प्रक्रिया स्त्रामित्म की जिमियेका है शाल्यों की प्रक्रिया स्त्रामित्म की जिमियेका है शाल्यों की प्रक्रिया

स्मित्ती (तिन्दु ११)। २ साम्बन्धी की शुक्रिया प्रवासनी (बर्म १ तिन्दु १)। स्मिमोन्सा की [अभिद्युच्या] केलो अभि गिमस्मा (वन १)। २ तिना स्थान (विने १५६१)।

क्रमिसेवण न [असिपेवण] पूजा सेवा मृष्टि (एउम १४ ४६)। क्रमिसेवि वि [असिपेविम] देवा-कर्ण (सूध २६ ४४)।

अभिस्तंत पु [अभिष्यक्त] भावकि (निते । २६६४)।

अभिदृष्ट म [अभिदृष्य] बनात्कार करहे जनस्तरती करके (सामा, वि १७७)। अभिदृष्ठ वि [अभिदृष्य] १ सामने चाया

हुमा (पंचा १६) । २ कैन साबुमों की मिला का एक बाप (ठा३ ४) ।

क्षसिद्दण सक [क्षसि + इन्] गारता, हिंदा करता (पि ४६६)। वक्क क्षसिद्द्रणमाण (क्षेत्र)।

क्तिहणन न [व्यसिहनन] पत्रिनात, हिंचा (त्रय ८, ७) । क्रमिह्य वि [अभिहत] नारा हुना, जाहत

(पिड)। स्रमिद्दा सी [स्रमिया] नाम प्रास्का (एए)। स्रमिद्दाच न [स्रमियान] १ नाम प्रास्था (स्प्रा)। २ वर्षक सम्बद्ध (स्वत १)। १

क्षांसहाय पृष्ठिसियानं । रेगाम स्रोत्सा (दुमा)। रेगायक सम्बद्ध (वन १)। १ क्यन स्रोत्स (विसे)। स्रोतिहास [क्षिमियानं] १ क्यास्स

(नुप्ति १६०)। २ नमन बक्ति (वर्गरी ११११)। ६ कोरायन्य (वेह्य क्ष्म)। क्षमिद्दिय वि [क्षमिद्दित] नवित उक्त (पाना)।

अभिक्षेत्र वि [अभिषेय] बाष्य पवार्ष (विसेन्द्रशे)।

अमीह } की [अमिजिम् ] १ गणत्र अमीजि | विरोग (सा ८ १४) १ शु एक राजकुमार (मा १६ ६) १ ३ राज्य बेणिक का एक पूज विवार्ग केंग्रीका भी की (स्तु)। अमोक् वि [अमीक्] १ निवर, निर्शेक (साका)। १ की मध्यम ग्राम की एक मुख्यांना

(ठा ७)। अभेजमा देलो अभिज्ञमा (पर्हा १३)।

कामोट्स कि [अमीड्य] प्रोजन के धयोग्य (शामा ११९)। घरन [गृह] रिक्सा के सिर्फ स्थोग्य चर, घोती सादि शीच कारित का चर (गृह १)।

अस सक [स्रम्] १ काना। र धानाव करना। १ काना। ४ पीनना। ५ सक रोपो होना 'सम स्वार्क्तु (विसे १४११) 'ध्रम पोने मां (विसे १४१४)। समझ (विसे १४४१)।

अमरग पुं [अमारों] र कुमारों बराव रास्ता (क्व)। २ जिप्पास्त क्याय गावि क्षेत्र पतार्थे 'वमर्ग परिपाणामि मर्ग्य करावंत्रकामि' (धाव ४)। ३ कुमत कुबर्रात (बंद)। अमरगाय पुं [अमाधात] र बच्च वर वर

हरण । २ मारिनिनारण वन्म बोरणा (पंचा १) । अमझ पुं [अमास्य] मन्त्री प्रचान (वीप पुर

असवार्षु[असारय] मन्त्री प्रचान (बीप सुर ४१४)। असवार्षु[असरये] केर केवा (कुस)।

क्रमसम्बद्धाः (इसम्प्री १ सम्बद्धाः स्कृतः स्कृतः (इस् १)। १ परमाणु (सम २ ६)। असस्य म जिसम् (इस्

अन्नसण्य न [अमन ] १ ज्ञान निर्ह्मय (ठा ६, ४)।२ स्रत्य सबसान (विसे १४४१)। स्त्रमण्य } वि [अमनस्क] १ स्प्रीतिकर,

असणकरा विश्वीष्ट (दा १ वे) । १ मनपहिले (धार ४ भूव २ ४ २) । असणाम वि [अमनआप] प्रतिष्ट, समनोहर

(सम १४६) किसा १ १)। असलास वि[असनोस] उत्तर देखों (जय विदा १ १)।

अस्यवास वि [व्ययनास] पैका-कारक दुःची त्यावक (सूस २ १)। कामणुस्स पुं [अमनुष्य] १ मनुष्य मित्र देव सादि (गृदि) । २ मर्गुसक (निष् १) ।

असलान [असमा] सलान, पान (नूप १६)।
असमानि [अममा] १ ममता-पहितानि सहरू
(पर्यष्ट्र मा सुरा १ )। २ ई सामामी
काल में होने वाने एक जिनलेक का न्याम
(सम १९६)। १ प्रमुख्य स्वाप्त से एक जिल्ला के होने वाने
पनुष्यों की एक जाति (कं४)। जिन के
२१ का मुद्दुर्य का माम (सर १)। सामे

[श्व] नि स्म्रह, ममठा-रहित (पंचव ४)। अमय वि [अमय] विकार-प्रित 'यमधो य होद बीनो कारण्यविद्वा

जहेब द्यागार्थ । समर्थं व झांचनिर्व सिम्मसव केंनुमाईसं' (निर्धे) ।

असय न [असूत] १ समूद मुदा (प्रास ६६)। २ सीर समुद्र का पानी (राव)। ३ पु भोत्र मुच्चि (सम्म १६७ प्रामा)। ४ वि नहीं मध द्वारा जीवित समझो हे तस विमुद्यामि (परम ११ =२)। इस पु िकर चन्त्र चन्त्रमा (छर ७६० टी)। (केटपा पू िकिरणी अन्त्र (सुपा ३७७)। इतंह व [कुण्ड] चन्द्र चौद्र (भा २७)। घोस प् िथोप । एक स्था का नाम (संबा) । फुछ न िफली ममूलोपम पत्न (सामा १ १)। मध्य- मय वि "मय] प्रमृद-पूर्ण (कूमा) पुर ३ १२१३ २३३)। सक्क पु "सयसा पना (मे ६८) । बड़ीर वस्त्रकी औ िवस्टरि, ये) ममुक्तवा ब्रह्मी-विशेष प्राची । बहिस, यस्की ही विहस्त. अस्त्र विही-विशेष दृहवी (सा २ पव ४) । बास पू [वर्ष] मुवा-कृष्ट (बाबा) । वेको असिय = धपूत्र।

असय पुँदि ] १ चनः चन्नमा (१ ११४)। २ समुर, देख (पद्)।

न शतुर, शत्य (वर्)। समयपदिश्र दुं [दे असृतपटित] शत्रमा,

जानपाकन ३ [६ अस्तपाटत] बाह्रमा, बाह्र (हुन्न २१)। जानपाकिमास पू [६ अस्तनिर्मेस] १

चन्द्र चन्द्रमा (दे १११) । स्रमार वि [आगर] दिन्य देव-सम्बन्धी 'समरा

व्यव्हमेया (पठम ६१ ४१)।

व्यवरोस प्रक्रियरेश] इन्ह्र (वेश्य ३१)।

जासस्य वि [असस्य ] १ निर्मेश स्वरूप (धर

सुधा १४) । २ पूँ मगतान् प्रत्यमंत्रेन के एक

क्षियु (पापन सः १९५) ।

बानरी की [जमरी] देश (कुमा) ।

ध्यमर दु[भ्रमर] १ देव देवता(पाम) । २

सुक्त बातमा (धाप) । १ जनवान् ऋयमवेव का एक पुत्र (राज) । 😗 यनगारी में नामक भावी विलक्षेत्र के पूर्वकन्य का नाम (वी २१)। १ वि मरातरीहर पार्वेट व्यक्तिकेली चीना मनरानर ठालु (पणि) । केस्र भी [\*स्**ट्रा**] युक्त मगरी का नाम (उस ६४% टो)। किंट पुँकित् एक राजक्रमार (बंध) । गिरि पूं ["गिरि] मेब पर्वत (पडम Ex ६७)। संदूत ['गेंद्र] स्वर्थ (ज्व ७२ व टी)। वस्त्य म ["चम्द्रन] १ हरि कत्त्त बुझ । २ एक प्रकार का मुपल्चित कार्ड (पाम) । तक् पू ["तर] करुक्त (सुपा ४४)। दच्च पूँ [देख] एक मेक्कि-पुत्र ना नान (बम्म) । नाइ दु ["नाय] इन्ह्र (परम १ १ ७५)। पुर न ["पुर] स्वर्ग (पबम २१४)। पुरी की ["पुरा] स्वर्यपुरी सन चक्ती (चन ६१६) । पस पूरिश्यो बानर-धीप का एक एजा (पडम ६ ६६)। बद्द (पदम ११७) मुर १ १) । बहु भी [ क्यू ] केनी (मद्दा)। सामि पू [स्वामिन ] इन्ह्र (क्लि १४६६ दी) । समापु ["स्ति] १ एक ख्वावा नाम (इंड)। २ एक ख्रेंब दुमार का नाम (ग्रामा t ) । । । । । । इस नि [<sup>\*</sup>।स्य] स्वर्ग 'चवित्रशमयनवाए' (छत ७२×दीः धुपा ३६) । विश्वे स्टे [ीश्रती] **१ देव-गवरी स्वर्ग-**युरी (पाम) । २ मर्खा । चोकनी एक नजरी छता शीक्षेत की राजवानी (४५ 🗈 ६ हो)। क्षमरंगवा की [क्षमधङ्गरा] वेशी (मा २७)। क्षमरिंत् पूर् [समरेन्द्र] देवी का राजा इन्ह (मर्बि)। क्रमरिस पु [अपर्य] १ मधीहप्यूना (३) २ १ ६) । २ कमाक्ष (उत्त ३४) । ३ क्लेब पुस्ता (पश्चा६ १ व पान्न) ।

अमरिसय न [अमर्थेज] १—३ व्यार

अमरिसय वि [अमसूच] ज्यनी ज्योनी

१ स्टीक्ट्यु धन्याशीस (सन् ११३) ।

(दम १६३)।

केलो । ४ वि सम्रहिष्युः कोवी (प्रवृह १४) ।

पूच का नाम (धन)। अमस्य की [अमस्य] राज की एक शह महिपी का नाम इन्द्राली-विशेष (ठा ८)। क्रमचस्ता केने अमावस्ता (नेवा ११ ર) ા श्रामाइ ) वि [कामाधिम्] निव्यत्यः, सरम अस्ताइंख } (शाची ठा १ । ≝ ४७)। ध्यमाभाय देवो ध्यमग्याय (ज्या) । अभाग रि [समान] १ वर्षसीत नम (क्रम्म)। ३ धर्षेत्व 'ठाणुट्टागुविसोदग्रमा-खमालोचित्त्वपृद्दों (उद ६ टी)। व्यमास वि [अभाव] नहीं स्वाधा हुए। भुसाहबरगस्य मछे धमावा (शत्त ६१) । क्षमाय वि [अमाय] विज्ञाद, सरव (क्रम) । अमाबि देवो अमाइ (भग)। व्यमारि 🕸 अमारि हिचा-निचारण श्रीतित बान (नुपा ११२)। शास नू ["बाप] अर्विद्धामी योग्यका (पुताक **१)। पढाइ** पू ["भटक्] क्वित-नियेश का विरिष्टम "धमा रिपञ्च च बोसले इं (स्वत् १)। व्यमायसा । की अभाषास्था हिवि अभावस्सा विशेष धमावद्य (वटा धूपा अभावासा २२६ शाया १ १ वर्ष कामिज्य नि [कासय] माप करते के लिए धराक्य धर्मस्य (१०५)। असिम्म्ह न [कार्येष्म] १ धशुचि वस्नु भईर यममिक्सारस पुरहिनंबरस' (का ७२ दी)। र विद्वा (सुना ११६) । खमित्त पुन [अभित्र] रिपू, दुश्मन (ठा Y Y & X, (w) | असिव केवी असय = चमुत्र (ब्रासू १ गा र∙ विते; मावश पिन) । ह्र'ड न ["कुळड] नगर विशेष का नाम (सुपा 🕬 )। ग्रह 📲 [मिर्वि] एक अपन भागाम (पिय)। माणि 🖠 [कानिम्] ऐरशत क्षेत्र के एक

तीर्थंकर देव का नाम (सम १६६)। भूम वि[भृत] धमृत-तुष्प (माउ)। मिह्र 🕏 िशय चिमुत्रवर्ष (व ३) । स्**र**्प िरुचि । चन्नः चन्नमा (भा १६)। अमिय वि [अमिव] परिमाश पी्त मर्चस्य, श्चलत (अव ६, ४० सूत्रा ६१० मा २०)। गइ पू ["गति] बधिए दिशा के एक ब्ल का नाम दिन्द्रमारी ना इन्द्र (ठा ६ ६)। जस प्रे विश्वस्त्री एक वह क्यों एका का नाग (महा)। जायि दि ["झानिम्] १ सर्वेड (विसे)। २ एँग्वत क्षेत्र के एक नित-देश का नाम (सम १५६)। "तेम ई ितिसस् ] एक भैत मुनि का नाम (**ड**प ७६८टी)। बल्ल हुँ ["बळ] इस्राहु वंद के एक राजा का नाम (पत्रम ६ ४)। वाह्य 🕏 विश्वहरू दिस्कुमार देशों के एक इन्द्र ना नाम (ठा २, ३)। दिग पू [दिग] राष्ट्रत र्थंश के एक राजा का नाम (पटम ६ २६१)। ौसंषिष (४ ["ासनिक] एक स्थान गर वही बैठनेनाना चचन (कम्म) । लसिक व 👣 अन का क्या हमा वस (मा 🕫 )। २ पुँसेप सेड्(ब्रोच ३६ ६) । असिक रि कि आसिक प्रिमन केर में वनाह्या(ग्रावा२ १११)। समिक्स की [अभिज्ञा] १ बीसर्वे किलोर की प्रचम फिल्या (तम १६२)। २ पाड़ी क्रोटी मैंच (शह १)। कमिक्सण } वि [बस्कान] १ म्बाव अमिक्सर्य } रहित तात्रा हुए (पुर १ १ १४ मन ११ ११)। २ तुं कुछ्हत्व्य दुत्र । ३ त कुष्टक बुल ना पुष्प (दे १ ६७)। **अमु र [ अवस् ] वह समुद्र (**वि ४३२) । असुक्ष व [असुक] वह, कोई, अनका-हमका (बीव १२ मा मुपा ११४)। कसुभ वेको क्षमन = ममूट (प्रासू ११) वा 1 (205 अभुज्ञं केवी असय = समय (काम ७७७)। असुअ वि [अस्सृत] स्मरहा में लही प्राया हुमा (यन ३ ६) । जमुद्दवि [कासोवित्र] न**्वी को**क्नेनाका

(चन)।

**असुग वेको असुडा = समुद्र (तु**न्छ)।

ठामुगस्य वि [अमुत्र] यदुक स्वान में (सुपा ¶ २) ı छञ्जा कि [आक्र] धवल पूर्व (**वह** १) । अमुणिय वि [अञ्चात] व्यवितित (सुर ४ ₹)1 अमुजिय वि [अञ्चान] मूचे, वजान (पण्ड् १ २)। समुत्त वि[समुक्त] प्रशिष्यकः (हा १)। ब्रमुत्त वि [अयुत्ते] स्परीहत निराकार (सुर १४ १६)। धमुद्रसा <u>१ त [ समुद्रम् ] १</u> सतीन्त्रिय अमुयरा । विष्याकान विदेप बंध वेश्वामी के पुरुष्परिद्वित राधेर को फेडकर बीज का शरीर पूर्वाम से निर्मित नहीं है ऐसा नि अंब (हा ७)। अञ्चल वि[असूप] स्वा स्टब "अपूरे वरे" (सूब १ १ १२)। अमुसाक्षे [असूत्र] प्रत्यवचन (सूच १ १)। याद्र वि ["यादिम्] सखनाची (कुमा) । असुद् वि [असुद्ध] निवतार (वव १)। अमुहरि वि [अमुस्तरिम्] प्रवाचान नित मापी (वच १)। अस्य हैर (अस्ट रिस्ट रिस्ट विवक्ता (खाया १ १)। प्राप्तन [कान] स्वयकात (मागम)। दिद्वि स्मी [ दृष्टि ] १ सम्बन्धर्म (पर ६)। २ वरिवनित बुद्धि (उत्त २)। १ वि शविष्यवित हरिः वाला सम्बन्धि (मन्द्र १)। क्षमुख वि [क्षमूप] सम्बद्धी (क्रुमा) । समञ्ज्ञ रेडी समिज (मन ११ ११) । क्रमेवस् केवो असिवमः (महा)। क्रासाहक वि [क्रामुक्य] क्रिएकी कीनल न हो क्षके बहु, बहुमुस्य (गतव गुपा ११६) । अमासकि न (दे अमुराकि) परनादि निरी क्या ना एक प्रकार (बीम २६२)। अमोसा वैवा अमुसा (बुवा) : शमीइ पि [क्षमीघ] १ क्ष्मच्य, सक्स (मुपाल १ १७१) । १ पुँ सूर्य के प्रतय बीर बस्त के बनव किएलों के विकार से होने बाभी रेका विशेष (भग ६,६)। एक यक्त का नाव (विपादे ४)। इस्ति वि

पाइजसङ्गङ्ग्यको विशिम् । श्रीक-क्षेत्र वे**व**नेत्रामा (वस ६)। २ म उदान-विशेष । ६ पूँ यज्ञ-विशेष (विपार १) । प्रहारि वि [ विषक्षित्र] भक्क प्रहार करनेवासा निशानकाम (महा) । राह् पूँ ("रध्य] इस भागका एक पविष (महर्रा)। असाह्य ु[असो≰] १ मोहका प्रमाप सय्य ग्रह (विरो)। २ दक्क पर्नेत का एक शिकार (ठा ८)। १ वि मोहरहित निर्मोह (मुपा #4) ( कासोह पुंक्तिसोच र भूवं-विस्त के नीचे क्यी-प्रश्री रोसती रवाप बादि वर्लंबानी रखा (बालु १२१) । २ पुन, एक देवदिमान (विनेतः १४४) । क्रमोद्दल न [क्रमोद्दन] १ मोहका बमाद (बब १ )। २ वि शुर्व नहीं करनेवासा (भ्रप्प)। अमोद्दा की जिमाचा १ एक बराइज बिसके नाम से यह बम्बुडीन कहताता है (बीब ६) । २ एक पूञ्हरिएरी (बीब) । हानम देखी श्रीय = प्राप्त (सर १ ६)। अम्मएव पुं <sup>५</sup> आ**सक्त**िएक केन धाकार्य (पण २७६ गा६ १)। अम्मगा **क्वो** अन्यया (जवा) । अस्मच्या वि दि । सर्वेषद्ध ( यह )। अम्मह देवी अंबह (धीप)। अस्मडी (भर) की [अस्ता] गता म (हे x x54)1 व्यम्मणुअविय न [वे] धनुगतन धनुनरण (g & AS)! अस्मवाई वेको अंधवाई (विश १ ६)। अस्मया की [अस्वा] १ माता कानी (बबा) । २ पांचर्ने बामुदेव की माता का नाम (सम १६२)। सम्महे (शी) य. हर्ष-पूबक धन्त्रय (ह ४ Ray) I काश्माको [दे अस्त्रा] भातामी (दे १ थ)। १५४, १५४ (५४८, वीत 4 व [ पितू ] मी-बाप भाता-पिता (थव ३) कृत्यः बुर दे करे का देश बुर देवब क १७ )। पेइय वि ["पेश्वह] मत्नापश्चक्यी (जप १ ७) ।

खन्माइञा की दि प्रमुप्तरता करने शसी बी वीसे-पीमे जानेकारी बी (दे १२२)। ी १ भावर्य-पूबक अम्मो म ि 2 धम्यय (**१** २ २ ० स्थण २६)। २ माता का संयोजन हेमाँ (उदा कूमा)। कम्मोगइया भी दि] समुख-गमन श्वागत करन के लिए शामन जाना 'रामा सबमेव बम्मोबह्काए जिन्मधी' (मृज २: १६) । अस्तोस वि [अयप्य] बन्नस्य समा के सबोग्य (सूपा ४०७) । अन्हर्स [अस्मत्] हम निक्र चुद्र (हे २ ६६ १४२)। कर, खेर, बन वि िश्व बस्मदीय हमारा हि ३ दश सुपा 484) I अम्बन्त वि [वे] प्रमुद्ध प्रमामित (वव् )। अमहार } (प्रप) वि [अस्मदाय] हमारा खम्हारय ∫ (पड् कुमी)। ध्यक्तरिक्य वि [अन्साटक] इसरे वैद्या (प्रामा)। अम्हारिम नि [अस्माष्टरा] हमारे वैश्वा ( हे १ १४२ पड)। अम्बद्धार वि अस्माक परमधीय हमाध (प्रमा है २ १४)। भन्हों य [सहो] नायर्थ-पूर्वक सम्मय (पड)। अध्य दु≅िमा} १ प्रकार पर्यंत । २ स्तप खप । १ सूर्य सूरव (मा २१)। अब दू [अज] १ छात्र वक्स (दिपा १ ४)। २ पूर्वपापनर नजन का समिद्यायक देव (ठा २,६)।६ मधादेश। ४ विच्छा। ४ राम चन्द्र । ९ वह्या । ६ कामदेद (मा १३) । व महाप्रवृ-विशेष (ठा १)। १ बीबोलाएक राजित से पहिता कल्य (पराय ११ २४)। करक पूं िकरको एक महाप्रद्व का नाम (ठर २ ६) । शास्त्र पूँ ["पाञ्ज] मानीर (भा ₹₹) ι अस्य पूँ [अरथ] १ गमन मध्ये (विमे २७६३ या २३)। २ साम प्राप्ति । ६ धनुसर (थिये)। ४ व पूर्ण्य (ठा १)। ५ मारम,

नशीब (या २३)।

अध्य व [अङ्] १ दुःच । २ पान (मा २३) ।

(निष् ५) । २ तीई का शास्त्राना (३१ ८)। इंद करांत पू विश्वानती लोइ-प्राप्तक (धारम)। "महिस्स म [च् कहिस्स] नश्चार् (योष) । दुवी श्री विष्यकी विहे का भावनविदेय (विपा १६)। कोहुय पूँ िकाहक] सोई ना दूर्म सोई ना योगा वोड्ड ग्रमलेत्रुया व्य नहुर्" (क्ष्या) । गास्त्रय बु िग्रासकी मोद्दे ना नेता (था १९)। बढवी की दिशी नोड़े भी नवसी या कर द्भन जिल्ल हास नहीं भादि हिमाया नहीं 🖹 (देर ७) । पायत ["पाञ्जी सोहे ना भारतः। सद्यमा को ["ब्रष्टारा] नोड् मी सताई (बर ३३३ की) । अञ्चलक[अयु] १ क्ष्मर श्रम्य जला। २ प्राप्त वरना । १ जानना । वर्षः अवसाय (नग ६६) । ध्यः छ सम [ कृप् ] १ लीवनः । २ जोतना भाग करनाः ३ नेना करनाः। सर्वेश्वद (ह ¥ \$=0)1 अयंद्रिरा [कर्षित्] वर्षेलुग्रैस जीवने-बाना (दुमा) । अर्थेड पू [अराण्ड] १ अनुचित्र समय (महा)। र धरमान्, हदान् (पडन र १६४) मै ४४ मडः)। ३ हिनि यनगरित द्यवित्र (श्रम्भ) । अर्थन वर्ष आपन् । बाळा हवा वर्षेश बरना हमा (मारन)। अर्थान्त्रं रि [अयस्त्रिन] बनाररणीय (बच **4** 88}1 अर्थीपर रि अजन्मिली नही बोलनेशना

मौनी (पि २६६ ३६६)।

स्टिन का निरामी (इस) ।

बराजनव करनेराना (बाबा) ।

रिप्य (भग ३)।

3 11

अयेपुन 🐧 [अयेपुन] बीरानक का एक

भ्रदेस र् [भारः।] स्तंतः नोनः। सुद्द र्

[सुरर] १ दन मान का एक ब्रीप । २ ब्रीप-

श्चर्यम्पि रि दिर्श्मिपि कार्यः गार्वेशी

क्षपदरप वे अस्प हरकी पर नहारते (पुन

छय न [अयस्] नोहानोइ (धोव १२)।

भागर पुं [भारूर] १ सीहे की सान

अपना } वृ [क] बानक शतुर (के १६)। अवगर पूँ [अञ्चगर] धननर, मोटा संप (पर्वाह १ १ परम ६३ १४)। कायह पू वि अपत ] कुप क्रुया (दे १ १०)। अवरण म अंतर्जनी मत्तव होना निएन्दर क्षोता (विमे १६७०)। अध्ययम् अभ्यन ] १ मनन । २ प्राप्ति चाप (विसं ६)। ६ बान निर्हास (विने ८६)। ४ वृह अन्दर, 'बीध्यायरी' (श ४३१)। १ वि मानक प्राप्त करनेवाका (विशे ८६ )। ६ ९न- वर्ष का सावा मार, जिसमें सूर्य बर्जिए ने उत्तर में या उत्तर से बर्जिए में भा**ता है (ठा २ ४)**-'एडे धमणे रिध्हा बीठ रचलीमी होर्स ग्रेज्यो । विद्यापको प्रज्ञमो इत्य दुवे श्वय बद्धकि (भर ८४६)। धयण व [सदन] १ अक्र**श**। २ शुराक भोजन (स १३ ३ ४८ ८ ७)। अवधु वि [अञ्जो धनान, पूर्न (शुर ३ 144) 1 अयमुनि [अवनु] स्तून बोटा महल् (ਬਹਾ)। अवर्तीचन रि [व] पूर, कावित (दे १ 184) 1 भयर वि [अबर] बुद्धारत्वाचील चयचवर्र क्षार्ग (पडि क्य) । अपर पून (अन्तर) १ सापर, लकूत (ई २ ) । २ नमम का मान-विदेश सावरोपन (समारे १३६ मध्य ४३)। वृक्ति श्रप्ते 🕸 घराख (बाह् १)। ४ धनमधे धरान्ड (तिन्द्र १)। भग्नाम शीमार (बृह १)। अवरामर वि [अजराभर] १ वरा धीर नरम में गहिल (बर ६) । १ ल. बुलि जीश (पत्रम ८ ११७)। श्रायख्य देनी अवश्च = श्रवन (श्राय नद्वर बरद्व १ ४ मी १ पत्रमः १४ लग क्षा भव १६)।

अथमा देना अवसः (गरम १२

१६६० ला १७ )।

अवग रेगो अजम (यउक आनू २३

अवस्ति वि [ अयरास्तिम् ] धवनौ यरो-चील कीर्ति सुन्य (पन्छ)। ब्ययसि 🤰 🛍 [अदमा] बान्व-विरोय प्रतारी ब्रयसी रे तीर्सी (क्ला ठा ७ राग्या १ **१**)। भया भी [काशा] १ वकरी। २ माना, यभिया। १ प्रकृति कुबक्त (हे ६ ६२) यह्)। किवाणिळ(दू ["कृपाणीय] सार-विशेषा वैधे बकरी के क्ष्मे पर अनवारी करी पड़ती है एस माफिक धनवारा निती नामें का होना (याचा): पाछ पूँ [पाछ] बागौर, वक्ये वरानेवामा (स २६ )। वस पु जिल्ला नक्षेत्र का नावा (अस १८,६) । अवागर रेगे अस आगर (ठा ८)। अयाण न (अञ्चान) बान ना धनाव (स्ट 44) i अयाज वि [अद्य अञ्चान] भवान अज्ञानी पूर्व (सोम ७४ पटम २२ दश वा १७५ देश धर्)। अयाणम नि [अञ्चादक] उसर देवो (नावा मिं। अयार्गत क्यों अमार्गत (बीम ११)। अयाणमाय रेवी अञ्चालमाय (तर ११)। अवाणिय क्यो अञ्चालिय (उप ७२० दी)। अवाधुय देनी अज्ञाजुय (बुर १ १६४) मुना 288)1 अवार र्षु [जरार] भ्रं शक्षर (विमे ४७६)। अपाह पं[अग्रस] धर्मान सम्बन्ध नाम (प्रकार २२ १)। अवासि वृं [दे] दुविन, वैपान्त्य दिश्व (दे 1 (1) अवस्थिय रि (अक्षाधिक) पारुग्यित यकागडीत्पमः 'पश्च वहत प्रात्म शत्वताने धवालिया विश्वयु (रंमा) । असि वेगो अइ = मरि (ई २, २१०)। अपुजरवह ध्ये [व] यविर-दुवति नगैहा,

दुमहिन ( ४३ )।

हिन्दुग्वान (कुना) ।

1 (385

अबोमय ध्यो अभो-मय (बंद १६) ।

अय्यायन (श्री) 🖠 [भार्यावर्त] भारत

अय्युज (वा) देनो क्षत्राच (१४ ११२)।

अर्पु[अर] १ पूर्व नहित्र के बीचना

वाह । २ वदारद्वा त्रिनदेव और सामग्री

वक्रवर्धी राजा 'मुमिएो घर' सहरित् पासक वरणणी घरो तम्हा (बाव २) सम ४३ वर्त १८)। ३ समय का एक परिमाण कालवक का बारहवाँ हिस्सा। (दी २१)। श्चर तुं["≰र] १ किरख । या **१**४३ से १ १७)।२ इस्त इत्य (ते १ २८)। १ मुन्द दूरी (से १ २८)। शरक हो | अर्रात ] धर्म मधा (बाचा २ 23 2) 1 अरह की किर्रात र वेबेनी । (मग बावा उत्तर)। रूम न रिमेन् परिव का हनुभूव क्मीवरेय (घर)। परिसद्द, परीसद्द प्र पिरियह परायही मर्चत को सहन करना (पंच म) । सोइणिका न िमाइ नीय] प्रचंत का प्रशासक कर्म-क्रिय (बस्म १)। रइ.सी ("रिति] मुख-पुण्ड (हा १)। "अर्रग देखो सर्ग (से २ २६)। आरंबर प्त [अरखर] नका चल पर (ठा x x) 1 <sup>\*</sup>अरक्टन देखी बरक्टन (से १ ४४)। अरफ्सरी की [अराक्री] नगरी-क्रिय (भाक) । झारम देखी ब्यर (पराह् २ ४ मग ३ ३)। अर्रावस्त्रप कि [अर्राष्ट्रत] निरुत्त न्सव्य 'बर्पन्मवर्षितावा' (सूब १ ४ १)। आरब्र् पू [अरद्व] बुद्ध-विरोध (छा १ ६१ ये) । अरण न [अरण] द्वा (३४)। अर्फा पू [अर्फा] १ इब-विशेष । २ वन कुछ की शक्की जिसको विसने पर अपि बस्धी पैदा होती है (मानमा एमस १ १८)। श्चर्याय पूर्व्य दि ] १ सन्ता मार्ग । २ पण्डि ≆ठारा (पड्)। धारणिया क्षी [भारणिका] बनलात-विधेय (माचा)। अर्गेट्स ५ वि धर्गेटको पचरों के हुक्यों से मिकी हुई स्तरेज मिट्टी (की व) । अर्फ्ज वि [आर्ज्य] जैक्त में श्रृते वाला (सुम १: १ १ ११)। -ठारण्य न [भारण्य] नन, बंबल (हूं १ ६६)। वर्षिस्तान ["वर्षसङ] वेवविभान

भिरोप (सम १६)। साण पू ["धन्] धंगनी कृता (युगा) । अरण्यय वि [आरण्यक] वैक्नी वैगन-वासी (धमि ५२)। भरत वि जिल्ही राग-पहित, नीराय (पावा)। अरम रेखो अरणग (कपा धर) । अरथाग पुंदि] एक बनार्य देश धरव देश (पन २७४)। अरमंतिया की [अरमन्तिक] परमण्ता कार्यं में बत्तरपद्धा (उदा) । अरव देखो अर (सत्त १ ८)। खर्ब रि शिरजस ] १ रजेपुल-र्वहत्र (पवन ६ १४६)। २ एक महासह का नाम (ठा २, ६)। ३ वि वृतीरहित निर्मेस (कप)। ४ म, पांचर्वे देव चोक का एक प्रतर (ठा ६)। ५ रजोपुस्त का समाव असे व सर्थ पत्तो पत्तो नामगुत्तर" (उत्त १०)। क्षरय वि [धरत] यनायकः नि स्पृत् (याचा) । अस्य पून [अरजस्] एक वेचविमान (व्याप्त १४१) । अरया की [अरजा] दुमुर नामक विजय की राजधानी (ब ४)। ध्वरयि पूर्व [अररिन] परिमाश विशेष, कुसी चंद्रभीवामा द्वाप (ठा ४ ४) । क्षरर न जिरर] १ पुत्र । २ वक्ताः इत्री की ["कुरी] नगरी-विशेष (बम्म १ दी)। अररि पून [अररि] किनाइ, हार (शामा) । अस्छ न वि र भी र शीर-विशेष। २ मराष्ट्र मण्डाप (वे १ ५६) । आरखाया श्री दि ] श्रीरी कीट-मिरोप (दे १ ₹1) 1 अरहा वेको अरह (पडम ४२ a)। अरविंत् न [अरविन्तः] कमक पदा (पर्वा २ ४)। बारविंदर पि [दे] वीर्थ. सम्बा (६१४४) । अरस गुं [अरम] प्यापीत भीरव (गावा 2 K) L ब्यरसं पू [ अर्शस् ] स्थावि-विशेष बनागीर (चा २२)।

बारस म [अरस] दय-विरोध निविकृति दा (संगीय १८) । आरह वि जिहुन् दे पूजा के मोरब, पूज्य (पह हेर, १११) । २ पूर्विनक्ष तीर्थतर (सम्म ६७)। "मित्त पू विभिन्न] एक व्यक्तारों का नाम (क्क्स २)। असह देको अस्टिइ = पहुँ। प्रस्तुह (प्राहु २६)। अराहि [अराहस्] १ प्रकार पित्रसे पुष मोन दिश हो। १ पुंतिनदेव सर्वज्ञ (অ**४१** €)। अरह वि [अरथ] परिपहरहित (अप) । अर्धात कह [आईस्] १ पूना के योग्य पुरुष (यह है २ १११ मा = ५)। २ पुँ वित मनवान्, तीर्वकरदेव (धाका ठा 4 v) i अपर्दन वि [ अपरान्तर् ] १ सर्वत्र सव सुद्ध वाननेवासा। २० विन मयशाम् (मव २१)। अर्थात वि [अरथान्त] १ निस्तुह निर्मम। २ पूर्विनदेश (मत)। अर**्**ष पष्ट [अर**्**षमत् ] १ सफ्ते स्वमाप को नहीं छोड़नेनाला। २ पूर्विनेश्वर देव (भग)। अरहरू 🛊 [अरमट्ट] मरहट, खुट, पानी का चरका पानी निकासने का शन्त्र विश्वेप (सा ४६ प्रानु ६६)। भिमिमो इन्हमग्रीत सर हरूविच्य जनमण्ये (श्रीवा १)। अरहर्द्धिय वि [अरमहिक] चयहट वजले नाला (मुघ १४)। अरहणा 🕏 [भईषा] १ पूजा । २ ग्रेप्स्का (मत्तर २८)। अरहण्यय पुं [अरहमक] एक ध्यापादी का नाम (शासा १ ६)। करव्हक पूर् [आईक] एक बैन युक्ति का नाम (गुक्त २, १)। अराइ पुं [अरावि] स्पू. दुरमन (कुमा) । अराइ ची [अराति] दिन दिवस (दुमा) । अरागि वि [अरागिन्] चनर्रीस्य भीवरान (पतम ११७ ४१)। करि देशों कर (तुर ११२ हो)। भरि पु [भरि] दुरमत रिपु (पठम ७३,११)। अववस्त पूं [ यक्षार्त ] च पान्तरिक

रहु—काम क्षेत्र कोम मोह, मक भारतमें (सूप ११४)। त्रमण नि [त्रमन] १ रिपु निमा राक १२ श्रुं दशक्तु देश के एक एका का नाम (परम ४७)। १ एक नैन सुधिको का नाम परिकाल के पुश्यम के एक वे (परम २७)। त्रमणी की [त्रमनी] निचा विशेष

ų٦

२ ७)। वसणी को [वसनी] विचा कियेत (पटम ७ १४३): "विश्वंसी को [विश्वं सिनी] रिप का नाम करनेवाली एक किया (पटम ७ १४)। कास ग्रंहिक कास एक्स क में स्टब्स क्ष्मा का एक एका

प्रकार के उराप्त क्या न एक प्रका प्रकार के उराप्त क्या न एक प्रका (प्रकार १९१)। होत कि किन्सु ? प्रिनुनिगालक। २ ट्रं निगोल (धानम)। करिकारिक पुंची हिं] ब्याब, हेर (११२४)। शरिकार ट्रं क्रिटक्स्य १ भननाण क्रमालेक्

का एक पुत्र । २ म. नजर-विशेष (पद्ध्य हैं १ श्रे कक पुर १ १) । स्राहिष्ट (स्वाधिक १ कक्ष्मिन्स (पद्ध्य १) । २ पनापूर्व वीर्यक्त का एक क्ष्म्यक (स्वाध्य १) ।

११२) । १ तुन एक वेपनिमान (विकेश ११६) । ४ म. वोष्य-पिरोप को माराव्यक्ष ग्रीक भी राजा १ (दा थ) । १ एक की एक बाढि (क्दा १४ ४ गुना १) । १ एक निकेश ऐक्त (पराग्र १७ क्दा १४ ४) । ७ व्यक्ति ग्रुपक कराज (व्यक्ति) । चिति जिसि तु [जिसि] मेर्कान काम के वाहेश्व विभक्ति (व्या १७ मेर्क २ क्या वाहेश

करिहा की [जरिता] कृष्ण गामक निवस भी एजवानी (छा २ वे)। करिया म [करित्र] उत्तराद कृष्ण, मान की पीचे वा उन्न विचारे नाव राहिने-वादे पुनानी बानी हैं (बानी १३२)। कारियों स [कारियों] पालपुरक सम्बस्य

कारिय केले वारस (स्थाप ० ००) भारतिय केले वारस (स्थाप ० ००)

करिस केवो करस्य (शाया १ ११) । जरिसक } वि [करोक्तर ] क्वावीर करिसक } रेजनाता (त्राम क्विता १७) । करिस कि [कर्षे] १ सोग्य वाक्क (जुण २६६ प्राप्त) । १ पुं विनकेत (बीग) । करिस क्व [कर्से] १ कोग्य होगा। १ पुजा के कोग्य नेना। १ पुजा कला। व्यक्ति (क्या) । वरिस्ति (क्य) । पर्)। दत्त "दिणमार्गु ["दत्ता] जैन श्रुपि-विरोध का नाम (कप्प)। कारिक्षणा देवी काराहणा (शक्त २८)।

सरिष्ठ के शरहें त = सर्थेष (हे २ १११) पर्मणान १ १) । चेदन म ["पेस्य] १ विमन्सन्तिर (श्रमा प्राप्त) । सासम्म म [सासन] १ वेम सामगन्तम्ब । २ विमन्सामा (प्राप्त २ ४)।

भवा। (पर्या र १)। अरु देशो तरु (वे ए ११, ४, ६५)। बारु वि [अरुज्] रोक्-रिए (संपु ४६)। बारु देशो जरुष (स्पु ४६)।

करना म [क् अरुक] बया वावा धरनं घर पुरुषरं (बह १)। अरुतुष मि [अरुतुष] १ मार्गेन्सकः । ए मार्गेन्सर्वी। चर राष्ट्रस्थानावारोहिंहिं विवि

सस्तापि (सम्पद्ध १)।
सदस्य मुं [सदस्य] १ सूर्य मूर्य (ते व १)। १ सूर्य का सार्थाः व संध्यारम कम्या को नाती (ते « भ)। ४ तिर-विरोप । १ समुद्ध-विषय 'विरुप स्तेत सस्यो सरपी विरोप तथी कम्यो (तीप)। ६ एक सङ्ग्लेखा का नाम (ता २ १) पत्त भ )। भ कम्यानी-तथा का स्विकृता के (ता २ व पत्त १८)। स किनिश्चेय (प्रीते)। ६ एक रंग, नाती। (स्वा)। १ म. विमान-विरोप (स्वा१)। १६ म.

वेमनियान-विशेष (द्यवा) ।

्थिकों व िश्वेष्ठ विश्वित्सान्तरियोग (क्या) : गा थीं [ गङ्का त्राह्म त्राह्मण्ड केश की एक नगी (ती २०) : गक्ष ता [ गुक्का विश्वेष्ठ (व्या) : वस्त्र ता [ गुक्का विश्वेष्ठ (व्या) : वस्त्र ता [ गुक्का विश्वेष्ठ (व्या) : वस्त्र (व्या) : यस [ गुक्का ता [ गुक्का ] क्षा तास का एक केशियाल (क्या) : वस्त्र ई [ गङ्का ] एक केशियाल (क्या) : वस्त्र ई [ गङ्का ] एक केशियाल (क्या) : वस्त्र

िकारती

नाव का एक व्यवस्थात (क्या)। सह इं [भात्र] एक वेनवा का नाम (तुब्ध १३)। प्रमुख न [मृत्] एक वेनविमान (व्या)। सहासद इं [महासद] के निरोग (तुब्ध ११)। सहाबद इं [सहाबद] १ क्यां निरोण ।२ क्यांस्टरोग (दक)। वर्किसक

न ["वर्तसम्ब] एक वेचनियान (अन्त)।

बर पूँ चिया र शीन-विशेषाः २ समूर विशेष (गुरू ११)। सरीमास पू चियममास] १ शीप-विशेषाः २ समूर विशेष (गुरू ११)। सिट्ट न पिछा

एक वेदिनाम (का)। मिन ["म] वेतिमान-विदेश (उता)। करिमान-विदेश (उता)। करण पूर्व [बाइक्स पदम (दे १ ६)। करण पूर्व [बाइक्स) १ एक वेद-पिनात १ (क्षेत्र १६१)। प्यम पूर्व [मम्म] १ कपूर्व नव्य पत्र पत्र वा निवासी वेद। (व्य ४ २ पत्र २२६)। या पूर्व [मा

হতে ব্ৰংক্ত-পিঠা (দুজ ২ )।
কান্তদ্যা পুঞ্চ [জনতামাল] নালী ংত্তা
কান্তিয়াল প্ৰতিয়ালক নালী ংত্তা
কান্তিয়াল প্ৰতিয়াল (কান্তমাল কোনতাম কান্তমাল প্ৰতিয়াল কোনতাম কিন্তমাল কান্তমাল প্ৰতিয়াল (কানতাম কিন্তমাল কান্তমাল কোনতাম (কানতাম কিন্তমাল কান্তমাল কান্তমাল (কানতাম কিন্তমাল কান্তমাল কান্তমাল (কানতাম কিন্তমাল কান্তমাল কান্তমাল (কানতাম কিন্তমাল কান্তমাল কান্তমাল

करुयोदय प्रं [अरुयोदक] एमुप्र-विशेष (वच)। अरुयोववाब प्रं [अरुयापपाव] प्रत्य-क्रिय वा वास (प्रंवि)।

अक्स वि झिल्स् ] तए जाव (सूध १ १)। अस्स वि [अक्स्य] नियेगी रोमग्रीहर (यम १। अस्ति २१)। अस्स्य केला अस्य = स्वर्ष (१ २११ पत्र) (असि)।

ब्यरेस वि जिरुस् | र कम्परीस्थ । २ ई हुक धारमा (पन २७३ जन १ १) । ६ जिन-वेत (पत्रम १, १२२) । धारस वेत्रो क्राह्म = सर्वे । धारस्थ (धार्म १ ४) । वक्ष-अस्त्रसम्माम् (जन्म)

१४)। वष्ट- अस्त्रमाण (यह)। अस्त्र वि [कर्ष] पोप्प (कत्तर तथ)। अस्त्र वि [कर्ष] पोप्प (कत्तर तथ)। अस्त्रीय केवी अरहेंय = वर्षयं (हे २ १११)

अरुहत वि [सरोहत्] र महीं स्त्रता हुमा कमा मही सेता हुमा (घप र र)। अहत वि [सहस्र] कार्यस्य समूर्तः (पत्रम ७४, १६)।

सरुषि वि [सरुपिन्] अपर केवो (अ ९ व बाबा परस्य १)। अर म [अरे] १-२ संमापण भीर एति-कसहका मूचक सम्बद (६२२ १ पड्)। अर म [झर] इन धर्मों का मूचक सम्मय---१ क्राक्रेप । २ विस्मय क्रारचर्य । १ परिकास ठहा (सीस १८ ४७)। कारोञ प्रक [ सत् + सम् ] सम्मास पामा, विकसित होना । घरोष्यः (हे ४ २ २३

द्रमा)। अरोभन्न पुं [अराजक] रोग-विरोप यश की ग्रहिष (मा २२)। अरोइ वि [ अरोचित् ] घटीच वाता येचि रहित 'घरोद सन्ये कहिए जिलानो' (बीय 9)1 अरोग दि [अरोग] चेवपहित (मा १० १)। या को [वा] कारोप्य कीरायता (स्व ७२६ दी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] मीरोग रोग-पीहत । या की [ वा ] मारोग्य, हंदुस्परी (महा)। अरोग्ग ) क्हो मारोव = ब्रायेग्य (माना २, अधेय र १४ २)। भरोस वि [अरोप] १ द्वस्मा र्यहर । २-३ पूँ एक स्थेण्य क्या और उसमें च्यूनवाली म्बेन्द्र बादि (पएड् १ १)। श्रस्त म [श्रस्त] १ विच्यू क पूच्याका सम

म्बद 'सलभव विष्कुमार्ग मुहमेव धहीरा दह य मेंदरम । सिट्टि विस् पिनुखार्यं

सम्बं सम्बस्य सय-मण्यं (शामु १९)।

२ धनामेनी वा एक सिश्सन (सामा२)। कृति समर्थ (साचा) । य<u>द्</u>रत ["प<u>द्र</u>] विष्णु की पूँच क्यें घाकारवाला एक शत (विपाद ६)।

ठा**छ देती तछ** (या ७१, से १ ७८)। **श्रद्धं च [ब्रह्मम्] १** पर्याप्त पूर्णीः "धनमा श्चं वर्णकीय (मुर १३ २१)। २ प्रक्रियेष নিবাংড়ে বর (ভণ ৭ ৬)। लसंग्र [ ससम् ] यसद्वार, मूपा (सूपनि

२ २)।

अ**र्जंडर** सक [हार्छ + कृ] भूपित करना विराजित करता। बर्लक(ति (पि ३ १)। **बक्ट आर्ज़म**र्रत (माम १४३)। संक्ष्ट कार्ल

करिक (पि १०१)। प्रयो-, कर्म सर्वकरा-बीयत (स ६४) I अलेकरण न [असक्करण] १ मानूपण धर्न कार (रक्स) ७४ मिंग)। २ वि शोमा

कारक 'मजन्द्रमसोग्रस्य धर्मकरींण मुखोर्घाण' (R# (Y) I अक्षंत्ररिय वि [असंहत] मृत्येक्ति विमृतित 'कि नवरमस्य रिमे बम्ममहर्ग ठए महापुरिय। (नुपा ४८४ मूर४ ११६)।

**अर्लंदार पुं [अस्क्रार] १ राम-वि**रोप साक्षिक्ताका (चिरि १६४ विक्तार)। २ पून एक देवविमान (देवेन्द्र १३४)। अध्यार पूँ [असंघार] १ मूपल पहना (धीप राव)। र भूपा, सोमा (ठा४४)। सहा की "समा] पूपा-गृह, ग्राङ्गार-वर (14c) I शर्खकारिय प्र[अस्टेंगरिक] नारित नाई,

िकर्मम् | हवानतः श्रीर कर्म (सामा १ १६)। सहा की सिमा हिमानत बनाने का स्थान (एएमा १ १३)। अर्खकिय वि शिक्केट्ट र विभूषित पूर्य-भित्र (कप्प भक्का)। २ न सैनीत का**एक** पुरु (जीव ३)। बार्सकुण देशो कार्सकर । मनेकुणित (रमण

हजान (लावा १ १६) । कम्म न

**१२)** । अञ्चंप नि [असव्ध्य] १ जलांबन करो के समीप्य (पूर १ ४१)। २ सम्प्रीयम करत के बरात्य (उन ११७ टी) ।

सर्वपणिय ) वि [ससङ्खनीय] उथर देशो अर्थपणीय j (नहीं भूगे ६ रि १६) नाट) १ धर्मप पुचि | दुच्चुट, पूर्गा(दे १ १३)।

असंयुक्ता की [अक्टम्बुया] १ एक विन्द्रमाधी देवीका बास । (स्र ८) । २ पुरुम-विशेष । (पाय)। क्संभि को [काराम] बताति (बीच २**३**)

अस्त्रम् की [अस्त्रम] नगरी-विशेष पहले

प्रतिवास्त्रदेव की राजपानी (पत्रम २ २ १)। देशो अरुगा अरुक्त्य पूँ [अरुम] १ इस नाम का एक राजा जिसने मगनान् महाचीर के पास पीसा सेकर मुक्ति पाई भी (बंद १०)। २ म.

धंतपहरता' गुत्र के एक धन्मयन का नाम । (धंत १८)। अञ्चल वि [अञ्चल] करवर्षे न प्रासके ऐमा (मूर ६ १३६) महा)।

अञ्चल्यमाण वि [असम्यमाण] को पहि चाना न जा सरता हो प्रम (स्प ४६३ थी)। अस्रवित्यय वि [अस्रश्चित] १ मजात बर्गार्चवनः (से १३ ४४)। २ न पहचानाः धुमा।(मुर४" १४ )। बद्धा रेखो अस्य = प्रनव (महा)। **अक्रम रेक्षो अख्या (धंत १)** १ अख्यान दि] कर्नद देना दोप का भूग बाराप (दे १ ११) ।

अञ्चलपुर न [अन्यलपुर] नगर-विधेप (दुमा) । खक्क वि [अक्क] निर्मेन, देशरम (परह 2 3) 1

असब्बर वि अनुजाल । असर देवी (गा ∉ः ४४४४. ६६१ महा)। अखट्टपरस्ट न [दे] पार्थं का परिवर्तन (2 8 84) 1 **ভাৰত বু[ভাৰত**] মালতা জিবাঁ হাৰ-पेर को सत्त करते 🎏 तिए जो रंग सवाती

🖁 वह (धनु ३)। अस्तय वृं[अस्तरक] १ अपर देनो । (नुगा ४ ६) । २ वि मालता ने रैमा हुमा (धन् )।

अञ्च्यो**य देवो प्रक्र**योग (व ६ ४६) । अख्यांज्ञ वि दि । मानधी मुस्त (देर M() I बालमंधु वि [बासमस्तु] र समर्थ। २

निरोबक निवारक। (ठा४ २)। असमस पू [क्] दुर्रान्त वैन (के १ २x) । श्रवमञ्ज्यसङ् पू [वे] स्मत वैत्र (वे र २५)।

इसस्रयन [दे] विद्वम प्रवान (दे१ १६ मवि)।

बर पृष्टियर] १ ग्रीन-विशेष । २ समुद्र

राष्ट्र-- काम क्रोब सीम मोड सद बारसर्वे (गुम ११४)। दमण दि ["इमन] १ रिप् बिना राष्ट्र। २ पूँ इस्मार्ट्ड वरा के एक राजा का नाम (पटम १ ७)। ३ एक वैन मुक्ति यो अस बाल् धनितनाय के पूर्वाम के रक थे। (प्रतम २ ७)। इसजी की विसनी विद्या विदेव (पटम ७ १४१)। "विद्यमी औ ("विष्य" (पठम **७** १४)। स्तास प्रे सिंडास] राज्ञकाल में उत्पन्न सद्भा कारक राजा (पटम ४, २६४)। इति कि विहम्सुी १ रिपु-विनासक । २ पुँ जिनदेव (सावव) । व्यक्तिस्ति पृंद्ये [दे] व्यात्र, देश (६ १ २४) ।

**4**2

[सनी] रिपु का नाम करनेवाची एक निया करिवय पूँ [करिक्षय] १ भगवान् ऋपयोग नाएक पुत्र । २ म. नगर-विस्टेव (पटन ४ रे शासका सुर ४, १ ६)। मरिट्ट पुं [अधिष्ट] १ बृद्ध-विदेव (पान्त १) । २ पंतरण्ये सीर्पेकरका एक गरावर (सम ११२)। १ पून-एक देवविमान (देवन्त्र १६६) । ४ म. मीम-मिरोम को मार्यच्या गोन । नी राज्या है (ठा ७) । १ राज मी एक मार्डि (बस १४ ४ सुरा १)। ६ कन-विदेश चैदा (पर्ण १७: उत्त १४ ४) । ७ सन्दि-**तुषक कपाद (बाबु)**। विसि समिन् ["निसि] वर्डमान कास के काणियें जिनक्षा (देन १७ ग्रेंड १ क्या पति) ।

क्षरिष्ट्रा की [क्षरिष्टा] नच्च नामक विवय सी धक्यामी (अ.२.**३)** । व्यक्ति न [क्रांट्य] फ्टबर, क्रन्ट, नाव की पीके का बाह, जिससे त्रक शाहिने-गाँव बुमावी बाती है (बर्मीन १६२) । भरिक्ति व [भरिक्ति] पास्पूरण सम्बन ( R 2, 280) 1 व्यरिस देवो भरस (छाना १ १३)। भरिसम्बद्ध १ वि [व्यक्तिन् ] बनागीर व्यक्तिस्स ) चेनवाचा (तमः विदा १ ७)। मरिक्षि [कार्ड] १ कोग्य, सामक (मुपा २६६, प्राप्त)। २ दु जिल्लेक (बीप) 1

मदिइ एक [बाई] १ योग्व होता। २ पूना

(यहा) । यसिहित (यम) ।

के बोला शोजा। १ पूजा करना। प्रशिक्त

अस्टि रेनी अस्ट-शॉन्स् (हे२ १११) पर्)। इत्त "दिण्न प् विता वैन मुनि-निरेष का नाम (कप्प)। अस्टिया रेली अस्ट्या (शङ्क २०) । करिष्ट देशे अस्ति = धर्म (ह २ १११) पर् खाया ११)। भद्रय न **िशस्य**ी १ जिल-मन्दिर (उना भाषु)। सामण न [शासन] १ वन यागम-सन्य । २ दिन-पात्रा। (पएइ २ ४)। सरु देनो तरु (न २, ११ ४, ६५)। अर वि [ अरम् ] रोग-राहित (वंदु ४६) । अन् वेषां समय (स्ट्रु ४६)। अरुगन [के अरुक] इस याच धाना श्य दुलाई (बृह ३) । भरंतुद् वि [भरुनुद्] १ वर्ष-देवकः । २ मर्ग एक्टी "म तर पूरवायायाणीई विधि यन्सावि (सम्बद्ध १६८) । ६)। र मूर्यं वा मारवीः ३ संप्यासन छनमा की कानी (खेद ७)। ४ द्वीप−ं विशेष । १ समुद्र-विशेष 'बैनुए होद सल्छो, मक्लो दीवो छयो उद्यूरि' (दीव)। ६ एक बह-देवताना नाम (ठा२, ३ पत

अनगर् [अन्य] १ मूर्य पूरत (मे ३ ७ )। ७ गमानती-पश्य का व्यक्तिता देव (ठा २ १: पण ६६)। ८ देव-विदेश (छीर)। १ रक्डरंग नामी। (सर्ग)। १ न, निमान-निरोप (सम १४)। ११ वि रक साम (पारः)। कृत स देवविमाल-विरोध (दवा) ! [कील] न [कीक] रेपविमान-विदेय (क्या) । स्या औ ["गङ्गा] महाराज्य केट की एक नदी (तीर )। समृत [<sup>\*</sup>राष] वेवविधान-विशेष (उवा) । अमृत्य न [भाव] एक केननिमान ना नाम (क्या)। "प्यस "प्यहण ["शस] इव नाम का एक बेवनिमान (तना)। सक् र्षं ["मत्र] एक केवता का नाम (मुख्य १६)। भूष व [भूव] एक देववित्मान (स्वा)। महासद् र् ["सहासत्र] के क्टिंग (गुल । ११)। सहावर दें ["महाबर] १ हीप-क्रिकेश २ समुद्र-विरोध (१४)। वहिंसम

व ["वर्षसक] एक वैवनिनान (क्या)।

(तुत्र ११)। बरोमास र् "बरावभास] १ द्वीर-विरोध । २ तुरू विदेश (गुल १६)। सिट्ट व [श्रिप्त] एक दैवदिमान (उस)। सिन [मि] देवविमान-रिटेप (उदा) । अरम न [दे] समन पर्म (देई द) । अन्त्रपूर्व [अरूप] १ एक **रेप**-विमाल । (ब्रेन्ट १६१)। एपम पू ["प्रम] १ स्मृतेनम्बर मानस मानग्रह का एक साराय-पर्वतः २ उप पर्वतः का निकासी देवः। (बार २ पद २२६)। सिर्वृक्तिमी ष्टप्प पुरुवन-विदेव (मुज्ज २ )। वन्त्रिम पूंजी [अस्तिमन्] नारी रकता, 'पर्यापपद्मार्घाणमरमणीम' (नुपा ४६) । अरुणिय वि [अरुभिन] एक, सान (वडड)। अरुम्चरपडिमग न [अरुपाचयवर्तमङ] इस नाम ना एक देवविमाल (सम. १४)। अरुमार् दु [अरुमार्] स्ट्रा-विरोध (मुझ ₹**€**} 1

अरुवाइय 🙎 [अन्याइक] स्पूत-विशेष (मय) । भरणाबवाय वृं [अरुगापपात] प्रवन्तिरेय का नाम (श्रीके)। अन्य वि [अन्य् ] क्ए बाद (सूच र 1 (1 1 अस्य वि [जस्मू] निरोगी, रोयर्फीड (तम शास्त्रि २१)। अरह देनो करह=,व्हेंद (दे २१११ पहः (धीर)। अस्थ वि [सस्य] १ बलागीतः । २ वृं पुत्र बाल्या (पण २७१ मण ११)। १ जिल-वेष (प्रस्म १, १२ )। अरुड् केवो असिड् = धर्मु । प्रस्त्रिम (धरिव १४)। वह अस्त्रमाम (यर्)। अद्भाद कि [कार्ट] योग्य (स्वार ब४) । भरद्रंत वेची अरहंत = वर्षेत्र (हे २०११ पर्)। अस्त्रत वि[अधेदन्] र नहीं करता हुमा चन्म नहीं तेताहुमा (भग ११)। भरव वि [क्षरुप] सामीत सपूर्क (पत्रम ७१, २६)।

सम्बद्धि वि शिक्षिपम् जिसर केको (स ९ । प्राप्त पर्स्स १)।

सरे प [सरे] १-२ संमापण **गौ**र रहि-क्रमड का सुचक क्रम्पय (हे २२ १) यह )। सर्म (अर्] इन प्रयों का मूचक प्रथ्य-१ ब्राह्मेप । २ विस्मय बारवर्षे । १ परिकास

बद्धा (चेलि १८ ४७) । भरोज वह [ रत्+स्य ] स्प्नास पाना विकसित होना। घरेमाई (हे ४ २ २)

कुमा) । सरोमज दूं [असेचक] रोक्षरिय बन्न की

बर्ग्य (भा२२)। **ठारोइ वि [ डारोबिन् ] प्रदर्भ वाला वर्षि** चित्र 'धरोड् धरने निहार निनानी' (यीम

w) 1 **कारोग वि [कारोग] रोपर्राहत (मग** १= १)। याँ ही [ता] मारोग्य, नीशेवता

(स्व ७२८ टी)। बारोति वि बारोतिन् । वीरोग रोग-पहित । या औ िंता ] प्रायेग्य, हंदुब्स्डी (महा)। अरोगा ) देवो प्राचेय = प्राचेग्य (प्राचा २ **अरोप** र्रे र. २)।

भरोस वि [करोप] १ प्रस्ता-प्रवृत । २-१ र्षु एक स्टो**ण्य देश धी**र उसमें स्टोननानी म्हेक्स बादि (पएड १ १)। धस्त्र म [कास्त्र] १ कि **ल्यू** के पुल्लाका सम

भारतेन विष्णुकार्य पुर्नेव

महीर्ग दश्य मंदरस ।

विद्वि-वियं विषुणार्थं **स्क्रं स्कारत सम-गाउ**री

(प्रासु १९)। र धारादेशी का एक विश्वत्वन (ग्रामा २)। ३ वि समर्थ (धावा)। पट्टन पिट्टी क्षिन्तु की पुँछ वैसे आकारणासा एक राज (विपार ६)।

" अस्त केवो तस्त (मा क्यू से १ कम)। ब्रम्हे च [अस्प्] १ पर्यात पूर्ण 'बलमा-एवं कर्मतीए (मूर १३ २१)। २ प्रतिचेव

निवारका वस (इप २ ७) । भराव [ असम् ] धनकार, मूपा (शुप्रति

R R) 1

**शसंदर** सक [अर्छ+कृ] मूपित करना विराजित करला । धर्मकरेति (पि ६ ६) । वक् असंकर्रत (माल १४३) । संक्र असं

करिक्ष (पि १८१)। प्रवी., कर्म क्रमंकरा बीयर (स ६४) ।

**असंस्र**ण न [अ**सङ्**रण] १ मानूपण धर्न कार (रयस) ७४ मति)। २ वि शोमा कारक "मक्त्रममोग्रस्स भर्मकरींग सत्तोगींग" (बिक्ष १४) ।

असंस्रिय वि [अलंक्स] मुख्येकित विमृपितः 'ब्रि नवरमर्श्नेकरियं बम्ममहेखं तए महापुरिस। (सुपा ५८४ सुर ४ ११८)।

असंधार पूं [अ**ङ्कार] १ राम-विरो**प शाक्रिक्कराच्या (चिटि १३३) सिक्चा २)। २ पुन एक देवविमान (देवेन्द्र १६४)।

अध्कार पूँ [अधंकार] १ भूपछ छना (भीप राय)। २ भूपा होना (हा ४ ४)। सहा को ['समा] मूपा-गृह, श्राङ्गार-वर

(इक)। असंबारिय पू [असंबारिक] नागित नाई, ह्याम (लामा १ ११) । कम्या न [कर्मम्] हमामतः सीर कर्म (खाया १ १६)। सङ्घा की ["समा] हवानत बनाने

कारवान (खाना १ १६)। अलंकिम वि [अलंकर] १ विश्वपित पुरो-मित (कप्प नक्षा)। २ न संगीतका एक

दुए (बीव ६)। **असंकुण देवो असंक**र । धर्मपुर्णीत (रमण

१२)। अक्षेप वि [अक्षक्ष्य] १ क्षलंतन वक्षे के धनोग्य (सुर १ ४१)। २ उस्तीमन

करन के धरमय (सर ११७ टी) । कार्डचणिय ) वि [कार्यक्रनीय] अपर वेशो

असंघणीय ∫ (महाँ सुपा ६ १ पि १९) नार) १ बार्खप पूँ वि दे दुस्कुट, मुनाँ (दे १ १६)। असंबुक्ता की [असम्बुक्ता र एक विकासि देशी का नाम । (दा व) । २ शुरूप-विशोध ।

(पाम)। व्यसंभि की [काक्षाम] गणाति (भीव २३)

कास्टब्स की [कास्टब्स] मगरी-विरोध पहले

प्रतिकास्त्रेव की राजवानी (परम २ २१)। देशो श्रष्टया।

शास्त्रकार्ष् [अन्त्रभा देशसमाम का एक राणा जिल्ली भगवान् महाबीर के पास बीका मेकर मुख्ति गाई भी (ध्रीत १८)। २ न श्रीतवण्यसार् सुभ के एक सम्मयन का नाम । (भंत १८)।

<del>अक्ष्मक कि [अद्राह्म] क्षम में</del> न प्रापके ऐसा (बुर १ ११६ महा)।

अ**अव**रामाण वि [अक्षस्यमाण] को पहि चाना न जा सकता हो ग्रेस (उप ११६)। **असम्बन्ध्य वि अधिति १ प्रकार** बयरिचिता(छ १३ ४३)। २ न पश्चमा इमा।(पुर ४ १४)।

अध्य देशो अस्य = प्रसद (महा) ।

**अब**गा रेक्षे मलया (भेद १) । **अक्षमान [दे]** कर्नक देना दोप का सूठा

मारोप (दे १: ११)। **अस्त्रपुर न [सन्द्रपुर] शगर-विशेष** (कुमा) १

अस्तव्य वि [अस्तव्य] निर्माण नेरारम (पराह 2 W) I

शक्रकिर वि [अस्तकालु] क्रमर वैसी (भा ६ ३ ४४ थर ६६६ महा) ।

अख्ट्रपरस्कः न दि । पर्यं का परिवर्तन ( 2 4 8 4) 1

भक्त पूंजिकको मानदा, सियो हाप-पैर को सास करने के सिए जो रंग समाती हैं पह (धनु १) ।

जबचय पूं (अबच्चा १ असर देवी। (तुपा ४ ६) । २ वि मल्या से र्या हुया (धनु) ।

अस्थोय देशी करुभाय (वे ६ ४६) : अक्रांजुस वि वि धलकी मूल (देश 84)1

**अलर्मधु वि [अस्मस्तु] १ धवर्ष। २** नियेवक निवासकः। (ठा४२)।

व्यक्षमञ्जू कि दुर्शान्त बैत (वे १ २४) । अस्मसम्बद्ध दि ज्यात देश (दे १

२१)। व्यक्कय पृत्ति विद्वय प्रवास (दे१ १६ मिंग)।

10

(विपार ६)। २ केट, इंक्सचे असा। (पाम स ६६)। अड्रया की अब्रह्मी हुनेर की नवरी (सध सामा १ तो। देशो असला

अउप वि अखपी मानी नहीं बोपनवाना

(नुष २६)। शास्त्रक्तवसह पुदि । भूगे बेल ( पक्ष )।

क्षप्रस पि बिखम रे बलमी मुन्त (प्रामु ७)। २ मन्द्र भीमा (पाम) । ३ प्रै **यह** की र विशेष मूनाद, वर्षाक्षतु में ए प सरीचा द्याम रंग का भो सम्बा बना करूब होता है

बाइ (बी १३) कुल्ब २६१) । असम दिहि १ मधुर मानावनला च

भारतं वक्तमंत्रक्तं (पाध्ये)। २ इतुस्य रंद छे रंगाहमा। ६ व. मोम (६ १ ५२)।

अञ्चल रेको कन्नस्य (से १६ ६३ ११ ४ ३ ना 1 (375 असमा १५ [अस्स ह] १ विमृत्तिका चैन

**श**क्रमय 🕽 (देवा)। २ ध्रेन्द्र, नूजने (वाचा)। असमार्थ वि [धस्यायित] विनने बालवी मी **तरह मानरा**न तिया हो मन्द (ना ३६२)।

**अस्माय बर्ग [ अस्माय् ] बानही हो**न्छ मारस्ये नौ तर्यकृतास करतः । व्यक्तापद (रि ११)। वह असमार्थन अल्लाय-

माण (गे१४१ दाप ६१६ गम्ब १)। भग्यमी देखो अवसी (यात्रा यहः हे २, 22) i

अस्य मे [अहा] १ °व नाम नी एवं देवी (डा६)। २ इक ज्लाली का नाम (कामा २) । वहिमग न विश्वस्को धनारेवी 💵 भरत (गुरमा )।

अना रेगा कुमा (गा ६६३) : अन्यत्र व [अलाव] तृत्वी वार मीवी तृत्वा

(बीर क्रायु १६१)। भषाप्रः } सौ [ भराष् ] तृष्यी-तता

अभ्यप् } (दुर्गे वर्)ो भायाय व [ब्रह्मन] १ क्यून जनता ह्या

भाउ (दे ११ ७ मोप २१मा)। २ महार, शीयता (ते ३ ३४) ।

व्ययक्ता थै [अस्यवृक्षिता] केला-क्रिक

(AUT 19) 1

भज्ञान् देशो अग्राक (पि १४१ २ १)। शसाह प्रं [असास] गुक्सान वैरसामः **'व**व

अस्मय रेखी अस्मर (वे १)।

हरमाणाण पूछो हाद मुलाहो कपायमहो बा" (नुषा ४४६) । अस्तर्वि देशो सम्बं (जन ७२४ टी हे २ १०६३

लामा १ १ मा १२७)। अद्धिर्थ (अधि) अवर (भूमा)। **द**स्न न

कियी समर्रों का समुद्र (हे ४ ३५३)। थिरुय न ["विरुत्र] भ्रमर ना प्रशास्त

असि पेन्री अिंक विश्वक परि (विचार

2 4) 1 श्राविश्वरकी सी दि । १ वर्षात्र, शेर वि १ ३६)।

शक्किमा की दि । एकी (दे १ १६)। खस्तिआर न विो द्वन (**दे**१ २३) । अधिकर न अधिकरी १ चका कुम्म (ठा

४ २)। २ इंड पान-विशेष (दे १ ३७)। भक्तित्ररञ पू [मिटिजरक] १ वहा (क्वा)। रॅक्ने का क्रेश रंग-पाव (पाय) । अस्त्रित न असिन्द्री पार-विकेष एक प्रशाद ना बनपात्र (बीर ४ ६)।

अभिद्रगर् अधिष्ट को १ हार का घरोह (म ४०६)। २ घर के बाहर के बरवाडे वा भीकः। ३ बाहर नास्त्र श्राप (बृहर श्राप्त) । अस्तिय प्राधित्य है। बाल्य रक्तरे ना पात्र-विदेश (बस्यू १६१) ।

असित्र र् दि ] ब्रांचक विष्यु (वे १ ११)। अधियी भी [अधिनी] जनपै (रूपा) । अधित न बिरियों भीना केनम भा इ.इ चणु(बाचा२ ६ १)।

अस्ति 🗷 असिक्री क्यान (पाप)। असिय व [असीक] १ नुपाशद, ग्रन्थ वचन (पाप) । २ वि क्टूटा सौना- 'शनिम-

शोरप्रामार'---(पाप) । ३ निष्यम निरबंह (परा १ २)। बाइ रि [बादिन] मुक्त-थारी (पत्रप ११ २०। नहा) । अधिस्य तथ [ प्रयय् ] पदमा बीतनाः।

धनिहार (रिम)। अस्मिक्टर् व [व्] १ एत्र विदेश का बात्र।

२ वि सम्बोजक नियमस्त (निय)।

स्रव (पिन)। असीरा ) देवो अधिय = मतीक (सर Y छान्नीय । १२३ सपा ३ अवहा)। खबीवह की जिस्किय | भ्रमणै (भ्रमा)। अधीसभ भी पुंदि। राष-पृश साम का वेह (दे १ २७)।

व्यक्तिस्या की [क्रिक्सिया] इस नाम का एक

धद्ध — ब्रह्म

अञ्जूषिका वि (अरुश्चिम्) कीमस (मन 11 Y अक्षेसि वि अक्षेत्रियम् १ वेरबा**र्यस्य ।** 

र पूँमुक बात्मा (स्व ६ ४)। अक्षेग ए [अस्त्रेक] क्षेत्र-पहल ग्राह चीत ब्यकार (यद)। अखाजिय वि[सद्धवितः] चूल्रपीस्य तमक-

कृष भव प्रमोधियं सिसं नोत महोद्र' (महर)। अख्येय देशी अख्येग (सन १)। असोम 🕻 [अस्त्रेस] १ दोव ना समन

र्थवोचा २ वि सोमग्रीहत संतीयी (भनः अखेड रि [अखेड] धमम्बट निर्मात (रत

₹ (₹ (₹) I असह देवो असम (दण)।

व्यस्क न [दे] दिन, दिनस (दे १ ४)। शस्य रेवो सह (हे १ x )। थरुड यह [नम्] नमना नीचे मुदना।

थोन्सन्दरित (से ६ ४१)।

भरस्य 🖈 भागेकी सवा-विशेष पार्टक-नवा (पर्वा १७) । अस्त्रम देनो अरुप्रय = मार्डक (धर्म २)।

अस्करथ सक [ क्ष्म + क्षिप् ] क्षमा पॅबना। धक्रपर (हे ४ १४४)। अङ्ख्यव व [यु] १ जनातां गौतार्पता। ६

केश्वर सूपाए-विरोध (दे १ १४)। अस्त्रस्थित वि दिस्सिमी देवा पॅका हमा (१मा)।

अस्डिय न[भाइ क] यारी धराक(बी १)।

तिय व [श्रिक] मारी श्रुत्ये भीर क्यूर (बी १)।

व्यस्क्रय वि [वे] शीर्रीचन ज्ञान (दे १११)।

अस्डय पूँ [अस्डड] इन नाम ना एक विक्यात देन दुनि चीर प्रम्पराद, वर्ग्योतन- १६ २११)।

(स्वि)।

**3.8)** 1

सूरि का स्रवाध्याय-सवस्था का नाम (गुर

धारकरक पूर्वि समूद, मोर (वे १ १३)।

अस्यविय [अप] वेश्वी आसच = बासपित

ध्यत्मि ) देशो अल्ब्सी। धक्रिक् (पर्)।

आस्टिक ∫ महिमद (दे ११८ हे ४१४)।

वक् अस्टिस्टर्जन (मे १२,७१ परम १२

**बारिस्तर सक** [ इप + सूप ] समीप में

बाना। बर्जियद (हे ४१११)। नद्व अस्टि

अञ्च्याच्या त्रि माठा माँ (वे १ ५) ।

**र्जंद (ग्र**मा) । प्रयो, प्रक्रियावेड (पि ४०२ ऋद१)। **छस्जिल वि जि**र्जिती गीमा किया ह्या (m xx ): अल्ब्रियाक्त्र न [आखायन] मातीन करना **चिट्ट करना** निसान (भग व ३)। अस्टिस्ट पू विशे मनस (पर्)। अक्टिय एक [अपैयु] मर्गेण करना। बक्तिकह (क्वे ४ इंट, मर्कि पि १९६७४१)। करूकी }स्क [भा+स्त्री देशाना। २ खल्कीओ प्रवेश करना : १ जीवना । ४ बायव करता । १ प्रानितन करता । ९ प्रक संपद होना । महरीमद (हे ४ १४) । भूका महारेपी (प्रामा) हेक्- व्यस्कीर्य (बृह ६)। आस्क्रीन विभिन्नी १ कालिए। २ द्मानतः ६ प्रविष्टः ४ संग्रदः ३ शोजितः। ६ योका सील (१४ १४)। ७ मानित (कप्प)। ८ त्रजीत तत्पर (स्व १)। शरहोस रि [ब्रक्षेट्य] नेरवाधील (काम ¥ %)1 धरस्रोग रेखो अस्रोग (हब्प ११)। अस्हाद दू [आह् स्थव] कुटी धमोब, मानन्द (प्राप्र)। बाद ध [बाप] इन वर्षों का सुपक सम्बय----१ विपरीत्रता जन्यास्य 'धवक्य, धर्वप्रय'। २ बापसी पीक्रेपन धनदमई । ३ बुरापन चरान्यतः चित्रमान्तं, घरमङ् । ४ म्यूनता कर्माः 'धवद्द'। १ एहितान्त, वियोगः 'कव-बार्ग्य । ६ बह्दरननः, 'मनदम्या' ।

काथ म अिथ | निम्नतिकित भवों का सुवक सम्बद-१ निम्नता 'मनक्एए'। २ पीक्षेत्र, 'धवक्ती' । व तिरस्कार, धनाइछ 'धव गर्गत'। ४ धारानी नुपदि धनपुर्ण। ५ शमन । ६ सनुभन (धन)। ७ हानि खास 'धनदास्'। इ.समाच 'सवसदि'। १ मर्याश (बिने ८२)। १ निर्श्वक भी इनका प्रयोग होता है 'घरपृद्ध, मचपहाँ । अनव सक [अन्यू] १ रक्षण करना "सर्वेतु मुणिस्रो व पक्कमर्ग (रमण १)। २ वाना शमन करता । १ इच्छा करमा । ४ भारता । ३ प्रदेश करना। ६ सुकता। ७ म क्या याचना । = करमा, बनाना । १ चाहना । १ प्राप्त करना। ११ मालिकून । १२ मारमा, हिंसा करना । १३ वसाना । १४ पक प्रीति करना । १५ दूस होना । १६ प्रकाशमा । १७ वद्यनाः शव (बार३ विमे २ २ )। अव पुँ [अय] धन्द, मानाम (या २३) । अवश्वकत्र एक [ दर्ग ] वेश्वना । यवप्रकाद (हे ४ १८१) हुमा) । क्षवंभक्तिका न [वे] निवायित मुखः ग्रेहाया हुमा ही (दे १४)। अवअच्छ न [दे] क्या-बस्र (६ १ २६) । अवभव्य पर [इ.स.चू] यानव वाता कृत होना । शनकच्छा (ह ४ १२२) । अवभव्य एक [ 🗨 ध्यव्य ] कुरा करता । मनमन्तर (हे ४ १२२)। भवशिक्षक [दे] देवो अवज्ञविस्तम (दे 2 Y ) 1 **अपश्रीवदाश वि हिस्सविती १ ह**छ भाइतिक शासः १ श्रुरा किया हुन्यः इतिक (भूमा)। अवश्यास सरु [ रहा ] वेक्शा । अवस्थात (पक्)। अवस्थित वि [वे] यर्गनटित, सर्वपुष्ट (वे १ ४३)। अवअञ्च पुंदि] स्वाम पुन्त (रे १२६)। अवअन्त वि [अपदृत्त] स्वतित (दे १ ₹¢) 1 अवजास सक [ दश् ] देवना । शनपासद

(दि४ १≍१ः भूमा) ।

uΥ व्यवह वि [बाग्रविम् ] प्रवसून्य प्रविधा घश्चवत्त (ब्रह्न १) । अवर्ण्य वि [अवतीय] १ उत्तरा हुमा नीचे यामा ह्या। २ सम्मा हुमा (सप्पूर परान ७१ २८) । भवद्य (शौ) दि [अवश्वित] एकवित दरहा किया हुन्। (मनि ११७)। अवद्य (शौ) वि [अपकृत] १ विसका प्रदित किया गया श्री वह । २ न अपकार, महिंछ (पाद ४)। अवद्भावेको अवद्या (पुर १ १२२)। अवष्ठकास्य [शयकुरुयु] मीचे समना। संक्र-अवडिद्धय (बाक्षा २ १ ७)। अवडब्स् एक [अप + डब्स् ] परिस्थान करता। ओड़ रेना। संड्रा अवडिम्हळण (शह १)। अवतरम वेची अववद् । अवस्टा ) देवो अवओडरा (सामा १ २) अधरहय रेस्तु)। अवर्षठण व [अव्युष्टन] १ इक्ना। २ गुँह बक्ते का बक्द, बूँबट (बाद ७ )। व्यवज्रह वि [अवगृह्व] प्रातिगित 'संमापह भवजही वाववारिहरोच्य विव्युसापडिभिन्नी ( T T T YE4) 1 अष्ठसण १ [अपवसन] रुपवर्ग विरोप (वेचा १६)। व्यक्तसण न [ब्रपकोपण] उसर देखी (पदा ₹€) i अवटक्ष्यन [अवगृह्न] ब्राप्तिह्रन (या ११४ ११९ बमा ७४)। **अवपद र् [अवप्**ज] शिवन-इस्त पात्र विरोप (साला १ १ टी-पत्र ४६)। अषपस पुं [अपदेश] बहाना धन (वाप)। अवभोडग व [अयक्राटक] पते को मधेकृत क्रकाटिका की नीचे से बाला (विधा १ २)। र्वंधण न ["बन्धन] १ हाव धीर सिर को इन्त बाप से बोबना (पर्सुर २)। २ कि रत्सी से बता थीर हाब भी मोहकर प्रष्ठ मारा के ताथ निसको बांबा वाय बहु (विपा १ ₹)1 वर्षेत र् [ब्रपाइ] नेन का प्रान्त भाग (तुर 1 (17 11 11) i

अस्य—अस्य

(पत्र्यास ६६) । क्षत्रमा की [असम्ब] हुवेर की नयरी (पाय) ए।या १ ४) । रेब्रो अस्त्र । श्राद्धव वि [अलप] यौनी नही बीवनेवासा (तुप २६)। काञ्चनक्ष्यसङ् पू दि ] दूर्व देव ( पर )। **अइस कि अिद**मी र पालरी सुग्त (प्राप् ⊌)। २ सन्द, चीमा (पाप)। ३ पूँ **सुद्र की**ट क्रिकेट, बू-नाम कर्यऋतु में क्रीय सरीका श्राप्त रंग को जो सम्बा बल्यु उत्तरक होता है बद्ध (बी १६३ फूल २६६) । कालस विदि १ मदुर गावाजयका की धनसं शक्तमंत्रुनं' (राघ) । २ भूतुस्य रंग से देपाइच्या। ३ त मोम (दे १,५२)।

(मिपार ६)। २ केट ड्रीवराले बाता।

अक्टल देशो कल्ला (से १६६१४) मा 1 (379 **अक्सग ) र् [अ**डस ३] १ दिन्**चिका** येव **धारसय )** (एवा)। २ व्यवहु, सूत्रव (धावा)। अस्ताइज नि [अस्सायित] जिल्ले मानस्र सी तरह धाषरत किया हो मन्द (मा ३४०)। असमाय धक [ अससाय् ] बानकी होना मामधी भी उद्धा नाम करन्छ। सलस्त्रका (नि ११)। यह अस्तायंत अस्ताय माण (से १४ १ वर प्र ३१३ वल्ड १)। धाउसी देवो अयसी (प्रान्त वर् है १, ब्रह्म की अर्थ्य १ इस नाम नी एक देवी। (छ ६)। २ एक इन्द्राशी कानाम (खासा २) । बह्रिसर न ["बर्दसऊ] धनावेती कामन (ए।मा२) । "अहा देनो इन्छा (गा ६१७)।

अन्त्राप्त मिळाणु दुन्मी कर चीनी दुन्ना (बीग प्रान् (१११)। अस्राक्तः १ सी [बस्स्ययु ] गुम्बी-नशा अस्यपु } (दुर्माः पर्)ो भाजाय न विकार र प्रमुक्त, भनता ह्या वाह (देरं र का सीप २१ मा)। २ सङ्गाद, मीयता (ते १, १४) । मस्यक्ष्री भी [मख्युषीता] गीशा-शिक्षेत्र

(ब्राइट ३७)।

**कबाबु केनो बाबा**क (पि १४१३२ १) । अक्राइ पू [काह्म म] मुक्ताल नैरलामः 'बन हरमात्राख पुर्यो होइ पुलाक्षा क्यानवाही बा" (मुपा ४४%) । भक्काहि वेको अर्क (उप ७२४ टी हे२ १०१) क्याया १ १। मा १२७)। थास्त्रियुं [थास्त्रि] भागर (कृमा)। सक्तान िक्कर] भ्रमरोका समूह (के ४ २१३)। विरुप न ["विरुत] भनर का गुवारक (पाय) । अक्षि पुंश्ये [अक्षि] कृष्टिक परित (विचार व्यक्तिसर्काची दि <u>दि कल्ल</u>्याः २ व्याप्र, शेर (दे १ १६)। अधिआ की त्रि प्रची (दे १६)। अक्रिआरन दि । इच (दे१ २६)। अशक्तिकरन [जस्किकार] १ थका कुन्म (क्ष ४ २) । ३ दुर पात्र-विरोप (दे १ ३७) । **अधि**जरञ पुं [अ**धि**कार**क**] १ वहा (त्या)। रंगने का लुंका रंग-पात्र (पात्रा) । अ**ब्रिय न** अिक्टिश्री पाल-विशेष एक प्रकार का पचपान (बीन ४ ६)। अधियार् अभिन्दकी १ द्वार का प्रकोह (स ४७६) । २ घर के बाहर के शरवाने का भीकः। १ नाइर का यस जान (बृह २० राज) । अक्रिय पूर्व (माकिन्द्रक) बाल्य रकत का पात-विशेष (प्रमु १११) । असिय र दि वृष्टिक विष्यु (दे १ ११)। व्यक्तिणी की [अस्तिनी] भ्रमधे (कूमा) । **अक्रियान [अरिश्र] नीशा खेल**न का उड़ वर्ष्य (बाबा २, ६ १) । सद्धिय म [अक्रिट] मपान (पाप) । मस्रिय न [अस्त्रेक] १ गुनावार, यसल वचन (पान)। २ वि भूटर, कोटा धानिम-पोक्सकाव'---(पाप) । व निष्यक निर्वेक (पर्याहर २) । आहिष ["बाविज्] मूपा-कारी (पक्रम ११ २७; नहा) । अधिरक तक [क्यव्] गहरा, बीसना।

र्मालक्का (पिय)।

अस्तिस्त्यक् न [दे] १ क्यून विशेष का नाम ।

२ वि व्यवपीतक नियमक्रीत (पिथ)।

सम्ब (पिन)। अक्रीग} केवी आक्रय≕मतीक (पुर ४ बासीय 🕽 २२३। पुरा 🔻 । महा)। बसीवह की [ अखिनम् ] भ्रमरी (हुमा)। सक्रीसञ्ज्ञ हो दे हैं। शाय-पूज साप का पेक (दे १ १७) 1 श्राकुष्टिका वि [अरुब्बिम्] कोमत (सर ₹₹ ¥) I बातेसि रि[बारोदियम्] १ वेरवार्ध्स्य । २ पूँ पुक्त बारमा (ठा ३, ४)। खक्कोग पूँ [ब्रह्मेक] भीव-पुरव माति पहित ब्यकारा (धव) । अस्रोजिय वि[अस्वजिक] बुखर्राह्य नगर-शून्यः 'नव सलोधियं सिक्ष' कोड वहेई (महर) । कक्कोच रेची कक्कोग (सम १)। अस्तोस प्रशिक्षोसी १ दोत्र ना सन्नम र्सकोष । १ कि चीमधीटत संदोशी (मय जो । **अक्षेत्र वि[अक्षेत्र] धन**स्पट निर्मीत (रस と:行(支)) वस्रोह स्था वस्रोम (क्य) । वस्क न **[दे]** दिन, दिवस (दे १ ४) । अस्छ देवी शह (हे १ = १)। क्षरुद्ध धक [स्यू] नमना नीचे फुक्ना। योग्यस्तरिः (के ६ ४६)। अस्तवं की आहेंकी नता-विधेप प्रार्थक-चवा (पएख १७) । **भरका के बहुद्धम = गर्जक (वर्ग २)। अस्प**स्य एक [ श्रम् + श्रिप् ] क्रेबा वॅबना। ध्यतन्तर (हे ४ १४४)। अरुब्रस्थ न 📳 १ वनाती वीटार्वका। ६ केशूर मुफ्छ-विशेष (दे १ १४)। अस्फरियम नि [चरिक्स] क्षेत्रा केंद्रा हुन्त (क्रमा) । अस्ख्य न [आद क] माधे धरफ (शे ८)। तिय न ["त्रिक] भाग्री इस्थी भीर कचूर

(वी १)।

अस्ख्य नि [के] परिचित जात (वे ११२)।

अस्अन् र् [बास्तक] इस नाम का एक

क्षियात केन पुति भीर बन्दकार, क्यूबोदन-

सूरि का सपाय्याय-सवस्था का शाम (सुर

१६ २३१)। कारकरक पुंचि मपूर, मोर (६ १ १६)। अस्छिबिय अिप रेडी आद्धत्त = बामपित (म्ब)। कारुला की शि माठा माँ (वे १ %)। ध्यक्ति } देशो अल्बी । धक्रीह (पक्ष ) । अमिक्किल 🕽 मिलियह (वे १ १६ - 🛊 ४ १४) । **बद्ध ध्रस्तिद्धार्थत (ते १२ ७१ पद्म १२** 26)! व्यक्तिस्त्र एक विष + सूप ] समीप में जानाः। मॉक्क्सइ (हे ४१३१) । वक्क अस्टि **व्यंत** (कुमा) । प्रयो चिक्रवादेह (पि ४८२ १ (१) १ **अस्त्रिम पि [आदित] पीला किया प्रमा** (बा४४)। अव्रिक्षपाष्य न [आखायन] शामीन करना खिलुकरमा मिसान (मग = 2)। अविश्वक्ष पू [दे] प्रमय (यह)। **छाहिन्छ।** एक [अपैयु] धर्मेश करना । मिमिष्ड (हे ४ वेर मिन प १८६ ४८३)। भारती १ एक [का+स्थि] १ स्थला। २ कारकीका । प्रवेश करना । व क्षोदना । ४ बायम करना । १ धालियन करना । ६ धक संगत होना । महरीयह (हे ४ १४) । मुक्त म्झीडी (प्रामा) हेन्द्र अस्क्रीर्ड (बृह ६)। ब्बल्बीय वि [बाबीन] १ धाव्यप्ट। २ मानदा १ प्रविष्टा ४ संग्रहा ३ वोजिता ६ भोड़ा सीन (हे ४ १४)। ७ प्रापित (क्य)। ८ स्थाति स्टबर (वव १)। भारतीस वि [कानेदय] धेरवार्यस्य (कम्म \* \* )! भक्कोग देवो अक्षोग (हप्प ११) । कस्हाद पुं [आह् स्वद] पुर्ध प्रमोद यानव (ब्राप्त) । अन्य म [अप] इन धर्मी का सुचक सम्बद— १ मिपरीच्या उच्छान "घषक्य, प्रवंद्वय"। २ बापसी पीक्षेत्रतः 'भवकगई' । १ बुशपन चरावपन धवयन्य सनसङ् । ४ ज्ञूनता कमी: 'समबब' । ५ चींताल, निगीनः 'प्रव वार्षा । ६ वाङ्ग्पनः "सन्द्रमर्खा ।

पाइअसइसहण्यको काषत्र वि जिल्लीत् ने जञ्जून्य, पविषद्ध क्षय म जिल्ली निम्नितिकित मधी का सूचक धर्मयत (बृह् १) । बम्पय--१ भिन्तरा 'घबद्रएए'। २ पीकेनक श्रवपूर्णण वि [अवतीर्ण] १ स्तरा हुमा भीने 'धनकुष्टी' । १ तिरम्बार, धनावरा 'धन गल्यां। ४ वासनी बुसाई/ वाबसूल्यं। ३ धामा हुधा। २ बन्मा हुमा (कप्पू पत्रम ७१, गमन । ६ धनुमन (राज)। ७ हानि सुप्ताः सनकार्त्र'। द सभाव 'प्रवस्ति । € मर्वादा अवश्रव (शी) वि [अवन्तित रुकतित इक्ट्रा (विने ८२)। १ निर्जंक भी इसका प्रयोग क्या बुबा (धमि ११७)। होता है 'धवपुट्ट, धवपार्व'। श्रवहरू (ही) वि [अपकृत] १ निसका महित किया येवा हो बहु। २ म अपकार, अहित अवसर [अव्] १ रक्षण करना 'यर्थतू (बार Y ) t मुखिलो य पक्कमर्स (एवल १)। २ भाना व्यवह्रम देखो अवह्ण्या (भूर ३ १२२)। गमन करना । ३ इच्छा करना । ४ बार्गना । अवश्रक्त सक [अवश्रुक्त्यः] नीवे नमना। ३. प्रकेश करना। ६ सूनना। ७ म मना संकृ अवडिकाय (याचा २ १ ७)। याचना। द करना वनाना। ह चाकृना। १ ठावधनम्ह सम्ब [अप + दत्रमहु ] परिस्थान प्राप्त करलाः ११ कासिकूनः १२ मारला क्ला। क्षोड़ का। संकु क्षप्रविशक्तिय व्हिंसाकरना। १६ वक्तान्ध। १४ सक प्रीति करताः ११ तुस होताः १६ प्रकाशनाः। (बह १)। १७ सङ्गा। प्रद (सा२६ विशे २ ६ )। अवस्था देखो अयबहु। क्षवत्रहरा ) केलो अयमोहरा (लामा १ २) अव र् अवि शब्द, पादान (मा २६)। सवरहय र भन्।। अवभवन्त शक [ इत् ] देवना । धरधन्त्रह ब्बबर्डठण न [ब्बबगुण्डन] १ व्हना। २ (दे४ १८१ कुमा)। श्रीक्ष बचने का कड़ा, धूँगट (बाद ७)। अवस्थितम् म [दे] निवापित मुखः पुरेहावा खबऊद वि [**सदगृह**] धालियत 'संग्राबह हुमा सुंह (देश ४)। धवज्ञको खननाखिरोम्न निम्बुनापडिनियो अवअच्छ १ वि] नमा-वस्र (६ १ २६)। (\$ 5. 4 E XE4) 1 कवञ्च्य क्ष [इ.स.चू] शलन्द पाना चुरा अवक्रसप्प न [अपवस्ति] दपधर्वा विरोप होना । सनधन्त्रद्भ (हे ४ १२२) । (वंबा १६) । **अनम्बद्ध एक [इ.्याद्य्] बुरा करना ।** अवअसण न [अपजोपण] अपर वेडा (पना मनमञ्जूद (हे ४ १२२)। 88) t शवञाच्याच्या हि देशो शवस्त्रिशक (हे अवज्ञाण न [अवगृह्रन] प्राविङ्गन (मा { ¥ }1 **३३४' ददश बळा ७४)**। भागभाषिकाम वि [इ.स.विता] १ अपूर व्यथप्ड प्रे [अवयज्ञ] शापिशन्त्रस्त पात्र-मार्नाव प्राप्त । २ कुरा विन्या हुमा इतित विशेष (ग्रामा १ १ दी-- पत्र ४६)। (दुमा) 1 ब्यवएस पूर्व [अपदेश] बहाना ग्रन्त (पाप)। अवशास्त्र एक [ ह्या ] केवना । प्रशासक्त अपभोडम ग [अप अटक] गते की मधेवना ( বছ ) ৷ इक्काटिकाको नीचे में भाना (विभा १२)। अवअभिम वि [दे] बर्सन्टिट, बर्सपूर्क (दे बंघण न ["बन्धन] रै हाव और सिर को ₹ ¥₹)1 प्रद्रामाय से वर्षिना (पर्सार २)। २ वि व्यवशण्या पुंचि कश्रत प्रवत (दे १२६)। रत्सी से नता और हान की मोहकर क्षा मान व्यवस्था वि [अपवृत्त] स्वक्रित (ते १ के साथ जिसकी बांधा भाग वह (विपा १ र=)। 9)1 अवभास सक [ दश् ] देवना । धनप्रसद अर्थन र्द्र [अपाङ्ग] नेत का प्रान्त घटा दूर (दे ४ १५१३ चुना)। र रश्ज सर रहे)।

कैर्रव (मर्प) ।

क्षाचरा प्रेत दि स्वयक्ती जल में होने माली बनुस्पति-विदेश (सुम २ ६ १६)। अवगड की किएगरिंगे १ कराव गींछ । २ क्रेपतीय स्थान (मपा १४३)। ध्यवरोड म [ध्यवराण्ड] १ सुवर्ण । २ पानी काफेन (सम १ ६)। अध्यांतस्य देशो अस्तास = धनगम् । क्षवराच्छ सक जिला+ राम ] वालना । धवयच्छा (यजा) । धवयच्छे (स १४२) । अवगयत यक विष + गम् ] दूर होना. तिकत जाता । प्रवत-**ना**ड (महा) । अवराण } सक [ का म + राष्ट्र ] सनावर अवराज्य | करना विस्तकारना । वह अस राजीव (मा २७)। सेह अवराण्यिय (शारा १ ४) । श्रवगणचा की जिवगणना प्रवशा बनावर (R 2 74) 1 खबराजिय ) वि [अबराजित] बब्बात अबगणियम् । विरक्षत्र (१) वीव १)। क्रमराय वि कि विस्तीर्यं, विशास (व १ 2 ) ( ध्यवराष्ट्र वंद्यो अवराप्य । ध्यवन्त्रह् (ग्रवि) । संक अवगक्तिक (मनि)। अवगश्चिय देखो सवगणिगय (वृपा ४२१) मवि)। अवगम ए [अपगम] र बरबरण (पुना ३ २)। २ विनाश (स १६६ विसे ११०२)। अध्यास एक [अब + गम्] १ जानना । २ निर्द्य करना। चंद्र- अस्मामिन्द्र (सार्व ६६) । ५६ अकातस्य (४ १२६) । क्षवस्स प्रिवस्सी १ कान । २ लिएँग निवास (मिसे १६ )। अभगमण न [अवगमन] उत्तर वेची (स ६० विशे १०६ ४ १)। मबग्रिज ) वि [अवग्रत] १ बाव विधित भवगय (भूगे २१×) । र निवित्त वन मास्ति (वे व २व च १४)। अवगय वि [अपगत] हुवच हुमा विनष्ट (खाना१ १ दस १ १६)। 'अबगर सक [अप+कृ] बगकार करना मद्रित करना। सदगरेड् (त ६३६)।

अवसारिस देवी अवकरिस पिते (११८६) । अवस्ताक कि चिर्दे साम्राज्य (यह )। खबराज कि शिवयस्तानी बीमार (ठार ४)। खबराइण न जिल्लाइणो निषय सम्बारस (पद २७३)। व्यवसात देवो जोसान (ठा १ मग म १७२)। संचगात वि विश्ववगाहित । प्रवगारण करने वाला (विसे २०२२)। अवगार एं अपन्यरी घपकार, बक्षित-करल (सर २ ४३)। **अवगारय वि [अपन्नारक] धरकार-कारक** (8 8 E) I अवगारि वि अपद्मरिया अनर वेको (स 48 )1 अवगास प्रशिवकारा १ फ्रूप्टर (म्छा)। २ बगह, स्थान (धावम) । ६ प्रवस्थान धाव स्पिति (ठा ४ ३)। अवगाद एक [ अव + गाद ] प्रवगाहर , करना । धवनक्षद्र (संस्) । अवनाइ पूँ [अञ्चनाइ] १ वचनइन । २ <sup>|</sup> भवकाश (उत्त २०)। अवगाहण न अवगाहन | धवनहर 'तित्वा-मगञ्जागुरचे मार्यतम्बं तए तन्त्रं (सुना ५६६) । अवग्रहणा केवी ओगाहणा (ठा ४ ६ विमे 2 44)1 अवगिषण न [दे अववेषन] वृषदरण (छर 1 (89 2 अवगिरम् देशो जोगिरम् । संग्र. शव गिविमस्य (क्यः) । अवगीय वि शिवगीती निन्तित (देप प **(**52) मचग्रंडण देखो अवर्वडण (वे १ ६)। अवगुरिय वि [अवगुण्डित] धान्यारित (महा) । भवगुण पू [अवगुण] दुव श बीप (हे ४ \$ **8 %** ) | अवगुण सक [अय+गुणस्] कोपना ज्यपान्म करना । अवद्यक्तिमा (धावा २ २ २ ४) । धनपुर्वित (मग १४) । अवगृह वि [अवगृह ] १ वालिक्ति (हे २ १६=)। २ व्यात (खाया १ ८)। क्षवगृद्धन [वे] न्यनीक प्रपत्तव (वे१२)।

अवग्रहण न शिवग्रहनी भ्रासिम्म (सर १४ २२ **। पटम ७४ २४)** । शावगहाविश नि अधगहिती मारनियत (स ६६६) । अवसा वि शिक्यक्ती १ वस्परा २ प्र धगीतार्थं साम्रामभित्रं सार्थं (कप ४७४) । व्यवस्थाह वेकी सम्मात (पन ६ )। समग्रहण न सिम्नप्रहणों देखो सग्रह ।विमे 8= 11 अवद देखी अवय - घरन (मग)। अववदय वि जिपचियकी क्राक्पेशह ज्ञासवाना (माचा) । अवचय पूं अपचयी हात धनकर्ष (सग ११ ११। स २०२)। अवस्य ५ जिल्लामी स्टूटा करना (हमा) । क्रम्बयण न (अवषयन) अपर देखों (है है **44)**1 अविच वक जिप + विचे हीत होता कम जाना । धवजिन्द्र (मग) । सवजिन्दि (भव २४. २) । अविष ) एक (अवशक्ति) स्वदा करता अविषय 🕽 (कुन मानिको पृक्ष से छोड कर)। सर्वाचर्याङ् (नार)। प्रति धवविद्यिस्स (पि १६१)। केल अविष्णेदं (थी) (पि 9 2) 1 । अविचय वि [अयुचित] क्षेत्र सास्त्राप्त (मिसे ८६७)। अवश्यिय वि [अयश्वित] इक्द्रा किया हुमा (पाम) । अवस्थितय वि [अवस्थित] वैद्यासमा भूर-पूर किया हुया (महा) । अवजुक्त पू [अवजुद्ध] पूर्त्य का पीक्षमा माग (पिक्सा ३४)। **अवश्वत देनो** ओऊछ (एाया १ १६ पत्र २१६) । अवस्य विशिवाच्यी १ बीतने के प्रयोग्य । २ बोलने के घरात्रय (वर्गर्स ६६०) । अवय न किपरयो सेवान बचा (कप्पा मान १ प्रातु =६)। व वि [ यम् ] चैतान-भाषा (तुपा १ ६) । भवित्र हैको अवसीय (पूर्यात २ ५)।

संबन्धी (ठा १)।

मार्मिक क्वन (वे १ ६६)। अवरक्केय पूर्विवरक्केव्] विभाग चीत (ठा **२ ३**)। कावद्भव वि [कापच्छान्यरक] स्थव के कराया हे चीत क्योदोय-दुष्ट (पिय) । खबबस पूर्व जपनशास् ] घपनीति (जप द १८७)। **सवका**ण सक [अप-|-द्वा] र सपनाप करना 'बालस्य मंदर्भ दीर्भ में च कर्ज बरकाराई इक्से (सुमार ४१ २६)। **ध्यकाय पूं [अपकार]** पिठा की व्यक्ता होत नेमनवाल। पुत्र (ठा ४ १)। क्षविक्रम पू [क्षपत्रिक्ष] दूसरी नरक-वृक्ति का साठमां गरनेत्वन--- नरक-स्थल विशेष (देवेन्द्र ६) । অৰম্ভীৰ দি [জনুমাৰ] ৰাৰ্টেচ্চ দুচ मनेक्न (तस्त्र)। भवजुब नि [भवजुत] प्रवापूर, निश (वन ७)। **अवद्यान [अवद्य**] १ गाप (पराह २, ४)।

**अवश्रुपण न [दे] अ**नेव संक्रहा वाता

२ वि निक्तीय (एम १.१२)। काबद्धास एक [ राम् ] जाता वयत करता । मनमप्र (१४ १६२) । यह शतकासीत (हुमा) । कावज्ञा की [अवज्ञा] सन्तवर (स.६.४)। अवत्रमः वि जिल्ला माले के समीपा (ग्रामा १ १६)। सम्बद्ध तक [ इस ] देवता (तींत्र ६६)। अवामास न [वे] १ कटी नगर। २ नि **प**टिन (दे १ १६) । भवतम् स्य [अवस्या] १ धरोच्या असी (इक)। २ विचेड वर्षकी एक नवरी (ठा २ ६)। व्यवाम्यण न [अपभात] बुरा चिन्तर, बुर्व्यान (बुरा १४१, का ४३६ सन १ । रिने १ १६)। अश्वमद्भाग हे पूर्व [अपन्यात] दुव्यांत 'चड-अवस्था निक्षे भारताती' (भावक २ १। वेचा १ २३ वंदीव ४३)।

ठावक्साय नि [क पण्यात] <u>रे पुर्वान</u> का विषय। २ ववजातः शिरस्कृत (लाशा १ १४)। क्षवरमाय (वप) देवी चवरमाय (वे १ ६७)। अपट्ट सक [अप + कृत् ] कुमाना फिएनाः भवट्ट बबट्ट कि बाह्यरी क्एएडारे रक्ट्रपरि वत्तरपुर्वपूर्वं निकासपूर्वं ग्रामंडरिय केव विरि स्प्रिप्रिवडियं पिथ विकल्प प्राण्यस्य (स १११)। अवह यह [अप+धृत् ] पीके इटना । यद हुइ (प्रक्रू ७२)। जबहा **की** [आवश्वां] राजनार्ग सं बह्द की चन्छ (का १११)। अवर्द्रम र्द्र [अवष्टनम**ें क्वल**म्बन ग्रास्ट (पत्रम २६, २ स ६६१)। बायद्वंस वुं [अबग्रस्म] हवता विस्मत (यमीर भवद्रंभ केको व्यवद्रंग । फर्न, प्रमट्टकारिः (स wxt) i अवत्ठंमण ) न [अवग्रम्भन] सनसम्बद् अबद्रहमा । सहारा (स ७४१ थी। ७४६) i २७) । भाषान्त 'सबहुबा महाविद्याप्त' (स १.८४)। करना ध्याप नेना। संक्र अबद्वदिक (विक **पनस्या** । २ व्यवस्या (बृह् १) ।

अवद्रक्ष वि [अवद्रक्ष] रोका हुमा (इस्प स्वदूद्ध वि [अवस्टस्य] १ यक्तम्बर्धः। १ अवद्रव एक [अन + स्तन्य् ] फक्क्सन ( 98 ) ! अत्रद्वाण न [धनस्यात] १ शनस्थिति अबद्विभ वि [अवस्थित] १ शवनाइन करके रिक्ट (शुध १६११)। २ कर्म कल किरोध प्रथम समय में जितनी कर्ग-प्रकृतियों का बन्ध ही दिवीय भाषि समनो में भी ज्यानी ही प्रकृतियों का जो बन्च हो वह (पंच ४,१२)। अवद्वित्र वि [अवस्थित] १ स्विर **प्**कृतिसास (भग)। २ मिल्स साम्रत (ठा १ १)। १ जो (शिक्षि मिसे 1) । बढ़ता-बटता न हो (गीव १)। व्यवद्भि व्ये [व्यवस्थिति] धवस्यान (ठा १. ४ विषे **७१**व) १ अवर्टम तक [धन+स्तम्म्] सक्तम्कर भवजम सङ् [ अब + नम् ] भीवे नमना । करमा । संह वक्र अवस्मात (एव)।

'नाएए मधी, सहेख महै, चोब्देश मध्यमुगापि । **अवर्**ठिम**रूप क्यूई बार्ड्स्स मुक्कि** पर्सा (वण्मा ४५)। अवटम प्रवि वामूच पान (दे १ ३०)। भवड र् [सब्द] कुप द्वार (एउड)। अवड ) पृष्टि १ कूम कुमा। २ माणन अवडम ) नमाना (११ १६)। भवडभ र् [वे] १ वडा वास-पूस का पुरका, प्रश-पुक्य (दे १२)। अवबंद पूँ (जनटंडू) प्रसिद्ध स्थातः 'क्यु-कमानविक्छ निविष्यसम्मी खाम' (महा)। क्षमब्बिक्क वि वि] कूप बादि में पिरकर मरा हुया, विसने माला-हरवा की हो। वह (दे \$ 80)1 अवडाइ सक [सत्+क्षः] अवेस्तरके स्का करता । समबाहेमि (दे १ ४७) । अवडाहिल त [वे] १ डॉवेस्तर वे ऐका (दे१ ४७)। १ वि प्रकट (वर्)। कावडिल वि वि] विक परिभान्त (दे १ R()1 व्यवद्व र्षु [व्यवद्व] इसारिका बंदी या बांदी क्एञ्मिल (पान) । भवदुक र्र [दे] प्रदूष्ण अनुकत (दे १ २६)। अवदुव्यम हि [दे] हुए मानि में निय हमा भवद्वाकी वि] इस्मिटिका पट्टी पर्टन का क्रीपा ज़िस्सा (जन १४, पत्र ६७६) १ अवब्ह वि [अपार्थ] १ मावा (गुरव १ )। २ बाबा दिन 'प्रवर्ड प्रवन्धार' (पहित्र सन १०६)। ६ माने छे कम (सम ७ १ नव ४१)। वज्रेत न "क्षेत्र] १ मध्यम-विशेष (चंद १)। २ छ्डाउँ विकेप (ठा ६)। अन्तव पृष्टि] १ पानी ना प्रवद्धाः २ वर नाफलहम (दे१ ११)। जनमः न [अन्त**] १** नननः २ **बनुबन** अवज्ञा देवो सक्यवज (पिर ४७३) । अवजद्ध वि [धवनद्ध] १ संबद्ध, बोहा हुमा (पुर २७)। २ माच्छामितः (मन)।

**अव**णमिय वि [अवनत] धवनत (शुपा ४२१)। खयण्सिय वि अवनसित् । नीवे विमा हुण नमामा इद्या (सूर २ ४१) ध ध्यवण्य वि [अवनद ] नमा हुया (रस १) । अवज्ञय व (सपनय) १ धरान्य हटाना (अ क)। **२ तिल्हा (तव१४ विसे १४ ३ धी)।** अवजयन न [अयनयन] हराना हुए करना (भूपा ११ स ४८३ रूप ४१६) । अवजाम पूं [अवनाम] कम्बेनमन क्रीपा भागा 'तुलाए गुमाबखानन्त' (धर्मेसे १४२)। अविण भी [अविने] प्रस्थि भूमि (छ। । (डि अहर अप्रतित देखी अवणी = घप + भी। अवणिद् पू [सबनीन्त्र] सबा, भूप (श्रवि) । अव्याप देवो अवजीय 'तं कुरानु वितर्तन वस्तामवरिष्यनीनेसदोसमसं (विवे १३८)। क्षवणी देवी क्षत्रीय (सूत्रा ६१)। सर पूं विश्वरिया मूमिपति (भिन्)। अवर्णी सक [अप 🛨 नी] दूर करना हुटाना। प्रवर्णेश, प्रवर्तिम (महा)। वक्क अवर्णिन, क्षत्रजीत (निद् १ स्ट२ ८)। श<sup>व्यक</sup> अवगद्भीत (स्प १४१ हो) । 😮 अवगिञ (# Ew) 1 कावणीय वि [अपनीत] पूर किया प्रमा (मुपा ६४)। अवर्णायवयपा म [अपनीतयवन] निवा-थवन (प्राचा२ ४११)। अवर्णेत रनो अवर्णा = यप + मी। श्रमणीय प्र (अपनाद) सरनवन इटाना (阿中 4日7) 1 अवजोबज न [अपनोदन] धपनवन, पूरी कर्या (स ६२१) । **भागण्य वि [अवर्ण] १ गर्जयीत, भगणीत** । (भग)। २ पूंतिन्दा (पंत्रव ४)। ३ धनकीचि (धोष १८४ मा)। व वि विम्] क्रियक 'देसि सबस्त्रमं बाद्ये महामोई प्रकृत्वाई' (सम ११)। वाय पु विषय किया (स २१)। अवण्यान [के] समझा निरादर (के ह अवण्या हो [अवज्ञा] निपरर, दिसकार (भीप) ।

श्रमक्षा नु [अपश्चय] धपमाप (पङ् )। अवण्ह्यण न [अपङ्कावन] वपशाप (धाना) । अवण्डाण न [अवस्तान] धार्ष धारि से स्तान भएता (गाया १ ११ निपा १ १)। अवतस रेको जबर्यस = वष्तंत (दुमा) । भवतंस पूं [अवतंस] येग्पर्वत (मूळ १)। धवर्तीसय वि [अवर्तिसत ] विमूपित (कुमा) । अवनट्र वि अवनट्री छन्नुव्य विभावता (बुध १ ६, २)। अवतद्वि देवा अवयद्वि = ववतप्ति (मूच ₹ ७)। अववारण न [अवदारण] १ व्हारमा । २ योजना करना (विसे ६४ )। भयतासम्बन्धः व [अवज्ञासन] बराना (पव ७३ : अयतिस्य न [अपनीर्य] कुलित या सराव विनास (नुसा १३)। अवस्य वि [व्यवस्था रे यस्त्यः (विये)। र कम समर बाला (बृह १)। ६ श्रवंस्कृष (युक्त १)। ४ पूँ केन्रो अवग्य (निपूर) : अवस्य वि [अवाव] प्यत्यहित (प्रका १) । अवच्च वि [अवारा] प्राप्त शस्त्र । अवत्त न [अवत्र] ग्रानन-विशेष (निष् १) : कावत्त्वय वि दि विसंत्युत्र धम्बबस्यित (दे \$ \$x) ( ध्ययत्तक्य वि [अवत्तक्रयी १ वयन से बद्धने के मरास्य भनिर्वचनीय । २ समयंग्री का चतुर्व भंग 'मर्बतरमूर्वाह स नियर्गत् बोर्क् समयदाईकि। वमराधिसाहिमें क्लामण्यतावे पडड़ें (सम्म \$4) I कामत्तिय न [कान्यतिक] १ एक केनामास भव निवासमासिक एक सर्व। २ वि इस मत का चनुवायी (ठा ७) । अवरर्थंतर न [अवरशान्तर] पूरी बता जिल अवस्था (बुध ३२१)। भावत्थान वि [अपार्थं क्र] १ निरुवंड व्यर्थं । २ यशस्यक सर्वनाला (गून नमैरह) (शिशे)। अवस्यद्ध वि [अवस्थ्य] सम्बन्धनारः विसको सहाय मिला हो वह (खाया १ १८)। ध्वयत्वय वि [अपार्वक] मिर्लक (विशे हर ह

क्षे) (

छावत्वरा भी वि] पार-प्रहार, सात भारता (R ? 22): श्रवस्था वर्ष [अवस्था] वरा चवस्यित (ठा ⊏ कृमा)। क्षशस्याज न [डाबस्थान] प्रवस्त्रिति (ठा ४ शः स ६२७ महासुर १२)। अवस्थान सक जिम +स्यापय र स्निर करता शहरानाः २ व्यवस्थितं वरताः हेन्द्रः ध्यस्याविद्धाः समस्यावद्धः (शी) (वि इकड़ा भाग)। **अवत्याविद ( शौ ) नि [ अ**तस्यापित ] क्ब स्थल किया हमा (शह)। खबरिवय वेबी अवद्रिय (महाः स २७४) । अवस्थिय नि [अवस्ट्रत] फेलाया हुमा प्रशासित (ए।मा १ ८)। अबरद्ध न [अवरद्ध] र प्रमान बसरन (भीन धावन) । २ वि निरमेंद्र, निष्टन (परह १ 311 धावर्धम देशो अवर्तमः। संग्रः प्रवर्गीयम (बेह्म ४=१) 1 अवव्यय देवी अवसमा (सूच २:२ %) r अवद्भाव [बापद्भ] १ निश्वाद, चार चहित । २ चना अपस्य (ठा४४)। अवव्हण न [अवव्हल] बन्दन गरम छोडे के क्मेर वादि से वर्ग (क्षेट्रेड व्यक्ति) पर द्यागना (ए।या १ ४)। अषदाय न [अक्दान] गुरु कर्म (दी १५)। अवदाय वि [अवदात] १ पवित्र निर्मेक्तः 'रिएवरकरावशायं अत्तं पेड्स<u>ित</u> <del>चरकु</del>णा सम्ब' (बुगा ४९१)। २ स्पेत बन्धेर (प्रकृष्ट् ४ पाप)। अवदार व [अपदार] १ सीटी विवृत्ती। र प्रमा बार (कर १११)। व्यवदास्त्र सक [अन + वृक्षम् ] सोनता । यवणनेह (पीप)। चंह- अनवासत्ता (पीप)। व्यवदाक्षिम वि [अवदक्षित] विकसित, विकृ क्रिक्त अवस्थानिवर्ष्ट्रियनवर्षे (स्रीमः पर्व १ = खबर) ; क्षधरिसा 🖈 [अपदिक्] प्रान्त विद्या (स ५२६)।

अपदेश देवी अपएस (धर्म ७६)।

अवदार ) देवो अवदार (खामा १ २४ ! संबद्धाः ( प्राप्तः) । श्चराहणा ही देशो श्चरहण (निपा १ अवद्वस न दि । अनुवन साहि भरना सामान्य अनुसर्ग दनराती में विश्वनी 'राम रिक्त नारते हैं (दे १ १)। क्षवर्द्ध पूं [अवन्यंस] विनास (अ ४ ४)। क्षत्रपंसि वि अपन्यसिम् विनासरारक (उद ४ ७)। क्रमधार एक [ काथ + घारयू ] निश्चव करता । ह अवधारियक्व (वंबा ६) । **शरपारण न [अवघारण]** नि<del>ष</del>य निर्शय (पा ६ )। अवधारणा औ [अवधारणा] शैक्कम तक बाइ एकते की शक्ति (सम्मत ११)। अबचारिय वि [अबमारित] निवित निर्हित (बस्) । सम्बद्धारिकस्य देनो अनुबार । शबदाय एक [ अप + भाव ] पीके रीवृता । धनकावद् (सरा)। नकुः धःजधार्यत (त २१२)। धार्वभिता की [दे] कारोहिना कीमक (पछ् **₹ ₹)** i अवधीरिय वि [संपर्धीरित] तियसत अप-मानित (बृह १ ४)। क्षवञ्चल ) तक [अव+भू ] १ परियान

क्यमुँज (नरना १ घरना करना । छह-अवभूणिज भवभूणिज (मान २६२ वेडी 11 52 अवधूय वि[अवजूत] १ यवश्रत तिरहरत (मीम १ व मा टी) । १ विकित (माव ४) । अवनिद्यं पृष्टिपनिद्रकी जनागर, निज्ञा शासमार (तुर ६ ≈३) । **अवस देवो अवरणा = यक्लै** (भग, धका थीय ३११)। श्चवनादेवो अवज्जा(बीच १×२ का गुर १६ १६१: द्वा १७२) :

प्रशासिक होना । अपर्यमुख ३ तक [वे] बोल्या । सवर्यकुछ अपर्गुर (मूर्म १ २, २ ११)। सन-जबमास पुं [बबमाम] **बान** (बर्गर्स 2999) : वहरे (बन १, १ १ ) । ध्यवप्रका क्षे [अवपात्रया] हारिया जेशी अवभागन दि [अवमासम] ज्वास-कर्ता धोध दस (एल्सा ११ दी—पद ४३)। ं (TTTY):

अवसासय वि [अवसासक] प्रकारत काबपुद्र पि जिवसपूर्य जिसका शरही किया धवा हो वह. भीए सरिजंदर्यासमिका निसि ससिकरावपुट्टाई । विवित्ववाद्यमधाई रोवंतिय सर्वागतविकार (समा ६)। कावपुरितय वि चि | श्रेचित श्रेषुक (वे १ **46)** 1 अवपर एक जिल्ल + पुरुष निरुष्ट करना । बक्पूरींव (स ७१२) । खबपेक्स संब ि अथ्य + <sup>5</sup>क्षा विवनतेका क्रफा । पर्यक्षित्वह् (एस १, १३) । श्रवप्यक्रांग च विषयप्रयोगी स्वटा प्रयोग विका धौपवियों का मियल (बाह १)। **अव**ण्यार पू [अवस्प्यर] विस्तार, फेनावा 'ता किमिमिला घटोत्रचिश्वाचन्कारमञ्ज्ञ (छ २ दव) । अवर्षेष प्रियम्भी क्षा बन्दर (गुउड)। **अववश्च वि [अववश्च ] वेवा हुमा निवन्ति** (वर्ग ६) । व्यववाण वि शिववाणी काराधी<del>त</del> (मतब)। व्यवसुरुष्ट एक [कार्य + जुध ] १ जानना । २ समस्ता 'जल सं गुरमधी एवं वेचलं गानपुरमाने' (उदा १ १६)। बहा- काच <u>व</u>ुश्क्रमाण (च १) । **४३- अव्**वुत्रमेळण (स १६७) i श्वचाइ पूं [अवसाध] १ ज्ञान बीच (पूरा १७)। २ विकास (बढड)। ३ बानरहा (वर्ष २)। ४ स्मरण याद (ग्राका)। अवशेष्ट्रम नि [क्षत्रकोधक] सन्तीत-नारक 'अविवक्तमताववीद्ययः मीहमद्वातिमिरपसरअर धुरं (कल)। अववोद्दि ५ [अवशांथि] १ शांगः। २ शिक्षय निर्णय (प्राप्त १ विमे ११५४)। अवसास यक शिव + भास दिवरणा अवभास 🖞 [अवभास] प्रकार (गुन्न ६) :

(full ato) 3 अवसासि वि विवसासित् ने विधेयमादः अकाशने बाला (भवड)। अवसासिय वि [अवसासित] प्रवास्ति अवभासिय वि विषयमापित । पाष्ट धविसन्त (वन १)। काबार देवी ओस (पाचा) अवसमार्थ [अपसार्थ | दुनाई वरन चस्ता (क्या) । जबसन्ध पूं [बपामार्ग] <del>दूस-फिटे</del>प विवश सटगीरा (दे १ =)। अवसञ्ज् र् [अपसूरय] सदाल सूख्, विद्या मीत थएस (दे ६ ३ द्वमा)। अवस्त्र एक जिद+सूत्र विलय म्बरमा, सन्द्रकरमा । संक्र अवस्त्रिकरण (T %Y4) 1 जनसण्य एक **थिन +** सन् ] शिप्रकार करना । धरमदर्गति (स्नर १२ ) । अवसद् पूं [अवसर्थ] नवेतः विकास (रहाई) १ २)। अवगहरा वि [अवगर्दक] गर्दन करने नाता (शाया १ १६)। अवस्य एक [बाव + सम्] बदबा करना नियवर करना । अवसम्रह (सहा) । कह-अन्यक्षेत (सुप १३४) इंह अन्यक्षि कम्प (महा) । अवस्तिय ) वि [अवस्तु । स्वबाद अव-अवसय र्वे धरित (पुर १६ १२७ महा अवमाण **१ (अपमान** विस्कार (दूर १ २११) । अवमाणं पूर [अवमान] १ ववडा, जिर∽ स्क्रमर । ३ परिकाल (छ ४ १) । जनमाज एक [अब + मानव ] प्रवस्तुना करमा । धनमान्त्रप्र (अपि) । अनमाणय न [अनमानम] बनादर, धरहा (पश्चार १ ४, भीप)।

अवसाजन न [अपमानन] विस्तार, मा-

मान (स १)।

**अवसायणा की [अवमानना] भवनगुना** (कास) ।

क्षत्रमाणि वि अवमानिम् यवज्ञ करने वाला (मिन ११)।

अवमाणिय वि [अपमानित] तिरस्कृत (वे १ ६६ सुसृह ०)।

क्षमाणिय वि [ध्ययमानित] १ वनकात समावत (सूर २, १७१) । २ सपुरित "धव माणियदोइसा' (सा ११ ११) । श्रक्तार पु [अपस्मार] प्रर्यकर रोव विशेष

पागलपन (माचा)।

अवसारिय वि [अपस्मारित, रिक] वर स्मार रोव कामा (माना) । श्रवमारुय पुं [अवमारुत] भीवे वसता प्रवन (क्टर) ।

ध्यवमिच्यु वेको ध्यवमच्यु (प्राक्) । अवसिय वि दि विसको वाद हो यया हो

बहु, ऋणित (बृह ३)।

सम्मुक्त वि [अवमुक्त] परित्यक्त (पि १६६)। क्षवसङ् वि [अपसच] वेष-पहित (बटड) । अवय रेको अपय = मनर (नूम १ ८ ११)। ध्यत्रय त [अस्त्र] कमल पद्म (पएछ १)। হাধ্য দি হিৰ্মী ংগীৰা মনুদ (কচ ६)। २ वस्य द्वीम सभेष्ठ (सूस ११)। ६ प्रक्रिक्च (मग १ ६)।

अवर्थस पू [अवर्तस] १ शिरोपूरक विशेष (क्रमाः या १७३)। २ कानका सागूपख (पत्म)।

**शब**र्यस स**क [ अवशं**सय् ] मूप्ति करमा । धारप्रसमिति (पि १४२, ४२ )।

अवयक्त एक [अप + ईस् ] क्लेख करना एक् केबाना। सम्मनस्यह् (शाया १ ६)। **बद्ध कावयक्तीत व्यवयक्तामाण (**शामा १९ भव १ २)।

अवयक्त सक [ अव + ईच्ह् ] १ देशना । २ पीचे से देवना । मध्य- व्यवस्थात (शोध १वद मा)।

**अवयवदय को [क्षेत्रा] प्रदेशा (लाग १** 

क्षयग्रान हि] यन्त वयकान (त्रप १ t) (

अत्रयश्रह् सक [अब + गम् ] बानना । पव यण्याः (स ११३) । संक्रः अन्ययण्याः (स २१)।

**काबयश्क्र एक [ इ**दा ] वेशना । धनमण्यद (ह ४ १८१)। भक्त **अव**य**च्छत (कू**मा)। अययस्टिय वि हिए] देवा हुमा (सामा १

अवयच्छित वि [दे] प्रसारित "पु कारवव रापिम्रशियमणयिक्स्यमयगरभञ्जा व (स

११६) ।

अवयत्रक सक [ दृश् ] देवना । प्रवयनस्य (११ १८१)। संक्र. स्रवयक्रिकजय (कुमा)। अवयद्भिकी [अवस्ति] तनुकरण पतवा करना (बाचा) ।

अवयद्वि वि [अवस्थायिम्] प्रवस्थिति करने बाता स्विर जुने बामा (धावा)।

अवयद्भि की [कावकृष्टि] बाकर्पण (बाका)। अवयद्धि वि वि पूर्व में पक्का हुना (R 2 YS) 1

क्षमयण म [अवस्त ] बुल्डित रूपन कुलित मापा (ठा ६) ।

अवयर सक [अब + तू ] १ नीचे सतरता । २ जन्म ग्रह्मा करना। सदयदाः (हे १ १७२)। यह अवयरंत, शवयरमाण (पराग बर ६३ सुपा १८१)। संक आव-षरिहै (प्राप्त)।

अवयरिअ व दि विशेष, विद्या रि १

भवयरिक 🕯 [अपकृत] १ विसका सरकार किया वया हो वह । २ त. सपकार, सहित-करण की हैं के दुई गमणे दुई शक्यरिमं मए किन (भूगा ८२१)।

अवयरिम वि [अवतीर्थे] १ कमा ह्या । र शीचे क्लय हुवा (सुर ६ १८३)।

**अवयव पूं[अवयव] १ ग्रंग विज्ञाव ।** २ धनुमान-प्रयोग का बाक्यांत (वसनि १ 🦹 १ 38K) 1

अवयनि वि [कानगविम्] धनवन नाता (ठा १ विशे २६% )।

क्ष**चराढ देशों ओगाड (नाट वट**ड) ( अवयाण न [पें] चीपने की डीपी सवान (₹ १ २४) I

अधवाय पू [अवसाय] भगराच दोप (छर १ ६१ ही) ।

व्यवसाय वि [अवदात] निर्मेन (सिरि १ २७) ।

खबबार पू **किपकार** पहिल-करण (स ४३७३ कुमा प्रामु ६)। क्षप्रवार वृं [अवदार] १ व्यक्ता । २ देश-

न्तर-पारण जन्म-प्रहुशा । १ मनुष्य रूप में देवता का प्रकारित होना। फन । एवं तुमें देवावयारी विश्व मागईएँ (स ४१६) मवि) । ४ संबंधि योबना (विसे १ म)। १ प्रवेश (विसे १ ४६) ।

अववार र् [अववार] समावेश (पर 🕬)। अवसार पूँ [दे] मात-पूर्म्यमा का एक बन्धन विसमें इब से बटनम बादि किया जाता है (देश पर)।

भवगरण न [अक्तारण] स्वारना (शिर ( Y) 1

अवसारय रेको क्षवगारय (५ ६६ ) : कायपारि वि [अपकारिन्] धनकार करने बासा (स १७६) विके ७१)।

शवयाख्यि वि [अध्याख्यि] वताममान किया हुमा (स ४२)।

क्षवयास एक [निस्पू ] शाहियन करना । धवयासङ (हे ४ १६ )। कम्झ- अय पासिकामाण (धीर) । इंह अन्यासिय (णापा १ २)।

अवयास धक (अय + ब्यश ) प्रचट करना । र्वह अवयासेकम (वंद्र) ।

अवयास वेषी अयगास (गढड हुमा) । कावपास प्री क्रिपे प्राप्तियन (बीव २४४ भा) ।

व्यवसम्बन्धः (इक्षेपमः) वास्तिन (बह्रः १) । अवसासाविय वि [ रहायित ] मानियन कराया हमा (विपा १ ४)।

शवयासिय वि [निरह] पानिपित (दुना पाध) । अवयासिकी क्षे [दे] नाया-रम्बु, नाक में बानी जाती बोर (दे १ ४६)।

अवर वि [कायर] पत्य, दूसरा सन्दित्र (भा २७ महा)। इत्र प्राधीसम्पन्न (पेका <) 1

11

अपदर स [अपद] १ सिक्या कलामा देश (महा)। २ पिछने कल सा केट में यहा हुया पाचारम (सम १३) महा) । ३ पश्चिम किला में लिट 'प्रवासीटी' (स ६४६) । 🛸 को ["सङ्घा] १ नातकी-खंड के पराक्षेत्र की एक एजवली। ९ इस नाम 🗣 आस्तवर्मे कवा सुर का एक घन्यका (खाबा १ १६)। ण्ड दं शिक्को १ दिन का धन्तिम शहर (ठा ४ २) । २ रिन का पतिरी मान (बाबू १) का २६६: प्राप्तु १४)। बाहिया पु ["इ[ब्रिज] १ नेप्राय कोश । २ वि नेव्यय शील में न्कित (पंचा २)। दाहिष्या भी िंदश्चिमा] पश्चिम मीर दक्षिण दिशा के बीच भी दिला, नैयत कोए। (वद ७)। फाजु की [पार्टिकी] एकी प्रश्निक शिक्का भाव (बर द)। सम्दु ["सत्र] देशो अवरत्तः चपरचत्र (धाषा) । विदेश र िश्वदेश महाविधे नामक वर्ष का पश्चिम बाय (ठा २ १ पार )। "विदेवकृत न ["विदेवकृत] पर्वत-विरोप का शिकर-विश्वेप (व ४) । वेबी अपर ! **अवर ध** [अवर] ज्यर केलो (महा: लाओ १ १६। वर्ष का पंचा २)। कावरंतुद्द वि [अपराष्ट्र मुख्य] १ संपूच । 🖁

य कपर (शि २६६)। अवरच्छ केते अपरच्छ (परह १ ३)। जबरळा १ दि ] १ भव दिन । २ बायामी दिन । ३ प्रमात नु**ब**ह (दे १ ५६) ।

अवराम् यर [ अप + राघ ] १ शरपव करना प्रमाद करना। २ नट्ट होना। यन एम्बर (महा चर)। बद्धः अवस्थानंत (स्पत्र)। अवरत र् अवररात्र अवररात्री चारि का विद्युत्त अर्थ (अन्य, वाबा ११)।

भपरता पि [अपरतः] १ तिरणः कात (धर । यु ३ ) । २ नायत्र तन्त्रुठ (बुश २६७) । श्रद(राम ) र् [दे] पवातार, समुपान (दे अपरनेम रे ४२, नाय) । अपरद्विता वैद्यो अदर-दाहिजा (पद

1 () 1 स्पारक न जिपराको र भगराप *पुनाई* (न्ह १. १११)। १ वि जिल्ले माधव दिया हो द्वया (याद ४) ।

अवरि रेष [तपरि] कार (१ १ १६ प्राप्त)। अवरिक वि [वे] अवनरती(न अनवगर (दे१ २ )। क्षत्ररिगक्षित्र (र [क्षपरिगक्षित् ] वृश्तै, तरपूर (मे ११

अवरिक्य रि कि विशिष श्रवांवाएउ (वे 2 25, 45 ) s

क्षवरिक्ष वि [स्परि] स्टाप्टैय नव, नावर (है **बाह्, प्रपद्मकी** 'समझे दारत् मम अंतिकारीं धवरद्वे (विषा १ ४८ स २०) । ३ विना-रित, नट क्या हवा (शाया १ १)। बावरिक्रम वि बिपराधिक १ धपराधी कोपी। २ पूँ सूना-स्टोर । ३ धपवि-वैश (पिंड १४)। व्यपरिद्या ) पुंती [अपराधिक] १ सर्प-अवरिद्ध्य ) वैश्व । २ पुनशी बीटा फीड़ा (मोच ६४१ विड)। अवरा की [अपरा] विधेष्वर्य की एक नवरी वीरेजार (दे १ ११) । श्रंष्ट्र- सरवंत्रिकस्य (ठा२ ३)। श्रदरा ची अपरा ] पश्चिम रिता (पर १ ६)। क्षवराह्या देवो अपराह्या (पटम २६ १ वं ४ ग्रज्ञ २ १)। लक्याइस केको अण्याइस (वडाई Y 483) I खनराजिय **वे**चो अपराष्ट्रथ (इक) । धपराजिया केवो अपराइबा (इक)।

अनग्रह प्र [अपग्रथ] १ वक्शव हुनाह (गम १)। २ धनिष्ट, इस्तर्कः 'धवसोस् इस्तेन् व निभित्तमेलं पर्छे क्षोइ' (बालू १२२)। अपराह पुं [के] कटी कपर (दे १ २०)। अवराहिय न [अपराधित] १ धरराथ प्रतक्तः चपद वर्ता महस्यं कस्त्रवि शवराहियं बार्ष (पठम १४ २५ इ.३२ )। २ इ.५-कार, यनिष्ट महित पिरि नडिया संदि प्रकार, पुलु शक्तर

मोर्डीत । वीनि महस्तुम सङ्ग्राई धवराहित न कर्रति (हे ४ ४४३) ।

अवराहिङ वि [अपराधिन] अनरावी (प्राकृ अवराहुत वि [अपरामिमुख] १ पराह ¶तः। २ पश्चिम किया शो तरङ श्रृंह किया

धर्मर) (यतः) । अवरोह र्चु [दे] निः, कमर (दे १ २०)।

माण (तम्म १८)। इन्ह. अवस्थित्रत (रि ११७)। तंत्रः अवसंविक्रण क्षत्रक्षे-विव (धार १, मारा २ १ ६)। हैप-

२, १६६ कुमा यसक पाम)। अवरिक्ष वि अपरीय | क्षांत्र, पश्चिम विरा र्चनानी 'तो ता तुन्ने प्रवाधन वजुराई पन्ने ज्जाह्र (स्हाया १ १)। अवस्थिद्वपुसचान हि ] १ मधील मनसः व बक्तर, कुठावेशन (देरे ६)। अवर्रंड प्रक वि] यातिकृत करवा। स्वरंबर वि १ ११। मूर ६, १४२। घरि) । कर्म, घर-

(देश रश च ४२१)। अवश्रुव्यः । म **वि** द्यान्तिकृत (मनि पाष्ट **अवरक्षित्र हे हैं हैं** है। 1 क्षवरूचर पूं [अपरोचर] १ वामध्य कीरा । २ वि वाबच्य को खर्मे स्वित (सम) । अवरुचर धी [अपरोचरा] बास्थ स्मिर्

पहिचय और बतार के बीच भी दिता (वर ર્જા ા व्यवस्त्र वि [अवस्त्र] विश्व हुमा (विशे 1 (2039 अवरुप्पर क्या अवरोप्पर (हुमा राम) न

अवस्द् धक [अव + स्द्र ] नीवे प्रताना । यनच्चेदि (मै १४) : अवस्त्र देशो अपुरुष (प्रस्ट ८४) । भवरोप्पर ) वि पिरस्पर विश्वन में (है Y अवधेवर 🕽 ४ है। एतई बुगा २२। हुए ३ **७६ पड्)**।

व्यवरोह पुं[अवरोध] १ धन्तपूर, धनान-शाना (पुपा ६६) । २ झन्त पुर में पन्नेवानी 🐗 (विपा १ ४)। ६ नवर को सेम्ब से वेरना (निचु=)। ४ संबोध (विसे ३४६६)। १ प्रतिकल 'वहं सम्बन्धितावरोहो छि' सिसे १७२९)। जुबह सी ["युवति] सम्बद्धर की की (पि १०७)। अवसेद र् [ अवसेद ] अपनेताला (त्स

अवसंव वर्ष [अय + सम्यू] १ वहाय लैना, बायव जेना । २ संस्कृता । सवसंबद (वन) । धरमवेड् (नहा) । वहः अवस्त्रेकः

अपसंधित्तम् (रसा 🖜)। हः अवसंबर्णिय अवसंविभव्य (मे १ २१)। । १ [अवसम्ब, क] १ सगय अबस्या | धार्मय (बा १६) । ३ वि नट कृतेराना (बीर: बर ४) । ३ सहारा सेनेवाया (पद = )। श्चयनेषय न [अपस्म्यन] १ सटनना । २ ब्रायय ग्रहारा (ठा ४,२ राय)। अवसंबनमा की [अवसम्बनमा] बनवह द्यान (एदि १७१)। अवस्ति वि [अवसम्बन ] सानम्बन बरनेवाला (गडड विधे २१२९)। अपलिय रि [अयम्ब्सिन] १ मरना हुमा। १ मानित (छाया १ १)। अवसंदिर रमी अवसंदि (गा १६७) । अवस्पराग न [अवस्रभुण] सराव सञ्चल बुरी चान्त्र (भरि) । अवस्ता रि [अयसम्ब १ वाद्य । २ मण ह्या सेनान (मरा)। अपसत्त रि [अपनिपन] बरहून दिसाया इमा (ग२१२)। क्षवसद्ध वि [अपसम्द्र] मनान्य से प्राप्त (ब र) । अवसद्धि सा [अवस्टिस्स] धप्रति (भन) । भ्रवस्य # [दे] पर, नरान (दे १ ९६) । अवस्तर मरू [अप+सप्] १ सन्य बोलना। २ संख की दिसला। करहा अवस्थितांन (गुरा १६२) । इ. अवस्य णिम्म (दुता ११२) । अवश्राव हूं [अपनाप] याहर (निष् १) । अयस्त्रिम न दि । चनाय, भूग (वे १ २२)। अवस्थित र् [अपनिष्य] बीर वा पुरुत्तों ने ब्यान स्वान-मिटेप (ठा २ ४) । अविरुद्ध रि [व] यदात धनानारित (मे १ अपित्र रि [अपस्टित] स्वान (गूप १ ( Y # # # अपिस ((अपस्ति) १ क्रियः २ द्वित धानमे हर्द्धारती बर्धान्य राज्यी यदानाई। एरे न्दिरी बबद, बाराम् बुट्टियो बिलि (उर) :

कायलुक्ष देला अबङ्गय (वाचा २ ३ १ ६)। अयल् आ की दि किय ग्रम्सा (दे १३६)। अयुन्त वि [अयुनुप्र] नोप-प्राप्त (नार)। अवनंत्र ) पुंजिबनेय] १ धर्रकार, गर्ने । अयनंत्र ) २ क्षेत्र नेपन (पाधः महाः नार)। ६ धरशा धनादर (नउ४) । अवहोद्द (अवहोद्द) भटनो (पण १ ८)। अवसेहिणिया औ [अपसम्यनिद्या] १ बांस था दिवका (ठा ४२)। २ पूर्ति धारि भाइने का एक काकरण (निष् १)। अपनदि १ थी [अयसचित, या] १ बांन अवसदिया रे बर दिलवा (बम्म १ २ )। २ सेस विरोप (पव ४)। ३ चारम के मारा के लाय पकाया हमा कूप (पमा ३२)। अवन्येज नक [अव+श्राक्] केरना चर नोक्त करना । वह अवस्रोजीत अवस्रोप माण (रवल १६) गावा १ १) वंद अप साइफ्रण (काम) । इ अपन्येयणीय (मुगा 0)1 अवस्थान ) पू [बाउस्थेक] बारतीयन वर्णन अवस्थेव ) (का ६०६ ही नुपा ६) त २७६ दबर) । अवस्थायण न [अवस्थावन] १ दर्शन रियो बन (बढड) । २ स्थान-रिकेट 'पूर्व घर मोक्नु बर' (परम ६ ४)। ६ क्लिए-मिटेप (वी ४)। अयन्ययणी धी [अष्यप्रावसी] देरी-विरोध (गम्मतः १६ )। अश्याव र् [अपद्योप] विताना भीत वरना (माउ१२)। अपटापनी की जिपन्यपती विदार्शनके

(प्रम ७ १३१)।

हो बह (श २ ४)।

नाम हो वह (श. १, ४) ।

दारस्त्र-रिटेन (याचा २ १ १)।

अवदायय विशेषात्रा (६१ १८)।

अवहाय 🤰 🗣 अवटाय] धरायाचन

अपवद्धः वि [ अपवत्यस्य ] स्ववार्यहेव (यउद्यो । अववद्या ही [अवपाक्या] कापिका धोटा त्तवा (मग ११ ११)। अबवारा वृं [अपदर्श ] मोश मुन्हि (धारम) । अवयदण न जिपपर्वती १ मानरए । २ कर्मपरमाणुचीं शी शोर्ष सिपति को छोडी करमा (वंच १) । अवबट्टणा क्षी [अपधतना] उत्तर रेगो (वंच अवश्य वि [अपवृक्त] १ यास सीटा हुमा । २ बरायून (दे १ ११२) । अवदरक पूं [अपवरक] बोठरी छोटा पर (पुत्रावर) । अवषह सक [अप+यह ] याहर फॅकना हुर हटाना। दर्भस उपनद (पंचा १६८)। अपवाइअ नि [आपयानि ६] साराश-नंबंधी (घरक १ व)। अववादय नि [ अपबादिक ] धारानाना (नए) । अववाय पू [अपवाद] १ विटेप नियम धाः बाद (उर प्दर्)। २ दिश प्रश्लेश्वाद (पण्ड २२) : १ धनुमा संगति (निच् १)। ४ निषय निर्णय बारी हरीवत (निष्कृ १)। अपयास यर [ अप+पान ] पाराछ देता बदर देना । यत्रतागर (ब्राप्त) । अववाह धर जिय + गाइ ी धरवान्त बरना । बरबाट्स (प्राप्त) । अविवाद वृं [अवविष] योटापर के एर अनः कानाय (भन ६ १)। अवगोह रि [अपनाह] सोल्पीरा (नबर) । अवर्षाह वं [अवर्ष ह] निष्पाहन दक्तता अवदय म क्रिजनहरू जिला धेरन का (यदर)। अपपीरण व [अवपाटम ] स्तर रेगी (दरर) । अपस रि [अपरा] १ भगापन नरापीत अवय न [अयय] संस्ता-रिटेन 'बरशाल्ल' को । (तूस १ ३ १) । २ स्टब्स स्वाधीत (त भीरानी नाग में दुगुने पर भी संस्था नन्य 1 (5 3 अवस ति [अवस] यसम यान्या (वर्षन भवध्य व [अववाष्ट्र] र्यव्य-रिटेन 'यहर' अवसंब [अरायम्] मगर क्या शो शीएमी साम में एएने वर को लेक्या। तिरचम (१ ४ ४२७) ।

तिनित्त चराव राष्ट्रन (मीच वर्षमा गा २६१ सपा ३६३)। धवसीके नि [अपराहिम् ] बाधरण क्ती (सम १-१२ ४)। धादमक एक थिय + ध्व≔्री पीचे इट जला। सन्छ न्देका (साचा) । सवसक्रम र अवजारणी प्रवस्त वीसे इटना (पेचा १३)। धवर्सक् वि [ अवप्यविद्यम् ] गेखे हुले वला (याचा)। **अवस्**ष्या वि कि करा इस्र टरना इस अवसच्य वि [धारमभा | निमन्त 'नावी वहा पंकवदानगरखों (उत्त १६ ६ )। अवसद् ५ [अवशब्द ] १ मद्रुट १००६ (सुर १६ २४)। २ वास्त्र वसन (हे १ १७२)। १ मरनीति धनकरा (कुमा)। कदसच्य प्रक [ अद + सूप् ] रीखे इटागा। २ निवृत्त होन्य । १ उत्तरना । घरछ १ ति (पि १७६)। धनसप्पण न [अपसपैण] घपस्यस सप वर्तन (पदम ११ ७ )। व्यवसप्पिति [सपसपित] १ प्रेडे इन्ने-नाचा। ९ निकृत डोलेनाला (सुघ १ २ २)।

भावसङ्ख्य म [अपरा**ङ्**न ] धनिष्ट-मुक्क

जवनाध्यातः (क्षरमाध्यातः) (पात्र क्षण्याः । देनिवृत्तः होनेनामाः (पुणः १ २ १)।
जवस्मित्यातः (क्षणः) व्यवस्मित्यः (क्षणः)।
जवस्मित्यात्री क्षण्ये (क्षणः)।
जवस्मित्यात्री क्षण्ये आवेद्यस्मित्याः (क्षणः)।
जवस्मित्यात्री क्षणे आवेद्यस्मित्याः (वे १ क्षणः)।
जवस्मित्यात्राः (वे) क्षणे आवस्मित्याः (वे १ क्षणः)।
जवस्मित्यात्राः (वे) क्षणे आवस्मित्याः (वे १ क्षणः)
जवस्मित्याः (वे) क्षणे आवस्मित्याः (वे १ क्षणः)
अवस्मित्याः (वे) क्षणे आवस्मित्याः (वे १ क्षणः)
अवस्मित्याः (वे) क्षणे आवस्मित्याः (वे १ क्षणः)

धावसर यक [बाप+स्तु १ पीक्षे हरणा । २ मिनुस होता । यवसरह (हे १ १७२) । इ. अवसरिवक्ष (जा १४२ टी) । धावसर शक [बाव +स्तु सम्मा करणा । संह्र-भोजराज्य जवसरिता (चा १ ) ।

ध्यस्तर धक [ब्यंव + स्] धाम्य करणा। धक्र-फोटप्प्रम् व्यवसरिता (वज १)। भवसर पुं[ब्यंवसर] १ काम धम्य (वाव)। २ त्रस्तात्र मोना (त्राम् १७ (वस)।

**अवसरअ देवो ओसरण (१४ ६२)** । अवसरण न किएसरजी १ पीचे हटना। २ निवृत्ति (गडड)। भत्रसरिय वि जाबसरिको समिवक सम योपपुकः (सस्) । धात्रसरीर वं विश्वपरारीरी रोग व्यापिः 'सन्मानसपीच्छिपो' (बप ५१७ टी)। अवसयम वि विषयस्ववद्यी पराधीन पर तन (गाया **१ १६**)। **अवसक्य न [अपस्टब्य] बाय पारवें** (स्त्रीर 229)1 व्यवसम्बद्धाः न [अयसम्बद्धाः रहीर का रिद्येनामाय (क्यपुर )। अवसङ् पं शिषस्थ वर समान (उत्त ¶ર)ા व्यवसद्द न दि । १ फल्डवः २ विसम (दे 1 X6) 1 भाषसाइज वि [धासावित] प्रसन्न गरी क्या इम्स (वे १ ६३) । **भव**साय म [अवसान] १ नहा १ यन्त मान (गत्रक पि १६६)। **अव**साय प्रे [अवश्याय] हिन वर्ष्ट (ध**रर**) । अवसारिज वि जिम्नसारित न **रे**ना इसा

धनिस्तारिक (वे १)। धनसारिक पि [ सपसारिक ] १ साइट सीमा हुत्या (वे १ १)। २ वूर विका हुमा हरामा हुमा (हुमा २२२)। धनसाम्बर्ग [ समसावम ] १ कभी (हुद १)। २ सात मनैयह ना पानी (हुद्ध १)।

कावसाविष्या धी [कावस्थापनिका] नुजलेकाकी विद्या (वर्गीक १२४)। कावस्थिक कि [जपस्ति] गोको हटा हुमा (छे १३ १३)।

व्यवस्थितः वि [क्यसितः] १ धमान्त परि पूर्ण । २ बातः वाना हृषा (विते २४ ) । अवसिक्तः धनः [ जव + सत् ] हारुतः पर्यान्त होनाः 'एक्नीव नावनिकाः' (विते

२४४४)। जबसित्त नि [श्रवसित्तः] सीमा हुन्सः (रंजा वरे)। अवस्थेज वि [जबसेय] यानते सोग्य (क्सिं १८७१)। अवस्य (वद) वेको जयसं (हि ८ ४२७)। अवसेया वेको अवसं भागतेया दुक्तियमा (पदम १२२१)। अवस्थेस दु[जकसेप] १ यवस्टि, वारो

(पुता ७७)। २ वि सब समें (जा २११ दी)। जावारीकिया कि [आवस्तियात ] १ समध्य किया बुध्या कार पहुँचाया हुआ ( ते ४ ४७)। २ वाफी का सम्बद्धि (त्रव)। जावसीब सक [ गम्यू ] बाला। धनकेब्द (व्र ४ ११२)। बापोर्ट्स (ब्रुमा)।

अवसेह कर [ सदा ] प्राप्ता प्यादण करवा । वस्तेहर (हे ४ १७४ हुपा) । अवसोहपा को [अवस्थापिका] रिवा (पुरा ६ १) । अवसारा कि [अपदाक] १ शोक-पहिच। २ अव-कियो (शिष) ।

श्रवसोय वि [अपनाय ] बोरा बाव (क्यर)। श्रवसोवयी थी [श्रवस्वापनी] विद्या (पूरा ४७)।

४७) १ ठावस्स वि [ठाउइव] क्ल्प्यै निक्तं (प्राप्त प्राप्त ४) । क्रम्स न [ क्रम्मेन् ] पावस्यक क्रिया(पालु १)। क्रप्यिका वि [क्रप्लोय] प्रवस्य करने वायक वर्गे प्राप्तिक प्राप्ति।

ाम्मा(श्राह्म ()। करायाळा सः [करायाज स्वरंत करने वायक वर्ग पामिक पादि। किरिया जी [किया] धलरसक प्रकुल (पाडु १)। विज्य नि [कुरम्] पानस्वक कार्य (है)। अवस्तं ध [ अधर्यम् ] बकर, निरवय (पि 32X) 1 अवस्सरिपणी क्वो अयस्रिपणी (संबोध 4£) [ अवस्साञ देखी अवसाय (विक्र)। अपस्मिय वि [अवाभित] माभित, भवनन्त्र (यन् १)। अयह सर्व [ रच् ] निर्माण करना बनाना । सरहर् (हे ४ १४)। अप्रवद्व स जिस्य दिनों युग्त (हे २ १३८)। अवह वि अवह न बहुता हुया जो बायु नहीं इंद फोस्पिलीन धरहो इसाइ नामो एमी स सिकिपहो (वर्गवि १६१)। श्रमहरू भी अपहति विकास (विसे २ 34)1 काबहर वि दि भागमानी गनित (६१ २३)। अबद्द देखी अबहुर = धर + ह । अपहर दि मिपहर ने निया गया धीना ह्या (मुगा २३६) मरह १ ३) । अपहर दि [अवहत] कपर देवी (प्राक्त)। अवदक्ष म दि । मूनन (दे १ ३२)। अयहण्या व दि सन्त बोबन ब्यूक्त अपहरुष प्रिपहरूरी माले के निए वा निर्माण बाहर करने के लिए अपा किया हुमा हार अवह वेण हुमी दूमरो' (महा)। श्रवहृत्य सक [अपहस्तय ] १ हान को क्रेंबा करता । २ ध्यान करता, ध्रीव बेता । मदहन्पेद (मद्रा) । एड अपहरियक्तम अपहरूपकण (पि १५६ महा)। अवहरयस भी दि नात माला पाव-प्रानर (दे १ २२)। अबहरिधम वि [अपहरितन] परित्यक, हर दिया हुमा (महा कार ३२४ गा ३१६) नुस १६३३ एपि) । अवद्य रि [अपहत] नट नारा-प्राप्त (से ₹¥ ₹c) I अबद्ध 🖟 [अभावक] यश्चिक (धीप ו ( גע

अवद्भर नक शिम् वाना । सनद्रश्र (हे ४ (खावा १ र) । १ पोरी (गृता ४४६) । ४ बाहर करना निकायना (निष् ७) । 🛚 भागा-₹**६**२)। अवहर सक [नक्ष] भाग जाना पसायन कार (भग २१ ४)। ६ लाग विनास (सर करना । धनहरह (हे ४ १७८ कुमा) । ७ १२१)। क्षबहर सक [अप + हा ? धीन सेना धप अयहार पंजियबारी निषय निर्णय । व हुएए करना। २ भागाकार करना भाग वि विन् निधम वासा (ठा १)। व्यक्षार पू अवधायी भूव राशि विश्विक दमा । ध्रमष्ठराह (महा) समझरेका (चना) । मनिव राशिनिशेष (मुज १ । टी)। करक अवहरित्यंत, अवहरिमाण (पूर व १४२ मण २६ ४ खामा १ १०)। अवहारण न [अवधार म] निवय निर्णय (से संक अबहरिकण, अबहरू (महा भावा ११ १४ स १६६)। अषदारय वि [अपदारक] छीननवासा अप भग)। कायहर सङ जिप + ह्यो परित्याग करना। हरण करनेशमा (मूर ११ १**२)**। अयहारि वि [अपहारिन्] पाहारक धीनने-संहर अयहट्ट (मूच रं ४ १ १७)। अवहर वि अपहर वाहान्ड छीन मेने-बाला (नुपार ६)। अवहारिय वि [अवघारित] निवित्त (त बासा (गा १५६)। अवश्रुत्व म [अपहरण] दीम नेना (भूमा १७६ पडम २३ ह सुपा ३३१)। सुपारक)। अपहास सक [मापू] दया करता हपा अवहरिक्ष वि [गत] ववा हमा (बूमा) । करना । अवहानइ (यह है ४ १५१)। अवहरिक्ष वि जिपहरी कीन निया हवा धवहावमु (दुमा) । (मुर १ १४१) ब्रुम्स र) १ अवहाबिज दि अवधाविती गमन के सिए अवश्च सक अप + इस् ] तुन्द प्ररिष्ठ (मिरि ४३४)। करना विचलार करना व्यक्तस करना। प्रश अवहास र्व [अयभास] प्रकारा देव (एवड इसइ (लामा १ १८)। माम)। अवहसिय वि अप , अवहसित विरम्हत अपदासिणी की [अपदासिनी] नासारम्ब भोतको भोत्रप्रागहान्त प्रवहातिएरे पुढा क्फासित (लामा १ ८ मुर १२ ६७) ( (गा ६६४) । अपदार सरु वि वाक्रेश करना । वनहांधीन अवहासिय वि [अवमासित] प्रदादित (दे१ ४० टी)। बावहाडिज वि दि विराष्ट्र, जिस पर माजीस (मृता १४२)। किया गया हो वह (दे १ ४७)। अवद् रेको आहि (पुरा ६६) १७८ विसे दरा धर्म)। अवहाण न [कायधान] १ व्याच कायोन (पुर १ ७१: क्या) । २ बान जानना (वमे अविद्वि वि वि वि वि विभागती पवित ६२) । (पर्) । अवहाय पूर्वि विद्या नियोग (वे १ ३६)। अविदृत [दे] मेपुन शंमाप (सूम १ १ अबद्दाय य [अपद्वाय] ध्रोड़ कर, स्थाय कर अबद्धिय वि [अपहत] ग्रीन निया ह्या (भग१)। अवदार एक [अव + धारव ] निराव (पत्रम २ ६६ नुर ११ ५२) सुरा ४१३)। करना निषय करना। कर्मः सबद्दारिकद अवदिय वि अिपहित्ती परित (चंद्र) । (त १६६) । हरू अवदारतं (यात १६) : अवश्चि वि [अवपूत] नियमित (विते अवदार (घर) देवो अवद्रर=गा+द्रा. 1 ( \$\$35 धवहारः (अवि)। बंहः अपहारिय (प्रति)। अवद्यि न [अयपृत] परवारल (वर १) । अबहार वे [अपहार] १ बाहक्क (पहर १ ) अव इय वि [अवहित] सामकत स्वालकाना का नुपा २७१)। २ दूर करना परिस्थान (बाया सहा ग्यामा १ २) बहम १

पर्ल (युषा २, २५)।

माना (प्राप्त ३)।

अवधिय-शक्तिसम

अवार वि अिपारी पार-रवित प्रमन्त (मे

एकाय-चित्त (सूपा १)। अपहिष वि रिचिष्ठ विर्मित, बनाया हवा (कुमा)। मबद्दीय नि [अबद्दीन] हीन प्रताक्ता रम बरबा बाला (नाटः वि १२)। धवहीय वि [अपभीक] किय बुद्धिवासा दुर्विव (परह १ २) । क्षवहीर सक [अद+धीरयू] सरका **गरता दिरत्यार गरता । धन्द्री**नेद्र (सहा) । मक्त कामहीरंड (मुपा ३१२)। चलकुः खबहोरिव्यंत (मुपा ३७६) । संहः, अय-हीरिक्ज (मद्या) । अबद्दीरण न अबधीरणी मनदेनना शिर स्वार (वा १४६ मधि ६४ एउड)। क्षवद्दीरणा की [अवधीरणा] कपर देखों (क्ष १६ १६ वेटी है। भवहीरमाण देशो अवहर = शप + ह । **अवर्।रिश्न रि [अवजीरित]** धवजान विर स्ट्रच (मे ११ ७ गडड)। भवदीस केवो अवहीर । अवहीलह (नए) । अपशीसा भी [अवहेका] वनतर (चिरि 144) 1 अवहृय नि [अपधृत] नार प्रमाना <u>ए</u>या (संबोध १२)। व्यवह्रअ वि [वे] दबा-योग्य, इपा-पात्र (वे १ २२) । अपश्च एक [ सुन्यू ] छोड़ना श्वाग करना । पादेग्द (१ ४ ११)। संह असहेतित (कुमा) । अबद्देश ) ृत [अयद्देश्क] याचे विर वा अबद्देश्य ) वर्र सामानीतीरीय (बत्तनि ६) ।

अबद्धहिय रि 👣 गाँचे भी तरफ मोहा हुआ

अवहरि ) भी अवहस्त्री मरप्रलग तिर

अबद्धी ) स्वार (दा देश दशक दी बाँग

धवहसम रि [अवहसक] तिरावारत (बुरा

भारद्रसम्म रि [अयहम्पन] काळा वाले बाला

अवशास र वि रिष्टु, विकेश (बह )।

धरमोरित (बत्त १२) ।

नुगा २११ वट्ग) ।

(नुव २ ६ ४३)।

2 K) 1

सुपा ४२३)। सण नि सनस् विशीन

अवहोस्र पण [ भव + होत्तम् ] १ कृतना। २ इत्या करना । वक्त-कावडीस्टम्स (लागा 8 =)1 अवाह वि [अपायित्र] १ पुःशी : २ दोनी अपराजीः 'निकियकमक्त्राई होइ सवाई य हें**ह**-कोर्याच' (नुपा २७४) । धवाईण वि [धवाचीन] धवोनुव (ग्रामा 1 (7 3 अवाईण दि [अवातीन] बादु से सनुपहत (रामा १ १)। अवाष्ट्रक विकिक्षापूर्य किसी कार्यस न नवा ह्या (क्य वृष् २)। **अवाउड वि [अमावृत] यनान्द्रादित** शम मिमनर (लासा १ १ ठा ६, १)। व्यवाबिक्ष वि [दे] विका प्रतारित ( यह )। अवाज वेको अपाज (पाय विपा १ ६)। ध्यमाय पु€समाय] पानी ना ग्रावसन (सा २३)। लावाय वि [अपाव] कापर्याहतः (था २३)। भवाय नि [अपाग] स्वरंगित (वा २६)। अवाय वि [अपा३] वायरीहर (आः १३)। अवाय र्षु [अवाय] प्राप्ति (या २१)। अवाय 🖠 [अपाय] १ वनमं समिष्ट (हा १)। २ बीग बुक्छ (बुर ४ १२ )। ३ बच्चारल-विशेष (ठा ४ ६) । ४ विनासः (वर्ष १) । विशेष, वार्वश्य (एवि) । ६ वंश्य-रहित निववात्वक बान-निर्मेप (का ४ ४ एटिंग)। **ब्रिंसि नि ["वृश्चिन्] वाबी धनवीं को** बाननेराना (ठा वा इ. ४१)। "विजय न "विषय शिक्रय] म्याम-विरोग (ठा४ २)। अपाय १ [अवाव] शंतर चीत निववात्मक ज्ञान-विटेच मनि ज्ञान ना एक श्रेद (हा ४ পা প্রাথি)। अवाव ि [अम्सान] वम्तान, म्लानवीहन ताना 'सरायनप्रनंदिया' (ग १ २)। अपायात्र व [अपादान] वारत-विशेष स्था-

बानविष्यान (का निव २ ११) ।

4=): अवशेमुद्द वि [यमयमुक्त] शेनों तरक मुह व्यवार पूँ विशेषकात हार वि १ १२)। अवारी की [दे] उसर देवी (दे १ १२) ! अवालुआ भी [के] होठ का प्रान्त वान (के ₹ Rc) 1 क्षवाय र् [क्षवाप] रहोई, युक्त । स्त्रा औ िक्या सोई-सम्बन्ध क्या (हा४२)। भवाम } (यप) देशो भवसें ( पर् ) । अवासें } नवाह् पूं [अबाह्] देत-विरोध (१८)। अवाहा देवो सनाहा (धीप) । अवि य [अपि] निम्ननिवित यवाँ का मुक्क कम्पर---१ प्रस्त (से १ ४) । २ सनकारस निषद (बाष्ट्र वा ४. २) । ३ समुबद (विदे ११११ सप १ ७)। ४ संबाबता (विसे ११४व क्त १)। १ विद्याप (पाम)। ६-७ नास्य के जनमांच चीर पारपूर्ति में यो इक्स प्रयोग होता है (भाषा) पडम पद्)। कावि पूँ [कावि] १ सव । २ तेप (विदे (vev) अविम विचित्र कर्मित (दे ११)। अविद्य वि [समित] एसित (दे ५, ११) । जविश च [अपिच] विरोग्छ-पुचक सम्बद (पंचाध प्र): अविकस [अपिय] स्टूबर-धोतक समय (तर १ १४६: मन १ २)। अविञ⊈ [अविक] मेप सेड़ (माचा)। अविष्ठवि [क्षतिम् ] सन पूर्व (सर्द्वि ४**१**)। अवित्रसंतिय वि [अस्युरध्यम्तिक] बपाँच-र्थित (स्प) । अविषयसस्य न [अङ्गुस्सक्षम] पर्रासवाद पाल में रतना (भव)। अविक्रम नि [अविद्रम्य] नियन (वंबा १ 9x) ı अविकरण न [अधिकरण] गृहीत बरनुभी नी यमान्यान न रवना (बह १)। अविकास देनी अवेत्रस्य । प्रतिस्वद् (महा) । हेक- अविकिताई (त ६ ७) : इन अवि कम्पणिक्र (विने १७१६)। अविरस्सा वि [अपेश्वक] क्षेत्रा वस्तै वाना

(87 tutt) :

(मपः वसः)।

क्षपिकस्त्रज्ञ म [अधेक्ष्ण] धवकोचन, निधि-द्यसु (मर्दि)। अविक्लाम म श्रिपंद्यण देशेया, परनाह (विदे १७१६) । श्रविक्ता देवी अवेक्ता (कूमा)। क्षपिक्तिस्य कि जिपेक्तित् । वर्षकितः। २ न, घपेजा परवह, 'नाविन्तियं समाए' (घा १४)। अविविद्धान वि [अवेद्यित] बदनोवित (गुपा ७२)। **अविगाइय वि [अविकृतिक] इ**त पादि विकार जनक जल्लुमी का स्मामी (सूम २ 3)1 अध्याद्विय वि (अविक्*नित*े बनामोगित (वद १)। खबिगाय स्वी अधियण्य (मुर ४ १=१)। अधिगण्या वि [अविक्रम्पक] १ विकल पहिता २ म. करपना-पहित प्रथम कान (वर्गसं ७४)। अविगतः 🖟 [अभिकतः] धक्यपः, पूर्णं (उप 2=1): अविगिच्य वि [कविचिकित्स्य] निसन इमाब न ही नके ऐसा समाध्य व्याबिः 'तालपुर' दरनार्ग वह बहुबाहीरा बिक्तियी गाडी । दोसालमञ्जनात्यं, तह धरिनिक्जो समाबोगी (मा १२)। अविगीय पू [अविगीत] श्रमीतार्व, शाकों के रहस्य भा धनमित्र साधु (वन ६)। क्रमिरगङ्क वि [अविमङ्] १ शरीर-धीर्त । २ पुत्र-रहित कबह-वर्षित (मुपा २६४)। ६ सरव सीमा (मरा) । व्याह की ["गवि"] धरिक गर्ति (मग १४ ६)। स्विष्य वि [सवीप्रय] बोप्सार्यहरु व्यापि रहित (पर्)। अविज्ञालय वि [अविद्यायक] धनकान पूर्व (तूष १ ६ १)। खबिज वि जिबीज केवसकि ने चीत (पडम ११ २४)। कवित्रय ५ किविनयी वित्य का समाव (द्व **3 3)** I

अधिणयत्रहर्षुं दि । जार, उत्पति (वे १ **अधिरत्त वि[अविरक्त] वेराप्यपहित (**एामा छापिययवर ११८)। 1 (85 3 काविणयवद्द की दि] धतती कुलटा (वे १ अबिरय वि [अविरत्ते १ विरामधीत ₹**६**) I व्यविच्छित्र (ग.१४४)। २ पाप निवृत्ति से अविणिष्ट वि [अवि नेत्र] निवा-विच्छेररहित **पीरत (ठा२१)। ६ चतुर्भ द्वारासना** (वा ६६)। नासा जीव (कम्म ४६६)। ४ किनि संश श्रविष्मा श्री अधिशा अनुप्रयोग, स्पाम का इनेख (पाष) : सम्मदिद्वि भी विसम्प ग्रमाण (सूच १ १ १)। ग्रहि चित्रमें ग्रायस्थानक (क्रम २२)। अविरक्ष वि [अविरक्ष] निवित्र मन (खादा **পৰিবছ বি জিৰিত্**নী লগে লখা(নল 1 (1 5 च्य)। अविरहि वि [अविरहिम्] विख्रहित अविन ) य [अविद, दा] विपार-मुचक (प्रमा) । द्धाशिवा <sup>∫</sup> धम्यय (पि २२. स्वप्न १८) । अविराम वि अधियमी १ वियमप्रीत । ल विभि पंत्री अभिविधी १ विस्त विधि। २ क्षिवि निरन्तर, हमेखा (पाध)। २ विवि का समाप (बृह ३ थाचू १)। अविराय वि [अविद्यान] यज्ञष्ट (कुमा) । अविकाण विकिथिकानी **१** प्रवात । २ अविद्याहिय वि जिविद्याचित । सन्तरिकत बबाद प्रपरिषित (परम ४ २११)। बाचबित (भव १५)। **अधियक्द ६ [अविद्**ग्य] ग्रानिपूछ (नूपा , अजिरिय वि अवीर्ये | नीवैर्यहर (भग)। १८२)। अधिक रू वि । १ पग्न । २ वि विक्रित (दे अवियत्त न [अमीतिक] १ मीति का समाव 8 XX) 1 (ठा१)। २ वि वागीतिकारक (पण्ड , अविसंविध वि [अविस्थिन्दत] विसान 1 (1 1 चीद्वारीम (कप्प)। स्वियक्त वि [अव्यक्त] प्रस्तुट, प्रसाटः अविला की [अधिका] मेपी मेही (पाप)। 'व्यविवर्त्त दैमले बलागार' (श्रम्म ६१)। अविवेस पूर्विभिक्षी १ विवेक का ग्रामाय। २ वि विवेकपहिता यंत्र वि [ बन् ] अभियम्प वि अभिक्रम्य । श्रे**रर्ग**हत परिवरी (पड़म १११ १९)। 'बंबएपब्ययस उ पूरियो पूरियो कि निष-मविक्यो' (मस्म ११) । २ हिवि नि संस्कृत, जविसीय वि [अविसीय] पूर्वार विरोध चैरमचितः 'सनिधनानिन्निधयं इय पूरिनं म रहित संगत संबद्ध (मीम)। भौ ऋग्रिक समिवन्यं (सम्म ११)। व्यक्तियाइ वि अधिसंगादिन् विसंवार पहित प्रमाणु मृत स्थ्य (कुमा सूर श अवियाउरी की वि अविज्ञत्यित्री क्रम्या १७५)। की (खाया १ २)। अधिसम वि [अधियम] सहरा, तुस्य (कुमा)। सवियाजय देशो शक्तिज्ञाजय (बाबा) । अविसाध वि अविपादिन विपादधीत ध्यमिरद्भ 🕏 [अविरक्ति] १ पिराम पा समाप (पण्डू १ १)। सनिवृत्ति । २ पान वर्गसे समिवृत्ति (सम अविसंस वि [अविशोप] तुस्य, समान (हा १ परहरी। १ क्षिता (कम्म ४)। ४ ने के बर दक्को। धक्का, मेपून (ठा ६) । १ विरोध-परिणाम अधिसेसिय वि [अधिग्रेषित] (छ १ )। काध्याव (भूम २२) । ६ वि. विरक्तिसीता (नाट)। बाय पूं विवाही १ धनिर्रात की अविस्स न [अविभ] मास पीर प्रवर (न्व चर्चा २ मेचुन-वर्चा (ठा९) । अविरक्षय रि जिनिरिक्ति विरक्ति ने सील अविग्साम विजिममामी १ विमानपीत पापनिवृत्ति से बॉनल, पाप कर्न में प्रवृत्त (नग्रह ११) । २ शिषः निरम्तरः सत्त (दर

७२= धी) ।

शहयाग वि [क्षव्यव्य] ध्यत्रधानुष्य, धनादुष

अञ्चलः } विशिष्ठमक्त्री १ ग्रस्तरु मस्ट्रय

(क्य १४) ।

धानेक्त एक शिल्। ईच्हा विवर्गका करना।

प्रवेक्साहि (स ११७) सेक्र अवेषिकारूण

अनेक्सा 🐗 [अपेका] क्षेत्रा, परणह (सुर

अमेक्स वि जिपेक्षित् क्रेसा करनेनामा

अवेक्सिय वि [बार्याक्ति] विश्वती यवेका

भाषेक्सिय वि [ धावेशिय ] ध्वनीकिय

अधेय वि [अपेत] चीत वर्जित (निस

२२१३)। सह नि [सृषि] प्रीप-धीरूत

सनेनकाइ (धहा) ।

(स इ.२७)।

(गढा) ।

(पथि १६१)।

वे बरुस देहर)।

हर्षे हो वह (स्रीप २१६)।

ध्यविद्वत पूर्वि भागन मना (यह १)। स्विष्टवं वि सिविभव दिशः (नरुः)।

**अधिक्या की** [अविषया] जिल्हा पवि

भौषित हो वह की शक्ता (लाया ११)।

अविद्वाद दि [अविपाट] यॉवरू (दव ७)।

अविद्याविञ नि दि । रेशेन यरैका २ त

**अनिद्दा**षिक्र वि [कविभाषित] बनानीवित

**धारिद्रिञ्ज वि [दे]** मतं चन्यत्त ( पण )।

क्षविद्वित वह [अभिद्यत्] नहीं नारता

विजेतिति परिक्षी संपत्तीय विसुक्ते वेश ।

श्रविष्टितीयि न मुच्छ, निसिट्टमाबोरित ना तस्त्र"

खविद्विस वि [अविद्विस] ग्रहिसक (माना)।

सविद्विता स्मी [भविद्विता] बर्ज़्सा (सूप

(भोष ६)।

अविद्वा देखो अविद्या (यमि २२४)।

धाविद्वि रेखो अविधि (एस १)।

हुआ, दिसा नहीं करता हुआ

मीन (दे१ ५६)।

(गस्य) ।

```
$1 P. 8) 1
धाविश्वीर वि [सप्रतीकृ] प्रतीका नहीं करते
 नाना (दुमा) ।
भविदेखय वि [समिदेटक] धारर करोगाला
 (स्टर् १)।
भवी केवो अवि (ध्या २ १)।
अवीद्य ॥ [अविविक्य] सदग्र हो कर
 (भग १ २)।
व्यवीद्य [अविवित्य] क्लिए न कर (यव
  १ २)।
अयाप वि [अद्विताय] १ प्रवासायय अनुस्म
  (दुमा)। २ एकाकी ससद्वाय (विचा १२)।
 अबुख देक [ वि + शप्य ] विश्रात करता,
  मार्चना नरता । सञ्जाह (हे ४ ६ ) । वधूः,
  व्यवृद्धी (दूषा) :
 अयुद्धक नि जिनुद्धी तरए। नमान (नुमा) ।
 अमुमाह देशो अधिराह (ठा १, १)।
 अबुद्द् वैद्यो असुद्द् (उछ) ।
```

अपु**द् वैको अवोद** (शाका १ १)।

(ब २ ) । मरेह (दुश १६१) ।

1 (Fee)

क्षत्र एक [काष + इ] बानना । प्रवेशि (विने

अब यक [अप+इ] हुर होना हटना । योह

```
निरीक्स (चर ७२८ दी)।
अनेव ) वि[अवेद क] १ पुरूपनेशाहि
मनेयग विष से प्रीत (पर्छ १) । २ मुक,
 नोमा-प्राप्त (ठा२१)।
कावेसि देवो अभिसि (३१ ६ पत्र्य)।
अवेद्द वेको अभेक्सा⊐ सर ⊹ ईस । स्रवेत्रद
 (सम र)।
अयोअड वि [अवदाकुरा] सम्बद्धः सस्पट
 (बाग्र ७१)।
अवोश्विष्ण वैश्वा जडरोचिक्का (बाचा) ।
अवाधिकति देवो काम्वोधिकति (ठा ४,
  ۹) ı
अवोद्दशक[अप+उद्दुः] १विचार करनाः।
  २ निर्देग करना । धनीब्रेए (बारम) ।
                                       अञ्चलमा वि अञ्चलनी १ अपन-प्रति ।
अमोद्द्र[अपोद्दी १ विकल्पद्यान तर्क
  विभिन्नार स्थान वर्गन (श्वन १९७)। १
  निर्धिय निश्मन (श्रुपि)।
                                       अध्यक्ष वि [कास्पर्या १ व्यक्तरहितः २
 अञ्चहमान 🐧 [बारुपयीशाच] व्याक्रपत
                                       अध्यक्ति वि [अध्यक्ति] १ अग्रीविट
  मधिस एक समास (मणु)।
 ध्यव्यंग वि (अवस्त्रे क्वार क्वार्ड (वर
                                       अस्था की [अर्थाक्] पर से किल 'सी
 अध्यान [अध्यक्त] १ पूर्वसीय पूरा
  शरीर । २ विं व्यक्तिक सम्बून संपूर्ती पति
  रियपन्नवधीयतिक्वसरा।' (वर्णीन १७
```

व्यविसाध वि [अवदाश्वित] १ विश्वेष

धील । २ धलीन एताव (बले २)।

```
जन्मसम् । क्य ७६८ दी सुर ४ २१ श.मा
 २७)।२ स्रोटी छनरका वानक बचा
 (निकृ १८) । १ सपीतार्थः शास-रहस्यान-
 नित (धापु) (धर्म २। बाचा)। प्र पू
 र्थन्तक भव का प्रवर्तक एक बैनामास मुनि
 (ठा ७)। १ व. सास्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति
 (मानम) । समान सित्री एक जैनामत
 नत (निसे)।
अञ्चलका वि (शबस्कव्यः । शबक्तीयः ।
 २ व्रं कर्मनम्ब निरोप सम बीन सर्मना नर्म-
 बन्तर्राहत होकर फिर जो कर्मबन्त करे वह
 (पब ६, १२)।
अञ्चलिय केवी स्ववस्थिय (धीर विधे
 धावम)।
अव्यक्तिचारि वि [अवयक्तिचारित्] ऐस-
 न्तिक (पैचा२ ३७)।
जब्बय न [बाब्यय] 'व' बादि निपार (<sup>का</sup>र
 ६व६) ।
अभ्यव व [अज़त] १ क्षत का सभाव (मा
 १८ धन १३१)। २ वि ब्रह्माइट (निधे
 REVE) 1
अब्बर वि [बाब्यय] १ यहर, यहर (सुरा
 १२१)। २ निम्य शास्त्रत (मन २, १)।
बक्बवसिय वि [सक्यवसित] १ वर्तिचित
```

पॅक्टिया२ मनसङ्गी (काइ. ४)।

ग. विरचन व्यान (ठा४ १: ग्रीप)।

**श**च्चाए छी पादाए' (सूच २:१ ६) ।

अस्या की [दे अस्त्रा] माता अनुनी (**दे** १

अञ्चाइद्ध वि जिल्लाबिद्धी १ धनिपर्नेस्ट

मनिपरीत ⊧९ न भूव कार्यक्र कुछ सत्तरीं

की काट-पुसर का ब्रागम (बृद्ध १३ पम्बः २)।

(पंचा ६)। २ निरम्ब (शहर)।

0)1

% (पव्)।

२ पूर्ण- नौकोत्तर रीति से १२ व किन (वै

क्षस्यागह मि [अञ्चाहत] प्रस्पक चान्द्रट (प्राचा सत र टी)। अञ्चाम वि [आस्पान] चेवा स्मिष्व (ग्रीव ४८८)।

स्रज्यासाह वि [अञ्चायाय] १ हरज-पीहत सामा-सर्जित (स्थाप १)। २ न पोगका स्राप्त (सगरेद १)। ३ मुख (सामा)। भूमोक्य-स्थान, प्रुटि (सगरे १)। १ पुँ सोक्य-स्थान, प्रुटि (सगरे १)। १ पूँ सोक्य-स्थान, प्रुटि (एगगरेष)।

सामान्य देव-प्रयोग (गुण्या १ व)। शञ्चादाद पुन [अस्यावाच] एक देविष्यान (देवेन १४१)। शस्यावत वि [अन्याद्वन] १ को व्यवहार में न सावा गया हा व्यापार-रहित। २ एक प्रशार का बान्यु (१६१)।

अरारका नाम् (दृष्ट् २/ । भारत्वादम् वि [अरुपापमः] स्रविन्तः, नारा को समाप्तः (मर १ ७) ।

सम्बादार वि [अस्यापार] स्थापार-विश्व (स १)।

क्षव्याह्म वि [अञ्चाहन] १ नकाव-विवत् (क्ष ४४ चुणा च्ये)। २ स्ट्राइस्त प्राणात प्रीत् (विरि)। शुक्रमावस्य न ियुवा परस्व विसर्थे मुर्तापर वा विरोध या सर्वर्धात न हो देशा (वक्षन) (प्रयः)। बारवाहार वुं [अस्याहार] न बोलना मीन

क्षक्वाहार पुं[अक्याहार] न बोलना मीन (पत्स)। क्षक्याहिय वि [अक्याहत] न दुवाया

हुया (जीव व सामा) । स्राहिमस्य वि [स्रविरत] विस्ति-रहित (वट्टि

अख्या व तीचे के सभी में से प्रकरण के सन्नु मार, निशी एक समें वा मुक्क सम्यय-१ सुकता। २ दुःसा १ सम्प्रयण। अ परायण। १ विस्ता। सानन्य। क सावर। य अय। १ विद्या १ विशाव। ११ प्रकाशान

'मानो हरीत दिवर्ष ठड्डिन न बेमा इबेटि बुवर्गण । सच्ची विशिष्ट्रस्टं मुग्गीत बुक्त अग्रव्महिया।।

सम्मो पुरारामिणं दस्यो सन्त्रम् एफनं वीसं। सम्मो सहसम्म पुने नवरं वह सा न बूरिहिर।' (है २ २ ४)। अञ्चोगक्ष वि [अक्याह्य] १ समिधीयत

(बहुन्)। २ फैलाव-पहित (दसाव)। व नहीं बोटापूषा। ४ कम्पुट-, कम्पट्ट। ४ व एक प्रकारका वस्तु (बहुवे)।

अञ्चोषिद्धणा वि [अन्युप्तिका, अरुपय किन्ना १ मान्तर-पीत सतत विष्येत वित्र (वव ७)। २ निष्य । १ मध्याहत

(गढड) । अठनोषिद्याचि की जिठमुण्डिचि, स्वस्पत्र चिद्यक्ति] १ सत्तव्य प्रणाह बीच में विच्छेर का सम्माण परंपरा में बरावर चन्ना सामा

ाण्याकी र साहत्य प्रवाह बाच य विच्छीर का समाव पर्यपर से बरावर चला साहा (सावम)। नय पुँ निया बरनु को किसी न किसी का से स्वाधी माननेवाला पसा

हत्याचिक नय (सग ७ ३)। अक्कोच्छिक देवो सक्योच्छिएम (सोय

३२२ स ४६) : अञ्चीय**ड वेडो अञ्चागड** (मन १ ४ माश्च ७१) ।

अस एक [ अस्] स्थात करना । ससद, भगर (पर)।

अम सक [ अस् ] होना । सिम हिस्स हमोहमस्य पि पट्ट (पन ११) । सीस (पाप) । सीन (ह ६ ° १६ ११७-१४०) । मुका साथि सानी (पन उका) ।

भूकः स्थान भागा (मन जना)। अस सक् [अञ्च] जोनन करता साता। भनदः 'कन्यमणामानूरं नाउद्द सेमोबि बल्बाही' (सर्वे १ ६ मिन)। सङ्कः असीत् (स्वि)। अस्यस्य (मृता ४३०)।

अस कर [अमन्] धनिषमान धरुत, 'पूर्वा ए निएस्टॉट ने व उपान्त्रए रुपं' व् (नूप १ १ १६)। असर् की [अस्टिट] १ उनटा का हुसा इस्त

असर् की [अस्ति] १ उत्तरा रजाहुचा इस्त तत । २ बाव्य सारने का एक परिमाण । १ वस्ते माग हृद्या बार्ग्य (दाणु राग्या १७)। असर् की [व असर्ष] प्रभाव व्यविद्यानताः 'पहर्म क्रमण वाज्या

बरमणा पर्णिकळ्ण पारेह । धमईंप नुबिहियाणं धुंबद य नयविद्यानोधों (उदा) ।

असह प्र[असह्नम्] धनेकबार, वार्र असह वार (धनि वाचा उर ८३३डी)। असह वो [असनी] रे कुलटा व्यक्तिपाणी वर्ष (जुना ६)। रे वार्षी (भन =,१)। पोस

[पुषोप] यत के लिए दामी नर्तुंबक या पशुर्वों का पासन 'ग्रम्मीनों च वित्रजा' (या २२)। पोमजया की [पोपणा] देखों सनन्तरोक्त सर्चें (पिटे)।

क्ससडम कृत [अशकुत] सम्प्रुत (वंषा ७)। असंड मि [अशकू] १ तकू-पेहत सर्व विष्य। २ निष्ठर, निर्मय (पाणा मुण्ट २०)।

असंबर्क वि [अरुट्सुन्त] रहतुना-पहित यरियनित (कुमा)! अर्मिक वि [अर्माकर] स्टेस्ट व केंग्स सम्बर्

असंकि वि [अराङ्किन] संदेह न केरन वासा (सूच १:१२)।

असंक्रिकेट्ट कि [असक्रिक्ट] १ संस्केट-चहित। २ किनुद्ध निर्दोप (सीप पर्यक्ष २ १)। असंक्र कि [अस्टिकर] संक्या-परित्र परितरण चित्र (सुद्धा १६६ की २७-४)।

असंदा न [असंस्य] शास्य मत से मिन वर्शन (मुचा १६९)।

कार्सलाह कीन [ब] कनाह भगड़ा 'जान य समग्रीस्थानसंबद्धाई राज्यप्रीम नेत आर्यीत' (राज्यह ६ ११): की बी (पन १ ६)। कार्सलाह न [ब] कनाह, भगड़ा (निष्कृ १)। कार्सस्याहिय नि [ब] कनाह करने वास्पा,

सम्बद्धाः (बृह् १)। स्वरंख्य देवो असंस्य = प्रतंब्य (सं ८१)। असंस्वय वि [असंस्कृत] १ संस्कार-हीतः।

२ संबात करते के शरात्य (एउ) । असंस्थित वि [असंस्थय] फितडी या परि

्वास्त करने के प्रशास (नव ६६) । अस्तिराज्ञय वेनी असंग्रज्ञय (मणु) । असनोत्रञ्ज वेत्रो असंन्यिज्ञ (मण्) ।

असंस्टब्स् वि [असंस्थेय] धरंस्यातवा । भाग वृं ["भाग] धरंत्यातवा हिल्ला (धीन भाग ।

भग । अर्सन्यक्रम पुन [अर्सम्ययक] गणना-विरोध (क्यू) ।

आसोगि [आसक्क] १ निन्तम् सनानकः (कएणु२)। २ पुंचलमा (मापा)। ३ मुख्योपा। ४ व मोद्य मुद्रि (पैयन ३)

यौष)। शासंगय व दिं] वस कपदा (रे १९४)।

१११)।२ विभूळा (पण्ड् १२)। मोस

कसंगद्दिय वि [असंगृहीत] १ जिनवा चंत्रह न फिया गमा हो बहु। २ धनाधित (ठा ८)। ब्यमंग्रिद्देय वि [अस्प्रहिक] १ संब्रहन करने बाला। २ पुनिस्य सव का एक सेव (विमे)। असंगिम ग्रेंच्रि १ यद चौद्रा। २ वि यतमन्त्रित चद्धम (दे १ ११)। क्सर्संघयण वि [असहनत] संहतन रा रहित । २ वज्र ऋषमं नाराच बादि प्राचनिक तीन संम्पर्णों से चीरत (निय অর্থ মন বিশেজন] কিংকা খবলেছি (Fig. t): अमंज्ञम वि [बासंग्रम] १ हिंगा पूर वादि भावच सकुरान (सूच १ १६)। ए दिसा मादि पाप-नामौ से भनिवृत्ति (वर्ग ३)। ३ बजान (बाबा)। ४ प्रथमाबि (बब १)। असंबय वि [असंबद] १ हिंसा मावि पाप नामों के सनिकृत (सूच ११)। २ विसा मादिकरने शला (इन ६,६) । ३ वुं साह मित्र पृत्रस्य (साचा) । असंबद्ध (असंबद्ध) १ ऐलतः वर्षके एक दिनके का नाम (सम १५६)। असंबोगि वि [जसयोगिम्] १ संबोग फीच। २ पुंचक बीव बुकालग (छ 3 () 1 असंन नहः [ असन् ] १ परिचमान (नव ३३) । २ फूठ धनव्य (प्रवृह १२) । ३ मनुंदर, सवाद (पर्यह २ २)। भस्त रेनो अस = पर्। थर्सन नि [अञ्चार3] शास्त्रवित हुई (परह २ २)। अर्मन नि [अमस्य] नरव-परित वय-कृष्य (धगद्र १ २)। मर्मभव वि [बे असंस्कृत] वरान्य धनपर्व (भाषा बृह ६)। असंबर्ग का [ व असंगरन् ] १ सम्बं न होता हमा। २ सीव न त्रका हमा (अब ¥) । १ तृत न होता हुमा (सीच १ २) । अस्थरण न दि असंखरण] १ निर्माह ना समार (इह रे) । २ वर्षाण साम का समाव (पंचर )। १ यसमधना सरान्य समस्या (मर्गर तिषु १)।

असीयरमाण नष्ठ कि असीस्तरमाण विजी समगाद ) पु [समङ्ग्रह] १ क्रावह (स्र ससगाह } ६७२ मुगा १३४)। २ प्रीत-असंभरंत (वन ४' योव १८१) । असम्माह ) निर्देश्य विशेष प्राप्तह (प्रति)। असंधिम वि [अस्थिम] मंबान चीन्त सबएड असचन [धमत्य] १ मूठ ववन (प्रापृ (**दा**( ४) । असंसीत र्षु [असंभाग्त] प्रमन नरक का स्टबाँ भरकेन्द्रकः —भरक-स्वान किरोध (केवेस्ट असंभव्य वि [असंभाष्य] जिमकी संमादता न हो सके ऐसा (बा १२)। भर्समापणीय वि [सर्समावनीय] क्रार वेको (मद्वा) । असंख्या वि [असंख्या] धनिर्वचनीय असंन्याय र्षु [असंसाद] १ काकारा । २ वह स्त्रान किसमें की गाँवा वसनायमन न ही भीक्षीहर स्वान (दावा) । असंबर पुं[असंबर] प्राथव संवर राधमाव (बर २)। असंवरीय वि [असंवृत] १ यनाच्यावित । १ नहीं स्का हुया (दुमा) । असंबुद्ध वि [असंबुद्ध] वर्तस्त्र पाप-कर्मसे मनिवृत्त (सूम १ १ ६)। असंस्थ्य वि [असंस्थित] वसंदिष्ट (वृद्ध R, 8)1 असंसद्ध वि [असंस्य] १ बूगरे वे न विना हुमा (इह २) । २ केन-प्रीट्ट (बीन) । ६ की. नित<sup>के</sup>पछानाएक नेद नव १६)। **अ**संसत्त वि [असंसत्तः] १ वनितित (उत्त २)। २ सनासक्त (स्ट एत १)। असंसम नि [असंदाम] १ संसन चीत (बह t)। २ कियि निचिष् नकी (समि ११)। बसंसार वृं [मसंसार] संसार का समाव मोक्स (शीव १)। जर्मसि वि [अस्त सिन्] व्यक्तिपर (पूपा) । असम्बर्ध वि [अशक्य] निसरो न कर सके वह (बुवा ६६१)। असका वि [अशकः] यममर्थ (हुमा)। असक्तप वि [असरहन] संस्कार-रहित (पराह 1 (8 \$ असक्तय नि [स्रसत्कृतः] सन्तर-रहित (प्रगृह ₹ २) :

न ["सूप] फूर से मिना हुमा सरव (इ. २२)। बाइ वि ["बादिन्] पूठ बोनने बाता (सम ४ वरुप ११ ६४) । सास न**ि**सूप] न सम्ब धीर न भूठ ऐसा वचन (धाना) : ।मामः 🐗 ["ामुरा] रेको यनन्तरोछ पर्ने (पंच १)। सम्राप्ति ["संग्रः] १ सम्भ-मित्र । २ घमन्य धरियाय बाना (सङ्घ बसझ ोनक [ंबस**बत्** ] संगत असळमाण ∫ करता हुमा (माना उत्त १४)। असरमञ्जूष वि [अस्त्राव्यायिक] फ्रन-पाउन का प्रतिवत्त्वक कारास (पव २६८)। असउम्बद र्षु [अस्ताध्याय] प्रतम्बाय, वर् काम जिसमें पठन-पाठन *का* निरोध किया गया दे(बध्य १ १)। असब्ब वि [असद्ध] महारहित (हुमा)। असङ् वि [अराठ] सरम निप्कपर (सुपा ११ ) । करण वि [करण] किकार भाव वे बनुहान करने बामा (बह ६)। असण न [अरान] १ मोजन वाला (निद् ११)। २ को खामा बाय बहु खाम पदार्व (98 8) 1 असण पुं [असन] १ बीवक नामक दुन्न (परण १ लाया १ १) मीया पामा द्वमा)। २ व. कोएए कॅक्स (निमे २७११)। असिष पुंची [अरानि] १ एक प्रकार की विज्ञणी (गुज्र २ ) । २ ई एक सरक-स्वान (शिन्न २६)। अस्तिज पूँची [अस्ति] १ वज्र (पान)। २ धारामा में विष्या विमिक्तम् (पाण १)। १ वज्ञ ना समि (बी ६)। ४ समि (स ६१२)। <sup>ह अक्रविदेश</sup> (न १ र) । प्पद्द पु<sup>\*</sup>प्रभ] रावाल के मामा का नाम (से १२ ६१)। सह पुंक्तिय] र बह बर्गा जिसमें बीने विल्ले हैं। २ मेर्डिमर्बक्ट वर्षा प्र**न्त-नेव** (बग ७ ६) । "बेंग यूं ["वेंग] रिवावर्षे असब्दर्भिञ्ज वि[भवक्तीय]धरास्(दूषः)। नाएक राजा(पटम ६ ११७)।

असणा की [अशनी] एक स्त्राणी (अ ४ श्रमणा की [अशना] विक्का जीम जनका-रामणी कम्मारा मोहरा तह बवारा बंगे व (मूचर ४२)। कासण्य वि शिसकी एकार्यहरू मनेतन (सहय १)। द्यसंज्या दि [असंद्रिम्] १ संजिनिका मनोज्ञान से पहित (कीव) (ठा २ २)। २ सम्बन्धित क्रिय क्रिक्टर (भव १ ९)। सूच न "अदी कैनेतर शास (छंदि)। कासन्त वि स्थिशान्त्री यसमर्थ (मूर १ २४४) १ १७४)। सत्तत्त वि अस्ति प्रशासक (धार्वा) । असस न असरा प्रमान मनता (गंदि)। असचि हो [अराचि] सामर्ग्य हा बगार । सत्त वि [ सन् ] बसमर्व बस्तरः (परम 42, 92) i असत्य वि [अस्मन्य] मतंत्रुगतः वीमार (मर ३ १२७)। कामरथ न [अराख] १ शक-नित्र । २ संगर निर्दोप बनुद्वान (बाना) । असइ प्रक्रिशम्य र मधीत गायरा (यन्द्र १) । २ वि शनरपहित (इह १) । धसद्ध नि [अमद्र] पदार्थात । श्री. द्वी (सर दू १९४)। अमझि रेको असम्मि (बक्ट की ४३)। असम्बद्ध वि अध्यापकी १ वागियितः २ निशीय पवित्र (मण्ड् २ १)। द्यस्टम वि जिसम्य विशेष्ट, जंगली (व ६६ )। शासि वि [भाषित् ] वसमा-मापी (मूर १ २१)। क्सरमाय वृ [असद्भाव] १ ययार्थता का समान मूठ (शिष्ठ)। २ वि समान्य समयाचे (बत ३ मीप)। असम्भावि वि [असङ्गिषित्] भूका चयत्व (मक्का)। असरभूय वि [असव्भूत] प्रमुख (भग) । असम दि [असम] १ प्रममान धमाधारण (मूर १ २४)-। २ एक कीत पाच साहि एकाई श्रेक्या बाला कियम । सर् पूं ["श्रर] भामदेव (पढड) ।

पाइकसहरमहण्यसे असमबाद न जिसमबायिम् नैवादिक बौर वैरोपिक गत प्रसिद्ध कारण-विशेष (विश ₹ €€) 1 असमजस नि [असमग्रस] १ प्रव्यवस्थित गैरम्यानकी (प्राका मूर २ १६१ मुपा ६२६ उत्र १ )। २ क्षिप्र धम्प्रसम्बद्ध स्प स (शष)। असमिक्सिय वि [असमीक्षित] बना-नोचित धनिचारित (परह १ २) । कारि वि (कारिम्) साहसिक। कारिया की [ कारिशा] सम्बद्ध कर्म (स्त ७६८ टी) । असरासय पि दि निर्देव निष्ट्रत श्वरव बामा (दे१ ४)। असम्बन्ध व [अक्त्रेख] वसम्य भाषा (बीह असम र् [असू] प्राण विक्तासमा विस डिमो क्ष कल (स ११७)। असवण्य वि [असवणे] प्रस्तान प्रशासारण (षरुग) । असपार पू [अध्यार] पुरुतवार (वर्गीव X\$) 1 असह वि [असह] १ वस्रिय्यु (दुना नूपा ६२) । २ पछमर्व (शव १) । १ क्षेत्र करने बला (बाघ) । असङ्ग वि असङ्गी सप्रहिप्ण शीवी अमद्राय वि [असद्राय] १ वहायर्ग्युत (मग) । २ एलाकी (बृह ४) । असिंद्रज्ञ वि [असाद्याच्य] १ वहायणा-र्थहरः । २ सहासना का सनिक्कुक (दवा) । असदीण वि [अस्ताधीन] परान्य परानीन (दस ८)। असदुषि [असह्] १ धन्तहिय्यु (४४) । र समयथ सराव्ह (सोम १६ मा)। १ बीमार स्तान (निष् १)। ४ सुषुमार, कीमस (ठा३३)। असह्य देवो जसहित्र (भग) । असागारिय वि [अमागारिक] गुहस्वी के धावागमन से रहित स्वान (वब १)। समात्रमृद् पुं [अपाडमृति] एक केन पुनि (FIX YOY) I

असाह्य न जिसाह ही तूल-विशेष (पर्ल १ पत्र वर्ष)। खमायम[असात] रूच पीड़ा (गण्ड १ १) 'रागंबा यह बीवा **बुस्मह्नो**यस्मि गाइमणरत्ता । वं नईति मनार्ग कत्तो ते हंदि नरएवि (AC = OE) 1 "बेयणिज्ञ न ["बेड्नीय] दुःस ना कारण-मूजकर्म (स २ ४)। व्यसार ) वि अिमार, की निस्पार, सार बसारव र्रे र्घहर्ष (महा कुमा)। असारा की दि । करनी-बूश केना का पेड़ (R 2 22): खसाछिए ईसी **दि** ए॰ नी एक जाति (पूपर व २४)। असासय वि [अशासन] यनित्र विनयर (ए।पा १, १ मा २४७)। असाइण न अिसायनी मसिद्ध (मूर ४ 284) t बसाहारण वि [असाधारण] चतुन्य चतुन्त (मग्ट इस)। असि पूं [असि] १ बडग तनवार (पाध) । २ इप नाम नी नरकपान देवों की एक जाति (मा ६ ६)। ६ की बनारस की एक तनी का नाम (ती १०) । हुई व िहरू ही मधुरा का एक तीर्थ-पान (ती ७)। भाग दू [भाव] समधार का मान (पठम १६ २१)। चन्नपाय अ विमापानी क्सवार शी न्मान कोश (घर ६ १)। द्वारा धी भारा करनार नी बार (उन्त १)। बेणु बेणुजा की चितु धत्रा एपी (गवश पाय)। पत्त न [पत्र] ! शनवार (विपा १ ६)। २ तमबार 🖩 विमा तीक्स्य पत्र (मग १ ६)। ३ तत्रबार गी पत्ररी (जीव ४ व नरकपान देनों की एक बाति (सब २६)। पुचना की ["पुत्रिया] परी (स प्र ११४)। मुद्धि औ "मुप्ति वनकार वी पूठ (पाप) । स्वया न िरक्षी चक्रवर्ती राजा भी एक उत्तम तनकार (ठा ७)। सङ्घ भी ["यष्टि] भार्म-नदा तनवार (विपा र् ३)। यम म [बन] घरणवार पन वाने क्यों वा अंगर (पएट् १ १)। यन देशो

स्बोधास (उन)।

असिङ् (प्रा) ध्यो असीङ् (स्ए)।

[पत्त] (से १ १२)। इर वि विश्वर]

तनवार-वारन योदा (मे ११८) । द्वारा

असिन न [अराम] भीत्रन खाना धाय-

भनहास इना (भाषा २<sup>:</sup>१ १ १)।

पित्रं परिदूर्विजनार्गं धहरू, पूरा व्यक्तिए। इना

असित्य न [श्रांसम्भ] बाटा नवे हुए हान

या नर्तन का कराड़े से श्रन्त हुया बोकन

(पश्चि)। अभिद्व वि [असिद्ध] १ यन्त्रियः । २ तर्वे राज प्रसिद्ध बुद्ध ईतु (बिसे २०२४)। असिय वि [आशत] हुन्त, कावित (पाधा मुग २१२)। अधिय वि [क्रसित] १ इप्ए स्नेतर्धाक (पत्रम)। २ मधुव (पिसे)। ३ सव्यक्त, ध मन्त्रित (सूम १ २ १)। "निया एवे बालु-मण्डति, बस्तिः एने सगुतव्यति (धावा)। कल प्रे िश्ची स्टब्स्टिय (बल्) : असिय न कि बाद वांटी (वे१ १४)। भमियस्य क्यो जस = घरा । असिक्रसा 🗱 [अन्द्रोपा] नवन-विशेष (मम ११)। असिकोग ( [अरुकारु] प्रशित्त व्यवस (सम १२)। असिय र्न [अशिव] १ दिनासः । २ स्पृत्तः । ६ देवतावि इत कालद (मीन ७) । ४ मारी धेन (बद ४) : अमिकिण प्रक्रियान विक देवता (प्रामा)। अभागन रेको असिए (बर ५) शहर)। असिस्ह 🕊 [अरिग्धा] रिजुपील 🕏 (प्रकार)। असिष् वि [अशिज़] रिजारीहर (वद ४)। अमीइ वाँ [अर्गाति] संरवा-विशेष कसी )। स वि विस् बस्तीव नौ (परम #X) I व्यक्षीश्य वि [अर्शाविक] धन्ती वर्ष व **प्रम बला (तंद् १७)** । जर्माम वि अर्मामन् निल्हेन आसीनंत मंद्रिधरस्य (द्वा ७२४ टी) ।

असीस्र वि [अशोख] १ दुःशीप धनता बारी (परु १ २)। २ न श्रमश्राबार, ध्यक्तपर्वः सीत् वि विन् देशस्यकारी (धीष ७७७)। २ समीवन (मूच १ क)। असूरी व [असू] १ प्राण (स ६०३)। २ म चित्ता ३ तार (प्राप्त दूर ५१)। अस् रेजो भंस (प्राप्त) । असुइ वि अश्विषी १ प्राप्तिन प्रत्त्वन मनिन (धीर वर ६)। २ श समेध्य शिहा (ठा १३ प्राप्तु १६१)। असुइ वि [अमृति] राजयवरण-पहित्र (भव v €) i असुर्श्वय वि [अगुचीकृत] यर्ग त दिया ष्ट्रमा (छा ७२८ ही)। असुग पुं [असुक] देवो असु = वनु (है है १७७)। असुरमंत वि [अहरपयान] नहीं विचाता इसा शलीर में बनुरुक्त । धूर्वतएत र्णि (पत्रम १ म २४)। ध्यमुणि वि [अबासू] न नुक्तेवारा, धनि सन्देशिर धरिएमि<del>त्रशेष</del>से **धनु**रिए मृत्युन् सञ्ज्ञासरा (नवा ३२)। असुद्ध वि [अशुद्ध] १ धस्त्रवद्धः मसिन । २ ग. नेना, स्टूबि । (यस इय पू विद्या-मक] मंगी नेव्यार (मूर १६ १८६)। अस्म देवो असुद् = दगुव (सम ६७ भग)। अस्य दि [अध्व] न मुनाल्या (ठा४ ४)। (परिमय व ["निविन] शक्त-प्रशस् के बिना ही हालवाची बुद्धि—सान (एवि)। पुरुष वि ["पूथ] पहले कसी नहीं शूना हमा ( महा, एरमा १ १३ पत्रम ६१,१४) । अस्य वि अस्य प्रतित (क्य २)। अमुर प्रशिक्षम्र रे रेप्य, शामभ (पाध)। २ देवजारि-विशेष भवनानि और व्यक्तर देशों शी बार्टि (पगा १ ४) । ३ वास-स्वा-

असुइ न [अनुभ] १ धर्मका चनिष्ट (मूर ४ १६६)। २ पाप-कर्म (टा४ ४)। ६ वि छछा धमुक्तर (भीत १३ हुमा)। णाम व ["नामन्] स्प्रम फन देनेवारा वर्ग-विशेष (सम ६७)। अस्€ न [अस्त्व] दुल (ठा ३ ३)। असूत्र एक [ असूय् ] सपूरा करना। सनू-वहि (मै ७)। असूबा की [असूबा] १ सूबना ना प्रभाव। र दूसरे के दोगों को न कह कर यसना ही बीप बहुना (निषु १)। अमृया को [अमृया] धनुषा समद्विरणुना (∜स) ; अमृरिय वि [अमृथ] १ सूर्वरहित यन्त कारमय स्वाल : २ व्रुं नरक स्वाल (सूम १ 1 (5 # जसेब्ब केवी असिए (प्राप्त) । असेव्य वि [असम्ब] हेवा के प्रयोग्य (पउ-)। कसेस वि [अराप] निःदेप नर्व (प्राप)। अमोज १ ई [अशोक] १ देव-विशेष (राय असीमा 🕽 🐔)। २ पुनः एक देवविमान (देनेन्द्र १४६) । ६ शक भारि इन्हों का एक धामाध्य विमान (देवेन्द्र २६६)। वहिंसय प्रेन [क्यांसक] सीवर्ग देवसोक का एक वियान (सन १६)। असोग 🕻 [अझोक] १ पुत्रसित वृत्र-विशेष (बीप) : २ महत्त्रहर्नकरोय (ठा २ ६)। श्य रेप (चय)। ४ मनदान् मस्तिनाव ना विष्य-पुष्ट (सम. ११२) । १ देव-विदेश (बीव ३)। ६ ल. <del>दीर्व विदे</del>ष (दी १)। ध यक्त-विरोध (विदार १)। द वि शोक र्थतः। चीर्षु[चित्रः] र सत्र मेलिक वापूत्र पत्रा कोशिक (धारम)। २ एक प्रसिद्ध बनावार्य (सार्व १५०) । जनिन्न अ

अक्षोगा को [अशोद्ध] t इस नाय की एक इन्द्रारमी (हा ४ १)। २ मन्त्राम् भी शीनम नाय को शासनवंशी (यव २७) ! ३ एक अवरी का माम (परम २ १८६)। असोभण वि [अश्लोमन] धनुन्दर, बराव (पत्रम ११, ११)। असोय रेबी अमीग (मन महा रंगा) । अमोय पू ि अध्ययुक् ] पाधिन मान (सम 20)1 असोय वि [अशीच] १ शीचर्यात (महा)। २ त शीच का प्रसाव प्रमुक्ति । यात्र वि िवाहिम् विशोच ना ही माननेवामा (धोष ३१८)। असोयम्या न्य [अशोधनना] शोक ना समाव (पश्चि)। उपसोबादेको असोगा (ठा२ ३ संखि असोहिय वि [अपक] नवा (उदा)। असोहि हो [अशोबि] १ प्रमुद्धि । २ विच-धना (धोष घटट) । ठाण न [क्यान] १ पाए-कर्म । २ ध्रशुद्धि स्वान । ३ हुवँन का स्मर्ग । ४ धनायदन (मीष ७६३)। श्रास्य न [श्रास्य] मुख मुह (मा १८६)। अस्स नि [अस्य] १ प्रध्यचित निर्मन । २ २ निक्रम साबु मृति (भाषा) । अस्य पू [अस्व] १ बोड़ा (वर ७६८ दी) । २ प्रक्तिनी नक्षत्र का समिद्वायक देव (हा २ ६)। ६ ऋषि-विशेष (मं ७)। ऋण्य पू ["इग्रो] १ एक धन्तर्शीय । २ इस मन्त-शींप का मिशसी (एंबि) । कण्यी की [ कर्जी ] क्लम्परि-विशेष (पर्वत १) । करण न [ करण ] बाह्य बोका एकने में बाता हो यह स्थान चस्तवस (धावा २. १ १८)। ग्गीम पुं ["प्रीम] पहले प्रति-बाम्प्रव मा नाम (सम १ ६)। सर पुत्री ["तर] चन्द्र (पएए १) । सुद्र पुं ["सुल] १-२ इस नाम का एक सन्तर्शन और ससके निवामी (एवि, पएए १)। "सह पं\_िमेच] मक्र-विरोप विभनें मरन माच जाता है (क्यू)। सेज पु ["सेन] १ एक प्रश्विक

राजा मनवान पारचैनाव का पिता (प्रव

|यर व ितर | विद्यापर वेश के एक राजाका नाम (पउम १ ४२)। अस्त न जिल्ली १ वर्ष प्रांतु । २ ४पिए, जुन (प्राकृ २६)। अस्संका वि [असंनय] संब्या-एतित (उप अस्तिगिठा वि वि । भागक (यह )। अस्रीपर्याण वि [असीहननियः] चेहनन रिवेत किमी प्रकार के ठारीरिक कन्न स रहित (मग)। अम्संसम रेखी असंज्ञम (उर)। व्यक्तं प्रयादि । अस्वयद् र पुर की माज्ञा-नुगार वमनेवाचा धस्वक्रंदी (था ११)। अस्तंत्रय क्वो खर्सजय (उन) । अस्टेडम र् [अधन्त्रम] सच-पताक (भूग 482)1 अस्तव देवी अस्व "मुरिए) इवर वयश मसस्यं (उप १४१ टी)। **ब्रा**स्सिक्ति देवी अस्तित्र (विन ११६)। अस्तरम पू [अन्यरम] क्य-विरोध पीपन (माट)। अस्सरय वि जित्यस्व रोगी बीमार (न्र १ १८१: मान ६८) । अस्समि केमे अस्रिम (पुर १४६६ कम ४ स को। अस्पम पृं[आजम] १ स्वान वगह। २ ऋषियों का स्थान (यति ६६३ स्वयन २६) । मस्समित्र रि जिमसित् । यमग्रीतः सन म्यासी (मग)। मस्त्रमार केते असमार (सम्पत्त १४२) । अस्सस मक शा+ इवस ] बाधासन नेना । क्षेत्र-कारससितुं (शी) (यति १२ )। अस्पाइय वि [आस्वादित] जिल्ला धारभादन नियानवाही वह (वे)। अस्साएमात्र देशो अस्साय = प्रात्नारम् । अस्मात् सक [ आ + सात्र्य ] प्राप्त करता। धस्त्रावीतं ध्यसाचेस्सामो (मग ११)। अस्सान् **सक** [ जा + स्वादय् ] धारतास करम्य । अस्सादण देशी अस्सायण (नुष्ट १ ६) । अस्सादिय वि [आसादित] प्राप्त क्रिया ११)। २ एक महामद्दरानान (चन्दर)। क्षमा (मन १५)।

98 अस्साय देशी अस्माद = मा + सहय । अस्माय देशो अस्साद् = मा + स्नादप् । नह अस्सापमाण (मन १० १) । इ. अस्सा-यणिज्ञ (लामा १ १२)। अस्माय रेको अमाय (कम्म २७ भग)। अस्मायण व [आइषायन] १ वय ऋषि स संतान (वं ७)। २ सफिनी नलव का योज (इक) । अस्तावि वि [आस्ताविम्] परता हुमा टप क्ता हुमा, सन्धित 'बहा सत्माविणि नार्व जारसंबी बुक्हर्ए (नूस १ रे २) । अस्मास सङ [आ + श्वासय ] बाबायन रना दिवासा देना । बस्सासमदि (शी) (पि ४६)। बम्मासि (उत्तर ४ ३ नि ४५१)। अम्सासय १ [आइयामन] एक महाप्रह (पुज २)। मस्सि की [अमि] १ कोए पर भारि का क्रीमा (ठा ६) । १ तमकार बादिका बय भाग-नार (छत पृ ११)। व्य रेख पूँ [कान्धिम्] धविनी तन्नव का गवि श्रायक दव (ठा २, २)। अस्सिणी की [अभिनी] इस शाम का एक नम्रव (सम ८)। अस्तिय वि [आमित] मामय-मान्त विराग-मेयमस्मिमो (बमु ठा ७ सेवा १८)। अस्म् पून [अमु] घोषु, 'घरषु' (वंश्वि १७)। अस्मु (शी) न [अम्] संसू (समि <u>५</u>१ म्बप्त ८१) : अरमुंक वि [अरुक्त] विस्की पूर्गी वा प्रीस माफ की गई हा बह (बर १९७ टी)। बरसुर (शौ) रेको असुय = बबुत (प्रमि ११३)। अस्मुय वि [अस्पृत] मार वहीं किया हथा मरसेसा वेको असित्तसा (सम १७ विसे ₹Y ⊑) : करसोड् की [आश्चयूजा] म्यप्तित मान नी पुलिमा (भंद १)। अस्माई की (आन्ययूत्री) याचिन मान की धमात्रम (मुळ १ ६ दी) देशो आसीया । अस्सोर्चंदा को [अन्योरकान्ता] पंगीत-राज प्रमिक सम्यम प्राप की पांकरी मुक्तूना

(ठा ७)।

असर्व व अस्ति १ प्राण (स १०१)। असुद्र वि शिशुचि दे संपंतित सल्बन्धः बिक्त (बील वक्ष)। २ न बनेध्य क्हिस असुद् वि [अस्ति] राजवरण-पीति (भव अञ्चरक्य वि [मञ्जूषीकृत] धपति विभा हुमा (इस ४२८ टी) । मसुग र् [मसुद्ध] थेको मसु = धर्मु (है रे (44) अ<u>प्र</u>कर्मत वि विष्टर्यमानी **व्या** विकास ह्या 'धर्मपि व धनुरुक्ते । हेर्नेत्रपुष र्णल' (पत्रम १ ३ २६)। ख्युणि नि [खमोत्] न गुलोगला चित कार्यपिरि बालियिक्तकोवले बाबुलि बुलबु

इन्द्र-विशेष (साया १ : नुपा ७७)।

सक्र ववर्ष (वका ७२)। अञ्चल [शहुद्ध] १ ध्यत्रभ्य, मलिन । २ म. मेला प्रमुचि । विसाइच पू विशा-धकी मंगी, मेहतर (शर १६, १६२)। भस्म वेशो अधुइ = ध्यूम (सम ६७ मग)। अस्य वि [अभ्य] न सुनाह्मा (ठा४ ४)। (ग्रेस्सिय न **"ानकिन** र शक्क-प्रवस्त विना ही हानेशामी बुद्धि—सान (शृंदि)। ुरू न वि ["पूर्व] पहले कन्नी नहीं पूता हुमा (मक्षा समा ११ परन ६११४)। अस्य रि [अस्त ] पुत्रपीत (क्त २) । असुर पुॅ[लसुर] १ देल्प दानम (याध)। २ देवजाति-विरोप धानपति और व्यन्तर देशो की बाधि (पराहर Y)। वे बाध-स्वा-नीय देन (घात १९)। क्रमार पुँ [क्रुमार] )। संवि ["तम] बलावा (त्रम भागपति देवों की एक भवान्तर जाति (ठा वो (वडम 44)1 १ १ महा)। राय 🛊 ["राजा] बनुर्धे नायक (पि ४)। वृद्धि पु ["वृद्धिमून्] राध्य (से ६, १)। असुरिंद दूं [असुरेन्द्र] बनुधे का राजा

एक्कि (मै ७)। अस्या की [अस्वा] १ स्वता का प्रस्य । २ इसरे के दोगों जो न बह कर प्रमता ही बीप कहना (निच् १)। अस्या की [अस्या] प्रमुवा अध्यक्षियुका (थंस)। अस्रिक कि [अस्य] १ सूर्यं छिए। सन्द-कारमञ्ज्ञ स्थान । २ दू नरक स्थान (सूम १ 1, 2)1 असेव्य केरी असिव (प्राप्त)। कसेक्य वि [ ठरसेक्य ] देश के प्रयोग्य (धक्क)। श्रमेस वि श्रियोपी तिल्लेन सर्व (प्राप)। ब्रासीज ) र्य (ब्रह्मोक्री १ केन-विशेष (यम शसीय 🚉 १)। २ पुन एक देववियान (देवेश्व १४२) । १ शक्त भारि इल्प्रों ना एक बाधान्य विमान (क्षेत्रेश २६६)। वर्सिसय र्न [देवर्तसक] सीवर्ग केनसोक का एक विमान (चय ११)। बसोग ५ भिद्योकी १ दशस्त्र ५व-किटेन (धीरा)। २ महादह-विशेष (डा २,३)। **इय रेड** (यम) । ४ श्रवतान् मस्मिनाच वा भैत्य-मूता (सम १६२)। इ. हेम-मिक्केप (भीन ६)। ६ क वी<del>वे कि</del>रेप (वी १)। ♥ यज्ञ-विशेष (विपा १ ६)। य वि शोक र्धहतः चंद्रु[चिन्द्र] १ समा चेलिक भापूत्र राजा नौशिज (भागम)। ९ एक प्रसिद्ध नैनामार्थं (साथै ७७) । "छास्रिय प्र **िस्रतिय**े चनुर्वे महरेत रा पूर्व-क्लीय नाम (चन १४६) । बया 🛮 ["वन] प्रतोक कुकी काला कल (मन)। **व**िज्ञाकी िवनिका ने घरतेक कुछ वासा वदीवा (राज्या ११६)। स्तरि दूं ["ऑय] इत शाम ना एक प्रश्यात राजा तजाद् मरोक (विदेव ६६२) ।

श्रसिङ-धरोग

असाह व [अञ्चय] १ धर्मका धनिष्ट (पूर ४ ११६)।२ पाप-फर्म (ठा ४ ४)। ६

वि चराव घरावर (बीव १) कुमा)।

जात न िनासम् विश्वम प्रश्न केनेनला

সমূত্ৰ বিমুক্তী হুক (তা ६ ६) গ

असूझ सर [ असूय ] प्रसूपा करना । प्रसू-

कर्म-विशेष (धम ६७)।

मुवा २१२)। असिय वि [असिव] १ इक्छ स्वेवर्यहर (पाम)। २ मराव (विसे)। व सवज्ञ स यन्तित (सूच १ २ १): 'सिना एमे असू-मन्द्रित परिवा एगे द्रागगन्द्रित (द्राचा) । क्ता प्रशिक्ष विद्यानिक (४ए)। भसिय न [दे] बाव बंदी (वे१ १४)। व्यसियम्ब वैद्यो अस = प्रशः असिलेसा भी [भरक्षपा] शकन-निशेष (मम ११)। असिक्षेत र् [बङ्क्षेत्र] प्रशीत प्रका (धम १२)। **अ**सिय न [अशिष] १ विनाश । ५ अनुसः। ६ देवतावि इत कलाय (भोष ७) । ४ मारी चेंग (म्ब ४)। धासिविण 🖠 [द्यस्यप्त ] देन धनता (प्रामा)। असम्ब रेगी असिन (बन क) प्राप्त)। भ समुद्र 🛍 [अरिग्धी] छित्रुचीत की (बाहर)। भभिद् रि [অश्चित्र] शिकार्यहरू (बब ४)। जर्माइ ग्री [अशीति] संस्थानशरीय चल्ली अमीन्य रि [अर्राविक] शत्सी क्यें री उप्र बाना (तेरू १७) । असीम रि [असीमन्] निक्तीन धनीनंत र्मातकर्ल (का ७२० हो) ।

ध्यक्षीमा की [अशोका] १ इस नाम की एक श्ल्याणी (ठा ४ १) । २ भवनात् सी शीतस नाब की शासनग्वी (पव २७) । ६ एक मन्दीकानाम (पतम २ १८६)। असोमण वि विशोमनी समुन्दर, कराव (पत्रम ६६ १६)। असीय रेखी अमीय (मग' महा' रेमा)। क्षसीय र् [ धावयुक्] धारिन मास (सम २९)। असोय वि [अशीच] १ तीचरहित (महा)। २ न शीच का प्रमात प्रमुचिता । बाइ वि वादिन् ] प्रशीच को ही माननेकाला (बीम ११०)। अक्षोबगया 🛍 [अञ्चलना] शोक ना समाव (पविचा)। असोबादेशी असोगा (ठा२ ३ असोहिय वि [अपक] श्वा (उदा)। असोडि की [कारोचि] १ क्यूबि । २ विय-बना (भोव ७८८)। ठाण न [रेबान] १ पाप-कर्म । २ सस्यक्ति स्वाम । ३ हुर्वम का संसर्गे । ४ धनायदन (सीव ७६३) । अस्स न [आस्य] मुख मुँह (ना १०६) । अस्स वि [अस्य] १ ब्रथ्यपद्वित निर्वत । २ २ निर्फ्रेच साबु सुनि (भावा) । क्षसम् पु विश्व र बोक्स (धन ७६८ दी)। २ स्टिब्ली नश्चन का समिद्वायक वेन (ठा २ १)। १ ऋषि-विरोप (वं ७)। कण्य चु किमी १ एक बन्द्राधीय । २ इस *बन्द*-हींप का निवासी (एपिट)। क्रण्जी की [ कर्यों ] कास्पति-विशेष (पर्वत १) । करण न [ करण ] नहीं नीहा छाने में बाता हो यह स्वात बारवयस (बाला २, (४)। स्तीय प्रीम् पहिले प्रति चानुदेव का नाम (सम १५३)। सर पूंकी िंदर] बचा (पएछ १) । सुद् पुं [स्क] १ २ इस नाम का एक बन्दर्शन और ससके भिवादी (श्रीर, पएछ १) । "सङ् प्\_"मेव] मक-किरोप जिसमें घरन मारा नाता है (क्ला)। सेपार् [सेम] १एक प्रसिद्ध राजा प्रथमान पारचेनाथ का पिता (पत्र **११)। २ एक महासाह का नाम (जाद २**)।

ब्यर प् ीत्र विधायर वंश के एक राजा का नाम (पठम १, ४२)। **बस्स म बिस्त्री १ यम् याम् ।** २ विषर, **जून** (प्राक्त २६) । अस्तंस वि असंस्था धंक्या-पहित (उप **छारक्षिणञ्ज वि दि** पानक (पत्) । जस्संघयणि वि असंहननिम् । शहनन रिहत किसी प्रकार के शारीरिक कन्त्र से र्चह्त (मग)। अस्तंत्रम देखो असंज्ञम (उद )। अरसंख्य वि [अस्वयत् ] १ द्वर की बाहा-मुखार चमनेवाला घरवन्त्रंबी (बा ३१)। अस्त्रेक्षय भने असंख्य (उन)। अस्तदम पुं श्रिषम्बन्दम । पश्यालक (मुपा 44X) 1 अस्तव देशो असच "मुख्यिते हच्छ वयल-मस्तव (उप १४६ टी)। अस्मिणिय वैक्रो अस्थित (विसे ११६)। अम्सरम र्षु [**अच्चरथ**] बृक्त-विरोप पीपत (भार)। अस्मत्व वि जिल्लस्य रोगी बीमार (पूर १ १६१: माल ६६) । अस्त्रक्ति देशो अस्रिया (तुर १४ ६६ कम्ब ४ स मे। अस्सम पुं[आक्रम] १ स्वल वगद्द। २ ऋषियों का स्थान (श्रांत ६६) स्थ्यन २५) । अस्समिल वि अन्तर्भावी धमर्याख सन भ्यासी (अग्)। **जस्तवार देखो असवार (सम्मत्त १४२)**। बस्सस प्रष्ट [ का + श्वस् ] प्राचारा भेगा। हेक-अस्ससिर्द (श्री) (पनि १२ )। भरसाइय वि [भारवादित] जिसका धारनादश किया यका ही वह (के)। अस्साएमात्र देवी अस्साय = प्रात्वादय् । भरसाव सक [ आ + साव्य ] प्राप्त करणा। भस्तार्वेतिः भस्तावेस्तामो (मग १५) । भस्साव एक [ सा + स्त्रावय्] शास्त्रावत अस्सावण देवो बास्सायण (वृज्ञ १ १६) । **अस्साविय वि शिक्षासावियों प्राप्त किया** ष्ठमा (वय १६)।

अस्माय देवी अस्साद = बा + सदय । अस्साय बेको अस्साद = मा + स्नत्यम् । नष्ट अस्सापमाय (भय १ 🐧) 🛊 भस्सा यणिक (णामा १ १२)। अस्साय देशो असाय (कम्म २ ७) धग)। अस्सायण पू [आइषायत] १ वय ऋषि व्य संवान (बं ७)। २ समिनी नक्षत्र का गोत्र (इक) । अस्सात्रि वि [आझायिष्] मरता हुवा टव कता हुवा चर्चिद्धः 'बहा ग्रस्साविध्य नार्व जारवंधी दुरहए' (सूम १. १२)। अस्सास धरु आि + भासम् । प्राप्तासन देना, दिखासा देना । श्रत्सामग्रदि (शौ) (पि ४६)। बस्सासि (उत्त २४ । पि ४६१)। अस्सामण र्वु [आहवासन] एक महाप्रह (सुवा २)। अस्सि को [अभि] र कोए। मर मादि का कोना (ठा६) । २ तसवार साहिका सह माग-नार (चप पू ११)। अस्सि पू [अस्मिन्] पश्चिमी नक्षत्र का बर्क ष्टायक संव (ठा २ २)। अस्तिणी की [अभिनी] इस नाम का एक नकाच (सम व) । अस्तिय वि आमित्री प्रामयभाज विराग नेगमस्तियों (वस् ठा ७ सेवा १८)। अस्स पूंत [अधु] मीसू, 'सस्सू' (शीत १७)। ब्यन्धु (शौ) न [अब्] म/सू (यमि १९ स्वप ८६)। अस्तुंक वि [बार्ड्डाक] विस्त्री चुंगी या प्रदेस माफ की गई हो वह (छर १६७ टी)। अरसुष् (शौ) देको असुय = धमूत (मनि 1633 धरसूय वि [अस्यूत] याद वहीं किया हुन्छ **अस्सेसा देशो असिनेसा (सम १७ विदे** ₹¥ **=)** ! अस्सोई की [बान्धयुक्ता] पाधित माछ की पुरिषया (चंद १)। अस्सोई की [आन्ययुर्जी] प्राधित मास की ममावस (बुन १ ६ दी) देवी आसीया । अस्सोकंता को [अन्धरकान्ता] संगीत-सम प्रतिक सम्बंध द्वाम की पांची मुन्होंना (অ ७)।

w

अस्रोपस्य दि [अस्रोतस्य] मुक्त के संयोग्य (मुर १४ २)। **शह** य [अ.स.] इत यसी ना मूचक शस्यस—

१ सब बाद (स्वय्त ४३ ६ ६१: दुमा)। २ बदरा मीरु 'बिजात सीमें यह शेत बंबाई बयत

समहासम्बद्धाः पडिन्मपालको मुपुरिमारण में होय वं हीन ॥ (प्रामू ३)।

३ मैदर (हुना) । ४ प्ररत । ३ मयुवय । ६ प्रतिनवन उत्तर (बृह १)। ७ मिरीय (का ॥)। व समार्वता मास्त्रवितता (विने १२७६)। इ. पूर्वपद्ध (विमे १७ ६) । १. ११ नावय नी सीमा बडाने क रिप्सीर पाद-पूर्णि न मी इसरा प्रयोग होता है (सूछ १ ७ वंका 1 (35

**बाह न [अहन्] रिव**म दिन (या १४४वाम)। आद्रता[अथस्] नीचे (नुर ३ ३ )।, स्माग प्रसिद्ध विकास-सीक (मूरा ४)। स्य दि किया नीचे प्राह्मा निम्ननिका (प्रथम १ २ ६१)।

आहर्ति अपरती बह पह (पाप) : आदत्व[द] दुख (४१६) ।

ब्रह् न [अप] पर (ग्रम) । क्षद्र केरो अदा (दे १२४४ क्या) । बाम बससो प ["इस] इन के धनुपार, सनुबन में (प्रोप ५ मा न ६)। करताय श्राय म [ रायान] निर्देश चारिक परिपूर्ण श्रेमन (टा १,२ नर १६ युगा) । वन्श्यवसीतय रि ["द्रमानस्वन] परिपूर्ण नंबन वाला

(मन २४, ७१। न्छ्यं देनो अहार्छद (व ८)। रिष रि: स्थ्री दीत-दीत रहा हता अव्यक्ति (टा १) । स्थ पि चिरी बाग्दरिक (दर ६ १)। व्यद्धरूप वर [प्रधान] प्रपान के दिगाय में (शय १५) भारः व [अंशिक्ष्य] सीसार-नुवय सम्बर—हो सन्ता (ना" क्यी १) । अध्वार वे अर्थ रार्ड विश्वमान नवे (अप १११रण रोः

अर्द्रशरि वि [अर्द्रकारिन] प्रतिमानी गनिष्ट (पवड) । आइ(जिसन [आइ(निंश] एत-दिन सर्वस (पिम)।

शहकम्य देखो अहेकम्य (पिंड ११०) । अह्रण वि अधार निर्धन अनरहित (विसे २=१२) । बाह्य जिल्लास न [अहनिश] रात-दिन निरुवर (माट) १ खद्वा व [ अधस्तान् ] गीने (मन)। काइस वि जिसम्भा विरायम्य इत्रयान्य (तुर २ ३७)।

अहमिस रेको अहण्णिस (नुपा ४५२) । अहम वि अध्या धनन नीच (दुमा)। अहमीत वि [अहमन्तिया प्रमिमानी प्रविष्ट (জ १)। अदमहास्था। ची जिल्लाहरिका में अहमहमिगया रने पने ही बार्ड ऐसी अहमहमिगा वटा, धन्तुत्वरहा (गा मुपा दक्षा १६२३ १४०) । अद्दर्भित पुबिद्दमिन्द्री १ उत्तय-येगीय

ध्यने को इस्त्र सममन कामा वर्षिष्टा 'संपद् पूरा चनायो नरिव । श्रमित व्यक्तियां (गुर 1 (3F\$ 9 **भाइ**न्स केलो आस्पस्य (शूस ११ २ : वस् नवं ६ सुर २ ४४० मुना २१०- बाजु १३६)। अहम्म वि [अधर्थ] वर्गजून वर्गरीहरा र्मसम्बादम् (सल्) ।

पूर्ण स्वाबीन देवनादि विशेष देवेबक धीर

बनुत्तर विमान के निवासी देव (इक)। २

अहम्माणि वि [अहम्मानिय] वर्जनानी (भागम)। बाइन्सि वि [अभिमिन्] वर्ग रील, पती (जुमा १७२) ३ अहरियद्र वेली अधरियद्व (धन १ (शक)।

(विकार ११)।

अहाँ स्मय वि [अधार्मिक] शक्ती पानी अद्य रि [अद्य] १ व्युवज वव्यानिद्य (इस क पत्र ४१)। र समतः अन्तरिक्य (नुप २ २)। ३ जो धनरी शरफ निवा गमा हो (भीर १६) । ४ लगा, नुत्रन (जा () i

आहर पि दिं बराफ, मसमर्थ (दे १ १७)। बहर र [अभर] १ होठ, योह (स्रीर)। र जिलीचे का शीचना (पर्सुद ३)। ३ शीच धवम (पएइ १ २) । ४ दूमध कन (मामा)। गा और गिति भनोनति बुर्वेदि तीच विच 'प्रहरतई निवि कम्माई' (पिष)। महरिय दि [अधरित] तिरस्तत (दुपा 1608 काहरी की [बावर्छ] केवल-शिका, जिस पर

नसाचा वर्गेटह पीसा माठा है बह पत्पर, शिनक्ट (बना) । "स्पेट्र दू ["से 🖫 निनने पीमा बाता है वह फ्लब्द, सोहा (उवा)। आइरीक्य वि [अभरीकृत] विरत्हर यव मिरात (मुपा ४)। आह्रीम्य वि [अघरीम्व] विस्त्रव 'क्परेश बरंबीय, नरस्यक्रमिमे महत्यई देवि ! ध्याचेनुबनतेशं वर्गन 📢 प्रात्तकताएं (भूपा १६) ।

नहरुष्ट दून [समरोध] गीने का होठ (मधह १ १ ई १ बक्त पद्र)। अहरेम केला अहिरेस । प्रतुरेगद (हे ४ 16 25 जहरेमिल वि [पृरित] पूरा तिया हुन्य (¶ HI) 1 अइस वि [अफार ] निप्छम निर्देश (बानू १६६४ एका) । अहर्सद् व [धमासन्द] बीच राख का बनम (पण ७ ) ।

अहसंदि देनो **अहासंदि** (पर ७ ) । अक्ष केरी अद्या (दे १ ६७)। सहबद् (शा) देनी अहबा (गुमा) । अद्वत ) य [अथवा] १ वाक्यासंवार में अहवा प्रिपुत्त निया बाता सन्यय (प्रमु लूम १२)।२ ना सक्या (बृह १) लिइ शापेबा व हे हे ६ ६७)। अहरू हेरो समस्य (श ११ )। अद्याप र [ अधर्मम् ] चीना नेर-राष्ट्र

अहरूमा धी [दे] धततो नुसदा धी (दे १

tc) i ं अद्दः सः[अद्दः] १त सवी ना भूवक यस्य—१ सामन्यतः । २ वेदः । ३ सावर्षः २ दुःवः । ४ सावित्यः प्रवर्षे (१ २, २१७ सा १४ वप्युः सा १४६) ।

अहा च [यथा] वैसे मास्त्रिक बनुसार (ह १ २४१)। द्वांन्य वि [ च्छान्य ] १ स्वक्कृत्दी स्वरी (दर व १६ टी)। २ न मरवी के धनुमार (वद ६)। आय वि विजाती १ मा प्रावरण-पहित (हे १ १४३)। २ न जमा के सनुमार । व जैन साबुधों में बीखा काल के परिमाण के मनुमार किया जाता बन्दन नगरनार (बर्म २)। गुपुर-शे की ितुपूर्वी वयात्रम अनुस्म (खावा १ १) परुम १ =)। दद्य न ["तस्व] तरव के क्नुनार (सद२१)। तचान ["तप्य] माय-मध्य (सम १६)। पश्चित्रण वि ["प्रसिक्त्य] १ डव्बित योग्य (घीष)। २ क्रिकि सवासीग्स (विचा ११)। पवना वि [ प्रयुक्त] १ पूर्व की तरफ ही प्रवृत्त सर्गर म<del>नित</del> (लापा १: )। २ न सारमाका परिकास-विशेष (स ४७) । पविचित्रस्य म ["प्र**कृत्ति**करण] घारमा का परिलाम-विरोप (कम्म )। बायर वि [बावर] निम्नार, सार-पहित (खाया १ १)। सूब वि "मृत] वारियक बस्तविक (ठा १ १)। राश्मिय रायणिय व ["राक्रिक] बया प्रमेश बडे के कम सं (सामा १ १ माचा)। "रिय न ऋजी गरनता के बनुसार (धाचा)। सिंह न [है] बसोचित (छ। २ १)। २ वि कवित योग्य (वर्ग १)। राय न ["रीत] १ पैति के सनुसार । २ स्वभान के गाफिक (नग ६,२)। संदर्ध [फन्द] बार का एक परिमाल पानी से मीजा हुया हाथ जिठने समय में मुख जाव ज्वाना समय (कप्प) । यगास न ["बस्रास्] धवनारा के सनुभार (नूम २ ६) । बच्च नि ["परव] पुत्र-स्पानीय (भन ३ ७) । स्थिह वि िसंस्तृत है शवत के मोग्य (घाषा)। संवि भाग पू ["संदिभाग] शापु को बात देना (उरा)। समान ["सन्ध] वालवित्रता नवाई (पाया) ६ सचि व [ नकि] शक्त के मनुगार (पंत्रुट)ः सुक्तन ["सूत्र] यादन के यनुनार (सम ७३)। सुद्द न

िमुखा रफ्तानुसार (एतमा १ १ मन)। मुद्रुम वि [स्पृह्म ] सारमुट (भग १ १)। रेखो अद्ध । अद्याजेद वि [यसाल्ज्य] यगमुजाट (रूप) रफ्यानुसार (समय) (सामा २ ७ १ २)।

स्वश्चान्त्राव (काय) इन्द्वानुसार (काय) (वाया २ ७ १ २) । अञ्चानुसार (काय) (वाया २ ७ १ २) । अञ्चानंत्रि पुं [ययाळन्त्रम्] 'ययानम्य' प्रतु हान नरने बासा पुनि (पन ७ ) ।

भहासंबाह वि दि | निप्कम्प नियत्त (निष्क २)।

अहासक वि [अहास्य] इत्य-प्रीत्व (पुना ६१)। अहाह व [अहाह] देवो अहह (हे र

२१७)।
आहि देखो अस्ति (गवड पास पंचर ४)।
आहि वा (अधि) इन वार्ष का सुचक सम्यय—
१ वाषिका विदेशको प्रिहित्तं वाहितार्थाः
२ पर्वाचकार, कताः व्यक्तिगर्यः। ३ पृथर्वे
'महिद्वार्यः) ४ जॅना ज्यर् वाहित्तः।

साहित्युं । इंक्स कर्यः वर्ष्युं पहित्युं । इस्ति इंडिकिंद् । द तेष विषयं (न्यूय्य ११ मा (चित्र)। व्यक्षणा क्षे [व्यक्षणा निर्माण होते । व्यक्षणा क्षे [व्यक्षणा निर्माण होते । व्यक्षणा क्षे व्यक्षणा क्षे वृद्धिक । व्यक्षणा क्षे वृद्धिक । व्यक्षणा विषयं विषय

महिल्लान दि] क्षोत्र प्रत्या (दे १६६ पत्र)।

অহিমান গ [জমিজার] পুরীগরা থান বাগী (বা ৭৭)।

भविषाइ भी [अभिज्ञाति] दुर्भागता (पर्)।

अहिआर पुँ विं वोक-रात्रा वीवन-निर्वाह (दे १ २६)।

अहिक्स वि [ब्रि] व्याप्त प्रवित्त (गठण)। अहिक्स वि [अभियुक्त] १ विद्यान, परिव्रत । २ उपठ प्रयोगी (ग्राप)। वे शहु वे विद्या हुमा (बेग्री १२ ि)।

अहिकर नक [अ(स + पूरय्] पूरा करना व्याप्त नरना । नर्पे पहिक्करणित (नडा) । अहिकल नक [ बहु ] यनाना करन करला। धहिऊतद् (हे४ २ ८ पड कुमा)।

अन्तः। । अद्विजेय पुं [अभियोग] १ संबन्ध (पदर)। २ बोजारोपए (स २२६)। देखो अभिजाल (प्रति)।

(भार्ति)।
आर्थित् पुंक्तिमन्त्र] र छनी का रामा
आर्थित् पुंक्तिमन्त्र] र छनी का रामा
अप्रतान (भारत्र र)। २ सेप्र छन्पं (कुमा)।
अप्रतान [चुर] बामुस्थिनगर। युरमाह पुं
["युरनाच] विष्णु अस्त्रुत्र (भारत्र २६)।
आर्थितमा कि [आर्थितम्ब] विद्यान करने।
अर्थितमा कि स्वर्थितम्ब] विद्यान करने।

बाला (बीव ७४७)। अहिंसण ग [आहिंसन] प्राहंखा (बागें १)। अहिंसय रेकी अहिंसना (नयह २ १)। अहिंसा की [अहिंसन] दूसरे नो किसी प्रकार से दुख गरेता (निसूर पर्ने १ सुधा १

११)। अहिंसिय वि [अहिंसित] बमारित धरी वृत्त (मूम ११४)।

कहिन्द्र्य देनो अभिकृत्य वह अहिक्द्र्यन (पंचन ४)।

अहिर्कक्षित वि [अभिक्षेषित] प्रमित्रापी शब्दुक (संग्र)।

अहिंकन्ति यो अहिंक्जिर(सूम १ १२ २२)।

अहिक्य वि [अभिकृत] विश्वका स्वितार काता हो यह, प्रस्तुत (विश्वे १४८) । अहिक्यण देवो अहिमस्य (तिष्टु ४) । अहिक्यणे देवो आहिमस्या (ता ६) । अहिक्यर देवो अहिमस्य (क्य १४ १७) । असिकारि हेवो अहिमस्य (क्य १४ १७) ।

आहिकारि देवी अहिगारि (रंगा) । अहिटिच च [अधिकृत्य] प्रतिकार कर, धहेरव कर (बाद १)।

बाहिकसाम न [के] बरासंग, उनहना (दे १ ११) ।

अ इक्तियत्त (र [अ'धेक्षिप्त] १ विरम्हतः। २ विक्ति । १ स्वास्तितः ४ परिस्यकः। ॥ सिम्न (बार) ।

अहिक्स्सम् नक [अभि + क्षिप्] १ विस्त्वार करता । २ कॅरता । २ क्रिया । ४ स्थानि करता । १ सोह देस । महिति वह (क्य) । धरितिकर्साह (न १२६) । बहु अहिक्सर्वेत (पदम ११, ४४) ।

```
श्रद्ध य [अय] इर दली का मूचक सम्मा---
 १ धन बाद (स्तप्त ४३ व ६१: पुमा)।
 २ प्रकाशीय
 विकार सीसं शह होत बंदर्ग चयह
                       सम्बद्धाः सम्बद्धाः ।
  पडिनश्रपालले सुपुरिचाल वे होद से होन्ड ॥
                          (प्रामु १)।
  ३ मैक्त (दूमा) । ४ प्रता । ३ प्रमुख्य । ३
  प्रक्रियम बत्तर (बहु १) । ७ विक्रेप (ठा
  )। वदावंटा वास्तविकता (विमे १२७१)।
  १ पूर्वपक्ष (विसे १७६६) । १०-११ वालय
  की शोबा बबाने के लिए और नव-पृत्ति में
  भी इसका प्रमीत होता है (सूम १ 🗢 पंचा
  $ £) |
 खाइ न [श्राह्म] दिनस दिन (या १४ नाम)।
 बाइ स जिल्ला नीचे (गुर १ ३)।
    स्रोग वृं ['स्रोक] पाताल-बोक (मुपा ४ )।
   रेब वि [देस] तीचे रहा हुआ निम्म रिक्ट
   (पडम १२६३)।
  अह प [ शहस्] यह बह (पत्र्य) ।
  क्षाइन दि दुन्य (दे१६)।
  अह् न [क्ष्य] नान (ग्राय) ।
  लाइ देलो बाहा (हु१ २४२ थूमा)। इदम
     दमसो स ["क्रम] बन के स्तुनार, स्तुबन
    से (भीष ६ मार सं ६)। वस्थाय सामा
    न [ क्यात] निर्दोप शरित परिपृष्ट संबन
    (ठा ४,२ 🖛 २६) हुमा)। क्यायसंज्ञय
    वि [क्यावसयत] परिपूर्त संबग वाला
     (मग २४, ७)। व्यक्त देशो शहारीत (वी
     t)। त्य मि [स्प] क्षेत्र-तर चा ह्या
     मचास्कित (ठा १)। रेख वि 📳
     बास्तरिक (ठा ६ ६)। "प्पद्वाण ध
     ["प्रभान] प्रवात के प्रियान से (मन १४)।
    भरः प [अनिक्रम्] स्वीरार-नुबद
     मस्पर-हाँ मन्द्रा (तारः प्रयो १) ।
    भक्षर पुं [भारतार] श्रीमान, वर्ष (शूध
      १ ३ सम्प र}ः
```

w

1 () 1

(मुर १४ २) I

धारसोरश देशी सनसरय (पि ७४° १५२

धरसोयम्ब वि [अग्रोत्तरम] मुनने के भयोग्य

(मबड) 1

(पिन्)।

२८१२)।

(नाम)।

आहेपिस न [आहर्तिशा] एत-विन सर्ववा

আছুজ ৰি আমন | দিৰ্ঘদ খনআছিচ (ৰিট

अहरिज्यस न [सहनिंश] रात-दिन निरुत्तर

काइन्स म जिमस्तान ] नीचे (मग)।

**शहकाम देवी शहेका**म (पिंड १९६) ।

```
स्राह्म नि विश्वन्य विश्वन्य हत्तवाय (सुर
 २ ६७)।
कद्वासस्य १को बाद्वविकास (गुपा ४९२) ।
अहम वि (अधम ) धवम नीच (धूमा) ।
श्रहमंति वि जिह्नमन्त्रित् धनिमानी वर्षिष्ट
 (æ १)।
लक्ष्मक्षिया । की [लक्ष्मक्षिका] में
शहमहमिगया । इंडरे प्रेमे हो बार्क ऐसी
अहमहिमा। भेष्टा क्यू कर्या (शा
      चुपा ६४ १३२। १४०)।
अहसिंद पूं [अहमिन्द्र] १ उत्तम-येलीय
 पूर्व स्वापीन वैषयादि विशेष स्वियक शीर
  यकुत्तर विभाग के निकासी केन (इक)। २
  बक्ते को इन्द्र समझने बाला गर्बिष्ट 'संपद
  पूर धनायो गाँख । समेनि स्क्रमिश (मूर
  १ १२१)।
 अब्स्म केवो अवस्य (तुम १:१ २) मरा
  नव ६) सुर २ ४४ सुपा २१८ प्रानु १३६)।
 बाहरमा नि [कामर्स] वर्तेच्युतः वर्तेपहित
  वैख्यानवी (धरा)।
 शहरमाणि वि शिहरमानित्र । प्रदिशली
  (भाषम)।
  आहरिस वि [अधिमम्] वर्गे रहित, शारी
   (सूपा १७२)।
  अवस्मिद्ध केवी अवस्मिद्ध (वन १० २)
   (एव)।
  अवस्थित वि [अवार्तिक] धवर्गी पापी
   (विवार १)।
  भाइय वि [आहत] १ प्रमुख्य प्रव्यविद्या
   (ठा ८ पत्र ३१)। २ यज्ञतः शक्तिएडत
    (सूच २,२)। ३ जो बुत्तरी ठएठ सिया
```

क्या हो (चंद ११)। ४ लगा, बूतन (घन =

()

```
आहर र् [अघर] १ होठ, घोड (एपि)। २
 विनीचे का नीचना (पर्सा १ ३)। १
 गौच प्रकम (परहु १२)। Y दूसरा धन्य
 (प्रामा)। गइ की [शति] समोनति
 पूर्वित नीच र्यात 'चाएका निवित्रमार्थ
  (पिश)।
अव्स्थि वि [अधरित] तिरखत (पुरा
  w) I
अहरी की किथरी देवल-रिमा निस्पर
  नडाका वर्षे छ। योगा वाता है वह पत्नद
  सिकाब्ट (तथा)। "क्रोटू दू ["स प्र] वितसे
  पीश बादा है वह परवर, बोड़ा (स्वा) ।
 बाहरीन्डम वि [बाधरीन्डत] विरश्रत धन-
  पश्चित (भूपा ४) ।
 अक्रीमूय वि [अवरीमृद] विस्तृत
  अयरेल बरतीय, भरतक्लमिम महत्त्रई देवि ।
  व्यक्षेत्रुवमधेर्वं वर्षात सुद् स्वस्तव्याएं
  (युरा ६६)।
 अब्स्ट्र पुन [अबरोध] ग्रेवे का होठ (पर्स
   १२ दे१ यथ पद्)।
 अहरंश वेली अहिरेस । महरेमद (हे ४
   १६९) 1
 अहरेमिश वि [पूरित] पूरा विद्या हुन्य
   (THI) 1
 ঋহন্ত বি [অদন্ত] দিখেল সিংক্ত (সার্
   १६७ रंघ)।
 बाइलंद न [बाबालम्द] पौच राखना समर्थ
   (पथ भ )।
 धाइसंदि देशो धाइस्तिवि (पन ४ )।
 अहब केवी अहवा (हे १ ६७)।
  अद्वर (सप) देवी अद्वा (दुमा) १
  ध्यक्षण १ म [अथवा] १ वाक्या<del>तं</del>कार में
 बार्वा प्रमुखं किया बाता सम्पद (पत्
   सूचर २)। २ का धवना (ब्राइ रा निर्द
   रा गंधा साहित ६७)।
  आहम्य केलो असक्य (पा ३१)।
  अवस्था र् [ अवर्षम् ] चीना वेर-राज
   (धीप) १
  अहरू या की [के] यक्ती दुलटाकी (के रे
  सदद थ[अदद्] इत सर्वेता पूर्ण
```

सम्स्य—१ सामन्त्रखः । २ लेदः । ६ सावर्षे । **४ इ.स. १ माविस्य प्रवर्ष (ह** २ २१७ मा १४) कण् । गा ११६)। अहा च [यदा] पैसे माफिक बनुसार (ह १ २४१)। सन्द वि व्यव्यो १ स्वक्युन्दी स्वेरी (का वहेदे ही)। २ न-मरबी क सनुनार (वव ६)। जाय वि [\*आस] १ लग्न प्रावरण-रहित (हे १ १४५)। २ न बाल के सनुसार । ३ वेन साकुर्वी में बीधा काम के परिमाण के धनुसार किया जाता बन्दन नगरकार (वर्ग २) । शुपुत्रनी की ["तपुर्वी] स्वास्त्र चनुरम (खारा १ ३) पस्म १ ६)। तस न ["तस्त्र] तरन के धनुमार (मन २,१)। **उच न** ["उप्य] मन्य-मन्त्र (सम १६)। पहिरूत वि ["प्रतिरूप] १ समित योग्य (पीप)। २ हिक् वकामीरय (निपा १ १) । पत्रत्त वि [ प्रकृत्त ] १ पूर्व की तरह हो प्रकृत अगरि वनित (लामा १ ६)। २ ल बारमा का परिलाम-विशेष (म ४७)। वृत्रिकारण न ["प्रयुक्तिकरण] धारमा का परिएाम ( विधेन (रम्म ६)। बायर वि विश्वदरी निस्नार, सार-रहित (ए।वा १ १) । मूब<sup>ा</sup> वि ["भूव] वारिवक बास्तविक (छ १ १)। राइतिय रायजियन [°रामिक] स्या क्येष्ठ बडे के क्रम स (ए।या १ १ द्याचा)। रिय न [ऋतु] गरनता के क्यूबार (माना)। रिद्रन [क] स्थानित (स्र २ १)। २ नि व्यवित वीस्य (बर्म १)। दीय न [रोत] १ रीति के बतुसार । २ स्वमार माफिन (मय १, २)। क्षेत्र वृं ["सन्त्] बार बा एक परिमाख पानी से मीका हुआ शप बितने समय में भूष जाव बतना समय (रण) । बगास न ["बद्धारा] धवराश के बर्दमार (मूघ २, ३) । इद्य दि ["कृय] पुत्र-स्थानीय (मध १ ७) । संबद्ध नि [ संस्तृत] रामन के मोग्य (माका) । अवि-भाग र् [ सिविभाग] माधु को बात देना (घरा)। सवान [सन्य] नास्त्रीतना सवाई (मावा) । सचि न [ ग्रकि] शक्ति के सनुभार (र्थम् ४) । सुन्त न ["सृत्र] यागम के यनुनार (सम ७३)। सुद्द न भदिम् व पर [दह] रनाना दहन

[सुका] रण्यानुसार (खामा १ १ मप)। सुहुस वि [ सुह्स ] सारमूत (भग ३ १)। वेको अहा। अहासंद वि विद्यासम्द विवासमात (काल) क्ष्मानुमार (समय) (धाचा २ ७ १ २)। अहार्जनि प् विधावन्तिम् "पपामन्" पनु हान करने वाला मुनि (पन ७ )। **छाहासँहाड वि वि**। निष्क्रम्य निषक (निष् अहासक वि [अहास्य] हान्य-एहित (गुपा 48 ) 1 लहाइ ब [लहाइ] देवो महह (हे २ अविद्विषेको अभि (गउ४ पास पंचव ४)। अहि च अधि देन पनी का सुनक भव्यय---१ वाक्तिक किरोपता 'वाहिगंच बहिमार्स' । २ व्यक्तिर, सक्ताः 'व्यक्तिय'। ३ ऐसर्थं, क्रीन्द्राएएँ । ४ कॅबा, क्रपर, पहिंद्रा । अद्वि पू [अद्वि] १ सर्पे साँप (पर्एए १) प्रामु १६ १६: १ ४)। २ शेव नाव (पिय)। ब्द्रचा भी (ब्द्रजा) नवध-निशेष (जावा १ १६ ती ७)। सब पून ["सूत्रक] सांप का पुरा (खामा ११)। अद्र प्रति] शेय नाम (सम्बु ६)। विश्वित ए िंदुश्चिक वर्ष के पूत्र से सन्दर्भ होत वापी वृध्वक वाति (कृमा) । अदिअल म [दे] औप पुस्ता (दे १ ६६ यद्)। थहिमाञ न [अभिजात] दुत्तीनता यान-श्रामी (या १०)। व्यद्विभाइ श्री [व्यभिज्ञाति] पूर्णानता अह्ञार पू [ब्रे] सोध-यात्रा श्रीयत-निर्वाह ( 48 38) अद्वित्त वि [वृ] व्याप्त रहनिस (गरु)। अद्विच रि [अ भयुक्त] १ विहान्, परिवत्त । र जयत वयौदी (पाप) । १ राष्ट्र में पिरा ष्ट्रमा (बेग्डी १२६ ि)। अहिऊर मक [अन्य + पूरम् ] पूर्ण करना व्याप्त करना । कमें चन्त्रिक्तिकान (मदह) ।

करना। शाहिजसद (हे४ २ ८ पड चुमा)। अहिओय वं [अभियोग] र पंबन्य (पर्वा)। २ बोपारोग्ल (स २२६) । देखो अभिजीक (मपि) । अहिंद पं [अहीन्द्र] १ सर्पे का राजा शेव नाग (बण्डु १)। २ थेष्ठ सर्प (कूमा)। बुर न िपुर] क्षामुक्ति-नगर । युरणाह व िपुरनाथ निष्ण सन्युत (सन्दु २६) । अहिंसग वि अिदिसकी दिशान करने बासा (धोव ७४०)। अद्विसण व [अद्विसन] प्रविसा (पर्न १)। अहिंसय धको अहिंसना (पएइ २ १)। गर्दिसा की जिहिंसा दूसरे को किसी प्रकार से दुःचान देना (निचु २) वर्म ३ समा १ 1 (33 क्षाईमिय वि [भिईसिड] धनारित धरी-दिव (शूप **र**ेर ४)। अहिष्या देवो अभिक्या वर अहियं यंत्र (वंचन ४)। अहिक्कि र विभिन्नक्तिन् विभागिया इन्द्रुक (सरह)। थाहिकन्य क्लो अहिमंत्रिय (मूम ११२ अद्देश्य वि [अधिकृत] विस्का प्रविकार बमता हो बहु, प्रस्तुत (निसे १४८)। अहिकरण रको अहिगरण (निष् ४)। अहिष्टरणी रंगो महिगरणी (ठा ८)। क्षाह्यार रेवो अदिगार (एत १४ १७)। श्राहिपारि देलो सहिगारि (रंमा) । श्रद्धिय य [अधिकृत्य] प्रविकार कर, सर्वरय कर (मापू १)। भहिष्याम व [वे] ज्ञानीम जनहता (वे १ अ इक्नियल वि [अ पश्चित] १ विरन्तः। २ निन्दितः । ३ स्थापितः । ४ परिवयः । १ धिम (नार)। ऑहेक्सिय गर [अबि + क्रिप]े १ तिस्मारकरनाः २ फॅबना। १ निन्तताः ४ न्यांति वरना । ३ चीन देना । भ्रहिति ब" (उत्र) । महिल्सिसहि (स. ६२६) । बर

अद्भिग्यर्थन (परम ६१, ४४) ।

अहि<del>व केव</del>—महिद्रा पाइअसहमहण्यको 6 जहिआण सर [अभि + का] पहिचानना । अधिगरण पून [अधिकरण] १ युव सन्गर्ध स्रक्रिकत्वपुपि भिभिन्नेपी १ तिस्कार। मवि प्रक्रियाणिस्स्ति (शौ) (पि १९४)। (अप प्रत्रे)। २ झर्टवम पाप-अर्मे से २ स्वापन । ३ प्रेरखा (मार) । व्यक्ति (स्र ५७२) । १ पान्य-भिन्न वस्र अहिजाय वि [अभिमात] दुनौन (सम ॥ अहिसिन रेची अहिकिसय नर अहिसिनंत बस्य (हा २.१) । ४ पाप क्लक किया 44)1 (র ২৬) ঃ (शाया १ १)। ५ माभार (विसे व४)। अहिसून देखो अभिस्त । एड. अहिसूनिय श्रद्धिंग देखी श्रद्धिय = यक्ति (विशे १६४३ क मेंट, उसहार (शुद्ध १) । ७ कशह, विवाद (भग)। tî) ı महिम्च देवो अभिन्तुत (प्रमे ४)। (इष्ठ १)। प्रविधाका उपकरश भीहकेश क्यद्वितीर सक दि दे १ पक्टना । २ मानात अहेळासक [अभि+इ] पडना सम्बास य राज्यं इनजनसम्प्रसम्प्रहमहिनरहाँ (पिने करना । प्रतिचीराः (धनि) । करता । बहिनाइ (बंद २) । वक्क व्यक्तियाँत ६१) : क्य. कर वि "कर] क्याकारक व्यक्तियं वि अधिगम्बी धविक कव गला (शय १२ २) याचा)। विशियास्त्री अड्डिमात्र (स्र १६१ टी ज्या)। र्रह-(गवड)। "किल्बा पाप-जनक **अ**ति प्रीति में से अहि ञिक्ता अहिता (उत्त १ सूर्य १११) अदिगम सक अधि + गम रिकलना। बानेवाची क्रिया (परहर २)। सिर्दात हेक कहिकार (रह ४)। २ निर्णय करनाः ६ ब्राप्त करनाः इ पं भिद्धाना बाल्यंतिक सिद्धि करनेवासा कड़िक वि किंचियमी क्यूप की बोरी पर अद्विगम्स (सम्म १६७)। विकास्त (सुब १ १२)। चड़ाना हुमा (बाए) (दे ७ ६२)। स्प्रियम एक स्थिम + गम**े** १ सामने अहिगरणी की [काधिकरणी] नोहार का अहिता ) वि जिसिको बानकार, नियुक्त बाना २ पासर करना । इर अद्विशस्य अहित्यग (पि २६६ प्राक्त रस)। एक प्रश्वरात (भग १६ १)। स्रोडि की (मख)। िलोटि विद्युर धविकरशी रखी बासी **छाहित्रक न (अध्ययन) पठन धान्यास (विसे** आहिएस र् [अधिगम ] १ जल (विशे है बढ़ कक्ष (का १६-१)। ७ ही) । € 5)1 अहिज्याम (शी) देखे अहिण्याम (प्राप्त ४७) । भहिगरणिया ) श्री [आधिकरणिको ] देशो चीनाईएनहिनमी मिन्द्रतस्य दामीवसमनावे बाह्रिकानिय नि (जन्मापिट) पाठित पहाना जिश्विगरणीया । अश्विमरज-विश्विमा (सप (धर्म ९)। २ उल्लाम्म प्राप्ति (दे ७ १४)। क्षमा (क्य व ३३)। र प्रद पार्वर का कारोग्र (विले २६७६)। र ठार शतकरको। खहिज्जिय वि [अमीत] पठित वस्यस्य (दुर ४ सेवा, व्यक्ति (सम ३१) । ३ न, एक व्यक्ति अद्विगरी 👣 मनपरिन, स्त्री ग्रथयर (श्रीव < १२१ उप ४६ टी)। के प्रत्येश से होतेवाली सदर्भ-प्राहि---मम्प-3)1 अहिक्किय नि [अमिष्यित] सोम-प्रीत मन (तुरा ६४=) । नद् की ["रुद्रि] १ अक्रिगार पृक्षिधिकारी १ केवन संपत्तिः धमुख्य (भन ६ ३)। सम्बद्ध वा एक मेद । २ सम्बद्ध वासा 'निवसिक्षारणुक्य' कम्मलभिक्षियं विदिश्लामी **महि**ट्ट शक [ अधि ÷ प्ता] करता । पहिट्रप (पत्र १४%)। (मुपा४१)। २ हक क्या (सुपा ३६)। ( RT & Y ?) 1 **भदि**गम रेगो मभिगम (चीप चे ३ प्रस्तान प्रस्त (प्रिमे ४०७)। ४ ग्रन्थ-अहिट्टम नि (अधिष्ठक) यनिश्राता विकास, विकास (बर्बु) । ४ बोग्यता, पावता (द्वासू गढड)। अद्विगमन म [क्यिगमन] १ ज्ञान । १ **११**३) । 'व्यवंदीपनिधरिषु, न निविज्ञा न शेहए। ज़िर्मय । ६ माप्ति चनसम्ब (निन्डे) । महिगारि देवि मिथिकारिन् देशपत निग्रीबार्शक्तेहाए, बुक्बनुसमहित्रया व्यक्तिगारिय । चर, रात्र श्लिक वताबातः र्थाद्रगप्रय रि (अधिगम्ड) वनलेनला (44 4, 22) ! बत्तनानेपाला (पिने ६ ६)। 'वा क्युचहिनायै धमानयो क्य श्रीम्य करो' अदिट्रण देखो अदिट्राण (पंचा च ३६)। (युपा रेष्ट्र का रूक)। २ पान बीप्य (प्राप् अदिगमिय वि [अधिगत] १ शता । २ अहिता वक [अभि+स्वा] १ ऊपर बनगा। १६६, मल) । निविद्य (दूर १११)। २ बायय देता। ३ छ्ना, निवास करना। आंद्रग्रम देनो अद्दिगम = ग्राॅि + गर्। भद्दिगिष व [अभिष्टल] व्यक्तिर करके ४ शतन शरमः । १ करता : **६ ह**राना । ७ आहराम्य रेपो अहिराम = यति + गर । (33 (35 775) व्यवनका करना। च क्रार चड्ड बैठना । ध आंद्राय रि [अभिदृत] १ प्रमुख (ग्राप्त अहिमाय र्रु[अधियात] धारतानत प्रापन वरा करना । बरिद्व इ (निवृद्द) · चा सहि ३६)। २ न प्रस्तात प्रसंद (राज)। (नरा) । ∝ेहिं इवं रक्व" (स.२.४)। सहिद्व का(ति र्भाइनय नि (अधिनत्ती १ क्लानस्य प्राप्त भद्दित्रचा औ [अद्दिणसूत्रा] वयरी-विशेष २१२ ४६६)। सा शहिद्वत (निषु १)। पुरुवंगन देश वी प्राचीन राजवानी (निरि (बत १) २ ज्ञाठ(दे६ १४०)। ६ क्षक अहिहिज्ञमाण (ठा v t) । चंद्र-र्ग ग्रेजर्प दुनि राज्यक्ति साधु (४४ १) : υc) I अहिट्टेडचा (निष् १२)। हेन्र अहिट्टिचए भौद्गर पूं [दे] धनपर (कीव १)। महिजाइ ध्यै [अभिजाति] दुनौक्ता (तत्र)। (TE 4) 1

अक्रिटाण न सिथिशनी १ दैठना (निक् र) । २ बाबयण (सुबर २ ३) । १ मालिक बन्मा (बाषा)। ४ स्वान, माध्य (स.४६६)। शहिद्वायम नि [अधिष्ठायक] यप्यश अभि पति (क्षप्र २११)। अहिटायण न [अधिष्ठापन] कार प्राना (निक्र १)। **अहिट्रिय वि [अधिष्टित] १ अध्यासित** (खाया १ १४)। २ अमीन किया हमा (स्पादा १ १४)। ३ माकल माबिह (ठा **१,** २)। अहिठाण न [अभिद्वान] चपान-प्रदेश (पर 532)1 अहित्य वि दे अभित्र पीकित गाँतहर्य वीन्त्रि पद्धे च (प्रम्य) । हाडिएंद देवी अभियंद । वक्र अडिएंद माप्प (परम ११ १२ ) कवक अहिणी विक्रमाण अहियंदीअमाज (गाट वि 244) I स्वत्रिपीतम् वेसी अभिगंदमं (परम २ ३ ३ अहिणोदि वि जिसिननियन् । बानन्य मानने बाला (स ६७७) । **अहिणेदिय देवो असिणेदिय (**पठम व १२३ स १४)। अहिणय केहे अभिजय (कप्पू: एए) । अहिलव पुंकिसिनवी १ ऐतुकल काव्य का कर्ता राजा प्रवरक्षेत्र (से १ ६)। २ वि मूचन नदा(छात्रा १ १ सूपा ३३)। अहिणवंसाण देवो अहिणी। **अहिणवेमाज देवो अहिन्छ ।** श्वाहिजाय देखो श्वाहिज्याय (मनि)। खड़िविबोड् पू [अमिनिबोध] शान-विशेष मविद्यान (परुए २१)। अद्विणिवस सक [ अभिनि + वस् ] वसना, खना। यह अहिनियसमाण (सुप्र २११)। सहिजिविद्य नि (अभिनिविद्य) यासङ्कपारा (E 201) | ठाहिषिवेस पु [बामिनिवेश] बायह, हठ (स ६२६) धनि ६६)। अद्विणिवेसि वि [अभिनिवेशिय्] पाप्ती (ft v x) t

अहिंगी की जिहि । नागिन (बका ११४)। अद्विणी देवी अभिणा नह अद्विणयमाण (सर व १६)। भविजील कि अभिनीकी हुए हुए रंप शासा (मजर)। अहिण सक अभि + नी स्तति करणा प्रशंसमा। यक अफिजसमाण (सर ३ ७७)। सक्रिप्प वि शिमिक्ष] येररहित सपुष्पपुत (बार६धः ६८)। अद्विण्याग न [अभिद्यान] चित्र, निराती (धर्मि १३)। अहिल्ला वि [अभिक्र] निपूर्ण ज्ञाता (हे १ 25)1 अदिवस वि अभिवसी वापित संवापित (बच २)। अहिचा देशो अहिच्य = पवि + इ । अदिवायम वि [अभिवायक] की वाशा राता (गुपा १४)। अविवेचमा शी [अधिवेचता] समिहाता देव (सपा६ कथा)। अहिद्दव सक [अभि + दू] हैरान करना। व्यक्तिवर्गित (स ११६) । यदि व्यक्तिवरसङ (स ११५)। अहिद्दुय नि [शिशतृत] हैरान किया ह्या (स ११४)। अहिमाम स्क [असि + शाव ] शैक्सा, शामने बीड़ कर जाना । नक्क. लाईकार्जत (से १६ २६)। अहिनाण ) देखो अहिष्याज (बा १६ सुना अविकाण } २५ )। भहिनिषेस वेको छहिजियेस (छ १२१)। धाहिएकुम सक [ प्रह्\_] प्रमुख करना । धित्रपुषक (दे४ २ १ यह)। श्रद्धि पश्चामित (रूमा)। कहिपच्चुम सर्व [सा + गम् ] ग्राना। प्रहि वच्चमद् (हे४ १६३) । अद्विपच्युद्धा नि ज्ञागत । धायात (क्या) । बाह्रिपण्युद्धा न [दे] धनुषयन, प्रमुक्षराह (t t. 48)1 छाहिप≅ सक विश्वीस + पन् ] शानने धाना। बह्निवर्वेति (पद १ ६) । अधिपास एक [ अधि + द्रम ] १ वर्षक

वेश्वना । २ समान रूप से देखना । ग्रिडिपासूर (सम १ द ३ १२)। अहिप्याय देखो अभिष्याय (महा क्यू)। अहिय्येय रेको अभिय्येय (छ। १ ३१ टी स १४)। अहिमय देशी अभिमय (मडड)। अहिसंज व अभिमन्य वर्षन के एक पुत्र का गम (कुमा)। अद्विमंत्रण वि [अभिमन्त्रण] मनित करना मन्त्र से संस्कारता (मनि)। बाह्रिसंविक वि (अभिसन्त्रित) मन है र्थसहरा (महा) । अहिमभ्ज स्रहिमण्या देवो अहिमंतु ( हुना पर्)। अहिमन्त् अक्रियम वि अिसिसरी धेनत इट (स छाडिमधर ५ डिमडिमकर सर्व रचि (पाम) । अक्टिमर प्रक्रिमिमरी यनाहिके नीम से इसरे को माप्ते का साइस कप्ते वाला (सुर १ ६८) । २ वनाविषातक (विसे १७६४) । अधिमाण ए अभिमानी एवं महंदार (बास १७३ सण)। अदिमाणि वि अभिमानिम् प्रभिमानी गर्विष्ठ (स ४३१)। अहिमार एँ जिमिमारी दूध-विरोध 'पर्त महिमाप्तारमं मन्यीं (क्वनि ६)। अदिमास १९ अधिमास, की मंदिक अहिमासय मार्च (मार १ निष् २ )। भहिमुद्द वि [अभिमुख] धंपुत्र, सामने छा हमा (से १ ४४ परम = ११० गन्नड)। भहिमुहिहुस ) वि [अभिमुखीम्ठ ] शायने अधिमुहिहुक है बायों हुया (पराय रेने १ ४ YX. 5)1 अक्रिय वि [अभिक] १ व्याश विशेष (पीत) ची २७३ स्वप्त ४)। २ क्रिके बहुत मन्दर्भ (मात)। अद्विष वि अद्वित पदिवन्द, शतु, दूरपन (महार मूपा ६६)। कहिय वि जिसीत पिठत सम्परत भाहिक-सुबी पहिन्तिन एक्क्सिक्कारपंडिनं सी' (शर Y EXY) I

69	<b>पाइअस</b> इस <b>इ</b> ण्णको	व्यक्तिस—अदिहा
	अहितरण पुन [अधिकरण] १ पुत्र नवाई (जप पून६व)। २ शर्समा पाप-नर्ग से	সাহিত্যাতা ভক [কমি + হা] পছিবালন। গৰি অহিতাতিভাৱি (থী) (বি ২২৫)।
र स्वापन । र प्रच्या (नाट) । छद्रित्वन रेको अहिक्तिय ग्रहः अहितिर्गतः	समित्रक्ति (सर ८७२)। ३ साम्पसित्र अप्रस	लहिजाय वि [अभियात] दुनीन (पार
( <b>e</b> ≠ B)	वस्तु(ठा२१)। ४ पापवनक क्रिया	11)1
खाहिम रेको श्राहिय = ग्राविक (विसे १९४३	(सामा १ ४)। ४ थानार (विसे ८४)।	अहिर्नुत रेलो अभिजुता। संह. अहिर्नुविय
द्ये)।	व सेंद्र, बाहार (बृह् १) । ७ कसह विशाव	(सन)।
<b>छहिलीर सक</b> ्षे ] १ पकन्तः । २ शासात	(बृह् १)। व हिंखाका उपकरण 'मोहिनेस	अहितुत्त केते अभिजुत्त (श्रो ५४)।
करना । यदिकीयः (मनि) ।	य रहम हनअस्यसमुग्रनपमुहमहिनरर्ग (क्लि	ল ছিলা গল [অমি + ছ] গ্ৰুপ, মন্ত্ৰত
श्रद्भिगंच दि [अधिराग्य] चरिक क्य नावा	११)। क्यू, कर वि [कर] क्वाह्मारक	करना । सहित्रह (संत २) । सङ्घः आहिस्त्रीत, अहित्यसात्र (स्त १६६ दी स्त्रा) । संहरू
(नवर) ।	(सूप १२ २ सामा)। फिस्मिक्ती	अहिकिता अहिता (का १ सम ११२)
क्षद्रियम सक [ क्षाचि + सम् ] १ वालकः ।	िंकिया] पाप-वलक इस्ति दुर्गीत में श्रे वालेवाली क्रिया (परदृष्ट २)। सिर्द्धन	हेक्क व्यक्तियार्थ (रस ४)।
र निर्दाय करना। 🤻 प्राप्त करना। 🕏	र्ष [ किद्धान ] बागुर्वनिक सिद्धि करनेवासा	कहित्र वि [अधित्रय] सनुव की बोरी.पर
अहिंगस्म (सम्म १६७)।	स्थित (स्थ १ <sup>°</sup> १२)।	बहुम्स हुमा (बार्स) (है ७ है २)।
अविराम पर [अभि + राम् ] १ तानने	अहिगरणी की जिथिकरणी नेहार का	अहिता है वि अभिक्षी बातन्त्र र निरूप
नाना २ भादर करना। इट अहिरास्म	यक करकरण (मग १६ १)। स्रोडि औ	आहित्र्या } (पि २६६) प्राक्तः स्त) ।
(মৃত্য) <b>।</b>	िलोटि जिल्पर समिक्यली रखी काटी	कार्बेळाज न [बाज्ययन] पळन, चानाच (विधे
अदिगम् पुं[अभिगम ] १ जान (विशे	है नह कहर (क्य १६ १)।	भ दी)।
[ x) i	1	अहिजान (री) देवो सहिएयान (प्रक वर्ध)।
पीनाइएमहिन्सो मिन्द्रनस्य खबोवसममावे	अहिन्सियश ) सी [आधिकरिंग्सी] वैद्यो अहिन्स्पीया ) अदिनस्प-किरिया (सम	श्रद्धिकासिय वि जिल्मापित । पाठित पहाना
(वर्णप्)। २ उपलब्स प्राप्ति (वे ७ १४)। वे द्वाव समेदि वा उपवेद्या (विसे २६७१)।	१ ) ठा २ १) तद १७)।	क्षमा (जन प्र ६६) ।
४ देवा, भक्ति (सम. ११) । ३ न. युव वादि	अविगरी दि भवशील स्त्री सवसर (बीव	काहित्विव वि [अभीत] पठित बाग्सत (दुर
के चपहरा सं होनेशाली  स्वर्ण-प्राप्ति –सम्ब-	3)।	च १२१३ कर १३ टी) ।
क्य (मुता६४) । स्त्रु की किकिश	्राचित्रार पूँकि भिकारी १ केल्च संपत्तिः	अहिम्मिय वि [अभिन्यित] सोम-प्रिव
मानदार का एक भेदा र नावत्व बाला	'नियम्बिमाय्युक्तं बन्मशामिद्वर्गं विदिश्सामी	धनुष्य (बद ६ ६)।
(पर १४३) ।	(पुपा ४१)। २ इक क्ला (पुपा १६)।	अविष्ठ रङ [अभि + छ] करना। समि <u>ष</u> ्टर
अदिगम रेनो अभिगम (धीर वे = ३३	वे प्रस्तान प्रसंग (विमे ४८७)। ४ ग्रन्थ-	(इन्ड ४ ४)।
सदद)।	विकास (वसू) । ३ बीरयता, पात्रता (इति	अहिट्टग रि [बाभएक] धरिहाता विवासक,
अहितमन त [अधितमन] १ बन । ३	₹ <b>₹</b> \$)	नारक
निर्देष । १ प्राप्ति वालस्म (विष्ठे) ।	अहिगारि } वि [अधिकारित] १ धनन	'कसंदीपितधिने मु न निविज्ञा न पीसए।
संदिगमय 🕅 [अचिगम <b>%]</b> बनानेदाका	विदिगारिय र चार, रात्र निमुख्य सताबीता	निर्मिधापविचेद्राय, बृद्धमुत्तमदिद्वमा
वषसभित्रामा (तिते १, १)।	ंदा रुपुर्राष्ट्रवाचे समागमो अन समित कर्ते	(सत ६ ११)। अदिदूज रेखी क्षदिद्वाज (रंगा ७ ११)।
<ul> <li>अहिरामिय वि [अधिगत] १ बात । १</li> </ul>		अविद्वा कर [अभि+स्या] १ क्रपर परमा।
तिबित्त (मुर १ ९८१)।	रेश्र छन्।	२ वायय सेना । १ रहना निसंस करना ।
आंद्रातम रेला अदिगम = व्या + वर्ग।	महिगिष च [अधिकरप] सविसार नरके	∉ स्वरूप करना। ६ इस्ता। ७
अहिरास्म देशे अहिराम = यति + यत् ।	(क्दर देश हर) ।	मारूपण करमा । अकार पह देशा। II
সাহ্যার দি [জাখিছর] १ গ্রপুর (ফল্	d Tournale antitud didli	वरा करना। सहिद्ध इ (निकूर)- 'ता सहि-
११)। २ न. प्रप्तान प्रदेव (धन)। वर्षमान कि जिल्लामा । कारणास	(MII) I	हेदि इमे रण्ये (स २ ४)। सहिद्व मा (पि
भर्दगय रि [जिथिगत] १ कातस्य अक्ष (स्तुरे) २ द्वार (१६,१४८)। ३		२६२। ४६६) । वह शहिद्वृत (तपू १) ।
्रता १३ २ द्या (४३, १४८) । पू गोतार्थ दृति शाकामित साथू (४४१) ।		नवक् महिहिज्यमाण (ci y t) । शह-
विद्यार वृद्धि सम्बद्ध (वीष १)।	अहिजाइसी[अभिजाति] दुनीपना(बार्य)।	अदिद्वेदचा (निष्ठ १९)। देश अदिद्विचय
	d and an f an ar witter   J did 3  ( MM )	1 (fix f) 1

অহিমাহখী[সমিতাবি] দুনীদল (বাস)।

(17 1) 1

पति (कुत्र २१६)।

(नि**पू** ३)। श्राहिद्विय वि अधिष्ठिय । श्रम्मासित (खाबा १ १४)। २ घषीम किया ह्या (सामा १ १४)। १ माजन्त मानिष्ट (हा ६, २)। **छाहिठाण न [अधिश्वान**] धपान-अवेश (पव १३%)। बाह्यकुय वि [बे अभिद्रुत] पीवित "महिहुवे पीकियं पद्धं वं (पाम)। **अहि**र्णद देखो अभिर्णद । वह अहिर्णद माज (पटन ११ १२ ) कवड आहिजी-विकासाण अहिजीशसाण (नाट) पि 258) **श्रद्धिणंदण देशो अभिणंदण** (परम २ ६ ) भवि । **श्राहिर्णीदे वि जिस्सिनन्दिन** विशनन नामने बाह्य (स ६७७) । श्रहिणविय केही अभिजंदिय (पज्य 🗷 १२६ स १४)। अहिजय देवो अभिजय (बज्यू: चरा) । लड़िणय प्रशिक्ति र स्तुवन्त्र काव्य का कर्ता पत्रा प्रवरक्षेत (से १ १)। ३ वि कृतन नवा (साबार र सुपा ३३)। अहि पबेमाण देवो अहिणी । शहिजनेमाज वेशो अहिजु । अहिजाज देवी अहिज्याज (गर्थ)। अहि भिवीह पू [अभिनिकोघ] ज्ञान-विशेष मिलकान (पद्माख २६)। भद्रिणिषस सक [ अभिनि + वस् ] बसना धाना । यक् अदिणियसमात्र (श्रुव २३१)। भहिजिवह वि जिमिनिविधी गामह-प्रस्त (स २७३)। अद्विभिनेन पू [अमिनिवेश] याख्य, इठ (स ६२६) यमि ६६)। भद्दिविषेसि वि [समिनिवेशिय] यात्रही (R1 Y X):

23

अहिद्वाण न [अधिष्ठान] १ दैठना (निद् (सम्र १ - २, ३ १२)। इ)। २ ब्राध्यस्य (सुबर् २३)। ३ मासिक अक्रियी देशो अभिया वर्ष अहिणनमाय अहिप्पाय देशो अभिप्पाय (महाः कृप्प) । बनना (बाचा)। ४ स्वान व्यापय (स.४६६)। (सर व १४)। खद्विष्पेय देशो अभिष्पेय (सर ११टी<sup>-</sup> अविद्वायम वि अधिष्ठायको अध्यक्त अवि अहिणील वि [अभिनील] हरा हरा रंग स ३४)। मासा (गतव)। काहियम केती अमिसम (परा)। **छाइट्रावय न [अधिप्रापन] उसर एक्ना** अद्विण सक सिमि+ त्री स्तृति करणा व्यक्तिम् र् मिमिमर्यु पर्वृत के एक पुत्र प्रशंसमा। बङ्ग अद्विणनेमाप्प (सूर ६ ७७)। का नाम (कुमा) । काहिक्य वि किश्विम नेपर्यात अपूर्णम्य अद्विमंत्रण वि [अभिमन्त्रण] मनित करता (गा २६४८ ३० )। बल से संस्थारना (मनि)। अहिण्याय न [लिभिज्ञान] चित्र, निराती अहिमीतिअ वि [अभिसन्त्रिषः] मत्र धे (धनि १३)। शंस्क्रत (महा) । महिज्यु वि [अभिक्ष] निपूक्त ज्ञाता (है १ व्यक्तिम्त X4) : खहिमण्यु रिको अदिसंजु (दुना पर्)। खद्दित व जिमित्रा तापित चेतापित अद्दिमन्तु । (क्य २)। काह्मिय वि [अभिमत] संगत इष्ट (स **महिता रेवो अहिटा = गवि + इ**ः अदिवायम वि [अभिदायक] की बासा श्रहिमयर प्रशिक्षिमकर् । एवं र्राव (पाम) । बाता (सुपा ५४) । श्राष्ट्रमर प्रजिमिमरी प्रशाह के मीय हैं महिदेवमा ध्ये [अधिदेवना] प्रविष्ठाता देव इसरे को नारने का साहस करने वाला (सुर (सपा 📢 ३ कम्पू) । १ ६८) । २ एजानिवातक (निसे १७६४) । महिद्रम स्ट [अभि + है] हैयन करना । शहिसाण प [अभिभान] पर्व ग्रहरूर महिर्वीत (म ६१६)। सवि सहिर्वस्सद (प्रासू १७ स्या)। (स ३१९)। अद्दिमाणि व [अभिमानिन्] प्रमिनानी व्यक्तियुव वि [अभित्रव] हैरान क्या हुमा गर्विष्ठ (स ४३१) । (च ११४)। अद्विमार प्रशिक्षमिमारी कुल-विशेष 'एवं अहियान तक [अभि + धाव ] शैवना, बहिमारवाष्ट्रवं बरकी (एतमि १)। सामने श्रीइकर जाना। नहः साहिचार्यत अहिमास ) पू [अधिमास, क] प्रक्रिक सि १३ २६) । व्यक्तिमासग र्गाप (भाव १ निष् र )। कहिनाण ) देखो कहिएजाण (बा १६) सुवा अहिमुद्द नि अभिमुत्त । एकुड सामने रहा व्यक्तिमाण ∫ २५ )। हुवा (वे १ ४४" पदम द १३७ वदा) । भहिनिवेस केशो छाहिणिवस (घ १२६)। थहिएकुश सक [ धक् ] पहुण करना । अहिमुहिह्स ) वि [अभिमुसीमृष] सामने महिपचुमा (१४२ ध थर्)। आहि अदिमुद्दिम् अ । भागाँ हुमा (पत्रम रेप्ट्र १ % पश्चकाति (क्रमा)। 88 8) I खहिय वि [अभिक] १ ज्याचा विरोप (मीप) श्राहिपरणुश्र एक ब्या + गम् ] याना । व्यक्ति-वी २७। स्वप्त ४)। २ किनि वहुत प्यमुक्त (हे ४ १६६) । सहिप**रमुद्**श वि शागत | धागत (कुमा) । सरपन्त (महा) । अदिपण्युद्धा न [वे] बनुनगन, धनुसस्स अहिय वि [अहित] पहिलकर, राष्ट्र, हुरमन ( t t ve) 1 (महा; पुपा ६६)। अदिपड सक [ समि + पत् ] सामने बाना । खदिय वि [अधीत] पठित सम्परत धहिय-

मुख्ये पविश्वक्रिय एन्झविद्वारपहिसे सी' (सूर

Y (XY) I

धीरपर्वेदि (प्रव १ ६) ।

अदिपास सक [अधि + इक्ष ] १ प्राचिक

```
श्रद्धिमा स्त्रै [सभिक्षा] भगराम् श्रीनमिनाच
 बी प्रवम किया (हम १४२) ।
ब्राह्मचाइ देखी सहिजाइ ( यह )।
अहियाय देशी अहिजाय (पाय)।
अदियार पुंकिमियारी शतुके वन के निए
  विया बाता मन्त्राविधयोग (नवड)।
अहियार देनो अहिगार (छ १४३ पान'
  मुद्रा २६६) सद्वि ७ दी। मृति दे ७ ६२)।
च्छद्दियारि देखो छहिगारि (१६१)।
 क्षद्विमास एक । अभि + आस , अभि +
  शह दिन करना रहीं की शन्ति है।
  भैताता । सहियामङ सहियामण प्रतियामेड
  (उद मात) । कर्न, महिवानिज्यंति (स्त) ।
  वक्र व्यक्तिवासंसाण (वाका) । चक्र- अहि
  बासिका अहियासक (मूत्र १ व ४)
  धाना) हेक अहियासित्तप (प्राना) । इन
```

व्यद्भिमास वि [अध्यास अधिसङ्ग] सङ्ख्य (**रह** १) । छ। हेपासन न जिम्मामन अधिसहनी संक्रम करना (चन ६६६ स १६२)। सहियासय न जिनिकारानी स्वेषक नोजन

अद्विपासियव्य (का १४६)।

धरीर्श (ठा १)। व्यद्भिमासिय वि [अध्यासित व्यविपोद] शहत किया इया (बाका) । अदिर र् [आमीर] घट्टी, नोनावा (ना #8 t) 1 भहिरम देनी अभिरम । वह- अहिरम'त

(EE 2XY) | अद्दिरम बन्न [ अभि + रम् ] नीहा कला संमोन करना । यहिरमन्ति (ही) (नार)। हेड अभिरमितुं (तो) (नार) । क्रक्रिएम वि [अभिरम्य] गुन्तर, मधेक्रर (मधिः)ः

**अहिरास वि [अभिराम] मुखर, मनोहर** (पत्प)। अदिरामिण वि [अभिरामिण] वानव की ৰলা(থকা)।

अदिशय प्र[अधिराज] १ एक (हर १)। २ ल्लामी चीठ (सन्ह)। **महिराय न [अभिराज्य] राज्य, प्रकृत्य** (বহু ৬) ।

अद्विरिअ रेखो अद्विरीय (पिंड ६३१) । अदिरीअ विजिहीकी निर्सन नेसरम (हे २, (Y ) अद्विरीअ पि **पि** निस्तेत्र प्रीपा (दे १ महिरीमाण विकि अहारिन्, अहीनमस् ] १ समनोहर, सन की प्रतिकृत्य । २ सपाना कारण 'णवपरे मधयरे मध्यानाम विभिन्छ

माणे परिन्दय से ब डियो के ब बडियोमाला" (बाका १ ६ २)। अदिन्य वि [अभिरूप] र सुन्दर, शनौरूर (यकि २११)। २ यक्ता योग्ड (विक्र ६८)। अदिरेम सक [पू] पूरा करना पूर्ति करना। यक्रिनेमड (हे ४ १६६)। अदिरोक्त वि वि ] पूर्ण (पह )। लक्षिप्रण न सिथितेहणी कार श्वत्य बारेष्ण (मा ४ ) : अहियोदि वि [अधियदिन्] अपर वहने नला (पवि १७)। अधियदियो व्ये [अभिरोहियो] निव्ये ही शीशी (वे ब, २६)। महिल वि [भारीले । धक्त सव (बन्हाः रमा)।

अहिलीय } नाय करना । श्राहिलीकर, श्राह सहित्यमा वंदर (१ ४ १६२)- 'वाहिल-क्वींन प्रचित्र व दशानारं विकासियोदिय-यार्च (ते १ १०)। **अहितकत्व वि [अभिकार व]** प्रमुपान के बालो योग्य (पडड) । भद्रिसण एक [अभि+छप्] धंनापश

अहिस्ता । यक [नाइक्] बाहता शक्ति

करना करना । एक्ट्र आहे आपमाण (स ex) i अदिसम सक [असि+सप्] समिनाव करनाः, श्रवहनाः। प्रहिसनदः (महा) । श्रद्ध व्यद्विसरीत (नाट) । अहिससिय वि [अभिक्षपित] गावित (पुर

1 ( YP Y जहिससिर वि [समिस्रियम्] शक्तियो प्रमुक्त (रेप्सा) ।

महिलाण ग [मिमिसान] पुत्र गा समान मिरोप (एम्स १ १७)।

अदिसाय प्रे [अभिसाप] राज्य, पाताब (ठा 2 m): अदिसास वै [अभिन्नाप**ो १७६**४ नाम्स चाहु (धडर) । अहित्सिसि वि [अभिसापिन्] बाहुनेबला

(शहर)। अद्विष्ठित्र न दि 🎖 परामवः २ क्ष्मेत्र हुस्ता (Rt sw) i महिसिद्द सक [भनि + क्रिन्तू] १ विना करनाः २ विक्रमा । यद्विविद्वेति (पूरा १ ८)। एँड अहिसिहिज (वेली २१)। अदिकायण ग भिभिक्षेक्ती जैवास्यव (परहरू २ ४)। अहिनास वि[अभिक्रोस] काम कावन

(गउद) ।

अहिसाहिआ की [अभिन्यभिक्य] संह्यत द्रप्ता (से ३ ४७)। अहिल वि [दे] वनवान, बनी (दे१ १)। अहिदियाकी बिडिस्सी एक तती की (प्रकार ४)। व्य**ड्व [अ**थिए] १ इत्तरी मुक्तिया (का ७२ व दी) । २ मानिक स्वामी (यउड)।

वे धना जुरा 'बुदाक्रिका बंदराय हर्बावि' (पोष व)। अहिवड़ वि [अभिपति] क्यर देखो (छाना १ । नगः मुद्द ६६)। अहिषेजु देवा अहिमंजु (पर्)। अहिबंदिय वि [अभिवन्दित] नगरका (ध 448)1 अदिवासु वेची अदिसंसु (वर् )।

अदिवह पद अभि + पन् | बीछ होता। वह 'एवं क्लिकारे मास्प्रसत्तरों भीविए अहि **पर्ध**न (तंद्र ३३) । अहिषक सक [ अभि + पन् ] याना । बहु-व्यद्भिष्टेत (चन) ।

अदिवर्ड देवो असिवर्ड प्रश्विर्द्धमो (क्य)। अदिवदिष 3 जी [अभिवृद्धि] बतर ग्रेड-भदिषद्वि परा नवाथ का प्रतिहास देकता

ा(पुचार १२, में ७-- पम ४१४)। अदिपद्दिन वि [अभिवर्धित] बहारा हथा (स २४७)।

```
कादिवण्य वि [दे] पीसा ग्रीर नाम रंग |
 वाला (दे१ ३६)।
अनिषण्णु } क्या अहिमंजु (यह कुमा 1
अद्दिषञ्जी की [कद्दिवरुती] नाय-बद्धी (सिरि
 <0) t
अदिवस सङ [अधि+धस्] निवास
 करना पहना। वह अद्वियर्तत (स २ ८)।
सहिवाइय वि [अभिवादित] यभिनिवत
(स ३१४)।
 सहिवायण देखी अभिवायण (गरि)।
 अदिवास वि [अभिपास] पानक रखक
  (भवि) 1
 अद्विवास पू [अधिवास] वासना संस्कार
  (देश दण)।
 सहिवासण न [सिविवासन] संस्कारावान
   (पंचा ८)।
 छहिबासि वि [अधिवासिन्] निवासी
  (बेह्य ६५७)।
 भहिषासिल वि [ अधिवासित ] चनाना
   हुमा स्थ्यार किया हुमा (दस्र ३१ दी)।
 अदिविष्णा की दिने प्रय-सापण्या की जर
   पल्ली (वे १ ए४)।
  व्यक्तिस्त्राक्षी [अभिशृह्या] प्रम स्वीक्
   (पडम ४२ २१)।
  क्षड्रिसंद्र्य की [असिक्षड्वा] मन बर (सुन
    १ १२ १७)।
  अहिसंज्ञमण न [अधिसंयमन] नियन्त्रण
   (गवड) ।
  व्यक्तियारण व विभिन्नेयारण विकास
   (पंचा ६ ३६)।
  शहराधि वृत्री [श्रमिसंधि] श्रीकाम
    माराय (पएह १ २ स ४६६)।
  श्राहिसीय पु वि वार्तवार (व १ व२)।
  अहिसदाम पुन [ अभिप्याक्रण ] संपुत
    दमन (पव २)।
   अद्विस सर [अभि + स्] १ प्रदेश करना।
    २ प्रपत्ने रपित-प्रिय के पास जाना । प्रयो-,
    नर्मे समियारीप्रदि (शी) (नाट)। हेक्- अशि
    सारिदं (शी) (नाट)।
   छद्विसरण न [अभिसरण] जिव के संगीप
    थमन (स ६३३)।
```

```
श्रद्धिसरिज वि [समिस्त ] १ प्रिय के समीप
 पतः । २ प्रक्टि (गावम) ।
व्यक्तिस्ण न [अभिस्न] सहन करना
 (র ६)।
शहिसाञ रेवो अक्टम = या + कम् । यहि
 शासद (प्राकृ ७३)।
धाहिसाम वि [धामिशाम] काला कृष्ण
 कर्षे बाला (यतः)।
 अद्दिसाय विदि] पूर्णं पूरा (दे १ २ )।
अद्सारण न [ अभिसारण ] १ धानवन
  (से १ ६२)। २ पति के किए संवेत स्वान
  पर भागा (गउड)।
 अद्विसारिज वि [अभिसारित] वानीत (वे
  2 24)1
 अहिसारिका की [अभिसारिका] नायक
  को निसने के लिए संदेत स्वान पर जानेवासी
  क्ये (कुमा) ।
 अदिश्विम न दि । धनिए वह की धार्तका
  डे क्षेत्र करना—रोगा (दे १ ३ )। २ वि
  प्रतिष्ट यह से ममसीत (पद )।
 अहिसिय देवो अभिसिय । शहिनयः
  (महा)। एंक बाहिसिचिक्ज (स ११६)।
 अहिंखिषण न [मिश्चिषन] धनिपेक (यम
   १२४) ।
 अहिसिच केंद्रो अभिसिच (महा) सर व
   22E) |
 कहिसेज देवी अभिसेल (नूपा ६७ नाट)।
 महिसोड् वि [अधिसोड] खन विना ह्या
  (बप १४७ ही)।
 अहिस्सँग र्ष [अभिध्यङ्ग] पात्रक्टि (नार )।
 अहिद्य वि अधिष्टती १ वाचार-वान्त
   (से १, ७०)। २ मारित न्यापावित (ने १४
   19)1
 आह्रहरसक [अधि + हू ] १ लेगा। २
   फराना । ६ घर सोमना, विश्ववता । ४
   प्रतिमाथ होना समना
   भीनामरणा भरमएलमंद्रका
                पश्क्रिंति रमलीयो ।
   नुएए।धो व पुगुमफर्वतर्राम
```

सहवारवस्त्रीयो ।

मनीवंडमंडलातीलं ।

शह मि इतिहास्यर्थिशसा

```
फलमसम्बद्धसपरिग्णामावर्शवि
               थहिहरइ चुवारएं (मतक) ।
अहिहर न [दे] १ केवडून पुराना देवमन्दिर।
 २ वस्पीकः (दे १ ५७)।
अहिह्म सक [सिमि + मू] परामव करना
 भीतना । धहिहर्गति (स १६a) कर्म सहिह
 बीयींत (छ ६६८) :
बहिद्दाण प वि अभिधानी पर्शन प्रशंस
 (देश २१)।
कहिहाज देवो भभिहास (ध १९६: नउड:
 युर ३ २४ पाम)।
अहित देवो अहिह्य। श्वक अहित्समाण
 (धमि ६७)।
अहिड्अ वि [अभिभृत] परामृत परास्त
 (देश १४८) :
बाही एक [काधि + ह] पहना । कर्न ग्रही
 यह (विते ११६६)।
खद्दी भी [अद्दी] नामिन सर्विणी (भीव २)।
अहीकरण न [क्षिकिरण] क्संड मगडा
 (Preg. E.) 1
अहीगार देखों अहिगाद, 'सेपेश प्रशीपाये
  <del>ध्वनच्याप्रचिद्धनदेतु'</del> (बाबानि २५४) ।
बाहीज कि [अभीन] भावतः शभीन (पराह
 2 Y) 1
काहीण वि [का हीन] चन्द्रन, पूर्ण (विपा १
  १ अमा)।
शहीय देशो कहिय = शविक (पद १६४) ।
बाहीय वि बिनीस ] पठित सम्यस्त विवा
 महीवा खं बर्बीट वार्ल (उत्त १३,,१२
 णाया १ १४ सं ७८)।
काद्दोरग वि [अद्दीरक] वन्तुरहित (फ्रमाहि)
 (शि १२)।
कादीर वि अभीरु निहर, निर्मीष्ट (भवि)।
कहीसास रेजो अहिलासः 'रहरिय बहिनासी'
 (dg vt) 1
महीसर पू [अभीश्यर] परमेश्वर (प्रामा) ।
अहुआसेय वि [अहुवादीय] यपि हैं धवीप
 (मउद्य) ।
अदुष्प ध [अधुना] यंगे एन भगग मात्र
 वर्ष (ठा३ वे शार)।
अहुणि (६) बेनो अटुणा (अरू १२७) ।
```

अहुखन वि [अमार्जक] प्रशासक (तुमा) ।

449

મરાક છું [ અદેશક] માં લકાતા (દેતા) ક सर्वत कर [अंगवत ] व बीता हुमा 184111

स. म देनो असीम न घटीन (१मा) । कर्ष । [लम् ।] यो न ह्या हो पुट्य

रहे | पूर्व | को रह देव की ल हुआ हो (कुना) । सर्दे स [ नपश् ] बीचे (बाबा) । नामा व [कार्य ] भाषात्र में जिला का एक दीव

, शिको। बहत है कि को शिवेद का कीवता श्<sub>षा (द्वस १ ४ १)। चर रि [ गर]</sub> रत करे वे एने बाने बर्ग वरेगा का मार्का [कारा है मिरा । (प्रमान शहर (दर्भ १) । दिसा ध्ये [ विकृ] र रेक दिस्तारकारेर ओग वृत्तिके र न्द्रभेक् (यर र)। वाय पु ['बाव]

#चे बनोराता वातु (वर्**छ १)। २ मा**त वनु परेर्द्धावाको। विषय वि [विकर] कि एक्टिंड स्थान गुरा स्थान, वीध भाग्यं बच्चेत्र में विस्ते महियावए दिनए (भाषा)। सचमा ध्ये ["सप्तमी] बावनी बं बन्जब नरकबृति (सम ४१ । सामा १

(१ (१)। रेखो अही = भगस्। भाई देखों लह = घर (भग १ ६)। भट्टेड एं [महेत्] १ बात हेतु का निरोधी रेग्य (प्र ५ १)। ९वि शारणपील राप्य इत्मर ११)। बाग द्रे विगरी बारमाच्य शिवमें दर्श-हेत को द्योतकर

सारं[का] १ पता प्रैयका का क्रिये | स्यत्यद्धं (राज्ञ)। इत दावीं का बुक्त

पमय-र व पत्तीय क्षेत्रा काष हुर् (राम विवेदार)। हे हाह्यांक ब्राप्त क्षेत्रावर कप्राहरूको (क्रा ( sas ) 1 x eyand " " Edd.

वाद्रभसदसद्दण्णश क्रिका शाय ही प्रमाण माना बाता हो ऐसा वाद (तस्म १४ )।

भट्टे उस वि [अहेसक] हेनुवर्गित निष्पारण (पराम ६३ ४)।

बार्देक्स्म पुन [अच प्रमेम] १ बार्वानित में री जाने बाला कर्म । २ मिज्रा का धावाकर्म बीच (शिंह ६६)। श्रदेसणिकः पि [य**वै**वशीय] चंस्कारर्यक्त

कोरा 'महस्रशिकाई क्याई वाएका' (भाषा)। आहेसर पू [आहरीन्पर] पूर्व सूरव (महा)। अहो देखी क्षा = मणस् (सम १६ ठा२ २ १ मन शाया १ १ परम १ २. वरा धास ३)। करण ॥ िकरणी कमह, माना (निष्

१०)। गइ सी [ गात] १ नरक या तियंश बोनि । ९ वदमति (परुप ८ ४५) । शामि वि [ैगामिन्] दुर्गीत में चानेवाला (सम १११ वा ११) । तरण न दिरजी क्सह मनका (निकृष्ट)। सहित "सका" अवोपुक धवनत पूस समित (सुर २, १६वा वे १वशः पुना ५४२)। क्रोब्स्य वि िक्रीकिकी पातास सोक वे संबन्ध रखने बाखा (सम १४२)। हि वि विश्ववि

१ गीचे बनौ का धश्वितान वाला (राय)। २ पूंडी गीचे बनाका सरविशान, सन-विश्वान का एक नेद (ठा २, २)। अही य अहिनी शिश्य में 'मही व रागी

इस विरिपादभसद्दमद्दण्याने व्यवस्पदण्डसंक्तनी गुम पहनो सर्पी समतो ।

ग्रा

'बाद्धेवस्थानंदुरं वर्ज्यं (दश्ये) क्षि र, प्रशासिके एत्रप्र)। य क्तों दोर चलुनंबना । <del>वरिश्विक्षेद्रोदी</del> (साम विदे ९ सचित्रकाः, जिरेयका भागीर ११) । पसन्त दर्शाहरू)। र

य सिवासिनासिलों (क्षेत्र १६१० 1 (3 5 अहो प[अहो] स १ विस्मव, मानगं। २ वेद कें।।

न्त्रस्य संबोधन्। ४ किर्जा । १ हर थमुम्प, श्रेप (हि. १. २१% एक वाण व विदानों शक्तंतक र २३ कर्प) । पुरिक्षिम, इर्देश ुक्षिया वर्ष, व्यक्त (r २८६)। विहार ई विहरी धानवंत्रमध्य ध्यूतन (बान) ।

अहो व (अहो) केन्द्रशुक्त 1 (35 आहो इत [बहन] कि कैतः जिस, निस तिस मिन प शिन दिन-एत शिल पक्काणार्गं (सूत्र १ ६ ह बर्क क्होबिसित वं (मि क्रो)। व िंग्य] । स्तियोर क्लेगॉबर बाठ बहुर (हा २ थोः 👫 पुष्ठ न कारिना रसीई जिन छै र बार रूप का क्या (वीरी) ψſ (4)

आ च [ला] मोचे यव (राय १४ १६)। आ म [आस्] इत सर्वों का सुवक सम्पय-१ कोर (बा ६२६)। २ दुःसः। ३ द्वस्था होष (इप्पू)। ला एक [या] बाना। 'घम्बो रा घामि केरी (पा ८२१)। काझ विदि] १ शस्त्रेत बहुत । २ शीर्व सम्बाः ३ विषम कठिनः। ४ न. कोह मोहा। १ प्रसम्य मूपन (दे१ ७३)। आज वि [सागत] याया ह्या 'पत्नेति धामरोसां (से १२ ६८: दुमा)। भाजम वि [भागत] यामा हुमा (ने ३ ४ १२ १८ या ३ १)। आअय वि [आयत] सन्वा विस्तीर्थं (रे **११ ११)** 'मरगयसूर्वनिश्चं व मोल्डिमं नियह याध्यसम्बद्धनो । मोचे पाउचमाचे त्रणम्यवन्मं उसम्बद्ध (या ३६४) । आर्मेड सरु [ कुप् ] १ श्रीचना। २ बोतना नास करना । ३ रेका करना । मार्मक्द (पड ) । भार्धदस्य देखो सागम = मा + वम् । **भार्श्वत रेको आगंतुय (स्व**प्न २ समि 121)1 आर्जिपान देवी आर्थिपय (वे १ ११)। आर्जन नि [आतास] बोझ मान (से ६,६१३ मूर ३ ११ )। "आञंब टूं [कादम्य] इंस परि-विशेष (से દ ૧૧) ા बामस्य एक [बा+पक्] वहना बोलभा उपरेक्त करना । सामस्त्राहि (मन) । कर्न, धाधस्त्रीर्धाद (शी) (गाट)। भूक धाय-स्थिय (शी) (तार)। शास**रक् दे**नो आग**रक्ष। धारान्यह** ( पर् )। शंक्र, आअविक्रम आअविक्रमण (गार) पि १६१ १६४)। आध्यक् पर [दे] परवश होकर चलता। पापहर (दे १ ६१)। काश्च सक [बया + पू ] स्वापूत होता काम में सकता। मामदृद्ध ( संख पत् )। मामदृद्ध (k x ¤ ₹) ı आअक्रिम वि [दे] परवरावसित बूगरे की प्रेरखा से बना हुया (वे १/६४)।

आअभिक्ष वि [क्यापुत] कार्य में समा हुमा आअण्यण देशो आयसण (मा ६४१) । बामचि रेबो आयह (पिंग)। आ अव्देशो आगय (प्राष्ट्र १२ सीत १)। आजम रेको आगम (मणुष्य मिनि १८४४ मा४७६ स्वप्न४८। मूत्राव६)। आराजसम केलो आगमम (ने ३ २ सुप्रा १ (ध्या आधर सक [आ + ह] बारर करना सकार करना । माघरद्र (पर्)। आ अरन [वे] १ ल्यूबत ब्रबत । २ हुवै (\$ 2 94) 1 आअद्ध र् [दें] १ रोब, बीमारी (दे १ ७४, याम)। २ वि चौचन चपल (वे १७३)। वेशी ब्यायद्वया । आअस्थि ) भी [पे] मान्नी चतावाँ से निविध **आअस्त्री रिश्रेश (देर ६१)**। आञ्चरत्र सक [ केपू ] कौपत्त । सामन्दर (पर्)। काञामि रेवी कागामि (वर्ष ८१)। भागास वेची आर्यस ( पर् )। भाञासतम [दे] रेची मायासतस्र ( पर् )। आइ एक [अ + वा] प्रह्य करना चेना। बाह्यूका (सूच १७२६)। बाह्यांच (बय)। कमे. बाह्यद (कस)। संह- आइसूज भागइचा, भाइच् (प्राचा तून १ १२ पि १७७)। प्रयो बाह्यानेंप्रि (नूब २,१)। ष्ट्र आइयस्त्र (क्स) । आद्र पूँ [आदि] १ प्रयम पहला (मूर २ १६२)। २ वरिष्ठ, प्रमृति (वी ६)। ६ समीप पास । ४ प्रकार, मेर । ३ सनवर्ष । भेरा । ६ प्रवाम मुख्य 'इच ग्रासंशीत निमीतु ! शिक्षस्ताद्यो विधा तुरुम (बूमा सुध १ ११)। 🕶 जन्मति (सम्म ६१)। 🗷 संसार, दुलमा(सूम १ ७)। गर वि विदरी १ धारि प्रवर्शक (सम १)। २ पूँ भववान् ऋषमस्य (पत्रम २० ३९)। त्रूज पूर्ित्जी खहमानी द्वारा (पाच ४)। पाइट दूं विशय] अगवान् ऋपमवेव (पात्रम) । शिरक्षयर् पू िर्ताचै हर] मननाज् ऋतमनेच (गुनि)। देव पू विदेश] भनवान् प्रायमध्य (पूर ६

१६२)। सर्दुमीप्रदम माघपहला (धान थ)। मुख त [ मूख] मुक्य कारण / (प्रापा) "माक्ल पू [मोस्] संवार से भूतकारा, मोल । २ शोव ही मुक्त होन बाली बाल्या 'इत्याची ने छ सेनीत बाइमास्ता हिते वर्णा (सूप १७)। राय पूर् ["राम] भनवान् ऋषमधेन (ठा ६)। वराइ पू िवराह् ] इञ्च नायमण (ते ७ २)। लाइ दि [भारिम्] यानेवला (पेवा **१**० 18)1 ভার কা আজি বিহাদ পরাই (বিহা)। आइअंतिय क्डो मर्बतिय (मग १२ ६) । आई य दि] नास्य नी शोमा के लिए प्रदुक्त किया व्याने बाला सन्दर्भ (मग १ २) । े भी दि १ बनता निरोप भाईस मा कर्ण-निर्णाणका देवी (पर **लाइं**स्नगिया आहेकिणिया । २ ७३ ही-पत्र १८२। इह १)। २ डोमिनी चांद्रसी (बृह १)। काईगन दि नाच-विशेष (पराम ६ ८७ 24 4) 1 आईप क्वो आर्यम् । धार्यम् (क्वा) । काईच देवो अञ्चय = मा + कर् । पाइंचइ (মাষ্কু ৬३)। धाइंच्यार दे [आदित्यवार] एदिशर (कुप्र आइंश्विय 🛣 [आदितियक] मानित्य-संबन्धी (सूमनि = टी)। आइंड्र केवो आजंडा याइंडर (हु ४१ १८७)। बाइक्स एक [ आ + पड् ] बहना प्रा-देश देश: बोसनाः भाइनखद् (तनः) । वड्ड आइक्लमाण (एाया ११२)। देश आह क्सिच्यत्तप (क्या) । धाइकता वि [शास्यायक] क्श्नेराधा बच्चा (पर्राह २ ४)। आइक्छण न [आक्यान] क्यत, धरध्य (बह १)। आइक्लिय पि [आक्यात] एक प्रापिट (स १२)। आइक्किया की आसमायिको र वार्ता कहाली (लागा १ १)। २ एक प्रकार की मैसी विचा जिन्ने पाएशनियी मूत-काल साहि की परोल बाउँ कहती है (ठा १)। आइग्ग दि [आविम] उतिम विम (पाप)।

बाह्य वि (अपुरुखी धविकवित (गुमा) । श्रद्भंत वह [अमपन्] न होता हमा (१मा)। सहज देवो अहीम = महीन (हुमा) । श्राह्म वि [अभूत] जो न ह्रपा हो पुरुष रि (प्रे जो पहने कमीन हमा हो (पूमा)। अट्ट व अयस | नीचे (दाचा)। कम्म म क्रिमेनी शाधारणे मिना का एक बोप (रिक्र)। ब्राय वृ िकायी शरीर का गीवला क्रिम्स (सुप्र १ ४ १)। \*चर वि विश्वरी । वित सारि में पूले बारे मर्ग बाँग्ड बल्तु । साहा केना अह = सवन् (सम १६ डा २ रा (घाषा)। तारगर् ["तारक] शिकाष विदेव (वर्ण १) । दिसा बर्ध [ दिख् नीवे नो क्या (माना)। ताग पु स्थिकी पाताप-नोक(छार र)। शाय पूर्विवाती नीच बढ़नेराना बाद (पग्ए t)। २ मरान बार, परेन (बाबम)। 'वियह वि विकिन्ती जिल्बाहिर्राहेत स्थान जुना स्वात 'तेमि चना बर्माक्ये प्रदेशिया धहियानए कनिएँ (पाना)। सत्तमा ह्ये विप्तर्मा स्वतनी या बन्तिन नरतन्ति (सम ४१ छाता १ १६, १६) । देनी अहा = मपन् । अहरैयो अह≔यर (मा १ ६)। अद्वेष पूर्विद्युति १ सत्य हेनु का विशेषी १)। २वि बारएर्स्टिक देशसम् (स निष्य (सुम १ १ १) । शाय दं विदारी

बाद (सम्म १४ ) । अक्टेंडय वि अक्टेसकी क्षेत्रपतित निकारण (परुम ६३ ४)। महेक्टम एन क्षिय कर्मेनी १ धरोपति में ने अपने बालाकर्षे । २ शिक्राका सामाकर्षे धीप (सिंह १,६) । व्यक्तियञ्ज वि [यथैरजीय] संस्काररक्षित कोरा 'बोसिएकाई क्लाई वाएका' (बाला)। बाइसर प्रे भिहरीयरी नुवै मुरव (महा)। वै १ घर छात्रा १ १ पत्रम १ २ वशः भाव ३)। करण न [करम] नत्तक, कमब्रा (निब् १)। गद्रकी "गत्र] १ भरक या प्रियंख बीर्ष । २ भवनति (पत्रम 🛮 ४६) । गासि वि िगामिन्। इर्वीत में बानेशना (सम ११६:वा ६६)। तरमन "तरम क्रिक्स क्रम क्रमशा (निद्रार्थ) । सुद्रारि मिश्रा श्रामेषुण वारण्ड पूज समित (मूर २ ११८ १९रा गुरा २४२)। स्रोडम वि क्षिकि पातान सीव से संशव रखते-बाता (नम १४२)। "दि वि "अवधि]

य विवासिकाविको (पत्रन ६१ १२८: परा बाह्रो च [शहां] एत प्रचौं का सूचक सम्पर-१ विकास बाधर्य। २ बैद, शोकः। ३ माम-ल्क्छ संबोधन । ४ वित्रकै । ५ प्रसंसा। ६ अनुवा होय (है २, २१७ आचा वस्त्र)। "दाज न "शान") प्राचर्त-कारक वान (वेच राक्त)। पुरिसिगा, पुरिसिका की िपुरुपिया वर्ष पविमान (स १२%) २०६) । "विद्वार वे ["विद्वार] धेरम 🖭 धान्धर्वत्रक सनुपान (बाचा) ।

बाह्री व [अहाँ] दीनता-मुक्क धन्यन (पण् आहां देन [अहम] दिन, विनस (रिन) : शिस, निस निसि न निया पर मौर बिन दिन-एवं 'शिक्य छेरदमार्थ प्रदेशिनमे

पचनावार्ज (मूच १ ६, १ मा ६ ) भीती बाहोमिनिस उ (विसे वक्षे)। रेख ई िराम्नी १ दिन और स्वीत परिमित्त कार बाठ बहुर (ठा २ ४)- विविद्य बहोरण पूछा न कामिया क्यतिएँ (पडम ४३ ६१) । २ भारप्रदरकासमय (बो.२)। राइया को िराधिका व्यानवनल सनुहात-विरोप (वंचा बाबाइ: सम २१)। धार्मीवेन न ["राजिन्द्रक] विकरात (भग भीत)। बहोर्ज न दि ] बत्तरीय बन्न, भारर (दे १

२६, श्राच्य ४३१) ।

इम मिरिपाइअमहमहण्यने अवाराहनहर्गन्त्रको एएम पहनी तर्रमी नहत्ते ।

रं बीचे बजी पा प्रविज्ञान बाला (राय)।

२ पूंजी नीचे दनाका धरविज्ञान छद

अक्टोय अहिनी विवन में 'महीय रहती।

विज्ञात का एक थेद (ठा २, २)।

## श्या

आर्थु[भा] १ प्राप्त कर्तुनाका का दिलीय रसन्वर्ण (प्राप्ता) । इत सवी वा गुवर बादा-१ स मधीत मीना 'सान मुर्दे (दक्का स्ति ३४)। ३ मन्दिस्ति म्पनि 'पापुनीगरं प्रतिरूपेशयो' (तृता ſť <)। ४ थोगान यणता

मानवराद, शिवुमें दर्व-हेनू को द्वीवरर

बालीतरदर्दन्दं बरल् (बडर) 'बाह्यच' (वेश वेश तिय १२वेश)। श्रममन्त्रम् वार्धे मेर 'मगरंडनमा प्रियागणुक्तम । च परीहिनीपियश्रीम (धार विशे अध् । ! ६ धरिकता (सरैपता 'शारील' ( जूस ११)। ७ म्बरम बार पट ⊱ क्षित्रक

याथर्प (छा १) । ११ क्यासम्बर्ध योग में धर्षेरिप्युति चीर विपर्यंक 'धारर' 'पानगर्दा' (पर् पुना)। ११ बास्य सी शोधा के निष् भी इनका प्रयोग होता है (ए।या १२) । १२ पासूचि स प्रदुक्त शिका बातासम्पर। वर् २ १ ७६)।

का भ जाि नोचे चयः (राम वर, वर्)। था भ [आस्] इन सर्वे का सुवक सम्पद-१ और (बा ६२६)। २ दुःश्वः। १ प्रस्ता क्रोन (कप्पू) । आ सद [या] पाना। 'घव्यो ख बामि छेतं (गा =२१)। काश वि [दे] १ घळाँत वहुत । २ धीर्व

सम्बा। व विषय कठित। ४ न सोह-नोहा। प्रमुखन सूपन (हे१ ४३)। आश्र वि [आगत] याया हुवा 'पत्वीत मामधेसां (से १२ १८) कुमा)। खाञ्चल वि जागत निया हुदा हि ६ ४ १२ १० मा ३ १)। आअग्र वि [आयत] बन्दा विस्तीरो हि 22 22) 'मरदयमुद्दीवेदं व मोतियं पियद् शायमन्यीको ।

मोरी पाउसमाचे तरागासम्य स्ट्राम्बर् (था ११४)। व्याअञ्चलक कियू दिवीचनाः र मोतना

बात करता। ३ रेखा करता। यात्रीबद्द (यह )। आर्थतस्य देवो साराम=भा + भग् । शासंत्रम देवो सार्गतुम (स्वन्न २ मन्त्रि १२१)।

आर्थिक केले आर्थिय (हे १ ११)। आर्थन नि [सावास] मोहा नल (व ४,६१ नुर १ ११ )।

"आर्थंब पूँ [कार्म्ब] इंस पत्ति-विशेष (स e, 48) i

आजस्त्र यक [मा**+पष्**] प्रहण बोलना जन्मेरा करता । स्थलन्ताम् (मन) । क्रमं, धाधक्शीर्घाद (शी) (गाट)। मुक्त धार्ध-स्थिद (शी) (१९३४) ।

**आजन्छ देनी सारान्छ । धारान्छ६ ( पह )।** <del>ধার লাঅভিক্রম সামাভিক্রমের (লাস</del> fit Kati Kay) i

आश्र**ष्ट्र बर [वे]** परवेश होकर चनना। माध्यार (दे १ ६) । **आश्रद्व पद [ब्या + पू ] व्यापूत होना का**र्य में सकता। मामदूद (सक्त पर्)। भागदूद

( \* x = ? ) 1 माअद्विम दि चि] परवरावतित बूसरे की प्रेच्छा से बना हुया (दे १ ९८)।

आश्रद्धिश वि [स्यापुत] कार्य में सगा सुमा (कुमा) ।

आअण्यण क्यो आयश्रण (गा ६६९)। ध्वासचि देशो आयह (पिन) ।

कालव रेबो आगय (प्राष्ट्र १२ सीप्त ६)। खामम देशो आगम (मणु ७ यमि १८४ सा ४७६ स्वया ४८ सुरा ८३)।

**आजनम् देशो** आगमग (ने १२ मुद्रा 1 (42)

साधार सक जिल 🕂 🕊 विवार करना, मुख्यार करना । बाधरह ( पर् )। ब्राह्मरन दिर्देश जुलास प्रवत्न । २ पूर्व

( 36 & 22) I आ अद्ध पुंचि १ रोग, बीमारी (दे१ ७६ पाम)। २ पि चॅचच थान (दे१ ७४)।

स्थी भागसमा । आझरिन्छ ) की कि माद्री बदायों से निर्देश धामस्क्री प्रदेश (व १ ५१) ।

आअन्त्र सङ [ बेप् ] कॉप्ला । साप्तम्बद 1 ( JEP ) मान्नामि देवो आगामि (दवि ८१)।

आमास रेखो आर्यस ( यह )। मामासवन [वे] देशे भाषासवस् ( पार्)।

आप यह शि + दा बहुछ करना सेता। बाइएका (तुथ १ ७ २१)। बाइपति (स्थ)। कमी आहमर (क्त)। संक्ष- आइस्पूर्ण आयश्चा, भारत् (प्राचा वृत्र १ रेश पि ४७७) । इसी. बादमानेति (मूच २३) । 📗 ह. आइयबन (<del>वस</del>) ।

आद र् [आदि] १ प्रकम पहला (सुर १ १६२)। २ वरिष्टु प्रजूषि (वी व) : ६ समीप पास । ४ प्रकार, शेव । १ साध्यक भेरा । ६ प्रकाण पुरुष "इम मार्लारीति निलीहि । सिश्वताहरो दिया तुरुम् (भूगा सुख १ १४) । ७ सरप्रि (सम्म ११) । ५ संसार, पुलमा (सूच १ ७) । सर मि ["कर] १ बादि प्रवर्तेक (स्य १)। २ वृं अपवान् अध्यक्षेत्र (पत्रम २० ३६)। शुप्प प्रे िश्चा खहबारी प्रस (मार ४)। व्याह र्यु ["लाब]

देश पुं ["दम] भगान ऋगमदेश (पुर ६

यत्राम् भागमनेत्र (गानम)। विस्त्रागर पू ["वीचें इर] भक्तान् ऋतमरेव (त्ति) ।

१६२)। सर्विमी प्रयम बाब प्रका (बाव १)। सुखन मुखी मुक्य कारण -(प्राचा) भाषक पूर्मिक चिंतर से कुनकारा मोधा। २ शीत्र ही मुक्त होने कली भाग्मा' 'क्रमीको व ए। सेवंति धाइमोश्या हि वै जला (बुध १७)। राय वृ िराजी भगवाम् अपमनेव (छ ६) । बराह् प्र **ैवराइ | स**प्पण नारायश (से ७ २) । खाइ वि खादिस् डानेमाना (वेचा १a 18)1 ब्याइ की जिल्ला से संबंध सहाई (बीबा)।

आइअंतिय देवो अवंतिय (यन १२,६) । ब्साई व दि वास्य से शोमा के सिए प्रदृक्त किया जाने बाला सम्मय (मग ३ २) । भाईज ग े की वि १ देवता विरोध करा-विद्याविका देवी (पत **आइंस**िया -

काइकिणिया २ ७३ टी-पत्र १वरा वृत १) । २ बोनिनी चौडासी (बृह १) । काईग न दिं] बाच-विशेष (पहाप ६ ६७ 25 511

बाईष देवी आर्यच । बाईबर (स्ता) । ं आईच देवो अस्तम् = मा + कम् । साहबह (রাড় ৬২) ৷

आईचवार १ [बाबिस्पबार] चीवार (दुन 488) t

आर्थिय वि [आवित्यिक] पावित्य-संवन्धी (सूमनि = टी)।

आईह रेको मार्जहा शाईहर (१४१००)। वाश्मत वरु [ भा + चन्द्र ] ब्रह्मा, स्टा-केश बेता बोसना माध्यक् (छ्वा) । वहां बादक्लमान (समा ११२)। हेह बाइ क्तिचर (का) ।

आइनकाग वि [आक्यायक] अध्नेत्राचा वक्स (पर्या २ ४)।

आइस्त्रण न [आस्पात] कवन, वादेश (40K N) t काइनिसम वि [आस्यात] बक प्रापिट

(स १२)। भावकित्रया व्य [आस्त्रायिश्व] १ वाटी क्यांगी (लावा १ १)। २ एक प्रकार की मैनी विचा निवने काएशविनी मूत-कास साहि

की परीस बार्ड कहती है (डा ६) । आइग्ग वि [अविध] विधन विज (पाप)। कहुतु वि [अकुम्स] धविवसित (दुमा) । कार्मंत कर [अभयम ] न होता ह्या (हुना)।

भट्टण रेग्रो सद्दीण = घरीन (हुना) ।

श्चनुष ति [असूत] यो न हुला हो पुष्य रि विश्वी को पहने नजी न हुया हो (हुमा)। छाइ थ [अयस्] श्रीष (बाबा)। अस्म

क [बस्ति] बारांकर्म मिला का एक बीप (पिंड)। स्मय वृष्टियोशरोर वा गीवना हिना (नुष १ ४ १)। चर वि [<sup>\*वर</sup>] बित धारिम छने बारे तो बगद्ध बन् (बाना)। दारग र्रु ["तारक] विराम शिक्ष (बगल १) । दिसा ध्ये [ (दे के ] नीर की रिह्म (माका) न्यंग पू **ि**स्थक] नागर-नोक(छा२ २)। नाय दें [<sup>\*</sup>दान] मीन बहतेराहा बाबू (पाग्य १)। ए धनान बाहुपर्तन। सारतः। विश्वहरिदिकः] भिन्यारियोज्य स्थान गुरा स्थान 'वॅमि मार्ग बाहिये बहेरिया बहिवानए बीग्र (बारा)। सत्तमा हो [सप्नमी] छाउस

१६-१६) । देती अक्षा = घरत्। अहरेगो अह = घर (भा १ ६)। अहर दं [प्रह्त] १ तय हेरू का विधेषी १)। २ रि बारग्राधीन रिशसन (छ तिपः(मूप १:१:१)। बाय दं विद्यो काममाण्यः, जिल्लानहे--हेन् को कावनर

या चन्त्रिम बराजूनि (सम ४१ छाना १

ने बस राज ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा बाद (सम्म १४) ।

अहारय वि [आहतुक] हेनुवर्गित विष्कारण (पत्रम ६३ ४)।

अदेशमा पून [अन कर्मम्] १ धरोपति में से जाने बाला कर्मे। २ मित्रा का बाबाकर्मे बोन (सिंह १५)।

अहसणिक वि विभेश्रीय विशासकी कोटा 'पद्देनशिजाई रूचा' जाएआ' (दाना)। भाइसर र्षु [भहरी/घर] शूर्व पूरत्र (महा) । अहा देनो अह = सचन् (सम ६६ ठा२ २ व रेमद लागा रे १ पतन १ २, वरा मार १)।

करम न ["करंग] क्साइ, महादा (निश्व १)। गइकी "गत] १ नरक वा निर्वध योगि। ध्यक्ति (परम क ४६)। तासि नि [नामिन्] दुर्वीत में क्रानेशाना (बप १२६ मा ६६)। तरजन विस्त्र क्यह स्पनः (तिकृतः)। ह्यद् ति [हिन्हा] सबोबुल धरनन भूप अधित (गुर २, १९वा १ ११६: गुरा १४२)। "स्रोहम रि [°स्मेडिक] पानान लोड वे देशम्य रखने-बारा (नम १४२)। हि दि ["अवधि] १ मीचे पत्री वा धरशिक्षात्र वाला (राद)। २ पूर्ण नीचे बनो या याचितान सब विज्ञात काएक बेद (ठाद २)।

अहाय [ज्ञाहनि] शिन में बहाब स्रवी

य शिवाधिकातिको (पत्रम ११; १२०) पर्य 2. 1)1

अही स अही देश धरीका तुवक मध्यप — १ विस्तव याथरी। २ सेद, शोकः। ३ माम न्त्रस्य संबोपनः। ४ विद्यर्के । ९ प्ररोसः। ९ समुना क्षेत्र (हे २, ५१७ बाबाः गउर)। बाज न विदानी प्रावर्ध-नाएक राम (उठ शक्य) । पुरिसिमा, पुरिसिया स्रो िवुक्तिका वर्ष कांत्रमञ् (व १२५) २८८)। "तिहार दुं ["विहार] संबम का याधर्यवनक धनुहान (याचा) ।

शहो च [अहो] देनता-तुषक सम्मय (पल् 1 (37

आहो पून [अहम्] दिन, दिवस (रिण)। विस निस निसि न [निश] यन मौर दिन दिन-राज 'शिएए होरहपार्थ म्योगिस पचनालाली (सूच १ ६, १३ मा ६ ) भीती बहीलिमिल ड (श्वि ४७३)। रच ई िαत्र | १ दिन और स्तवि परिनित कार बाठ बहुर (ठा २, ४)- निरिश बहोरका पूरा न धार्रनिया करतिर्शुं (पर्सम् ४३ ३१) । २ चारप्रदूरकासमय (बो.२): राइस्म वी वित्रिक्षी ध्यानप्रवान धनुहान विधेप (पंचारचामात्र समापर)। सर्वेदिक न ["शक्रिन्द्रम] रिक्सत (मन मीर)। बाहोरणं न दि । बतायेव वन्न, भावर (दे १ २६ पा ७७१) ।

इय निरिपादश्रमहम्बर्णमये अवाध्यत्रवस्त्रेत्रात्तो शाम पहली धर्रको मनसी ।

## श्र्या

আৰু মিনী হলতে মানিলে বা টিউৰ : रराप्तर्री (शका)। इन क्वाँका नुवक क्रभाव—देश भरीय बीमा भाव बुर्ड (दार निरेषकर)। ६ वर्षिति न्यां। चनुर्वतरं वांगर्यश्रयोः (गुना र)। ४ क्षेत्रहरू सण्याः ।

याणे ररहर (नुरं बार्ग (बउद) धन्धवं (ने ६ ३३) विने १२३१) । ४ नवलापू वार्धे धेर धार्गश्यका शिक्तमगुक्तम बारवैशिनंपिरंगीम्बं (ग्याः स्थि वऽ६) । ६ व्यक्तिता विशेषका विशेषा (जूप १४) । अस्तरण बन्ध(यह)। जिलाव हे

थावर्षे (हा १) । ह १ जियासका के मीप में वर्षीतमूज बीर क्लिक 'बारा' 'मागप्द'र्ग (पर् पूना) । ११ बास्य थी योगा के निर्धा प्रवता बरोन होता है (एका १०) । १२ पासूर्ण के ब्राह्म दिवा माग्राथम्यर (पर् २ १ ७६)।

(बीव १)। वरोभासमहावर प्रे विराध सासमहावर] मिनवरानास मामक समुत्र का विभागा देव (बीव १)। यसेमा सबर ियराधमासवर**ी देशो** क्लान्डरेक वर्ष (बीव ६)। प्राईनीइ भी [आदिनीति] छामकर पहली

आईनीइ-न्याउट्टारण

रामनीति (मुपा ४६२)। ज़ाईय देवो बाइ ≈ फ़ादि (नी ७० कात)। शाइय ६ ब्रिडीटॉ १ निरोप करत । २ मुसार-प्राप्त संमार में बूमनेवामा (साका)। आईछ पूर [आभीछ] पान का पूक्ता

(पर)। आहेब बक [ आ + दीप्] चनक्ता । वहः आइबमान (महानि)। आईसर १ [झादाचर] मनबाद ऋपमेत

(सिरि १११)। आड की दिंदि शानी वस (देश ६१)। २ इस मान का एक लक्षत्र-वेद (ठा २ ३)। काय काम पूर्विभाय] यत का जीव (उर ६८% पएछ १)। आइय स्तहस पं विश्विमिक्क का चीव (पर्श्य १ मग १४ १६): अनि प्र शिक्षीची चल का बीव (सुम १ '११)। बहुछ वि िंधहरू | १ मन-अपुर । २ एक्टबा प्रविद्या का त्तीय काएड (सम बद)।

आड स दि । भवता, या 'साठ वसोहेद श भवउत्तरेनेए। कोइ मनागुरो पाउ धवने मेर सम्बद्धीति (स १४६) ।

काड १० [कायुप्] १ मायु जीवन-आक्रम | कार्ने (हुनो रेनेश १६) । २ वमर, भव (मा ६२१) । ६ बार् के कारहानुत कर्न-पुरुष (ठा ४) । इत्रस्त पुं िक्सस्त नराष्ट मृत्रु (माषा) । कलाव दु ["सुव] मरण मीट (विपार १) । क्लोस न विस्ति कायु-पालन बोदन (बाजा)। "विज्ञा की िविचा विश्वकरात्र, विकित्साताल (भार)। क्वंप पू विद् विद्यु विद्युत्ता श्चाक (विपा१ ७)। आईय एक [आ+कुद्धय्] र्हपूचित करता, सभेज्या । सक्- आर्डिबिब (बार)

(धरि) ।

भारंचणा की [आकुद्धाना] उत्पर वेणे (धर्म ६) । अतीका वि [आकृष्टित] १ संकृषित । २

आरंपण श आकुमानी संबोध गावसंसेप

चठा कर बाएस किया द्वारा (से ६ १७)। कार्तति विक्शिक्षम् । संदूचनवला । २ निवत (गउड)।

(**क**8) 1

भाउँट देखो छ।उह = घन्वर्त्तम् । यार्वश्रवेषि (खामा१ ६) । क्लाउंट यक [आ + कुक्ब ] संकोचना

प्रया संह आर्डटाविक (पर १)। आउंटण न जिल्हाभ्टनी चावर्यन (पेचा 24 22) 1 आउंटण न मिक्किनी संजीत पान-संक्षेप

(\$ ? ?ww) I आडंबाक्किय वि [दे] माप्नावित हुवापा हमा पाली मानि हवरकार्य से व्यास (पाम) । आवस ) देको आह = बाद्वप् (भूपा ६६६) आरातग्रीसम्ब

(से ११ ४४)। संह आदिकारा, आडविद्वश (महा सुरा ६१)। आडच्द्रगर [आपच्द्रन] शक्ता बनुका (町 Y\* 光 ) t आइब्द्रमा 🕸 [आप्रवर्जना] प्रस्त (पंचा

आ प्रमुखक जा + प्रमुख विका चेता

यनुता तेना। वह आउवर्छंड, आउवद्याम

**₹२, ₹₹)** 1 भाउच्छा की बिल्युच्छरी प्राता (५३ \$34)1 **आविष्क्रय वि [अपूर] जिल्ही बाहा शी** 

गई हो बहु (से १२, ६४)। माउअव वेको भागोज्य = प्रातीच (हे १ 2×4) i आब्द्रार्थ (आवर्षे) १ संदूष कला। २

आप्रदापि [आधार्य] मध्युक्त करने योग्य (धारमा 1 आ इक्ष वि [आयोज्य] चौकृते योग्य सम्बन्ध

सून क्रिया (पएए। १६) ।

करने योग्य (विने ७८ १२१६)। आउडिय रि [भागाधि है] नाच बजानेनाना (भूपा १६६)।

भाउजित वि [आवर्षित] संतुष हिमा प्रवा (शरूस १६) । आउडियमा की जिलाबिद्ध किया व्यापार

बाउज्जिय वि बायोगिकी सायोगकामा

साववान (मय २ ४) 1

(धानम) । इदम न िक्दण । शुध व्यापार विशेष (प्रशा 📢) । अ। उज्जीकरण न [कायर्जीकरण] सुम

व्यापार-विशेष (पराख १६) । आउट्टबर [आ+यूत्] १ करना । २ यजाना । १ व्यवस्था करना। ४ मझ संपुत्त होना सत्यर होना। १ निवृत्त होनाः ६ वमना फिरमा। मास्ट्रह, मास्ट्रेलि (मन १ निष् १)। वक्त-आडट्टेट (सम २२)।

चंड- आइड्रिअय (चर)। हेह- आइट्रिस्टर (कप्प)। प्रयो धाउड्रावेनि (ग्रामा १ ६ થે) ા आहरू यह [आ + इस्ट् ] केल रामा

विश्व करता । पाक्टामी (पाचा) । आउट्ट वि आयुक्त १ निवृत पोले किय हुमा (चा ६६८) 'क्याकर बाउड़ी जह बिंख व वश्यवि वहेर्च (बृह ६) । २ प्राप्तिव भुरामा हथा (दर १ )। ६ ठीक-क्षेत्र

न्यवस्थित (घाषा) । ४ इ.उ. विक्रित (दाम)।

माउट् प्री (भाइन्ट) केशन दिला (सूप १ 1 (3 े वि [आहत] मारर-पूक्त (रिंह ब्याबद्दिश ∫ ११९३ पर ११२)। ब्याबहुन न [आकुहुन] हिंदा (हुम ११)।

काष्ट्रण न भिष्यर्चनी १ धार्यका सेवा मिक (वस १ ६) । २ ममिन्न होना, सन्तर शोगा (भूम १. १.) ३ ६ मिन्रापा ६०३) (माना)। ४ मृगाना भ्रमता १ प्रशिक्षि (पूप रें रे )। ६ करना क्रिया कृति (राम)। भावदृत्रया वये [आवर्त्तनश] धरायदान

(एपि)। भावद्वणा सी [आवर्षेता] कार देवी (निद 1 (5

आउष्टाबय व [आपर्श्वन] धामपुत्र करता वनर करना (याचा २)।

क्षापुरम् सक [का+ द्रा] सूंक्लाः मास्त्वद्, | साक्ष्माइ ( पर्)। 🎁 आइग्पिड (हुमा)। आश्च भ [दें] नवाचित्, नोईंगार (पएख

ब्याइव ट्रं [आदित्य] १ मूर्व सूरत रहि (श्रम १६)। २ नोकारितक देव-विकेय (खाना १ व)। १ न केविमान-निरेख। ४ पू द्रतिवासीके (पद) । ३ दि द्राच प्रदर्भ (सुवार )। ६ मूर्व-संवन्धी फाइचे छ मारो' (सम १६) । गइ दुं [ गति] चक्क रंश के एक राजा का नाम (पडम १ २६१)। अस प्रं विशास् ] मर्गा वक्ष्मर्तीका एक पूत्र किसर्थ इस्मान्तु वैद्य की द्याच्याच्या सूर्वेद की उत्पत्ति हुई वी (पदम १ ३) सुर २ १३४)। पसन [प्रस] इस नाम का इक्ष सदर (५७न १ दर)। भी दन [पीठ] भववात् श्रवभन्ते का एक स्पृतिविष्ठ---पाक-पीठ (बादम) । रवस पूं[रक] इस नाम शा सञ्चा का एक राजपुत्र (पत्रम १,१६६) । रच पूं[रक्सस्] कानर शाला एक (सुपा ५२७)। सिंघावर राजा (पत्रमः २३४)। भाइक केरो छाएक (तर १४)। धाः च्यमाण चड [धार्डी (हरमाण) बळ निवाबात्राभीवामा बाता (स्त्रका)। भाइक माण रेखो कादा = का + ह । भाग्द्वविद्यी १ उस स्थित् (सुर भ ११)। ५ विषक्तित (सम्म १)।

**आइट्ट** नि [आबिट] घषितित अन्तित (क्स)। भाइष्ट्रि भी [बादिष्टि] नारखा (क ७) । भाष्ट्रीहर भी [भारमञ्जू] प्रारमा की शक्ति घारमीय सामध्ये (सम १ 🐧) । आहरिक्य नि (कारमञ्जूक) वालीय क्रक-

अभिन (स्प १ ३)। भाइरिहर नि [बाइड] बीना हुवा (हम्मीर ₹७) : वार्य्य रेबी साइल = (१) (तंदु २ ) ।

शार्ष्य स्त्री सार्म (ग्रीप सन् ७ 👔 1 (11Y) I भाइत्त नि [भाषीप्त] नोहा प्रता<del>रियः का</del>

निव (एम्प ११)। व्याः च वि [आवत्त] धनीद, नरहेन्त 'तुरुगः मिचै वा पदस्त बादता' (जीवा १ ) ।

आइल नि [आदाव] बहराकको शासा | (হাড)।

आ ३ मूज देवो देश इ≃ या + दाः बाह्स्य न (आविध्य] घतिष-स्त्कार (प्रतह

भाइदि 🛍 [बाङ्खि] धलार (प्राप्त स्क्रम

भाइद्ध वि [धाविद्ध] १ प्रेरित (से ७१)। २ स्तुष्ट द्वमाह्मधा (से ३ ३१) । ३ ध्यूला इया परिदेश (बाक ३<)।

**भाइत वि (भादिन्ध**े स्थात (लाया १

भाइम वि [काकीय] १ व्याप्त अस्त क्ष्मा (पुर १ ४६, ३ ७१)। २ तुंबस दायक परमक्त (छा १)।

**का** इस नि जिल्ली के ने सामस्य दिस्ति (माना, भैक्व ४६)। काइक वि कादीर्जी विदेश किम चाइ-कार्व विवशार्व कीय पुन्तांति विकारियामी

भाइस पूँ 🛊 🛚 भाव्यस्थ पुत्रीत बोहा (पद्द ₹ ¥) i आ ३ प्पण न [के] १ माटा (ना १६६ ) के

१ ७) २ मर नौ शोमा के लिए बी पूना मार्दि भी एसबी दी बातो है वह : ६ बाबस के भारत का दूब । ४ वर का सब्दक—भूक्छ (**4** 2 w ) :

काइय (बन) वि [कायात ] बाबा हुना (मिन) ।

माइव वि [बाचित] १ सॅचित एक्कीकृत। २ थ्यासं अलीर्गे। ३ इकित ब्रान्सित (क्षम ग्रीप)।

व्यान्य नि [आहत] चाररप्राप्त (क्य)। आक्षण न [धावान] चहरत उपाधान (पराह ₹ **३)** :

आइयण्या की [आइन] प्रकृष ज्यादान (& Q 1) I आद्रिय वैची आवरिय = यानमं (हु १

1 (80 व्यक्तस्य वि [आविक] मनिन, ननुष कर**ाण्ड** (प्रमाहि ३)।

आइक् } वि [आनिस] प्रथम यहता धाइद्विय 🕽 (सम १६६, भग)। 'बाइनियमनु किंतु लेशासू" (पर्का १७: विशे २६२४) । आह्वाह्अ र् [आविवाह्क] <del>के विशे</del>व जी मूत बीव को दूसरे अना में से जाने के निए निमुक्त 🏞

'बाहे बमाराबंडा बरिगमुहा धाइकाहिमा तब बुरिसा।

ध्वत्रविद्विति समे धन्तुया ! वमञ्जूणिक्यवस्थ्वार (सब्दु दरे)।

आइवादिग पु [आतियादिक] मार्वकर्तक (बायुरेवर्टिकी पन १४)। आइस धक [ आ + दिश् ] याचेत करता, हुत्तम करना करमाना । बाइसक् (शि ४७१) ।

बह्न आइसीत (सुर १६ १६)। काइसम दि दि] वरिमत गाँधमक (दि १ w8) I

आर्थेय वि जिल्लीन दिश्लीन व्हर्ण राधेव (तुष्ट १ ३)। २ स. दुवित विद्या (सूप ११)। काईय र्र 🛊 राजिमान् घरन कुनीन गैस

(पाया १ १७) । आईज )त[ङाजिन क] श्वमो कार्का काईजरा है हुआ नक (शामा ११ माचा) । र पू बीय-विशेष । २ समुद्र विशेष (बीय १) । सद र् [ैसर्] शक्तिन-शिप का शक्तियाँ केव (भीव ३) । सहासह दूं [सहासह] केको पूर्वोच्छ सर्व ( बीव ३ )। सङ्ग्दरई

["सङ्ख्रा आक्त बोर ब्राविक्टर नामक बद्धर का महिलाता देव (बीव दे)। वर ई **चर** १ इति-विशेष । २ **चप्र**क्तिरेप । ९ मालिन मीर प्रमित्सर समुद्र का ग्रीकाया केन (भीव १)। बरमाइ दु [वरमाइ] वाचित्रवरकीय का व्यक्तिहाता देन (बीत १)। वरमहासह दुं [ क्रमहासह ] क्रो अक्टर बच्च वर्षे (श्रीत १) । वरोमास ई

विस्वसास र ग्रेप-विस्ताः २ वर्षः विरोप (बीव ६) । **क्**रोभासम**र** प्रै [क्यक्सासमङ्ग] उच्च होत का प्रविद्यमन केंद्र (क्षीत्र ३)। वरोसासमहाभइ 🖠 [बरावशासमहामङ्ग] क्या पूर्वेष वर्ष राजनीति (सुरा ४६२) ।

(बीव १)।

(बीब १)। वरोमासमहावर पू [वराष

मासमझावर] धविनवरामास नामक समुद्र

का व्यक्तिका देव (बीव ६)। वरोधासकर

[ यरायभासवर] देखो मनन्तरोक मर्व

आ नीइ की [झादिनीति] सामका पहली

आईय दे**वो आ**ई व्यमिष (वी ७- डाल) ।

खाइय वि [झातीव] १ विरोप-कार्त । २

संसार-पान्त संभार में घूमनेवाना (ब्रामा)। आहेल पुन [आबीख] पानका पुकरा (५व) । आह्य सक [ का + दीप् ] चनकना । नक्र-अर्डियमात्र (महानि)। आईसर पुं [भाषाचर] मन्त्रान् ऋपनेत्र (सिरि २४१)। आ उसी कि र पानी, नम (के १ ६१)। २ इस नाम का एक नसन-देव (ठा २ ३)। काम काम पूर्विकामी जरू का भीव (तर ६८५ पर्या १)। स्टब्स **का**इय 🛊 ["कामिक] बच का भीत (पएछ १) भग ९४ १३)। जीव दं **िं**डीव विश का भीव (सूम १ ११)। बहुछ वि िश्रहल**े १ जन-प्रहर। २ राज्यका पृथिकी** का वृद्धीय काएड (सम ८०)। भाउन दि] शबना या भाउपनीके स सम्बद्धिया कोई समाम्युक्ती आठ संचर्ध बेब सम्बद्धीति (स ३४६)। भाउ १न [आयुप्] १ माष्ट्र भीवन-आक्रम ) काल (प्रमा रेक्स १६) । २ वमर, बन (या १२१) । १ मार् के कारणभूत कर्न-पुरम्भ (ठा व)। **काछ पुं ["श्रास्त्र]** मराष्ट मृत्यु (प्राचा) । क्राय पु [क्ष्मय] मध्य मौड (प्रिस १ १)। क्लाम न ["इस] बायु-पासन, भीवन (बाचा)। "विज्ञा सी [ विद्या ] वैद्यक्रमण, विकित्यासाल (बाष)। क्षेत्र पू विश्व विश्वक, विकित्ता-शाम (विपार ७)। आर्थय सक [सा+कुद्धाय्] संदूषित करना समेग्ना । संह आर्डिविव (या) (मिवि)।

कार्तकान [आकुद्धान] संकोच यात्रसक्षेप धार्त**प**णा की [आकुकाना] कर देखे (वर्ग ६)। अर्थकाम (आद्वादित) १ संदूषितः । २ छठा कर बारल किया हुमा (से ६ १७)। छाउँक्षि वि जिल्कुक्किन् देशंकुचनेवासा । २ निवस (गउड)। आहेर देखो आहरू = धन्दर्पम् । पार्वरादेनि (लावा १ ६)। आर्डेट यक [आ + क्रुप्टन्] चंकोचना प्रवेद, चेइ आर्डनावित्तु (पर १)। आर्डेटण प [आकुम्प्ने] पावर्वेन (पेबा १७ ११)। आइंटल न [आकुद्धान] धंकीच याच-धंजेप ( (ve \$ 5 3) आर्डवास्त्रिय वि [वे] धान्नावित हुशया हुमा पानी बादि ह्वारशर्य से स्वात (पाच) । आवक्त } वेको काड=बायुप् (नुपा ६५६ आद्या रिमा ६ ६)। आ उक्द्र संक [आ + प्रक्यु] पाता तेना चनुत्रा बेना। वह आउद्धीर, आवद्धामा (से १२ २१:४०)। श्रेष्ट आप्ररिक्क्जिया आविक्रम (महा मुता ६१) । आडकद्रमण [आप्रवर्जन] बाहा बनुशा (**ग** ४७ ६ )। भाष्ट्या की [बाप्रचन्ना] प्रश्न (र्गश १२, १६) । भाजक्या की [आपूर्वज्ञा] मात्रा (पूत्र \$48)1 आ अभिष्ठम वि [आपूर्य] निनकी प्राप्ता श्री पर हो यह (से १२, ६४)। आउज देशो जाओज = वाबोध (हू १ ११६) । आष्ट्रजार्पु[आवर्षे] १ संदुव करना। २ सूत्र क्या (पएए १६)। भागन नि [आवस्ये] मम्पुत करने बोरय (भाषम)। आडळा पि [आयोजप] बीड़ने बोग्य सम्बन्ध करने मोग्म (विसे ७४ १२६६) । आर्थक्रिय नि [भागाचि है] बाच बत्रानेवाना (युवा १६६) ।

१०३ आडिय वि [आयोगिक] जायोगनामा शावधान (भय २ १)। व्यात्रज्ञित वि [आवर्जित] मंत्रुव क्या हुमा (बएए ३६)। भारकियाकी (आवर्षिक) किया व्यापार (धावम) । कर म म ["करण] शुम म्यागार विशेष (वस्य १६)। व्यावज्ञाकाण न [आवर्शीकरण] सूर्य न्यागर-विकेष (पएए) **१६)** । आउट्टबर्ड [आ+वृत्] १ करना। २ मुसाना । १ व्यवस्था करना । ४ मध संगुष्ड होना राष्यर होना । ५ निवृत्त होना । ६ पूनना फिरना। सास्ट्रह, मार्क्ट्रीय (अप १ तिषु १) । वह आउट्टेव (सम २२) । शंह- आउड़िकान (सन)। हेह- आहट्टिसप (कप्प)। प्रयो धाउड्रावेमि (शामा १ ६ थातर तक [अ:+ इन्द्र्] फेरन करना हिंसा करना । बाक्ट्रामी (बाबा) । भाउट्ट विश्विष्ट्रची १ निद्रुत पीले किय हमा (वर ६६८) 'बाक्य नावड़े जह बिसरी राष्ट्रित वहेर्ग (इह ६) । २ आमित क्रुनाया हुमा (बर ६ ०) : ६ क्रीक-डोड न्यरस्थित (कामा) । ४ इन्त विद्वित (स्वम)। आउट् र् [आइट्] बेरन हिंसा (सूप १ 1 (3 ) वि [आहत] प्रावर-पुक (निष ब्रावहिका है ६६६। यह ११२)। माबहुम व [आक्टइन] द्विचा (सूच १ १)। । आबद्दम न [आयश्चन] १ बारायन हेवा भक्ति (वय १ ६) । २ माम्नुबा होना, शपर होना (सूप १ १ ) ३ ६ प्रतिरादा इच्छा (माणा)। ४ चुनाना भ्रमणः। ५ तिवृद्धिः (सूब १ १): ६ करना क्रिया क्रिया (चन)। व्यावद्दगयां जी [भावर्श्वनता] प्रशयकान (एपिर) । आउट्ट्या को [भावचैना] कार देवो (निष्

आउट्टायम न [आयर्तन] याम्यून करता

ततर करना (याचा २)।

आवट्टिकी [आकृट्टि] १ हिंसा मारना (उप ६ तर)। ४ पूँ व व का निशुक्त किया (भाषा एव) । २ निबंदरा (धरा १८) । इया मुखिया (दे १ १६)। साइट्टिकी [आवृत्ति] देवो आउट्टण = आ उत्त विकास्त्री १ वंतिष (ठा ६ १)। २ इंध्रेष्ट (स्व)। भामतीन (यन १ १) २ १ सुमारे हैं। भारत्व रि [आस्मोरय] बारम-इत (वव ४) । मार्था)। १ बार-बार करना पून<sup>,</sup> पून<sup>,</sup> किमा भारत नि [भारतुर] १ रोनी बीमार (एवि) । (सूज १२)। काउट्टि वि [आकुट्टिन] १ याओवाला 42)1 हिसक 'बार्ड नाएए सम्ही' (सूच)। २ द्मनार्थेनारक (क्सा)। ३ गरम (दे १ ६४, ७६)। क्षार्डाष्ट्र वि [दे] साबे दीन 'एवे पूछ एवमा-मि वा बार्स्ट्र चंदा बार्स्ट्र भूग सम्माने (पाचा)। धोकर्सेति (तुम ११)। भावद्विम वि [आहुटन्य] दुरकर देउले मोग्म (कैन सिन्डे में बदार) (इसनि व १७)।

भाइट्रिय देखो ठाउट्र = माबुत (रहा)। भाउद्विष प्रं [बाङ्गद्विक] स्एट-विरोप (अस ₹\*)( भाउट्टिय वि [भाउट्टित] दिल निरास्ति । बाइट्रिया को [आकुट्टिका] पाप में बाकर नरमा (पंचा १६, १ )। आरब्द्व वि [आहुष्ठ] चंत्रूप (निव् १) । भाउड दर भित+जोडप् ] संदश्य राजा बोदना। स्वयुः आदिक्षित्रमाय (यव १, ४)।

भागड तक [भा+तुद्] १ दृत्ता पीटना । रे बाहन करना, समान करना । आखेड (वंद)। वदद्व माउद्विज्ञमाय (चयत्र ४)। माइड रह [ लिख ] निवना, 'इति वद्दु राामपं धारोद' वंद्र आइडिचा (वं १---बद २ )। भार्रहर दि [साहुटिय] स⊅त. टाविट

(व ६—५४ २२२)।

कार्यह यह [ सम्त्र ] सकत् काल हुका।

२ ज्व्हरिक्त । १ दृष्टिन, पौडित (प्रासु २०

आ करन दि देश महारेष्ट्र । २ वि वहुत । आहरिय वि आहरित दिन पीकित

आ इस्त वि [आ इक्ट्रय] १ व्याप्त (मीप)। <sup>३ ध्वत (प्राय)</sup> । १ व्या<del>पुत दुवित</del> । ४ वंकीर्यो (स्वय्य ७३)। १ थूं, समूह (विसे व्याप्ततः सक् [ आङ्कुल्यू ] १ व्याप्त करन्त्र ।

२ व्यव करना । ३ बुआरी करना । ४ वंकीर्स्

रणा। १ प्रदुर करनाः करह-शाह

क्रिजीत भावसीखगाम (महा पि १६६)।

आउडिकी [आनुष्ठि] क्ष-विशेष (दे १ १)। आवर्रिज वि [आउर्धिन] पातुम रिपा वृद्धा (मा २४, महम ६३ १ ६। तप द ६२)। बाटक्रीकर एक [आश्रुकी+कृ] रेखी आउछ= बाहुसम्। शक्तीकरेति (स्प)। इनह भाउसीकिलमाण (नाट)। आउस्राम्भ वि [आ**ङ्**सीमृत] वरहाया हुमा (नुद २ १ )।

लाउड्डेय व दि] बहाद चनाने का क्षप्रस्य बरवरत (मिरि ४२४)। থাতন ঘর [আ:+ বন্] চলা বাড वरता। का आइसीत (तम १)। व्याप्त इक [बा 🛨 अन्त ] बाबेस करत ह्मा देश, जिल्हा इक्स बीक्स । सामान

स्पवि (कामा १ १८)। आरस्स ५ (ब्याक्तेरा) दुर्वपन भरूम्य पक्त (सुम १:३ १ १८)। ब्बाहरिसय वि ब्रियम्बर्य क्री १ वरूरो । १ क्रिकि क्षकर, संबरम (क्एल १६)। करण न [करण] १ मन वचन और कामाना

आइस ) वि [अयुध्यत् ] विषयु चैर्वाषु आइसीत ) (सर २३) धार्वा) ।

आ वसणा को [आ क्रोञ्चता] प्रक्तिए विकं

आवस्स क्षेत्री आवस = मा + मृत् । मा<del>र</del>-

र्लीन (स्ताया १ १० मन ११)।

शुभ व्यापार । १ मोद्ध के लिए प्रवृत्ति (वस्ट भावह न [आयुष्य] १ तक, हविवार (कुरा)। २ विद्याबर वंश के एक शता का नाम (परम ६४४)। घर न ["गृह] रुक्तग्राचा (रं)। परखळा की ["गृहशास्त्र] रेबी फलार वक वर्ष (वं) । घरिय वि ['गृहिक] बायुवराखा का बम्बद-प्रवान कर्मपाये

(विसे)। आऊड यह [दे] दूर में परा हरता। धारू बर (दे १ ६६)। आञ्चित्र व 💐 चत्र यस बूर्ये की बर्जे प्रविका (दे १ ६८) ।

(वी) । गैसार न [गिसर] शक्क्ट्र (ग्रीम)।

आधेरि रि [आयुधिन्] गोडा, र<del>ज</del>वारन

बाकर एक [आ + पूरव्] घरना, र्रीय

भारतीय वि [मार्गित] रच हुम, म्य

कला, बरदर कला । ब्राइटेर (शर) । इं-भाउरपंत भाजरमात्र (पर्य) १ % ११ व (२,२८)। वस्तुः बाध्यस्तित्वन (नि ११०)। तर आक्ररिव (पर) (परे)। लाण्स पं आदेशी १ क्लेबा । २ प्रकाद रीति (एवि १८४)। ३ कि नीचे नेको (पिक 23 ) / आएस देवो आवस (भग १४ २)। आपस ो देशियरा दिलकेट रिजा। **छापसम**ें २ व्यक्त **इन्**स (महा) । ३ विनजा सम्मति (सम्म १७)। ४ घतिकि महमान (मुम २<sup>्</sup>१ ५६) । ५ प्रकार, मेक जीवे सौ मेरी ! कालाएसेएी कि सपनेस बपदम' (मय ६ ४ वीज २ विदेध ६)। ६ निर्देश (निक्र)ः ७ प्रमाण बाब न बहुप्पसन्ते ता मीसं एस इत्य द्वापसी (पिड २१) । = इच्छा समिन् बाया देवो आएसि। १ इप्रस्त उक्तरूपा 'नानाहरमाएडी भन्दतो इन धधरुरएएँ (मानानि २६७)। १ सूत्र प्रन्य शास (विसे ४ १)। ११ करकार, मारोगः 'भाएसो क्वमारों (विसे ६४ वद)। १२ विल-सम्मत

भड्डपुक्नाइस्स् दु, न गाहकारोहि बुक्यहारोहि । भारती सो उन्हों

भाएता सा उ भन ग्रह्मानि नरंतरविसमा (इन २ c)।

आपसण न [आदेशन] व्यर केही (महा)। आयसण न [आदेशन आदेशन] सीहा वरीष्ट्र का कारबाना विष्णकाना (धाना २ २२१ और)।

ब्रायसि वि[लावेशिय] र यादेश कणे-बासा । र यमितायी रण्डुक (शाका)।

भाषसिय नि [काबिए] निसको ग्राका की सर्दे हो वह (मिन)।

द्याप्रसिय वि [आदेशिक] १ धारेण संतन्त्री।
२ विवाद द्यादि के जिमन में बचे हुए वे बाद-पदार्थ जिमनो समस्त्री में बाट के बा संदर्भ किमनो समस्त्री में बाट के बा संदर्भ किमा समा हो (निष्ट पेटर)।

आजा च [वे] स्मरा या 'वेत विभागित कि ताव मुनिएको आको देवनार्थ सामो महीबन्यनो पानी राज्य वेनिति (त ४२४)। आजोग वृं[आयोग] रेनाम, नत्र (वीत)। २ सम्प्रीयक पुत्र किंगिय करना केना (सन)।

३ परिकर, सर्रवाम (ग्रीत)। आओग पु [आयोग] भवीराय सर्वोतार्यन का सावन (मुख २, ७ २)।

आधोग्य पुं [आयोग्य] परिकर, धरंणम (बीत)। आजोळ पुंत [आयोग्य] गण वाना (महा

वह)। आक्रोट्स वि[आयोध्य] संबन्ध-योध्य योदणे

साम्य (बिसे २३) । आओड एक [आ+कोटय] प्रदेश कराना बुसेइना धाधोडावीर (बिया १६) । आओडण म [आब्देखन] मञ्चल कराना (स

१,६)। साम्रोक्टिय वि दिं ] ताब्ति गाय हुमा (वे १६)।

आक्रोधसक[ आ + युघ्] नदना। यायौ वेषु (वेणि १११)।

आओस सरु [आ + मृद्ध कोराय] धारोग रुपा, स्वर रेता। स्वयोत्तर (निर १ १) पायोगेकडि धारोजित (उपा)। कसक आओसेख्यमाग (बोर २२)।

काओस ९ वि] प्रशय-समय सम्बदा-कास (स्रोव ११ मा)।

आआसर्णा श्री [आक्रोशना] निर्मर्सना विप्रकार (निर १ १)।

आओइण न [आयोधन] हुड सहाई (हर ६४० टी सुर १ २२ )। आंत वि [अन्स्य] यन्त ना (पंचा १० ६१)।

भाकंस सरु िया + काक्क् ] काक्ष्म क्क्ना । धाकविष्ठि (स्ति) ।

आर्थका की [आर्श्यक्षा] वाह, रूच्या प्रक्रिया (विशे ११६) । आर्थिक वि (आर्थाकिकान) प्रक्रियोगी

आक्रीक वि [आक्रोक्ष्म ] सम्मापी सम्पुक्त (प्राचा)।

आक्रम् धक [आ + ऋत्यू] रोना विस्ताना। धार्रवान (पि ४०)।

आर्कविय न [आफ़न्तितः] १ साझ्न्यन रीपन। २ वि. जिसने साझ्न्यन फिया हो वह (दे ७ २७)।

आर्कप मक [आ + कम्प्] १ बोहा क्रीपता। २ वटार होता १ १ आरावत करता । संक्र आर्कपक्षमा आर्कपक्षमु (शत)।

आक्रम पुं [आक्रम्य] १ कोडा करेवता। २ प्राप्तकत (वव)। ३ तत्प्रसा, शावजेत (स्त्र)। आर्कपण म [आरम्पन] स्मर वेसी (वयः वर्म)। आर्कपिय मि [आइस्मित] ईपद चमित

आकाषया व [आक्रास्पत] इपर चानत कमित (उर ४२८ टी)। आक्रपिय वि [आक्रस्पत] धार्वानत प्रसय

क्या कृषा (पिंड ४३६)। आकब्द पुं आउपी शीचान। विस्तितः वी [लेक्टि] शीचना (यन ११)।

আৰুৰ্ত্ত্ত্বাদ (আৰুবঁজ) দীবাদ (নিছু)। আৰুৰ্ব্ত্ত্ত্বাদি [বি] বহুং নিছনা হুমা 'ধুনা' ৰ কৰু বাঁধ নিকাজিনা

कः परितु मण्यम्म । पण्डिमस्योगवर्गिपादारेखान्त्रविद्वाः स्वति ॥ (वर्गीव ११३) ।

आकण्यान न [आहर्णन] सक्या (माट) । आकर्षणाय वि [आहर्णित] सुत सुना इसा (धावा) ।

क्षाक्ष्मिक को आस्त्रिक्षि (एक्षि १)। आक्ष्मिक्ष कि [आक्ष्मिक] स्कल्पान् होने बाला विना ही कारण होनेवाला 'बउन्हर्न मिलाणवा के स्थमाक्ष्मिक्षं छंति (विने

। श्राकर पुं[स्ताकर] १ कान। २ समूह (कमा)।

आरुस १वी आगस । मार्कसिस्मानी (मार्वा २ ६ ११४) हेक्स आरुसिचार (मार्वा २ ६ ११४) ।

माकार देवो आगार (हुनाः द १६)। भाजास देवो जागास (मा)।

ब्लाकासिय वि [वे] पर्याप्त नाफी (पर्)। ब्लाकिइ की [आइति] स्ववत शाकार (ह १२१)।

आकिषयः न [आकित्रहर्यः] निस्तर्यः निर्यास्त्रहराः भाकिषयः च वर्म च नः वम्मो (नव २३)।

आर्किपणया भी [आफ्रिजनता] स्पर वेलो (सम १२ )।

आर्किपणिय } वेबो आर्किषण (पाष्ट्रः पुगा आर्किषकः } ६ व)। भारितिष्टे बी [आकृतिः] पाषर्येण (पर्ये

पि १४)।

905 ब्याबिटि केरो काकित (रुमा) । अर्द्धप तक [आ + कुद्धाय् ] संबोध करना । सार्वक, संक ब्याङ्कविवि (घर) (ग्रवि)। मार्चचण न [भारुखन] धंकाच धंधंप (सम्ब १९६) विशे २४१२)। आविषय वि शिष्ठ खती संदूषित का कार्य सम्बंधियाची चमलीची पसरिया विमला (सर४ २६व)। आ इन्द्र न आ कृष्टी १ घाडोश । २ वि विश्व पर माशेश किया गमा हो वह (दे ३ ३२)। আছ্ৰপ্ত है আৰক্ত (ৰুম)। क्षाकृय न [क्षाकृत] १ धीवत क्रकार (का ७२ टी)।२ मन्त्रिय (विते ६२०)। बादंबस्य रि शिदंबरिक ने अस्पूर्व (भाषा)। साक्षेत्रप व [आग्रेटन] रूट कर बुधेवना (पर्राहरी)। भाभंस देवो अद्योस = शक्तेश (वंव ४ 2 €) 1 आक्रोसाय प्रक [ आक्रोशाय ] विकरित होना । वद्यः आकोररार्यत (क्लू १ ४) । कार्मन् (मा) केवा आईद । बास्तंबर्गम (प = ) l सार्थम (मप) सक [आ + कृप्] गीधे बौजना। संक-बार्लाचिप । मनि)। **जार्लंडस र् [धासण्डस] एत्र** (मूपा ४७)। मणुद्र न [ चनुप्] इलाकनुप् (बप १ वर दी)। मृद् पु ["मृति] स्म-भाग महाभीर के पुत्रम निष्म नीतम-स्वामी (पचम ११ १ न)। आगद् की [आगति] धायनन (भाषाः विशे २१४६) । आगड् केशे आविद् (मद्दा) । भागतस्य देशो आगाम = धा + थम् । कार्गतगार } न [कारान्त्रगार] वर्गताला कार्गवार ) मुक्रप्रैकरबान्य (योग व्याना) । भागंतु नि [बागन्द] यमेनाना (नूय)। भागन्तु **भे**ते भागम = धः + गम् । बार्गतुस ) दि [कारम्युक] १ क्रानेशका । आरंतुन } २ मोतिष (प ४०१ वास २४। पुत्र ६६६ धीव २१६)। ३ इतिम प्रस्ता-

लार्गतज देली आगस = धा + वम् । आर्माप एक [आ + इस्पय्] वीपाना हिसाना । वह आर्गपर्वत (स १११ ४४१)। आरोपिय हैयो आर्थिय (परम १४ ४१) । आरगच्छ स्टब्स् [का÷सम्] धाना वास-मन करना। **धागण्डा**इ (महा) । भवि बागविज्ञम्स६ (रि.६२६) । व**र आ**गव्युंत आगच्छमाण (नास वर)। हेइ- आग-বিশ্ববিদ (বি ২৬২)। आगत रेगो आगय (नुर २ २४८)। ब्यागची ध्ये दि ] कूप-तुमा (६१ ६३)। आगम एक शिंग + राप् ] १ माना सावशन क्एता। २ वानना। धीन धार्यायस्त (पि ५२१ ५६ ) । बद्धः शागममाण (धाषा) । **धेर आगेन्ल आगमेचा आगम्य (पि** इ.स. १८२३ धीप) । इ. आर्मन्डव (सूपा १६) । डेक आर्गर्स (राम) । आगम प्रे आगम र हमाबय (वेष १४५)। २ ज्ञान जानकारी 'चोतुर्धावन्यक्रम्यालं बावमे क्षं (मुख २ १३)। आगम र् आगम र भागमन (से १४ १)।२ शास निवास (वी ४)। क्रसंब वि **"इ**रास्त्री रिजान्तों ना बाननार (उत्त)। क वि द्वि शको का भागकार (प्राक्त)। णीइ की निति । भागमीच विवि (वर्म २)। ज्युनि [इ] शक्तीका वानकार (प्राप्त)। परतित वि [ परतम्त्र] विकान के मनीन (पंचन)। बह्मिय वि विश्वक विकाली ना **शब्दा जानकार** (यन क्वाहार पूं ["अब प्रहार] विद्यान्तानुगीवित न्पवहार (वन) । धागम सब आ + गम् । प्राप्त करना । श्रीह-थावमित्ता(सूग्र २ः७ ३६)। धारामध्य न [आरामन] धारमन (धा ४) । ब्यागमि वि [ब्रागमिन्] वाले वाला यापायी (मिसे वृश्यक्ष)।

'करन सम्बंतो दायमियो' (सुन १ १)।

राज्य प्रक्रियादित (स्वर १११) । २ कालीफ

बस्तु को ही नावनीवासा (सम्म १४२) ।

कामधिर विश्विमन्त्री यसेवला धारमर करनेवासा (सरा) । आगुनिस्स वि ज्ञागमिष्यम् । र पायमे, होनेबाला (पडम ११व ६३) । २ यानेबला (सम १६६) । आगमिरमा भी [आगमिरयम्ती] र्घाय-नाम 'बाईबन्डार्नाम्म बायमिरमञ्' (**१व** \$ ) t आगमस ) देनो आगमिरस (धंत १६) आगमंसि । धीन)। आक्रम रेसो भागम = धा + पन् । आराच वि [आरान्त] १ भावा हुया (प्रामु १)। २ अञ्चल (खाया १ ७)। आरार देनो आहर = प्राकर (प्राचाः ४४ व १३ यै)। आगरि वि आश्ररित् ] बाल का मानिक यान का काम करनेताना (पर्यह १२)। आगरिस व [आकर्य] १ शहस स्वासन (विमे २७८ । सम १८७)। २ धौंवान (विने है १ १४०)। १ बहुए कर की देश (बाहु)। इ प्राप्ति (सव २४, ७)। भागरिस धर िआ + कृष् ] श्रीवना । यह-बाबरिसंत (बमैसं १७२)। आगृहिस्तर नि [आउप%] १ बोवनेरालाः २ वृ सदस्कान्त बोद्द-पुन्यक (धारम)। आगरिसण न [आऋपंप] बीबार (सम्मद 782)1 मागरिसणी 🛍 [आरुपैजी] विदानिध्येन (पुर १३ ८१)। आगरिसिय वि [आइ.ए] बीवा हुम्म (<sup>पुण</sup> १६६३ महा) । भागस्य क [शा + कस्य ] १ वासगा । रे सम्प्रता । ३ पहुँचाना । ४ संमापना करता। थायमेड (स्प)। मानमॅरित (स्प १ १)। चेंद्र 'हरिव बोर्डामा बागास्त्रकाण' (महा)। भागक वि [आरब्धत] कान बीमार (दह रे)! आगस धक क्या ÷कृष्] बोचना । मार्च साहि (माना २ ३ १ १४) । ग्रेड. स्थान आगमिक वि [आगमित] विकित कर सिर्ट (मिमे २२२)। भागह देवो सागाह । संब्रः भागहरूचा (का थागमिय दि [कागमिक] १ स<del>क्त सं</del>कशी ₹ ₹ ₹?) i

भागवित्र वि [ब्रागृहीत] संपृहित (विदे

₹ ¥ ¥) I

आधिय वि [दे] गूरीत स्वीकृत (प्रसू ाइमाइ वि [ातिपातिन्] विद्या बादि | शागाह नि [लागाह] १ प्रवस दुःसाध्य के बस से शाकारा में गमन करलेवासा (श्रीप)। 'कबूबोसहंब बायाहरोजिएों रोनसमबन्दी' (उप आगासिय वि [आदाशित] धावात को आपवेत्तम वि [आस्यापयित्त] स्परेश ७२ द दी)- 'नी कपाइ निग्नेवास वा निग्ने-प्राप्त (धीप)। बीस वा बतामसस्य मीए बाबइत्तर, नवन्त्र व्यागासिय वि [आकर्षित] चौंचा हुमा मामाहि रोगाविकेदि (श्व) । २ व्यापाद, चास कारश (वेचमा)। ३ घरमन्त शह (निच्)। (पीप) । व्यागसिया को [आग्राशकी] प्रकार में जीग द "बोग मोग-विशेष परि-बोव (श्रोष १४a)। पण्य म [ प्रक्र] साम वयन अपने की सम्बन्धिक (सुमनि १६३)। आसाह सक अध्य+गा**द** विवयहर धावमः 'धायाद्यक्र्एंम् य मानियप्या' (वव) । करना, स्नान करना । आगाहद्वता (रस ४, स्य न [°स्तु] पानम-विशेष (निष्)। t (tt) : आगामि वि [भागामिम्] धलेवाना (सुपा आगिइ 🕏 [भाकृति] बाहार, रूप पूर्ति ۱ (۲ (सुर २ २६) विपा १ १)। आगारसङ [बा + कराय्] दुसला बाश्चान व्यागिट्टि नी [बाइटि] वाक्येंस (सुपा क्ला । संक्र आगारेकण (प्राव) । रश्र)। ब्यागार न [ब्यागार] १ वर, गृह (शावा १ धारी देखों आगिड किएए।परिस्थाधी १ महा)।२ वि पृहस्य मृही (ठा)ः स्य विसानु सामाइयं न में तासु' (विसे २७ ७)। वि दिव] पृद्दी (वि ३ ६)। बारा पुँ [बाकु] धनिनाय दक्का (बाक) । आगार प्रे आस्मरे १ घरनाव (उप ७२० आर्थ देखो आयव । 'सूत्रकृतांन' सूत्र के प्रवस द्या पि)। २ इंबिड चेप्टर-विशेष (गुर ११ भुक्तसम्ब का बस्त्री सम्पन्न (सूच ११)। १६२)। ६ साइति अप (सुपा ११४)। आर्थस एक [आ + पूर्] क्वंख करना आगारिय वि [आगारिक] गृहस्य-शंवन्ती (निच्च) । (बिसे)। आर्थेस सक आ + पूप विस्था चोहा ब्यागारिय वि [आकारित] १ बक्तः। ६ विसना। प्राणितक (प्राचार, २,१४)। क्छारित परिवक (मान)। आर्थस.वि ज्ञावरी बन के साम विसकर क्सरग्रह पूं [आगास्त] १ चनल प्रदेश में भो पिना चासक बहु (पिंड १२)। रहना। ३ सम भाव से रहना (माचा) ३ ३ आर्थसण न [आधर्यण] एक बार का क्यंश सरीय्या-विसेष (पन) । आगास दुन [आकारा] पालाठ, धन्तरान आध्यण न [दे] नव-स्वान (ग्राया १ ६---(चवा) । रामा भी विरामां } विचानीकीय पण १६७)। जिसके बल से धाकारा में गमन कर सकता है भाषत सक [आ ÷ स्था] १ क्यू शा उपदेश (पदम ७ १४४) । सामि वि [ैगामिन्] दैला। २ प्राह्मण करना। सामकेद (ठा)। मानारा में भगन करने वासा पविन्यमृति कवकु यावनिक्यए (अप) । मुका ग्रावं (सुग्रा (बाबा) । सोइणी धौ ("बांगिनी) परि पि ८८)। वहः कायवेशाज (पि ४४)। हेड विलेप 'भावासबीक्सीप निमुक्ता सहीवि बाग-आपविचय (पि ६६)। पासिमा' (सूपा १०१)। "रिधकाय प् आध्यणा की [आस्पान] कवन उक्ति िस्तिकामी भाकास-प्रकर्श का सबूह, (खाया १ र)। यश्चएक साध्यत-प्रस्म (पर्स्स १)। विकासम व्यापयद्रम् नि [आस्यायक] क्यक वका वि भवरित बाकार का बाव (धावम)। फस्टिइ, काडिय र् ["श्काटिक] निर्मेश ब्यदेशक (ठा४४)। स्तरिक-राम (धार्य भीप)। फाब्रिया बाँ आयविय वि [आस्यात] बनः, वहा हुणा िप्रासिमा एक मीठा प्रव्य (पएए १७) ।

(ft vs) 1

वक्स (याचा)। आयस सक् [आ + घस्] योड़ा विस्ता≀ धापसम्बद्ध (निष्)। आधा सक [आ + स्या] कहना । (माना) । काषाधक [आ+ ब्रा] धूँवना। वक्र आघा र्यंत (स्प ११७ टी)। भाषाय वि [भाषयात] क्वित हक्त (माना)। आधाय वि शिक्याती १ उक्त कवित (सूख १ १३ २)। २ मः छक्ति, कमन (सूब ११२१): ब्यायाय प्रे [झायात] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६) । २ विनासा (उक्त ४ ३२ सुबा ४, १२) । ख्यबाय पूँ [आधात] १ वय। २ वोट, प्रहार (कुमा एपमा १ ६)। आधार्यत स्त्रो आधा = मा + मा। खायाय देवी आयव । मावलेइ (पि ०० 2 3)1 आधुट्ट वि [आधुष्ट] पापित जाहिर किया हुभा (घनि)। काबुस्स अरु [का+धूर्णे] डोसना, हिसना गौपना बसना। आमुन्मिय वि [आमुर्णित] होसा हुवा कम्पित असितः 'माबुम्मियनयणुबुमी' (पराम \$ \$2 40 X4) 1 आयोस एक [आ+योपस्] योपणा करता विद्योग निन्नामा। मानोनेड् (स. १)। आयोसज न [आयपन] विद्यार योपला (महा)। आपक्त स्क [भा+ पशु] द्याताः वक्ट आ (वक्स्तंत (रि २६, ८ क्ट)। आपक्तिय (रो) वि [आसपात] उद्ध क विच (यगि २ )। आ बरिय वि [अपपरित] र प्रमुद्धित विद्युत्तः। २ म- धाचरण (प्रामू १११) । आ चाम सर्क [आ + चामय्] चाटना बाना पीना । वह माचामंत (दुप १६) । आचार देवी आयार = माचार (मूमा) ।

आवारक देवो आवरिय = प्रावार्य (पार) ।

₹0= श्चाचित्रसः सक् [शा÷पशः\_] वहना। **इ आधिकश**र्णाय (स.४.)। **आचिक्तिय वि [आक्यात] वर्वत बक्त** (# ११६) I **धानुष्यित्र हि [आकृषित] १ क्र**न्कर क्षिया हुद्या (पदम १७ १२)। साथक्क न आभावस्य र नव का समान (शप्प) । २ वि यात्रार किरोत' धानेलको बन्नो' (पँचा) । कारकेशन व [आयकेत्त] १ नात। २ वि माराक (ऋमा) । **धाजरब रेपो जागम + या = नम । माजरबह** (রাক্ত ভার)। खाशाइ देवी आयाइ (अ. च.१७.)। आ जिसे क्यों आ इ = यानि (दुसा वे १ ४६)। धार्जरण पूँ [भाजीरण] स्वनामकाल एक का सुनि 'बाबीएली व पीबी' (संवा ६७)। आर्जाव )पुंशियवी १ मानीविका आजीवग विवन निवंड के ब्याया पाची-बभेमें तु धबुरबमाछो पुछो पुछो पिप्परिवा-

स्वेति' (स्त्र) । २ वैन साद्व के लिए जिला का एक दोश---गृहत्य की माली जाति कुछ दादिकी समलदा क्वलाकर क्वरे क्या प्रदेश करना (ठा १ ४) । १ बोरासक मरा का धनुवासी साबु (पर) । ४ भन का समुद् (नुष) । आजीवगर् (आजीवक) १ वन का गर्वे

(शूब) । २ सम्म औष (शीव ३ टी) । वैश्री आश्रीवयः। आ त्रीव्यान [आ त्रीवन{ १ था-शीवका बीरत-निर्दाह का कराय । २ कैन साम के निए भिन्ना वा एक बीप (बह)।

भार्जावणा की [भाजीवता] उसर धेवो (बंगः योदः) । आश्रीवय देवी जार्जालगः। शाजीदवस्त्रिकेलं भक्रपमीविज्ञानि कुननी क्रीजोरिए उमुहुस्यमहस्ता नर्वतीतिमहराषा' (बीव ६) ।

आर्जायिय नि (आश्रीविक) बोरालक के मत ना भनुदायी (पएल २ ३ कता)। आजित्विया थी भिजीविरही १ निवीह (मार)। २ जैन नाभू के जिल्लाहरू का एक चेत्र (स्त) ।

आसत्त वि [आयुक्त] वप्रमाधै (निष्कु) । आञ्चाम्य प्रका ि आ + यूप् ] बङ्गा । **रेड भाग्र**िमहर् (हो) (केही १९४) ।

माञ्चह न [आयुव] हविवार (नै २४) । भाजोज्य केवो आ प्रोक्त (विदेश र ३)। का**र्डवर पूँ [आसम्बर] १ श**रीन जन्मणी क्किन (पाम)। २ शाच की मानाम (ठा)। वे यज्ञ-निशेष (धाषु)। ४ न क्छ का मन्दिर सार्थंबर वृं [आहम्बर] शत्त-विश्वेत पटह (बरा (२<)। भार्यवारक्ष वि [ भारत्यरवत् ] वाजन्यरी

(पाप)। आक्रविय वि [वे] १ वृश्चित पूर-पूर किया ¥मा(पर)। आहरिय वि [आटविक] चंपल में च्योगांता वंबली (स १२१)।

था≢इ सक [आ + इह् ] चारों धोर से

जनामा । बादश्व (पि २२२। २२६) । बाद-इति (पि १२२) २२६) । भावह एक [आ + भा] स्थापन करना निमुक्त करना । शास्त्रकः । धंक- व्यावस्ता (भीप)। आकाका की [दे] वजारकार, ववरवस्ती (दे 1 (Y# 3 व्यवस्थीय द्रं [आहासेर्यंक] पत्रि क्रियेप (भवह १ १)।

आबि 🛍 [बाढि] १ पति-विशेष। २ मन्ध-विधेष (वे ६, २४) । भाकियचित्र वं कि शिविका-माहक पूरव (?) (E 180 2xt) i आबुभास तक 📳 मित्र करना, मिनाना।

माञ्चमलाइ (वे १ ६६)। आइमास्डिप् विकिथना मिसायट (दे १ माहीय वेदो आहोद जपाटीप (तुपा १६१)। भाडोखिय वि [वे] रक रोका हुमा (लाग

1 (#9 9 माडोप नक [ मा + टापम् ] १ वार्यवर (मन)। तहः आस्थानसाः (धन)।

**गरनाः २ पत्रन द्वारा भूतानाः धाशोनेह** । आश्रम 🛊 [आटाप] धारम्बर (एवा संस्)।

आहोषिअ वि हिं] प्रायेशित इस्सा विम्य ह्या (दे१ ७)।

आहोबिअ वि [आटोपिक] माटोपवाना, स्कारित (पर्ह १ ३)।

**आहर्ड में ∫धार ही वनसकि-विरोप (पर्**ठ 1 (5 आद्या पुन ब्राइक १ बार प्रस्व (धर) ना एक परिमाल । २ चार हैर परिमित स्मा (बीपः सुपा ६७)।

आढरो नि हैं | बाइएस 'एल्टरियम निवय-बम्मनरबर्गणा पाढतो शिन्धिनित्तदशमी पूर वेथो गाम गरबई (म १४ )। अव्यक्त वि (आ(क्य) तुक किया हुमा प्राप्त (थीय रवश है २ ११८)।

ब्राह रेक ) विश्वारक्यों प्रारंग किया हुन्य ब्याद विश ) (मेंचल २३ वेदम १४०)। भारप्य देशो भारतः। आडय देशो आहार (सहार क्षा ११)। आडव करु [आ: + रस् ] प्रारंग करना शुक्त करना । साहबद् (है ४ ११६) वस्त २२) । कर्मे, मासलह, सास्त्रीमह (हे Y

११४) । आ वह तक [बा+ ह] श्रवर करता मानना । धाडाइ (ठवा) । यकः आहामान आहायमाथ (पि १ । धावा)। क्यक. ध्यक्षमाण (बाचा) । आहा की [आहर] संमान (पन र-नाना ११६: संबोध १६)। भावित्र वि [भाइत ] सन्दर्ध शम्मानित (E t tyt):

**बाहिस से दि**ंदि हुए समीहा २ स्टलीन माननीम । ६ सप्रमत्तः अचल्कः। ४ नाइ निषद (दे १ ७४)। आण एक [द्वा] जलता फिन व घाउँ एवं' (वे १३ वें)। बाकाछि (वे १३ २०)-धिमिधी पाइपकृत्व प्रदेश सोई च में स भारांवि (या २) । यान्छे (समि १९७) ।

भाष संक [भा+जी] ताना मानदन

नरना ने भाना। मालद (पि १७० वर्षि)। वह-काणमाणे (शामा १ १६)। हेई-आणिवि (प्रप) (मवि)। आण पू [बान] १ श्पानोच्यूतन बाग । र रगम 🕊 पुरुषन (परुछ) ।

लाण क्लो साम = यान (वाद क्र)। आणेह्य देशो आअंद्ध । प्राजंबद ( पर )। आणंत देखो आणा । आणंतरिय न [झानन्तर्य] १ मनिन्धेय भ्यवज्ञान का समाव (ठा ४ ६) । २ चनुसम परिपाटि 'बाग्रांतरियंति का ब्राग्परिकाधिति वा धराक्तभेति वा एगद्वा' (धाक् )। सार्णव् सक [ आ + तन्तू ] धानव पाना चुरा होना । आर्थेष् सक [ आ + सन्दय ] युव करना । मासंदेति (शौ) (भार)। 📡 आपंदिअन्त (रमध १)। काण इर्दु [आनस्य] १ बहोरात का सोन इयां गुरुतं (मूका १ १६)। २ एक वेश विमान (वेदेन्द्र १३१)। आणंद पूर्व (भानम् ) १ इर्व पुरव (हुमा)। २ जनवाम् श्रीवसनाव के भूस्य-रिप्य (सम १६२)। १ पोतनपुर नमर का एक राजा, को प्रमदान प्रविद्यनात का मालामह या (पटम १ १२)। ४ मावी छठव वसदेव (सम ११४ । ५ नायनुमार-जातीय वेवीं के स्वामी वराग्नेत्र के एक एव-मिन्म का धाविपति दन (हा ४, १) । ६ सुहर्त-विरोप (धन ४१)। ७ मनवान् ऋषमदेवका एकपुत्र (सर्व)। भगवान महाबीर के एक साबु शिष्य का नाम (कम्प) । १ मनवान् महावीर के वस मुक्स प्रशासको (धानक-दिस्म) में पहला (स्वा) । १ वेस-विशेष (के धीव) । ११ राजा बोधिक के एक पीत का नाम (निर २ १)। १२ 'खरामक्दर्स' सूत्र का एक सम्पर्म (ज्या) । ११ मण्डरीगाविक इसा भूव का सातवां सम्मदन (मग)। १४ 'निरमानश्ची' सूत्र का एक सन्यक्त (भिर २ १)। १५ थ. देश-विशेष (प्रजम १ ६६)। पुर न ['पुर] नगर-विशेष (बृह्)। रक्षिकाय पू िरविष्ठत देननामक्यात व्क कैन साधु (भव) । आर्जव्य म [भानन्दन] १ मुखे इर्ष (पुरा ४४ )। २ वि शुरा करतेवासा सानव श्राम (प ११३ रमश १ स्तु)। आजदवड ) पुंचि ] पहली बार की रज आजदेवस ) स्वका का रख बक्र (वा ४३७ दे१ ७२ पर्)।

आणंदा की [आनन्दा] १ देशी-विशेष मैद की पश्चिम दिशा में म्बित इनक पर्वत पर पहलेवाकी एक विस्तुमारी (ठा c)। २ न्स माम की एक पूप्करिएही (राज)। भार्णदिय वि भानिन्दित ] १ इपँपास्त (थीर)। २ रामधन्त्र के माई मरत के साथ वीचा नेनेपाला एक रामा (परम <१ १)। भाणंदिर वि शिनन्दिन् विषये पुर चुलेनामा (गर्मि) । शामक्य सक [परि+इक्ष] प**ी**सा करना । इक् आणान्से हैं (धीव ६६) । आवारक केलो आअंह । मास्त्रवह (यह )। आजट्ट वि [आनष्ट] सर्वेदा गट (रुप्त १५ ३ मुच्चर⊏ ४)। आणग न [आनन] मुच मुँह (रूमा)। आणम न [आनयन] सामा (महा)। आणत वि [आहप्त] पार्विट, विस्तरो हुन्त विया नया हो नह (खाया १ क मूर ४ t ) i आजित की आज्ञाति बाक्य हुए म (बीन =t)। अर वि [°दर] प्राक्ताकारक नीकर (ते ११ ६४)। "किंगर वि [ (क्ब्रूर] शौकर (पराह)। इर वि [दिर] पात्रा नाकुक संदेश-नामुक (धनि =१)। भाषाचिया की [आहप्तिका] कार **रेको** (एका विषय)। भागरम न [कानच्ये ] प्रत्नेदा (सम् धाजप (धरां) देशी जागव = धा + क्राप् । श्चासप्तमि (पि ४)। आजपान वेची आजापान (नव ६)। आजप्य वि जिल्लादवी सक्ता करने योग्य (समार्थ २ १४) । आणम धक [बा:+धम्] स्थल सेगा। बाएमॅरि (भग)। आजमणी **केवो आ**जमणः (मास १वः पि बदा २४६) । आजय पुन [आजन] १ वेबलोकनिरोप (सम १६) । २ पू उस देवलोच-आसी देव क्षा गय पूर्व [मानत] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५) ।

आणयण न [आनयन] सामा यानना (धा (Y' # (WE) 1 आवासक [आ + क्रप्यू] सकारता फरवाना । बाएजइ, बाएवेसि (परम ३३ १८) । वक् आपनेमाम (पि १११)। इ. शहमध्यक्ष (महा)। आण्य देशो आण्यम - या + गायम् । आणश्ण न (आञ्चपन) धाजा पात्रेश फर माइड (उना प्रामा)। आजवज न [आनायन ] मैनदाना (पुरा 1 (201 आ गवणिय वि अिद्यापनिकी प्राक्षा फर मानेबासा (दाय २६)। आजवित्राक्षी [आद्यापनिद्य आनाय निस्ति देवो देनों आमदमा (धार १)। आणवर्गी वर्ष [आज्ञापना] १ क्रिया-विरोध हुनुस करना। २ हुकुम करने से होतनाना कर्मबन्ध (तथ १६)। बागवणी की [जानायना] १ क्या-विरोध मॅक्साना । २ मॅथवाले से होलेवाला कर्म-कल (नव १)। व्याणा भी [माज्ञा] मारेत हुरुम (भोज १)। र छादेश 'एमा माखा निग्व'विया' (धाषा) । ६ निर्देश 'डश्वामी फ्रिहेसी माखा विस्तर्यो य होति पृत्द्वां (वव) । ४ मामम सिकान्त (विशे वर्श सुनि)। ५ सून की स्यास्य (धीप) : इसर पू िश्चवर] माना फरमानेशसा मानिक (विपा १ १)। जाग र्षु ["योग] १ बाजा का सम्बन्ध (गेवा)। २ शाझ के मनुदार क्षीत 'पान विसादनुक्त बाराजनीयो च मेंतबमो' (पंचन) । स्टू ब्ये ["स्वि] सम्बर्धन-विशेष (प्रत)। २ वि बागमों पर ध्यक्षा रखनेत्राचा (रंग) । व वि [ बन् ] बाका मानतेशाता ( बा)। वस्त न चित्र विकासन, हकूमनामा सि १ १८)। अवदार दे िक्यबद्वारी व्यवदार पिटोर (पंचा) । विजय न **विव**धा विश्व व वर्षम्यात-विशेष विश्व विश्व वाहा-धायम के क्षणों का चिन्तन किया जाता है (धीप) । <sup>।</sup> माणाइ वृं [ब्] राष्ट्रनि पत्ती (रे १ ६४) ।

आणाइना वि [ आक्रावन ] पात्रा मानने-बाना (वेचा)।

व्यापाइय वि [आनायित] मैंनाया हुमा (दुमा २ २१)।

काणायाण वृं [कातमाणा १ रवरशेण्यवस्य (प्रापृ १ ४) । २ रवागेण्यवस्य-परिवित स्वयम् (प्रापृ) । पद्मति की विश्वासि । इराशेण्यवस्य केने वेत्र की (स्वय १ ४) । सामात्राणु की [कानशाण] कार केनो पराहावानुकी (स्व २५ १)।

शापाणुय पू [भातप्राणक] स्वाधो न्युवस-परिवित वात (कप्प) ।

आणाम पुं [आनाम] स्वाध करा स्वास (स्त)।

भाणासिय वि [आनासित] १ कोडा नमाना हुमा (नणह १ ४)। २ मजीन किया हुमा (नडम १ १७)।

काणास व्रै [आस्तन] १ वन्तर । २ हाची वंचने भी रण्यु— नीति । ३ वहां पर हाची वांचा गता है चहु रुस्त्व, भीता (है २ १०० प्राप्ता )। करनेस लीता व्री (१ ११ ११०) वांचा है चहु रुस्त्व, व्याप्त लीता व्री (१ ११०)।

काणाव क्यो काण्य = स्य + स्वय् । क्युल-वेद (स १२६)। वयष्ट क्याणाविक्यंत । (मुद्रा १२६)। इ क्याणाव्यक्य (ध्यान)। कायाय एक [ भ्रा + तायय्] र्यक्याया। भ्राम्यार ( भ्रीव )। तथः क्याणाविय (स्तट)।

क्यापाद (बार) सक [बार + मी] कला । बारालद (बाह्र १२)।

आपादण न [वानायम] दूनरे वे नैनवाना 'न यमाख्यलं पदमा बीया वालावलेल वन्नीह् (चेदीय ७)।

आंगारम न [आद्यापन] याता हुनुस ( बर् )। आजारिय रि [आद्यापित] विसरी हुनुस

रिया सेमा ही बट परमाना हुमा (गुपा १२१)। भागाविस रि [आनासिन] वैन्यांस हुसा (गुपा १ १)।

व्यक्ति केलो आका । इन् आणियन्त (रक्य १)। सेष्ट्र ब्याजिय (शट)।

ह)। शहर ब्यालिय (नाट)। ब्याणिज हि [ब्यानीश] नावा हुवा (है १ १ १)।

र १)।
आणिक हि देशों आ वर्ष (११०४)।
आणिक हि देशे आ वर्ष (११०४)।
आणिक हि देशे हा मक (११४ द)।
आणिक हि देशे।
आणि कर हिंगे + भी नामा कर्में
आणिक (१४४०)। मक 'आण्ठतीय पूर्णम् सोमें पर्युत्रं मुख्यीय' (मुता २१४)।
संक आणीच (मित्रं ११४)। क्यान

आणीय पि [आसीत] नामा धूमा (है १ ११ कान)। आणुश्राम [हे] र दुवा ग्रुँद (हे १ ६२)

आ शुक्रान [के] १ कुथ और (के १ ६२) यह)। १ शाकार, शाकृति (के १ ६)। आ शुक्रागिक्ष वि[भानुयोगिक] व्यास्था-कर्ता(श्रुवि ११)।

क्का (राज ६()। आजुरंपिय कि [≱ानुकश्पिक] स्वासु, इपासु (श्व)। आजुरासि कि [अनुस्यसिक] नीचे श्रेकी

भागुनामि व [अनुन्तामिक] नाव रका (विते ७३१)। भागुनामिय वि [अनुनामिक] १ अनुकरत

करनेवाला गीक्कनीकी जानवाला ( लग )। २ त. धवविकान का एक सेव (धावम)। कालुगुरूज ) त [कालुगुरूज ] १ तीचिका कालुगुरूज ) त्रमुक्ताला (नेवा २ १६)। १ मनुद्रकुल (वर्षते ११६६)।

जाणुमिमक कि जालुश्रीमक इस कर्म-बामो को भी श्रमीष्ट, प्रत्येन्द्रमस्त (श्राचा)। काणुमाणु केवो आप्यापाणु (क्षम्म १, ४)। श्राणुमुक्य क [आल्पुम्बर्य] बनुष्य वरिपादी (मर १)

आनुपुत्रकी की [कानुपूर्वि] कम गरिलाटी (संस्कृ)। जाम नाम न ["नामक्] नाम कर्मका एक जैव (सम ६७)।

वाणुन्धिमक रि [आगुरोधिमक] ब्युनोध बनुद्दम मनोदर (बन ध ४६)। आणुनिश्च ६६ [अनुप्रशिच] बगुमरक (सं

६१) । आयुरा वृंग [अनूप] नगनवंत्रेरा (पर्नेशं ६२१) । आजून पूँ हिं] दराब बोन (६१ ६४)। आजी सक (आ + नी) चाना ने माना। आणेड् (महा)। इ. आणेसम्ब (तुना १६६)। संह- माणेरुण (महा)। आजी सक (हा) बानना। आणेड् (मर)।

आणितर केंद्रों आपने - स्वत्य (आ र )। आत केंद्रों आपन असलन् (आ र )। आतंत्र केंद्रों आर्थन - मज्यम (य २६१)। आरंत्रिक केंद्रों आरंद्रम (यूप र ; २०६)। आरंद्रों केंद्रों असल्य - मज्यम् (मज्यद्रित क्रुं प्रदेश कमार्थ (सुध र २ २, १)। आरंद्रों केंद्रा करण (स्वरूप र ))

आर्थन ) केवी जार्थन (बार Y प्रति जार्थना ) वः सुध १ Y) । आर्थ (की) देशों अन्य = ध्यत्यन् (इन्य ६) । जार्थ केवों बाइ = ध्य + धा । ध्यन्य (सूप ६ ८ १९) ।

जान्त वि (आत्मीय (सन्धीय (सन्ह २१)।

आर्पण ) वि [दे] प्रकृत मानुस वर्ष जादक ) कृता तथा (कर इ.२२१ है र ४२२)। आर्पण वि [आर्पान] बहुछ करता हुआ

(भु १६)। भारर देवी आपर ≔मा + इः मनस्य (ह

४ ६६)। आदरिस वैद्यो आवस (द्वमा वे २,१ ७)। आदाव वि [कादाव] बहुस करनेवाका (विदे १६६८)।

(तव १६६॥)। भावाण वेली आवाण (ठा ४१) 'पम्मह-चण्डेण संबूताति तुमं' (पदम १६,६ । स्वा)। आवाण म [आहेब्ल] एवला हुमा गरमं विचा हुमा (बल टेल ध्वरि) (बना)।

आवाजिय व [आवाजीय] ताम नवा (मुठ ६१) । आवाजीय केंग्रे आयाजीय (वज) । आवाब केंग्रे आया = या + वा।

आदि केंद्रों काड़ = पार्चित्रण सूप्त है थे)। आदि केंद्रों काड़ = पार्चित्रण सूप्त है थे)। आदिक केरों आत्म (टा र व क)। आदिक को आत्म (टा र व क)। अप्तिक को [आदिस्सा] बद्दरा वस्ते वी बक्दा (पार्च)।

आदिज्ञ रेजी आपञ्च (त्रन) । आदिट्ट देनी आदेट्ट (अति १ १) । आदिना रेनी आहब्द (त्रज्ञा १५ ) । भावित्तु वि [ आहात् ] प्रहण करनेनासा (ল ৬) ৷ आविय सरु झा + दा । प्रहरण करना । घाषियद (छवा) । प्रयो, ब्यावियावेंधि (सूध 2. 1)1 আবিত ১ रेको आइछ (पि ४६४) । ज्ञाति**क**ना है आदी को [भादी] इस शाम की एक महानदी (हा १ व)। आवीण वि [आदीत] १ कर्जन बीन, बहुत मरीव (सूस १ ५)। २ न दूपित मिस्रा। मोइ वि ["मोजिम्] इपित मिला को सेने-बाबा आरीलमोद्दीव करेति पार्व (सुख १ t ) i आदीणिय वि [आदीनिक] प्रध्यक्त शैन संक्रमी 'मादीलियं दुव्हरियं पुरस्ता' (सूच 1 (x \$ आद (शौ) बंद्धो अदु (ति ६ )। काबळा देखी आपळा (नएह १ ४)। आदेस देशों कोएस = प्रादेश (कुमा वन २, ≒)। आहेस पू [आहंश] व्यवदेत, व्यवहार (मूच १ म १)। देशो आएस = माचेत (सूम २१ १६)। आधरिस स्क [आ + वर्षेय् ] परान्त करमा दिएस्नारना । मार्वारसङ्घ (बानम) । आधा देखो आहा (सिंड) । शाधार देखो आहार = यापार (परह २,४)। आधोरण वूं [आधारण] हम्दिपक भहावत हामीबाल (बर्गीन १३६) : सातव देखो आणय (बर्)। आनामिय देवो आणामिय (पण्ड १ ४)। आपण केरो आवण (अमि १६०)। आपण्य देशे आयण्य (यनि ६१)। खापचि श्री [आपचि] प्राप्ति (संगोण ६६) पव १४१)। खापाइय वि आपादित**ै १ निस**की मापति की गरे हो वह। २ ल्लादित जनित (विशे \$58E) I आपायण न [आपाइन] संपादन (आवक बर पैचार १६)। आपीड पुं [आपीड] शिरोमुचल (धा २८)।

शापीण केलो आयीण (बस्त) । आ,पच्छासक जिला + प्रच्छा, } साझा केला सम्मित नेना । मात्रकहर (महा) । नह शापु**रह**त (पि ११७)। **४- शा**पुरुष्ट्रपाय (खामा १ १)। श्रंक- आपुष्टिक्सा आपु रिक्रसाणं आपध्कित्रज्ञ आपश्चित्ररं. ध्यापुचिश्चाय (पि १८२ १८३४ कथ्य ठा x t) i ब्रापुरक्ष्य व ब्रिप्रक्यूनो माद्या बर्गुमित (लाया १ १)। आपुट्ट वि [आपुर] विश्वकी मात्रा वा सम्मति सी गर्दे हो यह (गूर १ 🗀 ६१)। आपुण्य वि [आपूर्ण] पूर्व बरपूर (वे १ आपुर पुंजानुर] पूरनेशला 'मक्जानप पूरं सर्ति (कप्प)। कापूर केवा बाउर । कर्म, बापुरिजह (महा)। यह आपूरमाण, आपूरेमाण (भग राय)। **आ**पेड आपेड्ड नेबो आपीड (पि १२२, महा)। धापेष्ठ 🕽 आप्याप न [वि] पिट प्राटा ( पह् )। भाष्ट्रंसर् [जात्पर्श ] प्रत्य त्यर्थ (ह १ ४४)। माफर पू वि] यत बूबा (दे १ ६३)। धापाल क [भारकालय ] पारकाशन करना बानात करना। संद्र-आफासिका आफाब्रिडण (पि १६२: १६६)। व्यापतसम् वेको सप्पत्रक्रम (ग १४१)। अपुरुष्य वि [वे] शास्त्रसः (संसु १६२)। आफोबिश न [आस्पाटित] द्वाव पद्मादना ( F \$ 30PP) आर्थम सक [ का + बरम् ] भववूत बाँबता। मक्त आर्मपंत (हे १ ७)। सक्त आर्थ-भिक्तज (पि ५=६)। आर्चध पू [आवन्ध] संबन्ध संयोग (गउ४)। भावद्व वि [आवद्व] वैवा हुया (स ६५.)। आवादा की आवाचा १ वटा वावा (णामा १४)। २ व्यवर (सम १४)। ३ मानसिक पीड़ा (ब्रह्न) । आर्मेस्र र्षु [आर्म्कर] १ वह-विशेष (स २ वे)ः २ व विमान-विधेय (शम =)।

पर्मकर न ["प्रभक्कर] विमान-विशेष (सम जासकताण देको अस्मकताण (उदा) । आसह वि [आसापित] १ कवित एक (नुपा १११) । २ संमापित (सुर २,२४०) । व्याभरण न [भाभरण] मनकर, मामूपण (पि६ व)। आंगडव वि [सामडय] होने गोग्य शंपास्य (वय सूपा १ ७)। आभा की [आभा] प्रमा कान्ति देव (कुमा धीप)। भागानि विशिक्षानि भोका भोगी चित्रेगार्गं बम्ममच्यार्षं ग्रामानी **मरेल** (बस् ग्रामा १ १८)। आमार १ जिल्लामारी नेम, भार (मुपा २३६)। आ सास सक [आ 🕂 भाषू ] व्यक्ता संग्र थख करना । सामासद (हे ४ ४४७) । भागास र् [आभाम] १ वो वास्त्रविक में बहन डाल्प उसके समान काग्दा हो। २ विपरीत 'कप्छामासेहिं' (कुमा)। नाभासिय प्रशिक्षामापिकी १ इन नाम का एक म्सेच्छ देश । २ उसमें छानेदासी म्सेच्य चार्ति (पर्वह १ १)। १ एक धन्तर्शीय। ४ अधर्मे खनेशका, 'कहि तो मंदे ! बामा सियमणुपार्खं सामासियदीवे नामं वीवे<sup>\*</sup> (बीव १ ठा४ २)। आमासिय देवो आमट्ट (निर)। अधिओष्वय देखी आर्मिओगिय (महा)। आभिक्रोग पुं [आभियोग्य] १ विनर स्थानीय देव-विशेष (ठा ४ ४) । २ नौकर, क्रिकर (राय)। ३ क्रिकरता नौक्रपे (बस **₹ २)** I आश्विजोगा की [आश्वियोग्या] पामियोगिक मायमा (यस वेद २४४)। आभिजोगि वि [ आभियोगिन् ] किंदर रमानीय वैम (रस १)। आभिजोगिय वि[आसियोगिक] १ मन बादि से बाबीविना चलानैचल्या (पएए) २ )। २ श्रीकर स्वाधीय वेष-विरोप (गामा १ a) ३ वर्षीकरण पूनरेका वरार्ने करने का मन्त्राहि-नमी (५वा: महा)।

भामिओगिय वि [आभियोगिन] वर्ष्णकण्ण भावि से संस्कृत (भाव) ।

स्मामिकामा वेबी सामिकाम (क्एल २ )। सामिमादिक वि[सामिक्षद्वितु १ वाक्षद्व-संबनी (वंश ४ )। २ व. विकास विदेश (५४ ४ ३)।

सामिरगोह्य नि [सामिग्राहिक] १ प्रक्रिया सं श्रेनन चलनेशाना । २ प्रक्रिया सा निर्माह सप्टेमनमा (साम) । ३ न निष्णान-विरोध (सा ६) न आमिर्णाहिय है [आसिननिष्ण] मानस्य

माध (चंद)। ज्ञामिह १ वि दे प्रदृष्ट व्यक्ति पर ज्ञामिहिय मण्डे (पदम ४४२ ६१६२ वक्त ४२)।

आमिजिबोद्दिग देवी आमिजिबोद्दिय (वर्गरे २३) । आमिजिबोद्दिय न[आमिनिबोद्दिक] राज्य

ज्ञालाच्याह्य गुजालालाच्या छ गुणाला भीर सत्त है होनेबला प्रत्यक्रकानियोग (स्त ११)। आसिप्पाइक्ष वि[स्त्राधिप्राधिक] स्रक्रियक

वाना (बलु १४५) । व्यामिसक वि [भामिपेक्स] १ ब्रायिक के

बोत्स (निर ११)। २ कुब्द, प्रवाल, 'ब्राकि-रेक्ट हरिकरवर्ण पश्चिमचेड्र' (धीय)। भासार ्रपूर् [ब्रामीर] एक युव चारि भासीरिय में मेंगर, बोजाला (जूब १ प्रान्तुर

(२)।
आमुक्त वि [आमुक्त] क्लक (शिर है १)।
आमुक्त वि [आमुक्त] क्लक (शिर है १)।
आमुक्ति वि [क्ते] केली आमित्र [लग १९२१)।
आमोग वृं [लामोग] है शिकोकल केला।
(वर १४०)। श्रमेश स्वाल (हुर १, २११)।
हे नारुप्य जानत (योग १३)। १ असितेकर (योग १)। १ अपने स्वाल (लग ११)।
है शिक्षण (प्राल (हुर १, १)। ७ आला सालवा।
(मा १२, ६) हा १)। ७ आलो स्वाल (स्वार १९)।

आभोगण न [आमोगन] क्ष्मर व्हाँ (लुनि)। आभा ग नि [ आमोगिन् ] नरिपूर्ण, 'जह ननमें निकास मधी बहबिहमसोदी' (नुसा

धानोव ।

२७१)। गी बी [नी] यातस्य विश्वंब जल्मा कपनेवासी विद्यान्त्रिये (वृष्ट्)। आभाग सङ [आ + अगन् ] १ वेदान। १ बानमा । १ वसाब करना । ग्रामीएह (अक जन्म)। नक्क व्यामीएमाण (कल्)। संब्र

आसो चा आसोपऊण आसोइझ (स्त १। महत्त्र पेपक्ष)। आसोप पुं[आसोग] स्वपंदी फ्ला(स ६१)। र केवी आसोग (साव सहा पुर

६ ६२) । आस स [काम] क्ष्मुमति प्रकारक क्षम्यस— हो (गा १४७ पुर २ २४४ व १४६) । आस स [ अथना ] यस (ब्राह्म व१) । आस प्रकार हो स्थान है रहेप सीहा (वे ६ ४४)। १ वि सम्बन्ध कथा (सा २ ) । ३ स्ट्राइट,

सपविष (धाषा) । बार वृं [कार] सजीखें है जरफ कुबार (धा ११) । आमइ वि [ आमयिन् ] चेनी (बब १) । आमं प्र [आम] १ लोकार-मुचक प्रकार—हों (चुव २ १६) । २ लकियम प्रकल (वर्मर्स ५४१)

জানাই দ (ह) বনাবাই আনবা তা তব ছবিন আনবাছ (তাৰ্থ গৈ কাখে ঠোঁ) জানাইতা দ (বি) নাবাহ বাছ (হি ৫ ব)। জানাই তাছ (আন নাবাহ বি) আনুল কবো, উবাইবা কবো। গ্ৰাক্ষণৰ কবো। পাছ জানাইনাল (আখা)। গ্ৰাক্ত জানাইনাল (কখা) আন্তিনাল (বুল হ' খ)।

(१ न) चालावध (श्वार ४)। काम्रेट्य व [आमन्त्रय] साञ्चाल, संबोचन (बच)। वसया व [चचम] संबोचन-विमस्टि (शिम १४४०)। काम्रेटयी की [आमन्त्रयी] १ संबोचन वी

भाषा बाह्यान की वाया (वस ६)। २ बाठवी संनीवन-विमक्ति (ठा ६)। बामितिय वि [सामन्तित] बेचीविट (विया

आसग केवो आस (जाया १ ६)। आसभाय दु[असामात] समारि-त्रकार द्विस-निवारत (वेचा ६, १४, १ १)। आसज्य एक [सा + सम् ] एक बार सन्द्र

आसळा एक [ का + सृज् ] एक बार शास्त्र वरुगा। घासम्बेद्ध (माचा)। वङ्ग कासकर्मत (मिच्च)। प्रमो कासक्षत्राचेत्र (मिच्च)। आमद् र्षु [आमर्ष्] संबर्ध मानाव (कुमा)। जामय र्षु [आमय] ऐन वर्ष (त १६६, स्वप्न ६ )। करणी श्री [करणी] निवा विशेष (सुम २, २)।

आमय कि [मामत] संमत प्रमुखत (विके १९६)। आमराव वुं [आमराज] एक प्रक्रिक राज

नामयन पुल्लामयन पुरुष प्रकार यात्र (ती भ)। भामरिस पुंष्मामय स्पर्ध (मिटे ११ ९)। भामस्र पुन [भामस्त्र] चानता का क्ल

(सम्मत् ११६)। आमस्यक्ष्मी [आमस्यक्री] प्राप्तवा का पेड़ (वे)। सामस्यकृष्णा सी [आमस्यकृष्ण] नवरी-विशेष

(जाया २ १)। स्थामस्टा पुं [स्थामरक] १ वार्षे स्रोर से मारता १२ विपक्त-पूर्व का एक सम्बदन (स्रा

१)। जामका । पूर्व [जामकऽ] १ धानका का ज्यामकव । पेड़ (ठा ४)। २ धानका का कत जुल्लोनको जामकतो निव करतने देखियो मन्द्रवर्ग (बच्चा कुमा)।

आंगस्त्र व [के] ह्युर-मृहः ह्युर रक्ते का स्थान (दे १ ६७)। आमसिज वि [आमस्त्रन] १ बोबा विक्या।

र कावित (वे १२, ४३)। आमिख एक [भा + मुक्] ब्रोहना।

आसिक्षर (चित्र)। आसिक्ष न [झासिप] नैनेच (पंत्रा ६,२६) इस ४२३। वी १३)।

ध्यासिस न [आसिय] १ मोड (छाना १ ४)। २ कि मनोबुर, कुन्दर (ते १ व१)। १ माधिक ना नाय्य 'प्यासिस क्वनकुरिकसा विवृद्धिकामी निरामिया' (उन्त १४)। ४ ध्याहार, कवादि मोज्य करतु (र्वचा ६)।

आर्मुच पक [का + सुच्] र क्षेत्रमा। २ ज्याला ं ३ पर्ममा। यक आर्मुचंद (यान १)।

आसुक्त कि [आसुक्त] १ लक (पा १३८) यवड) १२ क्वाय हुमा (शत्र १४) १ ६ परि विव (वेजी १११ टी) । आसुद्रपि [आसुष्ट] १ सूत्र । २ उत्तरा श्या हमा (भीम)। आमुखसर [आ+मुप्]धोदना स्यापना।

दानुषद् (यरः) । आधुम एक [ आ + स्रा्] चौड़ा था एक

बार लर्रो नरना । बर आयुर्तन, आयुस माम (हा १) धावा मन व ३)।

भामदमा ग्री [आग्रदना] रिपर्वेश करना रापटा करना (पएह १ ६)। आमछ हूं (रे) सह, बदा (दे १ ६२)। । वृं [आपाद] कूमों की माला, पा आमेनमा - पुरुद पर पायर नी जाती है आमलय ) शिरीपूर्यण (हे १ १ १, वि

१२२: मग १ ३३)। आमन देलो आमेल = भारीह (उरा २ ९)। आमहित्र नि [आपीडिन] परवंतित थियै-भूपण ने शिभूपित (ने ६ २१)। आमाभ बद [आ + मुद्] गुरु होना । संह आमागुदि (पर) (मरि) । भामा ब र् 💽 आमार] हर्ष गुरी (६ १

₹¥) I जामाज र् [आमोर] मुक्तम बच्छी क्य (व ₹ **२३**)।

आमाञ ∮[आमार्] राप विरोप (सव ४६)। आमाभभ रि [आमार्क] १ गुल्य ब्लाप क्रतेशना। २ धानल-जनर (गे€ ४)। आमाजञ रि [आमादद] मुक्य देनेताना (9 & Y ) 1 भामाङ्गभ रि [भामोदिन] हर, इपित (बदि)।

आमारस्य वृ [आमारर] बील बुनि वृत्तुं द्वाराय (तूप १ १ ४ ११) । आमास्या के [अमारा] १ एकता । २

परिचान (मुख १ ६ वि ४६ ) । आमाद्व [दे] दर नर नपूर(११ ६२)। आमोदग न [आमाटक] १ बाल-विहेच

(याप्र) । र पुनों ने बानों ना एक प्रकार का बन्पन (इत्तरि १)। आमाद्यम व [भामाटन] योषा भीत्रम (बार) 1 (1 1

सामेरिक रि [आमंटिन] वॉन्ड (बार € } 1

आमीव् ) रेगो आमीअ (स्पन १२, गुर १ आसीय प्रशः वाली।

आसप्य पूँ [आसोक] क्तरार-पूज्य करार काबर, बुद्देकापूरण (घाषा२ ७३)। आमोरज दि [र] दिशेका घण्या जानकार 

आमाम पूं आमर्श यी सर्ग छूना संद-रिमलुमामोमी' (परा २ १ क्षे विशेष=१)। आमास पूं [आमाप] शोर (इत # २०)। आमानग रि आमापडी १ और बोरी करनगणा (छार २)। २ चोर्धे की एक

माति (बर २ ६)। आमामाद् र् [आमर्शीपधि] नव्य-विरोव विमक्ते प्रवार में राग्य मात्र से ही सब रोन नट होते हैं (परह २ १३ घीत)। आय पं भागी १ मान, प्राप्ति, पापदा

बार्ग हेनु (बिने १२२६ - २६७६) । ४ ध्यथवन पठन (विमे ६६६)। ३ गयन (रिये २७१२)। आय र् [आय] घप्ययन राष्ट्रांश-रिरोप (पर्यु २४ )। आय वि [आक्र] १ वन-नेम्यापी । २ वस्रे

के बाउ से सगाप्त (बस्परि) (दाचा) । आय नि [आगत] बाबा ह्या (रहा) । आय रि आची पुरीत 'कायनरितो करेद रामग्री (संबा १६)।

आय 🛊 [आगस्] १ पछ । २ घरराप पुनाइ (या २६) । आय पूंधी [आग्मम्] १ घारमा श्रीव (नम १) । २ भित्र गर्म 'बहामप्रसम्माई स्थाला' न्द्राय मायाए एश्वर्यन धरहार्थवि (मा ३ २) । १ राधेर, के (शापा १ ४) । ४ दान यादि शाला के नगु(शाला) । जुल वि [शुप्त] वंदत विशेषिक धारण्या विशे रियाँ (गूप) । जागि वि ["योगिन] बुबुयु प्यानी (नुष) । द्वि रि ["धिन] नुपूर् 'रचे में जिल्हा संपट्टी' (नूस)। तन वि

िनम्ब] स्थापीन, स्रक्त्य (सार) । जन्म व [तरप] परन परार्थ जन्मीर राजनप (याचा) । पामा र विश्वमा नि होन

हाय का वरिवाल कारा (वर्ष) । व्यक्तय न

(धारा) । २ बनश्रति-विचय (यगरा १) । ६

1823 आर्थन रि [आयाम्य] जिनने वास्थन रिवा हो बहरगाया १ १ ग १ । । आर्थन रेनी आया = मा + मा।

आर्थाम वि[आग्यनम] सामा वा निप्र बन्नराना (टा ४ २) । आवेश्व रि [आस्प्रशाम्] १ दर धरण । २ मध्ये (हा ४ २) ।

िमावी (धाम-स्राप्त । २ निव धीनप्राय (भग) । १ विषयामन्तिः 'तिएइत्रमी सम्बद् थायनार्थं (पूर्म) । य पूर्विजी पूत्र सहरा (मनि)। रएस्त्र नि [रिक्स] बहुरश्चर (ए। पार ध)। य वि विन् ] शानादि बारमञ्जूषी में संपन्न (धाषा)। हम्म रि িল্ল] मान्या को मधोगति में ने जानेत्राना। २ देशे आहारम्म (रिंड)। आय देवो आवर' फ्रिमावर्रीलयो जा पुरिमो सो हो" वरिमनयपाऊ" (मुना ४३३) ।

["प्रवाद] बारहवें मैन महाधन्य का एक

मान, सालार्ग पूप (सम २६)। साव पू

आयइ व्ये [आयनि] मीव्य गम (नुर ४ 232)1 आयडबगग न [आयदिजनक] राज्यमी

बिरोप (पत्र २७१)। भागाचा रेपी आह = या + रा । आर्थे हर्षु [आरङ्क] १ दुन्छ। २ गोहा (याचा) । १ दु साध्य रोम भ्राप्तु-राती रोग (धीप) । आयंकित [आनड्डिम] रोगी रोग पून्ट (हा १ श ही-पत्र १४२)। का गुरु व [आत्माद्गुतः] परिमान्तु वा

एए मेर 'बए) ज्या मानूमा वैमि में हो" मानामा हु । र्शं मरिएयमिहार्यगारमिख्यममान् पूर्ण इसं सु । (बिग्रेट हो)। आर्थय गर [आ+नक्य] सीवना विरत्ना । पार्वबद्ध बार्ववामि (उस) ।

आर्वयमिया । [आनद्रानश] कुम्बतार ना पात्र-रिचेप जिन । नट पात्र नतान क नथम मिट्टीशना पानी रगता है (मा १३)। आर्थपनी के [आ।द्वर्ता] सार रेना (शा

आर्थदम रि [अरमहम] १ बान्स का साह

रखनेत्रामा यन भीर इन्द्रियों का निष्टह्न करने-भारता। २ स्तर्थ मादिको संबद्ध स्थलेको सिकानेशना (अ.४२)। भाग्यंप पूं [आक्रम्य] १ करेपना हिसना। २ भॅपानेवामा (पत्रम ६६, १०)। आयेपिय वि [आक्रम्पित] केपाया हुमा (स 4×4) 1 कार्यय यह विष्] कौरना, शि्मना । मार्थवद्र (हे ४ १४७)। भार्यष् १ दि [आतास] चौड़ा चान आयंकिर ) (मोपाँ मुर १ ११ मुण ६ 324) 1 बाद्धविख म [आचान्क] तरी-विरोप वांचिन (शाया १)। बब्दसाज न ["वर्षभान] क्पबर्यां-विकेष (ग्रंड १२) महा) । भार्थविक्रिय नि [आपास्टिक्क] व्यक्तिन स शाक्दा(श्र ७ परहर १)। बार्यमर ) वि [कान्सन्मरि] लावी वकेट-आयंगरि वेट्ट (ब्र ४ ३)। व्यायंक् सक [व्या+कम्प्] कौपना दिलना

आयर्ग्स (हुना)। आहरू एक [आ + वर्षेत् ] १ किएना कृताना। १ स्वासना। १ क आसर्ट्ठ (वे १, ४६. ४ १६)। १ वक आपट्टिकाम (एत्स १ १)। आसर्ट्ज म [आवर्षेत] किएना (दुवा १ १)।

(शास १ १) । स्रावहरू कृष्ट [जा + कृप् ] क्षांचला । स्रावहरू कृष्ट [जा + कृप् ] क्षांचला । स्रावहरू (तृष्ट्) । कृष्ट सामाविहज्ञेष (क्षे ६ २२) । कृष्ट मावविहज्ञ्ञ्ल (तृष्ट्) । स्रावहरूप मावविहज्ञ्लल (तृष्ट्) । (तृष्टा १२, २६८ वा ११) ।

ध्यायदिह भी [भारूष्टि] कार थेओ (यहर **1** 4 22)1 भायहिङ पुंचि भिस्तार (दे १ ६४)। आयक्तिय दि [बाकुर] योषा हुमा (कलः क्रणु)। आवण्य सक [आ+कर्णय्] पुनना यवस्य करता । धायरूपेह (वा ३६१) । वह श्रामकार्ष (से १ ६६१ वा ४६४ ६४१)। शंक ब्याविणाजन (उश) । कायक्त्रम् न [आश्रमेत] धरण (नहा) । धायिनय वि आर्जिनी मूना ह्या (क्वा)। जायर्वत क [आइइम्] बहुए करता ह्रमा (सूचर १)। आयत्त रि [आयत्त] प्रवीत स्वरत (या 1 (548 कायम वेको आयज्य । यह आवर्मन (गुर १ २४७)। कायम्भभ वेची भायण्यम (पूर १ २१)।

कायम एक [ जा + चम् ] वाचमन करवा हुझा करणा। हिंक जायमिण २ (कम्म)। क्ष कायममाज्ञ (ठा १)। आयमन न [जाकमन] सुद्धि शीच (वा १२ गा ३१। मिल्लु ३३ छ २ ६३ १२२)। आयमिज वेको आगमिस (है १ १७७)। आयमिमी की [आयमिती] विचा-वरोज (छन २२)।

क्षायम वि जियानी रेडमा विरुद्ध (क्या रक्य २११) १२ दे गोश (पूष १२)। क्षायम वह जा ने पहा प्रेचा प्राप्त करात । क्षायम वह जितने प्रदे ११ करा १ ७)। क्ष्र सारमार्थ (विश्व १ ७)। क्षायमण म जियाननी १ अन्नेक्स्स (पूष १९,१)। २ जायान करास (पूष १ १९,१)। २ जायान करास (पूष १ १९,१)। १ जायान करास (पूष १ १ सामस (व्यावतनी १ चर मृष्ट् (क्या)। १ सामस व्याव (सामा)। १ केन्सीकर

क्षाययक म [क्षायतन] र चर् मृत् (चका)। २ साथय, स्वान (माचा)। १ केम-मीचर (माच्ये)। ४ वाजिक बनो गा एक वोने का स्वान 'जस्य बाह्यस्था बाह्य श्रीतशेश सहस्युधा। चरितामार्थमस्या सामग्री श्री मिनास हुं

(कम्म) । १ <del>वर्ग क्षम</del> का कारल (द्यापा) ।

६ निर्लेग निषम (तूम १: ६)। ७ निर्देश १षान (वार्ष १ ६)। श्रायर सङ्कान स्ता। सामग्र (शहा च्हा)। बहु आयरंत श्रायरमान (मन)। इ आयरियन्त (स १)।

आयर्थान (मन) । इ. मार्थायम्ब (व १)।
आयर्थ ( (बाइर) १ सानि चारः १ सहः
(बाह्य १)।
आयर्थ होता आयार् = मार्थार (हुन्द ११६१)।
आयर् वृ [आइर] १ सन्दार समान (स्वड) १२ तरिम्ह सर्वतेष (गएह १)।
इ. क्वान संस्कृत (स्पृ)।
आहर्या वृ [आयर्ह्ह] इस नाम ना एक

म्बेच्य एवा (पदम २० ६) । आयरण म [आवरण] म्ब्रांट मनुद्रम (पि.मे आयरण न [आवरण] मारर (मन १२, १)। आयरण की [आयरण] परंत्रण का रिवान (वहत २३)। आयरणा की [आयरणा] पावरण मनुद्रम

(बहु १४२: बनर १४६) । अवरिय रि [आवरित] १ समुद्धित निर्देश इत (बन) । २ ग राजस्यात पत्तन्तवरूग प्रवर्शेत समाहने से शत्त्व देशह स्वाहस्त । न निराधियमनेहि स बहुनसुम्मानाद्धित (वन ११)।

आयरिय द्रीआयार्थे] १ एए का नामक मुख्या (घारन)। २ ठपमेळ हुव, शिवक (घग ११)। १ यर्थ पङ्ग्लेगमा (सर् य )।

ध्यायरिस वेशो जायंस (हू १ १ १) । जायस्थ यक [सम्बू] १ ध्यात होता १ ९ जन्दना शिवकतात श्रीत प्रोरक्षा, परि गोच्छ निर्मेष सायस्माई (स्रीत) । ध्यायस्थ्या श्री हिं] केवैती 'मान्तप्रमिद्

रिर्मेगी सक्छा भागकार्य पत्ता (पत्रम ६

१ शे विश्वो प्रश्नावरणींह मूर्त्त धारामार्थ पद्में (पुर १६ ११ ) कि छण दिस्स सन्य ममस्त्राच्यार्थ स्वत्येष्ठ सम्बद्धीह णिवेदीर्थ (क्यू)। केवी साम्रक्त स्वता स्वायांक्षिक्य वि [क्ष] स्वाहत्त्व स्वात (धर्म १ ११ श्री स्वति)।

आयस्क्रिय वि [वे] ग्राशन्त व्याप्त (एर् १११ टीः प्रवि)। आयस पुंजितद्वपत्तः] प्रवीपन का २४वीं प्रकृतें (पुर्वा ११३)।

धायब--आगस आयम वि आतिप र स्योज प्रकार (या | vt)। श्वाप वान (ब्ला)। ६ न मूहुर्न-पिरोप (सम ११)। गाम, नाम न िनासम् । नामरभे का एक मर (मम ९७)। शायवत्त न [आसपत्र] यन याता (खाय ₹ ₹)1 भायवत्त पू [भायायत्ते] मास्त्र विदुस्तान (इक)। कायवादी [आतपा] १ मूर्वे की एक शव महिपी--पटरानी । १ इस नाम का "माना वर्गकमा मूत्र का एक सध्यमन (शासा श्रायम वि [भायम] सोइ का कोह निर्मित (मटड लिच्चू १)। आयसी भी [आयसी] सोहे का कांग्र (परह् t () 1 आया देशी आय = वापन्। स्रायां सक [आ + या] द्याना सायमन करता। बार्येड (कुपा ६७)। बायाइंडि <sub>।</sub> मावा"मु (रूप) । वष्ट आर्यदा । आया नर [मा + ता] प्रहण करना स्वीकार रफा। आयर्ज (उत्त ६)। इ. आया णिज्ञ (टा ६)। चंद्र भाषाए, भाराय आयाय (नम्र कप महा)। লাযাহ দ্বী [সাত্রানি] १ তলচি কম (চা १)।२ जाति प्रकार। ३ सामार, सामग्र (धाका)। हाण न["स्यात] १ धनार, वन्त् । २ भाषायञ्च मूत्र क एक मध्ययन कानाम (बारे) । आयाद् की [भागाति] १ कावनन । २ स्पत्ति वर्भे से बाहर निरमता (ठा २ ३)। ३ बायनि यनिष्य नाम (रक्षः) । शायाग रेगी आया = मा + शा। भाषाय पुन [भारान] १ व्हरा श्रीनार (माना)। २ इन्द्रिय (भग ६, ४)। ६ दिवरा बहुल हिया बाय बहु बाग्न बस्तु (ठा ४' मुख २.७)। ४ बारण हेर्नु चित्र मे तत्र मामाना वैद्धि नीर' पार्व (सूच १ १)- 'रिवा दुस्तायार्गं बहुउनार्गं समान्तृत्तिं (पदय १४ ४४)। ६ घाडि प्रथम (धनः)। आपाप न [भादात] १ संयम चरित्र (तुय १ १२, २२) । १४ मध्य, उत्तदेव (पूळ

१ १४ १० तेरू २ )। यय न [पैयः] बन्दका प्रवस सम्बद्ध (बलु १४)। आयापान [आयान] १ मायमन । २ माय का एक भागरण-विशेष (थड४) । भाषाम एक [ आ + यमय्] सम्बा करना । क्षकः आञामिञ्चत (से १ क) । संह भाषामत्ता भाषामेत्तार्ग(नव वि६८३)। आधाम सक आ + यम् ] शीच करता युद्धि करना । बायायद् (५४ १ ६ टी) । आयाम मक [रा] रना शन करना। बावा येइ (जन ११)। संह-आवामेशा (जन ११)। आवाम पू [आयाम] नम्बाई, देव्यं (सम २) गरुष्ठ)। आयान पृंदि] बस जोर (वे १ ६४)। आयाम न [आचान्छ] एवा-विरोध बार्यविसः 'नाहिनिरिद्रो उ त्यो सम्बाध परिविधंत बावार्य (बाचानि २७२ ३७३)। ब्रायाम ) न [आचाम] परमारण चारस आयामग रे बारि वा पाना (बीव १५६) उत्त १५)। आयामणया की [आयामनता] सम्बाद आयामि वि [आयामिन्] नम्मा (दरह)। भायामुद्दी की [आयामुला] इस नाम की वद नगरी (म ४३१)। आयाय देना आया - मा + हा । । आयाम वि [आयान] भाषा हुवा (१३म १४ १६ ८१६१ पुम्मा १६) । आयार सक [ आ + पारयू ] दूनाना चाहान करना । याधारदि (शी) (माट) । चंद्र आजा रिक आयार्कण (नहः स १७६) । आयार पू [आधार] १ बाइडि १५ (लावा १ १)। १ इज्लिव दशाय (राम)। भागार दू [आहार] 'म' घत्तर (दुत्र १२)। आयार द्रं [आश्रार] १ याचरण प्रश्रान (ठा २,३ माना) । २ भान-मतन रीन-मात (पत्रम १६ ८)। १ बारह केन बाहुद्रम्यों में बहुना दन्य दावाराह्मपूत्ते' (ठा ६ )। ४ निरूप शिष्य (मग १ १)। करायणी भी [स्तपनी] नवा था एन मेर (रा ४)। भंडग भंतप न िशण्डकी शलारिका जार एए -- मायन (गुप्पा १ १ १६) ।

लायारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स 1 (00 आयारिय वि [आद्यरित] १ माहत बुनाया हुवा (परम ६१ २१)। २ म घातान-वयन बारोप-अवन (से १३ ८ मिन २ १)। आयाव सक [आ + तापय्] मूय के ताप में राधेर को मोड़ा दशना। २ शीत माद्य बादि को शहन करना । वह आयार्थन पटम १ ६१) आपार्वित (कान) आयार्वेत (पडम २६ २१) आयायेमान (महा यय)। हेर आपायचार (शम) । संह आय'विय (याचा)। आयाय प्र [आवाप] यमुरकुमार बाडीय देव रिरोप (मग १३ ६)। ध्यायाय पू [आताप] मातर-मामरमें (रेक् १ { **4 u**} 1 आयावन वि [आतापक] शीत बादि को सहन करनेवासा (मूच २: २) । आयाच्य न [आनापन] एक बार वा घोड़ा बावन बादि को सहन करना (लाबा १ १६)। मूमि या ["भूमि] शोवादि बहुन करने का स्थान (भग ६ ६)। आवायणया र भी [आवायना] कार रही धायायणा (ठा ३ ४)। आयात्रय नि [भारापक] स्रीत बारि की सहन बरनवासा (पल्ह २ १)। आयापछ ) पृंचि वनेर ना तहना आयापछा । नानातर (दे १ ७ पाम)। आयापि रि [ मानापिन् ] देनी भागापय (घ ४)। आयाम नर [जा+यामय्] तरपन्ट देता निश्न करना । भाषासंति (रि४६ ) । चेर आधामित (मा ४१)। आयाम र् [आपाम] १ तप्तीय, परेपन सेद (यवड) । २ परिष्टु **सम्र**चीप (पा<sup>™</sup> १ १) । ।छ.व में [ ।छ.व ] तिनिर्नाटेन (4 tub) आवाम रेगा आपेम ( गर ) । आयाम रेगा आगाम (१३म र६ ८ 🛣 १ =४) । तिप्य व [शब्द्ध] सर

विशेष (वर्षि) ।

देनेवासा (समि १६)। थायासंतक्ष न [बाह्मशत्तक] ननतानः, भर के उत्पर शी चुनी स्रव (कुप्र ४९२) । ब्यायाग्यतस्य म 👣 प्रासाद का 😠 भाग (रे १ ७२) । भागासख्य भ दि । पत्रिष्ट गीड (दे १ ब्रायाधिव वि [ब्रायाधित] परिवास विव (म १६)। खायात्ररम वि विश्वसम्ब र बारपविनात्रकः। २ न बाक्षकर्में दोष (पिंड ६५)। स्रायाद्विया न [आद्विया] श्रीवरा पार्चे है भ्रमण करना (अना)। प्रशाहित्व वि प्रदक्षिण विशिष्ट पर्दं से समग्र 🕶 विश्वाप पार्थ में स्वित होनेवाना (विपा १ १)। प्याहिणा की [प्रवृद्धिणा] ब्रिक्ट पार्थं से परिश्रमण प्रक्विका (ठा १)। भाय देवो भाड = याद्रप् । येद वि विन्यू ] निरमुष्य दीवै समुदाना (परह १ ४)। आरर् क्यार १ छह-मोर बहुक्तम (सूच १ ए १ बार्ड २ बार्ड)। २ लकुब्द मीत (तूम १६२) । ६ तूमीली लोहे की बीत (दूप ४१४)। ४ त कुहस्थान (दूस १:२,१ ह)। भार देखारी १ मॅक्स-प्रह (पटन १७ मुर १ २२४)। २ जीवानरक का एक नरनावास (ठा ६) । ३ वि धर्माव्यन पूर्वता (तूच १६) । आरभ नि (कारक) क्ली करनेवाला (पा tet tr) : भारमी घ [भारतम्] १ पूर्वं पक्षे मर्जा (तुम ६ न ६४३)। २ डगीप में गत में (बा १११)। १ तुक कर के, बाधमा कर के (विने २२ ४)। भारओं म [ भारतस ] नौदे है (लंदि २४६ **4)** ۱ आरहर वि [व] १ वनेत्रण्य । २ श्रंबर म्बात (दे १ ७)। भारम नद [आ + स्म्] १ कुत्र करता । र प्रमाचला। मार्थ्यः (१४१५३)।

धायासङ्चिम वि [बायासयितः] क्यतीष

क्क आरंभेत (ग ४२ से व दर)ो संक आरंभक्ता आरंभिय (गर)। आरंग द आरम्भी १ मुख्यात प्रारम्भ (देर ६)।२ जीव-द्विसा वय (या७)। ३ चीव प्राली (पर्याह्र ११)। ४ पा<del>प क</del>र्म (घाचा) । य वि [ैंद्र] पाप-कार्य में सरकार (भाषा) । "विजय पूँ [ (धेनय] बार्य का बनाव । बंज ६ 🕅 [ (यनयिव्] बारंग से विरद्ध (द्याचा)। आरंमग } र्द [बारस्थक] १ अगर **को** भारमय । (तूच २,६)। २ वि युक् करने-पाला(विसे ६२ < चर दू ३)। ३ जिसक पाय-कर्म करनेवाला (द्याचा)। आरिय दि [आरिन्सन्] १ गुरू करनेवाला ( करह ) । २ पाय-कार्य करतेशाका (सर 444) I आरंभिक्ष पुं [दे] माचानार, माची (दे १ **आरंगिश नि [आरब्ध]** पार**व्य गुड** दिवा 📷 (ग्रवि) 1 भारंभिक केो बारंम = भा + रम्। जारंभिया जी [भारन्मिकी] १ दिसा हे सम्बन्ध स्वानेशाली किया । २ विंसक किया चे होनेपाला कर्प-मन्द(ठा२१ शव र±)। भारक्त न [आरह्य] कोत्रनल का धोक्स कोवनानी भारत्रस्या (तुवा १ १)। बारक्म वि शारची १ रतमा करनेवाला (दे१ १५) । २ वृं कोतवाम नगरका रसक (पाम)। भारकसमा वि [भारक्षक] १ स्थल करने-माला नाता (कप्पासूपा १११) । १ तू समियों का एक वेश । ३ वि अस करा में **ज्या**त्र (ठा ६) । आरक्तिस कि जिएक्तिम् । रक्षक भाषा (ठा **१ १ बीप २६**)। **भा**रक्रिया ) वि [आर्राधक] १ रक्षर आरंपिकार्व∫ माता । २ पूर्व नेतरानः (निषु १ १६ सुरा ६३६। महा च १९७ १६१)। बारम्म सङ्ख्या + एव विश्वतन र रहा। धारमध् (ताष्ट्र ६ ) । **धारम्म वि [**आराध्य] पूग्य, बावनीय (धण्डु #£):

थै)। श्रेष्ट कार्यक्षेठ्य (महा)। आरडिकान विदेशिकाय क्या । सि. वित्र-पूक्त (दे१ ७३)। आरज र् [आरज] १ केको<del>क विरो</del>व (बद् ध्य ६१, इक)। २ उस क्षेत्रोक का विकासी देवा 'तं चेव बारहाण्ड्य बोहीनाऐश् पासीव' (श्रंप १२१ विसे ६६६)। आरण पून [आरण] एक देननिमल (श्रीनः १३१) । कारण न [व्] १ सबर, होठ। २ फनद (रै १ ७६)। आरपाठ न (आरमाठ) मानी शाहराना (R t 40) 1 आर्जाकत दि] धमत पथ (दे१ ६७)। आरण्य वि [आरण्य] चंत्रती चंत्रत-निश्रसी (d < ₹€)! खारण्यमः ) वि [खारण्यकः] १ वेनली, वंगम क्यारण्यय निमानी बंगल में कराब (बन २२१३ सर )। २ म शाध-विशेष अनिवर् विशेष (पठम ११ १)। खारणिगय वि [शार्यण्यक] शंक्त में वसने-वाना (तापस मावि) (सूम **२**े२) । भारत विभारते १ नोहारक (भाग)। २ अञ्चल बनुरक (मरह २ ४) । व्यार्यच्य व [भारात्रिक] भारतो (सुर १ १६ कुमा) । ब्यास्य वि [आरब्य] प्रास्त्र शुक्र किया ह्या (कास) । भारत वि वि] १ वहा ह्या । २ छन्छ जलुका देवर में भ्रामा **ह्या** (दे१ ७३) । जारसास देवो आरणाख = बारतात (पाप) ! आरतास न वि] कमत पच ( पर )। आरंत्रिय देवी आएक्रिय (तुध २, २, २१) । आरब देवो आरव । आरडम ग्रीवे देखी। वारम वैयो आरंभ = था + रन् । यारमर (दि ४ १४१ चरर १ )। वह बहुरमंद्र, आरमसाज (झ ७) । तंह आरबस (विने 1(250

भारभद्र न [आरभट] १ नृत्य का एक मेव (ठा४ ४)।२ इस नाम का एक मुहुतै 'स्क्वेद य सारमणे संप्रीमती वंबधंदुको हाई (विशा)। आरमङ न [आरमट] एक तरह की माट्य विवि (राय १४)। मसोस्र न ["मसोस्र] मास्वविधि-विरोग (राय १४) । आरमहा भी [आरमटा] प्रतिबेचना-विशेष (धोष १६२ मा)। धार्यभय न [आरमित] नाट्यविवि-विरेग (सम्) । कारच दि [आरत] १ छरतः २ घपमत (सूच १ १६)। आरम वि [MISTO] उपका सर्वेषा निवृत्त (सुबर्पर ११११ १९)। आरव वं आरम् राज्य, प्रातान व्यति (ਚਹਾ)। आरब र् [आरब] इस नाम ना एक असिव म्बेन्द्र-देश (परह १ १)। आरम् १ वि [भारव] गरव देश में उरपध आर्परा प्राप्त केत ना निवासी । स्त्री सी (श्राया १ १)। आरविंद वि बारपिन्द } कमल-सम्बन्धी (मत्तक)। आरम सक [आ + रस् ] विज्ञाना पून मारना। वहः भारसंद (वतः ११) । इङ आरसिरं (काम) । आरसिय न आिरसिती १ विक्रमुटः बून। २ विकास हमा (विपा १ २)। आरस्यि पू [भार्छ] वर्षेण (श्हाननी) । कारह देवी आरम । बायह (वर् )। वह भारहिअ (विवि 🛍 )। ) वि शिक्षित विश्व महीत् का जिल आर्थ(तम ) देव सम्बन्धी 'सार्याठीई' (दस [४४ प्रपद्यस्थादा १७ )। आरा भी आरा विदेशी वनाई, पेने में बासी बादी सोहं की बीची (पराह १ १ स ३८)। आराम जिला १ वर्गक पहले (है १ ६३)। २ पूर्वेचाग (विशे १०४)। आराइअ वि [दे] १ पृष्टेच स्वीक्ष्य । २ अरात (देर घ )।

आरिय वि [आसरित] पाइत आराहि की [आराहि] चोत्कार, विक्राहर (सुबार, १५)। आराबी की हिं देवी आरंबिय (६१ आरिया व्यां अञ्जा = धार्यां (प्रारु) । খহ)। आराम १ [आराम] बगीचा उनवन (प्रीप-आरिहानि दिं} समार् जन्मन पहने भो ग्रामा १ १) । आराम पून [आराम] बगीचा उपवन 'घारा माणी (भावा२१२)। शासमित्र व शासमिक नानी (कुमा) । आराष पूँ [आराष] राज्य बाबाब (स ९७७ यउड) । क्षाराष्ट्र करु [आ + शबय्] १ वेदा <sup>†</sup> करना, मीक करना। २ ठीक-ठीक पामन क्रमा । चाराहरू चाराहेड् (महा' भप) । वह काराहेत (प्रस्तु ७ )। संकृ आरा-हिचा भागहेचा, आग्रहिरुण (इप्प मग महा)। हेह आरा€्डं (महा)। आराह् वि [आराज्य] पारावन-वोग्य (पारा 1 (\$5 आराह्म वि [आराधक] १ वारावन करने-बल्ता। रेनोञ्जनासायक (सय ३,१)। आराष्ट्रण न [आराधन] १ वेदना (पारा ११)। २ धनरान (ग्रज)। **आराह्**णाकी [आरायना] १ तेवा प्रक्तिः। २ परिपादन (ग्रामा १ १२३ पत्रा ७)। ३ मोल-मार्गके धनुषुत्त वर्त्तन (पश्चि)। ४ विसका सारायन किया जाम लह (धारा आराष्ट्रणा 🕸 [आरायना] बावरवंक धान विक बार्ड पट्-इमें (बागु ६१)।

प्रकार (बस ७)।

६२३)।

(पर्)

रियो धेषितो वा एयट्टित' (धानु)।

**उपस हमा हो (दे १ ६३)**। आरिम वि आपे अपि-सम्बन्धी (ब्रमा) । आरिह्य देशों आरहित (दम १ १ दी)। अस्मिम देखी आरोग्ग = बार्पन्य 'बारन्य-बोहिनामं समाद्विवरमुक्तमं दिन् (पिक) । आस्ट्र विभारती हुउ रह (प्रका ५३ 2×5) 1 भारूण्य (घप) तक जिला+ मिरपी बालिक्कन करना । बारएएड (श्राष्ट्र ११६) । आरुभ वेको आरुद्ध = मा+खा। वह आरुममाग (स्व)। कारुवणा वेका आरोवणा (विसं २६२८)। बारुम संस् [ भा + रूप् ] होन करना चेप करना। चेष्ट आरुस्स (सुप्र १ १)। आरुसिय वि [आरुष्ट] कुट दुपित (ए।या શ્ર રો ા आरुद्ध सक [आ + रुद्] ठमर भड़ना क्रमर बैठना। आस्हद्र (यह महा)। धारहर (मंग) । वह आर्द्धत, आर्द्धमाण (ने १ १६ मा३६)। संक्र आरुडिकण. बारुद्दिय (महा नाट)। हेड्र आरुहिर्ड (महा) । भारह वि [आरह] स्त्रम स्त्रुत बात 'यामारङ मिह माम वसामि नवर्षद्विषं द्य भारतिम । बाराहणी की [बाराधनी] जाया का एक लायरियार्ख पश्लो इरेनि वा होनि सा होनि' (गा ७ १)। आरह्ण न [आरोहण] क्रपर बैठना (खावा आराहिय पि [आराधित | १ सेपित परि १ २ या६३ मुपा २ ६३ विपार, ७ पालित (सम भ )। १ धनुष्य योग्म (श भउद्य)। आरहण न जिएएयो बार्यपण कपर आरिट्र नि [के] बात गत धनरा हवा चढाना (पन १४४, राय १ ६)। आरुद्धिय वि [आरोपित] १ स्वापित । २ आरिय न [आऋते] धायमन (राव १ १)। क्रवर बैठाया हुमा (से ८ १३) । आरिय देवो अञ्च⊏यायः। (भगपद आरुट्यि ? वि [आलड] १ कपर वहा ह्या युपा १२० पत्रम १४ १ । सुर ० १६) । आह्य 🕽 (महा)।२ इत विद्वितः 'ठीए आरिय वि आरित विवित्त 'पारियो धाय-पूर्व्या पण्डला भावहिया दुरुक्या यद साहि (पडम = १९१)।

हवा 'वारियो यागारिया ना

(बाव)।

क्षारेद्रभ वि [वि] १ द्रदूषिण चंद्रवितः। २ फ्रान्टा व सुक्तः (११ ७७)। ४ दोना प्रितः, पूर्वापितः (११ ७३) त्याः। ज्ञानक स्वारितः) १ वसीर पाषः (का १११८ दे)। २ सर्वारः, यहते (विदेवश्व)। १ प्राटास सर्वारिते २२०४)।

इ प्राप्तन कर (विते २२०४)। आरोज सन [बन् + स्त्य\_] वित्रमित होना व्याप पाता। साधेषप्र (१ ४ २ २)। आरोजप्रा (यो आरोजपा (य ४ १ विवे २२००)। आरोजप्र [बृ] देशो आरोज्ज (पर्)।

आरोग वर मि तान बावन करता बायेन्स । बारेन्स (११६) । आरोग न [आरोग्य] हमायन छ। (बेशेन १९)। आरोग्य न [आरोग्य] १ मारोरठा छेव ना

ससार (छोप के उत्तर)। १ वि छोत-प्रित्त नीर्छन (क्या)। ३ वृंदक कार्य्योत-नामक वा नाव (क्या ४४)। भारोग्यरिज वि [क्] एक वैशा ह्या (बहु)।

(बर्द्)। साधानाम वि [वि] बुळ याण हवा (वे १ वर)। साध्य वि [वि] १ वस्य ववा हवा। २ | न्यांत्य पर में साम हवा (यह)।

स्राध्य व [आधेरय] १ शेव कुछन । १ । भेगोरा वारीस्थानेय प्रमुखा (श्राक्ष २ १६ ६) । स्राधान नर [पुरूत ] त्वन बरना त्वहा बरना वारोग्य (१८१५ त्यह) । स्राधान्त्र व (पुरुत) त्वनित द्वना

स्वतास्त्र त (प्राप्त) पानन पर्यः दिया (सा (प्राप्त) । स्रातास्त्र पर्यः १ त्यान वन्ताः स्रात्ति (१४ प्राप्त) वर्षे आरोवणः आरोविषं सार्वावञ्च (स्त्र वृत्ताः स्त्रा)।

ध्याः प्रमान [धारापमा] क्रान्त पक्रमाः (सुस ६६)। स्वत्रीतना (देई देख्य) भागस्या का [ध्राह्म एमा] १ अपन्य पहाना । १ क्षार्यक्ष (स्वीत्र (स्वाह))। १ प्राप्तासा

व्याक्या ना एक प्रनार । ४ प्रश्न प्यनुयोग (विसे २६२७ १६२८)। आरोजिय नि (आरोपित) १ चढाया हुया।

आरोपस विश्वासायक है विश्वास हुआ। २ संस्थापिक (यहा पाम)। आरोस वृश्वासेक का निवली (पट्यू १ १३ क्य)।

क्स)।
आरोसिक वि [आरोपिक] नोरिक क् मिन हुमा हिंद १८: मीर दे १ ७ ।। आरोद वर्ष [आ + स्ट्र्स] करर बहुन बेटना । यर्पेक्स (१म)। आरोद वर्ष [आ + रोक्स] करर बहुना इ आरोक्स वर्ष [आ + रोक्स] कर बहुना। इ आरोक्स वर्ष (१म)।

धारि यर जन्नेकाला (है दि धर)। रे ईचार्ड (इह)। ह लामार्ड (वर र र)। आधेर पुँ कि लाल, जन चुँची (है र दशे। आधेरणा रि आपोर्ड है। स्वार लेग्नेकाला। स्वारिकार पीमका लामी सामार (वींग)। आधोर कि शियोर्ड हैं।

आपादिय रि [आहन्त] कार देग ह्या कार चड़ा हुया (सीर)। आस ह [कें] अनर्बर सूचा (सिरि वर्ष)। आस ह [कें] १ छोता प्रस्तुः १ रि कोमप मृद्गु (वे १ ०३)। १ बारण (रेबा)।

(बन्ध)।

आक न [आख] वर्णवादित खेवादित्य (ध ४६६) त्र विक नस्तरि बुद्धार्थ (नस्त २)। आम येगो पान (ख १११ हे १ २६ १ १६ १६)। आम येगो बाद (व १ १ ६ ६६)।

आद रेती नामा 'नमपित्तमे शुमेनि हरियाप

वीनवार (म ६ १६)। कामप्रभ रि [जामनित ] बनारवार स्वापित वीच स्वान व रणा ह्या (वण)।

ज्ञानक्षत्र रि [आर्मियक] गृगे बाध्ययाचा (धारा) ज्ञासक्षय रि [झान्धीसन] गुन्ता हुया (बाचा २ १४ व)

२ १२ ४) आस्त्रास्यिति [आस्द्रास्यि] १ धर्नशस् राष्ट्रशस्याः २ वर्तशस्त्रकारीः । ३ धर्म कार के योग्य 'मार्सकारियं मंद्र' उनसेर्य (बीच दे)। आर्स्टीकेम वि [दें] ५९ किया हुमा (दे रे

६८): आर्क्ट्रन [आर्ट्सन्] बमय का परिमान-विरोध पानों से मीजा हुमा हान नियने मध्य में मुख जाय उटन से सेकर पौच महोराच यक का कला (निसे)।

तक का कला (निये) । आर्किट्स कि [आर्क्सिक] उन्स्रोक क्रम्य का उन्स्रोक न कर कार्य करतेगता (क्रिये)। आर्क्स कक [आ + उन्स्य] प्रमाय करता वहाय सेना। वंड आर्क्सिय (मार ११)। आर्क्स वृज्जिक्स्य] प्रभाय पाचार (हरा १९१)। आर्क्स वृज्जिकस्य] प्रभाय पाचार (हरा

वर्षा में होता है (दे १ १४)। आर्क्डियन प्रकारमन्त्री १ धारम्य धावर, विश्वना प्रकारमन निया बात बहु (लाधा १ १)। ६ कारण हेट्ट प्रयोजन (पालमा ध्यक्ता)। आर्क्डियना की (आरक्रमता) कार देवो (ति १६७)।

आरंबि नि [आक्रम्बन] धवतम्बन वर्णे बाला आपनी (एउड)। आरंबिय न [आम्प्रीमफ] १ नगर-विटेस

व्यक्तिय न [आयिन्यक] १ नवर-निर्देश (छ १) १ पगरनी मूत्र के स्वर्ध में स्टब्स रा बरफ्तों बहेरा (नन ११ १२)। आर्किश्या की [आव्यन्यता] नगरी-निर्देश

(फा ११ १२)। आउम ई [स] पानन तृता (मत १२१)। आउम्पर पर [आ + सद्य पु १ बारना। १ विश्व से परिशानना। सत्तरित्यो (गड़ा)। आउम्बरण र [आर्मिनट] १ बात परि चित । २ विश्व से जाता हुमा (बड़ा)।

आखणा रि [आहम्र] नवा ह्या बेपुत्त (रे १९१)। आसमा रि आयरित] बेचारित बाजारित (काल रेड ४२) मृता र्ह्मा ६)। आसमाप रेतो असमा (पडा वा १४६)।

आनमा देगो असमा (गड़ा वा १४६)। आन्त्रप वृ [बे] बयुट तोर (१ १ ६४)। नामक वि [आस्प्य] १ तंत्र्य । १ तंत्रमः। १ त्युट, त्या ह्या । ४ ताम ह्या (तार)। कास्रप्य वि [आस्त्रप्य] वहने के योग्य बुद्धै से बाँमा इथा 'दहसूनवंडासाशियकमना-निर्वपतीयः 'सदस्यप्रमित्रपासप्यमेनं मधेर्ग' करिरणी निवो समस्मोडी' (मुपा ४)। (सह्या⊏)। आस्म सङ [ आ + स्मू ] प्राप्त करना । आसम् वृं आजापी १ चंत्रापण नातनीत (बा६)। २ धास्य मापसा (ठा६)। ३ मामभिक्स (उदर ११)। आजभण म आसमने दिनातन (यमसे प्रथम भाषण (अ ४)। ४ एक बार की उच्छि (मग १, ४)। 443)1 आसावक देखो अन्छात्रम् (मुज ८) । सार्व्यभया की [आखिशस] नवरी-विरोप आसावग व आसापकी पैरा पैराधार. (उदामग ११ २)। परिच्छेत क्षण का धेश-विशेष (ठा २ २)। धाळ्य पून [झाछय] गृह, बर, स्वान (नहा बास्त्रवय न [आस्त्रपन] वीवने का रज्यू गा १३%)। धारि वावन, बन्बन-विरोध। यंश्र पूर्णिया व आस्य पूर [ आस्य ] **शै**दर्शन-प्रसिद बन्ब-विरोप (भग €) ι विकात-विदेश (वर्ग ६६%, ६६६ ६६७)। धात्मपण न [आसापन] बानाप संमापक आखपगन हि । शस-पृष्ठ शस्या-पृष्ठ (वे र (बला १२४)। 44 = Z=) I आख्ययमः हो [आख्यपनः] बाधविरोप (बना आस्य सक [ का + सप् ] १ कहनाः बात-चीत करना । २ मोड़ा या एक बार कहना । आबास हुँ दि दिश्व विन्तु (दे १ ६१)। बह्न आसर्पत (मा ११व, धनि १८) आढ आत्यदि देवो असाहि ( यह )। वमाण (ठा ४)। भारतिकण (नहा) आबि प्रक्रिडे समय, समय मींच (पवि)। धास्त्रविय (ग्रट)। आब्रि रेखो आखी (चयः पाप)। **बास्यम र [बास्यन] रंजपर वातवीत** आर्डिंग एक (आ.+ क्रिक्टा) प्राप्तिकृत बार्लाधाप (बाय ११६ अर १२८ दी भा करना मेंटना गर्ने समाना। साहिताइ १६: के १. X&, स ६६) I (महा)। संक्र- आस्त्रिगिकज (महा)। हेप्स-भाइनास न [माइनास] कियाचे चौनमा बार्लिगिड (महा) । (पाम)। आब्दिंग पू [आब्दिङ्ग] बाय-विशेष (एस) । आसम्म वि आसमी पातरी मुस्ट (वन आब्रिंग वि [आश्रिक्त्य] १ प्रातिङ्गत करने १२२)। चन [स्व] मानव सुस्ती योग्न । २ प्र्रं नाय-विशेष (बीन १) । (बारको। मार्छिगत्र न क्रिसि**क्**ली पासिका में आर्डिसय वि आउसिती वालको मन (कम्पू)। वड्डिकी "कृत्ति । गास या क्योस (मन १२, २)। का धनवान---तकिया शरीर-प्रमाश क्रपकात आहस्य देवो आखसिय 'सानि सामतीना (मग ११ ११)। भ्रातमुगा पुषिका (सम्मक्त १६)। आर्किंगणिया औ (आस्क्रिक्तिक्र) देखो भासरस पुन [आजस्य] मुल्डी 'धानस्त्रो मार्किंगणवट्टि (जीव ३) । रामुरामुद्रो' (बन्ध १६२) । भार्किंगियो औ [भाकिङ्गिनी] भग्न धारि के आग्रस्स न [आस्रय] बान्ह भूग्डी (दूवा: मीचे रसने का तकिया (वस ८४)। सुपा २११)। आर्किंगिय वि [आसिज़ित] पाधिर, जिसका आग्रस्सि वि [आग्रस्मिम्] मानशी पुस्त प्राणियन किया यथा हो बह (काल) । (यभ्यः २,१)। आधित प्रं [आसिन्द्] नार्द के बरनाने के मान्याञ देशे व्यास्त्रप् (गा ४२८, ६१६) मै चीपट्टें का एक हिस्सा (प्रति १४१, ग्रांव अप्रतिपं**षक[आ** + श्चिष्] पोतना सेर आस्राय देवो आणास्त्र (शस से र. १७ महा)। करना । आधिपद् (उप) । हेक्ट आर्कि-

पित्तप (क्स)। क्ट्र आर्खिपेता प्रयो जास्त्रिपायंत (निष् १)। आर्खियम न [आज़ेपण] १ क्षेप करना निसे पन (रवण ५१)। २ जिसका तेप होता है वह बीब (निष् १२)। ळाळिगा रेको आवस्त्रिजा (वंब ५, १४१) । आखित्तन आखित्री बहाब बधाने का क्यप्र-किरोप (बाका २ ६ १ ६)। आकित नि [भाष्टित] चर्याञ्च चरहा हुमा लिपा हवा (विष २३४)। आक्रित वि [आइ.स.] १ वारों मोरवे जमा हुमा 'बह बाबिते मेह काइ पमुत्ते नरं तू बोहर्जा (वय १३ शासा १११४)। २ न भाग नगनी भाग सं अलना 'कोडिममरे वर्तते वासिल्हिम वि न डरम्ह्यू (बन ४) । आधिक वि जारिसरो मानियत (भग १६, ₹ सुर ३ २२२) ( आखित वि [आखीर] बचा हुमा मास्वादित (वे६ १६)। अखिसंदग ५ वि अखिसन्दर्श नान्य निरोप (ठा ४, ३ मन ६ ७)। अञ्चितित्य १ [दे आदिस्टिन्दक] कार वेको (ठा६३)। आस्टिइ वह [स्यूग् ] सर्श क्या धूना। मानिहर (१४ १८२)। शह- व्यक्तित (नरः) ( आख्रिद्धक [आ + क्रिय़ ] १ कियाध करना स्थापन करना। २ किन करना वितरमा वा विष बनाना । वह आसिहमाम (मुर १२४)। आधिकेम पि [आसिकेट] पिपिट (पुर १ =७)। आसासर [धा + धीं] १ तीन हाना यासक होताः २ चालियतं करताः ३ तिरास **करना। वक्ष आसीयमाय (गउड)।** आसीकी [आस्त्र] १५कि, थेली। २ सकी वयस्या (इ.१ = ३) : ३ वनस्यति फ्रिये (सामा १३)। अस्तिहरि[मासह] रे मावक बाबुनाना नवृत्राबहुत्तरदिननानौडनोत्रातिनानां (पटि)।

२ न व्यातम-विदेश (बद १)।

बाधीण दि शिकीमी १ मीन, बासक, एसर (प्रथम १२१) । २ मालिका बाक्कि क्रांचीयम वि [कावीपक] बनानेवाला भाग मुक्तरानेवाला (ग्राया १ २)। इरास्त्रीयमाण केते आब्द्रे = दा + शी । आसिस न दिंगिनीप नामय पाचका कर ( t 2 4x) 1 कास्त्रीवरा देवो आसीयरा (पराइ १ ६)। आ आधिक स्पत्र कि स्पत्रियों द्यार जनाना (के १ ७१ विमार १)। कासीबिय वि (आदीपित) प्राण व क्लाया हमा (वि २४४)। कालु पून [कालु] मन्द-क्रिये बालू (मा R ): आलुइ की [आलुकी] क्ही-विहेब (वन १)। ब्याह्में सं क्षा [ वृष्ट्र ] बनाना बाह केना । मानुबद (है ४२ । वस् )। भालुंस तक [स्पूरा् ] सर्श करना 🚁।। मालुबाइ (हे ४ १ २)। **जालंकज न** [स्पर्शन] स्पर्ध क्रम (४५४) । ब्यालुनिका वि स्पृष्ट स्ट. स्माहवा (ध १ २१। पाम्र) । क्यार्ट्स निकासि किस्सी कता हवा (बुर ६ २ ३)। आर्द्ध्य संग्र [स्पूर्] कृता । सानुबद् (প্রাদ্ধ ৬४)। भारतप तक ( आ + हान्यू ? इच्छ करना। बानुपद्व (धावा) । आलूप वि [बालुन्य] धपहारक, ह्यल क्यो-बाला छीन नेनेबला (बाना) । भाऋग देखो भाल (पएए १)। भाज़गानी हिं| पर्यक्षीटा पदा (स्प **45** ) i मासुपार्तंत 💽 निरर्वंत्र व्यवं निष्प्रयोजन,

> 'ता चॅनिको समस्य समङ्कार सामुकारव्यक्तिः गर्दि (मुग्त ६४६)।

गमनग्र । ति [भासरस्य] विवितः "र्रातः भामनित्यप । चरित्रद्वेतं सत्त्यं धानेस्वतिस्यनः

आसिक प्रेन (आसीक) योकाका मुख्य समग

का प्राप्तन-विरोध (वव १) ।

रास्कित अपनी (श्रमु २१) से प ४४३ मा ६४१३ गतक ) । आनेट ई को बासिछिम । भासेटक्स<sup>5</sup> कालेक ५ [आहोप] विशेषन लेग 'बालेक-निमित्तं च बेनीयो वसनामंद्रियनाष्ट्रायो पर्वति चंदर्ग (मात) । आहोनण न [बाह्मपन] १ तेप विमेपन। २ जिसका शेप किया बाला है वह वस्ता, 'बे मिन्**य र्राल बाले**वलकार पश्चिमक**ो** (निष् (P) आहोसिय वि [आइतंपित] शार्तिक करवा श्वमा (नेहन १७६) । काक्षेद्ध वृं [कालंख] चिन (शायम) । आहोडिश वि (आहस्तित) चिनित (स्का) । बाक्षोध उत्र [धा + सन् ] देवना विभोक्तम करना । वक्त साम्राजीत आसी इटि आक्रोपमाण (गा १४६ इन ६४३) भाषा)। वयद आस्त्रोद्यान (स.१.२४)। र्सक शासोपकण आ**सो**क्चा (काल हा t) 1 बासोध सर्वाभा + स्रेची १ रेडावा। २ द्वरू को सपना सपध्य बहु देना। १ विचार करणा । ४ शासोचना करवा । सामीएड (মা)। বছ আন্তাহান (বহি)। গ্রন্থ नाक्येपचा, बाक्ये-इव (भगः, पि १८२)। के बाबोहत्तप (ठा २ १)। इ. बाह्रो यमञ्ज आस्त्रोपप्रयक्त (सर ६ २) ग्रीव १ (१३७ भाक्षेत्र र् [भाक्षक] १ तेव प्रकात (श २ १२) । २ निर्मात्त सम्बद्धि अस्य केवल (बीप १) । १ द्रध्यी का समाम-वाद, सम मुन्सारा (बीध १६१) । ४ गलासावि जलागा-श्यान (धाना) । १ नमध, धीतार (धान) । € MITH (YEER ? Y) ? **बाह्येक्**र } नि [बाह्येचक] व्यतीपना बास्रोअय ∫ रफोर्नेला (या ∦

बाबोअन न (आसोचम<sup>ी</sup> गाँवे देवी (पर<sub>४</sub> २. १ मास २४)। आक्षेत्रण की भिक्षेत्रती १ रेक्त वतकाना । २ प्रामनित के निए प्रयूपे बीओ को पुत्र को बता देखा। ३ विकार कर<sub>िय</sub> (बग१७ राजा४२ सह १)। आसंद्रम नि [आसोचित] हुर, निरीक्ति (B & &X) 1 जाओइस वि जासोचित्र प्रदक्ति **प्रद**क्ष श्रक्ताका हुमा (पवि)। धाकोत्रभ केता भाषांत्र – या + बीप । व्याखोइलु वि [आसोक्यित् ] केवने नाकः ≣ष्टा (सम १६)। शाळांड्स नि ∫ लास्नेक्षत् ] त्रकार-**इ**क (नमा १६) : वाजेबंद क्या वाह्येस = धा + शेल । आस्त्रेग देको जास्त्रेज≔यलीच (मीद ४११)। स्वर न ["तगर] त्यारा निवेश (पराम १८, १७)। आ स्त्रेच वेद्यों आ स्त्रसम्बद्धा+ बोच्। सह, आस्त्रेषत (बुपा १ ७)। एक आस्त्रे-चिकण (स ११७)। माक्षणप क्या आस्त्रोद्यम (एप १६९)। भाजेंड का जिए+क्रोडम् ] क्रियोणी मक्त करना । संक कास्प्रेडिवि (प्रप) (क्स) ( भास्मेडियः ति [भास्मेडित] मन्ति वास्त्रेक्षिय 🕴 विलोग हुन्छ 'मलोहिना ५ नमरी (परुम १३ १२६) उप १४२ ही)। भाक्षेपण न [बाक्षेत्रन] एशक (क्ट ११, x) ( आसोष एक [जा + छोपय् ] शान्धारित करना। वन्त्र आखोविकासाम (श १ व २)। आसोष केता सासोस= शासीका <sup>4</sup>रीत यत्वलावे नेतरने मोन्स्डे विशाधनर्थे (रंग्रा)। भाष्ट्रोबिय वि [ब्रास्प्रेपित] पान्क्सवित

(विते १ दश)।

यात्रज्ञीत जीतन-पर्यन्त (धात) । बद्धां की ी िक्या जीतन-पथन्त 'बएएए धावनमध् पुरामनार्धन सूर्वति (उर ६८१)। कदिय वि ["पश्चिक् ] यावजीविक जीवन-गर्यन्त फ्लगमा (ठा ६ उर ६२)। ध्याप प्रशिवापी १ प्राप्ति साम (पराह २ १)। २ जल का सपूर्। शहस न विदुख] देशो आइ-बहुछ (कन)। आप मर आ + या । पाना वागमन करनाः 'बलबनिरालित निष्ने बाबद निहानुई काल' (मूपा ६४७) । ग्रापद (नार) । व्यापेति (मेन 1 (535 भावभास तक [ वप + गृह् ] *वानिका* करता । बारमानद् (शह ७४) । आवश् ग्री [आपयू] धारति निरम, संनर (सम १७) मुता १२१ मूर ४ २१%, मानू X (XE) 1 आरंग दू दि ] स्नामार्ग क्य विश्वप नव्यीस आर्बष्ट्र नि [आपाण्ड्र] बोहा सकेंग परेवा (गा २६१)। आर्थद्वर नि [आपाण्ड्रर] कार वेगी (न व 98) 1 आर्थत देगो जार्बत "धार्वती के वार्वती भीर्वास धमलाय माहला थे (द्वाचा १०४ २ ३ 1 2 2 1 Y (7 120)1 आयरगण न [आयन्तान] बध पर वहन नी नमा (व्यव)। भावदेज रि [अपरवीय] माग्य-माग्रेय (4.4) I भाषात्र रेगो आआज (हे १. १४६) । आबार धर भि + पदी प्राप्त शता नाव होता । यात्रवद् (शव) । 🖫 आयज्यियस्य (पर्चा १)। भारत्र पर [आ + दर्जे] रे संपूर **परना । २ असम करना 'मारजीत राज्य** रानु बर्गोर वर्त्त बन्ध्यद्वियः (स.११) । भीक्य सर्व [भा÷पट्ट] बाग करना। बारको (गा १२ १ १) । बाराने (गूब १ १९१६ ९ ) ब्लाब्ब्यु(न्य २१) । े [र [भाषत्र क] हेन्द्रनाच

आपन्तत (सिरं ४१६) ।

15

आपञ्जिय वि [आपर्जित] १ प्रमप्त किया ह्या। २ मभिपूर निया हुमा (नहा सूर ६ **११ मुगा २१२)। करण म**िकरणी व्यासर-निधेय ( मान )। 1 (798 आयज्ञिय रेगा आहज्जिय = बालौविक (इमा) । आपञ्चारस्य न [आपर्जीकरण] उत्योग विशेष या व्यापार-विशेष का करना उत्तीर लुप्तिका में क्यें-क्षोप एवं व्यक्तार (बीप निमेद्द ()। आवट्ट मर्फ [आ + पूर्ग] १ चर नी तरह युगना, फिरना । २ रिमीन होता । १ सक. शोपण करना मुसाना। ४ पीइना, इ.सी करना। धारहद (हे ४ ४१६ वृद्ध १ % २)। बरु आयहमाय (से १ ६)। आबट्ट वेगो आवत्त (प्राथा पूरा १४) मूच 2 1)1 आयट्टणा की [आवर्षना] बावर्डन (बाह ₹१) ı आपट्टिआ को दि है। ननोड़ा बनहिन। २ परतन्त्र भी (दे १ ७४) । आयह देगो आयत्त = भावते (राय ६ ) । आवष्ट छः िआ + पन् ी १ धाना, धापनन करना । २ वा सदना । वर्ष आयर्डत (प्राप् आवष्टण व [आपतन] १ विरता (व ६ ४२) । २ मा सपना (स १८४) । आपगयीद की [आपग्यीभि] १ हर-वार्ष बाजार । २ स्थ्या-विदेश एक तरह वा मुख्या विदेश (एव) । (राय १)। आप दल रि [आपनित] १ निरा ह्या (महा) । २ पाम में धावा ह्या (मे १४ १)। आपंडिज रि [रि] १ संन्त्र संदर्ध (६ १ oc बाध) । २ गर, सन्दूत (दे १ छव) । आपम र् [आपम] रे हर दूबान (तावा रिवोक्सरमी' (रिपे १६१४) । ३ मापता १ १ वरा) । २ वन्दार(श्रापः) । बष्ट । व **प**र्णान (स्ति **५१)** । आयित्र र् [आयोगक] बीरनर, ध्यारी आपश्चि का [आर्यन] प्रति (पर्वत (रच)। 1 (868

आयण्य विकापम् । भगति-युक्तः २ आयञ्चण म [आयर्जन] १ संगुत मरना । शह (गा ४६७)। सत्ता भी विस्पानी २ प्रमन्न करना (बाक्)। के उपयोग, क्यान । ४ जायोग-विशेष । ५ व्यापार-विशेष गॉपली मर्भवती भी (मनि १२४)। आयण्य रि आपभी बाधित (मूम १ १ 1 (33 3 आवत्त सर्का अप 🕂 यून् विदाना 'नारता' नागच्छर पूर्णो भने केल समूलकारिति' (बेरव आवत्त यच अग्रा+यस 🏻 १ परिश्रमण करता । २ वदमता । ३ चहातार पूर्वता । ४ सक पठित पाठ को बाद करना । ६ चुमाना । थारतः (मूक्तः ५१)। यहः अत्तमाण, आवस्माय (ह १ २०१ हुमा)। आयश्च व [आक्से] १ चरागार परिप्रमण (स्वप्त ६६) । २ मृहत्त-विशेष (सम ६६) । महाविद्ध क्षेत्रस्य एक जिन्म (प्रदेश) का नाम (ठा२,३)। ४०० तुरवाना पर्-विशेष (पएड् १ १) । ५ यह लोकपान बा नाम (ठा ४ १) । ६ पथ्टनियेप (ठा ६) । ७ विख का एक समागु (ध्यः)। प्रधान विशेष (बारम) । १ शाधीरक नेप्टा-विशेष कार्यक स्थापार-विशेष 'बुबावसावले विदि रम्भे (सम २१)। बृष्ट न विल्ली पर्वत-विदेश का रिलार विदेश (नक)। योग वह [ीयमान] र्यात्रण नी तरक नजारार पूमन नाता (भग ११ ११)। बायत्त पुर [आवर्त्त] १ एक तरह ना महान (मिरि १८३)। २ न नगावार २६ शियों शा दरराम (संबोप ५०) । आपत्त न [आनपत्र] एतः एउडा (गय)। आवश्वण न [आवर्शन] बनारार प्रमन्त (ह १ १ )। पि,िया ही [पारिसा] शीरका आवश्चन ने [आवर्शक] लो आपश्च । १ शि चमाचार प्रमण बन्नेताचा(दे रे रे रे)। आपत्ता की ज़िल्ला महाकि । व के ल्क रिवय (प्रारंग) का नाम (इस) । आवर्षि को [आपनि] १ बेच प्रतेष, 'मध्य

बाओअणा 🛍 [बाओवता] १ देच्य,

वतवाना । २ प्रायचित के सिए प्रसने खेलों

नो पुर की नता देता। ३ विधार करमा

बाब्देइन नि [आक्रोबित] हुए, निरीक्ष

लाखोदअ वि [आसोपित] प्रधरित पुर की

(बन १७ २ बा ४२) स ६ १)।

२,१ मसू २४)।

(8 4 EY) 1

आसीह पून [आखीह] मोद्धा का पुरु समय का प्राप्तन-विरोध (वन १) । आधीण वि [अस्मिन] १ मीन बासक, त्तर (प्रतम ३२ १)। २ व्यक्तिपतः व्यक्ति (क्प्प) । आसीयग दि [आदीपक] बनानंबला, याग मुसयानेशना (लागा १ २)। आसीयमाण देवी आसी = या + सी । आरमीक्ष प्रदिष्टि समीत कामय पास का दर (दे १ ११)। आक्रीका रेश्वी आसीयन (परह १ ३) । भासीनाम न [आर्द्रपन] बाद भगना (वे १ वर विपार १)। काद्मीविय 🖩 [आर्शपित] धार्थ 🗈 स्वाया हमा (रि २४४)। आलु दुर [आलु] नव-विटेर बाबू (या R ) i भारतस्य भी [आसुर्का] व्यक्ति-विरोध (पत्र १)। शालुक्य गर्ज [दह्] क्लाला सक्र केता। यापुंबद (दे ४ २ ८ वर्)। आसंस्य नक स्थिर] शर्ज करता आस्ता। मानुबाद (हे ४१२)। भारतंत्रण न [स्परान] सर्ग कुछ (नडड) । भार्त्तुनितम दि [१९४] स्ट्रा, कुमा हुवा (हे १२१ः नामः) । कालुंत्पिस वि [देग्भे] बता हुसा (सुर १ आर्लुप सर [स्ट्रा] छूना। सामुक्द

(प्राष्ट्र ७४)। भार्तुप पक [ भा + हुम्प् ] इयत शरा। मानुगइ (बाना)। अम्मुप नि [आलुम्प] बच्छारर इच्छ नसे-भानाद्भीन नैनेदाना (दाना) । **आनुग रैबो आ**नु (१ए७ १) । भालुगाध्ये [र] पर्शकोश वहा (का 25 )1 आगुवारीं [वै] निर्देश ध्यवे निर्पयोजन 'ता देतियो जनार्थ समह है। मानुपारव्यक्ति-विष्ट (बुद्धा १४३) । रि [आनाग्य] चित्रत शिन भागगा आनंशिय है चरिष्ट्रेड साम क्रानेत्वरित्तर

आस्त्रेजन न [आस्त्रेचम] नीचे देवी (मग्रह राण्यित सम्में (धन् २३। से २ ४३ गा ६४१ अस्य )। आसटर्डुं आसेट्रुई आक्षेत्र वृं [आहेप] विनेपन मेप यामेक-त्रिमित्तं व देवीयो वत्तयासंविधवाहायी वर्धति चंद्राई' (महा) । ब्यालेवण न [आलोपन] १ लेप विलेपन। २ जिसना नेप किया जाता है वह वस्तु, 'बे क्तिन् र्रोत मामेब्स्डार्थ पश्चिमाहेता' (निष्ट **१२)** 1 भाग्नसिय वि [भाइतपित] मानवन करावा हुमा (बह्म ३७६)। मानेह पूं [आसंख] चित्र (बावम)। आसंबिक वि असिसिन विविद्य (सहा)। आतोष एक [का+सोक्] केवत वित्तोदन करना । वड्ड- व्याख्येशंत आसी-इति आस्त्रेणमाण (मा १४६ इस ९४६ क्षाणा) । नक्क- आस्त्रेष्टंन (से १ २१) । संइ- आसोएऊण आस्माश्चा (कास व E) 1 आसोज नव [आ + खोद ] १ देवानाः २ गुरु को घरना घरराच वह देना। ३ विचार करना। ४ शासीचना करना। ग्रासोएइ (भग)। वह आस्त्रेभंग (पहि)। संदू जाळोणचा आसो-इम (धर, रि १०२)। कि आसोइचए (छ २ १)। इ. आहो एसम्य आखेएउथम्य (स्व ६ २ दोव । 9E4) I बास्रेम र [बाह्यक] १ तेत्र प्रकाश (न २ १२)। २ निर्मोरन सब्द्री तरह देखना (प्रोप ६)। ६ पृथ्मी का समान-ध्यक सम भू-वान (ब्रोम १६१) । ४ वनकादि प्रकाश-स्वान (माचा)। ५ वनन्, शंशार (माव)। ६ झान (पर्दा १४)। आसीत्रम ) वि जिल्लासीचक वानीचम आसम्मय ) करतरामा (या ४ वृष्ट ६११३ 11 78

बतामा हचा (पडि)। आखेर्भ देवी बास्त्रेख - गा + तीव् । आस्प्रेड्स् वि [आस्प्रेड्सिव्] देवते राता ब्रष्टा (सम १६) । साम्बेह्ड वि [ शास्त्रेज्वत् ] त्रचरः पुढ (यमा १६) । आखोदांत केशे आखोश - मा + दोन् । धाख्येग केही आस्त्रेअ=धानोक (धोव १११)। नबर न [नगर] नबर-विशेष (परम ६८ १७)। आखोप देवो आसंभ = मा + तोष् । वह-आस्त्रोचेत (सुपा ३ ७)। एक आस्त्रो विकल्प (च ११७)। जा**डोच**ण **स्वा धाखेमण** (चर १११) । आधोड एक [बा+क्रोडय] हिलोलक গৰদ কলো। ধছ আন্দ্ৰীট্টিথি (प्रत) (क्छ)। आसाहिय । मि आसोहित । मीना आस्पेडिय 🕽 भ्रितीय हुमा 'मानोहिया **द** नयरी (पतम ३३ १२६; छप १४२ टी)। आस्रवण न [भास्रोकत] न्यात (श्व १६ आसाव एक [ आ + स्रोपय् ] मान्द्रादित करनाः रक्तः आसोविज्यमाण (व १८२)। आसोब देती आस्ट्राम = बाबीका 'नवै बल्कालीवै बेस्टरबे मोयस्त्रे विशासवर्ते' (रंडा)। आखोषिय ४ [आसोपित] माम्बर्धरत बका ह्या (लाग ११)। आसोमत्र न [मास्रोदम] वितानन, दर्शन, आधारि [सर्वन् ] बितना। ब्रावंति (पि निरीवरा (धोप १६ घा) ११६)। 'दाना रोधलकरण इसरम हैले समेति बुडीसी। अभाष **य**िवादन् विकास समामा एवं विराहेर्य एति निवर्ष नर्रदार्शी बह वि किया केता कहिन (विते (बढ्ड) । १२६३ वार)। बद्धवि [दशम्]

साबकीय बीबन-पर्यन्त (माव)। कहा की िक्या | भोजन-पथन्त 'वर्**णा** आवनहाए पुरुष्ट्रभवारी न सुर्वनि' (टर ६८१) । कहिय वि "कृषिक" वादकीविक जीवन-गर्यन्त च्यानाना (ठा ६ उत्र ४२ )।

आय पंजापी श्राप्ति नाम (पर्वा २ १)।२ अस कासपूरः बहुछ न[बहुछ] देको आइ-बहुछ (दस) ।

आव सर [आ+या] धाना धायमन करनाः 'बल्रबमिराल्यि निर्म्य पावड निश्नमूई ताल्' (মুণা ६४৩)। धाबद (ন্দু)। धार्वेति (श्रेग १६२) ।

आपआस एक [ दप + गृह् ] *धानिका* करता । बारमामङ् (प्राक् ७४) । क्षाबद्द की [कापयू] बापति विपन्, संकर (सम १७) मुपा ६२१ सुर ४ २१६, प्रामु

ኤ የጳጳ) ነ **आर्थन दें [वें] य**नामार्थ, कुत विद्यय सन्त्रीरा ( 2 42) 1

आबंदु वि [भाषाण्डु] बीहा समेद फीका (या २६६)।

आर्यंदुर वि [आपाण्डुर] कपर देखी (न व #Y) 1 आर्मेद केंद्रो आर्मेत "मार्नेती के मार्नेती सीर्नेति सम्याय माह्याय' (धाना १:४ २ ३ १ ४, ६ श का वि ११७)।

ब्यायमाण न जिल्लामानी घष पर वहन नी कता (भवि)।

भाषचेळ वि [अपरवीय] प्रपत्न-व्यानीय (क्य) । आधळ देशो आज्ञाळ (हु१ १४६) ।

आवज्ञ परु [अ 🛨 पर्] प्राप्त होना नाष्ट्र होता । मायमद् (यम) । श्रु भावज्ञियस्य (पराक्षः ४)।

आवळ सर्काधा+ वर्जे ]१ संयूक्त गरना। १ प्रसम्भ करना 'बाक्बीत गुला धनु मनुर्शन करो समनद्भारत' (म ११) । मायज्ञसक [आ ⊹पर्] प्राप्त करना। बारको (उत्त ६२, १ ६) । बारस्य (नुध ११२,१६२) भागमपु(मूल ०१)। भाषञ्ज । वि [आवज क] त्रीधुनान्य आयञ्चन (सिर्वे ४१०)।

आषञ्जान [आयर्जन] १ पंपूत रस्ता। २ प्रसन्न करना (माणू)। ३ उपयोग, वयात्र । ४ उरवीय-विशेष । १ व्यापार-विशेष (विशेष १ ११)। आविद्ययं वि [आविजितः] १ प्रयम विया हवा। २ धनिमुल किया हुवा (महा' मुर ६

११ मुक्त २१२)। *६*रण न**ि**स्टरणी व्यापार-विदेश ( मान् )।

भावदिवय रेखा आउद्भिय = भारोदिक (कुमा) ।

आवर्जीकरण म [आवर्जीकरण] उपवान विशेष या व्यागर-विशेष का करना उत्तीर खन्निमना में नर्म-प्रशेष रम स्थापार (धीप विदेग १ )।

आवट्ट यह [ आ + पून् ] १ वड री तप्र यमना, फिरना। २ विश्तीन द्वीना। ३ सक-शीपल करना मुखाना। ४ पीइना दुःखी करना। बाबहुद (हे ४ ४१६ सूध १ ४, २)। वक्क आषट्टमाण (से ४, ८)। आवट्ट क्यो आक्त (प्राचा मुपा १४) सूच १ ६)। आबद्रणा भी [आयर्थेना] पापर्वन (प्राष्ट्र

आबट्टिभा की [दे] १ नवोहा दुनदिन । २ परतन्त्र सरी (दे १ ७७) । आयह देवो आवस = भावसं (एय ६)। आयड सक 🗐 सा + पन् 🕽 १ माना भाषनन करना । २ मा सकता । वक्त-आवर्डत (प्राप्त

₹ **६**} । काषडण न [आपदन] १ मिरना (ने ६ ४२) । २ घा समना (स १८४) । आवजवीहि की आपगवीचि १ हट-मार्ग

बाजार । २ रच्या-विदेश एक तरह वा बुहुहा (राप १)। आर्पाडम वि [आपतित] १ विराहमा (महा)। २ पाम में बाबा हुबा (छ १४ ६)। आवडिअ वि चि १ संगत संबद्ध (दे १ ७ वाम)। २ नार, मजबूत (दे१ ७०)। आवग र् [आपत्र] १ हार दूसन (लावा

१ १ महा)। २ वाबार (प्रामा)। मावणिय पू [भापणिक] सीशवर, व्यातारी (पाप)।

आवण्य वि [आपम] १ मापति-पूर्वः । २ प्राप्त (गा ४६७) । सत्ता भी विस्या री वर्मिणी वर्मवती ही (प्रमि १२४)। आवण्य रि [आपम] शापित (मूच १ १ 1 (37 9

आयत्त सक [आ + दूस् ] प्राना, 'नावत्तद नामन्बद पुलो भने ठेए बपुणसमिति' (बेन्म 1 (775

आयत्त यक [आ + बूस् ] १ परिश्रमण करेगा । २ वरपना । ३ चलारार प्रमा । ४ सक पठित पाठ को बाद करना। बूमाना। बारतह (मूक्त ११)। वह अन्तराण, बावचमाय (हे १ २०१ हुमा) ।

आपच र् [आवर्ष] १ बरामर परिप्रमण (स्बप्न १६) । २ मृहर्त-विरोध (सम ५१) । महाविधेषु क्षेत्रस्य एक विजय (प्रदेश) का नाम (ठा २, ३)। ४ एक सुरवामा परा-विशेष (पर्राह १ १) । ५ एक सोक्पान का नाम (अ ४ १) । ६ पर्यतिविदेश (आ ६) । थ नालि का एक नशल (राम)। दशम विशेष (भावम) । १ शाधीरक बेटा-विशेष कायिक ध्यानार-विशेष 'दुवानसावते विदि पम्म′ (यम २१) । कृष्ठन [फ्लिंट] पर्यंट निरोप का रिकार विरोध (इस)। सिंद कहा [ीयमान] राजिए की तरक बहादार बुमने-वाला (मन ११ ११)। आपत्त पुन [आवर्ष] १ ०% तरह ता बहान

(निरि १०६)। २ म लगातार २ १ दिनों का उपवास (संबोध ४८)। आयस्य न [आदपत्र] यत्र याता (पाय)। आयचण न [आयर्चन] चरारार समण (ह % ६)। पिहिया की वितिष्ठा विशिवा बिरुप (राम)।

व्यापचय पू [आयरुफ] देशो आयस्य । १ वि अज्ञानार प्रमण करनेवाना (द्वेर ३)। आवत्ता क्षी [आवर्षा] महाविदेह-शेव के एक विवय (प्रदेश) वा नाम (इस) ।

आपत्ति की [आपत्ति] १ दीय प्रमंद, 'तस्य नियोग्यावती' (निते १६६४) । २ सापरा बष्ट । ३ बलति (पिने ६२) ।

आपंचि की [आपंचि] ब्राप्ति (वर्षम 1 (Fer

जानदि स्थै [आहिते] यापण्ड (संधि शे)। आयम देवी आयण्ड (पडम १४ १ खासा १२ स २४१ उत्तर १६)।

श्रावय पुं [आवर्ती] देवो आदत्तः 'किर्दि-कर्म वारमावर्व' (तव २१)।

आपय केवो आवडा वड आवर्षत आयय माण (पत्न १३ १३) छाता ११ ८)। सावया की जिएगा निर्ण (पाप छ

६१२)। आबया की [आपत्] प्रात्क विस् हुन्त (श्रम बस ४२)

'त प्रणीत पुष्पनेई, न य नीई नेय नोय-मनवार्य ।

नम महिम्दादयाची पुरिना

महिनास्य धानतां (दूर २, १व६)। आवर सक [आ + वृ] चानदासन करना, द्रोपना। वर्ग आवरिक्रद् (का ८, ६६)। क्या आवरिक्रमाय (पर ११)। संद सावरिक्षा (ठा)।

भाषरम न [आयरण] १ घाण्याचन करते बाता बच्नेताला विदेशित वप्लेबाला (सम ७१: ह्याचा १ )। २ वास्यु-विद्या (आ

. १) । अध्ययस्थित्रात्रि शिक्षस्यापि । १ आच्छा - वसीन । २ दश्तेसासा स्थल्लाका वस्तेनामा

(मौर)। धारिय रि [बादुन] वाच्यादिन जिये-दिव 'मारीसी नम्मदि' (निषु १)।

ख्य भागरमा (तद्व १) । बादरिसम म [आयपण] द्विप्तना, निवन (तृह १) ।

आपरिसण न [भावर्षण] मुनंब बन को कृति (भण २१)। भागरक्षण का [व] वरिका, सच वरोक्ते

कानरप्रया का हुन्। बारका, मध्य पराक्त मा पात्र-रिकेट (वे १ ७१) ।

भावत्यत्र व [भारकत] बोहना (त्रह् १ १)।

जार्बास ध्ये [मार्चक्ष] १ प्रिन थेली (नरा) ।२ ई एक रिर्मार्च का नान (पत्रम १. ११)।

आर्रातमा भै [आवस्तिहा] १ वींक, बेली (एव) ।२ हम वीरतार्थ (नुब १ ) । ६ सन्दर्शित एक नुस्त वाद-वींकाल (बर ६,७)। पषिट्र वि "प्रविष्टा मेली हैं। व्यवस्थित (मग)। बाहिर वि [बाह्य] विप्रविर्धे, बैलि-बार खाँ खा हुमा (भव)। आवस्त्रिय वि [आवस्तित] बेटिल (पूर्याप २)।

आवर्धा की [आवर्ध] १ पेकि, मेली (पाम)।२ रावजुनी एक कन्दाना नाम (पडम १, ११)।

आवस सक [का+यम्] रहना शस करना। बारमेज (नूब १ १२)। शक्र-भाकार आवसेना वि'(नूब १ १)।

आवस्य हु [कावस्य] १ वर, धायय स्वान (मृद्य १ ४)। २ मङ सैन्यासिकों नास्वान (एस्ट्राई २ १व )।

आपसिहित वृ [आवस्त विक् ] १ पृत्रस्य वृद्देः
(तृष्य २ २) । र केवास् (तृय २ ७) ।
क्षात्रस्य (तृष्ट [क्षात्रस्य कृ ] १ स्वरस्य-कर्यस्य
स्थात्रस्य (तृष्ट [क्षात्रस्य कृ ] १ स्वरस्य-कर्यस्य
स्थात्रस्य (तृष्ट्य) निष्य-कर्य (तृष्ट वर १ ।
विक्रिंग) । वृत्रमा वृ [तृत्वसा] सार्वः
स्वरू पृत्र वे गास्ता (विदे १) ।

आवरमव पुन [आपामय] १—१ अर छेनो । ४ सावार, यासव (विने ८७४) । आवस्मिया की [आवश्यकी] सावावारी-

निरोप का साधुका प्रदुरात-विरोध (उत्त २६)।

आपद्धक [आ+बह् ]बाएड करना बहुत करना 'वैसेरि तिक्षित्त्रंवी बहुको नुक्रस्य पेत्रसावहर्ष' (उन) 'रही पूसर्व तपता धारहेमा' (पृष्टण)।

आनद्द वि [आनद्द] पारण करनेवाना (पाचा)।

। आषा बण [ब्रा + पा] १ पीता । २ शीग में नाता उपनीय परमा । हेर भेर्त इच्छीन साबेडे, नेथं हे महत्ते वर्षे (बप २, )।

आवादया जी [आवापिश] प्रवास होस 'पत्पुनाए परमावादनाए' (४ ७२७)। आयाम द्वीआपाठी पावा, विट्टी के बाव

वराने वा स्थान (शर १४ विसे २४६ दी)।

मानाह र्रु[मापान] बीरो नी एक नार्ति चैन्

कानेन्त्रं देन्त्रं समय्त्रं स्वरंद्दमप्दं वादे व्हरं सावास शामं विधासा गरिवर्ततं (वं १)। आधालय न [आधाणक] कुमन विदारं बावानुसारं (स ११)।

आवास पुन [आपात] सम्मायम समानन (पच ११: ११ टी)।

व्यावाय वैको स्त्रावाग (था २३) । आवाय पूं[स्त्रापात] १ ब्रास्स्स, हुन्सस्त

शायाय चु [आपात] र प्रारम्भ, पुण्यार (याम चे ११ ७४) । २ प्रथम मेमन (क्र ४१) । ३ त्रसामः तुर्रत (सा २६) । ४ यदन, गिरमा (सा २६) । ४ सम्बन्धः संसेत (क्या नम्म)।

आवास पुं [आवाप] १ आवा मिट्टी के पार पकाणे का स्थान । १ आवापाल । १ प्रशंप फेंग्सा । ४ शतु की किल्या । १ बोना कात (का २६)।

आवायमं न [आपायन] तन्पारन (वर्षसं १९८)।

भाषात देनो आलतात (वर्गीव १६११२)। आवात ) न [क] अस के निष्ट ना प्रदेश आपालय ) (६२,७)। आपाव देवो आवाव = धावाप। कहा हो

िक्या] स्पोई सन्दर्भाक्या कि क्या-क्रिये (क्राप्तर)।

आवास ( [आवास ] र वास-कात (क ध पाय) : हेनदान स्वस्थान पहना (क्यू र अंधीर) ! र पीक-गुरु नीत (कर है १) ! अ वन्य केस (कुस १६६) कर ह है । । प्रस्था है [पकेत] पने ना पर्योत (कर) !

आवास ) देनो आवस्तय = ध्ववस्थ्य (प आवासत ) ६४४ ग्रीम ६६ १ दिने =१ )। आवासजिया ग्री [आवासनिव्य] ग्राहण-स्थान (न १२२)।

आधामय ॥ [आशासक] १ प्रावस्थक वर्षा । २ जिय-कर्तस्य धर्मानुतान (हे १ ४६। विगे १४) । १ तूं परि-नृत, बीह (वर ११) : ४ वि स्टब्सायसस्य सामक । १ भागसस्य (विश्व संघर) ।

आवासि वि [आपासिन् ] युनेगना वर्षनियानासी (उन्)।

आवासिय वि [ आप्रासिन ] विनिर्देशन वहार बाता हुमा (नुपा पृश्च नुर १ १) । कावाद सक [आ + वादय्] १ सनिय्य के सिए देव या देवापिष्ठित चीज को बुकाना। २ इसामा । संह-ध्यावाहिति (घप) (मिन)। आवाद र्वु [आवाध] पीड़ा वावा (विपा १ आवाइ पुं [बादाइ] १ नद-परिखीता वपू को बर के बर साना (पण्डा२ ४)। २ विवाह के पूर्व किया बाता पान देने का एक छत्सव (बीव ३) । आवाह्य न [आयाहत] बाह्यान (विधे દેવવણ) ( काषाहिय वि [आबाहित] १ दुनामा हुमा बाहुत (भवि) । २ मदद के किए दुनाया हुया देव या देवाविद्वित वस्तु 'एवं च अर्थकेण' मानाहियादं सत्त्रादं (सूर ८ ४२)। क्याचित दि] १ प्रसक्त-वीडाः २ वि निष्य शास्त्रतः। १ रष्ट, देखा हुया (वे १: ७१) । काकि व [चापि] समुज्यस्योतक वस्यय (इप)। काबि स [ आबिस् ] प्रकटका-पुषक शब्सम (मुट १४ २११) । आधिअ सक [भा + पा] पीना वहा दुमन्स पुण्डेमु समर्थे व्यक्तिक रहें (बस १ २)। धाविभ वि [भाकृत] माञ्चातित (वे ६ 42) I ब्याविक पूंदि] १ इन्ह्रनीय सुद्र कीट क्रिकेष । २ विं मणित, माबोडिक (वे १ **७६) । १ प्रोट (६ १ ७६) पाछा पङ्)** । जाबिज वि [जाबिम] ग्रविच-केरोत्पन

व्याविस सङ आ + विश्व | प्रवेश करता (राव)। क्याविज्ञास्मा की वि १ नवोबा बुक्तिन। २ परतन्त्रा पराचीन और (वे १ ७७)। आर्थिय एक [का+क्य**्]** १ विवता। २ पद्मनगा ३ मन्त्र से सबीत करना। द्यादिव (सन्द ३व): साविवासी (पि Yat): 'पासंब' वा सुवर्एस्ट्र्स वा मावि वेक पिणियेक वा (बाया २ १६ २)। कर्म. गाविज्यस् (वव) । आर्थियण न [आब्यचन] १ पहनगः । २ मन्त्र से भाविष्ट करना, मन्त्र से सबीत करना (प्रहर २ माक १०)।

पाइअसइमइण्यवी आविकमा पुन [आविष्कर्मम्] प्रकटकर्म, प्रकटल्प से किया हुचा काम (बाबा २, ११ X) I ध्यावित्म वि [आवित्न] ध्वित्न उदासीन (शेर ८६ १३ १३ देश ६३)। काचिट्ट कि [आविष्ट] १ श**क्**ठ व्याप्त (सम प्रशामुपार्द≈)। २ प्रविष्ट(सूम १ ६)। । समिश्चित मामित (ठा १८ मास ३१)। ध्याचिट्र वि [बाबिए] मृत यावि के उपप्रव से पुक्त (सम्मत्त १७३)। आबिक्क वि [आविक्क] परिवित्त पहना हुया (字四) 1 काबिद्ध वि वि] क्षित प्रेरित (वे १ वरे)। आविक्याव वृ [आविर्माव] t जलाति। १ प्रादुर्मीन धनिष्यकि 'सानिन्मानविरोगान मेलपरिशामिकक्षभेकाय (विसे)। आविष्मृय वि[आविर्मृत] १ छरका । २ शा**द्व**मृत (क्प्प) । ३ समि<del>ष्</del>यकः (सुर १४ २११)। आवित नि [आविष्ठ] १ मनिन **यस्त्रक्य** (सम ११) । २ माकुक स्थान्त (सूम १ ११)। साविक्षिक्ष वि दि] दूपित क्य (पर्) । आविलुपिअ वि आश्चि**ष्**चतः प्रिकाशत (देश ७२)।

सी दम्मि दम्मि समय, नुहानुई बंबए नम्म (ডৰ) आविद्द प्रक [ आविर् + मू ] १ प्रकट होता । २ सन्पन्न होता । घानिहनद (स ४०) । व्यविद्वय वैचो आषियमूय (स ७१८)। ञाणी देको आदि ⇒ सानिस् "कादी ना जद वाचहरते (उत्तर १७ गुचा१ १७)। कम्म वेस्रो काविकम्म (धाना २, १४, ५)। आ मोअ वि आ पीठ दियोग । र शोवित (मे १६ ६१)। आबीइ वि [आबीचि] निरुत्तर, गरिष्यियः

बुसना । बाबिसेइ (सम्मत्त १ ६) ।

'परवारमाविद्यामिलि' (विदे ६२५६)-

आविस प्रक [ आ + विञ् ] १ संबद्ध होना

पुष्ठ होना । २ सक् छपमीन करना छेवना

'र्ज वो समय बीबो, प्राविसदे बेश बेश प्रावेश।

'यनमयमिश्माबी' समित्रकोए सर्' व सूसंदै। मणुचनर्यं मरमाणे भीयति बस्ती कहे मणदः? (सुपा ६६१)। सरण न ["सरण] मरख-विशेष (भग १**३** आवीकम्भ न [आविष्कर्मन्] १ क्लित । २ व्यक्तियक्ति (हा १ अभ्य)। आयीडस्क [आ + पीड ] १ पीड़ना। २ बबागा । बाबीड४ (सए) ।

आषीण न (आपीस) स्तन बन (मराज) : लायीक वेची आमेल = मापीड (स ११६)। लावीख केही लावीड । संह. आवीडियाण (धाचा २१ = १)। आयीजण न [आपीडन] समूह, निषय (बतक)। कानुक र्रु [आनुक] गटक की भाषा में पिता बास (साट) । क्षाबुज्य वि [क्षापूर्ण] पूर्व, मरपूर (वे २ १ २)। शाबुच वुं [दे] ग्रामिनी-पति (मधि १=३)। आयुद्वि [आवृत] इकाहुमा (प्रक्र≭

**१२)** 1 आबुदि भी [आबुदि] पारएए (प्रक = १२)। काबूर **रेको आपूर≕मा** + पूरन्। वङ्ग आवृरेस (पडम ७६ ८)। इवह. आयूरिव्ह माण (स ६वर)। आवृरण न [आपृरण] पूर्ति (स ४१६) ।

आबुरिय रेको आर्जारम (पचन १४ १२) स्कक)। आ थर्भ थरू [आ + वेद्यू] १ विनिधि करणा निवेदन करना । २ वत्रमाना । उनाव एड (महा) ।

आषेष र् [आवेग] गर दुव (छ १ ११ ७२)। आबंडे देखो आवा ।

आवंशिक्य वि [आवेष्टित] श्रीतत हैर : हुमा (मा २=)। आपेष है केता भामन हिं के, इंडर,

आवेद्रय ∫ गुना)। आयेख वृं [आयम्] १ क्रन्तः मनस्थानार गरना (गंध वर्ष) (

आवेडण न [आवेष्टन] उत्पर देशो (बस्ड **附电**¥) i आवेडिय वि [आवेष्टित] १ वार्षे घोर धे

बेट्टित (मग १६ ६ चप प्र ६२७)। २ एक

बार बेग्ति (ठा)। आवियण न आविदनी निनेदन मनी-काव

का प्रकारत-कराउँ (गतदा दे ७ ४७)। छ। देवमा वि [वे] १ विरोध सामार्कः २

प्रकृत, वहा हुया ( पर् )। आवंस एक [आ + वंशम्] भूताविष्ट

क्ला । **१५- आ**वसिकण (६ १४)। साबस ( [आबेक्ष] १ वर्षितिश्यः। २ जोरा ।

६ भूतप्रह । ४ प्रनेश (नार) । आवेसण न [आवेशन] कृत्वबृह "पावेसल समापनायु परिहमसाबायु एक्या नासी

(घाचा)। भास देशे अस्स = मह (मह २६)।

भास शक [ब्रास्] कैताः 🚓 'घवने आसमापा व पालमुकाई दिसई' (दस ४) । र आसिचप आसइचए, आसइच् (पि ३७ कम इस ६, ३४)।

आस प्रकारको १ सम मोदा (छाता १ १७) । २ देव-वितेष स्रविती नलव का सर्वित हाबक देन (मं)। १ ध्रदिनी नशद (चंव २)। ४ मन चित्त (पएछ २)। क्लग कम प्रै िक्यो । १ एक मन्त्रहीय। २ प्रस्ता निवासी (का ४ २)। गगीव पू मिश्री एक प्रसिक्त राजा पहला प्रतिवामुदेव (पदम ६, १६६)। वर ई ["वर] चबर (मा १:)। त्वाम दे [स्थामन्] प्रोन्शाचार्यं का प्रक्यात पुत्रः । (रूमा) । द्वस नुं ["ध्वश्च] विद्यावर वश का एक राजा (क्यम ६, ४२)। भ्रमा प्रै [ अर्म ] देशी पूर्वोक्त मर्व (पडम १८४२) । भर वि [ भर] धर्षी की नाएश करनेवाना (बीत) । "पुर न ["पुर] ननर-विरोध (६६) । पुरा पुरा की ["पुरा] नवरी-विरोध (वरा टा ९, ६) । मिनग्रमा की ["मिश्रिका] भनुचित्रम बीय-मिरोप (प्रोच १६७)। सद्ग सद्य रू [ भईक] सम का करेन

क्लोबाला (शामा १ १७)। "सिक्त व्र

िमित्र दिक वैशानात वार्शनिक को बहानिर्देश

सामुक्केरिक पंथ चलावा था (ठा ७) । मुद्द

दे िशुका देशक धन्तरीय । २ छसका शिवासी (ठा४२)। शेड् पूँ "सेथ] यड-

बिरोप (प्रजम ११ ४२)। खर् पुँ [रेष] चौज़-नाज़ी (ख़ाया १ १) । वार पूर्विवार]

कुरू-सवाद, पुर चड़ेगा (सुपा २१४) । **बाह** शिया **वर्ष** विश्वहनिका नोहे की सवारी बोढ़े पर क्षत्रार होकर फिरना (निपा १ ६)। सेषा प्रीक्षेत्री १ मध्यान पर्वताय के

पिता (क्य) । २ प वर्षे वश्वतीं का पिता (सन १४२)। रिष्ट् प्र िरोड् ] पुत्र-स्वाद, भूग-**पदे**वा (से १२-१६) ।

आस पुंची [आरा] गोवन 'सापासाए पाय रासार (सूच २ १)।

कास 1 [आस] क्षेपण पंचना (विमे २७११)। क्षास न (आस्य) धूच मुँह (यामा १ ५)। आसइ दि [बामयिम] स्तपद-दिनतः 'बंगा

सब्ती काता सा देती सालगैकिक्य' (वर्गकि 1 (083 धार्यकतक [आ + शक्कृ] १ प्रीक् क्षणा धरम क्ष्मा। २ वक मबनीत होता।

धार्षकद् (ध १ ) । वक्क आसीर्वन आसी-कोगान (गाट माच १)। व्यासंबद्ध को [भाराइस] राष्ट्रा भग गहम

**धंतक (तुर १ १९१ मह**छ मार) । आर्थकि वि आशिक्ष्मी गण्डा करने भावा(ना२ ५)।

आर्थिय रि [आशक्ति] र एक्ति एक-मिन । २ संग्रहिन (मक्का) ।

आसंकिर वि [बाशक्षित] व्यसंका करने थाला महसी (मुद्द १४ १७३ मा २ ६)। क्षासंग नु वि । वास-गृह शप्या-गृह (दे १

44)1 जासँग र् [आसङ्का] १ थावकि विभिन्नेतः

१ संबन्ध । (यडड) । ३ रोद (प्राचा) ।

बासीगिवि [बासद्गिन्] १ वातका। २ र्धनम्बी संगीपी (वडर)। छी, जी (गउ४)। आसंग्रह [सं + भाषय ] १ नंत्रावना

करना। २ धम्यवसाय राजा। ३ हिनर वरना निवय करना । आसंबद्ध (ने ११, ६ )। के किन शीरिक्य ना क्रिय का बीद विक्री पष्ट आसंपित (हे १४ १२) ।

आसंघ प्रंचि र भका, विस्वास (सुपा ४१६ वड् ) । २ सम्मनसम् परिसाम (स १ १३)। ६ धार्शसः ४७६। बह्द (मन्ड) ।

आसंभाकी दि । इच्छा नाम्या (दे १ ६६)। २ बाह्यकि (मै २)।

आर्थिक वि दि १ मध्यपित । २ सन वारित (से १ ६६) । ६ संशायित (हुमा) स १९७) । आसंक्रिय वि [सासक] पीचे तना ह्या

(पुर व व छक्तर ११)। बार्सद्य न [आसन्दक] शासन-विशेष (बाचा महा)।

आस्त्र्य पुन [आसन्दक] बाहन-विरोप मंच (पुच १ १)। भार्सदाण न [मासम्बात] प्रदर्शमा वर्ष रीव रकावर (क्टर)।

वासंदिका को [जासन्दिका] बोटा गर्व (सुम १: ४ २ १४ मा ६६७)। बासंदी 📽 [आसन्दी] मासन-विरुप, मध

(ब्रिय १ धा ब्रिय १ १४)। भासंबी की [सन्धाननी] बनस्परि-विशेष (प्रवा १२४)। **भासंबर वि (आशाम्बर) १ विकास, सन्** 

(प्राप्त)। २ कैन काएक मूक्त वेद। १ **ज्यका धनुमामी (सं २)**। भारतस्य वि [बर्सशयित] एतम-पौर्व (शुक्त २: २ १६)।

जासंसय 🐧 [आइंसन] रूक्य अभिनाय (पाप ११)।

आर्ससायी [आर्थसा] यक्तिया रच्छ (गाना) ।

आसंसि वि [बार्शसिम्] बनिनापी रच्छा क्लीवामा (धावा)। आसंसिज वि [ब्बारांसिन] श्रीबनवित (वा

44)1 भारत्कसपर्वृद्धि प्रचल्य पश्चिनीवरीय स्पेतन

1 (48 5 18) आस्मा देवो जास = चरव (छावा १ १२)। आसगरिक वि हैं। प्रात्मत 'प्राव्यतिकी

तिम्बकम्मपरितारिए (ब ४ ४) । मासर्गाक्रम वि हैं। बात 'एवं विस्मीनाह चित्रलेख कवियो कम्पर्धमायो माक्यसिमे

बीविवीव" (स ६७६) ।

धासक म [धासाच] प्राप्त करके (विदे . ) : आसंब र् [आसंब] विक्रम की तेरहवीं राजानी का स्वनाम-क्यात एक जैन प्रस्वकार (विवे 1 (1889 आसप्य न [आसन] १ विश्वपर बैठा बाता है वह चौकी धार्ष (मान ४)। २ स्थान, बक्द (क्त १ १)। १ राज्या (माना) । ४ बैठमा चन्नेकन (ठा ६)। आसजिय वि [आसनिव] प्राप्तन पर बैठावा इमा (स २६२)। आसण्जन आसम्बी १ समीप पासः २ वि धमीयस्य (वदड) । देखी लासस्य । आसक्त विशिक्षको भीन उत्पर (महा प्राप्तु ३४)। आसत्त वि [आमक्त] रे गोवे नगह्या (राम १६)। २ पूँ नर्पुसकका एक मेह, बीबैपात होने पर भी ह्ये का धार्मियन कर ठनके क्यादि संसों में **ब**दकर शोनेवासा नपुषक (पन १ ६)। आसचि से [आसकि] स्टिन्ड क्योन्त (कुमा) । क्तासस्य र् [अध्यस्य] प्रीपम का पेड़ (परम 1 (30 FX आसस्य वि [आयस्त] १ प्राप्तासन-प्राप्त स्वन्य । २ विमान्त (शामा ११ सन १३२ यदम ७ १व रे ७ २८) । आसम देवो आसण्य (दुमा: वन्त्र)। वस्ति वि विश्वित् निवधक में प्रतेवाला (शुपा 4×8) 1 कासम र् [बाधम] तापब बादि का निवास स्थान डीर्थ-स्थान (पराष्ट्र १ ६ मीप) । २ ह्या-वर्षे मार्हस्म्य, वानप्रस्य बीर मेडव (संव्यास) मै नार प्रकार की सबस्वा (पंचा १)। आसमपय न [आधमपद] तलहाँ के बाबन से उपस्रकात स्थान (<del>एतः १</del>१७)। आसमि वि [आमिम्] प्रापम में राजे-बाला ऋषि भुनि बपैछ (पंबब १)। आसय पर [ शास् ] डेज्या । शास्त्रीत (बीव ३)।

श्रवक्रमन करना । २ श्रव्युण करना । शासयद (इप्प) । बहुः, सासर्येश (विशे १२२) । ब्यासय प्रजिशको बानेनका (प्रापा) । आसय प्रे जिल्लामयो धामार, धनवम्बन (सर ७११ मूर १६ ६६)। आसम् व [आश्य] १ मन वित्त इवय (मुर १६, ६१, पाय)। २ श्रीनप्राय (सूम १ ब्रासय न वि निषद, समीप (वे १ ६४)। आसरिक वि वि विषुत्त-यानत सामने याया ह्या (वे१ ६२)। आसम्बद्ध [ शा + स्त ] गीरे-गीरे करना टपक्रमा । बद्धः सासायमाज (माना) । आसव सक [आ + स्र\_] ग्राना 'ग्रासकीर बेल कम्मे परिखामेलप्यको स विक्लेमी भावा सवी (इच्य २१) । आसब र् आभवी मुख्य ब्रिट, देको 'सया सध (मग १६)। आसन् र्र [आसन] यदः शकः (उप ७२८ टी)। ब्रासय पू [आश्रय] १ कमों का प्रवेश-द्राप, निससे कर्मकम्ब होता है वह हिंसा सर्धद (ठा २,१)।२ निभीता, पुरूपपन को पुनने बला (बच १) । सिक्क वि [ सिक्किन् ] हिंसादि में बासक (बाबा)। आसमय न वि । नास-तृष्ठ, शम्या-नर (वे १ कासयादिया वी [क्षयवादिका] प्रयन्त्रीत (धर्मीव ४)। आसाम सक [ आ + साइय् ] सर्व करना क्रुता । बासायुक्ता । क्ष्युः, व्यासायमाज (बाका २ १ २ १)। आसस प्रक [ आ + म्दस् ] बापासम नेगा विधाम तेया । धानसङ्, बानसमु (वि ८६ YEL) I आससण न [जाशसन] विनास, दिसा (पएइ १ ३)। आससा 🛍 [आशंसा] पत्रिवाया 'नेनि सू परिमाण संबुद्ध मानना हाई (विसे २५१६)। मामसिय वि [भाषास्त्र] यापासकन्त्रात (स **1**8c) 1 आसा की [आशा] १ धारा उम्मीद (चीप) आसय सक [आ+भी] १ वाचय करता | से १२६ सुर ३ १७७)। २ फिला(उप

१२५ ६४८ टी) । १ एतर स्वक पर बस्नेवाती एक दिवकुमारी देवी-विशेष (ठा ८)। धासाल एक भा + स्वाद् | स्वाद सेना चवना बाला। धारामंति (मन)। वह आसामर्अव, आसार्पव, आसायमाण (भाट से ३ ४३ छामा १ १)। आसाज बर्क आ + सादय रेपात करता। बक्र ब्यामार्थस (से ३ ४%) । आ शास सङ्ज्ञा + शास्य विवता करना श्यमान करना । सासाएका (महानि १)। **बहु आक्षर्यंत, आसाएमाण (बा 👣 अ** ۲) I आसाभ वं आिम्बाद । १ स्वाद, रस (वा दश्य से ६ ६० का **७६**० टी) । २ तृति ( t 2 ( ) ( आसाथ र् [आऽस्त्राद] स्वाद का वितरुक्त धमाव (तंत्र ४२)। बासाञ्च देवी मासय = बायय (तंतु ४३) । आसाम पूर्मासाद्] प्राप्ति (से ६ ६८)। आसाइम वि [भारावित] १ प्रवात विरक्तव (युण्ठ YXY)। २ न घनता विर स्कार (विषे ६२)। आसाइध्र वि [भास्यावित] चना हमा बीड़ा बाया हुमा (से १ ४६)। भासाइज वि [आसादित] प्राप्त शब्द (हेदर ३ मचि)। ब्यासाह र् [ब्यापाद] १ यामाइ मास (मम ३५)।२ एक निवन यो धव्यक्तिक सत्वका क्लारक या (छ ७)। सूद्र पूर्वि] एक प्रसिद्ध बैन मुनि (कुम्मा २६)। भासा**डा क्ष्रे [आपाडा]** मनन-विशेष (ठा आमार्डाकी [आयादा] भाषाद मान की पुरिषय (सुन्न) । आसाडी की [बाराड ] रे पापाइ मास हो पूर्णिमा । २ धापाइ मास की धमादय (सूत्र बासादंच् वि [आस्पादयित्] धास्त्रास्त नरनेवान्ता (ठा ७) । व्यासामर पूँ [मारामर] चात्रमें नापुरेन भीर बलकेर के पूर्वमकीय वर्गपुर का नाम (सम

(##J) 1

125 आसायण न [आस्वाइन] स्वाद नेना चन्नना (पत्तम २२ २७) स्त्राया १ ॥ शुपा १ ७)। भासामण न [आशातन] १ नीचे वेको (विके ६६) । २ सम्प्रतानुबन्धि कपास का नेदन (विसे)। बासायया बी [आशावना] विवधेत वर्तन मनमान, सिध्स्कार (पहि)। क्षासार एक 🛘 भा + सारय् 🛚 वंदुरस्य करना बीखाको क्षेत्र करना। संह बास्रायेक्ट (सिरि ७६४) । व्यासार पू [आसार] ममीनच्छ नीखा की क्षेत्र करना (दूप १३६) । आसार पू [आसार] देन से पानी ना बरसना (वे १ २ तुपा ६ ६)। आसारिय वि [आसारित] होन विया हुना, 'मासारिया डुमारेख शीला' (दुध १३१) । बासांस्यि पूंडी [बारास्टिक] १ सर्वे नी एक जाति (परहर १) । २ और विद्या मिलेप (पडम १२ ६४- १२ ६)। ब्रासायक्की की [आशापक्की] एक वनगै (वी 3×)1 जासदि वि [ बाह्मादिए ] फलेनामा चन्चित्र (सूच १ ११)। बासास सङ [ बा + झास् ] करा करना समीद रक्षना । प्राप्तामाँद (देखी ६ )। भासास दर्ज [भा + भासन्] गालासन का चल्लना रुरमा। याससह (रुवा १६)। मक्क भासासव आमासित (B ११ au मा १२)। बासास र्[बादास] र शास्त्रसन सन्त्वना (भोग इंग्रुस ६३ छप ६६२)। २ किमाम (ठा ४ ६) । ६ हीप-विशेष (भाषा) । भासासम 🛊 [भाषासक] क्रियाम-स्थान सन्द का संश वर्ग परिच्छेर सम्बाद (छ र ४६)। २ वि साधसन भेनावा 'नार्ग दाशासर्व सुमित्त्वन (१९५३ ६ )। भासासग र्रु [भारतस्यक] नीनक-नामक सूच (चीन) । **भारतसम् न [भाषासन] १** शालाना,

बिनावा (पुर रे, ११ । १२ १४ का ह

१७)। र बहीं के देव-फिरोप (ठार व)।

1 (35

भासासन र् जिल्हासनी १ एक महाबह (नूज २) । २ पि याधामन-पाता (नूब Rt ) : आसासिभ नि [भाषासित] वितनी मापा-सम दिया थया श्री नह (से ११ १९६) मूर ¥ ₹¢)1 आसि सक [आ+भि] याथव करना। र्षष्ट ब्रासिञ्च (वारा ६६)। आसि देनो अस = प्रव् । आसि वि [आशिम्] क्रानेकामा धीवक (सहि १३)। आसिमापि [भाष्यक] यस का रियक 'बुट विय यो धारे दमेइ र्समानियं विदि' (बव ४)। आसिम वि [आफ़ित] विचाया ह्या भौतित आसिअ वि [श्रामित] धापव-प्राप्त (क्रम बुर ३ १७ से ६ ६% विसे ७५१)। भासिभ 🖩 [आसिव] १ जारिए, शैव ह्या (सेंग ६६)। २ छहाहमा लिए (परुप 42 44) I मासिन रेको आसिच (ग्रामा १ १ कपा भीप)। आसिमम वि [दे] बोई का वीड्-निर्मित (दे १ ६७) सूत्र क भूगी जूगा २८३)। भासिमा की [भासिका] बैठना जनस्त्रन (d a 44) 1 आसिमा देवो आसी = वाकिप् ( वर् )। आर्सिष एक [का÷सिष्] श्रीपना। कर्म प्रासिक्वंश (विश्य १११) । आरिरण वि मारिन् | बानैवाना बोक्स में ब्रासिश्त्स (पद्म २६ १७)। भासिष 🖠 [माचिन] पारिका गता (वाय)। आसिक नि [आसिक] १ नौड़ा पिक (मय **१, ११) । २ क्रिक शोचा ह्मा (शायम) ।** ६ पुंतपुंचन का एक मेव (पूज्य १२)। भासि चिवा भी [वे] बाध-विशेष विद्या-हाईं मारितियाची भीचा वर्ण कार्वेति (सुज 1 (4) } आसिमानाय केवी आसीनाय (तूच १ १४

मासिख र्रु [आसिस] एक महर्षि (क्रूप र 1 ( 7 % | आसिखिट वि [आरिख्य] पालियित (नाट)। बासिक्षिस एक [ मा + रिसप् ] फॉनपर क्ला। इङ भाग्नेददुर्भ भानेहदु (ह 7 (4x)1 आसिसा हेवो आसी = वाटिन् (बहुः पनि 1 (775 आसी रेखो अस = म्स् । आसी की [आशी] बारा (विने)। विस र्षु (वय) १ आहरिसा संप, धासी धार्म तन्यविमानीविद्या पुरुषम्बर्ग (बीच १ 🛍 प्राप्तु १२ ) । ३ पर्वत-विशेष ना एक स्टिग्र (ठा२३) । ३ निसङ्घीर बनुसङ्करने <sup>में</sup> सबर्थ, लंदिय किरोध को प्राप्त (सम <, १)। भासी ध्यै [ आशिप्] बातीर्वार (गुर १ १६८)। वयान ["स्पन] सन्धैर्या (बुपा ४९ ) । बाय पू विश्व पारीकं (बुर १२ ४६) सुपा १७४) । ब्रासीय दि (आसीन) बैठा ह्या 'ऋमिन्छ बाबीका क्यों (बन्)। आसीयम पुंचि बरबी बपड़ा हीनेवाना (4 4 46)1 बासीसा देवो आसी = मान्निय् ( पर् )। भासु पुन [अभू] भारत (सति १७) । भारत ) य [भारा] ग्रीड, दूरंत कसी (तार्न भारो रेवाम्बर शत)। बार रे किएी १ व्हार, माप्ता । २ मफ्ते का कारल विक् चिका वनैद्य (बाव)। ३ शीव वपस्थितः 'पानुवारे नयते शन्त्रियाम् व वीविधानाएँ (कला६)। पञ्चावि विश्वाी १ स्टेंज+ बुद्धि । १ विषय-जानां केनव-बानी (सूर्य र (v tv) भासूर वि [आसूर] यमुर-संकनी (अ ४ **४ पाउ ११)**। ब्यासुरच न [ब्यासुरम्ब]क्रोबियन कुस्सा (वस च ११)। वासुरिय ई [बासुरिक] १ बनुर, बहुर बन से अरुपम (एव)। १ वि समुर-संकर्मा (पूर्म

पुत्र प्रक) :

आसुरीय वि [ असुरीय ] मगुर-चंगार्थ

'बानुराये दिसे शासा रण्योति बारमातमे (उत्त<sub>ा</sub> v ( ) 1 आमुम्स वि [आशुम्प्त] १ क्षेत्र बूद । २ र्घात दूरिन (गाया १ १)। आमुरन दि [आमुराक्त] पति दृशित (खाया 2 () 1 क्षामुरुच रि [आरास्य] पवि-पुरिव (विपा १ ६) । आमृष्य व [आशुनिम] १ वनिष्ठ वनाने-शनी नुस्तक। २ रहायन-विया (मूच १ ६)। आसृगा ही [आशुना] म्याचा प्रश्नमा (सूच ₹ E ₹X) i आमृष्यिय वि (आशुनित) बोहा स्वृत्त विया हमा (पतन १ १)। "रामृय व [द] बीरवाविडर यनीडी (विड x x) 1 आसञ्जनप वि [आसचनक] विद्वरी रेजने मैं मन मो दूमि न होती हो बह (वे १ ७२)। आस्परपर[भा+सेय्] १ नेवना । २ पातना । ३ धाषरमा । यानवर् (यात ६७) । आगपयन[आगपन] १ परिशनन संरक्षण (मुरा ४६६) । २ मावरण (स २७१) । ३ मपुन, रक्तिमेश्रोन (बसबू १ पर १७ )। आमयग्या , में जिल्लाना १ वरियान आमयमा } (गुम १ १४) । २ जिल्हीत बाबरत् (पर)। र बम्बार (पाषु)। ४ तिला काएक भइ (वर्ष १)। आमया श्री [आसवा] कार रेगो (गुप्ता

वा एक घर (वय १)।
अभावा की (ज्ञासवा) कार हैनो (नृता
१)।
आमविव रि [आसविव] रै वरितारिक।
१ घरण (यावा)। रै घार्वाण बहुन्ति
(म ११६)।
स्मामा शु [जयहुर] व्यक्ति वय अभावार (व्यक्ति)।
सामामा शु [जयहुर] व्यक्ति वय (व्यक्ति)।
सामामा रि [आसोड] मार्ग्य नृत संबन्धी (व्यक्ति)।
सामारवा थे। मि सामानिका विकास विकास स्वोतान्तिक वर्षाच्या व्यक्ति।

आसाह को [आययुक्त] धारित पूर्विका

(इंद) ।

भासोक् } श्री [आश्रमुका] १ शारितम भामोया | माम की पूर्णिया । २ शारित । मान भी समात्रम (गुजर ७६)। आमोर्फन की [आसीनाम्वा] मध्यम प्राम की एक मूच्छैना (ठा७)। आमीत्य र् [अश्वाय] पीरन शा पेड़ (पएए १ वर २३६)। भाद राम [ धूम्] गहना । चूना---मार्हनु, धादु (रप्प) । आक्ष्मर [पाढचा] पाहना इच्छा बचना। मारा (हे ४ १६२ वर्)। यह आहंत (पुपा) ह आर्ट्डड रेगो आर्यड्ड (हम्बोर ११)। आर्ट्न रेगो आह्य । आह्य प्रदि १ प्रत्यवा । २ जिल्लाल (बर १)। सान पूँ ["भाष] शास्त्रिकता (पर १ ७ ही)। आहर न [ब] १ घापर्य, बहुत धतिराय (हे १ ६२)। र म स्त्रीय जन्दा (बाबा)। **व पद्याचित्र, ग**र्मा (भग ६ १) । ∀दर न्यित होकर (घाषा)। १ थ्यरच्या कर (बूध २१)। ६ स्मिक वर (पाचा)। ७ छीन वर (दम्रा)। आद्षा ध्ये [आद्स्या] प्रमद् बाषात (भग आहरू न [प्] रेपो भाग्य्यु = रे (पर ७१ आहर्द ध्ये [वे] प्रीतरा परेतिय दयी बन शिनु न विस्हरा सर्व बाह्रदृहुतुहुताहि र्व (पत्र ७१) । भाइरद्व देनी आहर = या + हु । आहट [आइन] १ धीन निवाह्या। २ शिपै रिया हुवा (गुना ६४६) । ६ स्थानने नारा पूर्वा उराग्यपित (ग १४) । आश्वर न [दे] शेलार, नुस्त्र शय ( यर )। आद्यानर भा+ दम् । धापात करना बारमा । बार्ट्डावि (ति ४११) । संप्र आइपित्र आइगिज्य आइग्रिका (वि प्रदेश रवर १ रो। दि आर्तु (fr 2 S) i आहम बर्ग [आ + इम] जनता । वह भाटू [१ इ] मित्र (शर १ ११)। आह्यान र्वाशनने वास्त्र (स १६६)।

भाहणानिय वि [भाषानित] माहत १एगा ह्या (म १२७)। आह्त्तहाय न [यायावभय] १ वनानीयर पन यान्त्रविक्ता । २ तथ्य-मार्ग- सम्यकान यादि। ३ 'युवरुठाह्न' सूत्र का तैय्द्रसै मध्ययन (तूम १ १३ हि १३४) । आहम्म नर आ + दश्मी माना माणमन **भरता । बाट्टम्म** (हे ४ १६२) । आद्धिमा रि [अधार्थित] यपर्य-वंशाची (तम = ११)। आर्शनमय वि [अपार्थि ह] मपर्पी पानी (नम ११)। आदय रि [आहर] यापार प्राप्त प्ररिव (बन्म)। आहय वि[आहत] १ याह्य, गौबा हामा। २ धीना हमा (दर २११ टी)। आहर वर आ + हाँ ? दॉनना भीष बना। २ चोषीकरनाः ३ गाना भोजनवरनाः बाररद् (रि १७३)। चन्द्रः आहरिण्डमाग (म ६)। मी आहल्ट (मिरवर)। हैर आगरित्तम (नंद्र)। आहर वर [आ + हा] नाना। याचिह (तूच १ ४ २ ४) मार्चमा (गूम २ २ आहरण दुन [अहरग] १ उन्तरपत रहान्त (बीव ११६ वर २६१ १११)। २ बाहार, कुताना (गुरा ११७)। ३ प्रमण स्टैनार। ४ व्यवस्थापन (ब्रामा) । ५ धानपन नाना (त्व २ २)। आदरम र्न [आभरम] मूनल बर्ननाट <sup>6</sup>′ह धारगगा बर' (धा १२ वर्णु) । आहरणा थी [रे] गर्पेट नार वा गरनर श्या (धीष २) । भारतिनवरिभागीरिक्तीतरम्ब सन्दर्भ धार्गानियो दुर्घा संसीता नियन्त्रियो (ध वम) १ आद्य (या) यह [ आ + चस् ] हिन्ह्य, चत्रमा 'नवमा दश्रांती सामाद सन्दर मीहाँ (बॉप) । बाहदा औ [बाहरपा] विदायर ग्रह की एक कम्या (पर्स्स हैरे हैरे)। आह्व यह [आ+ह्व] रूपता । सन्दर्

(बर्मनि व) । संद्रः साइवित्रं, आइविकण (वर्मीव ६व सम्मत्त २१७)। आह्व पूँ [आह्व] युव नहार (शामा सुपा २८व प्रास ४१)। आइवज ) न [बाइ ्यान ] १ दुवाना । आइस्क्ण र ननदारता (मा १३) सुपा 🛚 परुष ६१ ६ : स.६४)। साहिक्स को आहुअ = प्राप्टुट (ही ४)। आहम्म वि [आभावय] रहकील क्षेत्रावि (पेका ११ के उपव १ ६)। आह्म्बर्धा हो [आहानी] श्रवा-विशेष (बूघ२२)। स्राह्य एक [का+स्या] कहना। दर्ज माहिक्द (पि १४१) साहिक्ति (कव्य)। भाषा तक आि + भाी स्थलन कला। कर्मधाहिकाइ (सूख२२) । द्वेष्ट आ देखें (सूस १ १) । संक्र-आदास (बच १) । भादा की भाभा किन्ति देव (अन्यू)। **बाहा हो सामा र मानार (**विक)। २ साद्व के निमित्त प्राहार के किए मन হাতিবাদ (বিৰ) । কর বি িকুব বি ভাবা-कर्म-दीव से दुन्छ (स १००)। कम्पन [कर्मन्] १ साबु के सिद खहार पकारा । २ सामु के निर्मित्त प्रकाश हमा क्षेत्रन जो **के**न साक्ष्मों के निय नियित है (क्यह २ ३ हा १ ४)। कृत्मिय दि किर्मिड देखो पूर्वोक्त धर्न (सन्)। स्राद्वागन [आभान] १ स्वलन । २ स्वन, मानमः 'सन्बयुग्राहार्सं' (बाव ४) स्वर २६)। भाराण १न [भायपान 4] र श्रीक ब्याद्दानय विकर्ता २ किन्द्रच्छे क्हानत बीकोट्डि (बुर २ १६) का ३२४ टी)। आहातहिय वि याबातध्यी धरम वलत-निक (सूप २ १/२७) । वेबो आइत्तहीय । आहार एक [आ + हारपू] काना मोलन करना भ्रष्टश करना। महारह, महारेति (मर)। नक्क आहारेमाण (कप्प)। सक्क भाहारिक्जस्समाज (भन)। क्रिक- माहा-रिचय भाहारेसए (क्य)। इन् बाहारे

यस्य (ठा३)। बाहार र् बाहार] १ कुछन क्षेत्रन (स्कन ६ । प्राप्तु ६ ४) । २ चाला घळाटा(पर)। ६ न केबो आरगरग (पटन १ ९ १)।

पत्रवर्त्ति की विर्योति । यक सक्षर नी क्स धीर रह के रूप म बरतने भी रुक्ति (धन । ४) । दोसह दूं ["पोपभ] बत विशेष निसर्ने भाइतर ना सर्वना वा धारिक त्याप क्या काता है (बाक ६)। सण्या की [ैसंज्ञा] बाह्यर करने की दक्का (ठा ४)। काहार र् [आधार] १ याचन प्रवित्रस्य (सुपा १२ व संवा १ ६)। २ बाकास (भव २ २)। १ व्यवपारण वाद रखना (पुण्ड ३१६)। भाइदारग ग भाइदार ै १ ठरीर विशेष विसको चौक्तु-पूर्वी केश्वतानी के पास करने के बिए बनाता है (टा२ २)। २ वि को बन करनेवाला (ठा २ २) । १ माहारक-शरीर वामा (विसे ३७%)। ४ शाहारक तरीर क्लाब करने का बिसे सामर्ग्य हो वह (कप्प)। जुगस न [ बुगस्र] शकारक शरीर धीर ज्यकं भौगेपाङ्ग (कम्म २ १ २४) । जासा न ["नामन] प्राक्तरक शरीर का हेनु मूद कर्म (कमार ६६)। हुगन [श्रृक्क] वेका जुगळ (काग १ ३ व १७)। धाद्वारण वि [आचारण] १ वादश करने-भासा। २ धामार-मृत (से १ १)। भाहारण वि [आहारण] ग्राक्पंक (दे ६, X ) i **जाहारय क्लो** आ**हारग (ठा 🛭 मन**ः पर्श र≈ं ठा १, १ इस्म १ ३७)। जाहाराष्ट्रजिया की [कायाराक्षिक्ता] क्वा-ब्येष्ठ व्येष्ठानुष्टम (बस)। **भारारि पि [आहारिम्]** शक्रार-कर्षा (इइइ ३११)। आहारिम वि शिहार्ये १ बले बोग्य। २ थल के साम बाम्म वा सके ऐसा मीरज पूरी **বিকা** (বিভাগ, २)। जाहारिम वि [आहार्य] धाहार के योग्ब, बाने बायक (निष्कृ ११)। आ द्वारिय वि [ब्यादारित] १ विसने भवतर किया हो बहु 'तस्य कंडरीकस्य रएको तं क्सीर्व पाश्चाबीक्स्तं सङ्ग्रहिक्स्य समास्त्रस्त (ब्रावा १ ११)। २ व्यक्तित त्रुक्त (धन)। बाहावजा 🕏 [बाभावना] धपरिमणुना

पस्तत का समझ (सक)।

आहायमा ध्यै [आभावना] स्रोरप (रिह 1(135 आहारिज वि [आधारित] रौरा हमा (सिरि ७१९)। आहाबिर वि [आधाबित ] बीहनेसका (एए)। आहास देवी बाभाम = मा + भाष् । संह-खाडासिवि (घप) (भवि)। आहाह स आहाही प्राथर्व-दोतक प्रमान आहि पुंजी [आधि] नन की पीड़ा (कस्प १२ दो) । आहिशह जी [आमिकावि] हुनीन्ता बान्यांनी (न १ ११)। आहिआई हो [आमिबारी] हुडीनता (क २८६) । कार्डिक धक अग+ द्विण्ड**े** १ नमन करना अला। २ परियम करना। ३ चूमका परिप्रमण करमा । वह- आहिंद्रेत आहिं केमाज (इप २६४ हो) शामा १ १)। संब आहिंडिव (महा स १६३)। आहिंडग १ व [आहिण्डक] चलनेनावा, आहिंडम परिजेमेरा करनेनाना (ग्रीम ११४। ११८ भीप)। आहिकान [आभिक्य] श्रीकाता (विदे २ ८७)। लाहिकाइ स्थो शाहिकाइ (महा)। आहिजाइ वेदो आहिआई (गा २४)। आहितंदिज पू [आहित्विक्क] नार्यक स्पर्रिया संपेत्र (क्वा ११६) । आहित्व विदि १ भनित यतः २ कृतित कुछ (दे१ ७६) जीव ३ टी) । ६ बाहुवी वनहाता ह्या वि १ ७६: है: १३ **८**३ पाय)- चाहित्वं स्रीपच्यं च मावतं पैपे-वरितं च' (बीव १ दी)। आहिद्धार्थ [वे] १ थ्या क्ला ह्या। १ वनिष्यं वसाह्या (पड)। आहिएस व [आधिपस्य] मुक्तियानव **वेर**ण (क्य १ वर टी)। भाहिय नि [आहित] १ स्थपित निनेतिय (अ ४)। २ सम्पूर्ण **दिलक**र (सूचा) । ३ विर्णयः

1 (1 3

मिमित (पास)। रिस पूं [ारिन] धरिन-होबीय बाह्यस (पतम ११, १)। खाहिय वि जिहित । १ व्यत्त चिविरेखा क्रियो एस पत्तीयरनाहिला' (तुप्र ४४)। २ व्यक्ति चरपादितः। १ प्रवितः प्रसिद्धि-प्राप्त (सूच १ २ २ २१)। ४ सर्वेण हिल्काची (मूच १ २ २ -२७)। ह्माहिय वि [भासपात] कहा ह्या प्रति पाकित उक्त (पएए) ११ मुझ ११)। साहियार पुं [अभिकार] सविकार, सता हक (पद्म १४ ६)। आद्विमत्त देवो आद्विपत्त (काम)। कादिसारिक वि [बिसिसारित] नायक-बुढि स नहीत पति-पृत्वि से स्वीष्टत (से १६ १७)। डराहीर पुं आहीर र देश-विरोध (कप्प)। २ शूद्र जावि विशेष सहीर (मूच ११)। ६ इस नाम का एक राजा (पडम १८ ६४)। की री-महीरित (मुपा १६)। श्राह सक आ + हवे | दुसला । क आह र्वपद्ध (धीप)। आह आ + ही बान करना त्यान करना। इ आहुजिज्ञ (सामा १ १)। **भाद्र प [भा<u>द्र</u>] धक्या** या (नाट)। बाहु इं कि इक उल्लु (दे १ ६१)। बाहुदेवो आह्≖यवः बाहर वि आहोत् । बावा श्यापी ( ग्रामा बाहुइ की [आहुति] १ इवन होम (परुड)। २ द्वोग का प्रसर्व वित (स १७)। आहुंदुर १५ वि] बासक बचा (दे र आहंद्रह र ६६)। आहरण विरेशीलगर, मुख्य समय का शब्द। २ पछित विक्रम् वेचना (दे१ ७४)। आह्रुड भक् वि] गिरमा । याहुबह (दे १ 1 (3) आहुकिअ वि वि निपतित निध हुमा (वे \$ EE)1 आसाहण मक श्चा÷ यू विभागा । क्षक आहुणिकामाण (खावा १ १)। लाहांभय वि लागुनिक र धावकत का भवीतः २ पुंचक्क-विरोग (ठा२,३)। आहुक्त न दि अभिमुखा सम्प्रक सामने 'कुमरावि पश्चाविद्यो त्याङ्कर्त' (महारु महि) । माहुअ वि [आहुत] हुनाया हुवा (पाय) । आहुअ पूं [आहुक] पिराय-विशेष (६६) । बाहुम वि[आमृत] चलप्र बात धालुपी धै कम्मो (बमू)। माइड रेको माहा = भा + था। आइड । पून [आसेट क] सिकार, लाहेडग गुगमा ( गुपा १६७ स १७) आहेक्य<sup>)</sup> है)। आहेडिय वि आसेटिको गुगया-सम्बन्धी 'चाह्रेडियमस्रेणेल' (सम्मत्त २२१) ।

वयु के प्रवेश होते पर जो निमाने का उध्यव किया जाता है बहु (बाचा २ १४)। आहेय वि [आभेय] १ त्वाप्य । २ मापिठ (मिसे १२४)। आहेर वेको आहीर (विसे १४१४)। आहेवन न [आभिपस्य] नेतृत्व मुखियापन (सम ८६)। आह्रयज न [आद्येपज] १ बाक्षेप । २ सोम जनम करना (पर्ह १ २) । आहोज रेको आभोग (धे १ ४६) ६ ३ या बदा वडड)। आहोश क्षेत्रे आमीय = मा + मोबय्। संक लाहोइकण (स ११)। आहोइअ वि आसोगित अत, इट (स Acr) ! भाहोइअ वि [आमोगिक] एपयोग ही विसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रवान (कथ)। आहोड सक [ ताडयू ] ठाइन करना निज्ञा वाहोबड़ (है ४ २७)। आहोरण [आधोरण ] हस्तिरक महावत (पाधाः स ३६६)। आहोहि । वि [आयोगियक] यवनि आहोहिय र्रे ज्ञानी का एक मेद, नियत क्षेत्र नी मनविज्ञान से देखनेनासा (भगः सम

इस पाइलसङ्मङ्ग्णाचे आजाराङ्गर्संक्लली विदयो तरेनी समतो ।

आहेप्पन [वे] निवाह के बाद नरके बर

## 뮻

इ पुंडि र प्राहत वर्णमाला का तृतीय स्वर वर्षु (प्रामा) । २-३ वाक्याल द्वार और पाइ-पूर्ति में प्रपुक्त किया बाता सम्पव (कम्म है: २ ११% पद्र)। इ रेक्षो दुइ (उसा)।

इ. छक [इ] १ बाला बनन करना। २ जानना। एइ. ऐति (कुमा)। बहुः ऐत (कुमा)। चेद्र इचा (शाचा)। हेद्रः इचार, एतार (कप्तः कस)। इसाइरा देवी इसरहा (साइ १७)। इद्र थ [इति] रन बजें हा नुषक प्रस्कूत र त्यांति (ग्राजा) । २ सर्वाचे दूर (तिने), वैधान वरिमाग्र (चन करे)। र तिन्द्रिन २ १३) । २ हेनु, सार्व्य (ठा ४)। (स्ट. इस वस्कृत स्वत्रकार (उन २२) क्रेन्ट्रीन

**(4)** 

₹₹ क्रमो स [ इत्स् ] १ इत्तरे, इत काएए (पि १७४) । २ इस तरङ (सुपा ३१४) । ३ इस (नोक) में (क्लि २६८२)। इओश म [इतम] प्रसंगल्टर-मूचक धव्यय (मा२६)। इंसिजिया की [दे इक्किनिस्स] निन्ता वहाँ (सूच१२)। इंकियी की वि प्रद्विती] उत्तर देखें (सुध 8 3)1 इंगार } केवो अरंग्रर (निश्यः की दा इरेग्रच र्पाष्ट्र । इस्स न [कर्मन् ] बीयला पार्टि जन्मत करने का धीर बेचने का म्बातार (पश्चि)। सग्र**हिमा क्षे** [ैशक-टिक्सी भ्रोपैकी, भाव रचने का बतन (यव)। इंगारकाह पून [अञ्चारताह] धारा, विट्टी के मात्र प्लालेका स्वाल (बाचा २,३ १)। इंगास वि [आहार] अङ्गार-संबन्धी (वस X) i **इंगास्त देवो अंगार**ग (छ २, ३) । इंगासम् देवी इंगास्मा (पुरुष २ )। इंशाध्ये की चि देन का दुक्का नंत्रेये (दे १ ७१ः पाष) । इंगासी के [आहारी] वेको इंगास उन्म (मा २२)। र्थिभिक्षन निक्रित दिलारा संदेत समियाय के समुज्य वेष्टा (पाय) । उस ज्या ज्या कि िंक] इसारे से समम्मेगाना (बाधा है प **६: रि२७६)। सरज र**िसरच] मध्य निरोप (पंचा) । र्णगिममाणुज रेखो इगिमक (शङ् १) । इंगिया की [इहिनी] मरश्र-फिकेप सनशन क्रिया-निरोध (सम ६०)।

इंगुञ्ज न [इजूद] इंग्रुचे इत्र ना कत (पुना: पत्रम ४१ है)। न्मुई , यो [इत्रूषी] प्रा-विशेष इसके श्चिती । बम तैसमय होते हैं इसका पूछरा नाम म्या-निरोश्य भी है, नेवीकि इसके वैन के बन्त बहुत शोध सन्धे होते हैं (साचा सन्धि इंपिज रि [वे] सद, गूँवा हुया (वे १ व.)।

11)1

इंपर रेगो किंग्सर (हे

**इंद केडो** ए = धा + इ ।

र्थुत् तूर्द्रह्री १ केनदासींका **एका वेन**सन (ठा२)। २ वे<sub>ठ</sub> प्रवान नामका **'स**र्रिस' (धतक) चेनिय (कप्प)। १ परनेषर, ईपर (ठा ४)। ४ बीव धारमाः दिशे जीवो समी **पलक्रिमी**यपरमेखरत्तरायो' (विसे २११६)। श्रृंध्वनैशासी (दावन)। ६ विद्यावरीं का प्रसिद्धारत्या (पद्धप्रदेश ७ व) । ७ प्रमी-काम का एक श्रीवहायक देश (हा १, १)। क्षेत्रात्माच का धनिहासक केम (ठा २, ६)। १ क्लीसर्वे शीर्वंकर के एक स्वनाम क्यास व्याचर (सम १६२)। १ सम्मी तिथि (कृप्प)। ११ मेच वर्ष कि वर्का सम्बद्धा पुरिवास्त्रं यह पने इंदो' (यसनि १ ४)। १२ न केनवियान-विशेष (धम ३७)। इ.च. [किस्] १ इस नाम का रासाच बंदा का एक राजा एक वंकेस (पराम ४, २६२)। २ चमल के एक पुत्र का नाम (से १२ ६८)। जोब देनों गोव (पि १६)। काइव ई ['काविक] गीलिय बीव-विशेष (पएछ १) । क्रीक्ष पू विद्या बरवाना का एक समयन (थीप) । क्रांस व् क्रिक्स**े १ वहा क्लरा (राम) । २ क्या**न-विकेस (शासार ६)। केंड प्रे किंह्यी इन्द्र-सम्ब इन्द्र-वर्ष्टि (परवृह ४ ४ ४)। की स केवो की स (की रा वि व 4) : गाइय केवी काइय (तत २६)। गाइ प् िमक् इन्त्रानेश, किनी के शरीर में इन्ह का प्रक्रिशन भी पानस्थन का कारण होता है 'बंबनाहा इना बोरपाहा दना' (अप के )। गोप गोषग गाषम पू ["गोप] वर्ष ऋतुमे होनेशना रखः वर्शका शुद बन्दु-विशेष भिनको प्रमसती में 'बोक्स गाय' करते 🧯 (बर १८ सुर २, वका जी १७ पि १६)। स्माह पूर्विमही ब्रह सिरोप (भीत ३)। *स्मा* ⊈ [ीस्नि] १ विशापा नक्षत्र का सन्तित्तवक देव (यसु)। र बद्धाबद्ध-विरोद (ठा २ ३) । म्लोब प् मिथि प्रहास्त्रियक देव किरोप (का र १) । जसाधी विश्वस्त निम्यान नगर के ब्रह्मराज भी एक गणी (बर्स १६) । आहर न [बास्त] शाशा-कर्म छत्र क्या (स ४१४)। जावि जासिश रि जावित्, 奪] यायारी, वाबीयर (ठा४: बुना १ ३)।

अक्रूप्य पू विक्र स्वताय-स्वात स्वतन्त्र र्थेश का एक राजा (पत्रम ६, ९)। **व**स्तव पूर्विक्जीमही स्वका (पिरश्रे)। बस्त्या की ["ध्यत्रा] इन्द्र हारा मरतयन को विवादें हुई धपनी विच्य सङ्गृति के जनवत में चना मध्य से प्रस सङ्गति के समान माइनी की की हुई स्वापना और ठसके उनसञ्ज में किया थया अध्यव (बाक्ट २ ) । जास्त्र पूर्व ["मीख] शीलन जीलमरिए रतन-पिटेप (क्तक पि १६)। तस् पूं ["तक] कृत विशेष जिसके तीचे मनवान् संमदनाथ की केवल बाल हुमा था (पत्रभार: २०)। स न [त्व] १ स्वर्गका भानिपत्न प्रकारा यवानारश वने : २ राज्या । ३ प्राचान्य (नुपा२ १६) । इन्त पुंचित्ती इस नाम काएक प्रसिद्ध राजा(हप १३६)। २ एक चैन चुनि (विपा२ ७)। विष्य पूँ विका स्वनाम-स्वाद एक वैन धावार्च (कप्प)। यणु प [ यत्यू ] १<del>८७ व्</del>यु. सूर्वं की किएस मैको पर पहले से शाक्तरत में को कलूद का आकार शेख पढ़ता है नहूं। र निदासर वैद्य के एक राजा का नाम (पडम = १ ६) ! नीस देवी जोड़ (पटन १ १६२)। पाडियस की [ ब्रिविपत्] का<del>वि</del>क (प्रवरको साधित) माध के इन्यापन्न की प्यासी तिथि (डा४)। प्रति पुरी १ स्त्र का नगर, अमरावती (चप प्र १२६)। २ नपर-विशेष, धाना श्रश्यक की राजनानी (जा १९६)। पुरम म ["पुर∓] वेतीय वेरावादिक पश के चीले कुल का नाम (रूप्प)। प्पम पूं [अम] छत्तत के ह के एक धना का नाम को सन्द्रा का राजा का (पराव ह २९१)। शृद् र् ["सृति] ननरान् सङ्गीर वा प्रवस-पुरव शिष्य गीतमन्त्रामी (सम १६४ १६२)। सह द्रं मिही १ दल्ह की धाराचना के बिए किया बाता एक प्रत्सन । २ चाचिन पूर्णिमा (ठा ४२) । सासी 🛍 [ गासी] रावा भारित्र की पानी (बड़म ६, १)। सुद्धामितित ५ "मद्यमिपिका पन्न वी बादवी दिवि सप्तमी (बंद १)। में इ.पू. ["मेच] रुखम नंश में धलन एक समा (पत्रम १ २६१)। यथं विकी १ दैनो इत्यू (ठाव)। १ तस्क्र विशेषः। दे

श्रीप-विशेष । ४ न, विमान विशेष (१७) ।

यास देशो जान (महा)। रह पूँ [रिय]

विधायर वंश के एक राजा का काम (पतम

६ ४४)। सम्बु [स्त्रज्ञ] स्त्र (तित्र)।

सद्भी विधि स्त्र-व्यव (गाया १

१)। लहाकी "सेद्या राजा विकसीयत

की पनी (पटम इ. इ.१)। बाज्या स्वी

[ वद्या] सन्द-विरोध का नाम जिसके एक

की विम् काराज की एक पन्नी (चन)।

याय प्रशिव एक मार्यक्वक राजा

पार में न्यायह बजर होते हैं (तिंव) । अस्त

(मवि)। वारण पु विशरण] इन्त्र का श्राची पैरावद (दुमा) । सम्म पुं शिर्मन्] रवनाम-क्यात एक ब्राह्मस (ब्राह्म)। स्नाम णिय पू ["सामानिक] इन्द्र के ममान ऋदि । माना रेम (महा)। सिरी की "भी राजा बहारत की एक पत्नी (राज) । सुन्ना पू [मृत] स्टब्स नक्का, बक्त (४ ६ १६)। से या की [सना] १ इन्द्र का मैला। २ एक महानदी (ठा ३ ३)। 👣 नेको छन्। (हि १ १४७) । इन्ह न ["।युच] इल्लान (ए। पा ११)। हिह्दपम पू शियुक्तम बानकीयका एक सना (पडम ६ ६६)। सम्भ पुँ ["सय] चना स्ट्रायुक्तम का पुत्र भानस्तीय का एक राजा (परम ६ ६७)। इंद्रपुर [इस्क्र] एक वेबनिमान (वेबेस्ट १४१)। इदि वि एम्द्र] १ एवः संबन्धी (शाया १ १)। २ व चैस्ट्रचका एक प्राचीन व्याक्तरहा (माचम)। इंद्रगाइ दं दि] छाय में शंतान खतेशने कीर-विधेप (वे १ =१) । **इंत्**गिगपु [दे] वर्ग दिस (देश क्र)। ¥द्गिगम्म त [व] वर्ष हिम (४१ ॥ )। **इंडब्**डस्टम पुं 🚰 इस्त्र का सन्धापन (वे १ इंद्रमंद् वि दि] १ दुमाधै में ब्याम । २ ह दुमारता यौषन (दे १ <१) s इंदमहरामुभ ई [ द इन्त्रमहत्त्रामुङ] पुत्ता धान (दे१ दर, याम) । र्षदा भी ब्रिटिटी र एक महानदी (ठा ४,३)। २ वरणन्द्र की एक बद्र-मद्विषे (लाया २)। रंगा की [निर्मा] पूर्व-दिया (हा १ ) ।

इंद्याणी की इिन्द्राणी है इन्द्र की पली (सुर १ १७ )। २ एक राज-पन्ती (पडम ६ २११)। इंदासनि पुं [इन्द्राशनि] एक नरक-न्यान (बेरेमा २६) । इंदिंदिर पूं [इन्दिन्दिर] प्रमर, मनरा भौंच (पायः दे १ ७१)। इंदिय पुन [इन्द्रिय] १ मान्या का विक्र जान के सावन-मृत इन्द्रिय-भोग बधु, प्राय विहा तक धीर मन 'तं तारिमं नो पवलेति वैविया (वस्यू १ १ ठा६) । २ इति शरीर क सबसव 'नो निगर्नचे इत्यीक्ष इरियाई मणोहराई मणारमाई बालोहला निज्ञाहला मन्द्र (उत्तर्भ)ः अनाय पू िपाय प्रिन्तियो शाय है जिहासा बस्तु का निवयात्मक शान-विहोप (पएए १६)। आगाहणा भी [पप्रहणा] दन्द्रमाँ हारा सगय होनवाना वान-विरोध (पएस ११)। तय पुं["सय] १ इन्तिया । चूँद्र देशो ईन् = इन्द्र (पि २६॥)। थानिमक् इन्त्रियानी वरामें रहना धावि इतिएहि वरणं नहं व कुलेहि कीरक सवार । ता कम्मत्वीदि श्रा अदयन्त्रं इतिवनयमिन् (गरि४)। २ तरो-विरोग (पर २७)। द्वाणा न [म्यान] शन्यों का जारान कारण मेंसे थीनेन्त्रिय ना शानारा बच्च ना तेत्र वर्षरह (नुष ११)। (जञ्चक्त मा की ["निर्देकता] इटियों के आकार की निष्यति (पर्या १५)। भाग न ["हान] इत्त्रिय-श्राध स्पन्न हान प्रमण शन (गर १)। त्य पू [ीर्य] इन्त्रिव से बावने बीग्य वस्तु क्य-रस-सम्ब वपेस (अ ६) । यज्ञाच भी ["पयासि] शन्ति-विरोध जिसके द्वारा भीत भानुसाँ के हम में बदने हुये ब्राह्मर को इन्द्रियों के लड़ में परिगान बरता है (पएश १)। विजय पू [ (यज्ञय] केंद्री अय (पंचा १८)। विसय पुं[िषप्रय] देवी स्य (धन ५)। इंतिय न [इन्यि] निन पुरुष विक (धर्मेंस t (f 3 इंवियास रेजो इंद् जाल (मुता ११०) मारा)। इंदियास 🕽 देशा इंद जासिः 'तुर कोजवन्त-इशियांतर । विषयं जिस्मि ने सन्दर्शिया नेए' (नुपा २४२)। बहु एम इंश्विमानी वीतान याग्नम्प्रसर्वं सत्ताई' (शुरा २४३) ।

इंवियालीम बेबो इंद-जालिज 'न मनामि बई खबरो भरपूंतव ! इदियानीयो (मूपा २४१)। इंदिर पूं [ इन्दिर ] प्रमद, ममत भौरा "मॅकारमुहारिक्साई" (विक २६)। इंदिय की [इन्दिय] सहमी (सम्मत्त २२६)। इर्द वर न [इस्ट्रीयर] कमम पहम (पटम १ 48) I इंदु १ हिन्दु कह कहमा (पाप) । इंदुक्तरविष्टमा न [इन्द्रोत्तरावर्वसक] देव विमान-विशेष (सम ३७)। इंदुर पुंची [सादुर] चूहा सूवक (नार)। इंदीकंत न [इरदुकान्त] विमाल-विरोप (सम 10): इंदोव देवी इंद-गोप (पाम्ट दे १ ७६)। इड्रोवच पुं [दे] स्त्रयोप कौर-विरोध (दे १ इंघ न [चिह्न] निराति, चिह्न (हे १ १७७ २ ६ ३ दूमा)। इंघण न [इ.चन] १ ईवन जनावन सकड़ी बगरह दाझ-वस्तु (हुमा)। २ सन्न-विद्येप (पवन ७१ ९४) । ३ व (रिन क्लेबन (उस १४)। ४ पनास पुषान कुछ वमैछ् जिसमे क्य प्रशंधे बाउ हैं (निष्टु १३)। साला की िशास्त्र] यह घर, जिसमें बनावन रज्ञे बारो हैं (निषु १६)। इंबिय वि [इस्थित] प्रशीतित प्रस्वनित (इह इत्त [प] प्रवेश पैठ इतमप्प् प्रवेमण् (विश्व १४८१) । इक्ष देखी एक (कुमार मुता १४०- ई.४.) पाम प्रानुहा कम नुरुष्ट २१२ मा १ इ.स. स्वयुक्त माधः पत्नम ११ 12): इकड पुं [इकड] चूल-भिरोप (पल्ड २, ६: duil 6) t ल्कड वि[म्बड] इंटड़ पूछ का बना हुया (धावा २, २ ३ १४)।

न्द्रम मि [दे] बोट, बुरमेगाना (दे ! = )

बाम्सरियाड तील् (म ७६)।

'बाहुनवाबूनेनुं रदवामी वरामग्रेक्साची र ।

बुधार केवो प्रकारह (कम्म ६ ६६) । इक्टिक वि [पर्केक] प्रजेष (वी ११ प्राप्त ११वा पुर ८, ४२) ।

इक्षित् श्रेष [एडचतारिशन् ] एक्पासीस ४१ (कम्म ६ १६)।

इक्कुस न [दे] श्रीनोरतत कमल (दे १

इक्त सक [ ईम्.] रेबन्स । शस्त्र (स्त्) । इस्य (सूम र २ १ ११)।

इक्तरश्र वि [इक्तर] रेबनेनामा (वा ११७)। স্বান্ত্র প্রিক্ত সামানীক স্থাত (বর্ষ 3 3 4)1

इन्जाड देवा इस्सागु (विक ६४)। इक्ताम नि चिक्ताकी दश्ताकु गामक प्रस्कित

शनिवर्षया में सरस्य (किल्ब) । इकाराग ) प्री इक्साक र एक प्रसिद्ध शविय

इनसारा रे राजपेश, मनवाद अवगरेन का बेरा १ क्या बेरा में उत्पन्न (बन १ केश करण और। पनि १३)। १ कोठन देठ (शुना १) : सुभि की "भूमि] सनोध्या ननरी

(धाव १)। इसम् इंडिसी १ से उक् हि १ १४ रि ११७)। २ बान्ध-विशेष, 'बर्फ्टिका' नाम गाथल्य (मा १)। गंडिया औ गिण्डिकी योधे देवना दुत्तक (ब्राक्त)। घरन "गृह् ] सर्वात-विरोप (विने)। कायग न दि दिर गापूचा (शाक) । बादशा न ["द्] १ ईम वी शालाका एक मान (बाना)। २ ईप का क्षेत्र (निकृत) । पिसिया की [परिका] कर'रे (निषु १६)। शिक्ति की कि देश का दुवज़ा (तिषु १६)। होरण न [ मरक] नएरेएँ नरे हुए कल के कुल्बे (वाचा)। संदूरशे विद्यिद्विक को लाठी रपुन्तर (भाष)। बाह पु विवाद देव का धन 'नुविरंशि सम्ध्याली नश्वेनो दन्दराहबरमध्ये (धार १) । साक्ष्मा न रे रेन की समी शाला (प्राचा)। ३ दैल की बाहर की द्वार (विषु १६)। केबो प्रवर्ष्ट्र प्रगरेको एक:(शम्प १ ० ३३ जुला४ ३३

मार्भ का विश्वप्रध्याक्ष सर

**₩**₹) !

इगयास्त्रज्ञीन [एकचत्त्रार्रिशत् ]एकचानीस ४१ (बस्म व ४६)। श्ववीसत्रम वि [पद्मविद्य] एककीसवी (पव

इगुवास वि [ एडवत्वारिशम् ] संस्था-किलेप ४१—कालीस सीर एक (स्य<sup>-</sup>पि writ) i

इगुणवीस वि [पद्मेनर्यिश] ज्योसवी (पव 44)1

र्गुणीस } 🖈 [एकोनविरावि] स्त्रीस (पर इग्रेवीस ∫ १७४ कम ६ दर)।

इगुसहि भी [यश्चेनयष्टि] इनस्ट (कम्म ६ 48) (

इस्त दि [दे] भीत इस इस्स (दे १ ७६) । इन्ग देको एक (शट) । इन्पिम वि वि गिल्लित तिराक्त (११

इका रेको इ सम ।

इबाइ पुन [इरपादि] ववैदह, प्रपृति (भी ६)। इसेवे थ [इरबेसम् ] इस मकाए, इस माधिक

(सूम १ व)। इंब्ब्रु एक [इप्] इच्छा नरना चाहना। रण्याः (त्या महा) । यहः रूप्यंतः रूपह माण (उत्तर देवा र)। इथ्य सक जाप + स - ईप्स् नित्र करने

को बाहता । इ. इविक्रमञ्च (वर १) । इच्यकार ध्वी इच्यान्तर (११४)।

इष्ट्रदार र्षु [इच्छा सर] 'इन्या' ठब्द (वंबा 12 x) 1

इच्छा स्था [इच्छा] यथ की व्यायहरी गरि 'वर्षीत-काराजिया य य(१ ६) व्हा व' (सुव t (x) i

इण्हा स्मी [इच्छा] धनियाना नाह बाचा (ज्या शातु ४×)। शार पुँ विदार रे स्वरीय इच्छा समिताय (पडि)। इदेव विकित्रम् रच्या के सनुरूत (पाप १)। गुस्संग वि [ मुस्रोम ] रच्या के धरुरूम (१एए ११)।

णुमोनिव वि [ैमुसोनिक] रच्छा के चनुरुत्त (धानः)। पत्रिय वि "प्रणीतः] रक्ष्मुमार क्रिया हुवा (वाका) । परिभाज न विरिमाणी परिवास बस्नुवीं के निवय

नी रच्याना परिमाल नरना, जलक का पांचरो इत (इ.१)। सुब्द्धा रनो ["मूचर्स]

र्षु क्रिया प्रवस बीम (ठा ६)। स्रोमिय वि ("स्क्रेमिक) महालोगी (ठा ६)। स्त्रेस पुँक्तिकी १ महान् कीय। २ वि महा-सोमी (शह ६)। इच्छा स्वी दिस्सा को को का रचका (मार)। इत्किय इसे इट धरिमाध्य शाम्बद (दुर

शायाचिक, प्रवत्र इच्छा (परह् १ ३)। क्लोम

X \$84)1 इक्सिय वि [ईप्सित्] प्राप्त करने की अपहा हुमा मन्मिपित (महः सुपा ६२४) । इत्याद्ध वि [इच्छित् ] निस्की इच्छा की नई

हो वह (धव)। इच्छिर वि [ यूपितु ] इच्छा करनेनाना (दुमा) ।

इच्छू देशो इक्ख़ (कुमाः प्राप्त ११) । इच्छु वि [इच्छु] बल्लिवी (वा ४४ ) ।

इक स्थ [का + इ] याना यापमा करना। बहु- इस्रेंत विश्वर्यम्म को उदाएलं बोहधो नुपाई नये। रिवर्ष को सिरिमिन्डर्गित प्रकेश पश्चित्रम् ॥

(45 \$ 4 R) 1 इक्ट पुन [इस्या] यह यादा "विक्क्ट्रा बेस-

इमिप (क्ल १२, ६)। इत्रा स्त्री [इस्या] १ याद, पूजा। २ बह्मणी

का सम्मार्चन (मलु ठा १)। इक्का श्री [दे] माता असमी (प्राप) ।

इजिसिय वि [इस्पेपिक] पूजा का धाननारी (का ९ ६३)।

इश्मा वर्ष [ इग्यू ] स्वकत्व (हे २, २ ) १ बह इक्मसाम (एव)।

इट्ट्य पूर्वि नेवद, प्र केव (विजनि वा Y46 Y44)1

बहुगा स्वी [इप्टका] नीव वेचो (वस्त २ %

बहुया हवी वि] त्याच विशेष सेव (चित्र YEST KEST KINS ) !

इट्टबाय केटी इट्टा-बाय (सम्बद्ध १३७) । बहुत स्थी [ब्रह्म] एँट (क्का है व ब्रश) । पाय बाय दें [ पाक] रही ना नक्त ।

२ वहाँ पर इंडें प्रशां जाती हैं वह स्वान (ध ५) ३

१३३

से मिरिक (तर ८६२) ।

2 4X) 1

w(%) 1

इट्टांख न [इट्टांख] इंट का दुक्झा (श्व ४,

बद्ग वि [इप्ट] १ यमिनपित मीग्रोत

बाफिस्ट (बिपा १ १) सुपा ६७ )। ५

पूजित सन्द्रत (यौर) । ३ यागमोन्ह, सिखान्त

बहु न [इप्ट] १ स्वाम्युगक्त स्न-निवान्त

(मर्गेसे ११९)। २ न स्पी-विशेष निर्वि

इति-तप (सम्बोध ५८)। ३ वायक्रिया (म

इट्टिकी [इटि] ! इच्छा समिनापा, चाइ

(नुपा २४६)। २ याय-विरोध (समि २२७)।

्रैबट्टिकी [कृष्टि] खीचार खींचना (गा ₹=): इडा भी [इडा] राधेर के बार्द भाग में स्वित नाड़ी (दूमा)। न्द्रूर न [दे] गामी (धोम ४७६)। इकुरता) म [वे] रसोई बक्ने ना बढ़ा पाव **बहुरव** ∫(सम १४ )। इकूरिया की [के] मिल्लान-विशेष एक प्रकार शी मिठाई (मुपा ४**८%)** । **पृह्द वि (ऋदू ।** ऋदि-सम्पन्न (संग)। इडिड की फिदि र नैमन ऐसर्व सम्पत्ति (मूर ६ १७)। २ मन्य शक्ति, सामव्यं (उत्त ६)। ६ पन्दी (ठा ६ ४)। सारव न िंगीरवी शन्यति मा पत्रको माक्षि प्राप्त होल पर प्रमिमान भीर प्राप्त न हॉलेस्स उसकी सामसा (सम २ ठा व ४)। पत्त वि विप्राप्त ] ऋदिसानी (पएछ ११: नुपा ६६ँ)। स, संव वि ["सन् ] ऋविवाला (Fre t 57 4) 1 इहिडांसय वि [व] वाषक-विधेप मोगन की एक जाति (सा ६ ६६ ही) । इपो } स [ एतत् ] यह (वेश ७६)। इक्ज देलो दिक्ज (से ४ ६२) । इण्य देनी किण्य (स = ७१) । इन्ह्रम [बिह्न] विक निराम (वे १ १२) यह)। **ँइण्हा भी [तृ**च्या] तृच्या व्यात स्पृहा (ग ६३)।

(दे१ ७१ पाम)। इतरेतपस्य प्रं [इतरतपश्य] वर्गकान्र प्रसिद्ध एक दौप परशर एक दूसरे की क्षवेद्या (धर्मर्स ११६८) । इति देनो इह (वि १८)। दास पूर्विदासी न्यूबंबुद्यान्त अदीवकान की घेरनामी का विक-रस पुरुषुस (४८१) । २ पुरासस्यक्ष (भग) । इन्त्य देशो इ सक । इक्तर विदित्तर दिस्तर विदा (क्यु)। र शल्य-कालिक योड़े समय के लिए की फिया वाला हो वह (ठा ६) । दे योड़े समय तक च्हनेवामा (या १६)। परिगाहा सी िपरिमदा वोहे समय के लिए राखी हैं। बेरवा र<del>वेन</del> रकात मादि (धाव ६)। परिगाहिया की [ परिगृहीता ] देखी परिगाहा (भाष ६)। इसरिय वि [इस्परिक] कार देखो (निव २ माचाध्यार्थवार )। इत्तरिय देवी इयर (मूच २ २)। इचरी भी दिल्बरी नोड़े कास के लिए रखी हुई केरवा बादि (वंचा १)। इत्तहे (बप) म [अत्र] यहा पर (हुमा) । इत्ताहेथ [इतानाम्] इस समय इस बन्छ समुना (राध)। इक्ति देशा ग्इ (नुमा)। इतिय वि [ इयम् भनावम् ] इतना (ह २ ११६ कुमा प्राप्तु १६६ धड् ) । इचिरिय वि [इत्वरिक] सरपदासिक को बोड़े समय के लिए किया बाता ही (स ४६. विसे १२६१)। इतिस देवी इतिय (हे २, ११६) । इसी वैका इआ (मा १७) । इताअ देखो इभाअ (बा १४) । इताप्यं दि वहां म नेकर, इत्र प्रश्नि (पाम) १ इरथ य अत्राधित इसमें (क्या कुमा) प्रानु १४१)। इत्येष [इत्थम्] इन तरह इत प्रकार

(पएल २)। अ नि रिश्वीनियत बाधार

बाला नियमित (जीव १)।

इत्यंग विहित्यंस्थी इम तरह एत हुमा (6.8 3 Eb) इत्याध पू [इत्यर्थ] बहु धर्म (मग)। इस्यस्य वृ [स्ट्रयभे] की-दिपय (पि १६२) । इत्यर्थ देशो इत्य (या १२) । इरिय कीन [क्री] महिसा नारी 'दल्पीरिए वा पुरिसाणि वा' (माबा २ ११ व)। इतिय २ भी [र्खा] बनाना भौरत महिसा इत्थी र (पूर्ण २ २ इ. २ १३)। कछा की "करा ] की के पूरा की की शीलने योग्य वसा (वे २)। बहा सी ["क्या] शी-विषयक बार्सामाप (ठा ४) । यपुंसग पुन ["नपुं सक} एक प्रशासका नपुंसक (निकृ १)। णाम न <sup>वि</sup>नामम् कर्म-विधेप विसके उदय से कीरन नी प्रान्ति होती है (ए।या १ ८)। परिमह् पू [परिपद्द] बहावर्थं (मगद द) । विस्पन्नह वि विप्रजही १ की का परित्याम करनेवासा। २ प्रं मूनि साबु (थल ८)। "बेद, येय तुं [चेंद] १ भी को पुरुष संग की इच्छा । ए कर्म-विशेष निसके झरव से की को पूक्त क साथ भीव करने की इच्छा होती है (भय, पएए) २३)। इत्येण विश्वित्र] क्रिजें का सबूह की-अनः 'तमसि कि न महंती धीलाबी मारिसियोगी (उर ७२० थे)। इदाणि च्यो इयाणि (प्राचा) । इराणि (शी) देखी इर्वाणि (ब्राइ ८७)। इताणी } रेखी इदागि (वंचि १६) । इदियस (शी) न [इतिवृत्त ] इतिहार (मोह १२८) । , इत्र न दि । काय रचनका एक उच्छ का पात्र (पणु १६१)। ब्रबुदंड प्रीक्री भीता मधुकर (दे १ ७६)। इद्यग्गिष्म न दि ] तृहिन हिम (बर् )। इदि रेजी इहिड (पर)। इच (शी) बना इह (हे ४ २६०)। ब्दम पूँ [इस्प] धनी बाम्प (पाय) । बुक्स पू [बे] वरिएक व्यासारी (१ ७१)। इस पुंडिम] हाची हच्छी (वं २) हुमा)। इभपास र् [इभपास] महाउट (तम्मत 1 (02) इस च[इर्म] यह (हे ३ ७२)।

इमरिस नि [एताइरा] ऐना इसके जैसा (बल) । इय रेवो इस (महा)। इस आयो इइ (पक् हेर शर ग्रीप) । इब न [बे] प्रदेश फैठ (यावम) । इ.स.चि. [६न] १ गतं यस हुसः (सूस्र १ ६) । २ प्राप्तः 'कार्यनमो वस्तीसे वसीम नंदुव्य किल्पंदी (सामै ७१: विमे) । ३ कात बाना हुमा (दावा) । इयन्द्रिय [इदानीम्] हास में इस समय, मधुना (ठा \*) ı इसर वि [इतर] १ सन्य दूसरा (वी ४०) प्रानू रं )। २ द्दीन ज<del>ब्ब</del> (बाका १ 4 P) i इयरहाम [न्वरमा] सन्दर्भा नदी तो सन्द प्रचार से (सम्म १ ६ )। इयरयर दि [इनरेतर] चन्योग्य वरस्पर (धन)। इमापि । म [न्दानीय] तल में इस इयापि । समय (सम पि १४४)। इरदेलो क्रिक्त (इ.२.१६६) नाट) । इस्मेंबिर ब्रे [के] करम केंट (हे १ ८१)। इराय इं दि हाथी (दे १ इरावती (थी)की [ इरावती ] नही-विशेष (गद)। इरि देवो गिरि "निमश्चरित्ररेखिद्दर" (पडन ( Re) 1 इरिण न [ऋण] करवा ऋण (चाद ६३)। इरियन दिं] नगर मुत्रलं (दे१ ७६ बढा) ( इरिय सक [ईर] बाला परि करना। इरि मामि (बत्त १ २६ नुन १८ २६)। इरिया भी वि] दुवी दुविमा (दे १ इरिया भी [ईया] गमन गाँछ भारता (भाषा)। शद्दं पिछी १ मार्वसे माना (मीप ६४)। २ जले ना मार्नस्तता (मन ११ १)। ६ नेपन शरीर के हाले-यारी स्थित (नूस २ २) सहिय न [ पंथिक] है उस सर्वेर की केंग्र ने हानगाना वर्मक्य वर्मे-शिध्य (तूम २ २ वन )। बहिया स्त्री [परिक्री] बनाव-र्गरन केरन कारिक हिमा, क्रिया-किटैप

(पिंक ठार)। समिक्षी ["सिमिति] विषेक से चसना दूसरे बीव को किसी प्रकार की शांति न हो ऐसा उपयोज-पूर्वक भवना(ठाद)। समिय नि ["समित] विवेश-पूर्वक क्लानेशाला (विपा २ १)। इस्ड प्रे इस्ड १ बाराग्यधी का बास्तक्य स्वनाम-क्यात एक गृहपदि--पृहस्व (शाक्य २)। २ न, इकादेशी के तिहादन का नाम (जाया २)। सिरी स्वी [\*si] इस नामक भूरस्य की स्त्री (शासा २)। श्चीय में को निसंत (ने ३ ४७)। "स्थाननी [इस्सा] १ प्रविकी मूर्गि (ने २ ११)। २ वरलेन्द्र की एक सम्माहियी (लावा २)। ३ इस नामक मृहस्य की पुणी (स्त्रामा २)। ४ रचक पर्वेष पर स्थलेकाली एक क्तिनुपारी (टा )। **१ रावा यक्त** की माता (परुम २१ ३३) । ६ इलावर्षन नदर में स्कित एक देवता (बायम)। कृष्ट न [°क्ट] इलावेबी के निवास-भूत एक रिकर (बर)। पुचर्ष ["पुत्र] स्नारेवी के प्रसाद से उपाम एक बेहि-पून विसने गरिनी परमोद्दिण होनार स्टन्टा ऐस्त सीचा सीर भन्त ने नाम कस्ते-कस्ते ही मुख बानना से ने रत्तकान प्राप्त कर मुक्ति पाई (धालू)। यह र् [ैपति] एकामस्य मोत्र का धादि पूक्य (रावि)। वर्डसय न ["क्रांसक] इसलेरी का प्राप्ताव (काना २)। इंडाइपुक्त देवी इन्द्र-पुक्ता 'क्जो इनाइपुक्ती निमान्पूको ध बाह्मुर्स्स (वडि)। इसिया त्यी [इस्टिका] सुद्र भीव-किलेव चीनी भीर चावत म उरका होनेवामा शीट विशेष (की १७) । इस्त्री स्त्री [इस्त्री] शस्त्र-विशेष एक वाति नी सनवार भी तस्य का श्विवार (प्राप्त १ व)। **१८** तुं [के] १ शरीहार, क्लसती। २ सनित्र कोती। ३ वि करिय, नरीव। ४ नोपन नुरु। ६ नामा इच्छ वर्णनामा (\$ ? \$) उद्युस्टिन् वृं [ने] व्याप्र शैर (वंश) । इडि पुंदि रेशापुत स्वापः। २ निहा १ स्प्रता (दे १ ≪३) s इहिय नि [≰] ब्रानिक, रुगै नक्षुकानिवास

चरुतासवेत्विधमक्रिया<del>यस्वतात्र्</del>र्णं (विक इस्किया स्त्री [इस्क्रिक्स] श्रुत्र शीन-विशेष धव में छएम होनेवाला कीट-विरोध (बी 24) I इरुब्रीर न [के] १ वासन निरोप । २ दाला । वे बरवामा पूक्-झार (वे १: ववे) । इत व [इत] इत मजीं का योजक सम्बय---१ ७पमा । २ साहरय तुलमा । १ स्ट्रोस्ट (दे २ १८२ चछ)। इसम वि [दे] विस्त्रीर्य ( पर् ) । इसणा देवो एसमा (रमा)। इसाणी स्त्री [ऐशामी] ईंग्रान कोए। पूर्व थीर चत्रर के बीच की विका (सह)। इसि र्डु [ऋषि] १ मुनि साबु, ज्ञामी सङ्गामा (बल १२, अबि १४)। २ ऋषिनादि निकास का बितरत दिया का इन्द्र इन्द्र-विशेष (ठा २ ३)। "गुच्च पुं["गुप्त] १ लनाम-स्थात एक चैन मुनि (कम्म) । २ श चैन मुनियों का एक हुव (क्य)। गुत्तियन [गुप्तीय] कैन पुनियों का एक दुस (क्या)। इसस दु िंदास**ी १ इस नाम का एक छेठ, जिल्लो** वैन वैद्धा भी भी । २ 'मनुत्तरोनदाहरमा' सुव का एक बच्चमन (मनु २)। इस दिक्य ई [ रच] एक बैत मुनि (कम)। पासिक र्ष [ पाछित] ऐरत्त क्षेत्र के पांचर्वे तीर्वकर का नाम (सम १४३)। पास्तिका स्वी [<sup>\*</sup>पाकिया] वैश दुनियाँ नी एक शस्त्रा (रूप)। सङ्गुच दुं[सहपुत्र] एक कैन बावक (क्य ११ १२)। मासिय व [ भाषित] १ संस्कृतों हे प्रतिरिक्त केत शाचार्यों के बनाए **ह**ु <del>एत स्टरम्परन</del> साहि शास्त्र (धाषय) । २ 'प्रस्तन्याकरस्य' तूव का तृतीय श्रम्पतम (ठा १) । बाइ बाइब बादिय पुं [बादिम्] ब्यन्तर्धे नी एक बार्ति (बीप पर्दा १ ४)। बास प्रं ["पास] १ विशिवादि-व्यक्तरी का उत्तर क्रिया का इन्द्र (ठा २, १) । २ पाचर वागुरेव का बूर्वजरीय नाम (तब ११३) : <sup>\*</sup>बाखिन पु [\*पासिन] श्चनिराधिष्यकारो है एक इन्द्र था नाथ (देर)। इसिज र्षु [इसिन] यनार्व स्त क्रिकेन (छाना 1 (5 3

देश में बन्दार्स (गुप्ता १ १ इक)।

इसिया की [इ.च.म.] सनाई, शतान (गुम 7 () 1 इस इं द्वियों बरण (पाप) । इस्स वि णिष्यम् दि स्मीय्य कात 'नूतं संपर्धापसम् (विशे) । २ होने गमा भागीः 'शंबरद इय विग्म (रिगे १ ६) । इतसर रेगा इसर (प्रायं पि दंध दा २ १)। इस्मरिय देशी इसरिय (पटन ६, २७ ३ वम १३: प्रामु ७१)। नासा हो [इन्या] होह सनुवा (उन १४ 28) 1 है वे हि । प्राहत वर्णनाता का चनुर्व वर्ण

इमिणाय वि [इमिनक] इधिक-नापक बनाये । इस्सास में नियास] १ धनुर वार्बुक राध सन । २ बाल-नेपक शीरदात्र (प्राक्त) । इह र्ष [इम] हापी हस्ती (शार्ष)। इह स दिवानांस दिन समय सप्रका (पाट इटच (इड) यहे इस जगह (बाना स्टब्स २२)। वारलोइय वि चिदिष्यपारसीकिकी इस और परलेक ये सम्बन्ध रखनेकाना (स १५६)। मधिय रि ग्रिटमयिकी इस बग्ग धंबन्दी (मग)। लोख, स्टान पू िंद्योकी बर्गमान जन्म मनुष्य-नोक (ठा ६ प्रानु ७१: ११६)। स्थव स्थल्य विणित् न्धेकिही इस अमन्द्रवादी वर्तमान-जन्म

संबन्धी (काम मुपा ४ व पएह १ १ ग ४०१)- बहुतायराएनोइयमुटाई सम्माई तल रिप्रा" (म १११)। इत्ज } कार श्मी (पड परम २१ ७)। न्दर्दं च [इदान'म् ] हात संप्रति ६५ ममय (पाप) वर्द } दगो इह = टर (पीत या १४) । इहरहा ) रेनो प्रयर हा (बा =६ । भत १६ प्रदेश है है र रहर)। इन्स् दर्गा न्द्र्यं = न्यानीय् (मउ३) । इतामिव रेगो इहामिय (वि ४४)। इहिंच निही बरा (रमा)।

## ।) इस निरिवाइअसहमहण्यवे इबायस्यहर्थरम्। लाम सन्धो सर्गो समस्रो ।।

न्या विरोध (प्रामा) । इक्षत्र [एनस् इतम्] यः (ति ४२६ 23E) 1 न्त्र व [र्गत] इव ठठ 'दंव वर्तावित्रांत' (विगे ११४)। द्वेष्ठ बुंद्रो [र्नेति] यास्य श्रीष्ट को नुक्रमान बर्गबानेराना हुए। महीर प्राण्डिन्यल (बीर) । न्त्रस रि [इटरा] ऐना, इन वस्तु का इसके मनान (मणा स १६) । इंडिट् थर [मा] दून होना । धॅनाग (शह (4) ( इट देनी बीड a बीग 'दुईसम्मिन्दईस्मरि **₹ (٣1)** 1 देश की [दश] मुर्ति (बाब ८६०)। हैय रि हिं। प्रिपी क्षेत्रको काला देव निराममें पुरुष १ १ m)। हेन रेनो इ.प.(वे हैं दि देखां देंद्र (सम ६०) ह

इदिस देखों इइस (न १४ धनि १८२ क्णु 🕽 । इर सक दिर ी १ प्रेग्गा करना। २ न्द्रमा। ३ प्यन गरमा। ४ फरना। देद (रिगे १ 1 ) **१ किल्लामणुद्रणमाप्र्यं**क्र मुगतरनिवातिवार विद्वीत इरिश्ववर्ष (पान्द्र १ १)। पूर इरिन् (शी) (वनि १ )। इरिय रि [इरित] बेल्ड (रिन ११४४) । ईरिया देवी इरिया (सब १ : बोष ७४ मुर २ १ ४)। ईरिम देशो इहम (१४। राज ११)। इस व [रे] गूँछ गोता बातक (रे र (x)

ईस तद [इप्] रेची बरता, इप करता। र्रमार्थे (गा २४ )। इस वृद्गिो रेलो इसर्≖रेपा (प्या पञ्चर ३ ५०)। २ म. त्यारं प्रदुष (राग २)। इम रेनो ईसि (बगू) ।

इसप्र पृत्ति येक हरिए की एक बार्डि (दे १ वर)। इसस्य व [इप्पन्नसाम्त्र] धरुर्दे, कल निया (धीर परा १ ६) विमानुनानु पुनारा रैपायहायानमा नीता' (परन ६४ ४ fr tto) i इसर १ लि मानव गानदेश (११ वर)। इमर १ [इरार] १ परवेषर बन्नु (१ १ १ व समान्त्र शिष्ट (पात्र १ ६, १२)। ३ रहामी पाँउ (कुमा) । ४ नावर पुरेत्रश (शिरा १ १) । ५ देश्ताची वा तक बाहाम वेचंबर दर्तो 🖭 बाराय शिक्षेत्र (तम ७३) । ६ तर पञ्चर बन्छ (१ ॥ २) । ७ सन्त्र नरी (मुत्त ४३६) । व रैपरीजनी बनरी (नीर रे) । १ पुरस्तर । १ - मगार्शनर

गमन्त्र-राजाः ११ मन्द्री (यम् )। १२

शंग विदेश अन्तर्ग निष्ठाय बा इत्य (दा व

३) । १३ बाजान-रिटेन (ग.४) । १४ तक

धारा बा बाब ६ १६ एक देन दुनि (सामी

। ६)। १६ वन विदेत्र (१४ २०)।

ईसर र् [ईम्पर] मणिया भारि थाउ प्रशास के ऐपन से सम्प्र (ब्यू २२) । इंसरिय न [पेरवरे] बचर प्रमुता इंबरान (934 8, 44) 1 इंसा की [इया] १ शोरपतों की अधनीह-विके को एक पहाँचा (छ १ २) । २ विधा-चेन्द्र की एक परिएए (जीव ३) १ है हाउ का त्क ब्रह्म (के २ १६)। इसा ही [देंपों] रंप्ता होह (परह)। धैस र् [योप] कोब दुस्ता (बप्यू)। इसाइय वि (इच्यायित) जिनको ईप्या हुई ही बहु (बुग ६१) । ईसाम वूं [इरान] १ देरनोस-विध्य दुवध केत्रतोड़ (सम २) । २ दूसरे रेहरीक का रख (छ २ ६)। ६ उत्तर मीर पूर्व के बीच वी হিন বিদেশীত (মুন ১ ) । ४ <u>মূর</u>র্ক-रिकेच (नम ११)। १ दूसरे देवतोक के गिताची देश (झार्ट)। ६ त्रञ्जू स्थानी (विडे)। बहिसय न [श्वनंसक] विमान विदेश का नाम (तम २६)।

ईसाय र् [इसान] बहासक का ग्यासकी मूर्त (तुब १० १३) : सामा भी विद्यानी नितनरोण (अ इसात्री सी विद्याची १ ईहान-बरेख । २ विचा-विरोप (पतम ७ १४१)। इसाल वि [इव्योल] वैर्यान्, धराविष्णु, क्षेपी (मज्ञा या ६३४४ प्राप्त) । स्त्री वैधी (परम ११ ४६)। ईसास देनी इस्सास 'ईबान्ब्राल' (जिंग वि 112)1 इंसिय [ ईपन् ] १ बोहा प्रत्य (पर्ण १६)। २ प्रविशी-विदेश मिडि-शेष भूक-मि (स्थ २२) । पदभार वि विप्रान्मार] बोधा प्रश्न (र्ववा १०)। प्रधारा श्री [ प्रागुमारा ] चुनिनी-निर्देश मिदि-श्रन (प्र व सम २२)। इंसिम न [इप्मिन] १ देखें इय (च ११ )। २ वि. जिलार ईप्यों की वई ही अप्र (दे २ १६)। ईसिअन दिी १ ग्रील के शिर परका पत्र

पूर, घीतों नी एक वर्ध की उसी। रेडि वरीहरा वरा किया हुमा (दे १ व४)। इसिं) देवो इसि (यहः दुर र १९ स ईसी कि १ १)। EE UF [ \$ti \$E\_] t tent ! ? विभारता । वे मेरा करता । ईहर (भित १६१) । वक् ईहेत ईहमाय (बरा गुप दब विशे २१.व) हंड भारिकारों हैरि कत्र मध्यमं (पण वर, विते ११०)। इड्ड न [ईड्न] गीथे देशो (यापू १)। ईहा की [इहा] ? विवाद, उद्यास, रिक्र (लाख १ १ लुप १७२)। २ च्या सम (बीब ६) । ६ महिन्हान का एक वेड रिस्ट १६ का द्र)। ४ इच्छा (स ६१२)। मिन, "मिय र् ["मृग] १ इक वेडिया (ठाव १ १ मन ११ ११)। २ मान्य ना एव मेर (चप)। इंडा की [इंझा] यत्रतोकर, तिलेकर (यौर)। इंदिय वि [इंदित] बेटित (सूम १ १ १)। र विकासित विकासित, ईमानियस्टेइन (विने 624)1

।। इय विरिपार्भसङ्भइण्यवे इयाराज्यस्थरकछो धान वदली वर्गी सम्त्रो।।

ਫ

स वृं [ज] प्राप्त व विकास प्राप्त हैं स्वर्गिति (प्रस्ता)। व वर्षण प्रस्ता करना स्वरण करना परिण प्रस्तोक्तकों (सिंखे हेर्रेश)। हे गींत्रीक्ता (स्वाप्त)। व स [ज] स्मितेष्ट सरी वा बुक्त क्रम्यवन्त्र, हे वर्षणक प्रस्ताता । व वीत्रचल, होर्गेर्डा। हे क्रम्याता वाला। व विकेद हुन। प्रस्तित क्रम्यां हे बर्गियाद् स्वरण्डा क्रस्य क्रम्यां (हे व देश)। व स [ज] क्राच्यां वा बुक्त क्रम्या—हे रोजा। हे बनागु (सा हू)।

विधेन 'क्टोरिम' (कानुवादारिके ११०६) काम य [ने] विमोतन नये देनों (दे? वर्ड दी है २ १११) काम य [कानु रा पर्यो का मुक्त प्रस्मान १ विदरत स्वयात १ दिनमें विवरी (दुनों) वे संस्तु इन्यात ४ तत्रकार कहन स्वी काम है १ एकरों। काम से ही सनु नतन (बर्ग)। काम केरो कर (या साले कर)।

['सिन्धु] स्त्रूद, शाहर (वि ६४ 🗥

प्रअ.वि. चित्रस्य] उत्तर, उत्तर विशार्मे स्वित । सहिद्दर पू ["सहिद्धर] विमायन पर्वेत (मरह)। च अञ्चल [बद्क] पानी जल (बाध्व से **₹** ==) | समा देवो उदय (से १ ११)। क्रमध्य न [चद्र] पे∕ उत्तर (से १ < ८)। क्रमञ्जूषि हि ऋजू सरस सीवा वि १ **⊑**⊑) | समाजद (शी) देशी उपराम (नाट) । धन्नवारम नि [उपद्यदः] उत्तार करने वासा (गा ५)। द्यमार्गर वि [दपदारिम्] ज्यर देखो (विक २१)। समाहरू वि [सप्रमीरूप] शास्त्र करने मीग्य सेवा करने योग्य (से ६ ६) । चअउद्भ सक [सप+गृह\_] धार्मिका बच्चा । संह, उअक्कारुण (पि १८६) । चळणस देखो स्वयस (वा ११)। इध्रैयण स∫हरूपत∫ १ जैवा क्षेत्रसा। २ इक्ते का पार्व प्रारम्बाक्त पात्र (वे ४११)। रुअंचिय (शी) नि विदक्षित १ ठेवा क्ठावा हुमा क्रेंचा फेंचा हुमा (नाट) । स्त्रांत पू [सद्भ्य] हकीक्त बुक्तान्त समाचार (पान प्रामा)। क्रमंदित् (शौ) वि [यपकृत] विमयर उपधार किया गया हो वह (रि ६४)। सम्बद्धि विष्युपत्य याने विया हमा (4 2 W): क्षभाव्य देशो स्वगय (मा ६४४)। क्रमाधित वि [वे] परका निवृत्त (वे १ **t** =) 1 रुअप्रीति वि [ इपन्नीविन् ] वानित (ववि 2=1)1 सञ्जन्धभ वेशो वनग्रस्य (नाट)। च अर्द्री की [दं] मीवी की कंवरिशक्ष की नाडी 'इसट्टी स्वयो नीवी (पांच)। सभद्रिभ देखो उबद्रिय (प्राप्त)। बभ्रणिश्र } देवी सबसीय (प्राहः ६) । उभयीत रअण्यास रेखो समण्यास (नाट) । बभर्यत केडी सम्बट्ट = उद् + हुन् । १⊏

सञ्जरबाज बेलो उबद्वाण (नार) । चक्रस्थिक्ष देखी उच्चट्रिय (से ११ ७८)। उभविद्व केती उपद्व (गार) । एअ**मुक्त वेको एक्मुक्त** (रॅमा) । उद्यमोग क्षेत्री उपभोग (गट)। रुअमिकांत वह [उपमीयमान] विसकी तुलना की जाती ही वह (काम ८१६)। सभार न डिव्र विन (भूमा)। मुआर्टि) देखों हबरि (गा ६४ से ब सक्षरि 🕽 🖦 १)। धमरी की वि शिक्तिरी वेबी-विशेष (वे १ इअरुउम्ह रेखो प्रथर्जम्ह । उपरम्मर्क (शौ) (मार)। उभरोस } देशो स्वरोह (प्रापः नाट) । प्रसम्बद्ध देखो प्रवस्तक्क (नाट) । तमविट्रम म [भीपविष्ठ वे शासन (प्राष्ट्र ₹)। उश्चिम मि दि । चिन्हरू, 'बहरा में शिक्षि मत्ते उपनियं श्रम पुरमाधी (शृह १) : चञसप्य केबो उपसदय । उपमय्य (वृत्तिम ११)। 'उमसम । वैश्वी धवसम= स्द+शम । चअसम्म े जासमह्, ज्यम्पाह् (प्राष्ट्र ६१) चआर्य [दें] येको दक्षिए (दे १ १० वजहस देवी वबहस । उपहराद (प्राष्ट्र १४)। जमहार देखी समहार (नाट)। उमहारी की वि शेराधी बोहनेवासी की (R 2 2 =) 1 कमहि पुं विविधि १ समूत्र नायर (बरुड) । २ स्थमान-स्थात एक विधावर राजकृतार (पतम १ १६६) । ६ शास परिमाण साय-रीपम (मुर २ १६६)। ४ स्वनाम बगात एक पैन मूनि (पठम २ ११७) । देखो सवदि । छमहि देवो स्वहि = उपनि (पण १)। उभद्वस्ति वैको प्रवर्भुख । समहोज देवो जनम'ग (प्रवी १ ३ नाट) । तआअ देखी ल्लाय (नाट) । उआक्षण देशो उदायण (नाम ४१)। त्रभार वेलो उरास (मुपा ६ ७३ वर्ष्य) । क्षार देखो उपयार (यह एउड)।

धकाळेम देवी स्वालंग = उपा + सम । ह श्रवार्धभणिक्य (नट)। रुआक्रम बेची रुवार्सभ = उपलम्म (ग्र ર શ)ા चमाज्य देशी चन्नार्थम् = उपा + सम्। ख्यामभेमि (चि बरे)। चन्नास्त्रिको दि प्रश्तंत शिरोनुपरा (दे १ €) i धआस वि चित्राम निषे देवी (पिंग)। उआस रेबो उनास = श्या + प्राप्त । करह-रवासिकमास (हास्य १४ )। नधासीय वि [नदासीन] १ उदावी दिल भीर। २ सम्मल्य कुन्त्व (स १४१ आट)। उआहरण देखी उन्हरूप (मन १)। उइ सक [उप ± इ] समीप भागा। एएट क्एव (शि ४६६) । वद्र सक बिद् 🕂 🛊 विदेव টना। उदह (रैमा)। वह उद्दयंत (रैमा)। वड् देवो वड 'घलोव हुंदु बझ्मी सरिसा पर र्दे(रमा)। राग् दू["राज्ञ] ४सन्द≒त् (रमा)। खद्रमानि [टिवित] १ उत्तय प्राप्त उत्पत (सुपा १२७) । २ एकः कविक (विमे २३३ चंद्र§) । परक्रम पू ["पराक्रम] इज्लाइ-बँग के एक राजा का नाम (पराम ४, ६)। टइअ वि [उचित्र] योग्य सामक (से व ( R ) वर्षवण न [वं] बत्तपीय मझ, चारर (दे १ १ ६। भूत्रमा) । वर्ष्य वृं [तपन्त्र] सन्त्र का सोटा भाई, विच्ला का बामन सबतार, को प्रविति के यम सहसा मा(देश क)। बद्द वि अपकृष्टी होत संपूषित पात्रिक धरताचम्मस्ट्रां<sup>न्</sup>देमें (शाया १ ६)। तहण्य देखो उदिण्य (ठा १, विने १ १)। तक्षण्य वि [चवीचय] उत्तर दिसा-सम्बन्धी क्तर दिशा में बन्दम (पादम)। तन्स देखी आन्ध्य (तम्मत्त ७०) । उद्दर्शत देनो उद्द = उर् + द । बङ्गण देनो हदीण (राप) । नईर देशे उदीरा 'उट्टा घातीर' (या

२७) । यह अइर्रन (प्राक्र १३) । संह

**बद्दाइचा (नूप १ ६)** ।

बारण रेको उदीरम (ठा ८ पुण्ड १११)। बद्दरणया ) देनी छदीरचा (विने ६३१६) **मुईरणा ेटा कम्मन ११८ विसे २१६२)**। उद्वरिय देनो उदीरिय (पूण्ड २१६) 1 च द कि चित्री १ अल्. दो सास का काल विशेष वसना मादि छ। प्रशास का करू (दौरा यन्त ७) 'उड्रा' 'उड्रा' (कप्प) । २ इध- प्रमुख रजी करोन, स्त्री-वर्ग (ठा ३ )। बढ़ पूं विद्व शिव भीर ज्याजान बर्या-कार क पश्चिरित्व बाठ मान का समय (क्रोप ६, २६ : ६४६) । साम प्र िमाम ] १ ध्यक्त मान (क्व १ टी )। २ तीम विकामा मस (सम) । य वि [ैस] म्बर्गम स्टब्स समय पर व्यवस होनेदाना (पटा २ १ सामा १ १)। 'जमापुरवर परप्रदेशकार्यमञ्जानका विकास । अनिकृ राजनगण स्मीत बार्ग्गिदादमहा" (खामा

1 2 ) 1 मिथि पूर्ति सिंघि अरु शा सीच-नान श्चनुका धन्त्र समय (धाका)। संक्रमाहर र्षु ["संबरसर] वर्ष-विधेष (ठा १) । देलो **इड** = एउ ।

क्षर्रकर केली जंबर = उद्गमर (पुना है १ २७ यर्)। **प्रप्रदक्षिय न [ऋतुबद्ध]** माम-नश्य, वद

मान तक एक स्थान में साबुका निवाला-मुजान (माचार, २७)। चक्रसम् ) पून [ चङ्कम ] टङ्कन, कुल्न

क्रइम र (हुमाँ पर्। इ ? १०१) उएट् पू 🚰 फ़िला विशेष (बार्ट १४६) ।

उमान्गित्र है हि सम्बद्ध, संरूक्त (पर् )। इं स दि दिन यथी का मुख्य सम्बद्ध--- १ क्षा किल्हा २ विस्पर । ६ और १ ४ रितर्के। ह मुचन (प्रार ७१)।

र्थम पक [नि + द्वा] नीय मेना । योबदः ( ( R ? ? ? ) I

उंबह्या स्मे [इ] बरमाछ (६१११)। र्चम पुन [सम्बः] थिया (नूम १) 2x) t

चंद दूँ [चःख्] धिता, मादुवरी (का ६७७: धीष ४२४)।

र्तस्त्रात्रं [के] करन ब्रानिना काम करन नामा शिली द्वारी जो करहा द्वारण है, श्रीट वनाशा क्रे वह (६१ र⊏ पाय)। र्थंत तक [सिन्] सीवना धीरुक्या। पॅनिजा (राज)। मनि--देनिय्नर (गुरा 214)1 संज्ञ सक यिज्ञ वियोग करता कीहता **भारती** देशी तह मिरि (मन्य व टी) 1 र्वज्ञायम् न विज्ञायनी पात्र-विकेश की वरिग्र-गोन की एक शाका है (ठा ७)। उंजिल वि सिक्त शिक, क्रीइका ह्या (मृपा १६६)। तंब | वि कि ] रंगधेर, यहरा (वे र तंबरा } चर मुतारंग्र उत्तरंग्य दी हो रहेब | १ : या १६) । २ पू तिए " भाषाई मेंचउड्य मञ्जाराई विराहण्या' (योज २४६ का)। १ चाने समय प्रव में रिएक कर से भग जान उद्यान गहरा की बड़ कर्डम (बीक ११ या)। ४ शपीर का एक ब.न सांस रिक 'दियग्रजेटम्' (चित्रा १ १) । खडग ) न कि ] स्पॅल्ड, स्वल क्य**ड** (दस र्थम र्थ १९६३ **।**) । वैद्रेष्ट न [द] १ माच सदान उद्यासनः। २ निकट, समूह (दे १-१२१)। **एंडिया स्थी [क्] मुत्रा-विशेप (राम)**। स्त्री स्त्री [व] निगर मोताकार बल्टू, 'सन्ब नमस्कार नरना (दे १ वद्)। र्णं एगा भरमक्रणे थे पुट्टे परिवादने निद्दू

बंदु न दि ] पुत्र मुंह (यमु २१) । अब्द म मि पूर्व में बूरम पारि मा नयह बाबाब करमा (घलु २१)। र्वदुरम दुं[क्] बामा दिखः(वे २ १ १) । र्वेतुरु पूर्णा [त्रस्तुरु] बूगक बूहा (बम २,

बीर्पट्रेर निष्मणे निषमण निजमहिन्समाछे

वैदर ) पृथ्वी विस्तुरी पूपन पूरा (बज्

उद्दर्भिष्ठकृष्टिं श्रीकेश्वर्थः)।

मक्र्यमंत्र्य पमनति (खामा १ ६) ।

वंग पू विस्ता बुध-विशेष "निवनप्रवर्तवर" (सन्देशका)। धेनर पू [ततुम्बर] १ वक्त विशेष श्वार वा

पेड़ (मएड १)। २ म. पूलर वा कन (पाप्र)। ३ वेहनी बार क गीचे की सकड़ी (९१६)। इत्य पुंचित्री श्यक्तः

विलेप (विपार्ट ७)। २ एक सार्वेगाह का पुत्र (विचार ७)। पंचन, पत्रनाव िपञ्चकी बढ़ पीरत पुत्रद प्रश्च और बलोइम्बरी इन पांच बुतों के प्रम (मुग ४६ वन ६ ३३)। पण्डन प्रिप्पी हुरर का कुत (मय ६, १३)। चंबर वि दिं} बहुत प्रचुर (देर हा)। र्वरक्षक म वि । महीन सम्द्रम धनुर्व क्षमति (दे १ ११६) ।

र्जबरय पूर्वि दुत रोव मा एक मेर (मिरि 1 (¥\$\$ र्धवा क्यें [दें] बत्तन (दे हं ≖६)। र्वशीर्था [द] यका हुमा मेड्ड (दे १ ८६,

पुत्त ४७३)। **ब्रिमरिया स्था [द] बृत्त-विदेय (पग्प १)**। र्वस सक् दिं] पूर्ति करता, पूरा करता (धव)। उक्टिट्र देखी प्रक्रिट्ट (गिन)। बकुरहिया [व] देशो उसकुरहिया (निर

1 (3 3 बक्क वि [हरक] १ जमुक जनस्कित (पुर ३ ११)। एक विद्यापर समा का नान (पब्स १ २)। उक्क वि [इक्क] वनित (रिंम)। चच्च व वि}पाद-यतन पानपर विरक्र

बक्र म (वि) क्ला कैस हमा (वर्)। उद्देशम ३ न दि । इस्से प्रशंता करना उन्हें भगवा । कुरामर (गुम्बा १ २)। २ क्रीचा करना चटाना (नुस कु २) : ३ म्ह्रा निवारता (निवृध्)। ४ वृद्, व्यित (बसार)। १ मुख्यं पुरुष की अन्तरकारे पूर्व गा, मधीपस्य विषयाणु पुरुष के बर में भौती बेर के निय निरमेट राजा (योग)। दीन है

विश्व अर्थेया बेटबाला प्रश्नेप (धन्त) । क्षमंद्रण न [दे] देवो नद्यंत्रण (स्त्र)। डक्कठ सक [डन्+क¤ट्] **ब**लस्टा

करना, उल्लूब होना । उसर्टिह (बै ७३) । नह उपकटित (मै ६३) । हह अपकटितु (यौ) (पनि १४०) ।

वक्कंटा की [शरक्रपठा] कनुवता। मीलुस्य (fr 45 4 ) i

हमकंदिय | भि [सर्कारितम] चल्युक (गा हमकंदिर | १४२ सुर १ वरा पदम ११ स्वकंद्रुत्वर ) ११८: वरमा ॥ )।

स्वस्था वि [यत्क्रियत] सूत्र सदा हुमा विशेष संदिश (विष १७१) ।

चनकंबय सक [चरकण्टय ] पुनकित करणा पियसेनि मुचर्चभावरणाय स्वन्तंटर्यात संगात (गतन)।

खक्क द्वय वि [ट्रस्टप्टक] पुनरित रोमाञ्चित (क्टड) ।

सकता की [रे] इस रिटण्ट (वे १ ६२)। सक्केडिश वि [वे] १ मारोनितः २ सरिप्ट

(पर्)। चन्द्रकृत दि [डाक्कास्त] क्रेचा गया हुया

(यवि)। स्वन्ति । की [दे] देखी सम्बद्धाः (देश सम्बद्धी । यक्ष्णे

सदक्त वि [दे] विश्वतस्य ठमा हमा महिनत (पड़):

स्वस्थास्य वि (वरसम्बद्धः) संदूष्णि (यग्यः) । सम्बद्धिः । स्वाद्धिः (वर्षः) । सम्बद्धिः । सम्बद्धाः (वर्षः १ ८०) ।

धक-इंप क्रक [स्त्+कम्म्] कीपना हिननाः बक्कंपपुं[बरकम्म] कम्म चननं(सस्

वा ७६४ )। चन्न्यंपिय वि [शस्त्रस्थित] १ चन्न्यन किया ह्या (राज)। २ न कम्प हिचन

हुमा (एव)। र न कम्म एकन 'रहीसामुक्तिपमुस्तस्मित् सारोति खन्ति बस्या । सम्बारिसीत् रिट्टे, विसम्म सम्पादि बीसरिसो' (स १६१)।

वक्कोपिय वि [वे] ववनित छन्नेव क्रिया हुया (क्रम)। वक्कोपण व [वे आवक्रमन] काट पर काट के हुन्ते से कर की क्रम बीकना करका संस्कार विकेश (वृह्य १)।

स्तरार (१००५ (१०००) स्वक्दंबिय वि [वे अवक्तियत] काठ से बीवा हुया (राज)।

वाना हुमा (राज) । वस्त्रवरद्ध वि [बरस्यक्] स्ट्रुट, स्पष्ट (पिम)।

एकप्रस्था की [उत्कथ्या] क्य-विरोप (पिग)। एकप्रियद्धमा की [धीपक्षिकी] कैन

क्काव्यद्धमा श्री [श्रीपक्षकिकी ] शैन साम्बर्धी को पहलने का बक्र-निरोप (धोष ६७७)।

सक्तकश्चा वि [चे] यानवस्त्रित वाम्यन (पर्)। स्वकाहि की [आपकारि] यानवर्षे हानि (वन १)।

धकाद्वि स्त्री [बस्कृषि] चटकर्प 'महता उक्कद्वितीहणारकमक्तरपेश' (सुरव १९---पत्र २७०)। रेको चिक्कद्वि।

चककड वि [स्टब्ट] १ तीत्र प्रकार प्रचार (त्त्रींच, मझा)। २ विद्याल विस्तोर्ग् (कम्प सुर १ १ १)। ६ प्रकल (जनाट सुर १

१७२ ) । स्वस्था रेको सुनवा (स्व १४६) ।

उक्कविय वि [र्दे] तोड़ा हुम्म, स्क्रिन (पाम)। उक्कविय देवो स्वकुबुम (क्स)। उक्कविष सक्तिन + स्टाम | स्क्रप्ट करता

बद्दाना । उद्देश्य (कम्म प्रे, १० टी) । वदक्टका पुं[अपवर्षक] १ जोर की एक-वाटि—को पर से वन ग्रांदि ने जाते हैं।

नाश्चान परश्चन आर्थित पान है। २ ओ कोर्टिको हुसाकर कोरी कराने हैं। ६ कोर की पीठ ठोकने वासे कोर के ख्याबक (पर्यार १ केंग्री)।

कक्काब्रिक्य वि [काक्रिकि] १ क्यानित स्टामा हुमा । २ एक स्वान से स्टाकर

धन्यत्र स्वापित (शिव ६६१) : बक्तरुपन वि [डस्स्ट्रज] सुतने के लिए उन्सूर (से ६, १६) :

डबकार का [उन्+कृत्] बारना कराता। वश् चककात (पूपा ११६) : उनकार वि [उन्कृत्त] करा हुमा, जिल्ल

(विषा १ २)। वक्कत्तप्र न [बरफर्चन] काट बासना स्नेतन (पुरुष १०४)।

वनकत्तिय वको धनकशः = रुक्ता (यर्थ ११,२४)। वनकस्थण न [बस्परथन] स्थानम (परह

१ १)। चनकप्प पुं[प्रत्कल्प] शास्त्र-निषिक व्यापरस्य (पंचा)। धक्कनाह् र्षु [ये] स्तम घरत की एक बाडि (सम्मत्त २१६)।

खक्कम सक् [सन्-|-क्रम्] १ जैना जाता। २ सकटे कम से रक्षमा। वक् प्रकर्मत (सामा) । सक्क सक्कमिऊर्ण (विसे १५११)।

च्क्रस्म पृं[च्यक्य] छचराक्या किपरीठ इस्स (विसे २७१)।

चक्कमण न [चक्कमण] कर्म्य गनन । २ बाहर बाना (वसु १७२) ।

उच्छिमित वि [उपङ्गास्त] १ प्रारम्य । २ कीरा 'घम्मामीन्तिम्म बाहुहे, ब्ल्बा ज्यमिते सर्वतीए । एमस्य गती स सामदी विदुर्ग ता घरणी सामन्त्र । (सूच १ २ १ १)। स्वस्कर सङ [चन् + कृ] बोदना । क्वकृ

चक्करिज्ञमाण (मावम)। चक्कर ई [चरहर] १ समूह चेपात 'सन्क-स्करसम्बद्धे' (मुना ११व)। २ कर-रहित

क्षकरखबर्वे (गुपा ११०)। २ कर-रहित राज-रेम कुष्ण से रहित (ग्रामा १ १)। स्वकारक देवी स्वकार = स्टबर, 'कस्सावि

अत्तरिकं महिक्या कमी म उपरुरहों (विरि ७११):

यक्तरब हु चि १ समुधि गरि। १ वहीं मेता रक्हा निमा काता है वह स्थान (मा १७ सुपा ११॥)।

चक्करिक वि चि दे विस्तीएँ बायव । २ आयोपित । १ वर्षिक्त (पर्) ।

धक क्षेत्रम वि [तस्क्रीर्य] बोस्ति छोवा हुमा टेन्ट्रकिएम्स निक्तनिहित्तकीयणा' (महा)।

एककारव् (शी) वि [सस्का] केंबा किया हवा (स्थप १६) ।

हुवा (स्थल १६) । वक्कारमा की [स्टब्सिका] कैने एएएड के

बीज से स्वयं दिनना सनग होता है स्व सरह सनव होना जेर-विदेश (सब ६, ४)। सम्बद्धारस सक [बन्-कृप्] १ पीचना। १वर्ष करना नगरीकरना।वक दक्करिसंठ (से १४ ८)।

दसप्रदिस वेको सक्तमस्सः = उत्पर्ध (तकः विते १७२१)।

त्रकोट्टिय वि [वि] सनग्रेव-गहित किया

ह्या थेरा उठावा हुमा (स ६३१)।

मोत्तियाबाना" (महा)।

उक्तुम्त्र प्रकृ [उन् + कुस्त् ] सँवा होकर नीवा हाना । संक्र उबद्धक्रिय (बाबा) । उद्यक्तिय न [उत्कृतियः] बन्यक शस्त्र (नीच्)। उस्कुट्र न [उस्कृष्ट] बनम्पति का बूटा हुमा पूर्ण (धाना निषु १ ४) । उक्कुट्ट वि [उत्मष्ट] जेंचे स्वर में बाकूष्ट (\$ t vo) उक्युकुरा । दि [उस्कुटुक] मासन विशेष उक्कृद्व मिरचा-विशेष (मम ७ ६ घोष १ १ १ मा गाया १ १)। स्त्री उल्युहर (छ १ १)। सिणिय वि शिसनिकी उपरुक्त-मानन से स्वित (ठा ४, १)। उक्दुर्यक [उन् + सृद् ] बूबना उद्यनना। उल्ह्रुद्द (उत्त २७ १)। प्राकृत्वा देवो उदकुरुहिया (शी ११)। उद्युक्त पूरियो उद्युक्त (तुम १६)। उब्बुल्ड पंदि राशि देर (दे १११)। उन्दुर्हिगा। भी दि पूरा नृहा शतने उदबुरिक्षमा भी जगह (चेर १६६ ही जिपा उक्टूरणी रिरेणायार २ देश 22 11 उक्छुम सक [ गन् ] भागा, यमन करना । बार्ड (६४ १६२)। इक्ट्रम वि [उत्पृष्ट] उत्तम बेह (मुमा)। उपसूत्रय = [उत्कृतित] प्रध्यक नहा-व्यति (दसन् १ १)। पुरुष हार जिल्लू हो १ नग्यार्ग ने प्रष्ट क्रातंत्राला । २ दिनारे हे बाहर का । ३ न बोर्च (पटह १ ३) । उत्तर्प सक् [उन् + पूज् ]सम्बद्ध साराज बरम् विश्वामा वर्षे उरक्षमाम (विषा १ Frc 1 t) 1 अस्पर पू [उरहर] १ मपूर चरित, हेर (कुमा महा) । २ करण किटेव कर्नी की रिक्तपादि को बहाना (विशे २५१४)। १ क्रिम एरमा के बीज की तरह की शक्य रिया नगा ही नद्व (धन) । उनकर वृद्धिकाराद में (११ १६)। प्रकटाविय वि [इ] स्रेनाया हवा

नुष्त्राया हुमाः 'सरहाः प्राहेशिया' श्रीप्त

बादे निर्मामा अभावयो जात हिन्ह

सकोड न दिं] सत्र-दुत्त में कतस्य प्रस्य, राजा मादि को दिया जाता उपहार (वन १ (डि१) उक्ताक्षा श्री कि पूछ विशयत (दे १ ६२ पण्हर ३ विशा १ १)। उक्षांडिय दि दिं] पून नेकर काव करने-बल्ता कुमन्त्रार (छाबा ११ धीन)। उद्योही सी हिं] प्रतिराज्य प्रतिस्थित (वे 2 (x) 1 उद्यास वि [उरशेष] प्रवर, क्रकट (मए) । एक क्रोपण देनो एक शेयम (मनि)। क्करोया श्री [प्रशोषा] १ पूस रियात । २ मुखेको रुपने में प्रकृत पूर्न पुरतका समीपस्य विषयाण पूरा के मन स योही देर के निए बराने कार्य की स्वयित करना (स्व)। उपकास पुंदि | भाग मून गरमी (द १ उनकाषण न [उज्जोपन] श्रीपन, क्लेबन-'मयलुस्रोवल' (भरि) । उबस्मित नि [उत्सापित] सप्तत कूद रिया हुमा (उप १ ७८)। उपस्यसम्बद्धाः चित्रम् अस्य दिश्येतः, विप्ताता। २ तिरम्शर करता। वर उपग्रसंद (प्रत) । वस्थम रि (उरक्ष्पे) उत्तर, प्रवान, पुरव (पंदा १२)। उक्सम द [अरहरी] १ प्रतर्थ प्रक्रिया 'बश्रोनवरमण् धंतपुरशं चित्र विदेति' (बी १८ थीए) । १ वर्ग व्यक्तिगत (त्रूप १ २ २ २१ सम ७१ हा४ ४ — पत्र २०४)। बरधम वि [त्रहरू] बच्च, व्यवक ने धवितः 'नुरनेरदयाग् ठिई उद्योगा सामग्रीण तिनीर्ध (मी १६) शीनतिर्वं च मरास्या अरेन्मप्रेरपार्नेतुं (श्री १२) 'तथो शिवर तीयी परिवर्णना ते जहा-उपनीवा सरिमना बहरणा (टा३१ का)। उपराम पुं [उत्थारा] १ पूरर, परिनिर्देश

(पएड ११)। २ कि जोर से किप्पाने बाला (सम्)। ल्क्सोसगन [इस्सेशन] t कल्न। २ निर्मर्णन तिसमार, 'बद्दोसणुजञ्जलजाङ्गाधो धवमाणशैत्रणायो व । मुणिणी मुणियरस्या च्द्रपहारित्व विसर्हर्ति' (ठ३)। उक्क्षमा भी [उत्योशा] शेक्षनामक एक प्रसिद्ध बेरया (वर्ष वि ६७) । उक्धेसिअ वि [त्रकोशित] मर्रिनंत विरम्हत दुनरास हुमा (उर ६ ७००)। उम्बासिभ वि[उत्सर्पिम्] रेखं उक्साम = **क्ष्**ष्ट (रूपः भन्न ३७) । धम्ख्रेमिञ्ज पू [प्रस्तीशिक] १ पौत्र-विदेश का प्रवर्तक एक ऋषि । २ व. मोक-सिरोप चिरस्य एां बन्जबहरफेल्य्य उननोनिववीत्तस्य (क्य) । उक्क।सिम्न विद्या प्रत्युत साथे किया हमा (वड्)। उक्कोनियां थी [उत्कृष्टि] उत्तर्थं बाधिस्य (मप)। उस्रधस्म केवा उस्रधस= ४५१७ (विमे 250) ( उत्तर नक [उत्तु] सीचना (नूप २ २ ११)। उपन्य [उद्या] १ संबन्य (राज)। २ जैन शास्त्रिया 🕷 पहुनते के बग्न-तिरोध का एक धंश (इड् १) । हरस्य देनो उद्ध्य = ध्यन् (पाम्) । प्रबन्धप्रम रि [प्रस्थित] ब्यात, मरा हवा (मेर ११)। प्रसरोह नव [प्रमु + स्रप्रहयू ] तीहना दुषदा वरना । वश्च अस्टर्स्ट्रेड (नार) । उरगंड पू कि १ संपात सपूर। २ न्यपूर, विषयोग्नव प्रदेश (दे १ १२६) । उत्पर्वहम्य न [उत्परप्रदेश] चानर्ततः, रिच्चेरन (दिस २०) । उत्तर हम वि [उत्तरिक्त] वर्णात, विस (4 x v1) 1 उत्तरिकारि [र] यक्त रसस्य (tt tt2) i

ष्टक्क्ष्रं पुं [जायसम्ब] १ केय जावना। २ भ्रम ने शक्तुभीया को मारता (पर्यक्ष १३)। षक्क्ष्मंस पुं [जन्मम] सनकम्ब सङ्गरा (संबा)।

तक्संभिय देवो उत्तंभिय (भिष्)। सक्द्रंभिय म [बीत्तिम्मक] स्वतम्ब सहार (राव)।

सक्तवसम्बाधः [ब] पूनः पूनः वार्यवाधः 'रुत्वसम्बाधः वा पूनो पुनोतिः वा पूनो पूर्वोति वा एरहा' (वय १)। बक्तवाण सक स्तितः + स्तवः] स्वाधाना सम्बोधः

करना काटना। एक सामादि (पण्डा १

१)। গ্ৰন্থ কৰবালিকাল (গ্ৰন্থ ই)। কৰ্ম দ্বৰকানতি (বি মপ্ত)। গ্ৰন্থ কৰকানতি (ক্ৰন্ত ২০)। ছা কৰবানিয়াকৰ (গ্ৰন্থ ২০)। ছাল্ডৰাত ক্ৰন্ত প্ৰিপ্ত কৰিবল, ব্ৰক্ত কৰিছে উ ক্ৰীট্ৰ লাহি কা ছিলকা ছাত্ৰ কৰাত বি

१ ११४) । तक्ताम नि [ब्रे] मनगैर्स्ट, वृत्तित ( पव्) । बक्ताम न [क्तानो] क्यूनन बनाटन

(बरह ११)। एक्सपण्यान [दे] बाँडना निस्तुपीकरख

(वे १ ११२ टी। उदस्त्रणित्र स [वे] चरित्रक, निस्तुतीहरू

(६१ ११२)। क्यान्य केने उपस्था (ति ६ १९६) । १९६)।

क्कारमः केवी उक्कान म क्ष्म + क्ष्म । वक्कारमः वि [उक्काव] १ ज्यानः ह्या कन्मीतन (काव्य १ वर्षे १ ६० वर्षः महा) । २ जूना हुम, क्षमारिक

फलन्तरमिय वसी, नुवाडविजाइये व्यक्ति भगसे। बलायधाना त्रिता श्वमारा त्रेस्ट्रित दुवारे' (तुवा ४ )।

(पुन्त के )। हवनास्त्र ) देनो बज्यस्त्र (हि. १. सूच सम्प्रस्त्रमा है: ४ १२)। बम्मास्त्रिय वि. हि. बस्तिविद्य ] क्यूनिव बम्मास्त्रिय (हि. ११)।

उनर्यासयो हुई। वि] बाली पात-विशेष इत्रयक्षी है (दे १ क) 'जन्यसिया बाली वा वाधुनिविद्यं का आशुष्यस्थ्या' (विश्व १)।

उक्ता थ्री [ऊला] स्वाची मानन-विशेष (बाबा २ १ १)। उक्तावृष् (शी) वि [उस्सावित] उत्पृत

(न्तर १७)। एक्साय वेशी धनस्त्रय (है १ ६७ वा १७३)।

प्रकलाख सक [चत्+कार सारुप्] क्यानग उन्तृतन करणा। येष्ट- उनलख-इचा (रेगा)।

व पर (२००४) जिन्नाम रेची डस्झाम = एव् + चन् । चीस्क-यामि (वर्ष) । संक्र चित्रकाणिमि (मर) (वर्षि) । सर्विश्वाणम् वि हिं] १ सवसीयाँ, शस्त

পুনিত । ৭ আৰম্ভ কুতা ই গৰে ই বিশিক্ষা কে বডে ই আইৰা (ইং ইং ই)। ভবিষকত । দি [কবিছনা] ই উৰ্কাল্পনা। বিশিক্ষাত্ম | হঠবা বছনা (আনা)। ই ক্টৰা কিলা কুলা (ব্যাবা ইং)। ম কবুলিত অংলাতৈ (ব্যাবা হং)। ম বছৰে

(पिग)। ७ न, वेस-विदेश (एक' का ४ ४)। चरण नि [चरक] पाक पाव के बाहर किकाचे हुए प्रोधन को ही धहुए करने का कियमबाना (धाबु) (स्वयु १, १)।

निकाला हुमा (परहा २ १) । ६ च्राल्या

विकारण केवी उस्तित्र = वत् + विष् । विकास वि [बिक्कित] सिक, बीका हुमार 'कस्पोनिकस्तामसरीरे' (तूम १, २ ११,

नप्राः। वनिस्तद्वः सकः [वे] क्वादनाः। त्रसः, हेड

'दिक्सक्षां। वंत्र मामची वृत्ते' (वी ७)। विकास सक [सप + सिप्] स्वापन करणा, 'मुक्स संस्वत्यों वेत भागे स्तिक

विस्तामो' (ध ११५)। विकास सक [वस्+विष्] १ फेंक्सा।

२ कैंचा केंक्या । ३ वहंगा । ४ बहुर वरणा १ वहंगा । ६ वहंगा । धरिकोड (तुक १६) । वह चारति विकित्तवेती न सर्वात वहेंगा नुवेतवर्ष (वह १) । बोह-विकारिकोई प्रविद्यालय (वि १७६१ चाचा २ १, १) । वहा विकारपर्यंत विकार स्माल (वे ६) ११, चक्क्ष १ ४), विकारप्रविद्यालय (वे ११)।

विकेशस्या व [वाह्येपन] १ व्यंक्ता हुर करणाः २ वि हु करमेलाला (कुमा) । धविकालाला श्री [वरुश्वेपना] बहुर करम, हुर करणा (हह १) । विकासिया स्त्रीत विकास (धुर २ १० ) । वक्सुंब पुँ वि १ व्यंक्त, स्त्रात मरस्त । ० वहुइ । १ वह का एक धरेर, मरस्त्र (वे १ १९) । वकस्त्रक स्त्र हुन्द् | ग्रीन्ता हुन्दा करणा।

चक्कुडिक कि [हुडिक] १ वरिक्त विक किव (डुनार के ४ २१ मुना २६२)।२ काम किया हुमा, वर्ष किया हुमा 'एतिस्काला इसिंह, कक्डुडिम

जनुबद्ध (हे ¥ ११६)।

सामित्राहमं नार्च । युद्ध बोर्ग्यं की खहरा पुरतो पुरतो कृद्धिबं हिम्म

(कुत १३)। वस्तुच वि [ वे बरक्च ] नाट हक्क 'पर्यु दुर्फ्युक्तसंग्रेतिक विस्त्रेति (श ४६१)। वस्तुमा स्वर् [ बत् + हुम् ] सुम्ब होता। क्युक्सम्बर् (शक ४३)।

वस्त्रुद्धिकाति [के] बर्विकत प्रेंकाहर्या (वे१ ४)। वस्त्रुक्षिप वक्ष [के] बुक्तामा। संक्र. वस्त्रु-क्षीयेव (साका २ १ ६ २)।

एक्बुहिश नि [एरहास्त्र] छूटा सोप-प्राप्त (वे ७ १६) । वरकेत कुं [एरब्बुय] १ बलाटन स्थानन (पीर) । व्यक्त करना (नवर) । व वो स्टाना वाय वहा 'सम्बंदे हिम्मुबेट स्थानन

कारणियं (संद १७) । वस्त्रीत र्डु [बपद्मप] करोद्दशाय सुनिया (ज्या निया १ २ १ ४) । वस्त्रीयम वि [बरस्मफ] १ क्रमा (वेंगी-

वाका । ए हैं एक बाति वा वंबा स्मानन-विशेष (पश्ह २, १) । यक्तिवण व [तस्म्रेपमा] १ मॅकना (पडव

क्लोक्य न [सस्टेप्प] १ वॅक्ना (पटन १० ४.) । २ बल्यूनन चलाउन (नूम २.१)।

हबलेविश्र-रुगास उक्लेपिअ वि [त्रत्देपित] बताया हुया (भूप) (मणि)। उक्नेबोडिज वि [स्ट्योटिस] १ बिलास सहाया हुमा (पाम)। २ विद्रभ स्वताहा हुमा (दे १ १ १, १११)। उस घरें [उन्+सम्] इतित होना। श्रमद् (नार)। द्या (प्रद) वि [उद्गाद] बविद (पिप)। उगाहिम नि दि उक्तिया पेंना हुया (पद्र)। उगुगपम कीन [एक्टेनपद्मारान् ] जनप चाम ४६ (मुख्य १ ६ ही)। उगुणकामा हमी [एकोनविंशवि] उत्रीय १६ (मुख्य १ ६ दी)। सगुणुक्तर न [एस्प्रेनसप्तिति] उन्हक्तर, <sup>8</sup> है 'उपुणुत्तराई (मुन्द १ ६ दी)। हगुनद्र स्थी [एक्प्रेननपवि] श्वासी द€ (इस्म ६ ६ )। उगुमीइ स्वी [एखेनादीति] उनावी ७१ कस्म ६३)। उसायक [उर्+सम्] बरित होना। भगे (पिंग)। वह समांत देव ! यसक गुक्तनाराजंबुद्धविषट्टलुग्मैतमिष्ठ-(१वि) चन्यु-क्वरिगुर (धर्मा ६)। चुरम् सक [उद् + घाटम् ] कोलना । कगाइ (8 × 44)1 उसावि [इम] १ तेब तीह प्रवन (पतम sa ४)। २ दूं शक्तिय की एक काति

हमा वक [उद्द + घानम् ] कोमता। कगाइ (हूं ४ वर्ष)। उद्या वि [वम] १ ठेव ठीव मावन (पतम वर्ष ४)। १ ठुं सामित्र की मायक-पाय पत्त तिवुक्त की मी (स. व. १)। वह रसी [यमी] जमीति-जान्म-प्रिय क्या-दिवि की मान (व. थ)। "सिरि पुं ["कीक] पत्रम वंद्र का एक पात्र। व्याप्त-स्थाव एक करिया (पत्रम २ १९४)। सेल पुं ["सेन] महुण नगर्य का एक प्रशा व्याप्त-स्थाव एक वर्ष प्रस्त १९४)। सेल पुं ["सेन] महुण नगर्य का एक पुर्वाचिक प्रशा (पाया १ १६ चेता)। उत्ताट कह [जनू + माया] कोमता योज सोमता। संक्ष क्योंडिडण (प्रम्मीर १७)।

सराधि वि [प्रदूरास्य] मायन नुवस्थित

समायाः । सम् [सद् + गम् ] स्थय समाम् | होना । सम्बद्धाः (सी) (नाट) ।

(पत्रह) ।

उत्पमह (बना १९)। स्तममन (काल)। बहु उत्पादत, उत्पममाम (सुपा १०-परस्स १)।

न्तराम पुँ चित्रामा १ वर्ताच चर्तनः मित्रापानो प्रमुद्दे पत्रश्चे एयद्वां (एत)। २ उदमा 'मूक्तां (पुर १ २१)। २ उदावि मं सम्बन्ध रखनेवाला एक विद्यानीय (स्त्रीव १२, १३ मा छ। १)।

उरतमण न [उद्गमन] उरव (खिर ४२० मुरब है)। खरामिय वि [उद्गमित] उपाबित (निष्क २)।

समाय वि [उद्गत] स्टास वात (धाव १)। २ विष्ठ, स्टब्स्आल (मृट १ २४७)। १ व्यवस्थित (स्टब्स्)। समाह स्टब्स् [रवस्] एवना वनामा, निर्माण

करता । करता । संग्यहर (है ४ देश) । स्राता स्था । संग्यहर (है ४ देश) ।

समाह सक [ ज्यू + प्रह् ] प्रहण करना । चरगहर (अय) । सङ्क जम्माहित्स (अप) । उम्माह पूँ [अवमह] इन्द्रिय द्वारा होनवाना सामान्य ज्ञान-विकेय (विमे) : व वक्षारस नित्त्वय (उन्त)। १ प्राप्ति साम (धाष्)। ४ पात्र प्राजन (पंचा १)। ६ शाब्दियों ना एक राज्या (योव ६६६ ६७६)। इ मोनिशार (बृद्ध १) । ७ प्रहुए करन मोग्य नस्तु (पर्या १ १)। द द्यासय, द्याराष स्यान वसति (धाना)- 'बाहापडिका' छरन्छं मोमिनिहत्ता (शामा ११) । १ वड वस्तु, विद्यार माना प्रमुख हो समीन भीव (बृह क)। १ केम मा ग्रुव ने जिल्ली हुरी पर पहले का शास्त्रीय विवास 🕽 उत्तर्गा वयह, मर्याश्चि पू-माम, गुर्बाद नी कारों तरफ की शरीर-प्रमाण क्मीन 'चलुवालह में मित न्याई<sup>2</sup> (पडि) । र्यंत वांत्यान **ि**(सन्द क] जैम साम्बियों का एक पुराज्याक्क वस्त काविया सँगेरः 'खाईतोग्यश्चर्तते' (बहरे)। पह पट्टगर्टन पट्ट की वेखी पूर्वीक अर्थ 'ना कराइ निर्मेवालं ,

उपन्हर्णतमे वा अन्यद्वनदूर्ण वा चारिताए वा

परित्ररिक्तर् का (शृह के)।

समाह पूँ [अनमह] परोसने के सिए उठाया हुया गीवन (युप २ ७६)। समाहण न [अनमहूण] हन्तिम हारा होने नाला सामान्य ज्ञामा 'सन्यार्स जन्महुसं समान्तु' (पित्रे १७१)।

समाहिल हि [रचित ] र निर्मात विश्वेद्ध (हुमा)। जमाहिल हि [लाबगृद्धीन] र सामान्य कप सं काल। र परोधने के निपर उठाया हुमा (दा रो)। व गृहिल। प्रधानीत । र पुत्र में प्रतिम तिर्दिह सम्पिद्ध पर्यापते — में क जिल्लाहरू, में व साहदर्शन पश्चिमार्थित (वच र ८)। सम्माहिल (वच र ८)।

लमाइका व [च] । नपुण-गृशके मण्या करह मिया हुमा (दे ११४) । सम्प्रासक [स्ट्रू+गे] १ क्रीकेस्वर से गान करना । २ वणुन करना । ३ इसामा करना,

'खाबाह बाह हसह, धर्मबुडी सय करेह कंदर्य ।

विद्विषयिक्षेत्र भिष्ट स्थानिक स्थानि

उमाह वि [उत्पाद] १ मी पाइ प्रवत (ठा १व६ दी मुग १४)। २ स्वस्य, वनुस्त्व (इह १)।

धरगामिय वि [उद्गिमित] कार एकमा हुमा केंद्रा किया हुमा (तुब्द १ १४) ।

वस्तार्थ क्षेत्र कस्ता ।
उस्तार ) पू [उद्गार] १ वस्त खीड के
उस्तार ) पू [उद्गार] १ वस्त खीड के
उस्तार ) पितुणा ये छ वहीं हिज्युणा
वर्ष्णुणारे (वस्त्र) । २ रहर, मात्राव
वर्षित्र "विस्वप्रदास्त्रवरणो एक्ट्राप्तिक्र्यः
विक्रमार्थः "वस्त्रीतिक्ष्मारायम्णा
विद्याहोसी" (पर्रश) । ३ वस्त्रार १ वस्त्र
वर्षेत्र यह (तर्राट क्ष्र) । वस्त्रकारास्त्र प्रभावस्त्रवाह्मारोणे ति वक्ष्मारोणे (व ११३। विद्या हो। द वस्त्र का चीटा स्वयद्, ज्यानो [च्चारेनें (त्राय) ।
वस्त्राह पू वस्तु परिकेत कामनी (त्राय)।
वस्त्राह पू वस्तु परिकेत कामनी (त्राय)।

(पन १८)।

कता (वर १) धनमाद कर [ उन् + मह् ] प्रश्ण कतमः 'ध्ययपुरुवादे (उना)। केंद्र उनमादा स्वरूणां धनमाद्वाद (उना)। केंद्र उनमाद्वाद वेशेव सन्तर्भ भागे सहानीने छात्रेच बनाव्यादे (दना)।

्वराह् कर [अव + साह ] जनसङ्ग बराता 'बराव्येदि गाउत्तरिहासो स्थित्या-स्टितार्थी (न १७)। बरायाद कर [ब्दू + हाह्य ] १ स्थासा बराया । २ और से बनता । उत्तराहुद । (शह ४२)।

हमाहण न [उद्माहण] वयना है। हुई चीन नी नीन (दुरा १०)। समग्रहनिआ जी [उद्माहणिया] करा देनो 'चन्नाज्याच्या पानीन नयो छ्या मोरि। सम्प्रहणियाहर्' (पूरा १९२)।

करणाहणी की [उद्गाहणी] उत्रव देखों (इ.६)। समाहा की [उद्गाका] क्ल-न्यिय (नित्र)। समाहिका दि [वें उद्माहित] रे गृहीन निवा हुया। २ वित्तन वें वाहुमा है

त बनाया हुमा (शब न २१६) । जमग्रहिम रि [अवग्राहिम] तनी हुई बन्तु । (१एइ २ ६) ।

उम्मिण्यः । रि ज्युमीकः । रेशन प्रविद् उम्मितः । (स्वि) । रेशन्यः अपूरीर्णे (स्वायः रेशे । रेशन्या हुसा उपर रिकारमा

रिका हुम्मा विकासमानसम्बद्धाः स्थानिक नरस्तिः सिरुद्रको ।

वितेत धही बहुत काम करहा इर परिहाँ (बुर १६-१४०) पित्रम : निर्मेशहीयह

वनवस्तित्तारः हे तुवं वायो । वीपलवारावर्रशारिकः वीवतार्थते (तुःसः १ ) । वीस्तर्भेते । वीकास्तुः इस्ट्रेशः

रह प्रिंगर्श (राम) ।

सरिमारण म [अङ्गरण] १ वास्ति वसन नयः। ५ वस्ति, शवन

'पार्शिस्त्रोति धवमारावेषस्य वै परस्य न करेंचि । सहयुक्तुरिवस्त्रावे साह्र

ध्यक्षिय मंत्रीय" (वर्ष) । एत्याळ तक ब्रिट्स मृत्तु श्रेनला। २ वकार करता। १ वन्त्री करता स्थम करता। ४ क्या । वह व्यक्तितात्रीयास्त्रीय

क्ला। ४ काना। नह 'विभवातुनिस्तेत बक्तु' (शाया १ वः) श्रेष्ट कर्माक्रिया (क्ल) जोगहोत्ता (नव्ह १ )। बन्मिस्तित्र केलो उन्माक्त्रा

कारास्त्रिक्ष कक्को उगाप्प (यार्थ)। करमीय वि [उद्गीत] १ तक स्वर से वाया हुमा (वे ११६३)। २ श संबैठ गीठ वात (वे १ ६४)।

तम्मीवमाण वेशी तम्मा । वस्मीर केमी तमिमर । यह- वार्ण वस्मीर (वी द्वित्तर्थल व्यवकोवार्ल (वुत्त ११ )। वस्मीरिम केमी तमिण्य "कर्वीर्ध्या समे-वर्षि, वस्मीद्वावर्थ्यकरणक्षी (वुत्त१४८)। उम्मीत्र ति [वद्मान] क्रमीर्ट्य व्यवक् (वुस्ता) किन दि [प्रदा] व्यवस्था

विया हुथा (का १ ६१ डी)। उत्पातनिक्रमाओं वि] इत्तर-स्थ ना उत्तरना सर्वेड क (दे १ ११)।

क्रमाय कर दित् + ग्रिप्यु र बीवना । २ प्रवट करमा । १ त्युग्य वरमा । वह दण्यो वा पुरित् वा कुरिन्देव पूर्व मार् १ ग्रिप्युपुत्वे वा नाव तुरित्सनुतर्व वा पानवाणं वार्षात्र क्रमायमाण वन्त्रोतेहे (वस १६ ६)।

डग्गांच्या न्ये [ड्र्य्गोपना] १ शीव योषणाः 'एनल गरेनणा नग्यला

व कनोत्रणा य बीक्सा।
एर्ग य तमागुर नामा
जर्मद्वा (र्गित (१६०६)।
१ रेग्स उसमा कावा कावेश्य काव्या १ वर्ष्युवाणि (नाम ११)।
इम्माविय रि [प्रदुप्तिणि (नाम ११)।
उम्मीवय रि [प्रदुप्तिणि सम्माने व्यक्ति वर्ष्युवाणि सम्माने (वर्ष्युवाणि समाने सम्माने (वर्ष्युवाणि समाने समान

उत्तय देवो र्जय। कन्मर (यह)। वत्यदृष्टि | व्री ह्वी वर्षके विदेश्यक (दे जत्यदृष्टि | )। जत्यद्वि श्र | अहुन भाटप् | बेलना (व्याप्ति श्र = [उद्द + पाट्ट् ] कुनता। व्याप्ति श्र = [उद्द + पाट्ट ] कुनता।

कणकार (शिर्द ४)। उपस्कर (वन १८ ७६)। उपस्क्रिम नि [बद्बाटित] कुमा हुमा (वर्ने १८ ७७)। वस्पहित्र पि कद्माटित] जुमा हुमा। १ प्रिम्न कर्मन्य हुमा (वि ११ १५०)।

धिन क्ष्म लिया हुमा (वि १६ १६०)। करण्या वि चित्रपृष्टी गुद्र-प्रशोगी निक्से चनवार बोह्न कर संन्यास निमा ही गद्र-खाडुः । 'क्षेत्रोच्य नालनको निद्यार्थय पर बनावरपे। व्यक्ष क्ष्मपर्थित रहेणी निक्स धूर्णियलं नहर्में (छावा ११ डी)।

(छावा देशों आयवा । जनकर (हु ४ १६१ हिर राजा) । बग्मसियम[अवपरिन] वर्गेल (राज ६७) । बग्मसियम[अवपरिन] वर्गेल (केर दर्गात थु हिं] र त्रमुक्त जेकत (केर १२६१ न ७० ४६६। सङ्ग्र केर, १४) । २ स्वयुट विराजनकर प्रकेश वि १ ११५) ।

करणास श्रृं किह्मान है । जाएक जाएन कन्नायों सारकें (याद्ये) र प्रोत्तरक क्षेत्रर कन्ना । के सक्करण जाननात (ठा है) प्रकोत्तरक प्रतिका रिवे १४४०) र साम (ता श. १) । के मानदिक्तनियोग । के नियोग नृत्य । एक देव दिक्कों कक प्राथित्यत का वर्णन है 'कावास्त्रण्यार्थ सायोग्या विविद्धते निसीहं मुं (साव है) । करणा। सायगुर (क्या १६ १) ।

उत्पादम रि [उद्यातिम] १ तह छोग। १ न. वह प्रावस्थित (ठा १)। उत्पादम रि [उद्यातिन] १ विकारित (ठा

१) । २ व सङ्ग्रावस्थित (क्षाः ४) । उग्माद्यं रि [उन्चानिन] सङ्ग्रावस्थित वाच (वर १) ।

यामार्यन [प्रदूषाविक्र] सङ्घार्यस्यतः (रन)। उम्भाद एक [ एक् + भाटय् ] १ कोलनाः। | २ प्रकट करना । १ बाहर करना । धन्यान्य (दे ४ ३६)। जनावप् (महा)। संष्ट सम्माहिकण (महा)। इ सम्माहिशस्य (था १६)। करक जग्याबिर्जन (से प्र 12) t

सन्धाद हूं [उद्घाट] प्रस्ट, प्रशास किंदु क्यो बहुर्गाह समाज्ञा निययकम्मार्ग (सिरि **५२**= )।

सम्बाद देशो सम्बाद = उर् + बाद्य । हेर्ड 'तं जिएहरम्स बारं नेएवि मो संस्कृतं चनाइेर्ड (सिरि ३२८)।

सम्बद्ध दि (धदुपाट) १ कुना हुमा धनाच्यादित (पर्वम ३१ १ ७)। २ योहा बन्द विया द्वसी 'उन्बाहकवाण्डन्बाहजुल् (मार ४) । ३ व्यक्त प्रकट । ४ परिपूर्ण, धन्युकः एत्पवर्धान्य सम्माजपारिसीसूयगो बसी पत्ती (सूपा १७)।

सरपाइण न [उद्घाटन] १ कोनना (बाक ४)। २ बाहर करना, बाहर निकासना (ठर पू १६७)।

सम्पाष्टमा सी [उद्घाटना] कपर देवा (मान ४)।

सम्पाडिक वि [इत्पाटित] १ नुना हुया। २ प्रवृद्धित प्रकानित (६२ ३७)।

उरभायज्ञ न [उद्घादन] १ नारा, विनारा (शाचा) । २ पूज्य-स्थान क्लान बल्हा । ३ मरोबर में जाने का मार्थ (ब्याचार ३)।

स्तरार पुं [उद्यार] सिक्त विकास 'विशिवरहिराधार निवृद्धिः वर्धशबद्दे' ( 4 18=) 1

उरियह । वि [प्रद्रमूख] संघ्य, 'नामरमुर प्रमुद्ध ) विरोद्धारमपुरामार्थवर्ष' (समृत ४ 8 € € ):

उन्मुद्ग वि विद्यापा विभिन्न बहुवीपिन (नुर १४: सरा)- 'धमरवष्टुन्बुट्टबयववारवे' (म्या)।

क्रमुद्र वि दि ] बजोध्यतः गुप्तः कृषेकृत विनारित (दे १ ११) 'चरपानिरवेछीनुह यत्तुनग्दुग्पृहुमहिरमा अगुष्मुषा ( मे ११ **१** २) 1

उन्युस सक [ मुज् ] सात करता, भार्जन करणा। सम्बद्धाः (१४१५)। सम्भूस सरू [ सर् + भूप ] रेक्ट रम्भोस ।

संब्रः सम्बुसिअ (गाट) ।

प्राथिक वि सिष्टी मानित साफ दिया

हमा (हमा) । चन्धोस नक [उद+घोषयू] घोषणा करण विद्रीस पित्रामा जाहिर करना। जन्मेश्व (विपा १ १) । वक्त रामोसेमाज (विया १ १) गुन्या १ १)। कम्ह उग्घोतिक्रमाम (विग १२)।

उग्योस पूँ [उद्याप] शीचे क्यो (स्वप २१) ।

प्रयोग्धणा 🛍 [प्रदूषोपमा] क्रुकी प्रियाना विशोरा पिटना कर पाहिए करना (निपा ₹ ₹) i

रुग्योसिय वि [मार्जित] शाद किया हुआ 'काबोनियमुनिम्मलं व बार्यसमंबस्तस' (पर्यह २, ६) ।

उग्भोसिय वि [हर्कोपित] जाहिर क्या हुमा बोपिन (मनि)।

**उभूम वि [मे] पूर्ण, भरपूर (यह )**। र्जाचय वि [उचित] योग्य भावक धनुस्य

(कुमानहा)। ज्यापि किया विशेषी (समध्य टी)। उचान [वि] नामि-सन (देश व६)।

ी विजिया कि, उच्ची ही र क्या उच्चा (दुर्मा)। २ उत्तम उत्कृष्ट (दुर १९४८ सूच १ १)। व्यवस्य वि िष्छ्नन्न सिंद, सोच्छावाधे (पछा १२)। जागरी रेखो नागरी (कप्प)। स म [स्य] र क्रेसार (सम १२३ मी २०)। २ प्रतम्ता (ठा ४ १) । सभयग सम यय पुं ["सम्भूतक] जिसमे समय और

नेतन का दशरार कर समायमध नियत काम नियाण।यनहंशीकर (राज्ञाद्वाप्त १)। चरिया भी [ चरिका ] तिपि-विशेष (सम १५) । स्थमणय म िस्थापनकी सम्बनीताबार बस्तू-विशेष 'धएलुम्स ती धलुगारस्य यीवाए धवमेवारचे तवनवलाधन्ते

होत्या, से बहानामए करमगीना इता पुरिया-

गीवा दरा उवन्यरण्य दर्श (क्यू)। वर्ण्यआ

की [ीवधिका] ठॅवा-मीवा करता वैसे-तैसे रखनाः

'कह तीप तुद ए। एएमं वह सा बासंदियाण महबाएं। काउन्स उच्चवनिमें तृह

दंशणनेह्सा परिमा (मा ६६७)।

बाय 🕯 विवाद निर्माण रसामा (स्त ७२= टी)। फेब्रो उचा।

उदाइन दि [न्दियित] एक्कोइत इस्ट्रा किया ह्या (कास) । उर्व डय दि [दे] केंदा पढ़ामा हुमा (हुम्मीर

उर्दत्य पू [उदन्दरा] सन्त-धेम, ६.६ में

होनेवासा रोव-विरोप (राज) । उर्वपिञा वि दि ] १ दीवै सम्बाधायत (दे

१ ११६) । २ माजन्त दबामा हुमा र्थेश ह्या 'सीस उन्बंधिम' (तंतु)।

ल्बाङ्गिम विदि चिल्या कैंवा देंगा हवा (4 2 2 8) 1

उद्यक्त वि [उद्यक्त] परित त्वक (पाम) । उवचयरत्त न दि । शोगें ठएक का स्थून

भाग । २ श्रामिपमित भ्रमण सम्बद्धान्त्रत विवर्तन (दे १ १६६) । ३ दोनों तरफ से कैंचा-गीचा करम (पाम) ।

उचरम पि चि हर मजहूत (६१ ६७) उवदिश वि वि पूर्णित कुराया हमा (पर्)।

उच्चच्य वि वि । भाष्म कार वैद्याहमा (दे t t ) i

**टयय** सक [डन्:+स्प्रज़] श्वाम देता धोद देना । इ. उधयणित्र (परम ६१

उच्य पूं [प्रचय] १ सपूर परिः 'प्यानी चचये तिमार्नी (नुपा ३४ कम्प) । २ ऊँचा देरकरना(जन गर)। ३ मीनी धीकै कटी-बंब की माड़ी (पाय)। क्यं ड्रॉ [बन्ध] बन्ध-विदेश क्रपरकार रच गर चीओं की बोबना (माद ६)।

न्द्रपार्थ (ब्रायपा) स्पट्टा गरना एक्सा मरगा(दे२ ५६)।

तबर स्कंदिन्+पर् रिपार वाना

धतीर्गे द्रोता । २ चडना बोलगा । ३ धक नुपर्व द्वीता प्राप्त सकता । ४ बाहर निक-सता। उपरा (तुनः ४६) भूमदेवेण व विक्रिया" पानाई पात हिंदू निविधानि-र पाँड वेडियमतागुर्य मागुमेजि । वितिये का राजनार्यन उच्छिम नामाने च मध् बार्गनप्रमापनी निराद्धी संपर्व सा न पोरियम्मादमधीत बितिय मीलबैं (महा) । 'शरिष्ठवर्गनारिव्यप्रसंबच्छित्रुको क्यूर्य्य । परिवाहा विभार्काल बहुद गायस्ट्रियो बाह्री (दा ३४७)। ण्डरण न [प्र**क्रर**ण] स्वनं च्रहारणः 'सिक नगर्भ डीहि वय-उच्चएग्राइ बाक्रग्र (मुपा 120) I उबरिय नि [उबरित] १ जनीयाँ पार-प्रातः टीए इन्तिज्ञंबपुरुवरियाए परिमद्धारा अर्थ क्रीदियसम्मोति कृत्विक्रम गुप्त भावितानं परोप्यो' (महा) । १ उच्चरित वसित जन्म (बिन १ १)। প্রস্তান বিশ্বনী কণ্ডল ক্র্যাইন (पाप) । ত্তৰভিত্ৰ দি [ত্ত্ৰভিত্] দৰ্শিক খল (খৰি)। उद्यक्ति दि ] १ सप्पातित बाल्ड । २ विद्यारित दिल (पर्)। उदह भर [उन्+ चम्] १ वरना यानाः २ गमीः व द्यानाः उचिद्य रि [उपस्तित] र का का ह्या । २ गर्भीर म धामा हुद्याः शिलमाणपूत्रार्णद्वमा**र्यम**्ह्रय पुलगरियोहस्त । कुरराई रेटारंडी बंधे रिंगिया क्षिट्टी है (तुर १ ७४) । उदाय [उदेश्] १ ईशा की केल दुट र्षिगा उंचा र्राटामा मोदनबल्डा । उड गौधों की शार्मी (बड़ा) । १ दलब बेठ (हा र t)। ताच नाय व िंताची ६ उनम भी र भ इन्तेश २ वर्जे क्रिकेट निवर प्रयाप ने और उत्तर बल्ले-बारे कुल में रुपप्र हैपा है (हा २ ४- वाचा)। बय

न विता १ महाबत (बत्त १)।२ वि महावतनारी (उस ११)। इकाम दि हिं] १ मान्त यका हुया (धोन **११**क)। २ व आसिथन परिसम्म (तुपा 11531 स्वाह्य वि दि उपयाजिती क्रपापित ब्रह्ममा इद्याः 'तनाइया नेगरा' (च २ ६)। कवाग पूर्विकाग्] शिमायन पर्वतः। य नि ियो हिमाचन में अलब 'उचावपठारा-सद्भितियाँ (श्राप्त) । उदाङ दि दि दि पून विकास (वे १ चवाइ तक [द] १ चेनना निवाला। २ मक धाउसीस करना स्थिमीर होना (हे १ (電車 左)1 उबाह्य न [उबान्य] १ एक स्वान से हुमरे त्यात्र में क्या से याना दर-स्थान वे घर करना १ र मन्द-विरोध जिमके प्रमाद से वरन धाने स्वान है पहायी वा मनती है 'क बादरायं मध्यमेद्रास्थाद सन्दर्शित्मह करनर्थ र्च (मुपा १६६)। उचाहमी की [उबाटनी] विदानियेव जिमके हारा वस्तु धाले स्वाम से बहाबी भागपठी है (गुर १३ १)। उद्याहिर वि वि वि रे शेष्ट्रनवाता निरास्त क्लामना । २ वहनीन क्लबाना, दिनगीरा कि ब्रहावेंतीय सम क्रितीए कि कू मीमाए। वर्षाव्येए वर्षात दीए अशियं न विस्तिवी (£ 4 121) : प्रयार नर [प्रत्+ कारयू] १ की रना क्ष्वारण **करना** । २ शतोन्त्रप करना वानामा पाना । इक्षारे (स्ताः । वदः प्रदारयेन (य १ ७) । उदारमात्र (रप्प छावा १ १)। इ. उबार्यध्य (उचा) । उदार १ [उदार] १ उपारण । २ रिहा, मनोलान (क्षत्र १ । उसा मुद्रा ६११)। उदार वि दि लिए सम्ब (दे १ ६०)। उदारण न [उदारण] नचन 'दनि हम्म-नेवामान्यारहार् (कीर) र उद्यारिज रि [वे] न्होन बगन(दे ह

ttv) ı

चबारेश वि विक्वारित । क्विय उका २ पाचाना वया श्रमा (राम) । धवास सक [तन्+ वास्त्रम्] १ जैवा कॅक्ना।२ इर करना। ब्रेड 'उबास्प्र निक्रालिय भरूवा भासकाती बतर्ब (बाषा) । तवास्त्रय वि विश्वसर्वयम् दूर करनामा ध्याकरेकाचाः चं जारहेका स्थानहर्य हं वालेजा दुरासदर्व (द्वाचा) । छवासिय दि डिवासिउ बिटावा स्था, क्रेंचा किया हमा उत्वारित 'ववानिवरित रार इरिशासियस्य संस्मृहाएँ (मीम ७४० बसनि ४%)। **बचा**ष यक [बच्यू ] क्रेंबा करना स्टाना। र्वहः सद्यायक्षाः होति पर ज्यापद्याः चन्दको समेव समिति गेएक' (परशा (४) i उदायत वि (इदायम) १ द्वेश और नीचा (यामा १ १) पर्य ३४) । २ उत्तर भीर बच्च (तथ १३) । ३ धनुरस भीर प्रतिरूम (स्प १ १)। ४ स्यम्बस्य सम्ब बस्यित (छाया १ १६)। १ विविध नाना-रिया 'क्यमानवार्डि सेजबार्डि तबस्ती जिल्हा बालर्र (बत ६) १६ बतास्वद, विकेश वत्रव 'वए ए तस्य बालोशस्त बम्याबानमन् क्या गर्णी सीमन्त्रमण्डी रमण्य करवान्त्रीम होच्यानेहि बास्त्रं मनेमालस्न (स्रा धीरते । डक्पादिय नि [उद्यित] क्रेंचा विदा हुमा (बज्जा १६२) र वस्थिष्ट मक [त्रम् +स्था] श्वरा होना। समिद्र (शम)। उचिडिम र्थ (है) सर्वाचा-प्रीत्व, निर्णान 'क्रीचरिन पुत्रसमार्ग (राघ)। उथिम सङ [उन्+िथ] हुन वरेल्ह को वीड़ वर एकविन करता, इतट्टा करता। शक्ति रु‴(दे४ २४१)। या उविधान(वार)। उबिएव न [प्रवयन] धरचवन, वरत्रीकरण (434 mp) र्खाचीयवृति [त्रचित] श्रद्धा विका ह्रमा धर्मच १ (ग्राप) । उचितिर रि [उबत्] दून कीछ की पूर्ण बाचा (इवा) ।

रुविय देशो एजिय 'इस्स सुधोज्यियका चलेल संतीसम्पूपता (सर १९१ टी)। उदिवस्य न [त्] क्तुपित वस मेमा पानी (पाम)। उर्चुच वि [दे] रूप्त गॉबह समिमानी (दे 1 (83 } श्वक्युग वि [मे] सनवन्त्रित ( यह )। प्रस्पृद्ध धक [ इम्+चुद् ] स्वसारण करता हटना। बक्त अबुद्धंत (यडव ७३६)। जन्युत्प शक [ पद् ] बढ़ना कारन होना क्षपर बैठ्या । कन्तुगर (है ४ २४१) । रम्जुरिपअ वि वि चटिव] बार्ड अपर बढ़ाहमा(दे ११)। स्वज्ञारण हि विश्वयः पूरा (यह )। ज्वस्थात अभ न [वे] हुनूहर स सीम शीम जाना (वे १ १२१)। डब्बुह्न वि दि] १ वहिन्त, बिस । २ प्रवि रद ग्रान्ड। ३ भीत करा हमा (वे १ १२७)। धरपृष्ठ र् [तरपृष्ठ] निरात का भीचे कर कता हुमा भूरेगरित बन्त्रांश (चर ४४६) । खबद्द वि हि ] गानाविम बहुविम (राज) । उच्युद्ध र्ष (अवस्त्र) १ लिशान का गीने नदरवा हुमा गुजूमीक बनांग (कर ४४६ र्श)। २ वींबा-निर--पैर उत्तर और मिर नाथ कर-खड़ा किया हुया (निपा १ ६)। उबंक्तो उविधा क्लोइ (हे ४ २४१)। हरू उद्येषं (गा १४६) । उदय वि [ उच्चेतस् ] विन्तनुर ननवाता (पाम)। स्थ्यन्तर न दि । इ.सर मूनि । २ जनत-स्थानीय वैश (वे १ १६६) । उद्याद वि [वि] प्रदेट, ध्यक्त (वे १ ६७)। उबाह पू [ध] शोपछ 'बंशगुबोहवाध बंदो देहस्य बाही (कप् प्राप्त) । उद्योदय पू [उद्यादय] बक्रार्टी का एक देव इत प्रामाय (उत्त १३ १६)। उद्योत रूपि १ लेंद, एउन १ २ मीनो औ के नटी-बाग्र की नाही (दे १ १६१)। उरह पुंजिसनी केर कुछ (है २ १७)। उन्द्रपू [र] १ थांत का बाजरण (११

८१)। २ वि स्पून होनः 'उच्यत्तै नास्पून लाम् (पर्रह्म २ १)। उच्छात्र पुं [उत्तरय] काल जलाव (हे २ २२)। "रुवञ्च व [पूच्छक] प्रशन्तर्का (पा ६ )। उबाह्यम वि डिबाइवित मानसवित 'वा**लेवतन्तर्यवन्त**्यको' (कास) । उच्छेशक वि [उपलङ्क्ष ] १ ग्रह्मना-पीर्व धनरोष-नर्जित बन्दन-गून्य । २ व्यक्त निर्र कुरा (पडड) । एच्छं मस्ति व [डण्ड्याहरित] धवरोव धीत किया ह्या जुना किया हुमा 'उन्ही-खनियवकार्ण सेक्षण विश् परकार्त (गठश)। क्षण्टेन पू [अस्त्रह्म] मध्य मानः मित्रहुन्छन-वरिष्यव्यक्रियेकजीरञ्जाननात्त्रिकोः पमुबद्रकौर (यत्र से १ २)। २ कींड मीर, कीरा (पाष) 'डम्ब्सॅ छिनिसेत्ता' (प्रावम) । १ प्रा देश (थीप) । **ख्यां**गिञ वि [उत्सन्धित] कोच कोसी या बोद में शिवा हुया (जा ६४८ टी)। उच्छारिक वि वि । आने किया हवा, काले । रखाइमा (दे १ १ ७)। एक्खंप देशा उत्थंप (हे १ १६ दी)। उच्छंट पू [क्] महा हे भी हुई भोरी (दे १ ११ पाम)। चन्द्रह् पूर्विचार, लाङ्क (वे १११)। उपस्काम विदि पूर्ण हुई बीज कोरी का माल (दे १ ११५)। "उच्छाण न [प्रच्छन] परत पुरुषा (ना R ) i उन्द्रक्य देखा बब्ध्स (ह १ ११४) । उच्छत न जिपच्छच १ धाने बीप को इक्ष्में का व्यर्व प्रयन्त, पुत्रशासी में कांकरि भीतें। २ मूपानाश सूठ शक्स (पराह्र १ २)। उप्धाम वि [उरमद्म] दिश वार्षित स्ट (प्रमा मुना २०४) । उण्याप सक [ कम् + सर्पय ] उत्तर करना प्रमानित गरेता। जन्दमह (मुता ११०)। बङ्ग उच्छप्पन (नुवा २१६) ( उन्दरपण न [चस्मर्पेण] स्त्रति सम्पूरप (नुसा २७१)।

प्रच्छपणा भी जिस्मर्पणा जार देशा "जिशापबयराग्नि उच्छणाराज कारेड विवि शामी' (मुता २ ६ ६४१)। त्रच्या व्यवस्था विश्वस्था विश्वस्था क्रीवा जाता। २ कृत्या । ३ प्रमुखा फैसना। बङ्क उच्छक्तंत्र (कम्म गराव) । उब्बह्मण व [उच्छसन] उस्त्रना (वे १ ११८ ६ ११४)। उच्छक्तिअ वि [उच्छक्तिन] बद्दमा हुना, उदिश बबा हुमा (गा ११७ ६२४° गडर) । २ प्रचल फिलाहमा 'तातास वर्णयो। छन्द्रसियो द्वासितं निव यमं गासीमन्द्रशान लस्य (मुना ३०३)। उच्छक्तिर वि [ उच्छक्तितृ ] बाननेराना (मर्गीव १४" कुम ३७३)। धच्छा**द्ध** व्यो त**म्बद्धः सम्बद्धः** (वि १२७) 'जण्यानि समुद्रा' (**१** ४ १२६) । তত্ত্বভূ বি [তত্ত্বভূত] ভদ্মননীয়ানা (মৰি)। उच्छक्षमा 🛍 👔 पावर्शना, बाग्रेरणा **र पाडपाड्डा परिष्ट्र समाधिक समारभ**रत स्थल ह पवेलियाँ (पराह १ ६)। उच्छतिअ देखा उच्छतिम (ग्रीब) । ज्यादिया वि 🚰 विसरी व्यव क्यी वर्षे हा वह 'चरणी जन्द्रक्रिया य रंतीह (दे 2 222) 1 सम्बद्ध वेची उच्छात्र (हुमा)। २ शाक (मिन)। एच्छ्विम न [दे] राज्या विश्वीना (दे १ 2 9)1 ख्यम्बद्धः पद्वः [ उस् + सद् ] उत्तम करता । ] वष्ट उच्छह (रम ॥ ३ ६)। उच्छाइ थक जिल्लास के उन्हादित होगा । वष्ट स्टब्स्ट्र (मा) । उच्छ इय वि [ उत्सदित ] प्रत्माइ यूक (मगु) । उष्यादभ वि [अयच्छादिन] बाष्पारित दश हुवा (परम ६१ ४२ मुर ६ ७१)। र लाडिश (पर) दि [अवन्दावित] स्ता ह्या (मचि)। उच्छान देशो उच्छ = ब्लान् (प्रामा) । वन्त्राप र्षु [उच्छाप] क प्र प्राप्त (हा

११७) ३४३, प्रामु १६व)।

२ विकास पापक (दे१ १२४)।

हरिक्क्स देशों सं केन्द्रणग (क्या)।

चिक्सच वि चितिहासी उँका हुया (से ५

उच्छित्त देवो उद्विय (मे १, १३) वज्र )।

1 (5 f F

(ম ম) ৷

६१ पाच)।

(R t (24)

२ धावन्य,

YEX) I

इक्नेवासा (स १२६)।

न्द्रेर, व्यावृत्ति (राज)।

पण् (भूम्मा ३)।

121 XET) 1

१६ दो)।

त्रबद्धाय तत्र [ अव + द्रादय ] यान्छ्यन

करना बदमा । शंक उच्छाइऊम (बहर

वस्त्रापण वि [अक्टहादन] भाग्नासक

परकायण नि [कच्छादन] माराच (श

रुष्यायणया । श्री [छब्यादना] १ रुखेर, रुब्यायणा । विनास (भर १४) । २ व्यव

चन्ध्रार देशो स्तार्≈मा+सम् (हे ४

**चरदास धक [ उत् + शास्त्] बका**लना

তথ্যাল্লম ন (বিষ্ফালন) জ্বাননা জনা-

क्षेत्रा फेंक्ना। वश्च तच्छासित (क्रुम्मा ४):

सक्तित (दूरा १०)। उच्हाम रेबो कसास (मै ६ ) । च ब्याह एक [ उन्+ साहय ] जलाह रिवाना, इसोनित करता । उन्हाहर (नुपा 427) I चनदाइ पू (ज साइ) र ज्यबद (क २ १)। २ इव च्यम स्वर्भमान (तुल २ )। ६ क्टरंडा परमुक्ता (मेर २ )। ४ पराज्या बत । इसमध्ये तकि (शाहरे हेर बन्दाह र् दि] एउ शा डीए (दे १,८२) । उच्छाह्म व [बस्साहन] वरोजन, बोलाहन (का दश्य दी)। उण्ड्याहिय नि [प्रसादित] प्रेणाहित वरीनिव (मिड)। उरिया धर [उन् + विद्] उन्दूषन करता उपास्य । र्रङ्ग उविद्वदिख (सुनः ४४) । प्रचित्रहण न हिं] जनार मेना, करना नेना नूप पर मेना (निष्ठ ६१७)। उन्हिपा रि [अवस्थितस्पर्ध] नोर्धे की बात-पात वर्षे रह थी शहायदा स्तेवाला (पराह ( )) i "र्राम्प्रपाम न [प्रस्केषण] १ क्रार प्रेमचा । रे ग्रहर तिराचना (बहद्द १ १)।

विश्वाप्यत देशो वक्तिहर । सच्छिय वि [उच्छिन] उसत जैवा (राम)। उपद्राप्तित्र वि [उपक्राप्तित] केंग हुया बरिक्रण वि वि ) सम्बद्ध पूरा (वर् )। विचित्रस्थ न [वे] १ किय विनर (रे १ ११)। २ वि यस्त्रीर्श (वह)। धनका केलो इक्स्स् (वाच वा ६४१ पि १७७ योव ७०१/ वे १ ११७)। अंद न विजी के पेरने का सांचा (दे ६ ४१)। जक्लू वृं वि] वज्न बाद्य (वे १ ५)। संबद्धान वि (कस्मुक) उत्परितन (हे २ 34)1 संबद्धान म [है] इस्ते इस्ते की हुई बोनी (ह 2 4X) 1 चन्छ्रकरण न [वि] ईखका खेट (दे १ 2 (u) ! रुष्ट्रजार वि कि विद्या बका हमा वि १ 111) । सम्प्रदेशिय कि कि र वाल की एक से माह्याः २ मारह्यं अक्तिः हुआ। (दे १ 222) 1 **प्रवृत्त देवी प्रवृद्धम** (गुर = ११)। ")भूय वि ["ीमूव] वो क्लिएडन ह्रुया हो (नुर 3. < ( c) 1 प्रबद्धारक्ष वि दि इस ध्यमनारी (वे १ £ (33 उच्युष्य वि [प्रमुख्य] १ वरिष्ठ, तीवा

(धीब २२ मा)। च च्छत्त्त वि दि ] १ विकास पॅशा ह्या। कई ग्री। श्रीकृत वि जिल्लिको श्रीवा ह्या विक 2 )1 हक्कूरण म 💽 १ स्थ का हेत । २ 🗱 क्या (दे १ ११७) । क्ष्यक्षान्त्र पुंदि र सनुवाद । २ वेद, क्येप (R t tat) : **चयकुर वि [द] शावक करार वैक्र हुया** (पद् ) । बरम्बर वि [बविहम] १ ल्ला, विशस्त (खाना १ १ वर)। २ मुपित प्रचन ह्या (राज) 1 दे निम्कातित नाहर निकास इया (धीप) । क्षण्यक्क वि किरस्थान किया है को। विकास चंदैरवरा चलो बीबो सरीरमलं वि' (दव पि 44)। वरकुर केने वस्तुर ⊭ तुइ(हे ४ ११६८)। बरमुख देशो समृद्ध (४५)। क्कोम इं [इच्छेर] १ माध, क्यूनन प्लाक्नीमहि मुहुम्हिश्यण्याम्हर्त (सम्म १८)। १ व्यवस्त्रीत व्यक्ति 'प्रस्थीयो वुत्तत्वार्यं वरम्बेर्रात वृत्तं भगति (शिष्ट् १)। बच्छे दण ५ [उच्छे दश] विश्रय, स्मूलन वितेष एव बनायो एकस्यू कोक्ट सक्त (बुवा १६१) । त्रत्रकेर सक [क्रम्+मि] १ ईवा **ह**ला कन्नत होना । १ प्रक्रिक होना, मसिरिक हेना। **यह उच्छ**र्रत (भाग्न १६४) । त्रक्षेत्र पू [करद्य] १ ईवा नश्ता क्यानाः २ कॅक्ना (स्व २ ४)। हुमा, 'बन्द्रुम्से महिम च निव्धिमर्म (पाय)। बच्छेब पूं [बत्दंप] प्रश्नंप (भर ४) ।

'खरावि वयुक्तरा त्तरिक्षद्व वि [त्रविद्यप्त] बुझ जिल्हा (बुपा विषयेश्वि परिश्रिया प्रक्रिक्ट नि (चिक्किप्ट) प्रक्रिट, ससम्म (बस দ্ববিদ্যালয় বি [রাইক্সারা রাইক্সা কর্ণানর

प्रबंगमेहि मिल्ला ध्रेनुच्यता (B 2 3)1 सन्दर्भ कि हि । विशिष्ठ । " पठिष इच्छूभ इंड [धप+दिप्] बाझेर काणा वाली देला । सन्ध्रमह (सप ११)।

चच्चुध्यय न [स्टब्रेपय] उँचा फॅक्ना (पर क्षक्टूर वि [वे] प्रवित्तरवर, स्वत्यी (वे १

बीसलं मादरत वि ब्राग्रानिया ।

प्रभ्रामार न [प्रभागर] बादणा निवा का | प्रभक्त कि [ हे ] रेगा प्रभन्त (है र जन्महरूमा न [जासेपग] कार देशो (स ६ torf) 1 34)1 श्रमात (रे १ ११७ वज्या ०४)। चरद्रपण न [दे] एत यौ (६१ ११६)। रज्ञलय नि [उज्यखन] परवास देशाय उज्रागुद्ध नि दि] स्वष्ठ, निर्मन (९१ उन्द्राप्त वृ [क्रमेघ] इनाई (वे १ १६ )। मान जानुस्वतस्मार्यवर्षः कृषाः पर्यक्षे उन्होहिय वि [उन्छोटित] सुराय हथा, उक्ष वि दि उमार वर्गान-प्रीत (दे यन्वेत्रवंतमं मिहि (क्या) । मुन्द्र क्या हुवा' 'सम्योहिम-क्यो सो रना उद्यक्षित्र हूं [उत्तरसित्त] होष्टरी नरब-भूषि 1 84); अगिया य शह [ स्त्रविमम् (भूर १ १ १)। 'जीक्ट्एएयमधेएयत वा शता मरनेन्द्रक-नाव-स्थान विशेष 'पामहिबगुरिमा वमाणपुण्योदिया च मै सत्र व्यरपुर्वितपृथि रशिशमा (thr c) : बंगां (मुर २ ३१)। भेजनबहरू विषया प्रमाची इद्यक्तिओं वि [उग्रविति] १ "हीत मेरा ता रूप्यभीयो (गढर)। उद्योभित [उन्छोम] १ शोगा-रश्यि। शित (पान ११८ वट मान) । २ कॅवी चळाणिझ वि दि} क्र देशा (व १ १११) । २ व रियुष्ता चुगरी (स्त्र) । ण्यातावी ने मुक्त (जीर १)। ६ न प्रहारन उद्धम घरु उद्ग+यम् विषय वरना प्रश्चातः मह [प्रम् + सृष्टय् ] उत्पूनन (चन) । प्रयम्भ धरमा । उत्रथमण (यग्म १४)। बरना उपाइना : बा उदशेखेन (सब) । डब्बस्ड रि [४] सेर-मॉरन पद्मीनागसा भग्नमह (३२) । बहु उद्यवस्य, उद्यवस् **इन्हा**ल सर [३९+क्षास्य्] प्रधानन मनिक 'बुंडा ब'हूरि गटटैगा उपप्रस्ता माण (पएइ १ ६): 'ए' बरेद दुश्नगीमां बरना योगा। यह हरुझालंद (निष्कृ १०)। भगनाहियां (मूच १ ६) । २ वतरान बञ्जनमालाधि सँजनन्देन् (सूच १ ११)। प्रया वर उन्ह्यास्ययेन (निष्कृ १६)। बिन्ह (हे २ १७४)। र उज्रमिअस्य उज्जमयस्य (नुर १४ पुरुष्टाप्टणात (प्रशासकी प्रमुद्ध कर ने डक्सस्ड न [अीरायरूप] "रस्पता (गा दश मुता २८७३ २२४)। 🗺 उन्नामित्र प्रशासक, 'उन्होतिएं व बार्ट व से निज्ये १२६) । धीरवारिया (शुभ १ ६ धीर) । रक्षस्य भी दि] बताखाद, प्रबरशकी ब्राज्यम पू [बराम] सरीय, प्रपण (स्वः) उन्छाद्धना ही [उत्हादना] प्रतान 1 (43 3 8) षी १ ३ प्रापु १११) । (''' ¥ \b') i उञ्जय सरु [ उद् + यम् ] प्रयम वरना । उज्जभम (भार) व [उद्यापन] उद्यान वन ज्यद्वासा धी [7] प्रमुद दव 'नारदेवरगरी पर भुद्धि उद्ययमार्ग पंचर करीत समाति-भार्य (भूति) । म बम्" एक्ट्रान्मीयहा घटमा (धर) । रित्तर्व समग्रं (उद)। रज्ञमि रि [ ग्यामिम ] वर्णणी (पुत्र ४९६)। चरञ्चांत्रम वि चित्रग्रास्ट्रीय है वेस्त्रामा उञ्जवम बेगा उज्जाबन (स्टिं)। उज्जितिय (बार) पि (प्रशापन) समारिक शिक्षात कानेश<sup>भ</sup>ा (सूमे २२१)। उज्जद यह [उद्ग+दा] प्ररता करना । (यन) (धरिः)। उनु देशो जानु (माना कथ)। प्रज्ञाद्यक [प्रमु+क्षाम] बोर ग मेर उद्धरना(उन २० ७)। उन्नम देगो उ।तुम (नार)। र्यसर्ग लेका । उपक्रम्यः (प्राप्त ६४) । बजाभर ) र्यु [बजागर] नागरण निवा बजागर | ना यमाव (गा ४०२ परमा ७६)। ज्ञादमा प्राय = बावम् (रण) । दक्षव ि [त्रमन] उपाधि त्र**पुन** प्रयम इद्राप्त (उर्द्धी देवे ब्रह्मा २ वर रीन (पास पाप १६६ सा ४४६)। उमाडिम रि दि] "ना" रिमा ह्या (4 or) 1 इज्रमना । भी [उज्याना व्यति] मरण न ["मर"] मरणु-रिस्टेन (धाना) । (मरि) श क्यारणी है नगरी-विदेश मानव देश की उद्मर्थत 🛊 [उद्भयम्य] गिरनार बन्नड 🗝 उद्यास १ (प्रयान) उपान बगैषा सरस्त प्राचीन चत्रपाया भागरत सी यह 'बर्टरेर्ड बन्तर्वत्रका प्रशिवा को कोट्र विश्वतनी (बाग कुमा) । असा की विवासी नेही भागन प्रतिज्ञ है (भार के कि केटक) त (ती रिते १०) 'ता "प्रवर्धतननवर्गः दर (एवा १ १)। पानम् शास्त्र श प्रार्थित न [न] बताचार, वहरणती । [पायद, पास] बरोबा का गांव मानी निष्यु समुदि जिल्लि (मुल्लि १ १७१) र हि दीचें तस्या (देश १९६) । (मुख ६ सः १ ४) । प्रमारिक दिहे । मध्यम्य क्रेक्स वा । र वृ विशेषा धव (तेष्ट्र प्रश्) र उद्मगरम ५ (उद्मागरक) १ वणसा उज्जानिक रि [जीयानिक] एकतन्त्रेक प्रमाय कर [प्रदू + स्वत्] । अन्या। रिक्रा हुए सम्बद्ध वरीचा वा (मग्र 🚼 🟌) 🛊 र प्रशास्त्र होना चमकताः जानि 'बाद व उपयापकी बद्धारियम रि [दे] निष्टेत्त्र देवा रिदा (धिक ११४)। बहु उल्लाबंद (एर्टि)। क्षात्र न देना शिवूर्रण महार् । ह्व (दे १ ११३)। गाम्बरपुर्व अव उद्यक्त रिजियाको है लिगेन संस्त उद्यानिया (कै [भीगानिया] केंद्र र्श्य नेहा एति गाँचा उप्राचिता है है पर बन करे

(भर ७ = दूना) । २ दीत नवरीता

⊤ (ब≕र द्विमा)।

प्राथानिक बन्दर (लिइ ४ व १४१) ।

(बण्या ६८) ।

एकाणी स्त्री [औरवारी] बेखी बोड (सुमा ४०३) । रुजायण न डिचायन । यौत-विशेष (मुज्य १ हो)। चटबास धक [ छत् + अवास्त्रम् ] प्रकासन करना विशेष निर्मेण करना। संस् प्रक्रमा-सियं (यावक ६७६)। स्क्रास्त्र एक स्थित् + स्वास्त्य विश्व वनामा करना। २ बसानाः चंत्र उच्चालिय स्वास्त्रिता (रस १३ वाना) । एड्यालय न चित्रभ्यास्त्री बनाना (स्व १)। रुआक्षम र रिकामाञ्जा परन्ता करना (सिरि ६६ )। रकाछम वि (राज्यासक) मान गुनको बाबा (सूध १ ७ १)। राज्ञास्त्रिम् वि [सर्व्यासिय] क्लामा इसा सुसवामा ह्या (सुर १ ११७)। क्षमान्य न विद्यापनी बद ना समान्ति-कार्यं (प्राक्त) । चम्बाविय वि [बे] क्लिसिट (स्ट)। चन्कित देशो एकमस्य (छाना १ १६)ः 'जीन्मेवरेलसिंहरे, क्लिका नार्यं निर्धाक्ति कस्य । र्ध वस्मयक्त्रवर्दिः, म्मिट्टनेमि नर्ममामि (पत्रि)। एरजीरिक दि [द] निर्मीखेत, धपमानित विसम्बन्ध (दे १ ११२) । ভাষীৰ্ম ব [ভাষীবন] १ পুন্নীৰণ मिलामा 'तस्तपञ्चलो वसो कुमस्तमुग्जीकरो माची (मुपा १ ४)। २ ज्योपन (४७)। चनकी बिथ वि विश्वकी बिन् विश्वनी विश्व विवास हमा (सुना २७)। कातु मि [ऋडू] सर्ग मिथन्यर, सीमा (भीव पाषा)। इन्ह्र वि विक्रो १ निरम्पट वक्सी (सामान्त्रत् )। कह वि [ इत्यू ] मान्ध-दक्षित शावरणवाला (माना)। बढ़ बहुवि [काबृ] तरन किन्तु मुखै उत्तर्यको नहीं समक्तिका (पंचा १६, क्य १६)। सह की [मिति] रे मन पर्वेत आन ना एक ग्रेंग, बानान्य

को जानना। २ वि एक मनो शाननाता (पर्याहर १३ धीन)। "वास्त्रिया वर्षे "बासिका नधै-विशेष विश्वके किनारे कावान् महाबीर की केवल-जात उत्पन्त हुआ क्ष (कप्पास ४३२) । सत्तर्थ स्मित्र] वर्तमान वस्तु की ही भाननेवाला नय-विशेष (का ७)। सय पृष्टिमती देखी पूर्वीक मर्थः 'पण्युपासपात्री उन्पूर्यम्मो सामविही कुलेक्को' (बसु)। इस्म पुं ["इस्त] बाहिना हान (धीव १११) । चरतु दे चित्र ने चंदम (सूच १ १६ ७) । चन्नाम वि [अर्थाक] कार वेची (धावा नुमा । या १४३३ ३४२) । चरमुआक्षा कि जिल्लाकारित । चरत किया इमा (से १का२)। करज़ग वेको करजुम (१०३७)। धरकुत्त वि विभूक्त विवयी प्रयास्तरील (बर ४ १६) पाम )। बज्जुरिक्स कि यिं] र बीख नट । २ जुम्क सुच्या (के १ ११६) । सकत्रह नि [बद्दाव्यह निच्छ किया इसा (धेवीय १६)। बक्जागा व विकासनकी भारक-विशेष হৰ তথ্যয়ত্ব কা বাদ (**মাৰ** ৮)। सम्बंधी देशो सम्बद्धि (नद्द्राः एक ६६६) : ख्ळोम एक [चयु+धोत्य] प्रकार करमा, वद्योत अस्मा । बन्धीयद (अद्यो)। यक्क बळावंत बळोडंत बळावराण बळो पमाण (छाना 🕇 🐮 पुपा ४ मध्य सुरा २४२ मीम १)। हक्को अपू [उद्योग] प्रमल प्रवम (प्रवस क १२६ शक्त मेर पुष्पान २१)। द्यमोध्य 4 जिल्लाची १ प्रकाश प्रकेशा। रार वि ["कर] प्रकाशक 'सीवस्स उच्चो-क्यरे, जम्मतिन्त्यरे किलें (पीड पाया है १ १७७) । २ उदयोश का कारत-मृत कर्न-विरोध (सम ६ वस्म १)। त्व व [पंका] रास्त्र-विरोध (पञ्च१२, १२ )। बजोजग नि जिंदुयोत की प्रकारक 'सन्त जबुरक्तोक्स्सं (छोर) । डजोअण न (उष्योतन) १ प्रकारन पव मनीजान सामान्य रैंदि हे बूसरी के मनीआव मासन । २ मि प्रकार करनेवाचा (उप

७२ व टी) । ६ प सूर्य स्वि। ४ एक प्रस्कित वैनापार्थ (द ७ सामें ६२)। उञ्जोञय वि [बदुयोदक] १ प्रतस्परा ९ प्रवासक बसरि करनेताला (वर = १९)। रुक्रोइंट रेबो रुक्रोअ ≈ २५ + घोठ≠। ত্ৰেট্ৰ দি [বহুখীবিত] মন্দটিল (গদ रश्चानपा २ १)। बज्रोपमाण रेको उज्जोध = ज् + घोठम्। बक्योमिका स्त्री हि] चील पत्सी (दे ! 1 (253 उद्योव देवो उद्योज = उद् + दोतव् । वर उज्जोबन बस्रोपर्यंत, प्रसादेंत उज्जान बेमाण (पत्रम २१ १६/६ २ ४ ६३१ हाद)। बळ्योवण व विद्यास्तिन । प्रशस्त्र (ध 444) 1 क्जोविय केवी कजोइय (कम्पः शामा १ श परवा १ भा पदम 24 8 48) 1 चम्ब्र चर्च [ डरम्<sub>त</sub> ] ध्याय करना क्षेत्र केश । उपमाद (महा) । कम्कू वहिम्हकामाण (क्य २११ टी)। संद्र बहिमाल बिमार्ज विश्वकाण (ग्रीन ६ ३ पि १७६ राज) । क्षेत्र- दविमृत्यप् (समा १ ८) । इ प्रमिष्ट युक्त (हर १९७ दी) । चक्रक पूँ चित्रक, उक्रभी अपक्रमाय पाठक (विश्वे ६१६८)। बरमञ्जा हे वि चित्रमञ्जा आय करनेवलान **ब**बस्या 🕽 क्षेत्रनेवला (सूच १ १, ७५१७६ तकस्थान (तकस्था) परिस्थान (तप १७८) प्रभागज्य १ व सीप)। चवस्त्रमयाः ) स्वी चित्रमना । परिवानः (वर नक्स्प्रा र ११६ धाव ४)। त्रक्राज्ञिक वि [वे] विक्रीत वेका श्रुवा । २ लिमीहरा, नीचा दिवा हवा ( वव )। जबस्थान विविधासन अध्या (दे १ 1 (# 3 चत्रमध्याण वि दि] पनामित भ्यवाहुमा (यह) र सम्बद्ध [निर्मर] पर्वत है विलेशका नग प्रक**्** प्रदाद का करना (द्याना रै यउकाया६३६)। वण्यीलनी [पर्या] তৰক-দাত্ৰ ঋৰ-মদাত্ৰ (শিশ্ব ই)।

चत्रमहिश्र वि चि देशी नवर से देशा ह्या। २ विशिष्ठ । व जिस प्रेंग्स हुमा । ४ परि ध्यक, उरिम्ह्य (दे १ १११)। सामा वि वि प्रवस विता (पर्)। उप्रमित्रिम विदि १ प्रतिस पॅकाइया। २ विभिन्न (पद्र)। च्छम्स पुं वि] प्रचम सचीगः, प्रमन्न (वे \$ EX) ! चामनिज वि [दे] धक्ट, वत्तम (पर्)। <sup>4</sup>उत्तम्म दला अस्तमम्म (सम्प्र ३७४) । उत्तमध्य ५ [ उपाच्याय ] विद्यान्याता द्वर रिहार पान्क (महासुर १ ६८)। रामासि वि [उद्गासिम्] चमक्नेवानाः, देशीयमान 'इंड्स्एन्स्यसिङ्'वा (रेमा) । उतिमहिन्दास म दि ] १ वयतीय सोकारवात । २ पि जिल्लीय । ३ कवतीय (३ ३ ३३) । उतिमहत्य वि [उतिमहत] १ परित्यक, विश्वक (दूमा)। २ फिन (भाव ४)। ३ व परिध्यास (बल्)। य पू [क] एक शानैनाह ना पुत्र (विया १२)। उतिसम्ब वि दि । शुरू सूना श्रूमा । २ पिलीइत नीचा किया हुमा (यह)। इतिस्या स्थी [उविसता] एक सार्ववाह पत्नी (ए।मा १ ७)। उट्ट पूंडी [उट्ट] कॅट, करम (दिया १ ६ हेर १४ उत्रा)।स्त्री उद्दी (यत्र)। उद्दार पू [अपदार] मार, तीर्व बसाराय का वर, सीमावीर विश्व समज्जनाय कुमारमयाँ

'बाइ 🛭 तुरदङ्कारे बहुमहमयरे मुमल्बनमत्त्रम् । (पत्रम ६॥, १)। उद्गिता देनो उद्गिया (वर्मर्स ७०)।

उद्विय ) वि [जीष्ट्रिक] केंट सम्बन्धी । केंट उद्वियय ) के रोगों का बना हुमा (ठा ४, ६ सोध ७ १) । १ पु सूच नीकर (कुमा) । ४ पदा पर (उदा)। उद्विया की [उष्टिका] पढ़ा बद, बुरूब (विपा १६ उना)। समय पूं [अमज] धानी रिक-मत का बाबु, भी की घड़े में बैठ कर

उद्ग यह [दन् + स्था] स्टमा, खहा होना ।

त्तास्या करता है (बीप)।

पाइअसङ्ग्रहण्ज्यो उद्गद्द (हे ४१७ मक्त) । उट्टेंद (पि ११) । **बह्न अहुंत (गा १८२ मुपा २११) उद्विं**त (बुर ८ ४३ १३ १३)। सी: उट्टाय उद्गित उद्विता उद्गेता (यत वाना पि १८२)। हेर प्रदेश (उप प्र २१८)। सह वि रिस्प विरियत बढा हमा (मीव ७ उबा)। बद्धमधप [ै]पनरा] उठ-बैठ (हे४ ४२३)। **छट्ट पूं [ओ** हु] थोठ सवर (सव १२१८ सुपा प्र२६)। उट्ट र् [इप्टू] वसकर बंतु-विरोप (मूच १ 0 22)1 उट्टप रेको उद्घाए (वर्गीव १३ )। उट्टेंस स्ट्रिय + स्त्रम् ] १ यालम्बन देना सहाय रेना । २ बाब्यल करना क्म बहुम्बद (हे ४ १९१) । सेट 'उट्ट मिया एगमा कार्य (बाका १ १ ६ ११) । उद्भवण म [रस्योपन] क्रयापन अना करना उठाना (योष २१४ दे १ ८२)। प्रदूषिय वि [इ'वापिन] जलाटित उठाया हुमा बड़ा किया हुमा 'सा सरिएय' उद्गविया मराइ किमागमगुकारग्री भूगाहे' (मूर ६, 24 ) i उट्टा बेलो उट्ट = रूप् + स्वा (प्राया) । उद्घा की [न्स्था] उत्पान, काल 'उद्घाए बद्रेष (काया १ १ बीप) । उट्टाइ वि [उरबाइन्] उठनेवाना (धाना)। उट्टाइज नि [उल्पित] १ वो तैमार ह्या हो प्रपुरा (पत्रम १२, १६)। २ उप्पन्न उप्पन्त (म १७१)। उहाइम देनो उहाविम (वरा) । उद्घाम न विस्थान दिशाम केना होना (उथ) 'मधमनितेष्ठि वहानु स बौक्सिका पर्कारणे महिराज्हार्स (से १६ ६७)। २ चक्रम जन्पति (गाया ११४) । १ मारम्म प्रारम्भ (मन ११) । ४ उप्रमुन, बाहर निक मना (एवि)। सुय न ["सुत] शाम-विशेष (एरि) । उद्भाव देशो उद्ग = उन् + स्था ।

उद्वारेष्ठ (बहा) ।

उट्टाबण वेस्रो उट्टयण (कस) । उद्घावण ब्लो उपद्भावण 'पन्त्रावणविश्विद्धा वर्गं च बाबाविहि निरमदेसँ (उन)। चहाबणा देवो उघट्टावणा (मत्त २१)। उट्टाविञ वि [उत्थापित] १ छ्ठामा हुमा नहा किया हुमा (नार) । २ जनावितः 'तुमए उद्गाविधा क्को एम' (उप ६४% टी)। चट्टि<del>ड</del> উদ্ভিব }-देखो उहु≃ उत्+स्वा। बद्रिचा उद्गिनु उद्देय कि [उदियत] उत्पत **अहा हुना** (मुर ३ ११)। २ उत्पन्न उदमुख (पर्ह १ ३) 'विश्वीतिया कावि उद्विया एसा' (मुगा १४१)। १ उदित उदय-प्राटा 'बहुयम्म मूरे (म्रहु)। उच्चत उच्चक (म्रामा)। **४ उडमित बाहर नित्रमा ह्या (ग्रोम ६४** उट्टिर वि जित्यातृ क्लीवाना (सर्ग)। चट्टिसिय नि [उद्भृषित] पुनन्ति रोमा चित्र (भीषः हुमा)। उट्टीभ (घर) देखो उद्विय (पन)। ब्द्दुम ) सक [अय+ शीव्] पूक्ता। "स्टुइ । चट्टुमेनि चटटुमाइ (चि १३ ) उद्दुल्ह (मग १४)। संक उद्दुल्इसा (मग १६)। उठिम (मा) देवो उट्टिय (पिग—पत्र Rat) i ेंडर पून [कुर<sup>2</sup>] पट, नुस्म 'पविषक्तामरुणुर्वे साथस्य उद्ये धर्णग्यम्बर्धे । पुरित्रसम्बद्धियमपीय कीश मर्गुडी करो बहान (बा२६) ैडह पूं [कृत] समूह, चरिछ 'सच्या पहा र्धेष्टवर्ड भत्तारं जो बिज्निमई' (सम ११) । उड देनो पुड (उना महा गढर ना ६६ मुर २ १३। प्रामु ३१)। उद्देख पूँ [उटकू] एक ऋषि वारम-विशेष (निष्टू १२) । चर्डप वि [व्] नित निताहमा (वर )। उडड र्रं [उटड] ऋषि-धापम पर्न उडच र रामा पत्ती है बनाहुसा पर (समि बहुाय नग [उन्+स्यापय] बटाना। उडव | १११३ जीव बर समि १० स

र 🕽 चर्चा तावतपेई (पाप)

1 (## 5

भागई विदाय राम्रो य, हुलायि महस्यायि । हैरा ये स्वस्मी बहुदी नार्थ सरस्यो सर्व (लिहा १)।

तकादिक्षः वि [वे] स्थितः योजा हुसा (यव्)। एकिम वि [वे] स्थितः योजा हुसा(वव्)।

बाहित हुँ [क्] जीवर, सरह.माथ बालय-विधेष (दे १ ६८) । इबु हुँ [वडु] एक केर-विदास (केरेस १६१) । ज्यास हुन [बस] जुनु सामक विशास के

पूर्व तरक स्वित्त एक देश-स्थान (देशक ११)। सम्बद्ध प्रेन [सम्य] क्रिक्टमान के इसिन्त तरक का एक प्रेन पितान (स्वेक्स ११०)। योषण प्रेन [स्वायदे] व्यक्तिमान के प्रीयन तरक का एक देश-सिमान (स्वेक्स ११)। सिंह पुर्न [स्वाय] व्यक्तिमान के च्या तरक का एक देश सिमान (वेश्स

बहुत [ एकु ] १ त्याम (गाय)। २ विशास विशेष (चग ९६)। प म थु [ प] १ क्या करामा (बीम पुर १६ ९२४)। २ क्याम जीमा (वे १ १९४)। ३ एक की चेक्सा (पुर १६ ९४४)। बहुत [ पायि] मुख्य (चग ६ पण्डा १ ४)। बहुत्री

्षिर] दुध (चब)। चडु चेवो चड (ठा २ ४३ बोच १२६ छ)। चड वरिजिया की [चडुम्बरीया] केन धुनियो की एक रास्ता (क्या)।

क्युडिम न [वे] १ निर्माहिता आदे को कोन । म वि उच्छिद्ध बुद्ध (वे१ १६७) ।

चक्रास ) पून (उद्दूराख) उन्हाबन क्यूबन चक्रुएस ) (रिज १९१ माइ ४)। उद्दू पू (बद्धू ) १ देश-पिरोज क्यूबन ब्रोड, पोडु गामी हे प्रस्ति देश किन्नो सावस्त

क्सेका नहते हैं (स २०६) । १ इस केश ना निनाती कड़िया; 'तगनकश-नम्बर-गाम हुने सेप्ट्र-बाम---- (पद्यह है है) । तह नि [के] दुधा सारित नो कोसोताना

क्यूनर (देर्र्ड)। सङ्गण १ क्षिती स्थल सङ्गा २ कि सीमी

श्रृण 1ु[में] रेमेंस चड़ा २ कि वी सम्बा(देर १२६)। ज्यूस केको आर्थ्स (उन्त १६ ११०)। ज्यूस दृष्टि विज्यान कटकीय जीवस (वै ११६)।

चक्क्षरण पुँ[व] चोर, बाक्य (देश ११)। छक्क्षाओं पुँ[वे] इन्द्रश चन्नाय खद्भाग (देश ११)।

जक्काण म [जक्कयन] जमान, कमाना 'भीरोनि साहर विस्पाद, होत तस्कास्य स्क्रासी' (पुर व १२)। जक्करव पुंचि] १ प्रतिकास, प्रतिकासीश । २ कुटर पश्चितिकारेग ३ विस्ता पुरीय । ४

सनोरक व्यक्तिशव । १ वि गनितः, व्यक्तिगानी (दे १ १२८)। सङ्गासर कि [सङ्गासर] सद्धद, प्रकल (कुप

१४६)। व्यक्तमर वि [व्यक्तमर] १ सव भीवि। १ भाषम्बरमाना दीवदारमाना (गस)। व्यक्तमरिक्ष वि [व्यक्तमरिक] मस-मीर विस्त

हमा (क्यू)। छहुत्व थक [कद्+कायप्] अनुसार अनुसर (कवि)। नष्ठ छहुत्वैत (है ४ १९२)।

चड्डाव वि [चड्डायब] उद्गलेगामा (शिव ४०१)। चड्डावण न [चड्डायन] १ व्हाना मत्त्रपद-नाममुद्रावचेख वमच्ड्रचर्य विभिन्न (कुमा)। २ मावर्षसा "द्विवगृत्वर्य" (रामा ११४)।

उन्नाविका वि [क्न्नायित] उन्नाता हुका (पा ११ चित्र)। क्नुविर वि [क्नुविर] अनुलेवाला (वका

रक्ष)। जहास दुं[वे] संताप परिताप (र १६६)। जहाद दुं[चडाह] १ भमकूर बाह, बसा का (च्य २ ॥)। २ मासिन्य फिट्टा छद-

कड़िश्र कि [कीड़] परीक्षा केत ना निवासी ' (नाट)। त्रिश्चिक कि [के] बिस्तान फोकाहुसा (यर्)।

मल (ग्रीम २२१)।

उड्डिजीत देवो सङ्घो ⇔क्त्+सी। विद्विज्ञाहरण न [वे] सूधि पर रतवे हुए फूल नो पदि की को सैनिक्सों से जैने क्रम कल

पाहुआहरण न [व] पूरा पर रेखें हुए कुत नो पांच को वो जैस्तियों है सेने हुए कह बाता: 'क्रुरिसन्त्रुक्कृत्रकृत बेतुस पार्यक्रतीहि क्याक्टां। है सहिद्रास्टाई' र्ष्ट्रस्य वर्षात्रीय वृत्तिस्याक्षास्त्रीत वंगूतः। यावाङ्गुलियगेञ्चति विश्वायस्पर्द्यास्त्रस्य (व.१.१२१)। वर्ष्ट्रिय विज्ञित्रीच्यास्त्रास्य चंद्रस्यस्य

पण्डिकुम्ब परे (बर्मीव १६२)। बह्विदिख हैं [बे] ऊपर छेका हुमा (माम)। बह्वी मक [बह् +की] छड़ना। बहुँद, व्हिटि (पि ४४४)। नह छहुँद्वस्य बहुत (है ६ ६४ जब १ ११ टी)। छंड, छहुँकस्म, बहुनित (पे १०६ मार्च)।

ज्ञान (१ राज्य आप) बहुत की [बीह्य] जिल्लेनियेव चलन केर की मिति (मिसे ४९४ टे.। बहुत्य वि [बहुति] बहा हुमा (लावा १ १ पाछ बुता ४२४)। बहुक्कल पूं[प] ककार, ब्ल्लाट बंबारएस्ट

वर्क्ष्यं वासिकानेष्ठं (विशे) वर्क्षक्ष्यः १९ [व] वेशो ववृद्ध्यः (वेश्रः वर्क्षामः १४९४ ४१०)। वर्क्षयावियः १ [वर्क्षयाटिक] सम्बारः व्यापीर वे एक परः वा नामः (क्ष्मः)। वेशो वर्षाह्यः

बद्दबहुत्र के के उद्घृद्धि (दे ११०)। उद्घृद्धि के वह दुर्श (एक)। उद्घृद्ध को बह दुर्श (एक)। उद्घृद्ध न [ऊर्फ] १ अन्य, जेवा (म्यू)। १ व्यक्त न (ऊर्फ] १ अन्य, जेवा (म्यू)।

वि वयम प्रका 'पश्चाए नो बहसार' परिएमिट (सर ६ ३: प्राप्ता) । ४ बडा एशायमा 'बापुल बहस्सो सम्बद्ध । अवसा (या ६) । १ अगर का कारिया (स्वा) । "बहुसा ट्रं [कम्बूयक] राखों वा एक एमस्या को गांति के अगर साथ से हो चुक्ताते हैं (यर ११ ६) । अग द्रं [कम्ब्री वर्गर का गांगिस प्राप्त (एस) ।

नाएक् पंजनमार्गा धनरेति समीत प्राप्य-एर्षि (सूम ११,२७)। गमा वि [गम] उत्तर जानेशाला (सूना ४५१)। श्वामि वि [गामिन] उत्तर जानेलाला (सम १६१)। नर वि [जा] उत्तर जानेलाला पानस्य

काय प्रे [काक] कल नावस से सर्व

न्यराव [नार] उत्तर चनानाचा सामग्र में कड़नेवाचा (मृद्यारि) (प्राचा)। दिसा बी [दिस्]] इतने विद्या (स्था प्राच ६)। रिकु दुं [रिक्] वरिमाल-स्टिम साठ

स्क्रमुख्याणिका (इक) । "छोग "कोय पू िस्रोक् हे स्वर्ग देव-मोक (ठा ४, ६ मय)। वाय पूँ [वात] देवा गया हुमा वाज़ बाय-विशेष (जीव १)। तबर्द कर देशो" 'उददंशाण बहोसिरे माण-बोट्टोबगए (मग १ १ महा बा ६६)। ख**ररं**क न [वें] माग का उपन भू-माग (मूघ ₹ **२)** 1 उद्देख हैं [द] राज्ञास विकास (दे १ सद्दर्भ ११)। शहरविय वि [क्रिकित] क्रेंबा किया ह्या (गब्ध १४६)। सहरत की किन्ती कर्म-दिशा (अ ६)। चडिंद दि देशे देशे देशे (सुद्ध १८०)। र्चाइड देवो बुद्दित ( पर् ) : सहित देखों इदि ( पर् )। एडिज्य देशो टद्धरिक = उर्वृत (गंगा) । संबद्धियां भी [व] १ पात्र-विरोप (स १७३)। २ कम्बल वर्गेष्ट् भीड़ने ना बन्न (स १०६)। **कर्ण दे**को पुण = पुनर (निश्च = २)। डमन ऋिष्यीऋख करना(धड)। चया ) देवो पुष्प (प्रामाः प्रास् ६१ कुमा ह्या है १ ६१)। चणपन धौन [ पद्मेनपञ्चारात् ] कानात ४१ (देनेन्द्र १६) । एजाइ र् [उपादि] व्याक्या का एक प्रकच्छ (क्यह २, २)। चणाइ र् [बे] प्रिय पवि नामक 'उलाइ-सप्रक्रोद्धाः जियाचे (संजि ४७)। क्या केवी पूर्ण (गउब नि १४२, हे १ ६३)। इएम व कियाँ मेह मा बकरी के रीम रोधी। देवी रुम । बप्पास र्रे [बाप स] उल मेड के रोग (निचू १)। णाम व िनाम] परनी नौट-विरोम (राज)। उठत देशो पुरुष = पूर्ण (ते द, ६१) ६६)। बण्यम यह विद्+तद् ] पुरारम बाह्रम बरमा । चएए।मा (प्राप्त ७४) । इण्गई की [उद्गांत] स्वाति सम्पूर्य (वा Y44) 1 उण्माइल्लमाम देखो उपमा । रुज्यम यक चिद्र + सम् | द्रवा होता

उन्नत होता। बङ्ग बण्यमीत (वि १९१)।

₹0

संकृष्ठाणिय (भाषा २१६)। उप्रधास विद्यो समुप्तत अवैवा (वे १ ८०)। रुण्यय कि जिसती १ उत्तत कैंका (मिन १)। २ प्रकान, प्रणी (सामा ११)। ६ धनियानी (पूच १ १६)। ४ म. धर्म-मान गर्ने (भग १० ५)। रुज्य पूं जिससी मीतिका धनाव (सव १२, १)। रुण्या की किणी कर भड़ के धन (धारम)। । पपाछिया श्री विपीशिका चीटी सम्पु-विशेष (दे ६,४८)। चण्णाधक वि [उन्नायक] १ उन्नतिन्धारक । २ वृंग सन्दरशास प्रसिद्ध मध्य-पुर चतुप्तका की शंजा (पिय)। उण्जाम प्रे जिल्लाको धान-विशेष (बाबन) । उण्जाम पुरिज्ञामी १ उन्नति अवाई (से ६, १९) । २ वर्षे यनिकान । १ वर्गे का कारण-भूत कर्म (घन १२ १)। रुजाम स्ट [ स्ट्रू + नम्यू ] द्वीरा करना (TY X4)1 उण्यामिय वि विर्मामती अँवा किया श्रुवा (या १६ २१६ से ६, ७१)। रुणास सक [ यद् + नमय् ] क्रेंबा बरुहा। क्रएए।सङ् (प्राष्ट्र ७३)। चण्यास्थिति दि] १ इता दुर्वतः । २ क्लभित अचि क्या कृता (दे १ ११६)। र्थाण्याम वि [स्मीत] वितनित विचारित (ने १३ ७०)। रुप्तिञ्ञ वि [अीर्पिक] उस का बना हुसा (ठा६ ३३ थोष ७ ६, ब€ मा)। विभिन्न विश्वासी १ विश्वतिष्ठ कल्वतिष्ठ (महा) । २ निदा-रहित (मान वर्) । उण्यो तक [उद्+ नी] १ ईवा वे वाला।, २ वहना। मधि अएलेट्ट (विशे ३५८५)। क्याहः राज्याश्चमाय (राज) । उष्णुक्ष ई [वे] १ हुँबार। २ मानारा शी तरफ पूँद किए हुए दुत्ते की धावान (दे १ १९९)। ३ वि वर्षित 'एवं श्रीणयो संतो ' बग्ग्युरधी सी नहेद सम्बन्ध (वद २ १ )। कण्ह र्ष [प्रध्य] १ वाला भरमी (ए।या १ १)। २ विषयम सब्र (दुमा)।

प्रवर्षका व [क्रायान] भरम करना (पिड २४ )। उणिहुआ की मिें इसर, विवदी (दे 1 (22 } धन्दीस पुन [उप्पाप] पनकी सुदुट (ह २ ७१)। उण्होत्यभंड पू [दे] प्रमर, मगर भौरा (के 2 22 )1 व**्**रोटा भी वि] गीट-विदेश (मानम) । खताहो स [उताहो] धवश. या (वि =३) s उत्त वि [उक्त] शकित भनिहित (सुर १ 94 E \$01) उस वि [प्रप्त] १ बीमा हुमा । २ कियादित बन्पादित देवरत बए सोए बंगरलेति शावरें (सूच १: १ वे)। उस पू कि वनस्पति-विरोध (राज)। दश्च वि [गुप्त] एखित (सुम १ १ व ३)। उत्त देशो पुन्त (वा मधा सुर ७ १३८)। ভবছৰ) দি [ডবজিব] (হয় দি না• , ब्लुइय ∫ १११ घन )। उत्तब वेको सर्वाच = दम्। सर्वमद (ह ४ १६६) । वर्त्तप वेकी उर्त्तम । एतंपर (प्राइ ७ ) । उत्तंत देवा दुर्त्तत (पर्ः निश्न १६)। বৰ্ণবিজ্ঞাৰ বিষ্টিবল হয়িল (ইং १ २)। दर्शभ कर [धम् + स्तन्म्]१ येनकाः २ जवसम्बन देना सहारा देता। नर्म क्लीमन्बद्ध क्लीमन्बीत (नि ६ =)। वर्त्तमण न [उत्तरमत] १ धरयेष:२ धवसम्पन (चा पू २२१)। उसंभय वि [उसम्मक] १ चेक्नाना। २ धवसम्बन देनेदाला सहायक (दर पू 38 )1 वर्षस पु [अवकस] हिरो-मूपण धरतंव (मरहा दे २ १७)। इसंस पू [वर्सम] कर्लपुरक बनपुन वर्ण-मुक्छ (पाम)। उत्तइय वि [व] चलतिल स्रीयक धीरित (रतनि ३ १४)। **छलय वि. [५] गरित (त्त**्रि १६ टी) । बेनो उत्तृज ।

वस्त्या वि [उत्तृष्य] तृष्ठतानीः समीन सिकामित्रमूमितनस्यदं चत्रणपद्योषणादै दर्मन् (पर्या ११)।

उत्तपुत्र रि [श्तानुक] श्रीवसामी गर्निह (पाय)। उत्तत्त रि[इत्तर] प्रतिन्तम महत यरम

(भूग ६७) । पत्तत्त कि [के] सम्मानित, साल्ड (पर) । सन्तर्भ कि [केस्सन्त] संर मेत सामन्यार

उत्तद्ध हेडी श्वरहू (स्वि) । उत्तद्ध वि [वि] १ व्यरह खेववाकी ( वे १ | १६१ पास) । संविक कुछवाला (वे १६१)।

ভক্তদেবি [ডক্ডদ] ইউদ্দেশন (খন)। কক্তম বুঁ [ডক্ডম] হক্তিন বা জ্বনার

(नंगीय दय) ।

बक्ता कि [उक्ता] र योग अध्यक्ष कुम्बर (क्ष्म अध्यक्ष कुम्बर (क्ष्म अध्यक्ष कुम्बर (येक्स येक्स येक्

उत्तम रि [उत्तमम्] श्रज्ञान-प्रीतः "निरिष्ट्यमा सम्बुरसा वस्त्रा वे क्वना होति" (श्रासन ४१ गण्)।

चचमंगन [चचमांक्र] सलाक निर(सन - दःकृता) ≀

उत्तमां भी [तस्मा] १ 'शास्त्रभावत् । वा एक सम्मदन (शास्त्र २१) । २ इत्ताली (शास्त्र २ ६ त ४ १) ।

उत्तमाओं [उत्तमा] पद्मगी प्रथम स्त्रीय (नुरुष १ १४)।

उत्तरम यह [उन्+तम्] विक होता. उदिन होता । उत्तरम' (त २ ६) । बहु बत्तरमंत्रः उत्तरमास्य (तट) । वहु बत्तरमंत्रः उत्तरमस्य बत्तमित्र वि [बत्तास्त] विल्ल, दितशीर (वे ११२, पाम)।

बस्तरक्षक [सन्+द] १ मध्यरनिकनना। २ सक पार करना। उत्तरिस्थानी (स ११): स्त्रु उत्तरंद

वेन्यंति व्यक्तिमनन्त्रा परिवा इतिवास्य पिट्रपेट्ररियो ।

वृत्तं धुक्रसमुत्तुवरंशवन्तिः विभ सम्बद्धाः (या १८०). 'उत्तरशास व सर्गः नीवगारी जिगाए गरिउ भारको (यहा)।चीह- एसरिजु (वि ४७७)। केरः वस्तरियादः (वि ४७)।

कत्तर सक [अब + सु] उत्तरता नीचे माना। बह. उत्तरमाथ 'उत्तरमाखस्य ती विधा कापी (बचा १४)। उत्तर वि वित्तर] १ म्बेह, प्रशस्त (परम ११ व व )। २ प्रवास भूक्य (सूत्र १ व) । व स्वयः-विता में एग हुचा (व १)। ४ वर्गार-वर्ती उपरिवन (उत्त २)। १ मनिक विविरिक्तः भद्दुसर— (धीप सूम १ः २)।६ संबान्तर, मेंथ सावा 'बसरपंबद' (क्रम १)। ७ छन मा बना हमा वस, कानम वर्षेख (कार) । ६ म. जबल प्रमुत्तर (बब १)। ६ वृद्धिः (भग १३ ४)। १ **५** ऐरबर रोज के वार्णमन मानी जिल्लेर का नान (सन १६४)। ११ वर्षा करा (कार)। १२ एक केन श्रुनि मार्ज-महाग्रिपि के प्रचम रिप्प (रण)। क्ष्मुय र् क्षिक्रकी बक्तर-बिरोप (विदा १ २)। बस्लान **िकरण** | क्वरणाद, संभाद,शिरोप-प्रणाबान

ধুন্মুদ্যান্ত ঘতনংখুদ্যান্ত ।

चंतरकार्यं नीरह. वह सन्दर्भनेदार्यं (साब १) ।

'बॉरियविश्यी यात

द्भरा की [जून] जनात-बात शेल्पिये 'बारपूरा हो की | पूरा विशेषा प्राचार साराप्रीचार गाएगें (जीव १) | दुक् शू [जुक] १ वर्षी मेशे 'अस्पुरमाण सम्पारीं (शि वेश : सन् ७ पाए १ ४-पाम १६,१) १ वेष्पिशे (वेश) दुक्कृत में [जुक्कृत ] १ नाष्ट्रीत परिणे ११ एक शुक्रमार (श्र १) १ वेष्पिये पर एक शुक्रमार (श्र १) १ वेष्पिये (मं ४) । क्षेत्रि को "कोटि" पंगीतराम-प्रधिक बाल्बार-बान की एक मुच्चेंना (ध ७)। गंघारा की गाम्बारा देवो पूर्वोक्त वर्ष (छ ७)। सुवा पु विस्तानी शासा प्रसु संस्मितः प्रसु (सन् ५ १)। बाबात्म की "शाबारा" नगरी-विधेप (धायम) । जुछ विश्वष्टी पुरूपश्चन का एक बीप, युव की बच्छन कर नई माबान से 'मटन-एस बंदानि' कहता (धर्म २) । व्यक्तिया स्वी ["जुम्बिन्हा] देखी भारतर न्यः सर्वे (**बह** ३) प्रशा २४) ⊦ इद्धान [ीर्घ] पिछना माना खन उच्चपर्य (मं ४)। दिसा 🛍 [दिश] क्तर विका (सुर २ २२०) । उट न ीियी विकास बाबा मान (पिय)। पराइ प्यक्ति की "प्रकृति क्यों के धवान्तर नेव (बत १६। सम ६६) । प्रवस्थिमित र् [पा ब्राहर वे पानक की (पि)। पट्ट ई पिक्री विश्वीमा के जगर का वस (भीव १८६ मा)। "पारणग म ["पारणक] प्रवासादि इदं की क्षमन्ति पाराय (कल)। पुरन्धिम पुरस्थिम पू [ पौरत्स्व ] ईशाम कोला जतार और पूर्व के बीच की विद्या(शासा १ १३ भना वि.६.२)। बोड्डमा की "मीप्तपदारे क्लप महस्य क्यम (मुक्प ४)। "फरगुणी को ["फारगुना] चक्तर-फ्रम्युनी नतन (कृप्यू: पि ६९)। बखिरसङ् र्ष ["बखिरसङ्] १ एक प्रश्विक वैत नाषु (कप्प) । २ उत्तर विश्वह नामक स्वविर से निकासा हुया एक कछ। भगनाई महानीर का जितीय गरा-साव-राज्यस (बप्प ठा ६)। महबसाओ [भाइपदा] नगर-विशेष (छा १) । संशा हो मिम्बारी मध्यम प्राम भी एक मुख्युंना (हा b)। सङ्गत की विश्वता मनते क्लिन (देन) । बाय पूं विवाद] उत्तरकार (बामा)। ।वध्य "बेडक्पिय पि ["मेक्सिय] स्थामानिय-जिल्ल बीक्रिय बनावरी वैक्रिय (रुग्प १ रुप)। शासाधी शास्त्री दे बीटा-पृद्धः २ गीधे से बनाया द्वाया घरः श्राहत-कृद् हापी पोझा साहि शक्ति वा स्थान वहेला (शिष्ट्र क्ष) । शाहरा साहम दि [सामक] विद्या नम्य गौरह गा

वत्तरओ--च्यास साबन करनेवासे का सहायक (गुपा १६१ स १६६)। रेको एत्तरा । **टक्तरओ ॥ [उक्तरत**] उक्तर दिशा की करफ (यदमा)। **दश्रांत (प्रदर्श) १ वरनाने का** उसर शा काष्ट (कुमा)। ३ वि चपत चवस (मुद्दा २६६)। इसरकुरु हुं व [श्तरकुरु] १ रव-पृति. ह्मर्ग (स्वप्न ६)। २ इसी प्रतानान् निमान नी बीहारिवनी (विचार १२६)। इन्तरम्य न [बन्तरम्य] १ शतरमा यार करना (ठा ४) स ११४)। २ शतकरण नीच द्याना (द्य १)। शक्तरकवरंडियां की दिं ] उद्वर वहान क्रीती (दे १ १६२)। इत्तरविद्रश्चित्र वि [इत्तरविद्रियिक] उत्तर बैक्सिनामक सम्बन्ध स सम्बन्ध (वंच २ २ )। इत्तरका केवो एकरा-संग (पर १८)। इत्तरा की दिक्तरा दिवर दिला (अर )। २ सध्यम प्राम नी एक मूर्व्याना (ठा ७) । ६ एक दिशा-दुमाधे वंदी (छाव)। ४ सियम्बर-मत प्रवर्तक बाजायँ रिजयुरि हो। स्वनाम क्याद धरिनों (विसे) । १ प्रक्रिकान संपर्ध की एक बारी का नाम (की) । जेंदर की [तन्दा] एक रिक्ट्रमाधि वेली (धन)। पह र् िपच | ज्यापिया-रिच्य केत, उत्त-रीय देश (मासू २)। फरमूरणी देखी उत्तर पन्त्राणी (सप ७ १७)। महमवा केन्रो इसर-अष्ट्रया (सम ७ इक)। यगन ियायी उत्तरायण सूर्व का चत्तर दिला में मनत मात्र से केवर का महीना (धम १६)। यया की ["यता] पालार-प्राप की एक मूच्छंत्र (ठाँच)। बहु केवी पहु (महा जब १४२ दी) । संग दू [संग] क्लचेव बच्च का शरीर में न्यास-विशेष उत्तरशब्द (क्या भा धीप)। "समा की "समा मध्यम पान को एक मुच्देना (ठा ७)। साजा की [पाड़ा] नशक्तियोग (सम १ कत)। हुत्तन [भिमुक्त] १ क्तर की तरक। र वि उत्तर दिया की सरक सुद्ध किया हुआ।

(योच ६४ साम ४) ।

उत्तरिय वि [जीत्तरिक, कीत्तराह] देवो दश्चर (ठा १०- विसे १२४४) I स्थारि**क वि जिल्लाको** उत्तर विकास कान में उत्पन्न या स्विष्ठ उत्तर-सम्बन्धी उत्तरीय भार उत्तरिक्षसमें (सुपा ४२, सम १ ३ भग)। वक्तील देशो "करिय = स्वरीय (हुमा है १ २४०० महा)। उत्तरीकरण न [श्तरीकरण] उत्तर बनाना विशेष शुद्ध करना 'तस्य चत्तरीकरातेश्' एकरोह पूं [बसरीय] १ उसरका बोड (पि १६७)। २ श्मयः मूँछ (राज)। **उत्तक्षर**अर्थ वि] किन्य शंकर (देश 1(11) उत्तव नि [ उत्तरम् ] नितने कहा हो बह (पि १६१)। बच्छ घरु [ उन्+ सस् ] ! बाह पाना पीवित्र होना । २ करना अवसीत होना । वहन ब्रचर्सव (तुर १ २४ १ १ २२ )। थचसिय वि [तस्त्रस्त] १ शस्त्रीय । २ पीरिय (गुर १ २४६)। हताइ एक [ उन् + वाइम्] १ हाइमा वाक्ष्म करमा । २ वाक्ष क्षमाना । क्षक "श्लाक्टिजीवार्ण वर्षारमाखे (सम) । उत्ताहजन [उत्ताहन] १ ताइना करना (पूमा)। २ वाद्य वनाना (राज)। उत्ताम वि जिल्लानी १ वम्यूच कर्मानुब (वैचा १८)। २ विशा (विदाद ६। ठा विश्व सोनेवला (क्स) 1

सकायमा (कर्म)

पाइअसहसङ्ख्याने चत्तरिका ) न [ बत्तरीय ] चावर, दुण्हा | श्चरिय । (उसा प्राप्त है १ २४०) 'जरविश उत्तरिय" (मुपा १४६) दचरिय वि सिपीयो १ एतर हया, नीवे माया हुथा (सुर ६ १११) । २ पार पश्चि क्षपा (मद्दा) ।

मुख्यार्गी

वत्ताणपत्तय नि दि ] एएएर-छन्मन्मी (पती

वर्गेखः) (वे १ १२ )। रक्तांनिज वि [उत्तानित] रै वित विमा हुमा (से ६, वर मा ४१)। २ विस सोनेबासा (बसा) । उत्तार सक [ अब + तारम्] गीचे उता-रमा। वर्ष एकारेमाण (हा १)।

क्लार सक जिल्लान वारयी १ पार पहें थाना । २ बहर निकासना । ३ दूर करना "को नईए किस्तो सको एए बद्द को उस्ता-रिता को ई मरिक्या (धुपा ११७ काल)। <u>बचार ५ (बचार) १ क्यूजा कर करना</u>र 'चलुरोपो रास्तारो पहिसोपो तस्य उत्तारो' (रव २)- खारवतायार (उनर ६२)। २ वरित्याप (विसे १ ४२)। ६ उतारनेवासा पार करनेवाला 'अवस्यसहस्सदुसहे, बाइबरामराज्यामधेतारे । बिखबरण्डिम प्रणामर ।

बरामदि मा काहिस प्यामें (अस् १६४) : उत्तार पू 👣 मानास-स्थान, बुनराठी में 'बताये' (शिरि ७ )। वचारण न [उचारण] १ व्यारमा २ दूर करना । ६ बाहर निकासनाः । ४ पार करनाः क्त बरवर्षि मोकुमहासहिषित्रदेवा

कुरेंदि तुद्ध बाढ । वाणुचारणदेवं सम्हा वर्त क्राम् भव ॥ (सुपा ११७ विमे १ ४ )। वसारव वि [इसारक] यार उदारनेंकमा

क्लारिक वि [इन्हारित] १ पार पहुँचावा ह्या। २ दूर किया ह्या। १ महर निशासा हुषाः विश्ववि प्रवास्त्रिः पूरिविवस्यो (માફા) ા वासयास परिएपीइ विकाससार (मुपा

- अर्थाणमण्डाकर 'वर्धाक्रमण्डाकर' । (४ ४ चलाड वि[चलाड] १ महन्, नहा 'क्ताल रिएउमा पासाधीया चरित्रारिएउमा' (ग्रीप)। ४ वनिरूष अपूर्ण जन्मधामद्रैन सम्रह बम्में (बम्ब ६) । साइय वि िशासिन्। इ. २)। २ जतायता श्रीमकाधीः पर्शव प्रशासो कप्यविनेहियनेश्य पिएईसी' (सूत्रा बचायम ) कर केले (बच या ११ ६२) । व ज्यात (वे १११)। ४ वेतान more flower area are over the familiar and

(H 440) 1

पनाहि उद्यान (ठ. ७) "गीम दुममुज्यान्तः त्यपुत्तानं च नमसो मुद्योगननी (नीव १)।

बलास्त्र न [दे] सरावार करन सन्तर-पहिच स्थल की सामान (दे १११)।

बचासम् देवी दचाइण ।

कत्तावस्त्र न [ब] स्वायम सीवता । २ वि सीवकारी माकुम 'इन्त्रुतावध्यांत्रवीयविव हिम्तनमासकर्पाएक्वे' (युर १ १) ।

षचास सक [तत् + श्रासय्] १ व्यनीतं करना करना। २ पीकृता हैएन करना। स्तारित (ग्री) (तट)। इ उत्तामणिक्ष

(हेरू)। बन्दास पुंबिस्त्रास] १ मास स्व। हैराजी (क्यू)।

प्रचासकृति [क्रामसित्] १ मान्येत करनेवाता । १ हैपन करनेवासा (प्राण)। करनेवाता । १ हैपन करनेवासा (प्राण)। करनेवाता । इत्रेचनकक्ष । १ हैपन करने-बाता (प्रवत २२ हैश हाया १ व )।

क्कांसिय नि [कत्त्रासित] १ के्सन निया ह्या । २ व्यक्तित किया ह्या (मुर १ २४०) साम ४) ।

उत्ताहिय पि [दे] बिकास्त क्षेत्राहुण (व ११६)।

वित्त की [ठ क) बचन पाणी (था १४ कुण २३। हम्मू)।
डांक्स दू [जिकक्ष] र वर्षमान्तर कीटनीयोग
(यर्ष रा तिष्ठ र ११)। र कीटियो ना
वित्ता 'वर्षियल्यास्त्रम्मीमान्ववर्षाराणार्थक
मणे '(वर्ष १)। १ कीटियो की तन्मान (वर्षा १)। ४ पूरा के स्वस्थान पर स्वस्थ कर्मान्त्र

पुत्रवर्ती में स्वरणे मिनाक्षेत्री क्षेत्र' बहुते हैं-'यर्तोनु व विद्कृत्या बोद्यु हरिष्टु वा । चरपम्म वहा निक्व

प्रतिकारतुषेतु वा' (क्य ११)। ६ न. प्रिप्त निवाद, रुख्य (निश्व १ धारणा ६ ६ ११)। ध्योद्या न [स्थ्यल] वीट रिरोप वा पुर—विस (क्यर)।

त्रसिंगपमग दून [इसिह्नपतक] बील्सि-सन्द, बीरिबों का बित (शत १, १ ११)।

किंतह सक [ तत् + स्था] १ उठाला । २ स्रोतित होता । यहः 'स्तितहन्ते विवासरे' (उत्त ११ २४) ।

दिश्च वि [हत्त्व] तृशु-पृत्य' 'संध्यतार्वात्रलखपरविवर

पधोद्देशस्त्रिसमार्गीद् । कुर्वसिक्गोहिन्यहं रस्त्वतः धश्या करमसेर्दि

(पार्थ)।

क्षिणीयमः वि विष्युचित । एल-प्येद्ध किया ह्या 'प्रेम्मयाराजीताण पर्योग' (सा १ ११) । विचित्रम वि विष्याणी १ वाहर निस्सा हुवा 'विष्युद्धा त्याराम्में' (नहा) । देश्य व्याह्म-क्षर्यः गतिकाणे सहारिद्धि त्यामः विद्युप्त । ब्राह्मा गत्मार्यः (च १३२) । 'प्रतिक्रणाः ब्रह्मा प्राप्ता (च १३२) । 'प्रतिक्रणाः ब्रह्मा प्राप्ता (चहा) । व को कम् हुमा हो 'प्रेमयः विप्ताने व्याह्माम्युनि-व्यय्नेक्षणां (पत्रा) । ए परित 'वीह्राह्मा

पदीसमानी पुरालेन वह होई मन्बसीराएगी

(नकर) । १ नियदा ह्या विसने कार्य समान्य

किया हो बहु 'यहाराजियकार' (वा १११)।

६ जर्मानिक महिकार्य (चन)। विधारण वि [अवदीर्थ] १ गीचे क्याच हुवा 'पानवस्थी ठेए साहा गर्माचा अक्तिएर्रो निप्पणी क्रिन्नस्वाधिन्द्रो तथा थेर्प (सहा)। विकार पुत्र [बद्धीर्थ] कृत्य चपनार्थ (चीन)। विकार पुत्र [बद्धीर्थ] कृत्य चपनार्थ (चीन)। विकार बेली उत्तरम (वह दि १ १ है १

४१३ मिषु १)।

विकास के को वस्तास्य (महा पि ११)। विकास के को वस्ताच्या (काव १४६: कुमा)। स्तिरिविषि । को [वि] भावन वसैराह का विकास । व्यापन । वस्तास्य का प्रवासी में निस्ता 'उत्तरेश' बहुते हैं (वे

१ १२२)- फोके विस्ता सोलपार सारेषि प्रतिवर्धे (स्त २५ टी)। वर्षोत्त वि [वसुङ्का] डेवा, स्रमत (सहा;

क्यू वस्त्र)। वर्षक वि [यमुण्ड] यमुक स्टब्स् (वस्त्र)। प्रमान वि जिल्लामा स्टब्स्

उत्तुवरि [के] पर्देशुक, रूप धरिमाली (के १ क्षा बन्हा)। ভবুতিবে দি [ব] দিলৰ পিকসা (বিণা १२)।

चत्त्व सङ [बत्+तुत्र प्रीम करना, हैरान करना। का चतुरुत (विचा १ ७)।

क्लारिक की वि] वर्ष समिमान । २ वि वांक्त समिमानी (वे १: ११) । क्लाक वि वि] शह वैसा हुमा ( यह) । क्लाक्क वि वि] स्थानिक विकार नर

(वेश १ ६८१११): सक्त पुंचि किताध-धीव क्षांच व्य

मुन्द कुप (१ १ ४४)।
छत्तेक वि [ उच्छास ] १ देवनदी प्रवर।
१ वृ प्रावन्त का एक सेव (विकास)।
छत्तेक व [ वर्षे कर्ता | वर्षे कर्ता (क्रा१८०)।
छत्तक व [ वर्षे कर्ता | वर्षे कर्ता (क्रा१८०)।
छत्तक व [ वर्षे कर्ता वर्षे कर्ता कर्ता | वर्षे वर्षे कर्ता वर्षे कर्ता ।
छत्तक व वर्षे वर

२६४)। करब व [क्कस] १ स्टोन-विरोप। २ मोर्न-विरोप (निरो)।

ध्यक्ष वि [च्छ्य] उत्तमन विश्वत (युपा ११६ ग्रह्म)।

इत्स (शै) केने एटु = उद् + स्मा। जन्मेर (प्रतक १४)।

करवान्य वि [अवस्तृत ] १ व्याप्त (वि ४ व ) १ २ प्रमारित कैनाना हुना । १ वाज्यारिक सम्बर्गामन्यसम्बर्धकर्मा (१ व्योक्त व्याप्त सम्बर्धकर्मा (राज्या १ १

पि १ १)। कर्ल्याझ केवो उद्योगस = क्कान्स्य (सि

११)। कल्पंप एक [बद्+समय्] द्वेषा कल्प

क्षमत करना। उत्पंदर (दे ४ ३६)। तरथय तक [बन् +स्तम्म] १ व्यवना।

२ सम्बन्धम्य हेनाः ६ रोजनाः (नडकः हे २,६) । जरुषेदः (दा ७२४) । दर्शयः चकः [डल् + क्षिप्] क्रमा केननाः।

ज्यवेदर (१४ १४४) । संस् स्थमिम (इया) ।

टर्लाय सङ्घित्य ] रोतनाः जल्पेनः (६ ४ १३३) । उत्तरंघ—चद्रा

उत्तरंघ पुं [चचन्म] क्रपं-माराण कैवा
रिमाना (ते ६ ६९)।

उत्तरंघण न [चचन्मन] कररं वेसा (नडा)।

उत्तरंघण न [चचन्मन] करर वेसा (नडा)।

उत्तरंघण न [चचन्मन] कंवा केमा
राज्याय न [चम्मन] कंवा किया हुमा
राज्याय न [चम्मन] कंवा किया हुमा
राज्याय न [चम्मन] कंवा किया हुमा
राज्याय न [चम्मन] वेसा हुमा
राज्याय न [चम्मन] व्यवास्ति, कक्षा
हुमा (ते ६ ६ )।

उत्पांचित्रं नि [चस्ममम] १ मामान-मान्य
प्रवस्तान करनेवामा
वार्गान्यक्ष वर्गान्योवि
कर्मान्यम्मनिक्षणक्षेत्रमेता।

कर्मापोर्जामस्यकृतियो । न इ समजस्मितिया । नुहानुद्रो कम्म-परिणाने ॥' (प्राप्त १२७) । उरस्मित्र रि [उचिम्मित] १ स्वतिया । भ ररा हुमा स्तम्बन्न प्रदर्शणक्यास्य । निमाण्ण मुख्यु प्रस् वसर्थी (श १२४) । १ स्वत्यनुक्क प्रिया हुसा (स

द१६) I

A+f)1

उत्सीमर केरो उत्तीस (बन्या १३२)। उत्सम्म पुंचि चैनरे क्याने (६१ ६)। न्यस्यप्रम क्यो ग्रह्मम (इन ११७)। न्यस्य केरो उत्यह्म (क्या) 'निवर्गक कलान्यन्त्रसम्बद्धाः नुवादि मार्चमा' (छर ७२६ दी)।

इस्सर वह [आ महम] बावमण क्ला। वंद अस्तरित्त (वप) (त्रीः)। न्या मह [अय मन्त्र] रे बाल्याल करना, क्राना : रपरम करना । कृष्ट स्टबर्सन न्यासान (गढ रे रे प्रन)। इस्सर । मह [उन् मन्त्र] बाल्याल इस्सर्व । कुला (१)। वरण्या, जनकाइ

उत्पद्ध ) बरमा (१) । उत्पर्द्ध, उत्पन्छ (ब्राह ७३) । उत्परित्र वि [माम्बस्तु मारम्य दवाय

हमा 'उपरिमोर्शनामार्थ मलेवे' (शय परि)। इरवरिय वि [वे] १ क्लिंग, निर्मेत (स 'धन्युक्तुस्वरियमहरूपकाह भरभीसहा परिवा' (सुपा २ ) । २ उत्तित उठा हुया (वे ७ ६२) ।

२ जिला जठा हुया (वे ७ १२)। उत्त्यस्त्र मृत्यस्त्र है है की यून प्रति उपत प्रसुप्त (सा ७ ६ दी)।२ उन्मार्ग हुप्त (सं ४ १)। उपत्यक्षित्र मृि] १ मर, गृह। २ मि जन्मुल-स्त्र उत्तर प्रवाहमा (१११ ७

स १६) ।
उत्यक्त सह [उन् + राक्] उस्तवा
पूजा। उत्यक्त (पह)।
स्रसद्वरायद्वा स्त्री [वृ] सार्वे परस्ते से
परिवर्षन स्वक्तपुष्प (दे १२२)।
स्रस्रक्त स्त्री [वृ] शर्मे (दे १२)।
१ स्त्रमं (ग्राह्म)।

इत्यक्तित्र कि उिरुद्धकिन उद्यत्त हुया 'त्रक्तिकार्य उद्यत्तिहरू कि उत्यक्तित्र (राग्य ) । उत्यक्ति कि उत्यक्तित्र कि उत्यक्तित्र विद्यायिक् ] उठनेवाला (के व रहे) । उत्यक्ति कि उत्यक्तित्र कि उत्यक्तित्र कि उत्तक्ति कि उत

'बारावारी समज्ज्ञेन नियस्त कोसहेहि करहि। तस्ता ती चारणे निकीत्रस्थ हिएसीहि' (मुप्त ४ ४)। ज्यामिय (वर) वि [उरभापिन] स्टामा हुवा (सिर)। बस्पार तक [आ + ऋम्] साबस्य करना

(विमे २= २१) । २ शरवान उत्तरिक्त

वधाना । उत्पाद (है ५ १६ । बहू )। बस्मार वैयो उत्पाद ≈ क्ष्मार (है २ ४० बहू )। बस्मारिय वि [आकास्त] बाकाला वधाना हुमा 'जनारियमंत्ररंगरितकारो' (हुमा मुख

डरियम देखो डिंहम (६४ १६ पि ६ )। बस्मिय देखो उत्पद्भ (पंचाव )। "डरियम व ["वाधिक] महानुवासी वर्सना-महासी (बाता वीर को।

286)1

नुवासे (बताः मीत १) । "बरियम वि ["सृचिक्क] सून प्रतिष्ठः स्वरूपः स्वीचम् (बताः मीत १) । उत्सुमण म [अवस्तामन] मनिष्ट की सान्ति के सिए किया जाता एक प्रकार का कौनुक धून्यू सावाय करना । (बहु र) । उस स जिल्ली कस सान्ति प्रति मादिल करे

उद् व [ण्य] कम पाती 'सर्वि साहित दुवे बाते सीमोर्थ समीच्या निक्की' (साका भग ६ ६)। उत्तर ओरुसा वि [ ार्गे] पानी में मीता। (सोच ४०६ वि १६१)। शकास व [ गर्चास ] गोव-निरोध (ठा ७)।

उद्दर्श रेको स्नोत्ह्य (स्तु)।
उद्दरम्य कि [ उद्दिन् ] उदयगत्र, बम्नीव श्रीतः 'विदित्यवर्षेत्रसूरी स्त्रस्तुरी सवादि उदरम्भी (द्वार १२२)। उदर्थ दुं [ उद्दर्श वस भाषात्र विकेश विवसे वस कैंचा विहस्त वाता है (वं २)। उद्देश वस [ ग्यू + अस्त्य] द्वीचा पाना (द्वारा)।

रे कि कैंचा चेन्नेनेनामा (स्पु)।
उद्देश्विद कि [उद्देश्वित ] कैंचा वालचाता
(दुर्गा)।
पुर्वा वृद्धि विकास स्थानी केंचा वालचाता
पिएमानेन्य केंचले बीजी रेती पर पहंचरस्त
उद्दर्शियों (से ४ ११ स ह मन्न)।
उदंग वृद्धि वृद्धि मुस्स्याय पून केंच्य रास्त
स्व यास क्रियेचनेंन)
उद्दर्श वृद्धि वृद्धि मा स्थान

उत्रा पून [३१६] जन पानाः 'चतारि उण्या पर्यादा' (ठा ४० मी ४)। २ बनस्पति-बिरोप (दम 🕊 ११) । 🧎 जलाराय (मप १ ¤)। ४ पूँस्वनाम-स्थात एर मैन साधु । १ सामर्थे भागी जिल्हेन (नुम २ ७)। यस्म पूरिसी भारत थाभ (मग २ ३)। शाणि स्त्री <sup>(\*</sup>द्राणि ] १ जन रमने ना पान-निरोप, उता करने के लिए परन लोहा जिसमें बाता जाता है यह (भग १६ १) । २ थी घरबद्व में नगाया माता है बह घोटा बड़ा (इस ७) । पारगण ल [पीद्गतः] बादल मेप (टा १ १)। मच्छ पुं ["मसव"] इन्द्र-बनुत का साग्रह ब्द्याउनिकेष (त्रम १ ६)। सास्र ५सी [ बास] उस वा कार बहुता तरंग प्राकृ शिया, बेना (सा १ वीच १) । बस्य की

विस्ति शति पानी भरी का मरार्क (ग्रामार्रिक)। "शिक्षाकी "शिक्यी बेसा (हा १)। सीम १ सीमण् <del>पर्नेत विरो</del>प (इक) ।

सद्ग्या वि [तद्म] १ मुक्द, मनोहरा चित्रो दग्द्रं तीए क्लं का बोक्सरापुरार्थं (गुर १ १२२)। २ छद चलस्ट प्रचार (ठा४ २ रामा १ रास्त ६)। ६ प्रधान मुक्य 'क्लगुनारितक्यो महेसी' (चत १६)। त्रहरू पू (तरुग्या) एक गरक-स्वान (क्षेत्र

२७)। सब्दा वि [उदास्त] क्यार, ब्रह्मपछ (सेवीध

**उदर्श** विदिश्यों स्वर-विशेष को क्ष्म स्वर हे बोला जाब बढ़ स्वर (विसे =१२)। **बर्मा 🖈** [उद्ग्या] हुपा, हरस पिपाला

(धन १ ११ दी। सब्ब देखी सद्दा (छाना १ सम १३३ **च**न ७२० टी। प्रासू ७२ वरल १)।

**बद्य दृष्टिद्यी बाम (इ.स. २ %, २४)** । बहब दं बिद्य दि प्रामुख्य अनिति 'बो एवंनिहेपि करने धानएड, सो कि नेनरस-दुमारस्य **ज्ययं हज्बद** १ (महा) । २ ज्यांत (विसं) । ३ विपान कर्ने-परिकासा

'बहुनाएउपञ्चाचाउराज

परमधीनकोनसार्वेश । सम्बन्धा तथ्ये सस्यक्ति एक्किस क्यार्ड (इन)। Yब्रादुर्मान **पर्**वम 'पाइक्नोबर, जंबपहा इव कियस बाना सुद्ध' (महा)ः 'কামানিদি প্লাদানুদি

बरद रतसर्ग क्षिम्मामो ।

रिहीपु भागरेसुनि तुम्बन्तिय भूख समुच्छि। ( (प्रसुरिए)। १ शरक्तीच के भागी शास्त्र निकार (शय १२९) । ६ बरळरोत्र में श्रीनेशाने दीनरे निल्हेन का पूर्व-शरीय नाम (सम १६४)। ७ श्वनाय-क्याध एक राजकुनार (पत्रम ११ १६)। । । यस पुं[ीयस] १९ँठ-विरोध आही सूर्य प्रक्रिय

क्रीता है (भूपा

समर्थत देखो उति । सब्दाल वे सिवयनी १ राजा विकास का

प्रसिक्ष मंत्री (कुम १४६)। सदयवा पूँ [सदयन] १ एव राषकुमार, कीशास्त्री नवधे के शवा संधानीक का पूत (विपार १)। २ एक विख्यात केन राजा (कृष्य)। १ न जमति जनमः। ३ मि जमत होनेमामा प्रवर्णमान (छा ३ ५)।

लक्र न लिक्री १ पेट, बऊर (सूस १ ८)। २ के की बीमाधी 'मबबरबराध्याचायची सोवराणि (नह्य १६)।

उद्देशरि वि [उद्दरम्भरि] स्वानी धरेनपेट्ट (PT 44E) 1 **व**त्रि वि [दव्रिन्] फेशी वीमापैदाला (परक्ष १ %)।

**चत्रिय वि [स्वरिक] अपर देखी (विंदा १** w) 1

चक्काह वि चित्रवाह े १ वानी बहुत करते-नाला, वर्ष-पाक्ष्यः। २ ई सोटा प्रवाह (मग १ ६)।

क्यसी [वे] [ स्वीधन्? ] तक ध्वदिः पुं [चव्या ] १ समूतः सापर (कुमा)। १ जनगरित देशों की एक जाति। चयक्किमार (क्यह १ ४)। **इमार १ डिमार**े **धर्मे** भी एक पार्ति (नव्छ १)। वेबो बझहि । वकाइ प्रे विदायिया १ एक केन राजा महाराचा कोशिक का पून विश्वकी एक पूर में भेग शाचु काकर वर्गच्छत से नारावा भीर को बलिया में डीएए विल्लेक होना (काराती)। २ पुँचमाकृष्टिक कापट्ट-इस्टी (यन १६, १)।

**उदाइण केही** छशानक (शुक्क २१) । चदाच वेबी वक्त (संवि १७४ टी)। रवायण प्रे विशासनी सिन्द्र-वेश का एक रामा निसने सपनान् महाबीर के पास बीबा। सी भी (ठा कः सव ३ ६)।

च्यार वेकी सरास्त (क्य पूर्व)। थदासि वि [सदासिम्] उदातः उदातीन ।

व त स्थि भीशसीन्द (रमास ४४६)। रवासीण वि (रहासीन) १ यणस्य च्टरम (परहरू २) । १ उपेका करनैयाका (ठा 4) ı

বৰাছত বি বিবাহৰ নিৰ্মিত প্ৰেণিক (राम) ।

ब्रवाहर एक चिंदा+ ह्यी १ **क**ड़का। २ रक्षन्त केता। ज्यातरीत (रि.१४१): 'सर्थ मुर्स नेव क्याप्रारिका' (श्रेट ४३) । मुक्ता, क्बाहु (धानाः वत्त १४ ६) अबहु (सूप ११२ ४) । नक वदाहरत (मूप १ 1(# 95

वदाहरण न विदाहरणी १ कवन प्रति-याचन । २ इट्टान्ड (सूब १ १२:विते) । उवादिय वि [बदाइट्रा र भर्मका प्रति पानित । २ इष्टान्तित (शत्ना शासा ६ ८)। उदाहिस विदिधिक्षा जेंद्रा गया (बर्)। चवाह देवी चवाहर ।

च्दाद्रेष [च्यादो] भवता वा (च्या) । च्याह आर्थे स्थाहर। क्दाहो देवो बहाइ = क्वाडो (स्वय्त ७ )। वदि सक [उद्दर्भ ही १ वस्त होना । २ क्लम होना। (निधे १२६६) जीव र)। सङ् **उद्यंत** (क्य यस्म वर, इ.स. सूपा १६व)।

कम्ब- विद्वांत (विदेश) । वरिक्किश कि विशेषित । प्रतिकार वि 6 888) 1

चविष्ण वि [स्वीच्य] उत्तर-दिता में अपन (बानम) ।

वृक्षिण्य ३ नि [बबीर्थ] १ व्यक्ति स्थव-मान दक्ति । (ठा४) 'इस्से वि इसी विख्यो विषये (श्रुप ११) । २ छनोत्पुच (कर्म) (परंश १६१ मप)। १ सरप्रा 'बहा खंबरसी न्त्रमुकोदिनाहीं (सत्त ९ व्या २७)। ४ बक्कट प्रकर 'प्रायुक्तरीवनाइमार्ख प्रति | बेना कि विदर्श मेशा जनस्त्रीका बीसमेडा ! (#PF T, Y) (

चित्र वि [बहित] १ सप्रेट क्यूपर (सन १९)। ९ क्सर्स (ठर ४)। १ तक, कविय (विधे ११७६):

वदीण वि [छदीकील] १ फ्लर विश्वा <sup>∏</sup> संबन्ध प्रवर्तनाला कत्तर विद्या में क्राफ (प्राचाः वि १६४) । पाईजा 🛍 ["प्राचीन्य] रैशनकोस्त (पन ६, १)।

वदीयां भी [वदीचीन्द्र] क्वर विद्या (व्य 1 (3 5

उनीर सक [ उद् + इरय् ] १प्रेरला करनाः | उदृहस्र देवो चडाइस्र (बाना, वि ६६) । २ वस्ता प्रतिसन्त करनाः ३ ओः वर्षे प्रदयन्त्राप्त न हो उसकी प्रयन्न विरोध न प्रयोगपुत्र करना । बदोरह, बदीरेंति (मय पॅनि ७८)। मुरा उद्योरिपुं उद्योरेपु (मग)। मरि उनेरिम्मैडि (मग)। वह उद्देश्व (ठा०) 'नुमनग'पुरीरकी' (ठा ६ ४)। करह उदीरिज्ञमाण (पण्ए १३)। है। उद रत्तप (रम)। जुदीरम नेली करिय (गंब ४ ४) ह ज्हीरय न [उहीरण] १ गयन प्रवितासन । २ प्रेरणाः ३ काल-प्राप्तं क होने पर भी प्रयास-विदेश में शिया आहा वर्ष-पान वा क्ष्मुभर (कम्म २ १३)। प्रशासनमा । नी [त्रदीरमा] करर देनो जभीरमा । (बच्च २१६१) 'ज बच्छे मोर्राष्ट्रिय जन्त दिक्रा बदीरस्य लगा (बम्मर १४३ १६६) । प्रदारय नि [उदारक] १ वपन प्रतिगन्छ । र प्रदेश प्रदेश । एक्सेश्रा विस्त्रविस्थ न्येरनम् (५ए१ १ ४) । १ क्वीरहा करनराता नात ब्राप्त व होन पर भी ब्रम्पन विदेश से नमें कर वा धनुसर वरनेवाना (वस्पर १४१) । उनारित् राग्ते उनारिय (घष ७४)। र्ज्यारिय वि [इद्।रित] रे प्रस्ति 'कानियार्ड र्षाट्टवर्ग्न सानिवानं उग्रीरियानं वेरिने नहा मर्गात (स्त्र नोर १)। २ वनित लॉड-पारित भीरं सम्मे प्रदेशिए (धासा) । ६ व्यंतर हुए 'महस्यामा करना रह्यस्या' (बाबा) । ४ गमय-प्राप्त न होने पर मी प्रयाप-रिकेश में गीच बर जिसके पात का बनुषर रिया जाय बह (वर्ष) (पल्ला २३ भग)। क्षपु रेमो उद्र (प्रार' यमि १० वि १०) । बर्दुबर रेगा बंदर (बम) । उद्ग्द पर [ १९ + ग्र् ] कार वहना । द्रुप्द (रि ११=)। बर्गान केर इस्तान (गि.६६) । बद्ग पूर्व [न] इन्दिरेन्सिसः (पंचा ४ १ Él) i बर्जिय रि [द] धरना श्रेण नग ह्या (44)1

क्ये का पूक्त (दे १ १२३) । १ मन्स्य विरेष । ४ उसके वर्षे वा बनाहुमा वर्षः (बाषः)। ज्रुति आिली कीना बाद्र (पर)। प्रदूध वि [उद्यव] स्वम-पृक्त (प्राप्त २१)। उत्रह ) वि [उद्रण्ड] १ प्रचएर ध्रवत उद्देश है (इसा सब्द्र)। २ ई हाय में दल्ड को क्रेका रखकर चमनगरी सामग्री **वी एक जाति (धीवः निष्**र्)। श्रदेतुर नि [प्रदुरनुर] १ निसमा ४ छ बाहर थाया हो बहा २ ऊँचा (यउर) । उद्देश पू जिद्दरभा रिल्ड का एक भेद (रिन)। उद्दरसंबू [प्रदूरश] मधुमधिका मणुए धार्वि छोटा बार (बच्द) । उद्दुर पूं [उद्दर्भ] राज्यमा नरक-पृथिति बारक नरकारात (छ ६) । सक्रियम पूँ "मप्यम] रान्त्रमा पृथिता वा एक नरवावान (दा ६) । | यम वृ िषच | देवो पूर्मेच षर्व (ठा ६)। (प्रसिद्ध व ["पिशिष्ट] रेगी पूर्वेष्ट वर्षे (श ६) । प्रदर न दि अप्यत्र] मुक्ति मुरान (43 2) 1 उदम पुन दैनो इक्कम = उदम (बाह २१)। उद्दर्शन विद्यु र न्याच बगाहा हुवा (दे १ १ ) । २ स्तृत्वि रिवनित पृथितं पनियं च दनियं उद्देशियाँ (शस्य) । प्रदरिक्ष वि [प्रदू + द्रतृ] नवित्र बदन धनिमन्त्री (गर्दि)। उदया न [उदयन] शिरास्त (वरह) । न्द्रव सक्ष**िद् उप + ४** ] १ दरन्य बरना पीड़ा बरना। २ मारना दिनपा वरमा रिमा बरमा "ता शु मा रेवई राजा वर्गेगी धन्नपा बचाइ तानि द्वाननाई मरहोगो चंदर जागिया च मरमीची मन्दार मोरेरो पहचा प्रह्मा ए नाशीय विकास के इंदर क्रवहना शान पुवानगरे नवलाई कोवादिय राज्यां हिराम्हर वर्षे १ वर्षे अवस्थ परिश्रक २ व्य बराबरानी नवानेबलानी वर्दि बरा नाइ मेन्स्र पुरुवान्द्रे हित्रई (एक्) ।

भनि छत्त्रहरू (मग् ११)। ग्नाहः उद् विज्ञमाण (वृत > १)। इ. उद्देवस्य (तृष २३)। बह्दम पुं [बद्दप्रय उपन्द] १ उपन्र। २ विनास, द्विमाः बार्रमी उर्दरमी (बा ७)। े उद्दब्र्लु वि [उद्होत्, उपडात] t नार्य कन्त्रवासा। २ हिमर विसारार भिहेता देना मना मुरिना बहुबन्ता रिनुरिता बर्वा करिम्मामि ति मत्रमानु (बाबा)। जन्मवान [बहुद्रमा जनगराः] र परम हरतता बहुरापुर्य जाणनु मारायरियनियाँ (निक्रभीत)। २ जिन्हरु जिना (संबद्ध याचा) । उद्देश न[अपद्रायम] मृतु ना छोद हर सब प्रकार का दुःसः 'उद्दर्गा पुगा जालमु यानापरित्रक्रियं वीर्ण (तिष्टमा २६। विष्ट 1 (03 उद्देशमा १ ध्ये [बद्द्रयमा, उपन्पना] बद्दमा कार देनो (भग गरह ११)। उदयाद्रभ देगो उद् हुपाइय - समागस्त्र गौ भवतमा बराबीरम्य छत बना हत्वा र् ---गोगम गर्छ उत्तरहरिस्याच्या हरेशको बारग्राक्त्री बहुबार्रियन(इस)-मनो सिरम्पार्टि (न्य)-मणे बामीहरूत-(य)-गण बालरामी नोव्हिक्ज (स.६)। उद्यिम रि [उद्देश उपहरा] १ पाहिता मंबादया मंबाद्रया परिवारिया रिमानिया बहरिया ठालामी ठालुं अंशानियाँ (पटि)। २ शिनावितः । नाक्रणः विभीति नियम्बद्धगुरमम् विर्णार्थ दो ना सहुर'मा उहिल्ली (गुना Y () 1 उद्यम देगी उदयदम् (पाषा) । उदा पर [उट् + दा] बताता, तिर्मात बरमा। उद्दार (था) । उदा धर [अव+ हा] मरता । पहार्द् बरायात (थर) । नंह तहाइला (बीच रेडा १ भाग)। बहाइमा की [बहुबाज' प्रपन्नार्था] कत्तर करनेवाची भी जात्रत बहुद्धया बोद बंबयो गीती शस्त्र (या १ १० मा है)। उदाइत देना उदाय न मून्। प्रहार्ता हैको प्रहा = यर + प्रा ।

110 [ब्र्सिन] हिंत पानी भएने का मशक (छात्रा १ १०)। "सिद्या की "शिश्या] केला (ठा १)। सीम पू िसीयण्डी नर्बत-निरोप (६क) । बताग वि डिदमी १ स्पर, मनोक्ष्य तिशी बर्द तीए वर्ग तह जोव्यतपुराये (पुर १ १२१)। २ पर उत्पट, प्रचर (ठा४ श र्णाया १ १ सत्त ६)। ६ प्रवाण मुक्क 'करन्बचारितको महेवी' (क्य १६) । उद्दु दु [सद्दाप्त] एक नरक-स्वान (देवेन्द्र 80) 1 बद्त्त नि [इद्द्रात्त] बदाद, शहपण (संबोध R ) 1 उक्त नि डिक्स की स्वर-विरोध को अवन स्वर से बोला चाव बहुस्वर (विस् १२)। दश्माध्यै [उद्या] क्या तरत विवासा (स १ ३६ थै। उद्य देवो उद्ग (ए)मा १ । सन १६६ का भरेन ही प्राप्तु भर पएए १)। **छद्य प्रीटद्यो नाम (पूस २**ं६ २४) ३ उद्य र् [ इदय ] १ प्रम्युस्य अन्तर्शि 'स्रो एर्वविद्वीरि वज्जे सामध्य, क्षो कि बेयवल-दुमारम्य **प्रदर्ग ६ स्ट**र १ (कृत) । २ क्लांत (विने) । । रिपाक कर्म-परिखास **बरमारसम्बद्धासम्बद्धारा**स्ट परमधीनतेमधाउँगै । मध्यक्रमी उद्यो रक्त्रशियो एक्ट्रिक नवार्ख (बन) । निपन्न बामा मुख' (भड़ा) 'टरपम्मिर सन्धननेष

४ मार्ड्यार अनुसमा भाइच्योग्य श्रेटब्युः इय बरः स्त्रक्तं विवसमधी । रिक्षीय भावतिया

तुस्तरियम रहूल राणुरिया ।" (प्रमू १२) । र मन्द्रध्य में बाबी माठवें विनदेश (नम रेश्रे । ६ भरतन्त्र व होनेतारी वीनरे जिन्हेर का पूर्व-वरीय नाम (सन ११४)। ७ स्वनाम-स्याद एक राजपुत्रार (राज ११ ४६)। १५७६ र्भू [ निमम ] पश्च-शिरेण महा तुनै व्यक्ति

उत्यंत देवो सवि । **बद्यण प्रै विद्यन**े १ एका विद्यापन का प्रसिद्ध मंत्री (क्या १४६)। त्रवयण प्रतिद्वनी १ एव राषकुमा८ कीशहरूकी नगरी के राजा शक्षानीक वा पत्र (विपार १)। २ एक विकास वैश राजा (कप्प)। १ न उन्नति उदस्य। ३ वि चन्नत हीनेवाला प्रवर्षनान (ठा ४, ६)। सबर ग सिवरी १ वेट, चठर (सूच १ व)। ए के भी भीगाधा 'क्रमणरमध्युषासाससी सोधराशि<sup>"</sup> (सहस्र १३)। क्त्रंभरि कि ∫उक्रम्मरि स्वली सकेनच्छे (पि वेष्ट)। उन्दि नि [उन्दिन्] के की बीमाधेवाला (क्स्बर इ)। स्वृरिय वि [स्वृरिक] अपर वेको (विपा १ w) t चत्त्राह वि [चत्रवाह] १ पानी बहन करने-नासा चन-नाइकः। २ ई कीनः प्रवद्ध (धन ३ ६) : बदसी दि विविधन ? विक च्यक्किप् विवृध्यि । १ सञ्जूत सागर (कुमा) । २ भवनपछि देवो की एक बारित संबक्तिमार (पणार ४)। इत्यार प्रेडिक्सारी देशों विदेश्या वि [बद्दांच्य] इत्तर-दिशा में इत्पर्ध की एक बाठि (पएए १)। **व्या क्याहि**। बनाइ पू [बदायिक] १ एक बेन राजा महाराना शोणिक सा पुत्र निवको एक बुट ने कैन बाबु वनकर वर्धक्का से माराधा भीर को चरिष्य में डीसरा जिनकेन होता (झंध ती)। २ प्रधानू लिक का क्टू-प्रस्ती (क्य १६, १)। बहाइण देशो उदायण (बुलक २३)। वदास देनी उन्स (संदि १७४ टी)।

राजा जिसने धननान महानीर के पास कीया भी भी (ठाद जन ३६)। उदार देशो उराम (का प्र १ )। उदासि रि [द्रदासिन्] प्रचम अधारीत । व न [रेव] धीरानीन्व (रंगः। स ४२१)। उदासीय रि [उदासीन] र मध्यक तन्त्व (परहर २)। १ उपेका परमेगामा (डा ۱ (۶

चदायण पूँ किश्यमी विश्व-देश का एक

धवाहर मि विवाहती कवित राग्निक (धन)। ब्बाइर इत्तर विदा∻ इटी १ अकटा २ शहान्त बेला । चबाइरॉव (पि १४१)- '**म**र्ख मुखं नेव करावृरिका' (एस ४३) । भूका, क्ताइ (धाषा) क्या १४ ६) ज्याह (सूप १ १२ ४): वह. स्वाहरत (सूम १ ₹₹. **₹)** I रवाहरण न रिवाहरणी १ कमन प्रति∹ पादन । २ ह्युन्त (सूम १ १२ विसे) । বৰাছিৰ ৰি ডিবাছতী ংক্ৰিল গতি-पामित । २ इष्टान्तित (बाबाः काबा १ ०)।

चबाद्विय नि वि] चरित्रस फॅन्स एवा ( वर् )। बदाह देखो उदाहर । धशह म [उठाइते] भवना वा(छ्वा)। चवाह केटो इदाहर। ख्वाहो देवो उदाह = स्ताहो (सम्म ७ )। **उद्दिशक [सद्द+ ह**] १ क्लत होना। २ करान होगा। (निते १२६६ थीथ १)। वह क्यूबंद (सनः पदम वर् १९ सूना १९)। क्यह- विदेशांत (विसे १३ ) । वदिक्तिम वि विदीविद्यी प्रवर्शकित (है 1 (YYS 9

(धावम) । विद्या है वि [उदीर्थ] १ इदित अवस्थात चित्रिम । (कार) चरो वि इको विसमी वरिप्री (सत्त १२)। ए प्रमोत्पूच (कर्न) (पएत ११: घन)। ३ तत्त्व "बहा अस्टिंगे लखुकोनि अमूर्ी (सत्त १ श्रा५७)। ४ उत्कट, प्रवत्त 'झानुन्तरोत्रवादवालु अंदे । देवा कि व्यवस्थि नोहा वनसंत्रमोहा औरतमोहा है (भव ह ४)। अविय वि [अवित] र बनिन प्रव्यत (वर १९)। १ क्यर (स.४)। १ क्य, कॉवड

(विने ११७६)। उदीण विविधीली १ प्रतर रिशा है सॅबस्य रखनेवाता उद्यार विद्या में उद्याप (पाचाः नि १९४)। पाईणा स्मे ["मार्चामाँ] হিন্দেশ্টান্ত (মন ২, १)।

क्यीजा की [उदीचीना] बत्तर दिया (ब 1 (1 1

देश है (बुंस ४४) ।

उदीर मर [ उद् + इरम् ] ! प्रच्छा करना। २ वहना प्रविश्वदन भरताः ३ व्यो कर्म प्रदय-प्राप्त न हा उसरी प्रयत्न-विशेष न क्लोन्यून करना। स्वीरह, उदीरेंति (भग र्गन ७०)। मूरा उद्योरिष् उद्योरिषु (मप)। भनि उदीरिन्सेति (भग)। वह उर्ने रेन (ठा ७)। 'नुमनर पूरीरंती' (उर ६४)। करह उदीरिज्ञमाण (पण्ए ११)। हेर्ड उदारसाय (मन) । जुलीरम नेनो जलीरम (वंब ४ ४)। - इदीरस म [इदीरण] १ वयन प्रतिगदन। २ प्रेण्डाः १ कात-प्राप्तः न होन वरंभी प्रयक्त-विदेश में शिया काता वर्ग-फर का सनुमा (कम मः १३) । जनीरणया ) धौ [उद्दीरणा] कार येगा जभारणा । (बच्च २१६१) जे बच्छ-गुरेक्षण्य बस्त दिल्ला बद्योग्गा एमा" (गम्मर 141 145) i उदार्व नि [इदारक] १ क्यक प्रतिशहक। २ ब्रेरक,ब्रायकः 'एकमार्क निमयनिमान्दीरप्यु (पण्ट १४)। १ डग्नेरणा करनेराचा कान प्राप्त न होने पर भी प्रयान विदेश से कर्म भार का धनुभव करनेवामा (कम्मव १४१)। उनारित् देगी प्रदीरिय (सम्बद्ध)। उदीरिय रि [उर्गरित] १ प्ररिष्ठ 'बारियाले पट्टियानी प्रामियानी बरीरियानी बेरिने शहा সমরি (মন নীৰ ছ)। ৭ কবির লরি पारित भीर यस्म प्रधीरिए (माना)। ६ जॉनन इन 'समह्दाया फाना बद्रीरवा' (मामा)। ४ नमय-प्राप्त न होने पर भी प्रयान-विकेश ना गीच गए जिनके धन का सनुभर रिया जान बहु (शर्म) (पाला २३ बन् देगी प्रष्ठ (प्राप्त यदि १८ वि १७) । चर्चेबर देना पंदर (बन) । उद्ग्रह नव [ उद्ग + ग्रह् ] कार नहता । राप्द (रि११c) । हरूमय रेपा उज्जाब (ति ६६) । बद्दा पूर्व [४] इविरोर्नियतः (पंचा = १ (13 बद्-िय (र [द] धरनत श्रीवालका हुमा (**4**₹):

उद्दुख देशा चऊह्छ (बाचा वि ६६) । उद्द व दि] १ जन-मानुष । २ कपुर, बैन के । क्षेत्रेका कुबर (६१ १२३)। ३ मन्स्य विरोध । ४ उसके वर्ष वा बना हुया वस उद्दि [आर्ट्र] योनाधार (पर)। उद्दर्भ कि [उदान] स्थम-पृष्ट (मारू २१)। उत्संह ) वि [उद्देण्ड] १ प्रकट्ड स्टेड । प्रश्रंकम 🕽 (नूमा गडक) । २ थूँ हाय में इत्तर को अबा स्थापर चननेताने तारखाँ की एक जाति (सीपा निष् १) । न्द्रंतुर वि[उद्देशुर] १ विस्तायत बाहर चाया हा बद्द । ए ईंबा (गउर) । न्द्रंस र् [उद्दरस] सन्द का एक मन (रिन)। उद्देश प्रदृदेश व्यूवधिका, वन्तुण भारि छोटा बीर (कप्त)। बहरूद वृं [बहरय] राज्यमा नरव-वृद्धिशे ना एक नरनारान (ठा६) । समिसस र्यू िशस्त्रम् । राज्यमा पृथिती वा एक नरकातान (छ ६)। पच ५ [वर्ष] रेवा पूर्वान्ड बर्ष (टा ६)। ।प्रसिद्ध र्ष ["परिष्ट] रेली पुर्वीन्द्र धर्ष (टा ६) । उद्दर न [के कम्पदर] मुक्ति नुकार (बहु १)। उद्दम पुन देशो उज्जम = बयम (प्राप्त २१)। उद्दर्भित दि दि रेडण्यत स्वाह हवा (दे१ १ )। २ स्ट्रुलिंड सिर्मानंड प्रशिक्ष वानियं व श्रीतमं उर्शिमं (वाप) । उद्देश्चिति [उद्द + द्रस्त] गरित बदन ध्यमिमानी (गरि)। उद्दरम् व [बद्दरन] रिचएम (बढ्द) । प्रदेशक प्रिंद प्रय+ प्री १ क्यार करमा वीहा करना। २ मारमा किन्ना बरशाहिमा वस्ता सारा सारेबर गाउँ वर्ग्ना धप्रया वया तर्गन दुवापनार्थ नवसीर्यं चंत्ररं करिएना द नवसीची शंचार योधेर्त बहुवंड उहुवंड्सा छ नरलीया रिवारधीरी वहुन्द वहुन्दा स्वि दुवानगर्द नवनीएं क्षेत्रवरित तन्त्रवं रिराप्तरोर्दे एगाचे बने आवर परिवास ६ भा बहाबयार्गं नवलोबलान्तं श्राँद दश-नार चारवागा श्रुवनाग्री विरुद्ध (उदा) ।

मनि उद्वेहिर (भग १४)। कवा उद विज्ञमाण (बूध २ १)। इ- उद्दर्थपस्य (पूष२१)। छद्यअ पूं [उद्द्रभ उपद्रय] १ उपद्रर। २ दिनारा हिमाः बारंमी उद्दमों (या ७)। ब**एवइन्** वि [ब्रद्भान्, उपद्रात] १ जान्य कन्तराचाः २ द्विषदः निनारागः विहेता धेला अता श्रुपिना बम्बदता वितुपिता बरुई वरिन्मामि लि मध्रमाणे (बापा)। च्चित्र व [ब्रह्मयम स्पट्रमण] १ पदव हरतत 'बहुपणु पुछ जालुबु मापायरियन्त्रियें' (पिक्कीप)। २ जिलास जिला (संबद याचा) १ उद्देशन व[अपनायम] मृत्यू का छोड़ार सब प्रशाद का बुध्य 'उद्गार्ग पुरा आसमु बारगविविधिय वार्च (विद्या २६) विर 1 (03 षहयगया १ व्ये [उद्दूषमा, उपन्यमा] बद्दमभा 🎜 अपर देखी (भग पगह ११)। उदपाइभ रेगो प्रदृह्याइय अमलस्म ग्री भगवधा बहारीरस्य एव क्या श्रवा त ---गोराग गणे उत्तरहनिम्मन्यग्रे उर्देशकृते बारगुक्यं बहुबाविव-(इम्र)-क्ये विस्ववर्धिः (६म)-गणे नामहिहत-(म)-गणे मागुनमा बोध्विगर्ग (द्य १) । प्रदेशिक वि [प्रदूषन प्रपत्नन] १ नीहिन

प्रस्वित्र हिंदुरून उपहुन्त है पीहिन भीताच्या वर्षाद्वया परिमारित्य हिनाविया वर्षायम क्षामणी ठाउँ संनानियाँ (वरि)। १ स्विगित्र नाज्य्य स्थित्य हिन्द्रमुक्त्य विर्वार्ष थी या महुन्या वर्षायमें (वृत्त १ हो)। इद्युक्त देना दर्शन्यु (मामा)। इद्युक्त देना दिश्चन् दर्शन्य स्वर्ता

वन्ताः वर्षाः (मा) । उद्दा यदः [ अव + द्वा ] वस्ताः दहारै, दहायति (वय)ः मंतः दहाइमाः (बीर वै डा १ स्था)। दहाइसाकी [उद्दायां, प्रतादी] कारव

वरारका का रिद्वाना, प्रताता जाहर वर्गनेत्वी क्षेत्र वाचा ब्हाइमा कोह वंत्रको क्षेत्र होग्ना (कार देव मा दी) । वहाइ ह वैना प्रदाय = मून्। प्रहाइना वेबी प्रहा = क्षर + हा। छहाम वि [उहाम] १ स्वेद, स्वच्छ्यस्य (वाय)। २ प्रचएट प्रचएः 'ठा सम्बद्धस्य इद्दालग्रीहरूरेल ठाला तं बहर्स (सुवा २४४)। ३ सम्बद्धस्य (है १ १४०)। सहाम हुन्दि। २ स्वपूट

विध्योजन प्रदेश (६ १ १२६)। वहामिय वि [प्रशासित] वटवता हुणा प्रशासिक (छत्व स्ट हुन्यो पासित सर्पाद्ववद्ववस्थानसङ्गादेते वन्यीसमञ्जलो स्वरूप स्मित्रपर्ण (विधा १ २)।

वहाय बार [शुम् ] ठीम्प्य, वैधिया होगा, बारदा बाह्य होगा । वह 'वनवरेषु प्रयुक्त-स्वारिधारत प्रवृत्ति । इहा 'वनवरेषु प्रयुक्त-स्वारिधारत प्रवृत्ति । इहा 'व एक्ट्रवीय स्वारिधारत प्रवृत्ति (युग्ता ११) । इहा 'व (युग्ता ११ टी)।

उद्याप (लागा १ १ सा)। द्यार केसी प्रशास = ज्यार 'देशि न कस्स्तीय वंगा बद्याग्यासस्य विविद्दरमञ्जाद' (नज्जा १९)।

বহুনৈ হৈ দ্বি হ বুত্ত দ্ব বাগানিত ঘটেন ত্তা ৷ ব বাগানে ক্ষত্তিক ( বহু )। বহানে বহু প্লিন দ্বিদ্ধা প্ৰাণ কাল হাল ই ঘটল দ্বলা । বহুলাল (ই ৮ হবুৰ গত্নো)। কি চহানেই (ই হবুৰ) ইয়ান বাংলালিক হালিকেৰি নাল্যালিক প্ৰাণ্ড বাহিনালিক হালিকেৰি লাল্যালিক ক্ষত্ৰাক্ষালিকেৰিল (প্লেল্যালাক ক্ষত্তিক বাহুলালাক

कास का प्रथम धारा—समय विशेष ( वं २)। इहास्त्रिय № [आक्तिक] श्रीना हुवा, शोच सिमा ममा (शाम कुना कर हु ३२३) 'सं सारवस्त्रहारि हु तैहि बहुरास्त्रा (कुना

२ १प-निरोप (भीप १)। १ प्रावर्गाली

द्रो )। वहावणमा को [उपप्रावणा] कारन हैएकी (राज)।

(# t ) 1

उदाह्य कि [उदाहक] साम करानराता (महाह र की)

विदेह कि [उदाहक] र क्षेत्रण प्रतिमाशिक (मिया र र) २ लिल्ह (क्छी । क्षेत्रण के क्षेत्रण र्थक्त गानावि 'गामप्रता काहिंद्रण परिकर्त्वमालि (सुध २, क्षेत्रण क्षेत्रल (सुध २ )। ४ न क्षेत्रण विकास सुधा धानु के विभिन्न क्षेत्रण क्षेत्रण

प्रवास्थित (वार)। विदेश वि [वर्षा प्रवासक (बृह्ण १)। वर्षा कर्क [ण्यू + दिख् ] द्यांका करता। वर्षे वर्षिमज्यकि (ब्यु १)। वर्षेष्ठ वर्षेष्ठ (व्यू + दिख् ] १ भाग निर्मेश-पूर्वक वस्तु का निश्याल करना। १

केका। १ एंडरप करणा। ४ जार्य करणा। ४ त्रांच करणा। ३ हामानि केवा। ७ हामानि हामान

एहिनिक देवो इहिंदु (शापा १) । दहिनिक रि [व] क्योशिन वितरित (दे १११) ।

वदीरणा देवो वर्त्तरणा 'अनुशैरणअरपाल' वं मास्त्रतं तद सोचाँ (पंच १ १)। सदीयण म [उदीपना] १ सत्तेवन। १ वि स्रोतेषक (मै १ १ देवा)।

वरीयांज्ञ रि [उद्देशनीय] यश्यक, वतेत्रका 'चयमपुरीमित्रवेष्ट्रि मिध्हेष्ट्रि मुक्तविद्धि (रेक्स)।

কাহীৰিকা বি [বহাদিত] মন্তাদিত সম্পাদিও (বালা) শীন্তা বাদিলাহিত তাটা লাহিনীকা বন্দালী (বাহ ৰ পৰ)। বন্ধান্ত (বাহ ৰ পৰ)। বন্ধান্ত বিষ্কৃত বাদানিত (বন্দা ৮ ৬)। বন্ধান্ত বিষ্কৃত হিচাদ দিবা হুবা (ব বহাল)

वाहेत क्यां विद्रास अहरेवाद (नार्स) । काहेस वृं [काहेया] १ व्याप्त प्रवास क्यां क्यां (स्वा १) १ १ नाम का व्याप्त (स्वारं १ ॥ ) १ वामम सुम्प्रवास नुमों के नुस पाव का सम्माप्त (वव १) । विश्व वृं [काह्य १ मान-निवंद पूर्व के बाद् निव्य व्याप्त (स्वारं) १ स्वारं व्याप्त क्यां पावक्यस शासितां । स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं । (स्वारं) । ४ सम्ब । १ स्वीरदार पटवर्ष (स्वारं) । व सम्ब स्वारं स्

१ वनह स्थान (कप्पू)।

इन्स मि [कीहरा] देवो उद्दास = प्रीक्षिक (वित २१)। उदस्य म [उदरान] १ पाठन वाचना प्राथमक "विद्वास वास्त्रणि पाठडम वेद प्रमुह" (वेचमा पर्युट २ १)। १ प्राथमक प्राप्त वीमाना (वा ४ १)। उदस्य सम्बर्ध हु [इदस्य साम्रुह मुस्तुम के

भन्यतन का समय (स्ति २ १)। सन्यतन का समय (स्ति २ १)। सरसमा की [सर्माना] इतर हैको (पंचमा)।

ण्डेसिय न [औहेरिक] १ जिलाना एक बोरा शालु के निय घोजन-निर्माश १ १ वि शालु जिनिया बनावा हुया (बोजन) (वर्ष) 'अनुविद्यं यु बार्य एतने खोदराज नीट्यं बोर्ड (पेचा १७- क्रा शांद्र)।

बहसिय वि [सीहेरिक] १ क्लेफ-माननी अल्केश के दिवा हुंचा। १ दिवा मार्थि के कासाय न दिए क्ल बीमन में निस्त्रीकों के मीनन की बमास्त्र के मानन्त को हुई मैं बाथ इस्म निनकों सर्वेशायित निहासी की की ना केटल दिवा क्या हो (रिंग १९१) **छदेइ प्रिटेश**] भवतात् महावीर वा एक मल-साबु समुदाय (ठा 🛚 🗪) । जरेहरूया भी [उरेहरू छाउ] वनस्पति-विरोप (ভৰ)। एक्टिया ) श्री [वि] बपदेहिका, दीमक सरेदी ) शीनिय जन्नु विशेष (भी १६ स ४३४ बीच १२३) 'जबदेशिक स्वेही' (2 2 23)1 उद्दोद्दग वि [चयूत्रीहरू] मातक हिंगक (पण्ड १ ६)। उद्ध देवो उद्द (स १ ११ पि दर महा<sup>ा</sup>

इर ११ छ १ २)। प्रदर्भ वि जिल्ला १ स्थाप (मे ४ १३ पाय) । २ व्यक्ति व्यक्तिमानी (मन ११ । १)। ३ धन्यस्ति (छामा १ १)। ४ चरित्रवंशा 'ठउरुतमंत्रकार- (पर्ह १ ९)। इक्क देको उक्करिअ = धर्षुतः 'पाशम्लेख धनेच्य व उद्ययप्रधारणा छ छदारो (बन

2 )1 उद्धार्थ (वें] शान देहा (वर्)। सद्धत देवो उद्धा ।

दर्दम सरु [जन्+भूष ] १ माला। २ धामेरा करना ग्रासी देना । चढरिंद (भग १२)। उद्धंसेंदि (छापा १ १६)।

बद्धस वच [ बदु + ध्यस ] विकास करता। संद्र बद्धेसिङ्ग (स ११२)।

**स्ट**क्सम न [स्टूपण] १ शकोत, निर्मेश्वेन । २ वयं द्विमा (स्तव)।

उद्भाजा भी [एड्रपमा] असर देखी (धीष ६८ घा) 'जम्मानपादि पर्श्व पर्णार्थे( प्रश्नेसंति

(ए।या १ १६)। सद्धांसय नि [पद्धांपत] बाब्ह, जिस्तर

धाशेश श्या नया शे वह (तिकृ ४)।

सद्भाष्यां व दि ] विसंवादित वाप्रवाशित 

दद्रविद्या दि दि ] सन्ति विदार (दे t (355 5 বহুবিদ্যান বি [ব্] বিনিত্ত সচিপিছ (ব

**१ १११)** ।

**उद्भर् टु रे**ली उद्भर । उद्धारि [उद्धुत] का कर रवा ह्या (धर्म ३)।

९१

प्रद्रुण वि दि] उद्युष्ठ स्विगीत (पष्ट्)। उद्धारय वि दि विश्वप्रकम वश्चित (दे १ **24**) I

उद्भवृद्धि न [श्रीव्येदेदिक] व्यन्ति-संस्कार बारि बन्पेटि क्या (स १ ६) ।

उद्धम सक [उद्भ- इन्] १ श्रंब वर्षेयह कृषिना बारू भरता। २ ऊर्था परेंकना उदाना । क्यक्र, सद्धमांताणं संकाणे सिमाणे र्वेश्वियाणं सरमूहीर्णं (राय)- 'पायानसङ्ग्ड बाधवस्त्रियमभिताउद्धम्यामाण्यपर्यश्यकार् (रवलायरनागर) (पराष्ट्र १ ३३ धीप) । न्द्रर क्षक [प्रदू+ ¥हें] १ ∜ते ¥ए को निकासना ७५८ वळाता । २ वण्यूसन ऋरता।

६ कुर करना। ४ व्यक्तिना। ५ धीर्युमन्दिर वयेखः का परिप्कार-संस्कार भरता। 🧗 किमी प्रव मा नेस के बंश-विशेष की हमरी : पुरतक या सेश में यशिकन नश्च करना। मनि चेद्रस्मिद्ध (स १६६) । वक्षः पण्नपरं

वन्यार्थं पार्थे जिस्त्रमंदिराइ पूर्वती, जिल्लाई उद्धरंश (मुपा २२४) ३ 'बवद बरमुक्त रही मरहीमारियमुहरगचमछेलु । 🚶

लिवंब्हेस करेस व वंबेप्रांतसा बहाकुरवी ( (सरह) ।

बंद उद्वरित्र उद्वरिकण उद्यरिका. **बद्धरितु उद्भट्ट** (पंचा १६ प्रारू), 'ते नय समारी जिला उद्धरिचा धमूनवा' (उस २३ वंदा १६): 'बाह क्युट्टू कला मगुन्यमं (मुझ १ ४)- 'तम पाछे स्वर्ट् पार्व पीरम्बा (माचा २ः ३ १ ४)।

उद्धर (सप) एडो उद्धर (प्रति) । "करण न [उद्धरम] १ क्यर उठाना। २ पेंस हुए को निकानका (यशक), बीहाक्करायुक्ति यर्गन परला (निवे १३४)। १ छानूनन । ४ घपतयन (मुद्र १ ४-१)। उद्धरण वि[स्] वर्षिद्धः, ब्रह्मः (देशः ११६) । उद्धरिमं नि[पद्भून] १ उत्पादित प्रशिक्त 'इसपुन' उच्छडं जीन्यत-उपाधिमाई स्वरित्तं' (पाष)। २ विश्वी प्रत्य मा लेख के धीरा विदेश को कूमर पुस्तक वा सेख में सविकन नरम कर देताः 'एमो कीर्यायको संग्रेन्नेग बालला-देखे ।

वंकिती ६३रिमी, रतमी वृष-वपुर्मा

(चा ११) 'बेए छउरिया निका चानासरमा महापरिएएगमी' (माबम) । ने माइन्ट प्लीबा हुमाः प्रनिज्यसितं वाहर निदाना हुमा 'उडरियमुष्यसम्म -- (वैषा १६)। १ पीर्छ बल्यु का परिष्कार करनाः 'त्रिणुनंदिर' म स्कृतिमं (भिषे १३९)। उद्धरिक वि [वे] प्रवित विनासित (पर् )। বঞ্জ খু 👣 दोनों চংক भी মসমুচি (पङ्र )। उद्भव वृं [उद्भय] क्रवो भीष्ट्रपण का चाचा मित्र सीर मछ (दिनम ४६)। ण्ड्रयञ्ज वि [दे] उज्जिप्त पॅना हुमा (दे १

उद्धविश्र वि [दे] प्रवित पूजित (वे १ १ ७)।

न्द्रा ) सक [उद्+धाय्] १ दौड़ना उद्धाःत्र }केन सं जाना । २ अपि जाना । उदाइ (पि १६१)। यह उद्धंत, उद्घार्थत, उद्यापमाण (कम मेर ६६ १३ ६१)

धीः। । श्रद्धाञ्च यक जिल्लीय विश्व होता । शर

उद्योक्षमाण (६१६६)। प्रकाश वि किन्द्रावी ब्रहाब्टिक के बा गया हमा दिएएकस्य बहुंचे राजामणियवगरण

मिनवसिंद्दरे (से ६, ३६)। बद्धाव्य पू 📳 १ विपमोत्रत प्रदेश। २

लपुत्र ६ वि वरा ह्या भान्त (दे १ 824)1 चढा॰भ वि [बद्धायित] १ पेमा ह्या

विस्तीर्णं, प्रचन (से ३ ४२)। २ ऊ का बीहा हुमा (स २, २२)।

डढार र् [डढार] १ माण रगण (हुमा) । २ ऋगु देना उपार देना (मुरा १६० था १४)। १ मार्ग्ज (पणु) । ४ वणगर (श्रम) । इ पारणा पड़े हुए पाठ का नहीं भूगमा 'पात्रस्तेश उत्तेच च ब बद्धवावतारला उच्छापै (बर १)। पश्चित्रायम न [ पम्यापम ] समय का एक परिमाण (षण्) । समय पूँ ["समय] समय-शिया (बर्) । साराचपम न िमाराध मी समय का एक धार्च परिमाण (मान)।

उद्धरंप रि [उद्घारक] ब्हारनाम्ब (१प

रुदाव देनो छदा । उद्भव न [उद्घायन] नीने वेली (या १)। रुद्धावणा चौ [उद्धावना] १ प्रवर प्रवृति । २ दर-धमन दर दाद में जाता (वर्ग ६) । ६ नार्म की ग्रीय सिद्धि (बच १)। उद्धि स्त्री पद्धि (पर्) । पृद्धि औ वि दे दारी का एक प्रथम गुजराती 'दंग' (मृज १ टी हा १ २ टी-पत्र 1 ( ## 3 उद्यिम देवी उद्धरिक्ष= उर्द्युत (बा ४ धीरा समावर १३ मीपा पर्व १०)। प्रदीपुर वि [उप्लीपुरव] हुँह क्रीना दिया हथा (भर ४)। उत्युंपस्थि वि [दे] **इ'**बराग हमा (डए)। प्रकृषिय देशे इतय (एत)। ब्रद्भान बस् [प] पूछ राता पूछ काता। स्मार (हे ४ १११)। "प्रभूमा मन [उद् + भा] रे वाबाब करना। र बोर से बमनी को बनाला। उद्याद उद् भाषाः (पड् प्रामा) । उद्भुमान्य दि [उद्भापित] हेडा दिया रथा निराधित (ने १ ८) १ उद्भुमाय नि [दे] १ परिपूर्ण भागान बङ् मामा (दुमा) 'परिदृश्यमुद्धमार्थ साहिरेद्यं भ भाग प्राज्यते (तृहि)। २ कमत 'नमरंतरनुबुनामनृत्रतनहूमर' (स ६ ११)। उद्ग्रंप रि [रम्प्र] १ वनन ने उना हुमा (मे ७ १४)। २ प्रयुत कता हवा मंतुन् वाजिराम' (ब्रोप) । ६ प्रशन्ति "काउन्य-रिचयोजयंती (और १)। ४ बच्चट प्रवेच (मन १३३)। १ ध्यक प्रस्ट (क्य)। उर्शुर 4 [उर्शुर] १ ईना रूप प्यूरं हरन' (राम)। २ अचनह प्रान्त (मुर ६ ६६ 19 7 77 2£Ae11112 } p11 3£A उर्पुमिय रि [ उर्पुयित ] १ रोनाच प्रयोगरी गर्द इतिराम निर्गत विव्यवाली म (बर) । २ वि रोनाचित्र दुननिय (दे १ ११८ ६ १ १ अपूरिवरोपर्को को बनायाँ न तेन्त्र धेनुद्रयन नी (सूर २ १ १) 'दर्जनगरेनावर' (नहा ।

**उद्भू एक [ उद्द**+भू ] १ कॅनाना चलका । २ चापर वयेरह बीजना पैका करना । करक उद्युक्तंत उद्युक्तमान (पद्धम २, ४ । क्प्प)। उद्रमणिय वेद्री सद्भूम (सरा)। त्रयार (ती) वेदो उदाध्य (नार ११)। तद्यस सक जिंद् + मुख्य रेश व्याप्त करता। २ वृत्ति वनाया। उद्भूक्षेत्र (ह 1 (3F Y उद्घुष्टलान [उद्घुष्ठन] दूल को यङ्ग दर सवला 'बारमसागसमृद्यदमुश्मुरूप्टंबसिब्दियोग् । ए। समपद **एक्ननाविधाद प्रकृ**न्हार्रथा । (पा४ व)। उद्मुखिय वि [उद्मुखित ] १ दृति वे मपेटा हवा। २ व्यान्त "निविधेन्युनियमनार्ड" (क्मा)। **रश्**ष्यिया की जिस्स्य मधी था देश निवि ह विचलत्त्वस्त्रप्रेषमीर्मेह गुग्हनादीह । क्यॉरवीम्य विश्वित उत्तविष्ठवं १४**०व**ित । (AR 5A 5AA) I त्रयुमिश्र IV जिल्लापित विसरी क्रा क्या पवा हो वह (विक ११६)। उद्याम पूं [उद्धर्प] क्लास अंचा होना (सिंट्र ११)। 'यं वं यह शहमाजीए चितिस" तं सन्तं रोमुडोसं करोर मह सम्मो' (नुग 44) 1 उद्याप किला किन वेद या बकरी 🕏 रीम । शव रि [सय] उन का बना हुए। 'नोवानियाण विदं नच्चाउ६ प्रारम्सियाहार'। द्यमयग्रसमित्रमणुरीम्गुप्रयम्भुद्धमार्यं त (नुरा ४३३)। बस (बर) वि विचण्त्री विवाद-प्राप्त निम ( वड )। उद्गाह देना राज्याई (कात मुपा २६७ प्रानु २ सार्वशि४)। रमञ्जामाग देनो हर्मा । उम्रह्म दि [उम्रीत] ऊँवा निवा ह्या (पडप ₹ **₹ ₹**@} 1 वर्षद वर [दर् + मन्द्र] यवितन्तव करता ।

(क्य) ।

शक्तव वेको उपगय (नुपा ४७६। सम ६१ कृष्य) । डब्रादेको डज्जा। सम वि सिय]उन का बना हुमा (सुपा ६४१) । उद्मादिय न [उद्माटित] हर्ग-धोतक पानान (स १७६)। उद्यास वृं [उद्यास] १ ईंबाई। २ समिनान, वर्ग (सम ७१)। डसामिश वि [डसमिट] क्रॅबा किया ह्या (पाधा महा स १७७)। दशास्त्रित्र दि दि देवी रण्यास्त्रित्रः 'दशा-नियं स्वानियं (राप)। उन्नाइ र् डिझाइ के बाई (पाप)। অভিচল ইকা ততিম্ভা= নীতিক (মীৰ 2)1 ट शक्य सम [इझि + सम्] ड्याइना उन्ध्र सन करना। यथि उमिक्सिस्सामि (तुम २ १ ६) : इ. उझिक्लेयक्द (सूप १ 1 (4 1 उत्सक्तमञ्ज न [उत्सिक्कमञ] रोमा पोर कर किर वृहस्य द्वाना, साधुपन स्रोहकर किर गृहस्य बनना (इप १३ में ११६)। उद्धी देशो उच्छी । क्वड क्सड्राज्यसाण (इप्प)। 'हमहात (वर) र्' [उप्लग्नस) बीम क्यू उपन्तार न [उपस्कर] वर वा क्शवरण (इव ६ ६)। बर्पेट व [इपास्त] १ पिञ्चना मा पीछे का वाग । २ वि समीपस्य (ग १६६) । प्रपरि के क्यो उचरि (विमे १ २१ वस्)। उपरिक्त देनी उनरिक्त ( नर् )। उपमञ्जमान रेपी उपपाय = दर + शरन्। उपागप देशे उपायद । इरायद ( पर्)। । संक्र उपस्थिपय (बाट) । डपानदिव पूंकी [उपानतृ] दूना भाग चित्रे बेरालेगलदिए **इ**तमास्ता (मुत ३१२) 'वह वे निक्ताल्डियाकी नाहिन्ती (बुग ३६९) १ वज्य दिवयवानान्यक्रमेर्दि इस्रेन्द्रिज्ञामाणे क्षप देनो आव्य a वर्षत् । कोद्र (ति १ ४) £ 2 246) :

सरपन्न देखो नयपण्य (जना सुर २, १६ )।

बहा हुया 'देवि य यागामे बन्म'ए' (उना' सूर ३ ६६)। २ उसत क बा (धाना)। 🤋 অংশুর কবর (उत्त २)। ४ न उपातन, चद्रमा (धीप) ।

रूप्पद्भ रि [उत्पाटिक] सन्तापित चठाया ह्या। वृद्धियादयमुणाले बद्ठूण विश्वं व सिविसम्बद्धं खमिरिए (से १ 🐧 )। रुरपङ्ग्रहें है हो उदयय = स्त् + पत्।

छप्पैठ वि दि] १ वह बन्यतः । २ प्रंपक् क्षीचढ करिरो । के ब्ह्माडि (दे १ र दे )। ४ समृद्धः पश्चि दि १ १३ पाचा भउड स ४१७)।

'रावपस्मव' विश्वरहार, प्रदिश्व देण्डीति बूधरमकस्य। नामस्य नोहरूपंतरान्यं

हरपमस्तं व ॥ (गा ३८३) । **रुप्पञ्च सक** [उन्+पद्] स्पन्न होना। सम्माति (क्या) । वक्त, प्रध्यक्षति स्थ्यका माण (वेद ११) सम्म १६४० मन विसे 1122) (

करपद्व सक्ष [सन्+पन्] स्त्रना अवाः वाना दुदना (प्राप्ता) । करपड पूँ [बत्पठ] शीन्त्रिय बन्तु-विशेष सुत्र कीट-विधेय (स्वत) ।

**एव्यक्रित देशे एव्यन्स (त**ह) ।

चप्पण सक [ चन् + पू ] काल्य नगैरह को सूप धारि से सारु-भूबरा करता। वर्ग, 'सानी बीड़ी बना य मुख्यंत्र मिलग्यंत् छपास्त्रिग्यत् र्म (पर्राहर २)।

कुरपुष्ण वि विरुपमा ब्रन्थन संभात जब्भूत

क्रप्पंच कि दि] १ प्रकित। २ किरक

बरपन्ति वि बिरपन्ति जलाति प्राप्तुर्गान

क्व्यक्तिया श्री [कीस्पक्तिश्री] दुवि विशेष

स्टप्पणय न [परपदन] मूप वादि वे वात्व वर्षेया को साक-मुक्य करना (वे १ १ ३)।

(मक् नाट)।

(**पद्**)⊹

(**प्रत**) ।

रप्रंग पू दि । समूह, यशि

(बर १४५ टी सामा १ ११)। संक्र उपप-

<u>प्रचा (यीप) । इ. सच्यद्दश्रस्त (से ६ ७८)।</u>

प्रकार (जीव १)।

(ठा१ से ६ २४)।

रिला (से १,६)।

२ २, २७)।

पिम)।

हेड उपपद्धं (पुर ६ २२२)। उत्पद्ध देखी सत्पव। यह सप्पर्शत (से ४,

'खरपवणुक्षुयसायरतरं यवेवेदिः हीरण नामा ।

श्रासुचरवत्रभिक्कि कप्पवनिवर्ग कुर्शुतिया बहुई

(तूर १३, १६७) । २ नाट<del>व</del>-विधि का एक

रूप्यण म (उत्पवन) क्रेंबा बाता, उद्यन

स्टप्यय व [स्टब्स्वन] बन को बाँबना

क्षप्पयणी की किरपतनी विद्यानीकरेप (सम

चप्परिं (मप) बेको उवरि (हे ४ ३३४

कप्परिवादि, ही की हिस्परिवाटि टी।

बहुन्ते बारुम्मासा सबे बहुना (पच्छ १) ।

रूपराध्यर व [स्पयु परि] क्या-क्यार (श

उप्पद्ध न डिल्पको १ कमल पथ (ग्राया १.

१ मन)। २ विमान-विरोधः (सन् ३०)।

१ संस्था-विशेष 'छमक्षम' को जीशसी साख

र्षे कुसुने पर को संक्या सब्ब हो बहु (ठा २,

४) । ४ युगन्ति अस्य-विशेक 'परमुप्यसर्वेशिए'

(वं ३)। १ पु परिवासक-विशेष (प्राप्

t) । ६ प्रीय-विशेष । ७ समुद्र विशेष (पर्शा

१४)। वेंटग पू विस्तक यानीविक

रुपार्श्वम न [करपसार्क्क] संक्या-विशेष, 'ब्रह्मय'

मत ना एक साबु-समाव (सीप)।

ज्ञादा क्रम विपर्यास विपर्यंग 'ख्रम्परिवाणी

युरमुक्तोसबस्द्रियमं वर्शनयरेखः वरिवाबि ।।

इच्यय पुंजित्यात् । शब्दात्तन ऋषि भागाः कृदना ज्यूपन । २ जलाचि 'धवट्रिए चने

मंदपडिबाडणमाई में (बिसे ६७७)। लियस

र् िनिपात् रिक चा-शीचा होना

उप्पक्त वि [व] सम्यासित यास्य (पर्)। उपय सक [अत्+ प्यू] १ तीपना पार

पर्व्कारणी (बीव ३)। कप्पछिप्पी भी जिरपव्यिनी क्यलिनी कम्म का गान्य या पीचा (पएख १)।

**ब**रपय सक् [तत्+पन्] प्रकृत नूदना। क्ष्मवह (महा) । यह- धप्पर्यंत, उप्पयमाण

क्यात एक साविका (भव १२ १)। ४ एक

बनाह्या (स ४८६)।

(विसे २०१९)।

करनेकासा (ठा ७)।

उपद्धा औ [टलका] १ एक इन्नाएी काम नामक पिशाचेन्द्र की एक सप-महिपी (ठा ४१)। २ इन माम का ब्राधायमकमा का एक धान्ययन (स्तामा २ १)। १ स्वनाम

करता दैरना। २ ऊ वा जाना पड़ना। वह

उप्पर्वत उप्पयमाम् (स ४ ६१ ६ ८६) ।

उप्पयक्य नि [प्रहाक्तिक] विस्ते शैना

च्य्यद्व पूँ [इस्पथा] क्रमार्थः कुमार्थः 'पंचाठ

क्याई नीर्ज (निवृश्धे ४ २६ हेना

२११)। आइ वि विवासिन् उसरे एस्ते

ध्या की बेबी क्याय = क्याब (ठा १---

चप्पाइ वि [ घरपादिम् ] ज्लप होनेवासा

चप्पाइच वि [सरपाइयित्] बलावक जलम

वय्पाइय न [भौरपाविक] मूर्जन बारि

बलातों का सूचक शास (शूध १: १२ ६)।

षण्याद्वय वि जिल्पादित जिला प्रमा

धप्पाइय वि [मीरपातिक] १ मस्तामानिक

श्वमिमः 'जप्पाइयरब्बर्य व वेडमेर्त'। २ धाक-

स्मिक मन्द्रसात् होनेबाबाः 'क्याद्रया बाही'

(राज)। ६ न शनिष्ट-सुचक माकत्मिक उपप्रव

क्लाक भी मी नाविवपुरिता धक्यवारा सपू-

क्या होत् । शेसइ क्यंत्रकर्ण व भीममुप्पाइये

देशो रुप्पाय = क्यू + पारम ।

बेरा (भूर १६ १ = ६)।

**प**णापर

**रुपा**एंत

च्यापत्तप्र

'उप्पाइयर्पनिष्कर्रसक्ते (चय)।

वानेवाला निपद-शामी (ठा ४ १)।

पन ११ ठा ५, ६--यन ६४६)।

ख्य्याङ्का देखो खप्पाय = उत् + पादम् :

कोड़ वी हो वह धाचु होकर फिर बृहत्व

शब्म हो वह (ठा२ ४)।

की चौरावी साम्र सं पुराने पर की संक्या

143

क्प्पाई सर्ट [ उन् + पार्य ] बराज करणा। संक्र उपपाक्षिकप (सिने ६३२ दी)। उप्पाह दुं [क्साट] कनूबन अस्त्रन 'ममग्रोम्पासे' (चर १४६ दी १८६ दी)। उपपाक्षप न [क्रपाटन] १ अस्त्रमण अपर

ष्टरना। २ समूबन अस्वतन (ध २६६ एव)। बप्पाडिय वि [उत्पानित] १ उत्पर उठावा हुया (पामा प्रतर)। २ उन्पृतित (पान)। उप्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पर विश्या हुया

'क्लाडिक्सम्बद्धार्थः चंद्रगसीसाख देखि नमा' (बान १६) । उप्पादक वि [स्ट्यादक] क्लाप्त कर्चा (प्रवी

१७)।

क्यादीअमान केवी उत्पाद = ज्य + पहस् ।

क्यादीअमान केवी उत्पाद = ज्य + पहस् ।

क्याद क्ष [ छन् + पाइस् ] करक करता,

क्यादा । क्यादीह (क्षण)। वह क्यादा ।

क्यादा (हुर २२ १ १९)। क्षण न्याद्यादी (हुर २२ १ १९)। क्षण न्याद्यादी (हुर २२ १ १९)। क्षण न्याद्यादी (हुर)। क्षण क्याद्यादी (हुर)। क्षण हुर्ग। क्षण उपाई प्रमान (क्षण) (हुर)।

कर्णाय हुंग [क्लार] र वरकत क्रम-नागठ भी वर्ग वेतुमणा चित्रवित नहंस्युमाने हुंग रे । र शादिस्क कराव पेक हुंग र । र शादिस्क कराव पेक हुंग र गावक ब्राह्नकों क्यारण कामाने (म्हा) र सम्बाद कराव कामानिक माने वाद सम्बाद कराव कामानिक (म्हा) र सम्बाद हुं वित्याव कहाना कराव १५)। दिस्साय हुं वित्याव कहाना कीर प्रकार (४ १११)। उप्पाद हुं क्यारण करावि सामुक्त (इस र हुंगा)। प्रस्त मुं व्यक्त वादिक कर्म कर्म कर्म कर्म साम्य हुं व्यक्त वादिक कर्म

वेषियां श्रीहा के लिए विचित्र प्रशास के खरीस

यनार्वे (भव ११ वीव ६)। पुरुष न

ृपूर्वे प्रकापूर्वे कत्वारा-किरोप शारहर्ते कैन सङ्ग-सन्द का एक माग (तम २६)। चप्पायम वि [उत्पादक] १ सराग्र करने-

वाका । १ पूं. वीरित्रव बन्तु-विरोप कीर विरोप (वव ८)। वच्यायवा न [प्रत्यावत] १ अस्पावन, उपार्वन

(छ १४)। १ वि स्टाइक स्वार्गक (प्रस १ ४)। क्यायणमा १ वी डिस्पाइन्स १ स्वार्गक सर्पायणमा १ वर्ग हरका।

जियाना जियाना विश्वास्त्र । वेत शहु की निका ना एक धीप (धीष ७४६ स १ ४) निव्ह १)। उपनायय वि [उत्पादक] जलक-कर्या (मुख

२ १६) । राज्यास्त्र सम्बद्धाः विद्यास्त्र सम्बद्धाः सम्

२,१६) । क्नड करिपयमाण (उस) । कप्पास सक [ क्रप्त + क्रस् ] हैसी करना । स्प्यामिति (मुख ११६) ।

वरपाइल न [में] ज्यांना लगुक्या (नाथ)। वरिप सक [ वर्षम् ] केना । वरिपड (व्या)। वर्षिय हा विपरि] करा अदि एरं भीश और विचा का गरिपडींति श्रेमेस्मा ! वर्षिय शैव च्याना स्थाने प्रकार पुढशीए' (श्रीष श्रेमार्थ स्थान हुन स्थान)।

विष्याक्षिमा कौ [वै] हाव का सम्य प्राप्त, क्रोफोस (दे१ ११)। विष्यक्षक वि] १ मुख्य वीमोगः २ एक

कृषी। १ धपरीति धरकत (१ १ १६१)। वर्णित्रस्य वि [वरिषज्ञस्य] धरिन्याकृत व्यापुत्त (वप्प)। वरिषज्ञस्य स्व [वरिषज्ञस्य ] धापुत्र की

ठ व्ह बाक्स्स करना । कहे हिस्स्य क्रमाण (क्षम) । हिस्स्यक्ष [के] क्ष्मो हिस्स्य क्रम्यूक्ष

ाध्यस्य व बाक्सं रोबारियं "प्रोहेश्य प्रधिप्त्यं व बाक्सं रोबारियं "श्रेत्रं दुय-कुष्यक्षपुतालं व कमयो बुरोयल्" (वीव १) 'रुखे यह स्तर प्रवाहुको पहावियो प्राय-स्थानको 'राक्षकोलीत प्रायरिमको (उत्तम द १७६१ १२, दण्डे, घोन्स्यानंतराहर्षः (श्रा ११६)।
किराम्य वेलो उराम्य । स्था अपित्रित (श्रा ११)।
किराम्य विश्वी १ मार्च औत ११ ११६ ६ ११ ११ ४४५ पुरु ५५४५।
कार्या १६ सम्बन्धियुद्धा कार्यान्युद्धा स्वत्रान्युद्धा । विश्वर सम्बन्धियुद्धा ।

पान्।

प्रिप्तंत कि [क] स्वतः भूक्त (चेत्र) (प्रव प्रक शि)

रुप्तंत वक [डत्+पा] र प्रतस्तातः रुप्तंत । र किर किर ब्लाउ होता क्र. रुप्तंत (प्रकृत र स्प्तंत प्रक्रा । विभिन्न कि जिपित् प्रकृत हमा (ह र र र )।

विभिन्न विभिन्न किर-विर स्वतः हेता (प्रम)।

(एव)।

किरायसमान केवो करपाव।

किरायसमान केविन्यसमेन करपाव।

किरायसमान केविन्यसमेन करपाव।

किरायसमान केविन्यसमेन करपाव।

क

विभाव (चे पुण) विभाव १६ [चत्-भ पीडयू] १ कम कर वीक्या १२ छव्यानाः चिस्तुं वा स्मार् ज्योवादेण्या (सामा २ ३ १ ११) । स्मारिकेण्या (ति २४) ।

कप्पील पुँ [के] र संवात सम्बद्ध (देर १२६ सुपा रहा भूद ६ ११६) कवा र पुण्क ७६। कम्म १२ टी) 'कुवामकी सर्व सम्बं बाहुमीको विस्तासर' (महा)। २ समुद्र विषयोग्यत प्रदेश (देर १२६)।

उप्पोक्तम न [स्त्रीहन] पीझा क्याप (धर्भ)।

कप्पीक्षिम नि [उत्पीक्षित] कस कर व वा हम्म कमीतिवर्शिवसम्हणहिमासद्वस्यराजा (नग्र १ वे। विमा १ २) 1 चल्पुक्ष वि [स्त्युति] सन्तवितः कृता हुमा (हे इ अब प्रकार है)। एएंसिज रेको उप्पुसिस (वे ६ व१)। रुर्पुणिञ्ज वि [स्त्यूष] सूप न साफनुक्छ किया हुया (पाय) । स्टप्पन कि जिस्पूर्ण पूर्ण स्थाप्त (स रुपुद्धाः वि [न्युस्टित] रोगाध्यत (स २०१)। उल्पुसिञ वि [इस्रोब्स्टित] कुर प्रान्धित (से ६ ८६ यहर)। प्रत्र पुं[ असूर ] १ प्राप्त्र्य (पण्डा १ ६) । २ प्रक्रप्ट-प्रवाह (धीप) । स्थापन्स (मा) देशो पविकला। ज्यापन (चिय) 1 स्टब्स्क स्टब्स् [स्टब्स् + इस् ] संमानना ब्राग्ना करपना करना। जनस्वामि (स १४७) । उपोम्बेमि (स १४६) । उप्पक्ता औ [उठ्येका] १ वर्तकार विशेष २ विश्वकेंगा संभावना (वा ३३६)। हप्पविज्ञम वि (उस्मेक्टिक) संगावित विकलियत (वे १ १ १)। उप्पेय न दि भम्पन, रिमारि की मानिशा 'पूर्व व मेननट्ठा छन्देर्व वह करेड निक्कियाली' (बद ६)। हत्यस सक [ स्त् + नमय् ] वैदा कला उन्तव करता। उप्पेक्स (हे ४ १६)। उपालिम वि [उसमिव] क्रेंबा क्या हुमा, चलत किया हमा (हुमा)। रुपाइ र् [रक्तमन] क्रीचा कला (परम ब 282)1 ष्ट्यम प्रेडिसपी शस् भ्य कर (से १ 48) 1 हप्पहरू वि नि अपूर्त, बाहम्बर्गावा (दे १ ११६) पाम स ४४१)। <sup>4</sup>शटफ देशो पुरम (मा ६६१) । चप्फण सरु [ उत् + फुण ] खोटमा प्रम में बाल्य मादि का क्षितरा दूर करना । दण्करांति मुद्दाः सम्बद्धानु, व्यति प्रणा-िएसपेति (माचार, १६४)। करपंत्रोस वि [दे] पथ श्रीनर (देश ₹ **२**)।

कप्याल पूर्वि असम दुर्गेन (देश कः पाष) 1 हरफास तक [ उसू + पारम् ] १ क्टाना । २ उच्चाइना । उपकानोइ (हे २ १७४) । सरफास सक [क्य] नहमा, बोलगा। उप्प्रासेष्ट् (हे २ १७४) । धप्फास वि विश्वकी बहुनेवामा सूचक (E AAA) I कप्पानिकावि विश्विती १ वर्षित । २ मृचित (पाय, छप ७२८ टी स ४७०)। चरिफड थरु [ उन्+रिफट् ] कृष्ठित होना यसमर्थ होगा। जिल्हाह उप्तेपह 'एमार्ज्ञक्तमणोहि बाधिरवमाणो बन्फि-(को)-बद्द परमू' (महा) । ष्टिफ्ड बक [ उन्+स्फिट् ] मंहुक की বহে পুৰণা ভয়না। অফিন্তম (ববা २७ १)। यह- शरिफबंद (पव २)। चरिपञ्चण न [उत्स्पेलन] कृष्टिव होना (स ६६०) । चिप्तक्रिय वि [प्रत्सिक्तनियः] १ क्रुएउरा । २ वाहर निकता हुया 'कश्वद सबहुतक-चिवनिष्पपूर्णक्रिममोचिक्सनो (सर १६ 784) 1 **एएईक्झा की दि**] योक्स, १५का बोले-वाकी (वे १ ११४)। चर्फ्टिक वि [व] बास्तुत विद्यास हुसा (R t. tt4): क्प्पुरुण्य वि [वं] बापूर्ण मरा ह्या व्याप्त (दे १ ६२ मूर १ २६६) ६ २११) । रुप्युक्त मि [दे] स्पष्ट, चुन्य क्षूया (पन १६८ हो)। रुपुरक्क वि [उस्पृक्क] विकश्चित (पाया) से 4 24)1 । बर्जुब्रिजा भी [डर्जुब्रिय] मीहा विरोप पाँच पर बैठ कर बारंबार ॐचा-मीचा हाना 'जपुलियाद सेन्द्रर

मा एर बारेख् होठ परिक्रमा ।

पुरिकार्यको विश्विधिनहिद

( या १६६)।

मा बद्दगुमारमस्ट्री

नगा। संकृ उपकृतिकण (पत्र)। ( क्रफ्रेयक्फेक्रिय बिनि [ र ] कान-पुन्त प्रवस बचन से, 'उप्लेशक्येर्ज़र्य सीहराय' एवं वयासी' (विषा १ १—पत्र १ )। चप्फेस पू [वे] १ शास मम (वे १ १४)। २ मुकूट पगड़ी शिरोबेप्टन पंच धमक्कुहा पर्याचा सं अहा-बार्य सर्व उप्टेसं चनाङ्कुषाठ नामनियणी (ठा ५ १--पत्र ३३ बीप श्रामा २३ २२)। उप्पन्नसम्प न [दे] इराना अयोग्यादन (मृख **1 ()** # **उपकोक्ष पु [दे] उद्गाम अदय (देश** 28)1 उधुम सक [सूज्] मार्जन करना गृदि करना साक करना । उनुसङ्ग ( यह ) । सब्बंध कर [सङ्+कन्य्] १ फॉसी सगाना फंधी सवा कर मरना। २ बेप्टन करना । बङ्क 'बसलिदिवर्डान्य दिहा उच्चे र्षती शहपार्खें (मुपा १६ ) । संक्र उदर्थ থিম **বহুৰ্থি**জন (বাল্য বি ২৬ स ≰४६)। रुव्यंभग न [उद्यवन्धन] फॉसो सपाना उल्लाम्बन (पर्वा २ ३)। उब्बाज वि [उल्ह्या] उल्ह्र्य (पि २६६) । उब्बद्ध वि [बदुबद्ध] १ जिसने फौसी सगाई हो बहु फॉसी सगाकर मराहमा। २ वेष्ठिया 'सुर्यपर्यवायस्यको' (सुर = १७)। ६ रिम्बर के साथ राजों से बैंथा हुया शिक्षक के बायत (ठा ३)। 'सिप्पार सिन्तांतो विक्वार्वेतस्य वेद वा विक्वा। विद्यमिन्दि सिक्बम्मि वं चिरकास तु सम्बद्धी (बृह्)। वर्षिवयि [वे] १ बिला प्रदिश्त । १ सूच्य वे करन्त । ४ शकट वेय वासा । ६ मीत उसा हुया। व सद्युग (वे १ १९७३ वज्या ६२)। बर्ध्विष्ठ पि दिं ] नकुत जबराना (दे १११ टी) । कव्यिक्त न [के] कन्नुप जन मीसा पानी (t t ttt) : वर्डिवविर वि [वे] विल प्रीरात (कप्)।

उप्कृत्म सक [सर् + स्पृष्ठ ] सिवना विक

उरवृद्ध कर िद्र + जुक् | बेमका बहुतर। वस्तुक न [व] र प्रमन्ति प्रमार। २ वस्तुक न [व] र प्रमन्ति प्रमार। २ वस्तुक कर्म [ उद्ग महा ] वेरमा। उस्तुक प्रकृतिस्पुष्ण न [निमुख म] स्वस्त्रम करण (राष्ट्र र। उन रेश्ट हो)। वस्तुक कि [चकुनुक्य] वस्त्रम वीर्ण (म

६७ स. ६८ )। उद्युक्त मा [उद्युक्त ] क्यान्स्म (वप्पु)। उद्युक्त सम्बद्ध [ उत्र + सुभ ] संयुक्त होता। स्मृत्य (प्राप्त धर्म)।

कस्पूर (विचित्र) र धीकर ज्यादा। २ वृं वीचात्र मद्भाः १ स्वप्नुः, विप्तमेलत प्रकेश (वे १ १२६)। उद्ध्या सर्च [ क्ष्मीय्] ब्रेचा गरमा खड़ा करमा। उस्पेत् ( वात्रा १४) कसीष् (बहा)। वहारी हेत्स हैरे ११ गुर १ ६

बर्) : वश्भंड पुं[संद्भाण्ड] १ सत्त्र ग्रीह काल्या निर्मेक होहा, यह शिदुषत

'सरबॉच वह बालसि

देशनायः निर्मति वे हिंदे । दिस्सोरात् बन्धंशे

गीवामि स्वरणनहानो । (ठा ६ दो) । २ म नानी पुनित प्रचन 'कार्यप्रयण-(परि।)

उद्मान दि [वि] ग्लान बीमार (दे १ ११ मा)।

मा) । वस्मेन रि [उद्भामा] १ बाहुन व्यापूर मिल (६ १ १४३)

लान्त (६ ६ ६४) प्रता गत्निका प्रतिकृति स्वीत् । स्वत् ए इसा गत्निका प्रियम् । स्वत् नार्वात्रिका विद्यम् । स्वत् नार्वात्रिका विद्यम् । स्वत् क्ष्यम् । स्वत् क्षयम् । स्वत् क्षयम् । स्वत् प्रतिकृति । स्वतिका । स्वति

परभंत प्रशिक्षाम्त्री अथन नरस-पृथ्विते या भौषा परदेनकः—पृष्ट नरक-स्वान (११८१)।

त्रस्यसा वि [वि] दुष्टिय्य नगया विति पोत्रमातिग्रहार्ष (६१ ११ जान)। यनसञ्ज्ञ की [वि] कोश्चल-समुद्द (एय)। यनसङ्घ वि [बहुसन्दे] १ प्रकल प्रवप्तः 'स्वमान्यत्रपुष्ट विश्वसम्प्रसाग्रह वाहायाः' (पुणा ४६)। 'यनसम्बन्तीनग्रीसणाप्ये'

( गुपा ४६ ); 'उच्यान्त्रस्तीनश्रीसातायः (श्रुपि ४)। २ सर्पन्द, विकासन (श्रूप ७ ६)। १ उद्धार धार्डमरी (वाथ) 'यहरोको धार्डामी धार्डासी

दुम्खेदि चंबामी ।

धर्कभागे व वेगो पंचवि

नक्सीर बहुबीत ।' (बस्म)। बब्धम पुं [बब्धम] १ खोन २ परिश्रमण (नार)।

स्वस्य सकः [स्तु + सू] स्वयः होना। स्वस्यः (पि ४७३८ नाट)। यष्ट्रं स्वस्यतेत (तुरा १७१८ ६१६)।

वस्मय मक [ उत्त्वेय्] केंबा करता खड़ा करता। कस्मय वुं [सबुमय] स्वतिस प्रापुर्वत (विसे

बस्मय पुं[सब्सय] स्पति प्राप्तवि (विशेष राज्या १२) । सम्माविम वि [कर्णिवन] क्षेत्रा विभा ह्या

(जर पु १६ वज्या १४)। चन्नाम वि [वि] सान्य उत्तर (वे १ २६)। सन्माम सम [सब्द + भ्रामय] पुनाया।

जम्मानेड (एम १२१)। चम्माम व्र [बद्भाम] १ मरिजनण (ठा

चरुमाम पुष्यिक्षाम ार प्रारक्षमण (का ४)। २ मि थरिझमण करुताला (वस १)।

उस्मामन्द्रां की [उद्भामिकी] संगीकी बुसदां की (वर ४१ बृद्द १)। बुद्द्रामान वे [वरुकामको कर कर्ला

चम्भामय 🐧 [उद्भामक] बार, क्लवि । (पिड ४२ )।

बस्मासम् वृ विद्वासम् । १ वारतरिक वर्णानन्तर (वी. १ वा) । १ वापूर्तावेष को तृष्ठ वरीपूर्व । आर वे उन्नत १ वी ७) । १ ति वरिकास्त वर्णान्त (वा १) । उस्मासिमा । औ [उद्दुक्ताविना] दुवस इस्मासिया । औ (उद्दुक्ताविना) दुवस इस्ट्रां

उदसासम्बन्धः विश्वति । श्री साहित्वे नाइ-नुष्या परमा क्यान । २ वि सहति सहति सहति । सीप (६, १११)।

ब्बमाक्षित्र वि [वै] सून वादि से शाव विमा बुधा जन्तुन 'जन्मस्वितं जनुस्तिमं' (नाम) बब्दमान सक [रम्] बीझा करना, खेनता। स्वस्थानक (है ४१६० वह)। वह जन्मा बेटा (मुमा)।

पदा (पूर्णा) वर्ष (ज्ञद्रसावता) १ प्रय-प्रसावणा । वर्षा, तीरम प्रविध प्रयम्प क्रमावणाय्यं ( का १०---वर्ष ११४)। १ क्रमेश्या विचर्षकुष्ठः 'क्रम्यसावस्मावणार्थि (णावा १ १२---वर्ष १४४)। १ प्रकारन प्रवशीकरण (स्विधि)।

चडमाचित्र न [रमण] मुख्य औड़ा संगीत (दे १ ११७)।

चन्मास एक [क्यू + मासप्] प्रशा रित करना। वह जन्मासत चन्मासी (स्त्रा २: १६ व ११६)।

चक्यासिय वि [बद्भासित] प्रगण्यि (देश २०२)

भरणको श्रीहरते विस्तृत्मि बार्जन्यहेड् देवेड् ।

रतिहि य वतिहि य

कस्मिन उद्यासियं वस्त्रां ॥ (मुवा ७७)।

उदमासुष्ठ वि [वि] शोसाहीन (वे रे ११)।

धरमासँव रैगो प्रमास

प्रविम बच्चे प्रविमय = विश्वक् (धावा) ! विकासिक वि [प्रयुक्तवृति] चौह वहास

हुमा (वजर) ।

वरिमञ्जा की [टब्नचा] नानी एक वर्ष्युवा शांक (शिंद ६२४)।

उदिसंद तक [ द्यू + सिन् ] १ क्रेम करणः, एता नरुता १ देन्द्रिक्ट करणः । १ मेट्ट रिन नरुता १ प्रोत्नाचा वर्षः वर्षः वर्षःवर्षिः । वर्षः प्रित्नित्तान् ( पाना २ ० ) । नवर्षः प्रित्नित्तान्तिकार्वरुप्तियः वृष्ठिपारियः ( पृष्ठा ६२६ ६० सन १६ ६) वर्षः वर्षस्तिन्यं वर्षसिद्धं (पेना १३: ११ ४०४)

बन्भिग देशो बन्भिय = बॉर्मर् (गप्प रे

X)

सक्तिहण ४ [उद्भेदन] सन कर यसन होना भाषात कर पीछे हटका 'बेर्स चिय चुठिका,

च्ह्नुविनवस्त्रमुह्नो महित्रेनु । हैन देव शिसिन्दर

पव्हिरोहंदोसिये कृषियों ।। (यबर्ष) ।

सक्तिएम ) वि [सबूभियां] १ धंदुरित संब्याम ) (प्रोव ११३) संब्याने पाणिय, पित्र (पुर ७ ११४)। २ उत्पाटिक खोला हुमा । वे न कैन साबुमों के लिए मिला का एक दोष मिट्टी वसैयह से सिप्त पात को चौसकर समने से ही जाती मिला 'द्रवसाह ग्रोबटलं उत्पिरिय व तमुस्मिन्पर्यं (पंचा १६ ठा६ ४)। ४ वि ऊँ वाङ्का आहा ह्याः 'हरिमदमुस्मित्रयेमेचा' (महा) । एकिसय वि डिव्सिक् पृथ्वी को फाइकर

उभनेवाको बनम्पति (पर्यष्ट् १ ४)। हरिमय वि किथ्वित जिला किया ह्या खड़ा किया हुमा (सुपा = १ नहां वन्ता = ) |

उक्सिय न [उद्दिसद्] १ नवछ-विशेष सपुर के रिनारे पर सार बनके संसर्व से होने-बाखा नोन (बाका २, १ ६ ४)। २ पून चौबपेद, रामभ मादि प्राफी (शंबीब २ घमैसं ७२: सूच १ ६ ८)।

सबभीक्ष्य वि[अर्जीकृत] क्षेत्रा क्रिया ह्मा 'उम्मीक्मकाह्युक्ते' (डप ११७ टी)। उस्मुक्ष पर [ रहू + मू ] बलन होना । BEHAR ( A & ) ! चक्सुआम वि [दे] र ज्वनता हुवा प्रतिन

से तन्त को दूब वरीयह क्वचनता है वह (दे ११ शाच वर)।

स्क्युम्म वि [व्] वज धरिवर (वे १ १ २)। धरमुत्त सर [उत्+ दिय्] क्रेंबा फॅक्ना। ज्युत्तर (हे ४ १४४) ।

रम्भुचिम वि [रात्याम] स्था केंद्र ह्या (कुमा) ।

च्डम्स्चिम नि [दं] स्हौपित प्रधीपित(पाच)। सबसूक्ष वि [न्यू सृत] १ अन्तन (गुर १ २६६) । २ बाक्तुक काराह (विशे १४७६)।

एक्सूबजा श्री [और् सृतिकी] श्रीहम्स वास् देश की एक मेरी जो फिमी बायन्तुक अयो-अन के उपस्थित होने पर बमाई बाती बी (बिसे १४७६) । हरमेश ( हिंदु भेद ) ज्यूपम उलाहि 'उम्हा ध्रतिविदियत्रंसीमाणिक्वविषक्षं क्युक्मेर्यं (मठड)-'प्रश्निणुवजोम्मणुक्योयभुक्तरः स्वयत्तमणुहरः

चवा (बर ११ ११६) । त्रक्षंत्रम वि [उद्भेदिम] स्वयं अराज होने बाना उक्सेदर्म पूरा सर्वेटई बहा सामुई

कोर्ग (निषु ११)। च सर्⊈[इ.स] जमय, दोनों (पंच ६ १०)। रुमआ म [ रुमयनम् ] दिवा दीनों रुख से बोनों बोर ने (स्व धीप)।

द्भकायण वेको सामञ्जायण (सुन्त १

क्रमय वि डिसय] धूनव दो दोनों (ठा ४ ४) । **रैचं** य [त्र ] दोनों जबह (तुपा ६४०)। छम पूंष्ठिके यह धीर पर जन्म (पेचा ११)। हाध विद्या शोनों तरफ से क्रिया (सम्म ६०)। समय्द्र एक [बक्ष्य ] ठक्ता, बूर्सना ।

जम**ण्डद (हे४ ११)। बङ्क** समच्छीत (क्रुमा) । कमन्द्र सक [अप्रया + शम् ] सामने बाला ।

समन्दर ( पत्र ) । चमाको [तमा] याचै, पार्वती (पाप)। २

ब्रिवीय बामूबेव की माता (सम १४२)। ६ दत्र-गरिका-विशेष (भाषू)। ४ वी-विशेष (क्रुमा) । साह्र [रिधाति] स्वनाम बन्ध एक प्राचीन जैनाचार्य झीर निकाद प्रत्यकार (बार्व १ )। समाज न वि प्रवेश (शाचा २ १ ६)।

समार देखो सुमार (प्रवा २१)। उमीस वि [चन्याम] मिभितः 'पविकसिर पनिष्मीवसकरखबुसपूमीसरह्वसुमार्भ'(कूमा)। ठम्य सक [बर् + सुप्] छोड़ना। वहः

उमुर्यत (उठ १ १६)। चम्मक्ष्म वि [व] १ मूब, मूर्च (वे १ १ २)।

२ जन्मत (गा ४१० भगमा ४२)। बम्मठक् वि [ सन्त्रमृतः ] प्रकाराती (बर्ग्य)।

क्रमॉड पुँदि] १ इछ । वि उप्वृत्त (दे १ १२४) ।

त्रमधिय दि दि] राम जना हुमा (भरता 42) 1 वस्तान्य वि विस्माप्त रे पानी के अगर मामा

हुमा तीर्छ (राज) । २ न अन्मजन तरना थन के उत्पर धाना (बाचा)। जस्त्र की "काक्स निर्मानिक्षेप जिसमें परवर वगेर**इ** भी हैर समते हैं (वे १)।

क्रमागा वूं [स्थार्ग] १ द्वाव स्थय राखा विषयीत मार्ग (मूर १ २४३ सूपा १४)। २ वित्र, एता (पाचा) १ प्रकार्य करता (पाचा)।

क्रममायां की [डम्मार्गया] क्रिप्र विवर (वाचा) । चम्सच्छान दि] १ क्लेब ग्रस्सा (६१

१२६। से ११ १६ २ )। २ वि सर्ववद्धाः ६ प्रकारान्तर से कमित (**दे**१ १२४)। जन्मकार वि जिन्मस्सर | १ ईप्यांन्ट, हेपी (से ११ १४)। २ ज्यम (गा १२७/६७१)। धनमञ्ज्ञविक विदि जिस्म (वे १ ११६)।

क्साचिक्स वि [दे] १ चपित च्यु २ वाकुत व्याकुत (वे १ १६७)।

चम्मकः न (चम्मक्रम) वरणः चेरना। ँपिमञ्जिया की [ैनिमज्जिका] उनकुम करणा" पानी में कैंचा-गीचा होता (हा 4 Y) ( दश्सकार वि [दश्सकाक] र क्रमका करते बासा योजा वर्गाने बाबा। २ उत्पादन सं ही स्नान करनेनाने वापसी की एक बावि (धीर, भग ११ ६)।

चम्मक्का की [दे] १ वसारकार, जबरहरती (वे १ १७) : २ निपेम भल्नीकार (कप ७२ व थै) ।

उम्मण वि [उम्मनस् ] अस्त्रीएठा परतुक (चप धूरू को ।

सम्मच पुंदि । स्तूप क्या-मिरोप। १ एएएड कुल-विरोध (वे १ वर) ।

सम्मात्त वि [प्रमात्त] १ उद्धाः समाह-युद्ध (बृह् १)। २ पागल भूताबिष्ट (पिंड ६८)। बसाकी ["वस] गरी-विशेष (ठा २, ६)। चम्मचय न [वे] बतुरे का एक "उम्पत्तक- (मोद्द २२)।

183

22) I

(R E EX) 1

वड)।

R 2 238) 1

हम्मत्य सक [ शस्या + राम् ] सामने धाना । सम्मत्वद ( हं ४ १६% कुमा) १ स्मारव वि वि ) भर्मानुव विपरीत (वे १ बस्सर पुंचि दिली डार के गीचे की शक्सी क्रमारिक कि हिं] एक्वात उन्पृतित (वे १ सम्मास N दि । स्वान, विन, बहु (वे १

इस्सक्ष्म न [उम्पर्दत] मधनना (पाय) । रूपद्व दुनि दे एका दूरा २ नेव मारिता १ बसलकार। ४ वि पीवर, पुरु क्रमहाकी [व] क्रूजा (वे१ ६४)। सम्मह्म विविध्यावन] गार्च विवासकारी

(बर क २६१) : वस्मान्त्र वि [प्रमावित] स्थत क्या ह्या (बब्म २४ १५)। इस्साहिय न विजिञ्जूक क्लाटा कार द्वा राठी में 'क्नार' (मिरि ६ )। बन्माण न [तन्मान] १ माप माता वानि तृत⊩मान (ँद्रा २ ४) ≀ २ वो ठीका जाठा है यह (ठा १)। इत्साइ देवी उन्साय (भव १४ २)। बरमायुद्रत्तञ्ज (दी) वि [दरमायुवितः] क्रमाय कदमराना (सप्ति ४२)। क्रमाय धड़ [उद् + मद्] जनाव करना

कम्मच होता। यह सम्मायत (का १ ६ tts सम्माय प् किमार् १ विस विभ्रम पावस-यम (टा ६ व्यूर)। १ कामाधीनता विषय में सप्पतानीक (वत्त १६) । ६ शामिजन (धिने) । रक्षाम देश आयोग (राय)। दम्माद्भिय व [उस्मासित] दुशोंबर(वर्षि)। प्रमाद र् [प्रमाम] रिनास, "निनेशिशवादि (पानगोता) परेति घरियणम्यद्वयाँ (मद्दर) ।

रुग्माद्य रि [रुग्माथक] रिनाराचा पाती

बन्नाइवर्त्त रिनपार्ट (महार भाँव) ।

र्यक्रित निरंक्ष्य 'सम्मितकरिक्ये इव स्थ्य शहनमसमूहं शी' (मुता १४व: २ ३) । धन्मिण एक [स्दू + मी] तीलना ऋप करना । कर्व चीमाहितक (यह १५३)। सरिमय वि (सरिमत्) प्रमित्त कोडकोडि बुरुम्भियावि विश्वितो इत्या विवित्ता वधै' (रमा)। े उम्मिसिर वि [उग्मीसिय] विकासी 'चल व चन्मिकरभ्रहमप्त्रवारिक्षवस्यसस्य । सूपा 4) 1 बस्तुमा } औं देखों उस्मगा = सन्मन चन्मि⊒ सक [उद्+सम् ]१ दिकलित कम्स्या (पर्या १ है। पि १ ४ २६४ होता। २ जुलना। १ प्रकारित होता। वीम्मलाइ (बटार)। यक्त द्रश्मिश्लेन (दे १

सम्माहिय नि [समाधित] निगारित (पनि)।

क्रिय पंजी किसी १ कल्लोस वर्षन (क्रमा

के ६ ६)। २ भीड़ अन-छमूबाय (भग २

१)। माजियी की विमक्तिनी नवी-विशेष

क्रिमिठ वि दि | इतितपक-धीन्त सहावत-

(অ ৭ ॥)।

र्राम्मह नि [स्माप्ति] १ विवस्ति (पाद्य धे १ व ७५)। २ प्रकाशमान (स ११ ६४: क्सर) । **व**न्मिक्स्य व [चम्मीक्सर] विकास क्ष्मास (पढड़) । श्रमिद्धिय पि (उन्मीक्षित) १ विष्रित **अन्त**नितः २ चक्रादितः **जुलाङ्काः दायो** क्ष्मियास्त्रियारिए कस्य नवशास्त्रि (धापन त्र । ३ प्रकाशिका प्रविद्वालय 'पैजक्षिका निवस्त्र लिक्स सम्बद्धिया वे (गीप ४)। ३ न विनास (बर्ग्)। धर्मिस क्य [ त्रक् + सिय् ] कुला, विक्रम्मा । वर पश्चिमश्चि (विक १४) अन्मिसिय वि [अन्मिपित] १ विवर्तिय, अपूर्ण (त्रव १४ १)। २ त् विवास क्षमेच (जीव ६)। बन्मिस्स बेली जन्मास (१४ ६७) । क्षमास रि जिल्लाकी क्रमूबन करनेराना उम्मी**स्ट्रम देशो इ**स्मि**स्ट्रम (पूमा: गउड)** । उन्मीसचा 🗗 [उन्मीसन्य] प्रथर अलावि उल्मुख बङ [ ४५ + सूमय् ] क्याइना

(शम)।

हम्मोसिय हेनी हम्मिद्धिय (चन)। बन्सीस है डिव्सिश्र] मिषित कुछ (तुम ७⊏ प्रसः १२)। धरमुझ देवी धरुम । वह-करामिन पीज्यवि बुरमुधीतं चनसं पश्चयतं सङ् विश्विषयाना (क्षपुर)। तम्मुख न [तस्मुक] यसातः नुका (गाय) । सन्त्रंच सक [सद् + सुप्] परिजान करना । बच्च सरम्भित (निधे २७१ ) । वस्मुक वि [हन्मुक] १ विमुक्त, व्यक्त चे बीचा बंबाखुम्मुस्का नावसंबंधि बीसिबँ (त्वध १ ६)। २ चित्रप्त (ग्रीप)। १ परित्यक्त (भावम) । डम्म्या वि जिसामी १ वस के उसरतैय ह्या । २ न. देश्ता । "निमुग्गिमा की [<sup>\*</sup>निमन्तता] धमनुम करता 'से मिल्लू

वा अवस्य प्रमाशे से सम्मानिम्यिय

करेण्यां (ग्रामा र: १२,३)।

धाचा)। बन्सद् वि [जन्मूष्ट] स्त्रष्ट, कुदा हुवा (राम्प)। उन्महिल वि [उन्मृतिन] १ दिवसित, प्रपुरस (बर्डा) रूप्) । २ ज्यूबाटित योगा हुयाः 'छम्पुनि(वधौ समुग्नो सम्मरम्बे नहुन-तुरक्वं सिमई (तुपा १४४) । बन्युक्क व [हन्योधन] परिकार, धीड देना (सर २ १६)। धन्मुबजा को [धरमोचना] खाप धरमर (बाव १) । सम्युद्ध वि [दि] इस मामिनानी (दे ह શ્રદા પર ) દ चन्सद्द पि [बन्सुन्थ ] १ संपूर्ण (बग प्र १९४) । १ जार्ग-पुद्ध (छ ६ वर) । चम्मूड वि [चम्मूड] विशेष मूह महक्त पुष्त । "तिसृद्धां स्त्र ["विस्थित] रोग

मिरोप हैजा (मुपा १६) ।

निनात्तक (यः ६ ६)।

नुष ने क्याद रहें। सा। प्रभूते<sup> (न</sup>हां)।

३७४)।

रम्मुखम—"रक्षीप तमाइय म (तपयाशिव) भनौती (गुपा ध बह सम्मृद्धेत सम्मृक्षयेत (व १ ४) व १६६)। एक सम्मृतिकण (महा)। हम्मूल्य न [चम्यूसन] सपाटन, उत्सनन (सि २७०)। धम्मूछना सी [रम्पूदना] स्मर देशो (पण्ड 1 (1 1 कम्मुलिम वि [उन्मूजिन] उत्पारित मून से उन्हाड़ा हुमा (या ४७६) सुर ३ २४६)। कम्मेंठ [वे] रेखो डर्मिसठ (परम कर प्रकास केवेर) र इस्सेस व् जिन्सव विकास (यग 22 Y) 1 हम्मोयणी 🛍 [हम्मोचना] निवा-निशेष (बुर १३ ८१) । इस्हर्युकी [अध्यक्] १ श्रीवाप पर्या क्रव्यक्ता 'संचेच्छम्हाय जीवह समावि' (उप ११७ टी गामा १ १ पूजा)। २ जाक, माप्य (से २ १२ है २ ७४)। धम्हद्दश ) नि [अप्सायित] शंकत नरम हम्हक्तिय ) कियाँ हुमा (व प्रे १ पटम २ १६ वड४)। सम्बाद्ध सक ि कप्ताय्] १ परम होता। २ माफ निरामना । वक्ट सम्बद्धारीत दमहाअसाम (से ११ वि १६)। हमहास्र वि [ ऊप्मवस् ] १ गणः परिक्तः। २ बाय-युक्त (एउड) ३ रमहाविक्षन हिं| सूरत, संमेव (देश ११७) । बयम्बय वि [दे] देवो डविस = परिवर्गितः 'ब्यन्यक्षीमपुरुन्तपहुपविष्यरुखे' (खावा १ 1 (\$5 PP-5 हराष्ट्र वेको एउमहु = त्व् + बूद् । अम्हेरिह भूका चयष्ट्रियु (बग) । सयह देशो उच्छट्ट = पहल । हरान्त यक [ अप + इत्] इट्या । सर । (छि १ छक) छोत 🛫

द्यार वि [उदार] सेह क्लम क्या मर्गीत

**चमरिया की [अपनरिका] छोटा कमध** 

विमलीयरलंपिकुद्या (पटम १ वय)।

(सम्मक्त ११६)।

94

ह्याय वि [हपयाव] स्थवत (धन)। उपार्ण न [अवतार्ज] निद्यापर, स्तारा हर्वेशन, दुवराती में 'त्रवारख़ (कुप ६४)। क्याह केवो बदाह (सुर १२ ४६) काल विशे १६१ )। उप्यक्तिम वि [दे] प्रकट्टा किया हुधा (यह)। उप्पञ्ज वि [चे] सम्मासित, साम्ब् ( पष्)। उर पून [हरम्] यक्तास्थल प्रमणी (हेर ९२)। इत, गपुत्री [ग]सर्थ सौप (काम १७१) ह 'अरबर्बिएनम्/(सम्बद्धाः तनतरमण्डमो ध नो होह। जनरामियमरास्थितसराहरा बेपम शासमाध्य सो समली। (प्राप्तु)। वस प्री वपस् विप-मिनेन (हा ४)। रेश न [ीरण] शक्त-विशेष विश्वेष केंक्नों से 📭 मधीं से बैदित होता है (पर्स ४१ १६)। वरिसच्य पूजी ["परिसर्य] वेट वे बननेवामा प्राणी (छपरि) (को २ )। सुशिया भी ["धुत्रिका] गोरियों की हार (धन)। उर न वि] धारम्भ, प्रायम (वे १ ८६)। वरंतरेण म [वे] शासात् (विपा १ ५)। बरस्त वि वि विराहत विवासित (वे १ चरस्थ वि [स्ट.स्थ] १ काती में स्थित । २ अपनी में पहनने का सामुपण (काना २ 19 17 1 चरस्यय ग [वें] वर्गवस्तर कमण (पाधा)। चरकम पंत्री [चरका] मेप मेड्र (शामा १ शः पर्याहर १)। सरविभाग वि [वीरश्रिक] ग्रेड स्थानेनाका (सुम २, २ २)। सर्वयस्य । वि [सरकीय] १ रेप-सम्बन्धी । सरविभय ∫२ फेतराव्यवले सून का एक सम्मदन 'तरो समुद्धियमेर्गं सर्वसम्बंति प्रमध्यतं (उत्तरिः सन्)। सरव पुं [करक] ननस्पति-निकीय (राज)। सरि र् चि क्षु करा (व १ वव)। सवविय देको सविभ = (दे) (एव १६ दी)। **उर्छ देवो दरा**छ (कम्म १ सम्दर्भ २२)।

छरविस वि वि ? सारोपित । २ वरिस्त क्रिन (पर्)। छरसिञ्च पूँ [छरसिञ्च] स्तन, बन (पर्निष ₹**₹**)1 उरस्स वि [उरस्य] १ छन्तान बच्चा (ठा १)। २ द्वाविक मान्यन्तरः 'उरस्यवत समग्णागम- (धव)। चरास्त्र वि जित्रार रे प्रतन (सम) । २ प्रवास मुख्य (मुण्य १)। १ मुन्दर, सह (बूब १ ६)। ४ मद्भुत (चन्द २)। ४ विशास विस्त्रीएँ (ठा ४)। ६ न शरीर विकेश मनुष्य भीर तिर्वेश्य (पशु पत्नी) इल बोनों का शरीर (बानु)। **डप**छ वि डिशार] स्मृत मोदा (सूम १ १ Y () ( चराळ नि [रे] मयकर, सीप्म (सुरुव १) । रुपविष्य न [ औदारिक ] रुपैर-विरोध (स्पु)। उरिआ वी [डड्रिका] विपि-विशेस (सम ३१)। वर्धितय न [दं वर्धस-त्रिक] तीन सर बाला हाए (भीप) । उरिस क्षेत्र पुरिस (मा २८२)। डक् वि [प्रकृ] विशास विस्तीर्ग्ह (पाम)। उद्भुष्ठ पू [वे] १ मपूप पूषा । २ विषणी (व १ १३४)। चरमिक्क वि [वे] प्रेरिक (यव् देश १ =)। उद्योष्ठ। चरोरुद् प्रे [बरोरुद् ]स्तन बन (नव ६२)। करोस्द्रन [करोस्द्र] १ स्तन, वन । २ वैल शान्त्रियों का जनकरश्च-किरोप (भोन ११७ खस्र देखो ऋस सि १ ५६। वा ११६ सूर ₹४१ महा)। **एक्स } दून [एडम] पूरा-विरोप** (पूपा चस्य रिवर प्राप्त)। चरुकी की [बस्तरी] दूरा-किरोद 'काकी बीरलं (राष) । विक्रिय वि [बे] पर्यद्ववित नगरनामा स्थार र्श्टि (वे १ यव) । कक्षिक व वि] क्रेंबा बूँमा (दे१ ८८)। **बर्क ज केलो कुळीण (या २५३)** ।

बह्मदिय वि वि] भाराक्तरु निक्तर वीमा

नाचा यथा हो वहः 'मह तमिन **सरप**नीय

**व्या**हिस्तवसम्बद्दनिनरम्भि' (नुर २, २) ।

त्रकेता (महा)ः

विद्याप (शुगाप **१)** ।

ecs र [दे] शत परा शीर्थ अलो

करणाः २ जनर चेंकनाः च्यालाः (हे ४

१६)। का. बस्थासेमाण (संद ६१)।

वस्थाक तक [क्रन्+ ध्रमस्यू | ताक्र

करना, बंबाना । वह कस्म्याद्वेसाण (धव) ।

बस्ट्यक पून [बस्टाट] चन्द-विधेष (पिष) । चस्स्रसिञ्ज वि [चझमित] २ खँवा किया हमा उत्तर फॅकाहमा (बुगा है ४ धरर)। बल्यासिय वि विस्टासित ] ताहित (राव) । चल्क्यय सक [दन् + छप , छापय्] १ बहुता बोलता। २ वक्ताच करता। ३ बूलवाना । ४ वक्तार कराना । वह-**एर्स्ट्रापंत, उस्लायेंत (न ११ १०)** गा प्रद ६५१ हे २ ११६)। चल्लाय दूं [चल्लाप] १ शब्द धाषात्र मि १ १)। २ छत्तर, बवाव (धोव १६ मा या ११४)। १ वजवार विवृत वयन। ४ इक्ति, कवन (वदम ७ १a) । १ संमापण 'तक्लॉई को न दीसर बेख समार्ख न होति जन्माका । रियमारांदे में दूए क्लोइ से माजुर्च विदर्भ ॥ (महा)। स्टाबिज नि [उल्स्पेत] १ वनः, विदाः २ न. शक्ति, वचन (गा ६८६)। इस्टाबिर रि [इस्ट्रियिक] १ बोलनेकाला भाषक (हर ११६ मुना १२१)। बल्यसम् वि [बल्यसङ] १ विर्गातत होने-बासा । २ सालव्यतक (था २७)। बस्टासण म [बल्हासन] रिकान (विदि द्रश्ह)। उल्हासि } वि [उल्हामिन्] उत्तर देवी **उस्त्यसिर**्र (रप्ये तट्टम १: प्रान् ६८) । उस्टाह नक [उन् + साचय्] वस करना हीन गरमा। यह उल्लाह्मीत (उत्तर 1 (53 वस्त्रिअ वि [व्] कार्मात्त स्वापत ( 48) 1 इस्सिम वि [आदित] यीता विमा ह्या (पदा है है है६)। उस्सिम रि [दे] १ बीच हुम, वाहा हुमा (उस १६ ६४) । २ क्यानस्य जनातृतः रिया हुमा (कम्मरा ६२) । इस्डिप नम् [ उद् + रिथ् ] राली वरता। र्रेश 'उस्सिपिकच य समयो इत्यक्षीर् मन्दर्भ (कुष्ट ४ ) । ब्रानिविषय वि [वे] जीवन ताली विषा वस्तुटिक वि [वे] वेवृत्तित दुवस्थ्यत्वम्

Eur

'तह नाहिरहो पुरुषसप्पेस शायप्रवारिका भरिष्री। नह निदृद् यह र्रोस्तविमोवि पियनयणुक्ससेहिं (मुपा ३३)। उल्लिक न [वे] दूरवेटित प्रधव वेष्टा (पद्र)। उहिंग्राण वि [उहिन्द्रज्ञन] स्वदशक (पर उस्टिपण न [ उपसेपन ] अपनेप (पिड १६ )। उक्किया भी दि राषानेष का निशाना "विवेयम्बा निवरीयमम्बद्धवरकोऽधिविद्धिया" (छ १६२)। उक्किर वि ब्रिए३ विशेश (बन्या ११२) । उल्सिद्ध एक [ उद् + सिद्ध ] १ पारमा। २ याना मनाए करना 'वक्कमिवरिह्मपुरचै डम रोरपर्यम्म शिक्तहर्द (दे १ cc)। वस्तिह वक [ वर्ष + कियू ] १ रेज करता २ लिखना । ३ वियता । उस्टिक्ण म [उस्सेकन] १ अपंत (मुपा ४=)। २ विलेपनः 'बहुमाइ नहस्लिह्ले' (t t v) 1 र्राष्ट्रिय वि [प्राष्ट्रिरिया] १ प्रमु विमा हुमा (लाबा १२)। २ व्यन्त हुम, चित्रत (पाम) । १ रेपा दिया हुमा (पुरा १६६ प्रामु ७)। उद्भी थी [दे] १ पून्त (६१ ८०)। १ क्षेत्र का मैन 'सस्मी क्षेत्र कुरमंका' (महा) । उनकीय रि [उपसीन] प्रच्यन गुरु (प्राचा २ २ ३ ११)। बस्सुक्ष वि [वे] १ पूररान याने रिया हुमा। २ रक्टरीया हुमा ( थर् )। उन्लुअ रि हि उहती धवय-प्राप्त (प्राप्त उल्लुझ रि [डस्स्न] १ छवूनितः। २ वः क्रनूमन (प्रार्**७**)। उस्मू चत्र रि [इस्मुद्धित] जगहा हुवा बाधूनित 'बुद्दीरि बु'नवश्मारा उत्मूबिया'

(नुपायः प्रशेष्ट्य)।

श्यि ह्या (रे११)।

सस्तुर वि [तस्सुण्ठ] समाठ, स्टब (नुपा प्रदेश सुर ६ २१४)। उल्लंख यह [वि+रेचयू] माला टपनना बाह्य निकासना । उल्यु बा ( है ४ २६) । प्रयो वह जल्लुंबार्यत (दुमा) । चल्लुक विदीपुरित ह्याहका (देश **૨**૨) ા उल्लुका सम् [तुद् ] कोन्ता। पल्लुसन (हेर ११६ वर्)। चस्लुक्तिञ नि [तुक्ति] नीटिंट ठोड़ा हुचा (पूमा) । डस्सुग । स्री [उस्लुका] १ नरी विरेय उस्सुगा । (विने २४२९) । ६ बन्सुमा नरी के दिनारे का अवेश (निशे २४२३)। तीर न ["तार] उल्लुका नदी के दिनारे बना हुमा एक ततर (रिन २४२४। भव २६ ६)। उन्हामाण 🛚 वि ] पुनस्त्वान, के हए हाव पाँव भी फिर से उत्पत्ति (उप १८१)। उल्लुह धरु [उन् + लुद्] मट हीना व्यंस पाना । यह 'तहिव य सा रायनिधी उल्मुहैदी न ताइमा दादि (उन)। चस्लुङ्क रि 👣 मिच्या धमस्य भूठा (दे १ <E) ( वस्तुर**इ र् [**दे] घोटा शहु (दे १.१.४) । वल्लुसिअ वि [उस्लुसिन] चनित (ता - **११७)** । उस्लुय केरी उद्धव = बर्+ नृ । उप्पृरद धेंड उन्द्रविक्रम् (प्राप्त ६१) । वस्त्रुद्द् सक [निम् + स्] निरसा । उन्तुन्न (E Y 7xe) 1 उस्मुहंदिश वि दि उन्नत रूप्यान (पर)। उस्त्द वि [दे] १ मान्द (६१ १ थर्)। २ बर कृति (रे १ १ वास)। अम्लूद सक [आ+रह्] बहता। ब्ल्यूदर् (प्रार ७३)। उस्स्र नक [तुइ] १ क्षेट्रना। २ नाश वरणा । अन्त्रूरण (ते ४ ११६: दूषा) । उस्खर्ण व [नाटन] धेन्त शहरत (ना १६६) । उस्स्रिम वि [तुहिन] विराधित 'उन्यूरिय पद्मिनन्येनु (तानि १ : पाय)। उपर रि[दे]स्थ मूना उम्ल द नमश्ले हरियं बावं' (घोष ४४६ हो)।

<b>१७</b> २	पा <b>इमसङ्ग्रह्</b> ण गर्ने।	मद्वेशा—प्रवस
हस्सचा देवी हज्ञ = बार यू।	१ समस्तरम (राय) । ४ एक्नार । ५ मीतर	वयपस्या । वा [वपरेशना] वर्ष
द्यान दृद्धि इतस्य इति (देश र र)।	(m/4 x) 1	कप्रसमा ∫ (राका निसे २५८०)।
बह्म कि कि बागर, बुम्ब कि है है है	क्षेत्र (बर्) यानी वर्ग 'पाज्यवाई म	वस्यसिव वि [स्पर्देशित] व्यक्ति, 'सामा
वाष)।	स्माणुनशाई व (शाया १ ७—यत्र ११७)।	व्यक्तिरहर्ति यो <b>न्तं</b> स्वएधिमं पुस्तकेतं
बझोइय न वि] १ पेताना बीत की प्रशा	उद्यक्ति वि [चरुरुष्ठ] वेगीप का यासम्ब	(विते १:यः छछ)। चत्रशोग दुं[बपयोग] १ झन चैतन्य
बरीय स करेर करना (मीन) । २ वि योजा	(बरा) ।	(प्रश्ति १२ छाप ॥ वंप)। २ वसमा वर्षभाग में दिवसागा ६ कमा सम्म
इस्स (लाया १ ग्रेस १३७)।	धवदह नि [वपनिष्ठ] कवित्र प्रतिसरित	व्यान शावधानीः चं पूरा संविग्वेर्त
बद्धों के वि दि दे दिया विकास (वह)।	रिक्षित (मोच १४ मा 🛱 १७३) :	व्यव्याग्युण्या तिम्मध्याप् (वंशा ४) । १
बद्धोस दुं [बं उद्धार] न प्रातप न वनी	रवर्णम वि [वप बाज] दैवित (७ ३६)।	प्रवोज्ञत प्रावस्थवता (सुपा ६४३)।
(के १ १ का चुर १२ १) चर १ ०)।	स्वाह्य वि [अपचित] र भावत पुर (पर्या	संद बोरिंग कि [उपयोगिन] जपकुक मन्य
पक्षद्र सक [वक्षेत्रम्] सोप्न मादि वे	१ ४) । २ छन्त्व (मीप) । सन्दर्भ वंबी [र] मीन्द्रिय सीच-विकेच देखी	क्रकोबनीका पताहेळ विकृति साहेर्ड मिरहर
षिमना । स्त्रीविश्व (पाचा २ १३ १) :	क्षांकश्च (वीच १ दी पर्छ) ।	व्युवधोति (तुवा ६४६ छ १)।
बस्त्राय पू [बनस्रोक] १ धनानी 🖷 (शास्त्र	स्वद्वस स्व विप + दिशे है। सामेत देना	उद्याद्व [क्याक्क] १ क्रीटा समयन सुत्र
१ १ अन्यः क्य)। २ नोही वेट, बोहा रिसम्ब (स्व)।	विचाना । २ प्रवितासन करना । जनस्यस्	श्रवः 'एवकाचे सम्मे कर्पम सम्व्यंति' (निष्
पस्त्रेय वेतो उस्स्रेच (तुर ३ ७ : हुना) ।	(वि १८४)। वश्यसित (मन)।	१)। २ बन्द-विरोध मूख-बन्द के प्रेर-विरोध
इस्टोस सम [ उन्हां + ल्लास   शुरुता नेटना ।	धवर्षत एक चिप + युक् ] बायोग करना ।	को लेकर उसका निस्तार से क्यॉन करने-
वह उस्त्रावंत (निष् १७)। ई. सोवाह्रम	क्रके उपरूपनेति (पित्तं ४०) । तक	वाला प्रत्य दीक्ष्य विशेषेत्राचे क्यूस्पानं
ग्री-दर्श राज्य (चन सहरवरिय)।	स्थानिकण,स्यक्त्यं (वि १०१ विष् १)।	चञ्चह वेपरली (भीप)। १ भीपपाविक
दस्तोत तक [तदु∻ श्राप्तत] पोलसा।	विवतका पुनि दिवाधार (दे १ ६)।	सूत्र वरिष्ट् काहर वेन अन्य (कम्पा के
द्योंनेड चेट उल्झेसचा (जाना २	२ वि क्लकारक (वह ) ।	११ बुद्ध ४ ) ।
tx x) i	क्षत्रच वि [वंपयुक्त] र न्याय्य, वानवी ।	वर्षकात्र न [इपाझन] क्रवल मानिया (यसह २१)।
उनकोक दे हिंदे हैं राष्ट्र पुरसन (है १ ६६)।	२ सामकल अप्रमाच (उन एए ७७१)।	दमकंड केतो तक्ष्यंड (स्त्रि)।
२ गोनार्स (पब्स १६ ३६)।	। <b>छवत्रह वि [चपगृह</b> ] बालिङ्गिच (गाम। वे	व्यक्तं न (वयक्तं विश्वमा (सिर ११२१)।
प्रस्तास है [उरसम्ह] १ क्रम्या 'बहेरे		वयस्तुल (शी) च [बयस्त्रच] लगार
मानि एराहिनारा विद्या काम्रोसा (नवह)।	। उन्तरम् सरु [ क्प+शृह् ] शासिङ्गनः   करना। कनस्मृह (शस्त्र कर)।	करके (प्राष्ट्र बद) ।
२ वि कर्मनः, उदय 'चनगुत्रस्विकानुक्रीक सार्वर (स.६०) । १ वि कमुक 'बहुसी	1	चवक्रप कर [क्प+मलु] १ कास्मित
वर्दनरिश्चरंदमरमुगसायसम्ब्रह्मोरे । द्विवर	Sanda Bankal analatana	करना । २ करनाः 'चनक्रमाह करेड क्राउँड
करव सम्मानि चेन्सा बीहराबार्य (बड्ड)।		ना इंग्वि एक्ट्रॉ (पेनशा)। उरक्रनित
प्रमापन (मार) देली बङ्ग्रांच (ग्रीप) ।	( 646) 1	(बुध १ ३१)।
इश्र्च सम् वि+ भ्यापय् दिश करना	क्षपण्डान्स औ वि श्री श्री श्री परे परे	उषस्य र् [बपकरप] छाडु को की काले-
भारत यह [ भारत म्याप्त (हे ४ ४१६) ।	(28 48 )1	वस्ती विका सम्पराम वर्गे छ।
उस्द्र्णिय वि [ब्रे विश्वापित] बुकान हुमा	वनएस भू जिपदेशा १ शिका नीप (उन) ।	उपरुष वि [३५७३] जिसकर वर्गकर
शस्त्र दिशा हुया (प्रकार १६६) ।	२ वस्त, प्रतिपाषत । १ शास, निक्रम्त	िक्या पदा हो यह, चतुन्हेंदाः असुनवयाः । सम्प्रमाहपद्यस्थां (शाम ४)।
उन्दर्भिमारि [दे] जावा, बहुत (दे ह	(धानाः निमे ८६४)। ४ उनसम् जिसके	् उदस्य हिं दि] स्टिन्स अपूर्ण सेवार
((1))	(शब म उपबरा तथा नाम बहु (शब १)।	- (\$ 1 516)
प्रस्त बर [बि + ध्या] बुन्द बाना । जल्ला	विषयमा वि [प्रविशास] अपरेश क्षेत्रामाः	वरकर देवी उन्नयर मध्य + हा। बनकरेंब
(# 3#3)1	दिण्यारो पुरुषाँ गीर्प भिन्न फिलोसल्सर्व	(mm) )

"दिच्यारो पुन्तवंतीर्थ निवा फिबोबएबर्स्स" (ज्या) र

तक्यसम्ब न [क्यव्यान] केवी अवयस | तूना अध्याननुता बाकाँछ (बाना र

4 4 44) 1

ा वर≳र तक [क्षत्र + क्षु] आस गरना ।

(भूप १ १)।

(उस १वः ठा ७ विके १६८३)।

(# 344) 1

उर्व म [उप] निम्न विशिष्ट सभी का कुक्क

बम्पर-1 वनीता 'कार्वेत्व' (पएए

र)। र व्यव्या तृष्ट्यः (वस्त १)। [

पहरण देवा बनारण (भीग)।
प्रस्त पर िष्ण + कप ] प्राप्त होगा,
गारण वण्युक्तकोर्ष (यूप + ४ )।
व भीगा कि वणुक्तकोर्ष (यूप + ४ )।
व भीगा कि हिंगे। रेसीगीहण। २ परिने
विरा 1 सर्जित खराणित (वे १ १६)।
प्रसार देली चरणार (वार्ग्य ६२ ही)।
वार्गिया देली चरणार (यूप न्दे)।
व्यक्ति १ प्रेर्ट [उपहृति] चरमार (वे ४
प्रादृत्ति १ १ में माम-विरोध योवन
पारि वार्ष्ण (वे ७)।

इयपुरुष्ट पुने [बपकुछ] दुन नक्षण के पास का नवन (पुन्त १ १)। इवस्रोमा की [उपकोशा] एक परिवक्त कोठा कैस्सा की छोटी वहिन (कुन ४११)। नक्कोमा की [उपकोशा] एक प्रसिद्ध केश्स

(वर्ष)।
उन्होंत हि [उपाहास्त्र] है यमीप में सामीत।
२ शायम मलावित (विषे देन्छ)।
उन्होंत हि [उपाहास्त्र] है युने कला
आराम बरना। २ शास कला। ३ बानमा।
४ यमीप में नाता। इ. संस्कार कला।
६ यमुम्पण कला। में मी पुरणी मार्च
स्वस्त्रम्य (विने देशर) 'वा तुम्मे वाव
स्वस्त्रम्य कर्णा 'वीमी पुरणी मार्च
स्वस्त्रम्य कर्णा 'वीमी पुरणी मार्च
स्वस्त्रम्य कर्णा वाच्यामा शास्त्रम्य
स्वमानि वि (महा) 'वेणीवक्तामि प्रवा' ममीवनायित्रवर्ण (मिने २ ११)
वाणी हम्मुनियारिय वताई उनस्हमित्रवर्शित वेत वेत्रमारक्त्रम्य (व्यु)। वह उक्क्यनिव

न्यसम् पू जिममम १ सारम् प्राप्तमः ।
२ प्रार्थित का प्रस्ता भिष्णा सम्बर्ध्यापम्थं
सम्बर्ध तथा मरेन्द्रकरुमी (प्राप्तः १ १
१ १४)। ३ मनी के प्रण्न मा समुख्यः
(त्रुप्तः १ कमा १ ४)। ४ मनी की
सर्वितः माराय-मुद्र सीम मा प्रयन्तः
विदेश (ता ४ २)। १ मण्या मीत विस्तरः
(मात १२) १ मण्या मीतियास सद् रूगम् रुप्तमः सम्बर्ध स्वरूप मीत विस्तरः
(यात १३: इह ४)। ६ मुर्याच्यः
भी स्वीतः में सामाः 'न्यस्तीकासम्बर्ध
सरासो छेल दिस्त स्वरूप)। व स्वर्धानी

(बिने १४१८)।

बस्य (ठा४ २ स २०४०)। व सम हवियार, 'सुरमाहारच्छेर उपकरमेणं च परिएाएँ (बंग २)। इत्राचार (स २ १)। १ ज्ञान निरुप्त । ११ धनुपूर्तन, धनुपूर्त प्रवृत्ति (विशे ६२६ ६६)। १२ संस्कार, परिकर्म 'खेलोक्स्कमें (धए)। सम्बद्धाः विपत्नमः ] यनुष्यि कर्मोको **ए**ड्य में माना (संघनि ४०) । उनकामन ग विपक्तमा उपर देखो (प्रश् जबर ४६ पिन १११ ११७ १२१)। उदब्धसिय वि शिषक्रिकि । उपक्रम से चन्त्रत्व रक्षतंत्रासा (ठा २ ४ सम १४% पएस ३३)। चवद्याम देशो सवसम = उप + अस्। कर्म चनकामिश्यद् (विने २ ६६)। थयद्यास सक्र रिय + क्रस् रे शिर्यदास में मोमने योग्य कमी को बका सबय में ही भोगना । कर्म, सदक्तापिण्यह (समीत 8 (#¥\$ ध्यक्तमण न [उपकृतन] उपक्रम कराना (भावक ११७)। जबकामण देवी उत्रक्षसण (विसे २ ५ )। खबक्रेस प्रजियक्तरा रिवामा। २ शोक (चन)। चमकाब सक [उप+स्कृ] १ पराना रमीई करना। १ पाक को मसाले से संस्कारिक करना । उपमुख्येत, एयम्बाहिटि (पि ११६) । संक्र उनकम्मद्रस्या (शामा) । प्रमो. चनव्यक्राचेष्ट्र, उरस्यक्राविति (पि ४१६) रप्प) । संब्रः सन्दरहायसा (पि ११६) । रयक्तवड ) वि स्पित्कृतः १ वदाधा चत्रकलिय ∫हुमाँ। २ मसाँमा वराह है संस्तार-पुत्रः प्रकामा हृषा (तिषु थः पि ६ ६ ४४२ उत्त १२, ११)। १ पून एमो है, पाक बिरायामझारामरास बहु प्राप्त तर

नवारी न कायम्बर्ग (उस १६६ री) ठा ४ २

खायार ० योग १४ मा)। सामि

िंग्स] पकाने पर भी का करूना रह जाता

दि वह गूँच वर्गेरह सन्त-विरोध 'अवस्थातार्ग

खाम पहा चएपारीएं उदक्तक्रियालं ने ए

भिज्ञानि से क्षापुरामं उत्रस्तियामं भागमुद्

(निष्कृ ११) ।

खबबसार पू [नपस्कर] १ संस्कार । २ विससे संस्थार किया जाय बहु (ठा ४२)। पुबन्नम्बर प्रै [अपस्कर] भर का उपकरण साधन (मूप्पनि ५)। **अबक्तारण न** [उपरक्र**रण] क्रपर देयो ।** साद्धा की [ शास्त्रा ] रमोई-बर, पाइ-पृष्ट् (निष्ट्र १)। सवक्तासक (उपा 4-स्या) कहना। कर्मै कपरवाद्रश्रीत (नुस २ ४ १ ) मग १६ १---पत्र ७६२) । उयक्त्या भी [प्रपासमा] सानाम (मर्मर्स ७२७)। चयकसार्**च् वि [उपस्यापयिच्] प्र**निद्धि रुरानेशासाः 'बालालां स्वस्ताहला मरह' (नूष २ २ २६)। उपन्तपद्या की (उपायमायिक्स) कारूपा भवान्तर कथा (सम ११६)। उपस्थाण न [उपास्थान] उपास्थान क्या (पत्रम ३३ १४६)। उवक्तिक्छ वि [अपश्चिम्न] प्रारम्ब शुरू किया ह्या (बुद्रा ९३) । उपक्रिय स्ट [ उप + क्षिप ] १ स्मातन करना । २ प्रयान भरना । ३ प्रारम्भ करना । उपन्तिय (पि ६१६)। उपस्त्रीण वि [उपसीण] सम्प्राप्त (वर्गीव 23)1 उवस्त्रक पुं जिपचपी १ प्रयम्न स्थोप । २ बनाव 'ण मणामि वस्ति साहणिज्ये विशे उनक्तेभी (मा ११)। खबस्तव पू [दे छपछेप] बाबोलान्त बुएवन (तंबु १७) । स्थम वि [उपग] १ सनुबरण क्रस्तेत्रासा (७४ २४६ वीर) । २ तमीन में बालेवासा (विशे २१६१)। कवगन्ध्य सङ [ उप + गम् ] १ समीर में बानाः २ प्राप्तं करनाः ३ वादनाः ४ स्वीकार करना । उत्रमन्द्र (उवः स २३७)। स्थमक्द्रीत (ति ६=२) । वृष्ट् स्थापिद्ध

कण (न ४४) ।

७२१)

ववगणिय वि [उपगणित] दिना हुमा

उपगण्पिय वि [उपग्रहिपत्त] विर्यापत (म

र्वस्थात परिनणिंड (न ४६१)।

\$3E ) 1

हबसिद्धामाण देवी उपगा।

(किन १११६) । हेर उपार्तन् (तिन् ११) । उपाय कि जिल्लान् १ पटा सामा हुआ (ते १ १६) सा १२१) । ये बाल सामा हुआ (मन कर जद १२ से बाल से १४४) । १ पूर्व, स्टिए (एस) । ४ मान्त (स्त्र) । १ प्रवर्ष-साम्य (स्त्रम १) । ६ स्त्रोइत, 'साम्य-स्वपुन्त, स्त्रपुर्वि कि स्वस्त्रमा 'सं मान्य-स्वपुन्त, सार्वित से मेनाया सेस्स्तुमावित । भारत-स्वपुन्ते सेस्सुमावित । भारत-स्वपुन्ते सेस्सुमावित ।

प्रसास है [उपकृत] किनार करकार विशा स्था में बहु (म २ १)। प्रकार का [उप + कृ] दिए न रता। जब संगित (म २ ६)। क्यारण में [उपकरण] १ भावन छानडी भारा कर्यु (सीच ६६४)। २ बास इतिय-रिदेश (विशे ६६४)। उपगारिय में [उपकृत] जनकार (कूब ४३)। उपगारिय में [उपकृत] जनकार (कूब ४३)। गान साना। छें उपगोसाका (कूब १३)।

प्रयानीतं मेरिना परिनोमादि कर्ड्याः

(विसे १२६५)।

भोगाती रिवारे मानदेश पहुंच्छ (यह १)।
उपना मर [34 + में] बर्ग मन्त, स्थाया मर [34 + में] बर्ग मन्त, स्थाया मर ग्राम्य अस्ता राज्यात करना। हेन्द्र अस्ता प्रसास अस्ता प्रसास अस्ता प्रसास अस्ता प्रसास अस्ता प्रसास अस्ता रही। प्रसास करने प्रस्त करने प्रसास करने प्रस्त करने प्रसास करने प्रस्त करने प्रसास करने प्रसास करने प्रस्त करने प्रसास करने

वपतारण हि [ वपतारक ] जनतर करने-करना (व १२१) । वपतारि [ वपतारम] कार देवी (मुद ७ १६७) । वस्तारिया को [वपतारिक] जानाह बाहि

चर्चात्रम (प्रपट्टन) १ जालार। १ हि

की पीरिया (राव करे )।

इचितिण्ड सक ित्रप+ ब्राह् ी १ उपकार करका। २ पृष्टि करुषाः वै बहुरा करुषाः। धविराहर्स (पि ११२)। तत्रगीय वि जिपगीत र बिंगत स्ताबित । २ व संवीत गीत गान वाद्यमन्वगीन नप्त्रवि मूर्ग विर्ठ चिट्टमृत्तिकर (सार्थ 8 = )1 उद्यागियमाण देखो उद्यागः। बबगुद्ध वि [त्रपगुद्ध] १ मामिद्धित (धा १११ स ४२=)। २ म धानियन (एव)। वयगृह सक [सप + गुरू ] १ सार्थिका करना। २ पुत्र पीर्ति से रसालु करना। ६ रचना परमा बनामा । क्या उदगृहि क्रमाण (जाबा १ १) बीप)। उदगुद्रण न जिपगृदमी १ मार्चिपन । २ प्रशासन-रहाल । १ रचना, निर्मात च्यारह-

एलप्रेलेहि बासबदबनुइलेडि व (वंदू)।

उचगहिय वि उपगृह वालिक्ति (धावम)।

उपगृहित । [इपगृहित] नाइ पारिका (पच १६१)। उचमान (इपाम) १ वट के समीप। २ मापाइ मार्च 'एमी विद नानी पुलरेद यर्ग स्रामिन (दद १)। ज्यास्य वे जिपमद्गी १ वृष्टि, वीएल (जिमे <sup>|</sup> रेबर )। २ ज्याचार (उस ११७ ही। स ११४)। १ बरुए उत्पादन (बीच २१६ ना)। ४ उपवि जनगण सावन (ग्रीप उषमाइ पू [उपप्रह] नानीया-सम्बन्ध (वर्षसं 153) 1 उपग्रहण रि [उपग्रहक] कारार-रारक (१मक २३)। उषगादिश न [उपगृहीत] कानार ( तर् R ) ( उषमादिम रि [उपगृद्धित] १ जासारित

(भगन् २३) । २ वार्रिक्नादि बेहा- 'बरह

निएदि कार्यारएदि छनन्त्रीहैं (त्रा) । १

प्रशास (न १९६) । ४ क्षार्टिका (एक) ।

उपगदिअ रेगो आवगादिश (न्यर) :

884) I

नेश (वंदा ६) ।

व्यवस्थि वि [उपवरित] t वातित

नेहिन बहुनानिह (स.स.)। २ स उपबाद

उश्यादि वि विप्रमादिम् । धनकी समक रवानेवासा (स १२)। उपरथाय व (हिपोद्वाद) धन्त के भारत का वर्षाच्या, भमिका (विशे ११२)। जनधायम वि विषयातको विनातक (वर्ष र्ध ११२) । धवयाइ वि [बपमातिम्] धपवात करने-बासा (बास ६७) विसे २ ६)। सबमाइम वि सिपमाविकी र अपवात-कारक (विदेश है)। २ जिसा ने सम्बन्ध क्लोबाद्या 'मुप्येवयाहरू' (धीप)। उपयाय वे प्रिपमाती १ विरायना, स्वतार (योव ७८०) । २ धतुक्ता (ठा १) । ६ विनास (नम्म १ १४) । ४ सप्ताप (तंद्र)। **इडरे का अग्रअ-विन्तन (मास ६१)**। नाम व िनामम् किम-निर्देश निर्देश खबन के जीव अपने ही शरीर के प्रकीय चौरदंत रहीसी सादि सदवरों से कीय पावा है बह रमें (सम ६७)। उपयावण न [ प्रपातन ] कार केने (पिये २२६) । **धवयय द्रं (चिपवय) १ इदि (सर ६ ३)**३ २ समृद्ध (विष्ट २ झोच ४ ७) । ३ रुपैर (बार १) । ४ इन्द्रिय-श्योति (१ए७ ११)। क्षययज्ञ विषययन दिश्वार परियोक्त पुरि (चन) । उवचर सक [ प्रप+पर\_] १ तेवा करना। २ नमीप में प्रमानिक्ता। १ माणा करता। ४ भनीय में खाता। **१ इन्दर** करनाः चनवरः, स्वयर्थः, स्वयप्रानी प्रवर्गि (का १ वि १४६) ४१६। माचा)। डक्कर नक [ हम + कर ] ध्यवहार करना । प्रवनरीत (ग्रिक्श ६) । उत्रयस्य रि [उपभरः ] १ केस के निर ने बूनरे के सहित करते का भीवा कार्त-थाशा (ब्रुघर, २ २ व) । र दूँ कार्यून चर(थावा२३१४)। उक्करिय वि [इपकरित] शांता (वर्तन

रजद समस्मित्रकारि (मग)।

(PT Y47) 1

स्विपि सक विष+ वि] १ इन्हाकरना।

२ पुरु करता । धवनिएद, धवनिएएद स्थ

क्रिएंटि। मुका उपविद्युत्। यदि उपवि-

शिस्ति (ठा २ ४° ज्ञा) । कमें उविव-

रुवचिट्र सक [रूप + स्या] उपस्कित होना,

इव्यक्तिय देवी उवस्थिय (वर्गीव १ ६)।

क्षिय वि [ क्पबित ] १ प्रष्ट, पीन

(पराह १ ४ कम्म)। २ स्वापित निवेशित

(कृष्य पद्या २)। ३ उद्घति (धीप)। ४ व्याप्त

श्ववदा हो (उपस्यक्ष) पर्वत्र के पास की

(मग्) । १ बुढ वडा हुमा (माचा) ।

समीर माना। एवजिटठे एवजिट्टेन्बा

मीची बमीन (दी ११)। चयण्डंबिद (शौ) वि [धपच्छन्तितः] सम्बन्धि (समि १७३)। उध्यांगळ वि वि] कीर्मलम्बा (६ १ 224) I स्वज्ञा सक स्पि + अन् | स्त्रश्च होना । धवजायद (विमे ३ २९)। स्यताइ की [स्पनाति] सन्द-निरोप (पित)। चवजाइय केवी उवसाइय (बाढ १६) बुगा 124) I उन्नज्ञान वि [उपजाद] स्त्यप्र (धुपा ६ )। उपजीप सक [ उप + जीव् ] कामन नेता। द्धवनीयद् (महा) । चयनीयम वि [उपबीचक] कामित (मूपा 1 (299 क्वजीति वि [उपबीचिम्] १ वामन केने-बाला 'न करेड नेय पुल्बाड निकासा जिल-मुत्रजीनी' ( क्य ) । २ ज्यकारक (विसे २व ₹)। इसकोइय वि [उपम्योदिष्क] १ वस्ति के समीप में चूलेबाला । २ पा<del>क स्वा</del>त में रिवटा कि इत्व बाता ध्वजीइया वा धारमाच्या था सह वंदिएहिं (उत्त १२, १८)। समञ्जाधक [सन्+पत्] उरलक्ष होता। धवरवृति (सूध १ १ १, १६)। चयञ्जल न [चपार्जन ] वैद्या करना कमाना (TC = tyr)

खबज्जिया सक [सप + शर्ज ] उपार्वन करना । उद्यक्तिऐमि (६ ४४३) । स्थवमत्य ) वं चिपाभ्याय**े १** शम्यायक स्वक्रमध्य 🕽 पेंबर्गियामा ( पर्यम 💵, 📧 यह )। २ सुत्राच्यापक चैन सूनि को दी जाती एक पदवी (विसे)। चपश्चिम्य वि वि वाच्यरित बुमाया धुपा (स्वा)। स्थमाय रेको स्वाम्यय (सिर्द ५७)। सबद्रण देखी सम्पद्रण (राक्) उचटुणा देशो उठश्रदुणा (सन्। विसे २६१६ क्षे)। चचट्ट वि [चपस्य] एक स्वान में बतत सब स्यित (बब ४) । बास्त प्रे विस्त पाने की वेसा धरमायम समय (वस ४)। बनद्रोम वृष्टिपष्टमम् १ बनस्यान (मग)। २ कभूकम्पा करहा (ठा २)। बबहुच्य वि [तपस्वापय] १ ज्यस्थित करने योग्यः। २ वट---शिकाके याग्यः 'वियत्तः किन्ने छेड़े व जबहुत्या व घाष्ट्रियां (बह ६)। उबहुद सक [सप + स्थापय्] दुव्हि से र्वस्थापित करना। उक्ट्रपंति (सूच २ १ २७)। **उबट्ड सक जिप + स्थापय**ी १ उपस्थित करना १ क्यों का मारोपण करना की खा देना । जबहुनेह, जबहुनेह (शहाः छवा) । क्षेष्ठ उपद्भवेत्तप (बह ४)। **एक्ट्रवणा भी [बपस्थापना] १ वारित्र** विशेष एक प्रकार की बैन दीखा (वर्ग २)। २ किया में बत की स्वापनाः 'वबद्वस्त्रयु बहुबर्सा (पंचका) । रबट्टवजीय वि [धपस्थापनीय] वेश्रो हपटूप्प (ठा ६) । चवद्वा सक (चप + स्या) प्रपत्त्वत होना । **प्य**द्वाएका (मर्ग) । चबट्टाण न [उपस्थान] १ वेठना उपनेशन (ए।वा १ १)। ९ अत-स्वापन (महानि ७)। ६ एक ही स्वान में विशेष काल शक शहना (वद v)। दोस पूँ ["दोप] नित्यवास बीप (बच ४)। साक्षा की ["शाका]

मारनान-मर्द्य सभा-स्वान (ग्राया १ १ः

मिर १ १)।

सबदाण व वियस्थान निम्हान, माबार (सम १ १ % १४)। चयट्टामा 🛍 [सपस्थाना] जिसमें 🖣न साथ भोग एक बार ठक्षर कर फिर भी शाब-निविद्य-धननि के पहुंचे ही मानर ठहरे नह स्चान (नव ४) । उपहास दे**को समहत्त्व।** उपहा**नेप्रि** (पि ४९c)। हेट चयदावित्तप्, धवटावेत्तप (81) 1 स्वदूर**र**णा केहो समहत्रमा (**११ ३**) । उषट्टिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त जलगार मुबद्धियाँ (कत्त १२) २ समीप-स्थित (बाब १)। ६ तम्यार, ज्यतः (शर्मे ६)। ४ वाधिक निम्मचमुबङ्गियों (बाव सूच १ २) ( ४ पुम्स, प्रधारमा तेने को तैम्बाछ 'उपद्रिमं पश्चिमं संजय सुत्तवस्तियं । बुक्कम्म बम्मामी असिद्ध महामोई पद्मश्रह (सम ५१)। **दब**ठायणा केती दबहुवजा (पैचा १७३)। चवड**्चित्र वि [स्पव्हित्] क्ला**नेगासा 'धवरिएकाएएँ कावमुबबद्धिता मनह' (सूच २ २)। उच्छिक वि भि भवनदानमा हमा (वड)। चवजगर न [चयनगर] चपपुर, शाखानगर (पौप) । दवजद धक [दप + नर्देय ] नदाना माच कराना । इतक चप्रणविकासाय (बीप) । एक्जब्र वि [बपनक्र] बटिश (उत्तर ११)। खबणसंसक [डप ÷ नम् ] १ ध्यत्क्रिय करनाथा स्थाना।२ प्राप्त करना। अत शामद (मक्त) । नहः, सवणमीतः (इत १३६ टी) सूच १ २)। चनपामिय नि [ इपनिमत ] उपस्थापित (सपा)। चषणय वि [चपनव] अपस्वित (छ १ ६६)। चवजय पुँ [चपनय] १ अवसंहाद, ह्यान्त के सर्वं को अक्त में ओइना हैन का पक्ष में चपर्चहार (पन १६ सीन ४४ सा)। २ स्पृति स्तावा (विदे १४ ६डी पव १४ )। व सवान्तर नय (राज)। ४ संस्कार-विशेष

**अ**पनमन (स २७२) ।

बयज्ञय व जिपनय विमोपशीत संस्ताद, एपदार, में<sup>र</sup> (एम १२७)। **रु**ध्यमण न [रुपनयन] १ छर्ग्हार (वन १)। २ कास्त्रापन (पिंड ४३१)। द्यात्रमण न विपनयन् उपनीत-संस्कार यम-गन बायल संस्कार (प्रवह १ २)। संविधा देखों सवलीय (से ४ ३३)। इप्रविक्तित है (उपनिद्यिप्त) व्यवस्थानिय (द्राचार)। स्विधिक केव प्रजिपनि कृप विशेष्ट्र, स्ता के बिए इसरे के पास रका बन (बब ४)। चयाजिंगाम दे [उपनिगैस] १ हार, क्रवाना (स १२ ६ c) । २ छत्रवन वयीका (वडक) । सब्जिगाय वि विवित्तरीत समीप में निक्रमा हम्प (पीन)। सर्वाज्ञान देवी बचनी । छम्णिमंत स्कृतिपनि + सन्त्रस्] निस न्त्रता क्या । यनि स्थापितविद्यति (शीप)। संद्र- उपध्यमितिकाम (स. १.) । च्चित्रमंदण न [इपनिसन्द्रमा] विमन्त्रका (वन ≃ ६)। व्यक्तिवाद वं डिपनिपादी सम्बन्ध (वर्गेसे YZ ) 1 चवित्रविद्व रि [४पनिविष्ठ] समीप-स्वित एवजिसञा की [ हपनिपन् ] नेवल्ड कह, वेदान्त-पूरम ब्रह्म-विका (शन्द्रः ) १ दर्बाणहा की [उपनिया] मार्केट मार्गेटा (वंबसं)। एयणिकि इंग्री दिपनिधि रेक्नीय न मानीत वरीहर(ठा +)। २ विरचना निमोद्या (क्यू)। सम्जिद् पुंची [उपनिधि] बरस्थापन धमा-मन (बगु ६२)। হৰ্মিহিস নৈ [জীপনিমিক] ং তথাৰীক-सम्मन्धाः धाःकी [की] क्रम-विशेष (क्ष्यु २)। दवानीद्य रि [इवनिदित] १ समीप म स्थानितः। र मान्त्र-नियतः (नुष्यः २, २) । स र् दि नियम विदेश को भारत करते-बाना विधु (नूम २, २) ह

स्वणी सक डिप + ना दिसमीप में नाता उपस्थित करना । २ वर्षेण करना । ६ इक्ट्रा करमा। जबसीति (उवा) जबसीयो । भवि ध्वतोविक (पि ४३१) ४७४ १२१)। क्यक स्थिति है। ११ १३)। संह चिमित्रको प्रवरोत्ताम्लोगे (सम २ 4 2)1 समनीभ न सिपनीनी उपनयन (श्रेष् २१७)। बयज म विजन । प्रशंता-तवन (भाषा २,४११)। उच्योय वि [उपनीत] १ समीप में सामा हुमा (पाध्य महा)। २ म्हिल उरहोत्रिक (धीप) । व जनकपुक्त अस्त्रहत (विसे ६११ टी- भरषु) । ४ प्रशरत श्लाबित (माचा २)। बरय पूं ["बरङ] धर्मधह विशेष को बारल करनेवाना साबु (ग्रीप)। **रुवण्यत्य वि [ स्पम्दरः ]** स्थय्यस्य स्प ৰ্থকিতা 'ছদ্দিন্তীয় কহত্ত্বে বিধিন্ধ বাহ্য-मोमर्था । तनगार्थं विषक्षिका (बस १ 1 (58 उदण्याम प्रे डिपर्यामी १ वास्थोतस्य प्रस्तावना (अ ४)। २ श्रुग्न विशेष (दश १)। १ रक्ता (स्थि १४)। ४ सन प्रदीय (बयी २२)। **धवतस्य न [चपतस्य] इस्त-तम्ब नी भारों द्वीर** ना पारवैभ्यप (लिच् १) । चनवान पू [चपशाप] सन्वाप वीहा (तुम 1 (# 3 **उच्छानिय वि [उपवापित] १ गीवित । २** <del>ट</del>-ठ विया हुन्स नरन विमाहशा(सुर २ २१६ वर्षा । दक्ष विशिष्टी मुद्दीत (परम १६, ४८) बुर १४ ११ )। वक्रवंड वि [उपस्तृत] कार क्पर गान्धा रित (भल)। बनस्थाय देवी उवट्टाय (रसनि ४ ११) । उपस्थाणा केवो वयट्टामा (पि १४१)। वपरिषय देखो उन्द्रिय (त्रथ १७)। दशस्य तक दिप + स्तु रेन्सि करना शताबा करता । जनग्युजुरि (पि ४६४) । बराबुनीरे (शौ) (बत्तर २२)।

चवश्य सङ्घिप + इरौप् विकास वत्तवाना । जनवंतर (कव्य नडा) । धररेतीय (विषा १ १) । सुवि उवसीमासावि (महा) १ वह- धवर्वसेमाण (तवा) । नवह चत्रवृंसिकभाण (शावा १, १३)। संद चवर्रसिय (याचा २)। चपर्यस पुंडिपर्दशी १ धेम-पिटेच वर्गी सुबार । २ धनमेड्, नाटका (नाव ६)। उष्टबंसण न [डपदर्शन] विश्ववाना (ध्ङ)। कृष्ठ पूं किटी नीमबंद नामक पर्यंत ना एक विकार (का २ ६)। ध्यवंशिय वि प्रिपर्शानी विननामा ह्या (स्पा वहर)। **चवर्थमर वि [ चपद्रिम् ] विवासनेपता** (इस्ते। चवरं सन्तु वि [उपदर्शयितु] विजननेनामा (Fr 88 ) 1 रुपद्रव 🛊 [रुपद्रव] अवस्य मधेका (महा)। **बच्दा भी** डिपदा में है, बपहार (रेस)। त्ववाह को [तद्वत्याधिका] वानी क्षेत्राती? पाउनसाई च स्ट्रालेनसाई च नाहिए<del>केस</del> कारि हवेति (शासा १ ७)। क्षदाव न चिपदानी सेंट, नवराना (पनि) क्यदिस सक किए + दिश ने क्य**रंट दे**ता। प्रवसिद्ध (रूप) । क्षप्रीय न दि | होपान्तर, श्रम्ब होप (देरे बक्देसग वि [उपब्राङ] व्यक्ताता (भीर)। चपर्मसभक्षा देवा बच्चमणया (विदेश्य 2 E) 1 चपन्सि नि (चपनेशिम्) प्रवंशक (पार बबदेही की [शपदेहिका] धूप्र बन्तु-विशेष थीयङ (वे १ १६) । स्वर्थ तक [४५+३] प्रशास करना ऊषम मचाना । प्रवि, स्मर्द्धावसम्ब (नहा) । चवर्व रेली प्रवत्य (ठा १)। तबद्वाय न [प्रपद्वाय] प्रशास करना की सर्वे नपना (वर्षे ६) । **चवद्**षिय वि चिपद्र ही वीदित सन्भीव विया हुमा (बार ४ विके ♦६)।

स्ववृद्धः नि [उपत्रृत] हैरान किया हुमा (भत्र १ १)। रुवभाष पू [उपभातु] निरुष्ट मानु (संबोध X4) 1 सवधारणया भी [सपधारणा] सनप्रह-सान (एक १७४)। ष्ठवचारणया भी [उपघारणा] वारणा बारस करना (ठा ८) । सवचारिय वि [सप्यारित] बारण किया ह्या (स्थ)। हवर्तद् र्षु [उपसम्द] स्वनाम-स्थात एक कैन सुनि (कप्प)। सवर्तद् सक [सप + सन्दू] समिमन्दन करना। क्वहः स्वनंदिक्षमाण (क्य)। एवनगर देवो उवनयर (पुड २ १३)। चत्रतयर देवो स्थणधर (सुपा ६४१)। दयनिविद्याच देवी प्रवणिविद्याच (क्य) । हवतिकलेख सक [धपनि + श्रेपस्] १ बरोहर रक्षमा । २ स्थापन करना । 🗫 उत्र-निक्छावियक्य (क्य)। स्वित्ताम देखी स्विजित्ताम (लावा १ १)। रुप्रतिबंधाय न [उपनिवाधन] १ संबन्ध । २ वि संकल-केनु (विते १६३६)। स्वतिमंत देखी ववणिमंत । अवनिमंतिः धवनिमंदिमि (क्स छ्वा) । **धवनिषद्ध वि [बपनिषिष्ट] समीपरिक्**र (सब २७)। क्यनिहिय वि [अीपनिधिक] देखी कविन-हिय (पण्ड २१)। स्वभत्य वि (दपम्यस्त स्वापित (स ३१ )। चयनास र् [त्रपम्यास] लिवेबन (वसनि १ #**3)** | तमध्यवायः ) न [बपमक्तः नी नीवि-विदेशः एक्टम्याणः ) क्त-नीतिः समिनतः सर्वे ना दाम (दिपा १ ३ छामा १ १)। बब्द्य वि (स्पद्भुत) स्पात भग से स्पाप्त (धन)। हवर्मृद्ध सक [ उप+मुज् ] उपनीय करता, भाग में साना। वनभूति (पष्)। वहा

पाइधसदमद्द्रणायो रवर्मुजण न [धपमोजन] स्पमोप (मुपा ₹\$) i खब्भुक्त वि [धप्भुक्त] १ जिसका उपनीय किया हो बहु (बन २) । २ शक्तिय (उप प्र **१२४)** 1 **डबभोभ ) पूँ [डपभोग] १ भोननातिरिक** खबभाग ∫ भीग विश्वकाफिर फिर मोग किया षाव रेसे-मक-गृहादि 'छबमीगो न पुरुते पुरुते उबद्वजद मयलबसमाई (उत्त ३३ समि ११)। २ विश्वका एक बार भोग किया बाय बहु, बरान पान वयेरहु (शय 🛡 २ पडि)। चयमोग पुं[उपमोग] १ एक बार भोग मानेबम । २ कन्तरंग भीव (थाषक २८४) । ३ बारण करता (ठा ५ ३ टी--पत्र ३३८)। उबसोग्ग ) रि [एपमोग्य] उपयोग-योग्य एकभोटा ( एक क्ष क) î रुपमा की [उपमा] १ साहरूव रहान्य (प्राण् **स्वा**मसूरे२)। २ सर्वा(ठारे)। ₹ काच-पदार्थ-विद्येय (और ३) । ४ प्रश्लम्या १)। प्रमाण-विशेष (तृष्ण १ १२)। पुरोमिता 45X) 1 wa) 1

(Rit tre): करए ' सूत्र का एक शुप्त श्रष्ट्ययन (ठा १ )। थ सम्बद्धार-विशेष (विशे ११६ टी)। ६ त्रमाण-विदेश ज्यमान-प्रमाण (विते 🗫 )। ध्वमाग न [उपमान] १ इप्रान्त शाहरय। १ मिस पदार्थ से छपना दी बाय पह (दसनि १ २) ( उत्तमान्त्रिय वि [ उपमाहित ] विमूपित, 'धमचामयपश्चि<u>र</u>म' कुनसयमान्योजमानियपुर्ह्**य**। ख्यपार पू (कपचार) १ पूजा क्षेत्रा साहर, क्यानमबपुराज्यस्य विश्वराते पासर् पूरावी (सुपा १४)। चवमिय वि [हपमिश्व] १ जिसकी प्रपंता थी गर्देशी नहा २ जिसनी उत्तमा वी भद्देशी बह (धावम) । ६ न स्थमा, साहस्य (विसे रुवमेख वि [प्रयमेय] रुपमा 🗣 गौन्य (मै (माचम) । सक्य पूं [वें] हाबी को प्रकृते का पहला (पाय) । ख्**व**य देवो को बस । वक्क समर्थत (कृष्य) । शक्य (प्राप्त) केको सन्त्य (प्रक्रि)। दवपर एक जिल्लाको स्वार कला दिवा

करना । धनमधेर (स्रष्टा) । क्र धनमरियम्ब (सुपा १६४) । खब्बर सक [ हप + प्दर् ] १ मारोप करना। २ मण्डि ऋसा । १ कस्पना करना ४ विकिन

रहा करना। अनकु स्वयस्त्रितंत (सूपा १ (ध्र स्वयरण न स्पन्नरण ने सामन सामग्री 'माए बरोबबर्ध धन हु छत्ति कि साहित तुमए (काम २६ गड४)। २ उपकार (सत्त ४१ ਹੈ)। खत्रवरिव वि [उपकृतः] १ उपकृतः । २ उप

कार (बना १)। वनवरिय नि [वपचरित] **मारो**पित (निसे क्वयरिया 🖈 [उपचारिका] क्षत्री (उप पृ

धवया सक [डप + या] समीप में बाता। उनवाद (सूच १ ४ १ २७)। उनवंदि चववाष्ट्रय वि विषयाचित्र र प्राप्तित धान्य-चित । २ न मनीती किसी करन के पूर्व होते पर किसी देवता की किरोप सारापना करने

का मानसिक संकन्प (ठा १ ) ग्रामा १ ८)। बचथाय न [बपयान] सनीप में गमन (सूप चवयार पूँ [चपकार] मनारै, हित (उनः गउडा बका ५०)।

मक्ति (**ध ३२ प्रति४)। २ विक्**ला सूप्पा (५वा ६)। ६ सप्तरता सम्बन्धित विरोप सम्यारीया 'जो तेमु शम्मसक्ती सी अवपारेण निष्माएण वर्ष (बसनि १)। ४ व्यवहार, 'शिठणकृषोवबारकुसता' (दिया १ २) । ॥ करपना 'उदयाखो वित्तस्य दिशि यमर्खं सरुवधी नरिषं (विसे)। ६ घाषेस **एक्यार्ग वि [बपचारक] सेवा-पूज्**या करने-नासा (निषु ११)।

तवबारण न [सपकारण] भन्नशारा जानार करना 'क्लबारएपारणामु निराधो पर्वनि यम्बी (पएड २, ३)।

श्वमुंजीय (चन प्र १०)। क्वल सम्बद्ध

व्यंत क्पमुद्रांत (वे ११ पुर ८१६१)।

बासा (बम्म व दी) १

स्वकारि वि चिपकारिन् विश्वकारक (स र क्षाप्तिक रहे विकेश है)। स्वयारिम वि भीपचारिको जनार है र्शवत्व रक्षपेताला (उनर १४)। रुवयासिये विपनास्ति १ एक मन्तका धुनि को बमुकेव का प्रव का और जिसने अनवान् मीनेमिनावजी के पात होला केकर शत्रुक्त पर धृष्ठि यादै भी (भीत १४)। २ राजा धोरितक का इस बाम ना एक दूज किसने प्रयान महाबीर के पास दीवा बेकर सन्तर विमान में के-परित प्राट की की (क्यू १)। दवरा स्में (दपरवि) विराम निवृत्ति (विशे **२१७ : २६४** : सम ४४) : स्वर्रम सक [सप+रक्ष] प्रतः करना। वर्भ जनस्वर्ष (शी) (मुद्रा ३०)। बबरग केने ब्रोजरंग 'क्यरकान्द्रिय बखक-बंब**े**ए फिल्क्ट्र दारदेश्डिएए क्रि. ते पुन्पपरिएकपेट्रिव (सद्धा)।

दब्दार्य वि [उपशर्क] अपकार करने

'कुमारुक्तेपराम' (द्वाम २६६) । र प्रमु वे वरित (त्राम) । र मामा (स ४४६)। स्वरूप कर [ स्व+ रम् ] मिनुस्य होगा स्वरूप कर [ स्वप्तम] एवाची व्यवस्थान स्वरूपमा (त्राहा) । स्वरूप हे [ बर्पमा] रे मिनुस्य (त्राहा कर्मा) । र मामा (विचे ६२)। स्वरूप हे [ क्यरत] र सिक्स मिनुस्य सुन्दा र ) । र मुनु (स १ ४)। स्वरूप हो (क्यरत] र सिक्स मिनुस्य स्वरूप के (क्यरत] र सिक्स मिनुस्य स्वरूप के सुनु (स १ ४)।

वस्त्व वि विपरको १ महरक चयन्त्र

करात (दर) केदो कव्यक्तिय (दें) (किया)।
कराता ) वृं [कराता] सूर्य या नक का
करात वृं करात पहुन्दारा (स्ट्राह, हे के
के क्षेत्र करा)।
अवस्मय वृं [कराता] तिक, 'स्प्रीवस्मय (स्ट्राह)।
करात्र वृं [कराता] कर्म, 'स्प्रीवस्मय (स्ट्राह)।
करित (हर्मार्ट) क्षार, स्ट्राह्म (स्ट्राह)।
करित (हर्मार्ट) क्षार, स्ट्राह्म (स्ट्राह)।

विदेश बीलका (परि) । संस्था सम

क्ष वि [ तत] अगर का अभी-रिका (यम ४३ पूर्ण का भर है १ १ १३ सम १२ २१) हुए वि [ "मासिप्रका अगर की तरह (युगा २६१)। क्यार्टिक अप कियो (दुगा)। क्यार्टिक पर कियो (दुगा)। क्यार्टिक पर किया (दुगा)। क्यार्टिक पर किया | १ स्थापन करणा। १ प्रकार असमा। १ प्रकार

करणा रीकटा। कर्मी काररणस्त्र क्यर्विषण्याः, (१ ४ २४०)।
कराइ १ विपरस्त्र] गरफ के बोगों को पुण्य
केनावे परशासानिक देशों की एक बाहिस्
भित्र कार्य स्त्र महाकाने कि नावर्षः
(सम १ )। 'मंतीर्थ कर्मार्थानि क्रमाहिस्
रागित व्यवस्था। कर्मीर क्रमालीर्थ क्षमाहिस्
शास क्रमालार्थ (सूच १ १)।
वसरुक्त वि विपरुक्त १ रीजात। १ शरिक्त,

धवर व 'पास्त्वयहारूको ऐका प्रवाद व्यवस्थाय स्थात (वार्क ६८) च्या प्रवाद हुए स्था ।
व्यवस्था स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप स्य

वन्तरीहि वि [वपरीकिन्] उपरोक् करी बाला (धाम ४)। वनकं र्वु [वपक्क] है भारता पत्थर (प्रान् १७६)। २ टोबी बनेपह नो बेल्करा करी बाला पानाल-बिरोम (बन्तर १)।

त्रवक्षम्मण पुं [तपसम्बन] बोरस (शिहर) बाता एक प्रशार वा तीयक (बन्)। ववर्धम तक [बप + क्षम] १ प्राप्त करता। २ बातमा । २ ब्बद्धमा हेता। कर्म, कालेक्टियह (पि १४१) । वह- व्यक्तिमाण (शावा १ १०) । व्यक्तिय पुं [व्यक्टिय] १ ताव पाक्र (दुरा १) १२ ताव (ए ६११) १ काव्यक्टि प्रं क्टबर्वर्स (उप ६४४ टी) ।

क्षुत्रकार (उप १९४ छ) । जबस्था स्था तबाईमा = छानास्य जनसं क्ष्म्य विषयत्ते गाहिसवार्षे वि वतार्थे (बतार्थि १ वर)। उद्यक्ष्म्यक्षः व [बरस्थममन] प्राप्ति (वर्षि ११)। वर्षक्षम्यक्षः व [बरस्थममन] जाति (वर्षि ११)।

विकास समुज्यस्य ज्यास स्वयंक्टान्यं (क्रम १११)। वर्षकस्यानं न विच्यासम्बद्धाः १ प्रियुप्तः (क्रम ११)। २ स्वयंत्रन्येश्वयं वर्षतः (क्षम १)। वर्षस्यविकासः वि [चरस्याद्याः १ राष्ट्रियानाः व्यास्तानिक्ष्याः वर्षाः १९२।। वर्षस्याः विव्यास्तान् वर्षाः कृषाः वर्षस्याः विव्यास्तान् वर्षाः (स्माः वर्षाः)।

ने बात है प्रकार का करना नारियों ने बात है प्रकार का करना नारियों ने निक्त लियों क्यानूना रिश्व नगा है गर्रे (बात करेट टी)। ब्यव्हाद्व की जिपक्षिया है प्राप्ति नाय । यं बात (विर्य करे) क्यान्यद्विय की ब्रव्हाद्वा विश्व के ने नामपुरवादियों ता तुर्ग मनिकारों (क्या रहो।

नावनेवाता (विधे ६१)।

(PT X & ) 1

चवस्रभत्ता

**११७)** 1

(खाबा१ १)।

चवसम देवो सम्बंग=दण+सम्। वह

उवस्यमगा । (देश रेर )।

सवस्त्रमंत (वि ४३७) । संझ- सबस्यम

स्यस्य वक [सप + सस्] भीदा करना

विज्ञास करमा । कम्बर समस्प्रेशीत (महा)।

प्रयो वक् सब्द्यस्थितामाण (सामा ११)।

एवळ्ळ्यन [दे] मुक्त मेहुन (दे १

**रमञ्जीत्य न [रूपळ.डित] क्रीश-विरो**प

स्पर्द्ध देवी प्रकलाम = उप + शम्। संब

) क्या दि] वसाय

चयस्त्रिय (स १२) चयस्त्रिकण (स 58 )1 ध्यस्त्रातक [स्प+स्त्र] १ बहुल कला। २ ब्रायस १९ला । हेड्ड, स्टब्स्सर्ट (अव १) । **एक्छि क्षेत्रो एक्छि । उनसिद्ध्या (धाका** २ 1 ( 3 ) 1 **टव्**किंप एक [धप+क्रिय] शीवना पौराना । मार्च जनसिपिहिह (पि १४६) । **चवक्किं**प सक [ धप + सिप् ] श्रुम्बन करनाः 'क्सार्ल को च चीसार्ग बीहार क्वलिपए' (बच्च १ १६)। रबक्किस वि [रपिक्किम] भीपा हुमा पोता हमा (सम्बाद १)। बब्द्धीम देवी श्वरद्धीण। बब्धुअ वि वि] समन्त्र समानुष्ठ (दे १ ₹ b) i ध्यक्तेष प्रजिपक्तेप रि क्षेपना । २ कर्म-मन्प (भीप) । १ श्रीकीप (भाषा) । ४ बारकेप (तुब १ १ २) । श्वतेषण न [धपक्षेपन] ऋपर देशी (अन ११ ६, लिह १ धीन) । डबसेबिय वि [उपसेपित] नीपा हुमा, पोता हुमा (कम)। रवद्योग एक [रूप+क्षोगय्] नाजव देना, लोम दिखाना । श्रेष्ठ छन्छोभेठाण धवसोदिव वि [धपक्रोभित] जितको शालक की यह हो वह (क्य ४२८ ही)। सवस्ति सक [सप+सी] १ खुना विकास

करना। २ धामम करना। समस्मियद (पि | १९६ ४७४) 'त्रपो संज्यामेव भासावासं क्विक्रिका (याना २, ३११२)। बवस्फीय वि विपक्कीनी १ रिक्त । २ प्रवाहन-स्वितः 'काक्नीला मेट्लबर्म विएए वेंति ( पाचा २)। समबद् पुं [उपपिते] बार (वर्गवि १२८)। स्ववक्र यक स्थि ∔ पद्री १ स्थल होना । २ धेगव क्षाना युक्त होना । उनसङ् भवि स्ववन्त्रिक्ष (धम्य महा)। वक्त-स्वयस्त्र माण (ठा४) । संद्वा । धत्रप्रक्रिका (मग १७६)। केइ- चवपस्तितं (सूच २१)। सबयज्ञण न स्थिवज्ञनी ध्यान भारतीयसी वयम्बर्णानह जानह सम्बर्धनवायाधी (स्पा ret) i व्यवकामाण देवो<sub>.</sub> उपयोग = उप+भारम । रुववन्मः वि [रुपैवासः] एक प्राविका बक्कव — मधान सेमापति गावि (इस १, १ ४)। **उनकम्द्र वि [औपबाद्य]** प्रवाद आदि का त्रवान सादि को बैठने योग्य (क्स १, २,१)। वनवड् सक [ चप + इत् ] ब्यूत होना, गरमा एक मति से बसरी गति में बाता। उनम्हर (भग)। नकु धननहुमाण (भग)। **टब्द**ण न [चपदम] वनीचा (स)मा १ १ ब्दड)। टबवण्या वि [टपपस] १ उत्पन्न, 'उववर्गो मासुर्शान्य कीमामियं (तत्तः १)। २ सकतः पुरुष (पंचा ६ उवर ४७)। ६ प्रेरिका 'जनमर्ग्छो पानकम्पुर्णा' (उत्त ११) । ४ न.. क्लचिकम (भग १४१)। त्ववत्ति की [स्पपिति] १ उलांत काम (ठा २) । २ युक्ति स्थाय (पत्रम २ ११७) स्पर ४१)। १ मियस । ४ संत्रम 'विसंत सि वासेमङ सि वा जवव सि सि वा एक्ट्रा (पाषु १) । स्वयम् वि [ वपपत्तु ] जलक होनेवाला. 'बेबसोनेनु देवलाए जनवतारी मनति' (ग्रीप: ठा ५)। वनवज्ञ वैको स्वयंग्यम् (मगःदार शःस \$\$wi \$88) 1 चववयण न [चपपतन] केबो चववाय ≠ उपरात, 'उन्दर्क उन्हाची' (वन्हा) ।

(पर्या ( ¥)। ४३ वस = ३३)। राम)। बीव (घाषा)। चबवास पुन [धपवास] क्शवास सनाहार, दिम-एउ भोजनादि का समाप (उदार मक्का) । उवदासि वि [उपवासिम्] विस्ते उपवास किया हो नह (पचम ६६, ११) सुपा ४७०) । उववासिय वि [वपदासिव] चपवाद क्रिया हुमा (मिन)। धवविश्र देवो एवपीश 'सम्बंध बुद्धको ब (? व) विभी (धर्मीक a)। खबविट्ट वि [तपविष्ठ] बैठा हुम्स निक्त्रहा (प्राचम) । स्थिकिपिरगय वि [स्पविकिरोत] स्टट निर्वेत (भीव ३) । बद्दिस यह [ हप + दिल्ला] देजा। ध्व निसद (सद्दा) । शङ्क- सम्बद्धिक (प्रि १=) । बषविसण न [सपवेशन] बैठना (दुनक ७)। खबबीय म [क्पबीत] १ सक्यूम क्लेक

345 स्ववसम्य न [स्पनसन] स्पनास (सुपा ६१६) । चववाइय वि [भीपपादिक, धीपपादिक] १ उरफल होनेवाला 'धरिन में मामा सन बाहर, मरिव में सामा जनगहर (माना)। २ बेबक्स या बारक क्य से उत्पन्न होनेबाता लबकास सक [तप + पाइस्] संपादन छत्रकाय पुं[उप + दाइय्] नाच वनाना । **उपकार पूँ [उपपात] १ देन या गारक जीन** साम्बाचार किरोप पारवरेची के साम रह कर सॅबिग्न-विहार की संप्राप्ति (पंत्रमा)। य वि वि देव या नास्त्र गति में उद्यन

करना चित्र करना। उपनायए (उत्त १ करक सपश्चमाज समक्त्रमाज (भन्म) की उत्पत्ति—जन्म (क्रम्प)। २ देवा भावछ 'बार्लोबनायनयलनिहेसे निद्रंदि' (भव ३ ३)। १ विनयः ४ माजाः 'जनवामो णिहेसी जाएए विख्वा य होति एपट्टा (वश v) । ५ प्रावृत्रीय (पद्या १६)। ६ कासेपादन, चंत्राप्ति (निष्कृ ४) । ६८५ पू ["वहस्य]

₹ंद्र≎	पा <b>न्अस</b> हसह <b>ण्य</b> पो	हवबीडहबसाम 
(जाय ११६ मन्यो। २ ति स्वित्य युक्त 'युक्तपंपित्वीयों (निवे ६४११) । स्वयाद या (स्वयाद या	पीत (तृथ १ व भी १)। २ नट भावत  कर्षचार करेंबू (एव)। १ थूं ऐरवर सेन  हे स्काम-क्य एक शीनेंक्ट्र सेन (पन ७)। भीइ पूँ मित्र होन  एम १)। वस्तीय की हिम्मारिकी प्रकामक  (यम १)। वस्तीय की हमसीय वि प्रसामित वि स्वसीय की हमसीय की हमसीय की हमसीय की हमान करना। वस्तीय की हमसीय की वार्त । २ सकीय के  बाता । २ स्वीक्टर करना। १ साम करना।  क्यांच्या (पर ११)। वह जयसीयक्रीत  (यह १)। वह अपसीयक्रित खनमीयक्रीत  (यह १)। वह अपसीयक्रित हमसीयक्रीत  (यह १)। वह समीयक्री हमान करीय  क्यांच्या (क्यांच्या)। वह प्रमान  क्यांच्या (क्यांच्या)। व्यवसीयक्रीत  वसीय-कर (वर्ष १)। क्यांच्या की [स्वसीयक्री हमान करीय  क्यांच्या की [स्वसीयक्री १ साम करीय  क्यांच्या की [स्वसीयक्री व साम क्यांच्या  क्यांच्या क्यांच्या  क्यांच्या की [स्वसीयक्री व साम क्यांच्या  क्यांच्या क्यांच्या क्यांच्या  क्यांच्या क्यांच्या  क्यांच्या क्यांच्या  क्यांच्या क्यांच्या  क्यांच्या	स्वसाल्या न [यपसर्वेत ] स्वाचान, बैंग्यु सिते २२६२)। व सम्बन्ध (मिरे व रो)। व्यवस्य नि [वपसर्याः ] रिरेट मार्ग्यत्वनायाः (छद्य व )। व्यवस्य पूर्व [यपराञ्च] दुर्ग्यन्तम राज्यः (त्र्यू )। व्यवस्य पूर्व [यपस्य ] दुर्ग्यन्तम राज्यः । २ स्वाच्याः वक्षः [यप + सूप् ] समीच नामा। वेषः व्यवस्थितका (म्या च १९६१)। व्यवस्य नि [यपस्यित्तम् वर्गयः में नाने- वानां (व्यव्यः) व्यवस्य वि [यपस्यित्तम् वर्गयः में नाने- वानां (व्यव्यः) व्यवस्य वि [यपस्यित्तम् ] प्रतः वना हुमा (प्रतः)। व्यवस्य वृं [यप + सम्बन्ध मार्गः)। इन्हर्मा व्यवस्य व्यवस्य (व्यव्यः)। अर्थः व्यवस्य स्वर्थः (व्यवः)। अर्थः व्यवस्य (विव्यः)।
• • •		होता । वहकता (क्या कार्य महा)। ह- क्यस्तिसका (क्या) प्रयो ज्यक्रिय (क्षेमे १२ ४), क्रक्याचेह (शि ११२२)। इ. वर्ष- स्वाविषका (क्या)। क्षस्त्र श्रु [क्राराम] १ क्षेम का धकत स्वा (वाणा)। २ ह्याँच-निष्कृ (वर्ष १)। १ क्ष्म्यका विश्व (कार १)। ४ द्वार्य विरोध (स्व ११)। स्वाम म [स्वम्यक्षा] स्वस्त्रस्या की [क्यासमा प्रतिमक मक्ता विरोध कर्मा-कृत्रस्य स्वय-क्योरस्यो के योगन कत्रस्य स्वय (वर्ष)। क्ष्मस्ति की [क्यासमा प्रतिमक मक्ता विरोध कर्मा-कृत्रस्य स्वय-क्योरस्यो के योगन कत्रस्य स्वय स्वय-क्योरस्या क्षम्योगन कत्रस्य स्वय-क्योरस्याप्ति क्षम्योगन कत्रस्य स्वय-क्यान्यस्य (क्षेष्ठ ११ की)। व्यवस्तिका श्रु [क्योरसिक्] क्यांन्यस्यात्त्र (क्षि)।
भिना नवा है। बहु चार्चारत (विकेट ११)। प्रत्मीत्म कर जिपने ने बिंगु केवन करता। मा प्रवमित्मिदि (वर्ण)। प्रत्मित्मिद्ध कि दिपसीतिया है। वर्णाय कें [स्वतः। व प्रतिवर्ण (वर्ण)। वन्तते हि विषयालया है। कोचारि हिलार	दशसमा कि [के] मन्य, यालडी (वे १ ११६)। वचसमामा कि दिवसमितः है रिमन किया ह्या (स्विरि १११७)। वयसम्बद्धा सक [चय + सुज्जु] समय कला। उस्त्रीजया (याचा २, व १)।	वच्छतिय हि [कीरामिक्त] र कारून है क्षेत्रका। २ कारूम है धरन एकरेनला (कुत केपन) वच्छाम कह [वद + शास्य] र छान् कुछा। २ ध्रीत करणा १ क्यामेर (क्या) कुड - क्यामोमान (चन) है, क्यामीमे चन्ह्य (कल)। छंड, क्यामप्रसु (र्ग)।

सबसाम पू [उपशम] उपशानित (सिरि | २३१)। ज्यसाम देखो उयसम (बिने १६ ६)। श्वमामग वि [उपरामक] १ डोवादि की स्पद्यान्त करनेवाला (विशे ४२१ द्याव ४)। २ इत्तरामचे संबन्ध रखनेवालाः 'दरमामम मैक्सियस्त होइ उत्सामयं तु सम्मर्त (पिछे २७११)। दवसासण न [प्रपक्षमन] सपरान्ति उपरान (# X4t) 1 हयसामणया भ्ये [स्परामना] उपराम (ठर उपसामय देनो उपसामग (सम २६ विमे 28 8)1 दक्षमामिय वि [भीपशमिक] १ उपराम संबन्धी । २ पूँ माथ-विरोधः 'माहाबममस-हावा मध्यो उपसामिक्रो भागा (विने १४ १४)। १ म सम्बान्य-विशेष (विने १२१)। भवसामिय वि [पपरामित] राज्य विवा हुमा (वद १)। उपमाद्द सङ [सप + फ्रम् ] कहता । सर साहद (सस) । उदमाह्य वि [उपसाधन] निजापक (मछ)। उपमादिय वि [उपसाधिव] देवार विवा ष्ट्रमा (पाउन १४ = सए) । उद्मिन नि [उपमिक्त] निक्त, दिन्दा हुवा (र्गमा) । उपमित्यभ एक [उपरक्षक्य] बर्लन करना प्रयोग वरना। हु ब्रासिन्साअह्नवृत्त्र (द्यी) (पुत्रा १६८) । रपमुक्त र उपमुत्र] सोबाहुमा (से १६, उपमुद्ध नि (प्रपशुद्ध) निर्मेष (बुध १ ६)। उपमृत्य रि [उपमृषित] मंगूबित (गल)। हयमर वि दि ] एवं बीग्य (दे १ १ ४)। क्यसेयम व किपसमनी नेस परिचय (पत्र हबसेबय रि [इपसेपरु] नेश वन्तेशवा मन्द्र (मर्दि)। 'उदमाध घर [उप + शुभ ] शोजना विध-बना । बद्ध वयसाभमान वयसोभमान (भन; द्याया १ १)।

दबसोभिय वि [उपशोभित] मुग्रीभित विरामित (भीप)। त्रवसोद्या की [न्पशामा] शोमा विभूपा (पुर ११४)। उपसाद्भिय वि [उपशोधित] निर्मेन किया ह्या शुक्र किया हुया (लागा १ १)। ख्यमोहिय देशो न्यमाभिय (गुग ५°मीन सार्थ ६६) । **धवस्ताग देवो उधसग्ग (१**स) । सपस्मय प्रं [उपामय] केन सामुपों के निरास करने का स्थान (सम १८४० कोक १७ मा उप ६४८ थे)। खबरसा श्री [उरामा] हेप (ब**म** १)। उवस्सिय वि [उपासिन] १ हेपी (वव १)। २ बद्रीइतः। ३ समीप में स्वितः। ४ म. ह्रेप (राव) । **चबस्मु**णि की [उपभति] प्रल-धन को जातन के लिए ज्योतियी की बहा जाता प्रकम कास्य (हास्य ११ )। ज्यह स जिससी दोनों प्रथम (नुमा है न ११८)। उसद्दर्भ दिं] दशी वर्ष दो वनसन्तरासा मम्पय (पर)। उपहरू तक [ समा + रम् ] श्रुन करना बारम्भ गरना । उत्तरहरू ( यत् )। चयहर वि [उपहृत] १ चरडीरित चरस्था वित (यम)। २ मोजन-स्थान में सर्वित भावन (ठा १ १)। उबद्ग्य नक [उप + इम ] १ विनास करना । २ बाबाद पर्रेचाना । तबहुलुद्ध (छउ) । वर्म उरहम्मद् (पर्)। वह उपहर्णत (धन)। बपहणम न (उपहनन) १ मानातः । २ निनाद्य (द्रा १)। उत्रहत्य वह सिमा + रच् र रचना बनाना । २ असेजित करना । सम्हाबन (हे 1 (25 Y उत्रहरियय वि [समार्जिन] १ वनाया ह्मा। २ पत्तित (गूमा)। उबहरम हैनो उपहुत्ता। उबह्य रि [प्रपह्न] १ तिनाशित (पानू १६४) । २ द्रप्तित्र (दृद्ध १) । े बबहर सम् [बप + इट् ] १ पूजा कला।

२ कारियत करना । १ मर्पेण करना । चर हरद (हे ४ २१६) । भूरा चवहरिमु (टा ववहसानर चिप + इस् व उपहास नप्ता हँगी करना । 🖫 दशहसणिक्स (म ३) । उपहसिध वि [प्रपहसिय] १ विसका रूप हास तिया गया हा वह (पि ११४)। २ न उपहाम (तंद्र) । उच्छा ही रिपधा निया क्यट (धर्म ३)। उपक्षाण न उपयानी १ तकिया जनीया (दे १ १४ । सुर १२ २ घ सूता र) । २ वाचर्या (सूच १: ६ २, २१) । ६ जापि 'चण्डाप पर्वतहरमणं उपहाणामा कनिक्य कार्ल' (उर ७२८ टी)। उपदार प्रं [उपहार] १ भेंट उत्तर (प्रति ७४)। २ विस्तार, फेलाव' 'पहामपुरमाब हारेड्डि सम्प्रमी चंद दीपर्यंतें (कृष्य)। रमहारवया केही उद्यास्थ्यमा (चन) । ववहारिक वि [दप्यारित] बवधारित निधित (सुम २ ७)। उपहारका ) को दि ] बाइनगारी की (बा उपहारी ) ७३१ दे १ १ व)। हवहारून्छ वि [ ज्यहारवन् ] स्वदारवाता (धींधार)। वयहाम पुं[डपहाम] हैंगी ठट्टा फिल्मी (₹२२१)। उपहास वि [उपहास्प] ईमी 🖩 भागकः 'सुसमस्यो विह्ना पणवद्यश्चिमं संपर्धं निमेते"। क्षो चन्नि ! दार मोए, मर्मप उबद्वामयं सङ्ग्रं (मूर १ २६२) । उपहासिषिञ्ज वि [उपहर्मनीय] हसवारात्र (पउम १ ६ २ )। उवदि मुं [पद्धि] समूर सामर (स १, ४ ) ४२ मिर्ग । उपदि पूँऔ [ प्रपाधि ] १ माध्य करट (बाका)। २ वर्ग (मूर्घ १२)। १ उप करात भाषतः निविद्या प्रवाही पएएएमा (हा ३३ घोष २)। थपद्दि सक् [ ४५ + दिण्ट् ] वर्षन्त वरता बुनना: 'बिक्स' बर्गारड' (पंडीय ४१) ।

बबहिय वि [बपहित] १ क्यतीलित सर्वता। २ तिहित स्वामित (याचा विते १९७)। १ त जस्तीकत सर्पेत (तिव २)। स्वहिय वि [जीपायिक] मध्या से प्रकास

विकारनेवामा (शाया १ २) । स्वहुँच स्क [ चप + अुत् ] स्मानेम करना, कार्य में लागा । स्वहुंबर (पि १ ७) । स्वहूं स्वहुद्धांत (पि १४६) ।

चन्द्रका (त. १२५)। चनद्रका केवो चनमुक्त (तायः चे १ ४१)। चनाइकास कर्म [उपाति + क्रम्] जन्तेकत करता। चेक्र चनाइकम्स (सामा २, ४१)।

स्वारूप वर्ष [स्पारित + ती] प्रवारता। संक. स्वार्डाणचा (याचा २ २, २ ७)। स्वारूप स्व [स्प + याच्य] मतीती कला स्थित साम के पूर्व होने यर सिसी स्वेशा की स्थिप बायस्ता करने ना मानस्वित्र संकल करा। हेड्ड "बीर स्व वर्ष केसा मिता। चारने वा स्वर्ति का प्रवार्ध करान्त्र महिल्ला स्वरंग स्वर्ति का प्रवार्ध करान्त्र

'ৱৰাত্বণিভাৰ্য' (বিনাং । ।) ।
বৰাত্বপ কৰ [ব্যাং না । ই হুবে কংলা।
ব সংলা কৰে। ইছং বৰাত্বপিত্য (তা
ব)। সদী লী ইষ্ট কৰু সন বিবকলুলে
বেলো বিনাৰ কৰিবলুলে
ধন্দল্যতি নিক্তবন্তলৈ বাইকলুলি
ধন্দল্যতি নিক্তবন্তলৈ বাইকলুলি
ধন্দল্যতি নিক্তবন্তলৈ বাইকলুলি
বিনাৰ কৰিবলৈ বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ কৰিবলৈ
বিনাৰ ক

वरिष्ट्रं व प्रकृषक्षेतामि चि कट्टु वीवाहर्ग

मस्तुद्वाय एमन्दर्ध ववाङ्गमाविकार्य (शामा (१२)। ववाङ्गमाव यव [ अति + क्रम् ] १ जनकेन करमा । १ दुनारमा वनार करमा । क्यान्य वेकार (क्या) ववाङ्गमावित । क्षेत्र व्याप्त्य वेकार (क्या) ववाङ्गमावित । क्षान्य ते प्रार्थित । वक्त यानिकार्य का विश्वाय ते एं विभिन्न के स्वार्थ किल्या विकास केर्य प्रतिकारमा ने केन्या वे व्याप्ति क्रमेर क्यारमानेक्य । वे क्यानु निम्मेव वा मिन्त्योती पार्थ एक्से क्यानुमोद्देश प्रवारमानेक्य मा स्वार्थन्य, हे पुर्वि शेवका स्वार्थ प्रस्तुप्ति विश्वयक्ष विश्वयक्षित ।

च्याद्यादिशाएं (क्या) । वयाद्यादियां वि [काशिक्रास्य] १ उस्मंतित । २ राजारा क्या पसार क्या ह्यां विरोधा

२ पुतारा ह्या पवार निमा हमा निवास हमार्ग नी रूपह निव्यंत्राल वा निक्कील वा स्थापी ना ४ पत्रमाए पीरवीए पत्रिमाहेला पत्रिक्त पीर्वित ववादलावेलए । से व व्यक्त जनाव्यापिए विवा तो नी रूपणा प्रेंत्रमा

(कस) । क्याइस केलो कक्याइस (सामा १ २४ मुचा १ । स्था) ।

एबाय्य ) बोल्य (विसे स १४८) ।

चताई थी [बद्धभधी] योतानी-नायक विचा की प्रतिराजमूत एक विचा (विचे १४४४)। कवाएका ) वि [उपावेश] बाबर प्रदेश करने

ज्यागच्छा । एक [चपा + गम् ] तमीप में ज्यामम । प्राप्ताः च्याच्चक्का (स्मा क्या) । यदि ज्याविक्ति (साचा २ व १ ९) एक व्याप्तिकृता (सन् कय) । हेंक-व्याप्तिकृत्य (क्या) ।

क्वागम ( [प्रपानमा ] सतीप में भावनत (यम) । क्वागमण न [क्यागमन] १ सपीप में भावनत । २ स्थल शिन्ति ( सामानि

वर्षः)। त्रवागम् वि [त्रपामत] १ समीर क्रियास १ मा (साचा ८ व १२)। २ प्रस्य प्रतिवर्धात वीची प्रक्ष्ममुत्राकमो स्रतान्त-स्रती (का)।

क्वाडिय नि [तरपाटित] क्वाडा ह्या (निश १६)। क्वापना) जी [तपानक्क] क्वा (वह) क्वापका) प्रकृष्टाधारणाणी क्वाएहाधी परमु द्विवादी' (क्या ६१ सुद्ध १४

२, १)। उवादा कर [उपा + दा] प्रहुश करना। कर्म, क्वाप्टैनीर (क्य)। क्रेन्ट, ब्वादाय ववादिएचा (मन)। क्वन्न क्वादीयमाण

ववादिण्या (भन)। क्वल क्वादीयसाण (भाषा १)। ववादाण व [वपातान] १ ध्रहण स्थीकार। २ नार्वस्त्र में गणितुल होनेवाला कारण। १ विकन्न बहुत किया कार वह प्राक्र

(पिसे १६७ )। तथादिय वि [तपसम्ब] परदुकः (एन)। तथाय पुँ [तपास] १ हेतु, शावन (स्त १२): २ हप्टम्लः 'जबासी सोबाबन्मेस व विवासेसा सं (पान १)। १ प्रतीकार (स्र

'नायोगायाले ज्यिय पुच्छा मोमीति तो यशै

त्रवाय तक [ तप + याच्] मनीती रूप्त । वक्क जनाममाय (खाया १ २१ १०)। जनायज न [तपायन] मेंद्र, ज्यहार, नद-चना ( ज्य २४४) बुना २२४-४१

¥ 4)1

च्छक )। एवासवास केवो स्वाह्म्पाल । ज्वामातातेशः सङ् चनायमार्थेतः हेड्ड एवासमाविद्यप् (क्ष्णे) व्यायमाविद्यप् (क्षम्)। चनायाम् केवो स्वाहास (सम्बु १२) छ २१

विते २१७१)। वद्यासाय वि [चपासात] समीप में बामा हुया (निर १ १)।

वसारक कि [स्पादक] प्रास्त (४ १११)। वसार्क्षम वक [स्या+क्षम] कार्यक्र कारा वसारम्पर (४म)। बद्ध-वस्त्रंपर्य (४म)। के वसारम्पर्य (४म)। के वसार्वम्पर्य ४)। के वसारमणिक (सार ११६)। वसार्क्षम वृ[चराक्रम्य] स्माहमा (क्षार्य १

१ मा ४)। क्वास्ट्रम् वि [तपास्ट्रम्] विश्वमे क्वास्ता मिया पमा ही वहा 'ठ्यासको स तो विगी वैस्त्रो (तिल्हु १) महत १६०)।

व्यास्त्र का [उपा+स्त्रम्] ज्याह्रक केमा। प्रति क्याब्यह्रस्य (प्राप्)। व्यावक्य प्रं [उपाङ्क] वह प्रत्य वो केळी वे व्यानुक्ष हृमा है। (बार ७ )।

बचावचित्र् (थी) वि [बचावृत्तित् ] उन्हाँ क क्यार वे बुक्तं (चार ४ )। व्यास क्याः [बप + शास् ] जावना क्याः वेशा करताः कुन्युक्तास्त्री व्याक्रमः कुन्यस्त्री कुन्यस्त्रव्यं (सूच १ ६)। शाः क्यासमाण्यं (ठा ६)।

च्यासाम् (अ.२) । च्यासः पुं[श्रदश्चरा] श्वली वस्त् प्रातास (ठा २, ४) च स्व) । धयासमा वि [तपासक] १ सेवा वरनेवाला । २ पूँ कैन मा बुढ दर्शन का धनुवायी गृहस्य (बर्में से ११)। ष्टवासय वि [स्पामक] १ ज्यासना करो-बाला शेवक । २ पूँ सावक वैत पृहस्य (बत्त २)। दसाकी ["दशा] साउनो कैन चेन प्रत्य (सम १)। पश्चिमा भी "प्रतिमा । भावकों को करने थोरव निवय निरोप (बच २)। श्रवासचान [उपासन] जपानना खेबा (स १४३ में ६६)। चयासवा को [उपासना] १ सौर-दर्ग ह्यामत वर्गेष्ठ सन्दर्भ। २ सेवा शुम्पूरा दिवामणा मंसुक्त्ममानया, पुरुषकार्यं वा कास्त्रा परबुवान्यमा (प्रावय)। उदासय देवा उदासग (सम ११६)। मनासय पुं [उपाधय] केन कुनिया का निवास-स्थान (द्वप १४२ टी)। बबासिय वि [उपामित] देवित (परम ६= ४२)। चवाह्य यह [उपा + इस्] विनाश करना मारमा । मह वनाइप्रीत (पर्छा १२) । च्याह्रजा देशो उद्याणहा (धनु: खाया १ (X) 1 त्वर्षाद्व पूंची [ उपाधि ] १ नर्ग-वनित विरोगण (पाचा)। १ शामीप्य, शर्माव (भग १ १)। ३ धरवामाविक वर्गः 'गुळोवि पनिद्मणी वरादिरमधी बरे॰ बन्नतं (बन्न 12 (1) 1 उदि सरु [उप + इ] १ समीप मात्रा। २ स्रीरार करना । ३ मान्य करना । जनिति (भन)। बह देखित (नि ४६६ भागा)। पविश्र देवो अधिम = सीर प (त २ १)। स्विभ वि [वपत] पुण स्थित (प्रवि) । प्रविम न दि शिम, यत्यै (देश वर्श)। २ वि परिवर्णित चैत्रप्रदेश 'लालाबलिक सुबरयस्त्रियनसम्बर्गस्त्रीत असीविक्यमिनिमेन्-विरह्मपृथिति दूरिनिहुन दूर्वे दिवा परवधानिक बीरवनए' (गावा १ १) । बरिंद् पू [न्पन्द्र] इथल (दुवा) । बाला । बबेदण न [बपेख्या] क्रोबा, बरामीनता औ विका विवास क्या के भारताला एक एन्द्र (रिय)।

वर्षित् पून [वपेन्द्र] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१) । **एविक्स सक [ उप + श्रेष्ठ ] उपेत्रा करना** धनापर करना। **वड्ड- ट**व्हिक्समाण (इ {**\$**} 1 अविकस्ता की [प्रपेक्षा] स्वेशा धनावर (कान)। उविक्सिय कि [प्रपश्चित्त] विरुक्त यनाहत (बूपा ग्रह्म)। धविकलेब पू [उद्विक्तेप] इज्ञानत कुन्जन (বন্দু)। उविषया वि [उद्विष्ठ] विक उद्देव-शान्त (यव) । त्वीव धक [ उद् + विच् ] एडेन करना बिन्न होना । स्वीवद (नार) । हवे देशो तथि । प्रवेश पर्वेति (धीय) । शहुः उर्वेत (नहा) । श्रंष्ट क्षेत्र (नूम ११४) । स्वक्ता केलो उदिकता। स्वेक्लाइ (गुपा ११४)। इ. उवक्छियक्य (स.र.)। उविक्सिज वेको उपिक्सिप (वा ४२)। उनेष वेको सम्र ज्वेस वि विषेत्री १ नगीप-गतः। २ इतः विदेश (वंस्था ६) । उनेय वि [उपेय] प्रशय-नाच्य (ग्रज) । ववेल्छ यक [प्र + स्] फैतना प्रनारित होना। श्रीसाइ (है ४ ७७) । चरम धक [चर्च + विज्ञ] बैठमा । बह्न इबसमाग (विष १८३)। त्रबाह् सक [ तप + ईक्ष्म ] तरेगा करना विरस्तार धरमा उत्तातीन रहना। अनेतुह (थम्ब १६)। वह उबेह्य उबेह्माण (ब ४६, ठा ६) । इ. उमेदियम्य (तल) । उबद्द सक जिल्ला + ईश्ची १ वालना सम जला। २ निवय करना। १ वन्पना करना। वनेहादि । वह समहमाणा 'दशहवाणी प्रण वेहमार्च दुवा, खरेहाहि सनिवार' (धाषा) । र्चेष्ठ उदेश्य (भाषा)। (लंबीय १ (रिस २३)। । ववेदा की [वपचा] शिलकार, प्रशास, प्रश

सीनता (सम १२)। कर वि [ कर] उरे-लक उदासीन (था २८) । उवेद्याकी [उस्प्रेया] १ जल सम्मः । २ करपना । ३ धनकाएए निषय (धीप)। बबहिय वि [उपेछित] मनारत तिरम्हत (का १२६ चुपा १३४)। तस्य बेडो पुरुष (या ४१४)। उक्बंत वि [बद्वान्त] १ वयन विया ह्या। र निप्कान्त निर्यंत (सिम २ ६)। उक्तक सक [ चस् + थम् ] १ वहर निका-चना २ वयम करना । हक्क उद्यक्तिर्द (मूपा 1 (375) चवन ३ नि [उद्वास्त] १ वाहर निराता सम्बद्धिय ∫ हमाँ (पर १)। २ वमन किया 'संदोसानवारणं कार्ड सम्बरियमं हवानेखा। वं गहिलाएं विराहे, कर्नीक्या मोहभूदेशां ( मुना ४३३)। श्रद्भाग देवो श्रीयगा । संह उद्यागियि (भवि) । चक्दर् सम [उद्+ पृत्, वसेय्] १ चरना-फिरमा । २ मरमा एक गति से दूसरी यति में जन्म लेता। ३ पिटिशा धादि ले शरीर के मन को 📳 करना । 🗑 कमें बर मालुमों की सबू स्विति की हराकर सम्बी न्यिति करना । १ पार ५ को बपाना-पिताना । ६ बन्धन होना अधिन होना। सम्बद्ध (मग)। बद्धः, उब्बट्टंत, उम्पट्टमान्न, उज्ञत्तंत (भग नाट उत्तर १ ३ वह १)। चीर उब्बद्धिता, बद्ददु, प्रस्वद्विय (श्रीत १) शियार १ भाषा २, ७ स २ १)। क्षेष्ट चक्षवद्विचय (बस्र)। वस्पट्ट रेजी उच्यद्विय = उर्वृत (भग) । सक्बहु कि [के] १ मीयव यय-यन्त्रित १ वनित्र (१११२९)। वस्बदृष्यं न [उद्गत्तन] १ शरीर पर ने सन वर्गेष्ट्रको दूरवरना। २ सप्रैरको निर्वत वरनेशना हथ्य--नुपन्यि वस्तु (उदा, शाधा १ १३) । १ दूनरे बन्द में बाता करता । ४ नप्रवेका परिवर्तन (धार ४)। १ वर्णनर मागुर्वी की हत्य स्विति की दीवें करता

(पंच) ।

स्क्राइया न जिल्लामी तुने से उसके बीज को सलस करना (पित्र ६ ६)।

चठवरूप न (अपवर्शने वेशे तक्ष्वकृषा = भावतीना (विसे १११४) ।

हरूबद्रणाची विद्वर्त्तना १ मत्त्व शरीर मे बीब का तिरवता (ठा २ ६) । २ पारवें नाथरिवर्त्तन /शस्त्र ४) ⊧३ चीव का एक प्रमान जिस्ते कर्म-गरमानुको ने। तकु रिक्कि

बीर्ज होती है, बरख विरोध (अब ६१ ६०) । **क्ष्महणा हो [अपमर्चना] जीन का एक** प्रयक्त विसुचे क्यों की चैचे व्यक्ति का आस होता है (बिते २७१४ दी)।

उपबंदिक वि विदेविती शत क्रिया हमा प्रमामिक निषेक्ष नानि छन्नद्विएँ (पिड ₹७६) ।

सम्बद्धि वि [उद्दुष्ट] किसी गाँउ हे बहर निक्ता ह्या भूता पाउनस्थल स्थ हिमा चमाला (परा १ १)।

बर्जाइय वि निद्विचित्री १ विक्रो किसी भी प्रथम से शरीर परका तैल लगैशा का मैस इर विया हो वह 'क्यो तकद्वियों'। वेश सर्ग्याको सम्बद्धियो इस्ट्राइसकोहि । पमामिमो (महा)। २ अभ्यावित विश्वीयश

से झर हिमा हमा (विड)। क्ष्यद्व नि [चत्रुज] नृद्धिन्यप्त (मानम)।

बक्यात्र वि डिस्तामी प्रवर्ग छन्नाट (क्य व ७ वर्ष धम्म ११ धै)।

ध्यम् रेवो इव्वट्ट = वर् + हुन् । स्थानह (पि १ १)। सह उव्यक्ति सम्बन्धमाण (से ४ पर स २१ m 4२0) । जनक इब्बसिक्षमाण (कृता १ व)। 🚓 सन्द-चिवि (सर्वि)।

एम्पन्न देशो सम्बद्ध (वे) ।

इत्तरा तक विदान वर्तेष् रे बका ररुत । २ इसेटा रुखा। इम्मरीय (पव **७१) बंक रुक्वतिया (बस १, १ ६३)**। उम्पत्त वि विश्वयो दिश बरोबला (उप ७१) ।

उध्यक्त में [सबुक्त] १ बतान वित (से **१, ६२) । २ व्यक्तिस्त (हे** ४ ४३४) । ३ रिसाने पारने को चुनावा हो बह (पान वे)।

Y कर्ज-भिवत 'सो एडवत्तविमाली संववसमी भागी (महा) । ५ हमाना हुमा, छिराना **एपा** (प्राप्त) ।

सम्बद्ध वि (अपप्रश्ती समदा च्या हमा, बिगरैव स्मित्र (से १ ६१)। उब्बन्तण न [उद्यर्शन] १ पर्स्न ना परित र्शन (गार**०३** निद्युप)। २ क्रीबारहना अमर्थ-बर्रोन (ग्रीब १६ व्य) । बक्ष्यतिय वि [उद्वर्शित ] १ परिवर्तिय, बना-

शार भूमा क्रूमा (स वर)- "समिय" व वराजकर्मिह **क्ल**शिवर्षं च सम्बन्धुहार्'/तूर १२ १६६)। स्टब्स् देवी प्रवाहत (वहा) । उठ्यम सङ्ख्या + सम् ] अन्तरी करता, पीक्षा निकास देखाः वक्क प्रश्नमंत् (न ॥

₹ ₹1 ₹¥₹)1 वस्वमिश्र वि [च्यान्त ] अन्य क्या ह्या

बनन किया हवा (पाय) । तस्वर सक [उद् + पृ] शैर पहना वच बाना नुभ्राता 'वताता अपुन्तरेद देश्जाह सक्रम तमन्त्रेष्ठ' (ज्य २११ वै) । शह क्षमंत्र (मह)।

कळबर वृद्धि वर्ग, शाह (देश ८७)। क्रमारिज नि वि} १ मधिक वया इधा स्वनिष्ट (दे १ १३८ पिका या ४७४ सूपा १६ १६१, योष १६० मा) । २ वसीरियत धनग्रीय । ६ निरिष्य । ४ वयस्यतः । इ.न वाय बरमी (वे १ १६२) : ६ वि व्यक्ति-कारत व्यवस्थित 'पश्चमाद्रश्लाक्षरम् लिग्श-इब्हाल वे बहुम्मरिका (तुपा ६६ ) ।

रुम्बरिक्ष व [अपवरिका] कोठपै छोडा बर (बर १४ १७४)। बस्पक्ष धक [कर् + क्लृ ] १ उपनेपन करना । २ गीजे भीटना । हेक्क कक्किस्ट्रय

(क्स) । व्यवस्थ सक [स्यू + बस्टर् ] अधूसन वरना । अनवए। वड्ड उन्नतमारा (र्पच १,१६१) ।

तकाञ्चण व चित्रधनी १ तरीर का उपनेपस-विक्रेप (शाका १ १३ १६)। २ माविका यागद्वन (बृह ३ ग्रीप) :

बक्दछत्रा धी (क्यूक्ता) १ क्रयूकर । र सहसम्बोग्य कर्ग-प्रकृति (वैश्व व ६४) ।

स्वयक्तिय वि [उन्नुखितः] पीचे भीटा ह्या (महर) ध रक्कस वि [रहूस] प्रवाह वसति-पीत

तस्बद्<del>य -</del>उम्बासिब

(तुपा १४ व्हा ४ ६)। प्रकासिय वि [हदुसित] कर केवी (वा १६४ वर २ ११६३ वर्ग १४१)।

प्रकासी हो [ वर्ष शो ] १ एक बन्हर (क्य) । २ शक्य की एक स्पेताम-स्पात क्यी (परम ax <) 1

कम्बद्ध सक [त्रदू+यह्] १ बार्फ करनाः २ रुडामा । जन्महद् (म्या) । वह क्रबाईत एक्वहमा्म (पि ३१७ हे ६ ६)। **इक्ट इक्ट्रान्समाय (ग्रंगा १ ६)** । डब्ब्हण व डिव्रह्मी १ वाएस । २ ज्या-पन । (बडड नाट)।

चन्नवहण न (वे) महान भावेत (वे १ ११ )। श्रक्या और विशेषाने बार (देर ०७)। खक्ता } शक [उद्+का] १ सुकनाः चळ्यां को शुल्क होता । स्व्वाह, क्लामा ( TX B X 9X )1 क्षमाध वि [सङ्खात] रूटन सुबा (गरा) । कम्पानः } वि [दे] विल,परियान्य (दे रै

बम्बाइज र रे रेड्ड श वन ४ पाम वा धर् । बुपर ४३६)। जम्बाबद्ध व किंदे १ वीत । २ करना बबीवा चम्बाइक न दि । दिपरीय स्था। र

यर्गान-रहित वैषुत (दे १ १६६) । बस्वाड वि दि रे विस्तीर्क विद्यान । रे दुषारीत (दे १ १२१)।

बन्माण रेको सम्माम = बहात (मूम १६८)। क्षमाय वेद्यो हवाय = उपाय (सम्र १ ४ ( q) : कव्यार (प्रप) सक विद्य-वर्तेम् विधान सरता क्षेत्र देना । रुने, समारिक्य (है ४ ४१ ) ह

**व्यक्ति (**यह्)। थठबास धक [ सव्+शासय ] १ **१**र करमा । १ वैश्रविकाका करना । ३ समार करन्त्र । अञ्चलक्ष (नाट निश्) ।

बस्तास सक [सूत्र] काता तीवता।

कटवासिय वि [बद्वासित] १ प्रजाह शिया हुमा (प्रतम २७ ११) । २ <del>देश बाह</del>र

किया हुमा (मुपा १४२) । ३ दूर किया ह्रमा (गा १ ६)। चक्याइ पूर्वि] वर्गताः (दे१ ८७) । सरुवाइ पू [स्ट्राइ] विकाह (मै २१)। एक्बाह् सक [ उद् + बाधय ] विरोध प्रकार सं पीड़ित करता । कन्क उब्बाहि ख्यमाज (भाषा खाया १२)। सब्यादिल वि [वि] सरिवार कवा ह्राया (R 2 2 8)1 পুৰুষামূভ দ [ব্] ং কলুৰুৱা কল্পড়া (भवि के १ १३६)। २ वि डेप्स मगीतिकर (दे १ १६६)। रुज्याद्वलिय वि [वे] असुक जनगिरुज (मवि)। एक्पिआइअ वि [बब्रेवित] उत्पीकित वि १६ २६) । च्छिब्द्धन [दें]-प्रकपित प्रकाप (प≢)। र्ख्यमा वि [इद्विग्न] १ बिला । २ श्रीत ववहाया हुमा (हे २. ७१)। शक्तिकार वि विदेशशीखी उद्देशकरो वाला (वाका ६८)। सक्रियद्ध देखो सक्रिया। स्निक्द (प्राप्त ६८) অনিক্রি (ব বং)। ইত বলিক্রিয়ত (घर्मीय ११६)। चक्किंद्र विदि (१ वनित ग्रीतः। २ वनान्त क्षेरा-पुष्ट (पड़ ) । **क**ठियडिस नि [वे] १ श्रावक प्रमाण गामा । २ मर्वादा-पहित निर्देश्य (दे १ १६४) बात पत्र २६७-३५६ पदा)। क्रियण्य देखी उक्ष्यिमा (पि २१६)। डक्पिद्ध वि [विद्युद्ध] १ क्रेबा गया ह्या खिन्छूत (पराष्ट्र १ ४)। २ वस्मीर बहुता (सम ४४ सामा १ १)। १ विश्व भीलय सर्हि वर्राणुयसे विवक्ते (संदा ८७)। सम्पद्ध वि सिद्धियाँ विश्वती अवर्ता का माप किया यया हो बहु (पव १६=)। इस्पिम देशो एक्टिया (हे २, ७१ सुर ४ उब्दिय पद [ एड् + बिज् ] ध्टोन करना चरामीत होता फिल्म होता की उध्विष्णव भरवर ! मरहास्त धवस्य मंत्रको' (म १२१)।

श्रठिवयणिका वि [सङ्ग्रेजनीय] स्ट्रेन-प्रव (पत्रम १६ ३१: मूपा ११७)। इडिवरेयगन [इद्विरेचन] बानी करना 'एवं व मरिजन्मिरेयणं कुर्णतस्य' (कास)। इटिपल्ड यक [स्त्रू+ वेड ] १ वलना क पना। २ सक केह्न करना। यक उठिय हर्द्धत, चित्रश्रद्धमाण (सुपा ६४ उप य ७७)। र्जाठबास्त्र बाक [प्र+सृ] कैनना पगरना। छन्दिससद् (मवि)। विदिह्स संबंधित + वेल ] १ तर्फदाना इवर-उवर चलनाः 'उम्बद्धकाः संवर्धीए देवो मासल्लवराज्य (यमीव ११६)। शक्यित्स वि [सर्बस ] बन्बल बपल (तुपा **1**(¥ उवित्रहिर वि [ स्ट्रोडिय ] अन्नवासा क्रिजनेवाला (सुपा ८०)। तक्रियम सरु [धद्+विज्] उद्वेच कला विकास होना । शन्त्रमह (यह) । तक्षिप्रय ) देशो चठित्रय । जम्मिन्स्ह, उन्हे सक्षेत्र ∮घद (प्रक्रा६०) । **उठिवस्त्र वि दि १ क्टा को**म-पूर्शः (पङ्) । २ उन्दमः नेप बाह्य (पाघ)। रुव्यक्त स्थाप्त विश्वक्त स्थाप्त के का केंद्रमा । २ अँचा बाना खड़ना दि बहाग्रा-मप् केद पुरिधे छन्। छक्तिहर्द (पि १२६)। बङ्ग 'मछसाबि धम्मिहंबाई' शरीपाई बाय-सवादं पासंति' (गुगवा १ १ # टी--पत्र २३१)। वक्क चकित्रहमाण (गग १३)। चंक्र चक्किशक्ता (चि. १२६) । नब्बिह् पुँ [बद्विह् ] स्वनाम-स्वान एक वाबीविक वस का जपासक (भव ८, १)। डक्यी पूँ बिली (क्षेत्र १)। स पुं िरा] यना (पुना)। सम्बीह वेबो सम्बन्ध (बूमा है १ १२ )। कामीस वि वि उत्पान कोचा हुमा (दे १ त्रक्षीड वि विदेश विदेश विदेश विदेश प्रमुख्य प्रमीदस्म मधागुरम् (ति १२६) । रुब्दीस सक जिल्ला+पोडव ] वीहा पर्नुषामा बार-पोर करता । वह सक्यीक्ष माण (धन)।

उक्को क्य वि अपन्नी क्षको भूग्या-पहित करनेवाला शिष्य को प्रायदिकत सेने में शरम को दूर करन का उपवेश देनेवासा (युष) (भग २५ ७ इ ४१)। सञ्जूरमामाण **देवो एउदाह** । बब्युण्य ) वि दि । श्रिक्षान । २ वरिषकः। षब्युम ∫ १ कूचे (१ १ १२१) । ४ छद्रर समास (वे १ १२३ मुर ६ २ ४)। श्रम्बुड वि [उद्बयुड] १ भारण विया हुमा पहुना हुथा (कुमा) । २ ळॅबा निया हुमा, क्यार बारण किया हुया (से ६, ४४° ६, ११)। १ परिशीत इत-विवाह (मुपा ४१६) । रुक्षेत्रणार्थ वि [उद्दावसनीय] स्ट्रेग-सारह धब्वेग र [उद्धर] १ शोक दिसमीरी (हा ३)। २ व्यापुसता (भग ६,६)। **ब**र्ज्येड सक डिक्+ दे**ष्ट**ी १ वॉथना। २ पुषक् करना कत्वन-मुक्त करना। सम्बेहर (पड्) उन्देखिक (भाषा २ ३ २,२)। रुक्षेडण त [उद्देष्टन] १ वल्पन । २ वि धन्धन-पदिव किया हुम्स (राज) । वर्धक्रिअ वि [चतुर्वेष्ठित] १ वन्तर **प**हित किया हुया। २ परवेशित (दे४ ४६)। बर्ज्यचास व [दे] व्यविष्टिय विकास निरन्तर पैदन (दे १ १ १)। वक्वेय वेदी वक्वेग (इसा) महा) । सम्बेशग वि [प्रवृधेजक] उद्देन-कारक (रवण ¥ ) I धरपेयणग १ वि [उद्देशनक] धोन-मनक धक्क्यणय । (शाक परह १ १)। बक्वेयणय पुन [श्रद्भजनक] एक गरब-स्वान (वेबना २व)। एक्पेल धक [प्र+स्] पेलना। ज्योनद (पह)। तब्बेस वि [प्रतूबस] सम्झालत (से २ 1)1 उक्षेक्तित्र वि [उक्षेति] फैला हुमा, प्रमून (बात १४२)। बन्यक्स वेशी उच्चेद्व । बानेश्वर (हे ४ २२६)। वर्षे बस्नेस्तिन्द्रह (दुमा)। बब्बेल्झ सक [सद्+वस्त्] १ समार जाना। २ ध्यान करना । क्रीचा सहना क्रीचा

**१इ. दक्षिमयमात्र (स.१३६)** ।

दक्तरण न डिएफ्रेनी तमे ये समुद्रे बीव को सक्तम करना (शिव ६ ६)।

सम्बद्धाः म [अपवर्श्वन] देखोः सम्बद्धाः = धापनसंद्रा (विसे २५१४) । तक्वडणा की विद्वर्थना है गरस रहीर देशीय का निवसना (ठा २ ३) । २ पार्श्व

का परिवर्तन (धाव ४)। ३ जीव का एक प्रमत्न विश्वनं करी-वरमानुष्टीं की बच्च स्थिति धीर्व होती है, पप्त मिठेप (शत ६१ ६०)। **एक्सर्**या हो [अप<del>्यर्</del>चेना] जीव का एक इस्टन विस्ते करों नी बीचें रिवति का ऋत्स होता है (विसे २७१३ दी)। प्रस्कृतिक नि [चटुक्तित] साथ किया हवा মুমাৰিত ক্ষুট্ৰত ৰাৰি তদ্বভূত্ (ট্ৰুড

२७६)। सम्बद्धिय वि (उद्युक्त) विक्षी विति है बहर निस्मा हुया मृत 'याउनस्यप्स 🛩 हिमा समाएउँ (परह १ १)। कम्पर्दिय वि विद्वावित्री ? विसने किसी भी इम्म ते रुपैर पर ना तैक वरैधा का मैल इर किमा डो वड 'ठको उटबटिकी' नेव ध्वमंगियो क्याहियो जन्द्रक्रसञ्च्यति से प्रष्ट्र निया हमा (विड)।

पमिन्तमी (महा)। २ प्रच्याचित विसी पश बन्दबु वि [सब्दुद्द] वृद्धि-शाप्त (वानम)। क्षमण नि [अन्या] प्रकार प्रकार (स्पूर्व ७ व्याप्त वस्त ११ टी)। पञ्चम देवो उञ्दु≍ उद्+दूद । क्रम्थसद (पि २ ६)। यह तस्यसंत हम्मसमाण (ते इ. ४२) च २इ ६२७) । 🗪 क्ष्मिचित्रमाण (द्यावा १ १)। वेब. कम्ब-शिवि (धवि) ।

स्थ्यत्त देखो नस्यह् (दे) । कश्वत सक [बदू+ वर्तेष्] १ लहा नरताः २ ज्लेटा करताः जन्तर्थेत (पर १) तंक दब्बतिया (रह १, १ ६३) । रम्पत्त वि [बदुवत्त] बहा ऋलेनला (पन ७१) । उक्क वि [बब्युक्त] १ ज्लान विश्व (दे

**४,६२)। २ लक्ष**मित (**१**४४ ४३४)। ६

रितने नारर्व की बुनाया ही बह (बाउ ६) १ है

ह्मा (प्राप) । शब्दार कि विवयत्त्र हो उत्तर प्राक्षिमा, विषयित स्थित (छ १ ६१) । उच्यक्तल म [स्टूबर्चन] १ पार्ल का परित र्शन (का २०६ निष्४)। २ ळीवा एइना क्रम्बं-बर्सन (प्रोप १६ मा) । बम्बक्तिय वि [सर्वाक्तित] १ परिवर्तित, धमा-भार पुना हुना (स = १) 'मानिये व रलुक्सीह क्ष्मातिययं व स्वक्षमञ्जूहाएं (युर १२ १६१)। चन्यद्ध रेको चन्नवस्य (शहा)। उज्यम ब्रष्ट [ स्रकृ + सम् ] चलगे कला नीका निकास देना । एक उच्चर्यत (से १, ह या १४१)। डक्यमिख वि डिडाम्ड े उभटी किया हवा बमन किमा क्षमा (पत्र्य) । क्रम्बर सक [उद्द+मृ] तेन शाला वप बागा 'तुम्हाख 'वेंतरस वमुन्दरेह देग्बाह सक्राय तमानरेता' (तप २११ दी) । भक्र-चञ्चरतः (भन्नः) । खळबर वंदिरी वर्गतान (दे१ ८७)। क्रम्बरिल वि कि ? सविक, बचा हजा बनरिष्ट वि १ १३२) पिक या १७४ सुपा ११ १६ राज्याच १६ मा)। र समीरिस्त मनधीर'। वे निरिचत ३ ४ स्वतिस्त । ≥ न

४ फूर्<del>ब निवत 'स्रो उम्बल्</del>तवराखी संबवसमी

कामी (मारा) । १ भूमाया हमा किराबा

वाप गरमी (दे १ १६२)। ६ वि चारि-अन्त ज्ञानिक परस्पाहरखनिरमा निरमा-ध्युत्रास हे **ब**बुव्यरिया (तुपा ३६०) । धन्मरिक्ष न [क्षपवरिका] कोठपै क्येटा बर (बुर १४ १७४)। बंडम्स्ड संब [संब्र् + क्ल्यू] १ अपनेपम करना । २ पीचे बीटना । हेड्ड चठवक्किय (**498**) i **स्टब्स् सङ्ग्रिक् 🕂 बसय्** ] अनुसन करना । क्लासए। वहा अन्यसनादा (वैच १,१६१)। उच्चक्रय म शिक्क्षत र शरीर ना उपसेपम-**पिरो**य (छाया ११३१) । २ मानिस्स, धम्यञ्चन (बृह ३ धीप) । क्रम्बस्याची चित्रस्यारि सम्बन्धार । २

प्रक्रमन-शेग्य कर्ष-प्रशति (र्पच ६,३४) *१* 

चन्नक्षिय वि [चन्नक्षित] पीचे बौटा **ह**मा (महा) । कम्बस कि डिक्सी समाह वक्ति-प्रीत (सपा १८६ ४ १)। गुरुरसिय वि विद्वसित् ज्ञार चेते (ग रहर बुद र ११६। बुन १४१)। धकारी हो विवेशी र एक मनाप (मन) । २ राज्या को एक स्वनाम-क्यात क्रमी (परम WY 4) 1 कम्बद् एक [बद्+बर्] १ मार्स्स क्ला। २ उठाना। उन्हर (नहा)। का चलबहुत, बम्बहुमाथ (पि ३६७ वे ६ ६)। कक्क चम्बुरस्माण (हामा १ ६) । कब्बहल व [स्टूब्स] १ वारसा । २ ज्या-

पन् । (बउडा मद्रः) । क्रम्बहुज म हि । महान् यावेरा (दे १ ११ )। चक्या की विशेषमें ताप (दे १ वर्ष)। क्या ) सक [त्रा+का] t तुक्सा चन्नाल हे कुन्ह होता । समाद्ध स्थापा (यह डे ४३ २४ )। धक्यास वि[चहात] शूक्त धुका (नस्ट) ∤ क्काम ) वि दि विकास परिमान्त (दे १ कक्याह्म है है है। बहु रा बहु ४ पतम मा ७६० सुपा ४३६) । खब्दाराज्ञ न [दे] १ नीत । २ इपक्य वसीवा बम्बाइड न हि १ विनरीय पुरत । २ मबोद्य-एडिय मैंब्रन (वे १ ११६)। कक्षात विदेश विस्तीर्थ विकास । २ अभारतिय (दे १ १९६) । सम्माण देवो सम्बाध्य = स्ट्रास (मूम १६६)। खब्बाय केवो सदाय = उपाय (धूम १ ४ 2 0)1 कव्यार (पप) धक चित्र-भववैत् विभाव करमा

कोड़ देशा । कर्म, उन्होरिका (हि.४.४३४) । ठठवास चक्र [चम्] क्ष्मा मोमाना। ज्यालह (वह )। चन्त्रास धक [चर्+शस्**र्**] १ 🕵 वरमा ३ देशनिकासा करना ३ ६ वनाई करना । कमाक्षा (नाट र्मिय)। दम्भागिय वि [बह्नासिव] । प्रभाग फिला इया (पत्रय २७ ११) । २ केश-महर

किया हुमा (मुपा १४२) । १ दूर किया इया (मा १६)। सक्याह् पुंदि] वर्गताप (देश ८७)। रुम्याद् पुं [उद्गाह] विवाह (मे २१)। स्टबाइ एक [उद् + बाधय्] विशेष प्रकार से पीन्ति करना। कव्छ उक्याहि द्ममाणं (बाचा सामा १२)। रुष्याहित्र वि दि] खीदान, फेंग हुणा (₹ १ **६**) 1 বছযাৰুত্ত ৰ [ব্] ং অপুৰুৱা ভবেত্য (सवि दे १ १६६) । २ वि इस्य सप्रीतिकर (दे १ १६६)। रक्षाहरिय वि वि] प्रस्तुक राक्षित्र (भवि)। ভতিব্যাহ্ম বি [ড্টুব্রি] ছণীটির (ট १६ २६)। एडियक्स न [दे]-प्रस्थित प्रसाप (पड)। र्षाठ्यमा वि [त्रद्विग्त] १ विला। २ भीत चवड्म्या हुमा (ह२ ७१)। **स्टिब्**मिगर् वि [स्ट्रेगशीक] उद्रेव करने बाबा (बाका १८)। हठिवद्म देखो एठिवस । सम्बद्ध (प्राष्ट्र ६०) द्यमिक्टी (बै ८१)। संक समिक्रिस्ट (बर्मीव ११६)। **स्टब्स्ट वि [दे] १ वक्तिय शीत** । २ व्याप्त <del>र</del>ूपेश-पुक्त (पड़ ) । एठिवक्किम वि [चे] १ प्रधिक प्रमाण नामा । २ मर्बादा-पहित निर्मन्त्र (६ १ १६४) बार पत १९७-१4९ पदः)। ष्टक्षियण्य केलो रुख्यिगा (पि २१६) । सम्बद्ध विद्विद्ध दिन क्या क्या क्षेत्रम्य (पर्वाह १ ४) । २ शम्भीर यहारा (सम ४४ सावा १ १)। १ किंग्र भी सम-सर्गेड् भरीग्रवसं कम्बिदो' (संगा ८७)। चन्त्रिद्ध नि चित्रिद्ध निसनी अनाई का माप किया गया हो वह (पद ११८) । स्कित्म देखी स्कित्रमा (दे २ ७१ सर ४ २४≖)। दक्यिय धक [ धद् + विज् ] छोन करना, क्टाचीन होना किना होना की सम्बद्धका नरबर ! मरणस्त भवत्व यंतन्त्रे' (भ १२६)। **गइ. एडियममाज (त १३६)** ।

स्रवियाणिक वि [चट्टेजनीय] स्ट्रेनश्रद (पञ्च १६ ६९ सूपा ५६७)। शक्तिर्यम् । चिद्विरेचन वासी करना 'एवं च भरितविवरवर्ग भूक्वंतस्त' (व्यस) । उठितस्य सक [ छद् + धंस्र ] १ जनना कापना । २ सक बेप्टनकरना । वह अब्दर क्छंत, रुविवद्धमाण (सुपा ६८ उप 1 (es p र्राष्ट्रयहरू बरु [प्र+सृ] केनना परणाः चित्रसम्ह (प्रमि)। चित्रहरू यह जि**द्र +** बख् ] १ तहरूमाना इबर-जनर जनना 'उन्निस्नइ संवर्णीए देवो बासन्तवस्तुन्त' (धर्मीव ११२)। हिन्द्रस्य वि चितुत्रयः चित्रम वपन (पुपा \$V) 1 व्यक्तिक्रियः वि [ एड्रेक्टियः ] चलनेवासा द्विमनेवाना (सूपा ==) । **स्टिब्स ध**रु { स्द्र्र + **विज्** ] उद्वेग करता ब्रिल होना । सम्बन्ध (पड) । रुक्तिक्य ) देखो रुक्तिया । रुम्पिन्सर्, उन्हे चरमञ ∫ सद्(प्रक्रा६व)। त्रक्षिक्य वि [वे] १ **क्रु**ड क्रोब-युक्त (यह )। २ चन्त्रस्ट वयं वास्ता (याद्य) । प्रक्रिक्ट सक [सन्+स्यम्] १ ऊँचा केंग्रा। २ केंग्रामामा सन्ता सिमहाला मए केद पुरिने सर्भु उदिव्यहर्द (पि १२६)। क्क 'मछशाबि सम्बद्धताई सरोगाई सास-चमार्च पार्सीवां (ग्रामा १ १७ टी-पत्र २३१)। वकु चकित्रहराण (शग १०)। पंड चर्क्यहिन्ता (पि १२६)। वस्थिद् पूर्विद्विद्वीस्थान-स्थात एक धानीविक मत का उपासक (मन ८, १)। कथ्यी पुंचितीं] प्रिलेशी (से २ ६)। स पंथिती रामा (क्रमा)। चन्धीब देखी सञ्जूत (कुमा, हे १ १२ )। रुव्यक्ति विचि उत्तार और हुमा (दे १ t ) i सन्त्रीह वि [सहिद्ध] शक्तिया 'तस्य अनुस्य क्ष्मीडस्स क्यागुरस्रं (चि १२६) । रुक्षीस वक [अव + पीड्यू ] वीड्रा पहुँचाना मार-पीरकरनाः वह-सक्वीहे-

भाष (धन)।

तन्त्रीख्य वि [अपन्नी**डक**] स्टबा-पहित करनेनासा शिष्य को प्रायशिकत सेने में शास की दूर करन का उपवेश बेनेवाला (यह) (मग २४, ७ ब ४६)। चरुषुत्रमञ्जाण देखो उच्यह । ु उक्युण्ण } कि [दे] १ क्विया । २ उतिका। सब्बुम 🕽 १ सून्य (दे १ १२१) । ४ स्वद्रद्र, बल्वस (दे१ १२३ मुर३ २ ४)। उन्युद्ध वि [उद्ब्यूड] १ बारस किया हुमा पहना हका (कुमा) । २ अँचा विधा हुचा, उपर बारण किया हुया (से ६, ६४% ६, ११)। ६ परिस्तीत इत-विवाह (सुपा **YX**() | उन्देशणाञ्च वि [उद्देशजनीय] स्ट्रेन-शरक (नाम)। डब्बेग पूँ [प्रदूषेग] १ शोक विसमीचे (ठा ३ ६)। २ स्थानुस्ता(सम ३ ६)। बब्बढ सक [उदू+ बेष्ट्] १ कौचना। २ पुत्रक करना अन्यत-मुक्त करना। उन्नेदद् (पड) समोडिम (माचा २, ६, २ २)। चम्बेडण न [डदूबंग्रत] १ वल्पन । २ वि बन्बन-रद्भित किया हुमा (राज)। उब्बेडिअ नि [उद्बेष्टित] १ बन्बन-रहित किया ह्या । २ परवेदित (दे ४ ४६) । वक्यचास्त्र म 🛊 देशी धविष्टिम विज्ञाना, निरन्तर रोवन (दे १ १)। ढक्यय देखो एठचेग (इमा) महा) । तब्बेयग वि [तद्बेशक] तहेय-कारन (रमण x ) ( तक्षेयणगा ) वि चित्रेखनकी खेम-यनक धम्बयणय र्र (बाउँ परह १ १)। सब्वेयणय वृंग [उद्देजनॐ] एक भरक-स्वान (वेदेन्द्र २०)। चव्यं उत्तर [प्र+स्] छत्तराः उत्तरेशः इ (पद्)। बब्बेस वि [उत्बंस] सम्बन्धितः (से २ उक्वेडिम वि [उद्वेक्ति] केना हुए। प्रस्त (माम १४२)। बक्यस्क केवी वस्त्रेष्ठ : बम्पेलाइ (हे ४ २२॥) । कर्मसम्बद्धिमा । बब्बेस्स सक [सद्+वेस्ल्] १ स**अ**र

भागा। २ व्याय करमा । अभा प्रदेशा अस्ता असा

		_
₹ <b>=</b> §	पाइअसदमहण्यवी	<b>रुम्बेद्द</b> रुस्समा
भागा। प्रश्नक फैतना, पनरना। बह	उसम पुष्मियम भूपम् १ सनाम	क्युक्रमाधी निवमा, जीवारायं विधोहरतारा ।
क्रमेर्स्ट (प १ ४)।	क्यात प्रकथ जिनदेश (सम ४३ कृप्प) । २	सेसस्य बहुमाये जै मूलं ते ब्लू होई
रहस्स⊛ वि [उद्येख] १ सम्बद्धीय स <b>ब</b> ता	वैश्व सङ्ग (बीव ३)। ३ वेहन-पट्ट (पव	(नो १)। स्तर, गार, बार वृं [कार]
हुमा 'उम्मेस्ना सहितातिही' (प्रस्त ६, ७२) ।	२१६) । ४ वैक-विरोप (ठा ८) । वै ऋक्ष्मण	१ पर्वत-विशेष (सम ६६ ठा २, ३ पत्र)।
२ प्रमुत फेला हुन्ना (पान) । ३ चिद्राप	विरोप (उत्त १)। बँठ पू [किप्ठ] १ वेत	२ इत नाम का एक राजा। ३ स्वनाम-क्यांत
'हरिसदमुख्ये संतुत्तवाए' (स १ १)।	नामसा। २ एल विशेष (बीव ३)। कृष्ठ	एक पुरोशित (इन १४)। ४ वि वास
टहनस्टिज दि [इद्नेस्फिन] १ नम्बत	पुं िक्ट] पर्वत-निरोप (ठा व) । जाराव	बनानेवासा (राज)। १ स्वनाम-स्मात एक
(बा६ ४) । २ बलालि (इह ३) । ३	न िनाराच ] संदनन-विशेष शरीर-वन्त-	मयर (बत्त १४)।
प्रधारित (स ११५)।	विरोप (पच)। वस पुं [देख] बाएए	बसुञ पूंचि] क्षेत्र पूपल (दे १ वर)।
स्टबस्टिर वि [उद्वेक्सिन्तृ] स्तर वाने-	कुएड द्वाम का प्रकृतिका एक बाह्याए । विश्वके पर सम्बद्धान महाकोर सहतरे में	त्रसुखन [श्युक] १ वाश के माकार का
माना हुमा)।	(कप्प)। पुर न ["पुर] नवर-विरोध (निवा	प्डशामुग्ला२ तिनक (पिक४२४)। उसुक्रावि जिसुकी स्वर्गस्टित (नुगा
कत्रम्म देनो उडिश्य । बन्तेवह (यह )।	२, २)। प्रशिक्ष प्रिशी एक धनवानी	684 14 [ 884] 611/50 (31)
चक्त्रेष रेगो उक्तेग (कुमा मुर्प रेट	(ब्रद)ः संजार्ष [सन] सम्बात् ऋराम-	संसुवाळ न [वे] उरुवस (एज)।
११ १९४)। इध्येषम् वि[इदुवैद्यक्ष] बर्देणकारक	देव के प्रवम पर्छवर (पाचु १)।	छन् <b>छन दं</b> हि] परिचा राष्ट्रकेन्य ना नास
'चदा चिरुपेरी चत्रप्रवाई स्वस्मई बन्हा ।	बसर (वे) दुंबी [चग] केंग (ति २१६) ।	करने के बिए अन्य से बाल्युसिस नर्स-विशेष
वंदा दौरूणसीना नौसा रब्देदका दुरुणाँ	उसक्रिम वि [दे] धेमाञ्चित पुत्रस्ति	(बत १)।
(स्व)।	(वह)।	बस्स ई [दे] हिम बोतः 'समहरिएद प्रमु-
प्रक्रोपणय रि [न्द्र्यजनक] ज्युरेक्जनक	उसक् देवी उसभ (हे १ १३१। १३६।	स्केन्द्र ( <b>११</b> ४) ।
(परम् ४%)।	१४१ पद् कुनाः सम १४२ पदम ४	चस्संब्रहेब वि [इस्सब्बेहर] क्लिट्ट, परि
जनवय देशो प्रकृषेयग् (व. २६२)।	<b>११)</b> ।	ध्यक (धावा २)।
द्वासर वृं [द्वयोग्यर] तम नामका एक	उसद्दर्भण र् [ब्रूपमसेन] शीर्पकरनीरहेप।	रसंतक्षत्र विक्याहरू । उन्याहरू
चना (दुन्स) । उद्देशक ट्री [पुरुष्कि] १ क्रेनारै (सम १ ४)।	२ विनदेन की एक शास्त्रकी प्रतिमा (पक	निरंद्वय (चि २१३)।
न करवर (का १)। १ वमीन का बारवा	रह)।	चस्संग प्रं [क्सम्] कोड कोला या नोध
(st ) i	उमा स [ चपस्] प्रमात्र-काल (गउड)।	(何尺) ( TXX.000 for [morless]
उम्प्रेड्सिया स्री [उद्देषिक्स] बनलावि	इसिय रि [उप्य] परम तन (क्य का द	उस्स्थट्ट वि [उत्संघट्ट] राग्रेर-सर्व 🖹 ग्रीहर (कर १११)।
विरेप (बहुछ १)।	१)। १ पूर्ण याम हार्स्य (उत्त १)। १ यरमी वाप (उत्त २)।	दस्सक्ष वक [ इन् + व्यवस् ] १ क्रलस्टिय
समङ्ग दि [दि] ईवा (धर) ।		होना। २ गोधे हत्या। ३ सम. स्वर्गन
इसद देगो असर = दे (पर २)।	रुमिय नि [इस्सून] स्वाप्त छता हुया (सम ११७)।	करना । वंड हस्तक्षत्रचा । प्रयो, वस्मका
उमग ई (उन्नम्] बहु-रिशेष युक्र	वसिय नि [अपिन] यहा हमा निवनित (क्ष	वर्षा (ठा ६)।
मार्गेत्र (गामे)।	व, दह अस हर )।	वरसङ्ख्य [ दन् + ध्यः प् ] प्रशीत वरना
प्रसण्याम र्चु [च्] वसम्य (दे १ ११०) ।	र्वासर <b>दे</b> णो उमीर = प्रशीर (शूप १ ४	उत्तेषिक करना । संह सरसक्रिय (ग्राका
त्रमन वि [इस्पनः] कार वैदा हुवा (लावा	3 ) i	3 ( * 3) i
1 () (	तसीर न [क्सीर] नुषीय तूल-किटेन खत	उस्सक्षण न [स्ट्यप्ट्य] निसी नार्य को
असम्र पूँ [उरमम्भ] भग विश्वियदेव की वृद्ध	(पसुर १)।	हुछ समय के सिन्ने स्वतित करना (बर्म १)। न्यसक्या न [बस्ट्याफ्का] सन्तर्गत (वंचा
मार्थ (में ६१)।	जमीरम [दे] नगपरण्य निग् (१:१	इत है)।
टम्दिया देनो इस्म दिवस (श्री ४ । वित्रे	( £x) I	उस्सव्हिय रि [इस्टब्स्टिक्त] विकास के
२०६)। वसम दृद[पूर्वम] एक देव-विवास (दिन्छ	ज्मुर्दृद्धि] र वाण शर (नूस १ ४,	वार विका हुया (तिह २६)।
ta ) :	१)। २ वनुषदार क्षेत्र का गाल-स्थानीय क्षेत्र-वरिमाल	बस्सामा 🕻 [जस्सरी] १ त्यान (बार १) ।
		२ मानाम्ब रिपि (दप ७=१)।

**इस्सरिंग वि [इस्सर्गिम् ] <del>ब्रह्मवै - ग्रा</del>मान्य** नियम-का बानकार (पत ६४)। बरसञ्जा वि [शबसक] नियन्तः विजेते उस्प्रक्ता' (परह १ ४) । उस्सण्य झ [दे] प्रायः प्रावेश (राषः) । दस्सण्ड्साण्ड्सा की [दरमङ्गरक्रकेणक] परिमोश्य-विदेश कार्य-रेश का ६४ वाँ शिस्सा (इड)। इस्सम देवी इस्स्याज्य = दे (नूस २ २ ६% तंदु २७) । साव दुं ["साव] बाहुन्यमाव (बर्मसं ७३६)। सस्सक्त वि [सरसक्त] नित्र वर्षे में धानाधी साबु (द्वमा १२)। बस्सच्यण न [बस्सर्पेत्र] १ वसकि योपरा । २ वि. चप्रत करनेवासा बढ़ानेवासा 'कंवरप इप्पक्तस्यपार्धं वयणार्वं वयप् वा स्रो' (सुना ५६)। **च**रसञ्चणा की [क्स्स५णा] क्तरि प्रमानना (उप १२६)। हरसञ्ज्ञा की [हरसपैजा] विरयात करना प्रतिबंद करता (सम्मत्त १६६)। हस्सप्पिणी भी [प्रस्सपिकी] करत काल विदेप का कीटाकोरि-सामरोम-परिमित कास-विदेश जिसमें सब पदावों की क्रमश स्माति होती है (सम ७२) ठा १ १) पटम २ **६**०)। इस्सय रू [एक्ट्रय] १ उपनि एक्टा (विसे ६४१)। २ प्रमृता (क्या २,१)। १ शरीर (स्व)। प्रस्तयण न [उच्छ्यम] विभाग नवै (तुम १ ६)। स्तरप्रक [उत्+स्] इटना दूर बाना। उस्युख् (स्वय्न ६)। सस्सम् सक [यन्+मि] १ क्षेत्रा करना । २ बहा करना । उस्तनेह संक्र कासविका (क्रम) । प्रमो , संहः उत्सविय (बाना २ १)। बरसंघ पुं [शरसंब] क्रशंब (धर्मि १९४)। एस्सब्यया की [बच्चूयजना] जैना हेर करता इकट्टाकरना (संग)। बस्सस बरु [ बत् + यस् ] १ वन्ध्वाय

सह (भग) । क्याह सस्ससिकामाण (अ ર )ા रुससिय वि [तच्छ्वसित] १ उच्छ्वस प्राप्त । २ स्क्रमित (स्त २ )। हस्साकी जिल्ला विमागी (दे १ ८६)। एस्सा [चृ] **वको** आसा (ठा ४ ४)। चारण र् विचारण द्वीस के धवसम्बन से व्यक्ति करने का सामध्येनामा पुनि (पन ६०)। उस्सार धक [ उत् + सारय् ] १ 📭 करना हटानाः। २ बहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना। बहु सस्सारित (बह १) । चंड्र उम्सारिचा (महा) । इन उस्सारइक्टव (ती) (स्वण ३)। तस्सार पू [तस्सार] धनेक दिन में पढ़ाने योग्य प्रन्यका एक ही दिल में सम्मापन। ≰ध्य युं [\*कइप] पाउन-संबन्धी साचार निरोप (बृद्ध १)। इस्सारग वि [चरमारक] दूर कजेवला । २ जन्मार-क्ल के योग्य (ब्रह्न १)। उस्मारण न [त्रत्मारण] १ पूर्वकच्छ । २ यनक दिला में पदाना योग्य प्रन्य का एक 🗗 दिन में सम्यापन 'सरिवाद उस्साच्छा कार्ड' (इत् १) । चम्सारिय नि [स्टासारित] पूर्वपूर्व इटाया हुमा (संवा ५७)। बरसास र्व [उच्छ पास] १ उन्होंस अना चास (पर्याः १)। २ प्रवस दास (बाव २)। नाम न ["नामम्] उद्यंद-देतुरु कर्म-रिशेप , (सम ६७)। चरसासय नि [उच्छ्वासक] बर्बास नैने-बामा (विसं २७१४)। वस्साइ विको सर्वाहाइ (लूमनि ६२)। वस्तिपद्धान (चच्छुकुछ) संग्री संग्रा-बारी गिरकुरा (उप १४२ हो)। चरिसंधिय वि [व] यकात सुँवा क्रुया (स २६ )। बर्सिसंभ सक [तत्+सिम्] १ सिमना सेक करना। २ क्रमर सिमना। १ साक्षेप কলো। স্বামীকলো পুর্টের নার্ वस्तिविभा (धावा २, ३,१ ११)। अस्ति चित (निषु १०)। वह प्रस्तिचराण तेता, धास चैता । २ स्क्रसित होना । करस-(धाचा२ १६)।

स्रसिंचण न [इस्सेचन] १ सिक्ता २ भूपादि से जस वयरह को बाहर को वीचना (बाबा) । ३ सिवन के उपक्रात्र (धाबा २)। इस्सिन्गा श्री [इत्सेचना] क्रेडो इस्सिन्ग (उस १ ६)। उस्तिक देवो उस्तकः। चंड्रः डस्सिकिया (स्व ६ १ ६६)। च रेसक वह [ मुप्] बोइना स्थागकरना। स्रसिद्ध (हे ४ ११)। उस्सिक्ष सक [ उन्+ हि.प् ] अंबा फॅक्ना। स्रसिद्ध (हे ४ १४४)। उस्तिष्टिल वि [मुक्त] भुक्त परिवक्त (क्रमा) । इस्सिक्सभावि [उलिस्स] १ जैवा केंका ह्या। २ करर रक्षाहुमा(स ३ ३)। बन्सिम वि [शस्यम] विकायन्तको प्राप्त धवित किया हुमा (व्य ६,२,२१)। **धरिनय वि [धरिकृत] जात कॅवा दिना** हुषा (कृप्प)। बासेसय कि [बल्स्व] १ व्याप्त । २ ॐवा किया हुचा (कम्म)। डस्सिय वि [उत्स्त] माईकारी (उत्त २१ 48) I स्सीस न [उन्हीरें] विक्रमा (सुपा ४३७-शाया १ १ कोच २६२)। उत्सुखाप वर्ष [उरसुद्धयु ] उत्करिका करना कन्युक करना। सस्युवादेव (स्तर 1 (90 त्रसमुंक ) वि [प्रपद्धका] सूक्क-पहित कर हरमुचा रहित (कप्प राग्या १ १)। वस्मुखः वि [प्रसुकः] स्टबरिट्य । तस्यक्षः । म [धीरसुक्यः] असुकता (बावकः सरसुगः) ११ व वर्गसं ११६ ११७)। उत्पुद्धाय वि [ उत्पुक्य ] जन्मूक करता क्ष्मिक्त करमा। संक्र उस्सुकामध्याः (चन) । बस्सुग वि [सरसुक] उत्करित्रा (परम ७६, २ ३ पश्दुर ३)। सरभुक्त वि [बरम्य] सूत्र-विस्त्र भिकान्त मिनरीत (वब १३ उन १४६ टी)।

बस्सुब वेशो उस्स्या (शा ४, ४' ग्रीप) ।

बस्तुय न [जीस्मुक्य] एकएठा, एन्प्रता ।

1 (1 1

बर पूर्र)।

ण्ड्सञ वृ [उत्सक] **१** सिषम । २ समति । ३ वर्ष (चार ४१) । म्ह्सइम वि जिस्तविम ] याद्य है मिथित पानी बाटा-बोबा कर (केल टा ६, ६)। ऊर्दकी ब्राप्टन वरामाना का यह स्वर , बर्छ (हि १ १ माना )। क्ष प दि दिनिनिचित स्पे का भूचक भ्रम्प्य-- १ वर्श निन्छ; 'क्र शिलाब'। २ मारोर प्रज्युत भारत के क्रिकेट सर्व की बारांशा है बंगे बरक्ता के कि अप म्रीएमें। १ विग्मय दारवर्ग के वह

कुणियाध्यये । ४ नूचना "≲ वेल ल

अअट्र रि [अपश्य] बूर्ल से स्ट (बाय) ।

अभास 🖠 [त्रपपास] मीत्रमाधार (हे ह

उद्देशोक्ष (११२ ७ वा बट्ये) :

ठर रि [उद्र] बरन दिया हुमा भारतु

रिया हुवा 'क्रारम' सम्बूतार्गालनेनु नुस्तं

उद्द रिकिट ] परिगीत शिवारित (वर्वते

क्या की दि देश व (देश ११८)।

रिल्युम् (हे १ १६६ वह )।

प्रशिव रि 🐧 पर्नप्त (बार् ) । उत्तमात्र देनो जनम्माप (हे १ १७१

101) 1

মানা) ।

दि(तेन् (बार) ।

116 )1

इर पि [°६र] रुपएडा-अनक (खावा

न्तमृत्र वि [तब्द्र] मूनाह्या क्रमाह्या

दश्पुर न डिल्सूर] सन्त्या, शांमा 'पचामी

नियनकरे उस्तूरं बहुए अखं (सूर ७ १३

(उप १६४) दउड स २ ३)।

उत्संक् वृ [त्रासेघ] १ क्रेंबाई (बिना १ १)। | तक्षर ग [तपगृह] सीटा वट, बाममनियेग १ क्रिक्ट, टॉब (जीन १) । १ बन्नति मन्यू-दम 'पक्रणेवा बरनेहा' (च १११) । वस्सेद्रगुस्त न [क्रस्तेधाक्युस्त] एक प्रकार का परिमाण (विशे १४ टी) t चद्र स [क्रम] दोनों, धूग्म युक्स (पड्)। च⊈ थक [अप + पर्] नट होना। अबहुद (सम्मत्त १६२)। ब्रह्त दु देवो सम्बद्ध = उद + बृग् । उद्भव स [डमय] कोन्डे युग्म (कुना भवि)। ।। इब्र विरिपाइअस्ट्रम्ब्रुण्यवे द्याराइछर्वंद्रमणी वाम पंचमी वर्रमो समलो ।।

(पर्याहर १)। श्चाहस सक (तप + इ.स.) इपरास करता। अर्थह (प्राष्ट्र १४)। सहार पुं [नहार] मलय विशेष (सन्)। वहिंबल ए हिं पन्धिकाम बन्दु-विशेष (da se 545) : रुद्धिमसिजा धी दि] ज्यर वेयो (उत्त १६ (34) सहु (चप) देखो अहो = महो (सस्)।

बहुर वि वि] सदाक मुख सवीमुल (वतक)।

क उन्हां की जिल्हा निवाहिता की (पत्प) ।

**ऊडिमग वि दिं ! यान्त शामकारित ।** 

२ न बाण्डारन प्रवरत (पाब) : ऊष्ण वि [ऊन] चून, हीन (पश्रम ११ ११६)। बीमइम वि विरावितमी जनी-धर्म (परम १६, ८ )। कथन [ऋष] ऋण नरना (नाः)। ऊपन्त्रभ वि दि । धानमित हर्वत (वे १ १४१ वर्)। अणिमा की [पूर्णिमा]पूर्णिमा' तमी तीए वेष अस्मिम् परिक्रम प्रदेशाई परिषयो भारताज्यै (बहा) । कणिय नि किनिशी पम शिया ह्या (व अणिय पू [अलिक] सेवक-शिक्ष (प्रस्वस्या पप १६)। उप्पार्यस्था थी [उनोद्दिता] नन पाहर बण्ना वर-विदेश (बस २४, ७) शर २ ) । उताबीम } धौ न [ एग्रोनवलारिंशन् ] क्रयांच ी क्रवचींग १८(नुव्र २ व

नग १९ रेरेन्द्र रहप्र)।

उन्नियल व दि ] ब्रॉबल्क भूमक (वर्ग २)। क्रमिणिय वि बिरो प्रोफ्कित जितने लाल के बाद शरीर पोंछा हो बहु (स ७६)। कमित्तिक्ष 🖪 📳 दोनों पारमों में बापाव करणा (दे १ १४२)। कर प्रीक्षी श्वाम क्षेत्र। २ तंत्र तपूर ( t tyt) 1 उस केवो तर (में व ६६)। जर केने पुर (ते = ६५) ता ४२) २६१) । करण प्रं [करण] मेर नेड् (रामा निषे)।

करणी और [दि] मेच भेड़ (दे १ १४ )।

करणीय विशिधियकी मेही वधनेराता

(बाह १४४)। **"करव रि (पुरक्क)पूर्तिः नफ्रेशमा (व्यप्ति)।** उरम वि [श्रीरत] पुत्र-विदेश रत-पुत्र (# 2 ) 1 करिसंकिम दि [दे] स्त्र ग्रेग ह्या (गर्)। करी व [करी] १ वंशीरार । १ स्थार । क्य रि हिंसी यंगीरत सीरत (उप करेंद्र दी) । उन्हर्षु[ऊक] बहुत वॉच(एससा र र । बाला एक धामुपरा (धीर) ।

कुषा)। आछ न ["साख] बाँव तर भटकने-

करत्रम वि [करवृद्ध] जेपा-प्रमाण (गहुए वयध्दः) (पद्) । करुइअम वि [करुद्रुयम] कार देशो (42) 1 करमेच वि [करमात्र] सरर देखी (पर् ) । काउ पू वि विश्वनिमं (दे १ १३ )। कुल देखो पूछ (वा १**०१)** । कस र् [इस् ] किंग्ल (हे १ ४१)। माखि र् ["माखिन] भूमें (कुमा)। अस र्षु [अप] शार-मूमि की मिट्टी (पए**छ**ी # Y) 1 ङसञ न [वे] उत्त्वान उमीसा शक्या (वे १ १४ ३ पड )। उसक वि विश्वसूत्री १ परिवास्त । २ व रुपार्जन मचादि वा ध्वाया 'नो तत्त्व असई पहरेका दंजहा चचारं का (बाका २ २ 2 3)1 कसंद्र 🕅 [द्र प्रचिक्त] १ तम मह (भाषा२ ४२, ६) जीव ६) । २ ताना 'मई महर्गात का कलडे अस्त्रीत का रानिये (स = ३)। र्शनए तिवां (माना२ ४ २ २)। क्रसण न वि गिर्व-भन्न (दे १ १६६)। **ऊसण्हर्साण्ड्या थ्या इरसण्ड्साण्ड्या (**पर २१४)। कसत्त रेगो उसत्त (रण धारम)। कसस्य पू [व] १ परमाई। २ वि मापून (\$ t (\$ x \$) + ऊमरघक [कर्+स्] १ विनक्ता । १ दूर होना । ३ सक स्मामना । अक्षरह (श्रांत) संर अमरिवि (क्रीर) । क्रमर म [क्रपर] धार-मूर्मि विश्वम बीव मही पैश होता है। फ्रिमस्यश्चित्वप्रमुख्याना एग्र (सम्ब १७ वक ७३) । (मूना) । क्रमरण न [नरसरन] मारोद्रश: धानुषश्री त्रपी सनुगयार्ड (शिम १२ c) : कसय र् दिग्छयी १ बलेब अवाहे। २ एनेबांगा (बीयम १ ४) । **उ**.सल घ**र [प्रम् +** सम्\_] कजनित होना । अनरद (हे ¥ः २ शबद (**पू**मा) । XX) 1

कसङ वि वि] पीत पुष्ट (वे १ १४ )। उमसिज वि जिल्लासित पार्म व उत्मस्तिअ वि वि धेमाध्यि प्रसंकित (दे १ १४१ पाम) । कसव बेगो उस्सव = स्मान (म्बप्न ११)। ऊसथ केता शरमध = उत्+ थि । उत्मोह (पि ६४: १११)। ग्रेष्ट्र असविय (कपा ऊसविद्य वि 👣 १ व्ह्मान्त (११ १४३)। २ क्रेंबा किया हमा (दे १ १४३) लागा १ < पाम)। ६ उद्यान्त वस्ति (पर्)। कसिय वि उच्छिन् किन्दिन (रूप)। उत्प्रस सर [पन् + रपस् ] १ उसीस लना कैंचा सीस सना । २ निरुक्ति होना । ६ वृमश्चि होना। ब्रम्सद (पि ६४) ६१५) । बहु असर्सन, उत्तसमाग (बा ७४) भए ४३ वि ४१६)। ऊससण न [उच्छवमन] एडॉन्ड । छद्धि <sup>(</sup> भी ["स्टिंबर्य] स्थानोच्च्य्यान श्री शक्ति । (भाग १ ४४) कसंसिध न [इच्छ्डमित] 🐧 श्राप्त (बक्रि) । २ वि छण्णसितः । ३ पुत्रफितः कमिर वि [ज्ब्स्चिसिन्] उमान नेने-नाना (हे २ १४४)। **असार्जंड** दि दि] येद होने पर विक्रिक ( t tyt) 1 कसाइञ वि [व] १ विज्ञित । २ उत्तित (वे t tvt) i कसार नक [त्रत् + मारय्] दूर करता रयान्ता । संश् उत्सारिपि (घर) (शक्) । कमार पुंचि नर्स-विशेष (दे १ १४ ) । असार पू [प्रस्सार] परिस्थान (अति) । उत्मार पूं [आसार] पंत्र वाली वृद्धि (हे १ ७६ वर् )। उत्पारि वि [भासारिक] वेत्र से बरलनैवाना कसारित्र हि [परमारित] दूर किया हुमा (महा: भवि)। उत्मास पूँ [प्रग्नुबाम] १ उत्तान अवा रशाम (बामू ४)। २ मरागु (बृद १)। णाम न ["नामन्] वर्ग रिटेप (नाम १

कसासय 🕼 [इच्छ्वासक] वर्शन नेने-बासा (निसे २७१४)। ऊखासिज वि [रच्छवासित] वापा-पीर्ड क्या ह्या (दे १२ ६२)। कसाइ र्षु [चरमाइ] उत्पाद, उद्याद (मा क्सि वर्क [उन् + भि] ढँग करना बमत करमा। संह क्रमिया (उत्त १ ३१)। असिक्स सरु [ उन् + प्याप्तु ] अँवा करना। चंद्र क्रिनिक्रकम (मग १ व ही)। कसिव्हिम वि [रू] प्रदीत शोगायमान (पाष) । असित्त वि [॰सिस्क] १ गाँउत । २ स्थत । ३ वहा द्वया । ४ व्यक्तियापित (हे १ ११४) । अभित्त वि [अवसिक्त] उपनिप्त (पाम) । उत्सिय देशो उस्सिय = उन्द्रित (सीप कप्प चए)। म [उच्छीपे ≰] स्पाना उसीम निर्माना (लावा १ ७) पाना **क**मीमग कसीसय | नुपा दशः १२ )। क्सुक वि [इरसुक] उत्करित (वा ४४६ कुमा)। रुमुक्ष वि [डब्छुक] बहा हे रूक उत्तव हुना हो बह (हे १ ११४)। क्सुण्य रि [प्रसुक्ति] रामुक किया हुया (वा ११२) । कर्मुभ बर [इन् + सम् ] उप्तक्तित होना । ळ्यूमा (१६४२२)। ङमुंभिम रि [उद्यसिन] उज्ञागनान्त (पृथा) । कर्मभिअ व दि र रोशन-निरोध गना के जाय ऐसा रूटन (वे १ १४२) बाह् ) असुविश वि [व] विद्वतः, पीएवदः (**१** १ 2×4) 1 उत्पुग देवो उत्पुश=दन्पुच (दन ११७ टी) । ळम्ग न [वे] भत्य मान (पाषा २ १ < 4): कसुन्मिम वि 💽 उनीमा वा निर्णाना किया हुमा (वह )।

उत्पुर व [४] नामून नान (१ २, १७४)।

उमुरमुधित्र वि रेगो उम्भित्र (रे !

1 (543

उद्गाह [उद्गुत को नवा । १३ रियाला। उत्प्र (शिंग देश) उद्गीत (शुर ११ देश) । गुर उद्गित्य (व्यवस्थे)। उद्भात [उत्प्रम् [चन (दिया १३)। उद्भाद [उद्गुति होत्रेष्ठ (पुत्र १४)। १

बाल (विने ४२२ ४२६)। उन्होंन न [उन्हाब] संस्था-विशेष (एन)। उन्हाद वि [क्] जाहाँगत (६११४)। उन्होंसस वि [उपहासिन] विश्वण उपहास विचा नवा हो वह (६१४४)। उद्धा को [उद्धा] वर्ष विवाद-वृद्धि (धारण)। उद्धाणोह श्रृ [उद्धाणोह ] शोध-विवाद सब वें होनेबाता वर्ष-विवर्ध हुए ११)। उद्धाय कि [उद्धित] प्रमुगल ने बात (वे ह १८)। ए श्रृ [य] स्वर-वर्ष विशेष (है ११। धारण)।

।। इच शिरिपाइअसइमइण्यन्ने उन्हायस्यहर्षण्यको बहुा तर्रने समतो ।।

-

ग्धा केनो ग्य ≈ यद (कुमा)।

ष्ट पूर्व [ष] स्वर कार्य-विदेश (दे ११ प्रामा)। ए स [पंगि] इत प्रवी ना तूचन सम्पद-६ बायन्त्रातु नश्योपनः 'ए एडि नपडहती मन्द्र' (पाम १७४) । २ वास्त्राणेकार, बास्य-धोमा ने बराखाम ए (ग्रम्प) । ३ रमरातु । ४ मधुवा देखां । १ बनुरज्ञा बन्दा। ६ म्यान्त (इ.२. २१७) म्या ना E () 1 ए नर [भा+इ] धाना साम्मन करना । बद् (बरा) । धर्म प्रिन् (ख्या) । बहुet mr tt te ) ffr धन (बडम (तुर १ ११) एजंड (रि १६१) एजमान (सर्दर हो)। ग रेमा ग्रीत्तत्र (३११) । छ देशों एवं (उदा)। णत्र रिष्ति] यापा ह्या आया (सम्बद्ध

णप्रम [मन्दूरिनः (वन द्वार शहर बद्ध)।

रिम नि विद्यो नेम इनके मैना

(६३)। उत्तर रिक्नियो तेना, इन

tt)। आदि [ास्ति] योग

(पनि १६ प्रति ६४) हरह वि व

[ ।इरान् ] ग्याप्ट्र शी शंक्ता दश सीर

न्य (ति रगर)। सदस वि [ीर्न]

प्रभारेगी एग (ग्रास्त शह स्थल ६

प्रवार का (गावा ६ ६ मण)।

satifie (Med) t

212)

एक ) देखो एकं 'एव दि निरोध दिखां' ण्डी (से ३ ४६ बढर रिय)। पर्शन रेखो यहरेन (वेली ta) : पश्चाइस (का) र् व. विश्वविद्यति ] एक्टीन (यिष)। ण्यारिन्छ रि [गताहरा] वैना इपके भैना (श्रामा) । पद्भवसाम देगा गय = एत्। पद्मय नि विजिती रिपेट (राव ७४)। मुझन देश प्रदेश (नग १ १७)। पद्म वि [म्लाटरा] हैना (तिसे २१४६)। ण्डांब (धर) च [म्बमक] १ इसी करह । ९ मही (वरि)। पञ्ज रेखो प्रमूच (लिप) । र्मन् केनो द्व=द्व: र्धन देशा ल = भी + इ । एक देगी प्रदासना त्या (वर् अप ६६ पत्रम १ ३: १७२ हेना ११६ नग्यू १ १ परम ११४ ४ जुरा १६२) रूपा बम कर ११९)। इज्राच ['सा] एक तत्रव में कोई वस्त्र (हेर १६२)। प्र (था) रि कि जाती (रि १६१)। भिरम पि [ । हिम् ] ल्लाको स्रोता (बा ७२< टी)। शित्राध्य ["नर्यन] संच्या-तिटेच एकाको (सम्बद्ध नि प्रवृद्ध) ।

पकृत्य देवी अडण = एकोन (मुज्य १६)। यक्त केयो यक्त बना मग (हि. २ ११ तुन १४३ सम ६६। १४। एक्स ११ १२० वडर रण्ये मा १०० स्वाप्टरी मा ४१) पि ६६६, नाट सामा १ १; या ६१० कल कुर १ १४२। स्यासम १८। पर्य २१ ६३: ४प्प)। बग्र देखो समापर (पका नुर १ व )। सणिव वि [°िए निक्र] एक 🐧 बार भीवन करनेवाना (कन्द्र ९ १)। सत्तरिक्षी ["सप्तिती वंग्नाः विदेश भ१ एक्ट्रचर (सम =२) । सरग, सरय वि सिर्द्ध सर्गी एवं समान एक वरीका (बना अन १६० फ्लू २ ४)। सि थ [ शस ] इक बाए 'मन्त्रवहमा बच्चो बन्द्रालियो एकामि कमार्ल (अप) गण्यमि वसी वनाधी बीवे बाहेद अरम्बु इम्मि (गुर ११२)- धरमान गौनरसीर वर देश्बर्द्ध वश्चित्ताई' (१४ ४२×)। मिय [त्र] एक (शिनी एप) में पेक्सीय व जा नियो निश्चितियो नी प्रीर बरानदौ (नुवा)। सि सिर्ध प ["दा] दोई एक धनव में (१२ १६२)। सिष[ सन्] एक बार (शि ४६१)। व्हरि ["किन्] यदेना (बवी २३)। ाइ व ि शिर देशमान-स्थात यह सामर्शाहरू (पूर्व) (स्ति १ १)। । । । । । । । । । ["तबत] ११ वॉ (पटम ११ व )। ारसम वि ["व्या] ग्याख्वी (विता १ र ज्यापुर ११ २४)। सहित्र ['दिशम्] स्थारह, वस शीर एक ( पङ )। [सीइ की [शशीति] संक्या-विशेष, एकासी (सम = व)। सीइविड् वि [ारीविधिध] गरासी तरह का (पएए ११७)। सीय वि [शारि] एकाधीवी दश्वी (पदम दर् १६)। विरसय वि[ीचरशततम] एक सी एक वार सर्वे (पउम ११ ७६)। ेोयर पू [ेोदर] सहोदर भाई, सगा माई (पडम६६ ४६१८)। रेयरा की [<sup>\*</sup>ोदरा] सनी बहिन (पडम स १ ६)। एक नि [एकक] घरेना (हेना ३१)। एक वि वि] लोह-गर, प्रेम-रापर (वे १ \$88) I प्**दा** (सर) दि [पद्मक्तिम् ] एकाकी ग्रदेसा (स्वि)। एक्ट्रेग न [दे] चन्द्रन, सुगन्दि काष्ट्र किरोग (£\$ \$XX) 1 चक्कंत पूरिकान्ती १ सर्वेदाः २ तत्व प्रमेय । ६ फल्ट, संबर्थ । ४ धंसाबारशास विशेष (से ४२६)। १ निजैन निएका (सा १ २)। देखो एर्गता युक्तस्यक वि [एक्टेक] हुर एक प्रत्येक (माट) । एक्क्च्म [दे] वेदी एक्क्च्या (छ १ एक्स्मिस्य । [पक्सिक्य] त्यो-विशेष (पद २७१)। च्यक्तम रेपो एग-मा = एक-क (कुत्र ७१) । पक्कमरिक्ष पूँ [के] केवर, पठि का छोटा मार्र (देश १४६)। एक्टलंड पुंदि] क्यक वया कहनेवाना (वे 1 (XX) 1 एक्टमुद्दि [दि] १ वर्ग-एदित निवर्गी । २ क्षित निर्मन । ३ प्रिय इष्ट ( वे १ १४%)। एक्सम्बर्धा पिल्किकी प्रत्येक हर एक (देश १ वर् दुना) । एक्टइ वि दि प्रवत वतवान् (यह)। एक्द्वपृष्टिंग न [वे] विष्य-विन्दु-वृद्धि सन्य बिन्द्रवाची वर्धिस (दे १ १४७) ।

एकसरिर्जध[यू] १शीव तुरुवा २ रांप्रति, धानकत (हे २ २१३ पत्र )। एकसिरिका च दि रोज, वसवी (प्राक्त **دڙ)** ا एकसाक्षित्र वि [दे] एक स्थान में रहने-बासा (वे १ १४६)। एकसिंवकी की वि] शास्त्रमनी-पूर्णों सं पूतन फ़लवासी (वे १ १४५)। एक्सस देशो एग सेस (यन १४७)। एक्स रेको परा (प्राप्त ३६)। एकार देशी एकारह (कम्म ६ १६)। पद्धार पु [अवस्त्रार] नोहार (हे १ १६६ एकी की [एका] एक (की) (निषु १)। यमकृष देखो अउप (पि ४४६)। एकका वि वि | परस्तर, यन्त्रोध्य (दे १ १४६) 'मुहुश एक्टेक्कन मने<del>व्यं</del>ता' (पथन पक्षेत्र है देशों एग (शह १६)। एस स [एक] १ एक प्रवम-सक्या (धलु)। २ एकाकी सकेका (टा४१)। १ शक्तिया (दुमा)। ४ वसहाय निःसहाय (निपा १ २)। इ.सन्स, दूसरा 'एवमेन वर्गति मोसा' (पएइ १ २)। ६ समान सरश दुस्य (उवा)। इस वेची एग 'सस्पेयप्रमार्ग नरहमार्छ एवं पशिमीवर्ग किई पम्नला' (सम शः ठाधः बीप) । इत्य वि [ैंक] स्वेजा एकाकी (मग)। ओ म [शस्] एक तरङ (क्या) । क्सरिय वि []श्वरिक] एक धरारणाचा (गाम) (घरपु)। अधि श्री ['स्प्रत्य] एक स्कन्यपासा (कुश वगैरह) (बीब १) । "सुर वि ["सुर] एक बुरवासा (मी अमैचह पत्रु) (परएए १)। स विर िंक] प्रकाकी चनेमा (मा १४)। सा वि[ाम] व्यक्तीन वरंपर (मुर १ १)। वक्तु वि ["अधुएक] एक धौजनामा एकावा करना (पर्वह २ १)। वक्तास वि िंचरवारिंश] एक्यानीमवी (*पडम ४*१ पर)। बर पि ["बर] एकाशी पिहुकी-वाता (धावा)। वरिया सी विस्ति एकाची विद्रशा (धाचा)। चारि वि

["बारिम्] धफेब-बिहारी (सूम १ १३) । ीचृष्टर्थु [िंभूष्ट] विधापर पेरा काएक रामा (पटम ४ ४४)। ब्टब्रुस वि िच्छव ? वूर्ण प्रयुक्तवामा धकराण 'एयण्डल' ससागर' भूजिज्ला बमुह्र' (पराह २ ४)। २ महितीय (काप १८६)। जिक्क ৰি ["জতিন্] মহামহ ৰিষ্টাদ (আ ২ ২)। आय वि ["आठ] घडेसा निस्तराय" 'खण्यविसम्ख व एयवाए' (पण्डु २ ५) : हू वि ["स्थ] इक्ट्रा एकतित (मग १४ ६ वय इ. व४१)। ह वि [धर्य] एक धर्ववाला पर्याय-राज्य (भीत १ मा) । दू ट्टंब 🔄 एक स्थान में मिलिया नक्त्रीब एगर्ड (परम ४० ४४)। ट्रिस वि ["स्पिक] एक ही धर्मवाला समामार्थक पर्वाय-शब्द (ठा १)। "हिय वि । "रियक विचके फल में एक ही बीज होता है ऐसा बाम बमैरह का पेड़ (पएए) १) । जासा की ["नासा] एक वि<del>ग्</del>तुमाचे देवी-विशेष (बाद १)। त्तम [\*त्र] एक ही स्वान में 'एपत्ते ठिमी (स ४७ )। "स्थ देखी हु(सम्म १ ६३ तिषू १)। नामा देखी पासा (ठा =)। पए म पिक्री एक ही साम प्रापन (पि १७१)। पक्त्य वि िंपका र मस्यस्य (एत्र) । २ ऐकान्तिक विकास (सुध १ १२)। प्रशास कीन [ प्रजाशन् ] एकावन, प्रवास और एक। पनासद्म वि ["पञ्चारात्तम] एथावनमा **११ वॉ (पदम ११ २८)। पाइअ वि** [ पादिक] एक पाँच केंचा एकनवासा (बाक्तपमा में ): (अन्ह)। पासग वि [ पार्वेष्ट ] एक ही पारने की भूगि स सम्बन्ध रखनशासा (भातानना में) (पसह २, १) । पासिय वि ["पारिवें के ] bai पूर्वोक सर्पं (क्य)। सत्त न भिक्ती क्त-विरोप एकासन (पंचा १२)। भूय वि [भृत] १ एकी मूत्र मिला हुमा (ठा १)। २ समान (छा १)। सम्प वि सिनस ] एक्सपंचित्र तल्यान (नुर २, २२६)। "मेग वि ["एक] प्रधेक इर एक (सम ६७)। य नि [क] एकापी, प्रदेशा (स्त १)। य ति [ग] परेना नानेशसा (बत्त १)। यर वि ["तर] शामें के क्रीह

भी एक (पड्)। याच[दा] एक समय में (प्राप्त नव २४)। राइय वि रिपन्निकी एक-एत्रि-एम्बन्धी एक रात में हीलेकाना (सम २१ कुर १ ६)। सम व ["सत्र] एक राप (ठा ६,२)। इ. वि. [एक] एकापी भकेता (ठाका सुर ४ ३६४)। "विव वि "विची एक प्रकार का (तर ६)। "बिहारि व "बिहारिम्] एकन-विहारी प्रकेता विकारनेवाला (बृह १) । वीसङ्ग वि विश्वितिम दिनीतवी (पटम २१ दर्)। बीसा **व्य विंगति**] एक्तीव (पि ४०१)। सद वि पर्हे एक्स्डना ६१ मा (पत्रम ६१ ७६)। सद्धि भी पिष्टि एक्टर (सम ७१) । सत्तर वि िसप्तती ए**रहतरनी ७१** वा (पदम १ )। समद्भावि [\*सामिक] एक ध्यय में होनेवाचा (भग २४ १) : सरिया स्मै (<sup>\*</sup>सरिक्म) एकामसी हार-विशेष (वे र)। साम्रियं वि [शादिक] एक वक बाता एवस्प्रीस्वमुक्तरासंगं करेंद्र (रूप रणमा १ १)। सिश्रंम वि∏ेर्ड धमय में (पर्)। सेख पूर्विका पर्वत-विरोप (ठा २,३)। सेस्कृष्ट पूर्व िरोसकटो एक्टोस पर्वत का शिकार-विशेष (१४)। सेम १ [ध्रुप] व्याहरश-प्रसिद्ध सदास-विरोप (सन्दु)। द्वा ≡ िथा एक बनार का (ठा १)। **इ**त्त छ ["सङ्ग्रा] एक बार (प्रामा)। । विश्व वि "किन् अनेना (क्य योद २ या)। दस वि व [ दिश्लम् ] व्याप्तः। ानस्तरसय वि ["।इसोचरराक्तम] एक बी न्यारहर्वा १११ वॉ (पडम १११ २४)। भोग दे शिभागी एकक-ककन (निकुर) । स्मोस वि [सर्श] र त्रन्यु-प्रचाला का एक दोल करन की सब्दाने शहरा बर दोनो संदनों वी हाद से क्टीट कर ब्द्राना (घोष २६७)। (वय वि विवत्ती एक संबद्ध (क्य)। (रक्ष केको व्यक्त (पि ४३१) । रासी की ["**१इर**ही] विकि विशेष प्रशास्त्री (रूप पुज्य करे ३४) । (क्या धील [पद्धारात्] एक।वन (शि १९६) । विक्ति, स्त्री और विविध

स्त्री विविध प्रकार भी मिशायों से समित हार (बीप) । | वस्रपविमत्ति न िावसीपवि-भक्ति नारक-विकेष (एप) । विवाह पू विवित् एक ही बाल्या वनैष्ह पदार्थ की माननेकाशा धर्रात, वेदान्त-धराँन (ठा ा चीस जीन विश्वाित चैंक्या षिरोच एकदीस (परम २ ७२) । सिण न [शिश्न सिन] क्रत-किरोप एकारून (वर्ग २)। ह्यू पून [शह्य रूठ दिन (माचा २, ३१)। स्वादि विस्यो एक ही प्रहार है नग्र हो जानेगाना (स्व ७ **१)। क्रिय वि "क्रिक** १ एक दिन का इत्यान । २ पुंच्चर-विशेष एकान्तर जनर (मय १ ७)। हिंद्य वि [विक] एक ते स्थारा (वंच): देखो एक एक धीर एक। भगे**त केलो** प**र्वा**त (ठा ३ सूच १ १३ ग्रीक रशः वैचा शः १)। विटि की विटि १ कैनेतर कर्तन । २ कि कैनेतर क्रांन को याननेवाना (मुध २,६) । ६ और निधिष्ठ सम्बन्धा निरुक्त स्था-बद्धा (सूम १ १६)। व्समा 🛍 [ दुव्यमा] वर्षापणी-कान ना कटनां भीर असरित्ती-काब का पहला बाय काल विशेष (सम १ ३)। पॅक्रिय पु विज्ञित । भाषु, शंपत (भग) । आस र् विकार कर्मन को माननेवाला। २ मसंयत्रजीव (यव)। बाह्रवि विदिन्ती वैतेतर क्रॉन का अनुवाबी (राव) । बाव पूं िबाव] बैनेवर क्त्रीन (सूपा ६१८)। सुसमा भी [ सुपमा ] काम-फिरोज भवधर्मिएी काल का प्रथम और **ब**रसर्मिणी नान का अध्या दाचा (लॉब)। एगंतिय नि [पेशन्तिक] १ वनस्येयाशी (बिन)। २ व्यक्तिया 'एएंसियं कम्मकाक्ति घोसह' (६ ११९) । १ कैनेतर क्यन (सम्म 2**%** ) i

एगैतिय न [ऐक्सन्तिक] मिन्यास्य का एक थेर - वस्तु की सर्ववा व्यक्तिक बादि एक ही रुष्टि ≣ बेबाना (संबीच १२)। एगद्रि क्यो एमा-सद्गि (वेवेन्द्र १३१: मुख्य ₹₹)1

पगट्टिया की [वे] गीला बहान (गामा १ १६) ।

यगठाण व [पदस्थाम] एक प्रकारका स्थ (पष २७१) । पर्गितिय वि पिकेन्द्रिय एक श्रीवन्त्रताः শ্বিল ঘোর্ট সিরবালা (বীর্ষ) (হাও )।

प्रशासित वि पिकीसती मिता हमा एका-प्रान्त (सुपा रू६)। प्राप्त देवो अठम । वचा अधि विलान रिंहा विजयानीसमां (पदम ११ ११४)। बत्ताधीस कीन विस्तारिशत् । हनवाधीक (सम ६६)। यत्ताबीसद्दम वि विवता रिंशक्तमी जनवाशीस्त्री (सम. ६) । जन्म व्ये विविधि मगाही (वि ४४४) । वीच कीन विज्ञात ] उनकेस २६। तीसहम वि ["दिशक्ता] उन्तीदवी २६वी (पर<sup>द</sup> ९१ ४१)। नउइ देखी प्रवह (सम १४)। नउस वि ["नवत] नवाग्रीवाँ (परम & ४१)। यभ प्रमास क्येन [प्रमारान्] चनचास (सम ७ : मय)। प्रशास वि िपञ्चाञ्ची चनपदासरी (पडम ४६, ४ )। पन्नासङ्ग वि [पन्नाशक्तम] जनवा धर्मा (धम ११)। बीस झीन विंहति वजीत (तम ६६ पि ४४४) शासा १ ११) । शिसक की विश्वति । प्रभीस (सर्ग (वीसङ्ग बीसईस वीसम वि ["विंशविवम] जनीसर्ग (ग्रामा १ १ प्रम १६ ४६ वि ४४६)। सह वि िपछ ] धनळवी १६ वी (पठम १६ वर) ।

वि [रिसीय] एकासीयां ७१ वां (पर्स ६, ६४) । देवो अवय । एशुस्य वृ [पकोरुक] र इद्र नाम का पर्क क्टब्रींप । २ वि उपका निवासी (ठा ४ २)! यग्य (घप) देखो एग (पिय) ।

सचर वि ["सप्तत] अवस्तरवी (पाव

९६,९)ः। सी स्तीद्र 🕸 ["फ्रीवि]

क्यांसी (दम ८७ पि ४४४ ४४६) । रिसीव

एक 🛊 [एक] बाग्नु, पबन (ग्राचा)। एकणया वर्ष [एकना] कम्म शौगना (नुपर्मि 1 (775 पळा केलो पय≕एन्। नक्त. एळासाज

(धम १०)। प्रचलं देखो प = सा+इ।

एज्जन व [आयन] बायनन (दर १)।

एक्रमाण देखें ए = मा + इ । एड सक [ एड ] छाड्ना त्याम करना । एक्ट (भग) । करहा. पश्चिमाम (सामा १ १६) । संक्ष एक्सिक्ता (मग) । क्ष पहेपव्य (सामा १ १)। एक्ष सङ [एक्षय्] इटाला दूर करना। एक, संक एकेसा (राम १८) । एडकः पूरिककी मेर मंद्र (उर ६ २६४)। एडपा भी [एडध] मही (पट)। पण र् [पण] इच्छ मृग इरिए (कप्पू)। वाहि हो ["तामि] क्लूरी (क्यू) । एलं≲ र् [एलाक्ट] चन्द्र चन्द्रमा (दप्पू)। प्रणिञ्ज वि िणयी हरिए-स्वन्ती हरिए का (मास बगैयह) (राज) । यशिकाय प्रिणेयकी स्वनाम-व्यात एक राजा जिसने मालान् मञ्जानीर के पान बीना श्री मी (ठा व)। प्रजिस प्रे पिजिम द्वित्र-विरोध (उप १ ११ tì)ı युजी बरी [पणी] इरिली (पाप परवह १ ४)। बार पू [ बार] हरियों को करानेशका. बनका पोपण करनेशाला (पदह १ १)। एणुवासिल पूँ हि भेन मेहक (दे१ १४७)। पणेज देवी पणिज्ञ (विपा १ ६)। पण्डे ) म दिवानीय विश्वता संशीत पण्डि (म्या है २ १६४)। पताप देवी 'एक्तिझ = एकावत, 'एकावे शर सोधों (बीवस १००)। एक्झ वि [इयत् एकावन् ] न्तना (ध्राध १६ सम्बद्ध )। एत्तए रेनी इ=इ। पत्ति (था) म दिस्स विश li (ब्रमा) । एत्तइ रही इत्तई (दुमा)। एचाई देशो इचाइ (हे २ १६४) पूर्मा) । पविञ्र ) वि [इपन् पतावन् ] क्तना पांचल । (१२ १२०)। सच सच दि [ मात्र] इतना ही (हे १ ८१)। पिक (ती) क्यो पश्चिम = एवानव् (शाह 22) I पश्चास (बन) कार बेनो (है ४ ४ **र**मा) । पत्तम स दि भन्ना इसकाय (शहर )। पची देवा इस्रा (महा)। RУ

एचोज व विविश्व सेसेकर (दे १ १४४)। प्रस्थ छ डिमंत्र] यहां यहां पर (उवा मजक चाद १ व)। प्रयी बेको इतथी (बप १ ३१ टी)। य भ (भप) देशी प्रथ (क्रमा) । पर्वपद्ध न [ऐर्दपर्य] सालय भागाने (उर दर्द थी) t पिट्रासिज (शौ) वि पितिहासिकी इति **इ**ग्स-संगम्भी (प्राप) । **एरह देखा प**श्चिम (हे २ १६७ कूमा । (एए प्राक् एस (बर) व [पथ] इप तरण पेना (पड मिय)। यमप्र (धर) थ [यथमव] इसी तरह ऐसा ही (पड्चमा६) । एमाइ ) वि जियमादि इत्याचि वर्षेश्व एमाइय ( शुरु = २१ जर)। प्साण वि [व] प्रदेश करता हुया (दे १ 822) 1 एमिणिका की [वे] बहु की जिसके शरीर को, किसी केश के रिवाज के करमार, सुद के थाने से माप कर उस बाबे को फेंक दिया भाता है वि १ १४४)। यसका ) व पिषमयी इसी शरह, इसी एसेम । प्रकार का मण कि करीएका एनेम ण नासरो छाई' (काल २६) हु१ ₹#१)। पन्य (बर) ध [ एलम् ] इस तरह, इस प्रकार (हे ४ ४१६)। पस्बद् (धप) च [एकमब] इसी तरह, इस मकार (है ४ ४२ )। एम्यहिं (प्रेप) म [ श्रुशानीम् ] इत समय षपुता (१४४४२)। एय यक [एअ: ] १ कौपना हिपना। २ चलना । एवइ (कप्त) । वहः गर्यशः(ठा ७)। मगो, नवह एक्ट्रमाण (शक) । एय पुष्कि विशेषमण (मण २०१४)। एयंन देखो एक्टन (पडम १५ रूप)। प्रयान मिलनी क्रम ग्रिलन, 'निकेश' मार्ख (बाब ४) । ण्यणा की [प्रसन्ता] १ कम्प ३ १ पति चपन (मूघ २, २ अत १७ ३)।

पयाणि रेखो इयाणि (रेमा)। य्यार्थंत वि पिठायम् ] इतना (भाषा)। एरंड पू [प्रण्ड] १ इप्र-विशेष रेंड़ मंडी प्रएक का पेड़ (ठा४४ छामा १ १)। २ शूण-विशेष (परागु १) । मिजिया 👊 िमिश्चिमी एग्एड-फन (मग ७ १)। प्रंड पि पिरण्ड प्राप्त-मूझ-संबन्धी (पनावि) (वे १ १२ )। यरंडन्य ) पृं[दे] पायन हुता 'एरॅंट्र परंडय ) गाउँ एरंडन्यमाखेति हुम्ह-विचा (बह रै)। **एरण्यस्य न [ऐरण्यवत] १ क्षेत्र-विशेष** (नग १२)। २ वि उत्त क्षेत्र में प्रातेकामा (बार)। परवड भी चिरावनी, अजिरवदी निध-विशेष (स्वा कस) । प्रवय न [ग्रिक्त] १ क्षेत्र-विशेष (सम १२, ठार ३)। २ दुपर्यंत-विधेष (ठा३)। प्रथम वि [ प्रयत ] प्रेमत क्षेत्र का (समार ६)। यरवय वि यिरवती येखत क्षेत्र का प्रती-बाका (बर्गु)। कृष्ठ न [\*कू∠] पर्वत विशेष का शिक्स-विशेष (ठा १) पराणां 🗣 दिं 🏋 श्वारणी वद का सेवन करांशसी की (दे १ १४७) । एरावई की [रिरावदी] नचे-विशेष (ठा ४, 2 ( 842) 1 एरायण पूं भिरायण । १ इन्ह्र का हानी ओ कि इन्द्र के इस्ति-मैन्य का समिपति देव है (ठा ६,१ प्रयो ७८)। बाह्य द्व [वाह्स] एप्रवाहन (का २३ थै)। परावय व पिरावत र १ ११४-विदेव (एक)। २ ऋद विशेष का माँगहाता देव (जीव ३)। इन्द-राष्ट्रप्रक्रिय पञ्चमा प्रम्तार में सादि के हुरव भीर घन्त के दा प्रद्रमध्यीं ना संकित (सिंव) । ४ सङ्घ बून । ६ गरन धीर सम्बा इत्त्र-बनुष । ६ इछवती नदी का समीपवर्धी देखा ७ दग्र का हाबी (है १ ર )ા परिम वि [ईटरा] इन वण्ड का ऐसा (बाबा: दुमा शसू २१)। परिसिज (मा) उत्तर रेनो (रिग) ।

पछ--पश्चिम

एक वि दि । भूका निर्मा (दे १ १४४)। ) पं[एड, एउट] १ मुद्दें की एक ग्रम्मा ∫ जादि (दिपा१४)। २ मेग श्रेक् मग वि िमकी (मुप २२)। सञ रे मुख जेड़ की तरह ध्यन्यक कोकनेवासा 'बच्च्तमुचमस्मणुचसिवनवण्डंपणे दोसां (या १२ इस १३ बार ४ तितू ११)। प्रसाच्छ न [प्रसन्नाच] स्वनाम स्थात नवर विमोग (का २११ टी)। एक्कप देखो क्छ (स्वाः पि २४)। एक्टबिस कि दि रवनाक्य बनी। २ पू कृतम्, वैतः (दे१ १४ पर्)। पठा भी पिछा १ इनावकी का वेड़ (से ७ ६२) । २ इलाक्बी-कन (सुर १६ ३६) । रस पंिंसी न्नायशै का रह (प्रश् 2 2)1 म्ह्यतुष पूर [एक्शलुक] बाल् की एक कार्ति कन्द-विशेष (क्यू ६) । पद्मवान पिद्धापरयी शरूरच्य नीत का रक शाखा-मोत्र (ठा ७) । प्रश्रम्ब वि (ऐस्प्रपर्स) क्लालव-योज का (सिंद ४६)। एन्यविका की पित्यपत्मा ] पत की छीवधी रात (चंद १ १४)। प्रसिक्त वि डिट्सी ऐमा (ब्रुट ७ २२)। परिस्य वृ [ग्रांसङ्क] शाम्य-क्शिव (परह १)। मनिया सी [र्णाहका एकिस] १ एक बन की मुद्धा २ मेन्या (दे १ १२)। प्रक्रिम देना गरिम (श्रूप १ ६ ६)। प्रमु पू [पानु] बुध-विरोग (क्य १ ६१ दी) । पलुग । पून [पलुक् ] रेज़्नी हार के नीचे मनुष्री की माँची (जीर ६ प्राचा २)। सह दि दि बिक्त निर्देश (दे १ १७४)। ध्य च पित्र देश दर्भों का सूचक्र चन्नव:----१ धवचारला निवय (ठा ३ १ शालू १६) । २ साहरव नृत्यना । ३ वार-निरोय । ४ निस्त्र । १ वरिमा । ६ घन्य योहा (६ २ २१७) । शक्ष केलो वर्ष हि १ रह पत्रम १४, २४)। एक्ट्र दि दिसन् प्राक्त् दिल्ला। मृत्ता य [ इरमभ् ] इतनी बार (वप्प)।

एकइय वि [इवत् एतावत् ] ध्वना (कव्यः विने ४४४)। एवं य [ एक्स् ] इस तर्था, इस रीति से इस प्रकार (सूच १ १ हे १ २१)। मूझ वं भिता १ माराति के बनुसार उस किया से विशिष्ट सर्वे को ही शब्द का धारिनीय मानाने बाबा पर्वा (ठा ७)। २ वि इस वयह का एवं-प्रकार (कर बच्छ)। विष पिह विशिष्यी इस प्रचार का शिर ६२६ बास)। एक्स्सिस् पू [प्रविद्यास] इञ्चिहान (धनः (₹ ₹) | एबड (पर) वि [इयम्] इतना (है ४ ४ ः दूपा, मणि)। एवमाइ को पमाइ (परह १ १)। एवमंच} देवो ज्मेव (हृह २७१ः उवा)। प्रजी केवी पर्व (पर् ग्रांप ७२: श्वप्न १): प्रध्व देखो एव = एवं (स्पि १६ स्वप्प ४ )। पर्म्बाह (यप) ध जिल्लानीम । इस समय म्मुना (प४)। एक्शरु पू शिवारु नक्सी (कूमा) । एस नक दिपी १ श्लाब करना। २ कोबन्द्र । ६ प्रशास्त्रित करना । एसइ (पिंड ₩X) i एस सर्वा अप+इप्] करना, 'तस्त्र विख्यमधिका (उत्त १ ७) गुब्र १ ७)। एस सक [आ + इप्] १ बोजना नृद मिनावी योज करना। २ निर्देश निकाका बहस्य रस्था। एसंदि (ग्राचा २ ६ २)। वाक एसमाण (बाबा २, १, १)। संक र्णश्चना एसिया (बन १ श्रामा)। हेरू प्रिचप (भाषा २,२ १)। यस वि पिष्य र मानी पतार्थ, होनेवाली कर्फ (भाव ६) । २ वं भनिष्य काउ (इसनि १) भारपंत संबद्ध बद्ध वीरा किह व एशम्म (षिमे ४२२)।

यसञ्जल यिद्रवर्यी नेमन प्रकृत संपत्ति (at b) : यसण विषयजी १ समयका कोवाः २ थास्य (उत्त २)। एसमा हो [१पत्रा] १ क्लेप्स प्रेक्स बौब (बाबा) । २ प्राप्ति सामः विस्तर्पत्रं विद्यायीते (सूच १ ११) । ३ प्रार्वेश (सूच १ २)। ४ निर्देष साहार की श्रीत करना (ठा ६)। १ निर्धेय निज्ञा (माचा २)। ६ इच्छा समिताय (पिट १)। **७ मिसा** ना च्या (स १४)। समिद्र श्री मिमिति निर्देश विद्याका बहुछ करना (ठा १)। समिय वि "समित्र निर्धेय मिला दो वहण करतेशांता (ठल ६) यय) । यसणिक वि [एपजीय] बहुए-नेग्ब (जन्म पसि वि [प्रिक्] सम्बेषक स्रोत करनेकारा (पाचा)। एसिय वि [एपिक] १ कोन कालेशना, यदेपक । २ दूं, व्याव । ३ पावरिड-विरोप (मूर्ग ११)। ४ मनुष्यों की एक नीच वार्ति (भावा २, १ २)। यसिय वि [दिपिन] गवैक्ति धन्वेपित (भव ७१)। २ निर्देश विका (गा ग)। एसिय वि [एपित] फिता-वर्ग की विति वे शास (तूब २:१ ६६)। प्स्मरिय देवी प्रसञ्च (हर) । प्द्र धक [ पम् ] बढ़ना क्रमत होता। पृहर ( पर् ) । प्रवा क्यक पीसीत दुरुष र ह्वा (रह १)। पा६ (बंप) वि [ ईहरू] ऐसा, इतक विमा (पशुः भवि) । ष्ट्यार (घर) 🛍 [एफसप्तरि] संश्रा पिरोप **७१** (पिप) । ण्डा की [ज्यस्] संगत रूकन (क्त १९, Aft AN I ण्डिश वि [धेडिक] इस कम्म-संबन्धी (बीच ₹**₹**) |

क्तमो वर्रनी वमत्तो ।।

एस वैको वेसा 'यदा की ए। इस्ताइ कर्ला

चे

पे स [कायि] इस वर्षी का सूचक सम्पयः— १ संग्रहमा: २ सामक्ष्य संवीवन । ३ वीहेमि एँ उम्मण्यि (ह ११६१)।

> श्व विरिपाद्यसद्मद्ग्यवे येवायश्वर्वकालो बहुमी वर्रमी वनतो ।।

## घ्यो

को पू [ओ] स्वर वर्ण-विधेय (हे १ १ प्रामा)। क्रो देनो अव= सर (हे १ १७२ प्राप्त कुसाः पड)। क्तावेची अन्त (दे १ १७२ प्राप्त क्रुमा षड्)। ओ केबो उप (१११७२ पुना)। क्षो देवो तथ = स्त (हे १ १७३) दुमा)। आ ॥ [ओ] इन घर्षों ना सूचक बच्चय-१ विदर्भ । २ प्रकीर विस्मय (प्राप्त ७६)। क्षो स [क्षो] इत सर्वो का सूचक सच्यम-१ मूचना 'स्रो स्रविद्यमदत्तिस्त्रे' । २ परचा चाप बनुवाप 'बो न मए द्वामा इतिबाए' (हे २, २ ३ वड् द्वमान् प्रका)। १ संबोधम, प्रामन्त्ररा (नाट-नैव १४) । ४ भारपूर्वि में प्रमुक्त किया काता सन्दर्भ (पंचा १ विसे २ २४)। ध्यास व दि ] बार्च बया कहानी (दे १ 2×2) 1 भोभज वि [बापगत] यरच्छ "मामबाधव-(वि १६६)। स्रोडोक पूँ वि] गवित गर्बना (दे १. १२४) । कोश्रंद सक [का + ब्रिप्] १ क्वाल्यार से क्कीन सेना । र नारा करना । बीधेस्त् (हे ४ १२६ पर्)। सोअंदणा भी [भाष्यंदना] १ नात । २ नवरवत्ती कीनना (मुमा) ।

ओअक्त एक [ दश ] देवना । योगक्द | (हे ४ १०१। पत्र )। बोधमा धर [वि+शाप्] व्याप्त करना। मोमागा (हे ४ १४१)। ओअरिगञ वि [क्याप्त] विस्तृत पैसा हुमा (श्रुमा) । आअग्निम वि दि । ययिमूत परिमृत । २ न केश वनेचा को एकवित करना (दे १ १७२)। आअस्पिक ) वि वि] कर पूँचा ह्या बोमपिम ∫ (दे १ रें १५० वर्)। क्षोक्रण्य वि [अयनस्] नमा हुवा, नीचे की तरक पुत्रा हुचा (से ११ ११a)। ओअस्य वि [अपकृष्य] श्रीवा किया हुया, । क्यटा किया हुआ। सीमचे कुमलुद्धे बनलक-। किसाबि कि सार् ? (गा ६१४)। ओअश्वम वि [अपवर्शितस्य] १ सनवर्शन-योग्य । २ ध्यायने योग्य अहोड्ने शायकः 'कुमुनस्मि व पच्चामाप् अमरोबात्तसस्मि' (t) \$ VC) 1 ओअम्मम वि [वे] प्रमिनुत परानृत (पड़ि)। शाभर तक [काव+त्] १ जीव-ग्रहण करमा। २ नीचे स्टरना। धोयरा (हे प <य) । यक कोयरंत (योच १६१ नूर १४ २१)। हेड ओयरिउं (शहर)। ह जोवरिषम्य (पुर १ १११)।

क्षोअरण व श्विपद्भरण । सावन, सानग्री (वा क्रोअरण न [अपदरण] उदरता, तीचे घाना (पउड) । जोमरय पुँ [अपवरक] क्याच कोठचै (पुना પ્રશ્ય) ( ओवरिक वि जिन्दीणी स्टच हुमा (पाप)। ओअरिब वि [बीदरिक] पेट-मध पेटू, ब्हर भरने भाष की फिन्ता क्रालेक्स्सा (बोब ११व मा)। ओअरिया की [अपवरिद्धा] शोउरी छोटा कमरा (सुपा ४१६) । क्षोक्षद्ध देवी ओबहू = पर + धून् । प्रोमन्त्रद (সক্তেভ )। ओअङ परु [अय+चल्] चसना । योपक्रति (पि १६७ ४८व) । यह आज इति (पि १६७ ४८६)। काञ्चन्न पूँ [वे] १ भगवार, बचव मानरस थाहित बाचरण (पड़ास १२१)। २ कम्प नोपमा(पड दे १ १६४)। ३ मीमॉ ना नाइत । ४ वि पर्यस्त प्रक्तिप्त । १ सम्बमान बटक्या हुमा (वे १ १९४) । ६ जिससी वर्षे विमीतित होती ही वहा 'मुश्चिरजैती-बक्का सक्तेवा शिप्रमनिहरूरीह पर्वता (स 22 ×2)1 को अञ्चल वि [वे] विश्वतन्त्र प्रतास्ति (पर्)। कोअव सक [साधम्] सावना **कत** में

करना, बीदनाः फन्द्राहि ए मो देशाए

निमा । सिमार महास्त्रीय पश्चरियमिक्त

जिन्दु विन्दुनायर्वभौरमेखन धमनिसम्बद्धा-

गा ६३)।

(पर्)।

आंध्रण्य वि [अवनीर्थ] उत्तरा हुधा (पाच ओक्टनो जी दि] दूका चूँ (दे १ ११८) : ओक्किअ न [वे] १ नास वसन सदस्वान । आंश्च } न [दें] परिज्ञात, यक्क (दे १ भोइचल } १११)। २ वमन छन्दी (दे १ १११)। आंक्लॉथ सक [आ +कुप्] वॉवनाः आंद्रकृषि [दे] धारड (वे १ ११८)। कर्म 'जह यह बोल्बंपिकड, तह तह देन भोडेठण **ग** [अवशुष्टन] श्री केर्नु∎ पर पविएह्माकोरा । स्वर्ष | तुर्रम्भलं इह्मलियो

का बरत पूँचर (भनि १६०)। बासमे दुम्ब् (गुर ११ ६१)। ओ उद्धिय वि [व्] पुरस्क्षतं साथे किया हथा खांक्संड एक [ अद + लण्डम् ] वोदना, माण्या । क्र भावस्त्रहियक्त्र (से १ - २१)। ओळ छ प [अथपूछ] सन्दर्शा हुधा धरना भावन्त्रंडिञ वि [व] धामना (वे १ ११२)। धन प्राज्ञम्ब (पाध) 'मरपयनबंतगोतियो-आक्संद्रवेची अवक्लंद् (मुद १ २१) २०३) । वेता आयुस्त । परम ३७ २१) : आ च [आम्] प्रखंब मुन्य मन्त्राहार (पृष्टि)। अक्लब को उठल (दुमा प्रव्य)। भों कार पं क्षित्रहार] 'घो' बद्धर (बत्त २४ काक्कामी [रू] देगो सक्तामी (दे १ १७४)। धोक्समाण (धौ) वि [भविष्यम् ] श्रीम्म

मोंगज क्ड [क्यव् ] चव्यक धाराव करता। भौष वेको अधि । सॉन्स् (हि ४१२ हि) । मॉब्ड न [दे] केठ-दुम्ह, क्रेश-रचना ऑबाड एक [झात्य] इक्ना वास्कारित

ऑवाङ सक् [प्ताक्य्] १ द्वाना । २ म्पात करनां। शतकार (दि ४ ४१)। **ाँगार्टिम वि[कावित] बनाह्मा (धुमा)** 1 भौवाङिक वि [प्छावित] १ द्वाया 🛍 । खोकंबण रेखो तद्यंबण (शाचा २,२,३ ओक्षिद्धया केवो एक्कविद्धवा (१व ६२) ।

कोराम देवो छातराम । इ. ओरामित्स्य (वी) (मा ४८)। 2, 2)1 भो स्मृत पि [अपकुष्ठ] १ बीचा हुया । २ (ठा ६)।

आंगय वि [दयगत] प्राप्त (सूम १ ६, व्यंगर देवो भ सार (स्प्र)। ओगस्तिअ वि **विकासित**] नियः हमा क्षिका हुमा (गा २ १)। कोगसण न [अपकसन] हास (धन)। ओगहिस वि [सवगृहीत] स्नाच भूहीत भोगाड नि [अधगाड] १ मधीयतः भनिद्धितः (अ.८,२)। २ व्याप्त (रामा १ १६)। वै नियम्म (ठा ४) । ४ वंत्रीर, व्हरा (पस्प 3 48 4 6 46)1 व्योगास पू [अवस्था] वयह स्वान (तिरे ११६ टो) । भोगास पुं [अथसारा] मार्गे चस्ता (पुंच R 38)1 ओगाइ क्षक [अब + गाह् ] पाँच से क्लन्य।

कः जोगाइत (सम्४०४)।

र्वे इनेन्सामा याची (प्रक्त १६)।

( # # 19)

ओलंप देशे भारतंत्र ।

धोकिन्दण्याधि [वे] १ शवकीर्छ। २

चिएडत कृण्यि (कसावेश १६)। २

कन बरा हुमा। १ पार्व में तिस्ति

आकिन्यच वि[अवक्रिप्त] छँका हुमा (वस)ः

क्ट्रमिश प योपनैहिं (वं ३) । संकृ आभवत्ता (वं १)। भोभवजन [सामन] विजय करा करणा स्वायतः वरता (व ३---पव २४=)। भोभाञ पुंदि] १ प्रामार्थक गाँव का स्त्रामी । २ साक्षा चाकेत । ३ इस्ती वर्गस्क की पकदने का वर्षे । ४ दि सपहत की ता हुमा (दे १ १६६) । आवामव पुंचि यस्त-समय (दे १ १६२)। भोभार एक [अप+शारम्] हास्त्रा, 'नई मुन्नं इत्वेग् मोमारेसि' (मै ४६)। आञार पूं [अपद्मर] यनिष्ट हानि सति क्षोभार पुं [खबतार] १ धक्तारण (ठा १) **गउड) । २ धवतार, देहान्तर-बार**ङ (वह) । १ अपित कमः 'सम्बंतमछोवारी बत्ब चराचेकाहोर्छ' (स १३१) । ४ प्रकेश (विसे १ ¥ )। भोभार स्वो चवपार (वर् ) । भोभारण न [अवदारण] उतास्त्रा सरतास्त्र करता (रे ४ ४ )। भोजारिज वि [सनदारित] स्तारा हुमा (चे ११ १६ वर १६७ दी)। भोभास र् [व] दोना प्रवाह(दे१ १११)। भोबास्त्रं स**्ट्रि** १ **वर्**मकादोप । २ पेन्द्रि, मेली (दे १ १६४) । मोभायस्य 🛊 📳 बात्तात्य सुबह का सूर्य-वार (दे १ (६६) । भोभास देवो अवगास (हे १ १७२ दुना २ ) भन्दारिकास भूंबर ! बोधालो करव पात्रार्ण (काश ६ ६ । भोभास देखो उदबास (हर १७३) शक्)। भोआदिअ वि [अपर्गाद्व] विवना भरताहन विका गया हो वह (से १ ४ ₹ )ı भाइप <del>एक [मा + सुब्</del>] १ क्षोड् केत स्माक्त्र केंद्र देता। २ उदार दरद्र देता ची व्यक्तिक्कण सर्व बोईवइ वंदुवं सरीचको

ऊर्म (पडम बोपगुद्द (प्रत्कु ७३)। मन्मिल्ड (दे १ ११ )। भौतुर देवी चंतुर (पङ् ) । करमा । बोबालक (हे ४ २१) । २ व्याप्त (क्रुमा)। १ टी) । कः समारपंछ चीचान (दल १६)। ओक्ष्यहम देवी उद्यवसम् (प्रवृष्ट् १ व)। भोकरम पू [अवस्टक] मिहा (मन ३)। मोक्सस सक [अरव+कृप्] १ नियन्न होता पर जाता। २ सीचना। ३ वह ओक इंदी वैची उक्कोरी (दे १ १७४)।

वाना **३ वड्ड- ओ**क्समाण (कस्र) । भोक्नत कि [अवकारत] विराज्य परावित 'परमार्थि अज'कर्रना यत्मग्रहरिक्रिक (पत्रव ६४ १६) तहेव स कडीत परिवा-परहात्रसिक्रमासा विद्वरंति (प्रोप) । बीए मीर्वद सि' (बाक ३)।

क्षोगाइ सर [अव+गाइ\_] घरवाहन | करना । स्रोगाइद (यर्) । वह ओगा-हुत (प्राद २)। संह ओगाहरूचा, कोगाइका (रम ६ भग । ४)। भोगाहण न [अवगाहन] सबलाइन (भए)। कोगाइणा श्री [अपगाइना] १ घाषार मृत माराम्ध्येत्र (ठा१)। २ दर्शर (मग्र m) । १ शरीर परिमाण (का ४१) । ४ ग्रवस्थान ग्रवस्थिति (विने) । जाम न [नामन् ] वर्षे-किग्नेप (भग ६ ६) । वास र् ["नाम] धरमाहनात्मक परिणाम (मय ६ ८)। भोगाहिम वि [अवगाहिम ] पश्चान (वंदा १) । आगिरमः ) सक [अव + मह ] १ सामय आगिण्ह् ) सेना । २ मनुजा-पूर्वे बहुए करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ सच्य कर बहुना। धारिएत्र (मग रूप)। चंद्र आगिशिक्य अःगिण्हण्सा स्रोगिष्टिचा, श्रीगिष्टिचार्थ (शावा रावा १ ११ क्स' बरा) । इ. आयत्तक्त्र (क्याति १७)। आगिष्हण न [अयमहण] नानान्य जान बिरोप धारवह (खंबि)। ओगिन्द्रयमा श्री [अपमद्द्रणता] ? उपर देगा (एवि)। २ मनो-विपधीकरण मन स पान्ता (घ ६)। भोगिन्द्र देनो आगिन्द्र । मेर शानि-रिन्सा (निर १ १)। आर्गुडिय रि [अप्रगुण्डित ] रिन्त (१६ १)। ओगुट्टि की [अपदृष्टि] बनवर्ग व्यवनार्थ नुष्या (गाम १६ ११) । भोगृद्धि नि [ अपगृद्धिन ] यानिनित (सामा १ ६)। ओगार र् [जागर] फाव्य किएँव सीहि विदेव (विम) । आसाद देनी उसाद (तस्म ०१) उर: बन्ध 777 784)1 क्षोगाद नद [ प्रति + इप्] धाना नरना । धोगगण (प्राप्त ७१) । आगार्य रेगो धार्मिन्द्य । पट्टम पून "पट्टक] रेन गाधियों के पश्तन वा त्व दुक्करद्वार पण पर्वस्था, संदेग (बस्न) ।

ओम्पहिय वि [अवगृहीत] १ व्यवहत्तान | से जानाष्ट्रमा भानग्रहका विषय । २ मनुका से पृतितः १ कद्भार्यमा हुमा (उत्रा)। ४ बेन के निए उदावा हुया (धीप) । कोग्मद्भिष वि [अधमहिक] धनुता न गुगेत सबपहवाला (धीर)। ओगगारण न [उद्घारण] बदबार (नार ७) । आगाल पुँ [ इं ] धारा प्रसाह (वे १ १५१) । ओग्यास सर [रोमस्थाय्] पतुराना चनाई हुई यस्तु का पूनः चनाना । धारनाचह (FY YE) I ओगगाडिर वि शिमन्यायित् पर्यानगारा चनाई हुई बस्तु ना पूनः चवानराता (बुमा)। भ)ग्गा**६ देनो उ**ग्गा**इ** = उत्+ब्राह्य्। धीरगाहर (शक् ७२) । ओगिगञ वि [दे] बनिनून परानून (दे १ **₹₹**α} 1 थोम्मीअ पू [रे] हिम बर्ड (रे १ १४१) । आरय देवा उरवड । संस्यन (प्राञ्च ७१) । ओरपासय रि अयपर्वित विवासित नार-मुच्य रिया हुवा (शय) । मोप 🕻 [ओप] १ नमुर नंपान (गापा १ १)। १ संनार, 'एन बाचे तरिष्यंति समूर' नरणियो' (शुद्ध १ १)। १ द्यक्तियह ध्यतिन्दिनवा (परह १ ४)। ४ मामान्य मापारए । सण्या श्री ["संज्ञा] सामान्य द्यान (१एए ७)। १इस वृं [ दिन ] सामान्य विश्वा (प्रथ २१ १)। रेजो आद = भीप । व्यापद्दित् (थी) वि [अवपद्दितः] धार्व (प्रयी २७)। आधमरपूरि] १ पर का धरश्रसह। १ धनर्थे शराबी भुतमात (दे१ १० ३ म्र२ ११)। भाषमिय दयो आग्र्यसिय । आपाययथ न [अपायनन] १ बरमध नै पुत्रा जाना न्यान । २ तनात्र में बन्ती जाने वा नावारण चरना (धावा २:१ २)। आयत्तम्ब देशे आसिन्ह । भाषार १ [रे अपवार] वान्य राने वी , आब्द्रादिय रेगी प्रग्हादिय

१६७ बही गोठी--मिट्टी का पात्र-निशेष (मग्य ओदिदा (सी) नी [औचिता] उचित्रता ग्री(परव (रंभा)। ओर्जुब सक [अय+चुम्यू] गुम्बन करना । सक्त आचुविऊण (भवि) । ओ खुल, न [दे] कुफाका एक माग (दे १ आचल ) रेगो आऊल (रिपा १२ मूर ओपुँढेग 🐧 💌 )। २ प्रुप से हटा हुमा शिविष-धेना (बल्ल) शेबूमयनियाया (वे --पत २४१) । ओयय देनो अयथय (महा) । आधिया ध्यै [अवचायिस ] तोह गर (कूमों को) इतद्रा करनवानी (या ७६७)। ओ चोहर न [व] उपरभूनि । २ जवन के चाम (दे १ १६६)। भो उद्धभः ) नि [भवस्तृत] १ पाण्यन्ति। ओच्छाइय 🕽 २ निस्त्र रोगी हुमा (गण्हु १ ४: यदण व १६४) i ओच्छॅन्जि रि [दे] १ मरहत । २ मनित पौष्ति (पर्)। भारदण्य रि [अवच्छम] बारदारित बना हुमा 'लिक्नीउगी धनीया मैं बदल्ली चारण्योर्ड (मन ११२) । देखी आर्ज्यस्म । आण्डस न दि] बन्ध-धारन दावन (द १ ११२)। ओन्द्रम बेगो आब्द्रपण (म ११२ मीत)। २ घरट्य याजन्त (माना) । आण्दर (शी) यह [अय + स्तू] १ विद्याना, फैनानाः २ घाषद्यदितं वस्ता द्वेषताः। बायद्यप्रवि (गार - उत्तम १ १) । आग्छ्रविय ) वि [अवप्रहानित] पाप्टा-आण्डाह्य रिक रेसा हवा चुन्द्रतवार-क्रतन्त्रवाधिकारद्वप्राध्यास्य मुख्यं वैभार विश्विषयायवूर्ण (गाया १ १---गव २४ २वटी महास १४) : अ ब्यानिय शेव रेती। जाण्याय मर [अय + द्रान्य् ] बान्याना बरना । श्रंह आस्द्राहित (प्रति) । **ओण्डायण वि [अयण्डाद्त] दारत,** शियाम (स. २१७) ।

कोडव्ड वि दि । क्यूक्त एवं (देश क्षोचक्कप्रद वि [बाङ्गान्त] १ व्यामा ह्रमा । \$\$\$) I ५ बल्टीच्य 'बोन्डरखब्ग्बरपद्वा' (वे ११ ओ दुर्धिये हैं ? एत्स्म देश । रवि 483 22 283 1 जर्जन देश का निवासी क्षत्रिया (रिय) । क्षोचकोञ्जल (है) पर शे का के प्रान्त ओब्रिश विश्विदीयी उत्तम-देशीय (पिंग)। क्रम से पिरता गानी। 'रत्सेड प्रतमं नत्स्यम भोवदण न विशेषात्रमः उत्तरीय नावर ग्रोक्योपमं परिकारी । (\$ ? ?XX) t ओबिहरा। क्षे विशे बोधनी (स १११) । श्रमुद्ध पश्चिपन्यविशो योजि

**ጂጂ** ነ ነ

कोडा व दि । सभ्युक्टन (प्रक्र ६०) । कर्मतं हा सम्बंद (का ६२१) कोण केरो अस = अन (र्था)। भोजिन्ह यक [आ] तफ क्षेत्रा । मोनिन्दर ओणंद पर [बाद + तन्द्र] प्रकारन (STEE LE ) I **इरमा। इनक्र आयोबिकामाय (क्या)।** कोळर वि [दे] भीड क्लोक ( पह )। ओजस सक श्रिव + सस् दिनोचे करता। भोवत देवो स्टाउ (१) । नकः ओष्प्रांत (३१ ४१) । श्रष्ट क्रीय क्षोळाल्ड वि वि] बनवान, प्रक्रम (वे १ मिख भोर्जामरूज (प्राचा २) निष् १)। 22x) 1 कोषय नि किंगनती १ नगा **ह**मा (बुर २, क्षोध्याध्य देशी बॉक्स कर्मास (देश ४३)। २ व नमस्कार, प्रशास (छम २१)। {\$\$Y} 1 ओ**लक शक**िलव + सम्ब्] शटकशा, क्रोडम्बर्ड हिंदी मैका सम्बद्ध नेवा वहीं **फेरानमानु श्रेने धोस्तरका**ई (प्रीर्प) । **वह (दे १ १४**४)। ओजबिय वि [अवनसित] नमका ध्या भोज्यत देशो जोज्ञ्य = यप + व्या । अवनत किया ह्या (क ६३६)। ब्यायसम्बद्ध व विशेषका व विशेषका व व व व व व व

भोजात एक अन् + समय ी श्रेने नमाना 2 2 2)1 शक्तत करता । ग्रोस्तामिक् (मृच्य ११ ) । क्षांत्रम्यः व िनिर्माते विकास वर्णत से र्वष्ट- ब्रोणामिचा (निष्ट्र) । निवत्तवा बन प्रवाह (ना ६४ 🐧 🖁 🐉 भोषामणी की [अवनामगी] एक विदा, क्याः यदा)। विश्वके प्रयान से कुछ वनैस्त स्वर्थ प्रशासि बाज्यरिम हिं] केही बम्मारिम (वे १ क्षेत्र के लिए भववत होते हैं (उप द्व १६६, ओरबरण न (अवस्तरण) विद्योग (पटन 222) 1 विष् १)। rf ex) :

2% ) i ब्रोणका दि हि । ध्रधनत, परान्त (दे । 1 (m # 9 कोण्जिह न [बौझित्र व] निवाद्य सम्बद्ध चीरिठाई रोजार्स (गाप्त ४५ हे १ 21471 कोण्जिस मि [सीर्किड] का के बना हमा अर्श-निर्मित (क्स)। कोणेख के किएतेयी क्षेत्र में सब कर बना इच्छ फून ब्यारि, बाबि से बच्चा मीम का पुलबार भार्याद्रमाउनिकार बोरासे (१ से) थर्व गैसिनं च एंग्रे च<sup>\*</sup> (स्तुति ६ १ )।

बोचस्म र दि शिक्ष (दे १ ११६)।

कोरन यह [स्वरा] इनगा। मोत्यर (शक

कोचान देवी दत्ताय (विश्व २४)।

1 (52

भारतका नि जित्रसर्जी १ फेबा इका प्रकर (वे २ ६) । २ धालकावित पिक्रिक चर्न क्को चल्कवे अयक्तै (धानमा हे १ १६१) संकत उंकड)। आंख्याम कि कि सबहम किय (दे र १४१) । ओरचड्रम केले घोडमाइय (ए: १९६) है 48 4 xu4) 1 आंखर क्वो ओक्क्रर। ग्रीलरह (नि १ १) नार) । शास्पर वृं [वि] जस्त्रम् (वे १ १४ )।

ओस्वरिञ वि [अवस्तृत] १ विद्याया हुमा । २ व्याप्त (से ७ ४%)। कोत्वरिश्व वि वि १ माजना २ वी मात्रमण करता हो बद् (दे १ १६१)। ओत्पस्ट देशी उत्पास्त = बर् + स्तू । मीन्य-इत्रद्ध (प्राष्ट्र ७५) । ओत्वस्वपरयस्य देवो अवस्थपत्यस्य (दे १ १२२) । ओस्याहिय नि [अनस्तृत] विद्यामा ह्या (ম**ৰি)** ৷ ओस्यार मक [ अय + स्तारय्] बाञ्चादित करता । कर्म घोत्वारिन्मॅर्सि (स १९८) । धारहा देखी ओरहय (प्रग्न १६६) । ओददय पून [औदयिक] १ उसम कर्म-विपाद (मन ७ १४ विने २१७४)। २ वि उदय सिपम (विमे २१७४ सूम १ १६)। ६ पुँ, कर्मोत्रय स्म सावः 'कर्म्मोत्रयसङ्ख्यानो सम्बोधमुही मुहाय घोषण्या (निमे १४१४) । Y वि उत्तय होनै पर होनेवाला (विमे 2808) 1 आदम न [औदास्य] एरासता बेहता (সাক) । জাবজ দ [পারার্থ] হুমারো (মারু)। আহিল দুলিহন দিলে উৰা চ্ছা পাৰন (परहर र मोद ७१४ वाद १)। खादरिय वि [जीदरिक] पर मछ पेट मरने

के दिए ही जो साबु हुया ही बहु (निचु १)। आवृह्ण न [अववृह्न] दत किए हुए सीह क नाग्र वर्गेष्ठ से सक्ता (राज) । भोदारिय न [भीदार्थ] ज्याका (प्राक्र) । আছে বিজিলেটী কীলা (সভে २)। आरंपिम दि दि १ भाशन्त । २ न् (\$ 2 292) | भोद्धंस एक [अव+व्यंस् ] १ मिरागा। २ हटानाः ३ इसनाः नमहः 'परवास्ति यगोतर्गता यर्एजलिएम् अणोळसिञ माणा विद्वर्शित (धीत) । ओयाव सक भिष + धाय | पीधे शहना । धौषावद् (मट्टा) । भोषुण देश अत्रमुख । वर्ग बांधुच्यति (वि

११६)। तर आधुणिल (प १११)।

श्रोपुझ मि [अवपूत] बन्दित (नार) ।

ओपसरिल वि शिवपुसरित विसर रेप वासा, इसका पीता रंगवासा (से १ २१)। ब्रोनडिय वि अवनटित विषयित विर

सहतः 'चंब्रमोनिश्यपरखन्तं (सम्पत्त २१४)। ओनियर वि शिवनियसी देश आणि शक्त = बपनिवत्त (कप्प) । ओपस्स वि वि वन्धीर्थ, वृष्टिक क्ले

एं से तेत्रविपूर्ण नीलूपल जान वर्सि चीने ! द्योहर्रात तत्ववि य से पारा धौराहा' (साया । 2 28)1 ओप्य दि दि । एट, घोर दिया हुया (पह )। कोष्य एक विषय् विषयु करना । योष्पेद्र । (Tr t 44) i

क्योप्पा सी वि] राज वादि पर मणि वगैन्छ का वर्षेण करना (वे १ १४८)। ओप्पाइय वि [औरपातिक] स्थात-सम्बन्धी (मीप)। आप्पिक्ष वि अपित । वर्गपत (ह १ ६६)। ओ प्पिश्र विदिशास्त्र पर विसाहका

"शिवमत"ोप्पिमपमण्ड्" (दे १ १४६)। ओप्पीछ पै दि । सपृष्ट बरवा (पाय)। आर्प्यमिश ) केशा उप्यक्तिका (गउड पि बोप्पसिक्ष (४६६)। भोवद्व वि[अवबद्ध] १ वैवा हुया। २ सनमप्त (बच १) I

ओ दुक्त बरु [अव + बुधू] जानना। **बह** कोयुरम्म्माग (धाचा) । ओबमालम बेली उडमालण (दे १ १ ६)। भोसमादि [अवस्थान] सन नट (से १ 11 2 31)1

व्यामाणा की [अपभाषता] सेन्द्र-निन्द्र भागीति (धान)। भोगाम यक [जय + शास्] प्रकारण अमहना। वकु आसासमाण (म्य ११ १)। प्रयो. योभाने (मय) योभानंति योभा

चेति (मुन १६) ४ भोमासमाण (नुष ₹ ₹¥) I आभास धर [अव + भापू ] वाचना करना मामना । कर्मा भाभासिज्यमाण (निष् २) । भोभास र् [अवधाम] १ त्रकार (वार)। र महाब्रह्-विदेश (ठा २ ६)।

ओसासण न [अपसासन] १ प्रकारान उद्योतन (भग य य) । २ भाविमींव । ३ प्राप्ति (सम १: १२)। आसामण न अयमापण याचना प्राचना (वव ८)।

आमासिय वि अवसायित १ याचित प्राचित (वव ६)। २ न. याचना प्राचैना (ex t) i ओमगा वि [अवमुग्न] वक बाँका (छाया १ द-पत्र १२१)।

ओ अडिय वि जियमुक्ती सहाया हमा चीहत किया हुमा' 'तेखबि किन्द्रक्रणसम्ब विव सई-मोनोडिमी नियद्वरक्रमें (महा) । आस वि अवसी बतार, निन्तार (भाषा २ % २ १)। क्योम कि जिल्ला र कम स्टून हीन (बाचा)। २ सबु छोटा (मोच २२६ भा)। ६ न दुनिल बरान (बीम १६ मा)।

कोड़ वि किरोड़ वनोवर, विसने कम धावा हा वह (ठा ४) । चेछन, चछन वि "चेलकी बीर्ए मौर मनित बस बारए कलनाला (एत १२ धाषा)। रस्त व यित्र १ दिन-साय, ज्योतित्र की पिनती के बनुपार विश्व दिभि का सम होता है बड (ठा ६)। २ महोतन यत-दिन (भोष 252)1 कोमइक्क वि [अवस्थित] मनित मैना (मे २ २१) : ओसंब हि देशो ओमस्य (पाप)। ओर्मिबय दि दि] मदोपुत्र दिया हुया

नमाया हमा (छावा १ १)। आमंथिय वि [अधमस्तिक] सीर्पासन हैं क्लि **गोर्थ मन्द्रक धार क्रिये देर रसकर** स्थित (छदि १२६ दी) । ओमंस वि [दे] पायत पामत (यह )। ओमज्ञण न [अयमज्ञन] स्थान-हिया (हर (Yc a) i

ओसज्ञायण पू [अवस्त्रायन] ऋषि विरोप (में था इस) । आमञ्जिम वि [अनुमार्थित] विनदी सार्ग कराया गया हो बड़ न्यस्टित (स १६७) ।

आमह वि [अवस्ट] न्द्राः पुत्रा हुवा (व **र. २१)** ।

ओवरृष न [अपवर्षन] वीधेहटना, वासित धोमस्य वि वि नेत धरोपुर (गाय)। ओसीस वि जिविमां १ मिन्दाः २ कासत्मिय दि दे देशों ऑसंबिय (धोव समीपस्य । ३ न. सामीप्य, समीपताः भौज्या (उप ७१)। क्षोयद्वद धक विषय+भूप् ी पेशाः। 1 (3 8 भूषिरीत बन्धमाखो क्षक आयहिरचेत (पत्म **७१** २६)। कोम**छ न** [निमास्य] निर्मास्य देवोन्बर्ट वेक्तिको कावमशियकोमीमे । ओयडिडमा ) की दि योहती मोहने इस्य (यह )। न उनेइ कावमार्व का बस बारा, दुम्हा (बुब भोयश्रही स्त्रामद्भवि विशेषका विशेषका ह्या पाहम्मयुखेल नियएए ।" (धोच ७७२)। २,६)। क्षोयज्ञ केची ओक्य (पतन ६१ १६)। आमाण र् अपमान अवमान विरम्हार ओमुक्त रि [अश्मुक्त] परिवक्त (सम्मत्त क्षोयस वि [अवरूच] घवनत घरोमूच (उत्त २६)। \$ X E ) 1 आभाज म [अपमान] १ विस्ने क्षेत्र वर्षे रह क्षोमुमा देवो उम्मुमा (पि १ ४ २३४)। (पत्म)। ना मार किया जाता है बहु, इस्त क्रव ओमुख्या व [अवमृद्धित] नहा मूर्चा ओयस सक [अप + घर्तेय्] उत्तरका वर्षे व्यान (ठा२ ४) । २ जिल्लामाप नो प्राप्त (पडम ७ १६६)। नाबी करने के लिए नमाना । संब विया बाता है नह धनादि (मणु)। **ब्धायक्तियाणं (दाचा२१७६)।** ओमुद्भग वि [अवमूर्वेष्ठ] बदोनुव चोनू धोयत्त्रत्र न [अपनर्तन] विनकाना हयान इवा वर्णायमे पर्रेति (पूर्व १ १)। भोमाज्य न [भयमानन अप"] धनमल (শিত হ৪ ছ)। विरस्तार (व ६६७) । आमुय सक [अव+सुक्] पहनताः कोसबिय वि [दे] परिकर्मित (परह १ ४° भोनुबर (क्य) । वह स्रामुखत (क्य) । धोमाय वि अवसित् विरिमत याना हवा धीपो । संद आंगुद्दचा (क्य) । (मुख्य १)। ओवा व्ये [आजस्] शक्ति, समर्थ्य (सम्ब आमोय 1 [आमोक] प्रायस्त <del>प्राप्</del>रस्त धामास देवा भोमछ = निर्मास्य (हे १ ६०) १ १ --पन १७ )। (क्य ११ ११)। भूमाः वरका ६)। कोया की [ओबस ] १ प्रकार (सुरव ६)। ओमायर वि [अवमोदर] भूव की श्रक्त भ्रामाध्रयक [उप+मारु] १ श्रोक्ता, २ माठा का शब-शोखित (तंद्र १)। भून गोवन करनेशना (क्य ६ )। शोभित्र होन्स । २ सम् वैका करता पूजना । खायाइम रेनो एक्याइम (मुगा ६२५) रे आमार्यास्य न [अवगोदरिक] १ स्पृत र्श्वर आमासियि (प्रति) । इनक 'सहवानि ¥ = 3) 1 धोनकर ता-किशेष (भाषा) । २ दूर्विक मक्तिरसर्वदिवनवरूपीयर् तुमरापेद्धि । ओमा-आयाय वि विपयादी स्वानत समीप पर्देश बनान (सोव )। सिज्ञत्वमा स्थिमा निवादिको हाई ह्या (शाका १ ६) निर १ १)। आमोर्यारवा की [अनमावृरिता "रिरा] (इर १व६ दी)। कोयार एक [अव + तारव्] नीचे का न्यून मोजन स्थ तथ (क्ष ६)। रुग । शंक्र श्रोबारिया (इस १, १ ६३)। भामासिज हेरो सामह - तिसांस्य (ब्राइ ध्यम्माय प्री उनाव् ] स्मान्यः (स्वीव २१)। क्षोबार वूं [अवदार] माट, तीर्ष (बेस्न आय व [आ कस्] १ विषय सहस्य जैसे आमाजिभ रि [उपमाजिन] १ शोक्ति । 28 ) 1 एर बीन पांच शादि (चिड ६२६) : २ आयारम पि अवदारक र उदारनेगन। २ पुत्रित स्मॅबन (स्पि)। बाजार क्लिंग भानी उत्पत्ति के समय और २ प्रदुनि क्लोबाना (सम १ ६) भागालिओं ध्ये [भपमालिश] विमहा वा प्रचम का बाजार नेता है कह (मुखीन १७१)। आयारल देनी बयारण (नुप्र १)। बुरमा है मारा (मा १६४)। ब्यायाधद्वतः ध [ब्रोजयित्या] १ वत दिवा भाग नि [ -राक्स्] बृह बर (बर १)। भामाम र् [भयमञ्जी गर्छ (मे ६, ६७) । वर । २ जनस्कार दिया कर । ३ विद्या सार्थि आय वि [आज] १ एवं चनहाय (नुस १ आभिण सम [अव + मा] सलता अल ना सामध्ये दिया कर (वो धोला दी भाग ४२१)। र पध्यन्थ क्यन उदानीत बरमा । वर्ग, धोमिनिगण्ड (धाकु) । वह) (स **४)** । (ब्रु१) । ३ पूँ विषय शक्ति (बग२४३) । आसिपान व दि अलग्र शिवाह की एक आंट 🏗 👣 १ चाइ, गुल्टर (दे ११४८) ! भाष व[ओजस्] १ दर (ग्राचा) । २ रीति वर के निये मानू वी बोर से विका र समोप (बस्त सन पू साल्या नीस-प्रकाश तेत्र (चंद १)। ३ उपाति-स्वान हुधान्योद्धानर (वंदा २३) । दवदक्ता ६)। न बाह्य पूर्यता का समूह (क्एए संय धामय वि अपसित् वरिणिहर वरिषित आरंपिश वि हिंदे प्राज्ञाना । २ नर (र ६२)। ४ वार्तंत्र ऋतुःवर्षे (द्वा ३ ३)। (गुम्द ६) 1 (505 5 आरोसि रि [प्रोकस्पिन] १ दरशन्। आभी उपर [ अप + मीम ] दुवित होता ब्दरंपित्र रि [र] पत्रता रिया हमा पिना बन्द होता बद्ध आमीसँत (१ १ १) । र तेरणी (नव ११२ थीत)। ह्या (पाच) ।

ओरचिवि [दे] १ वर्षिष्ठ क्रमिमानी। २ क्सम्म से एक । व विशासिक काटा हुआ (दे १ १६२३ पाछ)। सोरद रेको अवरद = यपराह (प्राप्त १ )। क्षोरम यह [ हप+रम् ] तिवृत्त होना । कोरम (सूत्र १२११)। ओरही की वि] सम्बा और मबुर बानान (दे १ १६४) पाम)। स्रारम एक [अव+र] नीव उत्तरना। श्रोरसङ् (हे ४ ८१) । स्रोरस वि [डपरस] स्व-पुक मनुसमी (छ १)। ओरस दि [औरस] १ स्वोन्यदित पुत्र स्व-पुत्र (ठा १ ) । २ मीएस्य इत्यासम (बीय ३)। कोरसिम वि [अवतीर्ज] उत्तर हुमा (कुमा) । **ओ**रस्स वि [औरस्य] हुवयोपल ग्राम्य न्तरिक (प्राच)। साराख देवो उपस्य≈ स्वार (ठा ४ १ बीव १)। भ्रोसस देवो एएस (१) (चंद १) । भारास न जितार] नीन देखी (निमे ६३१) । ब्रोग्रस्थि न [भीदारिक] १ शरीर निशेष सन्त्य धीर परुषों का शरीर (धीप)। २ ( वि शोभायमान शोभा वासा (पाय) । ३ भीतारिक राधिर बाना (विसे १७१) । जाम न ["नामन्] भीवारिक शरीर का हेतुनुव बमें (कम्म) । आरास्थित वि दि १ व्याप्त । २ स्थानह पिट्रोची(रोपनियमिरी' (मुख १ १६)। क्योरास्थिय वि [वे] १ पोक्या हुमा 'मुहि करमनु धैव पुरम् भोरासिउ मुहकमनु (भाँव)। २ पेतामा हमा प्रशास्ति 'वस्थिम शहरयेब् धौरालियों (मर्नि)। ओराग्री केवो ओरझी (मुर ११ ८६) । ध्योरिकिय न [अवरिक्किन] महिए की मानाज 'नरबद्द महितोरिनिय शरबद्द हुरुहुरुश्चेतन्द् सतिमं (पउम ६४ ४६)। क्रोरिक्ष ( दि ) भम्मा नान बोर्न नात (वे !

१ १९६) ।

भोरी [बे] समीप (प्राक्या कोप. पत्र—८३ मा १६)। को न्ज प वि शीबा-विशेष (दे १ १६६)। ओर्रभिय वि (एपस्ट्र) प्रापुत्त प्राप्यास्ति (मा ११४) आस्वय वि [अवस्थित] रोमा हुया (गा १३६) । ओरुद्ध कि [अवरुद्ध] एका हुमा कल किया हुमा (ग ८)। ओहम सक [ काब + रह् ] उत्तरमा । बहु-ओर्भमाग (क्छ)। ओरम्मा यक [सद्+या] सुलग नुल बाना । धोसम्माद (है ४ ११) । ओरह रेखी ओरुम । वह ओरहमाण (संवा६३ कम)। ओरहाज न जिन्नरोहणी नीचे प्रतरना (परुम २६ ध्रुष्ट विमे १२ ८)। क्षोक्कण न विवयोहणी नीचे नतारना धवतारस (पव १११)। ओरोध रेको ओरोड् = धवरोव (विपा १ र)। आरोड् देवी ओरुम। वह सोराह्माण (क्स ध्रा ४)। ओरोह् र् [अपरोघ] १ पनः पूर, बनानवाना (भीप)। ३ मन्तपुर की की (तुर १ १४६)। ३ तमर के दरनामा का संशन्तर **बार (छाना १ १ भीप) । ४ छंपा**त, समृह (दान)। को छन्न पूर्वि १ रदेन पत्नी वास पत्नी। २ मणनाप निक्रम (दे १ १६)। ओक्क गीकी दि] गरीता दुलक्षिप (वे १ आक्षप्रभ वि वि अवस्रतिती १ शरीर में सटा हुमा, परिवृत्त (वे १ १६२) पाछ)। र मना क्षमा (ने १: १६२)। ओ खप्रणी भी वि} प्रिया भी (वे १ १६ )। ओस्ड सक [उत्+सङ्क] : क्रमांका करना। सीलंडेंति (साता ११—पत्र ६१)। सोरंग वेला अवस्त्रंग-सव्यक्तरम् । संङ् व्यार्थिकजण (महा) । ओर्संव पुं [सबसम्ब] गीचे शटकता (शीफ स्थप्प ७३)।

कोलेबण न [क्यलम्बन] सङ्गण भाष्य । वीव पुं विषे ऋतुतान्त्र धैपक (चन)। ओर्टबिय वि शिवसमित् विपन्त विपना सद्वारा निया मया हो वह (निष्कृ १)। २ सर्वनमा हुमा (मीप) । आसंबिय वि [उद्घंबित] सन्कामा हुमा (सूच २, २ घीप)। ओसंभ र् [स्पासम्भ] स्नाहना भयोनंम-शिनिर्श्त पष्टमस्य शासम्बन्धस्य सम्मदटे पएएखे कि बेनि' (एामा ११)। बासक्तिक वि डिपस्किती पहिचाना ह्या (पडम १३ ४२ सूपा २६४)। ओक्री (बर) वैश्वी ओखरिंग (सिर्ट १२४) । ओ क्रमा क्**र**िश्व + हम् ] १ नी छे सगना 1 २ सेवा करना । बोचरमैति (पि ४वव) । हेरू ओसगाउँ (मुपा २३४ महा) । श्रमी-, शंक्र ओखग्गाविवि (सरा) । कोखन्म विकिधस्त्रणी १ मान बीमार । २ दूर्वल निर्वम (छामा १ १—पत्र २⊏ श्री विपार २)। ओसम्य वि [अवसम्त] पीचे समा हुमा धनुसम्म (महा) । भासमा [दे] येशे जोलुमा (दे १. १६४)। आसम्मा की [दे] सेवा मीड, बाकरी 'करेत देवो पसार्व मम ग्रीलग्दार्ग' (स ६ ११): 'बोबन्याय बेसचि बॉपिडे निन्मधी चुवो (बम्म ८ टी)। व्यासिंग वि [अवसारिक् ] सेवा करन वाला । बंधै- जी (रंमा) । कोस्माभ वि [अवस्मा] धेवित (वरना 12) ( ओक्समञ्जूष्ट [मृ] स्पेन बाज एशी (दे १ १६ स २१६)। ओडि देवों ओडी स्थानी (हे १ ८६)। ओस्ट्रिक पुं [अस्टिन्द्रक] नाहर ≅ दरवार्थ का प्रकोध (भा २१४)। ओब्रिप एक [दे] बोरना।काङ 'आसिप [ क्षेत्रप्य ] साण वि तहा तहेव वासा कवाहरिमविमाधियव्या (पित्र ११४) ।

आर्थिय धरू [अय+ छिप्] कीपना

सेप सपाना । कह अवस्थिपमाण (राज) ।

१ ११६: गुउर) । क्रोसिंगसमाण देवो आस्टिह । श्रोजित्त वि श्रिपविम चपविमी भीगा स्पार्कतनेप (पण्ड १ ३ उप पामा दे १ १२= ग्रीप)। ओक्षिची औ है ] खर्ग प्रादि ना एक दौष (R t txe) 1 मोलिएप न दि हिल ईंडी (दे र 223) I बोलियांदी सी दि यहद माहि का एक शोप (देश १३६)। आंशिक्ट सक किय + फिक्ट } पालासन इत्सा । इत्य इसेस्टिम्प्रमाण (रूप) । आसी एक शिव + की | १ भागमन करना। २ गीचे साना । ६ गीसे मानाः 'मीर्थच नामा घोमिर्ति (विदे २ ६४)। आसी भी आसी विक, बेली (दुमा)। श्रीसी स्मे वि हत-परिपाम दुलाचार (R t tx ) : आलं से की दिवित्तराकी एक प्रकार की मीहा (दे १ १६३) । भोलंड रूड [य + रेचम् ] करता टक्का गाहर निकलमा । घोलुंबर (हे ४ २६)। मालुडिर N [पिरेचपितु] भागेनाना (नुना)। आल्प दे [अपद्योप] बदतना, महेन करना मालुंपभ र् दि] वात्त्रिम्हत्व तवा हा द्याचा (६ ६ १६३) । क्षोल्गा पि बिवरूजी १ सेवी बीनार (बाय)। २ मन्त्र नट (परह ११)ः 'पुश्रा पुरा। निर्मता धोक्तक बीलूच मधेच (तिर १ १)। भाक्षमाप्ति दि दि रेनेपक नीपर। २ तिलोग तिर्मेत यत-होत (दे १ १६४)। ३ निरदान निगेन (नुर २ १ २ ३ १ tty; # yee & y) : वीदित (दग्या «६) । भारतपुरि दि र वर्तपटमान धर्मवन ।

२ निया, यनच (दे १ १६४) ।

भोक्सिंग और दि ] उपरेहिक, दीयक (दे ]

ओब्झज न [अवपदन] नीचे विरत्त, सन भोलेह्ह वि वि] १ यन्यासक । २ तृष्शा पर । १ प्रमुख (दे १ १७२) । घोळोठा रेबी समझोधा। नह घोसोझंत, खोकोपमाण (या शत्कामा ११६१ १)। क्षोस्रोट एक किए + लुट विश्वे नौज्या। क भोक्षोड्रमाण (राम) i आस्त्रोयण गणियस्त्रोक्ती १ देलगा। २ इष्टि नजर (उप प्र १२७)। ओक्कोयण व जिल्लाको स्ता विश्व विद्वा कलपा देश घोनीवशक्एरा (मुख २ १)। जोसोयणा श्री जिन्होकता । १ केवना । २ व्येपला कोब (वय ४)। को त पंदि र पति स्वामी। र वरह प्रतिनिधि पुस्य धामपुरुव-विग्रेप (पिप)। ओड देशों क्स = मात (डे. १ दर) काप १७२) । क्षोड देशो एक = घळ व्। धोज्नेद (पि १११)। सक ओद्धार (स १३ ६६)। क्रमा भोडियांत (च ६२१) ओक्करण व [अवसन्त] एक नरफ-स्वान (विवेशक्र २००)। ओहण न [आईयण] गीला करना विवास (पि १११)। ओहर्या की दि । गाँवता, इसायबी धान-भीनी मादि मसामा से बंहरूव श्री (दे है tty) : ओक्टरण न कि स्माप सोना (के१ १६६)। को इस्टिंग वि दि ] पुत्र बीवा हुमा (दे १६३: सुपा ११२) । काहिनिय (सी) गीमें देनों (पि १११ मुख्य t 2) 1 का क्रिम वि [कात्रित] शास किया हुआ (पा विवे : सम्बं)। भोद्धीकी [के] पनक काई, गुलराती में 'বল' (বিহশ রভর) ৷ ओस्ट्य तक [वि + ध्दापश्] दुम्पना । टेश करणा। नवड आस्ट्रियाजेत (व ११२) । ४ कोल्ड्बयस्य (स ११२) । श्रोलुमगाबिय वि [दे] देवीजार। २ तिरह<sup>ां</sup> ओस्ट्विम वि [दे] केनी उस्दृष्टिय (नूर \$ \$45}1 आय न वि शानी वनैष्ट नी बरेपने के लिए रिया हुमा गर्त (हे १ १४१)।

पात सि ६ ७७ १३ २२)। ब्रोवहणी की [ब्रबपादिती] विदानितेप विश्वके प्रशास से स्वयं नीचे बाता है वा इसरे को नीचे बतास्ता है (तुम २, २)। ओबइय वि [अवपतित] १ वनतीर्छ, नीचे थाया ह्या (ते ६ २८ औष)। २ मा पड़ा क्ष्याः बाद्याक्ष्या (से ६, २६) । ६ नः वसन (दीव) । खायह्य वृंकी 👣 तीन इन्द्रिक्शना एक कुद अन्त भी कि वे देईदिया है देईदिया प्राप्त-विद्या परलका वं बद्दा --धोबदना चेदि खीवा हरिनसोडा (नीव १)। ओबह्य वि जीपभविको स्थित परिपूर (राज)। ओबगारिय वि [भीपद्मरिक्ष] उपरार गरी बाला (यव १६ ६)। कोचनारिय वि [औपश्चरिक] उपनार है विभिन्न वा स्थानायम्ब (शिक्ष ३ t)। ओकाग कर [अप + कस्य] १ व्यक्त करना। २ इसना मान्स्यक्त करना। गीवागद्ध कोवागड (दे ४ २%, ६ ११) । भोदमा छः [दप + दलाः आ + कम्] १ मान्यका करता । २ पदास्तव करता । धीवनकः (प्राप्त) । संक्र क्रीवरिराधि (प्राप्त) । काषमाहिय वि (श्रीपमहिक) वैन सपुर्वी केएक प्रचार का स्थलकरण को कारस विशेष से बोड़े समय के बिए सिमा भारता है (पच ६)। जोबम्पिश रि हि एपर्वास्पत रे प्रांतरूत देशाश्रम्य (देव ३ पाम तुर १३) 43) I ओषपाइय वि [औपपादिक] हरवार करने माना पीड़ा प्रशास राजेरामा 'तूर्व स भद्र वा विट्ठं न लविज्जीवनाहर्वे (दन द) । आपच कर किए + ग्राप्त ] नास कता, 'सुहाग मोन्ब नाबहर' (मरि)। ओवह यह [अप+भृत्] १ ग्रेचे इटना। २ कम होता, इटास-बान्त होता। मह-मोपर्दत (स्न ७११) । आवर् रू (अपवर्त्ते) १ हाम शाना ने धानानार, (रिमे १ ६१)।

कृष्टिकी ही वह (से ६ १४)।

के बोग्ब मौकर (प्रवी ११)।

म्प्रमान्यात (से २ **१**२) ।

नोचटुणा 🛍 [अपषर्चना] मायाकार, माग-

भोवद्रिञ्जन [दे] चाटु, कुरणसव (दे १

मोवह दि [अयदूष्ट] वरस् हुसा जिसने

धोवटू द्रं कि सवनर्षी १ वृष्टि, कारिष्ठ

र मेब-बस का सिचन (दे १ ११२)।

ओवट्टिइस नि [बीपस्थितिफ] उपस्थिति

कोवड सक शिव + पत् ] गिरना भीवे

क्रोबहण व [क्रबपतन] १ धव पात । २

पदमाः भट्ट-क्योवद्यसः (से १६ २८)।

२१६) ।

**१६२)** 1

इरए (राव)।

(से १ २६)।

क्षण का ही साहार करना एप-किछेप (अगw t) 1 ओवबिड नि व्यवस्थि हास (निव २ )। क्षोवददा की दि] भोड़नी का एक आग (\$ 2 2 2 2) क्षोबण त जिपवन विशेषा प्राप्तम (कुमा)। बावजिद्दियपू जिपनिदित खीपनिधिकी जिलाबर विरोप समीपस्य किया की सेमेरासा साद्ध (ठा ३ घीप)। कोबणिक्या को [औपनिविक्त] प्रमुप्ती विरोध धनुष्टम-विरोध (धीप)। भोगत एक [अप + वर्त्तम ] १ ज्वटा करता। २ फिसना भूमाना। ३ व्हेंकना। संद ओवच्चिय (स्व X)। इ ओवचेशस्त्र (E \$ 1) I भोगत्त वि [अपवृत्त] फिछना हुमा (है 4 48) 1 कोवत्तिय वि [अपवर्तित ] १ प्रमास हमा। २ क्तिच(फाया १. १—पत्र 👐)। बोपत्वाणिय वि [बीपस्थानिक] समा का नार्वं करनेपासा नीकर । की या (क्या ११ **११**) i

स्रोवम देवी ओवस्स पृष्टियपण्यक्य पिय क्रम्पनारा बोबर्न च महनारा (बीबस १४२)। ओव्सिय वि [औपमिक] उपमा-सम्बन्धी ओवर्षिय ) न [औपस्य] १ उपमा (ठा ८३ क्रोबस्स रे बर्ग्)। २ छपमान प्रमाण (सूध ११)। ओवय सक [सब + पन्] १ नीवे स्वरना। २ छा पदना । शक्त छो बर्धत ओपयमाण क्ष्यास ३७ ३ पि ३९३३ सावार १ ९)। ओवयण न दि अवपदनी मोहरणक चुनना (लामा **र**ीर—पत्र ३१)। ओषयण न [अषपतन] वदत्तरण नीचे उतरना (भग १ २--पन १७७)। ओबवाइयय वि [औपयाचित्रक] मनौती से प्राप्त किया हुआ। मनौदी से मिला हुआ (ब १)। ओवयारिय वि श्रीपनारिक अपनार स्रोपद्द नि [दपार्थ] सावे के करीन। संबन्धी (र्वजा६३ पूज्क ४ ६)। ोमोबरिया भी [धमोदरिका] बारह कोवर दू [व] किर, समूह (दे १ १५७)। कोषबाइय विजियपातिकी १ विस्की जलांच होती हो वह (वंच १)। १ ई संसाध प्राप्ती (बाधा) । ३ देव या नारक-बीव (वस ४)। ४ न देव वागरक श्रीव का राधेर (पंच १)। ३ वैन धागम-बन्च निशेप सीप पाविक मूच (बीप) । ओववाइय वि औिपपातिकी एक कम से इतरे जन्म में जनेवाका (सूध १ ११)। भावसम्मिय वि [भीपशर्मिक] १ छावर्ग से संगन्त रक्षनेवाला, क्यारव-समर्थ रीवादि। २ शब्ध-विशेष प्र पदा शावि धव्यय रूप शब्ध (भए)। कोबसमिक्ष पुंत जित्तपशिमकी १ काशन । २ वि छपराम से बस्पताः व छपराम होते पर होनेनाचा (विसे २१७४)। ओ वसेर व [दं] र चन्दन शुपन्नि काह-विशेष । २ वि रहि-योग्य (वे १ १७३) । ओवरसय देवी डयस्सय 'चट्टिबद घोषस्तय ष्ट्यं वेग्राहरस्बद्धां (पव ८१) । ओवइ एक [अघ÷वह ] १ वह बला बह् बलना। २ हूबना। क्वहः ओबुब्धसाण

(कस)।

खोषहारिक वि जीपहारिक] क्पनार संबन्धी (विक ७१)। कोवश्रिय वि [क्षीपिषक] भाषा छे प्रप्त विचरनेवासा (स्राया १ २)। ओवाअअ पूँ दि] प्रापातप वत-समूह नी गरमी ( पड )। भोवाइय केनी ओववाइय (चन)। कोवाहय रेखो सबयाह्य (सुपा ११६) । ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवासा (छ १)। ओबाडण न [अवपाटन] विदारण नाग्र (ठा२ ४)। ओवाडिय वि जियपाटिती विवास्ति (मौरा) । जोवाय सक शिप + याचा निनौदी करन्य। वह जीवार्यंत भोबाइयमाण (पुर १३ २ ६ शाया १ च—पत्र १९४)। आचाय प्रविचयपानी १ सेवा मिकि (ठा ३ २ भीर) । २ वर्षं गक्का (परहुर १) । ३ नीचे गिरमा (पराह १ ४)। ओवाय वि [कीपाय] उपाय-जन्म उपाय सक्तवी (उत्त १ २८)। ओवार एक [स्रप+शह्य] शा¥द्यादन करना बक्ता। श्रेष्ठ ओबारिअ (प्रि 324) I आयारि न [दे] बान्य मरने का एक प्रकार का सम्बाकोठा योग्यम (ग्राक)। कोषारिक वि वि कि किया हमा ग्रहिन इत (स ४८७ ४८)। ओवारित वि [अपवारित] प्राच्छारित बना ह्या (मे ६१)। काबास यक [अव + काशू ] रोफ्या विधवना । धोवासइ (प्राप)। जोवास धक [अव + द्वारा ] प्रवास पाना जपह मिनना । बीवामद (प्राप्तः कुमा ७ २६ प्राक्त ६६)। ओवास पुं[भवकारा] परकारः वाली नगर (पन्नमध्य से १ ५४)। आवास र् [चपत्रास] ज्यवास भोजनामार (पक्षम ४९, मध्)।

ओवासंतर पुन [अवस्परान्तर] धाहारा

कान (मग २ २ — नव ७७६)।

वाती है (सन ७२ डा १)।

आसम कः [कप+शमय्] करवान

करना । जीव चीलनेट्रिति (शिष्ट ६२६) ।

धरनार, संर (दे १ १६४) ।

स्वप्त १६) ।

आसह व [श्रीपम] साई, मेरन (मी<sup>17</sup>

बरता । ६ प्रदेशनु वरता प्रतेतिक वरता ।

पीषस्य (रि.१.२३१४) । वह आंसळेत

भोसबमात्र (१ ६, ७१ व ६४)। ब्रा

मोसदि ही की [बोपिंद] १ वनस्पति (पएए १) । २ नपरी-विरोग (राज) । महि दर प्र मिहियर ] पर्वत-विदोप (यण्ड 22)1 श्रोसहिश वि [आवस्थिक] चलार्य-चलावि बत को करनेवाला (मा ३४६)। ओसाधी दि र ग्रेस निराक्त (जी ४, बराका विस २५७६)। २ विस करत (वे १ 25 ( ) 1 ओसाअ पूंदि । प्रहार की पीड़ा (दे १ **१**१२) । आमाञ्च (अवस्थाय) दिम योख (न १३ 22 4 4, 28) 1 ओमार्अन वि [द] १ वैमाई नाता हुमा , श्चाचयो । २ बैठता । ३ बेदना-युक्त (६ १ 20 )1 ओसाञ्चय वि दि । १ महीराल वमीन का मानिक। २ वापीतान (पद्)। श्रोमाग न [अपसान] १ वन्त (स ४)। २ नमीपना सामीप्य (मूख १ ४)। आमात्र न [अवसान] दूर के मगीप स्वान दुरू इ पात निवास (बुस १ १४ ४)। आमाजिहाय वि [व] विदि-पूर्वक धनुष्टित (6 2 254) 1 ओमाय र् [अयरयाय] बीस निशा-बन (बाबम २१)। न्यासायण न [अवसादन] परिवारन, नाव (विम) ∤ ओसार नक [ अप + सारम ] हर हरता । मोसारेहि (र ४ c)। वर्गे मीसारिज्ञीन् (स ४१ ) । शक्तः ब्रोसारिषि (त्रवि)। कोसार पू [दे] के-बाट, गी-बाबा (दे १ 8×8)1 भामार र्व [अपमार] पपसरण (११६ १४)। श्रीसार रेपो कमार = २लार (श्रीर)। क्रोसार र् [भगमार] क्षत्र कश्चर (म १२, 1(35 ब्रोसारिज रि [अपमारित] पूर दिया हुमा, धानीत (मा ६६३ वडम २३ ८)। कोसारिक्र वि [ अपसारित ] चवनविवत, सटकाया हुपा (धीर) ।

क्योसाम (धः) देशो ओवास = परकार (पषि) । जोसिअ विदिशिधनत नव-पीति (दे १ ११ )। २ सपूर्व धमानारस ( पड )। आसिम वि [उपित] १ वसा ह्रमा एहा हमा(सूध १ १४ ४)। २ व्यवस्थितः (सुपर ४१२)। क्षोर्मिअंत वह [अवसे दम्] पीका पाता ह्मा (के १ १ स व ११)। ओसिंपिज रि वि कत गूँपा हुया (दे १ १६२ पाम)। आसिषित् रि (अपसेषितः विसेष करनेकासा (सूचर २)। आसिक्तिजन नि १ वर्तिन्यावात । २। धारीत-र्निनित (दे, १ १७६)। बोमित्त वि [अयमित्त] भौनावा ह्या मिक्क (स्थाप २:१११)। भोसित्त वि [वि] क्वस्टित (दे १ १६८)। आसिय वि [अवसित] १ पर्यंदरित । २ उपरान्त (मुद्ध १ १६) । २ भीत परामृत (बिस)। ओसिरम न नि न्यूल्डमैन परिवास (पह)। श्रोसाध वि वि] प्रवी-पुत्र प्रवनत (दे १ ११८)। आसीर **रे**नो उमीर (पळ्ड २, ६) । कासीस यक [अप+पून् ] १ पीछ इटना । २ धूमना फिरना । श्रंक आसा-सिङ्ग (दे १ ११२)। व्यामीस नि [झप+वृत्त] सरकृत (दे १ १५२)। आमुञ वि [हस्पृक] बलग्रिक (प्राप्त) । आर्युन्तिज वि चि उन्नेबिय वरित्त (दे 242): अस्म सक [अव+पातय] १ विध वैना। २ नर करता। कर्नशीसुध्येति (स ७ ९१)। वह आस्यह (से ४ १४) । क्वर ओसुरभव (वि १६१)। आमुक वक [तिय] बीरण वरना तेत्र क्या। योगुल्ह (१४ १ ४)। आसुक्क वि [अवशुद्ध] मूना हुवा (परम 23 WE 2, 24) 1 आसुक्तः चक [अव+शुप] सूनना।, **गा-** मोसुस्तात (१६ ६१) ।

कोसूद्ध वि दि र विनिपतित (दे १ ११७)। २ जिनाशित (मे १६ २२)। जोसबर्गन स्त्रो भोस स । ओसूय व [औरसुक्य] रूपुरता सन्दरस (बीप वि १२७ ए)। ओसायत्रा , की [अवस्थापना ] विद्या कोसीवणिया। विरुप विसक्त प्रमाद में इसर ओसोब्धा को याद निप्राचीन दिया था सकन 💃 (मुपा २२ । छाना १ १६ क्ष्म) । कोम्मक पू (अवध्यक्त) कासर्गण पाछे इटना (पप २) 1 ओस्मक्डण देखे जोसक्डग (रिंड २०३)। कोम्मा 👣 देवा आसा (१म) । ओरखाइ १ अवदार ने नाग दिनाग (चर्छ) । आह वेको अरोध (सन्दर ४ ता ११०) निषु १९, बोचर बम्म १ टी)। ५ मूर शाम-सम्बन्धी बाध्य (विमे ११७)। आह् नक जिम्म स्] नीच उठला। बोग्रह (हे ४ ८१)। आह प्रा आध] १ बत्सर्गे मामाम निवम (छंदि १२)। २ सामान्य साधारण (बर १)। १ प्रवाह (सम् ४७ दी)। ४ सलिम प्रवेश । इ. शासन-शार(भाषा २ १६ १ )। ६ संसार (सूच १ ६ ६)। श्वात िंश्यो शाक्र-विशेष (ग्रीदि १२)। आहंक व विशेषा ही (दे १ १६६)। माइंशिक्षया क्ये दि] युत्र बन्द्र-विशेष चनुर्वित्रय भीव-विशेष (शीव १)। ओइंतर वि [ओवतर] संसारपार इस्ते-बासा (मुनि) (धाचा)। लाईस पूर्वि १ बन्दन । २ विद्यार चन्दन विसा पाता है वह सिना, चलीटा या होरता (दे १ १६८)। आहर् धर [ अप + पदद् ] १ धम हाना श्राच पाना । २ पीछे इटना । ३ सक हटाना नितृत्व करता। बीहरूद् 🕃 🗸 ४१६)। बार-आहर्द्व (वेद ६ : नुपा २११)। आबद्वार्थ वि १ प्रशास्त्र । २ नीकी

किन्नम । १ वि माद्य गाँधे हटा हमा

(दे १ १६६३ मरि)।

के बीच की सुरक बगह, हीए। १ संह

विमान (दे १ १६७)। ४ वसनर-पन्

ओहार पुं [अवसार] निवसः इ.सि

ओहारइस् वि [अवधारियत्] भिषय करी-

कोहारक्तु वि [अवहारवितृ] दूसरे पर

ओहारण न [अवधारण] नियम निवय

भाषा औद्वार्येष प्रत्यिवकार्यिष च ऋषं न

मानिज सवा स दुव्यो (इस व ३)।

[ वत् ] निवयनामा (x YE)।

मिप्यामियोय बनानेवाला (एव)।

मिरोप (पर्स १ ६)।

बावा (स्व)।

(≰ ₹) ı

२ ६ पाइअसहसहण्यवा भोद्द १ वि [अपपट्ट ] निवारक ह्याने-ओइ क्षिय वि [अवन्यक्षित] विद्या हवा ओहरूप । नामा नियेषक (क्या १ २ भेगुवसोहतियगैडयदो' (गुर २ १०६ शाया १ १६: १८)। सल)। माइट्रिज दि दि] दूनरे वी दवकर हान से बोह्सी की [ वे ]योग समूह (सुरा ३९४)। प्रशेष (दे १ १४१) 1 कोइस स**र िरंप + इ**स ] उत्हास करता । कोइट्र र दि देश हम हमा (देश ११६)। बोह्सइ (नाट) । कवड़ आहसिर्जात (स लोइट वि विवयुष्ट निसा हुया (प्रस \$0 E) 1 कोइड वि [अपद्वत] ग्रेचे शायः ह्या (वस **इ**त कम्पित (दे १ १७३) । 2 2 62)

मोइस दि दि पदनन (दे १ १३६)।

\$ (1)

१६१)। इ आइमणिक्र (स =)। मोइसिअन[दे] १ वस्त्र कपहा। २ वि ओदसिअ वि [चपहसिन] जिनका क्यास भोडडणी की दि] यर्गना (दे १: १६ )। किया समाहो कह (ग ६ देह १७३ स ४४८)। ओहाइभ वि दि ] प्रवी-पुर्व (१ १६व)। भोद्दान्ज वि [अवधायित] चरित्र से भ्रष्ट (रतपूर १)। ओहाडय न [सदयाटन] प्रावस्वित-विदेय (वय १)। ओहाइण न [अथयान्त] दस्या प्रियान (गम १) । ओहाडणां धी है अवचानती १ रिवासी (वे १ १६१)। २ एक प्रसार की धोड़नी (बीव ३) आहाडिय वि [अवपादित] १ पि**रित कर** 

मोइरियभ वि [अपइस्तित] परिवाक, हर ओहारणी की [जनशरपी] निवयस्पर रियाह्या (मै ६४)। खाइय वि [उपहत] क्यवात-मात (शाबा ओहारियीं भी [अवभारियी] जर देखी आह्य वि [संबद्दत] विनारित (श्रीप) s विवाहमाः 'वहरानयक्वाडोहाडियामी' (व १--पत्र ७१) । २ स्ववित (झाव १) । मोदाण न [उपचान] स्थनन हरूना (वर ४) । ओहाण न [अवयान] उत्तरोप स्यान (धाषा) । ओहाण न [सनमावन] धरवमल गीधे इना (निष्कृ १६)। आहाम तक [तुस्रय] तीवना पुसना करना। बोजामइ (हें ४ २६)। सह धाहामंत्र (दुवा) । भोद्दामिय दि [नुस्तिन] तीला हुसा (पाम म्या २६६) । ओहामिक मि [यु] १ व्यविमृत (यह्)। २ तिरस्तुत (च ३१३: घोष ६ ) । ३ वन्द तिया हुथा, स्वक्ति 'बह बीलाबंधरवा धालेल बाहायिया सम्बर्ग (पत्रम ४१ ६) । कोहार तक [अव+धारय\_] निरुप नरना। संह आदारिभ (र्धान १६४)।

(भास १४)। भोइर नक [अप + इ.] सम्बद्धाः क्याः। ओहाव सक [का + कम्] बाहमल करना। वर्म बोहरीयामि (नि १४)। थोदारद (हे ४ १६ ) वह )। ओहर पट [सद+हू] देवाहोता वड होता। २ सक् उत्तटा करनाः ३ फिएनाः। **इंड- आइ**रिय (ग्राचा २: १: ७) । वय ८)। आहर न [उपगृह] संमा दृह नोमरी (पराह | साहरत न [अपहरल] उटा ने वाता. नी कोड़ देना (नव ६)। मपहार (का १७१)। आहरणान [द] १ दिनादन दिना। २ (निश्च ४८६)। घर्षमर धर्व की सम्भावना (दे १ १७४)। ६ मान हरिकार (न १६१ ६३७)। ४ (नय २१) । रिमाञ्ज (पर्)। आंदरित्र वि [ वे अपद्वत] १ डॅना ह्वमा बनावर (का १२६ ही स ४१ )। (म १३ १)। २ नीचे नियम हुमा (ते १ १७)। १ उताय हमा स्वर्मिक (बीब (काक)। ६)। ४ गानीन 'मोहरियमस्बन नार नहीं (पा ४)। आइरिम नि [ इ ] १ बावत जूना हुवा । र पू करत पिनने वी रिला, बगाँदा (है मोहाबिश वि [अवचाबित] पत्तप्रीत प्राप 1 (12) धन (रतपूर १)। भारम देनो उउत्पन्न (हे १ १७१। हुना) । भाषास पु [अवहास, नपहास] हंगी कारम तक [भा + रस्पु ] विपना । सीर इस्स (मध्यः मैं ४१)। योग्तिही (दुरा १३६) । विधिष्ट भिन्ना (मार ४)।

ओहाद सक [अव + भाव ] गीचे हुन्ता । क ओहार्क्त ओहार्केट (मीक १२६) ओद्दायम न [अवधायत] १ यत्तर्गह पनामन (दव १)। २ दीका है मामना **दी**का ओहारण न [अवसादन] प्रस्तान प्रपरीति आहायजा की [अपद्यापना] सार्वत तहुता ओद्दावणा 🛍 [अपमावना] डिस्सार, ओहावना भी [भाकान्ति] शास्त्रह भोद्दविभ वि [अपमावित] १ विधन्त (गुपा २२४) । २ म्बान म्बानि-प्राप्त (वर आहासण न [अवसायण] वाचना मार्-

ओहासिय वि [अवभाषित] यानित (वंबा 23 2 )1

ओहि पूड़ी [अवधि] १ मर्यादा सीमा हद (या १७ २ ६)। २ इस्पि-पदार्वका सबी न्त्रिय ज्ञान-पिरोध (उपा सङ्घा) । क्रिय-पू [ जिन ] सर्वकातवामा सङ्घ (पर्या २ १)। आज न किहान] धनविज्ञान (वन १)। जाजाबरण न "झानावरण] संबंधि ज्ञान का प्रतिकत्वक कर्म (कम्म १)। ब्रंसण न ["द्यान] त्यी बस्तु का सतीत्रिय सामान्य ज्ञान (सम १६)। इसिगायरण न विश्वर्शना धरण । अवविदर्शन का आकारक कर्म (ठा श) । नाय देनो गाग (शक) । मरण न ["सरण] नरण-विरोध (मम १३ ७)। ओडिअ वि [अवदीर्थ] उत्तय हुवा (हुमा)। ब्रोडिस वि स्रिधिक बीरप्रविक ग्रामान्य चप संज्ञा (मलू १६६३२)।

कोडिय्य विकिपसिम रोक्स हमा मन कावा हुमा (ने १३ २४)। को क्रियान दि] १ विपाद क्षेत्र । २ रमन बेगा व वि विचारित (दे १ १६८)। कोहिर देवो ओहीर । पीहरद ( पङ ) । ओहिर देखो ओहर = यप + हु। कर्म घोषि रिप्रामि (पि €व)। कोशीअंव वि अवहीयमानी क्रमत क्रम होता हमा (से १२ ४२)। ओवीण वि जिन्हीं से रेगेंग्रे रहा हुया (बनि १६)। २ धानत प्रवस्त हुवा (व १२ १७)। को हीर सक [नि+त्रा] सी बाता निहा नेना क्षि १ १२) । यक ओक्कीरमाण (लाया १ शंक्षा ३१ कप)। ओ दीर यक सिंतू विश्व होता। वह ओहीरंतं च सीचतं (पाप) । ओहीरिज वि जिवकीरित विरस्तत परि

ओ बीरिअ वि दि रे उदगौत । २ धवसप्र बिय (वे १ १६६)। छोडअ वि दि । प्रिमुक्त परमूत (दे १ १५८) । ओहंज देशो सबहंज। योहंबर (पवि)। ओहड कि दि विश्वत निमान (दे१ { 20 } 1 ओह्रप्पत वि [आऋम्यमाय] विसपर साह-मख किया बाता हो मह (से १ १ व)। ओहर कि दि र धरनत मनाज्ञ पूर्व (गउड)। २ खिन्न खेर-प्राप्त । ३ सस्त प्रमस्त ( £ 2 2 2 b) 1 ओ हुद्ध वि [दे] १ विश्व । १ स्वनतः नीवे भूका हुमा (मनि)। ओ दूष्णा व [अवधूनत] १ कस्प । २ एक हुन । ३ अपूर्व करता से निम्न प्रत्यि का भेव करना (बामा १ ६, १)। बोह्य दि [अवपूत] व्हाहित (बृह १)।

।। इस विरिपाद्मअसङ्ग्रहण्याचे भोषायदवहर्षकालो खब्यो तर्रयो वमलो। क्रसमधीए च नरविद्वाचीचि समसी ।।

मृत (मापा २ १)।

布 **११७)। बह्य वय बाह वि**ष्पय]

व्यक्तप्रवर, विश्वका स्वायत-स्वान शब्द है (बाप प्रमा) । २ आद्या (वेश २६) । व विष्टुए पाप का स्वीतार, 'क्रीत कई मे वार्षे (प्रावम)। ४ न पानी अक्ष (स ६११)। इ गुष्ट (मुर १६ ५६)। वेकी आ सका क्ष देखी किम् (बडड महा) । कअबंत देवो स्थ-त = इत्तरत् (प्राष्ट्र ६१) । क्द्र विवि [कति] कितना 'संगीते । क्द्रकिले भोगारेड (भव)। अदि 👣 करिएय कद्देपना 'मोप्नि जान तुरुक्, निवर्ट कद्द्रपन् रियोर्जु (पत्रम ६४ २७)। अन् नि [ पस्] वितय, वस्ति (६१ १४) । इस [पिन्] कॉएक (प्राप्त ३) । स्थित िंध] कितनावी कीत श्रीक्य का ? (विके )

कृपुंकि] १ प्राप्टर वर्ण-सल्याका प्रवस

करिक (पटम ६१ १६ उता यहः कुमा देश २१)। लग्न अवधि नदेवक (काम महा)। "शिक्ष कि "किश्र कितने प्रकार का (भग) । कड़ वि [कृतिम्] १ विक्षान, पविश्वत । २ पुरस्कान् (धूब २,१ ६)। क्यू च [किचित्] करी फिसी जबहु में। (बस्य २ १४) । कश्च [कदा] कर्न किस समय ? 'प्रशाई क्षण भरतके क्षणमार्थ कह यु क्रम्बहर हैं। (पा ६ १)। कह पू [करिय] कमर, बागर (बाध) । कहमांच [क्रियंक] कर्रेस्पेशला, धाहक बीम पू विशेष श्रीप श्रीप श्रीप (परमध्य १६)। द्वय स्वर् ["म्ब्रज]

१ नानर-शीप के एक राजा ना नाम (पदम ६ ८६) । २ सर्जुन(हे२ ६) । इसिञ न हिस्ति र स्वच्छ प्राकार में प्रचानक बीवती का वर्रोत । २ बानर के समान विक्रत पुँह का हैंसना (सम ३ ६)। क्षत्र केयो कति = कवि (पडार सुर १ २७) । कार (बार) पूंदिकी चेह कवि (पिय)। मा भी दिव ] नवित्व कवितन (वद् ) । "सव पू चित्र ] १ चेष्ठ वर्ष (पिय)। २ 'शबदवहाँ' नामक आहत काव्य के कर्ता वास्परियत-नामक कृषिः 'ध्यसि कृष्यपूर्वची बप्पदरायो कि पण्डलबी (सबद ७६७)। किएंती करमी होड, विदिल्ली व वास्तियों

(क्य १६, १४)।

২০ন

कार्शसम्बद्धी ११)।

र् पृति क्लिट, समूह (वे २

बाइअब न किंदर क्रिय, सम्ब (नुमा प्राप्त)।

कद्गुरुवास किया किया किस समय ? (पा

१३ कुमा)। क्षत्रप्रस्क वि वि विदासमा प्रमा (दे १ २१)। बर्टर ए बियोग्या थेत्र कवि (वस्त्र)। स्वरुक्त औ [स्विश्रक्तु] वृत्त-विशेष नेव'च चौंड, स्वाद्ध (वा ५६२) । **बहुराह की किन्द्रती** एका बतरब की एक एनी (पडम १६, २१)। कद्दश्य पू [कृपिरव] १ वृत्त-विकेप कैय का पेड । २ फा-विरोध क्षेत्र केवा (वा ६४१)। क्रम्म विकित्मी बक्ष्त में दे कीन सा? (ह १ Y= वा ११६)। कृतक्य देशी कृत्याच (तंद्र १३) । **कदबहा (इस) म किया किय किस समय ?** (ਜ਼ਹਾ)। कइयाइ स [क्बाचित्] किसी समय में (इप्र ४१६)। कार देवी कमर = कार (विश्व ४६६)। क्यर है कियर देश निर्देश के कारताब हिट्ठा रह बगरोडी दवियामरिव' (भा १६) 1 मद्ररव न किरवी कमत कुमूद (हे १ ११२)। कारम गुन किरव दिवस, 'नहरजो' (श्रीत ५)। **%इरविर्णा ध्ये [फेरवित्री]कुलिंग कारिया** (दुमा) । <del>बद्दस्थस वंचित्रस हो १ व्यक्ताय-क्यात</del> वर्वेत विदेव (पान्य, प्रवस ६ १६ क्या)।

२ मेव पर्वत (लिच्च १६) । ६ देव-विकेय

एक नाग-धान (कीन ६) । साथ पृश्चिया

बर्यासा की [केसासा शा] के निकेप

नगस्त्रपद्भल पू [दे] स्तम्कर वाध वैश्व

**सन्तिया हो | बे**] बराल विशेष पीक्सन

भीरपानी (गावा १ १ टी-पन ४३) 1

फरम (पर) वि किएउ | रैस (रूना) :

कन्या (सर्व केनी क्षत्रभा (नुसा ११६) ।

सर्विय केनी कर्षय (१४० २ ११) ।

महाचेन रित्न (दुया) । वैको कंद्रमस ।

नी पक स्ववाती (जीव ३)।

वि२ २%।

(पड)। कतरक ) ह [कीरव] १ कुव केत का कररक ) सवा । २ हंकी कुव वैस में करपस । ३ वि शूद (देत वा वंत) से पंदन्य रक्षनेवासा । ४ प्रव केरा में जन्मन (भाम नाट है १ १६२)। करु व दि । इ करीय गोर्डे का पूर्व (दे 2, 5) 1 कृतस्य न (क्रीस) सान्तिक सरका प्रवर्तक प्रम्य क्रीमोपनियम् वर्षेष्ठ । २ वि राज्यि का श्यासक । ३ तानिक भव की कालनेवाला । ¥ ता?चक मत का बनुवायी। **३ देव**ता-**ਕਿਰੇਕ**\* "विस्र सिण्योतभहारामुर्व **ध्याचे बनपरीत्म चन्द्रा** । कंथ कियू रिक्क बच (तेषु १६)। नमछे ज्यित नैवर्दाड **चंद्र व**िकारते, 'चंद्र वेद्र सिल्किट ए द्वर्णति तुर् क्टबलायेयो ( पढश)। क्टसम देवो कहरन (पंड) । क्टेंब पूर्व (क्ट्रिक्ट) १ पश्चिम क्टिय (पर्याहर १ करसम् पूर्व [कीशस्त्र] क्यूपा 'करस्त्रे' ( वीचि ६ शक्ष १ )। ब्रह्मस न [डीरास्त्र] भूरानता बश्चता शोशिमारी (हे १ १६२ प्राप्त) । करवा न [वें] निरुप, स्वा हमेशा (वे २ १)। क्ताइ प्रत [क्क्ट्रिय] १ तेल के अपने का कुम्बद्धाः र एतेम अन वर्गया राज-विद्या १ पर्वेद का सक्तमाग टीक (हे १ २२१)। ४ रिज्ञानन गुक्स कंक्यू कृति । बुल-विरोध, नावन्ता-'अनिरिमियमहुर्गतीत्वतानवंसर स्वाधिरायेम् । सहैम् रज्यमाला धर्मती सोईशिक्सस्ट्राः कॅटर पूं [क्रकूर] वर्ष, दवका 'रामो नारे ( शापा १ १७)। देखी क्ट्रहा

क उद्दार्धी [क्युप्स ] १ क्रिया (पूगा) । २

शीमा कान्ति । ३ कम्पाकै तूप्यो वी माचा।

क्य (धप) स [धुन ] क्यों से (हे ४ ४१६)।

कडअ दि दि । प्रवान मुक्य । २ पून

करको अय व किरोपको थ्रेट पर बंधी हुई

क्तक सहि बहुरी देनी काह = नपूर

विस्तृ निर्मात (दे २ १६)।

तक्षवार (हे १ १६२ वद्)।

"तळा चता सीर्नंच संदिमं धनस्त्रीससा दिएसा । बस्स क्एएं पियस्कि । सी नेघ वली वली वामी (धादपर)। कपल्ड वि [कृत] किया ह्मा 9 (2) 1 क्रमोय डिटा स्टॉ से १ (बाका कर च्या २६)। ह्रच क्रिकि [के] क्रिक वरफ क्योहर्स पंतर्क ?' (महा) । इधोद कि इसे फिट ल्याम के इसी बबानी ?' (खामा १ १४)। क्षमोज्ह वि क्रिक्स्यो बोहा बरम (वर्गीव **११२)** । क्योंक क्षेत्र क्योंक (हे १ ४६)।

बद्दललस् (बिन्ह १२)।

पच (नाट)।

(पणा १ ३) :

भाषतुप)। २ एक प्रकार शा सम**पू**र्व

थीर तीम्छ मोद्दा (स्प ४६४) । ६ इस

विशेष भारप्रमद्भाषाम्यत् (छ। १ ११

थै)। एक न विश्व शासु-विकेर, पण

प्रकार का बारा को ज़रहा है (वेसी १ र)!

कोइ पूर्त क्रिक्टी एक प्रकार का चोदा

(ज्य इ ३२६ सूपा २ ७)। बत्त देवी

सर्वकरे विद्वा बेंद्री (परम ४४ २१) बीग)।

कंप्रबद्ध रि [कहुटित] क्रम्पराला वर्मित

गानक प्रोपनि (का १ ११ टी)।

य किते विस्ते विश्वित विश्

क्यूजं 🕒 'वची सी वस्त क्यू बखेद वाही-

कपण | कडेनठाडेस् (कुम्मा ११। कुस)

(गा ४७३)-

'बनरख्यममियेखं कएल कामो बहुद भल'

संसद्ध्य-अंबुश्चीत केंक्बुम ) यूं [काइट्रुक] दुर्मेंच माप कंडबुग है करर की एक बारि जो क्सी परता ही नहीं भंकतुची विव मासी, सिर्कि म लोइ बन्स नवहारी (वर १)। **इंड**म ॥ [क्**डू**म] हान ना बानरास-विशेष क्यम (बा २०) रा ६१)। कंकम दुं [दे] चनुरिन्तिय चन्नु की एक बार्ति (उत्त ३६ १४७)। कंटणी ही किट्टण] हाव वा बामरश-विशेष 'सममेब मंचयीय बर्खीय वं क्षेक्सी बद्धा (ब्रुप्त १५६) । कंटित पुं [कट्टात] पाम विरोप (एव) । कंदरिका पुंची (काकुरीय) मान्यव वंश में ভবেন্দ (ধ্যৰ)। कंक्य वृं [कक्क] १ नायकता-नामक योपवि । २ सर्वे की एक बाखि । ६ दुंबी क्या, केश वैवास्ते का जनकराए (सूच १ ४)। इंक्सास प्रक्रिकसासी कर्केट, सीप की एक कार्ति (पाम)। क्षेत्रसी भी वि क्षेत्र नेश सैवाली मा उपम्पत्त (ती ११) । कंग्रह न [क्ट्राह] पन्नी भीर नांस रहित प्रतिकत्त्रकार 'वक्तानेपाए' (वा १६)-भाइ नरकरंककंकलक्षेत्रचे ग्रीचणुमहाणे' (बज्राद देन, १६)। कंद्रादंस र् [कङ्कावरा] बनस्पति-विशेष (पएस ११)। क्रीकृष्टि वेची क्षेत्रिक (मुगर ११६) हुमा) । **बंद्र**मा केवी कंकम = दे (तुब १६, १४७) । **फॅटिकि पूं [कडूंकि]** महोक बूछ (मै ६ विक्र २८)। ब्रेंकेडि प्रं [वे ब्रह्मेडि] बर्गाट बुल (वे २ देश वा ४ ४ गुपा १४ ३६१२, कुमा)। कंदोड व [दे कर्कोर] १ वमगाविश्वितीय नकरेल एक प्रकार नी सकती जी वर्धा में दी दोडी है (देन का पास)। न पू स्क नायराज । व सांप की एक बाति (हे १ १६ वर्)। बंदोस पूं [बद्दोस] १ कड्डोन बीतल-बीती के बृद्ध का एक मेद । २ तः वस बृद्ध का पनः 'समप्रोतार'ओल' रोबोल' (छप १ ३१

क्रेंस एक [काक्स् ] चाहना चीरना । कबाइ (हे ४ १६२ पड्)। क्टंशप न [काइएसप] नीने देशो (वर्गे २)। कंशा की [कार्या] र बाह, प्रनियाप (सूच १ १४) । २ झासफि युद्धि (मण)। ३ ग्रस बर्ग की बाहु ग्रमका उपने धार्मीक क्य सम्पन्त का एक मतिकार (पशि)। माहणिज्ञ न [मोहर्साय] कर्म-विशेष (भग)। कॅम्ब कि [ काव्यिम् ] कालेक्स्म (पाना गतक मूर १६ २४६)। क्टेशिज वि कि कि कि सामि र समिक पित । २ क्रांशा युक्तः चात्र्वामा (स्वाः यय) । क्षेतिर वि [काक्षित्र ] पार्वेशका धनि-नापी (वा दश सुपा दर्फ) । कार्या सी [इ] क्वी-क्टिय नांगी (पण्ड १)। क्रुं ब्रोन किल्ली १ कम्प-विशेष, करेनन या कोगा (य ७ ४ ७ १)। २ वस्सी-विधेय (पएए। १)। क्रांसिया थी [हे फ्लांसिका] विन-मन्दिर , नीएक बड़ी बाहातनो जिल-मन्दिर में या उन्ने नजरीक समु या बृक्ष ग्रेति का करना (वर्म २)। कंपण पुन (काकास) १ एक वेस-विमान (बेबल १६१)। २ वि शोने का, युवर्श का 'च'गर्ड बोर्ड' (गमा ११८)। पह न ['प्रेस] १ एल-विशेष । २ वि एल-विशेष का बना हुमा (वेवेन्त्र २९६) । पायम पू ["याद्य] बुश्च-विशेष (स ६७६) । भूष्यम वे विश्वभानी १ क्या-विशेष । २ स्व नाम-क्यात एक भेही (उप ७२= टी)। ३ न नुष्रुतं, बोमा (कप) । हर न विदर् क्षांना केश का एक मुक्त गगर (बाल)। कुत न किया १ सीमनस-नाथक पञ्चरकार पर्वतकायक शिकार (ठा७)। २ वेक-विमान-विदेश (तम १९)। १ रचक वर्गत का एक शिकार (ठा=)। क्रिक्शक् कीर ["केतकी] शता-विशेष (कुमा) । "तिस्रम न [रिद्युक] इस नाम का विद्यावर्ध का एक नगर (एक)। स्वयक्त र स्वयक्की स्थ नाम क्यात एक नगर (वंस) । "बखाभाग न िषद्धानक] चौराधी तीचों में एक सीर्थ का

नाग (धन) r सेड पुँ ["रीड] मेस्-पर्वत (रुप्रु) । क्षेत्रणम पूं [काञ्चनफ] १ पर्वत-विरोप (सम ७ )। २ काञ्चनक पर्यंत का निवासी देव (शीव ३)। क्षेत्रवा की किन्नुना रेमनाम क्यान एक की (परमुद्द ४) कि क्रीचणार पूँ किञ्चनार] कुश-विधेष (पटम **१३ ७६ कुमा) ।** केंबणिया की [काञ्चानिका] च्याल मन्ता (भीप)। क्षंचा (पै) देशो कण्या (प्राप्त) । कृषि ) की विश्वक्रि की र स्वताम-कराय क जो ई एक देश (कुमा) । २ कटी-देखता क्मर का बाधूयख (पाम्र)। १ स्वनाम-स्यात एक नवर (पुरा ४ ६) । र्क्स की हिं] मुरान के पूँद में रसकी जाती तोड़े की एक बसवाकार कीन सामी या शाम ( 2 5 1) क्षीरव न [री] पूज्य विदेव (बजा १ ८)। र्चभीरय व [काञ्चीरत] मुख्य-विशेष (बजा 2 =) 1 क्षु }र्द्र[क्ष्मुक] १ की कास्तरका केलुक कि वस बोली (पडम ६, ११ पाय)। २ एवं-त्रक सापकी देवशी देवशी (विसे २११७)। ६ वर्ग कवक (स्प ६ ६६)। ४ दूब-विधेय (हेर २४, ६) । ६ वस कपड़ाः 'वी चरिमञ्चा सरमा (सरम्) चौर्चनः कंत्रवं क्षपेरावा' (पतन ६४ १६)। र्भवृद् पु [क्रम्किम्] १ अन्त पूर का प्रती हार, बरवादी (लावा १ १) पत्रन म ६६ सूर २, १०६)। २ सीप (मिने २११७)। १ सर वर । ४ वराङ वना । १ वृक्षार, धनकृत में होनेवाचा एक प्रकार का धन बोन्हरी । ६ वि. जिसने कनच बादण किया क्षां वक्ष (है ४ २६६) । केंचुइव वि [क्षत्रकित] क पुरुवाता (दुना विपाद २)। **कंपुरक्ष पूँ [कन्नुकीय]** यन्तपूर ना प्रती श्वार (मन ११ ११)। कंतुइलंब वि विकासियानी कार्य की वस् भाषरण करता 'सेमेक्डेब्ट्रग्रांत-सम्मनती (सुतः १८१) ।

210

२१२०)। **ध्यु**ति देनो देनुद् (घछ)। इंचुलियाची [दश्रसिक] इंदनी चौती (क्यो । कंद्रक्ष औ दि ] हार, नएक्षभरत (यदि)। र्वाञ्चल न (नासिक) नाजिक (मुर १ ११६) कप्पी । बंट केवी बंटरा (तिंव २ ) । क्ट्रेन्ड्रेन् रि फिए ग्रायसानी १ क्एटक वैमा नरुग्ड नी तराइ याचरता (सं €, २०) । २ पुननित होता (धनु ६ )। क्षेत्रप्र दि [क्ष्टिकिन] रे क्एन्क्वला (म १६२)। २ रोमाचित पुनक्ति (दुमा करण्डांन देनी कंग्जेंन (गा ६७)।

कंग्लंड पूंकिप्टकिसी १ एवं बहा का वर्त्यः। २ दि क्लुकों संस्थान (सूच १३)। क्टन्द्र देनो क्टन्झ (परहर १ कुमा)। संदर्शक वि [दे] वएर-बोत (१ २, १७)। कंटरिय देनों कंट्राम (१२ ७१)। क्ट्रेग ५ दृष्टिलको १ तरा तरुक केंग्य र्रे (क्स इ.१.६) ३ २ रोमाख, पुरक (गा ६७)। ६ शङ्क दूरमन (लामा १ १) १४ द्विक मी पृष्ठ (वन ६) । ६ रूप (रिपा १ ) । ५ इ.चीरप्रक नस्तु (बन

१)। ७ व्योक्ति-शाल-प्रसिद्ध एक दुवीय (मल ११) । वांदिया की दि वर्ण्य-रागा (माचा २ १ ६)। **भं**डानी ध्ये [व] वननादि तिरोप वर्ष्ट वारिता मन्द्रीया (दे २, ४)। फॅटिय रि किफ्टिको १ कण्टकवाना. सगरमञ्जूषा २ इप्यनिकोर (का १ ३१ 113

**ष**्टिया **धी** [पष्टिता] बक्चांत्र-क्रिशेष (बृह् १ मादुर)। चेरी की [हे] दारण्ड करिटका, पर्वेत के

नवदीर की मूनि। 'रयाची रन्या एतु स्नामन्त्र पूर्वित्व भूमिलश्हरता। र्पंद्रेची निरुपति व प्रमेन्द्रमहत्त्रामीया (नदह)।

इटोस } देर ७)। **इ**द्ध वि शिक्ष स्पर। २ मर्गाव शीमा (दे २, ५१)। क्टर दे ( कियर ) १ यका भाग (कूमा)। २

समीप पास । ६ सञ्चन 'क्टिक्ट्यार्रिग्री शिषदर्गद्धिमा (दे २ १<)। दरसन्धित्र वि विरस्मिक्षित्र] पर्यद (पाप) । सुरव भ मुखी धामरख फिरेप (खावा ११)। मुर्गी भी "मुर्था यहे था एक धामराह (बीप)। मुद्दी वर्ष "मुन्ना विवेक्त एक षाकृत्रल (धन)। सुचन [भूत्र] १ मुक्त-बन्ध-विशेष । २ क्वे शा एक बागुपरा

(धीय) । क्रेड विकिल्यी १ वर्ड के <del>क्रान्त</del> । २ धरल मुक्स (निष्कु १६)। कंज्युंची की हिंदि र पत्न वनगढ के बापस में बेंबी हरी गाँठ। २ वने में सटकडी 🔰 मन्दी नागी-कृष्णि (दे ३ १८)। कंग्वीयार वे कि किस विकर (दे १ २४)। कंटमहान दि । १ टब्से मृत-तिमिकाः । २ सान-पःच, बाह्य (वे २ २ )।

**इं**टमा**ड** पूंची [ इण्डमा**ड** ] रोम-विशेष (इप ४७१)। **कं**ठव <u>प</u>्रीष्टक] स्वताम-स्वाद एक चौर नप्रयक्त (महा) ।

कटाउँटि च किप्टाअपिटी गमेनाचै में महर्ण कर (छाया १ २--यम ८०)। बैठास वि [क्ष्यमन्] वहा बनावाना

(वर्मीद १ १)। क्षंठिभा १ [वि] कारासी प्रतीकार (वे २ {Z} |

र्चेठिमा की [र्कण्डरा] यत का एक धामुक्ल (ना ७१)। कॅरीरज देखी वंदीरव (फिरान १७)।

क्टीरव दूं [क्फीरव] तिह्र, साहुस (मदी २१)। क्टेंड सरु [कुण्डू] १ बॉरि श्वीद्य श

दिनरा यस्य करता। २ सींबना। ३ भूजनाता । वह एडेर (ग्रीव ४९) वा १६१) क्टॅंबर (छावा १ ०)। **क्षंद्र न**[पाण्ण] १ येण्य का सर्वस्थातना

थाप भंजीति एक मन्तर श्रेष्ट्रमञानी नर्स-खेरवी (पव २६ दी)। कंड र्युन (क्यण्ड) १ वरण माठी। २

निम्बित समुदाय ३ दे पानी यत । इ पर्वे। ३ इस्त कास्क्रम्य । ६ मृत्त शी स्वचा। ७ बूल का बहु एक माद, बहुरे से काचाएँ निरम्ती हैं। ८ यज्य ना एक मादः स तुच्छा स्तवकः १ धरव घोड़ा। ११ प्रेट, शिव और केशता के सक्ष का एक दिल्ला। १२ रोड प्रत्रभाग की कामी हुई। १६ कुशानदा १४ लावा प्रतंशा ११ इन्त्रका হত্তলেরা। १६ एकाल, নির্মণ। १७ রুড षिठेय । १८ निर्मन प्रमी (दि ह ३ ) । १**१** बरसर, बन्तात (या ६१६)। २ समुद् (खाया १ व) । २१ बाख रार (का ६६६)। २ र देव-विमान-विद्येप (चन्न)। २६ मर्बंत वनैया का एक भाव (सन ६३) । २४ खर्ड दुक्त, ववयव (शादु १): ब्रह्मारिय पू िह्मारिक]

१ इन्द्र नाम का एक द्वाम । २ एक पान-नायफ (वय ७) । रेखो क्षंड्रग, कंडय । र्फंड दृद्धि | १ केन, कीन । २ वि दुर्बन । व विवय निपत्ति-इस्ट (दे २, ११)। क्षेत्रहरू देवो क्टब्रुश (स. ११ ) । चैष्ठइञ्चंत देवो कुंग्ड्जंत (मा ६७ म) ! चैंडग न [फुण्डक] १ संस्थातीत संबम-स्पल-

समूचाय (पित्र १६३१)। २ विकास पर्वत बादि का एक माग (सम १६१)। केंद्रस पूर्व (पाण्डफ) केंद्रो क्षेष्ट = शाम (बाषा बाषम) । २५ ईक्म-भेरिप-निरोत (इह ६)। २६ इस नाम ना एक प्रान (याच १) । देखी क्षेत्रय ।

क्षेडण व छिण्डली बीडि ववैद्य को नाम करमा तुप पुकारण (था २ )। अंडर्पटवा क्ये [दे] महनिका परशा (वे २ २३)।

**प्रदेश पूर (काण्डक) देखो क्षेत्र = नाए**ड तथा ब्रॉडन । २० बृश-विशेष राग्रतीं वा नैत्य बृध्यः 'गुमसी मूबाल मन रश्यकार्ण न र्वडमी (ठा )। २० तानीज **म**र्डासण वर्गात बंदवाई पद्यक्तिरिति धनगाई (गुर १६ ६२)।

केंडरीय वे किएडरीकी नरायच राजा ना एक पूर्व पुरुवधिक ना कोटा नाई, निधने उपा)।

बयों तक बैती बीका का पानन कर चल्त में

<del>प्रस्का त्यान कर दिया का (ग्रामा १ ११</del>

क्टरीय वि कियहरीकी १ वरोमन अ-

सम्बद्धः २ सप्रयान (सुधनि १४७) १५३)।

) की किन्दरिका क्षेत्र कराय

कंडलिया } (शि १११ हे र १व हुमा)। कंडबा की किंग्डमा] बाद्य-विशेष (राम) । केंद्रार सक चित् + की पुरुगा, कील-जाल कर ठीव करता । संक्र 'रतुर्यं बुने वह प्रधानवर्यो जवनिम 📦 देहरिएम्भवराजोन्बरादाराज्यम् वर्धे स्तेत पहलं कुमधेलमंग कंडारिकण पम्बंद पूछा दुर्गमें (क्यू)। क्षावेस्की ही फायहवड़ी बनस्पति-विशेष (पर्य १)। क्टेंडिज वि [क्पिडत] साफ-मुख्य किया हुता (x 6 66x) 1 क्षेत्रियायण न क्षिप्रकायनी नेतानी (बिहार) का एक चैरम (मग १५)। कंडिस पुं[काण्डिस्य] १ कारिक्स्य-नोत मा प्रवर्शन ऋषि-विशेष । २ पृथ्वी कारिकम गोब क्रमा १ न धोष-विरोध को मारकम गोभ की एक शास्त्र है (ठा ७-पत्र ६६ )। ायण दे शियस्ते स्वनाम-स्वातः ऋषि-विशेष (चंद १)। कंड् रेको कंड् (एव)। क्षेत्र केवो क्षेत्र (सूत्र १:३)। क्षेत्रका सक [ क्ष्म्यसूच् ] कुमवाना । कब्रुवार (हे १ १२१ वन) केंद्रपद (पि ४६१)। बक्त कड्राजेव (वा ४६ ) कंड्राजमाण (बास २८)। क्षंत्रक पू [कारद्विक] इतवार, गिठाई वेवने-बाला 'राया विशेष क्यो व्यूक्तस क्ल रंतरमण्डसंपत्ती (' (ग्रावम) । क्ष्मुका । पुं [कन्दुक] येंव (वे व ४०, कंदरा चित्र)ः क्षुक्तुय वि [बाव्डजुं] वास की तरह सीना (स ६१७) गा ६५२) । कंद्र्यरा वि [कंप्यूयक] बुनानेवाला (धीप)।

क्रमण न [क्रम्यूयन] १ चुनती बान

पामा रोक्षशिया २ सुबक्ताः पामाग्रीह

११५ उम् २६४ टी गरण) । कंड्र्यय वेको कंड्र्यमा 'सकंड्रमपूर्वे (परह २. १--पत्र १ )। कंडर वूं [कायुरु] समामनवात एक राजा जिसने एमचना के माई भएत के साथ बैनी बीका भी भी (पराम ८४, ४) । क्षेत्र की [क्षण्या ] १ मुनवाहट मुनवाना (साथा १ ६)। २ रोम-विशेष पामा जान (गामा १ १६)। बोह्द की [६ण्डूति] अपर देखी (गा १६२) मुर २ २१) । कंड्रूज्ञ न [कप्यूयित] बुनवाना (लुम १ ३ व वा १८१)। कंडूय केलो कंडूका = कर्युत्। कंडूयह (महा)। **गड फंड्**यमाण (महा) । कंड्रवग वि [क्ल्क्यक] जुनवलेवाता (ठा ३ १)। कंत्र्यण देशो कंत्र्यण (उप २११) पुरा tue 220) 1 कंब्रुयय केलो कब्रुबग (महा)। कंबर प्रेचि कर बतुता (दे २ १)। क्षेत्र्य वि किण्युको बाववासा क्यानुपूछ (गुन्ध) । क्टब सक [कुल्] १ कल्ला, बेरला। २ काराना चरके से सुदा बनाना 'साई कीरीय क्याखों (सुध १ ६, १ )। शैतायि (विकास 32)1 क्व वि किन्दी १ मनोबर, मुखर (कुमा) । २ धानिमापित बाजिब्रहा (खाया १ १)। ६ पुंपति स्थामी (पाधा)। ४ केर किरोप (सुक १६)। र.म. कान्ति प्रमा (धाका २ ११)। वर्ध्य वि विज्ञन्त नित प्रकार क्षमा (प्राप) । कंदाकी [कान्दा] १ की नारी (सुर ६ १४ सुपा १७६)। २ रावस्त्र की एक प्रती का नाम (पडम ७४ ११)। १ एक योग-रहि (राष)। क्देशर न [कान्सार] १ प्रप्राय अंकल (पास्प) । २ इ.छ. दूषिका व निकासमा ४ पायम (कप्यू) । फैवार पुन [मान्तार] बस-फ्रमावि-पीरव सरएय, चेतारी (सम्पत्त १११)।

288 कवि की [कान्ति] १ तेन प्रकाश (सर २, २३६)। २ सोमा सीन्दर्य (पाप)। ३ इस नाम की रावस्त्र की एक पन्नी (पराम ७४ ११)। ४ महिला (पर्राप्त २,१)। १ इच्छा। ६ जन्म की एक कला (राज विकाद ७)। पुरी की पिरी नगरी-क्रिय (वी)। म. छ वि [भन् ] कान्वि पूर्क (शावम गतव शुपा क १वड) । कविकी कितन्ति १ परिवर्तन केरफार । र गमन पछ (माट---विक र )। क्ट्र है वि काम कामके (वे २ १)। क्षेत्रक ो पूँ कि सकी सब की एक जाति -(ठा४ ३) बता २३) 'जहा से कंबय े कंबोयायां माहले कंबय सियां (क्व ११) । क्षेमा की [कृत्या] क्यांगी पुराने वक्ष वे नग ह्या श्रोहना (हे १ १८७) । क्षार पूँ [कन्धार] क्य-क्रियेच (उप २२ क्ष) ( र्कपारिया ) श्री [कम्बारिका, री] कुछ क्यारी 🕽 विरोप (चर १ ३१ टी) । यज न चिन्ती समेत के संगीप का एक बंगत वहां अवन्तीसूक्रमार-नामक कैन सुनि वे धन शन बत किया ना (धान)। कॅपेर दू [कन्येर] इस-विशेष (यव) : कन्परी भी [कन्पेरी] क्यूटकनव क्श-विधेप (कर १२)। क्षंत् यक [कृत्यू] कांदना रोना। क्षंत्र (पि २३१)। भूका कॅलिमु (ति ११६)। बहुत कर्वेद (गा १८४) कम्ब्रमाण (ए।या 1 (9 9 क्दं वि [दे] १ इकं नप्रभूतः। २ नत क्रमचे। ६ व स्वरण धान्यासन, (दे २, 1 (95 क्रेंद्र हुँ [क्रम्य, क्रन्द्रित] व्यन्तर देवी की एक कावि (ठा३ ३—पन बरे)। कर पू [फन्द] र प्रदेशार और विना रेशे की वदः वशीकन्द, सूरत शकरकन्द, विभागीकन्द, श्रील गावर, सङ्गुत वरीरह (बी १)। २ मूल बङ्ग (पड़ार) । ३ द्यन्य विरोग (पिय) । क्षेत् प्र [स्कन्द] शासिकेय, पशानन (कुमा ≹१ ४ वर्)≀

विदेय (पाग्य १)। क्रेन्सिम १ वि [क्रन्तिन] श्रेष्ट्रीय (गुगा बंदिक । ति देश्या र्फरन्दी ध्यै [कन्द्रस्त्र] १ नता किरोप (कुत्त ह रच १६ व६)। १ व्यंद्र, प्रचेट्ट, 'ररि(रर्मा'र्नागणसो' (दर ७२ थे) । मॅर्रमी भी [पन्द्रसः] गन्द-रिशेष (उत्त ६६

( (() पंगरिय व [बास्यविक] ह्वनाई, विद्याई बेचनेराचा (इर १११ है)। चें(र १ मिन्शर करिताड़ी क्वित नवर के निराय का एक (टा के ४---पत 52) I

**पं**रिय पूं [धन्दित] १ क्लाप्टियर देतें की

ाप मार्चि (सार् १ ४' घोष) । २ स. रोदन

बाम्य (बन २) ।

रण) । रवड़ क्विजी (स ६ १ १ १३ 28) । प्रयो वह बंदाबित (बुदा १६३) । क्षेप पूर्वकरूपी बस्त्रीय वतन दिलन (कृपा धाउ)। क्षेत्र हु (है) पविष्ठ प्रुवास्टि (है २ ७) श्रंपण न [फम्पन] १ वश्र हिमन (मनि)। २ रोग-सिरेय। बाइस वि [वातिक] क्ष्म असूत्रामक सेवशना (धन् ६)। **वॅ**पि रि**व्य**न्पिम] नास्त्रात्र (क्णू) । वंपित्र नि [बस्पित] नाग हुमा (पुत्रा) : र्श्वीपेर वि [क्कियनू] नाननामा (गा ६११

या २७)।

नुश ११

(बर६ ही) ह

व्येषित है। विश्वपत्रम् ] बारनेवाना सस्यिछ निवनरियमं परमपाटि वरिक्रनामपूरं र्र [पर्याम] प्रमुक्तित (हा १ १)। पंपनि है [कारिय 0] १ महुबेदीय राजा नदारव र् ['संदारव] रूका दिन् धन्तरवृत्ति के एक पुत्र का बाध (धन्त ३) । (रिय)।

श्रीय वि (बास्तीक) कारीय देश में प्रशास (च € )। चैभारपूर फिटमीरी इस नाम ना ९६ प्रसिद्ध केत (हेर, ६ ≼ः पट्)। जन्म ग [जनद] बुद्रम केशर (बुमा) । देनी कम्दार । फेम्र (या) जार रेनो (वह ) । पंस पुंडिसी ? राजा अबनेन हा एक दुन थीइच्छ वा मानून (परह १ ४)। २ महा बर-स्थिप (क्ष. २, १—पन ७ ) । ३ नामा ल्कप्रकार की मानू (शाका रै ७—पप ११)। जास र् नियमी शास्त्रीरी (तुल २ ३ इक) । बज्जा दे [यर्ग]

बह-निधेन (छ २ ६---नत्र ७ )। राज्याम

केंद्र न [करेश] १ बानु विशेष कांवा । २ बाय-विशेष । २ परिमाण विशेष । ४ बाय पीने का पीन प्याचा (है ? २१, ७ )। "तास न ["वाज] वाप-विशेष (वीच २)। "वची, पाई की ["याजी] बोचा का बना हुमा पत्म-विशेष (क्या ठा १)। पाय न ["पाञ्च] बोचा का बना हुमा पाम (वस ६)। कंसार हु [यू] कचार, पर प्रकार की मिठाई, "वा करंडण कंसार वामपुष्यं कुष्ये चेने विश्वमीयन गोने उच्छोपि प्याणें (च १००)। कंसारी की [यू] कीन्द्रिय कुष्य चन्नु वी एक वालि (की १०)। कंसास कु [कांस्पास] बाय-विशेष (है २ १९ पाण १)।

कंमाझा को [कंसताख्य, कोखनाख्य] वाच वा एक प्रस्तर वा निर्मेष वाच (वृधि)। कंमाखिया को [कंस्प्ताखिका] एक प्रकार का बाच (धुरा २४२)।

स्मिन्न पुंडिस्कि । वन्य वैश्वापे वास्त्रकार (हृ १ ७ )। २ वाय विशेष (गुरा २४२)। स्मिन्ना से [केस्स्क] १ ठाव (शाया १ १७)। २ वास्त्रकारेय (सामा २)।

क्षकाचि पूँची [वे] नर्मस्थान "धसस विन्तरि कवाएमी थे" (मूम १ १ २ २ ११)।

क्छूप ) रेजो कब्द्र=वहुव (पि २ १) पञ्चम ) ह २,१७४)।

सनुद्ध देखों काइड् = कनुष (ठा ६, १ शाया १ (७ विचा १२)। १ इतिर्गश का एक राजा (पडम २२ ६६)।

ककुदा देशो कडहा (बर् ) ।

कमः प्रैकिन है उत्तर्धन क्या स्वर्धर पर का मैत दूर करने के लिए लगामा काला स्थ्य (कूम है दिन्दू है)। देल पान्न (क्या हैर है)। है मानक क्याट (सम्बर्ध)। गहरा निहान की माना क्याट (सम्बर्ध)। र—पत्तर दर्भ।

यक्त पून [बर्स] १ व्यन्त स्वाधि उद्यन्त हत्य (इस १, ६४) । २ प्रमुखि ऐस साधि में , निया बाता सार-माजन । १ नोस साधि है ।

च्यार्थन (पत्र २.—गावा ११४)। कुरुवाकी ["करुका] माता करट (पत्र २)। कक्क पुँकिकी] I वक्रमती का एक देव-कृत

इक्क पुंक्ति । वक्ष्मणी का एक देश-हर प्रासाद (उत्त १६ १६)। र चारित विदेष कर्म चरित (यसीव ६६)।

कक्षेत्र गुं [कक्षेत्र] प्रकृषिष्ठासक देव विशेष (ठा २ वे) ।

कक्षेत्र की [कक्ष्मेतु] वर ना दृश (पाय)। कक्षक पु [कक्षम] कर्मपति (विचार १ ६)। कक्षक न [कक्षम] । यसवामु कियेन कुसीर

कड न [कक-]ाथन-४-१-वस्य द्वार (यास)। २ कवसी पत्र्य निरोध (पन ४)। ३ द्वरस्य नाएक प्रकारका नामु(सस १ ४)।

क्षाहरू पुंक्तिमा करनी चीप (क्या)। क्षाहिया को किहीटना, टी करनी क्षाहिया है (चीप) कानाव (का १६१)।

कक्कमा स्वी [कक्कना] १ पार । २ मामा (पएइ १ २)। कक्कम पूँ दि] दुइ बनाते समय स्वी रह्नु-स्य

भी एक प्रमासा क्षु रस का विकार विशेष (रिंड २ व व ) । क्ष्म्बस् पुंष्टिकरां ! कॅकर, पत्वर (विपा १ २ यं उड सुता ४ भ सासू १६०) । २ विकारिक, पाप (साम्च ४) । व ककर प्रात्तास वासा (उटा ७)।

बाराज नामा (उत्त ७)। इन्हरप्यज्ञा स्मी [कर्करणाना] १ धोर्याच्यावन क्षेपोन्त्रावनमधित प्रकाप (ठा ३ ६—पव १४०)।

ककराइय न [कर्करायित] १ नर्कर की तरह सामस्ति । २ कोपोबास्त्र कीय-प्रकरन (याव ४)।

सक्तर वि [यक्तर] १ नकीर, यका (याय गुरा १८ सारा १४ नवार ११ १६)। २ सार- कारा १ ने तीव प्रसाद (विचा १ १)। ४ सीन्द्र हानि नारक (सन् १, ३६)। १ तन्द्रार, निर्देश (जार)। ६ बचा-बचा कर मन्त्र हुएसा बचन (साचा २ ४ १)।

क्षमा ) पुँचि सम्मोदन करान (वे कक्षमार ) २ ४)। कक्षमंत्र पुँक्षकमान् वालीत क्षमिरही काल में उदारन एक हतनान ब्याल बुलकर पुरुष (राज)।

चक्रालुजा स्त्री [कर्चन्छ] १ कृष्णाएड वही, कोंरुस का माध्यः 'क्वालुमा गोधव्यनि सर्वेटा' (मुन्य ४१)। क्रिकेटड पुंचि ] इक्तास गिरमिट पुजराती

में 'काकेशो' (२ र १)।
पछि पुंकित्रम् आवस्य में होनेवाना
पाटिश्व का एक स्वा। (वी)।
क्षित्र म [क्षित्र क] मोग (सुम १ ११)।
क्षित्र म पुंकित को स्वा एक की एक बादि
(चण दक्ष १ ७१)।

कनकराश हूँ [कर्केरक] ग्रांण-विशेष नी एक नाति (पुन्क २ २) । कनश्रक न [कर्केट] शान विशेष कनरेत क्योग (पात) क्लो कनश्रक । करकाबह स्त्री [कर्कोनक] कनो का बुख

करकोड हैं भी [कर्कोनक] करोड का बुध करते का गाय (पाए ?—पा २१)। करकोड पा [कर्कोटक] देवी धननके । १ पु पद्मेनकप्तानानेक एक नामन्यात । १ उपका बानाय पर्यंत (मा १ १ एक) । करकोब पू [क्रहोत्र] १ ब्रा-निरोप गीतक बीगी के बुध का एक मेर (गडार छ ४१)। २ म. फार्नानियो में पुरोधी होता है (पाह २ १) वेबी कंडोड । करकोबी भी [क्रहाड़े] बुध-निरोप (दुध

क्कम बेंबी क्रम्छ = क्य (उस क्रम धुर १ बद पउम ४४ १ पि ११ स ४२ )। क्षम्यम वि [क्काम] १ क्या-प्राप्त । २ दु बचा ना नेश (वह १६)।

288)1

कम्मलाह रेको कम्मस्स (सम् ४१ छा १ १/ वस्त्राच सन्।।

वज्ञाय धने)। कबन्यक्षति [दे] पीन, हुट (दे ३११ कप्पः स्थापा धनि)।

क्षकरप्रदेशी की [ है ] छक्की सहैकी (है २ ११)।

११)। करुरात [के] चेता करुरात ( यह् )। करुरात चेत्री करुदा = कथा (गाय छादा

१ म गूर ११ २२१)। कम्पाद तुं [ते] र मधानामें विश्वविध नटबीखाः २ विधार दुव की मनाई हि

नदर्भाषः । २ विमारः दूव की मनाई (वे २, १४) । करणायकः वृं [ द ] दिनादः, दूव का निकादः

तून नी बनाई (दे २ २२)।

कच्छुल- यहा क्ष्मञ्जूस र्व [क्षण्युक्त] पुस्प-विशेष (पएस १---पम ३२) । म्बस्युद्ध वृं (क्रप्युद्ध) स्वनाम स्थात एक नारव-पुनि (लाया १ १६)। क्रवाह् देती क्रवह्म (प्राप्तू ७२) । कच्छोटी की [य] कछीटी नंगोटी (रया-टि)। यस्य दि [कार्य] १ को दिया जाय वह। २ करने योग्य । १ जो निया का सक (दे र २४)। १ म. प्रदीवन स्ट्रेस न य गाहेड सदरमें (प्राप्तु २७ कप्तु) । १ करण्य हेनु (बर ≺)।६ कास काज धमह परिचितित्वह, सहरित्तरं हुम्बप्ता दिपएल । परिएम६ प्रान्तह न्विय

क्रमारंभी निक्किण

(TCY 15)1 প্ৰাতা দি ["হ্ৰা] বাৰ্থ কা মাননবালা (তা eve) : मेण वृं [सिन] धतीत उत्मर्पणी शास में इत्यन्त स्वताम स्यात एक बुलकर

पुग्य (यम ११ )। रुज्ञां (शी) की [सम्परा] सम्बा गुमापे (মার খও)।

कञ्च उड पू [रे] धनपं (दे २, १७)। क्ञमाय वि [दियमाण] वा विवा कता हा बद् 'चरब' च करत्याएँ च सायमिस्सं भ पानर्ग (नुम १: ८) ।

ब्रज्ञात क्रजात] १ कावन समी। २ चञ्च नुरमा (नुमा)। <sup>क</sup>पामा क्षे [ प्रभा ] गुद्दग्रना-नामक जम्मू-बुध की उत्तर । दिया म स्थित एक पूप्परिएरी (बीव १)। यञ्चलका वि [यञ्चलित] १ राजनाता ।

२ रमाम इप्या (बाम)। फन्नदेगी भी [कन्नसाहा] करवान्तर, बीर के उत्तर एगा जाता पात्र जिनमें बाजन दरदूर होता है अन्यरीती (येव स्ताया ह

1-44 (): **क्ष**ज्ञमा अ[क्ष्मसा] दा नाम शो तक कुरवितानी (इस) ।

पञ्चास्य पर [पुर्] हुग्ना पूरना बाच्यो मन्त्रा । पर्व वे स्रात्तर उदय

इतियेणु शासका, जनस्वरि वा खावा कन्य सार्थ (याचा २ ३ १ ११)। यह-क्षञ्चलसाय (पाषा २ ३ १ १६) । क्टासिल रेखी फाजस्वाज (से २ १६ द±चय १⊈[दे] १ विहासमा। २ <del>त्</del>रण कार्यय विष्टमा सपूर मुद्रा नतनार (दे २, ११ धर १७१३ १६३ स २६४)

दे६ ५६३ चल्)। कृष्टिय वि [कार्यिक] पार्याची प्रयोजनायी : (शव १) । कञ्चावम 🐧 [कार्योपम] घडावी महापही में तक दह का नाम (ठा २, ६--यव ७८)। कामाल न दि] मैनाम एक प्रकार की थात जो अभागमाँ में सबती है (दे र द)। करुरि (ग्रप) म [करर] इन चर्चों का

धोतक बच्चय-१ माधर्य विस्मय 'कटरि कर्णतद मुख्यहे च मसु विश्वन नार्र (है ४ ३५ ) । २ प्रशेसा, रक्तामा चटरि यानु मुरिसानु कटरि युक्कमस पमन्तिमर्ग (कम्म ११के)। मनार (यर) न [ न ] युधे खुरिना (है ४

YYYX) 1 फटु नरु [ सुग् ] नामा देशना। बहुद (मरि)। सेंड कड़ि, कड़िय कड़िय (रमा मिंग निय)। कट्टीर [पृक्त] काटा हुआ। दिला (उस

बहुन[ब्ह्]१ दुन्छ। २ वि बहुकारक नप्रशाद (पिम)।

कहर पूर्व दियों नहीं में बाना हवा भी ना महा साथ रिकेप (शिक्ष ६३७) ।

कट्ट न [बे] यान्य बंश दूसदा से वाना विस्तयरहरे इ का विकास रहे न का (बनु)। षष्ट्रराय न 👣 पुरी राष्ट्र-विदेश (स १८६) । बहारा गै [वे] बुरिका हुए (६२ ४)। पहिमानि [क्लिन] कान हमा होत्ति (रिग)।

करदू रि [यन् ] वर्षा, बलवाना (यह ) । बद्दु थ [बुद्धा] बरहे (गावा १ १ वण मप्)।

क्ट्रोरग र् [बे] कटोय प्याना पार-स्थिप तको पावेहि कराज्या क्ट्रीरपा मंडूबा निप्पाधा य ठविण्यति (निवू १)।

यद्भ विष्टी १ दुग्ध पीइर व्यमा (दुमा)। २ परा । ६ वि कष्ट-दायक पीड़ा-शास्क (६२ १४: १)। हरत [शु(] बङ-यस काठ की बनो हुई बास्ट्रीसरी (मुर २ 1 (935

बहुत (काछ) काठ लक्की (कुमा मुता **३**५४)।२ पूँ धनगृह नगरका निरामी रक स्त्रताम-करात बेटी । (बारम)। श्रूम्मन न ["क्मान्त] नकड़ी का कारवाना (बाबा २ २)। करंग न ["करपा] स्वामन-मामक पृहस्य के एक खेत का नाम (कप्प)। कार हुँ [ बार] बाठ-कर्म स बीरिया चनानवामा (पाए)। क्रीसंप पू ["क्रीसम्ब] बून की शासा के मीचे मुक्ता हुमा घष-माग (सन्)। न्याय पू ["साव] कीर-विधेर पूछ (दा ४)। दंजन [दंख] यदर की शाम (चत्र) । पात्र्यां भी [पादुश्च] काठका पता पदाई (बर्द्ध ४)। पुरुखिया दी [ पुचितिका] बञ्जूवनी (बणु)। पिछा की पिया र पूँच बर्ग छ। काम । २ प्रत न तमी हुई तर्मुम की राव (उक्त)। सह न [ मध् ] पूप-मगरन (नूमा)। सूल न [मूछ] दिश्म पान्य विश्ववादी रकड़ा समान हाता है ऐसा बना मूँग साहि मन्न (इह १)। हार पूं ["दार] मीन्त्रिय मनु-विशेष युद्र बीट विशेष (भीव १)। दारय पू [दार इ] नव्हत, नक्दरात

क्ट्र विक्रिप्ट विसिधित बामा हवा भीर दुनरहु परहोत्या इंपछे य भीती थे (बीप 998) 1 बहुय व [क्या ] धारपेल । गीकार

(पुत्रा १८१) ।

(dar) r पद्भार प्रे [फास्टार] नद्या तनहत्रत वाद्यसद्दर (दुव १ ४) ।

यहा भौ [काहा] १ क्रिय (नग ex) । २ हर, नीमा 'बररम्म घरा परा बहुा' (बा १६) । ३ कार का एक परिकास बहाए निमा (तेषु) । ४ श्रदर्य (गुज्ञ १) ।

215 सद्भित्र [दे] चारामी प्रतीहार (दे२ (X) 1 कटिओ वि विशिष्टिती कार से संस्थात और वर्षेष्ट्र (द्वाचा २ ३)। बट्टिय रेचो बदिज (शर—मामती ११)। षट्ठा वि [काध्य] देनो कृट्रिय-नाष्ट्रित (बाचा २ २ १ ६)। बद्वास देवो क्ट्र = इा (निंड १२)। कद्राविद्वी रक्षील दुर्वन । २ मृत विनट ( R R X 1) 1 बद्ध वृं किए । १ वाण्ड-वन नान (खाया १ १ दद (४) । २ तूल यास । ६ चराई, बाह्यरण-रिरेप (ठा ४ ४ वव २७१)। च सकड़ी बाँट देनि च पूर्व लगाणिट्ट बद्धाराण्यंतियार्ग्यं (बसु)। १ बेरा **शान (श्या १ ६ ठा ४ ४) । ६ इ**ए विरेग (ठा ४ ४)। ७ दिना हुमा नाह (बाबा १ २ १)। गद्धन्त म ["गस्य] बला रिटेप (बीर वे २) । तह न विट १ वटक का एक बाग । २ सम्ब तत (लाया ११)। प्रयागानी [प्रता] ध्वना रिहेप (मिरे २६ (६)। क्द्र रिहिन्दी १ शिया हुआ। बनाया हुमा, र्चित (सम पाउन र ह दिया है है। क्य बुता १६) १ बून यून रिकेश रख्युम (टा १ १) १ चार की छन्या (सूच १ २)। जुगन [ैयुग] नथ्य-पूप जप्रति काशनव याध्या ३० क्यों रा मापून होता है (टा∀ ३) 🖠 [ मुग्म] नव शांश-विरेण कार में आग देत पर जिसम पूछ भी क्षेत्र स वय तैनी र्चिष्य १ १) स्थापराज्या १ [ युग्मपृत्रगुम्म] चितिः विदेश (अव ३४ t) । तुरमर्शन्त्राय [युग्मप्रस्याज] राति स्थित (जा ६४ ६) । जनसंश्राध र्म[द्राय काज] चॉछ स्टिंग (वन ३४ t) गुमशावरज्ञाम ई श्रिमशावर यामी लिंग्सिस (स्वार १) आणि रि बिगामी र एप क्या (नियु १) । र मेम्प्रे सा (याच १३४ म्या) ३ कारी (तिन् १) । बाइ वं [बाहिन]

८ १ थो ते ए न मण्डर कि ने बी बनाई

हद्देशाननेशासा जयत्वन्तुत्वरादी (नुधः १ १ १) "पूर्व ["वि] देशो जोगि (यस लाया १ १--पत्र ७४)। देवी कय = **कड़अड़ १ दि ]** वीवारिक प्रती**हार** (९ २. फबाजदी सी वि । भएठ, बना (दे २ १५)। फबद्दा पूँ 👣 स्वपति बाई (दे २ २२)। कत्रहम पि [कटकिल ] बलव री उपर स्थित (से १२ ४१)। कबश्रम पूर्वि वीवारिक प्रतीहार (वे र करोगर न [कशहर] तुत्, विनरा, भूता (तुता १११) । कर्दत न दिंदिनी कल्द विरोध । २ यूसम (दे २, १६)। न इति र न [क्] पूर्णना सूर्य व्यक्ति करा रहा (दे २ १६) ह वर्षनरिज रि [के] दारित विदारित विना रिज (दे२२)। वडेय पू कित्रम्य । याच विरोध (विमे ७० කි) 1 श्वष्टंश पुँजी [कन्द्रम्या] बाय-त्रिरोप (सम थर्डमुम न **दि**] १ पूप्तशीर-नावक शाद प्रिरेश । महे का करु भाग (दे २ ९ )। कडकदेमो कडग (गा'---रला १)। प्रक्रमंत्रा स्था [पद्रस्ता] धनुस्यत्र हार तिरोण बङ्गास माराज (म २३७ वि ११ नार-भागती ११)। पश्चमित्र रि [बारप्रांश्य] रिक्ते बच-बह धाराज विदाहा वह जीएँ (नूर ११६३)। बटरांदर रि [बद्रद्रशिया] वहनाइ धाराज करनेराना (समु) । कट क्षेत्र न [कड़ बन] बहुतह साराज (मिर ६६२)। ब हरमा थुं [ब्रश्नात] बदारा विराह्मे विद्यान भार पुत्र इटि, याँस का नरेत (शास नूर I VE THE EV F बद्धवरा एक [बटाध्रयू ] बरात करना ।

बरमा (मर्देश)। मेर्ड ब्रह्मशर्मक (स्ट्रि)।

क्षासम्बद्धाः च [क्राक्षण] नदात्र करना (भवि)। कडिक्सिश नि किटा के वी १ निवार नटाश्र किया पर्या हो नह (रंग्र)। २ व नटाश (मनि)। क्आरग पून [कटक] १ नवा बसन दाव का बामुक्श-निरुप (छाया १ १)। २ वर्गना, परवा 'बागस्य सन्यवमश् होदी कर्मदरेस ह सम्बं । निमुत्रपुषणमाएएं (का १६१ धी)। ६ वर्णत का मूल भाग। ४ पर्यंत दासम काय । ५ वर्षत की सम मूमि । ६ वर्षत का एक भाग 'निरिन'दरकव्यविसमदुग्मेम्' (पद ६२, पर्या १ के लाया १ ४ १०)। ७ सिरिट सेन्द्र चत्रने का स्वान (बाहर)। द पूँ देश-विरोप (राज्या १ १---पत्र ११) । रेपो फडरुहु औ [दे] रहीं पमनी शेर्र (र ८ **9)** ۱ कक्कण व [कद्त] १ मार बलता, द्विता करना : (चुमा) । २ नारा करना । ३ नईत । ४ पारः १ युद्धः ६ विश्वनता बार्चता (E ! २१ ) i कडण गर्किन्नी १ घर गोल्हा २ घर पर धल बालना (नग्छ १)। कडल न [स्टन] चर्चा शाहि 🗎 बर रा संग्रार, बगाई मारि से धर के नार्ध भारी नात्रिया काता प्राप्तप्रदान (पाका ३ २. व १ की पत १६६)। कण्यास्थे [करना] घर का सरकर रिटेप फबर्णान्त्री फिन्नी केनल 'नुर्पयरितर शिगरिद्वियर्गसरमाञ् निरमानुत्रीते (तुरा 48x) 1 करतास स्थे [रे] साहे का एक प्रशास का इतियार, जो एक बारशाता और नम होता १(देव ११)। व उत्तरित्र रि हि] रेशो बार्डनरिश (चीर)। कडर्रिअ रि दि दे दिन्न नाग हुन। २ व रिप्रता ( चर )। बद्दा नु [दे बटम] १ मनूर निष्

बनार (रे १ १६ वर् । शहर गुरा ६१

मनिः दिल ६३) । २ वरण का एक मनि

(देव १३)।

क्टमड पुन [दे] उद्देष (वंदि। ४०)।

क्षाय न [क्टक] उस धादि नी यटि (धाना २ १ २)। क्ष्मय देवो प्रक्रम (सुर १ १६३ पामः बउड सहा सुपा१६२, देश ३३)। ६ सरकर, सैल्प (ठा १)। १ पूँ काली वेश का एक राजा (महा) । । यद स्थे [ । यतीः] राजा कटक की एक कत्या (महा)। क्षप्रदार्थ (क्षप्रकृति ना-सङ्ग्रामाय 'कत्यह करपनहाराप्यन मा(? य) मार्जनदूम म्हल् (पटन १४ ४४)। क्ट्रचंडिय वि [वि] परावर्तित किराया ह्या भूमाया हुमा 'स नुस्पह न प्यक्रिय शिद्धि में पविद्वत गिरिवर (सुपा १७६)। सहसम्बद्धा स्थी दि] बंदा रामाका व स की सवाई (बिया १ ६)। क्द्रसार न (क्टसार) मुनिका एक स्थ करण बाहन न वि मंद्र विणा निहीं (?ডি)। দৰি কুটা (? পি) খকচত ব कडमार (विचार १२८)। क्रहमी की हि] श्मरात, मनान (दे २ ६) । क्बड् पुँ [कटम् ] पुत्र विरोध (बहु १) । क्दाकी दि क्दी, सिवदी जेगीर की सबी विवडकशाहकवार्यं कडन्छमो निमुश्लिमो हत्ती (भूपा ४१४)। क्झार म [वे] नारिनेल वरियर (वे २,१)। कहार पू [कडार] १ वर्छ-विशेष शामका क्रुण भूष रंग। २ वि क्यित वर्णकाना मूर्य रंगका मध्मैका रंगका (पामा राण ७७ दुरा ६६: ६२) । इद्याधी की दि कराडिकों नोहे के ग्रेड पर बाक्ने का एक उत्तक्या (बनु ६) s क्षत्राह पूर्व किटाइ र नदार, लोह ना वाच, सोद्देशी वड़ी बड़ागी (सनुव सार----मुख्य है) । २ ब्रुप्त किरोप (पण्न १३ ७६) । द चौतर नी हुई।, सरीर का एक ब्रायव I (पएए १)। कडाइपस्ट्रिका न [वे] देनी पारवी का ध्यप्रचेन पारचे को पुनाना-विश्वका (के न, २६) । महिसी किटि ! रमर, रदी (निपा १ २ सनु ६)। २ कृषादि का मध्य भाग

(वर्ष)। तक्षम [तट] १ कटी-तट। २ मध्य माम (राय)। पहुम न ["पटुका] बोली बस्त्र-विशेष (बृत् ४)। पद्म न िपञ्जी १ सर्वादि वृश की पक्षी। २ पत्रशी क्यर (धनु ४)। यक्त न [°वल ] क्टी-प्रदेश (मर्दि) । हा व िटायी देवते कविद्व (रे) का दूसरा धर्म। वहीं की ["पट्टी] क्यर का पट्टा कमर-पट्टा (मुपा १३१)। बल्दान [बस्त्र] भीती नगर में पहलने का क्पन (रे २,१७) । मुत्त न ["सूत्र] क्यर का ब्रामुपण मेखना (सम १८३ क्या)। इत्य व [इस्त] क्यर पर एका ह्या शय (दे २ १७)। कृष्टि वि [कृटिम्] पटार्शनला (यलु १४४)। क्षत्रिम वि किटिया र कट—बटाईसे भाषकाहित (रप्प)। २ वट से संस्कृत (धावा२ २१)। एक दूसरे में मिसा ष्ट्रमाः 'वरावा"यवर्गण्याय्' (धीप) । कडिअ वि [दे] प्रीणित श्रुणी क्या ह्या | ( पड )। फडिस्सेंग प्रेडिंदि १ कमर पर एका हुसा हाय (पाय- वं २ १७)। २ इसर में फिया ह्या याचात (द, २ १७)। विद्यापुर [वि] तुए विदेय(सूच २ २ ७)। क्रीडच व्या कास्रच (गाया १ १थी-पत्र ६)। क्रांडामहन [दे] शरीर के एक पान में होनजला कुछ विधेय । (बहु ६) । फब्रिक्क वि [ वे ] १ क्रिप्त-प्रीत निरिक्त (दे२ १२ पाः)। २ स, कटी-बस्थ कमर में पहलत का बस्त बोडी क्षेप्स (दे२ ३२ लाका यह मूपा ११२ा कच्छा भवि विसे २६ )। ६ वन अंगल शहबीः र्श्वसारमध्यक्रिक्तं श्रेजोन्द्रियोग्गीयत्तरमञ्जूषे । नुपर्पणद्वाण तुर्वं शत्याहो नात् । सपात्री i' (पत्रम २ ४% वश २ वे २ ५२)।४ वि पहन, निविद्य साग्द्र, "मिन्निमिक्समदनदिस" (उन १ ३१ थी के २ १ २३ वह)। ४ बारार्शन, बाधीम। ६ पूँ दीवारिक प्रतीहार। थ विपक्त सर्भु बुरशन (दे २ १२) यह)। ८ कटाइ लोहे वा बदा पाप (धोप १२)। र जानगरा-निरोप (बम ९) ।

२१७ कही रेलो कहि (मुरा २२६)। कबु ) पृंकिञ्चकी १ नद्वमा तिक,रस कबुका निरोप (ठा१) । २ नि तीता तिक रम-वाला (से १६६ हुमा)। ६ मनिष्ट (पल्ह २ १)। ४ शहरा मर्वेकर (पल्ह १ १)। १ परय निष्टुर (नाट~राना ६६)। ६ की बनम्पति-बिधेय हुन्ती (हे २, ₹**₹**₹) ( क्ष्मुअ (शी) स [कृत्वा] करके (क्षे २ २७२) । व्हाबास्त्र हूँ [ मृ ] बराय बराय (दे २, १७) । २ सोटी महती (दे २ १७ पाय)। फबुइय वि [कटुफिड] १ कड़मा किया हुया । २ दूपित (गरह) । क्कून्या की [सटुकी] बस्ती-विशेष हुन्ती (पएए १)। कहच्छ्य । ुंकी [दे] रेखी कडन्छ्र 'मूबकदुक्क्रवहत्या' (मुपा ११ **कबु**च्छुय पाया निर १ १ बम्म) । कबुर्यापय वि [वृ] १ प्रदृत जिस पर प्रद्वार विया भया द्वा नह (दर पू ६३)। २ व्यक्ति पीडिक 'सा म (शेष्टाडी) डुमाएपहारक-हुयाचिया भग्या परम्पुद्दा क्या (महा)। व इत्यय हुमा परामुदा ४ मारी विपद् में परेना हवा (स्वि)। कडूइर (थी) 🕅 [बटुकुत] कटुक किया हुमा (शर) । क्टेंबर न [फलबर] शरीद, देह (एवं हे Y 352) 1 कब्दुबर्क [कुपू] १ कॉवना। २ जान वरनाः ६ रेका करनाः ४ पदनाः १ धन्तारण गरमा। सन्तर (हे ४ १८७) । वष्ट कड्डांच कडडमाग (या ६००) महा)। १९११ फब्रिक्जत कटि्ड्जमाण (स थ, २६। ६ व६ पएड १ व)। संद कवित्रक्षण अवस्था कवित्रम् कवित्रम (सहा) नज्जेल नजीवनार (पंचन) कहिन्दर्भ (नि ३७७)। इ. कहिन्दरम (गुपा २३६) । कहरू पूं [का ] श्रीचार ध्यारपीए (उत्त कट्टम न [क्यंप] १ सीबार बारचेल

(सुपा २६२) । २ वि बोवरेनला, प्रावर्णक | कृत्य सक [ कृत्यू ] यावाय करना । करहा |

(उप पू २७७)। क्रद्रजया 🛍 [क्र्येलता] धार्क्यल (उप य २७७) बहराविय वि दिर्पित दौक्याया हुमा, बाहर क्लिनगया हुधा (धरि)। कविद्वाम वि [दे] बहर लिख्ना हुमा

गुजराती में 'काक्षेत्र' '' 'तो शाशीव्ह पुराज व्य कविनमी कुट्टिक्स वर्ष (सिर ६ ६)। मुद्रिय वि [मुख्र] १ यत्त्र धु चौचा हुमा (पर्वा १ १)। २ पठित बच्चारित (स ₹ **२)** । क्ष्ट्रोक्ष्ट न [ क्यांपर्ख्यं ] क्रानातान (उद्ध ११)। कद्वाधक [क्रयू] १ शब्द करना। २ स्वामना । ३ द्वपाना बरम करना । नवड् (द्वे ४ २२)। लड्ड **भ्रद्र**माण (पि

रे बडांचरित्येखं (पुरा १२ ) बडीममाण (पि २२१)। क्टक्टक्टेंच वि [क्टक्टायमान] क्वक धानाम करता (पस्म २१ ६ )। सद्भाग कियती बान करना 'चनकुछेडी पावद खंकराक्त्रसम्बद्धाई भीवद्वा (दूप २२६)। ब्राहिअ न [दे] कड़ी (सँड ६२४)।

२२१)। करक 'राया अपद एमं स्थित रे

**कडिश वि[क**बित] १ ज्याचा ह्या। २ भूब परम दिया हमा। 'कडिम्री बन्तु निवरतो सहरदुवी एवं नाएई (मा २७ घोष १४७) मुपा ४१६)। कृष्टिमा क्ये [दे] कडी मोजन-निशेष (वे

२ ६७)। कृष्टिय ृति [फुठिन] १ कठिल क्रमेश, कब्रिजन } कठोद, परच (परक्ष १ ३ पाम) । २ न इश-मिरोप (प्राचा२ ३ ३)।३ पर्छं, पत्ता (पणह २ ६)।

क्किरेर कि किटोरी १ कॉटन प्रस्थ किन्द्ररः। २ पू. इत नाम का एक छचा (पठम ६२ २३)। कम एक [स्वत्र] रूप करना यातात करना। नराइ (हे ४ २३१)। वक्त-कार्यंत

(नुर १ २१ वण्या६६)।

(इ. ४ १६)। क्रम पूंबिया १ कल सेत; पुराक्समि परिकृति न सक्तर (शार्थ ७६)। विकीर्सं धाना (कुमा) । ३ वनस्पति-विशेष (पर्वा १) । ४ पूँ एक म्लेण्ड बेरा (सन) । १ प्रश्व-विशेष बहाविहायक वैष-विशेष (ध्र २, १--पण ७७)। ६ तएकुण बीस्प (उत्त १२)। ७ किन्क (बाचा २, १)। অ রিবঃ "নিয়হন দিল হা (पাছ)। হস্ত वि [ वत् ] विन्दुवाला (पाच)। [कुंडम] पुं [कुण्डक] योलन की बनी हुई एक सब्द करा, 'कराबुंबर' बहतारां विद्र श्रुंबह सुबरो ( एक १२)। पूपक्रिया औ िपूपश्चित्वः] भीवन-विशेष वश्चीकं (भाटा) की बन्दर्भ हुई एक बाद वस्तु (धाका २१)। भक्ता प्रमिश्ची फैटेरिक मठका प्रवर्षक एक व्यपि (राज)। विश्वि की [क्षि] क्या श्रेष (तूस २६४)। वियाजन प्रे विवासकी देशो कन्म-विमाजग (सुरुव २ ) इक्) । संवापय र् िसंतानकी रेखी क्याग-संतायम (इक)। ह्यू पूर्विष्ट्री वैदेशिक संस्कार व्यक्तंत्र ऋषि (विशे २१६४)। यक्या वि

क्याइपुर न [कनिडपुर ] नगर-विशेष जो महाराभ बन्त है भाई हनक की राजवानी बी (खै)। कणहर पुं [कर्षिकार]क्शेर, वनस्पति विशेष (पर्यक्ष १--पश्च ३२)। क्रमञ्जू हुँ [दे] युक्त कोला सुरग, सुवा (देश २१ वद् पाष)। फर्म्याकी विशेषता कथी (देर २४.

कम दुं [क्य] रुन्द, प्रायाम (६५ ६ १ ३)।

कमाइकेष्ठ पूं [कलक्कितू] इस नाम का

िष्ठीण ] विन्युवासा) (पास) ।

एक राजा (र्रस)।

पकास ४१६ पाप)।

कर्मगर न [कनक्कर] पाकाल का एक प्रकार का इविवार (विचा १ ६)। कलकल पुं [कणस्य] क्छ-कछ साराज (मानव)।

कुणकुणकुण धक [ व ] कुणु-कुण धानाव करता । क्राक्राक्स्ट्रेति (परम २६ ६६)। वह क्याक्रमकर्णव (परम १६ व६)। क्षणक्रमा प् [कनकनक] पर्निरोप, ब्रह्माचिहामक वैत्र विशेष (ठा २ ३)। क्षणकराणिश्र वि [क्षणकाणित] क्छ-क्छ

बारावदाना (क्प्यू)। क्ष्मतास्त्र व [ब्रे] स्थान-विशेष (सट्टि १ थै)। क्याय वि (कानक) मुक्तं-एत पादा हुमा (क्पड़ा) (याचा२: ११)। पट्टिंग िंपट्टी सोने का पट्टाबाला (प्राचा २, ६, **१ %) 1** 

कृतन देखी कम (रूम)। कृजग [रें] रेखी कम्मय = (रे) (पछ १ क्यांग पू [बानक] १ यह विशेष बहाविहास वैव किलेव (ठाँ२ ३ — पत्र ७७)। २ रेका-सञ्ज्ञित क्योति -पिएड को साकारा दे विरता है (मीच ३१ मा भी ६)। ६ बिन्दु । ४ शमाका समाई (राज) । ५ ब्रावर हीप का शक्षिपति देव (सूच १६)। ६ जिला इस देस का देइ (क्लानि, ३)। ७ व-चुक्रते शाना (सं६४: भी ३)। इति वि **िंशन्त**े १ कला की तर्द्ध काक्या (धाला २, ६, १) । २ वूं देव-विरोध (दीव)। इच्य व [\*इट] १ एवँट-विदेश का एक किचर (वं ४) । २ <u>५</u>, स्वर्ध मय किचरनाता वश्य (बीय १) । केंद्र प्रं क्रिया इस नाम का एक सभा (समझा १ १४)। गिरि पूर्विगारि] १ मेद पर्वतः। २ स्वर्धः मक्कर पर्वेष (धीप)। बस्हय हु ["क्क्षम्"] इस नाम का एक धावा (वेचा ह)। पुर व ुपर] वयर विशेष (विपा २ ६)। <sup>१</sup>८पम पुँ [अस] वेश-विशेष (कुछ ११)। ध्यमा स्या [ श्रमा ] १ देवी-विशेष । २ आता-वर्ममूर्वका एक प्रकासन (शासा २ १)। पुर्विक्रम न [पुष्पित] विसमे सोले के क्रव सम्बर् कर हो ऐसा भन्न (तिष् ।)। शास्त्र

ल्ली ["साछ्य] १ एक विद्यावर की पूत्री

(णत १)। २ एक स्वनाम क्यात सामी

(दुर १६ ६७)। सह पूरिको इस माम

काएक रावा (ठाभः १)। स्वयास्त्री

[\*अता] बमरेन्द्र ६ सीम मामक कोकपास देव की एक व्यवसहिती (इर ४ १-- पत्र २ ४)। वियाणगा र्रु ["विदानक] ध्य विरोप ब्रह्मपिष्टामक देव-विरेप (ठा २ १ पत्र ७७)। संवायगा र्यु ["संवानक] बह-विरोध बहाबिहासक देव-विरोध (ठा २ ३—एत ४७)। "वस्ति स्त्री ["विकि] १ सुवर्ण का एक बामूपर मुक्यों की मिर्गिकों से बना बामूपख (धेत २७)। २ **छप-बिरो**ग एक प्रकार नी <del>तपरन</del>र्या (ग्रीप) । ६ थू, द्वीप-विशेष। ४ समूत्र-विशेष (बीव ६)। विविपिश्विमित्ति स्त्री [विस्प्रियिमिति] नान्य का एक प्रकार (राय) । ।वस्त्रिभाइ पू िविक्रिमंत्र] कनकावति हीप का एक श्रीबहायक देव (श्रीव १)। विख्यादायह र्षु ["विद्यमद्दासद्] वनकावनिवर नामक ससुद्र का एक अविद्वारक वेद (कीव १)। (वस्मिहाबर पू ["पिसिमहाबर] क्लका-विकार नामक समूत्र का एक व्यक्तिहाता केव (कीव १)। !विख्यर पू ["किख्यर] १ इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक समुद्र। कनकावनिवर समुद्रका अविद्वाता देव-विरोध (जीव ६) । व्यक्तिवरभङ् पू [विश्वितरमञ्ज] कनकारतिकर होप का एक श्राधिपति केन (कीन १)। विश्वितसञ्ज्ञासङ् प्रे विकित्तरमहासङ्गी कनकावलिवर नायक ह्रीप का एक मक्तिहरा देव (बीव १)। विश्वरामास पुं िषिकवरात्रमास् । इस नाम का एक द्वीप । २ इस नाम का एक चनुत्र (बीव ३) । ।वस्तिश्रयेमासमञ्जू नू । [विक्रियरायमासम्बर्गः] कनकार्याधनराव चार श्रीप का एक मिन्द्राता देश (जीव दे)। विक्रियासमहाभइ पुं िविकास-बमासमहाभद्री कानाविकत्वमार ही। का एक पविश्वादा देव (बीव १) । व्यक्ति-परोमाममहावर र् [ावध्यरावभास महाबर] कननावनिवयनभास-समूत्र का एक मनिष्ठाता देव (बीव ३) । विक्रियरोमास बर पुं ["पिक्यरावमासबर] कनकावर्ति-वयवयान-समुद्रका एक प्रविद्वाता केव (बीव १) । सर्ध्य स्मी ["विकी | वैको । विक का

पश्चमा ग्रीर बूसरा मर्चे (पन २७१) । देखो क्याय = करक । क्यागसत्त्वरि की [कन इसप्तति] एक प्राणीन बैनेत्तर शास (पण १६) । कृत्यमा स्त्री [कनका] १ मीम-मामक राख रोन्द्र की एक श्रमप्रकृषी (ठा४ २ -- पत्र ७७) । २ चमरेन्द्र के सोग-नागक सीकपाल की एक बरा-महियी (ठा ४ २) । ३ 'स्राया-बागक्या' सूच का एक सम्मयन (खावा २ १) । ४ शुत्र बन्तु-विशेष की एक कावि चनुरिन्तिय श्रीव विशेष (जीव १)। कुजरात्तम पू [कनकोत्तम] स्य माम का एक देव (दीव)। कणय दं दिंदे र कुलों को इकट्टा करना प्रवष्य । २ वास्य राज् व्यक्तियेववरण्यती-मर--- (पछम ६ ६६ पर्या १ दे रे ५६ पाम)। कुजय पुन [कुनक] एक देश विद्यान (देवेन्द्र \$XX): क्रमय केली कमान ⇒कनक (धोव ६१ माः प्रासु १६६ 👔 १ २२० चया पाया महरू कुना)। दर्पुरानां जनक के एक भाई का शाम (प्रजम २०१३)। १ रावशाका इस शाम का सुमन् (प्रकाम ४६ ६२)। १ बसूरा बुख-निरोप (स ९ ४०) । ११ बुख मिरोप (पएख १--पण ११) । १६ ग. क्रव-किरोप (पिग)। पत्रवस पू िपर्येखी 🖦 कणग-गिरि (मुपा ४३)। सय वि [भय] सुवर्णं का बना हुमा (सुपा २)। ाम **विभाग विद्यापर का एक नगर** (शक) । "विशिष्मी शिक्षी वर का एक भाग (खामा ११—-पत्र १२) । १थसी स्वी ीवकी केवो कणगावकी । १ एक एव पल्मी (पडम 😻 ४३६) ।

कामर्थवी सभी वि मुस-विशेष पाजरी पाक्रम (R 7, KE) 1 कपविभाजय पुं विश्ववितासकी क्रमगरियाजम (पुरुव २ )। क्रणवी स्त्री [बे] कम्पा (बक्य १ व)। कणबीर पूं [करवीर] १ क्ल-विशेष कर्मर (के १२४३ मुख १४१)।२ तक्छोर कापूल (पसहर ३)।

₽१९ कणि पूर्वा हि] स्पूरण स्पूर्वा क्यी फुराई' (वाम) । क्रिणिआर वेको कप्रिणआर (कुमा प्राप्त हे 2 CK) 1 कणिबारिक कि दि । वानी मौक से जो केबा यया हो शहार तुकाती नजर छे देखना(वे २ २४): कणिय स्वी किणिया क्लेक ऐसे के बिए वानी से मिनाया हुमा बाटा (वे १ ३७)। कणियक वि विशेषकी मस्य-विशेष (बीव क्रिक्क वैकी कृणिक्य (या १४) । किणिह वि [किनिष्ठ] १ क्षोटा सबु (परम १६ १२ हे २ १७२)। २ तिहरू वसन्य (रंमा) । क्रणिय न [क्रणित] १ प्रा<del>र्थ-स्वर</del> । २ शाबाब व्यक्ति (ग्राव ४)। कृष्णिय 🕽 देशी कृष्णिक्य (कृष्ण) । २ क्यिया । किंदुका चारक का हुकहा (भाषा २१ c)। कुछ २ केवो कण-कुंडग

(स ४८७)। क्षयिया स्त्री [कायिता] शीएा-निरोप (शैव कणिर वि [क्कणित्] धावाज करनेवाला (ठर दृ १ ६ पाम)। क्रिजिल व [क्रिनिक्य] नशन-किरीप का धीन (इक) ।

कांपांत्रका स्पी [कांनिप्टिका] बोटी पीड़वी (शंगविका शब्दा ६ स्को १७५३) : काणिस न [काणिश] सस्य-शोर्यंक वान्य का श्चा-भाव (वे २,६)।

क्षिक्स न [दे] किशाद, सत्य-शृक्त सस्य ना रीक्स अब ग्राम (दे २ ६) मृति। क्रमील 🤰 वि 🖟 नियस 🕽 घोटा, भद्र,

कपीकस े 'दस्य भावा कपीसंधो पह नाम' (मधु, वेणी १७६ कप्प संत १४)। क्रजीजिया की [क्रनीनिका] १ बॉब की वारा । २ घोटी चंत्रसी (राज) ।

कमीर वेको कमेर (चेड) ।

क्युय व [क्युक] स्वग् वगैयह वा प्रवयक (सरका २ १ व)।

कण्या देखे क्रिया = वरिषका (क्स)।

विकारियों प्रत्येष बहुति के निराती

(क्प्पु)।

क्रमास पूँ [के] पर्यन्त सन्त-माप (के प

क्यंदिरआ—श्रद

क्षणित र्यु [कृतिय] एक गरक-स्थान (शिक्ष

कम्जित्रा की [कर्जिया] १ पप-उरर, रपत का बीज-कोप (वे ६ १४ )। २ कील थक (थए़ाठा ≈)। ३ शानि वनैयह के धीन कामूच-पूज तूप-मूच (ठा )।

काणियमार वृं [काणिम शर] १ धून निरोप क्नेर का ग्राप्त (क्रमा। है २ ६५, प्राप्त)। २ ग्रैशम्बरुका एक भक्त (सप १४ १)। ३ न कनेर स्प्रकृत (खामा १ ६)। फण्डिकायण व फिर्जिकायत् । स्थाप-विशेष का एक गोत्र (इक्)।

कण्यारक्ष देनो कर्मारक्ष । क्रम्बुप्पक्ष न [कर्जीत्पक्ष] कान का मानूपछ-विशेष (इप्यू)। कम्मेर देशो व्यक्तिभार (हे १ १६८)।

कण्डोच्छडिमा औ दि पूर्वरे की का प्रगाप मुक्तेवाची क्ये (देश: २२)। क्रमोहर े भी दि लो को भइको ना क्षण्योदिक्षा वस्तिये भेरती (ह २२ हो।

फ्रजेडचा [दे] देवो क्रजोब्झडिमा (रे र, २२)। क्यगोरपड श्वी क्रणुप्पछ (सट) ।

कम्योद्धी हरी दि । यस, भींच पदी म

होर, होड । २ प्रवर्तम रोच ८, मूक्श-विरोध क्ष्यत्रोकरारियमा स्त्री [क्रजॉप३[जिम] क्णीकर्जी क्लाब्स्मी (दे १ ६१) ।

कण्डोस्सरिअ [व] रेक्षा कण्यस्मरिय (₹ ₹, ₹¥) 1

कव्या के किएन किया किया किया कि

(53

कथ्यु पू [क्रुप्रम्] १ सीक्रम्स माता देवकी और पिता बमुदेव सं उद्भाग नवता शामुदेव (शस्या १ १६) । २ पांचवी शहादेव बीर वनदेव के पूर्व अन्त के कुक का नाग (तत ११६) । ६ वेतानकारिक वत को महिचीय

क्रमें ३ ) श्री [करेण] इस्तिये हमिनी क्मेर्पा रे हि र ११६ दूबा सामा १ १--पत्र ६४) । क्रजोवझ न [वे] परम किया ह्या बल तेन बरैख (दे २ १६)। क्रण्य पूँ [क्रन्या] चिठ-विरोप क्रम्या-चरित 'ब्रह्मो व कम्प्रामिन बहुग् उच्ची' (पडम १४ कृत्या पू किन्दी इस नामका एक परिशायक श्चपि विशेष (मोप भ्रमि २६२)।

क्लोब्डिमा स्मा [मृ] ग्रन्मा, मुँगमी (दे २

कुमर देशों कृष्टिमभार (हे १ १६ । पि

R ( ) 1

2x4)1

क्रणा पुंक्तियी १ कोरियाय अधोश (सुक ११)। २ एक म्सेच्य-वाति (मृच्य ११२)। ক্তেলপুৰ (কুৰ্যা) ং দলে থবত লীয়া 'बब्स्**कार' (नि** ६६ प्रासूर) रेर्नुसङ्ग देश काइस नाम का एक शका बुनिज़िर का बढ़ा भाई (बाया १ १६) । ६ काना बल्(के छोर नाएक घंश (बन सुक ३१ कर कर न विदा कान ना भागपण (प्राप्त केका ४३) । शह स्त्री िरादि मिर-सम्बन्धे एक शरी (ओ १)। जयसिंद्देव पू ["जयसिंद्दव] प्रवराठ केत का कार्यको ततान्ती का एक यहाली यजा(बी)। इव पूर्वियी विक्रमधी देखनी राजानी हा होचान-देशीन एक चना (ती)। दार प्रेष्टिशरी शक्तिक निर्धायक (छामा १ )। बाउरण वृं [कावरण] १ इस नाम का एक सन्तर्शीय । २ उस धन्त र्डीप का निकामी (पएश्रा १)। श्रा**करण** 

रेको पाइरण (१४)। पीड ग विकि कान का एक प्रभार का मानुगरा (छा ६)। पूर वेको कर (कामा 🕻 )। रवास्थी िरवा निर्ध-विशेष (पदम ४ ११)। वाधिया स्त्री ["वाखिता] नान के अनर मश्य में पहला व्यक्ता एक प्रकार का सामूपछ (प्रीप)। भेड्यम न [विद्यतक] क्रयन रिशेष कर्जनेबोप्सर (प्रीप) । स**बकुद्धी ह्या** ["राष्ट्रक्री] १ कान ना छिद्र । २ लाव नी भंगाई (खाया र ) । सोहण न

फ्रम्बाउट्य पू [झाम्बाकुम्प्र] १ वेत-वितेप दीमान यज्ञा बीर यमुना नदी के बीच का देश: २ न उस देश का प्रवास सगर, जिसकी भावक्य 'नशीन' वहले हैं (शी कप्पू)। क्रमणीबास म दि] नाम का धामुपरा— कुग्डन वगैरह (दे २ २६)। क्रमाता देशो दुसता (धार ४) । कामन्त्रुरी को [वे] वृह-नोवा किरवनी (रे २ १६)। कप्लक्षय (थप) वेद्यो कण्म (हे ४ ४३२) 488) i कृष्पछ (बप) वि [कर्याट] १ वेत-विदेय क्यारिक । २ वि चर्च क्या का निवासी (पिंग)। क्रकाक्षेयम पून [क्र्मकोषन] स्वी स्त्रिक खाबण (गुळ १ १६) । क्रमाञ्च पुन [क्रमेस] कार देशो (पुन १ १६ हो) । कुम्मस वि [कुरमस] धवन भागव (इत फण्णस्सरिय वि दि] १ नागी शवर से देवा

िशाधन दिन का गैल निकासने का एक क्षकच्या (शिष्ट्र ४)। द्वार पू ["घार] वेली

भार (सच्यु २४° स ६२७)। देखो कम ।

काणाबार देखो काण्यभार (बाह ३ )।

हुमा। २ न कानी नज़र से 🐂 ना(दे २ 1889 कृष्णा धी [कृशा] १ श्योतिव-शाव-प्रसिद्ध एक चरित्र । २ रुजा, सङ्की नुपारी (क्यू पि २**०२)। बाड्य न** विश्वक्र विश्व विरोध वदशक (छवि)। यदन नियो चीरा देश का एक प्रधान नगर: "चीक्वेपाव-र्यसे इन्द्रणालक्ष्मवरे (वी)। स्क्रिय न सीक क्या के विश्य में बोला बाहा भूठ (पण्हर १)। कल्लाकास व दि । कान का साबुक्त---दुरका गीवह (वे २: २६) । कञ्चाईयण न दि] कान का धानुपत्त---

पुरुष वर्षेषु (हे २, २६) । कण्णाह पू किणार र देश-विशेष, बो यानकत 'कर्खाटक' नाम से प्रसिद्ध है। १ क्रुतेवाला एक जपासक (मुपा ११२)। ४ विक्रम की तूरीय राजाकी का एक प्रशिव वैतानार्य, दिगावर बैठ मत के प्रवर्शक शिवमृति मूमि के ग्रुक (विसे २१५६)। १ नामा वर्ण (बाबा)। १ इस नाम वा एक परिवासक द्वारस (धीरा)। ४ वि श्याम-कर्ण कासा रंगशाना (कुमा)। आराङ 🕏 ६४)। ईन तू [काद] बनस्यति-विशेष शन्द-विदेश (पच्या १---पत्र १६)। क्टिंग यार प्र "किर्गा नर] कानी क्लेर का याध (जीव १) । इस्मार पु [कुमार] राजा स्रोतिक का एक पुत्र (तिर १४)। गोमा हरी ["गामिस्] काचा ग्राप्यकः 'करव्योमी बहा बिला, बंटर्रा वा विवित्तयं (वव ६)। पाम न "नामन्] कर्म-किटेय विसके उदय से भीव का शरीर नाना होता है (राज)। पविन्यय वि ["पाक्षिक] १ हर रमें राजवासा (मूम २,२)। २ वहुत राज सक ससार में भ्रमण करन्याना (बीब) (ठा १ १) । बंबुमाय प्रविश्वाची बन्न विशेष स्वाम पूर्णशासा हुपहृष्टिमा (जीव २) । मूम भाग प ["मूम] कानी कमीन (धारम विने १४८०)। रा राहर्स्य िशांजि की] दिल्ली रेखा (मण ३ %) ठा = )। २ तक इन्त्राणी ईरालम्ब की एक ग्रह-महिपी (ठां = भीत्र ४) । १ 'बाता धर्मेश्या' मूत्र का एक धम्मयन-परिक्येत (एगवा २ १)। एर्चि वृ िश्चिपि) इस नाम का एक ऋषि जिल्ला अन्य श्रीकानती मयरी में हवा था (वी)। शिस शिस्त वि िलश्य द्विपण-वेश्याचामा (भग) । क्षासा लस्सा गर्ध ("निरंपा) श्रीप का श्रांत निराप शन:--गरिगाम जयन्य-कृति (यम सम ११ डा १ १)। बर्डिसय वहेंसय व ि।वर्तमको एक देव-निमान (राजा लावा र १)। बहि बहाम्बी [बहि, ही] बद्गी विशेष भाषामनी बता (पाना १) । सप्पर्विसर्वे रेगाना सप (जीत १)। २ सह (नुत्र २ )। वेलो कहा।

कण्यह स [ लुनिसन् ] किनी ने (भूस १ २ ६ ६)। देशा कण्डुहरः

कपदास्त्री किए गाँ १ एक इन्त्राणी निग नेन्द्र की एक घड़-महिपो (ठा द-पत्र ४२१)। २ एक धन्तरून स्था (वंद २१) । १ होनचै पाएकों की स्त्री (राष) । ४ समा थे सिक की एक राजी (जिंग १ ४)। १ वर्ष देश भी एक नशे (बायम)। कण्टुइ स कि। यन् विश्वन, नहीं भी, (सूप ११)। २ म्ब्यू: से? (उत्तर)। क्रव्ह्रइ बस्रो क्रव्ह्रइ (नूब २, २ २१)। कतवार वृं दि] कठार, पूका (वे २ ११)। कात देशो करू = कवि (पि ४१६ मग)। दल्ल दली कड = गहु (कम) । क्ख सक [कृष्] कारना धेरना, क्खरना । कताहि (पण्ड् १ १) । बद्ध- कर्त्तन (योग 144 ) I कत्त तक [ कृत् ] कातना चरके से मूत बनाना । बष्ट प्रसत्त (सिंह १७४) । कत्त वि [अप्रि] निवित्त (सील ४)। कत्तान [वि] बलद, स्पी (पट) । कत्तम न [कर्तन] कातना (पिट ६ २)। कत्तवान [कर्तन] १ नतरता राज्या (यय १२१ क्य प्रत्र)। २ विकालनेवासर, कदरनेवाना (सूर १ ७२) । **क्ष्म**णया स्थे [क्ष्मनना] सम्म कनसई (शुर १ ७२)। कत्तर पूँ दि] बतवार, बूबा 'इतो व विममुन्दरस्य कारिज्यामिही वसः किमी विएहा (मुपान ७)। फ्यारिअ वि (कृष्य क्रीयत) क्या ह्या बाटा हुया भून (मूत्रा १४६)। **अश्वरी स्मी [कर्त्तरा] श्वरमी मैंची (राप)** । कत्तर्भारिक व [बाल्य ये] बुर-प्रिशेष (नव १४३ प्रति १६)। कत्तका वि [कर्सक] १ वरने बान्य (स १७२)। २ ग. नार्यं कान काम (था ६)। कत्ता स्त्री [वे] धन्तिमा-यूत्र मी कररिता, भोगी (दे २१)। स्वीत स्था जिल्ली पर्म चमशा (मा४३६ पडः गाया १ ८)। क्वि वि [ क्यू ] कलगाना निरिवा छ पतिर्धादवा (पर्नंत १४१)।

क्तिका प्रदिक्तिका महारेव का एक पुष्प प्रधानन (र ३ १)। कृत्तिगा स्में कितिका कितिक मास की पुरिश्रमा (पश्रम ८६ ३ १४) । द्वशिव वि [कृतियमें] कृतिम बनावधी (मुरा =३ वंशी। फ्रीचय पूं (धाच ३) १ कार्तिक मास (सम ६४) । र इस माम का एक भी ही (निर १ १) । १ मरत शेष क एक भावी लीचेंबर के पूर्वे शव का नाम (सम १३४)। क्षतिया न्त्री [कृष्ति ख] नगर-वियोग (सम ११ इच्)। कविया रुध [कविया] रतरनी कैंबी (मुना कविया न्दी [क्यक्तिकी] १ शांतक मास की पूर्णिमा (सम ६६) । २ कालिक माम की यमावास्या (वीद १ )। विश्वविद वि [वि] हमिम विश्वाकः पाति विवयहि उवहिप्पहालाई (मूप्पनि, १ ४): फलु वि [कर्युं] करनेवाला 'कला बुला ब प्रभगवाणी (मा ६) । कत्ताथ [कुता] वहाँ में किनते ? (रहम बुमा) । स्य नि दियी नहीं से उन्पन्न ? (बिस १ १६)। क्द4 सक [पाय्] स्तापा करना प्रशंसन्ता। करपद (हे १ (८७)। फरेय व [हुन] नहां हैं ? ( यह )। करव व [क कृत्र] नहीं ? (पर् दूसा शहर १२६) । इ.स. [ "बिन् ] पहा किसी बबह (बाबानम हे २ १७४)। करच रि किम्ब] १ नइने बाग्य, कवनीय । २ व काव्य का एक प्रण (ठा४ ४ -- एक २व ) । ६ बनस्पति-विरोध (धान) । बदर्शन देशी कहा = कवर् । परवसागा की [प्रत्यमाना] पाने में होने बानी कारपंति-विधेय (पर्ए १---पन 1 (y# बस्यूरिया । ऋ [क्रम्नूरा] मुक्त्यर अस्ति परभूरा विकास में होनराता नृगीयन

बन्यु (गुरा १४३) रा २३१, क्या)।

(पर्)।

कथ वि दि है चारत बुदा ? जीत दुईन

ৰুৰ্ — ৰুম্মন

नाम (कप्प)। कर्पय देशो कमा च (प्रक्र १३)। कपिञ्चल वृं [कपिङ्क] पश्चि-विशेष---१ जलकः २ गीस पक्षी (परद्वा११)। कपुर रेखो कप्पूर (मा २७)। कटा सक [कृत्] १ समर्थ होना। २ करपना, काम में बाना है एक कारना क्षेत्रता । कलाह, कप्पाद (कला महा दिन) । नमें कप्पित्रह (है ४ ११७)। इ. क्य्य-

(पंचन १)।

न [भाइ] कैन सामुद्रों के एक पुता ना

जिल्ला (शाव ६)। प्रयो क्रायां क्रायां क्रायां १७) । बद्ध- कप्पार्थेत (निष् १७) ।

कृष्य सक [कृक्ययू] १ करना बनागा। बर्लन करना । ३ वस्पना वरना । बहु-क्प्पेमाण (निपा १ १) । संइन् क्प्पेडप्प कृत्य वि [कहत्य] प्रहणु-नोग्य (पंचा १२) ।

कृष्य दे [क्क्स्य] १ प्रतालन (पिंड २६६ १७१ १ प्रान्याय १२)। २ वल्यार, व्यक्तर (वन १३ वन ६१)। १ वतापु क्षरत्व सूत्र । ४ वरत-पूत्र । ३ व्यवहार भूत (क्व. १) । ६ 🍽 जनित (देशा १ १)। काल र् [शास्त्र] प्रमुच शाम (कुम १ १ १ १६)। घर वि विदर् करा तथा व्यवहार पुत्र का आनंतार (गम १) । करण व किल्मी १ बाल-विशेष दशों के की हकार युव परिमित सक्य 'कम्मान्य कणिकार्य कार्य कप्पंतरेलु शिकोलें (शक्तु १० पुषा)। १ शास्त्रीक निधि अनुतुल (का ६)। ६ राज्य-जिस्ते (तिमे ६ ७५ मुता १२४) ४ नम्बल-अपूर स्वानगण (स्रोच ४ ) । १ देवीं ना स्वान बार्ट् देवतीक |

कृत नम्पन्ता (हुका) t

(मप ४, ४' बा २०१) । ६ बार्स्ट देरतीह निवासी देव विद्यासिक देव (स्रम २)। ७ बुध-रिटेय वनोर्डाध्यन कर को देनेताचा राव-रिकेश 'यमिनेडवरणदीनर्थारामां (४३५ ह ७३) । ६ मविशाम स्थान (बृद् १) । १ दामा सन्द का एक मान्धी (राज) । ११ हि । 1 (253

)। "ट्रिइ स्पी ["स्विति] सामुग्री का शास्त्रोक्त बनुहान (बह ६)। द्विया स्वी "स्थिका र सङ्की गासिका (वर ४)। २ तब्ख औ (बह १) । द्वी बबै ["स्या] १ वासिका सक्ती (भव ६) । २ दुत्ताङ्गताः, हुत-बहु (वर ६)। ठह पूँ ["ठह] कन-क्या (प्रासु १६ वः हे २ ७१) । त्यी औ िक्सी देनी देन-प्री (हा ६)। द्विम ब्हुम पू [डिम] क्स्य-इत (बल ध यहा) पायम पुं विषादप करन-मूख (परि. पुपा ११)। पा**दुक 🛮 [**'श्रासृत] कैन धन्य विशेष (थी)। स्वस्त्र प् दिस् रहप-कुछ (पएह १ ४): वर्डिसम म [वर्तस**क] १** विमाल-विदेय । २ विमाल-बागी केव-विशेष (लिए)। बाहिसवा 🕏 िवर्दासामा केन प्रत्य-विशेष निवर्षे शहरा-वर्षतक देश-विमालों का वर्त्यंत है (एवं विर १)। विष्टवि पू ["वटिपन्] नमन्द्रव (तुरा १२६)। साख दं िशास्त्र) बत्स-इम (का १४२ हो) । साहित् ["सानिकः] क्स-बुध (बुरा १६६)। शुच न [मूत्र] थीमप्रवाह स्वर्शमनीयविद्य एक क्षेत्र प्रत्य (रप्प क्य)। सुय त [ भृत] १ अत-विशेष । १ वन्य-विशेष (छवि) । हिस दू [शांति] क्लम बाडि के देव-विशेष हैदेवन भीर धनुसर विमान के निवानी केन (परत् १ २ परल १)। साबुं बिक्री सिनि को बान्तेराश (श्य ग्रीप) । [श्र वृ [ीय] बद्ध श्रद्धांद्र राज-देव भाव (निया १ ६)। कार्यन पु [करपान्त] प्रवयन्त्राम वंहार समय (रुप्यू) । करपञ्ज [कपेट] १ नवहा वस्त्र (पर्वम २६ १ : जुल ६४४ स १ ) । २ कोर्ड बस्य सर्द्रदागर रणहा (वस्तु १ ३) । कर्णाहम वि [स्ट्राप्टिक] निवृष्ट कीवर्गस (ग्रापा १ Mit thui qu t) : कप्पविभावि [ब्रायटिक] बच्छा बाद्यसै (रापा १ --पत्र ११)। कापण न [कुल्यन] देश, नाला (गुरा

हिम पूर [ धर्मम ] शीवड वाँदा (दुन ६६) । हर वि िछी गोपदगसा (सुप्रति 248) 1 हरूम ) दुं [कर्यम] र कथो शीच (पण्ड हरूमग (१२)। ३ देन निरोप एक नाम धन (मा६३)। । इमिश्र रि [बर्मिन] पट्ट-पुक नीवड बाना (ने ७ २ तहा)। इट्सिअ दे कि निश्य मेंना (दे २ १६)। इस देशे इप्त = वर्छ (सुर १२ वर २ १०१ मुता १२४ माम १२ ही हा ४ २: मूत ११ पाध) : स्पेम वृष्टिवर्तमी बान का बाजूरल (पाय) । इस देनो द्वा (इसक) यह देनो द्वारा-इव (द्रप्र ४) । बॉर (बहि ली विक्री) तिनारा यव मान (तून ३३१ ३३४ विकार ६२७ वन १२६)। बसदान देनो ५०७३५३ (बुमा) १ बन्नाग्रानी [बन्दरा] बन्ना सहबी बुबारी नुर ३ १५२ वटा । बसमारि [बनायस्] विका वक्क 'क्यनमित्रजनम्य' (बर १६७)। बचा रेपा दण्या (नूर १ ११४) नाम) । बन्नाड रेगो कण्याड (भी)। क्झारिय रि दि दिवृत्ति धर्नहत्त धाल्हे

रप्रारा बद्दे (स्टि)

1 (1 3

(¶मा)

कर्प्रगद र् [कर्नीरथ] एक प्रशासनी किरिया

बराज बारर ब्रहार वा बारत (गुरख)

बम्मुण्ड (दार) [बाग] बान धारानेश्वर

कशरप रेला प(क्याओर (क्या) ।

ારર

द्र्ण देशो ऋष्ठम = वरन (मृता) ।

दु देला कड़ = ब्लु (प्राप्त १२) ।

सौरी (क्एल १---यत्र ६३) ।

(प्राइट १२)।

राधि देनी क्रयसा (पर्स्स १-५० १५) ।

दुश (रो) च [इस्पा] नरके (प्राष्ट्र वद)।

हुइया स्वी कि बच्नी-विशेष, बन्द्र

दुराण (मा) वि [कदुप्पा] बोहा गरन

पुरपणा भी [करपना] १ रवना निर्माण । २ प्रत्मण निष्मण (निष् १)। १ करवना विषस्य (विषे १६वर) । **इ.**प्यामी औ [करपनी] क्वरती केंबी (परह १ १ विचार ४३ स ३३१)। कापर पू [कपर] बागर, कपल सिर नी स्रोपही (इह ४; मार) । देखो कुरपर = कर्पर । करपरित्र वि वि विक्ति चीए हवा (६२ २ वका ३४ मीव)। **क**ष्पास ५ [कार्पास] १ वपास र्गा २ ত্তন (নিমু ३)। ब्रापामरिय र्षु [कार्पासास्य] श्रोतिय शीव विशेष ध्रुप्र जन्मू-विशेष (जीव १)। क्रप्यामिक्ष वि [कापामिक्ष] १ कशस वेचनवासा (प्रया १४६) । २ न. वैक्तर शास-विशेष (मणु ३६ छदि)। क्टपासिय रि [क्यपासिक] क्यात का बना हमा भूकी वर्गेष्ट् (भए)। कुरमासी की किपासी दि भा पाछ (राज)। क्रीत्यभाक्रीयभ न [क्रस्याकस्य] एक वैन शाम (एदि २ २)। क्टिया वि [क्रिल्पत] १ रवित निर्मित (धीर)। २ स्थापित समीप वें स्वाह्मा मि सन्त् दुमारे से सम्में मेर्स कहिए सम निर्म करेड (निर १ १) । ३ कराना निर्मित विकल्पित (बर्मान १) । ४ व्यवन्त्रित (ब्राचा मूब १२)। १ दिल नाग हुवा (दिला 2 Y) : कप्पिय रि [कस्पिक] १ प्रमुक्त समिपिय (बार १६)। २ योग्य उचित्र (गण्छ १

> सक्तिन्तु (बन १) । क्षिया ही [पश्चिम] के प्रवस्तिय एक उराङ्ग-सन्य ( में १ जिर) । कम्पूर पू [क्पर] बपूर, मुक्तिक प्रव्यक्तिकेय (पण्हर ६ गुर २ ६ मुख २६३)। कम्पोदग र् [कस्पोपक] १ कम्पूछ । २ देव-विरेष बाट दर मौक वानी दन (कान्तु २१) । करपायाणा र् [कस्पचाक] जार रेवा

(7ुस ६ )।

कृत्योवयश्विमा का [करुपोपपश्चिका] रेव लोक-विरोप में बरपति (भा)। क्टफल व किट्फक्की इस नाम की एक बनम्पति कावपूर्य (ह २ ७७)। क्षापन्न हे स्था क्या ह = क्या ट (गउड)। क्टबाड [र] देशो कराड (पाप)। क्फ वूं [क्फ] कफ शरीर रिवत बानु विशेष क्याट प्रे दिरी प्रस्त अहा (वे २,७)। क्ट्रपंच (शी) केन्रो कर्मच (प्राष्ट्र ८६)। करवर्द्धा की कि दोश सबकी (शब २०१)। } पून [कक्ट] १ बाराव नगर. कामका ) पुरियंत रहर (भग पएह र २)। २ पूँ शह-विरोग सहाविष्ठायक वैद-विरोग (हार ६---पण ७८)। ३ वि पुनवर का भिवासी (उस १) । क्रवर रेखी क्रवपुर (प्राष्ट्र ७) । कृत्जाहमयय पू [र] क्षेत्रा पर वर्गन खारने 2 1)1 कस्युर\_ } वि [कर्युर] १ नवरा चितक क्रम्प्य विद्या विद्या (शब्द प्रणु ६)।२ पूं ब्रह्-विशेष ग्रहाविशायक देव-विरोप (ठा२ ६ राज)। क्रम्युरिक्ष वि [क्र्युरित] धनक वर्णवासा चित्रका शिया हुआ दिहरेतिकारुरिय जम्मणिह् (मुपा १४) मिणमम्बारायुकार णित्ररणपद्दाकिरणर**भारतः ( दुम्मा** ६ पडम <२ ११)। क्रभ (मप) देखो इस्फ (बह्)। कमञ्जन [व]कपान बाजर (बनु १ बना)। वर ॥) । १ पूँ गीवार्य, साध मात्रु कि वा क्रम सर्वे [क्रम्] १ वनना, पवि उदाना। २ धम्भीवन करना। ६ धकः केनना यमरमा । 😮 होना 'मगुसोबि विसयनियमी श करमह अची स सुद्धान्य' (रिशे २४६) 'न एल उरार्वतर्ग कम्म' (स २ ६) । वह कर्मन (स.२.१)। इ. कमाणक्क (वीरा)। क्रम गरु [क्रम् ] बाह्ना था एना । करा कम्मदाम (६२ ×३)। 🖫 कन्नर्शाय (मुता ६४: २६२): पत्रम (लावा १ ६४ धी--- पत्र ६ ८)।

यन्ता। २ व्यक्ति छुना। समद् (निष्ट २३१ पव ६१) । कस वृद्धिस्मृीर पाद, पा, पोद (मुर र ८) । २ परम्परा 'नियकुनकमाममामी पिक्ला विज्वाची मञ्च दिलामी (मुर १ २८)। ६ <del>धनुक्रमः परिराध्ये (यहक्र) । ४ मर्यादा</del> गीमा (ठा ४) । ३ स्याव ईमला प्रक्रि धारिय कर्म ए वरिम्मुदि (स्वप्न २१)। ६ नियम (पृष्ठ १) । कुम पूंकिमी धन धमनद, स्वान्ति (है ⇒ १ **६ कुमा)** । कर्मकलु पून [कमण्डलु] चेन्यानियों का ण्क मिट्टी या काळ का पात्र (निर.३. १ पएक् १ ४ जर ६४ ८ टी)। कर्मच पूर [कवरच] देश मन्दरहीत राधैर (इ.१.२३६ प्राप्त हुमा)। कमढ पूँ [वे] १ व्ही की क्लग्री। २ पिठर, स्पान्नी । ३ वनदेव । ४ मुक्त मुँह (₹ ₹ ₹ ₹ ) 1 कमड । ५ कमठ की १ तापम-विशेष, क्रमद्वरा विमुक्त भगवान पारवैनाव ने बाद में कमहत्वी श्रीता या भीर श्री गरकर देव्य ह्या वा (गुनि २२)। २ हुर्म कच्छर (पाम)। ३ वंश बांछ। ४ छन्तरी बूग (हे १ १६६)। ५ त मैल मल (निदूध)। ६ माज्यिया का एक पात्र (निकू १० औष ६६ भा)। ७ नाम्बिमी को पहुनन का एक करक (योज ६७१ इस ६)। कमण न [कमण] १ मति भास । २ प्रदृत्ति (धाषु ४)। कमणियां की [क्रमणियां] बपानन, पूर्वा (पृष्ठ ६) । कमणिव वि [कमययम् ] प्रवासना, प्रवा पान्ता हुया (बृद्ध ३) । कमणा सी [कमण] बूता, प्रतानत् (बृह् व)। कमगा की दि किमेरित सोही (है २ ह)। कमणांय वि [कमनीय] गुन्दर, मनाहर (युवा १४ २६२)। कमळ पुँ [हि] १ विदर, स्वामी । २ पद्यह बीन (दे२ दे४) । ३ मुल पूर (दे १ ५४ पर)। ४ हिन्सुमूर्ग 'तन्द य एने बुमें भर [कुम्] १ संगत होना युन्ह होना कमनो लगप्तकरिएँ। संबंधी पन्धं (सुर

बास महागर नी संस्था (जो २)।

कमस्य न [कमस्राङ्ग] संस्था विदेय चीरासी १६,२२ दे२ ६४) बल्लुक्यां बीप)। ५ वचह क्यका (यह)। क्सस्य पुन [कसस्य]एक देव-विमान (वेवेन्द्र १४२)। याभण पु [मयन] विया माधक्ल (समु १३२)। ब्रम्स न [ब्रम्स] १ रमन प्रधा सर्पनन्त (हपा) हुमा। प्रामु ७१)। २ रमकाक्य इन्द्राजी का सिद्धासन । ३ संक्या निरुप 'शमकाय' हो औरएसी शास से पुराने पर की संबद्धातस्य हो यह (वी २)। ४ व्यन्द बिटेथ (पिंग)। १ वृं कमकास्य इन्हान्ती के पूर्व करम का सिद्धा (श्वाया २)। ६ वरिट-**विरोद (सुरा २७३) । ७ व्यक्त-प्रसिद्ध एक** क्षण कल्म कन्नर जिसमें बुद हो नह पए গ্ৰহাত বা কৰেল বলন (प्राप्त)। इस्त र्थु [स्ति] "स नाम काण्य क्या(धरा) । अस्य त किया निदावर्धे श्च एक नगर (इक) । काणि पू विशेति **ब्रो**श विषयता (राम)। दुर न ["दुर] विद्यावरी ना एक नदर (इक)। प्यथा स्थै [प्रसा] १ गल-नामक विदालेख नी सप-महिपी (ठा ४ १) । २ 'बाठा वर्गकर्ना' मून का एक सम्बद्धन (खाना २) । बन्धु र्षु[बन्धु] १ पूर्व चरि (एजन ७ ६२) । २ इन समका एक धना (पक्ष्म २२ ३)। मास्य स्थी ["माध्य] पोठनपुर नगर के धनामानवारी परुधनी सपदालुबानि दनाच की मालानदी र—बाकी (पडम ३, ६२)। रप र् [स्त्रस्] नमन नाप्रसम (पाप)। बहिसय न [ीयक्सऊ] नमना-मामक रात्राजी का प्रामाद (खावा २)। सिरो श्री अभी वमना-नामक इन्हाशी भी पूर्व प्रमानी यादा नान्त्रम (रणाता २)। सुद्धी स्त्री ["सुम्ब्र्धी] इन नाम श्री एक रानी (बर ४२५ टी)। संमास्त्री ["सेना] एक राज-नुत्री (नक्षा)। स्मर, स्पर्दे िंग्ररी रेनमतीना समूतः २ सधेवर तर पनैष्यः बनारुम (ग १ २६) बच्च) । । भोड सम्बर्ध [भेपीड] यक वक्वर्ती ना प्रशन्तन (जी ६, ति ६६) । इसमान् [ामम] ख्या विकास (सधा के ७ ६२)।

२२४

क्रमध्य रशी [के] हरिएगी मूपी (पाम) । क्मश्रा स्थी किमश्रा १ सरमी (पाय पूपा २७५)। २ शक्याकी एक प्रजी (पठम ७४ १) । ३ नाम शायक विशायिक की एक सम-महिपी एन्ड्राएी मिरेप (ठा४१)। ४ 'बाशायर्मंकमा' शूत्र का एक सम्पन्त (खामा २) । ५ सन्द-विशेष (पिंग) । अर ने विश्वरी वनस्थ वनी (से १२६)। क्रमिक्यी 🛍 [ 🛊 मिखिनो ] परिणी 🔻 मत रा ग्रम् (पाय)। क्रमलुक्मप र् [क्मक्रेट्सर]क्मा (वि ४२)। क्रमव ) यक स्थिप्] सोना सो भाना। क्सवस ) कमक्द्र (यह )। कमक्स (ह ४ १४६ कुमा)। क्रमसो व [क्रमदा] कम से एक-एक करके (पुर १ ११६) : **इ.**शिज वि [वे] उपश्रमित पाम याया हुया ( R 7 P) I क्रमिय वि विद्यान्त क्षेत्रवित (दत २ ६)। कसंध्रग र पूंची [कसंख्य] कर और (पत्र्यः कसंख्य र जन १ ६१ दी र द १६) । बी गी (का १ ६१ टी)। कम्प एक 📳 ह्यामत करना धीर-कर्म करता। सम्मा (हि ४ ७२) यह)। सङ् कम्मंत (दुमा)। कम्म एक [सुज ] भोजन करना। कम्मद (पड)।क्रमेद (हे ४ ११)। क्रम रेखो क्रम = क्रब् कम्भ पूर्त [कमस्] १ और द्वाराध्यक्त किया बाता यस्यन्त शुरम पुत्रम (क्षाप ४४ कम्बर १)। २ क्रम किया करणी व्यापार (हा १: बाचा): 'बम्मा ग्राल्फ्स' (पि १७२)। ६ औं लिया जाग बहा ४ भ्याक्तरत-प्रविद्ध कारम-किरोप (विसे २ १९, १४२)। १ वह स्वान बहुर पर कृता वमैदह पदाया भाता है (पराह २ ११ -- पत्र १११)। ६ पूर्य-कृति माग्य- फानता कुम्मया वेष'(तुम १ ३ १ ध्यवा( पर् )। ७ कार्यंख राधैर । व नार्यंख-सरीर नामकर्भे, कमै-फ्रिकेर (कम्म २ २१)। **इन** कि [<sup>4</sup>4र] नीनर, भानर (बाचा): **वैद्यो** शास्त्रः

करण न "करण] कर्म-विचयक क्यान, बीत-पराक्रम-विशेष (घर ६ १)। बार वि [ द्वार ] नीकर (पतम १७ ७)। किविश्त वि विकिश्यप अर्म-भार्यास, स्थव काम करनेवाला (उत्त ३)। वर्ग्यय र्च (रेक्टब) नर्म-पूहर्तों का पिरुड (कम्प श)। गर केको कर (शक)। गार प्र ['शर] १ काचैगर, किसी (राज्य १ र)। केको कदा बोगपु["बोग] शास्त्रोक्त अनुहान (कम्म)। हाय न [स्थान] कारबाना (बाबा)। हि**! व्य** िरिवर्ति १ कर्ग-प्रशासी का धनत्मान-समय (प्रवंद ६)। २ दि संसारी कीव (बर १४ ६): "चिसेन वृ ["नियेक] कर्य-पूर्वार्ते की एक्ना-विशेष (ज्य ६ ६)। बारव र् िवारय | व्याकरल-प्रतिक एक धमास (बागू) : परिसाहणा जो ["परि शाटना] कर्ने पुरुषते का पीन-प्रश्ते से युक्ककप्रश (सूच १ १)। पुरिस 🕻 ["पुरुव] कर्म-प्रवान पुनव--१ कापैनर क्रिमी (नूम १४१)। २ महारूव क्ली-वानै बामुदेद बगैछह छवा स्रोम (ठा १ १—- थन ११६)। व्यक्ताय न [प्रकार] बैंग बन्बात-विशेष मळवाँ पूर्व (सम २६)। र्वध पूर्व ["वन्ध] कर्म-पूर्वमों हा घरमा वे लक्सा कर्मों से धान्माका बत्दन (धार भूमगकि [मिमिक] कर्मभूमि में डलन्न (पराध १)। भूमि हो ["सूमि] कर्म-प्रकान जूनि भएत क्षेत्र भगैरह (वी २३)। मूमिग **ध्वो** भूतग (क्एल २३)। मुमिय रि [मिसिक] कर्म-जूनि में करम्म (हा वे १—यत्र ११४)। सार्च र्षुं ["सास] यादश मार (बो १) । शासग पुं ["माथक] बान विशेष पांच शुप्ता प<sup>हि</sup> रची(प्रणु)। स दि["ब्रा] १ करें दे **ब्र**लम्ब **हो**नेत्रालाः १ कर्य-नुस्यको ना *दश्च* श्रमा गरीप-निरोध अपरेश रुपैर (अ २ १४६६)। याक्री ["बा] सम्बत्त के घटान्न **इ**ग्लेबाली बुद्धि, ब्रमुखब (एवि)। हिस्सा बर्ग [हिस्सा] इमें शाप होनेताना क्षीव का परिग्राम (भव १४१)। बागामा 🋍 [बरोगा] क्येक्प में शरिएत होनेशना पुरुष्य-समूद्व (पेष)। वाह वि विशिवणी माग्य नो ही सब नुख मानतेवाला (राज)। विद्याग पू ["विपाक] १ कर्म परिखास कर्म-फ्य । २ कर्म दिराङ का प्रतिपादक प्रत्य (कम्म ११)। संवच्छर प्रे [सप्तर] सौकित वर्ष (गुरुव १ )। कस्माय सक [सप + मुख्] उत्तमोग करमा। साम्राची "शास्त्र] १ करवाना । २ कुम्मकार का चटादि बनाने का स्थान (बृह २)। "सिद्ध पू ["सिद्ध] बारीबर, शिली (बायम) । अभीय ["स्त्रीम] १ कारीगर। २ वारीवरी का कोई भी काम बतनाकर निवादि प्राप्त कप्लेबाला साबु (ठा ६ १)। [बाम न [बान] विसंते भाषे पाप हो दैसा व्यापार (मन = १)। । यरिय प्रै िंधे दिन है साम निर्दोप स्थापार करने-बाह्य (पर्या १)। स्वाह देकी बाह (माचा) । क्लम विक्रिमेज दिक्षेत्रस्थि कर्न श्राम्य अमे-निर्मित कर्म-समः। २ त कर्म मुद्दक्तों का ही कहा हुआ एक बरक्क सुक्त रुपेट को सनान्तर में भी प्राप्ता के साव

ही चहता है (छ १ कम्म ४)। २ कमें । विशेष वार्मेश-शरीर का हेनू-मूत कर्म (काम २ २१)। १ कामँख-शरीर का ब्यासार (कम्म ३ १३ कम्म ४) । क्रम्भइय न [क्रमंचित, क्रमेंण] उत्तर देखी

(परम १२ ६६)। कर्मात पूर्विकर्मान्त्र] १ कर्मकला का कारम (प्राचा। सूच २, २) । २ कर्म स्वान

नगरवाला (दे२ ६३)। क्रमंद वि [ क्षुपेन् ] १ इसमत करता हुमा । २ इसम नापित (दुमा) । शास्त्रा की ["शासा] नहीं पर उस्तरा---वान नगाने

ना चुरा मापि समामा जाता हो वह स्थान (निच् ६)।

कम्मकर देशो कम्म-कर (प्राष्ट्र १६)। क्रमाग ॥ [कर्मेक, कामक कार्मण] देखी कस्म = कार्मेण (ठा र १३ पर्ण २१ (क्य)। कम्मण न [कामेंग] १ कमें मक शरीर (इं २२) । २ धीपन मन्द्र गावि के हारा मोहन वसीकरण क्षम्बाटन साहि कर्मे (इस १६४ दी सं १ व)। नारि वि["कारिन्]

कामण करनेवाला (सुर १ १८)। खोय पूँ [ स्रोग] कार्मेछ-प्रयोग (ए।वा १ १४) । क्रमण म [मोजन] भीवन (भूमा)। क्रममाण देशों कम = कम्। कम्मय देखी कम्मग (मगः पेष) । कम्मवर (हि.४.१११ पर्)। कमाबण न [इपभोग] समाय काम में सापा (क्रुमा) । कल्मसंबि [कल्मर्य] १ मणिन । २ न पाप

(पाच ह २ ७६ प्राया)। कृत्मा की [कर्मन्] किया न्यापार (ठा ४ २--पत्र २१)।

कम्मार पू [कर्मार ] १ सोहार, सोहकार । (विश्व १४६०) । २ धाम-विशेष (बाषू १) । क्रमार | वि [क्रमें सर, क ] र नीकर, क्रमारत वाकर (स १३७ सोव ४ ६४ कम्मार्य हो)। २ कारीवर, शिली (बीव ६)। कम्मारिया औ [कर्मेकारिका] श्री-नीकर, बाबी (नुपा ६३ )। कारिम ) वि [कर्षिण्] कर्ने करनेवाला क्रमिश्च विम्बासी

'खब्बम्मिएख उम्र पापरेख के दूख पाउदारीयो। मोतान बोत्तमपन्बद्धन्मि सम्याससी मुक्ता।

(या ६६४) । २ पान कर्ने कठोबासा (मूख १ ७ ६) । कम्मिया थी [कर्मिस कामिका] १ सम्यास से बन्पल होनेवाची कृति (लावा १ १)। २ बाजीए क्में विशेष बनशिष्ट कर्म (मय)। कम्ब्स्स न [क्ट्मस्र] पाप (धन)। कन्द्रा स [करमास्] वर्गे किन कारण

ਦੇ ? (ਬੀਧ) । कमहार केनो की मार (है २, ४)। सन िंड] केमर, बुकुम (बुमा) ।

कम्बिल पूर्वि नाली नालाकार (देन a)। कम्हीर केशों के भार (मूत्रा २४२ वि १३ ३ 427) i

क्य पू [क्य] क्य, बात (हे १ १०० कुमा)।

क्य पूं [क्य] बरीएना (गुना १४४)। क्य देवो कड = इत (बाका कुमा प्रामु ११)। करम उद्य वि ["पुरुष] पूर्वकाली भाग्यसमी (स ६०७ सुपा ६ ६)। इ

रेतो ग (पएत् १ २)। कळावि विगयी कृतार्च सफल-मभोरम (ग्रामा १ ८)। करण वि [क्र्ल] सम्मानी श्वाम्यान (बहुद्द परहर्द के)। किया वि ["क्टरप] इतार्थं गरुन मनोरन (सुपा २७)। ग वि िंकी १ धानी बलाति में पूसरे की सपेता करनेवामा प्रयम्न-वन्य (विशे tale स ६३३)। वृं बास विशेष युक्ताम 'भगगभर्ता वावत्रमत्तेवा कयगमत्तेवा (निवृध)। ६ न भूपर्शको सोना (सक)। स्म वि ["ध्र] उपरारम माननवासा इत्तम्म (पुर २ ४४) सुप्त १८६)। **काणुष्ठ वि [ैकायक**] **इतक** जरकार को माननेवाचा (पि ११६)। ण्णु वि [<sup>\*</sup>ड्डी उपकार की माननेवासा, किए हुए छाकार की करर करनेवाला (कम्ब २६) । ज्युवाकी [\*क्का] इतकता प्रमुखलमन्दी निहोच मानमा (उप पू वर्)। त्य दि [ वर्ष ] इतहत्व चितार्थ सरुव-मनोरव (प्रामु २३)। नासि वि िना धिन् <del>। इ</del>तम्ब (ग्रीव १६६) । स, न्तु रेको प्या, 'में किलियमहिराया विवेदनय-मदिरं कमन्तपुरू (तुपा ६१ महा। सं ३१ मा९०)। पंज्ञक्ति [ शक्तिही इताम्बलि गमस्कार के सिए जिसने हान कैंचा किया हो यह (बाव)। पश्चिक्य की [पितिकृति] १ प्रसुपकार (पेचा १६)। २ वितय-विधेय (वच १)। पढिच्छ्या 🛍 [प्रविकृतिका] १ अन्त्रुपकार (शाया १२)। २ विनयका एक मेद (छ। ७)। विकास्म पि [ विक्रिप्रेमेन् ] विसने बेक्सा की पूजा की है वह (मग २ ३० लावा १ १६--पत्र २१० तंद्र)। संग्रस धी ["सङ्गस्त] ६५ नाम की एक नवरी (सेवा) । मास, मास्य वि [मास, ६] र जिसन माला बनाई हो बहु । २ पूं कुन-विरोध कनेर नः गास्, 'संदोक्पविस्तर्ग्रहक्यमात्तवमास-सामवर्ष (उप १३१६ी) । १ समिका-नामक पुष्टा का समिद्वागक देव (टा २ व)। क्ष्मकाम वि ["सन्द्रण] विसने सपने शरीर चिन्ह को मफल किया हो बहु (मग्र हा णाया १. १)ः द वि [ यम् ] जिल्ले किया हो नह (निसे १४१४)। वाणमास-

पिय पूं ["बनमासप्रिय] इस नाम का एक क्या (विचार, १)। बस्स 🛊 विसेत् नुप-विश्व भगवान् विमत्तनाथ का पिता (सब १६१)। भीरिय पूं ["बीर्य] कार्त-बीबें के पिता का पान (सूच १)। कर्यस (कृतस् विमय वय (अवर १४४)। क्रमाखा की किन हुन। मानस्ती नगरी के स्पीप की एक नगरी (मन) ।

इध्यत प्रक्रियान्त ] १ सम् मृत्यू मध्दा (मूरा १६६) सूर २३)। २ शास्त्र निकासा 'प्रत्ति कर्य है में क्येतियां व सार्धीहर्य' (शार्थ ११७ मुना ११६)। ३ छन्छ का इथ नाम एक गुमर (पटम १६ ३१)। सह पू मिला एमक्टर के एक केशपति का नाम (पत्रम ६४ ६२)। धयण ध् िक्त्सी राम का एक केनापटि (परुम **e**y R ) 1 क्यंच केलो क्संच (हे १. १३८) वर ) । पार्यन देन्द्रो अस्त्रेन (मएए १ है १२२२)। कर्यं र किरम्ब निरुद्ध कप्पादी पित

मार्थ जीवपूर्वर्थ व रक्षक क्षत्राणि (श्रेषीक कर्यविव वि [क्युन्यित] समञ्जत विमूचित (इप्पं)। कर्यकुम देशो कर्राकुम (१प्प) । क्या वि [इतक] प्रमानाय (वर्षेष्ठे १६६ X (X) 1 क्षप्रा वि [क्रामक] वर्धशेतका (वर १ टी)। क्या प्रैक्तिकी १ बुद्ध-विशेष निर्मणी। २ न कब्राइ-शन्त निर्मती-फ्रम पानप्रहारी बाइ क्यबर्गनए।ई चार्द्रहायो विशेष्ट्रिटि

(विमे १६६ हो। क्यज वि [बद्वी] रंबुस क्ष्पस (स्त्र)। क्यांकृ (कपर्शिक्) इस नाम का एक क्य देवता (गुरा १४२) । क्यण न [कर्रन] हिंदा मार शलना (है १

२१७)। कपरण पत्र [ कर्यांच् ] हैला कला वीहा क्रमा। क्षेत्रमें (क्रम व टी)। क्रम्ब क्यरियञ्चंद (स ४) । कथरयण व [कदर्भन] देखती देखत करता. पीइन (नुसार अमन) ।

t (\$ \$\$ 7g Few क्यत्विव वि [कर्यारेत] हैरान विमा ह्या, वीदित (पुता २२७ महा) ।

क्यश वि किन्ध्रों बराव धल (वर्गवि 1 (385 क्यम वि [क्तम] बहुत में से कीत? (त Y 2) 1 क्यर वि[क्तर] यो में से कीन ? (हे % x )ı

क्ष्यर पू [कार] ४ इस-विशेष करीर, करील (संदेश)। २ त. करीरका फल (पमा १४)। क्ष्यस र्वे [कर्**छ**] १ वस्ती-कृष वेका का नाच्चा २ म. क्वली फन केला (है १ \$ 1 (# F क्रमञ्जन [वे] प्रक्रिज्ञर, पानी मरने का बड़ा क्वरा अंग्रह, यटका (वे २ ४)।

क्यकि की भी किएकि की नेवा का

गाम (शहा, हे १ २२ )। समागम प्

[समागम] इस श्रम मा एक गर्च (बावन)। इर न िगृह् निवनी-साम्य वे बनाया क्रमा वर (शक्क सूर ६,१४३ ११६)। । कमञ्जूब केली कम ⇒ इन (पूक्ष २ ३)। क्यवर प्रेडिंश कतकार, प्रशामिता (लामा १ १) मुना ३८० वक अस्टर्सर्थ भत्त ६। पामः सरापुष्य ६१ लि<del>ड</del>ू ७)। २ विद्धा (भाग १)। क्यवररिकता की वि क्यवरोतिकहा नूका साम करनेवासी शाही (जाना १ ७—

पन ११७)। क्यवाष पुं [क्रकाक] प्रदूर, दुवना पूर्वा (भउष) । क्यवाय पुं [क्रम्बाक] कुम्बुट, कुम्बर पुर्श (पाप) । क्ष्मसम्प न [क्ष्युराध] खराज मोलन (विक 1 (FF 5 कमसोहर वृं [दे] पुणका, मुर्वा 'कमनेहराण नुम्मद बाबानी ध्वति गोग्रॉम्म (नमा ७२)। क्यास [क्या] कर निसंसमय? (ठा३ ४ प्राप्तु १६१) ।

क्याइ≡[क्यापि] नमीओ निसीसमद

बी (उग्र)।

क्षप्रस्थामा की [क्यूकीना] उत्पर देनो (स | क्याई ) स [ क्ष्याचित् ] १ किसी समय कभी (उदा वसु) 'धह धप्तवा क वात क्यार (सूपा ५ ६, वि ७३)। क्रयाई २ वितर्व-चौतक चम्पन 'न्द्रं सि कमर्रात' (चम १६)। क्याण न (ऋमाणक) देवने योग्य वर्द्ध करियाना (टर पूरेर )।

क्रमाणमा पूनः देखो क्रमान्यः क्रिम नियवा-इराग्ड कवाएपे कि न विक्लेड (स्टिरि 1 (DAX क्रवार पृष्टि कतवार, कुका मैता (६ % ११ः वर्षि)ः क्ष्यावि देवो क्ष्याह्= क्वापि (प्राप्तु १३१)। कवोगः पुं [क्षयोग] सट-विदेत, बहुवरिया (TE Y) | क्ट सक [कृ] करना बनाना। कट्ट (है ४ २३४) । जुका काती, नाही काहीय करियु कर्रेंसु समासि सकासी (हे १ १६२) हुना क्य क्या) । प्रति नाक्षित्, काह्य करिस्का, करियोहर, कर्या, कार्यहान (है १ 🗉 वि ४३४) कुमा) । कमें, कमह, सरीह, करिका (मर्ग है ४ २६ )। वक्र करंत करिंत करेंत, करेमाण (पि १ टः प्रकाश वर, वे १,१% सुर २:२४ । छना)। इतकः कळामाण किर्रत कीरमाण (१ ५४७ द्वा क २७२। रमण ६१)। इन्हे, करित्ता करि चार्ज करिवृज काई, काळज काळजे, **बद् ट., करिंग, किया कियार्थ (श्या व्ह** 

व्यक्त करकारण कायहर (स्त १ पर्) स रहा प्राप्तु १४८ हुमा)। प्रश्रो करावेद् करानेई (वि ११३) ११२)। कर 🖫 [कर] एक म्यूरायह (तुश्र २ )। कर 🕽 [कर] १ इन्द, ह्राव (दुर १ ४४) प्राप्त १ क्षेत्र (उर ७६ टी पुर १ १४)। ३ फिराइ संयु (स 🍽 दीर दुमा) । हादी की तुँह (दुना) । ३ करका रिमा-वृद्धि, बीला 'करक्त्रशब्दि-याणिकामी (पराम १६, १५)। नाह 🕏 [भिष्ठ] १ दान से बहुए। करना: 'बस्स

१ पड़ा दुना सराब्दि ४१। तुन ११

१ मीत) । हेक् काई करेखय (कुना मन

< १)।इट इन्स्रीयक्क **कर**शैक्ष इन्हरि

करम्म्यूपृतियो विमाही (पा १४४)। २ पाएि-धद्रश्र रापी (एव)। यपु ["स] नस (गाप्र १७२)। सह पुन ["करस्ट्रा १ सम्ब (हे१ ६४) । २ वूँ सूप-विशेष (पत्रम ७७ ६०)। सापत्र न ["सापत्र] कता-रिकेष इस्त-शायन (कम्म) । येन्ण ग ["सन्दन] करन का एक दाप एक प्रकार का शुस्क समस्तर बन्दन करता (वृह १) । करमही ) की [वं] स्पूल वस मोटा दपड़ा क्तअरी रे (रे रे १६)। करकाबी[करका] वरता घोला शिला-बृद्धि (शक्दु १४) । कट्ट्राध्येको हिं] शुटक-कुल सूखा येह (वे २ १७)। करंक यूं (दे करकूं) १ निम्ना-पान (दे २ ११ वर्ष)। २ वरोष-पूत्र (६२ ११)। कर्रक पून [करकू] १ इही हाटा फर्रकक धन्त्रीसन्ते नसन्त्राम्मि (सुपा १७६)। २ द्मरिव-गळर, हाद-गळर (उप ७२४ टी)। ६ पानशन, पान बगैप्ह रखन की सोटी वेटी। 'तंबोनकरंबाट्रिफीयो' (बच्यू) । ४ हर्द्वियाँ का केर (मुर १ २ ३) । करंड सर [सम्ब्यु] दोइना फोड़ना दुवड़ा करता। करंगर (हे ४ १ ६) । करंज वू [करंज ] कुछ विरोध भरिका (पण्ल शास १ १३ मा १२१)। क्दंज पुंदि] शुन्त-त्वत्रः मूखो लवा (वे २ ८)। करिक्रभ वि [भम्र] बोहा हुमा (दुमा)। करंड पून [करण्ड] वंद्यवार हड्डी (संदु 12) I कर्रह = रेक्स ् वृ [करण्ड क] १ करण्ड हिम्मा पेरिया (पशह १ मा मा १४ छा ४ ४)। दर्शीहपा धी [दर्शण्डम] छोटा दिमा (सामा १ ७ जुना ४२०)। क्(डी स्पे [करण्डी] १ डिव्या परिता (मा १४)। र बुधी पात-सिरेन (जन १६६)। करहम न दि दे पेठ के पात पी हही (पएट १ ४—दर ७६)। ब्दरेत देगो कर = इ । करव व [करम्य] ध्री भीर भाष ना नता

हुया एक बाध इच्य रच्योदन (पाम दे २ १४ मुना १३६) । क्ट्रॉब्स्य वि [क्ट्रस्चित] म्यास कवित (सुपा ६४ मरा । करफेट पूं [फरफण्ट] एस माम का एक परिवासक तापम-विशेष (धीप)। करकंडु र् [फरकण्डु] एक वैन महर्षि (महा, परिः) । करकथिय वि [अकथित] करवत यादि से काहा हुमा (बल् ११४)। काकड वि [दे ककर कर्फर] १ विका पल्प (उबा) । करकत्री की [दे करतटा] विवस निक्लीय ब्रम-विरेप वा श्राचीन कान में बच्च पुरा को पक्षमाना कालाया (विपा १ २ -- पव इरस्य पू [कृष्य] कलन कर्पत बारा (पएए १ १)। करकर वे किरकरी वर-कर समान (जापा १ १)। इंड पून [शिपठ] गुण-विरोप (पराह् र --पत्र ४)। करकरिंग दूं [करकरिक] यह-विशेष यहाबि हासक देव-विशेष (ठा २, ३—पत ४८)। करम देखी कारम = शास्त्र (छरि ३.)। करगर् करकी १ करका बोसा (मा २ ३ बोच १४१ थीं १)। २ पानी की क्लकी कल पात्र (बातु १ व्या १६ सूपा १११ ३६४) । रेका करय = करक । करगय वैको करकय (स ६६६)। करगाह देखो कर-ग्रह (सम्मत्त १७१)। करपायक्ष पूं दि] किनाट, दूव वी नसाई (११ २१)। करच्छोडिया भी विशे तानी तान (शुग २ करहू 🐧 विंे यात्रिण यम यो वालैशासा बाह्मण (मृष्य २ ७)। करहर्ष (करटी १ काव कीया (बर १ १४) । २ हावी वा गाव-स्वम (मूपा १३६ पाय)। ३ पाय-रिशेष (पिक=७)। ४ बुगुरमञ्जा १ वरीर-कृत । ६ विरक्षित, सरः । ७ वासीय नास्तिक । = भाद-विरोध (रे १, ११ हो)।

करह पूँ दिं] १ म्याप्र, शेर । २ वि कमध वितक्षय (दे २ ११)। करहा सी दिं निर्दा—१ एक प्रकार का करक बुजा। २ पश्चि विशेष चटक। ३ समर, बींछ । ४ बाध-विशेष (वे २ ११) । करिंड वूं [करिटम] इत्यी इस्ती (पुर २ ६शः कुषा १: १३६) । करही की [वें करटी] बाच-विधेय 'महसर्प करबीएँ (अस्)। क्दबयभक्त न [दे] धाड-निरोप (पिड)। करण म (करण) १ इमिय (मुर ४ २३६ (दुमा)। २ वासन पदासन बगैरह (दुमा) । ३ व्यक्तिरुए बासम (मुमा)। ४ इति क्रिया विधान (ठा३ ४ मुर ४ २४६)। इ. कारक-विशेष सावस्तम (ठा ३ १ बिसे १६६६)। ६ छ्याचि ज्यबरण (घोष ६६६) । ७ न्यायासम न्याय-स्वत (कर प्र ११७) । < बीर्य-स्कृत्सा (ठा ६ १--पत्र १ ६)। ६ व्योतिः शास-प्रनिद्ध वव-वालवादि करण (सूर २ १६%)। १ निमित्त प्रयो वन (चालु १)। ११ जैल कैंबलाना (म्रवि)। १२ वि जो किया बाय बहु (ग्रोप २ भा ६) । १६ क्लेशाला (हुमा) । हिवह पू िधिपति । जैस का सध्यन्न (प्रवि)। साख्य की ["शासा] न्यानानय (वस व् इसरि पद १ व २)। करणया ध्ये [करणना] १ घनुष्ठान हिया । २ धेयमानुब्राल (खाया १ १—पत्र १ )। करणसासा भौ [करणशासा] ग्याय-मन्दिर (रम १ १ दी) । करणि की [वे] मिया नमें (पणु १९७) । करणिकी हैं] १ टा मानार (६२ ७ मुता १ १ ४७३: गाम)। र साहरव नमा नता (प्रेलू)। ३ धनुसरल नस्त सरना (गडर) । ४ स्थीनार, मंगीकार (बर ह ₹८१)। क्रिकेट देशों कर = हा। करित रि [रे] समान, सहरा- 'मयलज्यन केलीरकर्यिएम्नेलं अवामबोरेलं निरंहरेलं च बर बुवनेएँ (छ ११२) 'बंबूबर र्राएप्सेल \_

बदामाग्येल बहरेल (ब्रू३१२)।

। करणीओ देशी कर ≂ हा।

नाइ 🙎 ["नाव] १ ऐरावस ५% का

इत्यो । २ कत्तम इत्ती (भूपा १ ६) । अधिण

न ["बन्बम] द्वानी पक्काने ना पर्त (पार्य)।

करिक्ष पू [करिक] एक महाबह (मुख २ )।

भयर पूँ भिन्नर] वत-इस्ती (पाध)।

२ ०७)।

(विदेश ६ मणु)।

करिसावण पुन [कार्योपण] हिक्का-विशेष

करिसिद् (दी) वि किर्पित र मनिना

२ पासाक्ष्मा बेटी किया ह्या (हैका १९१)।

बाध (वडा) ।

करसी हि देवो कहसी (हे २ १७४)।

क्स्पर् पूं [क्स्स] १ ऊँट, चन्द्र (तक्ष्म ४६

इम्बनियेव (बढर ६६॥) ।

४४० रामः कृता<sub>ल्य</sub>तुपा ४२७) । २ त्वीवी

पात्र-विशेष (ब्राण् केष्ठ १३ पाच) । २

करिसिय हि [कृष्मिन] दुवंब विमाहधा (मूच १ १)। करीर पू [करीर] इय-विशय करीर, करीत (उप ७२८ टी) मा १६) प्रामु ६२)। करीस र् [कराप] यसले के मिए गुजाया हवा गोनर, इंबर गोइटा (हे १ १ १) । बरुग देती कलुण (स्वय्न १६: गुपा २१६) 'तरमञ् त्रयारमार्थ वस्थितं वरणार्थं व द्मानुबद्दं (गतः)। सन्गा भी [फ़रुमा] दया दूसरे के दुःख वी इर करने की इच्छा (गतत हुमा)। करुवाद्य वि [कम्जायित] जिसपर कम्णा की गई हो बहु (गड़ड) । क्षत्रणि वि [क्षरणित्] करला करनवासा दबादु (सए) । कर सम [ प्यरम् ] करामा । करेड (आक्र 4)1 करेअम्य } क्षेत्र कर = इः करहु दूं [दें] इनमाम निर्दाद, सर्ट (वे २, ५)। करेणु ५ [करजु] १ इस्ती हायी । २ वनेर शा बाह्य, 'एमो करेन्नू' (हे २ ११६)। ३ द्यी हम्जिनी इकिसी (हे २, १६६) लाया १ १ नूर = १६१) । दत्ताक्य विता] ब्यारत प्रवासी की एक की (वस १६)। सेणा धी ['सेना] रेपी पूर्वीक धर्व (उत्त १३)। करेणुआ को [करेणु] इस्तियी इचिनी (पाध महा)। करेमाम } देवो कर = इ: । को अ**ब्य** करेपादिय रि किरमाधिती राज-वर ने पीड़ित, महमूच में दैयन (धीउ) । क्टोड र् [वे] १ मारिनेत माध्यित । २ बाव बीमा (३ दूरम, कैन (६ २, १४) : फरोहरा पू [रे] पात्र-तिरोध बटोस (शिक् करोडि मी [बरोटि] बिर भी हुई (तुव २ २१)। वरोडिय दू [करोटिक] वासीवर विद्युव-विदेश (ग्रामा १ ४ -- १४ )।

स्विगिका पानदान (जादा १ १ टी--पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पात्र (बीप)। ४ कपान मिला-पात्र (खाया १ =)। इ परीक्षत का एक उपकरण (दे, २ वेस) । करोड़ी भी दिं एक प्रकार भी भीती शुद्र षभू विशय (वे २ ३)। करोब्री की दि ] बुरुष शव (पुत्र १ २)। क्रल तक [कळ्यू] १ तक्याकरला। २ शादाज करना । ३ जानना । ४ पहिचानना । १ श्वेतच करता । कसद (द्वे ४ २१६) याः)। कमर्पेटि (विसे २ २१)। मर्वि वसन्त्यं (पि १६६) । वर्षे कतिकए (विम २ २१) । शक्त कस्त्रयंत (सुपा ४) । काह पश्चित्रत (नुपा १४)। वंह पश्चिम्न क्तिज (महाः वनि १८२)। इः कस्तिज्ञः. **फड़शीक्ष (मुपा ६२२) वि ६१)** । क्छ वि विस्त्री १ मधुर, मनोहर (पाप) । २ पुँचम्यकामपुरशन्य (एम्सा १ १६) । ३ भोताहम बचनम (चंद ११)। ध कर्यंव शीबद, शोदो (भत १६ )। १ पाग्य-विरेप थोल जना मटर (ठा १, ६)। फ्रेंडी स्त्री िंकपठी कोविका क्षेत्रण (**१**२, ३ षण्])। संजुल वि शिक्तजुनी शब्द से मधुर (पाछ) । यंठ वू [ कण्ठ ] शोदिल बोबन (नुमा) । बंठी बनो कप्टी (नूर ४ ४६)। इंस वूं [दिस] एक वर्ता, राम-हेस (गणा गढाः) । कर्तक पूं [क्याङ्क] १ बाग, बोप (प्राप् १४)। २ माम्प्रम्, चित्र (पूमा यउद)। कार्यक्र वर्षः [कार्यक्रम् ] कार्यक्रितः वरमा । क्नॅक्ट(वर्षि)। क् कर्खक्रियम्ब (गुरा ४४८-पर्छक्र पूँ (वें) १ वीत पेश (१२ ०)। २ वॉन वी बनाई हुई बाइ (छाया १ १)। क्षांत्रम वि [क्राह्यस] सम्पंतन सम्प (बीर भेषा) ।

प्रसंस्त्रीभागि वि किलाइकीभागिन् रुप म्यार्च (यम २, २ ६१: ८३)। क्छंड्छीभाष प् [इस्डइसमाव] १ द्वाय से ब्यारसता । २ संसार-परिधमण (धाना २१६१२)। कर्लातमाई की बिरे बृति बाइ करें मादि से परिच्छत्र स्थान-परिषि (दे २, २४) । कर्लक्ष्य वि [क्स्स्ट्रित] वर्लक्षत यागै (ह Y Y \$ 4 ) 1 । कर्सक्षित्र वि [करुट्टिम्] वर्णक्रवाला वामी (बाव' पि १६१)। कर्लंडर न [कन्द्रान्तर] म्याम सूर (नुप्र **444)** ( कर्त्वर एं किसन्ती १ पूरण दूगना रंग पात्र (बना)। २ जाठि से माम एक प्रतार कै मनुष्य (ठा ६--- वन ३४०)। कर्तन पू [कर्मन] १ दूरा-विरोध तीय करम का गाय (है 🐉 🤻 २२२। सा ३७-क्णू)। चीर म विशेषीरी राज-विरोध (बिपा १ ६---पत्र ६६)। बारिया ह्ये िंपीरिश्च कुछ-विधेर विमना बढ माग चित ठीवल होता है (भीव है) । बालुबा भी ['पालुका] १ करम्ब क पूरा के मारार बाखी पूर्वी । २ शरक भी नदी 'बार्मबदा-मुपाए बहुनुम्बो घलंतसी' (शत १६) । कर्ममु थी [रे] बन्ती-तिरोप नातिना (दे २ १)। कर्लयुक्त न [पद्मम्बक] नदम्ब-बूल वा पुत्र 'पार्यत्वनर्गंद्वमे वित्र ममुस्मनिवसमपूर्व' (गप्प)। कर्तनुभा [रे] रेगो कर्त्रपु (राग्ट १३ नुष ४) । बर्लपुभा की [बररायुक्त] रे कराब पूछ के जनात अभि-भोरक। २ एक वृष का नान जहाँ पर सपरान् महाबीर को कालहम्त्री ने मनाया वा (राम)। कर्रपुषा की [करम्युश] तन में हितेशना बनस्यति की एक पाति (नूम २ ३ १०)। कर्मकण व [बस्तर्कत] वर्णाका करता बर्णायुग व [बस्तरक ] राज्यनुग (गुज 1 (53 क्सक्य पूं [क्सक्य] १ क्षेत्रस्य क्य बनरर (बा १४)। २ व्यक्त राष्ट्र

गुवर्णकार (वे २ ५४)। से मिश्रित क्ल (दिपा १ ६)। स्टबस्ट सम**्मस्ट**लाय्] **भवश्य**े क्खय पूँ [क्छाद्व] शोनार, सुवर्संकार (पड् )। यापान करना। वह कस्रक्षंत कस्रक्रस्ति कसर्पदि मि दि] १ प्रसिद्ध विक्यातः २ क्यक्रमेंच क्रम्बरुमाण (परह ११३ धीप)। इस्त्रहर्कित न (इस्त्रहर्कित) गोनाएय करना इस्राह्मिय दि (इस्टइसिट) कतक्य राज्य गा १६१) । से पुज (सिरि ६६४)। क्सकल वेबो कडक्का – क्यल (रा७ २)। बाला (क्का ६६)। **भस्रभुक्षि रू** [कर**णुक्षि] १** समिय विशेष । २ इस माम का एक खबिय-वंश (लिए)। क्रम्ब (पिग)। क्स्प्रम केवो करगा 'तोगुनि नमखेनु हानु सहसंकर्पो (घण्ड २) । क्छभ न [क्छन] १ छ= मासव। २ संस्थान गिमती (विसे २ २ )। ३ बायड सोखिय- (परम १६, ६६)। २ वर्स-बेट्न वर्ग । १ वर्ग के धवनव क्य रेत-विकार करना (मुदा २१)। ४ वालना (गुना ११)। १ प्राप्ति, ब्यूल 'युक्तं वा उत्स्वनतानकत् (नतः) । ४ करि। कीशङ् कर्मम (परः) । क्किसिय वि [क्छिसिय] क्वीमित कीवरासा

प्रसामस्पूषस्यं (या १६)। कक्षमा वर्षे [कक्षना] १ इति करण 'कुरुएं **६६**प्य-वर्षे (प्रमुक्तशक्तशक्तं चित्रस्त कृतं वर्षे (क्यू)। २ वारात करना, क्याना 'नवमहोहे सिरिबंडपंत्रकाश्चा (कृप्यू)। क्छानिश्र देशो ६३ = दनव्। **फळल म [फळात्र] को** मार्मा (तासू ७६) । कस्त्रभाग केवा कस्त्रहाय (धीप) । क्छम दुंसी [क्सम] १ हामी का करना (शापा १ १)। २ वच्चा, वासक 'खबमाधु

২≹০

मानाव (सप १ ३३ राव)।३ चुना सादि

सरवर्तेमरनमर्गदानहास्त्रुसमुधँ (हे १ ७)। क्यभित्रा स्त्रै [क्यभिक्य] हानी व्य ली मधा (फामा १ १--पत्र ६६) । कसम इंदि क्छमी इ चौद एकर हि २ १ पाम माना)। २ एक प्रकार का बन्नाम नावत (धवा प २. पाध)।

क्षमान र् [क्समस] १ के ना सक (हा व ६) । २ वि दुर्वन्दि दुर्गन्दनमा (का ०३६) क्छमङ पुन हिं] १ मरत-नेपन (श्रंश ४७)। २ बंपन नरनच्छह इसार चनुकेंद्र धहीसी शोखिबनिवालपुर्वसार्थं । स्ववीप विदियं भन्न शनवबर्ष वराइ द्विययम्गि (गन ६६)। बक्रव रेजे ब्युडव (हे १ ६७) s

स्थी कुत विरोध पाडपै पाडम (दे २ ६८)। क्छमञ्जू । दि ग्रीह-नेप होठ पर नगाया बाता लेप-विशेष (म्बि)। क्षाया केवी कक्षाम् (हे २ २२ ३ पायः क्क्षपस्तिर वि[क्क्रम्माविद्] क्रम्पन राते-क्**ब्ब**न कि.स. १ वीव सीर शोशित का বসুবাৰ 'দাহতৰ্গতি ভোৱা গুক্তবৰুৰ্বৰভাগিৰ্য क्बर्स (परम ११ व): वसक्तवसुँध-

बानक्मनियद्दारा (पडड)। क्सविक पु [क्खविष्टु] पक्षि विशेष वटक मौरिया पत्ती मौरैवा (पाव' फ्टड)। क्लाम् स्मी हिं] तुस्तीपात्र (देश, १२) पद्)। क्छमा पूर्[क्छ्य] १ पत्तर, बक्रा (क्स णाना १ १)। २ स्तम्बङ **ब**न्दका एक ग्रेट, क्य-विशेष (पिंग) । क्टस पूर्व [कलात] १ एक देश शिमान । (क्षेत्र (४ ): २ वाद-विशेष (सम K क्रमस्थित स्थी [क्रमशिका] १ कोटा बहा (मजु)। २ वत्य विशेष (श्राष्ट्र १)। क्ष्मद् र् [क्स्प्रह्] क्लेश, मनश (श्रम भीए)। क्स्म् वेची क्रसम (क्ट प्रश्न ४४ २ )। क्छ्यूव [के] समाग की स्थान (वे २ ४, कक्क वर्ष [कक्काय् ] भन्ना फेला नक्षर् करना । श्रष्ट क्रम्म्यूमाण (पक्य २० ४) मुला ११) १३६) १४५)।

**४८६(ज न [फ्टब्स्न]** सन्तर्भ करना (क्ल) ।

दिना हुमा' प्रवस्थार एक्क्स हिमानियरे सरबी

(री) (नार) । बहुः ऋग्रहार्मत (ना ६ )। कल्लाइअ वि [कल्कायित] नवहनता भ्व्यकृतकोर (पाध) : क्खहि वि [कर्काहम्] ध्यकाचीर हि ६, XY) I कब्दोय न किसपीत् । तुन्हीं धेना (सए) । २ वस्ति रजत (वज्रण परहरू ४) वाप)। ऋछाश्यी [क्ला] १ बेठ का**न** नामा (क्नु४)। २ धनय का शुक्त कृप (विदे २ २८)। ३ चनामा का बोबाव दिसा (शसू ६६) । ४ कवा निद्या निवान (कमा च्या प्राप्तु ११२)। पूक्त कोग्य नका के पुष्प व्यक्तर भीर स्त्री-योग्य कता के तुका খীনত নৰ ই 'রলক্তম কৰা' (মতু); 'बावचरिकतापंडियावि पुरिसा' (प्रामु १२६)-चंबर्डाट्रक्तापविका (खामा १ १)। पुरूर कना वे हैं---१ निपि बान । २ झंक्नस्ति । ६ चित्र कताः। ४ नाट्यकताः। ४ गान, शलाः। ६ वाध वबला। ७ स्वर मह (पञ्च ऋपेर वर्षेष्क स्वरीं का बात)। पुरुष्टर का (मुर्वेव पुरवादि विरोप नाम्य का शान) । १ सनवान (धैयोत के तस्य नाबान) । १ घृत नता। ११ बनवाद (बीमॉ के साथ प्राथान संवार करने की विवि) । १२ पासे का लेख । १६ पश्चपर (चौपार श्रमने भी पैति)। १४ र्शक्ष क्षित्व । ११ १५-पृक्तिका (पुनवप्र विद्या)। १६ पात्र कता । १७ पात-निर्मि (बसपान के कुरा-दोय का ज्ञान) : १८ वस्त विकि (बस्त की समावट की पीति)। १६ विशेषक-विधि । २ श्रमन-विधि । २१ मार्गी (क्य विशेष) वनले की रौति । २२ प्रहेलिका (विनीव के विए पहेसिन)-पूहारूम पद्य) । २३ यायक्किम (अन्य विशेष)। २४ वासी (अन्य विशेष) । २५ बीटि (अन्य-विशेष) । २६ स्लीक (अनुदूर अञ्चर) । २७ विष्प्र युक्ति (चांदी के मानूपर) की क्यारवान बोबना) । २४ सुरत्ने पुष्टि । २**१ पूर्व-**पुष्टि (नुष्यन्य पदार्चे बनाने की रीति) । १

मामरश् विधि (मानुवर्णी की बनावर)।

६१ तब्सी शरिकर्म (त्थी को नुस्य वनाने

4344 <del>- 4</del>8

कस्रदाश देवी करह = नवहान् । करहाएरि

विन्हों का परिज्ञान)। १३ पुरुष सञ्जल १९४

धारव-सञ्चल । ३१ यज-सञ्चल । ३६ यो

सगल । १७ दुस्रु-सगल । १८ धन

सत्रत्। १ द्र दर्द सत्रत् । ४ सनि सत्रत्।

४१ मण्डिनसम् (एत-परीमा) । ४२

काकणि-मनस (सन विशेष की परीक्षा)। ४३ बालुविद्या (गृह बनाने धीर गुवान की रीति) । ४४ स्वय्यादार मान (मैग्य परि मारा) । ४२ शार-मान । ४६ चार (४६-चार , का परिज्ञान)। ४७ प्रतिचार (यहीं के वड-मनन बगरह वा ज्ञान यवदा रीम्प्रजीवार ज्ञात) । ४६ म्यूह (सैन्य रचना) । ४६ प्रतिस्मृह (प्रतिकृतिक क्ष्युर्)। इ. चक्र ब्यूह्। इ.१ यका स्पृष्ट् । १५ शहर स्पृष्ट् । १६ पुत्र (मझ-पुत्र)। হর নিয়ের। ২২ বুরারিয়ুর (বংগারি -राज्य से पुढ़ि। १६ इटि युद्ध । १७ सुद्धि युद्ध । ५० बाटु पुत्र । ५८ बता पुत्र । ६ द्यु-सारव ( नियान्द्र-नूचक शास्त्र )। ६१ स्मान्द्रशास ( पश्च रिव्या शास्त्र )। ६२ चनुष्ट । ६३ द्विरेत्य पाच (बांदी बनाने की चीति)। ६४ मुक्लं-पाङ। ६३ सुबबीहा (लड़ ही सूद को बनक प्रकार कर दिल्ला)। ६६ बन्द श्रीहा । ६७ मारिया केन (चन-गिरीपः) । ६= पत्र-स्थेष (धनाः पता में समुद्र पत्र का फेरन, हुन्त-नापर)। ६६ कर-क्येप (गानी वध्यक्रम ने क्षेत्रकरन बाजान) । ७ समीप (मरी हु<sup>†</sup> पानू को (क्रायम बनाना)। ७१ निर्योद (बानू मारण रशायण)। ७२ छन्त-रत (छन्त इद्धातः) (भैरदीसम्बर्ध)। तुरर्द [शुर] बनाबार्वे नियाप्यारर क्रिनंड (बुरा १६)। यरिय इ ["बार्य] रेनो पूर्वोच्छ धर्ष (गाया १ १)। सह की [ यर्ना] १ क्लागनी ध्री । २ एक प्रतित्रता की (क्यू क्यू पारि)। संयुक्त व [स्थ्य ] संस्थानिकीय (दा १ ) । क्यापा में [क्युक्सिय] प्रशेष में में सेशर मिलाराम सर का हरतारवंड (शाय) । शस्त्रव र्षु [काद] मोनाय दुस्तुंबार (कार १२ लाय) १ ८) । कमाय र् [कन्मय] चन्त्र विदेश गोत बना, बन्द (टा १ शम्बु १)।

भी चीति) । १२ स्त्री-मसाण् (स्त्री के गुमानूम | कछाव थुं [कछाप] १ सपूह अल्पा (हे १ २६१)। २ मदर-रिश्य (मृता ४८)। १ शरीप तूल जिममें बाल रक्त बले हैं (दे २१४) । ४ क्एठ वा मानूपण (भीप) । फुळाइग न [फुछापफ] । चार रूपोर्ग पी एक बास्पता। २ छोवा वा एक घानरण (प्राहु २ इ.)। प्रशायक [ब्रह्मपक] बार वर्षी को एक । बाह्यता (मम्भतः १८७)। क्साबि पूँगी [फ्टाविन्] मवूर, मोर (सा ं ७२= छे)। कृति एँ [कृति ] एक मरस्य गत (वेरेन्द्र २६)। क्रक्रिये किंछि १ कसह मध्यक्त (दूमा प्रामु ६४)। २ प्रय-विशेष कवि युग (का < वेव)। वे पर्नेत किरोप (ती १४)। ४ प्रथम मेद (निष्कु १६)। १ एक क्षतेला (तृष १२२ मग १०४)।६ दूर पुरुष 'कुद्रो वसी' (पाय)। आग आय पै िको अ] गुग्म-राशि विरोध (यग १० ४: ठा ४ ३)। आयरहतुम्स र्ॄ[ओज कृतयुग्म] गुग्न-धारि विशेष ( मन १४ t)। आयर्चछमीय 🔩 [ आसक्त्योज] पुग्न-धरि विदेश (अप ६४-६) । आजन भाष र्दु [ आजन्मोज] पुग्य राजि विशय (मन ३४ १) । आदनामरशुग्म वृ [ आञ्चापरयुग्म ] युग्म-चरिप-रिचय (मग १४ १)। युंड न [कुःइ] रीचे विशेष (वी १६) । जुग न [ वुरा] वन्त द्भग (नी २१)। क्छि वृ [४] राष्ट्र दूरमन (दे २ २)। बिस रि [ब्रिटिंग] १ पूर्य, सहित (पण्ड १ २)। २ माम नृगेषः । ३ आतः निशित (दे२ १६ पाछ)। परितंत्र ऐंगो क्ल = गप्य । क्विभ वं रि]१ नाम ग्योला नेराना २ रियंत्र नर्वश्रुक्त (१२ १६)। वस्तिमा धी [द] गया नहेगी (६२ ४६)। क्यिम ध्व [विनिद्य] व्यक्तित पूर बसी (पाच वा १४४)। वस्तिम ्र [वितिहा दे देश स्थित मह देश उदीमा ने चीतगु की चीर देशकों के मुताने

बर है (पत्रव इट ६७ आप इ मा

प्रामु ६ )। २ कॉनग देश दा राजा (निय)। क्छिंग प् [क्रिलिक्ष] मनवान् पारिनाय वाएक पूच (ती १४)। क्रक्रिय देता क्रिस्थिय (गा ७३-)। किस वं [किस्सि] का बर्मा (निष् १०)। क्र विंच व दि दोधे सक्या (रे २ ११)। फ्लिंग पूर्व फिलिस्दी १ वीम कापाप विशेष 'कॉनबी बंधकारी' (गब्द २) । २ लूको शक्को (सगद ३)। कृतिकान [कृतिय] गनर पर पहना जाता गक प्रकार का वर्ग मय करक (लाया है १ थीर)। फब्रिम न क्विकनर पप (हेर १)। युक्तिमस रेपो स्थमस = रतकप (तंदू ४१)। क्रक्रिछ दि [क्रिकिन] पहन मना दुर्मेच (पाम) । कुलुष वि [कुरुप्त] १ दीन, दया नतक हरा-पात्र (हे १ २४४ प्रामु १२६ तुर २ २२६)। २ प्रै साहित्य शास्त्रप्रमिद्ध नारवॉ मॅ एक रम (म्राप्)। कलुमा रेगो करणा (चन) । **रुल्स वि [फल्प] १ मरिन प्रस्वन्य** 'विकिञ्जूमं (स्वित १६ पाप्र)। २ म पार क्षेत्र मैल (स १६२ पाम)। अनुमिश्र वि [क्युचित] पात-प्रस्त मनित (से १ १ मड४)। क्ष्मुमी इय 🕅 [क्ष्मुपीकृत] श्रीतत रिया ह्या (रत) । क्लरपृं (वि) १ वंकातः सन्तिनाम्बरः। २ वि क्याम भवलक (दे २ ४६)। कनपर व [फनवर] रासर, देह (धार Ye रिय)। कलमुच व [कलमुक] लगु-विदेश (बूध 2 8)1 वस्त्रवाइ क्षी [व्] पात्र-रिग्रेप (बाबा २-१ ₹ १) : फ≒न [कम्य] १ नत नया हुमाबा यानानाः नित्र (पाय ग्रापा १ १: है द ६०) । र शब्द माराज । ६ संस्ता गिनर्ता (स्थि १४४२) । ४ माराम निर्मान्ताः र में विशासने (विदे १४३१)। १ प्रमान

नुबह (बगु)। ६ हि निर्देश चेत्र चीन्त्र

(हा ६ ६) देट ६१)। ७ वि स्था न्यूर (देट ६१)।

कल्लवा हुं [कस्पवारी] क्लेबा, प्रातमीनन कल-पान (स्वप्न ६ : गाट) ।

कसमास पुरिवयपास्त्री कमवाद शराम वेचनेवामा (माह १२) ।

स्वतनाता (नव्य ६९) । स्वताताता केनाय हुमा (६२ १८) । स्वताताता केनाय हुमा (६२ १८) । स्वता के [क] नय शक (६२ २) । स्वता के [क] नय शक (६२ २) । स्वता केंद्र हुमें के (किया १ है शता १ ।

व्यय) । **कडा**ण न [कस्पाण] मुनर्श (शिरि ३७३) । ध्यक्कपाय देश व्यवस्थाय है सुक मौतन होना 'पुजुङ्गाजपरिकामे सेते बीबारा समनक्रमासा महा) प्रान्तु १४६) । २ निर्माए मोध्र (विसे १४४ )। १ निवाह सान (बर्)। प्रजित जननतृकः पूर्वकारे भारतम् भागः दीवाः केमल कानं शका गीमा য়াখির কর অবরতে পাঁপ নামাপ্রকান্তা समैति विद्याप होति पिमनेश (गंगा १)। १ समुद्धि मैसन (क्या) : ६ बूल-विशेष (पहल १)। ७ तप किलेप (पण)। फैल-निरोप । १, मनर निरोध 'नरनाकाओ कम्सालनकरे श्रेक्टी स्त्राम एथा निश् मत्तो इत्यां (ती ३१) । १ पुरुव शुन-वर्म (बाका)। ११ वि हित-कारक मुल्लारक (नीय ३ उठ ३)। कहाय न क्रिमकी मगर-विदेश (क्षी)। "कारि वि ["नारिम] मुकाबष्ट, मेवल-काएक (शाया \$ (4) 1

काहाणि वि [कश्याणिम्] वल्याग्र-साच्य (चन्न)।

कक्काणी स्वी [करुमाणी] र नन्ताल करहे-मानी की (नडड) ३ वे वो वर्षे ही महिला (रतर र वे)।

कदास ई [कस्मपास] नमात वाक केवने नाना (यहा साव ६)।

नदिस [ अक्ये ] नतः दिन नतः वोः (ना १२)।

कस्सुत पुं [कस्सुक] श्रीन्त्रम बीव-विरोप कीट की एक पार्टि (बीव के) ।

कारताय में [कारताक] बीमिय वन्तु की एक जाति (पएए) १—पन ४४) ।

फललुरिया [में] देशो श्वस्थारिया (राम) । फलेक्स पूर्ण [में] क्रमेवा प्रावस्था (थोप ४९४ टी) ।

कस्प्रेड्य पुँ[दे] सम्मीय केंश सङ्क्ष्माचा २ ४ २)।

२ ४ २)। कक्कोबिया [के] क्यो कस्बोबी (कर)।

कहोस्त पुं [कहोड़] तरंग कॉल (बीर जालू १२०)। कहोड़ वि कि कहोड़ाँ क्ष्य, इसल (वे

२,२)। क्योसियी की [क्योकियी] की (ब्यू)। कस्तार व किस्सारी क्षेत्र क्या (बस्छ

श के र ७६)। करिंद्र केवी कर्षि (गांव २)। करदोस ट्रेंट्रि] गण्डण, गस्तरा (वे २, १)। करदोसी की [वे] मण्डली संस्था (वे

२ ६)। कम मन [कु] प्राप्तत करता शब्द करता। नवद (हे ४ २१३)।

कमह्य वि [क्किकित] करूरपाला विशिष्ठ (परम कं कि की पीप) : कर्जभ वेची कर्मभ (परहू १ व महा गड़को) : कर्जम दें किस्मी किस्मी किस्म के तक के तक

क्तर (वर्गीन १४) । क्लिका वेदो क्लाइस (सिर १०१८) । क्लिका की [क्लिकिक] प्रशामिका

मणीत (राज) । कवड्रिक वि [कम्बित] गीवित हैरान किया इसा (हें १ रूप) ।

कवड न [कपन] माना क्षप्र शास्त्र (पाध्य पुर ४ १३१) । कवडि देवो कपड्डिए तो मण्ड नवदिनस्त्री

सन्त्रनि ते पुन्तुमें एमें (मुता ४४४)। क्रमहुर्द्र किन्दी नहीं नीही नरान्ति (हे ११ मी १२)।

कर्माक्क पुंजियस्मित् १ सक्य विशेष (सूपा ११२) । २ महारेच शिव (जुमा) ।

कमक्किया की [कपविषय] कीही वचटिका (सुपा १० १४२):

कुमाण नि [ फिस्] बोल १ (पत्रम ७२ वा कुमा) ।

क्रमय पुन [क्रमय] वर्ग कक्कर (विशा र २० वटम २४ हेड वाम)।

काय व [वे] बनसाठ-विदेश सूनिका (दे २ १)।

क्वरी की [क्वरी] केट-पास, वर्गमक (क्वरी वैसी १८१)।

क्रमञ्ज्ञ सक [ क्रमञ्ज्ञ ] बसला हृदग करना । कमसेद (एउट) । कर्म कमसिज्ञद (नवर) । समझ क्षमध्यात (सुना ७ )। संक्र कम

क्षिकण (नवर) । कवस ई [कवस्र] कवस दास (पर ४) बीरा) ।

ক্ষভাৰ গ [ক্ষভান] ৰচগ স্বাত (ৰাই থি । মুখা ১৯৮)। ক্ষভিডা বি [ক্ষভিল] মধিত স্বিত

क्यक्ति वर्ष (वे] सम का एक जकरत क्यक्ति वर्ष है १४६: दुमा १२१ ११६)।

(बाप प)। क्षम्ब पुँ [यु] तोहे का कहाद (सूम १ ८ ११४)।

कर्माकः) को [के] पात्र-विशेष पुरं वर्षस् क्षमक्किः। पक्रमे का मासना कहारः, कप्परं 'करमञ्जीक य निर्मा कामानिकार करिक्रमुम्पर्य (वर्षमा १२ / विद्या १ क्ष)।

क्वास } पुंत [क्याट] क्वाह, लेनारी कवाड (एडर चीच च ६२ )। क्याच व [क्यास] १ बोचमी किर वी दीन

'करकतिप्रकवानो' (ग्रुपा ११९)। २ मा कर्पर, विशानाभ (पापा) हे १ २११)। कवास ग्रुं [व] एक प्रकार वर बूटा धर्मनहाँ

्दि र: १)। कवि केटो इक = कवि (तुर १ २४६)। कवि पूँ [कवि] १ व्यंत्रता करनेत्रता (तुर

क्षत्र पुष्पत्र है क्षत्र करणा करणा । १२ हिंदी क्षत्र किरोग (बुरा १६२) । सान [लि] क्षत्रिकेण (बुरा १६२) । केसी केह ⊐ कविंदा कविंदा (बुर १४२) । केसी केह ⊐ कविंदा क्विम न [क्विक] सनाम (पाम गुना २११)। क्यिंग्रह रेपी एपिंग्रह (प्राना २)। कविष्ठन्यु , देवो बहरूपञ्च (पण्ड २ % क्षिगण्लु रेसा १४ वे १ पर जीव वे)। मृश्रिट्ट देशों केन्द्रश्च (यएए। ८ व व ४४)। कविद्र न दिं] पर का पिछपा धौयन (वे 2 6)1 कविरय देनो कन्स्य (उप १ ३१ टी)। कवियरहा देवो सहकपञ्ज (स २१६) । कृषिल पूर्वि दान दुता (१२६ पाध)। क्रियेख पूं [कपिछ] १ वर्ण-विशेष मूध रंग तामका वर्णे (स्वा २) । २ विन-विशेष (पर्या १ ४)। १ साहर मत का अवर्षक मुनि-विरेप (बावम: बीप) । ४ एक वास्रा महर्ति (इस =)। ५ इस नःमना एक मानु देव (छाबा १ १६) । ६ छहुना पुहन विशेष (स्वार)। ७ वि भूष रंगना मन्मैनारंग का (पटम ६० छ ७ १२)। [ भी ["[] एर बाह्यणी ना नाम (धाषु) । कविस्टडाक्षा स्त्री [दे कपिलडाला] सूत्र

भन्दु-पिरोप जिन्हो गुजराती में 'खडमानही' पहते हैं (मी १०)।

कविताम देवा कन्छास 'तमुबि हवेज पवि सानमधीमधिसिमा कूडा (उव) । पवितित्र रि [क्यिकित] करिन र्गाता

विया हुया भूरे रंग नै रंपित (गढ़ा)। क्विस्तुय न [रे] पात्र-विधेय नदारी (बृह

X) 1 क्रियस वृं [क्रियश] १ कर्ण-विशेष, पाणा-पीना रंग बारामा, बुप्या-बीत-मिर्मयत कर्तु । २ वि वर्गिश वर्णुवीता (पाम यज्जा) ।

क्षिम न [दे] दाण मय महिता(देश)। विविधा की दि] धर्वबद्धा, एक प्रकार का

पूरा(दे२ ४)।

र्म्यमायण र्न [बिरशायम] मच-विरोध 57 का बाक (प्राप्त १७---पत्र २१२)। विभीमग ) र्नुन्[विषशीर्यक] प्रावार ममिसीसय है का बद्दशाय (बीच रहारा ११ सम्)। क्षिद्सिय 🜠 [क्षिप्र्यासन] पाक्सा ने

धकमात् होनेदासी यर्थकर व्यवस्य करती व्याला (यस् १२)।

क्रवस्त्राय देखी कविस्तुय (ठा व-पुत्र Y(v) 1

क्योड देश क्योग (विष ११७)।

क्काय वूं (क्योत) १ नमुत्तर, पारावत परवा (गुडुप्र विचा १ ७) । २ व्येक्स् बैरा-विशेष (पतम २७ ७) । २ व बूप्पागड कोहका (मग १२)। क्ष्मान्त र् [क्रपान्त] याण यएड (गुर ६

25 A.A. 164) 1 क्योराण (मा) ति [कंदुग्ग] बीग गरम

(प्राष्ट्र १) । क्टब्र न [क्राध्य] १ नविता पवित्य (ठा४) ४ मामु १) । २ मूं यह किरोप शुक्र (मुर ३ १३)। १ वि वर्णनीय स्लायनीय (हे २ ७१)। इस वि [यम् ] नाप्यनामा (\$ 7 \$XE) :

क्टब्य न [ब्रुट्य] मोत्र (मुर ३ ६६) । क्ष्म्यदूर् हि] बालक वया (गच्छ ३१६)। कुरुवड केली बन्दरह (सर्वि)।

क्रम्या की मिल्या निया (सूत्र 😮 पत्र १७१ मूत्र मा १४२. सच्या ६ गा १)। कश्वाद पुरिही दक्षिण हस्त दाहिना हाच (49 2 ) 1

परुगाडिम वि [वि] कौर छठलेवाला, वर्हमी स मान क्रोनेवासा (मूत्र १९१) । **ध**रुपाय वूं [मृज्यान] १ शतान विशास (पाम ७१ हे २, ११ त २१६)। २ वि वच्या माम यानेवाला (प्रतम २२,

११)। १ मान बानेनामा (बाध)। क्ष्यास म 👣 १ वर्ग-भागः, वार्यातय । २ वृद्द बर (दे २, ६२) ।

क्म नद [क्य्] १ छार मारता। २ वसना थिमनाः ६ मनित वरनाः वसीते (पएए) १६)। नवा कसिक्समाग (नुता ६१४)। कस दूं [बदा] वर्ग-वटि, बादुक (क्एइ १ ३ लामा १ २ स २०७)।

धम पूं किये १ वर्गीय क्वनीयाः 'तार ब्देश्नेर्शि मुखं थलाह मुख्यपुन्पर्धं (मुपा ६६६) । २ वनीटी वा पन्बर (बाब) । ३ वि लिक्ट, बार बाननेशाया द्वार नारने-

बाना (ठा ४ १) । ४ पूंत्र संसार, मा षगत् (शत्र ४) । इ.स. वर्गे वर्गे गुरूप "कम्म" कर्स भन्ने वा कक्ष" (विसे १२२८)। पट्ट बट्ट पूँ ["पट्ट] कमीटी का परमर (धलूमा ६२६ मुर २ २४)। पेंद्रि पुंजी िंदि सा की एक जाति (पएए t)। कसङ्ब्ये दि धन विरोध सराध्यारी यमस्यति का फन (दे २ ६)। क्सट (पे) देलों कटू = कष्ट (है ४ ११४) माध)। कमट्ट पुँ दि । बत्तराद, बूका (मोप ११७) । कसण दूं [एट्या] १ वर्ण विटेय। २ जि कृत्यप्र वर्णवासा, वासा वयाम (हे २, ७३: ११ कुमा)। पक्त्य दे विश्वी इच्छ पदा वर्ष पर्सवास (पत्थ)। सार प्र िसार | १ ब्रुप्र-विकेष । २ हरिए की एक बानि (संग---मुन्द्र ६) । कसण वि [कृत्सन] सकत सक सम्पूरा (है १ ५४)। क्रमणसिअ र् दि । वसका पामुरेव वा

बड़ा माई (दे २ २६)। कमिज्ञ वि (कृष्णिव) काना विमा हमा (पाघ)। कसमीर देवो काहीर (पदम १० ६४) ।

कमरपूँ [के] यथन वैत्त (दे २ ४ सा ७६%)ः 'नल सीनमरम्बद्धले देशिष्ट सीवंदि का (? क) सम्म्य' (पुण्ड ६६) । कमर पून वि कसर] रोग-निरोप क्ला विरोगः 'वच्छा (? क) स्टबिवृमा गर्यतान राक्तरं हुन्यवित्रमञ्जू (वे २—पत्र १६१) ।

कमरक्ष पुंत हि कमराह् ] १ वर्गल-७ -शाने समय जो शाह होता है हु "शाहद न स बगरलोई (दे ४ ४२३ दूमा) । २ कुर्मन कून की कसी 'ते विदिशिद्धा है कीनु पळ्या से नधैरपबरमा। सम्मेनि नरही भववित्तनिया" वातो बाग्रेन्बस्य" (बजा ४६):

यमध्य व [वे] वाल याटः २ विस्तीक सरप । ६ प्रदुर, स्वात (दे रे, प्रा)। ४ बाद धीनाः रहिरतनभानंबियविद्वाराण्या नराम्पनिदर्श (स.४१७ हे र ११)। १

नर्वेष्ठ परगः 'बूरोययस्यरस्यूग्यास्त्रृत परवानधनवनमामी (वउद्र) ।

क्रम्सम् पुं क्रिइसप् र वंश-विशेष कस्त्रप इस्ता भी [इड़ा, इसा] पर्य-यीट, चार्ड कीहा (क्या १ ६ क्या १४१)। इसा देशो कामा ( पर ) १ कुमाइ वि (कुमाजिन) १ क्याय पॅयनासा । २ होष-मान-गाया-गीमबाना (पएश १८ धावा)। क्रमाइम वि [क्यायित] क्षर देखे (श ४८२। या १४। याचा) १ कसाव सक [कशाय] वाहन करना थारता । भूगः वसाहत्वा (याचा) । कसाय पू (क्याय) १ होच मान मामा सीर सोच (विसं १२२१) व व)। २ एस-। विलेप वर्षेसा (ठा १)। ६ वर्छ-विलेप काल-पीता रंद (उदा २२)। ४ नवान काडा । १ वि वर्षेडा स्वास्थाका । ६ क्याय रंग्याचा । ॥ गुगाची शुरभूबार (हे २ 24 )1 कसार [ब्] देवो इंसार (यव)। कृशि वि [कृषिम] मारनेवासा, विनासकः 'बतारि एर कमिछी करावा विवेधि पूनाई पुरान्यवस्तं (गुज १ १) । कसिक्र न [करिश्वा] प्रतीर, बाहुका 'श्रेगी मए महच्चीए कवियाँ माहती (प्रदी १ )। क्रिया की उत्तर देशों (सुर १६ १७ )। कसिमा भी [पे] कत-विशेष धरएवनारी नामक बनस्पति का कन (दे २, ६)। कसिट (पै) देवो कह = इप् ( पर् ) । कसिंग केवो कसमा≓ क्रम्पः इथल (हे ६ **७३ कुमा पाध⊳वे४ १२**)। धमुमीरा भी [करमीर] एक क्वर शासीब केस (प्राप्त २ ११)। करोन । इत किसर, की बबीय करू-क्षास्य विशेष (बाह्य प्रस्ता १) । कसेरग प्रेन [क्यांसक] बचने होनेशबी वन-स्परिती एक बारि (पूर्य २ ३ १ ) शासा ₹ ₹ 2)1 कसोति को [दे] बाय-विशेष 'महार्कि नतोर्थि मोचाक्न स्वेति (शुक्त १ १७)। श्रास्त रू कि पह वर्षन कारी (हे २, २)।

कस्सम न [दे] प्रादृष्ठ करहार, ग्रेट वि २

\$ **\$** ) |

बंदुर्सरो' (विक ११) । २ ऋषि विरेष (यवि २६)। कह सक [कथयू] नहना बोलना। नहर (१४२)। कर्य बरमहः विश्वकः (११ १वध ४ २४१)। बहुः कार्त करित, क्षेत्रेगाय (रमण ७२, त्र ११ १४८)। श्राकु करबंश कहिटांत, सहितामान (का बुर १ ४०८ वा १६८ युर १४ १४) । शह कहिबं, कदिकान (पहार काल)। इ. बद्धियाजा, वृद्धियतम क्यूपेयक्य, **बह**णीय (सुब १ १ १) सूर ४ १६२) मुपा ३१६ परहर ४ मुद १२ १७ )। ब्रह् तक [क्रम् ] श्वाच करता स्वासना । क्षह (पर्)। 👊 र् [क्:फ] रफ, शरीयस्य यहा-विशेष वनगम (कुमा) । कद्भवो पर्दा(दि ३ एछ नुमा पर्)। का वि देवी का उन्नेपि (यता तर ७२० टी)। वि केदी कर्दापि (प्राप्त ११४) 845) > क्र**ब्र**क्ष सं ्रिकश्वा] निक्र सीर माध्य सर्व को बत्त्वालेशका घन्नव (स ७ १४) । क्यां म [क्लाम्] १९%, क्यित्याः (स्वप्प ४१ कुमा)। २ वर्गी विद्य विद्? (दे १ २६, यह महा) । अहंपिय िकमापि विसी तख (या tye) । फेब्रा की किया । धर-इंग को उपला करनेशली कमा निकमा (शामा)। "पि चीय [चित्] किसी तरह, किसी प्रकार-से (बादराध्य १६ टी)। "पि थ "अपि शिक्षी तर्गा (मता)। क्दक्द पुं [कदक्द] प्रमोद-नसकन सुरी का सौर (क्षा३ १ — पण ११६३ कम्म)। क्यूक्ट पर [क्यूक्ट्यू ] कुशो भा सोर काश्या 🕽 की किया सरीह से निर्मात मान मचाना । वहः. कहः विति (परहा १ २) । पार (क्राप्**रः स्वरः नवरः**) २ शी<del>व</del>ः क्षिया (स ६४१) । १ मूच, वैशाय (योग **ब्दर्शस्त्र ( [क्दब्दक्र] कृ**ती का श्रोर नेदेशः **ज**ण्*ष्* २७४) । (धन)। कहरू हुँ [कर्वकमा] बातबीत (शाबा २, कारी मी [बाउमी] रचनामधी एक नवरी विद्वार की एक नवरी (श्रेषा ७६)। ११ २)।

भद्रगवि [क्षथक] १ अक्लोबाला (सहि

२६)।२ प्रैंचण-कार (इप १ ३१ हो)।

कद्यान (कद्मत) क्वन अस्ति (वर्षे १)। बहुजा और [क्यता] उत्तर देती (वेत रा सर ४६ । १६६)। करण हैको शहरा (वे १ १४६) । बहुस क्व वि ) वर्गर, बच्चर (धंत १२) । कहा शी किया ] क्या वार्ता हरीरत (पुर २ २४ । दूमास्वयायक्री। कहालाः । म [क्यानक] १ क्या चर्ल कहोणवर्ड (को १२३ वर्ष पु ११६)। २ बर्धन प्रस्तान 'क्यं से नामं आसिरितित बहारायरिसमार्थ (स १३३ ४०८)। र प्रमोजन कार्य बङ्कारायविगेसेल मधासमी पश्चिम्बर्ष (स १८१)। **पदाय तक [क्ष्मम्] कहमाना दुसर्गना !** षक्तेद (महा)। कहायक पू [कार्यापक] ब्रिज्ञा-विरेष (हे ४, धरे ६३: क्या)। पहार्विक वि [क्यित] कहतास हुमा (गुग ER YEW) ! कहि ) स्र [क्य कुत्र] कही कित स्तर्त फड़िका }- में ! (क्या जम ताट कुमा कहिं 🕽 उपो : कवित्तु वि [कवित्तव] बङ्गीनामा भागम (सम (६)। कहिय वि [क्षिति] क्षित एक (इव नाट) कहिया की [कविका] क्या नहानी (का र वह दी)। क्यू (प्रप) म [कुता] कहा से ? (बड )। क्यों के वि दि विल्या स्वान (वे २ १९)। कार्यु वेको काहित्रु (ठा४२)। कार्यंगी । भी [भारुपिक्सी] पाईकी है इस्ती (प्राक्त र )। ब्यह्म वि [काबिक] शाधिरिक शपैर संगम्बी (बा १४३ प्रापा) । काइमा ) को [कामिकी] र शरीर-वर्ग

काश्यीकी [के] प्रका शाकरती (के र

1 (19

प्रद की [काफ़ी] कीए वी मारा (विपा १ <sup>|</sup> 3)1 घर की [कापोती] नेरवा विशेष मान्ना ना एक प्रकार ना परिखाम (मन; साचा)। निसा भी विद्या] धाम-परिणाम-विदेश (यम ठा ३ १)। क्लिस्स वि लिइय] बारोज भेरवाबाबा (पारण १७ भग)। "लेस्सा रे**डी "श**मा (पग्प १७) । कार्त देखी कर जन्म। कार्यवर पूँ [कारादुम्बर] गीवे दलो (राव)। कार्यकरी की [कार्येद्धम्बरी] क्रीयविश्विरेय finderderterendeftelift- (at ? 18 द्या पएए १)। कारकाम वि [कर्त्तुकाम] करने को चाहने बाना (भीष ३ ७)। काउद्वायम न [कायोद्वायन] उवान्त पूर स्थित कुछरे के श्रायेश का धावाँदा करना (ए।या १ १४)। भाउदर वृं [काछेदर] सांप नी एक वाति (पट्य १ १)। कारमध्य वि [ कल्युमनस् ] करने की काह बाना (बब उप प्र ७ वे )। बार्गरेस द [बायुरुप] १ बयव बावनी मीच पूरव । २ वातर, बररोक पुरत्र (यउव स्र = १४ मुना १६२)। बारह पूर्वि वर व्या (दे२ १)। ब्यवसम्म 🕽 🐒 [ब्यमास्सम] १ वर्षेर पर कारम्समा रे समन्द्र शासाय (उस २६)। २ क्यायिक-क्रिया का स्थाप । ३ व्यान के निए शरीर की निरवत्ता (प्रति)। कां करो पाउ (घर रम्म ४ १६)। कारणी देवो कर ० हा क्षाआदर रेगो काण्दर (स्वज ६०)। बामाधी थी [पाराही] क्य-पिटेप, वन स्पर्ति विरोध (पण्ण १) । बाभोवन पु [कायोपन] संकाश माना (युष २ ६)। बाजोमगा देखी बाउसमा (परि)। साम पुं [काम] १ कीमा, वायत (बनु ६) । २ बहु-विदेश बहुर्रिश्वायक केंद्र विदेश (हा २ १—पत्र ७६)। उदंघाकी किहा

बनम्पति-विरोध वहसेती कुववी (धनु १)। देलो याग काय = काक। काइदेशा वृं [काइत्युक्त] एक पैन सहर्ष (क्य) १ कार्रविय प [काश्रुल्कि] एक वैन महर्षि कार्फेट्या की विकल्पिका देन गुनियों की एक शाना (रूप) । काकती देवी काईदी (लाग १ ६, टा 3 (1)1 काकृति रेक्षा कार्गाण (विपा १ २)। काकृति देखो कागन्ति (ग १ - यद ४७१)। बाग देनो काक (दे १ १ ८, प्रापुर)। "तासमंजीपगनाय ५ विस्थंजीयकन्या य । कारताचीकवाय (उर १४२ दी)। वालिक नार्धक न विज्ञायी देव बीए का प्रवर्तित पादमक घीर ताप-फन का चरम्यान विका होता है ऐसा महितरित शुंभव शकरमान् रिसी कार्येवा होना (धाका के १ ११)। यस न शियस्त्री देश-विरोध (१२२७)। पाठ पूँ [पाल] दूछ क्टिय (एज) । पिंबी स्त्री िएग्री] घट-पिएड (बाधा २: १ ६) । देखी काय = कार १ बार्गरी देनो बार्शरी (स्तु २)। कार्याण स्त्री दि रे चान्य, 'बसोगसिरियो पूर्ती भेनी नाय" नागीएँ (विसे ६६२)। २ मात्र का खाटा ट्रक्या (धीप)। कागणी देवी कागिणी (था २७ टा ७)। कागण को किकियी नवा प्रीम ना एक बार (धया १११)। ष्ट्रगाठ 🛊 [कारूप] वीवान्य क्षत्रत्र प्रदेश (49<u>1</u>) t धार्गानः) स्थे विश्वपति सी १ तस्य कागरा विश्व-जिति स्वर-विरोध (गुपा थर उत्त १५)। २ देशै-विटेप जनवानु यभिन्द्रवर्ग की शासन-देशी (पह २७)। कारिकी स्थी कि किकी है नौड़ी वर्जाता (बरण १ बर मा २०६१)। २ बीस गीरी के भूष्य वा एक शिला (धर १४१)। १ एल विरेप (नव २७ उप १८६ ही)। कामी की बाड़ी र नीए की माधा (वा र विदानिटेन (नित्र २४३६) ।

बाबोजंद पुँ [बाबोनन्द] इस नाम की एक म्बेच्य बाठि "मिच्या कारोएँदा विक्ताया महिष्यम्मि वे मूर्यं (पटम ३४ ४१)। काठिण्य न किठिम्यी श्रवितता (पर्मेंमें 22 2Y) I कड ने कार्यों नाहा (रूसक ११)। काण वि किया होता एकाम (मुपा ६४६)। काण वि वि र प्राचिक्त काना (काका २ १ व)।२ पुरायाहमा। स्टयपूर्विमय] चुराई हुई बीज को खरीदता (मूना ३४३ (YYF कागर्कित र की दि देशी नकर से बेपना कागरिक्या किटाउँ (दे २ २४) मनि) 'कालुन्धियामी य बड़ा विडी तहा करहे (घाषम) । काणगन (कानन (१ वन वौग्प (प्राप्त) । वयीचा पवन (धनु सीप)। कागत्यय पुंचि विस्त जसन्ति, बुँदनुब बरहना (दे २ २६) । कामही की 🚰 परिवास (दे २, २०)। काणिका की दि ] वहाँ ईट (बुद्ध ३)। द्माणिहा भी [पाणेश्रा] नोहे नी ईट (वय ४) । च्यणिमार देखी कणित्रमार (सीत १७)। काणिय न [काण्य] मोह का रोग 'काणिय' मिन्नियं चेव पुरिवर्य मुश्वियं कर्रा (याचा)। भागत्य र् भानीनी देवारी बच्चा न उत्तर पुत्र (मृति) । बार्यव देवी प्रायंच (परह १ १)। कार्वरी रेपो कार्यवर्ध (प्रति १८८)। धारुमय वि [ सर्पत ] धारमा की दूर्पत करनवासा । की शणया (मग ६ ५--पत्र २६८) । कापुरिस रेका धाउरिस (पाया १ १)। काम प्रे [काम] रोग, बीमारो (दमनि २ १६)। एवं देखी कामसूब (इप्र ४११)। रम न विश्व] मार्थवित तः (संशेष ५०) । बद्दम प्र [ बद्दम] महारेर शिव (बजा ६=)। रुप देनो कामस्थ (धर्मीव ११)। काम तक [पामयु] काइना काम्यसा । कामें (रि ४११)। कामेंनि (मडह)। बहु कामेंस कामजनाग (या २४१ धनि E ( ) 1

२१६	पाइअसइमङ्ग्यो -	•्यम—•्यव
स्वतः वृं किया है स्वतः कामना यिकाणाः (क्ता राजारा प्राम् १९) र पुण्य र छन्न, का नीय विभाव (क्ता राजारा प्राम् १९) र पुण्य र छन्न, का नीय विभाव (क्ता राजारा प्राम् १९) । १ विषय का योजारा (क्ता राजारा र पुण्य ) । १ विषय का योजारा (क्ता र जिल्ला का योजारा (क्ता र जिला का योजारा (क्ता र जिल्ला का योजारा (क्ता र जिला का योजारा (क्ता र जिल्ला का योजारा का योजारा (क्ता र जिल्ला का योजारा का योजारा (क्ता र जिल्ला का योजारा का योजारा (क्ता र जिल्ला का योजारा का योजारा विष्ण का	म [ मध्य ] वेशविभाग-विदेश (श्री व व) ।  महास व [ स्पष्टी यह विदेश वहारिताल के विदेश ( पूज र ) । सहस्वण म प्रकेश ( प्रकार ) । सहस्वण म प्रकेश ( प्रकार ) । स्टार व प्रकेश ( प्रकार ) । स्टार व प्रकेश ( प्रकार ) । स्टार व विदेश ( प्रकार ) । स्टार म [ प्रकार व प्रव	कासि वि इसिम्म् परिकारी (हुप १२४)। कामिज वि किसियाँ वास्त्रिय परिवर्णिय (वृप १२४)। कामिज वि किसियाँ वास्त्रिय परिवर्णिय (वृप १९४)। कामिज वि किसियाँ वास्त्रिय परिवर्णिय (वृप १९४)। कामिज वि किसियाँ (वृप १११)। १ त. तीर्ण विरोध ता ता परिवर्णिय (वृप ११)। १ ता तीर्ण विरोध ता
		- 2-3 - and or Fatter Of Age a.

धार्यंत्री की [सादस्यरी] १ अरिए वान्य बियारामा (मप)। हिंद थ्री विश्वति (बाध बाध रेरा १) । २ धरती-पिरेप मर बर किर अग्री शरीर में उत्तान होकर एमा (हा २ १) । विरोह र्थ निरामी शर्परस्वातार का परिवास (बाक ४)। ात्रिक्ट्स औ ("चिकिस्मा] १ वर्धर चेत्रकी प्रतिविधा। २ उत्तरी प्रतिसक्क शास्त्र (रिया १ =) । सपत्य नि ["सदस्य] माता के उत्तर में स्वित (भग)। बैकापू [युरुष] प्रारिशेष (राज)। समिज नि ि समित | शरीर वी निर्मेश महत्ति वरने- । बरना (मन)। समि सी विमिनि रिपेर नी निर्दोप प्रवृत्ति (स्म ६) । याय व [काध] १ मीमा मायम (का ह २६ देशो १४० मा २६)। २ वनमानि ब्रिश बाबा प्रवाद (परात १--पथ ३३)। देशी पाड, पाग । याय वूं [वाय] बांच शीका (महा बाचा)। याय दे दि | र नाबद, बहंदी बोन्ड बीन के दिए तरा हुनुका एक वस्तु इसमें दोनों मीर निरुद्धर नदस्ये महो हैं (ग्हाया 💲 🗈 धे—पप ११२)। यादिय पु [°कारिक] शीरर न बार होनेशना (शाबा १ = धे)। देगो वाद। दाय पूं [क्] १ मस्य केच्य निदाना । २ ामल निम पार्थ की उपमाधी साथ बह -(4) ( वार्षपुतः 🛊 🛚 ६ 🗍 वासिन्त्रुपः वाष-रागी तिरुप (६ २ २६) । बायदी । दि । परिहास अज्ञास (६ २ 2)1 कार्यश देनी कार्रिश (स.६) । वार्षप्र १ दि । राशियुक्त कर-ातै febr (8 2 46) 1 वार्षेष । देशिशम की १ हमन्ति बार्यदेन । (रच क्य) । २ वन्तर्व-रिटेश । ६ बराव कुर राज)। ४ वि बन्धव कुन माराची वार्षरपुरशीत्रवस्त्रुत्वप्रकृतवास्त्र बूल्ट व (बुन्ह २६६) । बार्यंदर न [बा न्दर] नद-विदेश गढ ना

दण बाईसरान्त्रा (दाव १ ३ १२०)।

नार्वहरी की [बारुवरी] तर हुना का जन

(42.55) 1

(श १११) । कायक न दियायकी हरा रंगकी रुद्री। बनाह्याच्य (ब्रापा २ १, १)। बाग य पू [सायस्व] जाति-विशेष नामय जाति नायन्य नाम में प्रसिद्ध काति मेगन शिखने वर वाम वरनशाली मन्त्य-वाधि (मून करा मण्ड ११७) । शायिपण्यदा ) श्री चि । वोतिसा कायन शायिपण्या । पिका (र २ १ वर )। वाधर वि विश्वरी धवीर श्लोक (लावा ११ मान् ६८)। कायर वि [रे] विष श्रेष्ट्रशाव (६२ ६६)। थायरिय वि [कानर] १ क्ली ६ अवस्त, मनीर 'बोरखरि बरिवर्ड कार्यरमधानि धनस्पर्मारपार्व (प्राप् ११)। २ १ योशास्य वा व्यव अन्य (यव ८ १)। बावरिया धी [बानरिका] माना करह (मूच १२१)। कायम पृष्टि रिकार कीमा दिश ४० शाम)। २ वि विव क्लेप्र्याच (११२ 26)1 कार्याके केना कार्यांक (नाग-मृक्त £२) । नावर्षमः [बायपम्पय] प्रदुर्वगरेत प्रहा बिटायक देश-निधेत (चत्र) । शायका देली पर = हा। वाबद रि [वाबद] देव-रिरेश में बना हुवा (बरत) । (बाबा रे १, १ ७) । बाया की [बाया] शरीर, देर (प्राप् ११२) व बार तक [बारम् ] बरराना, बनगना । बाग्द बाग्रे (वि ४७२ मुता ११३) । मुना वारेरवा (रि ११०)। वक् बार्यन (पुर १६ १ ): शाग्याम (४००) । स्तर बारियांत (तुस १७) । श्री वारिक्रम (रि उदर) । १ कारमस्य (र्वजा ६) । बार वि वि] वद्भ बहुता, ग्रीता (दे व २६) । कार पुर- देशों जारा = बारा (व ६११। बाबा १ १) व बार में [बार] र जिल की स्टलार (बा १) । २ पर समुद्रिः १ बंद का नस्य मन्त्र (वर १) ।

बार वि ["बार] करनेराता (परव १७ ७)। बार्रश्य रि दि वस्य गठिन (रे २, १ )। कार्यक्ष । वृ (कारण्ड, क) प्रतिनीक्षेप रेस कारंक्षम नारंकप्रवास्त्रायारमाथितं (मीत धारटय थिए म ६ १ म्यामा १ १ पण्ड 2 2 POX YE) 1 ब्हारग वि विद्यादकी १ करनताना (वाजन चर ४६ चा पूरशि)। र **र**शनगणा (था ६ शिमे) । ३ न कर्ता कम वरैस्ट श्याकरणा जासद बारक जिले ६३ तो। ४ कारण हैन् 'कारण वि वा बारत वि था बाहारणं कि या ज्यहाँ (बाहु १)। १ उराहुरत हमन्त (बाय १६ मा) । ६ बून सम्पारर विकेष शास्त्रानुसार बुद्ध किया 'वे यह भारतमं तुमर ते वह बरलास्य बारवा हो " (सम्य १४) । कारण व विद्यारणी १ हेन् निमिन (जिमे २ ६० स्वन्त १७) । २ प्रयोजन (माचा) । १ परागद (४५१) । बारणिज रि [कारणीय] प्रवेशकीय (छ 972)1 वार्राणय पि [पार्यणयः] १ प्रयोजन ने शिया नाता (उत्रर t =)। २ शास्त्र ग्रे बहुत (बर २) । ३ वं स्वाय-कर्ता स्वायायोग्ध (शुप्त ११ )। कारय देगी कारत (बा १६ विते १४१ )। पारव नक [कारप ] कराना काराना । बार रेट (बर) । बर्ग कार्रावन (ब्रुग ६३२ पुष्ड ६७) । वह बारविता (रूप) । पारपंग न विषय है निर्मान करना (धन) । कारपण पू [कारपरा] देश-रिटेच (करि) । धारवादिय रि [बारवाधित] देगो कर षादिय (धीर)। वार्शवय रि [कारिन] गण्या हुमा (कुर १ 44E)+ बारद रि [बारम] बरव नामधी (एउट)। बारा की [बारा] वेश्यमा (रे वे ६ : चन्य)। बार क्रेंब ["बार] वैरणाना क्रेच

(नुस १६२ मार्थ १२)। बर न [ैन्स्]

वैशाना (पन्तु et)। संदिर व [ सन्दिर]

बारा के विकित नेवा (१ १ १६),

बैन्यमा अनुसार (बागू) ।

```
काम पूं[काम] १ इच्छा कामना स्रक्रियापा
 (क्य १४) माना प्राप्तु १६)। २ सुन्दर राज्य, स्प
 वनेरह विषय (सव ७ ७ ठा ४ ४)। ३ विषय
 का समिनाप (कुमा)। ४ पदन नन्यपै (कुमा)
 प्राप् १)। १ इन्द्रिय-प्रीति (वर्षे १)। ६
 मिषुन (पर्या २)। ॥ श्रम-विशेष (पिम)।
  क्रा न ["शान्त] देव-विमान-विशेष (बीव
  ३)। इस न किस सालक देव-सोक
  के इन्द्र का एक बाबा-वियान (स्त्र १ --पव
  ४६७)। शाम वि िकाम विषय की
  चाह्रवाला (पन्त्रा २)। बासि वि
  िंद्धमिन् विक्वाम्हिप्पे (प्रापा) । कुड
  स किट देव दिमान-विधेय (बीव दे)।
   गम दि ["गम] १ स्थेणकाचार्यः स्थेरी
  (शीव ३)। २ न देखी कम (जीव ३)।
   गामि औ िगामी नियानिकेष (परम
  ७ १६४)। नृष्य म जिल्ली १ नैक्स
  (परंड १ ४)। २ राज्य-प्रमुख निपय (जत्त
  tv)। बहर्षु ["यट] इत्थित बीव को
  केनेवासा दिम्य दश्का (भा १४)। अन्त न
  िंबस्डो स्तान-पोठ, विस्पर बैठकर स्तान
  किया बाह्य है कह पड़ा विद्यास्त्रीय ह
  नामनवं (निष् १६)। जुरा पु चिर्या
  पश्चि-विशेष (बीव ६) । उस्तय न िक्छ हो
  केवनिमात-विशेष (बीन ६) उग्ह्या औ
   [ व्यक्ता] इस नाम नी एक वेरवा (विपा
   १२)। द्विष [प्रिक्ति] विषयाभिनावी
   (ए। या ११)। विद्वाप द िर्दिकी १ कैन
   सातुमी का एक करूत (ठा ६— नव ४३१)।
   २ त. भैन गुनियों का एक नूस (एख)।
    मयर न ["नगर] विदावरों का एक नवर
   (१४) : वाइणी की ["दाविनी] शिकात
   पस को क्षेत्रली विद्या-किरोप (पडम ७
    १११)। दुदा की ["दुपा] कापकेत (था
    १६)। देश दब द दिया १ क्रांव
    बन्दर्ग (तार स्पन ११)। २ एक कैत
    मारक का गाम (क्या)। विशु औ विशु
    इंप्टित कर देनेनाती वी (काब) । पाछ
    र्ष "पाछ । देश-विरोप (दीन) । २ वसदेत
    हनपुर (गाम) । (पेपासम वि विधासक)
    विपयाविकासी (मन)। पुर व [पुर] इत
    नान का एक विश्वावर ननर (इक)। प्यास
```

श्चामि वि चिमिन विश म "प्रश्न । देशनिमान-विशेष (श्रीव ६)। कामिश्र वि [मामित] " क्यस प्रे स्पन्नी बहु-विशेष प्रहाविहाता देव-विशेष (धूम २ )। महायत्र न (मरा २५१)। "सहायन | बनारत के समीप का एक कामिज वि क्रिमि बैत्य (मन १४) । राज र् [ कैरप] कैरा-विषय-सम्बन्धी (भन क्रिपेप को बासाम में है (पिक)। क्षेस्म बिरोप (वी २८)। "होश्य" देव-विमान-विशेष (शीव १) 1 £रिसत जन्म ि बज्जन विजी एक देव-विभान (बीव **रक्छा पूर्ण** रा ६)। सरथ व शास्त्र] चीत-शास्त्र (वर्षे tale talli २)। सम्पुरुकाति "समनोज्ञी समा स्वमित्रा 🛍 🛚 **एछ, कामान्य (धाषा)। "सिंगार म** भागामिया । "शृह्मार] देव-रियान मिर्टेय (तीव ३)। व्यमित्रुख र मिए न [ैशिए] एक देव विमान-विशेष 3 381 (धीव १) । विट्टन शिवरी देव-विमान-द्यमि 🕋 Trib-विरोप (बोब ६) । विसाइत्त 🛍 ियरा। क्रामिर्ग विद्या विशेष का एक तर्म ना ऐश्वर्म जिसमें वोशी यपनी इच्छा व यनुसार सर्व प्रशासी ÚĐ. का ब्यार्ने चित्त में समावेश करता है (सब)। ब्य घ सिंसा की ["न्सा] विषयानिकाष (ठा ž X X) 1 प्रा कार्मम [कामम्] इन सचौका सुचक **मध्यपं---१ प्रवचारल (सूघ २ १)। २** का धनुमति सम्मति (निष् १६)। ६ सम्बूपसम दा स्वीकार (सम्र २ ६) । ४ मदिसम, स्रविस्त ( 2 2 2tw) 1 कार्मगत [काराहर] कर्ल्य का बसेवक स्तान वमैख (धूप २, २)। कार्मदुद्दा हो [काञ्चुया] काम्क्रेट हिंचत बल्तु को की बाली ज़िक्स भी (पटन ₹¥} I कार्मच पुं [कासान्त] विचयापुर, तीव शामी 4 (प्राप्तु १७६)। श्रमकिसोर पुंचि वर्षय, नवा (१२, (भा काम 🖞 [ कामग वि कामको १ प्रविधयलीय, वास्क-हुमा) : कीय (पदाहर १)। २ वाइनेवाला इच्युक **क्टा-विरो**प । (सूम १२२)। में प्रतेशासा भामन न [कासमे] पाहः धनितानः 'परा-रारीरकी करा रिक्कामकोर्ड बीवा भरबस्मि कर्चारि (महा) । थी ["सुमि] स कामक वैको कासग (उपा)। বিবৈশিক্ষকা (কন)

कामि वि [कामिन्] विषयप्रीभनागी (ग्रापा,

नवद)।

["योग] रुपैर व्याप

(भग) । जोगि वि वि

समय र् [ समय] समय, वक्त (गुज | ×)। समा स्थी ["समा] समय विदेष धान्त्रका समय (को २)। सार प्री [\*सार] मृग की एक वाति वाला मृग 'एक' विवासमारी ए देह मेर्नु प्याहिए।व नते' (गा २१) । सोअरिय पुं ["मीक रिक] स्वनाम क्यात एक वसाई (बाक)। ।गर ।गुरु ।यर न [ौगुर] नुपन्धि इच्य-निरोप जा बूर क नाम में नामा बाता के (शामा ११ कप भीप गण)। ।यस सिन [<sup>\*</sup>[यम] सोर्ड्ड की एक वाति (ह १ २६३) भूमा प्राप्त से ६ ४६)। [मब्मिवपुत्त पू [ "म्पर्वशिकपुत्र] इस माम का एक जैन पुनि जो मगवान् पारबेनाय की वरम्परा में ये (भव)। सार्छज्ञर पु [बास्त्रज्ञर] १ केग्र-विराय (विक)।

स्पिछत् हु [वाहस्ता] व केली कार्डिका । बाह्यस्तर एक [कृ] है निर्माणीय करना परदारामा । है निर्माणिय करना बाहर निराम केना 'ची केली प्रतिप्त प्रति । प्रता वाक्सीया पूर्वी वी का प्रतिप्त मान्य कार्यम्या प्रति हो का प्रतिप्त मान्य कार्यम्या । कार्यम्य कार्यम्य । वानाव दर्गीः कि कार्य कार्यम्य (भूता रिक्षाण विद्या विस्थम ) बर्चीच्यं (भूता देश ४)।

शासकार पून [बाठाझर] १ मान जान मन्तरिया २ वि मान-चिनित 'बानाका स्त्रानितम मन्त्रिय दे विवशीत्मव्यास्त्र्य' (गा ३६) ।

बारक्यारिक वि [क] १ जगान्य निर्के विवेत । २ निर्वाचित्र चिद्दित व प्रियद् भूतम बद्यानुस्ताद बेस्से, नाने बामस्य दिखा निर्मा (दुसा १८८) 'का विक्रमा बानेस्नुं बारक्यारियों (बुसा ४८८)।

बाहरगारिक रि [बाह्यमारिक] देश न बार बाननेगाम, बोलिएन 'से पुरुपणे काध्रे वर्ग दर्श बारक्यांवर्ग (क्यू)। बारमा १ (इंटर हे देश)। २ क्यार बारमा १ (इंटर हे देश)। २ क्यार वर्गण (वन)। देशे बात (रंग बन १ ६ देशे।

यात्रारि[व] कृतं का (१२,३)।

कासपट्टम [के कासप्रमः] पनुत (६२ २८)।

कास्प्रतिमय पुँ [कासप्रीतिक] एक वस्ता पुत्र (डी.७) ।

काद्या जी [प्रास्ता] १ स्थाम-वर्णवामा । २ विरम्कार भरनेवामी (कृमा) । ३ एक कृतासी वर्मान्त्र वी एक पन्यानी (ठा ४, १) । ४ वेस्तानीवयव (सी ७) ।

्राज्यक्रमयन [धास्त्रानितमक] वर्शन्यस् सन्ध्रक कृष्मिस स्थानितमक] वर्शन्यस्य साम्राज्यसम्बद्धिक प्राप्तिक र )। साम्राज्यसम्बद्धिक सम्बद्धिक स्थानमक स्थानमक (सम्बद्धिक स्थानमक (सम्बद्धिक स्थानमक (सम्बद्धिक स्थानमक (सम्बद्धिक स्थानमक सम्बद्धिक स्थानमक (सम्बद्धिक स्थानमक सम्बद्धिक स्थानमक स्थानम

कानि पूं [काछिन] विहार का एक पर्वेड (वी १६)।

राज रचा । कासिअमृरि पुँ [याचिष्ठसृरि] एक प्रसिक्ष प्राचीन जैन सामार्थ (दिवार १२१)।

कास्तिआ की [क] १ रुपैर, देह। २ वास नतः। ३ मंत्र कास्ति (६ २ १८)। ४ मेप समूह कारन (पाप)।

वाहित्रा ही [वाहित्रा] १ देवी क्टिंग (तुन १०२)। २ एक प्रसार वा सूद्यमी पतन (वर ७२० टी छाना १ १)। वाहित्र १ [वालक्ष] १ देश निरुट पत्ता वानिग्रेसमी (या १२)। २ वि वन्ति

वश में उत्तम्न (वाम ६६, १५ । काविमा स्मे [थानित्री] वक्षी-विद्यत्त वर्ष्ण्य वा वाद (वरण १)। व्यक्तिमी की [बावित्री] विद्या विदेव (मूख २ २ २२)।

यासिकय न [ब] वर्षास्त्रः, स्थाम वनार का के॰ (६२ ६१)। बास्त्रिक्तयः भी [ब] कार्रको (ब.२.२१)।

काकान का [ब] स्थापना (व र रहा) व्यक्तियर वृं [बाकिसर] १ फेनियर (तिम)। २ वर्षत-पिरोप (उम. १६)। ४ ताम वनम विरोप (वाम ४० १)। ४ तीम-व्यक्तियरेग (ते ७)।

धानिक्षीकी [पानिक्षी] १ सपूना नदी (रुष) । २ एक इक्षाणी शक्त दशान्द्र परमनो (प्रस्ता १ २ १११) ।

काति । पृष्टि १ स्पेर् के । २ मेर वर्णता देर ४६) । | काज्यि येगो पानिय ज्वर्णक (सत्र) । कालियी। श्री [कालि ही] संशानिकोप बन्त समय पहले पुत्ररी हुई कीत का भी जिसमे स्वरण हा सके यह (विस १८ ८)।

कारिका न [कालय] हवर का पूर्व मीन सिन्य (नंदु)।

यासिम पुंची [कान्सिम्] स्थापना कप्णता वागीयन (गुर वे ४४ का १२) ।

चापान (मूर ६ ४४ का १२)। काटिय ९ [काछिय] इन नाम का एक मर्प (मुना १८१)।

वार्डि भी [कार्या] १ विद्यानेशी-स्वाय (वीर्डिश) १ २ वन्दर की पूर परदाती (हा ४, १ प्राया २,१)। १ वनामांत्र स्थिय वार-सहा (सदु ४)। ४ दानार स्थे वानी धी नावा नावा महुर्द्ध सामी माया तार वानी धी नावा नावा महुर्द्ध सामी माया तार वाना-दर्शित (वीर १)। ६ वीर्डी देव कारा-दर्शित (वीर १)। ७ वास्ती वार्षि (वाय)। ८ इम नाव वा एक धी (वित्त)। बाजुम न च्यान्य वा चरणा। यहिया धी पुष्टिची भीता माग कर सामी हिंवा वरणा (दिता १ १)।

यासुन्तिय देना बारुनिय (मूप १ १ १)।

वारुर्गाय देनी पार्तायय (भूष १६२६)। वारुष वृद्धि सन्त की एक सन्तम अर्गा (पामन २१६)।

ेबाउभिय व [शलुप्य] बङ्काण मॉलजा | (च्छा)।

२४०	पाइधसहमहणाची	<b>बामु</b> स्म— <b>बा</b> सि
स्मानुस्स म (कासुन्य) व नुहरण (गा २)। काल म (वे) वारिष्य, रयाम वगल का पेड़ (वे २ ६)। कालेय म (कालेय) १ काली क्या का स्वयः १ (वे २ ६)। कालेय क्या रिवार कल्लाकरम (व क्या)। ह इस्स का मास-करा व क्येता (यूप १ १,११९मा)। कालेयेस वं (कालेयां) समुश्यिक (राह्य १ १)। कालेयाई वं (कालेयां) समुश्यिक पर्याप्त १ १)। कालेयाई वं (कालेयां) सम्भाग का प्रकारिक विकास (स्वय ४ १)। कालेया वं (कालेयां) सुद्ध विकास वे कालेयां वं (कालेयां) सुद्ध विकास वे कालेयां वं (कालेयां) सुद्ध विकास वे कालका वं (स्वय ६०)। काल १ वं विकास वं वारो स्वय हो वोका काल इं वेकी सिंग्य प्रसाद पर वरण्य	सुरुवा। १ में वरावन्त्रा) - इसाविधाना स्वक्ता (स्व १४)। क्राविस्तावन वेदो किस्सावन (तीप १)। क्राविस्तावन वेदो किस्सावन (तीप १)। क्रावि १ २ २६)। क्राविस्त वेदो क्राविस्त (स्व १७१)। क्राविस्त वेदो क्राविस्त (स्व १७१)। क्राविस्त वि हिंदी क्रीवर वहन कर्णवाला (ब्यु ४६)। क्रास्त व्यव्ह कहर्य। वरावस्त (ब्यू)। क्रास्त व्यव्ह कहर्य। वरावस्त (ब्यू)। क्रास व्यव्ह क्राव्य वरावस (ब्यू)।	वह मुनाई कर्नवी माझ्यमो स्थे बन्दाः (मुना ६२१) । क्रास्य यू [क्र्यम्] १ र सः नाम का एक क्रार्थ (माना) । २ इरिया की एक वार्षः । २ एक बात की सक्ती। ४ रूप नाम का एक क्रार्थ (माना) । कि व वाक पीनेता (है ? ४४। यह )। क्रास्य व [क्रार्यम्] १ रस नाम का एक मोत (स क्रार्थ )। क्रास्य व [क्रार्यम्] १ रस नाम का एक मोत (स क्रार्थ )। क्रार्य व व्याप्त है रहे नाम का एक मोत (स क्रार्थ )। क्रार्य पीन में क्रार्थ का क्राय-नीमी (स क्रार्थ )। क्रार्य पीन में क्रार्थ का क्राय-नीमी (स क्रार्थ )। क्रार्य वाप्त का एक क्रार्थ (स क्रार्थ )। क्रार्य वाप्त का एक क्रार्थ (स क्रार्थ )। क्रार्य वाप्त का एक क्रार्थ (स क्रार्थ )। क्रार्य नाम का एक क्रार्थ (स क्रार्थ )। क्रार्य नामित्र की [क्रार्थ प्रार्थ ) व्याप्त व्याप्त की [क्रार्थ प्रार्थ ) व्याप्त व्याप्त वर्ष [क्रार्थ प्रार्थ )
(श्रीम १० पटन ७३ १२)। क्रोडिस पू	/-D =\ .	ि <b>२१)</b> ।

(कीव ६)। [\*कोटिक] नावर से गार कोलेवाला कास दे किया सी १ रोज विरोद, बाँसी (मरा)। देखो काय = (दे) : (लाया ११३)। २ दुल-विचेय कास काम-काभृद्धि है भी वि] कांबर (दूप १२१) बुर्मुमेंब मन्त्रे सुनित्यको अस्म-बीचियं नियर्पः काबोडि । १४४ क्ड ४ १ छ ।। (छर ७२= दी)ः 'कापूरुपूर्गद विहर्स' (धार कावडिश पूर्वि] वैवनिक कॉनर से गार ३ )। ३ उसका कुल को एफ्ट्रेस धीर शीमाय-द्योगवाचा (पडम ७३ ३२) । मान होता है, 'वा ठरन निमद वृत्ति चछ्वर कावम र् [कावध्य] एक महापड्ड व्यहानि इप्लावकारायंकार्यं (बुपा ४२०- कुमा) । ४ साबक केन-विशेष (राज) । बहु निशेष बहु-वेद-विशेष (ठा १ ६) । ४ रक्ष (ठा ७) । ६ संसार वनद् (काचा) । कार्बाक्क विदिगित्तरुग सम्बद्धिय (वे कास वेद्यो करेत - कारव ( है १ २६) वह )। ર. ૨) ા कार्याख्य वि [सावधिक] करना स्त्रोप का

कार (क्ष्म १ दिनायां क्षित्र के कारण कर्य कर्या कर्या (क्ष्म १ १)।
वाचां क्ष्मित्र क्ष्मित्र क्ष्मित्र क्ष्मित्र क्षमित्र क्षमित

/Ant I

कासँग्रस कि [कासक्क्य] प्रवाधी संदार में बावक (बाना) । कासग केलो कामय किए रोहरित गीजाई अवा बीनिट कारवा' (निचू १)। कासण ५ [कासन] बोबाला बाट्कार (ब्रोच २३४)। कासमहरा पुं [कासमर्दक] बनलाहि-विहेद प्रमामिकेप (पर्श १-पन ११)। कासय १९ कियेंड] स्थीनन किवान (हे मासव (१ दका प्राप्त): 'जह वा कुलाइ प्रस्ताई, कासनी परिस्तृदाई विद्यमित् ।

कासविज्ञाया की [कारवपीया] वैत पुनिर्दे क्षी एक राजा (क्स्म)। कासकी की [काश्यपी] १ पृथिकी वर्षिक (क्रुमा) । २ करवकम-नोनीमा क्ये (क्रम्म) । रद्व की [रिति] अफ्लान् दुमतिनाय गी त्रचम रिज्ञ्या (सम १६६)। कासा की [कुदा] दुवंस की (दे १ ११४) यइ)। कासाडूया रे की [कायायी] श्वास-रंग वे कासाई रे वे हरे लागे बला सामे (गण कासाय वि क्रियाय] क्यास-रंग वे रंग हुमा बकाबि (बजर)। कासार न [कासार] १ तथान क्षेत्रा क्रोनर (तुपा १६६) । २ पकाल-विशेष स्थार (संदेश) (६ द्रंसमुद्र भरवा(वडर)) ४ व्रदेश स्थानं(एकड)। श्रृप्ति <sup>इ</sup>र्ष ["मृमि] नितम्ब स**रेत** (न**पत्र**)। कासार न दि वानु-विरोध कीसपमन (दे २ २७)। कासि प्रं [काकी] १ फेल-मिक्टेप काली विवा 'कासिरि शक्तको' (सुपा ११; वर्ष

१)। २ काली देश कर राजा (दूमां)।

काहाक्य पुं [कापापण] सिक्का-विशेष (हे इ सी कारी नवरी बनारस राहर (कुमा) ! पुर न ["पुर] कार्य नवरी वनारस शहर २ ७१: पएइ १. २ पड् (प्राप्त)। (पउम ६ १६७)। राय पुं ["सञ्च] काशी काहिय रि किशिकी क्यानार, वार्टा करते वासा (बृह १)। रेश मा सभा (उत्त १०)। यर् विषे काहिक पृथि योपाम म्याला, जी सा काशी केश का राजा (पउस १ ४ ११)। (के २ ३ व)। बद्धदण पृक्षिर्धनी इस माम का एक काश्चित्रा को वि तना निस्तर पूरी मानि राजा जिसने मगवान् महावीर के पास बीता पकायी बाही है (पाम) । सी नी (ठा द---पत्र ४३)। काहील देखों का ह्य (शम्द ३ १)। कासिअ न [दे] १ मूक्स वक वारीक काद्वान्याम न [कारियंथनियान] अनुस्कार इपद्याः २ सफेर वक्त (दे२ ५६)। नी चारा से दिया **जा**ता रान (ठा १)। क्यसिज न क्यिंसिती धौक सुर (राष)। कासिज न दि । कालस्वस-नामक केरा (व ९६, घंत २४३ मात्र)। २, २७)। काइणुकी [दे] ग्रंका साथ रखी (दे २ कासिक वि [कासिक] कांसी रोपवाना (निपा ₹१)। १ ७— यन ७२)। कासी की कियी ] कामी कनारस (गामा कि देखों कि (हिंदि रह यह)। १ क)। येष पूँ[सब] कस्टीका सब (हिंग)। सर्विधीकारीना यजा (पिव)। सर्पु ["बार] काशी का यजा ६ ३ १४ रहे)। (चिम)। किल वैचो कम = इस (काल १२% प्रामु १३ काइ एक कियम् दिल्ला। काइमी (नूस यस ४ में ११ वसा४)। 1 (8 88 8 किम देको किम = इस (पद्)। काइर केबो काहार (स्त ४ १ टी)। किञ्चत वि कियत् ] कितना (सण्)। काइस्र वि [दे] १ मुदु, कोमतः । २ व्यः, बूर्तं क्रिअंत वैस्रो कर्मत (मणु १६) । (दे२, ६८)। काह्स वि [कादर] कारर, रूपोक, सवीर (इ र २१४ २१४)। माम (पाघ)। काइस पुन [काइस] १ काय-किरोप (तुर ६ **१६ बीप एडि)। २ बम्पन्ड घानान (पराह** २ २)। काइस्र की [काइस्र] बाय-विशेष महा-हनरा (विस ८७) । काहर्किया की [काहर्किस] धामुपण-विशेष (पण २७१) । काइसी की वि वस्ती पुन्ती (दे १,२६)। काइसी भी [रें] १ वर्ष करने का कारवादि : २ तवा वितार पूरी मापूकी वनैष्य पन्नस्थी विर क्या ? (प्राप्त)। बाती है (दे २, ४६) । क्प्रहार प्रे वि विकार, एक आधि वी पानी बरते और बोली वगैरह बोने का जाम करती ર, ૧)ા 🕽 (वे २ २७) मणि)

किंकर प्रे किङ्कर | नौकर चाकर, बास (सुपा ६ :२२३)। सच्दंिसत्यो १ पर मेश्वर, परमाध्या । २ सम्युट विष्णु (सन् ર) ા फिंक्टी की फिक्क्टी दासी मीकरानी किकाइण रक्षो केकाइम (मए २१२)। किंक्स्यब्द्याकी किंक्सर्वस्यवारे स्या करलाहियह जलना। मृद्ध वि [मृद्ध] किंकर्तव्य-विमुद्द इदानका भीवदा नह मनुष्य विशे यह म सूम्ह पड़े कि क्या किया जाय (महा)। काडे व किया किया किया कर किया समय ? हि २. किंकार पून [मंद्वार] धन्यक शब्द-विरोप (सिरि १४१)। किंकिश कि दिं] सफेद, घेंठ (दे २ ३१)। किंकिकतह नि किंकुरयज्ञ हहाबद्धा वह मनुष्य जिसे यह न सुम्ह पड़े कि क्या कि सक [कु] करना बनाना 'हृदियं कराते' कियाकाय (भा ७)। (विसे ६३ ) । कनक्र किञ्चत (सूर १ किंकियिका की [कि हिजिका] सूर वॉएका, करवनी (सूपा ११६)। किंकिणी की किंद्रियों अर देवों (मूपा ११४' भूगा) । किंकिञ्ज रेवो केंकिञ्ज (विचार ४६१)। किंगिरिक पू किक्किपेट क्रिक शह-विशेष, नीनिय बीच नी एक बादि (दाव)। किंप व [किंद्र] समुचय-घोतक सध्यय, और किञाडिका की [कुकाटिका] नवा का उत्तर भी पूचया भी (मूर १४ ४१)। किइ की किति इति किया, विवान (पह किंपण न [किञ्चन] १ हम्म-इच्छा पोधै (विते १४२१)। २ स. कुछ, किछिन् (वय प्रकारक)। कस्सान किसीन् दिन्तन प्रसामन (सम २१) । २ कार्य-करण (भ्रम २) เ किं थण व [किंग्रन] इस्य बस्तु (उत्त ३२, १४३)। ३ विधानशा (अवस् या १२)। = युव ३२ ×)। किंस [किस्] कीन क्या करों, निज्वा किषहिय वि [किक्किव्यिक] पुछ व्यापा प्रशा यतिसम अस्पता और शाहरम की (गुपा४३)। वतनानेवाना राज्य (हु १ २१ व प्रधः-किंप स [किक्रियन्] मन्य १५०, योहा ७१ दुमा विपार १ निदु∗३)- "क **बु**र्मित मसीयो बाउ स्थान्सेहि जिपेति (भी १३ सम्बद्ध ४७) । (प्रामु ४)। सथा था पुना तक फिर, किंपियमच वि [किश्चियात्र] सान्य बहुत भौड़ा, यत्तिश्चित् (नुपा १४२) । किंकत्तव्यया देवो किंकायकाया (बाचा २, किंभूण वि [किक्रियून] पुछत्तम पूर्ण-प्राय (घीप) । किंग्रम्म प्रक्रिकर्मम् । इस नाम का एक ! किंशक पू [किअस्क ] पूप्प-रेश पराप गुरुष (धंत) 1 (खाना ११)।

क्याहार पुन दि] कांनर, नहींथे (नुज १ १)।

२४०	पाइथसर्मइण्यको	•प्रशुस्स—गसि
बालुस्स न [बालुस्स] क्रहरूरत (ता २) । बालुस्स न [ब] ठारिक्स, स्थान ठमान का देवु (१२ ६१) । बास्य न [ब्युल्य] र क्सी केवी वा बरावा २ मुर्चन का पिछन नामक्सन (७ ७३) । १ हरत का मांस-करण नमेता (तुस १ ४, ११ रंसा) ।	कर्मणिक्षय वि [कांप्परसंय] र क्षंपल श्रृति- संघर्णा। २ न. क्षंपल-ग्रुति के बृत्तान्त्रवाला एक प्रकार ंत्रतात्रस्थर्म भूग का प्रार्थनी प्रध्यक्त (स्था ६४)। कांग्रिसायण क्षो व्हिसायण (श्रीन ६)। कांग्रिसायण क्षो व्हिसायण (श्रीन ६)। कांग्रिसायण क्षो व्हिसायण (श्रीन ६)।	त्रव भूगाई करोती वाद्यास्त्रवी स्तो बन्दाः (द्वारा ६२१)। कास्यय द्वीक्तस्यप्] १ स्त वात वा एक व्यपि (द्वारा)। १ २ हरित्यु की एक कार्या २ एक बात की महत्त्री। ४ वत प्रकारित का बागाला। १ वि वाक गीनेनाता (है १ ४३। वस्)।
स्वायन देवी कारकेस (वेत १)। सक्तेयरि वृं [कारकेसिय] वृद्धा विरोध (यह १)। शास्त्रपात् वृं [कारकेसिय] वृद्धा विरोध एक कारकेस्य विराम (वत १)। सक्तेयर वृं [कारकेसिय] कर त्याप ना एक कारकेस्य विराम (वत १)। सक्तेयर वृं [कारान] वृद्धा तिरोध की धारणी-नदर होर वो वारो तरक विराम कर विराम वृं [कारकेसिय वार्षको नोक्त स्वाय ) वृं [को वारत वार्षको नोक्त सवाय ) वृं [को वारत वार्षको नोक्त	कानुरिस केनो कापुरिस (ध १७२)। कार्येक न [कार्पेच ] कारायन, कान्यसण (यनु १२)। कार्योच कि [के] नाँकर चान करनेताला (व्यपु ४५)। कार्स केनो कहक अपूर्व काल्य (यहू)। कार्स कर्म चानु [कार्य] र वहणा चेन्टरियेच के बायन वारायन करणा। र काल्या कर्मा को वारायन करणा। र कोलार करणा। प्र	क्षत्रक क किर्पण्ये १ एक नाम का एक योव (का : एग्या १ १ क्या) २ १ क्षत्रक क्षत्रक का एक वृद्धे दुख्य १ दि. कारण थोत में क्षत्रक कारण पूर्व १९)। भ र्षु नारिक दुब्या (ता १६ १ मतन)। १ एव नाम का एक पंतरक्षणा हुन वा प्रमाण (पंतरक्षण) हुन वा कारणवादिया की किरएपराधिकों थी-
सन्ते सेतो धोर निरुद्दर संटकांधे जाते हैं (बीर १ राम ७५ १२) । कोशिय पु [काटिक] गांतर ते जार शेलकता (म्यु)। केतो काय मार्थ गार्थि १ की हिन्नी गांवर (तुम १२१) गार्थि १ की हिन्नी गांवर (तुम १२१) गांविस पु हिन्नी केतीक कोशर ते सार सेताला (राम ७६, १२) गांवय पु [गांवर पु स्तास्त व्यक्ति हाकर केर सिर्म (प्राम)। गांव्य प्राम्ति हिन्माम्म, सम्मीम्म्मू (वे २ २०)।	कोर बाना। वह कासंत कासमाण (राह्य १ वे—नव प्रशासाया)। वह कास्तिया (वीव के)। कास मुं किया स्त्री १ ऐम विरोग, बांडी (कामा ११३)। २ तुरु-विरोग काम-क्रीरिवर्ग निवार्ग (वह कोर टी)। 'कामुजुम्म विद्युप्त स्त्राप्त काम- रह)। ३ उक्का कुल बोर बहेर बीर सीमान- माण विवार्ग का तुरु-वृत्त वह वृत्ति स्ववार्ग व्यान्त्रमायकंपत (द्वार १८० कुमा)। ४ वह विरोग वह निवार, वज्य (वाचा)।	पर्णीजन (बाधा २ १ व ६ स्व. ४, ६ १)। ११)। भागतिकाया की [कारवर्षाया] कैन प्रतिसं सै एक शामा (क्या)। भागवी की [कारवर्षा] १ श्रीमती वरिष्ठे (क्या)। २ वरतकार-गोरीया की (क्या)। १६ की दिप्ती अस्तान पुर्वतनाव में प्रथम (क्या (बन ११०)) कारा की [करा] दुनेन की (है १ १० पर्)। भागतावा की [करावा] कर्म का (है १ १०
का का सि (वास्तिक) कक्षण तरे का प्राप्त (का वंद १०१) । वास्तिक १ विधानिक वेश्वनार्थी स्वीद सम्प्रत (त्रा १४०० ११० १ ११ वर्ष ११० ११० ११ ११ वर्ष ११० ११ ११ वर्ष ११० ११ ११ वर्ष १९० ११ १० वर्ष १९० ११ १० वर्ष १९० ११ वर्ष १९० ११ १० वर्ष १९० १९० १९० १९० १९० १९० १९० १९० १९० १९०	केश नीर्राप्त नासना (तिहू १)। कासज न निस्सनी जीवारमा जारकार	विश्वाह े रिके हुँदे काही नाम काही (नव कहा)। व्यास कि किसार विश्वास के देख हुमा कहारि (त्वा)। व्यास में किसार वे क्यान केरा करेवर (युर १९६)। २ व्यास मेरिक केरा (युर १९६)। १ व्यास मेरिक केरा (युर १९)। १ व्यास मेरिक केरा (युर १)। १ व्यास (ब्या)। भूमि के भूमि जिलान मेरिक केरावर ( १ २७)। स्रोम व्यास कि व्यास केराक केरा व्यास कि व्यास केरा केरा केरा निमा विश्वास केरा मा राजा (दुमा)।

छन्तर्ने मित जाता 🕽 उस तरह विका 🖫 घा (ডর)।

किट वि [किए] कोश-पूक (मग १ २) भीव १)।

किह वि [इ.स.] बोधा हुया एल-विदारित (मूर ११ १६; मच ६ २)। २ न देव विमान विशेष: 'जे बंबा सिरिवर्च्य सिरिवाम इंड महर्न किह (? हुं) चावोएएमं बर एएवडिसमं विमासं देवताए ज्वबस्ला (सम ३१)।

किद्धि लगे [कृष्टि] १ कर्येख ।२ बीचाय धानमाँख । ३ देवविमान-विरोप (मम ३)। कुछ न [कूद्र] देवदिमान दिशेष (सम E)। घोस न [घाप] विमान विशेष (सम १) । जुन्त न ["युन्त] विमान-विशेष (तम ६) । बस्सय न [ध्याळ] निमान विशेष (सम १) । व्यस म [ प्रस ] वेवविमाल क्रियेप (स्व १)। वण्य न ["वर्ण] विमान-विशेष (बन १)। "सिंग न ["श्ट<del>क्</del>र] विमान-विशेष (सम १)। "सिष्ठ न ["शिष्ट] एक देव विमान (सम ६) ।

किटियावच न [कुस्यावचे ] देवनिमान-विशेष (सम ६)।

क्दि उत्तरवर्डिसग व [कुस्युत्तरावर्वसक] इस नाम एक देन-विमान देन-पदन (सन E) I फिडरा वि [कीडक] भीड़ा करनेवाला (सूध

१४१२दी)।

क्रिकेट [क्रिर] सुकर, सुबर (हे १ २४१

किडिकिडिया स्पी [किटिकिटिका] गुणी इडी की सामान (यात्या १ १—यम ७४) । बिडिस र् [किटिस] रोप विशेष एक प्रकार नासुप्रकोड़ (बहुस १३८ मन ७ ६)। किवियास्मी वि] किवनी कीण बार (स इ.ब₹) ।

फिद्ध सक क्रिन्द विलग श्रीहाकरणाः बर क्रिकेट (शि १६७) ।

फ़िहुकर वि [ज़ीडाकर] बीड़ा-कारक (बीप)। फिश्वारणी [मीबा] १ मीवा बेन (निपा १ ७) । २ वास्यावस्या (ठा १०--पण xte) ı

किक्साविया स्थी [क्रीडिका] क्षीड्म-धानी बासक को खेल-पूर करानवासी याद (गामा १ १६--पत्र २११)।

कि कि वि दि १ संमोग के लिए जिसको एकास्त स्थान में नामा नाम नह (बन ३)।

२ स्वविष्, कृष (शृह १) । किविण न [किठिन] संन्यासियों का एक

पान, जो बीत का बना हुया होता है (सम 1 (3 0

किय सक [की] वरीदना। विराध (दि ४ **१**२)। बद्ध 'से क्रिगं किरणाचेमाओ इर्ख नायमारो' (सूच २ १) । किर्णंत (सूचा १६६) । संइ. कि.जिला (पि ५८२) । प्रयो

किए।वेद (वि ४६१)। किया दे किया १ वर्षण-विद्य, वर्षण की निरामी (यरुड) । २ मांस-इंबि । ३ सुका वान (सूपा ६ ं नमा ६६)।

किमध्य वि दि शोलित विमूपित (पडम किगण न क्रियण] नीनना खरीद, क्य

(छप पु२६६)। किया केलो किया (प्राप्त ह ३ ६९) किंणि वि कियिम् ] सरीरनेवाला (सम्बोच

किजिकिण बक किजिकिणय किए-किछ बाबाब करना । वह किणिकिर्णित

(भीप) । किणिय पि [इतिया] शीना हमा वरीया ह्या (ब्रुग ४६४) ।

किंगिय र् किंगिकी १ मनुष्य की एक वार्ति, को बाबा बनाठी और बबाती है ( भव १ ) । २ एत्सी बनाने का शाम करने-नाची मनुष्य मारि "किश्विया छ वरतामी वॉलविं (पंचू)।

किजिय न [किजित] नाश-निरोप (श्रव)। किंपिया की [किंपिका] कोटा फोड़ा पुनशीः 'घलेवि धई महिक्तनिसीय

रूपम्बकिशियपॉकिसा । र्मातस्य रकप्पडी व्याह्मप्रविश्यहा

क्यूनि ब्रिंगीत (स रेव )। किंपिस धन शिरणयू | तीव्य करता, देव करमा । किरिएसइ (पिन) ।

कियो म [किमिति] क्यों किसलिए? (र २ वृश् क्षेत्र २१६४ पाद्यः गार्थः महा)। किएम वि क्रिजें] १ उस्कीए, चुरा हुमा 'तवसकिएएक्व श्टूपडिमन्व' (सुपा १७१) I

२ धिस, फॅका हुआ। (ठा १)। बिक्का व किल्मी १ फसनामा बुझ-विशेप बिससे बाक बमता है (गडब बाबा)। २ न सुराबीय किएव-बूश के बीच विश्वता बारू बन्ता है (बस २) । सुरा की ["सुरा] शियुव-बुद्ध के प्रत्न से बनी हुई महिए (पबंद) ।

किल्ला कि वि दोममान राजमान (दे२

किञ्जो स [किनम्] प्रस्तार्षेत्र घष्मम (क्या) । किएतर देखी किंतर (वं १ थाया दर)।

किल्लाध [कथम] क्यों क्यों कर, कैसे ? किएला सका किएला पत्ता (किया २

१—पम १ ६)। किञ्जूस [किंतु] इत भर्मीका सुक्क सम्बद-१ प्रस्त । २ वितर्भ । १ साहरन । ४ स्वार, स्वस । ३ विकल्प (उच्छ स्वप्न

क्टिम्ब वैकाकम्ब (सा६४० ग्रावार १४ बर ६ % पएए १७)।

कि आहात दि | १ वारीक कपड़ा। २ सप्टेंक कपड़ा (दे २ १६)।

किल्युग पूर्वि वर्षकास में बढ़ा साहि में होलेनाची एक तरह की काई (भीवत ६६)। किण्डाकेशी कण्डा (ठा ४, १---पत्र १४१

कम्म४ ११)। कितव पू [कितव] ज्वकर, बूधारी (६

¥ 5) l किय देशों किया (ब्रीति १)।

किन्त वेसी किंद्र - वीर्त्तयू । मर्थि किनाइस्सं

(पडि) । संक किचाइचाय (पच ११६) । कित्रण न कित्रौन दिलावा स्तृति 'तव ■ विल्लाम संदि किलाई' (ब्रिजि ४º ते ११ १३३)। २ वर्णन प्रतिपादन । ६ क्वन,

प्रचित्र (विसे १४ ) नवकः भूमा) ।

किचया की [कीर्वना] कीर्वन, वर्तन मरांसा (नेएय ७४६) ।

202	पाइअसहसहज्ज्ञवो	विजयस—विश्वीकर
रशर हि. बनन्त पुँ [व] प्रिशंपन का भिष्य का भेष (१२ ११)। (कियाद (श्री)। ध्र [कियाद म् कियेत न] म्यू क्या १ (पर १ द्वार)। कियु च कियेत विश्व [कियाद] परनु शेकिन (पुर ४ के))। किये किये किये किये किये किये किये किये		वाहरवार्थु मित्रवाल ] नहरेर, रिल (द्वा)। हर दें चिर् नाहरेर रिल (द्वा)। हिंदीयर व [फिल्मिस्स् ] हिन्ने वनर तह, कर तक ? (कर रिन दें)। हिंद्या व [फिल्मिस्स् ] हिन्ने वनर तह, कर तक ? (कर रिन दें) हिंद्या व [फिल्मिस्स कर-पुक (हे रे. रेवः)। व हिंद्या हु त है मुन्तिरत है (कुर द रेवः)। हिंद्या के को कि का हा। हिंद्या के को कि का हा। हिंद्या के विकास का मित्रव (स्पा)। हेंद्र कह बोलेया हु र स्ताव क्या, वीस्ता। र वर्त्य क्या। र हत्या विकास हिंद्या (क्या रह्म)। वह, हिंद्या (क्या रह्म)। वह, किहुसा हिंद्या (क्या रह्म)। हैह, किहुसा हिंद्या (क्या रह्म)। हैह, किहुसा हिंद्या (क्या रह्म) हैह, किहुसा हिंद्या (क्या रह्म)। के किहुसा हिंद्या है हैंह, क्या का मन नित्र क्या क्या है हैंह, क्या का मन नित्र क्या क्या क्या क्या है हैंह, क्या का मन नित्र क्या क्या क्या है हैंह, क्या का स्त्र नित्र हैंह, क्या का मन नित्र क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या क्या
(बीद दे)। हिनारी   दिनारी   दिनार के बी की (दुना)। (दुना)। विद्व   [किट्ट] दुरेच्च सामेद सार्थक का विद्व स्व [किट्ट] दुरेच्च सामेद सार्थक का व्यवक (पर १)। विद्याद (दि होण कंद्रम (दे २ ३१)। दिनार [क्टिंग कंद्रम (दे २ ३१)। दिनार [क्ट्रम कंद्रम कंद्रम कंद्रम	ज्यस (तुमा ४६६) द्वामा)। २ बस्कीस दूसतीय 'व रिदूर्यो तुम्ला (सूप १ १४) ४ न शास्त्रीक स्टूब्स (सूप १ १४) ४ न शास्त्रीक स्टूब्स तिस्स, इस्ति (याचा २ २, २ सूप १ १ ४): क्रियंत हिस्स्याना १ तिस्र क्रिया बाता इस्ता महाना १ त्रीहित क्रिया बाता	(वस ११)। किट्रूप वेचो किन्छण (इह १)। किट्रूप वेचो किन्छण (इह १)। किट्रीट को [किट्रीट] १ सार्यक्रकारिकेंद्र स्थापनिकेच कुल्मविशेष्ट्रेण सन्त्रकारिकेंद्र स्थापनिकेच कुल्मविशेष्ट्रेण सम्बन्धाः स्थापनिकेच्छ किट्रूप (वस १३) सार्यकाः किट्रिप वि [केट्रिय] १ सर्वित, वर्गनित

किषय न [र्] प्रजानन, बोन्स 'शूनिसन्देयस

क्यारवनवर्त क्रिवाई व पोतार्त (धीव

किकाइनी [क्टरया] १ मान्त्रा वर्णन (का

प्रदेशक्ष)। २ किया नाम नर्जा ६ दव

वमैद्द्वी पूर्तिका एक भेदः। ४ आ पूनरी

अहा १ रोप-विरोप नहामाधी का रोप

किवि रशै [कृति] १ तृत वमेरद् वा वयहा।

সহা (ঘৰ)।

१६ --पर ७२)।

{**₹** १ १२=} ı

किया देशो कर = प्रा

इदि चित्र महुत्त दिनना रियाममुख्यूकर्ण व

(इक १८२ मीत) । २ क प्रसम कन

जो रेक्ट अ बीर श्राद में कुबर, बरल वाले

न प्राप्त का नाम करना है कियागतनोक्सा

हिव स [किमपि] बुठ भी (प्रामू ६ )।

(स्तरिम वू [क्रिंगर] १ म्थलर देशी

शासर वादि (कार १४)। २ सक इन्द्र

(स्प्रानिशाव के कनार दिया का प्रश्न (हा

२ १)। १ निर्देशन बनीन्द्र वी स्वतेना

बायविशिव देत (द्राइ, १—ात् ३३) । ं

4र पं[दिम्र] की प्रशेलक बाठियो <sup>|</sup>

रियाप € नगड निकास बहा हाता है

दिलका (मूट १२ १३ )।

(\*T1)1

(तुम २ ६) : २ प्रतिराहित, कवित (तुम २

किट्टिया स्थ्री [ब्ह्रांटिका ] बनलाटि-विधेव

किट्सि म [फिट्टिस] १ थमी वरनी निर्न

किट्टिस न [किट्टिस] १ कन बारि ना गरी

वया हुना ग्रेस । २ उत्तरे मना हुना नृता ।

है जल कीर के बाल धारि भी जिलार मा

मरारं वानूब नूता (सङ्घ्यापन)।

थादिना तेन रान्त कुछ (सानु)। २ ६५

२ स ७)।

(पगल १) भग ७ २)।

नुगा (बान ३४)।

दे बन्दे ना बरत । ३ मूर्तपर, बोजपर । ४ | किट्टाक्य रि [किट्टान्टन] स्नाल म निर्मा

इतिवा क्या (है २ १२) १) यह ) ।। हुमा, युवावार, क्षेत्र मुत्तर्ण मारिका रिट्ट

षित् वेनो पितृ = रिट्ट ।

किरोक्कय न [किरोलक] फन-निरोप किरो-फिरणिष्ठ वि किरणयम् ] फिरणवासा वेबस्बी (सर २ २४२) । कराड ) पूं विश्वत १ समार्थ केन विकेश किराय ) (पर १४=)। २ मील एक अंगली माति (मुर २ २७ १८ सुपा १व१ है १ १८६)। किरात (शी) रेको किराय (प्राक्त ५६)। किरि देखों किर = किम (सिरि = १२ स १४)। किरि वृक्तिरी सामुकी परवान 'नत्वह किरिक्ति करमाइ विधिक्त करकार विधिक्ति रिच्चान्तुं सहीं (पडन १४ ४%)। क्टिरि व क्टिरि मुकर, सूमर (वडव)। किरिआण देवो क्याण जम्मीवरगद्वियपुरन विरिमाणी (बुसक २१)। किरिइरिया ) स्त्री दि ? कर्जीपकरिएका, फिरिकिरिमा | एक नान से बूसरे नान गर्द हुई बाठ यर । २ कुनूइन कीनुक (देश **52)** ( क्रिरिक्रिया स्त्री दि । वाद-विशेष वीश धादि की दस्ता- सकती से क्या ह्या एक प्रकारका बाजा (बाबा २ ११ १)। किरिश्चल हैयो किश्चल (गाट-मास १७)। किरिया श्री [किया] १ किया प्रति व्या पार, प्रवस्त (सूम २ १३ छ। ३ शास्त्रोक्त सनुहान, वर्मानुहान (सूध २ ४) पद १४६) । ३ जावच स्वापार (वग १७ १)। ४ द्वाण न िरयानी कर्नवन्त्र का कारण (सूच २, २ माव ४)। यर वि िपर सनुहात-पुरुत (वर्)। बाइ वि शिक्ति र धास्त्रक की गारि का मस्तिक माननेवासा (ठा ४ ४) । २ वैनस क्रिया से ही मीश्र होवा है ऐसा मामनेरामा (धम ११)। विसास न िवराखी एक केन बन्दारा हैराजा पूर्व-बन्द (सम २६)। फिरीह व किंग्रेटी नुष्ट, शिरी-पुष्ए (नाम) । क्रिशेष्टि पूं [किरीटिन्] मर्जुन मध्यम पाएडा (बेली १६२)।

क्रिरीत वि क्रिकी शीना हुन्छ, खरीवा हवा

प्रतृतें बराप्र मीन्य वर्षत (स्त्र)।

(प्रघ्य)।

विशासतीकाधन (सर ६ ६)। किछ देवी किर = किन (हे २ १८६ यतः कुमा) । क्रितंत वि क्राम्त विम्म, मान्त (यह )। किल्लंड न किसिआ वास का एक पात्र विसर्ने येया वनैया को जाना जिलाया वाता है (बचा) । किसंज न [किस्तिज़] तूरा-विशेष (वर्गीव १६४ १६६)। क्रिक्रकेस पर [क्रिस्टिस्स्य] क्रिन किस दावान रूपा हुँसमा किमरिसद **व्य सहरिसं मस्त्रिचंचोकि विस्तिरोते**स' (बप्पू)। क्षित्रकेराह्म न क्षित्रकिटायित कि किन व्यति इपं-प्यति (धाषम)। फिक्म शी वि रम्या, यभी (दे २ ६१)। विस्तरम् पद [क्राय्] क्लान्य होता, विश होता । क्रिसम्मद् (क्रप्पू) । विचम्मसि (बळा ६२) । **वर्षः फिलम्मोत** (पि १३६) । किछाचक न किरियाचकी इस नाम रा एक क्टब-भूच (गिय)। किखा हु [किखाट] तून का विकार-विशेष मलाई (दे २ २२)। किस्सम एक किस्सय निश्नान्त करना चित्र करना ग्हानि उत्पन्न करना । किनामेक (पि १३६)। मक किसामेंत (भग ६ ६)। क्षक किस्समीक्षमाण (मा ४६) । किट्यम पू किम वेश, परिश्रम ग्लामि 'बमिलको ने किसामी' (पश्चि विसे २४ ४)। किस्समणया स्वी क्रिमना विन्त करना जरान करता (भग ६ ६)। किस्रमणा त्यी क्रिमना वनग वनेश (महानि ४)। क्रिसमित्र क्षेत्रों क्रिसंड (धल १३१)। किसामिक विकित्ति किया विकासित हैरान फिला हुमा शीवित: 'तएहाफिनावि धंगो (पक्रम १ ६ २२: मुर १ ४७)। किस्टिंपन वि धोटी बन्ही सक्तीना दुककाः देनेतरलोहरायं किल्बिमिसीय ग्राव-रिली (शत १ २ वाम के २,११)। विधिनिम न वि उत्तर केशो (गा व )। दिरीय व [किरीय] र एक क्लेक्स केता २ । किश्वित देखी किसीत (बाट--मृत्य ११) ति 2**3**5) i

किसिकिंग कर रिम् रिमण गरना श्रीका करना। किलिक्षिक (हे ४ १६८)। किस्टिकिंपिश न रित्ती रमण भीका चैमोम (कृमा) । किसिक्छ यतः [हिसिक्सम ] 'तिम-तित' धावान करना । वक्त किस्त्रिकितीत (उप १ ३१ थि)। किखिकिक न किकिकिकि इस नाम ना एक विद्यापरनगर (इस्) । किटिकिसिकि वेली किसकिए । यह विद्धिकिशिक्षिक्षेत (परम १६ a) ! किसिनिस्थित (किशिक्षेत्र) 'निम-किम' बाबाश करना अर्थ-धोतक व्यनि-विशेष (स ३७ ३८४)। किसिट्ट वि क्रिए] १ नमेरा-पुक (उत्त ३२)। २ कठिन विषय । ३ मसेश-जनक (प्राप्त हे २१६: उद)। किसिज्य देशी किस्तिम (स्वप्न =1,)। किकिन्त वि [बलुप्त] बरिग्त पवित्र (प्राप्तः पद के १ १४४)। किसिंचि ली [क्लुप्ति] रचना कम्पना (पि ११)। कि कि कि कि [क्रिक] बाद गीमा (११) 242, 2 2 5) 1 किसिमा रेको किसमा । किसिम्मद (पि १७०)। बद्ध- श्रिसिमांत (से १ व ११ 2)1 किसिमिम वि [दे] व्यति एक (६२ ₹**२)**। किस्तिव वेचो कीम (बद २। मै ४३) ( किसिस यक [क्रिन] यर पाना यक णाना, कुची होगा। वह दिक्किमेंग (परम २१ इ⊏)। किसिस वैधी किसेश "निकाशनक्स्मीयान किविसस्तित्तिकिम इट्टागुँ (सूपा ६४) ।

किकिसिअ वि किसेशित । भागांतित क्लेश-

व्हिसिस्स वैद्यो क्रिसिम = क्लिस । विक्रिन्सक

(महार दर) । वह विशिष्टसीत (शाट---

विधिरिसञ्ज वि क्रिए । वनेरा-प्राप्त वनेरा-

प्राप्त (स १४६)।

मास ६१)।

मुक्त (कर च ११६) ।

कित्तव पि [कोर्तक] कीर्तनका (पन २१६ टी)।

किस्तवोरिक देखो कस्तवीरिअ (ठा व)। किस्तर केसे किस्तर - स्टब्स (दक्क क)।

किया केवी किया = इत्या (शक्त =) । मिनी की किसी र रह की है मुख्याति (भौपः प्राप्तु ४६३ ७४ : व०) ३२ एक विद्या-वेगी (पठम w १४१)। ३ नेसरि-वश्व नी धरिहाती देवी (ठा २, ३--पत्र ७२)। ४ केन-प्रशिपा-किलेप (खादा १ १*श---*-पथ ४३)। ३ स्नादा प्रश्नेता (५६३)। ६ मीलकत पर्वत का एक शिकार (वी ४)। भीवर्ग देवनोक की एक देवी (निर)। र्, इस तस्य का एक बैत सूति जिसके पास पौचर मनदेव ने दीलाकी की (प्रतम २ २ ६)। इस वि इस्ती १ ततस्त्रस क्नाविनारक (द्यामा ११) । २५ यस्त्राह्म सारितात के एक पुत्र का नाम (पन)ः चंद्र द्रं चिन्द्रे नृप-विकेष (कम्म) । अक्स पूं[धर्म] इस तम का एक राजा (देस)। भर है विश्वरी १ तुप विशेष (देवु)। २ एक वैश सुनि बुसरे क्लबेब के पुर (पटम २ २ १)। पुरिस र्षे [पुरुष] क्षेत्रिकाम पुरुष वासूदेव

एक को (जत १३)। क वि [व] कील कर अग्रस्कर (ग्रीत)। किसी स्थे [कृति] वर्ग वनका कूला मसूरत कर्मकरीय (कार १३ ग्रा ६४)

वर्गेष्ड्(ठारे)। संदि[सल्]क्रीह-दुखा सर्देक्ये [सती] १ दक्की

धानी (पान)। २ ब्यूक्त कन्नवर्तिकी

क्षम्या ४४)। किस्तिम वि [कृतिसम ] वनावटी क्लबी (तुमा २४ ६१३)।

पुत्राच राष्ट्र । श्रिषिय पि [क्षीपिय] १ ज्या, व्याच्या विशिष्यपियमधिया (पत्रि) । २ अवस्थित स्याच्या (खा २ ४) । ३ निकस्थत अधि-पारिय (व्यु) ।

किचिय पि [कियत् ] कियत् (एउड)। किस पि [किस] यदः गैला (१४ १२६)। किन्द्र मेर्ग कुम्बू (गय)।

विवाह वि [वे] स्वतितः नियः ह्या (वह) ।

किम्बिस न [किस्किय] १ पान पातक (पत्रह १ २) । २ मांस 'किममर्थ न है। वीरमार्थकां किम्बर्थ' (छ २६६) । १ तु बाव्यास-स्थानीय वैष-नगांति (मग १२ १) । ५ किमोत्र । १ स्वस्य भीवा (क्या ६) ।

(तंद्र)।
किंकिशासिय पूर्व किंकिशायिक देश गएकमा
किंकिशासिय पूर्व किंकिशायिक देश रामक १९२२)।
२ कैंक्स नेपसारी सामु (मन)। देशि
समस्य नीच (तुस १ र १)। ४ पान-कम को मोगनेसमा वरित्र प्रविद्य परित्र (खासा १)। ३ मास्क-वेट्टा करतेसमा

६ पापी कुछ (वर्ग वे) । ७ कर्जुर, वितरवरा

(प्रोप)। विशेषक्षिया स्थी [क्षेत्रिक्षपिकी] १ ग्रामना-विकेष वर्ग-दुव वर्षस्य की शिक्स रूप्णे की ग्राम्स (वर्गे १)। २ केनल वेप-वारी शाबु की वृत्ति (क्ष्य)।

किम (प्रण) य [कम्पम् ] क्वॉं क्वे ? (क्रू ४ ४ १)।

किमज केनो किवण (माचा)।

किसस्स पू [किस्मय] गुरु-विकेश विश्वने स्त्र को छोता में इएका वा धीर शास नवने हे वो सरकार धनवर हुमाना (निष्ट्र); किसी पूँ [क्रिसे] १ कुछ बीन कीट-विकेश (नरपूरे १)। २ देव में पुन्नकी में धीर

(बी १४) । १ प्रीमिय मेटनीकोय (म्ह्यू १ १—नम २६) । सन [बा] प्राप्त-रुक् शे करणण वरण 'मंग्रेकेवनुस्ताई व्यं विस्तित दु स्कूलवर्ष (बेना) । हारा रास बुं [राग] किहमित्री का रंप (बदम १ २ ; १ १ १९ प्रस्तु २ ४) । शासि व

व्याधीर में उलम होनेवला बन्-विशेष

["रासि] वनस्पति-विशेष (५एस १— पर १९)। विभिन्नरवसण [वे] देवी विभिन्नरवसण (वर्):

विभीत्रकाष व [विभीतकाष्ट्र] हकानुसार सर्व (स्थाप १ व--पव ११ )। विभीयत्र वि [कृतिसत् ] क्षतिनुष्ट

निविश्ववृद्धप्रीकननेतु' (श्ववृ २ ४)। किमिराव वि [वे] नाना से रक (व २, ३२)।

क्रिसिहरवसण न [ वे ] कीरोकनस्य, रेठनी वक्र (वे २, ११)।

कि.सुम [कि.सु] इन शवीका नुवक सम्बन्ध-१ प्रश्ना - र विद्युगी व निम्बा। ४ निरेष (हु २ ११७ पिन)।

किसुय ≡ [किसुन] इन सर्वो वा पूरण सम्मय—१ प्रका । १ विकास । १ विकास ४ स्रोठित्स (हे २, २१ व); मानाराज्याविते कि पूर्वा ठेडिंद् विद्युप्त ठेडिंद् (विके १, ६१)। विकास व हि किस्सित्त] बदता बाले (राज)।

(कार्मीर वि [कर्मीर] १ वर्षुर कार्य (राव)। १ थुं राजवनीरकेप निकले बीमकेन ने मारा वा (नेरी) ११७)। १ वर्ष-विकेश विभाग किम्मीरवि (राव)। किस वेको कीम (रिव १९)।

कियंत वि [कियत्] कियंत (धमण २९८)।

२९८) । फियर**ण नेटो** कयस्य (धर्मि) । फिय**रण रेटो कड्सम** (दर्ग ७२० टी) ।

फिसकर देशो केइस्स (क्षा ७२० टी.) श्रिया रेशो फिरिया ' इसे ग्यात किनासीटें (हे १ १ ४): 'सारक्युसारे क्यो पत्ता विकास किया के ' (क्य ११६) स्त्रि १९६९ टी कम्मू)।

कियाडिया को [दे] कालहुटी कात में कर्मणे मात (यव १)। किमानी किये कर न क

कियाओं क्यों कर = इ : कियायमा श [क्रियायक] किराना ननम् भरताय प्राप्ति केमने दौरत भीतें (तुर १ ९ ) किर दुं [वे] सुकर, सुसर (१ ९ ३ : वड़)।

किर च [किछ ] इन सबी का सुबन्ध क्रम्या—१ सीमानगा १२ मिरनाय । १ किछ निरित्तत कारक्य । ४ बाती-सब्दिस सर्व । १ सर्वाच । ६ सबीक, सहस्य । ७ संस्थ तीक्ष (है २ १ स्ट., बहा ना १९६८ महा

ज्ञयोव होताहै (कस्प ४ ७६)। किर सक्द [कः] १ क्षेत्रमाः २ पतास्यः फैनानाः १ विसेरनाः सक्च किर्देशं (पे ४

पाव पूर्विमें भी इ**वक्**र

रका १४ ५७)। किरण पुन [किरण] किरल परिम असे (कुग १११) नक्षण मन् २)।

रका यस १)।

तेत्रस्वी (मूर २, २४२) । क्रिराह ) पू किरात र मनार्व केत रिदेश किराय) (पर १४८) । २ मील एक अपनी वाति (नूर २ २७:१८: मुका ३६१ हे १ १८३) । करात (शै) रेखो किराय (प्राप्ट <६) । दिरि देनो दिर=तिस (सिरि मध्य मध्य)। किरि पूँ किरि] मामू नी मानाज 'नरवह , किर्देज न [व्विदेख] कुलु-विराय (वर्गीव विचित्त करपद दिचित करपद चिचित्त रिच्याले सहाँ (पडम ६४ ४६)। किरि नू [किरि] मुक्ट, मुचर (गउड) । फिरिक्षाण देखो क्यांग 'जम्मं हरवरियान रिरियाणी (दुबक २१) । विरिद्यिया } स्त्री [ते] १ क्लॉरकणिका फिरिफिरिका } प्रक नान ने बूनरे नान नई हुई बात या । २ धुनूरम कीनुक (दे २, **58)** 1 किरिकिरिया स्त्री दि । नाय-निरोध गाँस सादि की कम्बा-सकती से बना हमा एक प्रकारनाबाबा(शाचा२ १११)। किरिशाम देगी किसाम (गाट-मास ६७)। किरियाकी किया १ क्या इति व्या पार, प्रयान (सूच २ १ व्य ३ ३) । २ शास्त्रोक्त चनुगन, धर्मानुहान (सूच २ ४ पद १४१)। ३ सारच व्यापार (भग १७ १)। ४ हाज व शियान वर्णक्य का बारण (मध २ २ घाव ४)। वर वि ["पर] मनुहात-पूरान (पर्): बाइ वि विश्विम् । शास्त्रिक श्रीवादिका शस्त्रिक मान्त्रवाना (द्य ४ ४) । २ वेदन शिया से ही नोध होता है ऐसा नातनेशाना (सम १६)। पिमास म विद्याली एक मैन प्रग्नाश, तेराचा पूर्व-त्रम्य (सन २६)। क्रिकेट में [क्रिकेट] मुत्तर, शियो मुक्छ (काम) । क्रिके र् [क्रिकिन] पर्टुन नव्यम सारवद (बेली १६२)। क्रियेत वि [क्रीत] क्या तथा, गरेदा तथा (प्राप्त)। दिरीय व दिसीय र एक घरेला था। र

एतर्वे बनाप मनेच्य बर्धत (राज) ।

विशावक्षी काफन (उर ६ **५)**। किस रेवो किर= मिस (हे २ १०६) पता नुमा)। क्रिसंत वि क्षितान्त्र विगय, धान्त (वह ) । किस्रेज न किस्तिओं बास का एक पाप विसर्भे मैया बनैष्ठ को खाना खिसाया जाता है (उदा) । १३८ १३६)। क्टिक्टि वर [क्टिकिटाय] स्थ फिल प्राचान करना हैंन्सा 'विमरितद व्य सहरिसं मणिकंबीकिलिजिरिवेण' (बण्)। क्रिकेस्प्राह्म म क्रिक्सक्सायिती क्रिय किस क्वीं ह्यं-क्वी (बाउम)। किसणी हवी दिया, वनी (दे २ ६१)। विखम्म मक [क्रम्] क्यान्त होता जिल होता । विसम्बद्ध (क्या) । रियम्पनि (वका ६२)। वह फिलम्मंत (पि १६६)। किलाचक न किशाचकी न्य नाय ना फिल्लाक पु [किसाट] कुब का विचार-विशेष मनाई (वे २ २२)। किसाम सक [ ज्ञामय् ] क्वान्त करना विश्व गरना ग्लानि उत्पन्न करना। फिलामक (वि १३६) । वह किसामेंन (मन ४, ६) । पवर किसामीश्रमाण (मा ४६)। क्रियाम प्रशिम क्रिया क्रिया क्रांकि 'यमिन्डिकी में फिलामी' (पढि विम २८ ४)। कियामणया स्त्री [अध्यता] लिल गरना उलमा बरमा (घम ३ ३)। किरव्रमणा स्त्री [ज्ञामना] करम क्लेड (बग्रनि ४) । क्रियमिज रंगी विसंद (मण् १३१) । किसामिल रि [स्थित] निय रिया हवा हैरान विया हुमा शीहरा 'तएहाफिनामि र्थक्ते (पत्रम १. व. २२ जूर १. ४८) । किलिय न दि थोडी नवड़ी सबड़ी वा दुवड़ा देनेतरमीट्रायं विनिचनित्तीः स्राह रिमी (मन १ रा शया देश ११)। । दिनियम न दि । जार देगो (गा व )।

किछिकिय मह स्मि एमण करना कीका करना । विधिष्टिषद् (हे ४ १६८) । विक्रिकिमिश व रिती रमण क्रीका संमोन (क्रमा) । ब्रिसिक्टि पर हिस्सिस्स्य । किन-किन वाबान करना । वह विद्विविद्वांत (स्त १ ३१ दी) । किछिकिछि म [किछिकिछि] इस नाम ना एक विद्यापरमध्य (इष्ट्र) । किलिकिलिक बनो किलिकिल । कह विद्धिकिम्पिकेलेत (पदम ११ c) ! किछिगिछियन [दिश्विदिष्ठित] 'निस-दिम' घाराज करना हर्प-योत्तर कानि-विश्वत (स to Tet): क्षिष्ट रि [हिए] १ क्नेरा-पुक (उत्त १२)। २ वटिन वियम । १ वनेश-अन्छ (प्राप्त हे २.१६ ६४)। किबिज्य रेको फिब्हिस (सन्न ६१) । क्षिप्रिच वि [बल्हुप्त] बन्पित र्रावत (बाज पर है र १४३)। किसिचि स्वी [बलुमि] स्वना बन्पना (रि ११) । किक्सिय किमिन बाद गीता है है 24x 2 4 4) 1 विकिम्म केरी किञ्जम । विभिन्नह (वि १७३)। वर दिलिमान (वे ६, ८ ११ 2 } 8 विखिमिन्न दि [दि] वदित नक्क (६० 1(58 किस्तिय देणों कीम (वर २; मैं ४३)। किसिम यह [तिग] मेर पता वह बाता दुर्गा होता। वह किन्द्रिनंद (न्त रेर रेक)। विजिम रधोविद्राम विकास मूर् विविधानिकास्य हुरू हैं (क्य १४)। हिन्दिमञ्ज वि[बनिगिन]हर्त्तन्त् हे-आत (व tvt) ; विजिन्म को विजिम = किन्। तिकिन (ना का)। वर विकेत (न्य-विश्व केनो विश्व (बार-कृत्य देश नि । निर्देशमात्र नि किर्] कन्त्र क्रूट मम ३१) । ET (TREU)

२ इ.च. पीड़ा, बाबा (प्रज्य २२ ७३) सूख मिषित भोजन-विरोप (हे १ १२**८**)। १)। १ रुच मा मारण । ४ वर्ग शब्द किसर रेखों केसर 'महमहिधानगर।किसर' गुमन्तर्मे (शह १) । यह नि किही स्पेत-( t t txt) 1 मनद्र (प्रस्प २२ ७१)। किसरा क्ये किसरा विषयी पावस-शाव निर्मासय वि [क्रादिन] दुखी विया ह्या वा निभिन्न योजन विशेष (के १ १२**८ वे** (525 025 X 2E) 8 = ): बिहा देवो बिहा (मे ६१)।

। फिस**स रेबो फि**सलय (हे १ २६१ दुया)। किन पुंडियों १ देन नाम का एक ऋषि किससद्य दि [किसलयित] चंकुरित नर्म हपाचार्य (हे १ १२व) 'बाइमयसमन्म श्रेष्ट्ररवाना (सुर १ ११) । रेनेचे निर्दे बोर्छ बयहर्ट सबर्की बीबे किससय पुन [किमसय] १ नृतन संकूर (বৈরতি বির) নাজবার (হানা ই [या २)। २ कोमन पता(बी ह) प्रम्य-विशेष (यत्रि ११) :

१६-- तत्र २ )। 'सम्बोधि विसमयो बनु रूक्ममाशो धर्लत्यो रिवें (दा) देगी वर्द (कुमा) । ष्मिको (प्रत्त १)। मा**स** श्री िमास्ती किनम वि [इपग] १ गरीव रंक दीन (तुम १ १ १ मन्तु १०)।२ शक्ति किसा देनो कासा (है १ १९७) । निर्मेत्र (प्रस्ट १ २) । ३ कंब्रुश कराता किसाणु पुं[क्रमानु] १ वर्गन की, बाग। (दे १ ३१) । ४ नतीय नायर (नुस २ १)। २ इल-विरोध विवक्त इस । ३ सीन की किया स्थी (कृपा) दमा नेत्रसाली (के दे **चंद**मा (द्वे १ १२ व~ पर् )। १२)। वस्तरि [पस] इपाआस, किसि की [कृषि] केती वान (विसे १६११ ध्यान् (पडम ११ ४७) । मुर १३ क् সাম্বী। कियाम पूर [हपाम] बहर उत्तर (कुन बिसिम वि [कृशित] दुर्वतता-प्राप्त, कृतता-१६ : हे १ १२: नजह) : पुक (शाप समाप्त)। द्विवालु वि [इपालु] स्वानु, स्वा व क्लेशना विसम दि [कृपिन] १ दिनतिन रेखा (414 ft 2 60 4 )1 तिया हुमा। २ जोता हुमा हुट। ३ कीचा रिविद्व न [वि] १ तरियान सम्र शास वर्गन

का स्थल । १ कि चलिएल में जो ह्या हो हुमा (हे १ १२०) । मद (दे १ ६ )। किमीबस प् किपीयसी वर्षक रिसान 'बार्य परस्य कर्म मार्चित रिसीनमा नृष्यि विविद्यां की दि । हिराव बार्स बार । २ वर मा सियना बर्ग्यन (६, १ ६ )। (या १६)। विविश्व रेची कियम (हे १ ४६ १२०) वा फिसोर 🖠 [किशोर] बाल्यावस्था के बाद थी धरम्बाराचा बाचक 'सीहरिकोरीमर दुरायी रेवेर नुरवे ४४ बानु ४१) बान्ह है हो। निषयी (न्या १४१)। दि दिशानि र्षु [इपीटवर्शन] यानि किसारी को [किशोरी] प्रवाद व्यक्तिहरू (मामत ११६) । युरनी (लावा १ १) ; शिम नव विराय्] हमित करवा वाचित विस्त देनो दिनिस = क्षित् । संक्ष विक्रम

कीवन प [कीटक] भीड़े के रुन्तु है रुन्ता होनेवता वक्क वक्क-विशेष (प्रस्तु)। कींबा केंद्रो किंद्रा (तुर १ ११६) छता)। भीडाविया देशे किङ्गाविया (धन)।

कीचश देखों कीयग (देशी १७७)।

124)1

ব্যবি (বৰ্ব १)।

१७ (१८६)।

स्या ३७)।

tta) :

कीड देवों किंदू = हीड् । श्रीव हीडिस्त (रि

कीकर्ष् किटी १ गोग सुद्र वन् (बर)।

ब्रीडब्स् वि [ ब्रीटयन् ] कीशवाना नीरक

कीडण न [कीडन] देश क्षेत्र (पुर १

की इन पूर्विटकी देवो की ≆ = गीट (सह

२ वीट-विदेश चर्चारिक्स जन्तु शी एक

काडिया औ [कीटिया] रिग्रेसिया चीप्रै 1 (3#\$ \$ 7P) कीशी की [कीटी] कार देवी (का १४७ में R 2 8) 1 कीज एक मिी बरीदना, तीन वैद्या। वीलाडः, वीलाए (यह ) । खीरः, वीरिल्ली (fr 224; 234) 1 कीपास वृद्धिनाहाँ यम कम (पाम नुग १वर)। सिंह [पूर] मून मौन (का ११६ हो)। कीरिस (ती) केरो फीरिस (मार: 1) ! कीय रि किंति] १ गरीय ह्या जोत निश हुमा (बन ११: न्छा १, १ नुपा १४१)। २ वैन माथुबो के पिए बिद्धा का एक बीड (सा १४) । १ त इन्द्र, बरीर (स्त १ रामा । सिग्रु (नूप १२११) । वृष्टे रे)। यह नहति (दुन) रे इसा (नूप १३२)। श्यिति [कृम] १ दुर्वन निर्वेत (प्रार बूल्प रेसर लिख हुया (इद १)। १ बार्ड िर } देवी वर (पाचा नुवा भाव १ २। के निष्धान ने बीता हमा, बैन बार्ड के १११) । र पाना(११ १२४ झा४ २)। शिर्दे । साथ १ १०)। पिर क्तिनोष-पुन्द बल्यु (ति १३ )।

१६-- यम २ १)।

ही-पन ६)।

२१ उर १ १४)।

कीयग र् [कीचक] विचट देश के चवा का

साला जिसको भीम ने मारा था (उप १४व

हो) 'मबमें बूचे विचाहनयर, दृष्य खे तुर्म

कि (? की) वर्ग चाउन्प्रवसम्पर्ग (सावा १

क्रीया की [क्रीका] मधन तारा मरकतम

सारकमित्तनक्छकीयराधिकम् (खासा १ १

कीर पुंदि कार] मुक्त बोबा मुन्ना (वे २

कीर पृ [ब्ह्रीर] १ क्या-बिरोय कारमीर वेश । २ वि कारमीर देश संबन्धी । दे वि कारधीर देश में बलाब (बिसे ४६४ है।)। कारव कीरमाण } रेखो कर = ह । कीरक पुंबिएक] देश-विशेष (पडम १० 48) I चीरिस रेखी केरिस (वा ३०४° वा ४)। कीरी की [कीरी] मिनि-निरोप भीर देश की सिरि (विते ४६४ ही) । न्द्रिस्त सक [स्ट्रीस् ] सीहा गरमी, सेनना । नीमइ (प्राप्त)। बहु- कीलंत कीसमाण (सूर ११२१ पि २४)। संह कीले चा क्ष्रीसिकल (मुर १ ११७ वि २४ )। **ब्योध कि दि** स्तीक पत्र कोड़ा (के २ २१) । **ब्ह्रेड रेस्टो** स्त्रीक (पाम) । क्की छ पून [दे की छ] क्य पता (सूम १ ४, 1 (3 \$ चीक्षम म [बोजन] कील वे बन्दन, बीबे वें मिमन्त्रया 'महरिपमस्तिनीसराषुक्क विमृहिर्ध पुश्चित्रवीए (मोह २ )। क्रीस्त्र न [संडन] क्रेश केत (बीप)। मात्र की ["भाती] पालक की खेल-पूर परानेवानी बाई (खामा १ १)। कीसगाध न [क्षीडनक] विसीमा (यमि २४२) । कीसणिया ) भी [के] रच्या गणी (के २ कीस्त्रणी ) है १)। की साक्षी दिंदे १ नव नप् पुत्रशित (वे २, कीस्म की [कीसा] मुख्य समय में विया जाता श्रूबय-ठाइन विरोध (दे २ ६४) ।

स्र १ ११७)। बास पूं ["बास] श्रीका करने का स्थान (इक) । कीसास न [कीसास] सीवर मून रक (स्प ८६ पाम)। कीद्यक्रिम वि [पीराहित] रविर-पुन्ह, नुनगरमा (मदह) । कत्यवग म [क्रीहन] क्ल करामा (लाया १ २)। भीसायगय भ [क्षीइनफ] विसीमा (निर t () i कलिज न [कीकिव] की ना रमण कीइन ! (सम १६) स २४१)। कीसिम 🕅 [कीकित] ब्रॉटा ठीका हुया 'मिहियम्ब बीवियम्ब' (मङ्गार मुपा २१४)। क्रीक्रिया स्वी [क्षीक्षक] १ क्षाय पृथा, मूटी (कम्म १ ६१)। र रापीर शहनन-क्रिकेष रुपीए का एक प्रकार का बांधा । विसमें इतियाँ केवल कृटि से बंबी हुई हों ऐसा राधेर-बन्बन (सम १४१) नम्म १ ११)। कीष पुंक्तियों १ नपूंसक (इह ४)। २ वि कावर, घनीर (मुर २ १४ ग्रामा १ १)। कीय पू [इ कीय] पक्षि-क्रियेप (परह १ १—पन ८)। कीस वि [कीएरा] कैना विस शख्ता (मगः पएसः ६४) । कीस वि [फेरव] कीन स्वतावशाला कैसे स्वमाय का (मन)। कास म [कुम्मान् ] क्यों किस सं क्रिस नारख से ? (तम है र, ६८)। कीम रेको ब्रिसिस्स । कीशीत (तत्त १६ १६ मे ११) । यह की संत (मे ४१) । 📆 म 😘 १ सम्प थोदा। २ निविष्ठ, निवा थिया ६ मूरियस, निन्दिस (ई. २ २१७) से १२६ ग्राम्म १)। ४ विशेष ण्यादा (शामा १ १४)। उरिस पू ["पुरुव] चराव माश्मी दुर्जेन (से १२ ६६)। चर वि विभर विश्व चाल-चलनवाना, तराधार रहित (याचा)। "श्रंह नू ("दण्डा पारा-विकेश जिसका प्रान्त मान कानुका होता है एँका रम्बु-पास (पराह १३)। बैबिस थि [ब्रिक्टम] बर्ग्ड वेक्ट श्रीना **ब्रु**मा ब्रम्म

(शिया १ १)। श्वेरव म ["वीर्थ] १ बनासम में स्टाप्ते का खराब मार्ग (मानू ह)। २ दूषित कर्तन (नूच रे १ १)। श्वेरिय वि चित्रीर्थिम्] दूर्वित स्वका यनुगायी (कुमा)। दंखिम देखो बंखिम (एापा १ १--पत्र ३७)। दसम न ["दर्शन] बुष्ट मत बूचित वर्म (पएए २)। **डमणि वि "दर्शनिम्" १ दुप्र दाराँ**निकः। २ वृधित मत का सनुमामी (मा ६): "दिट्टि स्त्री "दृष्टि १ हुरिश्व क्यॉन (श्व २०)। २ दूपित मत का बनुवायी (धर्म २)। ।वृद्धिय वि ["दृष्टिक] पुष्ट दशन का धनु वावी विय्वान्ती (पत्तम ६ ४४)। प्यत्र-यजन ["प्रथमन] १ दूपित शाम्त्र । २ ৰি ছুবিত ডিফ্ৰাল্ড को माननेवासा (মৃত্যু)। प्पाथवणिय वि ["प्राथचनिक] १ वृपित सिजन्त का अनुसरए करनवला (सूध १ २ २) । २ दूपित सस्पन-संव वी (सनुष्ठान) (मण्)। सत्त न "अत्त इत्य भीवन (परुष २. १६६)। मार्ट्र मार्ट्र दुष्तिव सार (सूच २, २)। २ शत्मन्त मार, मृत-भाग करनेवाला तावन (ग्रामा १ १४)। रंडा रुधे "रण्डा" एक किवना (मा १६)। स्व त्यन कियी १ वर्ण **व**य (उप ३६२ धी पए**ह १ ४)** । २ मामा विशेष (का १२ ३)। "खिंगन "शिक्का" १ कुलिस्त थेप (६८)। २ पूँ फॉर्ट वसपह सुत्र चलु (विशे १७१४)। ३ वि मुदीनिन दूषित वर्षे का बनुवासी (बालम)। "स्ट्रिगि पुं [सिक्सिन] १ नीट शीयह सुत्र जल्द्र (धोष ४४८)। २ वि कृतीविक सनस्य धर्म का धनुषायो (परह १२) : बय म "पद] शरांच राम्ह सो सीहर पूर्वतो कश्मणरहसाई विविष्टकवाई । को मॅनिकरा कुनमं समान्यं सुंदरं देहां (यमा ६) । "वियप्य पूं ["विकस्प] पूरिश्वत विचार (गुग ४४)। बुरिस देखो हरिस (पद्म

६४, ४४) । संसम्म दू [संसर्ग] कराव

चोव्यत दुर्जन-चंनति (यमें १)। अस्य पुन

[<sup>\*</sup>काम्प] दु<sup>रिनद</sup> समझ भगत-प्रणीत

धिकाला 'ईपरमयास्या मध्दे हुम'चा' (निद्

२४८	वाइअसर्महण्यवा	<b>इ</b> — <b>इं</b> श
११) । समय पूं ["माय] १ मनाय- प्रणीत राज्य (गम्म १)। २ वि कृतीचित्र कुराज्य का प्रणेता सौर सनुरासी (गम्म १)।	र बहुने हुए वपड़े का प्रांत भाव घडवल (दे २ ६८)। कुऊहरू न [कुनुबुस्स] १ सपूर्व बसनु वेसने	कुष्पिय प्रै [कुक्तिक] इस यान ना एक कैन बवातक (भत्त १६६) । कुष्पिया केनी कुष्पिया । कई से बच ह्या
सिंहप वि [ैशस्यिक] शिनके भीतर धराव रूट्य पूप बता हा वह (पएह २ ४)। सीम व [शील] १ धराव स्वमाव (प्राचा)। १ धराप्रवर्षे ध्यप्तिवार (स ४)	वी सामधा—उल्प्रताः र कीनुक, परि द्वास (दृश् श्रद्धाः द्वास)ः। कुओ क [कुना] वहीं से ? (यस्)। इ स [किनु]कहीं से विसो से (स १०४)ः।	पहाले का एक प्रशास का करका (कीत)। इंकिया क्ये [इक्किका] कुम्मी सली (निर ११६)।
४)। ३ ति जिमता सामरण सम्झान है। मर दुरावारी (सीम ७६३)। ४ सम्हावारी स्प्रितवारी (झ. १.३)। स्मृमिण पुन	"विष्य [कापि] नहीं से थीं (नाप)। मुंआरी स्थी [पुमारी] नगरति-विरोप मुनारपाठा जीवुबार, शीपुबार (भा र	कुंबर पुंक्तिकार] इस्ती इस्ती (हेर १६ पाध)। पुर म [पुर] नवरनिष्टेर, इस्तिमानुर (पत्रम ११ १४)। सेन्य स्ती ["सना] क्यपस मक्त्यर्थी मीएक एको
[म्लप्न] गराउ राज (था ६)। इस नि [यन] यण पनाता देखि (पण्ड २ १—पत १ )। इसी कि १ इसिनी मुनि पुरस्पाति	जी १)। ड्रॉडिय म [च्रि] १ गोमनव रख-नयस (पएछ १—यम ४)। २ पूं. शुद्र कमू रिशेष, च्युरिस्टिय नीवे गो एक जाति (क्य १६)।	(जल १९) । "वल न ["वर्ते] स्वर विशेष (पुर १ ००)। पुर्वन वि[कुक्ट] १ मुख्य वासन (बाबा)। १ मान-पहिल इस्त-दीन (पन ११ : निक्
सामग्री (साम १६)—पत्र ११४। सं १ २६) । सिझ न [ात्र ठ] १ तीसी जनन्, न्यां मर्थे ग्रीर पात्रात सोड । २ तीस जनन्	ईंडल ई [कोक्टम] वैद्य-विदेश (सणु वार्ष १४)। इंकुल वेदो इंडम (मिरि २ ६)।	११: धाणा)। ११: धाणा)। कुन्छविन्छ म[वे]१ संमन्तनप्रदि का प्रयोगः पाञ्चएव-विदेश (धारम)। २ वि नेव-
म निया परार्थ (धीरा)। चाझ वि [पित्रक] हीता जगा म स्टान्त बन्तु (धारम्)। चिमापस पुंत [प्रियम्पन] हीतां जलस् वै नसार्थ जर्गासित स्टोस्टिश्चरम् (स्थ	पुरुम व [कुर्कुम] वेगर, गुक्की हस्य- निर्देश (दुना जा १०)। पुरेग दूं [कुद्म] देश-विरोध (प्रसि)।	विचारि से पानीविका चनानेतला (भाष)। इट्रेगर वि दि] स्तान सूचा मनिव (१९ ४)। इटेट क्सी दि] १ कडी पांड (१२. १४)।
ग्रामा ११ स्थान १६)। बलय न [बेस्टम] इस्मी-मन्दर (बा २७)। सुमग्री देवी कुर्जीत (ति २११)।	कुष तक [कुझ्] १ जाना चनना । २ । सक संपुषित होना । ३ टेड्ड चनना (पुना गडक) । कुष पुष्मिद्धी १ विन्तियटेग (यरह १	२ शस्त्र-विकेश एक प्रकार ना सीजाए 'शुस्त्रुक्तस्वस्ववेदासकृतिकुर्तसम्बुद्धस्वर्थे' (कुरा १९९)।
कुम्रतम्भ देशे पुरस्य (प्राप्त)। कुप्तोंधे देशो कुमार्थ गा २६ )। कुप्तम रि कुप्तिनी स्टूचा हमा (पर ६२)। कुप्तम रि कि स्तात रण्य (दे २, ४ )।	१ जापूर का बर १ १४)। २ इस मान ना एक समुद्र (पाप्र)। ६ इस नाम ना एक सनार्यकेशः। ४ वि. असके विसानी	कुंठ दि [कुळ] १ मन्द, यानमी (मा १६)।   १ मूर्ग इदि-परिष्ठ (बामा)।   कुंटी की [बे] सैम्मी, बीमरा (बरमा ११४)।
भूरव रि [म्रित] यरम्यानतः याण (श.९)। मुग्य रि [म्रित] कर बंग्यनु ३ (स्त्रि))।	नीन (पर १०४)। स्वाहरी [१४वा] सम्म्बारम्य वी हम नाम वी एक वरी (परम ४२ ११)। सरमान [विहरू] एक प्रवार वा मराज (निलू १६)। हरि	कुँड व क्षिण्ड है र होग्रा पात्र-निरोध (वर्)। २ वानाय्य-निरोध (छोरि)। ३ इन व्यन वा वृक्ष वर्धेतर (डी. ३४)। ४ वाज्य, वादेश विनयस्मूहकारिस्टोनिरियनेक्स देस
সুগ্ৰকাণু (পুৰিয়া) লৈ বাসৰা কৰ নাৰ্থা কম লাক (চিব ১১০)। সুত্তম পুন (সুনুত) নতেবাম খা উপ মইলা মাধ্যা আমুধ্য আন্তৰিকা	पुँ शिरि] वार्रिनोय, स्वाप (बाय)। केनो व्योच। पुँचमन दिं] मुरूप समी बीर (१.२	(नन)। बासिय मूं "कोसिक] एक वैन जानक (उस)। माप्त नुं [माम] मयय देश का एक बीव (नग कब्र ने २१)। धारिति [धारिक] माजकारी
न्तारं का (१ दु) "बाई (बाब) देगो वृतुषः। वृतुषः स्ट [दु] गुम्मेन्तार गुल्ला (दे	वृष्पिरि [वृद्धिम] १ तुष्पि वश २ नासी करी (वर १)।	(क्यों) । पुर म [पुर] बाव-विदेश (क्यों)। पुँच न [र] क्या क्यों का भीती कारा को बोब का बना हुया होता है। (रे.स. १३ ४ ४४)।
7 (3):	वृत्तिय हि [बुश्चित्र] हे लेहाँबन (पुता	विशावन विश्वकत्त्री र कान ना किसी

बुविय रि [बुधिय] रे लेड्रॉवर (पुत्त | बूडिम बून [कुम्बक] रे यान का दिल्ला

१ ) ३ तुरका के बारारराजा लेखातीत (तर १, ४) माना ३, १ - ६) । १ (वीच व्हें हो) ३ तुर्गन वह (वह १) । वास्त्र हे स्टिया मुना (वस्ह १, ४) ।

ब्रुष रेनी बरन (पर ११०) ।

दुक्तान[दे] हे क्षेत्री जन्म, इत्रनवन्द्र ।

इदंशी की दि कुरमा] दोरी पणका ! (घानम)। कुंडमोअ पुन [कुण्डमोद] हाथी के पर की बाहरिकाना मिट्टी का एक वर्ष्य का पात्र (दस ६ ६१)। कुंडल पून [कुण्डल] १ एक देव-विमान (रेबेन्द्र १४२)। २ ता-विशेष 'पुरिमहू" या निविद्वतिक द्वा (संबोध १७)। क्षंडल पूर्व क्रिक्टको १ कान का बासूपण (भग गीत)। २ प्र विवर्त इत के एक राजा का नाम (पडम ३ ७७) । ३ ही उ-विशेष । ४ समूद्र-विशेष । ३ वेद विशेष (जीन १)। ६ पर्वत-विरोप (छ १)। ७ गोन मारार (भुपा १२) । सद् पूं ["मह] कुएक्स द्वीप का एक अविद्वारक देन (बीच । ३)। संख्याचि ["सण्डल] १ पुण्डल से विमूपित । २ विद्रम देश का इस काम का एक राजा (पतम ३ ७४) । सहासह र्ष [ सहासन] देव विराप (श्रीन १)। महायर पु ["महावर] दुराज्यार समुद्र का समित्रांचा देव (मुज्य १६)। यर पू ["बर] १ डीउ विशेष । २ स<u>पु</u>र-विशय । ६ देव रिरोप (जीव ६)। ४ पर्वत-विरोप (हा ६ ४)। बरभाइ पू [ करभन्न ] कुगदसंबर द्वीप का एक मनिहासक देव (जोर ३)। वरमहामद व विषयमहा भद्र] मुद्दनपर श्रीप ना एक प्रविद्वाता देर (बीन ६) । यद्येमास पू ["यराव भास १ होव-निशेष । २ समुद्र विशेष (बीर ३)। वर्षमासमद दू विषय भागभात विगारतवरायमान हीय का याप हाता देर (और ६)। वराभासमहाभइ र् ["वरावमासमहाभद्र] केरो पूर्वीक सर्व (जीर १)। वरीभासमहापर वृ [ यरावभासमहायर ] दुग्यनवरावमास ' ममूत्र था घपितायक देत-विदेश (जीव ६)। बराभासनर व् [ वरावभासवर] छन्नूर विदेश का ध्यपिति देव विदेश (बीच ३) । दुरसा की दिग्दशा विद्याप-स्थित

नपर्य विरोत (स्त २ ६) ।

12

(भाग ११)।

इंडिस वि [ बुण्डलिन् ] बल्बन्याना

कुंब किन वि कुण्डलिय नर्तुं स गोस माकारवाचा (युपा १२ कम्पू) । कुष्टिमा वि [कुण्ड'ल रा] दाव विरोध (निम) । क्रुंबस्थाद पूर् [कुण्बस्तोद] इस माम का एक समून (गुरुव १६)। कुँडाग पुँ [कुण्डाक] सैनिवेश विशेष साम विशेष (मानम)। मुंबि देलो शुक्री (महा) । चुँक्रिअ जू [व्] साम वा समिपति गाँव का <sup>1</sup> मुक्तिया (वे २ ६७)। कुंक्र अपस्य न [द] बक्याण विद्यु बक्याण की नोक्षी कक्कास की <del>देवा (दे</del>र,४५)। कुर्देशमा १ मी [कुर्वण्डका] मीचे देखो ! कुर्विया 🕽 (रमा चनुष्य मन खाया २ ४)। कुंडियान [कुण्डिन] विदर्भे दश का एक नगर (क्ष ४८)। कुंबी की [कुण्डा] १ वृष्टा, पाव-विशेष त्तिममहोमुमीए ठविया श्री व वेद्वारि पूला' (नुपा २६१) । २ शम्प्रत सन्यासी ना जल-पान (सङ्घा)। कुंद वेधो कुंठ (मुरा ४२२) । सुंबय न [दे] र कुम्सी भूग्द्रा। २ छोटा बरतन (वे २: ६६) । होन पुं [वं] शुरू वीवा मुग्गा (वे २,२१)। होत पू [कुन्त] १ हविशार-विशेष शाला (मन्दर १ योप)। २ सम के एक सुमट का नाम (पदम ११ १४)। द्वाल पुंक्तिमा १ केश काम (गुर १ रे नुपा६१ २)। २ देश विशेष (भूपा ६६ वर ४१३)। हार दे [ हार ] थम्मिक्न संयत केश, बांचे हुए बात (पाप)। शुनम पू [वे] शास्त्रवाहन नूप-विशेष (दे ₹ 14)1 चुनलाकी [कुन्तला] इस नाम की एक धर्मा (र्थम) । कुनसार्थ [इ] क्योन्ति परोक्षने का एक बाबरण (रे.२, १.)। इनिर्सा की [कुम्बर्सा] कूम्बन देश की रहते बारी ध्ये (बप्पू) ह इंशाइति व [युन्ताइमित] वर्षे वी नहाई (मिरि १ १२)।

कुरैताओं दिने मेंबरी बौर (देर ६४)। कुंता की [कुम्ला] पाएश्वों भी माता का नाम (छर ६४८)। "विहार पु ["विहार] गासिक-अगर का एक बैन मन्दिर, जिसका जीएपें**बार** कुम्तीजी ने किया या (ती २०)। इंतीपोष्ट्रस्य पि [दे] बनुष्कोरा नार कोनवाला भीकोर (हे २ ४३)। ईप्युर्पु [कुन्यु] १ एक जिन क्वाद्य सक सपिछी कास में स्टब्ल सत्तरहर्श तीर्थकर धीर यन्त्री तक्रवर्ती राजा (सम ४३; पिंड)। २ इरिवंश का एक राजा (पदम २२ १०)। १ चमरेन्द्र की हस्ति-सना का समिपति देव-विशेष (टाइ १ — यत्र ३ २)। भएक सुद्र बन्द्र जीतिस उन्तुकी एक पाति (उत्त १६ वी १७)। इति ई [इत्तर] १ पूप्प-इस निराय (अ २)। २ न पूप्प-विद्येष कुल ना पूर्य (सुर २ ७६ लामा ११)। ६ निया यर्थेकाएक नवर (इन्ह)। ४ दुन इस्ट विशेष (शिग) । कुद्य वि [दे] इन्ठ दुवैन (दे२ १७)। इंदा स्त्री [कुन्दा] एक इन्त्राणी सानिमार इंड की पटयानी (इक) । र्दुदीर न [दे] पिम्बी-फ्ल मुख्यन ना फत ( R R R) 1 कुरुष पु [पुन्दुक] बनशावि-निशेष (पएए) १--पम ४१) । इंदुरूक र् [कुरदुरुह] सुगरिम पदार्व-निरोप (जाया १ १--- नव ४१: सम ११७)। हुंबुस्लुझ र् [बे] परिनंबरेग उन्हर उन्ह इंबर पूं [इ] धोध मधनी (दे २ ६२)। शुरंपय पून [कृपक] तम बयरा राजने का पात्र-शिक्षेप (रक्छ ११)। ष्ट्रंपस र्नुव [पुट्सस पुट्सस] १ इस माप ना एक नररा। २ द्वास ननी नरिका (हेर २६ द्वमा पर्)। श्रुपर [ब्रे] श्रेगो श्रुपर (पाय)। र्चम पू [पुरुभ] १३ माठ धरनी सीर एक नी बाहक की नार (बलु १८१। तंदू २१) । ४ व्योतिक-प्रतित्र एक राग्नि (रिकार १ ६)। ३ एक धवा (सन ४५) ।

**ड**म पुडिस्सी १ स्वन्ध्य प्रसिद्ध एक राजा

यनमान् महिमाय का दिशा (सम १६१) प्रजा

२ ४२)। २ स्वनाय-स्थात वैत महर्षि यठारक्षर्वे शीर्वेचर के प्रथम शिष्प (सम ११२)। १ कूल्मलर्जं का एक पुत्र (से १२, ६१) । ४ एक विचायर नुम्रह का नाम (पजम १ ११)। ४ परमावामिक वेदो की एक भावि (सप २३)। ६ कमरा महा (महा कुमा) । ७ हानी ना कंएड-एकब (कुमा) । व कान्य मापने का एक परिमास (बसू)। 🛚 तले का चरकरख (लिच्नु १)। १ समाद, भाग-नाम (पद २)। ११ अव्यापु कियों चरता के कोने मार्थ का नाम (१४ ११) । आर पु िकार] कुम्हार, बड़ा साहि मिट्टी का करतन बनाने-शामा(देर व)। वेर न िपुरी नवर विशेष (वंश)। गार वेस्रो आर (नहा)। ैमा न हिम्मी श<del>रूप देत-प्र</del>तिश्च एक परिमाख (समा १ व--पन १२६) । सेवाब् िसेन | व्यक्तिरंगी करन के जनम की बैकर के प्रमम दिस्य का नाम (दिल्म)। हुमेड न [कुप्साण्ड] फन-विदेश कोईहा कुमहरा (कप्पू) । कुमार र् [कुम्मकार] पुग्हार, बहा गावि मिट्टीका वरतम वनानेवासा (ह १ )। क्षिप पू [पाक] दुम्हार शाबक्तन पकाले का स्वात (ठा ) । क्रमि प्र [कुम्मिन] १ इस्ती द्वानी (चल)। **२ ल<del>ुएक-वि</del>रो**ग एक प्रकार का पंड पुरुष (पुन्त १२७)। क्रुंगिय केरी वृभिय (एव १)। श्रुमिणीरणे [बे] वन का नर्ड (के २ १ )। क्षिय वि [कुरिमक] दुश्क-गरिमाणवाला , (BIY 3) I ई-भिख्य [दं इन्मिस्त ] १ चौर, लोग (दे ९ ६२, विक १६) । २ शियुन पुलेन (देश ६२)। क्सिंग्न वि [वें] योक्ते शोल्ड (६ १ ११) : द्यंभी स्प्री [दुस्भी] १ पान-विशेष बहे के मानारवाला घोटा बोछ (तत ११६) । व पुंच, पदा (वं ६) । याश पूं ["पाऊ] १

एक प्रकार भी बातना (सुघर ११)। क्रुंभी स्थे [कुच्यापदी] कोईंड़ा का बाह्य, 'चलियो कुथीएक चंतुरामु' (नडड) । क्रोपी ली विशेषा-रचना केरा-संबंध (दे र अंग्रीस पूँ [कुम्मीस ] पनवर प्राश्चि-विशेष श# संबद (वाद ६४)। कुंगुरुमव पू [कुन्मोव् मव] श्राप-विशेष समस्य ऋषि (क्यू) । कुक्तिम थि [कुक्तिम्] चयव धर्म करने-वाक्षा (लूचर ७ १८)। **अकट**कास्मी वि] नगेडा बुचविन (**१**२ **कुट्ट**स **हिं वेशो कुर**दुस (१४ ४ १३४)। क्रकाइन न क्रिक्टायित विते समय का राष्ट्र-विद्येच (तेषु) । कुक्स पु (कुक्स किएपानित भी की धाव (पर्शाह ११)। **कुमक रेको कोमक** । जुनकद (पि ११७) ४ व)। कुनक पूंकि कुछा कुम्बुरु कुननेहि भूगकाहि सं बुरकारी (तृष्क १६) । कुमक्रमय न दि मामरश-विशेष चर् शर्मित समेकार कुक्कमर्थ में परच्छाहि (सुम १ ४ २ ७)। वेसो कुम्कुक्रम । इसी ली [वे] इसी इस्ट्रिये (युक्त ११) । कुमकुम वि [कुम्हुच] भार की तथा शरीर के सरवर्ग की कुनेश करनेराता (वर्ग २ पर्ग ६)। क्षपञ्चम व [कीकुवय] पूजेश कामोत्सावक ध<del>ान निकार</del> (पञ्चम ११ ६७३ शाचा) । कुषकुम वि [दुकूज] धाम्पन करनेवासा (क्त २१)। कुरकुरमा श्ली [कुनकुना] धनरक्तार धरत रत-रन कर भूगा ध्सना (बृह ६) । इन्द्रस्य पि [काकु चिक्र] यह की तरह दुवेटा करीवासा, काम-वेटा करनेवासा (वन भीप)। क्रमेक्टल व [कीक्टब्ब] काय-कृषेष्ट

'श्रीवार्देश व क्यलाइनाए समियारकरामृतिह

विणियं। अक्कूप्रसें (शुरा १, ६३ पक्रि)।

इ.स. इत्यंपर क्कुक्कुड पूर्व [कुर्कुट] बतुरिनितय बन्दु की एक बावि (उत्त १६ १४०)। कुमकुष पु [कुमकुर] १ मुनमूर पुनी (ना १.वश क्या)। २ वनस्पति-निवेप (कर ११) । ६ विश्वा द्वारा विमा वाटा इस्ट-प्रयोग-विशेष (वच १) । मेसम न ["मांस-की १ सुर्वा का मांत । २ बीअपूरक बनस्पति का प्रचा (भग १६)। कुनकुछ वि [दे] मत जनत (दे २, ३४)। कुरकुदय न [कुरकुटक] देशो कुर स्वय (सूब रः ४ २ ७ टी)। क्षपञ्चित्र । भी जिन्द्रितिका कुक्कुडी | कुक्कुडी सुन्नी (सामा १ स विपार्ष)। कुलकुकी की [कुलकुरी] नामा कपर (विड **78%**) ( कुनकुडसर र [कुनकुनेश्वर] तीर्व-रिधेव (वी १६) । क्कब्रुक्टर पू [कुक्बुर] कृता त्यान (पर्स १४ व सुपार्चक)। श्चनक्रक पू कि निकट, सबूह (दे २, १६)। क्षमञ्चल है हैं] शाय ग्राप्ट का विशव जुबा (दे २ ६६) वस १ १ १४)। कुनकुद्ध र्थु [कुनकुद्ध] पश्चि-विरोध (बस्म)। क्रमक्रदाइल न हिंदे चनते समय अध्यक्त का राज्य-विद्येष (तंतु १६)। कृषिका पि क्रांकि] क्षेत्र कृषिक (रे ८ ६४३ बीप लाज ६१३ कर ६६) । कुविश्वीमदि वेचो चु विश्वेमदि (वर्मीव १४६)। कुरुक्तेमम रेक्षो कुरुक्तेमय (संकि ६)। कुमाद्र पू [कुमाक्ष] १ क्शाक्ष, हर (पर वह हो) । २ जक्ष-कम् विशेषः पूर्विहे-भाक्तवजेतुर्वनुन्ते (युवा १२६)। क्कचपु[कुच]स्तवसन (कुमा)। कुषोक्त न [कुचीया] नत्त्रं (वर्गस ११७१)। कुष पूँ [कुर्य] केंग्रे बात सेंबारतें वा क्र नरण (बस २२ १ )। कुक व [कुचें] १ शाही-बूँब (पाप्र प्रति २१९) । २ कुछ-विदेव (पद्मार वे) देवी क्षपा । कुष्पंपश को किर्चेत्ररा दिशी मू द. वारत करनेवाली (बोर १ मा)।

कुच्छिय वि [कुरिसत] बराव निष्रित

हुमा है केलो पुरव (बाबा २ २.३

ह्या । कार्य)। १ क्वी तुरा-निर्मित

तुलिका जिससे दौबान में चुना नदाया जाता है (उप पू १४३) कुमा)। कृत्विय वि [कृष्टिक] बाहो-पूक्षपाला (बह ٤) ı कुच्छ छङ [कुस्स् ] मिन्दा करना विद्यारमा। 🖫 कुच्छ कुच्छ्रजिज्ञ (धा २७) परह रे 8) L कुरुद्ध पूं [कुट्स] १ ऋषि-विरोध १ योज-क्रिकेट 'पेरस्य एं धर्म्यानवसूहस्य कृष्ट्यम् त्तस्य' (कप्प) । कुच्छ देशो कुच्छ = गृह्य् । क्कबद्धरा पूं [कुल्सक] बनस्पति विरोध (सूध क्रक्कुविक रेबो कुच्छ = पूरम् 'धर्मास मुन्दाणिन वालायं पस्तावित्रं हिं (बा २७)। कुच्छा 🗣 [कुस्सा] निम्त पूरा पुरुसा (बोब ४४४) उप १२ दी)। क्रुजिक्क पूंकी [कुश्चि] १ क्यर, के॰ (है १ ६५ डवा सङ्घो । २ सबताशीच बंद्रखना मान (बे २)। किमि पू किमि उदर में प्रशाल होनेपाला कीड़ा डील्पिय क्यू-विशेष (पएए १)। भार पू [ धार] १ वहान का राम करनेवासा नीकर 'चुन्द्रिवारकब बारकमनर्धनताखानानाखिमना (खामा १ च—पत्र (६६)। २ एक प्रकार का बहात्र का व्यापारी (खाया १ १६)। पूर् पू [°वूर] उदर-पूर्ण (नव ४) । 'बेयणा औ विश्वता | सदर का रोय-विशेष (श्रीव १)। सुस पुन ["शुक्क] रोम-विरोध (शाया १ १६ विपा १ १)। क्रुव्यितंसरि नि क्रिक्षिस्मरि सरेकपट वेट्र स्वामी 'हा तियवरित्तकुटिंग (? निर्दा) भरिए ( (रेम्ब) । कुबियमई की [दे कुनिसती] यॉल्ली धारप्र-सरका (वे १ ४१) पह )। क्रिक्सिमिक्स (मा) केनो सुविद्यसई (प्राष्ट 1 (9 9

गहित (पंचर क मंत्रि)। कुविक्रक म दि । पृति का विवयः बाह का फिर (देर, २४)। २ किए विवर (पाप)। कु÷क्टेशव प्रकित्तेयक तमनार, कश्म (देश १६१ पर )। क्रज पुंक्तियी मूल पेड़ (जै २)। कुत्रय प्रे कित्रय ] नुवारी चूपाकोर (पूप १ २ २)। कुळा विश्विदेशी रेष्ट्रमा पूनका नामन (सुवा २ कप्पू)। २ वृ्न, पुरम्-विशेष (पङ् )। कुद्ध्य पु [बुन्बक] १ क्त-विशेष शतपविद्या (पद्धम ४२ ६ कुमा)। २ न. उस कुश का पुष्प 'वंबेर्ज पुज्ञस्यमूर्ण' (हे १ १८१) । कुउस, सक कियु क्रिक करना ग्रस्सा क्त्ला। वृज्यस् (हे ४ २१७ पर्)। ब्रुट एक [ब्रुट्ट] १ कुटमा पीटमा ताइन करता । २ शास्त्रा केरता । १ यस्त करता । ४ छपानस्य देना। मवि कुट्टहर्स्स (पि १२८)। वक्र. श्रुट्रित (मृर् ११ १)। कमक् श्रुट्टि क्षांत कुट्टिक्समाण (मुना ६४ ३ बासू ६६ एव)। संइ८ क्रिट्रिय (मग १४ ०)। कुटुर्व [कुट्ट] यका कुम्ल (सूच २ ७)। कुट पूर्व दि ] १ कोट, विशाह विश्वति कवा-बाई कुर ट्रबरि भश स्वित्यवित (शुवा ५ ६)। २ नयर, शहर (पुर १२ ८१) । बाह्र वे [<sup>\*</sup>पांक] कोतप्रमा गयर-रत्नक (सुर १३ इक्ट्रण म [इक्ट्रन] १ केल पूर्णन येक (भीप) । २ कूटमा साइमा (हे ४ ४३६) । क्कट्रणा की [क्कट्रना] शारीरिक पीवा (तुम t (t3) 1 **फु**टूणा**ची [कु**टुनी] १ भूगम एक प्रकार नी मोटी संदर्भी जिन्हते भावन गाहि सह क्<sup>⊅</sup> जाते **हैं (बह** १)। २ दूरी कुटमी पुरिनी (रमा) । कुट्टयरी की वि] वंदी पानेती (दे २ १४)। कुटा और वि ] गीध पानंती (दे २, ३४) । क्क्राम पुँचि भनेपाट, मोची (देर ६७)। कुट्टिंग केवो कुट् = पुट्ट । पुरद्दितिया देवो कोईतिया (राम) । मुद्धि विशेषी कोहिय (पाय)।

क्रिंदणीको [क्रिंदिनी] दूटनी दुवी (क्रम्यू रमा)। कुट्टिस रेखी कोहिस=कुट्टिम (भग ८ ८ राम भीव ६)। कुक्रिय वि (कुट्रिय) १ कुरा कुण ताहित (शुपार्थ छत्त ११)। २ विद्रत देवित (बहर)। बुद्ध पून (कुछ) १ पंशायी के यहाँ केची भारी। एक वस्तु, बूठ (विसे २६३) पराह २ ४)। २ शेम-विशेष कोड़ (बब ६)। कुट्ट पूर्विद्योष्टी १ स्वर, पैटः 'महाविर्ध बुद्धमर्थ मेलमूनविसारया । वेजा इत्तुंति मेरिहिं (पक्षि)। २ कोठा कुरून मन्य मस्तेना बका माजन (परह २ १)। तुम्ब वि [कुछि] एक कार जानने पर नहीं मूलने-बासा (पण्ड २, १)। देशों कोटूकोटूना। कुटू दि [सूष्ट] १ शपित समियात । २ त. शारा समिताप-शम्य 'स्ट्रा फुट्ट केहि पेण्डेता धायपा इत्वं (मुना २५ )। कुट्रगर्नन [कोधक] सून्य पर (बस ५ १ २ ३ व२) । कुट्टा औ [कुछा] स्मनी विवा (बहु १)। अद्विति किन्द्रिन्द् क्षर रोजवाला (भूगा 2x4 204)1 कुड पू [कूर] १ यण कसरा (१२) १४ वा २२६। विसे १४४९)। २ पवत । व हामी वरिद्वका वस्त्रन-स्थान (स्रामा १ १—पत्र ६६) । ४ दुल वेडा 'तहवियसिहंबमंडियदु बगो (पुत्त ११२) । इंड पुं ["इ०७] वान-विशेष यहा के बैसा पात (दे २ २)। दोदिएयो अधे ["दादिनो] पदा भर द्भा कांनाली (गा १३७)। कुर्वगर्थन [कुन्क्क] र कुम्ब निष्टम्ब सता वर्गेष्ड् में बना हुमास्वान (गा ६८ ३ द्वेता ६ ३)। २ वन जैयत्त(इन २२ टी)। व वर्तत की काली की संग्री सनी हुई इस्त (इड् १) । ४ नहुर, कोटर (राज) । १ पेरा-यहन (एक्सा१ ६० दूमा)। हर्वगपुर वि इन्ह्ये स्वान्द्र स्वामे बरा हुमावर (दे२ वैकः महापान पर्)। कुबंधा की [कुन्का] मधानिकेप (पाम १३

1 (50

२६२	पात्रसस <b>्</b> सह्ण्यमो	कुर्वगी—इतिव
— – दुर्जागी स्थै [व् कुटकूँ] वंस की वाली, [	कुर्व विक्रुतिकम्, की १ प्रस्काः	वह कुर्णत कुलमाथ (गा १९१३ दुरा
एक्कपहारेख निवंदिया चंसकृषेती (महा' सुर	कुर्विक प्रेक्ष, सूद्दनार प्रुप्तवेपला	वृद्धः ११६। सामा) ।
१२२ । इस प्रस्तरे)।	कर्पक (बढड) । ६ सम्बन्धी स्रोमातुरससमूच	कुगक्त पु [कुमक] बनशकि-विशेष (पण्ड
कुद्धंत केवो कुर्जुत (महत्त्वा ६६)।	एर्णं बारहराष्ट्रहु विदर्शं (द्रप्प)।	१पन् ११) ।
कुडत केबो कुड (यातम श्रूप ११९)।	<b>इत्यू</b> वीक्स स [चे] धुरत संगोग मेश्रुन	कुडब न [कुलप] १ मुख्य मृत-गरीर (पाम
कुक्कमी स्थी [कुर्रमी] योग पतला (धर्म	(गर्)।	वहक)। २ वि दुर्जन्ती (हुई २३१)।
<b>(</b> )	कुर्युसरा पुंचि] जल-मरक्क, पानी का	क्रमाळ पुट. [क्रुयाक] १ देर-वितेष
कुडसन [व] नर्गभृद्ध, बर्गसे माण्यादितः	मेडक (निकृर)।	(श्राया १ वर्ग्य १ वर्ष दी)। २ विकास
बर कुटीर, मॉरबी (वे २ ३७)।	कुबक्द पुं[र] सतानुद (यर्)।	सहाराज करोक का एक पुत्र (विते «६१)।
क्काय प्रेन [क्वाज] प्रज्ञ निरोप शुरेशा	इत्सुचिक्षण [४] धुरत धेनीय येश्वन (दे	नवर म [नगर] एक छहर, व्यक्ति
(रामा १ २, पएए १७ च ११४)- 'कुण्य'	₹ ¥१):	धामी कुलाननगरे (धना)।
रल६' (कुमा) ।	इन्दुद्धां (धा) भी [दुर्टी] द्रुटिया मॉनडी	कुनासा की [कुनास्त्र] इस नाम की एक
कुद्धत पुंक्तिद्वती मनान या यस नालो का	( <del>3</del> 841) t	नवरी (मुक्त १ ३)।
एक माप (द्यासार ७ ४ र ४ ३ )।	<b>डब्रु</b> पुन [ <b>डब्</b> य] १ निश्चि भीत (परम	कुणि ) पु [कुणि] १ इस्ट-निकत हैं है, कुणिक ) हाम-कटा मनुष्य (पटम २, ४४)।
कुशास्त्र देवी कुश्रास्त्र (स्वा) । कुश्रिक्ष वि [वे] दुष्य वामन, शादा (बाय) ।	६ राष्ट्र २ ७४)ः "यज्यं नगोत्ति धर्म गगोत्ति	२ जम्म से ही जिसका एक हॉब कींग हो
इद्रिक्ट स्थापिति हिंदी मानुसर विदर (के.२	प्रका नगास धन पंजास प्रका नगोति मशिरीए।	वहा देविसका एक पॉप सीटा <b>ही</b> पर
SA) I	प्रमाणिय विद्यात हुन्। नेहार्षि	बार्ज (परहर ४—पत्र १४ वाण)।
कुकिन्द्रन [थूं] रेगार का ब्रिप्ट। २ कुटी	विश्वनिक्षी (पार )।	कुणियां की हि इति-विवद, बाह का बिर
मॉपड़ी। इ. ति दृष्टित सिय (हे २ ६४)।	इक्त न हिं] मारचर्य कैन्द्रक द्रग्रहच (वे २	( 2 34) 1
कुबिसं नि [कुटिस] यश टेका (शुर १	क्की नार्क्स वका क्रिक्त इक्स)। क्की न बिने सारवन केलेक 25वन (व.स.	कुणिय र्युन दि कुण्य र रूप पृष्क
२ । २ व६) ।	अक्रुगिकोई वि] मृत-नीवा विश्वनती (दे २	प्रथम (पर्राह् २ ३)। २ मॉत (ठा४ ४
इ देसरिक्स न [द कुटेक्सिन्स] इस्ति	्रह)। अक्रान्थाइ [व] ग्रह्नाचा ।वस्त्रकाः (द.स	धीर)। ६ नरकावा <del>ध-निधेर</del> (सूम् ६ %
रिवा (यन)।	क्रमुक्रेमणी स्मी वि क्रमुक्सपनी नुमा	१)। ४ तदकाशीय, बसावमैणा(सर
कुर्विक्सन हिं] रेक्टिय विकर (पान)। २	कृतासदीस्थितः (दे२ ४२)।	w t) 1
विकृत्य कृत्या (पाम)।	इन्नास न [वे] इस के कार ना निस्तृत संद्रा	इगुकुत वरु [ इसुकुताय्] श्रेत वे <sup>कम</sup>
कुक्किम वि कि कुटिखक दिला है।	(बना) ।	क्षेति पर 'कड़कवृ' सावान करनाः <del>गर्वः</del>
वक्ष (दे२ ४ ) मनि)।	इस्ड प्रेण [वं] १ इस्स हुई मर्द्र मी बीज	कुणुकुर्यत् (पुर २ १ १) ।
क्रुडियम् वेद्यो क्रुक्तिसम् (एक) ।	में भाग (देर, ६२, मुग ४ ६)। २	कुण्डरिया की [ब्रे] शवस्पति-विद्येग (पर्वे र—पत्र ११)।
इडी श्री [इटा] स्रेश पृद्ध सींग्री अशिर	भीनी हुई चीज को खुड़ानेनाला नापस	कुमची की दि ] मनोरन शास्त्रा (दे १ ३६)।
(मुवा१२) शब्दा६४)।	नेनेमाला (१२ ५२)।	कृतुंब पुं [हुस्तुस्स] नाध-विशेष (धम ४६)।
कुशार न [कुनीर] मोगही श्रुटी (हे V	क्षमार दे [क्रुटार] कुमाण करता (है ह	उर्तुबर वृं [कुस्तुस्बर] भाव-विरोव (राम ४९)।
३६४ परम ३३, ४)।	रेंदेरा पर्)।	कुतुम पुन [कुतुप] १ केन बनैष्य परने ना
भूतीरन [दे] बाब्या किस (देव २४) ।	पुरवानय न [वि] सनुवनन, पीछे जाना (निने	नमहे का पान (दे ४, १२)। देवो कुउम ।
कुर्णा पुँदि वितानक नतायो वैवका हुआ सर (पत्र ना १७४ २३२ थ)।	र्थभर हो)। क्रिकेट के जिल्लाक सर्वे केवल्या क्रिकेट	क्ष ई वि द्वा क्ष्म्पर (रेम)।

नैक्पर बुकी बुकी चुडिनश्रीरतील्य (तुर व

हुविय दि [दे] शिवके नाम नी चोरी हो

क्षण थक 📳 करमा, वनामा। पुराह,

नरें हो वह (तुल २, २१)।

(883) I

कुकेंब नि हि दूह, सूर्व वेसमक भूबंदि । कुत्त न हि कुनक] हैका स्वास (विग

पुरुष, पूर्ण (बन- नहा कुता ६२ )। विच्यू (पान रका पक्त ४१)।

१ १--पन ११)।

1 ( ) (

क्षचार वि [कुनार] प्रयोग्य वारक (नम्ब

कुचिय पूंची [दे] एक तरह का कीवी-

नपुरिन्दिन जन्तु-विशेष चरासिम दूरिक

मर (पर्ना १७४ २३२ वर)।

वर्षे (परा महा मातू १६७) ।

६ वा)।

क्रमेब म [श्रुदुस्य] परिवत, परिवाद, स्वयत-

कुर्यस्य पू [कुन्तुस्थक] १ सनलाकि-विशेष

विरोध 'प्रबंद्वनडस्टार'दे ॥ शंदली न शुद्ध'नए

परिवा (वर्ष्ट १--पर ४)। २ वन्य-

हुन्ती की [दे] हुन्ती दुन्दुरी (रैमा)। कुरव म [कुत्र] कहा विस स्थान में ? (क्वर १४)। इत्रय सक [को पयु] सद्दाना "नो वाळ हरेग्या नो सलिल हुरियम्बा (पण १४८ दो) बुच्छे (१ स्वे) च्या (प्रस्पृ १६१) । मवि वृच्छि (? रिव) हिई (पिंह २३८)। कृ. कुरुव (वसनि १ २४) । हरम देखी नद्र। कृत्यमि कृत्वमु (या ५१६)। क्षाचण स्थीत [तोद्यत] सङ्गा सङ्जाना (बच४)। भुरुधर न [दे] १ विज्ञान (दे२ १६)। २ कोल्य, कृत को प्रक्त सङ्कर (नुपा २४३)। ६ सर्व अमैरङ्क का विक्त (डप ६४७ टी)। हुरयछ रेखी कोत्यल, 'बुन्छ (१ ल) नस माराज्यसे (वर्गीव २७)। चुरश्रुंब तुं [कुरतुम्ब] बाद्य विरोप (राम) । चुरसुंभरी की [कुस्सुस्करी] बनस्पति-विशेष श्रमियां (पर्युर) १---पत्र ६१ ।

कुरधुह पून [कीस्तुम] मणि-विशेष को बिच्यु की खाती पर रहती है(हेका २१७)। **प्रत्युह्मस्य न दि | नीवी नास समारमन्द** 

कुलो देखो छुज्जो (हे १ १७) । कुद्द विदि] प्रमुख प्रदुर (देश वे४)। कुरुण दूं [द] रासक रासा (वे २, ३८)। प्रदेश हैं [क्षेत्र ] बाग्य-विशेष कीवी, कोतव (सम्य १२)। क्रदाळ प्र [क्रदाख] १ भूमि बोबने का सावन कुसार, कुसारी (तुपा १२६)। २ क्त-विशेष (वं २)।

कुनू वि [मृत्र] कृपित क्षेत्र-गुक्त (महा)। कुपचि (पै) स [क्रचिन्] विशे चनक् में (प्रस्ट १२३)। कुरप सक [कुप्] कोप करना हस्सा

करता। कृप्पत्र (ज्या महा)। यह कुप्पेत (मूपा १६७) । १९ कुप्रियक्कम (स ११)। कुष्य सक [ भाप् ] बीलना बहुना । कृष्यह (मिकि)। कुरप न [कुरुय] नुवर्ण भीर चली को छोड़ नर प्रत्य पानु भीर मिट्टी वर्गे यह के बन हुए

पृह-उपकरण 'काशारी उनकारो कृष्यं (बह १३ पश्चि) ।

क्कुप्पद्धः पुंदि 🏻 १ पृहाचार, वर कारिवान । २ समुदाचार, सदाचार (दें २ ६६) । कुरमात [है] पुरत के समय किया जाता इदन-ताइन-विरोप । २ समुदानार, सदानार ।

व नर्गं, हॉसी ठट्ठा (वे २ ६४)। कुरपार् र्[कृपर] १ क्योगि हान का मध्यभाषा २ चानु दुध्नाः ३ रवका धानसन-विशेष (व १) । कुष्पर तुं [क्रपेर] देशो कष्पर। श्रीत की

परत, मीत का कीएँ-छीखँ पर 'एवाघो पाडमार्वहरूपरा जुरुएमितियों (यउ४)। कुल्पस देको कुंपस (दि २७७) । कुटवास वृं [कूर्यास ] कल्कुड कांचनी कनानी मुख्यी (हे र ७२ कम्यू पाय)।

ह्मरिपय वि [बुद्धपत] १ कृपित कृदः। २ न क्येच ग्रुस्सा 'चूप्पियं नाम चूरिक्स्में' (माच् ४)। क्कृप्पिस देवो कुप्पास (दे१ ७२ दे२

¥ )1 क्कबर पूंष्ट्रवर] भगवान् मस्तिनाप का राखनाचिहायक यख (पन २६)।

क्कुत्रेर पुंक्कित्रर] सम्बान् नृत्युनाम के प्रयम पावक का शाय (विचार ३७८)। हुचेर ⊈ [कुचेर] १ पूत्रेर, सब-राज वनेश

(पाय, गउड)। २ भगवान् मन्त्रिनाय का शासनामिहाता यत्र निशेष (सवि ८)। ६ काश्चलपुर के एक राजाका नाम (पदम ७ ४१)। ४ इस नामका एक मेही (उप **७२८ टी)। १ एक वैन मुनि** (कप्प)। । ब्रसार्चू [ त्युक्तु] अत्तरविका (युर २ (१) । नयरी भी निगरी कुनेर भी शक्यानी धनना (पाध)। कुषेश की कियेशी कैन शतु-नता की एक

श्रदा (क्य) । कुम्बद्द वि [वि] कुमहा कुम्म नामन (था

कुरवर पुंक्तिर] वैधमल के एक पुत्र 🖭 🛚 माग (बीत ५)।

कुभड र् फुभागड देव-विशेष की जाति । (ठार, ३—पण ८१)।

कुर्महित् पू [ कुमाण्डेन्द्र ] इन्द्र-विरोप कुषाएड देवों ना स्वामी (ठा २,३)। कुमर क्लो कुमार (हे १ ६७ मुपा २४६) ६५६ चूमा)।

क्रमरी देवी इसारी (क्यू, पाय) ।

कुमार पूँ [कुमार] १ प्रवम-वम का बातक पांच वर्ष तक का सहका (ठा १ १२)। २ धूनराज राज्याई पुरुष (पराह १ ५)। १ भपवान् वासुपुरुव का शासना बिहाता बन्न (सेवि ७)। ४ मोहकार, लोहार "ववेडमृद्विमाईहिं कृमारेहिं धर्म पिव (उत्त २६) । 🗈 कालिकेय सम्ब (पाय) । ६ शुक्र पक्षी । ७ भूड़ सवार । द्र सिन्धुनदा ह बुक्त-विशेष बरण-बुक्त (हें १ ६७): १ मिनाहित क्यानाधे (सम १)। उसाम पूं [मास] मान-विशेष (बाचा २ ६)। र्णीद् प्रं ["नन्दिम्] इस काम का एक धोलार (बादम)। धम्म पू ["धर्म] एक **बै**न साद्व (कम्प) । **बास्त** पूँ पास्त्र} विक्रम की बारहवीं राताची का प्रबद्धत का एक सुप्रसिद्ध जैस दाजा (दे १ ११६ छी)। कुमार पूँ विक्रियार का महीना मारिकन मास (ठा२ १)। कुमाय की [कुमाय] इस साम का एक

धॅनिवेश तम्रो भगवं कुमाराए धॅनिवेसे यधो' (धावम) । कुमारिय पूं [ कुमारिक ] कवाई, चीतिक (**98** 2) 1

कुमारिया की [कुमारिका] देवों कुम री (R 11\_) I

कुमारी भी [कुमारी] १ प्रथम ध्य की शहकी २ व्यक्ति।द्वित कल्या (द्वेष ३२)। ३

वनस्पति-विशेष चीड्रमारी (पण ४) : ४ नवमस्तिका । १. नशी-विरोप । ६ जम्बू-हीन का एक बाब । ७ मनस्पति-विशेष धप रानिता। ८ सीता। र वही इवाची। १ बन्ध्या करुमी की सदा । ११ पनि-विशेष

( T = 32) t कुमारी भी [दे कुमारी] नीचे पानेती (दे

य दश्रा क्तमुख पूं [फुन्युर] १ इम नाम का एक वानर (मे १ व४) । २ महाविकेह-वर्षका

इनुम-इस्मार

एक विजय-पुरुत मुनि ब्रदेप-विशेष (ठा २ पत्र व ) । १ त. चना-विकासी कम्बा (सामार ६ -- पत्र १६ से १२६)। ४ र्धस्या-विरोध कृतुवाज्ञ को औरासी लाख सं पुरुषे पर को संक्या सका हो वह (को २)। र किचर विकेष (ठाव) । ६ वि पूर्वी में भागन पलेनला। ७ श्रायन प्रीतिकासा (से १ २६)। देखी इस्मातः। इसुज पुं [इसुद] रेन-विरोध (सिरि ६६७)। चंद पू विश्वकृ प्राचार्य सिद्धमेन दिवाकर को सुनि संवस्त्वा का काम (सम्मतः १४१) । इसुभीग न [इसुवाहा] संस्था-विशेष 'महाकाल' की जीएसी तरब से प्रताने पर भो संक्या सम्बद्धी वह (बी २) । इसमा की किसदा १ इस नाग की एक कुरुरिएडी (बे ४) । २ एक नवधी (बीव) । इसुर्मी में [इसुदिनी] १ चल-विकासी क्यम का देव (हुनार रोग्ना)। २ इस नाम मी एक राजी (क्य १ ६१ टी) । इसुर वेको इसुअ (स्त्र) । देव-दिमान-विशेष (सन ६६ ६४)। गुस्स न विगुरुम देव-विमात-विकेय (सम ६६) । पुर न िपुर नवर-विशेष (१८४)। प्यभा 🕏 ["प्रभा] इस नाम को एक दुष्करिएडी (वे ४) । वाज

244

म ["बन] मबुख नगरी के समीप का एव चन्नम (ती २१) । । । गर व्रं िकरो कुछक-भएड कुमुनो से यस हमा वन (पन्ह १४)। इ.स.चंग देशो इ.स.चंग (६क) । कुमुद्रान [कुमुद्रर] तृत्य-विशेष (शूध २ २)। इमुखं को [दे] इस्ती सूहा (दे २ ६१)। हुम्म पुं[सूमें] कन्द्रप क्यूमा (पाध) । मामि दे [माम] मदब देत के एक श्रीव कानाम (सव १६)। कुम्मण दि [दे] भाव कुळ दुम्हतावा ह्या (१२,४) कुम्मार 🛊 [कुर्मार] नगव देश के एक श्रोप वाताम (माचा २१६,६) । हुम्मास र् [हुस्माय] १ मल-विशेष प्रव (बीप ३५१ पर्स ८ ४) । २ कोड़ा भीता

हुधा बूँ न वर्षे एइ. भाग्य (चएइ २, १, – नग

₹¥#) 1

२ नारवं की माठा का नाम (पठम ११ १२)। पुरापु विश्वा को शब क्रवा इस शाम का एक पुक्रम शिसने मुक्ति पाई की र्फ्रम्ह पुन [कुदमम] वेश-विरोध (हे २ ७४)। इन्द्रंड देवों कोईड (प्राप्त २२)। कुम्हंबी देवों कोईबी (प्राष्ट्र २२)। कुर पूर्विची १ स्तन बन । २ कि तिकिस (वन ७) । ३ प्रस्थिर (निष् १) । कुपचा की दि] बस्मी-विरोप (पएए १---पन ३३) । इप्रंगर्द्र[इट्रइक] १ मृग की एक वादि (वं २)। २ कोई भी मूप इतिए (वर्ण्ड १ १ पदम) । और गी (पाद्य) । रुक्की और िची इस्टिड के नेव की नेववाबी बी मुक्तवनी की (बाध २)। कुरंटय प्र [कुरफ्न्छ] बृष्ट-विरोप विकास (उप १ ३१ थी)। इरकुर देवो इस्कुत्। वह कुरकुराईत (रमा)। इरव पु [इरक] वनस्पति-विशेष (पर्न्छ १—पम ६६) । इत्य न [इत्यक] पूष्प विशेष (बण्ना ₹ **६)** । इतरे पु [इतर] पुरर-पथी चलारेश (परा ११ का १२६)। इत्ररी क्ये [वे] प्रतु वानवर (वे २ ४ )। कुररी की कुररी दे दूरर पत्नी की मान्छ। २ पाचा अपर का एक नेव (शिव) । ६ मैची मेडी (एंस)। §दस्त पु[कुरस्त} १ केर वाल 'कुरस रूपनीर्द्धं व नियो तमत्वरत्तसामती बद्धारिको<sup>र</sup> (तुपा २४ पाय)। २ पशि-विशेष (शीव १)। **कु**रक्रीकी [कुरसी] १ केटों नी वकस्था (नुपा १ २४)। **१ कुरल-पश्चिर**णी **'कुर्गतव्य** ग**हंक्**रो मन्द्र' (पदन १७ ७१) । हरनय पू [कुरवड] वृत्त-विरोप कटसरैवा (सादामा ४ : विक्र २३ त ४१४) दूमह

**दे ६, १)**।

कुराकी [कुरा] वर्ष-विकेष सकते भूति-

कुम्मी की किमी र कहा, कक्क्पी।

अभिन व वि] बहा बंग्या सम्बद्धारमा (बीव ४४७)। इक्ट प्रैंव (इक्टी श्यार्थ देश-विदेश को ज्<del>यास्य में है</del> (सामा १ वः मृता)। २ भगवान साहिताव का इस नाम दा एक पुत्र (ती १४) । ३ प्रकारी-भूमि निरोप (हा ६)। ४ इत नाम का एक मेरा (मनि)। E पूँकी कर वंश में उत्तरना कृष्ट नेशीन (ठा ६)। अस असी देखो गीचे वस वसी (पः)। तत्त "स्केत न "सेत्र] १ विक्री के पास का एक मैदान वहां और व धीर पाएडमाँ भी बहाई हुई भी। १ शह देश की राजवानी इस्तिमापुर नवर (ववि ती १६)। चंद प्रे चिल्ली इत शम का एक राजा(कम्मान्नाक्त)। चर वि चिर् कृष देश का पहलेगामा । सी वरा वरी (हे ३, ३१) । "जंगल न ["जङ्गल] कूर-मूमि देश-विशेष (प्रवि शी b) । जाह र्व मित्र क्याँवन (वा ४४३) वस्त्र)। दच दंदिचे] इस मान क्वा एक मेंग्री थीर दैन महदि (बत २३ संद्य) । सई की मिती बारक परवर्ती की परश्री (सम १६२)। राय प्रं रिखी कृष केत का यवा(का ७) । यह पूं पिति | कुर वैत राचचा(इर७२ टी)। इन्द्रम्या की [इन्द्रुचा] गॉन का प्रशस्त्र (धीव ११)। इस्क्रम धक [इस्क्रुराध ] फूरकूर' शारान करना चुनकुताना बड़बड़ाना । चुबन रामनि (पि ११) । वक्त इस्ट्राइवेव (रूप्)। इन्द्वरिश्रव[दे] राजराजक मीलुला (वे 9 84) 1 करुपुर स्था कुरकुर । मुख्युरीत (छ १ १) । क्रिवेक हैं कि र बुसीए, वक्रमानु-विरोध २ व- घट्टा जपायान (दे २ ४१) । वेशी क्रुविद्ध । कुरुव वि [वे] धविष्ट, बक्रिय (वे २ १६)। कुरुब वि वि । १ निर्देश निरुद्ध (हे २ ६६ विकि। २ निपूछ कनूर (देर, ४३ मर्थि)। कुरुन न [दे] समाना यादूबरे नावव

(ঘৰ) ঃ

अस्यास अथ कि न्यूना कर कर न

कुरुया की [दे कुरुका] शरीर-प्रज्ञानन,

**इर न ["गृह] पितृगृह, पिटाका वर** (गा

१२१ सुपा १६४ स. ११)। जिल

वि ["अभिन] धपने कुल की बढ़ाई बतला

(इ. इ.) । उदाय वि ["आत] कुकीन क्षान-शती कुस का (सुपा ५१%) पाम)। जुल वि [युष्ठ] कुमीम (पर १४)। जास न िनामम्] कम के प्रमुसार किया बाता नाम (मणु) । सेतु द्वी वन्तु क्रासवान क्स-रोत्तति (वय ६) । स्टिस्टम पून ["तिस्रक] कृत में येष्ठ (भग ११ ११)। स्य वि [रय] कसीन चानदानी वंश का (लागा १ ६)। त्यंर पु स्थितिरी भेष्ठ

भीका माक्सभासा (सूम २ ६)। (पतम ८२ २१)। कुछकुळ देखो कुरकुर । मृत्तनुनाह (गरि) । बस्स दु ["धर्म] कूसाचार (स्न १०)। प्रकार पू "पर्वत पर्वत-विशेष (सम ६६ पूत्र (क्त १) । कास्त्रिया की ["बाद्धिकां] 20Y) 1 कुलोन कम्पा(सुर १ ४६३ इति व १)।। श्रुसण न ["श्रूपज] १ वंश को व्याने या | पुरवती (सूपा ३६४) । जनकाने बाला। २ पूं एक केवली सपवाप (पक्ष्म १६ १२२)। सब पु ["सइ"] चूम का द्यमिनान (हा १)। संयद्धरिया सहस्त-१६)। रिया की निक्षारिका कुल में प्रमान की कुटुस्य की बुक्तिया (तुपा ७६ भागम) । कूम की धापकीति (वे २ ४२ धर्मि)। ब कहा स (सुपा ११६)। राग पू शिगी पुत्र स्थापक रोग (व २)। बद् दू ियाती दालसों ना भूमिया प्रचान संन्यासी (बुल १६ अर ६१)। बंस दु ["बंश] परस्पर सारोध पद्म (ब्रमन्त ७६) । मूल कम बंश, बंश (शर १११) । वंस दू [ क्षंत्य] कुल में उत्त्वम वेश में धेशाव (यग १, ३३) । अस्टिसय पूर् [ीवर्यसक] कुर यूपता कुरु-रीपक (कम)। बहुकी [ बच् ] हुतीन की हुनाङ्गना (माथ १) (**रस** ४)। पि १८७) । "संपर्ण्य वि ["संपद्म] पुत्रीन, बातवानी दूस का (धीप)। समय पू कुछव देवो कुडव (वी २)। ["समय] कुनाचार (सूध १ ११)। सोख पूं ["शोड] कुन-पर्वत (सूपा ६ सं ११६)। सेखण भी [शैसजा] कुम कुखम देवो कुमाछ (राम) । सरिवा भूगो शीयवरमणस्य (नुपा ६)। पज्य) ।

स्साम (वय १)। कर बाबीयका प्राप्त करनेपामा (ठा ११)। कुरुर बंबो कुरर (कुमा) । त्य न ["त्य] पक्षो का वर, नीड़ (पाम)। कुरुसपूर्वि । कृष्टिव नेश टेवा वाल वि व्यार पु ["ब्बार] कुसाबार बंश-गरम्पर २, ६३ भवि)। २ कि निर्देख । ३ जिपुरा से पासा ग्राह्मा रिवाम (भव १)। <sup>4</sup>रिय पु [ [बें] तिलुन्पन्न की बपेशा से कार्य (हा व ?)। खित्र वि [िंखर] मृहस्त्रों के **व**र साधु (वंद्य) । "दिगवर चुं ["दिनक्रर] कुर्त कर दे [कुळकूर] इस गाम का एक रामा क्स में ब्रेड (कप्प)। बीच पु [बाप] कुस प्रकारक कुल में बोह (कप)। देव वृ [विष] योज-धवता (काम) । देघपा कुर्झप वूं [कुरुम्य] इस नाम का एक धनाये देखः । २ क्सर्ने प्रशेदासी वादिः (सूम २ २)। की विश्वना नोम-देवता (युपा ४६७)। की एक बादि (सबक्ष) । २ कुछ विद्योप "देवीं की ["देवी] योष-देवी (युपा ६ २)। (पएए १ पएड् १ ४—पत्र ७६)। ३ कुसक्तार्थ [कुळस] १ एक म्बेच्छ देश । कुटिसिक-मानक रीव एक प्रकार का जैया ९ असमें राष्ट्रनेवाली वादि (पराइदि १३ इक)। रोप 'एग्रीकृरविदयत्तवहस्युपुन्तवंते' (बीप)। बुपा ४३)। पुत्त पु ["पुत्र] वंश-एतक कुछारच पूं [कुस्पर्य] एक धनायें केछ (पर [बच पुन [ (बचे] भूपछ-विशेष (क्यो) । कुक्का ची [कुछन] व्यविवारिसी सी विशिष्त्रायों (पदम १६, ३८) । कुर्विश्च [दे] देवो कुरुचित्त (गाय) । कुळस्थ पूंच्ये [कुळस्य] प्रश्न-विशेष कूमणी क्क दून [कुॐ] र मूख वंश व्यक्ति (प्रायु:। (ठा १ ३ । सारा १ १)। भी स्वा(मा १७) । २ पैतुक वंश (उत्त ६) । ३ परिवाद क्टुस्थ (क्य ६ ७७) । ४ समावीन समूह कुछन्तसम् पूँ [दे] बून-कर्सक कुत का बाग (पण्ड् १३)। इ. दोत्र (तुपा व ठा४१)। ६ एक ग्राचार्य की संतरित (कम्प)। ७ वरः । कुछय वैको कुबम (तंदु २६ मणु १६१)। मुद्द (कम सूम १ ४१)। व सावित्य बामीव्य (माचा) । १ व्योतिय-शास-मसिङ कुछ्यन (कुछक) दीन या चार देण्यादा सम्मन्त्रेश (युक्त १ इक) भूको कुले (६ १ १६) । सम्ब पु [पूर्व] पूर्वण कुष्पद्ध पूँ [कुश्रस्त] १ पश्चि-विशेष (पर्छा १ पूर्व-पूरप (क्ला) । क्ष्म पु क्रिमी १)। र तृब पती (ज्ञा १४)। ३ कृरर क्साबाट बंश-गरम्पण का रिवास (सिंह पशी (मूच १ ११)। ४ मार्बार, विकास ery)। इद्र केवी मीचे गर (ठा १)। 'नश कुन्कुरगायस्य खिक्ने कुननधी धर्य' क्रोडि की [क्रोटि] कार्षि निशेष (पन १४१ ठाटा १) । कस केलो कम कुखक्रय पून चि हुन्सा गेड्य (पर ३०)। (तर्हु ६) । सर् पुं ["सर] कुल की स्थापना करनेवाका युग के प्रारम्भ में नीवि वमैरह की कुम्पस्तक की वि] क्रती मृत्या (वे२ १८)। कुरामक र् [कुरामक] नुमार्गत (वि म१)। ध्यवस्था करनेवरका महापुषप (सम १२६) वरण x) । नेह न ["नेहु पितृ-पृह (क्स)। पर्वत से निवत्ती हुई नवी कुनैसनमावि | बुख्यस वु [बुद्धास] कुन्यनार, बुन्हार (पाम सर् व वितृत्व (सीप)। सः वि व्यी नुसीन जानगरी नृक्ष में उत्प्रता

चनुर (दे २ ६३) । कुरुष यह [कु] धाराव करना कीएका बोलना । कूटबहि (पवि) । कुरुवित्र में [कुन] बादस का राम्य, कीए की सावाज (मवि)। कुरुव देखों कुरु (पटम ११८ ८३ मणि)। कुरुवा देवी कुरसय (युगा ४४) । क्कुर्स्वेत पूं [कुरुविन्द] १ मखि-विशेष एत कुर्विदा की [दुर्श्सवन्दा] इस नाम वी एक

अभित् पू क्रिवस्र विमुवाय भपना कुलने-

कुचिय नि [कुपित] दूब विसको प्रश्सा

ह्यादी बह (बस्ट ११ बुर २ ३) देश

इतिय केतो इत्य ≈ दुष्य (वत्य १ ३. तुवा

४६)। साक्षा की ['साउथ] विक्रोणा

थादि पृहोरकरुछ रखने की कुटिया, कर का

बर् माग विश्वमें गृहोपत्रस्य रक्षे वाते हैं

(पद्मार ४ --- पत्र ११३)।

वस्ती-विदेव (वए**ल १--प**त्र ६६) ।

**७३ प्रामृ** ६४)।

नामा (सूपा १) । नहीं की विक्री

**क्ष**बार म किम्पपुर निवर-विशेष (चेषा)। क्रिकि ) पु पुरस्कि १ क्लेकिए-साझ कुक्क विदेश क्रिती भूतहा (वे २६३)। कृष्टिय में प्रक्रिय एक प्रयोग (गरा १६)। २ आहेरा पाच पुत्रवा (वे २ ६३ पाच) । २ व. एक प्रकार का हुन (परहुर १)। कुक्तिक पूँ वि] राश्चिक इसवाई, मिठाई कुलिय म (कुक्य) १ चीठ मिति (नुमा १ बगानवामा (वे २, ४१)। प. १) । २ निही की बनाई हुई पीत (क्ट्र क्करिया औ [थुं ] इलवार की बुकान २) क्छ)। (प्रावम) । कुलिया धी क्रिकिशो भीत नुम्म (शह २)। इन्द्रा की किल्या र पन नी नानी सरिकी (इसा है २ ७६)। २ असी इसिम गरी इतिर प्रे क्विंग्रिश नेप नरेख नाख गति (क्य)। में क्रुवे राशि (पडम १७ १ ६)। कुहारा पू किल्याक सिनियर-विशेष मध्य कुबिम्बय पु [कुनिग्रत] परिवासक का एक केराका एक यव (कप)। मेर, तारम-विरोध वर में ही यह व को शाहि क्रती देवो क्रता (वर्गीव ११२) । का विवय करतेवाला (भीप)। कुरुक्तिया की [कुरुक्तिका] बटिया बही इक्टिस र्न (इक्टिया) यह यह का का हुका (मूच १४२)। भागून (पाम कर ६२ ही)। निजान पू कुरूरी की दि वाचनिरोप प्रवस्ती-

["निताव] रावण का इस काम का एक मुख्ट 'क्सेर' (पव ४)। (परम १६ २१)। सहस्र न जिल्ला क्रम्बरिम [के] जेवो कुद्धरिम (महा)। एक ब्रसार भी तपहचर्या (पढम २२ १४)। क्रमद्र दे दि । श्रयम स्थार (वे २ ६४) । कुमीकोस पू [कुटीकोश] पश्चि विशेष (पर्वा क्रमणय गवि वर्ग्याष्ट्र वक्ती क्या **१ १**—पत )। **5वस्य र [5वडय] १ शेबोरल इय रंब** हुर्यः प दि [हुर्यान] बत्तम दूस मे अस्ता का क्यम (बाध) । २ चन्द्र-विकासी क्यम (बालु ७१)। (या २७)। १ कम्म प्य (ग्राप्त)। इसीर पुं [हुक्ष र] बन्तु-विदेश (शचा वे व कुमधी की कि कुछ विशेष (ब्रूप २४१)।

¥\$) 1 कुर्भव एक दिश्व, नहीं १ क्लाला। २ स्तान करन्त्र । र्रेष्ट्र "मालक्ष्युगुमाई सुर्ही-चिक्रण मा बारित शिक्रुधी विभिन्ते (बा (x34)1 नुसुद्धिय पि दि वता हुवा विख्वतीय पुनुति करामहो<sup>र</sup> (मीप) । कुमोबकुम र् [कुसावकुक] वे कार नशक— श्रवितित, रहिता, यहाँ यीर शतुरामा (मुझ १ १)।

चु≒ दु[दे] रे पीरान्यक। २ वि सर्थ

यक्षन्त वीक्स होता है (क्त ७)। गानपर न शिमनगरी नगर-विकेश विकार ना एक नगर, धवनुड, को माननम 'धनमिर' गाम से प्रसिद्धा के (पत्रम २ १ ≈)। गगपर व िप्रपूर देवो पूर्वोक धर्व (सुर १ ८१)। हु दू [ (बचे ] मार्थ देश किलेप (संच १४ दी) । 🗑 पू ियों | मार्ग देश-विरोप, विस्ती राजवानी शीर्पपुर वी (इक)। च न िंग्स चि बास्तरख-वितेप एक प्रकार ना विद्यौना (छाया १ १--पत्र १६) । त्यस्

पुर न [क्यब्रपुर] नगर-विक्टर (पडम २१ ७१)। सङ्ग्रियां स्त्रे [स्टिका] सन के शान क्रुटी बाटी मिह्ने (तिषु १०)। बर ई परधी)।

[ बर] होए-विशेष (घणु--धै)। इस रिकिशी की का का इस (सर्वा 2 4 4 (Y)1

कास (विपार ६) निचर)। २ प्रेसर-

२)। या भिन्नी दर्भका सद-माय को

रवी राम के एक पुत्र का नाम (प्रतम १

**3** मण न कि तिमन, मात्र करना (१ %

इस्थय व [व] योरस (पिंड २ २)।

क्कपिय वि [व] दीएत से बना ह्या वरम्या वादि बाच 'दून (१ स) शिवंटि (पिंड कुसछ वि [कुराय] १ तिपूर्ण चनुद, वस,

व्यक्ति (भाषाः सामा १२) । २ व **तृष** 

विच (राम)। ३ पूर्य (पंचा ६)।

इसका की [कुराब्स] नवरी-सिरेप निष्टेतः धवायम (धारम)।

इसार वेदो कुसार (स.६.१)।

इनिवार (रे = १)।

इसीकी (इसी) तोई शाक्त हमाएक

कुसीसम् पुं [कुशीसात्र] धर्मिनपद्यती नर (ৰুমু) ৷ कुर्म्म पुन [पुन्सुरम] १ कुत्र-विरोध कन्नुम वरें (ठा⊏—पंद४ ३)। २ त दुनुस का पूर्व्य जिसकारंग बनता है (जै २)। ३ रंग-विशेष (भा १२)। कुर्मुभिञ्ज वि [कुर्मुन्भित] हुनुस्य रंगवाना (बा १२)। बुर्स्|बिल र्यु [द] रियुन दुर्बन भूवसकोर ( R R R ) 1 कुर्सुभी की [कुर्सुन्सी] बुल-विरोप हुनुम कापेड़ (पास)। क्स्म वर [ इसमय् ] पून वाना । इन्न मंदि (संबीय ४७) । **इ**स्सम न [इस्सम] १ पूप्त जून (पास प्रानू ६४)। २ धूँ इसंनाम का भगवान् पद्मम रा ग्रासनाविहासकं पनः (स्रीत ७) । किउ वु ["केतु] मरुलवर होग का मन्द्रियक देव (दीर)। वाय, बाव ट्रं [वाय] बामरेव मकरम्बन (मुपा ५९, ३३ महा)। उम्हय दू किया विक्त शत् (पूना) । व्यवर ग ["लगर] नगर-विशेष पाटितपुत्र बायनम जी पटना नाम ध प्रमित्र है (बायम)। दिंत पू [ब्रिन्त] एक क्षेत्रेद्धर देर का नाम इस धरत्तियी कान । के नवर्षे जिनदेर भी मुरिजिनाच (पडम १ ६)। दाम न [दामन्] कृती वी नाना (वरा) । प्रणु न [धनुष्] नामधेन (हुना) । "पुरव["पुर]देखाळार व्यवर(का ४०६)। बाज पू [ बाज] कामरेष (मुर १ १६२) पाप)। रभ र् [रमम ] मररन (पाप)। "रर पुं "रद देशो दंव (परम २ १)। शया औ ["सता] छन्द-तिरोप (धनि १३)। संभव र सिमयी नपुनाय, श्रेतनाम (बल्) । सर पू [ शर] रामरेश (बूर ३ रे ६) । "अर् १ ["कर] इन नामना रक पत्र (रिय) । १३६ वृं [१व्य] शाम बामदेर (म १९४) । | बद्द ग्री [ विश्वी] इस नाम की एक नगरी (पडम ४, ३६)। शसप र् [शसप] शियाक वर्गन, पूरा

रेलु (याचा १ १) भीर) ।

11

कुसुमसंभव पुं [इसुमसम्भव] वैराख मान ना सोबोत्तर शाम (सूत्रव १ १८)। कुसमाछ वि [कुसमयम् ] कूनवासा (स 1 (03) कुम्माल पुँ [व] चोर, स्तेन (६२ १)। क्रममाधिक्ष रि. दि. गून्य-धनाक आन्त-चित्र (दे२ ४२)। कुसुमिश्र वि [कुसुमिन] पूजित पूज युक्त, किका हुया (ग्राया १ १) पदम १३ \$8¢) 1 कुर्मुमिक्स वि [कुर्मुमवन् ] उत्तर देखो (सुपा २२३)। कुमर विोदेको मन्तर (हे२ १७४८)। कुपुछ पुं [कुशूछ] कोह, यन रखने के निय बिट्टीका बना एक प्रचार का वेहा पात्र (पाम) । कुम्मुसिव वुं [कुस्वयन] दुष्ट स्वयन (संबोध कुद् यक [कुय् ] सद बाता दुर्यनी होता। बुहर (मनि है ४ वहर)। । इन्द्र पूं [कुह] दुन पें। पादा भूहा महीसहा बच्छाँ (धर्मति १) । चुइ रेको यह (ना १ ७ म)।

इदंड पू [क्याण्ड] मन्तर देशों की एक षाठि (दीप)। कुइंड न [कुप्माण्ड] १ कुम्हरा, पेठा कोईहा (कम्म ५, ८३)। पुर्वकिया की [क्रुमाध्की] कोहेंद्रा ना नाड (यय)। कुर्य ह } बेग्रो बृहव (वर्गीव १६६ कुन ८)। इरम १ [कुइफ] नम्द-विरोध 'साहिसीह य पीहर पूर्वाय तहेन व (रक्त १६ १९ मा) । शुरुष वि [वे] पूच्य पूच्या (वे २ ६६)। पुरुष र् [चुरुम] १ इसों ना एक प्रकार, बूगी की एक बर्गता 'से कि वे बृहणा ? पूर्व धानेनिवहा परकता' (पण्ड १-पत्र १४)। २ बनस्पति-बिरोप । १ मूमि-वपोर (पराप्त १--पत्र १ : बाचा) । ४ देश-विरोच । १ रमर्ने प्रतेशनी जाति (पन्ह १ १---१७

\$4. ££) i

বংগ कुहुव्य वि [इहोधन] बोबी, बोब करनवासा (पर्तृ १ ४--पन १ )। कुहणी की दि ] पूर्पर, हाथ का मध्य-माग (बुवा ४१२) । कुह्य पून [कुह्क] १ शापु-निरोप शीवते हुए धरब के चदर-प्रवेश के समीप बलान डोठाएक प्रचार का नामू: "महायन्त्रिय-इसपुद्दए (सन्छ २)। २ इण्यामादि कीपुत्र 'ससोलुए धरनुहुए समाई (दस १, १)। क्रदर न क्रिया १ पर्वत का सन्वयत (एामा १ १---पत्र ६३)ः 'गेर्ट्रन विस्टिट्री खिन्बरपु**इरं व स**प्तितमुल्लाविमें (गा ६ ७)। २ दिहा विम नियर (परहुर ४० पानु २) १ वे पूंच चेरा-विरोप (पटम १० कुदाब ई [कुठार] हुन्हाड़ फरना (बिपा १ ६ पडम ११ २४ स २१४)। कुराबी भी [कुठाये] दुस्हादी, बुठार (उप 1 (882 कुदायभा की [कुइसा] १ भारवर्ध-जनक वस्त्र-क्रिया, शस्त्र-वर्षा । २ शोगों से प्रस्य इस्तित करत के निए किया हुया करट-मेव (शीत)। क्रहिअ नि [रे] सिप्त गोताहूमा (दे २ **12)** 1 क्रहिअ वि [पुनित] १ नोही दुर्गनागा (छावा र: १२---पत्र १०६)। २ छहा हुमा (वर्ष १६७ ही )। ३ तिन्छ (खावा १ १)। पूर्य वि [पृतिक] शक्त छहा हमर (पगइ २ १) । कुहिणी की वि] १ क्षंट, हाब का मध्य

क्रदुण रेची श्रहण=हुन्त (उत्र १६ र६ पर ) । शहरमध पू [बुगुप्रत]क्द विदेश (उस १६ Eu) t कदंद ई [ब] भीगगी-विदेश पुरेश्व एक प्रवार का हरें का बाद (दे २ ६४)। ३ ई (इर्ट क) १ पग रार क्रहरू है अपनानेताना मान त्राचादि जान-

भाष । २ रच्या महस्सा (४ २ ६२) ।

कुद्दिल पूँची [कुटुमन् ] कोयत पत्ती (रिय)।

कटु की [कटु] कोशिस पद्यी की बाराज

(पिष्)।

(विपा१ २)। बाध्र न विद्यार्थी नोदी

का बास, फ्रीसी (बत ११) । तुस्म सी

**उद्देवग—हुम** 

कुम पूँ [कूप] १ कूप कुँमा (पत्रह) । २ भी क्षेत्र वर्गेच्य रखने का पात्र कृतुप (स्त्रसा १ १--पन १=ः धीप) । बच्चर पू विशेर १ कृप का मेहक । २ वह समुख्य थो स्थम वर और बाहर नक्या हो सम्पन्न (का

६४० थे। वेशो कुम्। कूर वि [कूर] १ निर्देश, निका विस्त (प्रवह र ३)। २ कर्यकर, रीज (स्रामा १ चूब र् ७)। ३ प्रथा का इस नाल का एक नुबंद (परुच १६ २६)।

**फुर पुंत फ़ुर**] बनस्पति-मिरोब (हम २: १

इस्रविक्टी कत कोतव (दे२,४६)। गकुम गक्कम दुं[गकुक] एक वैष सङ्गीव (माचा; मान व)। कृद व [ईवन् ] बोहा क्या (१ २, १२६)

कृरियंद्र व [रे] चोनत-विदेश साद-विरोत (भाषम) । कृरि वि [कृरिम्] १ निरंगी कर विकास। २ निर्देव परिवारमामा (पराह १ ६)। क्टुड विदेशी के पश्चा किल्लाधन (३८

24) i

४वा है १२ ६२)। कुछ व [कुछ] तह, किनाच (प्रस्म सामा

१ १६) । भ्रमरा दू [स्मायक] एक प्रकार का बानप्रस्य थी किनारे पर श्रद्धा हो बानान कर मोक्न करता है (बीन) । बास्रग बाख्य पुँ [बाद्धक] एक बेन पुनि (मन्द **क्र्डिं**सा की [क्रुडकूय] को तीर गेर्

दोक्नेनावी वरी (वेली १२ )। कृष प्रेर वि १ प्रतर्भ की को को ने में जाला (रें २, ६२: पान्न)। २ दुर्साचीन को कुरलेवाना स्मेनी हुई चीज नो नहाई वर्गरहरूर बाध्य केलाला तिए स्टेग बीवरी देवी पडमस्तामं एवं बबाधी—एरं

प्यिष्याक्य परिवर्ततः तं **वद् रां** से **क्टा**र्र

क्यु देवा अंदुर्शने धीने भारते वाने वारत-कीय राजधीर कार्य साम बहारेके मन

कृष्णिक वि [कृष्णित] सकोष-प्राप्त संवीतित कृष्णिम वि [दे] ईसर् निकतित बोड़ा विसा

कुदेवना की क्रिकेटका कलावितेन निएशनु (पव ४)। कुछ देशों कुद = कुप (चंड इस्मीर १ )। कुभगत (कुभन) र सम्बद्ध शब्द । २ वि ऐसी बावाच चंद्रोवाला (छ: ३ ३)। कृभणना को [कुबनदा] दूबन, यस्त्रक रम्प (छ **१ १**) । कृतमा जी [कृषिका] रूई क्षोदा कृप (चंड)। कृत्यन [कृतित] स्व्यक सलाज (बहा मुर ६ ४०)। कृद्भा स्मै [कृतिका] रिवांक साथि का प्रव्यक्त पानाव (शिव १४६ टी) । कृषिमा से [कृषिद्य] राही-वृंद का राह (श्रीवा ६१) । कृषियां ही [कृषिका] दुसुर, दुस्तुला पानी का कुतरा (मिले १४६७)। कृत पत्र [कृत् ] यन्त्र रूप करता। पूनाई (बार ११)। वह- कुर्जंद (मै २६)। ভূমিন ৰ [ভূমিত] গৰত নাৰাৰ (ছুন্যা मे २६)। कृत सक [क्टप्] १ क्टाळ्या । २ सन्दर्भ करमा। दूढ़े (प्रसुध थे)। कृद र दिक्टी पात जैसी बाद (देश ४३ एक बत र, सूच १ १ २)। कूब पुंत [कूद] १ फराब, क्वा-पुण, कुरा "इंडेनुसदुरमार्ड" (पडि) । २ आस्त<del>ि बस</del>क बस्तु (भग ध ६)। ६ माया, कपट, सक दना बीग्रा (बुदा ६९७) । ४ नरक (क्य १ १ पोइा-सम्बद्धातः, दुःकोरराक्कः नगह (तूप १ ४.२ वत ६)।६ किचर दीव (ठा४ २०१६)। ७ वर्गेट का कथ्य मान (वे १)। च पायालम्ब कन्न-विदेश

नारने नाएक प्रचार शासन्त (बन १६) : र वपूर चरित (निर ११)। नारिनि

["नारिन] चौत्रेवान श्तन्तोर(नुग्रः६२७)।

गगद पू ["माद] चीले है बीची की

र्दशनेसला(स्ति १२)ः की सब्रह्णः

भृद्रेविकासनदारबीदी न पश्चाई सरहाँ

धम्म काते (कत्त २ ४२) । २ शासासक

मझ्मेकि-विरोध केंद्र न विश्वयद सर्व वाक्

दर्दक्केम्एडिव (पव ७३ टी वह १)।

क्षचेंडग पुन [दे] बजमा (वंबा ४, ६ )।

**ितस**ो भूकी भाग बनावटी नाप (त्रवा १)। पास न विपासी एक प्रकार की मक्क विकास के बाद्य (विदा १ व)। प्पम्रोग 🛊 ["प्रयोग] प्रच्यव पर (धार थ)। तिह्र दृंितेशा १ वाली केवा इतरे के हरवासर-तुरय सवार क्या कर बोबी वानी करता । २ इसरे के नाम तें चुठी चिही वमैष्ड विकास (पति। स्वा) । बाहि प्र वाहिन केंद्र, क्लीवर्ड (याच १)। सकत व "साम्ब] कुठी पनावी (वंचा १)। मस्सित्र वि [सामिन] पूळी पानी **रोबाबा** (बा १४)। सक्तिकाळा ग [<sup>4</sup>सा **एव**] कुडी क्वाही (पुरा २७१) । सामछि **को** [ैशास्मछि] १ इत विरोप के बाह्मर का एक स्वान, वहाँ क्रव-वातीय देशों का निवास है (सम १३) हार ६)। १ शरक स्थित श्रृष्ण-विकेश (श्रृष्ण २ )। शिगार न िंग्यर १ तिकर के शाकारवासा वर (ठा४ २)। २ पर्वत पर बना इसायर (भाषा २ १ १)। १ पर्वंत में हुता हुमा वर (निष् १२)। ४ विद्यान्स्वान (ठा ४ २)। मारसास्य 🕸 [गगरशास्त्र] वर्ष्ट्य

नामा वर, बडक्न करने के निय बनाया क्षमा वर (विदा १ ३) । हवान [ीहस्व] पाबार)-मय क्या की तरह मारता कुचन बालना (नद ११)। कुक न [कुछ] १ पाठ वाल क्र'स इतेस (सूच १ ६,२ १० राव ११४)। २ नगातार २७ दिन का क्याबाब (संबोध १०)। कृतम देवी कृत (माधम) ।

क्य यक [क्यम्] अंकृतित होना संकीप रामा (वस्थ) । (बढड) ।

हुमा (६ २, ४४)। कृष्णिझ पुं[कृष्णिङ] समा सेलिस पापुत (पीप) । कृषिय वि [कृष्णित] नहाहृया (दुप १६ )। सावारी मने कृते की हमामानकार, एए एवं महिका ने तुर्व वर्षात तस्य सालाधाका समस्यालिहेते विदित्यानि (स्थान दिस्तानि (स्थान दिस्तानि (स्थान दिस्तानि (स्थान दिस्तानि (स्थान दिस्तानि (स्थान दिस्तान स्थान स्थ

कूत्य पुंक्षिपक् वेश्वो कृतः नृष्य (प्रतण १२) । स्वताम-प्रसिद्ध एक वेत पुनि (श्रीत १) । कूत्र पुनि कृत्य वेश्वास का एक समस्य सहस्य का पुन्न सामः 'संकृतिगुलकपृक्षकर्य

द्योड़ बाहर न जाता हा (निच् १)।

बहान ना मुख नारा 'संकृष्टिएसनस्कृष्टवर्ध | (एएसा १ १ -- पन ११७)। २ रव सा साझी वरिष्टु का एक सन्दान सुनन्तर (से १२, ८४)। कृषक न [ब] सनन्त्रक (१२ ४१)।

कृतिया न [कृतिया] सम्यक्त राज्य, 'तह नहींव कुछद को मुख्यपूर्वियं समुद्री जल' (भूगा स्व)।

कृतिय पूं [कृतिक] इस नाम ना एक स्रीत-केरा-न'न (मारम)।

सूचिय वि [क] शोप-स्यावर्षक पूछाई हुई बीज वी खोज कर उन मानेशका (खासा ११ —यव २१६)।२ वोर वी खाज करनेशका (खामा ११):

कूबिया की [कूपिका] १ छोटा पूप (वर ७२ टी)।२ घोग लोह-गल कूपी(राज)। कूपी की [कूपी] कपर देखे एयच्यो सबय-कूपी मी (वर ७२८ टी)।

क्मार पु [व] वर्षाकार, गर्त वैशास्त्रान बहुरा पूकारवर्तठाची (वे २ ४४) वाप)।

क्टंड व [क्प्माण्ड] स्पन्तर देशें की एक जाति (पण्ट्री ४)। पटसक [की] कीतता खरीरका। केंद्र, देश

(पर्)।

के वि कियम् ] फिरान ? "विरण म ["चिरेण] फिराने समय में ? (वीत १४)। चिर्द य [ वारी फिराने समय तक ? (पि १४१)। "विरोण केले "चिरण कि १४१)। दर म ["दूर] चिरान दूर? भद्रते सा पूर्व तोचा ?' (परम भव्य ४७)। सहाक्य नि [महाक्ष्य] फिराम का ? (णाया १ व)। सहाक्षिय नि [ सहम् ] नियान नम् ? (परण २१)। सहिक्षिय वि ["कहिक्षित्र] चिरानी नहीं कहिक्समा (चि १४१)।

काइ हूं [केकदा] केमनेरेल, विश्वस प्रांता शांत वार्ष बार वाशा लाग वार्मा है, विश्व केश की मोगा पर का केश (कुक्त क्षेत्र) केश बार्क्स कार्रिय मिल्य' (वर्ष्ण । सत्त ६७ दि)। काल्य की कितकी] इक्त-विरोध, कमहा का कुल (दुना दे = २१)।

कं अग ) पुंचितक रेनुक निरोण, केनहा कं अग रे का गांछ, नेवली (गवड)। २ अ नेवली-पुण केनहा का कुन (गवड)। ६ विन्तु, निराम (ठा १)।

क्षत्रमी की कियकी र केवड़ा का पाछ या पीचा। २ कवड़ा वा कुप (चय १४)। कामक केवी फेवल (चयि २६)।

केअव देवो कद्भव = कैतका 'वं केमकेए 'पिम्में (या ७४४)। कमाकी किं] रस्तु, रस्ती (देश ४१

क्या १६ १)। क्ष्मार दृष्टिमार] १ क्षेत्र क्षेत्र (पुर १ क्द) १२ सामपास वयारी (प्राय) स्त्र ६१)। क्षमारवाज पृथि दुल-क्षिरेण क्यारा गा

पेड़ (६२ ४१)। कञारिजा की [केन्सरिका] भानवानी अमीन योजर मृति (वण्नु)।

कड पूँ किंतु र काम प्रवार (पूरा १२६)। २ वह-किटेन (पूज २ : मतह)। १ विन्दू निरात (वीत)। ४ पूर-तून वर्द ना मूता (मतह)। ज्ञाचन [चेन्न] विन्तुरित विक्तुरित से हैं निर्मे प्रस्त पेस हो कहता हो पेना क्षेत्र-विकेष (साह ६)। सह की [सती]

किसकेस और विपुश्लेस की सप-महितों का नाम बन्दाणी-विशेष (सम १ १ छावा १)। साखन [नामाल] वैतास्म पर्यंत पर सियत वहा नाम का एक विशावर-नगर (वर्ष)। केड थूँ [वें] इन्द्र, नीया (वे २ ५४)। केड थूँन [कितु] एक वेवविमान (वेवेन ११४)। केड गा थूँ [केतुक] पातास-कम्य-विशेष केडमा थूँन क्याक १ १ २—पन २२६)।

केकर कु कियूर] १ हाय ना वायुष्ण विषेण सङ्गर बाह्यण (श्रम प्रा ८,१३)। २ ६०३)। कंकरपुष्ण कुंद्र का पातास-क्रमण (पर २०२)। कंकरपुष्ण कुंद्रियों पात तथा मैंस भा बचा (स्रीत १४०)। केकस कुंद्रियुप् बतिस्स सब्द्र का एक पातास-क्रमण (इक)। केंद्राय बक [केह्यम्] 'केंन्स' पादास

करता । वह पिन्द्रप्र तमी बदावि केंद्रार्थते

बहीतांसी (पनन ४४ ४५)। क्षेत्रज्ञ केशो हिन्तुका (कुमा)। क्षेत्रज्ञ केशो हिन्तुका (इमा)। क्षेत्रज्ञ की क्षित्रका है। एवन दशरव शे एक पनी केमन केश के प्रजा भी कमा (परम २२ ४ का पर ६ १५)। र प्रारत्ने समुद्रोध की माना (चन १२२)। र प्रारत्नेक्ट्रे के विचीयण-मानुके की माना (समन)। केकम १ फिकमी १ केश-विदेश सह केश

आचीत नाहीफ अदेश के चित्रण जी और तथा विश्व देश में ग्रीमा पर स्वित है। २ इस देश का प्यतेतला (परवह १ १)। ३ वेचय देश का प्रमा (पंत्र व १ १ व)। का प्रस्ता की [कार्यस्था] परण की माज का नाम (प्रमूष ७ १४)।

कना की [केस] सदूर-नाली। रख पूर् [देख] सदूर की बातान सदूर-क्रम्य (लावा ११--पत्र २४)। कस्सद्रयन [केस्सवित] नदूर ना कम्य (नूस

कश्चारमन् [कश्चायन्] नपूर ना राज्य (नु | ७१) ।

सम्बर्दे रेश्ये कार्र्स्ट (परम ७६ २६)। कक्ष्म रेगी कास्य (एव २७४)।

कद्मता की [केंडसी] चारत की मन्ता (पत्रम १ १ ११४)।

२६०	पाइमसश्महण्यवो	केबाइप—केवडिश
कताइय देनो कासइय (खाया १ ६—पत्र	केरी की [क्रकटी] कुल-विशेष करीर या	कंबह्य वि [कियत्] कितग्र ? (स्म
११)।	बाक्र किवेबवीरिकेरि— (उन १ ११ टी)।	१९४४ विते ६४६ दी)।
क्रमई देनों फेटई (पडम १ ६४० २ १६४)। केमाइप देवों केसडस (पड़)। केसा हैं क्रियों नेपने डी भीन (स्ट १)। कर्स ो पुंकियों १ इस नाम का एक	केश वैको कपछ = करत (हे १ ११७)। केश्च्यदय वि [समार्गपत] धाञ्युक्य क्रिया हुव्य (क्ष्मा)। केश्चाय सक [समा+रचय] समारकत	केवह ट्रं[कैनचें] वीवर, सक्त्येतार, सङ्घ्या (बच्च स २१०८) हे२,३)। केवड (बच) वेबो केविज (१४४ छ कुमा)।
चडक ∫ प्रतिपानुध्ये एवा (पवम १,	करता, साक कर ठीक करता। केनायह (हे	केवस्त्र विक्रियस्त्र १ सकेवा स्वयुक्त (स
११६)। २ शैल-विशेष (हे १ २४ ।	४ रहे)।	२,११ सीप)। २ सपुष्म स्पितीय (का
दुमा)। रेड दूं [शेषु] बीहच्छ नारावण	केन्सस हुँ किसस] यह का क्रम्या द्वान	१ १३)। १ तुत्र, सन्त्र शतु के प्रतिका
(दुमा)।	विदेश (सुन्न १)।	(स्त्र ४)। ४ संपूर्ण परिपूर्ण (निर ११)।
केच देवी कैपित्र (इस्य १३६)।	केट्स सं वृं विकास ? स्वनाम-बद्धि वर्षत	१ स्वतन्त्र भन्त-प्रित (मिर्छ वप)। ६ व.
किप्तम् } वि [किपन् ] रितना? (है २,	विशेष (वे ६ ६) बड़ कुमा)। २ इस	सान-स्थिप सर्वपेष्ठ सान, पूठ सावी वर्षेष्ठ
कपित्रः ) ११० दुना यह यहा)।	नाम वा एक नाम प्रज्ञ (इक्)। ३ स्त नाम-	सर्व बस्तुर्धों का सान सर्वेडला (मिर्छ २१७)।
कपुत (पर) कार देवी (दुना यह है ४	एक का वावास-वर्षत (अ ४ २)। ई मिट्टी	क्ष्म्प वि [क्ष्म्य] परिपूर्ण संपूर्ण (झ
४ ॥)।	का एक वर्षाद वा ताल (निर १ ३)। केडी	१ ४)। जाज न [क्षान] सर्वपेड सन
करंदु (यर) स हिन्नी नहां तिस बच्छा १ (१ ४ ४ १)। पदर रेगो केलिका (१ २ १२० जाल)। पत्र १ (यर) केले कर्य (यह १४ ४ १ केल्स १ ४१०)।	कर्रवासः। केस्रि केवो क्यक्रि (डुमा) । केस्रि वी [क्षे] कम्ब-विशेष (क्य १६ १८) पुत्र १६ १८)।	धंपूर्णं जान (ठा २ १)। गायि नामि वि [कानिम] १ केमब-बानसा पर्येव (कण यीप)। २ दुः इव नाम के एक धर्मन् केम अदीत कर्डमंत्री-कार के प्रक धीर्षकर (दव ६)। "ज्यास्य "त्रास साम
कंप न किंती है वह घर। २ विक्र,	के कि ) के कि कि की ? की का केन	केवो ज्याज (सिंहे वर्शः वरशः दशः)।
निशामी (पर ४)।	के की ) मनाव (दुना वाका कप्पू)। २ वरि	वंश्यत्र म [वर्षेत्र] परिपूर्ण शामान्य वीव
कंपण न किंदनी है वह बन्तु देही भीत।	हान होती, ठठ्ठा (वाका कोन)। १ काल-	(क्या ४ १२)।
२ चीपी का हाचा (शा ४२—पत्र २१)।	की सा (क्प्यू) की ते। आर कि किरा	केव्ह्म च [केव्ह्म] केवल विर्यं, याव
३ वेरेस वरित स्थान (वस ४)। ४ बनुष	भेड़ा करनेवाना विनोधी (रुप्पू)। कापमा	(क्या दशःश कहा)।
भी बुठ (बच १)। इ. महानी वकड़ने ना भाग (बुच १ ३ १)। ६ त्वाल, बच्छू (सावा)। ७ चंडाक्कटीटनं (भूग कुटी. पत्र बर सा १७६)। कस्पर देशो प्रेडम् (कुडा १७२)।	त किनते अस्तियात (वर्ण)। किन्न गिन्न कि किन्न रे विकोशी अस्ति-प्रिय (तुता ११४)। २ थूं व्यक्तर-वार्तीय देव विकेश (तुता ११)। १ थूंत- स्वाक-विकोश (यज्ञा ११ १)। अवना व [अवन]	केसकाम धन [समा+रम्] धाएन करवा युक्त करवा। केसतावर (वर्)। केपलि वि [केसविन] केस्त शास्ताव, वर्षेष (वर्ष)। पविकास वि [पाधिन]
खयर रिश्चितव्य गरीको ग्रीम बहु	कास-बह विकास-वर (कन्द्र) । विसास	है स्वयंपुत । १ वृ विनहेर शीर्यकर (मा
(उन १८, ११)।	व [विसास] विवास-सहस (इन्द्र) ।	१ ११)।
यर १ दि मंदिर्ग्य संस्था वर्णु	सामय व [द्ययत] बास राज्या (इन्द्र्र) ।	वेषाक्षित्र वि [क्षेत्रक्षित्र] १ केमस्त्रामास्य
प्रथा हे नस्यो जीत (स्कार १) है ४	सेक्द्रा की [शस्त्रा] नाम राज्या (राष्ट्र) ।	(मा)। २ परिपूर्ण, बंगुर्ला, धामास्त्र केमस्त्र
१११। १७६ आप प्री)।	बच्ची केले क्यस्त्रा (१११२) ।	प्रमाण (स्वि २६०१)।
परत म किंद्रय] १९६६ मध्ये नमम (ग्राय, कृत ४६) । २ नेतर नप (११ १६२) । वरिन्द्र विकित्त केत्र किन त्रिय त्राह (११ १ ४) बाद नान) ।	कसी थी [र] पनतो तुमन, प्राविवारिती भी (दे र ४४)। प्रसीतिक ति कियोरिको नेतीतिस स्पान में उन्तर (सम्ब ११)। केप रेगो के (सम पनता १७—गव ४४)।	ण्यविक्षत्र वि कियक्ति है देशल-बात वे वेबन्य प्रमोताला (वे १७)। १ देशीन- त्रीक (त्रुच ११४)। ३ देशन-बाति-वर्ण्या (ठा ४ १)। ४ म. देशन बात संपूर्ण बात (चार ४)।
करियारि [कोटरा] नैया निम तरह ना ?	रिने १८६१)।	क्ष सम्म व [क्षम्य] वेदन असः वेतीरा
(क्या)।	वर्षे (यर) देनो वर्दे (वृता) ।	वैदत्ती (नगर्भ टी दिन ११ )

हमस्त्रं की किनकी ज्योतिय विद्यानियोव (हास्य १२६ १२१)।

हस दुं [दिहा] केश बात (यर ०६ व सी प्रती २६)। पुर न [पुर] विज्ञाक पर विकार पर विकार पर विकार पर विकार पर विकार पर विकार केश वाक क्षाप्त (पर न पर पर पर पर)। विकार न विकार केश विकार पर किया पर विकार पर भाग विवार न विकार विकार केश विकार पर विकार पर विकार पर विकार का प्रतिव का विकार विकार पर विकार विकार

केस केबी केरिस । श्री सी (ब्लुट १६१) । केस रेबो किलेस (कर ७६० टी) थान २२)।

केसर वृ[कदीचर] उत्तम कनि मेह कवि (उप ७२ व थे)।

कसर पून [केसर] एक देवरिमान (देवन्त्र १४२)।

क्टसर वृंत किसर] १ दूज्य-रेणु पराग विज्ञाल । (सं १ १ : दे ६ : १) । र शिह क्षेण्यः के क्षेत्रा का बात्ता केसरा (से १ ४ सुन्धः २१३) । दे दु बहुत दुस् (क्ष्म्भः गडवः । पार्य)। ४ न इस नाम का एक ज्यान वास्त्रिय्व नगर वा एक ज्यान (क्षमः १७) । ४ एक विशेष (पार्य)। ६ मुक्स्यं कोगा। ७ स्ट्रक्तियोग (से १ १४६)। व पुष्पं क्रिये (पार्वक १११२)।

केमराको [कसरा] १ विष्ठ ववैरह क स्काव पर के बानों नी सदा क्षेत्रस्य व सीहार्स्ट (बाबू द१ मठक बाना)।

क्षमिर्दे [ क्षमिरेण ] १ जिह कमध्य कराक्षेप्रत (उम्र क्षेत्र के क्षेत्र भ्रम्पर्थ १ ४) । १ इस्पिटेश मीक्षम्य पर्वत पर व्यक्त हर (यम १ ४) । १ गुम्मिरेश मध्यक्षेत्र के मुर्च प्रत बागुरेष (यम १४४) । १६५ [ प्रत ] महम्मिरेश (क्ष

क्सिंतिमा भी [किसरिका] ताक करने ना काहे ना दुवहा (पर्या निते १३६२ दी)। फसरिक्त वि [केसरबन् ] वनस्वाता (गडा)।

कर्मात हो किमरी] रेग्री कमरिआ किर

क्टुंडियस्थलस्युर्यपुरावित्तववेसस्य स्थापार्थः (स्थाया १ १ —पत्र १ १)।

कसय पूँ [फेराम] १ धर्म-मक्रवर्ती राजा (सम) । २ धीकृष्ण वामुदेव शाससमा (शतक) ।

केसि वि [क्रेशिम] स्वेय-पुक निनष्ट (विधे विशेष)।

के सि पुं कि शि ] १ एक कैन पुनि अपवाल् पार्त्वमात्र के रिष्य (राज कन)। २ सपुर विशेष सरक करना को बारण करणवाला एक देश्य विवाको सीहत्या ने साय या (पुता २६२)।

देश रवर्ग देसि वृं [करिरान्] देवो देसव (पतम ७५, २)।

कसिस वि किश्चिक किश्वनामा बाव-युक्त । बी क्या (मूच १ ४ २) । केसी की किशी विचर्ष कमुदेव की माता

(पडम २ १०४)। "केसी की ["केशी] केशवाबी की "विदरश-

केमी' (वना) । केमुझ रेको स्मिन्न (हे १ २१ नर्ग) । केमु (वन) नि [कीटरा] कैसा, किस तरहा

का? (शक्ति यहः दुमा)। केहि (धर) सः सिए, वास्ते (हे४ ४२३)। केशव न किंतव] करट, दस्म (हे रे १३ ता

१२४)। कोम देवो कोक (दे २,४४ टी)।

कांश देश कात्र (बडड)। कोशंड देशो कात्र्ड (शय)।

क्रोआस सक [वि+कस्] विकसना विजना। बोमासद (द्वि४ १६६)।

कोमासिय IV [विद्धिति विविधित प्रदेश वित्त हुवा (कुमा वि २)।

कोइस पुंबिशिक्त १ कोयण शिक (पहर १ भ का २६ स्थण ११)। ए एक का एक येट (शिय)। बद्धप पुंबित्रहो बनमार्थ कियेर सतस्माटक (पहरा १०—

पत्र १२७)। कोइन्स की [कोस्टिया] की-नोवर दिनी 'नोहना पंतर्म नर्र' (यहा वास)।

'कोहना पंत्रमें नर' (धंगुः पास)। कोइस्य श्री [वं] कायता वात्र के सपार (दे

1 (3Y F

कोडआ की [व] पोध्य की धरित करीपारित (दे २ ४६) पाध ।

कोडम ) त विशिद्ध र तुनुहस्त धपुर्व वस्तु कोडम र केवल का मास्तिमाप (तुर २, २२९)। २ भारवर्ष विस्तम्य (वन १)। १ उपस्व (यम)। ४ अलुकता वस्त्राठा (वेबन १)। १ वस्त्रिकोपपि से स्ता के सिए विमा पाता कामज वस तिमक रक्षा-बन्यमापि प्रमोप (यस

र श्रांट्र-वीपारि से एका के सिए किया काका कामज कर तिसक एक्षा-बन्मकारि प्रयोग (एक्षा बीग किया १ ११ पण्यु १ २ वर्ष है)। ६ सीवाप्य क्षारि के सिए फिन्म जाता स्तरन विस्तापन, बुर होन वनेपह कर्म (का १ गुगवा १ १४)।

कोउपद्व वि [कटुप्पा] बोहा नरम (वर्मीव ११६)। ।

कोबह्छ | देवो कुऊह्ल (हे १ ११७ कोउह्छ | १७१ २ ११: चुना प्राप्त) । कोवह्छि वि [कुन्स्छिन्] कुन्स्ती कीनुसी

क्रोड्स । क्रोड्स । क्रोड्स । क्रोड्स । क्रोड्स । क्रोड्स

कोठवल } देवो इठवळ (हुमा; वि ६१) । कोठवल हो [काङ्कण] केर-विरोद (स ४१२) । कोठवण व [कोठण हो १ स्वर्ण के किरो

कोंकगर पूँ [कोक्रुगरु] १ धनार्य देश-विशेष (इक) । २ वि उस देश में छनेवाता (पर्छ् १ १ विसे १४१२) ।

क्षेत्र वृक्षिक्क १ रण नाम का एक धनार्थ रेश (नण्ड १ १) । २ वर्षात-क्षिम (ठा ७) । १ विष-विशेष (श्री ४४) । ४ रण नाम का एक समूर (दुर्गा) । ४ वि क्षेत्र देश घर निवासी (नण्ड १ १) । विष् वृक्षि विश्वासी कार्तिय, स्थ्रूप (दुर्गा) । वर वृक्षि विश्वास इस गाम का एक बीन (क्ष्यू-देश) थीरण वृत [चारक] एक बान प्रमा वहार (इस्

कोषिगा श्री [कुछिया] धारी भूनी (का

कॉथिय कि [कुद्धित] पार्ट्रावन संदूषिक पण्ड १ ४)।

कोटसय न [ वृ] १ ज्योतियन्समानी मूचना । २ शहुनावि निनित्तन्तमान्त्री मूचनाः 'पर्वस्ते वीन्त्रयम्म' (बीप २२१ स) । वीन्त्रयम्म' (बीप २२१ स) ।

कोड रेगो कुड (हे १ ५ २)।

क्रोंड र्नू [कीण्ड गीड] क्रेप-विरोध (इक) ।

क्रोंडल केने कुंडल (एन)। मित्तम पू मित्रकी एक म्यन्तर देश भानाम (बृह ٦) t कोंडरम र् डिण्डस है । एक विरेष (ग्रीप) । कोंडकियां की [दे] र रतापर जन्नु-विशेष साही रवावित्। र बीहा नीट (र २ ४ )। कोंदिम ने दि। वाम-निवासी सीखें में कुट नरापर ग्रंभ वे गाँव ना मानिक वन बैठने-बारा (दे २, ४४) । केंडियपुर न [कीण्डिनपुर] नगर विशेष (रात्व ३१)। कोंडिया केने इंडिया (परह २ १)। कींडिएम रेगो साडिस (राज) । कोंड केवी हुन्द (है १ ११६)। कोंतुम्लु र् कि उत्तर अस्य प्रश्निनीवशेव (R 2 YE)1 कॉन देशो इत्त (क्या ११ तुर २ २०)। बॉनस रेचे इंबस=हुन्तर (शह ६ र्वोत ४) । कॉर्नादेको कुठी (खासा १ १६—-पत्र 228) i कोंभी रेगो कुभी (शह ६)। कार दृंबार है । प्रस्ताक पत्नी (देव ४३)। २ इक मेडिया (इक)। बार्मिय पुंचे दि बल्-विटेच, शोमरी मीगरिमा (गग्ह १ १) । स्मे वा (लावा रे रे-पन ६६)। बांस्यद् देशी कास्याप (संदोध ४०) । वास्त्रापत (वास्मद्) १ रक दुवुर । २ नाम नमन (पग्ला १ स्वय्य ७२)। षाद्यांसय [रे] देनो श्राव्यांसय (१एह 1 Y-47 84) 1 कानुरुष देवी बुकबुरअ (हा ६—१व २७१)। पार्चमक [क्या+ह] पुत्रत्य साहात बरना बोसर (है? वह बहु)। वह क्षावन (कुना) । नंद्र चार्किय (बॉट) ॥ प्रयोग्धान (वर्षा) । प'कास 🖠 [काक्षास] इच नाम का एक बर्गेत बार्र (यम् १)। व वागिय [वे] bri कोआसिज (देश 2)1

कोकिय वि [क्याइत] प्राहत कुनाया ह्या (मिथि) । कोक्कुर्य देशो क्वकुर्ड (क्स ग्रीप)। कोलक्म देशो लासुक्म नहः कोशुक्रममाज (पि वश्र)। को कप्प न विषे सतीन-हित क्रुटी मनाई, दिशानदी हित (दे २, ४६)। कोकिय पूर्वी दि] शैसक नया रिज्य (थव 4) ( कोच्या न [कीरस] १ गोव-विशेष । २ पूंची. कीतम क्षेत्र में स्टलम (ठा ४—गव १६ )। कोच्छ वि [कीस] १ द्रश्चि राक्त्वी उत्तर से क्ष्मान्य रबनेवासा । २ व उदछादेत 'मफ़िवायारकलेक्डाल (१ वर्ज) इत्सी' (सामा १ १--पम ६४)। को ब्यास र्थ [वे कुल्सभाय] काक कीया, बाक्या 'न मछी शक्ताकृत्वी ध्यक्ति ज्य**द वीच्यवा**गस्त (एव)। कोच्छाञय केनो कुचल्रभय (हे १ १९१) दुना पर्)। क्षित्र देवी कुछ (क्य)। कोळप्य म [है] को-प्रस्य (१२ ४६)। क⊫ञ्चय**ेती कुञ्च**य (छाना **१** व—पव 19x): को करिज वि [दे] बापूरिक पूर्ण विवा हुवा, भर ह्या (बड ) । कांग्मारिज वि [व] उत्तर केवा (दे २, कोटर वैगो कोन्स (वेदय १२१)। कोर्टिच पुंचि वी (नितीन ११६१ ना )। वोर्टुम कुन [वे] दाव ने माम्स बन कोटु दो ननवरमानी (पाप) । वैधी कोट्टु स । कोटीर्वारस थ [कोटीवर्ष] साट टेन वी प्राचीन राजवानी (विवाद ४१)। कोट्ट वेला कुटू ≈ हुटुः वक्ट फेट्टिक्ससान (धारन)। बंद्र पाहिय (और १)। पाट्टन [प] १ नगर, सदर (दे२ ४१)। २ बोट, रिसा दुर्ग (छावा १ - पन १६४। जन व ा बंद हा ब्रेस देशका ११व)। दास 1 [\*पात्र] वोत्त्राल तपर-दत्तक (41x x £ 8) :

कोईतिया को [कुटुयन्तिक] तित गरैवर की बुरने का उसकरछ (शामा १ ४--१४ (e35 कोड़किरिया थी [कोड़किया] श्री-रिकेट बुर्गों धादि रह रूपनाती देशी (धापु २६)। कोड्रण देवो <u>जरू</u>ण (सर १७१ परह १ १)। कोट्टर देवो कोडर (नहा हे ४ ४२१ व १६६ म) ( कोट्टबीर पुं[कोट्टवीर] इत सम ना एक मुनि काचार्य किममुखि का एक किन्त (विके २११२) १ को हा और दि ] १ नी ग्री पानंती (दे ६ वेश-- १ १७४) । २ यक्ट पर्वन (का ££2) : कांट्राम र् [कोद्दाक] १ वर्गीक नहाँ (ब्बचार १२)। २ न. हरे क्यों नो पुष्पाने का स्वात-विकेप (बृह १)। कोहिन ई दिविशोधी नौका पहान (दे 2 x0)1 कोहिस पुन [कुर्वहम] १ छनसम पूनि (शासा १ २) । २ फरब-बंद बसीब, वंदी हर्दे वयीन (वं १) । ६ मूमि-सन (बूर ६ 🐔 )। ४ एक या मनेक इनावस्तावर (वर ४) । ३ कोपदी नदी। ६ छव नी चल। धनारकायेड् (हेर ११६) भाग)। कोट्टिम दि <u>[कृत्रिम ]</u> बनावरी बनाय [या बहुराकी (पत्रम ६६ १६) । क्षांट्रिक ) पू [क्षीहिक] कुरबर, धुवरी चुनय, कोहिस 🕽 थोडी (राज- विदा १ ६—प४ ६६ 1(3) कोही यी [दे] र शेष्ट दोहन : २ तित्र स्यतना (दे र ६४)। क्र्यट्ट्रिंस पूर्व [४] हाब हे याहत बार 'कोटदु में करदय बीए' (दे २, ४०)। कोट टुम थक [सम्] श्रीहा शस्त्र, स्तर करना। वोर्द्रमः (हे४ १६ )। कार्टुपाणी धी [कार्टुपाणी] वैत दुनि-दल की एक राखा (क्ले) । काह रेली इट्ट = इत् (मप १६ ६ ग्रास 1 (4) 1

बॉर-बोट्ट

ध्रेडु--ध्रेणस्य घोट्ट पूं [कोष्ठ] १ कारखर, सवपारित सर्व का कालान्तर में स्वरण-योग्य धारम्यान (लीर १७६)। २ मुक्यी इध्य-विदेव (राव १४)। कोट्ट | रेन्से सुद्ध = कोस्ट (खाया १ १) टा कोदुरा | ३ १) बाम) ! ३ मामम-विदेश मोर्च्य | धानाय-विरोध (धीप २ १) । ४ बरारक शेठपै (रस ६, १ जा ४८६)। इ. पेरव-विशेष (शाबा २ १)। मार न ["ागार] बाग्य मरते वा बर (बीप क्या)। २ मार्कावाद, मंबार (खावा १ १)। कोट्रार पूर [कोद्यासार] महत्त्रासार, भंडार (पंडम २ ६)। धार्द्र नि [कुछिम्] कु रोगी (भाषा)। कोट्रिया हो [कोछिका] यादा ग्रेष्ठ गपु नुबन (ठरा)। क्ट्टु रू [झाप्टु] मुक्तर विवार (पर्) । कोई है देनों कोर्यह (स २४६) । क्रोइडिय देने कोईडिय (क्य) । क्रोडंघन दिने नार्यकान नाम (दे ०, २)। मोहप चि रेगो कोडिम (पाप) । कोइर न [कानर] महाद कुल का बीव भाग विवद (यो १६२) । द्याहरू वूं [द्याटर] परित-रियेप (स्तम) । योहा शहि भी विदेशकारि दे समानिकार क्रोड़ को क्षेत्र में प्रतने पर मी संख्या स्राप हो बहु (मन १ %) वध्या द्वार )। योहान र् [योहास] १ योग-विदेश का प्रवर्त्तर पुरव । २ नः बाँवर्नवदेश (बन्द) । क्षक्षि की [कारि] १ पनुत का यस काव (ध्य ११६) । २ मेर, अरार (मिंड १६४) । न्द्रीहि की [कारि] र लंबना विदेश वायेए (गावादे क सुरक्ष ६७-४६)। २ सम्बार, मंगी नीप्र (ने १२ २६ राघ)। ६ वेटा विकास, यान 'अधिकानी पानी लीए बानगरनीरिविलीति' (पर ११ हा १)। शाहि देती पाहा-बाहि (नुग २८६) । यद्ध हि विश्व रपेश्मध्यमम (दर ६) : मूम की [भूमि] एर देश डोर्न (हो ४३) । सिना की [शाम] एक देश हो५ (पाप ४c

११)। सोध[शस्]क्रोड़ी पनेक करोड़ (गुपा ४२ ) । देवी फोडी । कोडिश न कि ? घोल मिही का पाव समु ' श्रुता महोरा (६२४७)। १५ शियुन पुर्वत जुगनकोर (पर्)। कोडिस ( किंटिक] १ एक पैन कृति <sup>†</sup> (बच्चे)। २ एक जैन-मुनि-चए। (कच्च ठा €)। कोडिश रि [कोटिय] संधेरित (धर्मस क्षेत्रहरूम् ) न [कीडिल्य] १ इस नाम का कोशिम ) एक मगर (सर् ६४% दी)। २ वास्तित योव की शाया का एक बीव (कप्त)। १ पुक्रीरिम्य गोत्र का प्रवर्शक पूरवा ४ वि बीडिग्य-वीषीय (ठा ७---पत्र ११०) क्ष्य)। १ वृंग्क मृति, को शिरमृति का शिव्य या (विवे २११९)। ६ महाबिर सूरि वारित्य एक वैन पूनि (कम्प)। ७ गोलन-स्थामी के पात दीया मेनेताचे पांच ही हारमी पा पुरु (उर १४२ धी) । ग्रेडिमा भ्रा [क्रीण्डम्पा] कौरिक-मोनीय स्मै (रुप्प) । काबित पू कि पियून दुवन कुपनकोर (वेट, ४ वर)। कारित देशे शाहिक (राज)। कोहिस ( चिटिन्य) इस नाम का एक ऋषि चाउरन धूनि (बर १६ बागू)। स्प्रोहितय व [कोटिस रक्ष] बालस्य प्रजीव गौतिन्द्राञ्च (धर्ग्) । कोहिमाहिय न [पाटिमहित] प्रत्याक्यान विदेश पर्ने दिन अपरान करके बुधरे दिन भौ "प्रशास को भी जाती प्रतिका (क्य ४) । कारी देना काटि (उन का ३ १० वॉ १७): बर्जन करणी विभाग रियम् (तिर १ ३) । जार व िनार] इम नाप का नोष्ठ देश का एक बंगर (शी १६)। यानमा की "वानमा] कलार यम को एक मून्युँना (टा क---यम १६३)। वरिम न [ वप] नाट था वी चनवारी मार रहेत (इर पर १०४)। अतिमिता भी [ बीरहा ] देन बुनिनापु बी एक

शाला (कप)। सर् दू [ धर] रते पति शोटीश (गुपा वे) । क्षोडीज व क्रिडानी १ इन धम का एक यात जो कीला बोत की एक शाबा कर है। २ वि इस बोज में उत्पन्त (ठा ७---पत्र को दूंब व [दे] कार्यकात (दे २,२)। कोडेंबि देशो मृद्धि (ठा ६ १—पत्र १२४) । कोड्बिय पू [कीटुम्पिक] १ हुटुम्ब का स्वामी परिवार का स्वामी परिवार का युखिया (मध्) । २ साम-प्रधान कौक का थावमी (पराहर ४---पत्र १४)। १ ति पूराव में बराज पूराव से सम्बन्ध रखन-वाना कुरुक-मध्यापी (महाः भीव १) । काडूमगर् कार्यह धन्त-विशेष शोरी की एक जाति (धन)। कोड़ विकिता बहु दिन वह सद्भर ६४२ है ४ ४२२। लावा १ १६--नत्र २२४ उप देश्य मिर्दि)। प्राप्तम देलो काटदुम (दुमा) । कोबुमिश न [रत] रहि-मीहा-विशेष (बुमा)। कोब्रिय वि [रे] पुत्रहरी भीतुवी विनोर शीम वश्तरिहत (वर ७६= ही)। कांब्ड }र्द्र[कृष्टि] योग-गिरेय कृत-योज कार्ड रिक्क साथा ११३ मार्ट)। श्रद्धिति (कुछिम्) कुड़-देग ने वस्त कुड़ रीपी (भाषा) । कोति कृति [चुनिक ] पूत्र-येको पूत्र कोडिय देवन (पएइ २ १ दिना १ ७)। काम रि दि र काला रवाच वर्णवामा (१२ ४२)। एष्ट्री समुद्र, सक्की पति (दे २, ४१, निष्टु १। पाप) । १ बीला वर्गेच्य बनाने भी सकती बीच्या-बादन-दग्रह (बीर १) इ काम । पुन [कास] योग वार वर वर कोसस्य ∫र्स्ककार (गाउट देन ४४। इसा)। बन्नाव र् [कीमव] रातम (राज (राज)। धानायम 🐒 [कारायम] मरागद् हान्ति नाय के अवन धावक का नाम (दिचार क्षेत्रामग**्रं [क्ष्मानक] करवर व**निर्रा<del>हेच</del> (T'7 1 1) I

२६४	पाइअस <b>रमह</b> ण्यती	श्चेणाद्यीश्चेस
कोगाकी की [क] नेकी मेठ (शह र)। कोशिल हैं दे शिविक प्रता मेठिल का कोशिला है कु शुर्मिक प्रता मेठिल का कोशिला है कु शुर्मिक प्रता मेठिल का कोशिला है कु शुर्मिक (पंता शामा रे र महा कर) कोशिह मा की [क] हुम्मा हु 'काशेठी' (खु द हारि तम ७६) केगी. कोशिह मा कीश्र (१२ ४२)। कोशिल मा किरतम हुएक के रोम के शिल्मम एक समा कोश्र (१२ ४२)। कोशिल मा किरतम हुएक के रोम के शिल्मम एक (एक)) कोश्र (११)। कोशिल की कुकदास (कम)। कोश्र (११)। कोशिल हैं [कोश्र ] केग्र के राम के शिल हैं [कोश्र ] हुएक केश्र के राम के शिल हैं [कोश्र ] केश्र के राम केश्र का साम कीश्र (११)। कोशिल हैं [कोश्र केश्र केश्र कु श्र का साम हु (छ १)। कोश्र केश्र केश्य केश्र केश्य के	स्थेष है किया   एवं नाम का एक एका निवाने वानर्यक मरत के साम कैन बीधा भी भी (बान पर भ)। सेटल ही हुटल - कुन । होनार (नाट)। सेटल ही हुटल - कुन हिंदल मान्य मान्य (बीम नंदर ना हुनात है र रूप)। सेटल ही हिनार पर हुटल (बीम है)। सेटल ही हिनार पर हुटल (बीम है)। सेटल ही होनार हुटल (बीम है)। सेटल ही होनार हुटल (बीम है)। सेटल ही होनार हुटल (बीम है)। सेटल (बीम ही)। सेटल ही होनार हुटल (बीम है)। सेटल (बीम ही)। सेटल ही ही होनार हुटल (बीम ही) सेटल की बीम ही ही ही ही ही होना है। सेटल की बीम ही	केलाई - केल केल केलाई केला केला केला केला केला केला केला केला
४)। २ कोलती केता (छ १६२)। इसरा और किसरी] मीरी कीट विशेष (सह १)। केस्सुस । पू किस्सुस । बस्तुके के कता केस्सुस । पू किस्सुस ।	क्रेसुइया टी [कीसुविका] धीस्टब्स बासुदेश की एक नेपी जो क्रम्य भी सुक्ता के समय बनाई बातों थी (बिसे १४७६)। क्रेसुई की [बें] पूर्तिमा कोई थी पूर्तिमा	कोरण्यीया जी [कीरणीया] इस स्थापी पर्ज प्राण की एक पूर्ण्यता (ठा ७)। कोरिट केबी कोर्रेट (शासा १ १ — कोरिट प्राप्त ४२ ६४ कोर्ट प्राप्त ४२ ६४ कोर्ट प्राप्त स्थाप

ł

विद्येष जड़ाँ सीत्रध्यमदेश समझन् का मंदिर है, सह नपर बक्तिए में है (दी ४३)। पास धत १) । वु विपास देव किरोप करानेन्द्र का ओक्पाल (ठा १ १--पत्र १ ७) । सुणय सुणह पूर्वी दिलक र बड़ा शुक्र पूचर की एक चारि जैक्ती नराह (दाना २ १ १)। २ शिकारी पुता (परास ११)। की विया (यएछ ११)। श्वास प्रव िवास] काह, सकसी (सम १६)। कोंड नि कीड़ी १ शकि का जासक वार्त्तिक मत का सनुवायी । २ वार्त्तिक मत स संबन्ध रखनेवालाः 'कोलो बस्मी कस्स छो। माइ रामों (क्यू)। १ त वदर-फन-संबन्धी (सग६,१)। चुण्य स ["सूर्ण] बेरका बर्खे, बेर का सत् (सम १,१)। (गुड़र) 1 द्वियन ["स्थिक] केर की प्रक्रिया था चळची (मग ६ १)। कोशंब वं दि विकट स्थानी (देश ४७) पाप)। २ गृह्व, वर (दे२ ४७)। कोलंग वं क्रिसम्बी दुग ही राजा का नामा : 233) I हुमा सद मान (सनु १)। कोडगित्री हो [कोडी, कारुकी] रोम बाठीय की (बाबू ४)। क्षोक्रपरिय नि [कीक्षगृहिक] पुरुगृह श्चनकी पिरामुक्त-संकाली पिरामुक्त से संकाल रत्ननेवाला (बचा) । 22) ı कोलजा की दि । यहर रखने ना एक ठाए ना नर्त (भाषा २, १, ७)। ब्रोहर देखों कोटर (गा १६६ म)। क्रोसन न [क्रीस्ट्रव] स्थोतिय-ध्यक में प्रसिद्ध एक करण (मिने १९४६)। कोरास पि [कीबाल] १ दुम्भवार-संयन्ती। र न निही का पाथ (बना) । भोसास्त्रिय र् [कीसासिक] मिट्टी का पान 1 (eFY वेषनेशसा (शह २)। भासाह वृ [को सम] साप की एक पाति (पराह १)। YX) i कोस्प्रदल पू कि विभी की बाकान पत्नी शास्त्र (देर, ६) । कोस्परत र् [कोबाइत] तुमून धौरपुन कोहा देखे चुद्धा (गुमा) । रीमा हाला बहुत दूर बानेशाना प्लेकप्रवार बोहाग देशी बुह्माग (प्रेंग) । 14

का बस्पुटशस्य (दे २, ५ हेमार य कोसाइजिय नि [कोटाइजिक] कोनाहम-बाशा शोरएसवासा (पठम ११७ १६)। कोकित वं वि एक भवन मनुष्य बाति (सक्दर १६)। क्यें किल ए दि दि कोसी उन्तुवाय, कुमाइन क्यका कुनजगाना (वे २ ६४८ छोटि, वच २८ उपयुर्शी। २ भागका की इर, मक्का (दे २,२४) पामा था २ असव ४ वह १)। क्रोक्कित्त व [वृं] जन्मुक सूका (वे २,४१)। कोखिस न [कोसीस्य] दुनीनता वानक्ती (कांकि १४६)। कोक्कीक्य वि किमेडीकृत । स्वीकृत संवीहत काक्षीण न [कीटीन] १ कियरेवी चोफ-कर्ता यन-मृति (मा ३७)। २ वि वंश-परंपराका कुलक्रम से बावात । ३ धतम कुम में उत्पन्त । ४ तान्त्रिक मत का सनुवायी (नाट---महाबी को और न दि जिल्ला रंगका एक वकार्यः। क्छीन्य कामीररस्यक्ष्यप्रेम (६२ ४५)। कोल्लग्य न [कार्ज्य]स्या सन्त्रम्या करणा (निचूरेर) । पश्चिमा "वश्चिमा औ िप्रविद्या विष्युप्रम्या की प्रविद्या (निष् कोल क्य पुंचि | श्रीवियोक्त और अपर कार्र के मानार का जाग्य दादि धरने का बौठा (याचा २१७१)। क्येलय पू [कीहोयक] श्वान कृता (सम्मत ११ वर्गीव १२)। कोस पुन [वे] कोयला नभी हुई शक्त्री का हुक्ज़ा (निष् १)। कोछ"र न [कोझकर] नगर-विशेष (पिंड क्रोद्वपाग न [क्रोद्वपाक] रक्षिण रेश ना एक नगर, जहाँ भी परपत्रदेश का मन्तिर है (दी कोसर पूँ [क] फिर, स्थानी थानी धरिया ( **4** 8 Yo):

254 कोहापुर न [कोहापुर] चत्रिण केए का एक नवर, महाजस्मी का स्थान (दी क्रि)। कोछान्दर् कीडासरी इस शाम का एक दैत्व (ती ३४) । कोल्लुग [वे] देशो कोल्डुश (वव १ वृष्ट् 1 (3 कोल्हाइल न दि एम-विधेप विम्बी-एम (देश ११)। कोस्टअ १ दि । भूगाम क्रियार (दे र ६श पाम परम ७ १७३१ १ ४२)। २ कोल्ह परबी उन्ह से रस निवासने का कत (दे २ ६६, महा)। कोव सक कोिपयी १ क्षित करना। २ कृतित करना । नोनेद्र (सूमनि १२१) कोबद्दरव (कुप्र १४)। कोच 🛊 [कोप] कोण पुस्सा (विपार ६. बास १७२) । कोचण वि कोपन | सेवी जोक-पुरा (पामः नुपा वेवध सम वे४७: स्वयन ≡र)। कोबाय पू [कोपैक] मनावं केत-विशेष (पव 308) 1 कोचासिक केंद्री क्रोक्पसिय (पाप्र)। क्रोबि वि [क्रोपिम्] शोबी शोब-पुन्ड (गुपा २०१३ चार )। कोवित्र वि [कोविद्] निरूण निवृत्त, धरित (याचा नुपा १३ १६२)। कोषिस वि [कोपित] १ कुद निया हुमा। २ दूषिय योग-पुक्त किया हुमछ 'बन्दो किर बाहो बामखंडि भनि कोबिम नक्तु (उप)। कोविभा की [वे] शूनाती विमारित (वे २ ४१)।

कोविजार पु [कोविदार] पुत्र-विरोध (विक

कायिणा की [कोपिनी] क्षेत्र मुक्त हो (मा

फोशज (मा) पि [कटुण्य] बोहा नत्म

कोस पु [के] १ दूनुष्य रंग छ रंगाहूमा

रक्ष बच्छ । २ सबुद्र जनपि सागर (दे २

कोस पूर्व किया होने मार्ग की सम्बाध का

परिकार को भीत (पप भी ३२)।

83) I

(R) 1

(सार् १२)।

9= }1 7

केव्यिपर्श्व क्यारमं (च ६२४)। ७ ध्राव्यान-राज्य, श्रम्भावे-निकरक व्यव वैद्य स्थान अस्त स्थान प्रमुख पुराचकः। त पुन. पानगाता व्यवकः (पान्ध)। त न नगर विशेषा पोर्च नाय नवर (ध ११६)। पाण न प्रियान प्रीतं नाय नवर (ध ११६)। पाण न प्रियान प्रीतं कराव (या ४४४)। प्रियं पुराचन प्रमुख्य १ प्रमुख

क्तवार (सन) :

(वर्ष ६)।

कोस ५ किशा, पी १ कशना क्यबर

(लामा १ १३१३ पटन ६ २४)।२

तत्रवार की स्थान (सूच १ ६) । ३ कूब्मल

'बमबबोसम्ब' (धुमा) । ४ तुक्ब

क्सी (मडह) । ३ योग बृत्तारार' के युह

मैरिय**न रकोनरिर्धियनप्ररंतरंतर र**पस**र** (सुपा

२७३ गउड) । १ विक्य-मेद, दल लोहे

ना राग्रे भीया शरफ पूल सम्हे

कार्मविमा औ [कीश्वास्त्रिका ] कैन्द्रमित्र गढ़ की एक ठावा (क्ल्) । कीसी थी किशास्त्री नवल केत की दुवय-नवरी (दा १ ) विचा १ १ ) । काशा थी [कीशाक्ष] नालुकों ना एक वर्षे सर कारूएड वर्षाहे थी एक वर्षा भी कैसी

शिर-वर्ष्ण (१ ९ ११) । बासय न [वे काराज] नहु श्रापत श्रीय पान पान (१ २ ४७ पान) । बासस न [वीरास] पुरुषण निरूपणा मानुरी (दुना)

कासहर्श्वा सी [दे] पएशी पार्वती वीचे

बानुरी (दुना) ।

बानार न कि बीरी नारा, इनारवन्त (के १ ६८) ।

बानार १ कि बीरान कि कि बीराने कि बीरान क

कोसंक्षित्र १४ [कीराधिक] १ जोवम थेर में करणा कोस्तर केरा-सम्मती (यह २ ६) १२ वसोध्या में उत्तरन बयोध्या-चंत्रनी (ये २)। कोसंक्षित्र न [वे कीराधिक] प्रापृत मेंट, उत्तरहार (वे २, १२ सत्तर जुगा—सत्तानमा मे)। कोसंक्षित्रा की [वे कीराधिका] करर

वेको (वे २ १२: गुपा---प्रस्तावना ४) ।

(क्ष्यानुगारशनुर र स )।

(महा)।

कोसङ न [कीशस्य] निरुप्तता चनुसाई

क्षोस∎ न [वे] प्रावृत, बॅट उलकारः 'त

पुरनछकोक्ष्मनं नरबह्या व्याप्ययं कृपासस्य

कोसक्रमा 🖈 [कीशस्य] निपूशका अनुचार्छ

धर्मीम्या-मान्त कोमल देश (मय ७ ६)।

ध्योष्या-वयरी (पडम २

'वर् मञ्चनीरकोसम्बद्धा व श्रीश्रश्चिय स्मार्थि (शुपा ६ ६)। कोसका थी [कीरास्था] रातर्यंत राम की भाता (धर प्र १७४)। कोसक्रिज । विकीशक्रिकी गेंट, उपहार (दे २ १३ महार युपा ४१३। ४२७) चक्र)। कोसा 🗗 [कोशा] इस नाम की एक प्रतिब नैरगा, निगके थहाँ बैन महर्षि चीत्यसंख्य सुनि ने निविकार भाव से बलुपांस (बीमामा) फिया का (निवे ६६)। कांसिय विकियनी वीका नरम (माट---षेशी) । कासिय व [कीशांक] १ श्रृष्य वा गोत्र विरोप (ग्रीम ४१ ठा ६६) । २ वीलचें नदान का गीन (चंद १)। ६ वं उनुप पुरु, रूपु (बाध मार्थ ११) । ४ साप रिशेष अएडशासिक-मामक हाँग्र-विध सर्वे जिन्दरी मनतानु भीगरातीर नै अवीजिल रियामा (बारम)। १ मुग्र-पिशेषा ६ হস । চলুল । ৰ বাতাদেয়া অবাৰণী ६ ग्रीजि समुत्तकः १ दल नामका एकः छमा। ११ इन मान ता इक बनुरः १२

तमे को पणदुनशाला सरोध बाधीहरू । १६

धन्धिनार, मन्त्रा । १४ ईपारम्म (दे १

कीराक-मोशीन (ठा ७—वन ११)। १७ थी. कोर्सिंद (मा १६)। थी. कोर्सिंद (मा १६)। थी. कोर्सिंद (मा १६)। थी. कर्मिंद (क्य)। २ स्टब्स् मार्च एक स्टिंद (क्य)। २ स्टब्स मार्च एक स्टिंद वर-सन्त्र (पठम ७ ४४)। १ वर्च करा व्याप्त मेरिक साम्राम्य (पठम ७ ४४)। १ वर्च कराये (द्वार १६)। कोर्सिंद क्यों मेरिक वर्च (द्वार १६)। कोर्सिंद (क्य) १ कोर्सिंद (स्टिंद १)। कोर्सिंद (क्य)। कोर्सिंद (क्य)। कोर्सिंद (क्य)। कोर्सिंद क्यों कोर्सिंद (क्य)। कोर्सिंद की कोर्सिंद (क्य)। व्याप्त कीर्सिंद (क्य)। व्याप्त कीर्सिंद कीर्किंदी कीर्सिंद (क्य)। व्याप्त कीर्सिंद कर्मिंद कीर्किंदी कीर्मिंद कर्मिंद कर्म कीर्सिंद कर्म कीर्सिंद (क्य)। व्याप्त कीर्मिंद कर्म कीर्सिंद (क्य)।

१६६)। ११ इस कम का एक काल

(स्वि) । १६ वृंबी, कीरिक बोन में करान,

क्ष्माण देवर)। द वांतास्त्रात एक वर्ष क्षंत्राण वींचित्राता (वींचे) क्षेत्राम (व [क्षित्राता ] कुर्युन्नवास्त्रमी (वेंच) क्षेत्रमा व [क्षीत्राता क्षात्र (प्रका) । क्षेत्रस्त्रमा विक्रा क्षात्र (प्रका) । क्षात्रस्त्रमा कुर्युत्त (वींक्षा ४) । क्षात्रस्त्रमा कुर्युत्त (वींक्षा ४) । क्षात्रस्त्रमा कुर्युत्त क्षात्र (वेंच्या वेंच्या (वेंच्या वेंच्या वेंच्या (वेंच्या वेंच्या वेंच्या (वेंच्या वेंच्या वेंच्या (वेंच्या वेंच्या (वेंच्या वेंच्या (वेंच्या वेंच्या वेंच्

कोह दूँ [कोव] जाता, शीर्शन (कप १ ६)।
कोह दूँ [के कोव] जोवकी केना (रिते
२१व )।
कोह ति [काववर् ] होच-पुतः, कोप-सीरिण-वोरिए मन्त्रप्रदेश कोवार कोवार कामान-पण्ड (रिते)।
काह कामान-पण्ड (रिते)।
काह मन्त्रप्रदेश [कोयहरू वाह (रितेश्वर (रितेश)।
काह मन्त्रप्रदेश कामान-प्रतिक्रम्यान) होन पुतः विकास

वाइंड न [कृष्माण्ड] १ दुष्माएडी-प्रा

मोहित (रि ७६) है। १२७)। २ म

ची(त (हा ३ ३)।

बरसहींप मीत्र्यं।

बक्ट देखों कृत = कृत । (बा २६) । कैत देखों कित (हे २ ६१) । बत्यंब देखों रहेब (गवड़) । कित्यंब देखों रहेब (गवड़) । कित्यंब्य देखों रहेब (श्रम् १७) । कित्यंब्य देखों रहेब्य (यहड़ा । कित्यंब्य देखों रहेब्य (यहड़ा १ ) । बस्तु देखों हुए (यहड़ा १ ) । बस्तु देखों रहेब्य (सुना ११२) । बस्तु देखों रहेब्य (सुना ११२) । बस्तु देखों रहेब्य (सुना ११२) । वस्तु देखों रहेब्य (सुना ११) ।

।। इस सिरियाइअसहमहण्यवे स्थातस्मह्यंत्रसङ्गे दक्षमो दर्शयो समली ।।

ख

२ सव रोमवाका, शय-रोगी (मुपा २६६

स दू [का] १ व्यंत्रत-वर्ण क्रिकेप इसका स्वान वंदठ है (प्रामा, प्राप) । २ व. भाकारा, सम्पर्क 'पानित से मेहा' (है १ १५७ इसा हे ६ १२१)। इ दक्षिय (विशे १४४१)। सर्वाती १ वकी बन (बाम के २ ५)। २ सनुष्य की एक जाति को विद्या 🗣 बन से प्रापास में समन करती है, विश्वाबर ब्रोफ (ब्राध १६)। देशी साय ज्यान । राइ भी गिवि १ मानाग-गवि। २ इसी-विशेष भी बाबस्य-यदिका काराय है (कार २३ वर ११)। गामिणी 🛍 ["गामिनी] विद्या-विरोप निसके प्रमान से बाकाश में गमन किया वा सकता है (पसन ७ १४%)। पुष्पः न िपुष्प] सानात-नुभूध वर्धकानित बल्रु (दुमा)। साम १ तक [साम् ] संपत्ति-पुतः करना । साउर ) समाद सारवें (त्राक ७३)। हाइ वि [कृथिम] र सम्बाबा, नारावाबा ।

205)1 काइम वि [क्षपिव] गामित जन्द्रमिव (शीर) धनि)। काइ अर्षि (काणित) १ व्याप्त जटिया २ मरिश्व विभूपिय (ई १ १६६) ग्रीप- स 18831 लक्षत्र वि [सावित] १ बावा हुधा, बुक्क, क्ला (बाका स २३ । छन दू ४१) । २ भाकान्तः 'तह य होति च नयाना । बहती वैदि मणुरधी कमाकमाई न मुलेई' (स ११४) । ३ न, मोजन मलगु 'बाध्यस व पीएए व न य एसी ताइयी कुबद धरणा (पदा६२ साम ४--पत्र २७६)। काइका विकिथित लिम-प्राप्त क्षीका किम कायकाध्यवेदी' (बुद १६ १६१)। कड्म पुँ वि] हेनाक स्थमान (ठा ४ ४---यभ २७६)।

्र<sup>पृ</sup>्चित्रिकी १ क्षय विशास काञ क्ष्मूलन से कि वंबस्य विश्वस्थ क्षां व शहरहे कम्मपवडीसी बदएएँ (प्रणु)। २ वि स्वय से उत्पन्न स्वय-संकर्णी सब से संबन्ध रक्षनेवाला । ३ कर्न-नाम्य से उत्पन्नः 'कम्पनक्षप्रस्कानो कडमो' (निसे १४८६) कम्प ११%, व १६, ४ २२ सम्य २६: श्रीप)। काइन प चित्र] बेर्डा का समूह, धनेक लेट (日 (引 利) सहया की [सदिका] बाच-निरोप देका हुया धीड्रि-बान सामाः 'बह्रियमपायससहमा-नियोए" (मनि)। साहर पुं [सादिर] कुछ-विशेष केर का गाछ (याचा कुमा) । साहर वि स्तिविर विवर-कृत-पंकवी (हे १ इका सुवा १४१)। काइन हि देखों सहस्र (अ ४ ४--पन १७६ हो) ।

'वह मनम्प्रीदकोसस्बना य बीशाविद्य

कोसद्धा को [कीराक्या] करापनि राम की

क्रोसब्रिज न दि कीशकियों मेंट क्यार

(के २ १२) सङ्ग्रह सुपा ४१क। ६२७।

क्रोसा क्ये [क्रोहा] इत शम ही एक प्रतिक

इसार्डि (मृपा ६ व)।

मावा (चन पू १७४)।

सम्)।

क्षेसंबी की [क्षेशान्ती] बाद केत की कुक्क क्रीसग पूं [क्रोशक] सनुबंधिक एक वर्ष मन स्वत्रपद्ध चमने नी एक प्रचार नी वैजी

कोसय न दि कोराङी तद्वराज कोटा पान पात्र (वे २ प्रका पाद्य)।

क्रोसस्ट न [कीशस्त्र] कुशनता निपूलता, चनुधि (दुमा) । मोमस त दि] नीवी भाष इताराव्य (दे

भोसहदूरिमा वी दि । भएकी गानेती मीधी

गिन्दिशी बरन्धिय एक प्रकार की

कोसंक्या को [कोसान्यका] केलान-

क्तवार (चन)।

(वर्ष ६)।

क्स की एक खबा (क्रम)।

क्वपै (ठा १ ३ क्या १ ३)।

विष-मध्ये (दे २ ११)।

7 7 )1 क्षेसम १५ [कोसङ क] १ केनिकेन क्रोससमा र (पूर्माः नदा) । २ एक वैत नहाँप मुक्तिल कृति (पडन २२ ४४) । ३ कोसल **देश का राजा। ४ वि जोतला देश में उ**रका (स १,२)। १ पुर न ["पुर] वशीव्या नगरी (मात्र १) । कासका 🕸 [कोसब्स] १ अवसी-सिरोप

नैरमा, निसके बड़ा कैन महाय चीरक्तका तुनि ने निविकार भाष से बातुमींड (बीमासा) कियाण (विने ६६)। कोसिज विकोध्यी बीहा गरम (गाट---नेजी) । कोसियन [कीशिक] १ म्युप्यकाबोक किरोप (धित ४१ ठा ६१)। २ शीसर्वे नकाम का गोत्र (चंद १) । १ पूँ उभूक मुक् कम्मु (पान्धः सार्वे ११)। ४ सपि विशेष, वर्डमोरिक-नामक र्हाष्ट्र-विष सर्प विसनी सम्बन्ध सीमहानीर ने प्रकोषित

व्यक्तिचार, मन्त्राः १४ र्गुपारस्य (हे १

रियाचा (ग्रावम) । १ बुज-विकेष । ६ इन्द्र। ७ लहुन । ४ कोताप्यक क्रमान्त्री ६ प्रीति सनुष्या १ इन नामना एक यमा। ११ इस शास का एक श्रनुर। १२ कर्प की पक्रमुनेताका संपेश कार्यीहरू । १३

बना हुन्या 'कोनुमा बाला' (यस्त्र)। क्रोसुम्ह देखो कुर्सुम (वीस Y) । कोसेक्ष ) न [क्ष्रीरोय ] १ रेटरी स्थ कोसेजा रेहमी क्या हि २ १६१ वर्ग १४३ थ्या १ ४)। २ **४ स**र का नेनी ह्यायक (वी४३)। कार पूँ ["कोम] प्रसा कीर (बोन २ वर्ग का भ रे)। मुंद्र वि [मुण्ड] सीव-चीत (स ६,३)। कोड पुं[क्रेब] सहना सीरतंता (पन १ ९)।

'केक्सकोतीपनिद्वदेवारा' (भीप) ।

(विरि १ ३७)।

कोसंध वि [कीसस्य] कुर्तृत-सम्बन्धी (रेंप)

क्षेत्रस वि [क्षीतुस्त ] कुन सम्बन्धी कुन का

कोइपु [दे कोम] नोबती वैता (मिने ٦٤ ) ١ कोइ वि [ होधवन् ] होप-पुक, कीप-विधि क्रोक्राए वालस्य मावार सीकार् "वालान-ए।ए (पां)।

कोहराकपु [कोसङ्गक] पश्च-विशेष (धीप)। कोई स्थण ह [काभमान] ओर-पुछ रिन्ता (बार ११)। कोईड व कियावडी १ क्याएडी-कर.

रोहेंस (प्रिंथसः १८११)। र म

देव-विमान-विरोप (शे १६) । वे श्रुं व्यक्तर भेगोस केन्द्रावि-विरोप (यव १६४) । कोई की [कूप्साप्यी] कोई के गाव (हे १ १२४-६ २ १ दी) । विमान के प्रस्ता ११ छो प्रशासीय (तम १७ पतम ११ छ) । २ श्रु पन नाम का रावण वा पढ़ पुमर (पतम १६ १२) । कोइस्डिम की कुम्मद्राविक्य ] कुम्बी हुमुन्न मेनी । की आ (या ७६०) । कोइस्डिम की कुम्मपिकक्य ने नोहेंडा का

'जह संवैधि परवर्ड नियंगवर्ड

मरमहूपि मोचूएं।

तह मण्णे कोहसिण, धर्म करसीय क्ष्मिट्टीश (गा ७६०)। कोहस्टी देवों कोहस्टी (ह २ ७३। दे २ १ टी)। कोहस्टी की कोहस्ट (यह)। कोहस्टी की कोहस्ट (यह)। कोहस्टी की कोहस्टी (यह)। कोहस्टी केलो कोहस्टी (यह)। कोहि शिक्षिपिन् किसी कोसी-समायका कोहि शुम्माकोर (क्ममभ,१४ वह २)। कीरम देवों कडरण (ह १ १ वह)। किसम देवों कडरण (ह १ वह)। किसम देवों कडरण (ह १ वह)। "समुद्र देखो सूर = सूर। ( वा २६)। होट देखो "मेर (हू २, ११)। कर्तांत्र देखो पीड (गउड़े)। कर्तांत्र देखो रहेत (हू १ ११)। करात्र देखो रहा (शापू १७)। करात्रण देखा स्वाप्त (शाप्त १७)। "विश्वांता देखो निया (गुण ११)। कर्तु देखो खु (क्या प्रति १७) बाद १५)। कर्तांत्र देखो रहेतु (गुण ११२)। करेलु देखो रहेतु (गुण ११२)। करेलु देखो रेखा 'जारखेद व खर' (ट्य १२८ दी)। करोड़ी देखो रोखा (गयह १३)।

।। इस सिरिपाइअसङ्मङ्क्याचे स्थापारमङ्ग्रेष्ट्याणी इसमा तरंगी समती ॥

ख

२ लव रोमबासा सव-रोनी (मुपा २३३

काइम वि [श्रुपित] गारित छम्पुनित (धीप)

लाइल वि[काभित] १ प्याप्त, वध्यि । २

मरिक्त विमूचित (हे १ १६३ धीप स

काज वि [कादिय] १ बागा ह्या पूक,

इत (हिंदि) १ व्योजन-वर्ण विशेष इसका स्थान रूएठ है (प्रामा, प्राप) । २ न. बाकारा स्पन्त 'पक्री से मेहां (है १ १०७ कुमाः **३** ६ १२१)। ३ इ.जि.व (विसे १४४३)। गर्वां शि १ पत्ती आग (पास दे २ ५)। र मनुष्य दीएक वाति को विद्या के बन से धानाश में धमन करती है, विश्वावर सोक (साध १६)। देशी न्यय = खन। गङ्ग भी ["गति] १ मालारा-गति । २ भर्म- । विरोध जो मान्यरा-पविका कारण 🖁 (कम २,६ नव ११)। गामिणी 🖷 "गामिनी] विद्या-विरोध जिसके प्रमाद से भाकारा में पनन किया वा सकता है (पडम ७ १४१)। पुष्पः न [ैपुष्प] बारारा-कृतुम शर्सवानित वस्यु (कुमा) । इतमः १ धकः [सन् ] धंपति-द्रुतः करना ।

मह की शिक्षि है वास्तर-मिन १ कर्ज-दिशे को साम्राज्य कि कर कारण है (क्स्म पूर कर ११) मारियों की शिक्षिमी | विद्यापियों निष्के प्रधार के धाकारण में पानन किसा का करण है (क्स्म क १४%) । पानन किसा का करण है (क्स्म क १४%) । पान है पुरान वासाय-स्तुम सर्वस्रवित वस्तु (क्सा) । स्त्राप्त व पान प्रधान करण वास्त्रव्य करणा । स्त्राप्त व प्रधान करण करणा । स्त्राप्त व प्रधान व प्रधान करणा । स्त्राप्त व प्रधान व प्रध

१७६) ।

मवि)।

25A) I

लाइअ ) पूँ [स्रायिक] १ सय, विनास जिल्लान सिकि वेबस्र ? बहर खास सहरहं कम्मपबडीएं बन्एएं (द्वारा)। २ वि शय से रूपप्त सम्बंधनमी अस से र्चनन्व रखनेवाला । ३ कर्म-नारा से कराहा 'नम्मनवयसङ्खो खद्दमी' (विसे ३४११ कम्म ११४ ६१६ ४२२ सम्प २३ और।। स्वक्ष्य न चित्री केटी का सहक, धनेक बेट (पि ६१) । लड्या की [स्तरिका] बाध-विरोध देसा हमा वीदि-भान सावा 'वहिपनगायसकाइया नियोएं (मनि)। ताइर पुं [सादिर] बुझ-विशेष, बीर का माछ (शाचा कूमा)। स्तहर वि [न्यादिर] बहिर-बृद्ध-संबन्धी हि १ । (इद्रई क्राप्ट वर्डे **सार्य दि] वेको लाइअ (**ठा४४—पत्र १७६ टी)।

तुरिमे तुरमं शार्खंच भूंच मुद्दावर्षं (सुरा

सरद-संबद्ध

साउद्व वृ सिपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वैना-वार्व (पारम प्रावृ)। दाउर मक [ इ.स. ] १ चुल्य होना बर से शिक्षन होता। २ सक कनुदिश करना।

बरुष (हे ४ ११३) दुमा) 'बरुरित विश्वक्तं (से १, ३) । स्तार वि [व] क्तुवित 'दरद्यविवदशविष्दु-मध्यक्षत्रसं (वे र ४७ स १७ )।

कार न [शीर] चीर-इमें, इवानत (हुन 8=4) | स्तत्र पून सिपुरी वैर परिष्कृता विकास रस नार (बृह रै निष् १६)। अविकास न ["कठिन इ] बाल्सी ना एक प्रचार का पान (निमे १४६६)। सार्वरिभ वि [श्रुष्य] बचुनित (पान द्य 1 (8

र्ष्याद विमा हुमा (से १ ४६) । सहरिम वि [न्युरित] धरिरत्त, निग्हाना हुमा (निवृध)। सहरीक्य 🕅 (सपुरीकृत) बॉद क्येया को द्यक्ष विकास किया हुआ चनुद्धीचमी य चिद्रीकमी य

लहरिज नि [बीरित] पुरिस्त शुक्ति केत

चतरीक्यों व महिशामी। बम्मेरि एन जीवो वाड्यावि मुरक्द केल' (उप)। लकोपसम ५ [चयोपश्रम] दुख ऋव का

वितास भीर कुछ ना वक्स (क्स)। स्रजोपसमिय नि [स्रमोपशमिक] १ तके पराम से उत्पन्न श्रामीपराम-संकर्मी (बन १४२ । ठा२ १ मन) । २ दुवः, सबोक्सम (मग विमे २१७६)।

राज्यर पु वि । पनाश-कृत (वी १३) । र्गुणर पे न्याहर रोजा सेकट, विकय की बार्खनी स्तान्धे ना शीपत्र देश का एक मार्थि, विश्वकी दूजरात के राजा विश्वसान में मारा ना (ती ३)। नद्व ई िंगड़ा क्यर विरोद, धीराष्ट्र का एक नवट, की माज नन 'बुनावड' के नाम ने प्रतिब है (दी २)। संघ कः [इ.प्.] १ लीक्ता। २ वस्र्यं करता। वीचा (स्वीत): फालव्या शुरिक-

28c) 1 क्षेत्रिय वि किसी १ वीचा हवा (स १७४)। २ वह में किया हुया (यदि) । स्रोज यह 🕻 सञ्जू 🛚 बंगहा होना (स्प्यू) । स्तंत्र विक्तित विवक्त वेद पूरा (पुरा २७६)। संब न [साझा] पाड़ी में लोहे के डीवे के पाछ श्रांचा वाता साम बादि का बील कपडा----जो देख मानि 🛚 मीनाना हुमा चहुदा 🐌 🖣 वयाः 'खंत्रक्श्यस्यक्षियः' (उत्त ६४ ४) । र्श्वजय प्रक्रिया है एवं प्रकार विरोप (सुरुव २ )। चौडण पु चित्रजनी १ प्रिमिनिश्चेय चम्बरीन (वे २७ )। २ इत्र विरोध 'ताइवस्थान्ध-वस्त्रपुरवारकीरदुरवर्तवारें (स २१६)। लीवज पू [दें] १ कर्बन कीशह (दे २ ६६) पत्र्य) । २ कम्बन काबब, नपी (ठा ४२) । वे यारी के पहिए के गीतर का काला की व (सर्छ १७--पत्र १२५)। स्रोबर पूर्वि भूका हुना पेड़ (११२,६८)। स्रोता की [साझा] सन्द-विशेष (दिव)।

पैतृबुच (क्प्यू) । क्तंड ४६ [क्रण्डम्] तोत्ना १६क् करना, विश्लीर करता। चंडर (हे ४ १६७) । करह संबिद्धत (स १६ १२ मुपा १६४)। **१**ए संडिक्कप (उमा)। इन् संडियन्त्र (उप **६२** ≈ धी) । संब पु सिपड़ी एक गरक-रवल (बेरेन्ट २६)। काम न ["काम्य] सीध काम्यान (क्रम्बद्ध ४) । खंड (यर) केनो सामा 'मुझैर्स्ट बंडर बंधर

खेंबिश निकितिती को अंत्रहाइम्य हो

वर्णी (प्रति)। संद्र पूर्व [लण्ड] दुक्त थेरा, विस्ता (इ. १ १ १ जुमा) । २ चीनी मिल्से (इर ) । इ. पूर्णी का एक ब्रिस्था 'सल्बोड — (बाज) । यञ्चम पु विस्को किसूक का कर्णनात्र (काला १ १६)। प्यकाया भी किया हा वैद्याल पूर्वत की प्क कुछ (हा १, १)। सय प्र विश्व विच्छेर-विशेष परार्थ वा एक हरक वा

पात्र (शाया १ १६) । सी व [शस्] दक्का-दक्का खएक-बर्ड (पि १११)। भिय रेको भय (छ १)। लॉडन दि | १ प्रता, शिर, मलका १ बार का बलान, मच-पाब (दे २ ६०)। र्लंडई क्ये 📳 यक्ती क्रुवय (६ २ ६७)। संडग पुन [साग्डक] चीना दिला (स 2×3) ( लॉक्स म [माय्यक] शिक्तर-विशेष (दार इको । र्वाहण ग (मान्डस) १ विक्क्षेट, प्रत्यत गाउँ (लावा १ a) । २ कराइन, बान्य नवैष्ट् का वित्तका धनाय करताः 'चंत्रतस्थाराः विश्

कतक (सुपा ४३२)। लंडण की [लग्डमा] विच्लेद, नियर (कपू. निष् १) : संबप्रृ पू [सण्डपर्] १ च्<sub>रस</sub>्, दूपार्प (विपार ६)।२ इत्तं, ध्या ३ सम्बार हे व्यवद्वार करनेवाचा (विदा १ १)। संडरक्स र् [क्रण्डर**क**] १ शर्थगारीन कोतपान (छात्रा १ १ फ्ट्राइ १ ३ ग्रीप)। २ कुरूपल चुंबी बच्च करनेबाला (छाना १ १/ विशेष २३३ । छीप)। कोडम न [स्प्राप्टर] इन्ह्र क्या बन-विदेव

कम्में (बुपा १४) । १ वि भारा करनेताना,

1 (x) 1 संद्या की न्विपट] मिली, बीमी, रुपर, की (धीय १७३) : र्लंडर की [लय्डा] इस्रवाय की एक विधायर क्षम्या (वहा) । र्मशत्रीहे य [सरक्षत् ] दुवरा-दुमार कर्क्षक् (एस सामा ११)। बीक्य वि किती दुवना-दुवस किया हमा (पुर

विसकी यदुंत वे बसाबा वा (नाट-केडी

**24 48)**1 मंद्रासणि देवचा न (**शु**ण्हासणि श्र**ञ्**न) इत बाय का युद्र विद्यावर-नवर (इव)। र्व्यक्षप्रच व [स्वय्हावर्त्त] इस माम का एक

विद्याबरनपर (इंड) ।

'लंडाईड वि [सप्तसप्तड] हुरुद्द-हुरुवा मिन्सा **पू**रत (सुपा ६०१) । संदिक्ष पं [सण्डिक] छात्र, विदार्पी (भीप) । र्सक्रिय वि [सण्डत] क्षिण विकास (हे १ ५६ महा)। संबिध प् दि र मागव माट, विख-पाठक । २ वि सर्तिवार्ये निवारत करने को सराव्य (दे२ ७८)। -अविका भी (कण्डिम) चएव दुवना

(भ्रमि ६२)। संविद्धा की [व] नाप-विशेष बीख मन वी नाप (सं २४)। संबी को वि १ प्रयक्षाय, क्रीटा प्रम क्षार

(छामा १ १०--पत्र २६६)। २ विश्वेका क्रिप्र (खाया १ २--पत ७१)। थ्लंड (प्रप) देवो आग्ग । दुक्छती में चांड्र

नहरें हैं (प्राप्त १२१)। लंब्स न दि । बाह-काब, हाब का बाह्यका

विरोध बासूबंद (शुक्त १०१) । -लंडच देवी संडग (१४ १४६) । स्तंत पू [व] पिता वाप (पित्र ४३२ सूब ₹ ₹ 1 € 1 € 1 र्शत देशो स्ता।

**अंत वि [शान्त] बमान्धीय जगान्यूक (श**र ६२ क्षी कम्म भवि ।

संदर्भ वि भिन्दस्यी समान्योग्य माठ क्यूने सायक (विक्र वैदा श्रीदे)।

इसेंटिको (कास्ति) खमा बीवका समाव (क्या; महाः प्रामु ४६) । लंति केवो स्ता।

संतिया ) की हिं माला अननी (पिड स्ती (४१) ४११)। न्त्रेत् पू [रहन्द् ] १ काविकेच, महाचेत का

एक पुत्र हि २, ६, मामा छाना १ १--पत्र १६) । २ राम का स्कन्दशास का एक सूधा (परम ६७ ११)। "कुमार पुं ["कुमार] एक केन मुनि (तव)। राह्य पुँ निहारी १ स्थानकात कारक स्थानकार (थ १) । न कार-विकेश (मान १ ६) । शह थूं िशही स्कारका उत्तव (छाया १ १)। सिरी

की की एक चौर-सेनापि की सर्या का नाम (निपार १)। **श्रां**र्ग ) दूँ [स्क्रम्युष्क] १-२ क्रमर वेजी । ३ क्संद्य ∫ एक कैन शुनि (उचा भग धंता शुना ४ व) । ४ एक परिवासक नियने भगनाम्

महाबीर के पास पीछे से बैन दीजा सी पी (पूर्णादश)। लांबुरुष्ट् न [स्डम्ब्स्ड] शाक्ष-निशेष (बर्मेस 1 (183 संविद्ध पूँ (स्क्रान्थ्रिक) एक प्रथमात वैनानार्व विक्री मध्य में बेगावमों की निषि-कड़ किया

(यच्छ १) । लांध पू रिकाम मिति मीत धोबार (माबा २, १ ७ १) I

स्तंत्र पुं[रक्त्य] र पुत्रम-प्रचय पुत्रवींका पिएड (कम्म ४ ६६)। य समूह, विकट (विसे €ं)। इ. कल्याकॉब (कुमा)। ४ पेड़ का वड़ बहाँ से राजा निकलती है (कुमा) । १ सन्द विशेष (पिंच) । करणी औ ["करणी] साध्यमें को पहलने का अपकरण निरोप (भीष ६७७) । संत वि [ सन् ] स्थम्बनला (सामा १ १)। बीच प्र ['बीम] स्तन्त ही जिसका गीम होता है ऐसा करली वयेषहका वाद्ध (ठा ४,३)। साकि र् ["श्रासिम्] स्क्तर देवों की एक

वाति (चन) । सर्थागा र् [दे स्क्रवाग्ति] सूत कहाँ की माय (दे२ ७ पाम)। र्राधमंस पू [व] हाच, भूबा, बाहु (व २,

रुपिमसी की [दें] स्कन्त-विट्ट हरू (यह )। राध्य केरो सांच (पिय)।

संवयद्भिको वि स्टन्वयप्ति हल भूभा ( T T 187) 1 संघर पूंडी किन्धरी तीवा गना चरश

(सए)। भी स् (वहा)। संबद्धद्वि भी वि स्कम्पपिष्टि सम्बन्धिः हाव पुत्रा (धर्)।

संध्यार रेजी स्पदापार (महा)। र्यपामार रेपो संगातार (प्राष्ट्र १)।

र्धवार पू व [६६म्बार] केश-किशेष (पत्रम 8c 44)1

संघार देखी लंबाबार (परान १६, २० महा विवे १४४१)।

संबाद्ध वि [ स्क्रम्ययम् ] स्थ्रम्यवादा (सुपा 23E) 1 संवाबार पू (स्ट्रम्याबार) धावनी शैन्य का

पकाम शिक्षिर (ग्रामा १ म स ६ १ महा)। संघि वि रिक्षेत्रम् । स्क्रम्बनासा (घीप) ।

संधित केलो संधि (स ६१७)।

र्खंबी की केवो साथ (मीप)।

अविधार पूर्वि बहुत बरम पानी की नारा (दे २ ७२)। स्रांप एक [सिक्] सिक्षना, विश्वना।

संपद्ध (मवि)। क्षंपणय न दिने वक, क्यका वहतेर्यासम नवनवच्चां राजविषक्या संदेशे (धुरा ११)। क्षांस प्रेलियमी बाना बना (हे १ १८७

९ ४० ६। सम्द्रमङ्गी। संस सक [स्क्रम्] सुन्द होता, विश्वतित होना । अभिना सैमाएना (ठा ६, १---पत्र

₹₹₹) ≀ संमितित्व न [स्तम्मतीर्थ] एक वैन तीर्व ত্ৰথত থা সাধীন 'প্ৰমন্তা' দৰি (মুখ

लंमक्रिम वि स्तिनियाँ चेने है बांबा ह्या

(इड वह)। र्शमाइच न [स्वम्मादिस्य] पूर्वर देश का एक प्राचीन नगर, को भावकत 'बंगल' नाम से प्रस्थित है (ती २६)।

वांमाध्या = [स्तम्भाद्धगन] धन्मे 🛭 भावता (पबाहर को ।

सारकारम पून [वि] सूची रोडी (वर्ष १)।

सामा पूर्व [साह्या] १ पतु विरोप, वेंहा (बय १४व पण्ड १ १)। २ पून, चनवार, संसि (हे १ १४ स १११)। पैणुला की ["बेतु] पूर्व नाष्ट्र (रह)। पुरा की िपुरा विधानमें की स्वतान मसिक नवरी (अ. १. १) १ पुरी की [पुरी] दूनी छ 🗗 धर्षे (इक्)।

कागस्यिम न [स्त्रहुमास्त्रीहुम] हाउपार मो थवादै (सिरि १ ३२)।



स्रणेस (यावा)। क्वकः स्वन्नमान (चि १४)। न्याप पुँ [क्वाय] काल विदेश बहुत थीवा तमस (दा २ ४ है २ २ वतव प्राप्तु १४४)। आह वि [सीनिम] काणमान प्रश्यामा (पूस १: ११)। संद्राद वि [स्रकृत] याजनेकालकर, वर्गिष्ठ (द्यवन क १ १, सा ४२३ विते ११४)। या क्ये [स्र] प्रति एत (तर ४५६ दो। न्यास्त्रमान ) क्याल स्वत्रमान स्वत्रमान कार्यास्त्रमान (च्यालाम करता। त्याल कार्याद (च ६०४)। कहा स्वम

ल्यात हि [स्वतक] बोरनेवला (छाया ११८) स्वयण हिलातन] बोरना (परुप ६६ ६ जप ६२११)। समय केती स्वर = ल्ल्स (पावा छवा)। स्वयप हि [सनक] बोरनेवाना (६१ ६१)।

रामादिय वि [स्थानित्र] मुशका हुका (तुवा ४१४ महा)। स्थाम की [स्थान] बाक्र (तुवा ३१)।

स्प्रिया । देवो स्प्रिय = सर्विक 'सहादया राजिया । नागपुषा व्यक्तिका' (मृ ११२ धर्मर्स २२व)। उपियान [स्प्रियान्त्र] चोरने का घरन, जल्डी

(हे भ भ)।

उद्गीय वि [श्रिणिक] है व्यक्त निरुग्तर कार्या अंद्रित हिश्चिम है।

बाता नाम पंचा के पहिला 'मी दुम्हें कि वस्ते वर्णिया हम इंद्रु मेहिल्मों (साम बहे)। याह कि विचित्र में दुम्हें कि वसले हो। याह कि विचित्र में के वसले हो लाज निजन्म सामने साम विच्या का वस्तु कर वसले सामने सामने

स्त्रीतिय वि [स्तिनित ] गुण हमा (नुता ११६)।

रत्त्री देवी स्पेति (वार्ष) । राजुमा की [ब] वन का बुक्त मार्ववक वारा (४२ ६०) ।

रराज्य न [द] नात खोद्य हुवा (दे २ ६६) - बृह् ६: पर १) । जराज्य पि [सम्य] बोदने पीग्य (दे २ ११)।

हाळ्यु देत्रो साणु (दे २, १६४ पर्)। लच्युभ पुंदि स्याणुङ] कीसक बॉटी #्य (६२,६० सा६४०४२२ म)। श्रत्तन कि दिशास को सामा (के २ ६६: पाप) । २ राजाने तोड़ा हुथा (मीज **३८)। ३ सँग भोरी करने के लिए बीकाल** में किया द्वा छेर (उन पूरिक्ष छामा क् १८)। ४ भार, गावर (उप ४१७ टी)। स्यमगार् [सनक] संव नवाकर चोधे करनेवामा (खाया १ १८)। <sup>क</sup>ल गय न ] िलानन] सेंच सवाना (लावा १ १a)। मेह् पूं ["मेघ] क्येप के समान रसवासा येच (भय 🛡 📢)। कारा पू [शुद्र] सन्तिय मनुष्य-वाति-विरोप | (मुपा ११७ उत्त १२)। , श्वच वि [क्रात्र] १ धनिय-धेवन्यी सर्विय का। २ न समियत्व अभिवयन प्रश्नह यक्त क्रेड क्रेड इसे (बम्म = धी स्तर्चय पुदि] १ चैत चौक्नेपाला। २ सेंब समावर कोचै करनेवासा । १ प्रहु-विधैय राह (मग १२ ६)। राचि प् वि] एक म्लेक्स-वावि (मृब्द १५२)।

१११)।
स्वरित बुंबी [सनित् ] नीचे केवा 'क्सील केट्टे यह संवतकर (यूप १ ६ २२)। स्वरित्तक पुंची [सनित् ] समुद्ध में एक मानि त्वत्री पान्य (पिप हुमा है २ १८३, समू ६)। कुक्तमाम वुं [सुण्डमाम] नगर-निरोध वहां सीनस्तीरी केवा अन्त हमा वा (त्वत ६ १६९)। दुबंदार न [सुण्डपुर] पूर्वत्व हो वर्षे (वाचा २, १४.४)। 'विश्वा की [विरा] पनु-निवा (तृष २ २)। स्वरित्यों ) थीं [सन्तियाणी व्यव्यानि

राधियाती है मी की (तिय कर्य)। राह व [क्] प्रभूत नाम (पैचा १७ २१)। राह्म कि [क्] १ कुछ, जीतत (दे २ ६०) मुता ६१। का द्वा २६१ तता भति।। २ मुता ६१। का द्वा २६१ तता भति।। २ मुत्त कृत महत्व माहे नाहुनामी तहा

२ प्रमुद्ध, बरुव पादे काडुलावी तद रिया तैय मुद्दर्शिर (मार्थ ११४) देश १० पर २, इर ४)। दे स्थित बहा (धोष वे ७ ठा वे ४)। ४ घ. योग, जन्मी (बाजा २ १ १)। (वागिम्स वि िवागिक ] समृद्ध ऋदि-गंपना (धोष ८६)। लम्ब [व] वेचो स्वच्या (वाप)। सम्भाग केचो स्त्रम = नत्। सम्भाग की हिन्दी एक प्रकार वा बृता

(इह १)।

साप्पर पृं [क्पैर] १ मनुष्य-माजिनिकेष

पत्र वर्षाम कमराएवेनु पत्रमं से बामपाएं

वर्ग (र्रमा)। २ मिना-मान कमान (मुना

४६१)। १ बानके कमान (है १ ६२१)।

४ वर वर्षेपर काइन्द्रम्म (रवस २ १६६)।

सारवर ) वि हिं ] कम कबा निद्धुत

सारवर ) वि हिं ] कम कबा निद्धुत

सारवर । वि हिं ] कम कबा निद्धुत

सारवर | वि हिं ] हमा कमान

सारवर । वि हिं ] कमानक । व्यक्ति ।

इस्तिमाकव (सुना । ७ वर ७२० वर्ष वर्षामाक्ष्य ।

इस्तिमाकव (सुना । ७ वर वर्षामाक्ष्य ।

इस्तिमाकव (सुना । ७ वर्षामाक्ष्य ।

इस्तिमाकव (सुना । ७ वर्षामाक्ष्य ।

इस्तिमाकव (सुना । ७ वर्षामाक्ष्य ।

इस्तिमाकव ।

कल)। इंस्ताविषक्य (रम्म)। स्त्रस वि[शंस] १ त्रिक योग्य 'श्रीकतो साहापी न बसा सप्तमा कि पत्पेर्च'(पब दभ त्रामा)। २ स्त्रमर्च श्रीक्यान् (वे १ १७ जर १३ पूरा थे। स्त्रमा वृ[समक क्षत्रक] त्रास्त्री वेत साबु

त्समा पुष्चिमक क्षपक] तस्यो वैन साबु (वप प्रदेश सोप १४) सत्य ४४)। व्यस्मान [क्षपम] तस्यस्य वेता, तैसा साविता (सिंग ११२)।

स्त्रमण व [क्षपण क्षमण] १ घपराड (इत् १ तिष्क २)। २ वृ डाल्पी वैन साथु (ठा १०---पत्र ११४)।

रामय वैधी नवस्म (बोप १६४) इर ४०६) भरा ४ )। रामा वी [क्षमा] १ प्रविधी कृषि 'उच्चर जनामार्थे (दुपा १४८)। २ कोच का

सनामार्थे (पुत्र १४८)। २ कोच ना स्थान सानित (है २, १८)। बहु बूं [पिनी पत्रा दुन दुर्गत (नर्म १४)। समज \_ [धाममी गापु, ऋति पुनि (स्ति)। इत् पूँ िपरी १ एवंच प्राप्त । २ बाबु प्रति (पुत्र १२६)।

स्रमि-सम

(पुमा) । श्रामाध्य [दे] प्राप्तेष्ट दीय का कृषिया रमनी ही [रार्मा] रिचेट् वर्षे की वयधी

श्रामित व स्मित्रिम वशु-स्थित वेंहा

2,

विदेव (अ र १)। ब्रागुइ विदिशिष्ट प्राय पूर्त-बहरा (ग्रीय ३६ मा) । २ घर्षेरी त नास्तित क्रय (धार ११ मा) । १ तिलानु । ४ स्त मगढ (ब्रु १) ।

श्यक्तर [श्यम्] १ दारनं नरता परित नग्नाः २ नम्बरं व्यक्ताः। सन्द्र(हे४ (\$) i श्रविभ्रदेगो शर्दभ्र≖सचित्र (दुना)। ३ रिजीत (बण) । राबद 1 [दे] अन्य सञ्जूष शबू (६३

\$8) i शक्त र (दे २ ६१)। राज्ञ र [राज्ञ] रूप्र-रिटेर (व २६६)। रहार रि [रतार] १ साने बोग्य बन्दु (स्ट्रह १ २१। २ न माप्र रिटेन (महि)। रमञ्जादि [ ग्राय्य] जिल्हा स्थानिया का

मध्यम् (यर्)। स्ट्राप्टन रेची ह्या ४ स्तारम् रेगा स्टब्स् = चायः (तन १६) । रराजमान रेगो वा रराज्ञय रेगा रराज्ञ = गाव (१३म ६६ १६) । शास्त्रभाषि [त] १ शर्लनगृह्याः ३ क्षाणाव विवश "राष्ट्रता विश्व त्या हो बह

188 0 1 र्माजर (दा) वि [राह्यसन] को लका न्या हो वह (बाउ) । शाह का [सर्दे ] पुरुषे बाबा (सत्र) । शाहर ५ [शहर] १ बहर पा देह (नुवा: एल ६८) ४२ न बहुर का बन (काम ४१ र भूता ६ }। माञ्चरं। 🗣 [मञ्जूरं।] सङ्गर 🖭 लयः (श्रव

TOU I स्तापाद र्ष [दे] सम्बद्ध ३ ६६) । रापात्र व (राहात्र) बीप्तियेच चन्त्रु en e matte)

रबहुन [वे] १ सीमन नदी भीर (दे २ ६७)। २ वि बहा बन्स (पएस) १---यत्र २७ वीव १)। सह रूँ भिषी बड़े जस नी वर्षा (भव ७ ६)। रमुर्गन [पे] छाया धातरना सराप (रे २६≖}। राष्ट्रीय न [राष्ट्रवाङ्ग] १ शिव का एक धारुप

(रुमा) । २ वालाई ना पामा मा पाग्री । ३ ब्रायम्बित्तरम् ध्रिक्षा मायने ना एक थात्र । ४ तान्त्रिक दुश-विदेव-'इल्बर्डिये क्यान' न बुधर बुले धल्लिर कर्ड्ये। ना 🚰 विद्धे बानव जना वावानिली बार्या (वक्र; ८४)। ग्यट्टबरम्ड र्षु [ग्यर्याक्षक] शल्यका भाषक इचिती ना एक मररतानल जाले नाळण स्वराज्यवार् पुरशीए सप्टूमराप्रविद्याने करा

विचयोत्रवाळ चेत्र वारती प्रवच्छीर्ति (स

गर्रा भी [गर्वा] बाट, वर्गप बारगाई (बुरा ११०) हेर ११४)। सह दं सिस् बीनारी की प्रशनता है भी धाट से ६० न वक्ता हो बहु (बहु १)। गहिम । [र गहिम] स्थार नीनर र्गार्डक ∫ वेंबा (वाँ६ ३ व्रुप २ २३ दे 3 # )1 गड 🛊 👣 एक म्लेन्द्र-शति (बुब्द्य १५९)।

गडन [वे] कुण जान (वे२ ६० कुमा)।

गाक्ष्म वि भि तंत्रीत धंत्रोकताम (के 2, 42)1 गर्दग विषद्भी एः येष देश के के ए द्रेप-रिना बन्न ध्यानस्य अमेन्ति दश निरम्दा । व दि [ किम् ] धर्ही धेनों का जानकार (रि २६४)। ररहवय पून [राष्ट्रहत] याप्ट रेना असि के हारा मुखना निवाही वरीस्त की साराजः रिवरकरारकराः) सहदयी निमृत्यिते हानी' (44 x (4) t

गरवार र्व [गरहार] जार रेनी (नर tt tt= fr# ( ): गर्राव था } थी [र] पिन्दी होत हार गर्रवी (वन्तु मरा देश भर्र)। गर क्य देवी गरक्य (वर्तीत १६) ।

(बोह द€)। श्वबद्धार देखो द्वबदश्वर (बम्मत १४६)। सहराह हूं [राहलड] केने खडराड (इइ) ः लहराइग दि [दे] दोग धीर समा (यर)। श्राबद्वानित वृं हि ] एक म्बेन्च वार्ति (कृष्य

147)1 शक्यां सी [दें] नेवा नी (य ६१६ में)। शाहरू र् [स्प्राप्त] सांतम वर्षेष् गी बागव खळलार (सूना १ २)। राहद्दी थी दि] बनु-निरेप निम्हें, गिली (दे २,७१)। लाइट्रिक्स देखो राष्ट्रिल (सा ६६२ म)। राहिक वैद्यो लाजिज (वा १६२ म)।

राष्ट्रिक र् दि दात स्वाह ना वा वर्षी 20)1 रविष्ठता औ [स्रटिका] बहे, नहर्ते से विश्वते की खड़ी या श्राहमा (क्यू) । लक्षी औं [रार्टर] इतर देखों (मारू) । राष्ट्रभा क्ये [रे] मीवितः मोडी (रे ५ ६४)। राह्य वर [ आविस् + भू ] प्राट हैन्स क्ला होना । खहुर्रीत (बला ४६) । रर**दुः ।** पूंजी [दे] मूंड निर पर वंतरी राइव 🕽 हा प्रापत (बर १) । राष्ट्र नक [स्ट्रू] नर्रन क्ला । गर्र (है <sup>प</sup>

१२६)। राहुुन[द] १ सम्य सदी-पूर दिध ग्यकुराई ६६) गाथ)। रॅबझा वरल (ति २३७१ टी)। ३ वर्त के आगरराना (परा)। राष्ट्रा की [रे] रे बाति सारर (रे १६६)। ९ पर्वत हार मान वर्षत का मार्न (दे १ ६६)। वे वर्तन्द्वर यहा (नुर २,१ ३) म १६२ मुत्ता १४३ मा १६। महा बत्त २। पंता ७)। र्गाङ्कम रि [मृदिन] जिन्हा वस्त हिरी यया हो बढ़ (दुना) । न्यह दुयां की वि होतर, धारान 'धर हुप

ने बरत में (उन १ १a)। राष्ट्रात्य र् [६] वर्ग वर्ग दरस (४ १८१) र नाग तर [राम] बोरसा। चल्ड (गर)। वर्ग ताबद तालाख्य (१४ १४८)। बालीबाउ (पुर २ १३)। 🗗

चौंदा (दे २ ६० गा ६४० ४२२ छ)।

स्रचन[दे] १ बात बोदा हुमा (दे२

६६ पाम)। २ राज्य से वाड़ा हुमा (बोच

६४)। ३ सम भोरी करत के सिए दीनाश

र्ने क्या हुमा घेद (उन दू ११६) लाया १

१६)। ४ चार, भोवर (उप ११७ टी)।

न्यणेत (धाना)। सन्द्र- न्यझमात्र (पि XY ) 1 -रत्रण पू [क्षण] करत विशेष बहुत योहा समय (ठा२ ४ है २ २ ३ शतक प्रासू १६४)। बाइ दि ["योशम्] शरामान च्छतेशला (मूच १: ११)। मेगुर्वि [ अङ्गर] राख-निमलर, व्यक्तिः (पटम = र रंगा ४२३ विके ११४)। याची िंदा] राजि राज (बर ७९० टी। -सगरस्यमः ) यदः [स्रगन्यतायु] चल स्वयस्य प्रमाण विषयं विषयं विषयं विषयं सर्गादि (पडम १६ ११)। वक् स्वत क्त्यर्गन (स ६८४) । स्त्रमध दि [सन्द्र] चौरनेवाचा (ए।या १ १८)। -स्रायम न [स्पतन] कोरना (पटम =६ ६३ उप पू २२१)। न्यसम् वेद्यो त्यम = छए (धाना छक्षा)। श्चराय वि [स्वतक] सोस्तेवासा (वे १ = १)। रतगाबिय वि [न्यानित] बुरावा हुमा (नुपा ४३४ महा) । राणि स्री [रानि]बान बाक्स (बुरा ६१: )। न्यणिकः ) देवो स्थिय = सरिषः "महादया आणिग वामपुता चिएस्टा (भू ११२ धर्मसं १२०)। स्वविश्त न [रानिय] बोस्ते का वस्त्र, बली (3 x x) 1 नर्रागय वि [श्रुणिक] १ क्या-विनस्वर, धाल-नेदुर (रिने १६७२)। २ वि कुरुन-वाना गामधेपाचै प्र्युत्त को तुन्हे कि सन्दे परिवा इव द्वातु नीहरिसी' (बन्द < टी)। याइ वि ["वादिन्] सर्व पशर्व को धए-कितरार काननेताचा बीक्रवत का धनुपायी (राव) ।

न्यभिष रि [मनित] गुत्त हुवा (गुत

ररणुसाध्ये [रे] यन का दुग्य मानसिक

राज्य म [दे] गाठ योण ह्या (हे २ ६६)

गरण वि [गस्व] योग्ने योग्व (१२-१६) ।

4X4) 1

ररम। देवी स्वीय (शब) ।

र्पाड़ा(**९२,९**४)।

बुर ६ पत्र १)।

लगग पूं [स्यतक] सेंच नवाकर बीरी | करनेवामा (कावा १ १८)। स्वग्रम म [म्यनन] सेंच सवाना (खावा १ १८)। मेह पूं <sup>[क</sup>मेथ] क्रीप के संगल रसवाला मेच (भग ७ ६)। क्षच पु [क्षत्र] धर्षम मनुष्य-मानि-निशेष (युपा १६७३ इन्त १२) । राच वि [झाद] १ धनिय-संकली धविय का। २ त. खत्रियस्य शत्रियपन 'सहज्ञ सचर्च करेड क्षेत्र इसी (शस्त्र ८ टी) नाट)। क्षाच्य पू चि । चेत चोवनेवासा। २ सेंच समास्य चोधी करनेवाला । १ वह-विदय यह (मन १२ ६)। राचि प् [के] एक मोच्या-बादि (मृब्द 1 (823 माचि पूंची [हात्रिन्] गीचे देवी 'वातीए छेड्डे बह बंतवको (मूम १ ६ २२)। ग्रस्तिम पुंची [क्षत्रिय] मनुष्य भी एक नाति तत्री राज्यम् (सिम द्वामाः हे २ १६३ मानुद्र) । श्रीक्षस्त्रम पुं [शुरुक्षमाम] नवर विशेष वहां भीमहाशीर देव का अस्म हमाना(मग ६ ६३)। *शु*क्रपुर ल "क्रण्डपुर] पूर्वाचः ही धर्व (शाचा २ ११ ४) : "विक्या की ["विद्या] अनु-विधा (भूम २, २)। रहित्या 📑 भी [स्रश्रियाजी] समिय पाति न्यश्चियामी नी सी (निम क्य)। स्यह न [चे] प्रमुख शाम (चेचा १७ २१)। सद्धाः [वं] १ द्वान, मन्ति (१२ ६० दुता ६१ : जा पु १६२: वस वर्षा)। ९ प्रदूर, बट्ट भार माद्रालक्ष्मे तर-रिए। नेर मुदुरवरि (वार्व ११४ के व ६० पर २ इट्ट)। ३ स्थित बहु

(बोव ३ ७ ठा ३,४)। ४ ग्र. शीम. अस्ती (पाचा२ ११)। दिशाणिका वि [ाँदानिक] समूद्र ऋदि-संपल (मोप ८६)। सम्म [दे] देखो स्पण्य (पाप) । सममाय देवो दाग् = बन् । खन्तुल [र] वेबो खण्णुल (पाप) । रापुसा की दि] एक प्रकार ना चूना (बृह्द ६) । श्राप्पर वृं [कर्पर] १ मनुष्य-वाति-विशेष पत्ते वस्मि वसरएएमेमु पवर्स अं सम्मदारा बर्म (रैमा) । २ मिजा-पाच कराम (नुपा ४६%) । ३ कोपड़ी क्यांस (ई. १ ६८१) । ४ पन्यमेरह का दुकड़ा (पत्रम २ १६६)। लपर ) वि [वि] स्था क्ला नियुर क्षप्पुर ∮ (देर्रे हें हैं∟ पान)। स्तमधक [क्षम्] १ धमा करना मार्क करना। रेसहन करना। असम्ब्र (बदर ८३ महा)। कमें कमिननइ (महि)। ह म्यन्मियक्व (तुपा । ७) उप ७२= दीः पुर ४ १६७)। प्रमी खनावह (भवि)। चंड- लमावहचा, स्प्रमाधिचा (पहि कान)। हः स्त्रमाविषस्य (स्प्य)। लास वि[सास] १ उदित सोग्य 'सवितो माहारो न समी मएसा वि पत्ने हैं (पव १४ पाष)। २ समर्थशक्तिमान् (६१ १७ वर ६१ : बुवा १)। न्यसम् हुँ [इसक क्षप्रक] वपस्त्री मैन साह (जप प्र ३६२ कीन १४ वस ४४)। न्त्रसम्बन्धः हिम्पम् वितरपर्वा वेचा वैता मारिया (शिंह ११९)। त्यमण न [इत्पण क्षमण] १ परवास (शुरू १ निपुर्)। २ वृद्धाली मैन सापु (क्ष १०---पष ११४)। रासम देशा रामग (मोच १६४ वर ४०६) मस ४ )। रामा जी [क्षमा] १ इविरी भूमि 'क्सूर समानारों (नुसा ६४)। २ कोम ना थकार सान्ति (हे १, १८)। सह तु [पनि] एजा, पूर मूर्तत (कर्म १६) समय ५ [असय] सार्ध्व ऋषि पूर्ति (बाँड)। दर व [ पर] र वर्गत पहार । २ नापु. बुनि (गुरा ३२६) ।

स्तमाबजया ) की क्षिमजी समाज, माओ

२५२

(R 2 ve) : स्तय देशी स्तव । समइ (पद्)। साय सक [कि] सय पाना, नष्ट होनाः । समाद ( यह )। स्तम देवो स्त्रम् (पाम) : १ मानारः तक खेवा पहुँचा इया (से ६,४२)। राय दे ["राजा] परिवर्षे नाराजा पदब-पत्ती (पाप) । बङ् र्व (पिति) यस्त्-पत्ती (ते १६ ६ )। इत्यन दिया २ इत्य भाग चारको वे व कर्प (अप ७२≈ ही)। २ वि वशित ववाया हमा 'युरुधोच्च क्रीडक्को (मा १४ नुगा १४६ पुर १२ ६१)। जार स्त्री पुं[ाचार] तिक्तिवादाये शाचु या साम्बी (वस ६) ।

स्तय नि [स्राव] बोध्य हुया (गरम ६१ 43) I राय प्रीक्षयी १ सव, प्रसद, वितास (बद ११ ११)। २ रोय-विकेप राज-कामा (मरूप १६)। कारि वि (कारिक) करा-नारक (मुपा ६११)। काल ग्राह्म प् ["बाक्ष] प्रसय-काल (पर्यव 🕻 ४ १७७)। ौंगार् [ौदि] प्रमप-कात की बाग (खे १२ ६१)। नाजि ई ["झानिम्] केनन मानी परिपूर्ण बानवाना सर्वत्र (निसे ११व) । समय पू [ समय] जनव-नान । (सहम २)। रायंश्र नि [ध्रयकर] नारा-रारक (पळन ७ (1 ET 18 775 = 2) 1 राधनकर वि [क्षियान्वकर ] नाग्र-नारक (पडम १७)। गापर पूंकी गायर है धारात में काले-याना पत्री (भी २) । १ विद्यावर, शिवा

बन वे माशत में भानेशना मनुष्य (नुर

१ दक्त सूपार४)। सम्पूर्णिया विदावरों का राजा (स्पा १६४)। स्वयः देवो स्वइर - वर्षर (धन्त १२: मुपा X ( %) 1 क्रमरक वि काविरको विदर-सम्बन्धी । वी **व्या** (पुचार ३)। इत्रथास्त्र पूर्व दि विशेष्टान्याल बाँस का बन (चिर)। इतर बन्ड [ चुर् ] १ चरवा, टरका । २ मप्ट होना । चरह (विसे ४३३) । आपर विकिसी १ निष्ठर, चना परुप नदोर (पुर २ ६) वे २ ७० पाय)। २ पूंची भवेब, पका (पर्याह १ १३ पटन १६ ४४) । ३ पूँ क्रम-निरोम (पिंग)। ४ म- तिम का क्षेत्र (योग ४६) । चंद्र स<sup>®</sup>क्यट ] स्कूल वनैयाओं ताबा (ठाव ४)। व्यंता िकाण्ड] राज्यमा प्रियशे का प्रकय काएड--श्रेत-विशेष (बीव ६) । कम्म न विमीन् विश्वर्ने बनेक बीजों नी हानि होती हो ऐसा काम निन्दूर भेबा (गुपा १ १)। कस्मिञ वि विभिन् । रेनिय्तर कर्म करनेवाला । २ पूँ कोतवाल काएवपारिक (बीच २१व) । "किरण पु "किरण] सूर्य श्वरत (शिका सक)। दूसज रू [ दूपम ] इस नाम का एक विद्यावर राजा को शबस्त का बहलेही बा(पबप्र १ १७)। तक्षर् पु जिलारी स्वापर बन्तुं, हिस्क प्राणी पूपा १६६ ४७४)। निस्सण 🐧 िनिःस्वतः] इंस नाम का उपला ना एक पुनट (परम १६, १)। शह पू िंमुक्ती १ मनायँ वेश-विशेष । २ धनायँ वेश-विशेष कामिनासी (पर्हु१ ४) । मुद्दीकी िमुशी र शक्त-सिरेय (यतम 🐔 २३ पुरा १ सीप)। २ नर्गुलक दासी (भव ६)। यर वि [ वर] १ विशेष वदीर (कुपा६६)। र पूँदतनाम का एक वैन वच्छ (स्त्र)। सभयन विशेषको किस नावैच (धीव ४६)। साविधाली [काबिरा] निनिधितेष (तम ११)।

एक बाधि (बम २१)।

स्तर वि द्विरी विश्वयद, घरनावी (निर्ने AXA) 1 लारेट क्या (सर्पटम ) १ क्याप्स, विके र्खना करना । २ धेप करना । बर्रटर (पूक Y4) 1 कार्ट वि [शरपर] १ बुखाओवामा, विर-स्कारक । २ अपनित करनेत्राचा । ३ मतूर्वि पदार्व (ठा ४ १ सुन्त ४६)। स्तरंटण व [स्तरप्टन] १ निर्शतंत्र पर्सन् वावछ (वव १)। २ प्रेरखा (धोन ४ च)। कर्रटणा को [काप्टना] स्मर देवो (बॉन **₩**₹) 1 ক্লাতিম দি [কার্যভাৱ] সিমালির (কুম R(<) ! करंसुया की [दे] वनस्पति-विरोध (संबोध करब दूं [के] इतनी की पीठ पर विक्रमा बाता प्रस्तुच्छ (पर =४)। करब धक [स्त्रिप्] लेका पोक्याः क्षेत्र सरडिवि (मुपा ४१६)। करह र्दे [करट] एक वक्त प्रदुष्य-वाणि 'बह नेएड बरदेशं किसियं हुर्सम वस्त्रां' णिवस्य (तुपा १६२)। क्र शक्कि कि दि दे इस्त स्था। २ मन्द्र क्ट (दे२ ७३)। न्वरहिक्ष वि क्रिया विका सेव विया वर्ष हो बहु पाता हुया (बोन १७१ दी)। कारण व दि जिल्ला वर्षेष्ठ ही कर्ज़क वर्षे शाली (छ ४ १)। लाफस्स र् [सारपस्य] एक गरंक लाग (देवेन्द्र २७)। यास्य द्व [सारक] भक्ताम् महाबीर के शर्म में है चीना (बांच कीब) विकासनेवाना एक र्षेश (पेश्व ११) । सारव पु कि १ कर्मकर, नीकर (पीर्व ४वे ) । २ राष्ट्र (मन १व ६) । सावर यह [सासायम्] 'बर-बर' धारान करना । वह न्यरहर्श्य (नजह) । रसरिक्ष पूर्वि वीत्र वीता पुनका पूर्व (देश भरो। स्सर 📢 ["स्पर] परमानामिक केवों नी , रत्या श्री [स्परा] बन्तु-विरोध नैतना नी वर्ष

भुव से चवनेवाता समु-विरोध (वीच २) ।

मवि)।

४६०)।

स्तरिस वि [वे] प्रक, मसित (वे २ ६७)

स्तरिजा की [दे] नीकरानी दासी (घोष

स्त्ररिमुझ पुंदि स्वरिग्रुक] कन्व-विशेष

(मा२)। सरुट्टी की [सरोच्ट्री] एक प्राचीन किपि वो दाक्रिने से बाएँ को सिखी बाठी थी। गांबार निषि । रेखो, सरोहिना (परुछ १) । सरह वि कि १ व्हान क्टोर। २ स्थपूट, वियम और जैंवा (दे२ ७८)। सरोहिला भी [सरोहिना] विपि-विरोध (सम १३) । इसस्य क्षा [स्स्रह्म ] १ पड्ना विष्णाः २ मूननाः ३ रक्ताः सत्तः (प्राप्त) । वड-कर्शत, रुखमाण (वे २, २० वा १४६ सुवा ६४१)। लास प्रक [ स्टाल ] प्रथम एउ करना हटना । क्साहि (उत्त १२, ७)। स्तल म (सल्) पार पूर्व में प्रपुक्त होता सब्दम (प्रकृष् ५१) । इसछ वि [इसछा १ दुवैन, सबस सनुष्य (तुर १ ११)। २ म्, बान साफ करने का स्थान (विदार कं मा १४) । दृषि ["पू] कविद्यान या कलियान को शाफ करनेवाला (कूमाः पद्त्रामा) । साम्बद्धा वि [वे] रिक, बासी (वे २, ७१)। संस्थासम्बद्धाः पत्र [सरासद्धाय ] 'बन-बन' द्यानाम करता । क्लन्तवसेद्व (पि ३१८) । इसक्षण क्रिके वि [दे] यत क्रमत (दे २ 6w) i इस्त्रज न [स्सब्ज] १ नीचे देवी (धाणा से स ११८ वा ४१६ वज्ञा २६)। श्रास्त्रमा की स्टिबना रे गिर माना, निसान (दे २ ६४) । २ विरोधना, भीतन (ग्रीष **७**८८) । १ मटकास्त रकास्ट, 'हान्य पुत्रो रा बनएं करेमि वह धरस वस्तारत' (उप ववर हो)। क्रम्यमञ्जय वि दि ] सुन्य कोस-प्राप्त (मवि)। स्तक्षर ) पूँ स्विक्षसक् निष्य के प्रवास की रमस्त्र र मानान 'बहुमारहनाम्हिकीर्थ किछि-विविद्यानीय करहरायहों (पुर ३ ११ २ • T.) I

शक्रिया वि [स्वस्थित] रेच्का ह्या। २ पिराह्मा, पतित (है २ ७७ पाय) । इ न, प्राप्राच प्रनाह । ४ मून (से १ १)। लक्षित्र वि [सक्कि] बस से व्यास बनि खवित (वे ४१)। रुख्यिल पुन हिस्छिन र सनाम (पाय)। २ कायोरमर्ग का एक धोप (पव १)। स्वक्षिया और सिक्किक्को रिक्त वर्षेष्ठ का वैक धीरत पूर्व बामी बारी (धुना ४१४)। संख्यार एक [अप्तमे + **क**] १ विस्त्कार करना पूरकारना । २ ठमना । ३ उपप्रव करमा । कवियाची कवियाची (मुपा २१७ स ४६८)। कासियार थ्रे [कासिकार] तिरस्कार, मिर्गरसना (पजम ३१ ११६)। कक्षियारण न [काग्रीकरण] विचन्दार (परव ₹€, ¤¥) 1 क्रक्रियारणा भी सिक्टीकरणा वस्त्रना क्याई (स २०)। कांडियारिक वि [कांडीकृत] १ विराहत (परुम ६१, २)। २ विद्यात रुगा हुमा (स २व)। सस्पर वि [श्काद्धित्] स्थवन करोपाता (बमा ६०: सस्)। सामी की कि साफी | तिल-पिश्वका, तिल वगैष्ड् का स्मैहरहित पूर्ण, सभी (दे २ ६६) सुपा ४१६, ४१६)। क्रजीक्य देशो श्रष्टियारिक (वर ४४)। शासिकर वेको साहित्यार 🗠 बती + हु । बती करेड (स २७) । कर्म, बलीकरीकड, बली क्रिकार (स २०- एस) । सर्व्यण न [सब्दीन] देवो सब्दिण (सुपा ७७ स १७४) । २ नहीं का किनारा 'बबीएमहूर्य बएमाले' (बिपा १ १---पभ—११)। लहु म [लहु] विशेष-पूचक सम्मय (बसनि 1 (33 8 ललु प [सतु] इन धर्षों ना सूचक प्रस्पय--१ धनगरण निरमय (औ ७)। २ पूनः, रिट (याणा) । ३ पारपूर्ति सीर वास्य की ।

शोगा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (प्राचा निषु १): "सिक्त न [क्तंत्र] वहाँ पर वकरी चीम मिले बड़ क्षेत्र (वन ८)। कार्लुक पूँ दिं १ पत्ती वैस मनिनीत वैस (ठा ४ १-- पत्र २४८)। २ समिगीत रिप्स, कृशिष्य (उत्त २७)। लहुर्दिक्टार् दि] १ गतीबैस सबन्धी। २ **थ. उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक** ध्ययपन (क्त ७)। ञ्चल्या देखा रालुय (पर ६२)। क्रालुय न [स्त्रलुक] पुरुषः पाँव का मरिए-वम्ब (विपा ₹ ६)। लाह्न क्रि १ जाकृका किस्र । २ जिलास (दे२ ७७)। ३ वि कासी रिकः; 'वासा कलक्षोत्ता परिसोधियमंससीयाया परिपर्व (समधरद टी वे १ वद)। स्तक्क वि कि निम्न-सम्म विसका सम्म ग्राम शीचाक्षा वह (वे १ ३**०**)। लक्षद्रज वि [दे] १ एंड्रविट, एंडोब-पूक्तः २ प्रहृष्ट, ह्पंपूक्त (६२ ७६ क्टड)। लाइना ∤ुर्न[दे] १ पत्र पता। २ पत्र लाखेम ∮ पूँट पैकी कावना हुमा पुरुषा या बोना (सुध १ २, २, ११ दी पिंड २१ बह १)। लड़न ३ पुन दिंदे १ पार का रक्षण स्रक्षय ∫ केंप्लेबॉर्सायम्बाएक प्रकारका बुता (वर्ष ६) । २ मेबा (इन १ ६१ टी)। क्तछाध्ये हिं] वर्गपनता बाख (दे २ ९६ पाम) । स्पञ्जाब वेको स्पर्दीब (तिषू २ ) । क्रक्तियां भी [क्] पंक्ति (वे २ ७ )। कटिइड (पर) रेवो कटीड (ह ४ ३८१)। लाड़ी और दि किर ना बहु चमड़ा विसर्ने नेश पैदा न होता हो (धानम)। लासीब पूँ[सरवाट] विस्के सिर पर बाल न हो गैवा चैदला (हे १ ७४ नूमा)। लस्क् र् क्रिस्स्ट रूक-विरोध (पर्या १--पन १६) र साम सक [स्रुपय्] १ नात करना। २ बालगा, प्रचीप अपना । ३ कर्लवन करना । क्वेड (क्व) क्वयंति (मग १० ७)। कर्म वानिजंति (भन)। वक्तुः लावेसाम (ग्राया

लाव वे चिर्देश मान इन्त कार्यो हाक। २ मांब रामन (दे २ ७०)। म्बन्य दि सिपड़ी १ नाग करनेवाना सम करनेशना। २ व तासी वैत-पृति (छन कार क)। १ वि धएक भेति में मास्ड (कम्प १)। संद्विकी [भेषि] वपस क्रम क्रमों के नारा की परिपारी (बंद श ११: बचर ११४)। सम्बद्धिः विदि स्विचितः स्वलन्द्रात (t 2 mt): राद्रभ ) न शिपन रिजय नास (बीत)। ह्यबळ्य 🕽 २ डेह्नबर्,ब्रेस्स (रम्प ४ ७६)। १ वं केन-पूर्ति (विशे २३६६) मुद्रा ७०)। रायात्र देनो कामण "विद्वित प्रशासकते सी (वर्गे २३) । राजना की [शपना] प्रध्ययन, राजनशब्दार (मलु२३)। रावर्षे [वे] स्तम श्रंबा (६२६)। स्वयं देशो । प्रशा (सम २६ आधा १३ धावा)। राप्तक्षित्र पि [वे] दुपित, कूड (वे २ ७२)। रत्यक् पू [स्टब्ह] अल्य-विशेष (विश्व १ ६-- एवं वर्ष दी) । गरवासी [भूपा] छत्रि छट । अस्त्र न ित्रस्त्री मात्रस्थम दिन (ठा ४ ४)। राषिम 🕅 [अपिन] १ दिनारित ना दिया इमा (नूर ४ ३० प्राप्त) । २ डड्रॉबल (या 23x) : राज्य र् दि । र नाम कर बाबा हाय । २ रामम नवा (दे २ ७७) । रतस्य रि [रापं] बायब, दुस्त बाटा (बाघ)।

राद्य विस्तियों सब्द और धात्रमानको

गस्तम व विशेष्ट प्रव (दे २,६)।

राग यर शि निनरना पिर पश्चा। ब्रह्म

राम र् क [राम] १ घनाई केन्सिक्

शिरायम ६ रगर वें न्यन इव बान का

एक परावी पुल्प (परम ६ ६६) । २ वृंद्री

वयो पार्वि (निरि १ १)।

रप्रदेश देली प्रस्तुर (शिक प्रस)

(तिन)।

१ १८)। इह सम्बद्धा स्वित् स्वेचा

(मन १६, सम्म १६ मीत)।

बास देश में श्रृतेशाला मनुष्य (पराह १-पन १४ा एक)। इसलास प् [जासकास] पोस्टाका सना, क्केट वब (सं १६) । लसफस यह दि श्रेष्टना विस्तरना विर पहना। वह सासप्रसेमाण (सुर २१६)। स्रसप्तिम विदिशियातुम प्रवीर । 💵 वि "अस् व्याकृत दशाह्मा (हे V ¥29)1 लसर केबो इध्मर≖वेक्सर (वे २ स 8≈ ) I सासिल देवो महाज = विन्त (हे १ ११६)। स्पतिञ्जन [कृतित ] रोप-विशेष कौसी (\$ t tet) : लासिक वि वि किनम हथा (नुपा २<१)। त्रस् पूर्वि रेज-विशेष पामा पुरुशती में 'बर्ग (एए)। लाइ कृत निवाही याकास्य वनन (भग रे २-- पत्र ४७१)। ळाडेकोल (स ३१)। मद्भार देशो सायर (धीम निपा ११)। स्ताइयरी की स्तिवर्धी १ प्रक्रिकी माना पक्की । २ विद्याचये विद्यावर की की (हा R (): रा ) स्कृतियादी बाना भीवन करवा साम । भन्नलें करना । बाह, बाबह, बाव (हे ४ २२ )। विधि (मुपा ३७ । महा)। जीव बाबिह (हे ४ २२ )। एमें खबाइ (पर)। यक्त सार्थत सायमाण (क्व १४' पत्रम १२ ७१, विदा १ १): चिता विश्वेता द्वा में मर्रति पूछोनि वे संवि रिपति रावे ।' (वर १४) । क्यक्र राजीत राज्यमाण (रक्ष्य २२ ४६) वा २४ : पटन १७ १ः व२ ४ )। हेर स्पर्द (বি **१७३)**। न्याभ (र [दनान] प्रतिक विभूत (कर १९१) ६२३: नव २७- है २ १ )। किशीय वि िंशीचंडी वश्स्वी, वीतियान् (पत्रम ध ४) असम वि [ बरास् ] नहीं धर्च (पउम १. ): रया वि (रशांदत पुत्र, मांत्रत लाइनिक-

एल--- (वा ६६०: व(र)।

लाश्र विलिति १ चुच इसा। २ द. 🚾 ह्या क्वाराय, 'बाग्रीयवाड' ( क्या )। १ उसर में विस्तारवासी और गीवे में चंडरिय ऐसी परिका । ४ अपर और नीचे समान स्न वें बुधे हुई परिवा (बीप)। १ बाई, परिवा लाइ ध्ये लावि । बाई, परिवा (तुपा १६४)। लाइ की [स्पादि] प्रशिव्ध भौति (दुरा स्वरः हा ६ ४) । काइ दि ने ने साई (धीर)। स्ताइम केडो साइअ = बारिक (विदे ४८) २१७६१ तत्त ६७ हो)। स्वाहरू विकितिती बाबा हमा, इप मिलत (प्राप निर १ १)। लाइया की वि स्नातिसी बादे परिवा (दे २, ७३ वास स्वा १२१ मा १, ७. वळा ८, ४)। काई प्रदि] १—-२ बल्प नी सोमा घौर पूर्व राज्य के सर्व का सुचक सम्बद (वर % ४: बीप)। काइय केने न्याइम = शायिक (बंदा १११)। काश्म न (कारिम) प्रचन्नांस्त क्या पीतन वर्षेष्ठ बाव कीच (सम ३६३ झा ४६ धौप) । काइर वि [न्यादिर] स्वीर-दृष-सम्बन्ध वैर का, कायरे (हे १ ६७) । लाउप व [लायह] बारानान (पुषपुरि या १७१ देनदिश कथाना १ ५६६)। काओबसम ) १को अओबसमिय (५१) स्वभोबसमिम (१११: ६४ सम्ब १६)। वाभावसमिग 🔰 गाओवसमित्र (धान ६० मम्बन्तो ६)। কাৰহুম বি 📳 মতিমদিত মতিবিদিক (4 2 04) 1 श्राहसह र्षु [स्पडसङ] चीनी नरफ-इविशी ना एक नरनातल (ठा ६)। रगडहिन्म स्मे 📳 एक प्रशार का जानगर गित्रहरी किली (परह १, १३ क्षर इ. ९ ३ विशे ३ ४ टी) । गाण 🖠 🖣 है पुर क्लेब्द्रमावि (गुण्य (523) ग्याय व [ग्यादन] श्रीवन क्रांस्ट पालेप

सर-साम

म पाछिए। म तक् नहिमो मंद्रमी भद्रमणाए (मा ६६२: पत्रम १४ १६९)।

स्राण न [स्यान] कथन धरित (राज)। स्ताणि की [स्तानि] बान धाकर (वे २,

६६ कुमा सुपा १४०)। स्त्राणिक वि [स्त्रानित] बुदवामा हुया (ह

**1, 20)**1

स्त्राणी देशो साणि (पाच)। स्ताणु ) दुं [स्थाणु] स्थाणु दूठा वृत्र प्रवत्त सार्भुष (पर्वहर द द्वेर ७ कस)।

स्तादि देशो साइ = स्पति (सँवि १) । स्यास सक [झसस्] बनाना माख्य म नना। कामेड (भग)। कर्म कामिकड, कामीसड

(६३ १५६)। इंड लामचा (४०)। स्यम वि [शास] १ इस दुवंग 'कामपं हुक्तोलें (पर १८६ दी पाम)। २ धीख

क्शक (दे ६, ४६) । कामण न [क्षमण] बमाना (भावक १६६)। खासजा हो [क्षमवा] सनारना भाषी

मादना समा-याचना (सुपा १६४ विने 1 (30 ल्यामिय वि किमित् १ जिलके पास समा मानी बई हो बह, समाया हुआ (विसे २३ वट

के ३ १६२)। २ प्रदून किया हमा। १ विसम्बद्ध विसम्ब क्षिमा हुमा 'विधिए। धहोरता पूरा न कामिया में कर्यकरा (पड़न ¥8 \$81 # \$24)1

इताय पूं (इताद ] पांचकी नरक-सूनि वा एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११) ।

स्तायर देखी साहर (१म ६) ।

रतार पूं [झार] १ एक नरक-स्थान (देनेन्द्र ३ ) २ मूजपरिसर्व मी एक वार्ति (मूच २ ६ २४) । ६ वेट, दुरमनी (मुका १ ६) । "द्वाद पून ["दाद] सार पकल की मही (बाबार १२)। दीन देन विस्त्री मापूर्वेद का एक भेद वाजीकरण (ठा ८---पद्र ४२)।

रहार पूं [क्षार] १ क्षरण मरना संगमन (हा ब) । २ भन्म धाक (खाया १ । १) । १ बाट, साट, लग्ल-विधेव (गुम १ ७)। ४ सवता मोन (हुन् ४) । १ जनवर-निकेय (बाल १)। ६ प्रविदा समी (तूप १४ १)।

७ वि कटुया चरपण स्वात्त्वाला कटुचीज (पत्स १७ -- पश १३)। द कारी भीन नमकीन स्वादवासी वस्तु (मंग ७ ६ सूम १ ) । तहसी ["त्रपुपी] बदु बपुपी नगस्प ति-विशेष (पर्**छ १७)। "तिह्न म** ["सैस्ड] भारे से संस्कृत तैल (पर्याहर ४)। मेह पू "मेम ] तार रखनाने पानी की नपी (मप ७ ६)। वृद्धिय वि विश्वित्र वार-पात्र में

विमाया हुया । १ सार-पात्र का धावार भूत (बीप)। विचय वि विश्वचिक्र चार में क्रमा ब्रधा कार से सीचा हुमा (बीप दस ६)। वाकी और विवादों बार से मरी हुई वालो वृद्धा (परह ११)।

शारंपिती की बिी गोषा गोता पन्त-विरोध (दे२ १)। कारवृद्धण वि [सारवृषण] बरपूपण का

बरपूपल-शम्बन्धी (परम ४३. १३)। स्तारयन हिं गुपुम कनी (दे २ ७६)।

कारायण प्र [झारायण] १ ऋषि-विशेष । २ माएडम्पनीत के रहकामूत एक गीन (ठा **•**) 1

कारि भी [सारी] एक प्रकार भी नाप १४ धेर को तीन (वा बहर)। कारिंगरी की किरिन्मरी वारी-परिपत

नक्षु विसमें घर सके ऐता पान घर हुन केने-थली (या = १२)। सारिक न [रे] फन-विशेष सुद्वादा (शिरि

2224) I कारिय वि [शारिय] १ माविय ऋराया हुमा(वय ६)। २ पानी में विमा हुमा

(भिष)। न्यारी देवी स्थारि (वा = १२ वो १)।

सारमणिय पूं [क्षासम्मिक] १ म्लेक्ट रेश- । विशेष । २ पतमें खुनेवाली म्लेक्स काति । (भग१२२)।

ग्रारोदा की [फारोदा] नरी-विरोप (चन)। लास सक [ क्षास्त्र ] बोना प्रवारमा, पानी थे ताक वरना। इस्टास्टिक्स (का ३२६)। रगास औन [दे] नामा मोरी, गंश्यी निक्तने कामार्ग(टा२,६) धीलासा(दुमा)। रसस्य न [क्षालम] ब्रधानन प्रवापना (गुपा

१९=)।

लाकिम विश्वासिती मीत मोमा हुमा (dì ११) i

श्रायक न [स्वापन] प्रक्रियादन (पैचा १ w) 1

शायणा श्री [स्थापना] प्रसिक्ति प्रकमन 'धनकाएं कावए।विहारां वा' (विशे)। शायियंत्र विजियासमानी जिसको विनामा बाता हो वह 'कार्यालुमेसाई सावियेते'

(विपार् २—-पत्र २४)। खावियन वि [सादितक] विसरी क्रिमाया यमा हो वह कार्यासमध्यावियमा (भीप)। श्रापेत कि [ एकापयम् ] प्रकाति करता ह्या प्रसिद्धि करता हुमा (उप व ६३ टी)। स्त्रास धक ब्रिस् विस्ता वॉसी वाना। ष्टासर्दे (संबु १६) ।

न्यास पू [कास] रोक्निक्रेप वांसी नी वीमारी वांसी (विपार १३ मुपा४ ४ क्खे।

कासि वि [कासिम्] बांदी ना रोगवाला (सुपा ५७६) ।

कासिम न [कासित] श्रीग्री श्राप्तना (हे १ १८१) । न्यासिक पू [न्यासिक] १ म्लेच्य देश विशेष ।

र क्समें रहनेवासी म्लेक्ट कावि (पराह १ रि—पन १४० इक सूचर ४,१)। सि यक कि । धीस क्षेत्र । कर्म, 'विज्यह

वनचंदती' (स ६०४)। श्रीवंदि कीवंदि (कम्म ६ ६६) हो) ।

दिन भी किति इमिनी वस (परम २ ११६ म ४१६)। गोयर द्रं भाषरी मनुष्य मामुष भारमी (पतम १३ ४३)। पश्दु व [ प्रतिष्ठ] नदर-विशेष (म ६) । पदातूय न ["प्रतिद्वित | १ इत नाम का प्रकार (उप ३२ टी स ७)। १ राजगृह नाम का नवर, को माजकत विहार में 'राज विर नाम 🎚 प्रसिद्ध है (वी १)। सार द्वै ["सार] इल नाम का एक दुवें (प्रज्ञम

र्मिन पर [मिट्स्य\_] रिवि प्राप्तन राजा । बिचेर। यह निर्मित्रपैत (गूच २: ३३)। र्तिस्त्रज्ञिया की [बिद्धिजिया] पुर परिस्ता (स्ता)।

**4 ₹)** t

२.4	पा <b>रमसद</b> म <b>र</b> ण्याची	सिंसियी—दौष
वितिसमी की [किक्टिमी] कार वेशो (ठा	लिक ग लिखी केन कीड़ा मशक	मिनियं विशिक्षिति १ व्यका हुमा। २
१ सामा११ सनि २७)।	'किक्टेल मए घरिएयं एवं' (सुपा १ २)-	विश्व हुवा (पाप)।
विकामी की दि श्रवानी की सिवार (है	'बासत्तर्स बिद्वारो वमेइ' (बत्त ६८)। इद	खिछ न किस्से पड़ाट-मूनि स्टार बर्मेत
ર જાય) ા	वि किर् केन करनेवला गवाक करनेवाला	(पर्णा १ २पप २६)।
सिंग 🛊 [सिह्न] रंगेराज व्यक्तियां	(बुपा ७०)।	शिक्षेत्रस्य न [सिक्सकरण] बाबी गरम,
भरोवविषयका <i>उच्चा</i> सिकरसको (पंचा)।	सिरण्य वि[सिन्ध] १ विस्त चेर प्रत्य ।	शून्य करताः 'कृषमधाबीसीऋदीकराउपमारमी
लिंस सर्क[सिंस्] फिलाक्षणार्व्या	२ मन्त बकाह्या (दे१ १२४ मा२२६)।	नेसचाउँयी' (मैं ≈)।
करता तुष्काभरता। वित्तप् (प्राचा)।	<b>क्षिण्य केवी</b> साम्य (प्राप) ।	लिख सक [कीसय्] रीक्ना रकत्रद
कर्म विशिध्यद्र (इद् १) । चनक्र सिनि	किय पि [भिन्न] १ ऍन्म ह्या (पुर ६	शलना 'मछद दमार्ख बन्दव ! यम्खं
ञांद (ध्य दमम )। इ⊱ लिसियाञ्च	१ राजुना ११७)। २ प्रेरित (दे १ ६६)।	किल्लेनि नष्टिचे खेँ (मुना १६ )।
(खबर १)।	হত ৰৈত ৰি [°বিত] মাল্ড-ৰিত	तिष्ठ यक [ केस् ] श्रीय करता केत राज्यः
सिंसत्र न [सिंसन] बनर्लगान क्रिन्छ	विधिनय-मनस्क पानन (ठा ६,२ धीव	वमाया करता । वहा निर्द्धत (नुरा १११) ।
यहां (चीप)। लिंसनाचे [लिंसना] लिला वहां (बीप)	४९७ तर १)। संत्र दि [सनस्]	निष्क इं [दे] क्षेत्रा क्रासी प्रतासी में
इस (इ.स.च.)। जन्मना इस जिल्लामा निर्मालका अर्था (अस	्रिक्तं चनवाना (यहा)।   कित्तं केटो लाग (यहा प्रामुप्पति)। "देवसा	चील (तंदु १०) :
निमा की [सिंसा] उसर देनी (बोन ६	वी विका से का समितान देव	ि शिक्षण व [श्रेसन] विद्योगा, <b>क</b> ननक (दुर ं १९८:२ )।
x 45)!	(मा ४७)। बाउ दे पाछ देन-विरोध	किछ्द हो दि कि <u>छ्</u> द हो कर विशेष
किसिन N [किसित] निवत निवत	शेन-प्राक देव (मूपा ११२)।	जिल्ला(यार वर्षर)।
(ब ६)।	विचय पू [क्षेत्रज्ञ] गीर निया हुमा बहुका	किस्तुहरा स्त्री हिं कन्द-विरोध (वंत्रीय
किमिनेड पूँ [वै] इनकास विरोद्ध, श्रय	विजय मुएछावि दुवं बहुउ (दूध र द)।	YY) (
्(दे २, ७४) <del>।</del>	क्षिचय न [श्रिप्तक] क्षत्र-विशेष (प्राप्त २४)	िलिय चक [सिप्] १ वॅक्ना। १ प्रेरमा।
तिक्तिर्यंत वि [तिस्पीयमान] <b>"वि-</b> वि"	<b>२</b> १) ।	्रे ब्रावना (विवद्, विवेद (महा)। मह-
मानान करता (पद्यु १ ३—पत्र ४६)।	सिन्चयन (वें) १ बनवै तुकमान । २ वि	किनमाण (जागा १ २)। कनक निर्णय
किनिकरी की [रे] बीम वमैद्य का लाई	शोष्य प्रम्थासिय (१०७१)।	(कल)। संकृ विविध (क्रम ४ ४४)।
रोक्ने की बक्ती (देश ७६)।	लित्तम वि[ध्रैत्रिक] १ क्षेत्र-धम्बल्धै । ए	क विविध्वय (वृता ११ )।
मिन पूर [वे] बोचने बसरा(वे१ १३४)।	पु व्यापि-विशेष 'तासुपूर' बरमार्श्व बङ्	न्विकल न [झोपण] १ खेंकना क्षेत्रण (व १२,३६) : २ ब्रोरहा इवर-क्कर क्वाना
निज्ञ पर [तितृ] १ केर राजा,, पत्रनीत	बहुवाहील बिक्तियो बाजी' (या १२) ।	(B 2, 8)1
करता। २ ठक्किन होता, वक वाता।	किन के बो किन्य = किन्य (पाय, यहा)।	रिविषय वि [चित्र] १ विचन चैका हुन्।
विज्वाद, निज्ञाद (स. १४) वरक वि ४१७)। इ. सिक्षियक्य (सहाना ११३)।	<b>जि</b> ष्प अन्द [इस्य्] १ नमर्पहोगा। २	२ व्रेरित (मुना २) ।
निज्ञिमिया औ [श्रेष्टिश] केटकिया	दुर्वेव द्वीता । कियाद (दक्षि ६१) ।	विश्व रेषो तिव । एंड श्रह विश्विकन
सक्रमीय नगवा बद्रेस (छावा १ १६		धर्म पोए वे परिश्वा र <b>वश</b> नुमि' (शम
44 5 5) 1	वि [गति] १ सीत्र वित्रका। २ पूँ व्यक्तिति स्त्रना एक लोकपाच (ठा ४१)।	१२ थै) ।
सिक्षम न [दे] बालाव काव्या (दे	किर्पय [क्रियम्] तुरुत, श्रीव, कसी	न्तिस यक [वे] तरशक्त, विस्तरमा। सक
र, ४४) ।	(With the orde) :	ध्या निवर्गमे गण्डीतस्य निस्तिकण वाहणा
गिकिम वि[मिम] १ के प्रस्ता २ व.	रिक्रपंत देखी जिल्हा	र्मितो पश्चि (मुदा १२७) १२ जीय वैको लियम = क्रिक्ट क्रेनेस्व युपन
केर (स २२१)। ३ प्रशुक्त-कम्प शेष	The second state of the second state of the second	ब्राह्मी (सक्त कंड की)। अपने इन्हां स्थित्मी = विक्री क्षेत्रित देस
(ए।सार १—४४ १६४)। सिक्रियंग न [संवितक] सम्बन्धिय	हा(वंदे, बहा)।	कींप वि [सिम] र शबनात्व, बर्ट, विक्रिय
(सप्रिक्त)।		(सम्पर्धादेश १)। २ प्रतेन स्त
न्यिञ्चर वि[रेशविष्] क्षेत्र शरनेवाचा जिल	किर मक [अनुर ] १ मिरना, पिरपङ्गा। २ डपरमा मरनार विन्द्र (१४१७३)।	(मन २.१)। हुइ ल [*दुल] इ.स.
हीने को साक्तराता (हुमा ७ ६ )।	वक्र स्टिरंग (वडम १ ३२)।	पीरव (समा १४३) । सोह वि [माह]
		े हैं जिनका मोह नष्ट हा प्रमा हो। यह (छ व

४) । २ त बारहवी प्रशास्त्रातक (सम २६)। "राग वि ["राग] र नौतराय राय-पहित । २ तु जिनस्य तीक्कर देव (यक्त १)। स्वीयमाण वि चियमाया विषया श्रव होता नाता हो वह (या १८६ टी)। अमीर न चिरी देना दी दिन का उपवास (संबोध १८)। "डिंडिर पु ["डिण्डोर] स्व-विरोप (पुत्र ७६)। "बिबिया भी। "विण्डीरा] क्षेत-विशेष (१४ ७६) । **ध**र पु [ बर] १ समुद्र-विरोध । २ श्रीन-विरोध (सुरुव १६)। क्तीर न £र्मरी **१ दुग्य दू**म (हे**२** १७ ब्रामु १३; १६०)। २ पानी जन (इ.२ १७)। ३ पूंधीरवर समुद्र का व्यक्तियक देव (जीव ३)। ४ समुद्र विशेष खीर मनुद्र (पडम ६६ १०) । कर्मक पू ["कर्मच] इस नाम वा एक श्राह्मणु-बराध्याय (पटन २१ ६)। नामासं से निराधासी मनन्यति विश्वेष श्रीरविदायी (पर्का १)। क्ष पुं [ अक्ष] शीर-सपुत्र सपुत्र-विशेष (धेव)। जसनिष्टि पू "जद्मनिधि वही पूर्वोत्तः धर्वं (मूपा २३६) । तुम इम पू [<sup>8</sup>हुश] दूमवाला पेड़ जिसमें दूब निक्सता है ऐने बृत की जाति (बोध १४६ निक् १)। थाइ भी भार्ता दूव विकानशाली कार्दे (खामा ११)। यूर पू [ैयूर] वदमता हुमा हुप (पग्ल १७)। ८३० पु ["प्रम] धीरवर होप का एक श्रविद्वातः देव (बीर १)। "सेंद्र दे ["संघी दूव समान स्वादराने पानी वी वर्षा (तिन्व) । वह भी ["बर्धा] प्रमुत हुव देनेशाली (ब्रह ३)। बर पु [बर] द्वीप-स्थिप (जीव श)। वारित ["वारि] शौर शकुर का बल (परम ६६ १८) । हर पु ["गुह, धर] धीर-ग्रागर (कम्बा २४)। सम्ब पु शिम्पा निवय-विरोध निवके प्रकार में बचन दूर्य की तरु मधुर मानून हो। २ ऐसी मन्पिशभा जीव (परह २ १ धीप)। र्गीरहर वि [शीरकित] संज्ञत-शीर, जिममें दूव दल्ला हुमा हो वह उप सुंगानी पतिया पतिया गरिमवा प्रमुखा धावारम्था

श्रीता (? र) इसा बद्धप्रमा' (शाया १ ७)। सीरिक [च्छीरिन्] १ पूज्यसा। २ पु जिसमें इस निरमता है ऐस बूल की कार्ति (का १ ६१ दी)। क्षीरिक्जमाण वि [चीर्ययाण] विसवा बोहन किया शाला हो यह (धाया २, t v) 1 सीरिकी की [झारिका] १ दूबनानी (भाषा २१४)। २ कुप-पिछेप (पर्ण १---पत्र ३१)। मीरी की [क्षरवी] चीर, पताल-विशेष (सूपा ६३६ पाम)। स्त्रीराञ्च पू [क्रीरोन] मनुष्ठ-विशेष धीर शागर (है र, १८२ गा ११७ गउड क्य श्व के स्वरंत)। लायेजा की कि येशी का नाम की एक । नदी (इक ठा२ ३)। र्सारोद रेको साराम (ठा ७)। स्रोधदक<sub>े व</sub> [ चत्यदक] बीर सावर क्षीराइय 🕽 (लाया १ ८ ग्रीप)। ह्याराचा देखो सीरोधा (ठा १ ४--- १**व** 1517 खोल ) पू [कोल, क] बीमा पूर्ट, मीसर्ग भूदी (स १ ६ सूच १ ११ 🛊 कीलंब<sup>ी</sup> १ १४१ दूमा)। समाद्र ["मारा] गार्थ-विदेश कहा पूर्णा क्याता च्हन ने मृटि के निशान बनाये गये हीं (मूच 3 23): रास्त्रपण र [फीडन] क्षेत्र कराना क्षेत्र नरामा। भार की ['बात्री] कैन-पूर करानशानी बाई (खावा १ १---पत्र १७)। स्पोसिया देनो नीक्षित्रा (श्रीवस ४**०**) । र्ग सिया हो [क्रीसिना] घोटी भूँ टी (पारन)। र्सीत पू [भीष] मदशाख मनेत्वत मन्त (R = 81) 1 सुम [ससु] इत धर्वे पाशूपक धम्यय—१ निरुषम घरबारस । २ वितरे विचार। १ संशय संदेह । ४ संबा वना । १ विस्मय द्यापर्ये (हि.२ १६८ यहागा६ १४२।४ १। हाल 🗈 🕶।)। मुलेसे मुा (सन्दर्भ दूसा १६ : रहाया १ १३) ।

आह सी [शुति] १ धींक। २ धींक का निशान (शाया १ १६ मग ६ १)। स्त्रय 🖫 दि] १ विधिष्ठ । २ विध्यात शास्त्र 'सुन्यर विमा' (पुत्र १४ )। रुम्नियापुरिही नाक्याधिक (दे२ ७६) पाम्) । र्व्यम्बर्णाकी हि रम्मा, मुख्या (६२७६)। न्यंगाइ 1 दि सघ की एक उत्तम आदि (सम्मत्त २१६)। स्वन पुरि] मूट, मुटी। सोडय वि [बाटफ] र चूटि को मोहनेबाना उससे छुन्कर भाग जलेगाचा। २ पूरम नाम स्थ एक हापी (नार-मुच्छ ८४)। र्श्वडय वि [व] स्वामित स्वपना-प्राप्त (दे 1 (90 9 र्खुद (धी) वक [शुद्] १ जाना। २ पीछना কুতনা। লুখৰি (সাচ হয়)। कांद चक [श्रुष्] दूव तमना। तुर्दर (शह ६६) । लीपा की कि वृष्टिको रोकने के लिए बनाया भाता एक कुछमय उपकरण (र २ ७१)। संभय दि क्रिमणी क्षेत्र उपजानवासः (पएह १ १--पत्र २६)। भुज्ञ घक [परि⊹ अस् ] १ ऍअल्यः । २ निचन करना । गुजर (प्राष्ट्र ७२) । सुच्च १ वि [कुस्स] १ दूबका। २ वासन खुँज्य रे (हे रें रेवरें) या रेश्४)। १ शह टेड़ा (बीप)। ४ एक पार्थ ने हीन (पक ११)। १ व. संस्थान-विरोध रायेर वा बागन बाकार (ठा ६ सम १ वर्ड, सीर)। भी मुज्जा (ए।वा ११)। मुज्जिय वि [कृष्जिन्] नूबरा (प्राचा)। शुट सक [सुब् ] १ तीवना करितत करना दुक्झ करना। २ सक पूरना शीए। होना । व टूटना पुटिय होना । मुद्द (बाट---माहित्य २२१ है ४ ११६) । मुस्ति मुट्ट वि क्रि पुरित, मारिक विद्या है २ ভাগ সৃষ্টি। न्तुड केर्रा मुद्र = नुष्ट । नुस्द (हे ४-११६) । भुदेति (में व ४ )। वह भागेगनित्रमापना

पूर्शा (चर १वः संग)। सुष्य वि दि पिनेष्टित (दे२ ७५)।

TC tY 58):

१ १३ हा ६)।

(क्य ११६) ।

(प्रचा १२१)।

सत्ति वि वि निमन्त इसा इसा (दे २,७४ राज्य ११ वा २७६/६२४- सँगा पढड) ।

भूताय [कृत्वस् ] शर, **र**श्च (३क

सुद्द वि [सुद्र] तुन्ब, भीव बुट्ट, घवव (पर्रह्

**ब्रुर न [कोह य] दुवल दुव्यका यीवल** 

र्खाइमा 🕏 [धुद्रिभा] कल्कार प्राय 🕸 एक

सुद्ध वि [झुटघ] बोध-प्रान्त वदशया ह्या

भुषा की [ हुय् ] धूव (वर्षते १ ६२)।

अधिय विश्विष्ति अपतुर, जुका (तुम

मुच्चेना (ठा ७—पण ३१३)।

ब्रुहासम दि देशो सुदृष्टिम (गा १२६)। স্থাৰিল বি (কাণিত্ৰত) সুদিত অধ্যিত निम्मिन (हे १ १६) वड )।

सुर्वतिकामोतियाँ (पठम १६ ११२) ख

सुद्रक रेती सुद्रक = (१) : चुक्कर (वर्गीय

४४ )। संब्र सुविकाय (स ११३)।

300

**सृद्ध** संद [ संप + कमय् ] इटाना धूर मरना । बुदुदह (प्राकृ ७ ) ।

सबस पर वि र नीचे कारना। २ स्वस्तित होता। १ सम्बद्धी उपहुद्धका। ४ दूरश **पद्म- सदर्ज**न (कुमा) ।

से मीन प्रताः मुद्राह (हू ४ ३११)। सदक्षिम निर्दि १ ठल्व की ठळा चया. इमा बदकाइमा (इस ६६६)। २ सेव मुर' पुस्ता से मीन नारश करनेराका । औः आः (गा२२६ ग्र.)। सुद्धः ) पि वि सुत्र सुबक् । तथुः सुद्धाः । क्षेत्र (दे२ ७४ कन्नः वस ६

माचारं र ३ छत्त १)। र नीच सबब कुछ (पुण्य ४४१) । १ प्रे कोटा सन्धु, सन्धु किन्य (तुप्र १ ६ २) । ४ पूँच, बंदुसीय-विशेष एक प्रकार की बंदुओं (धीय चय 2 4)1 स्तुमकाथ दिशे श्रद्ध प्रवन्त । २ फिर किर (निष्य २ )। सुदूय केवी सुदू (ई.२ १७४० वड् कप्प

सम ६६ एएमा १ १)। सुद्वाग } वेदो सुद्वा (बील क्रश ६६) सुद्वाय । लामा र ७ कमा) । लिबंठ न ["नेमेंग्य] <del>एटाएम्पनन पूत्र का खठवाँ</del> धम्बदन (क्त ६)।

सुद्धिम न [दे] पुरात मेपून संगोत (दे २ WX) 1 सुक्रिमा वी [दे सुदिका] र बोटी नजी (दार ६ सामा २,२,३)। २ सम्बद् नशीनुषा हुमा कीना छलाव (वं १ वर्गह २ १)। मुणुकनुदिका स्मै हिं] क्राण नाथ गाविका 

निपूर्)। २ पूर्णित (६ २,४३)। ३ जन्त

मुण्यति [धूरुय] १ वर्षिय (अर ४४०३

1 ( } # 1) | सुभ देखो अ्वत = सुरुष्ठ (पि १६ )। सुम रेखी मुच्य = (दे) (पाय)। क्रूप्प सक [ युतुप् ] बनाना । कुपद् (प्राकृ 9x) 1 सुष्प चक [ सस्त्र ] हुन्तर, निमान होता । कुमह (हे ४ १ १)। सह- सप्पंत (परा कुमाः सीच २३ थे १३ ६७)। हेक्-कृष्पिष्ठं (तंबू) ।

खुप्पिवासा को [ब्रुरिपपामा] मूच बीर व्याद (नि ६१)। **सु**क्स क्य [सुस्] १ कोम दाना कृतिह होता। २ गीचे हुक्ता। वहर झुटर्सत (ठा ● —पन १०१)। भूक्मण व चिम्यो सीम, वरशक्र (सम्ब)। क्षा वर्ष क्षिम् विरुग, वरहाना । क्षस्य

**श्**रमाधक [शूम् ] पूच वपना। कुम्सद

क्षस्मिय वि [वे] गर्मित नमाया हुमा (साथा

(সা**রু** ६६)।

१ १--पन ४७)।

(एकस १)। इ. सुधियञ्ज (पर्शा १,३)। अधिय वि [शुधित ] १ बोक्युध, ववहाना हुध्य (पराहर १) । २ न-धीम, क्वहाहर (थीय) । ३ क्ताह समझा (द्वाह ३) ।

शीव-विरोध (शीव १)।

शुक्तिरी की [क्] संनेत (के २ ७ )।

कुछग वेको सुदूरा (दूप २७१) । खुक्रम (बर) देवो सुद्ध (गिर)। (व्यवि) । १ इन्हेंक-विशेष एक प्रचार की

बल्तूच वा बल्डच हुच (बिशा १ ६)। इत्राप्य कृत [इत्रप्र] एक ध्या का काम (सिरि १८१) । सुरव्य वृं [सुरप्र] १ वात बाटने का पंक-एक प्रकार का बास्त (नैसी ११७) ।

आर् पृं[सुर] बास्तर के पीव दा सब (दुर

इत्र पुं[इत्र] कृष क्लाप (शाका १ क

¥म्मा प्रमी १.७)। पच न पित्री

१ २४८: वधा प्रामु १७१)।

क्रिकेट, सुरता (सम १६४) । २ शर-क्रिकेट, श्रुरशाण **र्थ [श्रुरशान] १ के<del>त</del> क्रिये** 

(लिंच) । २ श्रुप्रतान केत दा राजा (लिंग)। सुरव्युक्त की [र्दे] प्रस्तर-भेर (बर )। ब्रासाय रेजे सुरशाय (पिर) । खुरि वि [खुरिम्] चुरवाला बानवर (बार 1) ( श्रुरु र्षु [झुरु] प्रह्रपण-विशेष समुप्र-विशेष (qc (% (%%)) सुरुद्वकसुद्धी हो 📳 प्रशय-कीप (हे ९,

**ब्र**हरूप केवी ख़ुरप्प (पक्ष्म १६, १६। ह tar) : सुद्ध क [दे] बहु गांद बहुर्ग शहुकों को दिया कम मिलती हो वा विश्वामें इस मादिन

मिलवा हो (वव १)। मुख रेको सुन्छ । सुन्नइ (शाङ्ग ६६) । सुद्धिश केवो सुद्धिश (पिन)। अपूलुइ पु 🛊 रे कुन्द्र, पैर की बाठ प्रीवी (वे

२ ७१, वाप)। लुख व हिं। कुटी बुटीर (दे २, ७४)। **मुख**्रीप हिंद्ध की १ कोटा, गंध श्रुवरा र क्रूप (पर्वे र) । २ दे. विभिन्न सुद्धय वि [शुद्धः] र बहु धून क्षेत

कीकी (एप्रया १ १ ---पत्र २६४)। सुकासम द्र दि | बनावी नहान का वर्षवाध-विशेष (शिरि १०४) ।

लेकर देखों लेकर (क र, १)।

क्रोध (साया १ १८)।

स्त्रप वे [स्त्य] जिसकी शाका भीर मूल छोटे

होते हैं ऐसा हुआ (स्तामा १ १--पत्र ६४)।

सुवय पू [ दे ] वृत्य-विशेष, क्यूटीक-पूण

कॅटीना चास (दे २ ७६)।

सुम्य देशो सूम । कुन्दर (यर्) ।

२ कृषि भूमि धेरा(इक् १)। ६ वामीन,

खुब्बय म [वे] पत्ते का पुढ़वा थोना (वव इसाई बेर्डात स्व्यसम्बेर' (नुपा २३७) । होश सक [ लेज्य ] हांकमा । श्रीवय (नेवय सुद्द देशो खुम। इ. सुद्दियम्ब (पुण ६१६)। सुद्दा जी [सुम्] पुच इद्वया (गदा ६६७ क्या ७१)। केड १ किए र कूती का प्राकारवाला नगर प्राप्तु १७३)। परिसद्द, परीसद् र्षु (कीर पर्छ १ २)। २ नहीं और पर्वती ["परिपद्द, परीपद्द] मुख की वेदना की से के जिला नगर (सूच २ २)। ३ पूं मुक्या शान्ति से सङ्ग करना (उन्त २) वैका १)। शिकार (मणि) । आहंक विश्विभित्री १ छोक्पात (वं १ आहेरान (केटक) फलक काल (परहार ४१, मुपा २४१)। २ ब्रोम संशाम (श्रोध w) 1 क्रेडल न [कर्पण] खेतीकरना(सुपा २३७)। क्यान [ध्रुय] कुम्बन, हानि (पुर ४ लेडम न [लेटन] चरेड़ना पीचे इस्समा ११६ महा)। २ प्रयक्त बनाइ (सङ्गी)। (उप २२६)। ३ खुनता कमी (सूपा ७-४३)। खाइपाश न सियनकी सिसीमा (पाट---लेश सक जिल्ला विक काला. चेट चना ६२)। उपजाना । सेएइ (विसे १४७२ महा)। क्रेक्टब पुहिन्देटक] १ विव अक्ट (हे २, नेकापू सिद्दी १ लेप, आर्थेग शोक (बर ६) । २ क्वर-विशेष (कुमा) । ७२० टी)। २ तकतीक, परिमम (स ६१६)। लेक्य वि (स्फेटक) नाराक, मारा करनेवाका ६ संयम विचित्र (क्ल. १३) । ४ वकावट (द्वेद ६ कुमा)। मान्ति (माना)। पत्र इस वि 🛗 केडय न किटकी फोटा यात (पाचा सूर २ निपृत्त दुरास चतुर, बाबकार (क्य ३ ६ 183)1 धीय ६४७)। क्षेत्राका विक्रिक्षको क्षेत्र करनेरामा क्षेत्र देवी लेख (पूप १ ६ माना)। क्रमास्तिर (३५ मू १८८)। साध दें [चेप] त्याय, मोबन (दे १९, ४०) केंद्रिज वि [बुग्र] इन से विद्यारित (वे १ क्षेत्रभण न लिइनी १ क्षेत्र, ब्रोदा १ कि **234)** 1 क्षेत्र राजनेशमा (क्षुमा) । वेडिश पू (स्पेतिक) १ गरामामा, नघर । क्षेत्रर देवी सायर (कुनाः गुर ६ ६)। विश्व २ मनाररमाता (हे २ ६) । केंद्र प्रक [रम्] बीकाकरना क्षेत्र करमा। र् ["धिप] विद्यावर्षे का चन्ना (पडम १×, बेह्र (है ४ १६व) । बेह्रीत (कुमा) । १७)। ।दिवह पु ["विपिति] निवासरी का राजा (पडम २४ ४४)। लेड्ड १ म लिखें १ और वा क्षेत्र समारा केर्द्वय निर्माक (इदि १७४ नहासुपा क्षेत्ररिष् पू [सेपरेम्ड] बेपरीया समा २७ । स.२.६) । २. बहाता, ध्रम 'मक-(पश्रम ६, ६२)। बोहुय निहेप्रसा' (नुपा ४२६) । क्षेत्ररा देनी लक्ष्यरा (दूसा) । संद्वा ध्ये [काडा] बीडा अन तपाता क्षाबाह्य वि [वे] १ ति सद मन्द, यालगी । (ग्रीपः पठम ८ १७३ व•ग्र २)। २ धनप्रियाः दैयान्ति (दे २, ७७) । रीक्किया की [व] वारी १एस 'मह । परिवासा ! न्ते ६ य वि सि एस ] किल किया हुमा (स नेहियाँ (६ ४०१)। (18) ! रात्त र्रून [त्तंत्र] १ यानाग (बिने २ ८८)। ी

क्रेड्मणा की लिएना बेस-मूचक वाणी मुमि । ४ देश, जॉब भगर वर्षेख स्थान (क्या पंचा विसे)। १ मार्या भी (छा १)। कृष्य पूं "कृद्य] १ देश का रिवाम (बृह् हे।इ.स.च (कृप्) बेटी करना चास करना। ६)। २ क्षेत्र-संबन्धी समुद्रान । १ प्रम्य-विशेष क्षेत्रइ (सूपा २७६), 'यह असया य दुखिनि जिसमें क्षेत्र-वियमक याचार का प्रतिस्तन डो (४५) । पश्चिमोयम न "परुपापमी काम का नाप-विशेष (बागू) । । । रिय प्र ीर्थे वार्थ मुभि में बराज मनुष्य (वस्तु १) । वेबी शिख = क्षेत्र । केत्तव पू [चेत्रक] सष्ट (मृत्र २ )। रेरेचि वि [चेत्रिन] शेषवाला अवकात्वामी (विसे १४६२)। लेम व [चेम] १ हराच कस्यास हित (परम ६६, १७ या ४११ मत ६६ रमण १) । २ प्राप्त बस्तु का परिणावन (खाबा १ १) । ३ वि कुरावता-पुष्ठ हित कर, ज्यात-राह्य (खाशा १ १ इस ७)। ४ थु शाद्यविपुत्र के राजा जिल्लानु का एक धमारम (बाष् १) । प्रश्चे की ["प्रश्ची १ नवरी-विशेष (पत्नम २: ७)। २ विशेष वर्षं की एक नवरी ( ठा २, ६)। केमंबर १ किमहर १ ब्रावर प्रश्नविरोध (पडम १ १२)। २ ऐरबंद क्षेत्र के चतुर्थ कुषकर-पुक्य (सम १११)। १ छह-विशेष शहाविद्या<del>पन</del> देव-विरोप (ठा २, ३)।४ स्वनाय-वस्तिह एक कैन मूनि (पटम २१ थ )। ३ वि करवास्त्र-कारक द्वित-वास्त्रः (चा २११ थी) । केमंबर पू [क्षेमम्बर] १ प्रनकर पुरक-विरोध (परम १,४२) प्रेसच क्षेत्र का पांचवां बुसकर पुक्र-विदेश (सम ११३) । ३ वि क्षेत्र-बारक स्वाप्तव-र्याहर (राज) । शेमव र् क्षिमक स्वनल-प्रविद्ध एक प्रन्त कृष् वैतमुनि (र्वतः) । केमराव र [श्रमराज] चना हुवालात ना एक पूर्व-पूक्त (हुप्र १)। केमसिजिया हो [धोमसिया] वैतपुति-गण भी एक शाखा (कप्प) । लेमा की [अमा] रे निरेह वर्ष गी एक नगरी (ठा १ १) । २ शेनपुरी-नामक मगरी-जिरोध

(पञ्चर १)।

(मनि)।

सेर-सोमा

क्षेत्र प्रकृतिस् विकास क्षेत्र करना, तमारा करना । सेना (कप्प) सेना (मा १६)। नद्ध-लेखेत (गि२६)। है। उद्दान का कर्मकारी किरोध (सिरि ३ वर) । है। है (से में केंद्र करने बाता नाटक का पत्त (बर्मीन १) बी ।स्या (वर्मीन १)।

है। र र वि एक मनेज्य वाति (मृज्य ११२)।

स्रोरि की कि र परिवादन नारक 'बएएकीए

वा (बृद्ध २) । २ वेद उद्देग । ३ चलंटा

36

सरमनता (मनि)।

सेख र् [इक्षयम्] स्वेप्मा रफ, निहीका बुबु (सम १ और कमा पडि)। संख्या } न सिख्यन क] १ दीवा सेख्यम } केन । २ विक्तीना (माना छ १२७) : केकोसहि 🕏 [स्तप्तीप व] १ वन्दि-विदेव विसरे स्तेष्य शोपनि ना नाम की सरो (पराहर, १) संदिय): २ वि ऐसी सर्वेचनका (यावम पन २७)।

वड- सेहमाज (स ४४) । प्रयो सड-साञ्चनेकण (पि २ ६)। क्षेत्र देशों लेख = श्लेप्पन (एव)। संक्रम देनो सफन (च २६६) । राह्मप्रकी न सिखन है । सेन करण केटाबणय र वीका कराना । २ न. विसीना (का १४२ दी) । याई की <sup>वि</sup>षात्री केंब वयनैवासी बाई (धव)।

केंद्र वेद्रो संस्थ = केन्। बेहर (श २ ६)।

लाक्टिश न [वे] इसित ईसी उन्ना(देश 44)1 सस्तुड वेदो श्वस्तुड (चन) । रीय व (क्षेप) र क्षेत्रफ फैरना (३४ ७३

शो)। र म्याम स्वापना (विशे ६१२)। **३** हंद्या-विरेष (कम्म ४ ११ व४) । रेंदब वे [क्रोप] विसन्त वेरी (स ७७१)। राय पू [राष] धाँन सेंद, स्मेर: भ ह नीह नक प्रेन नका सीतेनु र्रोतनुमक्षेतु (?)" (पराम १७ ९१)। राष्ण न [ध्रपद्म] प्रेरल (लाना १ २)।

रप्रत्य रि [चप+] वॅक्नेशला (य २ २) १

नुसन्धनवैद्यादनरिस्ताप्तृ (तुर ११ १७१)। को अर्थु क्षोद् र बसु ब्ला २ डीप विशेष स्थापर श्रीप । ३ समूद्र-विशेष स्त्रुरम समुद्र (संतु १ )। सोइय नि दि] विभोदित 'समी संगी कोप्रयाँ (सकार १६)। स्रोपद्य पु [श्रादादक] सपुर-विकेप (तृप 2 4 2 ) 1 व्याधात रेकी सावात (एक १६)। लॉन्ग ) पु दि विशेष विश्व (कारण स्रोटय है है १६६) कोक्ताथक [कोला] बानर का बोलना क्चर का ग्राचान करना । खीनकह (पा १७१ म)। आंक्सा) 📽 [स्टेसा] शनर की धानान

स्थवित वि सिशियों विलय किया हुआ

लेख प्राचित्रका एक 'वस्थियत्र' क्वर

लोक्स (माँ१६२)। लोल्डम छड चिद्राप्य विषय भवदीत होना विशेष ध्यानुन होना। वह सहेस् क्समाण (मीप पराइ १३)। कोक पून हि नार्ग-विद्य (संदिर ४०)। सोड़ तक हि बटबयना अस्टबाना ठौनना । ननक सोहिव्यंत (मोप ११७ डी) । संक्र कोट्टेर्स (धोव १६७ दी) । त्योद्विय दि वनावधी सन्दर्श (मंद्रीटिम पव 8×4)1 कोड़ी सी [क्] रासी कानपनी (के २,७७)। रसेंड दे (स्टाटी कोश (ब्राइ १)। स्थेड प् दि १ सामा-निर्वारक कहा लुटाः २ वि वार्मिक वर्गित (दे २ व्यंग शंवदा(दे२ द पिन)। श्रुत्यन नियार (गुरुद्ध १३) । १ प्रदेश वरह "डियल्नोडे क्यही" (धीम ७६ छ) :

का (हे र. ६) ।

को संत (परन १ ६६, सूपा ४८५) । हिन् क्तांभिचयं सांभइतं (क्या रि ११६)! ६ प्रस्फोटन प्रमार्चन (श्रोम २६१)। ७ न यजपून में का योग्य मुक्त वरिश्व इक्य (44 १)। रहोडपळाडि वृं [ब्] स्वृत बाह की शनि (R 9 9 )1 गोडय द्र [इसाटक] क्य से वर्गना किशी

۹) ı स्रोडिय र् स्रोटिकी निरुप्तर पर्वेट ना क्षेत्रपान देवता (ती २)। लोडी को विीश्यक्ष क्छ (पद्यार ६— पव १६)। २ कार की एक प्रकार की देवे (महा) । ३ नक्सी सक्ती (३ माच इ. हारि, पम ४११)। स्त्राजि और क्षिपे दिन्ती वरही (क्य)। बङ् र् [ैपठि] राजा, मूपठि (टर ७९० क्षे) । क्योणित प् चिगेणीन्त्र] एका, बूमिपवि (चस्)। स्तोणा के सोमि (गुर १२ ६१) दुग

२३० रेक्टो । कोब् र् [झोद] १ दुउँन विद्याप (धन १७ ६)।२ इतुन्छ ज्यामारव (पूप १६)। रस वृद्धि स्मानिक (श्रेष)। "बर च ["बर] श्रीप-विशेष (बीव 111 स्रोद र्वं [झोद] पूर्वं, दुरनी (हम्मीर १४)। क्षेद्रोक्ष १ दु [साबोद] १ सम्बन्धियः स्रोदीह । विस्का पानी स्तुन्त के पुन् मबूर है (जीन ३३ इक) । २ मबूर समीसली वारी (बीन ६) । ३ म. महुर पानी, वर्ड रम के समान मिळ क्त (पर्यं १)। गांद त [सीत्र] सदु, सहर (वप ७ ६)। न्योभ तक [शाभय ] १ विवर्धित करम् नैयं हे चुत करना । २ घारचर्न क्याना । वे रंख पैद्या करना । बीमेड (नड़ा) नहीं

्यांस र् [स्रोस] १ विश्वता, संप्रम (सार १ इस माथ का एक रावास का दुका (पक्रम ४६ ३२)। कांसण प [स्रोसण] शोध उपवास, विष नित बरनाः वैद्योक्तवोस्त्रकर् (१३न ८ ८२। बहा ) १ रग्रसिय दि [स्रासित] विवक्तित दिया 🛍 (पत्रम ११७ ११)। न्यस १ व **चि**मा १ कामिक वर्ण

ग्रीमय 🕽 कपाद भा बना हुमा 🗪 (लाम

१ १ — पन ४३ दी चता १)। २ सल कर बना हुना कहा (सन १२६ मग ११ ११। पएन २ ४)। १ रेटापी वहा (चन १४६ स २ )। ४ वि धवती-संकी सन-संबंधी (ठा १ मग ११ ११)। परिस्मान [मरन] विधा-विदेश दिस्ति कहा में करता का साह्वान विस्मा-बाता १ (ठा १)।

स्त्रोमियन [क्षीमिक] १ कपास का बना हुमा बद्धा (अ.वे. वे) । २ सन कर बन्य हुमा बद्धा (कप्प) ।

स्रोपिय वि [स्रोपिक] १ रेग्रम सम्बन्धी ।
२ शम-सम्बन्धी (वा १२०)।
स्त्रेय वेको स्त्रोन् (सम १११ इक)।
स्त्रेय वेको स्त्रोन् (सम १११ इक)।
स्त्रेय (ता द ११६ ग्रीह)।
२ तक ना एक रेग्र (१११ ६ । १, १ इह १)। ३ मध्य का नीमता कीट-कर्मम (सामा २ १ स्त्रे इह १)।
स्रोध्य पुरुष-एक्स्मून (शिक १२७)।
स्रोध्य वि दे वि ११८८ सहर्य कोटन कीट-कर्मम

खोसजय हि [रे] क्लूम सन्वे मीर बाहर भिक्ते हुए श्रीव्यामा (रे २, ७७)। स्वास्त्रिय हि [रे] जीएँ-प्राय फिया हुमा (शिंड १२१)। स्वोह सेनो स्वीम = सोमन्। बोहर (मर्थ)। बहु-स्वोहेंग (रे ११)। श्याप स्वीहि अंत (रे २ १)। स्वोह सेनो स्वोम = सोम (परह १ ४ हुमा गुपा १६०)। स्वोहण सेनो स्वोमण (चा १२ सुपा १ १)। स्वोहण सेनो स्वोमण (चा १२ सुपा १ १)।

।। इय शिरिपाइअसर्मस्थ्यते समापदशर्शकाणो एकारहमो सर्गमे धमतो ।।

(निषु १४) ।

ग

रा पू [रा] स्थान्यन-पर्श विशेष शतका स्थान कर्ठ है (प्रामाः श्राप) । ग कि ["ग] १ चलेशका । २ प्राप्त होने-बाला विध--पारम, बसव (श्राचा: महा) । गक्षचेत वि [गतवन् ] नवा हवा (बाह **%%)** 1 राष्ट्र की [गारि] र जान, अनवील (निशे २५ २)। २ प्रकार, मेर (छ १ ११)। ६ गमन, वसन देवान्तर-प्राप्ति (कुमा)। ४ बन्धान्तर-प्रान्ति सहान्तर-यमन छ। (१ १) र्ष )। १ देव मनुष्य, विर्धक्रण शरक धीर मुख बीव की प्रवस्ता बेवावि-योगि (कार, १)। वस पुत्रिसी परित सीर मामु के मीन (फाम ३ ११ ४ १६)। "माम न ["नामन्] क्वादि-गीर का कारहा मूद कर्म (सम ६७)। व्यवाय वृष्टिमपाती १ वरि की निमस्ता (प्रस्क १६)। २ र्चवारा-विशेष (सम «, »)। गार्थ प्रिकेन्द्र १ ऐरावण क्षणी वन

गर्दत पु [गजेन्द्र] १ ऐपस्य इत्यो इत्य इत्तो । २ वेड इत्यो (गडर कुमा) । पम

न ["पद] विरुतार पर्वत का एक बस-वीर्व (वी वे)। गद्रस्थय फेलो शय = नत (युक्त २ ५२)। गड ) पूर्विशी देव बूपन सीट (हे र गडम रेरेंद) । प्रच्या प्रविधिच्या १ बैस की पूँच । २ बारा-विशेष (बुमा) । गडम र् [गवय] यो-मुस्य ग्रञ्जतिकामा अंपनी पशु-विदेश गीव गाम (कुमा) । गष्ठकाकी [गो] मैका थी (हे १ १६८)। गरक प्रशिक्षी १ स्वशाम करात केरा अधिक कापूर्वी भाग (द्विष्ट २ २३ भूपा ६ थ । २ गीड़ केल का निवासी (है १ २२)। ३ नीक केल का रावा (नतक भुमा)। वहर् ["बच्च] नाव्यविराज का बनाया हुवा प्राकृत-साथा का एक कास्य-प्रेक (वत्रक)। राषण वि [गीण] सप्रवान समुक्य (व 1 (f 2 राषणी भी [गीणी] राजि-विशेष शब्द भी एक शक्ति (दे१ ६)।

गवरण वैश्री गारम (जुमा है रे. १९६) ।

ग्रहरिय हि [गीरिक्य] गीरब-पुक किमा ह्या विश्वक साहर—हम्मान किया ह्या हो वह 'जन्वज्ञास' क्रिया ह्या हो वह 'जन्वज्ञास' रस्तुमरेख' ( हुपा हश्द ६६ )। गर्य की [गीठ] १ पार्वक्ष रिल-पत्थी (पुपा १६)। २ वीर बर्खनामी की। ६ की-विदेश (पुपा)। पुच प्र [पुन] पार्वकी का पुष सम्बद कार्तिकेम (पुपा ४१)।

र्शं अंख्यो गथ = गठा भीमा वहागमगई परिवरण पंप् (रेमा)।

र्गम हुँ [गाला] द्विनि विशेष, द्विकिय सात का प्रवर्णक पुण्डित (श्रव )। विदे २५२ १)। वर्णक पुण्डित है। एक केम द्वित को पह वार्मुच के पुण्डेकल के पुरूष पे (श्र ११)। २ तवर्षे वार्मुचेक के पुण्डित का नाम (प्रवस २ %)। वे इस नाम का एक केम मेही (व्यत ११ ॥)। विष्णा पुरूष व्याप्तिया की की का नाम (विष्णा (पुरूष व्याप्तिया की की का नाम (विष्णा १ %)। वंगा केसी मंद्रामा पुष्टिपाला पुष्टिपाला (FT #X) 1

AFA) I

क्रिमाचन पर्वेष पर का एक महान् हार बढ़ी

षे वैदा निश्वती है (ठा२,३)। सोक

र्⊈िसानस्] नैगानके का अवस

रोगांसी की [बे] मील जुली (सुधा २७०)

श्रीता औ गिक्का र स्थलाय-धानिक वदी (क्रम

सम २७ क्रम् )। २ की-विशेष (कुमा)। १

ब्रोह्मक के यह है कल-गरिगाय-विशेष

(स्य १६) । ४ वंदा नदी की घरिद्वानिका

देशी (बाबम) । र भीष्मरितामह को माला

वानाम (छाना ११६) । इन्द्र न च्छिन्द्री

क्रियाचन पर्वत पर स्थित अप्र-चितेच बहा

के पंपा निम्मती है (ठान) : "कुड न

िक्टी विभावन पर्नेत का एक शिकार (ठा २ १) दीव प्र दिया क्षेत्र-विशेष चद्वी र्येन-देशीका भनत है (ठा२ ३)। दिशी की दिवी | वंशा नी अविद्यापिका देनी देनी फिरोप (इन) । बच पू विकी स<del>ावर्त्त विधेत्र (क्रम्म) । सम्म न ["शह</del>] **थोध्ययक के** सर्दर्भ एक प्रकार का काल परिमाख (अप १३)। सागर वे धिगारी प्रसिक्त सीमैं निरोध नहां सेना समुद्र में मिनती है (पत १)। शीतकपू [गाह्रेय] १ एंता राप्त कीमा निवास्त (खन्य १ १६ वेटी १४)। २ हैकिन सब का प्रवर्तक काकार्य (बाह्र t) । t एक कैन यूनि को मन्त्रान् पार्क स्प के क्य के मैं (यन ६, ६३)। संद्रा}्द्री क्री क्रम इस नाम की एक र्शक्त । स्तेल्झ वासि (दे२ ४) । गंक्रिय दुं[क्] देशी । द्वानों (बीक प्र ४६४।१-६१ समी। गंजसभ [गजा] र शिष्टकार क्रमा। ३ कर्त्तरत करता । १ वर्षत करता । ४ प्रधानन करनाः वैनद् (क्य १) । क्व वैक्क्षीय (Foft %=) 1 शंकारु [के] भल (६२ ≈१)। र्गज र्जुगिओं चीरन-विकेच एक प्रकार की श्राप वल् (पर्वा २ १---पव १४६)। "सावा को "श्राम्मी दुउ कमी क्षेत्र इत्यन रहते का स्थान (लिच्च १३)।

शंक्षण व शिक्षती १ वरमान, विस्त्कार (सपा ४०) वेदिस्ति स्ट्स्प्यमा, वरमात तवा न वेव केवरिसी। संबाधिकाइ मधा न बेबर्स बीरपुरिसार्स (बना ४२)। २ वर्णक काग 'धंबखरीहची जम्मी' (वजा **₹**<)। गंजन पि [गञ्जन] वर्षनकर्ता (चिरि १४%)। र्गज्ञाची गिक्का नुरान्द्र यय की दूकन (देर दर हो)। गंबिश पूर्तिक्रिडी करूप-शत करू देवने वाला भनाता (दे २, वर टी)। गंबिका विशिक्षारी १ पर्याक्त अविकृतः 'क्रावरिनर्पविद्यो इर्च (इर १६६ थी) । २ **इत गाय इथा विनातित (संप) । ३ वीहित** ( Y Y E) I गॅबिक वि दि र विवोधनात, विद्वार । २ भ्रान्त-चित्त पाक्त (दे २, ८३)। गंजुद्धिन नि कि रोमान्थित, पुलक्षित (बय र्गकोञ्ज नि [वे] समापुषः व्यापुषः (पर्)। गंबोक्किम वि दि] १ रोगान्यित निसके धेन की हार ही का (देश, १ २ न ईखाने के मिए निकाबाता धंग-रनरी इन्द्रणी इन्स्युब्ब्ब्स्ट (६२१)। गैठ बक शियुी १ बळच पूँक्ता। २ रचना, बन्तना । थंडह (🕻 ४ १२ । पन् )। गंठ देवो रोच (राद: तुम २, १३ वर्च २)। गाँठि की [गृष्टि] एककार व्यक्ती हुई नी (प्राष्ट्र \$**3)**1 र्गिठि 📆 [मन्जि] १ पठि और । २ वास माविकी शिखह, पर्वे (हृ १ ६१ ४ १२)। **क्करी बांठ (छाना १ १३ औप)।४** रोब-विरोध (सहस्र ११)। १ राजनीय का विविद परिसाध-विरोप (सप २६६);

'पॅठिति पुरुषेयो क्ष्म्बरक्तृश्रक्तृहर्गंडि व्य ।

बीवस्य कामविद्धाः वस्त्रपद्शिताना

**"छेम ५ ["चक्रेर]** गाँठ तीव्यंताला चीर-

विकेद, पानेस्वार (दे १, वद्)। "शेय व

[भेत्] वन्ति का जैदन (वर्त १) । श्रेक्स

(मिरे ११६६)।

वि "अव्यक्ती १ याचि को मेकोनाला। २ र्वे शोर-विशेष (ग्रामा १ १वा पद्य १ ३)। वञ्ज दं विंपणी सुक्षीय नाम किलेव (क्या)। सक्रिय पि सिक्रियो । गर्म-इन्छ । २ ल. ब्रह्मानमान-विशेष क्ल-पितेष (वमै २ पडि)। शंद्रिम न बिन्धिम र प्रभाव हे स्पी हर्र नामा वर्गेष्ठ (पर्यु २, १० मन ८, ६६) । २ शस्य-विशेष (परुष १---पत्र ६२)। शंदिय वि निभिन्नी पूँचा हवा करा हुमा रिधेक हुमा (कुमा)। र्गेटिय वि [प्रस्थिक] बॉटबला (तूम % शिक्षि हि [ प्रस्थितत् ] इत्यिपुष, पीर-बला (धन)। संद्र दृ [दि] १ वन चंत्रत। २ सदस्यक्तिः कोराया । ३ ग्रीय पूर्व (६ २, १६)। ४ न(पित नाई (देश, दशः भाषा २, १ २) । १ व. १ व. १ वर्षः पुरुषः 'पुरुषरावर्षम्युर-इविम (यहा)। बोड युंग शिण्डी १ नास क्योला (भग पुण इ.) । २ देव-विदेव पर्डमाना 'वा वा क्षेत्र वीवं वंदीमरिक्रेनियकुर्ता (का क्ष्य टीः बान्तः) । ३ हाची का फुम्बल्बर (पर २१)। ४ कुच, स्तम (ततः ४)। ६ इन का अल्बा इब्रु-छन्ड (बप इ १६६)। ६ क्ष्य-विशेष (निय)। ७ प्रोड़ा स्कोटन (वर्ष १)। « पंठ, बन्दि (धनि १७ धर्म **१**≂४)। "भञ मेमम ⊈ ["मदक] नोर-सिरोप पलेडमार (यमि १७) परि १av)। ग्राजिया की ["माजिका] मान्य का एक प्रकार की बाप (दाव)। भान्य की िंगाका रिक्तिक्रेप विश्वर्मे बीवा पूर्व वाती है (क्य) विस्त [वस] क्योब-तम (पुर ४ १२ )। होता की जिल्ला क्योच-मानी बाब वर बयाई हुई कस्तूपै क्लैया को चंदा (शिंद १ १) क्वार) । **विका**र की ["बच्चस्छा] योग स्टनों से बुध्व व्यापी-नाती औ (एच )। नाणिया 📫 ["पायिका] बाँस का पान-विशेष को शना थे भौन्य होता है (सन ७ )। बास 🖠 िपारने नाम पर पारव बान (बस्ब) ।

श्वि न [गण्ड] दोव नाय (यूप १ ६ १६)। साजिया दी [मानिक] यान-क्टिय (यय १४) विश्वनाय १ [क्यिय पाठ] क्योठिक-गाक-प्रक्रिय एक सेंग (संबेध ४४)। गंडस्या दी [गण्डक्टिय] नश्चे-विशेष

पाक्षण का [पाकाणका] पर्यापकर (प्राप्ता)। प्रक्रम पू [गण्डक] १ गॅझा, बागवर-विरोध (पापा दे ७ ४७)। २ ध्वकोषणा करने-बाला पुरूष टेर सवानेपाला पुरूष (शोव ४००)।

६४४)। गोबकी की [के] मीकी कवा का हक्का (कर दूर थे)। गोबा केवो गठि ज्यन्ति (प्राप्त १८)।

र्मेक्षतः पूँ [राज्यको नार्षः इजाम (बाला २, १ २ २)। ग्रीकि पूँ [गाण्यक] बल्यु-विदेश (वच १)। संक्षि वि [गाण्यक] १ वदण्याला वद्य येग-बाला (बाला)। २ वदण्याला (पण्य

२ १)।
गीडिया की [गण्डिका] १ गीडिया कव का
दुकता (महा)। २ छोगार का एक उपकराउ (अ.४.४)। १ एक सर्व के मनिकारताती सम्बन्धदित (सन १२६)।

रांबिस देवो गीमिस (१४)।

रांडिखानई केलो गॅमिस्सनई (रक)।

गंबी की [गण्डी] रे योगार का एक काकरण (का ४ ४—यन १ वर्श) । १० काल की कॉलका (क्या १९) (सिंदुता न [सिंदुड़क] कम्मनिरेच (वी १६) । प्या थु [पदा] हानी वनेष्य नयुष्पत्र वानवर (का ४ ४) । वोरवय धुन [पुस्तक] पुस्तकन्तिरोग (का

४२)। गोडीरी की [चे] क्एवेरी कल का दुकड़ा (देश बर)।

गंडीन न [गाण्डीव] १ मर्जुन मा कपूप (वेणी ११२)।

गंदीव व [वे गाप्दीव] बनुष कार्युक (वे २ वथ महा पास)।

गंडीवि पूं [गाण्डीविन्] यदुन, शस्यस वाएडन (वेणी २०) ।

र्गमुखा न [गण्डु] घोसीता, विष्याना (मदा) । रामुखा न [गण्डुस्] त्या-विशेष (दे २, ७४) ।

र्शबुख पुं [शण्डोस्त] इस्मिनियोप जो फेर में चैवा होता है (जी ११)। गोडवक्षाण न शिण्डोपधाली बाब बालबिया

रोडुवश्चण न [राण्डीपपान] नाव नातकिया (पव सर्थ) !

तंब्रुपय पुँ [तावब्रुपय] वन्तु-विशेष (राज) । शब्द्ध वेको नेबुक (पर्स १ १—गन २३)।

हेब्स है [शण्डूप] पानी का कुम्ला (या २७ सुना ४४१) 'बहुनहरावेश्वरपण्डी (छन १०६'दी)।

रोब्र्स पुं [राज्यूप] पानी का कुल्ला (पूर्णान १४)।

र्मत केवो गा।

गेंद्राज्य } वेशो गम = गम् ।

रांती की [गन्ती] मानी राष्ट्र (धन्म १२ दी तुपा २७७)।

रोहें केसी गम = नम्।

र्श्वपुणकागया की [शस्त्राप्तरयागता] निका-वर्धा-विदेश केन युनिओं की निका का एक प्रकार (ठा ६)।

गंतुकाम वि [गन्तुकाम] वाले की क्ष्या गला (का १४)। गंतुमण वि [गन्तुसमस्] उत्तर केवो

(पपु)। गीनपा) ....

र्गतूण } रेबो राम = १व । रातूण

र्शक्ष केको गीठ---प्रम्प । गीवह (पि ११६) । कर्म भीवीमीत (पि १४०) ।

र्गव पूँ [मन्य] रे राज, सून पुरस्क (विधे ८१४ १६८६)। २ जन-वाल गरियह बाका मिन्यांच कोज, मान बारि ब्राज्य-तर स्वर्धि परिचार (ठा ९ ११ ब्राह्म ११ निते १४६६)। १ जन परिचार (वार ११ निते १४६८)। १ जन परिचार (वार ११)। १४६८न परिचार वीर्यांच (वार १४)। १४६८न परिचार वीर्यांच (वार १४)। १४६८न परिचार

नान (५८६(२४)) । हरू पुँ[ वैश सापु(तूम १३)। राधि वि [शन्धम्] रवना-कर्ता (सम्मच १६९) ।

गीय वेको गीठि (पएड् १ १—पत्र ४४) । गीयम वेको गीठेम (एलम १ १६) । गीवस्थ को [गन्दिस] देको गीयस (१०) ।

शंहीणी की [वे] क्षेत्र-विरोध निसमें से स वंद की वाती है, सौब-मिबीमी (वे २ ८६)। गंतुक देखों गेंतुक (यह )।

गंध पूँ [गन्ध] १ तन्त्र नातिका से पहल करने योग्य पदार्थी को बाद महरू (यौन् यस है १ १७७) । २ सम सेश (से ६ १) । १ पूर्ण विरोध (परहू १ १) । ४

बाकस्थलर देवों की एक बादि (एक)। प्र. न देव-विमान निरोप (निर १ ४)। ६ वि कब्बुक पर्यार्थ (सुम १ ६)। नदी की [कुटी] सम्बन्ध्य का बर (बटा है १ व)। कासाह्या की [करायित] माध्य करणा में की सम्बन्धि

तुर्धान्य करात रंथ की साझी (जना अग ८, १३)। शुद्ध में [रिहा] जनस्य क्ष्य (व्या) द्विय न [रिहा] जनस्य क्ष्य क्ष्य (क्षा १ -- पण ११७) बुद्ध कि [क्ष्य] क्ष्यपूर्ण मुक्तपूर्ण (रंथा २)। वास न [नामन] क्ष्य का हैन्सून कर्म

विशेष (ब्लुप)। तेख म चिक्रु व वृत्येषका विशेष (ब्लुप)। व्यय म चिक्रु वृत्येषका किस (ब्लुप)। व्यय म चिक्रु वृत्येषका विशेष विष

६७)। सच पुं शिग करतूरी मृग करतूरिया इरिल (बुदा २)। संत वि [ बन्] १ सुर्गन्य सुरक्ष १ स्वर्गन्य सुरक्ष । २ स्रोतराम सन्त्रमाला किरोप सन्त्र से पुरु (ठा ४, ६—पन १११)। साइण,

(हा १, ६—तम १९६) । साहण, सायण पूं [माहन] १ वर्षत-नितेश इड नाम का एक पहाड़ (सम १ १। परहा २ एस ११—तम १६)। १ पूर्व वर्षत-विधेष ना एक विकार (हा १ १—तम ८)। १ न नगर-पिराण (हा)। बहु

की [बती] भूतानस्याप स्टेश का शापाकस्यान (शैव) वहुस ह [बर्सक]

र्शाचल-सराजीत

सूर्याचन केप-प्रस्य (शिया १ १)। सिद्ध की विश्वि एन उस्प की बनाई हुई जीवी (खामा १ १) मीन)। बह प्रेिबही पवद, बासु (कुमात्र वा १४२) । बास प्री िबासी १ मुयम्बत बस्तु का पृट । २ ऋषै मिरोप (गुपा ६) । समिद्ध № ["समृद्ध] १ सब्बन्धित स्वन्ध पूर्ण । २ न नवर-विशेष (भारतम इक)। साक्षि प्रै "शास्त्रि सुग-रिक्त बीडि, बान ( ग्रावम )। इतिथ प्रै दिस्तम् ]उत्तमहस्ती विसकी क्य ते प्रसरे हादी का नाते हैं (सम १ पढि)। हरिया पू [°दरिज] कर्जुरिजा दिस्त (कप्पू)। द्वारग वं क्षित्रको १ इस सम्बद्ध एक व्येच्या देश । २ क्लाइएक देश का निकासी (प्रयुक्त १ १--पन १४)। र्शायम पू [गन्यत] एक एएँ-वार्ति (स्व ર જો ા गैंघपिसाय दूं हिं] पश्चिक प्रतारी (दे २, **≈**⊌) | र्गाध्य 🖦 गंध (महा) । गंघलया और वि निवासिक क्रफ (दे २ वरे)। र्गवदाइ प्रै [सम्भवदाइ] पदन (ब्रह्न १०)। ) र्शावच्य प्रे गिल्बके । क्षेत्र-प्रकल स्वर्ध-गावक (इत १ सर)। १ एक प्रसार की केन-माति मर्गतर देनो की एक बाडि (परह १ ४ बीत) । १ वस-विरोग मालाल कुन्युनान का शासनाविष्ठामर का (चीति )। ४ न.। स्कर्त-विरोध (तम ११) । १ तृत्य-बृच्छ बीत, याव (विपा १२)। ईउन विश्व र्यो छन नी एक भावि (एम)। **बर व**िगृही संगीत-मृद्द संनीताबाद, संनीत का साम्बास स्वल (वं १)। पराद, मरार न ितगर] मस्त्रकत्त्वर, श्रीमा के समय में साम्रात में बीबता मिथ्या-नवर, मी मानी जलाव का मूचक है (मणु पन १६)। प्रस्क["पुर] देवी जार (तक्क)। क्रिकि की "क्रिकि सिवि-विदेश (सम १६)। व्याह र् ["विनाह] अस्तर-रहित विनाह, **की**-पुथा

**पी रुप्या के पनुसारे विभाइ (हरा)**। साव्या

क्ये िराखा नल-राखा संबेध-पूर् यंगी

कालव (वव १)।

राधका वि रिप्नवर्धे । वंदर्व-संदर्भी यंदर्व से संबन्ध राजनेपाला (वं १३ वजि ११६)। २ वं उत्सवन्तीत विवाह विवाह-विशेषा 'बंबक्रेस विवाहेल सबयेव विवाहियां' (अवया)। इ.स. बीट गान (पाय)। गंबवित वि गिन्धवित् । पानेवाला (वी १)। गेविकास पि [गान्यविक्र] १ पंत्रवं विधा में कुशन (सूपा १६६)। गेघा धी गिन्धा नवरी-विशेष (१४)। गंघाण न [गन्धान] क्षर विशेष (निन)। गेबार प्रे गिन्बार दिलनिकेन क्रमार (स ३व)। र पर्यंत-विरोध (छ ३१)। ३ व. भपर-विशेष (स ६४)। गंधार 🖠 ग्विम्बारी स्वर-स्टिप चर्मिनी किले (ठा ७)। गंघारी 🖈 गिल्बारी र बती-स्टिब इस्ट वास्केष की एक की (पिंड दांत १६)। २ विद्यारेगी-फिरेन (संदि ६) । ३ क्लबाह नमिनान की कासनदेनी (बंदि १ )। गेषारी की [गाम्बारी] किया-विकेद (सूच २ २ २७)। र्गधानहः ३ दे शिरशापातिन | स्लाजन्मतिकः गंधाबाइ रे एक बृत्त, बेवाम्ब पर्वत (इक ठा र ६--पत्र ६६. ठा ४ २—नव २२३) 1 र्गीच वि [गरियम्] नव-पुळ शंवरामा (क्य वस्त्र)। शक्तिश्र नि [क्] दुर्यन्य साराय गन्नवासा (के र्गिषक १ गिरिषको क्यान्य देवनेवास पहाधी (हे २, व०) । र्गविज वि [गरिनक] नेव-पुत्तः 'युनन्ववर क्षत्रनिवर् (प्रीप) । साक्षा औ िंगास्म राक्ष वरिष्कु वन्त्रदाती भीत्र भी बुकान (वन E) 1 गंभिक वि [गरिन्दा] क्या द्वार क्याना ( # 300; OF EVE WOS) ! र्गिष्य पु [गन्पिस] वर्ष-विकेश विश्वय-क्षेत्र-विकेष (ठारु ३ इक)। गॅबिस्मवर्षे की [गन्धिस्मवती] १ सेव भिन्नेय विश्वक्यप-विशेष (ठा२ १) इक)।

२ नवरी-विशेष (इ. ६१)। कुछ म [कुत]

र्राधिकी की दिविकास बीह (कार स ही)। रांधचमा की शिम्याचमा । धरिय, मुख ( R P, = 1) 1 र्शवेकी की दिर्देश मात्र, ध्रांडा २ मध्-विका (देश १)। र्शंबोदग 🕽 न [गन्बोदक] तुपन्तित यस ांचोदय है सुक्रम शासित पानी (प्रीम निय, 1 (3 3 र्शकोद्धी की दिंदि १ इप्रता, समिताना । २ रजगी एस (देश हर)। र्गिरिप देखो गम = गम् । र्गाप्पम् । र्शसीर व शिक्तभीये । वस्त्रीया। २ धनीकरम (समित १६)। र्गभीर वि [गुरुभीर] १ कम्बीर, प्रस्तात शतुष्यः, राष्ट्ररा (दीर 🛚 ६ ४४) स्प्य)। २ पून बहुन-स्थान व्यून प्रदेश वर्ध प्रति-कम प्रत्यव हो (विते १४ ४ वह १)। ३ द्वी स्त्रक्ताका एक गुक्त (क्ला ४६, ६) । ४ अनुबंध के राजा सम्बन्धिया का एक 💯 (श्रीत ३)। १ न समूद्र के लिन्द्ररे वर न्या इस नाम का एक नगर (तुर १६ ६)। योख व "पोटा" नगर-विशेष (यामा t १७) : बाह्रियी औ ["साहित्ये] न्या विषेत्र-वर्षे की एक नवधी (ठा २ ६)। गंभीय जी [ग्रन्भीरा] १ वंग्रेर-हुस्मा वर्षे (बद ६)। २ माना-स्वन्द का एक नेद (चिप) । १ सह बोत्-विद्येय चतुरित्रव चीन विशेष (श्यश्य १)। गंभीरिक न [गान्मीर्थ] पम्मोखा क्ष्मीरन (\$ 2, T w) 1 गंभीरिम पूंची [गाम्मीय] इतर रेची (धपा) 1 शतक व [रागन] धाकार धाकार (क्या व ३४४)। अद्यात "नम्ब्रन" देशका पर्यं परका एक नदर(इक)। बद्धभा वस्त्र न विद्यारी वैताला पर्वत पर का एक नवर (राम स्क्र)।

गगणीय **र्जन [**गयना**हः] भन्द-विरोध** (पिप)।

सम्म-सम बामा पुँ [रार्ग] १ ऋषि-विशेष । २ मोत्र विरोप भी गीतम गोत्र की एक शाका है (81 9) 1 नामा पूँ [गरी] १ एक वेन महर्ति (उत्त ५७ १)। २ जिल्लाको बार्ड्स शहाची का एक चेही (कुत्र १४६) । शारा पूँ [गारबै] वर्त वोष में करवा ऋषि-विशेष (वत्त २७) । नामार वि [गद्गद] १ गत्र यानावयाना, व्यति वस्पर बक्ता (प्राप्त)। २ वानंद या **पुण्ड** से प्रव्यक्त कवन (हे १ २१८, कुमा)। नागरी की [गगरी] यमर्थ कोटा पड़ा (दे २ ८६: हुदा ३३६) । शामित देखी गामारा 'समयानार गेर्स' (वा ब४३ स्या)। -राबद्ध एक [शम्] १ जाना नमन करना । २ भारता। १ प्राप्त करनाः यच्छाइ (प्राप्तः यक्)। सदि गण्डा (हे ३ १७३ मध्ये)। वर्तः गच्छतः, गच्छमाण (पुर ३ ६६) भग १२ ६)। संदूर, गव्यिक्टल (कूमा)। हेर गन्दित्तए (पि १६८)। बारक पूर (राच्या) १ समूह सामें, संकात (स १४०)। १ एक मानार्यका परितार (धीना सं ४०)। १ प्रस्परिवारः 'प्रकारकारो मन्द्रों तत्य वर्षताए छिन्नच विक्रता (पंचव बनै १)। बास दू [बास] पुर-दूज में प्याना मण्डागरेनार के साथ निवास (बार्ग ६) । विदार पू विदारी शब्द की सामाचारी यक्त का याचार (बक् १)। सारणा की ["सारणा] चन्द्र का एतए (श्वम)। शब्दागरिर्द भ वन्द्र-गन्द हे होलर (धीप)। गरिष्ठतः वि [ गरुक्रवन् ] वन्त्रशासाः, वन्त्र में रानीवाता (हह १)। गत रेपो गप ज्यव ( पर्) प्राच १७१ रक)। सार् पु [सार] एक केन पुनि बर्डक-प्रम्य ना कृती (वे ४७)। गञ्ज र् कि] वन यर शक्त-शिरोप (दे २ ८१ वाष्

गजन [गय] धन्द चिंद्र वाल्य अवस्य (हा

A A-dia 5co) !

सञ्ज्ञ शक [रार्ज ] शरमता नव्यक्ता चव-भक्ता। गम्बद्ध (हि. ४ ६०)। यहः गर्कतः, गञ्जयंत (सूर २, ७३) रवस ४८)। राख्या न रिक्रीन र वर्षेत्र प्रवासक वर्षेत्र, सेष या सिद्ध का नार । २ नगर-विशेष (उप wex) ! गुळाणसद्द दि गर्अनशब्द प्राचीर हाची की शाबाय (दे २ ८०)। गञ्चपाल ) वि वि] देश-विशेष में सम्पद श≋खं} (क्स्रों (शाका २ ४,१ ४।७) । गत्तम पु [गर्खम] पविमोत्तर विकाका थबन (दावम)। गञ्चर दूं [के] कम्ब-विरोध याबर, यक्स इमका श्वामा वर्ग-दाक में निविद्य है। (बा १६ और)। गळाळ वि [गर्जक] वर्गन करनेवाला (निष् गुझह केही गुझम (प्राप्त)। गळित को गिर्जा गर्जन, हाची वनैयह की बाबाब (कुमा मुपा वर, छप द ११७) । गिळाओं कि [गिर्मित] १ विसने पर्वन किया हो बहु, स्तनित (राघ) । २ व. यजैन नेम बरैफ की योगान (परह १ १)। गक्तिकु वि[ग्रीसर्च] गर्वन करनेवाता गिक्रिर निरम्भेनला (का ४ ४--- पत्र २.६. मा ११) । गणिजांद्विम न [प्] १ प्रवर्षे प्रवर्षे प्रवर्षे २ ध्रय-स्पर्धं से होनेनामा रोमांच पुसक (पश्)। शक्त वि [माद्य] महरा-योग्य (घ १४ ३ विसे १७ ७)। सप्त्यार्थं सिद्धनी भएकुँद्र की बाटक-रेता का धानगति (धन)।

गहिया की वि निर्मा पुरुषी 'धववदिया'

गड न शिडी १ विस्तीलै शिना, मोद्य पत्थर

(वे २११)। र वर्तकाई (बुर १६४१)।

गळवळ बूंग वि । गर्मन, अवानक व्यप्ति हाबी

वर्षेत्र की मात्रका का नहमई भूगों हो

समामधी मध्यथी सम्बं प्राचेतरे सर्व दिव

ग्रह (मा) देशो गय = वन (माप्र)।

(निश्व १३) ।

सी बक्को नश्यर्क पश्चमती (सुपा २०१ १४२) । गहरू इ.स. वि. गर्मन करना अपानक धानान करना । यहः गष्टमबंद (पुत (433) शहयही की दि] वज्र-निर्मेश वहराई पात्राज येव-व्यनि (वे २ ८४, स्छ)। ग्रहणक न [टे] बड़बड़ गोसमाल (मुपा **1 (37**% गढिम गङ्गम } देखो गम = गम् । गक्क न [र्दे] भाषन परिष्ठ का बीया-वस वावल शांदि का घोवन (वर्ष २)। गङ्क पूंडी [गर्च] पहड़ा पहड़ा (हे २ ३२. शायः सुपा ११४)। की राक्सा (हे १ **%**%) 1 सङ्क न (द) शक्य, गाड़ी (दी १६)। गङ्गरिमा ) की वि] बेड़ी मेपी क्रफंप गङ्गरिया । 'यहरिक्तकाहेर्ए मधालुकार्य कर्ण वियार्खची (बस्म सूच १ ६ ४)। सङ्क्षी की [दें] १ द्वानी मना मक्षी (दे २ वर)। २ नेडी मेची (चट्टि ६०)। गबुद पूंधी [गर्दम] एवहा गवा बर (ह २, ३७)। बाइपा र्च ["वाइन] राक्स दशलन (क्रमा) । गङ्किला । की वि. बाबी राष्ट्र (मीन १०६ गहीं देश हैं र दशहुता रहेर)। गब्द न वि शस्या विद्योगा (१२ व१)। गह वेची घड च चद्। काइ (हे ४) ११२)। गढ़ पूंची विं] मद, पूर्व फिशा, कोट वि २, <१ मुपा २१, १ १)। **की** शहा (कुमा)। गविका वि [थटिय] वका हमा बटिय (कुमा) । गतिझ वि झिनिता १ प्रांचा प्रमा निवस 'नेव्रानियहमाहियार्ग (हप १ वर्ष दी) प्रश्न १ ४) । २ चॅचित इम्बित निर्मित (छ २ १) । ३ बूट बानक, (बाबा २, २ २) बर्ड 2 R) 1 गण शक [गणयू] रे गितना निनदी करना। २ धारर करना । ३ सम्बास करना झावृद्धि करना । ४ पर्यातीयन करता । मणुद्द, जुनेह (क्रुबर शहर) । यह राजी गरीन (र्यका

का से ४ १६)। इ. गत्रवहत (उर प्रथम)।

राहमी की [गर्दमी] १ वकी मची (पि १८१)। १ किया-निशेष (काल)।

शहर है [तर्रेस] १ कहा गया बर (सम १ ; दे २, ८०। पाधा है १ १७)। २ वर्ष शाम का एक मॅस्प्रिय (बृह १)।

शहरू न [वे] दुनुष चन्द्र-विकासी नभक्त (वे २ ८९) ।

शहरूय पुं[गर्नभक] १ सुप्रजन्तु विशेष वी । नीराता वर्नपद में स्टब्स होता है (वी । १७)। २ देवी गहरू (त्रष्ट)।

सर्द्धी वैको गहभी (तार---भूक्य १० निष्ठ १)। गहिका वि [वे] गर्नित वर्त-पूर्व्य (वे २ ववे)। गद्धा वृं [गुक्र] पति-विरोध, क्षेत्र विद्र

(पीप)। राष्ट्र वि [गुण्य] १ याज्यीय शावणस्या "हिमानवाडी वर्रेची करव न होत वर्षा पुरानानी 'स्थ्यो पुणिद्दे वर्षो (वर्ष)। २ त. गणमा विश्वी 'पुत्रसंख कुंखद वर्षो (गुण। ११६)।

शहस पूर्व शिस्ते १ धूर्मित चेट, जवर (स ४, १) । २ अस्पत्ति-स्वातः, कम्प-स्वातः (हा २ ६)। ६ भूग मन्द्रप्तल (क्या)। ४ सम्बद्ध करा पीतर का (खाला १ व)। रास की [करी] क्यांबान करनेवानी विदा-विशेष (तुम २ २) । घर न ["गुड्] भीतर का बर, बर का धोतरी मान (खाना १ ६)। अर वि विश्वी समें में करनण होनेकामा प्राच्यी मनुष्य क्ष्मु वनैच्य (पड्य ६ २ ६७)। त्यसि ("स्व] १ वर्शन श्रानेशाचा। र ममें हे कराना क्षेत्रेणांगा मनुष्य गरैपर् (६४ २, २)। सास व िंसासी कार्तिक से तेकर माथ तक का महीना (वर्ष ७) । य देखी अह (बी २३) । "बद्दे ब्ह्री ["बता] बॉक्सी ब्ह्री (मूल २७६)। विषयति की [वियुक्तारित] १ वर्णकप में जलति (ठार १)। यस्कृतिक वि ि बयत्त्रधान्तिकी भगीतम में विसकी बरराचि होती है वह (सब २, २४) । इर देखो घर (नूर ६ २१) नूपा १७२)। गरमर न गिक्सर १ कोटर, प्रशा । २ वहन, विषय स्थान (प्राप्त तः चि ६६२) ।

गबसर देखो गहर, 'कनरो' (प्राष्ट्र २४ संधि १६) ।

शंकसञ्जाल न [सर्माधाम] संस्कार-विशेष (राथ १४६)।

राहियात्र हुँ [पे गर्सेज] वहान का मिल बेली का नीकर 'दुव्यिकारकलवास्यवित्र (१ वय) संजन्तसम्बासिययां (सामा १

च—पत्र ११६१ राज)।
गध्मित्र ३ वि. (ग्रीमेंत्र) १ वि. वर्षे गर्ने गरिसस्य ३ वर्षे हुए। हो बहु गर्ममुख्य (हे १ १ स्त्राप्त कार्या १ ७)। २ तुकः
क्षित्र विश्वसम्परिकारिकारिकार्य (हमा

पन्)। गरिस**स्य देशो गरिसम्ब** (शासा १ १७---यत्र २२५)।

भाग कह [गर्म] १ काम कि करमा बत्तमा । ये बाममा, समक्रमा । १ प्रस्त करमा । युक्त बनिक्की (दुवा) । कर्म सम्मद, गोमन्यद (द्वेप २०१) । कर्म सम्मदाणां (द १५ ) । स्तेष, संद्वेस सीया न्या, गांकुम, गांकिस, गांकुम (शी) (दे ४ २७२। सि ४०६। सार—मामकी ४) गांमिया नामियमु, गांचिस सीरियु (पत्र) (दुन्मा) । हेल गांनु (क्या सा १४) । इ. गांकुम प्रामित्रम, गांमिका (प्राप्त १ १ गां ४४६ वह युग्न गांकी) ।

गम कक [गामप्] १ के जाता। १ व्यक्तीय करणा पदार करणा प्रजारणा। वर्तेश्व (तका)ः भूक्षा | प्रतुष्ठ गोर्च्य (क्षा ४)। वर्षः निम्माति (तका)। गुरू गोर्म्य (तृता २ १)। तका गीमिक्रम् (ति) हेक्क गमिताय (ति दश्का)।

गाम हुँ [गाम] १ गणन नति जान (दर २२ दो) । १ मोर्चा (पदम १ २६) । १ धारण का मुख्य पाठ एव दर्ग दर्ग का मुख्य पाठ एव दर्ग दर्ग का मुख्य पाठ एव दर्ग दर्ग का स्थाप समझ सामार्थ किए हो (२१ १ १९६६) १ १४६ मार्ग । ४ स्थापका दोरा (१६५ १ मार्ग पाठना (दर्ग भ)।

गम ई [गम] र प्रकार (वस १) । २ वि. वयम (महावि ४) । राम्मा हि [गमक] बोवक निरमान (निष्ठे ६९२) । रामण म [रामन] पाप गाउँ (भग प्राप्तु

१६२) । २ वेदम जीज (श्रीवे) । ३ स्था स्थान, श्रेटा ४ पुष्प वनैष्ट्र नर नम्नन (राज)।

्पान । गामणमा १ की [गामन] नमन, निर्म 'जोर्यट-गामणमा १ नमणमार्थ' (ठा ४ ६)- पामर्थकर पक्षांकल यसणार्थ' (डाला ११--पन २१। गामणित्रक वैत्ती गाम = नम् ।

गमिषिश की [गमिनिका] रे विशिष्ट, व्याद्यमान विष्-कर्मन (एम)। र पुनारमा, व्यक्तिकालः कस्त्रमाणिया एक जनामी (जप ७२० टी)।

गमप्पी की [गमना] १ विधानिकीर निवकें प्रमान के पालता में पमन किया ना सकता है (काला १ १६—पन २१३)। २ बुतार 'बच्चीम नप्पी यस विधादि से काला पमकीमा नप्पादियों (सुता ६१)।

गमानील केवी राम = वस् । गमान देवी गमान (दिते २१७६) । गमार दि [दे मानव] वदिराव मूर्व

(विति ४७)। गमान केटो गम = गमन्। समानद (सख)।

गमित्र वि[गमिड] प्रकारशामा (वव १)। गमित्र वि[कृ] १ अपूर्णः २ इतः । ३ स्वतित (यहः)।

गमिय रि [गमिड] १ इबाए हुमा परिसंद (पठव): २ शापिड बोमिय निवेदिः (पित्र प्रदेश):

गतिय न [गमिक] राज्यनियेन बारा नक्षणता राज्य "मंत्रनीयुवार गमिने सीर स्वतमंत्र कारक्षणतेयां (मिके प्रश्चे ४१४)। गमिर नि जिल्ली कारेकाला (से २ १०४)।

गमिर वि [तन्तु] बातेवावा (हे १, १४१) । गमेथि गमेथियु } देवी गम = वर् ।

गमेर देवा गमार (सींत ४०)। गमेस देवा गदेन । व्यंतर (ह ४ देवर)।

विनेति (कुना)। शस्त्र वि[गम्य] १ तानने सामा। २ औ

मान्य भा तके (बरर १७ मुरा ४२६) । व इंग्ले मान्य माक्रतलीय (तुर १२६,

यन्त्र-गरिव

१४, १४४)। ४ वाने योग्य। ४ मीवनै बीरय-स्वत्तनी वयैष्ट् (सुर १२ १२)। रास्स न शिस्य कान 'चनम्ननमं सुनिलेपु वर्म (बुक्त ६ १६)। गम्ममाप च्योगम = गम् । गय लि दि ] १ पूर्णित भ्रमित पुनामा नमा (देश ११ वड)। २ मृत गरा हुमा निर्वीप (वे २, ६६)। शय नि शित्र] १ नदा हुआ। (सूपा १९४) । २ वर्तकस्त दुवरा क्या (दे १ ३६) । ३ विकास काला ह्या (मरुड) । ४ व्यु इत (६४ ७२६ दी) । १ प्रान्तः 'बावईसवसि मुद्रप्'(प्रत्युद्धाः १७)। ६ ल्लिन यहा हुमार्र 'मखुगर्ब' (उत्त १) । ७ प्रतिष्ट, क्सिने प्रवत्त तिया हो (क्षाप्र १) ः व प्रकृत (गूच १११)। १ व्यक्तित (ग्रीप) । १ न वर्ति, यमन 'उसमी न"दमयमसमूलविदगन-विकासे स्वरं (बन्, सुपा १७८ माणा)। पाणाचि (शाम) सून मध द्वाशा (वा २७)। सम नि [ैराग] सन-प्रीत, नीत-चन, निर्देश (जन ७२ थी)। नक्ष्मा वई की वितिकारी शिवना रोड़ (बीप) पटम २६ ४२)। २ विद्वन्य पति विदेश नया द्वी बहुकी श्रोतित मतुना (ना देवर पञ्च २६, ६२)। वय वि [ वयस्\_] कुर प्रदा (पत्न) । । प्रधादक्ष वि ित्रुय-विक्री संच परम्पण का समुदानी संच मबलु (उदर ४६) । गय पूर्विका दे हानी इस्तो पूजर (मल

बीरा प्रान्तु १९४ मुता ३१४)। २ एक चंदश्य केन बुनि, यत गुरुमान्त सुनि (शंद ३)। ३ इत नाम ना एक छेठ (कर ७३ **०** दी) । १ एवए का एक गुक्त (परम १६, ुंगवण न [गमन] मगन, प्रालाग, प्राला (है २)। इर व प्रिर् नवर-विशेष पुत्र केत नाप्रधान ननद्, इस्टिनापुर (छा १ १४० <sup>।</sup> बदा हत्।। इत्या अन्तर्भु [किये] १ द्वीर-क्रिये । २ उनमें प्रतेशना (कीन ६ द्य ४२) । वस्त्रम पुँ विश्वमी श्रेणी का वथा (स्रव)। सव रि "गत] हाची के असर <del>चारद (चीर) । मापय पू [ामपद]</del> पर्श्व-विशेष (बाष)। स्थ वि [रिय] हानी के कत्तर स्थित (प्रश्न = ६)। पुर<sup>ी</sup>

विन्यक् हाथी नो पकरनेवासी वार्षि (बूप १४२)। मारिजी औ िमारिजी बनलाति-विशेष प्रकार विशेष (पराग्र १--पव ३२) । **सुद्र र्¦िं सुका**ी १ थ©रा करापिट रिपर-पूत्र (पाय) । २ वय-विशेष (गए ११)। "राम पुं"िरास्त्री प्रजल क्षणी व्यक्त इस्ती (सुपा १ वर) । बद्ध पूँ विधि गर्मगढ, बैंड इस्ती (छाया १ १६ सूना २०६)। बर प बर निया प्रचान हाती। बरारि प्र ['बरारि] लि**ह राजु**स बनराज (परम रे७ ७२)। "बहुकी विस्] इतिही इस्टिनी (पाय) । बीड़ी और विशेषी दिख वपैरह महाबही का चार-क्षेत्र-पिरोप (ठा ध) । समज वृं िश्वसन् । इत्वी की सुँक (यीर) । सुकुमास पुं ["सुकुमास] एक प्रधिक बैन गुणि, क्सी घल में जुद्धि-यत बैन जा<del>डु-विशे</del>प (बेट पर्वि)। हरि पू िरिी खिह, पञ्चानन (धवि)। ।रोह पू ["रोह] इस्तिपण महायत (पाय) । गय पू [गव] रीम विमारी (बोरा शुरा 184€)! गर्यक पू [ग्रजाष्ट्र] वेगों की एक कारि विज्ञुसार देव (धीप)। गर्यत् पू [सकस्त्र] श्रेष्ट इत्यी (पवड) । गमक्ठ १ [गमक्फ्ड] एल विशेष (चय ६७)। गयकरन पु [गजकर्ण] चनार्थ देश-विरोप

(बस २७४)। गयग्गपथ व [गजापपद] बस्तर्शन्द्रश एक दीवें (बाजानि ३३२)। गयण न [गगन] 'ह' क्सर (शिर ११६)। मणि पू "मणि] सूर्व (पूत्र ११)। २ १६ ४ मजड)। शक्षु [शक्ति] एक धरपुगार (रस)। धर वि विवर विकास में मशनेनावा पत्ती निधानर नगैरह (गुपा २६)। मंडस द्वं [सण्डस्त्र] एक राजा (चंग) । गयगरह र् [पे] मेथ नेह, बारन (दे ) i गयर्षितु 🖠 [गानस्तु] विचावर वेश 🕏 एक

रामा का नाम (पत्रम १, ४१)

चवासीनवा (स ११) । गयसुद्ध पू [राजसुत्त] बनार्व दे<del>ठ निर्देश</del> (पच २७४) । गयसाउक्क ) 🖟 विं] निरस्त, वैरानी (र गमसाबस्छ । 🕶 पर् )। समाच्ये सिद्धी नोहें का या प्रकार का सक-निरोप लोहे ना तुपसर मा शाठी (रान)। हर पुं विधरी बागुधेका (बत्त ११)। गया की शिशा देश देश-विनाम (सैन्द्र 1(983 गया की [गया] स्वनाय-प्रसिद्ध अवर-निरोध (क्य २११)। शर वि [\*बर] करनेनाता वर्षा (सरु)। गर र् [गर] १ विच-विरोप एक क्लार रा वहर (तिक् १)। २ ज्योतिय-ताक-प्रविद

बबादि बरखों में से एक (विसे ११४०)। गरण वैशे करण (शता ६३)। गरक न गिरका १ विष, बहर (पाम मेंद्र ३८)।२ स्टब्स:३ विश्वमान, ब्रह्मी 'ब-नरकार ध-मम्मकार' (बीप) । गरस्थियक्त वि [गरस्थिकवर] निविध ज्यन्तस्त (निष्**र** १)। सरह सक [सर्हे] मिला करना प्रका क्रमा । यस्ट्र, मर्ट्स् (मन) । बङ्गः गर्स्ट् (इ.१५) : इनक् गर्धक्रियमाय (सम्ब १ व) । तंत्र गरहित्ता (ध्यवा ६ १६) । केंड्र गर्राहेस्टर (रस कर १)। इन सर्व्हणिक राख्णीय, सर्व्हियम्ब (दुरा १वाश १७६ परहर १)। गरहण न [स्क्रूंज] किना इर्जा (१८१९)। गरदणवा | भी [गर्दणा] भिन्त वसा (म गरहणा रिक शामीप परह २ १)।

गखर की [गर्हा] निन्दा पूछा (क्य)। गर्राह्म कि [गर्तिव] मिन्तव शक्ति (ह ६६ स.६३३ सछ)। गरिक पि [कृत] पिना हुमा, निर्मित (दे w \$\$) : गरिक्क कि [गरिष्ठ] शरिष्ठ पुर, बड़ा ऋषे (पुषा १ ३ १२ च प्रामु ११४) । गरिम पुंची [गरिमन्] इच्या प्रथम वीरव

(दिर ३४८ नुपारके १६)।

सरिष्क् वेको सरह । वरिष्क्ष, परिकृति (मङ्गाः पत्रिः)। सरिष्क् पुंचित्रहें [सन्दाः सर्वा (प्राप्त)।

गरिष्कृ पृथ्या देवी गर्मा प्राप्त (प्राप्त) । गरिष्कृणया देवी गर्माणया (एत २६ १) । गरिष्कृत की [सर्हो] निन्दा, क्या पुरुषा

(बीम ७१६) स १६ )। शक्त देखी गुक्त 'पस्यरमताय बिनिकण' (सुना

२१४)। शस्त्रम वि [गुस्तः] द्वरः वदाः सद्ग्यः (हे है १ १, प्राप्तः प्राप्तः ११)।

गरुज सक [ गुरुकारम् ] प्रक कला बहा

वनामा । नस्प्र (पि १२३) 'श्रीसास संपेर्ड सिपी सारिनेश

सह स्टाल हर्नेहर । सहस्राह्य विश्व पर

विश्व एए, सम्पार्ण स्वर वन्मेति

(हेका १११)।

गरुमा । पर [ गुरुमार ] १ वडा गरुमाम । वरमा । वड़ की उपह धावरण करमा । परमाह, गरुमाम (हे १ १३०) । गरुहम वि [गुरुहुत] बड़ा किया हुया (हे १ २ । परम)।

गरुष् । की [गुर्वी] बड़ी क्येश प्रकृती गरुपी । (हे १ क प्राप्त लेख १)। गरुष्क केवी गरुज 'जननेक्कण' प्रपत्नप्रीएस विकारण्यनकरोय' (प्राप्त)।

गरक देवो गरुज (वीठ १ व ११४) तिग)।
स्वस्थितेय (तिग)। त्यां म िका विकास्थित हिरोप करणक का प्रतिपत्ती सक (दान १२, ११ वर्ष १६)। त्यां पु िच्या वित्यु कानुदेश (दान ११ १७)। कृष् पु वित्यु कानुदेश (दान ११ १७)। कृष् पु विद्यु कानुदेश (दान ११ १७)।

(महा पि २४ )। गरुबैक पूँ [गरुबाहू] १ विष्यु वापुरेव। २ इस्ताहु वैरा के एक राजा का नाम (पज्य

प्र ७)। गरुछ दे [गरुष्क] एक देव विधान (देवेन्द्र १६४)। गरुछ दू [गरुष्क] १ पद्मिन्यक पश्चिम्बिरोण (पद्म ११)। १ सर्त्वन्द्रिय स्वकान् प्रानिकाल का स्थलनन्त्रम (विधि क)। ३

मनग्रति देशों की एक कार्ति सुपर्शंदुकार

10

तरुवी देखो शरु (कुला) । गुद्ध सक [तर्जु] १ सस जाला सङ्गाः १ बादम होला स्ताल होता । १ फरणा ट्रप कना, निरुता । ४ निकलना तरुन होता । १ सक निरुता ट्रप्यन्ता भाग रही एकई

(शहा)। वह जियेण रास-तेणाँच गातीतम् प्रमुक्तार्थं (शहा चुर ४ चेट चुरा २ ४)। गासित (पण्ड १ वे प्राप्त ७२)। प्रयोत्त, वह-गत्मवेमाण (णाया १ १२)। गास्त्र , प्रुं[गास्त्र] १ गता, वीवा व्यस्त

शस्त्रका है (पूर्ण वेश पाय) रे वरिष्ठण, बेरी ग्राम्की पंत्रकृति का क्रीटा वर देवता विचा है। म सुर द १४)। शास्त्रि की शिक्ति ही पत्री की पत्री (सहा)। शिक्तिय न [गामिय] क्लन्यतेन (सहा)। स्त्राय वि [स्कार्य] क्ले में सगास्त्रा कुमा नश्ट-व्यक्त (तीरा)।

गळड् की [गळकी] बनस्तरि-विशेष (चन)। गळम वेको गळक (पद्या १-१)।

राधस्य देशो सित्र । नतस्य (हे ४ १४३) प्रापः)। राधस्याय न[हीयण] १ क्षेपण करना, रॉकना।

२ मेच्छ (से ४, १६ चुना २०)। सहस्यक्षित्र मि [बे] १ जिल केंद्रा हुया।

व जीवा (वे ए, वक)। सम्प्रमाह युँ वि] तमहरत हाय है तमा वक-इना (शाया है कि वहाई है—यम ४व)। सम्प्रमाहिक वि] वेची सम्प्रमाहिका (वे ४, ४४) व ११)।

ग्र**स्त्वा की [दे]** प्रेरणप्र 'ग्रह्माणं चित्र प्रूवणस्त्र घावया

गस्माणे चित्र भ्रुवणस्मि भावया न उस्त हुँदि सहुमाण ।

गहरक्कोत्तमस्त्या, शिस्तुयार्यं न तारार्यं (उप ७२० टी) । गद्धरिपातं वि [चिप्ता] १ प्रेरितः (मुगा १९१) । २ फॅटा हुमा (१ २ ८७ हुमा) । १ बाहर जिल्लाना हुमा (गामा)।

गळ्ळा १ [ब] मेरित द्वित (यह)। गळ्डारियक वि[गस्कृत्तित] मना पत्रकर बाहर निकास हुया (वस्य १६२)।

गख्य वैद्यो गिक्सण (गट—पैट १४)। गिक्स पे पेडे गिक्सण (गट—पैट १४)। गिक्स वैद्यो गुरू = गता 'मञ्चुस्य मित गिसित्ता'

(राज्यू १ ६) : गांकि } दि [गांकि, क] पुनिनीत पुरेन गांकिम } (ला १२) गुप्त २७६) : गांद्यू थुं [गांदीम] प्रतिनीत बच्चा (एच २०) : बद्ध थुं [गांदीम] प्रतिनीत बेस (राष्ट्रा) : स्स्त थुं [गांदीम] पुरेस मोहा (एस १) :

गस्किम वि [गस्किय] १ गमा हुमा विश्वसा हुमा (कमा)। २ शामित प्रश्नामित (हुमा)। ३ स्वतित पतित (हेर २)। ४ गट गाट-मात (सुपा २५६ स्छ)।

गंकिन वि [वे] स्मृत, बाद किया हुमा (वे २ वर्ष)।

गर्कित वेबी ग्रस्थ = गत्।

गास्थित वि [गासीय, गास्य] नचे का (विश ४२४)।

गिक्कर वि [गिक्कियू] निरुत्तर पित्रनता उप कताः 'बहुसोमगित्रज्ञक्के (बा १४)। गालुक देवो गरुक (बन्दु १) पर् )।

गलोई } श्री [गुक्क] बन्नी विशेष गलोया | फिनीय प्रस्क हि १ १९४७ श्री

१)। गर्छ द्विष्ठि रेशाल कपोल (१९, ४१ जया)। रहायी रा लटक-स्ततः हुम्म स्वद्ध (वर्)। मस्त्रिया वर्षि [सस्रिक्स] श्राल का उपकास (बीटा)।

ग**डक पून** [क्] १ स्वटिक मरिए (प्राप्त वि ६६६) ।

ो गहरथ देवो गस्त्य । पललइ ( पर् )।

गद्धापाड रू [दे] स्मान नाथ-विशेष (दे   ग्रवेस धक [ ग्रवेषम् ] व्यवक्ता करना   र	गक्षण्योवम्
से पर्वत (पात है ) ।  साम म हि पड़ पात निर्माण (मा १२ कुमा ४१ ।  साम म हि पड़ पात निर्माण (मा १२ कुमा ४१ ।  साम म हि पड़ पात निर्माण (मा १२ कुमा ४१ ।  साम म हि (पात हो १ नम माम माम ११ ।  साम म हि (पात हो १ नम माम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम म हि (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  साम से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  से से से (पात हो १ नम माम ११ ) ।  से स	सराण व सिस्त कास विकास (व ११७)।  प्रांत के सिस्त मिला विकास (इर १४)।  प्रांत के सिस्त मिला विकास (इर १९८१)।  प्रांत के सिस्त मिला विकास (इर १९८१)।  प्रांत के सिस्त मिला विकास (इर १९८१)।  प्रांत का सिस्त के सिस्त का का सिस्त (प्रांत का साक्ष्म (प्रांत का साक्ष्म (प्रांत का साक्ष्म (प्रांत का साक्ष्म (प्रांत प्रांत (प्रांत (प

ग्रह् न [गृह] घर, मकल । यह दूं ["पति]

गृहस्म गृष्टी संसाधि (पटम २

प्राप्त) ः बङ्गी की ["परनी] पृष्ठिशी की (मुपा २२१)। गहरकोछ द [व प्रहरूसेछ] पह, पर् विशेष (दे २ वद पाप)। राहराइ सर [दे] हर्ष हे भर जाना सानान पूर्णे होना । नहपहर (मदि) । शहूज न [प्रहण] १ द्वारान स्वीकार (चे ४ ६६ प्रासू १४)। र धादर, सम्मानः । ज्ञान सक्तीय (से ४ ६६) । श श<sup>98</sup>, द्याबाल (द्याबार ११ द्याबन)। १ वि बहुछ करनेनाचा। ६ न इन्द्रिय (विसे १७ ७)। ७ चन्द्र-सूर्व का उत्तराम-मञ्जूष (भग १२ ६)। = वि संस्थ, निस्त्रस सङ्ग्र किया जाय वह (उत्त १२) । १ म. रिका-विदेय (भाग)। शहण न [प्राह्मण] प्रहण कराना, श्रेयीकार 'को शांति वंशवेरन्त्र<u>क</u>्षुक्' (बुमा) । राहण न [प्रहृष्य] १ मारान का कारख । २ बाह्मेपक 'चनशुस्त क्य' गहरा वर्गीत' (उत्त **1**2 22)1 राष्ट्रण न [राष्ट्रन] सरस्य-सेत्र (शाचा २, ३ ६ १)। विद्यान [विदुर्ग] पर्वत के एक प्रकेश में दिनत पुत्र-बद्धी-समुदाय (शुक्ष २२६)। ग्रहण विशिद्धनी १ विविद्ध कृतेंच कृतेन भावे मसाइतिक्षे बोसीनहस्ताम मोससे इत्व" (भी ४६): 'क्षसाय्यक्तियाग्रस्या' (मंडह)। २ वन, माड़ी चना कानन (पाधा भग)। १ क्स-वहार, कुछ का कोटर (विचा १ ६—पत्र ४६)। ग्रहण व दि १ निर्मंब-स्थान बल-सीहर प्रफेश (वें २,८३ भाषा२,३३)। २ बन्बक वरोहर, निर्मी (तुना १४८) ।

गङ्गमा की [मङ्ग] घड्डा स्थीकार, ज्ञा-

राह्णी धी [मह्णी] प्रचरम श्रीड (पर्ह १

रान (भीग) ।

४- भीप) ।

राह्मणी की [महणी] दुखि पेट (पव १०६)। राष्ट्रणी औ दि ] अवच्यत्वी हृच्छ की हुई औ मांची या मंदी (वे २ =४- हो ६, ४७)। गहत्य पुं [गभस्ति] किएए, लिब् (पाप)। गहर पूंदि] बूछ, बीब-पन्नी (वेर वध पाम)। सहर पुन [सहर] १ निर्द्रण । २ वन र्यनमः। ६ ऐस्, क्या । विधम-स्थान । १ रोवन । ६ पुछा । ७ घनेक धननीं का संकटा 'पहरो' (प्राक्ट २४)। गह्तह र् [गृहपति] इन्हः चेती करनेवासा (पाप)। राह्यदृषि [दे] १ प्रामील वांचका एहा-नामा(दे२ १) (२ दूं चमाना चर्तर (के २ १ ं। पासा वास १६)। राहिक वि [रे] बन्निय मोना हुया देना कियाद्वचा (वे २ = ६)। गहिल नि [गुरीय] १ ज्याच स्पेक्ट (प्रीप: ठा ४ ४) । २ पक्का हुना (परह १ ६) । के ब्राठ सम्मन्य विदित (यस २० वर्)। गहिज वि [गृद्ध] बासकः व्यक्रीन (प्राचा) । गहिआ की दि १ कम-और के लिए निसकी प्रार्थना की चाती हो बह की (वे २, (प्र)। २ ४ इ.स. करने योग्य की (प्रकृ)। गहिर वि [गमीर] बहुरा, गम्धीर, घरताब (देर रेर काल १२१, कम्या गलक भौप प्राप्त) । गहिस्स नि [प्रहिस्त] मृतादि है बाविष्ट पागम (मा १४)। गहिखिय ) वि वि प्रश्विमी प्रावेश-पूर्व गहिस र पामने भानत-वित्त (पडम ११६ ४६। पर्≀या १२। इस ४६७ टी। मंदि)। गरीभ केने गहिम = गृहीत (या १२) एवस ₹=) ≀ गदीर वेची गसीर (प्रानू ६)। गाहीरिक न [गाभीयें] सहस्तर, नम्बीरतन रह्म्यय न [दे] बहुना, ध्यमुप्रशु (नुपा ११४)। (R ? & w) 1

खा (है ४ ४११)।

गहेकक्ष गहेर्च } देखे गह≔न्नह।

गहुण (धप) केको शहू = वह । पहुद (पंद्र)। ना ) सक नि १ माना, भारतपना। २ गाञ्च विर्णन करना। इस्तामा करना। याद वाघद (हे ४ ६)। वह गीत गार्जेट, गायमाण (गा १४६ वि ४७१) पटम ६४ २४)। कनकुः गिर्धात (यउक्र वा ६४२ सुवा २१ भूर १ ७१)। श्रेष्ठ गाइडे (मात)। गाल पूर्वि] वैत्र क्यूपन सोड़ (है रै १६८)। गाल न [गात्र] १ शरीर, देइ (सम ६ )। २ शरीर का सबसव (सीप)। गाम वि [गायक] शनेकका (कुमा) । गार्थं ह पूँ [गलाह्य] महादेन फिन (हुना)। शास्त्रय वि [शायत] यानेशाला वर्षेया (पुपा ११ सखे। गाइअ दि [गीत] १ गागा हुआ "किपरेण को बाइवं गौर्यं (भूपा १६)। र न मोठ पान, पाना (ब्यव ४)। गाइआ की [गायिका] यनेवासी की (वा EVY) I गाइर वि [गाशक] कलेवाका, ग्रवेमा (सुपा 24) I गाइ की [गो] वैदा भी (हे १ १४० दे ४ १० मा २०१ सूर ७ ६६)। गांक । व [सब्युद्ध] १ कोस क्रीरा की गारक हमार बनुप-प्रमास बनीन (पि गारुक पर्श प्रीप इक बी १० निसे वर दी)। १ वो कोस क्रोस्ट-श्रुग्म (भीव 1 (83 गागर पूँ वि] की को पश्चने का बस-विशेष सर्व्य र्ववरा या मनिका पुत्रराती में 'नामरी' (पण्ड १ ४) । २ मतस्य-विश्वेष (पर्ण १) । गागरी [दे] वेबो गावरी (पि ६२)। गागकि पूँ (गागकि) एक वैनवृति (उत्त t)ı यांग्रेज वि [के] विका नवा हुमा, मानी-गदीरिम पूंची [गमीरिमम्] बहुराई, गमी-क्षियं (वे २, ८८)। गागका वर्ष [दे] नवीहा, दुलहिन (दे २ थय) १ गाबिक मि [ब्] विद्वर, विद्वक (वे २,०३)।

रश का करती।

१२ 🕏 **28)** 1

YT) I

R 44)1 गपारि दि] देगर छो नव वा निजनी (बका ४)। गरा। प्रपास मिसायी भी के शिवा म स न भाषात्र (पारु १ २)। गपनाः[इ] मातुत्र स्टिंबत्र (बह्)। र्गोदष्ट्र रिट [सर्विष्ठ] चीका हुवा (तुरा न ४४४ रुष् र्गापाप्र न 🕄 जनन शोरिशी चीती. हुख शिली (प्रदेश दि) । गरपुर्भा स्म [गरमुद्दा] वैत्रमुभिन्द्रपुर्श त्र धना (गा) गरका (भे [गरणः] १ वर के (एक १ १ देन) । १ शे वै१ नेह (स ७) ः

गम्ब १ [गर्प] मान, धार्रार, धाँमगान (वन गब्दर न [ग्रद्धर] बोहर, प्रमा (स १६६)। गरिव रि [गर्रिव] श्रीमानी धर्मपुक्त (था गस्तिह रि [गर्तिष्ठ] रिष्टेय धनिमानी । वर्ष बरतेशमा (दे १ ११ )। गरियप वि [गर्पित] वर्वे पुत्र विश्वशी ग्राम बान उत्तम हमा हो बट् (गय गुरा २० )। गरिवर वि [गर्जिन] बहुवारी बाजानी (हे र श्रद्ध हैना प्रत्र) । औ थी (हैना

शम गर [ झम् ] चाना, निगाना कार

गर्मन (पा ६२ थै)।

वस्ता।स्तर(१४४४ प्रवर्)।वाः

बह-नंदिर (भग १ ७)। "माह दूरिनाव] १ मुद्दै भूरत (मा २०)। २ वन्द्र, पन्नण (इर ७२० दी)। मुसस्त ["मुसस्] बुक्तारार बहु-र्रोफ (बीव १)। "सिपादम न [श्रद्धाटरु] १ पानी-धन के पारार वाली प्रदर्शक (सव ६ ७)। २ वर 🗗 व वह नी जोड़ी (बीन ३)। "हिन ई ["गंधिप] नूर्ये नूरन (दा२)। गह र्पु [प्रह] १ संबंध (वर्गने १६३)। र पत्रद्र करना (नुम १ ६ २, ११। वर्गीर ७२)। ३ छह्ल अल (पर्नेचे १६६४)। "भिन्न न ["भिन्न] तिमने गीप के पर <sup>वा</sup>

यवन हो बहुनतम (बद १)। सम ग

["सम] केंग्र काम्य का एक मेर (दर्की रे

24) 1

शांत वि [गांत] रेगांत निर्मित वान्त्र (पास पुर १४ ४८) र अस्मुत्त हर् (पुर ४ १९७) र विकि धानन्य धाँउत्य (इच्छ)। गांच नि [गांचन] चेत्र वान्त (हुँ ४ ६)। गांच नि [गांचन] गरैना चैत-क्सीस्त (है १ १ ६)। गांचनांव्य वृं[गांगक्रांचित्र) के सीचार प्रकार वृं[गांगक्रांचित्र) के सुधरे पक्ष में बानेक्सा वान्तु (हरू १)। गांची खें कि गांचन्त्री कोचर-कृषि (है २ १२)।

गावा केवो गाहा (मय पिंव) ।

ग्यम वि[गाध] प्रताम-प्रकृत कम ऋष (बे ४, २४) : गाम देशिया १ सम्बद्ध तिक्य भवतो देविक्प्रमी (भूर २ ११**८)। २ बार्ए**ड-समूह, मन्द्र-निकर (विशेष २०१६)। ६ वॉक वसरि बाम (रूपा सामा १ १ वा बीम)। ४ इन्द्रिय-समूह (कार मौत) । क्षेत्रस क्षेत्रस दे [ इन्टच्ड र इतिहमनात् इम कोटा (क्य धीर) । २ दुर्जनों का स्कासाल बाबी (मापा)। यायरा वि विदातको नौव का नात करनेवाला (पराह १ ६)। जिल्लामण न ["निर्धेसन] बॉव का शानी वज़ी का पस्तानला (क्य) । घम्स पुंजिसी रै विपन्धानिकाप, विध्य की वास्त्रह (का १)।२ इत्रिवें काल्यसदाः प्रवृत्ति (बावा)। ४ मैकुन (बूध १ २, ९)। १ शम्द स्म वर्षेत्व इतिहाँ स वियम (पर्द्ध १ ४)। ६ वान का बसे बीव ना नर्दम्ब (ठा १) । द्वः पूनः ["फिं] श्राचा योग । २ ज्यार भारत भारत का क्लाध्यकेत (निष् १२)। मारी की "मारी का गर म फ़बी हुई गाँगाएँ-विरोप (बीव ६) । राज प्रामा पाम न्यापक बीमाधि (ब २)। बद् हुं ["पवि] मांच का मुख्यिस (पाम)। ाजुमाम न ["ानुमाम] एक यांच हे बुस्टरे नान (पीप)। "पार दूं ["चार] विका (मान्य) ।

ग्यमदक्षः । पूंचि ] याँच का युविषया (वे २, ग्यमद्भारः । पृष्ठः ३)।

गार्मीतय व [धामान्तिक] १ बॉव की बीवा

(बाचा)। २ वि नौवकी सीमा में खुनेवाबा (बसा १) । ६ वं. कैनेहर बार्सनिक-विधेव (सुष २, २)। गामगोइ पुँ दि] यौग का मुक्तिया (६२ 5E) 1 ग्यसद्वर्षम् । মান হীল বান (মা 24) I गामल न वि गमनी मूपि में नपन चु-कर्पेश (भग ११ ११)। गामणह न [वे] श्रम-स्वान श्रम-प्रदेश (वद्)। गामणि देखो गामणी (दे २, वरः वर् )। गामणिसुआ पूर्वि यांव वा युव्विमा (वे २ व€)। गामजो पू वि वांवका मुख्या (दे २ वर श्रामा)। गामणी वि [बाम बी] १ थेड प्रवास कारक (वे ७ ६ व्या शता ४४६। यह)। २ पू. कुश-विकेष (वे २ ११२)। गामपिंडोक्स र् दि भी च छ धर बरले के विभे गाँव का प्राप्तय बेनेवाला कीबापी (प्राचा)। गाम छेड पूर्वि क्या से वंगका सुविदा बन बैठनेवाला नाम के लोगों में कुर उत्पन्त कर वनि का शांतिक होलेवाला (दे २, ६.)। गामहण न दि] प्राय-स्वान, बांब का प्रदेश (वे २, ६)। १ औटा पंप (पाय)। गप्रमाग र्यु गिमा की प्राय-विशेष इस नाम का एक सम्बद्धि (प्रावम) । गामार वि वि प्रामीज] प्रामीश और बांब का श्वभेताका (शब्द ४) । गामि वि गिमिन् अनेवाला (ग १६७) थाचा)। धीर्वा(क्य)।

वाला)। वर्षे वा (क्य)।
गामिज वि [मामिज] १ वेषो गामिज (१
१ )। १ वाप वर प्रविका (वित्र १)।
१ विषयमिकारी (व्यव)।
गामिजिजा वर्षे [गामिजिज] च्यन करो-वाली वर्षे "विषयमेव्यवद्यार्थिकारी (प्रवि १६)।

भागिकः । वि [ मामीयः ] यात्र का गामिकः । विवासी वैनार, (पत्रम ७७ गामीयः । दे वे विसे १ टी दे व ४७)। की की (दुमा)। सामुख वि [मामुळ] चानेराचा (च १७६)।
सामेद्रका की [मामेदिका] प्रेस की प्रकेचानी की विच्न करी (दर्श)।
सामेजी की विच्न करी वर्श करी (दे २,
क्य)।
सामेज की गामेचग (वर्गित ११७)।
सामेज की गामेचग (वर्गित ११७)।
सामेद्रका विच्न की सामेचका वर्गित ११७)।
सामेद्रका विच्न की सामेचका वर्षित ११७)।
सामेद्रका विच्न की सामेचका (दर्श)।
सामेद्रका है की सामेचका (दर्श)।
सामेद्रका है की सामेचका (दर्श)।

गानेस पूँ जिस्सेरा वांच का समिति (है
२, १७)।
सास्त्रप्त कि [सास्त्र ] स्त्रैया वांचण (तिर्वः
७ १)।
सास्त्रप्त की [की] वांची वांची करती कीन्न
वांची की [की] वांची वांची करती कीन्न
वांची की [किंदर] करता करती (स्त्रिं)।
सार पूँ कि सांचन ] राचर, राचरण कड़ी
(वंच थ)।

गार व [ब्दारार] वृह घर, रास्त्र (झ ६)। स्व पुंत्री [पत्त] गुरूम वृद्धी (मेड १)। स्विय पुंत्री [स्वय] ब्यूट्स वृद्धी शंतरीः वारीवास्त्रकृतियां सामाधियों व व्यक्तियां (पुष्क १०)। सा १)। गाराय वि [ब्दारक] कर्ता करनेवाता (व

१११)।
गारव हुँक [गीरवा] १ ध्यस्तिम प्रदूषर।
२ ध्यव्याप नावसा छन्। नारा १९७वा (छ १ ४ वा ११८ ध्य व)। १ ध्यस्य छस्त माना (हुया)। ४ धासर, समान

(यहा साम)।
पारिषय कि [गीरिषय] ह बीरानिय
पारिषय कि [गीरिषय] ह बीरानिय
पारिषय कि एक्षित, प्रतिमानी। है
बाबायमाना, प्रतिमानी (पूर्व ह है)।
पारिषय कि [गीरिषयत] कार हैवी।
(बम्ब है हही)।
गारिष्य कि [गीरिष्य] मुहल्ल-सम्मन्ते। पृष्ट

क (पन २३६)। गारि पुंची [अगारिन] पृद्दी संसाध भूकर (क्य ६, १८)।

गारिकरिकय-निविधा नगरिक्ररिध्य और गिहिस्स्य ] बृहस्य-धंदन्धी शंसारि-संबन्धो । श्री. या (पत्र २६४) । शास्त्र ) वि शास्त्र १ यस्त्र धेवल्यी । गार्ड र संप के लिय को बदारनेवाला, सर्वे-विध को दूर करनेवाला । ३ पूँ सर्वे विध को हर करमैकासा मन्त्र (छए १८६ है। छै १४ १७) । ४ मः शास्त्र विशेष भन्न-शास-विशेष धर्मेविय-मानक मन्त्र का विसमें वर्णन हो बहराइन (अ. ६)। संत 🖞 सिन्ही धुपै-विय का नाराक मन्त्र (नुपा २१६)। "बिउ वि ("विन् ] पावड मन्त्र का चानकार, बाहड शास का भागकार (सप ६=६ टी) । नास्त्रक्ष गासय रेमलना चानना। २ नात करना । ६ चल्लंबन करना व्यक्तिक-मणाक्रणनाः यासम्बद्धः (विसे ६४) । अक्र गालेमाण (मन १ ६६) : क्वक गाछि-कांस (स्पा १७६) प्रयो यानावेद (शाया

१ १२)। गालप न गालन । धानना नामना (पर्ह १ १३ छन द ३७३) ।

शास्त्रपा भी [गासना] १ वालना भागना । २ गिरवाना । ६ निषक्तवाना (विदा १ १) । गासवाहिया की दि कीटी मीका बॉगी 'एरचेतर्यन्य समावया पालवाडियाए निजा-

मबार्' (स १६१)। नाष्टिकी [गास्ति ] बादी भाग्रे वपराव्य. बसम्ब बचन (सूपा ३७ ) :

गास्त्रिय वि [गास्त्रिय] १ छाना ह्रमा । २ सर्विशान्त । १ विनारित्त । ४ जिल, 'गानिय-मिठी निरंकुमी विवरिक्ते राज्युव्धी (महा)। गासी को [गासी] रेकी गांकि (पव १०)। गाव (धप) वेधो गा । शावद (पिंग) । बहुर,

गार्थत (रि २१४)। राह्य (चप) देखो सम्ब (क्षति) ।

गांध वि दि ] वट, नवा हुवा हुवरा हुवा (41 ) 1 प्रधानम् १ पत्नद् पाणाण

गांबाच } (पाँघ)। र पहाड़ शिर (ह क 84) I गाबि (धार) देखो गब्दिय (महि) । गांची की [ग] बी, बेसा (ह १, १७४३ दिस १ २३ महा)।

सास वै [धास] शास क्यन (मुपा ४६०) । शास पं ग्रिस्सी भोजन (पन ६६)।

गाह देखो गह = यह । इसं गाहिक्क (प्राप्त)। गाइ सरु मिह्यू ने धहुता कराना । गाहेह (मीप) ।

गाइरधक गिर्दि] १ पाइला ⊈दमा। २ पहना धम्पास करना । ३ धनुमन करना । ४ टोइ समाना । पाहबि (शी)- (मुण्क ७२) । क्षकः गाहिकात (वका ४)। रतक प्रियाची धरताब-पहित बाह (ठा ४

नाइ पुनिहारि बाह्य, क्रिकीप, सब्द, अस **अन्तु-विशेष, सगर (वे २,८६३ शामा ३ ४**° भी २ ) । २ बाधहु, हुळ (बिसे २६८१ वज्य १६, १२) । १ सहस्य बालान (निन्हु १) । ४ गार्वोङ्क सपै को पक्कृतेवासी मनुष्य चाडि (बृहु १) । वह और ["बसी] नवी

4) (

गाइग वि जाइफी १ पहुछ करनेवासा, धैनेवाला (स्पा ११)। २ समझ्येवाला बालनेकारा (द्वार १४१) । १ समस्रतेवासा शिजक बाकार्य प्रव (बीप) ( ४ आएक

विशेष (ठा २ ३--पथ व )।

बीवक । और गाहिसा (बोप) । गाइक वि [प्राहक] प्राप्ति करनेवाचा 'बाहर्व सममञ्जालं (स ६०२)।

गाइजन (भाइजी १ वहण कराना । २ बहुए भारानः 'नाहुए तरबरियस्या गुरुखं चिम प्राह्मका होंति (पंचमा) । १ शास्त्र विकाल (यव ४) । ४ वीवक वचन, शिक्षा, जनच्या (पश्चा २, २) ।

गाइजया ) श्री [माइजा] क्यर रेको (वर गारणा 🗦 ५ वर्रे ४ वार्षी, वच्च १) । गाइय वेको गाइग (विते ७६१ स ४६०)। गाहा की [गावा] सम्पवन, धन्त-प्रकरण (पत्त ३१ १३)। गाहा 🛍 [गाभा] १ धन्य-विशेष, शार्या

गौति (ठा १, ३। वाति १७। १५)। २ प्रतिहा। ३ निवय सिसपयास य गाहा (बार ४) । ४ 'सूनक्तोर्ग' सूत्र का सोलहवी घप्पयम (भूष १ १ १)।

गाहा की [क] पृद्ध थर, वकाना 'नाहा पर पिर्मिति एनक्का (यस ८)। यह बुंधी ।

िंपविी १ यहस्य स्क्री संसापे (ठा४ भारतमा २२६)। २ वनी वनाक्य (<del>उस्</del> १) । ३ घंडारी मात्वामारिक (सम २७) । की जी (खाया १, १, उपा)। गाहाळ पूँ [पाहास] भीट-विरोव भीनिहय

बन्तु निरोप (भीव १)। गाहाबई की [माहाबती] १ नहीं विशेष । २ शिप-विरोध : ३ हास-विशेष, बड़ां से प्राह्णनदी नदी निक्तर्ती है (थे ४)। गाहाविय वि [ माहित ] जिसको पहल कराया नया हो वह (सुर ११ १ थर)। गाहिणी की गिर्मिती १ थवने वासी स्री । २ सम्बन्धिय (मिन) ।

गाहिपुर व [गाथिपुर]नवर-विशेष (वस्त्र)। गाहिय वि [माहित] १ निस्को प्रहार करामा गया ही गई। २ प्रामित जरुपामा ह्या (पृष १२१)। गाहीकम वि गिम्बीहर्ती एकवित इक्ट्रा

किया ह्या (सूम्पीन १ १६)। शाह की शाह फर-विरोप (पिय)। गाइसि पूर्वी दि पाइ, नड, मपर, कूर बत

बन्तु विशेष (वे २ वर) । गाहकिया देवो माहा = बाबा (सूपा २६४)। गिठि [युष्टे] १ एक बार व्यामी हुई। २ एक बार स्थापी हुई शाय (हु १ २६) । गियुक्त हि देवो गेंदुक (पाप)।

र्विभुष्ठ दि देशो गुँद्वरुक्त (पाप) । गिम (धर) देवो गिझ (हे ४ ४४२)। गिंह क्यो गिद्ध ( वह )। गिञ्जेव ध्यो गाः।

गिम्क वक [गृष्] धासक होना सन्दर होना । थिन्छ (है ४ २१७) । गिन्नड (खास १ ८)। अष्ट-गि।मदेव (चौप)। क्ष विविद्यायक्ष (पराह २, १)। गियम रि [गुरा, भाषा] १ पर्ल करने

योग्य । १ मानी शरक में किया जा सके वैसा (ठा १ ९)। गिद्धि केवी गिठि 'बारॅवस्तवि बता विद्री विद्विष्य जरतम्भि (तर ७२० दी) पायः

गा६४)। गिष्टिया की विशेषही वेंद्र केनने की सकते (पर ३००)।

त्रकार का कराव (सु १)। वार्क की साद कराव की साद की	हणा केयो प्रमाण चहा किएमा (पूणा १६६) वाली केयों में क्षी कि प्रमाण । जान के लिए किया हो किएमा (पूणा १६६) वाली केयों में क्षी कि प्रमाण । जान के लिए किया हो किया है क	RE%	पाइभसर्गहण्यवो	गिज-विद
र परेत का रिकार १ वे प्रमण्य ना प्रति (का वज साथा) । वह शियानकाल । (तूर १ ० १) । शास वृश्चिमा वर सरु (राज ४) । जण्य वृश्चिमा । (शा व ३) । वाण हिशानकाल (व १४ ) ।	१ परंत का रिकार। १ मुँ राजकात ना । एति (का कम सावा)। यह गिमानकाल   (तूस १ ४ १)। ।ताम मुँ [किस] कर	शिया केवो गया = कराय । विवर्धि (विष्ठि १०) ।  शिया केवो गया = करा । विवर्ध (वर्ष) ।  कर्मा गर्यक शिव्यात (प्राप्त १६६) ।  कर्मा गर्यक शिव्यात (प्राप्त १६६) ।  हर्मा गर्यक शिव्यात (प्राप्त १६६) ।  हर्मा गर्यक (वर्षा) । इ. शिव्याव ।  हर्मा गर्यक वर्षा ।  हर्मा गर्यक (वर्षा) ।  हर्मा गर्यक (वर्षा) ।  हर्मा गर्यक (वर्षा) ।  हर्मा गर्यक (वर्षा) ।  हर्मा गर्यक ।  हर्मा गर्यक (वर्षा) ।  हर्मा गर्यक ।  हर्मा ग्राक ।  हर्मा गर्यक ।  हर्मा ग्राक ।  हर्मा गर्यक ।  हर्मा गर्यक ।  हर्मा ग्राक ।  हर्मा ग्राक ।  हर्मा ग्राक ।  हर्मा गर्यक ।  हर्मा ग्राक ।  हर्मा ग्य	वाहर के वं वर्षकात से दिया वाता एक जिला का करा का करा (कू १)। जाई की [जिलो वर्षणीय करें (कि वर्ष)। जाई की [जिलो वर्षणीय करें (कि वर्ष)। जाई की [जिलो वर्षणीय करें (कि वर्ष)। जाई की [जिलो वर्षणीय करें (कि वर्षण)। जाई की वर्षणीय करें (कि वर्षण) के जाति की वर्षणीय करें (कि वर्षण) के जाति की वर्षणीय करें (कि वर्षण) करें के जाति की जाति करें (कि वर्षण) करें के जाति की जाति करें (कि वर्षण) करें के जाति की वर्षणीय करें के जीव को जाति की वर्षणीय के जीव की जीव की वर्षणीय के जीव की जीव की वर्षणीय के जीव की जीव क	मिख्य की [स्कारि] र बीजाएँ ऐमा र वेद व्यावद (ठा व) ।  मिख्यण देवा गिराजमा गिराएर कार्ने (७ क्षेत्र) ।  मिख्यण देवा गिराजमा गिराएर कार्ने (७ क्ष्रेष) ।  मिख्यण देवा गिराजमा गिराएर कार्ने (७ क्ष्रेष) ।  मिख्यण देवा गिराजमा गिराएर एमें।  र १३) १ र स्राफ्त सक्य वेदा हुय (ठा १ ४) १ र स्राफ्त स्वर वेदा हुय (ठा १ ४) ।  मिख्याय दि [स्कामि ग्रामि केद वर्गे (छा १ १) ।  मिख्याय दि [स्कामि ग्रामि केद वर्गे सम्पर्ध पेप (वापा) । की की (कारा) ।  मिख्याय दि [स्कामि जानितृत्र कर विशेष १ १ र मृत १ ४) ।  मिख्याय दि [सिंगिक्य निकास हुया सीम्य (वापा) ।  मिख्याय वि [सिंगिक्य निकास हुया सीम्य (वापा) ।  मिख्याय वि [सिंगिक्य निकास हुया सीम्य वि १ र स्वाव हुया र मुख्य १६०) ।  मिख्याय वि [सिंगिक्य निकास हुया सीम्य वि मिख्य हुया १ सीम्य सारा हि कार्म वि मानित हुया र सारा (वापा)

(इक्ट सब्, १८)। १ कम्बर्ग-रोगा धर

क्षिक्सी (स ७४८) । हिमहि र् [गृह्मेविम्] यूर्म (वर्गीव ोह्रम३ पू [गृह्यति] देश का यपिपति भूके-बारः 'तह निवृत्वद्वीव बेस्स नायवी' (पव व १) । गे।ह नू [मृहिम्] मृही संसारी वृहस्य (सीव १७ जा नव ४३)। धम्म पू भिमी गृहत्व-वर्ग धावर-वर्ग (राज)। "सिंग न ("किंक्ष्र] गृहस्त्रका थरा (बृह १)।। रेडिजी की गृहिजी मृहिणी भार्या, की (मुपा = ३) वा १६)। रेफ़्रीअ दि [गृदीत] माल उपल, महस्र किया ह्या (स ४२६)। गिद्रेल्ग रेजो गिद्रेल्य (बाना २ ६,१ ४)। गिहेल्य पूर्विलुक देशभी हार के नीके की सकड़ी (निष् १६)। गों की [गिर्] बाडी, काला बाक् विख्यानलं चे ख्यापत् च मीविसमिनं परमं (यदह)। शीओ की शिला किमक्रावर्गील ज्ञानमय उपदेश, सन्द-विशेष (लिंग) । गीड की गीति ? सन्द-विरोप भागी-बृत काएक भदा २ कान मीट (टा ७) उप (1 日) साइया की [सानिका] कर देखी (बीपः राम्बर १)। गीय दि [गान] १ पच-मय दास्य, गैम जी गाया जाव वह (यद्ध २ 🛍 छल्)। २ ৰখিব সলিনাৰিণ (ভাষা १ १)। ३ प्रनिद्ध विक्यात (संया) । ४ स. यात, तल धीर बात्रै क प्रमुगार माना (वं २ छत्त १)। १ वंदीत-कमा, वात-बमा धंनीत-राक्ष का परिवान (शापा ११)। ६ व धीवार्ष क्रान्तर्ग थीर मनगद नवेटह्वा भानतार जैन माबू विद्यापु धैन मुनि (धन ७७३) । जन्म व "यराम्] इन-रिधेन, कचर्व देशें का एक रतः(ठा२ ३ रक)। त्यचं ["धी] र रिप्रान् मैन बुनि (का बहर दी। सब भा नुपा १२०) । २ धंनीत राज्य (से १४) । पुर न ["पुर] नपर-विकेश (पत्रव १६ ×३)। सद्रमी [रिति] ! वंगोज-ग्रीहा

ग्रिपित देव-विशेष (ठा ७) । ४ वि संगीत प्रिय यान-प्रिय (विपा १ ४)। गीवा की [धावा] करूठ भरवन (पाप) : मुद्ध देशो मुख्य (हे १ २६)। गुंधासी दि रि तिलु। २ शही-पूंज । ६ समामीच (दे२ ११)। गुंख भर [इस्] ईंचना शब्द कला। प्रवह (हे ४ ११६)। श्रीक्ष बाक श्रिष्ठक है १ पुन-धून करना भागर कादिका बाबाज करना। २ नर्जना सिंह व्येच्य का बाबान करनार 'प्रजेति सीका' (महा)। वह गुंजेत (गान्य १ १--पत्र १ रमा)। र्गुक्त पुँ शिक्षी १ पुरुवारव करता बालू (भाउप १३ ४३)। २ पर्वत-विशेष: 'पु वयरपन्तव' ते (पत्रम ⊏ ₹ा १४)। र्गुजाको [र्जुजा] १ मता-विरोप (पुर २ ६) । २ फम विशेष श्रुविशी (ग्राया १ १) बा ६१)। ६ संस्त्रा वाच-विरोध (धावा)। ४ परिखान-विकेष (ठा ४-१) । इ.कम्बारक ध बन पुन-पुन मार्चामा 'यु बायरकपूर्-रोषपूर्व' (राम) । ६ नायु-विशेष ग्रामारव करनेवासा बार् (बीव १३ वी ७) पहल, इस्त किसी पर-विशेष पूर्वती (श्र २ ६ मूज २६१)। र्श्वप्रक्रिमा की रिज़ाक्षियी येगीर तथा टेनी वारी--नावसी या वाबदी (प्राचा 2, 4 4 2) 1 र्गुजिसिया भी ग्रिजिसिकी शक्तनारिएी ष्टेदी नियायी (शामा ११)। २ मोल <sup>1</sup> पुष्परिएी (निष्कृ १२) । ३ वक नही (पर्स्स र्गुजाविश्र वि [दासिन] ईनावा ह्या (कुमा 8 Yt) 1 श्क्रित्र न [गुक्तिन] दुन-पुन ध्यमक अमर वगैरद का राज्य (कुमा) । शुंदकर दि [गुडिस्यू] पुतनपुत व्यागन करने-थाना (तर ८ ६१ दी । र्शुनुदरेको गुजान पुजुन्तर (१४ २ २)।

र्गोनेकिय नि वि विश्वाहत स्क्ट्रा क्या ह्या (दे २ १२)। गुंबाह सरु वि+लुख़ | विकेशा । पुणी-स्पद् (प्राष्ट्र ७३) । गुंखोह बरू [ उन् + छस ] रूमार पाना विकसित हाना। इ बास्तइ (हे ४ २ २)। गुंकाश्चिम वि [उद्यमित] विकसित विक-धिव (क्या)। शुंठ सक [ तद् + भूछय् , गुण्ठ् ] पूप वालाकरना बूनी के रंद का करना धूप्त रितकरना। पुठ६ (ह ४ २६)। नक्ट र्गुर्टन (क्या) । र्शुंठ पूँ कि ] सबस धरव दुण नोहा (६२ **११। स ४६४) । २ वि मामावी कपटी** (बस १)। र्शुरा की कि नावा दस्य घल (बर ३) । गुठिल वि गिष्ठिनी १ प्रतिका २ व्याह २ साच्छावित (दे१ **८१)** । शुंठी की दि शिरंती की का वस-विशेष (RR & )1 गुंड न [दे] मुला ै छन्दम होनेवासा पूछ विशेष (के २ ६१)। र्गुडण व [गुण्डन] चूनि का मेर चून का क्रपेर में सनाता 'स्वरेक्टर ब्राग्रीण स नो सम्म सहिता (शापा १ १---पत्र ७१) । शुक्तिक विशिष्टिक दि पूर्वितित पूर्वि बुक्त (पाप)। २ मिस पता हुमा पुण्ला द्वविषणार्वं (विपा १ २--पत्र २४)। १ मिथ हुआ। 'संज्यों जह पमुपु हिया' (सूध १ २, १) । ४ व्यच्छावित प्रसूत (माना) । य प्रेरित (पएड १ ३) । र्शुयण व [मन्थन] धूँचना चटना (रवण (#) र्शंद प्र शिष्ट्र दिग्द (पाप)। शुंदस्त वि शुन्दस्त्री १ पानवन्त्रान लुखे की चावान इयें की तुनुभव्यक्ति 'मल नरकाविछीसंबक्ज्युर्ल (पुर ३ १११)। करिएपिदि वसहैदि य अल्मेनक हरिनवु दर्स नार्व (गुत्त १६७) । २ इपे-घर, मानक-संशेष्ट्र, जुलो की वृद्धि 'सर्वरकार्युक्य दन पुरुष" पार्शास्त्र वर्षेत्र सन्तर शीतावर्षिः परिवर्तियाँ (नुपा २२) १३६) । ति यानन्त

गिकाण विशिष्टानी १ वीमार, रोनी (बन

१ व व) । २ बरुक्त, बस्मर्थ वका द्वय

(ठा १ ४) : १ क्यांसीन, हर्प-धीत (छाम

(# wtw) 1

र स्थादित र ६)।

गिच-गिड

प्रकार का घरसाव (बाह १)। वर्ड की िमनी पर्वतीय नदी (पि १व४)। जास

गिख्यणि की गिक्समि । चानि केर, कातर (ठा ६ १) :

गिद्धायय वि गिद्धायकी गतानि वृक्त, क्षत

(बीच) । रिष्ट्रासि पुंची मिसिन् व्यक्तिरिकेर मस्यक रोम (धाषा)। की वी (बाषा)। गिकिश वि [गिकित] विस्ता हमा, चीना (इपा६ २ १ इपा६४)। गिकिमक्त वि शिक्तिवन विकर मञ्जल किया है। वह (पि १६६)। निस्त्रेष्ट्यः) की [के] यूह-रोगा, विशासी गिकोई (नुपा६४ पुण्ड२६७)। गिलिख की दि । हाकी नी मीठ पर नग वताहोस होस (लाबा ११—पत्र ४) दी। धील) । २ डोसी हो बादमी है स्टार्ट भारती एक प्रकार की शिविका (सर्व % <sup>६)</sup> दमा ६)। गिक्सण पू [गीर्सात्र] देव गुद, विस्ट (क्ष १६ दी) । गिइ न [गृह] वर, मक्तन (बाचा) ना २६ स्वय १४) । त्य वंश्री स्थि शहल, पूरी बीसारी (बच्चा प्र. १)। इसे, रेबा (बार्व ४६ ११)। लाइ वे न्तियी पर ग माणिक (था २व)। सिंगि नंधी कि जिन न्द्रान, मुद्दी संवाधे (दंव) । वर्ष पुँची [पिति] गृहस्य, गृही घर वा मानिक (का थु ३ शुपा २३४)। बास ई िंबास्त्री १ वर वें निवास । २ द्वितीसायन वंतप्रीराव "रिप्रवार्ध पार्च पित्र मर्लाती वर्ग्य दुक्तियो तस्य (क्षानः नुस १ १) । विदृ 🖠 [ीवर्ष] दिवीर 🐙 (तूप१४१) । वाच क्रिजीयापन स

बबर्गर स

ी बर

( ( e ) गिण्ड देवो सह≔ इहः फिल्ह्ड (कृष्य)। वर गिण्डंस गिण्डमाण (सुना ६१**८**) णामा ११)। <del>संह</del> गि<del>ण्डिस</del>, गिण्डि कव गिण्डिसा (पि १७४ १८१) १८२)। हेर गिन्दित्तप (क्य)। ह विण्डियक्व गिण्डेयटम (प्रतृ: मुपा ४१६) । गिष्य न देवो गहण - बहुछ (शिरि १४७ विष्ट परेट तेर् १ )। गिण्हवा भी मिह्नी ज्यासन सासन (बच १६ २७) : गिण्हाविञ वि [बाहित] पहल करावा हमा (बर्मीद ११६) । गिढ प्रिप्त पिट-विशेष क्षेत्र (पास राया १ १६)। गिद्ध वि [गृद्ध] भाषक सम्पर्व सेन्द्रप (बएड १ २ माच ३)। गिर्द्धापट्टन [गृद्ध स्पृष्ट, गृथपूप्त] मध्य निरोप धात्पहत्या के व्यक्तिपत से बीच व्यक्ति भो सपना सरीर किसा देना (पद १३.) 1 নিত্রি নে বিভিন্ন কিন্তু 11(Y) मिद्धिकी [गृद्धि] यात्री न नम्पटता नाव्यं (तुम १६)। शिन्द्रणा केनी शिष्ट्रणा (दत्त १६ २७) । गिद्ध र्षु [मीप्म] ऋगु-विरोध वस्त्री का मौतिव (हर ४४ प्राप्त)। गिया यो को गिक्का 'विम्हानु' (शुक्ष २ 10) ( गिर मक [गु] १ बोलना, बच्चारल नरना । २ विनवा नियतना। विद्यः ( वदः ) । गिरा भी [गिर्] गाडी वाना, वाक (**१** t (# ) i गिरि र् [गिरि] १ पहाड़ पर्वत (बढा: १ २३)। मही की ["वटी] क्रेंतीय नधे (नार)। करमई कर्णा औ िक्सी बली-रिटेर नदा रिटेन (पर्क १—१४ १३४ मा२)। कृद व [कुट] रं परेतका कियर। २ ई समस्त्रका नरा (राम व ४) : अरुप र् ["यहाँ]

REY

प िनार | प्रसिद्ध पर्वत-विशेष जो काडिया-बाइ में धानका भी "विस्तार" के नाम से विषयात है (भी १)। वारिणी की वित-रिणी विद्या-विशेष (एडम ७ १३१)। नई देवो व्यई (स्पा ६३१)। पक्संत्रण न ["प्रस्कन्दन] पहाड़ पर से विरना (निच् ११)। यहस्य न िंकटको पर्नत का मध्य धाय (क्वड)। पढमार वूं विग्रमार] पर्वत-नितम्ब (संबा)। राव पूं िराजा मेव पर्नेत (श्क) । वर पू [ बर] प्रवान पर्नत क्तम प्रकार (सूपा १७६)। वर्रित व "वरेन्द्र] मेव पश्य (बा २७) : सुमा सी िस्ता | पार्वेडी गीरी (पिय)। गिरि पे वि] बीव-बोठ (दे ६ १४०) । गिरिंत् पुँ [गिधिन्यू] १ बोह पर्वतः १ मैठ पर्वत । वे विवासन (कथ्र) । गिरिक्सी क्वो गिरि-इज्जी (वर ४)। गिरिडी की दि] परुषों के बांत को बॉबने का ज्यकराउ-विकेष 'वंतिविधिंड प्रवेदध' (नुपा २६७)। गिरिनयर न [गिरिमगर] पिरनार वर्षत के नीचे का नगर, जो भावकन 'धूनाकर' के जाम से प्रसिद्ध है (कुम १०६)। गिरिपृद्धिय न [गिरिपुण्यित] ननर-निरोप (विष ४६१)। गिरिस 🕯 [गिरिस] ब्यादेश शिव (पाय दे ६ १२१)। बास दे [बास] कैनारा पर्वेत (स ६ ७३)। गिरीस पू [गिरीस] १ विवासन वर्षतः। रे नहारेश दिए (रिंग)। गिया दथ [ग] किनना निनतना भन्नए। करमा । संक रिग्रसिकरण (भार) । गिष्टम न [गरण] निवरत बस्त (हे ४ ASE) I गिद्धा ) बद [गसि] १ न्तान होना बीमार गिसाम होता । २ तिम होता, वह बाता । १ बरासीन होना । विनाह, विनाबह, विना-एवि (तम वतः काका) । वहः, सिम्रायसाध (E 1 1):

गिद्दिकोइन्स की [गृहकोकिस) पृह्गोना क्रिक्सी (स ७३६)।

गिइमंदि १ [गृह्मंथिम्] गृहस्य (धर्मेष २६) ।

मिह्नद पू [गृह्यति] देश का प्रस्थिति सूदे बारा 'तह विक्रवर्धीन बेल्स नायगी' (पन = १)। निहि पू [मृहिम्] पृक्षी संवाधी पृहस्य (सीव १७ मा नव ४३)। धन्म प्रै िंधर्मी गृहस्य-वर्ग धावर-वर्ग (राज)। खिंग न ['सिंहा] गृहस्य का वेछ (बृह १)।

तिहियी की [मृहिणी] मृहिणी मार्वा, की (मुपा = १ भा १६)। तिहीअ वि [गुड़ीव] बाल ज्यात शहरू

किया हुमा (स ४२०)। गिहेलुग रेपो गिहेलुय (प्राचा २ ३,१ ८)। विद्वेल्य दे विदेलकी देखता हार के नीचे

की समझी (निष्टु १३)। नी की [गिर्] बाछी माना वार्ट्ः 'बिरमुज्जर्स च ब्रायामर्सं च गीबिससिये

बस्सं (गडह) । मीआ की [गादा] धीमक्रूबबङ्गीया कानमब

उपदेश, धन्द-विशेष (चिंग) ।

गीइ की [गीवि] १ सन्द-विशेष मार्गा-कृत काएक मेरा २ थान की ख (ठा ७) उत्त 88 B) (

गीइया की [गाविका] अंतर क्यो (गीप) श्चाया १ १)।

गीय वि[गात] १ पद्य-मय वाक्य केव को नाया चार बहु (परहुर १८ छल्)। १ কৰিব মবিনাৰিণ (ভাষা १ १)। ३ प्रसिद्ध, विकास (संबा) । ४ म. मान, शास धीर वाने क प्रमुगार वामा (वे २) क्स १) । १ धेगीत-कता वात-कथा चंदीत-शास का। परिकार (खाया ११)। ६ पूं योतार्व छन्तवं थीर प्रस्काद नगैद्ध का बानकार कैन साबु विशान केन मुनि (का ७०६) । जस प्रै "बरास्] रूप्र-निर्देश क्या हैने का एक स्प्र (ठारे १ रक)। स्वयु [भी] रे रिकाम जैन पुनि (उर ८३६ ही) वर ४' नुस १२०) । २ संगीत-रम्प्य (मे १४) । "पुर न ["पुर] नगर-रिकेंच (पत्रम ३३, प्रथ ['पित] १ संगीत-की हा

(धीप): २ पुंतन्त्रवंदेशों काएक इन्ह (इक मन ६ ८)। ६ गम्बर-देशाका चित्रति देव-विशेष (ठा ७) । ४ वि सैगीत प्रिय, गान-प्रिय (विपा १ २)।

शीवा औ [ग्रीवा] क्युट गण्डन (पाय) ।

मुक्ति केको मुख्या (दे १ २६)। नुंबाबी दि १ विन्दुः २ सदी-पूँछ । ६ धवन नीच (६२११)।

शुंज सक [हम्] ईसना हास्य करना। ग्रमह (हे ४ १६६) ।

शुंख बक् [शुंखा] १ दुन-पुन करना भनर धाविका बावाय करना । २ वर्गमा सिंह वदेख का बाबाव करना' 'तु वंति सीहाँ (महा) । बक्क- शुंबरेत (खाया १ १--पन

१ रमा)।

र्श्व पूर्व शिक्षा १ क्रमाप्त करता बाबू (पडम १३ ४६) । २ वर्गत-विरोधः भू वयस्यव्ययं र्षे (पदम व ₹ १४)।

शुंबा की शिक्षा र वता-विरोध (बुर २ ६) । २ कम विरोप पूरियो (खाया १ १) गा ११)। १ सम्मा बाच-विशेष (प्राचा)। ४ परिग्राम-विशेष (ठा ४ १) । १ पुत्रकारम

पु बन, पुत-पुत यानान' "पु बाचरकपूर धेमबूढं (ध्या)। ६ नायु-निरोध क्रामारन करनेशासा बायु (बीव १३ व्ही ७) फला इस न ["फ्रम] फ्न-विरोध पुत्रवी (मूर २ ६। सूपा २६१)।

शुंजाविका की [शुकाविका] वंबीर तथा टेड़ी वापी-वावसी वा बाबड़ी (बाचा 2 %, 2 2) a

गुंजाकिया की [गुआक्रिक] वक्रशारिकी टेरी फियारी (एप्या १ १)। २ गील पुष्करिक्षी (निष् १२) । १ वक्ष नदी (पर्गस

र्गुजाविक वि [दासिन] दैसाया द्वया (कुमा # Y() 1 शुंजिल न [शुक्तिन] दुन-दुन धानाव भ्रमर वगैरह का शब्द (बूमा)।

र्गुकिर वि [गुडिनर्] युन-पुन धानाम करने-बाला (बार ६१ दी। र्शुनुष् देवी र्शुजास प्रवृत्पर (है ४ २ २): गुजिक्किम वि [दे] पिएमीइत स्वद्धा किया ह्मा (दे २ ६२)।

्रांजाह सक [ वि + सुद्ध् ] विवेरना । प्र जी-स्सद् (प्राष्ट्र ७३) ( ्शिहे धक [ उन् + सस् ] उन्हास पाना

विकसित होता। प्रभाष्मा (है ४ २ २)। र्गुजाक्षित्र वि [उद्यसित] विकसित विक-सित (कुमा)।

शुंठ तक [तद्+भृतप्, गुण्ठ्] दूस बाखा करना धूनी के रंग का करना पूछ रितकरना। बुटर (हे ४ २१)। यस

र्गुर्टंब (क्रुमा) । र्शुठ दूँ [के] समय घरव हुए मोड़ा (वे २ **११: स ४१४) । २ वि मानावी क**पटी

(बच ६)। र्गुठा की वि] मार्ग कम खर (वर्ष ६)। शुंठिब वि [गुण्डिय] १ वृष्टियः । २ व्याप्त

६ मा<del>ण्</del>यास्ति (दे र<sup>ि</sup>⊏५) । शुंठी की दि | गीरंबी की का बस-विशेष

( R & )1 तुंड न [रे] पुल्ता 🛚 उन्पन्न होनेवाना 😙

विशेष (दे २ ६१)। र्शुडण न [गुण्डन] बुलिका नेप बुरका

रुपैर में नगला 'रमरेपुद ब्लागि व नो सम्में स्कृष्टि' (स्त्राया १ १--पत्र ७१)। र्वेडिश वि रिप्रिटिट र प्रतिनित प्रति बुक्त (पाम)। २ जिस पत्ता हुमाः पुरुष प्रशिववार्त (विचा १ २-- वत्र २४)। ३ विध हुवाः 'सब्यो वह पमुद्र दिवा' (सूच १२,१) (४ माध्यानित प्रानृत (माना) (

थ मेरित (पदत १ ६)। र्शुधण व [प्रस्थत] इविता ब्रह्मा (रमण ( p )

र्श्व पुं [गुन्द्र] बृत-विशेष (पाप)।

गुंदछ म [दे गुन्दछ] १ धानवनमान चुक्र की याचान हुएँ की तुपुत्तकातिः 'मत वरकामिणीसंबक्यपुरलं (नुर ३ ११६)। 'करिएडेडिं कमहेडिं य आगुमक' हरिनप्र'रलं वर्ड (तुस १३७) । २ हर्प-घर, धातन्त-वंशेष्ट. पूछी की दृष्टि 'धर्मरमार्श्यास स्प पुरुष "बालंब्यु दमेल नगर शीनावर्श्वि

परिस्तिमी (मुचा २२) १३६)। हि मालस

दुस्में (नुस १३४) ।

गुर्पक्रम न दि पुर प्रकार की मिठाई, धुन राती में जिसकी 'प्र'क्यक' बढ़ते हैं (दुस ¥ X)1 र्गुरा ) सी [वे] श्रीलपुर सवस नीच

र्मपा ( १३ ११)। र्गुप सक [ ग्रम्थ् ] पटना । द्वर (शाह **48)** 1 इर्षेक्ष विक्रमा देशी के का देशा । द्वीका

(बर् ) बर् गुपंत (हमा) । र्शुपः हे [शुरूपः] १ रचना, दूवना सन्तन (कार शकी देश रहा १४२)। र्मफुदंदि दित कायनाद कैन (दे २ 1(3

शुंक्याव दिशोधन पत्तर गॅक्नी ना सक्र-बिरोध 'पु'कलकैरलपुंगाळ्डि' (बुर २, ०) । मुद्धियी दि । रहाची पूर मीट विरोध धोजर कननदूष (दे १, ६१)। गुग्तुस पूं [गुग्तुल] पुर्वाच्छ अध्यनिकेट, बूबन या हुन्युन (मुना १६१) ।

शुरमान्त्रं की शुरमुखी कुल्ल का चेड़ (बी , मुद्द में गुद्द है शुद्ध के का विकाद नाल 1 1 शुग्राम् रेगो शुग्रुस (१४१६) । गुरव ११ [गुरव] । इच्छ उच्चर गुरुद्वेव । रेडबर्स (ज्ले रे रूरेज ७२)। २ बुलों की एक मार्ड (क्लुए १)। ६ बस्तों बा नपुट्(में १)।

शुरुद्धय रेना गारुद्धय (दोष ६६ ) । शुन्द्रिय वि [गुनियन] प्रवय नानाः इन्य-वुन "निर्म प्रिया (ध्य)। शुक्त रेगो ग्राप्त (गुरा २ १) । सुदार र् [गूबेर] १ कारत वा एक जाना ट्रस्टन देश (रिन) १ वि ट्रबरात का रियापी । क्षी. री (बार) । तुष्प्रदत्ता €े [गूप्रदया] द्वरणा देश (नार्व

1(2) मुख्यन्त्रि वि दि विवेश (बहु) । गुप्त १ [गुप्त] एक देर-मार्थ (दन ७ 11) (

सुम्ब } रि[शुष] हे दीवरेंड, विक्रो

गुन्तान के बेग्बे (गार्ग ११ १ व १२४)।

La gram igra fhaffilleard

शुह्याच्ये [गुह्य] १ हाची 🖭 करव । २ सभ का करण (रिगा १ २)। गुडिम रि [गुडिन] नवनित वनित इत-मैनाइ (मे १२ थ१ ८७) (रहा १ २)। गुढिआ भौ [गुटिच्य] शमी (शा १७७) 1

गुर्वाप्रदिभाधी हिं] कुम्बन (दे२ ६१)। गुद्धार प्रविचित्री कीमा या क्षेत्रा तंत्र. देख वसन्दर (मिरि ४ २ १४४)। गुत्र वरु [गुत्रय्] १ जिल्लाः २ धातृति ररता, बार करना । दुरपुर (मून्द्र ११) है ४ ४२३) पुनेर (दर) । वर शुनमान (रा दृ १११)। गुन र् [गुत्र] क्याल (बूबरि १)। १

रनना वेचना (धाना २ २,१ ७)।

बुग्मं पिव तत्थ्यला पुरु " (इप ७२८ धी) ।

व लिय, पुरुष-चिक्र । ४ योति औ-चिक्र (वर्षे

२)। द मैथून, संबीत (प्रकृश ४)। 🕊

वि पिरी प्रत बात की प्रश्ट नहीं करने-

बाला (९२४)। इट वि विदर्भे प्रस्क

नेशी प्रश्न बात को प्रक्रिक करनेशाला (वे २,

गुरमञ्ज रे पूँ [गुद्ध के] देशों की एक जाति

ग्रद्ध र दि विलम्ब एल-सार्वा भाग्युल

गुढ पर [ गुड् ] १ हाथी को करक वर्षेत्र

छे सजाना। २ लड़ाई के फिए स्टबार करता,

समाना 'प्रश्व गर्ड बरुपीकरेंद्र खुबक्कपा

इक्डे (मुपा २००) । नवक्ष 'तुविधगुहिज्य

गुड नरु [गुड्] निक्न्नल करना। **इरे**र

कलर (हेरे २ २) बानू १६१) । २ एक

प्रचार ना अन्य (चन) । सरध न [सामे]

शुक्रवासिअ वि [दि] लिग्दीकृत १वट्टा किया

1 (13

गुम्मा (व र १)।

पुट्ट व तस्त बान्द्रई (उदा)।

गृद्धी भो गोड़ी (बुक ६८) ।

त्तवर्ष (वि ११ ८७)।

नगर-विशेष (धाक) ।

हुम्म (दे२ ६२)।

(संबोध १४)।

गुटू के गोटू (पाच भत्त १६२)।

गुजर्दर [गुज] १ इस्त नवीद, स्तका बर्म (छ। १.३)। २ बात, सुब वनैया एक ही साथ रहतेपाला वर्ष (सम्म १ ७ १ ६)। ६ आन निनम बान होंगे मधाबार वनैप बोव-प्रतिपद्मी पद्मर्थ (हुमा) वत्त 😢 पत् बा४ ३ में १ ४)। ४ नाम, कामणे 'विश्वचेद्धं द्राणार्थं मानीत' (हे १ ६४ स्य १ ६)। ६ प्रशस्त्रका प्रशंस (स्नमा ६ १)। ६ रन्द्र, जोरा वादा (वे १ ४)। व्याक्तल प्रसिद्ध यु. का भीर पर्का स्वर-विकार (सूचा १ ३)। व कैन मुहस्व की पासने का इद निरोप प्रशास्त्र (पंचय ३) । ३ रच रड एन्ड मनैस्ट्रास्मापित वर्षः 'व्या-मधन्तरात्रमा वर्तीनि कामी नहाम प्यमनी (छाई १ वट २६)। १ श्रायक्ता अनुव शा रोना (मुमा) । ११ गार्थ प्रयोजन (पर २. १)। १२ प्रधान बक्क्य योश (हु१ ३४)। १३ वंड विकास (बान) । १४ उपकार, दिस (पैदा इ.स. विकिटी १ साम-कारक। १ कानार-कारक (वंचा द्र)। आर प्रं विगर] <u>इला बरना सम्माल-चाँग (नव १ )। चौर्</u> पुँ विक्ट्री १ एक स्पन्नमार (मानन) । २ एम पेन बुनि भीर बन्परार । ३ वेर्फेन विदेय (चन)। द्वाम न [स्थान] इलॉ वा श्वरूप-रिशेष विच्या**र्द्ध वर्षेण व**ण्य प्रय-स्वातक (रामा ४१ पत्र १)। "हिम र्प विधिको प्रश्न को प्रकार बार्सनेगना नत नय-गिरोप (सम्बर्ध **४)। इड** वि [स्य] द्रणी द्रलगत् (तुर १ १) १६)। यस ब्लूफिन, स्तुनि[कि] प्रण का जानशार (बजा: धरर बहा का ४१ शे नुता १२१) । पुरिम र्नु [पुरुष] न्ती पूर्व (बूध १ ४) संव वि [ येत्.] इली इल-दृष्ट (बाबा ११६)। स्पन्नस-बच्छर न [ रस्त्ररोपलार] तारवर्ध-रिधेव (भग)। वंबीदि[बन्] द्रणी, दुए-नूच (या ३१) का द७१)। व्यय न [हरू ] कैन मुरुब की शामने बोगय-बाउ विदेश (वर्षि) । सिक्य न शिल्लामी राजन्तुक्तर वा एक भैन्द (गावा दि. दे) ।

"सर्व्य क्षा [ अति] सर्व-नुरूपत्ती **री रत**मा

गुप—गुम्म

पुछ, यन वरीरङ् की निर्दोप प्रकृतिवासा (art s v) । v एक स्वनाम प्रसिद्ध वैनानार्य गुच केंद्रों गोच (पाय मय यादम)। गुन्तण्याण न 👣 पितृ-तर्पेश (**दे २, १३**)। गुचि भी [गुप्त] १ वैवकाना जेन (सुर १ 💵 धुपारेवे)। २ क्टबरा(सुपारेवे)। ३ मन, वचन धीर काया की धरान प्रकृति को सेकना। ४ मन वर्षेष्ठ्र भी निर्धीय प्रवृत्ति ठा२ १ समय)। शुक्त वि [र्गुप्त] सम वर्गेष्क् की निर्देश प्रवृत्तिकाका संबद्ध (परहार ४)। पान 💃 विपास जन का राज्य कैरबाना ना यस्तव (तूपा ४९७)। सण पु ["सेन] ऐरवत क्षेत्र में क्रपत एक जिनसेव (सम १४३)। शुच्चि भी [गुप्ति] योपन काल (दु १२)। गुल्डिकी [दे] १ कलान (६२११ शकि)। २ इच्छा प्रतिसापा। ३ वधन धादाव। ४ वटा बद्धी। ३ सिर पर पहनी **जल्**डी कुन की मला (दे२ ११)। गुक्तिदिय नि [गुप्ते द्विय] इंद्रिय-निपद्द करने बाना, धंगत्रेतिय (मग स्राया १ ४)। गुचिय वि [गीप्रिक] खक, रक्षण करने-शासाः नवरपुष्तिए सङ्गावेद्व (कृप्य)। शुचिय वि [गीत्रिक] शेरी समान बोक-नाना गोतिया (नूप्र १४४)। गुचियाक देवो गुचि-पाछ (वर्गम २६)। शुरव वि मिषिवी प्राप्तित वीवा क्या (स १ १ मार गा ६३ कम्यू)। गुर्यश्च पूँ वि भास-पत्ती पश्चि-विशेष (ह २, १२)। शुक्र पूंची [शुक्र] पीव शुक्र (के के ४८) । ह्यस् न [गाह्य] नगर-विशेष (भोड ac) 1 गुष्प धक [गुप्] व्याकुन होना । गुप्पर (दे ४ १ ग्रापर्)। वह गुर्वत, गुप्पमाप (दुमा ६ १ २३ कप गीप) । शुष्प विशिष्य | १ विशाने बीग्यः २ व एकान्त्र विजय (ठा४१)। शुष्पद की [गोप्पकी] यी का केर हुने करता गहरा 'को सत्तरित कर्नाह, निम्हूर्य दुन्दर-नीरे' (यम्म १२ दी) ।

१५) । ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, प्रति शुष्पंत म दि | १ शेमनीय, शम्या। २ वि योपित राशित (वे २ १ २)। ३ छमू इ. शुन्व पवदाया हुमा, श्याकुल (वे २ १ र) वे१ २ २ ४)। गुष्पय रेखी गी-पय (शुक्र ११)। शुष्फ पूँ[शुरूफ] फीसी पैर भी गांठ (स मश्हेर हो। गुफगुनिक कि [के] पुतन्ती युनन्य-पुक्त (4 < 21)1 शुक्त देखी शुरुष्ठ ( पर् )। शुभ धवः शिक्षः दिवना गठना । प्रनद (R 2 384) 1 तुम एक [ भ्रम् ] भूमना पर्यटन करना भ्रमण करना । दुनइ (हू ४ १६१) : शुक्रमुम १ वर [ शुक्रसम् ] १ 'इम र्गुमर्गुमाओ । वर्ष भाषाम करती । २ महुर यम्थक व्यक्ति करना। यह गुमगुमंस, शुमगुर्भित, गुमगुमार्यंत (मीप णामा 🟌 १ कप्प पत्न ३३ ६)। शुसरामादय वि [शुमरामायित] विसने 'पुन-पुन' धावान फिना हो नह (ग्रीप) । गुनिक वि [भ्रमित] भ्रमित पुनामा हुमा (चूमा)। गुमिछ विदि∫ १ मुद्द मुल्दा २ महत यहरा । ३ प्रस्वतिव । ४ प्रापूर्ण भरपूर (४ २ १ २)। शुमुरामुगुम वैको गुभगुम । वहः, शुमुरामु गुमेव गुभुगुमुगुमैव (परम २ ४) £9 E)1 गुस्म यक [मुद्द] मूल्य होना परशाना व्याद्भन होना । ग्रम्मह (है ४ २ ७) ) शुम्म पू शिक्स परिनार, परिकर 'इन्बी शुम्मसंपरिवृष्टि (सूच २ २ ११)। शुरुम पूर्व शिक्स देश का बाग्री काम्परि-विशेष (१एए १)। २ मादी बूग-परा (पाय) । १ सेना-विशेष जिसमें २७ हायी, २७ रच ८१ भीवा भीर १६५ प्याचा हों ऐसी मेना (पतन १६ १)। ४ दृन्द, समूह (धौपः सूच२२)। १ लच्छ का एक हिस्सा वैत्रमूनि-समात वा एक घंस (धीप)। ह स्थान, अयह (ग्रीम ११३) ।

का एक प्रसिद्ध राजा (स.६)। इट्ट वि ["धर] ! दुर्लों को बारल करनंत्रका पुली। २ तम् बारका की सं(मुपा ३२७)। ।यर पू ["कर] पुरहों की बान बनेक कुछ-बासा पुरति (पठम ११, ६८, प्रामू १३४) । गुप्त देखो एगूज 'कुणुस्ट्वि दरामचे मुराठवंवं तु बह इहायक्ते' (कस्म २, वः ४ १४: १६ मा ४४)। शुण दि ["शुण] पुता समृतः 'बीमगुणो हीसपुछो' (द्वामा प्राप्तु २६) । गुजन न [गुजन] १ पुलनार (पर २३६)। २ प्रम्य-परावर्तन मावृत्ति "प्रणणु (? प्रण एल्) प्यहानु स ससती' (पिंड ६६४)। गुजणा की [गुजना] करर देवी (सम्पन्न) गुजवासीस सीन [ एकोनचत्वारिंशन् ] उनवामीन १६ (यम १६)। गुणबुद्धिक की [गुजबृद्धि] समातार बाठ दिनों का उपनास (मंदीब १८)। गुणसंज र् [गुणसन] एक कैन आकार्य को मुप्रमित हैमाचार्व के प्रगुद ने (दुप्र १६)। बाया की वि निष्टात विरोध (मर्ब)। शुजाबिय वि [शुजित] पहाना हुवा पाठितः 'तत्व सो सम्पूण सक्तामी भगुन्धेवाहवामी महरविकामी कुछाविमी (महा)। राणि वि [गुजिम्] प्रय-प्रक प्रख्वामा (स्व ११७ टी वटा प्रानु २१)। गुणिक्ष वि गिलिनी १ १ का इसा जिल्ला पुणा क्रिया नमा हो नह (मा ६) । २ निविध सार शिया हुमा (सं ११ ६१) । ६ व्यक्ति सरीत (भीप ६२)। ४ विष्ठ पळ की श्राकृति नी नई हो नड परान्तित (वन ६)। गुजिल्स वि [गुणवन् ] दुली प्रक-प्रक (ft \$8\$) I गुज्य देखी गाजा (धणु १४ )। गुरुद् (या) देवी गिरुद् । पुरुष (प्राष्ट (12.5) I सुक्त म [सोत्र] तापुर प्राप्नुतन (सूच २, रुप्त № (रुप्त) युक्त अन्युक्त, विद्या प्रधा (एगवा १ ४) बुर ७ २१४)। २ र्यातत (बस्त | 16

वर्षि-विशेष, घारीपन से ऊँबा-नीवा नमन

(ठा व) । आयव न िसपव वाएसा**र**,

गुर्केस वे [गुलुस्स] इन्स्र इन्स्र (१३

शुस्ताद्रस्य वि दि देश पूर्व (६२,६३) मीन १६६: पाम पर्)। २ धपुरित पूर्ण नहीं किया हुमा ( यह )। ३ पूरित पूर्वी कियाह्मा (दे २,१३)। ४ स्थमित। प्रसंबक्तित बन से जबनितः ६ विपटित विद्युद्ध (देश १३ वट)। शुस्मात्र देखो गुस्म । पुरमदद (ह ४ २ ७)। गुम्महिम नि मिहित] मेड्-कुछ सुन्ध किया हमा (कुमा ७ ४७)। गुस्मागुस्मि च क्लामल क्लेकर (भीप)। गुन्सिक वि सिन्धी १ मोद्यक्रीत मुद् (दुमा ७ ४७) । २ दुस्तित सद से दूसता ह्या (बद्ध १)। गुस्मिल प्रशिक्तिकी रोक्सल नवर रक्षक (योग १२३: ७६६) । गुनिसम वि 📳 मूब से ज्वादा ह्या 🕶 निव (दे२ ६२)। शुक्ता की हि] इच्छा, धरिकावा (वे २ 1(3 शुक्सी जी [शुस्सी] क्लप्सी कुडा, कटमन 🥰 (तत १६, १३८) तुक २० १३८)। गुम्ब सक [गुम्फ् ] श्रूकना कशा । हम्बद (हो) (स्क्ल ६६)। गुद्ध देवी गुजम (है २ १२४)। गुरव देशों गुरु भी पुरने शहीको बान **धाहेद्र पोस्कृत्विभी** (परुम ६ ११४)। गुद् ) पू [शुरु] १ किसक विचानाता ह्यस्था पदानेताला (तय १: सर्ग)। ३ बर्गोरफेड बर्गाणार्थ (बिसे ६६)। ३ माठा पिना वर्षे खु पुत्रव को व (का १ )। ४ ब्रहराति ब्रह-विदेश (पदम १७ १ ; भूमा) । १ स्वर विरोध की मानानामा था र्दं वर्गया स्वयं, किश्वेष शिक्षे क्रमुरवार या र्तपुत्र स्पन्न ही पैता थी स्वर-वर्छ (पिंग) । ६ वि वहा, महान् (एवा है है है )। ७ भारी भौतिन (ठाइ १) परमा १)। व क्युट क्तम (कम्म ४ ४२ ४३)। इत्रम दि [कर्मन्] कर्नो का बोबदाला, पानी (नुरा२६४)। इस्टब (क्रुट) १ वर्गी-पार्व रा बामीप्य (पंचा ११) । २ हरू-परिवार (छ: ६७०) । शङ्क्ये [वाति]

र् िसहाध्यायिकी श्रद के भारे (शृह Y)। गुरुई वैनो गर्रुई (लाव ११)। गुरुयी 🟶 [गुर्बा] १ प्रस्त्वातीय श्री (तूर ११ २११)। २ वर्गानदेशिका साम्बी (हप ७२व टी) । गुरेब न गिरेटी इक्ट फिरेप (दे १ ४४)। गुरु वेचो गुरु ⇔पुर (ठा 🐍 १ 🚯 शासा १ व्यास ४४४ वीप)। गुरु व दि । भूग्यव (दे २ ६१) । गुस्त्रम् क दिन् + क्रिप् किया केन्स हे पुनयु बार (है ४ १४४) । संब गुक्सुविकण (क्या) । गुक्रमुंब देवो गुलुगुंब = उत् + नवव्। द्रमत बह (हे ४ १६) । गुरुगुष्ट कर [शुरुगुष्टान्] 'तुरुनुम्' वास्त्रव करना, हाजी का हुएँ है जिनाइना वा बोलना। **पक्ष-गुरुमालेव गुक्रमालेव (घर १ ६१ टी**) फ्यापटम व १७१:१२ २ )। गुक्रगुख्यक्ष ) न [गुक्रगुद्धयित] हाबी की गुस्तमुख्यि } नर्गमा (व १. सूपा १३७) । गुड़क एक [बाटी 🐑 बुरमन करना। पुन नह (है ४ ७३)। नद्ध-गुस्त्रहेत (कुना)। गास्त्रमधीयमा सी [गुहसाधिषात्र] एक तर्व की मिळाई, गोलपापकी । २ प्रकृताना (पग २१६, हुल २ टी)। गुष्प्राणिया भी [गुडभानिता] बाच-विशेव (पच ४)≀ गुक्किम वि दि विश्व विश्वीदेश (दे १, १ १। पड्)। २ तुर्नेड, कन्दुकः ऋदुवी पुष्टिकी (पास)। गुक्किमा औ [रे] १ पुरिस्था २ वेद रत्युष्ट । वे स्तरक प्रथम (दे प १ वे)। गुक्रिमा की [गुक्रिय़] १ नेती गुक्रिश (महात्र काचा १ १३ मुना २६१)। १ वर्शक प्रवय विशेष नुपन्तित हस्य विशेष (श्रीपः साबा १ १--पत्र २४) १ गुलुक्य कि दिं] प्रक्रियतं कुरूमकाका सका बनुष्ट्याचा (धीरा क्ल) ।

₹री । शहरांब रेको शुक्रमांब = प्रद + मिप् । इह ग्र**न्थः** ग्रीर वरानन (क्व ४)। सक्रियस्थ्यम HER (BY TYY) I गुलुगुम् धन [हत्+सम्बू] देश करना ज्यात करना । द्वनुत बद्ध (है ४ १६)। गलगंबिक विविद्यामित देश किए हिम अधिमत (दे २ १६ कुमा)। गुलुगुंबिइञ वि बि] बाद से मनप्ति (रे 7 (83 F गुजगुड देवी गुजगुज । भूतुर्वीत (वरि)। कह गुलुगुसँव (पि ११६)। गुलगुलाइय ) वेशो गुलगुलाइम (धीप गुलुगुलिय । पण्ड १ श व १९६)। रालुच्य वि [वे] श्रमित पुनाना हर्वा, ( 2 66)1 गुकुच्छ दू [शुक्तुच्छ] हुच्छा स्टब्स्(राम) गुद्धश्य वि [ गुरुमवन् ] वदा धर्दवानी प्रसम्बद्ध (दामा १ १--पर ४)। शुक्ष वेको शुद्ध = पुप्। पुत्रीति (क्षम १४)। ेगुबस्य को कुनस्य भूदिन्दुबबक्रिल (संदि) 1 गुवाक्रिया वि देखो गोआक्रिया (वी १०)।

> 'इसको करह कम्म त्वी करूत्रर दुलक्षियाः। व्यक्ती संतरक नियो वरमण्डचकपञ्जनितं (श्व ४४)। शुचिस्र वि दि] चीनी का बना 🗗 निसी-धाका (मिट्रांच्य) (तर ६,१)। गुब्बिजी की [गुर्बिजी] पर्मेंबरी की (गुप ₹७७} 1 गुह वैको सुन्न । प्रदूर (हे १ २३६) । शह ई शिही शक्तिन एक रिनाइन (पाच) १

गुहा की [गुहा] द्वस, बन्हर (पाम' स ८

गुबिर हि [क्] कभीर, वहरा (वामा कप्प)र

२ बासू २७१)।

गुविस वि [गुप्त] आहुव धुन्न (स ८

गुविश्व वि [गुपिछ] १ व्हन, स्वय वर्ग-

लिक (बुर ६ ६श का इ.स.) मस्ट्री

१)। २ ल. मन्त्री बंगल (छर ११*मी*)।

४-- पद १६१)।

गुद्ध चिं[गूद्ध] प्रस, प्रव्यक्ष दिया हुमा (पग्रहर, ४ चीरे)। दंत पुं [वस्त] १ एक बन्तर्शीप श्रीप-विशेष । २ द्वीप-विशेष का निवासी (ठा ४२)। १ एक वैन मृति। ४ 'धनुत्तरोपपाविक क्ता' सूत्र का एक सम्य-यन (सनुर)। ५ मराकोत्र का एक मानी चहवर्ती राजा (सम १६४) । राष्ट्र एक [शुक्ता प्रियम पुष्त रक्षमा। बक्त गृह्देत (स.६१ )। बहुद न [गूथ] इ. विद्या (तंदु) । राह्मण न राह्मन सिमाना (सम ७१)। गृहिय पि गृहित जिलमा हुमा (स १ ६)। गृष्ड् १ (प्रय) देखो गिण्ड् । पृत्वद्र (क्रुमा)। गुन्हें } सेहः गुण्हेप्पियुं (हे ४ ११४)। राज्य वि [रीय] १ गले योग्य, याले कायन मीत (ठा ४ ४ — पत्र २०० वका ४४)। २ न. योत धानः 'मखहरमेयनुर्गाएं (युर व ६६, या ३३४)। र्शेष्ट्रज्ञ न दि दिल्लों के उसर की क्स-प्रनिष र्गे<u>दुख</u> न [के] शस्त्रक जोली (के २ ६४)। गेंड न [दे] देवो गेंडुम (१२ ६१)। रोंड्ड भी वि श्रीका, केंद्र यम्मत विनोद (૧૨૨૪) ા गेंदुअ र् [कन्दुक] वेंद, वैदा क्षेत्रने की एक बल्द्र (हे १ ४७) १८२, सुर १ १२१)। रोक्त वि [वे] मस्ति विद्योदित (वे १ ८८)। रोळाखन दि] पीना का साधरण (६ २ 1 (YS रोजमः वि मिद्दा विद्युप्तियाम (है १७८)। ग्रहण न दि । फॅक्ना, शेपल । २ वे देना 'तत की बराक्य सर्थिमा भारत्यात लाई' (धन ६४= टी)। गेइ न दि रिपक्ट कीच की शेर रियन मन-विरोप (वे २, १ ४)। गेड़ी की दि] मेडी मेंद केशने की सकती (इमा)।

महा)। भूका पैराहीम (भूमा)। मर्कि

(मुर १,७४ मिना ११) । श्रेष्ट गेणिहसा,

शिष्ट्रिकण, गेणिह्अ (स्पः पि ४८६ कूमा) । इ. गेलिइयस्य (उत्त १) । रोधहुव्ह व [प्रहृष] धारान, प्रपासन सेमा (स्प १६६: स ३७६)। शंभूलया की [मह्ला] मह्ल बादान (उप **1 (378** गेज्हाबिय वि [माहित] महल कराया हुमा (स ६२६) महा)। राधिद्वा न [वे] उट-पुत्र स्तनान्सारक-वस (₹ ₹ **€**¥) I शञ्च देवो गिह (धीप)। गेरिका देन गिरिकी १ नेव भागरक गेठका की मिद्री (स २२३ पि ६ ११=) । २ मांख-विशेष एल की एक वाति (पर्या१---पथ २६)। ६ वि वेद रंध का (क्यू)। ४ पुं विक्एमी साबु, शंक्य-नव का सनुवाकी परिवासक (पन ६४)। गंधण्य ) व जिल्लाम्य रोग बीमारी ग्लानि रोखका } (विशे १४ ) जर ४६६ धीव ७७ २२१)। गेविद्या । न [प्रैबेयक] १ वीचाका सामू-रोबेळा पर्यणले का गहना (बीप थाया गेवेळाय ∫ १२)। २ **दैनेक्क दे**र्वेक विमान (ठा ६) । ६ पूँ क्लाम भेग्री के देवों की एक बावि (कप्प) और। सम भी ३३-रोधन वेको समेखा (धाना २, १३१)। रोह पुन शिक्षी वर, 'न नदैन वर्ण न सम्बद्धो पेद्वी (बच्चा ६८) । गहत गिही गृह, घर, मकान (स्वप्न १६) थरण)। जामाज्य पू ["आमा**त्**क] धर असाहै सर्वेश प्रमुद के जर में राष्ट्रीयाला व्यामाता (समा पु १६६) । एगार वि विकार} १ घर के धानगणनामा। २ ⊈ करम्बुस की एक व्यक्ति (सन १७)। ह्यू षि वित् | घरनामा गृही संसाधि (यह)। ासम 🙎 ["।अस] गृहस्थायम (पडम ६१ = R) 1 गेण्ड् केबो शिष्ट्। गैसह्द (हे ४२ ६ छनः गेदि वि [गुद्ध] शोलुप प्रध्यापक (धीव ww ) t गैरिहरस६ (महा) । वह- रोज्ह्रंत रोज्ह्रसाज गहिको [मृद्धि] धासकि गाम्पं नाहक

(स ११३) प्रशास १ ३)।

335 गेहि वि गिहिम् निषे वेची (सामा १ (Y) गेडिश कि गिडिक र करवाना पृद्धार पूर्व भर्ता, बनी पश्च (उत्त २)। गेहिल [गृद्धिक] शरवासक, सोसुप मामनी (परहर १)। गोहिणा की गिहिनी ] पृहिष्ठी की (सुपा इप्रशः क्षेत्राः कर्ता) । गो १ [गो] भूप राजा 'सहसी वो मूप्तपुर स्तिलो पि (बन १)। माहिसका न िमादिएकी वी और मेंस का भूत्र या समुद्र 'निष्कुर्य योमाद्विसद्य' (स ६८१) । बार्[यो] १ धरेन किया(भउड)।२ स्वर्गवेद-मृति (धुपा १४२) । १ वैश क्सीवर्ष। ४ पशु वानवर । ३ की गीयाः 'बपरपेरिजितिरियानियमिवहिष्यमणुबोरिएसो योज्य (विसे १७१६) पदम १ % ५३ पुपार७४)। ६ वाखी वान् (सूम १ १३) । ७ मूमिः च महद् विमन्यानीयराख भीषी पूनिकरण (गउड चुपा १४२)। ैमास **रे**ची वास (पुण्ठ २१६) । इञ्ज वि [मत् ] यो-पुक्त, विश्वके पास धनेक वो हो वह(दे२ ६०): ड⊌ न िंड्स्सी १ गीमॉकासमुद्ध (प्राव ३)। २ मोछ मो-बाइट 'सामी मोडनकरी' (बाबम) । दक्किय वि [कुछिक] यो-कुलवाबा यो कुल का मासिक गोगला (महा)। 'फिलंकय न [किस्टइस्क] पात्र-विशेष जिसमें गी को काशादिया वाटा है (सन 😻 🖒 । की इर पूर्विकट्टी पशुर्थों की मच्ची वची (बी १६)। क्लोर, स्रोरन कीरी वैवा क्य दूव (क्षम ६ छान्छ १) । स्तह पुँचिही काय की चोची सी को छीनना (परहर ६)। सञ्चल न "क्सइज] यो<del>-वाइ</del>स्ड (शास्त्र १ ६ ) । विदस्ता की िनिपद्या यासन निरोप सी भी तरह बैठना (ठा११) । "तिरम न ["तीर्थ] १ गीधों का तालाब मादि में चतरने का चस्ता क्रम से नौकी बसीन (जीव ६)। २ जनए समुज्ञ ननैरक् भी एक चन्छ (ठा १)। त्तास वि ["त्रास्त्री १ गीमॉ को प्राप्त

वेनेवाका । २ ई एक कुटबाइ का पुत्र (विधा

(परह १ १)। १ एक घन्छर्ति, हीप-विशेष ।

१२)। दास 🖞 [दास] १एक कैन-सुनि, कार्याह स्थामी का प्रयम शिष्या ३ एक कैनम्भिन्छ (कप्प ठा १)। दोहिया की विदेशी श्रीका केला। र मासन विरोप भी दुइने के समय विस तरह मैठा बाता है उस तरह का त्यवेशन (ठा ६, t)। दहरि दिह् ] भी को क्षेत्रले-शवा (पर्) । पृथिका की "पृथिका सान-विशेष मीयों को कर कर क्रीले का समय सार्थकाला चैलव्य बोव्हलियाँ (रंगा)। पय प्ययन [प्यइ] १ सी का चुर हुवे उदमा खादाः 'कहरिम वरिम जीवाता भागद नोपन व मनजनहीं (धाप ६६)। २ योजस्परियत मृति (बरह) । ३ वी का दुर (घ४४)। सइ दुंिसद्री थेहि विकेष शासिम्ब के रिवा का नाम (छ १ )। "मूमि की "मूमि] मौको को चले की जन्द्(याथम)। स वि [सन् ] जीवाला (विसे १४१व)। सकत िस्तीयी का राव (एममा १. ११--पन १७३)। सम व [सव] नोवर, गौ का सल नो-विज्ञा (मन ४,२)। सुत्तिका की ["मृजिका] १ वीकासून ग्रेसून (सोव६४ सा)। ३ गोसन के फाकारवाची गृहर्गक (वंबर २)। सुद्दिल न ["सुस्तित] नौ के पून की भाकारवाली कृत (स्त्रावा १ १ )। सहग पुरिषक] तीत वर्षका क्षेत्र (सूच १ २) । रीयण स्रोत [रोधन] स्वताम-क्यात पीत-वर्श हव्य-विशेष कोयस्तकत्विक मून्त-पित्त (पुर १११७) । क्यी या (पंचा ४)। सिद्धिया वी [सिद्दिश] स्पर मूमि (लिचु ६) । स्रोम 🖠 [कीम] १ वी का रोम बाल । २ डी**लिंड प्रमृ**-विशेष (जीव १)। बहुर्दु [पिति] १ इता। २ नुर्व । ३ राजा (नुपा १४२) । ४ सङ्खेन । १ बेर (६ १ २३१) । "बङ्य दुं ["झविक] वौथों की कर्म का चतुकरत करनेवाला एक प्रचारका उपल्यी (शासा १ १६)। अस केयो पय (एज)। बाह्य दुविस्ट] नीमों शा बाहा (दे १ १४१) । क्वाइय देखी बद्दय (धीप) । साख्य की [शास्त्र]

वीधों का वाहा (तिचुद) । इल्लान <sup>™</sup>धनों पौर्मों का समूह (गा दे ह सूर १ ४६)। गोअ देखो गोच ≕गौपम्। इत्गोअणि इत (नाट-मानती १२१)। ग्रोमंट प्रकृति । १ वीका चरता । २ व्यक्त श्रहाट, स्वतं में होनेवाला श्रहाट गा सिवाकाका के देव (दे २ १८)। गोजमा ही है ] रच्या गुहुन्या (दे २, १६)। गोअझा की विशेष वेषनेवाली की (दे र **€**<} 1 गोक्षरपृंग्तिचर] क्रामलय (क्स ४ २ २)। गोमस्मित्री श्री [ग'पासिनी] स्वाप्तन को धवलमूभिनैहीयर्गम चुन्हास्त्रीय महरोगु। पुण्डिययोग्यविशीय् यस्त्रक्षरिसूच्य निम्मविद्यो । (वर्गवि ११)। गोला को [गोवा] नदी-विरोध बोदावरी नयी 'गोपासासम्बद्धां वर्गातिका वरिप्रसी हेरा (च १७३)। गोआ की दि ने नरी कनती खोटा बड़ा ( R # t) 1 गोजाअरी की [गांवावरी] नदी-विशेष नेशनधे (वा ३११)। गोलाविभा 🕸 📳 वर्ष शतु में अपल श्रोनेवाचा बीट-विदेव (दे २ ६व) । गोमान्धी क्यो गोमामरी (हे २ १७४)। गोवर व [गोपुर] नवर या किसे का वरवाना (सम १३७ सुर १ १६)। गोडास्य वि [गोकुक्कि] पो-वन पर नियुक्त पुरुष गोनुष्य-एसक (कुम ६१) । मोंजी } की [के] संबंध बीर (केश कर)। गोंड देशो कोंड = कीएड (इस) । गोंड न [दे] कामन वन बंदब (दे २, १४)। गोंकी क्षी [क्षे] संबद्ध और (दे२ ६१)। गोंदस केवी गुंदस (वर्षि) । र्गोदीजन [दे] मयूर-पित्त मोर नापित ( 2 (0) 1 गोंफ बुं [गुरफ] पारधीन पैर नी बांठ (**परह** १४)। गोक्क }ुँ[गोक्कों]१ वी वा नाम । गोक्क }१ यो मुख्याना चनुप्पर-विशेष

४ गोकराँ-द्वीप का निवासी समुख (ठा ४ २)। गोक्जिंज देवों गो इक्षित्रय (एव १४ )। गोक्सुरव 🖞 [गोधुरक] एक पौर्वात क्र शाम मोसक (स २१६)। गोष्य दं 👣 प्राचन-सन्द, क्षेत्रा, चारूक ( ? eu) i गोष्ट्र देवो गुल्क् (वै ६ ४४ व र ११२)। गुष्यक्रम ) पून शिष्यक्रमें यात्र वरेष्ट गोच्छ्रग । संख् केले का बस-बर्ड (क्ले पण्ड २ १)। गोरकड न हि योगर, नो निहा (मृन्स १४)। गोच्छा को 📳 मध्यरी शीर (है २, ६६)। गोचिक्य देवो गुच्छिय (ग्रीप छत्य १ १)। गोडह रेंसो गांकप्रह (नार-पून्य ४१)। गोबक्कोया की [गोबक्कीरा] कर शेट रितेन, शिविय बन्दु-विदेव (परस ११)। गोळ 🕯 🕏 १ अधेरिक धेनराना रेव (बुपा २०१) । २ वालेवाला, पवेबा पानक वीक्षावंस्टलाई वीयं नक्षत्रक्रतयोग्वेद्धः। विविच्छेल स्कृतिसं जनसङ्ख्यामस् च नव (पडम बर, १६)। गोटू पूँ गोप्रज्ञी योगाना, यौगों के खले मा स्वल (सहायबस १३४ व्याप्तक)। धोहामादिस र् [गोप्रामादिस] वर्षशुली की बीच प्रदेश है सबद मान्नेबाना एक काशस भाषाने (हर ४)। गोड्डि केवरे गोड्डी (पारम) । गोट्टिक , वृश्मीक्षिक एक वदश्मी है योद्विद्धाः सस्त्यः, निष समान-नवस्त्र बेस्व योडिस्व (एस्सा १: १६--पत्र २ ६ विपा १ २---पत्र १७)। गाईत की [नाईत] १ मएडली समान कर-वासों को सम्मा (बाक्ट क्यूनि १ छावा १ १६) । २ वार्तासाय परावर्श (कुमा) । योड पूँ [गीड] १ फेल-विरोध (स २०६)। २ वियोद केटका निवासी (परहर १)। गोड र्रु कि] बोड़, पार, पैर (सार—पृष्ण ₹**₹**₹} ι गोडा की [गाका] नदी-विशेष, दोरावरी

(पाद १६)।

मांच रि [गीम] १ प्रस्त नियान प्रसम्बन्धः स्थापं (तिया १ २) सीप) । २ व्यवना समुद्धः (दीन) । मोंचंगस्था की [गवाझना] वैया, नाम (मुना

४६६)। नोजल १ पृत्र विशेषय का बीनार रकते नोजलय १ पृत्र विशेषय का बीनार रकते नोजलय १ तोनस्योधर के एक बाहि फफ़-पहित सांप की एक बाहि (पहा १

१। चर दूप के।। गोष्माची [के] वाब, पैदा यक (पट्)। गापिका पुँकि] वो-चनूद, बीबी वा सनूद (के २ ८० पाप)।

गोजिय वि [वे] वीचों का व्यापाये (तब ह)। गोजी को [वे] यम नेता (बोब २६ आ)। गोजब केवो गोज = वीस्स (क्या स्त्राम १ १—4४ १७)।

गोतिहाजी की [पै गोजिशायणी] बोबला भी की बस्की (वंदु ६२) । गोल पूँ [गोज] १ परंत प्रशाह (बा १४)।

नील पूँ [मात्र] १ वर्षेट पहाड़ (बा१४)। १ न तमा परिवास काल्या (हे ११, १)। १ के-पिटेर निवक्ति प्राप्त के प्राणी केल्य या तील कारित का स्कूलका है (ठा २, ४)। ४ पूँत, बोठ केंग्र, दूख बार्टा पंट मूलवेला परण्यां (ठा ४)। केलांडिय न [स्वास्टित] मामत्रीवास्त पुरु के बारे दूसरे के माम का क्ल्यांच्यु (हे ११ १४)। विकास की [विकास]

कुल-वेशी (बा १४)। "कुस्सिया की ["स्पर्शिका] बल्नी-विशेष (पर्ग्ण १)। ग्रेच पून श्रिज] १ पूर्वक पूबर के नाम से

१ १६)। २ वि वाणी का जाक (मूप प्रीय प्रत्य स्वतंत्र (एवि ४१ वृज्य १ १६)। २ वि वाणी का जाक (मूप १ १६)।

१ (१ ६)।
गोर्चि वि [गोत्रिम् ] समान योजवाता,
दूरमा लवन (पुग १ ६)।
गोर्चि वेशे गुरुत (४ २४२)।
गोर्चिका कि [गोत्रिक] समान गोवपाता।
स्वजन व्यद्भिक् (था ७)।

गाखुम देवो गोसुम (१७)। गोल्यूमा देवो गोसूमा (१७)।

वासुम , पुं [गोस्तूप] १ व्याप्त्र विक-गासूम ) देव का प्रवम-शिक्स (एम १६२ पि २ ८) । २ वेकस्यर नागधव का एक

बाबार-पर्वेत (सम ११)। १ नः मानुपोत्तर पर्वेत का एक शिक्षर (धिष्)। ४ कीस्तुम-एक (सम ११०)। गोन्युसा की शिक्षस्पा] १ वाली-विशेप

संबर्ग पर्यंत पर की एक काशी (ठा ६ ६)। २ सम्बद्ध की एक अध्यक्षिणी की प्रवचाणी (ठा ४ २)। गोदा की [वे गोदा] लगी-विस्तेप गौदावरी

(यडः मा ६९१)। शोगपु [शाम] १ ज्योच्या देशः। १ गोन देशः ना निमासी ममुख्य (राज)।

गोजा की [गोधा] पोड़ हात से चलनेवाली एक साप की बाति (पराहृश श छात्रा १ ८)। गोजा केवी गोधम (खादा १ १६—पण

गाभ चना गाण्य (खाया ११६---वर्ष २ )। गोपुर वेजी गोउर (ज्या १) वर्षि १०१)। गोप्यद्वेजिया की [गोपद्वेजिक्य] वीसी को

गाप्पक्षकथाक्य [गामहासक्या]योगीका कालेकी कालह (प्रामा २ १ १)। गोफमाक्ती [के] भोफन पत्नर फॅकनेका प्रसन-निकेस (प्राप्त)।

गोमदा स्थी वि] स्था प्रास्था (६२ १९)। गोमाम ) प्रीगोमाप्री श्वस्था विवादशीयक् गोमाम ) (लाट-शुक्त ६२ ) (१ १६४। सामा ४ ४ स २१६१ वास)। गोमाणसिया स्थी [गोमानमिका] सम्या नगर स्वान-विशेष (बीब १) ।

गोमाणसी स्थी [गामानसी] उसर देखी (शीव १)। गोमि } वि[गोमिस] जिमके पास सनेक

गोमि ) वि गिथिम् विनके पाछ स्लेक गोमिका है में हो बहु (स्लूग लिब २)। गोमिका हैको गोमिका (एक)। गोमिका हैको गोमिका (एक) ११२)। गोमिका (म) गिरियेत वे संगित (प्राक्त ११)।

गोमा को [यी कनकबूध गीनिय बन्तु विरोध (वी १६)। गीमुझ दु [गामुला] १ यक कियोग भगवाम् अध्यपनेद का शामन-क्य (विषि के)। २ एक अध्यपनेद की शामन-क्य (विष के)। २ एक अध्यपनेद की पिरोध । १ गोमुक-तीप का निवासी मनुष्य (ता ४ २)। ४ ग. उपकेदन (द २ क)।

(दे २ ६६)। गोसुद्धी स्थ्री [गोसुस्या] नाय-विदेश (सणु प्रस्)।

गोमुद्दी [गोमुक्ता] बाद-श्रियेय (ध्य ४६ स्रष्टु १२८) । गुप्तेश्व १ दू [गोमेद] धन की एक बाहि

गोमेरब ई पहुंचल (कुमा ७ वस १)। गोमेर ई [गोमेज] १ सक्त-विरोध प्रमानत् वीक्षणात्र का शास-वेस (सं ४)। २ सक्त-विरोध विसमें थी का वस किया बाता है (यस्म ११ ४१)।

सोस्मिक पुर्शिक्तिक] कोतवाल नगर एकक (परह र २)।

गोम्ब्री देखी गोमी (राष)। गोय देखी गोचा (तम ११ कम्ब १)।

ीबाइ मि [बादिन] सस्मे हुम की उत्तय माननेदाला वंद्यमिमानी (प्राचा)।

गोय न [वे] उद्यायर-पूतर वनैष्ह हा क्रम (साव ६) ।

शोध न शोध ] मील, बाक-संबंध (सूध १ १४ २ ) १ वस्य प्र [वाह] मीक-सूबक बचन (सूब १ १,२७) ।

गोयस हु [गोनम] ऋगि-विरोत (ठा ७)। २ खोटा मेच (मीप)। ३ न, नीन-विरोप (कम्प ठा ७)।

₹o₹	<b>पाइअसर्मार्</b> ण्यमे	गोक्स-गोब
गोमम दि [गीतम] १ गेतम नेत्र में जलब	िंसरों नर्रम की एक बावि (पर <b>ए</b> १)।	पुरपका नि≂क्ष-नर्मधामन्त्रस् (ज्ञादा १
बोतम बोबीय 'तै मैप्रमा वे सवनिश्चा पएउत्ता'	"गिरि दू "गिरि] वर्षत करोच क्रियाचम	ह)। ६ लिप्टुरता कठोरता ( <b>१र</b> ७)।
(ठा ६० पन वं १)। २ र्द्याण्याम् महत्त्वीर	(निषु १)। भिग पु भिग १ शिख की	गोख र् गोस्र १ स्थ-रिहेच 'करमर्गत-
रा प्रवात-शिष्य (सर १४ ७३ प्रवा)।	एक जाति। २ त. इस श्रुरिए के वस्ते का	किह्नेटर्चतिवारिये (यण्डु ४०) । २ केय-
दश्य नाम ना एक राक्नुमार, राजा	वनाह्माथका(पाचा२ १,१)।	कार, बुलाशार, भएकनाकार वस्तु (अ ४ ४
धानारवृद्धित का एक पुत्र, को मक्कान् नेमि-	गारम देशो गोरन (ना नह)।	सनुद्र । ३ मोबक ब्रुटा (तुना २७ )।
नाम के पात दीता श्रीकर सनुस्थय पर्नेतपर	गोरंग वि गिराम ] गोप शरीखाला	४ वेंच, कचुक (बुस १ ४)।
मुक्त ह्मादा (सन्त २)। ४ एक नकुट्य	गुन्ध स्रपेरसला (कप्पू) ।	गोळ पूंडी हि नेता बार के जरप पूर
सांति जो बैस द्वारा निका गाँव पर धनना	गोरंकिकी की [दें] बोबा थोड़, कनु-विशेष	(बल ७ १४)। बी की (बच ७ १६)।
निर्माद चनाती है (तावा ११४)। इ. एक	(देर ६६)।	गोस्रम ) वे [गोसक] स्वर देनी (तुन रे
शासम्बार्ग (क्य ६१७) । ६ होप स्थिप (सव	गोरिहत वि वि अस्त व्यस्त (वर् )।	गोस्रय र्वे हें हर दु वेश्व काष्र)।
क एप २६७ टी)। दिसि <b>ख</b> न	गोरव न [गीरच] १ महस्य इस्टब (प्राप्तु	रहेळक्यायक व [गीक्टबाबन] वोक्रिये
["करीय] 'उत्तरध्यक्न' मूत्र ना एक सम्बन्ध	। १ धारप, सम्मान क्षूमान (विसे	(da 5 54) !
धन जिल्लें नीतम स्नामी और नेरिपूरि का	१४७१/रवस्य ११)। १ कान, वर्ति (हा ह)।	योध्य की दि] यो नैमा(दे ६ ६ ॥
र्थमन है (बस २६) । संगुत्त हि		पान) १२ लगी कोई भी नगी। ६ वर्णी,
["सगोत्र] गोतम गोत्रीय (अंगः बाषय)।	गोर्थिम वि [गीर्थित] बम्मानित विस्का	छो्ची धॅरिनी (दे२, १४)। नोधानी
ैसामि पु ["त्वामिम्] नवकल् स्थलीर	मानर किया करा हो नह (दे ४ ४)।	नदी(देश १ ४० छाप्रद १७३३ दिया
के सर्व-अवान शिष्य का नाम (विपा १ १ —	गोरक्य वि [गीरक्य] जीरव-जीत्य (वर्नीव	२६७ सि = १,१६४३ पास, पड )।
पत्र २)।	ইপা কুম ইতত)।	गोडिय व [गीडिक] दुर धनानेपासा (पर
गोयमञ्जया ) की [गीतमार्थिका] केन्युनि-	गोरस पून [गोरस] गोरस पूत्र वही बहुत	<b>e</b> ) t
गोमसज्जिया∫ क्यांकी एक शतका (राक	या आण्य नरैप्य (सामा १ काळा४ १)।	गोक्कियाओं [दे] श्योती प्रत्नि (पन
क्य) १	गोरस ई [गोरस] बाली का शानन्द (सिरि	चलु)। येंद सहकों के क्लेने की एवं कीन
गोगर पू [गोचर] १ कीलो की चली की	(tx ) 1	चीए दातीए बडी पोतिमाए दिनों (रहीं
बन्द, 'छो बोगरे छो वरायान्त्रवर्ण' (बह	गोयह दु[द] इस में बोदने शेष्य वैश	२) । ३ वदा द्वरदा वही मानी (बार) [
<ul><li>१)। १ विषय 'धंदुरक्षीयरं सम्बद्ध''</li></ul>	(शाचा २, ४२, ३)।	विद्य क्षिपद्य न [क्षिपद्य क्षिपद्य]
सर्पेषु (वडड) । ३ इन्द्रियका विश्य शत्क्रकः	गोराकी [द] नाहन-ध्वति इच रेका। २	१ इतनी पूलहा। २ मन्ति-विकेस (स
प्रमाणका प्रश्वाची ते काळी नवस्त्रवीकार	नम् भाषाः १ द्योगा नदेन साजीकः (दे ए	< 4± X\$#) ;
स्पर्ने (दुमा)। ४ मित्ताटन क्रिका के सिए	( t x) 1	गांक्षियायत्र न [गोक्षिक्षयन] ! गोन-सिर्देष
भ्रमण (मीम ६६ का वस ६, १) । १	गोरि वैको गोरी (है १ ४)।	को कीरिक योज नी एक रहेबा है। १ फि
निया माधुरपै (क्य २ ४) । ६ वि चूर्वि	गोरिअ व [गीरिक] विद्यावर का नवर किरीय	न्येनिकायन-योतीब (दा ७) ।
में विचरनवाताः प्रिम्मलयोगसङ् वृत्तिसङ्		गोकी की [बे] मक्बी वा स्थानी, वयनिया
(नग)। नरिमा भी [च्चा] जिला के		यही मचने की सकती यही (दे २, १४)।
निए भेमए (का १६७ टी) पडने ४ ३)। भृति की [भृति] १ प्रमुखीं की चरने की	२)। रेपारेता रिक-पत्नी (द्वम <sub>ि</sub> नुपा	गासन (दे) विज्योन्त्रा भूज्यन शासन
यगह (दे १ ४) । १ क्या-अयश की	रेथ । या १) । वे मीक्ष्मा की एक औ का	(सामा १ =। दूमा) ।
वर्(धर्)। विचित्रि विचित्र		गाक्क वृ [गीक्य] र केत नितेप (भारत) र
विद्या विद्यामण वर्णवेशला (वा व ४)।		रन योज-स्टिए की शहरण कोण गी
गांपरी सी [गीवरी] निजा शपूरचे (नुश		शासाहै। वे वि शीस्य भीव में प्रशास
3(1):	ार्था की [गीरी] निवानीरकेन (तूब र, १, १७)।	(FI ) I
मोर र् [गीर] र गुल-गर्छ, बर्ध्व रह । १	ग्रीसम्ब म [ग्रीहरप] त्ररास्त बाद (बर्गेदि	गोवदा भ्री [रे] रिम्पी, बली-विरोप दुन्परन
रि नीर नर्जरागः, गुल्त (नद्याः चुना) ।		नी नहर (दे २ ११) मलका वाप)।
१ माचन निश्त (शाबा १ व)। रिसर्		गोव कर [गोपय्] १ फिलना । १ प्याप
	41,71, 44,64,141	वरवा । बोचए, बोवेद (तुना व४६। नदा) ।

कवर गोबिखंड (पुपा ११७) सुर ११ १६२: प्राप्त ६४)। नोव ] पू निये पीने का सक न्याना गोषम गिनल (स्मा ७ देश इट कप्प) । "जिरि वृं ["गिरि] पर्वत-विशेषा 'मो बरिहरिहर्सिक्टस्टियचरमञ्ज्ञिक्यापारमञ रहं (पूणि १ वर्ष )। गोयब्द्धप देखो गोयद्वण (स २६१)। शोषण न शिपनी १ फरण । २ विपाना (भा २६: उप १६७ टी) । गोबद्धण र् [गोवर्धन] १ पर्वत-विकेष (पि २६१)। २ पाम विशेष (पडम २ १११)। नोवय वि [रोपक] छिपलेवाला, ब्रीक्लेवाला (संबोध ६४) । गोबर पुन [व] योबर, योगय वो-विहा (व २, १६ च्य ११७ टी)। मोबर वू [गोवर] १ मनव देश का एक गाँव गौराम-स्वामी की बरममूपि (शक्त)। २ विशिष-विशेष (चप ११७ दी )। नोबस न गिवली १ पोषन मोकूब नीमॉ का समूह 'रिवि गोनवाई' (सुपा ४३३) । २ योज-विदेश (मुख १ )। गोपकायण देवी गोबद्धायण (पूज १)। गोवछिप प्रशिवसिक्ष न्याका सद्वीर (युवा ४३६)। मोबद्ध पून [गायक] योत्र-विशेष (धूळ १ ((金) नाबद्धायम् वि [गाबस्ययमे] १ वोवन योज में फलकार न. योज मिलैय (इक)। गोबा पु [गापा] नौधीं का पालन करने-बाखा, ग्वाबा (प्रापा)। गामाय स्थ [गोपाय्] १ विशन्तः। २ रक्षेत्र करना । कहा, गांबायंत्र (कर ६१७) । गोबार पु [गापास] वी पासनेवासा, न्यासा म्प्रीर (रे २ २=)। गुकारी की ["गुजोरी] मेरन रामशंथी मापा-निरोध पुत्रसात के महीरों का मीत (कुमा)। न्ग्रेषाख्य पु निर्माणको जगर केलो (परम 2 64)1

गोवाक्षिप गोपाक्षिम् व्यक्ता महीर (सुपा ४३२। ४३३) । गावाजियी श्री [गोपाकिती] गैप-स्य प्रही-रिन ग्वासि (सुपा ४३२)। गाधादिव पू [गोपाछि इ] योप महीर, ग्वासा (बुपा ४३३) । गोवाजिया 🛍 [गोपाछिछा] बोप-की मोपी ध्यविरित (शाया १ १६) । गोवाळी की गिपासी बस्बी-विशेष (पएस 1 (3 गोधिक वि कि प्रवक्तक, नहीं बोलनेवाका ( \$ 2, 20) 1 गोविज वि गोपित ? विशव ह्या । २ रमित (पूर १ वका निर १ व)। गोविका की [गोपिका] वीपांचना व्यक्तित (क्याचा ११४)। गोर्वित पू [गोपेम्पू] १ स्वनाय-स्वाध एक गोग-विपमक प्रत्यकार । १ एक वैतप्रसि (पंचन खंदि)। गोविंद् पूरियेषिन्द्ै र विष्णु क्रम्साः २ एक कैन पूर्ण (ठा १)। जिक्काचि की िमियुंच्छि इस गाम का एक केन वार्यांकक प्रन्य (निष् ११)। गाविक्र न [वे] क्रम्बुक चोसी (वे २ १४)। गोबी की हि बाबा, क्या जुगारी सक्ती (R 2, 84) 1 गोबी की [शापा] गोपांगना, महीरित (सूरा X\$2) गोज्यर [के] केवी गोबर (बर ५६६) १९७ ; थि)। गोस दुन कि प्रमार पुष्क, प्राय-भाग (के २ ट६ स्वतुः नराः वय ६ येचव २ पाम्यः पद्यः पद्यः ४) । गार्सिय र् [गार्सिय विशास प्रहार (धन)। गासम्य पुंत वि गोसर्गी प्राचन्त्रव प्रमात (वे २, ६६। पाप )।

गांसण्य वि वि पूर्ण, वेषकुक (वे २ 🛤 पस्)। गोसास र्यु व [गोशास्त्र] १ केट-विरोप गोसारम 🕽 (प्रक्रम हेंद्र 📢 । २५ मपनान् महाबीर का एक शिष्य जिसने पीछे घपना वाबीविक भत्र चलावा वा (भग ११)। गोसाविला की दि र केवा बार्चनंग (मुच्छ १६)। २ मुख-बननी (नाट-मुच्छ w ) i गोसिय वि दि प्रमाविक प्राव काम-संबन्धी (क्क) । भोसीस न [ग्रेड़ीपै] चन्दन-विरोध ध्रवन्तित कक्क-किरोप (पराह १ ४: ४। अम्म धुर ४ १४३ च्या) १ गोह पूँ [वे] १ योगका पुलिया (वे २ ८६)। २ सट, सुभा योज्ञा (दे २, व६ महा)। १ बाद, क्यपंति (जय प्र२१६) । ४ विश्रती पुलिस (स्प पू १६४) । ४ पुरुष बादमी मनुष्य (मुच्छ १७)। गोइ पू [दे] कोतवाल बादि क्र मनुष्य (मृख ३ ६) । ९ वि प्रामीख प्राप्त वैवार या र्मनाक बहाती (शुक्ष २ १३)। गोहा केको गोजा (दे२ ७६ मय स ६)। गाहिया की गिरिका १ नोना पेड. बस जन्तु-विदेप (सूर १ रेड्र )। २ साप की एक कार्य (बीम १) । १ नाध-निरोध (धस्र) । गोहर व वि योषय बोलेक्स (वे २ ६६)। गोहुम पु [गोणुम] सव-विकेष भेडे (क्य) । ो प्रे गोिषेरी क्ल-पिरोव शोप गोइरय 🤚 की वरह का बानगर (पत्रम ४%, बरा ६६) । माह वैसी गह = घड़ (गडड)। गराहण वैची रहाय = प्रष्ट्रण (प्रमि १६)। शाहण देवी गहण = प्रहास (कुमा) ।

## घ

च पू [च] कर्ड-स्वातीय व्यव्यतः वर्ण-विशेष | (प्रापः ज्ञामा)। प्रमानंद न [दे] तुद्धर, रपैश (पर् )। **पर्द (य**प) थ. पा**र-पूरक धीर यनवैक सम्**यप (द्विप ४२४) दूमा)। मञ्जोज ) वृ [भूतोव] १ सपूर-विशेष मञ्जोब | विस्तृका पाना मा के तुम्म स्वाबिट 🖁 (इक् छ ७) । २ मेव निरोद (शिरव) ३ वि विश्वका पानी बी के समान मधुर ही ऐसा भनारुमा≒धी का दा(जीव ३ राय)। र्घम तुबि | सुब मकान, घर (देश ६ ४)। साक्षा 🛍 ["शास्त्र] धनल-गर्वप सिक्क्यों का धार्य<del>न स्वा</del>न (योज ६३६) वय ७ माचा) । धीयस (बर) न [म्हस्ट] १ मन्नक नवह (द्वे ४ ४२२) । २ मोद्ध, नवरतहर (द्वारा) । भौचितिकानि विशेषकराया हुआ। (स्वि ६३ बर्मीच १६४)। र्थयोर वि 📳 भ्रमश-रोल भरकनेवाला (वे R ( 4) 1 ¥.चिव प्रे विंु देवी देव निकालनेवालाः हुबराडी में 'बोची' (सुर १६ १६ )। चंट पुंची [घफर] क्हदा नांस्व-किर्मित बाख मिरोप (बोच ६ मा)। और टा (६१ १६५३ छन्। । घंटिय पुं [घण्टिक] पाएशत का मुख-देशता क्य निरोध (बृह् १) । **५टिय र् [शांध्टक] वह्य वयानेवाचा** (कप्प)। घेडिया 🖈 [घण्डिका] १ बोटी व्यक्षी (प्रामा)। २ किकिएी उँद्वर (धूर १ ५४० चे २) । ६ शाक्पश-विशेष (शावा १ १) । **५स द (घरें) वर्षक विश्वन (कामा १** t-44 (1) i धसम्य न [घर्षेण] विसन रजह (१४४७)। पेसिय वि [पर्यित] क्या क्या एवड़ ह्या (मीप)। ववकुण देवी में।

याधर न [वे] वैवत ववत नहुँच क्षियों के पहनने नाएक वज्ञ (देश ४७)। घरधर पुँ घिर्धर | १ शब्द-विशेष (ग्रद )। २ वोचना ननाः 'पानरननस्म' (६ ६ १७)। ६ बोबला बाराजः 'स्ममाली नग्बरेल-कोरा (पुर २ ११२) । ४ म. स्वाडम शैक्त या वेवार वनेश्व वा स्त्रह (बड़क) । यद्र सर्वे प्रदूर देश सर्वे करना सूना। २ क्षेत्रका चलना । ६ श्रोबर्य करना १ ४ बाह्य करना । चट्टर (युवा ११६) । यह पट्टैत (का ७) । क्लक्क पहिच्चीत (से २ बद्ध सक [पट्टच ] हिलाना । संह चड्डियाच (इस ११)। सङ्ग् भक [भ्रोस्] प्रष्ट होना । नहुष्ट (दस्) । मह र् दि रि पूनुम्म रंग हे र्रना ह्या बच्च । २ मधी का बाट ३ ६ वर्ग वैश वीस (वे. २, 11(111 षड् **र्ष [**षड्] ! सर्वराज्या-राज्य शरद-वृति का एक गरकाबाख (इक) । २ पून अमारा (भारक)। ३ तपुष्ट अल्ला द्वयसूत्रः (सूपा२ १६)। ४ वि शाका निविद्य भूका नाकरक्यों (तुपा ११)। पर्श्वम न 🐧 भन्यंतृक् नकक्ष्मेय बुटेगार कीसूरण वक्त (कुमा) । घट्टण वि [चट्टन] बालानः हिला धेनेशाला (পিছ ६६६)। भ**रू**ण ग[भटून] **१ क्ला**स्पर्शकरनाः २ थनामा, हिमाना (सर Y) । पटुण्या पु [पहुनक] पात्रवयेखु की विकास करते के लिए वस पर निसानाता एक अकार कापरवर (बृक्ष् ३)। **पटुणया ) की जिन्ना १ धानात धान्-**महेणा रेलन (धीप ठा४४)। २ चनमं, दिवन (शीम र) । १ विचार । ४ प्र**च्या** (बृह्भ): एकवर्षमा पीका (धापा) । ६ स्पर्धं भूग (पएश्व १६) । **पहुष केती पहु** (गहा) । पहिष नि [पहित] १ सक्त संपर्कपुता

(वे १) । २ प्रेरिट भासित (पर्या १ १) १ वे स्प्रष्ट, धुमा हुमा (वं १: राम) । घट्ट वि[भूष्ट] र विशा द्वामा (हे २ रण्ड-बीक सम १३७)। यह बक [घट्] १ केश करवा। २ करना बनला। धक परिचय करना। ४ र्थनत क्षेत्रा, विकास । यहद (हे १ १६८) यक्त प्रवेत घटमात्र (दे १ ३, निषु १)। इ. घडियम्ब (शासा १ १—पश्र ६)। **यह तक [घटयू] १ मिनाना बीहर्न** संबुद्ध करना । २ वनामा निर्माल करना । ६ संबालन करता । यहेर (हे ४ ६ ) । चरि व्यक्तिस्तामि (स १६४) । वहः पर्वेद (शुपा२४४)। श्रेष्ट महिक्स (स्तर १) १ घड दूं[धट] वहा दुस्स, कनत (हे रै १९६) । बार वृं िबार | पुगलाए पिट्टी का बरतन बनलेवाला (इस ६ ४१६)। चडिया स्थी ["बंटिश्रा] नहीं घणेलांगी शाबी पनकारित (नुपा प्रष्ट )। बास ई [बास] पान्य मरनेवाबा शीकर, पश्चिए धारा) । दासी स्था [ दासी पानी वर्गे बामी पनिहासै (मूच १ १६)। घड वि [व] ध्यीकृत वनाया ह्या (पर )। घडर्झ नि [त्] संदुनितः (पर्)। चवरा पूँ [घटऊ] स्रोदा शहा (वं २४ वर्षु) <sup>ह</sup> षटगार देखी घष्ट-हार (वब १) । यक्षभवरा पुं [घटमटक] एक विदान्यमा संप्रदान (मोग्रा १)। घडण कीत [घटन] १ घटना, प्रपंप (वि १३)। ९ सलन संबंध (बह्य ४६ )। भडण्य भ [घटन] १ भक्का या दक्**का इ**न्द्रि निवांख (से ७ ७१) । २ मल, बेट्टा, परि यम (बनुधः पर्श्वर १) । घडणा श्री [घटमा] विज्ञान मेख चंदीय (सूच १ १ १)। भडय देवी यहरा (वे २)। थका 🕸 [घटा] समूह, चरना (क्वर) ।

(राय)। १ कठिन वरत्नता-रहित स्त्यान

(बी ७ ठा३ ४)। १. न. देवविमान-

विशेष (सम ६७)। ११ पिएड (सूच १

१ १)। १२ शाध-निरोप (गुण्य १२)।

पशापडी की [दे] योही, समा मएकसी (पद्र)।

घडाय सक [ मनय्] १ मनाना । २ बनवाता । १ स्थूष्ट करना मिनाना । बडावद (१४ १४) । स्ट घडायिचा (गायस) ।

(यारम)।
पांड कि [पटिम] घटनाया (प्रजु १४४)।
पांड कि [पटिम] घटनाया (प्रजु १४४)।
पांड की [पटि] के पांडिमा = विश्वा (प्राप्त ११)। संतय, सत्त्यम मिगटको कोने को के प्राप्त मा पांडिनतेच (पांड करा)। जीत न [यान्य] टेंट रॅडन पांडी तिकासी का कव (पार्य)।

पश्चित्र वि घिटत र इन निमित्त (पाय)। २ संसक्त धंचक स्थित, मिना हुया (पान्यः स ११४) भीपा महा)।

महिअमहा की [दे] नेही मएडमी (दे र १ १)।

पडिला भी [पन्छि] १ खोल पना नवारी (सा ४६ था २०)। २ वर्षी कुट्रुट (जुगा १ ०)। ३ सम्प्र व्यव्यक्तानामा क्रम्ब ब्रद्धियान पन्नी (साध)। छत्य न [क्रम] पद्धानाह, वर्ष्टा बनाने का स्वान (तृर ७ १०)।

घडिया } की [दे] येछी, मरक्ती (पड् घडी }दे२ १३)।

महिना देवो महिमा (सूम १४२ १४)। मही भी [मटी] देवो महिका (स २३८ प्राक्)।

पदुक्तम पू [घटोरक्रय] कोन का पुत्र (ह ४ २६१)।

प्र १८६१।
पहुरमां हि फिटोद्रमंग है स्ट में क्लाम।
२ दू खारि-सिकेट समस्त्य सुनि (प्राप्ट)।
पाड न [ से ] चूहा, टीना स्मृत्य (पाय)।
पाप दू [मने ] १ तेन सास्त्य (पूर १६
४४ सामू भरे। १ सीमा हि ६ ११)।
६ पीएक-सिकेट कीन सीमें सहस्य करणा
सैंदे सो का मन माठ होता है (सा १०—।पन ४६६ मिर्ग १९४)। ४ मारा का राज-विदेश कामाना मने ए (ता २ ६)।
दिदेश कामाना मने ए (ता २ ६)।
दिशे कामाना मने ए (ता २ ६)।

निविद्य निविद्या सान्त्र (क्रुनाः चौरः)। w

48

याह प्रवाद, 'कामा पीई वक्ता देखि' (क्ष्प

उदक्षि रेखो घणोबहि (भग)। "णिचिय वि "निचित प्रधम्य निवित् (भग ७ ६ धीप)। तथ म [सपस ] तपरचर्या विशेष (उन्त ३)। एंस पूं विन्ती १ इस नाम का एक चन्त्रश्चीय। २ उसका निकासी मनुष्य (ठा ४ २)। सास्त्रन ["मास्र] वैतास्य पर्वत पर स्वित विद्यावर लगर-विदेश (एक)। सुद्दंग धूं "सुन्दक्क] शेव की तरह वस्कीर मावानवाला बाध विशेष (बीप) । रह् पू [रिव] एक कैन बुनि (पटन २: १९)। चाड पूर् ["बायु] स्रयान बायु, को नरक-प्रनियों के नीचे है (उस १६)। बाय पू विवाद देशो वाड (भग की ७)। बाइएम पू विवाहन] विधावरों के राजा का नाम (पराम १ ७७)। "बिक्सुजा की विच्छा वेश-विख्य एक विषयुगारी वेजी का नाम (इक)। सामय पुं िसमयी वर्ष<del>ा कात</del> वर्षा ऋतु (कुमा घणगुढ पून [घनाक्रुक्त] परिमाश-विशेष सूची वे ग्रना हुमा प्रवरंगुल (सस्ट्र**१**५८) । पणसंगद पु [पनसंगर्व] क्योरिय-प्रसिद्ध योग विशेष क्सिमें चन्द्र मा शूर्व प्रश्न प्रयमा नगत के बीच में होकर बाता है वह योग (सुरुव १२--पत्र २३३) । घणधगाइय न [धनधनायित] रव की धनवनाष्ट्रण या यहवहारूण दाव्यक्त शब्द-विशेष (पराष्ट्र १ %) ।

भणपांद्र पुं[दे] एक स्वर्गपति (दे २

घणसार पू [भनसार] कपूर (पायः भवि) ।

"संजरी की ["सब्बरी] एक की का नाम

भणा औ [यना] बरलेज की एक बय-शक्ति

इन्ह्रासी-विरोप (सामा २ १—पण २११)।

घणा की [पुजा] एका पुत्रका का (प्राप्त)।

घणिय न [चनित] धर्मना कर्मन (गुक्र २ )। |

(क्प्पू)।

षणोवहि पुँ पिनोविधि परेवर की ठाए कठिन बल-समूह (सम १७)। धिलय न [धिलय] ननपाध्यर कठिन जन-समूह (पराप २)।

षण्णार्धृ वि ∳िश्वर, यसस् आसी। २ वि रफ्त रंगाहुमा (दे२, १४)। १ यास्य सारकातने सेन्य (सूत्र इट २—७ पत्र ४१)।

यत्त सक [क्षिप्] १ कॅकना बातना । २ प्रेरणा। बताव (हे ४ १४४)। संक-'बॉकाओ घितकप वरनीस्ट्री (पटन व २ स १४१)।

यन्त करु [ मह् ] प्रहुल करना । यदि वित्तर्स (प्रयो ११) ।

चत्त क्ष्म [ सर्वेषम् ] कोवना हुँहमा मनु र्शवान करना । वत्तह (हू ४ १०१) । सङ्घ चत्तिक (कुना) ।

यक्त सक [यत् ] सल करना, क्योम करना। वत्तइ (6दु १६)। यक्त वि [यास्य] १ मार कालने मोग्य। २

को मार्चका सके (पि २०१ सुधार क ६ ८)।

वच्च व [स्पण] कॅक्ना (कुमा)। वचा क्षे [पना] कर किरेव (पित)। वचार्णेंद्र व [चनात्व] क्ष्मिरेवर (पित)। यच्च य [ दें ] रीम क्ष्मे (माइ ८१)। विचय वि [विहान] मेदित (च २ ७)। वच्च वि [चाहुक] मारोक्सा बातक वक्राव

(तत १० ७) । यस्य वि [प्रस्त] पृष्ठीत पनका हुन्ना (पंड ११९) ।

अस्य वि[सस्त] १ मनित निपक्षा हुमा कवित (पदम ७१ ३१ परहार ३)। २ माझान्त पमिनूत (पुना ३३२)।

्रात्मा च चावपूर्व (ग्रुपा स्टर) महा)। सम्म पुं [सर्म] काम परमी संतार क्रूप (दे १९०० मा ४१४)। २ पसीना स्वेद (दे ४ ३१७)।

धम्मा की [धर्मा] पद्भी नरक-प्रविशे (ठा ७) । धम्माई की [बें] एक-विरोध (वे २, १ ६) । धम्माई की [बें] १ मध्यक्र काम । २ थरून मक्बर, बुद्र बन्तु-विरोध । ३ धामकी बामक-कुछ (वे २ ११२) । पयन [पून] नी इत हिर १२६ सूर र् [ शकुनि ] पानतु भानवर (वन २)। १६ 1३)। आसव पू [मिन] जिल्हा ममुतालिय वे सिमुतानिक बाबौविक मत का धनुपानो साचु (सीप) । सामि बचन की की तरह सभूर सने ऐना शब्दिमान् पूरप (भाषम)। (स्टून [किट्ट] गी कामैन (बय र)। (कट्टिया की विक हिका मैं नामन (पर ४) । गालान रिगास चा चीर पुड़ की की हुई एक

305

प्रशार की मिठाई, मिरान्त-विशेष (तुपा ६६३)। यह पूर्विष्ट्री ये का मैन यरंग्य न [गृहाङ्ग्य] वर का संपन औड (बह १)। यम्न वं पिकी बेबर, मिटान (ग ४४)। विशेष (उप १४२ मि)। पूर पूँ ( ४६) परकृषी सी [गृहकून] बी-एएर (तंदू ४ ) । चेनर या चीनर, सिम्लन-विरोप (गुरा ११)। यस्य देखी घर (बीव १)। धूममित्त वूं ["पुष्ममित्र] एक 🖣 🚮 घरघंट वं बिंग चटक भीरैया एटी वि २. धार्पर्यक्रत सूरि हा एक किन्ब (आहु १) । १ ७३ पास)। संह वृं विष्टों अपर का की चुतनार घरधरम पुं वि] यहा का बानूवल-विशेष (श्रीप १)। "सिल्छिया की "इक्षिका (वं १)। मी राजीट छुद्र कन्यु-सिकेप (बा १६) ।

विधेव (१३) । सागर ई सागर चरवा (निष् १) : समुद्र-विशेष (श्रीव)। थरही और [घरड़ी] छ्टाने तोर (दे ३ १ )। भयभ प्रिक्ति माएड सहा, घडना (का सूर प्रश्वे प्रवेशक की। घषपूम 🕻 [धूनपुष्य] एक वैन नहाँव (बुलक १२) ।

"सह व मिया ने कुरूप पानी बरली

मानो वर्षो (व ३)। यर प्रे विराहित

घर पुन [गृह] बर, मरान, वृह हि २ १४४३ टा १ प्रामुख्य)। हुइत और हिट्टी] १ वर के बाहर की कोल्प्रें। २ बीक के भौतर की कृष्टिया (मीप १३)। ३ औ शाश्चेर (नेष्)। शेष्ट्रया श्रान्तिज्ञा की विश्विषा । गृहचीया, खिरक्ती (विश्व

भूगा ६४ ) । गोर्सी की [गार्था] गृह योषा, क्रिसनी (४ १ १ १) । साद्विज्ञा मी [रेग्रांघरा] हैदारनी कनुनैरक्त (६

२, १६)। जामाउप र्द जिल्लामानुकी भर-जनाई, नमुर पर म 🧗 इमेग्रा च्हनेशला बामला (शाबा १ १६) । त्वः र्वृहिस्य] न्ही संतरि भरवायै (प्रानु १९१)। जाय न (नामम्) पपत्री नाम, बल्लारिक नाम (का)। बाहर न चिटको इसे हुई जनीन बला वर (राघ)। बार न दिहार] वर का करताना (काल १८६) । शत्राचि

घरोड न दि । यह-मोजन-विशेष (दे २ "स्वामिम् ] वरका शांतिक (११२ १४४)। मामिजी 🕏 [स्वामिनी] पृष्टिणी 🛍 घरोडिया } औ [दे] गृह्योषिका व्हिपक्ती; (शिटर)। "मुर शिरी ग्रासीक शूर, घरोक्षी । प्रवर्शी में 'बरेली' (परवृ १ मुझ राष्ट्र वर में ही बहाइरी दिवानेशका घरह प्रीघरही बक्षा चन्द्री युन्त पीसने का पापाल यन्त्र (या व स्य)। **पर£ पूं (के) बरक्ट धरहर नाती का** 

घरणी **दे**नो घरिणीः 'ते वरवर्संख वर्संख वं (७२व दी प्रामु ८१)। परबंद रू दि] भाषते वर्षेष्ठ तीहा (दे र 1(03 धास र् [चे गृहवास] नृहासन गृहत्वासन ( TE % ) 1 परसण देखी र्यसन्त्र (हल्) ।

परिव वि [गृह्यम् ] परनाना नृहस्य (ब्राह \$X): वरिणी और [मृह्णा] परकानी अधे शार्वी यल्पी (बर घर दानी क्षा पूर २ पुना)। परिकर्ष[गृथम] गृगी श्रेत्राचे वरताचे (सा ७१६) । र्थारहा सी [मृद्भिय ] परवानी सी वाली

(क्वा)। परिर्म 🖈 [वे पृथिती] गुम्ली पन्ये ( R R R R) 1 चरिम र् [चर्य] क्लंख रगह (प्राथा १

र के र १ ६)। चळपळ वृध्यिक्षपळी 'क्न वर्व सावान व्यक्तिविदेश (विपा १ ६ )। यह एक [स्तिप] केंक्ना शबना, वानना। चल्राह, चल्लांत (चर्चन है ४ ११४ ४२१)। थक्क विविधितरुक्त, प्रेमी (देर १६)। घढ्डय ∤ र्द्र दिं] द्रौतित कीरकी एक घ**द्धी**य } नाति (नुच ३६ १३ ) पत 14 (1 ) i

घरोइसा की हिं| बृहनोगा ब्रिस्टनी, सिन्

इया (पि १६०)।

2 (1)

घय-घसी

पक्षित्र दिश्यों केंद्राहमा बलाहमा (ध्येष)। पश्चिम वि हि बटित निर्मित विन्य हुमा, बद्दु ए ठेएवि दक्षियो विस्टबाग्युस्नायो (नुपा २४१) । थसंबक्द[भूपृ] १ क्सिना प्रवृत्ता।२ मार्जन करना संप्रम करना । शरह (महा-वर्) संहः 'यसिका वर्षातुरः वासै थञ्चालियो प्रयूपच्छा (नुर ७ १८१)। यस श्रीन हि । एड्ड हुई बगीन फरनानी जुनि (ब्याचार, १२)। २ श्रुपिर पूर्नि पोली बगीन । ६ तार मुनि (दब ६ १२) । घसण देवी बसज (मूरा १४३६ १ १६६)। पसणिज रि हि । शनिष्ट भनेतित (वर ) । थसणी की [पर्वजा] चर्च-रेका देही सगौर (स ६६७) ।

यसाक्षे [रे] १ पोली बनीन । १ पूर्विन ेका, नरीर (सत्र)। पसिय थि [पृष्ट] रिला हुमा, रनदा हुमा (इसा ६) । पंसिर वि [प्रसितृ] सृत्यक्रक बाह्य वाले नामा (योव १३३ मा) । यमी की [व] १ पृषि-राति नगीर। र नीने उक्ता बातरस्य (राज) । थसी औ दि | वहीन वा क्याद दान (मार्च

3 ( L 1) 1

घसुमर वि [घस्मर] काले की धारतकाका बाधुक (प्राष्ट्र २८) । धाइ वि [धारिय] बातक नाशक हिमक (बा ४३७ विसे १२३० मन)। सम्मान [ दर्मम् ] इसे-विरोधः ज्ञानावरसः वर्शनाः बरता मोहनीय भीर भ्रम्तराय में बार कर्म (र्थत)। यदक न [अपुण्क] पूर्वोष्ट बार कमें (प्रारु)। भाइअ वि [भावित] १ मारित विनारित (लागारे व तक)। २ वकाया हुया जी शन्ति-कृत्म हुवा हो सामप्पंतितः करलाई चारमार जाना धह केमणा मंत्रा (पुर ४

286) 1 घाइआ औ [मातिका] १ विनहा करनेवानी माय पूँ [भारा] १ म्यूगर, चोट वार (पडन की मारनेवाली की (वे २) । २ वाल इच्या । १ माच करता (तुर १६ ११ ) । भाइज्ञमाण } देशो पाय = इन्। पाइयक्य बाइयस्य रेखी घाय = यत्रव्। चारर वि प्राधिम् विदेशका (गा xak)। घाडधम वि [इन्द्रुद्धम] नाले नी रच्छा काना (खाया १ १८)। चार्यन देशी चाय = इन् । चाड मक [ भ्रोदा ] भ्रष्ट होना चुन होना।

खाया १ २)। २ मस्तक के नी के का भाव (शाया १ ८--पत्र ११६)। घाडिय वि [पाटिक] श्यस्य नित्र (शाया 2 2 4E 1) 1 घाष्ट्रस्य पू [क्] बार्लास की एक नाति (?) भा तुर संगमुहासारम्ब्रुनियका दुई मए यदा ।

भाइ र्षु [भाट] १ वित्रका श्रीहार्थ (इह

चाड६ (यह् )।

धारप्रमत्त्रमा इव धर्मबस्म से ननायीति । (डिफ १५ एक) भाग दें दे दे शमी कील निव-प्रिक-मन्त्र (रिक्र)। रेपान चत्री धारिमें एक बार शामने का परिकाल (मुत्त १४) ।

माम 🗗 [मान] नार नार्डिका 'दी पाणा' ारिस इन [ ीरोस् ] नाविका में होने-बाना रोक्शियेन दीका (दीप १८४ छा) ।

घाणिदिय न [प्राणित्रिय] नासिका, नाक (उत्त २१)।

भाग सक किन् नारना मारकालना, विनास करना । बद्धः भागद्व (उन) । बहुः न्यार्पस रिजनेहहरे' (पत्रम 🛚 १७) । घार्यंत

(पदम २४ २६ विसे १७६३)। क्याप्त, से वरो विशामणं बोरसेखावस्था वंबहि बोर सर्गोद्र सींड निर्द्ध भाइक्षमाणं पासर्' (शाया ११०)। वर्ष चाइयस्य (परुव ६६ १४)। चाय सक [चासम् ] मरवाना इसरे हारा गार डासना विनास करवाना। बहु-घायमाण (गूच २ १)। 🕏 घाइयस्य (परम **4**€, **4**४) । भाय पू [भारत] गमन, वर्षि (मुन्न १ १)।

श्रमा विनास, हिंसा (तूम १:१२)। ४ क्षंतार (सूप 🕫 😼) भायग वि [भावक] बार सक्तेतला, विमा-शक (स २६४ मुना २ ७)। धायण व [इसन] १ इच्या वाद्य हिंसा (नुपा ६४६ ४ २६)। २ कि दिसक मार, रामनेवासा (स १ ८)। धायण १ [१] गायक गरीमा (१२ १ ×

भागजा की [इतन] माध्या दिशा कर

हेर १०४ वह)।

१६ २१)। २ नरक (तुष १ ४ १)। ६

(प्रकार १)। । भायम रेकी मायग (विशे १७६६ स २६७)। भागम 🐧 [भागक ] नरह-स्वान निरोप (देवेन्द्र २६:३)। भाषायमा की [धातना] १ मरनामा दुसरे श्रास माध्या । २ सूट्याट सथनामा) बहुत्या-मनावात्रणाद्वि ताबियां (बिपा १ है)।

भार पर्क [भारत्] १ विष का कैनता विषयो समार्थ वेशिन होता। ए सक विष धे बेचन वरना। ६ विषय थे माठता। कर्में 'पारिबंदी व तमी विमेल' (थ १०१)। हैरू. पार्थिकाई (म १०१) । भार है [ न ] बारार, विका, हुने (वे २, विमा की [पूमा] र बुडमा कर्चव । २ t (n f भारत १ वि । प्रमुद्ध येगद एक प्रकार की

भीठाई (देन १ ८) ३

थारण न [धारण] विश्व की असर में होने-वासी वेचेनी (मुपा १२४)। भारिय वि [भारित] को विष की महर से बेचैन हुया हो" 'तत्त्रमी मोगो। सम्बर्ध वक्षपाया विश्वपारियमीयनुहोर्हतं

४४२) 'विस्था (१ मा) रियम्स जह वा यणम्बलकामणीसेयो' ( उपर ६७ )ः विस्पारियों डि पर्त्रियों सि मीइए किंव विभवी वि (नुपा १२४ ४४७)। षारिया की वि मिटाम-विदेश प्रशराती में बिमे 'वारी' कहते हैं (मर्बि)। षारा की दि ] र राष्ट्रनिका पश्चि-किरोप (दे २ १ ७ पाच) । २ द्वन्य विशेष (सिंग) ।

वास सक [चूपू] १ पिसना। २ पीहा करना । कमें बासद (मुझ १ १६ १६) । थाम १ थिए । एए प्यूपी की खले का क्छ (दे २ ६% घीर)। थास दे [मास] १ क्वल कीर (थीप उत्त २) । २ बाहार, भोजन (शाचा ग्रीप १३ )। थास १ विभे निर्मेश रमह भी मे उनक्रि-बी ध्र करख्यमणेख नग्लपामेल (मुना \$ v) 1 घासंसवा भी [बासेप गा] बाहार नियवद शृद्धि चतुर्व्धि का पंगीसीचन (बीच १६८) ।

थि देवो च । भवि विक्यिद (विते १ २३) ।

बर्म क्लिवि (प्राप्तू ४)। संक्र मिस्प्र

(इमा ७४६)। इंड घित्त (सुरार ६)।

इ विसक्त (मुर १४ ०७)।

चित्र न [भूत] वी मीव घाल्य (गा २२)। यम वि वि मरिवेत विग्लूत धनशीरित ( R ? c) t वि । व बिप्स र परमी की ऋतु बीव्य चिसु देन चितितिस्तान (धोप ११ माउलार ≈ रि६११)। २ न⊽सै धिषक्तिः (तुष १ ४ २)। थिट्र वि [ने] बुस्व बूबड़ा (दे २, १ ८)। चिट्ट रि [पृथ] पिताहुमा, रनहाहुमा (नुपा २७ ३ मा ६२१ मा)।

बया धनुतम्तः (हेरे १२०)। पिणिक वि [ पूजायन् ] प्रसारता नह रत क्लेशना (स्थिक)।

पाइअसहमहण्डलो

भूजिय वि मिणित क्यों से विद्य कुना हुमा

पुण्या देशो युग्म । वह पुण्यांत (नार)।

भारत बटका हवा (देव, ४६)।

[मा(दे २१ €)।

मुस्पिकण (महा) !

वय विराह्मा (स्पा १४)।

१९२)।

(कुपार १)।

भुम र पुत्रीत (पर्व्या १ ३)।

युण्जिक वि [पूर्णिक] १ प्रमा क्षमा । २

पुण्डिम वि [ हे ] जोपित यमोपित कोवा

पुत्र वृद्धेको पुत्रम । दुन्यह (लिए) । सङ्ग

महा)।

(93E 2) |

हमा (भवि)।

भित्तुण } रेडो थि। पिस सक [ भस् ] क्सना निपत्तना मतास करता। विसद् (हे ४२४)।

की इच्छावाना (गुपा २ १) ।

पिच (पप) वि [सिप्त] चेंना ह्या काला

भिचुमज वि [ महीतुमनस् ] बहुछ करने

पिसराजी दि] सक्क्षी परुत्तने का बास्त-विशेष (विषा १ व--पत्र द१) । थिसिञ दि [प्रस्त] इवसित निगना ह्या मसिव (बुसा ७ ४६)।

प्रमुख्य इं [ दे ] क्लार, इन क्षेत्र समृह ( ? ? e) 1 मावि (हे ४ ४२६)।

🖫 🖟 🎉 📢 🐒 एक कार पीने बोध्य पानी भुग्य १ (बर) पुन [पुरिध स्त्र] कविन्देश भूगिमञ् । बन्दर की बेटा (के ४ ८९३ **क्र**मा) 1

पुग्पुम्माय न [रे] सेर, धरतीय धरियम (4 2 22 ) [ पुर्वि वि नरहरू मेच मेहक (वे २ पुरसुम वि [दे] निःशंक होकर क्या हुवा (पड्)।

मुख्यसमुस्तय न [दे] सारोक अवन बारोका-प्रवासिक्षी (दे २ १ ६)। प्रमुद्रपुष यह [प्रपुषाय] 📆 बाधान करता कुछ ना अल्लू का बोलना। वह- पुमुमुमुमेंत (पस्म १ ६, ११)। जुषुगमण [जुषुयु अनर केलो। लङ्ग पुष्येव (लाबा १ व-पन १३३)। भुक्त दें [पूर्वक] किये हुए पात्र को विकारे

मा पत्वर (शिंड १६)। पुरुषुणिशः व [वे] प्रावकी वकी किला ( 2 11) पुट वि [पुछ] बोर्यित कींबी सावान से वादिर किना हुम्म (पत्रव ६, ११०- थरि)। पुरुष पन [गर्ज ] क्राना, यवरित

पुत्र रू [पुत्र] काह-पक्षक कीर, कुत (का

r. ti fit tutt) i

TON : TON (EY 46%):

श्वाच ) १ भुक्ता है [के] एक तत्त्व का प्रतक्त, को पान वर्गेषाको विकास करने के बिए क्या पर विका बारा है वराष या बरबी (विश)। मुरहुर देवो पुरुषुर। वह मुरहुरेत (बा (F9 पुरुष्क धक [ते] पुरक्ता पुरुक्ता वरनतः। 'पुरुषेति वरवा' (महा) । पुरुष्कर 🖠 [बुरुत्कार] तूमर शाबि को यानाय (विशव १)। भुरभुर वह [ मुस्युराय् ] मुख्युराक, 'पुर कुर' यानाम करना, न्यात वनैरह का बोक्का। बुन्द्रपति (न ११ ) : वक बुन्द्रपतित

चुमचुमिय दि [चुमचुमित] १ क्सिने भूम एक बारि (पर्रा )। हुम' गावान किया हो सह। २ न, 'हुम-हुम' पुसम देवो पुरसम (हुमा)। म्बनि 'महरपंश्वीरहुमवृक्षिवरमहर्म (<del>दु</del>रा पुसक सक [सम्] सक्ता विनोक्ता। द्वसम्ह (हे ४ १२१) । चुम्म बन्ध [पूर्ण] वृगवा बन्नकार हिरुता। पुसक्तिज वि [मिथिव] मधिव विकेशिव कुम्मद (क्षेत्र ११७ वर्)। शक्क मुनर्गतः (<del>क</del>्रुमा) । पुरममाण (हेका १३) शासा १ १) । संक पुरुमण न [धूर्णन] चलकार भ्रयश (हुमा)। कुम्मावित्र दि [बुर्जित] बुमाया हुबा (दबा मुस्मिय नि [मूर्जिथ] पुगा हुमा वक्त की चुन्मिर वि [चूर्जिए] दुमनेवाला विरुदेवलार वासकार कुमलेबाबा (छर पु ६२) या १ ;

पुसिल न [पुस्क] हुनूम सुमन्ति प्रक विशेष केवर (हे १ १२व)। भुसिया वि [भुस्यपत्] क्षुप्रवाहः, इंद्रम-पुच (हुमा) । बुसिजिम वि [वे] कोवित ग्रानिह (वे २ 1 (3 } द्विम न [वे] इच्छ क्षेट्रम (वर्)। चुसिरसार न [दे] प्रवस्तान विवाह के बन-धर यें स्नान के पहुंचे नवादा बादा ममुचित का विदाल, बनका (६२ ११ )। पुसुक केवी पुसस्त्र । यह- पुसुक्षेत पुसुक्ति (fix \$401 \$0\$) ! असुख्य व [सवत] विद्यालन (पिंट ६ २)। थून पुंची [भूक] वकुत सन्तु पक्षि विशेष (जाना १ व परम १ १ ११)। श्री पूर (विया १ व)। सरिष्ट [गारि] काक, कीवा वास्य (तर्) । भूषाग वृं [भूषाङ] स्काम-स्पाद बर्जिनेत-विशेष डाम-विशेष (बाद १) ! मूराको [के] १ वंदा, त्रोत । १ क्लका, राधेर का सकत हिरीना 'नहसास ना बुरामी क्योंकि' (तूब २, २, ४१)। देवेदो सह≖क्ष्र्ः नेह(वर्)। सनि

पित्र-वे

मुख्युरि वृद्धि नस्तुक, भाक नेक, वेन

पुरुष्ठ है देशो पुरुष्ट । प्रसूद्ध (महा)।

पुरुद्वर र क पुरुष्यसमाप (पहा)।

पुरु देवो पुरम । पुनद (हे ४ ११७) ।

मुलिकि की हैं | इत्यों की ध्ववान करिन्त्रक

पुळपुळ यक [पुळपुळायू] फून-कून

बाबान करता। वह भुस्युक्षाश्रमाम (वि

भुक्रिम वि [भूमित] वज्ञकार वृशा हुआ

पुत्रा की वि जीट-विरोध सीविस बल्यू की

( t 3 2 2) i

(पिंक)।

324) I

(9मा) i

चेन्द्र (विमे ११२७)। कर्म वेप्पद्र (हे भा २१६)। काकृ घेट्यंत, घट्यसाम (गा रूपर समा स ११२)। संह घेऊण, घषकूण घषकूम, बेसुआण, घेलुआणी भेत्रण भेत्रुणं (गठ-मलती ७१ पि १६४ हे ४ रेश विषय प्राप्त)। हेक देश बेखा (१४२१ परम ११८ २४)। इ. घेचस्य (१४ २१ प्राप्त)। चेतर पून हि बेबर, इतपूर, मिटाम-विशेष 'सा भएक निमनेहेंबि हू बयमेंडरमोयएं समा-कुल्ड (सुमा १३)।

चेक्क्स देखा च । चत्तमग वि [ प्रदीतुमनस् ] वहरूकरने की इन्धाकाना (पडम १११ १६)।

चप्प भ्रद्भंत ∞ देवाचे।

चटपसाग भवर [दे] देशो घडर (देश १ व)। . सकपाि पौना, पान करना। <sup>|</sup> घोडूप र्वे बोह्द (क्वे ४१)। वडा-घोडू र्यत (स २१)। केक घोड़िन (कुमा)। चोड क्वो भुम्म । शेवद (से ६, १ )।

घोड ] पूंडी [घोट क] बाका सम घोता - इप दि र १११ पंच १२ चोडय जिला; अस२ **०) । २ ई का**नी-स्तर्गं का एक कोच (मन ६)। रक्तकरा पू िरचक्की धररानः चास्ति (क्य ११७ धी)।

म्मीव ["मान] सब्दरीय-गामक प्रतिवास्त्रेत श्वविशेष (बादम)। सुद्ध न मिला वैनेवर शाक्र-विशेष (क्या) ।

चोक्रिय पुति निम क्यस्य (ब्रह्न ६)। घोडी की घोटी १ वोडी । १ कुन्न-विशेषा 'सीनक्रिपोडिनण्डुतक्यरबद्द्यद्वद्विष्ये' (स 224) I

चाण म भोग्री नोडे की नाक (छछ)। चोणस १ [घोमस] एक प्रकार का सांप (पत्म १६, १४)।

घोगा ह्यै [घोणा] १ नाक नासिका (पाघ)। २ चोडेकी नाका ६ सुधरका मुक्क-प्रदेश (से २ १४ वउष)।

मोर यक [घुर् ] विशा में 'श्रुर-श्रूर' गावान करना। नोरीत (या = )। वक्क नोरीत

(स ४२४ चप १ ६१ टी)। घोर वि वि १ माधित विमासित । २ पू

बीच परित विशेष (वे २, ११२)। घोर वि धोर निवस्त नवानक विकट (सुम १ इ १ नुपा १४४३ सुर २ २४३३ प्रास्

१३६) । २ निर्देय निप्ट्रर (पाष) । योरि पु [दे] राज्यम-पशुकी एक वाति (दे

२ १११)। चोळ देखो घुम्स । योखाइ (क्वें ४ ११७)। वह घार्त्तेत (कप्प गा ३७१ हुमा) । घोड एक घोडम् १ विस्ता, रतका। २

विमापा (विसे ९ ४४) से ४ ६२)। घोछ न दि] करने से जाना हमा यहाँ (पमा

18 (F#

घोळन न [घोछन] क्यंश एतक (विशे २ ४४)। घोळणा की विषयना नित्यर बगैया का पानी

की रमक से मौलाकार होना (स ४७)। भासमञ्जा रेग (वे) एक प्रकार का आध

घोछनक्य र ब्या वहीक्या (पमा ६३) शा २ ≓ मुपा ४६६) ।

पाळाबिज कि पि छित्र विभिन्न किया हवा मिलाया बचा (से ४ १२)।

घासिअ न दि रे रिमातम । २ इठ-इठ बबारकार (दे २, ११२)।

भोक्रिज वि [पूर्वित] प्रमामा हवा (शब) । घोडिम वि चिर्णित । शक्त सीन 'शब-एक्खिमी जविएमु शहेंच बोलियों (तुख २ 88) 1

योक्षिम विधिति याम के तरह भोगा

ह्रमा (तूम २ १ ६३) । योक्किम वि [योक्कित] रगहा हुमा मन्तत (थीप) ।

घोडिकर वि [घुर्णिष्ट्र] वृपनेवाना वक्तकार फिलोनासा (गा ११० स १७० गरह)। घोस क्क [घोपयू ] १ बोपला करता उँबी

यानाज से जाहिर करना । २ मोबाना औची यानान से सम्ययन करना और-ओर से बीस कर पडनाया ध्टनाः। भोसाइ (हे १ २६ प्रामा)। प्रमी घोसावेड् (भव)।

घोस प [घोप] १ डीची धानाव (छ १ ७-थुमा गा५४) । २ माशीर-एक्की ब्रहीरी का मइस्था बड़ीर टोनी (हे १२६) : १ नोष्ठ यौधीं का बाढ़ा (ठा २ ४-पत व ६:पाछ)। ४ स्त्रमितकुमार देवों को वक्षिए दिशा का इन्ह (ठा२ १)। इ. बदास मादि स्वर विशेष (वव १) । ६ समुनाद (भग ६ १) । ७ न .देव-विमान विशेष (सम १२ १७)। सेण र्प सिन । सात्र वास्त्रेय का प्रवेतना का वर्ष-प्रक एक बैन प्रति (पडम २ १७६)। योस न [योप] नगडार ग्या**ध** विनॉ क

घोसज न [घोपम] १ ऊँवी धादान (निद् १)। २ बोपला विद्योग विद्याहर बाहिर करना (राय)।

ज्यवात (संबोध १a) ।

घासणा की घोषणा अनर केवी (सावा १ १६ मा ४२४)।

थासय न दि] क्षिण का वर्ण दर्गेष्ठ एकने का चपकराए-विशेष (बीत)।

चोसाडइ **क्ष** [पोपावकी] सहा-विशेष

(पएक १७--पत्र १६ ) । योसाहिया रेखी भीसाहर्ष (यम ११)। धोसास् । के [के] शाद ऋतु में होने धोसाक्षी । बाबी बठा-विशेष (के २, १११

पएस १--पण ६६)। थोसावन न [योपन] बोपला डॉडी या कुबी

पिटना कर जाहिर करना (क्य २११ दी) । योसिश वि [घोषित] वाहिर किना ह्या (चन)।

## ਚ

च स [प] सम्भा यह 'चसको विक्पोर्स' (44 1 YY) 1 स् पू 🔻 राष्ट्र-स्वानीय व्यवना-वर्त्त-विकेश (प्राप्त प्राप्त)। भाष चिहित सर्वों में प्रमुख किया जाता धन्यम---१ धी८, तवा (नूमा हे२ २१७)। २ पूर्व फिर (कम्म ४ २६) ६६) प्रासू १)। १ यनवारतः निरुवद (र्वव १६)। ४ मेव विशेष (निष् १)। १ विकास वास्त्रिय (भाषा निष्क ४)। ६ समुम्यतः सम्मातः (निष् १)। ७ पास-पृत्ति पाय-पृत्या (निष् ŧ) ı वभाक्षी [लक्] पनड़ी लका (वड )। चद्रभ नि [शुक्ति ] को धनवें हुमा हो। तत्त (t & xt) : चाम रेखी चविल (परम १ १ १२६)। **पर्म पि** [सक्ती कुक, परिक्**क** (कुमा 1 (5Y F बाइअ वि [स्यामित] बुद्दवादा हुया, सुक्त कराबा हुमा (मीन ११६) । भइअ देखी चय = ध्यत्। मध्म को चु। चर्द्धा देखी चंद्रात ( वह )। नहरं नहरूपा है केता नय = लन्। महरूप केरी चु । भइत देवी चेड्ड (हे २ १६ हुना) चइच दू चित्र] माम-विद्येय केंद्र माछ (ह १ १६२)। नक्ता रेपी चु। भइताण | देशो अव - व्यव्ह भइद (रो) वि [चकित] पीत संधित (यवि २११)। चप्रयस्य देवी च् । च ४ ४ [चतुर्] चर, र्यक्स-क्रिये ४ (क्वा) नम्म ४ र) नी ११)। आबीस जीत िपलारिरात् ] भीपाबीस ४४ (सं ७६<u>.</u> १६६)। बद्धन ["नाहा] पार्धे रिया

(रूपा) बद्री की ["काष्टी] भीरबद्ध बीचठ

चीकरा शार के चारों भीर का काठ शार का श्रीचा (निषु १) । "ब्रोज वि ["क्रोज] चार कोलवाला चतरम (शावा १ १३)। ग ग वेशी भाउच्छ = चतुष्क (दं ३) गङ्की िंगति । एक दिर्पन मन्त्र्य और देन की मौति (कम्म ४ ६६)। शक्का वि िंगतिकी चार्चे निर्धनें भ्रमका करनेपाला (था १)। समज न शिमनी चार्रे विकाएँ (कम) । गुज ग्गुज वि [िगुज] चीतुना(दे१ १७१ पर्)ः चला शी ि चरवारिंशम् | र्यकार-विशेष भौग्रामीस (क्न) । बरज पुँ िवरज दियामा चार पैर के क्यु प्रयू (इस ७६ डी युपा४ ६)। "बृढ पूं "बृढ़] विचावर वंश के एक राजा का नाम (परुम १ ४१)। हु देशो त्य (हे २ ३३)। द्वाणविद्या वि िस्थाल-पविती नार प्रकार का (क्य) । जड़ा की िनवति संबद्ध-विकेष बीयको ६४ (पि ४४६)। लडब वि विवदी बीए-नवेगा, १४ मी (पदम १४ १ १) । जन्द वेची लड्ड (सम १७) या ४४)। व्या (दप)। 🖦 पन्न (पिन)। दिस दीस न ित्रिराम् ] चीतीस १४ (मर बीप)। वीसइम रेवी चीसइम (पब्स ६४ ६१)। वीसा 🔹 क्यो वीस (त्राक्)। शास्त्रीस वि ["चरवारिरा] चौधानीसमाँ ४४ वी (पबन ४४ ६ ) । सीसहम वि विश्वा रे भौतीक्यों १४ मी (क्प्प) । २ म, धीवह क्लिं का बनातार क्रमास (लामा १ १---पत्र ७२)। स्थापि [ब] १ भीचा(क्र रै १७१) । २ पून, छपनास (त्रप)। रैपीयबस्य र्रुत [अयतुर्ध] एक एक बर-दसः (वन) । स्थमत्त न विभक्ती एक क्लिका अपनास (एन)। स्वामशिय हि विमक्तिको निस्ते एक कानास किया हो। गह (परा २ १)। "रिवर्मगढ न "शीम-इत्**छ**] भवू-वर के समानम का चतुर दिन विश्वके बार बामाता ध्वेत्रा धपने वर बाता है चीक्षपै (चा ६४६ व)। ऐसी तो [धी]

१ जीवी। १ इंप्रवात-विश्वकि, पतुर्वी विश्वक (ठा≂) । ३ दिचि-विदेप (तम १)। वैद केको दित (स्वा)। दस वि व दिसन् बंदमा-विश्वेष जीवह (तथ २ भी ४७) : <sup>\*</sup>दसपुन्दि प [\*दरापुर्विम्] **गोद्य पू**र्व बन्दों का बालवाला भूति (बीव २)। इसम विकेशो इसम (शामा १ १४)। इसकी स विश्वया] कीवा प्रकार है (नव १)। दसी हो दिशी दिनि निरोप नपूर्वी (प्यस ७१)। इति पु दिस्ती ऐएनत श्वका हादी (क्य) । दिस**ंखी** दस (का)। "इसपुब्लि देखो इसपुन्ति (का १४)। इसम दि दिशी १ पीवर्ग-१४ वर्ष (पडम १४ ११८) । २ पूर्व बना तार कः दिनों का स्थानास (यव) । दिसी 🖦 इसी (रूप)। "इसुचासम हि दिसोत्तरस्वतमी एक सी नीव्यन ११४ वा (पक्रम ११४ ६४) । दिह वेबी ब्म (पि १६६: ४४६) । हारी लेगी बसी (बाब)। । इसं "हिसि म मिस्] चार्चे किताओं की वरफ, चार्चे क्तिओं <sup>क</sup> (क्टब्हाब४२)। द्वास[म] चार प्रकार दे (स्व) । "माध्य न [काल] मति श्रुत धर्मात्र ग्रीर मन पूर्वत्र ज्ञान (पन महा) । नाजि दि ["ब्रानिन्] मति वर्षेष चार बातनाला (सूपा ४३ ६२ ) पण्य देवी प्रसः। पण्यकृत वि [प्रमाप्त] । चीमक्यो ३४ था। २ त समातार सनीत स्ति का क्यवास (लावा २---पत्र २**११)** । पंभ प्रजास स्टेन ["प्रजासन् ] पीनण १४ (पडम २ १७) धम ७२, कम)। प्रमासद्य वि ["प्रशासक्तम] चौवनवाँ इ.४ को (पदम १४ ४०)। पत्र वेगो <sup>®</sup>प्यय (लाबार चानी २१)। पा<del>र</del>्ज प िपास्की तुनीव केन का प्रदू<del>रात कीत</del> (धव) । पश्या व्यक्तवाक्षी (पदिक्षी) १ कर-विशेष (रिन) । २ क्यू-विशेष गी एक जाति (जीव २)। प्याई की पिकी वैको पद्मश (दुपा ११)। प्यक्त देवी पश्च (सम ७२)। "प्यम वृक्षी ["मर्] [

चंद्रक-चंद्रस्तरसय भीताबा प्राणी पग्न (जी ६१)। २ म च्योतिय-प्रसिद्ध एक स्पिर करण (विसे १११)। प्यह पु [पय] नीहरा चीराहा चीरास्ता (प्रयो १ )। प्युड पि ["पुट] चार पूटवासा चीसर, चौपड़ (बिया १ १) । व्यास वि ["प्रास] वेगो स्पृद्ध (ग्राया १ १—नत्र १३) । वयाद्व दि चाहु १ चार हायबाखा। २ पु बनुपुंत भीहप्स (नाट)। स्मुश्न ["मुज] देनो बाहु (नाट मूच १ ३ १) । मँग पून ["मह] चार प्रकार, चार विशास (ठा v t)। भंगी औ ["महा] चार प्रकार, भार निमाम (भग)। आइया और "थागिस] चौछठ पस का एक नार (बल्)। ब्राइया की ["स्चित्र्य] कर्णे के लोब दूधे हुई निही (निदूर्व)। मेंड छा। व "सण्डलक् । साम मन्द्रन विवाह भगवप (नुपा ६६) । शासिक देनो चात्र म्मामिस (मा ४७)। सह मैसह प्र ["मुख] १ बद्धा विकादा (परम ११ च२ २० ४०)। **२ वि** चार मुँहताला भार हारवाला (भीप चए)। बगग दुन ["वर्ग] चार वस्तुओं वा समुदाय (तिकृ १५) । यण्य वस बीन [पद्धाशन्] भीवत, प्रवास बीर वार, १४ (छ २६५, २७३ सम ७२)। "दार वि ["द्वार] चार दरवानेवाला (धृह) (कुमा)। विद्व नि [विम] पार प्रकारका (६ ३२ नव ३)। बीम क्रीन ["विञ्चति] चौबीन, बीस सीर मार २४ (सम ४६ व १ वि १४)। बीसर (धर)। धौ ["विंशति] बीत बीर भार, चौबीस (पि ४४६)। बीमहम वि ["पिरावितम] १ शौबीसक्षा (पत्रम २४ ४)। २ म म्बास्ट् दिनों का करासार उप बास (मन) । कन्नमा केवी वनमा (बाधा २२)। स्वारपुन [वार] वार वार, मारक्स (हेरे १७१) दूगा) । "विवह केवी विद्(स ४ २)। क्वीस केनी बीस (सम ४३) । ज्वीसक्ष्म केवी बीस इम (रामा ११)। सहिची ["वधि] भीषठ, सठ मीर भार (सम 🕸 १) कृष्य) : संद्रिम वि ["पाष्ट्रवस] चौचठवा (पत्रम |

६४ ४०)। स्सिट्टिकेशे सिट्टे (क्यू)। रैसाल न [राज] बार ग्रानामों से युक्ट घर (स्वय ११) हह, इहय क्व दिह, की भीड्या बाजार (महा: बा २७३ मुरा ४४% हत्तर वि ["महत्त्व] चीहतरवां ७४ वां (पतम ७४ ४३)। इत्तरि की ["सप्तति] नौहत्तर, बत्तर चीर चार (पि २४४) २६४): हास [धा] पार प्रशास (ठा३ १० थी १६)। रेक्नो को । चाउछ न [चसुण्ड] चीवही चार बस्तुवीं का समूद्र (नम ४ पुर १४ ७८। मुता १४) 'बएल्डब्डक्केल' (बा २३)। चडक दि चतुरुठी बीक बीराइए कहा भार रास्ता मिलता हो वह स्थान भीमुहानी (दे । ३२ वड शासा ११ और कप्पा झालू-बहर बीन १ सुर १ ६६ घल) (२ यायन प्रांक्स (युर ३ ७२) । भड़बर पूर्वि । शास्त्रिय किंद का एक पूत्र (देव प्र)। चडकर वि [चतुपसर] बार हायवाला चपूर्धुव (उत्त =) । चर्यक्रमाची [दे प्रमुध्किका] श्रीका धोटा चीक (नूर १ ७२)। चडरमधद्या की [दे] नाप-विशेष (प्रव D c) 1 चउड पू [चाड] देश-मिरोप (सम्मल ६ )। चउद् वेकी चउ-दम (संबोध २३)। च उरह वि [अपूर्वत] भीरहरा (प्राह्न १)। की हा (प्राप्त १)। चडपंचमनि [चतुष्पद्भा]चार यायाचः। (सुध २ २, २१)। व्यष्टपाश्चिय न [ चतुष्प्रतिपत् ] भार पञ्चा था परिवा तिवियाँ (पव १ ४)। चढरपाय पं [चतुरपाय] एक किन का ध्य-भाम (सर्वोच ६०)। चरपञ्च व [चतुप्पञा] चौयुवा 'महस-नाव श्रज्ञयसम्रोवें (सिरि ११७)। चरनोळ धीन [चीनोळ] सन्दर्भरीय (पिंग)। भी भा (पिंग)। चक्रमुद्द पु [चतुर्देख] से दिन का क्यबास नेता (धंनीच १०) । चडर वि [चतुर] १ निपुश्च दक्ष होरिकार |

(शास वेली ६१)। र किनि नियुक्ता है होशियाधे से किसी गाया बडर (ठा ७)। चत्ररंग वि [चतुरङ्ग] १ चार भैवनला बार विमानवाला (शैन्य वनैयह) (छछ)। २ व बारशीय बार प्रकार (बत्त ३)। चर्डराय म [चतुरक्तक] एक तरह का पुषा (मोह ८६)। चंद्रशि वि चित्रहों हुन् । बार विभाववाता (सैन्य वर्षेरह)। स्त्री जी (मुपा ४२१) । चर्डरंत वि [चतुरन्त] १ बार पयन्तवाता नार सीमापैनाना । २ ई संसार (मौप)। को ता["ता] प्रियो, भएगी (ठा४१)। चडरंत न [चतुरस्त] चन्न, पश्चिम (चैन्य TYT) I थडरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोख चार कोलवाचा (भन भाषा व १२)। चडरंसा भी [चहुरंसा] सन विरोध (चिय)। चडरम पूर् [वे] चीरा चनुतरा, गाँव का चमा-स्याम (सम १६व टी) । चहररस रेवो चडर्स (विते २७६७)। भटरचिंच पू दि शतबाहर यजा शामि बाह्त (दे ६ ७)। चडराणय वि [चतुरानन] १ बार हु हवाता। २ पुच्छा विचाता (पडव)। चडरासी ) स्वै [चहुरसीति]संस्या-विरोद, चउरासीइ । बीरासी दर (बी प्रथः सण उवापउन२ ११ सम् १३ रूप)। चडरासीइम वि चितुरशीवितमी चौरा-सीनां ८४ वां (पत्तम व४ १२) कप्प)। चडरासीय बीग चितुरशीति बीएसी अवस्तियं हु पराष्ट्रस स्टब्स स्थलां (पद्धा ४ ६४)। चडरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] स्कृ विश्वा नाक बीर पशु इन चार इन्तियसला (बन्तु) (क्य ठा३ १३ की १ व)। चहरिमा थी [चतुरिमन्] चतुरता चतुराहै. चानुर्वं निपृष्धाः (सद्गिः १६)। जबरिया ) की [ब्रे] साम-मन्त्रप महवा अवधि | विवाद-मंबरपा पुत्रराखी में 'बोधे' (रैमाः सुपा ११२) ।

वहरुत्तरसय वि [चतुरुत्तररात्त्वम] एकसी

चारवं १ ४ वां (पदम १ ४ ६४)।

"बडबीस दि [बठुविंडा] चीबीसवाँ (१४ |

V1)1 चडवीसिमा औ [चतुर्विशिक्ष] समय-मान-विरोप चौबीस वीर्यंकर जितने समय में होते

• अन्तर काल-एक द्रव्यस्थिती या एक सब सर्विसी-काल (महानि ४) ।

च उनेव | वि [पतुर्देह] बारों देशें का चठवय वाता चतुर्वेदी भीवे (वर्मेर्स भडल्बद रे १२१८ मोह १ )।

चरसद्वित्रा जी [चत्यदिका] रखवाती चीन दौसने का एक तरप, चार पत का एक

नाप (मलू १११)।

चडसर वि [व] चींतर, कार संख (बड़ी)काबा (हार बाहि) (सुपा ६१ : ६१२)।

चउरत्थ पु [बहुईस्त]ओहम्छ (मुक्र १)। चट्टार प्र चित्रपद्दारी बार प्रकार वा

माहार, सर्ग पान, बाहिम धीर स्वाहिका र्ववासिकादि न संबदेति सङ्गारपरिवासे (स्पारका)। चमार प्रव 📳 पान-विक्रेप 'प्रकारकार) य प्रायमक्तरेसाए स्वय्गीएन स्त्रोडेन्

(स २४२)। चमोर ) दुन्नी [चकोर ] पश्चि-विशेष वभीरम । (परह र १ मुपा १७)। चभोनवहर नि [चरोपचथिक] वृति हानिवाना (दर ११४ दी आका)) चौत्रम सक्ष [चक्कम् ] बारकार चक्का । । २ इषर चवर बूमना। व बहुत सरकना।

४ देश करना । १ क्लना-दिरता । क्य. चंदमंद (का १६ की ६ ६ वी)। हैक चंकांगर्ड (स. ११६) । इ. चंक्रमियस्य (Pt 114) 1 चंद्रमञ् न [चक्कमञ] १ इवर इवर भ्रमण्डा रे बहुत अवनाः ३ बार्बार

चर्तता । ४ टेवा चत्तता । ३ चतवा-विस्ता । (समार ६ स्वासः १ १) । चौरसिय वि [चऋसिय] १ विक्ती चैक्रपण मा अमल किमा हो यह । २६ अनर केनी (का करव दी निष् १)।

चंत्रमिर वि चिक्रमित् विजनतः करनेवाला (बरा) ।

र्षक्रम प्रकृषिक्रम्य विशेषिक्रम । वह चंक्रमंत चंक्रममात्र (स.४६३ ६२३ क्ष प्रदेश प्रमुख्य १ इ. इ. व्याप्त । चंद्रमाण देवी चंद्रमण (छामा १ १---पच्च देव)।

च मिमाल देवो च निमल (स ११ ६६)। चेंगर पू [चकार] च वर्ण च कार (& t ) 1 चंग दि है कहा पुन्दर पनीहर, राम हि व १। सर पूर्व युपा १ व अस् ११) चम्म १ टी वच्या प्रका सत्ता भीते)।

र्चन क्षिमि दि । सम्बद्धा क्षेष्ठ (२५) । चान्य र जिल्लाके हिमानार्य का गृहस्वा वस्था का नाम (इस २ः) । चंगबेर पुन [वे] नाठ का तकता (धावा २ ¥ 7 €) / र्चनवेर पु [दे] नष्ठ-पारी नळ ना क्ना हमा क्रीय श<del>व वि</del>रोपा 'गीवए चंबचेरे थ' (व्हा ७)। चैंगिम पुन्नौ [द चिक्कमम्] दुभरता

सीन्दर्भ क्ष्मा चारफन (नार) । **क्षा** मा

(बिरे १ अस्य इंश्वरी पुरा ६ १२३ 18391 चरोरी को हिं] टीकरी कीमी हमिया **रठाएँ, दूस भावि का बन्द्र पान-विदेश** (शिक्षे कई महाह है है)। चंध वेडी खड़। वंबर (प्रक्ष ६१)। चंच दृ [चक्रा] १ रक्कामा तरक-द्रविशी क्ष एक नरकाशम (६क)। २ ग. केव

विमान-विदेश (इक)। च चपुड पुन [रे] शाचात समिनका चुर वत्तरत्रचेषपुर्वीद् वरश्चिमत्रं सम्बद्धमार्थं (¥ 1) i **चौच**रपर न [वे] सस्तम मुठ सन्ता चैव पर न भरिएमो' (देव ४)। चंचरीश पू [चच्चरीक] सगर, शीय (१

र्वाच्छ वि [बञ्चछ] १ वरत कावत (रणा माद १) । २ द्वै रावस के एक मुक्ट का नाम (चडम १६ ६१)। चंचताबी [चच्चसा] १ पत्रवस्त स्वी १ र क्ष विशेष (पिष) ।

4 4) i

इमा 'मस्समितिनचे (१च) स्निमनेतस्स (Per 22) 1 चंवाकी विद्या र गरफट की कटाई। १ वमरेन को राजवानी स्वयं नगरी-विदेश। रै वास का पुरसा (रीव)। र्षंत्रात (क्य) देवी चंत्रज (स्छ)। चंद्र की चिरुष्] चाँच पती का होर हि

र्चथक्तिम वि [चन्नासित] काका किय

€ 38)1 चनुविय न दि चक्रमृतित चक्रमृतित] प्रदिश नयन देशी नाम (ग्रीप)। र्चजुमास्त्रय वि दि] रोमान्नित पुननित (रूप धौष)।

र्चलुय ई [बम्बुक] १ वनायं रेश-विदेव । २ वत देश का निवासी मनुष्य (पदार १ १)। र्वपुर दि [बरुपुर] काथ नंबब (बर्गु) । चंड सरु [ ठस् ] क्रियमा । चंडर (वर्) । चॅड सक [पिप] पीसचा। चंदर (वर्)। पंड देवी चंद (इत)। चंड वि चिम्डी रे अवन स्थापकर, सीव (कप्प)। २ मधानक, उत्तरका (क्य १६) भीए) । ६ भवि झोवी झोव-सम्माग्रे (क्त रै। रै पिक क्याया १ (व) । ४ तेकसी तैषिस (का द १२१) । ६ मूं राज्यस नंग के एक शकाका नाम (प्रधम ६ २६४)। ६ मोर कोर (क्तार)। किया ई [किरण] सूर्व एक (का स १२१)। कोसिय दं किशिक्ष एक सर्व विस्ते नवधान् सहाबीर को स्ताया वा (रूप)। वृत्य प्रक्रियो श्रीपनितेष ( इक् )। पञ्चांक प्रयोश । अधार दे एक

बाचीन रावाका माम (बालम)। सामु र्ष [मान्] सूर्व सूरव (दूम्मा १३)। स्टर् प्र रिक्रो महन्तिकोची एक बैल सामार्न (आप १७) । वहिंसय पू ["क्लंसक] कुप-विशेष (स्त्रा) । बास द्र ["पास] हर-निरोप (कण्<sub>] ।</sub> संप्प प [सेन] एक रागका नाम (क्यू)। । स्थित विकि कीव-वरा नहा ह्या पूर (क्य १) : चंडसु पू [चण्डांच्य] सूर्य, तूरन परि (FOI) 1

चंडण देवी चंदणा 'बंडलं चंडलो' (प्राकृ 14)1 चंडमा पूं [चन्द्रमस् ] बन्द्रमा बांद (पिन)। चंडा की [चण्डा] १ जमरादि इस्त्रो की मध्यम परिषद् (ठा १ २ भव ४ १)। र भनवान् वासुपूरम की शासनदेवी (सँविशे )। चंडातक न चिण्डातकी की का पहनने का वक्र जोसी सहैंया (दे १ १३) । चंडार पून [द] भएडार भाएडावार (बुमा)। चंडाछ र् [चण्डास] १ वर्ससंबर वाटि-विशेष रुद्ध भीर बद्धाणी से सन्तम (बाका सूध १ ८)। २ कोम (उट १: घणु)। चंडासिय वि [चाण्डासिक] वर्णास-संबन्धी ब्रह्म बार्वि मं उत्पन्न (बस्त १)। चंडावी स्व [चण्डावी] १ चएडाल-जातीय द्यो । २ पिद्या-विशेष (पडम **७** १४२) । चंदिका वि वि देता किल कारा हुआ। वि R () 1 चंडिका पूर्व कि चाण्डिक्य] रोप प्रमा क्रोप रीक्ष्वा (दे ३ २ पर् सम ७१)। चंडिकिंअ 🖟 [दे चाण्डिमियत] १ रोप बुक्त, रीप्राकारकामा भनेकर (छावा १ १) दर्मार**ं**र मन ७ ≈। उस) । चंडिकार्षु हिं] कोर कोक गुल्ला। २ वि रियुन, धन दुर्गन (६३ २ )। चंडिस पुंधी [चण्डिमम्] चएवता प्रवर्शना (नुपा १६)। **चंडिया भी [पण्डिया] देवो बंडी** (स २१२ नाट)। चंडिस वि [दे] बील, पुर (दे १ १) । चंडिल र् [पण्डिक] एकाम काणित (है है २ः पाचा गा २६१ छ)। र्था की [पण्डी] १ शोव-पुष्ट की बन रा धीर जय धी (बा ६ व)। २ पार्वती, पौधै शिर-रात्री (पाप) । ३ वतन्त्रति मिरेप (पराच १)। "देवम वि ["देवह] भग्गी नाजऋ (मूमनि ६)। चंद्र र्पु [पन्द्र] १ चन्त्र चन्त्रमा चार (ठा रे वे बागू देशे देशे बाय) । ये नूप-शिक्षेत्र (का ७२६ थे) । ३ धनकत शहरकी धन (स १ १४)। ४ राम के एक मुच्छ वह नाथ (पाम ११, १५)। १ सत्तु का एक मुक्ट

٧a

पाइअसहमहण्णवो पञ्जय पु ["पर्मत] बतस्कार पर्वत-विरोव (पद्म १९२)। ६ राशि-विशेष (वि)। (हार ३) । पुर न ["पुर] वैदास्य पर्वेद **७ ब्राह्मस्यकं वस्तु। ८ कपूर। ८ स्वर्ण,** पर स्थित एक विद्यापर-मगर (इक) । पुरी सोगा। १ पानी बस (हे २ १६४)। ११ एक वेन दीचार्य (गच्छा४)। १२ एक की ["पुरी] नगरी-विशेष भनवान् घरमप्रम श्रीच का नाम श्रीप-विरोध (कीव ६)। १६ की क्रास-भूगि (पदम २ १४)। एपम रामानेत्र की पुरासी का बावां शवन, घत्क का वि "प्रभी १ चन्द्र के तुष्य शान्ति गनः। योशा (एवि)। १४ न देवनिमान-विशेष २ पूँगाठवें जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३ (सम ८)। ११ दथक पर्वत का एक शिकार भन्नकान्त भक्ति-विशेष (पएए १) । ४ एक (श्रीष)। अंतरेको संत (विकश्य १९६)। वैन बुनि (दंश)। १ न देवविमान-विरोप इच देवो शुक्त (द्वार १६८)। कराई (सम ८)। ६ चन्त्र शा विहासन (ग्रामा २ **"कान्स** १ मणि-विशेष (स ३६ )। २ १)। प्यमा की [प्रमा] १ वनः नी एक ल देशविमाल-विरोध (सम c) । ३ वि चना धव-महिपी (ठा ४ १) । २ मदिरा-निरोय की तर्यह माद्वाबर (मायम)। कंता की एक काल का दाक (बीव ३) । ३ इस नाम [°क) ना] १ नयरी विशेष (कर २०३)। की एक राज-करमा (उप १ ११ टी) । ४ २ एक कुसकर-पूरव की पानी (सम १४)। इस नाम की एक स्टिनिका जिसमें बैठकर क्छ न [ कूर] १ देवविमान-विरोध (सम मनवान् शीठमनान धीर महाबीर-स्वामी ≈)। २ रक्कपर्यंतका एक शिखर (ठा⊂)। धीक्षा के सिए बाहर निकने ये (पावन)। शुक्त हुं ["शुप्त] मीर्ववरा का एक स्वनाम-ैप्प**ह रेखो** प्यभ (क्रम सम४२)। भागा भी ["मागा] एक नदी (ठा ४, ६)। निक्यात राजा (विशे ८६२)। बार पू ["चार] चन्त्र भी गति (पं**र १)**। "चूड, मॅडफ पून ["मण्डल] १ चन्द्र का मएवस चु**छ प्रंिच्ड**] विद्यापर वैद्य का एक चन्त्र का जिमान (बंध- मम)। २ चन्द्र का स्वनाम प्रसिद्ध राजा (पराम थ्, ४४, ९४)। विम्ब (परहरे ४) । समार्थ मार्ग रे "बहाय 🖠 ["नदाय] धंग देश का एक **चन्द्र वा मएडल-स्ति से परिश्रमण । २ चन्द्र** रामा मिसने मननाम् मक्तिनाच के साच दीना का नएक्स (नुअ ११)। सणि पुंिमिति] नीषी(एलगा१०)। असाधी ["यञ्जल्] **चनाकान्त मण्-विशेष (विक**१२६)। एक दुसनर पूरपंत्री पत्नी (तम ११)। मास्य की ["मासा] १ चन्द्रानार हार, चन्त्र अस्य न [च्यज] देवविमान-विशेष (सम **इ**तर । २ **१८२१-१**रदेश (शिय) । मास्त्रिया स्रौ c)। णकाना भी ["नव्सा] स्ववस्त की ["माखिम] वही पूर्नेक वर्ष (भीप)। व्यक्तिकानाम (पदम १ १८)। आह् **प्र** मुदी की [भुन्ती] १ चन्द्र के स्मान िनगर] रारण का एक पुत्रन (परम १६ बाह्यास्क मुलगानी झी । २ सीवान्युन कुछ **११)। मही देवी व्यक्तवा (परम ७ १८)।** की पणी (परम १६१२)। सहर्ष वागरी की ["मागरी] वैन पुनिनए नी िरम् तियापर वंश का एक राजा (परम एक राजा (रूप)। दरिसणिया धी थे, १थ ४४)। (र्रीस द्र [ त्रापि] एक िंदर्शन हो । समय-विशेष, बच्चे के पहली वैन चन्वकार पुनि (५व ६)। ससन बार के चन्द्र-वर्शन के उरलस्य में किया जाता ["सन्य] देवरिवात-विरोध (श्रम क)। सहा थका (राम)। दिस्स ["दिन] प्रक्षि-की किया रेचन को रेगा चन्त्रका। परादि तिथि (वंच ४)। दीव पूं विद्यापी २ एक राज-राजी (दी १)। दहिसय न क्रीन-सिटेय (श्रीत १)। दिस्त [ार्घ] बाबा [रियर्गन के रियान का नाम चनः घट्नी जिल्लाचनः (शीर १)। (चंद १०) । २ देवी चंडवडिमा (इन पहिमा सी [ प्रतिमा] क्र-विशेष (हा २ १३)। वण्यत्र [यर्ण] एक देशीयान ६)। पश्चलिकी [प्रकृति] एक केन (सम \*)। वयग वि विद्नी १ वर पराष्ट्र पन्य (छा २ १--- १२६)। के तुस्य चल्लास्त्रमक मुह्ताला। २ ५

रातप्रचेश का एक रागा, एक लेकानित (परम ४,२९६) । "विकंप पुन ["विकम्प] चन्द्र का विशम्भनीय (बी १)। विसास न ["बमान] चन्द्र का विवास (वै.७)। विसासि दि [विद्यासिन्] चल के तुम्य मनोहर (राव)। "बेग पू ["बेग] एक विद्यावर-गरेश (महा)। संघवात पू ["सनस्मर] वर्ष-विशेष बाल बालों से क्तिरम संबत्तार (बंद १ )। साम्राची ['डास] स्ट्रांतिरा संगंधे (११६)। सासिया की [शासिका] बहातिका (एल्स ११)। सिंग व शिक्त के विमान-विशेष (सम )। सिंदु न ["शिए] एक देवदिमान (सम ) । "सिरी की ["भी] डिटीय कुलकर पुरुष की मौका नाम (बाह्र । १) । सिहर पू शिक्तर विद्यावर वेश ना एक राजा (परन ६, ४३) । सृरईसा याजिया भूरपासजिया को [मिरहरी निरा] बारक का जन्म होते पर तीसरे दिन रुपरो कराया जाना कर बीर भूवे ना वर्तन सीर उनके जासरय में क्या जाता जसन (भव ११ ११ फिना १ २)। मृरिधुं ['सूरि] हरनामधिरपात एक वैन बाचार्य (नए)। सेज पू [सन] १ बनगर मास्तिल का एक पुत्र । २ एक विद्यावर चत्र-दुनार (भरा) । सेहर पु ["शगर] र ब्रान्थिय (गी १) । २ महाचेर शिव (ति १६१)। हास पु दिशम] बार्व-रिक्टेर वनगर (न १४ १२ वज्रः)। ब्दंद्यु [बाद्र] नंरापर-विरोध जिनन संविक साम न हा बहु वर्ग (तुम ११) । अबू तू [बद् 1] दूस परिष्ठ जनतः दिनी वी एक श्चन (गुज १२) । वरियेश वृ ["वरियंत्र] नप्रनिर्देष (पल १२)। प्यद्दा की [ प्रमा] रेपा चर-प्रमा (निवार १२६ रूप प्रदेश) । त्रशः क्ष्यं [तिया] एक नगरी (मो ) 1 बार् रि [बान्द्र] बन्द्र-बंशकी (बीर १२)।

बूप व चित्रों देश बुशिया का वस दुन (बन्द ४)। चंद्रम रणो चंद्र = चन्न (है १ १६४)।

व्यक्तकार व विशेषात्र होत् हि ६ ६)।

चेर्चंड पू [चन्द्राङ्क] विद्यावर वंत का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पडम ४ ४३) । चंत्रा [चन्त्रक] देवो चंत्र। "विरमः, 'बेहम व ['बेहब] रावार्वव 'बंबयविक्म सर्व, केमलसरियं समावनरियोलीं (सेमा १२२, शिषु ११) र चंत्रहिताकी वि १ द्वर शिक्षर, क्रमा। २ प्रथम, स्तमक (हे १ ६) । चंद्रा वृं [चम्ब्त] १ एक देशवियान (विश्व

१४१)। २ एल की एक जाति (उत्त १९ )। १ वृं होतिहय बीच-वितेष यश का बीव (उस्त १६ १६ )। चंदण पून [चन्दन] १ मुर्वाचत वृश्व-विरोप चन्दव वा ऐक् (बाबू ६)। २ ल. पुर्वान्वत क्छ-विरोप जन्दन की सकसी (तप ११ ११; दे २, १०२)। ३ विमा ह्या जन्दन (बुमा) । ४ सम्बन्धिय (निष्) । १ तक्ड पर्वतकाएक रिकार (वं)। कछासार्यु ["क्कारा] जनन-वर्षित पुरुष, पानुवर्तिक बट (थीप)। धड र् [बट] यंग्ल-कारफ

बड़ा (जीन है)। बाख्य 🛍 विवास ] एक

शास्त्री की अनवाल् महानीर की प्रचम शिल्या

(पश्चि)। बाह्य हुँ ["पति] स्वनाम-क्यात

एक राजा (उप १ ६ ही)। चंदणग पून [पन्यन इ] १ जार वेबी । १ र् डींग्रिय बन्दु-निरोप जिसके क्लेक्ट की केत साबु सीय स्वापनाचार्य में रचने हैं (पर्ट् ११ भी १२)। **व्यंश्या हो [चन्यना] नगराम् नहारोर** की प्रथम शिच्या जन्दनगन्ता (नम ११२) कप्प)। व्यक्तिको दि पायमन पुता। "उथय म

1 (9 7 9 च ब्लीको में मिं] चन्द्र वर वन्त्री पादिगी 'बरी शिव बेराग्रीमीर्फ (गई) १ र्थरम र् [चर्रमस् ] बन्धमा चौर (मग)।

िंउर्क दूला पेंश्ने वी वस् (धाषा २

चौरून्ट् देवी चींह-कृष्ट् (वेश ११ ११)। चंत्रबद्याया क्षी [वे] जिनका माना शरीर हरा दौर जाना गंबा हुँ। ऐनी भी (वे ३ ७)। चंदा हो [चन्द्रा] पत्र-हीर वो राववासे (गीर १)।

चंदाअव र्षु [चम्त्रावप] क्योल्या चतिका जनाकी प्रसा वांत्रपी (ते १ २७)। देवी चंदायय र चंदायण पू [चन्त्रातत] ऐरवट केर है अथम जिल्लोब (सम ११६)। र्वदाणणा की [कम्प्रातना] १ कप्र के दुख

श्राक्षार क्रथम करनेनामी चन्त्रपुत्ती। र शास्त्री जिन-प्रतिमा-विशेष (ठा १ १)। चंदास वि [चन्द्राम] १ वत्र के दुव राष्ट्राप-अवसः । २ तुं गाउनां जिनदेर वातः श्रंब स्थामी (बाबू २) । १ इस नाम ना एक

चन-दुनार (प्रमा ३ ११)। ४ व. एव देववियान (सम १४)। चंदायम न [चान्द्रायण] हप-विशेष जिनमें भारता के गठने बढ़ते के बनुसार चीवत है कीर प्याने नड़में पहते हैं (वंचा ११)। च्यायण व [चल्हायण] क्य क व व माच पर पश्चिम बीर एतर दिता में बमन (को ११)। चंदासम देखी चंदालमः। १ साम्ब्राप्तः विशेष विदास चैवना (गुर ३ ७२)। चंदासम ल [दे] वाच ना स्परत-रिरोप

(नूष १ ४ २)। चंदावच्य [चन्द्रावर्त] एक देवविमान (सम =)। चंश्वियम्बय देवो चंत्रानवियम् (वृदि)। चंत्रिय वि [चारिष्ठक] बन्त्रका चन्द्र-संदर्गी (पत्र १४१)। चंदिशा स्पे [चरित्रस] चंदरी चन्द्र री

प्रभा, ज्योतस्था (में ह २) वा ७७) । चॅदिक्रोजकाय रि. [दं चित्रकोशप्रतिष] चन्त्र-गान्ति से बज्जात बना ह्या (चेर)। पंदियान [दे] विद्राना कारप्रमा

भेहाल दार्ल बंदाख चरिएं तरपराण फर्नांगर्रे ।

ন্দুবিদাতা বিশ্বল मामनं स्वननीमार्जं ॥ (बार् )। चेदिम देली चेदम (ग्रीर क्य)। र एक कैन

भूति (धतु २)। चेरिया हो [चिन्द्रम] चन्न नी प्रश व्योक्ता नारमी (हे १ १ १)। चेदिमाइय न [पार्तिक] 'ब्राह्मवर्थनमा

मूब का एवं बाध्ययन (राम)।

चंदिस 🖠 [बम्दिस] नापित हराव (गा २११३ दे व २)। चंदुश्चरपदिमग न [बम्द्रोत्तरायर्तमक] एक दवविमान (मम 🗷) । चंत्रये यी [दे] नगरे रिरोप (सी ४१)। चंत्रीच ) व दि रुपुर, बार-निवाती चेत्रीक्रम । इमन (देश ४)। चंत्रासरण न [चम्नासरण] नौराम्बी नगरी का एक उदान (दिया १ ४—पन ६ )। बदायर १ [घरतादर] एक राज-पुनार (धम्म) । चंनात्रम व [चन्द्रायक] संस्थानी ना एक दाकरण (हा ४ २)। चंदावता र् [चन्द्रोपयम] चन्न-पर्ण कल्याका प्रदेश राष्ट्र-वस्त्र (हा १ मय 1 () 1 च् हेनो चंद्र (हे२ ६ दूमा)। च्यंप सक [दे] चारना दादना श्वाना। बाद (बाय २३) । वर्ग वीरमद (है ४ 312) 1 चौप नर [चच्] वर्षा रस्ताः चेत्रः (ब्राप्र) । सेंह चॅपिङण (वक्षा ६४) । च्यंत तक [आ+क्य\_] पहना। नेवह (ब्राष्ट्र ७३)। चंप रेगो चंपय (एव १ )। ब्युवा बून [बायक] एक देशीलान (देशेन्त्र १४२) । श्रीपुरा देलो पीपुरा भागुरहान्त्रे परिवा भाग-माना न नीद्र नीते (धार १)। चंपहान न [रे] प्रहाद, मानातः 'नरमत्रकार श्वरिकारणीयपर्वतिभूषीत्रारमाराज्यस्यत्त्र-भूगेनारोरी (शिक्ष =४)। चंद्रा व [ने] चंपता दशता (शाहरू) चंपग र् [चंपर] १ क्य-विटेट बस्ता का देइ (म १६२ मा) । २ देव विटेच (मीव १ व वस्ताना पुत्र (दुका) । साला **भी भिन्न है। स**म्बन्धित (सि.)। ३ बागा दे दूपा का हार (पार १) । शया की [रिपा] १ मजबार जनार कुन । २ बराय पुरावी राजा (र १: थीर)। दश

न [बन] चम्पक बूर्जी की प्रयानकाताला बन (मग)। चंपग्रवस्थित र् [पम्पग्रवसंसक] बीवर्ग देवतोड़ में भ्यत एक विमान (राय ११)। चंदाकी [चन्दा] चंद देत की राजवानी नवरी-विरोप जिल्ला व्याजनम 'माननपुर' कहते हैं (विपा १. १ कप्प) पुरी श्री िंपुरी ] बही धर्व (पत्रव ८, ११६)। र्चवा स्री रेगो र्चवव । बुसुमन ["बुसुम] चन्ना वा कून (स्त्रः) । वण्यः नि [विश्रं] : क्रा के कृत के तुस्य रंगवाला भूवर्छ-वर्छ । क्षी नर्मा (धप) (१४ १३)। बंपारण (बा) पूं [चन्पारण्य] १ देश निकेय चेपारन, तिरहत वनिरनरी (विदार) वा एक जिमा। २ चैतारन का निवासी (विग)। चौपिस विदि] चौपा हुमा दक्तमाहुमा र्मादन (मुता १३७ १३व) । चॅपिअ न वि] बाजनए बनान (संदू ४४)। चंचित्रिया सी [बन्दीया] वैत पुनिक्श भी एक शाचा (क्य) । र्चम पू [द] हम से विद्यालि मूमिनेया (दे 3 () 1 च ध्रण्याको दि] स्तर लका बनदी (हे 1 (1 1 चक्रि देगी चर्द (दूगा)। बाग्रेर पूंत्री [बाग्रेर] पश्चितिकेथ बाग्रेर पनी (मुत्त ४२०)। श्री हो (चल्छ ४१)। वक पूर्णिको १ प्रतिनिधेत वक्ताक याँग (पाम कुमा अग्य)- तो हरिन्युनहर्यनी वही हर दिनुसम्बद्धार्थमाँ (द्वा करेद ही)। २ न याही का पहिया (यल्ट १ १)। ६ समूह (मूरा १२ । भूमा) । ४ वज्र-रिटेप (पाम ७२ ३१ मुना) । १ जनाकार यानुगण मण्तक का धामराणु-रिटेश (धीर)। ६ ब्यूइ-रिटेर रीग्य की कल्पाद एकता-विदेश (गाया १ १ थीत) । बंजर् ["बाध्य] देश-विक्रेय श्वयंत्रुरमण नकूण वा व्यविज्ञाता देव (देव) । जादि 🛊 ["वाधिन्] १ चर्न ने भइनेशना योजा (बार)। २ बनुरेर तीन बंदर्नुपरी वा रामा (दार १) । उसय 🐧 [भित्रो] चक्र हे रिटान शारी घरा (वं १) । पटूर् [मिसु]

184 बक्यसीं राजा (६ए)। पामि र् [पाणि] १ अक्रार्सी राजा, सम्राट् । २ बायुनेर यमै करवर्ती राजा (प्रतम 🗪 १)। पुरा पुरी की ["पुरी] बिरह वर्ष की एक नगरी (कार ३ इक) । प्पटुरेको पहु(सग्ग)। बर वं िबरी मिधुरु भीगर्मेया (बर ६१७)। रयण न [रतन] धप्र-विरोप चन्नवर्धी राजा शाधुक्य बाग्नुष (गएह १४) । बइ र्र ["पनि] समाट् (रिव)। बइ बहु व विभिन्न । सः याद मूनि का धविपति संज्ञा समाद् (स्मि ससा ठा १ १ः पडि प्रामु १७६) । अहि<del>ता</del> न ["वर्शन्य] समार्यन सामाग्य (नुर ४ **११)। व के केरो वहि (पि २०१)**। "विजय पूं "विजय] पञ्चली समास वीतने योग्य दात्र-विशेष (ठा =) । माला की [शासा] वह मरान बद्दा दित पेख जाला हो तैसिक गृह (नव १)। सह पू ["शुभ शुम्य] देव विशेष मानुगोत्तर पर्वत शा विधिष्ठि देश(दीव)। संगष्ट्र ["सन] स्वनाय-स्थात एक राजा (र्दम)। दूर व् ["घर] १ थडनसीं धना, समाद्(सम १२६ परम २, बद ४ १६ क्या)। २ बानुदेर वर्ष-वजी राजा (राज)। **वज न [चक्र]** धर देशीमान(देशे र १६६)। चक्रमाञ रेतो चक्काय (ति a र) । चर्चग पूं [चक्राङ्ग]पति-विरोप (गुना १४) ।

चक्रमध्य व [वं] नारंगी वा क्रम (६३ चक्रमाह्य न [दे] अनि तरङ्ग नहीत (दे 8 8) 1 पक्षम १ सम् [भ्रम्] पुषता भाषता

६)। परागर (हे ४ १६१)। वह चवर्मन (न ६१)। च बन्मविश्र वि [श्रीमत] पुत्रका ह्या. शिराया द्या (नुजा) । श्वचय देवी श्रद्ध (राग्य १) ।

पक्रमा प्रमण करना। परमा (१२

बहस व [दे] कृतस वर्ग वर धाकूर । २ वेताराव दिनेता वा विशाहर ३ २)। १ वि बनुत रोत्ततार प्राप्ते (६

पद सक चित्रे ] चन्द्रत दावि का विशेषन कराता । चण्चेई (वर्तीव १६)।

चव पूँ [चर्च] हेमाचार्य के पिता का नाम (**द्र**प्र२)।

न्यस पूं चिन्ने समातम्मन चन्दन वगैरह का शरीर में स्पनेप (वे ६, ७६)। चबर न चित्रर] चौद्धा चौयस्ता चौयहा

चौक (खाया ११) पछह १३ पुर १९२ (हेर १२ हुमा)।

चबरिअ पुं [दे चक्करीक] भगर, शींय (धड)। चन्नरिया की [चर्चरिका] १ शूख-विधेष

(रमा)। २ देवो चवरी (म १ ७)। चवरी की [चर्चरी] १ गीत-विशेष एक

प्रकार का गाना "निरमरियममधीरमपुर्वाध्यव आएममाने (सूर १ १४) पार्रीमयवश्वधी मीमा (सुपा ४४)। २ गलेकासी टोली मानेदासी का पूर्व 'पवर्ते' समरासहस्रवे निगमयानु निवित्तवेसानु नमरवक्षरीमु कह मीयवच्ये सम्बाण वचरीए समासले परिव्यवद्रं (स ४२)। १ क्रम्य-विशेष (पिप)। ४ हान की ताली की भावान

(ग्राच १)। पश्चसा को दि निध-विशेष 'बहुसमें चन्द-श्रार्गं, महत्वमं वश्रवाबायमार्खं (श्रय)।

चवाकी दि] र तरीर पर मुक्ति पक्षा भा समाना विसेतन (६३ १६ पाछ अ १ सामा १ राम)। २ तम श्राह

हाय की राली (दे ३ १६) पह्)। चन्नार सक [स्पा + सम ] क्रासम्ब केत

जबाहरा रेगा । बण्याच्य ( पर् ) । श्विषक वि दि] १ मरिवत विज्ञपितः

"बंदुरवपवरिवरना दिसाउँ (दे १ ४); क्तुप्पइत्रान्तविषयमे (यम १ टी); 'साठु ग्रुपरमध्यक्तिमा' (यह ३१)। २ र्पुत वितेपन चन्द्रनादि सुद्धील वस्तु का शरीर पर मतनाय (है २, ७४), 'विविद्यो' ( पर् )ः 'दुरुनवण्निसङ्गिरमंत्रो' (पदम २व २व टी) 'नेन्द्रर नुसम्बन्धर्थ पुरबंदण वंक्चवित्रम् (इर ४६० हो)ः भारतिहरू र्यक्रमचिद्धी (पुन्ध ११ )।

অভিয় দি ভিনিত্ৰ (বামে নামে)। वरपुष्प सङ [अपेय्] वर्षण करना

देशा । वण्युत्तव (हे ४ ११) । चच्छ सक [सक्] दिलना काटना। 4484 (\$ X \$5X) 1

च चिद्राम कि [तप्ट] विका कुपा (कुमा)। चल सक [हरू] देखना सननोकन करना। भागमा (देवे ४ पर )।

चळाडी चर्या १ भाषरत वर्षेत् । २ बलन नमन । ३ परिमापा संकेत (विसे

3 W)1

चित्रय वि [एए] प्रवर्धावत वेका हुमा (मक्का)।

चटुझ देवा चट्टुझ (गा १६२)। श्रष्ट सक दि विज्ञास्थ नेह करना न य सक्रोरिएयं सिर्म कोद चट्टेड (महा)। चट्ट र्युग दि ] १ मृक्ष बूमुक्ता 'जीवंति क्योदिया बद् दुन्कित न नीपीर्त (पूक ७)।२ वृंबहा विचार्यो । सास्त्र की ["श्राजा] पटरामा भटशार, धो<sup>9</sup> वासको ।

की पाठरासा (सह १) । च टू वि [चट्टिन्] चान्तेवाका (कप्पू)। , पूं [दे] शास्त्रहरूत काठ की

चलदुञ | क्षमधी परीवने का पात्र-विशेष चददुक्ष (केश्र शास्त्रस्य)। चव यह [आ+स्यू] चरना अपर <sup>बैठना</sup> धा<del>व्य</del> होताः चड्ड (हे ४ २ ६) ।

संह. पश्चित्रं अहिकान (सुरा ११४) बुमा)। पाद पूर्वि] शिका चोटी (वे ३ १)। चवक पुंग [रो] १ चटलार, चटका (ह ४४६ मनि)। २ शक्त-मिरोप (पळ्य \* RE) 1

वक्कारि वि [चटरशरिय] 'बटा' राज्य करनेवाला (पबन धारि) (गढड) ।

वहरा रेको चह्नय (पर्राप्त १)।

**बह**गर वृं [के] १ सपूह, यूव करना (परम रे १४, ग्राया १ १—पत्र ४६)। २ बाहम्बर, धाटीर 'महूबा चहवरताऐश् धारपञ्चा इत्तर् (वसनि १) ।

बहबह पूर्व [बहबह] 'बहबह' वाताव (विपार ६)।

नहभटनड यक [घडनडाय्] 'नड चर्ड वासाय करना । चत्रचत्रचर्डति (विना

**चडळ पूँ [चटट] ध्वति-विरोप विज्ञती के** विक्षे की बाराज (मुर २ ११ )। पहल न [आरोहण] पहला, उत्पर नेटना (या १४० प्रासू १ १ छप ७२० टी मोध ६ सद्गिरेश्वर वज्या १४)।

चडपड सक [ वे ] चन्पद्यना क्रम्पद्यना बसेश पाना । वह चहपडेत (पुरा ७२) । अक्टय र्युक्ती [अटक] पश्चि-विरोग मारैया पत्नी (रें १ १ ७) । और था(रें द १६) । चडवंक्षा की देशों चवेडा (पण्ड १ ३---पथ १६)।

**च्या**वण न [भारोहण]च्या(चर ११२)। चहाविय वि अारोहिती चहामा हुमा क्रपर स्वापिक 'रामुखंभाजर्याज्ञासुहरे अवाधिया करणवयवकत्तरा' (मुखि १ ६ १ सुर १३ ६६ मद्दा)।

चढायिय वि [वे] प्रेयित मेना हुमा 'बाउदिसित ठेलां बद्यानियं साह्यां वधा धीवि' (बुपा ३६१)। चित्रभावि [भाग्यः] चहा हुमा मास्य

(युपा १३७ ११३ ११६ है ४ ४४१)। चित्रभार एँ, 📳 मध्येत, मात्रमार (वे

पहुर्दू[पट्ट] १ प्रिय बचन दिय वास्य । २ वटीका एक धासन । ६ जनर, फैट । ४ पु न. जिय सेमायण कुरामद (हे १ ६७ प्राप्त) । आर वि ["धार] कुशावद करन-बासा बुशामधे (पर्या १ ३)। ब्हारक्ष

वि [ कारक] भूतावदी (मा ६ ६)। पबुद्धारे वि [चटुद्धारित] भूगावधै (निष्ठ RfA) I चकुत्तरिया की दि ] १ उत्तरनदा २

नार-विचार (मोह ७)।

चड्यारि देवो चडदारि (निक ४८१) ।

चबुळ वि चिट्रको १ बंबत चरत (से २ ४१, पडम ४२, १६) । २ वंपनाना हिनता हुम्प (से १ ४२)।

**पहुस्त वि वि वटुकर्रो सग्रन्थाएर दिया** हुपा, "विदुत्तवयदुनपक्षिन" (मूर्मान ७१) ।

चबुबाकी दि] रत-दिनक धीने की मेक्ता में बटकता हुआ एल निमित्त विनक (R R =) 1 चबुद्धातिस्त्रम न [दे] अनर आसी (दे i ) i चक्छियाऔर [१] यन्त आरम में अला इमा बार का पुदा वाद की यांटी (स्थि)। चतु धक [सूद्] मर्रेग करता सम्मनगा। भार (हे ४ १२६) । प्रयो नहानए (सपा ६६१)। वक्क पिया शिल्ला। वक्क (क्कि १८६)। चढुसक मुख् मोचन करना चानाः मक्क (कि. भ ११ )। चाबून [दे] ठेल-पान चित्रमें श्रीपण निशा मारा के प्रवराती में 'वाड़' (सुपा करेन) **बह्र** t) । चकुण विशेषती १ मोचन बाला। २ बाले की करा, श्राध-सामधी (कुसा) । चत्राबद्धी की [चत्राचद्धी] इस नाम की एक बबरी बहाँ भीक्तेस्वर युनि ने विकासी प्याध्वनी प्रधे में 'मुरमूंबरी-करिया' नामक प्राकृत-काम्बरमा वा (पुर १६ २४१)। चड्डिअ वि [सुदित] मधना हवा चिएका मर्थन किया गया हो वह (कुमा) । चित्रम नि पिष्टी पीसा ह्या (कुमा) । भड़ देवी चड = धा + च्हा शंह चहिरुज (सम्मत्त ११६) । **पहण देवी पहल (धंनीय** २८)। चम १५ [चलक] चनः सन्न विशेष भवाभ रे (वे १: कुमाई वा ११७-३ १ २१)। चलपूर्या श्री [चलकिका] मसूर, सम-निरोध (数 2、3) ) भाजरा केवी भागाओं (गुना ६६१) गुर ६ tv )। गाम र् [भाम] वाम-विशेष बीड़ देश का एक प्राप्त (राज)। पुर न [ पुर] नगर-विरोग, राजपृष्ठ्-नवर का बसली नाम (राम)। चजनमाम देशो चचरा-गरस (शरीवि ६ )। चणोद्रिया की विशेष्ट जा। ग्रा 'चलोदी' क्यों कोलेहिया (मनु यु हमीर नव

44) 1

चक्त पूर्व दिशो तक तकुत्रा सूत कमाने का क्रम सकती (देव १) वर्गेर)। चाल कि स्थिकों क्षोड़ा क्या परित्रक (पर्व २ १) कुना १ १६) । २ तुत्र की काँटी (प्रस्तव्या ६ १)। चत्तर केतो चचर (पि २८६ माट)। वशा को बत्ताकीसा (वन)। भत्ता की [भर्मा] १ राग्रेर पर सुकनी वस्तु का विकेशन । २ विकार, वर्गी (प्रकार ६०)। चन्त्रास्त्र नि [चरवार्रिश] चाबीसवा (परान Y (W) 1 चचाक्रीस न [चलारिरात ] १ चलीध ४ 'वत्तानीसं वियासावाससङ्ख्या परस्त्रतो' (इय ६६३ कप्प) । २ वि नातीस वर्ष की वसनामाः 'नचानीकस्य दिसार्थ' (वंदू)। चचाकीसा को चिरवार्रिशत । वालीब ४ 'तीस चयामीसा' (प्रदश २)। चरपरि पुंची [वे दस्तरि] श्रम शास्त्र (दे ¥ 2) I चपेटा की [वे चपेटा] करावात कम तमाचा (वह )। चय्य **एक जिला + कार्यो व्यव**स्था करता ध्वाला । श्रेष्ठ चारिपवि (श्रवि) । चप्य छक जिर्चे ी १ भष्यस्य करता। २ व्यवना १६ मधीना करना। ४ चन्छा बादि से विसेपन करना । चण्या (प्राक्त ७३ विति १२)। चप्पद्यम (दे) कह-कम-निरोप (सह १ ६--पण १३)। चप्परव न वि ) विरात्कार, निरास (द्व १)। चप्पस्रम वि वि ? प्रप्रक, कुछ (कुमा « ७६)। २ महानिष्याताची स्मृत क्रुठ मौलने-मना (भव्)। चिप्पा वि [आऋत्मा] आक्षण स्थाया पूपा (पवि)। चप्पुक्षिया ) सी चिप्पुटिका चरवे चुल्ही चप्पुती र्वे प्रकृते के बाद बोईली की शाबी (शामा १ ६ – पत्र ६५, वे ४१)। थण्डस<sub>ो न</sub>्द्रि] सेचर-विशेष एक संद्र् चण्डक्षत्र हेका विरोजनस्य । २ वि. सन्तरस् **क्ट**, निष्यात्राची (देव २३ हेव ३ स कुमाच २५)।

जगना प् जिसलारो प्रस्पय बारवरे 'संविद्यमञ्जानको' (बस्य १ दी) छ। ७६ व टी) । यर वि किरी विस्तय<del> पत्रा</del> (चरा)। चमक ) सक [चमस्+क] वित्रियत चमकर करता धारवर्गनित करता। चमनकेंद्र, चमनकेंद्रि (विने ४६ ४८) सह-चमकर्त विक १६)। चमकार 🛊 िचमत्त्रमर ी धारवर्ग विसाय (शर १ द मन्द्र १४)। चमक्किंज वि [चमस्कृत] विश्चित, शास्त-व्यक्तित (तुपा १२२)। चमड ) एक [मुज्] भोषन करना बाता। चमड ) चमडह (वर्) चमडह (हे ४ चसक प्रक वि १ सम्ब करना, सक्तवा । २ प्रहार करता । ६ क्यर्बन करता पीड़क । ४ तिच्या करता। १ साझमल करता। **१** ভারণে কলো ভিন্ম কলো। ক্ষম সম-डिजांद (योग १२= मा ब्रह्न १)। चमडण न [भोजन] भोचन, श्राना (हुना)। चमदान न [वे] १ मर्क प्रथमन (मोन रैयक बरास २२)। २ झाक्रमस (स १७६) । ६ व्यर्जन, पीडम । ४ म्हार (योग ११६): ह निम्हा, महीस (योग ७६) : ६ वि: जिल्ली कर्मांग की बाद गई (शोष २३७)। चमहणा जी हिं] उसर देखों (बह १)। जसक्रिम वि [दें] भाँका विनारित (वर चमर द्री[चमर] पशु-विशेष विश्वके बार्जी का भागर मा भेंबर बन्ता है: 'बराह्यस्त्रकारते-भिए रहरी (पठम १४१ १) प्राप्त १ १) । २ पूँपाचने विभन्तेत्र का प्रवस शिल्म (बस १४१)। १ चीत्रल क्रिया के समुख्यार्थ क स्क (ठा२,३): चंच ( चिक्का] पर रेक्ट का बालास-मर्गत (क्य १३ ६) । जीवा की ["पद्मा] पर्यक्र की राजवानी सर्ग पुरी-विशेष (स्तावार)। "पुर न ["पुर] नियावरी का भवर-विदेश (इक)। भार पुंत [भागर] चैतर, बायर, नाम-न्यवन (हेर ६७) । भारी हारी की

िंधारिणी] चामर बीकने या कोसानेवाची की (पुगा १९१ सुर १ ११७)।

चमरी की [चमरी] चमर-पशु ही माश, मुखी माय (से ७ ४८) स ४४१ थीरा नहां)।

चमस पुन [चमस] चनचा कतको वर्षी (ग्रीप महा)।

चम्रकार पुंचिमरकार] रे वारवर्षे विस्तवा 'केक्क्यसम्पूर्णकेमप्रवेशकार्यकारकारके' (पुर १६ १७)। २ विकासी का प्रकास 'ताव य विज्युक्तकारजंदा' वेदवारसस्वारी' (पुर २ ११)।

चामू की [चमू] १ तेना तिय तरकर (पाषम)। २ तेना-पिछेद, निवर्षे ७२६ हावी ७२६ रम २१०७ वोड़े सीर १६४% पैतन हॉ ऐसा नरकर (पटम १६ ६)।

चन्मन [पर्मन्] ब्राल लक्ष्मका बाल (हे १ ३२ स्तप्त ७ ३ प्रासू १७१)। "किंड वि ["किंट] चमड़े से सोमा हुमा (मन १६ ६)। क्रेस क्रोसप दूं किए, की १ अमड़े का बना ह्या मैला २ एक त्तरह का जमके का बूता (योग ७२०० सामा २,२ ३ वर =)। स्त्रसिया सी ["काशिका] चमके की बनी हुई देशी (मूच २२)। लंडिय विकिशिकारी १ न्त्रमहे ना परिवादनाता । २ सथ उराहराश चमके का 🗓 रखनेनाचा (ग्रामा १ १६)। रा वि [क] चमड़े का कता हुया अमैमय (सम २ २)। पश्चिम दु[पश्चिम्] वसके की पांचवाला पशी (ठा४ ४—पन २ १)। पट्टर्र ["पट्ट] चमकेका पहा वर्भ (विदार ६)। पाय न [पात्र] चनकेकापाव (प्राचा २ ६,१)। यर पूं्कर] मोवी बगार (स २ ६४ वे २ ३७)। रमण न [रहन] चक्रवर्ती का राज-विरोध विससे सुबह में बाद हुए शासि वपैरह इसी दिन एक कर खले बोग्य हो माते हैं (पद २१२)। स्वरुद्ध पूँ [\*कृश्ह] बुल-विरोप (बन प ६) ।

चम्मिट्ट की [चर्मैयप्टि] चर्मैनय यष्टि, चर्थै-स्वड चमड़ा सम्बद्ध हुई क्यूमी (कप्यू) :

चन्मट्टिज सक [चर्मयद्वीय] चर्मयद्वि की तरह माचरण करता। वह चन्मट्टिजंत (क्यू)।

बारमहिस पुं पर्मासिस ] पशि-विशेष (पर्या १ १)। बारमार पुं [बर्मकार] बागर, मोबी (विशे २१८८)

चम्भारय पुं [चमकारक] उपर देखी (प्राप)।

चिम्मय वि [चर्मिठ] वर्म से वेंबा हुसा वर्म-वेष्टिठ (धीप)।

चम्मेह तु [चर्मेष्ट] प्रहरण-विरोप चमके से वेष्टित पापास्त्रवाचा पातुच (परह १ १)। चम्मेहम दुंजी [चर्मेष्टक] राज-विरोप (सम

चन्सहुत पुंचा चुचाहुइ । कमन्त्रपत (यय २१) । भी ता (चणु १७६) । चन्न छक हियदा चित्रमा ध्याव करणा। चन्नद्र (पाया हु ४ वर्ष) । कर्म चहन्नद्र (चन)। वह चर्मत (चुन्न १वट)। संकृत्र

छना ततः १)। क्वं काइयतः (पुना ११६) ४ १ १९१)। व्यय सक्व [इन्ह्] सकना सनवं होना। व्यय (हे ४ ०६)। नक्वं वर्गतः (सूच १ ६ ९ से १, १)।

चहतायं, चहतु (दुमा बत्त १०३ महा ।

चय अक [च्यु] मरना एक जन्म हैं दूसरे कम्म में बाना । चयद (प्रमि) चर्मीर (क्ष्म)। नक्क चयमाण (च्य्य)।

चय पुं [चय] १ शरीर, क्या (विचा १ १) क्या) । १ समूह पारित हैर (विश्व २२१६) सुपा १७१ दुमा) । १ सन्द्राहोगा (सल्) । ४ इदि (धाचा) । चय पुं [चय] ईटी की एक्ना-क्रिय (सिंड

२)। पद्य पुंचियप] व्यव जन्मान्तर-यमन (ठा द कम्प)।

चयण न [चयन] १ सम्द्रा करना (पन २)। २ प्रहेश ज्यासन (ठा २ ४)। चयण न [स्थान] स्थाप परिसाय (सिट्ट १६)। चयण न [क्यसन] १ मरण कन्मान्तर-मन (हा १--पन १६) । २ स्तृत निर्दे काता । करप पुं [कह्मप] १ पवन-प्रकार, चारित वर्षरह वे गिरते का प्रकार । २ शिषिस शासुसी का विहार (गब्ब १ पंचमा) ।

चयण म [चमवत] चुति भग सम (तंतु ४१)।

चर तक [चर्] १ समन करना चनना, बाना। २ ममण करना। १ देवना। ४ बानमा। चर्च (उन नद्या)। मुक्त चर्चन्य (गठड)। तथि चरिस्स्य (भि १७६)। वक्र चर्चन्य चरमाव्य (उन्न २) सम् निया १ १)। ग्रंक चरिल चरिला (गठ-मुक्त १ साम्य)। हेक्र चरिले, चार्च (भीम १६) क्या। इ. चरिसम्ब (सम १ व १३)। स्था चरिसम्ब (एउट १७—पत्र ४४०)।

चर ्रुं[चर] १ पसल, नितः। २ वर्षेत्र (वंद्य यात्रम १ दृत कासूस (गाग्नः गर्धेत)। चर र्युं[चर्] वंदम प्रस्तो (क्रूप २४)। चर ति [चर्र] चलनेवाता (पाचा)। चरवी की [चरनी] निस्त दिशा में मुप्तवान्

निगरेन वपेर्ड मानी पुरत निवासी हों बह (बन १) । परग पुंचितक] १ केले बर - वर । २ संस्थासियों का प्रताह विरोध सुमाने बाने वाले विरोधियों की एक बाहि स्थित सम्ब

२)। ३ मिनुकों की एक बाठि (पएछ २)। ४ देश-मणकादि कन्दु (छन)। वरवार को [वरवर] 'वर-वर' ग्रावान

(ध २१७)। चरड पुँ [चरड] चुरेरे की एक बादि (बस्स १२ टी सुपा २६२) ६६६)।

चरण पुंत [चरज] १ संगम चारित सम्म चनाजवरणा पत्ते महम्बुनंदस्ता (संबोध

२२)।२ सावरण (सूपति १२४)। चरणा विद्यापी र संस्मा चारित इस विसम (छा १ १३ स्रोत र) विदे १)।२

वरणा प्रमुखों का एशादिश्वक्रम् (पूर २, ३)। ३ पम का बीचा हिस्सा (चिंग)। ४ वमन विद्वार (श्रीद, धूम १, १, २)। इ देवन मान्दर (बीव २)। ६ पाइ, पांच

चरम-चव

कर २, ४)। चरिय पूँ चिरको भर-पूका थावूत हुत (नुपा १२६) ।

चरिय न चिरित्ती १ नेहित भाषरध (धीप-प्रातु ८६)। २ जीवनी कीवन-वरित (भूपा २) । ३ चरित्र-ग्रन्थ (शुपा ६१०) । ४ सेवित बाधित (प्रवाह १ ६)।

चरिया की [चरिका] १ परिव्यक्षिक, संन्वा-

खिनी (क्षोच ३र्द≈)।२ किला बीरनगर

के बीच नामार्ग (सम १६७ प्रत्स ११)।

श्वरिम देवो घरम (नुर १ १ अप्रैश भन;

युनि (उप ६६६ व्यव १)।

चरिया की [चर्या] १ याचरए प्रमुहान 'दुस्करचरिमा बुश्चिक्छर्छ' (पदम १४ १६२)। २ वशव गति विकार (सूच ११ ४)। १ नाड़ी (याच्या पत्र ११ वा. ६≼)। चरीया देखी चरिया - वर्णी 'ठावपाठी वरीया व वरिवकारस कोविन् (र्थव ४२ )। **भरु दे भिरु स्वामी-किरोप पात्र-विरोस** (धीपः चरिः) । चरुगिजन देषुरे चारव्यय (इस) । चरक्तेन व [दे] नाम बाक्सा (दे १ ६)। चळ सक [थस्र] १ जलता स्थन करमा।

९ मन- कॉपमा हिलना । चनाइ (यहा परः)। वह वर्सत वक्रमाण (बा ११६) दुर ३ ४ मन) । क्षेत्र वस्त्रिप्तं (वा ४व४) । प्रको संक्ष वस्त्रचा (स्त १,१) । अस्त विक्वी १ वंचव धरेनर (व ४२ । क्या ६६)। २ 🕺 रागल का एक युक्ट (पळण ४६ ३६)। थक्षपञ्च वि [चल्डचर्क] १ वंचन धरिवर, 'असमस्यादी विमोरकाकराई नक्काई तक-रणीखँ (क्व्य ६) ः ९ पूंबी में बसी कली ् क्षद्रै भीज का पहला सीच जान (निष् ४) । चस्रज पुं [चरण] पाँव पेट, बाद (धीपा 🖺 ६, १६) । मासिना ची ["मासिका]

पैर ना बामुचल क्रियेच (चल्ला २, १८ धीम)।

बंदम न [बम्दन] पैर पर शिर कुना कर

अलान अलाम-विशेष (पडम व २ ६)।

चळ्याओ [चस्ना] १ पतन पति। १ कम्प शिकात (मन १६, ६)। असमाद्यं र् [अस्यानुभ] कुनुद, हुर्ग (8 8 W) 1 चछणामोइ 🛊 [दे चरणानुम] अर 🖬 (बर् )। चळणिया हो [चळनिका] धेचे देखो (शेव 4**0**4) ( चळविया } स्त्र [चळनिम्न नी] वैर चस्रजी 📑 सामियों को पक्तने का कटि वक्र (पर ६२)। पक्ष्मी और [चडनी] १ शामियों का एक क्लक्पश (सीव ६१६ मा) । २ पैर तक का कीय (बीब ३) मन ७ १) : **चलवल्य न**िको चटपटाई, चेचवता (परम १२,६)। चळाचळ वि [चळाचळ] भंचव शीवर (पडम ११२ ६)। चलिदिव दि [चलेम्द्रिय] इतिस्निम् स्रवे में प्रसम्बंदितकी इतियां कता में नहीं वह (बावा२ ४,१)। अधिअ व [अधित] १ विक्रमता प्रस्केर, चंचवदा (पांच) । २ नि चना हुमा, सन्तिय (बारम) । ३ प्रबुध (पाप्र ग्रीप) । ४ विनर्ट (दम्म २)। चिक्तर वि [चिक्तरू] चननेवाना, यस्विद क्षम चैनम 'अविरत्मरानी' (का श्रेम्ध) मुपा ७६३ २१७) स ४१) । **च्छ के**नो च्छ= बह् । यस्त्रह(हे ४ २३१३ **पक्ष**यम् व दि] बक्तारूक कठिनक (वर्)१ चिक्क कि कि शास्त्र कार की एक प्रकार की पति (कपू)। चिक्त वि: चि: स्वत-नेक्ता (सीत ४७) । चक्रियदेको चक्रिय (दुर २ ६१) चर≴ चव एक [कुम्यू] क्यूना, बोलना। चवर (१६४२)। कर्षेत्रमिक्तः (कुमा)। नङ चर्नत (वर्षि)।

यूत और एकर ग्रुष्ट (पूम ११ धम्म १९४) । करणाणुभोग 🛊 [करणानुयोग] संयम के मूल भीर एतर दुखों की व्याचना (निष् १४) । इसीस्टर्भ (इसीस) पारित को मसिन करनेताना ताबु, धिक्तियाधी साच (पद ९)। जय नियी किया को मुक्य माननेवासरा मत (भाषा) । सोह पून "सोड्ड] चारित का सावास्त कर्म-विशेष (कम्म १)। चरम वि चिरमी १ मन्त्रिय भन्त का पर्वत्तवर्ती (ठार ४० मन व ३३ वस्म ३ १५४ १६:१७)। २ धनन्तर बचर्ने मुक्ति पाचेवाला। १ किसवा विख्यान कर मन्तिम हो मह (ठा२ २)। बाळ प्र [काछ] मरत्रशमद (५वद y)। सस्रहि र्ष [ कास्त्रि मिलाम समूद्र स्वतंत्रुरमस्

चरमंत र् [चरमान्त] बन वे सन्तिम सब

चरय देवो चरग (मीम छाना १ १६)।

चरिया देवी चरिया = चरिका (चाव) ।

चरि पूंची [चरि] १ पट्टमों को चलते ही

बन्दा २ पाय, प्रमुधी की बाले की बीव

चरित्त गिरित्री १ चीळ धानस्य । २

क्वथहार (प्रावः) प्रासु ४ )। ३ स्वधाव

भरित्त न [मर्दित्र] मीवन-नमा, बीवनी

चरिशान [भारित] संबग विद्यंत इत

फिक्म (कार भाभ भामक)। कटपावै

िक्कप<sup>2</sup> संबम<del>श्का</del>न ना बरियाक्त सन्ब (र्भमा) । मोइ र्रुग [मोइ] क्नै-विकेच

इंदन का मानारक कर्म (क्य) । सोहाव्यक्त

[मोइनीय] यह दुर्वेख प्रवं(ठा प

)। विरिध्यं न [विचारित्र] ध्वरिक

द्यार पूं[स्पार] संबध का बहुशन

्रिय प्र[ार्य] भारत हे आर्थ

-- "नि (पश्चा १) ः

बम, माधक-वर्ग (पतिः प्रय

सपुत्र (बहुस २)।

बास (बुग १७)।

प्रकृति (दुमा)।

नहानी (सम्पत्त १२)।

**के प्रान्त-वर्ती (सम ६६)** ।

चय-पाउम्मासी चन प्रक [क्यु] मरना अन्तान्तर में बाता । चबद् (दे ४ २३०) । संझ- चविज्ञण (प्राक्त)। इस चावियवप (ठा ३ ३)। चव पू [क्यब] भएड मीत 'मलेता बपुण <वं (तच ३ १४)। चयचव पू [चयचव] 'वर-वर' मानान व्यक्तिविशेष (धीव २८१ मा) । चुक्रण न [च्ययस] १ मरल क्रमान्तर-प्राप्ति (सुर २ १३६ छ स ई ४)। २ पतन गिर जाना (बह १)। भावस्त्र वि [च्यपस्तु १ चेषक स्रांस्वर(पुर १२ १३ का आसू १ ३)। २ आहुल व्या कुस (भीप)। १ पूँ सबस्य का एक गुमा (पत्रम १६ ३६)। ब्ब्ह्स पूँ [ब्] प्रश्न-विशेष बोड़ा (बा १०)। व्यवस्य पुंचि बान्य विशेष प्रवस्ती में 'बाका' (पन १६४) । व्यवस की [प्रपत्स] तियुद्, निवती (बीव 1): चिम वि [बयुत] मृत जम्मान्तर-प्राप्त (दुमा२ २६)। चवित्र वि [क्षित] एक क्या हुमा (स्थि)। चवित्रा की चिविद्यी ननस्पति निरोप (पर्वा १७--पत्र ४११)। चविता हे थी [चपेटा] हमाचा, चपक चित्रा (है। १४६ हुमा)। चवेकी की चि रे रिलट कर-संपूट । २ संपूट, बन्द्र, दिल्ला (दे ६, ६) । चवण न दि ] वचनीय शोकालनाव (६ ३ %) 1 पवेता देवी पविद्या (प्राप्त) । धन्य सरु [ वर्ष ] वदाना (शीध ६४) । भव्य (शी) वेदी सम = वर्ष । बन्नांत (प्राप्त **(1)** अभ्यक्षित्र वि [दे] कालित क्लो से गौता हुया: 'चन्नक्रिया व चुम्नेस नासिया (धुपा YXX) I वस्त्रज म [वर्षण] धनामा (१ ७ ४२) । चम्त्राइ देखी पम्बागि (राज)। प्रकार } प्रं[कार्क] शस्तिक वृहस्पति प्रकार } का विष्य सोकार्याक (प्रवे

चठवानि वि [पार्वाकेम्] १ चवानेवासा । २ वृद्ध्यंबद्वारी (वन ६)। चक्रिया वि [वर्षित] चवाना हुमा (सुर १व १२६)। चस शक [चप्] चवता ग्रास्ताव वेता। नक्र चर्रात् (शी) (रंगा) । देश पसिर्द (शी) (रेमा)। चसग } र्रू [चयक] १ शक पीने का प्यासा चस्य 🕽 (चंश्रापार्च)। २ पान-पात्र प्याचा (मूर २ ११ पडम ११३१)। ३ पकि-विशेष (दे ६ १४४) । बहुंतिया की वि बुटनी बुटकीयए बोय-पुर्व्यहाँवियामेत्तपम्बवेक् (कास) । चहुटु बन्ह ≩ विपन्तमा विपटमा, समनाः पुनराती में 'चारतू" रि तुद तुद् सदन्ये शीलाइ चहुदूर बहा जिलें (धेवेग १६)। बहुद्ध (श्रूप्र २४६) । च्यद्वद्वाति [ क् ] १ नियन्त भीन (देव २ बका १०) 'मण-मगरी-पूल खीए पुहार्सवरे-विम बहुद्दों (स ७२० दी)।

बहुँद्धिय है हमा विनेति १४१ वेच ०२० दो हुम २७)। बहुँदि (वि) एक मनुष्य वाति (विने)। बाहु वि [सामिन्] १ त्याच करनेताता. क्रोमनेताता। २ दागी दान देनेताता, ज्यार (दुर १ २५०: ४ ११०)। ६ तिच्छेन, तिर्मीत, धंसनी (भाषा)। बाहुय वि [स्वाजित] क्रोमना हुमा (वर्गीव ०)। बाहुय वि [सामित] क्रोमना हुमा (वर्गीव वर्गा वर्गीवर्ग)। सम्बन्धिय (वर्गा ७ २१)। प्रकारिय

**बहुट } वि [वे] विश्वन हुमा सवा** 

पृष्टि बया वेस्तुण न जास्या सुचित्रेण । ताहे है नेरहमा (चया ११८, २४) । जातकोरी की [चार्यहाँ] गुल्य संमनली की (बाह २१) । जाईक पु [चासुचक] रास्टर-वंश का एक चर्मा, एक लहु-मंदि (चक्रम १ २६९) ।

चावकाछ न [चतुष्काछ] बार वनत बार समय (विसे ११७६)। चावछोय वि [चतुष्कोया] बार कोनवासा, कनुरस (बीव है)।

पाडगर्थेट ) वि [बतुर्धेष्ट] बार भंदाबाला, पाडगंड ) बार बएयमी थे पुछ (छाया ११ भग १ १३) मिर १)। पाडळाम व [बातुर्योम] बार महावर

पासक्ताम न [चातुर्याम] चार महातर सामुन्यमं—प्रदिसा स्त्य प्रस्तेव धीर प्रपरि यह ये चार सामुन्यतं (लाना १ ७ ठा ४ १)। चनतक्ताय न [चातकातं] बालयोनो सम

जाउट्याय न [जातुआत] बानवीनो तम कप्त इकाम्बी और नावनेतर (कर प्र १ ६, नहां)। जाउदिया देवो जाउदियय (उपनि १)।

चाशत्वा बेबो चाश्रिय (उत्तर्भ १)। चार रेशय पूं [चातुर्धिक] रोम विरोप चौथे-चौथे दिन पर होनेवासा व्यद, चौथिमा बुकार(बीच १)। चाश्रहिसमा की [चतुर्धशिका] विधि-विरोप

बनुर्देशी बीदग 'हीसपुरस्णनाग्दिना' (ज्या) । चाडदमी की [बहुदुर्दा] कार देवो (स्पा को है) ।

बाउदाह (बद) ति व [बतुईराम्] बौद्ध, १४ (विंग) । बाउदिस्तिं केशे बड़ दिस्ति (मद्दा बुता १६१) बाउद्यास ने बितुद्धान् | बतुर्वत वार स्वकार कर (बत्त २ २६ पुत्र २ २६)) बाउस्मास ) देश [बातुस्तिन] १ कीमाठा बाउस्मास | वैदे शागाङ्ग हैं। सेक्टर सार्टिक एक के बार सहैते (बतु १ १८ देश

१७)। १ बापाइ, कॉर्वक धीर छालुन

१वः)।

श्वावन्मासी की [चातुर्मासी] वार मास,
वीमावा आपाद से कार्तिक नार्तिक से
प्रमुख्य भीर प्रस्मुत से साथाइ एक के चार
महीने (प्रस्मु दे साथाइ एक के चार

चल्ल-जानोत्र का वर्षः 'पजरवातन्त्रेणक्योएए'

म्मासिम (वर्गे २) बाद) । भाउरंग देखो भडरंग (पदम २ ७६) ।

नावरीय देवो चतरीय (मयः शामा १ १---पन ३२)। चाडरींगळ व [चतुरङ्गीय] १ चारधेगॉ

भाउम्मासी भेर [बाहुर्मासी] रेको पाड

से सम्बन्ध रखनेकाचा । २ न्, "उत्तराज्यस्य व" सूत्र का एक ध्यायन (उत्त ४)। चाररंत केने पहरंत (स्व १) छ १ १। \* ( W ) 1

नाइरत पूर्[चातुरस्त] १ वक्क्सी राजा समाट (पर्हि१४) २ तः लग्त-गर्द्धप चौरी (स ७ )। भाउरंत न [भातूरन्त] भक्त-क्षेत्र व्यक्तवर्य

(वेहन देश देशहै) । चाठरंत न [चतुरस्त] चत्र, गीह्या (चेदव (\$XX) I

षाउरक वि [पातुरस्य] चरशर परिवृत। गोलीर व गिम्हीर वार बार परिख्य रिया हुमा ग्रे-दूव वैसे कठिएय शौधों का इत इसरी गीधी को लिखाना जाग किर क्लक सन्य गीमों को इस तरह बार बार परिश्रव निवा हुमा मो-दुश्व (बीद ३) । মাডভ বি [বি] বাৰদ বা 'আছি বা⊋≉

पिट्ट (इस ६ २ २२)। भाउछ 🛊 दि | पापन तरहर (दे ६ ः माना२ १ ३ ६७ क्य प २३१) मोर १४४ तुरा ६१६ स्वल ६ क्य)। चाडसम्म व दि रे पुरुष का शूबला—इजिन

पुरुव (तिषु १)। भाउमध्य देवी भाउमस (सम्मत्त १६२)। भाउवस १६ [चातुर्वरुर्य] १ बार बरहे-चाउन्पण्य विलों चार प्रशास्त्रकाः। १ र्नु साबु साम्बी भावक ग्रीट श्राविका का समूचन (टा १, २---१४ ६२१); 'चाउन्य र्जुस्त सम्युर्वस्तवं (१३५ ६ १२)। । न, <del>पाद्रा</del>ण चरित केरव सीर सूत्र वे चार मनुष्य-जाति (जन १६)। चार्शस्या हेना चाउरनेज (दी ७) । बारक्राञ्चन [बातुर्वेदा] १ बार बहार

री रिया—भाव म्यावरण साहित्य सीर

(महा)। पारस्साम मी [चतुरशाम] वार्षे वरफ के कपराधी है युक्त बर (पन १३३ टी)। चार्यत केवो चान = चय । चौर्वहा 🖈 चामुण्डा निवास-स्वात थेवे (हेर १७४)। स्वत्रवर्ष विस्तुकी म्ब्रहरेव रिज्य (कुमा) । चाग देवी चाव = धान (पंचन १)। चागि केटो चाइ (उप प्र १ १)। चाड वि [दे] मादावी क्यटी (देव u)।

चाबुर्वन [चाटु] १ प्रियमस्य । २ बुद्धायर

(दे १ ९७ प्राप्त) । चार वि चित्रों

कुरामधे (पर्याह १ २)। **चाबुध न [चाटुक]** इसर **जेवी: धू**मा) । भाजक र् भाजक्य र राजा क्लापुत का स्वमाय-प्रक्रिय मन्द्री (पुदा १४४) । २ एक मनुष्य-जाति (ध्विन) । याजकी 🛍 [बाजनयी] सिपि-विदेव (विदे ४६४ हो)। नाजिक केरी नाजक (यरू) । चायुर र्द्र [चायुर] सम्ब-विक्रेप विक्रको मीक्रम्स वे मारा ना (पराह १ ४) पिन)। वामर पूर्व विमरी वैरट, वान-ध्यन (ह १ ६७)। २ अन्य विशेष (विष)। गावि वि शिद्दिम् ] चामर बीबनेवाला नौकर। की शी (कवि) । श्रायण न विद्यावनी स्माति लक्कम का नोष (६क) । उस्तव पू **िश्रद्ध**ी नागर-शुक्तः पत्तका (भीरा)। बार वि बारी भागर वीक्लेशला (परम

चामरच्छ व [चामरध्य] नोम विकेश (गुण्य 1 (25 3 भागरा और कार देखों (धीर दनु भन १ चामीचर न [चामीचर] गुरर्ज, सोना (पाधः नुवा ७७। सामा १ ४)। चार्म्हराच र् [चार्मण्डराज] प्रमण्त का एक जीवुक्य वेश का राजा (दूस ४)। पामु हा देवी चाँउंडा (विने रि)। चाय क्षेत्री चय व धरः। का चार्यत चार्यत (नुगरे ३ रेवद १)। वर्त-प्रारतः। १ र् चीवे बाह्यसूर्णे वा एक ।

च्याय देखो च्याव (युपा १३ से १४ १६) पिय)। च्याम वे हियाग र घोषना, परिवान (प्रातृ चः-यंचव १)। २ वान (सुर १ ६**४**)। चायग ) र्षु [चादक] पक्षि-विशेष चार्यक

च्यायव <sup>1</sup> क्सी (स्यापाचाचे ६ ६ )। चार धक [चारम्] चछवा विचला। चारेड (बर्मीन १४३) । भार पंचित्र रिक्रीत नमना भावनाध्ये (महा क्य दू १२६/ ध्यक्त १४)। २ भ्रमल

परित्रमण (स १६) । १ वर-पूका बागुर (विषा १ %) यहां सवि)। ४ कारानाद कैक्डाना (प्रति)। १ तैकार, र्यवस्य (बीप)। ६ बन्हान बाचरत (बाच्यन ४६: नहा) । ७ व्योतिय-सेम मान्यत (स २ २) । चार दृद्धि १ क्ल-क्लिक पिमल दूर चिरौंबी का देव (देव २१ व्यक्त परस १६)। २ तल्बन-स्वान (१६६ २१)। ६ इच्**ब**, समिकाप (देवे २१ सर्वे दुग

**१११) : ४ त. पल-विरोध मेवा-विरोध** 

(परंख १६) । बक्रम पूर्व "क्रम] वेकी-वाचे की इच्छानुसार बान केवर खरीरना (मुपा ६११) । चारप केंद्रे चर≂पर्। चारत **दे (चारह) देवो चार (पीप**' सम्प १ १:पर्दा १ ३: इस ३६ टी)। पा<del>य</del> पू िपास्त्र] केलकाना का यध्यक्त (विपा रै ९—पत्र ६३)। पासमा द्व ["पासक] रैपसाधा का सम्बद्धा सेसर (का द ३३४) । भंड स<sup>ि</sup>साण्डी कैदी की किया करने का क्लकच्छा (दिया १६)। हिंद 🖠 [पिया] केरबाता का धम्बदा जेलर (वप प्र ३३७)।

**भारत पूं हि] श्रीन-प्रोत्तः प्रवेटनाद पौर** विशेष (दे ३ १) । चारज र् [चारज] १ बाकारा में बदन वरने नी राजि रखनेवाचे बैन बुनियो ही एक णार्वि (मीप मुर ३ १३, धनि ११)। र मनुष्य-वरित विदेश स्तुति वरनेवाली वाणि काट (बर ७६ टी) बामा) । ३ एक फैन दुनि-वस (का १)।

चारणिभा 🔻 [चारणिका] वरिएत-विशेष (क्रोप २१ टी)। चारसङ पु [चारसट] शूर दुश्य सङ्ग्या क्षेत्रिक (परहर २ १ व इस्र)। चारमंड दे [चारमट] सुनेच (संब १७१)। चारम रेको चारग (मुपा २ ७३ स १५)। चारबाय पूं वि] ग्रीच्म ऋतुका पत्रन (वे चारहड देवी चारसड (बस्म १२ ध मणि)। चारहडा जो [चारमटी] शीमेंड्ति शैनिक बृति (मुपा ४४१ ४४२ हे ४ ३६६) । श्वादासार न [नारासार] नैरकाना जेनकाना (सुर १६ १७) । चारि 🕸 [चारि] चाय परुवों के करे ही चीव वास सादि (सोव २६०)। चारि वि चिरिन् र प्रवृति करनेवला । (विसे २४३ दी वन बाना)ः २ जनमे बाला यमन शीम (भीप कम्पू)। चारिक वि चिरिती १ जिसको जिलामा यमाहो वाह्र (से २, २७)। २ विज्ञापित बताया हुमा (पर्ख १७--पत्र ४१७)। चारिअ 🖫 [भारिक] १ चर पूरव बासूस (परहर २३ पटम २६ ६६)३ 'चोन्सि बोरिवर्ति व होइ बमी परधारवामिति" (विशे २३७६)। १ वंदायत का मुख्या पूर्य श्युदाव का संदुषा (स ४ १)। चारित्त रेवो परित्त = चारित (बोव ६ <sub>सा</sub>। क्ष ६७७ दी) । चारित्ति देखो चरित्ति (कुफ १६४)। बारियम्य देशो चर = चर्। चारिया को [चया] १ बाबरण इवर-अवर गमन, जीविका । २ केट्टा (उस ११ वह 42; 4¥ 41) 1 बारी की [बारी] देवो ब्हारे = बारि (व ४ ७ घोष २१८टी)। चारु वि [पार] १ मुखर, शोकन प्रवर

(स्वा मीप)। २ पूँ छीमरे जिनकेन ना

प्रवस रिप्प (तम १४२)। ३ ग. प्रहरण

भारतम्य दु [चारविनक] १ वेधनीरहेव ।

२ वि उमे देश का निवामी (धीप- झंत)।

विरोप राम्न-विरोध (भीष १३ राम्) ।

की (पश (मीप) ।

चारणय पुं [चारुनक] उपर देखो (ग्रीप)। 🛍 "जिया (ग्रीप खाया १ १)। चारुर्याच्छ र् व [चारुवरिस्र] वैश-विशेष (पतम ६८ ६४)। चारुसेणा की [ चारुसेनी ] सन्दर्भिकेप (पिय)। चाल सक [चासम्] १ वताना हिलाना कॅपाना । २ विनास करना । चानेद (उव स ४७४ महा)। कर्म, थाविज्यक् (उप)। बक्त चालंत चासेमान (मुपा २२४° जीव ६) : कबर चासिध्यमाण (गावा १ १)। हेरू पासिचए (उवा) । बास्यन चिस्ति १ चनाना दिमाना (रंग्रा)। २ विचार (विसे १ ७)। । <del>बास्यान चित्रसन्</del> । रोका प्रस्त पूर्वपञ्च (बेह्य २७१)। ब्बाक्रमा की [बाजना] रांका पूर्वपक्ष बादोप (घणु बृह् १)। चार्क्षणया भी [चारुनिका] गीचे भेनी (उर १६४ थै) । भाजनी की [भाजनी] पाता कानते का पान चलनी वा क्रमनी (बादन)। चाछवास ५ वि । सिर का भूपश्च-विशेष (R R m) ( चालिय वि [चान्डित] क्नावा हुवा दिसाया हुमा 'पुण्डन'हर् नानियाए शिवसंकेयपदानाए' (मद्दा)। पालिर वि [चास्रविद्] १ चसलेवाचा। २ जसनेवाला 'चारपवराज्याहुवानिरश्वकिपात रिनेस पम्मेरा (पन्ना 🕶 )। थाधी भी [ परनारिंशस् ] नासीत (उना) । पाक्रीस क्षेत्र [ परमारिशत् ] पानीस ४ (भहापिण) की. सा (ति ४)। चालुक पुंची [चीलुक्य] १ चा<del>तु</del>श्य वंश में उपग्र।२ पूर्वपत्रका प्रसिद्ध राजा दुमारपान (दुमा) ।

चाय सक [चर्चे ] चवाना । इः भावसञ्ज

पाव र्रु [चाप] क्नुए शसु≉ (स्वप्न ११)।

पापस न [चापक्ष] चन्तवा भेचनवा (बांध

(उस १६ ६०)।

486)1

बाबद्व म [जामस्य] क्यर देशो (स १२६) । भाषासी की [चात्रासी] प्राम विरोप इस नाम का एक गाँव (मावस)। पानिय वि [पर्वित] भवामा हुमा (वर्मीव 44 (46) 1 चाबिय वि [क्यावित] मरवाया हुमा (वरह ₹ १)। व्यावेशी 🛍 [बापेटी] विद्या-विशेष विसरी बुसरे को समाचा मारने परबीमार मादमी का रोन चमा बाहा है (बब ५)। चामेसन्द्र देशो चाम ≂ चम् । चायोष्णय न [चापोझत] विमान-विरोप एक देव-विमान (सम ३६) । चास पूं [चाप] पश्चि-विरोध स्वर्त्त-वातक पपीहा सहनोरना (परह १ १ पर्या १७-णाया १ १३ कोम ≃४ मा उर १ १४)। जाम वं कि वाच इत-विचारित अमि रेखा क्टी (वे ६ १)। चाइ एक [बास्छ् ] १ चाहना, बाह्नता । २ अनेदा करता । १ याचना । चाहर, चाहसि (मनि लिंग)। नाहियों भी [नाहिनी] हेमानार्व की जाता कानाम (कूप्र २)। चाहिय वि[बास्कित] १ मान्छित समि सफ्त । २ अपेक्षित । ३ वाक्ति (मनि) । चाहुआ न १ (चाहुयान) १ एक प्रस्थित व्यन्त्रिय-वंश बीहान वंश । २ पूंची बीहान बेश में सरपम (मुपा ११६)। चि वेद्यो चिल् । कर्मे चिच्चह्, चिम्मह्, चित्रपति (के ४ २३६ मन)। चित्रं थं [एवं] तिबंगं को बतसानदासा मध्यमा 'मलामद्ध ते चिम्र कामिणीला' (है न १=४ पूर्वाया १६ ४६। ई.१)। ' विज व [इव] १---२ क्यमा बीर क्लोदा ना नुषक धच्यम (प्राप्त) । चिअ वि [चित्र ] १ इत्रहा निया हुमा (क्य) । २ व्याप्त (सूता २४१) । ३ पूछ

मासल (पर ८ ४ री)।

भिन्न [चित] इंटमॉर नाईसं(अपू

थिज वैको बिच = वित्त प्राप्न २६)।

१—रव १२) ।

चाउम्मासी स्मै [चातुर्मामी] वेको चाड स्मासिस्र (वर्गे २: याव) ।

चाउरीं। रेची चंडरींग (अन खाना १

चार्डागद्र विद्विद्वियी १ भारचेत्री

मूत्र नाएक ग्रम्थकन (बच४)।

से सम्बन्ध रचनेशामा । २ न 'उत्तराध्ययन'

चाउरंत केनो घडरंड (तन १) हा ६ १)

बाडरंग रेप्रो चडरंग (वडन २, ७१) ।

\$ 2 ex) 1 चाउरंत दूं [चातुरस्त] १ **चळल**ॉ छत मग्राट् (फाइट् १४) २ मः लग्न-जत्त्व चौधे (स ७६)। भाइरंश न [मातुरन्त] बक्त-क्षेत्र कास्त्रवर्ष (बेरव ३४ १४१) । बाडरंत न [बहुरस्त] यह पहिमा (बहुव (\$YY) I षाउरकः रि [पानुरस्य] चरशर गरेलगः। गोगीर न ["गांसीर] चार बार परिल्ल तिया हुमा पानूम जैसे कवित्रय शीम्री का हुद दूसरी मौधी को निकास जास किर क्ष्मरा क्ष्म्य गीकी की दन उदह कार बार परिगुष्त किया हुआ को-दुष्त्र (कीव ६) । भारत रि दि नारम वा 'तहेर नाज्ये रिण (रम १ २ २२)। बाह्य र् [रे] बारम छण्ड्य (रे १ : माना र १ ६ ६ ८ उप्रमु २३१ मीत १४४ मुत्त ६१६ १वल ६: बन्त)। चात्रक्तन (दे) पूरपंता पूलका—इतिव पुग्य (निष्कृ १)। षाप्रवास देगी याप्रवास (नावल १६२)। भारपस १ सि [पातुवर्ण्य] १ चार वर्ण-भाउत्पणम<sup>ि</sup>वाणी भार प्रशास्त्र<del>कालाः ३</del> र्पुधानुसारी भारकसीर धार्यकाला बदुत्तव (टा १ १---१४ ६२१)- 'बाउका रागान नमाप्रमेक्सन (एउन ६ १२)। l म, बाग्राण सर्वित मेरप सीर स्टब्स बार मनुष्य-वार्ति (मन १६) । भागविकाम रेगा भाजकोमा (तो e) । यारधात्रन [बानुदेश] १ बार बरार शे श्वि -- ग्वाब व्याहरण नाहित्व और वर्गनामः। २ पूँ भीवे बाह्मलीया एक 📗

धारम-उपयोग शा भगैः 'पाउरचाउन्नेजनसीएल्' (मक्त)। चारुस्साम्ब की [पसुरशामा] वार्षे तरक के कमरावर्षे के युक्त वर (पन १३१ टी)। पार्थत देवी पाय = नव । भाँउंडा की [भागवडा] स्वनाय-स्याद देवी (देश १७४)। काश्म प्रे "काग्रह] मझादेव दिन (कुमा)। भाग वैजी भाग ≔ स्माग (र्वपन १)। चागि देवो चाइ (उप प्रदेश)। चाड वि [वे] यायाची क्ष्मदी (वे वे व)। चाडु पून [चाटु] १ विकासन । १ सुरामक (दे१ ६७ मध्य)। धारवि विकारी बुरामधे (पर्व १ २) । चाबुध न [चाटुक] स्मर देखोः कुमा) । चाणचा पृचिष्णक्यो १ सना वनापुत का २, २)। स्मनाम-प्रक्रिक मन्द्री (पूदा १४४) । २ एक मनुष्य-वावि (व्यवि) । वाणकी थी [बाजक्या] सिवि-निधेष (विशे ४६४ हो) । भाषिक देवो भाजक (दाव) । चाण्र पू चाण्री गमा-विशेष विश्वके भीकृप्त में भारत का (बराह १ ४) रिम)। नामर पुन नामरी नेवट, वाल-ध्यनन (हे (बुवा ६११) । १ ६७) । २ काच-विशेष (विष्) । साहि नि [ मादिल् ] नामर बीयनेनाता नीकर। भी. यी (मीर) । श्रायण न**िद्धा**वस्ते स्मावि बलाव का बीच (इस)। अस्तव व [कात्र] भागर-धुन्द वताका (दील) s भार रि [भार] पानर वीमनेराता (प्रवस 1(2) शामरबद्ध न [शामरप्त] वीव विशेष (मुज्य १ (१६) १ चामरा स्में कार रेपो (गीपः वनुः भन १, # 380) 1 वक्) ह चामीमर व [चामारर] पुरली, सोना (पाय नुवा ७७३ शाया १ ४) । पानुबराय 🛊 [पानुष्डराज] दुनराज 🖭 यश भीतुस्य वंश सा राजा (बुद ४) । पामु हा रेगी चाँउंडा (रिना रि)। याय देवी अय = रार । यह आयेत, चार्णेय (बूगरे ३ १ वर्षर)। वृतिनए (स. १.) ।

चाय वेबी चाप (तुमा १३ ) ते **१**४ ११/ च्याय पूँ रियाग र धोइना, परिवाय (प्रापु ८ पंचन १)। २ बान (शुर १ ६४)। पायग रे पूर् [पातक] पश्चि-विधेव, बादक चायव <sup>5</sup> वजी (बक्त वाक रे ६, 🗷 )। चार बक [चारम] वरता विभागाः चारेड (बर्मीव १४३)। चार पू [चार] १ बति वमना 'पानचारेल' (ब्रह्म क्य दू १२६) रमज १३)। १ भ्रमज परिश्रमश्र (स ११)। ६ नर-पुका बाहुन (विशाह के सद्धा सवि) । प्रकासकार, **दैश्या**ला ( अति )। १ धंनार, धंनरस (बीर)। ६ मञ्जान, घाषयत्र (धारानि भग महा) । ७ ज्योतिब-क्षेत्र सारास (स चार पंदि १ कुल-विशेष पियल ग्रूप चिरों वीका पेड़ (देशे २१३ बालू परण १६) । २ शम्बन-स्वान (के व २१) । वै इच्छा, यमिकाय (दे ३ ५१ वर्षिः सुना **१११)। ४ स. वल-रिरोप देश-विदेय** (पएए १९) । बक्रव ट्रं [फ्रिय] बेक्ने-शाबे की इच्छानुसार दान केवर वरीका चारप केनो वर≔वर् । चारत रे [चारक] रेखी चार (बीगः छाना १ १ वस्तु १ के इस ३१७ डी) । पाछ र्षु ["पास्र] जेलबाना वा बध्वस (रिपा र ६—पव ६३)। पाळन 🖠 [पासक] रैक्बाना का मध्यता अन्तर (ता इ.१९७) <sup>‡</sup> ैश्रंड न ["माण्ड] कैशे को शिया करने भाजाकरल (भिषा १ ६)। हिंद 🖠 ["थिप] केक्सला का सम्बन्ध से पर (इन चारव पू 👣 पंत्रिकारेशक, पांत्रेरवार, बीर तिकेष (चे ३ १) । चारव ई [चारम] । यात्रात में बदन वरते भी शक्ति एक्षत्रशने क्षेत्र **बु**तियों नी एक वाधि (बीप नूर ३ १४, सर्थि १४) / रै वनुष्य-माति स्थिप स्तुति वासेराणी माति चळ (बाध्६ टी-सला)। १ए**०** दैन

विकादि दि दिशोक योडा सत्य। २ न शत् ग्रीक (पत्र)। विकास वि चित्रकारी विकास रिनाम (प्रमुष्ठ १ १। सूचा ११)। २ निविष्ठ चना वर्ग वार्थ विकास तप वर्ड (सर १४ २ ६)। ३ दर्मेच दृश्य से घटने योग्य (परात १ १)। जिहा की हि १ बोही बीव । २ हनकी मेव-बाँग, सुस्य घीटा (रे ६, २१)। चिकार पू [चीरमर] चिक्तपट, विवाद (हस) । विकार देवो विकय (क्सा)। विकलाभय वि वि । संद्रिप्य सहत करते-वाना (पट)। श्विक्तात पृथि कर्मन पंक कीच (दे दे ११: हे हे १४२ परह १ १)। विकासक्ष म [जिक्सक्क] काठियागढ़ का एक ननर (डी २)। विक्तिक दि देवो विक्तक (गा ६० भितिष्ठ । १२४ ४४६। १८४ मीर)। चितिचिताय सर्वा चिक्कचित्राय ] चक-चना करना चमकना। वह-चिरिधिगायंत (सूर २ =६)। विशियमा वेदो विषयका (विशे १ )। विशिवद्रण म [विकिसन] विशिक्षा इलान (उस ११६ ही)। चितिरम्ब देवो चित्रदक्कम (स २७ खामा ४--पत्र १११)। चिगिरका मी [चिनिस्सा] रवा प्रतीकार, इसाव (म १७) । संदिया की विशेषता रे विकित्सा-शाम वैश्वक-शाम (स १७)। चित्र नि [दे] १ निपये गासिकानाता बैठी हुई गाकनासा (दे ६ ६)। २ व. एनश संमोग रहि (वे १ १ )। चित्र वि स्थान्य द्वीको वीस्य, परित्रक्तीयः 'बरकम्मार्ड पि विवार्ड (सुपा ४१८) । चिवर वि कि विपटी गामिकावाला (वे 1. (9 .) विवादेशो चय = स्वन् । चिवि प् [विवि] चीकार, विस्ताहर, मर्गकर मानाम' निन्नीसर--- (निना १ २---पत्र २३)।

चिक्क प्रे कि हताराम सर्गन (दे ३ १ )। जिल्ह्स जिल्ह्स जिल्हामी नोसन (हे २ चिट य कि बलना प्रतिस्थ (पाना १ ¥ 9 3) 1 चिट यह स्था बैठना स्थित करना। चिद्रव (के १ १६)। प्रथम, चिद्रियु (धाना)। बढ़- चिटंत थिटंगाज (कुमा मन)। संक चिहित्र, चिहित्रण चिहित्र, बिद्धिता, विदिशाण (कम है४ १६) राज पि)। हेक् चिटिचप (क्य)। इ चिटिक्स, चिद्रिश्रम्ब (एप २६४ टी चिट्ट रेबी चेट्ट । वह चित्रमाण (पंचा १)। बिटइस वि रिवास् विजेगाना, ठहरनेवाला (श्रय ११ ११ वसा १)। चिट्रण न स्थित । भका चुना (पर २)। बिटण न बिएनी बेट्ट प्रकन (फ्र २२)। चिटणा को स्वानी स्विति बैठना सवस्वल (ex 1): चित्र देवी चेद्रा (सूर ४ २४६ प्राप्त 131) 1 चिद्रिय वि चिष्टित रे मिसने प्रशासी ही अक्क (पराहर के स्वाया ११)। २ व बेह्य प्रमल (पण्डा २ ४)। निद्यि रियती १ अवस्थित च्या न्या। २ ग. धवस्यान, स्विटि (चंद २ )। चिकिम पु [चिटिक] पश्चि-विशेष (पर्यु 1 (1 9 चिण तक चिरी १ इक्ट्रा करना २ दूल वनैयह तोइकर इकट्टा करना। विकास हि ४ २६=)। मुका विक्षियु (सन्)। अपि विविश्वहर (हे ४ २४६) । कर्ने, विरिज्ञाह । (१४ २४२) । प्रेष्ठ विजिज्ञण चिणेक्रण (98)1 चिण देशो चल (मा १०)। बिण देवी बिस्त (प्राप्त २६)। चिषिक्ष वि [चित्र] एकट्टा निया ह्या (शुपा ६२६ पूमा) । चिभोट्टी की दि] प्रवा श्रृंचची शास रती पुनराती में 'चणोठी' (दे । १२)।

विष्ण वि विश्वे । बावरित समुद्धित

रे निहित इत (बत १२) ।

अप्रक्रो । चित्त सक [चित्रय ] चित्र बनाना तसवीर थीयना । वितेह (महा) । क्यक्र थित्रिजंत (9yf PPF) विश्व न विश्वी १ मन सन्त करछ द्वरम (ठा४ र प्राप्त ११ ११४)। २ जान वितना (बाका) । ३ इक्रि मति (सव ४)। ४ धनियान आराम (भाषा) । १ उनमोग क्यान (क्रल) । प्रणुवि किही दिस का जानकार (का प १७६)। निवाह वि िनपादिन । शनवाय के सनसार बरवने-बला (बाबा)। संत वि वित् वित्री स्त्रीय बस्य (सम १६, माचा) । चित्त केही पहुन्त = चैत्र (रैमाः वे २ कथ)। चित्र व चित्री शब्द धलोक्य दश्वीर (सुर १ वरः स्वयत १६१)। २ शासमें विस्तय (उठ १६)। ३ काप्त-विदेश (प्रत श.)। ४ वि विशवस्य विचित्र (गा६१२ प्राप्त ४२)। इ. सलेक प्रकार का विशिव नानाविक (ठा १)। ६ सञ्चत सावार्य-बतक (विपा १ ६३ कम्प) । ७ कमरा चित्रकारा (ए।सा १ ६)। वर्ष एक चीलमाल (ठा ४ १--पत्र १६७)। E वर्षत-विशेष (पराइ १ १---पण ६४)। १ चित्रक भीता स्वापद विशेष (सामा १ १--पन ६१)। ११ नवन-विशेष विश नजब 'हरने नित्ती य तहा वह बुद्धिकदाई भग्णस्त (सम १७)। उत्त पू [शाम] भक्त क्षेत्र के एक मानी जिमरेन (सम ११४)। कथाना को विक्तकों केने-विरोद, एक विष्युत्रुमारी देवी (ठा ४ १)। कुम्स न [कर्मन् ] धारेक्य, छन् तसवीर (या ६१२)। इर केवी गर (म्रणु)। इन्ह वि विका नाना प्रकार की क्याएँ काने-शाचा (सत्त ६)। कुछ पुंचिती १ शीवानकी के बतार किनारे पर विका एक वजरकार-वर्षेत (में ४)। २ वर्षेत<del>-विदेश</del> (पठम ६६ ६)। ६ न ननर-विरोध जो बाजनम मेबाइ में 'चित्तीइ' नाम से प्रसिक्त (क्य १६) १२ वर्षीहत, धाहत (क्य ११) । है (प्रस्तु १३) । ४ विचार-विशेष (स्त्र २ ४)। क्लासं [प्रसा] <del>बाव विशे</del>त

चिकावि [के] १ स्तोक थोड़ा सका। २ म कुन्, चींक (यर्)। विकास नि [चित्रकण] विकास रिताम (पराहर १३ मुपा ११)। २ निवित्र जना वै पार्व जिल्लाखं तए कडी (गुर १४ २ ६)। ६ दुर्मेख दुःख से धूळने योग्य (परह १ १)। चिक्स की [दे] १ योदी चीव । २ हमकी नेव-बृष्टि, सूक्त कीटा (दे १ २१)। चित्रार पू [चीरसर] चिलास्ट, चिनाइ (ছড়) ৷ चिकिय देवी चिक्य (दुमा)। चिक्साश्रम नि [दे] सम्बद्ध सहत करले-वासा (पड)। जिस्त्यक्ष पूर्वि कर्मम पंक कीय (वे वे ११: हे ६ १४२: पएड् १ १) । चिक्सहय न [चिक्सहरू] काठियाबाह का एक नवर (वी २)। विक्तित्व [क्] क्वो विक्तव (गा ६७ विक्तव | ६२४ ४४६। ६८४ मीर्ग)। विक्रिय चितिचिताय कर [ चिक्रचिकाय् ] चक-चकार करना चमकना। वह-चिगिचिगायंत (सूर २ =६)। चितिरक्रम देखी चित्रच्छम (विवे १ )। श्विमिषद्भण न [चिकिस्सन] चिकिता इताम (सम १६६ दी) । चितिकहम देवो चित्रकाम (छ २७ खामा ६—पत्र १११)। जिगियम् के [चिकिस्स] दवा प्रतीकार, इलाम (स १७) । संहिया भी "संहिता] षिकित्श-राज वैद्यक-राज (ध १७) । चित्र मि वि र चिपयी गासिकामामा बैठी हुई नाक्याता (दे ६ ६)। २ मः प्राश संमोग एवं (दे ६ १)। विवा वि [स्यास्य] कोइने गौरथ, परिहरक्षीयः 'बरकम्माई पि विवाह (सुपा ४३६)। चिक्र वि [वे] चिपटी नासिकानाता (वे 1 (3 9 विशायो भय = त्यव् । चिवि प्र [चिवि] चीत्कार, विस्ताहर,

मर्गकर धानाम "विचीसर--- (निपा १ २---

पद २३)।

चित्रि र् दि ह्वासन मनि (वे वे १)। चिट्ट स दि सम्यन्त सन्तिस्य (साचा १ ¥ 2 9)1 चिट्र प्रक [स्वा] बैठना स्विति करना। बिहुद् (हे १ १६)। भूका, विहितु(बाबा)। वक्र चिट्टंस चिट्टेसाळ (कुमा मग)। संक्र चिद्धितं, चिद्धिताण, चिद्धिण, चिद्वित्ता, चिद्वित्ताण (कम्प है ४ १६ राजः पि) । हेक चिद्धित्तप (क्य) । इ चिट्टणिख, चिट्टिमस्य (सप २६४ टी) भग)। चिट्ठ केको चेहा। वड्ड चिट्ठमाण (पैचार)। **चिट्रब्र**स् वि रिवास् विनेतास **व्ह**रनेवासा (सप ११ ११: पता ३)। चिहुण न [स्थान] सदा ख्ना (पन २)। चिट्रण म चिएन] चेटा प्रवन्त (श्रू २२)। चिट्रणा की [स्थान] स्थिति बैठना धपस्यान (बृह ६) । चिद्वा देखो चेद्वा (तूर ४ २४% मासू १२४) । चिद्रिय विचिष्टित रिजलने प्रशासी हो मह(प्रखार १ लाग ११)। २ न नेष्टा, प्रयस्त (पराह २ ४)। निष्ट्रय वि [रिवत] १ धनस्वित च्हा हुया। २ त. प्रवस्थात स्थिति (वेद २ )। चिकिय पू चिटिकी पक्षि पिरोप (परहा 1 (1 3 चिण सक[चि] १ इक्ट्राकरला २ कुल वनैयह वोक्कर स्थट्टा करना। विखह (हे ४ २३०)। भूका, विश्विषु (शव)। श्रवि विशिद्धि (द्वे ४ २४३) । कर्गे, विशिज्ञह (६४ १४२)। सङ्घ चिजित्रज चिजेत्रज (पर्)। चिण वेदो चण (शा १०)। विश्व देखो चित्त (प्राक्त २६)। चिवित्र वि [चिव] इक्ट्रा किना ह्या (सुपा ३२३: कुमा)। चिष्पोद्गी की [वे] प्रवा ईंचनी तात रखी पुनराती में 'नएगेडी' (के क् १२)। विष्ण वि [चीर्ज] १ प्रावरित प्रमुहित (क्त १६) । २ मंग्रेड्स यास्त (उत्त ६१) । व विविद्य इत्त (क्त १व)।

चिल्हन [चित्रह्व] निरामी नामन (हे ८ খু ব্যৱ)। चित्त सक [चित्रय्] चित्र बनाना तसवीर बॉनना । नितेष (महा) । क्यक विचित्रांत (छप पू ६४१)। चित्र म चित्र र मन सन्तःकरण इसम (ठा४ १ प्रामु ११ १११)। २ जान नेतना (याचा) । ३ बुद्धि, मित (प्रव ४) । ४ वरियाम वास्त्र (बाचा) । १ उपयोग क्याल (बलू)। ज्युवि ["इट] दिस का बानकार (उन यु १७६)। "नियाइ वि [<sup>\*</sup>मिपाविम्] प्रमिश्राय के सनुसार कर<del>ाने</del> वाना (धाषा)। "सेत नि [ वत् ] धवीव बस्तु (सम ३१, मत्त्रा) । चित्त **देवो चइत्त = चै**न (रैस्ट वें २ कस्त)। चित्त [चित्र] १ अप्ति बलोब्स सस्वीर (पुर १ व ६ स्वप्त १३१)। २ शासकी विस्पय (उत्त १६) । ६ काह-किरोप (सनू श्री श्री विलयस्य विकास (गा६१२) प्राप्तु ४२) । ५ धनेक प्रकारका विकित नानाविक (ठा १)। ३ माञ्चतः मान्यर्थ-क्लक (विपा १ ३३ कम्म)। ७ क्वारा चित्रकार (खाया १ स)। मध्री एक नीतपान (ठा ४ १--पत्र १६७)। ह पर्वत-विशेष (मर्ग्यू १ १---पत्र १४) । १ विषक कीता स्थापव विशेष (ग्रामा १ १---पत्र ६४) । ११ मधन-विशेष चित्रा नसत्र 'हरनो किसो यसहा इस दुविकराई नारगस्तं (सम १७)। "सन्त पूं ["गुप्त] मरत येन के एक मानी बिनदेन (सम ११४)। कपागा भी ["कनफा] देशी-विरोध एक विष्कुमाधि वेवी (ठा४ १)। अस्मान िकर्मन् । प्रात्तेक्य ऋषि छछनीर(बा ६१२)। कर केवी गर (क्यू)। कह वि विका नाना प्रकार की क्याएँ कहते-वाता (बत्त १)। "कूड पूं["कुट] १ बीवानकी के अत्तर किनारे पर स्कित एक बतास्कार-पर्वेश (बं ४)। २ पर्वेश-विशेष (पछम १६ १) । ६ न मगर-विदीय जी धानक्य मेगड़ में 'वित्तीड़' गाम से प्रशिक्ष है (रमण १४) ३ ४ किहर-विशेष (हा २. ६)। क्लायको [ोग्नरा] <del>सन्दरि</del>देव (प्रति २)। गर पं विश्वरी विश्वति चित्रेष (सर१ १४) सप्तार को। "गत्ता की "गुप्ता १ देवी-विदेष सोग नायक सीक्पल की एक बाइ-व्यक्तियी (ठा ४ १) । २ ध्रम्या रचक परेत पर वसनेवासी ण्ड दिल्हमारी देवी-रिशेप (ठा व) । पकला प्री पक्षी १ केल-देव नामक बना का एक सोकपास देव-विशेष (ठा४ १)। २ सुद्र बन्तु-किरोप चनुरिन्द्रिय कीट-विरोप (जीव १)। फस. फस्टा फस्टा क्रांप न क्रिक्स दसकीरवाला तक्ता (महा भव १६) पि १११)। "मिचि भी "मिचि १ कि नासी भीत । २ भी भी तस्वीर (बच )। बर देवो गर (लम्पार ) । रस दू िरस्री भीतम केशंगती कश्लुलों की एक मार्दि (सम १७ पउम १३ १२२)। सिवा की जिला किय-विशेष (बनि ११)। संमूद्य न [संभूतीय] विक भीर बंसून नामक नाएशल-विशेष के बूलाना वाला 'वस्तरम्यकात्व' का एक स्थ्यका (अस (२)। समा 🛍 सिमाी उस्तीकाला पृष्ट् (कावा १ =) । साद्धा की विशासनी <del>विक्य</del> का दिवा देवरी :

বিশ্বনা বুঁ [বিদ্যান্ধ] বুল বৈনাৰ্কী কৰা কুলী ধাঁ বুল বাবি বেছ (৮)) বিশ্বনা কৈটি বিশ্ব আছিল (বুল বু ই )। বিশ্বনাৰুদে কৈটা বিশ্বনাৰ্কী (কাজ (দ)। বিশ্বনাৰুদে কৈটা বিশ্বনাৰ্কী (কাজি বুল বিদ্যালয়) বিশ্বনাৰ বিশ্বনাৰ বিশ্বনাৰ (কাজি বুল)। বিশ্বনাৰ বিশ্বনাৰ (বিশ্বনাৰ বুল)।

चित्रण ग[चित्रण] चित्र-कर्म (वर्मीय १४)। चित्रदाउ पुंचि] मञ्ज-४२वः नकपुतः (वै ् १ १९)।

चित्रपत्रयः द्रं [चित्रपत्रक] च्युप्तियः चीव वी एक वार्ष्ठ (वत्त ३६ १४१)। चित्रपरिक्तेय वि हि नहः चीवः (च्यः

७ १) । चित्तय देवी चित्त = चित्र (ग्रम) । चित्तयस्था स्री [चित्रकस्था] सली-विकेप

(इम्मीर २)। चित्रक्ष वि [दि] १ मध्यकः विमृत्तिः।

२ रमग्रीक, गुन्दर (दे ६ ४)। विभाव वि [विभन्न] १ विश्वत, कवरा जिल्लाम्य (पत्यः) । २० विषयी पशुर्वियोग इतिष्ठ के बाकारणाला शिक्षा पशुर्वितेष (बीव १ मण्डा ११) ।

चित्रक्षि पुणी [चित्रक्षित्र] संप की एक भाषि (पएए १)। चित्रक्षित्र वि[चित्रक्षित्र चित्रित] विव

पुक्त किया हुया 'पदय क्लिय रिखर्डे रुड्डी पेहाईह विक्तिमों' (बा २ ८)। विक्तिविक्रम वि [ब] परिकीपित (बड)।

चित्रतीया औ [चित्रवीया] वाच-विदेव (सर्व ४६)। चित्राओ [चित्रा] १ नजव-विदेश (नम २)।

र देवी विशेष एक विद्युष्ट्रनाये देवी (ठा ४१)। देशीं तर के एक सीवपान दी को देवी-विशेष (ठा ४ — पत्र २ ४)।

४ ग्रीपपि-सिरोत्तुर १ २२३: वर्स्ट १)। चिकापिक्षस्य १ पुरि] भंनती रातु-सिरोर चिकाचेक्षस्य १ (याचा २१ १ १)। चिकाचक्कि सी [चित्रपटी] वस्त्रिकेर खेट

चित्तावडी सी [चित्रपटी] वस-रिटेप सीट (त्रुटीवार) बारि वपड़ा 'जबिट्टा विद्या-बाहिमसुरवासि विस्थावहै वयसथा से (स ७३):

विचि वृं [विजिन्] निजरार, क्वेप (क्रम १ २३)।

चिचित्र वि [चित्रित] चिन्दशुद्ध रिया ह्रवा (बीत कमा वर १६१ टी दे १ ७४) । चिचित्रा की [चित्रिता] की-सीता, पापर

फिरोप की पास (पन्नात ११)। चिक्तों केवी चेत्री (पुजा १ ७)।

चित्ती की चित्री केन अस की पूर्शिया (१%)।

चिद्रचिम ) वि वि] निर्शालिक, निर्मालिक चिद्राचिम ) (वे वे देव प्रस्त स्त्रीत)।

विका केवी विकास (पुरा ४ तरात वर्षि)। विकास सक्त [वि] १ वृष्टमा । २ वरामा । कर्म वि (१ वि)-विकासीत वे तरिसं वैद्युचि सोसाइ बताईका (वे १, १६ दी)। सेक्व विदिस्ता

(बार २) । विकास पूर्व [के] यूटी हुई काम प्रवसाठी में विको (क्य २, ६ वि)।

विध्यक्ष केवी विविद्य (वर्गीय २७) । विध्यम केवी विध्यम (वस २:३ हि)। चिरिएम वुं [व] नवुंबर-विशेष कम ॥ समय में सबूरे के मर्बन कर जित्रा संबर्धन बना दिया यहा हो बहु (पन १ ६ दी)।

विधिषद्वय हूं [वे] यस-विधेष (रहा ६)। विश्वपुत्र न [विश्वपुत्र] होठ के नीवे ना यर यन ठोडी (दुमा)।

चिरसह न [विधिन] बीच नहरी, कन विशेष दुवसी में भीगा (दे ६ १४८)। चिरसहिया की [विधिनिम] रे गर्छ-विशेष नकती का साम्र । २ मन्य गैरा वर्षि (तीन १)।

चिक्सिड केवो चिक्सिड (तुरा ६६ ) नाय)। चिमिट्ट) वि [चिक्टि] चित्रस, नैश हुच्य, चिमिट ) वता हुमा (स्तक) (तुरस १ ६५ वि २ ७- २५८)।

चिमिज वि [वे] रोमग्र ऐमाझ्य पुनितः यहद दि व ११ वर )।

विया केवी चड्डम = बैक्ट ' की महत्त नक्स विवादीवार्डिड्डिको नवरे' (सन्तत ११६) चियाका } की चिया ] मुद्दें की कुँको के चियाका | किए चुन्ने हुई सक्तिकी ना वेर (पराह १ ६---पत्र ४१) नुसा ६१व' त

चित्रच देवी अस (स्म २, १ १ वय निवार)।

चित्रक वि [वे] १ शक्तिय सम्बद्ध (में १ १)। श्रीत्रकर, राज-मनक (बीप):१ श्रीत त्रीव्:४ समिति ता सक्तव (में ६ १—पन १४७):

चित्रया देखो चित्रया (पटन ६२ २६)। चित्रया ३ देखो चाय = ज्याम (ध्रा ६,१) चित्रया ३ धम १६)।

चिर व [चिर] १ धेर्च का बहु व वह (क्टन १ चा १४७)। २ विकास थेर (क्टन १ चा १४७)। २ विकास थेर विकास व्यक्तिमा (चा ४५) का कार कर कर की (बाब १३)। बारको हैं किए हैं (बाब १३)। बारको हैं किए हैं (क्टा १३)। ब्रोचिक का ठक कोलका। (व १४७)। ब्रीचिक हैं प्रेमिक के ठक कोलका। (व १४७)। ब्रीचिक हैं प्रेमिक हैं

"हुन, हिन्म दिन्म वि [स्वितिक]

बीमें कास (भाषा)।

सम्बाधानुष्यवासा दीवें कल तक रहनेवासा

(मन सूच १ र, १)ः 'एयाई कासाई

पुरुषि वाले निरंतरं तस्य विरद्धियें (सुध

१ ४,२)। एक दे चित्री वहकात

चिर प्रकृष्णिरय] १ विलस्य करना। २

बानस करना । जिस्सिर (शै) (पि ४६ )।

बिरं य विरम् देश का तक धनेक

बाय तक (स्वप्त २६) भी ४१)। तण

वि <sup>8</sup>तन पूराना बहुत कास का (महा)।

चिर्राचय वि चिर्राचित्र चिरकाम से उप-

कित-- इक्टा किया हमा या वढ़ा हमा (पंच R. 254) i चिरडी की दि] वर्छ-माना सम्राज्यकी भिर्दार्डीः प्रवासंता सीमा बोएडि योरवस्म-क्रिया' (दे १ ६१) । चिरद्विह दि देखो चिरिद्विहरू (गम)। चिरमास पर पित + पास्य ] परिपालम करना । विरमासद (प्राक्त ७१) । चिरवा भी दि ] कूथ-म्हेनकी (६ ६ ११)। विरस्म व [चिरस्य] बहुत काल तक (उत्तर १७६। हुमा) । चिराञ्ज देखो चिर=विरम् । विरमद (स १२१)। नियम्रसि (मै६२)। सनि नियमस्सै (गा २ )। वह चिराक्षमाण (गार-मानदी २७)। **विराह्य वि [विरादिक]** पूराना प्राचीन (सामा १ १ मीप)। चिरा य वि चिरादीती पूराना प्राचीन (विपार १)। चिराउम चिरास निरक्त के समे समय से (द्वाप १६७)। बिराजय (मप) वि [चिरनान] पूर्यतन पुराना, प्राचीन (कवि)। चिराइण वि[चिरन्तन] क्रमर देखो (दृह ६)। थिरात्र यक [ ापरय् ] १ विसम्ब करमा । २ बालम घरना । वे शक्त विसम्ब कराना रोक रकता विरावद (धर्षि) । विरावेह (काल) 'ना छे चियवेदि' (बडल ३ १२६)। विराधिय वि [चिराधित] १ जिल्ले निरुध्य शिया हो यह । २ विल्यामित रोजा गया । ६ न विनाम हैरी 'इस्तिमी श्रीतास कि मन विरापियं सामि। (परम १ ४,१ १)।।

चिरिंचिरा सी वि विश्ववारा, वृष्टि वि व ₹**₹)** 1 चिरिक्का की दि र पानी भएने का वर्ग माजन मराक।२ घरत पृद्धिः १ प्रायः कास सुबद्ध (वे ३ २१)। भिरिनिया [के] वेश्री भिरिभिया (६ व 14)1 चिरिशी देवो चिरशी (या १६१ य) । चिरिक्कित विवेशिक विशेषि । चिरिहिट्टी की वि देखा पुगरी नाश रती (देव १२)। चिकाल व [फिरात] १ धनावँ फेर-निरोप। २ किरात देश में राष्ट्रीकारी मोन्य-जाति जिल्ला पुलिब (हे १ १ क ६, २१४ ' पराह १ १) धीर कुमा) । ३ वन सार्ववाह (ब्यारापी) का एक दास-जीवर (लाया ११ a)। विश्वाह्या की [कियशिका] कियत देश की पर्नेनामी की किरायिन (गाया १ १)। विख्या और किएती अपर केले (sec)। पुंच पूं ["पुत्र] एक वासी-पुत्र सीर कैन महर्पि (पंक्रि स्त्रामा १ १०) । **चिळाद वेको चिसाञ (शकु १२)** । चिक्किचिकिमा की वि] वास बृष्टि (यह )। चिखिचिकिय वि [व] भीना वा भीगा हुया माजित यीमा (तंदू १८)। क्षिपित । कि चि न पार्र गीला (पर्य विकिष्ण १ १-- पत्र ८३ दे १ चिक्किकी १२)। चितिण हि] वेबो चिक्रीण 'बहायसंजनीम य चिकिए सेह्म्महासम्बं (दीय १६४) । चिक्रिमिणी क्ये वि विश्वतिका, परशा चिक्रिमिक्षिगा | भाष्यायम्पट (धोष भा चिछिमिषिया गुष २, २ ४ ४४ कस विश्विमसी मीप ७०३ ६ )। चिद्धीण न चि यगुचि मैना मस-भूत 'समिति विभीए) मस्त्रिवाची वरणुर्वदर्श मोसं (कार ११ टी)। भिद्धर्थि देश वान बचा सब्दा (६३ १)। २ जेसा शिष्य (ग्रावम)। चिविद्या थी [चिदिन] क्षत्र हम्य-विशेष चित्र ग्रं [चित्र] १ वृत्त-विदेश (एव)। २ (\$ %, wt) 1 व पूरा विशेष । चिनित्र वेली चिनित्र (पुर १६ १८१)।

'पूर्व कुर्णाति देवा अंचरणकुम्मेम् जिल्डवरिदाले। चह पूल विक्रश्लेषुं, नरेल पूरा विरक्ष्यमा ॥ (पत्रम ६६ १९)। चिक्क विदेशियुर्गसूप धान (प्रकार क)। चिक्का न दि देशेध्यमान चमस्या भंड क्षोब्रगुप्पगारएडि केहि केहिनि धर्वगक्तिय-पत्तनेहरामएड्डि चिहाएड्डि (प्रति २८। धीर)। चिष्ठम वि] केवो चिद्रिय (पर्राह १ ४---पच ७१ टी)। चिह्नड विं] देशो चिह्नछ (वे) (माचा २. 3 8)1 चिद्यमा की चिद्यमा। एक बती की प्रवा बैश्चिक की परनी (पडि)। चिक्रम न [रे] पराच्यु, सराव प्रांस (पराह १ १ टी-पत्र २६)। चिक्क प्रे चिस्तको १ मनार्य देश विशेष । २ वस देश का निवासी (इक) । चित्रक पूंची [वे] १ मानव पशु-विदेव चीता (पराह १ १---पत्र ७ स्तामा ११---पच ६४)। भी किया (पएए ११)। न कविशाला बामाराज स्रोटा समाव साहि (खाया १ १-पथ ६६) । ३ देशीप्यमानः नमकता (खाना १ १६--- १४ २११)। थिहा भी [वे] नीन पति-विशेष राष्ट्रीमेका (दे६ दं संस्पाध)। चिद्धिय वि दि र भोन यासक (लाया १ t) : २ वेशीप्यमान (ग्रामा १ १ औप (क्प्प) । चितिरे १ दि नतक, मन्दर, शुप्र अनु शिशेष (वे ६ ११) । चिस्सूर न [वे] मुक्त एक प्रकार की मोडी शक्ती जिल्ले जानत साथि सम्र कुरे बार्डे ¥(₹ ₹ ₹\$) ı **थिस्ट्य पूं [व] चर-मार्ग, परिये की तशीर,** गुजराती में 'बीलो' (नुपा २० )। चिषिष्टुं ) वि [चिषिट्] विश्व वेद्रा या चिवित्र ) चैता हुया (ताक) "विविद्यामा" (वि २४वा पडम १७ १२। गढा) ।

१पट	पाइमसहभद्यण्यवो	1987-24
चिट्टर पुं [चिद्धर] केश बाब (पामा सुरा	करेज्या (पुषा ४०४) । २ पुत्र कीट-विरोप	चुंचुकि दं हि । चुंग्ड गाँव। २ क्रान
२वरे)।	भविष्ठर(कुमादेश २६)।	पसर, एक हान का संपुद्धकार (वे १-२१)।
्वी ३ केवो चेद्छ (३:११११ <b>। धार्व</b>	चीवट्टी थी [वे] सची बाता राज-निरोत	चुंचु क्रिज वि [वे] १ सववर्तता निर्मा।
कीश ) १७/१३)।	(R + (v))	२ त सुच्छा, साक्ष्य बस्यस्या (हे १२१)।
भीक्ष न [भिता] दुर्वे को कृष्णि के विष् कृती हुई क्लिया गा वैरु भीष बेहुस्त व	बीवर न [बीवर] बड़, संन्याधिमी वा मिश्रुपी	चुंचुक्कियूर वृं किं] अनुक इस्स, परर (रे
धद्विमारं समर्थे बमुक्तिस्थं (पा १ ४)।	कै पहचने का कपका (नुस्य १४८   ठाँ) भूग	7 (x):
नीइ रेक्षी चेंद्रश (गुर १, ७१)।	५,२) । पीहाबी थी [के] चौत्कार, विस्लाहट, गुवार,	चुंब्र नि [दे] परिशोधिक पूकामा ह्रामा (दे
भीड वि वि] नामा काच नी मिलवाला	हाची की मर्नेना था चिनापना (सुर १	₹ tx) i
(हिर ६८)।	\$4\$) I	चुंबिक्क वि [वे] पूजा इका परिसेन्द
बीय वि चिंत्र] १ बोट६ सकू चीराविक-	भीड़ी की [दे] पुस्ता का तुख-विशेष (दे %)	'ब्रेक्शिक्स युर्वया मतार् <b>श</b> ना द्वस्तु
हर्यक्रमान्यप्राति" (शास्त्र १ त —पत्र १६६)।	\$4. €3) I	(बुग १४१)।
र पूर्णमध्य कैट-विटेश चींन केस (वस्त्र	चु धक [च्यु] १ गरना कलान्तर में वाना।	चुंड सक [चि] कृत गरीए को तीर कर
१ रास ४४६)। ३ भीन केत का निकासी	२ विरता । प्रति चयस्यापि (कप्प) । श्रेष्ठः	रचट्टा करता । वहः चुटेत (सूत्रा १६२)।
भीती का भीता (परुष्ठ ११)। ४ वाला-विद्येय,	पहरूप पहचा बहुआ (बत १) हा	चुटिर वि [चे] चुलनेवासा (वेद ११६ दी)।
शीदि शा भेर (छछ)। 'शीयालुर' ध्वनिया	वाकन)। इत्याद्यसम् (द्वादे १) ।	चुंदी की [बे] नोड़ा पानीनावा अकर्य ज्ला-
दलोक दिलाँ (महा)। यह दुं [पिहा]।	<b>बुक्त प्रक</b> [श् <b>बु</b> त्] करना शक्ता।	सम् (सामा १ १पत्र २१)।
चीन केरा में होतीवाला वक्क-विदोध (प्रशह १	चुमद (दे २, ७७) ।	श्रुंपाक्ष्य [वे] वेदो शुप्पाक्षव
<ul><li>४)। पिट्ठ त [पिछ] विन्तूर-विशेष (धय,</li></ul>	चुअ वर्ष [स्थ्यू] स्वान करनद परिवार	'वाग स सेवजासू कियो,
पर्स (७)।	करणाः 'एवमद्व मिथे च्चर' (सूधः ११२ १२)।	भारतक्ष्मेनचे निर्वा <del>धन</del> ्यः ।
चीर्णस् र वृद्धितांशः, <b>६)</b> १ वीर-विशेष	चुक वि [क्युत] १ चुत पूर एक जल	प्रशासक्य नेन्स्र,
भीगंसुम विसंके तल्लामाँ ते नक्त नकता है (इत १)। २ भीग केत का नक्त-विजेका	वे बूटरे बल्ल में सबदीयुँ (सरा महा छ।	निवर्डतं रअसुपण्यतिष् (प्रस्तर २६ = ) ।
बीखंबुसपुरियमस्थितकः (मुग देश संयुग	१ १)। २ विनष्टः 'चुक्कसिल्लुर्स' (ब्रजि	
4.5)1	१०)। ३ भए, पत्रित (खाया १ ३)।	भूव एक [ शुम्ब ] पुत्रम करम । इस्र
चीता की देवों चीश = वितार चीवार	नुष्ठ भी [चमुति] न्यनम् नरण (राज)।	(क्षेत्र ११८)। वक्त चुंबत (वा १७६) १९८): कमक्र चुक्तियाँव (ते १२)।
पत्ति वसी पहीनिया बनली (सुर ६,	चुंबारपुर न [चुक्कारपुर] एक ननर (सम्बद	वंकः लुकिकि (सप) (हे ४ ४३६)। इ
<b>«</b> )1	10)1	चुविभव्य (वा ४५१)।
भीरन [भीर] वक्ष-चत्र काहेना टुक्का	चुन्न पृष्टि केसर, धर्मास, नश्यक का	चुंबल व [चुम्बत] इत्वत श्रम्य इगा (ब
(सोप ६६ माना१२ बुगा६६१)। क्याहर	्र कृत्या (दे ६ २६) । ्र जुला दु[जुल्लुक] १ म्बेज्य देश-विशेष ।	रहशे क्या ।
गपट्ट पूं ["रण्डूसक्यर्] केन जानुसी का	२ अस्य केट में राज्योगानी अनुष्य आदि	चुविश्व वि [चुन्यित] १ दुस्या निया ह्य-
यक जनकरण रजीव्या का कवन-विशेष	(84)	क्रान्यमा रतः प्रमतः प्रमा (र ६
(বিশ্ব X)। ক্রিকার চিক্রিকার ক্রিকার	चुंचुण र् [चुम्चुन] शम (शमे) वाति	( e=):
र्थारम र्यु [चीरक] ग्रीके देशी (गंध्य १)।	विधेश एक विस्त-कारित (ठा ६पण ११ )।	चुनिर वि [चुन्नित] प्राप्तन करनेताता
भीरिय पूं [भीरिक] १ राम्छा अ वहे हुए भीवही को पहलेगाना क्युक । ए कटानूटा	7.7	(समि)।
क्षत्रकृति । यहुन्तराना । सनुका व काराहरः क्षत्रहा प्रकृतिवाची एक शाहु-चाति (शाय	1 7	चुंसल वृ [व] रेबार, धवर्तन विधेनुवर्त
१ १४-पत्र १६३)।	्र चुचुणिमाकी [वे] बोही नी प्रतिस्थिति । २ रमधा पति संबोगः व समझीका वेहा	(१११)। जन्म कर्णा प्रदेशी र अध्यक्ष असा करणा ।
र्थारका क्षा [थीरका] नोने देखो (तुर	४ वत-विशेष श्रुष्टि-वृतः श्र यूता, सरक्त	भुषः यक [ भेंद्य ] र भूकता भूग करना है र भए होना शीरा होना, मन्निय होना ।
\$ee) !	श्रुव पीट-विशेष (है है रहे) !	व सक मह करना खदरन करना। द्वारा
चीरी की [चीरी] १ वक सक्त वस		(हेथ १४७-वर् ) भी क्वारिसार्ट
टूबका थी ठेख निवदशर्ववसात बीस	ा पूरी (देश (व)।	जुलाइ वेर्स व बार्स वॉ (रिवे २६ ४)।

चुकारि [प्रष्ट] र दुका हुया मूला हुया विस्तृत 'चुक्तरनियां' 'पुरस्यविद्याग्रमिम' (बा ६१८३ ११६)। प्रमु बडिबत रहित 'बंश्युमेत्तपस्त्यो पुत्रना सि सुहास बहुमाएँ (गा ४६६) बड ६६ मुना ८७)। १ धन-बहित बे-बयास (से १ १)। चुका दे कि ] मुटि मुद्दी (वे व १४)। मुकार वे [वे] प्रापात राज्य (वे १६ २४)। चुक्कुड पुँदि] साप, बक्स धन (वे R 25)1 चुक्स [दे] देवो सोक्स (मृख ४१)।

जुजूय | त [जुजुक] स्तन का यह गान चुँचेंचुय कि का देश दर्श (मन्द १ ४ राष)। **कुक्**य पूर्त [कुक्**ड**] स्तन का सम्माग स्त्रतों की योनाई, पूर्वी (एव १४)।

चुक्छ कि तुब्ब्ह्य १ धस्य बोड़ा इतका। २ हीत, जबस्य नगस्य (हे १ १ ४ पद्)।

चुळान [द] सप्तवर्थ (६३ १४) छष्टि = 1 ) t भुइन्त दि] भीर्लंटा सर माना (क्षोप

348) I भुडांस्टम न [पे] प्रस्नापन ना एक बीप, रशेष्ट्राण को समात की तरह बड़ा रक्षकर बन्दन करना (युना २६) ।

चुहछा [दे] देवो चुदूर्छा (पर २)। बुडिसी रेवी चुडुडी (तंदु ४९)।

चुड्रप न 🔄 १ बात स्वारता (३ ३ ३) ।

२ मान साट (१८८)। ३ लगड़ी स्वका (पामी ।

चुक्रपाकी [दे] लावा बमग्री नाम (दे % %) 1 पुर्द्ध भी दि] पत्ता भगत नगती हरें

सरमी बल्यूक (दे १ १३) शामा न्या १६ १५९: स २४२) : च्या तक [चि] दुनन, दुनना परिवर्ते वा

बाना। पुछद (हे ४ २३ ) कामी निवी-हांच चुल्हर (तूख ८१)।

चुन्न पूर्वि देवाग्यातः। प्रवास्यवाः। १ सन्द, रच्या । ४ सर्धन भीतन नी

क्योति । १ स्पतिकर,सम्बन्ध । ६ वि सस्य को इरा ७ भूक स्थका स भाष्ट्रक र्सूमा ह्या (दे १ २२)। च्यां क्यां विषयित भारण किया

ह्या (के के १४) । चुण्य सक [ चूर्णय् ] बूला, हुक्दा-हुक्दा करता। संक चुणियय (श्वव)। चुण्य पुन [चूर्ण] १ चूर्ण चूर, बुक्नी वारीक खलड (बहु १३ है १ द४ वाचा)। २ बाटा, पिसान (बाबा २,२१) । ३ बूनी रव रेल् (६३१७)। ४ मन्द इस्य का रव बूक्ती (यग ६ ७) । १ भूता (हे १ ८४°

किया जाता अध्य-विसान (शाया १ १४)। कोमय न िकोशकी भव्य-विशेष (पर्यु चुण्य न चिरोणी पर क्रिकेट, गम्भीरार्यक पर

बिना १ २)। ६ बसीकरणादि के लिए

मद्वार्षक राज्य (वस्ति २) । खुण्मद्रम वि चि दुर्णाह्य दूरत से बाह्य बिस प्रकार भूगी फेंका प्रया हो वह (देव १७ पाम)।

जुण्या ⊈ [चूर्णेक] क्स-विशेष (साचा २. ¦ १ २१)। चुण्या की [बूर्जा] सन्द-विशेष बृत्त-विशेष

পুদসালা কী [বু] কলা বিল্ল (বি ব

चुण्यासी हो दि | यसी नीकरानी (है है

चुण्य की चिक्ती बन्य की शका-विशेष (निच)।

जुण्मिश्र वि [जूर्णित] १ जूर-जूर विमा ह्या (पाय) । २ भूनी से न्यास (दे ६ १७) । **भू**णिम**आ की भिर्णिम**ि सेक-विशेष एक उद्भा दुवन्माव वैसे पिसान का श्रवस्थ मनग-मनय होता है (पर्ए ११) ।

**जु**ण्यिय वि [जुर्णिक] श्रीएत-प्रसिद्ध सर्वा-वशिष्ट धेश (नुज्ज १ २२--पत्र १८४, १९--१प २१९)।

चुदस वैजी चड-इस (पुर a, ११a) । चुक्त देपो खुण्ज (दुमा का १ ) जानू १८/ वाद २ पमा ३१)।

भुक्षण व [चूर्णन] प्र-पूर करना (सा 1)1

चुझि देलो चुणिम (विचार १४२ चंड)। चुक्तिब देशो चुण्मिश (परह २ ४)। जुड़िज़ा देवी जुणिगड़ा (मास ७)। चुष्प वि हि सलह, स्तिम्ब (दे ६ १६)। चुप्पछ पूं हिं शेचर, प्रश्तंस (दे ३ १६)।

चुप्पश्चिम न दि । नवा रैना हमा नपहा (4 % to) i चुप्पाग्रय पूँ वि] मरोका नगान गतान

र्णमणा (वे ३ १७)। शुरिम न हिं| साध-विशेष (पन ४)। पुरुपुड धर [पुरुपुराय्] ब्लिएक होना उत्पुक होना । बहु, जुलजुर्लंद (मा Y=()1

चुक्रणी की चिक्रनी १ इतर सना की **सी** (सामा १ १६) छन १४ म दी)। ९ बहारत भन्नार्चीकी माता(महा)। "पिय र्षु [पिन्:] मगरान् महाचीर का एक मुख्य

उपासक (उदा) । पुस्रसी 🗣 [चतुरशीति] शौरसी यन्ती

थीर चार, ८४ (महा जी ४७)३ 'चलसीए नावद्रमार्थवासम्बद्धस<del>्योन्</del> (भन्) । चुकसीइ देवो चुक्सी (पाम २

वि २)। चुिंछमास्य औ [चुिंडवाडा] दन्द दिशेप (पिष) ।

चुलुझ पुन [चुलुक] चुन्यू, पसर, एक हाब

का चंत्रुटाकार (वे १ १० मुपा २१६) प्रामु १७)। भूल्य केते पाल्य (दे १ वर दी)।

भुलुचुस वक [ स्पन्त् ] बहबमा करबना

थाहा श्लिमा । चुलुकुमद (हे ४ १२७) । जुलुजुडिम वि [स्पन्तित] र फरता हवा

प्रथ दिना हुया । २ म स्पुरण शास्त्र (पाप)। चुलुव्य र् [के] साव, यत्र वक्त (६ ३

(7) I

चुल पूर्वि रिशिष्ट्र वासका २ दान, शीवर (देव २२)। ३ वि छोटा ल<u>क</u> (छ २, ३) । दाय पू ("दान दिता का द्यांस बार्ड, चाचा (ति ३२१)। "पिइ वृ स्रामा १ १ तूपा १४)।

पृब्हम (पा) वेबो पृष्ठ (है ४ १११) :

१६) । साठ्याच्ये [मात् ] १ कोटीना माता की बोटी एपरेनी विमादा धीरोजी माँ (का २६४ टी) शाया १ १३ विशा १ ६)। २ भाषी जिला के छोटे बाई की सी (विया ई भ-पर Y )। श्रागय समय प्रै. िंशता मनराण् महाबीर के का मुक्य क्यासकों में से एक (बना) । इसकैत पू [हिमचन् ] छोटा हिमचन् पर्वेत पर्वत निजेप (ठा२ ६ सम १२३ इक)। \*ब्रिय-र्यतकृतः त िहमयत्कृतः र शुद्र द्विपयान्-पर्वत का सिल्बर-विशेष । २ पूँ वसका प्रक्रिपति कैन-किरोप (अ ४) : हिमक्ट-

[\*पितृ] चाचा पिता का कोटा मार्ड (विपा

310

🕽 (वर्ष ४) । चुड्यान [दे] संदूक (क्षुप्र २२७) २२ ) । नुहुग [दे] वेदो चोक्क (शक्)। चुडि | की [चुडि डी ] दुनहा विसर्वे चुडी | मन रच्कर फोर्ड की बाडी है बह (हेर यक मूर २, १३)। **पुढ़ी भी [दे]** किला पायास्त्र-कश्ड (दे \$ \$%) I

गिरिक्षमार र् ["(इमवर्गिरिक्रमार]

देर-क्टिंग को सुद्र हिमबस्कृट का सविक्षायक

पुरसुष्यस्य पनः [दे] कनकना अक्रमना चुल्युन्बनेद वं होद अस्तर्व रित्तमं क्राक्रोह। भरिवाई स कुर्मनी तुपुरिवदिन्तासमंबाई।' (मुधनि १६ दी) । जुड़ोडय दुं दि] बड़ा बार्स (दे ३ tu)। चूअ पूर्वि दिन स्तत-शिकाबन का बाब आरथ्

भूषी (देशे १)। मुश्र पूर्व र कुन-विरोध बास साम मामाभ्र(गब्द भ्रमानुर ६ ४ )। २ वेद-विरोग (बीच १) । वश्चिसरान [ांबर्स सक् ]सीवर्म निमान-विशेष (राध)। विश्वेसा क्ये ["फ्रवंसा] राज्येत्र की एक भग्न-महिली, स्त्राणी-निरोप (इक बीव १)।

चूमाओं [चूता] तक्षेत्र की एक सह महिनी स्वांग्डी-विशेष (१का ठा ४ २)। चूचुम हेन [चूचुक] स्तर का शब-आव (知事 まま): चूब इं[ब] चुना, बाहु मूच्छ वस्त्रमानी

(देव १ ३ ७ १३) १६। पछ)।

भूरसक[भूरम् भूर्णेय्] बरहर करता वीइना टुक्बा-टुक्झ करना । चूरीम (प्रम्म **१** टौ)। भवि पूरप्रमर्ध (पि १२८)। क्यु. भूरत (तुमा २३१ ३६ ) ।

**पू**र (घर) दुन [ **पूर्ण** ] **पुर, प्रस्तु**रः विद् यिशींसम्बद्ध पश्चिम सिमा सम्ब्रुपि पुर करेल् (\$Y 250) : पूरण देशो चुन्नण (बुन्न २: १) । चृरिल वि [चूर्ण चूर्वित] दूर-पूर किया तुमा दुक्त।-दुक्ता किया हुया (महि)।

**भृ**रिम पूर्ण [के] विद्यार किरोप भूगों शह्ह

(पद ४ दी)।

**पृष्टं चेनो पृद्धः। समित है**सिवि नियावरों का एक नवर (इक)। बुसम [दे] देशे बृह (गट)। चूका की [चूका] १ नोटी छिर के दीच की <del>कैट-रिज्</del>य (गाम) । २ शिक्टर, टींचा 'सरि चवद नैरक्टर्स (हप ७२ टी)। १ समूर किया। ४ कुल्कुटरीक्या। ३ शेर की नेसरां ६ ब्रुट वरीय्हब्स समाप्तन । ७ विभूक्श वर्शकार, र्विविक् व वस्त्रभूका स्वित्ता गीमना व स्वित्ता।

इन्द्रक छैड् मोर्सक्त चुनावन्ति सम्मूरतादी। चूचा निमृत्यस्थित व विद्यस्थि वहाँकि एवहाँ (शिषु १)। व स्वतिक मातः। १ स्वतिक वर्षः १ क्रम्य का परिविष्ट (क्सक्रू १) । इत्रम न [क्रमेंच्] र्धस्कार-विशोप, पुरुष्टम (धावम)। संपि पुंची ["मणि] १ किर का क्वॉत्तम बानूपश क्लिप, मुक्ट-परन किए-मणि (धीपा थन)। २ तर्वोत्तम सर्वे सेहः विवासमूका चृक्तिथ पूं [चृक्तिक] १ सनार्वे का-विशेष ।

मखिनको दै' (वस्तु १)। २ कत केत का निकासी (प्रस्तृ ११)। ३ कीन संक्या निरोप, पृथिकांन को भीराखी ताच से पुरतने पर वी संख्या शब्द हो वह (एक स्वर्थ)। और मा(एक)। **वृद्धि**र्मग न [ **वृद्धिः अङ्ग** ] तंक्या-विरोधः

संस्थातम्य हो यह (ठा२ ४० भीव ३)। **पृक्षिमा देनो पूछा** (सम. ६६) नुर ३ । १२) खंदि निष् १ सा४ ४)। चून (दय) देखो चूम (मरि) : चूद्द सक [क्षिपु] ऍक्ना शनना प्रेप्ता। मुद्दर ( पर् ) । चे स चित् ] सर्दिको सरर (बत्त १६): 'यूर्व व कमी हिल्ले न वैत्रवेनोर्डि की नाही ?' (विशे २४ वर्ष)। चे देखी स्य = स्पन्। चेह, (माना)। संह नेबा (क्या ग्रीप) । ो देवो चिर । वेह वेहाह वेह नेनर चेंघ∫(वह)। चेम पर [चित्] १ फेट्स सम्मत हीना स्थान्य रखना । २ शुभ भागा स्मयप्र करना याद धाना। वेदह(स १३)। १ क्क चानसाः ४ वसुमय करन्ताः चैक्र

(ध्यथम)। चैत्र वर्क[चेत्रम्] क्ष्मर देवो । २ बैना वर्पेश करना विकरत करना र करना बनाना 'बी प्रतराव चेर्ड (सन **११) । वेराह, वेराह्य केरांच (माना)। नह** चेते[य]माण (छ १ २—पन ३**१**४ सम ११)। चेश्र थ [पद] प्रदशस्त्र सुदन स्टब्स् विश्वय नतानेनाला ध्रम्बय (हे २ १०४)। चेल व [चेतस्] १ वेत वेलवा बाह्य कैतस्य (विशे १६६१ अय १६) । १ मण् चित्र यन्त्र करहा (बस १,१। ठा १,२)। बेड पूं [बेदि] केग्र-किरोत (इस सत्त ६७

दी)। बहुर्व ["पिति] वेदि वेत का प्रश (प्ति)। 🔁 ६ १ पून चिस्की १ विद्या पर बनावा चेदम र्रे हुँया स्वारक, लूप कार या का वर्ग-ख्य स्पृति निक्रः 'सहसन्तर्मसु वा सहसन्तरिकार' वा मध्यवैद्यस्तुवा (धावा २ २,३)। २ व्यक्तार का स्वान, व्यक्तायवर्ग (भव-ज्यास्कः विराह स्थार (३३)। व निम-पन्दर, विम-पृष्ट, ध्वर्तनन्दर (अ ४ २—पत्र ४३ ३ वेचना वेचा १२३ नक्षः ब भा २७)ः 'पक्षिमं कासी व वैद्रप रमें (पर ७१) : ४ इट देर की बूर्ति

धमीट देवता की प्रतिमा "कल्लाखे मेंगर्स बेह्र्य पञ्जूषासामी' (मीपा भग) । १ मह-ट्यतिमा, जिन-वेद की मृत्ति (ठा ६ १ उका पएक २, ३ धाद २ पडि)- 'विद्यूगी सप्पाएल अंदीसरवर वीवे समोसवल करा, त्ति चेदपाई बेदह' (मन २ ६)- पित्रण विदे मेपनवेदमैति संग्यमुखी विति (पव ७१)। ६ सद्यान, बनीचा 'मिहिमाए चार् बच्छे शीधन्दाए मलीरम (उल ११)। ७ समा-बुद्ध सब्दा-मृह् के पास का बुद्ध । य बहुतरा-बालाबुक्ष । १ देवों का विश्व-भूत बुख । १ वह बुध बहाँ जिनका को केवल जान उत्पद्ध होता है (ठा = सम १६ ११६) । ११ ब्रुज देइ: 'बाएए हीरमाएम्मि बेहर्याम्य भएतेरमं (उत्त ११)। १२ यक स्वान । १३ मनुष्यों का विकास-स्थान (यह हे २ १७)। संसर्द्र["स्तम्स] स्तृप भूम, (सम ६६: राम मुख्य १८)। धर म [°गृ≰] विन-मन्तिए प्रर्टम्मन्दिर (प्रवम २ | १२ ६४ २१)। जसाकी [<sup>\*</sup>वाजा] बिन-प्रदिमा-सम्बन्धी महोत्सव विशेष (वर्गः) ३)। सूम पू ["स्नूप] किन-मन्दिर क समीप काल्ट्रप (ठा४ २८ च १) । बुरुष न ["ब्रुक्य] देव-प्रथ्य जिल-मन्दिर-संबंधी स्वादर या वैपन मिस्कत (दव 😢 प्रद्यमा का ४ ७ ह ४)। परिवाही की विर्ार पाटी] क्रम संजिन मन्दिरीं की गावा (क्रमें २)। मद्द पू ["मद्द] पैव्य-सम्बन्धी सन्तव (माचार रे २)। रह्मसार्थ [चूछा] र पर्वचयान्य दूस जिमके हीके बीचय व"वाद्दो ऐसावृत्तः २ वित-देव का जिल्दा मीचे पंत्रस बात उत्ताल होता है यह कृत । ६ वंबताओं ना चित्र मूत कुछ । ४ वेब-समा के पास का सूथ (सम १३ १६६ ठा ६)। बन्दभ व विन्युन] विन-प्रतिमा की मन वचन भीरकाया ने स्तुति (पन १३ संप १ ६)। वंत्रणा की ["वस्त्रना] वही पूर्वोक्त सर्प (तेप १)। शास पू िवास] जिल-मन्दिर में यठियों वा निवास (रैंग)। हर रेफो घर (बीज १३ पळन देश, देश कुता देश प्र देश जरह १६ )। परम वि चितित्र इत विहित क्य र

सवारीहि सगारा" बहवाई मर्वति (सामा २ १२२) 'बेइस कारोगर्ट्र' (बुहर र दस)। चेंघ देवो चिंघ (प्राप्त)। पेदादेशाप = धन्। चट्टबर [चेट्] प्रवल कला बावरण् करना । वह चट्टमाण (कान) । चेंद्र देशो विद्व≍स्या(दे१ १७४)। चेट्टज न [स्वाज] स्विति प्रवस्थान (वव ४)। बेट्रण देखो चिट्रण = बेट्रन (उपर्य ११)। चेट्राकी [पेश] प्रकल धाचरण (ठा३ १ सुर २.१ ६)। बेट्रिय देवो चिट्रिय = बेट्रिड (धीप महा) । चेड पूँ [दे] बाल पुनार, शिमु (वे ३ १ णामा १ २ वृह्द १)। चेड ) पुँचिट की १ यास मीकर चेडग (बीप कमा)। २ गुपनियोग चेडय ) नेशासिना नवरी का एक स्वनास प्रसिद्ध राजा (यहपू १३ मय ७ 🐮 नहा)। वे नेला वेबता, देश की एक वक्त्य वाति (मुपा २१७) । चेडिया की [चेटिका] ससी शीकरागी (भव १, ३३ कप्पू)। चढी की [चेटी] छगर देशो (पानम)। चेडी की [दे] दूनारी बाला लक्नी (पाय)। भक्त न [भरय] भैग्य-विद्येय (वर् ) । चेच पू [चत्र] १ मास-विशेष, वैद मास (सम २६, इं. १ ११२)। २ वैश द्रालियों कारक गच्छ (बृह्६)। चेची की [चत्री] १ वैत मास नी पूर्णिमा । २ वैत मास भी समावस (पूजर ६)। चित्र देशो चड्ड (स्म)। चर्रास पू [चेत्रीश्च] चेदि देश ना राजा (রুড়া) দ चयग वि चितको क्ता, केवला (उप (##J चयप पूँ चितन १ बाल्या जीव प्राणी (ठा ४ ४) । २ वि चेतनावामा ज्ञानवासाः 'बुवि जनएं च विमक्त' (विशे १८४१)। भवेणा स्मे [भेतना] बान नेत शैतन्य नुष क्यान (पान ६ गुर ४ २४१)। थ्यण्य । व वित्रयी कर देखो (विष्ठे चेवस रे ४७१८ पुरारे त्र गुर १४ ०)। नेयस देखा श्रञ्ज = बेटस् ३

'ईंबाचांसेल धानिट्टे क्लुगानिमनेयसे। वे शंतरायं वेश्व, भद्रामोहं पट्टम्बर् (सम ११)। चेया देखी चेयणाः 'पत्तेयममाबाधी व रेणु-रोस्सं व समुक्तर चेया (विसे १६१२)। थेख ) न थिखी यह रूपका (धाया चेखय । धार्प) । इत्यान [ इत्रे] व्यवन-विशेष एक तरह का पैका (स १४१)। गोछ व ["गोछ] बच्च वा गॅट. कन्दुक (भूष १ ४ २)। इर न ["गृह] तन्तु, पर-मग्रहप रावटी (स १३७)। चेस्रय न दि | दुसा-पान "दिहीनुसाए प्रवर्ण कुर्वेटि व निरुपेशए निहियें (बाबा १६)। चेक्किय बेली चेका 'रमकुर्बचलुचेनियमहमन भरमरियाँ (पडम ११, २१ भाषा)। चेल्प न [दे] सुमत मूपन (३३-११)। नेक ) [वं] क्यों चिद्ध (रे) (परम १७ **बेद्ध का रिशे रश्य का ४९ थे । इस**नि १ कर २६८)। <u>चेटन १ (रे.)</u> देवी चिद्धना (परह १ चेद्वय ∮ ४—पत्र ६० छ। ३३) । भाग मा पित्र भीते ] १ प्रवताराण मूचक धम्यय निवयदर्शंक राज्य 'वो कुलाइ परम्स बुई पालह तं नेव सो महात-पुरा (प्राप्त २६) मद्दा)ः 'भवहारणे चेवसदी में' (विन १४१४)। २ पार-पुरक सम्मय (पटम ⊭ मय) १ चव 🔳 [इय] माहरव-योतक सम्मय, 'पेन्स्ट्र गण्डरवस्त्रं सरमर्थव चन तेएसी (पडम ६ ४ वस्त १६ ६) । ची क्षेत्री चड (हे ⊱ १७१) दुसा दम ६ 🕫 भीप मग, खादा १ १ १४ क्या १ १३ सुर १४ ६७)। आख्य की भिस्तारि शन् ] वासीम मीर बार, ४४ (वर्ग २३ ४)। बहू की [पछि] चौछठ ६४ (कप्प)। बचरि भी [ सप्ति ] सत्तर भीर बार, ७४ (सम ⊏४)। भोभ सक [भार्य] १ प्रेप्लाकरना। २ नहत्ता। कोएइ (उकास १५)। कमक् षाइर्जन षाइज्रमाण (मुर २ १ ) छात्रा

१ १६) । श्रेष्ट चाइफ्रण (महा) ।

पत्ती (यगु) ।

चोश्रम वि [पाइक] प्रेरक, प्रशन-वर्ता, पूर्व

११२	पा <b>इअस</b> हमहञ्जूषो	चोमअ-चोम्बड
श्लोजम म [श्लोदन] प्रेरण मेरणा (सप १८ पण २०)। शोदम कि [श्लोदन] प्रेरण (छ १६ प्रमुप्ता १६ प्रोप महा)। भोर पण [श्लोदन] प्रेरण (छ १६ प्रमुप्ता १६ प्रोप महा)। भोर पण [श्लोदन] है प्रस्त करणा। १ तीका प्रस्त (स्वर्ध)। भोरत कि [श्लोदन प्रस्त महा)। भोरत कि [श्लोदन प्रस्त मुक्त परिवर्ध हुई १ वव ६, १६ एक धीर)। भोरत कि [श्लोदन प्रस्त महान प्रस्त प्रस्त की [श्लाम] परिवर्ध कर मान की एक वंस्तानिक (कार १)। भोरत कि [श्लोदन परिवर्ध परिवर्ध (कार १)। भोरत कि [श्लोदन परिवर्ध (कार १)।	योण्यह म चित्रपा थी के वर्षण निरम्भ वर्षण विश्वप पर है। वर्षण वर्षण विश्वप कर योग्य वर्षण विश्वप कि वर्षण विश्वप कि वर्षण वर्	च्योरिक हि [च्योरिक] १ चौर्य व राजेशना (वन ४१)। २ ई चर, नाहुय (वस्तू ११)। चारिक हि [च्योरिक] प्रधान ह्या (मिंच करण)। चारिका की [च्योरिक] प्रधान ह्या (मिंच करण)। चारिका की [च्योरिक] प्रधान ह्या (मिंच करण)। चोरिक है [च्योरिक] करार केवे (व्या १ क)। चेर्क है [च्योरिक] करार केवे (व्या १ केवे [च्या कर्म कर्म (क्या १ क्या १ व्या १ व्य १ व्या १ व्य १ व्या १ व्या १ व्य १ व्य
(X ) I		
चीत्रा देवी जोजका (भीज ४ क)। चार्या की [चार्या] रेट्या, कियी प्रकट हार्या व्यक्ति में और वे डूब नहरे या करते के र्लिए हेरेशका वरित (जांदे १९४)। चारपड यह [प्रभू] शिलक करता थी तेन वर्षाय वदना। चेरायह (हु४ १९१)। वर चारपढमात (हुय)।	नाव का एक खोरा नांव (बारम)। भोराव कह भोराय] नोर्ध करणा। भोरावं कह १ भोरायी[] केवी जवस्पती (हि ४३६८ भोरायी[] ४४६१)। भोरायी[व ४४६१]। भोराया विभिन्ने भोरे चरहरू (दि १, १ अक्षा १ (इ.स.च्यू १६ पुता १०६)।	बार, ७४ (वंध ११)। जीवाय क्रमर जीवासक दुन चित्रहों। जीवाय क्रमर मा क्रमन्त्रम् पूर्ण में एवं देशे हिल्लीके बावता। ज्यार हजो ची-(१वो)मान बारा हुकेय क्रमतीर्थ (स्व १९१४)। जावामा केलो क्रमतीर्थ (स्व १९१४)। जावामा केलो क्रमतीर्थ (स्व १९४४)।

विम क्षेत्रो पिम = एवं (हे २ १८४ विज } क्षेत्रो चेव = एवं (१९ ६२) वी ६२)। 🗷 म [एव] मनवारक-सूचक सम्यय (हे २ | १८४ मुमा, वह )। कुमा) ।

श्चाउम पूर्व द्विद्यम् ] १ क्यट, राहरता माना

 इस सिरिपाइअसङ्ग्रहण्णवन्मि चयाराइसङ्ग्रंकमणो चरहसमी तरेंची समची ।

亥

**स्दर्भ [द्ध] १ शासु-स्या**नीय व्यञ्चन वर्छ ै विशेष (प्रापा प्रामा) । २ भाष्ट्रावन, बकनाः 'स ति य दोसाख कामखे होह' (भावन) ।

स्कृति व [पप्] संक्या-विरोप क्ष 'अ संक्रियाची जिएसास्स्कृमिन (मा ६ नी ३२ भग १ s)। वत्तरसय वि वितर शततम] एक सी धीर घटनां (पर्ना १ ६ ४६)। इतमान [कर्मम्] वः प्रकार के कर्म को ब्रह्मस्स्रों के कर्तक्य 🐌 सवा— यज्ञन, याजन प्रध्ययन प्रध्यापन दान और प्रतिबद्ध (निष् १३)। आस्य न ["अव्या] सः प्रकार के बीच पृषित्री, सरिन, पानी बादु वनलाति भीर तम बीब (था ७-वेचा १६) : शुक्र न्युण वि द्विणी **ब**हुना (ठा ६ पि २७) । **ब्**रण पू िचरभं । प्रमर, भौंच (कुमा) । क्रीब निकास पू ["सीवनिकास] देशी काय (बाबा) । व्यवस् व्यवस् ["वावसि] संस्था-विशेष सामवे ६६ (सम ६८ स्राप्ति १)। चीस भीत [ "त्रिंशन् ] संस्था भिरोप बतीस ३६ (कप्प)। चीसइस वि [विशासम] धरीपरा (परम १६ ४६/पएए ६६) । इस वि व [वोडरान्] नोक्य योग्यः। "इसदा थ चित्रशया" सोसहप्रकार का (वन ४)। दिसि न [ १९३३ ] कः किटाएँ---पूर्व पश्चिम चत्तर, रक्षिण कर्म भीर मधीरिशा (भग)। द्वाम भिर्मी सः प्रकारका (कम्म १ ६)। नवइ सुवद् अउद् रेखी "ग्य⊀ (वस्म १ ४ १२ सम छ )। ﴿

शाहय वि [िंजचर्त] क्रानवेवां ६६ वी (पञन १६ १)। व्यक्तम प्राप्त प्राप्त पि**कारात् । स**पन ३६ (रावः सम ७३)। "प्यम वि ["परूपाछ] सम्मनवी (पक्रम १६ ४६)। बसाय पू ["माग] खडनी ब्रिस्स (पि २७)। ब्यासाकी ["आपा] प्राष्ट्रत, शंसून्त माववी शीरवेनी फैर्माचका और समझ राये 🖶 भाषाएँ (रंग्र)। शासिय, न्यासिय वि पाप-मासिक व मार में होनवाना वः माच सम्बन्धी (सम २१ सीप) । वरिस वि िंवापिंकी कः वर्षं की कन्नवाला (शार्व २६)। बीस देखो अभीस (पिन)। न्तिह नि ["मिथ] कः प्रकार का (क्श नव १)। ज्वीस और विशिद्धि छनीस, बीस भीर छा (सम ४४)। उर्दा-सङ्ग वि [विश्वितितम] १ कमीचर्चा २६ वा (पदम २६, १ ६) । २ शमातार बाएइ दिनीं का भवभात (शामा १ १)। सिंदू की ["पष्टि] शंक्या-विशेष शाह भीरमः (कम्प २ १८)। स्सर्वारभी [ सप्ति ] विद्वस्य (कम्म २, १७)। ैद्दादेको उद्धा(कम्म१५, ८)। **द्वा** केवो छ्वि = छनि (वा १२)। अहम वि [स्थमित] मापुत याण्यास्ति विरोहित (हे २ १७३ पह)। छन्छ १ वि दि विकास सनूर, होशियार अवस्ता । (पिन देश २४३ गाँ७२) वाला पाय अपूमा)। क्का वि [रो] स्त्रु.क्स, पर्वता (दे वे, २१)।

(सम १ यह) । २ आस्य वहाना(है २ ११२ वर्)। ३ भ्रावरण माञ्चादन (सम १ वा २ १)। ञ्चरम 🛚 [ञ्चर्मम्] ज्ञानागरलीय धार्वि बार बाती कर्म (बेहम ३४६) । **ब**्डमस्य वि [**ब्रद्**मस्य] १ <del>प्रसर्वेड</del> संपूर्ण बान से वश्यित । २ राय-सहित, सराव (ठा ¥ {1 { w } 1 **छ। उद्धा वैसी श्रम्**स (स्वा विसे २६ ८)। इंकुई सी [ द ] श्रीकन्तू, दूस-विरोप केनांच कराझ (दे ३ २४) : छटपू दि ] क्रीय यन का क्रोंटा वन 🕶 रा २ वि शीज, जस्यी करनेवला (दे \* \$\$) i इदंद सक [सिम्] धीवना । इदंदपु (बुपा संटण न [सेचन] धिवन शिवना (पुपा ११६ ड्रुपा) । छंटा भी [ दे ] वेको छंट (पाप) । छटिम वि [सिक्क] रोवा हुमा (सुवा १३८) । संब वेंची अहु≖पुर्। धंबद (बारा १२) इदेबिस वि[दे] यन दुरु (पर्)। अंडिअ वि [मुक्त] परिवक्त, और हमा

स्दर्भक [सन्दू] १ पाइना नाम्बना। २ चनुत्रा वैना संयति वेना। १ निमन्त्रस्

(धारा चनि) ।

थेना । क्यक्

'पंदेवरपुरवनवाहरोदि पर्यक्षरिपरेहि दुख्यिसमा ।

कामेहि वहविद्याह व छविकातावि नेम्बंदि (स्व)। संक्र अहे बिक्ष (बस १ )।

**स्टे**र पूर्व किन्त् र रक्का गरनी प्रतिनापा (बाबा पार राधरश्रातका प्रासृश्री)। २ मिक्रांन मारुन (मात्रा भन) । ३ नरावा ग्रमीनता (उत्त ४ हे १ ६६)। आरि नि िंपारिम्] सम्बन्धी स्वधै (का **४९**= दी)। इन्त वि [ बत् ]स्वेरी (धिव)। । शुक्तमा न [। नुपर्यन ] बरणी के मनुसार गराना (प्रायु १४)। । णुक्ताय पि [ लुवर्त्तक ] मरबी का बनुवरत

संद पुन [ झ-व्स ] १ लाभ्यन्तता स्मेरिता (च्छ ४) । २ प्रक्लिय इच्छ । ६ सा<u>ल</u>स यक्तिम (सूच १२२ प्राचा हे १ ११)। ४ इन्द्र-शाक (तुपा २००० सीप)। र कृत कन्य (वस्या ४) । प्रमुख वि कि

कर्णनामा (शाया १ ३) ।

क्षा का कालकार (सरुड)। **र्थर**ण पूर्व [स्राहत] बचना बचना (राव

1 (75 **इंद्रम न [ब्र-द्म]** निमन्त्रह (पिंड ३१ ) । स्टब्स न [कन्ब्स] बन्दन प्रस्ताम नमस्कार

(प्रमा ४)। ष्ट्रपा को [ब्रम्सन्त ] १ निमनका (नेना

१२) । २ प्राचैना (बृहु१) । सदा की [सन्दा] दीशा का एक तेब, प्रयते

ना बूसरे के प्राथमान किरोप से शिया हमा सैन्याय (ठा २, २ वंचमा) ।

স্কৃতিক দি [কুন্তিবে] মণুকার মণুনত (सीव १)। २ निमनिक (शिक्षू २) । **होंद! देवी श्रांद** = कन्यस् (धाना समि १२६)। इस्व नि पिट्की इसका व, भा तथा, 'बंदचरिक्क्सकाममंता (सुपा ११६ सम 42) 1

इता केवी इद = कप् (सम्म ४)। इदान [वे]पूरीव निहा (परवार ३ — यम १४ भीम ७२)।

बार देको बाक्ष (स्त २७१) ।

क्ष्मण न स्विमनी विवास क्ष्मण (१४ ४)। द्धाराण न मि नीमय मोबर (सप ११० धी र्वका १३३ निमृ १२)।

खगणिया सी विशेषा गंडा (धनु १)। क्याल पूंची [प्राक्ष] साम सम बक्या (पर्याप्त १९३ वीप)। इसी इसी (वे २ व४) ३ पुर न ["पुर] नगर-विशेष (ठा १)।

क्षाम वेचो छवा (४ ११) । खुरगुरु र्रु [पह्नुक्] १ एक सी भीर बस्सी

रिनों का उपवास । १ तीन दिनों का उपवास (धर १)। इत्यद्वीपर पून [द] अक्षुबर, मूने मा जूहे

शी एक वादि (**एँ १६**)। ख्रुख मक [राज] रोपमा चमकना।

बन्बर (१४१)। क्रक्रिय वि (राधित) रोपिन क्लंक्र्य

114)1

आस्ट्रमि पिछी र अक्कर्स (सम १ ४° हेर २६६) । २ न जनातार वो दिनों का छन्नास (सुर ४ ११)। कलमण न विद्याल स्रपण विश्वतार हो दिनों का उपवास (शंत ६ चप पू ६४६)। बन्हसम् पू [समक, श्रुपक] शो-यो निर्मी का करावर क्यवास करनेनाला स्टारनी (क्य ६२२)। भश्र न [भक्त] नयतार की क्लिंका जनाव (वर्ष १)। अक्तिय वि "अक्तिक] नपातार से रिनों का सपनास करनेपासा

(90 F 2 BOP) क्यूडी की [पड़ी] र सिन्धिय (हम १६)। २ विश्वविक्र निरोण संसन्त-विश्वविक्र (ब्रोदि है १ २६४)। ३ जल के बाद दिया पाता कारण-विशेष (गुपा १७ ) १

आपक एक [का+स्त्रा] बावड़ होना चयुनाः स्टब्स् (पर्)। ब्रहरकार पूँ [वे] स्थम, शासिकेन (वे

२ २६)। **कृतक्**षा की [कृटक्कता] पूर्व (वृप) वनेत्र से सम्म को काइते समय होता एक प्रकार का सम्बद्ध बालाश (सामा १ ७—५४ ११६)।

किंजिया की [वें] कुल-पाय चरेरी (स ब्रहा दि देशो छंटा ( पर् )।

छत्रा को [द्या] र प्रमुद्द नरमय (दुर ४, २४३३ मा १२)। २ छीटा पानी नी हैर ख्वास नि [कुटानत्] स्थानसा (पस्र 4x (=) | इविषय वि [इवटित] नूप भ¤वि दे ≅स्म व कल्का हुवा (तेंद्र २१ राव ६७)। **क्षा** तक [ क्ष्मि सुन् ] १ वन करमः।

खडा की वि विश्वत विननी (देश र४)।

२ कोइना त्याम करता । १ इल्लाम, विश्वयः। स्ताद (हे २, इ.स. ४ दश महत्र वर्ष) । कर्म कड्रिजह (छ २३१)। मझः सर्ह्रेय (माय) । संक्र अब्बेर्ड भूमीय और वह रिवर टुरमबारी' (विमे १४७१)। सुक्कित (वर ९)। **छड्डल व [छ्रदेन मोचन] १ परिया**द विमोचन (का १७१) ग्रीच १)। २ वस्त बान्ति (विचा १ ८)।

**बहु**य वि [ब्रद्रेक] क्षोक्तेतला (दुप ११७) । २ पू. एक छेठ का नाम (कुन १६६)।

खबुवय न [खर्रन सोचन] र कुर<sup>बान</sup>, बुक्त करवान्त्र । २ वसन कपना । ३ नि बनन करानेशासर । ४ चुक्तनेवासर (कुना) । **बहु**यय वि [हर्नुक मोजक] स्वार क्र<del>णी</del> वक्तास्थानक (दे२, ६२)।

**क्षप्रा**यण वेको सङ्ग्रदण (सुपा दरेश) ! बहुतिय वि [इर्दित सोवित] १ वस्त कराया हुया। २ कुइबामा हुया (सहबाउ es t) t

अब्रिक्ष अर्थ अर्थिश वयन का रोन (पर् हें के 44)1

**अद्विध्यै [क्षतिंस् ] किर, द्र**परा <sup>को</sup> बरणह परवर्ति से फिल्क्ट्रीय कि दुनह

(यहा) । क्रकिय ) वि [क्रिवित मुख] र गाउ क्षक्रियक्रिय ∫ वसन किया ह्या। २००**०** 

बुक्ट (विशे २६ ६ दे १ ४६) वीर) । क्षण एक [सूज्] हैका करदा करें (बाचा) । धनो, ऋछारेद्र (प ३१)। क्षय कर [क्षय ] केल करना। दर्श्य

(शुम २, १ १७)। क्रज र्[क्षज] १ करून मा (१ ६२)। २ विद्या (दापा) । वीद दे [ चन्द्र] रूपर श्रत्रं दिया श्री [छत्रान्सिक] परिपर्-विशेष

(सुपा ६ ६)।

ऋतू की पूर्णिमाका चलामा (स ३७१)।

ससि ५ [ शासिम] वहा पूर्वीक मर्थ

दुष्पण न [छ,त्रन] द्विसन, हिसा (थाचा)।

इजिद् पू [क्षणेन्दु] शरद ऋतुको पूर्णिमा

हुण्या वि [इद्देश] १ ग्रस, प्रव्यक्त विदास्या हुना

(बह १ प्राप)। २ धान्कादित दका ह्या

(ना इ.स.) । इ.स. माया, कपट (सूप १

२ २)। ४ निर्यंत विजन सहस्। ३ किवि

क्रुज्यास्य न [दे पण्यास्क] विकासिक

तिपादै, संन्यस्थितें का एक अपकरण (जक

तस्या बरायीय बोम्बलमप्र ।

इतिक पुर्वाई सीलं वर्यतिक्

(बर ७२८ दी)।

का चन्द्र (सुपा ३३ ४ ४)।

गुप्त रीति से प्रच्छप्र इस से

भं छएएं भाषरियं

तं पडिव (? मॉड) ज्यह

धीयः क्षामा १ ५)। सूचन (सूत्र) स्थला प्रत्याप (खासा**१** च प्रसुदशे। चारपु चारी काता भारत करनेवासा मौकर (बीव ६)। यहागा भौ "पिताका} १ सक-पूरु व्यवः २ अतः के अपर की पताका (भीग)। "पछास्थ न ["पद्धाराक] इतमंक्ता नवधे का एक पेत्य (का)। सँगपु ["सङ्ग] राज-नाश कुप मरण (राज)। द्वार वैको भार (यावम)। ीइन्छच न [ाविन्छत्र ] १ **छ**न के इस्सरका द्वादा (तम १६७)। २ 🖞 क्योतिप-दाक्र-प्रसिद्ध गीम-विदेश (सुक्ष १२) । कत्त न वित्री समातार वैदीत दिनों का स्टर-भास (सेवाय ६ )। पुन, एक देवविमान (देशना १४)। ६ व वयोतिय प्रशिक्ष सक्त योग जिसमें चन्द्र धादि पह चन के साकार ते यहते हैं (पुरव १२--पत्र २१३)। ब्रह्म वि [ यन् ] कातानाता (पुच २, १६)। कार वि [कार] काठा वनानेवाला फिल्मी (मणु १४६)। स पून िको अवस्पति विरोप (प्रमार ११६)। क्च दं [दाप्र] विदाशी सम्मानी (का द २२१३ १५६ थी ।

समा-विरोप (इह १)। **जुत्तच्छ**्य (पर) र्षु [सप्तच्छ्**र**] बुल-विशेष धरीमा प्रतिबन (सर्ग)। इदस्थक्ष म [वें] वास तूस (पाप)। **स्र त्यवण्य देशो स्र**श्चिवण्य (प्राप्त) । ह्यता 🛍 [ह्यत्रा] नमरी-विशेष (प्रावम) । खुचार 🖫 [खुअश्चर] खाता वनानेवाला कारीगर (पर्या १)। **श्चलाइ पुं [स्त्राम**] पूत्र विरोध 'खग्बोहस-चिषएणे सले नियए नियंगुक्ताहें (सम १५२)। **स**त्ति वि [इप्रिम] सन्युट, शारावाना (भारत ११)। ह्यचिषणा पू [सप्तपर्ण] दुश्र-विशेष धरीमा क्रतिवन (हे १ २६४) कुमा)। हाक्तोध पू [हाक्रीक] बनस्परि-विशेष क्रा-क्रियेच (पएस १---पत्र १६) । क्चोन पुँ [क्षत्रोप] इस-विरोप (बीप बंद)। क्रुकोइ १ [छत्रीघ] इस-विशेष (बीप-पर्व्य १--पन ६१ मग)। **ब्रद्**मत्य वेची घ्रदमत्य (हव्य ४४) । छ्रथम देवो सुबूबम (चन)। खरसम वि [पर्दरा] छः या का (तुम २ 8, 88) 1 क्दी की [वे] सम्मा निषीमा (वे ३ २४)। स्त्रम वि सिंग] दिसा-प्रवास दिसा-**वय**क (सूब १ ६ २६)। इस्त केबो इस्प्य (क्या उप ६४० दी प्राप्त क्षुप्पश्चिक्त वि [ यद्पदिकावन् ] बूक्त-प्रक बुकानाचा (बृह १) इष्टपद्या को [पट्पदिका] दुका 🦋 (वीव क्रुप्पेती भी दि] निगम-विशेष जिसमें पद्म निका बाता है (देव २६)। क्रप्पण्म } वि [के पर्मकक] विकास क्रपण्णय । बहुर, बाबाके (से ६ २४ पाया वजा ४०)। इरप्रसिक्षा भी [दे] १ चपत चपत्र श्वमाना। २ नगती रोटी पुत्रशा

क्ष्याचित्रावि सम्बद्ध नियत्ते पूर्ति । एत्व को बेसो ?। निमपूरियेषि एमिज्यह, परपुरिसविवरिजय गामे (गा ५८७) । क्षरपद्म हि देखो क्षरपण्म (बय १)। ह्रप्पय र् [पट्पइ] १ प्रमर, भौंछ (हे १ २६६३ वीन ६)। २ विद्यास्त्रानवाताः। ३ छः प्रकार का (विते २८६१)। ४ त स्त्व विशेष (पिम) । क्रुब्ब १ र्पुन [दे] पात्र-निरोग (बाचा २ क्रमा। १ व १ विष्ठ १६१ रेख्य)। क्रदमय न विं वेश-पितक वी वर्गस्त की श्चाननं का उपकरशा-विशेषाः "मुद्देशाईमनकोड एड्डि एंसचर्य च नाऊर्रा । वासेन्द्र सम्बद्धं (धीष ११८)। **स**रमामरी की [पट्आमरी] एक प्रकार की बीखा (एवया १ १<del>७ - यत्र २२१)</del> । इसम्बद्धमः थकः [इसम्बद्धमायः ] 'इस-इम' ध्यवान करना, धरम चीन पर दिया बाटा पानी की बानाव । श्रमक्समइ (वज्जा यय) । इपस्थादमा। स्ट्रां[स्ट्र] दुशापेड दरका (कुमा) । क्रमसम् प्री दि] सम्बद्धः, मूस-विसेव सरीमा कतिवन (देव २६)। खमा की किमा, क्सा विकी वरिसी मृषि (हे २ १०)। इर वूं ["बर] पर्वंत, पहाड़ (पड़) । देखी सुमा । क्सी की [रासी] कुत विशेष, भीत-वर्त बुत (हे १ २६६)। इक्स केवो द्वाउम (दे २ ११२) वहा प्रसार ४ ६, वस्तु)। क्ष्म्युद् र्षु [पण्युक्त] १ स्थन्य कार्तिकेय (हे १ २६४) । २ भनवान् विमलनाम का धविद्वायक वैश (बंदि =) । क्य न [स्द] १ पएँ, पत्ती पन पत्ता (ग्रीप)। २ बावरल भाज्याचन (से १ ४७)। अरुयन [कृत] १ वर्णमान (इ.२.१७) । २ पीड़ित, क्रीतृत (सूच १ २ २)। छयद 🔻 देशो सहद ((ग)। खरु पुँहिसकी बहममुद्धि तनवार का हावा (परंहर ४) । प्यथाय न [\*प्रवाह]

वाहप-रिकामधास (व २) ।

इस्त देवो छ = पर (नम्म ६, ६)। द्वसारक द्विस्त्रया ठमना वस्त्रमा। स्रात्रकेरवा (स २१६) । स्ट्र- ऋसिड क्रसिऊज (महा)। इ. क्रसिमस्य (सा१४)। इस्स क्रिक्की १ क्यट सावा (४४) । २ म्याज बहुला (पार्च प्राप्तु ११४) । व सर्व दिवाद वयन-विवाद एक रुख का वयन-इद्ध (सूप १: १२) । विषय न [ यतन] क्षण वयन-विवाद (गूब १. १२) । इर्लंस वि [यहस्र] पर्-शेष्ठ 🛢 कोशवला (ਕ )। छ्रतंसिञ् 🌃 [पद्मिक्] धः गोउपला (नूम २ १ १६)। द्वस्य व द्विद्वत्री प्रशेषक भेकमा (धाकानि 1 (55# छुछम न [छुछन] इनाई, नानना (नुर ६ १=१)। द्यसमा की जिस्ताी रेटनाई, कालका (भीष ७०६) उप ७७६)। २ छन नामा बगुर (विसे २१४४)। स्टब्स्थ वि पिष्टर्थे प: धर्मेशना (विश्वे 1 ( \$ B

ध्रसमीम बीन [पडमीति] बंक्श-विदेव <del>यन्दीधीरचः</del> ६(भन)ः द्वसमीद् भी अपर देनो (नम १२)। छसिअ दि [हामन] १ वर्गियत विप्रतारिक क्ताह्मा (क्रीक्तारा) । २ ज्यूक्तार-पाध्य । १ भीर ना दश्यस, स्टब्स्ट-बंडा (राज) : छडिअ रि दि विशय जलार चतुर (वे १ ५४: पाम)। द्वसिअ न द्विसिक्ष नान्य-क्रियेय (ना ४)।

र्द्धाराज वि [भगविन] स्थलकशाह (बोब 94E) 1 द्यतिया रंगो द्याखिया "शैलापूर्य द्यानवान-सोल रिले (बहुत)। समुध । १ [पर्म्स् ] वेटेनिक वश प्रव सर्वा - सर्वे बन्तरे अपि (क्या दा क ह्मम् । विने ११ ए) वस्ताप्रसूपवची-बरनाचा धनुरति (स्मि २३ १४३३)। द्यती की हिर्दे स्वया, बारमा बान (वे वे रभानी देशे ना देदें आर ४ र लावा

1 (11 1

खरूल्य वैको खलुश (पि १४८)। छात्र देखो छित्र । स्वर्धीन (सूना १७३) । इस्तकी की दिही चर्ने चान चनदा (दे दे २६) 1 स्रक्षिकी क्रिकि र कारित देश (क्रुगा) पाय)। २ धन, ग्रारीर (पर्याह १ १)। नमें, प्रमुखी (पाधा जीन १) । प्रधनसन (पश्चि) । इ. श्रंपी श्राप्ति (हा ४ १ ) ६ यसभूतर-विकोप (यए) । व्यक्काल पू िपक्षेत्री सञ्जाता विच्छेत सपतव कर्तन (पत्रि)। चछेयण न विकासनी धप-च्चेर (पश्चार १)। चाम न जिल्ला चमरी का बाच्छारन कनच वर्ग (इस २)। लुविध विस्तिष्टी लुगाइया (था२७)। अविषया न [अविषयंत्र] गौरारिक गरीर (बत्त ६, २४)। क्रवीद्य वि (स्रविमत् ) १ नान्तिवादा । २ का निविद्य (धाषा२ ४ २ ६)। क्रम्पर विशेषको प्रस्थय (राप) । क्किनम वि दि पिहित धान्यादित (नउड)। सह (यप) रेकी क् + थप् (पि ४४१)। ब्रहत्तर नि [पट्सरान] ब्रिहत्तरना ७६ ना (पक्रम ७६ २७)। **ह्यूचरि क्यं [**यद्भप्तिते] व्यक्तर, ७६ (दव 1 (35 क्राम देवो छात्र (शक्त १३)।

काइभ ति (कावित) धाच्यादित दरा ह्या (पत्रम ११६ १४४ द्रमा) । जाइक कि [ आयावन ] काव्यवाला वान्ति-पुष्क (हे २ १११ पर्)। धारह र् हि] १ वरीप शीपक 'बोर<del>ाव</del> तह छात्रक्रमं च शैर्च पुणेजाहि (वस 😼 है ३ ३५)। २ विसास समान तस्य । ३ जन प्रमुख (दे ६ ३१) । ४ तुक्त सुरील कारान् (देव १४८ वर्)। छाई रैनो छाया (वर ) । क्षाई की [व] नाता देनी देनता(देश 1 (25 धात्रमस्य न [हात्रमस्य] ययस्य-सनस्या (सि ६ श)।

धारमस्यित रि द्वित्यमस्यिकी वेशनासन

जनम हैंने के पटने थी. घरन्या में उत्तव

सर्वेत्रता की पूर्वावस्था है। बंक्य रक्क्शेनला (सम ११ पएए ३६)। द्धाओवन वि [द्धायोपन] १ स्नत-पुत्र. स्त्रमानाता (बुद्धार्थि) २ पूं सेवधीय पुरस् भाननीय पुरुष (क्ष ४ ३) । श्चागळ वि [क्वागळ] १ सव-संबन्धी (स ६ ३)। २ दूधन वक्छ। और सी (पि ₹**₹**₹) i क्षामस्क्रिय पूँ (द्वागस्क्रिक) बादो हे मलीतिरा करनेवाला संबान्धालक (विपा १ ४)। द्यापन दि । शतय वर्गे छ कामनय (र

व वश्र)। २ जीमम नोवर (देवे वेर्) सूर १५ १७३ छामा १ ७ बीव १)।६ वक करका (दे ६ ६४) बीच ६)। क्षाजन म दि] क्षानमा यामक 'मुमीदेस्ट' वबद्यालगाई नक्यांनी होई न्हासाई (ब्हें ४१ हो) । क्काजबङ् (बन) केबी खप्पन्तर (रिन) । इहाणी की दि] १ भाग्य वर्षे छ। नत्त्र । २ वक्त, कपड़ा (दे३ ६४) : ३ देन्द्र, गोबर (दे६ ३४ वर्ग २)। काजी की [यू] एंडा बोबर का स्वत (वर्ष क्काय नि [क्वात] अक्षाब्दित माननला (रह € ₹ €) ; काय क्य [हार्म] मान्द्रास्त रस्त्र बनगा। बानः (हु ४ २१)। नहः बार्नेट (पक्म क १४)। काय वि दि शात] १ द्वातित पूरा (१

क्षांचिस वि [द्वापावन्] शास्त्रिकारः वैबसी (सब १४२)। छायत्र न [स्रादन] भाजसन्त दरमा (निद लहासं ११)। द्धापण न [झाइन] १ वर नी सन का<sup>रन</sup> (तित्र १)। १ इत्तन याउरहा १ नर्फ नप्रका (गुक्त ७ १**४)** । क्षायिक्षा । की [रे] देत बहार धारती

कायती 'ची तार्व विमे एना इंटिज

मित्रकार्थाल (या १९ मरा)।

व वृष् पाया का कर दी बोच रह

मा) । २ द्वरा दुर्बल (देवे ६३) राष) ।

द्यायाच्ये [द्याया] १ मातप का समाव कांह् (पाघ) । २ कान्ति प्रमा वीप्ति (है १ २४६ धील पास)। ३ शोमा (धीप)। ४ प्रतिवित्त परसार्व (प्रामू ११४ बत २)। १ भूप-रहित स्थान धनातप देश (छा २ ४)। गद्र की ["गति] १ छावा के घनुसार शनन । २ डामा के सम्मन्दन न यति (पर्गा १६)। पास पुं[पारक] दिमानम पर स्वित मनवाम् पारवेनाच वी मूर्ति (6) ४३)। द्यायां की [के] १ नीति यश क्यांत । २ भ्रमरी भ्रमरा भीरी (दे व ३४)। छ।याइत्तय वि [छायावम् ] सावावाता द्याम-पुन्दः। स्री इत्तिआ (हें २०६)। **ब्रावाटा को** [ पट्चस्वारिशन ] विवालीस चानीस मीर छ ४६ (भव)। क्षायासीम स्थेन कार देखें (सम ६६) वप्प)। झायात्सम वि [पर्वस्वारिश] दिया शेमको, प्रदेश (परम ४६ १६) । द्धार वि [सार] १ विवसनेवासा मरनवासा । २ सारा सबस्य-नमबानाः। ६ वृं सबस्य नोन नमकः ४ सजी सजीकारः ३ पुढ (के २,१ प्राप्त)। ६ मन्य मृति (विने १२१६। म ४४। प्रामु १४२, कावा १ २)। ७ मारतयं, बसहित्युता (बीव ६) । द्वार दं दि । धन्यन्त्र यानुक (दे १. २६)। ह्यारव देनी ह्यार (मा २७)। द्वारय न [दे] १ इतु-शन्द अन्त नी द्यान (६ ६ ६४)। २ द्वरून वर्ता (६६ ६४) पाय)। द्वारिय रि [द्वारिक] धार-मन्त्रनी (रम १, ર ⊌)ા द्याल वृद्धिया विश्व बक्त (हे १ १११)। हाडिया थी [द्यागिता] बना धारी (गुर • ६ मछ)। द्यान्त्रं भी [द्यार्गा] उपर रेगो (प्रापा) । द्याय पूँ [शाष] बानक बचा रिष्यू (हूँ १ २६१: प्राप्तः वव १) । द्वादम रेगी द्वायण (रह १) । द्वाबद्दि की [पर्पष्टि] कावड, विवास्त्र, ६६ (लग ७६३ विशे २७६१)। द्यापर्चार ध्यै [पद्सप्तति] दिन्तर, बत्तर 83

मीर छ ७६ (परम १२ ८६) सम ८६)। म वि विमी छिद्वस्तरम् (मन)। छायकिम वि पिद्यायछिकी सः सावनिका-पश्मित समयवाला (विसे १३१) । द्यासह वि [पट्पप्ट] विमास्टवां (पटम 55 80) I द्वासीको हि दाद्य, तम महा(देव २६)। ह्यासीह की [पहरीति] छिपानी अस्ती बीरकः। सनि विम् दिससीर्गन्द वो (परम व६ ७४)। ह्याहचार (घप) देशो छावचरि (पि २४%)। छाहर्त्तार रेखो छायत्तरि (पर २३६)। द्यादा ं। की [छाया] १ खाइ कातप साहिया |- ना समान। २ प्रतिकान परसा ह्यादी ∫ (पह प्राप; सुर २ २४७३ ६ ६१ हे१ २४१८ मा६४)। छ ही ध्ये [दे] गयन, व्यकारा । सचि पू [भिति] पूर्व तूरव (दे ६ २६) : द्धिज देशो ह्याम (दे ८ ७२ प्रापा)। **डिइड** की दिविधनकी दूसरा (देव १७४ मा १ १ ६४ पामः धर्मरात-सबूब्रियम ११ १)। दिहरमा व [ब्] श्रीका-विशेष पद्म-स्वगत की बीहा (दे वे वे )। बिंद्धय⊈ दिी र चेह शिरा २ वार चनपति । ३ म धम-विशेष श<del>नाटू-क्र</del>स ( **R R R S**) 1 क्रियोसः भी [व] ग्रोटा यस-प्रवाह (दे १ २७ पाम) । सिष्टन दि । पूरा योटी (हे ३ ११ पास)। २ सत्र छाता। ३ क्रूप-सन्द्र (दे R 82) I छिडिआ की [व] १ बाइ वा छिर। २ बरवार 'स सिरियाची विश्वसासगुस्थि' (पग१४८ मा६)। सिर्दाकी [री] बाइ का दिल (ए।या १ २--पत्र ७१) । सिर्व सक [दिक्] धेरमा, विकास करना । विषय (प्राप्त महा)। अपि केन्द्री (है व १७१)। वर्गे फिन्सर (महा)। वह दिव्माण (ए।पा १ १)। धनश छिद्धत, दिज्ञमाण (चा६० दिवा १२)। संक्र

विविज्ञण, विवित्ता, विवित्तु, विविय, क्षेत्रुण (पि ४०४० भग १४ व्यापि ४ ६३ ठा १ २ महा)। इट सिदियच्य (पएह २,१)। हेक्-छेचं\_(मारा)। लिंगुण न सियुनी क्षेत्र बएरन कर्टन (बोप १५४ मा)। श्चित्रायण न [रुद्रन] नटनाना दूसरे हारा धेवन कपना (महानि ७)। छिदायिय वि [छेदित] विदिम्न कराया वया (स २२६) । श्चिपय प्रीध्यस्पक्षी क्यका सामने का काम क्रोचला(दे१ €⊏ प्राथ)। द्धिकान [रे] युत द्धीक (६३ ६ : हुमा)। हिन्दि [दे हुन ] स्टट दूना ध्ना (देश दर् हेर १६०) छेड ४५। छ vvv)। परोक्रमाध्ये निरोदिका न बनम्पति विशेष (विसे १७१४)। दिका वि [धीस्हम ] दी-दी पानाव न बाह्य पुल्विन वीरमुणिया दिश्वादिसा पः वयु दुरियँ (घोष १२४ मा)। छिषांत वि [दें] धींक करता हुमा (मुपा 1 (999 खिकाकी [दे] विका छीक (स १२२) । खिचारिश वि [दीरसरित] धी-धी वानान 🖟 मञ्जूत सम्बन्ध साराज से बुनाया हुमा (मीम १९४ मा टी) । द्विचित्र व [बें] छोकना, छोरा भरता (स 42x) 1 छिकाभन रि [वे] सहरू प्रविद्वा ( \$ 3 ( ) 1 व्यिषाहुक्षाक्षी [य] १ पर की माराज । २ परिस्त सस्य वासलनाः १ सान्ताका टुकडा कोबर-सगढ (र ३ १७)। द्विम श्रिक्षित्र रि [ वं ] क्यु, प्रत्या इस (देव २१)। द्धिनक्रोपण [ ४ ] रेनी द्धिनशोआण (ह्य ५--पण १७२)। द्भिगा (सी) सक [ सुप् ] छूता । फियरि (बाह ११) । छियासय पू [ द ] रेगो दिस्सोह (शय) । क्षिण्ह्य है केरी द्विपद ( यह )। जिण्ह्य देना द्विद्वय ( बर् ) ।

३३७

द्विद्धि य है भिक्षिक् विश्व कि कि कि कि तिक् प्रोक रिस्कार (है २, १७४) यह )। क्षिक सेवो विद्य = क्षित् । हेड. जिलिकार्थ (त्री)। क्षिक नि (क्षिय) १ व्यारक्ष किसा वा सके। २ क्षेत्री सोर्प्य (त्रूप २ १)। १ व क्षेत्र, विक्लेश, क्षितास्थ्य पार्तीय वेक्सहरोह्यिकन-सर्वास्थ्यासाई (वीत ४९ का पुरुष्ठ १०१)।

क्रिक्किकार पूँ क्रिक्किकार निवारश-सूचक

बा कुछा-सूचक राज्य, कि: बि. (शिंव ४६१)।

रेवर)। विक्रमेंच कि [क्षीयमाण] श्रव पाण पुर्वेच क्षेत्रण 'विक्रमेंचेक्कि' प्रणुक्तिण प्रचलकानिकि युप्तिम श्रीचेक्कि' (या १४७)। विक्रमाय है केको जिल्ल

कि जात है क्यों किए कि जाता माने कि कुत्र [किंद्र] है किंद्र वित्तर (पटम २ १६२, ब्यु ६ कर ११६५) १ स्वत्यकार स्पर्वत (पद्ध १ १) १ है क्युंग केंद्र (बुवा १६)। पानि हुई ["पानि] एक सम्बर माने केन समु (स्वापा २ १ ३)।

सिङ्क प्रेन [सिङ्का] याकारा नगन (शरा १ २—पम कथर)। क्रिप्पत केवी सिक्स (शासा १ १व) सुध १ म)। सिक्षणा पुर्वि वास, उत्तरति (१ १ १७)

यह)।
हिप्यन्द्रोडण मृदि ग्रीज गुण्य सस्यै।
(दे। रह)।
हिप्यम्द्रश्चिति रेक वे किल (याय)।
हिप्यम्ब मित्रि प्रमणे दुस्य (दे ३ २७)।

दियगाउ ई [मृ] बार, बार, जरावि विकासा श्रा विक्रण (वे १ वे वर्ष) । दिवसावित्रा | की [ब] प्रमाणी पुकरा दिवसावित्रा | की [ब] प्रमाणी विकास स्वीवनारिती । (प्रमाण स्था वे बिकास स्वीवनारिती । (प्रमाण स्था वे वे वे वे दिवसावा की [बे] बुची पूच (वाय)

द्विप्रगादमका की दिंगे दूवी दूव (वाध) बाम (देव २६)। द्वित्त केटो नियस = रोग (वीटर कर २३ टी देवर है)। दिस्स दि दिशे होट द्विया हुया (देवे २७)

वा १३ मुला ६ ४० पाप)।

क्प प्र१९७-४६ टी)। क्रिक्त की [क्रिकि] केंद्र विच्छेद, करण (पिसे १४४-। सङ्ग्रप ४)। क्रिक्त प्रिटी केरनेसका (पण १)।

क्षिप् वेशो विद्यु (शामा रे रे) ठा थ, १ परम ६४ १)। विद्यु [क्षे] कोटी सक्सी (वे १ प६)। विद्युत्ति [क्षिप्रित] किस-पुक्त, क्षिप्रयास (सस्य)। विद्युत्ति [क्षिप्री] १ सरिएस पुटिस केस-पुक्त (स्था साह्यु १४६)। २ निवस्तित निविक्त (क्षा १)। १ न क्षेत्र स्वयुत्त्त (क्षा १३)।

(मग बासू १४६)। २ निवरित निक्ति (क्या १)। १ न केर चएउन (चत्त १४)। योद 📭 िंगस्यो स्पेड-एक्ट स्टेड-पूक (पएक् २, ३६)। २ पुंत्रवामी शाक्रु सुनि निरोण (ठा १)। कक्क्सपु**िरहोन्**] शम-निशेष प्राप्तक सूच की क्षूचर सूच की करेखा से रहित माननेवाला मत्त (छीव)। द्वार्णीवर वि [िध्यान्तर] मार्च-विरोप बहा बाँव नवर वयेच्छ कुछ भी न हो ऐसा चस्ता (बह १)। सर्वंत्र वि ["सङ्ग्य] विक नांद ग स्क्रार के रामीप में कूसरा नॉब वयेरत न हो (नियुर) । स्वर्षि **दिह**िकाट कर बोने पर भी पैदा होनेवाली वनस्पति (बीव रः पर्या १६)। विद्यात नि वि हव की बाद का बेल पारि (क्य ५० ०)।

(क्य २६ क) की वि] स्थवपर प्रीव-पिरोप क्रिप्णास्त्रिया ( धीम कि स १ ) । देवी क्रिप्णास्त्रिया । क्रिप्पा म [बिह्म] क्षमी शीम । त्रम [पुर्य] सीम । एनमाम काला एक बामा

तुष्की (निपार के। एगमार १)। विष्पण न चिं] शिक्ताधीच (वे के क्षः कुपारेश्ये। २ पूल्कः, ब्राह्म (वे कं, क्षः) भागः)। विष्पीत वेचो विद्यः = स्ट्रस्।

क्किप्पंती की [के] १ वस-विशेष । २ वसमय विशेष (वेश १७) । क्किप्पंतूरण [के] १ लोगम वस्त्र सोवर वस्त्र । २ विशेष, वश्चित्र (केश १४) । हिएमाळ दे [के] सरायक केन, बाने में नव ह्या केन (दे के दन)। विद्यालय न [दे] देव, साहन (दे के पट)। हिएमाडी की [न] र क्य-फिरेका र क्या-विदेश के हिए, रिशन (दे के के)। विद्यालय है सिंह स्थान स्थान

पद्भी र कुटी कुटिया, क्रीटा वरा है बाद कर किर (है है हैरे)। ४ प्यान का केद (डी है)। विद्वार पहिंचे पत्थल क्रीटा तथल (है है पट्यार ४ २२१)। क्रिक्टर कि [ब्री] स्थार, विकार बालार ।

कि क्षेत्र की [के] किया जोटी (१ व १०)!
विश्व वक [स्ट्रा] स्टब्स करण कुषा।
विश्व (१ ४ १)। कर्म किया, किस् कर (१ ४ १००)। कर्म किस्पंत्र (क्षेत्र १००)। कर कि क्षित्र १०० १९६०)। करका क्रिप्पंत्र विश्व क्षात्र (१०००)। क्षित्र (१९) केश कर्मु (स्मार २ ४)। क्षित्रक न (स्प्त्रेम) स्टब्स १००। (पर १०० वीत १००)। विश्व कर्मा हिल्लाक्ष कर्म जीवन वाप्न-विश्व वर्षा (१९) स्टब्स्य कर्मा वर्षा

पस्य १ ६। विचा १ ६)। विद्याबिका ) सी [ब] १ विद्या विद्या नी द्विमादी ) कती तीन या ग्रेम (वं १)। २ भूसक-रिशेष पतने वजीनामी कॅसी पूस्तर

विसके पनी विशेष सम्बे धीर कम चीड़े हीं ऐमी पूरतक (ठा४ २, पद ८)। क्रिविश्र वि [स्प्रष्ट] १ छूमा हुमा (वे व २७) २ न. स्पर्शसूना(से २ ८)। द्वियान दि दिवा का दुवना (दे व २७) । छियोक्तअ विंदियो छिप्योह (स.६.४ •प्र) । द्धिरुप्रविद्धि कृतिय वनावती (**६**३ ह्यिक्वोझ न [दे] १ तिम्बार्थक मुझ-विद्युगः ग्राची-प्रकारक मुख विकार विरोध । २ विकृ िछ मुख (दे ∜ं २८)। विद्यक [स्पृत्] सर्गनमा सूना। खिल्ह (के ४ १०२).। हिहंड न [शिसपड] यपूर की शिका (णाया १ १-- वस ६७ हो)। क्रिहंडअ पूँदि विशे ना बना हुमा मिटाम ब्रिसर, धुनराती में जिसे सिकार वहते हैं (देव २६)। हिहंडि पू [शिल्पण्डिम] १ मधूर, मौर। २ वि सपूर्यपच्छ को बारण करनेकाला (राया १ १—पत्र ५७ टी) । ब्रिह्सी भी [बें] रिका चोटी (ब्रह् ४)। बिद्दा भी [स्प्रहा] स्प्रहा समिनान (गुमा हे १ ११वा पर )। खिदिविभिष्ठ न [व] दवि दहि (दे ३ R ) i दिहिन वि [स्पूर] छ्या हुवा (बुवा) । द्यीम भीत [सुत] चिक्ता द्यीत (हे t ११२ २ १७। मोच ६४६। वहि)। बी. आ (या २७)। क्षीअमाय वि [सुपन् ] धाँद करता (धावा र, र, १)। द्यीज वि [क्षीण] सम प्राप्त इस, दुवेंस (ह २, ६ गा ६४) । सीयंत वि [ शुवन् ] योह करता (ती c)। दीर न [धीर] का पानी । २ कुछ दूध (६२ १०) मा १६७) । विराशी की [महासी] बनराति प्रिटेन भूमि-पूजालह (पएए १--पर १६)।

ह्मण्य वि ह्मिण्य] र पूर्णित पूर-पूर फिया क्षीरक पूं [शीरक] द्वाव से असनेवाला एक ह्या । २ विद्व विमाशित । १ घम्पस्य (ह तरहना धन्तु, सांप की एक वाति (परह २ १७ সমে)। 1 (1 3 अभियोक्तभ [द] वेको आहरूबोझ (या ६ व)। द्भुक्त विद्यम् । स्पष्ट प्रमाहमा (हे २. १६८ः कुमा) । 🕿 सक [सुब् ] १ पीसनाः २ पीलनाः द्भुष्ति ध्ये [दे] पूज पर्योप (बुफ =१)। दर्म द्वार (उन)। कनक्ष. ख्रुट्यमाण (सेना क्टब्रीर प्रे वि १ शक्ति वका कारका २ शासी चलामा (दे १ ६८)। लुक रेको स्त्रीभ (प्राप्त)। श्रुका देशो श्रुष । भ्रुपार (प्राप्त ७३) । द्भृद्दिया वेको द्भृद्विया (नएह २ ५---नन ह्यई की वि]वसाका वक्ष्पंकि (वे वे वे )। 1 (385 हुं हुई बी दिं] दरिक्श्यु केवॉच का देव **धूद वेको सुद्ध (**प्राप्त) । छुद्ध वि वि] जिस प्रेरित (सए)। (R R RY) ! ह्रो<u>स्</u>युसय न [वे] रागणाक, अलुकता ह्य वि श्चिम मुखा (प्रारू २२)। जनस्टा (रे १ ११)। छुन पुन [झुण्ग] क्लीब नपुंतक (पिड ४११)। ह्यूंद वि [ आ + ऋम् ] बाहमखं करना। । ख़ुम देवो छुज्य 'बंदिम्म पादमह्ला छुला सुबार (हे ४ १६ ३ पड्)। क्ष्मेण कम्मेण (संबा ५१)। क्षूंच सक [दे] बहु, प्रमूख (दे १ १)। द्धप्रंत केवो द्वब । छनकारण न [चिनकारण] चिनकारना, क्षुक्रभ यक [ शुम्र] धुम्य होना विविधित निया (ब्रह २) । होना । सुझ्पेति (पि ६६) । क्षुच्छ वि [तुच्छ] दुम्बः, ब्रुट इलका (है | ख्रुवभस्य [दे ] देवो क्रोध्मस्य (दे १ ११)। 2 2 Y) 1 द्भा देखों द्वाइ । कुमद, धुमेइ (महा रमण ल्लाब्युक्कर सक [क्लाब्युक्यु+क्र] क्रम्य । २)। चंद्र छुभिचा (पि ६६)। धाराज करना स्वामादि को बुचले को ह्ममा रेजो छुमा (रसप् १)। धानाज करना । सुब्द्धाकरेंति (प्राचा)। ह्यर बच्च द्विर्] १ तेप करता, सीपना । म्जमाण रेको छु। २ छेरन करना छेरना। ३ व्याप्त करना (बा १२) पउम २० २०)। सुद्ध सक [सुद् ] पूटना वन्धन-पुक्त होना। द्धर 🛊 [धूर] १ द्धप निप्तका सम्र । २ सुद्धः (यवि) । युद्धः (यस्म १ दी) । पगुका नख नुरः। ३ कृश-तिरोप द्धर नि [द्राटिव] पूटा हुवा, शन्तन-पुक वायक। ४ बाख घर तीर (हे र १७ (मुपा ४ ० मुक्त बर) । प्राप्त)। एन दूरा-विशेष (पएल १)। ह्युट्ट नि [दे] धोग मन्न (पाम)। धरम न [ गृहक] नावित क सूच वर्षरह सुदृण व [ह्रोटन] कुन्करा धुन्कि (था रधन भी भैनी (निष् १)। हरूरण न [भूरण] धरमेपन (क्प्यू)। श्चर्द्रादि दि दिना। २ धिन प्रेमा ह्या छुरमङ्कि पृं [वे] मानित हमाम (दे व ६१)। (দ্বি) ৷ द्वारक्ष र् क् शरहरू नापित हवाम द्वरूष [दे] १ यदि, थी (हे ४ ३०१) (4 3 32) 1 ४२२) । २ शीम, तुरुत (१ ४ ४ १) । । धुरिजा स्पे [दे] वृतिका विद्वी (रे.३.३१)। धुक्क वि [धुक्क] पुत्र गुच्य, हलका सक् द्वरिमा ∤ भी [सुरिक्म] सुध कारू (मराः (चीप) । द्वरिया र नुस १ वरा स १४०)। द्विष्या व्य [ श्रुट्रिया ] बानरल-विधेष द्वरिव वि [द्वरित] १ व्यातः। २ पिक (पन्द २ ५--पत्र १६१ री)। (पत्रम २० २०)।

प्राप्तु ६१)।

न्यनेद (सूपनि १६ दी) । ह्युयं सक [हुप्] स्तर्धं करना सूना। कर्म क्रमह, क्रिक्टिंग (हे ४ २४६)। अवह सूर्यंत (टर १११ ७२८ हो) : द्धइ तत्र [सिप्] फॅलना शतना । सुन्ध (ज्या है ४ १४३)। तंत्र हो हुण हो हुन (स = १८ विसे १ १)। हुदाकी [सुघा] १ धमृत पीनूव (६१

हुइ देवो हुदू (दुना १११)।

२६४। दुमा) । २ वाही, मकान गोदने का रनेत हम्ब-बिरोब बृद्ध (दे १ ७८ ब्रुमा)। अर पुंबिर चन्द्र चन्द्रमा (यह )। क्रदाक्ये [श्रुष ] बुवा पूज ह्युता (ह १ १७ दे २ ४२)। ह्यसम्भ वि [सुधित ] नूना दुरुवित

(पा**ष**) । हुदादक्ष वि [धुराकुछ] जगर देखी (ग X () 1 हुइ। तुनि [श्रुवालु] कमर देवी (उप दू १६ १६ हो)।

क्कृदिल दि [श्रुधित] क्रमर देखी (इन उप **७२व द्या बासू १**ं ) । छुद्दिअ नि [दे] सिंट, पोता हुमा (दे ३ 1) i चुड़ दि [चित्र] विता प्रेरित (हे २, ६२)

१२७ भूमा)। ब्रुह्म न [दे] पार्ल्स का परिवर्तन (वह)। #संसायक [क्रेद्य्] १ क्रिश्न करता। २ दोक्नला जेस्सामाः कर्ने, क्षेत्रवरि (श १४१) । चंद्र, क्षेप्रश (नहा) । #अंतर्दृद्वीरमण प्रमण्यनंश्वर्वश्वर् ६ पाप से ७ ४ कम्म १ ६१)।

२ देनर, पति का बोटा बाई (दे ६ ६॥)। १ एक देश एक माद (वे १ w)। ४ निविज्ञन और (कम्म ४ ६२)। क्षेत्रस्य कि [क्षेत्रह] निपूछ क्यूर, ह्रकियार (पाप मानु १७२: ग्रीफ सामा १ १)। विरिय प्रशासकी विकासकी क्रमानार्थ (मन **७ १**)।

क्रुरी की [क्रुरी] कुछै वाडू (देर ४० छेम वि दि छे ह ] १ विश्वत निर्मंत (पंचा वै वेशः वेद)। २ न कल्लोचितः द्वितः (यर्मे र्थ १४३)। मुरसुरहुक देशो जुरसुच्यक। क्रुपु-क्रेम प्रीछित्र] १ नास विनासः 'विक्शान्सेयी क्यो भर् (नुर ४ ११४)। २ क्याड विमान (से १ ७)। १ ग्रेसन कर्तना

चिक्काधोर्म (सा ११३३ से ७ ४**०)।** ४ वैन प्रावस-श्रम्ब वे वे ≹—निर्द्रीयसूत्र न्हानिसीयनुत्र दशा-पुरस्थन शृहकस्य व्यवद्वारनृष्ट, पञ्चकन्यभूष (विशे २२११)। १ सिन विद्यान असप किसा हुआ। और (से ⊌ ४०)ः ६ कती त्युत्रता (पंचा १६) । प्रावस्थित-विशेष (ठा४१)। द गुब्रि परीकाका एक संग वर्ग-तुर्वेद कालने ता एक सम्रह्म क्लिंग बक्त ब्याबरल 'शो केरस सुद्रोति (वंबर ३): । रिह न ौर्षे ) प्राथमित विशेष (ठा १ )।

क्षेत्रण न [क्षेत्रन] १ कएश्न कर्तन क्रिया करण (सम ३६: प्रासु १४)। २ नमी म्युवता ह्राच (ब्राचा) । ३ तक्क इतिमार (तुस २ ६)। ४ क्लियक वक्त (इह १) । १ तूच्य शवस्य (इ.६१) । ६ वस जीव-वि<del>रो</del>प (कुछ २ ३)। अोनहाबण न [छेदोपस्थापनीय] के र्वयम निवेच वड़ी रीखा (शव २६ वंदा 1 (\$\$ केमोवट्टाबिक व [छेदोपस्वापनीव] क्ष्मर देखी (सक)।

छे,मस ) वि [छेदक] छेरव *परनेपा*या

छेक्यग<sup>9</sup> काटनेक्स्सा (नाट, दिने ६१६)।

क्वर [व] देशो जिंकर्र (ना व १)। केंद्र [के] देवी खिंदर (दे १ ६१)। व्यक्ताक्षी हि है किया, जोटी। २ तम माविका बता-विरोध (दे ६ ३१)। खेंबी की [के] कोटी भवी कोटा चारता (के R 40)1 छोग वैको इन्देश = कोड (दे ३ ४०)। क्रेज वैको क्रिज्ज (स्तरि रायहा)। के अना की [के सा] केरन-विन्स (पूछ १४)। द्येण प्रं [के] स्तैन, चोर (वस्)।

क्षेत्र केलो केत्र (या शास्त्र १३० दी ॥

१९४३ म्रीप) ।

अधियन [दे] सेदिश्य शास आविश्वेत स राष्ट्र, याच्यक व्यक्तिविद्येष (प्रस्तु १ छ विसेष १)। **के**क्ट्रेक्ट वि] चोड़े फूलवाली माचा (<sup>ह</sup> ₹ ₹₹) ı कियी हुई बीमारी (वन ४३ लिच्ह १)।

छन् देवी छाअ = सेरप्। कर्म बैरीपॉरी (पै १४३): संक्र छेब्जिल, छेब्चा (ति ५व६ घग)। क्षेत्र वैचो क्रेम≕क्षेत्र (पडम ४४ ६०) धीप वस १)। क्षेत्रम वि [छेत्र] चेलेशना (ति २३३)। इद्रज्ञ वि हिद्रनी घेरतन्त्री। भी 🕸

क्षेत्रसोवसयन [दे] क्षेत्र में ब्रह्म (र

केलु वि [छेतू] केलेबला कल्पेसस

(R 0 19):

1 18)1

(याचा) ।

(4 #£2) I केरोबट्टाचणिव स्वो क्रेजोब्हावनिय (स \$ Y) ! क्षेत्र पुद्धि १ स्वासक, चन्दराव्हि सुरावि बस्तु का विदेशन । २ चोट, बीटी करनेतब (\$ \$ \$\$) i क्षेप्प न [दे संप] पुष्य, नासून 📢 (व ६२: विपा १ २: वटड) । अभ्ययं दि । करत ग्राप्ट का विदेता स्वायक (वे ३ ६२)।

छेलग हे १श स्टाइ )। ब्रो. क्रिय **बेक्ट**ी की (पि २६१) पर्या र १— पव १४)। छे,क्सवस व [दें] १ उलक्ट इर्थ-स्त्रि । २ वाल-मेरन । ३ वीरमार, व्यक्तिकियेद 'क्षेत्रावरामुनिकद्वाद वालकीसावर्थ प र्हेगर' (बाबम) ।

अंख <sub>1</sub> पुंची हिं] यस अक्षम, सक्रय (रे

केष्मान [के] यहामाचे या गाउँ कीया <del>डेन्</del>ट}व [दे संवार्त केश्वर्य]! केषद्र ) सहनत-विशेष सरीर-रवना-विशेष विश्वये मन्द्र-कन बेठन धीर बीबा न होकर

थीं की क्षत्रियों सापत में बड़ी डॉ देखी

शरीर-रचना (सम ४४ १४६ सम, कम्म १ १६) : २ कर्न-विशेष जिसके जरम से पूर्वोक्त संहतन की प्राप्ति होती है वह कर्म (क्रम्प १ ११)। देवाडी [वे] देवो खिवाडी (पव व निष् १२ः जीव ३)। इद् पू [दं झेप] प्रेप्स क्षेपस की वस परिकामोक्षभूमधावित स्वयमास्यविद्वि चेक्षे (से ४ १७)। एड्सरि (धप) देवो झाहत्तरि (पिन) । छोअ पूँ [वे] विषका (सूम २ १ १६)। स्रोप्तथ पृद्धिवास नीकर (वे २३)। स्रोहका की [4] क्रिका देव गीए की काम (अप ७६= टी): 'रुक्ट्रेड परिवर बोह्मं पछामेहं (महा)। क्रोक्सी की दि सोक्स सक्सी (दूप १६)। कोड़िकी [इ] अन्दिश्या बुटाई (पिट ५८७)। -द्रोड सक [द्रोत्यू ] क्षोदना वन्त्रन 🛚 मुक्त करना । छोत्रह, छोत्रेह (मनि महा)। सँह छोडियि (सुपा २४६)। छोडय वि [दे] छोटा सबु (परवा १९४)। दोबावित वि [क्षोटित] धुन्याया हुमा बन्धन-पुक्त कराया हुन्। (स १२)।

कोंकि की दि ] छोटी सम्मी सुद्र (पिंग) । होकिक विकिटित १ औदा हुमा कन्मन मुक्त किया द्वारा 'बल्पायो खोडियो अंठी (सुपा ६ ४ स ४३१) । २ महित साहत (पंता १ ४--पन ७४)। सोबिज देवो फोबिस (पीप)। छोतूज वि हि देवकर (दूम ३१) । कोक्ण } रेको छुद। कोक्णं क्रोप्प वि [स्पूर्य] शरा-योग्य क्रुने सायक (भाषा २ १३ ३)। ह्याच्या पूं दि ] पिशुन, सब दुवेंन (व व ३३)। देखो छोम। खोबस वि [क्षोप्रय] धौन योग्य, कोमणीय 'होरि शत्तपरिवरिवया व सामा (? व्या) धिजकतासमयसस्वरशिकायाँ (पर्ह १ ६---पत्र इ.६)। क्रोफशरव वि [दे] प्रश्चिय प्रतिष्ट (दे १ ११)। बोध्भाइक्षां श्री दे दे वस्त्रया भूते के मनीप्या । २ हेप्पा चप्रीतिकर की (वे 1 (38 8 छोभ [द] देशो छोस्म (दे ३ ३६ हि)। रै निस्सहाम दीन (पराष्ट्र १ १---पत्र ११)।

३ त धम्यास्यान कर्षक-भारीपण दोपारोप (बहु १ वय २) । ४ तः वत्यत-विरोध को क्षमासमागुन्थ्य शब्दन (हुमा १) । १ मानावा 'कोबेस बनवर्गठो बॅठण्डोमे ये देह सो चिमा (महा)। छोम वैको इन्डम (लाबा १ ६---पव ११७)। क्षोबर पूँ [व] श्रोरा वहका, श्रोकरा (धप प्र २१४)। क्कोलिअ देवो क्कोडिम = कोटित (पिम)। होत पर [ वस् ] भीमना भान बतारना। द्यालाइ (थड)। कर्मकी फ्रीफ्रिन्जोतु (हे ४ tex) i क्षोत्रण न [तस्य] धीचना निस्तुपीकरण खिनका **ए**ठारना (ग्राया १ ७)। द्योद्धिय वि [तप्त] व्यनका स्वारा ह्या तूप रहित किया हुया (छन १७६)। कोइ दंदि ! समूह पूच चत्ना। २ विशेष (दे व ६१)। व मानल 'तान य सी मार्थनी भ्रोहं वा देश क्लरिक्सिम (महा)। कोइ पूं [क्षेप] १ क्षेपल फॅक्ना 'नियांदर्द्रि **अबोड्य**मयबाराह्यं (सुपा २१व) । छोहर वि विश्वो क्योयर (मुपा १४२)।

छोडिय वि [सोमित] सोम-पान पदशया

इसा, ब्याकुत्त किया गमा (उप १६७ टी)।

## इच विरिपाइकासङ्ग्रहण्यवस्मि खुबाराइसइसंन्मणी वंबरसमी वरेंगी समझी ।।

ল

क पूं [क] तानु-स्यानीय स्पेतन वर्श-विद्येष (प्रामा प्राप)। उत्त [यम्] को को कोई (छाव १३ थी ) द दुमा,या १ ६)। स वि "ज पराम "यवादगरतनेमी होड रिनेक्ट खेरूको बहुली (मा ७१६) 'बार' , जमल वि वि यम सामग्रास्त करा हुया बर्ज (दावा)।

वसकार हुँ [जयकार] बीत, धम्बुदर (शह कार पर [सर् ] लात करता सोमता करता। थरार (१४१» : पर्)। यह अक्षर्य (है ४ १७ )। प्रयो धम्बार्गति (नुमा)। (पर्)।

खा पूर्विति १ शतु विवेशिय संम्यामी (बीप मुपा ४४४) । २ घटन-शास में प्रसिद्ध विधान-स्वाप, वर्षिता ना विधान-स्थान (बम्म १ दी) । खइ नि [धनि] बित्रना (वर १)।

अह च [चन्रा] जिस नमन, जिम न छ (प्राप्त) ।

अब्द स [यदि] यदि, जो धनर (तम १११

थको तपोक्स थे माकास में थमन कर बनते

🕻 (मन २ 🖘 पव 🕬)। संतारिस नि

अधिकर्ण, संपिय (प्राप्त वहा)। हैए

संपित्रं (बहुर)। इ. जापिकस्य (श २४१)।

जारण र [मुन्] स्वताव-श्रतिक एक राजा

(का ४६७)।

स्रोपण न [अस्पन] घष्टि क्यम कहना (बा १२ गडह)। स्रोपण न हिं] १ सप्पति स्रयस्ता। २ ग्रुक स्रुष्ट् १ १ ११। स्रोपी। स्रोपस हि [स्रप्यक] बोनानेवासा भाषक (बाहर १ ३)।

(पर्यष्ट्र १ रे)। स्तंपाय म [ज्ञम्पान] १ बाहन-विशेष मुखा सन, स्टिविका विशेष (ठा ४ १) सीर मुपा इट्ड कर टर्ड)। २ मुक्क-यान राज-यान

(बुपा २१६)। (पाप)। (पाप)। जिपक्कप वि दि] निसको केले उठी को अंतुनह केला अंतनह (यंत परि)।

चाक्ष्मेत्राला (वे १ ४४ पाम) व्यंपिय वि [व्यक्ष्मित] व्यंपित क्या (प्रापू ११):

लंपिय केको खंप। खंपिर वि [व्हिप्तृ] १ वस्त्राक वाचान (६२ १७)। २ वोकनेवाना, ग्रापक (ह २ १४६:धा २७)गा ११२ सुपा ४ २)।

जिपिकेन्द्रस्थार ) वि [व] जिसको केन्द्रे द्विपिद्धर्मिगार ) उसी को जानना करने-बाता (यह व ४४) । जंबसहकी जानवानी बीक्टण की एक

पत्नी (बंद १४' साबू १) । जबर्षन पुं [जान्यश्रम् ] एक विद्यावर राजार का [जान्यश्रम] शाहुक्या राज्य

जीपास ह [वे] १ जेवास क्षेत्रक सक्तमस विरार या वेवार (वे ३ ४२ पाल)। जीवास प्रेन [जनवास] १ क्वेंग क्रांते क्रंत (पास का १ १) १२ सराहु गर्मनेक्ष्त सर्व

(पास का है है): २ वापकु मर्गनेहन वर्ष (दूस है क)। अवीरिय (सर) में जिन्हीरों मैसू या मीडू कम-निरोप (माम) कम्पुर्व [जन्तु है वासूब, विद्याप 'क्युक्-हुक्यावर्षमुम्मी' (पत्रम है ३, १७): २ एक

प्रसिद्ध कैन पूर्ण पुनर्ध-नामी के शिव्य धरित्य वनती (नप्प बगुः दिना १ १)। ६ त. वप्पू दूरा का कल जानुत (वा १६)। चंतु पुन [तस्यु] जानू दूरा का कल जानुत के दिनि बगु परधेनी' (संदोध ४०)।

र्जमु रेगो जेपू (क्या हुमा ४४: वज्य ४८, २२) ने १३ व६) ।

र्जबुझापुंदि] १ वेतस बूझ वेंत । २ पथिम दिल्यास (दे ३ १२) ।

जीवुका वृद्धिनमुक्की १ सिमार, पीरक् जीवुगा (प्रापृ रूरे उप क्षेट दी पतम १ x ६४) । २ न पासूब्य का फल भागुन (पुरा २२१)।

जीपुल पूँ विं] १ वागीर कृत वेंद्र । २ न सबसायन सुरापाव (वे वे ४१)। आरंधुक्त विंहिं] जन्मालः वाषाट, वक्साधी (पार्य)।

अंतुत्रह देखा अंत्रवह (श्रेत परि)। अंतु की [कान्यू] १ कृत दिरोप वामृत का देव (शासा १ १ मीत)। २ वंद कृत

के सामार का एक एकस्य शायत पचारे पुकरोगा विचये कारएंग यह बीप क्षेत्रीण कहमाता है (वं १)। १ थुं एक पूर्वाच्य वित्र पुनि नुषर्य-स्वामी का मुक्य शिष्य (वं १)। दीमा थुं ["द्वांच"] भूक्यक विरोध वव बीप बीपर चुर्जा के बीच का हीए विसर्थ

बह्न मारत मादि क्षेत्र वर्त्तमान है (बं १

क्ल) । शीयम वि [द्वीपक] बानुशिर श्रेमकी जन्द्रीय में क्लाम (ता ४ १।६) । शीवपज्यति की [द्वीपमाद्यारी के मामन-सम्पनिकेश निवर्ष बंदुवीर का स्वर्तन है (व १) । पीड पिड न [पीठ] मुद्दर्गन-बन्दु वा सम्बद्धान प्रदेश (व ४

एक)। पुर न [पुर] नगर-निरोप (१४)।
माजि हैं [माछिन] परण कर दून पुन
प्रत्य का पुरु पुन
१३ व.१)। मेथपुर न [मेथपुर] विचा
बर-नार-निरोप (१४)। सीं है [पण्ड]
प्राप्त किया (१४)। सीं है [पण्ड]
प्राप्त-किरोप (पापभ)। सीं में [स्थामिन]
मुचीकि कैन गुर्म-सैरोप (पानभ)।
सींपुण हैं [मम्बुन है विवाद, धीवह (शोप

दश मा) । अंबूष्य न [जान्युनवृ] १ नुनर्छं, योना (गम ६१: पदम १ १२१) । १ ट्रंक्साम प्रशिद्ध एक याना (पदम ४० १०) । अयुस्य ट्रंक्य (जन्मुनक) उरक माजन-पिरोण

(दरा)। अंत दृ[ब]तुष मूना बाव्य वयेरद्रका धिरका (वे वे ४)।

| जॉर्यत देवी जीमा = मृम्म् । | जीमग वि [जूम्भक] १ जीगारै मेनेवासा । | २ दु क्यन्तर-देवीं की एक बाति (कम

र प्र व्यक्तार वहा का एक वाति (क्या गुंपा ४)। जीमणंगण्यो वि [वि] स्वच्यात्व आयो को जीमणंग्यो महत्ती में बावे वह बोवने जीमणंग्यो वाता (पत् वे १ ४४)। जीमणं की [जूनमणे] तात्र अधित विद्या

विशेष (तुस २ २ प्रस्म ७ १४४)। जीसप केती जीसमा (उत्तय १ १ धीठ नग १४ क)। जीसा की [क्षुणात सन्त (२ ३ ४१)। जीसा की [ज्युण्मा] जैसाई, वृत्त्मल (विषा १)।

जंसा की [जुन्स] पर देवी का नाम (विरिट १)। जंसा । धक [जुन्स] जंसाई लेता। जंसाक श्रे जंसा, केंस्सद (है ४ ११७ २४: प्राप्त पर्)। यह जंसेत जंसाकेंट (वादपद केंच ६१: कम्म)।

२४ : प्रायः पर्) । वह जमन जमामत (वा १४६ छ ७ ११ कम) । वीमाइक न विकित्त जिमाई जुम्स (पति) : जीनिय न [जिम्स्त ] धैमाई जुम्मा । २ पु सामनियेग वहाँ ममनार महावीर को केमकास जलार हमा वा यह नोब नास्क

वाल पहुत्र के पान को स्वकृतिनिका नहीं के कितरि पर वा (कप्प)। अक्तर की की पहला है पहला की की पहला है पहला की की पहला के पहला की की पहला के पहला की पहला का मी पान का किया की वा (पदाव के हैं)। प की पता की पता के पता की पत

पुँ ["नायक] वर्गी ना घरिताति पुनेर (बागु) । त्रच न ["दाप्त] देखां सीचे (बिक्स (वस र६) । "दिमा की ["दुत्ता] महींर स्कूनमध्य की बहित एक बैत सामी (पवि)। सद्दर्प सिद्वी सक्ततीप ना ध्यन्तिति वेश-विशेष (चेर २ )। धिंडसप-विमण्डि की "मेण्डसम्मिनमक्ति एक वर्ष कानात्व (राज)। सद्द्रीसहीयश के लिए लिया काट्य सहोटमक (भाषा २ १ २)। सदासद् र्दु[सद्दस्त्र]करातीप मा व्यक्तियोव देव (चंद २)। सहावर वृं [महापर] मश संयुक्त का श्रीनद्वाता केंग्र शिष्ट (चंद २ ) : सय है [राज] १ ब्यो ना राजा कुवेर । २ प्रवान यक (नुपा YE२)। ३ एक विद्यावर राजा (पठम = **१२४)। वर पूं[बर] क्ल+छन्नुह का** र्धावपति देव-विद्येव (चंद ? )। १३ हू वि िबिष्ट क्रिक्स का बावस्थाना, क्राव्यक्तित (बाद शक्य २)। इंदिचय इक्षिचय न [ "[दूसक] १ नभी-नभी निशी दिशा में विजनी के समान को प्रशास होता है वह. भाराश में स्कतर-इत मन्ति-शैपन (बप ३ ६ वर ७)। २ समारा में शिक्षता धनिन-पुक निराष (बीब १) । व्हस वुं [विशा] मत-इव धावेश करा ना मनुष्य-शरीर मे प्रमेश (कर ६,१)। हिंद्य दूं [शिक्षय] १ वैभगता पुत्रेष, मगास्थ । २ एक लिया बर राजा (श्वाम ११३)। हिलाइ पू िधिपति देशो पूर्वोत्त धर्व (शास प्रक्रम # 225) i

कराराणि की [दे सम्राति] कैगानिका सीरामी वासित सदि समाम का पर्व (दे ६ ४६)। खरुरा की पिस्सी एक ब्रांक्ट केन बाकी

दाराम भा [प्रसा] एक माध्य कर बाला को महीत रमुक्तम् दो बिहित को (बॉड)। द्यांवरां कुं [चल्कि] १ वर्डों की स्थानी स्प्री का द्यार (ठर ४१)। १ सब्दान् सरमा का स्थानमाव्हित्यक केर (कर वह बंदि क)।

ज्ञविराणा की [यक्तिणी] रै नार-मौतित की वेदियों को एक बार्गि (सावय) । रै नायरान् मौतेतिताव वी ज्ञवत दिस्सा (यन १२२) । ज्ञविरामी की [यक्तिगी] वैची वश्या

जनमुचम पु [बसोचम] का-देनों की एक बनायर नाति (पएस १)।

अन्तरोस पुँ [यहोदा] १ मतों का स्वामी। २ भगवान् समिनन्दन का शासन-मक्ष (सीठ ७)।

७)।
 ख्यान [ शक्कत् ] के की विश्वसम्बद्धिक (पर्यक्ष ११)।

्परहर र)। आरगपुँ [वें] वन्तु वीव प्रास्तीः चुनो वया परिचेकाय मिन्सू (सुझ रें ७ २ )।

भारतकार । समझ (सुध १ क १ ) । जार दून [जारत ] प्राची जोन 'पूडियनीने इंग्लिका येथ टॉकस्थिया नर्गे (स्ट ४, १ ६०) सुध १ क २ १ ११ ११) ।

लग म [ जागम् ] चय संसार मुनियाँ (धः २४६ सुर २ १६१) । गुरु पूँ [ गुरु ] १ चव्य में सर्पन्येष्ठ पुरण १ याग्य का पुरण । में विश्वनेष्ठ सीर्पनर (सं २१) पंचा ४) । जीवस्य मिं जिल्लानी १ वक्य को

जाह पुँचािय विषय राजनक परवेश्वर, विनन्तेव (एपि)। विधानह पुँचिया प्रह्मी देवहाा विचाता। २ विनवेश (एपि)। प्रमास वि "अकारा विचार राजनार कारोजना जनकाराक्त (वहन २१ ४७)।

बीललेगला । २ व् जिल-वेग (राज)।

प्पद्वात्र न ["प्रधात] जनद ने क्षेष्ठ (कार)। आपर्द की [अगरी] १ प्राराद, किसा दुर्ग (नम १६ मैन्य ६१)। १६ वर्षा (क्या १)।

कार्यकरम है [कारवायनव] परेंड रिक्टप (राम ७१)।

जगमा पक [चाम् ] वनवनः, श्रेपता । वक्र जगमान जगमान्त्रं (वक्र ७

48 68 659) I

जगह नक [वं] १ भवत्ना, मनदा वरना बनद् बरना । २ वयनैत वरना पीदना । व व्यक्ता वापून वरना । वहः समझैत (चीत) । ववहः समझित (वरम २ १

चार)। बराह्य न [व] नीचे देनों (वर)। क्यार्थन, वीवृतः चिताः विधाः विधाः वामावृद्धानसम् वागावकारापचलस्यः (जन १३ वी) । जागविका वि वि विवादीकाः क्यांवितः (१ ६

. ४४० सार्घरेका उन)। अनगिक्रकः पि [दे] सङ्ग्या कृषा(वर्षेपे . ११)।

पर)। जन्मर पूर्वितार] संत्रक्ष, कमच वर्ग (दे रे पर)।

जराक्ष न [वे] १ पन्नामानी मरिए, मरिए का गीनमा मार्ग (वे ६ ४१)। १ जि.मी मरिएा का गीनमा स्था (वे ६ ४१) पास)।

जगार पुँ [ते] एव भवत् (वत् ४)। जगार पुँ [तकार] 'चं यत्रर, 'चं वर्ष (निद्व १)।

(शिष्ट् १) । कारार पू [यरकार] 'मद' राज्या 'जनावीद्वारी कारोत जिसेकी नीरद (शिष्ट् १) । काराधि की [काराधी प्राप्त-निरोध एक प्रश्नार का शुक्र काम 'प्रस्तुत कोम्लाकनुम्बुन्धन वार्षिक' (देशा हो ।

नारीह" (रेका १)। अनुस्तम वि [सगदुस्तम] बनद-मेह क्या में प्रदान (श्या २ ४)।

करमा बाक (आर्गु) है बामना, नीव से करूम । २ समेख द्वाना साववान द्वीना । कर्पाः नरिव (हे ४ व पर्। बात् है )। वह जर्मान (तृपा १०१)। प्रवो कर्मावर (रि १९६९)।

जग्गण न [जासरज] वाच्ना नितास्त्राच (बीव १ १)।

कारविक्र रिजागरित् विवास हुन्छ और वै कारस हुना (नुना १९१)।

 अग्यद् वृ [यद्पद] को प्राप्त हो को ब्रह्ण करने की धक्रका 'रएका बरम्दो कोडेक्में (भारत):

कम्मावित्र देती जागवित्र (व १ - १६) । जम्माद वेगो जम्माद (याक) । जम्माद ति [जागृत] बना हुमा त्यापनीर्थ

(या ३ १८ दुमा पुरा १८३)। अभिगत वि [जागरिष्] १ काक्नेताचा। १

२६६) ।

वस्य दृ [दि] पृथ्य गरर, घारपी (है है \* ) 1 उन के जारा १ क्तम जातवाला बुधीन बैह छत्तम सुन्दर (छाया १ १। मा १२। स्पा ७४। रूप्य) । २ स्वामानिक शहिना (तंद्) । ३ समाठीय विकाति नियण से र्राहत शूड (बीव ३)। प्राचेत्रण ॥ [जास्याक्षत] १ घेष्ठ धञ्चन सुम्बर झाँकन (ग्रामा १ १)। १ मॉवत ग्राज्यन हैस बनेपह ने मस्ति धारान (क्या)। खर्चादण न [त] १ धगर मुक्ति वस्य-विशेष जो पूर के काम में बाता है। १ ब्दम वेसर (वे व ४२)। ज्ञचंध वि [जास्यमधी बन्ध स समा सम्बा (मूपा ६६६)। अधिकास ) वि [जास्यन्यित] मुद्दस में जनसिय र क्यम बेठ वादिका (सूच १ 2 1 88 33 1 जवास ई [जास्यच जात्याच] उत्तम बाति का घोड़ा (पडमे १४ २६)। 🗮 (भ्रय (भ्रय) वि [फ़ातीय] स्थान जाति का (क्छ)। अविद न [मिथिर] बहा हरू जितने समय हम् (बय क)। प्रमद्धं राष्ट्र [ सम् ] १ स्टरम करना विशास बाजा । २ देना यात करना । अच्छाइ (हे ४ २१४, इ.म.) । क्षण्ध र् [यदमन्] शेन-विशेष यहमा छव रोव (शह २२)। जन्छन् वि दि । सम्पन्न स्वर (है ३ ४६ WE ) ! क्रत हैयाँ सपण्यम् । शह- जससाण (नार-राष्ट्र ७२)। जनुष्यो जड≈यनुष्(लावा १ % अय) बद्धारि [अस्य] थी जीताजा सक बह बीडने को शाय (है र २४) । क्रमार विजयेरी की एँ एक्सिय सोमाना बाबर, फॉनेस वा फीवर (या १ १ पूर ३ 1 (35) जदार बन [जजरप् ] मीर्छ गरम सोवता क्तनः। व्यक्तः जद्मरिद्धान्, कद्मरिद्धानाग (बाट-चेत ११। बुग १४) । 88

जिक्का वि [जिन्ति] विदित करा हुया जन्मरिय वि [जर्मिरिय] बीर्ण निया भग (सिरि ११६)। भोजमा किया हुया पूराना (ठा ४ ४' गुर जडिओ नि वि जटिती महित महाद्वमा क्**१६४, मन्त्र**ी। काजिता पूर्विकिटिशकी एक वैत धावार्यका न्तिवित्त सीसरम् (वै ६ ४१ महाः पोघ) । जहिम वंशी जिडिममी बरता अस्पर् नाम (ती १५)। ब्याच्य (सूचा १)। अक्तिय ) म िधावक्तीय ने बीधन-गर्मन्त जहिषाइस्म रे पूँ वि अटियादिसकी पर-अञ्जीव | जिल्ली मर 'चर्गाव बहिवरएं जिंद्यान्छव<sup>्र</sup> विशेष प्रदाविहासर देश-विशेष (पिक्र ६ ६ ११२)। (ठा२ ३ वन्दर)। जह वृजिते । देश-विष्ठेष (स्व) । २ वस जविस्त वि [अटिस्त] १ वटावामा वय-युक्त रेश का निवासी (है २ १)। (उनाः कुनार ३४)। २ ध्यातः, लविक्त जट्ट वि [इप्र] यवन किया *हवा बाव* किया **'उळ्यानिययहम्मजामोनियाध्ये अस्टी प्रशेगो** ह्रभा (स ६६) । वर्ष(बुक्त ४९५): ३ ई बिह केसरी। उद्दर्श डिस्ट} यजन याप यज्ञ (उत्त १२ ४ बटाबारी सारह (हे १ ११४- सर ११) A 1 4X # )! पण १४) । जिंद ये [याँष्ठ] कस्त्री 'अष्ट्रिपुट्टिनउप्रयहा-जाबसम १ दि जटिसको राह्न बहु-बिरोप रेडि (महाः प्राप्त) । (दुवार )। जब वि [जड़] १ धपेतन भीव चीरत परार्थ । जहितिय ) पि [जहिसिन] मन्ति भिना व्यक्तितित है हमा बटा-पुक्त किया हमा (नुपा २ मूर्य भामधी विवेध-कृत्य (पाधा प्रामु ११४ २**६६**) : ७१)। ३ शिशिए, जाने से ठंडा होकर काले अविक् वि [जटिन्] वटारासा वटापारी को बराक (पाय) । (बंद) । श्रद्ध वेको जह ( पर्)। जगुस देशी जहिस (मन १५---पत्र ६७ )। जह ) वी [जटा] बे हुए बास रिसे हुए जब वि वि वराम धरमध (पर १ ७)। बाह्य जाम (ह्या ११७) सुपा १५१)। অভ্ৰ দ [আম্ঘ] बहुता बहुपत (৪৫ ছব घर वि चिरी १ नय की बारण करने भागा । २ वृ बटामाधि तारच सैन्याची द्याः सार्थे १३ ) । (पत्रम ६६ ७६)। धारि वृ ["बारिन्त] शबु देला जह (पप १ ७ पंचमा)। बेमी पूर्वोक धर्ब (पदम ६६ १) । अब्रुपु दि] हामी इस्ती (मीप २३*४)* अहदारि वैयो जह भारि (पुत्र २६६)। बह र) । अक्काओ [व] जाहासीठ (गुर १३ २१४) **बक्षाड** १५ (जनाम्) स्पनाम-प्रमिद्ध मृद्ध अक्षाउण विशि-निरोप (नक्ष्य ४४ ११) अद वि श्यिकः विश्वतः, बुक्तः विश्वतः (हे ४ २४व थोप १ )। 'वहवि न सम्मन्तवही' अज्ञागि पुं जिलाहिन्तुं असर देखी (पत्ना बत भरे ही) । 88 4X) 8 आदर ) व [जरर] पेर तरर (**१**१ २४४ अद्यक्त वि [ ऋटायम् ] जटान्युच, जटावारी श्वद्रस्त प्राप्ते पर 🕽 । (**₹** ₹ ₹¥₹) i जहासुर वं [जटासुर] बनुर-विशेष (वेर्त) अग डर्क [जनपू] बलक दरदा, पैदा (##) I करना । बगेद शर्राति (ब्राप्ट १५) १ थ। प्रक्रि वि [प्रिटिम] र बनाराचा व्यापुन्छ । बहा) । बालुयनि (याशा) । वर्ष ऋणीन जणमाण (पुर १३ २१ ह १६ छप)। २ र्षु जरम्माचे वातम् (बीतः वतः 👔 🕽 ) । जहिम वि जिटिको रेको अहि (रूप ! जगद्र [प्रत] र मनुष्य माना बाली लीम, व्यक्ति (भीर माशाः पुत्राः प्रानु १३

कत्ताकी ["यात्रा] कर-समावन कर र्मपति 'जलनतारहियार्थ होह बहत्तं जहेंग नवाँ (दंग ४)। हाय्य न दिसाती १ दवड कारणय दक्षिण का एक बंदम । २ नयर विदेय नामिक (ती २०) । सङ् वृं ["पति] चौसी ना मुखिया (धीप) । यस पूँ विका मकुज समूह (परुप ४ १)। बाय पूर [ वार] १ जल-पृति किंदराती कहती सवर (पुरा १)। २ समुख्यी की बालव में चर्चा (भीप) । ३ सोक्याबाद, सोक में मिन्द्रा 'नलगानस्तु' (धर १)। स<u>म</u>ह की [सूर्वि] फिनक्सी। व्यवाय थु िंपवाद नोक में लिन्द्रा (ना ४०४)। र्जणहृद्यौ [जनिम्म] जनाईक्य सम्ब क्फोबली (हमा)। चलइड १९ [बनमित्] १ कन्द्र, पिता जनश्चु 🕽 (यमें)। २ हि. क्याहरू, क्याह न प्लेनाचा (ठा ४ ४) । জন্মত বুহি । হাদ বাহৰাৰ মুহন বাহ म गृषिका (देव ५२३ एड)। २ जिट. माएड भाँड विदुषक (दे ३ १२) । वर्णसम् (जनहम् । चार्यमः 'चन्छो हुँदि र्दकाम बैक्छाय वर्णवर्मा (उस १ ३१ दीः पाम)। चारग देत्रो जनसं(भनं छः पु२१६ सूर 2. 244) 1 अराजन [ब्रस्त] १ वन्त केता उटला करना पैशा करना (तुपा १६७) सुर ३ ६ द्रदेश)।२वि वस्तादक वतक(क्षरे ६

प्रमा मर्गि )- 'कलमरापद्मानक्यां'

खगगि १ और [जनमि सी] १ माता

कामगी किम्बा(पुर १ २६, में हा पाय)।

जगर्य र [जनार्यन] धीइप्स विष्यु

जनपदाद पुं [जनपदाद] उत्तरत बोहोस्डि

(का ६४व थे लिए)।

घटनाइ (नोइ ४६) ।

२ डररम्न करनेवामी की अरपानिका (जुवा)।

(बमू) ।

६४८ सप्त १६)। २ विद्याती मनुष्य (सूप

१ १ २)। ३ ठ⊊राम वर्गकोड (हुमाः

ব্ৰৰ ४)। ४ दि হংগ্ৰুত হুবুদ ক্টে-

बानाः चैल नुद्रमध्यत्रले (विशे १६ )।

मूप-विशेष (बाद १२)। जनमञ्जय देखो जणनेश्रम (पर्नेषि at)। क्रमण विक्रिमकी १ सलावक, स्टलम करनेवासाः विद्विवियं विमुद्यार्थं सम्ब सम्बस्त भगवस्त्रम् (प्रान् १९) । २ वृ थिता बाप (पाध सुर ६ २३) प्रामु ७७)। १ देखी जाण ≂ वर (नुष १ १)।४ निविधाका एक एका एथा बनक, सीता का थिया (पब्स २१ ६६)। ६ पून व मादा-पिता मां-बार वं किपि कोई सक्द, सम्बद्धार पुर्णीत वं सक्व' (सुना ११६। ११८)। "तपञाक्ये ["तनया] सनाकन की पूछी राजा रामचन्त्र की परनी सीसर, बानरी (व १ १७)। दुदिश, धूआ ["दुदिन्] व्यक्ति वर्षे (परुष २३ ११ ४८, ४)। नम्ज पु [निन्दन] एता बनक का पुत्र यामरुख्य (पदम ६१, २१)। ध्रिवृणी **बो** िनम्दनी क्षेत्र राय-पत्नी कल्ली (परम १४ ४५)। व्यक्तियी 🛍 ["नन्दिनी] नहीं सर्व (पउम ४६, १)। "नियनणया औ [ मूपतनया ] सवा बनक को पूर्व कीता (पत्रम ४० ६)। पुत्ती की ["पुत्री] नहीं वर्ष (रमरा ७०)। सुज पु [सुन] बनक सवा ना पूत्र नामग्रक्त (पडम ६४, २०)। सुला औ िसुवा] बानवी, धीता (परम १७ १२, हेर है है हैं। बलवंगया वी [बनशाहक] वानती स्रोता धवा समभन्त्र की पक्षी (प्रस्थ X\$ # ) ! अभवन पु [जनपत्र] १ केत, राज्य वन-ल्यान, बोडलाथ (ग्रीप)। २ वेश-निवासी वन-समृह प्रवा (पण्ड् १ ३ः शावा) । जणवय वि [बासपत्] देश में उत्पन्त, देश ना निवादी (धाना) । जनसमुद्द की [जनशति] दिनस्की धक्रमञ्जू, असूरशत (वर्गीव ११२)। वाणि (धर) स [इव] तसः माधिक वैमा ( th sun df)! ব্যতিষ্ঠ বিভিন্ন বিশ্বনিদ বিশ্বনিদ विकाहणा (प्रमा)।

जलमेश्रव [जनमेजव] स्वनाव-प्रशिद्ध खनीकी [अर्मा] भी, मारी मर्ज्या (समा २--पत्र २६३ पदम १६, ७३)। जणु देशो जणि (हे Y YYY) हुमा; वह ): जणुद्धिमा औ [जनोत्बक्किय] सूर्यो का धौटा शमूह (भव) ! जमुन्सि और [अनोर्सि] तरंत नौ तप्र मनुष्यों की भीड़ (भव)। क्योमाण देवो अप = वनम् । जणर (बा) विजिनको १ ब्लास्क, रैब करनेवासा । २ 🖫 भिता साम (बार्व) । जमेरि (धप) ही जिननी निहा, माँ (धर्म)। जञ्ज 🛊 [यद्य] १ सर्वे शब्द, सर्वे 🛐 (शप्टया २२७) । २ देव-पूजा। ३ याउ (बीर ६) । इ. आ इ.वि. ["साजिन्] स्व करनेवामा (ग्रीप: निष्कु रे) । इस 🗎 [मीय] १ स्व-सम्बन्धी का नाः २ न, 'चतराम्यका' नुत्र का एक प्रकरत (क्र ₹६)। ट्राजन ("स्थान] १ काना स्यान । २ नदर-विकेच नातिक (टी.२.)। मुद्द न ["मुन्न] यह का उपाय (इस २६)। बाड हुँ विवादी बाह्यस्वात (वा २२७)। संह दू [इंछ] बेह बड, इत्तर सन (बत्त १२)। जञ्ज देको जन्न = क्ल्प (नर्में है )। जञ्मय देवो जञ्म (ब्राप्त) । अञ्जवका को [वे बक्रवादा] बक्र विवाह की बाबा, धर के सामियों का क्या (इप ११४)। चण्णसेयी सौ [पाइसनी] हैनचै परम पत्ची (बेस्ती ३७)। बार्ग्याहर पु. [ क् ] कर-रावाच पुट-मुख ( पर )। जण्यिय र्दु [याजिक] वामक यह करानेशस्य (धाषम)। अण्यावर्ध्य १ त [सक्रोपकीठ] यह-मूच जण्जावदीय र्जिक (इस २, धारन)। वण्याद्य पूर्ि हो छत्तत क्षेत्रप्र(दे 1 (#¥ # जम्दन [पे] १ कोटीस्थाधी। २ पि इप्छ कावे रनका (दे ६ ११)। अव्युर्णकी [बाहुवी] तंद्रा क्यी सदीरती (शम्बु ६) ।

जण्ड्यी की दि] भीषी भाग इवारवन्द ( R T Y ) 1 जाणह्वी की [आहुवी] १ सपर वक्तनती की एक पत्नी सकीरच की जननी (पराम प्रदश्)। २ वङ्गा-नशः शाम्रिश्मी (पडाम ४१ दश केमा) । जण्डु वृं [ जहु ] मजन्यीय एक राजा (प्राप्त है २ ७४)। सुआ की ["सुता] गञ्चान्तरी माधीरपी (पाष) । जण्डुआ की [बे] बालु, पूरना (पाष) । सक्टुक्सा की [जहुक्त्या] नंग-नरी (इप्र ६६)। जन्त देवी खम = मन् । सबि वसिहामि (Prt t t): कत्त दुं [यहाँ] क्योप, चयम नेष्टा (धर दु ३६)। ज्ञत्ता की [पात्रा] र बेशान्तर-गमम, बेशाटन (ठा ४ १ और)। २ ममन, यकि। चरावि होद गम्ले (पंचमा धीए) । ३ देव-पूजा के निमित्ति किया जाता उत्तव-विशेष महाहिका रय-वाका च्यादेः भू नार्व पारका विकासनयोगु बक्ताची (नूर १ १०)। ४ तीर्चनमन होई-भ्रमण (धर्म २)। १ गून-प्रवृत्ति (सर ₹મારી) ા जचा धी [यात्रा] श्रेयम-निर्वात (क्ल ₹4 €) l जिला की [ दे ] र विन्ता । २ वेदा मुध्या 'प्रवाल्लाप् वस्वती व क्या क्रीम केलवि' (बा २०)। जित्तिम देशो यत्तिम (उरा २ १८) । र्जात्तम नि [ मावन् ] विद्यता (प्राप्तु १५६ धारम)। अप्तो देशो अपनी (हूर १६) । जल्य च [यत्र] पर्दात्रममें (देव १६१) মাৰু ৩ হ 🕽 গ অদ্বিদী ক্সং = দাং (সিমু ২)। अदिनदा देनी अदनदा (ब्रह १ मा ११)। अबु देनो सड = वडु (डुमा हा a) । अदर पून [वे] वरते-रिरोध (कामस २१ ) ११६) । अभाषेलो जहां (हा २ वेश्व १) ।

अक्रम देवी जल्म (पर्याहर २ ४ पटन \$\$ Y\$) 1 जन वि [अन्य] १ पन-दित नोक-दितकर (नुधार १२)। २ ध्रापमा द्वीन योग्य (मर्मेर्स २०)। जनका ) भी [वे] बरात गुनराती में 'नान' जमा (मुगॅ ११६ चर ०६८ टी)। जमसेणी देशो जण्यसेणा (पार्व ४) । जम्मु देखो आणु (वस्म ६८, १ )। जनोगइय देवा खण्यानईय (पुत्र २ १६)। ज्ञानक्षय रेको अञ्गायस्य (लावा १ १६---पष २१६)। व्यक्षी देशो जल्ह्बी (छ १ १)। ज्ञप देशो अप≖णप्(पद्)। जपिर वि [जपितृ] बाप करनवाता ( यह ) ज्ञाप्य केली जीप । क्याद ( पड् ) । क्यांति (पि २६६)। स्रप्य दे जिल्पो १ विष्ट, क्या । २ ध्रुत का उपानम्म का भाषण (चर्च)। करप वि चिएयों गयन कराने योग्य । जाण म [ैशान] बाहुन-चिरोप रिविका (दे ६ १२२)। जप्पमिष्ठ । य [यक्षामृति] ना ते, वहां ते जप्पित वेष्ट (लाया दे १ क्य) । **अध्यिभ वि [अस्पित] १ छनः श**वित (मार) । २ त. विदे, वयम (सम्बु २) । जम सक [यसयू] १ शाबू में स्वना नियन्त्रण करना । २ वमाना स्विर करना । थमेह (मे १ a)। संद जनप्ता (मीर) । असर्वृं [यम] १ व्यक्तिमादि प'व वगस्त सामु ना बड (गुप्ता १ १, हा २, ३)। २ बॉपल दिला का एक कोक्यान देश विरोध सम देशता, जमराज (वत्ह १ १ याया 🕻 १: १४१) । व अराती नरात्र का व्यक्तिर्थि हैर (मुख्य १ )। ४ हिन्सिला नगरी नारक धना (परम ७ ४६)। द वानम-विदेश (बाबम) । ६ मृत्यू, मीत (धाब ४ गरा)। ७ संयमन, नियमण (सामन)। नाइव र् ["काचिक] मनुर-गिर्देश शरका-वानिक देव जो नारशी के भीवों को कुछ क्षेत्रे (पटहर १)। यास द्र["याव] (

ऐरवत वर्ष के एक मानी जिन-देव (पव ७)। पुरी सो [पुरी] यम की नगरी मीत का स्थान की जनपुरीसमाखे समसाखे एक मुन्तवहर् (गुपा ४६२)। "प्यम वृ ["प्रम] धमबेच का उत्पात-पर्वत पकत-विशेष (ठा १)। शहर्षु ["सट] यमग्रकशासुमा (म्या)। संदिर न [मिन्दिर] समध्य सा थर, मृगु-म्थल (महा)। ।सथ न [।सय] पूर्वोत्तः ही वर्षे (पत्रम ४८ १ )। जनगर्व विद्यान र पणि विरोध । देव विरोध (श्रीव ६) । ६ पष्ठ-विरोध (श्रीव ६) सम ११४१ ६क) । ४ हरू-चित्र वह भीत (बीप १ ६०)। बेको जसम । खर्मा । म [दे] एक साव एक ही जमगसमार्ग निषय में मुख्य (वस्म ११ **ट्टान्त्रास ४ भीवा विपार १)।** जागणियाकी [लगनिका] वेन शाबुका क्राकरण-विशेष (धन)। अमन्तिम र् [जमन्ति] तत्तर विशेष इन नाम का एक धंन्यामी परशुखन का पिका (पि २६७)। अमद्गिषञ्चा ध्यै [यमद्गिष्णता] नन्य ह्रम्य-विशेष सुमन्धवासा (उत्तनि १)। कामय देखी जमग १ मः चर्तवार-शास्त्र में प्रक्रिय बनुपान-विशेष । ६ छन्द-विशेष (नित) । अमछ न [यसस] १ ओड़ा, पुग्न पुगन (लावा १ १ हेर १७३१ से ४, १६)। २ जनान थेरिए में स्मित नुस्य पेकिसात (शय) । ६ सद्दर्शी सहचारी (भव १४) । ४ धमान तुम्य (धम भीग) । उन्नगश्रीजतः पु [रेर्मुनभक्तक] बीइप्स बागुरेन (पापू १ ४)। यर पयन [पर] र प्राय-विश्व-शिटेष (निष् १) । २ माठ श्रेपी शी संख्या (वएस) १२)। पानि पू ["पाणि] मुरि मुदी (बा १६ १) । जमसिय पि [यमनित] १ पूर्ण राजे न्दित (राय) । २ सम-मेरित रूप में बार्गकत (लाया १ १ घीत)। जममाइय रि यमसीपिकी १ वर्गान तम्बन्धी दवारीर ये सम्बन्ध स्वतेशासाः। २ वरवायाधिक देव यमुखें की एवं प्रान्ति (मूच १ ११) ।

चन-दूमारु को मक्तान महाबीर का जामाता

वा जिसने घरवान् यहानीर के पास कीवा

नी**नी** सीर दीखे से संदना सत्तन पत्थ

द्यमायम व [यसन] १ नियन्त्रसः करता।

२ विषम वस्तुदो सम करना (निवृ१)।

क्रमिश्र दि [यमित] नियन्ति धैयमित

जमुणा देश जैंडणा (ति १७६, २११)।

महियो ना नाम (इक) ।

जम् बी [जम्] ईस्तरेख नी एक बय

करम यक [डान्] उराम होना । नम्मद (हे

Y १३६ वर्)। वह- सम्मीत (क्रुमा)ः

कार में किया हुछा (से ११ ४१ मुगा ३)।

नितातावा(द्याया १ ≋ ठा७)।

क्यान कैनावार्य किरोप (सुपा ६१x); निहर-

स्वर्ग मन्मं ग्रीर पातान लोह (गुरा ७६) ११)। नाइ प्रविनाय ] परमेस्वर, परमा-ल्या (पतम दर् ११)। पहुर्व [प्रसु] परमेपर (सुपा २८१ वा) । धर्मत वि ीनन्दी बनत् की याक्षव केनेवाबा (पराप

₹₹**७** ₹}। अवय वि [यत] t एका क्रितेचिय (मास **११) । २ उपनोव रखनेवाला क्याल रखने**-बाला (उस १३ बाब ४) 1 १ न कटबी ग्रस्ट स्वातक (क्रम्य ४ ४व) । ४ क्यांच क्यांच बारवानदा (सामा १ १—पव ११)। 'वर्ष वरे वर्ग विर्हें (इस ४) । बय पुँ [बच] देव शोल-बनन बोड़ (पास) । क्य पु[क्य] १ वन और शतुका परका (बीए) हुमा) । १ स्वनाय-प्रसिद्ध एक चन्न-वर्तीयवा(सम ११२)। इर स बुर् नगर-विकेच (स ६) । इन्मा की ["इम्मी] विचा-क्रिय (एटम ७ १३६)। पास ट्रे िभोप] १ अयब्दितः १स्वनः<del>ग</del>शस्त्रह एक वैन पुनि (कत्त २१) । यद पू "चम्त्र] १ विक्रम की बाध्वर्गी शतामी का नप्रीय वाएक सन्तिम स्था। २ पसर्यानी क्तामरी का एक वैताचार्य (रक्त १४)। बचा की ["बात्रा] त्यू पर चड़ाई (बुवा १४१)। प्रहासा की "फ्लाका विजय ना मंडा (बा ११)। पर देशो तर (बन्)। मंगसा को ["महसा] एक धन पुगाय (वंस १) । सम्बद्धी की "स्वस्ती] कर-सबमी विजयमी(से ४ ३१) काम ७४६)। बद वि [ वर्ग] समजात विजयी (पडम ११ ४६) । बद्धर पु विक्रम । मुन-विदेव (वेस १)। संब र् ुमन्यों कुमारीक गमक सभा वा एक समी (धादु४)। संभि पूं ["समिन] बहे पूर्वीक प्रवे (सल ४)। सह पूँ ["शब्द] विवय-मूचक वाकात्र (बीत) । सिंह र् [सिंह] १ विद्वत द्वीप का एक धना(स्वक्त ४४)। २ रिक्म की बारद्वी राताक्षी का बुजरात का एक प्रतिञ्ज राजा, जिल्ला बुनरा नाम 'सिक राम' ना 'नेल मर्यामहरेगी रावा मणिइल

वयस्तिही सुधी सर्वमधीमग्डलिम वृद्यक्तिहो (ग्रुणि १ ८७२)। "सिरि वो मि] विजयमी अम्बद्धनी (भाषम)। सेम 🖠 िसेनो स्वनाम-धरिद्ध एक छत्रा (महा)। ैक्ट(कि [ैबक्ट] १ थव को बहुत करने-वास्ता विजयी (पडम ७ ४) सुपा २६४)। २ विद्यावर-नदर-विशेष (इक) । विद्युर व [ भद्रपुर] एक विद्यावर-नगर (इक)। |वासंद ["लास] विवाध**ों** का एक स्वनाम-स्यात नवर (इक)। ज्य पुं [यव] प्रमल बेहा कोठित (स्व ६ खय ईसी [खया] ति<del>षि विशेष</del>—एटीय, षटमी यौर त्रयोषद्ये विषि (व १) । खर्थको अन्या≕वद्याः "प्यमिह≡ [भिञ्जूति] वन से जिस बसद से (इ **₹₹**\$) ( वर्षत पुं[बयन्त] १ इन्ह्र का दूप (राम)। रे एक ताकी बसरेव (सन ११४)। १ एक वैन पूर्ति को गब्रहेन पूनि के हुरीय रिप्य थै (कम्प) । ४ इस नाम के देव-दिमान में व्हनेवाली एक ब्रचम हैर-बावि (सन १६)। र बेंड्डीए की बक्दी के प्रवित्र हार ना एवं थविष्ठतादेव (ठा४२)। इ.स.चर विमान-विश्वेष (सम १६)। ७ वामुद्रीप सी बक्ती का पश्चिम हार (हा ४१)। व स्वरं पर्वंत का एक कियर (बा ४)। जर्मती को [बदस्ती] १ एत हो नहीं एउ (गुर्व १ १४)। २ घनदान् धरमावनी थीबा-सिविना (विचार १२६)। अर्थवी भी [अयर्था] १ वती-विरेष, मएएँ। वर्षं चळ (यएख १)। २ समय बनदेत की माता (बय ११२) । ३ विदेह वर्षे वी एक ननयै (हा २ ३) : ४ शंगारह-बानह स्तृ गो एक बष-महियाँ (हर 😗 t) । 🖹 वर्गुगीन के येद ने पश्चिम दिला ने स्थित दवक पर्वत वर ख्लेवानी एक दिल्मुमारी देगी (का )। ६ जनशन् बद्धानीर को एक जनाविका (जन १२, २) १ क मध्यान नदाबीर के बाउने क्लवरं भी जाना (मातम्)।, ंब्रेटरम्

'बर्मितीए सीमो वह्रदेतीए स वह्रप् विता' (तृक ६६)। जन्म सः [तम्] वाना वन्छ करना। नम्बद् (पड ) । जन्म पुन [अस्मन्] कम जन्मित (अ ६) महा प्रानु 🕫 ) । क्षमाण न [जम्मन्] कम उ≃तीत अलाव (दे९ tex धावा १ १ मूर १ ६) : क्रम्माक्षी [याम्या] चित्रण विरा (इन प्र 902) : करहाम ; देवो जैसास । बन्हायह बन्दाद विम्हाद् वम्हाहाद (शाह जम्हाशे 🕽 ६४) i अस्य सक [कि] १ मीठनाः २ सक् बल्क्ट्र-वन में बरतना । नमह (महा) । जर्मन (स 🕽 )। एक अञ्चा (क्र ६)। उपमक[यज्] १ पूत्राकरमा। २ याग वरमाः बन्द्र (कत्त २१ ४) । वक्क जभगाय (धनि १२६)। अप बर [यन्] १ यन नरना केला किला नरनाः २ त्याप करना जायीय करना । अवह (बा) । त्रीर जरम्नामि (बहा)। वह-क्रपंत जयमान (त १६ : बा १६) बीप \$54. Le 584) | 2. Afdet (24. नुर १ १४)।

द्ययण न [यतन] १ मण प्रयत्न चेग

क्तना प्राणी की ख्या (पणह २ १)।

क्यम 'वयण्यदस-बोग-वरित' (सन्)। २

क्रमण विजियमी बेग्बाला बेप-पूर्व (रूप्य)।

अप्रण न कियन] १ बीट विवय (सुध

२६८ कप्) । २ वि जीतनेवला (कप्) ।

त्रयण-वर्ध

दान (पण्ड २१)।

( R X ) 1

(कूमा मुर २, १६ १ ४)। की ई (कुमा या ४७२ म)। स्थात वृं शिष् ] बूटा बैत

(बहुरा सनुप्र)। स्त्रेबी की शिकाी कृती बाब (बा ४६२) स्तु हुँ दुँ हुँ हैं बुबा बेम । २ की बूबी गाय, जिएए। य

को दुल्बन हो इस ठयह महत्ति करने का

क्यन (निष् १३ से ६७ सीप)। जबहरू पूँ [जयहम्] सिन्हु देश का स्वताय-प्रसिद्ध एक राजा जो दुर्गीकन का बहुनोुई

षा (खम्मा १ १६)। जया च [यदा] विस समय जिस वन्छ (कप

कान)। जया की [जया] १ विद्या-विद्येष (परम ७

१४१)। २ नतुर्वं चक्नर्ती स्थानी सह महिपी (सम १६२) । ३ मनशान् वामुपुरुव की स्वताम स्पाव भावा (सम १६१)। ४ विधि-विदेय- पुटीया, घटनी आर वर्गक्यी

विकि (पुन १) । १ मण्यान् पार्थनाम श्री शासमदेशी (धी ६) । ६ झीपवि-विशेष (राम) । जयार पूंजि शरी १ वर्ष बक्तर। २ वका ग्रहि चरतीय राज्यः 'बरब बदारमवारं समस्रो

भेपा फिरमा**मस्त्रे (**एन्द्र ६ ४) । अधिज वेको जद्रग = क्यिन् (पर्वा १४) । कर मक [ जु ] बीएँ होना पूरामा होना हुड़ा होता। बरद (हे ४ २३४)। कर्न जीवर वरिग्वद (हे ४ २६) । वह भ्रश्त

(प्रक्ट ५६)। बर र् [जर] राक्तरेय दुवार (दुवा) । भार पुं[चर] र रावण नाएक मुक्त (प्रक्रम ४६,३)। २ वि कीर्ल,पुराना (दे ३ ११)।

करन्वको पश्चिम (पराम १६ १६)। जर देवो जरा (दुना धंत १६ वर ७)। करंड वि दि देश पूर्य (देश ४)। जरमा दि [जररक] बीर्लं पूराना (मनु ४)। सद्ध कि [सद्ध] १ कठिनः पुरुष । २ कीएँ खबज न वि] भाक्षे का वस्तर, हय-संग्रह पुरावा (ए।या १ १—पच १)। देखी खयणा सौ [यतना] १ प्रयत्न केष्टा कोरिका क्तरक्ष वि [वं] वृद्ध पूरा (वे वे ४ )। (किच १)। २ प्राप्तीकी रक्तार्मिलाका परित्यान (इस ४) । ६ छत्रयोग किसी जीन जरह देवो चरठ (पि १६ व से १ देव)। ६ त्रीतः समबूत (से १ ४६) । जरण न [खरण] बीर्णताः माहार का हवन श्लीमाः द्वाबमा (वर्गस ११९६) । खर्व र् जिरक एन्द्रशामामक न**रह प्र**निशी का एक नरकाबास (ठा ६—-पव ६६२)। सबस्त पूं भिम्म नरकावास-किरोप (ठा ६) । भिन्त पू भिन्ती नरनावास-विशेष (ठा६)। ।वसिट्र व् विषशिष्टी नर

काबास-विशेष (ठा ६) । ·वरस्रद्विभ } वि [वे] वागील वाम्य (वे बरलपिम । १ ४४)। बरा की [बरा] दुरापा दृहत्त्व (भाषाः क्या प्राप्तु १३४) । इत्यार दुं[%ुप्रार] की प्रप्त का एक भाई (बीच)। सीय व् ["सन्ध] धनपृष्ट भगर का एक धनाः नक्षां प्रशिषामुदेन जिसको भी कृष्ण नामुदेन मै मारा का (सम ११३)। "सिंधार्यु ["सिम्ध] बही पूर्वोक्त सर्वे (पएह १ v---पष ७२)। "सिंधु वृं ["सिन्धु] बही पूर्वीक धर्प (लागार १६ पत्र र 🗷

करा की [जरा] बमुरेन की एक परनी (नुप्र ા (૭૭ वसहिरण (पर) के वह हरत (पिन) । जरि वि [स्वरित्] बुबारवाना ज्वर है

पउमार ११६)।

योष्ट्रित (शुपा २८३) ।

१ १७ उर १ १)। जरिश्र वि [कारित] व्यर-पुक्त बुतारवासा (या २५१ मुपा २८१)।

386

जस धक विवस दिस्ता, वन्य होना । २ चमकमा । जलह (महा) । वह सर्खात (उना, या २६४) । हेक्- जनित्रं (महा) । प्रयो , वर्फ अस्टिन (महानि ७)।

सरि कि जिस्से वरा-प्रक बुक बुक (वे

चळ देखो बाद्य (मा १२ माद ४)। অভ দ [রাক্রম] পরতা দলতা "দলনীব-वल लेवा (सार्थ ७३: से १ २४)। खल वृं विश्वको देखेन्यमान चमकीसा (सूच

t & t) i अल न [ब्रस्त] दीर्प (पद्मा१२)। इतैन पुंत कारती एक देवविमान (६३०% १४४)। बारि प्रेमी विश्वरिम् निर्मार निय बन्दु-विरोप (यत ३६ १४१)। य वि अवी पानी में अन्तव (सु ६८)।

वारिअ 🛊 ["वारिक्ष] चनुरिन्त्रिय जन्तु शी एक बाद्धि (स**स** १६ १४८)। बर्खन [ब्रुज] १ शनी प्रदर्क (मूप १ ४, २) वी २) । २ पू जनकान्त-भागक इन्द्र का एक कोक्पाल (का ४ १)। इस्त पू िकान्त] १ मणि-विशेष सन की एक कार्ति

(पर्ण १ कुम्मा ११)। २ इन्द्र-विरोध वचीवकुमार-नामक वैत-वादि का दक्षिण दिशा काइन्द्र (बार, ३)। ३ क्लकालाइन्द्र का एक बोकपास (का ४ १)। कारणकाळ है िक्यरफाउँ] इत्त्र वे ब्राह्त पानी (पान)।

करि पूंची [करिनः] पानी का हावी भग-जन्तु विशेष (महा)। सन्त्रीय र्यू ["कर्म्य] क्यम्ब इक्ष की एक माति (नतर)। श्रीका श्रीसा की फिल्हा] पानी में की बाती जीड़ा बच-नेति (शाया १ २)। केखि मी किछि] मन-गीहा (हुमा)। पर वेशी सर (कृष्य है र

१७७)। बार प्रे विश्वारी पानी में चनना (धाषा २: ६, १) शारण द्र ["बारण] निसके प्रयान से पानी में भी नृति की सरह बवाबा मके ऐसी सवीक्रिक राष्ट्रि रत्नते-

नामा मुन्दि (नग्ज २)। चारि पूं ["गरिन्द्] पानी में यहनेवाना बोट्स (औ २ )। कमा स्थी [बामी] दक्षिण दिस्स (छा १ --पत्र ४७ )। जमाटि पू [जगावि] श्राम-स्पत्त एक राज-पुमारः वा सरवान् महावीर वा पामाता था जिसने जनवान महाबीर के पास बीका भी भी धीर पीजे से धारता धलब पत्थ निरामा वा (शाख १ ८ ठा ७)। खमायम न विमन र नियम्बल करना। २ विवन बल्दु को तम करना ( निव् १)। जिसिश्र वि [यमित] नियम्बित श्रंपीयत्, कार् में किया हुमा (ते ११ प्रश्ने मुला के)। धामुणा केनो जाँडचा (वि १७१ २५१)। क्रम् की [जम्] रैतलेक की एक वर मदियो रा नाम (इक)। जन्म धक (जन् ) बराध होता । सम्बद्ध (ह ४ १३६ पट्)। बद्ध अस्मीत (बूना)। 'जम्मेतीय सोबो अहमेतीए य बण्डम विद्या (सुन्द्र ८ ) । क्षरम सम [ब्रम्] श्रामा, यपाछ करणा । । यस्मद् (बर् )। क्षम पूर्व [जन्मम्] कम जपित (स 🕏 महाप्रानु ६ )। क्षमाप्य न [जनमन्] फल जनति जनाव (हर रंजर साम्या १ १। दूर १ ६)। क्रमा से [यान्या] शेंगल किंग (जा दू Raz) : जग्हाम | वेरो खंमाम : वन्हापट, जन्दाह | बन्दाहर, बन्दाहर (शह जन्हाका ) (v) i प्रयासक [क्रि] १ मीतना । २ मार्ग क्रवाप्ट पन में बरनता : नयह (महा) । नवीत (स १)। धेर अञ्चा (स.६)। अयमर [यज् ] १ पुत्रा करमा। १ याग बरमा । वपद (उस २४, ४) । वह जअमाच (सीव १९१)। अय बर [यन् ] ( कन करना नेहा करना। २ श्राप करना जायीन करना । लगह (दर) । भारे वदग्गापि (गम)। वह

नुर १ १४)।

जय न [जाग्] जन्म, दुनियां संसार | (प्रामू १२२ से ६,१)। चयन ["त्रय] स्त्रमें मर्थ्य शीर पाताल लीक (पुता **७१ ११)** । आह प्रं िनाय] परमेश्वर, परमा ल्मा (पत्रम दर ६६) । पहुर्दु [प्रमु] परमेशर (पूजा रेका का) । विदेश हैं। ["तन्द] जनद् को धाननः केनेवाला (पडम 1 (3 wys अस्य दि [बर्व] १ संयत्र नितेन्द्रिय (काव ११)। २ उपयोग रखनेवाता क्यान रखने-बाला (सदा १३ धाव ४) । ३ ग व्यक्तवां प्रण स्वातक (कम्ब ४ ४८) । ४ क्यांस - छपयीप बारबानता (लावा १ १--पत्र ६३) 'वर्ष बरे बर्च चिट्ठें (बस ४)। स्राय पूँ [अप] केब सीम-यनन वीड़ (पाम) । अस्य पूर्विषय] १ वयं जीतं रुद्र का पर्यक्त (और भूगा) । २ स्वनाय-अधिक एक चर्च-क्सी राजा (सन १६२)। दर न ["पुर] नगर-पिरोप (च ६) । अन्यां श्री ["कर्मा] विद्या-विरोप (पडम ७ १३६)। यास ई ियोच ] १ जब म्हान । २ स्वनाय-प्रसिक्त एक मैन कृति (क्या २४) । चौदा प्रै [चन्द्र] १ तिहम की बार्ख्यों स्वास्त्री का बधीय का एक सन्तिम यजाः २ पस्यक्ती ह्याजी का एक जैनानार्थ (राख ६४) i जला औ विकारी शह वर वहारै (बुवा xvt)। प्रदासा की ["वनाफा] रिजय नालंडा(सा१६)। पुर देनो टर(बनु)। भेगमा से ["महता] एक चन-प्रमाये (वंश ) । संपन्नी सी ["सम्मी] शम-मध्यो निजयभी (से ४ वेश बाज ७४६)। सन् दि [ सन् ] अय-साप्त विजवी (पडन ६६ ४६) । बहार पू [विक्रम] हा-विकेप (रंग १)। 'संब व ['नम्ब] वृष्टिक-बामक राजा ना एक नम्बी (बालू ४)। "शंचि पू "शरियो वही पूर्वीक सर्व (सार V) । साह नूं ["शहर] विजय-नूचक धारात्र (धोरा) । "सिंह 🕻 [सिंह] १ सिद्य हीर का एक समा (साथ ४४) । २ निका की बारहतें गालकी का पुत्रपत का अर्थन अप्रमाण (व १६ । या २६: धोष एक प्रभिन्न राजा जिलाहा जूलस नाम 'लिख १९४ एक २४१)। इ. जहरूबर (उरः

सर्व वा 'नेस वर्षनिष्टरेशे समा व्यक्तिस्त ।

समावेशीम (प्रिपि ११)। १ समान क्यात कैना नार्य क्रियेच (सुरा ६१८) स्मिरै क्याँख्यो सूधी धर्वभरीनवृज्यतीन सुप्रतिको (पूणि १ ८७९)। सिरि 📲 🛛 भी विश्रमणी वयवस्पी (दावय)। सेव 🖠 ["सेम] स्थ्याम-प्रक्रिड एक स्था (ब्र्यः)। ।वह वि ["पद] १ वर को यह करने बल्ला, विजयी (पडम ७ 😻 मुना २३४)। २ विद्यानर-महर-विरोध (इक) । व्यद्धर न [ीनक्पुर] एक विश्वाबर-नगर (हर)। ाबास न [ बास] विदायरों ना एवं स्वनाम स्वात नवर (इक)। ज्य 🛊 [यत] प्रवन्त बेटा झेरिस (स ६ 1 4)1 स्तय पूर्वी [अया] विकितियोग-पूर्वीय सहस्रे धीर बबोस्टी विवि (मे १)। अस्य देवी अस्य=वद्याः व्यक्तिहर्यः ["अमूर्ति] बद हे क्षित्र वसद है (व \* (\* ) वर्षत पूं [जयन्त] १ इन्ह्र 🖈 पूर्व (राम)। ९ एक मानी ब**क्ते**च (सम**्१६४)**। १ एक बैन पूर्वि जो पत्रतेन पूर्ति के पुरीय रिपर दै (क्या) । ४ इब जान के देश-दिवार ने पहतेवाली एक उत्तम केन-बाठि (क्रम १९)। १ जंडूतीर मी अनुती के प्रीवस हार वा एक व्यविष्ठाता देव (हा ४२) । ६ व देन विमान-विशेष (नम ६६) ( ७ वर्म्**री**ए वी वपती वा पश्चिम हार (ठा ४ ९)। इ व्यक् पर्वंत का एक रिकार (इन ४) १ खर्वती स्रो [जयन्ती] १ पत्र मी नगरी एर (पुन १ १४)। २ मध्यान् अरसम् वी क्षेत्रानीसीयका (विवाद १२६)। अर्थनी थ्री [अयर्था] १ थ्रती-रिशेष <sup>ब्रसम्प</sup>र वर्ष पांठ (वल्ला १) । २ समय वनदेश वी माता (धन ११२)। १ विदे वर्ष वी इन नवधै (हा २ १) । ४ श्रेखरफ-मानक हर् भी क्कथव नहिंची (हा ४ १) । ह कर्∏ीर के बेह ने पथिम दिशा में दिना दवन वर्षी वर क्रनेराची एक दिए दुमाधे देवी (स. ) 1 ६ मणनाम् बदानीर की एक प्राानिका (कर १२ ९)।७ अपराम् नहारीर देशावी

बल्बर को नाता (मारम)। व धररह

(सूपा २ २) । वड्ड चार्यतः (नार) । कवडः. जविकांत (सर १६ १८६) ।

**खब दे [अ**प] बाफ पुनः पुनः सन्तोकारण बार-बार मन ही मन बेबता का शाम-स्मरस (परहर र मुपा १२)।

ञ्जव दुं[यद] र प्रम-विरोध वद मा बी (स्ताया १ १: पण्ड १ ४) । २ परिमाग्-विशेष बाठ पूका की नस (हा द)। पाछी औ ["नाछी] वह नाती विसमें भी बोए चारो हीं (धाय १)। सबस न [कम्ब] १ तप-विशेष (परुम २२ २४)। २ घाट हुका का एक नाप (पव २६) । सरमञ्जूषी ["सन्यर] इत विशेष प्रतिमा-विशेष (SI Y १) सम र् [राज] वृप-विरोप (बहार)। बंसा की ["बंशा] बनस्पित-बिकेय (परण १)।

জৰ বু [জৰ] ৰ্ম বীক বীম গতি (दुमा)।

क्रम पूर [सथ] एक देवविमान (देवेन्द्र १४)। नासपर्वितासकी क्या का इंड्रुट (स्ट्रेंटियमधी)। सन्त [किस] सब निरुक्त परमाभ श्रीरूप विशेष जब की श्रीर, बाउर (पब २६६) ।

जवजय पुं [यश्यव] प्रश्न-विदेप एक तस् का यन मान्य (छ ३ १)।

क्रमण न [वं] इस की रिका इस की पोटी ( t & x !) 1

उद्यवज्ञ न [उद्यपत] बात पून पून पुनः सन्त का क्याच्या निर्देशा बहस्य वयुकी कलो मंत-क्वलमि (पडम ६६, ६ ३ छ ६)।

खबद्ध वि [अवन] १ वैम से बालेशांश (उप **७६** व दो)। २ प्रे वेय, शीव गरि (बालम)।

जापण पू [बबन] १ म्सेन्ब्स देश-विशेष (पराम १ = ६४) । २ वत देश में च्हारेवाली मनुष्य-माठि (पर्यह १ १)। ३ यवन देश का राजा (दुमा)।

जनज न [यापन] निर्वाह, ग्रुकास (अल

जनणा भी [यापना] उत्तर देखी (पव १)। जवजागिया ध्ये [यवनानिका] लिभिक्षेय (धन)।

अवजाकियां की [यवनाकिक] क्रम्यां का कञ्चक (धावम)।

कावणिमा भी विवित्तका विराध (वे ४१ समाः क्यू) ।

क्षविका देशी अब = यापम् । क्रवणी की यदनी परश धानकारक पट (१२ २५)। २ संचारिक दूरी (मनि

१७)। क्रमणीकी [यावनी] १ सवन की की। २ वचन की सिपि (छम ६४, विसे ४६४ टी) ।

क्षवणीश्र देखी अब = गापव्। ज्ञवपचमाण पुँ [बे] बाध्यरव का बादु-विरोप प्रास्त-नायु (गस्त्रह) ।

खवय १ पुंदि] वन का संदुर (दे व जबरय र्र १२)

अध्यक्ती की विशेषक नेवा 'गण्डीति पदय-नेहेस पनजुरवाहिक्का वनसीए" (सुपा २७६)।

जवनारय वि] देवो जनस्य (पंचा a) । जबस न [यबस] १ कुछ वास "निट्टिब्ब **भवस्तिम् (स्प ७२० द्या उप प्र ४४)** । २ थे दूर्व विक्रमा (माचार ३२)।

क्रमा 🕏 [रापा] १ वस्ती-विशेष वदा-पूज का दुशाः २ प्रतृष्ट्यकाञ्चय सङ्ग्रह्माका

पुष्प (भूमा)। जगास पू [यदाम] बुत्त विशेष रक्त पुष्प-बाबा बुक्त-विशेष 'पावसि बवासी (बा २६ पएए १)- अवासानुसूत्रे ६ वा (पएस t=) 1

) वि [अविन्] १ वेमनाता वेस-पुक अविज ∫धुपाँ११२) । २ पु धस्य शौंका (धन)।

कविञ वि [अधित] १ विश्वका बाग किया गया ही नइ (मन्त्र सारि) (सिरि ३६६)। २ न, सम्बयनः प्रकरण आदि वंशीय (सूच २ ११)।

अविय वि [धापित] १ गमितः दुवरा हुना । २ शक्तिस (कूमा)।

असर् [यशस्] १ शीत इच्छ पु क्यांति (धीपः कुमा) । २ श्रंपम स्याप विरक्षि (वय १३ वस १० २)। ६ विजय (उस १)। ४ अथवान् सनन्तनाव का प्रयस किय्य (सम ११२) । १ जनवान् पारर्वनाय का माठवी प्रकार शिल्म (कम्प)। किसी 🛍 िकीची पुरुषि पुत्रसिक (सूप १ श्रे प्रापूर)। सङ्ग्री भन्नी स्वनाम-ब्यात एक जैन बाचार्य (क्या सार्च १६) । म मंत वि वित् रे महत्वी इनवदार कीर्तिवाला (पर्ह १ ४)। २ प्रे स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुप (सन १५)। वई की [ पेदी] १ दिवीम चक्रवर्ती सगर राजकी माता (सम १६२) २ तृतीयाः यप्टमी बीर त्रमोस्सी की रात्र (वेंद १)। वस्म पू ["वर्मम्] स्वनाम-स्यात नूप-विरोज (पडा) । जाय पूँ विवाद साधुवाद वसी गाम प्रशंसा (सप १८६ हो)। विकास पू ["विजय] विक्रम की मंडा**रहवीं शतान्ये क**ी एक वैन मुत्रसिद्ध बन्बकार न्यामावार्य मोमान् वरोधिनय वराष्याय (चन)। हर दू ["धर] १ मारतवर्थं का मूत कालिक मठारहवाँ विन-देव (पव ⊂) । २ मार्ग्डवर्ष के एक भाषी जिन-पेथ (पन ४६)। ३ एक राज कुमार (बम्म) । ४ एक का पाँचवाँ दिल (बी )। १ वि वस को भारत करनेताला

यग्रस्थी (नीव ६) । देखी जसी । जर्ससि र्रु [यशस्त्रिम्] मगवान् महावीर के पिताकायक नाम (बाका २**ं १५**) ३

कसद पूँ [कसद] बादु-बिरोप बस्ता (चन)। जसदेव पू [परा)व्य] एक प्रसिद्ध वैनावार्य

(पद २७६)। असमद् पू [यशोमद्र] १ पस का बतुर्व विषय (भूज्य १ १४)। २ एक राजवि को बाग्ड देश के रलपूर नमर का राजा बा

धौर विलो वैती दीक्षांची मी भी माचार्य हेपपनार के प्राप थे (कुत ७ १८) । ६ त. त्तर हुवाटिक गए। का एक कुल (कप्प) : जसवह 🕊 [यशोमठी] धमनान महाबीर

नी बीहिनी का नाम (भाषा २ १४०३)। जसरिस वि [यद्मरिवम् ] बठरवी | वीर्तिमान् (बूबर्व व 🚆 १४३)।

जसहर पून [यरोघर] एक देव-विमल (विनेन्द्र १४१) ।

बसा भी [पराा] करिनपूर्ति भी माता (उत्त

枝り

पारिका स्प्रै [ कारिस्स] दुर कलु-क्रिकेत चनुरिन्दिय भीरनी एक जाति (राज)। कत न ["याच] यानी ना सन्त पानी का प्रवास (हुमा) । "गाइ हु ["नाथ] संदुष्ट सानर (तर ७२० दी)। गिहि र् [ैनियि] सपुत्र सत्पर (बउड)। यीब्दी की ["नीन्धी रैकान (**१.१.४२)** । सुसार <u>दे [ स</u>ुपार] यानी का रिक्यू (पाम)। धॅमियी की **िस्त**निश्रमी विद्यानिशेष (परव ७ १३१)। दर्व (दि] मेर यन्न (दुरा २६२ पत १०)। हा की [ीद्रार] पानी है जीजाया हुमा पंचा (जुपा ४१३)। निहि केशो चिहि (शमृ १२७)। प्यअ र्दू भिम्मी १ इन्द्र-विशेष काविषुवार नामक देव-बादि ना बत्तर किछा ना बन्ह (इ.स. १)। २ चलकाता नामक इताका दक्त लोलपल्प (ठा४ १)। सन [\*क] काल पद्म (परम १२ ६०: वीर पह्न १)। सदेनो है (शात नड़ से १ **१४)। दर पूंडी विद्यो कन में धा**ने-नाना प्राहारि नेन्द्र (मी२)। धी री (बीव २) । रङ्ग वृं [ रेट्ट ] पनि-विशेष ईंक पती (ना १७ गडाः) । रक्तास ¶ ["यश्रस] छवन की नवीत्र (शम्छ १) । रमायन रिमामी जल-बीहा अख-केलि (लामा १ ११)। १४ 🛊 ["रुघ] बनायन-नावक इन्द्र था एक नोषपान (टा.४.१)। श्रांस र्च [श्रांश] महुत्र मागर (गुज रदर का २६४ टी) । यद ईन जिल्ली बामी में बैद्य होतेशमी बनस्वति (पण्छ १)। रवर्षे (रिय) अपन्तराध्यक्ष इन्द्रना एक लापाराम (सम ६ )। स्ट्रीट्रह स ["स्प्रिंद्दर] पानी में बन्तम होनेजानी बरनू रिटेष (रंग t) । बाबस वृक्षे ["वायम] बनदीया परिनिदिदेव (तुना) । बाहिन दि [यासिम] १ नागै में रहनेताना । २ 🕏 हुनागों भी एक नर्जर को चानी न ही निवान छने १ (बीर)। बाद् वुं ["बाद] १ अप धान (बाब १२ मुता E) । १ जान रिटेच (राज w) : "विवन्य क् [बुधिक] बाती का विका चपुरिन्तिय मन्द्रान्टेर (गर्ग् १)। बार्रिय ह

िंशीर्थी १ इक्शकु वंश का एक स्वनाम-क्यात राजा (ठा ८) । २ सुप्र कीट-विरोप चपुरिविद्य बागु की एक वासि (बीव १)। स्यत्र ["शुक्रमः पद्म (छप १ ११ टी)। साध्यं की ["शास्त्र] प्रया, याची पिसाने का स्थान प्याड (था १२)। सूगन िंशुक् हे शैनास । २ वसकान्त-नामक इश्र काएक लोकपाल (धा४१)। सेख पु [ दीख] सपुर के पीतर का पर्वेश (हप १९७ ही)। हरिय पु ['इस्तिन्] पक-हस्ती पानी ना एक बन्तु (पाप)। **द**र पु ["धर] स्थल सम्र (पुर २,१ ४ चे १ **११)। २ एक विद्यावर सुम**ठ (पत्रव १२, au)। हर पू भिरी वच-समूह (नजर)। इर न िंगुइ, । समुद्र सावर (से १ ४८)। हरण न हिरल र पानी की क्वारी (बाबा)। २ इन्द्र मिलेप (चिंग)। "हिंदु िको १ अप्रतः तावर (शहरः नुपा २९६)। २ नार को संबत (विषे १४४)। इसय दुन िमायो धरोषठ क्लाब (बुर १ १)। श्रस्थ्य पू [जञ्जवित] बनशाना-नागव धन का एक क्षोकपाल (ठर ४ १—५व १६ )। जलंजित पू [जलाइति ] तरेण योगी हाणी में जिया द्वां क्या (शुर ३ ४१ वप्यू)। जनगर् वृष्टिसको धार्मि धाम (तिष्ट)। রভরতির নৈ [অনসমিশ] 'বল-বল' राम्य में बुक्त (मिरि ६६४)। अक्षत्रक्रित नि [जान्तरुपमाम] श्रीप्यमान चमरता (रम्प)। ज्ञस्य प्रिकटनी १ शनि वदि (बप ६४म टी)। २ देशों की एक वाति स्रोतन-भूमार-नामक वेर-जाति (पेल्हरू ४)। १ ति अपना क्षमा । ४ जनस्ता, वेरीप्यमान 'व्हेंव् बनस्पननशोगभाग्' (उर ६४ हो। थ बनाने तला (शूब १ १ **४) । ६** स. यन्ति नुपनाना (बएड १ ६) । ७ श्रामाना जन्म करना (शन्द २)। "जहि र् "अटिन् | विधावर वंश का एक सना (परम १ ४६)। मिस वे ["मित्र] रामान-स्पात एक प्राचीन गाँउ (पत्रह) । जन्यक्य न [अवस्ति] वत्रानः । राव करनः (बदर १ १)।

जस्तित वि[द्यस्ति] १ वता (पा⊳ प्र**के** (सूध १ ६८१) : २ वन्तर पानिनुष (पद्यहर ४)। वाक्रिय वि [स्वक्रियू] व्यवताः **पुरस्य** (वर्गीव १६, दुप्र १७६) : बख्गा को [बलीक्स्] १ वर्ग अलुमा है विशेष योग मनिरा मा का नीवा (पठन १ २४ परह ११)। २ पविनिश्तरेष (बीव १)। जहामग वं दि रोव-विरोध (का दृ १६२)। वस्त्रीयर न [जस्रोधर] रोय-विरोध कनका बडचम (स्प्) । जक्षोयरि वि [तक्षोदरित्] वदनार रेन है पीदित (चन)। बाह्येया देवी वातुना (वी १६)। बत्त पृंदि जत्ती १ तर्पर ना मेल, दुव्य परीमा (सम १ ४ और)। २ वर्षी एक प्राप्ति रस्ती पर क्षेत्र वरनेवाना क्ष (पछार ४) सीतः खासार १)। १ ुबन्धे विरद-पाठक (शाया १ १)। Y एर मोन्द्र देश। १ इस देश में प्रत्नेतारी मोन्द्र बारि (पद्ध १ १--पत्र १४)। बहार पुं[बहार] । लगाव-प्रीध्य **र**न धनावंदेशः २ कक्कार देशः वा विनावी (इए)। बहिय न [क् बह∓] शरीरका वर्ग(क्ष ₹¥) i वकासदिकी [दे असीपभि] एक वर्ष वी भाष्यातिक राजिः वितके प्रवाद ने रा<mark>गैर</mark> के मैश ने रोप का नाग होता है (क्या <sup>रू</sup> १। विमे ७७६)। अथ का [यापम्] । वसन करवान वेतनाः २ स्थापनागणनाः वतः (दे<sup>प</sup> ४)। हेर जनिसम् (तूम १ ६ १)। ¥ अपनिक्रा जनकीय (रागार ३०**६** १ १४४)। जब बद [यापयू] बान-बान करण पगार करना । सोनि (विव ६१६)। अथ परु [प्रवृ] नार करना *वार-*वर नन ही मन देशाना नान स्पर्ध करना

पून- पून- चम्प्रोचारण करना । मरह (र्रम)

'वार्गीत कामलेचे भवति मी करा कुरिका<sup>र्या</sup>

सम्बद्ध-सर्व

कर्म-विदेव (सम ६७)। व्यसण्या की [ असना] बादि के पूर्णों ने बासित मंदिरा (बीव ६): फल न ["फल ] १ दूस-विशेष। २ एक-विधेषः जायस्त एक गर्मे मशासा (सुर १३ ३३ छए)। संत वि [सन्] क्रम्ब आदिका (याचा२ ४२)। शय र्दू ["सद] भाग्रिका समिनान (ठा १)। यभिया की ["पत्रिका] १ मुगन्बत फनवासा बुझ-विशेष । २ फस-विशेष एक मर्गमना (छए)। सरपूर्विसर] १ पूर्वे जन्म की स्पृति । २ ति पूर्वे जन्म का स्मरण करनेवाना पूर्व-जन्म का जान बापा 'बाइसयाई मन्नै इमाई मयखाई सपरकोयस्म (मुर ४ २ व) । सरण न ["समरज] पूर्व बन्म की स्तृति (बत्त १६)। स्सर देखी सर (कम्प दिने १६७१) वर २२ थि)। जाइ स्मी [जादि] १ नगय-गास्त-प्रक्रिक कृपणामाय-धमन्य कृपण (धमेंधे २६ म ७११)। २ माता वा वंद्य (रिंग ४३०)। खाइ रेको जाया ( पर् )। पाइक्षे हि १ मध्य मुख बात (वे ६ ४६) । २ महिछ-विशेष (विषा १ २) । आहि [याजिम् ] बद-वर्ता (ब्ह्रिनि १ 284)) 1 जाइ रि [यायिम्] बालरामा (ठा ४ ६) । আহুস বি [বাবিব] প্লবির দাবা চুয়া (शिं २६ ४ मा १६६) । जाइअ देशी आय = कात (बरवा १४४) । जार्षिय १वि [बार्टनियक] १ रच्या बार्डान्छय । नुमार वर्षेश्य (यम्ब १२) । र रण्यानुनाधे (बर्ममं ६ २)। जाइन्दिय नि [पार्टान्द्रक] स्थेन्दा-निर्मित (विन २१)। आर्फ्सन रेची जाय = माउन्। आध्यन आध्यमाम हिमो जाय = यान्। ¥ .

ला॰जी ल्वी [याकिनी] एक वैन सामीः मध-मिरोप (विपा १ २) । क्लांबाव पुँ जिमको मुप्रसिद्ध यैन ग्रन्थतार भी हरिमद िआ अप] जाति की समानता बतना कर मूरि धपनी धर्म-माता समम्ब्रे ये (उप भिना प्राप्त करनेवाला साबु (ठा ४०१)। चिर पूं [स्विधर] साठ वर्ष की सम्रका १ ३६) । आश्यक्वय n [यातक्य] गमन गति (मुख मुनि (ठा १२)। "नाम म ["नामम] २ १७)। खा≰ञ वि [अधीय] वाति-सम्बन्धी (भारक ४)। बाद न जिल्लाम् विश्वेषा यनात् माह की बाजी सपसी खाश-विरोध (पिड ६२४)। जाउ व [जासु] बराबित् क्मी (उवहु ११)। बाउध बासु विशेष्ठ (दर १४७)। ैक्क्या पुं [क्रमे] पूर्वीगळपदा मसब का बीज (एक) । जात की यात्र १ देवर-पानी दवरानी। २ वि कानेवासा (संक्रिप्र)। बाउया की [यातृका] रेक्र-प्रशी पवि के कोटे माई की थी देवरानी (लागा ११६)। आपर पू[द]कॉनस्पङ्ग रैपकाफन (देश भार)। जाउछ पू [जातुछ] बस्ती-विशेष (पएश १--पत्र ६२)। जाउद्दाण र्षु [बाह्यधान] राजव (बन १ ६१ दीः पायो । जागर् [याग] १ यज्ञ सम्बर्ध होत इवन (परम रे४ ४७-ध १७१) । २ देव-पूत्रा (छाया १ १)। सागर धक [सागृ] भागताः निजान्याग करना । जागरद्द ( पष्ट ) । बङ्क जागरमाण (निसं १७११) । हेष्ट- जागरिचम्, जाग-रशाए (बप्प कम)। आगर नि जिगर है शानेपला पान्ता (बाक्षा कल का २५)। १ र्यू जागरता निज्ञान्याम (मुद्राहरू समाहर र पुर 1 (03 83 जागरः चु वि [ जागरितः ] जान्तेशाना (पा २१)। जागरिम वि [जागृथ] बाद्य ह्या विक्रा-र्णहर प्रदुष (सामा १ ११: था ११)। जार्गारज रि [जागरिक] निप्रान्धीत (मर्गः जागमा 📝 रिने २१४६) मणु पाष् र) । 18 R) 1

जागरिया श्री जिगरिका जागया ] बायरखः निज्ञाध्याय (छाया १ १ मीर)। जागस्य वि [आगर्फ] जागका जाया हुमा, भागने के स्वमायवासा (मर्नीव १३५)। जाजाबर वि [यायायर] गमनशील विनघर (सम्पत्त १७४)। वाक्षां की विशेष्टम सता-प्रजान (दे १ ४१)। साथ सर्क [हा] बानना ज्ञान प्राप्त करना समभ्या । बाल्ड (ह ४ ७) । बङ्ग आर्थत जामनाण (कप्प विषा १ १)। संह-ত্রালিকল, স্লালিন্তা, স্লালিন্তু (বি **४०६** महा मय)। हेक जाणि (पि १७६)। इ. आजियव्य (मयः घतः १२)। जाण पून [यान] १ स्मादि बाहन संबाधी (धीप पण्डर ध्रस्त ४ ६)। २ यन पाम नौरा बहान नाएँ संसारममृहतारहो बंबुर कार्गा (पुण्ड १७)। १ मनन निर्द (धव)। पर्च दत्तन विग्रही पहार नीका (नमि ३ सुर १६३१)। साछा सी िंशास्त्री १ तवेसा मलावसः। २ वाटन बनाने का कारधाना (भीता धावा २२२)। जाण न द्वानी जान, नीम समस्र (भग दुमा) । बाम वि [ कानन् ] बानवा हुया 'वाएं काएए एएउट्टी' (बूच १ ६, १)। पान पएछेख बाखवा' (बाबा) । वाणद् भी [जानधी] सौता चननानी (पराप १ ६ १८ हे ६ ६)। जागर वि [जायक] पानरार, शर्मा भागगणाना (मूच १ १ १; महा मुर 2 42)1 वाणगी वैदो जामह (परम ११७ १८)। जाणम न [ब्] बराई, गुक्सती में 'बान'; 'बो तहरत्याएं समुविधोत्ति पारणगुणगुरुषी' (स्प ११७ टी)। जामग न [झान] नानना वानराचै समम, बीध (१४ ७ उर इ २१ मुना ४१६: शुर १ ७१ रवस १४ वहा) : जाणगया } धी, उत्तर देवी (६४ ११६; । आजय देखी आजरा (भग महा) ।

असो देवी अस्स। स्म वर्ष [दा] १

बन्द नामक नीय की प्राप्ती (वा ११२) ६१०)। २ भन्दान् महाबीर की पत्नी (क्य) । कामि वि "कामिन्" कर व्यक्त-बाला (बस १)। कितिनाम न विशिधि मामन् ] कर्म-विशेष जिसके प्रमान से सुकरा फैलता है (इस ६७)। भर पुंचित्री १ बच्छेन्द्र के बहर है य का परिवर्ति वेथ (ठा ४ १) । २ म. **हैदेन**क देनमोक का प्रस्तर (इक) : हरा की "घरा १ वर्षाण क्लक पर्वंत पर राम्भेवाली एक किराजुमाची देवी (छ =)। २ वन्त्रु-पूस विदेश सुबर्तना (बीव १)। १ पश की वीची प्रति (को ४)। असोघर देखो अस-इर (नुम १ जसोषय रेको असो-इस (तुन १ असोया की [यशोदा] क्लाल, महानीर की क्लीकालम (धावा२ १६८३)। आह् सक [हा] स्थाप देनाः आहेत् देनाः। पहर (वि ६७)। यहः सहंद (नव ६)। इ-बह्यिक (धन)। संक अहिला (पि ६६२)।

उद्दर्भ [सत्र] महानितर्ने (हे२ १६१) । अवह स [मधा] किस तरह से जैले (छ ६ रालपार )। श्वम स (शहस) बग के क्युनारु धनुषम (पंचा १)। बन्ह्याय वैस्रो अइ-क्याय (बलम) । "द्विय हि ("स्थित] बाग्तविक सन्व (सुर १ १६२) मूपा १७)। स्य रि "बें] नास्त्रीयक संस्थ (बंबा १६)। त्यनाम वि [धनामम् ] नाम के चनुसार पुरुषाना सन्तर्व (या १६)। त्यवाद्दि ["भैयादिन्] चल-पचा (गुर १४ ११)। व्य न [पामारम्य] शास्त-रिषठा सत्वता (धन) : दिस्त न 📽 🖹 प्रवित्तता के प्रकृतार (गुपा १६२)। बहिय रि विचि बत्य बचार्थ (तुरा १२३)। विद्युकी ["विचि विधि के बनुसार 'नर्श्यनिशिवनुराभी वहदिश्रिका काहियनाओ' (न्र १२)। संयान सिंदयी श्रीका के हम के हमलूनार (शट)। देखी जहा = महत्र न [प्रपन] नवर वेतीवेता जल

(मा ११ ६ । ए। ना १ १) :

AA) I जहूपा को [हान] परिस्वाप (संबोध ११) : **बद्दप्**सर ) न [ये] यथॉस्क अननांतुक **बाइणुसुम**्रिकी को वहनने का वश्व-विरोध (दिवं ४४८ पद्)। अक्षण्या ) वि [अध्यय] निहरू होन सवप बाइका ∮गीच (सम की मन ठार १० की इच्छा थे ६)। आहा≕ केनी काइ च इता (पि ३६) । श्रेष्ट **बहाइका बहान (क्य १ २ १३**पि 1 (15 F आदादेको लाइ ⇒ स्वा(हृ१:९७ कूमा)। अस्य पि विक्यों समोपित योग्थ (पूर २ २ १)। जेडून [क्षेष्ठ] ब्याहता 🕏 क्य से (क्यू)। जामय वि "नामक] विसका भाग न कहा क्या हो धनिर्मित्र-नामा नोदै (जीव ३) । तज्ञ न ["तप्टयाँ] सक्द बारविक (ग्राबा) । तह न ["तथ] छत्यः नान्धमिक (धन)। तद्द व विद्यात्वात्वच्यी बारविकाता सरमदाः 'बारहासि वी जिल्ला नहत्त्वहेराँ (सूच १:६) । २ लू<del>पह</del>ताङ्ग सूत्र का एक शब्दम्म (सूद्ध १ १६)। पवट्टकरण न [अवृत्तकरण] शान्या का परिशास-विशेष (धावा) । श्रृव वि िशृत् सका नास्तिक (सामा १ १) राष्ट्रियमा की ["राशिकता] क्येहता के इस है वदम्मन के राजुसार (रख) । रह केवी खह रिह (च ४६३) । वित्त न [वृत्त] वैता हुमा ही बैदा गनार्थ (स २४) । सन्दि स्रोत ["शक्ति] शक्ति के श्रृतार (वंशा

जसी—जार् जिहिष्या से [परचा] नागे सेक्ट-स्वय्यका (य ४२६ वित ११८ व १२२)। जहिहिक मुं [प्रिमिट] पारह-पाम म लेख पुर कोठ पारका (हे १ थ) प्राप्त)। जहिमा की [प्रे] विश्वय पुरा के वर्ध हर्ष नाग (हे ४४)। जहुन व [ब्योज] करनानुपार (पी)। जहेज व [ब्योज] करनानुपार (पी)। जहोज्य व [ब्योज] करनानुपार (पी)। जहोज्य व [ब्योज[करनानुपार (पी)। जहोज्य व [ब्योज[करनानुपार (पी)। जहोज्य व [ब्योज[करनानुपार (पी)। जहोज्य व [ब्योज[करनानुपार (पी)। क्षाह्म व [ब्योजिल] क्षान्या के व्यु जार्थाव व [ब्योजिल] क्षान्या के व्यु जार्थाव व [ब्योजिल] क्षान्या के व्यु जार्थाव व [ब्योजिल] क्षान्या करा के व्यु

वाहेच्या केने वाहिच्या (मा ४६२)। अहोहय न [मयोदित] कॉक्सनुसार (वर्ष **₹**) i अक्षेत्रयः ) न [यद्योचित] नेप्यतः ने मह ब्द्रहोचित्र ∮ सर् (8 व श्रृंदुपा ४०१) । आर शक्क [लम्] करना होता। मामद (दें ४ १६६): सङ्घः कार्येव (दुना)। चैक **प्लो** निवन निनिद्धाः पुरोनुवो **मा**ई च मरिकेच (स १३)। च्याध्यक [मा] १ अथगाः यनन करना।२ मास करना । ३ जालना । बाद (सुरा ३ १)। बार्ति (महर)। वक्र और (बुर १ ४४) र ११७) । स्वद्धः जाइज्ञमाण (पण्ड १ ४)। ञासक[यः] तकतः समर्वहोतः तिः मय एला न बाइ एलाइटे 'बंदिद्वेयार्ट नि बायइ घरमाइडी (मुख २ १३) । का वैद्यो जान = मानद (हु१ २७१) दु<sup>वा</sup> बुर १६ १३ )। साज देवो साथ = बाप (हास्व १६२)। बाज वेबी जा = वा । वासह (शह ६६) ! बाधर वेची द्यागर (द्वरा १०७)। कामा तम [बाव] देवर मार्थी देव की लागी विषयनी (प्राष्ट्र ४३)। बाइ व्ये [कार्ति] १ दुव्य-विदेव वार्ति (पुना) । तामान्य नेपानिको के नत से एक वर्त-रिरोप को ब्यापक हो वैदे मनुष्य ना ननुष्य के को का मोरव (विदेश १९)। ६ बाह पु<sup>नर</sup> थोन वरा∗कार्षि(डा४ का सूम **१** १३) दुमा) । ४ क्लांति चल्न (बत्त १) वशि) । ३ शानियः बाह्यसः वैश्य बादि नादि (बच १) १

६ पुण्य अवान होता थाई ना वेड़ (नटल १)।

७ मध्-बिटेन (रिस १ २) । आजाप पू

[भाजीय] जॉन की समानता यदना कर

मिता प्राप्त वरनेपाता साधु (टा ३ १)।

धर पूं स्थिपिरी सार वर्ष की प्रमाना मुनि (दा १ २)। नाम न ["नामन] वय-विरोध (सम ६७)। प्यमण्या धी [ ५म)] पा उ के पूर्णों ने काश । मरिय (जीर १)। पाउन ["पछ] १वृत-विधेय। २ एम-नियोग जायात एक पर्व नगाना (मूर १६ १६ इए)। मंद रि[ सन् ] युच्य व्यक्तिका (धाका २ ४ २)। सव र्षु विन् विद्यास्ति का समियान (दा १) । यांभगा दी [\*पविका] १ नूर्रायड काराता कुत-रिटेव । २ कत-रिटेव एक मर्गे भगता (ग्रन्त)। सर पू [श्यर] १ पूर्व काम बी स्मृति । २ वि पूर्व मान बारमण्ड कानशास पूर् राम का राज बाना बाहनयाँ मन्ने हवाई नवज़ाई मयत्तमोदारम (नुर ४ ६ c) । सहरा न िंग्यर्जी पूर्व सम्म की रस्ति (जन १६)। नगर रेगो नए (राग दिन १६०१ एर २२ 🕮 । ब्राह् स्थे [वानि] १ स्वय-काल गीव दुशरामान-धराय दूसल (धभर्ग १६ म ५११)। १ माताबा वंद्य (शिव ४६०)। ताइ रागे जापा ( बर ) । ब्राहरू [दे] १ मध्य गुरा राष्ट्र (दे १ ४६) । १ मध्य-रियोग शासा १ २) । जाइ दि [ याजिम् ] दर-का (कति १ **(11)** 1 जाइ रि [यादिन] अनेरान्य (हा ४ १) । क्षाध्य रि[पापित] प्रयुद्ध द्वा (fit tr e m tert) जाइज रंगो जाय = बन्द (बन्धा १४४) । लार्गण १६ [यर यह] र एक जार्शन व दिन्द क्ला (बहन १३) । 3 Emily (414 £ 1) 1 जार्रगएय विधिष्टरियहरी क्षेत्रक रि. सर ('c 31) Antacka; Ala ende जारिया । जारिया । 3

जार्ला हो यिक्ति एक वेन मानी जिमको गुप्रतिद्ध येन धन्यकार भी हरिस्ट मूरि बानी वर्ष-मात्रा गममने में (च १ ३१) । ज्ञान्यस्थ्य । [धानस्य] गमन माँव (गुगः २ १७)। ज्ञा अ रि [ कानीय ] वाति-मन्बन्धी (धराक ४ )। जाप न [ जामु ] शीरनेवा समञ्जू माह शी बाजी मक्ती चाद विश्व (विष ६२६)। जाउ म [जामु] बर्चाबर् बभा(प्रमू ११)। जार म [यातु] शिरी हरू (दा १४७)। कणा वूँ [कर्ण ] पूर्वास्तालक मधार का बीत (स)। जाउ भी [यान्] १ श्वर-दाना दवस्था। २ वि यनेशना (वंधि ४) । जात्रया ी [यादृश] देगर-गली पति दे धीरे मार्र भी की देवचती (लाया १ १६)। बाउर वृद्धिकारपार वैषका पर (देश प्रश्)। जारा 🛊 [जानुर] बस्ती विदेश (बारह 1(5\$ 27-1 जान्द्राम र्षु [यानुषान] राज्य (८४ ११ री पाप) । आग रू [याग] १ वर घरर होत हान (प्राम १४ ४० ग १०१) । २ देश-पुता (गादा १ १) । नागर घर [जागू] बच्या न्जिनाय बण्या । बाल्स्स (यह ) । बङ्ग ज्ञागरमाण (विवे १३११) हेर जावरिष्ण, जाव-उपाप् (बार बन)। जागर वि [ज्यार] १ अमाराजा जान्य (दावा बाद दा १५)। २८ बालानु जिल्ला (न्या १८७ मा १०३ पुर 1 (0) 13 जाग्राम् वि [ जागीरत ] कान्यान (ध्य २३)। ज्ञानिक विश्वासी क्यांच्या विकास र्थाः प्रद्राव (स्था १ ११ का ११)। शालस्त्र रि [प्रवर्गस्त्र] रिटा स्टेन्ट (सन 17 7):

ञ्चानरिया की [जागरिश नागया] ज्ञागरूम हि [जागरक] रूप्या जापा जाञापर विश्विषायायर] गमनकीर निषय (सम्मतः (७४)। 'नाटी की दि दिया सहा-प्रशान (दे १ ४४)। आप नर [ता] पानना तान प्राप्त गरना আম ব [ব্যান] লাল খীয় পৰ্য (খন दुमा) । आर्थ हि [ जानगू ] बानता [या जाते शास्त्र स्टाही (मूच १ ४ १) 'यानू परग्नेत्र जन्मद्यं (याचा) । जाय की [जानकी] भा चारणी (परन १ ६ १८ ने ६ ६)। ज्ञापन वि [जापक] कालार गर्ने बारुशाला । स्य १ १ १। या सर जाना हमा जान (वन्य हरक नामन ब [ह] स्थाप प्रस्ते الإستناس والإولياء فالمسابل (TI LES (I) : जाना व [हार] बारत कालाते शक्य, बंख (हे प्रक न्यू प्रकार YES FEE WE TETTER KT जन्मान । की असर देश राज करें है बागरा हिरास्त बन यन है। जन्म र हेन्द्रे काइत (का. वर्ग

4 (4 थान्स्य निदाशाम (ए।सा १ १ मी १)। हुमा जादन के स्त्रमारणना (वस्ति ११०)। मयभना । बार्स (हे ४ ७) । बद्र जार्गन जाममान (बन दिस १ १)। वंह আনিজন, আলির। আনিসু (বি थब्दः महा भग)। **हेर** जाः। (ति २३६)। इ. आणियध्य (मा मा १२)। ञाण दून [यान] १. रचर्यः कारत गराधे (बीय पाट्र २ १) । र मान पात भीवा बहात नाएं संगरगहुरवारहे बंधूरे बाली (दुन्छ १७) । ३ एसन गी (यव)। यत्तं दश्तन [याव] नराव नीवा (नवि ॥ बुर १३ ११)। सा 🖫 की शिल्पी १ दरेला परायल । २ शान बनाने वा वारगाता (धीर: धापा २,२ २) ।

व्यासमञ्जूष व [यासमङ्ख] प्राकृतिकत्व

जामाठ ) प्रै [जामाच, क] बामाता जामाडय ) बामाच, बक्की का पति (पत्रम

सामि 🛍 [आमि, यामि] बहिनः ऋषिधी

कामाइ देवो कामाउ (विव ४२४)।

व्य ४ हेर रश्र वा १व्य)।

पश्चिमाचे (सम्बन्धः ११) ।

(धन)।

काणय वि ज्ञिएक] क्रमानेवाला, समग्राने नाना (भौर) । साणया सौ [ज्ञान] जान समग्र, बानकारी 'एएसि प्यार्थ भागानाय सबस्याय' (मन) । आपनय वि [बानपद्] १ केट में करणन देश-रोक्न्बी (मन्द्र सामा १ १---पन १)। जामाप सक [ज्ञापय] क्रांन कराना जनामा । कागानइ कागानेइ (कुमाः महा)। हेह जाणावित्रं जाजावेत्रं (पि १११)। 🖫 बाणावयस्य (स्य 🖁 २१) ।

कानायंग न [ट्यपन] डारन, बीवन (पदम ११ व मुख ६ ६)। बावायम्म १ औ [ हापनी ] विद्यानियेष कानानणी 🕽 (क्य दू ४२, सहा) । जाजानिय दि [झाफ्टि] बनाया विज्ञापित मानुभ करायाः, निवेदित ( मुपा ६१६ धानम )। कामि वि[हानिन्] नाम अनकार (हुमा)। আবিজ 🖟 [হাব] দাবা হুমা বিভিন্ন ।(इह व ४१४ ७ २१)। आ भुन [तानु] १ वॉट्ट दुग्नाः २ ऊव

भौरवद्यारानम्बद्धाः (तंदुः निरः ३, द्याया १ २)। আপু ∤ি [ইন্মান্ক] বাদদবাকা জাতা जाणुंअ } बातरार (संदेध र कामा १ \$ \$ ) I जाम म [ज्ञान] प्रदोत्ता-नुषक सम्मय माना (यमि ११)। कास परु [सूज्] नार्वत करता, छन्छ गरता। बानद (तांट ⊸प्राप्त आम वं [याम] १ प्रहृद, दीन बण्टा का समय (सम ४४ मुर ६ २४२)। २ शम

व्यान्या बाक्षि योच सन्। १ क्षम निरोग

भागसे बतान बतीन से नाउ भार नाउसे यपित्र वर्गकी क्रम (माका)। ४ कि क्य संबर्धा, क्षमध्यका (द्वारा ४१) । इ**छ** 

रि [ यन ] १ महरताचा (दे २ १४१)।

२ ४ प्रार्टिस पहेल्वर, शामिक (नुस

r)। । (सा की ["रिश\_] कीतल

रिया (गुरा ४ ४) । बह की विशी

रावि रात (नइह)।

जामिक जेवी जामिय (वर्मीव १९१)। ज्ञानिग पुं [बामिक] प्रकृतिक पहरकाः पहरू पहिलार (का सहस्)। व्यामिकी और [यामिनी] चर्कि यत (३४ भरद हो)। वानिष्क रेको जामिग (गुप्त १४६) २६६)। वामेळ पू [बामय] बानगः सामिनेसः विदिन का पून (वर्गीय ए२)। माव सक [याय] प्राचैना करना मौदन्त । नक्त सार्थंत (क्ल्ह १ ३)। क्लक्ट जाह व्यति (परम ६ ६०) । आर्थस [सातय्] पीइना सम्प्रका करना । भाएर (चर) । कमक्र जाइद्यांत (90ま2 ま): वाय रेको साग (छाना १ १)। आय वि [कात] १ उपल, को पैदा हवा हों (ठा ६)। २ त समृद्ध संपाद (ईस

थ)। ६ मेर प्रकार (ठा १ ३ निचूर्य)। ४ रि प्रकृष्ट (भीप)। ३,⊈ अवद्रशापुत्र (मय १, १६। मुता २७१)। ६ म मण्या सेताका नार्य तीए कह नहीर बायए पुनन-बोधरा (मुग ११)। ७ वाम संगति (शाया १ १)। कमान [कर्मन] रै प्रमृष्टि-कर्म (एगमा १ १)। २ <del>संस्कार</del> निशेर (बमु)। तिय प्रंितंत्रस्] व्यप्ति, वर्षि (तम १) । निरुद्धमा स्म ["निरुता] कुत-बालाओं (शिवा १ १)। वि<sup>स</sup>सुध ति [ैमुक्क] भागते दुक्क (तिसा१ १)। रचम [करप] १ मुत्रलं शोला (गीप)। २ क्य वसी (बस १४)। ३ नुस्तु निर्मित्र (गव ६१) । "येष पू [ "बेदस् ] धरिन वहि (अल १२)।

थमन पति (माचा)। व्याय प जार्जी बीतार्ज विकास 🚾 धर्म (पय-पामा २४)। जायग वि [याचक] १ मॉक्सेशताः २ र्ष्ट्री, विद्वक (बारशसुपापरः)। जायग वि [याजक] यत्र करानेनाता (स्त ₹**%, ६)** 1 कायण न [याचन] शावना, प्रार्वना (धा रि¥° प्रति ६१) । आयण न [पाठन] करचंद, रीइन (स्टर् ₹ **२)** । आयणया ) की विकास ) यादता प्रार्थेड

१ र)। २ प्रस्त (यूचर र)। १ स

जायजा जिल्हा (उप पृष्ट २) ध्यप । स २६१)। जायणा 🕊 चित्तता । क्यर्रेस मेहा (पण्डर १)। कायणी की [याचनी] प्रार्थना की कर (av t): व्यायम प्रकी [साइव] सदुवेत में उदस्त यहर्वतीय (खाया १ १६) पत्तम २ २६)। जाया की [याता] निवाह, दुवाय, दृषि। साय वि भाजी जिल्ले हे निर्देश हैं सके उतना 'चाहरस विक्रि क्षेत्र बाब्र गार्व भ बोर्न म (पिंड ६४३)। आया की [वाया] की बीरत (बंद पुपा १५६)।

चाया देवो जन्ता (वएइ २,४) सूच १ ७)। व्यापा स्वे [व्यावा] चमरेन्द्र बर्द्धर इन्हों नी बह्म परिपन् (पन्छ हा ३ २)। अध्याद्र पुंचियाजिन विश्वनाति सामक यव कपनेनाता (बत्त २४ १)। आर पुंजारी १ कार्गात, बार (हू १ १७०)। र यश्चिका सरागा विशेष (शीव १)। वारिच इ वि [पादका] क्यर देखी (प्रामा) । आरिम № [घाटरा] मैना तिब वयः ग ( t t ( 1) बार रूप्य न [जारहरम] बोर-विरोध, बो नारिष्ठ भीन की एक शल्सा है (ठा ७)। बास वर [प्रशासन् ] जनाना वरण करना

'वी जरियजनछत्रातासमीनु यानेपि नियोर्ट'

(नहा) । नंद्रः जामपि (नदा) ।

खास न [सारु] १ सपूर, संबाद (कुर ४

१५४) स ४४३)। २ माता का संपूह वान निकर (राय)। ३ कारिगरीकाने दिलों से युक्त

क्षांस, एक्टर-किरोग मरोबा (बीप गामा १

१)। ४ मधली वर्षेरह पबन्ने का पान पारा-

विरोप (परह ११)। ४ मध्यनी वर्षे रह पक्ष्मने

की करन पारा-विशेष (परहृ १ १ ४) । १ पैर

का धानुपण-विशेष कहा (धीप) । फलग

र्पू [यान्ड] १ सम्बद्ध गवासी का समृद्ध ।

२ सांच्छत्र गवाया-समूह से धर्महत प्रदेश

(बीव १)। धरत न ["गृहक] सम्बद्ध

गवास्त्रवासा मध्यन (राय खाया १ २)।

पंजर न ["पड़ार] मनाप (बीव व)।

कास पू [क्यास्त] व्यक्ता अनि-शिया आग

हरत देखी चरत (चीत)।

मी सपट (सुर ६ १ बचावी ६)।

जालंदर न [काव्यन्दर] सन्दिर मनात्र का मध्यमान (सम १३७)। जार्छेबर दे जिल्हा दि र्थ नाव का एक स्वनःस-स्याध शहर (मदि) । २ न गोन-विरोप (क्रम) 1 जालंबरायम न [जासम्बरायण] नोक-विदेव (प्रापा २, १६)। ज्ञानुमा केवी आन्ध = जास (पराह १ १। १। भीक गाया १ १)। खाइमा ई जाइकी डीरियम कीय की एक वार्ति मम्बी (बच १६ १६ )। खासपदिवा स्म [ब] चन्त्रसन, बहातिका, मदारी (रे १ ४६)। जास्य देवी जास = नान (दडड)। जास्त्रमी की [दे] चंदार सम्हाम बारा पुजराती में 'आजवरा' (विदि ६०१)। कान्द्र भी [कास्त्र] १ भ्रांत शी रिया (भ्राचा नुर २ २४६)। २ नक्म चञ्चली वी सना (तम १४२)। ६ भगवान् चन्द्रमम शी रामने में (चंदि १)। वास्त्र म [यश] जिस समय जिस नाम में বালা নামতি হুতা খালা ট বহিমাণ্ডি केपॉन (हे १ ६१)। आध्यतः 🖠 [ आरायुप् ] क्रीनित्रय कन्द्र-

रिटेर मरही (धन)।

काराव वह [अवस्य ] बनाना बाह् देना । ; बङ्क साराधंत (महानि ७) । सास्मिन्त्र वि विश्वासियों बसाया हुया (सुपा १८६)। आक्रि प्रतिक्षि १ एमा भेगिक गाएक पुत्रः जिसने मगनात् महानीर के पास वीशा ती थे। (धरु १) । २ की इप्ए। का एक पुक विसने बीला से कर शतुक्य पर्वेत पर गुर्कि पाई भी (वंच १४)। बाद्धिय प्रं [आद्धिक] बाल-बीवि बाहुरिक बद्देशिया चित्रीमार (गतप्र)। व्यक्तिय वि [स्वाद्धित] बसावा हुन्छ सुध-वाया हुमा (उक् एर ११७ टी) । जासियां की [काकियां] १ कन्हक (पराह १ १—यम ४४: यवड) । २ कुछ (ध्रम) । बालुग्गास 🛊 [बाखोत्गास] मझनी पहरूरी ना सामन-विशेष (प्रचि १=३)। आव देवो आमध्य (धाना २०२० ६ ६)। श्राध सक [ यापय ] १ पमन करनाः प्रका रना। २ वरतन्त्रः। ६ शरीर का प्रतिपालन करना । जावद (पाचा) । चावेद (द्वे ४ ४) बातए (सूच १ १ १)। जाय च [यायन्] इत पन्नी का शूचक सम्मय--१परिमाशाः। २ मर्यादाः ३ शह-बारण निषय 'बाबदर्य परिमाणे सरुवाधा-एक्काएगे नेव" (विशे १११६) सामा १ ७)। जीप की व ["छ्वाक] भीवन पर्यन्त (भाषा)। भी या (विशे १११० भीप)। व्यीविय वि [व्यीविक] यावरजीव-शंक्ती (स ४४१) । रेग्री जार्थ । आप प्रशिक्षाप्री मन श्री मन बार बार देवता का स्मरण मन्त्र वा उचारण (बूर ६ १७४३ मुचा १७१) । जावद र् [व] बुश-विशेष (प्रतृत्त १---पश भावहम वि [ यापन् ] नितना, जावहसा वप्रणस्ता (तम्ब १४४ वत्त १४)। আব<sub>ন</sub> থী [আবিদর্মা] १ কক-বিঠাৰ (বল ३६ ६ वा मुख ३६ ६ व) । २ प्रमा बनस्यति

की एक वार्ति (वएए १--पन १४)।

(यस १६ १६)।

खार्व देशो आय (परम र र )। "ताप म्म [सावन्] १ गणित-विशेष । २ ग्रुणाकार (ਨਾ₹ )। द्धार्थत देवो जावद्य (मग ११)। जानम देसी जानग = यापक (इसनि १)। कामण न [सापन] १ विद्याना पुत्रारता । २ दूर करमाः हुद्यमा (उर १२ टी)। जाबजा हो [यापना] क्यर देखो (सर ७२८ ਹੀ)। जावणिक वि [भापनीय] १ वो बीताया बाव पुत्राप्ते योग्य । २ शक्ति-पुक्त जाव णिकाप् णिकीहिमम्प् (पिक्र) । तैत न िंदा जो प्रन्य-विशेष (वर्ष २)। जायस वि [सापक] १ मीतानेवाता । २ पू सर्व-शास-प्रसिद्ध कात-योगक हेनु (ठा ४ ۱ (۴ जायव वि [जापक] पौतनेवाला विकारी बादपाएँ (पडि) । जावय ५ चित्रको यसक्दक धनदा साव का र्रष (यउद्य सुरा ६६)। जार्षासय नि [चार्यासक] १ वाम्य हे तुजारा क्फीराचा (बृह् १) । २ वास-वाहर (प्रीय २६८) । वाविय वि [यहपित] बीताया हुमा (ए)या 2 20) 1 जास पू [जाप] निराय-विरोप (धन)। वासुसम | वृं [ व्यपासुमनस् ] । वता वासुमिण | वा बृग पुण्यवान (पण्ण १ आसुषण । लाबा १ १)।२ न बना ना कुष (धाया १ १, वप्प) । बाइन पु [साइक] जन्द्र-विरोध विनक्ते शरीर में काटे होते हैं सादी या साहित (परा १ १ विके १४३४)। जाहरथ न [याथाध्ये] सायान बास्तविवता (विशे १२७१)। बाहार्मस रेगे बहा-संन्य 'बाहार्रपनिमीलं निवतः माहतायी में (उप १७१)। आहं स [यहा] जिल दलव जब (हे ३ ६५: महाः गा १ =) । बावस्य प् [ब्रातिपत्रीक] कर-विरोध जि (धन) देगो एय=एन (१ ४ ४२ हमा-यमा (४)।

tt 1 ) i

(कुष २७०) ।

विम—विष

विश्व (च ६१७)। बिम पू जिम बाला, प्राणी नेतन (सूर २ रेरेश मी ६ प्रानु ११४ १६)। कें अ पू ["ब्रोफ] एंसर, पुनियाँ (सुर

\$8 \$X\$) 1 কিন ব (আবে । খীর খব (মক্ত w )। गासि वि ["बारिम] कीत है सोकीवाका विजेता (भम्मत २१७) । सन्त दु ["राजु] र्धन-निया का जानकार कुमस सा-पुरूप (विचार ४७३)।

जिम वि[कित] १ श्रीतः ह्या पराभूत मनिमुद्ध (कुमा धुर १ ३२) । २ परिचित्त (विसं१४७२)। प्य वि [क्सिन्] विते न्त्रिय धेरमी (सुपा २७६) । आणु धु िमान् । प्रवस्थाय का एक स्था एक मोका-पवि (परम १ २११) । सन्तु वूं [ शयु] १ भनवान् धवितनाव का पिता (सम १६)। २ तुप-विदेश (सङ्घा विशा १ X)। सेण पुं["सेन] १ केन धाचार्थ-विरोप । २ गुन-विरोप । ३ एक प्रकारी

यमा । ४ स्वनायस्थात एक दुसकर (राज) । ारि पू भारत समजनावनी का पिता (सम 🗱 🕖 बिर्जना ह्ये [जीउन्दी] श्रही-विदेव (वयुष्ठ क्रिअन नि [ज्ञातकरू] वय-साप्त (पर्याः 8 (1) जिर्माहम । नि [जितन्त्रिम] इक्रिको को जिम्बिम किए म एक्नेक्ना ध्यामी

(पञ्च देश 🏗 🏗 दे २०७) । जिन सन मि गुन्ता गन्य बेता। क क्रिंप⊖ज्ञ (रप्प) । (जियन न [धाम] मूँबनाः यम्बन्धहरा (स 200) 1

(जियन धी [मात्र] क्पर केवी (धीव 1 (1) (अधिम नि [मान] गूँपा हुमा (पाप) । जिल्ह वृत्त हि | बगुक के विक्ट्येड्रिया-

राम्स (पत्र वर्ष १)।

जिन्म केवो जिम । निग्वह (निषु १) । किंग्यिक कि किंकित मुंबा हुया (दे के Y4) I किव विष्माण क्यो जिल्लामा । सिट्ट वि [क्येष्ठ] १ गहान् पुत्रः वदा (शुना रदेश कम्म ४ म्ह)। देवीह उत्तम । रे प्रे बका गार्ट पीट्टंब कमी**ए**ट पि ह (वर्ग २)। सूद पूं ["सूदि] कैन साद् विरोप (वी १७)। सुक्षी की ["सुक्री] च्चेट मास को पूर्विएमा (**६४**) । जिट्ट पूं [क्येष्ठ] मास-विशेष केठ (एक)। जिट्टा को [क्येछा] १ मनवान् महत्वीर की पुत्री । र भक्तान् महाबीर की सरिली (विशे २३ w)। ६ नदाम-निरोप ( वर्ष १ )। देखो सेंद्रा ।

र्विभिया औ [जुम्भा] बम्माई, बृम्भछ

मुख निकास (सुपा १०३) ।

जिट्टामी की [कांसा] को साई की पश्मी बिठानी वा वेठानी (मुपा ४०७) । बिट्रिणी की [स्पेशि] केठ मान की समावत (धट्टिक ही)। जिय सक [वि] शीसना वस करनाः। जिएए (दे ४२४१ महा)। कर्म विद्या ण्यपः, जिम्बार (हे ४ २४२) । वक्क जिर्णन विषयंत (पि ४७३ पडम १११ १७) । वबर जिस्सामाम (इत ७ २२)। संह बिणिका बिभिक्रण विश्वक्रम नक्रम क्षेत्रज्ञान (पि 🕻 ४ २४१ः वड्ः दुमा) । वैक-विविधं अर्थं (मुर १ १३ : रंगा)। **इ तिय ति**णेयस्य जेयस्य (जल ७ ११ पत्रम १६ १६: तुर १४ ७१)। जिया पूर् [जिन] १ राम शारि शक्तरंग राष्ट्रमी को बीवनेतामा सहैन् केर ती मेरर (सम १३ ठा४ १ सम्बर्) । १ दूव देर 🟗 माराम् (३.१.१) । ३ केरण समी

वि वीरानेवाला (पंचाक् २)। इति दे ["इस्त्र] महीत् केत्र (सुर भ =t)। अस्य जिनीसा भी [किनीया] जन की इच्छा र्पु विकल्पी एक प्रकार के बैन बुनिसों का मानार, नारिकनिरोध (हा १, ४० **इह** १)। कप्पिय व् [किस्पिक] एव प्रकार का कै पुनि (योष ६६१)। फ़िरिबा 🛍 "फिया] विक्वेत का बतवामा ह्या वर्मानुहान (रेक्ट १) । घर न िगृही बिन-मन्दिर(ध्व २, ब खाया १ १६--- गत्र २१ )। चार् **िंभन्द्र** १ जिनदेन आहित् देव (सम्प १ १३ पनि २६)। २ स्वनाम-बयाद केन बाक्स विशेष (प्र१२ सक)। अस्ता 🛍 विज्ञी भईन देन की पूजा के अपलक्ष में किया नहा ज्लाब-विरोध रब-बाबा (वैदा ७) । अस व ["नामम्] कर्म-विशेष शिशके अवस्य है भीन तीर्भकर होता है (राज)। इस ई िंदच**ि १** स्वनाम-प्रसिद्ध **वैनावार्य-विसे**प (नया २६: सार्घ १४ ) । १ स्वनान-स्पाट एक वैन घेटी (पक्षम २ ११६)। इस्म न [दूबर] विन-मसिर-शासनी कारि वल्यु 'बर्बरी बिछदध्य' क्रिक्टरचं नहरू थीवो (चा ४१≈ा दंख १)। दास ई [दास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक वैव कालक (याच् ६) । २ स्वनाम-क्यात एक कैद पुनि धीर बन्बराट, मिल्लेब-सूत्र का पश्चिकार (निपुर)। दिव दू [दिव] । मही वेष (ग्रु. ७) : २ स्वताम-प्रक्रि**त पैन्द्रपा**र्म (मारु)। १ एक वैन प्रशासक (मानू ४)। धम्म र् ["बर्म] जिनकेर का कारिय वर्षेत्र कर्मे (छ प्रेट हि ११७)। नाइ व िनाम मिनदेव प्रहेन देर (कुस २६६): पश्चिमाची विश्वविमा थाईव केन की मूर्ति (लावा t रिक्-कर २१ : धवः भीत ३)- 'तिशुप्रविवारंश्रलेण वडिद्रवें (क्षमपु २)। प्रथम न प्रिय चन वन बानम विनदेश-पत्तीत साम (विने १३४)। पमस्य नि विशस्ती

तीर्पंदर भारता जिल्हेड-सामित *ताला* क

पहुर्दु [प्रमु] जिन-देव गर्हेन् देव (स्म १२ टी) । पाहिद्देर न [ मातिहार्य] विम-देव की प्रहेता-पूचक देव-इत प्रशोक **पुत्र ब्रा**दि ब्राठ बाह्य विमृतिय≀ व ये हें—१ मराष देश २ मुरन्त्र पुष्त-बृद्धि ३ विष्य ध्यमि ४ पामर, १ सिहासन, ६ मामगडत ७ दुनुभिनार, बद्धम (रंस १) । पालिय पूं ["पाकिन] बस्स नगरी का निवासी एक स्रोहि-पुत्र (एगमा १: १.) । स्थल न विस्त्र वित-पूर्ति वित-देव की प्रतिमा (पण्डिया ७)। सङ्ग पुंडियर रेवनाम-न्त्रसिद्ध एक जैन धालामें का मुप्रसिद्ध वैन चलकार धीहरियद्र सूरि के गुरु में (मार्थ १६)। सद् पू [सद्र] स्वनाय-प्रसिद्ध वैत धानार्य ग्रीर प्रत्यकार (यात ४)। भयण न ["भयन] ऋर्त् मन्दिर (पंचव ४)। सथ न ["सन] वैन दर्शन (वैचा ४) । साया की ["मारा] जिन-देव की बननी (सम १९१) । सुद्दा की ["सुद्रा] दिनदेव जिस तया से अपयोग्सर्व में यहते **हिं** उस दरह रायेर का विस्थान, बासन-विद्येय (पंचा ६) । यंद देको व्यंद (गुर , ११ पुरा ७६)। रक्तिवयर्थुः रक्तिन] स्वनाम-क्यात एक सार्पनाह-पूत्र (स्वावा १ ६)। बद्द पूँ ["पिति] जिल-देव पर्युन्-देव (मुराब६)। यह की [ वाच्] जिन-देश भी कासी (इह १) । वयन क ["क्यन] जिल-देव की पाणी (ठर ६) । यसण न ["बद्दन] जिनदेव का मुख (भीर) । बर पूं िशर] माईन् देव (पडम ११ ४° मनि १) J बरिंद पू विरम्यू वर्ष्य देव (तर ७७१)। बहुद् पूं [भद्रम] स्वताम-क्रांड एक केन द्यापार्यं चौरं प्रसिद्धं स्तीत-नगरं(शहूप १७) । बसह पूं [बूपम] पहुंद देव (राज)। संदर्भ भी ["मक्दि] जिन देव की परिच (भन १ ६) । सामय न ["शासन] वैत्रकर्रीत (उत्तरेका सूम १३४)। हुँस दू ["ह्रेस] एक बैन मानार्थ (४ ४७)। हर रेको यर (पत्रम ११ ६) पुत्रा १६१ महा)। इरिम पू वृद्धी एक केन मूर्नि

देव का मन्दिर (पैचव ४) ।

जिलोइ देखो जिलिइ" सन्दे निर्शंश मुर्शेनर वैदा (पडिट की ४८)। जिणक्रीय पू [जिनकस्पिम्] पैन पुनि का एक मेद (वंचा १व ६)। जिल्लाम [जयन] बय जीत (सर्ग)। जिलपद् पुं [जिनप्रम] एक वेन बानार्य (शी र) । खिणिय प्रं जिनग्द्र जिन भगवान, महन् देव (प्रामू ६२) । गिष्ठन ["गृह्] जिन यन्दिर (सुर १ ७२) । चर् र्यु [ चन्द्र] बिन-स्थ (पउम १४ ११) । जियाय वि जित्र परायुक्त वर्णेष्ट्र (मुपा १२२ रवल ५७)। जिजिसर रेखो विजेसर (समत ७६/७७)। जिपिस्सर केने जिणेसर (पंचा १६)। खिण्चम वं जिनाचम विन-वेद (पति ¥) I जिणेंद् देखो जिलिद (नेश्य १)। जिलेस 🖞 [जिनश] बिन मध्यान, ध्वाँन् वेन (गुपा २६)। जिणेसर पू [जिनश्वर] १ विन वेर धाईन्। देव (परम २, २६) । २ विक्रम की व्यास्त्रवी शताओं क स्थनाम-क्यात एक प्रसिद्ध जैन मामार्व मीर प्रत्यकार (तूर १६ २६६) सार्थ ७६, यु ११) । जिल्म वि [जीर्ण] १ पूरामा, वर्गर (इ.१ १२ वाद ४६ प्रापू ७६) । २ पदा द्वरा 'पिएले भोपलमचे' (इ.१.१२)। १ क्य दूरा (बह १) । सङ्घि ५ [शेष्टिन्] र पूराना केठ । २ व्येष्टि पर से प्यात (ब्राय जिएम (धा) केवी जिल्ला मित (पिन) । जिण्यासा की [जिज्ञासा] बानने की इन्ह्या (पैचा ३)। खिण्निश्र } (घर) देवी जिणिव (रिय)। जिएगाब्सका श्री [वे] हुवाँ, दूव (पास) (वे 1 (14 \$ जिण्डू वि [जिप्यु] १ जिल्बर, भीतनेत्राला विजयी (प्रामा) । २ पूँध मून्, अध्यव योद्य (रमण १४)। ययण न [भारत] विन-(पउ४) । १ विष्णु च्येष्ट्रन्त । ४ वृदै रहि । ५ रत्य चेत्र-मायर (हे २, ७५) ।

विश्व देखो किअ = वित (महा) सुपा **११**४ (44) I जिल्विशः ) वि [यापत् ] जिवना (हे २ जिथिछ । ११६। पर्)। जिन्तुळ (धर) क्रसर देखो (हुमा) । क्षिय (शप) स [यथा] असे जिस कर्या से (k x x f) i जिम देशो किएग (स्पा ६)। जिशासिय वि [जिज्ञामित] बानने व निए इष्ट जानने 🕸 लिए चाहा हुया (मास ७५)। जिम्ह्यार पूँ [जीमोंद्वार ] पूरने धीर हुटे-क्रु मन्दिर वादि को मुद्दारमा (मुपा व १)। विक्म 🖞 [विह्न] एक नरक-स्थान (स्वेन्द्र क्ष २६) । सिक्मा औ -[जिङ्वा] बीम रसना (परह २, १ वर १व६ हो)। क्रिकिमेलिय व [जिड्बेन्ट्रिय] रतनेन्द्रिय पीप (ठा४ २)। जिक्मिया 🛍 [जिहिषदा] १ थीम । २ बीम क ध्यकारवाली चीन (वे ४)। जिम एक [जिम् , मुज् ] बोमना भौतन करना काना । जिसह (हे४ ११ वह)। जिम (पप) देखो जिम (पट भवि)। । जिसपान [जेसन भोजन] जीसन बौदन (मा १६: बेध्य १६) : जिसज न [जेसन] जिसला, चोन (वर्मीक w ) i व्याम**अ वि [विमित, मुक्त] १ वित**ने योजन किया हुमा हो बहु (पदम १ १२७ पुष्प १३८ महा) । २ जो बाबा गया हो वह भगित (दे ६, ४६) । जिस्स देवो (जैन = विस् ) विस्मद्र (हे ४ २६)। जिन्द्र पू जिहा र मेन-विरोध जिसके बरमने से प्रायः एक वर्षे तक जनीन में विक-नायन चहारी है (ठा ४ ४--पत्र २०)। रे वि. पुण्यि कपटी मामानी (सम ७१)। ६ सम्ब, धनस (अरि)। ४ न- सामा काट (पर १) । जिम्हन जिम्ही दूरिना पत्रा मारा कार (सम ७१) ।

जिब देशो जीव 'भागाद गई गरिएमी कामना !

जिलें ) (प्रप) केलो जिल्ल (दुमा पर् हें

क्रीअ देखो जीय = श्रीष् । श्रीक्षद (या १९४

**हेर १ त)** । यह जीओन (से व १२

प्रीक्ष देवी कीय = वीव (यटा) । द पानी

बच्छ विवद्या तुमए (वर्षेवि १)।

सिंह रे ४ ११७)।

मा ११)।

जिहा देवी सीहा (पर् ) ।

थन (दे २, ७)। क्रीज मेबो क्रीबिज (हे १२४१ प्राय) पुर 2, 28 )1 क्रीक्ष न जिल्ली १ माचा ५ जिल्ला प्रचा की ह (ब्रीफ एस सुपा ४३)। २ ब्रासम्बद्ध 🕻 सम्बन्ध रक्ष्मेनला एक तेरह का रिवास बैन सूर्वों में इन्ह पैति से विश्व तपह के प्राविक्तों का परम्पायक बाकार (हा है, २) । १ धाचार-विशेष का प्रतिपक्षक धन्य (ठा ६ २ वर्ष t)। ४ मदौद्ध, स्पिति म्बरना(क्षेत्रि)। कृष्य वे विक्रमा १ परम्परा से भागत भाषार । २ परम्पराकत मानार ना प्रतिपादक प्रन्य (पैका ६ भीत)। र्वापय वि विकल्पिकी बीच कल्पनाला (क्ष १)। घरनि घरी ध्याचार विदेश पा बानकार । २ स्वना<del>श क्</del>वात एक वैनाचार्यं (संदि) । वयदार दु [स्पवहार] परम्बरा के अनुसार व्यवहार (वर्ग रे पंचा १६)। क्रीमण देशो कीमण (सल्लीत २१ )। जीअव वि [ सीवितवस् ] वीवितवसा मोप्त बीयनसम्बा (परहर १)। ष्ट्रीआ **क्ष्र** [क्या] र स्मूच की जोर (शूमा) । २ दुनिनी मृथि । ३ माठा जनती (हु १, ११६३ पर्)। अधिय गदि अजिन | वील सलावी गीठ पर विद्याना माट्या चर्ममन ब्राह्म (पन न४)। जीम्अ 🛊 [जीम्द 🕽 १ मेथ वर्ष (राष्ट गडर) । २ मेल-निरीप मिछने करछने हे मनीन दश नर्पतक विकशी खरती है (# Y Y) I जीर केदो बर=मृ।

अधीरण गणियी १ घल पका २ वि पुराना, पथा हुमा' 'मजीरहां' (विक २७)। वीरच न [जीरक] बीच मसला:विरोप (पुर १ २२)। कीरल सक जिरिया प्रमानाः भीरमध (क्रम २५६) । कीव धक [कीय्] १ वीना प्रका पारण करणा । २ तकः यायम करना । जीवह (कुमा)। भक्त जीर्यत जीवमाण (विपा १ १८ रूप ७२० टी) । हेड्र जीविर्ड (बाचा)। <del>पंड</del>-कोबिस (शट)। इ. जीविज्ञका कीविष्यका (सूच १ ७)। प्रको भीवादेखि (वि ४१२)। कीम पूर्व [जोम] १ धारमा नेतम प्राम्ती (ठार राजी रा सुपारकर) भीवार/ (पि १६७)। २ जीवन, प्राशु-नारश 'बीबोचि बीबर्ख पाछबारर्ख बीवियंदि पण्यामां (विसंदेश का दूस १) । ३ ⊈ बहरपित पुर-पुर (तुपा १ ८)। ४ शव पणम्य (मा२ t) । t देशो सीछ = बीव। कास पुं [कास] बीव-एटिट भीम-बन्धर (सूच १ ११)। सहाइह न िमाही किले को एकक्ता (खाना १ २)। णिकाय 🛊 ["निकाय] श्रीत-राशि (क १)। रिवकाय र्थु [ीरितकाय] जीव समूह मीन-राशि (बन १९ ४° संसू) । **१**म वि विया शीका क्षेत्रका (स्प १)। द्वा भी विया । प्रालिक्या, दुवी नीव का पुन्य से फाए। (महानि २)। "देव पू िचेनी स्थमान-काल प्रसिद्ध वैन ग्राचारी और प्रवकार (धूपा १)। पयस वै [प्रदेशकीच] सन्तिम प्रदेश में ही बीच की रिवरित की भागनेशाचा एक वैशासास वार्श-भिक (राव)। पदस्मिय प्रै "प्रावेश्चिक] देशो पूर्णक सर्व (इस ७)। स्रोग "स्रोय 🐒 [स्थेक] १ नीच-नारि, प्रारित-नीक नीन-सपूर (नहा) । विशास व विश्वसी बीन के स्थवन का विस्तान (राज)। विश्वति की विभक्ति] बीव का चेद (बत्त १६)। "बुव्हिय न [ बुद्धिक] बनुबा, संगीत, बनुनित (एसि)। बनान (बय १, ६६) ध्रम) ।

जीव न जिल्ली सार्वाल का बच्चार क्रमास (संबोध द≈)। विसिद्ध द ["विशिष्ट] वही धर्म (संदोष १०) ! कीवंकीय व जिल्लाम र बार कर धार-पराक्षय (भय १, १)। २ वकोर-पद्मी क्कवा (धन)। जीवंत केवो जीव = बीव् । शुक्र पुं **"उ**न्ह थीनमुक्त, श्रीवत-श्रुप्त में ही संगार-स्थान है मुक्त सङ्गरमा (मण्ड ४४)। कीक्य दू' [फीक्क] १ पक्षि-पिरीप (का १८) । २ मूप-विरोध (तित्व)। कीनजीवरा दु [जीवजीवक] पनोर <sup>स्ट्री</sup>न चक्रमा (पर्स्तु१ १—पन स) ≀ क्षीबण न [क्षीबन] १ बीना बिन्सी (सि व्दर्शः एउम ≼ २६ )। २ वीलिए याणीविका(स २२७० ३१)।३ वि विभागेनामा (धन) : "बिचि सी ["वृचि] सामीविका (क्य २६४ दी) । श्रीममजीव र् [जीवाजीव] वेतन मीर वर पदार्थं (भावन)। चीवनमुक्त केही कोवंत-मुझ (स्वर १११)। कीयसमञ्जा [दे] मुनों के धारपंड है शायम-मृद व्याय-मृदी (दे ६ ४६) । कीवाकी [जीवा] १ क्यूप को शे**ए** (ब ३ ४) । २ क्षीमन भीना (विसे ३४२१)। क् क्षेत्र ना विभाग-विशेष (धम १ ४)। काषाङ पूर्वियोगालु विकासिका चीला बीवनीयन (भूमा) । जीवाविस वि [सीवित] विवास हम (<sup>क</sup> **⇒६** €) 1 जीवि रि [बीुविम] बोलेनमा (ब ४४<sup>७)।</sup> जीविकापि [जीवित] १ वो निमाहे। २ न जीवित जीवन, जिल्लगी (हे १ ए<del>४)</del> माम) । "समह दु ["नाम ] प्रस्तु-पर्ण (गुप ११४)। हिसमा व [हिसम] क्तरराधि-विशेष (प्रवृत्त १—नम १६)। कीविका की जिल्लिका र धारीविका निर्माष्ट्र-सामक कृष्टि (ठा ४ २: स २१४ खाया १ १) १ र्जाविक्रोसविद वि [जीवितोस्सविक] जीवन वें प्रधान के तुम्ब, जीवतीरतव <sup>क</sup> चीविजोसासिय वि [साविदोच्छवासिक] क्षोबन को बढ़ानेवासा (सब १ ६६)। कीविया देवो श्रीयिक्षा (स २१४)। जीह एक [स्टब्स् ] चवा करना करमाना। चीहर (है ४१३ पर)। जीहा भी [ जिड्डा ] भीय, रसना (याचा स्वप्त ७०)। छ वि [यत् ] कामी चीमवाला (पटम ७ १२ लॉम द **पु**र २ १२)। सीहाविश वि [छिजित] समाभुक किया गमा समामा क्या (कुमा)। न्तु देशो जुल (दुमा) । कन्न जुर्जन (सम्म १ ७ स १२ ८७)। ज़ की [युष्] सदाई, धुर कृति वातिकर केयह (विदे १ १६) । जुद्य [दे] निरुपय-सूचक सम्मय (सा४) । ज्ञाल देको <u>ज</u>ुग (**दे** १२ ६ करू पण्ड १ १)। ६ द्वाम चीड़ा चमय (पिंग सुर २,१२ मुना १६)। कुथ वि [युव] पुका संसाम, स्वित्त (६ १ दश दूर ४ ६४)। कुल देवी जुब (वा २२० कुमा धुर २ tww) I अपन की [युवित] चरछी अनान की (नवदः कुमा)। अन्तर्भमुक (धर) ध [पुतपुत] कृत-पूर्व सक्त-यत्तव किल-मिल (१४४२२)। -क्रबंप [दे] के चुक्छ=(दे) (वर् ) । जुअजद पू [युगनक] स्थोतिय प्रश्चिक एक बोन नियमें वैस के क्षे पर रखे हुए हुन-चुमाना चुमाठनी तरह चना सीर सूर्व श्वा नशन समस्कित होते हैं यह बोन (युक्र १२--पन २६६)। भुभय न [मुनक] पुर्व प्रवत्न (रे ७ ७१)। जुअरक न [ योजराज्य ] दुवरान का बाव

या पर, युवरायन (स २६०)। अनुसारक [युगस्त दे पुरम चौड़ा समय (पाम)। २ वे दो पद्म जिल्हा झव एक पूर्वरे से सामेश हो (बा १४) । खुमछ पु [दे] हुवा, तक्छा जवान (दे \$ 80) 1

ज्ञासिक वि वि किपुणित (वे १४७)। अञ्जलिय देवो जुगलिय (खामा ११)। स्मधी सी [स्गकी] ग्रुग्म जोका (प्राष्ट्र १८)। जुआव रेची सुवाण (गा १७ २४६) । साआरि की दि ] पूचारि, धन्त-विशेष (सुपा प्रभाग मुर १ ७१)। जुद्र की विश्वित कान्ति तेन प्रकास, जनक (बीप भीन ६)। स, संख वि सम् क्षेत्रस्थी, प्रकारताली (स ६४१ परम

१ २ ११६)। जुइ की [युवि] संयोग युक्तवा (ठा ३ ३)। ज्ञाइ पू [युशिस्] श्वनाम व्यास एक वैन बुनि (यउम १२ १७)।

बुईस वि [पुरिसत्] देवस्यी (सूप १ बुरुष्य स्ट [ सुगुप्स् ] एसा करना निम्हा करना । भूतच्यार (हे ४ ४ पर् छ

1, t) i जुडिकाय वि [जुगुप्रिसत्त ] विनिका (मिष्४)।

अधिय नि चि नाति कर्म वा शरीर से हीत विसको संन्यास देते का बैत दाओं में मिपेष है (पुष्क १२१)।

जुगिय नि दि । काटा ह्या (पिड १४६)। २ ब्रूचित (सिरि २२६)। **शुं**जसक [युक्त्] भोड़ना पूक्त करना।

चुन्द (द्वेष १६) । यह अनुस्तित (योच 428) I श्रुजणन [योजन] बोहना पुत्र करना

किसी कार्य में शकाला (सम १ ६)। शुंतपया रूपी [योजना] १ अनर धेको तुंबणा <sup>1</sup> (गीप का ७)। २ कर<del>ण विरो</del>प---मन वचन धोर शरीर का भ्यापार 'मराव यक्तमयनिध्या पन्नस्तविद्वातः चुन्नसाकरस् (विदेव्हर्व)।

ह्यंबम [वे] वेको शुंसुमय (इर ६१**व**) । भुंजिल वि वि अमुचित मूचा (सामा १ १--पम ६६। ६८ दी) ।

र्जुअपय न दि हाच चूछ-विशेष एक प्रकार नी इस्री जास जिसको पशुचान से काते हैं (स ४८७)।

**ज्**जिल्ला वि दि ] परिष्यु-रहित (वे ३ ४७)। जुरा पूँ [यूग] १ काल-विरोप-सस्य, वेंद्रा इत्तरधीर कसिये चार ग्रुग (कुमा)। २ पांच वर्षे का काल (ठा२ ४---पत्र **८६** सम ७३)। ६ न चार हाव का सूप (सीपा पर्श्व १ ४)। ४ शक्टका एक धैय *पुर* गाड़ी या हुए बॉक्ने के समय की बैक्तें के कम्बे पर एस्बे वाते हैं (इप दू १३१ क्ल २)। ५ चार हाम का परिमाण (प्रयु)। ६ देखो जुञ = यूग । प्यवर वि विशवरी पुत-वंड (मग)। प्यद्वाण विशिधानी १ बुय-म ह (रंगा)। २ पूँ द्वा∹म ह वैन बाबार्यकी एक उपादि (पन २६४ दुव १)। बाहुपु [बाहु] १ विदेह वर्ष में क्रपन स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिनकेन (विपा २ १)। २ विदेह वर्षका एक वि बर्गबिपित राजा (बाजू ४)। १ मिनिसा काएक राजा (दिल्क)। ४ वि सूप या चौना ৰ্ম থছে ৰালা হাৰদানা, ধাৰ্ণ-লাচু (তা ৩)। शच्क पू ["मत्स्य] की एक कादि (विपा रंव—पण वक्ष दी) संव**च्छा**र पू िसंकरसरी वर्ष-विदेव (ठा ४, ६)। जुरांतर व [युगाम्तर] सूप-वरिमित चूमि-माम, भार हाव बमीन (मग्रह २,१)। पक्षेयणा भी ["प्रक्षोकना] काते समय चार हाच बमीन तक इष्टि एखना (सम)। जुर्गचर न [मुगन्बर] १ गावी का काह विशेष, शब्द का एक प्रवस्त (वं १)। २ पुँ विदेश वर्ष में अरपध एक जिल-केन (साध t)। ३ एक कैन सुनि (पतम २ १॥)। ४ एक बैन सामार्थे (मानम) ।

लुगक न [बुगस्र] धुग्म भोड़ा प्रमय (प्रणू

चम्)। जुगसि वि [युगविन] बी-पूरव के कुम का

से उत्पन्न हीनेवाचा (रवस १२)।

जुगस्तिय वि [युगस्तित] १ **हुन्म-पुट्ट इन्ह** चहित (नीय ६)।२ क्रूपम कर छेस्पित (धम)।

जुलक वि [मुरावन् ] समय के प्रयक्त से वर्षित (बसूर राम) ।

शुगर } स [ पुगपत् ] एक ही साव शुगर्व } एक हा सबसे में कारएकज-

विधानो चैत्रपवासाख चुक्तकस्मेति' (निधे श्चनदा वेको शुण्हा (पुपा ११७)। ११६ धी मीत)। ञ्जप्य वेको जुलाबुलक (दे ४११)। त्तर्गं चुत्रम पुरिया तह सा'णावि साहिह् **तुगुच्छ देवो सुरुद्ध । मृहुन्द्ध (हे** ४ पुष्पवि (पुमा) । (उप ७२८ दी) । जुम्स न [सुरम] १ पुण्य, देशों, उस्त (ह तुगुन्धाणया ) वी [तुगुप्सा] क्या तुगुन्धा } विरस्तार (व १६७ आप्र) । जुष्ण वि [वे] विराम निपूछ वया (वे वे ९ ६ २४ कुमा)। २ प्रंतन राजि (धीर **γω**)∣ ४ ण ठा ४ ३---पव २३७) । पणीस ञ्चण्णामि [बीर्ज] पूनायुक्तना(हे १११३) जुगुन्धिय वि [जुगुप्सित] ब्रोक्त निविश्त वि [ अबेशिक] सम संस्य प्रदेशों हे निस्त (5ुमा) । बार्धकेष्ठ)। (मप २४, ४)। ञ्चारा न [सुरव] १ नाइल, नाडी वनेपह बाल जुण्णदुरम न [बीर्णदुर्ग] नगर-निरोप शो जुम्म व [मुग्म] परत्पर तमेश ग्रेक्ट (माना)।२ तिनिता पुरत-दान (लुध-२, भाषकम भी 'ब्रुगाधक' नाम से प्रक्रिक है (सिरि १६१)। २ः भाँ २)। ३ मोल्ब देत में प्रस्ति को हान (ती २)। **अन्ह**ें थ [युष्पत् ] क्षितीन दुश्त का ना<del>गा</del> का सम्बा-बीवा यात-विद्येप शिविका-विद्येप धर्मनाम 'बुम्ब्यम्हपयरहाँ (हे १ २४६)। ज़ुष्ट् वेदी जोष्ट् = क्वीरस्म (सुब्व ११)। (शाया १ १३ झीरा) । ४ वि यान-वाह्यक बुद्धिक वि चि च्या, निविद्य राज्य मत्त प्रादि । १ फार-शाहक (ठा ४ १)।

शुण्हा क्ये [क्योरसना] चांक्शी चीन्रका वन्त्र का प्रकारत (सुपा १२१ सरह)। ञ्जूष एक [मुक्तय् ] बोतना । संह जुत्तिचा (धी १६)। अरुच वि [युक्त] १ धॅमत चमित, मोन्य (खासा १ १६ चंदर )। २ संपुक्त, जीहा हुमानिका हुया चैक्ट (बूबर ११) शाचु)। ३ रूपक किसी कर्न में क्या हुस्स (पन ६४) । ४ स्त्रीतः सर्यान्ततः (सुस्र १ १ व गामा) । स्टिकिकान ["स्टिक्येय] सक्या-क्रियेप (शम्म Y क्रव) । **अ्**चार्णवयः पूनः [बुक्शनन्तक] व्यवना-

तुळ देवो सुंज। दुष्पः (हे४ १६ वर्)। जुरुम्द पत्र [ युथ् ] बहाई करना, बहुना । **बुग्न**ह (हे ४ २१४- पर् ) । बहु- जुरसंत <del>ब्र</del>म्भमाण (नुर १ २२२) २ ११) । संक्र विशेष (ब्रह्म २३४) । रुचारकिकाय केने सुचार्सकिका (असु **ब्र**िमत्त्वा (ठा ३ २) । प्रदी **पु**रुमक्षेत्र (महा) । नइ सुरस्थवेत (महा) । ह २३४)। ज़ुक्ति की [बुक्ति] १ मीम योजन, और र्धयोग (ग्रीमा स्नाया ११)। २ स्वाय जुडम्ह न [मुद्ध] नदाई, संप्राम समर (ए।या बपपत्ति (क्य १५० प्रामु ६३) । ३ सावन रे व्यूना, क्यूवा ६०४) । व्यूक्ट हेछ (तूम १ व व) । व्यविष्टिक] युष्टि का बाक्सार (धीप) । सार कि िसार] बुक्ति-प्रवान पुत्तः, स्वाय-संवतः प्रमासा-पुतः (उप ७२८ धै)। सुब्दान्य इ [ैसुवणे] बनावटी सोना (रस १ 🔍 ३३) । सेण प्रिणी ऐरवत वर्ष के ब्रह्म विव-देश (ब्रम १६३)। जुत्तिय वि [वीक्तिक] बाही वनिख् वें को बोला बाबः 'बुतियनुरंतनार्सं' (गुरा ७७) ।

'पुरुषुयनिक्कानत्व' (दे ३ ४७) । लुव पूर्व [युवम्] बवल तस्त्र (दुव्य)। राख पू ["राज] नहीं का बारिन (क्लर)-**चिकाये) सक्टुमार, भागो सवा (पुर ६** १७६, समि =२) । लुकड़ की [सुवित] एक्क्सी वनल की (है १ ४० औप यज्जाशस्य १३ कुमा) । **सुर्व**गर **१ [पुकाप] तक्य वेद (धाण** ४ X 6) 1 कुपरका व [यीक्सक्त] १ कुरस्वतव (स २११ की बुर १६ १२७)। २ एवा है यको पर वय तक पुत्रसभा का सम्मानिक न हमा∰ धक्तकका सन्दर्भ (साचा% ५ र)। १ यजा के मरते पर और प्रस्पन 🖁 राज्याबिरेक हो कही पर भी वरता हुई। युक्यक की निमृत्ति न हुई हो स्कर<sup>क का</sup> चम्प (बह १)। जुवक केवो जुलक (स ४७६) परम 👫 **२१)** । ज्ञुपक्षिय केवो जुगलिय (बय धीप) । ह्याय देवो सुव (पतन ३ १४६) छो<sup>ह्य</sup> रे रेड कुमा) । **जुना**णी **के**वो जुमह (परम ब, १८४) । सुक्यम २ देवी आक्रमण (प्राप्त<u>्र ४</u>६-जुम्बनच रे ११६) ह एक्टर विम नावर्ष 'वस्ते द्वमरतबुध्यणताई' (बुपा २४३) ! जुस्सिम नि [सुप्त] सेनित 'पाएल 🗷 बोनी क्ष्मणारिषु परिचित्र व बुक्तिए वा (का Y 8) (

**पुराच्य-पु**सिव

न ["र्गतपुदा] महत्तुव, पुक्तों की व्यक्तर वनामाँ में एक वजा (भीत)। शुरमाण न [बोधन] **दृ**ष्ट शहादै (सुता । दर⊌) । क्रुमिक्तप्र वि [मुद्रा] १ वना हमा, विक्रते र्रपाम विया हो बह (ते १४, ६७) । ए ल पुर, सहार्दे, चंबाम (स १२६) । सुद्ध नि [सुद्ध] वैनित (प्रामा) । सुद्ध व [दे] कुठ धकरमा 'का दुद्ध तुन कुट' नुब देवो जुग्म≂पुड (पुना)। नंति (पर्नीव १६६) । अप्रकृति अध्या (तुर १ २४४)

।यरिया ।रिया की ["। चर्च] बाहुन की

सुम्म वि [बोग्य] कावक उवित (विशे

बुरग न [बुरम] दुक्त इन्ह इसन (दुमाः

२६६२: सं ६१ प्रानु ६६: हुमा) ।

जुरमायसम्ब (स्व ४ २२१)।

শবি (হাপ ३—- पच १६९)।

मामः माप) ।

जुर्जन देवी सु

जुद्दिहिर—जेच दुर्शिहर ) देवो अहिद्वित (लिय स्व अविद्विष्ठ । ४५ टी गाँगा १ अदिद्विष्ठ । पण २ ८ २२६)। १४६ की जान १ १६— ब्रहुसक हि रे देना पर्यंश करना। २ हुबन करना होम करना । पृष्टुरागि (ठा u-पण १८१ वि.र. ?)। अभूअन [बाुत] भूमा चूत (पाम)। स्टर वि [कर] बुमारी पुर का कियाओं (सुपा १२२)। सार वि [कार] वही पूर्वीक सर्वे (ग्रामा १ १६)। स्त्ररि वि ["कारिम्] बुधारी (महा)। केन्द्रि की विक्रिको चुन-क्रीका (प्रत्यु ४८)। श्राष्ट्रय न [सस्क्रे मुधा देसने का स्वान (राव) । किन्नि । देशों देखि (संस् ४७)। खूम पूं [बूप] १ जुमा पुर, गावी का सवश्व-विरोप जो बेबीं के कन्बे पर काला जाता है, बुधर् ( उर ६ १३६ )। २ स्<del>टब्य वि</del>रोक 'बूप्रगहरते गुतक सहस्ते क उस्त्रवेह' (कप्प)। 🤻 यज्ञ-स्तम्म (व 🐧 )। 😮 एक महापाताल- | क्तरा (पव २७२)। स्मभ पूँ [दे] बाउक पश्ची (दे १ ४७)। अरुअगार्प[सूपक] देवी अरूअ च सूप (शर्म w2) 1 स्त्रा पू [सूपक] सन्या की त्रमा बीर कन की प्रमाक्त निमल (ठा१)। ज्ञा की युद्धी १ व चीनक, चन्यल खुद्र ! की-विदेप (भी १६)। २ परिमाण-विदेय, बाठ विशा का एक नाप (ठा ६ इक)। सेकायर वि ["राज्यातर] प्रवासी को स्थान बेनेपादा (सन १६) । अपूजार वि [ब्यूनकार] बुवारी बुव का बेताही (रंशा गरि गुपा ४ )। अपूजारि १ वि [पूर्वस्मि] कुधा केलने-जुआरित ! शता, चुए का खेपाड़ी (x ४६ \*\*\*: A \$# ) : ज्ञूस देनो जुग्स ≈पूर्। इ. सून्तिपव्य(विदि १ २४)।

सूप व [सूप] लक्कार घ. रिनों का काकात (संबोध ५४) ।

ज्य र् [जूर] दुराम नेश-मनाव (१४ २४३ चरि)।

अपूरम ३ पुं [शूपक] शुक्तपल की दिलीया ज्या 🕽 प्रार्थितीन विभी में होती अन्य की कता थीर संस्था के प्रकाश का मिश्रम् (प्रसू १२ ३ पव २६८)। जुरसक [गर्म] किंशा करना। भूरति (सूप २२ ११)। अर पर्क कियु ] क्रोप करना पुस्ता करना । भूरव (१४ ११२ वर् )। सर पर शिशी बेट इरना धरुरोम करना बूट्य (क्रे ४ १६२ एक)। बूट (हुमा)। भवि प्रितिहर (हे २ १११) । वहू-जूरंत (हे २ ११६)। अरूर वर्ष [ अरूर ] १ भूरता सुचना। २ सक वय करना द्विता करना (राज)। खूरण न [सूरत] १ शूचना फुला। २ দিকা আহিব (ব্যৰ)। जूरव धर [वृद्धवृ] ठकता वैचना। बुलह (हे ४ ६३) । ब्रायम वि विद्वान् । क्रमेगवा (हुमा) । सूरावग न [अरूप] भूराना शोरख (भव 1 (5 8 ब्यविध वि [क्षेत्रित] हुत दिया ह्या

कौषित (पुमा)। मुरिम नि [तिसा] सेम्प्राप्त (पाप)। ज्रुनिमज्य दि [दे] बहुत निवित्र शास्त्र ( ( E X P) मूख देखाँ सूर = कून्। सूस (ना ६१४)। अपूर्व केती जुल = युत्र (यावा १: २ -- पत 1680

र्ग} रेको लूब≂शून (शक ठा४ भूषय ( १)। ज्म केलो मृस (ठा२ १) कप्प)। जूम पुन [यूप] क्ष श्रेष नगैरह का नवाब क्दी (धीम १४७) ठा ३ १)। अपूसका वि [दे] क्रीसन कॅनाह्या (वर् )। जूमगा 🛍 [जापगा] सेवा (क्य) । मुसिय वि [जुन्न] १ देवित (ठा २ १)। २ लापिक सीए। (क्रप्यः) ।

जूद न [युव] समूत्र वरका (ग्रा१ १४८)। यह पूर् विति ] सपूर् का सथि पति पूर्वनानायक (न ६,६४ छ।नार् रे मुना १५७)। । हिंद दू ["शिय] '

पूर्वोक्त ही वर्ष (सा १४०)। हिएइ वु शिविपति । यूप-गायक (पतः ११) । जूइ व [यूथ] प्राप्त यूमन कोड़ा (माचा२, ११ २)। काम न [काम] समातार चार बिनों का उरवास (संबोध ५०)। जुद्दिय वि[युधेक] यूव में उत्पन्न (माज्ञा २ २)। जुब्दियठा म मृद्धि इस्वान विवाह-भएडप नानी जनह(माना २ ११ २)। जुद्दिया की [बुविका] सता-विरोप पूरी का पड़ (पएए) १३ पउम १६ ७८)। जुही भी [युर्था] सदा-विशेष मावनी सदा (क्षमा) । लेख १ पार-पूर्णि में प्रमुख किया जाता ध्यय (हे २ २१७) । २ धत्रवारण-मुचक ध्य्यय (उप) । जेज वि कियी बीचने मोग्म (धीम ४)। क्रेश वि [अनू] वीतनवासा (सूप १ ३ १ 2 2 4 2 3)1

लंड वि जिल् वितनेत्रस्ता, निमेता (मय 9 9)1 जेडबाज जेपं वेचो किण = मि।

जेरुप जेकार पू [जयकार] 'जय-जम' धाराज स्तृति 'हुँति देवास बेस्तारो' (या ११२) । जेटू देवो जिट्ट = ब्येष्ठ (हु२: १७२) महर क्या) ।

केंद्र देखी जिट्ट = ग्वैष्ठ (महा)। जहां थ्वी जिद्वा (धन = मादू ४)। मूछ पू िमुख] बेठ मास (भीप छावा १ १६)। मूखा की ["मूखी] बेठ मास की वृश्चिमा (नुम १) । जट्टामूख ध्ये [स्पष्टामूक्की] १ वेड मास भी पूर्विया । र जंड मास भी घनामस्या (सूत्र

अग वसो जङ्ग्य ≈ नैत (सम्मत्त ११७)। जन व [यन] शहरा-नुबद्ध पन्नय, 'मयरहरी

बेल नयपवर्ति (हेर १०६: हुवा)। जत्त रियापन् विजयाः भी सी (हास्य ११)।

जेचिक) वि[मानत्] विद्या (हे २ केचिस रे ११७: वा ७१: वटड)। केचिक (शी) ब्लर देशो (शङ ६५) । े (पर) उसर **वेको (१**४४६६)।

जेदह देशों जेत्तिम (हु२ १३ व्याप्त)। जेस सक [बिस् सुज्] भोजन करना।

बेनइ (ह ४ ११ पड़)। वह लेमीत (परम १ व व प्र)। जैस (मप) स सिवा जैने जिन तरह है (भूपा ३०३ व्यक्ति) ।

देसम } न जिसनी जीवन क्रोबन (बोब संसपा । = यीप) । जेमप्यन [क्] रक्षिए और, प्रवरती वें 'मस्यू" (दे ६ ४८)।

नेमणी भी जिसनी नीमन (संबोध ₹**७**) ( जेमारण न [केमन] भीवन कराना विनास (धन ११ रेंग) ।

देमापिय वि जिमित् मोविष किश्नो मीनन कराया दया हो वह (उप १३६ टी) । जमिय वि जिमित्री बीमा इया निस्ते धोवन किया हो वह (शाया १ १--- नव ¥8 t) 1 जेयस्य देशो जिल्ल = वि ।

अन (सी) देको एव = एव (रेला कप्पू)। नेवें (धप) वेबी जिमें (है ४ १६०)। नेतह (मा) देवी मंशिम (ह ४ ४ ७)। संस्व (डी) देखी एव = एव (रि: नाट)। बेह (सप) वि [ माद्यः ] वेसा (हे ४ ४ २ पर्)।

जहिस 🛊 [जिहिस] स्थलान व्याप्त एक वैश बुनि (इप्प)। ) धप्र [ दृरा\_] कैवन( ) बोद (छछ) । बोम रे एसाँह वैक्टर जावह यह नेयह बेए' (मुर १ १२६) । बोबेरि (स ६६१)। नमें भीरका (स्वस्तु ६२) । वहा, जीअंत (बम्म ११ दी) महाः मुर १ २४४)। नवर भावजीत (मुना २७)। र [पुन्] प्रशासित होता, चक-

को संस्कृष्टियात्यु विश्वपित करनाः। बोधाइ (सुम्र १ ६ १६)ः 'श्रस्तवि य गित्र पूछ बामपेविका बोक्ट दृष्टिया (मुपा ६११)। जोएण्या (क्रिने ६१२)।

बाअ एक [योज्य] १ समाप्त करना क्तम करना। २ करना। चौए६ (चुन्य १२—पर १व ॄ १८१३ सुझ १९— ॅपद्र २३३)। बोज स्क [योक्य] थोइन्ड दुर्ख करना। बोएड (महा) । यह जोड्यम्य जोएअस्य जोगणिय आयणिका (का १६१) स ५६ ३ मीग निष् १) । कोश्र पृंदि देशप्र चलामा (देश ४८)। २ दूरम पूरम (शादा १ १ टी—पद

1 (\$Y जोश देखाँ कोग (प्रति २६८ स ३५१) भूमा)। ब**ब**यम चिन्छी पूर्ण-विरोप पाचक वर्ण, शावमा (स २१२)। जाअंगण [वे] देशो जोईगज (प्रवि)। बोजग वि [दांतक] १ प्रकश्चेनामा २ व व्याक्टरा-शिवड निपात वदेख वद (विसे 8 8)1 जो भड़ पूर्वि शक्तिय गीर-विशेष पुरुत आंभण व दि] सोपन नेत्र पश्च, ग्रीख

(年年 文 ) |

भोरा (तय इक) । २ श्रेक्स संयोग चीइना (988 t t): कोमन न [थीयन] पुत्रानस्या, डास्छता बबानी (उप १४२ दी) गा ११७) । जोजजा ध्यै [भोजना] बोहना संयोग करना (का यू १२१)। अरोब्स और [धों] १ लर्गे। २ धाकात (पड )। को माणहरू वि [योजयिष्ट] को हर्नेनासा संपूर्ण करनेशला (ठा ४ १)। क्रीइ वि [यागिन्] १ धुनः, संगीपवासा ।

थाला। ६ पुँचुलि बटिँद, शाबु (सुरा २१६८)

रे नित-निरीय करनेवाला, समाधि लयाने

क्रोजल न [सोजन] १ परिमाल-रिहोप चार

२९४) ।

# X ) |

(चॅसि ११) ।

44) ı

कोइक कुँत [ब्रमोतियक] प्रचीप ग्रार्थि प्रशा शक परार्थ कि शुरस्य रेस्स्साहिक्से बाईली वर्द बवेबीयवि (रेया) । जोड्नल पुँ दि श्योभिष्क र प्रदेप शैरन (दे इ. ४६ पर ४० वन ७) । २ मधी थादिका प्रकारा (मोच ६६३) । खोडणी की चितिती ह बोर्स्सी ब<sup>म्बा</sup>

खोइस न दिं| <del>श्वान</del> (देव ४६)। कोन्स देवी जोड़ = स्वोतिस् (पेर १) प्र<sup>पा</sup> विते १०७ । को १० छ<sup>ा</sup> ६)। स<sup>ब</sup> ई ["शक] र सूर्व। र भनः(सूत्र २ । र )।

स्मय वृं [राष्ट्रम] पूर्व बाहि हेन (उठ

सिनी। २ एक प्रकार की केरी में चीतन हैं खोइर वि दि] स्वमित (वे वे ४८)।

६ १७३। सहा स्वीत) । आयोद्ध वि [ योजित ] बोहा हु<sup>द्ध (व</sup> कोइल देवी जागिय (धन)। खोईगण दु [रे] बोट-विशेष, इन्त्र-नेत (व

ओइस = न्बोतिस । बोइअ ९ दि जीर-विरोध स्पीत, दुन्नी पन्तीबना (दे ६ ॥ )। बोइस वि [द्य] देवा हुन्य विमोक्ति (दुर

िश्रक्की प्रतिन का काथ करमेराना नसी क्टब-विद्येष (ठा१)। रसन [रस] चल की एक मार्टि (छामा १ १)। केवी

ध्व नदात्र याति प्रकाराक पदार्व (चेर १) । ६ রাগ । ভ রাগ-রুক্ত ।∵দ মণিকি-যুক্ত । ३ श्रक्तमँ-कारक (ठा ४ ३) । १ सर्वे। ११ बद्ध वयेष्ट्रका विमान (यव)। १२ क्योतिप-शा**स** (निर ६ ६) । और 🗓

आंड र्, [क्योतिस् ] १ प्रकार, तेव (स्⊈ छ। ४ ३)। २ मीन वीन समि सम वहा पहिन्दं चोइमण्डे (मूच १ १६)। १ प्रशीप बार्षि प्रकाशक मस्तुर 'बहा दि यने हर

वाइछावि'(सुम ₹े १२)। ४ मनिना

काम कलेगासा कम्पन्न (सम १४)। र

शुक्तर (पुरुष ६० १)।

सोइस थूं [क्योतिय] १ देवों की एक वार्ति भूमें, चन्द्र प्रद्रमानि (कृप्पः प्रीतः वंड २७)। २ न सूर्यभाविका विमान (ति १२ को १)। ६ शास-विशेष क्योपिय-शास (उत्त २)। ४ सूर्वे झार्दिका चक्रः। ६ सूर्वे सादि का मार्वे धाकारा 'जे गहा जाइसम्मि चार' बर्धि (पर्ण १)। कोइस र् [बबीतिय] १ सूर्वं चना पारि देवों की एक वार्ति (क्प्प पंचा २)। २ वि क्योतिय ग्राह्मका भागकार जीतियी (मुपा १४६)। खोइसिअ वि [क्योदिविक] १ क्योतिय शास का जाता। देवस भोतियी (स २२ सुर४१ मुता२३)।२सूर्ववस सावि अवोक्तिक देव (सीतः वी २४' पर्वण २)। राम दुंिंगक] ध्सूर्व स्थि। २ चन्द्रमा (पएछ २)। सोट्सिंद र् [स्योतिरिन्द्र] १ सूर्य राव। २ चल्द्र चल्द्रमा (ठा ६)। जोइसिय पू [क्यीस्त] सुक्त पत्र (वो ۱ (۷ जोइसिया की [क्योसना] चन्त्र की प्रमा बर्निया बोक्से (ठा२४)। पक्क हुँ [पश्च] कुस्त पर (वंद १६)। मा की [मा] चन्द्र की एक सद-महिपी (मग १ १)। कोइसिया की विभीतियी देशी-किशेय (पएए १७--पत्र ४११) । जोइ की दि] विच्यु विवती (वे १ ४८ पड्)। जोइरस देवो जोइ-रस (रुपा बीद ६)। कोईम र् [योगीश] योगीन गौर्गन्य (स १) । कोईसर पू [पोगीधर] कपर रेखी (पुता দ্বাধ্য ব্যব্দ 📢 । कारकण्य न [बीगकर्ग] गोक्सिशेव (मुक्र १ १६ हो) । जोडरूणिगय न [यीगर्राणक] योक्स विशेष (सुब्द १: १६)। जोडार देवो जेडार (या ११२ ध)। क्षोक्स्त नि [व] मसिन वर्शनव (१ व YE) I

**कोग देवो जुग्गः =पुग्गः स**पाठमात्रीग समाइद्धं (सम ४)। ञ्जोग पूँ [योग] नश्च≒समूह का व्यन संचला भीर सूर्ये के साथ संबंध (सुअर १) । खोग र योग र व्यापार, मन वचन और शरीर की चेठा (ठा४ १ सम १ ≀स ४७ )। २ वित्तनिरोव मन-अग्रियान समाधि (पडम ६ २३ उत्त १) । ३ वरा करने के निए या पागण गावि बनाने के क्रिय केंद्र आता पूर्व-विशेष' जोगी महमीह करो शीरे विक्ती इमाल मुक्ताल (सुर = २१)। ४ सम्बन्ध संवोद मेनन (ठा१)। ३.६प्पित वस्तुकानाम (स्राया १ ४):। ६ शास्त्र का शत्रवदार्थ-सम्बन्ध (बास २४)। वस वीर्य पराहम (कम्म ५)। वस्त्रेमः न [ैक्स] फॅच्छच वस्तु वा माम और उसका भीवताल (सामा १ ५)। त्य वि िरयो योग-निष्ठ, म्यान-सीन (पराम ६a २९)। य पूर्वियो सम्बक्ति प्रत्यको का सर्वे ब्यूप्पति के बनुस्द्र शब्द का सर्वे (बास २४)। "दिहि औ ["रहि] चित्र-निरोप सं उत्पन्न होनेपासा ज्ञान-विशेष (यन)। भर नि धिर] समाचि में रूरान योगी (पत्रम ११६ १७)। परि व्याद्या **की विशेषास्त्रिको समा**र्थ । प्रवान वरिती-विशेष (शाया १ %) । पिंड र्ष [ैपिण्ड] वरीकरल बादि के प्रयोग से , प्राप्त की द्वर्ष मिता (पंचा १६ मिचू १६)। मुद्दा की [मुत्रा] हाथ का विश्वास-विशेष (पैचा ६)। व वि [ सन्] १ शुप्र प्रकृतिकामा (सूध १, २ १)। २ योगी समाबि करनेवाना (बत्त ११) । बाहि वि [<sup>\*</sup>वादिन्] १ राम्र आन नी धारापना कै लिए शास्त्रोकः सपनयों को करनेवाला । २ समा<del>पि</del> में पहनेवासा (ठा३ १<del>---पत्र</del> १२) : पिदि पूर्ण [विभि] शासी नी प्राराचना के लिए शास-निविट सनुहान त्तरत्वर्यां-विशेषः 'इय कुत्तो बोमनिहीं' 'युना । भोगर्व**ही**' (संग) । सत्य न [शास्त्र] वित्त-निरोय ना प्रतिपासक शाला (बनर १६ )। आग देनो कोग्गः इय सो न एल जोगी

794 बोवापुछ होइ धरपूरी (शम १२ मुर २, २ ४, महासुपा२ ६)। कोगि वेलो जाइ = योगिन् (कुमा) । जीगिंत र्षु [योगीन्द्र] महात्र योगी योगीचर (रमण २१)। खोगिणा दे**को** जो इफी (सुर १ १०६) । जोगिय दि यौगिक दो पर्धे के सम्बन्द से बना हुवा राज्य बेसे-अन-करोति अभि-येखयति (यस्त्र २ २ — पत्र ११४)। २ सन्द-प्रयोग से दना हुमा (उप पु ६४)। जोग।सर वेका आहसर (स २ १)। कोगसरा की [वागवारी] देव विशेष (छए)। जोगसी 🛍 [यागशी] विद्या-विशेष (प्रजन ♥ ₹¥₹) I कोग्ग वि [योग्य] योग्य, जवित शायक (हा**१ १ मु**पारव)। २ प्रमु समर्थ शक्तिमाम् (निष् २ )। कोम्मा की [दे] चाहु झुरामब (वे १ ४४)। कारणाच्या [धोरवा] १ शक्य का धरवास (मय ११ १६ व ६)। २ गर्न-वारश में समर्थं योगि (तंदु) । लोस देखी जोम≕योज्यु। मृदि जोज इस्सामि (दूप १६) । इ. जोट्स (उठ २७ )। उदाइ एक [योजय्] कोइना संपूक्त करना। यह-कोबेंच (सुर ४० १८)। शंक्र खोडिकण (महा)। लोक पून [के] १ नवन (दे१ ४६ पि ६)। २ चैक-विग्रेप (सए)। खोड (बप) की दिंगे जोड़ी पुल्ला 'पुरित वीत्र गण्डा (पूप्त ४३६) । आहिक पूँ चि व्याच नहेलिया निहीमार (R R YE) 1 क्षोडिल दि [योजित] जोड़ा ह्या संयुक्त निया हुमा (मुता १४१ १६१)। बोग पू [यान ययत] म्लेक्ट देश-विशेष

(ए।पा १ १)।

जोणि भी [यानि] १ उपाँच-स्थान (भग

संब्दे प्राप्तु ११०)। २ नार**ण ह**नु

क्षान (टा३ ३६ पंचा४) । ६ भीवना

उत्पक्ति-स्वान (टा ७)। ४ झी-विग्ह अय

(पए)। वहाय व िविधानी स्वति

1 X );

R 2(8) 1

बवानी (राय)।

( T 2 28) 1

२ ३ २ दि)।

नाये (पद् वर्ग २)।

द्वाण न [रिवान] कुश्ने का युव-कार्धन

राधेर विस्थास, धेव-रचना-विकेत (अ १

प्रसाम करना । कमें बोडारिन्डइ (प्राप्त

कोद्दार पू [वे] बोद्दार, प्रकाम (पर १८)।

खोडि वि [योधिम्] सङ्गेनासः, दुसः

वस्त्रयाचेक्र वि कि निवासित निवासे

448

योति का एक धीग (छान्ध १ १६)। काणिय वि योनिक यवनिकी सनार्व फेरा-विरोध सं उत्पन्त । की या (इक धीन साना १ १--पत्र ३७)। जोण्यक्षित्रा श्री दि | क्य-विशेष भूषारि-

बोल्डरी (वे ६ ६)। कोण्ड् वि [बर्गीसन] १ तुक, धत काबो वा जोराहो वा केससामा केस चंदरमा (सूख ११)। २ प्रव्याच्या (को ४)।

**बाम्हा स्वा [व**धोस्स्ता] चन्त्र-प्रकाश (पक् काम १६७)। जाम्बास वि [ चयोसनाचन् ] ज्योसना माना चनित्रशयुक्त (हे २ १५१)। बोच देतो जुन = युक्त (दुप्र १ १)। जान्त ) न योक्त की बोठ रस्ती का कोच्य पनडे राधस्मा निससे केस का भोडा, बाड़ी या इस में जोता जाता है

(पराहर ३० मा ६६२)। जीव देशो जाञ = इस् । चोवह (महा- गाँव)। जोदपुदि| १ विन्दुः ५ वि स्टोक बीड़ा (वे ६ १२)।

सोइ मर्क गुध्] नक्ता । श्रीहर (मर्कि) । ज्ञानमञ्जू १ दल्यक्त 'शाउपनानल' काइ पुयोची नुमः योका (बीपाडुमा)।

(योव १ मा) । २ थान्य का सर्ग धन्य-मनन (गोव १ था)।

कावारि स्त्री हि] सन्न-विशेष चुमारि (वे निक्दर )। ओह्रणा वैचो जोव्हा (मै ७१)। वीहर स्थी विभागी भूब-वरिसर्प की एक वाति (सूचर १२४)।

२४ १३)।

(पण ७१) ।

मात (वर्)।

(बीप) ।

जोबिय वि हिन्ने विचीतिक (स १४७)। को स्वल न [योचन] १ तास्त्य वनानी (भाग कम्प)। २ मध्य साव (स २ १)। ओडवन्नर्गार ) न [के] क्या-परिशास कुरुस ओहार सक दि] बुद्दारमा बोद्दार करा.

जीव्यमदेत्र द्वापा 'जोन्नएशीर तक लक्के वि विविद्दियाण पुरिदास्त्र' (ह जाव्यणिया स्थी [वीवनिका] वीवन,

जाबन्देजीयय न [के] बुक्त्य, बुक्क करा कोहि वि [सोधिम्] सन्तेवस्या नर्वेत कोस केवी जुम=चुप्। वह कोर्संद खोडिया स्त्री योधिका वत-निर्देग 👫 (चन)। प्रको चेष्ठ जोसियाज (४४ ७)। से चसनेवाशी एक प्रकार की धर्य-वाहि जोस प्रक्रिय] घवतान कन्त (सूध १ (बीच २)। क्षित्र ३ (श्री) य दि विवास<del>्य निवा</del> जोसिम वि [सुग्र] धेवित (तृप १२३)। ख्येश <sup>≸</sup>कासूचक सम्बद (प्रक्रा ६०)। जोसिआ की [योपिन्] की मध्का कोव ) (शी)। देखो एवं = एवं (गिर⊍ बोम्ब को सिजी केवो को जहा (श्रीव ११)। वस्त्रह केली स्टूड । कस्टब्ड (हे ४ १३ हि)।

।। इत्र विरिपाद्ञसादमहण्यवस्यि जन्नाराह्यद्वंतस्यो शेनहरी वर्षी बमधी ।।

斩

म र् [म] १ वानु-स्थानीय व्याप्त्रम वर्णे निरीप (पाचा प्राप)। व व्यान (विधे 118 ) 1

मंबार दूं [सङ्कार] पुतुर वनैष्य की व्यासन (नूर ३ १**०: पडि कछ)** । मंदारिज न [दे] धरववन पुन वर्गेश्व का

बारान ना भूतना (देश १६) ।

मध्य तक 📳 स्वीदार दरमा। अंबा (पर) (firft (y) i मंत्रन पड़ [ सं + तप्] बंतन्त होना, संतर् करता। मंद्रा (१४ १४)। र्मराधक [वि+क्कपू] विकास करता, वरवार वरुगा। जंबद (१४ १४०)। षष्ट मर्गन (दुमा)

'वरुनाधापी नहिलीनुग्री संबद्द नरेठ (एन 🖫 🥕 धीमोवि कराइ मंद्रति तुमेव बहुलोहुगर्वाहुमी

(41 tv) t मॉम्प तक [उपा+ स्टभ्] प्रतानंद देता वमाइमा वैता। प्रदेशह (है ४ ११६)। मंग्र घर [निर्+ धस्] ति धाम नेन्य । भीग (हिश्र २ १)।

मंहरो की वि घसती पुसरा (वे वे १४४)।

संबद्धा पूँ विं] कुल-किशेष पीलुका पेड़ (दे.

मंत्रकी की दि] भनती कुलटा। र शीका

**३ १३)।** 

(हुमा)।

क्ला कि विहे हुए संदूष्ट बुस (के वे वेक)।

मंस्रव र [उपाछम्भ] दगानम्म, उपाहना

मध्यर पूंचि ] मुल्क तक सूच्या पेड़ (वे

सहस्रक (श्रद्वी १ सक्ता, पके फल मादि का विरता टपकनाः २ श्रीत श्रीता। ३ सक. (छन ७२६)।

सहमारी की हि | बूसरे के सार्ग की पोक्ने

रताते हैं वह (वे ६ १४)।

के लिए चौडाब सीम को शक्की सपने पास

सागमित्र वेशो स्वामित्र (तुरा र )। मित्र केशो मुनि (रेश)। मित्र केशो महित्र (है १ ४२ वह महा पुर १)। मस्य रि [र] का वया हुया। २ वह (रे १ ११)।

६ ६१)।
मधित्र ति [के] पर्वत्व व्यक्तिम (यह )।
स्प्या केवो सम्य । प्रत्य (यह )।
सम्माक नि हे दश्याप साया-जाम (वे ६ १३)।
स्प्य पूर्वी प्रत्या स्था व्यक्ति (वे १ २७)

मीत) । जो यो (मीत) ।

मद्र सक [ हर ] मत्सा उपकमा कृता
विकार । स्वर (है ४ १ करे) । वक्त महर्गत
(क्षमा सुर १ १ )

मद्र तक [स्यू] याद करता । स्वर (है ४
क्षम सुर) । इन्मेर्स्यक्ष (हृद १ ) ।

मर्गत ) दृष्ट पत्र वा वनाया हुवा
मत्स्य ) दृष्ट पत्र वा (६ १ १ १ )

मत्स्य हिंदी पुरा ना बनाया हुवा
मत्स्य ) दृष्ट पत्र वा (६ १ १ १ )

मत्स्य हिंदी पुरा ना बनाया हुवा
मत्स्य विकार विकार स्रोते वा स्वर्या
प्राप्त विकार स्थान विकार वा स्वर्या
प्राप्त विकार स्थान विकार वा स्वर्या
मार्गत वा मत्स्य स्थान (हृद १ )

सरस्य न [स्राय्य] करता, हरवना चक्कत (बर १)।
करता ची [स्राया] कार देनो (धावन)।
करत दू [वे] बरणेगर, केतर (दे ६ ६४)।
करत दू [वे] बरणेगर, केतर (दे ६ ६४)।
करत दू [वे] बरणेगर कार (दे ६ ६४)।
करतंद्र से [वे] वरण नच्या (दे ६ ६४)।
करतंद्र से [वर्ष] वरण नच्या (दे ६ ६४)।
करतंद्र से [वर्ष] वरण नच्या (दे ६ ६४)।
करतंद्र से [वर्ष] वरण नच्या करतेतुन
"वर्ष्णणर्गणनात्रभीत्रनगरियं जिष्यं"
(नुग ६६० हे ४ ६६१)।
करतंद्र से वाग्य [करतंत्र चक्कन वर्षा साम्यायंत्र (वर्ष)।
करतंद्र से देशे।
करतंद्र से से हरें।

मनदम रेनी मन्द्रमञ् । बरह्मह (बुरा

१व६) । बहु महरू गर्मन (बहुन् ) ।

(कुनक १६)।
स्त्रां की वि । प्रश्तुष्टा पूर में बन बात
वार्ष एटा (६ व १६) तारा)।
सत्तुष्टिका । वि [दी दश्य बना हुया (६
स्त्रुष्टिका । वि [दी दश्य बना हुया (६
स्त्रुष्टिका । व १६)।
सत्त्रिकी श्री प्रश्नुष्टा वार्ष-विरोध
हुए बावा स्त्रुष्ट प्रश्नुष्टा वार्ष्ट ।
सत्त्रिकी की [दी प्रशा बन्दरी (४४)।

मञ्ज्यक्षिय वि [वे] श्रुम्य विचवितः भर

हरियवर भन्नहविषयायर विविध्यसकृतिर्म

च १६ पुता १ कला।
सक्करी की हिं] जार कररी (थंइ)।
सक्करी की हिं] जार कररी (थंइ)।
सक्करा की हिं। जेपूर्ण परिपूर्ण परपूर्व
(श्रीव)।
सक्करा की हिंपणां १ मारत विकास (श्रिव
१९)। २ स्वायसन प्रकार (श्रिवे १ रूप)।
सक्करा ई मारते १ एक केपरिमान (श्रेवेस
१९)। २ एक मारत-स्वास (श्रेवेस
१९)। २ एक मारत-स्वास (श्रेवेस
१९)। २ फिन्म १ प्रस्थ नक्करी (ग्रह्य १
१)। २ फिन्म १ प्रस्थ नक्करी (ग्रह्य १
१)। २ फिन्म १ प्रस्थ नक्करी (ग्रह्य १

स्मर (क्षुमा)।
स्मर वृद्धि रे समय प्रश्नीर्थ । २ ठर,
किमारा । ३ वि राज्य मध्यत्व । ४ देखेसमीर सम्मर धीर गंकीर, महत बहुत (१ १ १ )। १८ टेक के सिम्नर (१ १ ६ १) याम)।
सम्मर वृद्धिका होगा गाम्ब (१ ६,४७)।
समीर वृद्धिका होगा गाम्ब (१ ६,४७)।
समीर वृद्धिका हो होगा गाम्ब (१ ६,४७)।
समीर वृद्धिका होगा गाम्ब (१ ६,४७)।
समीर वृद्धिका होगा गाम्ब (१ ६,४०)।
समीर वृद्धिका होगा गाम्ब (१ ६,४०)।

सास है, विकास सात्रीक दिया बना हो बहू (दे व दे)। स्मर्दिस पूँ [स्टाल्यक्ष] काम त्यर (पूरा)। स्मर्द्रात चिँ) १ तात्र्यूल ताल (दे व देश तत्रक)। रे सर्व (दे व दे?)। स्मर्थ कर स्थि [श्रेला करता, त्यान करता। स्मर्थ पायर (१ ४ ६)। वह सम्बंध स्मर्थमाण (तत्रक स्था)। वह सम्बंध स्मर्थमाण (तत्रक स्था)। वह सम्बंध सम्मर्थमा स्था साह्यक्य सम्मर्थमा (पूना अह सम्मर्थमा स्था साहयक्य सम्मर्थमा (पूना साहयक्य सम्मर्थमा का साहयक्य सम्मर्थमा व

\$4 A) I

स्मह् दि [स्मायिम्] विश्वय करनेत्रता व्यान करनेत्रता (प्राचा)। स्माह्म वि [स्मात] विशेषत (पिरि ११११)। सम्बद्ध वि [स्मात] व्यान करनेत्रता दिवक (प्राच ४)। सम्बद्ध वि [स्मार] दे ततानक्त निकृष

सबा व [वे स्थाट] र वणा-व्हान निर्मूब स्थाई। वि ६ १७ ७ मारता पाप पुर ७ १४६)। २ इस तेष्ठ 'स्थाद्यी स्थादयीयां (दे १ ६१) 'बिट्ठी व छत् येसाउनसायन्त्र वर्शीय वर्ष्टी विद्यानको वालकें (व १४४)। स्थाद्यान (स्थादन) १ स्थाद व्यव शेल्खा। १ अल्डोटन स्थादना (च्या)। स्थादक म [ब्र] कर्पीय-क्रम होती, कराव (दे

व १७) ।
स्वाधायण करेत [स्मृटत] क्ष्मणस्, ब्रांध
कराता सार्वत कराता। की वी (दुव
वध)!
स्वाध वि [क्षान] व्यालकर्वा (बु १२)!
स्वाध वृंग [क्षान] व्यालकर्वा (बु १२)!
स्वाध वृंग [क्षान] १ शिका, विचार
४१ है २२)। १ वक्ष है बत्तु वि
स्वाध की विचारा की वचारा (ठा४१)!
व मन वाहि की चेहा की निरोध । ४१६
सम्बन्ध के मन विचार की निरोध । ४१६
सम्बन्ध के मन विचार की निरोध । १६६
व्यालक के मन विचार की निरोध । ४६६
सम्बन्ध के मन विचार की निरोध । ४६६
सम्बन्ध के मन विचार की निरोध । ४६६
विचार विचार १९)।
स्वाधीवरिया की [ध्वानास्थरिका] है के

प्यानों का नप्य मात् कह वनन विजे प्रवन प्यान की जनांत हों हों भीर दूनरे वा वारण करते के नारों हो हो थे भाग था थे। ये एक प्यान जनात होने पर थेए प्यानों में नित्ती एक की प्रवन प्रारंत करते का चिन्नते (यह १)। स्मार्थ कि [स्वानिन्त प्यान करते ला (पाय था)। स्मार्थ कि [स्वानिन्त प्यान करते ला (पाय था)। स्मार्थ कि [स्वानिन्त प्यान करते ला वाचा करते हैं।

माम विदिश्विष असा हुमा (बादा १

भूति (पाचा २ १ १)।

१ १) । अंदिस न ["१पण्डिम] राज

म्हाम वि [ब्याम] सनुवन्त्रत (पर्रह १ २---पत्र ४)। स्प्रसण न [वे] बनाना धाम नपाना प्रशेप नक (वय २)। मासर वि [वे] इद्ध, बूढ़ा (वे ३ ५७)। मासस्य न [दे] १ धीच का एक प्रकार ना रोव पुनरावी में 'मानरा'। २ वि मानर शोगबासा (छा ७६८ टी बा १२) । स्प्राप्तक वि विद्यासको स्वास काला (वर्षेत < **∀**) ≀ म्ह्यमञ्जिप वि [ध्यामस्त्रित] कासा किया ह्मा (क्रुप ६८)। मग्रमिश कि कि | इन्छ प्रस्कृतित (के क **१६: शव ७ दावन) । २ रयानवित काला** निया हुन्य । १ वर्षानितः 'वस्त्रवर्टमर्गमास्ति बीए का ऋमिस्रो नेस् (सार्व १६)। मध्य वि [यमाठ] मस्मीइस्ट वरण वका हुमा (ग्रीद)। मायव्य देखो सा । मग्रहुआ की [दे] और बुद्र वन्तु-विशेष (R # ##) 1 मध्यापन [स्मापन] देखी स्थास म (यव)। महामणा न [यमापना] राह, बसाना थरिन संस्कार (मानम) । सञ्जना देखो अस्त्रवमा (संदोद २४)। सिलाम न दि । पुरसाकला (वर १४६ हो)। मिलिल न दि वननीय नोपापनाव, नोप निन्दा (दे ६ ११)। सिंगिर ) पुँ [मृ] धुप्र नीर-निरोप चीत्रिय सिंगिरक ) जीव की एक जाति सोंबुर वा भिल्मी (जीव १)। सिर्मिक्षत्र वि दि श्रेष्ट्रीतित मुखा (श्रेष्ट ६) । सिमिली) की दि एक प्रकार का वेड मिनिर्द्धा । सहानेषिरीय (क्य १ ४१ हो: धल्या२ १ = १८६१)। मिर्जात १ वि [शीयमाज] को सब को फिज्जमान । प्राप्त होता हो इस होता हथा (से ४, ४८ ७२व टीः क्रुवा) । मित्रम पर [छि] शील होना । फिल्म्स (प्राप्त ६३)। मिनिन्द्रित क्ये दि वस्ती-विशेष (बाबा २ 2 = 3)1 स्टिण्म देवो स्ट्रीण (चे १ ६५३ **९**मा) ।

स्थित्य ) न विशेष्ठिए के धवयनों की मिनियय 🕽 पाइता (बाबा) । विद्या देखो स्त्रा । कियात, कियायत (उना भग कस पि ४७१)। बहु- मिल्यायमाण (ए।या १ १---पभ २८ ६ )। मिहिर म [के] बीखें कूप पुराध इनारा (वे ₹ Xu) 1 मिक्कि अवि दि । भीता प्रधा पक्षी हुई बह बस्तु को उत्पर से गिरती हो (बुदा १७०)। भिद्धा सक [स्ता] भीतना स्तान करना। भिज्ञद (कुमा) । मिद्धियां की मिद्धियां कीट-विशेष भीत्राय थीत की एक बाति मिळली(पाप्र पएछ १)। किविरिका भी वि] १ पीही-नामक कुछ । २ मराक मण्डक (दे ६ ६२)। किहित की दि नवसी पक्षक नी एक लुख्य की वाला (विपार द—पत्र ⊏६)। मिद्धी की [व] जहरी तरव (पटक)। मिद्धी की [मिद्धी] १ वनस्पति-विशेष (पर्ख १ उप १ ६१ टी) । २ शीट विरोप फीबूर (वा ४६४)। म्ब्रिण विक्रियाण है इसेन इस्स (है २ ६ पाप)। मीरण न [के] १ थंग, शरीर । ६ कीट, कीश (वे ६ ६२)। मीरा की दि] नवा शरम (दे १ १७)। म्फ्रेंस पूं [दे] तुस्तय-नामक बाध (दे ६ ६८)। र्मुप्रेक्टिय वि [वि] १ प्रमुक्तित मूचा (पराह १ ६---पव ४६) । २ फुटाहुमा, गुरुना हमा (मग १६ ४) । र्गुमुमुसयन दि] यन ना दुवा(दे व मुद्रियम [पे] १ प्रशाह (देश १८)। २ पत्रु-विशेष भी मनुष्य के शरीर भी परमीये मीठा है और निसंदा रोग कपड़े के लिये बहुपूरम है (चय १११) । मुक्ति भी चि नोपड़ी, वृत्त-दुरीर, वृत्त-निर्मित बर (ह ४ ४१६ ४१६)। र्भुवयग न चि प्राचन्त्र (शाया १ १) । मुत्रमः एको जुत्रमः=पूर् । मुत्रमः (पि ११४)। वह मुख्या (द्वेश १७१)।

मुद्ध कि कि भूठ समीक मसस्य (देव ₹¢) I मुख सक [ जुगुप्स ] इसा करना निश्व करना । भूरणइ (हे ४ ४ सुपा ११८) । मुजि पू [ध्यनि] राम्य प्रावाम (हे १ ४२ पष्ट् क्रुमा) । मुणिल वि [जुगुप्सित] निस्ति वृधित (कुमा) । कुत्ती की [दे] हेर, विष्क्रेर (रे ३: १०)। मुनुभुस्य न दिं] नन कादुच (दे दे ₹4) 1 मुळुख र् दि ] बकस्माद प्रकारा (भारमानु मुख यह [अन्दोस्] मूनना डोमना सन्तमाः बद्धः मुह्नेत (युपा ११७)। मुख्य भीन [दे] सन्दनिरोप।सी गा मुक्लुरी की [दे] पुरुष चता बाह्य (दे ६ X= ) ( मुस देवो मृस । शंइ. मृसित्ता (पि २ ६) । मुसणा देवो मृसणा (यत्र)। मुसिय केवो मृसिय (इह २)। मुख्या व द्विपरी १ रुच्य, विवर, पोत काली वनह (ए।या १ = सूपा६२)। २ विपोसा खुद्धा (ठा२ ३ ग्रामा १ २ पर्णा १ २)। मृक्ष देवो खूक्त । सुर्व्यति (धंवीव १८) । सूर सक[स्यु] यात करना विभाग करना। कुछ (६ ४ ७४)। वह सूर्रत (हुमा)। कृर एक [ जुराप्स् ] किया करना पूरा 'निरूपमनोहुग्यम्मं विद्युत्तं तस्य स्वप्रमुखिंद्धः। वंदी वि देवरामा सूरद नियमेशा नियन्त्रं (एए ४)। मृरं वड [श्रि] मुरना शीख होना मूचना। बक्र मृर्रव मृतमाण (वरा उर इ २७)। सूर वि [दे] दुनिस वज देवा (रे ६ ५६)। मृदिय वि [स्मृत] विन्तित यार विया ह्या (Wit) ı मृत्स धक [जुप्] १ धवावरता। २ प्रीति

करता । १ शीख करना स्थाना। क्य

444	<b>भाइश्रसहमह</b> ण्यको	मृ <b>⊕जा</b> टगर
म्समाण (पाषा) । धीर मृतिशा मृत्तिशाण मृत्तिशाण विश्वव धीर २७) । मृत्ताण स्मृत्तिशाण विश्वव धीर भीर समार ११) । मृत्तिशाल वि [से] १ स्वयं में सांस्कृत । २ स्वयं तिर्मत्त (१६ ६२) । सृतिस्त वि [सुद्ध] १ केल्व भावतिक (जाता १) भीर) । १ स्वित भिक्त परिवार (जाता १) । १ स्वित भिक्त परिवार (जाता १) । स्वयं स्वयं स्ययं स्वयं स्ययं स्वयं स	स्वेशक्तिम की [र्] एव के तमान एक प्रकार की कीम (दे १ ६)। स्पेश्व का [साटम] पेड़ धार्रि ही एक देखा की सिरामा। मोकह (रि १९६)। स्वेश्व के सिरामा। मोकह (रि १९६)। स्वेश्व के [स्वार्ट के प्रार्थित के प्रधारिका रिएमा। २ बीर्ल कुछ (लावा रे ११—वर १६)। स्वेश्व के [साटम] पातन गिरामा (प्रधार १ १—वर १९)। स्वेश्व के साटक (दे १ १६)। स्वेशक के साटक के साटक (दे १ १६)। स्वेशक के साटक (दे १ १६)।	मोससाय मोसेसाथ (पूरा रश्नाण)। येक 'वंग्युरसाय कार्य मोसिया निरम्धे यु (यू ६ २४६)। मोस वक [ग्रवंपय] बोनना बरेरत करणा। पोरीह (यह १)। मास वक [मोपय ] जलना प्रवेष करम। के मोसेपक्ष (कर १)। मोस व [मोपय ] जलना प्रवेष करम। के मोसेपक्ष (कर १)। मोस व [वे] मामा हर कर्या (वर १)। मोस न [वे] कर्या हर कर्या (य १३)। मोस न [वे] कर्या हर कर्या (य १३)। मोस न [वे] कर्या व्यव्य त्रीर पर्धे (वर १)। मोस में विशेष मामा (यह ११६ वर)। मोस मामा (वर्षेपना) (वर ११६ वर)।
।। इम निरिपाद्मसम्मध्यम्मसम्म स्प्रमायस्वर्षनमञ्जे स्वयंत्रमा स्वर्णाः ।।		
τ.		
ठ र्षु (ठी पूर्व स्थापित कालान वाणे तिरोग (त्रामा सार्) हापा थी [व] बाहाल-उप्त. कुमाने गी बाहाल इरवार्डी में दीशां (पूर्व १ ६) हे कु [स्कृत विश्व-तिरोग निवा वर वा विश्व (व्या १ ११) हे कु [दुस्तृत है कमार वर्गा वर्गा का (राष्ट्र) है है — यह है। १ व्यक्त काला है — पर ६९) अपने दान वर्गा हो हो। १ व्यक्त (या १२ तुमा ११६)। १ वर्गा है है प्रचल दान है तो को हो हो। १ वर्गा-तिरोग वार बात को तोच (त्रित) १ वर्गा-तिरोग हो के हो। १ वर्गा-तिरोग हो काला को तोच (त्रित) १ वर्गा-तिरोग हो काला को तोच (त्रित)	तिति कीय। १ वह कियाय (वे ४ ४)। १ मित्र पुरास (१ ४४ दे १, १६)। १ मित्र पुरास (१ ४४ दे १, १६)। १ किया क्षेत्र हम्म वार्ग ह्या (१ ४४)। टेक्स र्षु [ट्रह्म] म्मेल्या शे एक वार्थित (सिरे १४४)। टेक्स र्षु [व] नम्म क्लिम एक वार्थित (सिरे १४४)। टेक्स र्षु [व] नम्म क्लिम एक वार्थित (सिरे १४४)। टेक्स र्षु [न्दु रोग जाय (याय)। १ स्माम क्लाम एक तिर्मे (सिर १)। टेक्स र्षु [न्दु रोग क्ष्म वा स्मा (सिर्म)। टेक्स र्षु [न्दु रोग क्षम वा स्मा (सिर्म)। टेक्स र्षु [न्दु रोग क्षम वा स्मा (सिर्म)। टेक्स र्षु [न्दु रोग क्षम वा स्मा हमा (सिर्म)।	डेरिया की टिक्कियों क्लार नारने वा वार्क- स्मी (हमार २९७) । देशप दे दिने आपताला, इन मार्थ (१ ४९) । स्मार्थ दिखों क्यानेकार (१ र ११४) । स्मार्थ दिखों क्यानेका १ र्यु मार्ग नी एक नार्कि (प्रम ११) । स्मार्थ दिखें क्यार (१ र १ र ४ व व व वा वा वा (मुर १९, ७० व र १) । स्मार्थ के प्रमान क्यानेकार में बेमर्स ना प्राप्त (वर १३) । स्मार्थ के प्रमान क्यानेकार (१ ४२) । स्मार्थ क्यार (१ क्यानेकार व्यक्तिया (१ र १ स १९वा) ।

टबक 🛊 🔄 सामी चारिक मापात नी भाषात्र (दुन्न १:६) ।

टरुइआ थी [रे] जरनिंश परश (६४ १)। टच्यर वि दि विकास कर्णमाना अमेकर नानगमा (दे४ २ मुपा ६२ । नणू)।

टमर वृं [वे] केश-वय वान-समूह (वे ४ १)। ट्यर देता टगर (नुमा) ।

टस्ट पर [ टस्ट साय् ] 'टन-रग' मानाव करना । बद्द टक्टन्सॅन (प्रान्तु १६३) ।

टस्टिनिय वि [टस्टिनियन] 'रस-नम' बाराज । बामा (डा ६४८ दी) ।

टसपल बक [द] १ तहरूतामा वहरता। २ चरचना, हैरान हाना । टमपर्लीत (पर्नीव । १a)। वर टस्त्रालंग (सरि ६ a)। रुक्तिप्र नि दि देना हुमा इटा हुमा (विदि 4 = 8) 1

टसर न दि ] विमोदन मोहना (वे ४ १)। टमर व [यसर] टमर, एक प्रकार का नूता

(हे१ २ १ द्वा)।

दसराष्ट्र म [व] शेगर, मर्रातम (वे ४ १) । हर्द्दिय रि [द] इंचा क्या हुमा, 'टर्टरम बाना बाबी मिल्पर बीई बई सीडे (धर्मीक १४७ गमन १६ )।

शार वंदि ] यचम यच ह्या योहा (व ४ २) 'बर्राहरिसमीर न नुमद, मण्ये हारका हारले (भा २७)। २ हर्ट्स, योग चोहा (उर १३३) ।

हास व दि | बोयप पन दुर्गी उगल हाने के पाने की मराचा कारा कर (दन ७) । िट ) [दे] देवी टेंटा (वीर) । सास्त्र हिना । भी [ शास्त्र ] पुषानाना पुषा

सेन्द्रे का बहा (तृता ४६६) । टिंदर । पून [र] बूत-विधेत हैं। वा देश (रबरूज़) (देश रे बार शेर के बच्च)।

(टंबरुणा हो। [वे] क्यर देखों (गिर१०)। टिकान दि] १ टीका, तिलका २ निरका स्तबक मस्तक पर रक्ता थाता ग्रुक्टा (वे Y 1)1

टिकिट्स (शी) वि [के] तिमक विमूपित (क्यू)।

टिन्पर वि [रे] स्वविद, बृद दूवा (वे

Y 1) 1 टिट्टिम पू [निहिम] १ प्रतिनिधित टि

हरी टिडिहा । २ जस-धन्तु निरोप (पुर १ १६१)। हो भी (पिपारे ६)।

टिटियाय सक हिं] बोसने वी प्रेरणा करना **'टि-नि' बाराज करने को नियमाना**। शिद्वियानेह (लाया १ ३)। करक टिट्टिया येखमाण (लावा १ ३-- पत्र १४)।

टिप्पणय न [टिप्पनक] बिपरण धारी द्येषा (मुरा १२४) र

टिप्पाकी [दे] सिपक टीका (१ ४ १)। टिरिटिश तक [ध्रम्] पूनना किना बलना । निरिज्ञिन" (हे ४ १६१) । बङ्

टिरिटिइंट (१मा)। निहिषिय नि [वे] तिमृशित (वर्षति ११)। टिविडिक सम् [ मण्डव् ] जनिस्त करना निमृतित बरता । टिनिबिस्ना (हे ४ ११८ नुमा)। यह टिविकिका (मरा २०)।

निविद्यिक्ष वि [ मण्डन ] रिन्तित धर्माट (पाय) ।

ट्रेंट वि दिने दिन-इन्त जिनहा हाय करा हुमा ही यह (दे ४ ३: ब्रानू १४२ १४३)। पुरुषम् धरः [ दुण्दुशाण् ] ४४ वर्षः धातातः ।

थरना। वह दुंदुरुणीत (गास्ट्स साम्र) **582)** 1

द्वेषय पू कि बापात-विशेष पुत्रसती में 'द्र'बी' (बुर १२ ९७)। दुह बरू [दुर्] हुला दर बाला। हुर

(चिय)। बद्र दुईत (वे ६ ६३)। दुरपरम म दि विन साधु का एक धीय पात्र

(तूनर ११)। दूबर वृं [त्यर] १ जिसको बादी-मृद्य म बबी हो ऐसा चारासी । र विसने वाही-मूँप चटपा ही हो ऐमा प्रतिहार (है १ २ ६) बुमा)।

टेंट पू 📢 १ नम्ब-स्वित मणि-विशेष। वि भोषए (कपू)।

टेंटा थी [दे] पुषासाता मुमा सेनने का बड़ा (दे ४ ६)। टेंटा श्री [ब्] १ व्ही १-मोसकः २ व्हावी हा

बुष्क वस (बण्रु) । ठेंबळ्य न [द] कत-विरोप (थाना २ १

< () I टक्टर न [द] स्पन प्रदेश (दे ४ ३)। ) न दि दाङ नामने ना बर्फन

शहमांड (दे ४ ४)। हापित्रा थी [ब] होती बिर बर रतने वा निना हुवा एक प्रकार का कल्ल (मुपा २६३)। टोप्प दू [द] चेहि-बिटेर (न ४६१) ।

द्याप्पर पंत कि विराज्ञाण-निधेप क्षेत्री (धिंग) ।

टोखर्¶ द्] १ शतम, जन्नु-रिरोप । २ रिराष (के ४ ४ प्रानु १६२) । शहु स्री िंगति ] युद्ध-बन्दत का युद्ध क्षेत्र (पद १) । त्याइ की [शब्दिति] प्रशास मानारतामा (राप)।

द्याम 🛊 [ सं ] १ दिही निर्म (बर २) । २ पूष (रूप ४८) । टालंब पू [ द ] मधून क्य-रिटेर महमा

बादेश (देश ४) ।

ठ ई [ठ] पूर्व-वानीय व्यक्तन वर्ण-विशेष (साया सर)। ठइत दि [दे] र बरितरत ठार लंका इसा। २ दु सरकार (दें ४ रे)। ठइस दि [स्थितित] र सम्ब्यस्थित बका बुधा। २ वन क्या हुए। वन बुध्य (ए १०३)। ठइस केलो ठवित (स्थि)। ठिस केलो प्रविद्य (क्य)। ठस केलो स्थान स्टान्स्। वर्ण ठिवनक (१२२)। ठस केलो संग्रान्स्य (है २ रा प्रवि)।

उस्कूर रे राज्युंत (व र्राथम हुना ४१२) वहि ४४। १ पास करेग्र का स्वागी नामक दुविया (वासम)।
उसार दुविया (वासम)
उसार दुविया (वासम)
उसार दुविया वासम करना कका।
उसार दुविया (वासम)
उसार (वासम)

टक्कर }⊈ [ठक्कर] १ अकुर, शक्तिय

र कुमा)।
ठिरिय कि [ वे ] बर्चिक्त क्या हुआ विक्र-वार्षित (व्य १२४)।
ठिरिय केश ठड्स = स्वरित्त (क्य दु ६वव)।
ठिट्ठार द्वं [ वे ] वास्, रिप्तमधादि बाह्य के वर्षन करावस्य वीर्षास्त क्यारामात्रा ठटेश (वर्ष २)। ठड्डार दे [ स्टाम्म) इस्लाम्करा हुप्रदेश बहु (वे टू. १६८ वर्षना १२)।

ठरप है [संबाद्य] स्वरामीय स्वापन करने बोग्ड (दोन ६)। ठस पक [स्पर्] बन्द करना रोहना। ठर्गेष (त १११)। ठराण स्वितानी १ कहार बाटकार। २ कि

ठयण [स्वात] १ वकाव घटकाव । २ वि चैत्रतेशावा भी जी (का १९१) । इयत्र न [स्थात] क्व करना 'यक्किटक्स् व' (वैवा २, २३)।

feet (t v 1) i ठिख्रिय थि [ बे ] चाली शूल्य, रिक किया णवा (भूषा २३७)। ठक भि वि निर्भंत बन-परित वरित (व 8 K) 1 ठव एक [ स्थापय् ] स्वारन करना। हवड, होद (पिक: कप्प महा)। हव (सप)। वह ठबंदा (रवल १३)। संक्र-ठवित्रं ठिवजण ठविचा ठविच ठवेचा (पि १७६) १८६ इदर प्रामुरण पि इदर)। ठक्य म रियापनी स्थापन संस्थापन (तुर २ १७७)। ठवणा चौ स्थापना है प्रतिकृति चिन्, बृत्ति बाकार(छा २,४० १३ थर्जू)। २ स्वापन न्यास (हा ४ **१**) । **१** साकेतिक बस्द् मुक्त बस्द् 🕏 प्रमाच या चनुपरिचित्र में विश्व किसी चीव में ध्यका पॅक्टा किया नाम बहुबस्तु (विसे २६२७)। ४ वैव धाचुयो की फिलाका एक शेप, साचुकी मिला में केने के लिए छड़ी हुई वस्तु (ठा ६ ४---पत्र १११)। १ श्रदुका ग्रेमेरि (श्रीमे)। ६ वयू बळा बाळ दिलो का कैन पर्व-विकेच

का प्रेकेट विकास नाम नह नाम (कारे २)। स्थान मिलानी स्थापनी स्थापन स्थापन निकास प्रमाण की पूर्वि की निकासना पहल स्थापना-कार है (ठार । पर्युष्ठ ११)। उक्षण की स्थापना नाम नाम कार्युष्ठ कार्युष्ठ रुवामी की स्थापना नाम नाम कार्युष्ठ कार्युष्ठ स्था हवा क्रम्य (मा १४)। जोजन न

(लियार)। इस्क इंट डिस्सो सिमाके

सिए मनिषद्भ पुना (निष्ट्र ४)। अस पु

िनयी स्वापन को ही प्रचान माननेवाला

नव (राज) । "पुरिस पू ["पुरुष] प्रथम भी

बुधियाचित्र (ठावे १ सूच १ ४ १)।

यरिय 🛊 िवार्ये विश्व वस्तु में शावार्ये

ठवणी की [स्थापनी] न्यास न्यास कर से एका हुआ प्रका (मा १४)। सोस तु [मोप] न्यास की बोरी स्थास ना प्रश्नाप 'गोरीमु निचयोड़ी हमशीमीनी स्थेसमीतेमु' (मा १४)। ठिकेल कि [स्थापित] रका हुमा, संस्थान्त्र (यड १पि ११४४ स्व १,९)। ठिकेला की [दे] प्रतिमा मूर्ति प्रतिकरि

ठावजाका [वृ] प्रायमा मूल माणस्य (देश १)। इक्टिकेटो समिट पि १६६)।

उत्तर पत्ना पाना (१९ १९ १) गठि का क्लाब करना। उत्तर दिशे १९ गत्न ) । क्लाब उत्तरा (१९ १६ दी)। ग्रेक जाकरण अजग (१९ १६ पेचा १०)। हेक जाक्या जिस्सा पान १)। क्लाब्या अपन्य अस्य यक्ष्य (आसा १ १४) दुसा १ १३ पुर ६, १६०)।

पञ्च (क्यार १४) दुरा १ र दुर ६ १६)। ठाइ वि [स्वायिन ] प्रश्नेतका स्वर हैने शवा (क्षीत क्या)। ठाप्यक्त रेको ठा । ठाप्यक्त रेको ठाव। ठाप्यक्त रेको ठाव।

ठाण कुत [स्थान] १ स्थित क्लस्थल वर्षि शी निवृत्ति (सूच १ ३,१) बृह् १)। २ स्<del>यव</del>ी प्राप्ति (सम्ब १)। ३ निवाब, एटना (हुन १ ११/लिह १)। ४ कारल निनित्त हैं (कुस १ २ ठा२, ४)। ३ मार्च धावि मानन (राम)। ६ प्रकार, नेर (म १ आपूर्णा ७ पर, वदा (ठा१)। ≈ पुरुष पर्याच वर्ग (ठर ३ व धरव ४) । शास्त्रयम् आचार, अस्ति सकाम पर (स च ६) । १ पुर्तीय **मे**न संयन्त्रन्यः **'उन्ह**र्नि सुथ (ठर १)। ११ कालाव सून का सम्बद्ध परिच्चेत (ठा १ २ ३४४-४) । १२ कामीता<sup>र्</sup> (धीप)। अट्टान ["ब्राट] १ अपनी वर्गर से भ्यूत (खाना १ र)। रेपारित के परित (र्वंदू) । शह्य मि [ (विग ] कानोन्तर्न क्रमेनावा (भीप)। स्थि व [ "सर्व ] क्रींचा स्वान (बृह्व १) ।

ठाण न स्थाम] १ बुंकरा (कोक्स) देत ना एक नगर (बिरि ६६१)। २ टेरह निर्म का समारा स्थान (बिर्म र )। ठाणा न [स्थानक] शरीर की बेश-विशेष (पंचा १८ ११)। ठाणि वि स्थानिन् रे स्थानकासा स्थान-युक्तः (गूस १ २३ वन)। ठाणिज्य देखी ठा । ठाणिज्य वि दि र मीरविव सम्मानित (व ү ५)। २ न⊾मौरद (पड्)। ठाणुक्तक्रिय १ वि [स्वानोरस्टुक] १ जन-ठाणुककृष्टय हे इंड यासन्त्रामा (पण्ड २, १; भन्)। २ न, बासन-विशेष (इक)। ठाणुदेशो लाणु। लंडन [लिण्ड] र स्थाराकाभवददार किस्वाराकी तरह र्जना और स्विर रहा हुमा, स्वम्भित सरीर बासा (ए।वा १ १-पत्र ६६)। ठाम } (प्रप)। धवो ठाण (पिंगः छछ)। ठाय वे [स्याय] स्थल प्रामय (मुक्क % 1 (#5 हाब सक रियापय ] स्थापन करना, शहना। हाबद्द, ठावेद (पि ११६ कम्पा महा)। बह-ठावंद, ठाविंद (वच २ ३ बुगा ४८)। संह ठावहचा ठावेचा (क्स महा) इ. ठाएवक्स (सुपा ६४६)। हाबम न स्थापन] स्थापन, बाध्य (पेवा **१६)** 1

ठाषमया) देखो उद्देशा (इप १८६ धी<sub>।</sub> ठा ठावणा र १३ बाह २)। ठावय [स्यापक] स्वापन करनेवासा (गाया १ १६० मुपा २३४)। ठावर वि स्थावर विशेषामा स्थापी (प्रमु 1 (83 ठाषिअ वि स्थि। विवे स्थापित रबा हुए। (ठा ३ १३ था १२० महा)। ठाविकुषि [स्थापथितृ] उत्पर वेको (ठा 1 (t # ठिकाल म [हें] कम्बै कॅवा (रे ४ ६)। ठित्र की स्थिति है व्यवस्था क्रम मर्गाय नियम- 'चर्याद्वर्ष एसा' (ठा ४ १) उप ७२= टी) । २ स्थान **मचस्थान** (सम २) । ३ समस्यादसः (भी ४६)। ४ साम् उस काब-मर्याद्य (मन १४ १) शव ११: पएछ ४ भीप)। क्लाय प्रे क्षियो बाग्र का श्रम मध्या (विपा २ १)। पश्चिमा देखो सक्रिया (क्रम्य)। वैच पू [वाच ] कर्न-कथ की काल-मर्यादा (कम्म ४ =२)। बहिया की [ प्रतिता] पुत्र-वाम-सम्बन्धी क्रमन-विशेष (खाना १ १) । ठिकान विशेषुक्य-विक (१४६)। ठिकारिया की दि । ठिकरी वहा का टक्स (बा १४) ।

ठिय वि रिश्वती १ मवस्पित (ठा २ ४)। २ व्यवस्थित नियमित (सुम १ ६)। ३ बड़ा (यम १, ३३)। ४ निष्मुख बैठा हुमा (निकृश्याप्र क्या)। ठिर देशो थिर (घण्डु १३ मा १६१ म)। ठिविञ न दि दि अर्ज्ज अर्था। २ निकट समीप । १ हिनशा हिन्दशी (दे ४ ६)। ठिस्त्र सक वि+ भदी मोक्सा। संद ठिक्विक्य (सूपा १६)। ठीण वि [स्त्यान] १ नमा हुमा (बृत माहि) (हुमा)। २ व्यक्ति-कारक प्राथान करने-बाला १ व न नमाव । ४ थासस्य । ४ प्रति-व्यति (हे १ ७४ २ ३३)। कुँठ ईन [वे] इँछ। हॅंट स्थापु (वं १)। 🚁 सक [हा] कारप करना । दुस्कह (प्राष्ट्र 44) 1 ठर पूंची (स्थविर) इस, बुद्दा (ग्राब्द) म (प १६६) परव्यवाणी ग्रमी महमासी बोमाएं पई ठैरो । पुरुषपुरा साहीला मसई मा होड कि मस्त ? (या १६७)। की शी (या ११४ मा)। ठोड रू वि रे बोरिपी देवता। २ प्रवेदित

।) इस सिरिपाइअसङ्मह्ण्यवस्मि द्वयाराहरहर्षकाछी रपूराचीसहमो तरंमो समली ॥

콗

ड र् डि मूड स्वामीय व्यवस्त्र वर्ण-विशेष (प्रामा प्राप)। बभोपर न [ब्बोदर] पेर वा रोक्तिरोप । बन्तिय वेबी बक्क च्याट (वै दश) । बलीवर (निवृ १) । बंक पू दि ] १ वेब, बुविक (विक्यू) साहि का कांस (पण्ड ११) । २ वंश-स्वान, जहां पर | बंब देखो वृंब (हे १ १२७- प्राप्त) ।

शृरिक्क आदि वसा हो. "वह सम्बस्पीरका विश्वं निर्देशिषु बंब्र्स्मारिंगिति (मुपा ६ ६)। र्खगा भी 🕄 बांग, लाडी यति (मुत्रर २३०-Tec XXX) 1

बड़ न [रे] पक्ष के सीए हुए दुकड़े (दे Y W)1 बंदगा की दिण्डका दिल्ला के गाएक प्रतिक धरमय--वंपत (मुख) । बंडय र् [वे] रम्या महत्ता(**१** ४ =)। बंबाएय व दिण्डाएयी सीवण ना एक

(नुपा ११२) ।

बंदि ) की वि सिने हुए वक्र-कर्ण (वे ४ बबो (७) पॅस्ट्रॅं १ ३) । **बंबर ([ध्] धर्म भर**मी प्रस्तेष (दे ४ ८)। संबर प्रे सम्बद्धी धाइम्बद, माटीप (सप १४२ टीः निय) । बंभ रेको एँस (हु१ २१७)। ब्रिंभय न दिस्सनी दागने का राज-विधेष (विषा १ ६)। इसमान दिस्सनी वंचना उत्प्रदे (पथ २)। हंमणवा र बी [ब्रम्मना] र बावना । २ श्रीमाजा । मामा, क्यार देशम करवता (छप बुद्दश्य पहाहुर १)। इस्मिक्स पुंचि | जुमारी कूर का क्षेत्राकी (वे ¥ )1 र्देशिज जि [दारिशक] वस्त्रक भागानी क्मधे (डुमा) पड्) । हैंस धन [ इंडा ] हटना काटना । हैसह, इंसर् (पड् )। बंस पुं [ब्राह्म वर्णु-विरोप बीस मन्बर (भी १व)। दंस पूर्विशी १ शन्त-छतः २ सर्वे शादि का काटा हुमा बाद। १ दोव। ४ खेडन। १ वीठ ६ वर्गक्यकः। ७ सम्पन्नातः (प्राप्तः १६)। बंसण प्रेन [दंशन] वमें करण 'बंसखें' (शक् १३)। डक्स वि [ब्रुट] बसा हुया बाँव से बाटा हुया (क्रें २ मा ४६१)। बच्च वि हिं | क्ल-मुद्दीत वर्तत है क्याल (वे 8 8) 1 डच्च भीन [डच्च] बाय-विशेष (गुपा १६४) । डक्टुरिजंद था दि । वीकित होता ह्या (सूत्र 🗣 मा ६१६):

सगज न (६) यान-निरोप (धन)।

बर्धरनाः श्रदमगीति (स्व) ।

११९: ७**० मा**) (

C2 (g A ) 1

इरामग मक [वे] चलित होना जिलाना

श्राच न [दे] १ कन ना दुब्जा (शिबू १६)।

द्यगतः पुं [द] पर के कार पा मुलियप

र इंट. पापास: नरेयह का दुवज़ा (बीच

प्रसिद्ध जैयक क्एडकारएम (पराम ६०

े देखी बढ़ा। ब र मंत सम्माण 🕽 सद्ग वैसी सम्बन्ध मध्य (हे १ ५१)। सम्बद्धि विश्वा प्रश्वमित बला हुन्य (ह १ ९१७ वा १४६)। बङ्बाबी की दि] बब-मार्थ द्याग का चस्ता (वे४ छ)। क्षण्य न दि क्षेत्र भून्त माना शरकी मासूच-विरोप (दे ४ ७)। हरूम प्र[दर्भ] जाम, हुए चुछ-विरोप (हे १ ए१७)। श्रमहम चरु [समहमाय] 'हम-ध्य' धाराय करना उसक घारि का धाराज होना । बक्त कमकसत (मुपा ११६) । डमडमिय वि [डमडमायिए] जिएने 'कम क्म मानाज फिला हो बद् (बुधा १४१ 884) I कमर पुन किमरी १ राष्ट्रका ग्रीतरी या भाषा निप्तान माहरी वा ग्रीतरी क्यार (शासार १ वो २)पद भानीप)। १ <del>व</del>माह्यकार्द, निमह (पणह १२ देव: 49) I बमरुभ ) पूर्व विमरुखी बाद्ध-विरोध डमस्म 🔰 कापामिक मोगियों के बनाने का माचा डमक (दे२ ६ पतम ५७ २३ लूपा ९ ६ पड्)। कर यक [चम्] करना चन-बीत होना। **203 (€ ¥ 184)** 1 बर पु[ब्र] बर, भर, धीरि (हे १ २१७ क्या)। सरिभ वि प्रिस्त] सन-मीत उदा हुआ (क्रमाः सुरा ६६६: साहः) । बरू पूँ [बें] बोट, मिट्टी वा बेशा (दे ४७) । बक्क एक [पा] पीना। अस्तर (हे∀ १)। डा≒}≡ वि}ितिरका, बाला बाली वांस बहारा) वा बना हुमा फल-पूल रक्षने का पात्र (वे ४ ७ झावय) । बक्तार्थे [रे] बला, टाली (पूत्र २ ६) । कासर वि [पान्] पीनेगवा (कुमा) । इच तक [आ + रम्] मारुव करना सुक करना। बच्द ( पद् )।

डवडल स हि] जैना पुँड कर के देव है इवर-स्वर नमन (चैड ) : **बन्द** पूँ दि] नाम इस्त नामाँ इन्द्रः गुनरको र्वे आरथी (देश ६)। इस्त देशो इस्ति। इस्तर हिरू २१ व्यक्ति २२२) । क्षेष्ठ असिर्ड (सुर २ २४१) । द्यसम्पन विज्ञानी १ वंद्य, ४ त से कारण (हे १ ९१७) । २ वॉव (ब्रुमा) । कसञ्ज वि विहासी कारनेवाचा (सिरि ६२)। दस्तिभ वि [दृष्ट] बसाहमा कराह्या (बुपर ४४८) तुर ६, १५१) । **बह** एक [दह् ] बताना क्षत्र करता। ब्द्राध्याप् (हु१ २१≈। यज महास्त्र)। यणि अदिहिद (हे ४ २४६)। कस्क बार्मात बारमामाण (सम १३ ) प्रा ६३३) सुपा ८१) । हेक्- बहिडं (पडम ६१ १)। क बाग्रह (ठा३ २ स्त १)। कहत्वत्र [बृह्स] १ वक्ताला अस्य करण (क्हर) २ दुंधारित नक्षिश्मान (कुमा) । ३ वि जन्नानेनाचाः 'तस्य सुक्तुस्वस्थो प्रना बन्नाखी पंचावेड' (बार्य ८४)। बद्दर्पु[के] १ ठिट्ठ, मलक बच्च (दें ४ ापायावद का दस ६,१ सुम १८ १ २,३ २१ २२:२३): २ नि 📆 बीटा छूत्र (थोश १७**० २६** आ)। "स्याम पुँ िधासी क्षोता वांग (वय ७) । बहरक वृं [६] क्य-विरोध । १ वृप्त-विरोध 'बहरसञ्ज्ञासुरता बुबंदी तप्पनं पुरुदि' (वर्गवि ६७)। बद्धरिया की बिंगियल से स्टास्त वर्ष हरू भी सङ्खी (बग ४)। बहरी को [र] योशबद, मिट्टी का गरा वि Y W) 1 बामस्रव [व] तोषत साथ नेद (१४६)। बाइणी की बाफिसी र बामिनी बाना अप्रैस प्रेक्तिये । २ अंबर मंबर माननेपानी की (प्रशाह के द्वाहर सर्वाण मद्या)। काउ पूं[क] १ फॉलइंसन कुन यन पार्ति का येहा २ वलपित की एक उठा की

व्यतिमा (दे४ १२)।

र्वडि—शह

द्याग पून [दे] मानी पत्रत्यार तरकारी (भय n १ २ व्हार पद २)। डागन [दे] शप शासा (बाचा २१ ४२)। हागिणी देशे डाइणी (१ ३ ४) ! डामर वि [डामर] यर्वंडर, 'डगडमियडमध्या-होबडामधे' (मुपा १६१) । २ वूं स्वनाम-क्यात एक पैन मुनि (पठम २ २१)। श्रामरिय वि [श्रामरिक] नहाई करनेवाना विग्रह-नारक (परह १ २)। क्षाय न दि देवो द्वार (एव)। हायास म [र] इम्मं-तम प्राचार भूमि द्यन (प्राचा २ २ १)। हास जीत हि दे राज शाला टहनी (पुण | हिम पून [हिम्म] बासक बचा रिग्य १४ वेचा १११ है (४४१)। २ शाम काणक देश (बाबा२ ११)। स्वी स्म (महा पामा बका २६) सी (वे ४ शः पद्य १ : वर्णः निद्यू रो । काव पू दि] बाम इस्त कथा हाक प्रवराती में 'हाबी' (१४ ६)। हाह हैयो दाह (हे १ २१०) वा २२६ **१६५) इमा)** । बाहर दूं [दें] देश विशेष (निव) । हाहास र् [रे] देश-विशेष (नुषा १६६)। द्याहिण देवी बाहिण (मा ७७७- पिन)। क्रिज्ञ हो कि हि इंद्रण धीमा भूँगै (वे ४ 1 (3 हिंद्य वि [दं] बत में परित्र (पद्)। हिंदि पू [इण्डिन्] राजरमंत्राधी-निधिट धनिवाद-संतप्त (भा वृ वया पव-४७ म्होर ४)। हिटिम न [दिण्डिम] दुगरूपी दूग्गी बाध विदेश (पुर ६ १६१)। हिंटिस न हिंग्डिस रान का पात्र (धाका 2. 2 22 3) 1 निहिद्यान द्रे र धनिन्धवित वस श्वन-रिट्र में स्वात काहा । २ स्मरित हुन्तु (दे \* 1 ) i हिंदि भी वि निरेशा बल बाह (१४ v)। देप वृद्धिया पर्नेश्वेत्रर (निष् टीर व [ने] पञ्च नाम संपूर (१४१)। ट्रंगर र् [र] शत वर्षा प्रत्यती में हुंगर 11) ( दिसीर पून [दिवर्गार] बहुद का चेन, नक्द क्फ (उन क्रें≉ ही पुत्रः २१२)। टैप 🛊 वि] करिया का बना हमा बार 🖡

हिंड्याण म [डिप्ड्याण] नमर-विशेष (दुप्र ₹<del>u</del>) 1 डिफिज वि दि] वस-पतित पानी में गिरा ह्या (दे ४ १)। (हिंद पून [हिस्स] १ भय डर (से २,१**१)**। २ किन्न धन्तराय (शाया १ १---पत्र ६) धीप)। ३ विप्सव डमर (पै २)। हिंद पुंडिस्त्र] राषु-शियाकामय परचक का भय (सूख २ १ १३)। ब्रिंस ग्रञ्हिल्ली १ मीचे दिला। २ व्यस्त होता ना होता । विमा (हे ४ १६७ यह)। वह सिंभत (पूना ७ ४२)। (पाच हेर २ २ महा मुपा १६)ः 'यह दुनिक्रवाई वह कुन्धिवाईवड् विविवाई विमार्च (पिने १११) । हिभिया की [हिन्धिया थीर नहरी | (शाया १ १ €)। क्रिक्स करु [गर्ज\_] सोइका यरवना। { विद्यद्व (यद् )। डिद्वर पूर्[त] शेक मराक्षक मेडक थन(दे∀ │ 1 (3 हिरवर्ष [हिरय] १ बाह्य वा बना हुमा हाबी । २ पूरप-बिरोप को स्थाम, विद्वान, मुख्य, बूता बीर रेगने में प्रिय हा हैना पुरव (मात ७∌) । हिप्प सक [दाप] दोपना जमकता। डिप्यद्, डिप्पए ( यह् )। हिप्प धक [यि + गलु] १ यन जाना, सह भागा। २ निर पहुना। दिपादः दिपाए ( पर ) । दिमिस न [न] वाप-रिशेष (शिक ८७)। जिल्ला की [ब्र] जन जन्मु-विरोध (आप १)। हिय नक [टिप ] प्रांपन गरना। हिर (वव 1 ( \$ शीय वि वि धनतीलें (रे ४ १ )। टाप्पाचय न [द] स्तरि इतर (१४१)।

(tr ttitr we # 1) 1

विशेष को पानी निकासने के बाम में घाता 1 (15 Y F) # बुंबुअ पुं [दे] १ प्रयाना भाष्टा (६ ४-११)। २ वहा भएटा (मा १७२)। बुँड्याकी [दे] दाध-विशेष (विक्र ८७)। इस पर अिम् ] पूमना फिला चडर नगाना । दुइस६ (पर)। इर्थ पूँ वि दे होन चाएडान धरच (६ ४ ११ २,७१ ७-७६)। देवी बींच (पब ६)। डञ्जय न [व्] कपहे का छोटा मद्रा क्य खल दिवित पर्याप्तिम दुवर्ष घड्रम पदा न्तरान्त बुद्र' (मुपा १६६) । इस ब र िनल ् ] दोलना कांपना हिनना। द्वपद् (रिव) । बुक्ति पुं [दि] कन्यर न सुपा (सप पृ १६६)। बुद्दहुबुद्द पक [बुद्दहाय ] 'प्र-प्रर धाराज करना नदी के देग का खसलसाता। बरु बुहुबहुबह्तनन्ममिनं (पटम ६४ बक्रम ⊈ दि] मस्त्रण सन्मन शद्र कीट निरोप (पर्)। बब्दुर पू [द] बर्दुर, मेम मएइक महरू वय (वड)। हर वि [व] वेकदान भीकी द्वेंची साम्रवासः (धिय) ६ क्य सक [हिप्] ट्यांपन करना, नूद वाना धवित्रमण करनाः वर्षे ठपमाण (धर)। इयण न [इपन] टर्जन प्रतिक्रमण (धोष टाश (दि] बछ का दाना दान द्यार थारि परेमने का बाछ पात्र विदेश पुत्रराती व दोर्स (४४ ११ मा)। हाअग न [दे] नाचन, योग (रे ४ र) । द्योगर देवी हुनर (वापना २ हा)। हो गन्ध की [ह] र तामूत रतने हा भावन विशेष । ए ताम्ब्रुटिनी पान केवनेवाने की की तमी<sup>र</sup>तन (दे ४ १५)। दर्गि को [रे] १ हरासिक स्थापर । २ पान रचने का भारत रिटेप (रे ४ १३)।

क्षांव वं [ब्र] १ व्हेच्य क्रेप्निश्च २ एक

६) । ३ वेची संब (पाध) ।

हों बिख्या ) हुं हिं] १ क्लेक्ट केट विरोध । २

बोबिक्य । एक चनार्य जाति (परह १ १

इक) । १ डोम चल्हाम (ग २०६) ।

बोक्सी की दि दिया की (दूस १२३)।

हाह र् हि | बाहाल नित्र (मुख १ १)।

मोन्ध-वाति जीम (पर्वह १ १) इका पत्र

शादिनों की [क्] वाहाली (पन् १६ तून)। शादियों की [क्] वाहाली (पन् ४६)। शोड़ पूँ [क्] यह वाहुन्य-वाति वाहाला पिट्टो सक्कारितियों निप्पचर्तनों वीई शोड़ी तो तम्मुपर वानियं (उप १६६ ती)।

होर दृष्ट्रिकोर, ब्रुष्ट सन्ती (मा २१६ वज्रा ६६)। इस्ट यक विस्तर्य देशोलना दिलना बोड तुं दि । सोमन पाँच नमन हुन-एती में 'बोमो'। (वे ४ ६)। २ मनु-निरोप (बृहु १)। ३ एम-निरोप (पंचव २)। बोड युं दि | नद्वाधिय बीच की एक साधि

नक्र बेस्रोत (प्रश्यु ६ ) ।

होत हुँ [में] चतुरितिय बीच को एक बारि (जत ६६ रिक्स पुत्र ६६ रिक्ट)। होड़ा की [हाडा] दिखेना सुनना या सूचा (है १ रिक नाय)। हाड़ा की [के] जानी शिवका नावकी (है ४ रहे)। होडाजत वि होस्सपमान] संस्थ करो-

बाब्दा जा व दिख्यपंताना चेत्र व करान बाजा वैवाहेल (यन्त्र ७) । बाजाइज वि[बोज्यपित] पंत्रमित वैवाहोत्ता 'बहत्त होलाइचे हिच्चें (या १९९)।

ह

हरूम पू [हर्कुम] वाच-विशेष (धावा

ह र्रुं [ह] म्यप्रत वर्ण-विशेष । एइ पूर्वन्य । हेकुण प्रृं हि | मानुरा क्षाप्यस (६ ४ १४)।

2 888) 1

इस सिरिपाइअसङ्ग्रहण्यवस्य दशराहस्वंत्रस्थाः
 श्रीतामी हरेंगे सम्तो ।।

रै स्वीति रामा वास्ताय पूर्वी है होता है (प्रमान प्रार्थ) है है है है है है वि नार बासन सीमा (है प्र है है है है है नार बासन सीमा (है प्र है से दे! प्रमान तार प्रदेश गार विशेष नार स्टर्पी मानी या तरारायें (पर्वे दे)। सेंक है हिंदू है हमारिकारीय एक कैन बातक (तिसे दें। प्र)। देंद्र में किए। की सीमांस्त्री हिंद्दरहे। देंद्रण नि है हाहिन्न (दर्मा, रिस्क्र (अमूद: बान)। देंद्रण नेति हैंस्क्र (दर्मा)।

दंबनी के दि हाइनी दश्मी विश्वनिका

बरने हा। पाक्तिरेटर (दे ४ १४) ।

दक्ति रेपो दक्ति (निर्दे 248) ।

बीर केनो ब्रीड = (दे) (शि २१६ २२६)। दीरा पुत्र चिं क्या का से प्रीय वस्त्र 'बंबरोनोटि हु सहस्रोत पुत्रके स्व मान्दी स्थित (ता अदर, सन्त्रा दर) दीराज [स्व] केला। पु केवाय (यास्था-सन्द्र की सार्व्यी धास्त्रानक कर— भव्य दर)। दीराये की [स्व] कीला-निरोध वक्त समार की सीला (देश रेश)।

मीला (दे४ रे४)। वैद्य पूर्वि रेथंग शीच नर्देन कोछे (दे ४ रेर)। एटि निर्देश निरम्मा (दे४ रेराव्दि)। वंड दु [डाय्डण] एक देन स्मृति वस्स्य व्यप्ति (दुव २ ११)। वंड वि वि] स्मित्तक कस्प्री (तनस ११)।

**डो**ट्यविय वि [होक्कित] क्रीमत हिचाय

बासिक पूं दि] इप्सवार, वावा दिल (रे

कोछिर वि िशोसावन् ] शोबनवानाः, कार्य-

बाह्यवा वृं हि पानी में होनेशमा वर्षः

क्षांव वि] क्षेत्रों क्षोम (शॉफ वर प्र २१ )।

**बा**सिजी की दिं रशेलना, कन्द्रश्रम

को इस दं विदेव दि गमिती और ग

व्यक्तियाः मनोरव नात्रशा (हे १ २१७

थालाः 'चरडोलिएसीसं' (कुमा) ।

क्यिय (तूप २, ३)।

ची. बा (पमा २७)।

वस्ति (पर्)।

(भूमा) :

ह्या (पठम ३१ १२४)।

A 64) 1

वंदम दु (बण्डल) रात्तानस्वात प्रवर्धन दुति (विषे २० पी)। वंदमी की [व] वित्तम्बुः वेदान इत्त विदेश (वे ४ १९)। वंदर दु [वे] १ रिलाम। २ रिली (वे ४ १९)। वंदर साम दु [वे] कर्रम यंक रासा गाँगे (वे ४ १९)।

डेंडरू- सर्व [भ्रम्] बूमना फिरम भन्छ न ला। रेडस्स्ट (१ ४ १९१)। डेंडस्स्टिन नि [भ्राप्त] भन्न वृत्ता हुण (वृत्ता)।

दंडसिञ्जु[दें] १ दाम कामका। २ गंव का बुश (के ४१६)।

र्बंदुरस देवो संदरम्य । बंदुरलद (सए) ।

इंडोड सक [गवेपय्] क्षेत्रना शलेपण करना । इंडोलड़ (हे ४ १०१) । सीह

बंबोस्डिश (दूमा) ।

इंडोस्स रेबो दुंबुस्स । संद बडोस्सिनि (सए)।

इस पर [वि+वृत्] वसना वसकर। रहना चिर पड़ना। बंसद (हे ४ ११०)।

वक्त इंसमाण (दुमा)। इस्य न [ वे ] सवत, यननीवि (१४ १४)। सक्क एक [ सादय् ] १ दक्ता माच्यावन करता बन्द करता। इनकड (ह ४ २१)।

भवि दक्षितस्यं (या ११४) । कर्मं विकित-णबत कूनाई (सुर १२ १२)। सेक्र-'तत्त्र दक्षिका शार' दक्षिकताम संस्कृ क्रम (नुपा६४) मध्यापि २२१)। ह

हरकेयव्य (रस २)।

हरू पू [इस्क] १ देश-विशेष । २ वेश-बिरोप में प्रहोनाची एक बादि (सवि)। ह

क्तरकी एक जाति (उप प्र ११२)। इक्क्यन[दे] विवन (दे४ १४)।

इक्सि वि [दे] प्रसुद्ध, बारवर्ष-वनक (g ≥ ४२२)।

हरूकपरमुख देशो श्रीक्ष-तत्सुख (पन ४) । इसका की [इकड़ा ] वाच-विशेष बंका,

नपाड़ा बनक(या ४२६। कुमा। सुपा २४२)। ह्यकिका वि [ब्राहित] बन्द किया हमा

ब्राच्यव्यास्ति (स ४५६) हुमा) । इस्थान [दे] देन गरे गर्नेस (प्रसू २१२ मूत्र ६, १)।

**इ**स्स्ट्रम्मा की दि ] 'दव-दव' धावाश पानी बपैछ पीने की मात्राका 'सोशिय'

क्रमकामाए मेहमंती' (स २६७)। हुउनेत रेवो हरमांत (पि २१२ २१६)। हबह दूदि] मेधे बाप-विदेश (दे

¥ (1) 1 हर्दर पूर्वि चित्र (पुरुष २)।

खब्दर दूं [द्] १ वही मादाज सहाल्य्यति (भोगरेश्ह)। २ त. ग्रह-कम्बन काएक

द्धिक्छ नि दि देशना शिषिम (पि १४)। शोप भी स्वर से प्रशास करना (पुना २१)। ६ वि **बृद्ध पू**दाः **'बृह**र-सङ्गास मध्येस' (सार्व ६८) ।

इणिय कि [ब्बनित] सम्बद्ध व्यक्ति (गुर \$\$ EX) 1

इसर न [वे] १ पिठर, स्थानीया पानी (वे ४ १७) पाच )। २ गरम पानी उप्या वस

(RY (\*) 1

इस्यरप्र [व्] १ निशाच (दे४ १६ पाछ) । २ दियाँ हेप (दे भ १६) ।

ब्रस्त ब्रह्म वि] उपकर्तानीचे पहना

विरना। र भूकना। वक्त दसंद (पुना) • इत्तंतसेयचामश्नीसो' (इप ६८६ टी) ।

इक्षिय वि [ दें ] भुका हुमा (सर प्र ११०)। हाक धक दि] १ दासना नीचे यिराना।

२ ऋकाना चामर वयैष्ट्र का कीवना। सम्बद् (सूपा ४७)।

हरुहु छय वि दि । मृदु, की नव मुलायन (कवा 1 (883

इस्तिय वि वि निराहमा स्थवित (बना t ) i

काक्रिय नि [दे] नीचे निराया हुन्य 'खेलमो सम्बन्धो मुरो' (सूर १ २२०)। डाय प्रवि ने बायह, निर्मन्य (कुमा) ।

पक्दा)। किञ्ज } ⊈ [ ये ] सुत्र मन्तु-विशेष गी र्विकुग∫ मार्विको सबनेवासा कीट-विशेष (धनाधी १८)।

**हिंकसीमा की** [वं] पात्र-विशेष (सिरि ४२६) ।

बिंग रेवी क्रिक (राम)। बिंदय वि [ दे ] वस में पतिश (दे ४ १५)।

विक्कमक [शज्] सोदका परजना। दिस्का (१४ ११)। वह दिक्कमाण (पुमा)।

विषयम्यन विोि निध्य हमेशा सवा(के

Y (X) 1 क्रिकिकम न [गजन] संदर्भी भर्मना

(मदा) । विविद्रस म [विविद्रम] वैव-विवान-विशेष (**1**(1) 1

सिंक वृ किक्क विशेष (पण्ड १ १--

Y (X) I

(\$ Y \$4) I र्राणवास्म । पुन्नी [ मुणिमानम ] पश्चि

डिल्झी की डिल्जी भारतवर्ष की प्राचीन धौर ब्रच्छत राज-बानी दिन्सी रहर (पिंग)।

नाह पूँ ["नाथ] दिस्सी का राजा (कुमा)। बुर्बुद्ध सक [ भ्रम्] बूमना फिरना चलना।

ह्र हुम्बर (हें ४ १६१)। ह्र हुम्बन्ति (कुमा)। तुंद्र छ । स्थियम् ] दूरमा श्रोपना धन्तेपण करता । हु हुप्सइ (हू ४ १ वरे) ।

बुद्धम न गिरेप में बोज भनेपण (हमा)। इंदिश्विम वि शिवेषित् मन्त्रेषित ईहा हुमा (पह्य) ।

दुक्क एक [डीक्] १ मेंग करता प्रपंख क्रमा। २ उपस्पित करना । ३ धक सदना प्रकृति करना ६ ४ मिलना । नक्क दुक्कीत

(भिग)। क्यह तुक्कंत (बप १८६ हो। चिष्)। बुष्क चक शि + विशा | बुक्ता धूनना

प्रवेश करना । हुस्कद्र (प्राष्ट्र ७४) ।

बुक्क वि कि डोकिन] १ उपस्थित हाबिर (स २६१) । २ मिनिव (पिय) । ३ प्रवृद्धः र्गविति**वे पुरु**को' (भा २७) सर्खा सर्वि) । हुक इलुक कर [दे] चमडे से मदा हमा

बाच-बिकेप (सिरि ४२६)। बुक्किम कि [डीकिय] उसर देखों (पिय)। दुस ) सर्व भिन् ] भन्त करना प्रमन्।

हुँस र हमद हमद (है ४ १६१: हुमी)। हुरुहुछ देवो हुनुहु = प्रम । बद्ध- हुरुहुहुनु (यमा १२०)।

हें क पूर्व किहा ] एक बन पती परित-विशेष

(बज्या १४)। डें अ.ची[प] १ इर्प पुत्री । २ डॅब्रूस, क्ष्ममी कूप-नुमा (१४ १७)।

हेंकिय देखी विकिश्य (राज)। हेंकी की दि वसाका बरु-पंक्ति (र

बेंकुमई [ व ] मधुण बटमर(१४ १४)। हें कि अर्थि [व] धूपित भूग दिया हुया

दिनियालय र विशेष (पणह १ १)। औ लिया (यन् ४)। त्रद्धवि दि निर्धेत दरित्र (दे ४ १६)।

क्षोज वेयां कुषा = बीक । दोएन्स्ट (म्हा) ।

बोइय दि [बीकिन] १ मेंन किया हुया। १ उत्तरिय दिया हुया (महा) मुखा १९० स्तरे)। दीयर दि [के] प्रसल दील हुयकड़ कुमनेताला (१ ४ ११)। हायज देवो दोवण (पेरय १२:दूम ११८)।

होसजिया व्हे [होकिनका] चयहार, मॅट (वर्तीर करे)। ब्हेड दू [के] प्रियः पति (व्हिन ४०- हे ४ देर)। होझ दू [के] १ होल पटहा २ देर विरोद, निवामी पानवारी बीलपुर है (गिय)।

होषत्रय है वर्षेष्ठं करता (क्रूमी) । २ क्यहर, मेंट (गुपा २८ ) । होदिय वि [होकित] जरवापित क्यस्कित किता हुया (स १ स) ।

क्षोबत ) न डिकिन की १ वेंट करना,

श इत्र विरिधाइअसङ्ग्रह्ण्णवन्मि हवाराइसङ्ग्रंकनशो एक्क्वीसहयो वर्षको सम्त्रो ॥

## रा वया न

ण प्रीण नी स्वयंत्रत बर्शनिक्तेष इतका उपनारत-स्थान नुद्धा है इससे यह मुर्जन्य महावा है (प्रता प्रामा) । ण प [म] तिरेशार्वक सम्पद, नहीं अत (तुमानार प्रातृ १६६)। उल उला प्रमाद बजीस ["पुन] न शुन्हीं। ि (११ ६% वट )। दिविपरस्रेशकात्र वि [शान्तिपरस्थकपादिन] नीस और परनोक नहीं है ऐसा माननेशना (ठा )। मान[तन्]वह(हे३ ७ जूना)। ण ह [इत्स्] यह इम (हेश ७० छर 14 : ## tht tet) : वा रि [इ] बानरार, परिश्व विकास (इमा२ ६)। षभ देगो जद = नर (ना १ 和'~ चैत ४२)। दीम दृ शिषी बंगाल ना एक रिक्यण नगर, वा स्वाय-शास का केन्द्र निना बाता है जिसको धावकत 'बहिया' बर्ने हैं (नार-भव १२६)। णप्रेषर रेगो गलबर (चंद्र) । ण ६ औ [मिति] १ नवन, समनाः २ सर बान, बन्द (सब ४६) । भाष १ निवर नुषद्र सन्दर ग<sup>8</sup>र् लहें (हे २.१ ४ वर )। २ लिक्सिक खब्दकः 'नद मापानेप सिर्दा(नुद ३ ६ ६)।

भार केलो प्या (यजह है २, १७) वा १६७ पुर १३ ३४) । **व्यक्त व [नयि इ] तक्युक्त, चरित्राय-विशेष** नाचा (सम ४)। यक्क देखी जी = मो । मद्रमाध्यन विशेषानी में होनेपाना एन विरोध (बे ४ २६) । णद्वराय न [नीयरम्य] श्राला का बन्धव । बाद पूँ विदायी भारता के व्यस्तिस्त की बढ़ी जाननेवाचा दर्शन, बीद्ध तका भागीक बत (बर्मसं ११ १) । यई स्री [नदा] करी पर्वत सादि में शिरमा बढ़ सीत को लहुद सा बड़ी लगी में आफर निषे (दे १ २२१ गांघ) । अध्यात् िंडण्डी नरी के किमारे बरनी मानी १)। गाम पु भाम कि के विभारे पर न्थित यन (प्राप्त)। साह बू िनाथ] सपुर कामर (कर ७१० ही)। बद्द विश्वति बद्दर नामर (नवृत्र १ १)। शंनार पू ["संनार] नग्र क्वरना बदात मारि वे नदी पार जाना (राज) । सोस पुं[स्रावस्] नरी ना प्रशस् (बाटा दे १ ४)। शत (यर) रेली इच (नुमा) । जब्बन [नयुर] 'नपूरार' वा चीरानी

का करे पुराने पर को संस्थानक हो गई (ਗ २. ४० इक)। णडकंग न [समुता**ल**] 'प्रपुत' को बीरावी वे ब्रुखने पर को संस्वा बन्द हो प्य कि दे भ इक् । णाउद्द की [नवित] संक्या-विशेष नामें ध (चम ६४)। पाउद्य वि [नपत] १ वॉ (पड<sup>द</sup> १ 1 (18 गाउक र्षु [सङ्ख्या १ ग्योबा, नेतवा (पद्य १ १ को २२)। १ पांचरा पाएडर (साम 1 (15 3 णड**छ दूं** [लङ्क] बाद-विरोप (चन ४६)। णवस्त्रे स्ते [सकुद्धा] एक बहीववि (दी १)। णवर्श्य की [मकुत्रो] विद्यानियोग कांनीका भी प्रक्रिया रिया (राज)। र्णं स [के] इत सर्वीता तुषक सम्मय---१ प्रस्त । २ करना (प्राष्ट्र ७६) । र्णं सः १ काल्यानंशार में प्रपुतः शिया बला धम्पप (दे ४ २४३) छवा वडि) । २ त्ररक पुणक थान्यव ३ स्तीशार-योगः प्रध्यव (राम) । 🗐 (डी) देशों ज्यु (हे ४ २ १) । ण (धार) देनोर हुद (है भ अवन भरि नाएँ

पडि)।

र्धागम वि वि] यह रोका हुमा (पड्) । र्षागर पू [बे] संबर, बहाज को अस-स्वान में बामने के लिए पानी में जो रन्सी बादि वाली बाती है वह (इस ७२० टी मुर १६ १६६ सर २)। वंगर ) न [स्मङ्गस] इन विसंधे केंद्र जोता र्मगल है बीर बोमा बाता है (परम ७२ ७३ पराह १ र पाम)। र्णगास पून [दे] चानु, चीच चीच 'बागारणी रद्वी नहलंगनेमु पहरद, दयालखं दिवन-बक्छमने (पडम ४४ ४ )। र्णागम पूर्व [स्त्रह्मस] एक देव विमान (देवेण्ड 1 (883 धंगढि पुं [सङ्ग्रस्थिम्] बमन्द्र हसी (बुना)। वंगसिय र् [सङ्गास्तिक] इस क वानारनाने शक्र-रिरोप को बाएए करने माना मुमन (क्या बीप)। जीत्स न [स्राप्त्न] पुण्य, पूँछ (ठा ४ २ क्ष १ २१६) । जंगुडि नि [सार्गुसिन्] १ सम्बी गूँखवाला २ वृं बानर, बन्दर (हुमा)। संतक्षि हैयो जंगोलि (पर २६२) । क्यों ड रेजे पंस्त (जास १ १ वि १२७)। नंतापि १५ स्विष्ट्यस्थित की १ वन्तु लेगोलिय । धर-निर्धेष । २ व्हरा निग्रही मनुष्य (नि १२७ ठा४ २)। ¢देश न [द] दस्र दपका (कन साथ ३)। वाद् स्माम् [सन्दू] १ युव होता सातन्तित होना । र ममुद्र होना । एड्ड एडए (वह ) । করঃ পরিজনাথ (ধীর)। ছ গবি क्षाच्या व्यन्धास्य (बड) । र्श्न वृ [स द] १ स्वनाय-प्रसिद्ध वाटियपुत्र नवर वा एक राजा (सुका १६ छोति) । २ बरत-नेत के जारी प्रयम बागुबेर (सम ११४)। १ अरत-रोप में हान वाने नवर्षे सीर्वेश्रदा पूर्वेषशिय नाम (सम १५४)। ४ स्वताबन्त्रनिद्ध एक पैत्र कृति (बज्रम २ २)। १ हाताब-स्पेत एइ थेळी (तूरा ६१८) । ६ न. देर विमान रिरोप (नम २१)। मोद्देश एक प्रशास्त्र कृत कामन (गावा १ १—१४ ४१ छ। द ति समूद्र होने Y=

बासा (ग्रीत) । यन न विग्रन्त देव विमान-विशेष (सम २१)। कृष न िक्टन एक देव-विमान (सम २६)। वस्तय न ["ध्यादा] एक वेद-विमान (सम २९)। एपस न ["प्रस] देव विमान-विशेष (सम २६)। मई ली मिता एक मन्तरन् सामी (कत २४, सब)। (मेत पूं ["मित्र] भरतात्रेत्र में होने बासा द्वितीय बागुनेत्र (सम १६४) । "ज्ञेस न ( लंख] एक देव-विमान (यम २६) । बहु की [धनी] १ माउउँ बानुदेव की माता (पढम २ १८६)। २ र्शतकर पवत पर स्थित एक देव-नगरी (दीव)। दण्य न [ वर्ण] देव-विमान-विरोप (मम २६) । सिंग म "श्टाम ] एक देशियान (सम २६)। सिंह न [सुप्र] देव-विमान-विरोध (धम २१)। मिरी श्री [ भा] स्त्रनाम-कात एक वेहि-नन्या (ती ६७)। सेणिया का [ सेनिहा] एक पैन शाणी (चंत २१) । र्णद्र्व [स्नः ] भार विशेष बीष्ट्रप्त का पासक योपाप (बळा १२२)। णंद पूंची [नन्दा] पद्म की पहनी (प्रतिन्दा) पही और एकास्स्री तिथि (मृत्र १ ११)। र्णद न [व] १ अव्य कीनने या पेरने का नागन। २ नूग्रा पात्र विशेष (दे ४४१)। र्णद्ग 🛊 [मन्द्र 🕽 बाबुदेव का खडम (क्ल्ह् 2 x) 1 र्णर्ज 1 [तन्दन] १ पूत्र सङ्ग्रा (शा ६ २) । २ धम का एक समाध-स्थात भूमन (पदम ६७ १)। १ शताम-स्वास तक बनरेर (तम ६३)। ४ भरतक्षेत्र का शाही सारामां नामुरेन (सम १६४) । १ स्तनाम प्रमिक्त एक वॉष्टी (दा ११)। ६ वॉशिक समायापक पूर्व (निर १ २)। ७ वेड वर्तन पर नियत एक प्रशिद्ध बन (दा २ ३ ६६)। य एक चीरव (त्रव ११)। १ वृद्धि (साह १ ४) । १ नगर सिरोप (डा ७२० टी) । स्रीति [सर]कृष्टिनास्त्रः। कृष्ट न [क्रु] नगरन वन वा रितर (राज) । अह 🖠 "भन् एक वैत पूर्त (कन)। यम न [ बन ] १ रपनाम-स्यात एक बन को छेद

पूर्वेत पर स्थित है (सम १२)। २ उद्यान बिरोप (निर १ ६) । णंत्रण पृहि ] मूल्य नीकर, वास (वे ४ ₹E) L वांद्रज पून [सन्दन] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ न संतीप (संदि ४४)। णब्याको [नश्वना] सदकी पूको (पाम)। णंटणीटकी [सन्दती] पूत्री सद्दर्श (सिरि 2x ) 1 र्णद्रसमय प्र [नन्द्रभनष] धीदुष्ण (ब्राह र्णद्वामगर् [सन्द्रसानक] पर्धाकी एक पाति (परह १ १) । र्णस्यापचा } पून [नम्दापच] १ एक देव र्णशायक }िनमार्ने (देशक १६६)। २ पू चनुरिन्तिय जीव की एक वादि (उत्त ३६ (४८)। ६ न कयातार एक्कीम दिनों का त्रावाम (संबोध १८) । शदाकी [तन्दा] १ मगरान् ऋपमन्त सी एक पन्ती (पडन १ ११६) । २ राजा मेंसिक **वी एक परनी भीर समय**्रामार की माठा (शाया ११)। ६ भपवान् भी श्रीवसनाव की माला (सथ १३१) । ४ मपरान् महाबीर के धवनप्राप्त नामक गलबर नी माता (धानम)। १ राउल की एक पानी (पढ़म ४४ १)। ६ पश्चिम न्यक-पश्च पर छतेराची एक विष्ठुमाधे देवी (ठा a)। ७ दिशलेन्द्र की एक धवनहिपा की राजधानी (ठा ४ २)। स्वतान-वगाउ एक दूप्तरिएी (दा ४ १)। श्योतिय शास्त्र भ प्रसिद्ध तिथि विदेश---व्यक्तिका, पद्मी बीर एकादर्मे विषि (चंद १ )। र्वाद्य ध्ये दि तो मैवा (रे ४ १०)। र्णनावच र् [सन्दायच] १ एक प्रशास्त्रा हर्यालक (पूरा १२)। २ सूत्र वान्तु की एक जाति (शीव १)। ६ न, देर-विमान बिरोप (गम २१) । व्यक्ति वृद्धी [सन्दि] १ बाद्द प्रशार के बावी वाण्क ही नाव धाराव (परण ३ ४ राहि)। २ प्रबंधि हर्ष (स्तर २)। ३ वर्षितान सारि पांची ज्ञान (ग्रीह)। ४ वाधित वर्षे की प्राप्ति । ५ मंगर (बृद्ध १ सर्वि १०)। ६ समृद्धि (सन्)। **७ द**न

र्णादञ्ज-परम्मज्ज

वर्ष में प्रत्यक्ष अतुर्व जिल-देश (सम ११६)। २ एक वैन कवि (धिव ६८)। ३ एक राज पर्वत पर रहनेवासी एक रिक्ट्रमायै वेवी (ठा दा इक) । २ इच्छानामक स्त्रास्त्री गी सेणा भी विषा १ पुष्करिशी-विश्वेष

एक ध्यवनानी (शीव १)। १ पुप्तरिसी विशेष (छ ४ २) । ४ एजा मैरिक गी एक पत्नी (धंत ७)। लकार⊈ [यक्रार, नकार] 'त' ग'र्न बन्नर (बिसे २०१७)।

थक दु [नऊ] १ बनदन्दु-विदेश **गर्** नाका (पर्यष्ट् १ प्रुया) । २ सम्बद्धाना एक स्वनाम स्थात सूभा (पडम ३६ २४)। णकार् [क्] १ माक मातिका (दे४ ४६) विषा १ १ औष)। २ वि सूक राजा-बाचा-तरिद्ध से रहित ग्रैंस (दे४ ४६)।

(सरा की [ (सरा] नाइ का किर (शम)। भक्तंबर प्रेनिकक्कारी १ एक्स । २ वोर। व विकृत्सः। ४ वि छत्रि में कनवे किरवै-

बाला (हे १ १७७)। जरुकार् [सङ्ग] नवा तस्तून (३२,८६) য়য়ে)। জাৰি "হৌ লভাই জবন (আ १७१)। आइर् वूं [आकुप] विरु मुबारि (कुमा)। वस्त्रच पून [नस्य] श्वितः, मरिली

भएली सार्ति ज्योतिस्क विशेष (बाग्र वप्प इकाधुरव १): इसल दु['इसमे] राज्य वंश का एक सामा एक मंकिश (वडन ६.२६६)। शास दु["सास] व्योति<sup>द</sup> शास में प्रांतद समध-मान-तिरोध (वब १)। हुइ व [भूत्य] का वस (धन)। संयण्द्धर वृ ["संयरसर] व्योतिय-कार्यः

प्रधिक वर्ष-गिरोप (स ६)। जनगत्त वि [नगुप्र] र तक्तिमनार्थ है चनेत्व रार्थं करनेशाता (वर्मीत ३)। र र्जुन एक देव-रिमान (वेवेन्द्र १४३)। णवस्यक्त वि [सासन्तर] नधन-नम्बनी नान ना(नं७) । व्यरमध्यमिषु [१ मभन्ननमि] स्मित

भाषावण (व ४ २२)। णस्यसम्म न [द] नन सीर नगण्य निरान

सने का शक्ष गिरोच (ब्रह् १)।

न्दरा)ः यर व विरी<sup>ा</sup> क्रीरार-द्वी (छ ४ ३) । बराब् ई ["बधेद] नमुत्र-विदेश (जीर क)। र्णंदुचर पुं [सम्बात्तर] देर-विशेष, नाव-पुषार के भूगानन्त भावक इस के इब मैथ था सचिति देत (छ ११६६)। वहिं

१ १)। गाम दूँ ["प्राम] बाय-विशेष (स्व ६१७ बाहु १)। याम दे चिरेयी १ बारह जरार के बादी की बाबाब (एडि)। २ न देवविमान-विरोध ( सम (७)। जुण्यसन ["जुर्जेट] होत पर क्षपति कार्यक प्रकार का चूर्छ (नूस १ v २)। तूर त ["तूथ] एङ साव बकासा बाठा गायु तरह ना मार्च (दृद् रे) त ["पुर] चाविडस्य वेदान्य एक नवर (बर १ ११ थे) । फल पूँ फिल बिह्न विद्येष (लामा १ का ११) । साम्य न िमाजन] उत्तररण-विशेष (बृह १)। मित्त 🖠 ["सत्र] १ देवा गॅद-सित्त (स्व)। २ एक सम्बुमाद जिनने मणवान् मन्तिनाव के बाव बीरा सी बी (लाया ह स्रोग प्रियः प्राप्त विकास का **न्दंन, वाय-विधे**य (यय)ः सुद्द व{ैस्या **र्श**ानिरहेप (धन) । यर देशी कर (पत्रम ११६ ११७)। यात्रच र् ["झावर्च] १

श्रास्तिक-रिकेष (भीश पहत १ ४)।

२ एक सीवपात क्षेत्र (डा.४ १) । ३ शुद्र

जन्दु-विरोध (पगश्च १)। ४ व देर

रिनात-रिशेष ( धात्र )। शप पू ["श्रज्ज]

क्षणदश के नव-वागीत एक छन्ना (लावा

११६-ए४ २ ८)। सवर् [श्वरा]

नमुद्धि में दुर्ग (कार ६)। स्वया पू

["वृधा] बुक्क (परेन (परन्त १) । बहुइजा

रेगो पद्रजा (१र) । यद्म रू विधेनी

🕻 मगरम् नहारीर वा २३३ भावा (रण) ।

१ वर्त्त-रिक्टी (बपा) । १ तक सक्रमुमार ।

(रिपा १ ६)। ४ त. नवर-विदेश (जूत

t)। पद्मामी [वर्धना] १ ल्ड

धानम प्रेय-निरोप (एपि) १ ८ वाल्सा

समिताय चाइ (सम ७१)। १ शाल्यार

याम वी एक मूर्यंता (ठा ७)। १

देख्य

स्थनाम क्यात एक राजनुमार (दिया १ १)। ११ एक जैन मुनि जो दरने कानामी स्थ कुमार (ठा १)। ४ स्वनाम क्यात एक में डितीय बंददेव होगा (पडम २. ११.)। वैन मूनि (डप)। ५ देव-विशेष (राष)। १२ इप्र-विरोध (परंग २ ४२) । आवत्त देवो यायत्त (६३) । "उहद है दिखी (जीन ६) । २ एक विस्कूमारी वेशे (वीन) । एइ प्राचीन नदि ना नाम (इप्यू)। इद् संणिया की "पेजिका राजा मणिक दी गर दि [\*बर] मैदन-शरक (रूपा लाख ण्कपरमी (धंत)। स्सरपुं ["स्वर] १ देखो पौत्रासर (चन)। २ वास्त प्रकार के शत्यों का एक ही साथ यातान (बीब ३)।

अंदिस न [दे] सिंह की चिल्लाहरू ब्लाक (दे 1 (35 8 **पंदिअ वि [नाम्दत**] १ समृद्ध (ग्रीप) २ **बै**क्युनि-विरोप (बप्प) । यंदिक्ता दृदि] सिंह, मुकेब (दे ४ ११)। र्जीदेपास पु [नन्दिपोप] शय विशेष (ঘৰ **४%**) ৷

र्णेत्रिकान [नन्दाय] दैश पुनियो का एक दुवः (कृप्प) । र्विद्यां भी [मन्दिनी] दुनी नहरी (पस्प YE, २)। "पित्र पू "पित् ] जनवाल महाबीर का एक स्थलाय-क्यांच बृहस्य ख्या-सके (बन)। पर्विर्णासी [दे] यड, नेवा यात्र (दे ४ र्द क्ष्म ( प्रम )। जंबिस प् [मन्दिक] बायेगपु के शिन्य एक

बैनमूनि (एदि १)। विश्वसार ) दू [नन्दीश्वर] १ एक डीए । २ र्णशीमर ∫ ऐकें ममुद्र (मुँब १६)। ३ एक बेर विमान (रिवेन्द्र १४४) । र्णादी देखी र्णाद (महा धोच ६२१ मा वस्तु १ १ क्यीर सम १६२ लुदि)। र्णर्शकी [द] बड, ताय, वैया (दे४ १ः नाम)।

र्णशासर र् [सन्दीश्वर] स्वतान प्रस्ति एक हीर (लाया १

णक्ति व [निहान्] मुन्दर नक्ताना (ग्रह 1 (J णल देशो अक्त (मुप्र ६०)। ष्मादेवी गय = नवं (प्रहर ४ जा ३६६ श मुर १ १४)। राय पू ['राज] मेर वर्षेत (ठा १)। [भर] र् विरो मेह वर्गत (शाया १ १)। यस्ति पुं विरेम्य मद-पर्वत (पडम ३ ७१) । वागर म निक्रद, नगर] राष्ट्र, पूर (वह र कल मूर३२) गुचिय गोचियपु ["गुप्तिक] नगर रखक कोटपाल कोतवाल हरोता (शाबा १ १८ थीन परह १ २, हासा १२)। यात्र पूर्वियान] स्वहर में भूग्नार (णामा १ १८)। शिद्धमन न ["निश्रमन] नगर का पानी आने का सन्ता मोरी साम (ग्राया १ २)। रक्तिमा प् ['राह्यक] देखां शुक्तिय (निष् ४)। विश्व दे [विश्वस] राजपानी पानगर (अ १--पत्र ७४)। व्यारी केंद्रो मयरी (यव)। क्याणिका स्री [नगाणिका] धन्त-विकेत (पिद) **(** व्यक्तिंद पू [नगन्द्र] १ में उपनेत (पडम ६७ २७)। २ मेर पर्वत (मूम १ ६)। क्तिय वि निमी नेवा वक्ष-प्रीत (बाबा साय १९६)। णाग देखी जग (नंदू ४६) । णसारि निमी नेपा यस प्रीच (प्राप्त के ४ २०)। इ.इ. [ जिल् ] क्वार देश क्षा एव स्वनाम-स्याद प्रजा (भीर मदा) । व्यागठ वि दि निर्मेत बाहर निकला ह्या (4x-43 tet) 1 वाताह दे [स्यमाच] इत-विदेश वह का वेड् (ताय-मुर १ २ र.) । परिग्रंडम व

[ परिभण्डस ] संन्यान-निधेय शरीर का मानार-नियेत (स ६) । जपुत वृं [नपुर] स्रशाय-स्थात एक राजा (पक्रम २२ ११)। णियस वयो अद्य = सविचन् (वि ३६६)। एक (वर) वह पर्वन, अध्याम (तूर: (का v)।

२, ७१: ३ ७७) । ह्या मिर्च (ग १६१) ह अधियम्य (परम = प्रयो- क्ष्मक जन्मविक्रीत (स.२६) । व्यक्ष व द्वित्य विजनति परिन्ता (कृमः)। णश्च म [नुरव] नाव भूष (वे ४, ८)। णधा पि निर्मेष्ठी १ मामनेवाला । पून्ट भुषवया (वश्व ६)। णदाम प [नर्सन] माच मुध्य (कप्पू)। णवामा क्ये निवनी अवनेवानी का (हमा क्ष्यु, बुत्त १६६) । यता । पक्षण } देशा णा = हा । जबावित्र वि [नर्शित] नवावा हुया (योग २६४ छा ।)। ज्ञासस न (नात्यासस) प्रांत समीप में नहीं (स्राया ११)। जबिर वि [नर्श्तितृ] वचवैया नावनेवाला नर्तन-सीम (गा ४२ सुपा १४ हुपा) । णांकर वि दि] १मछ **-८**३न (३ ४ १८)। ध्यक्तुण्ड् नि [नास्युग्म] को बक्ति परम न हो (ठा ६ १)। ण अस सम [द्वा] जानना । छ स्माह (प्राप्त) । णक्त वि [स्पाय्य] स्वाय-धंगत (प्राष्ट्र १६)। णऋते यद्यमाय } देखो मा ≈ हा । पा≕नर विदि∏ मसिन मैचा(दे४ ११)। जामर वि [रू] विगव निर्मंत (रे४ १९)। ण∑धक निद्] १ नादना। २ सक दिना क्ला। सहस्र (हु ४ २३)। पट्ट र् [मट] नर्सरों की एक जारि 'एक्बंसि गाहा पमणीत बिन्दा (र्रमाः मश्चः बच्च) । व्यष्ट म [नाम्य] मृत्य मीत श्रीर मात्र न"-वर्ष (लाबा१ के सम ८३)। पान र्ष विवास नाटकस्थायी, शूचपार (बार्ष १)। माछप र् ["सान्छ] देव विरोध सएक्प्रशत तुम वा समिशायक देव (का १ ३)। ।अरिज 💃 ["पाय] नुत्रपार (RI Y) I ण टुन्स्प] भाच मृत्य (स १ वः वच्यू) । णय सर् [नृत्] नावना कृप करता । वाहुआ व [नारुवह] वेक्टी वाह∞ वाहव

णहुआ ) वि [नर्सक] नावतेशाना नवर्षया णहेंग∮(प्राप्ते खार्मार १ ग्रीर)। भी. इ (प्राप्त है २ व कुमा)। णद्वार पुं [नाञ्च धर ] नाञ्च ४रनेपामा (म्रण) । णहाब अ वि [नक्षक] नपानवामा (बप्पू) । णहिया को निर्त्तिका निर्णे नराही भाषने-नासी की (महा)। णन्दुमच र् [नर्सुमच] स्वतानस्याव एक विद्यापर (महा)। याष्ट्र र्जु [नाम] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २०)। २ न. प्रमायन (कुन्न २७)। जह दि [निय] १ मठ बयला नार∺बात (नुम १ ३ ६ शासू ६६)।२ पून मेहा-राज का सरारहभी मृहर्स (राज)। अहम कि "सितिको १ वो विवर-वहराहमा हो (छाया १ १—थव ६३)। २ शास के वाश्वविक बान ग्र एन्ट (चन्न)। णदूच वि[नष्टबन्] १ माध बात । २ म पहोत्तव का एक नुबुर्त (धन)। लड पर [तुप्] र म्याद्रत होताः २ सक विस्त रहता। एउड, एउटि (हे ४ १५ पूमा)। कर्म सहिनद् (मा ७७)। करहः परिद्रांत (नुपा ११०) । णक केवो पट्ट = नद्। एकद (बाह ६६)। णड देनी पछ = नड (हे २: १ २)। भड़ पूँ [सर] १ नई को की ए≨ बाठि नट (हे १ ११% प्राप्त)। स्ताइया भी श्चितिना दियानीन्द्रेय नर की तख कृतिम साधुरन (क्षा ४ ४)। णशस्त्र म [खन्नाट] भार कतान (है१ ४७+ ११७ पबर) । **पशस्त्रिमा औ स्थियानिया संशादनीया,** नपान में कन्दन वादि था विनेतन (कुमा)। णशक्तिम नि [गापिन] १ स्वार्त क्या हुया । लिल हिया हुया (मुना १२४) । ण दश वि[शुपित] स्यार्क (से १ ७३ ਚਰ)। ण क्रम वि 👣 ३ विज्ञ विज्ञाति (वे ४ १६) । रेनरित वित्र क्या ह्या (दे ४१६ पाच ग्राया १ ६)।

ज्यु स [नतु] इत प्रचौं का सूचक सम्बद्ध---

१ यनवारका निवास (प्राप्त १६१) शिक्ष १)।

२ मार्चका। ३ विचर्ता ४ प्रतन (छ्वा

पालपा पुँ [दे] १ कूप पुछा । २ दुर्जन,

भव्य न [नक] रामि, राद (चंद १)।

पर्यंत्रर देशो पर्यंत्र (कुमा पि १७ ) ।

पत्ति औ [इस्ति] ज्ञान (वर्नर्स २

६७ थै) ।

१ १३७ दुमा)।

णश्चल न निर्धनी नाच नूध्य (नाट---- नुद्ध

लचित्र दुं[नष्टक] १ गीत पूत्रकापूत

पोठा। २ थी दिव पुत्री का पुत्र नाली (है

मिरिमा) वर्षे [सप्त्री] रपूरकी पूत्री

णर्खा रेपीमी (पूजा) । १ पूकी की

णभु }ं[मप्पुक] देशो पश्चिल

ण<del>नुम ∫ (तिर २.१) हे १ १३७ तुरा</del>

यच्याच्याच्यापचिमा (इदा विपार ६)।

जलुइपी भी [नप्दक्तिनी] १ गीव की भी।

णलुनिज पंसिष्यु देवी अं कोळा। २

जर्मु<sup>६</sup> देखो जसी (दिना १ का करन्)।

ए दौद्रित की की (निया १ व)।

प्रयोग पररोता (सम क १)।

पुनी न्यतिन नशिनी (पान)।

११६ क्या १ को।

यत्त रेखो जन्म 'धरनिरेधिननियनियपुत्त-

सन । १ नदा नाई (१४ ४६)।

परिपृत्तनस्पृतीये (सुपा ६) ।

ভড় দ্বি ২২)।

मत का प्रक<del>र्तक वार्</del>षाकः। वास व **ैवाव**े नास्तिर-फर्तन (छप १३२ टी) । व्यरिव**वधाइ वि** [नास्तिकवादिन्] धारमा वादि के व्यक्तित्व को मही नाननेताला (वर्गवि४)। णक् सक [सक्] नाव करनाः धाराज करनाः। बड. प्यवृत्त (सम ४: नार---मु<del>ब्ब</del> १११)। णद् पूं [लद्] नाव सावाय राज्यः 'पश्चिका मना मरुग्डे निस्सर् **नगर्र नर्र** (सम ६ )। ण शी वेको पाई (दे ६ ६ १३) पत्छ ११)। **जहिम वि [वे] दुः कि**य (वे ४ २ )। पदिस ≅ [निष्ठ] कोण साका*न श*रू (चन) । णद्भ वि [शद्ध] १ परिहित शाच्छावित (पा १२ पटम ७ १२। सुपा ६११)। २ किय-नित वैवाष्ट्रमा (सुपा १११)।

णळ नि (सङ्को क्वचित वर्गित (वर्गीर ४)। णदावि [वि] भाषक (के ४ १व)। णद्<del>रविषयं</del> ग[वे] १ सक्या क्याया वित्त काश्रमस्य । २ निन्दा(देश ४०)। णपहुक्त वि [अध्युक्त] बनवीत बनक्कि वर्षेट्रस्टित (नडड) । णपदुर्णत वि [ अप्रभवत् ] यपर्वात होता (पढाः) । णपुंस । पुंत [नपुंसक] नांबक स्तीव नानर पंड (बीथ २१ व्या १६) ण⊊सर्य का १ तम ३७। नहां)। श्रीय प्रविद्यों कर्म-विशेष जिसके प्रथम से औ बीर पुरव शेनों के शर्म की बाज्या होती र्हे (**ठर र**) ।

(कम्म **४ १)** । जर्मस धक [नमस्यू] नवन करता नन स्कार करनाः स्त्रयंसद् (मन)। यह जर्मसभाष (यावा १ १: मद)। र्षं पर्मसिचा (ठा ३ १) घन)। हैउ-जर्मसिच्य (इचा)। 🕊 वर्मसणिङ फर्मसियक्ष (सीप: तपा ६६वा परव १६ 48) I जर्मसज न [मसस्यन] नमन, ननस्वर (मिचि ≅ सर्ग)। जर्मसंज्ञा ) 📽 [तमस्यता] प्रजन्द यमेखया 🤰 नगस्त्रार (मणः दुना ६)। पर्मसिय वि [नमस्यित] विस्को नमा क्रिक पना 🜓 वह (परह २ ४)। जनकार केवो जनोकार (यज्जा पि ६ ६)। जनज न निससी प्रशासि प्रशास समग्र (र १६ रसस ४६)। अमसिक्ष न [ब्रे] इपवाचित्रक मनौदी (<sup>६</sup> ४ २२)। णसि पुँ [निसि] १ स्वन्धम-क्संत एरोक्स नित-देव (सम ४६)। २ स्वताम-प्रतिक चक्पि (उत्त ११)। भवनान् श्रवनरेन का एक पीन (बख १४)। प्रसिक्ष कि [न र] प्रशुक्त विसने बमर किया हो वह 'पडिस्क्यच्याची दस्य धासी निधना (महा)। गामिक्र कि [सिंधि] नवाका हुमा (ग 55 ) I मानिश्र देखी शराः

२११ टीः पत्म १९ २१)। संइ. यमित्र

णमिञा की [निमिता] १ स्थनाम-क्यात एक की । २ जातामर्थकपानुत्रं का एक सम्ययन (ए।या २)।

णभिर वि [सम्र] नमन करनैवासा (कुमा मुपा२कः ग्रस्)।

प्रमुद्ध दे निमृत्यि । स्वनाम-वरात एक मन्त्री (मद्वा)। णमुद्य पृ [समुद्य] माबीविक मत का

एक उपायक (मन ७ १)। णमरु वृ [समेरु] बुध विरोग (पुर 💌 १६

स १३३)। ष्मो स [नमस्] नगस्कारः नगन (पनः

णसोद्धार पु [समस्कार] १ कनन व्राणाम (हर ६२ २ ४)। २ जैन-शाक्र में प्रसिद्ध एक सूत्र-सन्दिशेष (निष्ठे २८ ४)। सहिय न ["सहित] प्रायाक्यात-विशेष वत-विरोप (पडि)।

समीयार देवी गमोकार (चंड)।

ष्णस्म प्रैन [नर्मन्] १ ह′सी उत्हास । २ भीड़ा केमि हिर ६२:धा १४ है २, ६४ पाम) ।

व्यस्मया स्य [समदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (मुपा १ व )। २ स्वन्यम-करात एक राज-

यल्थी (न ६)।

वाय देवो पाइ = मद् 'विस्पर' नमई नर्व (धम ३)।

ज्य पुं [सरा] १ पहाइ पर्वेठ (कर दूरश्र गुना १४०) । २ बूल देइ (हे १ १७७) । देखी जग ।

षय ≅ [नच] नहीं (उप ७६० थै)।

णय सिन् देनसाहमा कुराहमा प्रशा मन (ए।वार १)। २ जिल्ली नमस्कार विया मेमा हा बहु शीरोयशिवकाकिमस्यानयञ्जलो नियानो रावा (गुना १६६)। १ मा बैनविमान विरोप (नव ३७)। सम्ब पू [सरव] भीग्या नारावस (घण्डु ७)।

णय पुंचित्र विश्व १ स्थाव नीति (निने १३६६) मृता १४वां स १ १)। २५ कि (३३७६)। ६ प्रशाद धीतः 'जनए। वि येशः' पत्रशा दुवन व रेक्ट राक्य (स ४१४)। ४ रहा

के बनेक बर्मों में किसी एक को मुक्त कप से रपीकार कर प्रत्य पर्यों की ज्येशा करनेवाला मत एकोश-धाहरु बोच (श्रम्म २१) विशे रक्ष ठा व व)। १ विधि (विसे व्वरूप)। चन् पु विनन् । स्थाप-स्थात एक वैन ग्रनकार (रंभा)। एस वि विविध् म्याय पाहनेवाला (था १४)। य, यत वि [ यत् ] नीतिनासा न्याथ-परावरा (सम मुपा ४४२)। विजय पू ["यश्रय] विक्रम की सतरहवीं शताची के एक वैन मुक्त को मुप्रनिक विज्ञान् भी क्योविजयजी के प्रकार वे (उपर २ २)। णयच्चाम [सयगक] एक प्राचीन वैतः। प्रमाण-प्रन्व (सम्मत्त ११ )। णयण न [संयत] १ ने जाना प्रत्येण (इस १३४)। र वातना ज्ञान । ३ निधय (पिसे ११४)। ४ वि से भानेपाना 'सम्या" मुपर्नमणार (नुपा १५७)। १ पून स स मैत्र सीमन (हे १ ३६ पाय)। उत्सन

[जिंख] घष घोषू (पाप)। णयय पुॅं[देनवत] उल का क्याह्मा भारतरण-विशेष (ग्राया १: १---पत्र १६)।

जयर केयो जगर (है १: १७४ मूर ६ २ मीप भव) ।

जयरंगमा की [नगरा**प्र**ना] बेरवा परिएका (पा २७)।

लवरी की [सगरी] रहर, पुरी (उस पडम 90 2 ) i

सर वृं[तर] र मनुष्य मनुष पुरुष (हे र २२६ सूच १ १ १)। २ सर्जुत सम्यम पाग्डेव (दुमा)। उसम वृ [ दूपम]

बैह ममुख्य धेनीप्रत नार्य ना तिर्वा ६ पुरव (धीर) । क्षेत्रप्याय र्थु ["झरत्यपान] **इ**व-विशेष (ठा २ ६) । व्यंता सी ["दास्ता] नरी-विरेप (दा ६ ३: सम २०) । दौना-कृष्ट न [कास्ताकृत] यश्च पत्रश

ना एक शिवर (ठा क)। दक्ता की [ देखा ] १ दुनि-पूरत भगान् की शामनरेनी (यन) र नियारेनी-विदेश (थि। १)। न्य पु विषे च्यानी रामा (धर १) नावग र् [नावक] समा नराति (बा १११ वें)। नाह वृ

िनाथ] एका भूपात (तुपा ६३ तुर १ **११)। पहुर्व विभागियमा नरेश (उन** ७२८ टी सुर २ cx)। पीरुसि पू ["पीरुपिन्] राज-विशेष (एर ७२c टी)। स्रोज पु विधे है] मनुष्य तीक (श्री २२) बुवा ४१३) । वह पू विकि निरेश राजा (बुद ११४)। बर पु विराहिता मरेश (सूर १ १३१: १४ १४) । २ उत्तम पुरुष (उन ७२< टी)। बरिंद व् विरोज्ती राजा भूमि-पठि (सूपा ४६ सूर २ १७६)। बरुसर र् [ वरचर] में ह चना (क्त १व)। धमम वसहपू विषयी १ देखो उत्तम (पर्यष्ट्र ४ सम ११६)। २ राजा नृपति (पटम ३ १४)। ३ दू हरिनेश का एक स्त्रनाम प्रसिद्ध राजा (पत्रम २२ १७)। बाह्य ( पान ) चना भूगम (नुपा २७१)। याहण दूं ["बाहुन] स्वनाय-स्थात एक प्रवा (ब्राक १ छए)। वेय पू ["वेद] पूर्व केद पुरुष की की के सर्थं की समिनाया (कम्प ४)। सिंघ ैसिंह, सीह ड्रु[मिंह] १ उत्तम पूरप बैष्ठ सनुष्य (सम १४३; पडम १ १६)। २ वर्षमाण में पुरयका भीर मर्चमान में सिंह का धाकारकासा भीड्रप्ल सारावल (णाषा १ १६) ह्येरर 🛊 ["सुन्दर] स्व नाम-राज एक राजा (यम्म)। हिंद वृ [रिचिप] स्वता मरेश (गा १६४ मुपा

परण्डम पु [नरकाणक] नरकस्यान-विशेष (देनेग्र १) ।

22) i

जरकंट पूर्व [नारक्षण्ड] एत की एक वावि (एम ५७)।

वार्तिह पु [मर्तिह] १ बत्रोर नाती

मोयस्मि बनदेशे नर्रोत्तरा जि पश्चिती (ग्राप १ ३) । २ एक सम्बुमार (हुन १ ५) ।

णरग रे पू [नरक] नारक बीवी का स्पान णस्य } (सिंग र र पटन १४ १६। मा वै प्राणु २१ कर)। दास, वाउप र्ष [ वास्त क] परमायामिक का नाक क बीरों को याचना (पीड़ा की है (परम ₹ ¥१३ × ₹₹۵) ı

जरुष ) पूर्व [नाराष] १ शोहमय शरा । जराम रिसंहरन-विशेष शरीरेकी रचना का एक प्रकार (दे १ ६७)। १ ध्रम्य-विशेष (पिंव)। णसमज पु [नासमण] बीक्रम्स विवस् णरिंद पुं [नरेन्द्र] १ राजा नरेख (सम ११६ प्राप्त १ ७ कल्य)। २ शास्त्रिक सर्पे 🎙 वियानी उत्तारनेवामा (सः २१६)। **इंत म ["बान्त] के-मिमल-विशेष (सम** २२) पहे हुँ [पद] राज-मार्ग बहुत्त्व (परम ७६ व)। बसह् पूं ["झूपस] बोह्र यवा (बस १)। गरिंदु चरवडिसग न [मरेन्द्राचरावर्तसङ] देव-विमाल-विकेष (सम २२)। जरीम र् [नरेश] राजा नरपित को घर हबनरीयो होही पुरियो न संस्ता (नुर १२, परीसर 🛊 [नरेश्वर] चना नलान (ग्रांज णरचम १ [नयेचम] धीइप्छ (सिरि **83)**1 **पदच**म पुँ[नरोचम] उत्तम पूरुप (पडम YE BE) ! गरेंद्र देशो गरिंद् (पि १४१: विम) । **जरेसर भो जरीसर (इ**न ७२० टी सूच XX; X48) 1 पद्म प [नड] दुए-विशेष क्रीवर से गोला रुपेशरकुण (हे २-२ २ छ। )। भक्ष म [नक्क] १ जनर देशो (पहरू १ जन रै रेरीय प्रामु १६)। २ ट्रं राजा राम चन्द्र वाएक गुक्ट (मे १) : ३ क्षमास ना एक स्वन्धम-स्याद पुत्र (श्रंत x) । कुष्मर कूमर पुं[कूमर] १ बुलेनपुर ना एक स्वयाम-स्वाध राजा (पडम १२ ७२)। २ विधमणाना एक पुत्र (ब्रावस)। "गिरि र् ["गिरि] क्एक्ज्वीत राजा का एक स्वताम क्याउ हानी (महा) । णस्य व [दे] पतौर, वस नातृक्ष (वे ४

११ पाम)।

णस्यष्ठ देवी जडास्ट (हे २ १२६ कुमा) ।

णसार्थवर वि [स्रह्मातम्यप] सनार की तपानेपासा (क्रुमा) । णसिअन [के] पृष्ट वर, सकान (के ४ २ पड )। णसिज न [मस्तिन] १ सन्प्रतार तैईंस दिनका क्यमास (सैबोम ४०)। २ क्र्न. एक देव विमान (विकास १६२)। णिखण न [निश्चिन] १ रक कमल (रायः चंद १ । याय) । २ सहादिश्वः वर्षका एक विजय प्रदेश-विशेष (ठा२ ३)। ६ 'न्यंनगांव' को चीराकी साख से पुराने पर जो र्थक्यासम्बद्धी वह (ठा२ ४। इक)।४ देश-विमान विद्येप (सम १३ ११)। ४ क्यक पर्वेट काएक खिलार (शीव) । कुछ पं िकृट ] बनस्कार-नर्वत-विशेष (ठा २ श)। गुम्म न [शुल्म] १ देव-विमान विशेष (सम १४) । २ तृप-विशेष (ठा ०)। ६ सम्बन्ध-क्रिये (पान ४) । ४ राजा मेशिकका एक पुत्र (राज)। विद्वासी [भिषी] विवेद वर्णनाएक विजय प्रदेश विशेष (ठा२ १)। णविर्णग न [नक्षिनाङ्क] चंक्या-विशेष पद्य को चौराठी साचा से बूखने पर को संस्था नन्य हो यह (ठा२ ४ इक)। अखिजि ) की [निकिनी] कमिनी परिनी पबिर्णा ∫ (पार्फे छार्सा ११) । गुम्स क्यो पक्षिय-गुस्स (निर १ ( विसे)। बण न ["धन] अचल-विशेष (शासा १)। पश्चित्राद्**रा पु [सस्तिनाद्**क] समुद्र-विशेष (बीप) । यक्कम न चिं**ु १ वृति निवर, बाहला क्रि**हा २ प्रमोजना ३ निमित्त कारणा ४ कि क्वींनित नीववस्ता (दे४ ४६) ण**व केवो** जस । शावद (धड**ा हे** ४ १६८) २१६) । णम् पि [नव] नया नूतन, नवीन (यडड प्रामुष्रर)। यद्भुया बहुकी [क्रपू] नवोड़ा दुवस्ति (हेका दर सुर ६ १२)। ण्य विव [सवस्] संकरा-विरोध नद्य ॥ (ठा ६) । इ.सी [ति] संप्या-पिरोप क्यो र (सम्रा)। सन ["क]नव नासमुद्यान (वे १) । कांगणिय वि [°योजनिक]

शव मोजन का परिमाणकाका (ar &)। णडव, नजद की "नवति संका-विरेद, निग्यानचे ६६ (श्वम ६६ १ )। बाद्य वि [मन्ति] १६ वी (पहन ११, ४१)। नवह देशो यडह (कम्ब २, १)। नषमिया की "नत्रमिका कि सार्था वर-विशेष (सम वद)। स वि [मि] नवर्ष (तवा) । सी औ ["सी] तिकिनिकेट थण का नवदाँ दिवस (बम ५६) । मांप्रस्त र्व ["मीपमा] धाठनाँ दिन बह्मी (वे ६)। जनकार देश्रो यमाकार (सर्द्धि १ कैम ६ णबस्थरमी की मिनरसरसहित] बला-क्यान-विशेष इत-विशेष (संबीध १७) । णबन्द (दर ) वि [नव] धनोबा कुल व्य (हे ४ ४२२)। भी सी (हे ४ ४२)। व्यवक्रीक पून [नवनीत] नक्टू मन्द्रन भनग (१९५ औप: प्रामा) 'कनुबङ्गोम वर्ग खीबो (पाम ११८ २६)। व्यवजीहवा क्षे [मदनीविका] क्ल्सार्ट-विदेव (पर्वा १) । जबपय न [सबपद] नवस्तार-मन्द (स्टिर RUE) I जबसाखिया की [सबमाखिका] दुव्य-प्रमाव बन्दराजि-विरोध, बसेवी नेवाध, बेबार (गण)र जबसिया औ [सबसिया दे इवद पर्यंट गर च्युनेशमी एक निम्हुमाधी वेशी (अ )! २ सर्वुस्य-तामक इन्द्र की एक धर-महिचे (ठा४१)। १ शक्केट की एक पटएकी (ठा व)। णपय <del>ये</del>नो जनना (येचा १७ १) ! भवय केवी श्रमय (श्रामा १ १७)। अथवार केवो जबस्मर (देशा १३ वि.वे. ६)। णवर सक्त [क्रम ] स्ट्रन्धा कर्ने छऽरि≇६ (সায়ত ৬৬) ৷ णपर ३ घर केमल धिर्ट कट (इ. २.१. श जनर द्विया पत्र क्या सूपा देशी पश ना ११)। २ धनन्तर, बाद में (है २, १०० माप्र)। भवरंग र्थु[स्वर्क्त, क] श्रृष्टन रेफ भवरंगय रेन्स कर्ण (नुर ३ ४२)। र

क्य-रिशेष (शिय)। ६ कीमुस्य रंग ग

वका (वचना वह २४१) तुर ६ १२ वाम) ।

जबरचि-णाइ क्यरित की [संत्रराति ] सब दिनों का मानिवन मास का एक पर्व (सिंहु ७८)। णवरि स वि] ग्रीय, बस्ती (प्राष्ट =१)। प्रथित ) देखो प्रवर (हे २ १८८ से १ णमरिल रे १६ प्रामाः सुर, २६। वह या १७२)। प्रस्रिक्षन दि]सङ्गा वस्यै तुरुत (दे ४ २२ पाम)। ध्ययस् देखी गावर (चैड) । णयक्षमा भी दि] वह इत जिसमें पति का शाम पूछने पर उसे नहीं बतानेवाली की पनारा की नदा से दाहित की भारी है (है ¥ 28)1 णव**द्ध रे**को णव = सद (हे २ १९४४ कुमा> स्य ४२८ थै) । णयमिञ्ज न [द] उपमाचितक मनीती (र प्र २२ पास वजाव६)। णया की [नवा] १ ननोड़ा दुनवितः। २ पूर्वित की (सूम १ ३ २)। ३ जिसको कीसा निए दीन वर्षे हुए ही ऐसी सामी (बद ४)। ४ म प्रश्तार्वक धम्मम, समवा नहीं ? (रवस ६७)। णविस १ वेपरीस-पूचक सम्यय 'शानि हा वर्ते' (हे २ १७८) भूमा) । २ निपेशबँक ध्यस्यय (मब्द्र) । एविंश देशो जिस्का = नत (ह ३ १४६ एक्टिअ वि निरूप ] दूवन नया (धाचा २ २ ६)। व्ययीज कि निर्दनी दूतन नया (सेखु ०३ बर्मीक १६२)। शतुत्तरमय वि [नवाचरशततम] व्ह वी नदवी (पडम १ १ २०)। प्रमुद्धय (भार) देशो पाय = नव (नुमा) । णबाडा की [नय'ढा] नव-विद्यादिका की दुसद्दिन (काप्र १६७)। णपोद्धरण न [दे] दिन्दाः, चुठा (दे४ 28)1 व्यव्य पू [दे] पार्ट्स बांद का पूर्विया (दे Y (#) 1 लक्द वि [सक्य] दूबा, नवा, नदीन (भा२७)।

ल्ब्य देशो ला≕ का। णक्यातन्त पूँ [क्] १ क्युट, मनाज्य मीमी । २ नियोगीका पूत्र सुवेदार का सहका (वे ¥ ₹₹)। णसंखक [नि+अस्] स्थापन करना। नमेज्य (विशे १४६)। कर्म, मस्सए (विशे १७)। संक्र निसंज्ञण (स ६ ८)। यस क्रक [नरा] मानना वसायन करना। लसद (पिम)। क्रमक न स्थिसने स्थाय स्थापन (बीव १)। जसा **धी [र्]** भग नानी 'धनुईरसनिण्यरणे हर हुक्करकीम चम्यक्सपढे' (पुपा १११)। णिमञ्ज वि निष्ट्री नारा-भाष्त्र (दूषा) । णस्य रेको नस=मय्। एसका एसकर् (यह दूपा)। यह नस्पंत, नस्समाण (मा १६ मुपा २१६)। णस्मर वि [सन्दर] विषयुक्त प्रयुक्त नारा । पानेवाचा व्यागुनस्पर्धाः स्वाई ( मुपा । २४३)। णस्मा 🛍 [नासा] नामिका धारोन्त्रप (तार-मृच्य १२)। जह देशो गक्स (सग६ कुना)। णद्भ [नभस्] १ शकासः गमन (प्राप्ट हे १ ६२)।२ वृं मालए गास (देशहर)। अर वि ["चर] १ शाकाश में विचरनेवाला (से १४' १व)। २ दू विद्याचय वाच्यरा-विद्यापे मनुष्य (पुर ६ १८६) । "केउमंश्रिय । न [ किनुमण्डित ] विद्यापरी का एक नयर (इक) । शमा की ["शमा] प्राकाश-वामिनी विद्या (मुर १३ १०६) । गामिओ की विश्वासिनी प्राप्तश वर्णनंत्री विद्या (बुर १ २०)। यर देखी धार (धा ११७ थे)। बह्यपूर्णय न विद्युत्तकी नव टवारने का शक्त (भाषा २ १ विस्मय न ["विस्क] १ नगर-विशेष। १ नुमट-विशेष (पडम ११, १०) । वाह्ण र् ["बाइन] मुस्किटेप (मुर ६ २६)। सिर न [शिरम्] नलका सम्माय (मग १ ४) । "सिद्दां और ["इल्या] नव का बच माग (क्या) । संध्य पूर् [कील] चना वपरेन का एक पुत्र (राज)। हरणी की [दिरणी] नव धतारने का शत्र (वृह १)।

पार्ट्सि वि [ नस्रपत् ] नववाना (दस ६ **(X)** शहसह युं दि] चुक उम्मू (दे४२)। जहर वृद्धिसरी नज मानून (मुपा ११ **₹ ()** I णहरण पूँ 💐 नबी नवमाना बन्तु, पापद (बग्बा १२)। गहरणी भी [नत्यहरणी] नहरती मक खतारने का राज (पंचव ३)। य**हराञ्च पुं [**नत्यरिम्**] नववादा चा**पर वंतु (स १६ दी)। णहरी की दि] दुरिका धुरी (दे ४ २ )। पाइथही की [द] विषुद्, विजनी (क ४ २२)। णहाद व [स्ताम्] स्ताप् रात्र तादी। जहि पूर् [नस्थिन्] नत्त-प्रवास बन्दु, स्वापद बन्दु (प्रणु) । गहि वि [निविष्] अपर देखो (प्रजु १४२)। पहि य [निद्धि] तिरेवार्यंक श्रम्थय गहीं (स्क्य ४१ विष छए)। जह **य** [नस्नलु] क्या देखो (शाट--पृ**श्**य **२६१ छामा १ ८)।** णा चरु [क्या] वानना समस्त्रा। स्वि याहिक (निमे १ १६)। एएडिमि (पि ११४)। कर्म गुन्तद गुन्तद (हे ४ २१२)। वनक- णव्यंत पञ्चनाम (से १३ ११ उप १ १ टी)। संक्रानार्ड जाउन जाउन पदा महार्ण(महा ति १व६ भीतः मूच १ २ १ वि १००)। इ पायक्त पंज (मन भी ६३ सूर४ ७ दशक्रि १६६ मध ३१)। णा थ [न] निरंब-नूबक घव्यय (यस्त्र) । णामन } रेको जापग (प्राक्त २६) । णासका णाधक (धा) बेबो णायग (पिंग)। णाइ पुं[हाति] दस्तादु बंश में बतान श्रामिय-निरोप । पुत्त पूँ ["पुत्र] मगकान् थी महाबीर (घाषा)। सुय र् ["स्त] भगशन् श्री महादौर (प्राचा) । णाइओ [द्यावि] १ माठ ममान जावि

११ चौप∵ दरा)। २ माना

रिवा बादि स्वयन तथा (सामा १ १)।

६ शान नीप (पाणा टा ह ६)।

(पटम १

₹ <i>c</i> 8	पाइअसइमइष्णवी	<b>খাহ্—</b> পাত্
व्याद (सग) देवी हव (कुमा) । व्याद (यग) शीने देवी (यिम) । व्याद (यग) शी [नागी] माम्म व्याद (यम) । व्याद (यम) । व्याद (यम) है [के] व्याप कार व्याद (यम) । व्याद कि [नागित] र व्याद क्षिण (यम) । व्याद कि [नागित] र व्याद क्षिण (यम) र माम्म वर्ग (यम) र र र र र र र र र र र र र र र र र र र	प्रमाणि देवी की एक प्रयान्तर वाणि (स्था क्ष्मा कि देवी की एक प्रयान्तर वाणि (स्था कि)। किएन (प्रका)। माद 1 मिद्री नाम केवा के प्रयोग कर मादि (कि)। किएन अप केवा कि प्रयोग कर स्थान कर प्रयोग कि प्रयोग केवा के प्रयोग कि प्रयोग क	प्यागणिया की पागणिया जिल्ला एक केन साल (उति २ २) । जागरि हैं निगारी १ नगर-पानगी। १ नगर का निगारी, नगरिक (उर ६ ६६ महा) । जागरिका जी निगारी १ नगर-पानगी। १ नगर का निगारी, नगरिक (उर ६ ६६ महा) । जागरिका जी निगारी । नगरिका निगारिका जी (जागरिका जी (जागरिका जी निगारिका निगारिका जी निगारिका निगारिका जी निगारिका जी निगारी । नगरिका निगारिका जी निगारी । नगरिका निगारिका जी निगारी । नगरिका निगारिका जी जागरिका जागरिका जी जागरिका
(विते १११)। हमार पू [कुमार]	भी पीशा-शिविका (विचार १२१)।	(तुपा १ )। "प्यक्षाय ॥ [प्रकार]

वैत प्रसारा-विशेष पांचवा पूर्व (सम २६) । [ सायार देलो । बार (पक्ति) । ब, चैस वि [ बस् ] द्वालीः विद्वाल् (पि ६४ साचाः यम् ४६)। य वि [ विन् ] कान-वेता (बाबा) । ।यार पूं [शबार] बान-विपयक शास्रोक विवि (राज) । वरण न [ीवरण] क्राम का <del>बाब्दादक कर्म (वस ८४)।</del> विर्याण न ["वरणीय] सन-उर एक धर्म (सम ६६ मीप)।

पाज्ञ । न [दे] सिक्∟ मुद्रा (मुच्छा १७ जात्रग ∫ सर्वे) । प्राणवन [नानास्य] मद विशेष **प्रना**र (झोब ६१८)।

व्याणका की [नानाका] क्लर देखों (विधे २१६१)।

णाणा च [नाना] स्तेक पुरा-पुरा (तकाः मग सुर १ ६६)। यिद्द्रवि विधा झनक प्रकार का विविध (जीव व सुर ४ २४% में १३)।

णाणि वि द्विश्लिम् । बानी बानकार, विद्वाप् (धावा उप)।

पाव्य देखी जाइय (रण)।

आर्भि वूं [तासि] १ स्वनाम स्वात एक कुनरर पुरुष भववान ऋपमदेव का निवा (सन १६)। २ केन कामन्त्र भागः। व बारी का एक घरमा (दस ७) । लेखू यु | ["सम्बन्धी स्वादान् ऋषमदेव (पडम ४ ६८)। **थाम सक** [नमय्] १ नमाना नीचा

करना । २ चरस्वित करना । ३ मर्नेश बरमा । सामेद (देश ४६) । वह- यामर्थत (विते २१६)। चंद्र- पामिचा (निष् १)। जास र् [साम] १ परिएशम भाष (सन २१ ५)। २ नमन (विमे २१७६)।

णास च [साम] संवादना-मूचक चव्यव (नूच १ १२ ६) ।

व्यास च [मास] रत सर्वोद्या सुबद बक्का-श्रीमादना (मे १,४)। २ धामन्त्रल संबीयन (बाह १ वं १)। १ प्रतिकि स्वाति (कृष्य)। ४ धनुवा धनुमति (विम) । इ.—६ भारता-संबार पार-पूर्व में भी इसरा प्रयोग होता है (हा४ १ चन)।

णास म नित्तसम् । नाम समया समियान (विपा १ १ विसे २५)। दस्मान िकर्मम् ] कर्म-विशेष विचित्र परिएान का कारण मूत्र कर्म (स.६७) । धिका, विद्य बेयन विवासिय प्रत्या (कप्प सम ७१ पत्रमे ४ ८)। पुर न [पुर] एक विचापर-नगर (१क) : मुद्दा की ["सुद्वा] नाम से संक्रित पुता (पत्रम ४, ६२)। सम्ब वि [ सस्य] नाम-मात्र मं समा नाम थारी (ठा १) । हिअ वेको चेय (पउम १७६ सपा ४३)। णामध्य न [समन] नमान⊳ नीचा करना (विसे १ ८)। काममतकस्त्र प्रं दि विषयप्रध पुनाह (वड")। आमागोच्य न [नामगोत्र] १ वदार्थ नाम । २ म.म क्षया गोत्र (गुक्र १६)। जामिय वि [मिमिस] नमाया हवा (सार्थ

णामिय न [मामिक] नाचक राध्य, पद (विसं 1 (# **जामुद्धसिल )** न [वे] कार्यकाल कार णामाव्यसिक्ष <sup>5</sup> (हे २, १७४० हे ४ २६)। प्याय नि वि] गनिष्ठः समिमानी (वे४ २६)।

णाय देशो भाग (कटा ७७०) कप्पू भीक यबक्ष बन्धा १४८ मुचा ६३६३ प्रक्रम २१ 48) I णाय 🕯 [नाक्] राज्य धानाय ध्वनि (बीप पत्रम २२ ६० स २१६)।

णाय र् [न्याय] १ प्रश्चतर—प्रकृति न्याय शास (गुळ १ १: वर्गीर १८) । २ शामनिक धारि पट्-धर्म (धर्ण ११)। जाय पूँ [नाव] चनुनारिक वर्श धर्षवस्त्राकार

धधर-विशेष (सिरि ११६)। ष्माय नि [स्पाय्य] स्वाय-पूक्तः (भूष १ १३

णाय पू [स्थाय] १ स्थाय, नीति (धौपा न ११९ घाषा)। २ सरपति प्रमाण (पंचा ४३ विशे) । कारि नि "कारिमा" न्याय-पत्ती (धाषु १) गर वि [°हर]

१ व्याय-वर्षा । पूँ व्यायाचीरा (भा १४) । ण्य दि [कि] न्याय का जानकार (धा 1 (31 #

व्याय प्रक्रिति र भगवान् महाबीर (सुम १ २२ वर्)। २ विश्वसिक्त (सूचर ६२१)। जाय वि ब्रिश्त रे जाता हुया विदिष्ठ (स्वः भूर २ ११)। २ ऋदि संबन्धी समा एक विरापरी का (कप्प: माउ ६) । ६ परा-विशेष में उपाल (पीप)। ४ पूँ वैश-विशेष (ठा ६) । १. समिम विशेष (सूम १ ६ कप्प)। ६ न. बदाहरस्य इप्रन्त (उदः बुपा १२८) । "कुमार वृं ["कुमार] **बा**ठ वंदीय सब-पुत्र (स्त्राया १ प)। कुस्र न ["कुळ] बंध-बिरेप (पएइ १ १) । "कुछ चौर पूं [ कुछचन्त्र] भगवान भी महाबीर (धाषा)। कुछर्नदय 🕻 [कुछनन्द्रन ] मयवाम् भी बहाबीर (पराह ११) । पुत्त पू िंपुत्र भगवान् यौ महानीर (द्याचा)। मुणि पूँ [मुनि] भगवान् मी महाबीर (पएइ २,१)। चिहि पूँकी विभि नाता या पिता के शारा संबन्ध संबन्धियन (बंध ६) । संड ॥ [पण्ड] उचाल-विरोप बहा भववाण् भीवहाबीर देव ने दीला सी दी (बाचार ६१)। सम प्रेसिती भवतान बीनहाकीर । सुव 🛭 [ सूद ] 'जातावर्गकवा' नामक चैन धायम-धन्य (खावा २ t) । । घम्मऋदा भी ["धमक्या] वैन मागम-धंब-विशेष (सम १) ) णायम र् [नायफ] हार के बीच की मणि मुमेद (स ६८६)। जायगर् [तायक] नेता मुनिया संद्रवा (वय ६४० ही कपा सम १३ मुता २२)। भावता वृहि अपूर मार्ग वे व्यासार करने-बाधि नाम नामता' (ठा ५६७ टी)।

पाय पूँ निष्क स्वर्ग देव-मोक (पाध)।

बासा बरिएक "पत्रकृत्वरात्त्रिण्यप्र मृहंक्य णावर रेखो जागर (म**श** मुता १८८) । णावरिय रेशी णागरिय (पुर १४ १३३)।

भी या(मिक्)। णायरी रेचा जामसः (बनि) । पायस्य देनां पा = हा ।

1 (30 3

प्यार पू [नार] चतुर्च नरक-द्वनिरी ना एक शन्तर (१४) । जारहभ दि [मार्सकित] १ नरक पूर्विनी में उत्पन्न शारको।२ पूँ नरकका कीव (है

पाइ**असहमह**ण्यानी

मृषि (सम १६४ कर ६४० टी) । २ तन्यर्वे णासंदर्द्धः वि [नासन्दीय] १ नासन्दा-सैन्य का श्रविपति देव विरोप (ठा ७)। संबंधी । व नासंद्र के समीप में प्रतिशादित पाछी और [जाडों] नाड़ी नव विस (रिज भारय वि शारकी १ वरक में उत्पन्न नरक-बच्यवन-विशेष प्याकृतांव सूत्र का शासवी 1 (9 3 र्धबन्धी नरक का 'जावए नाव्ये बुल्डें (नूपा धनययन (सूध २ ७)। १६२)। २ पुंतरक में उत्तब बाली तरह णासेदा ध्ये [नासन्दा] राजगृह नगर ना एक काशीव (सस)। कुह्मा (रूप' सूच २ ७)। पारिमाह वि [मारसिंह] नर्धस्य-सम्बन्धी पारस्थित न हिं] धार्मन्दव साम्बन्धनि

(धर १४८ दी)। (R Y RY) I भाराय र् [नाराय] हीलने नी धोटी हराब. गाँदाः नाराय निरस्पर लोहर्गत होतह व २४)। तुरक कि प्रशिमी । यु बार समे बखर्य दोलंदी नइन सन्बे सि 🏲 (वन्ता १६ (3#S) गाराय रेवो व्याज (हे १ ६७ वरा नम १४६ पनि १४)। तुरा व लाहुकी (पूर्ण बाना ४६ ६)। यज्ञ न विक्री संग्यन-(धानक १५)। मिरोग (पडन ६ १ ६) ।

नारायत्र १ [नारायम] १ रियम जीइयह (क्या त ६२६) । २ प्रमेन्द्रमाती राजा (परम १८ ११२ ७३ २ )। नारायम पू [मापयम] एक ऋषि (गुब 2 9 × 9)1 नारायमा प्री [नाधवती] देश विकेप नीचे इर्षा (गउर) । भारि देनो जारी (बच्च शत्र)। बहेना क्षी िंदान्ता नरी-रिरोप (सम ९७ ठा २

ī) ı शारिएर १९ [मारिपास] १ शारिया वा शारिएर १ वर । २ व. शारियर वा नरियर बारल (प्रति १२०; वि १२ )। रेनो णारिश्रर भारित क [सारिह्न] नारंगी का कर बीडा

भाषि भी मिली देशी चौरा बनान

**र्वा**न्स (रेसा २३ ३ ज्ञानु ६२ १४६) :

बेचु वसता मेचू (बच्च) ।

आर्लि पु [दे] दून्तन केश दसाय (रे ४ আভ্ৰম দ [নাভঙ] ত্ত-বিষ্টাৰ (দায় ६)। वास्त्र ) सी निवित्त नामी नम विचा (वे १ पासि । २० दुमा) । जाकि दी [मां**ड**] परिमाश-विशेष धनती वास्ति विदेशियस्य विराह्मपा (पर्)। याख्यि विशेष पूर्व, यज्ञान (के ४ 429) I व्याक्षित्रर देवो व्यारियर वि २ १ । परम १२)। दीय द्रं दिविष] हीप-निशेष (बम्म १ १६)। णानिभा) स्मे निस्तियो १ मन इस णान्या रेथमने की बंधे (श्म १ १ १)। २ परिवाल-रिशेप वंड चकुर (धल ११७)।

६ मर्थ नुर्शना सनव दो काणिया पुत्रती

(संदु ३२)। ४ नती 'बढ़ उतिर नासियाप

विश्वपित विश्वविद्यार्थ (वर्षेते १ व )।

रेंग्डू व [ गांछ] धन-विशेष (वे २ शे-

व्यक्तिमाओ [मानिसा] १ बझी रिकेन (१

%, ३) । ३ वर्षा यहे बराबारने का

एक बरह ना यात्र (नाम: तिमे १२०) । १

बाने शरीर ने नार बंग्य तस्त्री लडी

(बीच १६) । ४ यन-विदेश एक तदह का

पत्र १३१) ।

जाकीय वि (नाठीय) नात-दंदन्वी (प्रापा)। पाक्षेतः रेडो पासिमा (सूप १ ६,१०)। धावत (श्रप) वैस्रो त्रव (हे ४ ४४४) मीर)। पाचन न दि} शन, तित्तरहा (मध्हा जावा क्षी वि] प्रचित संगती, गरिमाङ विशेष (पव १ ६ दी)। जावा की [मी] नीता, बहार नार (क्य क्ता) । वाणिय र विश्वित्र क्रिय ते व्यापार करनेवाला पंत्रिक (श्रावा t. )। व्याचापूरम वृ [दे] इन्द्रक इन्द्र मिर् खारानुरएई भाषानद' (इह t)। णाविक ए [सापित] नार्र हम म (है है २६ : दुमा पर्)। साम्य 🛍 [शाय] नाप्ये पाध्या (मा १२)। जाविश र् [नाविक] बहान <del>प्राते।।ग</del>्रे शीश वा नार शंकरबाता, मलाळ केट मानी (लागा र ३। 📆 १३ ६१)। जाम देते वास । खाद्य (वर न्या) । मक्त व्यासीत (पुर १ १ रा १ १६)। ह जासियक्त्र (मुर ७ ११६)। जास यह [ नाराप् ] करा करवा। हात्रा (१४ ११) । छान्य (बण बर) । भास पू [नारा] नाठ प्रदेन (बानू १६९) नाम)। यर वि[नर]नार-नारर (दुर 1 (x29 .F9

ष्यास वं [स्यास] १ स्वातन (वा १६) प्रा

वन साहि (३३ ७६० 🗓 वर्ग २) ।

१२) । १ वरोहर वा समानत रणने कीय

पारंग—गास

२ ४८)।

णासन वि [नाराक] नारा कलेवाना (पुर

व्यासण न [नाञ्चन] १ प्रमादन चपक्रमण मागना (वर्म २)। २ वि नारा करनवासा (स ३२७ तल २२)। और या (से ३ २७)। णासग न [स्यासन] सापन रखना, व्यव स्वत्म (घणु) । णामणा की [नासना] विनाश (विसं १ ३६)। षामव स्र [साराय्] नारा करना। ग्रामग्रह (हे ४ ३१)। ण(मधिय वि [नारिति] नष्ट किया हुया, मवाया हुमा (तप ३३७ टी दुमा) । पामा स्री [नासा] नाक व्यरोनिवय (वा २२ म्रावाः हुपा) । णासि दि [नाशिम् ] दिनघर, नट्ट हीनेतला (क्रिमे १६८१)। जासिक देखो जासिक (संदि १९६) । ग्रामिक न निमिक्य विनिए मास्त ना एक स्वनाम प्रमिद्ध नगर, जो बाजरक भी लागिक नाम से प्रसिद्ध है, बाहा रापूर्णका शी नाक क्टी की पंचवटी (कर इ.२१६ १४१ टी)। प्यासिगा ह्यै [सामिस्र] तक छाड़ेन्द्रिय (महा)। णासिय वि [नाशिव] नटेवियाहुमा (महा)। लासियका देनो जाम = नस् । णासिर दि [मशिन् ] नष्ट होलेशना विनधर (**इ**मा) । णामी स्य वि [ न्यासी प्रत ] वर्धहर वा समानन कर सं रखा हुमा (या १४)। णासक क्यो णामिश्र (का १४१)। काइ र्षु [साध] स्वामी मानिक (हुमछ शामू । 1 (30 99 षाइड व [नाइट] एक समा वा नाम (ती 1 (25 पाहम ( सिद्ध] मेचा वी एवं वार्ति (हे१ ११६ दुना)। पाहि देनो पामि (दुवा वप्यू)। बहु पू िंस्ट्री बळा चर्चुय (यण्ड १६) । णादि (पा) घ [नदि] नरी नदी (१८४ ४११। बुका मित)।

णाहिष्णाम न दि विदान के बीच की रम्सी ( Y 7 Y ) I णाहिय वि निस्तिकी १ परतोक पादि को नहीं मारुनेवाला । २ पूँ नास्तिक मत का प्रवर्तकः। बाह्यः वादि वि वि विदिम् नास्तिक मत्तना अनुवायी (सुर ६ २ स १६४)। बाय वृं ["बार्] नास्तिम-पर्यंत (तम्म २)। ुर्द् कि] भवन गरी के णाढि त्रियद्दम वाहीए-विरुद्धन मीच का मान (दे ४" २४) । जिय [नि] इत प्रवी का मूचक सम्पय—१ निषय (उत्त १)। २ नियत्तरन नियम (ठा १) । ३ वाषिक्य व्यक्तिग्रय (उन्त १ विपा १ १)। ४ समोमान नीचे (शुपु)। ३ निध्यपन । ६ संद्यम । ७ मादर । य उपरम विद्यमः। १ वन्त्रमीत्र शमावेशः। १ समी पता निकटता। ११ क्षेप निम्दा। १२ बन्धन । १३ निपेच । १४ दान । १४ राशि क्यूह। १६ प्रक्ति, मोश (🛊 २ २१७-२१=)। १७ ममिनुशता संपूचता (नूम १ १)। १० घरपता, **बपु**ता (परह १ ४)। णि ध निर्ीशन सर्वेदा नुषक सम्बद् १ निषय (उत्त ६) । २ श्राविका ब्रिटिशय । (बत १)। १ प्रतियेग निपेप (सम १३७ मुपा १६०)। ४ महिमान । १ निर्मयन, निप्त्रमण (ठा ६ १ नुसा १६)। विञ सक [ द्वा ] देकता। लियदः (पर् है ४ १०१)। यह जिल्लन (रमा महा मुपा २६६) । संक्ष निपर्व (व्यक्ति) । णिञ्ज वि निञ्जी धारपीय- स्वरीय (या १६ पुना मुता ११) । णिञारि सिंती ने जायाच्या (न ६०६ गिम वि [नीय] ग्रैव प्रथय निहट (बस्व 1 1) 1 िज देशो यिष (मूच २<sup>ंद</sup> ४३) । णिमह की [निरुति] यावा नाट, छप कोसा(पस्हरूप)। णिश्रद्भी [नियति] १ नियत्तपन क्रीत-

च्यता होती जाग्य नियमितता (श्रम १ १

३)। २ धवर्ष-माविता (ठा ४४ चूम ११ २)। वस्त्रय वृ िपर्यंत प्रवंत-विरोप (बीव ३)। याद्र वि विषिम् विक्रुष मनित व्यवाके धनुसार ही हुमा करता । प्रपन्न वयेरह शरिक्षिकर हैं ऐसा मानलेसका, मान्यवाधी या देववादी (धान)। णिमंटिम वि [नियम्पित] १ नियमित । र न प्रत्याक्यान-विशेष हुए में या रोगी से बपुट दिन में बपुरु क्षप करत का किया ह्या नियम (पब ४)। णिअंटिय वि [नियम्बिन] १ वेंबा हुमा, जनहाडूमा। २ त मनरय-कर्तम्य निमम विशेष (ठा १ )। णिअंठ वि [निमन्य] १ मन पीतः। २ ५८ वैतनुनि स्थात यदि (मा ठा ६ **१** थ, व)। व जिल सगदान् (सुम १ ८)। णिमंठ र् [निमाध ] मनवान हुद (दुप्र YY3) 1 विक्रांठि देनों जिग्गंथी। प्रचर्न (प्रिप्न) १ एक विचायर-पुत्रः जिसका कृत्य नाम नत्यकि वा(ठा१)। २ एक वैतपुति जो स्यवान् सङ्कोर का शिष्य वा (सम ६ ८)। व्यिमं ठय वि निर्प्रिक्षिक्षी १ निर्देश्व-संप्राची। २ वित देव-चंबन्दी । भी या प्रमा प्राप्ता णिपंडिया' (नूम १ ६)। जिन्नेदी देशे निर्माणी (हा ६)। णिश्रंत वि नियदी स्पर (सप १ व जिर्देश रि [नियन् ] बाइर निरस्ता (नम्पत्त १११) । विश्रविष रि [नियम्प्रित] संयमित परहा ह्मा बबाह्या (महा क्ल)। णिशंबण व दि विश्व वाहा (दे ४ २×)। णिओं दर्प [निनम्प] १ पर्यंत्र वा लक्ष आप पर्वेड का कार्रिन-कान (मोप 😮 ) । २ औ की कमरका भाष्ट्रना भाग कमरक नीचे का भाग प्राइ (कृता ग्रह)। ३ तृत मान (में ∈ १ १)। ४ गटी-द्रदेश, कबर (वे ४)। क्रिप्रेयिको स्मानिकारियको १ गरन निन्मवाही ध्याः २ की वरिता (क्यु वाय गुरा ६३८) ।

रि ७४) । प्रयो- शिबंगानेइ (डि ७४) । णिर्मसण न दि निवयती यह करका दि ४ देव या देश । पाम गुजबा परुक्त १ व म्या १६१: हेवा ६१) । प्रजमिष की लियसमा विश्व क्या (पन ६२)।

मद्र (महा: । संक्र णिर्यसित्ता (जीव ६)

মিসভ গদ হিলা देवना। ভিষম (प्राप्त)। जिथ्रक्रफ विक्रिक्ति सेलारार पदार्थ (दे४ वेट पायो।

जिञ्जन्द्र सक [रुख] देवना । खिल्ल्बर (द्वे ४ १×१) । बद्ध लिअपर्छन विश्व च्छमाम (ना २६८ गडा गाँ५)। <del>বঁচ</del> থিসম্মিজন সিম্মমির্স (পুর १ १४७ दुमा)। इ. जिल्लामञ्जूषा (बढइ)। णिअन्छ डड [नि+यम्] १ निवसन

विजय नि निजक पासीय, स्वरीय (बना)।

**र**रता नियम्बस्य करता। २ व्यवस्य प्राप्त करताः १ वोहनाः। सङ्घालित्रणद्ववसा (तूम १.१ १ २)। मिमय्द्र धक [ नि + गम् ] १ सँवत होना मुक्त होता । १ तकः मदरव प्राप्त करता ।

निवर्धः (नूब ११११ १९, २ to t t 7 t ): সিম্পিন্নস বি [হয়] ইবা চুবা (বাম)। णिसट्चक [नि + इन्] ल्ह्बि दीना पीद हुन्ता स्त्रता । शिम्रदूर (गशः) । बहुर जिमह्माय (माचा)।

तिमद्द मण [तिर्+ पृत्] बनाना रचना निर्वाण करना (बीर)

जिमहसर्ति + अद्योगसम्बद्धाः करना (भीत) ।

बहुनामीर्ग् (बाधा) ।

(वर्षत वर्र)।

त्रिप्रहु र्ष [निवत्त] स्वापनैन निवृत्ति न्याणि विभट्ट रि [विदृष्त] स्वाइत शिवे हम हवा (वर्तर)। विश्र [ [नियमिय] न्यूत्र हानेसचा

इटना (बाच् १)। २ सम्बरसाय-विशेष (सम २६)। ३ मोक्नु-पीर्व धवस्था (सूध १ ११)। बायर न ["वादर] 🛚 इ.ख-स्वानक-विरोध (सम २६)। २ पू धुरा-स्वातक-विशेष में बर्समान बीब (मान ४)। जिमट्टिय रि [निवर्श्तिय] ब्यार्शतिव गैक्षे हुगया हुचा (धीर) । णिष्ठदिय वि [निर्वनित] एवित निर्मित बनाया ह्या (बीप)। णिअद्विप रि म्थितिरी पनुषत पनुषत (मीप)।

जिञ्च व [निक्र] १ विषय, समीप वक् कीक पास (बा४ २ पाधा सूपा ३१२)। २ विपक्ष रास्मीपका (पन्न)। विजिक्कि वि निकृतिम् । मायाची क्यथ (इस १ २३)। णिमदि की [निकृति] की हुई ठमाई की हकना---व्रिशना (शय ११४)।

णिअडि **को कि निकृति** नावा अपर (के ४२%) परहार स सम दह भग **रे-, ४३ मूच २ २३ शाचा १ ६**०३ माव १)। जिमहिन वि निगहित नियन्ति वरश इषा (वा ११६ वर्ग ११ तुरा ११)। णिजडिश वि निकटिकी समीप-वर्ती पार्थ में स्वित (क्या)।

णिअहिह वि [निकृतिमन्] वस्टी मावाची (हा ४ ४) भीर शा **8**) ( णिश्रह्य नद्र नि+कृपी धौषमा। धंद्र नियक्तित्राज्यं (सम्पत्त १२७)। णिअप वि [सप्त] नेवा वस-परित (पर ₹\*१) 1 गित्रक्त वि [निष्ट्क्त] बाध हुवा छिन (भग १ ११)।

णिश्रम दि [निर्व] शास्त्र ग्रामित्र, 'मुल अवनिवर्त (नर् ३३ वृष १ १ ₹ ₹₹}; निश्च देनो 'युप्रर = मि + दूर् । शिवतह

(बग दि२ १)। वह गिमसंग शिक्षस मात्र (ना ७६ १६३) ते ९, ६७ मार)। धरी शिवतारेदि (पि व E) s

(उस्) ।

नाथ (बदा) । २ निवृत्ति व्यानर्तन (पान४)। णिअस्तिज्य वि [ निवर्सनिक ] निवर्स परिमाराचाचा (तप ६ १)। णिशक्ति देखो जिअद्वि (स्त ३१)। णिअस्व हैर 🛊 है । परिवृत्त, पहना हुय (दे ४३ इ६३ बादमा भूवि) । २ परिवास्ति, विसकी बस याति प्यानाय भया हो पर 'खियल्या को बिखनाए' (बिमे २६ ७)। णिअइ धक [नि + शङ्] नहना वोसना। णिबददि (हो) (तार-वैद ४६)। मा-णिर्मश्त (गर)। जिमस्य देखो जिमस्य = न्वर्तित (चर)।

६२ या ६१८ सुपा ३१७)।

णिश्रक्तण व निवर्षनी १ वृषि नाएक

णिश्रस-विधव

जिस्द्राय न दि | परिवान पहतने गायत (पद्)। जिसम एक [ति + यमयू ] निर्यन्त करना नियम में रचना। श्रेष्ट जिल्लामे अन (R 144)1 णिश्रम <del>एक</del> [नि+यसय] १ रोक्ना। २ कथन हे कराना। ३ तरीर है कराना। नियमे (पाचा २, १३ १)।

णिश्रम पूँ [निक्स] १ निस्क्य (वी १४)। २ ली हुई प्रक्रिया इका 'परिवारित्यह खियमा खियमतपत्ती तमे भग्य (का भर दी) । १ प्राचीपवेदन शंकरा-पूर्वक वक्रान बराख के सिए इन्चम (से ६ २)। सी व [सात्] नियम से (धीर)। सो <sup>ब</sup> [शस्] निरचय है (भा १४)। स्पिअमण व [नियमम] विकवण संस्थ (विशे १२४)। जिज्ञमिय रि [नियमित] निवन में रण ह्या विवाधित (छे ४ ३७)। णिभय न [दे] रेस्त मैदून । रेशकीय

क्या। १ मन् बड़ा बत्तर (रे ४ ४४)। ४ जिल्लाचन नित्य (दे४ ४ । <del>पार्</del>म धय) । नुष १ विजय दि [निजरू] तिरहा <sup>हारी</sup> ५ यानीय घरना (राम)। जिज्ञव वि [नियन] नियम का नियमपुगाएँ

मूल कारण (धावा)। बाह्र वि शिक्ष्म् ]

निसने अपने शुमानुहान के फान का प्रक्रियाप

क्या हो वह (सम ११३)। कारि वि

िश्चरिन् ने बी धनन्तर उन्ह धर्ष (हा ६)।

णिआण न [निपान] कुप या तात्राव के पान

पशुमों के यस पीने के लिए बनाया हथा बस

न्तर बाहार होती बच्छी 'पहमाणं पहाई

पश्यम्म पण्सहं पश्चिमाएं (उर ७२८ थे)।

णिआणिया औ दि । क्या दलीं का

णिभया भी [नियता] चम्बू-बूल विशेष विसरे यह जन्द्र-हीए नहसारा है (इक्)। गिजर प्रे निकर रित, समूह, बत्वा हैर (गा १६६ पाय (गरह)। णिअरण न दि दिशा रिका (स ४२६)। णिमरिज कि दिं। एशि रूप ने स्थित (के ¥ 34)1

णि अस्य न दि ] प्रपूर पैंथनी या पात्रकेव की का पाशामरल-विरोध (रे ४ २०)। णिमस प्रतिलाही वेही सवस (से क

विपार ६)। देखी जिसस्य। णिमस्त्रद्व । दि [निगहित] साम्म ने णिअखाविञ ैनियन्तितः जरुदा हुमा (गा णिअस्तिम । ४१४ १ । पाप मतत्र से

X YE) 1 णिअद्ध प्रे वि नियक्ती प्रहाविशयः वेन विशेष (ठा २ ६)।

णिश्रह निजि स्तरीय शासीय (वहा)। णिअस देखी णिअंस । नियस (बुरा ६२)। णिअसण देवी जिल्लासण (हेका १६) काल

3 ()1 णिक्रस्य वि सिवसित् विधीत वाला ह्या (गुपा १६३) । णिश्रह केरो णिप्रह (नाट-मानती ११०)।

जिब्रा हो [निदा] शांख-दिसा (पिंड १ ३)। णिझा देशो णिश्रय = (दे) । यात्र नि [ यान्मि] नित्यशारी पशाने को नित्य माननगता (ठा ६)।

णिक्राइय देखा णिशाइम (सूच १ ६)। शिक्षारा र् [नियाग] १ नियत योग । २ निरियन पूजा। ६ मोश बुव्हि (बाबाः

मूच १ १ २)। ४ त. मायलाण देखर थी जिला थी जाय बहु (बल ६) ।

णिश्राम देगी णाय = ध्याय (बाबा) । रिजाम न [निदान] १ शाहक आरंग व्यागार (गुप १ १ १) । २ रीय-नारत

चीन की पहचान (तिर ४१६)। णिभाग न [निनान] १ बारण हैत न्महो मर्ग नियाएँ महंती विश्वमी (स १६ : नाम दामा १ (३) । २ लिह वत्रमुपत की फर-प्रांति का व्यक्तिया

क्रमुमन (रे४ ११)। णिज्ञाम केबा जिल्लाम व्यवस्था श्रेक ववसन्मा णिआसिन्हा बाबोन्द्राए परिन्तर् (नुष १३६) । णिज्ञाम केवा णिज्ञाम (पूच १ १ ८)। णिभामत ) वि [नियामक] नियम-कर्ता यिमामय | निक्ता (क्या ११६)। २ निरवायक विनिगमक (विधे ३४७ ( w) पिशामिञ्ज वि [नियमित] नियम वें रका हुमा नियम्बर (ल २६६)। णिमाय पुर्[नियाय] प्रशास्त वर्ग (बूच १३ १ २ २ )। षिशार सक [काणेशित हू] वानी नवर से वेदाना । लिमारह (१ ४ ६६) । णिआरिञ वि विगणिभवीषुन् । वसी नबर 🖺 देशा हुया याची नबर ने दया हुमा। २ नः भाषी नजर से निरीक्षण (पुमा) । णिमाइ र् [निदाय] १ बीव्य नाम बीव्य मानु । २ सप्ता धर्म गरमी (बढर) । णिश्रम वि निरियक्ती निरय का नीर्य विदेशियाँ (धावा २ १ १ ६)। जिहम ] वि वि नित्य, नीरियह ] शिथ जिद्द्य । शायतं समितपर (१ए३ २ ४--पत्र १४३३ सूध र∴रे ४′२ ४४ स्ट्रीट

माचा तम १६२)।

(\$ 2 231) ;

1 (25 3

जिइप रि[लिप्यूप] निर्मेष क्रीर (ब्राइ २६)।

णित्रश्र रि [नियुत्त] परिवेदित परीचित

निषम रि [नियुत] बुर्गन्त्र मुस्टिट (रावा

णिउंचित्र वि [निकृद्भित् विष्टुचित चहुवा हमा थोड़ा पुहाहमा (या १६३ से ६) १६३ पाम' स १११) । णिईज एक [नि + मुज्ञ] जोड़ना चंद्रक करना किसी कार्य में समाना। कर्म लिडे भीषिः (पि १४६)। बद्धः जिउन्निमाण (मूप ११)। श्रेष्ट निर्मेखकण निर्मेनिय (स १ ४ महा)। इ. गिरंदियक्त्र. गित्रचय्य (दर दूर हुमा) । णिर्वस पु [स्तप्ट अर्] १ महत, सता सादि में निविष्टपान (कुमा मा २१७) । २

नद्वर (वे ६: १२३) । णि म पू [निष्टम्म] दुन्मक्यु का एक

प्रविदेश (२)। णिर्डभिन्ता भी [निष्टुनिमता] यत्र-स्थान (B 2x 34) 1

णिउच्छ वि चि तुम्लीक मीन छत्राता (दे४ २७ पाप्र)। णिवक्त पूर्वि १ वायस वाक कीया। २ दि पूर बार-छक्ति मे द्वीन (दे४ ११)। णिडळ न [न्युष्त ] मासन-निरोद (गुरि १२८ हो) ।

णिशक्तम वि [निरुयम] बयम-पहिन मानसी (सुम २ २)।

णिउ**हृयक[**सस्त्र् नि + ब्रु**ड्**] मात्रत करना दूबना । श्यिक्ट्स (हे १ १ १) । **या जिउद्वसान (दुना)** ।

णिडङ्क रि [सग्न निमृद्धित] द्वरा हवा नियान (गेर १३ रूप छ४)।

नित्रवरि [नियुक्त] १ दर बहुद, हुत्तर (गाया स्वयं १६ प्रान् ११) मी ६) । २ मुद्दम यो मुद्दम पृद्धि न याना जा सदे (श्री २० चय) । ३ मिन शतका से चनुसा<sup>क</sup> हैं। पुरुषता है (शीप है) ।

गिरम रि [नियुम] १ नियंत पुणसना । २ निरिचन पुरा से बूक (राज) । ३ नुनिरिचन रिनिर्णीत (वंशा ४) । णिडाँनिय वि [मैपुनिक] निपूर्ण दश बपुर

(स ६) । मित्रण रि [नियुक्त] १ व्यक्तीस कार्य व

नगाया ह्या (र्वचा च) । २ तिषद्ध (शिक्ष ₹<π) |

विरद्ध (प्राक्त ८)।

विहस-धिम्बद्धाः

२ विकार, इ.स.-उत्पालन (माना)। जिंदिय वि जिन्दरिती धारीका वर्षेत र्सकोषित (भौप) । णिकस 🐿 णिइस (पए २१२)। णिश्चडय वि निमाचित् । र म्क्समासि

निव्यक्ति (र्वाद) । ए सस्यन्त निविष् स्म से हचा (कर्मे) (स्वा स्ता १७६)। म. कर्मी का निविद्य कर से बन्वर्व (का ४ ३)। णि द्याम एक [नि+क्यमंगु] प्रक्रित करना । किनामरका (सम १ १ ११)। क्क. णिशमयंत (सुम ११ ११)। णिकास न [निकास] **इमेरा** परिमाण है ক্ৰান্ত কৰে। বাতা থাকা (নিত ६४%)। जिम्रम न [निद्यम] १ निवर किर्णेर। २ बलान्त सर्विग्रद (तुम १ १) । णिकासमीय वि निकासमीजी धावन

(**দাৰা**) ৷

(धम २१)।

बार्ची (सम १ १ क)।

णि श्रय स्कृति + श्राचय**ी** श्रीमन

करना निकन्त्रण अपनाः २ विक्रीस करते

बॉबनाः ३ तिमल्थ्यः देनाः । क्रिनाइति

(थव) । भूका श्विकाईसु (घरा तुम २ १) ।

मनि शिकाइस्सेति (भग)। चंड-जिराव

णिश्चय दूं [निकाय] १ समूह बर्गा दुर्थ

वर्ष पछि (ब्रोव ४ ७ विसे ६ ३६

२व) । १ मोला मुख्ति (मार्गा) । १

बावरस्य धनस्य करने बोग्य सनुहान-निष्टर

(धरा)। स्त्रभार् किया विस्पर्धि

क्यों प्रचार के बीवों का बग्रह (दन ४)।

वप्रा कम्माण्यि विकासार्व (विदि १ १६९)।

जित्रम नि निन्दकी निन्दा करनेवाला (प्रज्ञ

णिकाय पुं[सिंहाच] निमन्त्रण मौता णि राय देवो जिस्साय केल वनस्पीरणी

আংগ্ৰেল ব [নিফাৰন] সংক্ৰেল (বিচ Y K) 1

णिक्रयणा धर्मे [निकाचना] १ शास्त्र-विशेष विश्वये वर्गी का निवित्र कल होती 🕽 (शिवे २४१४ टी) मन)। २ निविष्ट क्लान । ६ बाउन दिसाना (चन)।

1 () जिडक्त वे देशे जित्रं स = ति + पून । जिहिता की [निवृत्ति] विराम (प्राकृत)। पित्रदान सियदा नहा-प्रव. अस्तौ (तप २६२)।

पिरुत्त नि [निकृत्त] निरत ४५रत निमुख

णिडच वि निर्वेची नियन दिवा (स्तर

जित्र पं निक्त वृत्त-विकेष (कामा १ १ - पन १६)। णिउर न [नुपुर] 🗱 के पाव का एक भ्रामध्य पैंबनी पासन (दे ११२६ जूमा)।

णितर विदि १ किस काटाइम्स । २ भीर्ण पुरत्ता (पह)। जिड्द न [निक्दस्य] स्पृष्ट, करना (पान्छ सुर १ ६१ मा ४११। सुगा ४२४)।

४१७ ना ४११ साचि १७७)। णिउस पंदि वित्र पठिए एवं वह स्रीता-ऊउं चमप्पम्मो **दवित्रान्त्रनोत्ति** (भड्डा) । দিকত বি 'নিয়ত্ত' হয় সকল জিয়া हमा (धन्द्र ४३)।

णिडर्न म [निक्करम्ब] समूहः बल्धा (स

जिम्झ वि [ नियत ] नियम-पुक, अखिए सवाये (तूस १ ६,६) । गिप् व देशो जिल्ल = तिन (दालन)। णिओं अर्जिति + धोडाय े किसी कार्य में बयना । शिप्रीपदि (शी) (नाट---विक

X) 1 जिक्रोभ केवी मिल्लोग (हे २१ द्रापि २७ व्या ते ६४६)। ६ शाजा सम्बद्ध (छ २१४)। णिओन्स नि [नियोजित] नियक्त किया हुमा विशे वार्य में कवाया हुया (ब ४४२ मनि ११)ः

णिओन्अ वि नियोगिष्ट**े** विशेष-सम्बद्धी (बाह र)। णिश्राय 🛊 नियाय | मोज पुष्टि (नृय १ १ १६ को।

विभाग पुनियागी १ विश्व सामक वर्तेम्य (तिग १०७६ वंबर ४) । २ सम्बन्ध नियोजन (इ.स. १) । ३ धनुयोग नून नी

१ **धवि**कार-प्रेटल (सक्तो : ६ धना नप भाजाविकाता (कीत)। ७ वॉक प्रामा ६ क्रेम मृभि (बृह्व १)। १ सैयम व्याद (सुध १ १६)। देवी णिओश । पुरत पुरी १ स्वयानो । २ देश सका ३ सम्ब

(बीत) 1 विश्रोत कि [नियोगिन्] नियोग-निरिद्ध निमुक्त, साञ्चाप्राप्त समिकारी (सूपा ३७१) । णिओक्रिय देखों णिकोड्रथ (शहर)। ।णतः } णितृपः } 📦 णी=धम् । चित्र सक [निन्द] निन्दा करना **बूधर्य** करना बुदुन्धा करना । ग्रिवामि (पडि)। वह. जिउँत (भा ११)। इनक जितिकात (स्वा १६१)। **चंद- जिंदिका** यिंदस (याचा २ ३ १ शमाध )। कि पिंदिर्ट मिंदिचप (महाटका२१)। इट विंदियञ्च लिंद

जिम्म (प्रदार १ <del>ट</del>र १ ६१ दी शादा र्षित् वि निन्दा निन्दानीय निन्दनीय (मन्दर)। चित्र (घर) की निका नीए, निका (घरि) । खिंदण न निन्दनी दिन्दा इक्का पुरुषा (स ४४६ ७२ ही)। जिंदणमा रेखो णिवणा (इस २१ १)। णित्रणा **श्री [निश्त्**ना] ति**न्दा पूरु**चा (बीप धोम ७६१: पळा२ १)।

£ 21)1 णिश भी [निन्दा] प्रणा बुद्धसा (घार ४)। श्रिविक वि [निन्त्व] विसरी निन्ता की गर्दे हो यह, बुरा (ना २६७- प्राप्तु १४)। पिंदिणी भी [व] नुस्तित शुलों का उन्प्रतन ( X 4x) 1 सिंदु की [निग्दु] मृत-बंतवा थी विवक्त वर्ण्य भीपित न रहते ही वैसी की (धंत का

था १६)। जिंद मूं [निम्थ] गीम शा वेड़ (हे १ २६ ; प्रानु २६) ।

गिंवसिया भी [सिम्ब्गुस्डिम] नीन वा क्षम (खावा १ १६)।

णिकित सक ित + कुम् ] सारवा भेशवा । एक्सिस (पुण्ड ११७ स्थ)। सिमित्रए (उप: कान)। णिक्तिय वि निकर्तकी काट बालनेवासा (कल)। णिकुट सक [नि+कुट] १ दूटना। २ कारता । शिक्ट इ शिक्ट्रीम (उवा) । णिक जय वि निकृषित देश क्या ह्या मझ किया हुआ (वे १ = 4) । णिक्य प्रे सिक्टर गृह धायम्य निवास स्वात (ग्रामा १ १६ वत २) माचा)। णिश्चयत्र म [निकेतन] कपर देशो (सुर १६ २१: महा)। णिक्षेय व क्लिक्षेची संकोच सिमा वि अ 1 (23 णिञ्च वि दि ] सुनिर्मन सर्वेश मन-रहित (शाया १ १)। णिकरु देखी जिक्स = तियक (प्राष्ट्र २१)। जिक्करजन नि [निफ्कैनन] १ नपट-पहित निर्माय (कुमा) । २ कपट का समाच निष्कपटपन (मा ५१)। णिक्षेत्रस्य वि [निप्कक्क्ट] १ सावच्या-चहित (दीप) । २ उपमात-राष्ट्रित (सम १६७) । जिस्ति वि [निष्क्रविस्तृ धनिनास र्चात (उत्त १६, १४)। पि**कंसिय न [निन्दाकिस्**त] १ पानीया का समाव । २ वर्शनान्तर की सनिकाश (उन्त २, पडि)। जिल्लीप्रय वि जिल्लाविशत की १ बारावा-परित । २ वर्गमान्तर के पञ्चनात से च्चित्र (मूच २ का सीप राम)। विष्टंपण वि [नि"अञ्चन] पुगर्व-रहित धन-रहित मिप्स निर्धन (सूपा १६८)। पिष्टंटय वि [निष्टण्टक] वश्टक-रहित बाबाचीहर सञ्च-चहित (पुरा २ )। जिया है [निष्याण्ड] १ नाएड चीत स्त्रमान्त्रित १ प्रशासन्तिहरू (गा ४६०)। णिष्टंन वि [निष्टमान्ते] १ निर्गत बाहर निक्नाह्मा (के १ % ६) । २ जिसने कीला की हो वह गुरस्याधम से निर्वेत (बाबा) । जियातार वि [निष्मानवार] चरएय वे निर्वेत (চা≹া १)।

जि**व्हेति की** निष्कानित निष्मपण बाहर निकलना (प्राप्त २१)। णिबरेस वि जिस्कृतियाँ बाहर निकलने-नामा (ठा ११)। णिकोत सक [नि + करू ] सम्प्रसन करना । निक्षंबद्ध (सम्मत्त १७४)। विकास कि [नियहस्य] बस्य-राश्य विवर (हेर ४ विषर १)। णिक्द्रक वि वि । सनवस्थित वेषस **दि** ४ ३३ पाय)। जिक्द वि निग्हर इस दुवैन सीछ (ठा ४ ४-- नव २७१)। जिल्हा कि कि र किन (के ४ २१)। २ वे निषय निर्धिय (पद् )। विक्रविषय वि निष्कृत, निषक्षित्र विदर की जा हुया बाहर मिकासा हुथा (स ६ 211) [ जिल्ह्या वि [निष्ह्या] चान्य-**क**ण्-चीह्व प्रतक्त वर्धेन (भिपा १ ६)। णिकस यक निर+#टम रेशाहर निरसनाः २ धीदा सेना संम्यास सेना। शिकमामि (रि ४६१)। क्य- गिक्सित हिका वेदेनः ग्रहा बर)। णिक्टम पू [निप्कम] नीचे चेत्रो (नार-मुद्रा २२४)। णिह्नमण न नियसमणी १ निर्वेगनः बाहर निक्कना (मुद्रा २२४) । २ दीक्षा श्रंत्यास (धाना) । णिह्नम रि निष्ध्रमेन् । धर्मपीत पृष्टि माप्त मुक्त (हम्प १४) । णिक्टम्म वि [निप्फर्मण्] १ कार्य-पहित निकम्पा(ग १६१) : र मौण प्रक्ति। ६ धंबर, वयाँ का विशेष (बाबा)। णिकस्य पुनिष्यस्य दिशस्य अक्रालयन (मुपा १४१: पदम 💌 १२६) । २ मृष्ठि बेतन मबूरी (है २ ४)। णिकरण न [निकरण] १ तिरम्कार । २ परिमय । ६ विकाश (संबोध १६)। जिद्यस्य वि [निकारण] करणा-रहित

बया बरित (शार-मातती ३३)।

गिष्टम रि [निष्टस्त्र] गणा-पीट्र (श्वर १)। १

णिबाल वि वि | पोसापन से पीरत (सुपा १ मग १६)। णिक्संक वि निष्मक्का कर्मक-र्यात वेदान (स. ४१० महास्पार×३)। णिकलूण केको णिकसमा (पएड १ १)। णिकलुस वि [नि कल्प] १ निर्देश निर्मंस। २ निरपद्रम उपप्रम-रक्कित (से १२ १४) । णि**क्षत्र वि निरुक्त्यत्री कपट-सीवत** (उप 4 54 ) r णिक्क्य वि [निग्इथ्य] स्थय-एडिट वर्म बर्नित (ठा ४ २)। णिकस धक [निर्+कस्] बाहर निक सना । णिदस (सूम १ १४ ४)। णिकस सक [निर + कस् ] निकासना बाहर निकारमा । क्में जिससिद्धाह (रच १)। जिन्नसण व [निग्रामन] विर्ममन (राज)। णिकसाय वि [निष्क्याय] १ क्याय-प्रीत कोकादि करित (बार)। २ प्रै बार्त-नेत्र के एक भाषी ती वैकर-देश (सम १११)। णिका की निशी बाम नाविका (कूमा)। णिकास वि निर्धासी भवितापा-पहित जिब्हारण वि [निष्कारण] **१ कारण-पी**ठ यहेन्द्र (पुर २ ३६)। २ क्रिनि विना कारण (बार ६)। विद्यारम वि जिल्लासरणी निश्वतः जैन निक्कारछी वहाँ (पिड ६१६)। जिहारणिय वि नितः सरितः । कारण-र्णत्त, हेन्-कृत्य (मोप १) । जिब्बारिम वि [निष्ठारण] विना बारण (बारवानक २३ मधिकार, मानारेवाकना वधा ४२४) । णिका**स एक [तिर्+फा**सय्] कार निशासना। शह निकालेई (सुपा १६)। जिद्यासिम देनो जिद्यासिय (ती ११)। णिकास वूं [निष्मास] सैवात बाहर विश लगा (बर्मीव १४१)। जिकासिय वि जिलाग्रसिय] बाहर निराना हुमा (राज) ।

विधियम वि [निधिक्यन] निर्धन पर

चील निस्त गरीब (पारम्)।

<b>1</b> 93	पाइजसहमङ्ख्या	णिक्टि—जिमाड
पिबिट्ठ वि [निष्टस] सबस नीव हीतः बसस्यः 'सहितिकहूनाकिट्रसाति सहा' (या	निस्सिति (कप्प)। यक्क णिकसममाण (स्रामा १ १० पडन २२, १७)। संक	जिनमुद्ध वि [दे] सक्रम्य स्विर (दे४, २०)।
१४ २४; युवा ४४१ सहि १४८)। गिक्टिम सक् [निर्+की] पिक्टम करता, बरोजना सिस्टियावि (पुण्व ४१)। गिक्टिमिस पि [निष्क्रिमस प्रस्थित स्वसी स्वासीपक (सा १८। दी)।	जिन्ह्यमा (क्या) । हेत. जिन्ह्यमित्तप् (क्या क्या) । जिन्ह्यम पुन [निष्क्रम] १ निर्मेनन । २ शेक्षा-यहण (ठा १ ) वस १ ) । जिन्ह्यमध्य म [निष्क्रमण] उत्तर हैती (कुब	णिउस्पुष्ट पूर्व [निग्युज्ज] १ केटर, बोक्सा, विवर (र्युष्ट १)। २ प्रतिसी-यद्दर (पिर्व १२१०- र्यंच २, ६२)। १ बृहायव कावन, बर के शास का वसीचा (यस २१)। णिउस्पुष्ट यूं [निग्युज्ज] मूपि-बस्टर (विवे
जिक्किय हि [निष्किय] क्रियान्धील, बहिय (पद्म १२)। जिक्किय हि [निष्कृय] क्यान्धील निर्वेष (पास या १३ पुषा ४ १)। जिक्किय हि [निष्कृतिकृत] बगन गरि	रेश लावा र १६ पठम एक ४)। जिक्ताय कि [निकात] गाहा हुमा (हुप्र २१)। जिक्तमय कि [के निकान] निरुत गाय हुमा (वे ४ वरा गाय)।	११ वन) । णिकसुत्त न [कें] निश्चित नश्की चौत्त्रत, धावरण पत्ते विद्यासकों नासह दुढ़ी वच्छा निक्तुत (पडम १६) क्वा ब्यूपि निक्तुत (पडम १ वर)।
(বছ २ १)। আৰক্তৰ গুঁলিজনুত বাংল বৰান্য (তম)। আৰক্তৰ গুঁলিজনুত বাংল বৰান্য (তম)। আৰক্ত্ৰৰ ক্ষী বি বীবা হুমা, বিলিবিত (বং ४)।	जिक्काविक वि [निक्कावित] गुरु निमा हुआ विकारित (यण्ड ११)। जिक्कासरिक वि [ब] मुच्चि को सूर विदा गमा हो वरमूह-चार (वै ४ ४१)। जिक्काविक वि [बे] यान्य वरायम-सास	তি সন্তুমিজ বি [ব] আছক আমিলং (१४ ४ )। তিমনীক বুঁ [লিকেন্ড] আৰমতা দ্বীৰ্থ্য, ছুত্ৰা (মুদা १৬৪)। তিমনীক্ষাক কী তিমিনাৰ দ্বানি নিয়া।
णिकाकण न [निष्शेदन] बन्धन विकेष (नदृष्ट् १ ६—पन १६)। जिल्होर सक [निष्ट् + फोरस्] १ पूर करणा। २ पान वरेष्ट्र के प्रहूष का बन्द करणा। १ पान साहि का रुक्षण करणा। विकासीय	(पह्)। जिक्किक्त वि[निश्चिप्त] १ त्यन्तः स्वापितः । (पापः परमृह् १)। २ मुख्यः, परिस्पकः (रामा ११ वन २)। ६ पाक-माजन में	णिक्सेच वृं [तिस्रेप] १ बाक स्थाप (क्लु):२ परिकार मोषण (बाच ८१ १):३ बरोइर, बन क्टीर बना रक्य (पत्रम ६२ ६): णिक्सेचय व [तिस्रोपम] १ नितेप स्था-
(द्वार)। णिकोरण विचित्रकोरण] श्यान स्माविक द्वीद्व सम्बद्धाः २ सम्बद्धाः स्माविक सम्बद्धाः (द्वार)। पित्रकार्यु द्वि] श्योरः। शुक्काली काल्यन	विका (पर्या २ १)। बार विष्यु पाइन्यावन में विकास कर्या को निकास के नियर बाजनेवाला (पर्या २ १ और)। जिनिकप्पमाध्य गींचे देखो। जिनिकप्पमाध्य गींचे देखो।	यत (पत्त ६) । २ व्यवस्थायत विकास (पिषे ११२)। व्यवस्थायस १ व्यो [निक्क्षेपव्या] स्थाप्य, व्यवस्थायस १ व्या (व्याः कम्प)।
(वे २ ४४)। णिनन्त्र पूर्व [निंगक] शैनाए, मोहर, ग्रुवा सराधी स्पन्न (दे २ ४)। जिन्न्होंन केवी णिर्वात (तुम १ छम	करना स्वस्थान में रखना। २ परिस्तान करना । स्मित्तकह (महा) । स्मित्तकहंत (नित्त १९) । वनक्र स्मित्तरसमान (सावा)।सक्र सिक्तरिक्ता सिक्तरिक्तरिका	जिनसंज्य दूं [निश्चेपक] निनमत, करदेश (दह १)। पिकस्त्रचित्र कि [निश्चिम] १ त्यस्त, स्प- रिख। २ पुछ, परिसक्त (हए)। पिकस्त्रचित्र कि [निश्चेपिक] क्रमर देवी
१११ कस)। प्रारुपीय कि [निष्दश्यय] स्थल्य-पीत शासी पीत्र (चा ४६० घ)। प्रिस्टरमा न [निस्तनन] गाइना (दूप	१ ६। वर १)। छ जि केसविश्रक्य जित्त्वेत्त्रकथ (श्रह १ १ विसे ६१७)। जिक्तनव सक [नि+स्रिप्] नाम सावि	(स्थि)। जिक्तास १ पूं [निज्ञास ] शोस-प्रैप जिक्ताम् ) निज्ञास (स्म १ १, पर ४७)। जिक्ताम् केवो जिक्तास (इस २२६)।
१६१)। जिस्ताम कि [नि.काज] क्रण-पीता स्रवित ग्रीत (वि १६६)। जिस्ताम कर [निर्+कस] १ बह्म जिस्ता। २ थीमा सेना, बैलास जैसा।	(धपु १)। यदि निश्चितस्यामि (धपु १)। णिविस्तप पु [निक्कोप] १ स्थानम । २ स्वास-स्वानन वरोहर, वन धादि क्या रक्का	णिसाध्य न [तिसार्थ] संन्या-विशेष सी वर्षे सी घरम (राज)। णिखिता वि [तिसार] वर्षे स्टान स्व (प्रणु नाट—महानीर १७)।
विकास (स्था वर्गा, समास लगा।	(या १४)।	णिगंठ केबो जिनंड (विधे ११६९)।

णि क्लावण न [निक्सेपण] १ स्थापन । २

बाचना (गुपा ६२६ पष्टि) ।

रिक्समद् (मम) । शिक्समेरि (कप्प) ।

भूगा, शिक्सनियु (गप्प) । स्त्री शिक्स

णिगड चक [ निगडयू ] नियमित करण,

बांबला । बंक निगडिकण (दुम १४४) ।

णिगडिय वि [निगडित] नियम्बद (इस्मीर णिएम्द्र पुंदि] वर्ग वाम शरमी (वे ४ ₹**⊌)** 1 णियण वि निमी नेवा वस-रहित (सूध १ 2 8 8)1 णितश्व सरुनि ∔गद्दी १ नइमा। २ पश्चना सम्यास करना । वक्क- पिराश्वमाण (विशे ८६)। णियम प्रे [नियम] १ प्रइप्ट कीव (विधे १२८७)। २ व्यापार-प्रवान स्वान जहाँ कारारी विरोध संबंध में पहते हों ऐसा राष्ट्र मादि (परह १ ३) भीप मात्रा) । ३ व्या-पारि-समूह (सम २१) । णिसमण न [निरासन] ब्रमुमान प्रमास का एक प्रवयम ज्यसंद्वार (वसनि १) । फिगमिञ वि [दे] निवासित (पर्)। जिगर दू [निकर] समूह, चरिः, नरना (निपा १६ चवा)। णियारण न सिक्स्पनी काय्य हेन्द्र (सम w w) t णिगरिय वि [निकरित] धर्वमा शोषित (पद्याद १४)। गिगस देवी जिसस । २ वेडी के प्राचार का सीवर्णं प्रामुक्या-विदेय (प्रीम) । जिगस्थिय देखो जिगरिय (च २) । पिगाम देखो जिस्तम⇒ विकास (विड **EYE)**1 कियास न [निश्चम] स्तक्तः व्यक्तिय (स ६ शबा १६)। णिगास र् [ निकर्षे ] परस्पर धेमीवन, मिलाना, चोड़ (भय २४, ७)। चितिक्रिस्य 🐂 जितिषह । जितिह देवी जिविह (सुपा १८३)। णितिय वि निग्नी नग्न नैया (माना % २ इ.ए.७ १ विहर्ते)। णिशिणिज्ञ न सिएम्स निमान नानता (बल ६,२१) सूत्र ६, २१)। गिगि**ण्ड** सक नि+म**ड**़ १ निमह करना वर्ष करना किया करना । २ रोहना। १ धर- बैठना स्पिति करना।

संकृ जिनिजिम्हय, जिन्धेर्ड (ठा ७३ कम्प श्वा । इ. णिमिण्डियरूय (स्व द २१) । णिगंका सक [नि÷गुडा] १ प्रजिता सम्बद्ध शब्द करना । २ तीचे नगना । वक्क जिगं अमाण (खाया १ ६--पत्र १५७)। जिर्मा देवी जिरुक्त = निमुक्त (मानम)। णिशुष वि [निशुप] गुण-पहित (पराह 1 (5 9 णिगर्यंथ वेको जिउर्देश (पएह १ ४)। जिस्द पि निस्त र पुन प्रश्वाप (कप्प)। २ मीना मीन सुनेवाका (राव)। णिगाह सक [सि+गुड् ] कियाना गोयन करना । रिपन्नाइ (च्का महा) । रिपन्नाईरि (বহু ३२) । বছ- তিনুহ্ভিত (র ३३६)। जिस्⊈ण व [निस्⊈न] पोपव विद्यास (वंचा १६)। जिग्हिल वि [निगृहित] दिपाया हुया गोपित (नूपा २१८) । णिगोळ पू [निगोष] यन्त बीबॉ का एक सामारता राधेर-विशेष (भक्त प्रस्त १)। जीव दे जिया निरोप का बीव (सर २३ ६ कम्म ४ वर्ष)। णिया हैको णियाम = निर्+यम् । बहु-णिग्रांस (मनि) । जिमाठिव (ती) वि निमिष्वती प्रीम्प्टरः चिवत (पि ११२)। णियांतुं } वेको णियाम = निर्+ वर। णिमां**व देवो णिअंड (बी**पा घोष **१**२८) प्राप्तु ११६ ठा ६, ६) । णिगांच वि निर्मेन्ध निर्मेन्स-सम्बन्धी (शाबा १ १३३ छना) । विगापी थी [सिर्मेश्वी] वैन सामी (शामा १ १ १४) जवा भणा बीप) । णिग्गच्छ ) धक िं सिर्+शर्मी शक्रर णिग्राम जिन्ह्यमा । सिग्नाच्या (स्वा: कप्) । वद्या जिस्साच्छीत, जिस्साच्छसाज, जिम्मममाण (तुमः ३३ । शाया १ १३ भूपा १११) । चंद्र, शिमाचित्रसा शिर्मा-सूज (कय च १७) । हेड्ड जियांतुं (बर ७२८ थै) । जिग्गम वुं निर्गेष**े १ उस्तरि, बन्द** (विशे १४३६)। २ वाहर निकत्तना(के ६ १६८)

छापु ११२)। १ हार, बरनामा (छे २ २)। ४ बक्तर वाने का रास्ता(से ० ३३)। ४ प्रस्कान प्रमाख (शह १)। णिमामण न [सिर्ममन] १ निःघरण वाहर निकलना (सामा १ २) सूपा ११२ भय)। २ पंतायन भाग बाला। १ मपक्रमख (**चच** १)। णिम्गसिक वि निर्गमित वाहर निर्मासा ह्या निस्सारिन (भा १६)। णिग्गमिय वि [निर्गमिष्ठ] थमाया ह्या वसार किया हमा (सम्मच १२३)। णिमाय दि [निरोठ] निचन बाहर निक्जा हुमा (विसे ११४ ज्वा)। जस वि **बिरास** विस्का क्या बाहर में फैसा हो (गावा १ १०)। ामोअ वि विमोद् विश्वभी गुगन्त जून फेली ही (पाध)। जिग्गय वि [निगैज] हाबी-रहित (भवि)। जिग्गह देवी जिगिष्ड । इ. जिग्गहियव्य (बुपा ६८ )। णिग्गाइ प्रतिमद्वी १ वर्ग प्रिया (प्राप्त १७ । धान ६)। २ निरोध प्रश्रीच स्कापट (संद ७ १)। १ वहा करना कार् र्ने रज्जनः, नियमन (प्रासू ४०)। द्वाप्य न रिवानी न्याय-ग्राज-मध्यि प्रविज्ञा-हानि भादि पराज्य-स्वात (टा १ सूच १ १२) । पिरगहण # [निमहण] १ निवह रिजा बएड (गूर १६ ७)। २ इमन नियमन⊾ निमन्त्रण (प्राप्त १६२)। णिमाहिय वि [निगृहीत] १ विषया निवह किया तथा हो वह (सं ११६) । २ पराजित परामुख (बाबम) । जिमाद्वीय रेखो जिगादिय (गुढ १ १)। विगमा भी दि हिता हत्त्वी (दे ४ २१)। जिमग्रास पूर्व [निगास्त्र] निभोड रस 'सील-वदीनिग्वास (तंद ४१)। जिम्माक्षिय वि [निर्माष्टित] पनामा हुपा (का प्र बर)। षिग्गाहि विशिष्टियाहिया विश्वह करनेराचा (बच २४, २) : जिम्मिण्य वि वि निर्माणी र निर्मेत वाहर निकला हमा (दे४ ३६) पाम)। २ बान्त बमन किया इच्छा (से इ. २१)।

(पर्वाट सम ११६)।

भी रेका (गुपा १६१) ।

(धवि ६)। २ निविद् पुष्ट (धन्)।

(धीप घन)।

۱ (ع

(ध १११) कुमा)।

जिबंदु पुं [निचण्टुं] राज्य कीरा, मान संप्रह

दुःब स्थ त्याग करना । शिक्तह (हे Y

₹२ टि)। जूका हिल्लबीम (कुमा)।

णिषक वि [निकास] रिवर, रह यवव

(हर २१४७७)। यस न [पर्] द्वीक,

जिमित वि [निक्रियन ] विका-धीत

वेपितक (विकास वासू २०) बुदा २२६)।

मोख (पंचव ४)।

(मिसे २४=२)।

विगिगिक्किय वि [निर्गोक्कित] शाला वसन क्यि ह्या (स ११०)। जिन्म्की औ [निर्मणकी] सौपधि-विशेष बनस्पति संबास् (पएछ १)।

विग्रुप नि [निगुप] इल-रहित प्रश्नशीन (था २ १) चवा पराष्ट्र १ २ उप ७२० टी)। षिग्रुक्त ) म [ नैसुक्य ] दुश-पहितपन, णिम्गुज । द्वस्त्र शिक्ष स्टब्स् ( वस. मच १४)।

पिलाइ वि [निर्मुड] रिवर इस से स्वापित (सम २ ७)। जिल्लाह पुन्यिमाची बुल-विशेष वरवह, बङ् का पेड़ (पड़म २: ६६) पड ): परिस्डक न [ परिमण्डस ] राधेर-सस्वल-विशेष बराकार राधेर का शास्त्रर (सम १४१) का ६)।

जिन्हेंट } **च्या जिहेंदु (क्**य) । चिन्हेंदु णिग्महुवि [दे] <del>हुत्व</del> निपुल चतुर (दे ¥ \$¥) 1 णिग्मज आंको जिल्लामण (विकास २)।

जिग्मित्तकाति [दे] किष्ट चॅक्स ह्या (पाम)। णिग्बाइय वि [निर्मातित] १ धावात-प्राप्त भाइत । २ भ्यापास्ति विनारिक (ग्रामा १ जिग्माय **र्** [निर्मात] <del>छत्तर</del>-वंश का एक

चवा (पठम ६ २२४)। जिग्माय दू [निष त] १ शाकात 'रंकिर तुंपगुर'नमपुरन्वनिन्वामिकृरियं वर्धार्गं (शुपा ६)। २ विजनीकाविरता(स ३७६० जीव | t) । ६ म्यन्तरनुष्ट वर्जना (**हा** १) । ४

विनाता (सूच १ १६) । पिश्यायण न [निर्मातम]नक्रतः विनासः क्रम्देशन (पक्ति सुपा १ ६) । णिरियण नि [निर्येण] निर्देश, क्यला-सीहर

(पा४ १६ प्राप्त ११ पुर २ ६१)।

पिन्धोर वि वि निर्मेष, स्था-हीन (वे ४

जिन्देरं देने निरिष्ट् ।

1(05

(दुम्ब)।

संपन्नीमो न बुरुवद् निश्वकावपस्वादिन' (सम १)। सोम [शस्]क्य क्लंब गिरन्तर (महा) । स्त्रांभ स्त्रोग स्त्रोव प्रशिक्तेक] १ एक विद्याबर-राजा (पठम रू १२) । २ वक्।मिहानक केन-निरोग (ठा २, १) । ३ व. नयर-विशेष (पत्रम 🛊 १२) स्क) । ४ मि. धर्मेश शकासनामा (गृप्प) । णिच देशो जीय = गीच (सन ६६)। णियकम् वि [निकासुस्] वदुःचीतः नेव हीन सन्धा (पडम बर ११) । णिबह (सप) वि [गाइ] गाइ निविश्व (है ¥ ¥39) I णियम वेदी णियाह्म (प्रवी २१: पि १ १)। णिवार केवो जिस्तरः विकास (हे ४ 1 (2) 1 णिषस्य तक [ शर् ] भरता सपन्ता, पूत्रा । शिज्यवद (१४ १७३) । जमी शिक्सानेह

णियस प्रे [निक्रम] १ वधीटी का परवर (घरा)। २ करोटी पर की भारी सुकर्ण णि वय पुं[निचय] संबद्ध संवय (सूध १ पिषिट्र वि [निश्चेष्ठ] चेश-प्रीत (इप जिथ्य र् [निव्यय] १ छन्छ, एडि। २ क्राचम पुष्टि (योग ४ ७) स १११ सामा णित्वक्ष वि [निवित्त] १ न्यास अस्पूर पिष्कुछ पू [निष्कुछ] वृद्य-विशेष वंदुस **वृ**द्य जिमा नि [निस्य] १ ध्वीनस्वरः ग्रास्तव (व्यक्ता बीप)। २ त. निरस्तर, सर्वत हमेका (सद्दाः प्रासु १४ १ १) । 🗪 णिव

(Y) वि विद्याणको निरुष्टर उद्यवनामा (शासा १ ४)। "मॅडिया की ["सण्डता] बस्यू इत-निरोप (इक)। बाय प्रं विवर् पदाची को मित्रय माननेपादा मता भूतुपुरू

जिबेद (दी) रेखी जिस्क्रिय (पि १-१)। जिरमुखान र [सित्योदयोत] सक्तर द्वीप के सच्च की बिश्चस विशा में स्थित एक (दस ६, ५)। **₹ ₹#₹)** 1 (क्रम ५१६)।

धंननिर्दि (पन २६६)। णिष्णुकोस ) वि [निस्योद्धानि ] १ ७० णियमुळीय र्रप्रकालपुक्तः। २ द्वं बह-विलेव ण्योतिक देव क्लिन (ठा२ ३)। १६ एक विदायर-नदर (इक)। णिश्लुक विदि । स्वयुक्त वक्तर निरुग हुम्य (पड्)। २ निर्देश क्वा∺हीन (पाण)। णिक्जुब्दिगा वि [निस्त्रोद्विमा] परा विव जिच्चेड क्या जिचिह (छाना १ % पुर पिरचेवप वि [निह्चेतन] का पिर जिन्नोत्त्वा हो [तिस्यर्तुका] हमेरा रवस्त्रका प्रकृतिकारी की (का १, १)। णियवाय सक हि] निवोदना । तिस्तीवद णिक्जोरिक न [मिश्रीये] १ जोएँ ना लमाला ⊧२ वि चौ सै-सी[सं(क्य १६८ सै) णिध्यह्म व निरुविको १ फिरवर-सम्बन्धी । २ पूँ निश्चय नव अध्याचिक मय परियास-बाद (विधे)। जिल्लाहरस वि [निन्ह्नांशन्] १ अपट-पहित ৰাখ্য-ৰনিৱ (কচ सूपा ३६ )। र क्रिके विका पंपट (सार्व ११)। शिषक्क कि कि र निर्देश्य केतरम इट धीठ (ब्रुड १। वन ४.)। १ सवतर की लहीं

नामनेत्रा सवस्यव (स्टन)।

णिच्छमा देवी णिच्छनम (धर सार्वे १४%)। णिरसय सब [तिर्+िष] निरमय कला निर्णंग करना । वह जियद्वयमाण (बप ७२८ दी) । गिच्छ्य पु [निश्चय] १ भिरचम निर्धाय (समा प्रामु १७७)। २ नियम सविनामाव (राज)। ६ नय-विरोध इच्याचिक नम बास्तविक पदार्व की ही माननेवाला मत परिसाम-बाद (बृह ४) पंचा १३)। कहा **बॉ** िंद्या यपनार (निष् १)। णिष्युरस्य सम् [द्वितृ] ग्रेरना, काटमा । <del>चिन्द्रा</del>सद (द्वे ४ १२४) । पिच्छस्चित्र वि सिम्न बाटा हुमा (कुमा-स २६८। बटड) । णिक्क्सय वि [ निष्ठ्याय ] कान्ति-एहित शोमा-हीन (पस्ड १ २)। णिच्यारय वि [निस्सारक] सार-पहित, 'निकारमञ्जूषीया' (मा २७)। সিখিছৰ বি [নিহিন্তুর] ডিম-খন্তি (ভাষা १ ६ उप २११ टी)। गिष्टिहरू वि निष्टिस प्रक-इत सनग क्या हवा काटा हवा (विसे २७६)। णिच्छिष्ट देखो णिच्छिक (स ११ )। जिच्छिम देखी जिच्छिण्य (पुण्ड ४६३ मद्भा) । অভিনয় বি [নিমিন্ত] নিখিত, নিৰ্যাত धर्मशिक (शामा १ १ महा) । जिल्ह्यीर वि [निक्सीर] सीर रहित हुग्य-দৰিত (৭০তাং)। णि**श्ट्रंड वि [दे]** निर्देश कच्छा-ची्ठ (दे ४ ३२)। जिच्छ<u>द्</u>र वि [निर्ह्युटित] निमुक्तः कृटाः। हुमा (गुर ६ ७२) । णिक्लूम सक [नि+सिप्] १ वहर निरातनाः **উ**करनाः। ভিক্তুমহ (मन)। बर्ग शिक्कमा (पि ६३)। क्या शिवल बभगाज (विया १२)। तक जिब्हा भिचा. णिक्युसिई (का किर १ १)। असे. शिन्द्रनावेद (खामा १ ≤)। विकास व निकोपी निजायन (शिव

ter) :

णिख्द्रमण व [निश्चेपण] नि सारण भिज्यसन (निष् १)। णिनस्द्रभाविय नि [निमोपित] निस्तारिक बाहर विकासा हुधा (गुग्या १ ८)। जिच्छाइ सर्क [नि+क्षिप्] बासना। निष्यस्य (सुबा ७ ११)। जिच्द्रहणा श्री [निक्षेपणा] बाहर निकलने की माजा, निर्मेर्सना (छाया १ १६ टी-पद्म २ )। णिकस्त वि निक्षिप्त १ प्रकृत निर्पत (द्वेष्ट २३८)। २ फॅकाह्मा मिर्फ्यस (ब्रामा) । ३ निस्सारित फिन्मासित (ग्रामा १ स-पत्र १४६१ १ १६--पत्र १६१)। णिकसुन्ध म [निष्ठभूत] **पुरू क्या**र (विसे X (1) I जिच्छोड सक [ निर+छोटम् ] १ बह्यर

निकसने के लिए जनकाना। २ निर्मेर्सन करमा। १ एक्यामा । शिम्बोकेट शिम्बोबेटि (शाया १ १६ १=) । शिष्कीवेका (उपा) । संक्र णिष्ठकोबद्रचा (मग १४)। णिक्योडग न [निर्म्योटन] निर्मर्शन नाहर मिक्स बने की धमकी (छव)।

जिन्द्राष्ट्रण की [निखोटना] उत्तर केते (लाया १ १६—पत्र १६६)। पिच्छोडिञ नि [निर्छाटिठ] सदा किया ह्म्या (निष्ट २७६) ।

णिक्कोछ सक [निर्+तक] धीलना, बाल उदारमा । निन्द्रानेह (निष् १) । वह णिण्डोसीय (निष् १)। शक्क निष्छा जिञ्जा (महा)। णिर्मीतय नि [नियम्बिन] निवनित संप्रतित

(gr ? y) 1 णिजिण्य देवी जिल्लाम (स.४१)।

णिजीय देवी जित्रीय = नि + क्रुन् । नित्रीयद (रप्र १४६)।

णिजुद्ध वैद्यो जिटद्ध (निष् १२) । णिजासण व [सियोजस] निपूर्णिक, नार्य में सगाना, भारवर्षेख (उस १७१ क्षे) । णिशक्षिय देवी णिजाइय (उप १७१ है)। णिक वि [वे] गुरु सीमा हुमा (दे४ २६)

मस्)। णिर्जर देशों भी = है। णिक्रण वि [निर्जेम] १ विवन मनुष्य-रहित गुनसाम। २ न एकान्त स्थान (भग्ना)। णिज्ञप्य वि [निर्याप्य] १ निर्वाह-कारक । २ निर्वत अस को नहीं बदानेनासा धारस विच्यासीयनुरुविकल्पपाराध्योयधार्थं (पराष्ट R X) 1

णिव्यर एक [निर्+ज़] १ क्षम करना नाश करना । २ कमें-पूर्वी को मान्या से कान करना । शिज्योद, शिवस्, शिवर्रीड (भग- ठा ४ १) । भूका, शिकरिनु, शिन्द रेंस् (पि १७६) मग)। सबि स्मिन्त्ररिस्सेति (टा४१)। वह णिज्ञरमाण (मग१a ३)। रुवक्क णिख्यरिक्रमाण (ठा १

णिळरण व [निर्जरण] नीचे देखो (धीप)। णिव्यरणा 🕊 [निर्द्यरणा] १ शरु सव । २ कर्म-श्रय कर्म-नारा । ३ विससे कर्मी का मिनास हो देवा कर (तद १३ सुद १४ ६४)। णिजारा औ [निर्जारा] कर्म-शव कर्म-विमास (धाचा, नव २४)।

जिज्ञरिय वि निर्जीभी बील विनात-मात (चंदी।

णिज्ञव वि [निर्याप] तर्वाह करानेवला (पेबा १४ १४)।

णिज्यवस वि [निर्यापक] १ निर्वाह करने नामा । २ भारायक भारायत करनेवासा (बोच २ व घा)। ३ पूँ कैनमुनि-विशेष को छिप्य के मारी प्राथित का भी ऐसी ष्ट्याः थे विमान कर देकि जितते वह उस निवाह सके (ठा का भए २३ ७)।

जिज्ञाधना की निर्यापना १ नियमन वर्रित वर्ष ना प्रापुचारात (विते २६३२) । २ हिंचा(पएइ ११)।

णिञ्जबय वेको णिञ्जयग (बोप २८ मा टी) KYE) I

णिज्यभित्र वि [निर्योपयिषः] उत्तर हैती

(पष ६४) । णिज्या थरु [निर्+या] बाहर निरासना । खिज्जावंति (नन्)। मनिः खिज्जारमानि

(बीर) । वह गिज्ञायमाथ (झ १, ६) ।

विकाल न [नियोग] र बहुर निक्रमा निर्मन (त र. के)। २ बावुरिन-सिह क्यान (सीए)। व सेमा पुष्ठि (साव ४)। विकासिय नि [नियोगिक] निर्माश-सेम्बर्गी, निर्मन-पेक्सी (स्व १ के १) निष् न)। विकासमा व दिल्लामा निक्रमा (विशे १११६) सामा र १७ सील पुर १६

प्रको । जिज्ञामण स [सिर्वोपन] वस्ता कुमवा 'वरिश्चनम्याँ (वद १) । जिज्ञासत दें [सिर्वोमन १ शोवार की देवा-कुरामा करोनामा पुनि (वद करे) । २ वि स्टापन्य-कारक (वद-माना १७) ।

जिज्ञानिय वि [नियमित] पार पहुँगाया हुया वारिय (महा)। जिज्ञाय दुं हिं] उपकार (वे ४ ६४)। जिज्ञाय वि [निर्वात] विषेत निष्क्ष (वसु अर दु २८१)।

णिळावण न [निर्मातन] वैर-तृति, क्वना (महा)। णिञावमा की [नियादना] अपर केनो (उप

ाणआवमा का [ान्यावना] अनर क्वा (क्य ४६१ दी) । निज्ञाबन केवी निज्ञामय (धरि) ।

जिज्ञास पूं [निवास] दुवों का रह याँब, (तूम २: १)। जिज्ञास वि[निजिंद] बीटा हुमा परमूठ

(मोन १० क दी पुर ६, १६ श्रीप)। मिक्किय दक [निर्+ कि] भीतना परावन करना।निक्यार(अपि) संक निक्किणकमा

(महा)।

मिलिपिय देखो जिलिस (बुपा १६)।

जिलिसम्म १ दि [निर्मिषे नारामात पिलिस में तीए (पर ठा ४१)।

पिलिस है तीए (पर ठा ४१)।

पिलीस दि [निर्मिष] जीव-पीहर जैसन्य बरित (धीया या २ महा)।

गिरमुंड [निर्+ युज ] चरकार करना (निष २६ टी)।

पिरितृत्तं दि [निर्मुक] १वेबड, स्युक्तं (विस् १ १८ सीव १ मा) । १वर्षित, विद्वतं (मीप) । १ वर्षित स्टिप्लिस (सावपू

जिज्जुकि की [निमुक्ति] व्यावमा विवस्स दीका (विसे ११२३ मीच २ सम १ ७)। जिज्जुद्ध देखी सिन्नद्ध (स ४७)।

णिज्ञहू वि [नियु हा ] है निस्तारिक निष्णा-वित्र (शामा १ १---पण ९४) १ समग्रीस स्मृष्टर (सोण १४४) । १ स्मृष्ट सम्बान्दर वे समग्रीक (स्वति १) । विश्वज्ञह वि [नियु हा प्रीत निम्हार्ण एव

जिज्ञूहर्ष (चर्या म २२)।
जिज्ञूहर्ष एक [निर्-पृक्षः] १ परित्याप करणा । २ रक्षणा निर्माश करणा। कर्षे जिज्ञ्यूहिक्कर्(नि २२१)। हेक्क जिज्ञ्यूहिक्यर्ष (बन २)। १० जिज्ञ्यूहिक्यर्थ (क्य्प्र)। जिज्ञ्युहर्ष ही निर्मुह् १ नीम कर्षि, मृहस्त्वाकमा पाटम (दें ४ २० छ १९)।

हार के पास का शक्त वियोग (शास्ता १ १— पत्र १२ पर्रह १ १)। ४ हार करवाना (हुर २ ०१)। जिक्स्यूरा कि लिस्यूक्त अन्तान्तर के ज्यकुत करनेनाना (बद्दिन १ १४)।

शि**न्द्रप्रदेशों (**यस्य १ क्षेत्र वय १) । १

जर्युत करकाना (दशन ११४)। जिक्क्ष्रुण न [निज्ञूषण] केको चिक्क्ष्रुणा (क्ल केथ, २४१ पत्र १)। जिक्क्ष्रुणया ) की [निज्ञूष्ण] १ निस्स-चिक्क्ष्रुणा } एक बाहर निकासना (वर्ष

रे)। परिवास (का ४२)। ३ विरमना मिनीस (विसे १११)। जिल्लाकिका केलो जिल्लाका (काली १००)

जिम्बृद्धिः वेद्यो जिम्बृद्धः (स्तनि १ ११) । जिम्बृद्धिः वि [निवृद्धित] रहित (पर १९४) ।

पिज्ञोत दृष्टि १ प्रमार, राहि । २ पुर्वा का समकर (१४ १३)। रिप्जोक्ष रृद्धियोगा १ जनस्य पिजोगा । जामर (रज्ञ ४४) ४४। रिड १६)। २ जनसर (रिड १६)।

जिज्ञोक १ पि निर्मात परिकर, पिज्ञोक १ पि निर्मात परिकर, पिज्ञोक । जनमा परिकर, परिकरणाम १ १ -- पन्न १४)।

णिक्रोमि ई [वे] एन्. श्लो (वे ४ वर्) । णिगमः यक [स्तिह्] लेह करना । जिल्हाह रिशाह व )।

जिस्मर वक [ति] बीस होना । जिस्मर (१४२ । वह) । यह जिस्मरेत (इस ६१३) ।

विश्वस्तर वि [ब] बीहर्ड, पुराना (वे ४ २६)। विश्वस्तर वृ [निस्टेर] करवा पहल वे लेखा वाची का प्रपष्ट (वे १ ६०-२ १)। विश्वस्तरण न [निस्टेरण] करा देवी (क्वर ४४ १६) पुर ६ ६४ पुरा वेश्रर)। विश्वस्तरणी की [निस्टेरणी] नहीं वर्णन्ती (क्वा)।

प्रवासक्ता की [तासका] नव उपकर (हुआ)। पित्रस्स कह [तिश्वेद] केवता मिर्चेवस करणा। रिएन्स्सर्स रिएन्सस्य (१४ ६)। वह पित्रस्सार्थ्य पित्रस्यप्रताथ (गार्थ वादा रें । दे पित्रस्यक्रम्य जित्रस्स वह [तिर् + से] रिटेन विकास करणा। येह जित्रस्मेह्न्य (साम्)।

करणा रक्षक (जनसङ्घ्या (अस्त्र) । जिल्लाइ वि [तिश्वायिम्] केवनेत्रम्य (यात्ता) । जिल्लाइस्यु वि [तिश्याय] केवनेत्रम्य, तिरोजक (क्या १६६ सन १६) ।

विश्वक (वेट १२ वेन १२) पित्रसम्बद्ध हि [सिम्मीतु] म्रीडेटन क्लिन क्लोनाता (ठा १)। जिल्लामूच कि [तिस्वात] १ स्टू विवेशिट (त १११ वल ४१)। २ त सर्जेत लिटे-

नाज (म्हा---इड १ ) । चित्रमधिक्य वि [निर्माटित] निर्माटित (क्र ९४४ टी) ।

विश्वसाय नि [के] निर्वय, बमान्यीहर (वे ४ विकास विकास

(युर ६ देवश सुरा ४४व)। पिम्मूर वि [वे] बोसी, पुराना (६४ २६)।

णिम्मोक एक [क्रिड्] धेस्ता शटका जिम्मावद (६ ४ १२४)। जिम्मोक्य न धिन्न] क्रेनत कर्तर (क्रुमा)।

धित्रमञ्जेसङ्गु वि [निस्केंपबिद] सम् वर्षे वाका कर्मों का नास्त करतेवाता (ध्याप) । धिर्देख वि [वे] १ टक-व्यवतः । २ विकरः

यस्यतल (४१)। पिर्हेकिय कि [निस्क्रित] निरंक्त सम वारित (तुपा २६)।

णिएणहबद्द (बिने प्रदेश है ४ एका)।

REC	पाइजसहमहण्यते	जिल्ह्स्ग-निद्द
क्यं रिज्युक्तिप्रदि ( शौ ) (ताठ—चला	जिरबणण न [निस्तनन] विवय-पूचक अनि	मप्तीप' (सुर ६ दर वर ११४ सार्व
११)। वक्र जिण्ड्बंत जिल्ड्बेसाय (का	(दुर२ २१६)।	¥)1
२११ दी तुर ३ २ १) ।	णित्यर धक [निर्+वृ] पर करना	णिवृदिसण <b>व्यो</b> णिव् <b>स</b> प्प (क्वा पर १८४)।
पेण्डवग नि [सिड्डावक] धननान करी-	पार अवरमा । सिरनरेड (युपा ४४३)-	जिबसिसम वि निवर्शिय जन्मिक, क
वासा (मोद ४० म)।	"जिल्बरीत बच्च कामरावि पायनिक्यायव .	मामा दूधा (वर्मेंसे १ )।
णिण्डमण न [सिद्धवन]स्प्रमाप (विपार	क्रुप्रेण महएस्तर्ग (स १६३)। क्रमहरू	णिया औ हि । रे नेबना-निरोप बल-इक
२ छर)। फिल्ला के कि	णिरवरिकात (राज)। क्व जिल्लारियङ्ग	वेदना (भग १९ ६)। २ वासर्ते हुए धी
जिल्ह्बण नि [निह्नन ] क्लान-कर्ता	्(खासा १ ६) युपा १९६)।	की काली प्राश्चि-दिया (पिंड)।
(र्चनीय १)।	जित्थरण न [निस्सरण] पार-यमन पार	णित्राज भेवो णिक्याण (निया १ १३ की
णिण्ड्वित केती णिण्डुवित (माट—कन्ड	माप्ति (ठा४ ४ जप १६४ दी)।	१ थ भाट—नेयी ६६)।
₹₹ <b>१)</b> ।	जित्वरिम वेवी जिल्लिक्य (उप १६४ टी)।	णिदाया देखो (यदा (पएछ १६)।
णिण्डुयं नि [निष्तुतः] अपकापितः (पुपा २९०)।	पित्याण वि [निस्वान] स्थान- <b>पहित</b> स्वान-	जिदाइ दुं[निदाघ] १ वर्गवाम अन्छ ।
पिण्डुव केती जिल्ह्य = ति÷ छ । अधै	अष्ट (ज्ञाना १ १८)।	२ ग्रीम-काव गयीका मीप्रियः। १ 🕸
जिस्कृषिक्ष्मिति (पि. १६.)।	जिल्लाम वि [निज्ञवासम्] विश्वेत कमनोर,	यास (ग्राम १)।
जिण्हुविद्(शौ) वि [लि+हृत] क्र-	गन्द (पाधा नवव धूपा ४८६)।	जिलाइ 🕏 [निदाय] तीवस नरकना एक
सरित (पि ६६ )।	जित्पार सक [निर्+तास्य] १ पार	नरक-स्वास (क्षेत्रह ६) ।
जितिय केती जिब (याचा ठा १)।	च्यारना धारना। २ नवाना हुन्कारा	णिवाह 🛊 [निवाह] प्रश्लाबाएउ यह (बाव
जितुबिक वि [मितुबित] ह्रूटा हुना क्रिय	भा । जिलासु (काब)।	x):
(घण्डु १४) ।	णित्यार र [निस्तार] र कुमरा ग्रुवित ।	णिदेख प्र [निदेश] मात्रा हक्ष्म (द्वम
जिच्च <b>भेगे</b> जेच (पार्क्य पुत्र २६१) सङ्घ्य	र नवान प्रवा। इ छडार (शाया १ ६	(95%) I
<b>(</b> ¥) (	दी—पन १६६। पुर २ ६१ ७ २ १।	जिदेशिक वि [निदेशित] १ प्रवर्कत । २ चळ, कवित (पदम ४, १४४)।
णिचम नि [निस्तमस् ] १ सम्बद्धर-धीत ।	चुना २१६)।	
२ सज्ञान-ध्यिष्ठ (सनि )।	णित्धारम मि [निस्तारक] पार वानेयाचा	णिदीचन [दे] १ धरका समार । २
णिक्तक वि [दे] मनिवृत्त (सम. ११) ।	पार क्वरनेवाला (स १ ६)।	स्वास्थ्य तेषुबस्ती (पव २६८)। जिद्देश्याण म लिङ्काम्बानी सिवार्ने हेण्य
णिचि (प्रय) वैद्यो जीइ (सर्वि) ।	जिल्लारमा की [निस्तारण] पार-आपका	व्यक्ति दुर्मात-दिशेष (द्वाड)।
पिचिस व [निस्सरा] निर्देक करणान्हीन	पार प <b>्रांचा</b> ना ( <b>थ</b> े ३) ।	जिह्न वि [निर्देश्य] हत्त्व-चहित, व्येत-वर्गित
(दुपा १११)।	णिस्वारिय वि [निस्तारित] वनामा हुमा	(ब्रिया ४८६)।
णिचिर्रह वि [के] निरन्दर, सम्बद्धित (हे	च्याच क्यूचा (सनः नुपा ४४६)।	जिद्देश वि [निर्देशम] सम्पन्धीय कपव-पर्देश
X X ) I	णिरिबण्य ) वि जिस्तीयों १ प्रशीर्व वार	(441 (5.4))
गिचिर्राडम नि [दे] प्रटेट ट्रूप हमा (रे	पिष्टिम असः 'सिरिक्एसो समूर्व' (स	णिहरी (धप) क्यों णिहा = निवा (न १६६)।
Y Yt) 1	१६७)। २ जिलको पार किया हो बाह	जिद्दह वि [सिर्वेग्स] १ असावा हुन्छ
जितुष्य वि [वे] स्नेष्ट्-चीहर, वृद्ध शावि से	'णित्यमा मालया गर्का (गुर a at)	कस्म किया हुया (सुर १४ २६। श्रेत १६)।
वित्र (१६१)। णितुस वि [निस्तुस्त्र] १ मिस्पम स्रवाधारण	"मिरिक्स्एामवतपुर्दे" (स १३१) ।	१ वं कुप-विदेश (रातम ३२ २१)। ३ एक
(का इ १३)। र विकि सवासाण्या का	णिरंस थक [सि + व्योय् ] १ क्याइप्स	त्रमा-गामक नरफ-पृत्रिकी का एक नरकाराच
ध 'मएएड्। नितृतं मर्यव' (नुता ३४६)।	वयवाना स्ट्रान्य विकासाः २ दिवासाः।	(ठर ६) । सत्रसः दुं विस्पर् नरकानातः
णिचुस वि [निस्तुप ] दुव-चीक जुवा	शिरीद (रिय)। यक्क पिन्दितं (बुना = १)।	विधेय, एक नरक-अपेश (हा ६) । "त्वर्ष 🕽
वे एदिय, विदेश (यदा ४ २३ के ४० के ४० ह	वर)। जिर्माण ग[निवसीन] १ क्वाइच्छ स्थान	िंचर्ते । भरनावाच-विदेश (ठा ६)।
4) 1	(यभि १ <sup>(</sup> ३)। २ विद्याला (कार्ट)।	ोसिह ई ["विश्विष्ठ] नरक-स्रोध-निषेत्र (ठा ६)।
णित्तव रि [ मिनिजस् ] हैअ-दिश्व (खावा	णिर्द संभ वि [निवृशित] प्रचीया विकास	(वा ५) । जिद्देश वि [मिर्देश] स्थानीन, बस्ता-पदित
t t):	हुमा। 'एवं विविधिकर्ण निर्वतियो नियक्षी	निष्द्रर (नवा १ १३ तक्ष्र)।

णिइसमान सिर्वसनी १ मर्बन निवारण (धाचा)। २ दि मर्देन करनेवाला (बजा ४२) । णिइन्डिज वि [निर्देखित] मरिक विद्यारिक (पाफ गुर १, २२२, सामै ७१)। जिद्द धरु [निर्+दृहु] वसा देना मन्य करना । निरहद (महा' उर) । खिर् हेरजा (पि २२२)। णिदासक [नि + द्वा] लिया लेखा भींद करना । खिहाइ ( वड ) । वह जिहाअंत (से १ १ स्ट)। णिहा की निहा र निहा, नींद (स्वान ५६ क्ष्य)। २ निहा-क्रियेप वह निहा जिसमें एकाप भावान रेने पर ही भावनी जान उरे (इस्म १११)। और वि [ यम् ] निज्ञा-यतः, निवित्त (हे १ ५१) । करी की ["करी] सता-विशेष (वे ७ ६४) । "पिदा की ["निद्रा] निधा-विशेष वह निधा विसर्ने बड़ी कठिनाई से सारमी बठाया वा सके (कम्म १ ११ सम १४)। छ, लुवि प्राप्त)। यझ नि ["प्रद] निया केनेवाला (A 6 K8)1 णिहाश वि [निद्रात] को नीव में हो (से १ १९)। जिद्दाभ नि [निदाब] मन्ति-र्यात (सं १ 1 (3x पिदाअ वि [निर्दाय] सब-प्रदेश पेतृक वन से बॉबत (से १ ११)। ग्रिहाइअ रि [निद्रित] निज-पुक्क (महा) । णिद्दाणी ध्ये [निद्राणी] विद्यावेशी-विशेष (पदम ७ १४४)। णिदाया देली णिदा (पएए ६६)। जिहारिश्र वि [निर्दारित] बरिक्ट विदारित (नि १, वशा १६ ६६)। णिहार रि [निहाब] १ बावनत-धीट्ट । २ बंदन-परित (से १ ४३) । मिरिटू वि [निर्दिष्ट] १ विधव वक्त (मग)। २ अधिराधित निक्पित (पंचा ६) रेख) । णिरिट्ट वि [ निर्देश ] निर्देश करनेराका (रिके ११ भा विक ६४) ।

णिहिस सक [निर्+दिश् ] १ उपारण करना कमन करना । २ प्रतिपादन करना निकास करमा। निदिसद (विसे १४२६)। कर्म जिहिमह (नार-मालवि ५६)। इक निर्द्रुं (पि ४६)। र गिरिस्स णिशस (वित १४२६)। जित्रहरूल कि [निर्देश्य] दुन्त-छीत पूनी (सुपा १३७)। णिद्तुर वृं [क् नत्तर] देश-विशेष (क) । णिद्रवृक्षत्र वि [नित्रूपय] निरोप (वर्गवि णिहेस पू निर्देश १ जिन या धर्मेनाव का क्यन (ठा ६--पत्र ४२७)। २ विरूप का ग्रमियान 'ग्रविशेषियपुरुमी विशेषियी हाड निर्देशी (विशे १४१७, १६ ६)। ६ निवाद पूर्वक कथन (विसे १३२६)। ४ मधि-पारन निकाण (बता १ एपि)। १ माहा हुदूस (पायः इस १ २)। ६ वि जिसको देश-निदासे की माजा हुई हो वह (पान ४ E(1)1 [ यन् ] निजासला (स्रीज २ वि १६३८ | जिहेसरा ) वि [ निर्देश ह ] निर्देश करने-णिहेसर ∫ मला (विशेश्य ≈ १४ ) । णिहास्य न [निर्दोरस्य] १ दुम्नता का धमाव (वस ४) । २ वि स्वन्त दुःस्यता-चीठ (वष ७)। जिहास वि [निर्दोप] बोप-चहित, हुपछ-बर्नित विश्वय (ग्रहा नूर १ ७६)। णिक न [स्निग्म] सन्द्र, रय-निशेष (ठा १३ मण्)। २ दि.स्तेह-पूर्यः विश्वना (हे २ रेध बक्त पर)। १ कालि-बुक्त देशली (**43 (43 )** 1 णिइंत वि [निर्मात] धनिन्धंया है विशे-

बित, मन-रहित (पर्छा १ ४३ झीर) ।

बेराएम (विने १२०) ।

**७६** टी: महा) ।

णिद्धंधस वि [दे] १ निर्देय, निष्टुर (१ ४

२६ मुपा २४३ भा ३६)। २ निर्मेश्य

(देश राग्यार स्टारे ४ ५० वर

णिद्धम वि दि । प्राथितः नृह एक ही वर में रहनेवाचा (दे ४ ६८)। णिद्धमण न दि नात मोध पानी कानेका शस्ता (र ४ १६ वर २ १ ३ ठा ४ १ बादमा त्रंदु सदा स्हामा १ २)। व्यवस्थान [निष्मान] १ विरस्कार, यह हैतना (उर प्र १४६)। २ वं, यक्ष-विशेष (पाष ४)। णिक्षमाय वि दि | प्रविक्ति-गृह, एक ही **बर** में पत्नवाता(दे४ ६८)। णिक्रम्म वि दि । एक्पून-शायी एक ही तरफ बातचाजा (दे ४ ३४) । णिखम्म वि निर्वसन् वर्म-पहित प्रवर्मी (पा २७)। णिद्धय वि [दे] देखी जिद्धम (दे४ ६०) । णि इंडिजण देखी जिल्लाम । णिहाड वक [निर् + घान्य] बहर निरुत्त देना । कर्म, निकाडिकई (संबोध १६) । विदाहण न [निषाटन] निस्तारल निजा-धन बाहर निकासमा (प्रदाह ११)। णिकाद्यामिय वि [निर्माटित] सन्य हारा बाहर निकलवाया हुया याच्य हारा निस्सारित (महा)। णिद्वांहिय वि निभाटियाँ निस्तारिय क्तिमासिव (पाग्रः महि)। णिद्धारण न [निधारण] १ प्रण मा अर्थात चारिको बेकर समुद्राय है एक भावका पुषर्कतः २ निषय धनवारण (विशे 224=): सिद्धार्थ धर [निर्+धार्] शैक्ता। चंद्र णिद्धाइजय (महा)। णिद्यापिय वि [निर्यापित] शैहा हुमा थापित (मक्का) । णियुण धक [निर्+भू] १ विकाश करना। २ हर करना। संद्र निद्धण शिभूय (रत ७ ३७ तूद १ ७)। मीम ४४६। पाम' पुण्ड ४६४' सट्टि णिद्णिय , दि [निर्मृत] १ दिनास्ति णिक्य क्रिया हुमा। १ भागीत णिद्धण रि [निर्धन] वन-परित धविवन (बुरा ४१६ थीर) । जिब्स वि[निर्युस] १ पूप-धीत (हज् पदने १३ १)। २ एक तस्य का बानस्य भिद्धणम वि [नियान्य] बाग्य-पीरत (१५) । (वय १)।

णिप्युस्पय वि [निष्युस्पद्ध] वारिश्रन्दोप से चीता (स्व १ १६)। पिएप्त देखो जिप्पेंद (है २, २११ छावा १ २ : मुर ६, १७२)। जिएफैस कि कि निकिस, निर्देश (पड)। किएफद्ध यह [निर्+पर्] गीपवना छप बना सिक्र होना। सिप्कबर (स ६१६)। वक्र जिप्फक्तमाज (पराह १ ४)। किप्सक्रिज वि [निस्सटित] १ विधीर्यं। २ जिल्हा निशास क्ष्मिले पर न हो। ३ सङ्ग्रह-रहित (सप १२८ दी) । (प्रिप्कुम्मा वि [निष्पम ] गीपना हुमा नना हमास्टिक (से ११८ महा)। विष्कृति विभिन्नति निप्ताल विकि (सर हप २० धी कार्ग १ ६)। जियान देवी जियमण्य (क्या सामा १ 1 (23 णिएक्टिस वि वि] निर्देव ब्या-हीत (वे व विष्यक्र वि [निप्यक्त] फ्ल-पहित निरर्वक (के १४ २६ च्य १३६)। णिएकाक्ष देशो जिएकाव (प्राप्त) । णिक्साहरूण देखो जिप्काय । जिल्ह्याह्य वि [निष्यादित] गीपवास हुमा बनाया हुआ सिक किया हुआ (विसे ७ टी इत २११ दी मद्दा)। विष्याय स**क** [निर्+पादय्] नीप-बाना बनाना, सिक्र करना । संक्र जिप्पनाद कण (वंदा क) । चित्त्रायम वि [मिच्यावक] गीपनानेवासा बनानेशाबा, स्थित करनेशाला (विशे ४०३ हर ६। इस ५२०)। **जिप्कायण न [निष्पादन] नीपनाना** निगाँख इति (बार ४)। जिप्काम र्चु [निष्पाच] चान्य-विशेष बङ्ग (देर १३ पएशा १ छार १ मा १०)। व्यिप्स्यय पू [निष्पाद] एक माप बाँट-विशेष (मए १११)। विभिन्न पर [नि+स्टिद] बाहर निकवना । वद्ग- मिप्पित्रवेत (स १७४) । जिप्पितिक वि [निस्पितित] निवेत, बाहर नित्तता हुमा (परम ६, २२७ ८ ६) ।

जिएकुर पुं [शिस्कृर] प्रमा तेन (वजः) । णिएफेड पू [निस्फेट] निर्मम बाहर निक-मना (उप प्र २१२)। णिप्फेड्य वि [निस्फेटक] बहार निकासने-वाला (सूध २, २ ८४)। णिप्फेरहरा वि [निस्फेटित] १ निसारित निष्यासित (सूचा २, २)। २ भवाया हुसा नसाया सुमा (पूज्ड १२१)। १ व्याह्रत, श्रीना ह्ममा(ठा३ ४)। जिप्पतिस्या को [निस्पैत्टका] प्रयापा चोरी व्यस वहमा सीसनिक्षेडिया (सुब २, १९ पव १ ७)। जिप्पेक्स पूर्व दि] सकर-निर्मय भावाय निष-बना (वे ४ २६)। जिप्फेस पू [निय्येष] १ वेषण पीवना । २ धेक्द (है २ ४३)। णिर्वच सक [नि+वन्यू] १ वीवना । २ २ करना । निर्वेषद (यम) । णिबंध एक [ नि + बन्ध् ] क्यार्वन करना। खिनंदि (पंचा ७ २२)। णिबंध पेन जिन्नन्थ १ धंबन्य संदोत (विशे ६६०)। २ भाषक कुठ (सक्त)-'शिवन्याणि' (पि ११०)। जिबंधण न [निबंधन] कारछ प्रबोदन निमित्त (पाच प्रामु ११)। णिकद्व वि निषद्धी १ वैंवा हुमा (महा) : २ समुक्तः धंगडः (से ६, ४४) । णिबिड नि [निविड] साल, यना माड (गवडा कुमा) । जिविकिय वि [निविक्ति] निविक् विया हुमा (यठक्र)। जिलुक्त [दे] केवी जिल्लुक्त (परह १ ३--- | पत्र ४१)। णि<u>त्रक</u> घर [ मि + मरज् ] विमञ्ज करता क्षता । बहुर, जिलुक्किता निजुक्तमाण (यण्ड्र हार उपा)। णिजुङ्क वि [नियम्] द्ववाद्वया निवन्त (धा १७। तुर ३ ११ ४ व )। णिक्षूण न [निमकान] बूचना, निमकन (पडम १ ४३)। णियो**स देशे** जिल्ला = नि + मस्य । यह जिवोक्षिज्यमाण (राम)।

णिवीह र्ष [नियोध] १ प्रकट बीव धत्तम ज्ञान । २ मनेक प्रकार का बीव (विसे २१व७)। णिबोह्नण म [नित्रोधन] प्रदोप समस्त्रना (परुष १. २, ६२) । णिस्वंच पू निवंग्धी बावह (गा ६७१) माहस्य १८)। जिथ्यंपण व [निर्मेश्वन] निषम्पनः हेन् कारण 'सारीरियलेमनिम्बन्त पर्स' (कास)। जिन्नक देवो जिन्नक = निर + पर्। रिका चद (माक ६४)। णिक्यस्य वि [निवंश] वत-रहित दुवंत (पाचा)। जिन्दहिं व [ तिनेहिंस् ] प्रचन्त बाहर (ठा ५--पत्र वश्रः १) । पिक्वाहिर वि [निर्वाह्य] बाहर का बाहर यया हुया। 'स्विमनिष्याद्वित सामा' (स्वा) । जिब्<u>य</u> कि दि] १ निर्मून मून रहित। २ ब्रिन युक्त के किन्दुका किएएनय--- (पराह १ १--पम ४१)। णिक्युक् 🚧 पियुक्क निमन्म (स ३१ गउडी । णिबमंद्रण देवो जिबसच्याम (स्व १ १)। णिबसंखण न [दे] क्लाल के क्लाने पर बो रोप वत याता है वह (पमा ११)। जिच्मांव वि [निर्मान्त] निःसँद्ध, संरम-चीव (वि १४)। णिकसम्यान [दे] उदाल बगीचा (दे / जिक्समा वि [निर्मारय] सारय छीत वस-नशीय, समावा (उप ७२व टी मुपा १०१)। णिषमच्छ एक निर् + मत्में ] १ विर स्कार करना सपमान करना संबहेताना करना चाकोश-पूर्वक सपमान करना । णिक्स**च्छेत्र, शिक्सच्छेत्रा** (ग्रामा १ १०) जवा) । सं**ड** जिस्स<del>िका</del>म (नार—यानती १७१)। गिष्मच्छण व [निर्मरसैन] हिरकार. धानमान परंप बचन सं संबद्धेत्रना (पर्वृ १ कृ महर्ष ।

णिक्मक्क्षणा था [निर्मेस्सैना] कार को

<b>४</b> ०२	पाइथसहमहण्ड्यो	विद्यक्षित्र-निम
	पाइश्रसाइमहण्यते  णिनिम्म   केनी चित्रुख (प्रयू र है। गा  णिनुम्म   ल   ।  णिनेम्म   ल   ।  णिनेम्म   ल   ।  णिनेम्म   ल   रेने स्वस्त   व्याहर करणा ।  स्वम्म चिनेम्म्म (प्रयू र है - प्रमु प्रमु (प्रयू र है। गा  जिमम वह [ति + स्वस्त   स्वपर करणा ।  जिमम वह [ति + स्वस्त   स्वपर करणा ।  जिमम वह [ति + स्वस्त   स्वपर करणा ।  जिमम वह [ति + स्वस्त   सिम्मण्य केना  स्वीता केना । श्विमक्ष (च्या) । वह जिममे  तेमाग (यावा २ २ १) । वह जिममे  तेमाग (यावा २ २ १) । वह जिममे  तेमाग (यावा २ २ १) । वह जिममे  तेमाग (यावा २ १ १) । वह जिममे  तिममंग वह (निमम्मण्या) उसर देखी (देवा  देश) ।  जिममेनिय वह [तिममंग्यम] विवको न्योता  विमाग विमानो   विमानमा विमाना  एक प्रमा । विमानमा विमा ह्या विमा  सम्म वर्षणा । विमानमा विमा ह्या ।  जिममम वह [ति + माम्य ] ह्या ।  जिमममम वह [ति + माम्य ] ह्या ।  जिमममम वह [ति माममम्य । विमानमा वर्षणा ।  जिमममम वह [ति मामममम्य । विमानमा वर्षणा ।  जिमममम वह विमामममम्य ।  जिमममम वह विमामममम्य ।  जिमममम वह विमामममम्य ।  जिमममम वह विमामममम्य ।  जिममममममममममममममममममममममममममममममममममम	(सूच १ १) १ शास-स्थित जरिन महीर जानने का एक राज्य (सोन १६ ज क)। ४ सर्वितिय ताल में कार-मूल क्यारे ८) १ वेल जायुनी की सिका का एक रोग (ठा १ ४)। "पिंड ट्रं ["रिच्ड] म्येच्य स्वारत स्वारत कर प्राप्त की हुई स्थित (पाच १ ६)। श्रिमित्तिय केसो ग्रीमित्तिय (द्वाप ४ १)। श्रिमित्तिय केसो ग्रीमित्तिय (द्वाप ४ १)। श्रिमित्तिय केसो ग्रीमित्तिय (द्वाप ४ १)। श्रिमित्तिय केसो ग्रीमित्तिय (द्वाप ४ १)। श्रिमित्ता केसे [ति-सीत्ति] स्थान ते स्थान श्रिमात्तिय केसो ग्रिमीक्तिय (एक)। श्रिमित्ता कहा [ति नित्तिय] क्रेस्त स्थान श्रीमत्तिय (द्वाप १९)। श्रिमित्ता कहा (तिमित्त्व) क्रिस्तेयन प्रीक्ष- श्रीमत्तिय (स्वाप क्रिस्तेयन (क्रिस्तेयन प्रीक्ष- श्रीमत्तिय (स्वाप क्रिस्तेयन) स्थान स्थान १९११ १६ १६ ११)। श्रिमीक्तिय वित्तियो स्वाप्तिय (स्वाप क्रिस्तेयन (स्वाप्तिय क्रिस्तेयन क्रिस्तेयन स्वाप्तिय क्रिस्तिय क्रिस्तेयन स्वाप्तिय
१२७)। जिस्मयया न [निर्मेदन] क्रपर वेदी (दुर २ ९९)। जिस्मरिय निर्मिनेरियाँ प्रताणि केताया	स्मान के लिए बोड़े समय तक बनाराय में निमान पहुंचे हैं (बीच) । जिसकाल व [निमानकत] हुचना वक्त-प्रवेश	विमेदि (गडर)। पिसंग न [क] स्वान वबह (के ४ ६०)। पिसंछ बीन [क] स्वन्माच (के ४ ६)।
हुवा (क्ष्य १९ २१) । निम्म देवो जिह्न = निम (क्षण व ६) । जिमम्द्रमा देनो जिह्मदद्भम (निह ५१ )।	(भुता १२४)। जिमाजिस देशों जिन्माजिस = निर्मानित । (द्यार)। जिम सक [ नि + सुद्यु ] जोहना। लिमेद	की सा (६४ ६)। पितस पुलिसेप] मिसीबन सति होरे पत्रकता विस्ता पत्तक (धा १६ वर्ष)।
লিমান বুলিনাল্ল সমস্য অত্তৰ খালে (তাৰ)। সিমান বচ [নি+মান্তবুল অত্তৰ		िणमेशि रेपो जिमे ।   जिमसि वि [निमपिन] बोच वृष्णेसना   (पूरा ४४)।   जिस्स तक [निस् + सा] बनाय, निर्दाण
निर्देशस्त्र करना । स्त्रिमाधेहि (मानक)। का विकासमूर्त (उर कश्ची।क्यक	णिमिश्र वि [वि] बाजात सूँबा हुवा (वह् )।	वरना : शिम्बद (वर् )। शिम्बद (बन

णिमिया देवी णिम्माण = निर्माशः (१४५ १

णिमित्त व [निमित्त] १ वायत हेनु (प्रानू

१ ४)। १ नारल-रिधेय सहगार-नारल

११) ।

१९ थी) : क्यह जिल्लाकी (बार-

जिल्म बुंबी [मैम] बनीन से अँवा निरत्ता

नाचरी ४४)।

प्रदेश (शब २७)।

बर्ग जिमासर्थन (उर दृश्वे)। क्वह-

विमासिय रि [निमासिर] रहे, निरीतित

मिमासिजेंद (स्र १ ६ ६ छ)।

(बरदूर)।

जिम्मइत्र वि [निर्मित] एवित इत (गा म) । णिस्संधण न [निर्मंधन] १ विनास । २ वि विनारक 'राष्ट्र व पयट्टमु सिग्बे सम्बनियमेयसी तिर्द्ध (मुपा ७१)। णिम्मंस दि [निर्मास] मांग रहित गुल्क (एावा ११ भग)। णिम्मेसा की दि देवी विरोप चापुएवा (वे ¥ 32)1 णिम्मं<u>स</u> वि वि नि रम<u>म्</u> चक्छ वनान धूवा (दे४ ३२)। णिम्माक्त्यभ देनो पिम्मनिद्धअ = निर्मेतिक (नार) । णिस्मच्छ एक [नि + स्रक्ष] विलेपन करना । खिमम्बद्ध (भवि)। णिम्सप्द्वज म [निस्नस्य] विसेपन (भवि) । णिम्म**च्छ्र दि [निर्मारसर्य**] मारसर्य-रहित, **ई**व्यां-सम्ब (उप द ६४) । जिम्मण्डिय वि [निम्नक्षित] विकास्यवि)ः णिम्मचिद्धम न [निर्मीक्षक] १ मधिक का মন্দ্ৰ। ৰ বিৰদ দিখনতা(মনি ६৯)। जिम्मक्षाय वि [निमैर्योद] मयल्य-पहिल बेह्या (दे १ १६६) । णिममञ्जिय वि [निमार्जित] स्थापित (स णिनमण नि [ निर्मेनस् ] वन रहित (**ब**ष्य १२) । जिन्मण्य वि [निर्मेनुक] मनुय-धी्व (स्ए)। जिम्महरा वि [निर्मेदक] १ निरन्तर मध्न भरतेशाना । २ दू चोरी नी एक वाटि (पएड 8 8)1 निम्माइय वि [निर्मीतृत] विस्ता गर्दन किया गवा हो (परह १ ६)। जिस्सम वि निसमी १ मनता-चीहत, निः स्पर् (मन्द्र १६ कुग १४)। २ र्थु भारत-बर्च के एक बारी जिनकेर (सम १९४)। जिम्मय वि दिवेष उपसङ्घाति ४ १४)। णिम्मल रि [निर्मेस] नन-रहित रिष्ट (स्वय ७ ) प्रानू १३१) । २ दू बद्धानीत-शोकनाएक प्रश्वर (ठा६)।

णिम्मरुक्त [निर्मास्य] देव का उच्छिए हरूम देवता पर चड़ाई हुई वस्तु का बचा पूचा(१९१ वद पड्)। णिस्सव सक [निर्+मा] बनाना एवना करना । लिम्मबद् (हे ४ ११) पह )। कर्म, निम्मनिर्मेदि (वजा १२२) । जिम्मय सक [निर +मापय्] बनवाना कराना (ठा ४ ४ दुमा)। जिम्मवर्त्तु वि [निर्मापयित् ] बनवानवासा (81 Y Y) I जिस्सधण न [निर्साण] रचना इति (ठप १४८ टी मुता २३ ६४ ३ ४)। जिस्सवण न [निमापण] बनवाना कराना (क्यू) । जिम्मविश वि [निमित] बनाया हुधा चित्रत (जूमा गारे १ सुर १६ ११)। जिम्मविल वि [निर्मापित] बनवामा ह्या (दुमा) । णिम्मह एक [गम् ] १ काना गमन करना। २ सक् फेलना। शिष्म्यद्द (दे४ १९२) । वर जिम्महेन जिम्महमाण (वे = ६२) १म मन स १२६) । णिम्मद्द (निर्मेषी १ विशवाः ६ वि विनाराक (भवि)। जिन्महण न [निर्मेयन] १ विनास १ शि विनाश-कारक (मुपा ७३) **इ**टे जा (बर १६ १०४)। प्पिन्महिअ वि [गन] मना हुमा (दुना) । णिम्महिम वि [निर्मिषद ] विनारिद (हेका R )1 णिम्मा देशो णिम्म । शिम्माइ (प्राष्ट्र ६४)। णिम्मार्भत देनो जिस्स । जिम्साइभ बेगी जिम्माय (वि १६१)। णिम्भाण सङ [निर + मा] बनाना करता. रवना शिम्माशह (हे ४ १६) वह । प्राप्त) । णिम्माण न [निमाण] १ रचना बनाय, वृति । २ वर्ग-विक्षेत्र शरीर के धीनीपांग के निर्माण में नियानक वर्ग-विशेष (सब ६७)। णिम्माग वि निमानी मान-पीत वि १ जिम्माणअ 🖪 निर्मायको निर्माण-कर्ता, बनानेशाला (से १ ४१)।

णिस्माणिभ वि [निर्मित] येथत बनाया हुमा (पून्मा) १ जिस्साजिङ वि [निमानित] धरमानित तिरस्कृत (मनि) । जिम्माणुस वि [ निर्मातुप ] मनुष्य-रहित (स्वा ४४४) । भ्री सी (महा) । णिम्माय वि [निर्मात] १ रवित विहित इत (जन पाया कमा ६४)। २ निपुरा बास्यस्य क्राप्टस (बीप' कप्प)- 'नादियसप्पेन् निम्माया परिवाहमा (मुर १२ ४२)। जिम्माय न [निर्माय] हर-क्रियेप निर्मि कृतिक सप (संबोध ६८)। जिम्माद्धित्र देशो जिम्मह (प्राष्ट्र १६)। णिम्माव धक [ निर\_+ मापय् ] क्तवाता करवाना । खिम्मावद् (चल्र) । हः गिम्मा-विच (तूप २ १ २२)। जिल्लाचिय वि [निर्मापित] बनगवा हुमा, कारित कराया हमा (मुपा २६७) । जिस्सिज वि निमित्ती येवित बनामा हमा (ठा = प्रापू १२७)। साइ नि विश्वतिन्। बन्त को ईरवस्थि-एस मानने गाना (ठा ८)। णिन्तिस्स वि निर्मिश्र १ मिना हवा पिषित । बद्धी भी विद्वी परवन्त नक-बीच का स्थवन येस माता शिवा, मार्ड धरिनी पुत्र भीर पुत्री (बच १)। णिश्मोस वि निर्मिमी नियण-धीत (देरन्त्र २६ )। णिम्मीत्मभ नि 👣 श्रमपू-परित बाडी-मूँच वर्षिय (यह् )। णिक्युक्त वि [निर्मुक्त] मुक्त निया गया । (हरु५ ग्राफ् णिम्मुक्त 🖠 [निर्मोस्न] धुकि, सुन्तास (विने २४६८)। णिम्मस्य वि [निसंख] मूल-रहित विशवा मूल काटा बवा हो वह (नुवा १३१)। जिम्मर वि निमयादी मर्वाद्य चीटा निर्मेत (ठा६१ धोनः गुता६)। णिम्मोश्र वृं [निर्मोद] क्ष्युक बॅपुल का भी स्वचा (दे २ १×२ मधा ११ णिम्बोअपी की निर्मोधना वस्तर नियोंक (बन १४ ११)।

निरंक्त (पास) । म्बन्धे (इमाः सा २a)। 'णिरक्कण वि जिस्केन । प्रकाशील जिरंगम वि भिरत्रण निर्मेश बेप-राज्य (अस्ते । (भीग जन खादा १ ११-- पत्र १७१)। जिरहे विनिध्ये की शतकोड यिरंगी की विकिष्ण समयका बैच्ट णिखा निवासिक निवस्ता (उत्त १ )। ( Y 11 7 7 ): २ म प्रदोजन का सम्बद्धाः फिल्क्सियाः णिरंबण वि निरम्बन निर्मेप नेप-पील निष्यो वेद्यसम्बद्धाः पृष्टेषुद्धाः (उत्त २, ४२)। (च ३ वरः क्या) । जिस्म वि [निक्क्षण] चण-धीत करव दे जिरंतव वि क्लिस्किकी सन्त चीका (क्य मुक्त (सपा १६६) १६६) । ₹ % (£) i णिरणास **भी** णिरिणास=शह। खिर जिरंदर नि मिरन्दरी यन्दर-धीत व्यव बासद कि. ४ १७ )। पान-परित (महरू हे १ १४) ।

4(E) 1

णिरंत्तराय में [निरम्वस्थ] १ मिनिक

निर्मेष । २ व्यवकान-पर्वत काल 'काओ

क्रीड विसर्व च निरुद्धार्मे (प्रस ४४

णि<sup>र</sup>तरिथ वि [निरम्तरित] सकर चील.

पिर्श्व वि निरन्त्र किर-पील (गङ १७)।

णिरंबर नि [निरम्बर] वक्त-रीक्ष गण

णिरेंभा की [तिरम्मा] एक इन्त्राती वैशेषत

रण की एक ग्रंप्यक्तियों (हर १, १। एक) ।

जिरंस वि [मिरंश] भेरा-र्यक्ष क्याएड,

जिरोड वि जिलेखस**ी निर्वेद पवित्र "**गडवे

व नाहियों को निर्देशन देख वक्तमाहेल

व्यवनाग-राहित (बीच १)।

40)1

(मलम)।

सम्पूर्व (विते) ।

(नरीय १४६)।

वाज्य (है ४ १७)।

परसुर्वय वि [मरसुक्तम] व्युक्तमा-विव्रव

विश्व (वाजा १ १ वह १)।

विपयुक्तिय वि [मरसुक्तिया] विश्वय

व्यानुक्त (वाजा १ १ प्राप्त १०)।

विपयुक्तिय वि [मिरसुक्तिया] वरणाताव-वीव्रव
(वज्या १ १)।

विपयुक्तिय वि [मिरसुक्तिय] वरणाताव-वीव्रव
वर्षायस्त्रवा वि [मिरसुक्तिय] वरणाताव

वर्षात (वप २७४)।

विपरक्तिय वि [मिरसुक्तिय] वरणात्रव विराक्तिय (वप

द)।

विपरक्ति | वि[मिरसुक्तिय] वर्षायक्तिव (वर्षायम् विपरक्तिय (वर्षायम् वर्षायम् वर्षायस्य वर्षायम् वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्णायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्णायस्य वर्षायस्य वर्णायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्णायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्णायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्णास्य वर्षायस्य वर्णायस्य वर्

थिरप्य प्रक [स्मा] वैद्या । विश्वपद (क्ष

४१६)। मुका, खिरुगीय (क्रमा)।

(याना १ १)।
जिरसमाह कि [निरसमाह] अन्यस्कर्णके (यह)। जिरसमाह कि [निरसमाह] किर्फुनः क ज्यारे, स्वेरी (पाय)। जिरसम्बर्ध कि (पाय)। जिरसम्बर्ध है । तरसमा बराज-र्यह्म, विश्वास्त (कर ज्यार ११)।

जिरव्या वि [सिरवय] निर्मात विकृत (वर्ष

%, १ दुर ≪, १ ३)।

(क्षाप्र शकाशास्त्र १४)। २ गरम

विकासीय सारक (हर है) पांच ई

िपास्त्री देव-विदेय (द्वा ४ १) । विस्था

की विकास १ केंद्र सावम्यान विके

(निर १ १)। २ नरक-विदेश (पक्त २)।

णिरवर्षि जिस्तीयक सरद्रसर्वेत

णिरव पि निरवसी प्रोन्धीत निर्मेद

जिरव कर विस्ता | बले भी इच्छा <sup>करता</sup> !

जिरव एक जिला + ब्रिप्ट ने प्राप्तेत करता ।

जिरवहरू वि [ मिरपेस ] प्रपेता-धीर-

णिरवर्धन वि [विरवसक्ष] स्त्रा-रहिए।

पिरवर्षाका वि [तिरवद्मकिशत] निरम्भ

निरीहः निरुद्ध (विसे ७ दी)।

(उप ६७६) इम इसा २६) :

(मदाबाद७६)।

खिरवह (पड )।

श्चिरवह (पह.)।

निस्साह (धीप) ।

पिरवणाम देशो णिरोणाम (चर)। णिरसिञ्ज वि [निरस्त ] परास्त, प्रपास्त (६ **ዲ ጳ**୧) i जिएवयक्त देवी जिएयहक्त (लावा १ णिरस्साय वि [निरास्ताव] म्याच-रहित 🛮 पतम २, १३)। (उन १६, ३७)। णिरबद्ध वि [ निरस्यव ] धनगन-रहित णिरस्सावि वि [निराम्नाविव] नहीं टरक्ने-निरंश (बिने)। नामा, छित्र रहित । की भी (उत्त २६ णिएकवाम वि [निरक्षात] प्रवकारा-धीरा वर मुख २३ वरो । (गठश) । णिखंधर वि निर्वाधारी कौ-धील (उन)। जिरवराह वि [मिरपराच] क्य<del>ाव रहि</del>त णिरहारि वि [निराहारिम्] वाहार-रहित बेयुनाह (महा) । उपोषित 'इवड व ववस्पवारी निखारी जिरमगृहि वि जिरपग्रिय] कार श्रेवी धंमनेरवयपारी (मुपा २४२)। (भाष ६)। णिरहिगरण वि [निर्राधकरण] सविकरण जिस्स्त्रंव वि निरवस्त्रया सहार रहित चीत दिवा-चीत निर्धेष (वेषा ११)। मसहीय (परहर ६)। णिरहिगरीय वि निर्मायकर्णन्त्री करर जिरबन्धम वि [ निरमध्यम ] १ मन्त्राप रेखो (मा १६ १)। रहित । एत बात को प्रकट नहीं करनेवाला जिरहिष्यस वि [निर्धमेखाप] रच्या-धीत दूसरे को नहीं कहनेवाला (सम ५७) । निरीह (गउप) । जिरवसंक वि जिरपशकी इन्होना-नर्जित वि [निर्देश ≰] निप्कारश णि । इंड णिरहूरन | कारणचील ( वर्गर्थ ४४३ जिरबसर वि [निर**बसर** ] धवसर-पश्चि **जिस्हे**त्स Yto Y ) ! (गबर) । निराद्ध वि [निरायदः] सम्बा दिया हसा जिरवसाय वि विख्यान विश्वतान विस्ताच्ति (ने ४ १२ ७ १६)। (गवड) ( जिराउस दि [निरायुप्] बारू-पीर्ड जिर्देशमा वि निरंदरोपी हव हवन (है) (प्रकृ ६१)। १ १४ । यह ने १ १७) । णिराउद्द वि [निरायुध ] धारुवन्यनित पिरवह कुछ [निर + यह ] निर्वाह करता निन्दास (महा)। निवादना । निरवहिका (संबीय ३६) । णियस्र }बक[निय+कृ] १ निरेव त्रियगर | करता । २ दूर करता, दुहाना । जिल्लाय वि जिल्लाम है । क्या प्रीत ६ विराद का चैनका करना। निराक्तिको विज्ञ-क्षत्रितः। २ निवीतः विद्युद्धः (का १६ (इत २११)। वंड जिसक्तिक (तुम १ मुपा २७६)। णिर्रावरस्य , रेगो जिस्बद्दरस्य (मा 🗗 उप णिसक्रिक वि [निसकृत] निवित्र (वर्गीर णिरचंकार | वि १४१/ से ६, ७१८ गुल गिरवर्ग्य । इ.स. पंत्र ४ विश्व १३ { X 4 } 1 जिसगरण व [स्मराकरण] विसव विवारल मार-चेत्र २५७) । निरेप रोक्स (पंचा १० ११)। णिरम नक [निर्+ अस्] ध्रयास्त करना। नियमरण न [नियम्सण] १ निरेष रिएरमन् (मख) । प्रतियेव (वंचा रेक)। २ देवना नियमस जित्मत्र मि [निरशन] बद्धार-रहित (TY t) बपोगित (धर नुता १०१) । णिरागरिय वि [मिराइन] हटावा हुमा, हुर जिस्सण न [निस्सन] नियरका श्य देश विवाह्मा (परम ४६ ११; ६१ १६)। पूर करता धीरन (बाय ७२४) । गिरागम रि [निराइप] स्थित (c निर्यम वि [मिर्यस] चर्ल-रॉन्ड (१४४) । (निष् १)।

णिरागार वि [निराकार] १ बाइडि-रहित २ धनवाद-रहित (पर्म २)। णियणंत्र वि िनियनन्त्र विमनन-पीता शोकान्द्र (महा) । णिधमित्र (भा) च निरंत्रत नदी (दूमा) । সিংগ্ৰেপ্তৰ ৰক্ষা লিংগ্ৰন্থৰ: 'ভিক্ৰিসন্মিংসন্-क्षो बागुरियं भावलं कुएई (ठा ४४) 'धइ को छिराल वंदी (संघा दश पटम २६ 2K) 1 णिराणुवस्ति वि [निरनुवर्तिम] १ सनुवरण नहीं करनेवाला । २ वेवा नहीं वरनेवाला (उप) । णिराव वि [रे] नष्ट विनास-शान्त (रे ४ **3** ) i जिसवाय ) वि [निरायाय] यावावा-रहित गिरावाद । इरवल-धहेत (बॉम १११ मुना २३१ हर १ का व ४)। जिसमर्गंब वि [निसमगन्य] हुपस-रहित निशेंच वारित्रवाता (बाबा भूध १ ६)। णियमय वि [नियमय] चैन-धीत नोचेव (पुरा १७१)। णिरामिस वि [ नियमिष ] साम्रिक्टीन निर्देश, निर्दानिकार 'मामिसं सन्स्युजिसन्ता विहरिस्नामो लियमिस्त (स्त १४ ४६)। जिराय वि दि देशस्य स्टला दि ४ पाय)। १ अक्ट भुमा। ६ वृ रिप् रणा(दे४ ॥)। ४ विसम्बादिया ह्या (देर ४)। शिराय वि [दे] बायन्त प्रदुर, प्रविक (धुन २, ७) । जिसमें वि [निस्तक्ष्ट ] मात्रक्ष-संहत नीरीप (धीप) । णिसयरिय देशा जिसारिय ( परन ६१ 24) 1 णिरायव वि[निरातप] बातर रहित (परह)। णिसवार देनो जिसमार (परम ६ ११०) । णियपास व [निरायास] वरियम-दीव (पट्र २ ४)। शिरारंस वि [निरारम्म] भारमनाबित (पुता १४ गहर)। मिराजेन रि [ निराक्तम ] स्टनम सीत (स ११३ धारा ८)।

जिरासंबंग वि [निरासम्बन] धानम्बन-रहित (सरा: यहा)। वह जिरिक्सं शिरि क्लामाण (सला प्रप २११ टी) । संह (भौक ग्राम १ १) । णिरासंबण वि निरास्त्वनी प्रारोश-पीत जिरिकिकाठ्या (ध्या) : **इ जिरिका**क संस्थ-पीत प्रार्थना-पीत स्थापीत स्थ णिक्स (भ्रम्)। मान-र्यात (भाषा २ १६, १२)। **विशिक्षण न निरीक्षण ध्वनीयन** (गा फिरास्थ वि निरास्थ । स्वात-र्याष्ट एकत्र tx ) 1 णिरिकसमा को [निरीक्षणा] धनतीलन रिवति नदी करनेवाका (धीर) । णिरास्त्रेय वि फिरास्त्रेको कारा-धीत प्रतिवेचना (धीव ३)। जिरिक्सभ वि निरीक्षित वासीकत (**門**て \* \*): जिराक्कॉल नि [निरक्काडिकन् ] वारांख-ह्य (क्रम् परुष ४० ४०)। णिरिश्च सक [सि + सी] १ बारवैप करना रक्षित निस्पन्त (सुध ११)। विराध्यक्य मि जिरपंखी यथेक-शीव प्राप्तिका कला। २ घक विद्या। शिक्तिका निधेद्व (समा ११६) वत्त १४०)। ( X X X X ) I जिरिग्येश वि जिल्लीम वास्टि वासिना जिस्त्वरण वि [निस्त्वरण] १ प्रक्रि<del>क्टक</del> चरित्र (मौन)।२ तन्त्र (सुर १४ १७≈)। (कुमा)। जिस्तवस्य वि [निरप्रसम्] धपराव-स्मृत णिरिण वि निकाणी श्रष्ठ-पुष्ठ, उक्राय (मुपा ४२३) । (ठा३१ डी-- पद १२)। मिराधिकता ) केवी शिराधवनका 'विकास जिरियास एक [गम्] वयन करना। चित्रवेक्त । विद्यविक्ता वर्णव वंसार विश्वरिकासद (हे ४ १६२) । क्वार (मच ४१ पठम १ ४ १ जिरियास स्ट्रिप विषय । विस्ता । विस्तासह जियस वि [नियश] १ माटा-प्रेट हराग्र ( Y ( ux) ) (पक्षम ४४ १६३ वे ४ ४ ४ ४ छीव १६)। णिरियास बङ ितर् । पत्रावर करना। २ व. मारा का सप्तव (पर्द्व १ ३) । भावना । खिरियाला (हे ४ १७ । कुमा)। जियस नि **हि**े तुस्ता, इर (यर्)। जिरिजासिस कि [गत] स्वा ह्या वात विदार्शस वि [निदार[स] सामाभा-विक (दमा)। निरीह (धुना ६२१)। जिरिया सिश्व विष्ट विश्व विश्व (पूर्वा)। जिसस्य वि (निस्प्रस्य) निस्तार (कन्दा विधिणिज एक विष्] पैसना। शिरि १६२)। शिग्नइ (हे ४ १व६)। जिरासब वि [सिराअब] बा<del>यन एट्ट, कर्न-</del> जिरिजिक्क दि [पष्ट] वीसाश्या (१पा)। क्षान के कारखों से पीवा (पर्या २ ३)। पिरिचि वी [निरिवि] एक रानि का क्य जिराहर **को** जिरासंस (बला २ १६ ६)। (क्ष्म) । पिराह वि [दे] कियं किकारत (दे४ णिरीह वि निरीक्ष विष्काम वित्रक्ष \$w) | (कुमा३ ४२१) । जिरिम वि वि बच्छैपित वाकी प्रवा ह्या पिक् (बप) ब. निकित नामी (हे ४ ६४४ ( X X X ) I नुपाव६ः दश्याः व्यक्ति । विक्ति देखो जिस्ह (तुल्ज १ १२)। जिस्**म रेवी** जिस्**म** (विते ११ १, सूरा चिरिक वि कि नित बना हमा (दे४ ६ )। 3388) I जिरिगी वि रेको बीरंगी (बका)। जिस्कय [निर्दर्शकित] गीपैन किया प्रमा विरिषया वि[निरिग्यन] इन्कन-प्रीकृत (भव (इस ११ टी)। w () : विदेश एक [सि+६५] निरोप करना। विरिक्त एक [निर+ईश ] केशा. लि**र्वत्र** (धीप) । क्**म्म**ः विरुभगाज मस्तीकन करना । विशेषकाः, विशेषकाः जिरुम्भेत (सदश्यक्त)। श्रेष्ठ, जिर्द-ो

ग्रहत्ता (सूच १४२)। इ जिर्सियन्द्र णिरुद्धक्य (सूपा ४ ४० विसे ६ **८१)**। जिर्हमण न निराधनी बहरार समार (सम १ इ८ मणि)ः पिरुबंड वि [मिररकण्ड] इतएस पीट. निब्दमाह् (नार) । विकाय देवी विदिग्ध । विकाम (मर्) । णिस्वार वि [निस्वार] १ ज्यार-पूरी चोठनमें के लिए बीजों के निर्ममन से मर्भित (खादा १ ब---पच १४६) । २ पानाना बाले के भो रोका धना हो (परह १ १)। विस्वाहत वि [तिरुत्सय] जनव-प्रीत (बिवि १=१)। जिरुच्छाइ दि [निरुत्साइ] क्लाइ-हैन (दे १४ ११)। णिरुजानि [निरुज्ञ] १ सेन-धीरव । २ ग रोगका प्रवाद : सिलान ["रिप्ल] 🗫 प्रसार की करमगी (पद २ १)। णिरुक्रम नि [निरुधम] क्यन-**धी**स-यालकी (जब स दे१ सूपा देव४)। विरुट्राइ वि [निरुवाविम्] गर्हा क्लेसबा (बच १) ६ )। मिरुच वि [सिरुच्च] १ बच्च वर्षित (चच ७१)।२ न निस्ति स्र्वेट (क्स्ट्र)।६ व्यूप्पत्ति । (विसे २) **१६६)** । ४ वेगा शास-विदेश विसर्गे वेहिन द्वारों की मान्स हैं (बीप)। णिरुच वि जिरुक्त १ अनुक्त धक्कि इंट्रान्ट सिनु निबन्नो मानी पद्मस नजह व्यवसीय (विरि व४६)। २ जुलांच-नुक (विरि ११)। जिस्त किष हैं । जिस्त तरी पीक्ष (दे४ ६ पत्रम इस, इसा द्वमाः (क्ला व्यक्ति), 'राहनि ॥ सरह निवर्त्त पुरिती प्रेपरिकर कासे' (पदम ११, ६१)। ए वि विक्रिय चिन्ता चीत्त (नुमा)। भिरुक्त वि [निस्तृत] वितेष वर्ग**्र** संवय्य (ठम)। बिरुचम वि [निरुचम] सक्का भेड़ (नाव) जिरुक्तर वि [निरुक्तर] इतर-राह्य क्रिया **इधा, परमत (तूर १२ ६६)** । जिर्स्त से [निरुक्ति] भूति (विष्

**₹₹₹)** I

णिरचित्र वि [नैस्किक] मुलति के बनुसार बिसका धर्व किया जान वह राज्य (घरा)। गिरुचिय न [नेरुचिक] निर्रोक, पुलिव 'नो नत्यवि माखिति निस्तियं वेदसहस्यं' (संबोध—१०)। णिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेन्यासा सनुबर । औ रा (पएह १ ४)। णिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुमा (गुरावा ११)। २ माइट मान्दास्ति (सूम १२ १) । १ वृ मस्य की एक जाति (कप्प) । प्रसन्द वि [निरुद्ध] योहा संशिप्त (गूय १ 1 (\$5 VS णिसद्बन्ध है स्त्री जिस्स । जिस्स्मेत् 🦠 जिरुजि पुंची [दे] हुमगीर--नष्ट की माहर्षि वाला एक कन्दु (दे ४ २७)। जिस्वकित् रेको जिस्वकिट्ट (मग)। णिरुवद्यम वि [निरुपक्रम] १ को कम न हिमा जा सके वह (ब्रासुच्य) (बुर २ १६२ सुपार ४)। २ विप्रपद्धित सवाकः 'निय-निदमस्कम्पविद्यमभ्यस्तिसम्परितवको (सूपा ३६) । जिस्तवस्य वि [दे] सक्त नहीं किया हुआ (£ 4 75) 1 णिरविष्टरू वि [निरुपक्रिष्ठ] क्वेश-वीवत दुःबर्धीत (मन २६, ७)। णिरवक्टस वि [निरमक्तेश] शोक वावि होशी ॥ चहित (ठा ७) । जिस्त्रकल वि [निस्नाम] शब्द से न कहा या सके वह, धनिर्ववनीय (वर्गेर्स २४१) 18 11 जिस्त्रा वि [निरुपक] प्रविपाक (सम्बद्ध 22 ) णिरवगारि वि [निरुपकारिन्] क्वकार को स्त्री मान्नोनासा प्रस्तुपकार नहीं करनेनासा (बारम)। जिस्पागह नि [निस्पमह] ज्यन्यर नहीं क्लोबला (ठा४ ६)। चिरुपट्टाणि वि [निरुपस्कानिम्] निकामी शलगी (पाचा)। णिस्पद्व वि [निस्पद्व] अध्यव-रक्षित धावावा वर्षित (धीप) ।

किस्विक कि निरूपित र देवा हुआ (ध किरुवस वि [निरुपम] प्रसमान मसावारण १३ १३: मुपा ५२३)। २ मालोचना कर (धीपः यहा) । कारा हवा । ३ जिथे जिल प्रतिपादित (हे २ जिस्त्रपरिय वि [निरुपवरित] बास्तविक ४ ) । ४ विकसाया हुमा । ३ मनेपित (प्राक्)। वच्य (ग्राया १ ५) । णिहसूअ वि [निस्त्सुक] धक्य्य-पहित णिस्त्रवार वि जिस्पद्वार जनकार-पहित (गउड) १ (उप)। जिल्ह्य प्रे नित्रक्ष यमुवासमा-विशेष एक किरुमहोत्र कि [निरुपक्षेप] सेप-वर्जित ध-धरह ना विरेचन (ग्रामा १ १६) : शिस (कप्प): 'इप्रणुमिन खिन्ननेवा' (परुप णिरेय 🕅 [निरेजस ] निष्क्रम स्विर (x3 x5 णिरुवसमा वि निरुपसर्गे **१ ज्**पसर्गेन्**री**व (मग २४, ४)। जि**रयण वि निरंडन** निस्म स्पर उपहर-विक्त (सुपा २८७)। २ पुँमोक्ष (क्य धीप)। मुक्ति (पश्चिम्पर्ग २) । १ न. स्थार्थका जिरोजाम 🐧 [निरचनाम] नम्बा-रहित ध्यमाव (यव ३)। व्यवित स्वत्त (स्व)। णि **स्वद्यं वि [निस्पद्द**] १ ज्यवाद-परित ब्रद्धात (चग ७ १) । २ वजावट से शुम्य णिरोय वि [नीरोग] चेन-धहेत (मौप: ग्राया मञ्जितहरू (मुपा २६०)। t () t जिरुविह वि [मिरुपिव] माया-रहित जिरोध र् रि] भाषेत भाषा क्ला (तुपा निप्नपट (दसनि १) । जिल्लार सक ब्रिक्ट्री प्रदेख करना । जिल्ल णिरोषपार वि [निरुपद्मर] ज्यकार को मारक (हे ४ २ ६)। न्हीं माननेवाना (बीध ११६ घा)। णिस्वारिम वि [गृहीत] उपात्त गृहीत णिरोषपारि वि | निरुपद्मरिन | इसर देशो (चन)। णिख्वालेय वि [निरुपाद्धम्म] उपलब्ध णिरोबिश केवी णिक्सविम (पुरा ४३१ शूम्प (गठड) । मका)। णिरुवियम वि निरुद्धिमी बह ब-यहित णिये**ड् पू** [निरोघ] स्त्रबट, रोक्ना (अ (खाया १ १ — पत्र ६)। ४ १ औप पाम)। णिरुस्साइ वि [निरुत्साइ] चलाइ-हीन णिरोह्न वि [निरोधः विशेषन्त्रीताला (र्पमः)। णिरोब्ज व [निरोबन] स्कावट (पछा १ (सम १ ४१)। 1 (5 णिहम तक [नि + इपय्] १ विवार कर णिलंक पू वि । पत्रवाह, पीकसन होवत-दक्षना। २ विवेचन करना। ३ वैकाना। ४ पान भूकने का पान (रे ४ ३१)। विश्ववाना । ३ तमारा करना । निस्पेद जिस्रय र् [निस्रय] घर, स्थान, धान्मय (दे (महा) । वहः जिल्लींच निस्त्रमाण २ २ वा४२१ पत्रा)। (सर १६, २ ६८ कुत्र २७३) । संक्र विकायण व [निद्वायन] वसर्थ स्थान णिक्षिकण (वंशा =) । 🚁 णिक्षियस्य (पंचा ११)। श्रेष्ट निक्षितं (कुप्र २ ८)। (पिसे) । जिस्स्ट न [स्ट्रस्ट] यत क्याब (धुमा)। जिस्त्रवय न [निरूपण] १ विशोकन निरी-बाख (छप १३७) । २ वि कि<del>बा</del>सानेवासा णिकिम वेबी णिक्सेम । ग्रिलिमइ (पर )। क्यै जी (पडम ११ २२)। प्रिस्तित नीचे देखी। णिक्षणवा 🛍 [निक्षणा] निक्षणा (अप विक्रिक ) एक [नी + सी] १ मारचेव करता णिक्रीका ) मैंत्वा समे से नगलाः २ दूर 1( 93

करता । १ धन-क्षिप बाता । स्त्रिक्ट स्थिते-

यह (हे ४ ६६)। खिकिना (क्रम्)। बह्रा

णिस्माविक वि [निरूपित] पवेषित जिस

की बीन कराई नई हो नह (स १३१:७४२)।

(बस देन इ)।

*चित्रह सक*ित+वर्तम् निम्हत गरमः।

भैंडनेनामा (मुना) ।

(# × 224) :

(मा१२) ।

**9%)** 1

११७ २ )।

किर्कित पिकिज्ञमाय जिसीर्जन विसी-

ब्राप्ताच्य (ब्रम्यः सुद्ध २ २३ नुभा का ४७४)।

जिसीहर नि [निसेत्] धारलैय क्लोबालाः

जिलक रेको जिल्लीका । जिल्लका (क्रे ४

जि**हुक** एक [तु**र्**] गोहरत । रिग्नुकर

(६४ ७१७ टी) । २ प्रश्नसरामासा स्राप्त

१५ वर् )। यक्ष- विलुक्त (कृषा) ।

गिलुक्स वि कि निसीन र निकीन, क्य विद्या प्रया प्रव्यान द्वार विद्यादिक (छाना र वा है १४ श वा १४ दर ६ ए वना मूर(६४)।"२ श्रीम, प्रात्तक(निमे १)। मिलुक्कम न [निस्त्रवन] क्याना (द्वार २४२)। शिक्षंक दि देखो विस्तंत्र (१४ ६१)। णि**के**ण व [निर्संग्यन] रुपेर के किसी मदम्ब का केंद्रन (छन्छ वडि)। जिल्लाक देशों जेलनक (पि ६६)। जिल्लाम्बर्ग वि [निर्होक्षण] १ वृक्षे वेवपूष

गिक्क पि [निकेंक] सम्बन्धीय (हे प जिक्किम (ब्री [निर्वक्तिमन्] निर्धकरन केल्प्सी (दे ११६) । ची- सा (दे १ मिक्स पर्वाचन् । अञ्चलाः, विकासा । रिकास (हे ४ १ १)।

निष्ट्रचित्र नि [ **बह**सिव ] व्हाप्ट-कुछ, विकरित्य (कुमा) । णिक्सिम नि वि विर्वेत निक्त, निर्मात (4 x st): भिक्कास्थित वि [निर्माणियाँ] निर्माणियः, बद्धर क्लिना हुना (क्षावा ११) ---पप १९६३ सुर १९, २३१८ सहा) । पिक्किद् कर्ज [मिर्+क्रिक ] क्लिंग। रिक्रिक्का (धाका २३२३) । जिस्तुम तक [सूच् ] कोनगः लाग करना । किन्तु सर् (हे ४ ११) । जिस्स्रोडिक में [सूफ] अथ, बोना ह्या (इम) । निरम्भ च निर्मुत निर्मात (पिक २६)। ो

जिल्लुरह (हे ४ १२४) । जिल्लुरह (धाय (×) ( जिल्ह्यरण न चित्नों धेर निच्धेर (बुमा)। विक्लारिय कि **डि**श्रम ] करा **इ**मा विभिन्नद्वः 'धानश्चविश्वयमाद्वयमिस्न्दियद्विय-वंश्वरम् (पडम स ११८)। जिहेश वि [मिर्केप] नेप-पहित (विते १ ८१)। णिक्षेत्रम पू [निर्हीप%] राज भोगी (मापू 4)1

णिक्षेत्रण भ [निर्मोपन] १ यस को दूर करना (बब १)। २ वि निर्मेष सेप-रहित (बीक ११ य)। कास्त्र पृष्टिकाञ्जी सहस्रक विश्व समय नरक में एक भी भारक बीब क हो (मन)। जिल्ले कि कि निर्देशित १ क्य-रहित किमा क्षमा । र मिशकुमा सुट पदा क्षमा (मन)। निकेरण ग [निर्सेन्यन] **चर्**भर्तन पॉस्टन (बाना २ ३ २)। विद्योग । विनिर्धोगी बोब-पील प **બિલ્કોદ** કે <del>લુખ</del>ેં (યુતા દેવકા બો દરા व्यक्ति । जि**ष १** [नृष] शता, वरेष्ट (कृषध चम्रह Vo)। तमय वि "संविध्यन् सव संबन्धी धवनीय (बुगा ११६) ।

जिलाइ दे [तूपरि] जनर वेली (का ११ परम ६ ६)। मना पु भागी एक गानै, बाहिए चस्ता (प्रज्ञा ७३, १६) । भिषद्रम नि [निपविश्व] १ मोचे विरा द्वारा (बामा १ क)। २ एक अकार का किव (अ**प ४)।** जिनक्ष वि [नियविष्] गीने विजीमाना (#¥¥):≀ विवयम् ज वि] धवतारहः स्वारमः (वे 1 ( 4 4

अमो शिममानेद (निर १ १)।

णियका अक [ सिर् + पन्] निम्मा होना, नीपक्काः बनमा । शिक्षक्काः (यहः) । णिक्क प्रक [नि + सहू ] कैता । विकास (बंद ६)। यह विश्वसमान (स.६.६)।

निवद्वस्त्रमा (सूच **१**ी - २१) । क्षिपद् धक िन + प्रत् ] १ जिल होत. शीरमा, इत्मा । ९ इफ्ना । वक्क विवर्षन (नृपा १६२) । णिक्ट्र कि [नियुक्त] १ निवृत्त इटा इक्ट अवृक्ति-जिल्ला। २ त निवृत्ति (६ ४ ६९१)। निवरूण व [नियर्थन] १ निवृति व्यक्ति निरोप । २ बहा रस्ता कत होता ही वर स्थान (शाबा १ ए-पम ७१)। चित्रहिम वि [किस्तित] पक्र हमा, क्षेत्रह, खिद (काचा २ ४ २ ६)। णिवड बक [नि÷पत्त] तीचे पत्रक शीचे विका । शिवद ( वर पर्: यहा)। नक् विवर्धत विवरमान (च ६४: सुर ६ १२७)। ब्रोह्न व्यवहित्यन णियक्तिम (रच ३) महा) । चित्रहण व [निपत्तन] प्रय-व्यन (एव)। विविद्यक्ति कि [निपवित] श्री कि किए हुआ (वे १४ १४) वा २१४ कर इ.२६)। विवर्षित मि [सिपविदा] नीचे निरामस्य (नुपा प्रशः वक् )। जिबका स [नियान्य] १ बैठा हुया (स्प्) र्चना ६१८ ७३) । २ द्रं कामोरकन-स्मिन विसमें वर्ग मादि किसी प्रशार का स्थान न किया कहा हो। वह कानोच्छाँ (दान ३)। (वेश्यक पूं ["नियम्ब] विसर्ने **भार्त धीर** रीत क्यान फिला जान बढ़ काबोलार्न (यान भिषण्जुरिसम् **९** [भियण्योतस्तः] शाबोतसर्थः

विशेष विसर्वे धर्म ब्याल और युक्त व्यक्त किया काटा ही वह भागेरसर्व (प्राप L) ! णिवत्त देखो विवड्ड=नि+कृदः नक् णिवसमाण (४४ १)। **इ. जिवस**णील (गाट---शङ्क १ )। प्रदोः जिनतायेथि (कि इवर) र निवस केटो जिन्दू = निवस (वर्; क्यों) । विवस्तव देवो विवद्गुज (सहर दे <sup>२, ६</sup> कुमा)।

६ बर ) । संक्र जियादेशसा (जीव १) ।

णिवाहिय वि [निपातित] शीचे मिराया हमा

(मद्वा) ।

बासा. भीटनेबासा । २ लीटानेबाला बायस इरनेवामा (हे २ ३ प्राप्त)। पियत्ति भी [नियुक्ति] निवर्तन (उव)। णियस्तित्र वि [नियस्तित] रोका हुमा प्रति पिक (स १६४)। गिपत्तित वि [निर्वेचित] मिणारित 'निव त्तिया समयया' (स ४६३) । वियदि देवी गिवसि (सँग १)। विवस देवी विवयण (स ७६ )। जियय प्रक [ नि + पम् ] समाना चन्तर्भृत होता । सिवयंति (पव स४ थे) । णियय देखी णिश्वतः। शिक्सका शिक्एका (रप्पः ठा १ ४)। वह जियर्वत, जियसमाण (का १४२ टी मूर ४ ६६३ क्या)। जिपय पू निपात ने वे विरमा सब नतम (बुर १३ १६७)। जियरूज र् [नियरूज] बुध-बिरुप (दा ૧ ૧૧ટી) ા णियस बक [ नि + बस् ] निशम करना प्हनाः ग्लिबसइ (महा)। वर जियमंत (मुपा २२६)। हेक जिवसिड (मुपा 1 (138 णिबस्य न [निवसन] बज्र कपका (मनि १६६। यहाः पुरा २ )। जियमिय रि [नियमित] विसने निरास विमा हो वह (महा)। विवसिर वि [निवसिष्] निरास वरनेशना (गउड) । त्रियह सक [राम्] बाना वनन करता। श्चित्रहरू (हे ४ १६२)। विपद्ग सक [सरा ] भाषना, बनायन व एना । लियहर (हे ४ १०८)। विषद् तक [थियू] गीतना । छिराद् (हे ४ १०१। वर )। जियह पुन [नियह] समूह शांत जन्म (ने क अन्तर मुद्द के के कार्य के अन्तर है । "व्यवस्तर शा करनियदं (बचा १६२) । चियद पुरु **(रे**] स्तुष्ट वैत्रष्ट (रे४ २६) । िर्यद्र रि [नए] गए-प्राप्त (दुवा) । विश्रम्भ रि [पिप्ट] पीना हुवा (नुमा) । निवाद रि [नियानिन] नियोगा (धाणा)। \*

णिवाहिर वि [निपासियर] मीचे विसने-बासा (संग्)। कियान न [निपान] कुप वा शालाब के पास पशुधी क अस पीने के लिए बनावा हुया वत-पूर्व चर्छी (स ११२)। सास्य स्वै िशासा] पशुर्धो ४। पानी पित्ताने दा स्वान (महा)। जियाय देवी जिपाड । शिवायह (दूमा) । शिवाएमा (पि १३१)। जियाय वृद्धि स्वेद पर्वीना (दे४ १४) ल्द १२ =)। णिवास र्य [निपाद] १ पतन सक-गदम विरमा (बा २२२) मूपा १ ६) । २ संयोग संबन्धः 'दिद्विणियामा ससिमुहीए' (या १४८ उत्त २) वडड)। १ व प्र पादि व्याकरस प्रक्रिय सम्बंध (पएहर, २ पुपार ६)। ४ विमास (पिंड)। णिशाय नि नियात पान-प्रीत स्वर (परहर के स्प के अपके)। जिवायम व [निपातन] १ विचना निपा सन बाहुना (पएह १२)। २ व्याररण-प्रसिद्ध राज्य-निर्द्धि प्रश्नुदि मादि के विना विभाग विमे ही अधान्य राज्य की निव्यक्ति (निमे २१)। शियार सक [नि + वास्य ] निरास्त वरना निरेष बरनाः रोक्ना। श्रितादेद (बन' महा)। **बर्ग** जियारेंत (महा)। **बब्र** जियारा र्थन, जियारिज्ञमाण (नार—मुख्य ११४) १११)। इ जिमारियस्य, जिमारयस्य (नुपा ४८२३ महा) । णिपारम वि [नियारक] निरेच करनेपाना रीवनेशाया (पुर १ १२६, मुता ६३६) ।

गिवारण म [नियारण] १ विरेच वरावट

(मग ६,३३)। २ स्टीत माहि को रोहनेराला

रण बढ़ थारि न वे निपारणे धीव

र्ष्यप्रतालं विवर्ष (ब्रध्य २७) : ३ प्रि

विवारण करने गमा रोपने पामा **स्व**यसम्म-निवारणो एसो' (समि ६०)। णितास्य बेद्धो णियास्य (उर ११ थे)। णियारि वि [नियारिम्] निवारक प्रतियेगक। **की. "रिणी (महा)** 1 णिवारिय वि [निवारित] रोका हुमा निपित (यम प्रामु १६६)। णियास व निवासी १ निवसन प्रता । २ बात-स्वान हैरा (दूमाः महा) । जिश्रामि वि [निधासिन्] निपास करनवामा प्तनेपास (महा) । णिबिश्र देशो जिमिल = म्यस्त (स १२३)। जिबिट्ट देखी जिबद्द = न्यून (स्ए)। जिपिट वि [निविष्ट] १ स्पित वैठा हुमा (बद्धा)। २ ग्रासकः, शीन (चन)। विविद्धि कि निविष्टी सम्ब स्थात मृहीत (ता ४.२) । यदपदित्र सी "करपस्थिति" वैत शासूबी का एक तरह का माचार (ठा X, 9) 1 णिविड रेबो जिबिड (वर है १ २४)। जिविद्वित देशो जिविद्विय (एउट पि 34 ) ( णिविक्ति औ नियक्ति र निरक्ति करण प्रवृत्ति का समाद (विमे २०६८; स १६४)। २ बापस सीटमा अत्यावर्त्तन (मुपा ११२)। णिविद्वारि दि दे शैं शेर बळ हमा। २ नियम, हुनारा । ३ बकुट । ४ नुर्शेस निर्देय ( Y Ye) 1 विविद्य वि [निर्दित्त] विकिश् कान व परिव (संदू ११) । षिषिस थर िनि + पिन् ] बैटनाः का णि पर्सन (भा १२)। णिविम (घप) रेवी णिमिम (प्रींत)। णिविस्तर वि [ निवप् ] बैडनगना (सए)। णियुरम्यमाण वि श्युधमान । शीयमान जो भी वाया जाता ही भद्र (माना २ ११ ३)। णियुद्ध वि [निरूष्ट] बरना ह्या (क्षापा २ 4 8 A) 1 णिप्रदेख नरु [नि+पर्पेद] १ स्थाय बरना श्रीहरूमा २ हानि करना। बर् ियुद्दसम् (दुवः १ १) । संह निय दिश्यां (गुम १) ।

विकास सक [तिर + कर्सम्] स्थानाः

णिवदिद की निवृद्धि । वृद्धि का समाव

करना, पिछ करना । जिल्लीह (बहा) । (हार ३)। २ दिन भी ग्रोटाई (मन)। १३ १८)। धंड जिब्बचिक्रज, जिब्बचेक्रज (मध)। विक्रेमाबिय वि "निवेशिय" बैठामा ह्या जिब्रज रेनी गिउन (प्रन्तु ११)। णियुत्त देखो निवद् = निवृत्त (स १००)। (मद्यो । जिल्लाच सक [निर+यूचम्] केत णिक्य न निश्च **क**दि, परन-प्रान्त (वे ४ पिवदि हो निवृति परिवेष्टन (प्राक्त १२)। जनाना वर्तन करता। क्यक प्रिकाणि णितृद्ध देखो जिस्मृद्ध (गूप २, ७ ६c)। ४८३ पामी। क्यासाण (सर्)। णिबेध सक [नि +े बेदय ] १ सम्माव-पूर्वक जिस्त न जिल्ली समार के उत्तर का संपर्णन णिक्वच वि [निर्वच] निव्यन, **प्**रेड बारत करता याचे करता। २ वर्गल करता। fotfe tar) i निर्मित (यहा धीप)। ३ सामग्र करम्ब । धर्म विगेष्टकड (निच १) । णिस्वन **वि** १ क**ट्टर, विदः** १ व्याव जिञ्जल वि [निय**रमें] बनाने गोरब,** सम्ब शंक्र जिबेड्जन (म १९६)। केल गिबेयर्थ बद्धाना (१४४६)। (मकार)। (वैचा ११)। इट णियेयगीक्ष (च १२)। विकासकर नि वि विद्याद-वीत सव विकासन म निर्वर्सनी निमति, एका णिबेजरा वि [सिबेदक] सम्मल-पूर्वक ज्ञापन (इम १६७)। बनाबट (उप प्र १८१) । श्रिकरिनम् विकास वि | निवास हो । वस्थम-परिव करनेरामा धार्थी (मरा २६ )। ाहिगरियस की शिविकरियक्षी का (पि ६२)। जिनेजन कितिवेदमी १ सम्मान-पूर्व€ वनाने की किया (ठार. १ कर १३) ≀ विकाह देखो जिल्लाच = निर्+वत्तम्। चित्रक्रणय कारत, दिनम (पंचा १) निष् जिन्द्रज्ञा ) हो [तिर्देश्चेन्द्र] स्पर रेवी संब्र. विश्वविका (तार Y)। ११)। २ मेरेच वेवता को मणित सन मावि गिवनच्या (परश १४) प्रच १)। जिम्बद्ध (चर) देखी जिखद्ध (है भ ४२२ हि)। (पडम १२ १)। णिडवत्त्व वि [निर्वेत्तक] क्लिन करवेदानः जिम्बद्धा वि [निवर्तक] बनानेवासा, क्यां णिवेक्रणा की निवेदना केपर वेक्रो बनानेवाला (विसे ११४२) स दश्श है १ (बाब ४)। (हाबा १३)। पिंड पूँ [पिण्ड] n ) i णिक्वदिम केनी फिबटिस (वस ७ ३६)। देखा को चरित दश चाहि, मैंक्च (निष् पिक्वचि सी [सिर्वेचि] क्विचि विनिर्वेच जिम्बद्धिय कि [निर्वर्दित ] निर्माविद (विशेष २)। देखों विक्विति। बनाया द्वया (द्वाचा २ ४ २)। जिनेश्रय केसी जिस्त्राता (मुण १२३) स विक्वतिय वि [सिर्वेदित] निव्यक्ति, वनामा जिल्लाहरक सिची इत्त की बीएस। 284) i क्षुप्र (स ११६। पुर १४, २२१। वर्षि १ )। खिलाबद् ( यह )। जिबन्य रि [निबंदिय] सम्मात-पूर्वक शायित जिम्मचिव वि [निर्वृचिव] ग्रेनामर निर्म पिन्त्रह यक [भू] १ पुरुष होना पूरा (बहा भीव)। हमा (भग)। होग्य। १ शाह होन्य। शिम्पबद (हे ४ **जिबेद**ण्डा वि [सिमेद्द यह ] निवेदन विकासिक वि [के] वरिच्चक (के ४ रेट) ! 44) 1 करनेपाला (समि १३६)। णिस्वड देशी जिस्त्रछ⊏निर्+वड् (नुपा विकास वक [सिर्+शृ] साच रेला णियेस एक [ति÷ यशयू] स्वातना **छपरान्य होता। इ. पिक्स्यमि**ञ (व **१२२)** 1 बरना, बैटाना । खियेमा छित्रेशेष (सर्गः णिम्प्रक्षित्र वि [भूत] १ पृथम् जूत जो 1 (3 # बण)। धेह विश्वसङ्खा **থি**ৰদির্থ विश्वव वि [निर्वेद] १ क्यतान्त *राव-वार्ण* पुषा ह्या हो (से प )। २ शाही पूरा विश्वमिक्षण विश्वेसिका िवसिय (पुस १ ४२)। २ परिलाध परिणान-भो व्यक्त ह्याही (शूर **७**१४)। (बन ६२ मण महा क्या बहा)। 🕵 विष्यक्षित्र नि [निप्पन्न] निज्ञ क्षुत्र, निर्मुत मान्त (बद्धनि १)। त्रिवसियम्य (नूता ६६४) । (बाघ) सूर्युगलीय ग्रुष्टभूका य सन्मै णिक्षय वि मिल्र ही इंद-पौरंग निर्म गित्रम 🐧 [निरेश] 🐧 स्थान वापन इमीए शिम्बद्धियाँ (गुपा १२९) । चित्रत (पत्रम २ ०० उप २६४ टी)। (बार जापूर)। र प्रदेश (निपूध)। थिब्दडी दिवास, नंगः (देश २)। णिक्वयण म [निर्मेचन] १ निरक्ति, राप्टर्व ३ माताग-स्थान देश (बृह १) । नयन (भारत)। २ बत्तर, जवान (धारी)। जिञ्चल रि [निर्मण] शक्-चीत वर निश्म र्व निपरार्थित स्थान स्था प्रकारणी विजय विजासार का (शासा १ ६ सीप)। वे वि निवक्ति वालेबाला निवांबक्त जार्र धना (नृत ४६३)। क्षर्राञ्चयम्बद्धाः निम्मयस् णिश्वण्य अर्थ [निर्+वश्य ] श्रतावा वनियोगपीयो निरेगा न [निरेशन] १ स्थल बैठस (धम्ब व)। ररमः, प्रशंका करनाः २ देननाः वद्य (भाषा) । २ एक ही बरराजेशाने धरेक गृत् विष्यण्यंत (वेष ४४) कार ११ टी। णिब्यवणिक्र रेवा जिब्बय = तिर्+ र ! (एव ४)। नहा) । किरवा तक [क्श्रम ] दुवा वहना

णिक्याय व निर्मापी भी शाक मावि का

परिमाख (निष् १)। कहा भ्री किया

बाटक की एक संधि (सपा १७६ क्य १७५)।

शिमरद (हे ४ १)। मुका शिमरही ! णिक्यहण म [निर्वहण] निर्मात, यन्त (कमा)। कमें भक्ष तम्म निर्मारस्य दुस्य बंदुरजूएए दिमएए। शहाए पश्चिमं व जिम्म दुवर्श न संबन्ध (स ६ ६)। जिस्तर सर **विद**े देख गरना काटना । शिष्यक (हे ४ १२४)। णिक्यरण न [क्यन] दुःच-निवेदन (गा २४४)। जिस्वरिक्ष वि सिक्षी काटा हुया सरिवत (क्या)। पिक्वत क [ सुभ् ] दुःव को योहना। णिमलेड (हे ¥ ६२)। जिब्द्ध य**क** [सिर + पद्] निवस्त होना सिक्क होना बनना । शिष्यसङ् (हे ४ १२८)। क्रिक्वस देशो जिल्लस=शर्। जिल्लसइ (BY \$10 \$ 12) 1 चित्रवस देखो चित्रवड = मू । वह शिक्क्तंत णिक्वसमाण (वे १ ३६ ७ ४३)। क्राइवस्थित विदिश्य चन-बीठ प्रशीधे बोया ह्या । २ प्रविपत्तितः १ विचरित विमुक्त (वे ४ ११) । णिक्क्य एक [निर्+शापय्] ठेवा करना इस्ताना । पिष्णवेडि (स ४३३) । रिल्म्बनस् (कास)। वक णिक्ववंत (मुपा ६२६)। इ. (जटवियस्य (एपा २१. )। विकाधण न [निर्मापण] १ इस्ताना व्यन्त करता १: २ वि भाग्य करनेवाला, वाप की इम्प्रनेवाला (सुर ६ २६७)। पिठबनिज वि [निर्वापित] बुगाया हुमा ठंडा किया हुआ। (या ३१७ सूर २ ७४) । णिज्यास्थल [निर्+थया] १ निजना, निर्वाह करना, पार पकृता। २ शाजीविका थनाना। निरम्पहर (स १ ४८ वण्या ६) । कर्मे, स्त्रिन्दुन्दर (पि ६४१) । वद्ध- शिक्तवहंत (बा१२० कुप्र १३)। इ. निरुपद्विषक्य (कुछ ३७३)। णिक्स पर [यद्+ वद्] १ नारत

करना। २ क्रमर घटना। शिक्यहरू (वर्)।

૧ (ક્રફ णिक्या सक [ वि + सम् ] विधान करना । शिक्साइ (हे ४ १५१) । वह जिल्लाजीत (शेव ६)। णिज्वापाइस वि [निज्याघातिम] स्थानत चीरत स्थलना-चरित्र (पीप)। जिन्द्रामाय दि [निर्व्यापात] १ व्यापात-वर्जित (ए।बारे राभगः कया)। २ नः व्याचात वा संभाव (पर्ला २)। जिन्धपाया 🛍 [निर्क्यापाता] एक विचा-देशी (पडम ७ १४४)। णिक्याण प [निर्वाण] र ग्रॉक्ट मौधा निवृधि (विमे १६७३)। २ सूच चैन क्रान्ति ब्राप्त-निवृत्ति निज्ञणमणी निज्ञाले मुंबरि निस्त्रसर्वे नुसुद्धं (वय ७२८ टी पदम ४६ १६)। ६ इम्बना विध्यापन (साव ४)। ४ वि कुम्ब हुमाः 'वह दीदी खिचालों (विते ११६१ क्रुप्र ११)। १ पूँ पैरवत वर्ष में होनेवाले एक जिल्लीव का नाम (सम १२४)। णिष्याण व निर्वाणी इस्टि (इस १२ **%=)** 1 णिक्वाण न वि<u>} दुःच-</u>कवन (३ ४ ३६) । णिम्बाणि वु [नित्राजिम् ] सारतक्ये में मधीय क्लापियाी-काल में संजात एक जिल-देव (पथ ७) । जिम्बाणी की [निर्वाणी] सक्तम् श्री शान्तिमाथ की शासभन्तिनी (चींत १) १ )। णिज्याय वि निर्याण विशा ह्या व्यवीत (B \$4 \$4) 1 जिल्लाय वि [विकारत] १ विसने विकास किमादो बहु(कुमा)। ए धुक्तित निर्द्रुत (धे १६, २६)। णिठवास वि [निर्वात] नाषु-राहित (गागा ११ मीप)। णिक्यास्तिय वि [शाकित] इक्क किया हुसा (से १४ ५४)। जिम्मान केवो जिम्मान । शिल्लानेपि (स

एक वर्षत नी मोबन-नवा (ठा ४२)। जिल्लाहरण न कि विवाह, शारी (वे ४ णिक्यायहत्तम (शी) वि [निर्धापयित्क] ठेवा करीतामा (मि 🐛 )। णिक्वायण न [नियोपण] बुस्पना विष्यापन (यस ४)। विश्वायकान [निर्मापका] कुधना, ठंका करला उपशान्ति (यग्रः) । णिक्शयय वि [निर्मापक] धारा बुम्धनेतामा (सुध १ ७ ३)। जिञ्चाविय वि [निर्वापित] इंडा क्रिया हमा (लावा १ १) इस ६ १)। जिल्लासज व [निर्योसन] देश विश्वाता (स ११४ इम १४१)। णिष्यासणा 🛍 [निर्मासना] उत्तर देखी (परम ११ ४१)। जिल्लाह प्रतियादी १ निमाना पाए-प्राप्ति। २ भाजीविका जीवन सामग्री 'निस्वाई किपि दार्व व (सुपा ४८८)। णिक्वाहरा वि [निर्वाहक] निर्वाह करने-वासा (रमा)। विद्याहण न [निर्माहण ] १ निर्माह निधाना (सूपा ३१४)। २ जिल्लार करना (राव)। जिच्चाहिक वि [ निर्पाहित ] बरिवाहित विवाय हमा दुवाय हुना (हे ६ ४२)। पिक्वाहिल वि [निर्माधिक] ध्यावि छहर गीचेग (से ६ ४२)। मिवियक्षप्य देखो जिब्दियस्य (सम्म ६६) । जिब्बिकार वि [ निर्विकार ] विकार रहित (साध ६)। णिक्विड्रज वि [निर्विद्वतिक] १ प्रत बारि विक्रप्ति-जनक परानों से सक्रिय (और)। २ नः प्रत्यास्थान-विशेष विद्यमें वृत्त ग्रादि विद्य-तियों का स्थाप किया आता है (पन ४ पंचार)। णिकियानिका वि जितिविकरित्स फर प्राप्ति में शंका∹प्रीत्त (क्या वर्ष २)। जिक्किश्रीच्या न [निर्दिचिक्सम्म] एन माचि में सन्ध्र स मभार (अस २८)। ११२) । संब्रुः णिज्याधिकप (शिवा १) ।

जिब्बस्य ) वि [निर्विक्स्य] १ सन्देश धिकिनगण्य रहित नि चंत्रय (कुमा। गन्त २) । २ मेर-एदित (बस्प ३३) । फिक्तिगड्डम देखी जिक्तिइय (इंडीव १८)। णिक्षितप्यत न [निर्दिक्क्य रू ] श्रीत प्रशिव प्रस्यक्त शान-विश्वेष (वर्गल ११६)। र्जिक्सिराञ देखी गिक्टिइस (पर २)। जिक्किय वि [निर्विद्य] विक-खीत- वाक-वर्जित (सुपा १८७ सहा)। जिक्क्षित वि [निकिथम्त] विनाः-र्यातः र्मिवन्त (सुर ७ १२३)। जिब्बिक सक [निर्+ विद्] निवेंद पाना विरक्त होना । जिम्मिक्टैन्स (उप) । पिकिन्द्व नि निर्विध पूर्व (क्ट ११ १)। তিমিছ্ত ৰি [নিৰ্মুহ] <del>ত</del>নামিত *সানি*লিল্ল सकर्त (पिंड १७ )। जिक्कित कि कि जिल्हा के स्वर्थ (के ४ ६४)। जिब्बिट वि निर्वित्त जनपुक बारेक्ट परिपाणित (पास्य क्यु) । काइय न िशसिकी कैन साम में प्रतिशक्ति एक क्षपद्धका नारिव (स्प्यु: इक)। जिक्किका दि निर्दिणमी निर्देशभात विज (महा)। विकित्त वि [दे] से कर का हुआ (दे ४ \$2)1 शिक्षिकारित देवी ग्रिक्याचि । १ दनियम का साकार ब्रब्धेश्विय-विशेष (विसे २११४) ।

१ २ ३ १२)।

चीत (वर्ग १) ।

(रंख २) ।

. 100

चिकितम देती चिकित्रका (हर) ।

प्रान्ति में तंत्राका धवाव (शीप पत्रि)।

विचारता । निम्निक्य् (वतः ४ १६३१७) ।

जिक्किंद सक [निर्+िषद्] इला करना ।

शिम्ब्दिन्ब (सम १ २ व १२)।

णिविषयण वि [निर्विजन] १ मनुष्य-धीतः । जिम्बद्धिया हो [निर्दिषिक्षिसा] का-२ न एकान्तस्थम (युर १,४२)। णिक्किन पन निर् + विन्द्री पन्ती तथा पिक्किर वि दि विभट बेठा हुया धारिए-म्बरमाबाएँ (या ७२*व दि)* । जिब्बयम वि [मिर्वियम] विचन-पीच (छप पू १८३)। जिक्कित किन निर्विद्धम्य विकम्य-धील स्ट्रेम (सुपा २६६। भूम ६२) । जिब्बिक वि [निर्विकेट] विवेक-कृत्य (सूपा ३२३/३ नवह पुर च १=१)। जिब्बिस एक निर + विश्व ]धाव करना । निम्बरेका (कस्र) । वक्र जिक्क्सित (एव)। णिब्बिस सक [निर+विश्] अपमीप करना (पिंड १११ टी)। पिक्थिस वि [निर्विप] विच-पॉइट (बीप)। विविवसंक वि [निर्विशह] तंका-प्रीकृत निमेव (सुर १२, १६) । विक्किसमाण न [निर्विशमान] १ **वारिक** विशेष (ठा६ ४)। २ वि उस वारिवकी पम्बनेबाक्षा (ठा ६) । कारपटिड औ ["कर्म्पास्चवि] चारिच-विरोप की नर्गाच (कस्रो । शिक्यसय वि [निर्धेशक] अभो<del>व-व</del>र्ता (विष ११६)। णिक्तिसम वि [निर्विपय] १ विषयों की यमितापा से स्थित (बत १४)। २ धनचंद्र निर्मंत (पेचा १२) वप ६२१)। ३ क्या से बाहर किया हुमा निश्वको देशनिकाचे की तमा हुई हो बह (बुर ६ ३८ सुपा १६६)। ्णिभिषद्विद्व निर्मितिहास् विस्वन्यीहरू समाम पुरुष (धा १६ थी) । णिक्किसी की [निकिया] एक महीपकि (सी १)। णिक्यित हैसी णिठियर = निर्+िवर (पुध पिक्षिसंस वि [जिक्सप] १ विशेष-पहित. वयान सामाच्या (स.२६) सम्म १९८ प्रास् जिक्कितुर्युष वि [निर्मितुर्युप्स] प्रशाः **१०)।२ समिल को पूराव हो (के १६,** जिल्ली की [मिर्विष्टति] वप-विशेष (बंदोच गिकियमाग 🖪 [निर्दिभाग] विद्यान-परिव X(0) ( विस्तीय देशो चिक्किप्रज (संबोध १७) । जिल्लीस की मिनीसी पुत्र-परित्र विचका जिल्ला रेखी मिक्सिइम (संशेष १७ दुसर श्री (गीह ४६) ।

णिक्यूका नि [सियु त] नियुष्टि-बास (व १६६ कप्प)। णिब्युध् की [निर्वति] १ निर्वासः मोध मुक्ति (कूमा प्राप्तु १६४) । २ मन की स्थरनताः निर्माणता (तुर v st) । र सुब्द बु ब्य-निवृत्ति (यात्र ४)। ४ वैन शहुशे की एक शाबा (कप्प) । १ एक राजरच्य (कर १३६)। इट रि किटी फिलिंग्स (पएछ १) : क्लाय वि विस्तृ विश्वित का अपासक (वा ४२१)। विम्बुश्च्या 🛍 [निर्मृतिकरा] भगन शुमतिनाम की दीक्षा-तिनिका (विकार १९६)। जिम्बुड रेको पिम्बुअ (डुमा ध्यम)। जिल्लाह वि [निर्वत] प्रवित्त क्रिया ह्या (रह १ ६ ७)। विक्तुक केको जिस्कृ = मिनक्त् । वर्ष-णिक्तुक्रमाण (राव)। णिव्यवस्थ देशो जिन्नस्थ । वस जिन्नस्ट साज (सुक ६—पंच मे )। तक मिन्द्र-ब्ढेचा (तुम ५) । जिन्दुब्ह रि [तिन्दु ह] निर्दाहित, निबन हम्प (चा ३१) । पिम्बुच वेची जिबुच (वा १११)। विश्वय देवी विश्वयः = निवृत्त (स्व)। पिम्बृचि देवो पिम्बृचि (य वर्द)। पिम्बुव क्यो जिस्बम (बीस ६)। णिब्युदि देवी पिक्युप्त (ब्राइः )। जिब्बुब्स" देशो जिब्बह = विर् + वर् । विष्युद्ध नि [निक्य हाँ १ विश्वका निर्माह किया बना 🗑 बड़ । २ वटा, विदेश विभिन्न (माप्टराहे १ ४%)। ३ जिल्लो तिर्नाह दिवाही वह पार-प्राप्त (विवे ४४)।४ व्यक्त, परिद्रुष्ट (शे ४ ६२)। इ. बाहर निकासा ह्या, फिलारित -फिन्म्सा व करना वची यळप्यपोत्तनाथमा' (इप १३१ टी) । जिब्बुड कि [द] १ स्तन्त (१४ ६६)। नः नर ना पवित्र स्रोक्त (दे४ २६)। णिष्मृष्ट वि [निष्मृष्ट] विक्री क्षेत्र **वे** ज्यात कर बनावा हुया बन्न (दबनि र **(११)** ।

शिक्षेत्र पू [निर्देष] प्रृतिकी क्षणा (धम्मत १९६)। प्रिक्षेत्र पू [निर्देष] १ खेद विर्पेक (द्वमा प्र ६२)। २ संदार की निर्प्रेणता का धम कारण—निरुद्ध (ताल) करणा (उन ६-६)। गिक्षेत्रण न [निर्देष्तन] १ खेद वैदाय। २ वि वैदायसनका औं. भी (ठा ४ २)। गिक्षेत्र एक [निर्देष्तन] १ साथ करणा ध्यद करणा। २ वेदरा। १ बार्थमा। वह व्यवकाईत (विस् २०४४। धाना २,

व २)।
जिल्लास करू [ निर् + बेद्य ] स्थान
करणा। जिल्लासे (सुरुव २ १)।
जिल्लेड सक [ निर् + बेद्य ] मनवूरी
से बेहन करणा। जिल्लेडिक जिल्लेडेकस
(साला २ ३ २) पि ३ ४)।
जिल्लेड कि [ब] मान मेंसा (बे ४ २८)।
जिल्लासे की जिल्लेडस (सल २६, १)।

२ बळ्या बांबर (१ ४ १०)। जिल्लाह यह [तिर्+बेह् ] पूरताः स्टब्स् अरुता, सावित होता। खिलोक्कर (१ १ ७)। जिल्लोहिज वि [निर्वेष्टित] सर्वृद्धिः स्कृति-मुक्त (१ ११ ११)।

जिल्लोस वि [निर्देव] हेव-पीठ (वे १४, १६)।

प्रिकेस पुं [निर्देश] १ नाम प्राप्ति (का ४, २)। २ व्यापना "कम्माण कणियाणे कर्राश क्रातंत्रम् को लिएकेड (वण्ड १०)। निरुच्य (व्यापना व्यापना विक्रियाणे विक

जिल्लोडकर वि [निवासकर] निवासनीय बहुत करने बोग्य निमने सामक (माव ४)। जिल्लाक सक [क] बोच सं क्षांत्र को मितन करता। जिल्लोलत (है ४ ६९)।

णिस्बोसम न [करण] डोव से होठ वी अधिन करना (बुमा) ।

भिस्त देगो भिस्त (हुमा पटन १२ ८६) । भिस्त सक [नि+ अस्स ]स्थातन वरना । चित्रेद (सीप) ।

जिसीत कि [निसार 3] १ यात सुना हुमा (शासन) । १ याति का सबसाल प्रनात व्याहा शिवति तसग्रीक्षणायी प्रभाव केवल सारम् १ १ १ १ १ १ भा

णिसंस वि चिरांसी कर, विश्व (गुरा भ र है)। जिस्सार वे जिस्सी के क्यान स्वर्धि कि

े प्रसमा वृ [निसर्ग] १ स्वमाव प्रकृति (ठा ११ दुम १४०) । २ निसर्गन स्वाय (विसे) ।

जिसना वि [नैसर्ग] स्वताप ने होनेवासा स्वाताविक (नुगा ६४८) । जिसमा व [नैसर्ग] वाप्यक की वस्त

ाणसमा न [नसग] बायन्य का उप्ह स्वमाय से प्रमता (सूम २३३ १६)। ग्रिसिंगय वि[नेसिंगक]स्वासिक (सण्)।

णिसन्त पूर्वे क्यों णिसन्त्र मिसन्त्रे विवत्त स्वस्य (बन १)। जिसन्त्रा क्ये[निषया] र मापन (स्व ६)। २ क्योरतन बैठना (बन ४)। वैस्रो

जिसिक्या। जिसह वि [निस्पृष्ट] १ निकाला हुमा जिक ११६)। २ वक विवाहुमा (जामा ११—वक ११।

णिसद्ध कि [के] प्रश्चर, बहुत (बीप ८७)। जिसद्ध (बर) वि [नियण्य] वैद्ध हुवा (बर्ख)।

विसन्त श्रुं [नियय] र हरिष्यं केत से क्यार में सिवा एक पर्यंत (का २ ६)। र सवाम-स्थाय एक नामर, पाम-विमित्र (के ४ १)। त्र केत स्वाद (दुल ४)। प्र कार्यंत पा एक पुत्र (मिर १ ८ दूव ६०२)। प्र केत-पिरोटा। त्र मित्रम केत का प्रसार (दुला)। ० स्टार-पिरोटा। नियम पर्यंत का प्रकृत (कार (का २, ६)। पुत्र दुंदियाँ मुक्त पिरोट (का १, ६)। पुत्र दुंदियाँ मुक्त पिरोट (का १)।

जिसण्य वि [नियण्य] १ ध्यविष्ट, स्थित (या १ ८०११६६ उत्त २ )। २ कावीत्यर्थ का एक धेर (धार १)। व्यासण्य वि[निस्मेद्र] धंत्रा-रहित (स.६

|जनगर | पानसङ्गा स्वान्यहरू (से ६ १)। जिसस दि [दे] संदुर, संजेपनुषः (दे ४ १)।

जिसम देवो पिसण्य (वर एग्सा ११)। जिसम सक [ नि + समय] मुगना। वक जिसमेत (पावम)। वन्द्र जिसम्मेत (पाउम) संक्षः जिसमित्र, जिसम्म (गा वेणी वर्षः सवा पाया)।

जिसमात्र न [निशमन] धने खाइर्जन (हृ १ २९६, पटड)।

णिमम्म बरु [नि+पत्] १ बैठना। २ स्रोता शपन करना। शियम्मठ (वे ६ १७)। क्रेफ़ जिसम्मित्रं (वे ६, ४२)।

णिसर रेखो जिसिर क्ष्मकः निसरिक्सभाप (भव)। जिस्सक केको जिस्सक (सा ४ )।

णिसङ्घ देखो जिस्सङ्घ (बा ४ )। जिसङ्घ देखो जिनङ (इक)। जिसङ्घ देखो जिस्सङ्घ (यर्)।

जिसह वह [ति + सह् ] वहन करना। जिसह (प्राष्ट्र (प्राष्ट्र ४२)।

विसा की [निशा] धन्तकारवानी नरक-धूमि (नूच १ १ १ १)। णिसा [निशा] १ एवि एत (हुमा प्रासू

११)। र'पीवने का वन्यर, रिलीट, विस्तर (क्या)। अर पू किरो कर चौर हि रे द का )। अर पू किरो कर चौर हि रे द का )। अर पू किरो विस्तर विस्तर के वार रहा। अरह पू किरान्त के वार रहा। अरह पू किरान्त विस्तर के रहा। नाह पू किरान्त किरान्त के विस्तर के किरान्त के किरान्त के विस्तर के किरान्त के विस्तर के किरान्त कर स्तार कर स्तार के किरान्त कर स्तार के किरान्त कर स्तार के किरान कर स्तार कर स्तार कर स्तार कर स्तार कर स्तार के किरान कर स्तार कर

सोहा (उमा) । यह पूं ["पछि] चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा (गडर) । देशो जिस्सि । जिसास वक [ नि + शासम्] सान पर बहाना पेनाना, सोस्छ करना । संहा निसा

शिक्रम (स १४६)। पिसाम म [निसाम] शल, एक प्रकार का परवर, जिल्ल पर हरिवार तेंग किया नाता है (जबक परा २०)।

है (बढर मुता २८)। जिसाजिय नि [निशाजित] राल रिया हुया, पेनावा हुया, तारख हिया हुया, पेना

बारसर, नुशैना (तुथ १६)। विस्तात देवी जिसमा। जितानेर (नहा)। नक्ष- विसामेंत (तुर ३ ७८)। संह जिसमिकत विसामिता (महा उत्त १)।

भृति बस्यवन-स्थान (शाबा १ २,२)।

यिमामिक मि [में निस्मित] १ भूतः ग्राकस्थित (दे४ २० मा२१)। २ उप समित स्थाना हुया । ३ सियटाया हुया, संकोषिक 'मल्हामियो 'स्याबोयो' ( ध 1 (278 जिसामिर वि [ निध्यस्ति ] गुल्लेकाला (क्ला/1 जिसाय वि दि | प्रमुख (रे Y ११)।

णिसामण देवी जिसमण (पुरा १६)।

818

मिर्यस (के ६, ४७) ।

विसाय नि [मिछात] राज विना ह्या रीस्थ (बाद) । विसाय र् [नियार] १ मध्यम्य एक प्राचीन बावि (वे ४ ३३) । २ स्वर-विकेप (ठा ७)। जिसादत वि [नियाचान्त] तीव्छ नार बल्दा (ग्राम)। जिसास **एक [निर + बा**सय्] निजनाड

शक्तम् । कः जिस्सासपेत (पत्रन ६१ 1 (80 जिसास 🔄 जीसास (पॅन)। णिसि<sup>\*</sup> केबो जिसा (दे १ = ७२) यह

हुर १ २७) । पास्क्रम 🖠 िपास्कर्ने ध्र<del>श्व-विरो</del>द (स्मि)। सत व विभक्त शक्तिमोजन (ग्रीव ७४७)। अ्ट्व ग [ मुक्त] एति नोबन (मुना ४६१) । णिसिज क्यों जिसीज खिवियर ( धए क्य) । संक्र विजनिवस्ता (क्य) । विसिन्न वि [तिशिव] कान विवा ह्या-

रीपश (हे १, ४६ महत्त्व है ४ ११ )। जिस्सिक सक [ मि + सिन् ] प्रजेप करमा, बलता। संक्र-। लसिक्टियं (भाषा)। पिसिज्ञा वेची ग्रिसका (कम धन वर क्ष १, १) । ६ क्याच्य साबुधीका स्थान (वंच ४) ६ विशिमस्माण देवी जिसेह = नि + निष् । पिसिष्ठ वि [सिस्छ] १ वस्र किनाता इस्स (मास ( )। २ क्स अक्स (बाक्)। ६ भनुभाव (शृह १) । ४ मनामा हुना।

हिन बायनहराई ... प्रमी निही चितिह

क्वरादेश (का ६ ६ ही)।

(बचा १२)। विदिसय वि [स्थरन] स्वावित (वर्ष ७६)। जिसियण न [निपन्न] क्यनसन (पन) । विसिर सक [ नि + सूज् ] t बाहर निका-

सना। ५ देशा त्याग करना । ६ करना । शिक्तिक (भास १८ भन) 'विकासकारा । निविर्दित के न वंबे हैथि हु पाविति निम्बार्स (बुर १३ २३४) । कमें निधिरिण्याह निशिरिक्कर् (विशे १४७) । वहः निशिरिष (रि ए३३)। अवहः निसिरिज्यभाण (पि **१११)। संक्र**िणिमिरिचा (पि २१४)। प्रबंध निविधार्वेति (वि २३%)। जिसिरण न [निसर्जन] १ जिलाएए (अस ए) । २ स्थाप (खामा १ १६) । चिसिरणया रे पी [निसर्जना] १ व्याप जिसिरणा रेशन (माचा २ ११)। २ निस्धारण निम्बाधन (मर्य) ।

जिसील घक [नि + पब्] बैठना । शिवीधइ (भग)। बहुः विसीशंत जिसीशमाण (जन१३६ सूच ११२)। सङ णिशीवचा (क्या) । हेइ- जिसीवचप (क्स)। इ. णिसोइयम्ब (खाद्य १ १) विसीक्षण व [ निपदन ] क्लेक्न बैक्ना (क्ष्य २६४ थी स १४)। णिसी**आवण न** [निपावन] बैठाना (क्स ४ ९१ थै) । णिसीक क्यो जिसीक् = निर्धाप (के १: २१६)

क्या)। जिसीच्य देखो जिसीमय (सीप)। जिसीह कु [जिसीय] १ मध्य शाम (ह १ २१६३ कुमा) । २ प्रकाश का सम्राव (निद् १ व म बैल बागम-प्रम्य निरोप (शृथि)। णिसीक्ष वं शिक्तिक्षी जलग पुरूप अंक शतुष्य (कृमा) । जिसीहिक मि [नैशीजिक] मिन में निए बाना बना है ऐसा नहीं जाना हुआ और नारि पदार्न (शिष्ठ ६६६)।

विसीवित्रा सी मिवेशिकी र शक्यक्ति

पत्र-सूमि स्थापत-मूमि (सम्बर )। २

केले को पत्ता (एन ६३)।

ए और में समय के लिए ज्यात स्वान (का १४ १ )। ३ शानायम् तुन वा एन द्यसम्म (साचा२२२)। विस्तीहिया वर्ष [नेपभिकी] १ सामान-मूमि (शम ४)। २ वाप-विद्याना स्त्रान (पडि हुमा)। १ व्यापारान्तर के निर्मेश स शासार (अ. १.)। देशो जिसेप्रियाः।

जिसीहिमों भी [निशीयिनी] धीर ध (धर ६ १२७) । नाइ १ [नाव] स्टब्स (द्वमा) । णिसुझ सि [दे निष्टुत] पूरः मार्कास्त (8 x 50 84 1 550 5 350 मका पत्मी। चिसुंद र् [निसुन्द] चवल का एक पुरू (क्ल्ब ६६ २६)। जिल्लंभ सक [ नि + शुम्भ ] बार सक्य व्यापादन करना । कवहर, जिसुंभीत निप्तु-कर्मत (ते ६, ६६) (४ के ति १ वर)।

षिश्चंम दं [निशुन्ध] १ स्तनात-**सार ए**न रामाः एक प्रतिमानुसेन (गडम ६, १६६) एव २११) । २ केल-विशेष (पिष) । जि**र्द्रमण व [निश्**रम्मत] १ म**र्व्य, जानार**, विकास । २ वि मार कालनेकला (सूच १ 2, 2) 1 णिसुंमा की [मिझुन्मा] स्वनाय-स्थाद एक रकाखी (दामा २ इक)। चिसुमिय वि [तिश्वम्मित] निपारित 🖛

पारित (सुपा ४६ )। } वि [के] कार केवी (है Y **मिस** जिस्**हिम** र १ । श र जिसुब देशो जिसुब = नद् । निमुख्य (पर्)। जिस्**बद्ध के**ने जिस्सह (हे ४ १६४ डि.)। विसुद्ध सक [नम्] बार दे भावन्य हैत्वर तीचे नमना 'कुनना। रित्युवद (हे ४ १६०)। जिसुड तक [नि + द्वान्स्] बारनाः नार कर विरामा । क्यक विस्ववित्रांत (स । थि पुरिष्ठ मि [सर्च] भार से नमा हुय (पास)।

विसुब्रिक कि [मिद्युम्भित] निपारित (ह

28 48)1

सम्बद्ध (भव) ।

et 1, y2) |

(प्राचने ।

जिब्रचण व [तिथ्रचत] कर्म राशिक

शिवर थक सि+क्री पल्यन कर्य

जिहर यह श्रित + क्रन्द निस्त्राना । विस्प

करमा । शिक्षम्यद्र (हे Y १६२) ।

शिक्तालगा । शिरसारक (क्रथ १३४) । पिस्सार ) वि िति सार े १ सार-शिव जिस्सारग निरक्क (बल नुब १ ७ भाषा) । २ वीर्ल, पुराना (भाषा) । णिस्सारम नि [निसारक] निकालनेवाधा

(सप २६ टी)। णिस्सारिय वि [निन्सारित] १ निकाना हमा। २ भ्यावित भ्रष्ट किया हवा (स्थ t (v) 1 णिस्सास प्र [निन्धास] विज्ञात गीपा

रदास (बर्ग) । २ शाय-मान विशेष (४७) । ३ प्राणम्बाय, प्रस्कास (प्राप्तो । जिस्साद्वार वि [ मिल्लाबार ] विरावाद धनम्बन-पील (क्ख) ।

णिसिंग दि जिञ्जू नियम् निवास 121) 1 पिस्तिषिय न [ति:शिक्कित] सम्बद्ध राज्य विशेष (विदे १ १)। गिरिंसच प्रक [निर + सिच] प्रकेप करता रामाचा चेंकमा । वक्र जिस्सिकारण (धन)। संद्र फिस्सिचिया (वस १, १)। णिस्सिणेड् वि [सिन्स्तेड] स्टेड-प्रीट (वि

8x )1 जिस्सिय नि [निकित् ] १ वाचित सन्बन्तित (स. १ चल ६०)। २ सरस्त्री मनुरकः तस्त्रीन (सूम १ १ १) इस ६, २)। ६ न राय बार्सीक (ठा ६ २)। गिरिसम व [निमित्त] १ निमय है बस (तुम २, ६, २३) । २ व्यवसी समी (**नव** १) ।

जिस्सिव वि [ निःस्त ] विवेद निर्मात (कास ३४)। जिल्लीस है ि निज्ञीस ने स्थापार-प्रोत दु≍शीच (पक्य रुववांका ३ २)। णिस्त्य वि [निःशुक्त] श्रेवेत विश्ववद्या (बा १२)। जिस्सेमा स्था जिसेमा (ना १२७) । चिरसेण की [मि:भेजि] शीवी (पर्णा १

१ पायो । जिस्सवसंग [निजेयसं] १ कव्याल म धेव (अ.४.४: शाना १ ॥)।

णिस्सेवसिय वि निःकेवसिकी समस्य. मोध्याणीं (मध १४)। विक्रांचि देवी विश्वचि (धन)। जिह्नम एक [सि+हरम] बागा कर णिस्सेस वि निःशेषी धर्म सम्ब (छार ।। जिह वि [निम] १ समान, शुरू, पहरा (से जिह्नच वि [निहत्त] मा**रा ह्रया** (बा ११०० र प्रकाण रहेका है र प्रशेष रूप णिह्य वि [सिट्यात] यावा ह्या (स ४१६)।

ग्रस्यक्य प्रकृति (जल =)।

महाला क्याचा भ्रम्म (पास) । पिड पि निडी र मानाची क्यदी (सब र ६)। र पैरित (तय रंश र)। ३ थ. यावात-स्वान (सुम १ ४, ५)। णिइ पि स्थित । समै स्व-प्रक (प्राचा)। णिशंतक्य केली जिल्ला = शि + हर 1 जिइंस र् [निपर्य] वर्षेश (वहर) । णिश्रंसण म निवर्षण वर्षश रवह शि %. ४६३ गवह) । भिरुद् <u>द</u> य, १ **वृद्ध र र,** दुक्क करके (दाजा)।

२ स्वापन कर (शासा १ १६)। णियद्व वि निष्युष्टी विकादका (के.स. (ww) णिइण एक [नि+इम् ] १ व्हित करता माप्ताः २ केंग्याः विक्रमानि (प्राप ९६२)। विम्हलाहि (क्य)। चुका— खिव्यां (धाना) । नहः निक्र्णंत (स्त्रा) । **एक जिह्निया** (पि १०२) । क जिह्नेतस्य (पतम १, १७)। णिइप्प एक [नि + लान] भारता । श्विपुर्वत

वस वस्तुविकारियाँ (वस्त्वा ११ )। हेक. 'बोरो कर्न निष्कृणि चम् बा**रडो'** (महा) । पिइण न [दे] दून डीए, ज़िनास (दे ४ 24) 1 पिक्षण व जियमी १ मध्या विकास (पाध्य भी ४१)। २ द्रं रावसा का स्कास्थ (पडम १६, ३२)। जिक्क्ष्मण न [सिक्न्सन ] निकृषि भारता (मझास १९६)।

जिद्दाजिम वि [मिह्य] सारा हुया (तुना १६ । स्या) । जिंदस यक [नियसम्] कर्म को निविष क्य से बाबना। भूका श्रिहरिंग्यु (स्त्र)।

वर्षे शिहसेस्वीव (भग)।

(पर)। णिहर सक [निर्+ सृ] बहर विकास।

विक्रप्र (वर )। णिकरण देखी चीहरण (ग्रामा १ २-यय बदी। जिह्न देवी जिह्न । जिह्न (फट) <sup>हि</sup> 82 N) 1

णिह्य नि [दे] मुक्त सोसा <u>स्था</u> (वर्)। पिक्रच पै नियही समूह (वर्.)। जिश्च सङ [ति + पूर्व ] विद्या। स्टब्स पिइसिकर्ण (४४)। जिइस दू [निक्य] १ क्यप्ट्रक करीये क परवर (पाम)। २ कडीटी परकी वाटी रेवा(देर ेर ६८ २६ ऋज)। णिहरा प्र तिमयी वर्षेत स्वरं है 1 (## जिल्ह्स पुंदि | बल्लीक सर्वस्राप्त का स्मि ( Y 22) 1 १ ३वा १९१ मञ्जा वच्या ११ )। 24 ) (

जिल्लासण न [निवर्षय] वर्षण रक्त (है ८ विवासिय वि [निवर्षित] विका हमा (क्वा जिल्लाकी [निक्षा] मात्रा कपट (सूर्घ १ ×)। थिहा सक [नि + मा] स्वापना करता। मिहेक (च ७३ )। क्यक विदिय्येत (व च, १७) । संद्र फिदास (तुस १ ७) । मिद्दासक [नि+इत] स्वाप करमा । स्वर्थ-णिश्चम (चम १ ११)। , यत्र [ दशः ] केवल्यः । शिक्सः ६ विहामा | सिहामक ( गर् )।

पिद्वाप न [निभान] यह स्थान वहाँ पर | वन सावि याका गया हा श्वदामा मएकार (क्या गा ११४ गडर)। जिहाय पुंदि] १ स्वेद,परीना (१४ ४१)। २ समूह जल्दा (दे४ ४३, से ४ ३८) स ४४७ मंत्रिः पाद्यः गढळ सुर ३ २३१)। जिहाय र् [निषात] धाषात बास्त्यसन (से १३८७ महा)।

जिहाय देवो जिहा = नि÷ वा नि÷ हा। जिहार पू [निहाद] सम्पक्त राज्य (पुण ¥ 4) 1

जिहार दू [निहार] निर्वेश (परह १ 🛭 क्ष दो ।

णिहारिम न [निर्होरिम] विवके मृतक शरीर की बाहर निकासकर शंस्कार किया बाय तसका मरल (मग)। २ वि दूर वाले-बाला दूर एक फैननेवाला (पराह २ ४)। থিৱাত বৈটা নিমাল। ভিয়াইছি (র १ ) । यद्भ-जिहालीत थिहासर्थत (का ६४८ दी ६८६ दी)। संक्र जिहासाई (नच्दर)। हा जिहासेयब्द (उप १ ७)।

शिहासमान [निभासन] निएवश ववसोकन (क्षा इ. ७२ सुर ११ १२) सुवा २३)। विकासिक वि िनिमाविक विविधिक

(पाधा सः १)। जिहि नि [निधि] १ बनाना मेबार (शाया १ १६)। २ वन सावि से करा श्या पाव। कि दे हैंसे वे देश का मा की मान्त्रीर्थ छिद्धि निम्न सन्ये एम्पं व समस्पार्श व (मा १२६)। ३ पक्रमची चना की संपत्ति विदेव नैसर्प मादि नव निष्य (ठा ६) । ैनाह र् [ैनाय] हुवेर, कनेश (पाध) । णिहि पूंची [निधि] चयातार वन दिन का

क्यवास (संबोध ६०) ।

पिदिश वि [निहित] स्वाधित (हे २ ११) য়য়)।

जिहिष्ण वि [निर्मिश्न] विदारित (यण्ड 1 (35 पिदिच **वेको** पिदिम (शा १६१३ काम

र शक्ता)। चिद्दिष्वंत देवो निहा = नि+शा। जिहिस वि [निशिष्ठ] सब सकत (धन्द्र १ ग्रास ११)।

जिद्विय देशो जिद्दिश (पुत्र २, ४१)। णिही की दि वनस्परि-विधेप (चन)। णिहीण वि [निहीन] स्पून (क्रूप्र ४१४)। पिश्रीण वि [निश्रीन] तुम्ब, बराव हराका

सार 'धरिय मित्रीयो क्रि कि चामनिर्वपाएँ तुज्य ( ध्यू ७२८ टी)।

णिह की [स्तिह] धीयधि-विशेष (बीव १)। णिहरू वि [निभूत] १ धन प्रमदन- प्रिसा इया (ते ११ १६, यहा)। २ विमीत समुद्रत (से ४ १६) । ३ मन्द्र, चीमा (पास सङ्गा)। ४ मिक्क स्विर (उत्तरेश)। ३ घर्षमन्तः 🤚 संप्रमर्शन्त (रस ६) । ६ शृत चारा क्या हुवा। ७ सिर्वनः एकान्त । य प्रस्त होने के निए व्यस्थित (हे १ १६१)। ड उपरान्त

(पएस् २, ३)। णिहुअ वि [वे] १ स्थानार-परित अनुसूक, निर्देश (दे४ ३ से ४१ शूध १ व बृद्ध है) । २ तृष्णीक, मीन (देथ प्रा बुर ११ ८४)। ६ त पुरत मैधून (१४ प्रथम्)।

जिह्नसम बेको जिह्नसम (स ४८३)। णिहुआ की दि बामिता संमोप के लिए प्राणिक की (वे ४ २६)।

णिहुण न [दे] व्यापार, बन्ना (दे ५। २६)। णिहुक्त वि वि निमान, इन्य हमा (प्रजम

1 (45) 9 5 जिहुरियमगा **धी [वे]** वनस्पति-विशेष (परास १---पत्र ६६)।

जिहुन सक [कामस्] संमोप का प्रमिताप करमा । शिक्षमद् (है ४ ४४) ।

णिष्ट्रबण १ [निध्यन] मुक्त संगोप (श्रम् कार १६४): पिहुबल्युंवियलाहित्वा (488)1

णिहुळ न कि ] १ पूरत नैपून (१ ४ २६)। २ नि यक्तिक्ष्मर (निसे न्दर्भ) । देखी जीहरा।

णिइंडण न [दे] १ वृद्ध वद, मकान (१ ४ रेश है २, १७४० पुरा पर ७२० दी स १८ ३ पायः यथि)। २ जपन सी के कमर के नीचे का मान (देश ११)।

णिहो स [न्यग्] तीचे (पूप १ ४,१ ४)। णिहोड सक [नि + वास्य ] निवारण करना नियेश करना।

शिहोबद (ह ४ २२) । वह शिद्दोबंत (इमा) ।

णिहोड सक [पाठयू ] १ विराना । २ नारा करना । शिक्षोध्य (हे ४ २२) ।

णिहोडिय वि [पातित] १ गिरामा ह्या (रीस १)। २ विमासित (बन ११७ टी)। यी सक [ गम्] बानाः ममन करनाः। छोद

(हे ४ १६२ वा ४६ म) मनि एोडिन (था ७४१)। बड़ णिंत, णेंव (से ३ २, गतक गा ६३४- छप २६४ दी गा ४२ ) ।

संक्र णित्या, नीडं (गडक विसे २२२)। व्यक्ति | १ चे जना। २ जनना। १ शन कपनाः वतनाना । ग्रेष्टः ग्रमद् ( हे ४

३१७- विसे **१**१४) । यह जेंत (मा ४ ३ कुमा)। क्ष्मक णिज्यंत गीक्षमाण (स ६ बर का से व = १३ बुना ४७६)। संह णाक्ष थेउं, जेडबाज जेड्य (नर---मुन्द १६४' हुमा पर्या १७२)। हेक

णेडं (गा ४६७ हुमा) । इ. गोझ, गझब्ब (पतम ११६ १७ मा ६६६)। प्रयो खेमाबद् (सए) ।

णीलक्ष वि 📳 समीचीत, मुन्दर (पिंप) । भीकारण न दि] श्रीन-बटी बनी रखन ना ब्रोटा कवर (रे ४ ४३)। भीइ की [नीति] १ म्याय चित्र व्यवहार,

न्यास्य व्यवहार (उत्र १=६ महा)। २ नय बल्यु के एक वर्ग की मुक्तप्रधमा माननगत्ता मत (का ७) । सत्य न [ैशास्त्र] मीति-प्रविपादक शास्त्र (सूर ६ ६६) सूपा ६४ ३

पीका की [नाका] दुस्या शहर, सार्पण (जुमा) ।

थीरसय वि [निअन्त] निवित्त संपूर्ण 'नय गीवनगरपाणं तीस्त राष्ट्रण मुत्तस्त' (जिनार

र्णाथक व [नाचैस् ] १ दीचे, ग्रा (है १ १६४) । २ वि गीना, प्रव-स्थित (रूपा) १

जी**ब्रुड वेदो** जि**रुद्ध (स्तरि)** ।

योजह रेवो भिन्जह = रे. निर्देश (धन) । मीड देनों पिट्व (ग १२ हे१ १६)। मीप तक शियु जिला पमन करना। फील्ड (हे ४ १६२) । छोर्खित (हुमा) । र्भाभ सक् [नी] १ मैं कालाः २ वाहर ले काम बाज्य निशासना भारमंद्रास्त्र ग्रीप्टेड, क्सार क्षा अन्दर्भ (जल ११ २२) । प्रवि मौलेपिए (महा) । यह जीजेमान । करह मीणिग्रहर यीजिस्बमाम (वि ६२ धावा)। वेड जीगऊन जाजवा (महा उम्म) । पाणाविव वि [नायिन] दूनरे डारा ने भावा गया स्रम्य हारा सानीत (उत्र १३६ मीजिज दि शिद] पया हमा (पत्थ) । मीजिज विनिधी है ने जाय क्या (का **५१७ टी मुपा २८१) । २ नारप निकासा** ह्या (ए।वा १ ४) 'क्वरप्यविद्वयुरिकाए मीणियी पंतपन्यये (मुपा ३=१) ) मीजिमा ही [नीजिम] चतुरिश्रव हन्द्र मी एक बाति (जीन १) । थीस दें मिया १ दूध-विशेष वदेव वा वेड़ । २ म कम-विकेष (बन १, २ २१)। भीम दू [मीप] इत-विशेष वदम्ब वा येह (बदल १ बीता है १ वर्ष) । मीमम दि [निर्मेस] तदक-धील (पण्ड 1 (3 ) क्षीमी केतो शीभा (दुमा वह ) : शाय रि (नीच) १ मीच यक्त क्याय (दरा नुसार ७)। २ रि स**म्हल** (नुस ६) । । । । । । व िग्रेप्र हिल्ला भोगः २ वर्ष-रिरोप, वी सुद्र जाति य जन्म होते शाबाएए है (बार्र ४ बाबा)। ३ ति नीय नीय में प्रभाव (बूच १, १)। र्व्याय रि मिं.नी ने बाया नया (बाचा उप 711 () ( सीय रेगो जिंदय = तित्व (दव) ।

(Le ars) 1

(इस ११६)।

ा रंगमा क्षे [भीषंगमा] नही

र्पार म नीर किल पानी (मूमा प्रामु ६७)। ।नद्वि प्र<sup>कृ</sup>िनिषि | समूत्र शायर (गुपा र १)। "सहत्र दिह्ये कमत्र (ती १)। बाह पूँ विशह] येथ धन्न (तप पू ६२)। **दर ५ [ शृह]समूत्र सागर(त्य द १११)।** विष् भियो समुद्र (इस १८६ ही)। ोकर पुंिकर] समुद्र (उप १३ मी)। जीरंगा की दि नीरङ्गी किर का बनपुण्डन विध्येशक कुँक्ट (के ४ वे१ याचा) । पी∜न सक [मक्आ ] तोइना थ-कना। शीरंबद (हे ४ १ ६) । णीरंजिञ वि [संग्न] तेमा ह्या तिस (**ब**वा) । पी**रंग वि [**भीरत्म] विस्तार (बप्) । र्धारण न [व्] वास कारा विमन्नी पंजनमार्थ मीरिवयमीच्यादर्वदुर्ख' (बुबा ६ १) । जीरय वि निरंशस रिश्वी-रहित निर्मेश युका विदेश कन्यार कोरको' (पुर १६: वस्त वेवे समार्थेण पत्रमा १ वे १व४ कार्य ११९) । २ व्रु अधानेत्रकोच का एक प्रस्तक (ब ६)। यीरव सक [सा + शिप्] धा<del>डो</del>प शरवा। कीयम (द्वेष १४१)। जीश्**व तक [ गुजुङ् ] बाले** नी चयाला। र्णीरवह (हे ४ १) । मुक्त स्त्रीरनीय (क्वा)। जीरत नि [आसप३] मालेर वर्गवस्था (बुमा)। पारस वि [नीरम] शन-एति हुन्द्र (वद्या फीरसञ्जल (मीरसञ्जल) वार्यात्य का (संबोध १८)। पीराम } वि [मैराम] चन-पील बीतराव सीगय ( (नस्ट दूष १२६ दूता) । जीरण दि मिरण दिना परित कर पील (481) 1 र्थाराग वि [मीराग] येवशील, तंपुरून (बीप १)। र्णायंगम रि [मार्थगम] बीचे जानेशमा , र्णास बङ [मिर +स्] वाहर नियतना । ग वर्ले, बीचा रंद (झ

THINK (E)

१) । ३ रायक्त्र का एक तुक्त, बालस-विशेष (से ४ १) । ४ इन्ट्रिटेन (सिंग)। थ पर्वतनिरोध (का २, ६)। ६ व. एन वी एक वाति कीतन (तामा १ १)। **व** वि इस वर्शनावा (वरुख १ सर) । 🕏 र्षु ("कप्छ] १ शकेद का एक केपारीं, शबेश्र के महिप-क्षेत्र वा मविविध देव विकेष (हा इ. हा इक) । २ सबूट और (पायः हुम २४७)। ३ महारेज तिल (इम १४७)। कम्मीर 🛊 🛚 करमीर 📑 रंग के कुनॉबला क्नैर का येह (यव)। शुक्त को [गुक्त] स्थान-पिछेप (बानन)। सनि पुत्री ["ग्रामि] रान दिये ग्रेशय मस्त्रत (हुना)। जिस नि किश्य) नोल नेरधानाचा (सरुद्ध १७)। <sup>\*</sup>सस्य स्प [शिद्धा] बहुत सम्मरहाम-विदेश (स्म ११। ठर १)। बोस्स भेगो क्षेस (श्ररण (७) । स्टेस्सा देवो "ससा (एव)। "वंट र्ष विन् र पर्वत-विदेश (ठा२ १) वस १२) । २ आह-विशेष (बाग्र, र) । ६६ विकार-विदेव (ठा र. ३)। कीक दि [नीक] कन्दर स्प्रा (शाका २)४ २ ३) : किसी को ("केशी] तकती: हुनर्वे (**ev** y) ( जीसमंत्री हो हिं] इस-विदेश वा<del>त है।</del> ¥ ¥3)1 जीक्य की [नीका] १ हेरपा-विरोप एक **रा**प का चारता वर चारूब वरितान (कान Y १६। प्रव) । ए मोनवर्तवानी की ( वर्.)। णीखित्र दि [मिस्त] निर्मेट, निर्मेट (पुत्रत) । जीकित है। [सीकिन] बीत मर्ज वा (श 1 ( 2 4 1 णीतिमा देगो पीस्म (भन) । णीसिम वृद्री [नीसिमन्] शेलार बीवार्गः हरावन (नुगा १२०)। र्जाक्षी की [मीन्यी] १ बनत्पक्रि-रिटेप ग्रेन (प्रमण १ पर ६ १)। र बोन वर्ण गर्मी 🗗 (पहु) ६ धान वा रोष (पुत्र १११) ।

च-पुंद्ध नव [कृ] १ निरातन वरना। रे

व्यक्तीस्त रस्ता । गीउमः (१४ का

वर)। वर्षार्थनिद्धन (१मा) ।

श्रीकुदा सक [ राम् ] बाला वसन करना । ग्रीसम्बद् (हे ४ १६२)। गीलुप्पल म [ नीझोस्पछ ] नी**व ए**व का कमल (हे १ बक्ष कुमा)। बीलुय पुं वि] सरव की एक प्रक्रम कार्रि (सम्पत्त २१६)। वीस्रोमास र् [नीस्प्रमास] १ पहानि प्रायक देव-विक्रेप (ठा २३ ६)। २ वि शील **प्रमा**य को मीसा मासम बेठा हो (शाया 1 (5 5 कींच वृं सिंध कृत विरोध करान का पेड़ (हे १ २३४ कप्प ग्रामा १ १)। पीवार पू [तीबार] कुस-बिरोप तिली का नेद (गलड)। कीवार प्रे शिवार] क्रीविश्वेष (वृष १ \$ 3 36)1 मीवी की [तीमी] यून-कन पूँगी। २ नारा इकारकाद (यब् ३ कुमा) १ सीसंक देवी जिस्संक = निर्माक (वा १४३) दुमा)। धीर्सक प वि दूपम, केन (पर्)। पीसंकित देनो जिस्संकित (विश्व १६२) सुर ७ १४४) । जीसंदर वि [नि संस्थ] संस्था-पीत, बसंस्थ (सपा ६६६)। जीसचार देवी जिस्संचार (पडम ३२, १)। षीसंद र्द [निष्यानः] रह-लुक्ति स्व का मध्य (परुष)। जी**संदित्र वि** [निप्यम्बित] करा हुना, टपका हुमा (गाम)। शीमंदिर वि िनि प्यन्दितु कानेवाला हक-कनेवासा (सुपा ११) । णीसंपाय वि दि वहां बनपर परिधाना ब्रधा हो वह (वे४ ४२)। णीसदूषि [नि सप्ट] १ विवृक्त (पराह १ १ पत्र १ क)। २ मक्त (बृह्य)। व क्रिकि र्धातराब, धरमन्त 'गौसङ्गमनेमणी श का भरदं (उन)। पीसप र्**[नि:सन**] समानः शब व्यक्ति (gr १३, १=> इम १६) 1 पीसणिआ } भी [क] निचीछ शीकी (क कीसणी (४ ४१)।

णीसना वि [सिन्सन्त] सरव-हीन वस-रहित (पचम २१ ७४, १६मा)। वासद वि [ति:शब्द] सम्बन्धीस (६ ७ २८ मिन)। जोसर वह रिम्] बीहा करना श्वरण करना । गीवर (१४ १६=) इ जोमरजिज (नुमा) । पासर मक [ निर् + स्] बाहर निक्नना । गीसर६ (हे ४ ७१)। वह नीसरंस (बोब ४३६ टी) । णीसरण न [नि सरण] फिल्लन एपटन (**44** Y) 1 णीसरण न [नियरण] मिनेयन (से ६, tu) 1 1 णीसरिक्ष वि ितिस्त े निर्मेत निर्मात (सुपा २४%)। जीसक वि नि:राक्ष्य र विस्थत स्पर। २ बषदा-पद्वित प्रतान स्पाट भीसमतद्विय वंशावर्ग्ह् मंडियपडिप्यापेटी (शूर ६ ७२)। णीसह वि [निजास्य] शस्य-प्रीक (चरि)। र्ण सब सक [नि + शाबय ] शर्बच करता श्रम करना । वह भीसबमाज (विसे Sake) ! जीसका देवी जीसचय (बावय) । णीसक्च नि [नि सपरन] राष्ट्र-रहित विपत्त चीक्ष (मृज्य वा वि २७६)। पीसवय वि [नि:श्रावक] निजंश करोनाता (विशेषके होनी) पीसस पद [ निर्+ चस् ] गीराच धेगाः श्यास की नीचा करना। श्रीससद (यह)। वक्र गीससंघ जीससमाज (वा ११ दुम ४%। भाषा २, २, ६)। श्रेष्ठ जीस-सिम जीससिकाय (नाटः महा)। णीससण १ [नि चसते | फिलास (ब्रमा)। णीससिम न [निन्धसिव] निश्वास (हे १ 4×)1 जीसह वि जिसह मन्द, यतचा हि १ १६ दुमा)। णीमद वि [ मित्राल ] शाबा-रहित (ग २३)। भीसा और दि] पीसने का नत्वर (बस ४,

णीसा **दे**लो णिस्सा (कम) । णीसाइ वि [नि स्वादिम्] स्वाद-रहित (प्रवि t ( f जीसाज बेबो जिस्साज = (वे) पर्मीव c )। णीसामण्य ) वि [निःसामाभ्य] १ मरा-जीसामक र बारल (नजहां सुपा हरा है २, २१२)। २ प्रस् (पाप)। थीसार सक ितर + सारयी व्यार निकानना । क्षीसारह (गरिं) । कुर्मे नीसा रिज्या (श्रूप १४ )। पासार ५ वि नहत्व (रे ४ ४१)। णीसार वि ति सार् । बार-रविव कम्ब (वे 1 (=¥ F णीसारण व [निःसारण] विकासन, वाहर, निकालना (बुर १४, २ ३)। णीसारय वि [निःसारक] बाहर निकासने वाचा(से १ ४०)। णीशरिय वि [नि सारित] निकासित (सुर र, १वद) । वीसास देवी गिस्सास (हे १ १६ हुना पीसास १ वि निःमास, की निरमस णीसासय रे सेनेबाना (बिसे रंक्र्र्य,रक्र्र४)। णीसाहार केवी जिस्साहार<sup>, ज</sup>नीसहारा व पबद मूमीय' (सुर ७ २६)। पीसिस वि निष्यक किन्मत विक (पद्ध)। नीसीमिक वि हि निर्वातित देश-बाहर किया इया (वे ४ ४२) । णासेयस श्री जिस्सेयस (बीब १)। योसेणि की निकेणि होडी (न्द्र १३ 82 ) 1 जीसेस 🗪 जिस्सेस (ववड 🐠) । <u>जीहट्ट</u> थ निकास कर (धाचा २ ६ २)। णोब्द्दु थ [नि+स्त्व] बाहर विकास कर (बाचारु ११४)। णीवक विकित्ती १ निर्मंत निर्मात (माचा २३११)। २ बाहर निरुक्ता हुमा (वृह्द १ः कत्त) । णीइडिया की [निद्व तिका] मन्य स्वान में ते जागा जाता हम्य (शह २ तू १८)।

( Y Y ) I

2 2 38) 1

फीइरमक [निर्+स्]१ गहर निरु-

मना । खीइटर (है ४ ७१) । वह मीहर्रेत

(पूरा ४६२) । संझ- पाइरिस (निष् १) ।

णीहर मक [धा + कन्दु] सकला करना,

प्रीहर धक [निर्+ह्नव्] प्रतिव्यति

भीहर सक [ निर् 4 सारम ] बहर निका-

वना । हेक् पीइरिचर (अने १८४) । 🕊

र्थाद्र पक [निर्+द्व] पत्ताना वाना

पुरीपोत्धर्वं करता । नीइरह (हे ४ २१६) ।

मनः निर्देश बाहर निकासना (दिना १ ६

खाया १ १४)। २ पविभाव (निचू १)।

जीव्**रिञ वि [निःस्त] निर्णंत** निर्धात (सुर

र्णब्दिश्य वि [निर्द्व वित] प्रतिकाशित (वे

**পীছ(লেণ[ছ] তথ্** হাৰৰে অণি(ই

जीहार पूँ [साहार] १ हिम तुपार (**धन्**द्र

**७२**। स्थल १२ <u>द</u>मा) । २ किस्स सायूक

भीद्दारण न [निस्सारण] निष्मासन (छ २

भीदारि पि [निर्दारिम] १ विकानेवामा ।

२ फेपनेशायाः 'बीयस्ट्डीहारिका सरेह्र'

जीहरिअंत देवो जाहर=तिर + हुद् ।

जीवरण न [निस्सरण निर्देशन] १ निर्व

**जीह**रियक्द (पुरा ४=२)।

६ बपनमन (सूब २ २)।

१ ११६ ६ ४६। पाछ) ।

का बरतने (धम । )।

(मापम धम ६)।

खाका ११)।

११ १२१)।

Y YR) 1

¥) I

**जीव्**रिक्ष **क्षेत्रे** या**व्यः** = निर्+ ध ।

करना । यह व्याहरत, व्याहर्शन शि १०

ह. जीहरियम्ब (सुना १६ )।

षिलान्त । एद्विय (हे Y १६१) ।

कर सक्तेरावाः 'पर्यक्तिकार्वं' (धार्मान

णुब [सु] इत्र वर्षी का भूवक भ<del>व्यव -</del>१

व्याप व्यक्ति । २ वक्ते कि (स ३४६) । १

नित्तर्वे (ब्रेस) । ४ प्रस्त । इ. विकास : ६

क्लूनदा ७ हेत्, प्रयोजना च चपमाना ह

धनुताप बनुतय । १ वनदेश, बहुन्ध

षु स [न्] । १ निम्हासूच क प्रव्यव (इस २,

शुक्कार प्रे जिक्कार है कुछ रही धानान

अखिलाय वि किं] कमा किया क्रमार प्रक्रियां

'क्याया रहेला क्रिक्स से बकराई,

णुचर्वानुची १ प्रेफिया २ वित्र रुका

णुम **डड** [नि+अस्] स्थापन करना ।

पुग सक द्विरत्य दिल्ला शास्त्रकर

णुमञ्ज वर्ष [नि + सक्] बैठना। शुमन्तर

अप्राण्य स्कृति⊹शस्त्र] झूलना।

णुमञ्ज प्रक [श्री] स्रोता पूक्ता । सूमक्तर

णुज्र वि [ इस्क ] वास्त्रवर (या वं र)।

(ब्रांड है २ २१७) २१८)।

१)। २ विशेष (सिरि ६४१)।

विद्याय अस्तु (स ६८६)।

ह्मा (छे १ ११)।

खुमद (ह ४ १९६)।

(पश)।

करना। खनइ (हे ४ २१)।

शुभक्तह (है १ १४)।

(चम)।

७८७) । **रेव**ी पि**हुञ** ।

खुक्क्य वि [नियम्ब] वैश्व हवा, **वर्क** (बचक छाना १ ध स २४२)३ पार्वान नुबर्खां (स्प ६४८ धी) । লুকৰ ত≼ [ঘ≔কাধবু] সং#ক

प्रीक्षम<del>् ने</del>व

(कुमा) (

करता। गुम्बर (हे ४ ४१)। यह मुस्त णुसा को [स्तुपा] पुत्र-वर्ष, पुत्र को वर्ष (प्रमी १ ६) । जूटर दे<del>ची</del> ज़िट=चुर (वह: है !

णूज वि[स्यून] कासन (चरदारध)। जुले ) व [नूनम् ] इत वर्षे सा**र**त णुष्टे देश<del>स्य —</del>१ निषय, सन्तरस्थ । २ तंत्रं विचार। ३ ह्यु प्रमोत्तव । ४ क्ला ६ बरून (हे ९ २३: ब्राफ्ट क्ल्मट क्ला क्ल १२. ब्राह्म ११ वर्ग १२) । अनुख्यः दि [सृदल्] तका नवीन (यप १)। थुपुर **भ**ो जूबर (बाद ११)।

णूस एक [क्राइम् ] १ डकमः विद्यार। श्रुम६ (**६**४ २१) । श्रुमीत (खल्ब ५ १६) । यह जूर्मत (या ४६६) । ण्यान [के] १ प्रच्छादन, जिसला। १

धंसरण कुठ (पराहर २)। **१** शस्त्र 🕶 (नम ७१)। ४ प्रम्बस स्थल इस स्पेप (ब्रुप्त १ व के सब १२ ६)। इ सलका ध्यक् धन्मकार (राम)। जूस व (क्टी कर्न (कूस १६३१)<sup>६</sup>

बिद्ध न [शुक्क] मूमि-पृक्क (सामा २ ६ R (1) 1 भूसिक वि **दि**शिवित क्या द्वरा विश्वा हुंबा (से १ १२) पाथ कुथा)। ज्यिल वि [वे] योका विमाहमा (वर्ष है

ण्याची [दे] साक्षा अल (दे ४ ४६)। णे व पत्र-पृत्ति में प्रमुख होता सम्बद (धन)। लेक वि[नैक] समेक महुद (**शब्म ६**४

424)1 येश देवी या = हा। णेंझ देवी था⊏ मी। गुशिक वि [स्वस्त] स्थापित (दुमा) ।

(知義 命水) 1 पुमरजञ व [निधवजन] हुक्सा (एक) । गुमण्य वि [निपण्य] बैठा ∦मा, उपविष्ट (यह है ? १७४) । णुमच्य } वि [तिमन्त] ह्वा ह्या औत

णुस≢ }(दृश्धर १४)।

णुमिश्र दि [कावित] दक्य हुमा (कुमा)।

**जदा**रित [निर्हादिन] बीव करनेवाला

यु अनैयासा (स्त १ । पि ४ ६)।

व्यक्तरिस देवो विद्वारिस (ठा २ ४) बीच

जु**ढ क्रो** जो**ड**ा **शु**क्षप्र (स २४४) ।

प्रमुख्य कि विं] तुत्र शोदाह्मधा (वे ४

**२१)। 'विद्र वि ['विश्व] सनेत्र प्रकार का** (पवस ११३ १२)। णेश्रः य [सेंब] नहीं ही क्लापि ल**हीं** करी

नहीं विश्व के उस्त देवता स्वयं सूर रे

देव की समाजर सरक भावि में करते के धीतर था स्थान निसमें ४८-नदी नाना प्रकार का देश संजाते हैं रफशला नाटकशला (शाबा १ १)। २ वेष (विसे २१८७ सूर ६ ६२: लग्र बुना ११६)। मवस्थण न दि ] निर्देशन, उन्तरीय वज्र का माचन (जुमा)। गंदरिक्य वि [नेपध्यित] विक्री केप-बूपा मी हो बहा 'पुरिसनेवरिश्वा' (विपा १ ६)। णेवाइय वि निपातिको *नि*रा<del>त-निर्मा</del>ण नाम सम्बद्धानि (विशेषका सन्)।

विस्त्र न [नेपध्य] १ वस मधि की रवनाः

४२२

णवास दुनिपाठ] १ एक बाउडीय ≹त, नेपाम (द्या द १११) मूत्र ४४०)। २ वि नेपाल-देखेब नेपानी (पदम ११ १६)। मेक्टिक ) न निवंदा देवता के सले बस भवेज हिमाँ सन्त सादि (वं १२**२** मा १६) ( দীৰুষাতা ইন্ধা জিডবাল – নিৰ্মান্ত (মাখ্যা बुर १ २ । स ४४४)।

गेब्बुअ रेपी जिब्बुल (स 💗 टी)। गम्मुद्द देवी शिष्मुद्द (सर ४६० टी) । गैर्मागाय देनो जिसगाय (नुपा १)। णस्त्रि वि निपश्चित्र । बाहन-विशेष से क्तरिष्ठ (पन ६७) वंदा १०) । मसज्जिल निपिश्च कर 🕬 (छ × शकीयामध्द्र २ शक्छ)।

गैसरिव र् दि विश्व ननी विश्व बनान (RY YY) I णमरिषया १ वी मिस्टिश नैशक्तिश्री र विवर्णन निर्मात्छ। र णसर्था निधर्मन से (नियाना वर्ध-बन्द (ठा ९ १ मप १)।

णसप्प निमयी लिक्ष किय बाबर्स रामा पा पुर देशमिद्वित निकास (ठा ६) (कार्दशी)। शेसर दृद्धिया नूर्व (४ ४४)। णसाय रेनो जिसाय = निवार (धन्न) ।

ण गुन् [ने] १ मील मीठ होठ । २ वॉव∵ । 'तर निकार्यत्वेता दुवस्य निर्देशलैगुबूबे (TT 14 ft):

शह बु [माह] १ यन बनुयन ब्रैन (शब)। विक्तार (हे २ कक्ष अ. ध. ६३ आज) ।

णहस्र पुँ रिनह•े] <del>कल वि</del>रोप (गिर) । प्राह्म कि [स्तेश्वर ] लोगी स्पेश्वरूक, पियराई बेह्साई धल्रसामी निर्माणीमी (वरीन १२१)।

वेहर देशो केहर (परह १ १)।

**केब्रा**ल वि [ स्तेब्यम् ] स्नेब्र्युक, स्मिन ( R 2 ( 22) 1 वेहर पुं[नेहर] १ वेश-विकेष एक धनार्य रेछ। २ उसमें बसनेवाली खवार्य बार्रि (पर्का १ १---नव १४)।

लो च [नो] इन **सर्वों** का शू**षक सम्बद**— १ निपेत्र प्रतिपेत्र प्रजास (ठा ६ क्या यहाँ)। ९ मियल मियकाः 'बोस्हो मिल्सक्तहम्मि' (विशेष )। १ देश, भाग, यंग्र हिस्ला (विमे ८ ८)। Yधवबारहा निरुवय (राज)। \*शागम व शियामा १ दालन का भ्रमावा। २ सावम के साव विश्वरहा। ३ सामम ना एक बाँग (धावमा विशे ४६) ≭३ ६१)। ४ पदाचेशा धपध्विल (धीवे)। इतिय न [ इन्द्रिय ] यन झ<del>न्दाकरका चित्त (ठा६। सन ११ उप</del> इ**६७ टी) । इसाय र् ["क्**पाय] श्पाय के ब्रह्मिक द्वारन समैद्धाना परार्थ ने वे रि—्हास्य एठि' बर्राट, शोर क्य बुहुन्तर

पुंचेत्र क्रीकेत भीर नर्युतकानेव (बम्म १ १७ ध १)। **क्रियम**नाण न [क्रियस्थान] स्वर्षि और शवापर्यंद क्षान (छ.२.१)। गार वं विनार] भी शब्द (धव) । शुण वि गिली धनमार्थं धनस्त्रविक (धन्ध)। र्जाश दे [ कीम ] १ भीप भीर भजीप से क्लि प्रार्थ स्थानु। २ स्थीय, निर्मीय । ६ बीव वा बंदेस (पिछे) । सह वि विस्त वो वैसाद्दीन हो (स्र ४२)। शोध दि] इन धर्मना नुषक शब्धाः— १ थेर । २ कामण्यलः । ३ विवित्रतः । ४

मत्त्रहा मान्य कर हरतहीं (बर्नेट १वध्य १२४६)। जारूग वि **दि**] धनोला, धरुरै (पिन) ।

षा दे[मृ]द्रमः वर-खोशससमाम

विद्यार्थ प्रकोश (ब्राफ्ट व )।

२ मैन ब्रारि विकास सम्पर्धार्थ । ३ विस्ताहि । जागाण्य हि [मागीय] यववार्व (नाम) (को १४)।

पादिक देवी जाडिज (धर)। जोस**िका जो** [सबमहिका] दुर्शन क्रा बासा कुछ-विशेष नेवारी, बार्बाडी (बार वि (दर)। णोगानिजा औ [मनमासिया] स्मर रेखें (हे १ १७ । सा २०११ वर्ष दुना षभि २६)। जामि पुं [चे] रासी रम्बु (१४ ११)।

जोजुरा न [सोयुग] श्वन पुर (पुरन ११) :

पोसद्ञा ) को **दि | पत्र्यु पॉप पॉप** (रै वोडका । ४ १६)। थोइ सक क्षिप्तुर्ही १ फ्रेंक्स । बेरहा करना। श्लोस्सइ (हू ४ १४६) वर्)। कुल्मेह (वा वच्द)। इनकु जोक्षित्री (दुर १६ १६६)। पालिम वि [मोदित] प्रेरित (वे ६ ३२) काना १ ६, पकार १ श व ३४ )। व्याच्या पू 📵 ब्रह्मुच्छ, सुवा वा बुवेचर एउं धविनिधि (रे ४ tw)। गोइ**छ दूं [स्रोइस्ड] सम्बद्ध र<del>न्द</del>-निरो**द (गर् पि २६ । धासि ११)।

कुतन फलनली (हुना) : ६ नूतन फन रा बहुबम 'छोड्डनियमप्त्रछो कि छ नाक्दे, शक्ते हुरदद्मरा (श ६)। जाहा की [स्तुया] पुत्र की शार्ता **उपन्य** वलोड- वह (मि १४ । ब्रॉचि १६)। ज्यक्ष वि **क्रिक**ो जानकार (वा २ ३) । ज्जास **देवो** जास = न्द्रस (सप्त ११४) ! ण्युस**स्त्रो** स्त्रम (सा४ ध**)**। ण्डूं स १ व वात्रवासंकार और पत्रपूर्ति <sup>क</sup> अपूर्क शिया जाता सम्मय (शम, क्न)।

योहस्तिमा को [नक्फिक्सि] १ तार्थ

फ्ली नवोत्रपन प्रनी (हूर १७)। र

ण्ड्य थक (स्नप्थ ] भद्रधाना स्वान कराणाः लानेह (दूप ११७) । क्यह- व्हिन्नीत (तुमा ३३)। तह व्हिष्किय (मि २१३)। ण्ड्यत्र व [स्त्रस्थ] स्तात क्रांना न्यूनामा (दू**बर)** । व्हर्श्यम 🌬 [स्मृपिन] वितरो स्नान रचना

वर्गाद्वह(नुर२ ४ प्रवि)≀ <sup>क्ष</sup> } क्रक [स्त्रो] स्तान करना. नद्गमा !

व्यांगी स्तारें (रें ४ १४)। स्तारे रहर्गीत (डि ३१३)। प्रति राहानार्थ (पि १११)। नक्ट-व्यासमान्न (ए।पा १ ११)। चेक व्याइसा, व्यानिका (पि १११)। व्यान न [स्तान] नद्यान नद्यान (कप्प प्राप्त)। पीढ पुंत ["पीट] स्तान करने का पुटा (ए।पा १ १)। व्यानमहित्रा की ह्स्तानमित्रा (पा १४)। व्यानमित्रा की ह्स्तानमित्रा (पा १४)। व्यानिका की ह्स्तानिका हुलान-विया (पाय ४४—पत्र १११)। व्यानिक वि ह्स्तानिका विसन्ने स्तान विया है वह (पर १०)।

जहाय वि [स्तात] निकने करान किया है।
बहु सहाया हुया (क्या कीय) ।
जहायमाग्य देखो जहा
जहा महाया हुया (क्या कीय) ।
जहायमाग्य देखो जहा
नहा, वानां हिना हुये हैं। व्यक्ति क्या की निरा
नहा, वानां । र अहारहा वेदियों में की एक
मेली प्रकृत करेन साथि (बोक्यकारा
प्रभू पत्र सर्वे देहें)।
जहाय देखो जहा । रहा वह रहा कहा (वि देशे)।
बहु रहा विक्रण (गहा)।
जहारिका वि हिन्सी वि नहावा हुया

निष्ठको स्तान कराया मना हो यह (महा
प्रति)।
व्यक्तिका वे [नापित] हकाम नार्ष (हे १
२३ कुमा)। चेत्रण एहावियं सावरण
वुक्तिका ने प्रतियं (कर १ थे)। परोक्षय
वृ [ त्रसेषक ] नार्ष की सपने सपकरण
व्यक्ति की येथी (कर २)।
वह य [चे] निरुच्य-सूचक सम्प्रय (कीवत
१८)।
वहसा की स्त्रिया] दुक्ष्यमु दुव की भार्य,
वर्तेष्ट्र (वाचया वि १११)।
वहस् को वहस्य (वाचया वि १११)।

 १३ इत्र विरिपाइञ्जसहमङ्क्ये कमाग्रहसहसंदनको ब्रह्मेल जनगरहसहसंदनको वाह्यहमे तर्गी समतो ॥

त

द पू [व] रन्द-स्वानीय व्याञ्चन वर्ध-विशेष (प्रचर प्रामा)। द्यं [तम्] यह (ठा ३ १ हे १ ७) क्यः दूमा) । स स स्पन् दि। इय विक्रियो देख विमाल्या (म ६८ )। त देवीत्या ≈ स्वन् । दोसि वि दिपिन् १ वर्ष-रोगो । २ दुष्ठी (सिंड ४७३) । साध केनो सम = तपस् (हास्य १६१) । सह वि [तिनि] बदना (बर १) । तह (क्षा) म [तत्र] बहुर, इसमें (बहु )। तुइ य [तुरा] धन समय (प्राप्त) । तद्रभ वि विशीप विशेष (हे १११ तद्रअ (या) वि [स्वरीय] तुम्हारा (पवि) । तक्षत्र च [नदा] उम मनम भ्रांगधो रमा बेढी महमापर तहव बध्यदेवेग्र ।

वाएए घर मिछनो भगिली ठाणुम्मि दायन्ता (पूर १ १२१)। वदमहा (प्रय) य विदा वस समय (प्रवि मखो । तदमान [तवा] उत्र तमय (देव ६५) वा €शो । वदमा की [युरीमा] दिनि-विशेष तीत्र (तम तक्या की [श्रृतीया] तीवरीः विश्वकि (वेण्य **६**=३) । वास्त रेसी संद्व (घर ६२१) । वर्छोड् की [त्रिसोर्डी] तीन नोक-एकाँ मध्यें धीर पातान (नुना ६८)। तऽत्येक } न किमक्य दिलर देनी तामध्य । (पाने ३ १ श्रीय २ २० ल , प्रकशे पुरुषे २ ३ लुका द∉राव्या w h

: तइस (पप) वि तिहरा विशा पन तरह का(हे४ ४ ३ वर्)। तइ की जियी वित का समुद्याय (सुवा ६०)। तईअ देवो तहुझ = तृतीय (मा ४११) मरा)। ) न जिए । बान-विदेश शीवा बारम रे शंवा (समे १२३) बीवर कर १०६ श्री वहा) । यद्विका स्पे "पहिन्छी कान का शामुक्त विशेष (दे १, १३) । वडस न [त्रपुप] रेपी तडसी (धन)। "मिजिया की "मिजिया दि शह शह शिर्ट गीन्तिय जम्मु गी एक वादि (नीव १)। शहम न जिपुर्व बीच बरही (दे ८३१)। तासी की जिल्ली वर्गते का बीच का गाय (ना १३४) । त्रय च [त्रनस्] बनन बम बायल हे । २ बार में (बत्त र रिवार र)। शण्यारिम वि [स्वाटरा] तुन वैना, नृप्याध तरह का (म ६२)। तुआ देवी तुष्(दावे १ प्रातूच्य)।

बच्चो प्रशास होई (सा४२) । "बहास

ियथा । करहारदा-प्रदर्शन सन्यन (मानाः

तंड न दि ] सपान में सबी हुई सार। ए वि

र्देडय (धर) वेडो तबुब । तंत्रमह (मनि) ।

तंडच सक 🛭 ठाण्डक्य् 🛚 सूख करना । तंड

ধৰৰ দ বিভেত্ৰী ংকুৰ ভত্তত বাস (গায়

बीब ३ सूपा वरे)। २ एक्टाई पार्टवित

क्याच्चेद्रतंक्रावंचरेषि कि मुद्धं (बस्स व टी)।

र्वेडविय वि [ठाण्डवित] नवाया हुमाः

र्वहरू पू विष्हरू भारत (स ६२१)।

वैद्य न [तम्त्र] १ केव एष्ट् (पूर १६ ४०)।

२ राज विकास (उपर १) । १ वर्तन, अस

(इर ६२२) । ४ स्वयेक-चिन्हा । ३ विय का

थीयम विदेश (द्वार ४) । ६ तम कम्बास-

विदेश नार्च व्याग्यं ततं सरितन्त्रय तान्त

व वयरवर्षे (विदे) । ७ विदा-विदेश (तुरा

४६६)। न्तुनि "श्ची छल का बानवार

(सुपा २७३) । बाह्र दे िवाहिन्छ । विश्वा-

निरोध से श्रेम आदि को जिटानेकाला (लूपा

र्वंद नि [दान्त] विज नवान्त (खाना १ ४

तंत्रक्षां की [वं] रपन क्या और चारत शा

र्शतका } र्जु [तान्त्रकक्र] पतुरिन्दिय जेतु

र्ततपव 🕽 सी देन काति (दुव्य ३६, १४६)

संतिय पू [तान्त्रिक] बीरण वनानेवाका

बना मोक्न-निरोप (वे १८४)।

दश्चिम (सर) देखी तबुविस (सवि)।

मस्तक-रक्षित । ३ स्वर से अविक (दे %,

र्शका देवी तया = तदा (गरह) ।

संट न विरोधाः, पीठ (देथः, १)।

धस्य)।

1(33

वॅटि (बलम्)।

দবিব (नक्क)।

रेको संदुक्त ।

**YES)** 1

विपार १)।

बत्त १६, १४६) ।

(पणु) ।

र्च-राष

र्शकरकारी की वि शैक्सविका पूजानात **लता-पिरोप (वे ६,४)**। र्रथरकी की दि यह में ब्रुक्तम की काय (वे

2, X) 1 लंबा की दियों भी केंद्र मैद्या (देश, राजा ४६ ३ वाघा बस्ता १४) ।

र्सवाय दे (सामार्क) बाव्हीय श्राम-विशेष (पाम)।

र्वथिम वृत्री [ताञ्चल] प्रयक्ता रेन् रच्या (पत्रश) ।

र्शियन (ताम्रिक्) परिकारक का म्हलने का एक चपकरात्र (मीप)। गुडवा सूबि)।

तका [तक] सङ्घ द्वाच (धीव वशः पुरा

Terr,

बीव ६)। धाचा)।

X44 87 E 114) 1

क्ला, घटनव करना। सक्तेमि (वै १६)। वैक् तक्रियाओं (ध्राका)।

र्वस कि (प्रयस्त) कि-कोशा रीज क्रेनवामा (देर २६ वंडब छार मार प्राप्त ेत्रज्ञायक [तर्क] तर्ज करना स्तुमान

र्वश्रेक्ष व [चाम्बूक] पान (हे १ १९४) कुमा) । तंबोक्षिम पूर्विमानुक्षिक] १ तमोली पर्ल देणनेनामा (बा ११)। २ एवं में डोमेनामा र्ववैक्षिम गाग । र्ववेक्षिक्षे की [राम्बूक्षी] पान का बाब (वर् र्थम वेशो श्रीम (बह्)। र्वस वृं [च्येरा] शिवदा दिस्ता (वेच ४, ३४ विशे करन र, व्यू ।

िकी सुती करका (जल २, ११)। यात्र प्रै िवास करवा कुलीमाला बुलाक्षा (बा २३)। साख्य की दिशास्त्र कियका ब्राव्हे र्शविर वि वि चान वर्शवाला (हे% <sup>१६</sup> र्वतुष्यकोषी जी [वे] राजुबाय का एक का-र्वविस विशेषको तबस्ती (१ ६,६)। श्रंदक न कि निवास-विदेश प्रदर्<del>शकार प्र</del> र्तत्व वेको ५ वस्र (परम १२ १६८)। २ (बराय )। मक्य-विशेष (बीष १) । विद्याद्विम न र्शवरम प्र [स्तम्बरम] इस्ती इत्वी (का प्र 1 (455 रविद्दी की दिने पुरान्यवान बुक्त-विदेव **धंदुक्तेत्रम्य प्रदेश हैं विश्वक्रीयक्री वनशांक्ष विशेष ग्रेप्सिमा (दे १, ४)** । वेव्सय वेको विवसय (श्रुट १६) १६७) ।

तंती और कि क्लिए कानस्य उदार्वीव

रोत प्रै तिन्त्री शुरु सामा माना (परुप १

१३)। जगर् कि चतवल्य विकेष

(परुष १४ १७ क्य २ १)। ज पन

विपारिकी बैन प्रन्य-विशेष (शरि)।

र्वत दे [स्त्रम्ब] एखांव का कुल्बा (हे १,

र्धव न [ताम्र] ? वानु-विशेष, वांवा (विषा

१ पाइट ४६)। २ व वर्ष मिरोप।

१ वि अक्छ मर्खनामा **बाल** (पर्म्स १७)

वीप)। "च्छ पू [च्छ] मृत्यूट, पूर्वा(पूरः

**११)। अण्यी और पिएडिं। एक नशी का** 

भाव (बप्पू)। "सिक्ष् वृं "फ़िला कुल्कुट,

र्तभक्तां पून [वे] ताल वर्णनामा इत्य-

**७वकिं**सि **प्रे** [के] कीठ-किछेच क्ष्मणेल (के

र्वेषक्य न [बे] बारा-विशेषः 'धलाइवर्ववस्त्रेण्

तंबद्वसूम पुन [दे] दूध-विशेष

कटपरेना (देश ६) नहें)।

मञ्जीमु (सी १५)।

का नद, तीत-बर (मन १६)।

कच्छा (देश ७)।

(पद्दा १)।

४३८ क्या) ।

ञुषी (पह्म )।

विशेष (पहरत १७)।

× ६३ वद्)।

र्वती की विस्त्री १ मीला बाध विरोप (कम्प ग्रीप सर १६ ४०)। २ नीस्ता-विशेष (पराव २ ६)। ३ शांत जनके की चली (पिपार ६ सुर ३ १३७)।

या इससे मिका हुआ गीत गेम काण्य का एक मेव (बस्रीय २ ९६)।

बलब-उपन्यासः 'तं कियसबैदियोलबै (हे २ १७६: यह )- 'चै मरखमलारेने विश्वीह.

(48 3) 1

तक--तहरहा तका पूं [तकें] १ विमर्श विवाद, सन्कत-श्चाम (भा १२ ठा १) । २ न्याय-राज (सुपा २८७)। तक्या की दि दिन्हा, प्रक्रिया (वे ४,४)। तकाय मिं [तकीक] तक करनवाका (पर्यक् ₹ **३**) ( शक्त हुं [तस्कर] चोर (ह २ ४' ग्रीम)। तका कि की दिं करकी भूता ने ले का पाल (बाबा २:१ = ६)। **टक्स**रित ) क्ये [बे] बलवाकार बुज-विशेष वक्सी (क्एक १)। तच्छ की तिकें] देशों तं ≍ तर्रे(छ १ मुप्त १ १६ धाचा)। सन्दान विवि [तरहान] स्वी समय (कुमा) । तक्किम वि [तार्किक] तर्वयाह का कानकार (सण्ड ११)। तक्तिमाणे देखो तक ≈ तर्क । तक्कु पू (तकु) सूर्य बनाने का सन्त तकुका सकता चरबा (दे १ १)। तक्क्रय पूँ वि स्वयन-वर्ग 'सम्माध्यावा शानेता चहिन्दंदिया नायस्या, परिचोधिया বলুমখন্য ডি' (র হং )। दक्त सक दिस्त किनना, काटना। त्तपन्द (यह है ४ ११४)। कर्म तनिश्व-बाद (कुम १७)। वह तक्त्रमाण (मजु)। सबस्य दं विद्यास्थी वस्त्र पत्नी (पाप) । सक्ता प्रतिकार है । सक्ती काटनेकाता, कहाँ । २ विस्ववार्ग, निस्त्री-विशेष हिं ह १६ पर्)। सिख्य की ["शिक्ष्य] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, को पहले बाहुवरित की राजवानी नी बड़ नपर पंजाब में है (प्रतम ४ १वा द्वप्र १३)। तकतान प्रतिशकी १२ अनर वेदो। १ स्वताम-प्रश्निक सर्पे-राज (इस १२६)। तक्काय न [तस्त्राम] १ तकान प्रतीक्षम (डा४४)। २ किथि श्रीम, शुरुष (पाय)। तक्स्रय देवी तक्स्रग (स २ ६) द्वप्र 11((385 त्रक्रम्भ वेतो तक्ता = त्यान् (हे ३ ५६

यर)।

तुनार् देखो टनर (क्शह २ ५)।

28

तराय की [तराय] सेनिनेश-निशेष (स ४६८) तगरा की [तगरा] एक नगरी का नाम (शुक २ ४)। समान वि] सूत्र-विका वायेका वैक्या (देश शुः बतह)। तमाधिय वि [तद्गन्धिक] एसके धमान र्धश्रवाचा (प्राप्त १४)। तक वि [त्वीय] तीवच (वस द उना)। त्य न [तस्व] सार, परमार्थ (माध्यः मारा ११४) । वाय वे विषयो १ तस्य-वाद, परमार्थ-वर्षी । २ इष्टिबार, जैन श्रीव-श्रेय क्रियेप (ठार )। सद्य न [तथ्य] १ सत्य सवाई (हे २ २१ क्त २०)। २ वि वास्त्रविक स्टब (क्त ६) । स्व पूं [ीर्थे] एवर हम्बन्द (पद्म व १व) व्यास पू चित्र केवी करर ीवाय (ठा१)। ध**र्थम** स**्त्रि** } तीन बार (मर; पुर २ ₹₹); त्रिवित्त विवित्त्र छिती में विस्कानन सगाही वह उल्बीन (विपा १ २)। तच्या सक [तस्तु ] विकास, कारना । राज्याद (६४,१६४) पत्र )। एंड सच्छिम (सूच १ ४ १)। वनका विश्वकात (तुर १ 2=) : वन्छ १ विष्टि विमा द्वया वन्त्रका राज्यिक । 'वे निप्तर्रहा प्रवर्ष राज्या (सूच रे में २,१४० रे ४ रे रे वर्ष १२, 14)1 सम्बंध धीन शिक्षण क्रियम, बर्टन (परह रे १) की या (गाया १३ १६)। शक्कित वि किराम भनेकर वि १ 1 (# वश्चित्रजात वेको सच्छ । तिष्मुद्धं पि [दे] तस्पर (पर्)। तकाधेकी तया≈त्वप्(६११११)। स्त्रम स्वरू विजेयी तर्मन करना बरसैन करणा। समझ (प्रति)। सप्त्रीद (शावा १ १०) वह वर्जन वर्जन वर्जन वर्जन वसमाण वस्त्रेमाण (श्रांत सुर १२, २३३ शामा १ वा राज निपा १ १---

पण ११)। कमक त्रस्थिकांत (का प्र१६४) छप १४६ टो)। चळण न चिर्जनो मर्लन विस्कार (ग्रीप जवा परुप ११ ११)। वस्त्रया भी [वर्षना] स्पर देशो (पर्या २१ सुपार)। वक्रणी भी [सर्जनी] पूषरी पंत्रनी मेंबूटे के पासकानी शंगुली प्रवेरिमी (मुपा १३ हुआ) । वळ्याय वि [वळ्याव] समान वादिशासा तुस्य-जातीय (धान ४) । कट्याविश ) वि विजित विजित परिस्ट विकास (स १२२) सुना २६३ समि)। विकास सञ्ज्ञिकोत रेको सङ्गा। तकोमाण तहबहू न दि निमायल बामुपल श्वित्रं प्रसिनं नमत्त्रसामी क्लुयाई क्टूबहाई। शवहरिति नियमपद्मी **हारेड प्हान्म क्रिस्सेटो** (सुपा ३६६) । वहिना की वि वहिका विनंबर बैन साब का एक स्पनराय (बर्मसं १ ४६ १ ४०)। लड़ी की कि बिल मन (के ए, १)। तदू वि[त्रस्त] १ वय हमा मीत (हे २ १६६ कुमा)। २ ल सुद्धर-विशेष (सम 1 (32 बहु वि [बप्ट] किला हुमा (सूम १ ७) । तबुध न [त्रस्तप] सुकृतं-विरोप (सम ११)। वट्टि वि विधिम् दिव्हत प्रशासना (मूप 2 4 2 31 तक्कि ) पुं[स्वप्ट्र] १ छक्क विस्वकर्मा तद्दुः (एवड)। २ मधान-विरोध का स्रीव प्रायक केंब (का २० ६)। वद् दु र् [स्वय्द ] पदोपन का काव्यता मुख्यं (सुकार १६)। वद सक [ यम् ] १ विस्तार करना । २ करना। तबद (हे ४ १६७)। वस पून [वट] किनाय चीर (शस्ट पूमा)। त्य वि दिया १ मध्यत्व पद्मपात-शिन । ए समीप स्वित (बूमा) वे ६: ६ ) । तहाउटा दि देवी तहनहा (भीन का

विधिम वि [वन] विश्वीर्य देश ह्य (इमा)। वणुवि [वजु] १ पत्रवा (वी ४)।२ इस

तहम्बद्धम-स्पुपन

तहतहासक [तहतहास् ] तक्ष्यक साधान होला । पढ तहतबैय यहवर्डेत तह तहरीत (राज सामा १ १ जुना १७६)। त्रक्रतहा भी [तब्रदहा] तर्-तर्मधानान (स सङ्घ्याङ ३ वन [वे] चङ्गा चापटाना, त्रक्षफड ∫तङ्क्ष्में स्थालुस होना। सर प्लब्द (कुमा क्षेत्र १६६) विशे १-२)।

€)।

ताकावि (मुर १ १४ )। यह तहप्तहंतु, स्तफ्तंत (का भ६< दी नूर १२, १६४) त्र प्रश्लेष्ट निर्देशिय वर्ष्ट ने चीत्र व धरफशया हमा व्याप्तन वि १८ ६. ध

% **\* (9** # 2 वहसद वि [दे] बुक्ति शोध प्राप्त (दे 🗞 राह्मबह नि [वं] क्रिमा-धील संधानार-धूक (सहिं१ ७)। वहश्रदंव रेकी वहवडा ।

४२६

२१७)।

तक्षकक्रिक्र विदि] सनवन्तितः (पर्)। तक्षकार पूं [तटरकार] चमकारा विक्त-

बस्कारी (पुत्रा ११६) ।

बुस १७६ दुव २६)।

रहपदा भी [दे] दुल-निरोध मान्नीका देश (दे १, १)। वडाम १ ॥ [वडाग] वासाव सरोबर (गा वहात रेश विवेश २४)। वर्डि की [वर्डिन्] विक्वी (पाध) । इंड पुं[नण्ड] विचाईड (महा)। केस पुं [केश] चनस-वंद्येष एक राजा एक लंका-

परि (परम ६ ६६)। विश्व र् विश्व नियापर वंद्य का एक राजा (पत्रम 📞 t ) i चटिम नि [वंत] निस्तुव केना हुमा (पास,

(<del>ক্র</del>ে)।

खापा १ -- पत्र ११३) । दक्षिभा की [दक्षित्] वीवली (सामा) । त्तक्रिण वि चि विरत धन्याय (ते १३ वक्रिकी भी [तटिनी] नधे वर्षध्यी वक्षिम न [वक्षिम] १ विकि मौतः। २ क्रीहेश

पाचाचा मार्थि वे वैचा हुमा भूमितक (हे १

यम् ६)। वड्ड ) सक विस् र शिखार करना। २ तर्मेष } करता । तर्मद्र, शहनद्र (ह v ११७)। भुका--शहबीय (कुमा) । तक्रिका } कि चित्र विस्तीएं केना हुमा (पाना महा दुमा पुर ३ ७२)।

२) । १ धार के उत्परका भाग (से १२

वडी की [बटी] वन किनाए (क्या ११)

तश्रुकी [तर्तु] काठकी करकी (शक्त तजसङ [तम् ] १ भिन्तार कला। २ करना। तरणाद्व दाखुप् (थड)। कर्मतसिंख-णबए (विशे १३०१)। त्य न दि] स्त्याकमत (६ ६ १)। লুজান [লুফা] বুড় ৰাভ (হাফাডৰ)। এছ मि [ बन् ] तुःखनाबा (गतः)। दीभि रि <sup>"</sup>शीबिम्" वास साकर जीनेनामा (सुरा १७) सम्बु चिञ्ची तल-इस तस

िंकुम्तको एक बूत अंदु-वादि नीमिय बन्यू-विशेष (राज)। तमगंपि [तृपांक] तुलंका क्या हुमा (बाचा २ २ ३ १४)। राजब र् [ रानव] पुत्र नहका (मूना २४७ 43A) I वजय वि [वि] श्रेवन्त्री 'मह वज्जप्' (सूर व ED \$ 4 \$ 100 1 राजयमुद्दिमा सी [ वे ] श्रेष्ट्रसीवर शंद्रकी (R X, E) |

का पेक् (चतः)। "विटय, "बेंटय पू

वष्यां भी [वनया] सङ्ग्री पूरी (दूपा) । वणरासि ) विचित्रसारित पैनाना वणसस्म ∫ ह्या (४ र ६) । वजपरंक्षी की भिं किया होगी ओटी गीका (電孔 10) 1 राणमोक्कि) की दिरी श्रीमानका पूर्व

वणसोक्तिया । प्रवान बुब-विरोध (व ४, ५) खावा १ १६)। २ मि. तूल-सूम्प (यह )। वजहार ) ई [वजहार] र भीतित क्लु वजहारच ) भे एक बार्स ( क्ल १६ १९)। ए. पि. भात मान्कर केवनेवाला मनिवारा (प्रापु १४३)।

पुर्वत (वेवा१६) । ३ मता वोसा(१६ ११) । ४ लगू, सीटा (शेव १) । १ तूम (कप्प)। ६ की राधेर, कस्प (दे २, ११) वा थ)। तमुहितम् की [तनी]

विकारभारा-नामक पृत्वी (स व दर्ग)। पञ्चलि की ["वर्षाति] ज्लाब होते वस भीव बारा बहुए किये हुए पुरस्तों को रुएर कर ये परिख्त करने की शक्ति (काम ६ १२)। समझ वि ["उद्गाद] रे तरीरने उल्लंग । २ पूँचक्या (मनि) । "हमदाबी ["उद्भवा]ं वहती (घरि) : "मृपूर्णः [अ] १ सङ्गा। २ नडकी (घाष)। व वि ["व] देवी समय (उत्त १४)। सि पुन िस्त १ वेटा, बाल (रेस)। १ ई पुत्र शरका(यदि)। वास द्रं विजन] सूबम **बागू-विरो**प (इन ६ ४) ।

तणुझ वि [तनुक] अपर 🖮 (गम ધ का बाब है। यब १४, गाम)। वणुश्र तक [तनम् ] १ पतना भरव <sup>। १</sup> हरा करना, दुवंब करना । श्युएर (य ६१ काम १७४)। वणुषा ) यक [वसुसम्] दुवंब होत तजुलाम । ६० होना । ठलुबाद क्युटी सद त्रजूपामए (था ३ २ हेर इट) मार्ड-

वणुश्रामंत (ग २६ )। वर्णुमामरभ वि [वनुत्वसरक] इन्ह्य हरनायेनाला बीवेस्व-नतक (च १४८) ! वणुर्थ वि [वन्स्य] दुवंत स्थि 👫 क्षरा विका हुमा (पा १२२) प्रकार १६ ४)। मणुर्ने की [तन्ती] १ प्रध्नी-वितेष निक्र

शिक्ता (सम २२) । २ वटका श**ीरका**दी, क्ष्मायी कोमतायी की (पर्)। तलुईकस नि [तनुक्रुत] प्रदेश क्रिया 🟴 तणुग्रदेशो तलुझा(व २३३)।

(परमः) ।

वणुज्ञ वेबोर वर्णुन्य (भर्मीव १२)। वजुत्रसा ई [वनुत्रसार] पुत्र धर्मा (वर्षीव १४८) । वणुभव देवो वणु-ध्यव (वर्गीव १४२)।

त्रपुत्री--तब्मत्तिय

तग्री [सन्] रुपैर कामा (गा ७०० पाम (१)। २ ईपछारमाराजामक पृथिकी

(ठा ८)। स्व दि [क] १ रुपीर से क्ष्मपत्र । २ पुंशहता, पूत्र (सः ६०६) । "अत्य की ["करारा] ईपलाप्याय-मामक पूर्विशी जिल्लार मुक्त कीन रहते हैं सिक

किसा (सप २२)। रह पून दिह ] देश रोम बाल (उप १६७ टी)। तज्ञ इय देको तजुङ्ख (पर्क) ।

क्षणेय (अप) ध लिए वास्ते (हे४ ४२% कुमा)। वणसि वृं [के] त्स-राग्ति (वेश व पर्)।

त्तुज्ञाय पु [तज्ञ क] बस्त बस्द्रा (पाप्न वा ११ गउड)। ह्यण्याय विद्यिष्याः कीला (देश २ पाधा गढडां से १. ११ ११ १९६)।

हण्डा की हिण्या १ व्यास पिपासा (पाम) । २ स्पृह्मः बाम्छा इच्छा(टा २ ३) मीप)। सु सुधावि [ बन् ] तूप्णा-बाला प्यामा। 'समरतएहामु' (पडम व ४७-

c (44) 1 লক্ষ্যায়ন্ত্ৰ বি [ব্যিন্সেন] ব্যালুত মতি ম্যালা (वर्नेनि १४१)। सनुबेदो तय≖तत्(अ.४.४) ३

तत्त न [तस्व] सत्य स्वस्य कव्य, परमार्थ (इर करन्ये पुष १२)। आ य िवस् ] बलुनः (टर ६०६) । ज्यु वि िंद्रों दल्य का बानकार (यंका १) s

क्त पृक्ति र तीमध शरक-मूचिना एक शरक-स्थान (देशन्त्रः )। २ त्रयम नरश मूमि का एक नरव-स्थान (वेबेन्द्र ४) । कत्त नि [क्स] गरम क्या हुमा (बन १२%) निपार ६३ दे ६ ६ ६५)। अस्ताकी िंक्सस्य] नचै-विटेप (ठा २ ३) ।

तत्त्व य तित्र] यहाः सम्, होत वि [ मधन् ] पूग्य ऐसे धान (ति २६६) मनि १६)। वचरूमुत्त न [वस्त्रार्थेसृत्र] एक प्रशिक्ष वैन रर्शन-प्रत्य (धान्य ७०) ।

3 88)1 तक्ति की तिसि | तृप्ति | वैधीय (दुमा, कर २६)। इ. पि [सन्] तृष्ति-पूक, तृप्त सन्तुष्ट (राष) ।

क्षचिक्रम न [पे] रेगा हुया क्यका (क्यू

त्तिकी कि रिवादेश, हुदूस (वेश २ सर्ग)। र बन्परता (६२)। १ किना विचार (बान ४१ २७३ शासुपान् ३७ २a)। ४ वार्तवात (या २ वन्का२)। इ.कार्ये ध्रयोजन (पराहृ १ २ वव १)। त्तरिय वि ितायन् ] काना (प्रान् १४९) : त्रचिस्त ) वि 🚰 उत्पर (पर । देश, ३ त्तिचिह्न∫या रॅंप्रॅंप्रामू रेश्)।

नुमा)। तक्तिक न दि ने मुस्त समीन (देश ६)। तक्रिम वि वि । चित्र ( यह ) 1 वक्ती रेको सओ (दुमा की २१)। सुद् वि [ मुख़ ] निस्का ग्रैह वस चरत हो वह (सुर २ २३४)। तत्तोहृत्त न [दे] तत्तिभूक उसके सामने (गढण) ।

तत्त (सप) देवी तत्य = तत्र (हे ४४४

तस्य म [तत्र] वहां असमें (हे २ १६१)। सव वि [ सवन् ] पुरुष ऐने शाप (पि २६३)। य वि [क्य] वहां का रक्षीवाना (उप १३७ टी) । सस्य वि जिस्ती गीत बत्त ह्रण (हे २१६१ कुमा)।

तरय देनो तच≈ तम्य (वर्गसं ६ ४४ संदि करवरि 4 जिल्लारि नय-विशेष 'कावरिनएक रुषिया सोइत गरम पुर्दे (थण्ड्र ४) । तका देवो तया = तवा (शा ११६)।

सको देवो सभा (हेर १६)। तश्रभय न दि । तृथ्य, नाय (६ ५, ८)। शिक्समस । न कि प्रतिरित सन्दित र्षारअसिक हरतेन (दे र. का नदश तर्दिशह नाम)।

वशेय वि [स्पर्शय] तुम्हाच (महा) ।

तहासि देवी त-हासि = खग्दोरिल् । सक्रिय प्रतिक्रित्ती १ व्यावरता-प्रतिद प्रत्यव-विदेश (पर्राह १ १ तिसे १ १)। (भग ४, ७)।

र तांद्रत प्रत्यव की प्राप्ति का कारण-भूव धर्षे (धए) । तथा देखो तहा (ठा३ १३७)। सम्राय देवते सण्याय (सूर १४ १७४)।

समहादेखो सण्डा(सुर १२ १ दूमा)। तप देको तथ = तपस् (पैड)। सप्प सक [तप्] १ तप करता। २ मक गरम होता। तप्पद्य तप्पेदि (गिमः प्रासू X1) 1 तप्य सक [तर्पयू] तुस करना। यह वप्पमाण (पुर १६ १६)। 🚺 'न इमेर बीबो सही संपेट काममोगेडि (भाउ १ )।

कु नरपेयस्य (मुपा २३२) । ठप्प न [तहप] रुप्या निमीना (पाम)। अर्थि [ग] रुप्यापर जलेगामा सोने बला(पएत १२)। एप पुन वित्र] डॉबी खेटी नीश (पण्ड १ १ विशेष ६)। बप्प पून विमी नधी में दूर से आदकर भारत ह्मपा काल समृह (संदिद ही)। चप्पक्तिमा वि[तत्पासिक] धर पत्र का

तप्पञ्च न [तात्पर्ये ] तात्पर्यं मतसद(राज)। वप्पण न [वर्षेण] १ सभ्य, सनुमा, सन् (नएह २ १)। २ सीमः वृति-करण प्रीतन (मुपा ११६)। ६ स्निग्ब बस्तु से शरीर की मानिश (खाया १ १६) । टप्पणमान दिने येन शाबुका पात्र विशेष

(मा १२)।

चरपछी (बुलक १)। वप्पत्राह्माखिला भी दि । मक्तिशिव भीवन (बरा व कु बनुदेवद्विधी धरिय

सहिंदी)। बण्यभिद्रं च शिप्रमृति विवते, तबने सेकर (क्य गाया ११)।

तप्पमाण रेपी सप्प = सर्वेव । वप्पर वि विस्पर विशव (दे ६, ३)। वप्पुरिस र् [वस्पुरुप] म्यानरल-प्रक्रिक

समाग-विशेष (मणु) । त्रप्यक्य देन्ते त्रप्य ≈ तर्पय् । वस्थानिय रि [वदुभक्तिक] प्रमण रेजक

स्य न त्रियों तीन का बनुह, विक किन

त्तपृक्षित मेर्स (चड ४३, कार∉)।

वय क्यो ववा⇒वदाः प्यमिद्द

["हार्र] शर्मा की बालेनामा (म ४ १)।

तवाकी [स्वयु] १ लया, अप

बमही (सम ११)। २ शब्दगीकी (का

**४१)। संत पि [सत्] लय** 

बाला (शाबा ६, १) । विस द्रं [विन]

वयार्जवर न [वदनग्वर] उसके बार (दीर)।

देखो समा≕लप्। कैसाम रि

मिस्ति विषये (ब ११६)।

तया च [तदा] क्त समय (कुमा)।

धर्वं की एक बावि (बीव १)।

```
बहु मरस जिससे इस बन्ध के सवान हो
 परकोड़ में भी जन्म हो बद्धा सनुष्य होते से
 माग्रमी बन्ध में भी क्विते मनुष्य हो ऐता
 मररा (मन ११ १)।
सम्भारिय पू [तद्यार्य] शब्द भीकर, कर्म
 चारी कर्मेंडर (घर ३ ७) ।
बस्मारिय र् [बद्धारिष] क्रमर वेखी (जन
  1 (0 1
तब्सूस दि [तर्मोस] वदी मूमि में करण
 (TE 1) 1
दर्भाचप [दे] सोज, वस्ये (प्रकृष्टर)।
दम स्कृतिस्] १ केद कला। २ छक
  इच्छा करना । तमइ (प्राक्त ६१) ।
 दाम पू [ब्रे] शोक, मक्सीस (वे ४, १) ।
 दम पुन [ दमस ] १ यलकार । २ यकान
  (8 ૧ ૧૧ વિક્રષ્ટ થીમ થળેર)ક
   दम वं दिमी सदनी नरक-पृथिनी का
  पीव (कम्म १ पेच १)। समध्यमा ची
  [तमप्रभा] प्रतानी नरक-पुनिनो (बाए)।
  तमा की विमा शतना गरक-प्रक्रिकी
  (सम ६६ ठा)। "तिमिर = ["तिमिर]
   १ सम्बद्धार (शहर)। २ ध्वतन (प्रीत)।
   ३ चन्वकार-समुद्ध (बृह ४)। प्यामा श्री
   िमभा दिन्दी नरक-पूक्ति (पएए १)।
  तमंग दुं[तमहा] सतवाच्छा वरका वच्हा
   समा (तुर ११, ११८)।
  समंजनार 🛊 [समान्धकार] प्रश्व धन्तकार
   (पडम १७ १)।
  समज न दि पुल्हा जिसमें बान स्वानर
   रसोई नी नाती है मा (देश २)।
  दर्माण पूंची [व] १ द्वान द्वाव । २ शूर्व
    बूग विरोध की सात जीवपन (दे र १)।
   तमय दूरिम की १ जीवा नरक वा एक
    मरप-स्वाम (देरेग्र १ ) । ए वाच्यी नरव-
    भूमि का एक नरव-स्थान (देशेन्द्र ११)।
   वसमान [वसस्] मन्त्रकाट विश्वतात्र मे
```

दिना पं (शब्द १६ ) ।

1 2)1

रामस में [रामस] अन्यशास्त्राचा (शत ६,

तरभव पू तिबुसयी नहीं कम इस बल

कैसमल पर-जन्म । सरप्प त ["सरप्प]

```
पाइकसद्दमह-जबो
वसस केवो वस = वसव 'पंतरियो वा
 क्य के बान वैक्द्री नेव्यू सि की स्टेको' (पव २)।
वमस्सर्भे औ [वमस्पर्वा] पोर प्रन्यकालाकी
 चल (बहर) ।
तमा भी [तमा] १ व्यव्या नरम-पृथियी
 (बग६६ हा७)। २ स्थोरिशः (ठा१)।
समाव धक [भ्रमम्] बुगाना फिराना।
 तमाबद (हे ४ १)। वहः, तमार्वत
  (कृपा)।
वमास प्रजिमास्त्री देश-विशेष (ज्य
  १ वेरे दीः यस ४२)। २ ग. स्यास श्रम
  काभूभा (से १ व ६)।
 विमिस पूँ [विभिक्त] पौचर्य नरक का एक
  नरक-स्वान (विदेता ११) ।
 विभिन्न [विभिन्न] १ धन्तकार (सूध १
  थ, १) । गुहाकी [गुहा] gas-विकेत
  (44) I
 वमिसंबचार 🙎 [धमिस्नान्बकार] प्रबस
  सम्बन्धर, नीर संबंध (सूच १ १ १)।
 वमिस्स धेको तमिस (१ ० १६)।
 वनी की विमी | चनि चत (वबर)।
 वसुकाय केवी वसुकाय (तर ६, ४,—वन
   २ ६ म ) ।
 वसुबाय दू [वगस्क्रय] श्रेषकार-वचय (क्र
   ¥ 3)1
 तसुध वि [तमस्] १ वन्तान्य वाध्यस्य ।
   २ मस्यन्त बकामी (तुथ १, २)।
  वमाकसिय वि[तम ऋषिक] प्रव्यव क्रिया
   करनेवाला (तूच २, २)।
  वस्म धक [ तम् ] क्षेर करना। (या ४०६)।
  सम्म वेवी सम = सम्। सम्मद् (प्रकृ ६१)।
  वस्मण रि [ वस्मस्] व्यक्ति वश्वित (विश
   1 (5 3
  तस्मय वि[तस्मय] १ तालीन तरार । २
   पलका विकार (पर्याह १ १)।
```

तम्भिन [व] वक्त ववदा (नक्षः)।

३५३)।

R) I

वस्थिर वि [वसिन्] धीर करनेवाला (बा

वय वि [तव] विस्तार-प्रकः (हे १ ४६) है।

२ वशः बद्दा) । २ ल- वाय-विशेष (ठा २,

तयाजि ∤स [तदानीस्] इप दश्य (नि समाजि । दश्का हे १ १ १)। तबाणुग वि [तद्युग] एसका प्रदुष्ट करवेबाबा (सूच १:१४)। सर सक [ तु ] दूरक ख्लाः धेरोन ख्लाः वर्ष (विश्व ४१७)। तर बन्द [ स्वर\_] स्वय होना, बन्दी होना तेव द्वील(। तर (विसे २६१)। तर बक [बक्द] समर्व होना सकता। सप (हे ४ वर)। नक्र तरंद (बोन ११४)। तर तक [त्] तैरना, तच्य (हे ४ वर्ष)। कर्गं, व्यरिन्त्रह, तीरह (हे ४ २६३ म ७१)। यहः तरंत तरमाण (पाम द्वेरा १=२)। 🔐 तरितं तरीतं (जम्य ५ १४१ हे २ १६ )। इन्तरिश्रम्य (य १२ तुवा २७८)। दर त्र [ तरम् ] १ केप ≀ २ वस पर्यन्ति। सिंह वि विश्वति है वेषश्राद्धाः २ वर्ष वक्ताः। सद्विद्यावयः 🛚 ["सद्विद्ययन] वस्त दुवा (भीप)। वरंग दूं [वरतः] १ कलीव शीप वर्ष (पद्यार ३) थीत)। लंदल ॥ विन्युनी इपनीररेव (रंध १) । सामि र मासिन् लपुर, भावर (शाम) । बई सी विनी १ एक शायिका। २ कवा-बोध-विरोध (र्थन १)। वरंगसस्य भ्री [वरद्वस्थासः] अनमिट्रवृरि इत एक पञ्चत प्राष्ट्रत केन कमानांच (सम्बद्ध

1 (#F 5

वरंगि वि [तर्राक्षम] वर्रवनुषः (यतः क्ष्यु)। वर्रीगम वि विरक्षित । वर्षा पुरु (वडड से ८ ११: मूल ११७)। नरिंगर्गा को [तरिंद्रियो] नदी गरिवा (प्राप् १६: एउड: मुना ११८) ! न्तरंगिर्मानाह पू [तर्राद्रियानाम] वगुर शामर (बञ्चा १६६)। शरीब १ पून [नरण्ड, क] बॉक्से नीका शरहत है (गुता रंधर दंध में मुर व १ ६) पुरव १०१)। करण वि [तर, क] केप्नेशासा विषय (हा X X) 1 नरण्डा बुंबी [तरकरें] चापर बण्यु-विकेश स्याप्रशी एक जाति (पगह १ १ छाना १ १ स २२७)। और व्यदी (वि १२३)। मत रूपी ["मत] बार बणु विशेष (पडम ४२ १२)। क्षरह रि [बे] प्रयाम, प्रष्ट, समर्व चतुर हानिरनराव खाट्टी (बाट १०)। शरहा } ध्ये [दे] प्रमत्म स्थे प्रीडा नाविता शहा रे शिक्ष्मार स्री 'नारोज द्वारि चिर बरणी थएहें (बच्चा नाम १६६)- भाई क बावनाधी तरलत्रकृती प्राधी (मुना४२)। श्रदण न [तरण] १ वैरता (बा १४ व ६६६: मुपा २६२)। २ जहान जीवा 1 (es \$ 177) सर्राम पू [नर्राम] १ नुवै परि (पूना)। २ वहात्र नीता। १ प्रत्यूमाधै का पह **पी-(धार का पेड**ा ४ सर्थ दूस धारवन TH ( \$ 1 91) 1 शरनम रि (तरनम) सुराधिक 'तराध बोल्युनेहि' (बन्द) । सरमाण देनो तर = त । तरम रि [तरम] बंबर काव (धारः कार क्षा बाबू देह गा २ का बुद र, बहे) ह मध्य गर [नरण्यु] अंथन बरना अनित गरता । वरतेद् (पत्रह) । यह तरलंत (PH Ye ): नरप्रात [नरस्त] वस्त्र प्रसा हिल्ला 'काम्मदेगो द्रामंत्र दुरदारवर्ष' (बमू) । मराप्र वस दि [नर्राञ्ज] चेरा हिन्तु हथा कर प्रमान विया हुया (दशह व्यंह)।

सरकि वि [शरकिम्] दिसलेबासा (बन्दू)। श्रावित्र वि शिरावित्री चंचन किया ह्रण (पा ७८ जा पूरेरे सार्वे १११)। तरपह व [बे] बुद्ध-विद्येष अववद प्रमाद वशार (दे ४, ४३ पाप) । । सरस न दि | यास (१ ४, ४)। सरमा च [सरमा] ग्रीम पक्षी (मुप X#7) 1 करा औ [स्तरा] जल्दी स्रोधना (पाम) । तरिभव्य वैद्या तर 🕶 तु । वरिअवन म [ये] बहुत एक तव्य नी वोधै शिक्स (वे ४, ७)। तरित्र वि[तरीत्र] हैरनशका (विकेश २०)। सरित देवो सर = १। तरिया की दि देश बादि का सार मताई (शम १३)। सरिद्धिय [तिहि] तो तक (नुर १ १३२ tt 6t) 1 वरा ध्ये [वरा] शीरा, वॉबी (यूपा १११) दे६ ११ - जानू १४६) । प्रामु २६) । त्तरम रि [तरण] जरान नम्य नपराचा (पडम १, १६८) । तरमा ) वि (तरमार्ड) वायक, कितार तरामय | (सूर्य १ १ ४) । २ वर्षान नया (बर ११)। की. (जना व्यया (यावा 1 (1,5 वसमरद्ध पून [न] येन बीमारी (बीप 234) 1 वरियम पूर्वी [सरियमम्] यीवन अवामी (वध्य) । सम्मा थी [ नम्मी ] प्राप्ति थी। बाह्य हो (यज्ञव राष्ट्र ४२ महा) : नम बर [ तम् ] सरना भूतमा तैत साहि में बुरता । वरण्या (रि४६ ) । बार समित (बिग १ १) । हैं। विकित्तर (त ११६)। सस्र म [च] १ धन्या विद्योगा (दे स. १६)

बर्) । रेर्च बात्रस वाच वर बुन्तान (हे

गवर्ष [गत्र] १ दणस्टिम समुक्ता देव

[mm] } 2 21-44 A\$1 A24 35

2, 22) 1

७१)। २ म स्त्रक्त 'वर्राणवसीय' (बप्प) 'कासवित्तनस्थि' (दूमा) । ३ इपेसी (मं १) । ४ ततः, मुमिशः नददने धामाप् (मुर २ ⊏१)। ९ धनोमाग नीचे (लामा १ १) । ६ हाव इस्त (कप परह २ ४) । ७ नव्य छत्ड (ठा⊂)। ⊂ ठ≒त्रापानी के मीचे का जाप या संबद्ध (बर्स्ट रे ६)। शास पून ['वास्त्र] १ हस्त-वास वाकी। २ बाव-विशेष (कप्प) । व्यद्वार वृं विद्वार] तभाषा चौदा (है) । सँगय मे भिक्क फी इत्ब का बालुपल-निरोप (मीप)। बहु म ["यह] विद्योते को जरूर (काबा १ ४) । थट्टन ["पत्र] ताइ दूत की पता (वण्या 2 Y) 1 संख र्न [तस] धुनायनियेत (एव ४६) । २ हपेती। व्ययमाउसी करतमें (सूच २ १ १६) । ताम कुत्र की वर्षी (सूच १ ६, १२)। बर पुंचिरी सवा में प्रसम होकर वित्रको रूच-विदेव क्षेत्रे का पट्टा दिया 🗗 बह (मण् २२)। थरु पूँ [यरु] बूग पेड़ पाछ (को १४) <sub>द</sub> संस्थान सक [भ्रम्] समय करता, बूसना दिरता। वनमेंग्र (हैं ४ १६१)। राजनागरियुं [दे] दूप दनाय (दे ४ ८)। वक्रआहा की [वं] बनस्रविनिवदेश (प्रतृत्त १)। चक्रण व [चन्दन] दलना भर्तन (पर्यह 1 (5 5 वस्तरप बच्च [नप्] वरना गरम होना। दनपर् (निष) । वखायम १ [दि] स्पनि शिक्ष पान (ह ₹.0) I तकरच दूं [दे] १ बान वर धामुरण-विदेव (वेश रहे याय)। २ वर्षण उत्तराय (R X 32) 1 तमयर दुष्ट्रि तस्त्रर] नवर स्थक्त बोजरान (रापा १ १: नुसा ६, ७३ और महा धारं कामा स्यामन् प्रा)। वस्त्रीर (व [वात्रस्ति] स्वस्त रहा (हे वस्त्रीर १ ६० त्रात्र) । वस्त्रीर

नक्षमाचित्रकि [चें] १ र्रीतार सुप्च

पूर्व (देश १) ।

तस्तर सक सिन् सीवना। वनहरूद

तबाह्य (सूचा ११६)। नक्क- तबबहुर्ति (सुना १११) । त्रस्ट्रहियाची दि] पर्वत का मूच पहाड़ के नीचे की कृति। तसहरी तराई हुक्सरी में-- तब्दी' (सम्मत ११०) : वधाई से [वस्तिक] क्रेय राज्य (कुमा) । तसमा ) न [तकारा] वानाम वरोनर (यीव क्तस्मय∫ इ"रे २ रें ३ प्रज्ञ खाबा १ क स्व)। सञ्चार पू [क्] नवर प्रान्तः कोतवाल (वे ४८ ३ मुपा २३६३ ३६१ वड हुम १४३)। वसारम्ऋ पुं 🛊 वद्याराष्ट्री अगर वेली (बा१२)। वस्ताव रेको तस्मा (हका मि २६१)। द्यस्थि (दिस्ति ] पूत्र हुमा उचा हुमा (विवाद २)। दक्षिमा १ न [क] क्यानह चुता (धोन वसिगा 🕽 १६ र 4E () ) विक्रिय वि [विक्रिन] १ प्रवतः सूक्त कारीहः (मरहरे ४ भीत के ६,६)। २ क्रमा सुद्र (से १ 💌) । ६ पूर्वम (पाय) । विक्रिम पून [दे] १ रुप्या निकीमा (६ ६, २ ) पाय ग्रामा १ १६--पत्र २ १३ २ २। मतक) । २ दृद्धिम फरछ-कच बसीन (देश, २ नाम)। ६ वर के अगर की मूनि । ४ वास-गरनः सन्तर-पृद् । १ प्राप्टः भूतने का सामत-न्यस्तत (वे ६ २ )। विक्रमा की [विक्रिमा] क्ल-कियेप (निवे थ दी वृहिती)। वसुण वेशो वस्त्र (खाना १ १६ छन बर १६) । तक्र वि] देशो तक्षार (अपि)। दस्स्रम [ब्रे] १ वस्थन क्रोटा समार (बे इ. ११)। १ इल-निरीय वक् वि ६. १६ पर्या ९ ६) । ३ रज्या, विश्वीना (वे ६, ₹ध वद्)। दरस्य र [ दरस्य ] नुच विशेष (धन) । सस्यक्ष न [ब्रे] राज्या विश्वीना (वे ४, २) । विस्पिद्ध विदि विषय, क्षणीत, (दे हः, ३ पुर १ १३३ वाम)।

वस्त्रसः ) वि विस्क्षेत्रयो ज्यो में विस्का वरुद्वेस्स ) बच्धबसाय 🜓 तत्त्वीन तत्रास**न्ह** विपा१ २३ राष् वस्त्रोविस्थि सौ वि । वहप्रकृत वहप्रमा अपनुष द्वोगाः 'बोड६ चति विम मण्डजिया **धस्तो**विस्ति कर्रतं (कुप्र व६) । त्रमः शक्तः विभृी १ तपना गरम होता । २ **छक्ष. तपरचर्वां करना । धवाइ (हे** १ १३१) वा २२४)। मुका, ताँवसु (सव)। वह तवसाण (था २७)। त्र सक [तापय] बरय करना। तबेद (भद) । तम पूर्व विषयः विरास्ता कारचर्या (सम ११ मन २६ प्रश्नु १७)। सम्बद्ध पू [गच्छा] कैन मुनियों की एक शाका गख विरोप (पंदि १४)। सन्दु ("गव्य] पूर्वे के शिवर्ष (इ.७.)। चरण करण व [ चरण] १ तपरचर्ग तप-करल (बुध १ ४, १ उप दू ६१ वर्षि १४७)। २ तप काफन) स्वर्गका बोग (कामा १६)। बर्यन नि विर्यालन् । त्रास्था करनेनामा (ठा ६,३)। केवो तमो । तम चेनी सम (हे ८,४६३ वर्)। तम वेशो भूषाः तस्य (प्रकृद्ध)। द्यागार् विक्री कि से बेकर न तक प्रांच क्रमरः। पविसक्ति न [श्रविभक्ति] नाठ्य-विशेष (यव)। **डबण दुं**[डपन] १ मूर्व सूरव (छर १ ६१ टी दुप्र २११)। २ एक्स का स्व प्रवास तुम्बर (के १६ १)। १ त. शिकार-विशेष (बीम)। तक्य ने तियम दिश्यो नरक भूमि का एक नरक स्वान (स्वेशः )ः तुणया की विशया वापी नहीं (इस्मीर १६)। तक्या 🕰 विषन्त्री प्रातालका (तुपा ४१३) । वर्षाणक न विपनीय दुवर्ष, धोना (पर्श

१ ४० पुता ३३)।

(दीन्द्र १६२)।

तकणिका पून [तपनीय] एक देव-विवास

तक्यी भी [दे] १ काव भन्नल-गेन्य कल

मादि (दे इ. १३ सुपा १४ ३ शस्त्रा ६२) । ।

२ वाश्व की बीत ते फाटकर कक्क सेन्स बनाने की किया (सुधा १४६)। १ हरा, कुमा ध्यवि पद्माने का पात्र (हे २, १६) । वन्योय देशो तन्यिक (मुपा ४०)। तवमाण देशो तव = तप । तवय विदि] व्याप्त विश्वे कार्व देवना हुमा (वे १ २)। तक्य पूर्विषकी तका मुनने का इसका (बिया १ व सुपा ११वा पास)। वद्धि देवो वदस्सिः पर्ययक्तिन नवा इस्तो स्वसीख व गोर्चु (समैति १९ १६)। वंबस्सि वि [तपस्विन्] १ तपस्य क्रकेता (सम ४१: उप वरे वे टी)। २ ई सम्ब्र 🖼 श्चवि (स्कार १)। तविश्र कि[तप्र]क्याहमा यस (है ८ १ ३ पाम)। त्रविश्र वि [तापित] १ यप्न निया [मी । २ संबापित एसाए की न धनियो, वक्नीन लच्चीए सम्बद्धे (सुपार ४३ महा निर्म) र क्षक्रिम कि [तपित] तीवये नरक-तृमि म एक नरक स्वान (देवेन्द्र प)। श्रविका की [तापिका] तथा का हावा (रै \$ \$44) : तुषु वेको तुक्ष (प्रथम ११०, ६)। त्वो देशो तभो (रेम)। तथो देखो तब = तपहा कम्म न ["रमेन्] क्य-करुष्ठ (सम ११) । भ्रम द्व विक्री ऋषि शुनि (शाक)। घर दूरियरी वपस्पी मुनि (पत्ना २ १६६८ १ व १ द)। इस्स निवनी अस्ति का स्मर्थन (उप ७४६) सम्बर १६) । शक्यिय वि दि शीवत बीड, दुई-वर्तव का धनुकारी "तम्मातिकाया निवं निधनपुर्वे" नुकरबन्धवसाविद्यार्थ (विसे १ ४१)। तब्बक्षिम वि वि एतीयवर्णिको एकैंव बायम में स्कित (क्य पू २६≡) ≀ विन्द्र ने [विद्विम] न्द्री प्रकार का (म्म)। वस थक (बस् ) करता, बाद बाता । वस्र (हे ४ १६=) । इ. तसियक्त (का १६६ तस पूर्विस् र सर्वन्तिहर है समिक

इन्द्रियताला बीच हीन्द्रिय भावि प्राफी (बीव

शाबी २)। २ एक स्थान से बूखरे स्थान में काने-माने की राखिमाला प्रायती (निष् १२)। "स्त्रहण प्र**िक्सिय है जै**यम प्राप्ती, क्षीन्त्रियावि जीन (पराह १ १)। काय पू िश्चिय**े १ वस-समूह** (ठर २ १) । २ चंदम प्रायी (पाचा)। जाम, शाम न िनामम् ] कर्ग-विशेष जिसके प्रधान से श्रीन वसकाय में उत्पन्न होता है (काम १ सम १७)। "रेण वं "रेज़) परिमाण विशेष बत्तीस हवार साथ सी सङ्ख्य पर माराझों का एक परिमारा (करा यह २६४)। वाष्ट्रया हो [पादिका] बीन्त्रिय जन्तु क्रिये (कीव)।

-इसण न [त्रमन] १ स्थलन वनन हिनन (राज)। २ पलायन (सूझ १ ७)।

त्तसलाकी की जिसलाकी जिस बीबो के रहते का प्रदेश को अपर-मीचे मिलावर जीवत रक्यू परिमित्त है (पब १४३)।

तसर देशो टसर (क्यू)।

वसिक्ष वि दि] तूक्क सूक्षा (वे ४ २)। त्रसिम वि [तृपित] त्वानूर, विपासित

व्याचा हमा (रवय =४) । त्सिका वि जिस् | चीत क्या ह्या (जीव

६ मह्य)।

तसियक्य केवो तस = कर्। हसेयर वि जिसेतर | एकेकिय बीव स्वावर प्राणी (सुपा १६८) ।

तह स सिवारि एक्से वर्ख (दमा प्राप्त १धः स्वप्न १)। २ और, तवा (हे १ ६७)। ६ पार-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता धन्यय (निष् १) । असर दे विनारी 'तना' शब्द क्याया (एत २६)। जाण वि ["क्वान] प्ररत के चत्तर की वालनेवास्ता (ठा 4,)।२ न,सस्य अनन (ठा१)। चित्र [इति] स्वीकार-योजक शक्यव-वैसा ही (बैसा मान करमाते 🐧 (खामा १ १)। य म ["च] १ एक मर्प की शहरा-पूजन धम्बद्धः २ सपुन्त्रपःसूत्रकः सन्दद्धः (वैचा २) । "पिय "पि] तो भी (गतक)। विद्वारि ["विघ] पर प्रकारका (कुपा ४६१)। देवी वहा ।

तह कि विषय तथ्य सस्य, सक्का (सुम 1 (89 3

तह व सिया बाजानाएक सस. मौकर (ठा ४ २--पत्र २१६)।

तह )न तिच्यी १ स्वमान स्वस्थ ताहीय (सुप्रीत १२२)। २ सत्य वचन (सुप ₹ ₹¥ ₹₹) I

त्रहं थेको तक ⇒ तथा (भीप)।

तहरी की कि नकुबली मुख (१ ४ १)। तहक्रिया भी वि ] गो-शट, गीर्घो का बाहा गोशासा (वे १ ८)।

तहा केको तह ⇔तया (कृमा नउड प्राचा सर ६ २७)। गय पं भिन्नी १ प्रक बाह्मा । २ सर्वेड (धावा) । सय वि िमृत् । उड प्रकार का (पड़म २२ ६४)। इस्म वि किय | संस्थानिक प्रकार का (सव ११)। विकि [वित्] १ मिनुषा चनुर २ पुंचर्यक (सूच १ ४ १) । क्रिय िंदि वह इस प्रकार (उप १व६ दी) । तहि वेशो सह = तमा (गा वश्व कत ६)। **८ डि.) च तित्री वहाँ छसमें (का** २ ६

सक्कि प्राप्तक गाँ २६४ ळव १ १)। वहिय वि [वध्य] सत्य, सच्या वान्तविक (श्रापा १ १२)।

तिहियं म तित्री वहाँ छउने (विशे २७०)। धहेंस ) व [वधैव] उसी वरह, उसी प्रकार पहेंच (कुमा वर्ष)।

ताम तिवी धनसे बस कारण से कि ४ २०८ सा४६ ६७। छन्।।

तादेको बादा≈बानव (हे र २७१ मा 2×2 2 2) 1

याम [यक्त] का उस समय (रेमा) हुनाः संगा ।

ताम विक्रि] तो वथ (पंताकुमा)। ताकी [ता] बक्सी (सूर १६, ४०)।

का सं[कद्] वह। गंध ⊈ [\*गल्ब] १ ध्यकाक्ष्म । २ प्रसुके शम्म के समान सम्ब (भगण १७)। प्रधास दे [स्वर्श] १ च्यका स्पर्ते । २ वैसा स्पर्ते (प्रवृक्षः १७) । रैस ⊈ [रस] १ वहस्तर्थं। २ वैसा स्पर्धे (पद्याप १७)। इस्मान किये [१ बहुक्या२ कैसाक्य (पदस्य १७ —प% ५५२)।

ताक्ष देखी ताब = ताप (या ७१७ व१४ क्षेकाम् )।

साम पं सिक्त १ तात पिता गए (मुर १ १२३: बल १४)। २ पूर्व नस्स (सूम ₹ ₹, **२)** ≀ साअ धक 🗐 ध्याण करना। 🕏 सायम्ब

(बा१२)। धामप्य म [ वादान्स्य] तर्म्यता समेद,

यानिकारा (प्राप्त २४)। ताइ वि [स्थारिम] स्नाग करनेवासा (गा **२३** ) (

वाइ वि विविध्य रिक्षक परिपालक (उन्न

बाइ वि [वापिम्] वाप-पुक्त (सूप १ १५)। ताइ वि [बायिम्] एतक छाए करनवासा (वक्ष २१ २२)।

ताइ वि शिथिम् जिम्हारी (सुध १ २ 2 (0):

ताइ र् [मायिम्] पुनि चार् (रतनि २ E) i

वाइथ वि [त्राव] धीतव (क्व) ।

नार्ड (भप) क्यो ताथ = शबद (क्रूमा)। वाठा (दुपै) देको दाहा (हे ४ १२४) : वाड क्व [वाडब्] १ तक्त करना पीन्ता। २ प्रेरणा करना सामात करना। ३ प्रणाकार करना। ताबद्र (क्रे.४ २७)। माने वाकास्तं (रि २४)। मक सार्कित (कान) । कन्त्र टाडिक्समात्र साडीअंत. वाडीअमाण (सुपा२६ पि२४ । धामि

१६१) देश वादिषं (क्यू)। इ- वादिस (बच ११) । ताब पूं (ताछ) ताइ का वेड़ (छ २४६)न वार्वक पू [ वार्डह ] अस का धामुक्छ-

विशेष कुएक्त (दे ६, १६) कप्पूर कुमा) । वाडण न वाडनी १ वाइन पीटना (धप र=६ दी गा १४१)। २ ब्रेंग्गा बामल (धि १२ चर)।

वासाविय वि [वासिव] पिटवामा गना (सुपा २०वो ।

साविध्य केवी साब = काव्यू।

वाक्रिम वि [वाहित] १ विश्वमा कावन किमा क्या हो वह, पीटा हुया (पाय)। २

नुपुत्र पत्रमानी की साता (सम १६२) ह

नरी विदेश (हा १ ) १ बीओं भी रामक

देशी (इंच ४४२) । यह म [ तुर] सार्रका-

रनान (रूप ४४१) - यह है [ चंग्र] एक

राष-पुनार (बाब ७१ है) । तमय है

कम्प)। २ एक राजाणी। पूर्णकार-नावक राजा भी एक हामस्य न [नामस्य] नमन वय (दे थ, परयागी (हा ४ १) । रेगो शाहवा । १ पाम)। तारण न (तारम) १ बार उतारना (पुत्रा तामरम न दि ] पानी में बचन श्रमेशना ११०) । २ वि. **शा**रोजामा (**बुगा ४१७)** । बुग्ग (वेश १)। वारत्तर पू [पे] बूट्से(वेश १)। हामसि 🐒 [नामसि] स्तराव-स्वात एवं साराव शास्य विगे तास्य (सम सं शामू t t) । ४ 1 (207 2 21 47 5) 1 म, सुग्र विदेश (विग) । हामन्त्रिण 🛍 [हामनिति] एक शाचीन शारपा रेची तारगा । १ वांच की तारा क्रम है प्रेय देश की आपीत सम्बाधी (क्रम (पन्नर या १४ - २५४)। सव ६ १। पराग् १३ तारा था [नारा] १ वांच की पुतनी (च बार्बार्ग्यसम्बद्धाः श्री (शास्त्रियः) केन्द्रभ प्रदेश प्रदेश) श्रेणाल (श्राय, श्रे शे श् बंद की एक साधा (करा) १४) । रेल्पीर गीकी (के १ १४) ४

शासास (शासस) १ सन्दर्शर । १ सन्द

स म र दि [नायस] तबोरणकाचा (पर्स

इन्तु बर्त वा सक्र विदेश (परेश 🔍 ) १

वृष्ट्रा) स्पन्न [भूम]

माराज्यार (बेरस १९१) ।

तारुल 🧵 (पडेंग रुप्यु दुवा दुवा सा ११६)। तास वेगो नाड = ताव्यः तानेद (पि १४ )। वह वाक्षमाम (दिना १ १)। दर्भ तासिज्ञत, वासिज्ञमान (प्रम १६६ १ । वि २४ )। तास कर (साक्षय) वाना नवाना करें करमा । चंद्र वास्त्रवि (मुना परे )। हास र् [हास] १ क्न-विशेष (परह १ ४) । २ काय-तिरेच वींचरा (बल्ह् २ ४)। १ वाली (रन र) । ४ चन्न वमाना ति र १६) । १ वाय-भनूह (राज) । ६ बारीरर्न नम्बर एक उत्तावक (धव द ३)। ७ व-वात दार बन्द बरने वी बन्द (बा ६६६)। ≖ ताप इस का कम (दे६ १३) । विश् न [पुर] वारान अत्तरका विशिष्

(लावा १ र४: भूगा १६०: ६१६)। जीव

ई ["प्रहात र दुन-रिरोप : वर्ग र) । र रि

c) । बस्तय पू ["म्बज्जी १ बनदेर

(मारम) । २ मूप-विरोध (वंस १)। १

राष्ट्रक्रम पहाड़ (ती १) । पर्लंघ प्रै

[<sup>8</sup>प्रदम्य] गोरात्रक का एक खरासक (मग

द १)। पिसाय र् [पिशाय] बीट-काय राज्यस (पएएए १)। पुढ देवी सङ (या १२) । यर र्ष ["यर] एक मनुष्य बाठि बारण (बोय०६६)। विंट विन बॅट, बॉट न ["बुन्त] व्यतन, पेका (पि प्रकाट—केली १ ४ दे१ ६७ मान)। ं संयुद्ध वृं ["सपुर] तास के पत्रों का संपूद, ताल-पत्र संबद (सूम १ ६,६)। सम वि[सम] ताल के प्रतुपार स्वर, स्वर বিশ্বব (হা ৬)। शासंस्टर्द्र[ताबक्क] १ दुवडल काल ना धामूपण-विशेष । २ सन्द-विशेष (भिव) । वासंकि पूर्वी [वास्त्रीहुम्] स्ट्रप-विशेष । धी जी (निय)। वालगन [वासक] लक्षा द्वार वन्त्र करने का सम्ब (तर ११६ टी) । वासण देवो वाहण (मीप) । वालगा हो [वाडना] चपेटा बादि का प्रहार (पराह् २, १। धीप) । वासप्तासी की [के] वाबी जीकरानी (४ ३, वासय देवो वास्म (नुरा ४१४ दुम२६२)। काससम न [काइसम] नेय काव्य का एक मेर (स्पनि २ २३)। साम्बद्ध पुंदि] शानि बीहि (६ ४ ७)। सास्त्र म [तदा] उम समय दिला पापेति दुला बाना वे सद्दिमएड् विप्यंति (है व ६५। बाह्य १२१) । तास हो दि तान धोर्ट, धन वा सारा (t 1, t ) i वाध्यपर र् [वाष्ट्रपर] कान (वाष) वयाने-बाना (निष् १६)। वास्त्रचर ) पुं[वाद्यचर] १ मैधक-स्थिप वास्त्रचर ) वाल देशमा मैशक (गाया ११)। १ नट नतीक सर्वेद सहस्य-आर्थि (EE 3) 1

वासिक वि [वासिव] बाह्व पीटा हुया (खावा १ ६)। तास्त्रिजेट सक [ भ्रमम् ] प्रमाना फियना । शासियदा (हैं ४ व )। तालिऔर व तिसम्बद्धी व्यवन पंचा (स R =) 1 वाटिअंटिर वि [भ्रमियत्] पुगलेवासा (रुमा) । हाजिङीत देवी तास = ताव्यू । तात्रिम रेखो शारिम (उत्त ४, ११)। तासी सी [मासी] १ बूल-विरेप (बार ६ )। २ स्ट्रप्र विरोध (सिंग)। "पत्त न ["पञ्च] तास-मूख के पता का क्या हुआ पंचा (चारु ६३)। तालु १ न [तालु क] तानु, पूँद के घन्दर तालुक है का क्याचे बार्च उनुवा (बत ४६ याया १ १६)। वाशुग्याहर्णा स्म [हास्प्रेद्वाटनी] विचा-किरोपः शासा चीचने की निया (वसू)। साल्यर पृद्धि १ फेन भ्रोण । २ कपिल बूछ कैब का पेट (दे ४,२१) । ६ पानी का यापस (देश, २१ ना १७ पाय) । ४ 💃 पूप्य वासम्ब (विक्र ६२)। राजिव देवो शस = वानव् । त्राय सक् ति।पय् ] १ तः।मा यय्य करनाः। २ वंताप करना, कुच कामाना । तार्वित (गा =१)। कमं तानिक्वंति (गा ७)। कृ वार्षाणञ्ज (मय ११)। वाव दे विषयी र गणी वाप (नुपा ३०६) क्ष्यू)। २ संतरा युद्ध (बार ४)। ३ सूर्य र्रातः। त्रिसाध्ये [ "दिश् ] सूर्य-वारित दिशा (राम) । ताव ध [तापन्] एन वर्षी का शूकक भ्रम्पयः । १ तत्रतकः (पत्रमः ६०, १.) । २ प्रस्तुत धर्षे (धावय)। ३ धावारण निकय। ४ धर्मा हरः ३ पत्रान्तर । ६ प्रशंसाः ७ बास्य-भूता । व नान । १ सायन्य, बीपूर्णेता। १ तर समध्यम (११११)। रापभ वि [नापक] स्वधेय, नुष्टाच (पण्ड 23) L ताप्रदेश रि [ नाषन् ] काता (यम १४००

वप)।

तार्थं देश्रो ताच = तावद (मग )। ) (स्प ) देखो साय=तादत् सावहा (क्या)। सायण पूर्व [तापन] चीची नरकपूमि वा एक नरकस्यान (देनन्त्र व) । २ 🕅 तरानेशारा (Pr 20) 1 ताबण न ति।पनी १ मध्म भएना बपाना (निषु १) । २ वृं समाद्भ वंश का एक राजा (पज्य १ १)। तार्वाणञ्ज रेपो ताय = तपयु । रायत्तीमः ) देवो टायत्तीसय (प्रीप वापत्तीमग्र साप्रतीमयः (प्र.४१८) इ.स.) ( तावशीसा देखो तायशीसा (पि ४१८)। सायस पू [सायस] १ कानी मोगी शंन्यासि-विशेष (भीष)। २ एक जैनमुनि (कप्प)। शिहन शिही वापसीका मठ (पाप) । वायसा भी वायमा निन प्रतियों की एक शाबा (रूप) । वाबसी भी [वापसी] वपस्तिनी योगिनी (गउ४)। शाबिक वि [शायित] दराया हुया मरम कियाह्या(चा ४३ दिया ३ ३ पूर ३ २२ )। वायिषा भी [वापिया] वदा पूमा मारि पकान का पात्र (दे२ ५६) । २ कहाई। धोग क्युड़ (धारम) । । वाविच्छ पुर (वापिच्य) बृश-विदेप वदाम बा पेड़ (बूमा के १ केंश मुदा ६०)। ताबी थी तिर्थी नरी-निधेत (परम ११, १३ वा २१६) । क्षाम पूँ [ब्राम] १ मन ४९ (ब्रा द्व १४)। २ वर्षे गः चंत्रस (पर्टर १ १) । ातासम्बद्धाः (श्रासन्) वाष्ट्र बरवानराचा (9 \$ 3 EUP) तासि वि[बाधिन्] १ भाग-पूरु माउ । ए वाग-पनक (टा४ २३ कणू)। तामिक्र विजिमिती निगरी बाग कर बाया गया हो बद (गर्दि) । ताइ ब [नरा] "त शनप तर (६३ ६४)।

ति स [विध] दीन बार (पोप १४२)।



केरो ते<sup>व</sup> ।

१२ १४ । इ.११)। मुख्याणि पुं [ैश्र्छ-पाणि] १ महादेव छित्र। २ त्रिशूचका हाय में रक्षनेवासा सुमट (पटम ४९,३४)। मृजिया की ["शुद्धिका] छोटा किर्न (सूच १ १ १)। इत्तर वि [सप्तव] किहतरवी ७३ वी (परम ७३ ३६)। शा स ["मा] तीन प्रकार से (पि ४२१ मणु)। हुळण, हुण, हुमण न [ सुपन] १ तीन बगद्ध स्वयं मार्थ सीर पाताम शोक (दूसा सुर १ = प्राप्तु ४३ चण्डु १३)।

२ पू. राजा दुमारपास के पिता का नाम (दूप १४४)। हुअमपाल पुं िसुवन-पार्छ] राजा दुमारपाल का पिता (दुध १४४) । दुव्रणालंद्यर पू ["सुषनाउंतरर] रावरा के पट्टहरती का नाम (पदम धर १२२)। हुणविहार पू ["मुमनविहार] पाट्या (इवस्त) में सवा हुमारगास का बन बाया हुझा एक जैन मन्दिर (दुप्र १४४)।

"सि देखो इञा = इति (कूमाः कम्म २ १२ રશે ા विञ (पर) यक [विम्, स्विम्] १ वाड होना । २ धकः माज करना । दिपद (प्रतङ **१**२ ) :

तिकान [त्रिक] १ तीन कालमुदाय (या १ छर ७२ व टी)। २ वह वयह बहां छीन एस्टे मिल्डे ही (सुर १ ६६)। संज्ञञ मुं ["संयत्] एक राजींप (पडम १ ११)। देखो तिग।

विभावि [त्रिक्ष] वीन दे उत्पन्न होनेवामा (चन)। विशेष्ट 🛊 [त्रिकंकर] स्ननाम-काश एक मैनपुनि (राव) ।

विक्रम न [त्रिकक] तीन ना सपुद्धव (विक्षे २१४१)।

तिञ्रहा को जिसहा दिनाम-क्यात एक पत्रमी (से ११ ८७)।

विभर्मगी भी [त्रिमद्गी] सन्द-विरोध (विष्)। विजय न [त्रिवय] बीन का सपूड (सिसे 1443)1

तिअलुकः) म [त्रैक्षेक्य] धीन कनत्— विभाग्नेय रेलमें मध्ये भीर पातल मोक (बर्गा६ उत्तह्य र)।

तिअस प्र जिन्हा देव देवता (हुमाः पुर १ e)। राज पूँ ["राज] ऐसम्ब मा ऐसम्ब हाथी इन्द्र का हायी (से १ ५१)। नाइ प्रे ["नाम] इनः (उप १८६ धी सुपा ४४) ।

पहु पू विभागी इन्ह्र देव-नायक (गुपा ४७ १७६)। "रिसि वु ["ऋषि] नारत सुनि (रूप १७१)। स्रोग र् ट्रैकिट] स्वर्ग (उप ११६)। "मिछया भी ["वनिता] देशी की देवता (सुपा २१७) । स्रिरि भी सिरिन्] गंगा नदी (दुर्ग)।

सेउ प्रैंशैली मेंब पर्वंड (युगा ४८)। ालय प्रेन शिलयी स्थर्ग (दूस १६ **र**प ७२व टीठ मूर १ १७२)। हिं**ष** पू िधिय हम (पुरा ६४)। "हिसह पू

ौघिपति ।श्य (मुपा ७६) । विश्वसम्रि पू [ त्रिवशम्रि ] ब्रह्मवि (सम्मत्तः १२)। विकसित् 🖞 [त्रित्रोग्ड्र] इन्ह्र देव-पवि

(गण्या ११४) । विजर्सेद देशो विजसिंद (बेह्म ११)।

विमसास ५ जिस्सोरा राज रेक्शानक (Rt t ) i विभागा की [त्रियामा] चत्रि, राव (प्रज्यु

At) 1 विद्यस्त स्थ [विविद्य] सहन करना। विद्वसाए ( ग्रामा )। वक्क विश्वस्थामाण

(ध्यथा)। तित्रभग्ना श्ये [तितिशा] बना, चरिप्यूता (धाषा) । विद्राच । वि विवीय | वीवच वि ४४६।

विद्य ∫ संजि २ ) । तित्रक्तर न [त्रिपुच्छर ] नाच-विशेष

(मनि ६१)।

तिबद्ध करु [ त्रोटम् ] १ तोइना । २ वरि व्याप करना। विजिद्विण्या (तुम १ १ 1 (1 5

विष्ठामा [दर्] १ द्वन्याः २ द्ववः होना- 'सम्बद्धका विकृद' (तूप १ ₹% X) i

विष्ठहृ वि [ुद्धु, श्रुटित] १ द्रश हुमा । २ धपसूत (धाषा)।

वित्रह पूँ दि कारा भोर-पिक्स (पाप)।

विउह्नम पुन [चिपुटक] याम्य निरोप (बयनि ६ व पव १६६)।

तिज्ञह्य न [स्] १ मल्पन देश में प्रसिद्ध बान्य विशेष (धा १८) : २ कॉॅंग लबंग (धापत

वितर म जिपुर दि विद्यावर-नगर (रुक्)। विकर प्रे जिलुरी समुर-विशेष (वि १४)।

णाइ पूं िनाध] बही (ति वर्ष)। विडिश की जिल्ली नमध-विशेष नेदि देश

की चनवानी (कुमा)। विब्रह्म दिं] मन वचन भीर काया को पीड़ा पहुँचानेशासा दुःच का हेनु (उत्त २)।

विकाद रेको विकृष्ठ (से व यर ११ ६८)। र्तिगिआ भी दि निमस-एव (६ १, १२)। विंगिच्छ रेको विगिच्छ (१६)।

विंगिच्छायण न [चिक्टिसायन] नवन गोग-विरोप (इक) । विंगिष्यह की [के] क्यम-रज पद्म का रज

पराम (दे १,१२) मतका है २ १७४ में ४)। विव वि [वीमिता] भीना हुमा (स ६६२)

£ X X88) 1 तिंतिय ) नि चि बहबड़ करनेराना

विविधिय । बङ्बर्गनेवाला वाञ्चित नाम श होने पर केंद्र से मन में जो धाने से बोल हे-वाला (वय १ ठा ६—-पत्र १७१ मन)। विविधी भी विश्विणी । विवा इसती का पेड़ (बरीन करे) ।

र्विविगी की [दे] बहुनहाना (वब ६)। विदुष्पी थी [विग्दुकिनी] मूछ-किरोन (गुप्र

₹ **२)**।

विदुस १ व [विग्द्रक] १ बृत-विशेष वेंद्र तिंदुस<sup>9</sup> का वेड़ (पाफा पठम २ ३७ सम १४२ पएए १७)। २ न. कम-निरोध (पएए १७) । १ न्याशस्त्री नगरी का एक बदान (विदे २१ ७)।

विद्या रेप् [विन्दुक] गीन्त्रिय कर्त गी विद्या प्रकारि (बत ३६ १३८, नुख 14, (12)

ति देनो नद्भ चतुरीय (कम्य २, १६)।

भाग भाग इत्रभू भागी तृतीय माय, कीनस दिस्या (रम्य २) शावा १ १९—१त्र २१८ कम्)। ति देवी थी: 'उर्दु वार्यंति कूँग्र नगतिपूता विमो चयरिवा गाँवीर्ड (रंग्रा) । ति रिव [यि] तीन, दो घीर एक (नर ४० सदा)। अगुत्र न ["अगुद्ध] दीन पर मागर्पों से बना हुया इच्ट, 'प्रएचकर्रीह घाटडरभे नियानचे ति निरेश<sup>®</sup> (श्रम्ब १६६)। तम वि [शुम] १ छोनपुना। २ ना रतम सीर तमम् दुलासना (अण्ड । इणियदि [शुक्तित] छोनपुत्रः (म्बर)। उत्तरमय रि ["उत्तरहातनस] एक नी टीनच १३ वा (पब्स १३ १७६)। उल रि [\*तुम] १ तीम को मीउनेराच । २ हीत वो हीतनेराया (छावा १ १—पर६४)। ओयन[आञ्रस्] रियम याधि-रिकेश (का र ३)। क्रीह बंदग रि [ बाण्ड क] द्येत राज्याता वीन मागराचा (राष्ट्रा ग्रुप १ ६) । कडूल न [सद्वर] सार नरीच थीर गीरन (यत) । इत्या देनी गरण (धन) । धान व ["धान] कुत की त्य सीर वर्स मान कार (अस सुरा ) इदाल देखा मा (देश १६६) । अंद्र रि विराज्यो दीन याच्यात (सा ६८६ देत) । श्रीका दिव 📫 ["राग्याध्यवंत] यथे वकाशी द्यास बागुन्द (बरम ६१ २६)। अल गर्ज केम वर्षेत्र (स १६६ १६३)। ररेंग न [रगें] मन बचन और बास । (स्था) स्टू स्थाई स्था हु है। शुन्त है। [गुन] बनानित वर्णाः साम र्तासमाधान (से ) सम्बद्धि [६न] हैन को समा (धन) असा भ्रम् [चर्चारशन्] तेत्रचेत्र (कान्य र ११ - १३न [जगा] सर्वस्थ ert eine ere ([3 \$1 : 0 033 4 [नाम]सम्मासिक्षंत्रहरू रंग स्थानमः) तुत्र विशे बाउ (म्प्या १ १ ६—पर ६३)। "तिस् (वर)रेपो सी। शासकःव[ब्रह

किंशन् र संबत-विशेष ३३। २ तेतीस वंदगवासा वेतीय (कप्पा वी १६) पुर १२, १३६ ६ २७) । ﴿ह न ["दण्ड] १ इमि-बार रखने का एक उपकरता (बद्धा) । २ तीन वएव (धीर)। इंद्रि पूं [ वृण्डिम्]संन्यासी सोका मत का चनुवायी खापू (का १६६ टी) मुपा ४३६ वहा)। नयह की ["नवति] १ र्वक्या विशेष विशासने । २ विशासने संस्था बाला (बस्म १ ६१) । योचा पि.स प्रधम् विद्याद् (धोष १४)। पंचासहस रि [पद्भाष्ठ] विस्तर्था (पत्रम ६६ ११ )। पर्न ["पद] बहाँ तोन छल्ने एक क्रिय रीने हों बह स्वान (राज)। पायज न [पानन] १ रुपैर, इन्द्रिय चौर प्राल इन तीनों का नारा 🗓 २ मनः वचन धीरः नाथाः कारिनास (सिंड)। पुंड व ["पुरुड्ड] तिसक-विशेष (स. १)। पुर वृ विष् धना-निरोर । १ न सीन नवर (राज) । पुरा की [पुरा] विद्यानिकोप (पुरा ११०)। "धर्मनी स्री "माही सन्दर्शिय (निय)। सहुर न ["मपुर] थी सदर सीर न्धु (मणु) । सामित्रा थी [श्रेमासिद्धी] निसरी घरवि सीन मात नी है ऐसी एक वित्रमा, बच-विरोप (बम २१)। सुद् वि [<sup>8</sup>शुग्र] रे तीय दुग्याचा (धव) । २ वृ क्यराज् संबरनावती वा शागन-देर (सर्ति ७)। रत्तन ["धात्र] तीन रात (व b ४२) 'बम्बररास नुक्रुपोरि बुध्येश क्रियुण जिल्ले (इत्र ११८) । ससि न ["ससि] भीत सनीत और नोतीय वय सीन राशियाँ (धन)। रण्यन धिवस्ति सर्वस्ति थीर पाताप संच (शुभा- प्रामू ८६ सं१)। ध्यभग 🖞 ["सपन] महारेग छिर (भारेक नाम १ १२२। सिंग)। रुप्त पुत्र र्षु [ैर"रुपूरर] बातरीकार के रिदेह में उत्पन्न एक विनास (बडम ७३ - ११)। सा के ["साधी रेगी लोज (परा बग (५३)। स्टोग देनो स्टाम (३४ हू १) व<sup>र्ड</sup> क्षेट ["पर्रा] १ तीन क्या का समूह। र मूर्व में होत बार पर वा न्यान (सीह)। र वीतिया (सेत १६)। वात व [वा] । वर्षे सर्वे धेर कान वे तेन

पुरुषाचै (ठा ४ ४---पत्र २०३) स ७ १ छाद्र२ ७)। २ सोक ≣इ मीर दमर इत तीय का नर्ने ६ ३ सूत्रः धर्मे सैर का दोनों का समुद्र (बाबु १३ बारन)। बण्न र्षं विर्णी प्रवास बुग (ब्रुमा)। बरिम रि ["बर्थ] तीन वर्षशी भवत्वाकारा (वव **३)। वस्त्रिक्षी [विश्वि] पमग्रे शै** कैर रेकाएँ (कम्पू)। विक्रिय वि [विक्रिके] तीन रैयानामा (राय) । बस्त्रं रेवो बर्जि (चा २७०। धीप)। "वहू पुं ["पृष्ठ] वट-शेष के भागी नवम बालुरेए (बम १२४)। वय व ["पद] डीन परिवास (" ६.१)। वहुआ हो ["वयगा] भेवा नधे (ह ६ क्षा वण्डु ६)। शायजाकी [पाठना] देशो पायत्र (पछ: ११)। विद्व विद्रु र् पूछ किए बालके वे क्लास प्रवम धर्म-वक्ताती राजा रा नान (बन दबा यदम १, १११)। त्याद्र रि ["विश्र] सेन जनारका (बरा मी <sup>६ ३</sup> नव ६): विहार पूं ['विदार] ग्रम कुमारराज का बनवाया हुम्म बाउँछ वा एक बैन शन्दिर (नुत्र १४४)। स**५**ई ["राष्ट्र] नूर्यरंधीय एक राजा (धरि वर)। संस्थ ("सन्दर्य] प्रशत नमाह भीर वानेशन का वस्य (तुर १६ १ ६)। सङ्घ वि ["यद्व] तिरमहर्ग ६६ वर्ग (परम ६३ ७३)। साहि यो [पिष्ठि] तिरान्य ६६ (प्रकि)। संच दिव [सिप्तर] एधेन (बा६)। सचतुक्ती व [सप्त क्रवस्] त्योत बार (खाँबा १ ६) दुरा ४४१)। शमक्ष वि ["शामविक] <sup>होन</sup> समय में यराज होतेशमा तीम मनव में धार्विशास (द्रा १४): सारय न ["मार्फ] सीन संघ या सहीराता हार (एन्स t १: थीर: नग) : १ बाद विशेष (पाप ६६ ४४)। संस्त्री ["संस्तु] बच्दमी बाह्नी वा बाच-रिक्टेप (रिता १ क)। सरिव व ["सरिक] १ स्टेन बना या सड़ी बाता E<sup>rc</sup> (बप्त)। २ शद-रिटेन (बबन १६३ ११)। वे वि भाषा विशेष-विश्वति (प्राप्त दे दे ११६)। सस ई[सीर्व] स्मीरोप

(दैश): शुत्र व [ शुः ।] १५५-(१३४ (१३४

१२ १४ छ १८९)। सुख्याणि वृ िर्श्वक पाणि १ महादेव रिप्ता २ त्रिशूल का हाय में रखनेशासा सुमद्र (परम १६ ११)। मुखिया धी "गुलिफा] होटा निपून (सुध १ १ १)। इत्तर वि [स्तर] विक्रतरनी ७३ मी (पठम ७३ ३६)। हा ध िया दीन प्रकार से (पि ४३१ करा)। हुअल, हुण, हुबल न [सुबन] १ तीन जक्त, स्वर्ग भर्म और पाठाल सोक (इमाः भूर १ ॥ प्रामु ४२ सण्डु १२)। २ वृं राजा कुमारशास के शिवा का नाम (इप्र १४४) । हुअणपास पू िमुचन-पाछ] राजा कुमारपाल का पिता (कुप्र १४४) । हमजासंस्वरपू िसुबनासंकारी रावण के पहास्ती का नाम (परम = १ १२२) । हणयिहार प्र िमुबनविद्यारी पाटल (प्रजयत) में धवा दुयारपान का नन बाया ह्या एक कैन मन्दिर (हुप्र १४४)। रेको तं :

<sup>®</sup>सि दे**वी इच** = इति (कुमा कम्म २ १२) 21)1 विञ (मन) भक [ विम् क्विम् ] १ बाद होता। २ एक. बाह्र करना। तिबद्ध (प्राक् १२ )।

विभ न [बिक] १ वीन ना चनुताब (बा १ क्य ७२ व टी)। २ वह क्यानुबाही सील चस्ते मिक्ते हीं (पुर १ ६६) । संज्ञा पुं [संयत] एक धर्माय (पडम ४, ११)। देशों तिस ।

विभ वि [त्रिज्ञ] तीन दे उत्तर होनेकावा (খ্যম)।

विमेटर ई [त्रिफंडर] स्वनाम-क्यात एक पैनवृत्ति (राज) ।

तिञगन [त्रिकक] दौन का समुदान (विसे २१४१)।

तिञहा भी [त्रिकटा] स्वताम-क्यात एक चनती (से ११ वक्र) ।

विमर्भगी स्रो [त्रिमङ्गी] सन्द-रिधेव (प्रव)।

विअय न [त्रिवय] दीन का समूह (विधे (FFYS

विअलुका न त्रिकोफ्य वान वन्त्— विञ्ञासीय स्मिर्ग मध्ये चीर पातास मौक (वर्गा ६ ३ लहम ६) :

विजम प्रे जियश के श्वता (प्रमाः सुर १

श)। गम पूंिगञ्जी ऐरावत या ऐरावल हामी इन्द्रका हामी (संद ६१) । नाह दू िनायी शन्त्र (उप **१**८६ दी सुपा४४)। पहु पू िश्रम् ] इन्त्र देव-नायक (सुपा YOI १७६) । "रिसि पु ["ऋषि] नारव नुमि (कुत्र ३७३)। जोग व िंद्रोकी स्तर्ग (उप १ १६)। विख्या औ

विनिता देशी की देवता (सूपा २६७)। सरिक्षे सिरित्] गंग नदी (दूप)। सेख पू रिके भिर्म पर्वत (सुपा ४०)। ाख्य प्रेन शिख्य]स्वर्ग (हुप्र १**१** उप **७२** व टीर चुर १ १७२)। हिंदा पू

िथिप दिल (मुपा १४)। हिन्द पू [ किपति] धन्त (पुषा ७६)। विश्रसमृरि १ [त्रिक्शमृरि] ब्र्सिट

(समत १२)। विमसिद् 🖠 [त्रिद्शंग्द्र] एक देव-पवि

(बल्बा १५४) । विअसेंद क्यो विअसिंद (नेहब ११ )। विअसीस र् [तित्रोरा] इन्ह्र देव-वायक

(E ? ? ) i विकामा औ [त्रियामा] चनि, राव (मन्द्र

विश्वसम् सक [विविश्व ] सहम करना । विश्नवए (ध्यमा)। नक्न विश्वनक्षमाण

(धाचा)। विश्वन्त्वा की [विविद्या] श्रमा, श्रीह्यपुता

(धाषा) । विद्रञ्ज ) नि [वृतीय] वीसचा पि ४१६।

विद्य । संसिर् ) । तिरक्तर न [त्रिपुष्कर] बाव-विशेष (पनि ३१)।

विषक् सक [त्रोटस्] १ तौरना । २ परि ध्याम करना । तिबङ्गिका (सूच १ १ 1 (1 1

विबद्ध सः [ब्रह्] १ द्वव्या। २ मुक होना; 'सम्बद्धका विन्द्रस्' (नुस १ なれ)1

विउद्दृषि [१६, बृटिव] १ दूस हुमा। २ यपस्य (याचा) :

विवद प्री दि कमान मोर-पिक्स (पाम) । विउद्या पूर्व [त्रिपुटक] बाग्य विशेष (क्वति ६ व पम ११६)।

विषय न [यू] १ मानव देश में प्रसिद्ध बान्य विशेष (बा १८)। २ औष, सर्वग (बा पत्र 1(33

विषर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर (इक्र) । विटर पूँ [त्रिपुर] मनुर-विशेष (वि १४)। पाइ पूं ["नाथ] बही (त्र ८७)।

विडरी की [जिपुरी] नवरी-विशेष केरि देश की राजवानी (कुमा)। विरुद्ध विदि] मन वचन भीर कामा को

पीड़ा पहुँचानेवासा दुःस का हेतु (उत्त २)। विकड देवो विकृष्ठ (से व वर्ध ११ ६८)। विंगिआ भी दि ] कमस-रव (दे थ, १२)। विंगिच्छ देवो विगिरक (१६)।

तिंगिच्छायण न [चिक्स्सायन] ल्यन-योष-विशेष (इक) । विंगिष्यः की वि नमस-रन पद्म का रज वयाग (वे १,१२) यवका है २ १७४ वे ४)।

विंद वि [तीमित] भींवा हमा (स १६२) KY YII) (

विवित्त १ वि कि बहबड़ करनेताना विविणिय । बहुबहुनिबला बास्कित साम न होने पर खेद से मन में जो माने सो बीवने नाला (वय १ ठा ६—पन ३७१ हम)। विविजी की [विन्त्रिणी] १ विका इससी का पेड़ (धरिन ७१)।

विविणी भी वि] बक्नकाना (बक् १) । विदुल्जी स्म [विन्दुकिनो] क्य-किरोग (कुम

विदुग १ पू [विन्दुक] १ प्रान्तिकेव वेंद्र विवुध का वेड (पायः पडम २ ६०: सम १४२ः पएए १७)। २ म. फस-विरोप (परस्य १७)। १ व्यानस्ती नवसै का एक ख्यान (विसे २३ ७)।

निदुग रे प्रविद्धक विशेषम् कानु की तिंदुव<sup>ी</sup> एक बादि (एत ३६ १३८, पुक 1 (383 38

३ श्रीहा-विदेश (यावम) ।

(पएक २२)।

विस्त न चिसरमी वीनों कर का विषय

तिकृष प्रै जिल्ला रे संश के समीप का

धक पहाड मुबेस पर्वत (प्रथम ५, १२७)।

२ सीता महानधे के बॉलना किनारे पर

स्मिन पर्वेट-विधेष (ठा २, १—पत्र व ) ।

सामिय दं दिस मिन् पुरेश परेत ना

निकार क्रितिकारी १ देव सीका पैता

(शहा सा ६ ४)। ३ सूदम । ३ चोला

शक्ष (कृमा) । ४ पदव मिन्द्रर (वन १३

३)। ६ देव-पुत्र, श्चित्र-नाचै (वे २)। ३

क्रोमी, गप्न प्रश्निवाला । ७ वीका नद्वरा

८ कराती । १ प्रवस्य-शिवः १ कार.

क्ता। ११ म निप जदरः १२ लोदनः।

१९ वस, संप्रार्थ । १४ शक्त इपियार । १६

इत्यानानीन । १६ यरनार । १ थेव

कृष्ठ । १ व क्योदिय-प्रसिद्ध तीरस्त करा अवा

**धरनेपा पात्रों, व्येता धीर पूच न**नत्र (≹

नियम बर्स [र्तक्त्रम्] तीरल कला

विस्त्राम न निस्त्राची वैक्ष-करण उत्तेतन

नियन्गस सक [ वीक्ष्मय ] वीक्ष करना ।

पर्ने विशासिक्त्रीत (तूर १६ १ ६) s

हेब गरता। हिन्तेइ (हे 😾 १४४)।

2 42 3)1

(इमा) ।

स्वामी धक्य (पदम ६६ २१)।

रिह्नक (प्रक्र ७६)।

११३ १ १२)।

विवस-विविश्लय

(ठा २, ६-- पर ७ । इक्ट सम, ३३) । तिजन दिली क्य बाह (दुरा २३३ २ इड-विशेष निषय पर्वत पर स्वित एक बबि (७६) सं (७६) । सूप व िंगु∓ी ह्रद (ठा२ ६---पत्र ७२)। निविश्व सक विकास ने प्रतीकार कला त्ल का बय बाग (त्रय १३)। इत्सव र् िंडस्तको बाल का पूना (सन ३ ३) । হলান কলো কৰা কলো। বিদিচনাহ (ভল विणिस व [विनिशा] ब्रच-बिग्रेव बैंत (म ११ ७६: पि २१६: इ६४)। ४ २ कम १ १८। बीत)।

विभिन्नि व विभिन्नि १ पर्वत-विशेष

विगिरक ए विशिश्स ] वैद्य, इन्होन विधिस न दि । मधुनामा मण्डम (१६ (बच १) । तिनिष्क प्रतिनिष्क र इस-विशेष नियम पर्वेत पर न्यत एक ब्रह्म (इक्र)। २ न देवविभाव-विद्येप (शम ६ ६)। विगिष्क न विक्रिस न विक्रियान्याक (सिरि १६)।

विभिन्नवा करनेपाना । २ पू वैच इसीन (स ४ ४) नि १(६) १२७)। विभिन्द्यन न [चिक्सिसन] चिक्तिस (पिंक रेवक)। विगिन्द्य व [पैक्सिय] विशित्मा-इर्व (छ ६--पन ४११)। विभिष्दा 🗱 [चिकित्सा] प्रवेशर, स्ताव

**र**वा (ठा६ ४)। शरव **त**िशास्त्री

विगिष्क्रम ) वि [चिष्टिस इ ] प्रवीकार

धावूर्वेर वेशकताम (एव) । विभिष्कायण व [विभिष्कायन] नोक-विदेश (बुश्य १ १६) । विभिन्ति देशी विभिन्नि (६) २ ३---पत्र सम बक्ष १ कि वि ११४)।

विगिण्छिय र् चिरिहिम के विच विशिश्यक (3Y)

निवामा ) की जियामा रिच, रात (रज शिजामी रिप्र रिया) ह

विजिस दि विनिशा विभिन्न वर्षकी, वैंत का (श्रम ७४)। विजी इय दि [त्याकृत] तृष्ठ-पुस्य मना ह्या (क्रप्र ६) । ) यक [तिम्] १ श्राप्त होना। विज्याबाइ र सर्व बाई करहा। विरंता-यह (प्राष्ट्र ७४) : विषय वि [वीर्य] १ पार पहुँचा हुमा (धीर)। २ शब्दः समर्थे (हे ११ २१)। विष्य व स्तिम्य विशेष किल्लिएस्टम्पे (क्ष प्रदेश हो)। विष्य देवो वि≕र्ता विश्वित वि

नि-प्रकृष्ट दील खत्त्वबन्ता (समि २१४)। "रिक्क् वि ["विक्व] तीन प्रकार का (नार---विद्यापशी र विष्मिश्चर्युविश्चिक् विचित्र≖ विचिक् (६६)। विष्यू देशो विस्ता (हू २ ७४, वशांति 1 (F\$# विष्हा देगो तल्हा (धम धन्ना ६ )। निवड वृं निवड विनये वा चनकी पाष्ट्र बाझ वा वैदा द्यानन का पात्र (शामा)। विविषय ऐसे विद्यस्य । विविधार तितिस्तए (बन्दा ति ४**१७) । व**ि

विजिस्सया रेगो निनिसस्य (सि. ५६८)

निस्ताम विस्ती होत बार (दिस निमानि [निमा] वध्य नेता है २ ६२)। । १ कप सीर एवं)। निग्ध वि शिक्षा निवृता, श्रीत-वृता (स्तत्र) । तिय रेगो शित्र वरिष्ठ (वी ३२) नूस ३१ विनय बेगे निअय (बर १)। तिपृष्ठ वं विषयही विधायर वेश का एक गापा १ १)। बरिम वि विविधानी चना (गरम १ ४१) । मन रचन धीर राधेर को कारू व राजेशाना विज्ञक पू [जिज्ञट] १ शियाचर वंश के एक 'मरम्म जिप्तिमिन स्थि वानवर्ड बहाँ विवित्रसमाग्र (चत्र)। यंत्र दानाव (पडन १ २)। २ धरान (ब्रा: १६७) । विविक्यम न [विविज्ञम] दहन गर्मा बेराको एक सामा (पत्रम ४, २६२)। (इ.इ.)।

निरम्बाह्य वि दि देख विवाहना (देश १६ शाम) ।

निगमपुण्य न [विद्यमंपूर्य] नगकर तीन स्मिक्त कारता (वेशेष ६.) ।

विविश्वस्था देवो सिद्रश्रस्था (सम १७) । वित्त मि [तृत] तृत संपूर् सुर (विने २४ ६ सीमा दे १ १६३ मुपा १६३)। विक्त विकि रे तीता करूपा (खाया १६)।२ वं दीता एस (ठा१)। तिन्ति देवी त्या = दे (बिरि २७ संबोध ६)। तिकि की विमि विकि संदेश (या ११७ क्षी हे १ ११७- गुपा १७६ प्रामु १४ )। विचि दि वासपर, सार (दे १ ११ पर)। तिस्तिज वि तिवन् विवना (हे २,११६)। विचित्र रू [निचित्र] १ म्नेष्य रेश-विशेष। २ उस देश में चहुनेताकी मनेन्द्र चार्ति (परह १ १)। यसो तिण्यिका।

विचिर ) पू [निचिरि] पश्चिमिक्रेप वीवर विचिर् मा विविर (इ.११ मूत्र ४२७)। विचिरिक्ष विदि स्तान ने बाह (१३) 82) L

तिचित्र वि नियम् । उद्या (पड)। विचिन्न दे हिं) बारशन प्रजीहार (ना 228)1

तिस्थ वि दि पुर, माध (वे १८१२)। तिन्छ (दा) देयो विचित्र (१४ ४३६)। दित्य पुं [त्रिस्य] सापु, साप्नी, मानक बीर मार्रिश का समुदाव, बैनलंप (विशे १ वश्)। तिरम प् कियमें ] कार वेची (विन १३ )।

तिरय न [तीर्थ] प्रपन नगुनर (गृहि ११ ही)।

निरंध न [तार्थ] १ क्रवर देनो (विशे १ १३ । टारे) । २ वर्णन मत (सम्बद-दिनं १ ४ )। ६ मात्रा स्थान परित्र प्रयद (बर्मेरः एउ मर्घि १२७) । ४ प्रज्ञवन शासन निमन्दर प्रणीत हादराष्ट्री (पर्ने 1) : १ पूर्व धवतार, भार, वध वगैरह में **प्रतरते का राम्ता (निमे १ २६ विक ६२** प्रति बर प्रानु ६ )। यस, शर देशो यर (धन ६७- वप्प' चडम २ - क- है १ १७७)। उत्ता स्व विगया संबं गयन (वर्ष २)। पाइ माइ प्र निया [बक्-रेप (ग ७६१) च प १३ ६११ नर्च ४३: वे १६) । वर वि विद्यो १ तीचे वा प्रात्तेत्र १ वूँ जिन के जिल्ला

मान् (सामा १ = हे १ १७७- सं १ १) की. री (एवि)। यरणाम न विस्तामम् क्यें विशेष जिसक उत्तय से बीव तीर्पेकर होता है (का है) । साय पूं चित्र] निन रेक (चप प्रभ )। सिद्ध पु [स्टिह्स] शीर्प-मन्ति होने पर वो पुक्ति मान करे वह वीद (ठा ११)। ।हिनायग पुरिविना-शक मिनदेर (तर १०६ टी) । हिष्य प्र िधियी संधनायक जिन-देव (उप १४२ दी) । द्विषद् पू िविषति विनक्ति क्रिन मेदरान (पाय)। तिरवं स्र प्रविचेत्रर विषेत्र विस्य-पर (चेद्य ६५१)। तिरिव वि वि चिम् ] १ वार्यनिक दर्शन शास का विद्वार । २ फिसी दर्शन का धन यामी (पृ १)। तिरिया वि [तायिक] उपर केवी (प्रकी

तिरबीय वि [तार्थीय] कार देवो (विशे 1 (2338 विस्थानर है ि वीर्धेश्वर दिन-रेष जिन-भवनाम् (सूरा ११ व६ २६ )।

विवस वेधी विञस (गट-विक २a)। तिरिय न [त्रित्य] स्वयं देवसोध (बुवा

१४२म् पुत्र १२ )। विम (मा) देवी वहा (ह ४ ४ १ दूमा)।

विस देखी निज्य (सम. १)। विद्मा वि वि दे स्वीमित बाद गीला (शाया

1 (2 5 तिपन्न रैयो स-यण्ज (पंच १, १८)।

तिष्य तक [तिष्] केता। तिमद (सिंह ११७)।

विष्य थड़ [ मृप् ] नम होना । वह निर्धन (Fit (xo) 1 िय सक [सपेय ] तुम करता, हैह भा

इमा बीतो सबसे निष्युर्व बामगोदेहि (पृष्य २२)। व निर्णियस्य (पत्रम ११ ७३)। विष्य सक्तिपृति सरहा, बुना। १ यहतीत वस्ता । इ.संसा । ४ एक मृत

च्यत करना । जिल्लामि जिल्लीत (श्रुव २, १ २२ १५)। यह निष्मान (छाता १

१--पत्र ४७) । प्रयो, बङ्ग तिष्पर्यंत (सम 41) 1 तिष्प पून [ त्रेप ] सपान मादि योने की

क्रिया शीच (मध्य २ ३२)। विष्य वि विभी संदुरु नुख (दे १ १२५) । विष्पण न सिपनी पीइन हैरानी (सूप २.

3 22)1 निष्पत्रका की [तपनता] क्यू-विमोधन रोवन (ठा ४ १३ भीप)। तिष्याय व श्रिपादी ता-विशेष

(संबोध ६०)। निम (गप) रेका तदा (द्वे ४ ४ ग मिर

कम्प ()। विमि प [विमि] मस्य को एक बादि (पर्ह

5 () 1 विभिंगित पू [ इ ] मस्य मध्नी विनि (बन्त्व) को नियननेवाला मस्त्य (वे ४,१३) । विमिनिक १ विमिक्ति मास्य मी एक जाति (दे १ १ में अ का पराह १ १)। "गिळ पूं "गिक्की एक प्रकार का महान्

यतन्य वडी माधै मध्यनी (मूम २ ६)। विमिगिछि पू विभिन्निष्ठि भारत भी एक वादि (परम २२, ८३)।

विभिगित देशो विभिगित = विभिन्ति (उप 1 (093 तिमिच्छ्य ) पूं [दे] पविष्ठ भूताधिर (दे

विभिन्छाह र १३)। विभिग न दि । गोना काउ (दे ६, ११)।

विभिर् न विभिर् १ बन्यकाट धेरेत (पढ़ि क्य) । २ निराधित क्यें (वर्ष २) ।

६ यत्य शत । ४ मजान (बाबू ४) । ६ वृ. ब्राप्त-विदेश (ह २ ६) । निमिरिष्य र् दि ] बुक्तिये करेंब का

पप्र (दे ६, ११) ।

विभिरिम १ कि इब-रिधेष (पाए १---तम ११)। विविध कीन [विवित्त] बाय-रिकेर (बरन

१७ २२)। धी. सा (घर)। , निमिस पू [निमिय] एक बरार मा बीपा,

वहा कुम्हहा (कप्प) । निविधा ) स्व [निविद्या] बनाइव १४४

विधिन्मा है की एक द्वार्स (स १, १) पान ₹ ₹<del>~</del>47 ₹४) ;

**गह.** विम्ममाण (पत्न ३१, २ ) । तिम्स च≉ित्र] १ श्राप्ट करला। २ सक गीमा होना। तिम्मद (शक्त ७४)। संख विस्मेरं (विष ३४ )। विम्म क्यो विसा (\$ २ ६२)। विस्थित वि स्वितिवि व्या येवा वि १ (थर्ग प्र तिया की दिल्ला की महिला श्रेषी तुन क्रियनमध्य प्रश्ने बाग्री एक्टिंग्स बीचे (श्रव ¥ 4) i वियास देशों से-सात्मेख (कम ६ ६ )। विरक्त धक [विरस् + कृ] विराकार करणा, सम्मीराज नरमा । क्व विरक्तरणीम (माट) । विरद्धार र् [विरस्कार] विरस्कार, धपयानः धमहेमना (प्रवी ४१) गुपा १४४) । विरक्तरेजी ) स्रौ विरस्करेजी वर्धनकाः तिरक्टारियो । पर्वे (स व व) समि 1 (5=5 विरम्भ केवी विरिम्म (प्रमा १६) ३०)। तिरि ) म ितर्थेक ीतिरका, देवा (जाए विरिक्ष । ₹**₹**) 1 विरिक्ष वि [तैराम] विर्मेश का विरिया मजबा व विकास क्ष्मपना विविद्यांतिमाविका (सूप १ व व १४)। वि [विर्येच्] १ वक, पुरिव विरिज्ञेच । बाक्यें (बद २ जिल है ३६६ विरिध्य | युर १४ १६६)। २ वूँ वर्षु विरियम प्रशी धारि तासी के भारत धीर मनुष्य से विश्व योगि में करपण क्षणू (मरा ४४ है २, १४३) सुध १ व हा का दूरें बरे प्राप्त रेक्टर महार भारत प्रश्र **परम २ १६ मी २ )। ३ मर्ल्यको ६ वस्य** सौफ (टा३ २०)। ४ त सम्य बीचा (यम: बग १४ %)- 'तिरियं सर्वश्रेत्राणं बीवतपुरार्श बरम्बं मरमेल बेलेव महरीवे धीर (रप्प) । शह धी शिर्वती १ क्विंग-मोनि (टाइ, ३)। २ वक मीट टैड़ी व्यक्त ৰূদিৰ গৰৰ (পাৰ ২) । আনিয়াৰু िजनसङ्घी देवी वी एक वाकि (कप्प) ।

क्याणि क्ये विश्वानि विश्व विद्याश्रीय का

ियोनिक विश्वय-योगि में जलम (सम २३ भग भीग १ ठा ३ १)। जोणिणी और "योनिका | तिर्यय-मोत्र में एपम **औ** थन्, तिर्येक की (पर्श्य १७—पत्र १ वे)। शिसा शिस की शिक्ष ] पूर्व पावि रिस्त (बावम क्या) । प्रक्रमस पू विपर्धती बीक में पहला पहाड़ मार्थावरीक्क पर्वत (भग १४ ४) । "मिलि की "मिलि रीव की चीत (बाका)। छोग ⊈ [स्रोक] मर्त्तां मोक सम्ब खोक (ठा १ १) । बसाइ को विससि विश्वय-योगि (पण्ड ११)। तिरिच्या पि [तिराधीन] १ तिर्गेष् पत टेका पनाक्ष्या (राष)। २ तिवंग-धंकणी (क्लरपर १६)। विरिच्छि देवों विरिव्य (ई.२.१४६) पद् )। विचिच्यान केनी शरिच्यान (बाचा २ १६, X) i विरिच्की की [विरक्षी] शिर्मक की (कुना)। विरिक्ष पं वि । एक वावि का देव विधिर ## (R. P., 21) 1 विरिक्रिम नि कि रै विमिर-पुकः १ र निचिव (R 2 28) 1 विधिक्क पंदि विभाग मार, गरम पनन (ह 1 (83 .2 विरिक्षि (मा) वेबी विरिविद्ध (है ४ ९६४)। विरोड प्र [किरीट] बुरूट, विर का बामूनरा (पर्सार ४ सम ११६)। विरीक्ष प्र [विरीट] कुब्र-विशेष (बृद्ध २)। "पट्टब न ["पट्टक] इस-विशेष की खान का मना क्षमा कराड़ा (हा ३ - पम ६६०)। तिरीकि वि [किरीटिक्] सुक्टनुष्क प्रकृट निमृतित (क्ता र, ६)। तिरोभाव 4 [तिरोभाव] तय धन्तवीन (विके २६६६)। विरामद्र वि कि वृति से अवस्ति बाह से न्परदित (दे ४, १३) । विरोहा तक [ विरश्-का ] प्रत्यक्त करना, कीय करना प्रश्य करना । विदेशिव (कार्नि ₹¥} I विधेदिन वि [निधेदिय] प्रत सर्वाहर

महत्त्व साम्बादित देश हुना (राज)।

विख पूँ [विस्त] १ स्थवाम प्रस्ति <del>यह विके</del>न, क्षिम (ना६६६८ सामा १ ए प्रमु १४४ १ ८)। ए वर्षातिका क्रि-विशेष, वर्ष-विशेष स्थ ए १)। इसी को िंडसी शिव को स्पेहर एक जोज्य वस्तु रिस्तकूट (वर्ष २)। पप्प-बिया की "पर्पेटिका किन की की हुई एक बार्च चीव विस-पापशंपएण १)३ पुण्स्वन्त वृ ि पुरुप्यूष्ये ] स्वोतित्व देन-वितेत वर-विरोप (छा२ ९) । शङ्की 🕸 [<sup>\*</sup>मर्फ़ी] एक बाच वस्तु (कर्ग २)। स्मान्त्रिय सै िंशास्त्रियाँ जिल की **व**ली (का १६)। सक्किया थ्ये ["ब्रुव्हिस्स्य] ति से क्ती हुई बाच नस्त-विरोप किवर्डिका (एन) विश्ववद्यान्ति [विश्वविद्य] विश्वव हो वय धार्यास्त विमृतित चनकमः (तिकासी नंक्सरुपुर्धी (समा ६)। विश्रात र् [विश्व ] देव-विरोध एक बर्धन व्यक्तिस्त वेद्य नाम श्रीत (हुनाः स्क)। विकाद्यां भी [विक्रकरणी] ! विवर करते की छलाई। २ ग्रेग्सेक्ता ग्रेने रंब ना एक मुर्गक्ति प्रम्य, को दास के रिटाम्प है निक्नता है (सूम हा ४ ९,१)। विका १ ई [विसंत] १ इब-विरोग (वम विस्त्र र रेश योग क्या समा १ ए चप १ वर्ष द्यां सा १६)। २ एक प्रतिनर्तुः देव राजा जरफ्लोव में अरमण पहचाळीं बामुबेब (सम. १६४) । १ क्रिन-विकेश ( Y सपुत्र-विशेष (राज) । ॥ तः प्रश्नकिरे (कुमा) । ६ डीका सत्ताट वें दिना बाह्य कारण गारि का किछ (कुमा क्षा ६)। क यक विद्यागर-ममर (इक)। विसम्बद्धी औ [विसम्बद्धी] क्षिम की क्ये 🛱 एक बाच परतु, वित्रकृत (पर ४ दी) । विसिविसय पू 🛊 🖣 का-क्यू विशेष (क्या)ः तिस्तित कीन [वे] नाम-वितेष (इप) १४वः क्षल)। इसे मा (नुर ३ ६०)। विशुक्त न [ब्रेस्टोक्य] स्वर्ग, नार्व यौर परवाल सीच (वे २३)। विलुक्तमा देशो विज्ञोक्तमा (वस्मत १८६)। विद्राष्ट्र न [विद्रावैस] दिव का के (इना) ।

विस्रोक्त रेकी विलक्त (तुर १ ६२)।

क्करा (का ७६८ दी। महा)।

विद्योदय र बर्ल (बाबा क्या)।

38)1

(बह १)।

X) 1

वानोही वानी !

विस्रोत्तमा सौ [विस्रोत्तमा] एक स्वर्गीय |

विसोदग } न [तिसोदक] विन का योवन--

विद्वन सिंखी वैन केन (मुक्त १४) दूम

विक्षम वि [सैयक] वेन वेचनवाना वेनी

विद्धार्थी ही 🚰 विसहरी हु कीसरोगी

(मंद्रो नि पत्र १६६ पुत्रित) मारवादी में

विद्वादा ध्यै [मैन्येदा] नदी-निधेष (मिन्दु १)।

विवर्णा हो जिवणीं ] एक महीपि (धी

तियँ (मा) देती तहा (हे ४ ३६७) :

तिह न [सह] सन्द-क्रिय (निय)।

্যায় **দ**∓ সি+পার্ড } মন কৰণ बीर नाम से नट करना, जान से नार शापनाः। तिवासए (मूस १११३)। ।पिद्धमः पुं [त्रिविक्स विन्युक्तिः 'वहिया निवर्ण्ड ( ? विरर्ण्ड ) मही विविध्यो रेख शियाओं (वर्मीद =६) । ।विहासी [र] मुची मुई (रे १, १२)। ५विश्री की 💽 पुटिका चौटा बुद्दा (दे 🗷 🛚 1(5\$ देष्य वि [नाज़] १ प्रयम प्रवर्ड धन्यट (सम १५ भाषा)। २ रीप्र सपानक क्राप्ताना (तूच १ ६,१)। १ माइ निविद् (पर्ट १ १)। ४ निक, बहुमा (मा १ १४)। १ महा वतन मार्थ-पुट (लावा १ १--पत्र ४)। तथ्य विद्विती १ द्वारा यो पछित्रता म मद्त हा नर (दे ४, ११ मूख १ १ शाहर, (१२ ध प्राप्त) । २ धणान्त श्चिक सन्दर्भे (दे दा ११ वर्षे दे शहा वत्र १ व वंबा १६। बार ६। बरा) । तर्मधी विश्लम्यी दीन बार नृती से मन्द्रो तथ या घर थेरे की का का ता वर्षेत्रं १२ ७)। मात्र था [जिसस] कारत बहातेर की ग्रज्ञा का नाम (ग्रम १६१)। सुधानु तुत्र] भागत नहारीर (रहर १, १३) ।

विसा औ [तृपा] प्याप रिगमा (भूर १ २ १, पाप)। विसाइय ) वि [ शृथित ] तुरानुर, व्यामा विसियं ∫ (महाधापस १ ४ मुर १ 1 (757 विसिर पं व [ त्रिदिारस् ] १ देश-रिशेष (पछम १४ ६५) २ व वृत्र निरोप (पडम ११ ४१)। व रावण का एक पूत्र (मे १२ १६)। विस्तराूच रेजो वीसगुच (यम)। विद् (धन) रेन्पे महा (रूमा) । निहि वृंत्री [विधि] वंषक्य चन्द्र-कता न बुक्त काम दिन साधिय (वेद १ ₹**c** ) i तीअ वि [चुनीय] तीनरा (तप १६ सीभ नि [अनीस] १ प्रमय हवा *मीसा* । हुमा (शुपा ४४८, मग) २ पूँ भृतकान (ठा । वीइस पू [मेर्तिस ] ज्योविय-प्रसिद्ध करण निरोप (निन १९४०) । वीमण न [वामन] नहीं पाध-विशेष, मोर (देश, वेश मण्)। तीमिम पि [तीमित] बाद याला (रूप र्द्याव वि [ तीन ] सीन (मूच १ २ २, र्थार धरू [शक्] नमर्व होना । तोरह (हैं Y 41)1 बीर वर्ष [वीरय ] बनात गरना परिपूर्ण बरमा। तारह, तीनेइ (हे४ ८६ मन)। बंद दारिचा (क्य)। शीर देन [चार] निनारा, बद, पार (धान ११६ प्रापुद हा ४ १: वप्प) । शास्माम वि [शार्यमा] बार-मामी बार जाने बाडा (धावा)। र्वारद्र र्द्र [सारम्य शास्त्रे] सापु पूनि मने ( ( रनि २ २ ) । क्षप्रिय वि [न.रिन] मनारित, बरिपूरी विचा हमा (पर १)। धारिया भी दि शर वा धीर राजी का चैना वरम्य ग्राह्म साम्य (१) महिष्य देव पानार्थ बनुहर्द, कथवा शरिक्यार (न

१६३) ।

वीस न जिराम् र धंक्त-विधेव तीत ६ । २ क्षेत्र-धंब्यावाला (महा घरि)। वीमभा ) धौ [ त्रिशत् ] अपर देखे (धीन वासङ् ैर१)। बरिस वि विर्ये विष वर्षशी सम्राम्य (प्रत्य २, २०)। वीसइम वि [त्रिश] १ वीसवो (पटप 🤏 **१८)। २ व सगातार चौदह दिनों का उद**-नाम (ए।या १ १)। वीसम वि [ब्रिशक] ठीन वर्ष वी कमराना (वंद्र १७) । र्धासगुन्त र्वृ[तिस्वगुप्त] एक ब्राचीन प्रापायै विधेय जिसने धरितम प्रदेश में बीब की सत्ता का पन्य चलाया था (हा ७)। सीसभद्द ( विषयभद्र ) एक वैतनुति (क्य) । वीसम दि [ब्रिस] वीसर्च (मृदि)। वीमाधी वेदो वीस (है १ १२)। र्वीसिया की [त्रिशिया] क्रीस वर्ष के बन्न पी स्री (पप v) । तु स नि] इन सर्वों का सुबंद श्रम्मय---१ निप्रता मेर विशेष**ण (मा २० वि**से ३ ६४)। २ धरमारल निरुप्त (सूम १ २२) । ३ समुज्यस्य (सुमार् ११) । ४ नारण 👣 (निष् १)। १ पार-पूरक धम्यव (विशेष ११ पंचा४)। शुभ वह [सुदू] व्यवा करताः पौड़ा करता । तुषद्र (यर् ) । प्रयो. संह- तुयापद्या (ठा १ २)। नुभर पू [नुपर] काल-क्रिप घर (में नुष्पर धर [स्वर् ] राच होना श्रीम होना जल्दी क्षणा । शुप्तर (या ६ १) । भुग वि [मुद्र] १ ईवा जन्म (या २१६ धीर) । २ दू धन्त-रिरोत (रित) । र्तुगार पु [ तुद्वार ] परित बोल का करन (धारम) । तुनिम पूंड्ये [तुद्धिमन् ] अन्तर्थः प्राचन्त्र (गुरा ११४) बजा ११ : बजू- शतु) । सुंधिय वुं [मुद्धिक] १ धाम-विकेट (पारब)।

२ वर्गेंड-विधेया जीव मुक्तियांबार तानु दिश्व

हर्न नवर्ष (इस १ २)। व दूर्व त्यानीरदेव

में कप्ता नववर् पुतर केरें (तरि)।

नाम (कम्प)। हुंगी की [के] १ चर्कि एत (के के, १४)। १ बादुव विरोध 'बसिपरसुष्ट्रीतदुंचीर्वन्ह्-(काव)। हुरीय पू [हुक्सीय] पर्वत-विशेष (पुर १ हुइ कीन [हुण्ड] र मुख गुँह (बा४ २)। २ शव-बाग (नियु १)। 🗯 बी 🍜 कोषि बीविक्स्पी कंट्रबद महिस्स तुंबीएँ (युवा १२२)। <u>द</u>्वतीर व [के] संदुर किम्बी-कमा (वे ६, मुंबुद्ध दु [दे] कीर्छ बर, पुरामा पड़ा (दे X, (X) 1 <u>र्तत</u>कसुद्धिल वि [वे] अध-पुक्त (देश ह्यंत्र [हुन्य] स्वय, फेट (वेश १४) स्थ ७२६ हो)। तुंदिसः ) नि [तुन्दिसः] वहा पेटवाला सैनिन हेंबिक (कप्प नि ११६, स्त ७)। हुंब स िहान्य ने हुन्यी चलानु, शीफी (पचन २६ ६४) सोच ६४- द्वप्र १३६)। २ पाईर की नाकि 'न दि तुबन्नि निख्डी सच्या चम्बारमा ड्रॉविं (मालम) । ६ 'ज्ञातालमेंकना' सूथ शाएक सम्बद्धत (सम)। वजन चित्र] टॅनिवेड-विटेप, एक मांव का नाम (सर्व २६)। बीग वि विगा विशा विरोप को बमलैनासा (बीन ३)। बीजिय वि ["बीणिक] नहीं पूर्वोक्त सर्व (बीमा **भग** १ ४ शामा १ १)। हुंच म [हुस्ब] पहिए के बीच का रोश सम वर (तृष्टि ४३)। बीजा की विशेषा बाच-विरोप (सब ४६) । तुबरु देवो तु गुरु (दक्) । तुवा सी [तुम्बा] बीरपान देवी की एक ममन्तर परिवद् (क्ष ३ ५)। तु बाग पून [तुम्बक] नशू शीनो (वस ४,१ तु बिनी की [तुस्थिती] बन्दी-विशेष (है ४ ४२७: सम्) ।

हुनिया की [तुङ्खिका] नदरी-किरोप (अग)।

तुर्तियायण व [तुङ्गिकायम] एक योजका

क्षकिद्वीकी वि] १ मधु-पटण मवपूरा। ए उद्गबस्य उत्त्वस (देश, २३)। (ब्रुट ३ ४१) प्रता)। हुवी की [हुन्ती] १ दुन्नी समानू, शीनी, कहू (दे ४०१४) । २ वैन सामुधों का एक पान शपरनी (मुपा ६४१)। सुंबुरु पु [सुस्बुरु] १ बृधा-विशेष क्रिक का पेड़ (वे ४ वे)। ए सम्बर्ध देशों की एक ( x 414) 1 वार्ति (पएए। १३ चुपा २१४) । ३ मनवाम् युमरिनाय का राज्यनानिहासक क्षेत्र (संदि ७) । ४ शहेना के कमर्व-रीत्य का प्रविपति इं १६१)। देव-विशेष (हा ७)। पुक्तार पु [चे] एक अत्तय बाठि का धरन बा बीका 'बार्न च स्तव पत्ता पुत्रबायदुर्दवमा वहनिद्यार्थ (युर ११ ४८) व्यक्ति)। वेवती वोषकार । तुष्कार्थी [तुष्का] रिका विकि व्युवी गनमी सना चनुरंदी विचि (चुपन १ (X): पुरुद्ध वि [वे] सनगु०क पुदा वीख ( R X, (Y) तुष्कामि [तुष्का] १ इसका वक्त्य, निकट, क्कीन (ब्राया १ ५ आसू ११)। २ यस्प बौहा (सप ८, ३३) । ३ शूच्य रिक, काली (माना)। ४ मसार, निकार (क्य १८ ३)। १. मपूर्व (ठा४४)। तुष्महरू ) वि [दे] चीनक वनुस्त्र-प्राप्त हुक्क्ष्म । (दे हैं, (१)। तुष्यित्म पृथ्ये [तुष्यद्वः व] पुष्यद्वा (वण्या 884) I हुळान शिये विषय नामा (सुमा १)। हुरू यक [अूट्,हुब्] १ ट्रांगा विक्र होगा ૧ રોં व्यक्तित होना । २ बूटना, बटना, बीदना । धुकुद (महा सराहे थ ११६); 'ब्राल्यर्थ र्वेतस्समि तुर्द्वित न सामरे चम्लाई' (बना १६६) । यह- तुर्देव (छल) । सुटु वि जिटित द्वियाह्मा, विक विकास (स धरना सुद्ध १७ वे १ ११)। हुनुष्य न श्रिटम् विन्देर, पूजरकरण (सूच (#7 2 Y ? E PW) १ १ रायमा ११६)। तुर्दिभ नि [ मुटिस तुमित] विश्व करिन्त (स्ट्रॉव; कर इ.२१ महा)। (पुत्रा) ।

शुद्धिर वि [पुटिव] ह्यांच्या (इनाः का)। हुद्ध वि [तुष्ठ] कोप-मात 💵 चंद्र 🐺 तृद्धिको [तृष्टि] । कुछी, यातनः संक्रे (खर पुर १ २३ क्या २४४। 🕏 १ १) । २ इत्या, विद्यासी (द्वार १) । हुब सक [हुब्] ट्रुट्य स्थप हैचा दूर सुवि को [त्रिटि] १ मूनता, क्मी । २ केंद्र ह्मप्रस् (हे ४ ११ )। १ तरू, बीव (हा तुविक न. [तुटिक] सन्दुर, स्त्राह 'तुटिकमस्त पुरमप्रकरनी' (बोबर्वि 😮)। हुडिस न [हुटिड] सन्तपुर, बनावन (दुल १व--एव १६६)। हुविस नि [ बुटित ] इस हमा, विका (अन्द्र दश हे १ ११६। दुस र)। हुविभान दि दुटित] १ शह, गर्मि बाबा (धीरा राज्य व शक्स २,१)। १ बाहु-साम हाय का सामस्या-विदेश (सी) ठा का गठमा वर १ ४० सद)। १ <del>वर्ष</del> विशेषा 'तुर्विमंद' को चीरावी बाब हे हुए। पर को संस्था करन हो यह (इक अ २,४)। ४ साथा करे हुए वस सार्थ में कराये <sup>सर्थ</sup> पद्मी पेचन (निचूर)। हुक्रिकंगन [दे प्रदिवात] १ वेक सिरीय पूर्व को बीघडी बाद दे इस्ते स को संक्या सम्म हो यह (इक स<sup>्</sup>र्<sub>ग</sub>)। ९ दू. बाध बेनेनाका नरानुष (म १० सवार्थ पत्रमार २,१२६)। तुक्तिमा को [दुक्तित] कोनतन रेर्नि क्स-महिपियों की श्रम्यक परिन्तु ( तुक्षिमा की [के तुरिका] इत्य का भावर<del>क विदे</del>त (मध्य ८ खाना १ १ टो—ला ४३) । हुणन दुं [बे] बाद-विशेष (वे ६, १६)। ठुणमा क्यो तुण्याग (तय)। तुष्प्रण न [तुमन] क्टे हुए वस मा क तुण्यास 🤰 [तुमबाय] बच की शुक्रवाय | नामा एक करहेरामा,

द्रमहकेर वि [स्वदीय] दुम्हारा (डुमा) ।

(# ? PY ? ? Yw) 1

तुम्हार (बप) उत्पर देखो (बनि) ।

(है २ १४७ क्चमा वह्)।

र रामन मीप)।

प्रमहकेर वि [युष्मदीय] बापका हुम्हारा

तुम्हारिस वि [गुष्माद्दरा] बावके वैसा

तुमहारे वैद्या (वे १ १४२) वट्या महा)।

पुम्हेचय वि [गीव्याक] धापका तुम्हारा

तुयह धक [ स्वग् + बृस् ] पार्थं को बुमाना

कष्मद फिएमा। तुबहुइ (कम्मा मग्)।

पुष्टुं क, पुष्टुं का (पपः बीप)। हेरू तुय

हित्तप (पाषा) । इ. तुपहियक्य (पाया

द्भवदृष्ण म [स्वम्यर्थन] पार्थ-परिवर्धन

करबट फिराना (धोष १६२ था। धीए)।

प्रणिक्स [ सूच्यीम्] मीन प्रथी प्रणकी

तुन्दि र् [दे] सुकर, सूधर (वे ३, १४)।

हुर्जिं केवो हुर्जिंद = तुष्कीम् (प्राक्त १२)।

ह्मिक्स 🧃 वि [सूच्यीक] भीत रहा हुसाः

प्रुण्डिक ∫ मीन चहनेवाला कुप च्हनेवाला

हुण्ड्चिव विद्]मुदु-निवव (वे ४, १४)।

तुष् देवो तुमा तुष्प् (थर) । वक्क तुर्व

हुद् 🖞 [तोब] प्रतीय, सरदार बंबा शक्क

हुमज न [हुमन] रक्न करना (नम्ब ३ ४)।

(प्राप्त मा ३५४ सुर ४ १४८)।

तुण्हील देको तुण्हिल (स्वय ४२)।

तुच 🖦 वोच (मुपा २३७)।

(मिसे १४७)।

(सूम १ ६, २, ३)।

हुपवाप दुपकेसे, मील होकर (मनि)।

२४६) ।

पुष्णिय—तुन्रगा

हुमा (बृह १)।

(वर्गीव ७३)। हुप्प पूँ [दे] १ रोजुक । २ विवाह शादी। ६ सर्पंप सरसों, वान्य-विदेय । ४ कुनुप की धादि माने का चर्न-पात्र (दे थ, २२) । इ वि अखित पुष्पा हुमा भी मादि है। लिस (दे ४, २२ कव्या वा २२ २०१) हे १ २ )। ६ स्तिष स्तेह-पुक्त (१ १, २२) मोव १ ७ मा)। ७ न बृत वो (हे १४, रेव युरा ६६४१ कुमा)। हृत्य वि [दे] वैष्टित (बत्रु २६) । धुन्तर्था तुष्पक्षिम | वि. [दे] वी हे वित (वा n प्यविञ् । १२ थ)। तुमंतुम ई [दे] बोच-इत मनो-विकार विशेष (छ य-पत्र ४४१)। हुर्महुम पुं [के] १ तुकारवाला कवत. विस्कार वचन तू. तू (सूच १ १, २७)। २ बात-सन्तक्षः 'घणतुर्मतुमे' (उत्त २३, ११)। १ वि तुकारे से बात कहनेवाला (स्थोप १७)। तुम् द [तुम्क] १ नोम-हर्पेश दुर, मगा-

नक संदान (पन्ड)। २ व सीरक्त (पाय)।

45

तुमाय देवो तुष्याय (संदि १६४) । मुबङ्गावण न [स्वन्यरोत] करतर बस्तवाना । हुसार इं [हुसदार] एड्र करनेवाला शिक्यी (प्रत्या) ।

द्वभाषद्वा वेको तुक्षः XE \$4) 1 विष) ।

\$¥) 1

प्रसाय देवी दूर।

कैश-विकेष (तुम १ १, १ टी) ।

तुरमणी वेको तुरमणी (सद्दि १७ टी) ।

हुर मक [त्वर्] लग्र होना वस्यो होना रोप होना । वह द्वारंत द्वारंत द्वारमाण, हिरेमाण (६४ १७२ प्रासु १०। वस् )। तर ) की लियर] सीमताः करती (दे १८ हुए रेश्री। वर्ति वि [ वन् ] लय-पुत्तः, हुरंग वृं [हुरक्र] सच, नोड़ा (क्रुमा प्राप्त ११७)। २ धनवनाका एक सुमद (पडम हुरंगम र् [तुरक्तम] बध, बोहा (पाय; हुर्रीगमा को [तुरिहरू] नोदी (पाच)। तुर्रंद वेको हुर ।

पीप) । गुरक वृं [के गुरुक] १ केत-कितेब, बुक्ति-स्तान । २ समार्थं वार्षि-विशेष पुर्व (ती

तुरम केको तुरम (मन ११ ११, राम)। सद पं ["सुरू"] भगार्थ केत-विशेष (तुम १ १ टी)। "मेड्ग पु ["मेड्क] सनाव

**४६४ है।**। हुरत हुरेमाण } क्यो हुए। त्रसेथम्य (से ६, २१)।

इंद्रा है ४ एक) ।

हुस्मान [वे] काक्वातीय स्थाय (हे ५

दुष्ट केवी सुख्य (दुपा १३)। हुर्बना देवो सुसन्ता (पण्ड 🗷 ) ।

हुरुमणी जी [वे] नवधे-विशेष (मतः ६२)। तुष्क सक [तोक्स्य ] १ वीलना। २ स्टाना। वे ठी<del>क ठीक शिक्य करना । तुसद तुसेद</del> (है ४ २४ तम बबा ११व) । बहु तुस्तिय (पिंग)। चंद्र- तुलेकण (दहर)। इन

क्य करते में काम शाता है सोवान, सिस्हक (सम १३७ ग्रावा १ १ पटम २ ११; द्वरूच पू [तुरुष्क] १ केत-विशेष पुक्तिस्तान। २ वि तुर्किस्तान का (स १३)। तुरुकी की [तुरुक्ती] विधि विशेष (विसे

२२ १२)। तुरिमिणी रेखी तुरुमणी (राव)। सुरीकी [के] १ पीन कुट। २ रूप्याका **ध्यक्र्या (देश** २२)। तुरु न [वे] वाय-विधेव (विक्र ८७)। तुरुक्त न [तुरुक्त ] धुयन्नि हम्म-निरोप को

हुरिल वि [तुर्थे] बीचा चतुर्थ (सुर ४ २१ कम्म ४ ६६। सुगा ४६४)। निहा 🕏 िनिद्रा] मरशस्त्रा (इर ४ १४३)। सुरिक्ष न [तूर्य] काच नावित्र वाका 'तुरि यान्सं सीमनाएए दिल्लेखं पनए। फुरें (स्त

तुरिश्र वि [स्वरित] १ वरा-बुक्त स्तावना (पास हे ४ १७२) सीपा माम)। २ क्रिक बीज जल्दी (गुपा ४६४) मवि)। राष्ट्र वि ["गिवि] १ शीम मित्रमासा । २ दू समितगति नामक इन्द्र का एक सोक्पास

(अ.४.t)।

ह्यस्य पुं [ह्यस्य] १ मच, भोड़ा (पराह १ ४)। २ ऋत-विशेष (पिंग)। "देहपिंडरण न ["देहापअरण] सघ को सिमारना सँवा-रता र्जुगार करना (पाघ)। विकी सुरग । हुस्यमुद्द देनी तुरग-मुद्द (पन २७४)। त्वरानामा अस्तवान (से ४ ३)।

हॅगिया भी [हुद्धिया] नगरी-विदेव (शर्ग) ।

नाम (नप्प)। हुगी की दिहें १ स्वर्थ सत्त (१ ४, १४)। १ भागु :- विशेष 'धारतपरनुपूर्तानुंबीसंबहु----(राव) । हुगीय पूर्व [हुक्कीय] पर्वत-विशेष (कृद १ हुंब भीत [तुपब] १ मुक्त गुँह (बा ४ २)। २ घर-माम (निक् १)। की की कि क्रीर बीवियाची क्रीया ब्राह्सस बुंबीए (नुपा ६२२)। धुडीर न [दे] मधुर-विल्यी-कस (दे ६ {Y)1 हुं इस दु [दे] बोर्छ वट, दुशना बहा (दे **२, ११)** । हुंदुबसुबित्र वि [द] लग्रनुष्ट (वे १८ 1 (75 ठ्रुत म [हुन्द] बदर, देट (दे ६, १४) उस धरद दी) । तुँद्छ ) दि [तुन्द्रिल] बड़ा वेटवाला छोड़ेख नुहित्त । (रण गि दश्य, रत ७)। दुव न [ हुम्ब ] तूम्बी चलाबु, लीवी (पडम रहे, ६४ मीय १वः दूर १६१) : २ गाई नी नामि 'न दि शुर्वीन विख्यु बरवा चादारमा र्हिट (माचम) : व 'जातावर्गश्या मुत्र का एक सम्मयन (बन) । सम न [ बत] वॅनिरेश-स्टिए एक यंच का शाम (बार्थ २१)। बीच दि [धाण] बीला-विदेश को बजलैशना (बीक ६) । श्रीणिय रि ["बर्गमाउ] **वहां** पूरीक वर्ष (बीर क्टर २ भ शाया १ १)। होप व [तुम्ब] परिए के बीच का बील कर धप (नारि ४६) । बीजा औ ["बीजा] बाद-शिटेच (शव ४६) । मुंबर देगो हु पुर (६४) । हुयाधी [हुम्या] सोरपात देशों की एक यम्पन्तर नरिनर् (का १ २) तु बाग ईन [तुश्वक] वर् औरो (स्त क्रह ।

४१ सात्र) :

हुँगियायण न [नुक्तिकायन] एक कोश का २ जावास क्रमश (हे १ २६)। हुंकी की [तुम्की] १ शुम्की, सत्तानु सीकी क्ट्र\_(दे रु. १४) । २ वैन साक्रुमों का एक पात्र वपस्यी (मुपा ६४१)। <u>र्शेष</u>रुप् [तुम्बुरु] १ कृत-विशेष शिवक का पेड़ (देश व)। ए यन्त्रवं देशों की एक बार्सि (पएछ १: युपा २१४) । ३ शनवान् सुपविताय का रासमाविद्यायक देव (संवि ) । ४ शक्टेन के थन्तर्ग-रीम्य का व्यक्तिति केन-निरोप (हा ७)। तुक्त्वार पुंदि] एक उत्तम बादि का बस्व या बोहा 'चन्न' च क्रय पत्ता दुनशास्त्रुरंतना बहुविहीयां (पुर ११ ४६: अवि) । **रेकी** वांक्सार । तुच्छ पुंची [तुच्छा] रिका विवि कपूर्वी नवधी तका चनुर्वती विधि (पुरुव १ ₹**₹**) i त्रण्य वि [के] सवयुक्त सूका नीस्त (₹ %, १¥) i हुच्छ वि[तुण्छ] १ इवका, बक्त्य विक्रुट हीन (लाघ १ ४, शमु ११) । २ वस्य बोड़ा (जय ६, ६१) । ६ सून्य रिक, बाली (बाचा)। ४ धडार, मिलार (बच १०, ३) । १ बर्स (अ ४ ४) । तुण्याहरू ) वि 👣 चीनव अनुसक्तास गुष्यम है (दे हैं, ११)। तुनिद्मम पुंची [नुनदान्य] तुम्दता (नन्मा \$25) t हुञान [तूम] बाघ बाना (नुम १)। हाह वक [ पुर हाक ] १ हरणा, विश्व क्षेत्र रास्टित होना । २ सूरना, घटना बीतना । चुट्टर (नहार क्या है v ११६): 'ब्रायुक्त व रतस्त्रशि तुर्हीत न नायरे स्वलाई" (बक्द ११६)। वर नुर्दुन (छल्)। तुह रि दिवित दिया हुया, विका सवितत (4 afer dat fa g f f f6): तुष्टा व [घाटन] तिब्देत वृषत प्रस्तु (नूष t t trantttt): मु विका भी [मुनिवर्ता] वाजीनीवटेर (है ४ तुहिम रि [ धूटिन गुडिन] दिव सरिवत (इया) ।

तुषिही की दिं] १ मधु-पन्न मनपुहा। तुट्टिर वि [बुटित्] टुजेनाचा (रूग का। तुद्ध विश्विष्टी तेयन्त्राप्त एवं क्यू क (बुर १ ४१:४वा)। तुद्धिक तिथि १ कुछी सम्मर्भा बुर १ रश बुध रश है (स २ १ १) । २ इत्या मेहरतानी (दुव t)। हुड पर [हुड् ]हुउन्नः प्रभा होय। (R v 225) 1 तुक्ति की जिटि १ ब्यूक्त क्यो । २ बयरा हि ४ ३६ )। ३ वंडय वर्षे १३ 4 (22) तुक्तिञ्ज न. [हाटिक] सन्दुर ५ 'तुर्रिकमन्तु पुरमप्रवेश्यते' (बोबर्डि 🏋 द्रक्रिम न [तृटिक] सन्दर् (सम १६—पत्र १६१)। मुक्तिय नि [ चटिन ] हुम हुम्प, (बल्ब १श दे १ ११६) सुना वर्षे। हुकिम न [द बुटिस] १ वर्द बाबा (धीन चक व ३) वस ६, दस ६,३)। वाहु-एक्षक द्वाच का व्यवस्त्र-सिरेष का वा परम वर १ ४ राम)। ३ ₹ विरोध 'तुर्रियंद' को बीधनी बल १३ पर को संस्था करन हो नह (हर स रा ४ बांचा की हुए बन्न पट्टी पेषन (निष् २)। प्तकिक्षेग व [दे क्रटिनाइ] १ क्रिटेव 'पूर्व' नो नीराडी राज्य है 5 की बंबना लाव हो वह (इस स ६ ई २ वृ. बाच वैवेशासा वस्तानम (म । सम १७ पत्रम १ २, १२६)। तुक्तिमा की [तुक्ति] सोरगर ह धव-वदिवियों की अध्यय गरिता । ય વીં नुविभा को [दे शुटिस] स्व<sup>र्</sup>री हाय पर मानारा-निर्देश (पदा ६ <sup>१</sup> चाया १ १ दी—यर ४१)। गुगव वृ [द] बाव-विदेश (रे थ. १६)। तुष्याग देखो तुण्जाग (स**ब**) । नुष्यम म [तुमन] क्रे हुए बच्च वा (47 E YE 1) 1 तुज्याम 🧃 [तुम्रसव] रह 🖺 तुष्याम }ेवाबा रा दरोसना (लॉक्टबाइ २६ वरा) ह

[ बत्बारिशत् ] १ संब्या-विशेष वालीस

भीर दीन की संक्या। २ तेम्रालीस की

चेक्याकला (सम ६०)। आस्त्रीसङ्गम नि

**िचत्वारिंश**िकेमाबीसनी ४३वॉ(पटम४३

४१)। आसी भी विशीति १ संस्था-

निरोप बस्सी भीर तीन। २ तिरासी की

संक्यानामा (पि ४४६)। आसीहम वि

३३ १४=)। बट्टिकी [परि] तिरस्ट,

साठ भीर तीन, ६६(नि २६१)। वच्या, वस्त

ध्येन [ पम्बासन् ] नेपन, प्रवास और

(कुमा) । संदर्भ विस् विश्ववाद्या प्रमान्द्रक (पर्ग्यू २ ४)। वीरिय पू िंधीयें नरत चडनतीं के प्रपीत का पीत विसको भावराँ सकत में केवसकान हुआ बा (बा ८)। तेअन [स्तेय] चोरी (शव २ ७)। तेअ देखो तेअय (भन)।

["मञ्जीविद्यम] विराधीयाँ (सम 🖘 परम तेम पूं [१] टेक स्तम्य । दर १४)। इंदिय पु विश्वित स्वार्थ तेओसि वि सिबस्थिम् | देक्यामा देव-पुक्त बीब भीर नाक इन दीन इन्द्रियवासा प्राणी (बीप रवण ४ मय वहा सम १६२) (झा२ ४० वी १७)। जीय पू पत्न १ २ १४१)। [ आबस्] विषम चरित-विरोध (हा ४ तेअग वैको सेमय (बीव) । ६)। जबद्दं भी ["नविती विराजने मन्त्रे तेमण न [तेश्चन] १ तेन करना पैनाना। भौर तीन, १३ (सम १७)। जडव वि २ उत्तेवन (हे ४ १ ४)। ३ वि उत्तेवित िमवती विद्यनदेशं ६६ शां (कम्प्र प्रस्त **१६ ४)। गदह देखो गडह** (शुग क्रशेशना (दुना) । ६६४)। डीस, चीस चीन [ ऋयिंद्र तेव्यय न [वैद्यस] शरीर-सहचारी पूका शास विदीस बीस और तीन (अग्र सन शरीर निरोप (हा २ १ %, १३ चन)। १प)। स्वे सा (हे १ १६१ वि४४७)। तेमसि पूं [तेवस्ति] १ मनुष्य बावि-विशेष चीसदम वि [प्रविद्या] वैदीसवी (पर्वम (वं १३ इक)। २ एक मनी के पिताका

नाम (खामा ११४)। प्रचारी [\*पुत्र]

एवा कनकरम का एक मन्ती (सामा १

१४)। पुर न ["पुर] ननर-विशेष (छामा रीतः १६ (हे २ १७४ वर् । छन ७२)। १ १४)। सुव दु ["सुव] देखो पुरा यचरि भी ["सप्तवि] विद्वर(पि २६१)। (यन) । देखो तेत्रक्षि । बीस धीन [प्रयोविशावि] देश्व बीच भीर तेअव सक [प्र+दीप्] १ दीपना धीन १६ (बम ४२ है १ १६१)। बीस. नगकना । २ जनगा । तेसनइ (हे ४ ११२ वीसहम वि [त्रवाविश] वेईछवा (पडम वर्)। बर २६ २६ का६)। सम्बन तेअवास देवी तंजपास (हम्मीर २७) । िसम्ब्ये प्रातः,मध्याव धीर वार्यशास का समय (परम ६६ ११)। सहि औ तेव्यविय वि [प्रदीप्त] बसाह्या (दुवा)। िपप्ति देखी विद्र (सप ww) : सीह २ चमका हुमा उदीस (पाछ)। को अशीवि विचर्च मसी मीर कीन तंश्रिय वि [तेजित] तेन क्या ह्या (वे (बम ८१: वप्प) । सीइम वि [काशीत] = {1}) i

तम वह [तेजयू ] देव करना दैनाना बार देव करना, चीरण करना । देख (यह )। तेज देवो तह्ज = तृतीय (रंभा) । तम पु[तजस्] १ कान्ति सीप्रि प्रशास, ब्रवा (बना मन्: दुना, दा क्र) । २ तान

विद्यसीवी (रूप) ।

संभाकी [तेजा] पर भी तैरहरी यद (पुण्य १ १४)। तमाक्षी [तंत्रस्] भयोस्पी विवि (वी Y3 4 ( to ) 1

तं अस्सि पू [ शंजस्विम् ] दस्वाङ्क वंश के

एक राजा वा नाम (परन १, १)।

विमानुगे व रासच्यी रामो सीवातक्सरा-शंपुषीवि (ती २६)। तेमा वेबो तेशय (सम १४२ वि ६४)। तेमासि पू वि] क्य-विशेष (पएए १, १--पत्र १४)। तेष्ट्रव्यः न [चैक्टिस्य ] विकिरशा-कर्म, मधीकार (बस ३)। तंत्रच्छा भी [चिकित्सा] प्रतीकार, इवान

तेष्ट्रव्यय वेंबो तेशिक्यिय (विपा ११)। तेइच्छी सी [चिक्सिंग, चैक्सिंग] मरीकार, इश्राव (क्रम्प) । तेइस्बन वि [वार्वीयीक] १ दीसरा। २ क्बर-विशेष, बाहा देकर तीसरे-तीसरे दिव पर धानेवाला जबर, विवास (उत्तनि ३)। ते**इस रेको** तेअसि (मुर ७ २१७- मुपा 44) I तेड प्रतिज्ञस्] १ साद, स्मीन (क्न ई १३)। २ केरवा-किशेप तेजी-केरवा (भग: कम्म ४ १.)। ३ सनिमिक्त नामकं इन्द्र

बबा (बाबा) स्त्रामा १ १३)।

का एक कोकपाल (ठा ४)। ४ ताप, व्यक्तितास (सूच १-११)। ॥ प्रकारा क्वोद (बुध २:१) । भाग देखो काय (भग)। इतं पु ["कास्त] धोकपात केर-विरोग (स ४ १) । काइयन [ काविक] र्धाप्त का कीक (ठा ६ १)। कास पूर् [काय] शरिन का और (पि १११)। क्काइय देवो "काइय (क्एए १) जीव १)। प्यसं पु "प्रस] सन्तिक्ति नामक इन्द्र का एक सोकपान (ठा ४ १) । प्रमास पं [°स्पर्श ] क्या लग्नं (भाषा) । लोस वि [ "सेश्य ] तेबो-नेरपानला (भव)। "लेसा को ["सेदया] वप विशेष के प्रमाव से होनेजानी स्वकि-निरोप से उत्पन्न होती

तैय की ज्याला (ठावे १३ सम ११)। "तेस्स ध्यो "सेस (पए**छ १७)। "**सेस्सा वैषो "संसा (ठा १ १)। "सिंह 🐒 [°शिय] एक सीक्पाल (का ४ १)।

सोय न [क्षीच] मत्म पारि है किया

बाता शीब (ठा ४, २)।

दिनस भूगो (दे २ १६)।

त्वइत ५ [ त्वादत् ] दृशा गानः गव हुसमा हो हि] यहच्छ सीरिता सोच्छा प्रसंपीक वि [तूच्यीक] भीनी (शब्द वकालेकाका (पर्स्ट २, ४: बीर, क्या) । मन्दी मेला (विश्व ६१)। १७१)। ह्रसम्पन हिस्स्ती सीवना सेवन (क्या तुसक्री की दिं भाग्य-विकेष 'तं तत्विम तुष्यय प्र'तिष्यकी वाद-विदेश (शक्ष ६ बना ११७)। वो धुर्सान भाषद सो किस्तिम बच्चीर्य' (धुपा 22 () ( तुष्ण्या की [तुसना] चीलगा, सोलग (का १४१)- 'वेवनिक्के वंतीए गुरुक गुससी त्जा } की [तूणा] १ वाद-विलेप (पर शुक्ति" ∫ सङ्गु) । २ इपुक्ति शक्स (वी. तै प्र २७४१ च ६६२) । म्प्युएए।या (सूपा १३ टि)। हुस्था की हिस्सना होल वनन (नर्गन ह्मसर न हिमारी दिस वर्ष, पाना (पाप)। १२७)। कर पू किर] यहा अन्तरमा (तुपा ६३) । तुषरी की [तुषरी] चृरु बच्हर(शि ६१३) तुक्य वि [दोक्क] तीलनेवाला (बुवा त्र केते हुत्व । तृष्ट (१४ १०१/मर्)। <u>च</u>सारवर देखो <u>त</u>सार-कर (वि १ ३)। क तूरंत तूरेंत तूरमान तूरेमान (रे ११७)। तुसिण वेचो तुसणीक (बवोच १७)। हुस्सिओ की [हुस्सिका] वीचे रेको त इक्त सेंबा उन्हाबह )। हसिणिय | वि[सूच्यीक] यौनी कुप तुर पुन [सूर्य] नाय, वाबा, प्रयोह है देश (इमा)। ह्यसियीय ∫ वचन-रहित (खावा १ १— बद्ग्राज)। बद्गु [पिति] सर्वेश हुकसी की [दे हुकसी] बज-किरोप दूसरी पव २८८ ठा ३ ३)। (देश देश पदशा देखा वापाला)। नटों का शक्षिण (प्रक्र १) । तुसिकी थ [त्य्योम्] मीन पूजी। हुस की [हुस्र] १ चरित-वितेष (शुपा १६)। तूरव तूरमाण } देशो तूर = तुरत । 'तह्या तुविसीए श्वेन्य पहनो' (पिंड १९२ र उराष्ट्र दीलने का शावन (मूपा३६ १११)। तूरविञ नि [स्वत्रतं] विसक्ते संस्था कर्त मा १६१)। ६ व्यमा, सहस्य (सूच २,२)। कुसिय पू [तुपिन] कोकान्तिक देवी की एक बद्धी वह (से १२ वरे)। सम वि शिसमी एन हैपरे एडिए मञ्चास चावि (सामा १ व्यस्य वर्ष)। तुरिय दे [वीर्थिक] शाय वनानेगाता, वर-(TE 4) I हुस्अर्थम न [दे] शब्द, नक्क्शी काह (दे द्रख्य भी द्रिस्मी १ ४ ग ४ सिवा(स ७ ६)। तूरी की [दे] एक बनार की मिट्टी (बी४)। एक शाप (बर्ग्यु १३४)। **₹. ₹€)** 1 तूर्व तूरेमाण }े क्यो तूर = हुन्न। हुओ देग) न [हुयो दक] बी.बि. बारि का कुक्किम वि [पुक्कित] १ कक्षमा हुवा, अवा <u>व</u>स्रोदय ∫ बीठ-<del>वय</del> -बीवन (राव: क्य)। निया ह्या (वे ६ २.) । १ तीला ह्या त्छ र [त्छ] चर्, स्ता, ग्रीन-प्रीय <sup>स्थर</sup> (पाम)। इता हमा (यम)। हुस्स वेंची सूस = तुन् । तुस्सद (विसे ११२)। ह्मभग्य वेशे तुछ। (बीपा नाम वनि)। हुइ इ [शर्ग] तुम। तामय मि [सिक-हुड वि [तुस्व] धमानः तरीवा (काः प्रापु त्किञ न नीचे देखों, 'संसु विद्यादिन्या न्धिन् दुम्हारा तुमधे धेवन्व रक्ववेदाला वहनिवर्ग तुसिर्ग रोष्ट्रपनाहर्ग (वहा) i \$8) \$XE) I (युपा ११६)। तृष्टिमा को [तृष्टिमा] १ वर्ष हे परा येथ हुबहु केवो तुपहु । तुक्तु (वद ४) । द्वहरा पूँ [द्वहरा] कम्ब की एक वादि (बल विजीना यहा द्रोरक (दे ६,११)। र वर्ज द्वबह ई [स्वस्वर्त] रामन, बेटना (वब ४) । 84 RE) I द्वार मन [सर्] लय होता, शीम होता बीर-चित्र बनाने की क्तब (खत्य १,४)। द्वदार (घर) वि [स्वतीय] दुमहाय (हे ४ देश होता। तुष्ट्य (हे ४ १७ )। बहु सुवितणी की [वे] इब-विदेश दालकी रा AAR) I हुबर्रत (६४१७ )। प्रयो यञ्च तुबराजीत तुहिष न [तुहिम] हिम तुपार, नर्फ (गाव)। देव (दे १, १७)। (नाट—भानती ६)। इरि पु [ शिरि] शिमाचन पर्नत (पश्रव)। तृक्षिक्र № [ तृक्षित्रमन् ] वस्पेर माने तुवर ईव [तुपर] १ रक्ष-विकेष कथाय स्था कर र्ष [कर] क्लामा (क्षण्)। शिहि वी वसमवाता कृषिका**नुष्ट** (वरण)। (दे १, १६)। १ वि नवाय प्रायक्ता, केको इरि (युग ६१व)। 'शास प् त्की की [त्की] क्षेत्र त्किमा (इर ६ क्रीला (से व १६)। ["स्त्रम] दिनालय पर्नेत (नुपा २। पत्रम १६. २४ जुन १६२)। नुषरा देगो तुरा (नाट—महाबीर २७) । तुहिपायस पू [तुहिनाचस] दिवासय पर्वत तूबर देखो तुबर (विसार १—पत्र १६)। तुपरी भी [तुपरी] शप्र-विशेष शखर (शा तूम यक [ हुप् ] चुत्र होत्रा। दुबर, दुःर (वर्गीय २४) । term tr ): (है ४ एस्से अपि स्टाबर्)। ह सूम पु [वे] रेंच का नाम करनेवाला (वे ४, तुस 🕻 [ सुप ] १ वीवय—वीवय या वीवी ₹**६)** । तृसियच्य (नणा १ ४)। ध्यदि तुक्तः वान्य (इत व) । २ वान्य वा नूण पून [तूज] रपुषि बाना शरकन नूसीर तूह केनो वित्य (हे ११४) २,०१: इस

(दे १ ११श वह दुमा)।

R 12, (1) 1

तम देवी तर्म = दुवीय (रंग) ।

तंत्र पू [तंत्रम्] १ वर्ग-व दीति त्रपायः, र्

प्रवा (बंदा चरः प्रवा का व)। २ शाः,

पाइअसहभइण्यने तेआ भी [त्रेता] पुर-विधेव पूर्व पुर-व्यक्तितास (कुमा भूष १ ४,१) । ६ प्रतास । विधानुवे य रासच्ही रामो सीमासन्बरा-४ माहरूम्य प्रसाद। ५ दत पराक्रम (कुमा)। मंत्रकि [°धिम् ] तेजनाता धंबुद्दोनि (दी २६)। प्रमान्युक (परमूह २ ४)। वारिय पू तेजा देखो तेमय (सम १४२ पि ६४)। "यीर्य] मरत **नवनर्ता के** प्रतीत का पीत रोजाहित पू दि ] बूज-विशेष (पएछ 🐍 जिसको धाररा भवन में केवसज्ञान हुया वा १---पत्र १४) । (हा द)। सङ्ख्या म [चीकिरस्य ] विवित्तानार्यं, संभान [स्तेम] चोषी (मा२ ७)। मरीकार (दस १)। तेल देखी तेलय (मग)। लंडच्छा जी [चिकिस्सा] प्रवीकार, इसाम समार्थ [१] टेक स्तम्म। बका (भाषा खामा १ १६)। तेश्रीस वि शिजल्यम् । हेनबाना हेन-पुक तेष्रच्छिय देवो तेगिच्छिय (विचा १ १)। (बीप रवश ४ मन; बहा सम १४२ तेक्च्या की [चिकिस्सा, चेकित्सी] परुष १ २, १४१)। प्रवीकार, इसाम (कप्प) । तेला देवो तेलव (बीद) । तंब्रम्मत वि [तार्वीमीक] १ तीवरा। २ तेश्रज व तिञ्चन] १ देव करना पैनामा । **ज्वर-विरोप आहा देकर तीसरे-तीसरे दिन** २ ज्लेषन (हे४ १४) । ३ वि उत्तेतिस पर मानेकाता जबद, विजास (उत्तनि ६)। क्रुलेबाना (दुमा) । तेइस वेको तेअसि (नूर ७ २१७- तुपा तंक्षम न [तेकस] शरीर-स्त्वारी शूप्न श्राप्टेर विशेष (ठा२ १ ६, १३ मर्थ)। तेमकि व तिवक्ति । मनुष्य वार्ति-विशेष (वे १) इक)। २ एक सली के पितासा नाम (खामा १ १४)। अस्त प्रै प्रिप्नी राजा कनकरम का एक मन्त्री (स्त्राया १ १४)। पुर न ["पुर] नगर-विशेष (खाया १ १४)। सुव वृ [सुन] रेको प्रच (राम) । देशो तेवछि । तेमव धक [प्र+दीप्] १ धीपना अवस्ता । २ जनगा । तेयाइ (हे ४-१६२) **4**₹) i शक्षवास रेप्रो तंज्ञपास (इम्मीर १०) ।

38): तेड प्रतिज्ञस्] १ शाप योग्न (मार्- ई १६)। र केरवा-फिरोप तेजो-छेरवा (भग कम्म ४ १ ) । ३ भरिनशिक नामक इन्द्र काएक लोकपास (ठा४) १)। ४ दार, यमितार (सूम १ ११)। १ प्रसाप्र क्षांत (तुप २ र)। आय रेको स्वय (यव)। र्दन पू [कान्त] दोकपाल देव-विदेव (अ४१)। काइपपु [काबिक] धानि का जीव (टा १ १)। कास पू िकाय] शांत का भीत (रि १११)। बकाइय देवो काइय (गएछ है। बीव १)। प्यम पु [मम] धान्त्ररिक नामक इन्द्र 📲 एक सीक्पान (टा ४-१) । पर्यस शंकविय रि शिदीरी वना हथा (पूमा) । वृं ["स्दर्भ] उपग्र स्तर्भ (बान्त)। सेम ९ थनना हुया अहीत (पाय) । वि [ "सेश्य ] देवी-नेत्पाताना (वन)। शक्षविय विशिष्ठित । तेन विमा ह्या (वे "तेसा थी ['नेदया] वर विटेन के प्रस् c (1) 1 वे शतेराती चाँक चित्र व रूप होते तअस्मि पू [ तंजस्मिम् ] १८वापू वंश के तेन की जनाना (दा है, ए वन ११)। एक राजा का नाम (पडम ४, ६)। क्षित्स देवी क्षेत्र (क्ए १३)। क्षेत्र त्रआ की [तेजा] पत नी वेस्की सब केनो किमा (स र १)। जिल्ह (नुज्य १ १४)। ["शिवर] पर बेंगरन (# x 1) 1 साय व [क्रीव] बन दर्ज है दिया ताआ की [ताजस्] अवपटी विकि (वी ਅ' ਕੇ ਹ}। बचा होते हैं है है है है।

तेर ) वि व. धियोदराम् ी ठेखा. वस

तेरस ∮ भीर धौनें (भा ४४ वे दिश<sup>ें</sup> काम

तेव वेको तेळाम (पत्र २३१) ।

र्वेडम न दि बत-विरोध टीवर का पेड हिं रोजय <sup>| "</sup>प्पक्षोगप ["प्रयोग] १ कोर की २ २६, ६६)। z. tu) i तेतु । पुष्तिमञ्जू १ क्य-विशेष तेतु तेतुम । का पेड़ (पर्या १) ठा व वटम तेतुम । ४२, ७) १२ तेव, कमुक (पडम तेरच्या क्यो विरिक्या = विजेप (प्राप्त १६) । चौरी करने के मिल प्रेरका करना। २ चौरी तेरस रेको वेरसम (क्रम ६ १६) पत्र ४६)। के सावनों का बाल या विकास (वर्ग २)। तेरसम वि जियोदकी तेरावा (सब २३४ तेणिश्र ) न स्तिम्यी चोधी प्रवत्त वस्त EX. 23) I लाया १.१-पत्र ५१)। तेजिसक रे का बाह्य (या १४४ बॉब ४६६, र्वेद्रमय पूर्वि किनुक र्यव (शावा १ व)। तेरसया की विकेश प्रक्रियों की एक काला पद्ध १ ६)। तेंबर पं कि दा बीट-विरोध बीमिय बालू (कप्प) t रेणिस वि चिनिशा विभिन्नका-संबन्धा वैठ की एक पादि (पीन १)। तेरसी की [त्रयोदशी] १ वेचना । २ विकि का (संघष ह)। तेगिय्य रेबो तडम्ब (ग्रूप १२ - २११) । विशेष शैरव (सम २१: पुर १ १ ४)। तेणा की स्निन(] बोर-की (सम्बन्ध १६१) । तेरिज्या वि [विक्सिक] १ विक्सि तैरसचरसम् ६ विशेषक्रेचरशक्तमी तेष्ण न [स्तैश्य] शेध परश्**लका प्रशा**पक करतेवाला। २ वं बैदा प्रकीम (चन १६४)। एक शी ते खर्वा ११६ वॉ (पक्रम ११६ (निक १)। तिमिन्द्रमा देवो संप्रच्या (धर १६, २११) । 99)1 तेण्हाक्रज वि [तुरियत] तब्दा-श्रवः, जाता तेशिक्कायण देवो निराक्कायण (धन) । वेयह भा तेरस (हर १६४८ बाज)। (8 # # # B) तिरिक्ति स्था विरिक्ति (एव)। तंशिस प्रविश्विक निर्मान (विवर्क्ष)। तेवधि र तिवधिन । वर्णन के नन्तर्न-सरिविक्य वि चिकिस्मिकी १ विक्रिश शंग्रसिम वि त्रियशिक र मत-विशेष का रेगाका गासक (इक)। र देनों तेशकि कालेकला। २ एं. देख इकीयः। ६ त क्लुबानी बेचितक मठ-जीव सवीव सीह (सामा १ १४—पम १६ )। विक्रियानमें प्रतेष्यर-करण : शासा की नोबीन इन दीन चहिन्दों को मानने नावा িগ্ৰাম্বনী বৰাজালা বিকিম্বাজন (ভাষা तेविस देवी वीडल (४ ५)। (भीप का ७)। २ न सत्त विशेष (तब १ १६- तम १४६)। तंत्रिक वि शिवन किला (प्राप्तः वटक थ विवेदशदश काण)। तंचतारीस देवो ते-आसीस (शक ११)। ना ७१ कमा)। तेरिच्यः देवो विरिच्यः = विर्मन् (पर १८) । तं च वेदो ते ज ≈ तेत्रय । दैनई, (शक्त ७३) । तेचिक (शी) वैको तेचिक (कक ६६)। तरिष्या केवी विरिक्याः≕विख्यीक किर्म तंब व निक्र विश्वनिष्ठेष (समस्य ११६) । तेचिर देवो विचिर (बीन १)। व मलस्ते वा देरिका वा सराविधारती तर्वसि देवो तर्वसि (१४ ७४)। तेचिक विशिवती ब्याग (हे २ ११७)

तंत्रज्ञपुर न तिज्ञञ्जपुर] विकार पर्वेत के विशेष (समिव ११) : त्रिक्षिक विशिक्षक विशेषको विशेषको नेत्रकः । (मप) क्यरं वैको (डि.४.४ थः यान मंत्री वेजपाल ना बसाया हुया एक (बीव २६६) सर) । राम्बर्ध हिमा हे ४ ४३१ हि)। नवर (ती २)। तेख = चिंता १ योच-विरोध को मारक्य तंत्सु(धप) वेको तत्व≔ तत्र (द्वे ४ ४ ४) नीन की एक याचा है (का थ)। २ दिवा तजस्सि देखो तजस्म (दन १)। श्वाज (धार) देखी चय = ध्वान् । तेलाइ (सिन) । तेषद रेको शंचिल (हे २, १६७ माम पहा संक तरिज्ञा (निय)। कुमा) । स्तिकाल (बार) वि स्थिक विका हवा संबद्ध देखी लेक्य (पत्त) ।

2R }1

कमा) ।

तंचिक न विविक्ती ज्योदिव-प्रक्रिक करत

तर (वन) वि [सन्दीय] वैधः तुम्हाध (शहः

रोम (बरा) देखी राष्ट्र – तवा (विष्) । क २११३ १४ २**१** )।

सञ्जयास र् [तेसपास्त्र] हरका के स्था

बीरबंबस का एक यहाली मंत्री (ही १)।

रस्य देल कमनवर्ण (हे २, १व६) हुना) ।

२ वन बरड (का)।

सक्ष चक्र दिं दिनाना । वेशीव (कम्मच रेमासिक वि किमासिकी १ क्षेत्र महीने में (525 होलेगाला (भग) । २ तीन मास-संयल्डी (गुर: तंत्र दे वि रे राला, यस-नातक कीर, िर्म । र रिहार, राजध (वे २, २३) । सम्बद्धाः सेम (ह४ ४१०) । तज्ञ च [तन] १ शक्त जुन्दर यथ्यय 'धन तर वि प्रियोदशी तैयाची (कम्प ६ १६)।

वा विकाध वेस (संदिह १७)। तेक्षंगर्वक विक्रको १ क्या-क्रिकेट १ पूंची बेरा-विरोध का निवासी यस्त्य, रीसंदी (पिप) । तंबाडी की [वैशादी] औट-विदेय, वंबीली

तेरिक्ज न [विसेक्ट्स ] विसेक्टस पर्छ-

(बाप ११)।

प्रमित्तन (क्य १ ६१ ही)।

(Rw ev) दे<del>शुक्त</del> न (त्रैसाक्क) तीन भ<del>क्त स्</del>नर्ग तंस्रोम ् नत्वे ग्रीर पांतल शोक (ब्रापु १७) तको का∮ बाध राज्या १४ पत्रम≪० ७६० हेर १४० र १७- पर सीसार**७**)। वृश्चिति विश्वित् वर्षक वर्षकी

वाना (रे ६ १०) । २ १८४-नार्थन (वड ) ।

वाशा(दे ६ १०)।

बोमरिन्ही की चि बझी-विशेष (पाम)।

रेट विदेश । १ एक पैन मानाई (एप) ।

(दोष १६६)। जाह र् ्रीनाय] तीनी अक्ट का न्यामी परमेश्वर (पड्)। संहण न ["मण्डन] १ दीनों चपद्द का सूपए। २ वृं चारण का पट्ट-इस्टी (पडम क **t**) i तह न [संख] हैम तिन का निकार, लिएक ह्रव्यक्तिरेय (हे २ ६० चरा पर ४)। किला ही किछा मिही का काबन-विदेव (छत)। पद्मन पिस्यी धैर रूपन का मिद्री का भावन-विदेव (बसा १ )। पाइया श्री [पायिता] गुत्र बन्दु-विटेप (ग्राप्य) । तेझा न [मेंडक] मुख-स्टिप (बीब ३) । শলিস বুঁ [নিভঃ] উপ ৰখনবাদা (বৰ ६)। तक्षामः { स्यो तलुक्त (पि१६६ प्राप्त)। । नहीकाः त्तर्ये } (धर) देशे तह = तथा (हे ४ तबँड }े देश्यः द्वमा) । तपट्ट नि [नैपट] विस्तृत की शंक्याना जिनमें निरमठ यथिक हो ऐनी संख्या "निवि वैप्रदाई पाशादुमसवाई (पि २६%)। तबह (मा) वि [ वायन् ] काना (हे ४ ४ ३ दुमा)। तयण्यामा ध्ये [त्रिपद्यारात् ] नेरन, **६६ (प्राष्ट्र ६१)** । सर्वामइ भी [प्रवाविद्यति] वैदेंग (बाह 11)1 संयुक्तरि देवो न-बचरि (कम्ब ६, ४) । सद (घप) वि [ तादग ] बनव मैता बैना (हे४४२ वर्)। तदि (धर) च बान्वे निष् (हे ४ ४२१ नदिय रि [प्यादिक] त्रेन दिन का (वीपन तदुष'र देगी न-पचरि (मणु १७१) । ता रेनो तभा (याचा दुमा) व ना म निदा दिव उत्त तक्य (कृता) । नामप 🕯 👣 बाउद क्यी (१ १. १४) । मींड देगो हुड (हे १ ११६) प्राप्त) । नीतर भी दि । बराव की मात्र को बती हर्द एक गाउ रहा (दे ६, ४) ।

वोमर्रा क्ये दि विज्ञी तता (रे १. १७)। बोक्सार देवो मुक्तार 'नुरनुरवदबोणीय-वीम्हार (बा) देखो तुम्हार (पि ४६४) । संबर्धक्योस्तारमस्त्रुवी (सुर १२ ६१) । क्षोयन [ताय] पानी, अत (एटर् १ व सोटल न [प्रोटक] एन्द-विकेप (पिय)। बमा १४ वे २ ४७)। यरा घारा, ध्ये सोक्ष सक [ मुक् ] १ तोइना मेरन गरना । िंधारा] एक रिस्ट्रमाचे देवी (रक्ष का ८)। २ ब्रक्ट हटना । वीवद (हे ४ ११६) । वह पटू, पिट्रन ["प्रष्ठ] पान्धे का कारि लोबंस (मनि) । संह साहित्रं (धरि) माय (गएह १ ३३ मीप) । ताहिता (ती ७)। ताय पूं [ताद] स्वया, पोड़ा (हा 🕯 ४) । तोड पू [प्राड] पूरि (बर प्र १८)। वारण न [वारम] १ हार ना बरवर-विशेष ताहण वि [दे] यगहन यम्प्रियु (दे थे, बहिडाँर (या २६२) । २ बन्दनप्रार, कून ₹<)1 या पत्तों की भाषा (मधारर) को बरंगर में नाइण न [तोर्न] व्यया, पीड़ा-करण नस्मा६ जाती है (सीर)। सर न िंपुर] (चन)। नपर-विरोध (भट्टा) । शाहर न वि] टांडर, नास्य-विशेष (सिरी वारविञ वि [वि] व्रतेनित (पामः द्राप्र १ २१)। **१९२)** । होबद्दिआ ग्री [दे] नाय-ग्रिटेप (माना २ तारामदा भी दि] नैत का राय-विरोध (बद्दानि ३)। वोडिज वि जिल्वि वीवा ह्या (यहाः वास देकी मुख=वोत्तय् । वोनदः, वोनेद ਚਾਹ)। (पिंग महा) । यहः दासंद (यमा ११a) । तोड व दि । धूर कोट-विशेष बनुश्चित्रय रवर तासिज्ञमात्र (नुर १४, १४)। इ बीव की एक नादि (सन)। तान्तिपस्य (म १६२)। होण वृंव [तू म] सर्वय प्राप्त तरक्त नृष्टीर वास पून कि मगब-देश प्रनिद्ध पन परि (पाधा धीर है १ १२६: रिसा १ व) । माए-विशेष (तंद्र) । लाण र पून [तूणीर] शर्चन भाषा (शय शासम र् [दे] पूर्य धारमी (रे ४, १७) । हे १ १९४ मिंग)। वास्त्र न [वास्त्र] दीन करना दीरना वात्त न [तात्र] प्रतीय, बैन को बारने वा नार गरना (राज)। ह'वने वा ब'म वा मानूप-रिकेष पैना नासिय वि [नाकिन] दीना हमा (बद्धा) । शोग बार्क (पान है वे ११ बुरा २३७ नास न [तास्य तीछ] तीन बबन (रूप शुर १४ ११)। 1 (3YS शोत्तरि [द] रेगो गींतति (पाप) । कोबह दे दि । १ शत का मानुरागु-विदेश। शास्त्र रि शिक्ष व्याप प्रकारियामा नमन की वरिष्ठका (दे ४ २३)। दीरा-बारक (उन्न २ )। नाम नर [नापय] गुद्री शरना नगुत्र तागर पुंत हि तागर] नवारा अपुनशी बरना । सन्द्र (बर) । वर्षे, सीविज्ञद्र (स का वर या धना या बहुवाउ तीवर मनाउ % # F t थामहिराप्त सम्प्रती (वर्गीर १२४) । न'म र् [नाप] नुध्रे, यातम, यंत्रेच (राय शामर पू [त'मर] १ बाए-विटेन एक प्रकार ग्या २०१) । यर दि विरी मंत्रीप का करा (पर ११ तुर २ व थीत)। बराय (बान) । २ व ६० विटेन (पर)। न'सन [दे] यन दौना (दे ६ ६०)। श्वमितित्र र्षे [न] १ राम का प्रमार्थक रहते-नामनि वृत्तिर्भागनी १ इन्हरितेय । ३

पुत्त [पुत्र] एक प्रक प्रशिक्ष केन यानामें (ग्रावम) । तोसंस्थि प तोसंस्कि ताविकाम का स्वीत संविद्य (सावद)। वोसविभ ) वि विपेषित दिन किया हवा होसिका चेदोवित (हे ६ ११ अपन wa ca) | शोबार (धप) देशो शबार (पियः पि ४६४) । च नि जि नाय-कर्ता, एकका 'बक्नच

स्त्रहो सक्त्र शो सो नरो होड (युग ३९६)।

"त्तप रेको तज (दे १ ६१)।

(बक्त ७०)। "चि वेको प्रम = इति (क्या स्वया १ सरा)। त्व देखी प्रत्य (या १९२)। "स्व कि "स्था (स्वय च्या ग्रमा (वाचा) । 'त्य देवी अस्य (नाम ११) । रिधम केलो यय = श्तव (छे १ १)।

रेल**रह रेको यरह** (बच्छ) ।

त्थीय देशों भीग (पाप २ )।

ल्पेसण देशी श्रीसण (वा १ )।

क्षित्र को बंग (क्या) ।

रैंबरु वेबी यह (पि १२७)। रक्षम देवी धाम (बस्य ४७) । रैयकी देवी शकी (पि ३०७) । त्वय केवी वय=त्ता। वक्र त्वयंत (माट)। रिश्वक देशी वक्य (से १ ४ ३ नाट)। ैत्याण **रेवो** वाण (गाट)। त्वास्त्र देखो थास्त्र (कृगा) । रियम रेको थिय (ग ४२१)। शिवा देवी किए (कमा) । स्योक्ष देवो श्रोक (गट--नेव्हा २४) ।

वंग कि कि निवन असम (६ %, २४)।

वंद इंस्ट्रिक्टी ट्राइट मादि का दक्का (दें 4

प्रदेश बरीच अध्यक्ष प्रश्न पर्दर्श ।

 इस चिरिपाइकसङ्गङ्क ज्लाविस तदाराइस्टर्चकाखी वेबीसहयो वर्रको समली ॥

ध

**य** प्रे. वि. **क्य-स्वतीय म्याजव-विदेश** (शाप)

बाग १२ वाल्याचीकार और नाव-पृति में ধ্বত দিয়া বালা ঘৰৰ। ভি ব বৰ্ণ थम्बद्धे में भ क्या जी मर्थक पनर्शनर्ग

(खन्य १ १--पत्र १४८ वेशा ११)। म वेची परन (मा १३१ १६२) धरा)। **बहुध वि स्थितित**े पाल्कावितः बका हुना भक्कभ") की [स्परिका ] पानवानी पान

र्व विन् किम्बूल-पात्र-वाह्य भोकर (सुन्न **७१)। घर दे विधा** तालूत-नाम का मञ्जूष शीवर (तुपा १ )। श्रीहक दे िबाइकी पानरानी का बन्नाक गीकर (सवा १ ७)। देखो वनिया

भद्रभा रेक्नेका पात्र पात्रवान (सङ्घा) । अश

बद्रभा थी वि क्रिकी वैसी, क्षेत्रकी वा बसनी-कमर में बांकी नी करतों की वैश्रो 'संबन्धद्रपाराजाती' 'वेबिया संबन्धदर्द (१ ६) मा (दूब १२७े)। भट्ट देखी जय = स्वरम् ।

यच्छ म रिकपुट ी १ निवस और उल्लंब बकेर (वे २ ७८)। २ वि गीचा-जैवा (मस्य)। यडविभ नि [स्बपुटित ] १ निवय और

(धडर) । भवड न हि पत्थातक, इस-विशेष मिसला (R R 24) 1

*थैग तक विदान सामय* दिना करना क्षमरा करना । मेगद (प्राष्ट्र ६३) । र्वेडिस न (स्वविडस) १ शुद्ध पूनि वन्द्र-रवित प्रदेश (कथ निष् ४)। रे क्रीय क्राता

(त्प११)। थंतिक पुंष्टिकण्डिक विशेष पुरसा (तूप १ 2, (8) 1 **वंडिक न** रियण्डिक] तुत्र मुनि (कुरा ११

(धाना) । श्रीक्रिक्कन कि∏ नव्दक्त पूर्तनकेश (दे% 3X) 1 र्वत देनी जा।

क्नाद प्रदेशनामा । २ श्रीचा-द्वीचा प्रदेशनामा

बीस बाक (स्तास्था | १ काला, स्तान्य होता, रियर होता निरुपंच होता । २ इन्छ नियन निरोध करता. स्टब्स्सा रोक्स, निरचक करना । चंत्रह (ग्रीव)। कर्मैः वॅधिन्यह (हे ६, ६)। संक्र संभिन्नं (कुत्र १०८)। बंग र् हित्रम्मी वेदाः 'वेप्रीक्रपानंत्रस्यं एक

रोराप्परक्ष्युक्तियो नाइ चंपाथसीडी (इस्पीर २२)। "तिरम र "तीमें] एक वैन दीवें (ब्रम्पीर २२) । र्था वं दिल्ला है स्तान्य बन्धा बन्धा (है

ध्यक्तिर (इच र १३ ज्व ११) । विमा की "विध्या स्टब्स-नेप्रीय वा निर्देश काने की विद्या (तुवा ४६६) ।

क्या बर्गे वर अन्य (नव १३३)। ६

र्थभण व स्तिम्भन**ो । स<del>्तव्य क</del>रश** नवरिना(दिवे ३ ७ तथा ४६६)। २

२, १। कुशा बालू १३) । १ स्रक्लिम वर्ष्ट

हुमरात का एक नगर, भी सामकन 'बीमार्च'

नाम से प्रीस्क है (दी १३)। पुरन

"पुर] नगर-विशेष श्रीमात (सिग्व १)।

र्धमण्या हो [स्तम्मना] स्टब्ह-कच्छा (ठा

4 4) 1 र्बमणिया औ [स्तम्मनिक] विद्या-विशेष (वर्गीत १२४) । र्दभणी जो स्तिन्मनी] स्तम्मन करनेवाली विदानिरीय (सामा १ १६)। श्रम्भ देखी श्रम = स्तम्म (हुमा) । श्रीभेध वि [स्त्रिमित ] १ स्टब्ब क्या ह्या समाया ह्या (कुम १४१) कुमा कप्प मीप)। २ वो स्तम्ब क्या हो सबहुतन (E X5X) 1 श्रक्ष धक [रका] पहला बैठना, स्थिर होता । बक्कड् (हे ४ १६) पियो । मनि यनिकस्तह (पि व ह)। शक्त प्रकृति मेचे याना । क्लबर (\$ Y = 0 ) 1 श्रक्ष पर्व [ सम् ] धवनाः मान्य होना । बल्लंडि (विष्)। अवस्थारि [स्वितः] रहा हुमा (कुमा) वण्या ३व धुपा २३७। याच ७७। सङ्घ ६)। अक्ट पू कि र मनसर, प्रस्तान समय (के ५,२४३ वन ६ बहुछ विशेष १३)। २ **दि बना हुमा भारत 'बन्ध' सम्बद्धारे** र दिकर पूर्व पुरुष्कार पर (पुर 💌 १०१८ ४ **१९**%) 1 थब्छि वि [भान्त] कर हुमा (पंत)। बद्धव सक [स्थापय\_] स्वापन करना रखना । भक्तनद् (प्राष्ट्र १२ )। द्या देनो वय≈स्थायः। प्रति वश्यस्त (पि २२१)। थगण = [स्थगन] विवाद, बक्ता संबद्धा धानराम धान्यासम्, पर्स (के २, ०३) छ। Y Y) I बगवन वक [बनवनस्य] बहुबना काँपन्य । वहः धगयसित (महा)। वरिय नि [स्परित] निहित, पान्कारित, चाबुत (दम ६, १) मावन)। श्वनिय रेका भइम । नगहि दू ["शाहिल्"] राम्यून-माइक मीकर (मुगा ६३६) ।

धारायाची दि] चंदु चोंच (दे १ २६)। बाय सक स्तिम ] बत की बारती की सारमा । कर्म विश्वज्ञार (पव द**१)** । बरम प्रक्रियाह, ससा, पानी के गीचे की भूमि पहराई का घन्त सीमा (वे ४,२४)। भाषा भी वि ठियर देशे (पाप्र)। बहु पुन [दे] १ क्र भीम भूगव पपूह, वृत्र बरपाः गुक्रस्तुरंगस्ट्रा' (युपा २०८) विश्ववह सङ्ग बुट्टान्ट्रियोच्ट्रचट्ट (सङ्घ ४) । २ ठाठ ठाट तहक-भड़क, समयम याहम्बर (ध्रमि)। शक्ति की दि या जानवर (वे २, २४)। श्रक्ष पुन हि] ठठ पूप सपूत्र (गर्पि)। यहरू वि [स्तब्य] १ निरुष । २ वर्षिमानी वर्षिष्ठ (नुवा ४३७ १८२)। े यक्तिमान (स्तर्गिमन) १ स्तन्त्र किया हुमा । २ श्तरम निरम्ब । ३ न पुर-बन्दर का एक बीप सक्क कर पुरुको लिया बाता प्रसाम (धुमा २३) । यण बक्त स्तिम् । १ धरमनाः २ मासन्द क्का, विकास । ३ धाक्रेस क्या । ४ कोर से नीवास सेना। यक वर्णत (ना 88 ) L थय र् [सान]कः, रूच वरोपर, पूची (धाचाः मुमान्याप्र १११)। जीपि वि जिलियो स्तन-पान पर निजनेवासा शतक (बा १४) । सङ्घाँ विद्यों को स्तनवाबी (वरव)। ामधारि वि [विसारिम्] । स्तन पर पैमनेवासा (गरप)। सुक्त न िंसूत्र] बर-नूष (वे) । इर वे िशरी स्तन का मार बाबोम्ह (हें ११८९)। थर्णभय पू [स्तनम्बय]स्तन-पान करनेवाशा बानक क्रोटा कच्चा "नियर्थ वर्छ धरीतै पर्रापयं इरि निष्योति (नुर १ सम्बद्ध १३)। थप्पप्रव [स्तनन] १ वर्जन परजना (सुख १ १६२)। २ वाइन्ब, विश्वादट (तय १ ६ १) । ३ धारीसः समिताप (एअ) । ४ धानाजनाता नीसास (तुष १ २, ६) । थणय 🐒 [स्तनक] दूसरी शतक-मूमि शा एक नरफ-स्थान (देवेन्द्र ६) ।

223 थणकोलक प स्तिनकोक्षपी इस्ट नरक-मुमि भा एक शरक-स्थान (विनेत्र ७)। थणिञ पू [स्तिनित ] एक नरक-स्वान (शिनर ६ २६) । थणिय न स्तिनित्री १ मेघ का गर्मन (बका १२/दे १, २७)। २ बाक्स, विन्धाइट (सम ११६)। ६ मू मबनपति वेशों सी एक वार्षि (शीर परेंद्र १ ४)। इस्मार पु ["कुमार] मननपठि देशों की एक वाति (का t t) i थणिह स्क चिरय दिया चोरी करना। वरिएस्वइ (प्राष्ट्र ७२)। यजिन्न वि [ स्तनवन् ] स्तनवाना (वप्पू)। थपुनुष्र पुस्तिनक द्विता स्तर (यहर)। थण्यु धेवी बाजु (वा ४२२) । यचित्र न [दे] विभाग (वे ५, २६)। बद्ध देको बद्ध (सम ११: मा १ ४ वण्या १ )। यज्ञन [स्त्रस्य] स्तनका दूव। बीदि हि ि जीविन् ] क्षेत्र वश्वा (मुत ६१६) । यद्य सक [ स्थापय ] एवना, यव्ही करना । वपाइ (सिरि ८६७)। धप्पण व [स्थापन] व्याद न्यहन (हूप (#\$\$ थप्पिम दि [स्थापित] एल्डा हुमा न्यस्त (रिप)। थक्म सक [स्तम्] प्रहेशर करता। थन्म६ (सूच १: १६ १ ) । बरुमर १ [ दे ] ग्रयोप्या नावधे के समीप का पुन्न ब्रह्न-वर या गरित (वी ११)। थमिश्र वि विं} विस्मृत (दे दे, २४)। थय सक [स्वतय्] माण्यारम करना धावृध करना, इकना। वएड, शर्मु (पि ₹ रुगा६ ३)। स्वी वद्रसर्व(गा ११४) । हेहर, यद्वतं (या १६४) । थय वि[स्तृत] स्थात मत्पूर (दे १ १)। थय पू [स्तव] स्त्रुटि स्तवन ग्रुण-मीर्नन (गमि १६: सं ४४)। थमण न [स्वत्रत] उत्तर देवोः भुरपमञ् बंबलवर्षमणास्य दमहुमास्य एयाई' (धान २)।

हारकुक्सनिकर्म (तूपा २७३) । मुत्ते हुए पुँद्व शीफर्स्ट मुत्ते हुए पुँद्व शी थवय पुं [स्तवक] दूध शांति का दुष्ण्य (दे धानी बनह(बन ७) । इक्क वि [ बन्[] स्वत-पुट (नवर) : "दुन्तुवियंद्य न ["दुन्तु-२१ शाया)। ट्यण्ड] बबस प्रतेष के निए बुसा हुया बुख यभिभा की [व] प्रदेशिका शीला के सन्त (बच ७)। बार पूँ विवार] बनीन में में ननामा जाता छोटा कहन-विशेष (दे १ क्तना (पाचा)। मुख्यिमी की निश्चिमी क्मीन में ड्रोनेकाना क्मन का ऋख (कुमा)। वनिय नि [स्थापित] स्थरतः निदिति (यदि)। य नि जि वसीत में अपन होनेनाका र्वावय वि [स्तुत] किल्ली स्तुधि की यौ 🗊 (पर्छ र पाम १२ २७)। बर नि **गह,** क्षारित (सुपा १४१) । [चर] १ जनीन पर चालीनाता । २ जनीन भविर नि [स्थविर] क्षुत्र, क्षुत्रा (वर्गीव पर चलनेशाला विशेष्ट्रय विशेष प्राष्टी (बीव ११४)। का ब्रोप र स्थीप)। ब्री. री (मीय वे)।

1 (89

(चन)।

यानी (सिरि ४ १६)।

शक्य न कि महा दुरादि-निनित गृह (वे

थर्क्सहुरार हे थे [वे] युगव-स्मारक, शब को

श्रम्भिया । गाइकर का वर शिवा काता एक

बद्धी श्री [स्थसी] वस रूप वृत्यात (तृताः |

पाम)। योद्यन दे ("पीटक] पशु-विशेष

ब्ररार वा चर्तरा (त ७३६ ७३७)।

यसी हो [स्पद्धी] क्रेपी वजीन (उस ६

वहिया की [वे स्पास्त्रता] चतिता छोटा

बान बीजन करने का बरतन (परम १

R. 22) I

(बद ७)।

144)1

१७: पुरा १७)।

थणी [में] केमो धनिका(के २२१)।

थस यसक्र } वि [ब्रे] विस्तीशे (वे ४, २१)।

मिष) । संष्ट्र, याळव (क्षेत्र १६) ।

१ १)। बह् 🔩 [चे] निस्तय थाधाव, स्थान (६ ४, थार ⊈ [वे] यत मैव (वे ४ २७)। वारुवय दि [धारुकिन] देश-विशेष में वावेची ठाः भाद (वर्षि)। धर्वेद वाहिद करनव । धर्वे निया (धीप) । केवी (गि ३२४) । वक्क बंद (पत्रम १४ १३४) थरगित्र। शास्त्र पुत्र [स्थास्त्र] वही पश्चिम भोजन थाइ वि [स्थायिन] च्हनेनाता । ची श्री करते पानाम (दे ए. १२: ब्राह्म श्री का प्र िंशी वर्ष-वर्ष पर बच्च वरलेपानी योगी २५७) । थाकद् वि [स्थास्त्रिम्] १ वाववाता । १ र्युः, नामप्रस्य ४३ एक मेर (ग्रीप) । धागत्त न [वे] जगन के बीतर पूजा हुमा amaran fall ..... / es \ .

थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के निनारे पर

कारक रक्कर (क्य ७२ व दी स १४व)।

मान परिचाननी १ वस बीजै पराध्य

(हि ४ २६७) ठा ६ १)। २ वि. सब

पुष्प (विश्व ११) । व वि वित् वित् वित्रास्त्र

थाम पुन [स्थामम्] १ वह । १ प्राप्ता ला

खणु) व्यक्तमु स ससत्तो (पिड ६६४) ।

थास व [इंस्थान]स्थान, त्रवह (इंक्रि

४७: स ४६: ७४६): न्येवानियननितरे

फिम्पुरनाया व यमगानम्य' (पुर २,

(१ मा) मी ना परिहातद इसस्य (१ इन्छ-

नाम वि वि निस्तील (दे ४, २४) ।

(उत्त २)।

२१ टी)। संद्र विपित्र (माप्र ८ २१

बिमाख न वि. १ मितिनार, धीत में किया

इमाबरमाना(यस ४११४)। २५⊅

री)।

(हा १ १ पुरा ४८७)। पाग वि ["पाक]

थाम प्रक [स्थापय्] १ स्विर करना। २

इप्ही में पनावा हुआ (ठा १ १)।

रबना। मायए (उत्त २ ३२)।

थावंचा जो [स्थापत्या] डाव्हा-निवामी एक यहस्य की (ग्राया १ ४)। पुच्च पूं ["पुत्र] ह्यास्था का पूच, एक बैन मुनि (साया १ रः येत्।। शाहक न स्थापनी म्यास मानान (स २११) । बानय र् [स्वापक] समर्व हेनु, स्वपक्ष सावक हेल (ठा ४ ६--यम २६४)। शावर वि स्थावर] १ स्वर खनेवाता। २ र्षु एकेन्द्रिय प्राफी कैनस स्पर्शेन्द्रियवाना---युधिकी पानी भीर कनस्पति मादि का कीक (क्ष ६२ को २)। ६ एक विशेष-नाम । इक नौकर का नाम (क्य २१७ दी) । बहुय र्\_["काव] एकेन्द्रिय शीव (ठा२ १)। ∣ "पाम, नाम म ("नामन्) कमे-विशेष स्वाबरूप-प्राप्ति का कारायु-भूध कुर्म (वंच ३ सम ६७)। बासग वि दुराम (प्राव टिप्पल-पत्र 28 2)1 बासग १५ [स्थासक] १ वर्गेल बाक्तो द्यासय रे श्रीश (विना १ २—५ व २४)। २ वर्षेत के बाक्सर का पात्र-विशेष (बीपा बतु स्नाना १ १दी)। १ यस मा धामरस-विशेष (धन)। माइ 🖫 [वे] १ स्थान, बच्छा: २ वि यस्ताव पंतीर वस-नावर । व विस्तीर्शं । ४ बीर्व, सम्बा (वे ४, ६ ) । भाइ दुं[स्थाम] पाइ**ः तका** सहसाई का सन्त सीमा (पासर विसे १व६ए) श्रामा 1 6 12 g= x)1 थाहिल 🕽 [वे] याकार स्वर निशंत (तुना ₹**₹**) i विभ वि [रिवत] एहा हुआ। (त २७ : जिसे १ वस, भवि)। विद्व वेदो ठिइ (से २, १०) पडक)। विविधी की वि अन्य-विरोध "विविशिकांत-चकेए' (समाच १४१)। Ýø

पुटे बक्षा में किया भाषा संभान अका साथि के ब्रोडित भाग में समाद्दै जाती जोड़ (पर्स्स १७३ क्ति १४३६ टी) । थिगाक पुंत हिंदि हिन्दा र गिरने के बाद दुक्त (ठीक) किया ह्या मृह मान (माना २१६२)। बिद्ध देशो शद्ध = स्पेर्व (संबोध ४३)। बिष्ण वि [स्स्वान] इंटिन जना हुथा (है १ क्यून इ.इ. है २,३)। देखो शीगा बिण्य वि वि । १ श्वेष-रहित बयाबाना । र श्रविवानी पर्व-पूर्व्ह (दे∀ ६)। थिक वि वि] गरित समिमानी (पाय)। भिष्य केलो विंप । विवाह (हे ४ ११८)। विष्य ग्रन मि + ग्रस्] नत पाना। मियह (हे ४ १७१)। शिवुक पू [स्तिमुक्त] कम्ब-विरोध (तुथ १६ (\$\$ मिम सक [स्विम्] पात्र करना योजा करना । क्षेत्र विमिन्न (राज) । भिमिक्त नि [दे स्टिमित] स्वर, निवन (देश रका से २ ४६ व देश सामा १ प्रेमिपारेर पर्यार ४८ २ थ बीपा युक्त र पूर्व १ व ४)। २ सम्बद्धीया (पापर) । पिमिम व् स्तिमित् । स्वा सम्बद्धारिय के एक पुत्र का नाम (श्रीत ६)। भिम्म सम् [सित्य] १ मधः करना। धाक थात होला । पित्मह (प्राप्त १२ )। बिर वि [स्वर] १ नियस विषयः (विपा र रासम रेरश खाबार च)। २ निष्पद्म संपन्न (रक्ष ७ ३१)। जास "नाम ग ["नामण्] कर्म-विशेष जिल्के करन से करा हुई। कार्षि सनमनों की स्थिएता होती है (कम्म १ ४३: सम ६७)। विक्रिया थी [विक्रिका] वश्-विशेष सर्वं की एक कालि (बीक २)।

विरणाम नि [व] चत-नित्त भेषस-मनस्क ( t x 70) 1 थिरण्णेस वि दि । ब्रिसर, नंबस ( पड् )। थिरमीस विदि रिपिर्शक निकर। २ निर्मेट है कि विशेष किया पर कमाच गाँचा हो बहु(देश ११)। थिरिम पू भी श्यियी स्वित्ता (एए) । थिरीक्रम न [रियरीक्राम] स्थिर करना १४ करना बमाना (या ६ रमण ६१)। थिक वि वि ग्रेस (चत्रपम निवृद्धानंद)। विक्ति की वि यान-विरोध-१ को बोड़े की बन्धी । २ दो समार मादि से बाह्य मान (बूध २.२. ६२ छाया १ १ डी—क्व ४१ मीप)। विविधिध सक [ धिष्ठविषाय\_] 'पिष विव' धाराज करना । वक्क विविधिषेत (दिपा ર ⊌)ા विदुत्त ) प्रं [स्तिसुक] बन-विश्व (विदे विद्युत्त ) ७ ४ ७ ४, सम १४६)। संक्रम पुँ सिक्तम । कर्म-प्रकृतियों का धापस वें संक्रमश्-विरोध (पंचा १)। थीह पूंची दि] कम्स्निरोप (बस ३६, €€) i बिहु पूँ [स्टिम्] बनस्रटि-विदेप (एज)। भी की किं। की महिसा नारी सीख (हेर १३ क्रमा प्राप्त ६१)। बीय देवो थिएम (हे १ ७४ दे १ ६१ पुना पाय) : "गिद्धि की ["युद्धि] निक्रष्ट निवानिकोप (ठा ६, विसं २३४) उत्त ३३ थ)। दिस्थी ["दिंह ] प्रथम निहानिसील (श्वम ११) । "द्विय वि ["द्विष] स्त्यानद्वि निकाशाला (विशे २३४)। बुध विस्कार-मुचक धम्यय (प्रवि वरे)। शुझ वि [स्तुत] निसकी स्तुतिकी नई हो नहः प्रशंक्षितं (दे ≪ २७३ मस्ट ४ ३ झनि शुक्ष वैको शुण : शुसद (प्राक्त ६७) । थुइ भी [स्तुदि] स्तव इंग्र-कीर्वन (दुमा: चैरव १ पुर १ १ ३)। सुद्रवास पु [स्तुतिबाद] प्रतंता-वचन (बेहर

MAX) I

270	पाइअसरमहण्यवो	<b>धुक-</b> योग
प्रश्व पक [बूत् + कृ] र कुमा। २ वक विरामार करण कुमामा ध्यार के जाय निरामार करण कुमामा ध्यार के जाय निरामार करण कुमामा ध्यार के जाय निरामार करण हुमामा ध्यार के जाय निरामार करण हुमामा ध्यार के जाय निरामार करण हुमामा ध्यार कुमामा ध्यार कुमाम	पुष्ठ वि [स] परितिष्ठत, सकता हुया (वे स. १०)। १०)। पुष्ठ वि [यक्क] मोट्य (वे प् व् व् व्य सामा)। पुष्ठ वि [यक्क] मोट्य (यक्क वं क्षेत्र) पुष्ठ वे (यक्क)। पुष्ठ व (यक्क वं क्षेत्र) पुष्ठ वे वे पुण्ण। पुष्ठ व (यक्क वं वे क्षेत्र) पुष्ठ वे वे पुण्ण। पुष्ठ व (यक्क वं वे क्षेत्र)। पुष्ठ वे वे पुण्ण। पुष्ठ व (यक्क वं वे क्षेत्र)। पुष्ठ व विकास व वे वि वे वे वे क्षेत्र) पुष्ठ व विकास व वे व	येण पुं हिनेता और तास्तर (१ १४७)। वेणिक्विम नि [य] १ हुए क्रिम हुमा। २ थीत उर्धा हुमा (१ र. १६)। येए वेशी थिएम। येमा (१ २ १) वंशि १४)। येर वेशी थिएम। येमा (१ २ १) वंशि १४)। येर कि [स्विमर] १ हुम, नुका (१ ११६०) २ तव भग ६, ११)। १ दु किम काष्ट्र १ तव भग ६, ११)। १ दु किम काष्ट्र १ तव भग ६, ११)। १ दु किम काष्ट्र १ ति हुमिनों का सम्बार-निर्धेम क्षम में सुके- वासे वेस प्रतिमात्त काम (१० १ ४) धोम १०)। क्रियम टू क्रिमिन्ड समार- विशेष का मान्यम अर्थनाता सम्ब में सुके- वासा वेस प्रतिमात्त का पर (१० १ ४)। विशेष का मान्यम अर्थनाता सम्ब में सुके- वासा वेस प्रतिमात हुम (१० १ ४)। विशेष का मान्यम अर्थनाता सम्ब में सुके- वासा वेस प्रतिमात विशेष का पर (१० १ १)। विशेष विशिष्ठ विशेष के मिल इनिर्मे का वासु १ २ था विशेष दुनिन्या विशेष का विशेष विशेष विशेष विशेष के परित का विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष का विशेष विशेष विशेष विशेष विशेष का विशेष व
		***

बोडेस्य देवो पाडेस्य (उप ७२० टी) । योजा देवो यूजा (ह १ १२४)। बोत्तन[स्तोत्र] स्तृति स्तन (६२ ४३ मुपा २६६) । बोर्चु देशो धुण। मोम {र्द्र[स्तोम क] 'व' व' धावि

बन्कारा हृति य सकारता बोमया हृति (बह्र । (डिउ९५ स्थि १ योर देवो शुद्ध (है १ २१४) २ ११) पत्रम २ १६ से १ ४२)। थोर वि हिं] प्रम से विस्तीएँ यव व योग (दे ४, ६ वज्या १६)। शोसमा निर्देक सम्यम कर प्रयोग, 'स्था | मोल पु कि वस का एक केंग्र कि दे है )।

}वि[स्तोक] १ धरा नोड़ा(दे योव शोबाग 🧦 २ १२४: उदा व्या २७ सीव २४६ विसे १ ३)। २ दुसमयका एक परिमाण (ठा२ १ भप)। थोड न वि वन परावन (दे ६, ६ )। बोहर दे औ हिं नतस्पति-निरीप पूहर का येश सेह्रींड (सूपा २ ३)। की "री (कप १ ३१ टी की १ ) वर्ष ३)।

 इस सिरिपाइअसङ्मह्ण्यक्ति अवाध्वरहर्षक्त्रणो चक्चीसहमो तरंबो समत्तो ॥

द

इ र्च [दे] रुद्ध स्वानीय व्यवस्थन-वर्छ विशेष (ब्रापः ब्रामा)। इक्रफ्टर र् [दे] प्राय-स्वामी गांव का स्विपति (दे १, ३६) । इश्रप्ती की विषे पूर्व, मन्दिय, बाक (वे ४, 8 x) 1 इड्डी [हति] भरक वर्म-निर्मित वय-पान (धीम १८)। वृद्ध वि [दे] यीता (दे १, ११)। दृष्ट्रअ पूर्वी [ट्रिया] मराक वर्ग-निर्मित जन-पात्र चमडेका बना हुमा बह यैला जिसमें पानी भरकर बाते 🖥 वशक्या व्यत्किलावा (पिक्रप्र)। आसे क्या (यस १६२ पिडवा १४)। इट्टम वि [इयित ] १ प्रिय, प्रेम-पान 'बामो वरकामिछीरहमी' (पुर १ १=३) । २ मग्रीट, वाञ्चितः चन्हाराः नयोद्दयं र्वबस्तर्भाव पुरुष मन्त्री (मूर १ २१०) । इ.वू वर्ति स्थामी मर्जा (पाका कुमा)। यम वि विसी १ मत्यक प्रिया २ व पीत अर्जी (नडम ७४ १२)। दब्रभाकी दियता की जिया, पक्षी (दुमा; महा' मुर ४ १२६) ।

दश्च प्रे दिया शनद समूर (हे १ १६६) क्रमार पाच) । शुरु दू ["शुरु] युक शुकाचार्य (पाम) । बृह्म न विस्था शानता, परीवपन गरीनी (8 2 2x2) : दृइष पूंत [ वेव ] वेव भाग्य, धरुष्ट, प्रारम्य पूर्व-इराक्नमें (हे १ १११ इसा महा पठम २८ ६ )ः 'ध्यूचा शुविद्यो शहरी पुरिसं कि हराइ सडोगा (पुर ८, ३४) । का, प्या र् कि व्यक्तियोः व्योति रामाना पिद्रान् (हे२, ८१ वड)। देखो वेष = रेग । ब्रह्मसम् विवतः] वेग वेनतः (परश् २:१ हेर १६१ दूमा)। दक्षिम विविद्धी श्व-संबन्धी रिच्य चत्रम (स १ १)। ब्रुव्य बेली त्रुव (६१ ११३ २ ११) कुमाः। नतम १३ ४) । बुबचि (शी) थ द्विरागी शीय, बस्ती (प्राकृ ६६)। दबदर ) न **दिकोदर**ि धेन-विशेष,

मुमोदर र भवीदर, पानी से पट का कुराना

(खाबार १३ विचार १)।

**र**ओमास प्र<u>ृष्टिश्वसमास</u>] नव<del>ण सप</del>ुर में स्पित बेर्चबर-नागराम का एक मानाच-पर्वत (इक) । वृंठा बेचो द्वाहा ( गट--मलवी ५६) । वंठि वि [वंष्टिम्] वहे बीतपाला दिसक बलु (नाट-नेखी २४)। **एंड एक [दण्डय़] समा करना निवड** करमा । क्ष्मक् इक्षिज्ञीय (प्राप्त ६६) । बुंब पू [च्पक] १ बीव-द्विता प्राप्त-नारा (सम १ छाया १ १ ठा १)। २ अपराची की भगवान के प्रमुखार शाधीरिक या शासिक बएव सवा निम्नह, बमन (ठा ६ वः प्राप्त १६ हे १ १२७)। ६ वाठी याँग्र (बन १३ टीर मासू ७४)। ४ दुण्ड-मतक, वरिद्याप-अनक (धाया) । १ सन वयन सीर राधेर का चतुम व्यापार (पत्त ११, ई ४६)।६ धन्द विदेव (पिंग)।७ एक वैत उपायक का नाम (संबा ६१)। ८ दुन परिवास्त्र-विकेष १६२ चीपुण का एक माप (इक)। रूपाना(ठा ४ ३)। र पुन् शैष्य, शरकर, प्रीज (पएड ११४) ठा ४,३)। मक द्रं विक्र क्रिक्त क्रिक्त (स्वि)। ज्ञास न ["सुक् ] पट्टिपुक (माना)। गायता नु

["नायक] १ श्एड-शता स्वराविकार

कर्ता । १ धेवापदि धेनानी प्रविनिवत

सैम्प का बावक (प्रस्ट १ ४ ग्रीफ कम्प

एममा १ १)। जीइ को "मीति] नीवि-

मिरोब, प्रमुताबन (ठा १) । यह वृं [विय]

मार्ने फिरोप सौथा भावें (सूब्र ११३)।

पासि वं विविधन, पारीम् र बएड

धारा । २ कोतनाव (एज बा २०)।

"पुद्रजय न [प्रोस्क्रनक] बरुबकार ऋडू

( वं १)। भी दि मी दएड छे इसी

बाता बरह-ग्रीब (माना)। स्वत्तिय वि

"स्मृत । इत्र धेनेशना (दव १) । वह <u>प</u>

िपवि हिनान्द्रे केनानवि (सूपा ३२३)।

वासिग, वासिय पू [बान्डपाशिक]

गीवदाल (कुन्न १५६) स २६६, क्य १ ६१

थि)। शीरिय दु ["वीर्व] राजः शरा के

**र्मर का एक राजा⊳ जिसकी बादर्श-कृड** में

नेनवज्ञान उरपद्व हुमाना (ठा )। रास 🙎 ["यस] एक प्रकार का नाच (कम्थू) । ाइय दि [ (वत ] बरह की तरह तस्त्र (नसः मौग) । । यद्य नि [ांवतिक] पैर की करड़ की उपद्र सम्बा फैक्स्नेशाला (पीम व्याह्म हा ६, १)। "राव्यिका र्य [ौरशिषः] स्वरूपाचै प्रतीहार (निष्: १)। रिष्य न [रिष्य] दक्षिणु धारत का एक प्रतिक्ष भैक्स (प्रजम ४१ १ ७६, ६)। सियम नि [सिनिक] श्रुड नी उच्छ पैरफनाकर बैठनेवाचा (क्ट) । देखी देवग बंदव । पंड र् [दपड] १ वरड-रामक वेताराति (वर १)। २ ज्यान करान 'विक्रिकोचर्य जिस्कृत सिर्व फातुस्वसीत वह कर्न्य (पण १६६ सिंड १वा विचार २३७) । **पंड**ग । पं[दण्डक] १ वर्ल दुरङल नगर दंडच ∫ का ऐक राजों (पत्रमंद १६)। ९ बग्डाबार बालव-प्रकृति अल्बाश-किशेप \_(য়াৰ) । ই সৰ্ল্যতি মাহি শীৰীত কংজ্জ यर-गिरोप ( **१ १**) । ४ न. ब्रिक्ड मास्त का एक प्रतिका जैनल (पत्रम देशः २**३**) । 'तिर्दि चे िगिरि ] चर्चेत विशेष (प्रका ४२ १४) । देशो देह (उर ११) शृह १३ गृप २, **र प्रमाप** ११) ।

**र्वड**ण न [क्**ण्ड**न] स्वड-करहा किसा (तूस २२ दरावश्)। **रंड**पासिंग प् [क्राण्डपाशिक] कोतवाब (मोद्ध १२७) । र्वडक्षक्रम वि [ब्प्डलाविक] शएव बेनेवाला धपदानी (नव १)। **एंडा**वण न [दण्डन] सवा कराना निम्नू क्रपना (भा १४)। देशविश्व वि विधिष्ठत विश्वको पर्य विज्ञाना गबाहो वह (गीव ११७ टी) । दृक्कि दि [दिण्डिन्] १ दए≢-पूछ । २ वै क्एक्वारी प्रतीकार, वरवान (कुमार भी ३)। देखि भेको देखी (क्रम ४४४)। वैकिश व दिविक हो १ सामन्त राजा (पण २६=)। २ राज ककानुबत पुरुष (पद ११)। १ वार्क्शारिक कोतवान (वर्षेष्ठ १११ )। देशिक वि [व्षिष्ठत] किसको स्वादी वर्षे हो वह कैरी (मुग ४६२)। वृंडिम वि [द्प्यिक] १ क्दरवासा। २ पू धवा नृप (वन ४)। १ श्वृष्ट-वाता, अपराच निचार-क्सी (वव १)। इंडिमा की [वे] चेड पर चपाई नाठी राष भूगा रुप्पा, मोह्यूर (शृह्व १)। क्**विका**श वि [वे] शपगानित, 'वॅशिवियो समास्त्रो तमनदारेख गासेद' (स्म ६४० दी) । **इंडि**णी **इं**डि वृण्डिनी युग धव-प्रता (বিভাষ )। वैकिम वि [विण्डम] १ व्यव से निर्मातः। २ व. सका करके वसूश किया हुआ इस्य (शामा १ १--पन १७) । की भी वि] १ सूर<del> का</del>र । २ बॉमा ह्या नक-कुरम (दे १. ३३) । ३ श्रीषा ह्या भीरई वक्त (ब्रान्य १ १६--यम १८६) पर्या १ <del>१--पश</del> ६६) । र्दत वि [ब्दन् ] थल कत्ती बता (सिंड

दंत पूर्वितन्त्री के काशवास बेला (श्रेमीय)

दैव दि [दान्व] से क्यबन्त (संबीय १)।

वंत में वि ] पर्वत ना एक केत (वे ४, ६६)।

वैद वि [वान्त] १ जिल्ला दशन निया क्या

हो नहः वरा में फिया हुआ। 'बरीए विशेश

KEY) I

चर्चेत बीर्प (प्राप्तु १६४)। २ नितेन्त्रिय (खामा १ १४३ वस्य १ )। वंद प्री दिन्दी दाँत करन (कुमार कर्म्)। कुकी की [कुटो] देश राह (तंतु) । यहाम र्ष विकार योज योज (पाय)। भावज न ["शायन] १ वॉट सफ करना क्कन करना । २ वॉट बाफ करने का काह, ब्द्धवन (पद्धा १ ४- निषु १)। प्रवस्तासम्य न ["मञ्जासन] नही पूर्वोक्त धर्म (तूम १ ४२)। एस्य न ["पात्र] क्षेत्र का बना हुमा यात्र (धाचार व १)। पुर न ["पुर] ननर विशेष (वद १) । यहोयण न ["प्रधावन] केकी भाषा (स्व ६)। माछ हुं ["माख] कुल-क्लिप (मं२) । बच्च दूं[°बक्ड] क्टपुर नगर का एक छना (नगर)। बर्खिंड्या की विक्रमिका । ज्यान-विशेष (स ७ ) । शाणिकान ["नाणिकन] **हाचै-रांत नगेवह शंध का म्या**पार (वर्ष २)। हर पूँ ["द्यर] दोत का काम करनेनावा क्लिशे (पएए १)। र्वेषकार पुं [वृत्ताशर] बाँव बनानेवाना रिस्पी (यणु १४१) । ब्दर्जनी की [दन्तकुरकी] सब, बंटा (दंड **र्वपक र्** [दान्तवास्य] नक्स्ती रामा (सुम १ ६ २२)। वंदवन व 👣 इस्तपन्ती १ वन्त-तृद्धि । १ **बद्धन चांत साय करने का नाम (दे २, १२)** ठारे—पव४६ व्यापव४)। इंतरप्य पूर्व हि वन्तपवन] स्तक्त (स्त ۹ ٤) ا र्वस्थोदण व [दन्तशोधन] स्टब्स (श्व ₹₹ ₹**0**) 1 वंदास पूंची कि शक्त विशेष वास कारण क्य इतिनार (नुपा १२६) । इदि (कम्प १ १६)। वंवि प्रे [दन्विन्] १ इस्की हानी (पाप)। २ पर्वत-विशेष (पडम ११, १) : दॅविञ ⊈ दि] ठठक चलीत चया (र E (48) 1

वंतिविक वि विश्वतिरेह्य विदेशका

इतिबन-निच्छी (भोष ४१ मा)।

देशिकः म दि] चलक का घाटा (इह १)। पंतिका न चि नास (बर्मेंस १६१) । वृंतिया की [दन्तिका] एक बृत विशेष वधी सताबर (पएए १--पत्र १२)। **बंदी की दि**न्दी | स्वनाम-क्यात **बुध (**परूछ १—पत्र ३६) । दंसक्कास्त्रिय च [बन्धोस्ट्सस्टिक] वापस विरोध की बीठों से ही पीर्यह या पान वमेख को निस्तृप कर बाते है (निर १ ६)। बंसुर वि [इस्सुर] क्रमत शतवासा विसके इति उत्रह-कायह ही । २ व्यंत्रा-नीचा स्वान विषम स्वान (६२ ७७)। श्रदामे सामा हथा दाये निकस चाया हुमा (क्रप्यू)। र्नुत्रिय वि [दस्तुरित] अगर देखी 'विवित्त पासम्पर्वेहिंबंतुरियं (डर १ ६ टी सुपा २ )। र्वत् पू [क्रुम्यू] १ व्याकप्श-प्रधिक्ष समयपर प्रवान समास (क्र.छ)। २ न परस्पर विस्त शोत-क्या मुक्त दुन्त मादि पुरम । ३ क्सह, क्तेरा । ४ वृद्ध, संप्राम (सुपा १४० कृमा)। स्पद् पू ब. [स्म्यदि ] स्थ-पूस्य मुक्त -- कोड़ा पति-पन्नी 'ते रंगईंड तह तह सम्मन्नि समुक्रमा निक्के (सिरि २४८)। दीम पूँ [दम्म] १ माबा कप (के १ १२७) । २ छन्त्र-निरोप (रिव) । ३ ठमाई, बञ्चना (पन २)। **र्**भग वि [दस्म#] समी पासंक्षे ठव पूर्तः 'बैमनो सि निकाब्धियो' (गुब २ १७)। **एंमोबि पुं[दरमोबि] यह (दूप २७**)। ≰स सक [दर्शय] विकासका बताबासः। रंबर (हे ४ १२) महा)। यह वृंसंत इंसित्र देशमेत (मगः शुपा ३२ थानि १०४)। करफ वैभिर्ज्ञत (तुर २ १६६) । संक्र र्देसिअ (नार) । इ. वेंसियब्ब (नुपा **ሄ**ኚሄ} ι दैस यक [दंश] कान्त, श्रेत से काळ्या। वेवद (नाट-पाहित्य ७३) । वेचेनु (भाषा) । वक् इसमात्र (धाषा) । न्स पुं [देश] १ कांच कड़ा मच्छड़ (अव-) मापा)। २ दण्त-कत छर्पे शासन्य किसी वियेते नीवे से काटा हुन्य यान (ह १ २६ छि)।

र्श्स प्रे [ब्रह्म] सम्बन्ध सरवन्यमा (पानम)। र्दुस्ता वि [वर्क्षक] विश्ववानेवासा (स ४८१) । इंसय पून [वर्षीन] १ धनकोकन निधेत्रण (पूर्णा १२४ स्थल २६)। २ चञ्चनेत्र शांक (से १ १७) । ३ सम्ब<del>र</del>ण तरन यदा (ठा१ १.३) । ४ सामान्य कान 'ज' सामन्त्रकारा चैत्रसामेद्रा' (सम्म ११)। इ. मत वर्ग। ६ शास-विशेष (ठा ७ ८) तका १२) । सोह व विशेह तत्त्व-व्यक्ता का प्रतिकश्वक कर्मे-विशेष (कम्म १ १४) । माहणिका न "मोहनीय" कर्न-विशेष (हा २, ४ मन)। "। वरत न ["। वरत] कर्म-विरोध सानास्य-कान का बावरक कर्म (धार)। (अरणिज्ञान विष्णाय] वृश्रीक ही धर्ब (सम १४) । वेची वृश्मिण । व्यापन [द्रान] यांत से कारना (से १ ₹**₩**) i दसजिति दिशैनिन् र किसी वर्गका श्रमुवायी (सूपा ४६६) । २ श्रार्शनिक **दर्श**न शक्त का मानकार (कुत्र २६ कुम्पा २१)। ३ छल-मजानु (बण्) । व्संपिक्षा की [वर्गनिका] शर्मन धननोक्ता 'चंदनुरतंबियमा' (प्रीका ग्रावा १ १)। व्सणिज्ञ ) वि [ व्यनिय ] केवने योग्य वैसमाञ्च 🕽 वर्शन-योग्य (पूर्व २) 🤏 वर्गन

६८ मञ्जा)। दंशाय सक [ क्योंय् ] दिवामाना । दंशावेद (प्राष्ट्र ७१)। र्देखायम न [ब्र्झन] रिकाना (उप २११ टी)। एंसापिश वि [वृश्चित ] विश्वनावा श्वदा (भुगा ५८६)। देंसि वि [ब्रिशिम्] केवनेशाला (धावा- क्रूप

४१३ द २३) । देंसिअ वि[दरित] विकास हुमा (पाम)। **दे**सिश्च देसिव वैको बुंस = वर्शम् । र्वसित्रत

र्वसियम्ब व्यापि [ब्रष्ट] भी बीत से बाटा यसा ही बह ( **प**() ) बुक्रम वक [दर्] देवना धवतीयन बरना । शक्यानि शन्तिमी (धनि ११६) विश

२७)। प्रयो बन्तावद (पि ११४)। कर्मे, बीसह (उप) । कपष्ट दिस्समाण वीसंत, दीसमाण (मान र मा ७३) मार-चीत ७१)। सक्त वस्तु दट्दु बन्दुकाण, बट्दुं बट्डून, बट्टूण, बिस्स, विस्स, विस्सा (क्या पत्र कुमा मक्का पि ध⊭र मुघर व २ १३ प्रि ११४) । हेफ्र दट ठुं (हुमा) । फ्र दुइम्ब विट्ठहव (यहा जतर १ ७)। इकता तक [ दशय ] क्विकाना 'सोवि ह बरुबद्द बहुको उपर्मतर्गताई (सुपा २३२) । इक्क्प कि [इस] १ निपूछ चनुर होशियार (इच्यासुपादवशेश्यादव)। र पु भूता सन्द नामक इत्त्र के पदाति-सैन्य का अविपति देव (ठा ६, १ ६क) । ३ मनवान् सुनिसुवतः स्वामी का एक पीत (पठम २१ २७)। दक्त देवो हक्ता (पदम १६ ७६, दूमा)। दक्सका पू [दे] मूम गीव पशि-विधेप ( ( X 2 X ) 1 इक्कल न[दुरोन] १ प्रवत्तोकन निरोक्तण । २ वि वेखनेवाला निरीक्षक (कुमा)। द्कस्तव सक [ दशैय ] दिश्रवाना वदनाना । दलकार (हे ४ १२)। वक्कविक वि [दर्शित] रिवामामा द्वारा (पास कुमा) । व्यक्ता की [हासा] १ वस्ती-विशेष शक या शंकुर का पेड़ा २ फल-विरोध द्याच्य, संबूर (कप्यू सूपा २६७ १३६)।

दक्तावणी की [दाशायणी] गौधे शिव पली (पाय)। वृक्तियाण कि [बंदिएण] १ बंदिएए विशा में

स्विति (सूर ६ १० गठक)। २ निप्रा

कपुर (प्रापा) । १ दिवकद, सनुरूष i ४ अपसम्ब नामेवर, बाहिना (शूमाः ग्रोप)। पश्चिमा औ ["पश्चिमा] रक्षिण सीर परिषम क बीच की दिया नैसाँच कोए (माध्य) । "मुरुरा सी ["पूचा] यरिन-मोरा (बंद १) । देनो दादिय । दक्तिमन दि [दाक्षिणात्म] चीवल दिस्म

वें बलन (धन)। ल्कियमाध्ये [दक्षिया] १ र्राज्यण क्रिय (भी १)। २ विक्रण देश (रण्)। ३ धर्म

वृहत्रह पूँ [वे] १ वाटी वर्श धनस्क्रम (वे

कर्म का पारितोधिक, शन, भेंट (क्रम्पू सूच २, १)। "इस्ति नि ["बाव्यिम्] वनिता का धरिकापी (पठम १ ९६)। यथ न ["यन] १ सूर्यका प्रदिश्व विशार्ये समा २ कर्ज की संकारित से बन की ह्रोगान्ति तक के का मात्त का काम (भी १)। वस, बह्र पूं ["पम] स्थितस पेस (कप्पा १४२ धै) । इक्टिजापुरमा देशो दक्तिज्ञज-पुरुषा (क ₹ **६)** । द्विकाणिक वि [दाक्षिणास्य] रविष्य विस्त मॅक्सम्बद्धास्थित (सम १ ) प्रस्प ६ 2X4) 1 इक्किनेय वि [दाश्चिनेय] निस्को बविला से बारी हो बहु (विसे १२७१) । इक्टिक्सच्या ) न [दाक्षिय्य ] १ पुतक्का विकास । पुरुषक परितर्देश वि एंदो सहय राहानेचि चम्ह दिशमार्ड (वा वशःस्वण ६ व)। २ व्यवस्था सीनार्वः ३ सम्बद्धाः मार्थम (दुर १: ६४८ २ ६२: प्राप्तु )। भ समुद्रमदा (वेस २)। इक्सिय दि [दर्शित] दिवनाया ह्या (श्रीव)। इक्तु देवो इक्त = १०। इक्स, देवो इक्स = क्ष (सूच १ 😯 🤻 )। इक्स वि [पर्व त्रष्टु] र वेबनेयाना । २ वृत्तर्वक्ष जि<del>ल्लीन</del> (सूर्य १ २०३)। इक्स् वि [इंछ] १ विमोरिष । २ व् त्रवंड जिल्लीय (सूम १ २ ३)। इतान [दक] १ पली, जन (संदर्भ वं ३४) क्या) । २ द्रै सह-विशेष प्रहाबिशाक्क देव-विकेष (ठा२ व) । देखवरा-ठमुद्र में विका एक सामास पर्वेद (सम ६ )। शबस थुं [गर्म] सस वास्थ (क्र.४ ४) । इंडि र् ["तुण्ड] विश्व-विशेष (पर्या १ १)। व्यवस व ['प्रमध्ये] क्योतिक देव-

शिरोप एक प्रदुका नाम (छा**२ ६**)।

वासाय वृ ["प्रासार] स्कटिक शत का

बना हुन्स नहतं (वं t) । "पिप्पकी की

[\*(परपद्धी] बनसाठ-विदेप (परख १)।

एक साराव-पर्वत (सन ७३)। संवय व्

भास प् ["भास] वेतन्वर वावधव का

ब्ट् दूर्ण

भिक्रम पू [भागक्षप] १ मर्गक्य-विशेष जिसमें पानी स्पष्टता हो (पर्याहर १)। २ स्प्रटिक प्रांत का ननावा हुया यहारप (वं १)। महिमा मही व्यै "मृश्विमा १ पानीवाली मिट्टी (बृह्व ४३ पक्षि)। २ क्या-विशेष (व र)। "रक्कास पू िराहासी क्क-समुद के पाकार का नंतु-विद्येष (तुद्ध १७)। रथपूर्व रिशस क्रिक-मिन्सू, क्स-क्रिका (क्या)। "वण्य 🛊 ["वर्थ] च्योतिष्क **वद-विशेष (पुरुव १ ) । बा**रा बारव र् [ बारफ] पानी का कोटा बड़ा (एक कामा १ २)। सीम पू ["सीमन] वेलीवर नारराज का एक बा<del>वाल-</del>गरीत (यम्)। इरान [इक] ल्कटिक एल (एस ७१)। सोवरिक वि [शीक्रीक] सांस्य गत का बस्प्राची (पिंड ११४) । वका देवी वाः क्ष्म देवी दक्ता=१स्। सथि रच्छे, रणाडि राज्यपिति (प्राप्तः एतः २२, ४४) षा <१६)। ब्च्य वेको व्यन्त = बसा "रीमधमसम्बं धोराई" (क्ष्य ७२८ की प्रकार १, ६—पण ४६८ है २ १७)। व्च्छानि विीतीक्या तेन (देश १३)। व्यक्तम् } देशो वृद्द = दह । बुद्ध मि विश्वी विश्वनी बीच के नाटा पमा हो बद्ध (पदः मक्षा)। रङ्क वि [१६] वेबा ह्या निर्मापित (रात)। **पट्टीराय वि [बार्ड्डीन्सक] जिसपर दशका** विया यदा हो वह धर्ने (क्य पू १४६)। रहरूप १द्दु } ध्यो दक्त = रस्। ब्द् दु वि [ त्रधु ] वेक्नीवाला, मेशक वर्तक (भिक्षेष्ट ६६)। ৰ্হ ক্ৰমাণ दट द्व **वेचो एव**रत = **१**स् । बद् ठूज

३ वश्र है ४ ४२२ मनि)। २ शीम, **पस्**री (चंद्र) र वृक्ति भी [बे] नाय-निशेष (प्रति) । व्युट वि[युग्ध] क्लाह्म्या (दे१ २१७ भन) ह व्यक्तांक्षि औ [वे] स्व-मार्ग ( वर् )। दड वि [इंड] १ सम्बद्धतः मचनान् पोड (बीफ छे न ६ )। २ जिल्ला स्विट निष्कम्य (सूघ१ ४१ ग्रामा२व)। ३ समर्थकम (सुध १ ६ १) ५ ४ म्हि निविष् अनाइ (राम) । ॥ कठोर, गठिन (पंचा ४) । ३ क्रिने प्रतिश्चम प्रत्यन्त (पंचा १ ७)। किंद्र पू किंद्र] एसव दीव के एक फारी जिल-देव का शाम (पच णिमि वैची निमि (श्वा)। प्रपु [भन्य] १ दैलाव क्षेत्र के एक क्य**ा** पूचकर का नाम (सम ११३)। २ वर्ध-क्षेत्र के एक धारी दुवकर का शल्प (धार)। थम्म वि विभौन् दिशो वर्ग में किन्ब हो (का १): २ <del>देन-विदे</del>व का बाम (धानम)। "मिईय नि ["धृतिक] धरिसम वैर्ववासा (परम २६, २२)। "तेसि वुँ िनेमि] धना समुद्रीयत्य का एक पूर विचने मरानाम् नैमिनाम के पास दीसा सी थी और सिकायन पर्वेट पर दु<del>क्ति वार्हें</del> सै (बंद १४) । पद्रण्य नि [मितिक] १ स्विर-प्रतिक रूप-मतिका २ दुसूर्वान देव का वातामी क्रम में **होनेवा**वा नाम (राम)। प्यक्तिरे 🛭 ["प्रक्तिम्] १ मञ्जूव प्रकृत करनेवाला। २ दु केन्युनि-विशेष शी प्याने चोरों का नावक का बीर पीछे है वीका लेकर द्वाक हमा मा (छाया ११०० च्या) । सृति को ["सृति] एक वांत का नाव (पारम)। मृह वि [ मृह] निदान्त बुर्ख(दे१४)। सद्⊈ [रेस] १एक दुलकर पुरुष का काव (बस १६)। २ धनवाल् भी रिक्तनगणनी के पिछा का माम (सम १६१) । रहा को ["रवा] नोजनाव वादि देवों के बाप-महिवितों की बाबा चरिवर् (स.व. १—पत्र १२७)। पत्र पू ियपी सनदान नदानीर के बनव

वहगासि--व्मण में तीर्पंडर-नामक्रमें प्रपार्वत करने वाना एक मनुष्य (टा १--पत्र ४२१)। २ मरत होन के एक माबी कुसकर पुरुष का नाम (सम १६४) ( वहगाठि की दि वह विशेष भीमा हुमा सदश बद्ध (यव ८४ वस्ति १ ४६ टी) देवो दादगाछि।

विका वि हिस्ति है हह फिया हुया (कुमा) । ह्या ) पू [बनुष्ठ] केल बानव (हे ह वर्णेक र १६ के हुमा पर्)। इंद पेंद पू ["इन्द्र] १ दानमाँ का मक्तियाँ (वसका के १२)। र समञ्ज संकारति (पतम ६६ १ ) । बहु पूँ ["पति] केवो इदि (पत्म १ १३ ७२ ६ सुपा ४३)।

क्च वि [क्च] १ विवा ह्या वान निया हुमा विदीर्ष (हे १ ४६) । २ व्यक्त स्कापित (वे १)। ६ पू स्व-नाम-स्यात एक मेहि-पून (इस १६२ ७६० टी)। ४ भरत-वर्षे के एक काबी हरलकर पुरुष (शय ११६) । १ क्यूचे बसदेव के पूर्व-बन्न का माम (सन ११६)। ६ भएत-क्षेत्र में जलक एक धर्म-नवर्ती राजा, एक बातुरेक (सम ६६)। ७ भएत-नोत्र में प्रदीत कार्यात्त्री वात में छरपप्र एक जित-देव (वव ७)) s एक बैनमुनि (दाक)। १ तुर-विरोध (विधा १ ७)। १ एक कैन बाकार्य (दूस ६)। ११ म बान उस्तर्ग (उत्त १)।

वृत्त न [दात्र] शंदों भार करने का हींसवा (\$ 2 24) 1

इस्ति व्ये (दस्ति) एक बार में जिल्ला बाल दिया बाय बहु, श्रीविच्छित्र क्य से जितनी मिया की जाप बहु (छ १, १ तंबा १८)। वृत्तिय पूंची [वृत्तिका] अरह देशी 'शंबी

इतिगतमं (भग १)। इतिय र् [दिनिक] नामुनुर्खं चर्मे (राज) ।

व्सिया ध्ये [दात्रिया १ घोटी बीधी वास काटने का राम-सिरोप (राम) । २ केनेवासी की दान भरतेवानी की (बाद व्)।

दत्यर वृं [दे] इस्त-साटक कर-शाटक (दे 2, 18)1 वर्षत रेठी दा।

ददर १ दि वर्षर] बुतुन मावि के पुँद पर बोबा बाला कपका (पिंड १८० ११६ राम E ( ) (

दहर कि कि दर्शरी १ बना प्रकुर, बायन्ता 'वोसोससरसर**तवंदणदर्**षिएसपंचेष्ठकिराना' (सम १३७) । २ पू अपेटा इस्त-तस का साधात (सम ११७) सीप शाया १ व)। १ बानाव प्रहाट 'पायबहराएडं कंपर्यतेष मेइणितसँ (गुप्ता १ १)। ४ वचनारोप

(पराष्ट्र १ २---पत्र ४४) । १ मौपान-नीबी सोदी (सम १३७) । ३ बाच-विरोप (वं २)। वृहरिमा रेखो वृहरिया (राय ४६) ।

दशरिया की द ब्दरिका र प्रशास मानाठ (लाया १ १९)। २ नाच-निरोप (राव)। ब्दु पू [दुत्र ] याच सूत्र प्रष्ठ-रोग (मग

वस्तुर प्रे [वर्द्धर] महार, मानात (बर्मनि

< X) ( दद्दुर पूर्व [ददुर] १ नेक नेक्छ बेंग (सुर १८४३ शासू ४२)। २ चमके से सवनक मुँहवाला कमरा (पर्वह २ ३)। ३ देव-

विभेव (छावा १ १६) । ४ चङ्क बहु-विहोद (मुन्न ११)। १ प्रश्त विशेष (लागा १ १६) । व नाय-निरोप (दे ७ ६१ वटन) । ण्य वर्षुर देव का सिद्दासन (एग**रा** १ १९) । विश्विसय न ["(नर्तसक] बेब-विशेष सीवर्ग देवतीक का एक विमान (शाया

₹ **११)** i वद्युर्ध की [वर्द्धरी] की-नेतक वेकी (लागा ₹ **₹**₹) i

व्युद्धक वि [वृद्धमृ] बार-रोगवाला (सिरि 1 (155

इपि देशो एडि (इम ७० नि ६०६)। पद देशो सहह (बुर २, ११२, वि २२२)।

क्ष्य पू [क्ये] १ महंबाद, याँगमान मर्वे (मानू ११२)। २ वस परावम जोर (क्षे ४ १)। १ पूजता विकार (मव १२ १)। ४ थदि से नाम का साम्रेक्त (लिब्रू १)।

ब्ष्पण पु [ब्र्पेज] १ काच श्रीसा, बारसी (शासारे रेश शासू १६१)। २ कि वर्ष-बनक (पएइ २ ४)।

व्यक्तिक वि विभेगीय । बस-जनक पुटि-कारक (खामा १ १) पएए १७) घीफ apod); वृद्धि वि [क्ष्पिम्] बनिमानो प्रविष्ठ (क्र्यू)।

वृष्टिपक्ष मि [वृर्षिक] वर्ष-जनित (उत्रर १५१) । व्यिष्ण वि [वर्षित] श्रीमनाती वर्षत (मुर पएह १ ४)।

व्याद्ध वि विभिन्न विकास महंकारी (मुपा २१)।

द्ध्युष्ट वि [द्पैदन्] बहंश्रामका (हे २ १६६ पर्)।

ब्रम पू [बुर्म] दूछ-बिरोप बाम कारा, कुरा (हे १ २१७) । युष्क पू ["पुष्प] धाँप की एक जाति (पर्राह १ १--पत्र a)। ) न [दार्भीयन दाश्यायन] व्किसवायण रे विजानका का मोत्र (इक सुम र )।

इकिमय न [हार्भिक] योत-विरोप (सुन १ १६ दे) ।

दम एक दिसय् ी निषष्ठ करना दशन करना रोक्ता। क्षेद्र (स २०६) । कर्म दस्मद् (बन)। कनक इन्मांत (बन)। श्रेष्ठ इमिळण (ब्रुप्र २६३)। इ. इमियब्य द्रम्म, द्रमयस्य (कालाशाचा२ ४ श स्व)। वृत्र प्रै [वृत्र] १ बमन निष्ठ हु। २ इन्द्रिय

निवत् बादा बृधि का नियंत्र (परह २ ४) र्गादे)। बास पू िंघोप] श्रीद 🚾 🤻 एक याजा का नाम (ए। सा १ १६)। द्वा पुष्तिस्त्री १ इस्टिसीपैंड सबर के एड रामाका नाम (चर ६४८ टी)। १ एक वैत बुनि (तिवे २७११)। घर दूं चिर] एह र्थन मुनि का नाम (पडम २ ११३)।

व्यग रेको इसय (स्त्रवा १ १६) सूपा ३८८। वय ६ निपुरेशः ब्रहर छन्।। ब्मग वि [ब्म ह] धमन करनेवाला (निब्

दमण हैयो दमणढ (चव ३४: १२१)।

दमण न [दमन] १ निषद् रान्ति । २ वश में करना कार् में करना, 'मंदिक्यसमणपरा' (बाग ४)। वे बनतान पीड़ा (नग्रह १

६) । ४ पर्युमी को धी कार्यि शिक्षा (प्रक्रम 2 3 45)1 इसक्क ) दुव [इसनक] १ वीला जुवनिका द्रमण्य विश्वामी वनस्यति-विदेव (पराह इसप्पर्य ) २ १८ परुख १ यउड) । अन्य-बिरोप (पिय) । **३** य<del>ण्य प्रथ्य विशेष</del> (शाम) । दमन्ता वक [प्रत्माय्] बाबम्बर करमाः । यमसमाद्धः ययसमानदः (है ६ १६०)। दमय वि वि दुसकी वरित्र एक वरीय (वे १८ वक्त विशे २०४१) । व्मर्मती 🛍 [व्मयन्ती] राजा तथ की पत्नी का बाम (पति हुन १४) १६)। इमि वि [इमिन्] क्लिन्सिय (उत्त २२)। इसिम वि [इसिव] निवृहीत रोका हुआ। (बा धरे । प्रमुख्य । दमिस प्रक्रिकि दि एक चरतीय केता २ पुंची असके निवासी संगुष्ट शामिक (कुछ (७२) इक भीप) । बी. ब्हें (खाया १ श इका भीप)। व्येयक्व वृत्स } क्लो व्स=व्याप्। ब्रुस 🕯 [इस्म] बोने का विकार वेना-मोहर (क्य पृष्टक्ष के ४ ४२२)। दम्मतः देखो दम = दमय् । दय क्य [ द्य ] १ घराज करना । २ इसा करार । ६ मधाना । ४ का (। स्वत्(धाना))। मक बर्जन व्यामाण । (के १२ ६४) १ १२ मनि १२)। इस्म दिव्य किमा पानो (देश ६६) रह t)। सीम र् [सीमन्] सक्छ-समुद्र में स्थित एक बाबात-पर्वत (सप ६०)। द्व न वि शेष प्रपात विवशिष वि म, 111 **युप विको श्या** = क्य (श्री १ प्रश् १२ ८५)।। इय नि ["इय] क्लेबाला (क्या गाँ४) । द्यां भी [इवा] कच्छा शतुक्रमा क्रमा (बस १ १)। "बर पि ["पर] व्याह्म 1 (\$55 P PE : Y 35 PEP) ब्याहम वि [दे] एक्ट (वे ४, ४४)। द्याङ्ग रि [द्वासू] दशकात, क्वल (है है

ब्द १६) ।

स्थाबण ) वि हि । शेत, वरीव रंक हि वयावका र देशां धीन पराप ३६ ८९)। बर धक दिरी धावर करना। वरह ( धव )। इर्र⊈पंदिरों भव, बर्र्सुमा)। १ स र्वेशक बोहा पाल (हे २ २१४) । **ब्रद्रव (ब्र**ेट क्रुब्ब, कम्बरा। २ वर्षे, नक्का, पहा ना नक्का कराए, कि व क्या मिक्स ते म' (वर्षनि १४ )। दर न चिटिया सामा (देश, देश प्रति केर २१%, का वि ब्रंब्र पू कि] बसाय (वे १: १७) । प्रमाता की [ के ] क्याल्यर वरपाती (8 x, 4w) i व्यमक संबंधित है चूलें करना रियाणाः २ पात्रत क्या। राज्यस (धनि)। मक्क ब्रुटमक्तंत (धनि)। ब्राध्मक्ति मिर्मित विकास प्रक्रिय (भनि)। व्यवक्रिज वि [वे] स्पष्टक (क्रुमा) । बरमा है कि प्राप-स्थामी श्रोप का मुखिया (के प्र केश)। "विश्वेद्यान कि शूला मुद्ध क्षामी पर (रे १, ३७)। वस्तर पू विद्वासी १ व्यक्ति विक् (के १८ १७)। २ काराच्य वरपोचा ( वक्ष )। "विवाद वि [क्रि] र बीची बान्या । २ विरुख (वे ५ १२) । **बर**स (शी) केवो बरिस । बरवेबि (शास ee) : ब्रिम विदी कन्या इन्द्रा चरिता वा (भाषा १,१ त)। इरि" केवी वरी । कर पू ["चर] किनर (8 & YY) 1 दरिका वि (एस) वाविष्ठ, क्रांत्रमाची (हे १ १४४ वास)। वरिक्र वि विथि । १ वया वया थेव (बुना) नुवा ६ तर । १ प्राकृत हुआ विकारित (রৱ ভ)। क्रिज (चप) र् ब्रिट्रिज धन्य निरोग (पिय)। वरिमा मी [वरिमा] कररा प्रदा (शह--(प्रिक्त सप्त) । ब्रिट्रि मि [ब्रिट्रि] हे मिर्मेश मिलन सम-रथक रूप । परान रहा, वह नुपा केंग्र । रम्लाः २ सीन गरीन (पाधः, प्राप्तः २३ क्ची ।

वरिदि । वि [ब्रिड्रिक् , क] स्नर केके वरिष्टिय । भान्ते वरिष्टियो, वर्त विवास्थल रलो य पूर्व करेमी' (महाः ससः ति २१७)। व्रिडिय वि [ब्रिडिक] द्वारित को वन-पहित हमा हो (महा: पि २३७)। वरिशेष्ट्रय वि [वरिजी मूद्य] को निर्वन हमा हो (ठर ६ १)। क्रिस सक [ क्षीय ] विकासना अस्ताना । विसद, विसेद (है ४ ६२) कुमा। महा)। वडः वरिसंत (शुपा २४)। इ. दरिसणिक, **ब्**रिसणीय (ग्रीमा पि १३४) बुद १ १)। दरिसण क्यो इसफ=बर्गन (द्व २ १ ६)। प्रस् म प्रस् । नगर-विदेश (इक)। आवरथी **धी** [ (वरणी ] विद्या-वितेप (पटम १६८४)। क्रिसमिकान [क्रोनीय] १ शाक्त स्प । र भवनाकन (तंद्र ३१)। वरिसमिका । भेगो वरिस । १ न चैंट, बर-वृरिसात्रीय वार परिक्रम शरफ्लीर्व वंपती राइडी वृष्टं (बुर १ ह)। वरिसाव देवो वरिस । वह वरिसावंत (स 2 (4)1 व्हिसाव दें [ वर्सन ] क्लेक समास्कार प्यो व म्ह्या सहवयंत्रीयु शीरतार्व शास्त्री परिनियक्तई (महा)। लाईन इम बार्च स्वयूमेने वरिवार्व पुरुपेनि महंस्टीहोड' (नुपा ११६)। व्हिसाय पु [ब्रमेन] विकाला (वन १)। दरिस्तवज न [दर्भन] १ वर्गन सम्बाद्धार (साम १) । २ वि क्लोक विकासियामा वरिसि वि [वर्धिन्] वेववेनासा (क्वा, नि ११६६ स बर्क) । व्रिसिम वि [ व्रिति ] विवयमा हमा (पूमाः 🖛) । वरी भी विशेषिका क्या (खामा ११) \$ 5 AL MI & SE & ALED! ब्बन्धिक वि वि क्या निवेश (दे ४, ६७) । दल तक दिती देना, यान करना, धारीश करना । श्वाद (वय्या करा) ; 'जे तत्ता मीजे तपाई प्रमाणि (ज्य २११ टी)। सुद्र इन्द्र-माल ब्लेमाज (क्या शामा १ १६/---वस र प्रावस प्रेय-तम २१६) बहुत बुक्सिशा (कप) ।

इस्र सक [इस्] १ विद्याताः २ घटना सरिक्ट होना दिया होना 'पहिस्परिक रणाजितरंबच्च विश्व चलद कमलवर्ग (मा ४११) व्ह्रवर्थ बसइ' (हुमा) । यक्क वृद्धीत (t) ? Xx) 1 दस सक [ दस्य ] दस्ये करना, हक्के हुक्के कंश्मा, विशासना । वक् "निम्मूभं बुळमाणी समस्तरसत्तरसत्तरमञ्जू (सूरा ८१)। क्ष्मक दक्षिञ्जेन (से ६ ६२) । संक दक्षिअण (कुमा)। ब्स न [ब्स] १ सेन्ध सरबंध कीव (ब्रुमा) । २ पत्र, पता पंचारी या पेनुही न्तृहरस्यहस्य मोसस्य बाद्य बहुते निमाण्डयत्तवती (हेका दर मा । १० नदक वेटवे) १६२ १६१: मुता ६६८)। ६ मन सम्पत्ति । ४ समूह, समुद्राय मरोड् (सुपा ६६ व)। १ क्या माग संश (से १ ६२)। इस्रय न [इस्तन] १ पीयना इस्त्रैन (सुपा १४) ६१६) । २ वि चूर्णं करनेवासा (बुगा २६४ ४६७ इप्र १६२३ १८६) । वसमाय देवो दस = ध । इसमाय देवो दस = दसय्। ब्समस देवो ब्रमस: वह व्समशेत(श्री )। ब्लय देशो ब्ल=शाः ब्लयह (धीप)। प्रवि दनदर्श्वेषि (मीप) । वह दश्चयमाण् (णाया १ १—पन ३७ का ६ १—पन ११७)। संक द्रब्दचा (धीप) । इसय पर [दापय्] विपाना (क्ष्प) । ब्लव्ह वेको ब्रमस्र । बलवहुद (धरि) । द्रष्टवट्टिय देखी इसमस्त्रिय (श्रव)। द्याव तक [दापय्] दिवाना । वनावेद (पि १६२) । वह दस्तवेमान (ठा ४ २)। दक्षित्र № [दक्कित] १ विश्वतित विकासका (मे १९ १)। १ पीना हुमा (पाम) इ -दिशमनःकानितेषुभववननि श्रेपाम् रा<sup>ह</sup>न् (वा ६६१)। ३ विशास्ति खरित्रत (हे १ १६६। पुर ४ १११) । दस्तित्र न [दस्तित] १ चीज वस्तु द्रव्य (धीय ११) जह बोरफिनदि सीतए सध्यस्मित नीरए परिमा (निसे १६३४)। २ परिवत (इद कं चा च ४)।

पाइअसहमङ्ख्याधी वयहत्त्व व दि दिया-मूल दीम्म काम का विख्य कि वि दे दे निकृष्णिकाल जिसके टेबीनकर की हो यह। २ न, सँगसी (दे ४, इ.२)। कात शक्को (वे ६, ६२, पाम)। वसिद्धति देवो वस्र=वत्य। विकार देखो वरिष्ट (हे १ २६४ मा २३)। वसिष्टा महः विदेशा देशैत होना दिए होना। विशाह (हे १ २१४)। मुका विशाहित (संक्रिय ६२)। वृत्तिद्ध वि [ द्रश्यम् ] बन-पुक्त, बसवाला (चए)। बलेमाय देवो दस्र = दा। त्व वरु द्रि देशदिकला। २ कोइना। बचए (विसे २८)। हम पुहियी १ चौक्य का प्रिकित वन की द्याग (वे १८ ३३) । २ वन, वंक्य । °िर्ग र्⊈िशिय्त्री विभवाका समिन (हेर १७७ प्राप्त)। द्य पुंद्रियो १ परिदास (६ ४, ३६)। २ पानी जल (पेचन २) : ३ पनीकी करतु, रहीली चीज (विसे १७ ७)। ४ वैग 'दव बबचारी (सम १७)। १ संयम विरक्षि (बाका)। कर वि किर् परिकातकारक (मग १ १६)। स्तरी गांगेकी कियी एक प्रकार की बासी जिसका कान परिश्रास-चनक वार्ते कर भी बहुताना होता है (अंग ११ ११: शामा १ १ दी पत्र ४६)। क्षण न [क्यन] यान नाइन (सूचनि १ =) ા ब्रम्पय वैको दम्पाय (मृति)। ब्यद्व ) स द्वित्रयम् ] शीम, अस्थी ब्यन्वस्स 🕽 'बनव्यमधः पमध्यम्मा' (धंबीब १४३ क्ट १७ व): 'दनदमस्त न गन्धेमा' (वस १, १ १४)- "बहु वछवनी वर्ण दनद नस्त बतियो क्रिक्ट निरुद्ध (धर्मेन व६) । 1 द्वद्याकी द्विद्वाी वेदवाकी धर्ति 'नाऊस गर्ने चुहियं नगरमसो वाविसी दव-बबाए' (पद्मय = १७३) । द्यरप्रं दि ी १ तन्तु शेख, मागा (देश, १३ यादम)। २ रम्यू, रासी (लावा t =) 1 दशरिया की [दे] घोटी शसी (विशे)।

प्रारम्म (वे ४, ३६)। ब्बाय सक [दायय] दिलाना। दनावेद (महा)। वकु द्वावेमाण (एल्स ११४)। **धक् व्यानकम (महा) । हेइ' व्यानेचए** (क्स) १ ववावण व विधन विकास (निश्व २)। ववाविश्र वि [वापित] विधाना हुमा (सुना १६ च १६६ महा उप प्र १८१ ७२व टी) । वृज्ञिय पून (द्रुष्ट्रय) १ सन्त्रसी वस्त्र भीव धारि मौतिक परार्थ मूस वस्तु (सम्म ६ विशे २ ११)। २ वस्तु प्रशासार पदार्थ (बीव १, बाबा कम्प)। ३ वि सम्प मुक्ति के योग्य (सूध १ २ १)। ४ मध्यः सुन्दर् शुद्ध (सूम १ १६)। ३ राम-≝प से विचित्रं कीतस्य (सूम १ व)। स्पुओन पू ित्त्योग प्रार्थ विचार, बस्तु की मीमांसः (ठा १)। १ लो वच्चा द्विञ वि [त्रुविक] स्वम नाला स्वम युक्त, र्धयमी (पात्रा)। द्विम वि [द्रवित] द्रव-पूछ, पश्रेती वस्तू (भोप) । व्यविष्ठ केली व्यविक्ष (सुपा ४०)। द्विकी की [त्राविकी] सिपि-विशेष वामिन मापा (विशे ४६४ ही)। क्षिण न [द्रविषा] क्षम वैसा संपत्ति (राम कप्प) । व्विय न [प्रक्य] १ मास का बंग्ल वन में वास के जिए सरकार हैं सबस्द्र मुनि (साथा २,३ ६ १)।२ द्वण भावि हम्य-समुदाय (शूब २. २ ८)। व्यक्ति प्रशिक्षी १ देश-विशेष बहित्या बेरा-विशेषः महासभातः। पृक्षी हविह देश का निवामी अनुष्य, हाबिड़ (पराह १ १---पत्र \$x) 1 वृष्य देखी वृतिका = प्रथ्य (सम्म १२) मग विदेश व वर्षा क्वारक)। ६ वन विशा र्षपति (नामं प्रानू १३१) । ७ मृत मा व्यक्तिय यदाने का कारण (तिने २० वंशा ६)। दशीख ध्यवातः। श्रमातः साध्य (बंबा भा ६)। द्विय द्व िविक रिवन, ास्तिक ह्राच्य की ही प्रपान माननेवासा

84⊂ पद्य नय-विशेष 'राष्ट्रियस्य सम्म सना श्चरुप्पश्चमविखद्रं (धम्म ११ विसे ४३७)। "(र्डेंगन ["स्डिङ्ग] वास वेष (पैका४)। \*स्तिरि वि "सिम्मिम् पेयवारी साहु (ह १ )। होस्सा की हिरया छिए बार्व पौर्वतिक वस्तु का रंग का (घर)। "वेय र्पुविद्] पूरव सामि ना मास भानार (राज)। परिय पू [ाचार्य] मजबान बानाये, बानायें के पुर्जों से र्याइट सानायें (पैचा ६) । ब्रुड्ड म द्विडयी योग्यता 'समयम्ब क्ल्स-सन्दो पार्य वे भोगनवाय रही ति शिकवय-क्तिं (पंचा६ १)। इञ्बद्धिया औ [तुब्यद्धिका] नमस्पति-विरोध (पहल १--पत्र ११)। इकि: देखो दक्वी (पर्)। व्हिंबविक स [बूब्येन्द्रिय] स्कूल इन्तिय (भन)। ब्रुव्यीको [बुर्वि] १ कवाँ कनकी जनको नेवे ३७) व्यूत् १) । पत्र १४)।

(पाय)। २ सांप की फन (वे ३ ३७)। बर कर दूं किए ] सीर सर्व (वे धः दक्की की [दे] बनस्पति-विधेप (पएछ १---वस नि व [दराम्] वस, नी बीर एक (ह र १६२: हा ६ १—यम ११६: सूपा २६७)। बर न [ पुर] नगर-मिरोन (विशे २१ १)। बंठ प्र िंबण्डी धनका एक संका-पठि (से १६, ६१) । क्रीबर पू िक्रम्बर दिया पत्रक (परक) अवस्थित न विश्वकि एक बैन भारम-ग्रंथ (यसनि t)। सर्न[क] क्टनास्पृह (र व नवदश) । शुग्र वि [शुग्र] क्ल प्रमा (का १)। गुणिका पि ["गुणित] बम-पुना (बन; मा १)। गरीव पू ["माव] धरुछ (पत्रम ७३ **८)। श्**स मिया और ["दरामित्रा] भैन सनुना एक वार्थिक सनुदानः प्रतिवा-विशेष (तन १ )। "दिवस्तिय रि ["विवसिक] वस दिन वा (ख्रामा १ १ -- नव ६७) । द्व र्नुन ["tu] नोव ४ (तम ६०- क्यामा १ |

१)। बणुपु [ बनुप् ] ऐलड क्षेत्र के | एक भागी कुमकर पुरूपं(सम १६६)। पर्सिय नि ["शादेशिक] वस धनवन नाचा(ठा१)। पुर वैची तर(महा)। पुर्विव वि विवृत्तिम् । यस पूर्व-सन्वर्धे का बम्याची (बोच<sup>े</sup>र) । बस्र पू**ं विस्त्र**ी भगमान् कुछ (पामाः है १:२६२)। सावि ["म] १ दसर्वा (राज) । २ चार विनीं का क्षनातार जपनास (धाना यामा १ १) गुर ४ ३६९)। सभक्तिय वि ["स⊐क्टिक] चार दिनों का जयादार अपनास करनेनाचा (पण्ड २,३)। मासिक कि "मापिक] दन माने का ठीनकाला अब पाने कर परि माखनासा(भप्पू)। सी 📽 🗂 🕻 दशनी । १ तिषि-विशेष (सम २१) । सुदि यार्णदग न [\*भुद्रिश्वानम्दङ] श्रव **स** र्चमित्रों की वस क्षेत्रुटिया (धीप) । मुद् पं भिका यथस प्रसस्यति (दे t १६९ माम देका १७४)। सहसम्बर्ध [मुक्सूत] रागक का प्रमा मेक्सर शाहि (वि१६ र )। य वैक्यो ग(झार )। ∢चन ["राज] स्वराज्य (मिना१ ३)। यद प्रीियो १ समक्त्रकाके विताक काम (धम ११२) पक्षम २ १८६)। २ वरीत क्यापिती-काम में प्रयुक्त एक शुक्रकर पुरुष (का ६—१६ ४८७) । शहसूब र् [\*रमसुत] यमा स्टर्स का पू<del>त्र य</del>म नक्पकः यस्त बीर तनुष्म (पत्नम ११, «७)। बन्नप रू ["बदन] सना सबस (ध १ श्र)। वस्त्र केलो वस्त्र (प्राप्त)। विद्वित्र [विघ] रस प्रकार का (श्रुमा) । विका-क्रिज न "वैद्यक्तिक" वैन शापम<del>-क्रम</del>-मिरोप (बनाँत १३ शर्वि) । श्रा ध ["भा] थस प्रकार से (बी २४)। । गापा पूँ [ीसन] राज्ञतेषदर रावशः (ते ६ ६६)। हिया की [ोहिशा] पूत-बल्त के बालस्य में रिया बाता दस दिनों का एक क्रसब (क्य्य)। क्सम वि [ब्रा≱] यस वर्षनी कन्न का (संदू १७)। दशय र्षु [दशम] १ वॉठ वन्त (तन कुमा)। **१ म. वेश, ना**टना (पर १) । ब्रह्म्य दू

[ व्याद ] होट- सवर, थोट (पुर १९ १९४) ।

बुसण्य पू विशाजी हैत-विशेष (उप २११ ये दुना)। कुछ न [कुट] रिकर-निरोप (यावस) । पुर न विपुर निवर-विशेष (ता १)। सद्द पूर्व [मद्र] क्यारोपुर का एक विकास राजा को सक्षित्रेय साजन्यर से भगवान् महानीर को कन्दन करने क्या बा धीर विसने सम्बाद महाबीर के पास बीसा सी वी (पश्चि)। बद्द ई [पिति] कराएँ वैद्यकाराजा (कुमा)। व्सवीय न 👔 बान्य विकेच (पएछ १---पच ३४)। ब्सम देवो इसण्य (एत ६७ दी)। द्धा को [द्रा] १ त्विति प्रदस्ता (श २२७ २०४ प्रातु ११)। २ सी सर्वे क प्राच्छी की वस-दस्त कर्षकी धवस्त्वा (दस्रीव १)। ३ पूर्व वा ब्लाका कोटा और पत्रशा वाना (बोच ७२१) । ४ व कैन श्रापक-य<del>न्य विशेष</del> (प्रसू) । दसार वृं [दरार्म] १ च्युक्तविषय धारि क्ट यासम (समा १९६ है २, १, इति २ स्ताया १ ४—यन १**१**) । २ वानुदेव भीकम्पत्र (शांसा १ १६) । १ क्लोन (धाषम) । ४ बासुमेव की संतरित (धाब) । "पेड पुँ ["नेत्] भोइम्प्ड (**स्प**) । नाइ प्रै [नाव] मोहन्छ (प्रस्त) । बहुर्पु ["पवि] बीइब्स्ट (कुया) । वृक्षिया केवी शृक्षा (पुता ६४१) । बस् ई वि] योक विवरीये (दे ४, ६४)। दसुचरसव न [दक्षोचरशत] १ एक सौ वस । ९ वि एक सी दसवां ११ वर्ष (परम ११ ४१)। वसुव ई [वस्यु] क्ट्रीय, बाहु, बोद, शन्कर (बस १६)। वसेर हुँ [वे] सूच-वक (वे १ ११)। दस्स देवी दंस = पर्यंत्। इ. दस्सणीम (स्त्रज ६१) । व्रसण केवी वृंसण (मै २१)। बस्सु 🛊 [ब्रम्] बोर, तस्कर (मा २७)।

ब्द् सक [ब्द्] बतना, सस्य करना।

यदः (महा) । नर्थं रहिन्दः (१ ४ ११६)

वस्कद्र (माना) । वह ब्हेंद्र (मा २०४) ।

रम-रह

क्वक द्वर्मन द्वममाण (नाट-मानती | ३ ; पि २२२)। दह प्रे द्विष्ट्री हुद, बड़ा बलाश्य धील सरोवर (भग कवा गुग्या १ ४---पत्र **१९: गु**पा १९७) । पुरक्षिया की िपुर्विका विशेष (पर्वा १)। यह [वर्ड की विती] नदी-विशेष (ठा२ ६---पन व में ४)। बह नेको इस (हे १ २६२ व १२ पि २६२: पदम ७०: २१८ से १३ १४ मात्र हेर्४ १६ व ११३ १ ४ पटम व ४४ घष्र)। इड्डण न [द्रह्म] १ बाह, सस्मीकथ्छ । २ र्नुद्राप्ति विक्रि (पश्चर् १ १३ **व**ण प्र २२ सुपा ४७४ मा २व)। दहुणी औ [दहुनी] विद्यानिवरीय (परम ध ११**८)** । दृहको की [दे] स्वाली व्यतिया विध्या (R X, PK) 1 इहायम वि [दाहक] बसलेवासा (एए)। इद्विम [द्याय] वद्यी दुव का विकार (ठा के १ ए।मा१ १ प्रा⊒)। भण पूं[घन] दक्षि-पिएड प्रतिराग जमा हुया दशि (पर्एए १७—पत्र ४२१) । सुद्द पु ["सुसा] १ द्वीप-विशेष (पडम ३१ १) । २ एक नगर (पदम ११ २) । ३ पर्वेत-विशेष (राम)। कप्प वस पू [पर्य] १ एक पना, तुन-विरोध (दूप ६१)। २ वृत्त-विदेव (मीप) सम १६२ पर्या १--पत्र ६१) । वासुया व्य ["बासुका] वनलांत विधेय (श्रीव ६) । वाहण पू विग्रहरू नृप-विदेप (महा) । सर पूँ िशर वाच-ब्रम्य-विशेष मताई (वे ६ २६ ६, ६६)। वृद्धि वि [वृद्धि] १ द्वाँ "कुन्द्रान्द्रशीय सहरहेक" (बर्मेनि ११)- 'घर्नेतु धही' (तुम ५,१ १६)। २ देता नगावार चीन दिन का कामाव (संबोध ६८) । X, 12) 1

इहिटू हूं [दे] इक्क विटेच विश्व वेंच या

इहिण देवो दादिण (नार-वेणी ६७) :

कैप मा नेट्र (रे श्. ११)।

वृद्धिस्थर ) पुं [ वे ] विषयर, वही पर की विदिशार मेराई बाध-विशेष (देश \$E) 1 वृद्धिमुद्ध र्यु [वे] कपि बागर (वे १ ४४) । दक्षिय पुर्वि] पक्षि-विशंव 'वं सावयदिति रिवहियमोरं मार्रति धड़ोस नि के नि मोर्र (কুম ধ**ং**ভ)। वा सक [दा] देना जरवर्ग करना। बाद, देव (प्रक्रिकेट २६) धाचा महारुक्त)। प्रथि **वाहं दाहा**मि वाहिमि (**६ ६ १७** धाचा)। धर्मे दिनद् (द्वे ४ ४६०)। सङ्घ विंत बेंत व्हेंत, बेयमाय (बुर १ २१२) वा २३ ४६४ हे ४ रेण्डा बृह है। णाया १ (४---पत्र १८६)। कमक्र दिख्यंत्र, विकासण वीक्षमाण (या १ १) सूर ६ ⊌शः १ मुख्य देश सुपा ६ रामा **३३)। संह, दक्षा नार्य दा**ऊण (विपा १ १ पि ५८७ फूमा उप)। देख-दार्ट (प्रवा)। इ. शायम्ब, देव (पुर १. ११ ह्या २३३ ४४४४ ४३२)। हेब्र. देव (मर) (हे ४ ४४१)। दा केको दग। भारतम ("स्वाहाक] अस्त है जीसा बास (बग १६---पण ६८ )। कत्रस पूं ["ब्रस्टरा] पानी का छोटा बहा । क्ष्म किन्मी क्लाका बढ़ा। बरहा पू विशेष जिल का पात्र-विशेष (सम ११--पत्र ६८ )। वाकैको ता≃ दानव (सॅ३१)। वाम रेको दाव = वर्धन् । श्रापद् (निशे ८४४)। कर्ने दाहबाइ (विशे ४६ )। क्यहा-शाह क्रमाण (क्य) । क्षाम पूँ क्षि प्रतिमृ, वायिनशर, वमानश क्रमेशला (दे १, ६८)। बाध दं शिया बान, धन्धर्य (शाया १ १—पत्र ३७)। बाइ वि [बायिम्] बला केनेवाना (छा प्र इहिउप्स न [व] नवनोठ मैर्जू मक्कन (वे | बाह्म वि [वृद्धित] दिवकाया हुया (विधे १ १२)।

बाइअ 🐒 [वायिक] १ वेतृक संपक्ति शा

समान-योषीय (रूप्प) ।

हिस्सेवार (उप पू ४४- महा) । २ वीविक

378 वृद्धामाण रेको वृाम = वर्रम् । इक्काय न दियक पालिप्रहात के ममय वर-वयु को दिया बाता ह्रम्म (सिरि ४६६)। बाउ वि [दाय] वाता वेनेवाता (महा' वे १३ युपा १६१) । बार्ड रेको दा = दा । बाओयरिय वि [बाक्येवरिक] बनोदर चेय-बाबा (विपा १ ७)। बाक्स्तप (सप) देखी एक्स्तम । दाश्यमध (शह ११६)। वाध देशी वाह (हे ? २६४) । दाकिम न [दाकिम] फस-निरोप मनार (महा)। दाकिमी की [दाकिमी] सनार का पेड़ (वि 4K ) I बाडगाखि रेको बहुगाछि (बस्ति १ ४६ दी)। दाखा की [दंद्रा] बढ़ा बीट कट-विरोध भौमक पहु, बाक (है २ १३ । गतङ)। दाकि वि [दंप्ट्रिम्] १ सङ्गानाता । २ हुँ विंसक पशु (मेणी ४६) । सूचर, मध्यक कि बादीमनभीमो निवर्ष दूई केसधे रिवर्ध (प्रवस ७ १८)। दाढिमा भी दि] बाबी पुज के नीचे का बाग रमपु हुद्दी के नीचे या हुदी पर के बाल (वे २, १ १)। बाढिजाछि ) सी [बॅप्ट्रिश्चवित्ति] १ दाहा बाढिगाछि ) सी पॅकि । २ बस-रिशेप (ब्रह १३ जीत)। ब्राण पून [ब्रान ] १ धान करधर्म स्वाग 'प्रदेशिक बाला' (पटम १४ १८) क्या प्रामु ४व १७ १७२)। २ हाबी धा मद (पाधा यह गढह)। १ वी दिया पाय वह (गउप)। थिरय पू ["विरत] एक राजा (नुपा १ ) । साध्य भी विशस्त्री धत्रागार (ती ८) । बार्णवराय न [बात्मन्तराय] नर्वे-प्रिशेव

जिसके करव से बान की नी इच्छा नहीं होती

ब्राजपारमिया भी [ब्रापपारमिता] शत

क्ष्मिये समर्पेका दिवस्त हिरम्तारी धम्मामा

देहमारियं चैत । धानद्वतिसितिसी जा रोहा

बा दालुवारमियां (वर्षतं ७३७) ।

है (राय)।



w ) :

वास्त्रिह केलो वारिह (हे १ २१४ मासू

वास्त्रिहिय देवो वासिहिय (गुर १३ ११६)

थका १३८)। वाकिम देवी वाडिम (प्राप्त) । कार्तिर्यंत न [वादिकान्छ] दान का बना हुमा बाद्य-विशेष (पराह २ १) । दालिया की [दान्तिक] रेबो दान्ति (उवा)। वासी देवो वालि (मोन १२१)। दाय सक [त्रैय] दिवनाना वजनाना। बाबद्द बारेड (ई ४ दर मा ६११)। बहुर दार्थत (ग १२)। दाय स्क दिवया दिनाना दान करनाना। द्यावेद् (क्रम) । मझ- वार्चेन (पउन १९७ २६: मुना ६१८) । हेड दायेच्य (क्य) । श्राय वेशो वात्र = वात्रव (से १ १६ स्वयन १२ वसि १९)। -बाय पूर्वियी १ थन, जनसः २ देव देवता (से १ ४३)। ३ व्यंकत का धरिन (पान)। मिन दूं [पिन] चंदन की साथ (हा रै ६७)। प्रायक, प्रसाख पू ["लक्क] बंगल की धार्ग (चया नुपा १८७ पवि)। द्यायम् त [दामन] छत्न पर्युक्त को पेर में बांबने की रस्ती (कुछ ४६६)। क्षावण म [दापन] दिलामा (सुपा ४१६)। दावणया की [दापना] दिलाना (ध x१ पडि)। नाबर्य पुं [दायत्रव] कुद-विशेष (शामा १ ११--पत्र १७१)। बापर ५ (द्वापर) १ द्वपन्तियेय शीवरा बुध। २ मुक्रिक दो भी तिर्मशी लेख बाहरी (सुप्त १२९२६) । जुन्स दुर्वियुक्ती प्रति-विदेप (ठा ४ ६---पत्र ५६७)। दाबाय सक [दापय्] विकासा। होह-दारायउ (महा)। यापिश वि [द्रिशम] श्विमाचाष्ट्रमा धर्माठत (पाम मेर प्राप्त क्षा शायिक वि [दापित] दिलावा हुवा (दुवा २४१)। दाविश रि [प्रादिन] १ मध्यक ह्या ४५ भावा हुमा। २ वरम किया हुमा (धन्द्र 54) I

वाहिणिह देशो वृष्टिसणिङ (परम ७ १० दावित देशी ताम == शापम् । वास पू [वर्ष] वर्शन अवकोकन ( पर् )। वास प्रविष्य १ मीकर, कर्मकर (इ.२ २ ६ सून १२२ प्रासू १७४, घ १० कप्पू । २ वोवर, महाह केवट्टी बीवरो वासो (पाप)। "रोड, "घेटग पु ["घेट] १ छोटी क्रम का भीकर । २ गीकर का अक्का (महा; सामा १२)। समार्थु[सरम] भीकृप्य (यण्ड १७)। दासरिह पु [दाशरिय] समा वकरव का पुत्र रामचन्त्र (से १ १४)। दासी की दिल्ली नौकरणी (धीर महा)। वामीखरपहिया श्री [बामीफर्वेटिस] वैन प्रांभवीं की एक शाका (कप्त)। वाह प्रीवाही र ताप असम गण्मी: २ बहुन, जस्वीकरण (हे १ २६४ प्रापू १०)। **१ रोग-विरोप (विपा १ १)। उद्य**र पू ["क्यर] क्वर-विरोध (शुपा १११)। वर्षाः । विय पि [<sup>2</sup>व्युक्तान्तिक] विसकी स्वर् जलक हुना हो वह (खाया १ **१—**१४ 48)1 वाह रेखो दा = रा। वाह्य वि [दाह्क] बलानेवाचा (जनर at)। वाह्य न [वाहन] भनाना मस्म कपना (पठम १ २ १६१)। दाइबिय नि [दाहित] जनगरा हमा. भाग भक्तावा हुमा (हुम्मीर २०)। दाक्षिण वैको त्रक्तिया (भगवाः है १ ४% २ ७२ गा ४६६ वर्र६)। दारिय वि चित्रारिकी चित्रश विद्यार्ग विश्वका द्वार हो पहु। २ ल, व्यक्ति।-प्रमुख श्रास नशक (क्ष ७)। प्रवृत्यिम वि ["पश्चिमीय] पश्चिए धीर पश्चिम क्रिया 📽 वीच का धाग नैआईंट कोए। (सव)।

र---पण २१६) ।

पह पूं ["पथ] १ चॅलल देश की बीर का रास्ता । २ वशिख वेशः नण्यामि वाहिए १ई' (परम १२ ११) । पुरस्थिम वि ["पूर्वीय] व्यक्तिए और पूर्व किला के बीच का जाब म्पीन-भोग्र (मप)। (वश वि विवर्त) विश्वल में बारतेशना (शन वर्णार) (ठा ४ दाहिणा देशो दिस्तमा (ठा ६ मुग्द १ )। वसः मात्रः पासः है १ १४६ः सुपा ४८०)।

दाहिण। औ [बुक्सिमा] बीतस दिशा (कुमा) । कि कि व [क्रि] को यो की संक्यावासा (R 2 255 & 4 X 1) 1 वि देशो विसा (गाय ६६)। वारिष्ठ ["ब्हरिम्] (रम्-हरक्षा (कुमा) । स्माईत् ई ["गजेन्द्र] विम्-इस्ती (गतः)। गगय र् िंगम् विमृह्नती (स ११६) । जनसार न ["चक्रसार] विद्यापर्धे का एक नगर (इक)। स्मोह पू विशेष्ठ हिरान्त्रम (ग्र बद्ध)। देखी विसा। विश्व पून वि] विवस विन (दे १, १८)। 'राइंदिमाइ' (क्रम्प) । विकार विकार बाह्य किया (कुमा: पाधा उप ७६≈ धि)। २ वल्ट वॉट। ३ शक्काण चादि तीन वर्ण-बाह्यस धनिय धीर वैस्प। ४ प्रवृहतः प्रवृहे से क्लान होनेपाचा प्रास्त्री । १ दूस विशेष जिकका पेड़ (हे १ १४)। राय प्री [राअ] १ धत्तम द्वित्र । २ थलामा (सूपा ४१२। क्य १६) । दिक पूँ [हिक] बाक कीमा (चन ७६०थे)। हिम र् [द्विप] इस्तोः हाची (ह २ ७१)। दिश न [दिव] स्त्रर्ग देवलोक (दिव)। खोश सारा र्र [कोफ] स्वर्ग रेवलीड (पडम २२ ४% मुर ७ १) । िम वि [दित] क्रिम काटा हुमा (बम्मी 1 (5 विकादि दिये इत बार शका हवा व्यक्ति व विषयपुरा करा बार्जीवर्ग पुरुष्ठी (ग्राप विर्मंत पू [दिगस्त] विशा का प्रस्त भाव (मद्दा)। विश्वेषर वि [दिगनतर] १ नग्न मेगा वस-पहिता २ पुंदक वैन संस्थाय (भाष प्रवर १२२ दूम ४४६)। विकामार्च [ इ ] मुक्तंकार, सोतार (दे 1 (59 J दिमञ्जूष पूँ [दे] कार कीमा (हे ४,४१) । विभर १ (१पर) विका ग्रीश भार (या

विषा १ ७)।

y4२	पाइमसङ्ग्रहण्यकी	বিশ্বতিপ—বিশ
प्रभेद विश्वविक वि वि पूर्व प्रसावी (व र, वह)। देससी की वि वि वृद्धा व्याप्ता, वृद्धी (तय)। वेससी की वि वृद्धा व्याप्ता, वृद्धी (तय)। वेससी की वि वृद्धा व्याप्ता, वृद्धी (तय)। वेससी कुन [विवस] कि विवस (यह (तय १४ ६३)। नाह दु [मार्च] यूर्व परि (व १ १६)। नाह दु [मार्च] विकाद की विश्वस (याप्ता)। विकाद के वि वृद्धा व परि (व १ १)। विकाद कि (व १ १)। विकाद कि (व १ १)। विकाद विवा] कि विवस (वाप्ता वा १६)। विकाद विवा] कि विवस (वाप्ता वा १६)। विकाद विवा] कि विवस (वाप्ता वा १६)। विकाद विवा] कि वाप्ता वा १६)। विकाद विवा] विकाद वाप्ता (व १६)। विकाद विवा] विकाद वाप्ता (व १६)। विकाद विवा] विकाद वाप्ता विवा) विवाय कि [विद्या] वा १६)। विकाद विवाद विव	विद्यु द्वि [स्था आकरण-प्रशिक एक नमान (अयु हि १६०)। विद्यु केशे विद्यु (अयु १४०)। विद्यु केशे विद्यु केशे केशे क्षण्या (द्वुव १९६१)। विद्यु केशे विद्यु केशे केशे क्षण्या (द्वुव १९६१)। विद्यु केशे विद्यु केशे क्षण्या (द्वुव १९६१)। विद्यु केशे विद्यु केशे क्षण्या (द्वुव १९६४)। विद्यु केशे विद्यु केशे क्षण्या (द्वुव १९६४)। विद्वु केशे विद्यु केशे क्षण्या (द्वुव १९६४)। विद्वु केशे विद्यु केशे क्षण्या व्यव्या केशे केशे केशे केशे केशे केशे केशे केश	(मूच २ १) विषय है कियो न निवार विषय (मिक्स ४)। युद्ध न [युद्ध] दुद्ध-विषय प्रांत को विषया में कार्य (प्रवार ४ ४४)। युद्ध न [युद्ध] दुद्ध-विषय प्रांत को विषया में कार्य वीकमा (या ७२व थे)। या ये [युद्ध] (प्रवार ४ १ श्वायमो )। या ये [युद्ध] १ श्वाय-च्य (प्रवि ४४)। ह वि (सत् १ ४ श्वायमो )। या ये [युद्ध] (सत् १ व्यायमो )। या ये [युद्ध] (सत् १ व्यायमो )। या ये [युद्ध] (सत् १ व्यायमो के स्वयं २व १२ १२)। वाय ये [याव] कत्यं २व १२ १२)। वाय ये [याव] कार्य १व १व्यायमे (या या य
,	, , , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	ं तुर्वे धीर (पुष्यः ६७) । संधि 🕻 [मिणि]

मूर्व रिराकर (गाम से १ १ वन्युपा २६) । [दुन्तिकत्या ] की [दिहासा] वेकने की दृष्या मुद्द न [ मुख्य ] प्रस्तत, प्रातःकाल , (पाय)। यर देखी कर (पडा मिंग)। रयगिकरिकी ["रजनिकरी] रियानिकीय (पत्रम १६०)। बद् पू [ पति] मूर्व र्चीर (रि. १७१) । दिविद पू [दिनम्ड] मूर्व, रिन (सुरा २४ )। हिगस र् [निनस] १ नूर्वे सूरव (कप्पू)। २ बारह की संस्या (विवे १४४)। दिण्यति [दत्तः] १ दिया ह्या विदेशी (हिर् ४६। प्राप्त स्वयन प्राप्तु १६४)। २ निवरित स्वारित (पएइ १ १)। ३ वृं अगरान् पार्शनाम क प्रयम पण मर (सब १६२) । ४ मनरान् सेवायनाय का पूर्वजन्तीय नाम (सम. १६१) । २ भवदान् चन्द्रप्रमं वा प्रवस यत्त्रवर (सम १६२)। ६ भगरान् नमिनाय को अपन बिगा बनेराना एक गुरुष (सम १४१) । येथी विश्व । दिया देनी दड़म (सब)। दिष्णह्य वि [न्त] न्या ह्या (बीप २२ भा, ही)। दिस्त वि[दाप्त] १ व्यक्तिक प्रशामिक (सम ११६ यति १४' सहय ११)। २ वान्ति युक्त भाग्यर, नेपरमी (पाम १४ ११ सम १२२) । १ ठीवराभुत, निरित्र (सम १६६ सहय 💔 । ४ स्टब्स्टन व्यवीता (श्रीक्ष) । १ पुत्र परिवृद्ध (बन १४) । ६ प्रसिद्ध (सब २६ ३) । ० मारतपारा (योग ३ ३) । ायस रि [िपस] हर्र के बॉडरक ने रिनरो रिक्ताय हा गरा हा बहु (हरू ३)। ल्चि रि. चिन्नी १ वरित वर्नेनुक (बीरा) र २ मारनशाचा । ३ हानिन्सास्य (बीप ३ रा। इण गि [\*सिण] र निषक्षेत्रा में दर्द हो। २ तर्च के ब्रिडिट के जो। यान्त हो मार हो बर् (दा ६, ६—१४ ६२७) । শিল ঐ [ব্যাম] ৰাজ্য ইন মধ্যা (গায नुर र १३ १ अई स्टारेश्ट)। स (र[ सर्] रानिनुत (रण्य १)। रिनि १ (र्राप्त) प्रश्चित (च्च १० १)। टीर [सर्] क्राप्टरचा (श्यान (25) I

दिदिच्या । (यम मुस रेट४) । पवि)। दिद्ध वि [दिग्य] पिस (निष् १)। दिश देशों नियम (महा प्रामु १७)। ७ भी गोतम स्वामी के पान पान मी शासनों के साथ बैन दीना सेनेदाला एक तारन (उर १४२ टी रूप २६६)। ८ एक पैन माचार्य (क्य) । दिसय १ दिसको येन निया ह्या पूत्र (हा १०---पष ११६) । दिव्य बक्ष [दीव्] १ चमरना । २ तेव होता । १ जनमा । न्यिह (हे १ - २२१) । बक् दिप्पेन दिप्पमाय (मे ४ व नुर १४ ६६ वहा। परह १ ४ पुरा २४ ) 'दिन्तमाखे वष्टर्ख (स ६७६)। दिप्प बर [ नृप् ] तुत्र होता, सन्द्रप्र होता। िप्पा (पर्)। दिष्य वि [दीम] जनरगवाना देवली (दे 12 5 विष्प (वप) पू विषय । १ एक्ट विदेव (पिंग) । दिप्पंत पू चि वन्ते (दे १, ११)। दिप्पंत दिप्पमाग } रेग्री दिप्प = शेप्। दिष्पिर देगी दिष्य = श्रेष्ठ (दुमा) । वियात मध [दा] देना । दिवारद् (वंदा १३ 1 (92 #9 (R) दिख ई [दिख] हम्बे हाची (हे १ १४)। दिलंगिका [४] रेपो दिहिदिसिक (गा DAS) 1 विमित्रिक मत [ निस्तिराय्] परन् रित् धाराव करना। वर्ष दि सदिलंद (वडन 2 7 71) 1 निविदेश्य पुं [निविश्यक्त] एक प्रशार शा बाह, बन रमु बी एक वाति (पाट् १-१) । िहिन्सिम पू [इ] बारत हिंगू नहरा (रे.इ. ४ ) सी. जा बचा सप्ती (दा करहे) । न्दि च्द [निय] १ वेदा करता। २ क्षेत्रने वी द्रष्णा करना । वे मेन-देन करना । ४ वर्षमा बाल्याः १ बाहा वस्ताः

TT (TT (TT ):

दिव म [ दिय ] स्वर्ग देवसोक (कुप्र ४३६ दिबद्दत वि द्वियपार्थ देव एक मीर मामा (शिस ६१३ स ११ सुर १ द स्पूरा ध्य मविसम ६१: मुग्य ११ ठा६)। न्यस ) देखो दिअस (है १ २६६ उप दिवह ) प्रापृ १२ मुरा ६ ७ वेखो ४७)। पुरुष्त म ["पूथास्त्र] को से सेक्र ना दिन तक का समय (भम)। नियादेशो दिशा (ए।या १ ४ प्राप्तु € )। इसि पुं ['दीर्चि] काएसक भंगी (ह x vt)। "कर पू ["कर] मूर्य मूरव (बत ११)। दिस्ति पू [ किस्ति] नारित हत्राय (रूप २००)। गर देखी कर (खाया १ १ दुब ४१६)। सुद्र न ["सुल्ब] प्रधान (यहर) । यह देखी बह (मुना ११) ११४)। यरस्य न विस्तान्त्री प्रकारा-शारक प्रज्ञ-विदेव (पडम ६१ ४४) । दियायर पू नियासरी १ विडवेन नामक विकात देन वृद्धि चीर तानिक। २ पूर्ववर मुनि (मम्पत्त १४१)। दिषि वेची इय 'डिनिएएनि कालपूरिने-कुब्द एसा दामी महं च निप्पवधे एक्दा दिशीए िच्यामी (रंमा)। दिविभ र्रं [द्विपिद] बलर-रिपेप (न ४ ८ दिविज वि [दिविज] १ सार्व में स्थात । २ र्थु देश देशता (प्रति ७) । दिविष्ट रेगो दुविटू (चन)। दिय (या) देना दिवा (हे ४ ४१६) हुमा) । ल्ब्य वि [ल्ब्य] १ स्वर्त-अध्यक्ती स्वर्गीय (श २ ठा ३ ३)। २ बत्तम मुन्दर, अनोहर (पान = २६१ मुर २, २४२ प्रामू १२≈) । १ मधान सूच्य (सीप) । ४ देर सम्बन्धी (हा ४ ४ मूम १ २ २) । १ न शतकरिये व्ययेत हो गाँद ६ तित् हिया भाता मन्त्रियारा गर्रा (बर द र)। ६ प्राचीन बाद में ब्राइक स्टार हो मुन्दू हो यात पर जिल चनाराए-जनक बाजा है राज न्हों के निए शिया महूच्य का शिरीक्त होता वा वर हरित-पर्वत चरत हैया चर्चन चरी-क्षिक क्रमण (उत्तर ३१ टी) । स∏स

(જાવ)ા दिब्ध न दिब्ध दिला टीन विन का सन्तरार ज्यमाच (वेशेष १ ) । २ वि छैव-प्रम्कनीः 'तिरिया यहावा य रिव्यंता का सन्या विविद्यादियां (सम्ब १ २ २ 8X) 1 विकार देशो बृहद (सुपा १६१) । विवय देशो देश 'यमोई विन्यदंग्रल्'वि' (नूप **११**२) । दिव्यारा पू [क्रिक्याक] सर्वे की एक जाति (पदश १)। दिव्यासा की दि नहुएश क्री-निशेष ( 12, 12) : दिस सक् दिश्ची १ वडताः २ प्रतिसध्य करना । विश्वद (वनि) । नवक्क. दिस्समाण (घन)। दिस र् दिशा एक वेच-विदान (वेवेना 1 (3#3 दिस दि दिश्यों दिशार्ने कला (से ६, **2** ) i दिसक्षा की [इपद्] शतर, शकाल (पर्)। दिसाइ देशो दिसा-दि (पुरुष १ टी--पर w ) t दिसा श्री [दिशा] १ फिला, पूर्व साथि दिसि रत दिखाएँ (पाठ प्राप्त ११६) दिसी महार दुपा २६७ वरह र ४ र ३१ वन) । ९ जीकाकी (छ १ १४) । अब्द म ["चक्र] फिल्मों का सबूद (या १३)। इसरी भी ["इसारी] वेगी-विशेष (तुपा ४ )। कुमार दे [कुमार] नानपृति देशों की एक वाति (दएक १ भौत) : "हम्भारी क्षेत्रों हमरी (महा गुना ४१) : गम पू [गम] रिक्-इस्टी (से २ ६:१ ४६)। सद्द 🕻 [गमेन्द्र] रिष्-बृत्ती (रि.११६)। भवा देशी आह (मृपा १२३। महा) । चक्र सञ्जन विका-बाऊ] रे फिलामी का बहुह । २ सर-निधेव (निरंद १) । चर पूर्वियर विशवस करनेवाला बच्च (मग १४)। व्यक्ता वैद्यो

बच्चा(उप ७६ व टी)। अस्तिय देवी विचय (ज्या)। बाह्य [ बाह् किशानों में हीनेनामा एक तरह का प्रकार, विश्वमें नीचे धन्तकार चौर उत्तर प्रकारा रीक्षता है। यह व्यक्ती कारावर्ती का सुवक है (सग १, ७)। **भुषाय पु** [कानुवात] विशाका प्रमुखरक (पर्का ३)। इति द्र [क्लिस्] विन्कृती (तुपा ४८) । दाह केवी बाद (भग १ ७) । दि दे विभावि वेह वर्षेष्ठ (पुण्य १) । "देखवा वर्ष ["देवता] रिलाको व्यक्तिकारी क्या (रंगा) । पाकिका 1 विशेक्षिम् ] एक प्रकार का शासका (धीप)। माम र् ["माग] शिकाप (का बीया कप्पा दिया ११)। सन्तन िमात्र] धरफल वंदिस (स्प ७४६)। मोद पे मोदी किया का अस (विक् (१) । पता की वाजा देशान दुस-किए (स १६६)। याच्य वि विश्वात्रिकी हिलाबी में फिलोबामा (बना)। छोदा पू िआक्रोक विद्या का प्रकार (विद्या १ **१)। बह् पुं["पन] दिशा-का नार्व** (प्रवाद रें)। कास्त्र दें विवस्ती क्लिपाल विस्म का अविपति (स ३६६) । "बेरमज न ["बिरमज] केन पुश्च की पासने का एक निवम-दिशा में काने-माने ना परिमास करना (बर्म २)। अवय न िमत को विरमण (बीम) । सोरियय प्रशिवस्थिक स्वरिक्त-विकेष (दीप) । सोनारयय पू सीनरितको १ स्वरिकड बिग्रेण बक्षिए।उर्च स्थारिक (पब्रश्न १ ४)। २ व. एक देव-विमान (समय ) । वृक्षक पर्वतकाएक शिकार (ठा )। इतिकार् िंद्दितिन विश्वम विशामी में रिवट प्रेपनत चारि वाठ इस्ती । हांत्वकृष्ट पुन विस्ति कुट ] विशा में रिक्त इस्ती के धाकारताला शिक्षर-विशेष, वे भाठ हैं-पद्मीतर, शील वन्त गुहरती मन्त्रमधिर, दुषुर, पश्चारा, धनरोध ग्रीर शेचर्वावृरि (वं ४) । विसेम द्र [विगिम] स्टिंग रिव्यूस्ती (बडर) । हिस्स वि हिर्दे देवने ग्रेग्य प्रत्कद्व आ

था रिचय (शर्मेश्वे ४२)।

दिस्स बिसर्ग वैको वृक्त्या = एरा । दिस्समाण दिस्समाण वेदी विस । विस्ता केवी वक्टा = इस् । विद्या श विद्या थे प्रकार (हे १ १७)। विकि की विकि मेर्र कीरक (के ए, १६१) थुगा)। स नि [सत् ] वैर्थ-राजी थीर (कुमा) **।** दीज देशो दीव = दीप (मा १३४८ ४४७)। बीशक देवी बीचम (मा १६४)। बीअमाल वेची दा नया। शीज वि शिन् रिरंक नरीव (प्राप् २३)। २ इ.चिच. इ.च्च (खाया १ १) । ३ इस्ति म्पून (छा भ १)। ४ शोक प्रस्त शोकाद्वर (विपा १ २ मद)। कीप्सार दे [कीनार] क्षेत्रे का एक कि**न्**रा (क्या क्य प्र ६४) ११७ हो)। बीपक) (प्रय) पुन [बीयक] बन्द विशेष दीपच्छ (सिन)। तीय देवी दिय - दिन् । बहु, धारवेदि मुद् लेक्कि शीवर्ग (सम १ १ २ २६)। हीब एक [ दीपयु ] १ दीपाना ध्रोबान्द । ९ वक्तमधाः १ तेन गरनाः ४ क्रक्ट करनाः। ६ विवेचन करना । धीवड (मीच ४६४) । रीमेश (महा)। यहः, श्रीवर्धतः (कृप्प)। चंक्र- वीवंचा (मीव ४६४' करा)। क्र दीवविक्रम (क्य)। बीत पे बिपा र प्रयोग विका निरास, क्रमीक (चाद १६ शासा १ १)। २ कलावृत्र की एक चार्षि अधेप का कार्य करनेवाला कर्माकुत (सम १७)। व्यंपम न [बस्पक्र] दिशा का बसना क्रीप-पिकान (क्रम ६)। ली की जिल्ली १ किन्सिका र बीवाली वर्व-विशेष कार्रिक वर्धी धनावस

(रे ६ ४२)। त्वसी की विस्ति।

दीव दे द्विप**ै । जिल्हे वार्ट मोर वय** 

वस 🚮 दैना भूमि बान (सम ११) कारै )।

र जनस्पति देशों की एक बाति, हीपपूर्वार

वैद (पराह १४० घीप) । ३ म्याम (धीव १) ।

पुर्वोक्त ही यर्व (ती १२)।

"कुमार पूं ["कुमार] एक देव-काटि (मन १६१६) । उच्च दि [ इद्र ] द्वीप के मार्ग का जानकार (उप १६१) । सागरपन्नश्चि **बी** ["सागरप्रक्रि] **वैन प्रन्य-विशेष विस**र्गे हीयों और ममुत्रों का नर्यान है (ठा ३ २---पत्र १२६)। हीच पुर्विष] सीराष्ट्रका एक नगर, धीन

(पव १११)। दीषअ पूँ [दे] इक्सास विरिवट (दे ४, **88)** 1

दीवल दूं [दीपक] १ प्रदीप विया विराम द्यालोक (बा २२२ सङ्ग्र) । २ वि योगक, प्रकाशक, शोमा-कारक (बुमा) । ३ न सन्द विरोप (स्वि २६)।

दीवंग पू [दीपाङ्ग] प्रपीप का काम केनेवाने कश्यक्त की एक जाति (ठा १)। द्वीचरा देखो दीवअ = दीपक (था ६) सावम)। बीवड प्रे वि विकल्द-विशेष कुरतिशिय

संपृष्टं मर्गतमी वरीवर्डं (सुर १ १८०)। दीवण न [दीपन] प्रकारान (मीव ४४)। द्दीवणा 🛍 [शीपना] प्रकारा 'बुबो संस्कृत दीवणाहिं (स ६७१)।

शीविणक्क वि [र्व:पनीय] १ वटरान्ति को बड़ानेबाला (ए।सा १ १—पत्र १६)। २

शोमायमान वैदीप्यमान (पएस १७) । दीवर्ष देनो दीव - दिन्।

हीययद देखी दाव = दीपम् ।

दीवायण दे द्विपायन, द्वैपायनी एक प्राचीय ऋषि जिसने हाएका नजरी जलाने का निवान किया को बीर को बाजानी जनांपछी पाल में बरव-बेन में एक डीबंबर होता (संद १४, तम १४४) क्रुप्र ६३) । दीवि १५[ड्रीपन्] स्याप्तकी एक जातिः

वीविभ ) बीता (श ब्दर फावा र १---पत्र ६३, परह १ १)।

दीबिज वि [दापित] १ वताया हुधा (पत्रम २२ १७) । २ ब्रकारित (योव) । बीविजेंग पू [दीपिस्तक्क] वस्त-बुक्र की एक

वार्ति यो ग्रन्थकार को दूर करता है (पत्रम १ २ १२६)।

दीविमाध्ये [दे] १ ज्योधीका शुरु कीट विशेष । ए व्याव की हरिएती जो कुलरे

इरिक्षों के मानर्यक्त करने के सिए रखी वादी 🕽 (दे ५ ५६)। ३ व्याय-संबन्धी पिनके में रका हमा विविद पक्षी (शामा १ १७---वचर ३३२)।

दीविभाकी [दीपिका] छोटा दिया मह प्रकीप (जीव १)।

वीविद्या वि द्विष्य द्वीप में छप्पन्न द्वीप में वैदा हुआ (गुप्पा १ ११---पत्र १७१)।

दीवी (वप) देवी दंवी (रंगा)।

वीकी भी शिविका नवु प्रशेष खोटा दिया। 'दीवि व्य ठीइ पुती' (मा १६)।

**इ** बूसव वूं [दीपास्सव] कार्तिक वरी ममावस रीवाली रीपायमी (ती ११)।

वासत वीसमाज वेशो दक्तः= श्र्।

दीइ वि[दीर्घ] र यायत अस्या (ठा४ २ । ब्राप्त कुमा) । २ वूँ वो मात्रामासास्वर (पिंग)। ३ कोशन देश का एक राजा (उप ९ ६८) । काय **िकाय**ि धरिनकाय (धाणा प्राच्य १—१—४)। कासिगी सौ िकाबिन्ही विज्ञा-विशेष बुद्धि-विशेष विसर्ध चुवीर्च मृतकान की बातों का स्मरख धीर सुधीर्थ अविच्या का विकार किया का सकता है(वै ३२ मिसे ५ ८)। व्यक्तिय वि िकाछिको १ धेर्पं कास से उत्पन्न चिरंतना **पी**हकासिएएँ धेवार्यकेखें (क्र. १)। २ रीर्वेकाल-सम्बन्धी (प्रावम) । श्रेष्टा ही ["यात्रा] १ मन्यी एकर। २ वयण मीत (४७२१) । विका 🐧 विष्टी निसको साप में काटा ही वह (निष् १)। । शहा भी ["निद्रा] भएए मीस (धम)। इति पुं ["तुन्त] १ भारतवर्षं ना एक माबी चक्र-वर्ती सना (सम १५४)। २ एक वैतनुनि (यंत)। विसि वि [विशिन् ] इत्तरधी पूरुकेशी (नुर व का से क्र)। दसा भी व [दशा] वैन वैव-विशेष (ठा१)। विद्वि वि ["राष्टि] र पूरवर्ती पूरवेशी। २ और कीर्थ-वरिता (वर्ष १) । यह व िंग्रही १ **व**र्गसीप (<del>दाव २२)</del> । २ बक्यज का एक मन्त्री (बृह १)। पास दू िपारः | ऐरवछ क्षेत्र के सौजहरूँ मारी जिल-👫 (पर ७) । पेहि वि ["प्रेक्षिन्] दूर

क्रिक्त (पत्रम २१: २२: ३१: १.५)। बाह्र पूँ विष्ठि १ मध्य-सेत्र में होनेनासा दीसध वास्केव (सम ११४)। २ मगवान् चनस्यम का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १६१)। सद पुं भिन्नो एक बैन मुनि (कप्प)। मद्धा वि भिष्व] सम्बा रस्तावाचा (ग्रामा १ १८ ठा२ १ ४,२—यत्र २४)। सञ्ज वि **िंद्र**े वीर्थकाल है गम्म (ठा ५ २---पत्र २४)। साहन ["सूप्] सम्बाद्यानुष्य (हारे): स्त, राय प्रेम रिक्रीर शम्बी रातः। २ **बद्ध** रात्रिवासा विर-वास (धंक्षि १७ सब)। सब पूं िसजी एक रापा (महा) । "छोग 🕻 ["छोक] बहस्तवि का बीब (बाबा)। खेगसत्य म दिनेक-शक्ती समिन ब्रिड (साबा)। "वेयडड प्र ["वेतास्य] स्वनाम-स्र्वाठ पर्वत (ठा<sup>°</sup> २ र—पन ६२)। झुचन [सूत्र] त्यका बुता (निषु ३) । २ धामस्य मा बुरासु धिहसूचं परकरने सीवलं परिवर्शनों (पडम ९ ९)। सेण प्र िसेनी श्यन्तर क्षेत्रतीक-नामी पुनि-विशेव (मनु २) : २ इस सवस्पित्ती कान में उत्पान ऐरवत क्षेत्र के धाठवे विम-देव (पद ७) । । उ. । उस वि [रेयुप्, ायुष्क] सम्बी छन्नशासा वदी ध्यपुतालां जिरंबीबी (हे १२ ठा ६ १ पर्वम १४ ३) । सण न [ौसन] रुप्या (**व**ि १) ।

बीइ देको विञह (हुमा) । कीई स वि दिवसा घी दिन को देखने में संसमके 'परिचा दोहंबा' (प्रान्त १७६) । पीइबीइ र् दि रोच (दे ४, ४१)।

दीइपिट रेखी दीइ-पट्ट (मिरि १ १)। बीहर देगो दीह=कीर्य (हे २ १७१ मूर

**२ ९१८ बायू ११३)। पद्धकि[187]** शम्यी पांचवाला वड्डे नेत्रवाला (सुपा two) 1

दीहरिय दि [दीयित] सम्बा दिया ह्या (पदश) १

दीदिया की [दीपिया] बारी बनाशव-पिटेव (सूर १ ६३) कप्पू)।

क्षेत्रीकर एक [दीर्घी+कृ] सम्बा करना। बीहीकरेंखि (भग)।

ķ٤

हुतेंचो स्थ≔ दुः कर्ने – दुवर (विशे र⊄)। हु वि न दिश्री के बेक्या-विधेपकाला हि १ १४ कम्म १ उपा)। द्वपु [द्व] २ क्यापेश स्वथः (बर १)। २ सत्ता सामान्य (विशे २०)। द्वय द्विस्] यो बार, यो बच्च (बुर १६

द्वय द्विर\_] इन यवीं ना भूवत्र सम्बद्ध ---१ समान । २ दुञ्जा चारानी । ३ प्रतिका कठिनादै। ४ निन्धा (हे २ २१७ बात् रेश्य सुनारेश्वर शासार १ जना)। हुअन [ इत ] प्रक्रिय-विशेष (ध्य १९)। द्वाच न [द्विक] पूरम पूरन प्रेज़ा (न ६२१) । हुम वि [इव] १ पीड़ित ऐयन किया हुन्य (क्प ३२ टी)।१ वेस-पुष्टा १ लिये सीत, भर्मी (सुर १: १ १ मशु) । बिर्झ-विमन [विद्धन्तित ] १ केव निरोगः २ व्याप्तक विदेव (दाव) । हुअस्तर वृं [ब्] यहर नपुंचन (वे क 8#) ( हुधक्तर वि [दूपश्चर] १ व्यान, पूर्व,

सरपत्र (तर १२६ दी)। २ दे**क्ट.** वाच थीनर (पिड) । 🛍 (रया (यानन) । हुमगुष्ट पू [द्वयगुष्क] से प्रशासुधी का स्क्रम्ब (विमे २१६२)।

बुक्तर वि [बुप्कर] बुल्क्य गाँउनाई थे को लिया वासके वह (प्राप्त २६)। हुअञ्चल [तुक्कि] र यक्ष क्यका। २ यहिन मध्य, पुरुषक (हे १ ११६, प्राप्त) । वेको हक्छ। दुभाइ र् [द्विकारि] श्वारण अतिय योग

मैरव में द्यान नहीं (हे द ६४२ २ ७६)। हुआगस्य वि [हुरास्त्रय] दुःश्व से बद्धा पोल्म (छ। ६ १--पत्र २६६) । बुकार व द्वार] बरवाबा, जनेश-नार्ग (क् 1 (50 5 दुआराह् वि [दुरायभ] विस्का धाराना कार्टनाई से हो सके वह (प्याह १ ४)।

<u>बुकारिका की [बुधरेका] १ कोल हार । २ [</u> द्वार द्वार, ब्ल्यार (स्त्रमा ११)।

हुआवत्त न [बुधावर्ष] हटिनार का एक सुव (धम १४७)। तुरुत्र कि [विद्वीय] प्रथम (दे १ १ १) हुई का |२ हा देशा कर्जा ठाछ ४)। तुइड (पप) वि [द्विचतुर] थे-बार, दी वा

भार (माक् १२ )। दुर्बंद } सक [ अूगुप्श् ] निका करना, तुष्टच्या प्रशा करमें। दुरेशक, दुरुवह (**₹** ∀ ∀) i दुरण वि [द्वितुत्र] बूग बुक्त (वे ४. प्रमादेश रुप)। बार मि चिर्] सूने में गी किरोप ग्रास्थनत (से ११ २७)। बुरुणिम वि [ब्रिगुणित] उत्तर देखों (षुपा) । दुरुव्य केको दुश्रक्ष (प्राप्त या १६६ पर )।

तुंब्द १५ [तुम्हुम] १ वर्ग भी एक वासि हुदुम ) (२ ७ २१) । २ व्योतिक-पिरोग युक्त महा**बद्ध (ठा** २ **१—** पत्र ७ )। तुंद्वभि वैचो तुद्बि (भव ८, १३) । हुंदुमिल न कि ने नहें की मानाब (वे % ४४३ पर्}ा हुंबुमिणी श्री वि] क्यानबी 🐗 (२२,४२)। हुँडुवि पुत्री [हुन्हुयि] बाध-विरोप (क्रम) पुर के ६ यज्ञा दूल ११८) ।

हुंचपरी की [बे] बांक्स मधे (वे ४, ४ ) । बुक्ट वेदो बुक्क्ट (र ४७)। हुक्य वेको हुन्द्रप्य (नवू) । बुक्तम न (बुद्धमीन) पाप विशिक्त कान शाकाप (का २७३ मनि)। दुश्रम पू [दुष्माक] सकात पुणिक (शिरि 1 (18 दुक्तिय वेको तुक्कम (मवि)।

बुक्टकपु विकास १ क्या-विशेष । २ वि बुरून इत की झाल से बना हुमा नक बादि (शाया १ १ टी—यश ४३)। दुर्वादिर नि [दुप्कानितः] अञ्चल गावन्य करनेपासा (भूमि) । बु**क्ष प [बुक्**रत] पाप नमें निन्ध सामध्य

(सम्बद्धाः श्रीहरू १ ।। पक्षि)। हुब करि | वि हिप्कृतिम, क] रूपार तुमक्रिय करनेतला, पापी (सून १ ४, श्चनकारप पुं [दुष्कारप] सिर्मित बाबु का धानरङ पतित ताचु का धाकार (पंकस)। हुक्कमा न [हुप्टमीन] बुए क्में भ्रष्टरावरह (लुपा२ वा१२ ५ )। वके द्वतितव रष्ट्र-बाय्य (हे ४ ४१४

बुक्कप न [बुप्कृत] पाप-समै (परह १-१) धुकार वि [दुपार] मी द्वाव देशिया ना र्वचा १६): आरम नि विहास्त्री बुल्डिम कार्ने को कलेशका (वा tue) ∦ २, ९ ४) । इतल न (<sup>®</sup>दरखी कडिल कार्यं को करना (इ. १७)। स्वरि वि ['कारिस् | देवो जारअ (का कृ १६ )। बुक्कर न दिवाद मान में धाँद के बारी शक्र में फिया बाता स्तान (वे ५,४२)। हुक्करकरण न [हुद्धरकरण] पोच किन का बध्यतारं क्पवाद (संबोध १. )। हुक्क्क वि [दे] धरविशमाः परोपशी (बार १ १६) यस २७)। हुक्कर र् [तुप्प्रस्त्र] मन्त्रमः दुर्गत्स (सार्थ

बुक्तिय वैची बुक्तम (सरि)। हुएकुक्तजिमा की दि ] पीक्सप, पीक्सपी हुक्कुत न [तुप्कुक] निन्ति दुस (वर्न १)। दुक्डब् वि वि देशस्त्र परक्रित विक

विका। २ व्यक्तपहित (हे १८ ४४) । हरू क पुन [बुला] १ घनुव कह पीड़ा क्लेश नन का बोम (दे १ ६६) 'पुरुवा चारीचा मालासा व संसार (संसा १ १) ध्याचा थ्या राज ११: १ : अनु १६, रेम्पः रं≉र)। २ क्रिये मष्ट छे धूरिका 🖥 कठिमारे से (बसु) । ३ वि दुःखबाना, दु:वित दु:बदुक (दे ११)। की कला (थप)। कर वि [\*at] दुःस जनक (सूपा १६१)। च वि वित्ते दुवा वे पीनित

(इस १६१) स वर्षे प्रसू १४४)। चगवेसम न ["चौगवपम] पुरब दे गीविय की देना, धार्त ग्रुपूरा (क्या ११) : मजिय वि [सर्वितदुःसः] किले दुःस क्यार्वन किया ही यह (क्य ६)। 10ह मि िराज्य] दुःच दे धारामक्त्रोत्थ (क्रमा

दुगुद्रका हैयो द्रगद्रका (बाका) । युर्विद्धा देगो नर्गद्धा (चन) । कस्म न ि सर्मन् ] रंगो पीचे का सर्थ (छा १) । शोइपाय न [साइनाय] वर्गनिरंप

बुग्ग होश है (बस्स १)।

बिगड़े बन्द स जीव की समूम बस्तु पर

ह्युंदि रि [मृगुप्पन् ] क्या करनगण

तहरत वरनेशना (बता २ ४४ ६ c)।

यात्र ६) ।

दुर्गुद्धग वि [जुगुष्मक] पूर्ण परमाना हुर्गुद्रम म [ुगुप्मन] क्ला भिन्ना (नि

(पतम ४६ ६२)। य्यसंपुष्ण न [द्विगर्सपुण] भगातार बीच दिन का जपराम (धेनीक १६)। नवरमञ्जय श्री [तुरामा] दुःशी काना,

हुकरमाप सक [हुत्रमयु ] हुन्स प्रामाना इत्यी गरनाः दुल्साश्च (ति ११६)। बहु दुस्प्यापेन (पटम १० १०)। नपह हुपग्रापिर्जन (बारम) ।

त्रसम्बद्धिः [त्रासम्बद्धाः द्वापुषः

दुरियम र दुरियत र सनुक कुलिया

(हैर धर प्राप्त प्राप्त दश महानुद

ह्रबार्त्तर वि [रूगानार] यो दला मे तार

रिन्न कार जिन्हों यार बरने में ब्रान्स्ट्र

दुक्तुमाम [[म्]दो कर दोट्य

दर्भ क्षात्राता ( प १ ३)।

(धाषा) ।

1 (131 2

Pt (417 ( 1) 1

(BIX 3--- 17 1 €) (

हुक्रविक वि [दुर्वरात] दुःशी विवा हुवा ("प ६६४। मनि)।

(Prg. 25) 1 दुष्तर्गरेया औ [दुष्क्ररिका] १ दाशै नान धनी (निष् १६)। २ नेरमा बायाज्ञना (तिच १)। दुक्यक्रिय (पर) वि [दुर्गराउ] दुक्यक्र

दुक्त्यम वि [दुअनम] १ यस्त्रयै। २ मग्राप (बर्त २ ११)। दुकार देखे दुबर (स्वन ६६)। दुक्तारिय पुं [दुष्करिक] श्रव नीकर

दुकारह देखो हुबर (शह २३)। हुकारण म [दुज्यन] दुसना, वर्ष होना (ता ७११ तूम २ २ ११)।

शाना । २ सक दुखी करना "तिरंसे दुक्तई (स १४)। दुक्सामि (चे ११ १२०)। दुस्वति (सूध २ २ ६४)।

देशो दुइ = दुःस । का भाग चून इ. (दे ६, ४२)। हुक्स यह [हुस्सय्] १ हुब्स दर्श

११२)। पद नि [पद] इच-प्रद (परम १४, १ )। स्थिमा 🕏 [शिमिका] देवना पोहा (ठा १ ४)? हुकात न [दे] बदन की के वसर के पीछे

दुक्त्युस देखी दुक्तुस (गरि २१) ।

वुषस्त्रीह व [बुस्तीय] दुश्र-यशि (पद्म १ व १४४: मुता १६१) । दुसरोड् व [बुऋोभ] क्ष्ट-क्षोम्य - बुस्पर (मुत्र १६१ ६२६)। दुसीह 🏗 [द्विहाएड] वो दुमनेवामा (ठा

१८६ ही मित्री।

दुगन [द्विक] से ब्राम ब्राम बोड़ा (स्थ

हुगेह रेखी हुनुद्ध । यह दुर्गहमाण (रच

४ १३) । इ. बुर'ह्यणिज्ञ (क्त १३ १६)

दुर्गञ्जूणा की जिल्लाध्यननी प्रखा निका

हुगंद्रा थी [जुगुच्मा] एला फिला (पाप

दुगच्छ | वह [ जुगुप्स् ] एण करन

दुराह्य निन्दा करना । दुवन्दर, रूप शह

(पर ६४ ४) । शह दुर्ग्ञात, दुर्ग्य

माण (तुमा वि ७४ २१६)। सह

दुर्गुद्धिर्द्ध (धर्म २)। इ. दुर्गुद्धणय

तुर्गेय रेको दुरर्गय (पत्रम ४१ १७) ।

मुर १ १७३ मी ११)।

रि ७४)।

(पउम ११ ५१)।

रूप ४ ७) । वेको दुर्गुछा ।

, दुम्बुचो ध्यो दुक्तवृत्ता (क्स) । दुम्बुर दूं [द्विशुर] से कुरवामा प्राखी यो भैंस बारि (पएल १)।

देश (गुपा १२८) । रं ६ पूर व २१६)।

हुँगूक ( नुर र व भेरे)।

लेलिमें दूर्ग (स ६३६)।

का मातिक (मुता ४६ )।

विद्या दोर (वि १११)।

या नने वह (वर्गी ४) ।

नुपा २१ महा)।

1 ( 628

(पएए १)।

(योष १०२)।

दुगुब्ध रवी दुर्गुत्र । दुष्टबर (हे ४-४ षड)। वह धुगुरुष्ठंत (पत्रम १ ४ ७४) । हः धुगुच्छ्याय (पउम व २)। हुनुगदेशो दुउग (ठा२ ४' ए।या १ १ हुन्य एक [हिन्तुगय्] हुदुना करना। ब्युग्येह (ब्रूप २८४) ।

दुगोचा ध्यै [द्विगात्रा] बस्ती विधेय

दुग्गव [दे] १ दुख क्ष्ट (दे ४ ४६)

पट पर्राप्त १ ६)।२ इस्टी इसर (६ १

४३)।३ *एए संशय द्व*ा न्या<del>रतं</del>च

हुगा वि दिशी १ वहां दुन्त से प्रमेश क्या

वा सके बहु दुर्गम स्थान (भग 💌 ६ दिशा

१ को । २ का इत्त्व से जाना भासके (सुम

१ १ १) । ३ पून, विसा गढ़ कोट

(पूरा १४६)। नायग पू ["नायक] किने

दुरगइकी [दुगति] १ हुमति, नरर प्रारि

कुल्यित योगि (ठा व का क्ष्र १ उन्न ७

१८ मापा) । २ निप्रति दुग्र । १ दर्गशा

बुधे बरस्या । ४ वंगानिबत्त चित्रद्वा ( ११४

बुगाठि की दिमाचि दिम्पनि विद

दुमाध पू [दूरान्य] १ वताब कव । २ वि

हुमा<sup>द</sup>ध वि [द्रानिधम] दुर्गेन्यदाना (गुरा

दुग्गम वि [बुगम] को कटिन है ने पाना

दुगान । विद्यामी १ वटाइ लागे

दुरगान्त । अवस्थितियाँ ना नके का (परान

४ १३ धीय ७३ मा) चरित्रतगतिहरू

चराव क्यवाला दुर्गेलि (ठा ८ - पत्र ४१४-

१ १ महादा १ ४ मण्य २)।

दुगुणिज रेखो दुउणिस (रुमा) :

दुगुड ( रेवो दुधस (हे ? ११८ इसा

बुर्गुद्रम र् [दीगु दुक] एक सन्दि सभी

बुरुंद्धिय वि [जुरुप्रियत] प्रणित निन्दित

मॅलिपे द्वेषप (पर्ध र १--वर ४४) ।

हुपम र् [दुपम] एक बसार का कुर्कर,

1) ( हुरपट् ) पृष्टि इस्ती हानी वर्ष हि र. हुरमोही ४४ वर्ग भीर)।

द्वायर न [बुगु ह्] कुछ वर (ननि)। दुग्पास र् द्विमाँस] र्डान्स सन्त्र (हर

कुम्पहिश नि [कुनैदित] रे बु क से संबुधा । २ कराव शीति से बना हुया 'बुन्बर्रियमंच-धस्य न करों करो पामपण्डेरो' (ना ११ )।

द्वापद वि द्विपैटी को दुःच दे हो सके बह क्: मान्य (गुपा ६६) ६६१) ३ ব্ৰুগণায় বি বিশ্বাদ । মাধ্যাত (ৰামীৰ ৭৯ )।

हुत्रमङ्ग नि [बुर्मेड्] निवना भाष्त्रास्त बुज् ते हो एके वह 'पाध्यक्षीक्याक्याकेमखब्दन-हुबहिदा' (पर्राह १ १---पन ६४)।

(वय ७) । ब्रुग्राम्म देवो दुन्गिम्म (से १ १)।

दुमारक वि दुर्माद्य दुम हो विश्वक धक्छ दुःख से हो सके वह (सुपा २३४)। हुग्गुड वि [हुग्,ड] घत्यन्य प्रत, प्रति प्रच्यन्त

बुम्गास न [बुर्मास] दुनिज्ञ सकान (पिंड भा ६६)।

बुरगायेंकी क्रिक्जी मीर्च । २ देवी व्मादेह विदेश (यह देहे २७ **बुमादी** कुमा) । समग दं िरमण म्म्बाचेन दिल (पड्)।

पन्धौ (पाम सूपा १४≈)। २ वेकी-विशेष (र्णंड) । ३ परित-निरोप (मा १९) । हुस्साई की दिगादिकों १ पार्वती

बुगाइ वि [बुम इ] विषका बहुत कुल से ही सके वह (उप द ३३ )। हमा की दियाँ र पानंदी मीचे मिन-

नोइंदो जिल्ह्यमं नोहित्मं पूरमधं सहयं (संबोध ४) ।

(पास ठा४ १ -- पत्र २ २)। हुस्सम् न [दुस्त] १ विश्वताः २ दुवाः

हुमाय वि [दुरीत] १ वरित वन-दीन (ठा

सरिक्स (ठा३१)। क्षा गार्दा। २ कृषी विपक्ति प्रस्त

> रिक पुर यानध्य (पीठ- सुर ६ २६२)। तु**च्याका** वि [द्विप्रमूक] बायह बकार का **पूर्ण वार्** पश्चार्या, माशाचे भाग<del>ता</del> निही । दुरम्बरकारशाणि कस्मारश धम्मार्स परिकित्तिव<sup>®</sup> (भा ६)।

> १ राज्याकार १६)। हुचेद्रिय ग [हुरचेधित] बयन नेहर, शारी-

दुर्विष्ण न द्विर्धार्थी १ ५८ समस्य दुवारित । २ दूछ कर्म—द्विमा शाहि । ६ वि कुए शंचित एकवित की 🚮 कुए वस्तु (विधा

द्रविगिष्क वि [दक्षितिस्म] निसमा प्रती-कार प्रशिक्तम से ब्री मह (स. ६१)।

व्यक्षितिय विविधिन्तिती १ वर्ग विश्वित (सब्स ११ ६)। २ न व्याव किलान (पविष्)।

दावरस्त्रवाचा (स १ व) । बी. जी (मक्क)।

बुषार वि [बुआर] दुरावारी (गवि) । बुबारि नि [बुबारिन] बुधनारी बुध

२ विक्यवाये (देश ४४)।

(धाना)। ब्रमरिश्र न विकारिया १ चपच धाचयक्ष बुध् वर्तन (पश्रम ३०८ १२ छन प्र १११)।

इंचा से वो किया बाय गढ़ (क्य ६४० टी) वक्रम २२ २ )। स्थाद **१ िस्थाद | ऐ**सा प्राप्त या वेश जिसमें कुच्च से कावा का सके

दुवाय ) योग्य (कृमा का ७६= हो)। दुवर ) विद्विधरी (विसर्वेद्वासी दुवरिक्री कार्यायात नद्व (साना)। २

९ इचरित कु याचरखक्ता । ३ परप भागी नदा बोसनेवासा (वे १८ १४) । दुव्यका १ वि [दुस्त्यका] दुवा छे स्वाकी

पुरिविधित (के ४, ४,४ पाम) । हुर्चवाख वि [थ] १ कस्य-निस्त कावस्थीर।

बच्च देनां सोख = प्रितीय, प्रिस (क्रम्प) । बुवंडिश वि [वे] १ पूर्नेमित । दुनिवाम

बुध न विरिया (त-नर्ग सभावार प्रश्नुवाने भग कार्य (पाधा)।

मा) । बहुपू पिति पादीका व्यविपति या सामिक (धीव १०६ मा)। हुचिप्रवादेनो हुचिच्या (पि १४ औप)।

> शास्त्र हो वह (ग्रामा) । हुमानेसिम नि [हुर्वोकित] हुन से देनित (माचा)।

हुब्स्प्रसय वि [दु स्वय] निस्ता कर कर-

बुबस्तव वि [बुब्यांत] वितके विवय में बुद्ध फिला किया यमा हो यह (मर्थे १)। बुबम्बेसय वि [बुर्बोप] निक्की देश कर रें ही सके देखा (पाचा)।

बुक्षोइण ई [बुर्घोधन] इतरह का व्येष्ठ 24 (EL & S) 1 हुक्य विशिधी बोहने योग्य (दे १ ७)। बुब्ध्यम् न [बुर्जान] 😥 विकास (वर्ष १)।

दुकाश नि दिसीय दे की हो बोर्स बोरब (सवा ६४ मक्का)।

हुव्योच न [हुर्योच] बागीनका का मन (विशे १४६२)। दुक्ताइ वेंको दुकीइ (भवा १६ )।

दुव्याय न [दुर्यात] दुर नमन कुल्कित याँव (बाचा)। हुर्जित ई [हुपैन्त] एक शाबीन मैनकृति (क्प्प)।

हुव्यास वि दिर्जाती पुष्प से निकरने नेतन (से १२ ६६)।

धुक्रायन दि रे च्यान पष्ट द्वाब स्थाप (वेश-४४ से १२ ६३ पाछ)।

बुळाय वि [दुर्केय] को क्ष्ट है बीता का सके (जन १ ६१ की तुर १२ १६ सुना

बुकाण पू [बुकान] क्या पूर मनुश्य (प्रासू २३४ कुमा)।

बुधय वेमी बुम्मय (महा)। बुजीइ दृ[द्विष्ठिक व] १ सर्व सन्त । २ दुर्गन श्वल पुरुष (सद्दि ६३ श्रूप्या) । दुर्खांत देवो दक्षित (चन)।

तुद्धाच देशो तुष्यक्षक ( वर्ग १ )। बुबाडि पु विद्यादिन् विशेष प्कमहाय⊈ (ठा२ ३) ।

क्षीइने मोध्यः 'बुभद्द्या बीविमासा व' (वर्गवि 1 (v99 तुरक्षेत्र वि दिरकेद निका **क**ल बु खरी हो सके वह (पडम ६१ १६) ।

दुब्स्टेसिम हि [दुःस्पित] कप्ट से पासित बुक्तर वि ब्रिस्तर] दुल्तरखीय दुर्मच्य (सुपा ४७-११४ सार्व ६१)। (धाचा) । तुह वि दिए । दोप-पूक, दूपित (धोव १६ ३ पाध दुमा)। य्य पू शिसम् दुरु श्रीव पापी प्रास्ती (पदम ६ १३६ ७% १२)। बुद्ध वि दि द्विष्ट] हेय-पुक्त (धोम ७३७ क्य)- 'घरत्वदस्त' (गुप्त १७१) । हुद्राण न [तु स्थान] दुण बगह (सन १६ २)। हुट दु व [दुप्तु] बध्य वसुमार (स. २ दी निर १ १ सुपा ३१ वाई ४ ४ १).। हुण्मय देलो तुस्रथ (विक १७ सावम)। दुण्यास न दुर्नासन् दे स्वरोति धरमशः २ इप्रमान बराव प्राच्या । ३ एक प्रकार का गर्भ (भग १२ ६)। बुच्चिमाञ्ज वि [बून] पीवित बुच्चित (गा 1 (88 दुष्त्रिश्च क्यो दुझिय (पन)। द्वणिगमत्व न दि । वनन पर स्वित । थळा: २ जवन अधि के कमर के नीचे का भाम (दे ५, ५३) । बुष्णिक कि [के] कुषरित कुरावारी (रे ሂ ሄጲ) ነ दुष्पिक्स वि [दुर्तिप्कस] बहाँ हे निकास कष्ट-साध्य हो वह (राज ७ ६)। दुण्त्रिक्तित हि दि १ दुरावारी। २ कट संबोदेशाजासके (देश, ४३)। दुणिगक्देव वि दिनिश्चेषी कृष से स्वापन कटने बोग्य (मा ११४) । हण्यिकाह केवा दाश्यकोह (राज) । दुण्गिमिश दि [दुनियाबित] दृष्ट है बोड़ा हुमा (से १२, १६)। द्वणित्रमित्त न [दुर्तिमित्त] बचन शकुन मपराष्ट्रन (पदम ७ ६) । हुणियविद्र वि [दुर्निविष्ट] प्रचाही हते. निही (निष्क ११) । दुष्पिसीदिया की [दुर्निपद्या] कट्टजनक स्वाच्याय-स्वान (परह २ १)। दुष्पेव वि [दुईंय] निस्त्र शत कट्टसाव्य क्षो नह (उक्त १२८) क्य ६२०)। बुविविषक्त वि [बुविविध] दुस्सह को बु:बा से सहन किया वा सके वह (ठा ४,१)।

हुत्तकी और दिस्तटी र नगी। २ कराव किमारा वासी नदी (बस्म १२ टी)। दुन्तव वि [बुस्तप] नष्ट से वपने बोग्या दुःव से करने योग्य (ता) (मगी १७) । दुत्तार वि दुस्तार | बुत्व से पार करते योग्य, बुस्तर (स ६ २१८ ६ १ ) । दुत्ति स दि शोध, वसी (वे ४ ४१ पाच)। दुश्चित्रक्ता ) केनो दुनिविक्ता (पाचा दुचितिक्स ( चर्म)। बुक्तह पू [बुस्तुण्ड] दुमुख बुर्जन, (सूपा २ व)। धुकोस वि [दुक्तोप] विस्को संनूत करना कठिन हो बहु (बस १)। दुरय न दि विषय सी भी कमर के मीचे का भाग (देश ४२)। दुस्य वि दुःस्य] दुर्यतः दुःस्वितः (ठा ३ के धनि)। बुरय न विक्रिक्य देवींग इक्स्ता (नुपा २४४): 'नाह विश्वरसद्दावा हरित पुरुषेवि भीए (द्वा १४)। दुल्पिम नि [दुरिधरा] १ हुनीत विपत्ति-बस्त (प्राया ७५) वर्षि चरा)। २ निर्वत नरीन (क्रुप्र १४१)। दुरमुस्दंड वृंबी दि] भगक्तवीर, कवह-शीत (देर ४७)। श्री बा (देर, ४७)। हुस्कोम पू दि । हुमँक धमाना (वे ४, ४३)। दुर्देश वि [दुर्द्दिश] ब्यात १ ११ करने की धशस्य पूर्वम विश्वसम्पत्ता पर्वतर्वविद्या वेदियो वहवे (मूर व १३७) सामा १ १, धुपा ६८ ३ महा) । दुश्स वि दुर्वेस ] पुरानोक, जो कठिनाई से बेका जा सके (उत्तर १४१)। दुईसण वि विशेषीनी विषका वर्शन बसंध क्षो नक्ष (साव )। दुश्म वि [दुर्दम] १ पुर्वम पुलिवार (बूपा १४): 'द्रुरमकर्थ' (बा १२) । २ पू राजा चमकीव का एक <u>इ</u>स (शाक) ∤ दुरम पु [दे] केनर, परि का शोद्य चारै (दे ኒ ነጻ) ፣

दुविट्ट विद्विष्ट ही १ दुर्ग स्टब्से देवा ह्या। २ वि इए क्येनबासा (परह १ २-पत्र २१) । द्रशिक्ष व दिर्दिनी बादनों से ब्यास दिवस (मोच १६)। पुद्देय कि [बुर्देय] दुष्य से देने मोग्म (सन E (8) 1 बुद्धासना की दिवेगी मैया (यह)। दुइग्ली की दि कुल-वंदि, पेड़ों की कनार (वे १, ४३) पाप)। दुदः न [दुग्य] दूम सीर (विपा १ ७)। आइ को "वादि निवय-विरोप विस्का स्वाद तुम के जिसा होता है (बोम के)। समृद्ध व विस्तृत और-वस्त विस्तृत पानी इप की दर्श स्वादित है (गा १०६)। दुर्दम विद्ययस विस्कानारा ग्रहिस्ट से हो (सर १ १२)। द्रक्रमधिअमुद्द पृंदि वास शिवु क्रीटा अवका (देश ४)। द्वराधिशमुद्दी भी [दे] बोटी सहकी (पाप) । दुख्ही । की दिं] १ प्रसृति के बाद तीन दुदही रे दिन तक का बो-पुन्व (पमा ६२)। २ वट्टी काम के मिनित हुए (पण ४ —ना २२=)। दुबर वि [दुर्घर] १ पूर्वह, विश्वका निर्वाह पुरिषम से 🜓 सके बह (पएए १—पद ४ पुर १२, दर)। २ गहन वियम (ठा ६ मंदि)। १ दुनैम (दुना)। ४ दू रावल का एक सुमा (पाउम १६ ३ )। दुद्धरिस वि [दुर्घेष] १ विस्का सामना कठिमता से हो सके बीतने को ससक्य (पराह २ १८ कम्प)। हुद्धवत्तही की [दे] बानम का बाटा शनकर पकावा बाता हुव (पव ४---गावा २२८)। दुवसाडी की [वे] प्राप्ता निसाकर प्रकास वाता दूब (पव ४-पावा २२०)। हृश्चिक्ष न नि न्दू चीकी इवसती में 'द्वरी' (पाम) । दुबिएण शा ३ को दि । र तेन शादि रखते हुदिया ∮काबाबन । २ तुम्बी (दे ४, KY) I

Street at [4] ander and a	वे)। २ वि यो परानामा (युगरे १२ ४)।	प्राथमित क्षेत्र-क्षेत्र न किया पदा 🕅 वह
बार बोहने पर फिर भी बोहन किया का सके		(विचार ११)।
ऐसी बाम कामकेनु (६ % ६)।	दुपिक्रमाद्द् न [द्विप्रविषदः] दक्षित्रव का	
दुषा केवी दुषा (सर्वि १६१)।	एक सूच (हम ११७)।	तुष्पबिगर वि [तुष्पतिषर] विस्वारतीकार
हुनिमित्त रेबो दुण्यिमित्त (था २७)।	हुपबोमार वि [ब्रिपदावतार] दो स्वानों में	दुः च ये किया ना एके (बृह् १)।
हुक्तय दूं [बुनय] १ दुण् नीति कुनीति । २	किसकासमानेत् हो लके वह (ठ८२१)।	हुष्पविप्रवि [हुष्प्रतिपूर] पूरने के निप
धनेक वर्मेशली वस्तु में किटी एक ही	तुपद्योजार वि [विशश्यवतार] क्यर <b>व्या</b>	यसम्म (तं <b>र्</b> )।
बमें ही मानकर अन्य पर्में का प्रतिकास करते	(बर १)।	बुष्पवियार्गर् नि [बुष्पस्यानम् ] १ वो
बासाफ्दा(सम्म १६)। ६ वि दुक्र नीति	बुष्पाक्रिय केतो बुष्पमं क्रम्य (पुना ६२ ) ।	किसी तर्व्यक्ष संदुष्ट न किया वासके । २ वर्षि
सन्दास-नारी (तप ७६× टी)। नारिति	हुपय वि [द्विपद] १ वो पैरवला। २ वुं	नष्टचेतीलधीय (निपार रि—पन ११⊱
"स्मरिन्] सम्बाय मणीवाला (पुण १४६) ।	मनुष्य (लायः १ः धुपा४ ६)। ३ त	ਲਾ∀ ₹)।
हुसिक्स वैची दोनिक्स (वर 👂 ६ डी	कावी रुच्छ (कोव २ ३ था)।	बुष्पविचार वि [बुष्पतिकार] विस्का श्र <b>ी</b> ॰
विश्व के हैं।	तुपव पू [तुपर] कारिस्स्पुर श्रः एक राजा	कार 9, चर से हो सके यह (छा ३ र—≒न
हुक्तिसम्ब वि हिर्निसही विस्तर निवह हुआ	(छाया १ १६)।	देशको देददा वा देशभा वन् )।
से हो तके कह, सन्तियाँ (इप प्र ११६)।	हुपरिचय वि [हुप्परित्वज] इत्स्वव इज्ज	हुप्पक्तिह दि [दुष्पवितेस] वो क्षेत्र-क्षेत्र
	🖔 भ्रीको क्षेत्र्य (का ७६४ द्या रमछ १४)।	न देखाचाएके नह (पन बंध)।
दुनियोद नि [दुनियोय] १ द्राव वे जलने	दुपरिषयणीय वि [दुप्परित्यवनीय	बुप्पवितेहण न [बुष्पवि <del>तेश</del> न] <del>अन् वैन</del>
मोनव।२ दुर्नम (सूम १ ११ २१)।	दुष्परित्यज्ञ] ज्ञार देखो (कल)।	स्पर्धि <del>देखना</del> (मान ४) ३
दुमिमित्र को दुष्यिमित्र (भा २७)।	द्वपस्स वेची द्वप्पस्स (अ ६, १—पन	हुप्पक्षितेदिव नि [दुष्पविश्लेखित] श्रेष 🖥
दुक्तिय र [दुनीत] दुष्टकर्म दुष्टा, विगीत	984)	नहीं देवा हुंचा (बुपा ६१७)।
वैदेखिन पुत्रिकार्खि (सुध १ ७ ४) ।	हुपुत्त र्थ [बुच्युत्र] कुनून क्यूत (परम १६,	दुष्पविष्द् ति [दुष्पतिष्द ह] १ वहाने की
हुनियस्थ वि [दे] विट का नेयवला लिम्ब-	२१) ।	संस्कृत । २ गलने को सरक्ता (स्तका)।
नीव देप को बारख करनेवालाः नेवल वधन	बुपेरमा पि [बुध्येश] दुर्वर्थं, स्वर्धंतीय	तुष्पविष्ट्रण वि [तुष्पविद्युद्य] स्मर
पर हो वस-पहिंचा हुम्स 'सोए वि <del>प्रचं</del> छन्त्री-	(व्यपि)।	विको (भाषा) ।
निवं वर्धे बुश्चियत्ववद्वस्त्वं निवर्षे (क्व) ।	हुप्पद्म वुं [हुप्पवि] दुष्ट् लामी (श्रीष) ।	दुष्पनिद्दाल न [दुष्पनिधान] दुध्यनेद,
हुनिरिक्स नि [दुर्निरीक्स] वो कठिकारै वे	तुष्पश्च वि [तुष्पयुक्त] १ दुश्यक्षेत्र करते-	भन्नुम् सबोग द्वाक्सदोग (इस ३ १ दुपा
देशा वा क्षेत्र वह (क्ष्या भारे)।	शाचा(छ २ १—-थम ६६)। २ विसका	(K ) (
शुक्रियार वि [बुर्नियार] रोक्ने के लिए	बुक्तमीय किया क्या हो बह (क्या वे १)।	हुप्पणिविष वि [हुध्यणिवित] प्रवाहक.
भरात्य निवका निवारका धुनित्रण हैं हो	तुष्पश्चिम ) वि [तुष्प्रज्ञस्तित] <b>सेव-शेव</b>	विष्टका पुरुषयोग किया बता हो यह (सुपा
को वह (नुपा ११३) महा)।	तुष्पद्धः जिल्ला विकासकार्थः (स्वाः	XX4) :
दुक्तिवारणीय वि [दुनिवारणीय हुनिवार]	वेचा १)।	बुप्पगीहान देवी बुप्पणिहाण 'क्यसावह
द्वार क्यों (स इंदर्ग करें)। विश्वतिकास स जिल्लाहरू	दुष्पञीम ई [दुष्पयाम] दुस्पयीय (स्व ४)।	सीवि दुव्यकीकृत्यं (तुपा ५११) ।
प्रशिक्षण्य वि [बुर्नियण्य] कथव शीर है	दुष्पभोगि वि द्विष्ययोगिन् दुस्तरोप	बुष्पजोश्चिय नि [बुष्पजोश्च] दुस्तव बोहरी
देश ह्या (छ ६, २—वर्ग ११९)।	करनेनामा (पस्र १ १पत्र ७)।	को समोत्य (सूच १.६ १)।
प्रुप देशो दिझ≕क्षित (एक)।	बुष्पक वि [बुष्पक्ष] देखो बुष्पबक्ष (बुपा	दुष्पक्रमपिस्स वि [दुष्प्रशापनीय] कष्ट
	Yet)	वे अचोचपीन (प्राचार, ११)।
हुपन्स वि [द्विप्रदेश] १ वी सनवनतता ।	हुप्पनसास नि [दुप्प्रशास] निक्या असा	दुध्यवर् वि [दुध्यवर] दुस्तर (दूस १
२ दू. बप्युक्त (बच १) ।	सम कष्टलाच्या ही बहु (पुता ६)।	x t) i

**पाइअमहमह**ण्णयो

(भव १, ७)।

भूपण्डिय वि [विप्रवेद्धिक] वी प्रवेदनाता

तुपक्कापु [तुष्पद्य] द्वष्टपद्य (पूच १ ६

दुपनकानः [द्विपक्ष] १ वो पळ (पूप १ २

2740

**₽**) ι

दुकायहि । ई [दुग्योदिधि] समुद्र-विशेष दुक्कोदिहि | विश्वका पानी दूव की शख

स्तादिल है बीरसपुत्र (बा ४७३ का २११

दुशोईणी की दि ने-विशेष विश्वी एक

तुक्रीमहि--शुप्पतर

हुप्पबृष्पेनिस्तम नि [हुप्पस्तुक्रोशित] क्रेक्-क्रीक नहीं देशा हुपा (१व ६) ।

बुप्पजीवि वि [बुद्धजीविम्] दृश्व से जीते-

तुष्पविद्यंत वि [दुष्प्रतिवास्त] विस्ता

नावा (वस्तु t)।

दुष्पर्दस वि [दुष्प्रध्यंस्य] विसन्ध नारा

कठिनार से हो सक वह (खाया १ १०---

तुष्पद्धंस वि [तुष्प्रभूष्य ] धनेव, दुनैव

तुष्पह वि [तुष्प्रम] यो दुष्प से सुक्र सके

वत्र २३६)।

(लाबा११०)।

सफानहीं करना (वर्ग ३)।

હિવરિં≭)ા

ुरपर्चस वि [दुष्पपर्चे] दुर्वर्व दुर्वेव (उत्त

दुप्पमञ्जग न [तुष्पमार्जन] क्षेत्र-शिक

हुरपमध्जिम वि [सुध्यमार्जित] मण्डी तथ्

से सफा नहीं किया हुया (सूपा ६१७)।

दुष्पय देखो दुषय = द्विपद (सम ६ )। बद्धाः दुर्वेम (मोह् ७२)। दुष्पवार वि [दुष्पचार] विश्वक प्रचार बुष्पाय म [बुष्पाप] सा-विशेष, पार्वविन इए माना पाता है वह धम्याय-पुक्त (कम्प)। त्तप (संबोध १८)। हुव्यरक्डन वि [बुस्पराकास्त] दुरी तख बुच्चित्र र् दुर्द्धित् दुर्ग पिता (मुपा १८७ से बाजन्त (धाना) । भवि)। द्रप्यरिजल्फ नि [वे] १ प्रशस्य (वे ४, ४४, ह्राच्यिच्**क देशो दुपेच्छ** (पुर २ ४) पुण माचासे ४ २६।६ १८। मा१२२)।२ त्रिपुण कुलुना । ६ सनस्यस्य सम्यास-पहित दुष्पिय वि [दुष्पिय] वर्षिय । वसासि (R 2, 22) 1 वि िमापिन् विप्रय-वद्य (सूपा ११४)। बुप्परिक्रा वि [बुप्परिक्ति] प्रपरिक्ति दुष्पुत्त बेबो दुपुत्त (यस्म १ ६, ७२) शक्ति (音 23 (音) 1 कुम ४ ३)। दुप्परिकाय केवी दुपरिकास (बन्न =)। तुष्पर वि [बुष्पर] को कठिनाई से पूरा द्रुव्परिणाम वि [ द्रुष्परिणाम ] विश्वका कियाचासके (स १२६)। परिखाम कराव हो। बुविपाक (मवि) : दुष्पेक्क रेक्षो दुपेयद्ध (एए) । तुष्परिमास वि [तुष्परिमर्य] क्रृश्-साव्य द्रप्येक्सजिस वि [पुप्येक्षणाय] कट वे स्मर्गनाचा (से १ २४)। क्रांगीय (गठ-नेखी २१) । हुप्परियत्तण देवो हुप्परिवत्तण (तंद्र) । हुप्येष्ण्य 🝽 हुपेष्ण्य (महा) । दुप्परिस्छ वि [वे] दुराक्यं धावितिस तुष्पोखिय केलो तुष्पउद्धिक्ष (भा २१)। दुप्परिस्थित से इंप्स्रा प्रमु आहा (बा १२२) । दुप्पन्न वि [दुप्पन्त् ] ब्रुरिक्त से फटने बोग्य (ति =६)। कुप्परिवक्तम वि [कुप्परिवर्त्तन] १ विद्यान परिवर्तन कुना से हो सके बहु। २ ल. सून्य हुप्फरिस : वि [दुःस्परो] विसका स्पर्ध बायन चुण्कास हो वह (पक्षम २६, ४६, १ १ से पीचे बीटना (र्दंड्) । द्वमास केश हो द गर) हुटमर्बन र् [हुच्मपद्भन] हुट प्रपेन (स्थि)। हुप्पनम दे [हुष्पनन] हुए नमु (प्रति)। हुफास नि [द्विस्पर्श] लिग्न भीर छीत दुष्पमेस वि [तुकाबेश] बद्दा कर से प्रवेश मावि प्रविद्ध थे रुग्तों से गुल (भग) । हों सके बह (यामा १ १ पटम ४६ १६) बुक्बक वि विकेत स्थान राहि है वैशा स रशः पुपा ४११)। तर वि ["तर] ह्मपा (बाचा २ ६,३) : प्रवेश करने की सन्तक्त (प्रश्राह १ ३---दुष्पक्ष वि [दुष्पक्ष] निर्वेष वस-हीन (विश पत्र ४५)। १ का सुपाद ३ प्रासु२३)। पृक्तकृत कुप्पसद् वृ [कुप्पसद् ] वंचम मारे के मन्त भिक्त पुन [ अस्यवभित्र ] दुवंच को मक्द में होनेवाना एक वैन भावार्य, एक सावी करीयाला (ठा १)। वैत सूरि (छा = १) : हुष्त्रक्रिय वि [हुक्छिड] हुवैस विवेस द्वप्पस्स वि [दुर्वंद्वं] को सम्बन्ध से (क्य १२२)। पुसमित्त वृष्टिय रिक्रमामा चासके नह(ठा १ १ टी---सित्र] स्वनाम-प्रक्रिक एक वैन ग्राचार्य पथ २६६)। (হাভা **ধী**ভ)।

तुरवलिय न [दीर्यस्य] सम बाक पदावट (बाचा२ ३२३) । बुक्युकि नि दिस्कि र बुए बुक्निना श्राच नियतवासा (उप ७२८ सुपा ४४) २०६)। २ की क्षयम दुद्धि दुग्निमत (पा १४)। दुक्बोस्स पू [दे] ज्यासम्य स्वह्ना गा प्रताहरा (वे १, ४२)। दुष्य पि [सुग्भी रोहासूमा। २ त. बोस्प (प्राष्ट्र ४७) । दुक्श देखो दुइ ≔ बुह्ः बुक्सन वि [बुर्सन] १ कननतीय समाया । २ बाजव बनिट (पर्यहर २ प्रासू १४३)। जाम नाम न ["नामम्] कर्न विशेष जिसके जबय से उपकार करनेवाला भी लोगों को भाग्रिय होता है (कम्म ! सम ६७)। क्रिप्त 👊 🖺 रूप 🛚 दुर्मंच बनानेवासी विद्यान विशेष (सूच २ २)। तुष्याग न [दीर्माग्य] दुर्मनता नोक में यप्रियता (पिक १ २)। दुष्मर्राण की [दुर्मराणि] दुष्ट से निर्वाह, **ब्**रिट धनग्राकी देखि **दुन्भरती** पड्ड दुद् बरस्साबि' (सूपा ३७ )। दुरुमान पूर्विमान रिहेम परार्व (पटन <६ ६१)। २ जस**र-मार करार-प्र**सर पिमुखेश व केश कमो दुक्सकों (सुर ६ 1 (23 दुब्माय र् [द्विमाय] विभाग पूराई (दुर दुषभाष 🙎 [द्विभाँष] द्वित्व बुक्तारन (बेह्य ब्रुव्मासिय न [ब्रुमीपिव] बराव नवन (पडम ११५ १७ पवि)। बुक्तिय पून [बुर्सन] १ वरान कव (सम ४१)। २ वि मसुब, **व**राव समुन्दर (ठा १)। ६ वि चारान पन्नवाचा वृर्पीन (धाण) । सैय ["सम] पूर्वोच्य क्षी सर्वे (अर धाचाः खाया १ १२)। सद वृत [शब्द] कराव शब्द (खावा १ १२)। तुबिमक्स पुन [दुर्मिश्च] १ दुष्त्राल शकान बृष्टि का बनाव (सम ६ ) सूपा ११८) न्यासले रहारंपे यूढे बंदे दक्षेत्र दुव्यासको ।

हुन्म देश की [हुमैहिस] दुप्ट की (वीव

बस्त 🌃 बीन्ज्या सी पुरिसी महीयवे विक्ती (सम्बाधन) । कृषिता कामध्य (ठा १ २)। ३ वि बड़ी पर फिरान मिल लो यह देश साथि (द्वा १-- पन ११०)। दुव्याज्ञ रेवी दुव्याज (परम = १)। दुस्मृत्र की [दुर्मृति] धरीवर धर्मकत (1 1): बुक्सूय र्न [दुस त] १ नुरशान करनेवामा कल्ल-हिड़ी वकेटड (सप इ. २)। २ ल्. प्रतिष धर्मक्न (बीर ६)। दुष्म्य वि [दुर्मृत] दुरावारी (क्त १७) दुरभाव दि [दुर्मेष] तीक्ष को सत्तव । (पि ४ २८७ नाट-मृच्य १६६)। दुष्भय वि [दुर्भेड़] कार देवी (सर्व) । द्वमग रेनी दुवमग (नव १६) । दुसय न [दूसय] वर्डनान और बाकानो । बन्द 'दुबनहुर्गुगनी' (मा २७)। दुभाग र् [द्विमाग] भाषा धर्व (सग १)। द्वम सरु [भवस्य्] १ तर्थ्य करना। २ पूना मारि से पीठता। पुनद्र (हे ४ २४)। रुपम् (ना ७४७) । नक्क तुर्मत (दुना) । हुम 🕻 [इस] १ वृक्ष पेड़ बाद्ध (दुसाः श्रामु ६ १४१)। २ चयरेन्द्र के पद्यति-सैम्ब काएक धविपति (ठाइ, १—पत १ २० इतः) । १ यत्रा वैशिक नाएक पुत्र, जितने जनबाल महाबीर के पाल कीया नेरर यनुष्टर देवबोक की बद्धि द्राव की बी (सनुर) । ४ व. एक देश-दिनान (धन १३) । अन्त न ["नान्त] एक विद्यालर मनर (६४) । यस्त न [प्या १ कृत ना वता। २ 'उत्तराष्ट्रयम नून का एक बास्त्रम (शत १)। पुष्कियां की ["पुष्पिशा] 'कार्यकालिक' जून वा न्यूना सम्मयन (वस t)। रापर् [राज] क्लम क्ल (स. ४ v)। सत्र र्द्रीसन् र एक वेशिह वा एक पूर्व निवने क्यावान सहस्तीर के बात दीया नेकर अनुसर देवनोक में बर्जि ब्राठकी वी (ध्युक्त) । क्षत्रवें बत्तवेव बीर मानुरेद के पूर्व-जन्म के धर्व-पुद्र (श्रव १२९ नडम २ (०४) ह

442

तुर्मनय पू कि] केल-अन्य धन्तिका—वीधी बीटी, बुक्त (दे ४, ४७) । दुस्त्य व [श्वस्ता] चुना यात्रि से लेपन क्षकेद करना (परहु२ ३)। दुमणी की 💽 गुका, मकान वादि वीवने का धेत प्रव्य-किरेय चूना (वे ३,४४)। दुमक्त वि दिमात्री से मानायामा स्वर मर्ग(दे१ ६४)। दुमासिय वि द्विमासिको वो मान का वी यास-सम्बन्धी (हरू)। हुमित्र वि[घश्तित] पूना यर्धि से योजा ह्या उद्धेद हिया हुआ। (गा ७४ दुमिस देवो दुम्सिस (निष्)। हुनुहु र्दु [द्विमुम्ब] एक चर्याप (उत्त १)। दुमुद्द देवी दुम्मुद्द = दुर्गृष्ठ (पि ६४ )। हुमुद्रुच ईन [हुमुन्ती] बपन मूहर्ग दुरु सपय (नुवा २३७)। दुमोक्स्य वि [बुर्मोध] जी दुन्त वे क्षोद्य कासके (सूम १ १२)। तुम्म देवी दम ≈ शाच्यु । दुम्पद (धर्षि) । बुर्मिति बुरमेति (वा १७४; ३४ )। कर्म बुन्मिच६ (वा ६२)। दुम्मद्र वि दुर्मति । शुरीक, दूर दुविकामा (भारक सुपार ११)। बुम्मण्यी की वि] भयतानीर की (रे रे, ४७) वर् )। बुस्सम वि [दुर्मनस् ] १ दुर्ममा विच्य मनस्क क्रीहान-चित्त क्वाम (निपा १ १३) भूर ३ १४७)। २ श्रीत श्रीततापुतः। ३ प्रिष्ट **शेष-प्रक** (ठा३ २—पत्र १३)। इस्मण वह दिर्मनायू विदेश होना बदास होता । दह हुम्मणार्थन तुस्मणा-यमाय (नार-नहानी ११, भारती १२ : रवस्य ७६) । दुरमणिअ न [दीर्मनस्य] क्यापी बहेन पिन्दा वेपैनी (स्त **१** ३)। बुर्म्माणअ न [दीर्ममस्य] दुर ननो शह बन रा दुष्ट विद्यार, दुर्यनता (का १, ६ दुम्मय र् [इमड] किसरी शैक्तना (सा w (Y) i

1 (B x3x दुश्मात्र प्रदिर्मानी भूठा ग्रीमान निन्धि वर्ग (धन्द्र १४)। बुस्मार दे [बुसार] विषय मार, वर्षकर ताइन 'बुम्मारेल मधो शोषि' (भा १२)। बुम्मारि औ [दुर्मारि] रूप्ट माध-धेव (इंबोध २) । तुम्मारूप पूँ [तुर्मान्त] हुप्त परत (धरि)। दुन्सिक वि [दूम] कारापित, पीदिव (या ७४४ २२४४ ४२३ स्थी कार ३ ) । तुम्मि**ड कीन** [दुर्मि**ड**] क्ल-निरेव। सी स्य (निंग) । बुम्भुह देशो बुमुद्द = प्रिपुत (यहा)। दुन्हाइ ई दुर्मुल विवदेशका बाराधी देशी से बल्लन एक पूत्र जिसने सपनात् नैमिनान कै पान रीसा सेकर दुक्ति गाउँ थी (संद ६ पएइ १ ४)। हुन्सुइ ई कि महंट, बालद, बन्बर (वे ४, हुरमद वि [तुर्मेषस् ] दुर्गेक दुर्वति (पण्ड 1 (8 1 बुम्साम दि दुर्मोको दुव वे होहले बीरय (यदि २४४)। बुवजु देवी हुअणुअ (वर्षतं ६४ )। हुरद्रदम वि [दुरनिक्रम] दुर्नम, जिसका कर्मकर दुःब-साध्य हो बहु (माका) । **बुद्धमानिज्ञ नै [बुद्धिक्रमणीय]** जार देखों (सामा १ १)। दुरंत वि [दुरमः] १ विश्वका परिकाब---रिनाक खराव ही यह, जिल्ला पर्यन्त कुछ ही वह (ताचा १ : परह १ ४---पत ६ शास ७१ वर्ग)। २ विक्रमा विकास क्य:-साम्य हो वह (र्तर्) । हुर्रव्द वि [वे] इ.च के प्रतीर्थ (वे १, ४६)। दुरमण वि [इस्स] दिवसी यवा करना करिन हो वह (तुगा १४६) । दुरकार वि [दुरझर] पूरा वदोर बड़ा (वधन) (सर्वि) । । हुरगम्द ई [दुरामह] नरावह(दुप्र १७१)। दुरम्भवांसय न[दुरम्पनसित] दुप्ट विनान (तुवा ३७०)।

दुरणुपर वि [दुरमुपर] विश्वस पनुग्रल विक्ता दे हो सके वह दुग्गर 'एमो वर्डण धम्मो दुरगूबरी मेवनताएँ (गृर १४ ७१ धा १ (-पत्र २६६ छावा १ १)। हुरणुपाल वि [दुरनुपाछ] जिसवा पानन बर्ध-साप्य हो (बस २३) । हुरत्प र्षु [दुरारमम्] दुन्ट मारमा दुर्जन (दावहा)। हुरस्थाम र् [दुरस्थाम] चरात्र धारत (नुत्त १६७) । हुरांभ देती दुविम (प्रणु परम १६ ६ १२ ४४ पणहर शोधाचा)। हरिस्ताम वि [दुरिस्ताम] १ वहां दुःच वे गमन हो सके बहु वय्टनस्य (छ १ ४)। २ दुर्वीय क्ट से को जाना का नके (सब)। हुरमच वू [हुरमास्य] रूप्ट मंत्री (रुप्र 1(\$35 हुरवगम रि [हुरवगम] दुवीव (गुत्र ४०) । हुरवगनम देवी हुरवगम (बेरव २४८) । दुरपगाद वि [दुरपगाद] बुप्पवेश वहाँ प्रोध करना पटिन हो बद्ध (दे १ २६) सम (YZ) 1 हरम रि [ब्रुस] ययन स्वारतना (का शाबा १ १२ ठा ८)। हरमण र् [हिरमन] १ छ । वाप । २ बुर्जन दुष्ट नदुष्य (नुपा ६६ )। हरदि देवी हुरभि (का ७२० में छंदू)। दुर्राद्वाम ध्वो दुर्राभगम (तम १४३) विधे द्वरदिगम्म नि [दुरिभगम्य] दुत्रा है बानने बोरब दुवीय 'बन्दर" रि स वयशमग्रह भीता दुर्घत्यम्बा (नम्ब १६१)। दुरदियास वि [तुरध्याम दुर्शवसदी दुरगट् की बष्ट से स्ट्रम वियो का शके (गाया १ १) धावा का १ ११ टी स 1 (02) दुखगर 🖠 [दुखनन] श्लिबर देश दा एक रामा (परम १८, ४%) । दुरापुणकार [दुरशुपर्ति] विकास ब्युत्तर्वत बर्श-बन्ध्य हो बद (बब ६) । दुराय व [ब्रियात्र] को छत्र (छ ३,३३ यम्)।

वस्त्रवार वि [ब्रुसंबार] १ ब्रुसंबाध द्वष्ट बुरुत्त न [युरुवत] दुगोक्ति, हुट वयन धावरणवासा (मूर २, ११६ १२ २२१। (सार्थे ११)। केली १७१)। २ दूर्यमुख्यापरण (भवि)। दुरुच वि [द्विरुक्त ] १ यो बार वहा हुया इरायारि वि [इरायारिन्] उत्तर देखी पुनबक्त । २ की बार कहने योग्य (रंमा) । (भवि)। बुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुरुष, दुर्मम्य दुराराह् नि [दुराराघ] निसम घाराचन (सूम १ ३ २)। २ न दुष्ट उत्तर, धयोग्य द रा से ही गके वह (कम्प)। जनाम (द्वे १ १४)। दुरारोह वि [दुरारोह] विस पर दु स से बहा दुरुषर वि [द्वि उत्तर] यो वै प्रपित्र । सव जासके वह, दूरम्यास (बत्त २३ ना४६०)। वि[रास्त्रम]एक सी दावा १२ वा द्वाक्षात्र र् [व] विभिन्न, च मगर (वे ६, (पतम १२२४)। दुरुचार वि [दुरुचार] दुन्य वे पार करन दुराक्षेत्र वि [दुरालोक] वो दुःच 🐧 देवा बोग्ब (बुरा २६७)। क्या सुद्रे देखने की श्रष्टाय (से ४ का दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] निसका उदार कठिनाई पुरमा) । से क्षेत्र वह (सूम १:२ २)। दुराक्षेत्रण वि [दुराक्षेत्रम] उत्तर देखी, दुरुपणाय वि [दुरुपनीत] विस्ता उपनय 'बुरल्तोक्लो दुम्मुहो रत्तनेत्तो' (मबि)। बूबित हो ऐसा (उदाइएए) (दसनि १)। दुरायह रि [दुरायह] दुर्थे हुर्यह (परम दुरुवयार रि [दुरुपचार] जिसका उपचार ta t) i **च्छ-साप्य हो ब**ह (तं<u>द</u>)। द्वरास वि [दुरारा] १ दूर पारामना । । दुरुव्याधी [दूर्या] दूर विशेष दूर (म २ शराब इन्द्राबाला (अबिः एखि ११)। १९४। यम २१८) । हुरामय वि [दुराशय] दूर पाश्यका दुरुद्द वर [मा+रुद्र\_] मास्य होना (मुपा १३१)। चदना। दुरहर (ति ११८। १६८)। बङ्ग दुससय नि [तुराप्रय] दुन्य हे जिल्हा दुरुद्माण (प्राचा २. ६ १) । संद शास्त्र विया जा सह वह साध्य करन की तुरुदिचा तुरुद्धिचार्य, तुरहेचा (मव मदाःग (पग्द १: ३ थतः १) । महा पि १८१ ४८२)। हुरासय वि [दुरासद] १ दुध्याच्य वृत्तंत्र । तुरुढ वि [आन्ड] प्रविष्टर् कार पहा २ दुर्जय । ३ दू सह (दस २ ६ राज) ह्या (जाया ११२१ मीन)। दुरिभ न दिरितीयात्र (पायः नुपा २४३) । दुरूप वि [दूरूप] १ संचव स्थापना कुरूप दुरिश न दि ] हुन शीम, जल्दी (बष्ट् ) । बुदोल (ठा = भा१६)। २ मनभूद का वर्षम (गुक्त पूर्णी मा ३१७)। दुरिप्रारि ध्यै [दुारतारि] मन्त्रान् धंमानान हरूप रि [पूरुप] मगूषि धारि ससर गर् भी शासमध्यी (संति ह) । तुरिमन वि [बुरीसा] रेगने वी प्रशस्त (गुष १ ६, १ २ )। तुन्द रेली दुन्द । वी दुन्दिश्च दुन् (बुका) । दुरिट्ट न [बुरिप्ट] सराय नग्रत्र (शानि १ दिया (नूप १ १ २, ११); 'अल ग्रामा तिरित नारं नारपंत्री पुरुद्विया' (सूच १ दुरिष्ट्र म [दुरिष्ट] सचय यज्य---धाय(दर्गान 1 ( 7 95 1 (2 9 9 दुरुद्व व [आध्दा] व्यविधान क्रार दुरक वि [व] बोहा बीबा हुमा दीह होड चर् बेटना (स ६१) : न नी कीमा हुदा (स्राचा ३१ €)। , हुरद् र्र [निरफ] प्रमद, भीत (राम है दुरहुत रप [प्रमू] र प्रमुप करता 1 (43 3 पुरमा । २ वेंगर्र हर्र चीन की योज में | दूराभर न [दूरानर] बुद्ध यत (राय) । बुबना : नष्ट दुरदुर्गन (नुर १६, २१६) : े दुरादर देनो दुराप्तर (रर्गर २६) :

तुसंप देवो दुर्हम (मनि)।

बुक्सियों (बुक्त २१६)। () ( बुद्धसभा यो [दे] सभी, नीक्सनी (हे ३ तुद रि[दुर्सम] १ दुरुर विगरी शक्ती विध्नाई में हो बा (स्टल ४६) कुमाः भी ६ अरमू १६ ४६३४७) । ३ विकस

४ केंद्राप दुरिस्थित (पाछ)। १ म. कुरारा। दुर्गेन वस्तु वी स्वितारा (महानि

বিহুদ্টাৰি বৃদ্ধ পতায়ী। बीट प्रमुपी नि गुर्म शैलुडएरिक-

२ दुर इच्छाराता 'नितस्द नेशास विदे विविद्वारणामेदि दुव्यमियो वीलह दुर्श्याय मस्यरीनार्य (तुपा ४०३) ३२ )। ३ । स्पर्मानी भाष्ट्रातानाः 'पन्ना सा पुन्तुः रिसर्विम्मकः

(बुका २१६) : बुक्तम ) रेपो बुक्द, कि युक्रमं वर्छ। द्रवाम । प्रणायामी (वा १७६ निष् ११)। बुद्धविभ नि [बुद्धविन] १ दुर्श्यव्याला।

द्रद्वरगति (दे) प्रस्टमन अञ्चल (दे ६ ¥1): दुस्ता न दुर्भेम] दुर तान दुर क्रुरी

**१६:** वजा १३६: मा २०): २ जो कठि-मार्दि के बाना सके (कप्पू)।

१६२) तुरा १६३) चल्)। हुद्धक्य वि [बुर्केस] १ दुनिक्षेत्र, जो दुन्ह से बाना वा क्ले बनस्य (8 < ६३ स

४१ हेरा ३१ दुर २,७८)। हुइंग दि [दुस्तेम] दुराप दुष्पाप्य (ज्य द्

हुछ त [दे] दब, काहा (दे ६, ४१)। द्वर्षंप नि [दुर्कक] निसना स्वांतन बढिनाई से हो सके वह समयगीय (परुष १२ इन्ड

क्षपु १३२)।

६१७) । देवी तुस्रह । हुन्ति पुंधी [दे] कच्चर क्यूबरा (दे १, ४२

दुर्सम रेबो दुर्द्धम (पवि)।

दुसर्वि [दुर्सभ] १ ज्लिकी शक्षि दुख से ही पड़े यह (कुमार बराबर प्रास् १३४)। २ पूँ. एक वरिएक-पूत्र (तुपा

प)।

री)।

१४६ से)।

(स्य १४४ थै)।

(बजम १६, ११) ।

दुवर्क सी द्विपत्री कन्द-विशेष (स ७१)।

दुषान (बाबन) उपताप वीकृत (पद्य १

दुवच्या ) वि [दुवर्ज] श्वराव स्थवाना (श्वर दुवना ) वा )।

भुषय पू [इपद] एक राजा, डीपधी का पिता

(श्वादा १<sup>९</sup>६ वन ६४८ टी) । सुवा की

िसना विषयन-वर्णी हीतथी (उस ६४०

हुबर्शनका की [हुपदाक्षका] एवा हुग्द की

लक्की हीनकी पाएककों की पत्नी (प्रप

तुषयंगरहा की [हुपदाहुनहा] उसर वेदो

बुबयण न [बुबैचन] बराब रचन, दुर बर्फ

तुबयल न [ब्रियचन] दो का दौबक

व्याकरण-प्रसिद्ध प्रश्वद, दी बंक्या दी वाचक

विवर्षि (हे १ ६४ ठा ६ ४—यम १६८)।

बुबार 🄰 वेको बुझार (हे %, ११२ प्रति

हुबाराथ 🕽 ४१) बुपा ४००)) 'एवडुबायए'

(इस)। पास्र र्र ["पास्र] ११शन प्रतोहार

(तर १ ११४३ २ १४)। बाह्य 🕸

[भारा] हार-भाष (बाचा२ १ **१**)।

द्वारि विद्विरिम् । १ 🛊

दुबारिज रि द्वारिक दरवामामना, धर

दुपारिश्र र् [शीरारिक] शरशन हारशन

दुपास्थ्य त्रिज [द्वादशम्] बाद्य ११

(बच्छ) दूषा)। सुद्धिताझ दि ["सीहृतिह]

बार्ट्स् पूरुर्जी का विध्याल राजा (सम ६६)।

"निह्नि ["विष] वास्त्र दशरका (तत

२१)। हाब ["बा] कटह प्रचार \*\*\*

(देश १६ ३ सीन ६ मुता २६ )।

दुराची वर्ष्टि बच्छा' (मुपा २६६) ।

पुरवद्गारिए" (कस) ।

रामान प्रश्रीद्वार भूगरिशायी वसी राव-

एक प्रसिद्ध राजा (पु १)। राग पू [राज ] नहीं धर्न (सार्व ६६१ कुछ ४)। लोग वि किन्मी विस्तरे प्राप्ति कुछ से ही सके वह (परम १६ ४०) पुर ४ १२६)

१ €) ।

देव (सम ११४)।

पच २६६)।

दर्द हो) ।

१४३ वस १)।

२ पह)।

भा २६)।

बुक्बम (पहड़ १४)।

यातम-शन्त 'भाषाचीव' भावि वाच्य सुत्र प्रत्य (सम १३ 🛊 १ २१४) । 🛍 . नी (राम) । बुकास्परित वि [ब्रायशाबिक] वाधा संक

इन्बें का वानकार (रूप) ।

बुवास्थ्यम वि [ब्राव्य] १ वाय्वाः १ न व्यातार पाँच दिनों का अपवास (भाषा: क्षाचा १ १३ ठा ६३ ठउ )। इसै. भी (एम्प

दुनिङ १५ [द्विप्रत दिनिष्टप] १ भवा

दुनिद्दु∮क्षत्र में इस अवस्थिती वाल में

जल्पचित्रदेशको स्थाप (सम्हरूद

टी' पढन ६, १६६)। २ वटा-क्षेत्र में छत्त्रज्ञ

**होतैनासा प्रक्रशं घर्ष-वज्री श**वा एक नातु-

हुविभक्त वि [हुविमान्य] निवका निवाप कला कठन हो रह—परमायु (स ६,१—

तुविसम्ब देवो हुन्दिसन्द (क्ष. १ दो)।

हुवियद्द्र वि [दुपिंदरव] दुस्तिवित जान-

काये का कुछ सनियान करनेवासा (का

दुवियप्प र्थु [दुर्वितस्य] दुः वितर्वं (प्रवि)।

हुविक्य पूं [हुविक्षक] एक प्रवान देत 😘

(१ 🐒 विसय-सञ्च्यु<del>रस —</del> (पद २७४) ।

दुविद् रि[द्विय] दो प्रकारना (दे र

हुबीस कीन [द्वाविश्वति] बाईब २२ (ना

तुक्तपत्र हेको दुक्पन (पद्म ४१ १७)

हुरूपंप व [तुर्हेत] १ दूर विषय । ९ पि

हुए वत नरलेराला । ३ वय-पदिच नियन

दुव्यपत्र न दिसेवत] दूर विक, शहर

बचन (पत्रय ३३ १ ६, विदेश र । पर

बुब्बनम् व [दुब्बेसन] धरार वारत परे

विज्ञा (ठा४ के क्या १ १)।

व्यक्त देशो द्वत्र (नहा) ।

१४ ८१)। विश्व न शिवरी नायह बानर्जनत्वा वस्तव, प्रकाम-विदेव (सब २१) । दुवाखर्संग ध्येत द्वित्रशाङ्गी वादा वैत दुरुषद् वि [दुर्देह्] दुर्वर, दिसवा वहन दुरमंचार वि [दुरसंचार] कार देवी (पुर धवज्ञ (या १४८। पुर १ १४४' १४ वर्गिमारि हो सक बहु (स १६१) सुर १ २१)। 5 66)1 कुक्तिसोरम रि [दुर्पिहोप्य] रुद्ध करने को दुस्भव दू [दुष्यन्त] चन्त्रशीय एक समा, हुश्या देशो दुरुस्वा (हुमा: नुर १ ११४) । राष्ट्रचा रा पवि (पि १२१)। घरास्य (वंचा १७)। दुष्याइ वि [दुषादिम्] यत्रियरका (स्व हुब्यिहिस न [दुर्विहत] हुए धनुहान बुरसंबोह हैंव [दुरमंबोघ] दुर्बोध्य (मन्त्रा) । ٤, ٦) ١ हुस्माम् हि [दुस्साध्य] हुन्तर (गुरा व (रम्पूर १२)। दुव्याय र् [ दुवार् ] दुवंबन कुछ बन्छि द्रस्थिदिय वि [दुर्विदित] १ एएव धीत हे XEE) I 'बक्छेलुबि दुष्पाची न य बादकी परस्य विया हुवा दुव्यिह्यविकानियं विष्टिएरे दुस्मणगण्य देखी दुमझस्य (इट् ४)। पीडयरों (पतन १ १ १४६)। (मूर ४ १६ ११ १४३)। र धगुनिहित दुम्मच रि [दुस्सस्त्र] दुवरमा दुर नीव हुज्याय दूं [दुबान] दुरु पवन (एपि ४) । धवरुखी (मार १)। (पडम ४७ १)। हुस्यार वि [दुबार] कुछ म रोस्ने बोग्य द्रव्याप्त वि [द्र्यांझ] दुर्बेह दुन्छ हे होने दुम्मभ्रप्य देशो दुमग्रप्य (इस) । संबार्त (मे १२ ६६: का ६०६ थे। जुना दुरममदुन्ममा श्री [दुण्यमदुन्यमा] भाग योग्य (से १ १ ४४४ (३ ६६) वजा ११७ १७३: यमि ११६) । विदेश सर्वादम काल बारसी ही काल का **1**(=)1 दुस्योग्रह वि दि ] पुर्णाय पुरा से मारने धुउर्ग धीर बन्धरिएी साम का पहता पाय हुस्यारिश्र रेगो हुवारिश्र = दीरारिक (प्राप्त)। इनमें धन परायों के दुलों की सरों 17 हानि बोग्म (से १ १)। दुश्याशी स्मे दि ] कुन-मॅकि (पास) । दुभक्क न [दुन्संकट] विषय रिरावि होती है, इसना नरिमाण एनरीन हवार हुदराम र् [ दुवामस् ] एर मार (यान बपों का है (दा १३ ६३ इक)। 21€)1 दुमंबर रेगो दुमांबर (गीर) । হুভিয়ন্ত বি [হুমিয়ুল] বাবোল-গনিত दुम्समदुमुममा ध्रै [दुप्यममुपमा] पेगा दुर्मध वि [जिम्सध] से बार मुनने से ही शीन हवार क्य एक कोटाकीरि सामग्रेशम का क्रम नेपा (टा ४, २—२३ ३१२)। उने भन्दी तरह बाद कर सेने की शक्तिकाना परिमाणुराना बात-निरोप समितिला गान दुविप्रज्ञहरू | रि [दुविद्यम] शान ना सूटा (पर्में से १२ ७)। का चनुर्थ और उत्प्रतिही नात का तीनछ द्देश्यिअद्धे । भागमान गरनेराना पुनिराशिक दुमग्रप रि [दुम्मंताप्य] रुशंप्य (श्र १ धारा (बचा इक) । (पाम हा ६३)। Y-97 ((X)) दुम्पमाकी [दुप्पमा] १ हुए काल । २ द्वविकासय रि [दुपितय] बुख के बातने दुसमदुसमा देवो दुस्समदुस्समा (श्रग एक्सीय हमार वर्षी के परिमालगाना ना र योग्य कानते को काक्य 'बर्ड्सकारिएएल 1 (0 1 निरोप, घरमरिएी-गाप का पांचरा धीर मंगाजिनसम्बारम् (पान् १.१)। दुमममुममा रेगो दुस्सममुममा (हा १)। उव्यक्तियो काच का दूकरा भारा (उर ८४० हुर्ग प्रदूष रि [हुरअ] दुःच में धर्मन बस्ते दुसमारेगी हुस्समा (भग ६ ७ वर्ष)। E#) 1 भोग्य अध्नितः स कमान बीग्य (गुप्र २१६)। दुसह देनो बुश्सह (हे १ ११४ नूर १२, दुम्ममात्र रेगी दुम्म । दुर्ग्यिकात्र वि [दुर्गियनी विविध्य बद्धत (35) #15 दुम्मर 🖞 [दुम्पर] १ वध्यर वारात्र (राज ६६ ६६ रूप) । दुसार् वि [दुरमाथ] दुनाव्य, बटनाव्य कुष्पित करूर । २ वर्ज-सिटेच जिल्हा सन्द दुध्यिण्याय वि [दुरियात] धमन्त्र सैन्ति ने (परम ८६, १२)। से नरर नरप्र-मण्ड होता है। (सम्म १ ५०-बाग ह्या (बावा)। दुर्गिक्यात्र वि [दुरिशक्षित] दुर्विराप नद १६)। लाग नाम व ["नामन्] द्धिमात्र देली दुषिमात्र (स्तर) । (पडम २४, २१) । राम्बर का बराग्र-कर वर्म (देवा हम ६७)। मुश्चिमान वि [दुरिमाना] दुनेया हुन दुर्भावन देशो दुरमुक्ति (र्यः)। दुष्मक हि [दुरराज] दूरिकेन बरिनेत ने जिनहीं धानीचना हो अधे कर (दा ४, दुमुरक्त्य व [दे] यने का बाबूनर-निरोध ({T" t) 1 १ क्षे-पर ११६) । (म घर) । दुरसद् वि[दुश्सद्द] को दुल ने करत हा दुस्यियात रि [दुरिमार्थ] अतः हेनो दुश्म तक [द्विष्] देव वरता। शह सके बन्द्र (राज को है ? हर १११ (R4) I ष्ट्रसम्बद्धाः (स्पर् ११ ११)। (**48** ) (

पाइअसदमहण्ययो

दुव्यिटसिय न [दुर्विष्ठसित] १ स्वय्दनी

दुव्यिसह वि [दुवियह] पायन इ.सह.

काम (उप १३६ दी)।

विभास । २ लिङ्ट कार्स्य अपन्य काम कीच

दुम्पमु--दुस्सह

द्यदाग्य साबु (घाना) ।

दुस्यमु ति [बुर्वमु] द्यमप्य सराव हस्य

(पाना)। मुणि दुं [ मुनि] मूच्टि के निए

8×8

दुस्मत्रम न [दुदरातुःन] धारातुन (एपि

दुरुसंचर हि [दुरसंघर] नहाँ दु:घ वे जाग

जासके दूगम (स २३१ सींड १७)।

हण (पा ए वे दे)।  इस्सामान इ [द्वरासन] इसीवन वा एक पोप आरं. कीरकरिये (बाव देश वेखी हे थे)।  इस्सामान इ [द्वरासन] इसी में वर्षाच हो कीरियाम देश हो कीर वेखी हो	शहे, भरेट हो)। स्टास युं [स्वारंड] [स्वारंकर रुप्त (पारंड] [स्वारंकर रुप्त (पारंड] [स्वारंकर रुप्त (पारंड] [स्वारंड रुप्त (पारंड)	हिंशा स्वाह कट्यामाण, दिल्लामण (वि श्रप्था प्रार्थ) । स्वाह कट्यामाण, दिल्लामण (वि श्रप्था प्रार्थ) । संह. कार्ड (सहा)। इदाय कट [सिष्ट] सेराण सेरा करण विराय करणा : गुरावर (हि ४ ११४)। इदाय कट [सुराय प्रार्थ ] प्रत्या करणा : गुरावर (ह ४ ११४)। इदाय कि हिंदु लिला के प्रत्या (क्या)। इद्याय कि [सुराय] प्रत्या क्यां व्याप्य (व्याप्य)। इद्याय कि [सुराय] प्रत्या क्यां व्याप्य (व्याप्य)। इद्याय कि [सुराय] क्यां व्याप्य व्याप्य व्याप्य क्यां व्याप क्यां व्याप्य क्यां व्याप क्यां व्याप्य क्यां व्याप क्यां व्याप क्यां व्याप क्यां व्याप क्यां व्याप्य क्यां व्याप क्यां व्याप क्यां व्याप क्यां व्याप्य क्यां व्याप क्यां व्याप क्यां व्याप्य क्यां व्याप्य क्यां व्याप क्यां व्
हुद्देशने दुश्य=द्रम (१६, वर श्रम् व १६ २ (६२)। ज ति [४] दुम यु देशमा द्रम कर्म (द्रम ४५४)। इति । [१ने] दमके मीहा (द्रिम १ १। यूना । १६)। तृत्व ति [मीहा] दमके मीहा (योग)। हुई [मी] सरस्याम ह	धी)।धीर्मा(नि२३१)।	(शङ्क ६४) ।

वूमा रेसो पूआ (पर्)। तुइ देवो दुई । पद्मसय न ["पस्पशक] एक चेन्य (उदा)। बुद्धन ग्रह [हू] यमन करना विहरना बाला । दूरमर (बाचा) । वह- तूर्कात, कृश्क्रमाण (ग्रीपः **लाग** १ १ मग बाबाः महा)। हेङ दूर्वज्ञच्य (क्स)। बुइन्त न [नृतीस्य] रूती का कार्य दूतीपन (पदम ११ ४१)। वृद्ध सी [वृती] १ दूत के काम में नियुक्त की हुई क्षी समाचार-हारिक्षी कुटमी (है ४ ६६७)। २ वैन सा**बुधों के** सिथे मिलाका एक बोप (ठा १ ४--पत्र १६१)। पिंड र्षु ["।पण्ड] समाचार प्रदूषात से विसी हुई मिला(याचा२ १६)। वैको बृद्धा द्य वि [दून] हैयन किया हुया 'हा पिय-वर्षत इद्दो (? छो) मए तुम (स ७६३) । वृग दूं [दे] इस्ती हामी(दे ६,४४ पर ): ह्व (पप) देखो दुवण (पिय)। द्वाबड वि [दे] १ मशस्य । २ तहाब, तमाच तामाच (दे द, ६६) । तृभ यक [शुःलाय्] दूनना शुःचित होना त्रम्हा पुत्तीपि दुमिरमा पहिंगम व बुरमणी (मा १२)। इ.स.ग. देनी बुक्सग (एवंबा १ १६---पत्र 284) I दशागान [दीर्माग्य] पुष्ट व्याप लगार ननीय (उर पू देशे)। द्म सम [ तू, दायम् ] परिताप करना, संनाप करना । दूसद कुमेद (नुपा का आधा द्वै ४ २६) । धर्म दूमिनमह (धर्मि) । बा पूर्में (मे १ ६३)। क्वक वृद्धि द्धन (गुरा २१६)। दूम रेगो तुम = वत्तम् (१४ १४)। द्मक ∤ि [दायक] काताप-जनर पीहा-बूमग र बनमें (बएई १ का चन)। दुमन वि [दायक] उपतार करनेरापा (सूध **१ २ २ २३)।** द्मगन [द्यन दावन] बरिवार शहर (प्रहर १)। दुमय न [धवछन] सदेद बरना (बब ४) ।

दूसन रेको दुस्सण=हुर्मनस् (सूध १ २ २) : वृत्तणाइअ वि [बुर्मनायित] को उदास हुया ही चंद्रियन मनस्क (नार---मानती १६) । वृश्चित्र [दून, दावित] संतापित पीड़ित (गुपा १ १११ २१)। क्मिश्र कि चित्रक्ति ] सरेव किया हुमा (हे ४ ४४- अध्यो )। मुयास्यर व दि] कना-विशेष (स ६ ३)। दूर न [दूर] १ बनिषट धनमीरा 'रुडेव बस्त किलो बया धूर्र (कुमा)। २ घतिस्य बन्यन्त भूरमहरं असंते (श्रुमा)। ३ वि व्यस्तित ससमीपवर्ती (मुझ १ २ २)। ४ व्यवहित धन्तरित (पउड)। गृषि [°ग] ब्रवर्सी बसमीयस्य (सप ६४८ टी: भूमा)। गद्द गद्दश्च वि "गतिक) १ पुर कानेवाला । श्रीवर्ग बादि देवलोठ में क्रपण होनेकला (ठा व)। तराग वि िंतर] मत्कन्त पूर (पएए १७) । स्थ वि ["स्व] बूर्यस्वत बूरवर्ती (कुमा)। अधिय पूँ ["भस्य] शीर्वनान में पुष्टिको प्रत्य करते की योग्यनावासा बीव (उप ७२० दी)। य रेको श (तूप १ १ १)। यचिष [यर्निन्] दूर में एनोबासा (पि १४)। खद्य वि विद्यविक् ] पृक्ति-नामी (भाषा) । "स्वय पू ["स्वय] १ ब्रूर स्थित साम्ययः। २ नाजः। ३ प्रक्तिः का नार्य (धाषा) । वूरंगइम देखो वूर-गइअ (धीप)। वूर्रनरिञ्ज № [बूरास्तरित] प्रत्यन्त व्यवद्वित (या ६१८) । वूरचर वि [तूरचर] दूर श्लवासा (बम्मो बूराय चक [बूराय] ब्राप्तनत नी तरह भागून होना क्रवर्ती माणून पहना । अष्ट वृद्ययमाग (यत्रह)। व्धेम्प वि [व्धक्त] द्र क्या ह्या (भा २=)। क्रिह्य वि [क्रिम्त] को दूर हुया ही (कुस १४८)। सूरज वि [बूटरन्] प्रणीवत पूरवर्ती <sup>1</sup> (पार ४)।

वृस्त् देखो तुद्ध् (संसि १७)। दस सक [ दुप् ] धूपित होना विद्य होना। इस६ (ह भ २३१ सीच ३६)। वृस धक [ दूपम् ] दोपित करना, दूपछ--दोप समाना। बूसइ (पनि) बूसेड (बृह ४)। दूस न [तूच्य] १ वझ कपड़ा (सम १४१) कष्प)। २ तंत्रु पट-पुटी (वे ६, २०)। गणि पू [ गणिन् ] एक कैन माचार्य (खंदि)। सिचार मित्र मीर्वेग्र के नारा होने पर पाटलिपुत्र में प्रमिपिक एक यवा(यव): हरन [गृह] तंतू पट ब्रुटी (स २६७) । वृक्ष अपि [वृष्क] दोप प्रकट करनेवामा (बरबा १८)। वूसग वि [दूप ह] दूपित करनेवासा (पुरा २७१ स १२४)। वृक्षत वि [ वृपक ] दूपल निकाधनेवासा शोप देखनेवाला (वर्मीव ८१)। वृक्षण न [वृषय] दूषित करता (श्रम्क ७३)। बूसयान [दूपया] १ दोप धपराव। २ कर्तक दाप (तंदु) । ६ दूं राक्या की मीसी का सङ्का (पडन १६ २१)। ४ वि दूर्वित करनवाता (छ ३२८) । द्मम रि [दुष्पम] १ वास्वर दुरु । २ दू कास-विशेष पांचवां बारा 'इसमे काले' (चट्टि १२६)। वूसमा वेजो हुस्सम दुस्समा (सम १६ ठा १) ६) । सुसमा बेगी बुस्समम्समा (हा २ ६ सम ६४)। तूसमा व्यो दुम्ममा (सम १८) हा ८३६ टी थे १४)। वृसर वेदा दुस्सर (राज)। बूसस वि क्रि दूर्वेग, भ्रमामा (वे १, ४वः पर)। कुमद रेगो दुस्सह (ह १ १६ ११४)। बुमहर्गाञ्ज वि [दुस्तहनीय] दुलद् समग्र (ति १७१)। बुसासण बनी दुब्सासण (हे १ ४३)। वृमा इभ वि [दीस्माधिक] दुगाव वाडि में बराज्य चस्त्रस्य माति का (प्राप्त १ ) । कृष्मि वृं [कृषित् ] नानकता एक मेर्स 'दोनुर्वि वे ग्यु सम्बर् द्रूपी' (बुर् ४)।

१ २०१ मुचा२ १)। बसिया सी

[<sup>\*</sup>इसिस्स] रेहरी कोटा रेप-नन्दिर (रूप

(४४): दशा की किया दिन्त्री

देवताची ना शोतप्रव (बीर १) । दिखिस

(लावा १ )। बद्दबह्य पु विद्वदक]

१ १६) : बार त [ब्रार] के नुह निरोप

का पूर्वीय बार, विज्ञास्तर ना एक बार

(बा ४ १) । बाब दे [बाक] इत-विरोप

वैरदार का वेड़ (राज प्रेव : घट) : हासी

विद्यासी श्वरति-विद्येष प्रतिपति

रेजीएमा धी विवर्शिक्ष विदेश वेत-स्वाप

र्थात कर [ प्रत्] देवना- वननातन

रस्ता रेस्पर् (हे ४ १०१)। वह

(शह शध श हो)।

देत देवो दा = शः।

(पर्ण १७--पत्र १६ )। दिण्ण, दिश

र् दिता व्यक्तिनायक नाम, एक सार्वशाह-पुत्र (राजः सामा १ २—पत्र ६३) । दीय र्द्र विद्याप द्वीत-विदेष (श्रीव ३) । बूस न चित्रप्यी देवता का बच्च, दिव्या वका (बीव के)। दिव हूं [दिस] १ परमेरवर, यरमारमा (सूपा ५)। २ इन्द्र देवीं का स्वामा (बाषु १) । "नट्टिया की "नर्विका" नाजनेवाची देवी देव-मधी (प्रजि ३१)। ैनवरी की [ैनगरी] मनरावती स्वर्व-पूरी (पदम ६२ ६५)। पश्चिमकोस पूँ विश्वति-क्योमी तमस्ताय सम्बकार (त्रय ६ ४)। **पिक्सोम र् [परिक्षोम] इ**प्प्य-चित्र (मग ६ x) । पञ्चय दूरिपर्यंत्री पर्यंत-विदेप (ठा२ १—पत्र ६)। व्यसाय र्षु [प्रसाद] राजा कुमारपाल क विद्यासह का नाम (कुछ १)। फब्बिक् पूर्व (परिघ] रामस्काय, सम्बद्धार (सन ६ ६)। शह र्षु ["भारत] १ देव-धीप का चरिष्ठाता देव (जीव ६)। २ एक प्रसिद्ध जैनावार्स (सार्वे < १)। मूमि की ["मूमि] १ स्वर्ग देवलोकः। २ मण्याः मृत्युः चिह्न सन्तवाय सिट्टी विरवेनी देवभूमिमणुपको' (पुपा ६०२)। सद्दासद्दं ["सद्दासद्र] देव-शीप का र्मानहाता देव (और ३) । सहायर पू ["सहायर] देव-नामक समुद्र का श्राविहासक वैव-विशेष (बीव ६ इक)। रह दू [ रहि] यक पना (मत १२२)। सक्ता दू िछ्यी रागस-वंदीय एक राय-कुमार (पाउम १, १६६)। रण्यान [शरण्य] तमकाय, मन्तरार (ठा ४ २)। रमण न [रिमान] १ सीमाक्रमी नगरीका एक स्थान (विधा १ ४)। २ धरण का एक ब्रचान (पतन ४६ १६)। राय पु ["राज] इन (पत्रप २, १० ४८, ११) । सिंख दू [ आपि] शारद मुनि (पत्रम ११ ६० ७० १)। काल कोग पुंक्षिके दिला (सब - शामारे भन्तुता ६१४८ मा १६)। २ देन-जातिः 'नद्भिहा खं भेते देनलोना पएछता । योवमा चडम्बिहा बेउलोना पर्याचा तै पहा-भारताथाभी बार्व्यतस्य. भोद्रसिका वेमारिएया' (मन ६ **१)**।

उत्पत्तिः न्यामीयगमणाई वेशवीननमसाई 🛒 अपन्यायाया पूर्वी नोक्तिमामा (सम १४२)। **ै**बर पु [ैबर] देव-मामक समुद्र का समिहा क्र एक देव (बीव १)। यह की विध् केमांवता वेगी (प्रति ६ )। सर्णेक्ती की िसंद्रप्ति । १ वेन-१४त प्रतिबोच । २ वेनता के प्रतिनोध से भी हुई बीआ (ठा १ ---पण ४७३)। संणिषाय पू [\*समिपात] र बेब-समागम (ठा ६ १) । २ देब-समुद्र । ३ देवों की धीड़ (राव)। सन्म पूं [रार्मम्] १ इस नाम का एक बाह्य ए। (महा)। २ ऐरनत क्षेत्र में ३९एम एक जिनदेश (सम ११६)। "सास म ["शास्त्र] एक नगर का नाम (उप ७६= टी)। सुद्धी की ["सुन्त्री] देवांपना देवी (धनि २०)। सुय वेको स्तुय (गग ७)। सेण पू [धेन] १ तत्रकार नवरका एक समा, विसका धूसरा नाग महापच का (ठा १---पत्र ४१.६)। २ ऐरवत होत्र के एक जिनवेश (पय ७) । १ भक्त-क्षेत्र के एक भाषी जिल्लीत । के पूर्वमव का नाम (धी १६)। ४ धवदान् । नेमिनाव का एक रिप्प एक धन्तक्ष्य मुनि (मंद्र)। स्स न स्वि वेद-प्रव्य जिल-मनिर-संबन्धी धन (वंशा ४)। स्मुस व् ["<u>६</u>व] मरत-क्षेत्र के अठवें जानी जिल-वेद (सम ११६)। इर न [गृह] देव-मन्दिर (उप ४११) । १इवय पु ["तिवेस] सहन् वैव विन ममवान् (बय १२ ६)। । । । । । । र् ["नन्त्] ऐरमत क्षेत्र में धावामी करतिराषी कास में उत्पात होनेवासे बीबीसमें जिनदेश (सम १९४) । । गोंशा की [ीनमहा] १ भवभान् भहावीर की प्रचय गाता (शाचा २, । १६८१)। २ पवाची पनमावी रातिका नाम (कप्प)। । णुष्टिपय पुं ["ानुप्रिय] सर, महाराम महानुभाव सराम-प्रकृति (सीप विपा १ १ महा) । । यरिक्र र्**िप्**यार्थे ] एक गुप्रसिक्ष वैन धावार्थ (गु ७)। । रका वेको रण्य (सगद ४)। २ देवीं का की हा स्मान (बो ६) । छिय पून ["स्तर्य] स्वर्ध (का २६४ थे) । हिंद्य पु ["विद्य] परमेधर, परमाध्या जिनकेन (सम ४३ स

श)। हिन्द प् िभिपति शा देव नायक (सूघ १ ६)। देख पून [इंस] एक देव-विमान (देवेन्द्र ११६)। कुरु क्ये [कुरु] मगत्रल पुनि-सुवत स्वामी की बीला-तिविका का नाम (विचार १२६)। च्छांदय पून [च्छान्दक] क्मानदार पूमन्यासा दिन्य पासन-स्थान (बाचा १ १६, ६)। विमस्स वृत ["विभिन्न] धन्मकार-चति, वमस्काम (अग ६, ४—पत्र २६४)। दिसाबी दिसा भववान् वामुपुरम की द्वीक्षा-शिविका (विचार १२१)। पश्चिमस्रोम पू ["परिश्वाम] इय्यायनि इञ्यावर्यं पुत्रश्रों की रेखा (सर % थ—पत्र २७ )। रमण दूं [रिमण] मन्दीचर द्वीप के मध्य में पूर्व-दिया स्वित एक भैननगिर्दर (पद २६६ दी) । बुद् दू िंब्यूह**े तमस्काय (मग ६, १—**यह **२६**स) । इंग्वेको इड्ग (क्य १४६ टी, महाउद्वे १ १६६ टी)। स्तुति ["इतृ] भौतिय-शास का जानकार (सुना २ १)। पर वि ["पर] मान्व पर ही थका रक्तनेवाचा (पर्)। देवइ की दिवकी वीडम्स की माता, बामामी उरसमिती काव में होनेवाने एक रीवैकर-वेद का पूर्व भव (पडम २ १०३८) धम ११२ ११४)। **रेको देवकी**। देवडप्प न [दे] पत्त्व पुष्प पद्माहुमाफल ( \* 1, YE) ! देवं देवी दा=दा। देवंग ल [दे विक्याहा] वेनपूच्य बद्ध (उप वंबंगण न [देवाझण] स्वयं विश्वं पहिचं व देवीमणे रमद्र' (सम्मध्य १६ )। वेर्वप्रकार देखो देवेषगार (मन ६ १---पश २६४) ।

देवेचनार पुंचिया चक्चर] विभिर-निवय

इंवकिविवस वृं [इंवकिस्विय] एक प्रवस

वेबश्चिविसया सी [बेबश्चिस्विपक्री]

नामना-विशेष जो सबस देव-योति में क्यांत

बन्पकार का समूह (टा ४ २)।

का कारण है (हा ४ ४)।

वेद वाति (ठा ४ ४—-४व २७४)।

प्रशासकानक (यव २९) । विराह्य वि

िधराधकी वह बादि में बॉलिक दूपका

समानेवाचा (सम ६ १)। पिराहि नि

["विराधिन्] बही धर्व (खत्मा १ ११---

पद १७१) । विगास न ["पद्मश]

थावक का एक इत (सुपा १६१)। विसा

सियन ["वद्धांशक] नहीं सर्व (पीप

मुवा १६१)। हिंच 4 िभिपे एका

(पडम ६६ ६६) । हिस्स प्रीमि

इंस्टरिक नि [देशान्दरिक] मिल देश का

बेसज न [देशन] क्वनः उपदेतः, प्रक्नज

(ई१)। २ विं उपदेशक प्रवयका की

वेसय दि [देखक] १ कार्रशक, प्रकार

(ध्य १) । २ विधनातीयामा वर्ण्यानेनामा

देसराग वि [वैशरमा] 'वेररप' ४४ में

वनाह्या देशसमाधि ना (बादा २ ६,

देसणा की [देशना] कारेट

विवेदी (७५१ ३१ टी कुम ४१६)।

पवि] एका (क्यू ४)।

इस देको वस = हैप (रव्य १६) ।

बुसरा देवो दूसय (६ २६)।

वी (स्व 😕) ।

(नुपा१व६)।

(चन) ।

**इ**क्)।

=) 1

देवची रेनो देवई : अंदल र् [मन्दन]

देश्य पि [र्यक्य] देव-सम्बन्धी (पन १२४) ।

देवय न दिवत दिन देव देवता (तुरा १२७) ३

भीरूच्य (नेसी १८३) ।

तेबम रेनो देव = रेव (महा; साबा १ १≤)। बेबमाधी हिस्ता १ देव समर (समि ११७। ग्राम्) । २ परमेश्वरः परमात्वा (वेचा t)i देशर क्यो दिकार (ह १ १ ६ मुना ४०१) । ह्यसराची देनो बेह्यसामी (दे १ ११)। बेबिसिय दि [देवसिक] दिनव-शंबली (धोव बर्दा देवद सूत्रा ४१६) । देविसभा धी [देवसिता] एक पवित्रता की जिमका दूसरा नाम देवसेना वा (पुष्ट ६७)। दैसिंद पंदियेन्द्री १ देनों का त्यामी, इन्ह (क्रेड १६२ शामा १ ॥ प्राम् १ ७)। ২ ঘত মনিত্ৰ বীৰাবাৰ্গ ঘীৰ ফৰবাৰ (আৰ २१)। मुरि वं विमुरि | एक प्रतिक केता नार्वे और धन्यनार (कम्प १ २४)। देविहर 🐧 [ देवस्त्रक ] देवविज्ञान-विशेष (देवेन्द्र १२)। द्विद्विद्व स्त्री दिव्यक्ति र देव ना वैगन। ९ वृं एक नुप्रसिद्ध वैत्र घात्रार्व और वन्त्रतार (क्ष्य) : देपिय दि [दीपक] देन-तंदली (बुर ४ २१६)। द्विष्य र् [देशिख] एक प्राचीन ऋषि (शूध \$ \$ X \$) 1 देवी और [देवी] १ देर-की (वेचार)। १ चनी, चन-पनी (रिपा १ १) १) । ६ इनी, भारी (क्यू)। ४ सल्वे बहरसी ग्रीर म्ठायहरें जिन-देश की नाता (तम १६१ ११२)। १ दर्धी मध्यतीं श्री यय-महिनी (सन ११२) । ६ इक विद्यावर-क्रमा (पटन \$ Y) 1 वैपीरण रि [देवीहरा] देश से बनावा ह्या चानिविमलुम्हो उपलो बीए देवीहमी नोपी (च १११)। रमुक्तमञा भी [रेनारनिका] केते वी हेड, रेते ग्रीभीड़ (हा ४ १)। दरमर वृ [दवेधर] इन्द्र देशों ना सम (दुना)।

क्षेत्रोकश्राय वृं **क्रिको**पपात अरक्क्षेत्र में धानामी उपांतिणी काल में होनेवाले हैर्देसवें विन-देव (सम १६४)। बेक्स देखो दिक्त = विष्य (प्य १व६ टी) : वेडम देवी दब्रम (मा १९२३ महा; सुर ११ ४° मिंग ११७) 'एसो व दे≔रो खाम मलायास्थीयो विश्वपूर्ण (स १२०)। व्य ण्य च्या वि **ँह**े बोलिये व्योजिय राक्त की बाननेकाश (यद कप्पू)। बेस्वअणुभ इस्त्रमणुभ हेस दंहिंडी एक सी हाय परिमत समीन 'इत्लंडचं बनु देशे' (निंड १४४)। 'ब्रेस थं विश्वी सी हाव से अन्य क्मीत (दिक १४४) । सम व दिस्स केल-विकेष (योषा २३१७)। देस ४७ [ देखय ] १ ५१क करके का। २ क्त्रचाना । क्यू देश्चर्यत (पूरा ४०%) भूर १४, २४०)। संक वंशिचा (हे १

वेख द् हिंशी १ यंत्र भाव (छा२ २ क्य)। २ वेत वन्तर (ठा ६, ६) क्या प्राप्त ४२)। १ समस्य (निष्ठे १ ६६): Yस्वान जनइ (ठा३ ३)। **बद्धा की** िका विनाद-नार्ता (ठा ४ २)। क्रस केनो बाला (विसे २ ६६)। अन्दर् ियति बारक उपाधन वैत पृहस्य (कम्बर शैकाउ)। व्यापि विज्ञी देश की रिपछि की जाननेवाला (दर १७१ यै)। मासा की "साया देत की बोसी (बह ६) । भूसण द िभूपणी एक केरलबानी महर्ति (पटन १९, १२२)। बास र् [ काछ] अर्थन, यरतर, शोरव समय (प्रज्ञम ११ १६) । राज्य वि ["राज] देश का समा(तुस ६५१)।

बगासिय देनो । बगासिय (नुतः १६६)।

"विरम् धी ["विर्शत] न्यावक वर्ग वैत

भृहस्य का बा धलुकत, द्विमा चारि का

योशिक स्वान (पेंचा १)। "विरुध पि

"बिरन] यानग प्रतामद । २ त. शांचरा

₹ w) ( वंसि वि [द्वेपिम्] हेर कलेनला (श्वस 14)1 द्**सि } विदिश्य**ि **शंकी मोनिक** वेसिअ । मानवामा (विमे २९४७) । २ विकामियाता । १ प्रपत्तिक (विशे १४९%) ध्यस २)। वेसिज वि दिश्य देशिक रेठ में करान, रेंच चंत्रणी (जा ७६ ही) सन्दूर)। सद र्ष ["राब्द] वैद्येबाया शा राज्य (बन्ध ६)। इसिज रि[इंशिन] १ कवित कादिट। १ कार्यालय (४ २२) प्रामु १२ १३६, इसिअ नि [इशिक] बृहक्तोबन्यानी तिस्तीएँ (बाका २ १ ३ ७)। देशिक्ष रि [देशिक] १ प्रकिक पुताकिर

(पत्रम २४ हेरा क्या पूरोहर) । २ क्या-

रैश क्र (तिथे १४२३) । १ प्रोपित प्रचार

41

१६२)। "सहाकी

दोण प्र द्विगा १ भनुदेंद के एक सुप्रसिद्ध

िसमा | वर्गराना (सर दू ११४)। वृोजुर वि देना वोजुर (वह )। धानाम को पाएडन भीर कीरवों के पुरु से बोर्किर्य व [च्चिकिय] एक ही समय में से वेसिल रेसो देवसिका 'पहिन्दम दसिव सम्म' (सामा ११६३ वर्णी १४) । २ एक (पक्षिमा६)। क्रियाओं के ब्रनुमन की माननेवाला (ठा ७) । प्रकार का परिमाख (को २)। सुद्दम देसिमय वि दिशिदवन् विक्रो जनवेश दोक्तर देखी तुक्तर (भवि)। िंशत्यी नगर, जन और स्पन के मार्गशासा दोक्सर पू द्विज्ञक्षरी वर्ड नपुंचक दिया ही वह (मूच १ १, २४)। शहर (परहृष्ट ६३ वप्पः भीर) । "मेह व (MK N) 1 [मेघ] मेन-विशेष, जिसकी बारा से बडी वैसिद्धग देवो देसिक = देश्य (इह ६) । दोस्पेड देखी दुर्लंड (मनि) । वससी मर काम वह वर्षा (विसे १४१८)। इसी की [देशी] भाषाविशेष शरमक प्राचीन दोर्ख डाम वि [द्विकाण्डस] जिसके से दुस्के स्या की [स्वा] सदमछ की की ना प्राप्टत भाषा का एक मेद (दे १४)। किए गए हों वह (गवि)। नाम बिरुल्या (पडम ६४ ४४)। मासा नी ["भाषा] नही वर्ष (खावा १ दोर्गीछ वि [जुगुरिसन्] क्या करनेतला दोणञ पूँ [दे] १ सम्बुक्त सॉव का मुख्यिस । १३ और) । (fq ♥Y) i २ झानिक इसनाइ, इस बीतनेवाला हरवाहा देम्ण वि [देशोन] दुल कम धंश की नमी-वोगध न [वोगस्य] १ दुर्वति दुर्वता (वंचन (वेश शह)। नाता (मन २ १ ३ द २ व )। ४)। २ वारिक्रम निर्वनता (मुरा २३)। दोणधाक्षी[दे] सरवा महुमक्त्री (देप्र हेरल वि हिर्ची १ देखने योग्य । २ देखने दोर्गुद्धि क्यो बार्गिद्ध (प २१६)। 28) ( को शस्य (स १६१)। वोर्गुन्य पुन [बोर्गुन्दरु] एक देव-दियान वोणी की [डोणी] १ नौना धोटा बहान देह देवो देवला। देहरी देहए (बल १६ ६) (रोग्न १४६)। (पर्याहर १ वे २ ४७ वस्स १२ टी)। पि ६६)। वह देहमान्य (मा ६ १३)। २ पानी का बड़ा हुँडा (मणु: दुप्र ४४१)। वोगुंदुय पूं [दीगुन्दक] एकप-वातीय देव वेह पुन [देह] १ राधेर, नाथ (की २०३ क्रूप्र <sup>1</sup> दोत्त्वडी की [दुस्तरी] दुर नदी 'एकतो मिछेव (मुपा ३३) । ११३ प्रामु ११)। २ प्र निराच-विशेष दोम्गन [दे] बुग्म बुग्नम (११६, ४६) वह)। बर्भो बनतो दोचडी विवडा (उन १६ (इका परस्व १)। रयं न [रित] मैचून दोग्गद्र वेको सुग्गद्र (तुर व १११) । कर दी पुपा ४६६)। (वजा१ व)। दोरम ग [दीसध्य] दुन्स्पता दुरंशा दुर्गीत बहंबलिया की [बेह्यशिका] निजा-कृति वि किरो बुगैरि-जनक (पटन ७३१)। दोग्गद रेखी दोगम (या ७६)। भीख वी भागीविता (छापा १ १६-पत्र (वद ४: ७)। बोग्मह ) पृबि हाथी इस्ती (पि ४६६ कोग्माह ) पर पाम नहा नहम ४ छ कोमह ) ४६१)। 1 (355 दोदाय वि [तुर्दान] हुच वे देने योग्य पर्पास महा सहस ४ छ देहणी भी दि] पंत नर्थम नास कोही (इद्रि ८) । (₹ % Yc) I वादिअ पू वि वर्ग-कृतः वसहै का बता दोष्ट पु [द्विष्ट] विदायर क्य क एक बहरय (घर) न [देवगृहक] देव-मन्दिर हमा माजन-विशेष (दे १ ४१)। धना का भाग (पडम १, ४१)। (यका१ ⊏)। दोद्ध वि [दोग्यू] बोदन-नर्जा (बस ११ दी)। बाद्य वि [द्वितीय] बुनए।(सम २ व विपा इंडकी भी दिस्मी शैखद हर के तीने क वोधक ) न [दोषक] दोषक (त्य)। धन्द-विदेश सवती (सा १२१) दे १ ११, द्वार १०३) । 1 (F F दाव न [दीस्य] दूतानः दूत-हमें (गाया १ देकि प्रदिष्टी माना श्रीव (स १६५)। दोषार पू [द्विषाद्मर] विवाहरण दो मन ६ या व४)। दहर (धर) न [देवचुन्त] देर-वान, मन्दर करना (ठर १ १--पत्र १४६)। दोचम [द्विस्] दी बार, दो दक्त एर्थ (मवि)। श्रोनिक्म वि [दुर्निकम] प्रायम्य कट्ट से च निरामिता रोज्यं तज्यं समुक्तरंतरम् (तुर दा म [द्विया] ये मगर है से ठए (द्वा बनने योग्य (मग ७ ६--पत्र ३ ३)। ₹ ₹4)1 २१३३ ११२) । दोर्थगन [द्वितीयाद्वा] १ दूसरा संन । २ को<u>पुर वं [स्] पुम्पुर स्वर्</u>य-गायक (पर्) । क्षेत्रिय द्विदीयो सनस् पुरव (हे हा पकाया हुमा शाक (शृह १) । ६ सीमन्द्र दाम्यस्थिय देवो दुरबन्धिय (पाचा २ ) (Y) कड़ी (ग्रीय २१७ मा)। दा दे [ शेस् ] हाव बाह (तिक ११६ दोबीहरू [ब्रिजिट्य] १ दुर्गगः २ सार ब्राब्यस न [वार्येक्य] दुर्यंतता (शि २०४) रमा गण्) । (पुर१२)। क्सार वर्ध) । हाम६ थैं [द्विपदी] धन्दनिकेत (तिम) । षोगम वि [बाह्य] बीट्ने बीग्य (धाब्य २ दाभाव वि [द्विमान] से मानतात, से रामास र्षे [दे] राज देन (१ २, ४६) । ¥ ₹) i बर्द्यमभा (का १४७ टी)।

बामणीसय वि [बीमैनस्यक] विव्य क्षोक पस्त (हा ४, २—पत्र ११६)। दोमजस्स न विभिन्तस्य देवनस्य, हेप मन नी दुल्ता (सूप २, २ ं दश व∜)। दोमासिम रि द्विमसिक दे मान का (मर भूर १४ १२)। बी. क्या (सम 1 (19 दोमिय (प्राप) देखी वृत्तिका = वाक्ति (प्राप्त) । ब्रामिक्षी ध्यै [ब्रामिज़ी] लिनि-विधेष (धन)। बोस्टरिधिस्य रिशे बॅह्शना। २ र्षु पूप-रिरोप (महा) । १ दुर्बन (का २६६)। दार पूँ दि दिशेष प्राया मून (पटन ४ ५ ३ ब्रुज २२६ सूर ६, १४१) । २ क्रोकी रम्डी (भोष २१२ १४ मा) । ३ क7-सूत्र (R X 84) 1 दारिया देवी दोरी (सिरि ६६)। बारी स्त्रे कि दोड़ी सबी (या १६)। दास पर [दासय] १ दिलना । २ फूलना । बोलइ (है ४ ४०)। दोलीत (बण्यू)। शेख्यम न [इास्टनक] कूनन धन्दोतन (R = YR) 1 राख्या ) भी [दोखा] सूरा दिशेना (गुपा दोध्य १८६ द्वमा)। दोस्पइग रि [दोस्प्रयित] १ दिला हुमा। २ संश्रमित (नेका ११६) । दोख्ययमाग नि [दोध्यवमान] १ दिनवा हुमा। २ वेराम कलाहुमा (नुस ११७) नदर)। बासिया देनो हास्य (मूर ६-११६) । बान्तिर वि [बार्लायल्] भूत्रवेशना (बुमा)। राप र् [राष] एक धनायें बर्तात (राज) । इएएट की [द्रीपर्श] समा हुन्छ की करना पानदा-पानी (गामा ११६ का ६४ थे। **4(x)** 1 बाबयात देगी मुखयत = प्रियम (है १ EY (TI) ब्रायन्स (या) देनी हुनार (गान) । श्वारिक १५ [श्रीवारिक] बारान वर रापारिय े बार ब्रह्मेंदार (शिबू दे, साम्य

१ १० मन ६ ४० मूस ४२१) ।

बोविह देवो दुनिह (बत ए। नव ३)। दोनेसी बी वि शार्यकाल का मोजन (वे ४. वोबन्छ केता वोबन्छ (स ४ ४९, व 1 (02 वास देवी वृक्त = शूप्ज (धीप, प्रप ७६० टी) । दोस प्रीदीय द्वारा पुरा प्राप्त (बीपा सुर १ ७३: स्टब्स ६ : प्रस्तु १६) । फ्लु वि [ क] दीप वा कामकार, विक्रल् (रि १ १)। इ. वि चि दोच-मातका पूर्णित पोक्क दोपई नुद्ध" (नुपा ६२१) । दास दूरि] १ वर्षे बादा (६ ४. ४६)। २ नीत क्रोच पुरसावि ३ १६३ पर् )। १ 🗗 क्रीद्व (बीप कम्माठा १ वत का सूच १ १६। भरता २३। युर १ वेशे सदा याँगा पुत्र १७१)। कोस 🖞 [दोस] इतन इस्ट नाइ (8 2.1)1 दोसभिञ्जीतः ध्रुं [दें]चनः चनतमा चन्द्र (३ **ኒ. አየ**) i दोमा भी [दोपा] राजि राज (पुर १ २१)। बोसाकरण न [बें] नोप क्रीब (६ ४, ६१)। शासाणिज वि वि विशेष किया हवा (वे 2 2() 1 दामायर पूँ [दोपाकर] १ चनः, चनः (अर ७२ १६ पूरा २७५)। २ दोवीं की बाल कुए (मुख २७६) । दासारमञ्जूषे हिं दापारली चन्त्र चांद (पर्)। दोमासंब दू [श्रापाश्रव] धेत-द्रुक, दुः (पत्रम ११७ ४१)। दास्ति रि [दापिम्] शोपनाना, शोपी (दुप्र YEA) I क्षोगिश्चर् [दीव्यक] बखना व्यामाचै (बा१ मः वजा१६२)। श्वासिम [ब्] वेधो बासील (पएड २ ३) यासिया [ दे ] नीव देवी (टा ९, ४—वव ६): नाची भा] वध्य ग्रीएक वट चनी (ठा४ १ इर छाना २) होसिमी थी [दे शांपम ] व्योगमा, चन्द्र

कर्चा(प्रमध्ये)।

होसियण्य व [होपिकास ] वादी सब (चन) । दोसिक वि [दोपमस्] शेक्युक (नम्म ११ टी) । दोसिस वि [दे] हेप-पुष्क, होनी (विदे 111 ) i दोसीण न [दे] रात का गावी मच (पदाइ रु श बीच १४४)। वोसी**छ नि [दुस्सीछ] इ**ट स्वधाननामा (पर 98) 1 दोसोख्य विव [द्विपाडरान्] वतीत ३२ (कप्पु)। दोद एक [ब्रुट् ] होह करना। यह दोहत (धंबोच ४)। कोइ प [बोइ] कोइन (६२ ६४) । बोह वि दिश्वा देशको सोग्य (बाग १)। कोइ 🔩 [द्रोद] स्था 🛤 (प्राप्त मनि)। होहमान [हीर्मान] कुट करन दुपह क्मनदीवी (पद्यकृष्ट प्राप्तुर के १७४) मा **444)** ( बोइग्गि वि [दीर्मागिन्] पुर मान्याना कवनगीय सन्द-धान्य (श्रा १६)। पोद्यान [दोइस] दोइना दूर निकलना (पच्ह १ रि) ≀ेंबाइज्य न [पाटन ] बोहन-स्वान (निष् २)। कोइजहारी की [के] १ वेद्यकेतली की (<sup>३</sup> १ १ व्हार, १६) । २ पनिदाये पन्ये गफ्रेयाची की क्लहारित (वे १० ६६) १ क्षाह्यीको कि के कार्य, कर्षम (दे र शाह्य वि विद्या वेदलेनामा, (रा ४६१)। क्षाह्य वि [ब्रोहक] ब्रोह करनेवास, हैप्याँड (बर ११७ सैं। प्रमि) : होइल प [पाइप] पॉलगी ध्येवा अभोरव (देश परण-पषर कव्य) । बोबर च [द्विमा] पे प्रशार (११ १७)। बाहाइभ रि [द्विपाइन] निका हो बहुव शिवा वया हो यह (है १ १७ दुवा) । बाहासम्बन [४] नदी-वटः बमर (६ ६ बादि नि [बादिन] अस्तैराना, टरानेनला प्रभागत (दे में, प्र.) समिनुगर्ग वीविछी (या ६२१) ।

दोहि वि [द्रोहिन] होह करनेवाला (यवि)। दोहिज्य वि [हिमिस] द्विष्टर जिसका बो दक्षण किया गया हो वह (प्राष्ट्र ३१)। दोहित वृं [दीहित्र] सहनीका शहरा गली (दे ६ १ ६, मुता ३१४)।

दोहिसी सी [दीहित्री] सहकी की भड़की नविपी (महा)। वोबुका व [व] तव मृतक पुरसा (है ६, Y() ! होस रेखी दोस = (१) व्यक्तियसपहीसी (भूप १)।

त्रुतका (धप) न [दे भय] मय डर, मीति (BY Y22)1 ब्रह् पू ब्रिया बहा बसाराय सरोवर, मील (हेर = चुमा)। द्रेहि (मा) की [दृष्टि] नवर (हे ४ ४२२)। ं ब्रोड देखों दाइ = ब्रोड (पि २६व)।

## ॥ इय सिरिपाइअसर्महण्यवन्मि व्याधासस्वरूती वंबबीसन्मो तरंगी समद्यो ॥

## ध

२६: क्या १ =२)।

ध पूँ [ध] शन्त-स्थानीय व्यवस्थन वर्श-विकेष (प्राप प्रामा)। घझ देवी घद (गर )। चंत्र पूँ [म्बाइक] काक कीया (उर वरशः वेचा ११)। र्धन दे वि भीव भ्रमर मनच (दे १,१७)। घेत न [ब्यान्त] सन्बकार, विशेष (सुर १ १२३ क्य ११)। र्घत न [स्वान्त] सहान (देवेन्द्र १)। र्धत न दि यदि यदिस्य प्रत्यक्त भेर्त-पि सुधसमिका' (पच २६३ विसे ६ १६, बह र) । धंत वि [ध्यात] १ धीन में त्याया हवा (स्तामा १ १ मीना पएश १ १७ जिले ३ २६ मनि १४)। २ शब्द-पूछ, शब्दिस (ffw) 1 र्घमा की [दें] सन्त्रा शरम (दे ४, ४७)। पंपुद्धय न [धन्धुद्धय] दुवचत का एक नगर, को मान कल 'संबुका' नाम सं असिक

है(सूपा६४०; भूत्र २ )।

(ਬਚ)।

(पक्) ।

भैमोस्रिय (मर) वि [भ्रमित] पुगाया ह्या

र्घस धक [ न्यंस् ] नट्र होना । धंसद, वंसए

र्धससक [ब्र्यसय] १ नारा करना। २ बहुम्बुण १५ [बृष्युम्त] धमा इतर का बूरकरला। चंसक (सूच १ २ १)। वसिक बहुँब्बुण्ग∫एँब पुत्र (हिं२ ६४०) खासा (सम ५ )। रं १६ कुनायक् पि२७०)। भमाड सक [ मुभ् व्यान करना को हना। बड़ न [दे] बढ़ बने हे नीचे का शरीर पंताबद् (हू ४ ६१) । (मुपा २४१)। र्षसाक्षित्र वि [मुक्त] परियक्त बोहा हुना **बड्डियन [दे]** वर्जना मर्जारक (सुपा (द्भगा)। 1 (705) र्मसाविक वि दि विपानत नष्ट (वे ४, घण न [घन] १ विच विमा स्थादर 18) i **बंगम सम्मत्ति (उत्त ६) सूम २**१ प्रामु ११ ७६ कुमा)। २ गरिएम मध्य मेप भगवन सक [भगवनाय्] १ जन्मर या परि<del>च्येप प्रथ्य---निनर्फ 🛭 भीर नाप मादि</del> धावाज करना । २ जवना, घतिराय बचना । हे क्य-विकय योग्य पश्च (कप्प) । ३ पू **बड़** घराधरीत (खाया १ १) पदम १२ कुबेर, बम-पंडिर 'मुच यो सिट्टी पंछोपन ३१ थ(म)। अएकमियों (मुपा ३१ ) । ४ स्वनाम-स्थात धगपगाइध वि [भगपगायित] वन्नग् एक बेह्री (छप ११२)। १ वस्य सार्ववाह का मावाबवासा (कप्प) । यक पुत्र (खान्धा १ १८)। **इत्** धराधरम् वैश्रो धराधरा । वक्क धराधरमञ्ज-वि विस् विसी वनवाना (कुछ २४३८ माण (दि ११६) । नि १६१ सीच १)। "गिरि पू "गिरि भग्गीकृष वि दि विवास कृषा सरमन्त एक बैन महार्थ को कब्रस्तामी के पिता थे प्रशिक्त 'सन्दी बन्दीक्ष्मो व्य प्रशिक्षे' (या (क्य बर१४२ दी): सुच र् िगमी (x) एक वैत्र पूर्ण (प्राथम) । गोव पूर्णिगोपी घड रेखो घय = ध्वन (पूगा)। बन्य सार्थवञ्च का एक पुत्र (लागा १ १८)। "ब्ह् पु ["स्वय] एक वैतमुति (रूप)। भट्ट रेबो भिट्ट (हे रंं) १६ : परम ४६. र्धित पूंची ["नन्दि] दुवना देव-प्रथ्यः देव

क्षतिस्त व [क्षतिस्त्रवनुष्] वक वनुष

(राव) । स्माह पू िमहा अनुस्थित (दश

भावि विवके ब्राह मीर पांच काने होते हैं

(पश्चार १ १)।

Y)। ३ एक धना (वितार २)।

धर्णज्ञवर्षु [धनद्वस्य] १ सर्बुल यध्यम

घत्ती को [धात्री] १ बार्ट कामाता बार्ट (स्वप्न १२२)। २ पूर्विणी मूमि । ३ माम सती-बुझ घावने का पेड़ (हे २,८१) । वेखी घाई। मसूर पू [यसूर] १ इत-विशेष वनूषा। २ तं क्यूरा का पुरूप (सुपा १२४)। भस्रिज वि [भास्रिक] विश्ने बद्धा का ल्ला किया हो वह (पुपा १२४ १७६)। घरम वि ज्विस्त विशेष प्राप्त नट नारा हुया **(है**२ **७१** एस)। चम्र देशी घण्य ≔ वस्य (कुमाः प्राप्तु १६ ८४: १६% उदा) । स्त्रान [सान्य] १ भाग सनाव सन्त (उवा सुर १ ४६) । २ घान्य विरोध 'कुसत्य हड् धानव कसावा' (पव ११६) । ६ वनिया (स्ति ६)। क्रीड पूं ["कीर"] ताव में होनेवासा बीट, कीट-विरोप (बी १७)। "मिहि पूंडी ["निधि] धान रखने का घर, कोहाबार, मंबार ( ठा ६,६ )। परथय प्र प्रिरमकी भागका एक लग (वद १)। "पिक्रान ["पिटक] नावका एक नाप (वव १)। धुंखिय न [पुंक्षितधान्य] इतद्वाकिया ह्या सन्तव (ठा ४ ४)। "विकित्तर र विक्षिप्तवास्य विकास सनान (ठा ४ ४)। विरक्षिय न विरक्षित घान्य] बाबू से इंक्ट्रा किया कुरा बनाव (ठा ४४)। संबद्धिय न ["संबर्धितमान्य] **चेद से काटकर करें -- विता**सन में नामा नवा चान्य (स ४ ४) । तमर न [गार] क्रोहायाए, बात **एक्ते का बृह** (निष्कृ क्र) । बसा की बिल्यों मन, बनावः 'समिव शाह्याची क्लामी स्लबाहेंची (बप ६८६ हो)। धका की [घट्या] एक की का नाथ (उना) । भ्रम सक [थ्रम] र वयना वीक्रना भाग में दप्ताना। २ श=व करना। ३ कादू पूरता। बनइ (नद्दा) । वनेद (कुप्र १४६) । बहुः, धर्मत (तिषु १)। क्यक धरममाण (क्या याया १ ६)। धमग वि [ध्यायक] वमनेवला (ग्रीप) । धमण न [धमन] र माय में तपाना (बाबानि ११७)। २ वायु-पूरता (पर्वा ११)। ६ वि. मझा, जमनी मानी (चन)।

धमणि ) और घिमनि नी ] १ मणा, घमणी । भगनी भीकनी। २ नामी सिरा (भिपा १ १ उपान्धीत २७)। यमयम यक [ धमधमाय ] 'बन्-पन्' धाबाब करना 'वनवमइ सिर' विणियं वायह सूरोपि मञ्जूष विद्वी (सुपा ६ ६)। वक् चमचर्मत चमचमार्थत चमचर्मेत (मुपा ११४ नाट---भाषती ११८४ गावा १ ८)। भगास प्रै [घमास] क्रुश-विशेष (पएस) ₹७) i घमिल वि [ध्यात] विसर्वे नापु पर दिया थवा हो बहः 'विमिन्नी संखी' (पुत्र १४६)। चनिय पि [क्सात] बान में समया हुवा 'बमियक्खय कुकाए हाधवर्ष हुरुव' (मोह X4) I चन्स पुं[धर्मे] १ एक देव-विमान (**देवेन**र १४३)। २ एक किन का जरवास (संबोध X=) 1 भन्म पून भिने । शुन कर्ने कुराल-अनक श<u>न्ता</u>न, धशाचार (ठा १३ सम १ २ थाचा सुबाहार, बासू पर ११४ सं ५७)। २ पुरुष मुक्कत (सुर १ १४) धार ४)। १ स्वन्धन ऋक्तं (निन् २) । ४ प्रण पर्याय (ठा२, १)। १ एक शक्यी पदार्थ, को भीव को वदि-क्रिया में सङ्घयता पहुँचाता है (नव ६)। ६ वर्तमान धवसपियी काल में धरामा पनहरतें जिल-वेद (सम ४३) पश्चि । ७ एक मणिक (क्य ७२८ टी)। ८ स्पिति, मर्याद्य (माचु २)। १ क्यूप कार्युक (सूर १ ५४) पाय) । १ एक मैन ग्रुमि (क्रप्प) । ११ 'सुमक्रताक्क' सुम का एक सम्बद्धन (सन ४२) । १२ धावार, रीति, व्यवद्वार (कय) 1 कत्त प्री पुत्र शिल्म (प्राक्ष)। सर व [पूर] नगर-किरोप (रंध रे) । **व्हरि**श वि ["काविद्वाद] वर्ग की वात्रवाला (शर्ग)। क्या की [क्या ] वर्ग-सम्बन्धी बात (अप, सम १२ खाना २)। इन्हीं पि "कथिन वर्गकवा कङ्गीपाला, वर्गका उपवेशक (योथ ११६ मा ब्या ६) । कामस वि [कामक] वर्षकी वाहवाला (धव)। नप्रम पुं ["काय] वर्ग का सावन मृत शरीर (पंचा १व)। करताइ वि [कियायित्] वर्ग-प्रतिपात्रक (धीप)ः वस्तात्र् वि

**िं**क्यादि वर्गसे क्यादिशासा धर्माटमा (धीप)। गुरु पुं [गुरु] वर्ग-वर्ग हर, वर्गावाय (इ.१)। गुव नि [गुप्] वर्ष रप्रक (पर्)। शोस दूं ["योप] काँएक वैत मुनि चीर धाषायीं का नाम (शाष्ट्र १ सी ७ माच ४ मग ११ ११)। "चऋस िंचक् ] जिन्होन का वर्ग-सकाशक चक्र (पन ४ : सुपा १२) । चक्काट्टि पुं [ चक्क-वर्शिन्] जिन देव (माबू १)। व्यक्ति पू िंचकिन् वित्र भगवान् (कुम्मा ६)। क्रमणी भी जिननों भर्म की प्राप्ति करानेवाशी की अर्म-देशिका (पंचा १९)। जस पू [ यरास् ] वैतन्नुति-विशेष का नाम (बाव४)। जागरिया की "जागर्या] १ वर्म-वित्वत के सिए किया बाता बानएए (सप t२ t)। २ जन्म के अद्वर्ते दिन में किया काशा एक जरसव (कृप्य) । बस्द्रय प् **िच्यक**े १ वर्ग-योतक व्यक्त दश्त-व्यक (राय)। २ ऐरनत क्षेत्र के पनिमें जानी विन-देव (धन ११४)। <sup>\*</sup>हम्मण न िष्यानी वर्ग-विन्तन सूत्र व्याल-विशेष (सम १) । विम्हायि वि [विमानिन्] धर्म म्मान से बुक्त (भाव ४)। हि वि[विम्] वर्गका श्रामिकापी (सूर्घर २ २)। पायग वि निगयकी १ वर्षका वैद्या (सम १ पडि)। ज्युदि [क्र] वर्गका बाता (र्वच ४) । विस्वयर दू ["तीर्घकर] विनमपदल् (चर्च २३, पति)। दैस्य न िक्यों बस-विधेव एक प्रकार का इविधार (परम ७१ ६६)। "रिव देवी "ट्रि (रेवद v)। स्वकाय र् ["स्विकाय] शव किया में शहरकता पहुँचाने बाबा एक ग्रहनी परावे (यद)। दय नि विद्यी वर्ष की प्राप्ति करानेवासा वर्ग-देशक (मम)। दार न द्वारी बर्मका कराय (ठा४४)। दार पूर्व दिवार] वर्ग-पत्नी (कप्पू)। दास इ दिवस वनवान महागीर का एक विष्य और छपदेवमाना का कर्ता (ज्य) । "द्युष् [देव] एक प्रक्रिया केत (प्राचार्य (सार्व = )। देसग दसय वि ["देशक] वर्ग का उपदेश करनेताबा (राजः क्या पति)। भुष को [भुष] वर्गस्य

पूर्य (खाया १ व)। शावरा वेकी भावरा

(भय)। "पश्चिमा और ["प्रतिमा] १ वर्ग

की प्रतिश्वा। २ वर्षका सावन-भूत सरीर (हा १)। "पण्याचि की "प्रकृति] वर्षे सी अवपरा। (क्या)। पदियो (श्री) **व** [परनी] वर्ष-पत्नी भी मार्वा (श्रीय २२२)। "पिनासय वि ["।पपासक] नर्ग 🤻 शिष् प्वासा (भ्रम्) । ["पन्यस्थिय] वि ियपासितः वर्षे की प्यास्त्रकता (तेषु)। पुरिस पूं ["पुरुव] वर्व-प्रवर्तक पुरुव (छ ६ १)। पछच्छण वि <sup>वि</sup>शरक्षनो वर्गर्ने भ्रम्बक्त (क्रम्मा ११)। प्यचाइ रि [<sup>\*</sup>प्रमादिन्] वर्गोमकेतम (भाषानि १ ४ २)। एका दू[प्रम] एक कैन शाचार्ने (रवश: १०)। प्यानादय वि प्राप्त<u>ा</u> वर्गनायी वर्गनायेखा (मानान ११४१)। बुद्धि वि बिद्धि वानिक वर्गमिति। २ द्रेएक राजाका नाम (च्य ७२व दी)। "मिन्त पू ["सिन्न] सदनम् पध्यम् का पूर्वस्तीय नाम (श्रव १११)। य वि वि वि वर्ग-राता वर्ग फैरान (सम t)। 6इ. की "हिन्दि] १ मर्मेनीफिं (मर्मेर)। २ वि क्रमें में स्टीच याता (ठा १)। ३ पूँ एक वैद ग्रुपि (निरार र पर ६४८ में)। ४ नाग्रख्यी काएक सदा(सलन)। स्मन द्रै सिम्मी १ वर्गभी प्राप्ति । २ वैन साबुद्वाचा दिया वाटा मागीवॉद (सर १६)। क्यांनिक वि ["सामिय] विश्वको 'वर्गताम' क्या बाधीर्मात विका कथा ही यह (स १६)। कार्यको साम (स ११)। साहण न ["स्थमन] धर्मनाव-धप धरहीवाँद स्नाः न्दर्ग यम्मबाइएँ (४ ४६१)। "ग्राहिज रेको स्थामिस (त १४०)। वेत ४ [ यम् ] वर्षवाला (धावा) । वय 🛊 ["ब्यय] धवर्ति शत चर्माश (तुपा ६१७)। र्मि विष्ठ वि [वित्] वर्मका जलकार (धामा)। विज्ञ पु विद्यु मधाँमानी (पंचप १)। स्वयं वेली वय (गुना ६१७) । सञ्चा को ["मञा] वर्ग-विकात (इस ११)। सञ्जा देवी सन्ना (अन ७

६)। सस्य न िशाका वर्गभतिपादक त्रक (बंद ∀) । सभाकी ["समा] १ वर्गे विकास । २ वर्म-द्वादा (पर्वाह १ वे) । सारवि पू िसारवि विगरत का प्रवर्तक, वर्ग-देशक (क्या २७ पति)। साद्याधी ियास्त्र] वर्ग-स्थान (धर ११)। सीख कि "शीस्त्र" वार्मिक (सूघ२२) । सीक् र्वू [ैसिह्य] १ सनमान् श्रवितन्त्रन का पूर्व भनीय नाम (सम १६१)। २ एक वैन ग्रुनि (संबा ६१) । "सेण प् सिन एक बनका का पूर्वमंत्रीय जान (सन १३३)। "हुनार वि [पेक्किर] वर्षका प्रवस्त प्रवर्णकः। २ र्षु विल-वेद (वर्ष२)। ।<u>श्रद</u>ायन ीनुप्रान वर्गं का बावरण (वर्गं t)। खुष्य वि [ीनुझ] वर्षका धनुमीलग करीनाका (बूच २,२३ खाला १ १०)। ाणुय वि ितिया । वर्ग का क्षत्रक्रका करते-नावा (धौर)। । बरिय पू [ीचार्व] वर्ग-बाता प्रव (धम १२ )। देशाम 🕻 विषय] १ वर्ग-चर्चाः २ वारहवां वैत व्यय-वल्दः **इदिमार** (ठा १)। । हिरारणिय 💃 िधिकरणिकी मान्यभेगः न्यानकर्ता (बुवा ११७)। अक्रियारि वि विविद्ध रिम् का-प्रकृत के योग्य (का १) । यस्म वि [श्रम्थी] करं-कुछ वर्ध-संग्रहः भ पुरा तुनं कोहित तमेन भन्ना (महानि ४ ह मन्ममण द्रं[वे] <del>वृद्य-निशेष</del> (क्य १ ६१ धीपक्रम ४२ ६)। धनमभाज 🕪 । घम । थम्मय पुंचि १ पार शहर का इस्त-क्छ । २ लएडी देनी की लर-वरित (देश ६६)। श्रामित वि विर्मिण् १ शरी-पूर्वे, प्रव्य-पदार्थ । २ वासिक वर्श-परायद्य (सुपा १६) ६६६, १. ८ मना १.६)। भस्मि वि [भर्मिस्] तर्वस्यसम्बद्धिः पद्य (वर्षेश्व १ है)। थस्मित्र रेति [यार्मिक] १ वर्मशायर, वर्म धरिमा । परावक (भा १६७) वर्ष वहेश वर्ष्ण १४) । २ वर्श-कावाची (उप २६४) पेचा १)। ३ वासिक-शंदल्यी (ठा३ ४)। घरियद् वि [बर्सिप्ट] चरितन वानिक (धीन नुसारि )।

धम्मिष्ट वि [धर्मेंग्र] वर्ग-प्रिन (धीर)। घस्मिट्र वि [घर्मीष्ट] बॉमिक वन को थिय थरिम**क**ुपुन [थिनिमक्ष] १ प्रकत केत चन्नोक ∫र्वमा हमा केरा, क्रिमों के बाने हुए वाल की 'पटिया या बूड़ा'। बीच में कुत एक पर अपर से मोतियों भी या सन्य किसी ∠रात की कमियों से वैता **ह**था के<del>ट-क</del>साप (प्राप्ट वक् स्थिति ३) । २ ई. एक वैत युनि (बान ६) । चम्बीसर दुं[बर्मेंबर] बरीत **क**र्शांखीका में भरतवर्ष में उत्पन्न एक जिल-देश (पन ७)। थम्मुचर वि [धर्मीचर] १ इसी पुर्शी थे मेह (यत्दुर)। २ त वर्गकाशयान्य न्बस्युत्तरं बङ्ग्बं (पनि) । धन्मोवएसग् ) वि [धर्मीप्**र**शक] वर्ग का बन्दोवयमव 🕽 व्यस्ति भेनाना (छाना १ १६। धुपा १७२। जर्म १)। घय श्रव [घे] यान करना स्तर-यान करना। वक्र धर्मत (सुर १ १७)। धय ५ औ [क्वज] व्यवा, प्रताना (ह २ २४) खाला १ १६४ वर्षा १ ४४ गा १४)। **धी**. °या (पिंद)। वह पूं[°पट] ध्वदाक्स वक्र (श्रुमा) । धय पू [वं] तर, पुरुष (दे ४, १७) । थयण ≋ [दें] वृद्ध, तर (दे ३ ३७)। बयरहु वुं [बुवराष्ट्र] इंच क्की (पत्र्य) । बर एक [मृ] १ वाएड करना। २ नक्क्य। नरद, नरेद (हे ४ २३४) ३३६)। कर्म बरिक्षद् (नि १३७)। यह घरंत घरमान (स्था भरि या ७११)। श्रमक घरत घरेंत घरिवांत घरिकामाण (ध ११ १९७१ ४ र एका बच्चार ४- भीयो। र्थेष्ट व्यक्ति (क्रुप्र ७) । क्र घरियक्त (भूपा २७२) । बर तक [ घरम् ] इतिथी का पावन करता। वक्र वर्रत (सुर १ १३)। भरत [रे] एव वर्द (रे.स. १७)। बर ⊈[घर] १ जनगद प्रधान का शिंहा (बस १३) २ वद्वार नगरी ना एक राजा (स्ताना १ १६) । ६ नवंद, नहाइ (६ ж ६३ पत्रः)। धर [<sup>\*</sup>धर] चारत क्लोनला (क्प्प) ।

₹•६) । परिर्ज्ञत पारव्यवः ) धरिव्यमाणः 🤇 रेली घ€ अपृत घरियी थी घिरिणा विषयी भूमि (पाप) । चरित्ता की [घरित्रा] पूर्विको मूनि (पू

पाइअसदसहण्यको

चरित्र वि [धूत] १ बाच्छ दिवा हुवा (वा

१ १ मूला १२२) । २ धोका हुमा (म

'बरानियं मध्ये' (क्रूप्र १४ )।

१। वष ७) । २ बूग-विशेष (गएए। १ उर १ ११ टी घीष) ।

धना हुमा (शए)। धया न [धायन] यौन, नारत साहि ना

धारत-मा (मृत्य बह्र) । भयन पुँदि । स्वताति में बलन (देश 2(4) 1 धयतः न [धयः] जनानार शोतः रित ना जाराव (नंबीच १६) ।

होयने का सावन (जो २)। यहि कारछ धयन्त्रक न [धयस्त्रक] प्राम-विशेष जो १२७ सम्मल २२६)। करनेवाला (धूमा)। प्यभ र् ुधमा बावरच 'मोवक' नाम से प्रवचत में प्रसिद्ध धरिम न [धरिम] १ को तथाई में तील कर बरतीन का उत्पाद-पर्वत (ठा १ )। **₹** (đì **\***) i वेशाजाय वह (था १० शाया १०)। भरणा श्री [भरणा] रेखी भारता (एपि)। धबस्रम न [धमस्रम] सकेर करना खेती-र ऋणु करना (क्षामा ११) । ३ एक धरोंज को [धरींग] १ पूमि पृथिकी (बींग करख (हुमा)। तच्द्रकी नाप सीम (वी २)। मुमा)। २ भनवान् घरनाय की रायत-देवी घवळसडण पू [क्] इंस (दे ४, ४१। पाछ) । धरियक्त वेही धर = धू । (संदि १)। १ मनवान् वानुपूरमं की प्रवस थवया की [घयछा] मी मैदा (ना ६६८) । धरिस चक [भूप ] १ श्रंबर होना एक पित शिल्मा (नम १६२) पत्र हो। स्पील पू धवसाम मक [ धवसाय ] सदेद होता। होगा । २ प्रगरमता परना, हीआई करना । िक्टिंड कि पर्वत (मुख १)। कर प् षत्रस्रर्भन (गा ६)। [\*बर] ममुच्य (परम १ १ ४७)। घर ३ मिलना, संबद्ध होता । ४ सक हिसा धपछाइम वि चिषद्यियती १ उत्तन केन र् [ चर] १ पर्वेत पहान (सनि १७)। करमा, मारना । इ.समर्थं करना, सहम नहीं की वरह जिसने कार्य किया हो बहार न, १ वयोच्या नपरी का एक मूर्व-वंशीय स्था करता । गरिसद् (राज) । वत्तम कृपम की तरह सावरण (डावें ६)। (वहन र १ )। धरप्पचर पू [धरप्रवर] घरिम सङ [घर्षेय ] सुध्य रएता विश्वतिष्ठ धषंडिम वुंकी [धव डिमम्] संदेशन युक्ता मेह पर्वत (पवि १६) । घरवड् पू िंघर करना। गरितेइ (अस ६२ १२)। पवि । भेर पर्वत (धनि १०)। घरा और धकेंद्री (नुपा ७४) । घरिमण व [धर्षेत्र] १ परिमव ग्रायिपव । ["धरा] मगशन् विमननाम की अवध धविषय वि [धसिक्षित] सहेद हिया हुमा २ श्रेष्ट्रति समूद्र । १ समर्पं धमहिप्यता । (वदि। । ४ हिंगा १ वन्बन, योजन (निष् १ द्यंत)। यपर्छा क्ये [धमर्छा] उत्तम भी मह देया ६ प्रयम्भवा पुत्रका शीकाई (चीप) । ["परि] मू-परि चना (नुग ३३४) । (गतह)। घरेंत देशी घर ≂ पू। बट्ट व [प्रष्ठ] महान्योक, भूमि-सन धम्ब र् हि] देन (६ १ १७) । भष प्रश्चित्र १ पति स्वामी (ए।या १ घस सक [धस] १ वसना। १ नीवे

वाचा । ३ प्रश्त करता। बस्द, धनत (रिय) । धत्रकायक [चे] यहनना अय मे व्याहुत धम पूं [धम ] 'वन् ऐवा धारात्र विस्ते हीना बुर्गपुरामा । परदाह (बस्) । की बाराज पनश्चि महिनंदते कीटमी धेवकिय वि दि ] बहरा हुमा भवत ब्लाहू न (वहार खाख १ १—पत्र ४३)। थमधः पुष्ति हरवका परयाप्टको माताकः बुक्यवी में 'पाडकों'। 'दो जायश्चितहरा' (पा रंग्र कुत्र रहेश) । धमक्कि वि [र] तूर परश्रम हुमा (वा ₹¥) I यसन वि [रे] स्टिंग हैता [या (रे र.

Re) 1

800

धवळ वि धिवळी १ सकेर, रश्त (राघ:

मुपा २०६) । २ वु छत्तम वेत (स. ६३८)।

६ वृत्, ध्रुव्य-विशेष (पिष)। गिरि वृ

िंगिरि कैसास पर्वंत (ती ४६)। गह

न ("रोह्] प्रामात सहस (हुमा) । चंद्र प्

िचन्द्री एक वैन मूनि (वे ४७)। रघ प्

िरय] मैयलयीत (मुपा २१%)। हर न

["गृह्] प्राताद, महम (या १२ महा)।

घत्रस सर [धयस्य ] स्ट्रेज शरना । यत्रमञ्

(रि ११७) । स्वक् धयसिञ्जेत (गरह) ।

शिष्या (तम १६२) । यल न ["तछ] समि-दम भू-दार (लाया १ २)। यह व (महा) । हर देवो घर (व ६ ३६) । घर्रायद वं [घरणम्त्र] नाम-नुमार्गे श्री दिग्य दिशा वा श्रन्त (पद्म १, १६) । धर्राणमिंग ई [धर्मत्रश्रद्धी वेद पर्दन (गुज १) । भारमी देना धरणि (प्रापृ ३३ नि ५३। ने २ २४ पुत्र १२) । घरा थी [घरा] पृषिते भूमि (पत्र पूरा र र) । घर टर 🔩 [धर] याँन पराइ भि ६ कर १० स २११ छ १। ब्रा धर्व हो। ।

घर्ष्य म 🔩 [घर्ष्यश्रा] चरा (श्रोह ४३)।

घरमा—घसछ

थरण र्षु [घरण] १ नाव-कृषार देवीं ना

द्यागण-दिशा का इन्त्र (ठा २ ३ चीप)।

२ पर्दरीय राजा सन्यक्ष्मुप्ति का एक

पुत्र (यंत्र १) । १ वेडि-विदेश (यत्र ७२८

टी। मुपा १११)। ४ म. **भारण कर**नी

(देश इंशार्यदासमा ४०)। १ सोनह

होने का एक परिमाया (को २)। ६ करना

देना, मंदन-पूर्वक उपदेशन (पद १०)। ७

NCC	<b>बाइअसरमहण्य</b> यो	<del>परिम-पारपमा</del> प
समित्र कि [यसित] कता हुया (हम्मीर (१)।  सा कर [या] वारत करना। वाह, वामर वारय (कर)। कर्म चैयर (तिश)। सा तक [या] प्रमान करना किना करना। वार्मित (क्री)। सा तक [या] र शेष्ट्रमा। र पुत्र करना। वोरा। वाह वार्मित (क्री)। सा तक [या] र शेष्ट्रमा। र पुत्र करना। वोरा वार्मित (वर्ष)। साइस कि [यायित] चैता हुया (वे ८, वं वार्मित)। साइस कि वार्मित (दे २ वरं वन १०)। प्रमान करने वे मान ही हैं निवा (ठा ४ ४)। र क्यन्तियेश (क्षित)। पित्र ही विद्या (वार्ष)। साई किया वार्मित वार	वाहुकास्त्रसार्य्य वाह् िका- पाड सक [तर् + सार्य्य वाह् िका- काना । एक साहिकाम (पुत्र न शे) क्ष्युर- धाहिकास (पक्र १० ५० ५६ १११) । धाह पक् [आन ] देरणा करणा । र नाथ करणा । वासीस (सुप्रीन ७ )। क्ष्युर- धाहिया व (सुप्रीन ७ )। क्ष्युर- धाहिया व [स्तुर- व व्याप- धाहिया व [स्तुर- व व्याप- (क्षिण्) । धाह्य व व [स्तुर- व व्याप- क्ष्युर- । धाह्य वि [से आटक] तक्ष्य क्ष्युर- (क्षिण्) । धाह्य वि [से आटक] तक्ष्य क्ष्युर- धाह्य वि विद्या तक्ष्य (सिर्ट- १८५) । धाह्य वि [से विराय २२ थ)। धाह्य वि [से वि- स्तुर- व व्याप- धाह्य वि [सि- स्तुर- व व्याप- धाह्य वि [सि- स्तुर- व व्याप- धाह्य वि [सि- स्तुर- व व्याप- धाह्य व वि- धाह्य व व्याप- धाह्य व व व्याप- धाह्य व व व व व व व व व व व व व व व व व व व	पायक में पायकी प्रानिश्ते का स्वाधि
भार प्रं [भारा ] १ सोना नायी तांता, नोहा रामा सीता भीर मस्ता में कार करा (जी १)। २ मेर, मनक्ति मार्गिय सर्वे (वे ४ ४ क्या १ २)। १ सरीर-मारक करा—करू, बात निता रह रहा नांव	रहा। पाकिन पि [निस्सारित] निर्मापित बक्द निकामा हुसा (पडम ११९ । स १९८३ जप ७२० हो)। पाडी की [पाटी] १ उन्हार्य कर कर (पुर	बारण व [बारण] १ वारने की सक्तवा। २ वहुछ । १ फाछ एकाना। ४ परिनान करमा। १ सन्वस्तन (भीरा छा १,१)। बारणा की [बारमा] १ मनोद्य स्तिरी

२, ४३ प्राष्ट्र) । २ कृथवा श्राक्तमण् नाना केट, वर्शन सभा भीर शुक्र (भीर- **गु**प्र ११४) । ४ पुलिया जल देव मीर गायु य (क्य)। घाण रेवी घरण = क्य (क्य १ )। पार महादृष्ठ (तूम १ १ १) । ३ थ्या-बराउ प्रविद्ध सम्बन्धीन 'मूं' 'पब् प्राप्ति घणां की [घाना] चलिया एक प्रकार का (बस)। ६ स्थमाच प्रदृष्टि (छ २४१)। वशाला (वे ७ ६६: प्राप्त)। नाटन-शास-प्रसिद्ध धाराणिकः-विशेष घाणुका वि [धामुद्याः] वनुर्वर, बनुर्विशाः वे (इमा २ ६१) । सीन ["का] ३ वालू वे क्षांचल । २ वक्क-विद्याप (पंचमा) । ३ लाग, የየህ **፵**፱ ሂደት) ፣ राम (प्रकृ) । बाह्म वि विवादिकी थाणुरिका व [वे] कथ-नेव (वे ४ ६ )। भीवनि भारि के बोच है ताल शादि की लोका भाग पून [भागम्] स्रहेकार, वर्षः २ रख मनैरङ् बनानेवाला विविधासर (पुत्र ३६७)। धारि में कागरता। व वि वर्त-पुष्तः ४ भाइ पू [भातृ] परुपनि बामक् व्यक्तर देवो रश बादि में बागह (श्रेदीय १६)। गएक १८४ (ठा६,३)। याम म [घासम्] चल परक्रम (बारा १३) भाउस्तेसण व [भानुसीयज] धार्वविच कः चरा)। (बंगाय १.) । घास वि[भात] १ तुश लेपुट (धोव ७ भाइ मक [निर्+स्] बाहर क्लिला। भाष्युर २ ६७) । २ मः नुमितानुकास

(¶(₹ ¾) |

बाहद (द्वे ४- ७१) ।

(थापम)। २ नियन प्रकृत करनेनानी दुवि (ठा वंश १)। १ तात वियम का समित्सप्त (विके २६१): ४ प्रवदारम निरुप (मानम) । १ मन की स्थिता: ६ वर क एक बनवा वर्गी ना वर्ग (सद क १)। वयदार र् [स्वयदार] सन्धार-विदेव (का ६ २)। भारणा की [भारपा] नकात का खंबा, थरन (धाचा २:२ ३ १ टी) पर १९३)। षारणिक वेदी भार - वारम् । मारणो चौ [चारणी] १ बारश करनेतली (धीन)। २ ऱ्यारकृषे जिनरेत की प्रत्य तिच्या (सम १६२) । ६ बगुबेर धादि यनेक धनायों की सभी का नाम (धंता धाका है। विपाय १३ कावार १)। भारणीय रेको धार = शारम् । धारय ध्वो धारग (मोच १/ मनि) ।

भारवधाण केवो भार - कारन्।

धारा की दि रेख-मुक रण-मूमिका श्रप्रमाम (दे ४, ४१)। षारा भी पारा र सब के झाने का माण, भार (गतह प्रामु ६२)। २ प्रकात् राप्ती (महा)। १ याच की गति-विशेष (दुमाः मझा)। ४ जल वारा पानी की बारा। इ वर्षा पृष्टि । ६ अव पदाची का प्रवाह रूप से पतन (मरह)। ७ एक राज-पत्नी (ग्रानम)। क्यंब पूं [क्ल्म्य] क्रसम्ब की एक बाति को वर्षा से फलती-फूबती है (कुमा) । घर दूं ["घर] मेत्र (मुता २१)। वारि , म ["यारि] बाय स विरक्षा बस (मन १६ इतिय वि ['वारिक] नहां पाच से पानी विष्टा ही वह (भग १३ ६)। इय वि ["इत] वर्षा से सिक्त (कम्प)। हर देखों घर (सुर १३ १६%) । भारा की [भारा] मानव देत की एक नवरी (मोह ८०)। बारावास पू दि ] १ मेक मेहक बेंग (दे १) ६६: एड) । र मेच (दे १८ ६३) । धारि जि [धारिम्] मायत करनेराला (बीप घारित देशो धार = बारम्। धारिद्व न [घाष्टचे] बृष्टता ज्यूपकता नवे सक्रम (प्रास्या स कोरा घ - 33 भावधेना कवा पच १२६) : भारिजी रेजे भारणी (मौप)। भारित्तप देखो धार = पारम्। धारिय वि [भारित] बारछ किया हुवा (भविद्याचा)। बारी रेकी घन्ती (है २ =१)। घारी देवो घारा (दुमा) । भारेत्रप } क्यो धार = भारम् । भावसङ [भाय] १ कीकृतः। २ सूछ करना भौता। भागइ (है भ २२वा २३व)। बक्र. घाषेतः घाषमाण (प्रामु «४- महाः कप्प)। चेह भाविकप (महा)। धावण न [धावन] १ देन क्षेत्रमन्, शीवना । (तूम १ ७)। २ प्रशासन, क्षोना (तूप्र 144) 1 **{**3

धाबणय पु [धावनक] बीड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाचा हरकारा संविश्विमा (सूपा १ ४ २१४)। बाबणया ध्री [धान] स्तन-पान करना (उर : (# # z धावमाण देखो धाव । घाविल वि घायित दौराहपा (प्रवि)। धाविर वि [भावित्] बीइननामा (धछ। स्पा १४)। पानी देखो पाइ ≕पानी (उप १३१ वें स ६६: सूर २ ११२ १६ ६८)। भारा की विी याह, प्रकार, विकासिट (पत्रम ११ ६ वः सुपा ११७ १४)। चाहायिय म [दे] बाह पुकार, विस्माइट (स ३७ : सुरा ३० ४१६ महा)। चाहिय वि वि पनायित भागा हथा (बम्म ११ थि) । धि व [ निक ] निक्तर, की (रंग)। चिष्की पिति १ मैर्ग मीरव (सुध १ = पर्)। २ नारता (शावम)। १ वारता. ज्ञात विषय का अविस्मरापु (विमे)। ४ चरछ प्रमस्नान (सूच १: ११) । ५ व्यक्तिया (परहर १)। ६ वैर्वे श्री धरिष्ठाविका देवी । ७ देवी की प्रतिमानियोग (राजः यामा १ १ दी-पत्र ४३)। व तिविच्छि-हरू की अविद्यापिका देवी (इक ठा २३)। कृत न ["कृत्र"] पृति-वेशी का समित्रित विकार-विशेष (व ४)। बार पू विवार] १ एक सन्तान्त् नाहपि । २ 'श्रेतनाः नाहाँ सुत्र का एक सम्ययन (श्रीत १८)। स् सीत वि [सम्] शीरअवाका (हा ६ पराप्त ₹, ¥) i भिद्रकी [भृति] वेका कपातार तीन किन का अपनाम (संबोध १०)। धिक्य वि [धिक्कृत] १ धिक्तारा हमा ( वय १)। २ न, पिश्वार, विस्तवार (TE 1): थिकाण व [चिकाण] शिरहरार, विश्वार (खाया १ १६)।

(पुप्त १६७)।

धिकार पु [धिकार] १ विस्तर, विस्कार (पर्वाह १ के इ. २६)। २ प्रपक्षिक मनुस्यों के समय की एक बएड-नीति (ठा ७ —पत्र 18c) 1 धिकार सक [ धिक + कारय ] भिकालाः विस्तार राजा। इस्कृ चिद्धारिकामाण (বি খছৰ) [ धिक्र न चिवे विषय पृति (दे २ ६४)। चिट्य वि चिया बादण करने योग्य (सामा 1 (5 5 चिल्ल कि क्येय ] स्थान-योग्य किन्तनीय (छापा १ १)। चिजाद पूंची [द्विजाति, चिग्जाति] बक्कारण विश्व । की 'तरून महा नाम धिज्याद्वणी' (पायम)। विज्ञाहर ) पुन्नी [ द्विजातिक, भिरवा चिक्ताइय<sup>5</sup> दायी बन्नाख चित्र (महा उप १२६ मान १)। धिजाबिय प[धिगुजीबित] निन्दनीय **बी**वन (सूब २ २)। चिट्ट वि [चूप्ट] बीठ प्रकल्म। १ निर्संज्ञ वेशस्य (हे ११ मुर २ १ मा ६२७ था (४)। बिट्रब्तुण्ण देखो घट्टब्र्युण्य (पि २७६)। चिट्टिम पूजी (चूएरप) पूरता ब्रोक्स (सूपा 27 ) 1 विद्धा ) य [ विक् विक् ] धी थी (का घिषी ∫ व रें!ः रंगेः}। थिप्प थक [शीप] शैपना चमनना। विष्यद्र (हे १ २२३)। बिध्यर वि [श्रीप्र] देशीयमान अमधीमा (कृषा) १ भिय म [ भिक ] मिलार, धी नेइ पिर विव मृद्धिय' (उर ६६४) । थिएसु व [चितस्तु] विकार हो (छामा १ १६ नका प्राप्त)। धिसम प्र [धियम ] शहस्त्रश्च सुर-प्रक (पाप)। विमिष [थिषु] विकार, धी (बुग ३११ सण्)। थिकरिक वि [थिककृत] विकास हथा भी देशो भी मा न्यं संगत्तं बुंभतितस्य बीए

यस्तीद रा नश्वीत बार्च (मंत्रत १२ २ )।

15	पाइअसइसहञ्ज्वो	पी—पुची 
पी की [भी] दुर्जि, मिंत (नाम शामा है १६ दूर ११६ २४० मसू २)। यल वि चिन्ती १ दुर्जियाना विष्यम् । २५ एक मनी कर नाम (जा कार दो)। ज्ञ मंति है चिन्ती १ दुर्जियाना विष्यम् । २५ एक मनी कर नाम (जा कार दो)। ज्ञ मंति है [ मनी ] दुर्जियानी विष्याप् (जा करेत दो कना राज)। पी स [चिक्क] विक्तार, की (ज्ञा के १ १ ते १६२ महार पर्व नव्य ४२)। पी दे वेची पिछ्न जुनका नामदर्गित्या पर्वितिस्य दुर्जिया स वीर्तिः (ज्ञा ६२६ दी)। पी उद्यक्त स वीर्तिः (ज्ञा ६२६ दी)। पी उद्यक्त स वीर्तिः (ज्ञा ६२६ दी)। पी उद्यक्त स वीर्तिः (ज्ञा विक्ता विषयः विषयः विषयः विवासः विषयः विवासः विवा	पाइमसर्साइण्यां धीयर १ धीयर १ मळ्यीगार यञ्चया महत्त्व व्यवसीरी (क्षमा क्ष्म २४%) १ वि प्रमाद व्यवसीरी (क्षमा क्ष्म २४%) १ वि प्रमाद व्यवसीरी (क्षमा क्ष्म २४%) । प्रमाद व्यवसीरी (क्षमा क्ष्म २४%) । प्रमाद व्यवसीरी (क्षमा क्ष्म २४%) । प्रमाद व्यवसीरी (क्षमा क्षम २४%) । प्रमाद व्यवसारी व्यवसार (या १ १ ) प्रमाद व्यवसार व्यवसार (व्यवसार १ व्यवसार (व्यवसार १ व्यवसार व्	(१ ४ १६ पाचा है १२) । वर्ग, कुनद् कुछिक्स (१ ४ २४२) । वक कुणित (द्वा १ १३) । के कुणित पुणित (द्वा १ १३) । के कुणित पुणित (द्वा १ १३) । के कुणित पुणित (द्वा १ १३) । के कुणित (प्वा १) । कुणान कि पुनना । ध्वमम दिवमा (धोन १६१ का) । कुणा के कुणाम (क्व १३ १०) । कुणा कि कुणाम (क्व १३ १०) । कुणा कि कुणाम (क्व १३ १०) । कुणा कि कि कुणाम (क्व १४ १०) । कुणा कि कि कुणाम (द्वा १४ १०) । कुणा कि कि कुणाम (द्वा १४ १०) । कुणा कि कुणाम (द्वा १४ १०) । कुणाम (द्वा १४ १०) ।
थीराविम रेनो भीरविय (विश्वष्ट)। भीरिम रेनो भीर ≠भर्ष (है २ १ ७): भीरिम रेनो भीरिबय (विष्)। भीरिम पुंची [भीरिम] वैसे बीटन (वर ह	त्रण सक [यू ] १ व्याना विकास ११ ४४ १६४)। १९४४)।	सुचित्र वि [पूचित] बांग्स्य प्रशासि (तुना वेदेश या १२)। सुचिम पूंजी [पूचिस] वृचेता, बूचेश स्पार्ट (बृह वेट्ट दुमा या १२)।
६२ नुतार ६० व्यक्ति नुष्य ११ )।	करना इदाना। १ नात करना । पुण्ड, पुण्ड	भुषीकी [यूचा] कृतंत्री (कथा १६)।

(गडह)। २ हेच मनीति (पर २ १)।

२ १) । ⊭ मंगार (बल्) । १ न मृत्रि का

मून्ति। क शेवन श्रान्तवारि नियह (नूष १ | घूम पूर्व [धूम] १ पूम पुष' योग-विष

**१ ६)** ।

```
नारम् सेप्यार्थं (शाचा )। १ वर्मे |
भुद्गुन्न (बर) चर [ शम्हाय् ] मागन
                                      (धरः) । ११ धरदन धरिस्त भुगमी
बन्ता। पुरपुषद (हे ४ १११) ।
                                      रिग्म (टा ६)। बस्मिय पू विश्वम
पुरव रेनी थिया। पुना (सप् ७ )।
                                      सलार धर्म हिली (बन १) वारि नि
भुगत वृ [भूख ] १ मूस भूष १ २ वर्ग
                                       [यारिन] बुबुध मुद्रि का प्रभिताती
 बिटेर बारेन्सर्गे । के हि बरेन बर्ग
                                       (बाबा) । (गम्मद् वृ ["नमह] बाब
 बन्ता। नाम वृं [151] एवं सामा (व
                                       श्वत प्राप्त करने येग्य धुतुतकतिथेत
 18 6 )1
                                       (धारा) । सम्य पूं ["सारा] दुष्टि-नार्य
मुर म देना पुरा (बर पू ६३)।
                                       नोग-मार्च (तूम १ ४ १)। राष्ट्र पू
पुर बुं [पुर] १ वर्षांतार वर्णनेका ।हा
                                       िशाही चर्रास्टेन (सब २६)। बन्न
  र्के)। वेंदभनर श्राप्ती सम्मयत
                                       र्दे [िय√] र नवन । २ मध्य कृष्टि। ३
  सीव बीटालंडा तान पुरवर्ग नाभे
                                       राराण यरा (षाषा) । देनी भुझ = घुष ।
  दुग्गरि दर्र पुरार्ग (दुरा ४२६) ।
                                      पुषात्र शाक्ती १ बसामन (कोच ७३
 पुरंपर दि [पुराधर] १ धार को बान बाने
                                       ३५७ स २७२)। २ हि इतिहासना
  में तमर्थ किमी बार्द की पार पहुँचान में
                                       नित्तरात्ताः भी या (पूर्वा) ।
  हर्गमान्, प्राप्ताप्त (मे १ १६) । २
                                      भुरम द्रव [भूपन] १ पूर देश । पूप-पार
   मेता बुला घटुमा (गए) उत्तर २ )।
                                       (47 t t) 1
   ६ वृत्तर इत्या वायनेगाम के प्र
                                      पुषिया भी [पूषिता] क्षीनिक्षेत्र सूक
                                       बन्पिनी वर्मन्द्रपृति (र्वक १ ६६) ।
  सरा ८ [पूर ] श्यारी कीरहवा बड
                                      मुज्य रेगो गुप=यान्। धूम्पड (वंजि
   प्राप्त भूगी (एव) । २ व्याद केव्या । १ विका
   (१) रे६)। चार दि (धार) धुरा क
                                      गुर्मन रेगो धर = पू ।
   बन्त बारसार, पुरमर (पान ७ १७१)।
                                      पुरुषाः | देवां गुप - पार ।
  पुर्ध की [पूर्त] मार पूर्व नाहे का इस
    (FE) (
                                      पुरम वि [र] एएए बावे विका हवा
  प्रीम (र [प्रधान] पुरुषद, मानवा, बाचा
                                       (41)1
    (बर्द ११६ पानन ११६)।
                                      पुत्र वि [पूर्व] तमा गुन्न - भूत (ब्दश
   धुवान्य [धारा]क्षेत्रा दुग्यस्ता कृतः
                                       ला रे रे वि रेश्व रेश्व पूर्व रे
    पुर्व (११ से मार्थेश विषय है।
                                        A 3) 6
    बर गुर्दा (में व है है) बबर गुर्दश
                                       भूत रेका पूर्व स्ट्रा (त्या ६१७)।
    ten in a set g a en ent
                                       पुत्र म [पूत्र] रणे वेरा हथा वर्त पूर
    20 17 22 1
                                        बर्च (ल्बर १ ६१)
   44 64 [4] em. [mm] 642 15
                                       भूभा के [नर्दिय] जन्म पुत्रे (१ व
     A st at ) an dett (auf
                                        $34 2m 6411
    बसर पुरर्थ (बब्द)
   unte [124] ! feren fert (ere 1) :
                                       भूत्रपू [ ] स्थ हत्ते (देव ६ )
     tier erer elnære en t
                                       प्बिय रि [प्रितः] वीम्न (स्य ६ )
     क्ट १ ४ १३ व्यास्टरी (ब्ह १ १)
                                       थुम र् [बूम] १ शरकार करण (पेर
     4 } re feer (err) : 2 4 ex
                                               A Rid hadte a le Riq.
     & red or over (greet & over
                                        144.4 (1) 1
```

इंगान्दर्भ क [ग्रिहार] द्वेष घोर साग (बोप २०० का) । यत्र पूर्विम् ] १ व्यक्तिक बार-शिये (मा २ 🔃 पान १ ३ चीड) । २ व्हा चरित माम("ल २२)। १ शहा सात या गूपर हारा-पुरम (गार)। बाह्य वृं विवारा] पूम दे बारम्बन न बारास में दमन राने दी रुक्तिका बुक्तिस्टेव (सम्द्र) । असि र्षु [ शक्ति] बन्त मेर (शम)। उन्हय रेगो द्वार (छत्र) । नाम र् र [दाव] भिना का एक दोन होय गे भारत करता (बकार १ ६)। द्वर 🖠 [ध्वत्र] वह योज (राम का रे रेरेटी) । एरमा, प्पट्टाक्षी ["प्रभा] पच्ची नगर-शृक्षी (त ७ प्रका)। "स रि [स] पुर्वा बात्त (दर २६४ धै)। यहन्द र्दुन [ पत्र्य] थुय-समु (दे २ १६४)। यण्ण दि [ बन्न] पानदुर वर्धनाना (नामा १ १७) । त्तरा थी ["शिरात] भूते का ध्रमान (धार ग)। धूर्मग १ (दे) भवद में छ मबता(दे ४,१०)। ध्यत्रव[प्यत] धुन दान (श्य २ १) । धूमहार न [व] राग्य बात्तस्त्र मधेगा पुमदाव (दि) १ त्याव वयात वयात रमदियं भेता (देश ६३)। भूमञ्चयमहिमा की व [दे] इतिहा काल (\$ 2 5 5) 1 भूमप्रतिशय रि. [र] में में रास्तर बन नगरे पर में का बच्चा का बाब का (तिह संपद्धार क्षंत्र क्षेत्र कृता कृता कृता 16 2 41 4.6) 1 मुद्रिक्ष [न] र रूप कामा (रेर 12) 2 m fre (45): भूमा रेका भूमान्य । मुस्य (शाह ५१) । quis er [quy]t ger ein. १ वन १३ १ पृष्ठको नगर बन्द ला

बगाप्रीति (से व १६ वटा) । वक्क सुमार्थतः (पतक से १ व)। मुमामा जी [मुमामा] पाँचकी जरक-पुविकी (पतम ७६, ४७)। वसिज वि विसित्ती १ वृष्युक (पिंड) । २ श्रीना क्या (शास्त्र भ्राप्ति) (दे ६ यव) । भूमिजा की दि नीहार, दुहासा (दे ६, ६१ पाच का १ का ३ क वर्ण)। चयत देवी प्रभा (सूप १ ४ १ १६)। मुरिश वि हैं | शेर्व नम्बा (दे १, ६२)। भूरिजवट पू [दे] सम नोहा (दे ५ ६१)। मुख्यविद्या (सप) केही मुखि (६४ ४३२)। मृक्षि) आहे [मृक्षि, छी] पूत्र रज रेख भूकी (वर्रहा प्राप्त २ ४)। क्रम क्रीत्र है किहाना क्रीमा क्रिन में विक-यनेवाला अवस्य-कृत (कृता) । जीव वि िंसको विसके पनि में धून सब्दे हो वह (बद १)। भूसर दि ["भूसर] कृत से विष्ठ (स ७७४) वर्६) । बोठ वि भिनेत्री कुल की चारु करनेनाला (तुपा १६६) । पंच पू [पव] पूति-बहुल मार्ग (पोष २४ थै)। बरिस पू किये बूह की बची (भावम)। इर त गृह वर्ग का में सक्के तीन को चून का कर कनती है बह (स्प १६७ ये)। यसिक्की की दि । पर्व-विदेश होली। इति इग्रेप्यच्छसरिता सन्त्रेसि **ਦਚ**ਰਿਕਗ (कुसक १)। भूसीवह वृ वि प्रव कोझ (वे ६, ६१)।

श्व सक [शूपय्] कृप शरमा । शूनेम

भूष र् [भूपं] १ श्रुपत्थि इस्य से अरप्यः | क्मा १ स्वतिव प्रव्य-विशेष को देव-प्रश धार्षि में बचाना जाता है (शाना १ १ सर ६ ६१) । शकी की पिटी वप-पात पूप से मधी हुई कमशी (वं १)। अस न विश्वा क्यानाव (देश ११)। सूत्रस्य **म**िसूपन दि दूप देशाः । २ दूस-पाप, रोप की निवृत्ति के बिए किया वाशा वूम का वाक 'बूबब्रे कि वमले य ब लीकम्मविदेश्ले' (स्स ६ १)। बहि की <sup>वि</sup>विचि का की बनी बड़ बर्तिका धगरवसी (कृप्यू)। वृत्तिक्ष वि विभिन्न रिशापित वरम विभा इचा । ए डॉप थादि से साँका इचा (बाद ६) । ६ क्य दिशा ह्या (यीपः शब्दा १) । बूसर 🖠 [धूसर] १ इनका पीना रंप हैपर पारक वर्ते। २ वि इस्टर रंग्याचा ईक्ट पास्तु वर्णकाला (प्रापु वर वा ७ ४ से ६ 48)1 मुसरिश वि [धूमरित] बूबर वर्खवाला (पाग्रः स्विते)। मे सक बिगी भाष्या करना। नेद्र(<del>दक्</del>रि ३३)- नीह धरत' (कुप १ )। वेशः ) वि वियेषी व्याल-योग्य (यक्षिः वेका ) १४० छ।वा ११)। चेउद्विया केते बीउहिमा (शुव १ १) । मेज दि विस ] करत करते गोरम (शामा t () i वेळात दियी वीरण वीरण (पर्याप बेणु 🕏 विसुी १ वय-प्रतृता दी। २ स्वतः नौ । ३ क्वार बाय (**हे** ३ २**८ वं**४) । (धाना १ १३)। नक्त पूर्वेत (वि ३३७)। भेर देखी धीर = बैसी (निक १७)।

वेषव वृद्धिवत् । स्वर-विशेषः विवससम्बद्धाः पएका भवीत क्षाइन्यका (हा ७ - पत 1 (#3# भोज्य एक बाब, देनेना राज करना पकारमा । बोएका (भाषा) । यह घोर्बत (सुपा =१) । मोअ दि भीत | भोगा हमा अनावित (ते १ २८४ च स १६६)। घोअग विधाव ही १ थोनेवाचा। २ दे. बीबी (अप वृ ११६)। থীজন বি ঘাৰনী বীৰা সমাৱৰ (বা २ रक्स १८: बीन १४७)। योदम केहा योज = शीद (गा १)। योज्य वि [सुर्ये] १ द्वरील यार-नाइत । २ बहुबा नेता **प्र**रत्वर (वव १)। बोरय न वि विक्रमादमं (ग्रीप)। बोर्राज ) ही बोर्राज की पिक नतार घोरणी 🕽 (मूपाँ ४८। भ्रमः पर्दे )। घोरिय देखो घोळा (मना२ २)। वास्तियी भी [बोस्बितिक] रैत-निपेप में करता भी (खाया १ १--- पत्र ३७)। योरेष वि [सीरेम] केहा श्रीका (दुग्न 42 ) 1 योव क्या योज = नान् । दोवह (स ११७) रिष् )। योलेका (प्राचा) । वक्क यार्वर (व्यर)। स्त्रक्त मोर्क्यंत भोस्माण (पत्र्म १ ४४० द्यासा १ व)। इन् घोषणिव (町田 १ (ま) ) धोक्य देनो बोमज (पिंड २६)। घोषय ध्वा घोषग (दे

भुष (घप) स [भुक्स्] धळ्या तिवर (है

A A\$#) !

## न देखो गु

ह प्राष्ट्रण भाषा में शक्यादि सब सार एकायादि होते हैं, समांद्रधादि के नकार के स्वाल में निरंध या विकास से एं होनेका व्याक्तरणों का सामान्य नियम है (प्राप्त २ ४० दे द ६६ टी। है १ २२६८ पत १ ६ १६) सीर प्राष्ट्रत-साहित्य-सल्यों में मोनों तास्त्र के प्रयोग पाए लागे हैं। इससे पेंद्रे सब सब साम्य एकार के प्रकरण में या लागे से महां पर पुनरावृत्ती कर स्वार्थ में पूराक का क्षेत्रर बहान स्वीत नहीं समझ यता है। परक्रकरण एकार के प्रकरण में सादि के प्यां के स्वान में सर्वेत्र प्रां स्वारत में। स्वीत कारण है कि नकायवि हानों के भी प्रमाण एकायदि स्वार्ग में ही दिए यह हैं।

## q

न्द र्व [य] १ ब्रोह्य-स्वातीय व्यव्यत्त्रत वर्ण-विशेष (प्राप्)। २ पाप-स्वाग 'पत्ति व पारवण्डणे (मावन)। प स [प्र] इन यशे था पुषक यथाय—१ प्रकर्प न्यमेस (से २ ११)। २ प्रारम्भ पाणियं 'पक्टि ( थ १ मग ११)। १ वर्षातः ४ वयाति प्रसिद्धि । १ व्यवहार । ६ वार्षे बोर से (विदूर दे २ २१७) । व्यवस्य श्रूप (भिमे ७४१)। = स्टिनीटर (निष् १ १७)। ह दुवस हुमा निगष्ट जानूस (ठा भ २--पत्र २१३ ही)। व रि [प्राप्] पूर्व तरक स्थित (भाष) । पर्जगम १ रिसरह्रम दिन्धिय (स्व) । पर्अप ई मिजदी राधस-निरेप (वे १२. 1 (82 पञ्चम रेपी पग्रम = प्रगत्म (प्राप्ट ७०)। पइ च प्रिति १ योग्रा-नुबर (स्तृति ॥ १)। २ तस्य तरः, मोरा भारतन्त्रं वह चनियं (सम्बत्त १४६) वर्गेरि ११) । पद्र दे [पिनि] १ का भर्ता, परगीरक करने-बाता (बामः धा १४६: वया) । २ मापिकः ।

३ रक्क 'मूनई' 'तिमस्गण्य हैं 'नरवह' (तुपा ३६ सदि १७: १६) । ४ व्येष्ट, क्तमः वर्राण्यस्त्र€ ( प्रति १७ )। <sup>8</sup>घर न [गृह् ] समुराल (यह )ः इता स्था भी झिना वित-नेवा-वर्ण्यण श्री हुमनती थी सभी (या ४१७) सूर ६ ६७)। हर देयो घर (है १ ४)। पद् देखी पश्चि (ठा २ १) काल धार २१)। पदम वि दि । प्रतित तिस्त्रता २ न. पहिया रच-वक्र (दे ६ ६४)। पद्दर् वैघो पराण्⊂प्रदृति (से २ ४%)। पश्च देशो पथ = पर् । पश्चनपरण न [प्रस्युपपरण] प्रश्वरचार, प्रतिनेपा (रमा)। पइउस वेगी पहिल्हा (नाग-विकास)। पर्शयया वेची पर्श्यया (लावा १ १६ — पभ १ ४)। पद्र (घप) देनो पाइक्स (गिय) । पर्राविदे वेतो पश्चिति हि (नाट—ग्रङ्क ११६)। पश्चा देती पाइच्च (तियं ति १९४)।

पर्मार् रेनो परिहित् (स ६२१) ।

पश्च्यम प्रविश्वम ] मूत-निरोग (चन)। पड्ड (यप) वि [पर्वित] निय हुया (पित)। पइज (का) वि [प्राप्त] मिता हुमा सम्ब (पिष)। पडळा रेखे पडण्या (मनि स्यु)। पइट्र वि [द] १ जिस्मे रस को जाना हो बड़ा र निरता १ पूँ मान पाला (दे £ {\$}) 1 पश्टू रेको परिष्टु (बहु र दी) । पहटू वि वि] प्रेपित भेजा हुमा 'जठ घर नुमर मिन्छो समयग्रह निगुस्त परिशित (संबोध १) । पह्ट पूर्व [विदिष्ठ] भगवान् सुपार्थनाय 🗷 पिता का नाम (सम १४)। पहटू वि [प्रकिष्ट] निस्ते प्रदेश रिया हो यह (न ४१६) । पर्टूव बर [ प्रतिनयापय् ] नूटि सारि

नी विधिन्तूर्वेद्ध स्वारमा गरमा । परद्वीप्रशा

(वैवाध ४३) ।

षद्भुषम रेगो पद्भूषम (सम्)।

पद्भार की प्रितिक्षा १ मारर, सम्मान। २

क्रीति, कराः ३ म्बनस्या (३१ २६)।

४ स्वापना चेस्पापन (खंदि) । ३ धनस्वान, स्विति (पेचा ६)। ६ मुर्ति में ईस्वर के इर्को का धारोपहा जिस्स्विताल पहरू कश्या विश्व बार्यक्स्त (सर १६ १६)। ७ धामद, ग्रावार (धीप) । पद्मा 🛍 मितिसा १ चारणा वासना (श्रीदिश्वदे)। २ समाचान श्रीका निराश-पूर्वेक स्वपन्ध-स्वातन (विदय १३४) । पद्रशम प्रीपितिहाली एक प्रवेश (एव રકો ા पद्रष्टाण न [प्रतिष्ठान] १ स्विति, व्यवस्थानः 'काळ्य पद्धार्य रमश्चित्रने एत्त्र प्रव्यक्तमी' (पडम ४२ २७) ठा १)। २ मानार, मानव (मन)। ६ महत्व साहि की नीव (पन १४६)। ४ मगर-विशेष (माक २१)। पद्मकाण न विंी नवर, शहर (वे १ २६)। पडटाबक ) देवो पइट्रावय (छाता १ १६ पद्भावा ( चन)। पद्भावण न [प्रतिष्ठापन] १ शंस्त्रापन (पेंचा ७) । २ ध्वयस्थापन (देवा ७) । पद्भावय वि [प्रतिप्रापक] प्रतिका कर्ण-बाबा (भीप मि २२ )। पहटाबिय वि [प्रतिष्ठापित] संस्वापित (स ६२ ७ ५)। पट्टिस वि मिविधियो मिवस एका क्रमा (माचा २, १६ १२)। पद्मद्भिय वि प्रिविद्विती १ स्थित समस्यित (क्या) । २ मामित 'रमणामखीरपा**ट्र**भाख पुरिसारत व व व्यक्ति (प्राप्तु ७ ) । ३ व्यवस्थित (धाषा २ १ ७) । ४ गीएमानित (B 2 4 ) 1 पश्रम्बस वि प्रिटिनिक्टी निवस-संक्ष विव्यमित (धर्मवि २१६)। पद्रव्य पि किंदी विद्रश विस्तृत (के ६ )। पङ्ख्य वि प्रितीर्णे | प्रवर्षे 🛚 तीर्खं (धाना) । पक्षण ) वि[प्रदीर्ण क] स्वितित्व पर्यापा के प्राप्त का प्राप्त का विकास का का विकास का वित प्पनातुर्वे सा पश्चित्रसूप् र्युटं (चा१४)। र प्रमेण प्रकार से निर्मित (पेषू)। है क्षिया ह्या (ठा६)। ४ क्षितारित (ह्या १)। १ म. प्रमानिरीय सीर्वकर-वेव के

सामान्य शिष्य हारा बनाया हथा वंश (गुंदि)। कक्षा और विकासी करनमें सामान्य नियमः 'अस्तरको पद्मएलक्का मर्ग्लंड धवनायो क्रिमण्डका मस्साई (निषु १)। तम व ितपस् ] तपरचर्मा-विशेष (पंचा १६)। यक्रणा की मितिका र मस राज नाम-गलावी १६)। २ नियम (बीप: येचा १॥)। ६ तकेशांका प्रविक्त धनुमान-प्रमाख का शब्द क्षायम भाग्य क्षान का निर्देश (क्सनि १)। पद्रण्याच (ती) नि [प्रतिकाश] विदरी प्रतिका मी नई हो वह (मा १६)। पत्रक्रिय वि प्रितिद्वावन् । प्रतिक्रावना 'बंबमोक्बपशिकालो' (उत्त ३ १ 2 ) t पहल देखो पष्टल = प्रदृत (मनि)। पश्च नि प्रिकीसी बसाक्षमा प्रत्विक (T 22. w4) 1 धक्त देनो पवित्त - पवित्र (सूपा ७४) । पद्मवि (शी) वेको पगद (नाट---स्ट्र ६१) । पश्चिम न शिविदिनी इर चैन (कार्य)। पद्मक्रिय वि [प्रक्रिप] विभिन्त (सूप १ K, 9) 1 पद्मविषद्व न प्रिविदिवन्ती प्रविदिन, इर रीम (सर १ १) । पद्मनियय कि प्रिकिनियत । शुक्ररेर किया हुमा नियुक्त किया हुम्म (माध्य) । पद्मक केचो पद्मण म≕ मतीर्थ (क्ट्रह २ १ धी-काश्य)। पङ्ग्रा } देखो पङ्ग्या (तम ग्रांका वा ६)। पद्ममा विशे पद्ममा (वेदन ११) । पद्ममा वेची पश्चका (सुर १ १)। पद्भव्य वेची पश्चित्य । वह पश्च्याण (भर ४१६) । प्राप्परिय न [प्रविध्वीक] क्लॉब, ब्राह्म (र्रमा)। पष्टमय वि मितिसयी प्रत्येक प्राली की धन प्रपक्षतिसद्धा (शासा १ न वर्षा १ १३ भीप) । पदमा की [प्रतिज्ञा] दुवि-विदेश अकुलक मरि (युष्पः ६३१)।

पद्ममाणाज न बिविभाद्यानी प्रविमा से धरपन्न क्षेत्रा ज्ञानः प्राविम प्रत्यस (भर्मेर्ड 1 (3 F\$ पद्मक् नि [प्रतिमुख] धेपूस (२५ ७४४)। पक्षर चक विषा नेता नपत करता। पदरिति (धाचा २ १ २) । भूका- पद्दित् (भाषा र ११)। यदि पहरिस्पृति (बाचा २ १ २)। इन्द्रै, पद्दरिण्योति (ह wee) i पहरिकड कि [दे प्रतिरिक्त] १ रूच चीत (देद ७१) से २, १६)। र विद्याल विस्तीर्श (दे ६: ७१) । ३ तुम्ब, इसना (धे १ ४०)। ४ प्रकुर, निपुत्र (ग्रीव २४६--- वन १ १)। ५ निवन्त प्रतक्त पश्रीतकपुरुम् मछासूनुबार् विश्वरपूर्णम् (क्य) । ६ ग. एकान्य स्वान विवन स्वान. निर्मन क्षमह (देव ७१) स २६४) ४४४) कावव धन २६६)। पहळ (बप) वैको पहम (पि ४४६) । पहरुषक्ष की जितिस्मविक्षी हान के कर बलनेवासी सर्वे भी एक वार्षि (एव) । पद्रक्ष प्रदिक्षी १ शक्त-विधेष धराविद्यानक देव-विरोध (का २, ६)। २ धैन-विद्येप श्रीपद (परह २, ३)। पद्मपूर्विष्यी एक शतक कानाम (चन)। पइवरिसन [प्रतिवर्ष] इत्युक वर्ष (पि 16 88 पद्माइ नि [प्रविवादिन्]प्रविवासी प्रविकारी (विसे २४ )। पत्रविधिद्व वि [प्रतिविशिष्ट] विदेव-द्रुव-विस्तिह (प्रवा) । पद्मिसेस 🖞 [प्रतिकिरोप] निरोप क्षेत्र किन्ता (विसे १२)। पड्स वैको पविस । पड्यड (ध्रवि) । पदवंति (वे १ १४ टि) । कर्म, पद्मीक्षण (स्रीर)। भक्त पद्मति (चनि)। इ. पद्मसियम्ब (R 46A) 1 पङ्खस**न न [मदिसमन]इर समय प्रक्रिक** (पि २२)। पक्षर केवी पविस्त । पद्धरद (द्वीर) ।

पदमास्द (मीर्ग)।

(महाः भवि)।

1 (203 3

संक्र पश्चिक्रम (स्व)।

पदमार सरु ि प्र + वेद्मय े प्रवेश कराना ।

पद्मारिय वि प्रियेशित निसका प्रवेश

करामा गया ही वह, 'पद्मारियो म अगरि'

पद्रदेत पंदि विकास इन्द्रका एक पूत्र

पद्वता सक प्रिति + हा स्थाप करना।

पद्र केतो पद्र=पति (पद्र हें १ ४ सूर

पर्देश वि प्रितीत् । १ विज्ञार । २ विरवस्त । र प्रसिद्ध विद्यात (विसे » १)। पई अन [प्रतीक] संग सन्यव (रैना)। मईइकी [प्रतीति] १ किरवासः । २ प्रसिद्धि (स्व)। पईय देखी पद्धिव । पईनेइ (क्छ) । पर्केच पू मिदीपी धैपर, विमा (पाम वी १)। पद्रव वि [प्रतीप ] १ प्रतिरूत (हे १ २ ६) । २ वृं राष्ट्र बुरसन (दर ६४८ टी) क्षे १ २३१)। धर्डस (मर) देवो पत्रस । पर्रेश (मनि) । पड (बन) वि पितिती निय हमा (निन)। पहल देनो पागय = प्राष्ट्रत (प्राष्ट्र ६) । पाडअ र् [व] दिन, दिवस (दे ६ १) । प्रदक्ष व प्रियुत् विकाशियोग 'बहुताह्न' को की एनी साल से कुलुने वर को संबदा लध्य हो बहु (इका क्षा २ ४)। पत्रजंग न [प्रयुताहा] संस्वानीरकेन 'चपुत्र' को कीएमी साम से प्राप्त पर की संबदा सक्प हो वह (ठार ४)। पर्वत सक [प्र+ युज्र] र जीवना युक्त करना। २ उच्चारता करना। ३ प्रप्रश करना। ४ प्रेराणा करना। ३ व्यक्तरा करना । ६ वरना । पर्वत्र (महा प्रति नि १ ७)। पर्वर्शत (रम्म)। वह पर्वर्जन पर्णजमान (मीर पडन ६४, ६१) । क्रमूर पराज्ञमात्र (प्रवी २६) । इ. पर्राज्ञश्रहह पत्रप्र (सन्द्र २, ३) एत ७२० टी। स्थि ११८४) पद्रहरू (बर) (इना)।

परंज्या दि प्रियोजकी प्रेरक, प्रेरणा करने-नाला (पंचन १)। पुरेज म कि प्रियोजनी प्रयोग करनेवासा (पदम १४ १)। देखी पञ्चोजण । परंजक्षा) भी प्रियोजना प्रयोग (मीम पर्वञ्चला १११४)। 'दुश्व कीरद कम्ब क्याम्य क्ए पर्ववस्ता दुवर्स (वन्ता २) । पर्दक्षिक्ष वि [प्रमुक्त] विसका प्रयोग किया गवा हो बहु (गुपा १४ ४४७)। पर्वजिल् वि [प्रयोक्त्] प्रवृति कलेवाना (লং १)। पर्वजिल् वि [प्रयोजियत्] प्रवृत्ति करनेवासा (हा इं १)। पडळा पडळामाण }रेको पडेंग्र। पश्चम [परियुक्त्य] मार कर । परिदार पू विशिक्षारी सर कर किर बनी शरीर में उल्लंध होनर उस शरीर का परिमोध करना 'एवं सन् वासामा । बलस्मइ-बाइयामी पट्ट पव्हारं पव्हिर्रेटि' (भग ११---पत्र ६६७)। पउट्ट वि [परिवर्ष] १ परिवर्ष वर कर फिर उमी राधेर में चरपन्न होना। २ परिवर्ष बार 'एम छी गीयमा । योखासस्य अंधानि पुरास्स पट्टे (भग ११--पन ६६७)। पउट्ठ वि [प्रकृप ] बरना हुना (है १ 1 (985 पडट्ट पू [प्रयाम] हाथ का पहुँचा कराई बीर नेहनी के बीच ना भाग (पराह १ ४--पत्र **७**वः वष्मः वृमा) । पपट्ट वि [प्रजुतु] १ विदेव नेवितः । २ व. धति उषिद्य (षेष्ट) । पउट्ट वि [प्रद्विष्ट] हेप-पूक्त 'तो तो बठ्ट विसी (गुरा ४३६) । पत्रकृत 🕏 रेशून पर। २ 🛊 परका परिचय प्रदेश (वे ६ ४) । पण्य बक [प्रमुखय ] तन्द्रशत होना मीरीय होना समस्य चिवित्रदार चढराइ बसो न नौरम्मि (वर्षेमे ११८४)। पद्म पंचि १ क्या-प्रकेटः २ जियव विदेश (दे ६ ६१) ।

पत्रा वि [प्रसुत] १ वट्ट, निर्शेष वट्ट

सञ्चरणविष्ठको बाधद पर्जीखरियाणपि (सूपा ४७२ महा) । २ हैबाद, तम्बार (दंस ३)। पत्रणाद्य व [प्रवसाट] क्य-विशेष वमाह का पेड चक्कड (दे ५ ६ १)। पश्च सक [प्र+यूत् ] प्रवृत्ति करना। ह पउत्तिवृद्य (शी) (नार-शरु ५७)। पत्रक्त वि प्रियक्ती निवना प्रयोग किया ययाहो वह (सद्रा भवि)। २ न प्रयोग (खावा १ १)। पत्रच पू चित्रित्री सहकेका सहका पोठा (प्राप्त १ व ११७)। पउल न [प्रतोत्र] प्रवोद, प्रावन बाहुक पेता (इचा १)। पड़क्त वि [प्रदुक्त] जिसने प्रदृति की हो बह (उदा)। पउत्ति भी [मर्ज़ुत्ति] १ प्ररहेन (मम १५)। ९ समाचार, बृतान्त (पाय: सुर २, ४८) १ ४४) । १ कार्य काल काम । बाउस कि [°ट्यापूत] वार्व में बना हुमा (सीप) । पंउत्ति भी [प्रमुक्ति] बात हरीकत (कर ६२२८ सम्)। पडिचिष् य रेको पडक = म + मृत्। पउल [प्रयोक्त] १ प्रयोदकर्ता। २ प्रेरला कर्ती। १ वर्ते निमीता। स्री का (संदू 8X) ( पण्स्य न क्षिति गृह बर (देव ६६)। २ विजोपित प्रशास में सवा हुआ। 'छड़िक नोवि पराची प्रहे स रूपारव सोवि सखलेखें (बारेक ६६० हेना । परम १० ३। मजा ७६ जिले १६२ सरा दे ६ ६६: भरि) । यहपा ही पिनिशी बिमरा वित देशानार यथा हो पर स्पे (शोध ४१६) शुपा १ <)। पत्रहरू देखा पर्वेच । पउप्पथ रेगो प्रजास्त्रय (भग ११ ११ दी)। पत्रपत्र देवो पश्राप्यत् = प्रीतिक (मग रेर रहकी)। पत्रम न [पद्म] १ नूर्व-शिकामी कमन (हे २ ११६३ पण्ड १ ६ कम सीत प्राप

१११)। २ देश-शिमान-शिक्षेत्र (सम. ११

३१) । ३ वंग्या-रिटेग 'न्याव' को कौरानी

लाय व प्रशाने पर जो धीवना नाम हो बह

३)। द्वरापुँ विश्वता पुत्र धानी राजनि (ठार ४० इक) । ४ कवा अध्य-विदेश (ग्रीप कीन ६)। १ सबनी समाका एक को महापद्म श्रामक जिल्लेक के पास बीका खिलायन (साम्य २)।६ विस्तका नवनी चेवा (ठा च)। नाइ **च्चो** भाग (<del>ए</del>प मुद्रचं (को २)। व विद्यास्य स्वकन्यवंत का ५४ थ्यो । पुर न विदा एक पश्चित्रास्य एक शिकार (ठा ६) । ६ ई राणा रामणकाः नगर, जो पाधकन 'नासिक' माम से प्रसिक्त श्रीता-पर्वि (पराम १ १, २१८)। १ धारुरी क्डरेन भीड्रप्य के वहे मादै। १ इस चरसपिखीकाच में उत्तर नवनी नवनशी राजा राजा पद्मीतर का पुत्र (पञ्च ४, ११६ ११४)। ११ एक राजा का हाम (बन ६४ व टी) । १२ मान्यव नामक पर्वत का शक्छिका केन (ठा२ ३)। १३ बरहचेत्र में धानायी असर्पिकी में जरपस देलेवाबा माठवां वस्त्रक्ती राजा (स्य १६४)। १४ बस्त मेन ना मानी माठना बलदेश (तम १६४) । १६ पश्चली राजा का लिमि जो चैम-नातक मुक्तर वहाँ की पूर्ति अध्या है (उप १व६ दी)। १६ राजा मेलिक का एक पील (निर २१)। १७ एक बैन पूनि काशास (क्या) । १८ एक खुद (क्या) । १८ पय-मूख ना समिहाता देव (का २ ३)। र महाराध बामक विनवेत के पास बीका <del>উন্নেৰা দুৰ বাৰা, হৰা আৰী বাৰ</del>দি (নে )। शुस्स म ["शुरूप] १ बाठमें देन शोक में स्वित एक व्य-विमान का नाम (सम ६४) । २ प्रचन देवलीक में स्थित एक देव विमलकानाम (मध्यः)। ६ दूधना। मेरि)क नाएक पैत्र (लिर २ १) । ४ एक भारी राजीं महारायनामक जिल्लेक के पाव दोशा नैनेतारा एक राजा (छा )। **"परिय न ["परित] १ धना यमक्रम** की भीकमी----करिका २ प्राक्टल कालाका एक प्राचीत बंच, बेन रामायश (प्रकार ११ १२१)। जाम र्षु निमा १ वातुका रिप्ता (परम ४ १) र मात्रामी क्टब्सिसी नात में बरद**ोर में होने** गला प्रयव जिल्लीन तानाम (पा ४६) । ६ वशिव-दान्देश के एक नाल्यनिक राजानानाम (लागा १ १९--वन २१३)ः दस्र स ["दस्र] वसव-शत (प्राट) । इद्व दु िह्द्व ीिशिय ब्रवार के वनती से परिपूर्त एक महान् हाव वानाव (नगर ४) नणा थडन १ **२**.

है (धक)। प्यस दूं किस] इस सन चरिएरी काल में जराम यह जिल-देश का शाम (करप)। स्पन्ना चौ प्रिमा एक पुरुष-पिग्रीका नाम (इक)। प्याह केबो प्याम (ठाइ.१ सम ४३ पछि)। सहाप िसही रावा भ एउट का एक गीत (निर २ १)। साक्षिपं "साक्षिम् विद्यावर र्वत के एक राजा का नाम (पराम ५ ४२)। सुद्ध देखी पत्तमाणय (भव)। रह्म प्रै रियो १ निवायर-नेश का एक राजा (प्रकार ४३) । २ मधूरा नवरी के राजा व्यक्षेत्र का १त्र (महा)। "राय पू "रागी एक नर्श मध्य निशेष (१६६) १६६)। श्च र्ष दिखी यातकी च्यार की सपर क्रमा नवरी का एक राजा जिल्ले बीएकी का बपहरशंकियां वा(ता१)। स्वन्तर्पू विद्या १ उत्तर-कुम्बोप में स्थित एक इस (हा २ ६)। २ इन्द्रास्त्रत वक्षाक्रमन (बीव ६)। छया को "छसा" १ कमक्तिनी परिनी (बीव १ मन कप्प)।२ कमल 🕏 बाक्सरमञ्जी बड़ी (गाया ११) । वर्डिसय वहेंसय व ीक्शंसकी प्रपारती-रेवी का शीवर्ग गायक वैवलीक में स्वित एक विभाग (राज लावा २—१४ २४३)। बरबेप्रया की ['बरपेदिश] १ कनवें नी बह नेविशा (मन) १ जन्यू हीय की जनती के अपर च्या **हुई केरीं नी एक मो**य-मूनि (जीव ६) । बृह् पू ["स्यूह्] शैल्य की नचाकार रक्का (प्रश्रह १ ३)। सर प्रै ["सरसः] कमलों से पूर्व तरीनर (स्ताया १ १ क्या) महा) : "सिरी धी ["शी] १ धरूम चन्न-वर्शी नुनुसराज की परकानी (सम १६२)। **२ एक की का नाम (दुमा)। ऐने पार्**द ["सेस] १ राजा थेश्विक के एक बीत का नाम किसने जनवान् सङ्ग्रवीर केपाल दीला नी थी (निर १ २) । २ नानरूपार-वा**री**य एक देश का बाद (दीप)। सेहर 🐒

[क्षेत्वर] द्रश्रीपुर नदर के एक राजा का नाम (बम्म ७)। मार पु [१कर] र क्रमसीं का समुद्र 🖓 सरोवर (छन १६६ दी)। "सण म "सिन | पणकार धारक (Wtt) i परमय देव [पदाक] केसर (वस ६ ६४) । पहसप्पद्द वृं [पश्चप्रम] विक्रम भी देख्वी श्रामधी का एक केन सामार्थ (विपा ३)। पडमाकी पिद्यारि सम्मो।२ हेपीन विशेष । ६ और सर्वेत । ४ प्रमानिशेष

कुमुम्म-दुव्य (प्रक्र २ )। पत्रमाची पिद्यारि दोसरें डीव्लंट वी <u>पुलिमुबद्धस्थामी भी माला का नाम (सम्</u> १६१)। २ श्रीवर्ग देक्तोल के इन्त्र की एक पटचनी का नाम (का ब---पत्र ४२६) पठम १२ १३१)। ६ भीम नामक राख्यकेला नी एक पटरानी (का ४ १---पत्र २ ४)। ४ एक विद्यावर क्षम्बा का नाम (परम % २४) । १ रावस्त की एक फ्ली (परम ४% १) । ६ सहसी (राज) । ७ वनस्पति-निवेप (पएछ १--पन ३६)। य श्रीवहर्वे तीर्थकर

बीधक्कानाव की <u>सुक्त रि</u>ल्या का नाम (१व

६)। ६ पुकर्रना-मानु की क्लर किसा में

स्वित एक पुल्करियों (इक)। १ हर्कर

वत्तरेन भीर वासुदेव की सादाका नाम।

११ भेरमा-विशेष (राव) ।

पवमात्र र्थ कि वृद्ध विकेप ममास का नैन वक्रवड़ (वे १, १)। परमाध्यम र्षु [पद्मानन] एक चना का नाम (उप १ वर दी)। पश्मास र्वु [पद्मास] यह वीजेंडर का नाय (पद्य १ २)। पटमार [वे] वेको पटमाङ (वे २ ४८)। पठमावई वये पिद्यावती १ कमारोप के सुमेद पर्वत के पूर्व तरफ के स्वक पर्वत पर च्यूनेवासी एक विरुद्धमाची-वेवी (ठा )। १ बालात् पार्चनाव वी शास्त्र-वेती. को साव राज वरहोन्द्र को पटरानी है (शंक्षि १)। वे सीटच्छ की एक परनी का नाम (बंद १६)। ४ शैस-नामक राज्योग्द्र को एक

नटरानी (लग १ ४)। इंशाब्देश की एक

पन्यानी (ग्राया २—पत्र २१६)। ६ वस्ये-द्यर राजा दविवाहत की एक की का नाम (मात ४)। ७ राजा दूरिएक की एक पन्नी (मन ७ १)। ८ इस्पोध्या के राजा इर्शिसह की एक पानी (जन्म ८)। ह तैतनिपुर के राजा ननकरेणु की पानी (वेंस १)। १ कीशास्त्री नगरी क छना शतानीक के पूत्र क्त्यम की पत्नी (विपा १ ३)। ११ शतक-पूर के राजा शैवक की परनी (खाया १ ४)। १२ शका बूखिक के पूत्र वामनुवार की मार्थाका नाम । १३ राजा महारूल की सार्था कालाम (जिर १ १ मि १६६)। १४ बीयर ठीवंबर धीमुनिमुक्तस्वामी की माठा का नाम (गम ११)। १५ पूरण्यीकियी नवरी के राजा महायध की परायती (यापू १)। १६ चम्पनामक विश्वयान्त्रि । जनभानी (वं ४)। परमावश्वी (घर) ही [पदुमावती] छन क्शिय (पिंग)।

नमत-नाता (रूप मुपा१४६)। २ एक केही की थी का नाम (उन ७१० दी)। पउसुषर मुं पिन्सांतर] १ नगर्ने पक्रमणी भीतदायस्यक के दिशा ना नाम (शम ११२)। १ दन्नद पर्यंद के स्टरायन नग ना एक रिएइस्डी पर्यंद (क्रक)

पडमिणी ध्ये [पद्मिनी] १ वनकिनी,

पडमुख्य स्मै [पर्माश्वय] यह प्रकार की रुप्तर, याह जानी (यामा १ १७—पन काम २२६, १७)।

पउरित [प्रचुर] प्रमूठ वहुत (हे ११८) - दुमा मुरंप ७४)।

पडरिंदिति १ पूर-संबन्धि तथर है। संबन्ध राजराजा । १ वगर में रहनेवल्ला (है १ १६९)।

पत्रस्य द्वं पीरव] पुस्तावक चन्त्र-वंशीय नृर का दुवं (वेचि ६) ।

पत्रयम (यर) देवी पुराम (चरित)।

परस्मिति [पीन्प्रेय] कुरक्क्ष्ण, दुरक् का बनाया हुमा केसन तह बापरस्थिताराँ (पर्वेद बटर)। हर्

पटरिस भून [पीरुप] दुष्यल पुरुपार्थ, पडम्म ने बीरता मरवामी (हे १ १११ १६२) : 'पडरसां' (गांग) 'पडरसां' (सींध

६)। पद्रश्च सक [पद्म् ] पकाना। पद्रभद्द (हे ४ १ ३ देद ११)। पद्रश्चम न [पद्मन] पकाना पार्क (मस्दृष्ट

र)। पडक्किंअ वि [प्रक] पद्मा हुमा (पाम)। पडक्कंअ वि [मध्यस्तित] सम्म चना हुमा

(उना)। पण्छ देको पण्छ। पक्लस् (पर्ः है ४ है ि)।

पड्छ वि [पक्क] परा हुया (पंचा १)। पडझा न [पचनाठ] एकोई वा पाव (क्शव बु ब्रोरि पच १७ २)। पडिया वि [प्रकृषित] विशेष कृषित कृष

पदस्य स्वर्धः [स्र+द्विष्] द्वेष कला। पत-स्वेत्रा (सीम २६ मा)।

पउसम वि [त] देश-विशेष में करण । की मिया (बीप) । पडस्स देखो पडस । पठस्सति (दूस रेपण) ।

वष्ट्र पडस्सेन् पडस्समाग (यन वैष १२)। वेष्ट्र पडस्सिक्य (व ११३)। पडहूज (वा) वेषो पयहूज (विषे)। पक्क न [के] नहु वर (१ ६ ४)। पए छ [प्रा] वहुवे पूर्व विजयसम्य

करले सामस्वारणं कर पर होगें (सीम ४७ मा) 'बह पूरा विश्वस्थान पर व पता स्करतार्थ करीं (सीम ११०) । पर्याज्यसर श्रृ [मिणाचार] व्याच की कर सामि को हॉएवीं को करने के बिए हॉएवी-माइक को कार्य की गाने हैं (यह १ १—कर १४)।

पण्य प्रे [व] १ वृत्तिनंत्रवर, बाह वा धिर । २ वार्ष, राग्या । १ कंटरीजार नामक पुत्रस्-विरुपः ४ पने का धिर । १ सेन्नार धार्म स्वर । ६ ति पुरसील पुरावाधि (१ ६ ६७)। पण्या वं विषे प्राविधेकन करोगी हि ॥

पयस पूँ [प्रदेश] १ विस्तृत विभाग म हो सके ऐना भूक्य ध्यवयम (ठा ११)। २ कर्म-दलका शंचय (तद ३१)। १ स्यान, जयह (पूमा ६ ११)। ४ देश का एक माय श्रान्ध (नुमा६)। १ परिमाश-निशेष निरंश धनयन-परिमित्र माप। ६ होटा माग । ७ परमाणु । ८ इप्रणुक्त । 🛚 ध्याणुक् सीन परमार्ल्यों का समूह (राज)। कम्म न ["कर्मम्] कर्म-विशेष प्रदेश-न्य कर्म (मण) । "रगन "प्रिमी नमों के दलिकों ना परिमाल (मय)। यत्र वि "यत्री निविद्य प्रदेश (धीप) । याम न [नामन] नर्म विरोप (ठा ६) । जाम र्रं ["नाम] नर्म इच्यों का परिलाम (रा ६)। ६५ पू ियाची कर्म-दर्शे का मारम-प्रदेशों के साम संबन्धन (सम १) । संसम पु विस्ता क्में-बन्धों को नित्र स्वधाद वाले कर्मों के रच में परिख्त करना (ठा४२)।

पदसय न [बहुरान] उत्तरेशः 'पएक्स्ययं काम क्ष्मपुर्वे (माषु १)।

पणमय वि [मद्राकः] करदेग्रः प्रदर्गेक पिन्नियद्वप्रवृत्त्वण वेदें (विते १ ११)। पर्णाम प्रृ [मदेशिम्] स्वतान-काल एक एता, को बी पार्थनाव प्रतान के देशि-नामक मस्त्रवर संग्रह्म हुमा दा (श्रम कुन्न

१ थः बा ६) । पर्णामणी धौ [वि] पहोस में छनेशारी धौ पहोसिनी (१ ६ १ दो) ।

पण्रिलणी की [प्रवृश्चिता] बंदुत के पश्च की पंत्रकी वर्षेनी (सीप ६६ )। पण्रित्स देखो पष्टित्य (रात्र)।

पत्रांभ पू [पयोद] मेच (राप ७ १२)। पत्रांभ देवो प्रभाग (११ २४४ धनि १

सण विवय)। पञ्जाभय न [प्रयोजन] १ हेतु, निर्मत बारण (तृष १ १२)। २ बार्व, वास । व सत्तनव (वहा चता २व स्वप्त प्रत)।

पआइड् (शी) रि [प्रपातिक] निमत्ता प्रयोग कछया त्या हो बहु (साट—रिक्ट १ १)।

पजान पू [प्रयोग] प्रयोजन (नूम २,७ २)।

twy) i

जोगर्विषयोगी १ राज्य-पोबना (ऋस ६३)। २ और ना ध्यापार, केतन का प्रयत्क 'रूपायी इतिक्यो पद्मोयवस्तियी य विस्सरो वैन (सन २१) ठा ३ १ शाम १२६. च १२४)। ३ प्रेयता (मा १४)। ४ ज्ञराम (धादुर)। ३ जीव के प्रयत्न में नारत)-मृत्यान भावि (ठा३३) । ६ शतः विवाद राजार्च (वसा ४)। क्रम्म व िंक्समि वन सारि की केहा **।** सारण-प्रदेशों के भाव बेंबनेराचा वर्मे (राज)। करण न "करण] जीव के स्वापार हारा होनेवाता विमी बस्तू का निर्माण 'होइ थ एपा बीबच्यावारो तेष्टा वं विशिव्याको पमोक्करएं तर्व बहुई। (विसे)। "किरिया की शिक्ष्यों मन बादि की बेहा (ठा व १)। फडूब न [स्पर्धक] मन बादि के म्यागार-स्थान की वृद्धि-शायः कर्य-परमाखधी में बढ़नेबाला रस (बस्पा २३) । वीच प्रै [<sup>\*</sup>बन्ध] भीव-प्रकल हाय होनेपाला कलन (मन १० १)। सङ्घी मिति शब्द विवयम-परिवान (रमा ४)। संपना 🕸 [संपन्] बाचार्यका बाद-विवय सामम्म (ठ. ४)। सा स प्रियागको जीव प्रकारत से (ति १६४) । प्रमात्र केरो पर्यञ=ध+कुन्ः पदीवर (पर ६४)। पभाजग वि मियोजको जिल्लासक निर्णावर बमक (पर्मंस १२२१)। पञाहु देवी यदहु=प्रक्रेष्ठ (प्राप्त सीप ft ¥)1 प्रभाच न [प्रतोच] प्रतोव प्राप्तन-वर्ष्ट, वैना । घर प्रे घर देशवाडी होन नेवासा, बहुन वाव बा नाड़ी वान (ए। धार री) । प्रभाद पु [प्रनाद] डार पेगो (बी४) ।

पञाञ्चय दु[प्रपीत्रक] १ प्रपीत्र वीत वा

হুয়। १ মহিলখাৰা হিন্দু বিভাগ ৰাইটো

हैर्स मजरूर्य विमनस्य प्रस्तुवी नवीशस्

धम्मधाने नाने मणुव्यर (अप ११ ११

दशांत्पय र् 🖣 प्रपीमिकी १ शमास । १ तिप्य-विर्ति दिव्य-व क्षित्र ११—पत्र ४४ ही) १

्यम १४८)।

ያየረ

पञ्जोब्द 🛊 [पटाइन] पटान परवर, परोध (पराध १)। पनोधी भी प्रताली १ नगर के भीवर का प्रस्ता (असु) । २ तपर भा वरनावा<sup>-</sup> 'नोडरी पद्मीभी में (पायः शुपा ५३१ था १२ प्रप प्रवश्चामि)। पञ्जोबद्वान देशो सञ्जयस्थातः। प्रधीनद्रामेदि (वि २०४) : प्रक्रोबाह पुष्पियाचाह्यी मेन वालन (पट्य ८, ४१। से १ २४। बुर २ वर्)। प्रभोम सङ्घ्या 🛊 द्विष् 🕽 द्वेष अपला बैर करला । पद्मोखद् (मृद्ध १ १४) । भभोस पु [दे प्रद्वेप] प्रदेप प्रक्रप्ट हेव (टा १ ) श्रंत धका साम ४० सुर १६, **४ पूर्व्य ४५३८ करन १ सङ्**ति४ कुत्र स ११६) । पञ्जोस देन बिनापी १ सम्बद्धाना दिन भीर राप्तिका सम्बन्धन (वे १ ६४) क्रमा) । २ वि प्रमुख दोवों से प्रुक्त (से २ 1(11 पश्लोद्दल (वय) देशो पनद्दल (व्यवि) । प्रश्लोद्वर वृ[पयोधर] १ स्तन वन (प्रसः द्वार २५ पदा सुर २, १)।२ वेक बारक (बळा १ )। ६ <del>क्रफ</del> मिरोप (पिन)। ६**६ तुष[यद्व] १ वर्डन नीय**ह नामा कांग्रे बीका 'बस्यमितिपि मी भार्न पंचेव वक्खेपर्छे' (बार केर काथ वस्थ आयू वस्)। 'सुमह व पंडे' (बजा १६४) । २ पाप (सुध २ २)। ६ शर्धनम प्रशिष वरीयह का शनिवह (निष् १) । आवस्त्रिमा औ **ैविक्रा व्यव**िक्षण (पिन) । प्यभा श्री ["प्रशा] चौची नरन-नृति (टा क इक्)। सहस्र हि ["बहुक] १ वर्षय-प्रकृष्ट (१ **१) । १ पार-प्रपूर (पूप २ २) । ∜** 

पंधा थी पिक्सी चीची नरक-मृति (इक क्रम ३ १)। पंचामा की पिक्सभा | चीची नरक-प्रविधी (एस १६ ११८)। प्रकार की [प्रकारती] पुल्का नामक विषय के पश्चिम तरफ की एक नरी (इका वे ४)। पॅकिय वि [पङ्कित] पंक-पूछ, क्रीववाला (भप ६ 🐧 मनि)। पॅक्सिक रि [पक्कित] कर्यमगला (का २० बाध्यः क्याक्रार्वे १०७)। पॅक्रेस्ट न [पहेस्ट] क्यत पप (क्यू दुव \$8\$) I पंत्र पंत्री पिछी १ पंत्र पांचि पांच पक्ष (पि ७४) रामा पठम ११ ११वा मा १४)। २ पनया क्रिन, प्रवाशका (यन)। सिण व िसने भिक्तनिर्देप (राष) । पंत्रिक पुंची पिक्रिया प्रशी (बा१४)। और जी (रिक्४)। पंतुविभा) की [के] पंचानम (कुर स्टा पंजुडी } दें दें त)। पंग सक [बद् ] प्रहुत कला। पंगह (है Y Y E) 1 पंत्रज व [माझय] धांका (हुत ५६ )। पंगु वि [पङ्ग] पत्र विकस अञ्च संबद्ध बुका कीहा (पाना पि ३६ । पिंप)। पुर <del>एक मिर+को बनना बाल्काका</del> करना । पंपूर्वर (धर्मि) । श्रेष्ठः, पंरारिमि (चरि) । पैगुरण न [प्राथरण] बस्न, नपद्म (ह १ १७४। चुमाः या ७ २)। पंगुक्ष वि [पह्नज] स्था पंगु (विचा १ १) र्श्व ७३३ पत्रम् । पंचार व [प्रथ्नम्] नोच ४ (देव १२६ वर्ष्य प्रमा) । उद्धान किया र्थभागत (श २१२) । "प्रक्रिय **प्र**िक्टिक हैं। 🖰 उचायम में 🕰 हर विचार करने बला। (त २१) ।∦ . प्रशिष्ठकी स्वयान

केनलवान भीर निर्वाख । २ काम्पिस्यपूर, बहा तेरहर्वे जित-देव धीविमनताय क पौर्वी क्रवाणुक हुए थे (ती २४)। ३ वप-विशेष (बीठ)। कोट्टग नि [\*कोप्टक] १ गाँव कोहीं से बुद्धा २ थूं पुरव (ईंड्र)। गरुव न रिश्तक्यों याथ के ये पाच पदार्थ-पूच दही। इत नोमय धीर मूत्र पंत्रबंध (कप्पू)। "गाइ ल ["गाय] गापाछ-च वाके पाँच पद्म (कस) । राष्य वि शिष्यो पाँचग्रमा (ठा५६)। चित्त पुँ[पित्र] एछ जिन देव भीपराज्ञाः विनके पाँचौं कस्पालक चित्रा मद्रम में हुए चै (ठा १ १ कप्प)। जाम न [याम] १ महिसा स्टब्स स्वीये, क्कावर्यं सीर स्थाग ये पांच महादत । २ वि बिसमें इन पाँच महाबर्धी का निकास हो वह (इस ६)। जडह की "लयकि ) पंचानवे १५ (काल)। प्रथम नि [निवत] १६ वां (कास) । वास्त्रीस (घप) सीन **िपत्यारिंदात** ] पैक्सीस ४% (पिक रि ४४६६)। "तिरवी और ["तीवीं] पाँच तीयों का समुदाय (वर्ष २): दीसङ्ग वि [°िंद्रसम] पैटीसबा ६१ वा (पर्का **१४)। इस निय दिश्**नि पनग्रह १ (क्प्यू)। इसम वि दिशासी पनरहवाँ रव को (सामा १ १)। दली की ["ब्राी] १ पनव्यनी १४ थी (ब्रिप्ट १७६) । २ पूर्विमाः। ३ समावस्याः (नुजः १)। ब्रह्मचरसय वि [वराश्चरतात दम] एक सी पनस्त्री ११% वा (प्रस ११६ २४)। नडप्र केको शास्त्र (पि ४४७)। माणि नि [कानिन्] मधि मुठ अवविः यगःपर्यव और केवल प्रत पांची डानों मे पुरु सर्वेड (सम्म ६१)। पड़ती की ["पर्वी] मास की वो घटनी वो जबुवँसी भीर रुक्र पंचमी ये पांच विकियां (रवस २६)। पुरुषासाह पूँ "पूर्वापाडा वसवे विनदेव भौग्रीवननाच जिनके पांची करवा-रणक पूर्वाचाडा नजन में हुए थे (ठा १८१)। पुस पू ["पुष्य] पन्छ्वं विनमेव बीवर्ग नाम (ठा ४.१)। बाग पु [भाग] कामरेव (तुर ४ २४६) दुमा) । भूव न न ["भूत] पृथिनी, यस शरित बायू ग्रीर

भाकारा देपांच पदार्च (सूच १ १ १)। मूयवाङ् वि ["भूतवादिम्] धाला बादि पश्चामी को न मान कर केवस पांच भूतों को ही माननेवाला नास्तिक (पूछ १ १ १)। सङ्ख्यास्य वि [ सहास्रतिक] पाँच महा क्षतींचाचा (शूष २ ७) । स**क्**ठवयन ["महाझव] हिंसा धसरम चोरी मेंबून और परिवह का सर्ववा परिवाप (पराह २ १)। सहासूय न [महासूत] पृष्की बस धरिन बाबु और शाकारा ये पांच वशर्ष (बिसे)। मुहिय वि ["मुप्टिक] वाश्व मूरियों का, वाश्व मुख्यों में पूर्ण किया वाता (जरेव) (ग्राया १ १ कप बहा)। सुद् र्पु [सुत्रा] सिंह पंचानन (स्व १ ११ दी)। यसी रेखो वृक्षी (पत्रम ६६ १४) । <sup>१</sup>रच, राय र् चित्र] गौच रात (मा ४३ मण्ड २० र-पर १४१)। रासिय न [राशिक] गाँगुल-विशेष (ठा ४ ३) । रूपिय वि [क्षिक] पाँच प्रकार के क्लीवाला (ता ४ ४) । वस्तुग न [वस्तुक] याचार्य हरि क्वसूरि-रिवट सन्ध-विशेष (पंचव १ १)। बरिस वि विर्पे] पांच वर्षं की प्रवस्था नाला (सूर २ ७३)। "विद्यासि ["विध] पांच प्रकार ना (चयु) । बीसइस वि [विश्वतिदास] पत्रीसवी (परम २४, २६)। संगद्ध प्र "संगद्ध" परचार्य बीहरिगप्रसूरि इत एक वैन प्रन्य (र्गच १)। श्रीवच्छरिय वि "मांबरसर्गरक" पाँच वर्ष परिमाशा बाना पांच वर्षे की बायुवाचा (सम ७५)। सह पि [ पेष्टं] वेंस्टचां ६५ वॉ (पटम ६४, ६१) । सद्भि की [पछि] पेँसड ६५ (कम्प) । समिय वि["समितः] पाँच श्रमितियों का पालन करनेवाला (सं च)। सर प्रै ["शर] कामध्य (पाक पुर २, ६३ गुरा ६ रथा)। सीस व [\*शीर्थ] केन-निरोध (शीक)। सुरुग न ['शून्य] पांच प्राणिवय-स्वान (तूम १ १४)। सुच्यान ["सूत्रक] बाकार्य भौक्षित्रसमूदि-निर्मित एक वैन धन्य (पत् १)। सेज सेख्य, सेख्य 🛊 [रीस, **क**े सबयोदिन में रिनत थीर पांच नर्नतों से विमुपित एक खोटा हीप (महा' पूर्व ४) । सोर्गधिअ वि ["सौराधिक] स्नावकी बर्धेग क्ष्मूर, इंग्रोस सीर बातीफन-नायफन इन पांच मुगन्पित बस्तुघों से संस्कृता 'नगरप पद्मसोपॅभिएए र्वनोसेर्ग, सबसेसमुह-नासविद्धि प्रवश्वामि' (श्वा) । इत्तर 🕅 ["सप्रव] पवहत्तरको ७३ वॉ (पटम ७३ ८६)। €चरि की [सप्तिते] १ संक्या विशेष ७६। २ जिनकी संस्था पणहत्तर हो के (पि २६४ कप्प) । इत्थुक्तर पू हिस्तान्तर मनवान महाबीर, जिनके पाँचों करपायुक उत्तरपुरान्युती-स्तात में हुए थे (कप्प) । उद्यु पूँ [ीमुच] मानदेन (एए) । (जन्द्र भी ["नवित] १ संस्था विशेष पंचानवे १४। २ जिनशी संक्या पंचानके हो ने (सम १७) पडम २ १ व पि ४४)। । जडम वि "सवती पंचलवां १५ वां (पडम १५ ६१)। ।णण १ [ानन] सिंह समेन्द्र (शुपा १७६ महि)। । णुक्यइय वि ["ग्रुप्रतिक] व्हिंसा व्यसस्य **कोरी मैन्नुन और** परिव्रह का व्यक्तिक व्यायनासा (चनाः क्रीप गावा १ १२)। व्याम वैको जाम (इह ६)। स कीन [शरात्] १ प्रकानकियेय पचास १ । २ जिनकी संख्या पचीस हो के पंचार्य व्यवस्थासम्बद्धाः (सम ७ )। स्मान [ीशक] भाषार्थं भीहरिस्द्रमूरि इन्त एक वैन प्रत्य (पंचा)। (सीव्य की [रेशीवि] १ चंदरा विशेष चस्त्री और पाँच ८६ । २ जिनमी संख्या पंचारी हो के (सम ६२ पि ४४६) । इसीइम वि [हरीविवस] प्रवासीबी वर वा (पडम व्य वहा क्या वि ४४१) । वंचेभण्य देखी पंचायण्य (४३४)। र्वजन न [पद्धाङ्ग] । सोहान से वालु धीर मस्तक ये पांच राधिराज्यन । २ नि पूर्वोक्त पांच धंपवाला (प्रशास ग्राहि) 'पंचेर्य करिय

व्य**दे** पश्चिमवें (तुर ४ ६०)।

( 4 (4) 1

११ कप्प) ।

र्यच्युक्ति र्युं [के] परएड-कृत्र रॅडी का गाम

पंचेगुछि पू [पद्मागुचि] इस्त हाम (शाया

ban	orenza este comi	<del>पंचायिका—पंड</del> रिय
पंजातिका की [पक्रातुष्किक्य ] बस्ती- विरेव (वर्रण १—पन १६)। पंचाति [पक्रात्त] तांच (परावा वार्षि) की कीयत का (वर्रात ६ १६)। पंचात व [पक्रात्त] तोच का वर्ष्यूस (वाचा)। पंचात व [पक्रात्त] तोच का वर्ष्यूस (वाचा)। पंचात व [पक्रात्त्र] तीर वर्ष्य का रोख (कार वहरा वा १७४)। पंचात व वर्ष्या वा (दर १ भ)। रो वर्ष्य नीत (दर १ थ)। रो वर्ष्य नीत (दर १ थ)। रो वर्ष्य नीत (दर १ थ)। रो वर्ष्य	पाइमसहमहण्यां वाग गोवासी गरी के किनारे मानते हैं, वव कि मानुनेक नवेपक जीव कंतर रजवां के विश्वां कोर पर, गोवासते के किनारे, हजका होगा विक्र करते हैं (उत्तर करे)। पंचवसण प्रं [प्रधायत्त्र] विक्र मुक्ताव (तमता ११)। वेचवसण प्रं [प्रधायत्त्र] वे वांच वर्षु—व्हीं कृष भी मतु वचा सकर (शिरे २१४)। पंचार मं [प्रधायत्र] कामशाच मानेता एक ध्वरि (तमता ११०)। प्रधाय प्रं व [प्रधाय प्रधाय दे स्वाः	पंचांगुबिजा—गंहरिय  पंक्षि १ [पांक्षम् ] पंक्षः वद्ये वर्षेक्षः विश्वामा (वर १ ११ दे)।  पंतर श्रंत [पंकर] १ सामार्ग जामायः अमर्गक सार्वि शुलिन्छ। २ स्मार्थनमन- निर्मेव समार्थ-अमर्गतः। १ स्मार्थ-ममन- निर्मेव समार्थ-अमर्गतः। १ स्मार्थ-ममन- निर्मेव (वर्षा) १)। पंजरित (पंजर्षा) मित्रमा नित्रमा (वर्षाः, वर्ष्णु सम्बु १)। पंजरित १ [ब] बहाव का कर्मवारी-परिष्यं (शिति प्रकृति [पंजरित नित्रमें वंद विसा हुमा (वर्षाः)
पेषां हैं कि [ क्याप्य ] पांच कार्यों में हुया पिंद (करेंगे) याता (दिन का प्रश्न) पेषापुर के हुए [पिंद (करेंगे) याता (दिन का प्रश्न) पेषापुर के हुए [पिंद (करेंगे) याता करेंगे। पांच कर है है। प्रस्त कर [पिंद (करेंगे) (कर कर हों के विद्या कर है। पांच कर है। प	ष्टिये पज्ञापं केत (शासा १ व सङ्घा व्यास १)। २ शु ध्यास देश का राज्या (सदे)। १ ख्यास्टेश्य (स्वा) ५ स्वाजिमा की पिक्राक्षिता] यून्यो कहारि विश्व क्रेटी प्रक्रिया (स्वा) पंचालिमा की पिक्राक्षिता] १ हुग्य एवं भी वस्त्र क्रेन्स प्रकृति (देशी १२४)। २ वस	हुणा (दडा)।  पंजा के दि [प्राज्ञान वारत थीना खु (कुत देश) तथा १ )।  पंजा हुं हैं [प्राज्ञान वारत थे कि ए पंजा हुं हो [प्राज्ञान वारत थे कि ए थे कि हुं हो [प्राज्ञान वारत थे कि ए थे कि हुं हो हो हो है हैं हैं हुं हो कर स्वतंत्र (बना)। उन्हें दू [पुट] यान्तर्मेन्द्र , बुंग्न करन्यम (बन १६६ थीर)। उन्हें कह ति हिरामार्ज्ञान विकेत संवाल के तिए हाम मेंस्स है प्राच्छा के तिए हाम मेंस्स है प्राच्छा के तिए हो मेंस्स है प्राच्छा के तिए हो मेंस्स है प्राच्छा के तिए हो मेंस्स है प्राच्छा थे कि ए प्राच्चा थे किए प्राच्चा थे कि ए प्राच्चा थे कि ए प्राच्चा थे किए प्राच्चा थे कि ए प्राच्चा थे किए प्राच्चा थे कि ए प्या थे कि ए प्राच्चा थे कि ए प्राच्चा थे कि ए प्राच्चा थे कि ए प्य
र्धमप्रदेश थी [यप्रामित] गाँच मान्युप्रयास एक स्थान स्वद्यं सीधानस्वयत्री ने स्वयत्त्रे सम्मान के नमय साधान दिया ना इन स्थान ना सरिवण करें सीन 'मार्थक' नगर के	कोहरूलं नेपियं दुरुषस्परत्यं च प्रेमीयाँ (नीर)। पंचमु मूँ [पद्मोपु] नामरेर गंदर्ग (नम्प्र रेमा)।	२१)। । पंडरंश वृद्धि शमेश, त्रंत्र ना योपार्तः (वर्ष)। पंडरंत्य देखो पंडरंत्यः (स्टर)।

पंद्रप कुं [पाण्ड्रप] राजा पाराह का पुत--१
द्वापिष्टर, २ थोग १ वर्षुत ४ वर्षुत और
२ तहुत (खाया १ १९ उप १५० टो) ।
पंद्रप कुं [वि] परक-रक्ष (?): विविद्व प्रविद्व वि पांच्रप कुं [वि] परक-रक्ष (?): विविद्व प्रविद्व वि पांच्रप केषण्याच्या पार्थी के भीवा हमा (६ ६ १) ।
पंद्रिष्ठ वि [वि] बताह पार्थी के भीवा हमा (६ ६ १) ।
पंद्रिष्ठ वि [पंग्रिष्ठ ] १ विवास राज्यों के मार्स को बारतेषाला बुवियान, उत्पत्न

हुता (व व द )।

पिडिश्र वि चिण्डत है विवाल ग्रामों के सिर्म के कारतेपास बुदिमान, ठाएका कारमण्या होएना कारमण्या कारमण्या कारमण्या होएना कारमण्या होएना कारमण्या होएना कारमण्या होएना कारमण्या कारमण्या हो हिस्स कारमण्या कारमण्या हो हिस्स कारमण्या हिस्स कारमण्या हिस्स हिस्स हो हिस्स हिस्स हिस्स हिस्स हो हिस्स हिस हिस्स हिस हिस्स हिस

रकतेवाबा (केरम १६)। पंडिका १ मा [पाणिकस्य ] परिवचारै, पंडिका १ निज्ञा केरूप (ज्य मुद १६, ६८) पुरा २६ र्यमा सं ४७)। पंडी केरो एंड ज्यारम्य ।

का मिमान रखनेवाला विद्वता का वर्गड

पंडी देशों पंड = पार्च्य ।

पंडीम (पर) देवी ५डिख (स्प)।

 "इंजला की ["कम्बला] बही पूर्वोच्छ सर्थे (ठा २ वे)। तालम पु ["तनम] परमु एम का पुन पाएडव (गतम ४०१)। सङ्घ पु "सम्रू] एक वैन प्रान्त को साथै संमूचि-

एवं का पूज पाएक (गजिंग ४-४)। अह डू जिल्ला प्रकृत को सार्थ वर्गान-विकास के शिष्प में (कपा)। सहिया अधिया के शिष्प में (कपा)। सहिया अधिया की जिल्ला (क्र अकार की लख्ने विक्रुं (की रा परण १—पत्र २१)। सहस्य की जिल्ला प्रकृत करना करना के

अहुत की [मित्रुरा] स्वामान-स्वात एक भागी पाएवर्षे हाए बनाई हुई भारतवर्षे के विलाग तरफ की एक मधरी का नाम (शाया १ १६—पत्र २२१, संत)। राज टुं [जाव] एका पाएकु पाएवर्षे का रिवा (शाया १ १६)। सुत्र टुं [सुत्र] पाएवर्ष (का ६४८ टी)। सेना टुं [सेन] पाएवर्ष का बीचनी से जलान पुत्र कुत्र (शाया १ १६। का ६४८ टी)। पंत्रुष्ट्रय विक्र दिस्ट टी)।

किया हुआ (खाया रे र--पर २०)। ध्वेशा १ वृ पाष्ट्रक रे रक्कवर्ती का बावजें बेहुंग है के दुर्पिक कर्णवाला एक निर्म (एक) का २, र--पर ४४४ कर कर कर कर रे रे वर्ण की एक बाटि (बाषु १)। १ व मेक पर्वेठ पर विषद एक बन, पाएडक-बन (बन ११)।

रहा।

पृद्धा र्षु [पाण्युर्ग] १ स्वेत वर्ण चर्चेम रंग।

२ पीछ-निर्मियत रोत वर्ण। वृत्ति चर्चेम वर्णे वर्मा। ४ स्वेत-निर्मियत गीत वर्णेमामा (क्य्य चन्न वेत ४४२)। ज्या की [या] एक कैन ठाल्मी का नाम (याचग)। तिथा [यिक्क] एक वर्म का नाम (याच शे) चर्चेमुरेग र्षु [याण्युराङ्ग] चर्च्याली की एक वर्मीत सस्य वननेशासा चर्चमाधी (याणु

पंतररा ) प्रै [पाण्डुरक ] १ शिष-भक्त पंतुरप ) धंन्याधिमाँ की एक बाशि (ग्रासा १ १४—पन ११०) । २ शेक्षी पंतुरा केमा पंतुरमा ह्याँच विं (ज्य १)। पंतुरिका ] वि [पाण्डुरिक] पाण्डुर वर्णे पंतुक्कस ) वि [पाण्डुरिक] पाण्डुर वर्णे पंतुक्कस ) बालाक्य हुमा (गांवेच ८ शिया

8x) 1

स्पित एक किला जिल पर जिन-वैशों का पैस कि क्रियान है स्थापन (सन जनपात्रियेक विका काठी है (वे ४)। ११३३)। २ सरीमन, समुख्य (सामा

१ २--पण २७)।

(अ व)। यर वि ["वर] मीरा प्रवार वी बीज करनेवामा उपकी (पद्म २ १)। अधि वि ["बीविम्"] मीरा आहार ग्राय-निर्माह करनेवाचा (अ १)। "हार वि ["हार] क्या-पूचा प्राकृत करनेवामा (अ १,१)। पंताय क [में] उपकृत करना मारना । पंताय कि वि

कुछ न कुछ] गोच कुम बनना नाति।

पंति को [पक्कि] र पंतिः, सेखी कतार (ह १ ९१ कुमा कम्म)। र हेना-विशेष निसर्ने एक हाली एक एक, तीन बोड़े सीर पांच पकतारी हों ऐसी देना (पतन १९ ४)। पंति की [के] वेखी केख-रचना (१ ९ २)।

पंति की वि] वेशी केश-राजना (१ ६ २) । परितय कील [पक्रिक] पंकि, प्रोणीः 'स्वासिक वा सरपंतिमासि वा सरसरपंतिमासि वां (बाचा २ ६ ६ २) । की पंतिमामा' (बाक्ष) ।

पंच पूं [पास, पविस्] नार्य परता। वंचे किर वेपता हि १ वव) 'पंचीन यह परिवाह (पुरा ११: हेका १४ प्राप्त १७३)। पंच पूं [पास्य] पविक्र सताकिर हि १ ३

पंस श्रृ [पास्य] परित्त, प्रवाधित (है १ व सन्द्र कर) । कुट्टण न [कुट्टन] नार गीरकर पुरावितों की सुरुत (शास १ १८) । कोट्ट में [कुट्ट] बहा पर्य (१ १ र—पन ११) । कोट्ट को [कुट्टि] यहो सर्थ के बार्टिश्यान स्वाध्यान स्वाध्यान के बार्टिश पंता मुंचित के स्वाध्यान विदेव (पहुछ १ —पत्र १वे)। पैका वि [पाइक] पत्र (श्यवा वावि) वी भीगत वा (श्ववि १ ११)। पैका व [पाइक] पत्र वा चतुर्व (याचा)। पैका प्रमुख्य प्रीव्यक्ष स्थाप्त (याच्यक्ष स्थाप्त (याच्यक्ष स्थाप्त व्यव्यक्ष स्थाप्त व्यव्यक्ष स्थाप्त व्यव्यक्ष स्थाप्त व्यव्यक्ष स्थाप्त व्यवस्था।

र्पर्गुडिया थै [ पद्माङ्गुडिया ] ससी-

पंचल ] न [पद्धला] र पांचलन पत्रक-पंचलागं ] क्लडा (पुर १ ५) : २ वरण भीत (मुर १ ४ वरण कर पु १२४) । पंच मित्र [पद्धगुण्यु ] पांच क्लानों में

हुए:-पिव (मटेरी) बोला (शिव धा ४वे)। पंचपुत्त पून [के] प्रस्त-बन्धम विशेष मधती परहते वा जाव-विरोण (विशेष —पत्र बंध दी)।

—ाव बध दी)। ध्यम नि [बद्धम] १ पोषवी (हना)। २ पृंत्यर-निरोग (हा ७)। घारा की ["घारा] भरत ती एक तथा ती यति

(तरा)।
पंजमद्रम्णकं वि [पाद्यमहासृतिक]
पांज महावृती की मानतेराना छोडवस्त का पहुंचती (मुच २ "११)।
पंजमासिकं वि [पाद्यमा सक] १ पांच

मान दी उप्रकाः। २ व द शान प्रपूर्णे होनेनामः (यमिष्ठह स्नादि)ः स्त्रे आस् (गम ११)। पैपसिन्न दि [यम्ब्रोसिक] योजनी यजस (योज ६१)।

पैत्रमादी (पद्ममा) १ पोत्रसे (प्रामा) ।

र निविन्तिरेप पत्रमी दिवि (श्रम रहा भा र )। हे स्वाहरण-प्रमिद्ध बतायन रिमोर्फ (वार्चु)। ध्यास केरी प्रधानक्य (श्रामा है हैद सन्त १९४०)।

देवराम कर्ता पद्माज्या (छाता १ । बुरा १६४) । चेपरण्या स्टे [पणापीक्रिका] बुजारि

र्षपागद्रया ध्ये [पगापीक्रिका] बुक्तरिनर्ध रिटेप हाव ने चननेशने धर्मजातीय ब्राली बी एक बाति (भेप र) ।

वी एक वाति (केन र) । पैपन्नकृति की [पन्नन्दी] पांच वर-बुलवाका एक प्यान वहाँ पैपानपन्नती है सकी पन्नाप के बनव बातन दिया को दन स्थान वा किनाच कर बोत निर्माणकर वातर है

पास दोवावरी नहीं के किनारे मानते हैं, वब कि ब्राहुनिक प्रवेपक तौन बस्तर रजवाड़े के बतित्ती छीर पर, पोशावरी के किनारे, इसका होना विक करते हैं (ततर पर)। पंचवमण पुंपिकावयन] सिंह मुत्रपत्र

होता विश्व करते हैं (बार नरे)।
पंचयका दुं पिक्रावरनी विश्व मृत्याव
(समय रेक्)।
पंचायन व (प्रश्नायनी से वांच करतु—वरीः
दुव की मद्र तमा सरकर (विरि रेर्ट)।
पंचाक दुं विश्वाब्द कामतान नरीया एक
अर्थ (वमत रेक)।
पद्माक दुंव पिक्राब्द वाक्राव्या है केत विश्वाद करता करता (स्थाव वाक्राव्या रेक्स

परण १)। २ तु. पानान केत का चारा (प्रवि): १ क्ष्म्च किए (रिन)। ५ चाकिया की [प्रकाषिका] कुलती कर्ज़ार गिर्वित कीटी प्रतिका (स्पूर्ण)। पंचासिका की [पाञ्चाकिरा] १ कुल्ल-धन

रोक्या होन्छै (देखी १६५) । २ वल

वा एक नेव (कन्यू)। पंचायण्यः । क्रीण वि पक्षापक्षारात् । १ प्लावकः । क्रेका-नेवेश पक्तत्ते, ११ । २ निजनी संस्ता पक्षण हो वे (१९८,१७४) वे १ २०। १९, १० (१)। पंचायकः रि वि पक्षावक्षात्रः) पक्षणक्षां (पञ्च ११,६१)।

रॅबिविय ) वि [प्रक्रेन्ट्रिय] १ दह और

पश्चितिय । शिक्षकी त्यचा जीव, शाक

स्रोम और नान में बांची इन्द्रियां ही (पर्य

१। वप्प बीर १: प्रति) । २ त. स्वर्ध स्तरि पांव इत्त्रियां (वर्ष १) । पंथिया को [पश्चिक्त] १ प्रांव की संख्या सप्ता । २ वांच किन वा (वर १) । पंचुकर कीन [पह्योद्धन्वर] वट पीएव स्तरम्बर, सन्त्र धीर वारोद्धन्वरी का फन

(मीप)। धरे शे (वा २)। पंचुचरमय वि [पद्योचरहाततम] एक वी पांचरी १ १ वां(पत्रम १ १,१११)। पंचतिय वि [थे] रिमाशित 'नैस नोजन

पंचतिया है [वि] रिमारिक 'नैस मोनस्त बोद्युत्तरों पेटियं दुर्द्वस्थास्त्वं च येथेटियँ (मीप)। पंचानु हुं [बादोयु] बानरेट वस्तुं (क्यूर पंक्षि पुं [पश्चिम् ] पंक्षे, नतो प्रवेष विविध्या (का १ वह दो) । पंक्षर पुन [पञ्चर] १ धावार्य, काम्यान प्रवर्षक शांदि पुनि-पर्ण । २ सम्यान्यमन-निवेष धायार्य-प्रवर्षन । ३ सम्बन्धका-प्रवि-

येश (बय) १) । पंतार न [पत्तर] पिश्रण पित्रका (सबक कप्नू सम्बु २) । पंत्रशिक्ष पूर्वि स्थान वा कर्मचारी-सिरोज (शिरि ४९७) ।

पंजारिय कि [पञ्चिता] निजरे में बंद किया
ह्या (वजड़) ।
पंजाब कि [माञ्राख] यान सीमा बादु
(तुना देवर' नका है )।
पंजाबे कुंबी [माञ्राख] बराग करने के किए
योगा ह्या वर-पाटुट हरा-माञ्चानियोग
सेपुक करन्य (चना)। "उह वुं [पुट]
सम्बन्धिन्दुट संपुक करन्य (चन ११६
सीम)। यह कह कि [क्यमाज्ञाख]
विगने माणाम के लिए हाम बीमा है खुं
विचारी माणाम के लिए हाम बीमा है खुं
विचारी माणाम के लिए हाम बीमा है खुं
विचारी माणाम के लिए हाम बीमा है। खुं

ব্যবিজ্ঞান 🦳 বব্দৰ ধান মুক্তিনাৰা বলা

'चल्कुनेयु समंती पीत्रक्यास्त्रं विध्यक्षेत्रं (शिरि ११८)। पंड वि [पाण्डच] १७-विशेष में कारण। की की 'पेत्रेस्त्रं पंडवलांकुबमस्त्रवारं (कल्प)।

पैकः । पुष्पिकः, कः १ नपुंचकः समीत पैका। (सीतः ४६०- सन्तः १६० पात्रः) १२ पैक्षयः । व सेव नर्यतः कः एकः ननः (द्वाः २ १३ इकः)। पैक्षयः केदो पैक्षयः (द्वाः १७)।

भवर हूं [याण्वर] र शीरमर बानक होत ना व्यक्तिका देव (यान) । १ त्रेस्त वर्ण, तमेन रेन । १ कि त्रेस्तरणेताना, स्टेस (नगी) । भिन्नमु हूं [भिद्ध] रहेवाम्बर बैन संप्रशंब का पूर्वि (व १२२) । ग्रैकर देवी गेहर (स्थन ७१) ।

पंडरंग हुँ हिं] रह महारेप कित (वे ६ १९)। पंडरंगु हुँ हिं] धामेग्र, बोच वा समिगति

्रिष्)। वृष्टरिष देवी वृष्ट्रिज (सरि)। र्पञ्च पू [पाण्डव] सवा पाएडु का पुत्र---१ दुविधिर, २ मीम १ सर्दुन ४ सहरेव मीर ५ लहुत (शाया १ १६ उप ६४८ टी)। पंडय पू हि । धरव-छाक (?)» चिट्टि गुइवेदि शाधियपंत्रवद्याणीह् नरवरो रहो' (सम्मत २१६)। चंद्रशिक्ष वि वि वसतः पानी से भीका हुमा (दे ६ २ )। पॅब्रिक वि पिण्डित र विद्राल शासी के समें की जाननेकाचा बुद्धिमान, तत्क्या कामक्सवा शामं मशिया होत्वा बावलध-क्षमापिकमा (निपा १ २ प्रामु ७४ १२१)। २ संयव साबु (सूस १ ६, १)। सरण न [ सरम ] शाचु का मध्य जुन मरण-विरोप (मय, पच्च ४१)। साम वि [स्सस्य] विद्यामिमानी निज को परिवत्त माननेवासा दुविवरण प्रथपका धूर्व मनाही (क्षोव २७ मा)। साणि वि भिर्मालस् देखो पूर्वोत्तः धर्म (पडम ११ २१ उप १६४ टी) । वीरिक्षन विभिन्ने संबद्ध का

द्यारम-वस (भग)। पंडियमाणि वि[पाण्डित्समानितः] पंडियाई का ग्रमिनान रखनेवासा विद्वारा का धर्मक रखनेवासा (वेदय १६)। पश्चिम ) न [पाण्डिस्य ] वरिश्वताई, पंक्रिया । विश्वयाः वेडुम्य (उका शुर १२ ६ स सुपार६ रेक्स सं ५७)।

पंडी देवी पंड = पाएव्य ।

पंडीझ (प्रव) वैको ५डिझ (प्रवा) । पंडू पु [पाण्ड] र मूप-विरोप पाएक्वों का

रिता (का ६४= दी सूपा २७ १। २ रोग-षिरोप पारकृ-रीय (वर्ष १) । ३ वर्ग-विरोप, शुक्त मीर पीठ वर्ण। ४ श्मेत वर्ण। ३ वि गुरु भीर पीतवर्णवाना (कप्पुः वडह)। ६ सप्टेंग्ट, रवेत 'संग्रं सिर्म वलक्ता सवस्ता पेड्रंचवर्त्तं प<sup>र</sup> (पामः मठड) । ७ शिका बिरोप पाएड्डम्बना नामक शिका (बै ४० इक) । फ्रेंबर्टमिक्ट की [कम्बर्धशिका] मेद पर्वेत के प्रस्कृत कर के ब्रियश ब्रोर पर रिमत एक रिला जिल पर जिल-देशों का चन्मामिरेक विया जाता है (वे ४)।

कंबला की ["कम्बस्त] वही पूर्वोक्त धर्व (ठा२ ६)। तिणय पु [तिनय] परह श्रम का पूत्र पाएडव (एउड ४८३)। सङ् वं िश्च विक्र जैस मृति को सार्थ संमृति-विजय के शिक्स में (कल)। सहसा मिलामा और मिलिका एक प्रकार की स्पेद्र मिट्टी (बीच १ पएए १---पत्र २६)। सहरा को "मधुरा] स्थमम-क्यात एक नवरी पाएकमें द्वारा बनाई हुई भारतवर्ष के दिखला तरफ औं एक नगरी का नाम (साया १६---पथ २२४, धतः) । राय द्र िराजी राजा पार्ट्स पाएक्कों का पिता (कावा १ १६) । सम प्रविश्वती पाएक्ष (जर ६४८ दो)। संग पू िसेनी पाएक्यों का शीववी से स्टाप्त एक पूज (शामा १ १३ इम ६४ व टी)। **पंक्रक्य वि [पाण्क्रकित**] १ स्वेष्ठ रंगका किया क्षमा (छाया १ १--- पत्र २८)। पेक्स्स ) पूपिण्डकी **१ वक्स्पर्शी**का शस्यों पेंद्रेय े की पूर्ति कर्जवामा एक निवि (राजा तार रै—पत्र ४४ चप १०६ टी)। र सर्पं की एक बाधि (बाबू १)। ६ व नेव पर्वत पर स्थित एक बन पाएडक-बन (सन 1 (59 भंदूर है [पाण्डूर] १ स्थेत वर्ण, बक्रेर रंग। २ पीत-मिपितश्चेत वर्णः। ६ वि सन्ध्य वर्णः-

(कपायन सेव ४६)। इसर की (रिया) एक बैन साम्बी का नाम (शावम) । रिश्रय ["स्थिक] एक गान ना गान (धाचु १)। पंदरंग दू [पाण्डराहा] संन्यासी की एक वारि मस्य बयानेत्राचा शंग्यासी (घणु 44) I ५वररा ) र्षु [पाण्युरकः] १ शिव-शकः पंयुरपः) चैन्याधिमी की एक जाति (शाना रे १४—पण १८६) । २ देशो पंदुरः

**गामा । ४ श्रेत-निश्ति गीत गर्लंगला** 

फैसा पेंड्रुप्या हर्नति हैं (उन्न ६): पं**दुरिल १ कि [पाण्डुरित] पाण्डुर** वर्ण पंदुष्ट्य 🕽 वानावना हुया (गा ६८८ विपा १ २--पत्र २७) । र्पंत वि[प्राप्त] र मन्तवर्ती मन्तिम (जय

**शः ११) । १ यरोमन धनुषर (बाधा** 

धोष १७ मा)। ६ इन्द्रियों के मननुकृत वित्रयन्त्रतिकृत (पर्ह्ह २ १)। ४ सम्प्र शसम्बद्ध व्यक्तिह (बोब १६ टी) । १ प्रतस्य शीच इए (सामा १ =)। ६ वरित्र निर्मंत (धोव ११) । ७ कीर्ग फय-ट्रगः यंत बरब— (बृहु२)।≡ ध्यापन्त विनष्ट शिक्तवनगरमाई बंदे यंत्र व हाइ वादर्म (बह १ साका)। ह भीरस सुझा (उत्त ८)। १ अन्तर्वास्ट्रकामेने पर वशाह्या। ११ पर्युपित बामी (शादा १ ५—१व १११)। कुछ न ["कुछ] नोच दुसः असन्य जाति । (ठा ८)। बर वि ["वर] शीरस प्राहार की कोज करनेवासा तमस्वी (प्राह २ १)। क्षीचि वि शिक्षीचिम् नीरस माहार से राधिर-निर्वाह करनेवासा (ठा ४,१) । । इति वि [हार] कवा-पूचा बाहार करनेवाता (बर्१)।

पंताय सक [दे] शहर करना मारना। वंताचे (पिंड ६२६)।

पंति की [पक्ष्कि] १ पंकि, मेखी कतार (ह १ २६ कुमा कम्म) । २ सेना-विरोप जिसमें एक हावी एक रव, तीन बोड़े धीर पांच पदाची हों देसी सेना (पडम ५६ ४)।

पंति भी 👣 वेखी, क्ट-रवना (वे ६ २)। पंतिय भीन [पहरिक्र] पंक्ति, म छी 'सराहित बा धरपंतिवारिया का सरसरपंतिवारित वा (माचा २३६२)। ही, 'पंडियादी' (मणु) ।

पंध प्रे. पिण्या पथिन् ] नार्षे चल्दाः 'पंधे किर धैनियाँ (हेर यह) 'पंपनिस पह परिमार्ड (सुपा ११ । हेबा १४ मापू 1 ( F# 5

र्षथ र्षु [पान्ध] पवित्र, मुमाकिर (दे १ ३ : सम्बद्ध ७४)। इत्यान [कुट्टन] मार वीटकर पुचाकिएँ की चूटना (एगमा १ १व)। बाह दुं [कुह] बहा सर्प (विपा १ १--पत्र ११)। साहि को किहि वही धर्य 'से भोरतेलावई पामवार्य ना भाव

र्थंबकोट्टिया कार्ड दव्यति' (ए।धा १ १ द)। र्चमग हूं [पान्यक] एक मैत कृति (लावा १ १३ थम्ब ६ क्षेत्रे ।

प्रस्ता व्यक्तिमाल (है रे क पुता १४११)।
पंद्म ई (पंद्म पांद्र) क्यों रण केपू (है
१६ पांद्र पांद्र) क्यों रण केपिक्स केरिक्स
रि [क्रीहावर] निवत्ते बाल व्यवन में
पंद्म केद्रा भी महे हो नह व्यवन मा वोद्यवन
भी क्षेत्र की महे हो नह व्यवन मा वोद्यवन
भी क्ष्मित्र होने के आपार रिक्स के तुवस
पाद्म पहरा हो न्यू (कर १२)। मुक्किस
१ [मुक्किन] विचानक मानुस्तानिकस
(धार)।
पंद्म विक्री हुकार, करवा (है र २६)।
पंद्म केद्रा पद्म (पद्म)।
पंद्म केद्रा पद्म (पद्म)।

उत्पार सरण (क्षण है क)। पंद्रास्त्र पुरि है । क्षेत्रिक कोलका। २ वाए, करतीत (३.६ व६)। १ कि व्यक्त, तेलक इस्य (वर्ष)। पंद्रास्त्र प्रदेश। २ कि. कृषिन्युक्त (वर्ष १६)। २ कि. कृषिन्युक्त।

(पडड़) । पंसुक्त को [पंसुका] कुकरा व्यक्तिपति को (कुमा) । पंसुक्तिम मि [पंसुक्तिक] बुलैन्द्रक लिया हथा पंजुक्तिमकोल (पडा) । पंसुक्तिमा की है पंसुक्तिमा वार्षक पहुँ (पर २२९) ।

पेसुको औ [पांसुकी] कुमरा, व्यक्तिवारिखी की (पाम भूर १४, २ 🐧 २ १७१)। पर्श्वच रेको पर्गच (प्रान्त १ ६ २)। पर्स्तवग र् [प्रकृष्तक] यस-विशेष एक प्रकार का थोड़ा (ठा४ ३ — पत्र २४८)। पद्भैय र्पु प्रिकृत्य] अस्य अधिना (ध्यव ४)। प्रकृष्य न [प्रकृष्यन] इसर भेको (पुपा ६११) । पर्द्यप्रज वि [प्रश्वम्पत] ज्ञानन-पुत्त, काँगा ह्मा (याच २)। पर्वतीय वि प्रिकृत्यित् । कार्यनेवाचा (ज्य ह १३२)। बंदे, श्री (रंख)। पक्क कि [प्रकृत] १ प्रस्तुत प्रकृत छर स्वित घत्रकी इच्छा (धर ७ १०---गर **१**९४८ १८ ७—नत्र १४ )। २**३**४८ निर्मित (वय १ व ७) 1

पक्क देवो पराह = प्रकट (का ७ १)। पक्क को पराहड । कराइ- पक्कि पक्कि का साम (वेश)। पक्क कि (प्रकृत र कर्म-कुछ । २ वीचा हुमा (वेश)। पक्क कुछ । प्रकर्मन अन्ति वीचार (विष् १)। पक्क कुछ प्रकर्मन क्या कथा।

प्रतीसा करना । वन्त्रत्वह (सूध १ ४ १

पक्रम्य सक्त [प्र+क्तुप्] १ वास में माना स्पर्धान में साता। १ काटमा केला। ∰ पक्रम्य (ठा १, १—पन १: )। केलो प्रस्त्य = प्र+क्ल्या। पक्रम्य सक्त [प्र+क्लयम्] १ कम्म्य

१६ मि १४६)।

वानुमा । इ बेक्स कराम भाग्ने वहीं विशित्त क्ष्म्यावहीं (तुम २, ६ १६) । व्यव्याद वृं [मक्स्य] १ क्ष्म्य व्यापात, व्याप्त साम्यवह (ता ४ के) १ क्ष्म्य व्यापात, व्याप्त विस्था (ता १७० के) विष्यू १) १ सम्बन्धन विस्था 'बान्यावहीं वृष्य कर पुरू क्ष्मकरा । ४ व्याप्तवहारणः 'व्याप्तविक्षीते सामारक्कारें (ता १०) ११ क्ष्मणा । १ द क्षमणा । १

बाबुधों का एक प्रकार का बाकार स्वविद

नस्य (पंचारा) । १ एक महापद्ध, ज्यौतिय वे<del>व विशे</del>ष (गुजर) । संभाषु विस्त्र एक प्राचीन चैन धन्त, "नितीष" सूत्र (बीर १)। लड् वृं [यिति] निरोपं धन्यम का कानकार साबु, 'बम्मी निरामक्रती वक्यवह्ला को बच्चों (वर्ष १)। धर नि [भर] 'निसीच' धम्यसन का <del>बानकार</del> (निषु२)। वेद्यो पगप्प ∞ प्रकार। परूपमा औ [प्रकायना] प्रकाशा व्याक्या पंक्यक तिका प्रक्रमध्य तिका एक्ट्रा (निषु १) । पञ्चलवा औ [प्रजल्पना | करना (नेस्म (४१) धक्य १४२)। पञ्ज्यकारि वि [मक्तप्रचारित्] किंग्रीव सून का चालकार (बद १)। पर्खिप वि [प्रकृतिपृत् ] स्मर देशो (वव

पक्षिपक ति [प्रक्रियंत्र] करत हुता 'एक पण्डीपक्षमा एएए प्रकृति (१ क्षिम)। का लेका' (क्ष्म है २)। पक्षिपक ति [प्रक्रियंत्र] १ संक्रीरस (६ २)। २ तिर्मेश (म्रह्म)। ३ स. पुर्वेत्रास्ति क्षमा 'ख स्त्रे पर्वेत्र पर्वेत्र (सुद्ध १ १ ४)। देवो म्याप्टिक। पक्ष्म ति [म्रह्मत्र] सुद्ध स्त्र से संस्त्र हुना (इत १३)। पक्ष्म कि [म्रह्मत्र] करते से सम्बन्धाः क्ष्मत्र (इत १३)।

पक्रीय पक्रिति (क्यां पि हिंदे थे) । कक्र पक्ष्माम्म (क्या) । डीक्र पक्ष्मिम्म (क्या) । पक्ष्मिम्म प्रदा = क्ष्मर (बार-नेप्नी करें) । पक्ष्मिम्म (क्या) कर्या क्री (क्या) । प्रकाशिक वि [मक्ष्मिय] क्रिको क्यां का सरस्म क्षम्म हो बहु (कृष्ठ १ वृष्ठ क्यां का

पडोईक वि [मक्सित] किन्ते बहुते का आरम्प किन्न हो वह (का १ ६१ द्वा कर्तु)। एक्सम व [मक्सम] १ स्टबर्ग सरक्त (शाम १ १) बहुत बाट—नन्द्र २७)। २ ई

নপ্ৰয় অধিনাৰ (হল ৬ ৬)। বঙাল (মণ) হল [ দুৰ্ ] বন্ধানা। কমৰত (বিভাবি ধাংগ)। पक्टि देवो पगिट्ट (राज) ।

पुन्नम देखो प्यास = प्रकार (पिय) ।

पक्षिण्य कि [प्रश्लीयों] १ स्टब्स, कोया हुआ।

२ बत्त विमा हुया 'बर्डि विक्युखा (मा) विक्हृंति पूरला (इन्त १२ १६)। देखी पहुज्य = इकीएँ । पश्चित्रिक्ष वि [प्रकीर्त्तित] वर्ष्यित कवित (खुर च)। पश्चित् रेको पगइ = प्रकृति (प्राहः १२)। पिकदि (शी) देवो पहड़ = प्रहति (स्वप्न ६ समि६४)। पिक्रम देखा पिक्रणा (उत्त १२ १३)। यक्रिरण न [प्रक्रिरण] देने के लिए ऐंदला (मग १) । प्रकुम देखो पद्मर ⇒ प्र+ क्र । पङ्कुछद (कम्म 2 4 ) 1 प्रकुष्य सङ् [प्र+क्कप्] शेव कला दुस्या करना । पहुष्पंति (महानि ४) । पद्रप्पित (चुपै) वि [अञ्चपित] सूद्ध, बूपित पुस्सामा हुमा (ह ४ १२६)। पकुविम ऊपर थेको (महानि ४)। पकुरुव सरु [प्र+क्ष्म, प्र+क्षमें ] १ । करने का प्रायम करना । २ प्रकर्ष स करना । ६ करना। पनुष्यद्र (पि ५ ≅)। बह्न पकुष्यमाम (सुर १६ २४ वि ६ ६)। पञ्जनित वि [प्रकारिम्, प्रकृषिम्] १ करने-भाषा कर्षाः २ प्रे प्रायम्बित देकर शुद्धि कराने में समर्थ पुर (इ.४१ ठा = पूज्य 144) i पकृषिक्ष वि[प्रकृषित] क्षेत्र श्वर से विक्रामा ष्ट्रमा (क्यं द्व ३३२) । पञ्चेट्ट रेखी पञाटू (राज) । पक्षेत्र पू [प्रस्तप] प्रस्ता, क्षेत्र (या १४)। यका वि [यक् ] परा हुया (है १ ४७ २ ७६ पाष)। पश्चिष [वे] र द्वास यनिकः २ तपर्थे पद्या पहुँचा हुम्य (दे ६ ६४ पास) । पद्धति विशिष्टास्त् ] प्रस्तुतः प्रकृतः (दुवा ₹**७**) : सक्तमाइ पुंदि १ मकर, मगरमध्द (१ ६ २६) । २ पानी में बसनेवाला खिद्वारार बस-बनु (से ४, ५७) ।

सपर्व, सक्त (दे ६ ६१)। १ पूँ नायशस (सं६६) । ४ एक यनार्यं केश । ३.५% की-शतार्थं देश-विशेष में रहनेवाको एक मनुस्य कार्ति (धीप राग)। बी. मा (सामा ११ भीप इन्ह)। ६ पूँ एक नोच वाति का वर, श्रवसम्बद्ध (पेरा १२) ः उस्त म [कुछ] १ बाएशम का कर (इह १) । २ एक पहिछ कुस व्यक्तरहाउसे वर्ततो साउछी हमरोनि वर्राह्मचो होद' (धान १)। पक्किं वि वि] १ मितराय शोममान भूव शोगता हुया। एकन भौगा हुमाः ६ प्रिवर्ग प्रियमापी (दे ६ ६४)। पद्धानिय पूंची दि] एक बनावें केत में रक्षनेवासी मनुष्य-भाति (परह १ १--पव १४- इक) । प्रक्रमान पिकाका केश्वय की में बनीहरी बस्तु, मिठाई मादि (मुपा ६८७) । पक्षम सक [स+ऋम्] प्रकर्ष से समर्थ होना । पक्कमद्द (भय ११---पव ६७८) । पक्कम धकि मि + कम् ] १ प्रकर्ण से जाना चलालांगा यसन् करेता। २ वक प्रयक्त होना। प्रवृत्ति होना। पक्तमई (उत्त ६ १६)। पस्करीय (बच २७ १४ इस ६ १६)ः बालुमामस्त्रमेष पक्कमे (सूध १ २ 1 (11 1 पक्टम पूँ [प्रकःस ] प्रस्ताव असव (मूपा पद्मणी की [प्रकृमणी] विद्यानक्रियेय (तूच २ २ २७) : पष्टक वि [वि] १ समर्थ, शक्त (वि २ १७४-पामा भूर ११ १ ४-वन्त्रा ३४) ।

१ वर्ष-पूर्वः, यविष्ठं (सूर ११ १ ४० वा

११८)। १ मीडः 'चतारि पश्चनवदस्ता'

यक्सानम पुँ [वे] १ शरम । २ व्याम (दे

पक्षात्रय नि [पकाकृत] पद्ममा हवा

'पश्या प्रमार्जीतपशारिषद्य' (बण्या ६१) ।

(बाद१२ कि ४३६)।

4 92)1

पश्चस देवी पद्धस (पाचा) ।

माणा" (शामा १ २)। पक्कीखिय वि प्रिकाशिक निवने की दाका प्राच्छ्य किया हो वह (ग्रामा १ १ कम्म)। पक्षेत्वय नि [पक्ष] पका हुमा (उना)। पक्रम वू [पश्च] बेदिका का एक भाग (राय <?) ı पक्ला 🛊 [पञ्ज] १ पश्च पचवारा, मावा महीना पन्नाइ विन-रात (ठा २ ४--पद वद् कुमा)। २ शुक्त और इच्छ पञ्च **उनेना धीर कॅने**च पा**च** (बीव २ हे२ १६): १ पार्श पांतर, कल्वा के नीचे का कार्य। ४ पश्चिमों का शबदव-विशेष पंक, पर, पत्तम (कुमा) । १ तक्ष्मास-प्रसिद्ध बनुमान-प्रमाण का एक बनवन साम्यवासी बस्तु (विसे २८२४) । ६ सरक, मीर । ७ जल्बा, वस टोसी । व मित्र स्का। १ राधैरका शावा बावा १ वरकश्चर । ११ वीर कार्यस (हे २ १४७) : १२ वरक्यपै (वद १)। स कि नि] पक्र-गामी पल-पर्यन्त स्वागी (क्रम १ १०)। "पिंड पून ["पिण्ड] ग्रासन-विशेप—१ भानुसीर वॉम पर रक्त वॉम कर बैठना। २ बोलों हापों से राधीर का बल्बन कर बैठना (कत १ ११) : य प्रैकि निवादास क्ष (कप्प)। बंद वि [ यम् ] शरक-वारीकला (वव १) । बाइद्ध वि पातिम् पञ्चपात करनवाला सरक्याचे करनेवाला (चर ७२ व दी) मन्म १ दी)। वाद पूँ [ पात ] चरकवारी (का ६७ स्वयन भव)। वादि (हो) देशो पाइस (माट---विकर सम्बर्धी ६५)। बाय देवी बाद (तुपा२ ६ २६३)। वायपू ["वाद] थस-सम्बन्धी विदाद (तर प्र ६१२) । वाह प्र विवाह विशेषा का एक देश-विशेष (थ १) । विकास नि ["पितिन] पन पार्वी (के ४४१)। प्रशाहना की [ीवापिक] होम-विशेष (स ७१७)। परमांत म [प्रशास्त्र] यस्ततः इत्त्रिय-राज 'बलवर देशियमार्थ परवर्त मरग्रह' (तिह

पक्रिर सक [प्र+क] फॅक्ना। यह

'श्रारं व मूर्ति वं क्यवरं व उवरि पकिर

पक्रमेनर अ[पग्रान्तर] क्य गा किन ! पत कृमस पत्र (सार-कहानी २४) । पस्तरंत् तक [म + सम्द्री १ मान्नल बरमा । २ बीडबर मिछता । १ घण्यवसाय बरबाः 'यत्रवि वितयं जोई धमके'तं इसलयं' 'बर्वीत व पत्न्द वर्ववहेला' (34 44 44) 1 प्रत्रोद्देश न [प्रस्करन्त | १ माञ्चरा । २ स्रव्यायाय । १ श्रीहरूर विरमा (निष्कु ११)। पत्रतीहोस र् [पत्रयम्बास्टः] पत्ती का रिकेश क्या (यव ७६)। पान्यमाण रि [प्रयायकार] को सावा पाता हो शह (नुम १ %, २)। पुरुर्वेद्वास रि.बि.) बण्डरित विवरित्रत

मनरामा 'परापदिए निदिपप्रितिषरे विरहे (R 4 2 ) 1 पदरदर मकः [र्म- नददय्] नंगद्र वरता धरर का नवच ने तरिवंद करना । चल्चीह (मृता २६६) । संदू पक्कां(अ (पिन) । पक्तर है जिल्ली शहत दावना (बग्रीर 25) 1 पत्ररार पू [द] बहात नी एवा ना एक छन-बरता बानवी (निरि १ वर्ष) । पाग्यर म दि ] शनर अध-अंगात थोड़े का

बचब (दुश ४४१ वित) ।

पकराराध्ये दिवे काचर यथ-बेनाह (दे ६ १) भीनारिधाकारे (शिवा १ २)। पत्रगरिभ नि [संसद्ध] क्वलिन, बेन्स बरच हे दिश्यित (धरेर) (बुरा द श मुख ६६ ३ मर्टर) । प्रशास सक [ स + स्टास् ] विरुद्ध नक्ता स्यानित होता। यस्यान्ह (क्य) । बक्ष पारम्जन परराधमात्र (स्व १, १) हि र ६१ स<del>म् ---कुम्स</del> (४) हुई ६) । प्रशासम्बद्धाः व [प्रभातः च] वद्यात्रः वचारतः । एक प्रकार का बाजा मुर्चन (क्यू)।

क्शन्याय वि [ प्रस्थान ] प्रतिक्र विश्वन (84) पत्रमारित १ [प्रधारित] १ सनावेशेस रिरेप । वेर्डी इन देठ वा निवासी बन्दाबी की (धन)।

प्रशास सक [ प्र + झासर ] बकारना श्रद करना चीना । क्षत्र प्रक्तासिकामाण (छाना १ ४)। श्रंक वक्तान्तिभ पक्ता-चित्रस्य (बाट--वितं ४ महा) । पकराज्ञण न [प्रशासन] पकारना भोगा (स ६२३ धीए) १

परसासिक वि मिशानित विवाद हवा बोपा ह्या (धीप वर्षि) । पकरासक न पिस्थासनी धातन-विशेष नियके नीचे यनेक प्रकार के पश्चिमों का विश हो ऐसा बाउन (बीप ६)। पश्चिम पूंची पिकियाँ पाची पत्नी (टा ४ भ माना नुग २१२)। और जी (या १४)। स्थराक पूंची शिराली शरिन निशेष (नष १३ ह)। ब्ह्री <sup>क</sup>्रमी (बीव १)। यम ई ['ताक] नव्ह (नुस २१)। मीचे वेशी। पनियाम पुंधी [पश्चिक] १ क्रार देशो (या र ) । २ वि प्रभावी शरहवादी वादीवाचाः 'तमस्विमे पुत्रो धरहो' (या १२)। पंचित्राज नि [पासिन्ह] श्राकत कालि ना

(पद २६=) । परित्रम वि [पामितः] १ वक्य वै होने-नाता । १ पछ से सन्तरम श्वतेतासद सर्थ-मात-सम्मनी (रप्पः वर्षः १)। ३ म वर्षः शिधेय अपूर्वती (सहस्य १६ ह ४२)। प्यांगराम र िप्रक्रिकी गर्वकर्तकान त्रिमरो एक बाप में हीय रिक्याधिनाय हीता ही और एक पता में घटन ऐसा नर्रसक (बुण्ड ११७) । पंचित्रसम्यः न [पाक्षिपायन] नेन विशेष की नीर्रेशक क्षेत्र की एक दाला है (ठा ७) । पविशय देनो पविश्य श्रद्ध बीललाल नर्सी (पान १४ १ )। प्रविधानी देखी प्रविधा ।

विवयक्ष वि [मीशुप्त] देश ह्या (महा-रिहरी। विषयमह 🖠 [विधिनाव] १९४ की (वर्गीय ४) ।

नानम्बन्धः यक्तिराज्यम्बन्धः **देशो यमिसम** । पक्तिक सक नि म किए ] र पैका, ध्टेंक बेना । १ इद्रोहना स्थापना । ६ डावना । परिवारक (महार कप्प)। परिवारक (सही, क्या) । परिवादाः, परिवादिण्याः (भाषा २, १ १ १) । क्षकः पश्चिमप्रमाण (स्था है स--पन १२३ १४७)। सेई पक्षितकण पक्षित्रस्य (महा नुबार ध १ पि ६१६)। इ. पविराधेयक्य (इप ९४व दी)। प्रवी, बक्क पविस्थायाचेप्रत्य (ए। श १ १२)। पक्टील विभिन्नी क्षेत्रक क्षेत्र भई वक्तीस्त्रविमनी (महा) ।

पक्लुडिम वि [प्रस्किटत] बदिश्य प्र बंद्रले (दुवा ११६) । पक्खुब्भ वक [प्र+क्षुम्] १ क्षोप पाना । २ इस होना बढ़या । बढ़- पत्रस् कांड (वे १ २४)। पचलुष्मीय वेशो पक्साम । परस्पनिय वि [प्रश्नुनित ] बोबप्राप्त बसुक्य (घीप) । परम्बन हूं [मच्चप] शास्त्र में नीचे हे किनी के बाय राजा का विभाग हजा बाहर (वर्नर्ट

१ ११) । स्टार पू [ "स्टार] वस्त्राहार (नुपनि १७३)। वक्रव १५ [मश्रम क] १ सेन्छ वररेक्स दिनमाः वाहिमा नीत्रमान्त्रीर (बरा) । २ वृत्ति कलेशमा ब्रम्म वृत्ति के निए गीये वे जागी जाती बानुः 'माराचैव' याच पार्गीर समस्य (खासा १ १६—१व 164)1 परगपण न [मक्सपन] शपण अजेड (पीर) । परराज्य देवी पनराचन (बहु १) । परस्ताह वक [पि+कोशय ] ( क्रोलया। र कैपाना । परबोहर (है ४ ४२) । ब्रेड

पहरगांश्याप (तुम १३ )। वरत्य वर्ष [राष्ट्र] । गंगमा । १ मार् कर्शनामा । पत्र्योग्द्र (हे ४ १३ )। वंश नवशासिन (शा १०४)।

पक्लोड सक [प्र+द्भादय्] धक्मा माम्बारन करना । संक पक्तोदिय (सप र्दश) । पक्सोड एक [प्र+स्फोटय] १ चून भाइना । २ बारम्बार माङ्गा । पन्छोडिमाः वक् पक्लोबंद (बस ४१)। प्रयो पक्लोबा विका (बस ४ १)। पक्काब पू [प्रस्प्रेट] प्रमार्जन, प्रतिमेखन की क्रिया-विशेष (पर २)। पक्सोडण न [शहन] बूनन कॅपाना (कुमा)। पक्सोबिस नि [शदिव] निर्माटिव फाइ कर मिरामा हुआ (दे ६ ७ पाध)। पक्लोदिय देवो एक्लोड = शर, प्र + सावम्। पक्छोम एक प्र+क्षोभय् ] कुम कणा क्षोम छलप्र कर दिला केता। क्वड ८ पबस्तुबर्गत (वे २ २४)। प्रक्रोस्य न [रायन] १ स्वतिष्ठ होनेवासा। २ विष्टु होनेवस्ता (एम)। पहास (पै) देखी = परमणः 'पक्रमचरापार्ड' (प्रक्तः १२४)। पस्त्रोड देशो पस्द्रोड = प्रस्पेर (पत्र २)। पस्तक्ष वि प्रित्यर विषय तील तेन (प्राप्त)। पराइ की [प्रकृति] १ प्रकृति स्थमाथ (मधः काम १ शासुर १४ ६६ सुना ११)। २ प्रकृत सर्वे प्रस्तुत सर्वे व्यक्तिस्कृषे पगई गमेड्र (विशे २४ २)। ६ प्राकृत कीर छावा-च्या वन-धनुद्धः 'विसमुद्धारे बहुदस्य' नवर्दगी' (तुपा ६६७) । ४ श्रुम्मधार यादि सकरह मनुष्य-बारियो बहुरसप्तन्यवस्तर को हो म जो एइ (धाक १२)। १ कर्मी मा बद (सम १ परव रव भीर तनकी साम्या बस्या। ७ बतरेव के एक पुत्र का नाम (शाज)। र्वप पू [कर्य] कर्म-पूर्वमाँ में विध-राचिमों का पैसा होना (कम्म १ २)। देखो पगडि । परांठ पू [प्रकप्ठ] १ पीठ-विधेष । २ सन्त का भवनद प्रदेश (बीब ६)। पर्गय सर्व [प्र+कश्य] निना करना 'धलियं धर्य(कं)ने सतुना प्रव(कं)ने' (धाला)।

(ft 222)1

٤ų

पगड मि [प्रकृत] प्रनिश्चित मिनिर्मित (स्त શ્વ) હ पगड पू [प्रमार्थ] बड़ा बड्डा या यहहा (धावा २१ प)। पराष्ट्रण श [प्रकटन] प्रकाश करना श्रुसा करना (ग्रीवि) । पराश्चि की [प्रकृति] १ मेर, प्रकार (मन)। र---रेबी पगइ (सम धरा सुर १४ **4**a) 1 पर्ताक्षीकृत नि [प्रकटीकृत] स्वक किया हमा सार फिम्प हुथा (मुचा १*०१*)। पराबुद्ध संग्र [ स 🛨 छुत् ] श्रीचना । स्वकृ पर्शाब्दकामाण (स्पा १ १)। पगण्य केती पद्माच्य = प्र+कल्प्यु । संकृ. यमध्यप्ता (सुब २ ६ ३७)। पगप्प देखी पद्मध्य ≈ प्र+क्खप् (श्रूष १ π X) I पगप्प वि [प्रकल्प] १ उत्पन्न होनेवाला प्राहुमु त होनेवाका "बहुपुरुप्यवन्याई कुळा धक्तसमाहिए' (सूच १ ६ ६ १६)। देवी परुष्य = प्रकल्प (द्याचा)। पराध्यित वि [प्रकरियत् । प्रकरितः कवित 'रा उण्याहि किहोदि पुरूपासि परन्तियाँ (पूप १३ ३ ११)। रेखो पक्रियञा। पगप्पित्तु वि [प्रकरपवित् प्रकर्तेवित्] कप्रनेवासा करायोगासाः ईवा सेला पर्वाच्य-(विष्)चा भावसामागुनामियो' (सूभ १ ८ R) 1 पगरम सक [प्र+गत्य] १ कुला करना, ष्रष्ट होना । २ समर्थ होना । पगवसद पवस्मई (शाका सूच १२ २ २११ २ १ १ उत्तर, ७): पगण्म वि [प्रगश्म] पृष्ट, बीठ (पदम १९ ११)। २ समर्व (का २६४ टी)। पगढम न [शागरूप] पृष्ठता, बीहाई, 'पमस्मि पाछे बहुएंटिकाती' (सूच १ # c) ! पगण्याणा भी [प्रगरमना] प्रकारता प्रावा (पूथ १ १ १७)। पगड रि [प्रकृत] व्यक्त, कुता स्वत्र परवज्ञ परास्था की [प्रसस्या] नगनाम् पारनेनाव

की एक शिष्या (ग्रावय) ।

पगरिभक्ष वि [प्रगतिभव] वृष्ट्वा-पुक्त (सूम 2 2 2 2 2 2 2 2 Y)1 पगढिमच वि [प्रगरिभद् ] काटनेवाताः "इताको तायमधिता" (सूम १ = ६)। पगयन ब्रिक्ट दि प्रस्तान प्रसंग (सूपनि ४७)। २ 🁔 और का शक्तिरारी (पर २६वो । प्राय वि [प्रगत | संबद (श्यवक १८६)। पराय वि [प्रकृत] प्रस्तुत व्यविकृत (विसे दश्के सा ४७६)। पराय वि [प्रगत्त] १ प्राप्त (चन) । २ जिनने बयन करते का प्रारम्भ किया हो वह 'मुणि खोषि बहानियमे पदमा पमएस करतेस (सूपा २६१)। १ ए प्रस्तान प्रविकार (सूथ १. ११/१४) । प्राय न 📦 या पान पैछ प्लवियम्म साको अंडवाएमो । तेए भागी तुरवपनयमानी (महा)। परार पु [प्रकर] समूह, चरिः (सुपः ६११)। पगरण न [प्रकरण] १ प्रविकार, प्रस्तान । २ इंग-भएड विशेष प्रधास-विशेष ( विशे ११११)। १ किसी एक नियम की सेकर बनाया ह्या क्षोटा सन्द (स्व) । पगरिञ वि शिगस्तित् । वित्तुष्ट कुष्ट-विरोध की बीमारीबाला (पिंड ५७२)। पगरिस 🔩 [त्रकर्ये] १ अल्क्यं में हता (बुरा १ ६) । २ व्यक्तिस्य व्यक्तिस्य (मुर ४ 188) 1 पगरिमण व [प्रक्रपैण] अनर देशो (वित (4) L पंगक सक [ भ + गळ ] महला हपहला । क्क प्रगलत (विपा १ » महा) । पगढ्यि वि [प्रमृद्धीत] प्राह्ण किया हुवा क्याच (सूर १ १६७)। पनाइय वि [प्रगीत] जिस्ते करे का प्रारंक किया हो बहु 'पगाइयाई स्यान्तित्वहरू (स ७१६) । पगाड वि [प्रगाड] स्टबन्त गाइ (विपा १ १३ सुपा ५३)।

पगाम थ्यो प्रधम (बाबा था १४) नुर ३

ant En Six) !

पर्गेश [प्रगं] मुब्ह, प्रयत काच (पुर ७ **७८ कुत्र १११)**। पग्ग सक [ब्रह्] बहुश करना। पन्नह (व€): पगाछ वि [के] पापन सम्पत्त (अस ₹ t}ı पस्मद्र पं [प्रश्नह] जाने के लिए प्रक्रमा इया घोजन-पान (सूध २:१ ७३)। परमाह वे प्रिमाही १ क्लीब उपकरास (पीप ६६६)। र मधाम (वे ६, २७ १९, (६)। १ पतुर्वी को बाक में शताद वाती बोरी नाक की रासी नाम । ४ प्रयुक्तीं की

बोक्ने की होरी प्रसी पद्मा (खादा १६, पगासगा थै [प्रकाशना] प्रकरीकरल बना)। १ शमक मुक्तिया (ठा १)। ६ यहल क्याबात । ७ दीजन बोहक्या चित्रसियन पगासय वि [प्रच्यशुक्क] अराध वरणेनातः । ≹র্ড (সন) ঃ पनादिक्ष वि [प्रगृद्धिय] १ सम्बूलक सम्बर स्वीष्ट्रत (संदू ६)। २ प्रश्ये 🖹 भूग्रेत ने गरिबन्ध अञ्चलकोत्तुं गरंग विवालाह । (धर धीप)। १ उद्यया ह्या (वर्म ६: ಷ ೭) ( पगाहिय रि [प्रमहिक] कार वैपी (बरा)। परिगन्द्र संस्ट [म + सृघ] धार्तीक वा पिनाम ) (क्या) च निर्मस् । प्राप्त नुवा)।

प्रारम्भ होता । विदिश्मका (उत्त पम्मिन्द हे बेहुका (वह है के ४१४ स्य व १६)। पमा द कि ] भिष्ट समूह (दे ६ ११)। पपस सर [प्र + पूप्] दिर-दिर धिनना। पर्वतेक्य (निष् १७) । वयी वह पर सार्यन (Prg (+)) पर्यसन्त व [ध्रयधम] पुनः पुनः पर्यस एतर रिल बार्यक्र रिले क्लिक्ल (निष् ३)। प्यास्य व्यक्षि में स्पृत्रय्] वित्रता अपन 7 4)1 रीना। वह चंद्राकोर्ना वकुणार्थ (इब पथश्य देनीः पश्चरप≔श्चर्यकः (नुसः द

पार्ताभग रेगो परिषद (वन धीन वि ZET) I पशद्भार [प्रष्टि] र प्रयोग भूका (मुख ह्या (ब्र २, ८४)। ७३) । २ बत्तम, सीष्ठ (द्वारः गुपा

२१६)। प तार सक्क [स + सक् ] दे बहुता करना। १ "प्रसः। १ वास्त्र बस्ता। ४ वस्ता। सा प्रारिक्ता यीजिद्वार्थ प्रान-

१२६) ह

तिम्हर्गति दे देवह और सांचा≎ ६४ १ रम)॥

(सम्बा १ १)ः पूर्व वहं सीनुत्रवयानदृष्टि-

श्रम्भवित्रमुपयामात्तं प्रति मुखारं स्थानं

(बना) : २ प्रसिद्ध स्माति (मुख १ ६) ।

६ मानिर्माप प्राहुर्मात । ४ उर्द्योत मानप

(श्रद)। इंडोब द्रस्तः 'सर्वं च पर्वंड

शो को नय बस्क्रेस पद्मसं माहरी (सुख

१२,२१)।६ वि. प्रकट-व्यक्त (तिच्

पग्रसम्बर्ग की [प्रकाशनता] प्रकार

पार्थामय वि [प्रशाशित] बहुवोक्टित क्षेत्र

पदानिर्दिष (सूच १ १४ १२)।

पति इ देगी पगइ (बंबोब ६६)।

पगामग रेखी पगासय (चर्ड)।

पतासण बेयो पंचालय (दीन) ।

धावीक (मीम ४१)।

(अंत ६२ २)।

(सिमे ११४४)।

पगामधी—पद्म द्वा

पथोक्ष पू [प्रयोप] उन्हें रुक्त-प्रकार

पथोसिय वि [प्रधायित] गोवित किंव

हुवा क्षम स्वर है प्रवास्ति किया हुव

पज्ञ कि पिची प्रकारा। पज्ञ वचर

वर्बीठ, वर्षात वर्षा वर्षा प्रमाण वर्षाम

वकागी, वकाम, वकाम वकिमी, प्रविद

(इसि ३ : पि ४३६ ४४१) । स्वरू

प्रकार जरए नेस्ट्रवाल खोलिंस पर

बाधार्ख (मुर १४ ४६: बुदा १२ )।

ध्वभौक्या (मरि) ।

(मर्थि) ।

पच (धर) देखो पंच । आखीस टाबीस बीन [ नश्चार्रिहरू ] १ वंक्य-विशेष

पैतानीस ४% । २ पैदानीस संस्था जिल्ली क्षे के (शि एकड़ा ४४% हिंदा) । पर्चक्रमणस्य म [प्रचारक्रमण क] परि से चलका (भीप) । पर्वकारक र [प्रवर्कमण] परि हे श्रंचारख पांच से बताना (भीव १ % वि) !

वर्षांड वैद्ये वर्षंड (बन व)।

पच्छिम केहो पवछित = प्रवस्ति (धीप)। पकार सक [ प्र+चारप्] नक्षाना । पदा-रैद्र (धिरि ४३३)।

पचार इं[मचार] दिस्तार, फैनान (नीम् २ ) । वैद्यो पसार≔प्रचार ।

पचाछ तक नि+चाछम् । शक्रिय चवाना, पुर चनाना । वह पंचालमान (बप १ १)।

थविय वि [प्रयित] नमूड (हरन ६१)। यभीम (भर) ध्रेष [पद्मविराधि] १ वर्षीव र्वक्रमःनिरोग बीच सीर बाब ११।१

जिनहीं संस्था पर्योग हो है (सिंग सि १०६) पशुष्टिय दि [प्रकृषिक] पूर-पूर विमा यपब्सि रि [यथेसिम] रशर ररा ह्या

शहबद्धरावेशिकरपेट्टि (नुवा 1)। पचाहें अर्थ [प्रयादित] ब्रास्त (तूप र

पष्ट्रय हि प्रस्पयिक है शिरवाडी विधास-वाता (छाता १ १२) । २ शाववाची प्रस्पवन्ता । १ व युट-झान शावम झान (विसे २१११) । पष्ट्रय हि प्रस्पयित विस्वात्ववाला विश्व-स्त (महा पुर १६,१९९) ।

पबद्वय कि [प्रास्थमिक] प्रथम से जलक प्रतीति से संवात (द्वा के के—पन १२१) । पर्वात न [प्रत्यक्क] हर एक स्वयम (प्रण् १४ कम्प्र)।

११ वन्यु । प्रविभिन्न की [प्रत्यद्वित्ता ] विद्यादेशी-विद्याप -प्रतिविक्तंतत्वरणा प्रवणह पञ्चितिस सर्हे विका (भुग १ ६) ।

पर्वत पु [प्रस्पन्त] १ धनाविष्ण (प्रयो ११)। २ वि समीपस्य पेश संनिद्धप्रप्रान्तं भाम (सुर.२२)।

प्रवित्र केवो प्रवित्य = प्रव्यक्तिक (श्राचा २३१४)।

पर्वातिय वि [प्रस्थान्तिक] छनीय-केछ में स्थित (कर २११ दी) ।

पक्षतिय वि [मास्यन्तिक] प्रश्नन्त देश वे स्रामा हुमा (कम १ टी) ।

प्रवस्त न [म्प्यस्त] १ इतित वावि नी स्थापना के निवा ही करणा होनेसाना झान (निजे व है) । र दिन्तों है चलान होनेसाना झान (ठा ४ है) । व वि प्रत्यक झान हा नियम प्रवस्तामी स्थाने एने उच्छो महामानों (दुर ६ १७१)।

सबक्त } छङ [प्रत्या + छ्या] ध्याप प्रवक्ता करना ज्याप करने का निवस करना । प्रकार (प्रता । वक्र प्रवक्ता-माण प्रवक्तापमाण (पि १०१) क्या । छङ्ग प्रवक्तापमाण (पि १०१) क्या । प्रवक्तापमाण (पि १०२) । ह्र

प्रकारणा न [प्रस्थाक्यान] १ परित्याः कारो भी प्रतिका (सम ज्या) । १ कें कारो-निर्देश नवसं पूर्व-पक्ष (प्रस्2) १ कें कं कार्य—किंग्र क्यों के लिक्कि (क्रम १ १७) । 'परप्प पूं ['करण] क्याव-विशेष कार्य-रिर्देश न प्रतिकारक क्षेत्र-सार्वि (क्षम १ १०) ।

प्रवास्त्रिय वेको प्रवास्त्राय (पुरा ६२४)। प्रवासमीकर एक [प्रत्यक्षी + कृ] प्रयास करमा साम्राज्ञ रुगा। स्रीव प्रश्नस्तीस-रिस्स्त (स्रीम १८व)।

प्रवक्तिविद् (गी) वि[प्रस्पद्वीकृत] प्रत्यक्ष क्रिया हुम्म प्राथात् वाना हुम्म (रि ४६) । प्रवक्तीम् पर्क [प्रत्यक्षी + मृ] प्रयक्त हुमा प्राथात् होना । येक प्रवक्तीमृत्य

(धावम) । ध**बक्ता**य वेको भवक्ता ।

पद्मागील [त्रयम] १ प्रमानः क्षुस्य (घ २४)। १ वर्षेष्ठ सुन्यर (चय १-६ दी, सुर १ ११९)। १ नवीतः, नया (पास)। पद्मानिक्कमः वेची पद्मान्यमः (घन ठा २, १—पत्र ७१)।

प्रविद्यमा देवी प्रवृत्तियमा (राव)।

पष्टिक्षमिष्ठ वि [पात्रास्य] परिचय विशा में उपल्या पश्चिम विशासम्बद्धी (स्थ ६६) पि ६६९)।

पक्षियमुत्ता देवो पक्षियमुत्ता (पत)। पव्ह क हिंद्र क्रिक्श व्यक्ता प्रकार (हे ४ १७६)। पर, पव्हसात (हुमा)। पद्महु कह [सम् ] बाता सम्बन्धात। पद्महु कि [सम् ] बाता सम्बन्धात। पद्महुक्त कि [स्ति। पर, हुसा व्यक्त हुसा (हे १ १७४)।

पश्चिम् जी [वं प्रत्यक्तिका] महाँ का एक प्रकार का करण (विशे वेवेदक)।

पष्णीय व [मरयनीक] विरोधी प्रतिपत्ती बुरमन (जप १४६ टी सुपा ६ ७)। पष्णुमस सक [ प्रस्यत् + मू ] स्मृमन कला। वह पष्णुमसमाण (सामा १

२)। पर्यमुद्धाः देवो पर्यमुसयः। पश्चपूर्याः (उत्त १६ २६)।

पश्च वि [प्रस्पक] विश्वय स्थाप करते का प्रारम्भ क्या मना हो वह (उर ८२८)। पश्चर व [बे] बाद्ध कुठामव (६६ २१)।

पचत्वरण न [प्रत्यास्तरण] निर्दोना (पि २०१) । देको पस्दृत्वरण । पचत्वि नि [प्रत्यर्थिम्] प्रविपक्षी निरोणी

बुस्तन (उप १ ६१ टी पामा हुत १४१) । पबस्थिम वि [पाइचास्य, पश्चिम] १ पविन दिसा तरक का परिवम का । १ न पविन विस्ता तुर्धकोरी वस्तावधुर बोन्स्यमाह स्तियं बेर्च बालक, पावक एवं यनिवरीयो पव्यक्तिपर्मेर्स (उसा मान प्राचन रूप १) । पव्यक्तिपर्मेर्स (उसा मान प्राचन रूप १) । पव्यक्तिपर्मेर्स (उसा मान प्राचन रूप १) ।

(ठा १०—पत्र ४७=। सात्रा)। पद्यस्थिमिङ्काचि [पाझ्यस्य] पत्रिम स्तिय का (विपा १ ७) पि १९४,६२)।

पबस्यमुक्तय की [पश्चिमोक्तय ] पीयमोक्तर दिया काम्य्य कोया (ठा १०—पत्र ४००)। पबस्युय वि [मस्यास्तुत] मान्यादित वका हुमा (पत्रम १४ - १६) और १)। २ विद्यादा हुमा (कर १४० टी)।

पबद्ध न [पद्धार्थ] पिद्धवा शामा अत्तरार्थ (यवड) : पबद्धचष्टपहि वुँ [प्रस्थर्चकम् वर्तिन् ] नामु

देव का प्रतिस्ति राजा, प्रतिवासुरेज (ती १)। पद्मापन व [प्रत्यपेण] बास्य देवा सीटा

पक्षप्रम व श्वरयपण्या शास्त्र हेना सीटा हेना (विनंद १७)। पषचिपम सक्त [प्रति + कार्यम्] १

वारत के। वीत्राता। २ तीर हुए कार्य को करके विवेदन करता। पत्रवीस्त्राह (कम्म)। कर्म पत्रवीसित्राह (वि ११०)। वक् पत्रवीसित्रामान (ठा १, २—पत्र १११)। वीक्ष पत्रवीसित्रिता (वि ११७)। इसा। २ माण्यक्रीस्त (भाषम) ।

(गाम) । देशो पचना हेसा ।

मतस्य (वे ६ वे४)।

(年 252) 1

प्रत्युच्यारश (विशे २६३२)।

पच्चपसेख वि [दे] भासक-वित्तः तसीन

प्रकाशभास पुं [अस्याधासः] विकान

वदयभिजाय को वदयभिजाय । पर्याप-

**पच्चिमश्रा**णिव् (री) देशो पच्चिमशाणिअ

यक्षभिजाय धक [मस्पनि + का] पहि

मालादि (सौ) (पि रे≒ ३१) ।

बालना पहिचान देना । पञ्चनिमाधाः (মহা)। वह परचिमञ्जाणशाण (खाया १ १६) । श्रंह प्रश्विताणिकण (मका)। प्रविधायित वि [प्रविकात] पहि-पाला हुमा (ब ३६ )। प्रविभयाय व [प्रस्थमिद्वान] प्रकृति (स २१२ नाठ-राष्ट्र घ४) । व्यवस्थिताय के प्रविद्यानित (स मुर६ ७३/महा)। प्रवसाल देखी पत्र = १म्। चक्क्य पू [प्रस्पय] १ मठीवि हान क्षेत्र (इसाध्य १६ क्षेत्र १६४) । २ निर्धन, निवाद (विशे २१६२) । **१ श**्रिक कारछ (श २ ४) । ४ शास मिरवाय करना करने के क्रिए निया या क्याया नह्यः तह माय ध्यनि का चर्नेफ गरैयह (स्थि २१६१) । १ साग का कारका । ६ झान का विधय, जॉन परार्त (ঘৰ) । ৬ <del>সংঘৰ দৰ্</del>দৰ, স্বাতি কা क्रपत्क (मिसे २१३१ प्रामम)। व निशास भवा । र शब्द, धारान । १ किट, विवर । ११ सामारः भाषमः । १२ म्याकरण-प्रशिव प्रकृषि में लगता रूज्य-विरोग (हिन १३)। प्रकास वि [रि] १ पत्रमा समर्थ, पृहिता मा (हे द स्थापन क्षा प्रता क्षा 环 ६६। पाम)। २ सश्चरत संस्मिन्धु (\$ 4, 42) 1 प्रकारित | (मर) म [प्रस्पृत ] वैपरीरक प्रकारित | वर्ष्म्य, वरष् (१४४२ )। प्रबाजन (शी) वि [ध्रस्थनतः] नगा **ह्या** भूग में मोरि प्रशासकामित्रीहर जन्म विस क्रिएत (१) बंगे करेबि' (पवि २९४) ।

प्र**चपरभा**ण न [प्रस्थवस्थान] १ श**क्**र-परिवार, समावान (विशे १ 😕 )। २ प्रशिवयन बएवन (बहु १)। पद्चार व हि । सुस्क एक प्रकार की मोटी धकरी जिससे जायश साहि यान कुटे असे ¥(4 € ₹ £X) £ पश्चमाय प्रीमरमनायी १ नामाः निजन व्याचात (स्त्रमा १ ६, महा स २ ६)। र बोच क्यारा (पत्रम ६४, १२: धारक् ७ योष २४)। ३ परा चहुपण्यवादमस्त्री विद्वामी (सुपा १६२)। ४ ब्रूपा पीझा (क्रम स्थ्र)। पचनाय पु [प्रस्ववाय] १ प्रमात-हेत नाग्राकाकारण (तत् १ ३)। २ यनवै (पंचाक १६) पचनेक्स (हो) वि [प्रस्पमेहित ] निधीवित्त (शह-राष्ट्र १६०)। प्रवाह न जिस्साही हररीज प्रतिन्ति (सप्रि **%** ) i प्रविद्वाण ) केली प्रविभिज्ञाण । पण्य-पश्चित्राण । प्रियायोगि (सि ११ ) । पण्य वैशासद (ब ४२) । बंद्र- पषद्विदाणिऊष (# 8Y ) I पक्षा की कि देख-मिटेप अस्पन (ठा १. ६)। "पिक्रियम न [क्] बल्पम तुद्ध की कृटी हर्द काल का बना हमा रबोहरहा—कैन **धाषु कर एक प्रशंकरात्त (दर ४, ६—५**म 44 ) 1 यका केवो सकता (श्रमी १*६१ नाट--- श*रा ७) । पक्षाज्ञच्याः चक्र [प्रस्था + राम् ] वीचे सीटमा, मापश्च सामा । प्रकाम**न्यद** ( थक् ) । प्रवाभव (शी) क्यो प्रवागय (प्रयी ११)। प्रवाहनका वेको प्रवृत्तका = प्रत्या + क्या । प्रवाहरकानि (शाचा २ १४, ४,१)। जनि प्रचारनिकस्सामि (पि ४२६)। वक्र-प**वाइ<del>वक</del>्यमा**ज (पि ४१९) । पद्मारहृज्या की [प्रस्तावर्शेंगता] यवान---संराय रहित निषयात्मक ज्ञान-विशेषः निष-श्वरमक यक्तिकाल (शृंधि १७६) । पद्मापस पुन [प्रस्यानेष] इटान्ड निकर्नन क्याहरकः 'नज्नास्त्रीच्य अञ्जीनरम्बर्ध' (त | पत्तावास नि [प्रश्यासाय] सरक्ष (धन)।

पक्षाग्य वि [प्रस्थागत] १ वापत यामा gan (स ६३६ हे १ ६१) महा) । २ म. प्रध्यानमन (इर ६--- पद ६६१)। थबाचक्क सक [ प्रत्या + चक्क ] परिवार करना । क्षेत्र- पद्माचविद्यंतु (दी) (पि YEEL YOY) I पद्माणयय न [प्रत्यानयन] नापस है सन्म (सुबा २७ ) । पक्ताणि १ एक [प्रस्या 🕂 थीं] बापद ै प्रकार्या 🥬 प्राप्ता । अनक्ष प्रदाणिकांत (वे 28 24X) I पकाणीव (शी) वि[ प्रस्वानीय ] गपम वासाष्ट्रमा (पि ≅१ः नद्र-~- विक १.)। पद्माभरण न [धस्यास्त्ररण] समने होकर बदना (स्वत्र)। प्रकारिष्ट्र में [मस्त्राब्धि] निचन निपन्न (पि १४६) मृत्या १)। पबादेस पुं [प्रश्यादेश] नियमच्य (भनि ७२८१७ नाट—विश्व ६): वेको प्रवास्स । प्रवापक शक [प्रस्था+पत्] शारव बावा चीटकर या पढ़ना । वक्क 'सन्तरहि ह्यपुष्ट र्यवप्रवापरं<del>डचं वस</del>मिक्टिकवर्ग (सीस)। पश्चामित्त प्रन [प्रस्ममित्र] धमिक पुरमन (श्वावा १ २—यत्र ४७) सीप)। पक्षाय सक [दि + आयम्] १ प्रदीवि कराना । २ विश्वास कराना । प्रवासद (या ७१२) : पचाएमी (स १२४) । पकास केवो पकाया । पचायण न [प्रस्थायन] बान कदाना प्रदीति जनन (निधे २१६१)। पव्यावयं वि [मरयायक] १ निर्शयः धनकः। २ विश्वाय-जनक (विज्ञ ११३)। पचाया धक [ प्रस्या + कम्] अपन्त होना जन्म चेता । प्रवारति (औप )। प्रति पचायाबिक (धीपा पि १९७)। पकामा पद [प्रस्था + या] उत्पर देवी। प्यापति (पि ४२०)। पणामाइ 🗚 [प्रस्थात्राति प्रस्थायाति]

क्यांचि कम-प्रश्च (ध १, १—नत्र १४४)।

पचार सक डिपा+स्टब्स्] स्थानमा देना, उत्ताइना देना । पचारह, पचारंति (ह ४ ११६३ कुमा) । पदारण न [सपाधम्मन] व्यविनेद (पाव)। पदारिम वि प्रिचारिस विधाया हुया (बिरि 884) I पद्मारिय वि चिपाछक्यो जिसको समाहना दिया गमा हो वह (मवि)। पद्माक्रिय वि दि प्रस्थार्दिकी भाग्र क्रिया हुआ गीला किया हुआ। 'पचालिया य खे प्राहियमर बाहमनिकेश दिही (स ३ a)। पदासीह न [प्रस्यासीह] बाग पाद को पीचे हटाकर मीर वक्तिया पांचको माने रखकर कड़े रहनेवाने वानुष्क की स्थिति **पनुपनारियों का पैतरा (४४ १)** । पचावड पू फिरपावर्ची धावर्च के सामने का मावर्षं पानी का मैंबर (राथ व )। पवावरण्ड् पुं [प्रस्थापराञ्च] सव्यक्ष के बाव समय रीसरा पहर (विपा १ ६ टि पि 44 ) i पद्मासण्य वि [प्रस्थासद्भ] सनीप में स्थित सन्तिरद, बहुत पास (बिसे २६६१)। पदासचि को [ प्रत्यासचि ] क्वीपता सामीप्य (मुद्रा १६१)। पबासक देनो पबासक्का 'तिन्दं पबासको परिस्कर धनको सन्तु (इस ६ थे)। यबासा क्षे [हरपासा] १ मान्येसा नाम्या, मानिकापा । २ निराम्म के बाद की बारा। (स १६०)। १ कोम, कावक (तप दृ ७३)। पत्रांसि वि [प्रस्याशिम्] बान्त या क्य किया हुमा वस्यु वा भवस्य करनेवाला (धार्था) । पचाइ सक [प्रति+मृ] जतर केना। पण्याह् (पिंड ३७८) । यबाहर एक [प्रस्था + हा] उपकेश देता । पत्राहरओं कि एं दिसमपमणीयों कोवएलीहाचै सदी' (सम ६ )। पबाहुत्त किर्व [प्रकारमुख] वीचे, वीचे नी चरक बाब न सत्तट्ट पए पन्यहुर्च नियत्ती र्षि (वर्गीव १४)। पवित्र केलो पव्यवस (विकाधि क्षेत्र)। पच्चुअ (वे) वेको पच्चुद्धिअ (वे ६, २४)।

पञ्चुमभार वेबी पञ्चुबयार (शह ६६ नाग-मृ**न्य १७**)। पच्चुम्मच्यापा 🛍 [प्रस्युद्धमनता] वाभिनुवा गमन, (भन १४ १)। पण्लुखार पु जिस्युखार विजुषार वर्तुमावका (£ \$ €A) I पच्छूच्यूह्णीकी दि] बृतन पुरा शावा धारू (वे२ ३४)। पण्युक्तीविक वि [प्रस्युक्तीवित] पुनर्मीवित (बा ६६१) हुम ६१)। परुषुद्धिम वि [प्रस्युरियत ] यो सामने बाहा हुमा हो वह (पुर १ १६४)। पच्चुच्याम यक [ प्रस्युद् + नम् ] बोहा कींचा होना। पण्डुए।मइ (कप्प)। संह पण्डुएखमिता (क्या बीप)। पच्चुक्त वि [प्रस्युप्त] किर वे बोबा हवा (रेक ७४- पा ११८)। पण्युक्तर सक [ मस्यव + तु ] शीचे धाना। पञ्चताः (पि ४४७) । संक्र पच्चुत्तरिताः (चन) । पण्युत्तर न [प्रस्युत्तर] बनावः उत्तर (बा १२० सुपा**२१०१ ४)** । परुष्य वि [वे] प्रमुत फिर से बीमा हुमा (4 4 24) 1 पच्चुत्वय ) वि [प्रस्पवस्तृत] ग्राक्तादित पच्युत्युय । (लामा १ १--- पन १३ २ क्प्प)। पच्छुद्धरिज वि [वे] शंगुवाका शामने नाया ह्या (दे ६ २४) । पण्युद्धार पूं [वे] संसुक्ष सानमन (वे ६ २४)। पश्चमण्य १ वि [प्रस्पुत्पक्त] वर्शनाम काव पच्चुप्पका र्वकमी (पि ११८) सम सामा १ दा सस्य १ १)। नय पू ["नय] वर्त्तमान वस्तु को ही सस्य माननेवाका पक्ष निरचम नम (बिसे ११६१)।

पच्चुप्पन पुं [प्रस्पुरपना] वर्त्तवान काल

पञ्चुरफक्किम वि [प्रस्पुत्फक्कित] बापस

पच्चुडमङ वि [प्रत्युद्धन] प्रतिस्य प्रवश

(सूप १२,३१)।

(संगोध १३)।

व्यापा हुव्या (से १४ वर् )।

पञ्चरस न [प्रस्पुरस] हृदय के सामने (सम्) । पच्चुद्धं य [वे प्रस्युव] प्रध्युव उसद्या 'न तुर्म क्ट्रो पण्डल्वं समं पूर्णातं (बच १)। पच्चुबद्धार देको पञ्चुबद्धार (नाट-मृज्य २१५) । पच्चुबगच्छ सक [ प्रस्युप + गम् ] समने बाना । यज्ञुबदम्बद्ध (द्या) । पण्णुवनार ) र्यु [प्रस्युपद्मर] उपकार के पच्छुषयार । बस्ते उपकार (ठा ४ ४ पडन ११ वेश ४४ मार )। पच्चुवयारि वि [प्रत्युपद्मरिस्] प्रश्रुपकार करनेवासा (सुपा ४६४) । पच्चुवेक्स सक [प्रस्युप + ईस् ] निरीजस करना । पण्डुनेमबेड् (धीप) । एंड्, प्रम्यु धेक्सिता (बीप)। पण्युवेक्सिय वि [प्रस्मुपेक्षित] सवनोधित निरोखित (स ४४१) । पच्छाहिल वि [दे] प्रस्तुत प्रकरित, प्रच्छी वर्ष्ट्र चुने या टपक्नेबाला (वे ६ २१)। परुष्टन दि यात बार, भोदन करने का पाय, बड़ी वासी (दे ६ १२)। पम्पूस [दे] देवो परपूह = (दे) 'फिल्प्हिं पयतेखिक कारण्यस स्व ए पण्युती?' (gt \$ ? \$Y) i परुष्स १० [प्रस्यूप] प्रभाव व्यक्त (हे २ पच्चीर रिक्ट समित र शंका र की। परुष्ट् पुन [मस्यूह्] निष्न बन्तरस्य (पास्र कुम १२)। परुष्द प्रे [वे] पूर्व स्व (वे व स्था ६ था पाय) । पच्चेक्सन[प्रत्येक]प्रत्येक हर एक(पड्)। पचेड 🖩 [दे] मुस्त (दे ६ ११)। पचेतित (धम) देको पचित्रित (धरि)। पचोगिछ धक [ शस्यव + गिछ ] धास्त्रावन करणा थ्या या स्वाव लेला । वहः, पञ्चोगिख-माप (क्स ४, १)। पण्चोणामिणी भी [प्रस्पयनामिनी] निधा-विशेष जिसके प्रयास से बुद्ध साबि फूस देने के बिए स्वयं मीचे नमते हैं (चर प्र १११)।

परपोदियस वि [प्रत्यविन्तृत्ते केंबा सक्त पर गोवे गिरा ह्या (स्वह १ वन पत्र पर)। स्वोधिकाय सक्त [प्रत्यविन + पत् ] सक्त कर गोवे गिरागा। यह परकोशितवीय (बीर)।

(बार)।
परचोदी कि देश परचोदणी (१ २११,
१ २। दुगा ११ १२४ १२६)।
परचोदक म कि देश १ १८ के छनीन का क्रीया
प्रस्थाय का प्रस्था में तु गैरिक काल प्रस्था पर का प्रस्था में तु गैरिक काल प्रस्था परचोदस (बाजा २ ११ १२)। वीक्र परचोदस्य (बाजा २ ११ १२)। वीक्र परचोदस्य (बाजा २,११,१)। में के परचोदस्य १ इस परचोदस्य १ इस १ १ भागा ११। द्वार परचार ११। वीक्र परचोदस्य १ इस परचोदस्य १ इस परचोदस्य १ इस परचोदस्य (बाजा १)। वीक्र परचोदस्य (बाजा १)।

पण्डमेलिया वि [वे] चंद्रस सागा हुमा (वे १२४) । पण्डमेलपी की [वे] चंद्रस झल्यम (वे ६ १४)। पण्डोसस एक [असम + प्राप्तः] १ स्रोवे

वदरता । २ तीचे हुरणा । रथोजबर, गयो-बर्दीत (क्दा पि ३ र मन) : बंह धरुयो-संविद्यां (ज्या मत) । पण्या क्ष्म [ म + अर्थम् ] आर्थमा करणा ।

कनक पाँचकुरुमान्य (क्या ग्रीन)।
पन्क सि प्रथमी १ ऐसी का विद्यारी
माहार हि २ ११ जार नुमा व करेश
दुरा ४ ६)। २ विद्यारण विद्यारी
पन्का सभा (क्राम १ ११—वन १७६)।
पन्का सभा (क्राम १ ११—वन १७६)।
१० १९ विद्यार १ १४ करा विद्यार

'क्क्स बाम' (कुमा १ १८---व १७१)। पण्ड म [प्रधात] १ मण तीए (केंद्र १)। १ रोग्ने हुए यान। व गाँवन विशा-'कुमेल वर्ण पण्डेल मेंबुमा शक्तिलेल बार्वकर्मा (बना ६९)। जो व ित्ता | तेले, रीज मो घोण श्रामे केंद्र्य मण्डामी सामें (बार)। 'यहर म महिम्बामीको छान्नेन बन्द्रासी गोंद न दुन्यों 'ति १ १) भी केंद्रसारी जन्मायास्त्रोतेल्ल स्ट्रासी वार्च वर्ज मेंच्य (मुगा १११)।

"कस्मन [वर्सन] १ यजनरका करे,

बाद की क्रिया। २ र्यावर्यों की निका का एक बोच बातु-नतुक दान केने के बाद नी पात को शास्त्र करने वादि विमा (धोष ५१६)। त्ताक्ष दं ितायी बशुद्धाय (वना १४२)। द्ध व कियों वीद्यना थावा एउटावें (भवड यहा)। बरध्या न विस्तुकी पिकास कर, वर का विकास हिस्सा (पर्श् २ ४-- पन १६१) । याच पं विषयी पथाताप अनुताय (दावध)। देशो पण्छा ⇒ पण्डह ) (धप) व [ प्रज्ञात ] तमर देवी थच्चार्य}(द्वे ४४ ४४ वर्षे चिंशे। शिव पुँ विषय क्ष्मुताय क्षमुख्य (क्रुया)। वच्छ्रदेशक रिस्ट्रीधाना कान करना। 1 (533 Y \$ 314ev पर्कादि है [गन्तु] धमन कलेवाना (हुमा)। पच्छीभाग दं पिकाद्वामी १ विवह का पिक्कमाञ्चग (राज)। २ <u>प</u>्रैन अद्य<del>प्र-विके</del>य चना प्रता केवर जिसका भीग करता है वह শভৰ (অং)। प्रमुख क्षेत्र [ध्तुक्षुपः] लक्षः वारीक विकारण चाटुधावि से पर्तकी आरम

१ १) चण्यालादिक सम्बद्धादिक (लाय १ १९)। पण्याप्रणावि प्रिव्यक्ति । इतः व्याप्यः, (स १०६)। पहतु [पिति] बाद, वस्पति नार (सूच १ ४ १)।

विकासका 'उच्छाटोड्' व वच्चाराहि व' (विपा

पच्छाद रेको पच्छाय (ग्रीप) ।

पण्डाह्म व [पण्डाहम] स्थलता वास्त्रम् भागा विश्व क्षात्रा ह्या स्थलता व । पण्डाहा केडो पण्डाप्य (जगा पुर १,१४४)। पण्डाम केडो पण्डाप्य (जगा पुर १,१४४)। पण्डाम केडो पण्डाप्य (जगा पुर १,१४४)। पण्डाम केडो प्रकार ११)। पण्डाम केडो प्रकार ११)।

पश्चामण केने प्रस्करण (नेष्य = )।
पन्यास्त्र (सर) केने पश्चास्त्र (सर) ।
पन्यास्त्र (सर) केने पश्चास्त्र (सर, तेने
(तुर १२२४४ तथ्य सानू १७)। पञ्चा
रहते । १ पर्योक्ष पर्युक्त (सन्य ११६)। १ प्रयोक्ष प्रस्तुकर। पञ्चा

बन्नविवार्ग (छप)। १ निकार वाप, ब्रहा४ चरम शेष (दे २ २१)। इ.प€स शिक्ता (कृष्ण १ ११): उत्त वि िंशाभुक्त विस्तरा धामीवन गीबे में क्लिस यया ही बहु (इस्प)। इस्त पुं [इस्त] बानुपभ को फ्रोइकर फिर पृष्ट्रस्य बचा हुमा (हर शहर)। इत्य स्थापण क्रमा (पि ११२): "पिवाइ वेबी "निवाइ (धत्र)। शुताब र् ["अनुताप] पथानाप बनुतराः 'पञ्चापुरानेश पुत्रम्ममधानेत' (धानम) । "गुपुरुषी की [ बालुवृर्धी ] क्टब इप (अंजु कम्म ४ ४३)। तार्म र्व (वाप) ब्युताप (प्राप ४)। वादिन वि [ शापिक] प्रवासायवामा (पर्यः २ **३)। "निवाइ वि** [निपातिम्" १ ग्रीमै से विर वालेशाना । २ वारिव प्राप्त कर बाद में इसते चुट होनेनावा (माना)। भाग 🕯 ["भाग] पिकका दिस्सा (कास १ १)। सह वि सिक्स परापुक विस्ते कुँ योचे की तरफ केर किया 🕅 वह (मा ११): देव बाद देनों देव (पड़न श्री वर्षः दूरः दूरः, दूरः, दूरा देशः वहा)। वर्षम मि ["वापिम्] पनास्तर करतेशाचा (३५ ६९ ही)। बाय ई [बाह] प्रकार किल का प्रका: २ पे**वे** का पवन (शाया १ ११)। संस्राहि सी वि संस्कृति ] १ पिच्चा संस्कार ≀ २ मध्य के क्रायक्त में बाठि-चूटेचे बचेख् प्रमुख भनुन्ती के बिय पक्सी बाती रही है (बाबा १ १ १९)। संबाद "संस्वा १ शिवना धंबन्य की पुत्री गरीयां का श्रेमत्व । ९ मैत युविवर्षे के लिए विका का एक बोच अनुर बार्वि परा में श्रूपको मिला भिवते की बालव से यहके फियार्ज माना (ठा १ ४) । संधुक वि सिर्मुत्ती शिक्षवे श्रवत्व हे परिवेश (धाना १, १ ४ ४)। इस नि वि वीचे की करफ का 'वसवरमयरिम पण्डा-ह्यार्थं प्रवादें द्वीप् स्ट्रह्म्ख' (शुपा २ १)। वच्या क्षे विक्या हरें इंग्रेडनी (है २

२१)। पच्छांश बक [ प्र + सद्यू ] १ हरना। १ दिल्ला १ नहः पच्छांश्रेत (ते १, ४८) ११ १)। इ पच्छांश्रेम (श्यू)।

पच्छाभ—पञ्चत पच्छाञ वि [प्रच्छाय] प्रषुर सायानाचा (धनि ६१)। पण्छाइअ वि [प्रच्छावित] १ दका हुमा माञ्चादित । २ विदाया हुमा (पह्म मणि) । थच्छात्रुञ्ज देखो पद्भाग्न = म + क्यून्य्। पच्छात पू [पच्छावक] पात्र वायते का कपडा (सीव २६% मा) । पञ्चाबित (शै) नि [प्रश्वासित] मोमा हुमा (माट---मुक्त २६६) । पच्छाविज 🔃 रेको पण्याविजिल (पड्)। पञ्चाजुशाविक वि [पश्चाव्तुवापिक] पदा-चाप-युक्त पञ्चताना करनेनाचा (राम १४१)। पच्छादो (ग्री) क्यो पच्छा = पवार (पि 1 (57 पच्छायण न [पच्यवन] पायेव, चस्ते में श्वाने का भीवन 'बहुर्स करियं पण्डावशास्त भारियं (महा)। पर्यक्तायण न [अच्छादन] १ साज्याक कक्ता। र वि भाष्काशन करनेवासा । या श्री [°a] मान्ध्रका 'परपुस्तपन्ध्रमणवा' (बद्र)। यवद्वास देवो परस्तासः । पन्यतेह (काल) । पश्चिद्ध सी मि सिनिका, पिटारी, वेशावि र्घवत माणन-विशेष (६६१)। पिड्रथ न ["(पनक] 'पन्की' क्य पिटारी (भग ७ ही-नत्र ३१३)। पश्चित्र (प्राप) देशी पश्चतुर् (हे ८ १८०) । पश्चिक्रकामान वैको पच्छ = प्र+धर्वय । पश्चित्रच न [भायध्यत] १ नाप की शुद्धि करनेवासा कर्म पाप का क्षय करनेवाला कर्म (इन' सुपा १६६: इ. १२) । २ मन को शुद्ध करनेवामा कर्न (पैका १६ व) । पष्पिति नि [प्रायक्षितिम्] प्रायक्षित का बागी, बोपी (उप ३७१) : परिद्रम न [पीधम] १ परित्र रिद्रा (उपा

(महाः ६२ २१ माम) । ६ विश्वाचा चाव

का "रियमस्य पश्चिमे बाए" (कृप्य) । ४

धन्तिम भरम पुरिस्पश्चिमकाले विश्व

परर्**ए' (सम ४४)। इट न**िम्

उत्तरार्थं उत्तरी प्राथा क्रिसा (महाः ठा २ ३--- पत्र =१)। सेख दे ["रीख] यस्ताणक पर्वेद (गरुइ) । पश्चित्रमा सी [पश्चिमा] पश्चिम विशा (कुमा: पश्चिम्सिक वि [पाम्रात्य] पीके से स्पन्न पीखे का (विशे १७११)। प्रिक्र्यापिष्टय देशो पश्चित-पिष्टय (धर ₹¥ ) I पश्चित्र (धप) देशो पश्चित्रम (मर्थि)। पश्चिम् १ वि [पश्चिम, पाम्नास्य] १ पश्चित्रक्रय ) पश्चिम दिशा का । २ पिछना, पुरवर्ती (वि इंटर इंटर नि ४)। पच्छूचाव पू [परनायुक्ताप] पद्मावा परचाताय (श्रमात १६) वर्गीव १६८ १२२३ १६ ) । पक्क्क्सचाविक (भप) वि [पश्चाचापित] बिसको परचात्ताप हुया हो वह (पवि)। प्रवक्षेत्रसम्म केवो प्रवक्ष-क्रम्म (हे १ ७६) । पृष्ठक्रेणय न [वे] पायेय रास्ते में निर्माह करने की मोजन-सामग्री कवेवा (६ ६,२४)। पच्छाधवञ्या १ वि [पश्यादुपपन्त] गीधे पच्छोवनसङ् वि क्लम (मग)। पर्जप स्क प्रि + जहप् | बीमना कहना। पर्मप्र (पि २१६)। पर्जापाकण न शिवाहपत्ती कोलाना कवन कराना (भीपा पि २६६)। पर्जिपक्ष वि [प्रकश्चित्र] कवित एक वहा क्षमा (वा ६४६) । पञ्जणम वि मिञ्जनन विस्तारक वसम करनेवाला (राथ ११४)। पराणण न [प्रजनन] निय पुरुर-भिष्ठ (विदे ए५७६ टी: घोष ७२२)। पजस धक [ध + बद्रश् ] १ विरोप अवना धरिशय वन्त्र शोनाः। २ जनकराः। अक्र पञ्चलीय (मनि)। पश्चीहर वि [प्रकाशित] धत्वन्त ववनेवाला ७४ (१)। २ वि. पश्चिम विद्यका पाद्यास्य

'सिवनकाणानकपनकिरकम्मकेता**रम्**म**सहस्रव** 

पश्रद्ध सक [प्र + हा] स्थाय करना । पनहानि

(पि ३ )। इ. पञ्जिबियस्य (धाचा)।

(भूपा १)।

पजाक्ष भी [प्रश्राका] धीन-रिका भार को सी या सपट (भूम ११७)। पश्चीसम्म न [प्रजीयन] प्रामीनिका भीवनी पाय, धेबी (पिश्व ४७०)। प्रमुत्त देवो प्रवस — प्रपुक्त (वंड) । पज्दिक कि [प्रमुविक] यूव मा समूह को विया हुमा बाजक-यश को ग्रापत (पाचा २ १ ४ २)। पनेमण व [अजेसन] भोजन-पहुण भोजन धेना (एम १४६)। पट्य एक [पाधम्] पिनाना, पान कराना । पन्त्रेद्द (विपा १ ६) । कनक्र 'तराक्कादया वे वर्व वंद क्षरी पश्चिम्बमाणद्वरी रहिंदी (तुष १ ५ १ २४)। इ. पट्टोयश्य (मल ४ )। पका न [पश्च] ऋन्यो-नदा शस्य (दा ॥ ४---पत्र ६०७)। पळान [पाद्य] पार-प्रसातन असा प्रत्ये अ पण्यं च व्यानं (शामा १ १६—पत्र ₹ €) ( पळा देवो पळाच (रॅ३६ कम्म ३ ७)। पळांत दुं[पर्येन्द] मन्त धीमा, प्रान्त भाग (हिरं ६० २ ६४) पुर ४ २१६)। पळाज व दि । पान, पीना (६ ६, ११)। पञ्चल न [पायन] पिनाना पान कराना (भग १४ ७)। पञ्चण्य देखो पञ्चण्य (तूर्मान ६७)। पञ्जणुद्धारा ३ थुँ [पर्यंतुयोरा] प्रस्त (वर्षेष्ठे पञ्चलुंबाम । १७६५ २६२) ह पळाण्य प्रीयिक्षेत्र्यी मेक बाबच (सन १४ २ शट- प्रचार७२)। देखो पञ्चन्ना। पज्जवर वि [वे] चीवत विदारित (पर्)। पट्यात वि पिर्योती १ पर्वाति 🖟 यन्द्र 'पर्याप्ति चाला (ठा२ १ प्रयूह १ १) कम्म १ ४१)। २ समर्पे शकिमान्। ६ सम्ब प्राप्त । ४ काफी मचेट स्टाना जितने से काम चया काय । इ.स. दूति । ६ सामध्यै । निवारणः । = योग्यतः (कृ २ २४) माम)। १ वर्ग-विरोप विसरे हरम से बीव वाली वाली 'पर्वासियो' से युद्ध होता है वह कर्म (रम्भ १ २६)। जाम सामन

पृथियी का एक नरकामास (ठा ६---पम

३६६) । अग्रस्त एँ भिष्यो एक नरलावास

सन ५७) ।

1( \$\$

(मूच १ र)। र बीम की वह शक्ति,
मिनके हाए पूर्व्या में कहुए करने तथा
करने प्रदार, करिर धारि के कर में बहुत करने प्रदार, करिर धारि के कर में बहुत करने कहार, हरिर है बीम में पूर्वयां को पहुंच करने क्यां परित्यामें वा प्रत्ये को शक्ति (धर, नम्म १ थई। मुम ४ में ४)। १ मार्ग्य पूर्व मार्गिय (१ १ १ १)। भू स्थित मार्ग्य प्रदेश मार्गिय है मार्ग्य प्रवास १ (ज्ये कई हो)। प्रकार की [पर्वासि] १ पूर्वत पूर्वता (वर्षी के क)। २ मार्ग्य क्यां प्रत्ये १ व)। प्रवास हु (एकस्प) नेम-स्टिन विरुद्ध प्रवास वर्षात्र है प्रदेश में एक ह्यार वर्षात्र में प्रत्याहर एकी में प्रस्तु (१क) में श्री

["नामन्] प्रकटर रुक कर्म-विशेष (एज-

प्रजात्त न [पर्गोत] ननवार चौतीस विभ

**पद्मक्तर [दे] वेशो पद्मतर (पर्-प**र

पठ्यक्ति औ [पर्योमि] १ ठाकि सामध्ये

का करवास (स्वीव १८)।

ना रिचा परवार (का दे हे वह क) नुर ?
१४८ वर )।

पाना पूर्व [पयव] र मुक्तका ना एक सेंद्र
दश्रां के प्रकार कर सुरूष्ट निरोध के ब्रोकक्यां के बार को मा प्रकार के सुरूष्ट निरोध के ब्रोकक्यां के कर हो में प्रमा के ब्राक्त के स्थान
दे कर पर्व है वह पुराजन (का मा १ क)
१ — को प्रमान (बाम १ क) हिंद्र
पर्व अवन अवन अर्थ अर्थ है। सीमानी
पूर्व का स्थान का पुरु के का सम्मान
प्रकार के प्रकार का पुरु के का सम्मान
प्रकार के प्रकार का पुरु के का सम्मान
प्रमान का प्रकार का पुरु के का सम्मान
प्रकार के प्रकार का पुरु के का सम्मान
प्रमान का प्रकार की स्थान
प्रमान का प्रकार की स्थान
प्रमान का प्रकार की प्रकार की स्थान

स्प्र प्रमार (हे४ ३, के के दश<u>्र</u>मा) ।

महामेड पने के बामेरों दन बानकताई

पञ्चय प्रसि शार्वकी प्रशिवानक, सर्वानक

मानेशि (ठा ४ ४--पन २७ )।

(ठा ६--पत्र १९७८) । बहु पू शिवसी भरकाबास-विधेष (ठा ६) । स्टिह्न प् [ विशिष्ट ] एक गरकामा**छ गरक-स्था**न मिधेप (का प)। पुक्रक देशो पुरुद्ध । पश्त्रकोद्द (महा) । अक्र परमधीय (कम) १ पञ्चक्रम वि [प्रान्तकन] बनानेवाला (ठा ¥ 1)1 पञ्चक्रिम वं [प्रमास्ति | तीवध नरह-वृधि रा एक वर्ग्ड-स्वान (रेवेन्द्र **द**)। पञ्चक्रिय विशिक्षक्रियों १ वकाया हसा क्य (बहा) । २ जूम चनकोशनाः, वेरीपा मल (पण्या २)। प्रवासिक्त वि [प्रश्वसिक्] १ वशनेवासा । २ जूब चमक्नेब्रामा (सूरा ६६८: यशा) । पत्राक्रीह नि प्रियंपक्रीह । प्रतित (निकार 1 (898 पकाष पू [पर्येष] १ परिचीत विर्णय (विशे श्री शावन)। १ वैकी प्रकास (वाचा,

वन विदे २७३२ सम्म १२)। असिवान िक्ररूप) चतुर्वेश पूर्वभाष तक का बात अंद्रज्ञान-विदेव (पंचना) । साथ नि िंबादी १ विश्व मन्त्या की प्राप्त (पर्या % ३)। २ बाग सावि मुख्योनाचा (ठा १)। ६ न. निपयोपशेष का धनुष्ठान (शावा)। अध्यक्ष ["बाव] बाल-जान्व (इस १)। **ंडिय प्रशिवत स्थित, स्टिक** शक विरोपः अस्य की अधिकृतर केमल प्रवर्ति की हीं मुक्य बाननेवाला क्या (दान ६) । "धान, नगर् ["नग] मही समन्तर एक सर्व (राज निष्ठे ७३) कल्जांति नर्गति स धाना निममेश प्रजाननवस्त (स्था ११)। पञ्जबण न [यद्यक्त] शरिष्येत, निरुपत (विशे पञ्जनकार तक [ यजन+म्यापण्] १ सन्दर्भ सारामा में राज्या । वे विरोध करमा । प्रतिकार के ताल भार करना । ध्रमनस्थानेतु ।

(ती) (मा ६६)। पञ्जनत्वावेदि ( नि **\$\$**\$) ( पञ्चबसाज न [पर्यवसान] धना धरतान (मय) । पञ्जवसिञ्ज न [प्रमेवसिक] सनदान, धन्ता 'धपन्यवसिष् सीए' (धावा)। पद्माकेको पण्या (हर ८३)। प्रज्ञाकी पिधा नार्गकरताः भीषं प वहूच बना सामाद्यं वनमञ्जयमा (सम्प (\$0) \$ 4 2 MH (02) पत्ना की कि किया कि की है (दे के है)। पत्रम 🐿 [पर्याय] महिकार, अवन्य-वेद (दे६ १ पाछ)। पज्या केवी पदा व्यवस्तिकर्रीत नासे निक्या बंडिक्बंदी नासे परका आसू ६६)। पञ्चास्य प्रं [प्रजागर] बागरण निया **स** शनाच (श्रीम १६)। पळातक नि [पर्याकुछ] विशेष मानुष व्याद्रमा (व ए ६७३) हे ४ २६६)। पञ्चाभाय छ≠ पिर्या+ भावस् ] कार करना । श्रेष्ठ, यज्ञामाइचा (चन) । पञ्जास प्रियोधी १ समान सर्व का नावक कार (विशे २१)। २ पूर्व माधि (विधे < १) १ ३ पक्षाचे-सर्ग, सस्तु-पूरा । ४ पद्याचे का चूरमधा स्कृत स्मान्तर (निधं १२३) WELL SAL SALE BAR BAR १)। ३ वन परिपादी (द्याब्य १ १)। ६ ब्रकार, नेड (बानम)। ७ फ्लटराट निर्माश (के १: २४)। केवी प्रज्ञान तमा पळाल व पिकासी तालाने कालाने, प्रकृत (श्यांत १३१)। पञ्चाक सक [श्र+क्लास्य] सवाबार नुस्तरम् । पत्रशासद् (वनि) । ब्रॉड- प्रजान क्रिज, पञ्चातिकण (श्व १, १) महा)। पञ्चाक्य च [प्रकासन] दुनवाना (का ४२४ हो । पट्यांक्रिय वि [यन्यांकित] बताया हमा. नुवनाया हुवा (सुरा १३१) प्रानु १)। र्थाजका को विमार्पिको स्थाल को मध्यामही वरतानी । र विद्या की मारामही,

बरवादी (बन क है १ ४१) ।

पिज्ञासमाण रेखो पज्ज = पायम् । पश्जुद्ध रि [ पर्युष्ट] प्रमुक्तमा हुवा (१): भिरती ए। रूमा समुद्रे सालविसे घरणी स्। पश्जुद्ध (पा १२१)। पश्जुनसुस्र वि पर्युष्मुक्त] बरित रुणुक

(नाट)। पश्चिमस्य न चिं टना के मुख्य एक प्रकार

देनी प्रश्कुत । पश्चुदास वृं [पशु दास] निवेच प्रश्विच (पिसे १६३)। पश्चुस देनो पश्चुण्य (छावा १ १ और

रेश हुम देश' सुपा देर)। दे कि सभी भीनच प्रमुद बनतासा व्यव्जुलसोति परिद्रुप्तस्पनीमें (तुम देर)।

पाञ्चपट्टा वरु [पर्युप + स्वा] वरस्वित होना । हेतः पाञ्चपट्टार्डु (शी) (शट— वेखी २२) । पाञ्चपट्टिय हि [प्युपस्थित] वरस्यित

मीद्दर दाबिर, तत्तर (उत्त १० ४१)। पानुवास सक [पुषु प + आस्] भेवा करना अकि करना। परनुवानः परनु वार्वति (उर पर)। वह पानुसायसम्। (पापा १ १२)। काक पानुसायसम्। मारा (पुरा वेषण)। संस् पानुसायिका (अत्र)। इ पानुसायिकाः (सुमा १

पानुपासन व [पयुपासन] वेदा, श्रीक, ज्ञानना (का स ११६ टा ६२७८) सनि ३८)।

श कीए) र

सनि १८)। पानुसारमा १ दी [प्रतुपासमा]कार पानुसारमा १ रेगी (टा १ १ मा पान १ १३ सीत)।

11

पञ्जुवासय वि [पर्युपासक]धेवाकरनेवाता (वात)। पञ्जुमण

परमुसण परमुसस्वण परमुस्सवण परमुस्या परमुस्या परमुस्या

परमुस्या ।
परमुस्या ।
परमुस्या ।
परमुस्या ।
परमुस्या परमुस्या पत्रावस्या ।
बाक्षेय (निष्टु १ ) ।
परमुस्युम ) वि [पद्मस्युम । प्रीत क्लाइ ।
परमुस्युम ) विशेष क्लाप्टिय (प्राप्त ) ।

प्रज्ञासुंक } पिरोप जंकापित्र्यं (सांत्र १ रे पि १२० ए)। पत्त्रोका प्रक्रिया कृष्योतः। २ स्वर्त्रायमे नक्षये का एक राजा (उच)। गर वि [कर] प्रकाश-वर्ता (सम १ (बच्च सीत)।

पद्मोद्दय वि [प्रचोतिस] प्रकारित (उर ७१८ टी)। पद्मोय सक [प्र+चोत्तप्] प्रकारित

नरमा। बहु परवोदेत (बहुय १२४)। पञ्जोदण पु [प्रदोतन] एक वैन वालाव (राज)।

पजासनय यह [परि+सन्] १ बाय करना रहना। १ वैनाननश्रेष्ठ प्यूपणा-वर्ष मानना। परमोहार्वेह, परमोहार्गित परमोहार्वेट (क्य)। वह पत्रासर्वेव पज्जीसनसाय (निषु १ क्य)। वेह प्रजासनिक्य पज्जीसनस्य (क्य

क्छ)। पञ्जोसपय न. देखी पञ्जोसवणा (पंचा १७ ६)। पञ्जामवणा स्त्री [प्युपमा] १ एक क्षा

स्यान में वर्षा-ताल स्थतीत करता (ठा १ कथा । २ वर्षा-ताल (तिजू १) । ६ वर्ष रिवेर स्थादन के बाठ रिजों का एक स्रायह देश वर्ष 'वाध्यक्षित्र प्रजान प्रतास्त्र देश वर्ष 'वाध्यक्षित्र प्रतास्त्र (द्वार १६१)। स्थ्य हू 'किस्प् । यूच एक में करते होग्य स्थाद रिका स्थाद, वर्षाक्ष्मर (धार २२)। प्रजासक्षमा स्वी (वर्षानक्षमर सुप् प्रतासना)

पञ्चासपत्राक्ष [पयामक्ता प्रमुपदामना] करर रेगी (ठा १०—गत १ ६) । पञ्चामविष रि [प्युपिन] स्वित च्या हुवा (वण) ।

ाता पर्यक्तमः धकः [प्र.+ महत्त्वः] राज्य करता धावात करता वहः पर्यक्रम्माण (राजः)। पर्यक्रिका वै [पर्यक्रमहिका] प्रत्यक्रिय (राजः)। प्रथमहिका हिस्स , प्र.+ क्षरः ] फरता

वि (एत्त्र)।
परमार सरु [क्षर , प्र + क्षर ] मरना
ध्यकता। परमार (हे ४ १७३)।
परमार पु [सकार] प्रवाद-विदेव (एएए २)।

प्रमान्त्रण न प्रिम्नरण ट्रावनमा (पण्या १ व)। परमान्त्रिक वि प्रिम्नरिती ट्रावन हुमा (पाम कुमा सहा सीत १४)।

परमास देवो परमार = सर् । परमान- (रिंग)। परमाजिमा देवा परमाद्विसा (रिंव) । परमाय व [प्रम्यात] मतिराय विन्तन (मणु

परमध्य वि [प्रध्यात] विन्तितः सोवा ह्याः (भणु)। परमुक्त वि [दे] बवित वहित वहा हुया

(पाप)। देखो परञ्जुल पर्कुम्ह देखो परमुम्हः । दङ्ग पर्कुममाल (एव ८३)। पटउडी सी [पटकुनी] संदू दक्षन्तृह, करड़

कोर (तुर १६ १)। पटल क्यो पहल = पटल (तुमा)। पटल क्यो पहलू (तृति १)।

पटिमा (पे पूर्र) देखो पर्दिमा (पर् रि १६१)। पटावा की पिरोक्स किस्स केरान

पटाव्य की [पटोक्स] बस्ती-विशेष पोध्यकी बारवस्ती (तिरि ११९)। पट्ट वक [पा] पीता, पान करता। पट्टब (१४१)। मुक्त पट्टीस (पूमा)।

पट्ट [पट्ट] र परम्म का नामा भट्टी वि होग कर्ता देपपाएँए से स सरकारी (इस् के क्षांत कर्य) । र एव्या प्रद्वासा तिर्हार सामित्राष्ट्र केर्युण करिया माना (प्रा केर्यु) । वे वामाण सारिता तका राज्या विशिक्षास्त्रपाएस्स स्वादीनीतिर्हार्थ (व्यव १ ) विकासमार्ट्स कर्यार्थ्य (व्यव

४९) 'गृहबंद्रियरवार्थार्यास्य एउन्हिन्ते एोसी' (बीट ३) १४ सामार पर के बीधी जाती एक प्रवाद वी वपहीर 'चयकि' वृहक्ता राजाना वाया कुर्व वहवस्ता सामी' (मरा) १४ AUX) I

अकार का हमियार (पद्मा १ १ पडम व

प्टायक्तामा किमी प्रकारका स्थितिकार

पत्र (रप्र गरे भी वे )। ६ रेलम । ७ पाट-

सन (का १२ वर्ष)। द रेहानी कपहा।

र धन का कपड़ा (कप सीप) । १ सिक्सम गरी पाट(बुध २८ मुपा २०६)।

१२ नमावच् (राज) । १३ पट्टी कोडा

धादि पर बाँवा बाता सम्बा वस्त्रीत

पाटा 'चडरं क्लपमाश्रपद्रबंदेश सिरिवण्डाच

बिसं धादरं नगजरवर्गं (महा निया १ १)।

१३ शास्त्रीकीय (सूरव २ ) । इस ई

[वा] प्रेज पांद का प्रश्विया (श्री ३) ।

चक्की स्क्री हैं क्रिक्स वक्त-गृह (बुर १३

११७)। करि पू [करिन्] प्रचान इस्ती

(सुरा ३७३) । कार पू िकार) त्राचुवाय

क्क इतनेवाचा कुनाडा (पर्तार)। वासिका

श्री [ वाश्चिता ] एक विरो-मुक्त (१ ४

४६)। साक्षा की [शास्त्र] काव्या का

सुनि के एहने का स्वतन (नुवार ३)। श्रुच

न ["सूत्र] रेठमी भूता (धावन)। हरिब

र्ष "इस्तिन् । प्रवात हावी (तुपा ३७२)।

पहुद्धः ) पुंदि] पटेल नॉन का पुल्तिया पहुद्धः (पुणा २७१) १६१)।

पद्ग्रस्थ न पिष्टांशुक्री १ रेशमी क्या। १

सनकामका(या ४२ ३ कब्यू)।

स्वापित व्यवस्थापित (पराश २१) ।

पहत्रस्य---पह

पट्टी 🛍 पिट्टी 🧗 वनुर्विष्ट । २ इस्टब्स्ट्रिका हाब पर धी पट्टी: 'क्योडियससससस्य (विपार १ — पण २४)। पद द्वाम पूर्व देशो पद द्वाया 'पहदपर्द्व' (पुष ६ १)। पट हुना की दि । पार-प्रकार, नात बुजराती में 'कार' शिरिक्को कोलेखं सहाहची

पदद्रसार दिवनम्प (गुपा ६१७) । देवी प्रबद्धमा । पट द्वदिश्रान दि । क्युक्ति का गंदा का 'पर्दुविये कास क्ष्मुसमर्थ (पाय)। पहुनि [प्रष्ठ] १ यक्कापी बद्धसर, बदुमा (शाया १ १-- पन १६)। २ इत्या निरुष्ण : १ प्रवान मुख्या (बीप राष्ट्र)। पट्ट वि [रपूछ] विसका स्पर्श किया पता 🗗 मझ (ग्रीप) । पट्रम ब्रिप्टी १ पीठ, शरीर के पीकी का

भाग (खासा १ ६० दुना)। २ तव क्लर काम्मन विकिमे पट्ट च तर्म (पार्य)। नर नि िनर | बनुयानी बनुवागी (कुशा)। पट्ट विद्विष्टी श्री विश्वको पूछा गयाको मञ् । २ त प्रश्न, तमास 'अल्पिके पट्ठे परकारो' (का ६---पण ३७६)। पट्टच सक [श+स्थापम्] t शस्यान कराना नेजना। २ प्रकृति कराना। ३ श्राप्त्य करना । ४ शक्त से स्वापना करना। प्रमाणित केता । पट्टबाइ (क्टें ४ ६७) । मुका, पहुनरंतु (कप्प) । इत पहुन्तिज्ञक्य (क्या सुवा ६२७) । पहुचन वेशी पटूचन (कन्म ६ ६६ टी)। पट्टबण न प्रस्थापन है अक्रप्ट स्वापन । र भारत्य 'इसं पूक्त क्यूकरो व्यूक्ष' (ब्बर्ग) । पट्टच्या स्री [प्रस्थापना] १ प्रश्नष्ट स्वापना । र प्राथमिक्यवानः 'दुनिका पहुनला बद्ध' (नप १) ।

पञ्चन वि [प्रस्थापक] १ प्रनर्शक प्रकृति

करानेकाचा(खापा १ १ — पत्र ६६)। २

प्राप्त्य रुप्तेशाचा (विशे ६२७)।

पट्डिया ) औ [प्रस्थापिता] प्राक्टिक पट्टिया । विशेष धनेक शायनिया में जिसका पश्चमे प्रारम्य किया जावं गद्ध (ह्य थ,२ निद्(२ )। पट्टांज केवी पट्टाय। वह पद्घार्णेश (बा पट्टाण न [प्रस्वात] प्रकल (मुपा १४२) । पट्टाय रेकी पट्टम । पट्टानह (ह ४ ३७)। प्रामेद (रि ११६)। पट्टाविश देवी पट्टविज (१४१६ दुना, विव १)। पट्टि की वेको पट्ट = १४ (वडा करा)। संस न सिर्मस ] पीठ का नांच (पर्वा १ २)। पट्टिक वि [प्रस्थित] विक्रते प्रस्तान किया ही बहुत्रयात विभार घोष ८१ मध भुपा ७ 🕽 । पहिस्र नि दि । सन्द्रा विस्पित (पर्)। पट्टितकाम वि [प्रस्मातुकास] प्रपास का इच्छान (मा १४)। पहिलग 🛪 🗣 निकृत्यः, मैल 🕷 वंभे पर का भूमक किल्ला (देद २६)। पट्टी देवो पट्टि (बदा कात) ह पट्टीबंस पू [प्रस्वंश] बर के मूल को बंकी पर विरक्षा रका भाषा बड़ा साम्बा (पर्व 1 (##5 पठ वेको पद्ध । पठिर (शी) (सह—मून्स १४ )। पर्वति (सिंद)। कर्ने प्रजानग्रह (ff # &: xxe) : पठंग बेबी पाइग (क्य) । पक सक [ पत् ] पदना, विस्ता। रहर (उन्हार्के २१ १४४)। सक्रापद्य पञ्चमाण (ना २६४- महाः प्रकार हुइ ६)। चंक्र पवित्र (नाट—राष्ट्र ६७)। इ. पश्योध (शब)।

पष्ठ पूँ [पद] वस्त्र कपका (धीपा क्य स्वश्न

चर, स ६२६८ था (×) कार देखी गार (धन)। इंडी की डिटी कें, रक्त-इव

(१६६ की १)। गार वे कारी

पद्गा देखो पट्ट (रस) : पहुण न [पन्तन] नगर, रह्यर (शन औष ब्राप्तः दुना) । पहुद्वी थी [पहुद्देवी] बटक्रमी (विधि **१२१२)** 1 पहुस केबो पट्ट (उशा छामा १ १६)। पद्दमुत्त न [पद्दम्य] रेटनी वस (वर्गन पहाडा की [ब] पट्टा, बीवे की पेटी करन 'होशिया पट्टाटा क्रमाध्य पद्धारा' (सहाः नुष १ १)। यद्भिय पि [यद्भिष्क] पट्टी पर विश्वा जला नांव वनेषा, शुन्नि पट्टिक्वापरिय तुद्रशक्तने पट्टरनो नरकाचो कृषित को साधि प्राधीए चित्ती (गुना २७६) । पट्टिया भी पिट्टिसा है भोशा तकता, बाटी। "विकारिया" (पर १ )। २ केवी पक्षाः 'दराज्याद्विमा' (राज-वा ६) ।

तस्त्वाय, कपका बूननेवामा (वस्त्र १ २---पत्र २०)। बुद्धि वि विश्वविद्धी प्रमुख सवाची को प्रतुख करने में समये बुद्धिवाका (धीप)। संबद प मिण्डपी तंत्र, मझ-स्थार (दाक)। साहि वन पिन्नाना वक्रवामा (पद्)। याम प्र (बास) बक्र में दाना जाता बुंब्य-बुखे पादि सदिवत पहार्थे (यउथ स ७३ )। आस्य पुरिसन्दी १ वर्ग करका। २ बोती प्रति का बाना वक्ष (अव १, ११)। १ बोडी सीर बुन्हा (सामा १ १--पत्र ११)। पशंचा की वि प्रायक्ती व्या बनुत का किळा या डोची (वे ६ १४ पाप)। पहंसम रेको पहिंस्य (पि ११४) पक्षेसवा की [ प्रसिक्त ] १ प्रतिराज्य, प्रक्रियानि (हे १ वय) । २ प्रतिका (कुमा) । पहुँसुआ की हिं] ज्वार बनुष का जिल्ला (R 4 8X) 1 पहांतच देशो पश्चित्तव (प्राक्त १२)। पक्कर प्रेडिं सामा कैसा निवृतक गावि । (दे ६, २१)। पडवर इं [पटबर] बीद क्ष्मर (मा॰---मुच्य (६५): पश्चमनाम देशो पश्च = प्र + दश्च । पश्चण न [पतन] पात, विशा (खावा १ १ मान्द्र १ रो । पहणीय वि [अस्पतीक] विशेषी प्रतिपत्नी देश (ए ४५१) । पडाजीक देशो पद्य = ५६ । पश्चिमा को [परप्रतिका] केश कर बमान (संबीय १)। पक्षम वेको प्रतम (११ १ ४ गट-१५६ १॥)। पहलान [पटक] रे समूह, संचात, कुन (बुमा)। २ वैन धाडुमों का एक झाहरशु-(प्रदाके समय पात पर इका **वाता वक्ष**-ब्राहर (परहा २, १--पत्र १४०)। प्रदास न दि विकास पिता, मिही का पता हुमा एक प्रकार का खाड़ा जिससे सकता द्वाए जाते हैं (वे ६, ४ वाम)। पहरता } कीन [वे पटस्रक] नरुधे चाँक पहरतम | दुनवारी ने पोटुब्र 'पोटसी' ।

'पूञ्चनकामहत्वामें' (शाया १ ८)। भी "किया, "स्रिया (स. २१३) सपा ६)। पहचा की वि पट-कृषी पट-मारकप वक्ष का संदर्भ (देव ६)। पक्क करु प्रि+वही बसाना सम करमा । कवक पहल्कमाण (पराह १ २)। पश्च प्रिटक्की बाच-विशेष नवाहा बीत (धीप संदि महा)। परहरवं वि दि ] पूर्ण घरा हमा (स १८ )। पश्चिष्य पू [पाटशिक] दोन नजानेवाचा बोली बोलक्या (परम ४६ ८६) । पश्चिमा की पिटिंद की होटा होन (शर 1 (22) पदाश देखो पद्धाय = परा + सय । इ पश्चाक्रमस्य (सं १४ १२)। पदाइम वि [ पदायित ] विस्ते प्रवायन किया हो वह यागा हवा (से ११ ११)। पहाइक्षक्य देशो पहाछ । पंचाहवा की पिताकिका क्षेटी क्लाका मन्तर-प्रतास्त्र (कुत्र १४६) । पकारा दे विटाक, पताकी पताचा ज्या (कप भीप)। प्रकारा ) को पिताका व्यव (महरू पकामा । पाम हे १ र ६ बाबा बर्जा। इपकाग पु भितिपताक] १ नलय की एक कावि (विपा १ ६—पन ८३)। २ पताका के अगर की नताका (धीप)। इराज न िंदरणी विजय-शान्ति (संवा) । ी नौका में सफी-प्रवागार न ि नावा नवा (गराने भू १ आराम भीर धप 1 (755 पकायाण वेशो पक्षाण (हे १. २१२) । पश्चमाणिय वि [पर्याणित] विस पर पर्याण नाधायमा हो वह (कुमा २ ६३)। पदाकी भी (दें] १ पीक, मशी (वे ६ ह)। २ वर के अपर की चठाई धादि की क्षकी द्वार (बंद %) । पष्टास वैश्रो पसास (गार – मृष्य २४१) ।

पक्षि वि [परिम्] बजवाचा (समु १४४)।

पक्षि य [प्रति] १५ सभी का भूचक सम्बद्ध-

७५२)।

१ प्रकर्म (नव १) । २ सम्पूरीका (नेदन

१ विरोध 'पश्चिमक' 'पश्चिमाम्'रेव' (मनक पत्रप २ २२)। २ विशेष विशिष्ट्याः 'वीक्षेत्रक्षित्रक्षित्रमय' (ग्रीप)। ३ श्रीप्सा स्याप्ति 'पहिल्लार' 'पश्चिमका' (पण्ड १ में से ६ १३)। ४ शायस थीचेः 'पक्रिया' (विपा १ १३ भग सुर १ १५६) । ५ सामिन्स्य चंत्रवताः पत्रिकरहः, 'पत्रिकद्व' (पट्ट २ २ गावक)। ६ प्रतिकान वदमाः 'पविदेष्ट' (बिसे १२४१): ७ फिर से 'पश्चिपविज' 'पश्चिमित' (सामें १४० दे ६ ११)। ४ মতিলিখিনল 'খাহিলার' (তথ ৬০ ৭ টা)। प्रतिरेव निपेव पश्चिमाण्डियाँ (मन सम १९)। १ प्रतिरुखता, प्रिनशंतता 'पक्रिकंप' (के २ ४६)। ११ स्वयाव-'पश्चिम (ठा २१)। १२ सामीच्य निक व्या 'पश्चिमिय' (सुपा ४१२)। १३ बाक्कि महिराक 'पश्चितारोव' (ग्रीव)। १४ साहरम तुरुवता 'पहिदेश' ( पदम १ % १११)। १६ सबुका स्रोटाई 'परिवृशार' (कम्प परख २)। १६ मरस्तता स्मना 'पश्चिम' (बीव ६)। १७ संप्रतिकताः वर्तमालता (ठा १ ४-- पत्र १३०)। १८ निरमेंक मी इसका अयोग होता है, 'पडिइंड' (पटम १ १) - पश्चित्रवारेनका' (भन) । पश्चिमो परि छिप्र प्रश्च ६ र्मात ७) । पश्चिम विद्विविद्याः, विद्वास्त (दे ६ १२)। पश्चिम वि [पविव] रे नियः ह्रमा (भा ११ आसू ६ ११)। २ जिसने प्रधने की परियो' (वस्) ।

पश्चिम विकि । इन प्रची का सुबक प्रध्यम-

सारम्य किया हो बहु भागपनगंकेश य परिकारे (कर्तु ) । पांत्रका वेको पक्ष = प्य । पांत्रका केको पक्ष = प्य । पांत्रका किया प्रश्चिति । विद्यापित । एकार्या प्रश्चित्रका प्याप्तिका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रश्चित्रका प्रिका प्रश्चित्रका प्रत्यका प्रत्याचित्रका प्रत्याचित्रका प्रत्यका प्रत्याच प्रत्याच प्रत्याच प्रत्याच प्रत्याच प्

१ का बर् 🕽 ।

*16	पाइअसहमहण्यापो	प <b>डि</b> अग्ग—प <b>डिएडिम</b>
र गा करता मन्ति करता ६ शूचमा	पित्रसरण व [स्विचरण] सेवा, जुल्ला (योर १६ था था छ कुता २६)। यकिसरणा की [स्विचरणा] र वोवार वर्ग स्वतन्त्रण की स्विचरणा र वोवार वर्ग स्वतन्त्रण (याद १६ थे)। य धालीच्या त्रण स्वतंत्र सेवार (याद १६ थे)। य धालीच्या त्रण वर्ग से विश्वति । य चार वर्ग में प्रवृद्धि (याद ४)। य धालीच्या त्रण वर्ग से विश्वति । य चार वर्ग में प्रवृद्धि (याद ४)। योडम्बार कि [विश्वति वेद मुख्य (याद ४)। योडम्बार वर्ग स्वतान्त्र (वर १)। योडमार वर्ग (याद ४) प्रविचार वर्ग वर्ग वर्ग (याद ४) प्रविचार वर्ग वर्ग वर्ग (याद ४) प्रविचार वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्ग वर्	१ ४, १११)। व सायर-गैठ के एक एका का नाए (यस ६ ११)। पाडिप्रंचण न [परीप्रमान] ज्यूकरियेर रूप मात्र का सारिश्ती प्रका (प्रमान १९)। पाडिप्रंचण न [परीप्रमान] प्रमान का सारिश्ती प्रमान । पाडिप्रंचण न [परीप्रमान] प्रमान अपीप्रंचण न [परीप्रमान] प्रमान अपीप्रंचण न [परीप्रमान] प्रमान अपीप्रंचण का प्रमान क
परिप्रदार [प्रत+कृ] १ बद्धा कालाः १ इत्यान वरता । १ स्टीशह करता हैल परिप्रार्ट (का ३९ ) । वंहा तहर्तन	बस्तेसला (लाता १ ११ क्ष-पण १ १)। ध्ये, एसा (लाता १ १-पण १८)। प्रीहरमारिति किस्तिमारिकी करा विसे	व वर्ण" (व ॥ २७) । वंश्वित्रयदार वृं [प्रस्मुपवार] ज्यावार वा बरना जीतान (वान ४ ७३: मुना

परिदेश कू [यनीग्द्र] १ श्या वेरन्तक ।

देव राष्ट्र के रूप देवरवाना देश (बढा है १३)।

पश्चिम् असे पश्चित ।

(बाब १ ६, १) । व राज वर बाबाजित | पश्चिमांताल रि [दे] बतार्थ प्राचारत (दे ६

पाँउराउँ (सा ६६ ) । लंहा तहाँत पश्चिमीरे रि [हित्यारित] कार रेगी ttx): बहिदाराम द्वारियो त्सी (दूप ४ ) । (वर १)। पश्चिम्सम पत्र [प्रत्युत् + धराः] पुत्रशै ष -स.पू [न] पुर्गानुष चाहेबा बूग यदिइ वर प्रिन्ति + इ.] बोचे लीन्या बारव रिय शना रिर ने भोता । यह प्रविश्वसम-बाला । वर्षे पश्चिम (उन १६० दी) FIR (E S. 20) गंग (ने दे ११) । र्षादामा पू [परिशत] परिशत, पारिवारि हेरु पटिएलप् (बन)। पश्चिम देशो पश्चिम्य (बन्द्र व । ने व (१९)भाषुणियों वर निस्ती हैं भेव पश्चि की [पनिति ] नतन नाम (नम ४) । 11() 1 ٥ (( ١٤ ١٤) ( ( ١٤ ١٤)

परिमाग रि [प्रीत्वारक] नेपानुपन

काने न्यातिक है वह है।

पश्चिमासङ्ग [प्रस्यीयभ] एक श्रीयम का प्रतिपक्षी बौराव (सम्मत्त १४२) । पश्चिमुञा देखी पश्चमुका = प्रतिमृद् (धीप)। पश्चिमद नि प्रतिकत धैयीकृत स्वीकृत (प्राप्त पि ११६)। पश्चिम्य वि शिविकण्टको शविसामी (चय)। यहिन्द्रंत देशो पहिन्द्रंत (चप २२ टी)। पश्चिम्य वि प्रतिकर्त ] इसाव करनेवासा (घ४४)। पहिन्द्रप सक प्रिति + कृप्] १ सजाना स्वानट करताँ 'क्षिपामेद मी बेदाणुप्पना ! कृत्शियस्य रएकी विभिन्नारपुत्तस्य धार्मिने€ इत्पिरवर्ण पडिकपोड्डि (धीप) पडिकपोड (धीप) । पडिक्रिपेश वि [प्रतिक्सुप्त] स्वाया हुवा (विपार २—पन २३ सङ्घ्यामीप)। पश्चिम वेची पश्चिम्य । हु 'पश्चिम्य हो पविकासी पडिकमिलको च सालुपुनीए" (धर्मि Y) । पविकास न केवी पविकास (धानि ४)। पढिकम्म न [प्रतिकर्मम्, परिकर्मम्] वेडो पारकम्म (बीफ संख)। पढिक्य वि [प्रविकृत] १ विवका नवता कुकामा गया हो बहु। २ न प्रतिकार, बक्ता (점 ૪ ૪) पश्चिमार्ड रेसो पहिजर = प्रति + # I पश्चिमाञ्जल र पडिकाममा देखो पडिकामणा (श्रीक्स **98** 🕮) : पहिन्त्रय पु [प्रविद्यय] प्रविन्त्र प्रविना (बेइय ७३)। पविकित् की [प्रतिकृति] र प्रतिकार, इसाम । २ वरता (दे ६ ११) । व प्रति-निम्न मूर्ति (प्रनि १६६)। पश्चिकिय न [प्रतिकृत] अनर देखी (देश्य **6**X) | पिंडिकिरिया औ [मिविकिया] प्रतीकार. वरसार क्याडिकिरियां (धीप) । , नि [प्रतिकृष्ट] १ निर्मिक पटिङ्कट पविकृष्टिक्चम } प्रतिपद्ध ( बोन ४ ३ पन <) गुपा २ ७)<sup>-</sup> पडिदुर्द्रिखर्पावच्छे वञ्जेका

धट्रमि च नवमि च (वव १)। २ प्रतिकृत (स २७ ) श्वन्तोर्न पत्रिकटा दोशिव एए यसम्बाम (सम्म १६६)। पविकुट्टेस्य देखी पविकुट्टिस्स्यम (वव १)। पश्चिमक वेको पश्चिमक = प्रतिकृत (सर ११ २ १)। परिकृष्ठ सक [प्रतिकृत्तय ] प्रतिकृत याच एस करना । यह 'पश्चिम् सैतस्स मन्मः जिल थक्यों (सुपार कार ६)। इट पश्चिक्तों यव्य (कुम २४२)। पविकृत्व वि [प्रतिकृत्व] १ विषयीत जनटा (उत्त १२)। २ यनिष्ट धनमियत (याचा)। व विरोधी विपन्न (हे २ १७)। पविकृत्यमा की [प्रतिकृत्यना] १ प्रतिश्व भाषरण । २ प्रतिश्वमताः विरोव (वर्गवि ६६)। पविकृष्टिय वि [धविकृष्टिन] प्रतिकृत किया हुधा (सन)। पिंडकूचग पूँ [प्रतिकृषक] कूप के समीप का •धोटा•ूप(स १: )। पश्चिकेसम पूं [प्रतिकेशक] बागुरेव का अविपन्नी राजा अविकाम्बेच (प्रका २ 8 Y) I पिक कोस सक [प्रति + क्यू ] साक्षेष करना कीसना शाप या बासी देना । पत्रि कोसह (सूच२७ १)। पिककोद्दर्भ [प्रतिकाच] गुल्सा ( दस ६ ₹5)1 पविषक न [प्रत्येक] प्रत्येक हृस्यक (याचा)। पश्चिममंद्र वि [प्रतिकास्त] पीचे इटा हुमा विमृत (अवाः पशह २ १ः बा ४३ ef ₹ ₹) 1 पविषक्त वक [ प्रति+क्रम् ] क्षित होना पीची हटना। परिश्यम्बद (छच महा)। पश्चिकमे (बाइ ४० पच १२)। हेहर पडिक्कमित्रं पडिक्कमित्तप् (वर्षे ए कसः ठा२ १)। संद्रपदिकक्रमित्ता (माचा २ १४) । इ. पहिनकृतस्य पश्चिकःसियच्य (धायमः ग्रोथ व )। पढिकस दुं[प्रतिक्रम] देखो पडिल्कमश् "मिहिपवित्रसमाद्यारात्" (पर---याचा २) ।

पविकासमा न [प्रतिकृतमा र निवृत्ति व्यावर्शन । २ प्रमाद-वरा शुम बोन से गिरकर धशुम योगको प्राप्त करने के बाद फिर से शूम योग को प्राप्त करना। १ चतुम व्यापार से निवृत्त होकर जतरोत्तर शुद्ध मोम में वर्तन (परह २,१ भीप चंड १३ पडि)। ४ मिथ्या-दुष्क्रत-भवान किए हुए पाप का परवाताप (ठा १)। ३ मैन साबुधीर गृहस्यों का चुवह भीर शाम की करने का एक माबरमक मनुष्ठान (मा ४**८)** । पश्चिमय वि [प्रतिकासक] प्रतिकास करनेवाला जीवो उ पश्चिकमधी समुद्रार्थ पावकम्मकोयार्गं (ब्राप्ति ४)। पडिक्कमिर्व देखो पडिक्सा। िंदाम] प्रतिक्रमण करने की इच्छादासा (राया १ १)। पश्चित्रय प्रं [दे] प्रांतक्षिमा, प्रतीकार (दे ६ te) i पविकासमा की [प्रविक्रमणा] देखो पृष्टि क्सण (भोव ११ मा)। पडिस्कुछ देवो पडिकुछ (हे २,१७ पड्)। पिंडक्ला थक प्रिति 🕂 ईक् 🚶 १ प्रदीक्षा करना बाट देखना बाट बोहना। २ सक स्विति करना। पठिलक्षा६ (पड् महा)। वक्र पडिक्लंड (पडम १, ७२)। पविकसाध वि [प्रविद्यक] प्रवीक्षा करने बासा, बाट कोड्नेबासा (मा ११७ छ)। पश्चिमन्त्रंभ दूं [प्रविस्तन्भ] धर्मना, घरमना बागव बगरी ब्यॉड़ा (से ६ ६६) पश्चिमकान व प्रितीक्षण निर्माका बाट राष्ट्र (दे १ ३४) क्रमा) । पविषयप वि वि] १ जूर, निर्देश (दे ६, २४) । २ प्रतिद्वा (पड )। पविक्तान वक [ प्रति + स्त्रस् ] १ हटना। २ पिरला। ३ कल्या ४ सक् रोकसा। **वड- पश्चिक्त्यतां**त (मृषि)। पडिस्कास्य न [प्रतिस्कात्रन] १ पतन । २ शवरोष (धावम)। प डिक्सक्टिम कि [प्रतिस्टासिन] १ पराइस पीकी क्याड्रमा (सं १ ७) । २ ६का ह्या

(से १ का शकि)। देवी पहिद्यक्तिश्चा।

216

परिभियन रि. पिरिक्रिप्ती विद्यारित (47 t) t पर्दिशोद के दित्ती र जनकान जन यस्ते

बा इति प्राप्ति पात्र। १ बसराद मेत्र बादर (\$ + 3e) 1 र्षाटानेवी की जिही कार रेगी (दे ६ २०)।

र्पंडग्रंड रि दि] हत माय ह्या (?)-विकास स्थापाय विकरित (ब्रह्म) ३ प्रान्यतः देना प्रदिशस्य (वर्षः) । वर्षः

पश्चिमित्र (श्वा २ ४)। परिगरन रेना परिगरनम् (बर्गेर १६)। पॉटरराज्य र प्रितिसरदित १ रका ह्या (वरि) । २ रोग हमा 'रुजा हनो

र्याचीमो धन्तमेल (दुच ६२०)। हेती वर्षप्रधानित्र । पहिनिद्धा धर [प:र+निद्द] लित्र होना

रराज रोता । चीर्रापारीः (धी) (तार---मार्ग्या ६१) । पश्चिम्यत्र न विशिवस्त्री स्वार्शन, येथे

भी ता (यव है ) र्षाक्षमय बुं [प्रतिसद्ध] प्रीतामी राज्ये (१९३४)। पहिराय ई जितिरात्ती बीध और ह्या क्षाव देशा (भारता ११ का भीत ETT FEE EYE)

पोश्चार देवा परिचाद (दे ४ ६१) । र्चंशाहरू दिशि + बही राख ure elet uret afere (uff) बीराण बीराणी (बार) मेह पहिला दिया परिमार्जना बहिलाहुका (बार ब्याना २, १ ३ ३) । हेर्र ५ हिमाहितान

(47) 1 बारगारत हि [प्रांतपार्ड] हरत बारे 470 (mm 1 1-41 11 11 1

11111

पहिलाह 🖠 [पतनूबह प्रतिवह] १ पात भारत (पार २ १ बीप बोप १६ ११६) देश क्या)। २ वर्गे प्रशिक्षिण वह प्रश्ति क्रियमें कुली प्रश्ति का वर्षे दन

बरिलुन होता है (रम्भर)। धारि वि िधारिक् वित्र श्यनेगन्त्रा (वण) । पहिमादिक वि विशिवदित प्रश्विति

पारताना 'समणे मनर्ग महातीरे संतक्तर नाहिये जाने जार चीररच है ही या हेल पर स्रोपना पाश्चिमश्चित्र (बप्त)। पहिमाहित (श) हि हिनिगृहित परि

गुदानी सीइड (कार-मुख्य ११ । यत्था ₹₹) ı पश्चिमाह रेका पश्चिमाह । वरिन्याहेड (धरा) । संह पहिम्माहत्ता (उग) । हेह प्रकारतहरू (रच भीत)।

पहिमाह सर् [ प्रति + माह्य\_ ] परा प्रकार ह पहिमादिक्य (शी) (बार)। पहिमाद्य रि जिनिमाद्यी प्रभावका बारन नैनेशना (दे ७ १६)। पहिन्याय ने [हर्नियान] १ निरोप धन्त्रात

(स्व ६ १ ) । २ शिमास (पर्नीर १४) । पहिषाय ﴿ फिनियानी १ नाग विकास । र निरागराः निरमन 'रामारिपायरेडे (बाबा बुर ७ ११४)। पश्चिपायम रि दिशियाग्य । प्रतियाग्य करने-

बाता (उस १६४ दी) । पहिणानिर रि दिनिपूर्तियु शैपनेशया टिननेशासा (ने ६ ५१)। पहिचेन वृद्धितियार् । तिमेन पार भी

न्नान शहिया ब्रूबर है (सा)। र्थाटचक (प्रांतपक) कृष्य वक्रमा er (राष) देनी व हयदः प्रतिपत्र वर्षद्रभार देनो पाद्रभार = प्रीत पर अह प्रदूषस्य (रपार १) व विश्ले

वृद्धिवर्गरायम् (बार ४) । वर्षस्य वर [ दर्श + पर ] दर्शक्रमा 414 4(1412 (P32 E 1)

पहिचरणा रेधो पहिजरणा (राप)। पहिचार पुं [प्रविचार] नगा ग्रिटेन-१ बढ धारि की गाँउ का परिजात । २ रोची को सेश-एक्स का बात (वे २) धी दे छ 1 (1 ) पश्चिपारव वंद्री (प्रतिचारक) शीरफ

क्ष्में र १ व्यो (स्या (स्या १ ८)। पहिचादाबमाण क्रेनी परिचाय । पढिचाइय 🗗 मितियोदियो १ अकि (बर इ १६४)। २ प्रतिवृत्ति जिन्ही वृत्ति दिया बदा हो बढ़ (रहम ४४ ४१)।

पहियोक्न वि बितियोर्गयत् वेरर (अ 1 1)1 पह्याय नद्दा प्रति + बाइय ी प्रेरण करता। वहिकीएंटि (प्रम ११)। कार

पश्चिमोप्रश्रमागः (यतः १४—पत्र ६७६) । पटिचायणा की जिनियासना जिल्हा (धारे इंजिंग १६--पण ६ ६)। पहिचायमा श्री [प्रतिबादमा] निमेचेना निगरता है प्रेरला (विचार ३३ )।

पश्चिम्पारम रेगो पश्चिमारम (जा ६०६ (i)

पश्चिम्य देनो पर्वटकार । क्यू प्रदिक्यंत्रः 'महिरेगरि' परिच्यमात्रा 'बहुर' (का म १२१/ वर्ग) । 🛊 पहिल्छिक्स्य (**411)** (

पविण्यं यह [ प्रीत + ह्यू ] प्रन्त नरनाः विकास गरिकार (बार्च मुत्त १६) । बह पहिच्छमान पहिच्छमान (बीप नार गामा १ १)। मंत्र पहिनद्धाना यशिकाल परिकार परिकार म (वण यवि १ हा नूस दक्ष निपूर) ।

हेर पर्टिंग्लर्ज (बुरा ७२)। इ पर्टि िरवष्य (युत्त १२६ मुरु ४ १ १)। बक वर्ष पहिण्यापीओं (ते) (ति **११९ ना') । यह पहिण्यादेशा**न (44) 1

पविषयी है (इतिराहरी है मूर्ति क्षेत्र सम्बद्धाः । शः भः १११:६ ६) । عإلكال ازاء لم لطفط عسرار िरेश] बनार हिरा ह्या (दुवा) ।

.च्छ्रजन प्रितीक्षण प्रतीसामाट यह

ाम्बरुष न ब्रिस्मेपण**े १ प्र**क्ष सावान

मा । २ रासाच्छ विनिवारण 'कुविसपढि

क्रमबोरदा पच्छा कृष्या महित्रराणुं (गठक)।

[ল্ডুআ ) শি [মবিক্স্ম ] মাক্রাবিচ

इन्द्रसं देश ह्या (शामा १ १ —पत्र

डेस्टर पूर्वि समय, भास (६६१६)।

डेक्क्सपण न प्रितिच्छादन**े देवो** पडि

डेल्क्स्य देवी पश्चिम्क्स्स (ग्रीप)।

**ब्ब्ह**णा [प्रस्थेपना] **गर्**ण

হয়ের---বহিলিবিত

उच्च ११)।

ন ३७८)।

नेष १६)।

३ क्य)।

ক্ষায়ৰ (ঘৰ)।

(ह देवे छल्)।

१-पन १६ हो)।

मानरस (पुत्र २ )।

परमाई (ज्य ११६ टी)।

पक्रिकेटर कि दि । सहस्र समान (है २ 20X) 1

पाक्रसम्बद्धाः प्रणाची

(X#5

डिच्छाकी प्रितीचका । भडला संगीनार डिच्छायण न [प्रतिच्छादन] मा≠ग्रदन-वस अञ्चादन-पट किरिपडिज्यायणे व नी <del>प्र</del>ेचार्यम सम्बाहित्तएँ (माचा) खावा १

হ্রিত্রাধন ব মিবিত্রার্নী ফল্ডান रहिरुकायाओं प्रितिरुक्ताया<u>।</u> प्रतिकिन्त

पश्चित्रहासमाञ् देशो पश्चित्रह् = प्रति 🕂 इप् ।

पश्चिष्यक्षम वि मितीयः मतीय्यतः १ गृहीत, स्वीहत (स ७ १४ हरा) सीप सुपा

बप्र)। र विशेष क्य से वास्थित (शब्)। पहिच्याल देवो पहिच्या = मति + इय । पश्चिम्ब्यमाकी विरिध्य प्रतिकारी । २ विर कुल से स्थामी हाई मेरा (दे ६ २१)।

पश्चि क्लिप्त र पशिकारूम देवी पशिका = प्रति + इप । पश्चिष्टिक्य वस्य 🖟 पश्चिद्धर वि [प्रतीक्षित् ] प्रतीता करने पाना बार देखनेत्राता (बरना ६६)।

महिच्छिम वि मितिचिक्क मिने चैजा पुर की बाजा केकर पूर्यर कच्चा के बाजायें कपास उनकी धनुमति से शास प्रानेशाना

मृति (एदि १४)।

पृष्टिक्षेत्र देखो पृष्टिन्दर्शतः 'महियं निपम्बिद्धर्य' (स्य ७२८ टी)। पश्चिमा की जिल्लीका जिल्ला बाट (बीच

पश्चिमाया रेको पश्चित्रद्धाया (नेश्य ७१) । पश्चित्रीय सक प्रिति + कस्पु रे उत्तर देशा । पश्चिमेपक (मिकि)। पश्चिमा देशो पश्चिमागर = प्रति + पाग। पश्चिमयह (बस १)।

पश्चिमसाय वि प्रितिजागरकी सेवा-सम्पत करनेवासा (एप ७६८ दी) । पश्चिमस्मिय वि [प्रतिजागृत] विश्वकी सेवा शुम्पाकी मदेशो वह (सुर ११ २४)। पश्चिमागर सक प्रिति + आरगू र सेवा गुब्द्या करना निर्वाह श्रदना निर्वाना। २ वनेपणा कणा । पश्चिमपरींच (कम) । कह पश्चिमागरमाण (विपा १ १ उदाः यहा)।

पश्चिमागर पू [प्रविज्ञागर] १ छेगा-गुम्पा । २ चिकिरहा, 'मरिएयो सिद्री यागुचु विश्व पविज्ञासरहाएं (सुपा १७१)। पश्चिमागरण न मितिज्ञागरणी अभर देखो (भव ६)। पश्चिमागिरय देशी पश्चिमीगा (दे १ पश्चिमायणा औ प्रितियादना प्रतिनिम्ब

प्रतिमा परसाई (नेहम ७१)। पश्चित्रक की जितिसकति १ स्व-समान बस्य यूनवि । २ सपत्नी (क्रूप्र ४) । पश्चिमा पु [प्रतियोग] कार्मण बादि बोब का प्रतिपातक मोग चर्त-किरोप (शर व

2 V) I पबिद्व वि [ पटिश ] सप्यन्त निपूक्त बहुत मनुर (पुर १ १वेथ, १३ ६५) । पडिद्वविज वि [परिस्थापिक] संस्थापिक (से

भ भर)। पडिट्रविक वि प्रिनिष्टापित विवकी प्रतिहा भी गाँ हो यह (शब्द ६४) । पश्चितः रेजो पद्दरः (शरु-स्मासरी ७ ) । पडिद्राय सक [प्रति + स्थापयू] प्रतिशित करमा । पश्चिमविद्वि (चित्र २२ ३ ४४१) ।

११२)। पश्चिटायित (सी) देशो पहटाविय (पनि पश्चितिक देखी पद्मतिय (पद्मापि २२)। पब्डिटाण न मितिस्थानी हर नपह (भर्मीन

8) 1 पश्चिम देशो पश्चीम (नि वरः ११)। पश्चिमक कि दिलिनकी नवा मूतन, 'तुरम पश्चिमकारबाद ग्रिएंडप्लेबिब (विक २६)। पक्षिणिअंसल न दि । यद में पहनने का पचा कि ६ ६६)। पश्चिणिशत्त सक प्रितिनि + दृत् । पीछे बीरना पीखे नायस बाला । पहिरिय<del>कार</del>ी (धीप)। वहः पश्चिणिअर्चतः, पश्चिणिअस्त

साम (से १३ ७%, शर-भासती २६)। संक पश्चिष्णियन्तिका (मौप)। पहिमित्रक र दि [प्रतिनियुक्त] पीम्रे शौदा पश्चिणिङच ∫ हमा (गादेव मा विपाद द्रा क्या से १ २६। ब्राह्म १२४)। पहिणि सस वि [ प्रतिनिकारा ] धनान, तस्य (राय ६७)। पडिणिक्सम यक [प्रतिनिद्+ क्रम् ] बाहर निकसना । पडिण्डिस्बन६ (स्वा)। संक्र पश्चिणिरव्यक्तिचा (दवा)। पहिणिग्गच्छ यक [प्रतिनिर्+गम्] बाहर निकत्तना । पश्चिणिग्मन्द्र (दवा)। बंक्ट पश्चिषम्माच्छाचा (छ्ना) । पिक्षणिज्ञाय सक प्रितिनिर् + यापय ]

पिक्रियम वि पितिनिमी १ व्हरा द्रस्य. बराबर । २ क्षेत्र-विशेष बाद्ये की प्रतिका का बॉडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेनू—यूक्ति (ठा ४३)। पक्रिणियक वैको पक्रिणिअक्त = प्रतिनि + क पडिजिथचमाण (नार. एला

प्रपंश करना । पश्चित्रिजनार्यम (याना १

\* 4x 28a) 1

(काल)।

पहिणियत देवो पहिणिशत्त ≔प्रतिनिदृत पहिजिबिद्ध नि मितिनिबेसी प्रिट हेव Mer (40% & 6-44 0) 1

423	पाइअसइमह्ण्यको	मडि <u>णियुत्त-</u> -पडिपाव
पहित्रियुक्त देनी पहित्रिअस = प्रतिनि + इर १ वर पहित्रियुक्तमात्र (वेणी वेदे) ।	पश्चित्यर वि [व] धमान <b>धरत (रे ६</b> २)।	पहिनियत्त देवी पहिणिशत्त = प्रवितिशत्तः। पश्चिम्पतः (महा) । हेवः पहिनियत्तरः
पहिश्वित देवी पहिणिञ्जल = प्रतिनिवृत्त (स्प्रि ११=) ।	पश्चित्वर वि [परिस्थिर] स्विरः भूजीत- पश्चित्वरे (वे २ ४)।	(१प्प)। पडिनियत्त वेजो पडिपिमत्त = प्रतिनिष्टत
पडिजिबस देखो पडिनिबेस (धन)। पडिजिन्सन देशो पडिजिल्स = प्रतिन +	पश्चित्रद्ध वि [प्रविश्लब्ध] पवित (उत्त १२ १)।	(शासा १ १४) महा)। पश्चितियक्ति की [श्रीतितृत्वि] कस्य
हुए । बङ्क पडिजिब्बर्सन (हैना ६६६) । पडिजिसन नि [प्रतिनिक्रान्त] १ विधान्त । १ निरोज (साम १ ४—पत्र १७) ।	पहिन्दे र्यु [प्रतितृण्ड] हुस्य स्एड के स्थान हुस्य स्एड 'स्परिवर्डण' सरिज्यमार्केण सामवसेल क्रियनि (सीच) :	भौटना प्रत्यावर्शन (मीड ६६)। य बनिवेस युं [प्रतिनिवरा] १ माम्ह
पडिजास न [प्रत्यनीक] १ प्रतिष्ठैन्य प्रति पद्म की नेता (सन ६ ६) । २ वि प्रतिष्ठेन	पश्चित्रसं चन्न [मिर्वि + ब्राय्] रिवालका। पश्चित्रसं चन्न [मिर्वि + ब्राय्] रिवालका। पश्चित्र (वगः चना)। बंह परित्रसेन्द्रा	वसाबह, धुरायह, अनुभित्त हुठ (एव ६) । २ कह अनुराद पश्चातार (विषे २२६६) । यक्टिनिसिद्ध वि (प्रतिनिधिद्ध) विवाधि
रिपारी, निपरित साचरल करनेराता (का स क) लावा १ २ सम्ब १६६ धीरा	(क्या)।   पश्चिम् सक [मिर्ति+या] गीचे केता सन	हत्रवा हुम्म (छर पू १११) । पडिसच रेको पडिव्याच (माना १ व १
सीय ६६ इ.६६)। पहिल्लेस रि [प्रविद्यत] एक, वन्ति	का बरला रेगा। पडिवंद (विते वेश्४१)। इ- पडिवायम्ब (वरा)।	∀)। पडिलय दक [प्रति÷द्वपस्] गहनाः।
নাদ তা নিজুল অন নদন আছু ব বাদু বহিনতে (অ) তা নাচিহত (না) তিছিঁ (আবা হু হুখ)।	। परिवास व [प्रतिवासन] श्रम के वर्ष में   वान "कार्यागीवालसमित" (का ११७ की)।	चंक्र-पश्चिमविचा (क्य)। पश्चित्रय चर्च [प्रति + द्वापय] १ मध्या
पडिण्याचेनी पद्दश्या (स्वय्य २ ७) नूच १२२)।	पडिशासियां की [प्रतिशासिका] क्षती । (रह ११४)।	कराना । २ निस्संदिताना । विश्वविक्रां, परिस्रवेज्या (बद्दणूर ॥) । पश्चका वैको पद्विच्या (साचा) ।
पडिण्याद देवी पर्ण्याद (दि २७६) १६१८ शास्त्रानीत १२)।	) पडिस्मा ) श्री [प्रतिस्त्र ] रिस्ता । पडिस्सि ) विरिष्ट (राज रि ४१६)।	पडिपंश दु [प्रतिदक्ष] १ क्लडा मार्ग निन्धेर मार्ग । २ प्रतिदक्षता (मुम १: ३ १ १)
पहिनंत रि [प्रतिनन्त्र] स्व-सङ्घ ही में प्रतिक पर्व 'जो बाहु क्तंतर्तिको न य पर स्वेगु यो व परिनंती (बुट १)।	पहितुर्गिति रि [यविजुराप्तिन] १ मिन्स बरनेताना । २ पध्यार बरनेवानाः 'सीबी- बनाविदुर्गीप्रणी' । (मुख १ २, २ २ ) ।	पहिलंबि रि [प्रतिपन्धिन] प्रतिहुत्त विदेवीः 'सापेने पहिलाबीत पहिलंबिननापका
पहित्रणु हो [प्रतिवत्] प्रविका अविकित्त (वहर ४३)।	पश्चितुमार न [प्रतिद्वार] १ १९ एक झर (पग्द १ ६)। ९ छोना झर (क्या प्रत्यु १)।	(नूम १ ६ १ ६): पडिपक्तर देनो पडिप्तरस्य (बीप १६)। पडिपडिय रि. (प्रतिपतित) दिर से निया
पटि प्रपातकः [प्रतितर्पय्] कोजनावि के तत्र करना । पश्चिम्पद् (बोकश्रद्ध) ।	पहिषि वेनी परिहि: 'नूरियरहिपीती बहिता' (नुश्य १) ।	हुमा चरनो निरस्किको मानिकारि परिपरिका मरारएऐ' (नार्व ६४)।
पश्चिमस्य सक् [प्रति÷त्यू] १ विन्ता करताः १ सक्द स्वन्यः वित्रभादै (वस १७ ६) ।	पदिनसुरुवार र्षु [प्रशिनमस्त्रार] कालार के बरने में नगरनारप्रणान (रंता) ।	पाडपांच ) रेलो पहिपत्ति (सह—विदे पविपदि ) १४-वित १)। पहिपद् पुरितपय   १ क्षमार्थ रिवर्धत
चडिनरिपय रि [प्रिनिनपित] क्षोजन व्यक्ति में त्या रिया हुमा (वर १) :	पहिनिकार्यतः वि. [प्रतिक्षित्रशास्त्र] बाहर तिरसा दूचा (खासा १ ९३) । पहिनिकासम्बन्धाः पहिलासम्बन्धः बीरिक्त	यस्ता (सं१४७-ति ३६६ छ)। २ व यसिपुच संदूत (तूस २, १ ३१ छ)।
बहितुहु रेगो वरितुहु (बाट—कृष्य ०१) । पहितुद्ध वि [प्रतितुस्य] नवान करव	क्लबद् (बन्प) । सङ्ग पश्चितस्मामस्ताः	पटिपरिक्र रि [शांतिपधिक] तंतुन सले- नाना (नृष २, १ १४)। पटिपात्र सर [प्रति + पार्य ] प्रतिसर
(राज १, १४६) । मरिल हेली पनित संबद्धित (वे १ ॥		्षरता नथन शता । इ. पहिचालकी न (गण्—सर्वा ६१)।
४ )। चौदशाम देवो परिचाम (नारङ्ग ६४)	र्जंद्र पॉटनियाण्युका (क्या दि है है)। । पॉन्निभ क्षेत्रो पॉट प्रश्न (क्या है)।	पडियान पुर्वितियाद्ये कुच्य कार को बरान बार बहुंबन्दराज्य कार (छन)।

पश्चिपुदय रेखी पश्चिपुरिजय (राज)। पश्चिपादुङ न [प्रतिप्रासृत] दवने नी मेंट (सुपा १४३) । पश्चिपिंडिक वि वि प्रदुक बढ़ा हुया (वे E, \$8) 1 पश्चिपिल्ल सक प्रिन्ति + इतिप् , प्रतिप्र + र्रेस्य विरुद्धा करता । पहिक्तिमह (भवि) । पश्चिपस्थ्रण म प्रिविप्रेरण र प्रेरणा (सूर १५ १४१)। २ बल्लन पियान। १ वि प्रेरखा करननता। 'दीवसिहापविध्याणमध्ये मिस्तिति गीसार्थ (क्रम १३१)। पश्चिपदा देखो पश्चिपेदा । सङ्घ पश्चिपिदिचा (বি খন্ন ) ৷ पश्चिपीक्षण न [प्रसिपीक्षन] विशेष पीवन स्विक दवाद (गडड) । पश्चिमुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ ] १ १ च्या करता, पुक्रमा । २ फिर से पुक्रता । ३ मस्त क्षा जवान देता । परिपुच्छइ (छप) । वहः, पहिपुच्छमाण (क्य) । इ. प. इपुच्छ-जिल्ल पहिपुच्छणीय (ज्या ग्रामा १ १ चय)। पश्चिम्बद्धण न प्रितिप्रच्यस्ती नीचे वैद्यो (मराज्या)। पश्चिपुण्डमपा ) 🛍 [प्रतिप्रच्छना ] १ पश्चिमुण्युगा । नुबन्ध प्रन्या । २ किर छ पुण्या (उत्त २६,२ ३ मीय) । ३ छत्तर, प्ररम का बवाब (बृह् ४ कर द ११=) । पश्चिपुरुद्धणिज्ञ } पश्चिपुरुद्धणीय } देशो पश्चिपुरुद्ध । पश्चिपुण्या की [प्रतिपुण्या] देवी पश्चिप म्म्ह्या (र्पचार, वद २३ हुद्व १)। पश्चित्रका नि [प्रतिपृष्ट] निक्रो प्रस्त किया यया हो बहु (या २०१)। पश्चिपुरिकाय नि [प्रतिपुरिकत] पश्चित धर्मित **व्यंदराभरकरहनका**समुविद्यिम्मयपश्चिपंति (? पुण्डि पृष्ट्) यमस्याजमसीईतदारमाप् (खामा १ १---पत्र १२)। पहिषुष्य केहो पहिषुत्र (उनाः पि ११८)। पश्चिमुत्त पुरितिपुत्री प्रपुत्र पून का पून, पोता श्रीकनिवेशियनिवनियपुत्तकपश्चिपुश्चनश्च-पुर्वीय (नुपा ६) । देशो पहिष्येच्या । पश्चिम वि [प्रतिपुष्त ] परिपूर्ण संपूर्ण (छमारे १: पुर २, १:११४)। 63

पश्चिप्यम् ) वि प्रतिपुत्रक पूजा करने-पष्टिप्यय ∫ पार्ची (सर्वे धर्म ४१)। पश्चिप्यय-वि प्रितिपुद्धक् प्रमूपकार-कर्या (उत्त १७ १)। पिक्षप्रिय नि [प्रतिपृतित] पूर्ण किया हुमा (परुष १ १ १११ ७)। पश्चिपक्रण देखी पश्चिपिद्धण (गराह 🖹 ६ 1(R) पश्चिमेहम न [परिदेशम] देशो पश्चिपिद्धम (वे २ २४)। प्रक्रियेक्टिय नि प्रितिप्रेरित गिरिक निस्कर, प्रेरणा की य<sup>9</sup> हो वह (सुर १३८ १८ मक्का)। पश्चिपेहा एक ब्रितिपि + मा विकास দাল্যাকা কলা। খন্ত পতিবছিলা (বুদ ર ૧, ૫૧) ા पश्चिपोत्तम 🖠 [प्रतिपुत्रक] नजा कत्या कापुत्र सङ्खीका सङ्का नाती (धूपा १६२) । देशो पश्चिपत्तय । पहित्पह वेको पहिपह (का ७२= धै)। पश्चिप्किक नि [प्रविस्पर्धिन्] सर्वी करी-गला (हेर ४४: २ २६ प्राप्त संक्षि १६)। परिष्माक्षणा की [प्रतिफलना] १ स्वतना। २ संज्ञम्या 'पश्चिसह्पान्यस्य लावजिद्धीये-समुरबंट (धुपा ८७)। पहिएफसिस ) वि [प्रतिपत्रहित] १ प्रति-पश्चिमारिक विभिन्न वंशान वि ११ ३१ दे १ २७)। २ स्वानित (गम)।

पश्चिम सक [प्रति + बन्ध्] रोजना बट कामाः पश्चिमपद् (पि ११६) । इ. पश्चि वर्धयस्य (वस्)। पश्चिम एक [प्रति+श्रम् ] १ वेट्रग करना। २ सेकना। पडिजेक्ट पडिजेबीट (सूध १ १ १ १ प्राप्त पश्चिमंप व [प्रतिबन्ध] व्याप्ति निमम (वर्मसं १११)। पश्चिमंत्र प्रितिवस्था १ क्लावट (उनाः कण)। २ किम, धनतराव (३४ ००७)। वे घरमाहर, बहुमान (छप ७७६) अवर १४६)। ४ लोह मीति राग (ठा ६, वेचा १७) । १ माराष्टि, प्रमित्रीय (शाया १ १) नप्प)। ६ वेष्ट्रन (शूध १ ३ २)।

पक्षितीयअः | वि [प्रतिवासक] प्रतिकत्प पृष्टिर्वधग करनेशामा रोक्नेशमा (धमि न्द्रम् वन १४४)। पहिलंघण न [प्रतियम्धन] प्रतिबन्ध स्कानट (पि २१८)। पश्चित्रं वेयस्य देलो पहिसंघ = प्रति + मन्द्र । पश्चित्र वि प्रितिकदा १ रोश हमा, शंद्रत 'नाग्रीय प्रभावनदे' (रूप परह १ ६)। २ छरबनित छत्पादित (गरु४) १०२)। ३ सथक संबद्ध, संमन्त 'सरियाण वर्रिय वंकमञ्जयिक्तक माल्यामस्या पुष्तिराष्ट्रियारा (शतक कुप्र ११% छवा)। ४ शामने अँवा इधा पश्चिद्ध नवर तुमे गरिवनम् पदाविद्यहॅपि' (गढड) । १ व्यव रियत (पंचा १६)। ६ बेट्रित (यटा)। ७ समीप में स्थित 'ते जेव य सागरिये जस्स महरे स पविनद्धी (बह १)। पश्चित्र वि रिविद्यों निमत म्याप्त (वंदा 8 3)1 पिंडवाइ सक [प्रति + वाभ् ] पैतना। हैक पश्चिमाहित् (शौ) (नाट—मकानी 1 (33 पश्चिमाहिर वि [प्रविवाहा] प्रनविकारी धयोध्म (सम 👢 🕽 । पिक्क विवास विकिथ्य १ परमधी प्रकि-**ज्या**या (सूपा २६**१**) । २ प्रतिमा प्रतिनृत्ति (पाम शामा)। पश्चिमिका नि [प्रतिनिम्बत] निस्का प्रविधिम्ब पहा हैं। बहु (शुमा) । पश्चिमक थक प्रिति + सुभ ी र बोब वस्ता । २ वापूर होता । पहितुत्रमाह (स्था) । वक्क पश्चितुरमंत पश्चितुरमस्माण (कप्प)। पांचनुबन्धनया 🤰 🛍 [प्रतिकोधना 🕽 १ वोष पिंडचुँब्स-पा ∫सम¥ें। २ वार्न्स (स १४१ घीप)। पश्चिम् वि[प्रतिबुद्ध] १ बीव-प्रान्त (प्रासू १वर, प्रव) । २ जावृत (लावा १ १)। ६ न प्रतिवीच (प्राथा)। ४ पूँएक राजा काशस (खाना १ ८)।

पश्चिम्हणया की [प्रतिमृहणा] जानप

पक्षित्राभ वेको पक्षित्रोह् = प्रतिनोत्र (शार---

पृष्टि (सूध २ २, व)।

मालती १६)।

पत्रकोधिश रेको पश्चिशाहिय (प्रश्नि १६)। पश्चिमे इस मिति + बोध्य ी १ जनाना। र बीच देना समग्राना, जल प्राप्त कराना । परिजीवेक (क्या महा)। कमक पवि बोहिक्फ्रेन (प्रथि १६)। एक पहिनोहिक (नाट-पानती १३१)। हेक पश्चिमाहिये (महा)। इ. पश्चिमोहियन्ब (स ७ ७) । थबिबाह ए प्रितिबोधी १ दोव समन्त। २ जागति जायराज (महत्र शि १७१)। पश्चिमोद्दग वि [प्रतिवाधक] १ गोर्च क्ले-बाला। २ वयानेबाता (विसे २४ दी। यहिदाहण न ब्रितिबोधनी केही पाड क्षात्र = प्रतियोग (काला स ७ ≈)। पृष्टिकोडि वि [प्रतिकेथिम्] प्रतिकेश प्रान्त करनेजला(बाचा२ी १ ≈)। पश्चिम्रहिय वि [प्रतिक्षेषित | निसको प्रति-मोन किया पदा हो यह (खाना १ ६) क्रमा)। पश्चिमंग ए प्रितियोगी भेद विनाश (वे %. 28) 1 पंडिसंब धक [प्रति + सङ्गु गाँका, ह्मा । हेरू- पश्चिमीखर्ड (वब ४) । पश्चिमंड न [प्रतिभाण्ड] एक वस्तु को बेयकर प्रश्ने वर्ष में खरीदी वाती जीन (स २ ६ पुर ६ ११४)। पहिसंस सर्व प्रिति + भ्रा सय । श्रप्त करना श्युत करनाः 'पेक्स्यो व पविभेतद् ' (स १११)। पश्चिमरा वि विशिधानी वाला हवा पद्मापित (मोन ६६६) । पिक्रमास पे प्रितिसर्दी प्रतिपद्धी धीमा वि १३ ७२ बास मध मरि)। पश्चिमण सक [ प्रति + मण् ] बलर बेना जराब देता। पविस्तवाह (सहरू क्रमार नृपा २११) वशिक्रकानि (महानि ४)। पश्चिमणिय वि मितिमणित्र प्रज्ञातील मिगरा बतर दिया क्या ही वह (बहा कुपा र्पाद्रमत्रिय वि [प्रतिमणित] १ निराहत (भगेस ६६ ) । २ म. प्रलुक्तर, निराकरात (बर्मेचे ६१) । पहिसस करु शिति परि÷भ्रम ] वृत्रना पर्वटम गरमा। सं⊈्र शरमद्र कन्यानिय नवहः

वंति पश्चिमसिय सहस्तीयाँ वर्षीयं (मनि)। पश्चिममिय वि विविधान्त परिधान्ती भूमा ह्रमा (मवि)। पश्चिमय न प्रितिसम् । सन् बर (परम ७३ 83) I पश्चिमा प्रकृषितिसारी मासम प्रोत्था। पृष्टि मादि (शी) (नाट---शना ३) १ पविमाग प्रशिविमाग र घेत भाग (थप २३ ७)। ए प्रतिविज्य (राज)। पश्चिमास धक [प्रति+मास्] मन्द्रम होता । पश्चिमास्ति (सी) (शाठ-प्रका tvt) i पश्चिमास एक [प्रति+ माप् ] १ ज्लर वेना। २ बोलना कबना 'बच्चेगे पश्चिम धीर्ष (मूच १ ६ १ ६)। पश्चिमिण्य वि प्रितिभिन्नी संबद्ध, संसान (t v k): पश्चिमिन्त वि प्रितिभिन्ती मेव-प्रान्त (पन--नाबा १६ चेदन ६४२)। पविस्कृतं पू [प्रतिभूवक] प्रतिपत्नी पुलीय-नेरमा बीपट (कपू र २७) । पांडियू पूँ [प्रतियू] बामिनवार, बमानत काञ्चला मनीविया (नाट--विव ७६)। पश्चिमञ्जूष कि प्रतिभवी क्यालम्ब, निवा पश्चिमेसो प्रचारखँ (पास) । पश्चिमोप्र वि प्रिविमोशिन । परिजीव करते वाला 'सकलपविमोदीया' (बाचा २ ३ १ का विश्व ४)। पश्चिम वि प्रितिमी समान कुम्प (मोह 92)1 पश्चिम वेषो पश्चिमा। हुन्द्र नि [स्थायिन्] १ कामोरसर्वे में प्रकोनाब्दा । ५ नियम विशेष में रिनंत (पदाह २, १---पव १ est te १-- पत्र रहर)। पश्चिमंत सक [प्रति + गन्त्रम् ] उत्तर देशा। प्रतिमेरी३ (एसा १७०३) । पश्चिमस्य पं मितिमस्य मितिमस्य मित (पनि)। पश्चिमा 🕸 [प्रतिमा] १ वृत्ति प्रतिविच्या ·शिलपरिमार्गतलेख परिदुर्व (दननि १ः नामाना १३११४)। २ नामीरसर्पै। ६ बैन-स्त्रक्रीक निवन-विशेष (पएछ २ १)

बगरेश हार ३ % र)। निहान िराक्को मनिवर (लिक्ष १२)। वैको पश्चिम<sup>®</sup>। पश्चिमाण न प्रितिमानी जिस्हे स्वर्ण प्राहि का तील किया जाता है वह रती मला वालि परिमाधा (धरा) । पश्चिमाण व प्रितिमानी प्रतिका प्रतिक्रिम (NEW WILL) पृक्तिमि }सक [प्रति + मा] १ तीव पश्चिमित्र करना माप करना । २ किनती करना । कर्म पविभिक्तिक्द (अञ्च) । अनक्र पविभिन्नभाग (चर्च)। पिंडम् अर्ज [प्रति + सुच् ] क्षेत्रना। केक पश्चिमंचित्रं (६ १४ २) । पिंडमंडणा की जितिसण्डला मिनेक निवादश (बह १) । पहिल्ला वि मिर्वस्क केश हमा (से व 84)1 पडिसोक्जा 🖈 [प्रतिमोचना] 🕬 प ( t x x () ! पश्चिमोक्सल न [मदिमोधन] कुन्मय (ब पश्चिमोपन वि [प्रतिमोचक] कुम्बारा क्रके-नावा (राव)। पडिमोयण देशो पडिमोक्कन (पीर)। पश्चिमक देवी पश्चिक (माना)। पश्चिमक দ [মবিসক] পুরদনা-বিটার चैश पूर्वा निम तिप्यवसी इंश्रेप पश्चिम क्यूपुर्के य सभागुनि क्यायु (बद्धा)। पश्चिमात्र र प्रिविद्यागरणी सम्हान खबर (धर्मचे १ १३)। पश्चिमक देशो पश्चिम = प्रति + इ : पश्चिमरण न [प्रतिकटन] प्रतोकाद, इवान (रिंड १६६)। पडियरिक वि [मितिकरित] क्षेत्रित, देवा किया कृष्य (नीवह ११) । पश्चिमा की ब्रितिका दि पहेरद "पंडवाद पविवाए' (क्लंबाचा)। २ व्यक्तियम (ठा ३ र-पन ११४)। पश्चिम स्मै [पटिका] वक्त-विशेष भूपनासाय नुनुता

व्हुक्ता छड् व कोनवा विटिरे ।

क्तो परलेडि विसा

वेसा पविसम्ब सेपडा, (यका ११६)।

पश्चिमाङ्गस्य सन्द्र [प्रस्या + स्वया] स्थाम करना । पश्चिमाङ्गस्य (वि १९६) । पश्चिमाङ्गिकस्य वि [प्रस्यास्त्रमञ्ज] स्थल परिस्तृतः स्रोहा हुस्या (स्र. २ १ मण बना करा विचा १ १ सीय) ।

पश्चिमाण्यस्य म [क्याप्याकः] वर्ताण्यः के भीते स्थित कारतः वर्णे स्थापि का एक उपकरण्य (जाया ११७—पत्र २६)।

पश्चिमाणीद पुं [इस्थानस्त् ] विशेष धानान्तः प्रमुख धाहत्तः, बहुत धानेद (धीप)। पश्चिमाणय न [क् पन्तानकः, पयाणक] पर्याण के शीचे पता बाता वस धार्षि का एक भूतवत्रयि का काक्षकप्रण (छाया १

१७ — पत्र २१२ दी)। पश्चिमारणा की [प्रतिवारणा] निपेत्र (पेत्रा १७ १४)।

पंडियाभूर मक [वे] विक्ता प्रस्ता होता। इ. 'पंडियाभूरेयम्यं न क्याइवि पाछ वाएपि' (प्राक्ष २६, १४)।

पडिर नि [पविदा] पिरनेनाना (कुमा)। पडिरल केको पडिरण (ता ११ वा से ७

रेश)। पडिरिजिज वि [वे] कर्त हुटा हुवा (वे ६, वश)।

पडिरम्बिक्स मि [प्रतिरक्षित] निस्की प्ला की महिहो बहु (मनि)।

पंडिरव पुं [प्रतिरव] प्रतिस्वति प्रतिराज्य (वड्या पा ११। मुर १ २४४)।

पहिराम प्रै [प्रतिराग] नानी रक्तपना 'ठम्बहर वस्पनम्मित्र्येट्टिमिन्नरेटरोक्पन्निस्यं । पाछोमरेटनहरं व प्रतिहरूसमं हमा बक्की'

(बरह)। पडिरिमाम [फ्] रेकोपडिरेजिम (पर्)। पडिरु यह [मॉत+स्] बॉलव्यीन करना, प्रतिस्था करना। वश्च पडिरुमंत्र (ने १९,

क्षा (१४०६)। पहिस्म १ तक [ प्रति + रुप् ] १ रोकना पहिस्म ) घटकाना । २ व्यक्ति नरवा । परि

रंगाः (स व ११) । वष्ट. पविरुपंत (स ११ १) ।

पश्चित्त्व वि [प्रसिद्धः] रोका हुमा, घटकावा हुमा (पुणा नष्ट बना ४ )।

हुआ (पुणा च्या बना र )।
पिहरूम ) वि प्रितिक्ष्ण १ एम पुण्यः
पिहरूम ) यदः, मत्रेष्ट (स्वार १९० वदा)
होता ) २ कावान, प्रशस्त कावाना यह
स्वार्तिक्षण्या (पिते) १ क्यापारण कावाला ।
प्रश्नुका कावाला (से हैं। र सेरी
६ सहस्य (सं च्या प्रकार र ११) ।
६ सहस्य स्वार्ति सहस्य प्रकारवाला (का

७ समान ब्यवासा सहय बाकारवासा (उत्त २६ ४२)। ८ न. प्रतिविक्त प्रतिपृत्ति 'कायावि विश्वप्रमय् काया वि यान्म तस्स पण्डिये सिहिज्यां (पुर ११ ११वा राय)।

॥ समान कम समान सामुख 'तुस्त्रिकक-वारि पास्त्र विक्वाइरसुराई' (तुपा २१०)।

विनय का एक मेव (वच १)। पविक्रमंसि वि [प्रतिकृषिम् ] रमसीय

चुन्दर (बाचा २.४.२.१) । पश्चित्रयमा पून [प्रतिक्षणकः] प्रतिविद्य प्रतिकार किचिति परिक्षणा स्वेतक्यां (प्रानः

पिकरमणया की [प्रतिक्रपणता] १ समा नदा सहतता वा साहत । २ समान नेप बारण (सत २६ १)। पिकरमा की प्रतिक्रपा एक दुबहर पुस्त

पाडक्स को [प्रतिकृता] एक दुवहर पुस्य की पानी का नाम (सम ११ )। पडिरोब दुं [प्रतिरोध] कुमरारोपण (दुव

पाडराव दु [प्रावराय] युनरारायण (दुप्र ११)। पक्षिरोह दु [प्रतिरोध] श्कावट (यबट या ७१४)।

या ७९४) । पश्चिमेद्वि वि [प्रतिरोधिन् ] धेक्नेवासा (धडा) ।

(१४४) । पश्चिम वर्ष [प्रति + सम् ] प्राप्त करता । वंश पश्चिमिय (तूच १ ११) ।

पडिसंस ई [प्रतिसम्म] प्राप्ति वास (सूप २ १)। पडिसंम्य वि [प्रतिसम्म] नवाहुमा सम्बद्ध

पाइक्रमा वि [प्रतिकृष्य] नवा द्वया । सः (ते १ वर्) । पश्चिम्प्रगाळ न [दे] बस्मीक कीट-विरोप**न्**त मृत्तिका-स्तूप (वे ६ ११) ।

पब्रिक्षम सक [प्रति + छम्] प्राप्त करना । पविकामित्र (उत्त १ ७) । संकृ पश्चित्रकम (सुम ११३ २) ।

(भूगः १ वर्षः प्रिति + क्ष्रमयं द्रम्भयं । पिढेळात् १ अपु धाप्ति को धान बेना । परि नावेण्ड्य (कातः)। नक्षः पिढेळानेमाण (एताः १ ॥ मनः चना)। सेष्ठः पिढेळा मित्ता (चनः १)। पिढेळात्ण न [प्रतिकामन ] वान बेना (रेना)।

पाँकिकिहिक वि [प्रतिकिकित] निवा हुमा 'सम्मं मंसे बुबारि पर्कितिहुम्मं' (वि १४)। पाँकिकीण वि [प्रतिकित्ती सम्मन सीन

पाडस्त्रण वि [प्रोवेस्त्रील] स्थ्यन्त सीतः (वर्गाव १६)। पडिलोइ एक [प्रति + लेल्ल्य्] १ तिरीलाण करणा केवाना । रिकार करणा । पडिलोइ स वक करा मत्र) 'प्रतेषु साधे पडिलोइ एवं प्रतेषु काष्ट्रण स्थानर्थ (सुधा १७ १)।

प्तवा काव्या व सामवंद (तुम १ ७ १)। वंक भूपाँह वार्च पडिलोह साम' (तूम १ ७ १६)- पडिलोहिका (भग)। हेक पडि लेहिकय, पडिलोहेका (भग)। कृ पडि लेहिकका (भोग ४ कम्म)।

पवितेष पुं [प्रतिक्षेत्रः] केवी पवितेषा (भारत, २६६)। पविक्षेद्रा केवी पवितेष्य (एव)।

पडिस्नहण न [प्रतिसंखन] निरोधण (प्रोच १ भा चंत)।

पबिलेहणया के पिरिलेहणा (उत्त २८, १) : पबिलेहणा की प्रितिलेखना निरोत्तरा

निकारा (सन)। पक्तिहरणी की [प्रतिक्तेकानी] साबु ना एक अपकरणा पुंचली (नन ६१)।

पहिनेहर वि [प्रतिसंग्रह] विरोजक वैक्नेशला (भोव ४)।

पडिलेहा की [मितिलेखा] तिरीक्तण धक जोतन (बीन ३ ठा ४, ३) कम्म)। पडिलेखि कि [पडिलामिक 1 स्थ

पश्चिमेदि वि [प्रतिज्ञलिक्] निरीतकः (तृष १ व व १)।

पंति पश्चिमसिय सम्बद्धीको वर्णीत (मनि)। वजनोधिय हैने पहिलाहिय (यमि १६) ! पश्चिमसिय वि विदिशास्त परिशास्त्री पश्चिमेह स्कामिति + बोधय ी १ वयाना। य बीच देता सबस्ताता बात प्राप्त कराता । भूमाह्या (ध्रमि)। परिचोदेद (क्या महा)। क्या. पवि पश्चिमय न प्रितिसयी भव, वर (परुन ७३ बोहिरजन (समि १६)। एंड्र परियोशिक 2R) I (नाट-मलती १३१)। केळ पविचोत्रिचे पश्चिमा कर प्रितिमा । मासम होना । पडि (मजा)। इ. पश्चिमोडियाम (स ७ ७)। भाषि (शी) (नाट-स्टना ४)। पडिशाइ ए प्रितिकोमी १ कोच सम्सः। पश्चिमारा व प्रितिमारा १ वंद, माप ६ जापति जानरहा (बढ्डा पि १७१)। (भग २४ %)। २ प्रतिविच्य (राज)। पश्चिमहरा वि प्रिविवाधकी १ वीर्व केने-परिभाम वर्क मिति + भास निम्तर बाला । २ भवानेवाला (बिसे २४७ दी। होता । पश्चिमसपि (शी) (नाट-पुण्या पश्चिम्य न प्रितिकोचली केली पश्चि 8 (8 kg बाद = प्रतिवीव (काल स ७ ४) । पश्चिमान सङ्गिति + भाग ौ १ उत्तर पश्चित्रक्षि वि प्रितिकाधिम् । प्रतिकाश प्राप्त देना । २ बीचना, क्ह्ना धपेने परिचा करतेवाचा (भाषा २:३-१ ८)। चीर्ति समार वार को। पश्चिमिण्य वि प्रितिभिन्नी श्रेषकः श्रेषकः पश्चिमोडिय वि [६विबोचित] विस्की प्रकि-(8 Y E) I बीब किया पदा हो बहा (खामा १ १) पश्चिमिन्न वि [प्रतिभिन्न] मेद-प्रत्य क्स)। (पव---पाका १६ केवल ६४२)। पहिस्ता वृद्धितिसीग् भेग विकास (चे ध पिंडमुक्षंग पू [प्रतिभुश्रङ्ग] प्रतिस्थी 183 सर्वम---वेश्वय-खंपट (कर्प'र २७) । पढिसंज बक प्रिति + शश्री चौलना पश्चिम प्रतिमी वाभिक्यर वनानत इटल । हेक- पश्चिमीखर्र (वर ४) । पहिसंद न प्रितिसाण्डी एक वस्तु की क्रणेनामा मगीतिया (गाट-वित ७३) । पविभाग वृद्धि प्रतिसद्दी स्वालस्य निसा केपकर इसके वसने में बरीनी माती चीज 'पश्चिमी पचारल' (पाध)। (स २ % शहर ६ १% )। पहिस्त पर प्रिति + भ्राशम् । भ्रष्ट नरमा पिक्रमोड वि शिविसोशिन । परिवेद करत-च्युन करनाः 'पंचायो य पडिशंस्टड' (च ६६६)। नमा 'धकावपत्रिमोद्वीत' (धाचा २ ६ 1 > (1 x x) 1 पश्चिमगग वि [प्रतिसम्त] जाया हुन्छ पश्चिम नि [प्रसिम] धमल तुल्य (मोह पत्तायित (भीत १६६)। पढिसड १ [मितिसट] प्रतिपदी नोबा (व 9X) 1 १६ ७२ बाध १६ महि)। पश्चिम वैको पश्चिमा। हाइ वि विशासिन्। पढिभाज सक प्रिति + सण् ी कतर देना १ काबोरमर्वं में राज्ञेताका । २ नियम विशेष अराह देशा । पहित्रसमूद (बहुछ क्या सूपा में स्थित (पराह २, १---पथ १ 81 K. २१६) चडिमणामि (महानि ४)। १--पत्र २१६)। पश्चिमीत सक जिति + मन्त्रम ] कतर पदिमणिय रिमित्रभणिती अलत्तील देना । पडिमंतेष (क्त १००३) । जिनहा बतर दिया प्रया ही वह (बहा गुगा ۲ ) i पश्चिमस्य पूँ [प्रतियस्स] प्रतिपत्नी न्या र्पाटभत्रिक वि प्रितिमणित् । शिरावत (मरि)। (कमें र् १x )। २ त. प्रलूतर, निरावरह पश्चिमा क्ये [प्रतिमा] १ मूर्त्त प्रतिक्रिया (बर्नेसे १)। ·निएपडिमार्वेशकोक पश्चित्र (बतनि १) पहिमम कर मिनि परि+ अस् ] कुनवा पामाना १३११४)। २ वाबीस्तर्पः ६ वर्षेण्य वर्षाः चंद्रः शत्यः बङ्ग्यापिय शब्दः पैन-शासीलः निवम-विशेष (वर्णः २ १)

सम १६, इ. २. ३ इ. १)। "गिक्र न िशकी मन्दिर (लिच १२)। देखो पविर्मा। पश्चिमाण न प्रिविमानी क्रिक्ते मुक्स धारि का दीवा किया नाता है बहारती मासा धारि वरिमाग्र (धरा) । पश्चिमान प्रितिमान शिवमा, प्रतिकित (बेस्ट ७६) । पश्चिमि ) एक मिति + मा १ तीव पश्चिमिण किला नामकल्या २ किनदी करना । कमै परिमिष्टिकड् (महा) । क्ष्मक पश्चिमिन्जमाण (चर्व) । पडिदुव एक [प्रति+ सुभू] आदेवना। हेक पहिसंचित (व १४ २)। पडिमुंडणा भी [प्रतिमुण्डना] निपेव निवारङ (बह १)। पश्चिमुक्त वि [प्रतिमुक्त] बोहा ह्रम्य (वे 📞 1 (93 पश्चिमोत्रमा 🖈 मितिमोचना 🗫 स्ट (R & X4) 1 परिमोक्सज न [प्रतिमोचन] कुकाय (व पश्चिमीयम वि [प्रविमोश्वक] कुल्क्सच करने पाचा (पान)। पश्चिमोशन देवी पश्चिमोक्कन (बीप) । पश्चिमक रेको पश्चिम (प्रापा) । पश्चिमक म [प्रतिकृत कुरुका-विशेष, चैए पूर्वी बिंब किप्पादती हैक्सी पश्चिमी क्लाबुक्के व शवानुनि क्वालु' (महा) । पश्चियमात्र व स्वितिश्वागरजी बन्हान्द धानर (धर्मसे १ १६)। पश्चिमक केली पश्चिम = प्रति 4 इ । पश्चिमस्य न [प्रतिकरण] प्रतोकार, इवाज (Fer 440) : पश्चिमरिक्ष वि प्रितिकरित् विकेत सेवा किना ह्या (नीड् १ १)। पविषा की ब्रितिका है बहेरन विकास-विकार (क्ष भाषा)। २ समियाव (ध. र. २—पत्र ११४)। पश्चिम ध्यै पिदिरा क्य-भिक्षेत्र 'बुपमाद्या च गुनुता वहस्था तह ॥ कोक्ता विधिरे ।

पश्चियाइक्स-पश्चितेहि क्तो पुरवेहि विखा वैशा पश्चिमन संपत्रह, (यबा ११६) : पश्चिमाइक्स एक जिस्सा + समा रे करना । पश्चिमादस्थे (पि १६६) । पश्चिपाइक्सिय नि प्रिस्वास्त्राद शिक्ष परित्यकः बोहा ह्याः (हा २, १ शतः प्रका क्स' विपार १३ चीप) । पश्चिमात्रय न दि प्याजही पर्वाण के नीचे दिया बाता वर्षे धारि का एक उपकरण (सावा १ १७--पत्र २३ )। प्रमुख बाह्यार, बहुच शानंद (मीप)। १७-- पच २६२ थे)। 20 Ex) 1

पश्चिपाणंद वे [प्रस्थानन्द] विशेष यानन्त्र, पश्चिमागय व [बे पटतानक, प्रयाणक] पर्यास के भीचे रक्षा जाता वस सावि का एक प्रवृत्तवाधी का काष्ट्रस्य (सामा १ पश्चिमराजा की [मितिबारणा] निपेत्र (पेत्रा पश्चिपास्र यक [क्] विद्रमा प्रस्ता होना। g- 'पश्चियासरेयक्व' न नगाइनि पास-चाएवि (भाक २१, १४)। पश्चिर वि [पविच् ] गिरनेवाला (हुना) । पश्चिरक केलो पश्चित्य (गा ५१ स) से ७ 1 (35 पडिरंबिज वि [दे] फन द्वरा हवा (दे 4, 48) 1 पहिरम्भिय नि [प्रतिशक्ति] निवनी एका भी गई ही वह (मवि) । पंडिएक पं [प्रतिएक] प्रतिप्कृति, प्रतिराज्य

(बरह या देदः बुद १ २४४) ।

(नडर)।

1 (FOY 17 3

यहिराय वे प्रितिरागी नानी रखनन

'क्लाइ१ वहरावद्वियात्ररोट्टिक्जिक्टोस्परियार्थं ।

भाषोस**ंतनहरं न क्**लिहचस्य द्या अवर्श

पहिरिगाम [रे] रेको पढिरंजिम (पर्) ।

पश्चित् धक [प्रति + कृ] प्रतिव्यक्ति करता,

प्रक्रियम्ब करना । यहः पश्चिकार्थनः नि १२.

पब्रिसेय ? सक मिति + रूप है शहना पहिरुम | बर्जाना । ए ब्याते वरना । पडि-

बैमइ (से व ११)। मझ, पहिर्द्धांत (से 11 X) 1 पश्चित्र वि प्रितिकद्वी रोका ह्या, मटकाया हुधा (सूपा < १० वका ४)। पश्चिम्ब्य ) वि शिक्षिक्ष र रम्य सुन्दर, पश्चित्रप र पार्ट मगोहर (सम १९० उनाः धीप)। २ स्पनान् प्रशस्य रथनाता यह धाकृतिवामा (धीप) । व धशाबारस क्याबास । ४ शुक्रम क्शवासा (बीच ३) । ५ याग्य, चिंचत (संबच्छ सम १६ दस १ १)। ६ सरग्र स्थान (शाया १ १—पत्र ६१)। ७ समान रूपवाला सहरा धाकारवाचा (उत्त २१ ४२)। ≂ म. प्रतिक्रिम्य प्रतिपूर्तिः 'कस्यानि विचलसय कस्या नि प्रवस्ति वस्स पन्टियं मिहिज्ञखं (बुर ११ २६८ राम)। धमान क्य समान बाहती 'तुम्ह्पडिक्य-बारि पासह विश्वाहरतुवार्ड' (मुपा २६८) । पु समा-विरोध मूत-निकास का बतार विशाका धन्त्र (ठा२, ३---पन ax)। ११ विनय का एक मेद (वय १)। पविक्रमंसि वि [प्रविकृषिम् ] कालीय मुक्द (माना २ ४ २ १)।

पश्चित्रया प्रामितिकप्रकी प्रतिशिष्ट विशिष्ट 'विविधि पश्चिमा स वेषक्या' (धारा 1R) | पश्चित्रवणया श्री जितिक्रपणवा १ समा नता, सहराता या शाहरय । २ समान वेप नारण (क्य २६ १)। पश्चित्रमा की [प्रतिकृषा] एक कुसकर पुरुष की पानी का नाम (शब १६ )।

पश्चिम प्रितिरोपी प्रचलिपण (क्रम XX) 1 पहिरोह पू [प्रतिरोध] रकावट (वडक था ७२४) ।

पंक्रियोक्ति कि [मंतियाधिन ] रोक्नेपाना (पडर) १ पविश्वेभ कर मिर्वि + सम् ] प्राप्त करना । शंह पविश्वयिय (तुव १ १३) । पहिस्तम प्रतिसम्य जाति नाव (न्य

२ १)। पृष्टिसम्य वि प्रितिसम्ब स्वाह्मा सम्बद्ध ( t & = 2) 1

पश्चित्रमाख न दि । भवमीक कीट-विरोप-कुत मृतिका-स्तूप (वे ६ ६६) । पश्चिम चर्क प्रिति + सम् ] प्राप्त करना । पिक्रमेन (उत्त १ ७)। संक्र पश्चितकम (सपर ११ २)।

परिवास ) सर्वा प्रति 🕂 त्यमय सम्भय 🖥 पश्चिमाइ 🛭 शाबु मादि को दान बेता । पर्कि साहेरबड़ (कास)। बकु पश्चिद्धार्थमाण (सामा १ १ मन जना)। यह पहिस्स भित्ता (मद = इ)। पविस्मद्दण न मिलिस्समन निन्न हेना (रंपा) । पश्चिकि हेल वि ब्रितिक्रिन्दि हो सिका ह्या 'धर्म गर्व इवारि परिविक्तिमं' (वि १४)। पिक्सण वि प्रितिकीनी सम्बद्ध सीन

(वर्मीव १६)। पिक्केट् एक [ प्रति + होसाय ] १ निरीयण क्छा देखना । २ विनार करना । पश्चिमेक्केट वक क्या भए) 'एतेनु बाए पनिषेड् सार्य एत्सा काएस व म्यवर्षे (सम १ ७ २)। र्शक मृत्येंड कार्य पश्चिमेड सार्थ (सूच १ ११)- पडिलेहिचा (म्प) । हेइ. पडि होहिचयः, पडिलेड्डेचय (इप्प) । इ पडि मेहियम्ब (बोव ४३ क्य) । पडिसद १ मितिसंस्त्री देवी पडिलेडा (बेहर, १६६) ।

पश्चित्रहम् देशो पश्चित्रहम् (सन्)। पडिलेड्ज न [मितिहोसान] निर्धेशल (धोप ६ मा संत्र}। पडिलेह्णया देवी पडिलेह्णा (उत्त २६,

पश्चिम्पण भी [प्रतिसेशना] निरीवण निष्मण्य (घग) । पविश्रद्भी भी [प्रविज्ञसनी] सबु का एक

जनकरण पुंचली' (पन ६१)। पश्चित्रह्य वि [प्रतितरम्ब ] निरीत्तक वेक्वनेवाला (शीप ४) ।

पहिसेदा की [प्रतिसंखा] निरीक्षण बन-शोकन (बीम ३ टा ४, ३) कम) । पश्चित्रेदि वि [प्रतिहेलिन् ] निरीनक

(ब्रुप्त १ १ १ १)।

देखा इस्र (बना)।

पश्चितेहियण्य देशो पश्चितेह । प्रविस्त्रेम वि [प्रविस्त्रेम] प्रविद्ध (भव)। २ किपरीत रुक्तस (याका २,२२) । ३ न परबारानुपूर्वी उत्तटा क्रम 'बर्ग्न बुद्दासुखी मेण तह य पहिलोमधी यने नरने (सूर १६ ४८। निष् १) । ४ व्यवहरू का एक होप (बसनि १)। १ यपनाद (यन)। पश्चिमश्चाय प्रितिकोमनिस्सी गर निरोप बारसमा के स्टब्स या प्रतिकारी की इदिश्न बनाकर रिया बादा बाद-साकार्य (ਕ ६)। पश्चिक्की की दिं] १ कृष्टि वाड़ । २ शवनिका, परवा (दे ६ ६१)। पश्चिम देखो पर्स्स = प्र + दीपम् । पत्रिनेद (E L 40) 1 पश्चित्रहर व प्रितिवैर विरका वरका (मनि)। पिकदा देको पिक्रिया (पण २७१)। पडिपेचण न [प्रतिबद्धवन] वक्ता कर विविच्छात्र (परम २६ ७३)। पहिचंत देवी पहिपंच (वे २ ४%)। पृष्टिकंच देवो पृष्टिकंग (धीर)।

पडिबंस पुं [प्रतिसंश] ब्रोट बान (राम) । पश्चिमा स्ट प्रिति + वच् । प्रश्नुतर देना कवार देता । परिचक्द (मर्वि) । पश्चिमस्त्र पुंसितपर्शी १ रिपु दूरवन निरोधी (पापन वा १६२ मुंद १ ६६:२ १२६, से १ ११)। २ सम्ब-विशेष (पिन)। ३ विपर्गंद वैपरीक (स्वरा)। प दर्शकरूप नि मितिपश्चिकी विकास पत्त-बाना विदेवी (द्यु)। पश्चिम सक मिनि + झन्द है बायत जला।

पश्चिम्बद् (पि ६६ )। पहिनम्द्र देवी पहित्रकरा, बाह शानकारत बीमा परिचन्द्रोहिंग परिवदलीं (या ६७६) । पश्चिम् सक् मित्+पद् । स्थीकार

करना धोबीरार करना। परिवरश्वतः, परि बरजप्(भार सहार अल्बु १४१)। भन्नि पदिवरिक्रस्तामि पदिवरिक्रम्बामी (पि ३३७ थीर)। वर पश्चिमद्रामाय (पि १६३)। धर परियञ्जिका परिविश्वाल

रमा)। क्षेत्र पश्चिमक्रियं पश्चिमक्रियप् पश्चित्रची (वैदा १० डार १ करा रंश)। इ पहिचक्तियुक्त पश्चिमुक्तियुक्त (बस्य ६२ वस्य ६८४ १ १)। पश्चिमकाय न मितिपद्ती लोकार, मंत्री कार (श्रुप्र १४७)।

पविकाल गिरियानी मधीकारख स्मीकार करवाना (कुम १४७) १०६)। पविषयान्यां की मिलिपदाा न्त्रीकार (संबिर २३२)। पश्चिमव्ययमा भी [प्रतिपादना] प्रविशक्त (शवि ११९)। पश्चित्रकाय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करते नावा 'प्र तान क्युग्रनप्तपडिपण्डमी ति' (E % %) | पश्चितकारण व [प्रतिपादन] स्वीकारख स्वीकार कराना (कुत्र ६६) । पश्चिमकानिय वि शतिपानित् स्थीकार करावाहमा मद्या)।

पश्चिमका न निर्मिषककी एक नकार का रेग्रमी क्यहा (क्या) । पडिवडबावज नि शिविवर्षापञ्जी १ वर्षाः 👫 पर प्रवे स्थीनार कर बन्धकर क्लेकाता । २ बनाई के बक्बे में बनाई देनेवाला। और ।पद्मा (क्यु) । पश्चिमण्य नि[प्रतिपन्न] १ प्राप्त (क्ल)। २ स्मीक्रयं यंपीक्रयं (पड ) । ३ माधित (थीपा ठा ७) । ४ विक्ते स्टीकार किया **डॉ** चा(अ४१)। पश्चिम पू [परिवर्त्त] परिवर्तव (तह. तृच्छ 1( SF

पश्चिमञ्ज्ञम वि [प्रतिपद्य] स्वीतः स्व (पवि)।

पश्चिमत्तम देवो पश्चिमत्तम् (नार) । पश्चिमित्त की [प्रतिपत्ति] १ वॉर्पण्डांस । २ अक्टी प्रकार (शिथे १७)। ३ मण्डि खबर (परम ४७ १) ११)। ४ सान (ग्रंद १४ ७४)। ५ सारट, वीरव (नहा)। ६ स्मीपाट, संबोधार (बाँचे)। ७ नाव, प्राप्ति; 'बम्बप्रविष्विश्वेत्रक्तलेल' (बहा) ।

< नताश्वर। ६ विश्वय<del>ु वि</del>रोध (बन १ ६)। े

ब्रीवन मावि बारों में से किसी एक बार के करिये समस्त होसार के बीवों को बानना (कम्म २ **७)। समास** ए किसासी यत-जल किरोप-परि मापि हो नार हाएँ के जिप्ते जीवों का क्षान (क्रम १ %)। पश्चिम्तं देखो पश्चिमञ्ज । पश्चित्रक्षे केलो पश्चित्रक्ति (प्राप्त)। परिवद्यायभा देशो पश्चित्रहरामम । स्ट. विञा (रंग्र)। पश्चित्रका केको पश्चित्रकारः 'पश्चित्रस्पामारो मुप्रियाण व डोइ सं डोड' (प्राप्त ३) साम्य १ शास्त्रकात्र ४ १७-४ ६१६ केर २६ पाम)। पश्चित्रक्षिय (ब्ल) देखो पश्चित्रभ्य (धरि)।

पश्चिम्य यक [प्रति+पत्] द्वीर जानर

पडिचय यत्र प्रिति + शत्र विचर देखाः ~

विरुत्त । वक्क पश्चिमवसाज (सामा) ।

समि पवि<del>षक्ता</del>मि (सूम्र **१** ११ ६)।

पश्चिम्यण न [प्रतिक्चन] १ ऋषुत्तर व्यवस्य (या ४१६। स्ट्रंट १२६। व्यक्ति) । २ माचैल, जाबा चेहि ये पहिनक्एँ (धायम) : १ तूं इरिजेश के एक राजा का नाम (नवम २२, १७)। पडिक्या ध्ये [प्रतिपत्] पट्या पदाकी प"ची तिचि (हेर ४४० र ६ वर्)। पश्चिमिय वि [प्रस्युप्त] फिर हैं बीका [मा ( 4 24) 1 पश्चिम् यक [ प्रति + वस् ] निरात करनाः बह- परिवर्तत (वि ३१७) बाट-पुन्य 441) 1 पश्चितसभा प्री प्रितिश्वपम् । श्रवा स्वतन हैं थी नोत की कृष्टी पर स्थित धीन (पन w )। पडिवड् एक प्रिति + वह ने बहुत वरता. क्षेत्र । कथक पश्चित्रसमाज (क्या) । पविषद्ध वैची पश्चिपद्व (ते ३ २४-८ १३)

पहिचह पूर्वित्रय परिवयी वन क्ष्मा

पञ्चम ७१, २४)।

(पक्य ७३ २४)।

पश्चिमाइ--पश्चिसंघमा पश्चिमाइ वि प्रितिवादिन् प्रतिकार करते-बासा बादी का विपक्षी (मिन ६१ व)। पढिवाइ वि [प्रतिपादिम] प्रतिपादन करने वासा (सवि ११ ६)। पश्चित्राइ वि [प्रतिपातिन्] १ विनरगर, नष्ट होने के स्वमाववाची (ठा २ १ घोष **४,३२: उर पू ३,४८) । २ सम्मिशान ना** एक मेद फुँक से शीरक के प्रकाश के समान एकाएक नट होनेवाचा धविषक्तन (ठा ६ कम्म ६ ८)। पश्चियाद्वज वि [प्रतिपातिष्ठ] १ फिर से पिरामा हुमा। २ लष्ट किया हुमा (मीव)। पृष्टिबाइअ वि [प्रतिपादित] जिसका प्रति पादन निया हो वह, निक्पित (सन्द्र १३ EYE XYE): पश्चित्राङ्ग वि [ प्रतिवाषित ] १ किवने के बार पड़ा हुना। २ फिर से बॉबा हुना (東京 284) 1 पडिवाइकम ? देशो पडिवास = प्रति + पश्चिताइयव्य र बाबन् । पश्चिताहय देखो पश्चिताह = प्रतिपादिन् (खाँव = () 1 पश्चित्राज्ञि देखो परिवाडि (यः ११ )। पश्चिवाद (शौ) शक प्रिति + पात्रय ] प्रतिपादन करना निल्मया करना । पश्चिमारेवि (नाट—एना ६७)। **इ**. पश्चितात्रजिङ्ज (धनि ११७)। पश्चिमादय वि शिविपादक । प्रतिपादन करनेपाना । की "दिश्रा (नार--- वैत ६४)। पश्चिमाय सक प्रिवे + वाच्यू ] १ किस्तो । के बाद वसे पढ़ केगा। २ फिर से पढ़ लेगा। संक पंडियाइकण (कुम १६७)। ह पश्चिवाइयव्य (हुप्र १६७) । पश्चिमाय सक [ प्रति + पादम् ] प्रतिपादन करना निरुप्त करना । परिवासनीत (सुध \$ 28 RE) 1 पश्चिम पू [प्रतिभाव] १ पून:-पवन फिर से मिरना (नव ३६)। २ नास, वर्गन (विसे १७७)। पडिचाय दूं मितिबाद है विशेष (माँब)। पहिवास पू [ प्रतिवात ] प्रतिकृत पनन (धावम)।

पहिचायण न [प्रतिपादन] निकास (ग्रुप 284) 1 पश्चितास्य देशो परिवारः न्यविकारमपरि वरिधौ' (महा) । पश्चिमास्त्र सक प्रिति + पास्य ] १ प्रतीका करना बार बोहना। २ रहास करना। पश्चिमासोइ (हूं ४ २१६)। पश्चिमासेद (शो) (स्थप्त १ )। पित्रासह (ग्राम १८३८)। पष्ट प**डि**वाळअंत, पडिपालेमाण (नाट--रामा ४वः सामा १, ६)। पश्चिमाळण न प्रितिपासन् १ फाल । २ प्रतीका मार (नार-भहा ११८) का ૧૧૧) ા पश्चिमास्त्रिज्ञ मि [ प्रतिपासिय ] १ रहित । २ प्रवीक्षित विसकी बाट देखी गई हो पड (मक्त)। र्पाञ्चवास वूँ [प्रतिबास] यौवय धारि की विरोप क्रकट बनानेकामा पूर्ण धारि (उर = १। समा ५७)। पविचासर न [प्रतिवासर] प्रतिषित, क्र रोज (यडक) । पश्चिम्रसुदेव पू [प्रतिवासुदेव] शापुदेव का भक्तिभ्रतीस्थना(पञ्चय २ २२)। पश्चिमिकण एक प्रितिषि + क्षी विचना। पविविक्तिसार्थाः (साक ११ पि १११)। पिंडियेग्जा सी [प्रतिविद्या प्रतिवद्या विद्या, विरोधी विद्या (पिंड ४६७)। पश्चिमित्वर प्रै प्रिविविस्तर परिकर, निस्तार (सुधार २ ६२ दी राज)। पश्चित्रद्रंसण न [प्रविविध्यंसन] निनात । श्रीच (श्राम)। पडिविष्यिय न [प्रतिथिप्रिय] प्रतकार का बरका बरते के एवं में किया बाता धारिए (पदा)। पश्चित्रिरङ्ग औ [प्रविधिरवि] निवृत्ति (पर्यक्र 8 8)1 पश्चिषरय वि मितिषरत निवत (धन ११) समार २,७५, धीप, चन्)। पश्चिमसम्ब सङ [प्रतिवि+सर्जय] निसर्वेन करना विद्या करना । पश्चिमिस्परवेड (कप्पा चीप ) । मन्ति, पश्चिमसम्बेद्धिति (पीप) ।

पहिलिसमिजय वि प्रितिविसर्जिती विवा किया हमा विस्तिति (सामा १ १---पत्र **%** ) ( पश्चितिहाय न प्रितिविधानी प्रतीकार (स १६७)। पश्चिमुहम्ममाण देखो पश्चित्रह् = प्रति + यह । पश्चिम्त्रावि प्रित्मुक्ती १ जिसका उत्तर हिया गमा हो वह (धम ६ ज्य ७२८ टी)। २ व. प्रस्पुत्तर (ध्य ७२ व टी)। पडिवृद (शौ) वि पिरिवृत्ती परिकृति (धिम १७) नाट- मुच्छ २ १)। पश्चिम् 🖞 [प्रतिब्युह्] म्यूह् का प्रतिक्ती ब्बार, सैन्द-रचना-विशेष (धीरा) । पश्चित्रहण वि प्रितिक हर्ण १ वहनेवाला (बाचा१ २ ४, ४)। २ त वृद्धि, पूर्षि (याचा १२ ६४)। पबिवेस ( वि] विशेष फॅक्ना (दे ६ २१)। पिंडवेसिक वि [प्रातिवेरिमक] पहोसी पहोस में खतेवाला (वे ६ वे सुपा ४,६२)। पश्चिमोड्ड देखो पश्चिमोड्ड (स्ए) । पहिसंदा की प्रितिशासी भय राजा (पदम ६७ ११)। पहिस्ता एक प्रितिसं + क्या । व्यवहार करना व्यवकेश करना । पश्चिमंश्वाए (श्रामा)। पिंडसंखिव एक [ प्रतिसं + क्षिप ] वंतेप करमा। संह- पश्चिसंदिविष (भग १४ ७)। [ प्रविसं + सेपय ] पश्चिमीयेव सक धवेसना समेरना। वह पहिस्तिवेमाण (धव ४२)। पडिसंचिक्स सक [प्रतिसम्+ईस्] विन्ता करता । पश्चिमित्रवे (उस २ ३१)। पहिस्ताल धक मिदिसं + क्वास्त्य ] ज्योगित करना । पश्चिमकोण्यापि (धाचा) । पिंदर्गत वि [परिशास्त] कान्त, उपरास्त (8 F PP) 1 पबिसंत वि [प्रतिभाग्त] विमान्त (इह १)। पश्चिमंत वि [के] १ प्रतिदूत । २ प्रस्तिमत. धस्त-शब्द (बे.६.१६)। पश्चिमं ) एक [प्रतिसं+भा] १ फिर पडिसंबंधा है संबंता। २ वर्तर देता।

पश्चिम बन्ह [ प्रति + शम् ] विच्त होगा।

पश्चित्तरीर न [प्रतिशारीर] प्रतिपूर्त्त 'पट्ट

पश्चिमकाना को जितिसम्बद्धी पहर विशेष

पहिसद वक्त प्रिति + हाय ी शहर के बक्ते

र्ने शाप केना "ब्रह्मध्यमें तिन संपत्ति-

पश्चिमन चन [प्रति+मृ] १ प्रतिका

करता। २ स्वीकार करता। ३ यादर करता।

पडिसक्त वि विदिसपली विदेवी दन्

पश्चिम् । यक [ द्वम् ] राज्य होना । पश्चिम

पश्चिमा बन्ध किया जानना शनानन

होता। पडिवाद पर्वितीय (देप १७८)

इएंटि एक्तावि न य पविस्तरित (उप)।

ड पश्चिसवयीय (श्वर)।

(बननि ६ १८)।

(R × 240)1

भट्ट गरमा (भव १)।

(पुगा) ।

मह (हे ४ १६७ वह)।

क्यो पडिसरीर व' (वर्गीव १) ।

युक्त (सम्मत्त २१=) ।

पश्चिमद (से ६ ४४)।

क्करा (वर्ष १)।

(कम्म ४ ७६)।

= {X)|

**₹**₹} I

835

६ सनुरुत करमा । पश्चिमेवर् (उन्त २७

१)। पश्चिमकार (सूच २, ६ ६) । स्ट्रेस

पश्चिम ) सर्क [प्रतिसं + भा] १ व्यवस

पश्चिमीया है करता । २ स्वीकार करता । पश्चि

पहिसंसद न मितिसंसको संबुद्धः सामने

पहिसंद्राय वं प्रितिसंख्यपी प्रश्नुनर, जनाव

पश्चिमंद्रीण वि प्रितिमंद्रीनी १ धम्बङ

सीन प्रच्छी तरह बीन । २ निरोध करते-

बाना (छाप्र २ चीप)। पटिशा चौ

["प्रतिमा] श्रोष सार्षि के निधेष करने की

पडिसंबिक्त एक जितिसंवि + इच्ही

पहिस्ति । ७० मिलि सं + वेदयी

पहिस्तिय । धतुन्य करना । पत्रिविषेट

पहिसंसक्षमा ध्यै [प्रविसंसाधना]

धनवजन धनकान (धीप) भग १४३ ३३

पडिसंहर वर [प्रविसं+ह्र] १ निवृत्त

करना । २ निरोप करना । परिसंहरेण्या

पहिमद्भन पितिशहन परिशहन ।

चीमान्ति पाउदमान्ति (शास) ।

सङ्ग्रामा । १ विमाद्यः "निरन्तरपण्डिञ्ड-

प डिसडिय रि [परिशटित] को धन का

हो जी क्लिंच जीलीहमा हो यह (पिंड

पहिसन्त पुं प्रिविशाली प्रविश्वाली प्रतान

पश्चिमस्य व मितिसार्ज । श्रीतरून वन (निश

पहिनद् 🖠 [प्रविशम्ब] १ प्रविन्ति (परन

१६ १३। वर्षि) । २ स्टब्स् प्रजूषक अवाव

मैधे (तम १४९ पत्रमे ४ १४६)।

विसंधियमंदि (मण शि ४६ )।

विभार करना । पश्चिमेनिन्छे (उठ २ ६१) ।

२ २ वहा वर दका देश वेश)।

'बच्चो पहिस्तेनहं पत्रजोयस्तं (महा) ।

(मि १ २६) ११ ६४)।

त्रतिहा (धीप)।

1 (4 28

(स्री)।

\$ (w) 1

(परम १ ११)।

(गुम १ ७ २ )। पहिस्तक देवो परिसद्ध। परिसन्तक

संबद् (पञ्च ७)। संङ पश्चिसंभाग (सूम

पहिस्थाय (क्य २:२ २१)।

वसा (दे ६ १७) । पश्चिसार सक प्रितिस्मारय ने बन विस्ताना व पश्चिमारेश (मन १४)। पश्चिमार धक प्रिति + सारम् विकास श्वाबट करता। पश्चिम्नरेड (हो) कर्प-

इटाना, अन्य स्वरूप में से आता। पश्चिप्रदेश

पक्रिसार दु[दे] १ फ्टुला। २ कि निपूर्ण

धनस्यतः । ३ किनातः । ४ पराडः मुख्ताः (हे

पश्चिमिर्द (शौ) (क्यू) ।

(8 2 9)

बद्ध **स्त्रुर (दे ६** १६) ।

पश्चिमगहर एक प्रितिसमा + हा । गोधे खींच सेनाः थिद्धि पश्चिमाहरे (दस ८ पहिसय र् प्रतिक्रय । क्यायय साम्र शा निवास-क्वान (क्यू २, १ टी)।

पश्चितार स्थ [प्रति+ सारव्] विकास पश्चिमर वै ब्रितिसरी १ वैश्व का क्याकाय (प्राप्त)। २ इस्त-सुद्धः वह वामा को विवाह से पहले बर-बबू के हान में राहा**र्य वांक्ट्रे** हैं: पश्चितरण व [प्रतिसरण] बंबरा (र्गवा पक्किसर प्रतिसारी १ समावट। १

> १ २ दा दे ६ ४६)। पश्चिमार वे प्रितिसारी चपसायक (हे १ प्रक्रियारण न प्रिविस्मारण । यह विनाध (**44 ?**) :

> पिंडसारका 🛍 [प्रचित्त्वारका] संस्थाक (भग ११) ( (\$ 4 48) i

**२२)**।

पत्र ६६) । श्रेष्ट पविसाहरिचा पश्चिमा-

≅रिय (खल्बा १:१: मा १४ ७)।

पश्चिमद्भारण न मितिसंहरची १ समेट-र्षेक्टेच ३ ९ विकासः 'बीयदेक्तेस्वापादकाहर

पश्चिमारिक वि दि रुपुत ग्राव विना श्वमा पश्चितारिक है [प्रविसारिक] १ हर हिमा

इया क्यसंचित (से ११ १) । २ विकासित (वे १४ १०)। ३ पराज्या (वे ११ पविद्यारी की कि निमान परदा (दे ६

पहिलाइ का मिति + कम्मी क्लर देश है पश्चिम्राब्रिका (सुग्र १ ११ ४)।

पडिसाइर वक [प्रविसं + हू ] नित्त करमा परिसद्धरेण्या (स्य २, २ ४१)।

पहिसाहर तत्र प्रितिसे + हा १ स्वेबन्स, समेळ्या । २ मारब से बेना । ३ ठीं बे

रुप्यपं (क्य ११--स्थ ६६६) ।

नाचा। पश्चिद्धस्यः (शीपा द्यान्यः १ १---

पडिसाह एक मिति + शायम परि

पश्चिमाइछ नि दि निषका नता नेठ पता

क्षी, पर्वर वद्धवाला (दे ६ १७)।

शास्य ] १ तक्षमा । २ पत्तरामा । ३ वास

करमा। पश्चिमार्शित (भाषा २, १२, १ )। र्षक्र, पहिसाहिता (बाना २ १६, १ )।

पहिसाहका को विरिहाटमा । भूत करता,

पश्चिमाम वक शिम् ] राज्य क्षेत्रा । पश्चिम-

पहिसाय है [शान्त] राज्य राजनान्त

यद्विमिद्धविदि] १ भीत ब्राह्मसा । २ भन भूटित (दे६ ७१)। पहिसिद्ध वि [प्रसिपिद्ध] निपिद्ध निवारित (पाध प्रव धोव १ दीः संस्)। यहिमिद्धि भी वि प्रतिसर्गा (वह )। पहिसिद्धि औ प्रितिसिद्धि १ धनुरूप सिक्ति । २ प्रतिकृतसिक्ति (हे १ ४४<sub>।</sub> यह )। पहिमिद्धि रेजो पहिएकद्वि (संशि १६) । पहिमिस्रोग र् [प्रतिरस्रोक] स्मोक के उत्तर में बड़ा गया श्वीक (सम्बन्त १४६)। पश्चितिययञ्ज द्रं [प्रवित्यप्तक] एक लाज का विरोबी स्वप्न स्वप्न का प्रतिकृत स्वप्न (कप्प)। पहिमीसञ्ज ) न प्रिविशीपैकी १ शिक्षे पिंडसीसक वेष्ट्रन पन्ही (बय्यू)। २ सिर के प्रतिका सिर, निसान (पाटा) धावि का मनाया हुमा सिर (पस्ह १ २—पत्र ३ )। पडिस्ड र् [प्रविभिति] १ ऐरवत वर्ष के एक भागी मूलकर (सम ११३)। २ अरहान्ने में करपर एक कुलकर पुरुष का नाम (पराम R % ) i पहिसुज सक [प्रति + भू] १ प्रतिज्ञा वरना। २ स्वीकार करना । पडिमूखह<sub>ै</sub> परिमुखेर (धीप क्या छरा) । कह पिंडसुजमाण (यद १३ वि १ ३) । संह

चीम्बुणेर (सीर क्या छा) । कह वीक्ष्युत्रमाण (वर ११ ति १) । कह पिक्ष्युत्रमाण (वर ११ ति १) । कल पिक्ष्युत्रमाण (वर १५०) । देर पिक्ष्युत्रम्य (प्र१६०) । पिक्ष्युत्रम्य की न [मित्रम्यण] १ नृत्रमा नृत्रम्य क्या नित्रम्य (वर १) । ती व्या (वर १) । २ वस्तु (वंश १२ ११) । विक्युत्रमा की [मित्रम्यण] १ संसीचार स्वीरार । २ मुन्धिला का एक क्षेत्र मावार-वे-देश्यामी किया साने वर क्या सीरार चीर समुक्षीन्त्र (वर्ष १) । विद्युत्रमा की [मित्रमूच्य] नानी रिक्स् सूच्या म्या नित्रमा (क्यान्त्रमुच्या) (क्ष १ देन्यन ११)

यिन्स्ति रि [र] प्रविद्रत (६ ॥ १ )।

पिंदसुख वि [परिपुक्त] बायमत गुढ (भाग द ०)।
पाँडसुम वि [प्रीयमुन] रे स्थीवत संगीवत (धा व रेस)। र म संगीवतर, स्वीवतर (धा व रेस)। रेको पाँडस्सुम ।
पाँडसुमा रेको पाँडसुमा = प्रतिस्तुत (परह्
रे र — पत्र रेस)।
पाँडसुमा की [प्रतिष्कृत] प्रथम्य-पिरोय
एक महार स्री रीता (का रे की — पत्र

पश्चिमुहरू पूं [प्रतिसुभट] प्रतिपत्नी बोडा

पश्चिम्यम 🕻 [प्रतिमृष्य इ] एक्वरों की एक

बेणो भवर-द्वार पर रहनेवाला जानुस

पश्चित्र वि [पे] प्रतिरूक्त (दे ६ १६ प्रकि)।

पहिल्र पू [प्रतिमुच ] सूर्व के सामने देखा

80X) I

(काम) ।

(वय १)।

बाता संपातादि मुक्क द्वितीय सूर्व (प्रस् पहिस्र दे [मतिसूर्वे] स्त्र-बनुर (सन) । पश्चिसेन्द्रा श्री [प्रतिशय्या] शस्या-विशेष वत्तर-राम्या (मन ११ ११: पि १ १)। पहिसेग 🖠 [प्रविषक] सब के ग्रीम रा भाष (सम ६४)। पश्चिसेव सरु [प्रति + सेष्] १ प्रतिरूत धेवाकरना निरिद्ध वस्तूकी सेवाकरना। २ सहन करता । १ सेवा करता । पहिनेवह पडिसेनए, पडिनेनेति (कस बच व सत्)। बह- पश्चितेवंत, पश्चितेवमाण (वष् श सम १६, ति १७) 'पडितेलमाली कस्ताई' धनसे मगर्व धेहला' (धाना)। हुः पिंडसेवियक्त (श्रम १)। पटिसेक्ग देशो पहिसेवय (निष् १) । पडिसेवण न [प्रनिषयम] निषद्ध बस्तू ना

लाल (कत)

पिता (कत)

प्राप (कत)

पहिसेबि वि [ मतिपेविन् ] साह-प्रतिपद बस्तु का वेदन करणवामा (उदा पदन द रू)। पहिसेबिक वि [मतिपेबित] विस् निपिद बस्तु का बारोबन किया बसा हो बहु (बच्च-धीर)।

पहिस्तवेषु १० [प्रतिपविद् ] प्रतिपढ वर् द् भी सेवा करनेवामा (ठा ७) । पहिस्तेष्ठ वक् [प्रति + सिक्ष] विदेव करना निवारक करना । क्षा स्वित्तेष्ठव्य (व्यन) । पहिस्तेष्ठ वृ [प्रतिदेच] निदेव निवारण पैक (योज स मा पंचा ६)। पहिस्तेष्ठ ग (व्या मा मा व्या विदेव

(वर्षके ४ ११२)।
पडिसेहण न [प्रतियेपन] ज्यार देखो (निये
१७४१ वा १७)।
पडिसेहण न [प्रतियेजित] विवका
प्रतियेच किया नया हो न नियारित (विपा
१ १)।
पडिसेहज कर देखो पडिसेह = प्रति + सिष्।
पडिसोका १ ई [प्रतिकोतस ] प्रतिकृत पडिसोच । प्रतिकोतस ] प्रतिकृति

पविस्संत के परिस्संत (तह मुख्य १००)। पविस्संति की [परिमानित] परिसम् (तह म गुण्य १२१)। पविस्सय वुं [प्रतिकाय] येत तापुर्यों की पत्रे का स्वाल करास्य (योग स्व क्ष वा १७६१ स १००)। पविस्मय केत्री पविस्सर (वंबा स ४६)।

पहिसांस वि [दे] प्रतिदूस (पड्)।

पडिस्माय वरु [मिति + भाषयू ] १ प्रतिका करावा । २ इरीकार कराना । वर पढि स्मावअम्म (काट—एर्ग) १ ४) । पढिस्मायि में [मितिसायिम] मस्मेराना स्पर्भाराना (पत्र) । पढिसमुण वरु [मिति + मा] र मुक्ता । २

संधार करता। शरिम्मुणीत (तुम २ ६ १)। शरिम्मुगेश्वा (तुम १ १४ १)। परिम्मुगे (तत १ २१)। परिम्मुगे (तत १ २१)। परिम्मुगे (स्तिमुन् ] १ मरिकात। २ स्त्रीत (यद्यक्ष १)। देवो परिम्मुग (ज्या) ।

¥1) I

पश्चिम्सुया — पशुप्पन

विशेष । **व** वि [ैंथत्] प्रक्षिशवासा (सुध 2 21: 2v) 1 पश्चिम् वेशो पश्चिम् = प्रति + मा। पश्चिम यह (स ४६१ स ७१६)। पश्चिमाय पुरिविचार र प्रतिकृतन, वारा का बक्ताः २ निरोप गठकाव रोक (पसम ६ १६) । पक्रिशार पूँ [प्रविद्वार] एन्द्र लिक्ट देव (पव **२१**)। पश्चिम् र पूँची [प्रतिकार] हारपाम बरबाम (दे १२ ६ कामा १ ६, स्वप्त २२व स्वीव ७७)। वर्षी री (बृह्व १)। पश्चिद्दारिय देवो पादिद्धारिय (क्य प्राचा १२३ १७ (स)। पिकारिय वि [मितिहारित] धवस्त्र रोका

पश्चिद्याण न [प्रतिभान] प्रतिमा, बुद्रि

**₹ =)** |

🖠 [ैदात] रिषय का बस्रु (ठा ७)।

इया (स १४१)। पश्चिम् सङ [प्रति + भास् ] मञ्जूप होना नक्ता । पव्यक्तिके (शी) (नाट) । परिकास वुं [प्रतिमास] प्रतिकाद वर्तिकत (देर २ ६ वद)। पडिवासिय वि [शिवेशासिव] विक्रा प्रतिकात हमाहो भा (उप १ ६ टी)। पश्चिम् । प्रेटिस् ] कामील कामीक-पश्चिम् रे बाद, मनीतिमा (पाचा देश, १)। पश्चित्र वन्त्र [परि + भू ] पराधन करना, इएना । क्यक परिकृतमाण (विधि ११)। पडी भी [पटी] नव, कपहा (क्का तुर १ पक्रीआर द्रीग्रतीश्वरी केवी पश्चिमार = प्रतिकार (वैसी १७७- कुप ६१)। पश्रीकर तक [प्रति + कृ] प्रक्रिकार करना । वडीकरेमि (मै ६६)। पडीकार वेचा पडिव्यार (परह १ १)। पश्चीका वेचो पश्चिमका = प्रति = इप् । वही बंधि (पि २७३)। पडीय नि प्रतीभीन | परिम दिहा है इंदरन रक्रमेगवा (भाषा धीप अ. १, १) । बाय

पक्षीय वि मितीप प्रशिद्ध प्रतिपद्धी

विद्येषी (भवि)। पबु वि [पटु] निपुष्ठ चतुर, दुराब (धीप क्रमा पुर २ १४६)। पक् (ध्य) रेको पश्चिम = परित (रिंग) ।

पबुक्ताब्रिक्स वि 📳 १ निपुद्ध बनावा ह्या ६ २ ठाहित पिटा हमा। ३ मार्कि ( \$ 4 64) 1 पदुक्त्रेव 🛊 [प्रत्युक्त्रेप] १ वाय-श्राप्ति । २ अञ्चलन इस्तन (बस्त १६१) । पबुक्केव दू [प्रस्युत्वेष प्रतिक्षण] १ वाच **११**ति । क्षेपछ **पुरस्ताः '**धमतावप<del>ारके</del> (पस्छ ११)। 1 ( ) # (भीका) ।

(ठा ७---ग४ ११४)। पहुंच थ [प्रवीस्य] १ याध्य करके (बाचा बुघर ७ सम् ३६३ मच ३६)। २ प्रतेबा करके (भन) । ३ शक्तिकार करके पहुच वि थाप्य विशा ध्रीकृतिय विदायपहाँ (बल्द्रशः बर्यु) । इत्रयः व विद्रयः] किसी की अपेक्षा से जो दूख कराय, पापे-विकड़ित (रहर) । साव प्रविभाग] धप्रतिकोतिक पदार्थं आपेश्चिक वस्तु (माच २)। स्थल न ["सचन] आरोबिक थका (कम्म १) : सक्वा क्री "सत्वा] क्रम बागका एक बेर, अपेक्षा-क्रुट छल। यसन पहण्ला क्यर केब्रेट की द्विविदि भागनुर्वे

पहुच्या (बूबर १ १ १ ४)। पद्मुबद्द की दि ] इसिंह शक्ती (दे % पङ्कियां की [ऋजुक्ति] प्रस्तुक्ति वंशाय पबुष्पण्यः । वृं [मृत्बुरपञ्च ] १ वर्तमान पकुष्पम ∫ कमा(द्वा ६ ४)। २ वि. वार्चनानिक, वर्चमान राज में निचनान (अ १ । भय ⊲, धः छम १६२; छमा)। १ त्रक्र⊬सम्ब (ठा४२)। च पहुलको व से जहोतियो श्राहारो' (ब २६१) । Y अत्रप्र,

पश्चिम् सक [प्रति + इन् ] प्रतिकात करना प्रतिद्वित करना । पश्चित्ति (स्त) । पश्चिद्रकम न [प्रतिद्तन ] १ प्रतिवात । २ मि. प्रतिपातक (दूप १७)। पश्चिष्णणा सौ [प्रतिद्वनन] प्रतिवाद (बोव 22 ) 1 पश्चिक्तिव केवो पश्चिक्य (मुपा २३)। पश्चित्रजिय केवो पश्चिमणिय (नर्मर्थ क व)। पहिद्रत्य वि दि ] १ पूर्व, यथ 🛍 (१ ६ २क पाम कुत्र ३४ वजा १२६ कर ह रेवशः पुर ४ २१३। पुना ४ व) पिविद् रवर्षिनयहण्डलप्रदे हा तकन कमार्ड (शाय (x)। २ प्रतिक्रिया अधिकार-वश्वाः ६ वयन कारों (के ६. १६)। ४ म्राव्यमुट (जीव ३)। १ सपूर्व सहितीय (वर् )। पश्चिद्दश्य एक दि] प्रजुक्तार करना अन्तार का बदला कुन्ना । परिकृत्वेद (छे १२, 44)1 पश्चित्रस्य पि [प्रविद्यस्त ] विष्टक्ट (चैब) । पडिहरूबी की वि] इंदि (वे ६ १७)। पश्चिम्म देशो पश्चिम्म । पश्चिम्मेण्या (पि १४)। यथि परिवास्ति। हिन् (शि १४६)। क्रिप्रय नि [प्रतिकृत] प्रतिनात-भाग (धीना भूका महाग्रह)। पश्चिर का प्रिति + हु किर संपूरीकरना। पश्चित्रस्य (हे ४ २८६) । पश्चिम परित + सी नालुग होना सकता। पश्चिम् (पञ्चा १६२ पि ४८७) । पश्चिम की मिविमा दिनिन्देश, कुल मुन्त क्लोब करने में समर्थ बुद्धि (श्वमा) । पश्चिम् देनो पश्चिम् म प्रतिकास, 'वेजनिहा नीवा ननता, वं बहा यतिप्रीवहाँ (बा ६, १—वन ३ ३)।

पहिस्सभा देनो पहिस्समा = प्रतिभूता (ठा

पश्चिष्ठच्या पि दि ] पूर्व (सरा) । वैकी

पश्चिद्दु थ [प्रतिद्वस्य] धर्पेश करके (क्य

पश्चिद्व प्रै बितिसट] ब्रिटिक्टी मोबा (स

१•—पम ४७३)।

पश्चित्रत्य ।

48 t) i

1 21) I

बाट (ठा ४ २)- 'हॉिंटि य पहुप्पप्रविणास रामिन मंत्रक्रिया स्वाहराई' (इसनि १)। पहरु न [दे] १ वषु रिटर, छोटी वासी। र वि विष्यपुत्त (दे ६ ६०)। पहचक्य वि दि देशका देव (वेद १४)। पहुतत्ती भी दि] वनिका परवा (दे ६ २२) । पडह देवो पड्डुह। पहुन्द (हे ४ १६४ €) I पश्चोध नि [वे] यान नद्र स्रोटा (वे६०)। पद्याच्छ्रज्ञ वि प्रत्ययच्छ्रज्ञ चल्च्याचित द्याकृत 'सद्वविङ्कम्मतनगडमपडोण्डलो'(उथा)। पडीयार धक [ प्रत्युप + चारय् ] प्रतिरक्ष छपचार करना । पडीयारेंति पडीयारेड् (अग ११--पन ६७१) । पक्रीयारेड (मग १५--पन ६७१)। पडोवारे (पि १३१)। कवड पद्मेष (१ षा) रिव्यमाण पद्मेशरेग्ज भाष (पि १६३ मन ११-नम ६७६)। पश्चोबार पूँ 📦 ज्यकरण (श्वर २८) । पड़ोबार दू फ़िस्युपचार] प्रतिकृत ज्याचार (मम १५--पत्र ६७१: ६७१)। प्रकोबार प्रक्रियक्तारी १ मध्वयः । २ धानिर्मादा 'मण्ड्स्स दासस्य देरिस्य बादार भावपढोगारे होत्या" (सम ६ ७---पत्र २७६ ५--यथ ६ थः पीप) । पद्योगार पू [पदायनार] किछी वस्तुका परों में विचार के किए प्रत्वरण (छ ४ १--पत्र १वन)। पडोगार दूं [प्रस्युपन्तर] करकार का काकार (चत्र)। पक्षोबार पुंदि] र जामधी । २ परिकट 'पायस्स पडीवार' (श्रीम ६१२)। पड़ोस पूंची [पटोड़] लहा विशेष परवस का नाथ (पर्छ १—यम ३२) । पडाइर त [के] घर का गीछना सांस्त्र (के ६ १२ गा ११६ काम २२४)। पहुषि दें] वस्त्र सन्देश (दे ६ १)। पहुँस र [के] विरिनुहरा पहल की ग्रस्त के पहुच्छी की [दे] मेंत 'पहुच्छिनीर' (तीव E0) 1 पद्भरमी की [दे] १ बहुत दूधनानी। २ दे**म्**नेवाली (देद ७) :

84

पहुर पूँ दि] भैंता पाड़ा पुनयसी में 'पाडो" 'सो चेव हमो वसमी पहुमपरिष्ट्रण सहद् (महा)। पश्चक की हि | बरल-मात पाद-प्रहार (दे 1 (u) 1 पद्मस कि मि ] पूर्वभनित सम्बद्ध तरह से श्चेमित (वे ६ ६)। पदाविक वि दि समापित समाप्त करामा हमा (पद्)। पश्चिया भी वि] १ कोटी मैंस पानी। २ कोटी वी बिक्सा (निपा १२--पत्र २६)। १ प्रथमप्रमुखाणी। ४ नव-प्रमुखा महिपी (क्व ६)। प्रश्ली औ [वे] प्रथम-प्रसूता (वे (4 8) 1 पहाड आ की हि | चरण-पाठ पाव-प्रहार ( ( = ) I पड्ड इ. मक [शुर्ग] चुल्थ होना। पर्हु इप (हे भ ११४ मुना) । पड एक [ शरु ] १ पड़ना बम्बार करना । २ बोलना कड्ना। यहद (हे १ १९६) २३१)। कर्म प्रधीमह, पश्चिम्ह (हे ६ १६)। यह पढेल (सूर १ १३)। रुवच पहिल्लीत पहिल्लामाण (सुपा १६७) का १३ ही)। श्रेष्ठः, पविचा (हे४ २७१ पद ) पश्चिम पश्चिमप्रशी (है ४ २७१) पढि (घप) (पिय)। हेब्रूर, पंडिर्ड (मा २ कुमा)। कृपंडियक्थ पद्धयक्य (पंसू १) बन्धा ६) । प्रयो. पदावद (क्रम १०२) । पड पू [पड] बारतीय देश-विशेष (६४) । पहरा वि [पाठक] प्रशेषाका (बच्च) । पहण न [पठन] पाठ, धन्यास (विशे ११व४ः कप्पू) । पदम वि प्रियम र पहला बाब (हे र ११, कम्प स्वा मय दुमा, प्रासु ४५३ ६ = )। १ नूतन नवा(थे)। १ प्रभान सूबस (क्य)। करण व ["करण] धाल्मा का परिशाम-विशेष (पंचा ३)। "इसाय पू **िक**पाय | क्वाय-विशेष क्रम्सानुबन्धी क्षाय (सम्पर) । द्वाणि, ठाणि दि [रेशानिम्] चन्द्रशय-पृक्षि, प्रशिवसात (बेबा ११)। पांडस द्व [ प्राप्नपू ] धायाङ् मास (निष्ट् १)। समीसरण न | यद्धे देवो पहान । यदे (प्राप्ट ६)।

समवसरण वर्षा का विश्वसमोसरण उद्बद्धं सं प्रमुख बासाबाधोग्यही पहमसमी सरए भएछइ (निष् १)। सरय प्र शिरम नगरीयोपं मास (मग १६)। सुरा भी सिरा निया शक रातव (रे) । पडमा भी [प्रयमा] १ प्रविश्व विधि पहचा (सप २६)। २ व्याकरख-प्रसिद्ध पहली विभक्ति 'शिहेंसे पहना होह' (बरा) ! पदमाखिला भी दि प्रथमालिका प्रवन भीवन (बोच ४७ मा; वर्म ६)। पद्यमिष्ट े वि प्रथमी पहला माख पडिमिह्लुल (भक्त भारदा मुपा १७ पि पहामिरुल्या - ४४१: ५१५: विते १२२६ परमुद्धभ [(यामार ६—पप १४४ पडमेस्लूय ∫ बुद्ध १ पटन ६२ ११ वर्ण १६, चए)। पढाइन [राी] गीने रेसी (शट-नैट ८१)। थहाय सक चाठय ] प्रशाना । प्रश्नेद्र (प्राक्र ६) । श्रृंकः पद्माविकाम पद्मावेकाम (प्राप्त ६१)। हेह- पदावित पदावर (प्राप्त ६१)। 🔻 पडायणिका, पडाविश्रक्य (प्रकृ ६१)। पढावभ वि [पाठक] बध्यापक (प्राप्त ६ )। पहाचय न [पाठन] पहाना (कुन्न १)। पदाविज वि [पाठिव] पहाना हुमा (भूपा ४१ के ब्रुप्त हरे)। पदाविकार्यंत वि [पाठितयम्] विसने पदाया हो वह (प्राक्त ६१)। पढाबिङ १ वि [पाठविद्] भन्यापक (प्राकृ पदाविर 🕽 ६ 🥻 । पश्चि पश्चिमः } देशो पश्च = पट । पब्रिक्ष वि [पठिव] पहा हुमा (हुमा प्रानू ₹+ c) 1 पहिळांत गरुभव परिज्ञामाम् | देवी पद = पर्। पिंडर वि [पिठितृ] पदनेवाला (चल)। पहुच्छ वि [प्रदीकिया] मेंट के लिए उपस्था-पिष (मिष)। पद्भाष्ट्री पहम (है १ ४४) बाट—विक २१)। पं**डेयण्य देशोः पष्ट** ≃ पद ।

पण्डेचो पंच (मुगा १ तव १ ) करण २ ६/२६ ६१)। जडह की निवृत्ति (वानने सब्बे भौर पंच (पि ४४६)। वीस स्पेन [क्षिशन् वितिस तीस ग्रीर प**च** (ग्रीप कमा ४ १६। पि २७३ ४४६)। जुबह देवी पाउइ (मुपा १७)। रस विव िंदशम् ] पनपा (सरा)। विभिन्न वि िंपर्जि≱ो पाच रजका (सूपा४ २) । बीस धीन ["विश्ववि] पबीड बीस धीर पौच (सम प्रोप्त सव १३३ कम्ब २)। वीसइ जो [विंशवि] पही घर्न (पि YYZ)। सद्द्रिकी (पिष्टि) वेंक काड मोर गाँच (सम ७०० मि २ ३)। सब न ["शाद] पांच सी (इं६)। सोइ की "|शीति] पत्रमी यस्तै पौर पौत्र (नम्म २)। सकत दिली पांच हिंचा-स्वात (चन)। पण पू [पत्र] १ शर्त, होदः "तत्वपरोग्र बुज्माबैदस्सं (मक्षा) । २ प्रतिका (माक) । १ वतः। ४ विकेश वस्तु, क्रवालकः तिल विद्यम्पम पद्मक्ष्यं (दो ६) पण पूँ प्रिया पन प्रतिका (नाट-मानती ₹₹¥) i पण ) न [पञ्चक] १ पॉचका समूह (पंच पणग 🕽 १ ११) । १ तप-किरोप नौनी ठप (संबोध १७)। पणभक्तिभावि दि] प्रवटित व्यक्त विश्व ह्या (रे ६ ३ )।

रान)।

484) I

भोक (दुपा २१६) ।

শমহ=হতবিশ্ (হড়)।

पत्रस्य वि [स्वितिक, स्विधित् ] क्यो

۷ì

पणअस देनो प्रजयस (हु २, १७४ टि। पण्ड हो प्रिजिति प्रकाम नगरकार (प्रज्य रेर ६६ पुर १२ (३६) प्रमा)। पगाइ वि [प्रजिमित्र] १ प्रखबनकाः लोहीः प्रेमी । १ प्रेपी पति स्मामी (पास्क शहर tv)। र माचक प्रनी शार्ची (वर्ड २४६ रहर: पुर १ १)। ४ जूल रामा नगहरामीत पल्लानो (नवड पणक्षी के [प्रश्निमी] पत्थे, कर्वा विक,

(ब्दर ११ टी। सूना ४६ । दूप १)। पत्रसम्बद्धाः विश्वकः समूहः (पूरः ६, ११२। मूपा ६६६४ वी Ш व ११। कम्म ₹ ११)1 पण्यार्थ[के पनक] १ शैनाच हेनार श शिवार, पूरा-विरोध जो नत में ब्रायल होता है (ब्राप्त क्ष का नग्या १ संदि)। २ व्यक्ति वर्धा-काल में मृषि काह यादि में करपन्न हीते वाचा एक प्रकार का बल-मैब (धाचाः परि स य-नव ४११/ इन्त) । ३ इर्गम-वितेष सूक्य र्गक (बृह ६३ मद ७ ६) । केबी पणय (दे)। महिया मध्या सी "मृचिक्ता नवी सावि के पूर के बत्तम होने पर पह चाली कोमक क्लिके मिड़ी (बीव १ पर्या १--- एव २४)। पण्या धक [प्र+नृत्] नावना तृत्व करना। वद्य. **पण्डा**याण (शामा १ द— पव १६६ सूपा ४७२) । इसी जी (सूपा २४२)। पणकाम म जिनतीन दिशा नाम (नुसार १४)। पणित्र वि [प्रतृत्तित] नावा ह्या विस्रका बाच हुमा हो वह (शाना १ १---पत्र २१)। भजवित्र वि[प्रतृत्ती गावाह्मा 'मनना राक्पुरको पशुनिवा देवदत्ता (महा क्रुप्र पणिश्र वि [प्रगतित] नवामा ह्या (परि)। पणदू वि[प्रतय] प्रकर्ष वे वास की प्रत्य (तूब १ १ श से ७ बुर २, २४७ १ १६७ मिर्गक्य)। पणक् वि प्रिजदी परिवद (बीप)। प्राप्त केरी प्रापंत्र (क्य १४७ वि)। पष्पण्यद्भ 🖦 पश्रपसद्भ (कप १७४ ि पि २७३)। पळपक्र∡कीत [ वे पक्रापद्माशत् ] पक्रपत् पनास और पनि (हेर, १४' कम सम

७२। कम्ब ४ ४४ ४४ देश दिवः)।

पणपश्चिम देवी क्लान्त्रिय (इक)।

की एक बाखि (१४ १३४)।

३३ वॉ (कप्प)।

नमन भरना । पछना, पछपप (स १४४ अप)। कड़ प्रमात (ध्रष्ठ)। क्युड़ पणसिळांत (शुपा बद्ध)। सङ्घ पत्रसिञ पण राऊप पजिभक्तजे पजिल्ला, पणमिच्य (धर्म ११वः बाधः पि ६६ थय क्ष्मण)। पष्पमण न [प्रथमन] प्रजान नमस्कर (क्व∵सुपा२ ⊭ ४.६१)। पजिस्म रेखो पजस । पणमिश्र विशिवदी र तमा ह्या (भनः धीप)। २ त्रिक्ते नक्ते का ब्रारम्य क्रिया हों बढ़ (राज्या १ १ — पत्र १)। १ जिस्के नमन किया क्या हो वहा 'पछिमधी शरीख रावा' (स ७३ ) : पणसिज्ञ वि [प्रजसित] नगवा हुम्य (स्रीत)। प्यमिर वि [प्रवस्त] ब्रखान करनेवाचा नयनेवस्ता (कुमा कुप्र वेद सन्त) । यजय शक [प्र+ जो] (स्चेह करना प्रेम करना । २ प्रार्थमा करना । 🕶 पञ्जर्थ (\$ 2 2) 1 ঘণৰ ৰি সিমত ীং বিলক্ষী একাৰ স্থিক यया हो वह 'नरलक्ष्यसम्बद्धम्यव' (सुरा २४)। २ विस्ते समस्त्रार किया हो वहः पराक्तविषक्षे (तुर १ ११२) पुरा **३३१)। ३ जन्द (सब्द १∵४१)।** ४ निम्ब, ग्रीवा (बीव ६) एए)। पण्य प्रशिजयी १ स्तेष्ठ, प्रेम (फस्मार श्रेवहा वा २७)।२ प्रावैना (वडड)। र्वव वि [ चन् ] स्टेश्यामा प्रेगी (का 1 (555 यणय पूर्वि यंक कर्षक (दे ६ ७)। पणप पुंचि पनकी र तैवाब सेवाद दुल-विशेष । २ काई, वल-मैंब (मीर्न १४१) । १ नूक्य कर्बंग (महद्व १ ४) । यजपास वि वि प्रत्यसमारित विता-यणपद्माध्य नि दि पञ्चपञ्चाञ्ची पत्रसम्ब नीवर्ग ४१ वॉ (परम ४१, ४६) । पनवास 🗦 श्रीत 📳 पश्चनस्वारिंशन् 🕽 पवायांक्रीस र् वैदानींस, नामेच चौर नाम पमपश्चिय 🛊 [पैश्रम्मद्राप्तिक] स्वन्तर 🖬 ४३ (धन ६३) कम्म ६, २७) ति ६) मन्द

सम ६व्य सीयः वि ४४१) ।

<del>पण**व**—प</del>णिशाण प्रज्ञ देखो प्रजम । प्रश्नवह (मिंग) । प्रश्नवह (दे २ १६६)। वक्क पणवंद (सवि)। पणत्र पुं[प्रणव] घोंकार, भी बालर (सिरि 1 (735 पञ्च 🕻 [पणव] पटह, होस बाध-विशेष (धीर क्या प्रेष) । पण्यत्रिय देखो पण्यविद्यय (यौप) । प्रमायक्या } देखो प्रमापन्न (पि २६४ २७३ पणपन ) मग हे २, १७४ हि)। प्रावसिय पू [पन्नप्रसिक्त] व्यन्तर देवीं की एक वार्ति (पर्या १ ४)। प्रणविम देखी प्रणमिय = प्रणव (मनि)। पत्रश्रीसी औ [पञ्चर्तिशतिका] पंचीस का समृह (संबोध २६)। पणस पू [पतस] इव-विरोध कटहर या कटबुर (पि २ वः नाट--मृण्य २१०)। पणसंदरी सौ [पणसुम्दरी] वेरवा (वर्गीव १२७)। प्लाम सक [ सर्पय ] सर्पेश करना देने के बिए उपस्थित करना। प्रकामक (क्रि.४ ६१) अस्तियो य पर्णवास करवासाई प्रकास (भूपा १६६)। पजाम सक [ प्र + समय् ] नमाना । परामेश (महा) । प्रजास सक [बप + ती] ध्वन्तित करना । परामेद (श्रष्ट ७१) । यज्ञास पूर्[प्रणाम] नमस्त्रार, नमन (३ ७ ∎ मणि)। पजामणिका 🛍 [दे] श्रीदिपतक जलव (444)1 पत्रामय वि [कार्यक] क्षेत्रका (सुध १ २ २)। पन्नासय वि प्रिकासकी १ वसनेकाचा। २ शब्द धादि दिवस (सूस्टे १ २ ३ २७) । ∣ प्रमामिक वि [अपित] वर्गातत 🌬 🕸 निए भरा हथा (पाधः कुमा) 'धाम्छापि मेरि बहिमे दुनुमतरेशा अहमाललक्कीए बुई (क्षेत्रा ४ )। पणामिश्र वि [मणाभित] नवावा ह्या (के ४ वर या २२)। पंजासिस रि [भनिमित] नत नग हथा

'पराभिया बायर' (स ३१६)।

पणाशक ) वि [ प्रणायक ] से कानेवामा पणायम } निम्नाणयमणसम्बन्धसम्बद्धायकाई (क्लाइ २ १ फ्लाइ २ १ टी बन १)। पणास्त्र र्षु [प्रणास्त्र] मोरी पानी मादि वाने का रास्ता (से १३ ४४ चर १ ४८६)। प्रणासिका भी [प्रणासिका] १ परम्परा (सूम १ १३)। २ पानी वाले का रास्ता (कुमा)। प्रजाकी की जिलासी नोरी पानी काने का चस्ता (गर्नड) । पणार्क्स की प्रनाक्षी राधेर प्रमाण सम्बी साठी (पक्ष १ व--पव ६४)। पव्यास सक 🛛 प्र + नाहाय 🗍 विकास करना । पखासेह, पखासए (महा)। पणास 🖠 [प्रणाश ] विनाश चन्नेवन (द्यावम) । पणासण नि [प्रणारान] विनास करी-बाह्माः 'सम्बपावप्यक्रासत्तो' (पश्चिः कृष्य) । की पी(भा४६)। प्रजासिय वि प्रिणाशित् विसका विनास विमा नमा हो वह (कम्मः ग्रवि)। पणिञ नि दि] प्रकट, स्पन्त (रे ६ ७)। पणिक वि [प्रजीत] रवित (बूचनि ११२)। पणिक त [पणिक] १ केवने बीरव बस्तु (देश कर ६ ७ खाबार १)। २ व्यवहार, तेन-केन क्य-विकास (श्रम ११८ छाया १ १---पण ११)। १ शर्त क्षेत्र एक वर्ष का क्षमा (माम ६२)। भूमि मुमी भी ["मृसि मूमी] १ यनावें देश-विशेष अहाँ भाषान् महावीर ने एक भौमासा विद्यामा था (राज कथा)। २ विक्रेस वस्तु एकने का स्वान (मंग १४)। साख्य और ["शाला] इस्ट बुकान (शृह २ निवृ १६)। पणिक्र न [पण्य] विक्रेश वस्तु (तुपा २७१८) धौर माना)। ग्रिह, यर न [\*गृह्] धूकान, शहर (निषु १२० धाचा २ २, १)। साम्रा की ["शाम्रा] हाट हुकान (ग्रापा)। वित र् [ैपण] (पान, हाट (ग्राचा)। पणिअ वि [प्रणीत] नुकर, नगोहर । भूमि की "मूर्मि] मनोज भूनि (धर ११)। पणिअदू रि [पणितार्थ] भोर (दब ७ 1 (ef

पणित्रसाद्ध्यं 🛍 [पण्पशास्त्र] वतार, भग्न या नाम रखने का विद्य हुचा स्थान गोदाम (धाबा २,२२१)। पणिआ की 👣 करोटिका सिरकी हुई। कोपनी (वे ६ ६) । पणिदि ) वि पिरुवेन्द्रिय लिक् भीमः पणिविसर्गनारु सांख सौर कान दन प की इत्तिमोंनाला प्राप्ती (कम्म २ ४ १ ३ १ व 1 (33 पणिक वि [प्रस्तिग्य] विरोप स्निग्य (प्रणू २१६) । पणिचाय देखी पश्चिद्याण (अमि १०६० नार --विक ७२)। पणिचि पुंची [मणिचि] मानाः चम 'पुरारो पूर्णो पश्चिमि(? मी)ए इरिसा उनहथे नर्ए (सम ६ ) । देखा पणिडि । पविवस्य पि [प्रक्षिपसितः] पहना हुमा (बीप)। पणिक्रिअ वि दि हत मारा ह्या (पर्) । पणिबद्ध दि [प्रणिपदित] मह, नमा हुमा पिल्यक्सक्स्यसम्बद्धाः ए देवासुन्धिया । उत्तम पुरिवा (सामा ११६ – पत्र २१६ स ११ कर ७६० दी)। पणिवर्ज वि [प्रणिपतित् ] विश्वकी नमस्कार किया गया हो नहा 'शरन्तुद्धि परिवर्षी बीधे' (बर्मेन ३७)। पणिवस सक [प्रणि + पन् ] नमन करना वन्दन करता । परितृबनामि (कप्पा साम् 48) i पणिकाय 🖞 (प्रिजिपात) कम्दन नमस्नार (सुर ४ ६८) सुपारः २२२३ महा) । पणिहा सक [ प्रणि + धा] १ दकाव किन्तन करना व्यान करना। २ व्यक्ता करना। ३ मिक्तिया करमा। ४ चेटा गरना प्रमत्त्र करना । संक पणिद्वाम (लागा १ १००

मग १३) ।

पणिदाण न [प्रणियान] १ एका स्थान

मनो-निमोन धरवान (इस १६ १४) स दका

प्रामा) । १ प्रयोग व्यातार, नेटाः किनिहे

परिवृत्ति पर्वाची वे बहा-मरापिहाले

वयनविद्वाले कावप्रतिद्वाले (धा १ १ ४

रेश क्षम रेक्स क्षेत्ररो । ५ सक्तिमान कालमा

पणिहास देशे पणिहर ।

(परहार ६)। २ शामना ग्रीकनाव (व me) । १ ई चरदस्य इत (पर्वा १ ६३ वाय-वर १ ४ समा ४६२)। ४ विष्टा क्वारार (रंगले १) । १ मादा क्याट (यान Y) । ६ म्परस्वापन (राज) । ঘণিটি বুলী মিজিমি] বয়া নিৰি (বভ m, () 1 पणिडिय वि प्रिजिडित १ प्रयुक्त, ब्लायुत (दमनि =)। २ व्यवस्थित (भाव ४)।

पणिक्रि रही भिक्षित्रि १ एनाएक सनवान

प्रयोग विक्रिय ही १ निर्मित इन्ह, र्यक्ट 'बरवेनियं पर्ताब' (निवे १३ ७: नूर १२ ६२। सूत्र र<sup>े</sup> १६७)। र स्मिम पूर धानि स्नेड् वी अञ्चलावाला, "विज्ञा दली र्धसम्मी पर्धीयरममेत्राणं (दम ६, १७) कत १६ ७ घोष १६ मा धीरा बढ़ ६)। ३ निवरित प्रश्रीत प्राह्मात (प्रशु प्राप्त । ४ मनीज मृत्यर (तन ६, ४)। ६ सम्मन् मामरित (सुम १ ११) । पर्णाद्वाण देशो पणिद्वाल (मारव =) विच 1 (23 पणुष केरो पत्रीद्ध । बद्ध- पणुद्धेमाण (वि 22Y) 1 पण्डिभ रेगो पत्रोद्धिश (पामः तुपा २४ प्राप्त १६६) ।

पुर्णाम धीन [पद्मपिश्वि] संस्था-विकेष बचीन बीम बीर वांच । १ जिन्ही संस्था भयोत ही ने (स. १. ६ दि. १ ४० २७३)। ष्णुर्व सन्म वि [पद्मर्विशिवित्रः ] वजीवर्श वंश वर्ग (रिने ११२ )। प्ताम कम् सि+ ग्राही १ मेरला करणा। **४ दे**रना। **१ शता वरता ।** एट्रोल्कर (प्राप्त)ः 'पात्राई बण्डाई क्लोन्बहासी' (उत्त १२ ४ ) । बद्दा पत्रोनिक्समाण (छावा र रंपण्युर ३)ः दीर पञ्चाहः (तूष t )1

पमोक्षण न [प्रमादम] प्रेरणा (स. १ का

पमामय वि [प्रगाप्क] प्रेरक (कावा) ।

g tyt) i

पणाक्तिअ वि [प्रमोदित ] प्रेरित (बीवा वि 3 (88 F पण्य वि प्रिक्ती वानकार, बन विपूर्ण (उद्य १ व्यालुम १ ६)। पण्य वि [प्राद्व] १ अवायामा बुविमान् क्श (केर १६ पर ६२६)। २ वि प्राप्त सम्बन्धी (सूत्र २:१)। पञ्जन पिर्जीपन पत्तापती (दूबा)। पण्ण वेको पणिअ = पर्व (शाट)। पण्य कीन हिं] प्रशास, ४ । की कहा (पद्र)। पण्य रेको पंच पत्र (पि २७१ ४४) YXX)। रस विविधियानी प्रविधः १४ (सन ६६: पना)। रसमा वि विद्या पनपत्ना (बना)। रसी की विश्वी है पनवाची । २ विकि-विशेष (पि २७वे। क्या)। बढ केवी रस (शक्त)। शहिप विद्या पनसह्वा १५ वां(शाप्र)। देखो पदा≕ पण्यावि पार्थी प्रशेषम्बन्धी, पर्शेका पत्ती से बंगन्य रचनेत्राला (राज)। पण्य केलो पण्याै। द दि [वर्] प्रज्ञा-भाषा (का ६१२ दी)। पण्डाई [यसगा] मदबल् वर्षमाव दी राज्यन-रेवी (पर २७)। पण्यमार्थ पित्रमा सर्वे औप (दा ७२० द्यो। सन प्रशिशन निवयपत्री (विव)। देखी पश्चम । पण्जम नि कि पश्च है । श्रीमी है "तिस के ितिक्की बुनैन्दी शिन (राज)।

पांच ६१ (वप्प)।

र वं प्रायन बएड बेल प्रत्यावि प्रापने की

बाहरी (पराह १ व---पत्र १४)।

पण्यद्वि हो प्रियमिश्ची चैतह, शार और पण्याच वि [बद्धार] विश्वतित वर्तास्ट क्षेत्रित (धीनः बताझा ६ ६३४ १३२३ जिला १ १: अनु १९१) । १ मणीत समित (बारमः पेर २ जन ११ 🖽 मी४) । पण्यति की जिल्ली ह विवासी-शिव (थं १)। २ वैन यांगन वंगरियेर सूर्य-ब्रह्मीत ब्रह्मीर प्रयोग-संय (ब्रह्मी १३४१)।

**की एक वर्गात** (इक)। यणिक (इ.७)। (पिये १४६) । (स्वीक है)। पण्याचांत रेली पण्याय । वित्र (क्षला बत्त १६)। प्रथमवैभाज देत्री प्रथम । (**₹**)। पण्या रेनी पण्य (है)। ७२ ≈ शे; निष् १) । २ आन (कृष १

श्चिपेषाः विकास एक वेद (ठा४ ९)। पक्तक्षण की प्रश्नपणी क्या का एक मेर (राव) । प्रज्ञप्रिक्ष र् प्रज्ञप्रि व्यक्तर वेशे वश्याव देखी वश्यामा (से ४ ४)। प्रकार चन्न (प्र + झापथ ) प्रकास करना कारेत करना प्रतिपासन करना । पराज्येत. पएश्वेति (तवा भव)। बक्क पञ्जबस्य पण्डवेसाच (मन: पि १६१)। 👺 पञ्ज पण्जवग वि [प्रद्वापक] प्रकरक प्रतिपादक पण्जवण न [ब्रह्मपन] १ अस्तरु प्रदि पारत । ९ शाब्द विकास्य (विसे ६४) ! पण्याक्य वि शिक्षापनी ज्ञापक, विकास पञ्जबन्मा की [प्रकापना] १ प्रक्रपण प्रकि-पालन (शामा १ ६, छना)। २ एक मैन धायम क्षेत्र 'त्रज्ञास्ता' सूत्र (भर) । पण्जविज्ञ देखी पण्जव । पञ्चमभी की भिज्ञापनी भाषा-किरोप मर्च-बीवक धापा (त्रव १ वि)। पञ्चाराज्य स्टेन वि पञ्चपञ्चारात् ] पर्यः पन, पक्त भीर नांच (दे ६, २७: वर् )। पण्जनश देवी पण्जनमा (विदे १४७) । पण्त्रविध वि [प्रज्ञापित] प्रक्रिप्रक्ति प्रक-पण्यकेत वि विद्यापयिक विशेषक मन पण करनेवला (हर ७) । पण्जायक [स+का] १ प्रदर्व से बाजना। ९ वन्ध्री हरेतुः भागमा । समी, पर्कार्मीत पण्या थी "प्रज्ञा] मनुष्य ही । इब बहरवार्मी में क्षेत्रश सरावा (तेरू १६)। पण्या की निक्षा र दुनि वरि (का ११४)

१२)। परिसद् परीसद् व विवरिषद् परीपद् र बुद्धिका यर्गम करला। २ पुदि के समाद में क्षेत्र न करना (मन = = प्रव वर्)। सय पु ["सर्] दुवि का ममिगान (सूच १ १६)। बैत वि [ैयम्] ज्ञानदान् (स्टब्) १ पण्याग वि [ प्रद्वा ] विद्वान् (वैचा १७ प्रणाह देशे प्रसाद पर्लावह (हे ६ 1(39 प्रकाल न [प्रकाल] १ प्रकृतकान । २ सम्मग् झान (सन ३१) । ६ दायन शास (प्रामा)। व वि [ैयन्] रे आनवान्। २ शास्त्र (माचा) । पण्णाराह (प्रप) नि व [पद्मव्यान] पनव्ह (पिन)। पञ्जाबासा की [पन्नविराति] पबीस बीस भीर पाच २६ (पड्)। पञ्जास कीन दि पद्भारत् ] वनास १ (दे ६ २७- पद् । पि २७३) ४८८, कुमा)। देखो प्रशास । पुण्जासम् वि [पञ्चाक्षक] प्रवास वर्ध की सम्रका (तेरू १७)। पञ्जुवीस देवी पणुषीस (स १४६)। पण्ड वृंद्धी [प्रश्ल] प्रश्न पुच्छा (हे १ ३१ कुमा) । और अदा (देर ३४) । (देश ६६)। पाइज न विषद्ति वैन मुनि-वर्ण कर एक दूत (वी १०)। । प्रागन्त श "क्याक्सम ] स्या**रहवाँ केन ध्यंत**-प्रत्य (पर्वह २ इ. घर पिपार १ सगर)। देवी पसिम । पञ्चल भव [प्र+स्तु] मरना, टपवना 'एक्टो परहमद क्लो' (या ४ १४५२ म)। पण्डम ) दुं वि प्रस्तय ] १ स्तन-नाश पण्डम ) स्तन संबुध का करना (वे ६ व पि २३१ रामा धर्म का प्रकार भारत टनकमा 'विद्विपसूद्व' (पिंड ४०७) । पण्ड्य पू [पहुष] १ सनार्थं देश-विशेष । २ पि पस देश का विदासी (पहा १ १---पन १४)। पण्डल न [प्रस्तमन] सर्छ ऋला (विपा 8 B) I

पुण्डविभ देशो पण्डुश (१६ २१)। पुणक्षा देखो पुणक्षा पुण्डि पुंची पार्टिन की की का समीमान पुरुष को नीचना हिस्सा एकी (पएह १ का t w 4₹) 1 पिश्वा भी [प्रहिनक्र] एड्री, प्रश्य क्र स्त्रोमाय, फिलस् परिह्याची गरशे नित्या रिज्ञण बाहिएमो (नेश्य ४८६) । पण्डुम वि [प्रस्तुत] १ खरित न्फरा हुमा । २ जिसने करने का प्राप्टम किया हो वह 'प्रमुक्तवोहरामी' (परम ७१ २ है २ ७४)। पजुद्दर वि [प्रस्तोत्] मध्येयावा 'हरबच्हेंतर) बरग्यनीयि पर्यक्रमह बोहमपुखेरा। सबनोद्यसप्पर्वहर्षारं पुत्तम पूर्ववृद्धि पाविहिति (या ४६२)। पञ्चोत्तर न [प्रश्नोत्तर] सवास-ववाय (सुर १६, ४१ः कम्यू) । पराणु देखी पराणु (धान)। पतार सक [प्र + शारव्] उपना। चंह-पवारिम (प्रमि १७१)। पतारग वि [प्रतारक] शम्बक छ। (धर्मर्थ (ex) पविष्यं १ वि [ प्रतीर्थे ] पार पहुँचा हुम्य पविद्या निस्तीखे (राज परहर १---यम १६)। प्रमुख्य ) न [प्रमुक्त] नत्थन का बना ह्या पर्युक्त }ेवकें (बॉर्चार, ११७) । पतेरसः 🕽 वि [प्रश्रवीदश] प्रकट वैध्वर्षाः पतस्य विस्ति । विभी १ प्रकृष्ट वैष्यू गौ वर्ष। २ प्रप्रुत तेध्यूकां वर्ष। १ प्रस्कित देपहर्गावर्षे (धावा) । पक्ष वि प्राप्ती निका हुआ पाया हुआ (कम्प सुर ४ ७ सुपा ३३७ वी ४४३ र ४६। प्रान्त ६१। १६२ १≡२। स २४१)। कास याळ न विश्वसी १ **पै**टम-विशेष (धत्र)। २ वि धवसपेरियत (4 Af )! पत्त व [पत्र] १पती पत्ताबस पर्शे (कप्प। नुर १ ७२३ थीं १ : बागू ६२)। २ पस पैच पीच (ए।सा१ १ — पत्र २४)। ३ निसंदर निका जाता है वह, बावन यन्ता

(स इन्: सुर १ ७२ से २ १७३)। च्छेळ व ["ब्छेष] क्बा-विशेष (पीप: स ६४)। सेत कि [सस्]पत्रकाक्षा (लामा १ १)। रह पू ["स्य] पन्नो (पाध)। "सहा क्यं ["संसा] अन्तनावि से पत्र के धाकृतिवामी स्वता-विशेष सूपा काएक प्रकार (समि २०)। सञ्जी की िंबद्धी १ पथ्यानी सता। र मुँहपर चन्दन कादि से की जाती पत्र-मेली-पुरुव रचना (क्रूप्र १६४)। विंटन [ैयून्स] पत्रका कन्यन (पि १३)। ब्रिटिय वि िंबुम्तक, श्रम्तीय] श्रीनेशय बन्तु-विशेष पत्र कृत्य में अशल्य होता एक प्रकार का जीन्त्रिय जन्तु (पएए १---पद ४३<u>)</u>। विरुद्धय पूर्विद्धकि बोद-विशेष एक शस्त का बुल्पक चतुरिनेत्रम बीवों की एक बारि (बीब १)। चिंट देखो (बेंट (पि १६)। ैसगडिजा की ["शकटिका] पताँ से मध हद्दै याही (तप) । समिक्य दि दिसम्बद्धी अपुत पत्तेवाता (पाम) । "ह्वार पूँ ["ह्वार] श्रीलिय **बलु-विरो**प (पएए १—पत्र ४३८ चच १६ ११८)। हार <u>प्रं</u> [ौहार] पक्त पर निर्माह करनेवाला वानप्रस्य (ग्रीप) । पंचन पित्रि १ मानन (कुमा प्राप्त ३६)। २ बाबार, बाबम स्वान (कूमा) । १ दान की योग्य पुर्खी सीक (छन ६४० दी। महा)। ४ समातार वर्तीस उपनास (संबोध १a)। क्षिय हूं [विस्घ] पात्रों को बॉबने का क्पना (गीम ६६०) । देखी पाय = पात्र । पच वि [माच] प्रसारित (कन)। पत्तद्वश्च वि [प्रत्ययित ] विरवस्त (चय) । पत्तक्रम वि [पत्रकित] १ थस्य पत्रकाना। २ फुरियत पत्रवाला (खाया १ ७---यत्र 1 ( 755 थचावर पुँ 👣 बनस्यवि-विशेष एक प्रकार का बाध (पएए १--एव ६१)। पत्तच्छक न [पत्रच्छेच] बाल है पत्ती वेजने की कबा (अंदिटी पत्र १३७)। २ नक्कारी राकान चोदनेका कान (माचा ९ १२ १)।

पसह वि [दे प्राप्तार्थ] १ वह-विधित

विज्ञाल श्रविद्वार (दे ६ ६६) सूर १,

≈t नुपारेर६ क्यारे**४ रागक्य)।** र समर्थ (जीवस २०१)। पचट्ट वि [दे] गुन्दर, मनेक्ट (दे ६ ६०)। पत्तम देखो परूप (धन) । पत्तज त**्रि** परक्रज**े १ दपु-क्रम**क, कारा का प्रमुख । २ पुंच, बारह का ग्रुस माथ (वे ६ ६४ वा १ )। पत्तमा स्मे [स् यस्त्रमा ] १---२ उसर केवी (गतक से १६, ७३)। ६ वृंख में की बाठी रथना-विशेष (वे ७ १२)। पत्तमा भी जिपमा जिल्हा (र्द ४)। पत्तपसाइका की [दे] वितर्शे की एक नी पन्हीं जिसे जीत जोग पहनते 🖥 (वे ( ?) I पचिपसास्त व दि कार देखों (वे ६ २)। पुलाय न [पत्रक] एक प्रकारका केप (डा Y Y) I पत्तव क्यो पत्त (म्हा)। पत्तरक न [न् प्रतरक] यानुष्यक्र निरोप (पण्ड २, १--पत्र १४६) ! पत्तक नि दि र शीक्य देन (वे ६ १४) नक्याई धवारिडयपचनाई

तक वि [दि] १ शीवज देव (१ ६ १ नमजाई धवारित्ययक्ताई परपुरितवीच्छरजाई । परिवर्धकाई व हुक क्षाय इस चं व मार्पित हैं

इस्क स्माधका (श्रुप्ता ६)। २ पक्ता इक्क (वे.वे.१४४) वर्णना ४६)।

पराक्षं के [पत्रक] है का सहस्य, बहुत वर्ती-बावा (पाय के हैं कि शा प्रेटिक के के के के हों)। र स्वत्यका (बीच में के)। पराक्षं में [पत्र] क्वी वर्ज (हि.ए. हेक्का) प्राप्ता करण हैं भें किल)। पराक्षण में [पत्रकान] यह-समूख होना, कर-

पश्चक्रम न [पत्रस्का] पत्र-मध्य होना, तत्र-महत्त होना जाउनियातिकोक्तुनुर्वपत्रक-सत्तुनुत्रहातिय' (वा ६२६) : पश्चकी की [द] कर-वितेष, एक अनार का

पान-वेश निराहह वहेशातील स्थित (तुना ४६१) । पत्तहारक वि [पत्रहारक] पती को वेक्से का काव करनेताना (बालु १४१) ।

पत्ताण सह [वे] वनाला मिटानाः 'पुण्यतं साणु कीनि यो वाशाह सौ तुम्बह विवास परास्त्रह (याँक) पतास्त्राहि (सिने) । पत्तामोड वृत [सामाटपण] सोना ह्रवा पत्र 'कामे य दुने य परासी' च मेरहह (सैव

'कम्मे सकुने य पतायो" च गेरहाई (श्रंष्ठ ११)। पत्ति की [प्राप्ति] काम (६१ ४२ छन २२६, केदम ६४)।

पछि द्वै पिष्टि १ केना विकेत दिवर्षे एक एव एक हाली. तीन योडे और पांच पेस्क हों। २ फैला चवनेवानी छेना (कर ७९० छो)।

२६/१)। पश्चिम वि [पित्रिय] संगत-तम विश्वर्षे पद करमा हुए हो वह (खाना १ थः ११— पत्र १७१)।

पत्तिक वि [प्रतीति प्रस्थयित] प्रदीति-गव्या विरुद्धतः (क्षः वे—पत्तः देशः क्रम्यः क्या । पत्तिक निर्मातिक श्रीति, स्वैष्टः (क्षः ४ देशः 4—पत्तः देशः ।

१ का ६—त्या ११६) । पश्चिम पूर्ण [मस्पय] प्रकारः विश्वासः (ठा ४ ६—यव २३६, वर्ष १) ।

पत्तिक त [पत्रिक] जरतत्मन (कप्प)। पत्तिका की [पत्रिक्य] पत्र पर्दी, पदी (द्वना)। पत्तिकाक देवी पत्तिक ≈ प्रति + द। विषयका (प्रति ७१), पत्तिकार्यी (पि

४वण) । पश्चित्राच कर [प्रति+ध्यावन्] पिरवात करामा प्रतीर्देश करामा । परिष्यवेद (काव २३) १ यसिता देखो यस्तिम=प्रीतिक (वंशा ७ १)। पश्चिमकोद्यो पश्चिम=प्रति+१)पतिमधि

परिकारि (रि ४००)।
परिकार्य केवी पचित्राय । परिकार (कुत ६ २)। परिकार (कार्य रि १४)।
परिकार १)। परिकार (कार्य रि १४)।
परिकार है [क] तीक्छ (६ १ १४)।
पर्या की [क] पर्यो की करी हुई एक दाइ की पाढ़ी किहे प्रीव की परिकार पर पहली कुँ (६ ६ २)।
पन्ता की [फर्या] की सामग्री (कर इ. १६४)।

साय ६८ स्वक्तापाय)। पर्चाची[पात्री] शावन पात्र (वर १९१४) सक्ताचर्याक १२०)।

मक्राः वर्गीन १२६)। पूर्ण देखी पाय = प्र + बाप । वन्त्रवाद (शै) दि [प्रस्युपात ] १ सामने बबा हुता। २ बस्स्य पदा हुमा (नार.--निक २३)। पचेश्र [न [प्रत्यक्त] १ इप्पन एक एक पत्तेग र्दिश हुना नित्र स ३४१) ⊦२ एक की शरद, एक के शसनी 'क्लेब' बलेब बखरंडपरिनेबलामी' (बीब १) ३ त. बर्म-विशेष जिसके स्वय से एक बीव का एक समय राग्रेर होता है। 'पर्यन्तन्तु वर्तेश्वरात् (काम ११)। ४ इतक इतक श्रम् व ध्रम्य (कम्म १ ६)। ६ र्युण्ड बीव जिल्हा रारीर सत्तन हो। एक स्वयन शरीरवासा बीव 'साहारलपरीमा वलस्यर-बीबा बुद्दा सुर् गरित्रया" (बी. )। जास

बीचा बुद्ध प्रदेश (ब्रि.) व यास [ मामान् ] बोच मार का वीवार करें (व्यत) । पिनोयय वुं [ पिनोयब विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास वुंचा हो पिनोयब वुंचा वुंचा विकास वुंचा वुं

बंबाबा (र्यम ६)। एम फर्म-विशेष भिष्के

पत्तेय-पत्येयस्य होता है (पवह १ १)। संवीरनाम न [ रारीरनामन् ] वही पूर्वोक्त धर्व (सम 10) मत्त्रेय वि [प्रत्येक] बाध्र कारण (एवि १३ १३१ टी)। परव सक प्रि + क्योप ी १ प्रार्थना करना। २ प्रक्रियाया करना । ३ घटकाना रोकना । पत्चेड, पत्चेंदि (सव सीप) । कम परिवर्णक्ष (महा) । वह परचंत पर्स्वित परचेकामाण (माट-न्यालीक २६ मुश २१३ प्रामु १२ ), कामे पत्येमाणा धकामा विव इत्यहें (उस ६१७ दी) । करक परियद्यंत पत्थिकामाण (गा ४ सुर १ २ ६ ६६ कप्प)। 🕵 परथ, परश्रीकाञ परवेशक्य (सुपा ६७ सुर १ ११६ सुरा १४८। पर्वा २ ४)। परवर्ष पार्थी १ धर्तुनः मध्यम पार्वद (स ६१२) वेली १२६ चुमा)। २ पाकास देश के एक राजा का नाम (पठन ३७ ०)। भहिचपुर नगर का एक शाला (सुपा 428) I परभ र् मिर्च १ प्राप्तन प्राप्तना (राग)। २ वो विभी का जनवास (संबोध १८)। पत्थ देखी पण्छा = पष्म (मा व्र१४- पत्रम १७ ६४ धन)। पत्य देखी पत्य = प्र + प्रर्थम् । पस्थ पू [मरव] १ भूजन का एक परिमाश (बृह ६ बीवस यक्षा ठेंद्र २१) । २ शेनिका एक पुरुष का परिभाग (छन पू १६) 'पल्बगा द वे पूरा धासी द्वीरतमाला व तेवला' (वय १)। पर्धत हैया परथ = प्र + वर्धन । परर्थंत देखी परधा । प्रभग हैको प्रस्थय (श्रव)। पत्थद्व पू [प्रस्तर] १ रचना-विशेशनामा सपूर् (ठा वे ४---पत्र १४१)। २ सर्गी कं बीच का भन्तराज्य भाग (प्रस्तु २ सम २१)। परवड वि [प्रस्तुत] है विद्याचा हुन। २ फैलाहभा(भन६ ८)।

परथण न [प्रार्थन] प्रार्थना (नहाः भाष)।

पत्यणया ३ और [प्रार्थना] १ भ केशापा परगणा ∫बान्सरें (धार्ष ४) । २ शक्ताः माँग । १ विश्वति निवेदन (शग १२ %) सुर १ २ सुपा २६६ प्रान्यू २१)। परवाद केवी पश्च = पच्च (सावा १ १)। परवय वि प्रार्थेकी धनिमावा करनेवासा (समार २२१६ सारथ)। परथय रेखो परय = प्रस्य (उप १७१ टी। षोप)। परमयण न [पध्यव्न] राम्बल पापेव मार्व में बाने पाणुराक क्लोबा (लाया ११% स १३ ३ वर ८ ७ शुग ६२४)। पत्यर शक [प्र+स्तु] १ विद्याला। र फैनाना। यङ्ग पत्थरेता (बस्ट ठा ६)। पस्यर र्वू [प्रस्तर] पन्बर, पायाख (बीप-क्षण पत्न १७ १६ सिरि १६२): 'पत्वरेणसूमी श्रीवो पत्वर' उन्द्रमिष्ट्यई । नियारियो सर् पण सक्तांत विमरगर्द (प्रकेश)। परभर न दि । पाद-काश्रम सात ( वड )। पस्थर 🕬 पत्थार (प्राप्ता विश्व २) । पत्थरण न [प्रस्तरण] निजीना चिट्टापरनर एमं तहा एमं (बर्मीव १४७)। परवरमञ्जित न दि । कीमाहन करना (दे व परवरा की [दे] चरण-चात कात (दे व **=**) ι पत्वरिम प्रदि] प्रमण कीरम (१६२) । परवरिक्ष वि [प्रस्तृत] विद्याया हमा 'पन्तरियं चलुख' (वास) । परमय देवा पत्थाव (हे १ ६०: हुमा: पडम ५ २१६)। परवा सक [प्र + स्या] प्रस्थान करना प्रवास करना । वक्त प्रधाँख (खे वे ५७)। प याण न [प्रस्थान] प्रपाशः नमन (परि दश मनि **१**) । परबार 🖠 [मस्तार] १ विस्तार (अवर ६६)। २ तुष्पवन । ३ प्रमुशाविनिर्मित शस्या । ४ पियर मसिक मिन्या विद्योग (प्राप्त) । प्र प्रायमित वी रचना विशेष (टा ६---प्रम १७१३ कस)। ६ विनाश (चित्र ५ १३ 122) t परयंधक्य

पत्यारी की वि] १ तिकर, समूह (दे ६ ६१)। ए सम्बा निसीना ग्रनसरी में 'पनारी' विद्दृष्टा पाया सुपा १२)। पत्याव सक [प्र+स्वायय] प्रारम करना । बक्क. परबावर्धन (हास्य १२२) । परबाद १ मिस्नावी १ भवतर । २ प्रसंग प्रकरण (हे १ ६≈ इमा)। परिवज वि [प्रस्थित] १ विक्ने प्रवास किया हो वह (से २ १६ सूर भ १६८)। ২ গ সংখাদ হতি খাল (হাৰি ১)। परिवाह वि मिर्जिती १ विसके पास प्राचैता की नई हो बड़ । २ जिस की ब की प्रार्वना की बर्द हो वह (मग पुर ६ १८ १६ ६ । उ**च**। । पश्चिक्ष वि हि | खेळ वस्ती करनेवासा (दे 4 8 )1 परिवास वि प्रिशिवकी प्राची प्राचेना करते-बाला (छव) । परिवास वि प्रिप्तस्थित विशेष मास्त्रावाचा अइष्ट व्यक्ताशासा (३४) । परिचक्ष । की [क] मीच का बना ह्या परिधक्ता र्रे भावत-विशेष (ग्रोम ४७६)। "पिक्रम पिक्रम "पिन्की बांच का बना क्रमा माजल-विकेष (विदा १ ६) । पारधद वेको पुलिश्च = प्रस्थित प्रापित (माक २६)। पस्पिय प्रीपार्थिया १ एका नरेत (खाया १ १६३ पास)। २ वि प्रविधीका विकार (चना) । परबी की [के पात्री] पान मानना भीन करबोरपरिव व माउमा मह पर्द विश्वपिटि (बारप घ)। पस्थीय न वि १ श्रम्भ वक्त मोटा कपहा । २ वि. स्पृत मोटा (वे ६ ११) । परमुख वि [प्रस्तुदा] १ प्रकरण-प्राप्त प्राकर शिक (तुर ३ (१६) सङ्ग)। २ प्राप्त सम्बर्धाः १४ १ १७)। पत्युर वेको परमर= म + स्तृ । बंह परमु-रेचा (क्य) । परमेजनात्र े पार्थेत देशो परभ = प्र + धर्पम् । पत्येमाण

यदा (सी) न जिल्ला विरुग्ध (शह-

परम (ती) देवी परम (तार--पुष्प १६६)।

पदान देखो प्रस्त = पर्य पर्य प्रदूष प्रदूष पर्दत

पद्दण न [प्रदृष्म] धेवाप वस्मी (नुमा)।

पदाइ वि मिन्नायिन् दिनावा (नाट---

पदाय ॥ प्रदान देश सर्वेश (धीरा

पबाबि (शौ) र् [पबाति] पैका फानेनामा

पदाक्या नि [प्रदासक] केनेलाला (निते

बैन्छि (प्रमी १७- वाट—वेटी ६६) ।

पद्मव देवी प्रयाद (स. ६२६)।

मदरिसिय वेको गर्वसिम (वर्वि)।

मलवी ३७)।

(EB) 1

(4 x ) 1

धवि ४५)।

33 ) (

पीक्ति (शह १)। पब्स बर्ग मि+द्वियी हेर करना। पहुर्वित (पैचा २: ६३)। पव्स्वया 🕷 [प्रद्रेपना प्रव्यना] हेव भारतमें (अप ४०६)। प्रकेश स्थापि + द्वा विषय से स्थाना। पवेन्बद् (र्मान) । श्रेष्ट "पविश्सा न विस्ता वयमका (घर १८ रि ११४)। ववेस केहा पएस = प्रफा (धन)। पवेस व मिद्वेप हेव (वर्गत १७)। प्रवेशिक नि प्रवेशिको प्रकलित प्रविवासित (भागा) । क्योस केही प्रश्नोस = दे, प्रहें व (प्रत १६) Prog () i पदोस देवी पञ्चोस = प्रदीप (एप) । पद न दि शि द्याग-स्थान (देद १)। २ बीटा पर्वष (शय) ।

१८६)।२ वीच, मेखी (घर Y)।३ परिपाटी क्रम (बालम) । ४ प्रक्रिया प्रकारत (बमा १)। पर्वस वं प्रिन्धेसी मीच नात । साम वं ियान यदाव-विदेश वस्तु के शाह होने पर करका को समाम होता के कह (विसे १८१७) । पद्धरविदिशिक्षपुष्टमा भीवा(१६ १)। २ सीक दबराती में 'पावर'। 'पबर-पर्णाह नाइवे पचारेड' (शिरि ४३६)। पळक कि बिटे शेकों पारनों में फलका (पद्)। पदार दि विशेषका गुँक पट बना हो गई. पुँक्करा (दे ६, १६)। प्याद्य के प्रशासिय (मनि)। प्रमाण केवी पहत्य (नाट—शुक्स २ ६)। पधार देखो एद्वार=प्र+ वारम् । भूतर-पवारेक्व (घीपा शाया १ १-- पव ६४)। प्रचाद शक दिन भाव दिश्या प्रदिक वैष से भागा । संज प्रधाविक (बाट) । यघावण न प्रिचावली १ दीव क्ये हे गमन । २ कार्य की सील विक्रि (मा १)। १ मकाबन (वर्मचे १ ७४)। प्रमाणिक वि [प्रधानित] १ दीना ह्या (महार परवा १ ४)। २ वरि-धील (धन)। यमाबिर वि [प्रधावित] दीकोराबा (मा थम्बय न प्रिथमनी १ वप देना। ९ एक प्रकार का साबेपन प्रथ्य (क्य) । पण्डिय कि निर्मापिती विकास क्षा वि पमा हो वह (राव)। पयोज्ञ सक् श्रि⊬भाष्] दोना । सै पर्याद्वता (याचा २०१ ६. ६)। प्योज वि नियीत | बोना इस्रा (यीप) । पभोग छ⊌ प्रि÷धामृ] बोला। पनोर्थे (F Yut) 1

प्रयोज-पद्मीव

पद व पिछी स्वोक बस काम (प्रक

पष्टेस वेशो परेस = प्रॉप (तुम १ः१६ ३)।

पद्धक्षी पिद्धति । मार्थ, रास्ता (क्या

पन देशो पंचार, रस विव [विशास] पन्छ इस भीर पाँच १३ (कम्म १ ४ १२ ६८: भी २६)। पन्य (पे चूपे) देखो पणय = प्रखम (हे ४ 124) I पद्म देखो पण्या = पूर्त (मुपा १३१) कुम ¥ =) 1 पद्म हेको एकम = है (सप कम्म ४ १४)। प्रस देखो प्रण्य = प्रज (धाचा कुश ४ ८)। पद्म वि प्राञ्च र पंडित जानकार, विज्ञान (ठा ७) हर १५१ वर्नर्स ४६२)। २ वि प्रस-संबन्धी (सूच २, १ १६) । पम रेवो एक । र, रस ति व [देशम्] पनच्छ १५ (६ २२ सम २६) समा संख्)। रस रखम वि विद्या वनस्वा १४ भाँ (तुर १४, २४ ३ पतम १४/१ ०)। रसी की विश्वी र पनधार्ग । २ पनखबी विधि (कप्प) । पस रेखी पणिस = पएस (स्प १ रे१ टी)। पर्श्वनगर की [पण्याङ्गना] देखाः वास्त्रज्ञना (छा १ ३१ थी)। पद्मरा देनो पण्यसा = पद्मर (विदा १ ७) सुर २ २३०)। प्रमृद्धि देशो पण्ये हे (रूप्प) । पद्धतं देशो पण्यत्त (द्वारा १ १) का सम १)। पश्चिर की [पश्चसप्ति] पन्नहत्तर ७३ (सम ८६ वि १)। पद्मचि देवो पण्यचि (बुगा ११३) सीत ध महा) । १ महर्ष ज्ञान । विषये प्रक्रमण निया काय बह (तेंदू १४) । ७ पोचवां होश-ताल

भवातीतुष (धाषक १११) : पश्च रि मिद्वापित् यास्यतः प्रतिपास्क (दिष्ट)। पभपिता की [प्रक्रपत्सवा] देवी पुत्रप चिया (रुप)। पश्चपश्चम् देवी प्रव्यवस्य (वि ४४६)। पस्रव देखी पण्यम (पाम) । "रिज वु ["रिपु] यस्य पती (पाम) । यक्षया ध्यै [पक्षया] नवनात् वर्गनावजी को

शायन-देशी (देवि १ )।

40

प्रमुख देखी पुण्यस् । पन्नवेद (शव) । कर्में पल्लिका (स्व) । वक्क पद्मवर्यत (सम्म १६४) । संक प्रायेकणं (पि १८१) । पश्चमा वि [अक्रापक] प्रतिपादक प्रक्षमक (कस्म द सद्दी)। पद्मक्त देवो चण्यवम (सुपा २८६) । पद्मस्था रेको पण्णत्रणा (भव वर्ख र ਨਾ**ਥ ਪ)**। पद्मवय देशो यण्यवरा (सम्म १६) । प्रमध्येत वेको प्रसय । पद्मा देखी पुज्ञा = ब्रजा (बाबा का ४ १) ₹)। पन्ना बेचो पण्या - वे (पच १ )। पम्नाइ एक [श्रुक्] गर्रन करना। पप्रावद ( Y 234) 1 पद्माविक वि [सूचित] विनका मर्वन किया बदा हो बहु (पाम' कुमा)। पञ्चाण देखो पण्याण (पाचा दि ६ १)। प्रभारस (वप) नि न [प्रश्नवदराम्] पनरह १५ (ग्रवि)। पन्जास केवो धण्डास (धम 💗 🛚 हुना) । की सा(कम्प)। इस नि[चम] पनासना ६ वा (पकल ६ २३)। पम्ह देखी पण्ड (कप्प) । यन्द्र (मप) देखी यण्ड्ज = दे. ब्रह्मव (धरि)। पर्यंच वेकी पर्यंच (सुपा २१३)। पपद्मीण वि [पपछावित] भागा हवा (वि १४६ १६७ गार-पुष्प २०)। पपिष्णामद्द पुरिपितामद्दी १ अद्या विकास (राज) । २ पितामहका पिता परवाचा (वर्गर्स १४१) । पशुक्त पुं[प्रयुक्त] थीव, पुत्र का पुत्र, गोला (नुपा४ ७)। पपुत्त रुपू [प्रपीत्र] पील का पुत्र पोते पपीच मा पुन परगेवा (विदे =६२: राज)। पच्य सक [म + आप्] प्राप्तकरमा । क्योत्र, पप्पोषि (पि ६४) उस १४ १४)। पत्पोदि (शी) (पि १ ४)। श्रृष्ट पटप (बएए १७) सीप ११) विशे १११)। हर-थ्प्य (चिते १६४७)। पटपरा न 🛊 पर्ये इ.] बनस्पति-विशेष (तूथ **₹. ₹. ₹)** 1

पष्पक्षः ) पूंडी पिपेट | १ पापकः सून मा प्रपद्धता । इर्द की बहुत पत्नकी पुरु प्रकार की रोटी (यह १४) मित्र)। २ पापक के बाकारनामा सूर्व्य मृत्वाएड (निष् १)। पायम पू ["पाचक] नरकानास-निरोप विकेश १)। भी इस प्रमित्क रिक प्रकार की मिट करनु (पर्एए) १७---पत्र पप्पक्रिया भी [पर्पेटिका] तित भावि की बनी हुई एक प्रकार की कार्य बस्तु (पर्श्य ₹1 FEB XK5) 1 युव्यक्ष केलो युव्यक्ष (नार-निक्र २१) । पप्पीक्ष पू [वं] बातक पत्री पपीक्षा या वपीइस (वे ६ १२)। पञ्चल कि प्रिप्तती १ क्लाब पानी से मीबाह्या(पण्डर र स्थाया र व)। २ व्याप्त 'चपरण्यूयवेनस्माई च' (पन ४ दी) । १ न फूदना सामना (यतह १२०)। पण्पोड्ड पण्पोति } ध्वारे पण्प । पप्पंत्रवाम [प्रस्पन्दन] प्रथलन करकना (राम) । पण्यास प् हि | समिन-विरोप (दे ६ ६)। पण्डिकम वि [वे] प्रतिस्थित (वे वे **२२)** । पण्डुल वि [वे] १ धीर्व सम्बाः २ उद्दीय-शान, बक्ता (६ ६ ६४)। पण्डह् बक [प्र+स्ट्रद्] १ किवना। २ कुटमा । यमुद्रह (प्राष्ट्र ७४) । पण्कृतिम र् [प्रस्कृति] नरकारात-विरोध (विवेध्य २९)। पर्युत्य देवो परपुक्षा 'बाह्यपृत्रमध्यो' (सूच २ २१)। पएकृत बक [ ग्र + स्फुर ] १ करकमा, क्तिया। २ कॉपना । क्युट्स (से १४, ७७) या ६४७)। पप्पुरिक वि [प्रसुरित] फरका क्ष्या (६

₹ **१**€) 1

पप्पूचन (रंभ)।

पणुष्ट बक [ प्र + पुरुष् ] रिक्सना । वहः

पण्डल विश्व विद्वाल विश्व हिंद

(शाया १ १६३ वर इ. ११४४ पत्रम ३

६६, तुर २, ७६३ वर्श या ६३६ - १७ )

<b>₹</b> ₹ <b>⊂</b>	पाइअसर्महण्यको	पणुरक्षिभ—पर्भवण
'दम पशिएत सर्वते प्युक्तनिबोसका गामा'	प्रवस्त्र नि [प्रवस्त्र] बनिष्ठ प्रवर्ग प्रवर	का आरत (से ४२)। वे बोड़ानमा हुआ।
(भाग १९१)।	(कृषा) ।	पर्वत का धाव (स्तामा १ १ — भव ६३ धन
परपुरिक नि [मपुरिका] करर देवी (सम्मत्त	पंशाहा की [प्रवाधा] प्रकृष्ट वापा विशेव	र,७)। ४ एक देत एक द्याप (से १ द≺)। र
१ ध मीर)।	पौका(खनगर ४)।	चलकर्ये परमाग (यज्ञक)। ६ पुनः, पर्वेत के
पर्युक्तिभा की [ प्रपुद्धिका ] केवी कप्यु-	पबुद्ध वि [प्रदुद्ध] १ प्रवीक्त निपुक्त (वि	ळपरकाथाप (ठॉदि)। ७ वि योग्रायमा
क्रिमा (च ११६ घ)।	१२ ३४)।२ वाग धुना (तुर ६,२२६)।	हुमा ईवदनगठ (यंत्र ११) ठा १) ।
पप्छतियं न [प्रस्कृषः] प्रतान सम्बं (चय	<ul> <li>शिसने सम्बद्ध तरह बानकारी मात की हो</li> </ul>	प्रमास की [प्राग्मास] क्वा-क्रिके पुक्र
₹ <b>«</b> ) ι	नह् (गाना)।	की सत्तर से यस्ती वर्ष तक की यवस्वा (हा
परफोड क्यो परफुट्ट। एन्डरन्ड खन्डरेकर्	पकोश्र सक [प्र + कोश्रय्] १ वावृत करना।	१ पण प्रश्र तंदु १६)।
(बाला १४३)।	ए जान कराना । कर्ने, पदोषीयामि (पि	पब्सूस वि [प्रभूत] स्लब 'मंड्रुसीए क्से
पप्लोड सक [प्र+स्प्रेटस्] १ महक्ता	\$\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	परमुख्ये बर्दुरचेख' (बर्मीक ६२) ।
मध्यप्र मिराना। २ मध्यम् न करता। १	पद्मोक्षण म [प्रदोधन] प्रदृष्ट दोषम (घट) । पद्मोद्ध देवी पद्मोद्ध । इस्यवाहणाव (पद्मम	पञ्चोक्ष ट्रं [दे प्रमाग] भोत विकास (दे
प्रक्षेपस्य करना। पण्डोबद् (वा ४३३)।	क द ) ।	4 ( ):
राष्ट्री (तत २६ २४) रङ्ग प्रयस्त्रीबंत	पनोद्दुप्रिनोध] १ जावप्रतः २ जान	पस पूर्विमा १ श्रीकान्त नामक स्त्र क
पण्छोडमेतः पण्छोडेमाण (बारेश्रः पि	हमक (चार १४ पि १६ )।	एक जोकराच (ठा४ १) इक)। २ द्वीप-
४६१ Ⅲ ६)। संक "पण्डोकेळम स्सर्व	पत्रीहण आको पत्रीमण (राज)।	निरोप धीर समुद्र-निरोप का प्रविपति नैन
रम्प (बाट १७)।	प्रबोह्य वि प्रिकोध है जबीव कर्या (विशे	(ए <b>न</b> ) ।
पण्छोडल न [प्रप्योटन] १ स्थवना प्रकृष्ट	1 (50)	पम वि [प्रम] सहत तुल्व (क्ला)।
कूनन (भोन स्व १६३)। २ शास्त्रोटनः	पत्रोदिक कि [प्रदोषित] १ वर्षका हुन्य ।	पमइ के पिसिद्य, 'चंडाल' चंडवद्पवर्रेल
सास्त्रमन (पद्दृ २ २—पत्र १४वा पिड	र विश्वको ज्ञान श कराया थना ही वह (सुरा	(सम्बः १४१)।
२६६)) पण्छोडमा क्यं [मल्योटना] अपर क्यो	184)1	पर्मेष्ट्र हुँ [प्रशङ्कर] १ प्रष्ट विशेष ज्योगिय-
(योग २६६: क्या २६, २६) ।	पक्षक केवो पक्षक (से ४२% ६, १६)।	कि-निरोप (ठा२ ६)। २ दुतः देव-निमान
पण्छोडिम वि [वे प्रस्थोटिव] निश्चीक	प्रशास देशो प्रशास = सम्प्। प्रशासक	(तमं कः १४' पन २६७)।
माहकर क्याचा हमा (देव २७ लाग)-	(f × 4t) 1	पर्भक्त वि [प्रभावत] क्षाराक 'क्ष्मकोम-
पण्डोरिसमोहनामस्य (पडि)ः २ फ्रोड्रा	प्रभास देशो प्रशास = जानव्। प्रवासद (हे ४ ४१)।	पर्मक्षे (बत्त २३ ७६)।
हुमा दोस हुमा 'चन्डोडिमछरुश्चिमां व	पक्तुद्ध देवो पत्रुद्ध (पि ११६)।	पर्मकरा की [प्रमहत्य] १ विदेशनये भी
वे हींव शिस्ताय' (संबोध १७) ।	प्रस्म वि [ब्रह्म] नम्न (ग्रीनः ब्राम २४)।	एक नवर्षेका ताम (ठार, १)। २ वर्ष
पण्छोडेमाय रेपी पण्डोड = व + स्केटर् ।		की एक सरमदिको का नाग (स. ४.१)। १ तुर्वेकी एक सक्तमदियों का नाग (सर
पद्भ देवो पएठक (वह )।	परमह } वि[ प्रश्नव ] १ परिष्रष्ट परमसिज   प्रश्नासित पुरूष ह्ना (परह	१ द्रोः १ द्रो
प्युक्तिम रेको प्रशुद्धिम (हे ॥ ११६)	रंवे प्रविद्रिष्ट मा वेर तुर वे	पर्मकरावर्षे की [प्रसङ्ग्रावरी] विदेश वर्षे
रिम) ।	१२३ था ६३: ६४)। २ मिल्यूट (से १४	नी एक नवर्ष (बाहु १)।
पश्य तक [प्र+वस्य] बरम्बक्य हैं।	४२)। व ट्रे नरकाशस मिसेय (विकास २०)।	पर्मगुर पि [प्रमङ्गर] पति जिल्लार
नहना निस्तार के कहना <sup>े</sup> प्रवित्रा (श्व	पत्रमार दे कि मागुभार] १ वंशत समूहा	(बाबा)।
<b>१ २, ६)</b> ।	बल्ला(दें € ६६ छ ४ २ छुर १	पर्भेजण पु [प्रसङ्गत] १ वाहुकुमार-विकास
पर्वत र् [प्रवस्य] १ सन्दर्भ धन्त्र परहरर		के क्यार रिया का इन्हर्स (ठार, ३ ४ १
मन्दित नास्य-धमूर् (रंग्रा ) । ३ श्रीपच्छेर	पबमार पू कि विरि-प्रका पर्वत-शक्त (र	सम्बद्धः । १ वयस्य समूद्र के एक शास्त्रकः
मिरन्तरता (स्त ११ ७)।	६ ६६)। 'यद्यारर्गसरमया साईती सन्तरी	क्यतः या मनिहासक देः (का४ र) ।
पर्वथण म [प्रजन्धन] प्रकृष सन्तर्भ सन्ति		व बाजु पदन (व १४ ६१)। ४ बानुपोत्तर
कास्य-अनूर की दक्ताः न्वज्ञात् व वर्णवर्ते (तत्र ६१)।	परभार प्रशासकार] १ प्रश्टकार, 'पुनरे शंत्रविवरण्यास्थारो' (वस्त व शे) । र क्रपर	पर्वंत के एक शिक्षर हा व्यक्तियति देव (धन)
(22.44)	ं समानवस्थ्यक्रमास्य (वस्य व स्त) हर क्रवर ।	वणज दु[तमय] इत्तरह (के १४९८)।

पर्मसण न [प्रश्नकन]स्वतना (वर्गस १७६)।

पमक्त पु [जमकारा] १—२ विपुत्तुमार केलों के हरिकारत और हरिस्सह नामक योगीं इसों के लोकपालों के नाम (ठा ४ १—यन १९७ इस)।

१६७ इर)। प्रमण सक [प्र + मण्] कहना बीसना। प्रमण इ (महा सल्)।

पसण्य (महा ७७)। पसणिय वि [प्रसणिति] उक्क, कवित (स्क्ष)।

पसम सङ [प्र+अस्] जनस करना सन्दर्भाः प्रमनेसि (सु १६३)।

पसद सह [प्र+भू] १ समवे होना पहुँ बना । २ होना स्थान होना । पसवह (पि ४०१) । बहुः पसवंद (सुपा ०६) नाट— बिक ४९) ।

पसन पूर्व प्रश्नम् १ इत्यक्ति कमा प्रमुखे प्रश्नम् (ठा १, नसू)। २ प्रथम इत्यक्ति का कार्य्य (एपि)। १ एक केन्द्रम् वासु-स्वामी कारिम्स (इन्या वसू, एपि)।

पश्चम भी [प्रसवा] दुवीय वानुवेत की पटक्ती (प्रस्त २ १८६)।

पञ्जिष वि [प्रमृद] को समने हुया हो 'सा विक्या सिट्टसुए जरण्युत्तरिम पञ्जीका नेव' (बर्मीर १२३)।

पमा की [प्रमा] १ कान्ति देव (महुछ वर्गेतं १९९९)। २ प्रवाद निन्तुरेकीया समा सर्वेपका दे विस्त्वेदि (वेदेन्द्र ३१ )।

पभाइन ) पून [ममात] र पाठनसम्म जुबह् पमाय (पन्न ७ दर्ग पुर हे, द्र है महा ६ १४४) : २ वि मकाशित रस्तीए पन्नमाय ( जन ६४८ टी ) । राज्य वि [स्तिनिनम् ] मामातिक ममात-सम्मनी, सुन्द न (पुर १ २४४)।

पमार वृं [प्रमार] प्रकट कार (सन १६३) । प्रमाय केवी पहाप = प्र + मावन् । यत्रावेद्व, यत्रावित (सन पर १४०) । वहः प्रमावित (पुरा १७१)।

प्रभाव देखी पहाव-प्रभाव (स्तुल १०) । प्रभावर्ष की [प्रभावती] १ कडीवले (स्तुत-देव वी महरा का नाम (क्षम १११) । २ स्तुत्व को एक पत्ती का नाम (प्रस्म ७४

११)। इ. स्वाप्न राजींव की पटराणी चीर केवा गरेव की पूरी का गाम (पिष्टे)। ४ बलावेन के पुन निपंत की गामी (शाबू १)। १ राजा बल की परती (धन ११ ११)। पमार्थना वि [अजायक] प्रमाय कालेशावा शोमा की बृद्धि करलेशावा (बा ६: म २१)। १ सार्वि-कारक। १ सीरत बनक (हम १६०)।

पसावण म [प्रसावन] गीचे देवो (सू १)। पसावणा की [प्रसावना] १ सहारुय, गोरव। २ प्रसिद्ध प्रकारि (सावा १

१६---पण १२२ मा ६ यहा)। प्रमावय वि [प्रमादक] धीरव वद्गनेवाता (क्षेत्रीय ११)।

प्रमावाञ्च पुं [प्रमावाञ्च] वृज्ञ-विरोप (राष) ।

प्रसार्तित केको प्रसाय = प्र+ माक्य्। प्रसास सक [प्र+ साप्] बोलना भागस्य करता। प्रसारिति (विसे ४६९ टी)। वक्र

पत्नासंत, पत्नासरंत पत्नासनाम (सर इ २६ पत्न १४, १८ = ६ १ )। पत्नास मक [ प्र÷सास्] प्रकारित होता। पत्नासित (पुत्र १६)। भूका—पत्नासित्

(तय पुरुत १६)। घोडे पर्याखस्ति (दुव १६)। इड प्रशासमाय (क्य)। प्रशास वड [ प्र + भास्य ] प्रशासित करता। प्रशासि (व्या)। प्रशासित (दुव १-पूर्व १४)। वहा स्वयास्त्रीय व्याप्ति

करता। प्रजासेह (मा)। परावित (सूब १-पष १४)। महत्त्वप्रसासयेत प्रसासे साव्य (पत्रम १ ८ १६ व्याय ७४ कव्य जन्म भीप क्या।

पासंस पूँ [प्रसास] १ व्यवका महावेर के एक मण्डमर का बाय (स्व १६ कव्य) । ए एक विकटसाओं पर्योत्त का प्रविद्याला केव (ता १६ कव्य) । ए एक विकटसाओं पर्योत का प्रविद्याला केव (ता १६ न्याप (क्यों १) ४ एक विकटर का नाम (क्या १६ दे) । दन ती केविया (ता १६ पर्दा) । र कैय-वियालनेतिय (ता १६ पर्दा) । 'दिस्य न ['वीरों] ती केविया प्रधान केविया प्रधान केविया में विकत एक ती विवास विद्या में विकत का ती विवास विद्या में विकत का ती विवास विद्या में विकत

प्रभासा चौ [प्रभासा] वर्षेत्वाः श्वा (पद्मः २ १)। पमासिय वि [यमापित] उक्त, कवित (सूर्य ११११)।

पसासेमाण वेको प्रमास = प्र + भारत्। प्रमिद्द वेको प्रमिद्दं (प्र ११)।

ान्य प्याचाराष्ट्र (२०४)। पश्चिद्ध वित्य ["प्रमुखि] इत्यादि वसैट्ड् (सर्ग क्या महा)।

पिताई । य [प्रभृति] प्रारम्भ कर (नहां पिताई । वे) शुरू कर, नेक्स भावसावायी पिताई । पिताई । प्रभाव । प

पसीय वि [प्रमीत] यदि भीत भरमत्त करा कृमा (वट १११)। पशु वृ [प्रमु] १ इत्वास्त्र वरा के एक रावा

का नाव (पत्रम १ ७)। २ स्त्रामी मासिक (पत्रम १६ २१: कृष्ठ २)। ६ राजा तुर 'पनु राज्या सणुप्पयु कुन्नराया' (निर्मू २)। ४ दि चयक रावित्रमन् (मा २० मार १४ क्वा ठा ४ ४)। १ योग्य, बावठ 'पश्चित वा बोग्योचि वा एन्ह्रा' (मिन् २ )। एम्प्रेंच वक [म + मुर्जू ] श्रोम करना।

पहुंदेदि (दी) (हम्म ६)। प्रमुख (वै) वैको पनिष्ठं (हुमा)। पशुच्च वि [प्रमुख्य] १ विश्वने वाले का प्राप्तम किया हो वह (दुर १ ४८)। १ विश्लो योजन किया हो वह (स १४)। प्रमुख्य हेको पनिष्ठं (पदम ६ ७६। स

पर्भृष् १ १ १ मृत् ] प्रष्टुर, बहुत (मनः पष्ट्र १ मृत् शासा १ १: पुर १ व १ महा) । पसीय (पर) केवो हवसीगा 'सील-पर्भयमाणु के विकार' (पति) ।

न । क्यार्ट (मान)। प्रमाहक वि [प्रमाखिन] यदि मक्षिन (सामा १९)।

पसक्ताण न [प्रमुक्षण] १ सम्प्रका विशेष यन । २ विवाह के समय किया पाता एक तपह का स्वटन (स ०४)।

पसिक्तस्य वि [प्रमुक्षित] १ विनितः । १ विवाह के समय निस्तरी स्वटन निमा वसा हो तत् (वसु सम ७१)।

सः चयु (पणु चयु चयु) । प्रमुख्य धक्क [म + सूख् , मार्त्र] मार्थक करना, शाक-मुक्त करना भाइ मार्थि से वृत्ति वर्षेश्य को दूर करना । प्रमुख्य (क्या) (क्रमा) ।

नप्र(भाषा)।

2×4) I

**₩** ₹)।

1 (605

488) 1

स्थमः (चाव ६४० पि 💵 )।

पत्रोडल **के**शे पत्रोचम (श्रम) ।

पवाडा की प्रिवाधा प्रकट नाना निर्देश पीका (कामा १ ४)।

पबद्ध वि प्रबद्धी १ भगोल निप्श (से

१२ १४)। र भागा प्रया (सर ४ २२६)।

६ जिसमे स**म्ही श्रम भानमारी** प्राप्त की हो

पक्षोच सक [स+कोसय] १ कापूत करना।

क्ररकर्य परमाग् (यजक)। ६ पून पर्वत के

क्यरकाधाय (द्यंदि)। ७ वि मोकामना

परकृतिका—पर्माजप

k₹⊏

पण्डिका वि [प्रपृत्तिन] अपर विशे (सम्बद्ध १वश् विके। पर्लुक्षिमा को [प्रकुतिका] देवी चर्छ-

क्रिया (ना १६६ म)। पप्पुरिसय न प्रिश्वय्वी स्तत्तव स्मर्ग (राव परफोड 🖦 परपुद्ध । परदेश कन्द्रीका

(बाला १४३)। पप्लोड सर्वाप + स्टोटची १ फाइना महत्वर गिरामा । २ धाल्यासन करना । ३

प्रश्चेपक्ष करन्त्र । पण्डोबद्द (वा ४३३)। एक्ट्रोड (क्त २६ २४) बहु पण्योद्धेत पण्छोडपंत पण्छोडेमाय (स १४३ पि YER ठा ६)। तंत्र 'पण्योद्धेकम श्रेषये नम्मं (धार ६७)।

भएक्ट्रेबण न [प्रप्कीटन] १ ऋदना, प्रकृष्ट <del>पूर्</del>तन (भीव ना १६६)। २ धारकोटनः मास्क्रवन (परह **१. १.—**पत्र १४०) सिंब R ( ( ( # ) )

पण्येक्टमा 🛍 [प्रस्केटना] उसर 🖦 (योच २६६ क्ट २६ २६)। पण्डोडिम नि दि प्रस्कोटित निर्माटित म्बङ्कर विद्या हमा (वे ६ रि७ नाम)-'पण्डोडियमोहबाबस्त' (पति) । २ कीवा

हमा तीस हमा 'पण्डेडिमनडरिहर्सटर् व वे ब्रॉल निस्काच' (संबोध १७) । पण्योडेमाय देवी पण्योड = द्र + स्कोटप्। पद्धक्ष वेशी पद्धक्ष (वह )। प्रमुक्तिम वेकी पर्यक्रिक्ष (हे ४ वेश्व

Fiel 1 पक्षम बच्च [म+ वस्यू] प्रशन्त क्य से गहना पिस्तार से नहना। वर्णीयला (दश થ, શુ ) (

पर्वय र् [प्रवस्य] १ बन्दर्भ क्षम्य परस्पर मन्ति वात्रक्षमृत् (रंगः )। र ग्राविच्येत मिराजस्या (बस ११ ७) **।** पर्वपण न जिन्नस्मा अनन्त सन्तर्भे सम्बत्

(सब ११) ।

कारप-समूत्र की रक्का अहाए व कर्बक्ती<sup>\*</sup>

प्रमास देवो प्रमाध-सारप्। प्रमाबद ( ¥ 28)1 प्रमास देशो प्रस्तातः = न्यानन् । प्रशासद (RY Yt) | पण्युद्ध क्यो प्युद्ध (पि ११६) ।

पण्म वि [प्रदृष] नम् (सीरा प्रक्र १४) । ृषि [ शक्तर ] । परिचर, परमस्तिम प्रस्कतित चुन्य हुना (परह १ १ प्रविश्रद्धां या ३१० सर ३ रेरकेश के का क्षेत्र (से रूप ४२)। १ 🖞 नरकामात्र विशेष (देवेन्द्र रूब)। परमार दे [के प्रागुमार] १ संकत संपूर भारता (के व ६६, के ४ २ पुर १ ११६ भण्या नक्षाः बुक्क २१)। पण्यार पुरि विशि-प्रका वर्षत-वन्दर (हे ६ ६६) 'परमार्गशरमसा धाईती सम्पत्ती बदु (एव ८१) । परभार वृद्धिगम्बारी १ जरूर बाद, भूतरे र्तंशीवरण्यपद्यती (वान ही)। रे क्रार

२ ज्ञान कराता। कर्मे प्रवोधीमामि (पि पश्चेभवः न [प्रदोधन] अझ्य दोवन (एव) । पबोह रेको पबोध। इन पबोह्लास (पटन थबाह दुमिनोधी १ जायरखः। २ ज्ञान प्रवोद्य वि [प्रवोद्यक्त] प्रवीत-कर्ता (विशे पनोदिश रि प्रिकेशिव] १ वर्गमा हुया। २ जिसकी जान न कराबा क्या हो बद्ध (सूदा वस्त्रस्य देशो वस्त्रस्थ (हे ४ २६) १, ६३) ।

4 2 ): (एक)। 2) ( (धामा)। पर्शक्य पू [प्रमक्त] १ वसुनुवार-विवास 🎙 प्रसार विस्ताका अन्तर (ठा२ ३ ४ ध बन ११) । २ लवल-तदुत्र के एक पाताब-नलस ना ध्यीन्हानक देर (ठा४ २)। व बायु नवन (ने १४ ६८)। ४ मानुनोधर

ह्या ईपवननत (संत ११ का १)। पुरुमारा 🛍 प्राग्मारा देशा-विरोप पुरुष की शक्तर से घरती वर्ष तक बी धनरना (झ १ -- पत्र प्रश्च शंच १६)। प्रमुख वि प्रियत् जिल्ह भंदरहीए कर्ने पण्मचा बर्दुरलेखं (धर्मवि ६६)। पक्सोश र् दि प्रभोग] मोन विकास (व पस प्रिस] १ हरिकाम्य कामक एक क एक शोरूपात (ठा४ १) इक)। २ होप विरोध और समुद्र-विरोध का अविपति देन पस वि [सस] धइष्ट तुस्य (कम ज्वा) । प्रमुद्ध केवी प्रसिद्ध, 'चंदादी चंद्रबहुपनकी (पण्म १४१)। पर्भेकर इं[प्रमक्कर] १ वह क्लिन ज्योतिक क्षेत्र-विशेष (ठा२ ६)। २ प्रेन देव-विमान (समः १४४ वय २६७)। पर्शकर वि मिमाइर महरूक 'स्वबोद-पर्मकरों (कस २३ ७६)। पर्शकराक्ष [प्रसङ्ख्य] १ विदेश-वर्ष से एक नगरीका नाम (ठा२ ३)।२ वर्ण की एक बंधनद्विपी का नाम (इस ४ १)। ३ तुर्वे की एक अप्रयक्तियों कर नाम (सम पर्मकरावर्षे की [प्रसङ्ख्यावरी] विदेश का नी एक वर्गये (धालू १)। पर्शगुर थि [मशङ्गर] बढि विकरण

नर्गंत के एक रिखर का मीनादि देश (धन)।

वयम दु [ वतय] ह्यूमान् (दे १४ ६६)।

११७३ इक)।

(एस)।

पमग्रह (महा चए)।

पमक्त पू [प्रमद्भन्त] १—२ वियुत्पुगार

देशों के हरिकान्त भीर इरिसाह नामक बोगों

इन्हों के कोकपाओं के नाम (ठा ४ १--पन

ममण सक [प्र + भण्] कहता बौसना।

प्रमणिय नि [ प्रमणिन ] उक्त, कवित

पसम सक [प्र + भ्रम्] भ्रमक करना

सटकता। पसमेसि (सु १६६)।

पसम्बद्ध [प्र+भू] १ समर्थ होना पहुँ चना । २ होन्स रूपच होना । पमच्ड (पि ४७१)। बच्च पमर्थस (सुरा ६६ नाट--विक **४३)** । पस्य पुं [प्रसंद] १ स्टपित वस्य प्रमुति प्रसंग (ठा १, वसु)। २ प्रयम क्लान्तिका कारण (एपि)। १ एक बैनमुनि बन्दु-स्थानी का रिक्स (क्रम बसु, एदि)। पसवा की [मसवा] तृतीय कानुदेव की पटरानी (पदम २ १=६)। पश्चिम वि [प्रमृत] जो समर्थ हुया हो 'सा विक्या सिटुसुए, क्यान्तुद्धम्मि प्रमुखिया नेव' (बर्मीव १२६)। पमा की [प्रमा] र कान्ति देव (महाः वर्गेष्ठे १६६६)। २ त्रमाव जिल्ह्रुस्बोद्धा छना स्रमंपमा दे भिरम्पेति (शिन्द्र ३२ )। पमाइभ १ दून [प्रमात] र प्रातञ्जास युवह प्रभाव (परमें " १६। तुर १ ११ महा। स २४४) । २ वि प्रकाशित सम्योग प्रमागर् ( क्य ६४ व ही ) । सामा वि िसंबिधन् ] प्रामाविक प्रमा<del>त सम्बन्ध</del>ी सुबह का (सुर ३ २४%)। पसार मुं [प्रमार] प्रकृत मार (सम ११३) । पशाय देवी पद्दाव = प्र + मावस् । एमानेह यमार्वेत (क्षत्र पत्र १४०) । वह यमार्विस (मुपा १७१)। पमात्र देवो पहाद-प्रमान (स्तप्त १ व) । पमावह की [प्रमावती] १ क्योसने विक-देव की माठाका काम (सम १६१)। व् राम्ल की एक पश्चीका साम (पडम ७४

११)। १ उदाका राजॉप की पटरानी चौर भेका गरेश की पूत्री का शाम (पश्चि)। ४ बसरेव के पुत्र निवय की भार्या (धायु १)। ५ राजा नस की परमी (मन ११ ११)। प्रमावरा नि प्रिभावको प्रमाय बहुलेगाना शोभाकी बुद्धि करनेवासा (मा ६ ह २६)। २ छत्रतिकारकः ३ गीरवणनक (कुम ₹\$a) 1 प्रभावन न [प्रमायन] गीचे देखो (यू.५) : प्रमायणा की प्रमायना १ महत्त्र्य गौरव । २ मसिति प्रच्याति (सामा १ ११--पण १२२ था६ मक्का)। प्रमानय पि [प्रशासक] बीरव बहानेवासा (संबोध ११)। पमाषास्य 🛊 [प्रभाषास्त्र] शृद्ध-शिक्ष (एक) । पमावित रेको पमाव = प्र + धारव । प्रभास सक [प्र+ माप ] बोबना भाषण करना । पमासंति (विसे ४६६ ही) । वक् पमासंव, पमासर्वत पमासमाम (का द्व २६१ पटन ३१, १०, ८६ १)। पमाम बक [ म+भास् ] प्रव्यक्ति होना। पमासिति (पुत्र ११)। भूका-पमसियु (मग; धुण्य ११) । मचि पमासिस्तंति (पुज १६) : वष्ट प्रसासमाण (कप्प) । पमास चट ब्रि + भासम विकासिक करना । प्रमासेह (मय)। प्रमासंति (सुक ६-पत्र ६४)। बद्धः प्रमासयंत प्रधासे माण (परम १ व ३३ रमस ७५ कप च्चा भीपः सर्।। पमास र्रं [प्रमास] १ मनवान् महाबीर के एक मण्डर का नाम (सम १६३ कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का ग्राविहाता केन (ठा२ ६—पण ६१)। **३ एक केन** सुनि का भाग (वर्ष ६)। ४ एक विवकार का नाम (नम्म ६१ थी) । १ न ती में निरोप (व ६ महा) । ६ वेष-विमान-विशेष (सम १९ ४१)। विस्तान विश्वी की क विशेष भारतवर्षं की पांचम विशा में दिवत एक वीमें (इक) : पयासा की [प्रभासा] धर्मेला क्या (पर्या

8 () 1

488 पमासिय वि प्रमापित उक्त, कवित (सूच ११११६)। पमासेमाण रेको पभास = प्र + भारत् । पश्चित्र वेची पश्चित्र (र ११)। पश्चित्र कि.म ("समून्द्री इत्यापि वगैरह (मय चना महा)। पंभिष्रं ) घ [प्रसृति] प्रातम करः (बहा थे) शुरू कर, मेकरः 'बासमावाधी पमीइ पिनि<sup>जी</sup> (सुर ४ १**९७ क**म्पा पभीई । महा स ७३३ २७१ 🗗 । प्रभीय वि[प्रभीत] प्रतिभीत सर्यन्त इस हुमा (चत्र ११)। प्रमुपुष्मिम् । इस्तान्त्र वेश के एक शका कानाम (पउन ३८७)। २ स्वामी मालिक (पदम १६ २३) इ.इ.२)। १ सवा तुम 'पनुरावा बस्युप्पमु कुवराया' (निर्मूर)। ४ वि धमक राक्तिमान् (या २४) मब ११८ बका ठा४ ४) । ३ मोरम सामरु पञ्चति वा कोरगीति वा एमहा (निवृ २ )। पुर्मुख एक [ध + भुज् ] मीन करता। पश्चमित्र (शी) (इस्य १)। प्रमुखि (पै) देखो प्रमिष्टं (कुमा) । पुनुष वि [प्रमुक्त] १ विसने वाले का प्राप्तम्य किया हो वह (सुर १ १०)। १ विसने मोजन फिया हो बहु (स १ ४)। पमृद्दः केवो पनिई (परम ६ ७६) छ पमुद्र रे २७१)। पभूष वि [शसूव] प्रद्वर, बहुद (सम्प्र पक्त × × याभार १। दुर ३ व(। महा)। पमीय (बंद) देशो हमसीगा 'नोव-पनीयनाणु र्व किक्क्ष (पवि)। पमञ्च कि [प्रमस्तिन] परि महिन (छापा 1 (1 1 पमक्रमण ग[प्रमुक्षण] १ सम्मक्रन विशे पन । २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का प्रवटन (स ०४)। पमक्तिम वि प्रमुक्षिती १ दिनितः। २ विवाह के समय जिसकी तबटन किया गया हीं बह (बनुः सम ७१)। पसम्बद्ध (प्रक्तिस्ता सार्वे ) मार्वत

करना, साफ-सुपरा ≕रना, मधद्र मादि है

वृत्ति वर्षेश्य को बूद करना । पनमद (हरा

हवा)। पमिन्या (मावा)। वह पमञ्जेमान (द्राक)। एंड पमञ्जिता (भग उवा)। कि पमञ्जित (पि १७७)।

पमञ्ज्य न [प्रमार्जन] सार्जन भूमि-शुद्धि (र्थत)।

पमञ्जणिया ) श्री [प्रमार्जनी] माह्न, भूषि पमञ्जणी | श्रीक परतेश लखरस (सामा १ भ भर्मे १)।

पमञ्जय हि [प्रमाजिक] प्रपानन करनेराला (दे ६, १८)।

पमिक्रिप्र वि [प्रसूष्ट प्रमाजित] वाक विश्व हुमा (बता भट्टा)।

पसक्त कि [मसक] र प्रमार-पुक्त, सकार काम प्रमाधी केररकार (धर काम रेस्ट-प्रासु १)। २ म कहती प्रध्य-कामक (कस्म ४ क १६)। ३ प्रमास (कस्म ४ क १६)। ३ प्रमास (कस्म ४ क १६)। ३ प्रमास (कस्म क्षेत्र) (गा)। क्षोग वृं [चेंसा] बताब-कुक केर्य (गा)। क्षेत्र पुं [चेंसान प्रमास कामक

मुक्त प्रति (क्य १ १)। पसद केलो पसय (स्वल्य ११ कम्यू)।

पसदा देखो पसया (तट---शक्तु १)।

पसद् चक [म + मृष्टु] १ मर्थन करना । २ विनास करना । ३ वन वरना । ४ वृद्धी करना । १ व्हें वी बूद्धी---पूरी वनला । वह- पसद्माप (निष्ठ १७४) ।

प्रमाद पुं [प्रमाद] १ वनोतिय राज्य में प्रशिवा एक मेंच (क्य ११ तुम १ ११) २ वेक्य वेगर्व (प्रमा) १ विश्व वर्षक करने-नाया। ४ विकासका 'कार सरदाय वर्षक प्रवासकार्य कु प्रवृद्धानार्य' (वेशिव १७) । प्रमादाय [प्रमादेश] १ व्यवस्त मूर्त करना

प्रमारण में मिर्मिता है बाज मुख्ये करणा (राम)। र नारा करणा। व कम करणा (राम (स्व.)। ४ वर्ष में गुली करणा शिक्ष व के)। देश विनास करणेवामा (वेचा देश भरे। समस्य मिं मिर्मार्थको मगर्थन-कर्णा (व्यक्षि र है)।

पादि हैं [मारिन] प्रयक्त करनेवला (बीत विकर्ष)। प्रमाय वृं[मार] रे भागन्य हुएँ (काल या २७)। रत वर्ष्ट्र वा प्रमा वाही की रूक्ताों की, ब्राल्स (स्वर पर )। कार

न [बन] एना का धन्यपुर-स्थित बहु कम या बाबीका बहुर एनर प्रतिनों के साव कीका करें सि ११ १७ स्थासा १ का १३)। प्रमासा की [प्रसन्ता] जतम सी कीठ महिना (बन बहु थे)।

(कन बार ४)। पमत् प्रीममञ्जी तित्र का सनुवार (गाम)। णाह प्रीमाञ्जी महावेष (मनु ११)। विदेश प्रीमियों तिल सहावेश (बा ४४०)।

कडक)। पत्ता चक [प्र.+ सा] सरव-सरव द्वान करना। कर्म प्रमीवर (विने ६४९)।

पमा की प्रमात । १ प्रमाल कार्यामधीनामाहण्य क्यांत्रीकिलिमाधीवहाल्यामाहीनामाहण्य प्रमा । १ प्रमाल स्वायः प्रतिताचियो प्रमाक्षेत्री (वर्षेष ६८१) ।

पमा केने प्रमाय = इनाव (वव १)। पमा केने प्रमाय = इनाव (वव १)। पमाइ नि [समाविन] प्रयाची वेरतकार

(तुरा ४४६) चर माया)। धमाइक्रक्य देवो पमाय = म + मद्। धमा°क्क वेको पमाधः 'वस्मपपास्के' (तर

७२व टी)। यमाग्य शक [प्र + सानय्] विशेष पैर्ति शे यातमा आसर करमा। इ. पमान्यणिका

(वा २७)। यमाण व [प्रमाण] १ यवार्व काल सस्य ज्ञातः। २ विषये बल्युका धन्य-सस्य ज्ञान हो बहु स्टब्स झान ना शायन (बंसु)। ३ जिससे नाप किना काय वह, 'बायुप्पवार्थीप' (ब्रा१७ व्या वरा)। भूमार मेरा परि शास (विचार १४४ छ। १ ३; जीवस १४° बम निमा १ २)। १ श्रंटमा (प्रश्नः भी २६) । ६ प्रमाध शास, व्याय-शास, एवं-शास- विक्काणसम्बद्धाः प्राप्त भारता भारता प्राप्त भारता प्राप्त भारता प्राप्त भारता प्राप्त भारता भारता प्राप्त भारता भारत वक्ष्य (भूत १६)। ७ पून सका बन से विश्वकार**नी**गार किया वास नहः। च मान-तीय प्रापरलीय। १ समा ध्या ठीक-धीक धवार्गे 'कमाध्यो नीय वैसि विश्व नम्पी बीय पमाछो होर्स (सुपा १६ मा १४)। भिर्देषि बन्द्रमासी वद्यर्गमे पिष्णः श्रम्भुशाशीमा ।

नीय न भागद नहुरी नद हेतानी नमार्ट हैं (प्रान्त देवे) । बाज पे किल्टी नगर-नाम. तर्मेशास (सम्मत ११७)। संबद्धार पूं [ैसंतरसर] वर्ष-विदोप (तुम १ २)। प्रमाण सङ जिमाणम् ] प्रवाण रूप है

स्वीकार करना। पत्रालु पत्रालु (शि)। कड पत्राणीत (कत्रर १≈१)। इत्र पत्राणि यक्य (शिरि ११)। पद्माणित्र सि [प्रमाणित] क्रमलु कर छे

स्त्रीपृत (तुरा ११ । मा १२)। पमाणिका भी [शमाणिका प्रमाण] पमाणी शमाणिका प्रमाणी

पमाणीकर यह [ममाणी + कृ] प्रमाण करना स्थ्य वर्ग में लौजार करना । क्यें पमाणीकपेपरि (शी) (ति १२४) । संक पमाणीकिम (नार---मालवि ४ ) ।

पनाइ देखे पनाय = प्र + नव् । इ. पनावें यहर (खासा १. १-- वव १.)। पनाइ देखे पनाय = प्रशद (जा; सीव: स्वन्य

१ १)।
पमान यक [म+सद्] मनल करना
बैदरलाध करना। बनायद, पनायप (कन पि ४६ )। पक्ष पमार्थन (पुन १)। ह पमाइजन (मन)।

इ. १५८३,७०० (१४४): प्रमाय प्रीप्तमान् १ कटोवन राजी में व्यवस्था और सक्टीब राजी में प्रकृति की स्वरूपनान्ता नेश्कारी (सामा) उठ ४ १९१ वहां प्राप्त इता ११४)। १९ वर्ष कर्षा 'व्यवस्थानस्थ दि का दिशासार्थमां वर्षुमारसञ्ज्ञानस्थ (इता १३)

च्युक्तास्त्रपुत्रमाद्धं (क्य ६६) । पत्तार द्वं [प्रमार] १ वच्छ का प्राच्य (कर्म ११) १ र दृष्टे वच्छ सारता (क्य १) । पत्तारचा को [प्रसारमा] द्वुचे वच्छ सार्व्य (क्य ६) ।

पमित्र वि [ग्रमित] वर्षितः वास हुगाः विश्वसूत्रसम्बद्धाः वर्षेति देशीर्यो (वेच २०३) ।

पिनसाय वि [प्रस्तात] यदिक्य बुरमार्थ हृषा (दा ६, १ः वर्षेत्र ११)। पिनसम्बद्धाः [प्र + म्स्री] बुरमाना 'पस्ट'

यसिद्धाय धक [प्र+म्से] दुरस्ताना 'पस्क' पन्नाय परेडी कोखी विकासर महिसिवारी' विक ४)। पशिस्त पन [म+मीख्] विशेष पीकोच करना सनुवना । पमिस्सई (हे ४ २३२) प्रमाय रेखो प्रमा = प्र + मा । प्रमील वेको प्रमिक्छ । एमीसइ (ह ४ २१२)। पसुद्धा दि [प्रसुद्धित] इर्व-प्राप्त इपित (बीप जीव ३)। पर्मुच सक [ प्र+ मुच् ] छोइना परिस्थाप करना। पर्युपीत (सन)। कर्म प्रमुख्यह (पि १४२)। प्रवि पमोक्खसि (बाचा)। **बड़** पर्मुचमाम (सब)। पमुक्त रि [प्रमुक्त] परिमक (हे २ ६७ पड)। प्रमुक्त देको प्रमुद्ध (सुपा १३ छ ११३ भी १)। पमुख्यिय पुं [प्रमुख्यित ] नरकावास विशेष (देवेना २७)। प्रमुत्त देखी प्रमुक्क (रि १६६) । प्रमुद्धिय देशो प्रमुद्धा (पुर ३ २ )। पसुद्ध वि [प्रसुरभ] श्रायन्त पुरव (नाट---मलती ४४)। पसुद्द वि [प्रमुख] १ तस्त्रीन दृश्यामा, 'एक्पमुद्दे' (बाबा)। २ ई धह-विशेष **क्योतिक देव विशेष (ठा२ ३)। ३ न** प्रदृष्ट्र मारम्य, मानि बारातः किंपागफल-सरिनको भोगा पहुदे हुनैति कुणनहराँ (पडम १ ३१ पत्रम)। पसुद्द विक् [प्रसुत्व] १ वर्षेट्य, सावि । २ प्रमान मेंह, मुख्य (भीप प्रामु १६१)। पसुद्द वि [प्रमुखर] शामाच बच्चारी (इस १७ ११)। पसंद्रस्त वि [प्रमेषस्थितः] विश्वके शरीर में अर्थी बहुत हो बहु, चूसे परेपने सम्ब्री पाइमेशि य गौ वए' (वस ७ २२) । पमेच वि [ममेच] प्रवाण-विषय, सत्त्व-पश्चर्ष (यगंध्रं १११ )। पमेश प्रमाशी धेव-विषेषः वेश धैव मून-बोप बहुनूकता (तिष् १)। पमोभ पुं [प्रमोद] १ धारूच, पुरी, हुएँ (पुर १ ७६ महा छीर)। २ एतस-क्रा के एक राजा का नाम एक खेना-पति

(पत्रम ६, २६३)।

पहोक्स के प्रोप्त । पमोक्स्य पुन [प्रमोक्ष] १ ग्रुच्डि, निर्वाण (सुध १ १ १२) । २ प्रखुत्तर, वशकः भो समायमः किषिषि प्रमीतलमनसाम् उ (भग)। पमोक्साम न [प्रमोपन] परियाग पंठा-कंठियं धनयास्यि बाह्यमीनवर्ण करेड्र (गाया १ २---पत्र दव)। पमोयणा भी [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद बाह्यस, मार्गद (बस्य ४११) । परमञ्जास यक [प्र+स्ते] धविक म्हान होना । पम्मसम्बद्धि (शी)ः (पि १३६ नाट-माबदी ३३)। पम्माम ) वि [प्रस्थान] १ विशेष म्लान पन्माइज∫ बरक्त पुरम्बया हुमा 'पन्माम-सिरीसार्थं व । सङ्घे नायार्थं भंगार्थं (मा ४६ ता ४६ ि)। २ शू≃छ 'वसक्राय जाययामा यामा पम्मायजिक्सम्मा (वर्धीच ম্ৰ) ৷ पम्माण वि [प्रम्छान] १ मिस्टेब पुरम्राया हुमा । २ म कींकारन मुरम्धना पन्हा (? म्मा) खप्दल्खिंगी' (प्रलु १३६)। पन्मि पुंदि] पाछि द्वाप कर (यह)। पन्मुक्क केवो प्रमुक्क (हुर १७ वह् पन्मुद् वि [प्राक्त्युरा] पूर्व की बोर विश्वका पुँह हो वह (शन वज्या १६४)। पन्द् पूर्व [पद्मान्] १ धक्ति-कोम करवनी मांध के बात (पाध) । ३ पध भावि का केसर, किंगस्क (उत्राधन विदार १)। ! ९ सूत्र साहिशा सरपस्य द्यागः। ४ वेदा पर्वत (हेर ७४ माम)। १ केराका सब माग (वे ६ २ )। ६ छप भाग प्रायलक्ष बावणगदतगत्ताणगर्मं (ते १४, ०६) । अव्यक्तिकेष्ठ वर्षं का एक विजय—मरेश (ठा२ ३४ इ.क.)। स.स. एक वैद-विसान (सम १३)। इन्द्रिय न ["कालन] एक देव विमान का नाम (सम १५)। कुछ वै [फ्टिं] १ पर्नेत-विशेष (धार)। २ व बद्दातीक नामक देवतीक का एक देव-विमान (सम १५)। १ पर्वत-विशेष का एक शिकार (दार व ६)। दमन्य ल [\*ध्युक्र] {

देव-विमान-विशेष (सम ११)। प्यम न [ श्रम ] बद्धासोक का एक देवविमान (सम १५)। "लेस, "लेस्स म ["लेश्य] बहालोक-स्थित एक चन-विमान (सम ११ राज)। बण्मन ["धर्ण] वही पूर्नोस्ट धर्ष (सम १९) । (सेंग म <sup>१</sup>२८क्क] वही बर्च (सम १३)। "सिंहुन ["स्ट] वही पूर्वोत्रः धर्वं (सप १५) । वित्त न [ीयर्चे] वही धर्मे (सम ११)। पस्द देको पश्चम (पर्स्टा ४---पन ६७ **७वः जीव १)। रांध नि** [गिम] १ कमस की गृज्य। २ विकास के समान पम्बवासा (भय ६ ७) । "तिस वि ["सेहय] पचा नामक नेरधानाचा (मप) । संसा की [क्रिया] सेरवा-विशेष पांचर्व सेरवा धारमा का शुमतर परिग्राम-विशेष (अ १ शः चम ११) । लेसन देखो लेस (परण 1 ( 9 5 % | 10 -- 09 पम्हम सङ्घि + स्मृ] भूव बानाः निस्मरण होना । पन्हसद (प्राष्ट्र ६१) । पम्हराज्योः की पिएसआवदी । महाविधेह वर्षकाएक विक्य, प्रदेश-विशेष (ठा२ ३ इक)। पम्हट्व वि [प्रसमृत] १ विस्मृत वि ४ ४२)। २ त्रिसको विस्मरस हुन्ना हो बहुः कि पम्हट्ट विद्व बहं तुर् वश्चणुष्पराखिवह बारविक्एएं (से ६ १२)। पम्बद्ध वि [वि] १ प्रभट, विकुत (से ४ ४५) । २ व्हेंचा हुयरः प्रत्यन्त 'पम्हदू वा परिद्वविषे 🛅 का एउट्टर (का १)। पम्बस्य वि [फ्रस्म क्र] १ पक्स से उद्याग्त । २ व एक प्रकारका सूदा (प्रका)। पम्हर र्ष कि वामृत्यु प्रकान-नरण (ह पम्बद्ध वि [प्रस्मग्रह] पश्य-प्रक्र सुंदर मजि-सीमवस्ता (हे १, ७४३ हुमा पर् भीप पडड धुर ३ १३१ पाम)। पम्हळ र्थ हिं] किसला पंच माहि का केशर (१६६ १३) पर्)।

पम्बल्यि वि [बे प्रश्नादित] ववतित

विषयविद्यानीधी (स ३६)।

सकेर किया हुमा 'नावएए बोन्हारबाहरम्यू

(दे १ ३२३ और १२३ पाछ) । २ पाधी

(ख १४४)।

विस्पृत कराया हुमा (सुब्र २ १)। धम्बा की पिक्सा र बेस्त-क्रिय पध-नेत्याः प्राच्या का गुध्यार परिखान-विकेष (काम्य ६ २३ कर २६)। २ विजय-क्षेत्र विरोप (सन्द)। पनदार 🖞 [वे] मपमृत्यु, वेमीत मरख (R 4 1) i पम्हावई की [प्रस्थावती] १ विश्रय-विशेष मी एक शबदी (ठा२ ३३६क) । २ वर्षेट-निरोप (ठा२३—मत्र )। पमद्भद्र विदि रे मध्य मध्य प्रत्य (द्वि ४) २१४)। २ विस्तृता पम्बुट्ट विम्हरियी (पाम) "किंच तर्म पम्छ (छामा १ च—पथ १४वः विकार २६व) । पम्द्रकरवर्षिसम न [पश्मोचसवर्षसङ] ब्रम्भोक में स्कित एक देव विमान (तम ₹**%)** I पम्दुस सक [बि + रस्] भूबना विस्वरश

करता। पम्बस्य (है Y #\$) I

बरना। वस्ट्रा (है भ ४४) ।

क्षेत्र पद्रवं (दुप्र २६६) ।

विचारना । चवड (विकेश ४ ४) ६

₹%, ₹+) i

मृत बाला । पम्हराइ ( पड् )ः पम्बृतिकनासु

पम्ब्रसाबिय वि [विस्मारित] मुकाया ह्या,

पमदुस स्क [प्र+मृश् ] रस्टै कल्प्र। पग्हबर बम्ह्य (हे ४ १ ८ क्रुना ७ २६)। पम्हुस सब [म+सुप्] बीयमा बोध करमा । पण्डुमहः पण्डुमेह, पण्डुक्टि (ह ४ रेवार द्वा रेश्च द्वा ७ २१)। पम्हुसम म [बिस्मरम] शिग्नृति (वंचा पम्हुसिम वि [बिस्मृत] जिल्ला विस्तरश ह्मा हो वह (दुमाः क्य ७६ की) । पग्हद्भ तक [स्मृ]स्मरतः करता, थार परदृष्य रि [स्मर्त् ]स्मरण करनेताना पवतक [पथ्] पराना सकरला। वयर (हे ४ १)। वर पर्यंत (वण)। पप का[परू] १ नलाः २ जल्लाः ३

थमा (सुपा १६६० पाप)। हर देखो पमोहर (पिय)। पय दे [प्रज्ञ] प्राप्ती कन्द्र (धाका)। पय पून पित्री १ विज्ञतिक के साम का राज्य, 'पयमत्त्रवायमं श्रोवयं व र्षं नामियाई पंचिविद् (विसे १ व बासू १६० वा २६) । २ <del>राज्य</del> समृद्ध, नानवा 'जनप्सपया इंड सम्मनायाँ (इस १ १ व वा २३)। रे पैर, पांच चरांच 'बार्ज च तबलातबलीह नग्नो ध्येपि मेदप्य, कम्बपद्व बालो इव चान न सत्तृपर पचाहुर्सनियक्ती वि (बुपा १) वर्गीच १४ धुर ३ १ ७ मा २३) । ४ पार-चिन्द्र वसाद्ध (शुर २ २३२ मुंग ११४ तथा २३० प्रसूर )। १ वर्ष का चौचा हिस्सा (चलु) । ६ निमित्त भरत (धाना)। **५ त्वाना घवपा**खपर्य हितेव ति (सुर २, १६७ मा २३)। प्रकी स्वीवराध कुरधायपट् कि नवि व्यविशिषद् देव में पूछी 🏲 (सूर २ १७६८ थका)। १ नास्त शास्त्राः १ प्रवेशः । ११ व्यवताव (शा २६) । १२ दूट व<del>ात वि</del>रोप (बूब रं १२ ६) । देस न [ब्हेम] क्रिन कस्थाए 'जुम्बह य हो पक्छेपक्यको' (सब ६ ४ ६) । स्व द्वै [ैस्य] पशक्र वेक्स व्यासाः नुष्युक्त सङ् नुरंग्रे पाइको सङ् क्सचेल (परुष ६ १२) । पास 🖠 [पाश] नाषुरा कान धादि वन्दन (सूब ११२ ०१)। रक्स 🖞 [सह] यदाति व्यक्ति (मर्दि 🕻 ४ ४१)। बगगह पू "विग्रह] परिच्छेर (विशे १ ६)। विभाग र् विभाग । करत बीर बर्गबाद का यवा-स्वाल निरेश सामा-चारी-विशेष (साथ १)। बीह वैत्रो पाय-बीड (पर ४ लुपा ६१६) । समास दुं [समास] वर्षे का शहराब (कम्प १ ७) । ाञ्रमारि वि [ीमुसारित् ] एक वर में वलेक वर्षक नहीं ना भी वलुर्तनाल करने नी कविष्यांसा (धौर **रह** १) । शेणुसा रिकी भी [ ानुसारिकी] प्रक्रि-विकेश एक पर के शक्त से दूनरे संयूत परीं ना स्वयं वता क्याने सबी बृद्धि (वयस २१) ।

पय (ग्य) वैको पत्त = प्राप्त (पिक)। पव वैद्यो थया = प्रका । "पास्त्र वि ["पास्त्र] १ प्रवाका शासकः । २ द्रं द्रपश्चितेय (**left YX**) : थय वि ["प्रवृ] देनेवाला, पीइप्पर्य (रंख) । पयइ 🛍 [प्रकृति] संदिका प्रमान (शर्यु ११२)। पयह वैको पगइ (मा ६१७) गतव महार तन ६१ सत्त ११४ मध्यु क्रुप्र १४६)। पगरंद र् [पटनोन्द्र, पर्कन्द्र] राज्यक्तर वातीय देवों का इन्हर (ठा २,३)। पनई देखी पमवी (बटड) । पर्वगर्द [पत्रज्ञ] १ धूर्व धीव (पाम) अती हरिस्पुनहर्मनी अही इब स्थितानमपनेती (इव ७२० दी) । २ रंग-विदेश समान-ह्राच्य-विशेष (कर इ. ४ सिरि इ.६०)। ६ छत्रम पर्वेठमा, शक्तेशाला बहेटा भीट (शाया १ १७ पत्रम) । ४—१ विशे पवस - पत्र , पदक पदन (महार १ ४---पत्र ६<: एत) : बीहिया **व्य ["वीयका**] रै ठच्य का कान्यः। २ विला के निर्द पर्तन की तरह बसना नीच में को चार नहीं की कोज़रे हुए मिला नेना (उच ६ १९)। बीदी की विश्वी वही पूर्वेत्व पर्व (क्य **1** (2): पर्यंतुख र्युन [प्रपञ्च्छ] सरस्वस्थन-विदेश, नक्षमी पक्को का एक प्रकार ना बला (विपा१ ८--पत्र दइ)। पर्यक्ष वि[प्रचण्ड] १ स्त्युव तीहा प्रचर । २ मबातक अर्थकर (पद्धा १, १) १) ४) पर्वत वि[प्रकाण्ड] श्रालुच अलट (पर्वह 1 Y) 1 पर्यंत वैको पय = पन्। पर्वप यक [ प्र + कम्पू ] प्रतिशव क्रोपना । वह- पर्यपताल (त ११६)। वर्षपंपक [प्र+ जन्मू] १ कान्य बीलगा । २ वक्वार करना । पर्यप्र (ब्रह्म) । चेष्ट पर्विपेडच्या पर्विपेडच्या (महार वि

१ १)। इ. सर्वविभयत (स.४१

११२)।

पर्यपण व [प्रजस्पन] क्षमन चक्ति (का

यु २१७) । पर्यपिय वि [प्रकम्पित] चति कांपा हुधा (स ३७७)। पर्यापय वि [प्रवस्पित] १ कवित बका। २ म. कदम, बक्ति । १ बक्तार, व्यावं श्रहरम् (विदा १ ७)। पर्यपिर वि प्रिजिहिपत् र बोलनेवासा । २ बाबाट बक्बारी (सुर १६ ३० सुपा ४११८ या २७) । प्रवेस सक [प्र+दर्शयू] विकलाना। पर्यसेति (विसे ६३२)। पर्यस्य न [प्रदर्शेत]विक्साना (च १११)। पर्यसिक वि [प्रदर्शित] विक्रमाया हुमा (पुर १ १ १ १२ ६२)। पयक रेको पाइक ( प्रयक्त एक भिला + स्या भ्रायास्यान करना प्रविष्ठा करना। पश्चिष्ठ (निचार wax) i प्यक्तिम रेडी पर्विकाम = प्रच्याण (खाया **१ १६)** 1 प्यक्तिस्त्रम केवी पद्किस्त्रग्र ≈ प्रवक्षित्रमृत् **धंक प्रमन्त्रिणिकण (सुर ८ १ १)** । पमिकामा देवी पद्कितागा (जा १४२ दी। सुर १४ वे )। यया देखी पश्च = प्रतय पदक पदम (राज) पद ११४)। पयच्छ सक [प्र+यम्] वैता झपैछ करना । पवच्चर (महा) । श्रंकः पवचित्रकाय (चन)। पयच्या न [प्रदान] १ शन सपैछ (सूर २ १४१)। २ विकेनाला (संख)। पसदृश्यक [म+कृत्] प्रवृत्ति करना। पबदूद (है रंं र ४ १४७ महा) । स्ट पयट्टिमस्य (सुपा १९६) । प्रयो प्रयोश्व (स २२) संब पयट्टाबिट (स ७११)। पसट् वि [प्रभुक्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो बहु(है २ २६। महा)। २ विश्वता प्रसद्धी चलियं (पाम)। पसदृय वि [प्रवर्षक] प्रवृत्ति करनेवाला (**983** ( 1) 1

प्यट्टावम वि [प्रवर्षक] प्रवृत्ति करानेवाला (क्ष्म्य)। पगड़ाविक वि [प्रवस्तित] प्रवृत्त किया हुमा, किसी कार्य में लगाया हुमा (महा) । प्यष्ट्रिक वि दि प्रवर्शित अगर देवो (दे 4 34) 1 पयद्विश्व वि [प्रवृक्त] प्रवृत्ति-युक्त (बल ४ २,सुचा४२)। पयहाण देशे पद्भराण (काब पि २२ )। पर्यश्र एक [प्र + कट्यू] प्रकट करना व्यन्त करना । वयवद, प्रयोद (सन्तु महा) । वह-पयद्वंत (सुपा१ मा ४ ६ मिन)। क्रेड प्यक्रिल् (पि १७७) । प्रयो प्यका-मद्द(ध्रमि)। पसक्ष विशिष्ट्यी १ व्यक्त श्रुमा (कुमा महा) । २ विष्मात विष्युत प्रशिक्त 'विक्कामो विस्तृमी पवडी' (पान्न) । प्यक्रण ग व्रिकटनी १ व्यक्त करता शुवा क्रांगा (सर्ग) । २ वि प्रकट करनेवाला चि तुष्मः पुर्वा बहुनेह्पबङ्गाः (वर्मेव ६६) । पसकावण न [धकटस] प्रकट कराता (ऋषे)। पथकाविय वि [प्रकटिस] प्रकट कराया हवा (काख भीव)। पसिं वेको पगइ (पर्वा २६ पि २१६)। पमिष्ठ की वि] मार्ग रास्ता और पूरा सम्महिट्टी देखि मस्त्री चवरत्वयदीए' (सिट्ट **1**887) 1 पयष्टिय वि [प्रकटित] प्रकट किया ॥मा (पुर १ ४व बा २)। पयश्चिय वि [प्रपतित] निय हुमा (लावा १ ८--पम १६६)। पयशीक्रम वि [प्रकटीकृत] प्रकट विया हुमा (महा)। पसक्षीकर सक भिकटी 🕂 📆 प्रकट करना । प्रयो पवशिकश्येषि (महा)। पयडीभूष ) वि [प्रकटीमूच] को प्रकट

पमक्रीहुम 🕽 हुमा हो (पुरे ६ १ 🗫 या

पमब्हणी की [वे] १ प्रतिहारी । २ बाक्रीट

बारपेंख । ६ महिपी (६ ६, ७२) ।

प्यण देखी प्यान (वा ७७७)।

पर्याण केवी पश्चण (विशे १०१६)।

१६ महासए)।

प्यथा } न [पचन, क] १ पाक पकाना प्याणा (सींप कुमा) । १ पात्र-विदेप पकाने का पात्र (मूर्चान 🖘 वीव 🤻)। सास्म की विशाला (पह र)। पयणु 🕽 चि [प्रतन्तु] १ इन्छ पतना। २ पयञ्जि ∫ शुक्तीयारीकी । सन्द नौड़ा(स २४६ सुरव १६४ मन ३ ४० वे २ पञ्च ॥ १६ के ११ मध्या ६०२। परह)। पयण्यय रेखो पङ्ग्लाग (तंदु १) । पयश्च बन्ध [प्र+यस्]प्रवल करनाः। पमत्त्व (सी) (पि ४७१) । थयत्त देशो पयट्ट = प्र + बृद (काल)। ययक्त वू [प्रयञ्ज] बेटा एकम एकोम (सुपा) बकासूर १.६.२.१<२३४ ≂१)। पयक्त वि [प्रवृक्त प्रक्त] १ विवाहमा (सम्) । २ धनुत्रात संस्त (सनु ६) । पगच वेको पयटू = प्रकृत (सुर २ १५६-व २४८१ से व २४१ व के सा ४व६)। थयत्तावित्र वि [प्रवर्षित] प्रवृत्त किया ह्मा (कास)। पंबरम वू पिदार्थी १ राज्य का प्रतिनाच पर का सार्व (विसे १ ६ केहम २७१)। २ तला(सम. १. १, शुपा२ ४)। ३ वल्यु चीव (पाप) । पयश्च देखो पङ्गण्य = प्रसीर्ण (मृषि)। पयना बेकी पड्डण्या (छप १४२ दी)। पंचण्याय न [प्रकल्पन] नश्यना, विचार (भगंधं ६ ७)। पमय वैको पामय≕प्राष्ट्रत (है १ ६७ नच्छ)। प्रथम वि शियती प्रयक्तिकीच सत्तर प्रयक्त करनेवाक्षा (चीता पठन ६ ६६ पुर १ ४ छव)- 'इल्फ्रिक न इल्झिन्स व तहवि प्यथी निर्मेतप् सक्षु' (वृष्यः ४२६) । पवस पू पितम पत्रक पदमी । बात-व्यन्तर देशों की एक भाति (ठा २, ३) पएए १३ इक) । २ पहन वैजों का बिद्धाल दिया का क्क (का २,३): वह पू विति पतन देवी ना बत्तर विद्याना इन्द्र (ठा२ ६ -- पत्र αξ); थवय न [वि] सर्तिरा, निरन्तर (दे ६ ६)।

**३ ३**)।

(पिय) । संह्र- पश्रक्ति (द्वर) (पिय) ।

पयर प्रमिक्त । समृद्ध सार्वे अत्वा पवछे पिनोसियारो मीर्निव चुनेयने बन्हर्य (स ४२६ पत्रका क्रम्प)। पबर र् [प्रवृर] १ योगि ना शेव-विशेष । २ मिशास्त्र जीव । ६ ठए, बास्य (दे ६ १४) । पपर देखो प\$र = रप कोनुनियो व किसे कर्त परदेश (सुपा **१६** ) । पयर=वेको पगर=प्रकार (हे र ६= पर्)। पयर देवी पदार = प्रचार (हे १ ६ ०) ३ पयर पून [प्रतर] १ पत्रक पत्रा प्रतर **चरापरवर्णकारसम्बद्धाः स्टब्स्** मर्यापमारकपुंत्ररीय (कम्प भीत ३ आह

१)।२ शृत्त कातार दानुपल-विशेष एक

प्रकार का च्याना (प्रीप: छाद्य १ १)।

६ गरिवर-विरोध सूची से हुकी हुई सूची

(काम १, १७ भीवा १२ १२)। ४

मेर-विदेप बाद बावि की वर्ष प्रशर्न का

पूराध्य (ध्रष्ठ ७)। तप पूर्व [ तपस् ]

इप-रिशेय "वह न ["कृच] संस्थान-विशेष

पनर व जिल्हा निवन-विदेश बोली वे प्रशी

पमरण न प्रिकरण दिशस्त्रक अर्थन । २

एकार्व-प्रतिपासक प्रेम । ६ एकार्व-प्रतिपारक

बंबाका 'बुम्बुक्यबुपमध्यो' (हे १ १४६) ।

पद्मरण न [प्रतरण ] प्रचम बाराम्य विश्वा

हुई थेटी (प्रश्न १७३) ।

(चन)।

(एक) ।

€ 4¥) 1

प्रविस केवो पगरिस (बहा) ।

488

22):

४ ७४)। बङ्ग पयरेन (कुना) ।

रंबई (बायक ७३ टी)।

पदर धक प्रि+चर् द्रेशर होता रखा

सूपाच मन्तिया वे शोए परछ है सन्ने सन्ते

पपर सक [प्र+पर] १ फेबला। २

स्पाप्त होना *भाग में समना* १ पडरह (शब्द

प्रबद्ध देवी प्रवह = प्रकट (स्पर) ( पथछ (धर) धक [प्र+ चास्त्य्] १ कमाना । २ विद्यमा । प्रमा (चित्र) । परस्र वि [प्रवस्त्र] करामनान वतनेतासा (बरम १ - ₹) ı प्यस्त पूर्वि नीव पश्चिम्ब (दे ६ ७)। पथल । भी दि प्रचला १ निता गीर पयस्य ) (व ६ ६) । २ निज्ञा-विशेष केटे-बैटे थीर खड़े खड़े को नींद धाती है बड़ा। ६ जिल्ले प्रथम है बैठि-बैठे और खड़े-बड़े नीव याची है वह कर्य (स्म १६) क्रम्म १ ११)। पयस्य 🕸 💐 प्रचन्ना १ वर्ष विशेष किल्के ज्वय से क्लेट-क्लेट निज्ञा धारी है वह करी। २ पक्षते चरते धाले-माची नीव (कम्म ११) झारा निच्न ११)। पयस्य क्षत्र [प्रभारतस्य ] निका बैना नींद करना । पथकार (पाधा) । हेक्क पथस्थारूच य (इस)। पवस्मक्ष्म न [प्रव्यक्तियेत] १ नीव, निश्राः। २ पूर्णन भीन के भारता बैठे-बैठे तिए का बोनमा (छ १२ ४२)। पयध्मश्रमा की विशे हान से चलनेवाले बन्द की एक कारि (लग्न २, ३ ३१)। पयक्षम वेद्यो पमस्य = प्रवहान् । शक्तायद (कीव ६)। वह पद्मार्थ्य (एव)। पवस्थम 🕻 🛊 🕽 १ इ८, ब्रह्मफेर (वे ६ ७२)। १ सर्प समि (दे६ २) एक)। प्यक्षामण व [प्रचस्त्रयन] वेदी प्रयक्षाह्रम 1 (# 39) पवज्रावभचा 🖠 📳 प्रहुए मेर (दे ६ 1 (25 पयक्रिम वेको पर्यक्रिम (पिक पि वेश )। पयक्षिय नि [प्रचक्रित] १ स्वनित थिए हुथा(एक गाता)। १ क्षिमा इत्या (प्रतम प्रवरिस रेखो प्रथस । १इ प्रवर्शित (शका देव, ७३ सामा १ का क्रमा और)। पनस्थिम नि [प्रवृक्तित] योगा हुमा होता ह्मधा (कम्प) । परध्यक [प्र+ चत् ] १ चलता। २ पयक्षे कर [म = भास्त्र ] क्लावगान करता स्थानित होना। पनसेच्य (धाषा ६ २ प्रतिपद करना। प्रकॉरिंग (स्टब्स् १ १७)।

पशक्क सक [प्र+सु] दशका क्रमना। । (३४ का प्राप्त १६) । पश्च वक [क्ष] १ शिक्यिता करना, बीमा पश्रक्त देशी पषडं≕प्र÷वश्य । पक्र होता । २ सरकता । पशस्त्र (है ४ ७ )। पथक्क वि [प्रश्नन] पैमा हुमा (पाम)। पथक्क पू [प्रकल्य] भक्षप्रश्-विदेश (शुरुव थवद्विर वि प्रिम्मर विभनेत्रामा (रूपा) । पथित वि [शैथिकमकुन्] शिथि होने-वाता ग्रीमा होनेरामा (कुमा ६ ४६) । पथिष्ठर वि [सम्बनहृत्] संक्रिनेशसा (दुपा **₹ ४₹)** 1 पदव धरू [म+तप्,तापर्] ठगलः नरम करना । प्रधानम्ब (दे ४ २८) । बहु पमिकत (है २ २४)। पस्य सरू [पा] पीता पत्न करना। क्याह-'बीचर्य सहस्रक्त कलपञ्जविद्यात्रञ्ज' हि ९, प्रथम की कि किना सरकार (के ६८ १९)। थयमि की [यहकि] केवी धनकी (नेस्स ≃करो । प्यविभ वि [प्रवस प्रवापित] गरम विमा ह्या क्याय हमा (बा१वध से २२४)। प्याची की [पत्की] १ मार्ग शस्ता (पाम बार्ड का सुपा रेक्ट)। २ विरुट गरनी (काद्र १)। पयह सक [ म 🛊 हो | स्वाप स्थवाः होन्याः । बच्चे पद्धिक, पद्धेकन (सुध १ १ १६) 1 4 5 22 2 5 3 4 WHY 12; श्र १३६)। स्रोहः प्रयाद्विय (परम १३ १८८ वश्वार २४)। इत्यविमध्य (स 4(8)1 पर्याहण देवी पद्मिक्षण - प्रश्तिए (भीर)। पथायक [प्र 🕂 ऋत्रव ] प्रत्य करता, वर्ग वैता । बदामि (क्या १, ७) । प्रयास्त्रमासि (विपार्क)। ज्ञवि पदाविति, पवार्विति, नयादिति (क्षया दि ७३) क्षयः) । प्याचक शि + साँ प्रयास करना अस्त्रव क्छता प्रयाद (क्त १३ ९४)। यवा की [के] इसनी इसना (धन) । पयाची थ. [प्रश्ना] १ वटाली ब्युप्त विक चहुय नगरा ऑप्टोर्ट (इस दिना

पयर-पर्या

११)। २ स्रोक जन-सपूहा (सिरि४२। र्तवा ७ ६७) । ६ वंतु-समूद्र, निनिद्शा भारी ग्रस्ट क्यामु (भाषा सूर्व १ १ १ £)। ४ श्रेतान वाली की: 'निन्तिय नीव सरए वमास् धर्मेख्ररेवी' (धाचाः सूच १ १ १६)। ६ इंडान, संतवि (विरि ४२)। र्वाद् वृं ["सन्वृ] एक दुलक्ट पुस्य का ताम (परम ६ ६६)। भाइ ई [नाव] राबा नरेश (सुपा ४७४)। पाळ प्रं ["पाळ] एक केन मुनि जो पांचर्ने बसरेव के पूर्वेजन्य \_र्मे प्रकृषे (यदम २ १६२)। "यह पू ["पठि] १ ऋद्या विकासा (पाय सुपा ६ १)। २ प्रथम बासूबेन के निवाका नाम (पदान २ १=२ सम १६२)। ६ नसम के स्थिप चेदियी-मतन ना मन्द्रायक देव (ठा२ ६----व ७७- सुरुव १ १२)। ४ इस करवन मादि ऋषि । १ धना नरेख। ६ सूर्य रवि । ७ वसि, सन्ति । २ त्रहाः **१.** पिता कनका १० भीट-किरोप। ११ भामाता (दे १ १७७ १०)। १२ वर्ती राव का ज्योसवाँ द्वृत्तै (सुन १ ुव)। पयाइ दु [पदावि] प्लाख पान छ (पैक्स) **पद्मनेशाला हैतिक (हे २ १६**०) यह ३ कुमाः मका)। धयाग पूर [प्रभाग] तीय-विशेष बढ़ी बेबा भीर समुता का चंगम है (परम 🖘 🖘 \$ \$ \$40) 1 पंचात्र म प्रदान] राल निवरण (श्रमा अप १६७ से सुर ४ २१ सुना ४६२)। घयाण न [प्रवान] विस्तार (शव १६ ६)। प्रमाण न [प्रयाग] अल्बान नमन (लावा १ का पर्वाह के दो प्रथम संघ ने । महाते। प्रयास वैको पश्चम (स ६५१)। मयाम न [वे] चतुर्व अमानुशाद (वे व **श** पाम) । भयाम क्यो प्रथम (ब्रुमा) । भयाभ वि [अमात] जिस्ते प्रकाल किया क्षो शह (चप २११ धी महाः धीप) । मयाम कि प्रकार ] स्थम संवात, प्रवाद-सामा निविद्या (इस ७ ११)। पयाय वि [शकार, प्रश्ननिष्ठ] प्रमुत्त, जिसने कता दिया है। बद्धां चारने बनायां (बिया १

१ २३ कव्या सामा १ १—यन ११) 'पनामा पुर्ख' (नमु) । पयाय देशो प्याच - प्रशाप (वा ६२६ वे \* 1 ) I पयार सक [ म+ चारय्] प्रचार करना । प्यारद (छख) । संक्र. प्यारिवि (भप) (सख) १ पनार सक [ श + वारन् ] प्रकारण करना इयना । पवारक, पवारमि (श्रेष्ठ) । पबार दु[ब्रस्टार] १ मेथ किस्म । २ वंग धीर व्यक् (दे १ ५८ दुमा)। प्रभार पू [प्राच्छार] क्लिंग हुनै (परम व 48) I प्यार पु [प्रचार] १ वंचार, वंचरण (पुरा २४)। २ प्रसार, फैनास (हे १ ६०)। पमार पू प्रिकार] र प्रकर्ग-प्राप्ति (बसलि १ ¥१)। २ धा**ण**रख धाषार (बसनि १ \$\$X) I पवारण न [प्रवारण] बञ्चना उनाई (तुर **23, 42)**1 प्रवारिक्ष वि [प्रदासित] हमा क्रांट वस्थित (पाप सुर ४ १६६)। प्रवास पू [पाठास] मनबान् यनजनापनी का हासन-वज्ञ 'सम्ब्रह पयान कियर' (धीरा व)। प्रशास सक प्रि 🛨 ठापय् ] तपाना यस्य करना। बक्क पदावेसाण (पि ११२)। **१इ.** पयाविश्वप (क्य) । वबाव पूर्जियाम्] र तैय प्रकरता (कुमर) बर्गा। ९ प्रक्षारं सार प्रकारकस्था (पर ४)। पर्यायण न [पाचन] पचनाना पाच कपाना (पर्याहर १ शाय)। पद्माब्य ॥ [प्रवापन] १ परम करना श्रमना (योग १० मा) पित्र १४ माचा)। १ सनित (\$2 **1** ∈ **2**) : प्रयाणि नि [प्रता पेन्र] १ प्रताप शाली । २ र्जु इक्शकु नेश के एक शवा का नाम (वजन

K., K.) I

¤११ टी पि ११७)। इ पयासणिजा, पवासित्रकथ (उप ११७ ही: इन इ ११) । वयास देवो यगास = प्रकाश (वाप कुमा) । पवास पूँ [प्रयास] प्रकरन अधन (नेइस ₹€)1 प्यास (चप) नीचे देखो (प्रवि)। प्रयासम् वि [प्रद्मश्रक] प्रकार कप्नेवाचा (4 4 )1 प्यासय न [प्रश्नाञ्जन] १ प्रकार-कच्छ, (गावा: पुना ४१६)। र वि प्रकारक, प्रकाश करनेवाला 'परमत्वपद्यासर्ग वीरी (पुण्ड १)। प्यासय केको प्रवासग विसे ११६ १ पर वर्शे। पयासि वि [प्रकाशिम्] प्रकाश करनेवला (सस् हम्पीर १४)। पद्मासिय वेको पतासिय (प्रवि)। पवासिर वि [प्रकाशिक] प्रकास करनेवाता (यपि)। पवासेंत बेबी पयास = म + कारावृ । पथाहिण देशो पद्विकाम = प्रदक्षिण (उना श्रीपः शन्तः पि ६५) : पथाद्विण देको पद्क्लिन = प्रवक्षिणय । पबाहिन्द्र (मनि)। पमाहिन्द्रित (क्रा २६६)। पवाहिणा केहा पन्नकिलगा (तुगा ४७) । पद्मबरबाग (शै) 🛚 [पर्येवस्थान] अङ्गति में धरस्वान (स्वयन ४८)। पर वक [भ्रम्] भ्रमस्य करना भूवना। पद्म (हि.च. १६१ कुमा) । पर केवरे प = म (तरू ४६) । पर वि [पर] र फल्क निम्न इतर (पा रेवक महा प्राप्तु क ११७)। २ उत्त्वद् शक्तीनः "फोउस्सपरा" (महाः कुना) । १ थेप्र प्रतय भवान (याचा रम्छ (द)। **४ प्रकर्षशास प्रक्रात्र (धाचा मा २६) ।** १ उत्तरवर्षी कार का न्यरतोह— (महा)। व बुरमर्थी (मूच १ म निष् १)। ७ यनाप्पीय अस्पीय (स्ता १३ निष् २)। व भगस सक [म + कारायू] १ व्यक्त र्थ <del>राष्ट्र इराम रिपू (पुर १६ १२) प्रमा</del>र क्रमा। २ वनकानाः ६ प्रसिद्धं करनाः प्रातृ ६) । ६ न केवल फका(दुमा: मकि)। पमारेष (१४ ४१)। वक्र प्रवासीत, वह वि [पुष्ट] पत्य वे पासितः। २ तू प्यासंत, प्रवासमेत (त्या का ४ ३ वर्ष कोकिस नजी (हे रे १७१)। विशिध हि

िरीविंड किर स्टीनवादा (थर्ग)। एस वु विशा निरेत्त क्या सम्य केत (वर्षि) । ओ स [तस्] १ बाद में पर्धी—पूर्वी द्यापक 'बाइबीए परधो' (मक्षा) । २ विश्व में इतर में (कुमा) । ३ इतर है, चन्त्र है (सूच १ १२)। राणिक्य वि "राजीन] जिस क्छ से संबन्ध रक्षनेताचा। और जिया (निषु )। गरिश्वेम्ब्राय न [निष्क्षेम्पान] इतर नी मिन्दाका विकार (धार)। धाय पुं भियात है इसरे को ब्रामाध पहुँचाना । र पुत्र, कर्म-विद्येष विश्वके उदय ने जीव सन्द बनदातों की भी इष्टि में सबैय धमन्त्र नाता है नह नमें 'परनाज्यपा पाणी पर्रीस क्दीर्खपि होत् दुव्हरिद्धी (कम्म १ ४४)। "चित्तप्युति ["चित्तज्ञ] यत्र के नत के श्चाद की जामनेवाला (इस १७१ टी)। च्छंब, छंद इं व्यवस्त्री १ परका মহিন্দে ঘৰ কামাতৰ (তাও খাকৰ २१, ७)। २ पराचीम, परतन्त्र (धनः पाम)। अराष्ट्रभ वि किही १ परको भा<del>गानावा । २ प्रश्नुट मानकार (प्राक्त १</del>०)। इ पुंिची परोपनार (राज)। हा की ["वि] इसरे के लिए, 'कब परद्वाप' (धाना)। जिल्लाभ्यान [किन्दाभ्यान] यन्त्र की कियाका विकास (बाप) । प्यूप्त केवी बागुअ (प्रकार )। तंत्र कि [ैंदनकी पराबीत, परापत (दुपा १६६)। "विशिवास **वेदों स्टियम (मक्** सम्म ३)। दीर न िंदीरी सामनेत्रासा तिनाच (पान)। ख ल ["स्व] १ निश्रम पार्वेस्य । २ मेरोपिक क्रांन में प्रशिक्ष दुश्व-क्रिकेच (विशे २४११)। च भ ित्री १ सम्मन्तर मं प्रजीक में (सुपार )। २ त कमान्त्रच के खुआंपि **दरशे गरकाई जीति निवमेश्व' (तूपा १२१)** "छ। चौप् चिप धीसद सम्मो करमी वर्ण परतेश (मध्य १३)। त्य धा चि क्ल्पान्तर में "ह्यू पराजाति व व विद्यार ल निजय टींप क्या विदिश्व (इस १७) तुर १४ १६ फ्लो। स्व देखो "टू (तुर ४ ३)। तथी और "की] परण्येत की (जास १२१)। बार प्रेन विदारी परमेव की (पवि)- 'को धन्नद्र परवार' सो वेषद्र को कनाव परार्ट (तुवा १६१) 'बभेस धप्यकार गरिया वैद्यावि होत परवार" (तूपा ६८ ) । बारि वि विहरिम् वरक्षे सम्पट "वा एस वसुमध्य कपना परवारियाए बाबाबी (पुर ६ १७१)। पक्स पि विश्वा वैवासिक मिस वर्ग का कन्यांनी (स १७)। परिवाहम वि विपरिवादिक रतर के थैयों को बोसनेवासा पर-निष्टक (धीप)। "परिवास व "परिवास" १ पर के प्रस-बोपों का विद्वशील बचन (बीम क्रम्म) । २ पर-निन्ता प्रतर के बोपों का परिशीर्शन (हा १ ४ ४)। १ सम्ब के समुद्रुतीका मपनाप (पेच्च)। परिवास पू ["परिपाल] मन्य का पातन बोधोंक्वाटन-हाचा कुछरे को नियमा (मग १२ व) । पुट्ट देशी चन्न (परतारक संभारत)। सम्बद्धियाँ ध्यमानी जन्म (मीग परत ११)। सविभ वि "अविक] मानानी जन्म है संबन्ध रकनेवाला (प्रया ठा ६)। सागुर् िभागी १ मेंह यंश । २ धन्य का क्रिस्ता। १ क्लम्ब क्लप् (स्पन्न ६७) । सहेका भी [महस्रा] १ क्यम सी। १ पलीय की (सुपा ४०)। यन्त वैको ।यन्त न्यस्तापरक्षी (शब)। क्रोक्स कांग व **चिनेकी १ फार कर-स्वत्रन से जिस (उन** द ६ टी)। २ भन्यान्तर (पर्यह १ ५ विसे १६६१ महा असू कार बन्हो। बस वि विश्व] परावीन परातन (कृमा सूपा २१७)। वाइ वृ विशिवादिया स्तर कार्य तिक (शीप) । वाय पू विश्व १ शहर यरौग सिक्ष मत (ग्रीप)। २ मेह गर्मी (मा २७)। माम पूर्विवाचर् 🕽 र सम्बन पुरुष । २ वि चहुनालीनामा (शा २३)। "वाय वि "बाज देशोह परिवासा। ए पुरिष्ठ मच (भारक)। आस कि ींबासी <del>शासकार, आ</del>नी (या २३)। बाय वि पाकि १ सुबद रक्षोई बनावे-काचा। १ पूँ रक्षोदमा (भा २३)। बाय ⊈िपार्थों र भूषानी चूप का केनामी। २ सन्त्रम समय (था २३)। शासान् [क्यार] काश्रका विभ (या २३)। साम र् [ीकार्य] क्यी युक्ताहा अमान्य छण्डास

(बारश)। याय दि [वाद] १ महर संबद्धवासा । २ व सुनिया समय का भाग (धा २३) । बाय वूं बात प्रीप्म स्वव का ब्रह्मिक्टर (मा २३)। शास 🖠 िंद्याची बर्चं हम (मा २३) । साम रि िपाय विशेषिकता (भा २३)। बाब कि विका नेदल, मेर्डाव्ह (भारह)। बाय वि पात् । १ बसायु, काविक । २ तृत्र पूल कछोतासा । ३ तृत मूचपे-बाला। ४ द्रै पातृद्कात गांस्त्रास दूता। १ सक-कासनी (बा २६)। बाब वि िंबाइ] सुस्पिर (धा २३)। नाम वि **बिमार**ी १ में इसम्बद्धारक। २ ई वल, कपका (या २३) । बाब वि विषयि १ प्रक्रुप्ट बहुत करतेशाला । २ ई मेठ व्यक्त बाय, बत्तम बुताहा । १ महान् परम (स्य २३)। वास विकियागसाँ १ मधि बढ़ा धरायां विकास प्रमाणी (भा २६)। बाय वि [क्याप] प्रष्ट विस्तारमा (बार्ड) । बाय वि विवास र वहाँ पर बहुत अफ-समुद्ध हो बहुस्थान । २ न सक्स-परिपूर्ण छरोबर (मा २३)। बाम वि िक्यायी १ येष्ट बालूबाला । २ वहाँ पर पश्चिमों का विशेष आयम्त होता हो वह। ६ प्री अनुकूत पनत से चलता बहान । ४ शुक्रर घर। १ वनोहेरा बनाप्रदेश (मा ९६)। बाय वि शिवार्वी १ जार्र पाने का ब्रह्म प्रापनन हो कहा रज बनवि-पुच शपूर का मुँह। १ दूँ स्थालनुह, महा-बायर (या १६)। बाध वि कियान] भन्य के पास-विदेश समन करनेवाचा । रै प्राचीच-भरावल (भा २३)। बाम नि [पाय] १ शरमत होत-धाय ३ २ किन-थिक (था२६)। वास वि [<sup>\*</sup>वाप] रै अक्ट वपलवासा। २ तूं इतक (बा२३) ! वाव वि ["पाप] १ महायागे। र झमा क्रध्नेत्रका(मा२३)। बाय ⊈िं।पाकी १ कुम्मकार, बुम्बार। १ तुन्त बीच। १ पहची दीन नरक-मूमि (या १६)। शाम वि [ीपाय] श्व-पीठ ब्य-वित (मा १९) । बाय नि [ बाब् ] स्कूनास्त (बार्व) । बाय पूर्वियाद विवास दूस

बहादेवं (बा २३)। बाय वि [पास्] प्रकृष्ट पैरकासा (का २६)। वाय वि विवास] फॉक्ट शाकि (बा २६)। वाय वि ["साप] १ विशेष मत्त्र से शतु की चिन्ता करनेवासा। २ दुसम्बी धनस्था। १ सुमद, योद्धा(धा २३)। बाद नि [पात] प्रापात-मुन्बर, को प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह (शा २३)। वाय वि "द्रीय] भेष्ठ विवाहवाला (था २३) । बाय दि ["पाय] बंह रामानामा किस्त्री रज्ञाका उत्तम प्रवस्य हो बहु। २ ग्रस्थन प्यासाः व पूँचका नरेत (मा २३)। याय नि ["क्यात] १ इतर के पास विरोध वसन करलेवाला। २ धुं सिम्बुक साचक (सा २३)। वास वि[पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिए श्रुवियार रक्षनेत्रासा। २ पुं सुमन योजा (मा २३)। बाया की ["क्याजा] नेरवा बार्यमना (बा २६)। वाया क्ये [क्यागस् ] धरती कुलटा (भा २३)। वाया की ["इयापा] धन्तिम धनुत्र की स्थिति (धा २६)। बाया की ["पाठा] कुर्त-नेशी (मा २६)। वासाधी दिशसा हुन इच्च (या २६) । दाया की [ीपाता] मस्-मूमि (मा२६)। वासा 🕏 [°वाच्] करमीर-पूर्मि (बा २६)। बाया को [बास्] दुप-स्विति (बा २३)। बाबा की पिता शतपती कल्-किरोप (भा २३)। बाबा की िक्याका निर्णे कार्य-विरोप (का २३)। विषस पू [ विदेश ] परवेश, विदेश (काम १२ १६)। स्थास केवी वास (बार् मा १६६७ मनि)। "संविध वि िसरकी पर-संबन्धी परनीय (परा**र** १ भ)। समप प्री [समय] क्तर वर्शन का सिकल्ल कानडमा नयनामा तानडमा केव परसममा (सम्म १४४)। हुआ वि स्ति **१ इ**सरे से पुष्ट, कम्प से पासित (प्राप्त)। २ पूर्वी, कीक्स पिक पश्ची (इप्प)। की. क्या (पुर ६ १४४ पाछ)। ींघाय देनो भाग (प्राप्त १ ४) सम १७)। |भीण देखो | व्हीप (वर्मीद १३६)। | शक्त वि विषयी परामीन परतान (परम ६४

१४° इस पूर≒२ महा)। "हि¦ण वि [रैप्पोन] परतन्त्र परायत्त (माट---मानवि ৭) ৷ प्रर देखो प्रा≂ष (मा२३ प्रतम ६१ ८)। परंधा [परम्] १ परन्तु भिण्तु, भी तुनै माल्येतिति परंतुह्रभूरे नगरं (गहा)। २ उपरान्त भी से कप्पद एती वार्डि, देख परं, बस्य काशबंससम्बद्धिताई बस्स्यपीत ति वेमि (क्स १ ६१ र ४—७३४ १२—२६)। व केवल फल्त (एस मह संदाय), पर माख्यस्य अन्य से स्वतन्त्रहरि (महा)। परं ध [परुन्] बायामी वर्ष व्यन्त्र करने वर्ष पर्यार (के २) 'सक्के पर पर्यार पुरिसा चितंचि प्रस्थसंपत्ति (प्रासू ११ )। परंग एक [परि+अक्ष्] वनना परि करमा । श्वकः परंगिकामाण (बीप) । पर्शामण न [पर्येङ्गन] पांच से चलना, र्वक्रमण (धीप) । परंगामण न [पर्यञ्जन] पत्राना चान्यक **करामा (भग ११ ११—पम २४४)** । परंतम वि [परतम] धन्य को हैरान करने नामा (ठा४ २—पन २१६)। परंखम वि [ परतमस् ] १ सन्य पर अभेष अप्रोबाक्षा । २ प्रस्य-विषयक प्रज्ञान रहने-काला (छा ४ २—- पव २१६)। परंतु ध [परम्ह्] निन्तु (बुपा ४६१) । परंदम वि परन्दम दिश्य को पीका पर्ह्मणाने काला (बला ७ ६) । २ सन्य की शरण करनेवासा । १ धरण धादि को सिकानेवाला (ठा४२—पथ२१६)। परेपर ) वि [ परम्पर ] १ किन-भिन परंपरम ( खर्षि )। २ ब्यवद्यात 'परंपर परंपरम विक- (प्रस्छ १) छ। २, १ १)। ६ पुनः परम्परा धनिम्बद्गन भारा (चप ७३३) 'पुरिसपर'परएस वेहि स्ट्रमा धारियां 'एव रम्पपरंपरमां' (शाव १) 'वरंपरेक्ष' (कृप्यः वर्गसं १३१: १३ ६) : पर्रपरा की [परम्परा] १ चनुष्यः परिपाटी (मन, बीप पाच)। १ धविष्यान वारा प्रवाह (शाया ११)। ६ निरम्तरता, स-व्यवकात (यन ६१)। ४ व्यवकात ग्रन्ताट

'मर्लंतरोननएएगा चेन परंपरोननएएगा चेव' (ठा२ २ सप १६१)। पर्रभरि वि [परम्भरि] हुसरे का के मरने थासा(ठा४ ३—पत्र २४७)। परंगुद्ध वि [पराष्ट्रमुख] वृह्य-विद्याः विद्युष (पि २६७) । परकीश् वि [परकीय] यम्य-सम्बन्धी स्तर परकेर हे संस्था रखनेवाचा (निसे ४१ परका गुपा ३४६ मिन १४१ पर स्वप्त ४ स २ ७ मड ) 'न सेवियव्या पमया परकका (योम १३)। परकान [वे] सीय प्रनाह (वे व व)। परबंध वि [पराकान्ड] १ विस्ते पर्यका किया ही बहु। २ सन्य से साइमन्त 'नामा णुवाने द्रारण्यमाणस्य द्रारणार्थे द्रायास्तरी चन इं(धाचा)। १ स. पर्यक्रम वनः। ४ **च्चम प्रथरनः १ धनुप्रानः जि धङ्का** महानागा नीरा परम्मत्तर्विक्यो प्रसुद्ध वैश्वि परस्कर्ते' (सुम १ व २२)। परकास थक [परा+कृत्] पराक्रम करना । परक्षमे पद्धमेनमा पद्धमेनमासि (बाबा)। बद्ध-परव्हर्मेव परव्हममाय (याचा)। इ. परकामियव्य परकास (खाया १ १३ दूम १ १ १)। परकाम सक [परा+क्रम्] १ काना। २ वारेवन करनाः ६ सक प्रवृत्ति करनाः। परक्को (बस १, १ ६)। परक्कमिक्का (बस व ४१)। संक्र परव्याना (इस व ३२)। परकास वू [पराक्रम] वर्व धावि 🛭 निका माम (वस १,१४)। परकम र्रून [पराक्रम] १ नीर्यं वस शक्ति सामर्थ्य (विसे १४० ठा ६ १ हुना), शास्त्र परमञ्जन नीयमार्शं न तए सूर्यं (सम्पत्त १७६)। २ उत्साहः। १ केट्टा प्रमुख (भाषु १ प्रसू ६३ धाषा)। ४ राषु का नारा करने भी शास्त्र (वा ६)। प्र पर-माक्रमस पर-पराजय (हा ४ १। धावन)। ६ पनन यदि (तूप २, १ ६)। ण गार्चे (दश स पूसू स8)। परक्रमि वि [पराकृतिम्] पराक्रम-संकल

(भर्मीक १६ १२ )।

मोल मुक्ति। ६ धेवम चारित्र (धाचा

२ २ ११)।

(42 A8) 1

(रह ७ ४३)।

बरग न दि परक] १ दुए-विटेप, निसमे

दुन पूर्विवाते हैं (बाका २ २ ३ २३

नूस २ २ ७)। १ काम्य-विदाय (गूम

परम दि पिएमी परन न्य का बना हुया

(मामा रें १ ११ १ २,२,३ १४)।

वरगामय रि विशासको प्रशास करनराचा

वरम्य नि [दशाये] यहचे माना शापूरव

पर्ट्स (धर) सह [परा + जि] पराज्य

करना इसना । परम्बद्ध (व्यति) । पर्याजय (बर) रि [पर्याजन] प्रधाय-बात हराया हमा (मर्नि)। परामः नि 👣 १ पर-परा पराधीतः । परतन्त्रा जिल्लामाः मुख्यारणकार्यः ते वेजन देनगायवा परत्ना (उत्त ४ १६ वृह ४) ह २ दूव परतन्त्रना पराधीनता (हा १००० दर १ साथ र--पर ३१४)। परट्ट देनो परिश्रद्ध = परिवर्त (जीवस २६६) पर १६० कमा ६, १६)। परदा ध्ये [दि] तांनियदेव (दे ६, १)-चित्रकारं कुराकाली सपान्यदेशीय वस्य बरशार बही बीशांग मधी (मुता ६६ )। परदारिश्र 🛊 [ पारनारिक ] परही जन्मर (पान१११७) परदारि [दे] १ शीरत दुर्गतत (हे ६ पाय नुरुष ४ १६ १८४ छ। इ देरे मणः। २ वीतः । ६ ग्रीव दशोक )। মাল্যাত 'নীয় ৰহল সীয়া न रोनाफ्रशिका हार्डिश सम्बाहर है परापर देगी पराधार (वि ६११ नार---मारने १६ । । परस्थकतात्र रको पराभव वसा+ मू परभण रि [र] भीत बागेश ( बह ) परमात्र १ दि । बुग मेपुर (१ ६ ३०) परम रि [परम] १ वच्छ, नर्शावक (नय १ ६ मी १७३३ ६ दल्य क्रोलिय योह (रेवर ४ वर्ष १ पुत्रा) । ३ व्यवसे

ब्यादन (राज १३ मा बीप) : ४

क्षत्र रूप दल्द स्त्र क्षेत्र । र्र्

तृष १ १)। ७ म्. सूच्य (रसु४)। ≼ नमातार पांच दिनों का अपनात (संबोध ×व)। हुर्द्र["ध्यें] १ सस्य पदार्थ, भारतिक चीन 'धर्य परमहे सेने क्याह्री' (मगः पर्ने १) । २ मीज, युक्ति (उत्त १ व्य पएर १ ६) । १ धीयम शारित (भूम १ ह)। प्रयुक्त देखों मीचे दिया वार्षे पर महमिद्धिमहा (पीड धर्म १)। एम देनी न्त (सम १६१)। रेख पून ["र्थ] १ तन्त्र नन्त्र 'तत्तं परमार्च' (पाध) 'परम लदी (धनि ६१)। २--४ देवी ह (मुग्त २४ ११ । चए प्रान्तु १६४ महा)। श्य न [िस] सर्वोत्तम इपियारः वयोद मक (गेरेरे)। देशिक [दिशिम्] १ मोत्त देवनवासा । २ मोत्त-मार्व का जनगर (बाषा) । स्रव विश्वीर श्रीट दुग्ब-प्रवान सिंह भोजन (भूगो ६६)। २ पुष्क वित्र का करवाल (संबोध १८) । यस न पिन् वोज निर्वाण मृक्ति (सक् मिर्मिप्राविका १४)। प्रियु [समन् विशेषक धान्या, परवेश्यर (दुमा दुर्गे ६६) रवल ४६)। ध्यय देवी पय (मुता १२०)। ८५व देनी <sup>कैदा</sup> (मरि) । प्यया क्ये [शिसना] द्वकिः मेनेनि बारहित बरिडेसरिन्धै परमन्त्रयं पत्ती (पूरा १२७)। श्राधिमत्त र् ["बाधिमस्य] परमाहेत यहेन् रेव ना परम बड़ (नीक्ष ६)। संशिक्त म िश्वययो सम्यानीरोग (बस्त ४ ४१)। सामग्रीमय हि सामगरियत्र] नरोत्तन मनशला, श्रेपुत्रे बनस्तार (धीरा बच्च) । भामजरियय रि[ सीममस्यिक] बही वर्ष (बीर रूप) । दिखा की [दिस्स] बक्त जिल्लार (गुरा ४३ ) विक्रम [ीयम्] १ लम्बा सापूचा वडी बनर (राज्य १ ७) २ मीरित दात उसर (शिवारेर) त्य ई जिल्ला, वर्गन्यव बरपु (बा नडह) हिन्सिय [ पासिक] सनुर-विदेश करफ बीधों को पूज देनेयाने देशे की एक माधितक वे । ागटिश वि [ पार्वाचक वर्षकान-विदेशका per grade from a

व्यभित्रापी (रत ४ १) । परमिद्विष् [परमिष्ठम्] र बद्या पर्याम (पाय सम्मल ७८) । २ धार्न, विज धानार्वे उपाध्याय धीर मुनि (नुस १४) ब्राप ≅व यस ६३ तिसा ₹ )। परमुख वि [परामुक्त ] परित्वक (पाम धरै परमुषगारि ) वि [परमीपरारित] वह परमुपयारि ) वपरार करनेवामा (पुर % YE, E 80)1 परमुद्ध वेनी परममुद्ध (स. २, १६)। परमंद्रि केची परमिष्टि (धुमान प्रति केदर Y44) 1 परमसर 🐧 [ परमेश्वर ] वर्षेपरंशक बरबाग्मा (मम्मत्त १४४' अवि) । परम्बद्ध वि [पराक्ष्युरन] विक्रुपः क्रुन-विका क्याधीन (गुप्ता है २) बाद ७२३। या परय म [परक] बाजिल, बतिराप (दर्ज #K (A) 1 परखोद्दम वि [पारधीकिक] बम्याखर संबन्दी (बाबा सम ११६ परह १ ४)। परवाय वि [प्रस्थाक] १ बहुत राज्य ने प्रैरला क्रमेरामा । २ 🐒 बार्टक, स्व इक्तिकार (या २३)। परचाय नि [शारबाय] १ थेष्ठ बाना यने-बाचा। २ वृंद्रतन नरेशा (या २३) । परवाय 🛊 [शरराज] नाव (मन) बले वा कोठा, वह घर करा शाम संगीत दिवा माता है नोहार, बसार (बा २३)। परवायां भी [ प्ररमाप् ] द्विरिनग्रे रहाग्रे नदी (भा २३) । परम (बा) रेगो स्त्रम = लर्श (रिय और)। समि 🖠 ["मणि] रन्त-शिरेप, निनके वर्श में नेदर मुक्त होता है (रिन) । परमञ्ज्ञ (बा) हेगो प्रमक्त्र (शिष्) । परमु ई [परमृ] बन्न-रिटेम बरधन बुटाट. इत्यारी (भा ६, ११) प्राणु ६: ११: वान)। राम १ (शाम) बनर्रान करि

बा पुर विमा प्रशेष बार ति साति पृतिनी

परमुद्द्य पुंदि ] कुल देव दरका (दे ६ २₹)। परस्सर पूंची [दे पराशर] गेंबा पशु-विशेष (पएए १: राज)। की री (पएए ११)। परदत्त वि [परामृत] परावित हराया यया (पतम ६१ ६)। परा च [परा] इत यसी का सूचक सम्बद---१ मानिपुक्य सेपुक्तता । २ ध्याचा ६ क्यें ए । ४ प्राचान्य, मुक्यतः । ३ विक्रमः । ६ वर्ति, वसन् । ७ मञ्जूष ॥ सनावर । ६ विरत्नार । १ प्रस्थाभर्तन (हे २ २१७) । ११ भूत, धरयन्त (स ६ २ मा २३)। परा की दि परा] तूरा विशेष (परह २ ६---पत्र १२३)। पराइ धक [परा+अ] इसना पराजय करना । सक्. पराहत्त्वा (सूमनि १११) । पराइज नि [पराजित] पराभन प्राप्त (पराध २ ८६ घोषास ६६४ सुर ३ २३ १३ १७१ व्य १२ १२)। पराइक्ष (प्रय) वि [परागत] यया ह्रमा (मिन) । पराइन केशे पराज्ञिन । पराइन्ड (पि ४७६ मय)। पराह क्ये [परकाया] ५७२ स संगल रक्षते-वासी वह नासिका को परपुरूप से प्रेम करे (१४ वर । १६७) । देखी पराय = परकीम । पराद्मा देवो परव्यम (सूत्र २:१६)। पराज्य वि [पराश्वत] निराष्ट्रत निरात (धरम्ब १)। पराश्वर सङ [परा + क्रु] निराकरण करना । पराकरोवि (शी) (नाट-वित ६६) । पराजय पूँ [पराजय] परित्रण धनित्रण श्वाद (राम) । पराजय } पन [परा + जि] पराजव पराक्रिय । कला इंस्ला । मूटा, पराज-दिस्प (ति ११७) । अवि पर्शविश्वरसङ् (वि ६२१)। चेंक्र पराक्रियिचा (ठा ४ २)। देश पराविभित्तप (भग । १)। पर्वाजिनिक } वेको पराइभ = पराजित पराजिप । (का द धरा महा) । पराण देखो पाम = प्रारा (बाट--वैत १४० 🛭 १३२) ।

पराणग वि [परकीय] सन्य का दूसरे का 'बाब द्विरदणमुक्त्रण इल्लेख परासामि नो क्षिये (पण्या२ ५)। पराणिस वि [पराणास] पहुँचा हुपा (अवि)। पराणी सक [परा + पी] वहुँबाना । पराखर (स्वि)। परालेमि (स २३४)- 'बह मणसि का निमेक्तियरेण रूपं कायपेंदिरं पराखेपि' (क्रुप्र६)। परानयण न [पराजयन] प्रश्नानाः कियम वियोगरानमये का समा धवि व असको प्रत (चर ७२८ टी)। पराभव सरु िपरा + भू दिस्ता। कवक् परामविद्यंत परव्यवसाम (उप १२ टी खासारे २ १८)। पराभव 🙎 [पराभव] परावय, हार (विपा 1 ( } 3 परामविष्ठ वि [परामृत] धनिमृत । एरपा क्या (वर्गीव ६८)। परामट्ट रेको परामुद्ध (पत्रम १० ७३) । परामरिस सक [ परा + भूश ] १ विचार करना विवेचन करना। २ स्पर्ध करना। परामध्सिह (विषे) । बक्त परामरिसंत (अवि)। सङ्ग परामरिसिकः (नाट---मृच्य परामरिम पु [परामर्थ] १ विवेचन विचार (ब्रामा) । २ ब्रुक्ति, क्यक्ति । ३ स्पर्शः ४ न्धाय शासीच्य व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पश्च का ≋ात (के २ १ १)। परामिद्र ? वि [परामुष्ट] १ विचारित परामुद्र े निवेषित । २ स्प्रट, सुना ह्या (415- gut 44 g f. 646 A 6 प्रम ११) । परामुम धक पिरा+मृह्यो १ रूरी करणाः सुना। २ विचार करणा विवेचन वरना। १ माण्यावित करना। ४ पॉय्रमा । ४ सीर करना। प्रापुसद (कस)। कर्म

'शूरो परामुक्तिकः शामित्रहारकत्वातितिते'

(ज्यर १२३)। यहः नियजसरिक्वेस

नगणाई परामुस्तिण भणिई' (इप ६६) ।

**क्ष्मक** परामुसिज्यमाण (स ६४२) ।

परामुसिय देवो परामुद्ग (महा पाय) ।

पराथ बक [प्र÷राज् ] विशेष शोमना। बक्क परायंत (कप्प) । पराध पूँ [पराग] १ बूसी रज रिणू पेनू रधो वरायो व' (पाय) । २ पुष्य-रत्न (कुमा पबद्दो । पराय ) वि [परकीय] पर-धंकनी श्रार परायम ें से संबंध रक्षतेयामा 'तो सन्यग्रा परामा गुरुणो कइसाबि हुँति सुद्धार्ख (सिंद्र र १३ हे ४ १७%) मन वर्ष १)। परायज दि [परायम] स्टार (कम्म १ ₹**१**} । परार्दि च [परारि] मागामी तीवरा वर्षे (प्रासु ११ वे २)। थर/छ देवी पलाछ (प्राप् १३८)। पराव (भप) सक [प्र+आप] करना । परावर्षि (हे ४ ४४२) । थरावक्त मक [परा + बृत्] १ वदनगाः पसटना । २ पीमे सीटना । परावत्तद् (स्वर ८८)। वहः पश्चन्त्रमाण (चन् )। परावच धक [ भरा + वर्तम् ] १ फिराना । २ ममुचि करता । परावचीव (पव ७१) परावर्तेसि (मोड् ४७) । संड 'ठी सावरेख षणियं वरे परावित्तकण निववर्षे (हुन 10 05 परावश पू [परावते] परिवर्तन हेरफेर, हेक्केप (स १२ ज्य पू २७ महा)। परावन्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन करने-बाबा 'बेस्परावर्डिक्की प्रविद्या' (मङ्गा) । परावश्चि औ [परावृत्ति] परिवर्तन, वेराहेरी (वप १ वर दी)। परावश्चिय वि [परावर्षित] परिवर्षित वदना हुमा (महा) । परासर दू [पराशर] १ परानिकोप (पान) । २ ऋषि-विद्येष (धीप गा ८१२)। परास् वि [परास] प्राण-पहित मृत (था १४३ वर्गेधं ६७) । पराइष देवी परासव = परामव (५४० ६)। पराहरा वि चि पराष्ट्रमुदा विश्वव मुह-क्षिय (अ २४६। से १ ६४ का प्रश्वन सीव ११४' वरवा २६) 'सङ्बिखयगराहची' (पदम वैवे ७४ गुवार १७)।

परगत दि परक] १ एउ-निरोप निषये

कुब दूपें बते हैं (माना २, २ ३ ३ ३

सूच २ ५)। २ वान्य-विश्वय (सूच

परग वि विश्ता परय दुश का बना हुया (काचार १ ११ का २ २ व १४) ।

₹ **२ ११)**।

पराग्रसम् वि [प्रकारकि] प्रकार करनेनामा (de v4) 1 पराध वि [परार्थ] महर्च महैया बहुमूल्य (रस ७ ४३)। परका (धप) शक पिरा + विक्री परावक करमा हरामा । परम्बद (मनि) । पर्रक्रिय (धप) नि [परासित] परान्य-बाक हरावा हुमा (मवि)। **परबस्त वि दि १ पर-क्ट गराबी**न परतन्ता चिर्वजनाः तुष्कपरप्पनार ते पेण्य-बोसागुक्या परम्क्ष (उत्त ४ १६ बृह ४)। र पून परात्मदा परामीनदा (ठा १०---वत्र शास्त्र ४ -- पत्र ११४)। परह देशो परिञ्जह = परिवर्ष (श्रीवस २६२) वय १६२ कम्प १, ११)। परका और दिं] सर्ग-मिलेन (के ६ १) 'छन्दार पुलमाखी सपालदेस्तीन बस्त परहाय, ब्हो पीहाए सभी (सुरा ६२ )। परवारिक व पारवारिक ने परब्री-बन्मट (पउम १ ६८ १७)। परद्ध वि [वे] १ गीविक पुःचित (वे ६ को ताम द्वर क प्रारंद १४४। का व २२ महा)।२ पतिया १ ग्रीव, करणोव्य (६६७)। प्रभाष्य 'बीइ पद्मा मीमा न बोसपुरहर्गनको होति (कामो १४)। परप्पर 🖦 परोप्पर (१९ ६११) 🖘 🛶 मानती १॥ )। परस्मवसाम् रेखी परासम् = नश+ व । परमत्त वि [वे] भीव करलेक (वह)। परमाभ दें हिं] धुरत मेंचून (१ ६ २७)। परम वि [परम] १ व्यक्ट , सर्वाधिक (सूध १ ६३ भी ३७)। २ वरान सर्वोत्तम सीह (र्यचन ४० वर्ष ६ यूगा) । ६ स्थलकी घटनच (परहरे ६, मर बीव)। ४ प्रवास दुवस (माना वत्त १ ३)। १ तू 🖟

मोक्ष गुर्कि। ६ सेनम भारित (धाणाः सम १ ६)। ७ ग. सुच (यस ४)। ८ सरातार पांच दिनों का जनवास (संगीव kc)। हु दें भिने र सत्य क्याने, बास्तविक कीज 'धर्व परमहें सेवे घरणहें' (भवावर्ष १) । २ मोल मुनित (उत्त १८) पक्क १ ६)। ६ समय चारित (सुध १ र)। ४ पूर, देशो तीचे त्म=ार्च पर बहुविद्विश्रद्वा (पक्षि वर्गे १)। एव वेद्यो न्त (सन १०१)। रेख पून [ीर्थ] १ क्लब इत्य कत्ते परमत्वे (पाच) 'परम-स्को<sup>ट</sup> (सनि ६१)। ५—४ देशो <u>द</u> (कुरा २४) ११ । संस्ताप्रासु १६४ महा)। त्य न िक्यों स्वयोत्तम इतिमार, प्रयोग थक (धेर रे)। इसि ए विशिन्ती १ मीज वैकानेपाला। २ मीव्य-मार्थका जलकार (पाचा)। सन विशी १ आहेर, बुरबन्धबान मिट्ट घोषन (पुना १६ )। २ एक दिन का क्यचास (सेवोच १८८)। यस न पियी नोमा निर्माश श्रुटित (पास मिन धर्मि ४३ पैचा १४)। य्यू र्य िस्तान विशेष्ठम भारता परमेश्वर (कुमा बुगो वर फाल ४६)। प्यय रेची पर्स (सूरा १२७)। <sup>प</sup>रपस केसी **ै**प्प (अपि) । प्यया **की ि**रसता ेे प्रस्ति मोळा 'सेवेसि धायक्रीत धारिनेसरिसरी परमञ्जन वर्ती (नुपा १२७)। बोधिसन्त वं विदेशियसम्बर्धि परमञ्जूष ध्वांत के का परंग गण्ड (मोग्रा १)। सीक्रिकान िसंक्यंच] संस्था-विशेष (कम y ७१)। सोमणस्सिय वि सीमनस्थिती सर्वोत्तय भगवाना, संतुष्ट भववाना (यीप **१प्प) । सोमयरिसम रि [ सीमनस्पिक**] नहीं सर्वे (बीप कप्प) । हैं का की हिका बच्चम विस्कार (गुपा ४७ )। विस ियुम् । १ लम्बा यानुष्य नही अपर (पडव १ ७)। २ श्रीवित राख चमर (विपारेर)। | णुर्दु ["| णु] सर्वे-सूक्त बस्तु (सन चन्ना) । हिस्सिय [शासिक] धनुष्टर्नवरोग गारण बीची को पुण्य क्रीवारी देवीं की एक वाति (सन १)। शही हिस श [ भागाधिक] धनविकान-विशेषनामा श्रावि-विशेष (नग) ।

परसाहरिया वि पिरमधार्मिकी तुल क श्रीमलाची (रस ४ १) । पर्धमिद्वि व [परमेहिस्] १ ध्या, पर्यान (पाध' सम्मत्त ७ ) । २ महिन् दिव धानार्व चपाम्याय भीर मृति (सुरा १६) शास्त्र वय काष्ट्र ६। किसार १। परमु**क्ष** वि [परामुक्त] परित्यक (पत्रम **७१** 38)1 परमुक्तारि ) वि [परमोपकारित] वर्ग परमुक्तारि ) स्वकार करनेवका (धुर % 47 7 80)1 परमद केको परममुद्र (छ २ १६)। परमेद्रि देशो परमिष्टि (कुमा धनि नेश्व 444) I परमेसर पू [ परमेश्वर ] सर्वेधर्म-संगन परमात्वा (सम्मच १४४ मनि)। परम्मुद् वि [पराइमुख] विश्वव मुद्द-विक्य **ध्या**मीन (खाना रे २३ काम ७२३३ ना 464) 1 परय न (परक) प्रानितन प्रक्रियन (प्रच #A \$A) 1 परक्रेड्ज वि [पारक्रीकिक] बन्धन्तर क्षेत्रन्ती (ब्राचा) सम ११६। एवह १ १)। परवाय वि [परवाज] १ प्रकृष्ट धव्य वे व्रेरखा करनेवासा । २ <u>पू</u> साधीद, रम श्रीकनेपाला (था २६) । परशय वि [प्रारवाय] १ वेंह याना छने-बल्बाः २ ∮ उत्तम लगैमा(मा२३)। परकाय दे [प्ररपाञ्ज] नाव (क्रम) प्रत्ने का कोठा यह वर यहाँ ताल संस्कृति निन्द नाता 🐍 कोठार, बबार (बा २३)। धरवाया को [ प्ररवायु ] बिरिन्त**ट गहा**मै नधी (मा २३)। परस (पर) वेबो फास = स्पर्त (निफ गाँव)। मणि पू ["मणि] पल-विशेष विको धर्म्य में लोगा मुन्दर्ध होता है (पिंच) । परसम्भ (ध्रप) देशो पराध्या (पित्र) । परस र् [परश्] बक्र विशेष परपर रूक्षप क्रमहती (मन १. १६) प्रानुदा १२०

काव) ः रामः प्रीिरामी वक्यीन स्रवि

ता पुत्र निधने प्रमोश बार नि:श्रारिय ग्रीमरी

की भी (कुछा वि२)।

परसुदत्त दें [दें] कुछ देह बरका (दे द २१) । परस्तर पूढ़ी वि पराशर] वेन, पशु-विशेष (पएख १: राव)। भी री (पएख ११)। परहत्त वि [पराभृत] पर्यावत हराया परा (पत्तम ६१ ८)। परा च [परा] इन वर्षों का सूचक धश्यय---१ प्रामित्रका सेप्रकता । २ स्थाय । ३ वर्षेण । ४ प्रावल्य मुक्यता । ३ विक्या ६ यति यमन । ७ मङ्गाय सनावर। ६ रिस्टार । १ प्रध्यावर्तन (हे २ २१७) । ११ प्रुरु ब्रस्क्ड (ठा १ २ था २६)। परा की [वे परा] इस विकेप (पराह २ १--पथ १२१)। पराष्ट्र सक (परा+धि) इसना पराजय करना । संज्ञ. पराइक्सा (सूपनि १११) । पराइज वि [पराजित] परामब-मास (पडम २. व्य ब्रीस संयक्ष्य सुर १ २७ १३ १७१ वस १२ १२)। पराइक्ष (घर) वि [परागत] वया हवा (भवि)। पराइप देवो पर्राज्ञिण । पराइशह (पि ४७३ मन)। पर्याई को [परकोमा] इतर सं संबन्ध रक्तने-बाबी बहु नाबिका को परपुरूप से प्रेम करे (हे४ ११ १६७)। देशी पराय = परकीय । भराक्तम देवी परकाम (मूच २ १ ६) । पराज्य वि [पराश्चव] निराञ्चव निरस्त (धरक्ष १)। पराकर सक [परा + कृ] निराकरण करना । पराकरोषि (शी) (नाट--वैत ३१) । पराजय पूँ [पराक्रय] परिश्रम शक्तिमन श्वार (चात्र)। पराजय १ सक [परा + वि] पराजय पराजिए। करना इरामा। मुका, पराज क्लिश (नि ३१७) । मनि पराणिलसङ् (पि १२१)। संक पर्वाक्षणिका (स ४ र)। हेक पराकिणित्तप (भग ७ १)। पराजिणिल ) वेदी पराइम = पराजित पराजिय 🐧 (कर पू धर-म्यूरा)। पराज बेको पाप = प्राप्त (नाट--बैत १४० ff (\$\$3) 1

पराजग वि [परकीय] सन्य का पूसरे काः 'बारव हिरएएसुबस्यां हत्येग पराणगीप नो (प्रच्ये (प्रचार १)। पराणिय वि [पराणात] पहुँचा हुपा (श्रवि)। पराणी सक [परा + णी] पहुँबाना । पराखप (माम)। परायोगि (स २३४)- 'बह मणसि ता निमेसमित्तेण तुर्म रायमंदिरं पराखेमि' (कुम ६ )। परानयण न [पराणवन] पहुँचानाः 'नियय गिलीपरानवर्षे का समा धनि व उन्होंने एस' (का ७२८ दी)। परासव सक [ परा + भू ] हराना । कनक पराभविद्यंत, परक्रमयमात्र (उप १२ ही गावा १ २३ १८)। पराभव 🙎 [पराभव] परावय द्वार (विधा परामविश्व वि [परामृत] पविशृत हराया ह्या (वर्गनि ६८) । परामद्र वेको परामुद्र (परम १० ७६) । परामरिस स्ट [ परा + मुश ] १ विचार करमा विदेशन करमा। २ स्पर्शकरमा। परामरिसङ् (भवि) । वक्क परामरिसीत (मनि) । संक परामरिसिम (गाट--पुण्ड परामरिस र् [पराधर्श] र विवेचन विचार (प्रामा)।२ ब्रुक्ति स्पत्ति । ३ स्पर्शः। ४ न्याय- शाओच्ड व्याप्ति-विशिष्ट क्य से पस का क्रान (ह्रे २ १ १)। परामिष्ट्र } वि [परामृष्ट] १ विचारित परामुद्र े विवेषित । २ ह्यूट क्या क्या (नाट---मुच्य देर हें १ १११ स १ प्रम ११)। परामुम सक [परा + मृश् ] १ स्तर्श करना कुनाः २ विचार करना विवेचन वरता । ३ पाण्यास्ति करता : ४ वीवता । इ.सीप करना। पराधुमा (कस्र) । कर्म 'सूचे पचतुनिका छात्रिवृह्तिकत्त्वतिवि (उपर १२६)। यह- निमन्तरिज्येण नयलाई परामुसंतेण व्यक्तियें (कृत्र ६६)। भवर परामुसिज्यमाण (स १४८) । परामुसिय वैको परामुद्र (महा पाप) ।

पराय धक [प्र+राज्] विशेष शोमना। बहु परायंत (कप्प) । पराय वृष्पिरान देशूची रक रिगू वेसू रथो परामो य' (पाम) । २ पुण्य-एव (हुमा गउड) । पराय ) वि पिरकीय पर-पंतनी इतर परायग े से संबन्ध रखनेवासा 'तो प्रत्यशा पराया पुरुषो कहमाबि हुति मुद्राएँ (बद्धि १ १३ क्षेत्र १७६४ सव 🖙 १)। परायण वि [परायत्र] तरपर (कम्न १ 48) r परार्रिय [परारि] भागामी श्रीसरा वर्षे (प्रामु ११ वे २)। पराख बेको पक्षास (प्राप्तु १३०)। पराष (धप) सक [प्र+आप्] प्राप्त करमा । परावद्धि (हे ४ ४४२) । परावक्त सक [परा + प्रत् ] १ क्यतनाः पचटना । २ पीके सीटना । परावत्तद् (उबर वय)। वह परावत्तमाम (धव)। परावच एक [परा + वर्तेय् ] १ कियाना । २ बाबुचि करना । पचवर्त्तव (पद ७१) परावसंखि (मोह ४७)। सह 'तो सागरेख मिल्प बरे परावित्त हुए नियम्ब (क्रम १७८)। परायच र् [परावर्ते] परिवर्तन हेरहेर, हैपनेचे (च १२ वर प्र २७ महा)। परार्वाच वि [परावर्तिम्] परिवर्तन करने-बासा 'बेसपयबिट्डी दुनिया' (महा) । परावश्चि की [परावृत्ति] परिवर्तन, हेराहेरी (तप १ व१ दो)। परापश्चिम वि [परापर्वित] परिवर्वित नदना हुधा (महा) । परासर वू [पराशर] १ क्यू-क्रिकेप (राज) । २ ऋषि-विशेष (बीयः ना वहर)। परामु वि [परामु] प्रायः-रहित मृत (बा १४ वर्गसं ६७) । पराइव देको पराशव ≈पराशव (गुलु ६)। पराहुत्त वि कि पराहुद्धाः विश्वव होह क्षिय (व रंग्या के १ - पंग कर पू पत्न बोब ११४ वरवा २६) 'महबिखवाराट्टी'

(पत्रम ११ छ४ सुक्ष २, १७)।

परि म पिरि इन क्यों का सुबक धन्का-१ सर्गतीका तमेतात, वारों धोर (वा २२, सुध १ र )। ५ वरियाटी अन्य (विय)। ३ मुनः पुनः किर किर (पराह १ १ बारक २०४) । ४ सम्पेट्य समोपताः (द्वार ७५१) । इ विशियर व्यक्ता परि बार्खं = परिवान ( व्यक्ति) । ९ वरिकायः बिलेब (स ७३४) । ७ संपूर्णता व्यक्तिमें (पत ६१)। व नापूरपन (कावक २०४)। श्र अमर (के २, २११ सूचा २६१)। १ रोप मानी । ११ पूजा । १२ व्यापकता । **१६ व**परम निवृत्ति । १४ कोच्डा१४ किसी ब्रकार की प्राप्ति । १६ याक्यल । १७ र्वतोष-मन्द्रस्य । १० मृत्रस्य दर्वकरस्य । १८ क्राजियन । २ कियम । २१ वर्गेन्द्र प्रतिवेश (हेर २१७ म्ह्री भवड)। २२ निरर्वेत्र भी १तका प्रयोग होता है (बड़ड १ चळ)। परि 🖦 पश्चि = प्रति (छ 👢 १ — पत्र १ २) पर्व्य १६—पत्र ७७४० ७०१)। परि की कि दीत पीत (कुमा)। परि क्ष [ क्षिप् ] पॅक्ना । पछि (धर् ) । परिश्रंस एक [परि+सब्द् ] बांक्ला दोइना । परिसंबद् (बल्बा १४६) । परिश्रंत एक [ कियु ] १ व्यक्तिक काता। २ वंतर्नं करना । परिभंतर (है ४ १६ )। परिश्रंत केको पर्जात (पगह १ १ परम ६१,

पराहुत्त | नि [पराभृत] धामभूत, इराया

पराह्रस हिमा (स्प ६४व टी पांच)।

१६ सूच २ १ १४)। परिश्वतच्या को [परियन्त्रका] बाँठराव श्लाखा (ताट-पावती २ )। मरिअंतिअ वि [शिष्ठ] यानिक्ति (हुका) । परिश्रमित्र वि [परिज्ञान्मत] विवक्षित (ह ર, ૧) ા परिश्रद्ध धक [परि + पृत् ] पलटना, वर-शता वर्षे दिही अपरिवर्षकीय सहया-रच्छानस् एनी (दुव ४३) नहा) परिवह माण (महा)। परिभट्ट वर्क पिरि + वर्तेष् ी १ पल दाना

परनला। र बाष्टि राज्य प्रक्रिय श्रव भी

बार करना । १ फिरानाः पुगाना । परिबद्धाः परिवादेश (पाषिः प्रयः) । हेक- 'परिवादेश महरतो निक्रितीपुर्म कि क्रम्प्रेमले (कुप १७३) । परिश्रद्व सक [परि + अद्] परिश्रमस करना वसना। पण्डिन्द्र (द्वाप २३)। संक्र परियद्विषि (धप) (मधि)। परिकाह है कि ] एकड बोबी (वे ६ ११)। परिश्रह दं [परिवर्त ] १ पत्रधव 🗪 । २ समय का परिज्ञान-विशेष कमन्त कर्तास्त्री बीर बक्शिपछी कात (विपा १ १। धुर १६ १४४३ वद १६२)। परिखट्टन वि [परिक्तेंक] परिवर्तन करने-वाश्वा (विचु १)। परिश्रद्रज व [परिवर्तन] १ पचटाव वस्त्रा करवा (निड ६२४ वै ६७) । २ क्रिक्ट विक्रय शांवि अपकरस्य (स्थमा १ ९ १ परिश्वहणा 🛍 [परिषर्तना] १ किर किर होन्त (पर्याह ११) । २ माश्रीत प्रक्रिय

पठकाश्रीवर्डन (श्रामा ३१४२ <del>व</del>र्स २६ १। १ अभ और ठा ६ १)। १ हिपुरा बाहि प्रकरित (पि २ ६) । ४ क्रका करमा (चित्र ६१६)। परिश्रह व वि पिनैटकी परिश्रमण करने-वालाः गरविदिशयवपरिवद्वर्गं (क्ष्य ३१)। परिश्रहृक्षिण वि [ के ] वरिष्यक्र वि ६ 3 %) I परिश्रह्मिक्ष नि [वे] परिष्यान (पर् ) । परिअक्टिय वि [परिवर्तित] वक्षामा ह्या (कारे ४ पिक स्टब्स येथा ट्रेट्र)। वैको परिअस्तिम । परिश्रक्ष सक [परि+स्यद्] परिश्रमण करता : परिवर्शीत (पायक ११३) । वक्र परिषद्धंत (गुर २, २) । परिश्रहण ग [ पर्यंटन ] परिश्रनल (स (435 परिमाधि 🕸 📳 १ वृत्ति वाहा २ वि

बुब्दं, वेशपूक्त (रे ६ ं वे) ।

ह्या (तिस्ता १४)।

परिअक्टिम मि [पथटित] ररिम्रान्त कटरा

परिविद्विभ वि [दे] प्रकटिश व्यक्त किया इमा (वड् ) । परिश्रद्ध यक पिरि 🕂 भूम 🕽 नदगः, 'परिवाह बानएस्' (हे = २९ )। परिश्रह्ब धरू [ भरि + वर्षय् ] वहला ( F 4. 38 ) I परिश्वविक की पिरिकृति निशेष कृति (प्रकु२१)। परिश्रविद्धा वि पिरिवर्षिम् की बढ़ ले-नामा 'समल्यस्वरंदपरिमहिए' (धीप) । परिमहिडल वि [पर्याच्यक] परिपूर्ण (धीम) । परिअविद्वास वि [परिकर्षित्, क] बॉवर्ने-बाला यक्तवंड (ग्रीम) । परिव्यक्तिक वि [परिकृष्ट] बीमा ह्या बाइट मस्य धमरेत् खेड इयनयमस्मिकिन-परिमन्त्रपारा । ब्ह्रपरिवाद्विक्वपादिरिकेश-कनारो व्य बारवार्ग (पुरा ११)। परिवाद वृ [परिवाद] १ परिवाद, कुट्रम्द, पुत्र-कलाव दावि प्रश्ननीय वर्षे । ए अनुबद् चनुवामी (वा २**०१) पडका पि ११ )**। परिअच देवो परिश्रंद - रिवए । परिश्रचर (हे ४ १६ हो)।

परिश्रच क्यो परिश्रद्ध # गरि + दुव । गरि যৱহ (ৰ্যৰ) 'नडुन्न परिम्राचर बीबी' (दे ६ ) परिवचए (बना )। वह परिव चमान (महा)। परिअन्त देवो परिखट्ट = परि + धर्मप् : संह.. परिवर्षेट (हरू १)। परिजन्त देखो परिअड्ड = पणितं (मीप)। परिभक्त कि कि प्रकार फैबा क्ष्मा क्या-थर्णारच्यंत्रमहो करपरिघता वार्ष (हे Y 10x)1 परिवक्त वि [परिवृक्त] क्लटा ह्या (व्यव) । परिजन्तय देवो परिजन्न (यवन) <sup>चार्</sup>क्षकरवर्षपरपरिवक्तकृत्वेववस्परिपर्वतः । क्षत्वा विविद्यवसम्बद्धाः कुरवावस्या मुचीत वर्ष (बुग ६३१)। परिमत्तवा क्षेत्रो परिभद्ग्या (धन)। परिज्ञसमाम 🖦 परिअस । परिभक्तपाणी की [परिवर्तमाना] कर्न महति-विरोग यह धर्म-प्राप्ति वो सम्ब प्रश्ति

लिक्दिनिवेर्ययेजसमई व के शत्य मा उदय की चीक कर स्वयं बत्य या स्थ्य को प्रान्त होती है (पेत्र १ १४ व भागमध्ये । परिश्रत्ता की [परिकर्ता] जार देवी (कम्म 2. 2) 1 परिअधिक वि [परिवर्तिक] १ मोहा हुया 'बावियमं परिवर्तियं (पाय)। २ देखी परिबद्धि (परि)। परिवार सक [परि + पर ] सेवा करना। क्ट, परिवर्रत (नार-शकु ११६)। परिवार वि [क] सीन निमान (दे ६ २४)। परिश्रर पूँ पिरिक्ररी १ वटि-करणका 'सम्बद बद्धारिमरमधी (मनि)। २ परिवार, विराण-विवासियनरियरहर्नयविसम्बद्धवृत्तिविदेवि (पतक चेहर १४)। परिवार पू [परिवार] देवक मृत्य अणु-खिरनेते एकार्नाएमस्बुधननसमान**्छि**हेले (एवड) १ परिधरण व [परिचरण ] देवा (धवीय 1 (3# परिवारणा को पिरिकारणा हेवा (नम्मश 288)1 परिवरिय वि [परिकरित परिशृत] १ वरि 'इमनवरह बोहनह इनरिवरियो' बार-धक (महा, भवि च्छा)। २ परिवेद्रिक "तथी तं समायन्तिकारण मुद्दमुई ताल केर्र समेतवा परिपरिया सन्बद्धीयेर्ग (महा सिरि १२८२)। चरिक्रङ सक गिम् विनय गमन करना। परिमन्द (१४ १६२)। परिश्वत ) प्रधी दि । याच यांत्रवा ग्रीजन परिवास । पान (मान १ क १२)। धरिअक्रिक्ष वि शित्र मिया श्रमा (श्रमा)। भरिष्ण केंद्रो परिष्णका परिष्णक (हे ४ १६२)। चंड परिम छक्रम (पुना)। परिमारम वि [परिभारक] सेवक, पूरव (बाद १६) । क्यें रिमा (ग्रांग १६६) । परिजास सक [बटप्] बेटल करना बरेन्ना । परिपाचेश (हे ४ ११) । परिकास वि दि । परिवृत्त, परिवेटिका 'सो क्यह बाम-स्नायमाण-मुद्दवासिवसभारियाणं ।

जो बहुद क्लमासं' (परह) । परिभाद रेजो परिवार (छावा १ वर हा ४२ मीप)। परिभासिक वि विष्टिती नतः। हमा वेदा ह्मपा (कुमा: पाम) । परिजाब वेबो परिवाब (रम ६ २ १४)। परिभाषित्र सक [ पवा + पा ] पोना । परिवाधिएका (नव र. १ ४१)। परिश्रासमंत (पर) च िपर्यासमन्तान् न बार्धें बीर से (मवि)। परिश्वसङ पिरि + इ दियंटन बरना। परि र्वति (उत्त २७ १३)। परिश्रणम वि पिरिक्रीणे विश्रम (सम्पत्त 1 (725 परितर (शौ) वि पिरिचित्त परिचय-विक्ति. भाव पाचाना हमा (मनि २४८)। परितंत सक पिरि + चुन्त विश्वन करता। परितंत्र (प्रवि ) १ परित्रेषण न [परिजुम्बन] सर्वतः चुम्बन (मा २२ हाम्य ११४)। परिर्णामा भी पिरियम्बना कार देखी 'पंग्रदिबंबए।पूनन्त्रंग ए पूर्णी विराहस्त्रं' (या २ ) ध परिकारमध्य वि [प्रमुक्तिमद्व] सर्वेदा ध्वक (बरा) । परिष्ठ 🕅 पिरतुष्टी विशेष तुर्ग (स ७३४)। परिजय कि कि | प्रोपित प्रकास में समा ह्या (रे ६ १६)। परितिका वि [पर्यापत] बासी ठगुडा. भारत निकला हम्य (भोजन) (वे १ ५७)। परिकार थि वि परिगृत वाम एक पत्तथा. 'रप्रतिसमाद क्षाउँ मा ए बारेड्डिड्रोड परिक्रम । मा बहुएमारमस्त्रै पूरिकार्यती किविम्मिहिद्द (या ११६)। परिकरण न [परिपूरण] परिपृत्ति (नाट---**रक्ट** ≒) । परिषस रेको परिनेस = परि + विष् । ववड परिपक्षिक्रमाण (भाषा २, १ २, १)।

ያጀዊ परिक्रम देखो परिवस = परिवेट (स ११२)। परिभोस सक [परि+तोपय] संदूर करना जुशी करना । परिमोधः (मर्नि मुखी । परिमास प्र [परितोप] मानन एंडीय मूळी (मे ११ १ पार्य, २१ स.स. मता १७ । । परिजोस वृ वि परिदेश विदेश हैंग (चरि) । परिजोमिय वि पिरिनोपिनी संदूर फिना ह्या (से १३ २४ मिन)। परिंग देशो परी = परि + इ । परिकृत सक पिरे + काक्स ] १ विकेप समितास करना। २ प्रतीक्षा करना। परिसंबर (एत ७ २)। परिकार व पिरिकारी मान्य विन्ताहर (हम्सैर १)। परिश्रंपि वि पिरिश्रम्पम् । प्रक्रिय कॅपलेबाला (गठह) । परिक्षिपर वि पिरिक्षम्पद्वी विशेष क्रांपने-शास्त (क्या) ( परिकरिक्कम वि [परिकासित] परिपृहोत (ध्यम) । परिचटनित्र वि वि वे प्रम रिएमेस्ट (रिंह २१६) । परिकद्दशक [परि+ कृपू] १ पार्ट भागर्थे आदिका। २ प्रारम्भ करना। शक् परिकटनुमाम (चन)। संकृ परिक्रहिस्डल (पंचय २)। परिकृतिय वि [परिकृतिन] धरान्त वितन (गडक)। परिकृत्य सक [परि+कृत्ययू] निवासन करता। २ करता करना। परिकायर्वित (सुद्ध १ ७ ११)। संब्र परिकॉप्परूप (बेह्य १४)। परिकरिपय वि [परिकरिपद्य] हिला काटा हवा (पएत १ ३)। देवी परिगण्यिय । परिकरनुर वि [परिकर्तुर] विशेष कारा--विवक्षा (परा)। परिकम्म ३ न [परिकमम्] १ प्राप्त-विदेश परिक्रमाण र् का बाबाद, शहकार-करता 'परितम्मं किरियार बाजूरी द्वराशिसेस

श्वापित (यु ११)।

परिकासमा-परिकास

बरारण-बन्न राज्य (मॉरि)। ३ गणित विदेव । ४ प्रदेशान-विदेश युक्त वर्षा की नराना (टा १ --पद ४६६) । १ निध्यापन (पद १३६)। वरिक्रमचा हो कार देने: 'बेटनहरूं दिक्वं न तस्य परिशम्बला नव विलालों (रिने ६२४) सम्म १४४ तेवीय १३४ क्टर्व १४)। परिश्रमिय रि [परिश्रमित ] गरिक्स विरिद्ध, लेखारित (१९४) । परिकर देली परिकार = नरिनर (पिन) । परिस्तान म "परिस्तान" क्रानोग "बनर परिवारक्षणप्रवादम्भियमधै (सूरा ६)। परिवासित्र वि [परिकासित] १ पुन्न, शहित (गिरि १ १) । २ स्थान्त (नम्पत्त २१६) । ६ ब्रान्त 'संबन्तिरियनिवयर्थं व यत्रश्रं ब्रह योग् (धर्मेश २५)। परिश्वमन्त्रा भी [परिश्वपद्यता] व्यापः 'इरिकारिकासणागुरुकोर्मकुमा' (कुश व) । परिर्श्वम रि [परिरियन] गरेतीयार न बरित वर्णवाना (नाव) । परिक्रीश्वर वि [प स्क्रीपरा] चरित्राव नामित रिवराना (शहक) परिकाश म [परिक्र म] धोंचार (नजर)। परिषद्ध सक [परि + क्यव्] प्रकाल बास्य बाल्य । बरिप्रदेश (उत्तर) बरिपार्टन विच्य ६ ७३। वर्त्र परिषद्भित्रमहर्शित २४१) । ky प्रश्रम (यीत) परि। इस न [परिकारन] बाल्यान सम्प्रस् (नुस १) । चरित्रदेशां की पिरिक्रथमा । अपर रेगो (बराव)

वरिष्टाकी विरिक्रमी १ वजनीतः । २

वर्शिका देवी परिक्रिया विश्वापालकात

बर्लन रिष्ठ १२६) पार्शास्य मि [परिक्षित ] प्रार्थ

बारयात (मरा) ।

बार्तकार्ग (स्त) ह

वरिकालों (स्थि ६२३) गर १३ १२४),

तिक परता कार्ड सरीरपरिकामणी पर्वे

(इन्न २७१: क्या घर) । २ संस्थार शा

'नियारिककुराधिकेको' (वर्गीय १४)। २ म्बाप्त (पुर १ १६) । परिकितंत्र वि [परिकारत] विशेष क्रिल (का २६४ हो) । परिकिलोस सक पिरि+कोशयी रखाँ र एना, हैरान करना । परिवित्तेशीत (धव) । संह- परिक्रिजमित्ता (भा) । परिविज्ञम र्च [परिक्र'स] दुःख बाबा, रेफ्सी (सुबार के दर बीन स ६७६) वर्गसं६ ४)। परिकेसिर वि [परिकेसिय] बाउराव शहर वरतेयमा (सर्ग) । परिक्रिय वि विरिक्रिकिय विश्वासन (विचे १०३)। परिकृतिक वि पिरिकृतिकी विकेश वक (सूर ११)। परिकृत वि पिरिकृत विस्तान परिव (वर्षीत ११४)। परिकृषिय नि [परिकृषित] शक्किय कुड (लाबा १ । प्रमा वर्ण)। परिश्रोमधाः (परिश्रामधी सर्वतः बीवतः (परा) । परिस्त वि [परामास्त] परावन-मुख (नुस 2 3 V 22) 1 विश्विम तक पिरि+ क्रम् देशक ने चनता। २ लगीर में जानता। १ वरावर वच्या । ४ शक् पराज्य वच्या । वरिद्रवर्षि (रामि ४६) । बरिप्रमणि (रामि १३) । शरिकोष(श्री) (रि४८१) । शरु परिश्वमंत्र (गा") 🕊 परिक्रमियक्य ( लावा १ १-- वश १ ४) और परक्षम्म (नुस १ ₹ ₹ ₹): वरिक्रम देनो परिकास = नगरम (लास १ १ नत्त्र वर्गा १४) । बरिश्च इस देनी परिशृद्धिय (मृत्त २ )। वरिवास रेगो परिकास=वरि⊹नवः परिग्रामीर (रि.४) रि ५३)। र्पारकार मन पिरि+ईस्ती बरनाना परीमा करना । परिश्वार परिश्वार, परिश्वान

परिकार । (शकि: मक्षाः बण्याः १५८) ब ४१७) । वज्र परिकर्तनः परिकरमाज (शोव = मा या १४)। एक परिकास परिकास पिरिकीणी १ परिवत केटित. (का)। इ. परिकित्सम्ब (काल)। परिकलाम वि पिरीक्षक परीका करनेवासा (मुपा ४२७-था १४)। परिकराञ वि [परिश्वत] माग्तः वित्रवी वान इसा हो नह (में = ७३)। परिकास वृद्धि रखमी १ व्यक्ट इतिः वहमपक्तवरम्य जोग्रहापरिक्तयो विम (বাৰ ⊲) ঃ ২ লৰ সাত (বরচ) । परिकरात्र व [पर्धभाषा] पर्यक्षा (ब ४६६ कल्या नुपा ४४६। स्ताया १ ७ समि)। परिकारमा की पिरामणी परीक्ष (परम 1666 32 परिकासाण हैया परिकास । परिकलक्ष यक पिरि + स्लास ी स्त्रविद होनर । यह परिकारलीय (से ४ र७) । परिकलस्थित्र वि पिरिस्पिस्ति स्वयंग-प्राथ (शि. ६.५) । परिकास की [परीक्षा] परंच जांच (ता?---नामवि २२)। परिकताइभग वि [दे] परितील ( बर् )। परिकासन वि [परिसाम] बाँडटन इन (उत्तर ७२) स्पट--रामा १)। परिकित्य वि पिरिक्रिम विषयनेगवा ररीधक (बा १४)। परिकिश्च र पि पिसिसी १ वेटिंड केप ह्या (कीपा पांच में १ ६२) क्यू)। र सर्वेश रिर्देश (प्रापन) १ व वार्षे मोर **॥ मान्य** (चर)। परिक्रिय है पिरीसिय विवरी परीजा भी ध<sup>8</sup> क्षेत्र कड्ड (प्रानु (प्र.)। परिकित्र र तक [परि + क्रिप़ ] १ केहन शरमाः २ तिरन्तार करमा। ३ म्यःप्त करना। ४ कॅक्सा 'एवं जुक्याकरती वरिस्थिवद बायुरा व अयहाँ (dg १३ बीरम ( ६)। वर्षे परिक्यितीयामा (ति वरितिसर्विय रि. विश्विति है ने हम (इन्मीर ६२) । वरिचनव रि [परिक्षेप] वेच, वर्तिय (क्न यम १६१ वना धीर) ।

इस्य (वा ११६)। परिक्रित वेची परिक्रित (सए)। परिस्तित देखो परिकित्सव। परिविधः (र्माव): 'राया ते परिवित्तई बोहरणवहैख मक्ज्रीम (सम्पत्त २१७ नेइम ६५६)। परिकिथिय देशो परिक्रिय (एए)। परिख्नहिय वि [परिक्षुवर्ष] शतिका स्रोत কী মাত্ত (মৰি)। परिलेश्य वि [परिलेवित] विशेष जिल क्रिमा हमा (सए)। परिसेद (टी) पू [परिकेद] विशेष केंद (समार ≤ )। परिलेग सक [परि + लेदग्] शक्तिय क्रिल करताः परिवेदद् (एए) । संक्र परिसद्धिय (प्रय) (एछ)। परिकेविय (भग) केवो परिकिविय (बरा) । परिगंत भागे परिगम । धरिगण सक [ परि + गणय ] १ क्लाना करना। २ विन्तन करना विवाद करना। बह-'एस बक्का यम पमस्रस्य ति परि गपतिय विद्याविधी रावा (महा)। परिगप्पत्र न [परिकल्पन] करपना (धर्मसं 4=1)1 परिगप्पणा की [परिकरपना] क्यर देखो (घर्मसं ६ ६)। परिगण्पिय वि पिरिकृष्टिपत् । वितकी करपना भी परे हो नह (स ११३ अमेंस ६१६)। वैको परिकृष्पिय । परिगम सक [परि+गम्] १ जाना 40

परिक्लेवि--परिघग्पर

करनेवासा (उत्त ११ ८)। ारिलोच पुँदि दिशार, दहार, बनावि

बाह्यक मोकर (वे २, २७)।

(उप १८६ हि)।

1 ( a f

रिक्लेबि कि [परिष्ठेपिन्] हिस्स्कार

गरिकास्त्र सर्कपिरि+**लर्ज**ी हुनाना

सुनताना । कन्त 'परिस्तरनमाणुमस्वयदेशो'

परिकाल व पिरीक्षण विशेषा-करण परीका

सेने पर्वाने वा बाँच करने का काम (पन

परिस्तविय वि [परिक्षपितः] परिसीण

परिस्तास वि पिरिद्धार्स विति दुर्वेत विशेष

'प्रकाटकमारागपरिवादियसचीचे' (महा) ।

३ व्याप्त करना । संक्रु परिगंह्य (सप्त) । परिगमण न [परिगमन] १ ग्रुण पर्वाय ्र'परियमश्रौ पण्याची चरोपकरराँद्रसोति एक्टबा' (सम्म १ ६)। २ धमन्ताब बमन (शिक्ष १)। परिगमिर वि [परिगन्तु] बलेवाना (स्रष्ट)। परिगय नि [परिगत ] १ परिनेष्टितः 'मए स्तवन्युरापरिवर्ष (छवा वा १६) बहुपरि बक्परिक्या' (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त 'विश्वपरिवर्गाह् बाढाईं' (स्वा) । परिगर पू [परिकर] परिवाद, श्रिक्षात्व स हरियम्बं परिनर्शन्त्रकालमारीया शार्थं (वर्गस १२१)। परिगरिय वि [परिकरित] थेको परिकरिय (सुपा १२७)। परिगम्ड बन [परि + गर्क] १ वस बाता श्रीसः होता । २ फरना टपकना । परिकाह (काक)। कहा परिगर्छत (परम ११२ ११. तंब ४४)। परिगक्किय वि [परिगक्कित] वला हुमा पितीस (क्रम ७ महा सुपा =७: ६६२)। परिगक्किर नि [परिगक्कित] यस बानेबासा धीस क्षेत्रकाता (सर्ग) । परिगद्ध वेदो परिगेण्डः शंकः परिगद्धिक (मा ४८)। परिगद्ध देखी परिगद्ध (कुमा)। परिगद्दिय वेको परिम्गहिस (बह १)। परिगा सक [परि + गै] यान करना। क्ष्मक परिगित्वमाण (ग्रामा १ १) । परिगासण न [परिगासन] मासन आहमन (प्रकार १)। परिगिट्यमाण देखी परिगा । परिगिम्स पारागम्भः परिगितिसस्य } देवो परिगेण्हः । परिनिषद् देशो परिनेष्ट्र । परिकित्रहर (धाष्ट्र १) । यक परिनिष्द्व परिनिष्द्रमाण (स्प २१ ४४३ ठा ७—-पत्र ६०३)। परिगिक्षा सक पिरि + ग्ली । कान होना । वक्र परिविद्धापमाप्य (बाबा)।

(पिंग) । परिशूणण 🖪 [परिशूणन] स्वाध्याय (मीव 42)1 परिश्व वक [ परि + शुपू ] १ व्याप्टम डोनाः । २ सकं सत्ततं भ्रमणं करना। बद्धः परिगृतित (राष)। परिश्व एक [परि + शु] राम्य करना । बङ्ग परिगुश्स (सब्)। परिगुरुष यक [परि + गुप ] १ व्याकृत होना । २ थक उत्तव भ्रमणु करना । बहु परिगुर्व्यत (ठा१ — पत्र ४)। परिगृधक [परि+गृ] राम्य करना। कक्क परिगुर्क्त (ठा१ — पत्र १)। परिगेण्ह∖सक [परि÷मह] ध्रहण परिग्यक्ष है करना स्थीकार करना (प्रामा) । वक्र परिग्गहमाण (भाषा १ ८ ३ १)। धंक परिगिविक्तव परिभक्तूण (राजा पि १८६)। के परिचेतु (पि रे७६)। 🗑 परिगियम परिभेतम्य, परिभेत्तस्य (एस १ ४३ युगा ३१ सुम २,१ ४० वि परिगाय 🖦 परिगय (इस १ २ ८)। परिसम्बद्धं [परिमद्द] १ प्रदुख स्वीकारः । ९ वन कादिका संप्रह (क्लाहर १ स्पीप)। ३ समस्य मुच्चा(ठा१)। ४ ममस्य-पूर्वक विचका चयह किया बाग बहु (शाब्द ठा १ १। वर्ग २)। "बेरमण न ["विरमण] परिश्रम् स निवृत्ति (ठा१ पराहर १)। ार्थत वि [ वन् ] परिष**ह-प्र**तः (प्राका पि ११६) । परिग्यहि वि [परिप्रहिन्] परिप्रह-प्रक (सुमा१ १)। परिगादिय वि [परिगृद्दीत] स्वीद्रत (उना भीप)। परिगर्दिया औ [पारिमहिकी] परिवह सम्बन्धी किया (ठा२ १ तव १७)। परिषम्पर वि पिरिपर्परी बैक्ष हार (पानाव)ः 'हरिएडो चनद चिरं निह्नसहपरि

मम्बद्ध भागी (मजर) ।

परिष्ण सक पिरि + सूजम् ] परिक्णन

करना यिनती करना। परिप्रसङ्ख (घप)

परिषद्र—परिष्यक

परिषद्भ न [परिषटन] निगील

(निष १)। परिपद्भिय नि पिरिपद्भित्ती बाइक लाध्य (बीय १)। परिषद्व वि पिरिचारी १ विसका वर्षेश

किया गया ही वह विसा हथा। 'मंदरवन्यरि **元 (まる \$a**x) ! परिषाय देवी परीचान (राज)। परिषास एक पिरि + वासय ] कियागाः मोनन कराना । क्षेत्र- परिवासेर्व (शाना) ।

परिवासित 📭 [परिवर्षितः] परिवर्ष-प्रक 'रक्या वा गरिवासियपुर्ण मनति' (बाचा २ t 1 1 1) 1 परिचम्मिर दि [परिचर्णिक] शनैः शनैः क्रीरता क्रिक्ताः बोलता (प्रज्य = २ ६) था ₹¥#) I परिचेत्रक '

क्वो परिगेष्य ।

परिषेत्रस्य

परिमेचं

परिषेत्त्र परिभोड एक [परि + भूगै ] १ जोवना । र परिचानक करना । वक्र- परिचोर्जन परिघोजेमाण (वे १ ३६ और शावा १ ४--नम १७)। परियोक्तन व दि परियोक्तनी निवार (ठा ¥ ¥--पश रेव३)। परिभोडिर वि [परिभृतितृ] जेलवेतला

(यञ्ज)। परिचल देशो परिचय = वरिवय (शाह---शह ७७)। वरिकास देशो परिकास । श्रेष्ट परिकार अ वरिषद्भय (नदा) ।

परिचयन दि [परिचलक] विवयन भारत ( t ty) 1 परिचक्त देवी परिचक्त (महा भीप)। पारचरणा 🛍 [परिचरमा] वेवा प्रक्रि

(तुवा १३६) ।

क्या (दे १ ६) । परिचारक वि पिरिचारको धेना करनेशलाः सेवक (गट--मालवि ६)। और ।एआ (mz) 1

परिचारणा औ [परिचारणा] मैक्त-अनुधि (ठा ६, १)। परिचित्त सक पिरि + चिन्तय न चिन्तन करना विचार करना । परिचित्तक, परिचित्तेह (धल का)। कर्म परिचित्रवा(धप)(छल)। क परिचित्तंत, परिचित्तयंत (क्छा परम \$\$ Y) I परिचितिय वि [परिचितित] विन्छन क्षित्रा भग हो वह (छछ)। परिचितिर वि पिरिचिन्सयित् विन्तम

क्लोबाला (धण) । परिचिद्ध सक [परि+स्वा] खुना स्विति करना । परिचित्रक (स्वरा) । परिचित्र वि पिरिचित्ती बात चाना हमा, विकाहमा परिचानाहरा (धीप)। परिचुन देवी परिश्वन । परिचुनिकसाण (गीप)। शक्क परिचृतिका (बार्षि १६ )। परिचुनिय देवी परिजेबय (प्राप्त १६ ७६)।

परिचुनिय वि [परिचुन्कित] विवक्त कुन्तन किया पना हो वह "परिचुनिजनकृत्र" (उप इंदेक की) । परिवास सक [परि+स्यात्] परिज्ञाव करमा, क्षोड़ केमा । परिचनक, परिचनक (म्यूर, यांध १७७) । वक्षः परिवासीत (यांच १३७)। संक्र परिचक्रम परिकरण परिश्वद्वज्ञाण (चित्रक्ष च्या व्या व्या राम) । क्षेत्र, परिवास्तय, परिवासं (क्या

नार)। परिवक्त वि [परिस्थक] निका परिसाय विमानगाही बद्ध (दे च २ ) पुर ९, १२ । जुला४१ : साट—सञ्ज १६२) । परिवासक त पिरिस्वास्त्री विध्यान (स 18) I

परिकाद है। [परिस्थामिन्] परिव्यव करने

बाला (धीप घवि १४)।

परिचाय वि पिरिजास्य विभाव करने नायक 'बक्केनि बस्तकोना सोजिपमध्ये परिचार्य (यंबीय ३४) । परिविद्य वि वि प्रविद्यात क्रमर केंका हमा ( वव )। परिविद्ध केवो परिविद्य (अन १४२ है)। धरिका देवो परिकार भागसम्बद्धसम्बदी क्षणको मध्य पधिन्त्रम्या (दश्र ६ : निव

बीप भगे।

के परिच्छति (चिंड 12) र परिचक्रम वि [परीक्षक] परिका कर्ता (वर्गर्व 1 (25% परिवद्यान ) वि [परिवद्यमः] १ मानसर्वित परिवास । इसा इसा (यहा)। २ परिवास क्छ परिवार-सक्रित (वय ४)। परिच्छाय नि [परीक्षक] परीक्षा अर्जनाना (सम्म १६६)। परिच्या के [परीमा] परब भाव मावपास्य

(धोच ६१ मा विसे व४≈ः इत दूरे )। वरिकाल केते परिकास (वा १६)। परिक्रिक एक पिरि+क्रिकी १ निवन करना निर्देश करना। १ नाटना काट वस्ताना । परिनिकाद (वर्मंचे १७१) । धंड-'परिचिक्क देव बाह्य एक पान निकामस्त्री क्का नविधारि (शापा---टि) पि ६ ६३ 1 (932 परिकारण वि पिरिक्यम र कारा हुमा 'चन सुक्ताहा परिश्विद्का' (पण १३) । २ দৈঠোঁত দিখিত (খাৰ ४)। परिविक्ति की [परिविक्ति है । परिवाद तिरोंप। २ नरीज़ा मान (स्प ११)। परिच्याम केवी परिनिक्ताण्य (स १६६ समत १४१)। परिचक्क मि पि परिक्रियती र जीवानः वेचाह्या(दे६ २४) नीम ६)। १ वरि व्यक्त (दे १३ १७)। परिच्छेत्र पू [परिच्छेद] फिल् व विचय (विते ११४४ थ ६६७)।

परिष्क्रभ वि [दे परिष्क्रक] नद्व, क्रोब

(पीत) ।

परिचारेजा--परिणम

बासा (दर तह है है) । परिष्कोद्ध में [परिष्केश ] बह बस्तु विश्वका कम-विक्रम परिष्केश पर निर्मर पहुला है— एत, बक्र पादि हम्य (मा १०) । परिष्केश हैको परिष्केश स्थापिकेश (बर्गरी

परिच्छेत्र देशो परिच्छेऽधः = परिच्छेर (वर्मेस १२व१) । परिच्छेत्रग देशो परिच्छेऽधना (वर्मेस ४) ।

परिच्छोय वि [परिस्तोक] कोवा अस्य (भीत)। परिक्षक देवो परिच्छेक (भारत)। परिक्रितिय वि परिकल्पिती चळ, गणित

(तुना १९४)। परिज्ञज्ञर वि [परिज्ञजैर] व्यविमीएँ (उप २६४ टी १व६ टी)।

पपिज्ञहिस्त वि [परिज्ञटिस्त] प्रक्रियम वटिस (यवड)।

परिज्ञण देवो परिअण (बना)। परिज्ञय सक [ परि + विख् ] प्रमक करणा सक्ता करना। संक्र परिज्ञविय (सम्र २

२ ४ )।
परिवाद सक [परि + खप्] १ बाप करता।
परिवाद सक [परि + खप्] १ बाप करता।
पर्वाद कीतम् । बक्त करता। एक 'ख
विन्तु वा प्रमृत्यु वा प्रयाद्युपानं बुद्दक्ष
माणे यो परिव चिंद परिवादिया २ कामयूनार्य दुरनेमां (पाना २ ३ २ ६)।
परिवादण न [परिजयन] बाद वास्त सामसारिका गुन्द पुन कन्नारण (निके ११४)

नुर १२ २ १)। परिजाइय वि [परियाचित] संना हुना (सर्वेत १४२)।

परिज्ञानं वह [परि + द्वान] बच्छी तद्व बाह्मा । परिज्ञाम (वहान) । वह परिज्ञा प्रधाना (दुना) । वह परिज्ञानिक्साम्य (त्वान र शे दुना) । वह परिज्ञानिक्साम्य (त्वार र शे दूना) । वह परिज्ञानिक्सा (तूम र र र शे र १ र १ र १ र १ र १ ) १ ) । व परिज्ञानियम्य (याचा रि. ४०)।

२० /। परिजिम नि [परिजित्त] सांचा बीत कित बर पूरा वाहू विसा बजा हो बहू (स्थि - ४६१)।

परिजुण्य कि [परिजीर्ण] र चटान्ट्रटा ब्रत्यक कोर्णे (बाका)। र पूर्वक (कद २ १२)। १ वर्षिय भिर्मन 'परिजुरणो छ वरिष्ठो' (कर ४)। परिजुण्या बेको परिजुमा (ठा १०—पन ४४४ दी)। परिजुण्य कि [परिजुष्य] चद्विल (वंशेक १)। परिजुम के बो परिजुण्य (कर २१४ दी)।

परिजुषा को [परिजीपा, परिधाना ] प्रवस्या विशेष बरितता के कारण की हुई धीला (छा १ -- पत्र ४७१)। परेजुसिय देखों परिकृत्विय (ठा ४ १---

यत्र १८७३ थीप) । परिकुत्तिय त्र [पर्यु पिठ] शक्-परिवसन शत का बासी शहरा वासी (झ ४ २—पव

२११)। वेको परिष्ठसिम् । परिज्ञूर कष्ट [परि + जृ] सर्वमाधीर्थः होनाः 'परिज्ञुरक वे संपर्दा' (२०१ १९६)। परिज्ञुरक विपरिजीजी प्रविजीएं (सणु)। परिज्ञ्य पुँ हिं] इन्ट्स पुरुषमानिकेव (सुरव

२ )।
परिरक्षुभ वेको परिकृरिय (इट इ. २ ≈)।
परिरक्षुभ वेको परिकृरिय (इट इ. २ ≈)।
परिरक्ष्मिय कि [परियामित] स्थान
(क्सा) विश्वाहमा (किन्नु १)।
परिरक्ष्मिय कि परिस्कृत्व १ देवित।
परिस्कृतिय कि परिस्कृत्व भ

परिस्ट्रेसिय ो ग्रंबेपमोपसंपतर्थे (जन २१ ७—पत्र ६२६ ६२६ दोः १ वरीक्षण स्त्र ४ —पत्र १वव दीः वि २ १)। परिद्वप सक् [परि ∻स्थापस्] १ वरि |

स्माय करणा। २ संस्थापन करणा। वरिद्वेष परिद्वेत्रमा (याचा २, १ १ १ १ अणा)। संह परिद्वेत्रज्ञ परिद्वच्या (यह ४ मस)। हेर परिद्वेत्रज्ञ परिद्वच्या (यह १)। वह परिद्वेत्रम् (निज्न २)। इन परिद्वच्या (यह १४ १) वहा

परिहुषण व [प्रतिदायन] प्रविद्धा कराना (वेरम ७०६)। परिहुषण न [परिद्धापन] परिस्थाप (इस बर १६२)।

परिद्वापा थ्ये [परिद्वापना] कार देखे 'यनिद्वारिद्वारणाण् नाजस्यायी व गुरवर्गी-यमि (बह ४)।

परिट्रवणा की [प्रतिप्तापना] प्रतिष्ठा करामा वेताववर्षा विद्यापना प्रतिष्ठा करामा किर्मा (वेद्या ७७६)। परिट्रविय की [प्रतिष्ठापित] धंस्मापित

पारहाष्य का [आवशायत] उस्यायत (व्याप)। परिहार को पहुरा (हे १, १८)। परिहार वि[परिशापन]परिकामी(नाट---

धार्ष १४२)।
परिद्वाण न [परिस्थान] परिस्ताप (नाट)।
परिद्वाण न [परिस्थान] परिस्ताप (नाट)।
परिद्वाण वेको परिद्वन केक परिद्वाणिकार
(कण १४७०)।
परिद्वाल नि [परिरमापक] परिस्वाम
करनेनामा (नाण)।
परिद्विल नि [परिरिचट] संपूर्ण कम वे

स्थित (पष ६६)। परिट्विक वेची पद्गष्टिम (हे १ देवा २ २११। यह मझा मुर १ १३)। परिट्विष वेची परिद्वत । परिट्वष्ट (प्रम)

परिद्रवण देवो परिद्रुवण = परिद्रावन (पद— धावा २४)। परिज देवो परिजी 'परिजृद बहुबाट क्यर क्यामां (वर्गीव ८२)। वह परिजृद (मीव)। वह परिजृद्धण (महा क्रुप ७६)

परिणड् भी [परिणति] परिणामः (मा १९ इः वर्षसं १२३) । परिणंत रेको परिण ।

1 (09)

परिजंतु वि [परिजन्द] परिजान को प्राप्त क्षेत्रेनका परिज्ज होतेनामा (विते १११४)। परिजंतु चक [परि + तस्तु] बर्जंग करमा, स्थापा करमा "कार्ज परिजर्दता (१ वि.)' (वेद्र ४ )।

परिणद्ध वि [परिणद्ध] १ परिणत बेटित 'वबुरमासारिखदगुरपविभे' (उना स्माम १ ५--पत्र १३३)। २ न बेटन (सामा १ न)।

थरिणम वक [परि + णम्] १ जाज वरना । १ शक्क काम्यर को जाज होना ॥ १ पूर्ण होना, पूछ होना "विष्युनेश्चं तु परिष्युने (खत १४ २१) "परिप्रमह सन्मासरे' (स १८४ वन १२ ४)। वक्क परिप्रमंत्र,

परिवाममाण (दा ७ शाया १ १-पन 1691 परिणमम् न [परियमन] परिणाम (बर्मंड Y42. 34 E)1 परिणमिश्र ) वि [परिजन ] १ वरियम ) (पाम)। २ वृद्धि द्वाप्तः पाह परित्तविमी बन्ती वह र्र कीमेर्डि न पुराबि (बर्मेंब a) : व सवस्थान्तर को प्राप्त (ठा २. १-पद १६ कि २६१)। वय वि विषया देश का का (काषा के रे---पद ४व)। मरिजयण न [परिजयन] विकास (का १ १४ मुता १७१)। परिजयणा ह्ये जार हैयो (बर्मेंब १२६)। परिजय रेपी परिणम । परिणमः (कारा ६१: महा) । परिमाद प्रिचिकाति । वरिषय 'नह तुक्य देश नवर्ष परिशाई तत्त्वहेश स्थानो (पदम १६ २६)। परमाम तक पिरि + जमय ने परिकात भरता। परिकामेद्र (ठा २ २) । कमा परिवासिज्ञमात्र, परिकासज्ज्ञसात्र (क्रम टा १ ) । हेळ परिवासिखय (नव १ Y) I वरिगाम ﴿[परिगाम] १ बरस्वान्तर आहेत क्रान्तकताब (वर्मतं ४७२) । १ दीवै नाल के बन्द्रत ने बताब होनेताला बाध्य-कर्ष रिकेश (इस ४ ४--नव २ वे) । वेदरमान धर्म (छ ६) । ४ यध्यामाय मनो-शाव (निकुर् )। ३ नि परिण्ड वरनेशनकः पिन्ना परिचामें (बच १ ब्रुट १)। र्षारमामगया । ध्री [परिजामन्द्र] परिछ भरियामया । नाना स्वान्तरप्रका (प्रस्थ १४--- वर कतर निते पर्व )। परियासय वि [परिगामक] गरिगुण गरने कामर (ब्रू॰ १)। र्पारमामि रि [परिमामिन] बरियन होने । बाता (देर र प्राच र हो । बारण म ("बार") बार्व-प में बरिशन होनेशाना दार्त्त प्रचारात दीरता (दरद २४)। व्हिपाधित्र हि [पारियाधिक] १ वहिलाव क्रम परितास में बराज । १ परितास

(NB REWES TYPE) | परिणामिश्र नि [परिणमिन] परिखंद किया क्या (शिंक ६१२ मन)। परिजामित्रा 🛍 [पारिजामिक्री] ब्रीह विरोध धीर्व काल के धनवब से उत्पार होते-वासी बॉड (ठर४४)। परिवास वि [परिकात] कमा क्षमा परिविध (पत्रम ११ २७)। परियास सक [पारे+व्यायम्] दिवाह कराना । परिशावनु (कुछ ११६)। ह परिजावियस्य परिजाबनस्य (१४ ३३ ३ 82X) I परिवारक न [परिकायन] विशाह करावा (भूग ११८) । परिणाविक वि पिरिणावित विसवा विवास करावाबना हो या (सपा१६६: बर्मीक the gr tv) : परिवाद र् परिवाद र सम्बाद विस्तार (नामा से ११ १२)। २ परिचि (स ६१२) छ २ २)। परिविक्रम रेखी परिवा। परिचित केलो परिची = परि ने यम । परिणिञ्जीत हेको शरिर्फा = परि + सी । परिभिन्नारा 🕏 पिरिनिर्मरा दिवार 🖘 (पत्रम ३१ ६)। परिणिज्ञित रि [परिनिजित] परामूत, पराप्तपन्त्रान्द (पञ्च ११, २१)। पर्चित्रहा 🛍 [पर्चित्रहा] संपूर्णक, समाहि (बबर १२६) । परिविद्धाय न पिरिनिष्ठासी घरमान बन्ध (विके ६२६) । परिविद्धिम रि पिरिनिशिया रे पूर्ण प्रिया हुमा धनतत्त रियाहमा (रमश्र १४)। २ बार-भाग (छान्ध १ ा भाषा हर वैषा १२ १४) । ३ परिवास (वन १ )। परिभिद्रिया ग्री पिरिनिश्चिमा है। इपि विदेश जिल्लमें से या तीन बार एक शोपन विद्यापन ही वर्णिक सवी दी बालीव बार भी नीरनी (नियारी) नी हाई सेन । १ धैशा-रिक्टेन दिनने बारबार पश्चिमारों शी र्थक्यो । ३ द्रीराज्य । ४ व्यास्थितः । यानोक्ता की बाड़ी ही बह बीडा (श्व.)।

परिविध कि पिरिजीती विसका निवाह हुया हो वह (संद्यु: मर्दि) । परिजिञ्जन एक [परिनिर\_+ वापय्] वर्षे अकार से व्यक्तिसम्ब परियान करना। संक्र परिणिब्द्यविष (क्स) । परिजिञ्चा वक [परिनिर + भा] र राज्य होता। २ सक्ति पता भोज को बस्त करणः। परिशिक्षार्यस्य (यम्)। मूक्त परिकिच्याइंस् (चि २१६)। नाम परि ডিশান্তিতি (ঘৰ)। परिधिक्काण न [परिनिर्काण] नुष्ठि, नोच (बाबा कपा)। परिविच्छा है [परिनिर्वति उपर देवी (यम) । परिविच्याच देखो परिनिज्याम (भीप) । परिवर्शक पिरि+ण रिविस् क्रमाः २ थे वला। क्यूबर, परिचित्रतेत, परिचीय-साम (क्षत्र १२७) भाषा) : परिको धक पिरि + सम् ] बाहर निम्हवा। बक्त, परिजित्त (स ६६१)। परिणीक्ष नि पिरिणीक् निसना निगर क्षिमा बना हो यह (बहा: प्राप्त ६६: एक) । परिकोश्च वि पिरिनोक्षी सबेवा इस रेंग का (सरह) । परिणे 🖃 परिजी । परिणेड (महा रि ४७४) । हेक् परिवेड (कुम र )। है-परिवायक्य (तुपा ४४३ नुप्र ११८) । परिकेषिय (धर) रि (परिजामित) नित्रा निषद्ध क्याचा बना हो बद्ध (दल) । परिणेश्यूच केवी परिनिश्युम (शत १% RR) ( परिच्य रि [परिक्र] हाता, बानरार (भाग \$ to \$ Y) | परिषय देशो परिषया (धावा १ % £ 2) 1 परिण्या एक [परि+मा] पानना । बाँ परिण्याय (प्राचा नव) । हेरू परिण्याई (शी) (पनि १ १)। परिच्या क्षे [परिता] १ शान बानगारी (बाबाः क्युः येवाद १४)। १ निवेक (थाना) : ३ पर्याप्तिम रिकार (तुम रै

१ १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रध्याब्दान (ठा X. 2)1 परिण्याण वि [परिज्ञान] बान जानकारी (बर्मेस १२१३ बर प्र २७४) । परिण्याय बेक्रो परिण्या = परि + सर । परिष्णाय वि [परिकात] विक्रित जाना ह्या (सम १८, ग्राचा)। परिक्रित वि परिद्विम् । परिता-युक्त नीव-बयो च परिएकी वह निकार परीसहाणीय (वव १)। परितंत वि [परितान्त ] सर्वेवा विजन निविद्या (ग्रामा १ ४--पत्र १७ विपा १, १३ च्य) । परितंबिर वि पिरितास्त्री विशेष तास-मरुए वर्णवासा (यउड) । परिवास सक [परि + वर्जेय] विस्त्यार करना । वहः परिवासयेन (पउम ४६ १ )। परिवर्षिय नि [परिवर्ध] सूत्र फेलाया हमा (स्ख)। परिवर्ध 🖪 [परिवर्त ] भ्रम्यन्य पवना (नूपा ₹¢) [ परिवप्य बङ [परि + वप् ] १ संवन्त होना यरम होगा। २ परशाचाप अस्ता । ३ दुःशी होना । परिजयह (महा क्य) परिजयंति (सूम २ २, ११) 'ता वोडमारवाडगुनस्थ परिकल्पने पण्डा (बर्मनि ६) : इंक परिव प्पिक्रम (महा) । परिवष्य सक [परि+वापय्] परिवाप क्तकाना । परिकर्णात (सूच २, २ ११) । परितरपण न [परितपन] परितरत होना (सूम २ २ ६६)। परितप्पण न [परितापन] परिताप उपशास (सुमार २ ११)। परिवक्षित्र वि [परिवक्षित] वना ह्या (बोच ८८)। परिवर्षिय वि [परिवास ] परिवास प्रक (स्छ)। परिवाण न [परित्राग] १ एक छ । ५ बाग्रसिय बन्यन (सूध ११२६)। परिवाद देवी परिवष्प=परि+वापन्। परिवावेसक्य (शि ४७ )।

परिनाव व पिरिवापी १ संवाप बाहा २ परकाशाय । ३ दुन्त पीका (महा-धीप) । यर वि किरी दुवीत्यावक (परम tt (): परिवाधण देशो परिवरपण = परिवापन (पीप) । परिवाधिका वि पिरिवापित र चंतापित (यौप) । २ तका हुया (योग १४०) । परिवास प् परितास विश्वस्थात होनेवाला वय (गाया १ १--पत्र १६)। परितृद्धिर वि [परितृटित् ] हुःजेवाना (स्स्तु) । परिसद्ध वि पिरिसारी सोप-भाष्य चंतुर (ज्या बेन्य ७ १)। परिमुख्यि वि [परिमुक्ति] तीमा हवा (स्का)। परितेक्ति केने परिचन । परितोछ धक [परि+तोख्यू] च्छाना। बङ्क 'ध्रगर्व परिठोलचा खार्ग सपर्यक्लाम्म ती दोवि (सुपा १७२)। परिवोस एक [परि + वोपप ] चंत्रह करना । भवि परितोसहस्तै (कवैर १२) । परिवोस प पिरियोपी बागन्य सरी (माट-माचिव २३)। परिवोसिय वि [परिवोपित] धंपुर क्रिया ष्ट्रमा (बस)। परिच कि [परीव] १ व्याप्त (शिरि १८६)। २ प्रमष्ट (सूम २ ६ १६)। १ संबोध किम्पी गिनदी हो सके ऐमा (सम १ ६)। ४ परिभिन्न नियन परिमास्त्रवामा (उप ४१७)। १ वयु क्षीटा। ६ तुम्ल, इसका (चर २७ ३ ११४)। ७ एक वे लेकर शर्सक्षेत्र जीवों का माध्य एक से शेवर घर्रक्षेप वीश्वामा (ग्रीम ४१)। च एक थीववासा (पएस १) । करण न िकरजा सबुकरण (तम २७)। सीव 🛊 🖼 वि एक राधेर में एकाकी खानेवाला जीन (नरास १)। यंत न िनन्ती संस्था-विशेष (कम्म ४ ७१: व१)। संसारिश वि िसंसारिको परिषय संसारनामा (क्य ४१७)। स्टेश व िसंस्पाती संस्पा विशेष (कम्म ४ ७१) ७६) ।

परिचाल देवो परिवास । संह परिचालिका (स्का ११) परितेष्टि (धप)। (पिन)। परिचा ) सक पिरि + त्री प्रत्यस करना। परिचाल । परिचार परिचामम्, परिचाहि परितासह (प्राप्त ७ पि ४७६) हे ४ 244)1 परिचाइ वि [परिश्रायिम् ] प्रायः करी (सपा ४ ३)। परिचाण न [परित्राण] रक्कछ (से १४ १६ मुपा **७१ धा**रमानु दः सरा) । परिसार्णवय पन [परीतानन्तक] संस्था बिरोप (मल २३४)। परिचास क्यो परिवास (क्य)। परिचामंखेळाय वंग पिरीतासंख्येयकी धंबत-विशेष (पण २३४)। परिचीक्य वि पिरीताकृती संक्षिप्त किया ह्या सपूत्रत (लाया १ १-- नत ६६)। परिचीकर धक [परावी + कृ] मन्न करना ध्येय करमा । परिसोकरेति (भन) । परियोम व [परिस्तोम] १ वस्तक । २ वि वक्र 'विकासियोमपच्चरं (धीर) । परिचंतिक वि [परिस्तम्भित] स्तम्ब क्या हमा (सुपा ४७१)। परिश्व वक [परि + स्तु] स्त्रुवि करना । कत्रक्र- परिधुक्त्रंत (सुपा ६ ७) । परिश्रूर ) वि [परिस्त्रूर] विशेष स्त्रूत परिश्रुक ) चून मोटा (पर्मेश व्हेवः वेहम बर्गाया ११)। परिदासक [परि + दा] देना। कर्म परि विश्वस (पर) (पिम)। परिवाह प्रीपरिवाही बंदान (बन्द २ इः भव) । परिकृष्ण वि [परिश्व] विकाशमा (विध १२६)। परिविद्ध वि [परिविग्ध] ज्यांत्रिक (सूध २ ३७)। परिविम्न 🕪 परिविष्म (मुपा २२) । परिदेव सक [परि + देव] विवास करना : परिवेचय (उत्त २, १३) । वहा, परिवेचंत (पत्नम २६ ६२: ४१, १६) : परिवेचन न पिरिवेचनी विकास 'ठस्स कंपणुद्धीवसापरिवेदसामा हा है (संबोध **ਪਈ ਵੀ ਵ)।** 

वर्ष को वक्ष) (शिंक २८१)। परिचनस्थित नि [परिचनस्थित] जून स्पेत परिपंतुर े दि [परिपाप्युर ] विशेष क्या ह्या (स्रा)। परिपंद्रक प्रवाहर-कुत्तर वर्श वाला (तुपा परिचाम प्रेन [परिचासन्] स्थान (पुरा २१६। कप्पा बज्ञ से १ १३)। यरियंचग वि [प्रतिपश्चक] दुस्सम विरोधी 44. ( ) ( प्रतिकृष (स १ म.)। परिवाधिक नि [परिवासित] श्रीका ह्या परिपंधिम ) वि [परिपन्निक] क्वर केवी (इम्मीर ६२)। परिधानिर वि पिरिधानित । शैक्नेकाका परिपेषिम ( ७ ०४६३ वर १३१)।

(ਚਰ)। परिपक्क वि [परिपक्क] एका इच्छा (पर परिष्णिय वि (परिष्तित) क्रक्त व्यागा ४३ वदि)। इम्रा (सम्बद्ध १९६) । परिपक्किम (बप) वि [बरिपतिनः] विरा परिश्वसर वि [परिश्वसर] शूबर वर्धवाला हमा (पिय)। (बक्बा १२व- पठड)। परिभाग पुँ [परिपाक] विपान, करा पूजा परिलद्ध कि [परिलद्ध] क्विष्ट (महा)। व्यविक्रिमधुकरिक्षपरियामी एवं अध्यवपरी परितिष्कार देवो पश्चितिषकार । पर्धिनक (रम्बा १२ द्वाणा)। परिपाइक नि [ परिपाइक ] सामान्य नाव मैद्र (कप्प)।

विवासित (वे ७ ३१)।

(सुपा ३४२) ।

(पाच)।

**₹**π γ ) t

श्ला वर्णाशका (वज्रत) ।

२०३, गुपा १)।

परिविध सक पिरि+ पा निवस, यक

परिपिजर वि [परिपिष्टकर] विशेष गीव

करवा। कम्ब परिपिञ्जीत (नाठ---

1 ) 1 परिनिम एक [परि + इश्र] वेचना सक-कोचन करना । बद्ध परिनिर्मत ( धुपा **2**22): परिनिषट्ट नि [ परिनिषिष्ट ] अनर बैठा इया (नुपा २६६)। परितिविद्व वि [परितिविद्व] विशेष निविध | बाचना (महा)। परिभिन्ध रेखो परिचित्रका। परिक्रिकाह (मन) परिनिक्नाइति (इप्प)। महिन परि विकार स्वति (मद) । परिजिम्बाज देवी परिविक्ताय (काश्व १ का द्वारी क्षेत्र क्ष्य पत्र हर ही) ।

परिनिम्बभ ) रै परिनिष्टत १ तक.

परिजिम्बुड मोस नी प्राप्त (का १ १

**भक्त** २ वक्ष रूप)ः १ शास्त्र तस

परिनिद्धित देखी परिविद्धित (क्ष्प) रेजा

परिपुच्छ इन [परि+प्रच्छ\_] प्रता र्रमाना प्रवासी रॅब का (एउड)। परिपाडिक वि [परिपाटित] प्राकृ हुमा परिपुर्व्याय न [पिछान्यान] प्रता प्रचा परिशाह सक [परि+पाइन्यू] फाए परिपृत्तिका ) वि [परिपृष्ट] पूका विक करनाः। परिपासकः (अदि)। क्रु-परि पाञ्जीम (१९०० २६) । संहर, परिशक्तितं परिपाञ्चन न [परिपाञ्चन] एतहा (क्रुप्र परिपाकिय नि [परिपाकित] र्यक्ति (भनि)। परिपासय वि देशो परिवास (१)

] निर्माणिय (पारशेश परि नुपा ३०७)। परिपुण्य ] वि [परि [जी] संपूर्ण ( प्रण परिपुत्त र प्रिक् परिपुस सक [परि + स्पूरा ] धीरपर्ट करना । परिप्रसङ् (दे ४ ५)। परिपृत्र एक पिरि+पृत्रव ] पूनवा। परिपृक्त (धप) (पिप) । परिपूजन यू कि परिपूजें की विश्व-विशेष कानींड बुक्रीनामक पत्नी का बीस्त्रा (मिटे १४१४) १४६१)। परिपूजन नं वि परिपूर्णकी की वन राजन

का क्यक्र, बानमा (ध्रीन १४) ।

परिनित्तव (हुपा १४) ।

यरिपिक्का धना पिरिपि + मा वन्ना,

परिभिद्वेता (क्या पि १८२)।

पहुँचाई नई हो यह (स्वि)।

= 8)1

गैयकु (ववि) ।

(विवि ) व

करना । परिपुण्डस (शरी) ।

वा<del>च्छा</del>रन *बर्*नाः संक्र परिपिद्विचा

धरिपीडिय वि पिरिपीडित विसनी पीस

परिपीछ छक पिरि + पीडम् । १ पीक्य ।

२ पोलना, इकाना । परिपीलन्या (नि

२४ )। क्षेत्र परिपीस्त्रचा परिपीस्त्रि

परिपीक्षियाचा (सर्व राजः माना १ १

परिपुराक वि दि ] भेड़ा इतम (1)। चंपर

व्यक्तियत् परिपृत्तः होसह धिंडनिनिकुरः

परिपीक्षेत्र देवो परिपीविक्स (एक)।

परिपृय वि [परिपृत] आना हुआ (कप्पा तंदु ३२)। परिपूर एक [परि+पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना । वह परिपूर्त (प १३७)। संद परिपृरिक्ष (नाट-भानवि १६)। परिपृश्चि वि [परिपृश्चि] मरपूर, व्याप्त (पुर २, ११)। परिपेच्छ सक [परिप्र + ईश्रा] केलना । बक्त परिपेच्छत (यन्तु ६३)। परिपेर्रत पू [परिपर्येग्त] प्रान्त भाव (ग्रामा र ४ रशास्टरम, २ २)। परिपेरिय वि पिरिपेरित विश्वको प्रेरका की गई हो वह (सुपा १८६)। परिपेक्षत्र वि [परिपेक्षत्र] १ सुकर, सहज स्त्रम मासान (से ६ १६) । २ महद । ६ मिन्सार । ४ वर्षक चीन (**एक)** । परिपेक्किय देशो परिपेरिय (का १७७)। परिपेस एक [परिप्र + इ ] नेजना। परिपेषक (भनि)। परिपेश्चम न [परिप्रेपम] नेजना (स्ति)। परिपेसक वि पिरिपेशकी सन्दर मनोक्रर (बुवा १ ६)।

परिपेसिय वि [परिरेपित] येना हुवा (व्यत्र)। परिपोध वक [परि + पोपय ] कु कला। कनक परिपोधिकांत (एन)। परिपामान न [परिवामान] परिवास (व्यत्रि)।

परिष्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण (मिश)।
परिष्पय एक [परि + प्रृतु ] हैरना गोडा स्वामा। नक्क परिष्प्रस्त (से २ २॥) १ १६ पास)। परिष्पुय कि [परिष्पुत ] साम्बुठ स्वास

(राज)। परिष्युमा की [परिष्कुता] केवा किशेष (राज)।

परिष्यंत तु [परिष्यंत्र] १ एकमा-विकेश 'कमद नामापरिप्यंत्रो' (गडा) । २ समस्त्रात् 'बसम (बाद ४६) । ६ वेष्ट्रा प्रयक्ता 'बोसा 'रंगेदि विद्वित्ति सामस्त्रे व्य ब्रांडरापुर्वेदिः। सन्तरिप्यंत्रेष्ट्रे विस प्रीमा समित्रारसम्बं

(गडड)। परिष्कृद्व वि [परिस्कुट] शत्मन्त स्पष्ट (से ११६ सूर ४ २१४ स्रवे)।

परिप्कृत श्रु [परिस्कोद] १ प्रश्नेद्रन वेशन । २ वि कोइनेवाला विनेवका 'ठापवला परिप्कृत के केसवा पन्यसंतक्ष्म (क्या) । परिप्कृत कर्ष [परि में स्कृत ] बक्ता । विपक्ति (क्या) (गाट—उत्तर २०) । परिप्कृति (क्या) । परिप्कृता व [परिस्कृता ] क्रिका बक्ता (क्या) । परिप्कृती व [परिस्कृता ] क्रिका बक्ता

परिप्पृतिक वि [परिस्पृतिक] स्कृतिनुक वत्रपु परिपृतिक (त्रिष)। परिपन्ति वृं [परिस्पर्क] स्वतं स्कृता (पि ७४ १११)। परिक्तेसक व [परिस्पर्यन] क्रयः क्रेसे (क्र

१८६ थी)। परिफागु पि [परिफलगु] लिखार, बसार (बर्मेस १११)।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ठ] व्याप्त (श्व १ १ ७२)। परिकृत वेको परिष्कृत = परिस्पृठ (पटम व

द प्राप्तु ११६)। परिफुडिय नि [परिस्कृटित] प्रत्य ह्वया स्थम (प्रक्रम ६५ १)। परिकुर वैको परिस्कृर । परिस्कृरक (स्यो)।

बार- परिफुर्रव (स्या) । परिफुरिक वेबी परिस्कृरिय (स्या) ।

परिफुश्चित्र वि [परिफुश्चित] कुना ह्या कृतुमित (पित) । परिफास सक्र [परि क्राया ] स्वर्ण करना

परिफुस सक [परि + स्पृष्ठा ] स्पर्धे करला कृता। वक्ष- परिफुर्सव (वर्गीव १२६ १६६)। परिफुस्सिय वि [परिप्रोक्टिकार] गोंका क्षम

(अर दू ६४)। परिष्ठोसिस कि [परिस्तृत] कुमा हुवा - अक्कारेटरीयकार सम्मोतिककपुदास विशेषकप सिक्तियो है। इस कर ६४० छ)। परिसूच्या क [परिख्नुहुक्त] इक्रि करकम

पारनृष्ण न [पारकृष्ण] काळ अपवय (नुष्प र**्ष १)।** परिकर्मत नि [वे] १ निपिक्ष निवारित । २ - वीद, वरपोक (वे ६ ७२)।

परिकर्मसित् (ती) नीचे देखी (मा १ ) । परिकर्महु वि [परिकाद] पतित स्वतित (स्वामा ११६ सुना १ ॥। सनि १४४)।

परिकास एक [परि + अस्] पर्यटन करना सटकता। परिकास (श्रक्त ७६ सीव जव)। वक्त, परिकासस (ब्रुट २ ०० ६ ४४ ०१ सवि)। परिकासना व विशिष्णसम्म (सुटन (सुद्ध)।

परिकासण व [परिकासण] पर्यटन (महा)। परिकासिक वि [परिकास्त ] सन्का हुसा (वे ६६ सण पवि)। परिकासिक वि [परिकात ] मन-सास (पटन

११ १६)। परिच्यूअ वि [परिमृत] पदाम्ब प्राप्त (बुदा

२४०)।
परिमत्मा वि [परिमत्न] भांगा हुमा
(धारवातु १४)।
परिमह देवो परिश्मह (महा वि =३)।
परिमहि देवो परिश्मह (महा वि =३)।
परिमणिर वि [परि + मणिषु] कहनेवाला
(धळ)।

(चल)।

परिसम देवो परिकास । परिकार (महा)।
वह परिसमंद , परिसमसाण (महा एवं को दाँवर १४)। संक्र परिसमित्रल्यां (वि १८३)। हेक्- परिसमित्रल्यां (वि १८३)। हेक्- परिसमित्रं (महा)। परिसमित्रं देवां परिकामित्रं (मही)। परिसमित्रं वि [परिकामित्रं] पर्यंटन करने कला (पुरा १९६)। परिसम्ब एक [परिस्मम् ] प्रावन करना

विरस्थाला। परिमाह (बर)। इसे परि सरिकामि (मोह १ व)। इस परिभावणिका (शावा १ ३)। परिभाव पुष्पिसका परमान विरस्तार (सीम स्वप्त १ प्राप्त १७३)।

परिमर्थंद पृं[परिमन्तः] पार्थंत्न साथुः, विवित्तानार्थे मुनि (वन १)। परिमन्ताः = पिरिमन्तः रे ४११ केको (नाम)।

परिसवस म [परिसवन] आर देखों (राव)। परिसवसा की [परिसवत] अतर देखों (पीत)। परिसदिअ वि [पि सृत] समिनुद (वसीत

वर) । परिमाञ कर [परि + भाजस ] बांटना,

विकाय करना । परिभार (क्या) । कन् परिभाईत, परिभायंत परिभारमाण (बाका २ ११ १८ छाता १ ७—पक् ११७१ १ क्या) । क्या परिभाइका (ft 268):

परिभाषय वि पिरिभाजित विसक विका क्या (याचा २. १ ६ २) । परिभागीत देशो परिभाग । परिमायण न [परिभाजन] बैटना छैना (ff# (11) i परिमान एक [परि + भावन ] १ पर्ध श्रीवन करन्य । २ सन्तर करना । परिश्रवह (महा)। संक परिभाविकल (महा)। परिभाक्कीय (छत्र) । परिसादक्ष वि [परिसादयित] प्रमादक क्लिटि-कर्री (ठा ४ ४---पन २६१)। परिभावि वि [परिमाविन] परिवत करहे-बाखा (धनि ७१)। परिभास पर्च[परि+ भापू] १ शक-पासन करना कडना । २ किया करना । परि बासड, परिवासीच परिजानेक परिवासक (क्तारक्षेत्र सुमार्थ व वाय ७ ३६: विदे १४४३)। वक्र परिमास साम (पर्क्य १९ ६७)। परिभासा औ [परिमाया] १ धीरत (संबोध इ.। माच १६)। ५ विचलकर । १ पूर्णि द्येका-विशेष (श्रव)। परिमासि वि पिरिमापिन् । परिवन-वर्ताः **'राइडियररि**मारी' (सम ३७)। परिमासिय वि पिरिमापिती अविपाधित क्षाच २१) । (दमनि परिभिन्न एक [परि + सिक्] भेवन करना । क्ष्मक परिभिक्तमाम (चप प्र ६७)। परिमीय वि [परिभीत] करा हवा (क्व)। परिशंब का [परि + सुझू ] १ वला शीवन वरनाः धेवन वरना छेवशाः व बारबार फरबोम में बेना । कर्म परिश्वनिकन्नद वरिप्राग्नह (पि १४६ वन्म १ ११)। बङ्ग परिमंद्रत परिमंद्रमाण (निच १) श्रापा १ १३ कम्प) । कम्बु परिश्रवस्माण (बीप क्षप्रदूष ) कामा १ १—पत्र १७)। देह परिभोत्त (रव ६,१) । इन परिमोग परिभोत्तस्य (स्ट ३४ क्छ)।

माण (राष)। पंद्रः परिमाइका परि

भावद्रता (क्य धीरा) । हेइ. परिमाप्ट

परिमंज्ञण व पिरिशोजनी परिजीव (क्य श्वे हो। परिमृजणया को [परिभोजना] उपर रेको (ब्रम् ४४)। परिमुक्त वि [परिमुक्त] निकार परिचान किया भगा क्षो पत (छपा ६ )। परिमुख । वि [परिवृक्त] वेष्ट्रित परिवृक्ति परिभग निपेटा सधा वेदा ल्या (घाचा २ 22 35 2 22 22) 1 परिमुख नि [परिमृत] धनिपूर विरक्षा (ब्रुव २ ७ २ सुर १६ १२१ क्यूब **क**१४३ सका)। परिमोध वेचो परिमोग (विध १११)। परिमोद्र वि [परिमोगिम्] परिपाय करने माला (पि ४ १। नाट-- रुक्ड ११)। परिमोग व पिरिमोगी १ बारकार क्षेत्र (ठा १, व बी) भाग ६)। २ विसका बार गार भोन किया जान वह बस बादि (धीप)। निसकाएक दी बार भोग किया बाय----को एक ही बाद काम में काना जावा का— अकार, पान बादि (क्या) । ४ वाह वस्तुओं क्स भीय (बाव ६) । १ शहरेक्स (प्रवृद्ध ह 1 14 परिमोग परिमोत्तका केने परिमुख परिमोत्त परिमञ्च सक [परि + सूज्र ] मार्थन करना (प्रविद्व ६१)। परिमदम नि [परिमृतुक] १ विशेष गीमन । व भारतन्त्र सुकर, साम्रत (वर्गात ७३१) ६२) । श्री सई (शिरो ११६६) । परिमरक्षिम्स वि [परिमुक्तकित] वार्थे मोर ট ঋপুপিত (মুফা)। परिसंह्या न [परिसम्बद्धन] समेनरण निपूर्वा (क्स १६ १)। परिमंश्रक नि [परिसण्डक] बूस बोलानार (क्याप १ १३) बता वद २९) स व१६ यक्याधीयायस्यासाहाहर १)। परिमंद्रिय नि [परिमण्डित] निमृच्ति बुरोक्ति (कप्पाधीया सुर १ १९) । परिमंत्र वि [परिमन्तर] अन्त, बीना (पांड मा घरेश) ।

परिसंधिक वि पिरिमधित । कलत वालोx 3x )1 (शया १)। (करा)। परिसक्त एक [परि + सन्] बादर करता । क्षेत्र वदः सङ्घा, वक्षा ११)। परिमहिष वि [परिमहित] दुवित (परन 1 (9 9

विव (सम्पत्त २२६)। परिशंव वि (परिमन्द) मन्द्र, धराख (पर वरिसाम क्षत्र (परि + सार्गम् ) १ धने-यका करना खोजना। २ मोला, प्राचेता करता। वक्. परिसमामाण (नाट-निक ६ )। सङ्घ परिमागेठं (महा)। परिसरित वि पिरिमार्गिन् विक करनेवला (बर २८१)। परिमक्तिर नि [परिमक्तितः] इयनेनला परिसट वि [परिसूद्ध] १ विसा द्वमा (वे ६ २। « ४३)। २ मास्तावित परिमद्व वेद्यीवर्थे (र ४ १७)। व मान्ति रोजिय परिवद्द चक [परि + मईब् ] मर्वन करना । क्ष परिमहर्मेत (गुर १६ १७२)। परिसञ्ज न [परिसर्वेत] यर्वन पाक्षिक (क्य सीप)। परिसद्यां की [परिसद्यों] हैवादन दलमा वैक्जी--गैर काना मादि (निष् १)।

परिपक्क (धरि)। परिसद्ध तक [परि + सन् मुद्] र किछ्ना। २ मध्न करना जो मरणुकनि परिमलद इत्यू (ब्रुप्ट ४५२) 'कृतिरहीसु भगवि परिमक्षि सचन मामदीन की प्रचित्त । वरबचलं तुह मही महपर भद्र पास्त्रा इस्त्रा (मा ६१६) । परिमक्ष 🕏 [परिमक्ष] १ क्षेत्रम-नवस्त्रि ग मर्बन (से १ ९४)। २ हुम्म्य (कुमा। नाम)। परिमञ्जन [परिमञ्जन] १ परिवर्शन । १ निषार (वा ४२ पक्ट)। परिमक्तिम वि [परिमक्ति परिमृद्धित] त्रिसका नर्देन किया नवा हो बहु (या ६३७)

परिमा (मा) देखो पश्चिमा (मर्बि) । परिमाद भी [परिमाति] परिमाए "त्रिए साम्रीत प्रामीवस्यात व पंडियमधील गुवर परिमाइ व' (मनि)। परिमाण न [परिमाण] मान माप नाप (दीर स्वया ४२। प्राप्त यथ)। परिमाम दे [परिमर्श] शर्र (लावा १ ६३ वयह सु ६ ४६: ६ ७६) । परिमाम र् दि] नौका का बाह-विशेष (सावा १ ६—पत्र १४७)। परिमामि नि [परिमर्शिन] एकौ क्लेमका (fr 42) 1 परिसित्त नीचे रेगी। परिमिण सर [परि + मा] नारना शीनना। पर् परिमिलंग (मुपा ७७)। इ परिमिक्त, परिसय (वन १६ वजन ४६ २२)। परिमिश्न वि पिरिमिती परिमाण-पुक (क्याध्य १ भीप पण्डर १)। परिमिक्ष वि [परिपृत्त] परिवरित वेष्टित (वसम ११ भवि)। परिमिष्टा धक [परि + स्त्र] स्तान होता । परिनियादि (शी) (दि १३६ ४७१)। परिमिद्याम रि [परिम्हान] म्यान रिच्छव निस्तेन (मण)। परिमिद्धिर वि [परिमोषत्] परियाम करनै-बाना (स्ट्र)। परिमुञ सक [परि + मुप्] परिवान बरना । परिकृषद (स्तु) । पश्चिम र [पश्चिक] परिवक्त (पूरा २३२ महा क्ला)। परिमुद्ध वि [परिमुद्ध] सूर (बा ४४) । परिमुण पत्र [परि + हा] वानमा । बरि मुछ्नि (बना १ ४)। परिमुनिअ रि [परिकार] बाना हवा (परव १६ ६१। नए)। परिमुग सर्थ [परि + सूप् ] क्रोसे करना । या परिमुमंत (था २०) । धंत्र परिम् सिक्रम (ब्रॉर २१) । परिमुख वर पिरि + मृत् हे राखे करना, दुना । परिपुत्तः (गर्वे) । र्परमुक्तान (परियोगन) १ वर्षे । १

बाबना द्वार (ता २६) ।

41

परिमुसिअ वि [परिमुख] स्पूर्ण (महानि ४-परिममण रेदो परिमुसण (गा २६)। परिमेय बेस्रो परिमिण । परिनोद्ध वि वि परिनुक्त स्मैद स्बच्छाची (भूषि) । परिमोक्स पु [परिमोक्त] १ मौत मुक्ति (धाना) । २ वस्तिवाय (यूप १ १२ १) । परिमाय सक [परि + मोचयू ] धोकाना युग्नाच कचना। परिमायह (सूम २ १ 1(38 परिमोयण व पिरिमाचा नोध छन्। स (सरभ २५ कीप)। परिवास पू [परिवाप] बापै (बहा) । यरिर्यंच एक [परि+अव्य ] १ पास में वाना । २ स्पर्धं करना । १ विमुपित करना । संक परिश्रंचिथि (यप) (मर्थि)। परिवेच एक पिरि + भर्घ े | पुत्रमा । संक्र परिअधिवि (प्रा) (भीर) । परियंषण म [पर्येष्ट्रपत] लश्चे करता (बुख १ १) । देवा पछिर्याया । परियंचित्र वि [पर्येक्टिय] विवृष्टि पव चरामगामगरियं चित्रं (मृति) । परियंपिअ वि पियेचित । प्रवित्त (प्रवि)। परियंग्यक पिरि + बन्दी करत करता **ल्**वि करना । क्वरु परियंदिखमाण (धीर) । परियंत्रण न [परियन्त्रन] नम्बन रनुवि (धाषा)। परिवण्य कः [रा] १ रेवना । २ पानना । परिवर्दाइ (धर्मि उप) परिवर्ण्यति (बर) । परिवन्त्रिय रेगो परित्रनिद्धय (राज) । परिययदा थी [परिकर्ता] वरत (वर्गसन मुमा ३१ पत्र ९४, ९)। परियरिंग की [पन्नीत] हैया पन्हरियया 'बतो बाय' बरगी बीरराची दिश्यप् हती' (क्षेप्र ११ )। परिषय कर [परि+कश्यव] बलाना करना, बिन्टन करना । वह परिययमान (धावा१२,१२)।

परियप्पण म [परिकल्पन] कल्पना (वर्गेस १२०८) । पारवय ५ [परिचय] जान-पहचान विरोध क्य हैं। बान (यउड़ा हैं। ११ ६६ मिन 1 (385 परियय वि पिरिगती धन्तित प्रक (स परिवाद सक [पर्या + दा] १ समन्तार बहुए क्या। २ विभाग से बहुल करना। परिवाहयह (वृद्य २ १ ३७) । संह परिवाहसा (हा ७)। परिवाइक कि पियाँची चंत्रलें कर से गृहीत (ठा२ ६--पन ६३)। परिवाइम रेको परिवाईय (ठा २ ३--- त्र परिवाइणया श्री [पर्यावान] सनन्त्राद बहुस (पर्स्स ६४--पन ७७४) । परिवाइक वि [पर्याप्त] शाधी (राज) । परिवार्द्य वि [पर्यायातीत] पर्यंत को परिवान्त (स्व)। परिवास देखी पञ्चाय (मीप ज्या महा वच्य) । परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से बागत (बसाद २१ मुख द २१ छाया १ १)। २ वर्षेषा निरुद्ध (स्राया १ ७ — पन ११६)। परिवास धक [परि + हा] जानना। परिवालक परिवालाइ (पि १७ ३ द्वा)। परिवाण न [परित्राण] रक्षण (पूम १ १ ₹ € ७) 1 पारयाण न [परिदान] १ शिनमम मण्ता सेनदेव । १ समाताइ शत (म्बि)। परियाम न पिरियान र गमन (ठा १)। २ नाइन यान (का च)। १ घरतरा (का 1 (f f परियाणम न [परिकाम] जानका पै (स (15 t परियामित्र रि [परिवासित] परियास युक्त (तूस ११२७)। परियानित्र रि [परिहात] जना हुण

विन्ति (बाब ८० ११। एवं १वा मरि) ।

परियाणिश्र पुन [परियानिक] १ मान श्राहुन । २ विमान-विदेय (ठा⊏)। परिवादि देनो परियाइ । परिवादिवर्धि (क्य) । संक्र परियादिचा (क्य) । परिवाय रेगो पन्ताय (छ ४ ४ मुपा ११: रिमे २७११ और धाषा उचा) । चिमाय मत 'सर्गंड परिकार्गंड सोबं कुया क्दे दियं (तूस ११३) । १ प्रक्रमा बीजा (हा वे २---पत्र १२१)। ११ बहायर्थ (धार ४) । १२ जिल-देव के नेवन-ज्ञान की ब्लाति का समय (खाया रे a)। धर वृष्टिवविद् । शैचा वी क्षेत्रा से दुढ (ठा ३ २)। परिवार्यतरसमूमि धौ वियोगान्तकृत् भूमि जिन है। के हैक्स हात की अवस्थि के इसय से लेक्ट सन्तत्तर धर्म प्रवस मृद्धि पनिसने के बोच के तमर ना घल्ठर (खावा १ ५-- पत्र १६४)। परिवार सक [परि+चारव] १ हेन-कृपना करता । २ संबोध करता नियम हैरन गरना। परिवारेड (छा ६ १३ थए)। **बर् परियारमान (घर)। कारू परि** । पारिसमाग (हा १) । परिवार पू [परिचार] मैचून विशव-नेतन (पहल १४--पद थः इत १ १)। परिवारग रि [परिपारङ] १ रिवय-नेवन करतेगता (पर्व २ ठा १,४) । २ छेश शुक्त बरनेसामा (बिया १ १) । परिवारण न [परिचारत्र] १ हेरा-गुक्ता (नुव १०-- यत्र २६६) । २ वान और

(बरागु १४) ।

मनपकासी कारण्य (तिकृते)।

परियाम देती परिवार (शव ६४) ।

होत्सः १ स्तान्दर वे दरिग्य होता। ३ ।

विभाग (सुरा ६ )।

धीव १६४)।

र्यारमारमया ) यो [परिचारणा] कार् परिमारणा } रेसी (फ्लूट १४ टा १, १)। सर् 🖠 ['दावर] रियम्डेयन 🤻

परिपान्तपत्र व [पर्योग्राबन] विवाद परिवाद रेगो परिताद = वरितार (बाचा वरिवारक यह पिर्या + वर् ] १ वीरिव |

तक सेवना । परिवादण्याः, परिवादण्याति (कथ याचा)। परिवातज्ञाच न [पर्यापान्त] त्यान्तर प्राप्ति (गिंड २ ) १ परियानज्ञणा सौ [पदापान्त] बारेनन (ठावे ४--पत्र १७४)। परियायन देवी परिताक्य (मूच २ २ परिवारणा 🛍 [परिवापना] परिवाप र्वतप (मीप) : परिवायिक्या हो [परिवापनिका] कारान्तर तक वनस्थान स्थिति (शाया १ १४---पत्र र्पारवाष्ट्रय ) वि [पर्योपन्न] स्वित श्रव-परियापम 🕽 स्थितं (बार्चा २१११ ७ e) भगदे४ २ दक्)।

२११६): परियायस <del>क</del> [पर्या + बासय्] बाबाध करामा । परिवाबसे (एस १८ १४ पूर्व t= XY)1 परियापसङ् रू विर्याषमध् । मठ, संन्यासी कास्त्रान (बाचा२ १ व २)। परिवाविय वि [परितापिन] वीहित (रहि)। परिवासिय कि [परिवासित] वाती रखा ट्रपा (क्स) । परिरंज सक [भ्रष्टक] कांक्स तीहना। परिरंबद (बक्त ७४)। परिरंभ धर पिर + १म | बार्तिका कला। वरिरंत्रसम् (शी) (पि ४६) । चंद्र

परियानम नि [पर्यापम] बन्न प्राप्त (प्राना

परिरीम ३ (९४ २४२) । परिरंभन न [परिरम्भन] धानिद्वन (शब मा बरेर, मुत्ता २३ रेट्र) । परिरक्तर धक [परि + रक्ष\_] गरितलन वरमा। वरिरक्त्वह (अपि)। हः परिकार-पीअ (निस्ता ३१) । परिकारम न [परिहारण] गरियानन (ग्र ६१ मरि)।

परिरक्तम 🕊 [परिरक्षा] कार वैगी (पतन थ्र था<sub>।</sub> वर्गीतथा नगर)। परित्रविश्यव ति [परित्रक्षित] परितालित (र्जाप) ।

परिस्ता वि पिरिरम्घी धर्मचन्त्रित (या 1 (259 परिरम वे पिरिरम है परिष परिनेप (क्व ३६ ११/प्रज्ञादर, ६१ पत्र १४% थीर)। २ पर्याय, समानाचैक कृत्य 'एनगरिस्य क्ति वा प्रदेशकान कि वा एक्छाममेद कि वादयद्वां (बाब्र १)। १ परिश्रम्ख फिर कर बारता चित्रका बेरो सस्य व देवरा

क्र कॉनए था, वे समला है सम्पूप्र वर्षात. जो बबनलो हो परिसर्ट-भग-केश वचाई (बोयमा २ दी)। परिश्वय थक [परि+श्रव] विद्यवत्, होस्य । बहु परिचयमाण (क्य) । परिस्ति सक [परि+रिक्स्] कतन फरकरा डिनना ! रह. परिस्तिमाम (का १६ धे)। परिरुप बच्च [परि+रुप] रोपना धटकाना । कर्मे परिस्त्रमञ्ज (वज्र ४३४) । र्थकः परिरंभिकल (स्कू १) । परिसंधि वि [परिसंहम्] धेमा करोगाना (बडड) ।

परिक्षत्रि वि पिरिक्रमियम् । सरम्बेरसा (गडड) १ परिसंभिक्ष वि [परिस्मिनत] शान रच्छ हुया 'ची क्यवचे मुखीखं (मुखीमें) बनाणि परिवरिया पत्रक्तमा (१४४ ८४ १)। परिख्या वि [परिश्वय] स्वाह्मा स्वाहन (का दहर हो)। परिक्रिम वि दि । सीम, श्रमय (वे ६,२४)। परिक्री थक [परि + क्री] लीन होता। वर चरिजिन परिस्नेत परिश्रीयमान (छावा र र--गव र, योगा के ६ प्रम नद्य है, का रायो। परिकी की है। बातीय-विशेष, एक तरह ना भाग (धर)। वरिसीज 🖫 [परिसीच] त्निव (शम)। परिर्मुप का पिरि + सूप ] तुल करन

बहर करना । करहा परिनुष्यमात्र (नहा)। परिकॅन रेनो परिमी = धरै + ही । परिक्रोपन न [परिक्राचन, परिक्रोदन] बरनीयन निर्देशका १ है, रेननेशनाः 'चुर्ववरारियोयनाय् रिट्टीए' (क्रा) ।

परिक--परिवाह परिष्ठ देशी पर = पर (वे १ १७)। परिक्रयास वि [दे] मजात-गति (वे६ ३३)। परिक्री केवो परिस्त्री = है (राय ४६)। परिश्वी देशो परिश्वी । वहा परिश्वित, परिहेंत (भीप)। परिनदस मह पिर + स्रीस | विर पहना सरक जाला। परिवहसद (हे ४ ११७)। परियद्भ वि [परिद्यक्तितृ] शमन करने में समर्थे (ठा ४ ४-- यत्र २७१)। परिश्रंप्रक (यन) मि [परिषक ] सर्वेश टेका (मवि)। परिवंच सक [परिवक्कय ] ठवना। संह परिवंचिरुण (समन्त ११०)। परियंचित्र वि [परिविश्वति के ठगा गवा हो (वे ४ १८)। परियंत्रि वि पिरिपम्बिम् विशेषी बुरमन (पि ४ ६) माट--विक ७)। परियंश्य म [परियन्त्रन] स्तुति प्रशंका (बाचा)। परिपंदिय वि पिरियन्वित । स्तृत पुनित (पउम १ ६)। परिवक्तिमय वैश्वी परिवक्तिद्वय (श्रीप) । परिवास दूं पिरिवर्सी परिजन-वर्ग (प्रक्रम 28 2Y) I परियन्छ न [दे] बदबारश निषयः 'शान-शस्त्र परिवर्ण्ये (कारपा २१४२)। परिवरिक्तय देखो परिक्रक्टिया 'शक्तनेकाव हम्परिवन्धियाँ (शाया १ १६ टी-पन २२१ भीप)। देखो परिचरियस । परियम्ब सङ मिति + पद् ] स्वीवार करता । परिनम्बद्ध (मृति) । परिवास सक [परि+यर्जय ] शिक्तर करना, परिस्माम करना। परित्रकड् (श्रवि)। संद्र परिपक्तिय, परिपक्तियाण (बाचा fr ter) 1 परिवज्रण न [परिपर्जन] परिवान (वर्षस **११**२ ) । परियञ्जना की [परिवर्जना] हतर रेखो (बर) । परिवर्ज्जिय नि [परिवर्जित] परिवर्क (बरा मगः मरि)।

परिवट्ट देखो परिवत्त =परि + वर्तेय् । परि बहुद (श्रवि)। संकृ परिवृद्धिव (धप) (मिरि) । परिषद्भण ग पिरिवर्तन | पावर्तन पावरिष न्मायमगरिवद्वर्शं (संबोध ६९) । परिषद्धि बेस्रो परिषच्चि (ना ४२)। परिवद्भिय देखो परिपक्तिय (मनि)। परिषद द्वल कि [परिवर्तक] पोमाकार (स \$a) 1 परिवद्ध सक [ परि + पन् ] पहना। वड्ड-परिवर्शन परिवश्वमाण (वैच १ ६२ ६७ चप द दो। परिवक्तिज वि [परिपतित] विरा ह्या (नुपा ३६ बस् यति २३ इम्मीर ३ वंशा 1 (X) परिवद्यस्य प्रकृष् परि+कृष् ] वहना। परिवहूद (मद्भा पवि) । मनि परिवहिस्सद (धीप)। इ. परिवद्धतं परिवद्धमाण, परिवक्तमाण (वा १४९, खावा १ ११ मका खासा ११)। परिवद्दरण म [परिवर्षन] परिवृद्धि, वहान (बक्ट धर्मसे ८७१)। परिषक्षित की पिरिपृद्धि क्यर देवी (से 北 引)」 परिवर्षिक देवी परिश्वविका = परिवर्षिक (भीप १६ टि)। परिवक्तिक वि पिरिवर्षित विद्यान हवा (या १४२ ४११) । परिवड्डमाण देखो परिवड्ड । परिवण्ण सक [परि+ वर्णय ] वर्णन करता । इ. परिषण्णे अक्ष्म (भग) । परिपरिणम वि [परिवाजित] विश्वया वर्णन किया क्या हो वह (धारम ७)। परिवक्त देखी परिअट्ट = परि + पून् । परि त्त<sup>क</sup> (उत्त १६ १) । परिवत्तम् (पान ७) । वह परिवर्शत (या २८३)। परिवक्त हैयो परिअद्र = परि + वर्तन । बद्ध परिवर्तेत परिवर्त्तर्यन (ख १ सूप १ र. १ १६)। श्रेष्ठ परिवक्तिकम् (बाल)। परिपत्त रेवो परिअट = परिवर्तः "विद्वियस्य परिक्तों (क्रूप १६४)। २ संकरण भ्रमण (सम्) ।

परिवक्त देशो परिशक्त = परिवृक्त (कात)। परिधक्तण देखो पश्चित्रक्तम (पि २६६ माट--विक परे )। परिवक्तर (अप) वि पिरिपवित्रम् । पद्मावा चया घरम किया गया व्यंत मसेवि गुर्वया-मोएं निमश्चित परिवत्तरतोएं' (भवि)। परिवक्ति वि परिवर्तिन् वरसानेवाला 'कनपरिवर्षिक्षी विज्ञा' (इ.स. १२६: महा)। परिवक्तिय रेको परिअद्भिय (मुपा २१२)। परिवत्थ न [परिवन्त्र] वक्, क्यका (मनि) । परिवर्धिय वि पिरियक्षिती भाष्यादित 'उम्बनेन प्रहत्य (?ब्ब) परिवरिषयं (धीप)। रेको परिवर्षिकाय । परिवद्ध देशो परिवद्ध । भट्ट- परिवद्धमाण (राज) । परिवक्त के बो पहिचम (उप १६६ दी)। परिषय बक [ परि + धम् ] विवंद विरमा। परिवर्षति (राय १ १)। परिषय सक [परि + यद्] किन्स करता। परिवर्ग्या परिवर्गीत (ग्राचा) । वड परिषयंत-(१ए४ १ १)। परिवरिक्र वि [परिवृत्त] परिकरित वेष्टित (समा १२४) । परिवद्धाः व [परिवद्धयित] वेष्टित (मुस ( S परिचल जरू [ परि + बस् ] बसना रहना। परिवसक्ष, परिवसंति (अमः महा पि ४१७)। परिवसण व [परियसन] बाबास (राज)। परिवसना भी [परिवसना] प्रावणान्य (Fig. 1 ) a परिवसिञ रि [पर्युपित] छ। ह्या बाह रिया हमा (एए)। परिषद् सक [ परि + वह ] बहुन बरना बीना । व बरु वाजू रहना । परिवहद (कपा) । परिवर्षेति (गढर)। वक् परिवर्षत (पिंड ६१६) । परिवद्दण न [परिपद्दन] होना (राज)। परिया चक [परि + का] मृतना । परिवादन (पडर) १ परिवाद वि [परिवादिम] जिन्हा करनेशना (यम)।

परिविच्छाय वि पिरिविद्याती सर्वेग विज-

परिविद्य नि [परिविद्य] परोक्षा ह्मा (ब

विधिवेत्तस प्रक [परिवि + क्स ] हत्त्व ।

परिवित्तर्शिता परिवित्तरेका (बाबा १ ६

परिविक्ति की पिरिकृति । परिवर्तन (दय

परिविद्ध नि [परिविद्ध] को दिवा क्या हो

परिविद्यंस का पिरिव + भांसम ] १

परिविद्यस्य मि [परिविध्वस्त] १ निष्ट्र।

परिविष्ट्वरिय वि [परिविष्ट्वरित] स्त्रृति-

परिवियक्ति हि परिविगक्ति 1 द्वरा

परिविवक्षिर नि [परिविमक्षित् ] करनेनावा

परिवेरक वि पिरिवेरक विशेष विरव

परिविद्धासिर वि [परिविद्धासित्] विवासी

परिविस तक [परि + विश्व ] वेहन करना !

परिविस सक [परि+विष्] परेतना,

विकास । संक्र परिविस्स (उत्त १४ १)।

परिविदास 🖠 [परिविदाद] दमनाग्र 🌬

परिविद्वरिय वि [परिविद्यरित] श्रीत गीमिक

संज्ञ प्रतिविद्यस्तिचा (मग) ।

२ परिवापित (सम्र २, ६ १)।

ह्या टपका ह्या (सस्त) ।

विनास करना । २ परिवास क्यांना ।

इन्त (समार ६ १२)।

१८श स्पा ६२६) ।

T. X) 1

X40) (

च्या (स्पा २० )।

बच्च (पंत्र) ।

क्लेन्सा (क्या) ।

(वच्छ मा १२६)।

परिनित्तर (महरू ७१)।

(बर्मीव १२६)।

(((())

र्मपद्माः २ मेटिया 'च्या से स्थाप' परि नक्सचपरिवारिए' (उत्त ११ २६८ कान)। परिवास देवो परिकास । परिवास (दे ६

३४ हो) । परिवास सक पिरि + पास्य न पासर करता । परिवासक, परिस्तवेद (वर्षिः सद्धा) ।

क्क. परिवासकीय (सद १ - १७१)। क्रीड परिवासिय (राष)। परिवास देवो परिवार ≠परिवार (शाया र --- पष १**३१**) ।

परिवाणिय वि [परिवापित] अवाह कर फिर से **गी**या हमा (ठा ४ ४)। बाबना ब्रम्यासन विस्तिरिवादी ध्वीतवर्ती परिवाणिया की [परिश्वापिता] धेवा-विशेष फिर से बढ़ावती का बारोगरा (हा ४ ४)। परिवास प्रे कि केंद्र में बोलेशका प्रक

> (वे व व्यः)। परिवास न [ परिवासस ] वज्र करवार व्यंबोधनवुरुक्तरपासई सुनिक्टरई मि भ्येख-परिनासईँ (मृषि)। परिधासि वि [परिवासिन् ] वधनेवाका (सवा ४२)। परिवासिय वि [परिवासिय] वृवासिय

नुकन-पुकः 'नवगरिनलपरिनासिवपुर्' (प्रवि)। परिवाद सक पिरि+वाहप रिवहन कराना । २ बचादि क्रेनाना, बावानि-भीदा निवधैवधिकास्य स्थ परिवाहर पादिभागीएं (श्रद्धा) ।

परिषाद दे [परिनाद] वस का अन्यन 'मरिजनरंतपसरिर्धापयसंबदस्यितस्यो नराईद् । परिनातो निम बुश्वस्य शहर छायछद्वियी वर्षो (बा १७७)। परिवाह पृथ्वि । वृक्तिनय, ध्यवनय (१ ६ परिचार है [परिचार] गृह-तोक वर के जनुष्य एक)। परिशाहण व [परिशाहन] ब्राह्मरि-केन्स **'**यासपरिवाह्यानिवित्तं भएक' (ठ वर्।

मका) ।

(44)

परिनोम सक [परि+क्षीप्रम्] पैका करना इचा करना । नरिमीएमि (स ६७) । परिविज्ञास कर [परि+विस.] केटन परिचीहम थि [परिचीमित] निवनो इस भारता । भरितिमालक (बा*डा* ७३१ मारता

पारितानुवर्धनकरमधिवहारियो वर्ग योग् (गुर १४ १६) :

भी नई हो नह (उन १११ दो) ।

यरियारण न [परियारण] १ नियमध्य (पएड १ १--पत्र १६)। १ धान्यारग.

बरना (दे १ ८६)। थरियारिम वि वि] चीत रावत (१ व R ) :

462

Tw tx) |

(पटम १४, ४१)।

( x x ) 1

(वर्षेष्ठे १९४)।

(चन)।

EL, I

tx) (

भीशा (श्रम ४६)।

१ **१ २,३)** 1

परिवाहय वि पिरिवाचित पदा हथा (परम

परिवार्त को पिरिवारी कर्जन-सर्वा 'वर

चरिचाड सक चिटम र भटाका संगठ

चरिवासस वैसी परिपादस (भवा)।

करना । २ रचना, निर्मात करना । परिनादेश

परिवादि की पिरिपाटि । पक्षि पैवि

(मिने १ ना)। २ पॅकि, थेलि (क्व १

देशे। दे कम परंपेष (संदेशे। ४ सुनार्थ

(बर्मीव १६)) 'प्रस्थिति वर्षित करेपरि

परिवादा केवी परिवादिः 'परिवादीमावर्ग

परिवाद ए परिवादी नित्वा क्षेत्र-गोर्डन

परिवादियी भी [परिवादिनी] वीला-विशेष

परिधाय वेको परिवाद (कम बीप पत्रम

परिपानग १५ [परिकासक] संभाती ।

परिवायय विका (धणा दुर ११, १)।

परिवासणी की [परिवासनी वाट टांडवानी

परिवार एक [परि+वारय] १ केटन

करता । र दुदुस्य करता । वष्ट्र परिचारयेन

(रत १३ tv)। सङ्ग परिवारिका (तुप

(पीतः महाः हुमा) । १ व, स्थान (बाप्र) ।

खान्य ११ स ६२ शालाधि

बाब्बिएननि वासि (क्वक ११)।

परिवाहिक वि पिटियाँ चित्र (कुमा)।

ह्वह रक्त्र (पटम ११ १ ६) पाछ)।

बस्य ताव बता बद्यपरिवाद बहे पत्ता"

परिपोध म [परिपोठ] प्रास्त्र-भिरोध (याँग)।
परिपोछ पक [परिपोद्धय] स्वकता।
सेक परिपोद्धियाण (पाचा २ १ ८ १)।
परिपुढ वि [परिश्वत] परिवर्धिय वेशिय
(यापा १ १४ वर्षित २४ धीर महा)।
परिपुद्धय वि [पर्युपित] १ स्वा हुमा। २
क वास्त्र सिवस्य।
परिपुद्धय वि (याद्ध ४४)। वेशो
परिपुद्धय वि (याद्ध १२)।

परिवृत्ति की [परिवृत्ति] केट्ट (सक्त १२) । परिवृत्तिका कि [पर्युत्तिम] क्लिन कहा हुआ 'से जिल्ला करेंचे परिवृत्तिय' (साचा १ व ७ १: १ ६ २ १)। की परिवृत्त्व । परिवृत्तिका कि [पर्युत्तिम] कह जुलप हुआ परिवृत्तिक (१ १)। परिवृत्ति कि परिवृत्ति विकार्त (क्या ७ २)।

परिवृद्ध वि [परिवृद्ध] समर्थ (जय ७ २)। परिवृद्ध वि [परिवृद्ध] स्वृत्स (शास वर्ष उत्त ७ ६)।

परिसुद्ध वि [परिवृद्ध] १ बनवल, बनिष्ठ (स्व ७ २६)। २ मस्त्रेत पुट्ट (दाचा २ ४ २,३)।

परिचूड वि [परिच्यूड] वहन किया हुआ बोबर हुआ 'न कहस्दानि यह पुण विरुत्तर बुद्दं इसे मोहूँ (वर्षीव ७)।

परिवृद्ध केवो परिवृद्ध (एव)। परिवेड सक [परि + नेष्] वेदना बपेटना। परिवेडह (चित्र)। संक्र परिवेडिय (निष्कृ १)।

न्तरिवेड पू [परिवेष्ट] केष्टन केराः ना कायह टो निकार देवानरमुहत्त्रप्रिकेड (शिर

६१८)। परिवेदाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित करावा

हुमा (पे १ ४) । परिनेडिय वि [परिनेहिश] नेहर हुमा क्रा

हुसा क्षेत्र हुमा (घर ७६० टी: वल २ ; पि १ ४)। परिवेश सक [परि+सेप्] क्ष्मण

भारतय सक [पार्+सप्] कांपन 'कासरपरिति परिनेसह' (सदि)।

परिवेद्विर मि [परिवेद्विरः] कम्पन-ग्रीम (कार्य)।

परिवेष धक [परि + वेप्] कौपना । क्यू. परिवेषमाण (सावा) ।

परिवेश सक [परि+विष ] वरोसनाः विशेषकाः (पुण वर्षः)ः कर्म परिवेशिकाः (पुण वर्षः)ः कर्म परिवेशिकाः (पुणा १ कः)ः वह परिवेशिकाः परिवेशिकाः विशेषिकाः परिवेशिकाः विशेषिकाः परिवेशिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषिकाः विशेषकाः विशेषका

परिश्रंस पूँ [परिश्रेश प] १ वेष्ट्रम (गडड)। २ जैडम नेपादि से सूर्य-जान का वेष्ट्रगाकार संद्रम अपिवेशी सांकर फरश्वरण्यी (पडम

६६ ४७३ स ६१२ टी गतः)। परिवेसका व [परिवेपका] परीसना (स १८७ विक ११३)।

१८७ विंद ११९)। परिवेसणा की [परिवेपणा] अनर देवो

(विड ४४१)। परिवेसि [ परिवेशिन् ] समीप में चहुने बाका (वरण)।

परित्रवा सक [परि+ त्रज ] १ सर्गताः काम करमा। २ शीका वेगा। परिकार परिवारकाति (सुम १ १ ४ ३ पि

γ4.)ι <del>υσωνι</del>θε

परिकास कि [परिसूत] परिकेष्टि 'ताय परिकासो किन सरामपुरिस्तमाचेते' (चमु) । परिकास कि [परिकास ] क्रिकेप स्थय

(ताट-भूग्स ७)। परिचयम पू [परिचयम] बर्चा वर्ष करने

का नग (बत १ रै टी)। परिज्ञाह टक [परि + यह ] बहुन करना

वारण करना। परिवन्तहर (रोगीन २२)। परिक्याह्या की [परिवासिका] संन्यासिकी

(स्रामा १ = महा)। परिञ्याज (गी) ६[ परि + श्रास्] श्रेमाधी

(बार ४६)। परिकाजम (तो) वृ [परिमामक] संसादी

(पि २०४० मार — मुख्य ०४) । परिव्याधिमा (शी) केली परिव्याध्या (मा २ )।

परिन्याम केवी परिक्याज (सूर्वान ११२) भीप)। परिन्यासम् १ पृं [पारिकास इ] संन्यासी

पारम्यायम् १ पृं [ पारिकासः ] संन्यासी परिम्यायम् । सामु (स्य) ।

परिण्यायमः वि [परिष्ठात्मकः] परिवासकः । सन्त्रभी (१९८२) । परिस वेदो फरिस = स्वरी (गडक बाह ४२)।

परिसंक सक [ परि + शक्क ] स्य करता करना वक्क परिसंक्रमाण (सुम १ १

२)। परिसंक्तिय वि [परिशक्तिय] मीठ (परह ११)।

परिसंका एक [परिसं + समा] १ सम्बर्ध तप्द नामना। १ मिनती करना। एक परिसंकाय (वस ७ १)।

परिसंख्या की [परिमंद्रमा] धंक्या विनहीं (पत्तन १ ४६) भीवस ४ पत-गावा १३ वंद ४ क्यो ।

पहिस्ता हुं [परिपङ्ग] संग शोहरत (हन्मीर १६)।

परिसंग 🐧 [परिष्यक्क] ध्राविक्तन (पच्म २१ १२)।

परिसंगय वि [परिसंगत] द्वक सहित (क्रीवि १६)।

परिसंहर चक [परिसं + स्थापय्] संस्थापन करना । परिसंहरह (मन) (निय) । वक परिसंहर्मिन (न्यर्थ ४०) ।

वह परिसंत्रवित (कार्य ४३)। परिसंत्रविय वि [परिसंत्यापित] संव्वापित (तंदू ३८)।

परिसंध्यि (द [परिसंस्थित] स्वित एहा इया (महा)।

ह्या (महा) । परिसंत वि [परिश्रास्त] बका हुमा (महा) ।

परिसंधिविय वि [परिसंखापित] बाधावित (व १६६)।

परिसक्ष कक [परि+ध्यण्क्] कता नवन करना इत्तर-कद कृतमा। परिसक्तक (का ६ थे कृत १०४)। नक्त परिसक्त, परिसक्तमा (कार ११०१व ११३)। कृ-परिसक्तिकाम (पुना ११३)। कृ परिसक्तिकम् (पुना ११३)।

परिसक्तिम वि [परिकारिकत ] १ मत (पति)। २ नः परिक्रमण परिभ्रमण (ग ६ ६)। परिसाक्तर वि [परिकारिकन] गमन करो-

नामा (ग्रामा १ १ रि ४८०)। परिनक्षिम (गर) नि [परित्यक] धार्मियत (क्या)।

परिसद्ध (भाषा २ १ ६,६)। परिसक्तिय वि पिरिप्रटिती सम्बद्ध्या दिन्ह (शामा १ २३ भीए) । परिसम्ब कि [परिन्यक्या] दूवम कोटा (से 1 ( 9 9 परिसन्न रि [परिपण्न] को हैरान हुमा ही वीवित (वज्रम १७ ६)। मरिमत्प का [परि+सूप्] क्वना। परिक्रमेर (माट-पिक ११) । परिसप्पि पि पिरिसपिन् १ अक्नेबला (क्यू)। २ मुंब्री द्वान बीर पैर से चलते-बला बन्दु--बर्न धर्प मादि प्राप्ति मराध्ये जी(बीव २)। परिसम देवी परिश्वम (नडा) । परिसद्भन्त नि पिरिसमाप्त्री चम्पूर्ण जो उध हमाही नह (सं १४ ६४ सुर १४ २६ )। परिसमिच वी [परिसमाप्ति] समाप्ति पूर्वंद्य (उप १३७ स १२)। परिसमापिय रि [परिसमापित] नो समात फिना नवा हो, पूर्य किया हमा (विसे 44 2) 1 परिसमात्र एक [परिसम् + आप ] पृश्री करना । बंकु- परिसमाभित्र (पनि ११०)। परिसर प्रे [परिसर] नवर बादि ड शमीप कास्थन (धीनः नुगाः ६ मीतः ७६) । परिमाहिय नि [परिशास्त्रिक] राज्य-पुक (দহা)। परिमय सक (परि + स्त) फरना शास्ता। नप्र परिसदन (तर् ११: ४१) । परिसद र पिरियह | देशो परीसई (बन)। परिशाधी पिरियदी र तत्व, वर्षेत्र (काब धील बराग्नीता है है) । २ वृहितार (का 1 (wff 27--- 1 परिसाद देवी परिस्माद (चन) । परिमाइयात्र वैची परिसाद । परिमाद पर [ परि + शाटप् ] १ त्यान ! बरमा । ६ धनन बरमा । दरिमाहेर (कला

भन)। भेर परिमादहस्त (मन)।

परिसद्ध यह [ परि + शर् ] समुख होना।

परिसाध का पिरि+शाटयी १ ध्वर जबर वेंक्ना । २ घठना । ३ रसनाः परिसा-विज्ञा को प्रतृ (दश ६ १ २०)। परिशा डिक्तिः चुका, परिपार्विस् । भूषिः परिवार्विस्संवि (धावा२१२)। परिसादका थीं पिरिशाटमा निषक बीमा (वय १)। धरिसाङ्ग्या औ [परिशाटमा] प्रवक्तप्र (समनिकार)। परिसाडि वि [परिशाटिम्] परिशाटन-पुक (योव ६१) । परिसाडि नि [परिशादि] परिकाल पुरू-इरख (वित ११२)। परिसाष्ट्रिय थी [परिशावित] निराम ह्या (बस १, १ १६)। परिसाम वक शिम् किल्ड क्षेत्रा । परि सामद (है ४ १६७)। परिसाम वि [परित्याम ] शीचे च्या परिसामक वि [परिश्वासक] इच्छा काला (सबद)। परिसामिश वि [शान्त] शन्त वयनुक (दुमा)। र्पारसामिञ वि [परिन्यामित] इच्छ विवा **ट्रमा** (ग्रामा १ १)। परिसाय का [ परि + झावय ] १ निजी इना । २ नानना । क्षेष्ठः, परिस्नावियाण (माचा २०१ म १)। परिसाधि बेदो परिस्साचि (बह १)। परिसादिय नि [परिक्रियेश] प्रतिपारित बन्द (बन्दा) । परिसिध चक्र पिरि + सियी शीचना। परिजिया (बत १ १)। वह परिसिय माज (जाना १ १) । १ वह, परिसिचमाज (बण गि १४९)। परिसिद्ध रि [परिशिष्ट] सनरिष्ट, कारी वयाह्या(क्षाचा १२ ३ ६)। परिशिक्षित दि पिरिशिक्ष दिने विकेश दीमा (नडर) । पर्धिनश्च नि [परिधिक्त] १ सीमा हवा (ना१ ६) शता)। १ न. वरिपेक केवन

(**40**( **t t t** ) (

परिसिद्ध वि [पर्पेद्वत् ] परिवर् वादा (4E %) : परिसीक सक [ परि + शीक्रम् ] धन्यत करना मानव शत्राता । संद्र, परिसीक्षिक (धप) (सम्रा)। परिसीचन न परिशीयनी सम्यास बाद्य (रंबर धरा)। परिसीक्सि वि [परिसीक्षित] बनस्त (কন্ত) ৷ परिधीसग के पश्चिसीसञ्ज (चन) । परिसुकानि [परिद्युपक] भून पूजा ह्या (क्यि १ २ पट्टा)। परिसुष्य वि [परिशुस्य] सभी रिक दुर (वि११ वक)। परिस्रक वि पिरिहारी वर्षना क्षेत्र इस (नाट-- उत्तर २३)। परिसद्ध वि [परिद्धद्वा] निर्मेत निर्वेद (का परिसद्धि की [परिद्यद्धि] क्युद्धि, निर्मेक्स (वच्छा प्र ६६)। परिक्रम वैको परिहास्य (विदे २०३३ क्य)। परिसुख (बन) क्य [ परि + शोपम ] भुकाना । सङ्घ परिसुसिबि (धर) (श्रुत) । परिस्थाना की [परिस्थाना] सूनना (दुरा परिखेब दू [परिपेक] वेबन (बाब १४७)। परिश्रस र्व [परिश्रप] १ शाबी वना 🕮 धवरिष्ट (ते १. २३) पदम **३६, ४** । वा ः कस्म ६ ६) । २ धनुसान-प्रभाख का एक मेर पारितेपानुमान (वर्ष देश देश) ! परिसेसिश वि [परिहापित] १ बारी वया ∎मा (यन)। ९ वरिक्यिल निर्धीतः 'करमंबि करमार् गाबि नहतु सद कुरति दिक्तर वा प्रश्नम् । व्यक्ति परिवेशियो क्लिस वी हु सर्वनिषयस्थानी (दा ४१)। परिसेद् 🖞 [पारियेष] प्रक्षितेत्र निगरणः

पारद्वाराण्य भी व परिवेदी । बाल्यमञ्जन

रैंग्रं को व रिही एउ करनको' (कान)।

परिसोण वि [परिशोण] नाल रैंग का

(वज्य)। यरिसोसण व [वरिशोयण] गुबाना (वा

६२८)। परिसोसिक हि [परिशोपित] सुनाया हुना

पारसामिक व [पारमापव] धुनाया हुवा (एए)। परिमोह सक [पार + शोधय] शुन्न करना।

कवक परिसोहित्यंत (एए)। परिस्तव स्क [परि + स्वज्ञ ] सामित्रव करता। परिस्तवदि (शी) (पि १११)। संदूष परिस्तवज्ञ (पि १११, गट-नक्

७२)। परिस्तव देखो परिसंत (ग्राया १ १ स्वप्न ४ । वर्षि २१ ) ।

परिस्सव (ग्री) केने परिस्सक्ष । परिस्काह (ज्यार १७६) । वक्ष परिस्सकोत (ग्रीम १३१) । संक्र, परिस्सक्रिक (ग्रीम

परिस्तम पुं [परियम] मेहनत (वर्णने भवव स्वन १ वर्णि ११)।

परिस्मन्स सक [ परि + मम् ] १ वेड्नत करना । २ विधाम बैना । परिस्सन्मङ् (विसे १११७: वर्मसं ७८१)।

परिस्सव सक [परि + स्तु ] पूना करणा दनका। पद्व. परिस्सवसाण (क्या १ १)।

परिस्तव पुं[परिस्तव] सलव कर्म-वन्न का कारण (भावा)।

यरिस्सृह चेको परीसह (दाचा)।

परिस्साइ देनो परिस्साबि = परिज्ञाबिन् (क्र ४ ४—-पत्र २७६)।

चरित्साव **था** परिसाप । संद्रः परित्सावि-षाण (पि १९२) ।

षाण (तर १६२) । परिस्सावि वि [ परिज्ञाविम् ] १ कमै-कल करनेवाला (भग २६, ६) । २ कुनेवाला,

भएनेवाला (भग २४, ६) । २ बुवेशसा, टरकनेवामा १ प्रम नात को प्रकट कर छेड़े-बाला (बच्च १ २२) पंचा १४, १४)। नारिस्साचित्र [ परिमाचित्र ] बुनानेवाला

परिस्साधि वि [ परिषाधिन ] धुनानेवाला (प्रच्य ४६)। परिष्कृ धुव्य [परि + धा] पर्वहरूना, पहलना।

परिकृष्ट (वर्गीय १६ अपि)- 'धन्नेवीरोजि परिकृष्ट चेत्रु रमश्ममात्रकारे' (वर्गीय १४१)।

परित्र पुँचि देव ग्रस्स (६६७)। परित्र पुँचिरेच वर्षना भाषम (मणु)। परित्र प्रकृषि चि १ पद्घ प्रज्ञ निपृष्ठ (६ ६ ७६ भ्रमि)। २ मुं मणु, चैव ग्रस्स

६ ७६ थि।)।२ थुं मन्तु, चैतः प्रस्ताः (१६ ७१)।वेको परिवृत्यः। परिवृत्काःवेको परिवृत्यः (शीपः)।

परिष्कृ सक [ स्वत् परि + षष्ट्य ] मर्गेन करणाः पूर करना कवरना कुपबना। परि हृद्ध (हे४ १२६ नार-साहित्य ११६)।

परिदृष्ट् चरु [ वि + तुस् ] १ मारणा मार कर मिप केना। २ सामना करना। १ सूट नेना। ४ सरु वनीन पर बोटना। परिसृह्य

(ब्राक्ट ७३)। परिवाहण न [परिवाहन] १ धांतवाल बावल (सं १ ४१)। २ वर्षेल विद्यंता (सं व ४१)।

परिवृद्धि की [वि] बाह्मिंग्रे, बाह्मिंग्र की बाव (वे ६ २१)। परिवृद्धिका वि[सूदियाँ] विस्तृता पर्वत किया

यना हो बह, 'परिवृद्धियो नायो' (कृता पान्न)। परिवृद्ध न [दे परिवान] बक, कमना (दे ३ २१ पाक हे ४ ३४१ सुर १ २४

विति । परिहर्सः श्रु वित् । यत्तवन्तु-विद्येशः 'परि हत्य-वन्त्रु-विकासम्बद्धेः स्थापं-विकासिक्यों (तुर १३ थरे) 'पोत्तवस्थितः '' परि हत्यक्षाय-वन्त्रक्य-वस्त्येशयक्ष्याप्तानिङ्ग्यापे प्रस्कित्रकृत्वस्थानुस्यक्षास्यः गुलासँगः'

(एएका १ १६ — पत्र १७६) । २ वि वज्ञ तिपूक्तः काले कामपिक्ता पूर्वः (पत्र ६६ १) क्लू १ ६ — पत्र १५ पास्य आस् ४) । १ परिपूर्वः (और कम्म) । देखो परिष्ट्रकड्, परिसूर्वः (और कम्म) । विश्वो परिष्ट्रकड्,

परिश्रद स्टब्स [परि + भू] शास्त्र करना। संख् परिश्रदिक्ष (स्त्र १९ ३)।

परिदर्शक [परि+क्ष] १ लाग कला कीक्षण। २ करणा। व परिनोव करण धावेषण करणा। परिहरद (क्षे ४ २१३ जब महा)। परिवर्षकि (च ४१०–वब ६६७)। वक्ष परिवर्षक (च परिवरमाण (बा १९६४ राम)। बोहर परिवर्षक (मिंग)।

शुक्र परिहरित्तप्, परिहरितं (ठा ४, वें काम ४ वे)। क्र परिहरितीच्य, परिहरि छाव्य (वि ४७१ का २२७ कोच ४१ सुर १४ वर्ष शुचा ११६६:४वव वक्ष २ ४)। परिहरिता व [परिहरिता] चारक कला (वन १)। परिहरिता व [परिहरिता] १ परिवाल वर्षन

परितृत्व म पिरितृत्व है परित्याव बर्केस (महा) : १ सावेक्स परितेम (टा १ ) । परितृत्व की चिरितृत्वा जिल्ल केस केसी (पिड १९७): परितृत्वा होच परिनेमों (टा १ १९): परितृत्व होच परितृत्व परित्या कर्मक (महा क्ष्य परिने । परितृत्विक कि परितृत्व परित्य हन्मा हु। परितृत्विक कि परितृत्व परितृत्व हन्मा हुन।

परिकृतिक कि | परिकृत | बाराय किया हुया 'परिकृतियक्याभद्रेक्यांक्यसम्प्रकृतिय कुरछेत्र । अस्यकृत्य ! चामवर्षेट्यं परिकृत्यक्ष करछत्र । अस्यकृत्य ! (पा वेश्व मा) ।
परिकृत्यक्षिक पुँ [के] बाब-निर्मम मोरी
पराक्षा (के कृत्य) ।

परिवास कि [ परि + मू ] परावस करता। बक्त परिवास (का १)। इ. परिवासियक्व (चर १ वर्ष)। परिवास (विरासना) परावस विरास्त्रार (वे १३ ४६) सा वद्या है १ १८)।

परिक्षण व [परिभवन] कार वैको (ध ४७२)। परिक्षिण व [परिभवन] कार वैको (ध

(कप ६ १८ )। परिवास तक [परि + इस ] क्याहास करना इसी करना। परिवास (नाठ)। करो, परिवास सीमार्थ (गी) (नाठ---यक्त २)।

पधिहस्स वि [पधिहस्य] करकत बहु (ध

परिदाधक [परि+ हा] होन होना कन होना।परिदास, परिदास (बना मुख १ १)। यदि परिदासस्वीर (गी) (वनि १)। करक परिदावंडा परिहासमाथ (पूर १ १) १२ १४ गापा १ १३। धीच छा।

पचित्रिमसाम (ति १४४) ।
 पचित्र एक [परि + मा] चित्रता । स्रोध्
 पचित्रताम (श्राचा १ ६, ६ १) । तंत्र

परिवारिका' वि पिरिवापित्ती क्षेत्र किया

परिवाधिक वि पिरिधापित । पश्चिमा क्रमा

(बहास्ट१ १७ स १२३:क्य १)।

परिकास र् [परिकास] कवान हैंसे (म

परिद्वासच्या औ [परिभाषत्रा] अवाजन्त

परिद्य वृद्धी [परिद्य] र परिवेच 'सस्तिक'

भ परिक्रिका धर्म सिलेख सस्य राज्यिकी

(समा १ १--पत्र २ )।

श्या (वय ४) ।

। (म्पानः) थ

(पाय १)।

राष्ट्र)।

परिश्वादिक देखी परिश्वाच = परि + वापम् । परिशाम म [परियान] १ वक क्यका (क्य १६: मुपा ११)। २ वि पक्षिरीयामा प्रक्रिकेशकाः 'महिविस्ता सुविक्यस्थपरि शासी' (पडम ११ ११६) । परिशाणि की पिरिशाणि । बाह मुलकान द्यति (सम. १५० मा १२० मी ११ प्राय 11) 1 परिदाय वि [दे] श्रीण दुवेत (वे ६ २६) पाच)। पंचित्रवैव नारकावत परिदायमाण }े देशो परिदा ≈परि÷हा। परिहार पू [परिहार] रूखा कृति (वन १)। मरिहार पुं[परिहार] १ परिकाम नर्जन (बद्ध) । २ परिमोन, साधनमः पर्व बन्द योगाला । वहास्यहकाद्रयाची पञ्चपरिकार परिवरित (पम १६)। ३ परिवार विमुद्धि बामक संबंध-विदेश (बस्म ४ १२ २१)।

परिश्वितम परिश्विता (द्रप्र ४२) तुम १

४ १ २३)। इन परिक्रियस्थ (स ३१%) ।

परिवा की पिरिताों बादें (बर ४ ए

परिद्वाद्रभ वि दि । परिजीस (बङ् )।

बद १) । "विद्याद्विम "मिस्कील न िवगुद्धिकी चारित्र-विदेश चॅमम-विदेश (का प्र. शास्त्र १६) । र्पाद्वारि १४ [ पांद्वारिम् ] पांद्वार कछे-नाता (ब्रह ४) । परिद्वारिक वि [पारिक्षारिक] भाषात्वान् कुरि प्रयुक्त विद्वारी वैत्र प्राप्तु (प्राप्ता २, १ 1 (Y) परिद्वारिणी की दि देर में स्वार्ट हाई बैंत (C & 31) परिदारिय रि [पारिक्षार्टक] १ शिववाय के बोग्य (दूर २) । १ वॉद्यार नामक सप का पानक (पर ६६)।

परिदास र दि जन-मिर्देश शीध (१ ६

बर परिदार्शन (यर) (बार) ।

1 (38

४ विषय (वव १) । १ ता-विशेष (ठा १, २)

(पब १४१) । २ परिलाह- बिस्तार (राज) । परिद्यम वि पिरिविच । पहिल हमा (क्वा-ब्रम्ध रूपा ग्रीपा पाग्रा सर २ ०)। परिविद्धाल देखो परिवा = परि + वा। परिहिंद सक [ परि + दिपद ] परिश्रमण करना। परिवृत्त्य (ठा ४ १ डी-पन १६२)। वक्. परिश्चित परिश्चितमान्य (पठम व १६६० ६ २) १६६ चीप)। परिद्विधय मि [परिद्विण्डत] परिचान्त भटका बचा (पत्रम ६ १६१) । परिदेश } वेबी परिदा=+वा। परिक्रीभ्रमाण केवी परिक्रा = वर्षर + का परिक्रीय वि परिक्रीत र क्य खन (बीच)। २ बीस निगष्ट (गुरुग १) । १ चीरा, मजिव (२३)। ४ व आस्य श्रप्तम् (राय)। परिद्रमा नि [परिभुक्त] जिसका चीन किया मधा ही बह (ते १ दश दे ४ ३१)। वरिष्ट्रम वि [परिभृत] परान्ति श्रीप्रभृत (वारद्रभाषामा १ ८ दि २ )। परिष्कुरात न [चे.अधिहार्यक] व्यक्तकानीकीय (धीप) । परिद्रो सक [परि+ भू] पराधा कला। परियक्तिय (धरित) । परिद्वाञ्च रेजो परिमोग (गडह) । परिष्क्षस (धप) भक् [ परि + हुस् ] क्ष होगा । परिद्वाल (पिय) । परीतक विदि+ ही भाषा यमन करना। परिहाप तक पिरि + भाषम् ] परिशना । वरिषि (पि ४१.६) । वह परित (पि 1 (13Y

परीसकि स्थिप ी ऍक्ना। पणैद (दे⊻ १४३) । वधीस (अभा) । परी सक भिम् ने भ्रमण करता, बुनना। परीह (हे ४ १६१)। परेंचि (क्या १ 3—एम ४६**)** । परीपाय पू [परिपात] निर्मात विषय (98 4Y) I वरीजस केवो परिजम = परि + छनः चित-नाको परायवसादशास्त्रे सोगलस्त्रेश परी-लमीत (स्वर्ग ३३)। वरीमोग देखो परिमीग (द्या ४६७ अनड रवर पंचा व शे। परीमाण देखो परिमाल (बीवस १२६ १३२ पण १ ऱ र )। परीय वैंबी परित्त (चन)। परिवक्त में वि परिवर्ती बेहन जिनके-बळ्नाधिस्सई स्वाहरणं बारए एवं (भीव w e) 1 परीर्स र्षु [परीरम्भ] मार्किमन (हुमा) । परीवळ वि । परिवर्त्य । वर्तेतीव (कस्प ६, (自) परीकास देखी परिवास = परिवास (परम ११ वे पद २३७)। परीवार क्यो परिवार = परिवार (इम्प नेप्रय प्रयो । परीसम न [परिवेषत्र] परोत्रम (६% 143 परीसम श्वा परिस्थत (वनि)। परिसद्ध र्थ [परिषद्ध] वृद्ध शामि 🛭 होनेनामी वीझ (भाषा भीग धर)। परुष्य वि प्रिरुदिती थी धेने सना हो नह (स धरूर) । परकरत देशो पराक्टत (विधि १४ ३ 🕅 लूपा १व६ था १। बूज २५)। परुज्य ) वेद्यो परुज्य (दे १ वर, १ पर्दात । ६४३ वा ११४ व । महा **€₹** ₹)1 परुष्पर देशो परोप्पर (१प ४) । पर्वमासिद (शै) नि [प्राह्मासिय] जनमध्य (वयी २)। परुस नि [परुप] क्डोर (च १४४) । पहंड वि [पहंड] १ बलन (वर्गी १११)।

र बढ़ाइमा (भीप नि.प. र)।

परुष सक [प्र + रूपय\_] प्रतिपादन करना । पक्षेत्र, पक्ष्मीत (सीप, कम्या मर्ग) । संझ. परुवदत्ता (ठा १ १)। प्रस्ता वि [प्रकृपक] प्रतिपादक (सदा कुप 2=1) 1 प्रसम्म न [प्रसम्म] प्रतिप्रादन (प्रस्)। परुजणा की [प्ररूपणा] उसर देवी (बाष् 3) 1 पर्ख्यम वि प्रकृषित र मिलपारित निक्षित (पर्छ २ १) । २ प्रकारिका 'तत्मदं क्या स्मृयापस्थितमामुरपृष्ठकामुरि चेच (प्रति २३)। परअपू वि] विशास (हे ६ १२) पाम ∖ पर्)। परेण म पिरेण] बाब मनतार (महा)। पर्यम्मण रेखा परिकासण (कप्प)। परवय न वि । पाक-पतन (दे ६ १६)। परव्य वि [परेणुस्तन] परसीं का परसी होनेवासा (चिंड २४१)। परो य [पर] एक्ट्र 'परोप्टरिव्ह तथीव्' (उदा) । परोद्वय देवो परुष्य (स्य ७६= टी) । परास्त्र न पिरास्त्री १ प्रत्यक्त-किन प्रमास 'पवनवपरोक्बाई दुलेव मधी पनालाहें' (सुर १२,६ ३ ध्रक्ति)।२ विषयोध-प्रमाणका विपन धनरमञ्ज (मृपा ६४७ हे ४ ४१०)। इन पीचे, सांबाँ की मीट में यन परीक्तो कि दर भएनुमें हैं (नहा)। प्राट्ट वेको पस्त्रोट्ट = पर्यस्त (यक् )। परोप्पर ] वि (परस्पर) यापस में कि १ पराण्टर । ६२ कुमा क्यू वह )। पराष्ट्रार है [परापदार] दूसरे की यलाई (मार--भूज्य १६६) । पराषयारि वि [ परोपद्मारिक् ] शूसरे की मनाई करनेवाला (बक्रम १ १)। परीवर केवी परीप्पर (प्राष्ट्र २६ ६ )। परांचिय वैको परुष्य (उप ७९८ टी स A4 )1 पराइ यक [म + स्ट्र] १ जलब होना। २ बढ़ना । परोद्धरि (शी) (हाट) 1 परोह् पू [मरह] १ चलकि (क्रमा) । २ वृद्धि । १ स्ट्रेंड्र, मीमोस्पेस (११ ४४)ः

'पुश्रवयाण परोहे रेहद धारावर्गतम्ब' (धर्मीव १६५) । परोश्चल न दिं। यर का पिछना सामन, वर के पीड़ों का भाग (योच ४१७) पार्च पा ६⊲६ धावण्या १६१८)। पळ बक्त पिछा रिजीना।२ जाना। पन इ (बड़)। देखों बक्त ≠ वत्। पछ (धन) धक पिन विकास विस्ता। पलाइ (पिंग) । आह पर्छन (पिंग) । प्र (घप) सक िप्र + कटय ि प्रकट करना। पम (पिय)। पञ्च चक पिरा + अप्य ने मालाः 'बोराए कामुकास व पानरपश्चियाखं कुल्कुको रहह। रे प्रबह्न रमह बाह्यबह नक्ष् त्रज्यस्य स्वणी' (वज्या 2 (Y#5) पछन [वे]स्वेद, पसीमा (दे६ १)। पस्त म पिकी १ एक बहुत कोशी तील। कार शोबा(ठा १ १ मुपा४६७ वज्जा ६८) क्रम ४१६) । २ मोस (क्रम १८६) । पर्लघ सक [प्र+धर्म] यक्तिक्यस्य करना । पसंबेज्जा (ग्रीप) । पक्षंपण न [प्रसङ्खन] बस्तंपन (बीप) । पर्लंड प्रं पिल्लगण्डी धन चना पोठने ना काम करनेवासा कारीयर, 'पक्षमंड पसंडा' (प्राक्त १)। पर्लक्ष पूर् [पञ्चाण्क्ष] प्लान ( बक्त ३३ ₹¤) ι पर्शन पक [प्र 🕂 छम्ब ] सटकमा । पर्शनप् (पि ४१७) । नष्ट- पक्षंचमाण (धीप महा)। पर्छन नि प्रिक्षम्य है सटकनेपासा बटकरा । (पराह १ ४- राय) । २ वास्त्रा, दीर्थ (से १९, ११, प्रमा) । १ ई. शह-विरोध एक भ्रहाचड्ड (ठा२ ३) । ४ <del>प्रक्रची फिरो</del>प सक्रो राज पर माठवाँ मृतुर्खे (सम ११) । ५ यून धामरण-विशेष (धीप)। ६ एक तरह ना थान का कोठा (इह १) । ७ मूल (इस **पृह** ?}। ८ रचक पर्वेत का एक शिकर (काय-पत्र ४३६)। १ द्वीन-प्रज (हह १ ठा ४ १--पत्र १८६) १ वेथ-विमान-विशेष (सम **१**४) ।

पर्हाविद्य वि [प्रजमिवत] तटका हुमा (क्रम श्रीवास्त्रामा १ )। पहांबिर वि [प्रस्टिन्यवृ ] बटननेनासा बट-क्ता(स्पारी सुर १ २४८)। पञ्चक वि वि विभाग "इय विस्तरायस्थ्यमी" (इम ४२७) गट)। पलक्स प्रेटिसम्बेद का पष्ट (कुमा पि ११२)। पञ्जगन [पञ्जक] फन-विशेष (माचार १ = **€**) ( पक्षज्ञण वि प्रिरक्षत्र चित्री, प्रमुख्य बालाः 'धवम्यप्रसम्बद्ध — (द्याया १ १८) भीप) । पळट्ट बक [परि + अस्] १ पपन्नाः बब्बना । २ सक पमराना वदधाना । पनपूर (रिप) 'कोहाइकारऐपि इ मी बक्क्क्सिट पत्र दि (संबोध १ a) । संक्र- पत्र है (प्रप) (पिन) । रेको पहरू । पस्रच वि [प्रस्मित] १ कमित चंद्र, प्रचाप-बुक्त (बुना ११४) से ११ ७१) । २ न प्रसाप कवन (धीप)। पळ्य द जिळ्यी १ इफलः करपाल-धनः । २ वयत् का सपने काएछ में बद (से २. २) पतम ७२,३१) । ३ विनाराः 'बायवबाद-पसप् (ती १)। ४ वेटा-छम । ६ क्रिपना (हे १ १८७) । इत् प्रिके प्रसय-कार्य का चूर्व (पटन ७२ ३१) । धन वूं ["धन] प्रसम का नेप (शस)। स्टिम 🐒 [ीनस्र] ध्रमय काल की भाग (संख)।

पद्धक्त पिद्धद्धी १ शिव-वर्ष तिन-नोद

(परहर ३३ पिंड १६१)। २ मान (कून

पञ्जित्र न [प्रश्नवित] १ प्रशीक्त (ग्रामा

पक्षप तक [म + सप्] प्रतार करता बक-

वाब करना । पश्चनदि (सी) (नाट-वैसी

१७)। बद्धः पद्धर्पतः पद्धप्रसामः (कावः

पर्स्वण न [पद्भवन] रुद्धनना, प्रश्वरनन

व्हेपाइमनाज्यक्षे व्यवस्य प्राप्तकामी य

सुद्द ए १२३३ सूपा २६ ३ ६४१) ।

१ १--- पथ ६२)। २ शक्त विल्याम (पद्धाः

1(##5

₹ ¥) i

(बीम १४०)।

पद्मारि भी 👣 ऋसी भीटा गर्माः स्त

पद्मसियां की हि पद्मशिका] त्यकातिका

कास की बनी ह**ई ब**क्सी (सूप t Y

प्रसद्ध देनो प्रसास (सीम १६) पि २६१)।

पक्कि केको परि (सुम १ ६, ११ २ **७** 

पश्चिम न [पश्चित्र] १ दृह मदस्या के कारह

शब्दें का पत्रना देशों की धेउता 🖯 र कर्न

की पूर्तियाँ (है र<sup>ू</sup>. २१२) । ३ कर्म <del>पर्न</del>ः

पुरुष्का भी केह सद्या पश्चिमं चर्मति (माना

१ ४ ६ १)। ४ इस्ति ब्लूडल डि

व्दा वस २१, ३४ मि २१७)।

विशेष (वे ६ १४)।

ર ७) ા

पश्चार २)।

पद्यीना (रे ६, ७ ) ।

**15)** 1

S. 1)1

पखिला ) वि [प्रस्तिपति] १ प्रदर्गेक वहा

पर्स्सवत ∫ हुमाँ। २ न यन्त्रंक सावल (वंड)

पद्मिर नि [प्रस्नुपितः] क्वनारी (वे ध

पसरान [वे] १ कर्लास-प्रता २ लोव

पक्स (चप) न [पद्धारा] पन पत्ती (वर्षि) ।

पद्ममुद्री हि नेवा पूजा भक्ति (दे

पस्रित् पूंडी कि कपास (वे६ ४ पास गरवा १व६ हे २ १७४)। पलक्कि विदि शिवस सम्ब। २ पुनः समृत क्मीन का बास्तु (दे ६, १६)। पछिद्रिक्षण वि 🗣 एपछहूदयी मुद्धे, पापाछ-हृस्य ( पर्)। पस्त्रुक्ष वि[प्रसम्बद्ध] १ स्वस्य जोहा। २ कोटा (से ११ ६६) पडड़)। पस्र देशो पद्धाय≔परा+सन् ≪ी अ करतिम स्वारं सक्तीय बाह्न क्याह ते तुल्ल (धारमाञ्च २३) पत्तासि पद्मामि (नि **\$56)**| पद्धार्थन } देवो पद्धाय = पद्म + वय् । पद्धारम प्रसाहभा । वि [प्रसावित] १ चानः ह्या पद्मपं रिप्टॉ 'क्वास्य होबद' (स. ३६ँ) गरिक्को सिम्नं यह पदार्श्य (दमेनि १६) देश परम देश अप योज yew; क्य १३१ दीमुपा२२ ६ ६ ती१६८ तल व्यक्त)। २ म, प्रमापन (बर ४ ६) । पद्माय न [पद्मायन] ग्रापना (तुपा ४६४)। पसानिज्ञ रि [पसामनित] विवते पदाना किया हो वह बागा हुआ। 'तेखवि धानन्त्रीतो रिनाधो तो बनाशियो हुएँ (तुरा ४६४) । पस्पत विभिन्नानी गुरीत (चंड) । प्रस्य सक [परा + अय ] बाद बान्स श्वधनाः ररायदः, स्वायकि (महाः पि १६७)। मीर वताश्तर्व (शि १६७)। वक् पद्मार्थन पद्मश्रमात्र (श. २६१: शाना रेका मान १ । पर इ.२१)१ वक्र प्रशास (माट रि १६)। हेइ प्रवाहतं (पाक रशानुगा ४६४)। इ. पश्चाइमञ्ज (पि 250):

पळाम पूर्वि चौर- तस्कर (दे६ व)। पश्चाब केलो प्रसाइअ = पनावित (खाया १ ६ स १६१ छ। दू २५७३ वर्स ४०)। प्रस्तयण न [प्रस्तवम] नावना (पोष २६ दुर २ १४)। पश्चायणया की क्रमर केवी (वेदन ४४६) ! प्रमायमाण केवी पद्धाय = परा + धन् । पद्मास्त वि [प्रसास] शक्य सामानाना (प्रसु 1 (945 पद्मस् न [पद्मस्त्र] तृष्ठ-विशेष पुष्पन (पर्ण् २ ३४ पार्थ धार्मा) । पीइय म ["पीठक] वचात का बासन (निष् १२)। पक्षस्मा वि [पद्धास्त्रक] पनाल—पुषाल का भग इया (याचा २, २ ३ १४)। पञाद एक सिरास मिगाना, नह करना । पताबद्ध (हि. ४ ३१)। पकाव ने प्रियायों पानी की बाह (तंतु ध पक्षाव दे जिल्लापी धनर्थक माध्या वक्याय (मक्षा)। पक्षावण न [साशत] नष्ट करनाः अवस्ता (इमा)। प्रधावि वि प्रिसापिन विकासी वर्षक फ्लानिशी एसा (क्रूप २१२, संबीय ४४ मिम ४६)। प्रजाबिक नि [प्रक्रबित ] द्वारा ह्या, क्लाया ह्या (सुर १६ २ ४० <del>द</del>्राप्त १०० १७ स्तः)। प्रसाविज वि [प्रसायित] प्रतर्वक वीरिय करणाया क्रमाः न्यंबर् कि बुक्बरिक प्रवाधित धन्नस्यक्षाहो नार्ज धन्यानिज" (भवि) । प्रक्रांचर वि प्रस्कृपिया वश्रमाद करनेवाका 'यहह बरोबञ्चपद्यानिरस्त नपूजस्य पेश्व नह

बाह्यद्वेश इए वा चुनिए वापसियं पर्वते (बाका१ ६ २ २) । इ. सर्म सम (बरचा १ं≥१२२)। ६ तपा ७ कर, विकिष्टिका। १ वृद्धः दृद्धः (ह १ २१९) । १. पका हमा पर्वत (वर्ने स निष्क १६)। ११ वध-बस्तः 'न हि दिन्बह আহুমর্ড বনিবভ্রমন্ত্রমুক্তর (যার)। हाय "अजन ["स्वान] <del>कर्मस्वा</del>क कारणाना (प्राचा १ ६ ६,२)। पश्चित्र न [पश्ची चार भर्य दा तीन ही शीव क्रम्बाकी नाग (तंदु २६)। पक्रिक देवो प्रक्रणपाद (पद १६०- प्रक भी रहा लग रा वं २७)। पश्चिम (बर) वेबी पश्चिम (सिंग) । पश्चिमेक प्रेपिय हो पर्वत बाट हि र ६० तम ३६ घीत)ो आसम व ['आसन] बा<del>दन-रिशे</del>ष (दुपा ६३६)। पक्रिजंकर की [पद्धाः] पदासन करन-विशेष (ठा ४, १—पत्र १)। पश्चित्रंच प्रश्न [ परि+क्षमा ] १ धनवान करना (े ५ ठवना । १ ब्रियाना थोपन दुरश्री' (भूगा २ १), 'विन्तनाशीय अपेड, करमा । प्रश्नितंपीत यशितंपनीत (एस १७ एसो एवं पवानियों (तुपा २०७)। १६। पूप १ १६ ४)। शह- पक्रियंत्रेन पन्नम पू [पद्धारा] १ इस-विरोध विद्युक (याचा २ १ ११ १)। वह पश्चित्रं बसाज नाबूब क्षक (बण्या १६२ ना ३११)। २ (बाचा१ ७ ४ १) २ १० १ । फार्स्ट (करना 📳 या ३११)। ३ पून पश्चित्रंचम न [परिकुद्धान] नामा कपट वर्ष बता (पार्थः बण्याः १४२) । ४ ध्यासन (तूम १ ६, ११)। बन का एक विष्हत्ती कूट (ठा — यव ४३६) परित्रंच्या की [परिकृष्णका] १ तन्त्री हक)। वत्तवी विद्याला। २ मार्च(AIV \$

हो---पत्र २ )। ६ प्रायदिकत-विशेष (ठा ¥ 1)1 पश्चित्रिक वि [परिकृतिक्षम्] मावाबी कपटी (नव १)। पश्चितंत्रिय वि [परिकृत्रित ] १ वरिवत । २ म माया कुटिमता (वद १) । १ <u>प्र</u>व-कन्दर का एक कीय पूरा कन्दन न करके ही गुर के साथ बार्ड करने सब जाना (वब २)। पछित्रंजिय देशो परिवक्तिय (भन)। पश्चित्रच्यक्त केलो पश्चिआच्छक (धावा १ 2 ( 4) 1 प्रकारमहर देशो प्रक्रिओसूड (सीप-इ **₹** (ट) | पिछडिक्य वि [परियोगिक] परिजानी बानकार (सप २ ६)। पश्चित्रक देखी पश्चित्रक (नाट-विक १६) । पश्चिमोच्छम वि [पश्चित्रावच्छम] कमी-ब्राज्य कुन्नर्भी (घाषा १ ६,१ ६)। पश्चिमोरिक्स वि [पर्यवस्थिस] स्मर देखो (बाचा मि २६७)। पविशेषक वि [पर्यविश्वस ] प्रचारिक (धीप)। पश्चित्रीयम पून [पस्योपम] समय-मान विधेय काल का एक धीर्ष परिमाण (ठा २. ४ भग महा) । पश्चिमा (शी) देखी पहिण्या (पि २७६)। पिक्क चलमा देवो पिक्क चला (सम ७१)। पश्चिक्त्रीज वि [परिश्रीण ] बय-अच्छ (तूप २, ७ ११ मीप) । पश्चिमाच र्षु [परिग्रोप] १ वच्य, शास, कारी । २ माशकि (सूम १ २ २, ११) । पश्चिम्बरुग ) वि [परिच्छक] १ समनाव पिक्सम । ब्यान्त (सामा १ १--पत्र च=ा १ ४)। २ निक्**ट री**शा हकाः 'रोचेर्डि पनिष्क्रमेद्दि'(बाबा १ ४ ४ २)। पक्षिण्डाअ तक [परि+झाद्य्] स्वता धान्धास्य करता । पश्चिमद्राप्त् (धान्ता ए 2 2 S) 1 पश्चित्र सक [परि+ विद्] केल करना काटना। संक्र पश्चिष्टिहरिय पश्चि-चित्रदियाणै (याका १४४ ४ १३१३ ર શ)ા

काटाह्मा (सूम १ १६ ४८ प्रम ४०% पुर १, २ १)। पशिष्य वि मिथीसी क्वनिय (क्रूप ११६ सं ७७ भग)। पश्चिपाय रेको परिपाय (सुम २, ६ २१) पाचा) । पक्रिय्य सक [प्र+वीप्] जनना । पनियद (थकः प्राक्क १२) । वक्क पश्चिम्पमाण (बि २४४)। पश्चिमाद्वर } वि [परिवादा] हमेशा बाहर पश्चित्राहिर र्रे होनेवाँचा (दावा) । पर्ख्याग व [परिमान, प्रतिमान] १ मिवियाको धेरा (सम्म ४ ८२)। २ प्रकि-नियत बीरा (बीबस ११४)। ६ साहस्य, समानता (राग)। पश्चिमित सक पिरि + भिद्यो १ वानना । २ बीलना । ६ भेरत घरता, वीकृता । संक्र पश्चिमिवियाणं (बूप १. ४ २ २)। पश्चिमेय व [परिभेद ] पूरमा (निष् ४) । पश्चिमंश सक पिरि + शम्ब ] वांचना । पविमेक्य (बच १, २२)। पिक्रमेश द्र [परिश्रम्व] १ विनाश (सूच २, २६:विसे १४४७)। २ स्वाच्याय-व्यावातः (क्य २६, १४: धर्मर्स १ १७) । १ विका बाबा(सुघ १२२,११ टी)। ४ सूबा, म्बापार, व्यर्थ क्रिया (यानक १ १) ११२)। पश्चिमंत्रम र्वं [परिसम्बक्त] १ काम्प-विशेष काला थना (सूध २ ९ ३३)। २ सीस भगा । ६ विसंव (धन)। पश्चिमीयु वि [परिशम्य] सर्ववा वातक (डा ६---पत्र ३७१ क्य)। पश्चिमह देवो परिमहा परिमहेरका (पि १५७)। पर्तिमङ् वि [परिमर्दे] मानिश करनेवासा (मिषु ६) । पश्चिमोक्स रेको परिमोक्स (प्राचा) । पश्चिपंचान न [पर्येश्वन] परिप्रमण (सुर ७ १४३)। रेको परियंचण ।

पश्चिमंत र् [पर्यम्त] १ धन्त व्यव (नूच १

३११४)। २ कि संस्तुतकालाः सक्तः

वाला 'पनियंत मणुयाख वीविय' (मूच १, 2 2 20) 1 पिरुवान्तर् । पश्योगम 🕏 भौतर(सुष १२११)। पिक्ष्यस्य ग पिरिपार्थे । समीप पास निकट (मप ६ १---पच २६८)। पिछल वैको पिछिल = पिरत (है १ २१२)। पख्रिम केवो पद्धीव । प्रतिवेद्द (मि २४४) । पश्चियम वेको पश्चीयम् (राज) । पश्चिषिक्ष वि [प्रदीपित] बनावा हुमा (पर् **₹१११)**1 पश्चिविद्धसम्बद्धाः परिवि + व्यस् ] नष्ट होना । पत्तिविश्वंसिन्जा (सरा १८ )। पिंक्सिय ) स्व [पिरि + स्वज्ज ] मासिगन पब्रिस्सय करना सर्ध करेना धुना। पश्चिस्तप्रमा (शह ४)। शह- पश्चिसयमाणे पुष्तव को सङ्गा याग्यमाधिय (बुद्ध ४)। **बेट** पविस्साइडं (ब्रह ४)। पविद् देवी परिष्ठ् = परित्र (राज)। पश्चिद्व वि [दे] पूर्व वेवकूक (दे ६ २ )। पब्बिद्द की वि क्षेत्र बेठा निकासिक्षदेश शोहिषि किसिक्तम काउमाइल (सूर १६. पिस्स्य न 💽 ज्ञानं शव कान्न-विरोध (R & 25) i पश्चिद्यय पुँदि] करर देखी (देव १६)। पर्छा एक [परि + इ] पर्यटन करना अपस क्या। पतेइ (सूम र १३ ६) पतिति (तूम ११४१)। पर्छन पक [म + की] सीत होना सासच्छि करता। पनिति (सूच १ २ २ २२)। वह. पहोमाण (थाचा १ ४ १ ३)। पर्याण वि [प्रसीन] १ व्यक्ति नीन (भग २५ ए)। र संबद्ध (नूप १. १ ४ २)। ६ प्रसय-प्राप्त नष्ट (पूर ४ ११४) । ४ विसा ह्या नित्तीन (सूर १ २व)। पक्षमंथ देखो पक्षिमंध (सूच १ १ १२)। पळीन सक [ प्र+दीप ] वसका । प्रशेवद (देश १६२) पर्)। पर्लाथ सक [प्र+दीपय ] बताना बुलवाना । नतीनद्द पत्नीनेद (नदा- है १ १२१)। इंड पर्कविक्रण, पत्नीविक्र

વહર	वाइअसहमहण्यभो	पश्चीच—पछि
पक्षेत्र पुं[प्रश्राप] शेवर शैवा (प्राष्ट्र १२) वर्)।	पस्त्रोट्ट तक [ प्रस्या + ग्रम् ] बीटना, बापस माना । पर्वाट्टस (है ४ १६६) ।	पर्द्धमञ्जन [प्रसङ्घन] १ मिटरमश (छ ७)। १ नमन, मिट (बच २४ ४)।
पद्धिया हि [प्रनेपक] धाव सनवेशना (पद्धिया हि [प्रनेपक] धाव सनवेशना पद्धिया हि [प्रनेपक] धाव सवाम्य (धा १८: द्वा २६)। पद्धियावा को उत्तर केनो (निष्टु १६)। पद्धियावा को उत्तर केनो (निष्टु १६)। पद्धियावा को उत्तर केनो (निष्टु १६)। पद्धियावा कि [प्रनेपिक] प्रमान (धा)। पद्धियावा कि [प्रनेपिक] कनावा ह्या (वर)।	प्रस्नेष्ट्र सक्त पुरित्न अस्त ] १ व्हेंब्ला। २ सार विरामा। १ सह प्रमाना विरामेत होगा। ४ स्रामि करता। १ गिरमा। प्रमोट्टा प्रमोट्टा (हे ४ २ । क्या कुमा)। वह प्रमोट्टा (हमा ६६ या २२२)। प्रस्नेट्ट पद्मा ६ स्मान्टा अमीन पर बोल्या। बङ्ग प्रमाहेत (मे १, १०)। प्रस्नाट्ट हि प्रपेरनी १ किंत केंता हुया। र हुए। ६ विरोमा (है भ ११)। ४ प्रक्रिट, गिए हुमा (स १७)। १ स्वृत्त	पहला को पढ -पल (तिते क क)। पहलू केवां पलटू - पति + सन्। पलटूर (है ४ २ मित्रे। संक्र पहलूर्ज (नेना १६ १२)। पहलू दें [रे] पर्यव्यक्ति (पण्ड १ ४)। पहलू दें [रे परिवर्ज कामनिष्ठेर समय काल कर्म का काम (बज ४०)। पहलू दें [रे परिवर्ज कामनिष्ठेर समय वाल कर्म का काम (बज ४०)। पहलू दें [रे परिवर्ज को पलाह = पर्यक्त (है १ ४०) पहलूर्ज के [प्यतिह] सरसम्भिष्ठेन कर्मण्ड
पसुट्ट कि [मसुटिंग] केन ह्या (दे १ ११६)। पसुट्ट करो पस्प्रेट्ट = वर्षस्य (द्वे ४ ४२२)। पसुट्ट करे वे प्रस्नाहित्र = वर्षस्य (द्वा ४ ४१)। पसुट्ट वि [प्तुष्ट] क्या वसा ह्या (पुर १ १ दुरा ४)। पस्नामा केवी पसी = म + सी। पस्नामा केवी पसी = म + सी। वास्त्य वसास्त्र वृं [मनव] एक वास्ति वा प्रवद, बास्त्रपूर्वनिये (वी १)।	पेक्षां वरण्या ठथो पहोहा बवा कता छोवां (दुवा)। पक्षद्ववीद् वि [वे] ज्यान्यनेये वात कां नक्ष्य करवेशमा (वे १ ११)। पक्षित्य म [म्हाध्या] बुक्काचा बुक्काचा विकास (व्य ११)। पक्षाद्विक्ष केको पक्षोद्व = पर्वता (दुवा)। पक्षां पक्ष [य + ध्यस्य ] चुवाचा तालव का। क्योचीत्यों (गी) (शस्य —गुच्च १११)। पक्षोमां वि [महासित] बुक्काचा हुणा	जारकारणं प्रज्ञानिक्षणं विकादिवाणं व । क्याकार्यक्रम्या निर्णुपणी सन्द्र वरणां।' (क्या क ) । केच प्रकृतिकारा। पञ्जा न [जरूपति] कोच्या तमात् (क्या कि काव्य दे दे जुल ६४५, व ४२ )। पञ्जा बुं [जरूपति] दे किस्मान कोचूर (क्या मीन)। र पण जाता (क्या दे रहे)। दे केन विचेष (क्या)। प्रविकाद कोच्या कि
पसोश वर्ष [ म + तर्गव स्थापन] केरल निर्माण करवा वनोत्तर, वनोत्तर वर्गेत्रर (क्ष्मण, म्द्री) व वं वर्गेद्रश्यक्त (क्ष्मण) वर्ग प्रस्ताभेन प्रशोधभंत पर्या स्व प्रस्ताभान प्रसामन (क्ष्मण क्षेत्र) स्व प्रसामन (क्ष्मण क्षेत्र) भूग स्व क्ष्मण क्	(व्यक्ति ११६)। पक्षाम्म वि प्रिवासिम् विशेष सीधी (वर्षि ७)। पस्मामम वेषी पद्मामधिम (पुरा १४१)। पस्माम (वर्ष) वेषी पस्माम (क्षीर)। पद्माम (हर्ष) सेषी पराम (क्षीर)। पद्माम (हर्ष) सेषी पराम (क्षा १ मा)। पद्माम (हर्ष) सेषी पराम (वाह)। पद्माम (वर्ष) सेषी पराम (क्षा १ सेष)। र वाम परने कार्यण (र १२० का १ १)। र वाम परने कार्यण (र १२० का १ १)।	पहचान हों। तम केट (दे द १६)। पहचीन हिंदू। वाधा-एक (दे दे ११) पहचीन हिंदू। वाधा-एक (दे दे ११) पहचीन हैंदिशहरित] र पहनामा (दे ६,१६)। दे संद्रोंक प्रापुत्त, जनम (दे १)। दे पहनानुक (रक्ता)। पहचीन हिंदु पहनानु पहनानुक (दुना ३, वक्त १४)। पहनाने केटी पहना हुए १६४)। पहनाने केटी पहना व्यक्त पहना दुना पहनाने केटी पहना हुए १६४)। पहनाने केटी पहना व्यक्त पहना दुना पहनाने केटी पहना व्यक्त पहना दुना पहनाने केटी पहना हुए दुना पहना हुना पहना पहना हुना पहना हुना पहना पहना हुना पहना हुना पहना हुना पहना पहना
है)। प्रमाद्व दि [मामन्ति] मैग्रह (बीर)। प्रमाद्व दि [मामन्ति] हैका हुआ (व ११ वदा)। प्रमाद दि [मामन्ति] मैग्रह (स १ वदीर)। प्रमापनी हैको प्रमास क्लोपसार है हैको प्रमास क्लोपसार है हैको प्रमास क्लोपसार हैने हो।	पात द्र[पात] वाण्य वरणे का वाह कीटा कहरे बक्का वालीलों प्रीकृतला विद्वतिं (शावा १ च—पात ११२)। पद्धिक वेद्यों प्रतिक्षति (है १ ६ १ वर्ष)। पद्धिक देवों प्रतिक्षति (है १ ६ १ वर्ष)।	पकाण न [यर्गम] पर वर्षत ना ता व किं वर्षणी प्लाणं नगोड़ पत्रमो तप्त (वर्षा रेका नारा)। पद्मान कह [यर्गमय] वस्त आदि नो बनामा स्मापित (वर्ष)। प्रमानक कि [यर्गणात्र] वर्षण-कुळ (तुमा)। पति की [यर्गणात्र] वर्षण-कुळ (तुमा)।

नाह तु िनाय] पक्षो का कागो (भूग १११ पुर २, ६६) । यह तु िनति वही पर्क (बुद १ १६१: पुग १२१) । पक्षित्र कि दि १ धाकण्य (निकृष) । २ कस्त (निक १) । ६ प्रेरित 'पक्षट्टा परि-धाष्ट्रक्य' (यदा ४७) । परिच कि दि ] पर्वस्त (यह) ।

पक्की रेको पिक्क ( यउड र्यका १ वर्षः गुर २ २ ४)। प्रदेश कि [ग्रन्थेंग] क्लिप सीन कुर्विपर क्रम्केश क्लिपो किहुई (पन २१ ७) क्ल्म्य)। पक्कोट्रक्तप्र [व] देको पक्कोट्स्थीह ( वर्ष् )। पक्काट्स्व केनो पक्काट्स्य कि १ वर्षः (१४२ १)। कक्काट पक्क्त्येव (वे १ १३२ १)। कक्काट पक्क्त्येव (वे ६ वर्ष ११ ६९)।

पस्त्रम परु [वि+रेषण्] बाह्य निका-सना। पाह्यद (हे ४ २३)। पाह्यस देवी पस्तेद्र = पर्यस्त विकास

पाहत्पपुरे (मूम २ २ १६ हे ४ २६०)। पाहत्यण न [पायसन] टॅंक केना प्रजेपल भागता श्वरूपकर्षणणकाको स्मृद्धित हुटु पारस्यो (मोह

पस्क्रस्मरण देवी पचरवरण (त ११ १ व)। पस्क्रस्वावित्र वि [विर्पणित] बाह्र विवस बाबा हुन्य (कुमा)।

पस्दित्यञ्ज देशो पद्मीद्ट = वर्षस्त (व » २ : एगमा १ ४६---पत्र २१६, सुना ७१)।

पक्षियार की [यमैन्ति स्त्र] प्रावक्तिकेल— १ दोना बातु बहा कर पीठ के साथ कारक कफ्कर कैटना (क केट) २ दोबा पत्र कंट्रकर कटना । व जीवा पर पाव प्रवक्त बैठना (क्व १ ११) । पर्दे हुँ [यद्द] योगन्दु (पत्र)।

पस्य १५ [पद स्व] १ सवार्य देश-पस्य ो क्रिंग (क्रम द्वाम दक) । २ वृंकी. पद्म देश वर निराती (क्रम ६, २—व्य रच वंत) । वी वी, विद्या (नि १६) । वीरा एसा १ १ —व्य १७ १८) ।

पहत्वि पुंची हिं पह स्विधः हानी को पीठ पर विकास बाता एक तरह का कपड़ा 'पन्हति हत्वस्वर्धा (पन बर)। पम्हवियां } वेलो पल्हयः। पम्हवियां

परहाय सरु [प्र=ह्स्स्य] धानन्तित करणा कुटी करना। परहायद (वंशेष १२)। शह पन्धार्यत (स्त्र मुद १ १२१)। ह रेजो परहायभिज्ञ।

पल्हाच युँ [मह्स्यायुँ १ मानन्य नुती (कुमा)। र हिरगपकिरायु नामक देख का पुत्र (हूँ २ ०६)। ४ सातन्त्र मितायुरेव एका (वज्ज ४,१४६)। ४ एक विचायर निर्देश (उच्ज ४६,४१)। पण्डापका वृद्ध होत्र (उच्ज ४६,४)। पण्डापका वृद्ध होत्त्र होत्र होत्

सुबर (पत्रत १६ ११)।
परस्वायणिका वि [प्रस्क्षावनीय] याकव बनक (शाया ११—पन ११)। परसीय वे व [प्रस्तिय वेट-विटेट

(पडम १८ ९९)। पद्म सक्ष [पा] पीना। क्ष 'भरसमझा स प्याप्ताच्चा स्पा' भासं सासिद्दित' (भम ७ ६—पत्र १ १)।

पर्यग द्र[प्छवङ्क] १ वानर (ते २,४६ ४

४७) । र बानर-वंदीय मनुष्य । नाह् र्यू

[िताथ] बानर-वंशीय राजा बानी (पत्नम १ २१)। यह वुं [ैपिठ] बानरराज (पि १७१)। पर्यगम वुं [प्रत्योगम] १ बानर (पाम' से ६ ११)। २ सन्य-विशेष (पाग)।

६ ११) २ स्टन-मिये (पिग)। पर्यंच श्रृं प्रिपञ्च र तिस्तार (उन १६ दी बीत)। २ संसार (प्रूप १७७ वन)। ६ प्रवारण कवार (उन)। पर्यंचण न प्रिपञ्चन निष्ठतारण नवान

जगार्थ (प्रसुक्त) (प्रशास क्या) क्यार्थ (परहुर १ — यह १४)। पर्यंचा को [प्रदक्का] मनुष्य को दश दशायों में सात्रवीं दशा—६ से क वर्ष को प्रयस्पा (सार्थ केंद्र १६)।

पर्वश्विक वि [प्रपञ्चित] विस्तारित (या १४ कृत ११२)। पर्वद्व तक [प्र+थाञ्च,] बाञ्चना विकास्य करना। वक्र पर्यक्रमाण (उप पृ १८)। पर्वत केले पम = प्यु।

पर्वतं केंद्रों पम — प्यू ।
पर्वपुक्तं कृत [क्षेत्र] मम्बद्धी पक्कृते का बाल
विदेश (वित्या १ ——पण स्थ्र) ।
परक वि [प्रव्यक्त हैं रेजन-कृत करतेवाता ।
१ वैरतेवाता (पर्गृत्त १ रो —यत्र २) ।
१ वृत्त्यों । ४ देवनाति-विदेश मुख्यं हुमार नामक देव नाति (पर्गृत्त १ ४—पत्र १३ )।
परक्तसमान देवों पद्म प्रस्त प्रमान स्था

पप्रज्ञ यक [ प्र + पश्ची स्थीकार करता । पद्मम्बद्ध, पद्मित्रका (स्थि दिन १) । पदि पद्मितिहित्त ( पा ६९१) । वक्ष पद्मजीत (या २७) । तेक्ष पद्मित्रत (सीह १) । इ पद्मित्रपत्र (येग ११) । पद्मकाण व [प्रपद्म] स्थीकार, व्यंत्रीकार (च २०१ वेगा १४ - ध्यावक १११) ।

पविशिष्य वि [प्रपन्न] स्वीहत होयीहत (वर्गीत १३ कुत्र २६४; पुरा ४ ७)। पविशिष्य वि [प्रवादित] को बबने बना हो। (ए ७१६)।

पवित्रय देवी प्रवत्तः। पवह वक [अ+धून्] प्रवृति करना। पवृद्ध (वहा)। का पूर्व (परुष ६ ६०) । चौड पूर्विषण्डी

व्यक्ति-भाषक नाम (महा)। राजम प्रै

(सम्)।

(बड के २ २६ 🗗)।

पवट्ट वि [प्रकृत्त] विक्रने ब्रकृति की हो वह

प्रमुख्य वि जिल्लाको अनुस्ति करानेनामा

पबढ़ि की प्रवृत्ति प्रवर्तन (हम्मीर १३)।

प्रवृद्धित वि प्रवृद्धित । प्रवृत्त विमा हुमा

पंचय हेवी प्रथम = प्र + वह् । वहु- प्रवर्गान (भाषा) । पश्चनि और [प्रशृति ] इकता, पान्कावर

(समित क) । पवळ केवो पवळळ⇒प्र+क्वा सक

पषद्धाराण (पेश्व ६१६) । पवळ दं वि] यम, इसीझा (वे ६ ११) । पष्टिय जेवी पविदय (महा)। पक्क वि [मपक्क] १ लोक्स्य मेन्टेक्स (वेदम ११२ प्रात् २१)। २ प्रस्तः 'पुकाश्चप्रचिवणकानामास्यो' (म्हा)। पषमाण रेवो पव 🗢 पर । पक्साज 🐧 [पक्सात] पश्रन वसु 🖫

भारता बुवा नहीं)। पद्य तक दिन + बद् ] १ बक्तन करना। २ बाक्-विवाद करना । बहु- पदयमाण (पाप्ता १ व. १. १)। पक्य तक श्रि + श्रम् ी शोतना कहना । याचे कमक प्रमुख्यमाण (बर्मेंड ६१)। कर्म श्रृष्ट्या प्रमुखी, श्रृष्टीत (क्रम नि

१४४३ घर)। पथ्य केवो पक्क = जनक (स्प दृ २१) । पश्च र्थ [प्यापा] बानर, कवि (पत्रम ६% दाक्के∀ २२ । पाम से २ कका **१**%, १७)। बहुर्द ["पदि] बानपें का उना बुधीन (से २ वेश) । "विदेश दूर्व ["विद्य] बद्धो प्रवीक्त सर्व (स. ५ ४ ३ १२, ७ ) ।

पवक्य प्रे [प्राज्ञन] क्षोड़ा बाहुक दि % 1 (05 पषयण व (प्रवचन) १ विवदेश-बस्टीह धिकल्य कैन शाका (मरा १ ८ प्रापू १=१)। २ मैन बंगा भ्रमुकपुरामो धंनी पनक्छ शिर्म सि होइ एनहाँ (वंदा व वशामिते १११२० जन ४२व हो। धीरा)। वै कावप-कान (विशे १११२) । माचा की

वर्ष (श्रव १३)।

[मावा] पांच बर्मित और तीन चौत का

पक्र वि[प्रभर] येह बत्तम (बना हुरा

वेदेशः वेप्टरं शासू १२१; (१४) ।

ितनयी अनुमान (से १ ४०)। नेतृप्त पू निम्बन हिनुमान (प्रजम १६ २७ तम्भव १२३)। प्रच प्रशिव दिवसान (पत्रम १९ २०)। श्रीगर्व विगार ब्लाभान का रिता (पत्रम १४८ ६६)। २ एक देन हुनि (पठम २ ११)। ह्यका प्रशिक्ती इसमान् (पडम ४३, १३) छ ४१६ ७ ४५)। । जंद द्र िनव्ही ह्युपान् (पदम ४२ १)। यक्ष्यंत्रञ पं पिक्तञ्जयी १ अनुगण का पिता (पक्षम १६,६)। २ एक वेहि-पूच (কুল ३४७)। पन्नजिय वि प्रिविदिती पुल्व किया प्रधा तंदुरस्य शिया शुक्रा (चप **७६** टी) । पवण्ण केलो पवस (४ए) । थवन्त केवी थवड़=श+इत्। पवत्तर, पक्तए (पन २४% धन)। पवस सक प्रि+क्वेयी बद्द करना। पनसंद, पनसेक्षि (वन १; वप्प) । प्रवास देवो पन्छ = शक्त (पटम देर ७ ३ स १७६ (मा)। पमचरा वि [प्रवर्शक] प्रवृत्ति करानेवाता (यम १३१ टी: नर्मीन १६२)। यवचल व प्रिक्चेंनी १ ल्युचि (देश ६ क्ट ११ १)। २ वि प्रयुक्ति कटलेवाला (ब्रस: ३१: व्यक्त: १३) । पवचय नि [प्रवर्चक] १ प्रवृत्ति करोगाना (के २ व )। विश्वपूर्य करानेमाच्या "तिरचनरप्यचर्चर्य' (प्रणि १ ३ वन्त्र १ १ )। पंषरित स्वै [प्रकृति] प्रवर्तन । वातय वि िंडवापूरा शकुत्ति में सवा हवा (बीच)। थवरित वि जिल्लीचन । अवस्ति करानेवाला (ठा ६ ६ कक्षाक्षा)। पविचर्या और [प्रयोचनी] साम्बर्धा की

धम्बदा पुरुष वैत्र शामी (तुर १ ४१)

पर्वाचय वैची पवड्डिश (रात) ।

म्यूर)।

(मिरि पे)। पबट्ट देखो पबट्ट ≕बकोहर (दे १ १३६) । प्यवस्था प्रिम्पन् प्रकाशिस्ता। प्रवृद्ध प्रवृद्धिका प्रवृद्धका (भगः कृप्प ध्यका २ २ ६ ६)। वह पत्रबंध पवडेमाण (छामा १ शः स्रिटि ९ शः याचा २२ ३ १)। দৰভাৰ প্ৰিদেশনী ঘৰ দাব (বাছ %)। पण्डम्म ) भी प्रिपतना विलय केली (हा पवडणा 🕽 ४ ४ — यम २० । एक)। पवकेमाण देशो पदशः। प्रवद्ध यक दिं] योदना स्रोता 'चाव তৰা বৰছহ তাৰ পট্টাই দিখি অক্ষান্তৰ্ণ (बुप ६,१)। प्**नदक्ष** सक्ति + क्य**ी** नदना । पनद्वद (क्व) । वक्क पवद्वसाय (क्व्या सुर १ रे राष्ट्र १२४)। पवद्द नि [प्रपुद्ध] वटा हुआ (सम्बर्ध)। ঘৰতত্ত ব সিৰ্মনী ং গ্ৰাণ সৰুতি (संबोध ११) । २ वि वदानेनामड 'संसारत्स पमण्डी (सम ११२ २४)। पविद्वय वि प्रविचित्त विश्वासः ह्रया (स्रवि)। पमण वि प्रिवासी १ करार (बुल १९४)। २ वंदरस्य स्वस्य सुरवः पश्चित्ररियो द्या प्रवस्तो पुष्पं व बहास संजामी' (का ११७ दी: १प्र४६ )। प्रवास [प्रदासने] १ बद्धन कर गमक (कीव १) । १ तरण 'वरिज्ञानस्य परहर्थ (? बल) किये (लाया १ १४--पण १६१)। "हिन्द र्दु ["कृत्य] गीवा नाव, शॉवी (ब्राया १ १४)। प्रयादं [प्रया] १ त्यम वाहु (पामा प्राक्तु १ २) । २ देर-जाति विदेश समाप्रति देशों मी एक सवान्तर वाति, वदवदुशार (श्रीप: नहरू १ ४) । **१ तुमान्** वा सिता (के १ पयरंग न [दे प्रयस्ता हिंद, मस्तक (दे ६,२४)। पदर्युक्रीय पुन [प्रयस्युण्डरीक] एक देव-विवान (प्राचा २ १६,२)।

वननवर्गात (भाषा र ८६, र)। पद्मरा की [प्रवरा] प्रगवान, वासुपुरुष की शासनवेदी (पद २७)।

शासन्दर्भा (पन रण)। पवरिस सक [प्र+कृप ] बरसना वृष्टि करना। पनरिसद्द (मनि)।

पक्छ देखो पबस (द्या क्रुप्र २४७)। पवस सक [प्र+वस ] प्रयोग करणा विदेश कला। वक्र पवसीत (से १ ५४ या १४)।

पप्रसाम में प्रवस्ता प्रवास विदेश यात्रा सुक्षांकर्श (व ११६ वन १ ११ दे)। पवस्तिक वि प्रोमेतित । प्रवास में वस हुआ (स ४२ च ४ : बुर ४,२११ सुना ४०६)। पवस् यस [ प्र+वस् ] १ बहुता। २ सक. टाकना मत्या। पवस्स (प्रीमे विच)। वह पवस्स (प्र१२ ७४)। संह

पमह सक [म+हम्] मार कासना। मह 'पिन्धत पनहुँदं मनम करनले कसिय

करवामं (पुपा १७२) । पवह वि प्रियह १ वहनेवामा । २ टपकने-वाकः कृतिकाः यह सामाः कर्मसस्य

बहामाँ (विचार १ — चन १६)।
पद्य दुं प्रियाह है क्षेत्र बहल बल-बारा ,
(या १६६, ४४६ कुमा)। २ प्रकृति । ६
स्थलहार । ४ बद्दान स्टब्स (११६ ६॥)। १ |
प्रमाद (यन)।

पवहण पूर्व [प्रवहण] १ तीका बहात । (शामा १ १ वि ११७)। २ माही माहि बाहत 'पुरकामा विशेषसम्बा विश्वसम्बा वरहरूकमा' (तीन तमुः बाह ७ )।

पवदाइअ वि [वि] प्रवृत्त (वे ६, १४)। पवदाधिय वि [प्रवाहिस] बहावा हुया (धवि)।

पपा की [प्रपा] जलवान-स्थान वाणी-शाला, ध्याक (बीर पएड १ के महा)। पदाइ वि प्रिवादिन है। बाव करनेवाला

पताइ वि[प्रचादिन्] हे कांच करनेपालः - नारी । १ बार्गनिक (तुस ह**ेड हे चड** - ४७) ।

पवाइक वि [प्रवात] वहा हुमा (वायू) 'पवाहमा कर्मवदामा' (स ६८१) पडम १७ २७) सामा १ ८ स ११)।

२७) सावा १ क स ११) । पयाइज वि [प्रवादित] बनावा दुमा (कप्प भौर) ।

कीष)। पत्राण (क्य) केची प्रमाण – श्रमाण (क्वम, पि २४१ स्रक्षि)।

पवाड सक [ प्र+पादम् ] विचना । वह पवाडेमाण (स्व १७ १—पव ७२ )।

पनाके साण (भग १७ १—पत्र ७२) पत्रादि देखी पर्याद्र (वर्मेर्ड १३३)।

पदाय धक [म + वा] १ पुत्र पाना। २ बहुना (हवाका)। ६ एक वमन करना। ४ दिशा करना। पदायह (माइट ७६)। वह पदार्थन (साचा)।

पषाय द्वीप्रधादी १ व्यवस्ती बनमुद्रिः (तुपा १ व्याद्वा २१)। २ परंपाः प्राप्त व्यवस्ता । २ मत वर्गन 'पशस्युक्त पश्चारं बारोजन' (प्रापा)।

पवाय हु [प्यात] १ वर्ष गक्का (खाया १ १४—वर १६१ दे १ २२)। र उदि स्थान वे विष्णा कल-व्यूह (खप तर)। १ इट-पिंहर निपातर पर्यक्र-स्थान । ४ पत में पद्मीताली वाह नाए (पत)। १ पतम (ख १)। इह दू [हूद] नह दूपर वहां प्रवेश पर वे नये। पिछी हो। (ख २ १—

यम ७६)। पनाय प्रशिवात ] १ प्रक्रट यक्त (परह २ ६)। २ वि सहाहुप्रा(यक्त) (संक्षि ७)। १ प्रका-स्रीय (इड १)।

पमायन वि [श्रिशाचाक] पाठक सम्बापक (विदे १९२)।

पनायम न [प्रवाचन ] श्राटन धम्पक (सम्पत्त ११७)।

पवायणाकी [प्रवाचना] करर देवी (विसे २०११)।

पत्रावय केको पद्माध्मा (विदे १ ६२)।
पद्माख पुन [प्रवास्ते] १ नवांकुर, विकल्प (प्राप्त वेशरे छाता १ १ सुपा १२१)। १ भूँगा, विदुल (प्राप्त कच्च))। सैत सेन वि [ वन् ] प्रवास्तवासा (छाता १ १। सीत)। पवाळिश्र वि [प्रपास्तित] वो पासने सवा हो वह (उप ७२८ टी) !

पवास वृं प्रिवास] विशेष्य-ममन पररेष्ठ-मात्रा (तुरा ६१७) हेका १७) शिर ६१६) । पत्रासि १ वि प्रिवासिम् प्रवासिर (गा पवास ) १० पहः पि ११० हे ४०

पथाइ सक [म + थाइस्] बहाता कताता। पवाहद (सवि)। मनि पवाहिति (विधे २४१ टी)। पशाइ देवो पशह = प्रवाह (हे १ ६ = = २)

कुना साथ ११४)। पषाइ पुरियाच ] प्रकट स्पैका (विना १ १----पत्र १)।

पवाइत्य न [प्रसाइत] १ क्या पानी (पानप)।२ वहत्ता वहत कपना (वहस १२६)।

पिषे द्वै [पिषे] यज्ञ रुक्त का सक्त-विरोध (क्य २११ टी सुना ४६७) क्रुमा समेनि ८)।

पविश्रंभिज वि [प्रविजन्मित] प्रोक्सिति सङ्गलन्स (सः १६ व्र) । परिजाकी [दे] पक्षीका पल-पाद (१ ६.

पावजा की [व] पक्षी का पान-पात्र (दे ६. ४ = १२: पान्न) : पविष्णम वि [प्रवितीर्ण] दिया हुमा (सीर) :

भारत्य व भारताण ग्रावण हुमा (बार)। पविष्ठण १ वि प्रिकिटीण १ व्यास पविष्ठल १ (धीर छाता १ १टी —यन १)। २ विसित्त तिरस्त (छाता १ १)। पविष्ठस्य सक प्रिति + कस्यु ] सारत्यन्तामा

करना । पनिकरमई (छन ११) । पनि असिय नि [प्रियमसिव] प्रकर्ण हे निक-विव (चन्न) ।

पविकित सक [प्रिये + क ] फूँकना । वह पविकित्साण (ठा व) । पविकितान वि [प्रवीक्षित] निरोजित

धननोधित (स ७४६)। पविविच्यर देवो पविविद्ध 'नानिसम्ले स संड पविविद्धति समुहस्मि' (मुर १३

२ १)। पविषय वि [दे] विस्तृत्र (यह्)।

पनिवरिय वि[प्रविवरित] पमन-दारा सर्वत्र

श्वन्त (हुमा) यक उत्तर ४३)। (क्टरी १४)। पश्चित्त रेखी पब्दट = प्रदुत्त (त ६ १४)। पश्चित एक [पश्चित्रय] पाँचन रहता। शक्क (क्ट १, ६३)। भवित्तयत (गुपा वर)। ह पवित्तियम्ब (मुपा दव४)। पविचय न [पवित्रक] संदुर्श श्रेपुर्णायक

(शापा १ १। भीत)। पविचानिय नि [प्रविचत] ब्रह्म किया हुया नियाध्यद्वा अध्यानं क्ष्यपं कुमा (सिंव (मनि)। 93 ) I पविचि केशो प्रवत्ति = प्रवृत्ति (सुपा २ बीच ६३ ग्रीप)। मैचुन (देवेन्द्र ३४७) । पविचिनी देवो पवचिना (क्स)।

पविरथर यक [प्रथि + न्तू] फेलाला । वक्र. पनिस्परमाग (पव २११)। पब्स्थर व मिवस्वर निस्तार (इस) सूच २ २,६२)। पवित्परिक्र वि [प्रक्रिस्तृत] विस्तीर्छ (छ ७६२) । पवित्यरिष्ठ नि [प्रविस्तरिन् ] निस्तारनाकाः (धन-वरह १ १)। वेको पविरक्षिय।

पविश्वारि वि [प्रविस्तारिम्] केलोगवा (प्रवह)। पबिद्ध वैषो पब्बिद्ध (पर २)। पविश्रस यक [प्रवि + भ्यंस ] १ विश्रस्तान-पुत्र होना । २ लिन्ट होनाः चैछ वद बोखी पश्चिम केल पर बोली स्थित (ठा ह १--पद १२३)। पविद्यत्य वि [प्रवित्वका] विक्ट (कीव १)।

पविमत्ति भी [प्रविमक्ति] इस्त-पुरू विभाव (दत्त १, १)। पविमाग 🕻 [प्रविभाग] अभर क्या (विभे teve) i

पविवक्तन वि प्रिविचक्कान विशेष प्रवीका पविदार पूँ [प्रवीचार] १ श्रम्य भीर वचन की केश-विरोध (हर ६ २) । २ काम-**व्यक्त** मंत्रुत्र (क्षेत्रमा ३४० पन २६६) । पविवारण न [प्रविचारण] धंबाद, 'बाउन

पविधारणा 🐧 [प्रभिचारणा] काम-बीब्द, पविद्यास शक [प्रवि 🕂 ऋश्यू ] फाल्क, कोसना 'पविमासक नियनकर्स' (वर्में वि १२४) । पाँचमासिय वि [प्रविकासित] विकक्षित किया ह्या 'पवित्रासिकक्षकार्थ करी निकासेद विखना**ह** (मुपा १४)। पविरक्षभ दि दि । अधित श्रेमता-पुटः (दे

4 9)1

पविरंत इत्र [ मर्ज् ] ग्रॉका वोक्ता। पविश्वप (१४११)। पविरंजन वि दि लिग्य लेक्नुक (पत्)। पिष्किञ्च वि भिन्नी वीना द्वारा (क्वार) दे६ ७४)। पविरंत्रिक वि दि १ लिल्य लेक्सूफः। २ कठ-निपेच निवारित (दे ६ ७४)। पिकारका कि [प्रक्रियक] १ व्यक्तिका १

विभिन्नस (परः) । ६ सरपन्त बीवा, बहुर्स ही कमा अरक्षमकरसारविया दोरंति महीय वनिकार्गाचर (मुच २४ )। पविरक्षिय वि वि विस्तारकामा (पर्या १

४—-वत्र ६१) । वेशी पविस्थ**िङ** ।

करना । क्छ पधिश्रसीत (पद्म १६ १७)। पदीहर दि [पदीखित] हुना के लिए चवाय ह्या **(यी**प) । पद्मेव वि [प्रतीप] तिपुद्ध दश (हर ६ ६ यवीयी वेको पश्चिमी । पश्चेक्षेत्र (मीप) ! पक्षेत्र एक [प्र+पोडप्] पीक्ताः वन्त करणाः पर्वासप् (याचा रे ४ ४ १) । पतुर्वकी प्रश्न = प्र + वर्षः पबुद्ध नि प्रबृष्ट | १ शूच वरका हम्म-किस्ते प्रमुख कृष्टि भी हो सङ्क (ध्यमा २ ४

दूपना । पविसद् (इनः महा)। धरि-

पविशिक्षामि पविशिक्षेत्र (पि १९६)।

**१इ पदिसंद प**रिसमाय (गरम ७६,

१६ युगा४४व विषा १ दश्कमा) ≀सैंक-

पविधित्त.

प्रविसिक्तज (क्षणा महा। मनि ११६)

क्रमा)। क्षेत्र पश्चिमित्तपः, पश्चेटार्ट (क्स

पविस्त्य न [प्रवेशन] प्रवेश, फैट (सिंग

पविस्थक [प्रवि+स्] बल्लाकण्य।

पश्चिस्स वेको पविछ। पविस्तर (महा)। वह-

पविदर सक [प्रवि + हूं] विहार करण,

पविद्रस पन [ प्रिम + इस् ] इसना इसन

**थेड** पवि<u>स</u>ङ्क्ता (तुम २, २ ६६)।

कम्पापि ३३)। इट

(धीन ६१) सुना ३०१) ।

पुबिस्समाण (मृष्)।

विचरता । प्रतिहर्सेठ (स्त) ।

पविसित्ता

1 (w} f

**२२** )।

पविसिम

प्रविशिवन

१ १३)। र न प्रमुद बृष्टि, वर्षसा काले पहुट विम महिलांकि केवला बाउला (मन्दि पतुक्त वि [प्रवृद्ध] बढ़ा हुमा विशेष दृश (R 2 E) 1 पचुडिद्ध की [प्रयुद्धि] बदाव (पंच १, ६६)। पञ्चान [प्रोक्त] १ को कहने सगाहो, जिल्ली बोलना प्रारम्य किया हो वह (पडम २० १६३ १४ २१)। २ उत्तः कवित (बर्मीव ८२)। पत्रय दि । देवी पदस्यः चुत्रवं पूर्व वेलं गाये पहुरबा' (बाक २६३ २६) । पबुद् वि [प्रदृत] प्रकर्प से माणकारित (प्रक्र १२)। पवृद्ध दि [प्ररुप्दा] १ वारण किया हुआ (छ ६११)। २ निनंद (राज)। पवद्ग्य नि [प्रमेदिठ] १ निवेदिछ प्रिः पारित 'चमेन सर्च नीसंक में निरोहि प्रेक्स (स्व ६७४ दी। मत)। २ विकास विकित (राज)। 🐧 मेंट किया हुमा (स्त 14 141 gw 14 14) 1 पक्षाय वि [प्रवेषित] कम्पित (पतम ३, **u**=)1 पदेका एक [प्र+वेत्रयू] १ विवित बरना। २ मेंट करता। १ सनुभन करता। पवेकप् (सूच १ म २४)। पर्वाहिय नि [प्रमेष्टित] बिए हुमा बेदा हुमा (सर१२१४)। पहेच देखो परेखा । परेपीत (प्राचा १ & २ १२) । हेड पवेड्चप (क्स)। प्रवेदण न [प्रवेदन] १ प्रक्ष्मण प्रतिपारन। २ क्रमः निर्धेत । १ धतुमस्यत् (धाव) । पदेषिय वि [प्रवेपित] प्रकामत (स्राध १ १--वम ४७। यस २२, १६)। पश्चिर वि [प्रवेषित्] कोपनेशाचा (पद्धम # 4Y) I पथस सक प्रि + बेराय् ] कुशाना । पनेसेह (महा)। पवैसमामि (पि ४६ )। पनस पूर्विशा भीत नी स्पूलका (ठा ४ २--पत्र २२६)। पवेस प्रियेश] १ फैंड, कुछना (कुना मदा प्रातू ९२)। १ शाटक का एक प्रिस्तः (क्प्यू) । पश्चेस पू [प्रद्वेप] प्रविष्ठ हैय (श्ववि) ।

पुंच [प्रवंशन, क] र प्रवंशः पबेसप पैठ (परह १ १३ प्राप्तु १वा पबेसणग ब्रम्य ३२)। २ विवातीय पवेसणय 🤳 बन्मानार में उत्पत्ति विवासीय मोनि में प्रवेश (मन १ १२)। पमेसि पि [प्रविद्याम्] प्रवेश करनेवाला (धीप) । पमेसिय वि [प्रवेशित] पुराया हुमा (स्क)। पद्मेत्त र्ष प्रिपीक विक्र का पुत्र (बाक व)। पक्रम पून [पर्वेन्] १ डन्मि नॉट (मीप ४८६ जी १२ जुला ५ ७)। २ करतन त्यौहार (सुपा र ७ वा २०)। १ पूर्विंगमा श्रीर धमानात्मा विश्वि । ४ पूर्विमा भीर धमाबास्पावाचा पता (धा ६—पत्र ३७ ३ सुरुव १)। १ सन्द्रमी चतुर्वशी पूर्वितमा भीर मनाचारवा का दिन' 'धट्टमी चन्न्सी पुरिशामा य तहनावसा (वह पर्मा। मासम्म ध**न्यस्ट रि**पि य पन्काई पक्कमिन' (वर्ग १)।

६ भेषका मिरिमेक्सा । ७ र्प्या-पर्वत (सूच १ ६ १२)। = संस्था-विरोध (इक)। वीय पू विश्व क्यू मावि क्य विद्या पर्व--प्रनिष--ही अपन्ति का कारण होता । 🕽 (धन)। सङ्ग्री शिङ्की सङ्ग्रीवियः, वो पूर्णिमा धीर धमाशस्या में समरा कर भीर सूर्य का श्रष्टुल करता है (सून्य १६) । पब्या विषेतिम् । शोष-विशेष कारका वीत्र की एक शाखा। २ पूंछी बस गीत्र में क्लब (चन) । देशो पुरुष्पेनक्षप्र । पञ्चाई देखो पश्चाइ (शा ४१११)। पक्ष्यपूक्ष वि [प्रमुक्तित ] रे वेशित वेल्यस्य (धीपः वसनि २-भागः १९४)। २ वतः, प्राप्त 'धमाराची अखगारिमं पष्पद्या' (श्रीप सम कप्प)। १ श शीका संस्थास (वन १)। पक्यईव पूँ [पर्वतेम्त्र] मेद पर्वत (शुक्रम 🛚 पस्तर्ग केशो पस्थरूल (वप पू १११)। भी, गा (स्प प्र ५४)। पव्यवस्थित न [चे] वास-मय कंटक--शाबीज

(दे ६ वश)।

पुरुष की पार्यदों | नौरी रिज-पली (पाम) । पढवंग पुन [पर्योक्त] संस्था-निशेष (१४) ह पब्यक 🦙 पुन [पर्वेक] १ नाच-विशेष (पराह पठवरा 🕽 २ ५—पत्र १४१)। २ 👣 बैसी धन्त्रिवासी बनस्पति (पएए १)। ६ तुग्रा-विशेष (मिष् १)। प्रवस्ता वि [पार्वक] पर्व--धन्य--वांठ का थनाह्या(शाचा२ २ ३ २ )। परुषक्तार्द्र कि दिन समा २ शट अस्ए । ३ बाल मूच (वे ६ ६९) : पश्यकता की [प्रश्नक्या] १ गमन विता २ **दीचा संन्यास (हा ३ २ ४ ४ प्राप्त** ₹**६७)** । पञ्चली भी [पर्वेणी] क्रांतिकी दादि पर्वे-विषि (सामा १ १--पष ११)। पञ्चपेश्वह न [पर्वप्रेक्षक्ति] देखी परुषह (ठा ७--पम ६६ ) । पञ्चय सक् ब्रि+ ब्रज्जी १ जाना गर्डि करना। २ दीक्षा बेना संस्थास हेना। पन्त्रयद (महा)। मनि पष्पद्रस्तामो पश्माहिति (भीर)। यह पञ्चयंत, पञ्चयमाण (पुर १ १२३ ठा ६.१)। डेप्ट. पब्लंडचर, पञ्चाइवं (धीपा मगः मुपा २ ६)। पत्रवय देखो परवरा (पएए १--पत्र १३)। प्रकार देखी प्रकाइका 'प्रमारमावर्धवाचि धरएका वावि पञ्चमा (सुध १ १ ११)। पच्यम 🕽 पून [पर्येत, क] १ विदि, पहाड़ पश्चयम (हा १ ४) प्राप्तु १६४) उना) 'पण्डवारिए बन्हारिए म' (बस च २६ ३ )। २ पुँ विद्योग वासूरेव का पूर्व-मनीय नाम (सम १३३: परम २ १७१): १ एक बाबाल-पुत्र का शाम (पठम ११ ६)। ४ एक राजा (मवि) । १ एक राज-दूमार (टप ६६७) । "राय पूं ["राज] मेर पर्वंत (मुख्य प्र.) । "विद्युग्ग पून ["बंदुर्ग] पर्नेतीय केत पक्काइबाला प्रवेश (भग) । पश्चपतिह न [पर्यतगृह] पनत नी प्रस्थ (माच(२३३१)। प्रमद्दशक [प्र+स्वभ्]पीइना दुःब क्षेत्राः वस्तरेका (लग्न ११४६)।

tec	पाइजसद्यहण्यको	पश्चाहणा~-पसञ्च
काइ पन्नदिकामाय (राज्या १ ११	वेक्स्म (वंबन २)। क्ष्रिः प्रथ्यापित्तप	परीव वि [प्रशास्त] र महरू तत्त्व स्त
मन १११)।	पक्काचेचाय पक्कायेतं (हा ए. १) व्हर	प्राप्त (कल्पः स.४.३ व्युप्त)।२ <b>कर्मक्</b> र-
परुष्ठा सी [प्रवस्था] व्यक्त पीड़ा	र्षणमा)।	शस्त्र प्रसिद्ध एस-विशेष, शान्त एस (मणु)।
(धीर) ।	पञ्चासम्य व [प्रशासन] बीचा वेना (स्व	पर्वति को [प्रशान्ति] नात विकल 'सन
पक्तिहरूप वि [प्रस्थमित] वर्षि हु विश	स्रोम ४४२ थे) :	दुक्कपार्शवील (धवि ३) ।
(श्राचा १२६१)	पक्ष्याथम न [वे] प्रवीतम (निक्र ५१)।	पर्संघण न [प्रसन्धान] स्तत प्रवर्तन ( <sup>शिष</sup>
पक्का की [पदा] बोकपानों की एक नका	पञ्चाषणा चौ [प्रज्ञाजना] धेसा वैषा (सीव	A( ))
परिवर् (ठा३ २पव १२७)।	४४३ पथ रथ शूमित १२७)।	यसंस बन्ध [ प्रशंस ] स्ताना करना । पर्न
पुरुवार्ज्य देखी परुषाच = भी ।	परमानिय पि [प्रवाजित] बीसिय बाबु	सद (यहार भाष) । शङ्क यसंस्था पर्सस-
पठवाइम् वि[प्रमाजित] १ विस्की बीला	बनामा द्वया (खावा १ १∽-पत्र ६ )।	माय (परम २४ १४) २२ ६८)। १९%
धी नई हो नइ (सुरा ४६६)। २ न बीका	पञ्चाद छक [प्र+क्षाद्य] बहाला प्रकार	पर्सिख्यसात्र (बसु) । संक्रं पर्ससिकन
ইনা (খন)।	में कालमा। वक्क पंथवास्त्राण (सव ६,४)।	(वहा)। इ पर्ससम्बद्धः पसस्य परी-
पक्काइज वि [क्झान] विक्कान शुष्प (श्रुमा	पक्षिक कि [के] प्रेरित (के ६ ११)।	सियक्ष (बुरा ४० ६४३) चुर १ ११६)
\$ (R)1	पठित्रक्र वि विश्वक्ती सहात, बढ़ा (ध १४	वस्त ७६ ) <b>व्यो</b> पर्सस ।
यक्याः(भा को [प्रजाशिक] परिवानिकाः	1())	पसंस वि [प्रशस्त्र] १ प्रशंतानीम । ३
संन्यातिनी (महत्) ।	पश्चिद्ध न [प्रविद्ध] पुर-कशन का एक रोज	र्द्रवोत्र(क्षूप१२२२)।
पुत्रश्रादिक वेको एउनास्त्रिक = न्यानिय (व	शनका को समाप्त किये दिना ही मानना	पर्शंखण न [प्रद्रोमन] प्रशंका स्वामा (क्य
# ¥\$) (	(प्राप्त)।	१४२ की सुनार ६ चन वे १७)।
- परमाण मिं [स्हात] रुष्ण, सूचा (योग)	प्रमीसम न कि प्रमीसमी शास विशेष	पर्ससय वि [इन्होसक] इसवा कर्णनावा
¥च≼) I	(900 t Y-94 t )	(बा ६) मिर)।
पण्यास देखो प्रयास≂ स÷ वा। पञ्चक्रका	पसंद्रकी [मस्त्रि] १ नाप-विक्रेप की अवस्थि-	पर्ससा औ [प्रशंसा] स्नाबा स्तुवि वर्क
(शाक्र ७६)।	क्सर <b>का</b> एक परिमाश (तंदू २६) । २ पूर्ण	(बालु १९७ पुना)।
पन्नार कर [म + ब्राजय ] वीवित करना		पसंस्थित वि [मझॅसित] स्नावित (क्य १४
(बुरा १६६)।	मधे इर्द चीन ( क्रुप १७४) ।	१४)। पराच्य वेको पर्सच ।
प्रदेशम चन्न [म्स्र] सूचना । पन्नावत हि ४	ं पर्संग पुत्र [जसम्] १ परिचम 🛚 व्यवस्य (स	प्रसाम ) स प्रमास १ ब्रुसे बीर हे मुझ
१०)। वक्र पण्यासीय (वे ७ ६७)।	३ ६)। २ धंनित धंनम् भीए पनीवर्षः	पस्तक्या पिति है (कुम १ के २ १६)।
पक्कात है [स्थात प्रकाय] कुम्ल पूका		र इतियु, मनारकार से (स ३१)।
<b>बु</b> सा (पास सोच ३६६ स २ ३ से ४ <i>०</i> ०	R(I)))	पसरमाचेत्र न [ प्रस्त्वाचतस् ] वर्ग-गराम
6 64 (42 AA) 1	नरं विद्विविद्यो सच्चो वरं हालाञ्चलं निर्धः हीरापाचाविकसम्बद्धाःस्थि कृत्यो प्रह	जिला कारमहो सन ( <b>क्यू</b> १ १४)।
पक्तास पुं [सवाठ] सङ्ग्य प्रवन (क ६२६)।	(min as), a such other man	पसंब वि [प्रसङ्ख] समेश्र वित रक्षकर द्वर्ण
पञ्चात सक [धार्य ] बक्ता वान्क्रक	(स १७४) । ४ मैपुन काम-मेरा (क्यू १	क्या इस (रह १, १ ७२)।
करना। पण्याबद्ध (हूँ ४-११)।	४) । र बालकि । ६ शस्त्राण व्यक्तिगर	पसंद्र वि [ प्रसंठ ] चल्क्य एछ (वृद्ध रे
<sup>~</sup> पश्चास स्थ [प्यावय ] श्रून निवागाः,	(शतक अभित्र वीचा है २६)।	18)1
वसमोर भरता । यनासार (हे ४ ४१) ।	पर्मानि नि [प्रसिद्धित ] शर्मन करनेनत्का,	पसर्व वेको पसस्म (स्त १, १ ७२)।
पस्त्राक्षण म [स्कानम] तराकीर करना (ह	वाबकः 'भूयववसंगी' (महा शामा १ २)।	पसंबिक्ष वि [प्रशिक्षिता] विशेष बीला (वे
<b>(,</b> ( <b>x</b> ))	पर्श्व पर्व [प्र+श्तप्त, ] १ वासचि करना।	£ <\$)1
मस्याभिभ वि [ध्वावित] सबन्धन वध-	२ माराचि होना, चलित्र-वाक्रि होना । परानद	पसण्य वि[प्रसन्न] १ द्वर, त्यत्व (१ ६
बोर रिया हुया (पाय क्रुमा) थे १ १ )।	(क्य)ः 'धरिहरूने जीनसीतम्मि कि द्विवाद	प्रशेषाप्रदेश)। २ स्थल्द्धानिर्मेष (सीप)
परवासिज वि [क्षावित] वक्ष क्षमा (पुत्रा)।		थीग १४६) । "चंह दू ["चन्द्र] सनगर्त
परमान धक [प्र+शासन] वैक्षिय करना	(मिने १६९)।	महासीर के सबन का <b>रह</b> राजनि (पर्प
बोध्यास देशा । राजास्त्र (सन्) । बीझ- यद्यान-	[ पसंदित [वि] क्यक धुवर्श (देशः १ )।	परिष्र) ।

पस्तण्या 🕏 [प्रसन्ना] महिरा बारू (सामा १ १६० विचार २)। पसत्त वि[प्रसत्तः] १ विपदा हुया (शडह ४१)। २ मासक्ट (यस्ट ४३१ जन)। व ब्रापति-इस्ट बनिष्ट-प्राप्ति के बीय से बुक्क (विदे १०६६)। पसचि औ [प्रसक्ति] १ प्राप्तकि धीमनञ्ज (इप १३१)। २ मार्गत-सेप ( बन्म **११६)** 1 पसत्य वि [प्रशस्त] १ प्रशंसकीय, स्ताक्तीय। २ ब्लेंड सच्चा (दे२ ४८) चुना) । पसिय 🕏 [प्रशस्ति] वंशोलहीतैन वंश-बर्णन (शब्द सम्मत्त ८३) : पसत्यु दू [प्रशास्त्र] १ नेखाबार्ग व्यक्ति का सस्यापक (ठा ३ १) । २ वर्ग-साक कापाठक (ठा ६ १ सीर)। ६ मणी धमास्य (सूध २**ं१ १३)** । पस्तक केको पस्राप्या (मङ्गा मनिः भुपा 48X) I पसन्ना केवो पसण्या (पाम्दः, परमः १ २, १२२: पुद्ध २ २६)। पसप्प र्रु [ प्रसर्प ] विस्तार, फेनाव (प्रम्य पसप्पत वि [प्रसपक] र प्रकर्ष के बावे-बाला पुराफिये करनेवाचा । २ विस्तार को प्राप्त करनेवाचा (ठा ४ ४--पत्र २६४) । पसम सक [प्र+शम्] घच्छे उच्छ राज्य होना । पसर्गति (बाक १६) । पसम र् मिराम र बसन्त सान्त (क्रुगा)। २ शनातार वी उपवास (धैवीव ४८)। पसम र् [प्रश्रम] क्लिय महत्तव-बेब (धाव 8)1 पसमजन [प्रशासन] १ प्रदृष्ट शयन (शिंड ६६६। मुर १ २४२) । २ वि प्रशास करते-वाबा (स ६२%) : वरी यी (दुमा) । पसमाविभ वि [मरामित] प्रशान्त किया कृषा (स ६२)। पसमिक्त सक [मसम्+इक्] प्रकर से रेबना। र्डड पर्श्वमिस्स (उत्त १४ 1 ( \$ \$

पसमिण वि [प्रश्नमिम्] प्रसान्त करनेवाचा, नारा करनेवाला 'पार्वति, पावपसमिए पास विस पुह प्यमविषा' (समि १७)। पुसन्स रेको पुसम् = प्र + शम् । पुसन्मह (बढा)। मुक्त पसम्मीत (छ १ गडड)। पसय पू [वे] १ मृग-विशेष (वे ६ ४ पराह १ १। चर्षि संख्यं महा)। २ मृप-रिप्यू (विपा १ ४)। यस्य रि [प्रस्त ] देश हुधा 'पस्यिका' (बका ११२ १४४)। रेखी पसिछा= प्रसुद्ध । यसर बाक [प्र+सृ] फैनना। पनराह (पि ४७७। वनि)। वक्र-पमर्रद (सुर १ वर मवि)। यसर र् [प्रसर] विस्ताद, केमाव (हि ४ १५७: कुमा)। थसरण न [प्रसरण] इमर वेशो (बज्र) । पसरिम वि [प्रस्त] ऐवा ह्या विस्तृत (बीप ना ४) शना सामा सामा १ १)। पसरेष्ट् वृ [वे] किंत्रस्थ (वे ६ १३)। यसक्रिक्ष वि वि श्रेतित (यह )। पसम्बद्ध प्रि+स्] मन्द्रवेता उराय करना। पसन्द्र (हे ४ २३३)। पस्तरति (जन) । वह पसनमाण (सुपा ४१४) । पसन (धन) सक [प्र + विश् ] प्रवेश करता। पराषद् (प्राकृ ११६)। पसम १ [प्रसव] १ वन अवस्ति (कुना)। २ त पूप्पः भूकः 'नुसूर्गपक्कं पस्यं व (पाय) पुष्पाणि म पुषुपाणि व पुरुवाणि वहेब हॉॉिंक पसबारिक" (बसनित १ ४६) । पसन दि वेसी पश्य । 'पसना हमेरि एए' (पडम ११ ७७)। "नाइ पुँ "नाध | मृग- | यन सिंह (स १४७)। राय पूर्व ["राज] सिंह (स ६१७)। पसनश्चान हि विशोधन (दे ६ ६)।

(मनः एवं ७४४: पुर १, २४०)।

जिसने बन्म दिया ही वह 'स्यमेन पर्सापया

शकु ७४) ।

हं बहाकिसेक्स नरमाह (सूर १ ₹₹ : युक्त १६)। देशो पसुञ = प्रसूत । पसंबिर नि [प्रसिद्धि] बन्म बेनेनाला (नाट)। पसस्स ध्यो पर्सस । पश्चस्य नि [प्रशास्य] प्रभूतः शस्यनामा (पुपा NYX) I पसाइध वि [प्रसादित] १ प्रसम्र किया हुमा (स १८६ ५७६)। २ प्रसम्म होने के कारल विका हुमा न्यंगविकागमधेस पशास्त्र कडयवरवाई (सुर १ १६६) । पनाइमा की वि] किस्त के किर पर का पर्एं-पुटः फिल्मीं की पर्यापे (दे ६, २)। पसाइयव्य देखो पसाय = प्र + सम्दर् । पसाम वि [मशाम्] शान्त होनेवाला (यब् ) । पसाय धक [ प्र + साव्य ] प्रसन करना बुरा करना । पसन्तिति पसादिस (या ६१ विका ६१)। वह पसाञ्चमाण (या ७४%) । हेहः पसाइडं पसाएडं (महुट षा १२४)। 🕊 पलाइमब्य (सुरा १६१)। पसाय 🕻 [प्रश्राद] १ प्रशत्व प्रसम्बद्धाः क्रुप्री' 'क्रयुमणपदायत्रक्को' (बसु) । २ इत्या, मेहरजानी (जुमा)। ६ प्रस्तुय (गा wt) i पसायजन विशावनी प्रसन्त करता, के पसामध्यपद्रस्त्रमखो' (कुत्र 🏗 सुना 💗 महा)। पसार सक [प्र + सारयू] पराप्ता, फेनाना । पसाचेद (महा)। वह पसारमान्य (ग्राचा १ १) चात्रा) । संक्र पसारिक (नाट---मुच्छ ६११)। पसार पूँ [प्रसार] बिस्तार, फैबाब (बप्यू)। पसारण न [प्रशारण] स्वर देवी (पुरा १८३)। पसारिक वि [प्रसारित] १ फेबाया हुमा (छरा नार--वेरणी २३)। १ न- प्रसारस्य (सम्मत्त १६६ वस ४ १)। पसम्बद्ध न [प्रसम्बन] प्रवृतिः अन्य-धन पसास एक [म+शासय्] १ शासन पस्रवि नि [प्रसक्तिन्] बन्न क्रेनेशला (बार---करना, हुनुमत करना । २ विका देना । ३ पलन करना। शक्र. 'रम्ब' पसासेमाणे पसविव वि [अमृत] की जन्म की बना हो

निवृत्त('(काया १ १टी--यत्र ६) १

१४--पत्र १वधः घौतः महा) ।

परुवाद म न विशेषको बन (पिंड ११) ।

४४३ पद २१ सुद्रान १२७)।

पंचनद्य) ।

**3.8**) 1

(यव २)।

मोग ४४२ थे)।

प्रात (कप्प: स. ४ ३ क्रम)। २ तांपिक

शास-प्रशिक्ष एक-विशेष शान्त एवं (भए)।

पक्रप्रहणा ही [प्रक्यवना] व्यक्ष पीड़ा (मीप)। पक्ष्महिम वि प्रिव्यक्षित् विशे बुक्तित (भाषा १ २,६१)। पब्दा और पिका विकासनों की एक नाम परिवद् (हा ३ २ -- पद १२७)।

क्ला प्रवाहित्यमाण (सामा १ १६---

पश्चार्जन देशो पश्चाय = भी । पक्दाइध वि [प्रद्राचित] १ विसको सीमा की गर्द हो बहु(मूपा ५६६)। २ न कीला देना (स्रव)। पण्याहम रि म्झान] विश्वाय कुक (दुमा **4** (2)

परपाक्षा हो [प्रधाकिया] परिवानिका, संन्यासिनी (महा)। परवाडिअ देशो परवालिश = प्लावित हि X, Y() ( पश्चाण दि [स्हान] कुन्ह, तुका (धोव ४वद)। यक्त्राय देखी प्रवाय ≈ प्र÷वाः व्यवस्य (शक्त वर्)। परमाय सरु [म + माजय ] रीकित करना

(धुरा १६६) । प्रदास वक [स्त] मूलता । पश्चायत (ह ४ १)। बर्रपञ्चाञ्चत (त ७ ६७)। पब्दाय रि [स्थान प्रदाय] कुन्द्र नुवा इपा(शाम मोच ३६३ छ ३ ३ के ४≪। E 41 (42 XX) 1 पब्दाय पू [प्रवान] प्रहट पदन (श ६९६)। परमान तर द्वितरम ी दक्ता, मान्यस्त

क्छन । क्यम्य (हे ४ २१) । पश्यात स्ट [प्लाइय ] सूर्व विज्ञाता । क्राबीट बरना । बम्बल्टर (हे ४ ४१) । पक्षात्रण न [प्यावत] क्राचीर करना (वे \$ (X): पम्माविभ नि दिशायिको अत-स्थाप्त सरा-बौर रिया हमा (बाघ दूमा 🖥 🗞 🤾 🕽 ।

पस्मातिम वि सिहिती हरा हुवा (हुवा)।

पश्राप तर 🗐 🗆 + माजय 🗍 धेवित रूप्य

श्रीन्द्रान् देश । राजानेद्र (तप) । श्रीष्ट्र प्रवत्ता

वरी हुई चीन ( दूस १७४) । 28) (बढा विकार्यचा १ २१)।

पम्पाभिय वि प्रिजाजिती के कित साव बनाया द्वारा (खावा ११--- यश ६) । पञ्चाह एक [प्र + बाह्य ] बहाना प्रवाह र्में डामना । शङ्क पब्याहमाण (भव ६४)। पब्चिद्ध वि 📦 जेरित (वे ६ ११)। पठिवक्क वि प्रवृक्क विश्वाप, बढ़ा (छे १४ पश्चित्र व [प्रविद्व] पुर-कवन का एक शेव नन्दन की समास किये दिना ही धानना पञ्चीसग न वि पञ्चीसगी शक् विधेव (मराहर ४--पव ६ )। पसङ्ग्री [प्रसुवि] १ नाप-विशेष को प्रसृवि— पक्कर का एक परिमाला (तंदु २६) । २ पूर्व धम्मित हो इस्त-कत-विवृधि मिला कर पर्छा प्रशास प्रशास दिवार व्यवसा (स ३ १)। २ इंपति संबन्धः चीए प्रतीवर्धः पित्र पत्रास्त्रपुरूपाधियाँ (ठर ४ ४ इप "वर्र रिद्विविद्यों स्वयों वर्र हालाह्य विर्त्त । हीकाबारापीक्ष्यक्षात्रं वृ हो मह (संबोध १६)। १ बापचि प्रतिष्ट-प्राप्ति (स १७४) । ४ मेपून काम-बोहा (पर्य १ ४)। इ.धानस्ति । ६ जस्ताव अधिरार पसंगि वि [ब्रसिक्तिन] प्रशंव करनेवाना यातकः 'बूयवर्षक्ष' (महाः शादा १ १)। पर्श्व थक [प्र+सअ\_] १ व्यवस्थि करना । र बाराति होना, धनिञ्जाति होना । पहणह (**७**३)- 'प्रशिष्**ने** भीवतीयीम कि दिशाए पनवर्षि (इत १०११ १२)। श्वत्रेका (विशे २६६)।

पटमाध्यम व शिक्षाञ्चनी गीला वैना (चय पर्सति 👊 प्रिशान्ति । नाग निनातः 'सन्द बुरूपमंतीर्ग (पवि १)। पर्समान व विस्थान स्टिट वर्गन (विष परमावणा व्ये प्रियाञना शिक्षा रेगा (योव W ) 1 पसंस एक प्रिशंस े स्तान रस्ता। दर्भ-सह (बहुतः प्रति)। वक्क पर्संस्त पर्सस-साम्म (पश्च २८ १६) २२ ६)। स्वत्र पर्संसिक्समुत्र (बसू)। हंड पससिक्स (बहा)। इ पर्श्वसिक्विक प्रसस्स सियव्य (बुवा ४७ ६४१) बुर १ रिध पत्रम ७१८ द) देखो पर्सम । यसंस्र वि (प्रशस्त्र) १ प्रतंता-बीन्य । १ र्वतीय (बूब १ २,२ २६)। पर्संस्क र [प्रश्लम] प्रशंस स्थाय (का १४२ टी सुपार ६, इप वं १७)। पर्संसय वि [इन्होसक] प्रतंता करकेवा (बा६। गवि)। पर्ससा को [बर्शसा] स्तामा स्तुति वर्षेत्र (बास १६७- दुमा)। पसंसिक्ष वि [प्रश्नसिव] स्वाक्ति (वर्ष १४ ₹ ) t वसाज्ञ भो पसंज्ञ । पसम्बः । य [प्रसद्यः] १ दुने तीर वे. ज्या पस्तरमें) रेकि से (सूच १ २ १ १ १)। २ ह्वन्तु, बच्चतकार हे (त ३१) । पसञ्चित व [ प्रमक्काचेतस् ] वर्व-निर्णन चित्र अव्यवद्वी मन (रहपूरे १४)। पसंद्र वि [प्रसद्धा] मनेक रिन रवकर हुनी क्यि ह्या (बस ६, १ ७२)। पसंद्र वि प्रस्तु विकास का (वृष ६ Y 1) 1 पस**र्व देशो** यसत्रम् (स्त १, १ ७१) । पसिकति विशिक्षित् विशेषा । 1 (3# 3 यसण्य वि[प्रसन्न] १ पुरः, स्तलः (वे ५ ४१) वा ४६१) । २ स्टब्ब, तिर्मन (मीत) धीय ६४१) : "र्वश् वु ["चरबू] संस्तार बहाबीर के बनद ना एक शत्रांप (बन) पर्सिक दिन विकास सुबर्ध (६६ १)।

पसण्णा को [प्रसन्ता] मंदिए पारू (ग्रामा पस्तिज वि [प्रश्नसिन्] प्रसान्त करनेवाला १ १६। निपार २)। पसन्त वि [प्रसन्तः] १ विपका हुवा (गउड ११)। २ मासकः (यका १३१ वन)। व मापश्चि-प्रस्त प्रमिष्ट-प्राप्ति के बोप से कुछ (विशे १=१६)। पसचि की [प्रसक्ति] १ बार्सक, बश्चिन (इप १६१)। २ चार्यत-तीप ( अपस 1 (#95 पसस्य नि [प्रशस्त] १ प्रशंसनीय, स्वाक्तीय। २ वेंड धच्चा(हे२ ४% कुमा)। पसरिय की [प्रशस्ति] वंशोरकीतेंग वंश-बर्गेन (गठक सम्मत्त = १) । पसल्ह् पू [प्रशास्त् ] १ देवल्बार्यं गणित का सम्मापक (हा ६ १) । २ वर्ग-शास कदपाठक (ठा ३ १३ थीउ)। ३ मन्त्री धनात्य (सुधान ११६)। पस्ताम केलो पसम्पन (महरू चनिः चुपा **48**8} I पर्समा केनो पसण्या (पाध परम १ २ १२२ मुख २ १६)। पसप्प पू [ प्रसर्प ] विस्तार, फेनान (शब्य 1 ) ( पसप्पतानि प्रिसर्पेकी १ प्रकर्ष के जाने-बाला मुखारिक्यी करनेवाला । २ विस्तार की प्राप्त करनेवासा (ठा ४ ४--- थव २६४) । पसम यक [प्र+राम्] भन्दी एक राज्य होता । पर्स्मिति (माक १६) । पसम प्रियम र भक्तान्व व्यन्ति (क्रुमा)। ६ समातार की अपनात (सेनीन ६८)। पसस पू [प्रश्नम] विशेष मेहनतः—केर (धान x) ı पसमज न [प्रशासन] १ प्रकृष्ट रामन (पिड ६६६: बुर १ २४६) । २ वि अक्तान्त करने-बाबा (स ६८६) । की जी (कुमा) । पसमाविक वि [प्रशमिव] प्रचान्त किया हुषा (स ६२) । पसमिक्ता एक मिसम्+ईस्ट्री प्रकर्ग ते वेदानाः चंद्रः पसमिक्तः (क्तः १४ tt)ı

महर करनेशामाः 'पार्वति पानपसमिस् पास निशा तुह व्यमनिशः' (सुप्ति १७)। पसम्भ देशो पसम= प्र+शम् । पष्टम्मद् (पढ़क)। क्या पसम्मीय (स १ परङ्गे । पसम पू [वे] १ मून-विशेष (वे ६ ४- पराह १ १ मणि सल् महा)। २ मृथ-शियु (विपार ४)। पसय वि [प्रसृत] फैना धुवाः 'पश्चविद्धः!' (थका ११२ १४४)। वेश्वो पश्चिल= प्रसृत् । पसरबक [प्र+स्] पेक्षना। पसर्क्ष (पि ४७७ । महिः पसर्रत (सुर १ ८१ ग्रवि)। पसर हुं [प्रसर] विस्तार, केशव (हे ४ १६७ हुना)। पसरण न [प्रसरण] कार ध्लो (क्यू) । पसरिक्ष वि [प्रस्तुत] केना हुना किस्तुत (धीप) मा ४३ वर्षि स्माना १ १)। पसरह र्ष [दे] किंबस्क (दे ६ १६) । पसक्रिका विदिशिक्त (वक्)। पस्थ सक [प्र+सृ] थन्म देना, **ब**रास करता। पक्षमा (हे ४ २३६) । परावंशि (छन)। वक्क पसवंसाज (बुपा ४३४)। पसव (घप) छक [प्र + विश्व ] प्रवेश करना। परनंद (प्रकृ ११६)। पसम र् [प्रसव] १ वन्स करपत्ति (हुमा)। २ न पूच्य कुना 'कुसुने पसर्व प्रसूध वर्ष (पाध) पुष्फासि श कुसुमाधि स पुरुवासि लक्षेत्र होति पसकारिए' (क्समि १ ३६)। पसव [वें] वेको प्रस्य । 'पर्स्वर इवीर्ड वृद् (पचम ११ ७७)। लाइ पुं["मार्च] गुग राज बिह (स ६१७)। दीय वु [दास] सिंह (स ६१७)। पसम्बद्धान [दे] विलोकन (दे ६ १)। पसवण न [प्रसथम] प्रसृति कन्य-वान (बग का करत जुर है, १४८)। पसर्वि नि [मसबिभ्] बन्न क्रेन्सना (नार---रा (४४ क्रुफ पस्तिय वि [असूत] को बन्द की सवा हो, जिसने बन्ध दिया 🗗 प्रमुध 'सम्बद्धेन प्रस्तिया

इं वहाकिनेधेश नरनाइ' (सूर १ ₹₹; तुपा ३१) । वेशो पसुञ ≕ प्रमुत । पर्सावर कि [प्रसमितः] कम देनेवाला (माठ)। पसस्स रेको पर्सस । पशस्य नि [प्रशस्य] प्रभूत करवनामा (सुपा EVE) I पसाइम वि [प्रसादित] १ प्रसन क्रिया इया(स ३८६३५७६)। २ प्रसन्त होते के कारण विया हमा श्रीविकागमधेर्स पराध्ये कबयमस्याद' (सुर १ १६६) । पसाइकाकी दि] भिक्त के बिर परका पर्ण-पूटः जिल्लों की पमही (वे ६, २)। पसाइयव्य रेको पसाय = 🛭 + सारव् । पसाम वि [प्रशाम्] राज्य होनेवाला (पर् ) । पसाय थक [ म + सादय ] प्रकृत करता कुत करना । पसार्वीत पदारुदि (स्व ६१) सिक्का ६१)। वह पसाञमाण (ना ७४६) । हेक- पसाइटं पसाएउं (महुट वा ४२४)। इ. पक्षाइयव्य (युगा ६६१) । पसाय प्रे [प्रसाद] १ प्रवृत्ति, प्रसन्तता सुरी: 'बरामलपसायवरागी' (बसु) । २ इत्या गेहरतानी (ब्रुमा)। १ प्रणय (शा **w**{}1 पसायण न प्रिश्नादनी प्रश्नन करना कि पसायख्यक्रारूमशो' (हुन १) सुपा ७ महा)। पसार एक [म + सारम् ] पराध्ता फेनाना । पद्यारेष (महा)। वह पसारमाण (साम्र १ १: भाषा) : संक्र पसारिक्य (नाट---मुच्छ ६६६) । पसार र्षु [मसार] बिल्वाद, फैसाब (कृप्)। पसारण न [प्रसारन] अनर 🖦 (पूपा द≪ है)। पसारिज वि [प्रसारित] १ फैलाया हुमा (चएाशक्ट—वेगी २६)। २ व प्रसारक (सम्मत्त १३३ वस ४ ३)। पसास **४४ [ग+राासय्] १ शासन** करना, हुकूमत करना । २ किसा देना । ३

पासन करना । नक्त 'रन्ज पसासेमाजे

विहरत'(याना १ १टी-⊶पत्र ६; १

१४--पन १वटा बीप महा) ।

पसाइ---पसंविजा

86

पसाइग वि [प्रसाधक] सक्क, सिक क्रफोबाला (वर्गंग्रं २६)। तम वि विस्त्री १ प्रकृत् साथकः। २ वः व्याकरस्य-प्रसिद्धः

कारक-विशेषः करश-कारक (विशे २११२)। जो पश्चाह्य । पसाइण व प्रिसायनी १ किंद्र करणा-*विश्वापदा*इपुर-वदनिश्वाहर सावना सनिस्दरनेती (पुर ६ १२)। २ व्यक्ट सावन 'सम्बूत्तमे माराचर्त दुलाई कास्युहे परक्रम फैयाकास्य न निर्वर्षेति धाने (स

पसऋ एक ग्रि-। साधयी १ इस में

है १ ४४)। ४ भूक्तुमादिकी खनाकटः मूचरापसम्यादेवर्षेष्ट्रं (बन्धा ११४-सुपा 44) I पसाइय देवी पसाइग (कान)। २ धनाने-नाचा (धन ११ ११)। पसाहा की [प्रशास्त्र] राजा की राजा.

७४४) । १ मलेबाद, भूबल (सामा १ ३)

भोदी काचा (ग्रामा १ १) मीप व्या)। पसाहाविय वि [प्रसाधित] विद्रापत करावा पमा अनवामा हुआ (गवि)। पसाहि वि प्रिसाचिन् दिक क्रोनाना 'मन्यूरक्पराहिली' (स्वीच क १४) ।

पशिक्षि वि प्रसाधित । सर्वक्रत किया हुम, समामा हुमा (बे ४ ११: पाम) । पमादिक वि [प्रशास्त्रिक् ] प्रशासानुक (दुर थ १)। पश्चिम्र झक [प्र+सद्] प्रसन्त होता । पश्चिम (मार्थक ४६६) है १११)। परिवद् (एउ) । एक परिकल परिकल

(ध्रम्भाध्याच)। परिभावि मिलानी वैका क्षया विस्तीरी न्यतिवर्णिया (श्रादश दश्य)। पश्चिम व [दे] पून-प्रम सुराध (दे ६ ६)। पसिच धक प्रि + सिच् दिका करणा बहु-पर्सिचमाय (सुर १२ १७२)। 'प्रसिद्धि (दे) देखो प्रसिद्ध (पाय) । परिकास वि [प्रदिशक] चीकौरामा (च

१९१ प)।

(बा ६७६)। पसिविक रेशो पसविक हि १ वश वा १६६ मध्य)। पसिष्म क्रैन प्रिश्नी १ इच्छा प्रस्त (तुपा ११ ४१६)। २ वर्षेश मादि में केला का बाह्यल, बन्नक्या-विशेष (सम १२३)

इह १)। "विज्ञा की ["विद्या] गन्तविद्या शिक्षेत्र (का १)। । पशिष्य न शिप्रस्ती मन्त्रविद्या के वस ने एउन ध्यवि में वेदता के बाह्यान हाथ जाना ह्रवा गुम्मतून फल का कवन (पद २) बृह १)। पिछिणिय वि पिहिमती कुछ हुमा (मुपा 10 432)1 पसिक् वि प्रिमिक्टी १ विकास विश्वत (महा)। २ प्रकर्षने मुख्यिको प्राप्त मुख्य (Reft 242): पश्चिति की प्रिसिद्धि । क्यांपि (है १ ४४)। २ तन्त्रका धर्माचान याचीप का परिहार (मक् भिस्म ४६)। पश्चिस्त श्रेणो पसीम (लिवे १४)। पसीझ ≒को पसिझ ल ब ∻ एव । दशीयह परीयत (क्रुप्र १) । श्रेष्ठ पसीकण (स्त्यु) । पसीस र् प्रिशिष्यो रिज्य का रिज्य (परान ¥ 48)1

पस वृद्धि १ कन्द्र-विशेष शीय पुष्काला त्राखी चतुमास प्राणि-मात्र (कुमाः बीप) । श्चल, व्यवस् (पशु)। शूय कि <sup>वि</sup>श्वयः ै पत्तुन्तुल्य (सूच १ ४ १)। शिक् र्यु "रीघ] विसर्वे प्रशुका धोप विकासता हो मह बच्च (परुप ११ १२)। बहुर्द्र िंपति निवालेन सित्थ (ना १३ सूना ६१)। पस्च वि [मसुर] कोवा कृषा (हे १ ४४४ नाम बताना १ १६)। पसुच्चि भी मिसुसि न्यू है येन निरोप नवादि-विवारक होने पर ग्री धनेवनता

पश्चादत्त है दि दे का देन (दे ६ ५६)।

(चन)। वेबी पसूत्र। पसुन (का) केवो पस (का)।

(धंत ३)। १--पव ३७)।

(**441**) I

(के ६, २१) ।

पसेनिमा व्य [मसेनिमा] नैवी, कोनती

पसृषि [प्रसृ] प्रवद-कर्ता जन्म-करा (मोइ २६)। पस्चान [वे] पूज्य कुल (वे ६, ६, पाधा यमि}। पश्च क मिश्रवी १ इन्द्रन को पैस इसी ही (कामार्थक जन प्राप्तु १६१) । १

क्को पसविष (महा)। पस्क्रण व [ प्रसवन ] बन्म-दान (दुरा ¥ 1) ( पसृद्ध की [प्रसृति] र प्रक्रक कम, सर्वार्ष (पक्रम २१ ३४० प्राप्त १२**०**)। २ एक बकार का दूह येग नवाबि से विदारण करने पर वी दुल्य का स्वयंत्रिक, जमही का मर थाना (पिट ६ )। "रोगार्ट्र ["रोग] रीव-विदेव (चम्मत्त १४)। पसूच्य र् [मस्विक] बाहरोय-विरोध (सिरि 1 (#25 पसूचन [प्रमूम] क्रम क्रम (क्रम इस) ।

परोज र [प्रस्पेष] पर्वाचा (दे ६ १)। पसेडि के [प्रभेषि] धवान्तर बैदि--विक (पि ६६३ एक)। परोज 🛊 [प्रसेन] अन्तान पर्त्यान के शक्त नातक का ताम (विचाद ६७४) ! पसेणाः 🖫 [ प्रसेनवितः ] १ इतकर-पुरू-क्लिक (पडम ६ ११, सम ११)। २ यक्ष्मंत के धवा सम्बद्धांच्या का एक दुव पसेजि की [प्रमेकि] धवान्तर बार्वि

'बहारस्प्रेडियक्षीमी एडामेड' (सामा १ पसेवग वेका पसेवय (एक) । पसेव एक मि + सेव ने विशेष ऐवा क्या। वक्र पश्चेत्रमान्त्र (सु ११)। परेवय र् [प्रसेवक] केन्द्रा, देवाः न्यापि बपबेनपोल्न वर्षीत बंबीत शोब तस्त बसुवा पस्स सक [ दृश् ] देवना । परसद (पर्

प्राष्ट्र ७१)। वह पस्समाज (बाब्ह बीरा

बसु, विपा १ १)। इट पस्स (ठा४ १)।

पहळ सक [भूगें ] दूमना भौपना क्षेत्रना

हिलना । पह्नार (हे ४ ११७-पार्)।

पहिद्वर वि [प्रामूर्णियु] वूमनेवाला कोनटा

पहचनक [प्र+मृ] रज्यप्रहोनाः २

समर्थ होता। पहनइ (पंचा १ १ स ७

वक्र पहाईत (सुर १ ६१)।

(कुमा सुपार ४)।

पस्स (शी) देशो पास = पर्स्त (प्रमि १८६) स्वि २६ स्वयन ३६)। परस देवी परस = हरा । पस्सओहर वि [पर्यतोहर ] वेवते हुए कोरी करनेवाला, सुनार, सबदा 'नखु एसी परवद्मोहरो देखो' (उप ७२८ दी) । पहिंस वि [वृशिम] वेसनेवाला (पराण १)। पस्सेय देशो पसंज (सुच २ ६)। पह वि[प्रदु] १ तमा २ विनीतः। ३ बासकः (प्राष्ट्र १४)। यह दू [पिथिम्] मार्ग रास्ता (हे १ ६६) थाम कुमा था २वः विधे १०६२, कप्प भीत)। "देसय वि "देशक] मार्ग-मार्ग-(पत्रम ६= १७)। पहरह पू चि । धपुर पूपा काश-विशेष (वे **६, १**८) । पहुंचर देखो पर्मकर (उत्त २३ ७६ गुख २३ ७३ इक)। पर्देक्य केवो पर्मक्य (इक) । यहाँचण पुं [प्रमञ्जन] १ बायु, पवन (पास)। २ देव-आति-विरोप सवलाति देवीं की एक मगन्तर वावि (नुपा ४)। ३ एक सना (मवि)। यहकर दि रेकी यहवर (छामा १ १) क्या भीता कर दू ४७० निपा है है राहा भगा १३६)। पहरू वि दि] १ इत छउत (१ ६ हा पड्)। र धावरतर हट, भोड़े ही समय क पूर्व देखा हुचा (पर्)। पहरू वि [ प्रहृष्ट ] सार्वन्तित हुवै-प्राप्त (धीप: मन)। पद्दण सक [प्र+हुम्] मार कामना। पहलड पहले (महा उत्त १० ४६)। क्मै पहिणाकः (महा)। वह पहणेत (परन १ १ ६१)। क्यक पहरसंत, पहण्यमाण (वि १४ । शुर १ १४)। हैर पहिणाई पहिणेई (दूब २४ वहा)। पहण न दि] दूत शंध (३६ ६)।

पहणि हो दि | संपूर्णका का निरोण सामने धात् हृद् का घटकाव (वे ६ ४) । पहुणिय देखो पहुम = प्रहुत (सुपा ४) । पहत्य व [प्रहस्त ] राजस्य का मामा (से १२ ५५)। पहल वि [रे] सवा इष्ट (दे के १)। पहुन्म तंक [प्र+हन्म्] प्रदर्भ से बति करना । पहुम्भद्र (हे ४ १६२) । पश्चम न [पे] १ पुर-काल वेष-पुरुष (१ ६ ११)। २ कात-अस दूएका ६ विवर, क्रिप्र (वे ६, ४३)। पहरमत पहरममाण } केशो पहण = प्र + इत् । पह्य वि [प्रहत] १ वर्र, विशाहका (ने रे दंदां इहरे)। २ मार काचा गया, निक्षत (महा)। पह्य वि [महुत] जिल पर प्रहार किया गया हो नह 'पह्ना ब्राप्टिमंतियबसैल' (यहा)। पद्दयर 🙎 👣 निकर, सपूह, दूव (दे। रेक्ट जब रेश पाय)। पहर सक [म + ह] प्रहार करना । पहरह (जन)। वह, पहर्रत (महा)। संहू, पहरिक्रण (महा)। हेर पहरितं (महा)। पहर र्थ [प्रदार] १ मार, प्रहार (ई. १६० थर् प्राप्त संक्रि २)। २ अहापर प्रद्वार किया हो नइ स्वान (से २ ४)। पहर पू [प्रहर] तील भी का नमय (का २० ६१ पाम)। पहरण न [शहरण] १ वक्त यातून (धाना भीप विषा १ १ गजा)। २ प्रश्रर-क्रिया

(से व वय)।

प्रतिवागुरेव (सम १९४) ।

विवालगाही वह (मृदि)।

(स्वयः १ ६) ।

संक्षि १६)। मणि पहनिस्सं (पि १२१)। बङ्क पहुर्यात (माट—मासवि ७२) ।-पह्य दू [प्रश्नव] क्रपत्ति-स्थान (प्रश्नि ४१) । पहच चेको पहाय = प्रमान (स. ६३७)। पद्य देवो पद्द≕ प्रञ्ज (विसे ३ द)। पहुष पूँ [प्रश्नव] एक जैन महत्व (कुमा) । पहणिय वि [प्रभृत] को समर्थ ह्या हो 'मणिकुंबमायुभाषा स्टबं नो पहिंबयं नरिवस्स' (बुपा ६१६) । पइस बर्क [प्र+इस्] १ इच्ना। २ क्पहास करना । पहसद (भवि सरा) । वह पहस्ता (क्य)। पहुमण न [प्रहृसन] १ छपहादः परिद्वास । र सारक का एक मेर हास्य-रस प्रधान माटक करक-विरोप 'पहुसलुप्पाय' कामसत्य बयर्ख' (स ७१३ १७७) हास्य ११६) । पद्दस्यिव [प्रद्सित] १ को इसने बग हो (मन) । २ जिसका छाहास किया हो शह (मवि)। वेत हास्य (बृह् १)। ४ ई पवनध्यय का एक विद्याबर-मित्र (पाउम 2X X4) 1 पहासक ब्रि÷ द्वाे १ त्यायकरनाः २ अरकः क्य होना क्षीए होनाः "पहेल मोह" (उद्य पश्राह्मा केनो पहाराष्ट्रया (पर्छ १---पत्र ४ १२: वि १६६) । वह पहिळामाण, पश्चलमाण (पन धन)। संक्र-पद्माय पहराय 🙎 [प्रभराज] चरतनेव का छऽवां पद्दिकण (बामार १११ वन ३)। पक्ष भौ प्रिया र रीति व्यवहार । २ पहरिलं वि [प्रहृत] १ प्रहार करने के निष् क्यांति प्रमिक्ति (कड )। ज्यव (पुर १ १११)। २ जिल पर प्रशुप पहां की प्रिप्ता निर्मित तेन धाबोक बीति (भीतापामा पुर १ २३४३ दुना केइन यहरिश र् [प्रहर्ष] बाकर, गुरो: 'वागीवी ११४) । मंद्रस रेनी भागंद्रस (परम ६ पहरियो दीबी (पाध नुर १ ४ )। ३१)। यर प्रेकिस् १ नवे चन । २ पहस्मवित (शी) वि[एइ मानित] बानन्ति धमक्त्र के भाई भरत से साब दीता बेनेताना एक राजि (राज्य वर, १)। बहुँ हो।

ta	पाइमसदमद्द्यको	पहाड-पडुज
[प्या] व्यव्हें बापुरेश की पण्यती (ववस व २ १००)।  वहाइ कर [म+मान्य ] इकर उकर  स्वारता मुगारता। प्रश्तिति (प्रयोश के दी)। प्रदाल कर [मप्तान [१ नामक प्रतिकाति । पुत्रता कराति हु (प्रयुक्ति कि प्रयान कर्माति हु (प्रयुक्ति कि प्रयान कराति हु (प्रयुक्ति कि प्रयान कराति कि प्रयान कि प्रयान कि प्रयान कराति कि प्रयान कराति कि प्रयान कि प्रयान कि प्रयान कराति कि प्रयान कराति कि प्रयान कि प्रयान कराति	पाइस्तरिस (क्या-प्या)  पाइस्तरिस (क्या-प्या)  प्रदारमें साइस्ति मर्ग पहरेगा भवि  (का र र)।  प्रदार में साइस्ति मर्ग पहरेगा भवि  प्रदार के [म + भावप] मन्यद्र करा गिर्म कर कर का नि  प्रदार (क्ये)  प्रदार के विद्यापित्र (क्ये)  प्रदार (क्ये)  प्रदार के विद्यापित्र (क्ये)  प्रदार (क्ये)	पहिंद्ध के पहुं अपहुं (पीरा पुर १ वर्षक कुल से पहुं अपहुं (पीरा पुर १ वर्षक कुल से १ वर्षक

पहुणाइय न [प्रायुण्य] द्यातिका व्यक्तिवि

सरकार 'कालमीक्लक्ष्माइरलकालाइम्बह

शाहि (? इ)यं संपादेई (रंगा) । पहत्त 🖟 प्रिभृत 🏿 १ पर्याप्त काफी नावतं च पहुंच" (पाम गडह मा २७७)। २ समर्थे (मे २ १)। १ पहुचा हुया (ती (X) पहुन् देका पमिइ (सँवि ४' प्राइ १२)। पहुष्प । यह [प्र+मृ] १ समद होना यहँच रे सकता । २ पहुँचता । पहुण्या हि ४ ६६ प्राष्ट्र ६२) एपाची बारियाची निय-निक्येद्रमु जह पहुन्यति दह दुराई (पुरा २३ )। पहुप्पामी (कास) पहुरियरे (है व १४२)। वह 'कि सहद कोवि कम्सवि गाय महार पहटवंदो पहटपमान (वा ७ योप १ १, क्यत १६)। क्वड पहुब्लेट (स १४ २४ वच १ )। हेक्स पहिंचित (महा) । पहची औ [पृथियी] मूमि बरती (नार---मलाडी ७२)। पद्व द्व [मिस् ] एवा (हम्मीर १७)। बद्द पूँ [पिति] कही सर्व (इम्पीर १३)। पहरुदंत देशो पहुद । प्रस्न वि [प्रभृत] १ वहत प्रकृत (स ४३३)। २ व्यवा १ मूरा। ४ उल्ल (प्राष्ट्र ६२) । पश्चमान रेसो पहा = प्र + शा । पहण न वि] नपू की वे अने पर दिला के बर दी बाडी बसीन (साका २ १ ४१)। पहेण । न [६] १ ध्रीननेपानन बाच बस्तु शी भेंड (बाबा बूब २, १ पश्चम ) १६ वा स्रवाह व विश्व हुव्या पाय दे ६ ७३)। २ सरस्व (हे ३ ७३)।

पहेरक न [प्रहेरक] सामरख-विशेष (प्रह

पद्दोस तक [स 🕂 भाव] प्रसालन करना

बीना । पहोएरज (माचा १ २,१ ११) ।

यहोइ वि [प्रधाविन्] बोलेशका (वस प

२, १-पत्र १४१)।

94)1

पविता (जूबा १९३३ और) ।

पहोद्रज दि दि र प्रवर्तित । २ प्रहुन्य (R 4 24) I पहोड सक [यि+लुल्] हिमोरणा धन्दो बना । पद्रोड६ (भारता १४४) । पहोच्या श्रीत विधान ने प्रकासन देवपड़ी मण मं (दस ६ ६)। पद्दोक्ति वि [प्रवृणितः] द्विननेषामा बोलता (या ७व: ६१६ से ३ ४१ पाछ)। पद्मीय वैसी प्रधीय । पद्मीयाद्वि (धाषा २, १ € 8)1 या शक या योगा, पान करना । प्रवि वाहिश्व पाहायि पाहामी (कप नि ६१६) क्य)। क्ये, विश्वद (उप) पीर्थाप (पि ११६)। क्वक पिर्जात (गर्वक कुत्र १२ )। पीयमाय (स ६**६२)** पेंत (का) (सर्छ) । संक पाऊण पाऊर्ण (मार---मुक्त ६६ गतः इत्र ६२)। हेत्र पार्ड पायय (काचा)। ्रायस्य पिञ्ज (मुगा ४३६ प्राप्त १ २ इस्मा २ ६) पत्न पथक्य (इसाः व्यक्त १) प्रेज (छाचा १ १ १+ चवा) । पासक पारिक्षण करना। पाइ, पायक (विशेष २% क्षेप्र २४) पाउ (चित्र)। पासक [ग्रा] सूँचना गम्ब केना। पार पासद (ब्राप्ट वर्ष २)। पाइ वि पारिन् विलेनामा (वंशा ह 7)1 पाइ वि [दायिम्] पीनेवासा (ता १६७ ft () i पाइअ न [व] बदन-विस्तार, ग्रुहे का फेबाव (R 4 3E) i पाइम देशो पागय = प्रकृत (दे १ ४० प्राक्ट. <ाब्रासुरः जला≪ यामापि १६}- भाह पाइमाची वासावी' (त्रुवा १ १)। पाइक वि पिक्षित् विकास क्या पान करामा हुम्म (कुत्र ७३८ सूत्रा १३ पहेंसिया की [ब्रहेस्डिश] हुए बारुपदानी

YXY) I

२१व)।

थाईत केवी पान - पामम् ।

वैनिक (दे २ १३० कुना)।

पाइक पूँ [पदावि] प्याचा पैर से क्लनेवाला

पाइकि की [प्रापृति] प्रापरण वक्त (या

1 (5

पाइण देखो पाईण (पि २१६ टि)। पाइला (धर) की [पश्चित्रा] सन्द-विशेष (पिन)। पाइव [शी] वि [पाचित] पद्यामा हुमा (मा"-पत १२६)। पाइक देवो पाइण (एदि ४१)। पश्चम न [ग्रातिम] प्रतिमा बुद्धि-विशेष (कुप्र १११)। पाइम वि [पाइम] १ पकाने मोग्य । १ काल-प्राप्त मृत (बस ७ २२)। पाइम वि [पास्य] मिधन मोग्य (प्राचा २, 1 fe 5 X पाइ औ [पात्री] १ मानत-विशेष (णाया १ १ दी) । २ छोटा पाष (सूस २, २ ७ ) । पाइण वि श्रियानी १ पूर्वीक्या-संबन्धी 'बबहार-पारणाई (१ ईणाइ) (पित्र ६६) कम्प सम १ ४)। २ न गोत-विशेष । ३ वृंकी वस गोत्र में एक्स भी प्राप्तात बाह पाईएसमेले (कप)। पाईणा की प्राचीना पूर्व दिशा (सब २ २ ६८ छा ६--यम १४६)। पाठ केको पार्व≂ ब्राह्म (मूम २ ६ ११ पात्र पुष्पायु द्वार य'इ (ठा १---पत्र ४३ एए)। पात्र पूंडी हि १ थकः, मादः, भोजन । २ इस्. ळख (दे६ ७४)। पाउक न [के] १ विष पनस्याय (के ६ १८)। २ मछा। ६ इत् (देश धर्)। पाडम देशो पाउड = बाइट (या ४२ स वस बीय पुर ६ का पाफ है है 1 (393 पाडभ रेको पागय (मा २, ६६व' मामा क्य, तियो । पाडमाकी [पादुका] १ वहाई कछ का बुता (बय; सूच २ रहा कि १७२)। २ बूता पवण्डी (नुपा २५४) धीत) । पार्व केली पाळ्याः भाउंग प्रादसी प्रभट स्पक्त भारत चर्चीत करिस्सामि पार्च (भूम १ १ १

पारंद्रज २ न [प्रार्प्रोस्द्रन ६] कैन

पार्रेष्ठपमा रे पुनि का एक छनकरक रजीवस्था

(पत ११२ टी। घोष ६६ ३ पंचा १७३

₹**२)** । पादकर एक पादुस + कि] प्रतट करना। मि पाउनिस्सामि (क्य ११ १)। पावकर नि [प्रादुध्कर] धारुमीनक (सूच १ ₹% **२४)** । पावकरण न शिद्धकरण र शबुर्शन । २ रि बो प्रकारिय किया बार बहु । ३ कैन सुनि के निर्एक किया-दीय प्रकार कर थै। इर्द क्लिंग 'पश्चिक्कपादककारणपामिक्क' (थराह २ ४--न्त्र १४६)। पाउकास वि [पानुकास] पैने की इच्छा वाला 'तं को हो एतियाद माउवाद बुडे पाउनामे से हो लिग्यच्यार (खाया १ १०)। पाठकावि दिी मार्ग्यंत मानित (दे ६ ¥8) 1 पाउचरण केवी पाटकरण (चन) । पाइक्क्सस्य न दि पायसास्का १ पाचाना रही मतोरहर्ए-स्वामा काइ वेब स्मापाउल्लाबसम्म रक्योर्प (स १ % भत्त ११२)। २ मलोरसर्प-क्रिया "रक्सीए पाउत्त्वास्त्रयनिमित्त्युद्धियो (स २ १)। पाडग्ग वि दि । सम्य सम्रास्थ (वे ६ ४१ स्का)। पाइमा नि [प्रायोग्य] इनित तास्क (तुर ११८ २१६) । पाडग्ग्ह र् पुत्रदुमह् । यात्र (यात्रानि ર 1ા पार्डागाम नि वि] १ क्या क्लेन्स्या। २ सोट राष्ट्रन विश्वाहता (वे ६ ४१ पाडड वेची प्राप्त (श्रष्ट १९) पूछ १२ )। पाउड वि पाइस रिधान्यायिक बना ह्या (सूम १ २ २ २२)। २ वळ, अवहा (छ १ १)। पाक्रत सक शा + की बालक्कित नरुवा पदिरमा।पाञ्चद (स्वि ६१) । संहः अर्थ पाडिकरण चैंत शिग्नचौ' (नहा) । पात्रण सर्वि म + अराप्] जात करता। नाकनुद्र (वन) । नाकगुनि (चीरा) सूच १

मनि पाउरिएस्सामि पान्नीसविद्य (पि १६१) क्या)। संकृपात्रविका (बीयः लाया १ १ विपा २ १३ वपा उवा) । क्रेब्र पाइणि-त्तप (बाका २, ३ २ ११)। पाठण (धप) देशो पाषण = पारम (पिय)। पाटच देवो पटच = प्रयुक्त (बीप) । पाडप्यमाय वि [प्रादुष्यमाव] प्रधा**पुरा**-प्रकात-पूका 'कस्ब' पारुपवावाए छाछीए' (खाया १ १३ घर)। पात्रक्याय वक [प्रादुस्+भू] प्रकट होता। पाज्यसम् (पद ४)। भूका पाकमधित्वा (स्वा)। वह पाउवमर्थत पाउडमबमाय (सुपा 📢 🕎 प्र २८) शांबा १ १)। एक पावस्मवित्तार्थ (उदा यौप) । क्रेष्ट्र पाउक्मविचय (पि १७६) । पाडक्शव वि [पापोञ्जय] पाप से सरपन (का ७६५ थे)। पाउच्यवजा को जातुर्मेवन] प्रभूमार (सर 1 (3 1 पाप्रक्रमुख (क्षप) श्रीचे चेको (क्रश) । पाउद्भूय वि [प्रावुर्भेत] १ बलक संबाद । २ प्रकटित (औप सन्, बनाः विपाः ११)। पाउरण न [शाक्रम] वह, क्यका (सूचनि द्ध है १ १७१ वेचा १,१ पात्ररण न [के] नक्य वर्ग (वह)। पाउरली बी [वें] क्रमच वर्ग (वे ६ ४३)। पाररिश्र केरो पाषड = प्राकृत (दुन्न ४११)। पाइक्ष वि [पाएकुक्ष] हतके दुस का जबन्म कुल में शरपा 'दवानियं पाउचाए धरिन्छ-बार्य (छ ६२१), 'नसदर्गडरगडस्थान्यर्थयन-संधीपरावरपेलकास्त्रमी (तुर १ ३)। पादकुत देखो पात्रशा 'पारस्ताई बंकमट्टाए' (तुम १ ४२ १४)। पाठव न पादोदी पत्रश्यसालव-वन नाज्यसभी व एक्षालुक्सभी वं (लाया है ७---पन ११७) । पाइस दंशिक्य विश्व ऋतः (१:१ १९। ज्ञाप-महा)। की वर्ष पुँ [कीर] क्याँ ऋतु वें अस्मा होलेशका शीव-विशेष

(श)। । गम चूं [गम] वर्षा-प्रारम्ब (पाय) । पार्वाधम वि प्राकृपिक वर्ग-प्रमानी (चन)। पाठसिञ्ज नि [प्रोपित प्रवासिम्] प्रवार में यदा हुधा, क्ति नेकायमधीरियमानम्यार्गं परेश गुरामी । यग्त्रयवकोत्रभारगीत निमद् पार्वियव नामी। (मुपा 💌 ) । पाइसिमा 📽 । प्राद्वेपिकी 🕽 हेय--मस्तर से डोनेपाला कर्म-सम्ब (सम १ ) हा २ 🗱 भव नद १७)। पाकदारी की [दे पाकदारी] अलाको सलेगाबी, भार-यानी से मानेगाबी (स ६६४ म) । पाय व कि प्रमृति, (वहां से) गुरू करते (बोच १६६) ग्रह १) । पाय एक पावय | रिकाना । पार्ड (ह ३ १४६) । पाएकाह् (महा) । वक्र पाईव पानवंद (दुर १६ १३४- १२ १७१)। र्थक पाएचा (याक १) । पाए एक [पाइय ] विशेष प्रता । पार्यः (\$4 FYE) 1 पाय श्रम [पाम्य] पनमाना । पाप्र (हे ६ १४१)। शर्म, पाइकाइ (मात्रक पाएज) य श्चियंजी बहुत करके प्रायः पायल 🕽 (विवे ११६६) करन, रूपा मानू ¥\$)1 याओ = [ प्रायस् ] अनर देशो (या १७)। पाओ च [प्रावस] प्रवासक प्रमाव (सुक्श १ ६, क्रम्म)। पाओकारण वेबी पाडास्त्र (पिंड २६४) १ याखीग वैको पाटम्स (सूप्रति ४३)। पाधोरिय वि [प्रावारिक] प्रकल-बनिक सररामाविक (वेदय १४१)। पाञामा केटो पाडमा (भ्रस १३ वर्षेर् ११× )। पाओपराम न [पान्पोपराम] भारे पाओ-बरामप्य (वद १)। वाओवर वृ [प्रातुष्तार] देवो पाउपस्य (ठा६ ४ पैचा १६ ४)।

पाञ बरामण न [पात्रपोपरामन] सनसन-विशेष मध्य विशेष (सम ३३) धीप कम मम)। पाक्षोचगय वि [पार्योपगत] बनग्रन विशेष से मृत (भीप कप्प भंत) है पामीस दें कि प्रदेयी मतसर, हेप (ठा ४ <del>∨...पत्र</del> २० )।

पाओसिय देवो पादोसिय (धोच ६६२)। पाओसिया के पाठमित्रा (वर्ष ६) । पौडिया नि [दे] बसछः यानी से गीमा पांह रेको एंड् (पर २४७)। सुझ ई

["सुद] प्राथ्लय का एक मेद (ठा४ ४---यह २०६) ।

पाद्ध केवो पाग (क्प्प) ।

पाइस्स न [प्राकास्य] दोय की बाठ दिवियों में एक सिक्षि 'पारम्भद्रकेश पुनी मुनि 🖚 मीरे वर्ति व्य पुनि वरद' (कुप्र २७७)। पाशार पुं [प्रान्तर]किता दुवें (स्प प्रच४)। पास्ति (दी) वेबी पागय (प्रयी २४) नाट--केछी देश वि १६ वर)।

पार्लंड देवी पासंड (पि २६३)।

पारा दे [पाक] १ पवन किया (श्रीमा छवा) सुपा १७४)। २ वैतम-विद्येप (गडड)। ६ विपाक परिखाम (वर्गेंग्रे ६६६)। ४ बनवान् दुरमन (बावम) । सास्रया तू िशासनी स्थ, देव-पति (हे ४ २६१) पत्र भिरे रे)। सासणी भी विशासनी इन्द्रबा<del>ध-विद्या (सूध २<sup>०</sup>२ १७)।</del>

पागइम नि [श्रकृतिक] १ स्वाधानिक। २ वृ साबारण मनुष्यः प्रतकृत कोक (१व ६१)। पागड एक [प्र+कन्यू ] प्रकट करना, चुवा करता व्यक्त करता । वष्ट्र- पाग्रहेमाण (धार ४--पत्र १७१)।

पागद्व वि [प्रकट] म्यक, कुला (उस्र १६, ४२) मीप चन)।

पागडण न [प्रकटन] १ प्रकट करना। २ नि प्रकट करनेनावा (भर्में से २६) । पागडिम वि [मकटित] व्यक्त विमा हमा (उदा धीर)।

पागविक ) वि [प्राक्रियम्, क] १ यम धाराबिकेक रे बानी "पानही (? क्वी) पहुनए मुद्रवर्षे (लाबा ११) । २ प्रवर्शक प्रवृत्ति करानेवाला (परहा १ व---पत्र ४१)। यागच्या न [प्रागस्त्रय] बृष्टता, विकार (सूच

2 X 2 X) 1 धागिकस ) वि [प्रागतिसम्, क] पृष्टवा धागिकस्य विकास पृष्ट, डीठ (सूच १ ५,१

धर११८)। पाराय वि [प्राकुत] १ स्वामानिक स्वभाव सिता । र सार्यावर्षे की प्राचीन नोष-भाषा न्सन्क्या पापमा वैष<sup>\*</sup> (ठा ७—पत्र १६१ विसे १४६६ टी प्यण १४ चुपा १)। व पूँ शाकारस कृतिकामा समुख्य सामान्य बोबः 'बेसि ग्रामागोर्च न पागठा पर्राविद्धिति' (पुण्य ११) किंदु महामध्यम्मो दुरम्बस्मी पानयन जुस्स (नेद्दव २१६) सूर २, १६)। भासा को ["भाषा] प्राकृत भाषा (का २३)। शागरण न [क्याकरण] प्राक्ट भागा का क्शाकरस्त्र (विशे ३४११)।

पागार दें [प्राकार] किया दुवें (चरः सुर 1 (ttx) i

पाजावच पूर्विमात्रापत्यी १ वनस्पति का यमिप्राता देव ।: २ वनस्पति (ठा १ १---पत्र २११)।

पाटप (ब्रुपे) देखी वाहब ( यह )। पाठीण रेको पाढीण (परह १ १--পদ ৬)।

पाड केने पद्भड - पाट्या पर्धवपत्तकापृहि पार्थिष' (सूचनि ७६) ।

पाड का [ पातय् ] विरामा । पाकेइ (उन्)। धंक पांकिल पाकिल्य (काल ११६ दुप्र ४६)। कनक पाडिकांत (चन ३२ टी)।

पाड केलो पाडम = पाटका 'दी सी विद्वहासी सय नद्यो नेसपाडम्म (सूपा ५६ )। पाडवर वि [व] पासक नित्तवाना (१.६ 44) I पाडबर र्थु [पाटबर] थोर, शस्कर (पाय

4 4 4x) : पाडण न (पाटन) निनारक (भान ६)।

पाइण न [पासन] १ विराना पाइना (मुचनि ७२) । २ परिप्रमणः इवर-उवर 'बहुबडरपिडरपडियारपाडग्रासा कमकी नो (कुमा २ ३७)।

पाडणा भी [पातना] अपर देखो (निपा र t-un (4) :

पाडय र्पु [पाटक] मुहल्बा रम्पाः बंगल पाड्य गंतु (बर्मीन १६वा निपा १ वा

पाडय वि[पातक] गियनेवाना । श्री विद्या (मुच्छ ९४३)।

पाडल पू [पाटक] १ वर्ण-विशेष श्वेष सीर रक्त कर्श प्रभावी रंग। २ वि श्वेत-रक्त वर्णुंगला (पास)। ३ न पान्तिका-पूज्य ब्रुकायकाकुल (या ४६८) सुर्द ३ १२७ दुमा) । ४ पाठका बृज्ञ का पूज्य पाठक का कुस (या ६)।

पाइन्ड दे दि । १ ईस प्रति-विशेष । २ इपन बैस । कमस (दे ६ ७६)।

पार्बक्रसरुण पू वि] इंच पश्चि-निधेय (रे € 8€) I पाडका 🕸 [पाटका] वृत्र विशेष पाडन का

मेड पार्मीर (या ४३६ सुर ३, ३२ सम १६२) 'र्वपाय पाञ्चश्नको समास वसु पुरुवपरिचरी होई (पडम २ ३६)। पाक कि की [पाटकि] अपर रेकी (मा

४६८)। उत्त पुत्तन [पुत्र]नगर विरोप पठता जी प्रावक्रत विद्वार प्रदेश काप्रचाल नगर है। (है २८१४ -पि २६२ चाद ३६): पुच्च वि [पुत्र] गाट**लिपुत्र-शंबर्ग्या** पटना का (पत्र १११)। संह ल विषया नगर-निरोप (विपा १

 तुपालक्ष्माः विकासिक्षमः। पाक्क्सिय नि [पाटछिन] स्वेत रक्त वर्जनाका किया हुमा (गतक)।

पा**वसी रे**नो पाडक्कि (वर पू १६ )। पुर न ["पुर] पटना नवर (वर्गीव ४२) । बुक्त न पुत्रिको परनानपर (यह)।

पाक्षण व [पाटण] पट्टवा निपुराक्षा (बम्म

थाज्ञचण स [वे] पाच-पतन पैर पर विस्ता प्रखाम-विशेष (दे ६, १६)।

पात } फेबो पाय ≔ पात (ग्रूप १,४ २

पाद् । पर्या २ ६-- पत्र १४०) । विशेषण व ["बाधनी पात्र वॉक्ने का वक्त-कर्य केन नुविकाएक उपकरता (पर्राह २ %)। पाव रेको पाय = पार (निपा १ व)। सस वि **"**सम**े पेत-विशेष (ठा ७---पत्र** ६६४) । ीहपय न [°ीछपन्] ह2नाव शासक वारक्ष्में बैन यानग-प्रन्य का एक प्रतिपाद्य विकय (सम १२)। पादु देखो पाद=प्रादुस्। पादुरेक्षप् (पि १४१)। पातुरकासि (तुस १: २, २ ७)। पाने देवो पाओ = प्राठस (सुन्न १ ६)। पादोसिय दि प्रादोपिकी प्रदेशकाल का प्रबोध-शंबन्धी (मोन ६६व) । पाइच देखी पावच (फ १६७ घ)। पायस देखी पाइस (वर्गर्स बव६)। पाचार तक [स्वा+गम् पाद+ कारय्] पबारमा 'पाबाख निमनेक्टे' (मा १६)। पाबद्ध वि [प्राबद्ध] विरोध वैश हथा पारित (निष्कृ १६)। पासाइय ) वि [प्रामातिक] प्रमात-पामाविय र धंक्त्री (ग्रीवमा ३११ पतु ६ वर्गीव १ )। पाम सक [प्र+काप्] प्राप्त कला दुबदाती में 'पामद्र'। 'कारानेद परिमें किछान्य विमरोक्तीसमीहान्।। सी सप्रमदे पामइ मदमलए बम्मदरहर्ल ।।" (पाछ १२)। कमें पामिक्क (सम्मत्त १४२) । पामण्य न [प्रामाण्य] प्रवाख्टा जगाउपन (धर्मसं ७६) । पामदा भी [ब] बोली पैर से बाल्य-मर्दन (के ( Y ) I पामभ केनी पामण्य (विशे १४६६) वेड्स \$ 8X) 1 श्रामर पू [पामर] इत्तोवन वर्षक केठी का काम गरनेशामा गृहस्य भागरमञ्जयहेनशासा नामना रोजना इनिमाँ (चाम' नमा १९४) स्वर हे ६ ४१/ पुर १६ ६६)। २ ह्यारी कार्तिका मनुष्य (क्ष्णुः का **११व) । ३ वृ**र्व केरपुत्र, सप्रानी (मा १६४): न्द्री नान वानरं पुत् बचर दुर्वरहरे (ना १२)।

पामा की [पामा] रोक्शिकेप चुनली चान (तुपा २२७) । पामाश्च पू [पद्माट] पमाङ् पपार, पशाङ **चक्का पूध-विशेष** (पाय)। पासिच एक 🐧 उचार होगा। पामिक्नेज (धाचा२२२३)। पासिकान कि अपसित्य देशार वैना बापस केने का बास्त कर बहुए करना। २ वि को चवार मिया बाय यह (पिंक ६२ ३१६ बाचा ठा३ ४ ३। बीपा पर्शा र ५ वर १२ ध वंचा १३ अध्युता ६४३)। पामि चित्र वि 👣 उचार लिया इच्या (माचा १ १ १)। पामुक्क वि [ममुक्क] परिष्यक्क (पाय स 4×6) 1 पामृजान [पादमृख] पैरका मूल कान पॉक का भाग मान (परुप ६ ६ सुर 🖘 १६१) विड ६२ ) । वेशी पायमुक्त = पारपुत्र । पामोक्क केवो पसुद्द = प्रपुत्र (शासा १ ४) =∪ महा**)** । पामोक्स 🛊 [धमोस] ग्रुव्ह, कुकारा (का ६४व थी) । पाय 🛊 👣 १ रच-चक्र रजका पहिला(रै ६ १७)।२ फसी सीप (वड)। पान पूँ[पाक] १ पानन-क्रिया। २ रही ई (माइस्टिश्चर २ टी)। पान वि [पारूय] पारू-योग्य (दस ७ १९)। पाय केवो पाच (चंड) । पाय <u>पं</u>[पात] १ भवन (पंचा २ २**१** वे १ १६) । २ श्रेमन्तः 'पूखो पूखो वरमसिट्टि पाएकि (बुर ६ १६)। पास पूं[पास] पानः गीने की किया (था **२३)** । पाय पूर्विष्यु १ यजन विष्ठ (था २६)। २ पै८ चएउ नीच "चल्लाकमान नाना (पामः। श्रावा १ १) । ३ पच का भीना विस्था (क्षेत्र १३४३ शिव) । ४ फिएल 'धेलु रस्की वार्वा (पाम धाँग २ )। ३ लापु, पर्वत का कन्क (पाय) । ६ एकारान क्षा(योगोय १)। चार्यपूर्णीका क्या नार (रक) । कंचणिया वी ["बाह्मनिश्रा] पैर ब्रह्मासन का एक उन्नर्यनाम (राज)।

कंगड पुर ["कम्बड] पेर पॉको का अस-सएड (क्स १७- ७): **कुनकुर** प्र िंड्रक्ड्रन] कुस्कुन विश्वेष (स्ताना १ १**०** ब्रह्मर (चित्र)। चार दूं विचार] पैर से गमन (छामा ११) । चारि वि चारिन्] पैर से याताबाद करनेवाला भाष-विद्वारी (परम ६१ १६)। आहरू मास्मान िकास की पैर का बाजूकछ-विशेष (मीर) थनि ३१ पळह२ ४)। साजन["प्राज] भूता पर्याची (दे १ ६६)। पर्वत र् [असम्ब] पैर तक सटक्लेशाबा एक पानु यस्त्र (स्त्रया १ १ — पत्र ६३) । पीड देखी वीड (द्याना १ १ महा)। पुंक्यम ग "प्रोक्क्जन राजेश्वरक कैन सामुका एक क्यकरश्च (बाबा; बीव १११) ७ हा नर-चका)। य्यक्रजन ["यदान] पैर पर विरमा क्लाय-विशेष (पटम ६३ १×)। सू**छ** न िमुक्की १ देशो पासूछ (क्छ) । २ मनुष्यी की एक छावारख बाति नवंकों की एक वाति 'समायमाई पाममुखाई' 'पूबदमवाकी पावनुकेह्इ पत्ती रहसमीवे 'पछविदाई पायपूनाई 'सङ्खियाई पानपूचाई' पर्च-व्यक्ति पाममुनेहिं (स ७२१: ७२२ ४३४)। क्षेत्र[यामा क्यं [क्षेत्र[निका] पर गाँवने का कैन राष्ट्रका एक करहमा क्लान्य (बोच १६) । धंदव वि विश्ववृक्त वि पर विरक्त प्रजाम करतेशाचा (जावा १ १९)। बळ्ण न "पदान" पेर पर विरन्ध प्रखान विदेश (इ. १. ४ ३ ड्रमा) बुर १. १ () 1 विश्वया की विश्वचित्री पार प्रतन पैर क्रूना, मणाय-विरोप; 'पामगढियार क्षेत्रपुतार्थ प्रव्यक्ति (जाना १ ५। तुपा २१) । विद्वार पुंचिहार] पैर छ वर्षि (मव)। बीड न ["पीठ] पैर रचने ना भासन (है है दुमा पूपा १)। सीसग न [ शीर्पेक ] पैर के क्रपर का भाव (राम)। | असम न ["कुछ इ] क्रन्ट-विशेष (निय)। पास वैची पचा ⇒ पात्र (सावा; सीप: सोवस १६ १७४)। किसरिजा को किसरिजा 🁫 बाजुर्यों था एक काफरहा, वाक-सनार्जन MT WITH John Co .. D.S. ..... Al .

ट्रबण, "ठयण न ["स्वापन] बैन सुनियों का एक उपकरण पात्र रखने का वक्त-खब्ब (विदे २११२ टी घोष ६६८)। पिज्ञोग, "निज्ञोग दू ["निर्योग] बैन साहु का यह उपकर्ण-समुद्र--पात्र पात्रक्त्य पात्रकापन, पामनेशरिका पटम रवकारा धीर गुरुवक (पिंड २६ वह व विसे २११२ टी)। पश्चिमा भी भितिमा पान-संबन्धी समिप्रक---प्रतिज्ञा-विदेय (ठा ४ ६) । वेसी पाद = पाव । पाय (ग्रप) केही पत्त = ग्राप्त (पिंग)। पाय थ [प्रायस्] प्रायः बहुत करकेः न्यायपार्य बस्ते (वि (वि ४४६)। "पास एंव ("पाद्) पूज्यः 'संदूष्यः समिध-**एंतिपासमा' (ग्रांव ३४)**। पायए देखी पा≕ पा। पार्च वेची पाय (स ७६१ सुना २०, १६६) আৰক ভাই)। पार्यस[प्राक्तस्]प्रऋतः (सूत्रः १ः ७ **१४)** 1 थार्यगृह पू [पादाक्रध] पर का संग्रह (शाया १ म)। पार्यक्रि वे [पावक्रक] पवर्शवक्रव शास, पातकत बोय-मूत्र (एति १६४) । पार्वस म [पादान्त] मीत का एक नेक पाद कुक्रमीत (राय १४)। थायंद्वय पू [पादान्द्वक] पैर बांबने का कञ्चनम जनकरण (बिना १ ६--नव ६६)। पावक केवी पायय = पाठक (वव १)। पायक रेको पाइक (सम्मत्त १७६)। पायक्तिरूप न [प्रावृक्षिण्य] प्रवृक्षिण (परुम ६२ ६२)। पायग न [पातक] पाप (बाक्क २४८)। पायन्तिहत्त पुन [प्रायक्रित्त] पापनाकृत कर्म पाप-धन करनेनाता कर्म 'पार्शकती नाम पायन्त्रियों चंडुयों (सम्मय १४४ बनाः यीप नन २१)। याय**ड देवो** पागड = प्र+कटम्। पाथडह (ध्वि)। यह पायक्षेत्र (पुण २६१)।

क्षक पायडिकांद (यः ६०१)। क्ष

पायकिर्ड (बूज १) ।

पायक्ष न दि ] शंक्ष धाँयन (वे ६ ४ )। पाय**ड देशो** पागड=प्रकट (हे १ ४४° प्राप्त बीच ७३ औ २२ प्राप्त ६४)। पायह देशो पागह - प्राकृत' 'बाईपि वाथ रियसे रायर परिकामित्र भसक्रमोर्मा पाध डगणिया विम रच्चि परसरो सहर्षु यामञ्चामि" (धिव २१)। पायश वि [प्रावृत] प्राण्याचित (विसे २१७६ धै)। पायिक वि [प्रकटित] व्यक्त क्या हुमा (हुम भा से १ १६) वा १८६, २६ ३ गढड स ४१०)। पायबिद्ध वि [प्रकट] चुना (वण्या १ ४)। पायण न [पायन] विज्ञाना पान कराना (ग्राया १ ७)। पायस न [पादाद] परादि-समूह, ध्वानों का **नरकर (उत्त १८ २ धीयः क**म्म) । (शिय न [ीनीक] परादि रीन्य (पि 🕫 )। पायपुंच्या न [पार्युक्कन] पार-विरोध रायव सकोरा । पायप्पश्य पुंदि] दुक्टुट युवा (वे ६ ሃኚ) ፣ पायम न [पातक] पाप (भन्दु ४३)। पायय देखी पाय = पाप (पाम)। पासय देखो पागय (हे १ ६७)। पायस केकी पायत (से ६ ७)। पायय केवो पावय = पावक (यमि १२१)। पायय वैकी पाय = पाव (कव्य)। पायरास 🛊 [प्रावराश]प्रावःकाव का श्रोदनः क्लपान वक्कावा (शाचा ग्रामा १ ८)। पायस्य न [वे] चशु श्रंत (वे ६ १८)। पायव र्षु [पाव्य] कृत वेह (शक्त)। पायक्य वैको पा = पा। पायस वुन [पायस] दूव का मिल्ला कीछ 'पायसो बीरी' (पाम: सुपा ४६४) । पायसो च [प्रायशस्] प्रायः **बहुत कर** (तप ४४६ पंता ६, २७)। पासार पू [प्राकार] फिला कोट, दुर्ग (पाधा द्विरुष भूमा)। पायास व [पातास] रता-तम यमो पुनन (१११ व अपाय)। कम्प्रा पू [क्रम्सा]

समुद्र के भव्य में स्वित कत्तराकार वस्त् (प्रणू) । पुर म विपुर] नगर-विशेष (पद्धम ४३ ३१)। मंदिरन मिनिए पतास स्थित गृह (महा)। इदिन ["गृह] बही धर्म (महा)। पाबाछ न [पादद्व ] पासस्य धेन्य पेरस र्शनिक (चरुपञ्च यत्र १८१)। पायालंकारपुर न (पातासरुक्कापुर) पातान चंदा रावस की राजवानी। 'पामासकारपुर' सिग्बं पत्ता मर्जन्ममा (परस ६ २ १)। पायायक न [प्राजापस्य] ग्रहोराच का श्रीद इवी मुहुर्छ (सम ५१)। पायाविय वि [पायित] क्लिया हुमा (परुप tt vt) i पायादिण न [प्रादक्किप्य] १ वेहन (पन ६१)। २ वक्षिण की घोट 'पायाहिलेख विधि पंतिमाहि म्हणूह नदिपए' (सिरि 1 (993 पायाहिला केको प्रमाहिला पायाहिली किंतों (बत १, ११ सुब १, ११)। पार सक [छक्] सकता करने में समर्थ होना। पार्व्यः पारेदः (हे ४ व६ पाद्यः)। **ब्ह्र** पार्रत (क्रुमा)। पार सक [पारय्] पार पहुँचना पूर्छं करना। पारेड (हे ४ ८६ पाम) हेहर. पारिचय (भव १२ १)। पार प्रत [पार] १ वट, किंनाच (माका)। २ पर्वा किनाराः 'परतीर' पार्र' (पाप्र) "व्यक्त मह होवी मण्डल हिपार" (तिसा ४)। ३ परकोक धारामी अन्य । ४ मकुन्य-सोक-मिम गरक धादि (सून्द १ ६, २६)। १ मोग पुक्ति, निर्वाण 'पार' पुरुयुत्तरं द्वारा विदि (बाइ ४) ः गणि ["ग] पार वाले-बाबा (धीए) सुपा २३४)। राय वि ["रात] १ पार-माप्त (सकसीप)।२ द्री विन-देन भगवान् यह्न (ज्य १३२ टी ) । गामि वि िंगामिनः ] पर पहुँचनेवाता (माचाः क्रम धीप)। पाजस न ["पानक] पेस ब्रब्स-विशेष (खामा १ १०) । विश्व विश्व पार को जलनेवाका (तूम २ १ ६)। ामोय 🕅 ["गोग] पार-प्रापक (गम्म) ।

₹**₹**) 1

(चय १४)।

(कर द १४६)।

(सूच २, १३)।

(सम २.२ ३१)।

(पडम १४ १॥)।

नाना (६१ ४४ २६) ।

पाहियक रेको पाहितक (धीर) ।

38) I

(छम)।

पाडिञ्जन देखो पाड = शङ्य ।

पार्विदियं न [प्रास्यन्तिक] धरिनन-निकेप

पाडिकरण न [प्रतिकरच] देशा ज्यासना

पाडिरक्य वि विदीप्स की खारा क्राप्तेवाला

माहिपहत [प्रतिपद] बॉब्बुक सब्बे

पाडिपहित्र देशो पडिपहित्र (तूस २ २

पाडिपिद्धि ची [दे] प्रतिशर्का (यव् )।

पाडिप्पचग र् [पारिप्कपक] पक्षि-किशेष

पाहित्स्रक्षि वि विविश्वाधिन । शर्वा वस्ते

पाडियेंतिय न [प्रास्पन्तिक] सम्भिय-विशेष

पाडिपय 🕅 [प्रातिपर] ६ ब्रक्तित्-संबनी

पहना दिनि ना; 'जह करी पाडिनमी पहिल्ली

नुराकानि (कार ६) । २ ई एक

पाडित्या भी प्रितियन् । तिबि-विद्येष वश्च

भी धानी तिकि नक्स (सन रेश सावा है

भागी पैन धानार्य (विचार ६ १)।

tift (Um) i

पाकिसारिय वि प्रितिहारिक वायस की पार्वतर न [पाठान्तर] विद्यापळ (श्यानक मोग्य वस्तु (विसे ३ ३७) धीरा स्वा) । 488)1 पाडिहेर न [प्रातिहार्थ] १ वैवता-इत प्रती-पाइन वि [पाठक] १ प्रवास्त्र करनेरामाः हार-कर्म, वेबहत पुवा-विशेष (मीपा पव 'पडिज' मंगवपाडमेर्जि' (क्रुप ३२) । २ ११) 'इव सामस्य याचा खाईरि सगबत्त धम्याची प्राथमन करतेशाला । ३ ग्रामातन नरतहो । बाघो प्रपश्चिपै (ब्रुग १४४) । करतेशासा यम्बायकः 'बखुपादव्य' 'चुन्पिए-२ देव-साधिष्य (अतः १६)- 'बहुर्या पुरेष्टि पाडपार्श 'बन्डशमुमिएगाडपार्ल' (वर्षीर कर्म पामिहेर् (मृ १४ महा) । **६६। छाबा १ १। क**प)। पाडी और दि | वैंस की विक्या पानी या पाइज व [पाठन] द्रम्यापन (इप ४ ११६८ परिमा पुत्रचरी में 'पार्टी' (बा ६१)। प्राष्ट्र ६१: सम्मच १४२)। पाईकी की दि] क्छी-जबपनाने की पाडणवा की [पाठना] कार देखों (पंचय पामशी (दे ६ ६१) । पाइंगोरिनि दि र निपुत इस-प्रीत ।

पार्डुगारि कि [म] रै विद्युत प्रधान्यिय । र तक में सावका । देशी नक्ष्य देशन-वाली बाद चार मेरी म देशियों वाला विद्युत्त देशिय विश्वास्त्र करूर साहि का सरीर में कलोग । र दि पट्ट निपूत्त (दे ६, ०६)। पार्डुविया कि [सारीतिक] किनी के साध्य हे होलेनाना सारीतक। की सा (स २, नवर १)। पार्ड्याच की [म] पुरस्त्रपूरण कीहे ना निवार (दे ६ देर साम)।

धर (दे६ ४२)।

पाडेश देवी पाडिश (दम्म ११)।

पाडय देवी पाडग (इस्स. छ का इस्स. १ . १ — नव २ : सहा) ।

पाद्यक्ष कि पिर्वालको प्रक्रिको ना विकाध

वृषियो का 'पात्र' क्योर' दिवा' (ज्या व

पाडा की [पाठा] बक्तपर्रत-विशेष पत्र, प्रश्न

पादान वक पाठय ] पहाना, सम्मापन

करता । पादापेड (प्रह्म) । संस्न, पादाचि अप

पारावेळण (माइ ६१) । हेइ- पादाविडे

पाशाबंड (बाइ ६१) । ह पाहावणिज

पाडाबाज वि [पाठक] सम्यापक (बाह ६ )।

पाडाक्ज व [पाठन] ग्रम्मापन (ब्राह्न ६१)।

नामध्य (पहल्ड १७)।

पादाविभव्य (त्राह्न ६१) ।

24)1

पाडाबिस वि [पाठिन] सम्यापित (प्रशः

पादाधिक्रवंत वि [पाठिश्वनत्] विसने पदाया हो नह (प्राष्ट्र ६१)। पादाधित ) वि [पाठिश्वर्तः] पदलवाचा

पाडाबर (प्रह ६१:६)। पाडिज वि [पाठिव] पदाया हुमा सम्मापित (प्राप्त)।

पाहिज्यंत देखो पाडापिक्रपंत (माङ् ६१)। पाहिज्या की [पाठिका] पदनेताली की (कप्पू)। पाहिज्य १ वि[पाठिपत्] कप्पारक पहाले-पादित १ वाला (माङ्ग ६१)। पाडीप्य वृं [पाठीन] सन्यत-परोप भाठियाँ।

सद्भागी मत्त्य की एक काति (मा ४१४ विक ६२) । पात्रोआसास पुं [प्रथमानशी] कास्त्र संक

संस् का एक भ्रम्य (ग्राहि २३६) । पान्य सक [प्र + आनय्] निकाना । वक्ष-पान्यश्रेष्ठ (नाट---यात्रदी ६) ।

पाण पूंडी कि दे पर कर्यमा है ६ ६ ६८ कर दू रेश्न महा पाया का ४ ४ वन रे) मके जा (जुक दे र महा) कि के जिल्हा के मिन्द्र हैं। बाएस की मिन्द्र हों। बाएस की मिन्द्र हैं। बिरा हैं। बार की मिन्द्र हैं। बार हैं। बार हैं। बार हैं। बार हैं। बार हैं। बार हैं। पिरा पीटी बारसाम-सावह (बहा)।

पाण न [पान] १ पीना पीने भी किया (शुर

६ १) १ वेले की बीक वाली बाहि (जुल द दी वित नहर बाका) १ वृं उप्पतिकेल करवायका वाला का मार्च का विद्वार के वित्र करवायका वाला का विद्वार वे (वरण्ड १) पत्र ल विद्वार ने के स्वीत व्याप १ व महान वित्र के स्वात व्याप का विद्वार के स्वात व्याप का वृं विद्वार के स्वात व्याप के स्वात वृं विद्वार का वृं विद्वार का

'पारणाधि वेब विशिहंति मंबा' (सूम १ 💌 १६ का १ माचा कमा) । ४ जीवित बीबन (शुपा २६६) १६६ कप्पू)। इत्त वि ["दम्] प्राध्यमसा प्राणी (पि ६ )। बाग वे िस्मयी प्राप्त-नारा (मुपा २१८) ६१६) बाय पुं [स्याग] मच्छा मीत (नूर ४ १७)। आइय वि ["आविक] प्राक्षी जीव कम्तु (सावा १ १ १)। साह पूं िनान । प्राणनाम परि स्थामी (रंग्रा)। एपया भी "प्रया भी पत्नी (न्र ११ ¤)। बद्द प्रेविघीर्षमा (पराह् १ १) । विचित की विक्ति कोबन-निर्वाह (महा) । सम प्रै सिमी पवि स्वामी (पाध) । सुद्वम न ["सुद्दम] सूरम बन्दु (रूप) । "हिम दि 🛚 हुन् प्राल-नाराक (रंग) । प्रति कि [ धन् ] व्राक्षकार प्राची (प्राप्त) । शहराह्या ध्ये िलिपातिकी किया-विशेष दिसा से होने-वाला कर्म-वन्त्र (सर १७) । द्वाय पू [ाशियातः] विका (उका)। "उ प्रैन [ीयुस्] प्रन्तात विशेष बार्ख्या पूर्व (सप २३८२६)। पाण ।पाणु प्रन [ीपान] प्रशास भीर निज्ञास (वर्षस १ वर् ६८) । याम पू [ीयाम] बोबाङ्ग विशेष--रेषक पुरनक सीर पुरक्रशामक। प्राफ्ती की बमने का उपाय (बउड) । पार्धनकर वि शिगाम्तकरी प्राण-शास्त्रक (तुपा ६१४) । पाणतिय वि [माणान्तिक] प्राण-नारुवासा 'पार्गातियानके वह (" (सुपा ४६२) । पात्रम पूर्व [पानकः] १ वेद-प्रव्य-विशेष (वंश्रज्ञा १३ पुन्न २ टी क्या)। २ बि यान वरनेवाला (?)- 'रा पाराची व वक्षे भएएरे (धर्मसे ८२३ ७०)। पाजिद्ध भी [वे] रप्या पुरुज्ञा (वे ६ वेश)। पाजस वक [प्र+अण्] निःश्वास केगः

नीचे सोसना। पाणमंत्रि (तम २३ भग)।

११७५) ।

पाणय व [पानक] देखा पाण = पान (विसे

पाणय पुरिमायत्]स्वर्थ-विशेष दक्त देर

नोक (सन ३०। भग वया) । २ विमाननाक

देशवियान-विशेष (दनेन्द्र १३५) । व प्रास्तुत

लर्नकाइन्द्र (ठा४४)। ४ प्राण्य देव-लोक में रहनेवासा देव (बरा)। पाणहा 🛍 [ उपानह् ] चूता 'पाणहायो य छत्तं च शालीयं वामवीयर्णं (मूम १ १ पाणाठाश वृद्धि । सपथ भाएशस (वे ६ η<sub>α</sub>)1 पाणास पुँ [प्राप्य] विष्याम (मा)। याणामा की [प्राणामी] शैशा-विरोप (सन **1** () 1 पाणाळी भी दिं] शे हामीं का प्रहार (वे ६ पाणि 🙎 प्रिणिन् 🕽 बीच्य भारता चेतन (भाषा" प्राप्तु १३६८ १४४) । पाणि 🕯 [पाणि] हत्त्व, हाब (कुमाः स्वप्न 24 ६)। ग्रहण देखी ग्राहण (ग्रवि)। नगह र्थु ["मह] निगद्ध (सुरा ६७३ धर्मनि १२९)। सम्हण न ["महण] विवाह शारी (विपार्शःस्वप्न ६३: मृति)। पाणिक न [पानीय] पानी क्ल (हू १ १ १ व्याप्य परहरे ३ हुमा)। भारिया भी ["भरिका] प्रमिहाची जिवसक्तुस्य रएखी पाणियम(१ म)रियं सहावेदं (छामा १ १२—पत्र १७१)। हारी की ["हारी] परिवारी (दे ६ ५६ महि)। देखो पाणीका। पाणिणि 🖠 [पाणिनि] एक प्रशिक्ष व्याकरण कार ऋषि (हे २ १४७)। पाणिमीश्र वि [पाणिनीय] पाणिनिश्चवनी

वाधिति कर (है ६, १४०) । पाणी वेको पाण = (१) । पाणी की [पानी] बक्को-विकेट 'पाणी सामा-वाधी की [पानी] बक्को-विकेट 'पाणी सामा-

६६)। पर्गाज देवी पाणिक (हि १ १ १ मानू १ ४)। परी की [पर्ग] विन्हारी (जास १ १ डी---पद ४३)।

पाणु पूर्व [प्राम] १ प्राणु बाहु । २ पामो व्यक्षाक (१ स्म १ ४ सीत १५म) । १ व्यवस-परिमाल निकेष प्रोक्तावनीमान एव पाणुचि कुषदा । यस पाणुन्ति हैं बोडें (श्री १२) । ["अन्धन] पात्र बांबने का बक्त-सन्दर्ध 🖣 मृति का एक उसकरस (पराह २०३)। गद् देखो पाय ≖पत्र (विपा १ ३)। सम षि [<sup>\*</sup>सस] वेष-विद्येष (ठा ७—पत्र १६४)। द्विपय म [कीप्रपद हिनार नामक बारहर्वे कैन धाराय-धन्य का एक प्रक्रियाच्य विषय (सम १२व)। पाद्व देको पाड⇔प्रादुष्ः पादुरेसप् (पि १४१)। पातुरकासि (तूस १ २ २ ७)। पादो कैतो पाओ ≕ प्रतब्(सुक १ ६)। पादोसिय वि [प्रादापिक] प्रदेश-काल का, प्रदोप-संबन्धी (ब्रोब ६१व) । पात्व केवो पावव (वा १३७ छ)। प्राथम देवो पाइस (वर्गर्ड ७८६) । पाचार सक [स्वा + गम् पाद + भारच ] पनारमा 'पानारक निप्रवेद्दे' (भा १६)। पाषद दि [माबङ] दिलेब दैवा हमा पारित्र (निष्कृ १६)। पाभाइय }वि [प्रामाविक] प्रशास पामाविय र वक्ती (भोषमा ३११ धनु अमेथि १)। पाम एक [म+काप्] प्राप्त करता दुवरानी वें 'दासद् । 'भारतेह पहिमें जिलाल निधारिक्सेसबोहार्स । स्रो सप्तवने पामइ जननका बम्मनरहत्र ।। (घरत १२)। कर्ने गामिका (नामत्त 8 ¥ ₹ ) I पामका व [प्रामाक्य] बनाएका प्रमालाव (वर्षसं ७३) । पामशा ध्ये दि बोनी बैर हे बान्य-वर्डन (वे < \* ) ( पामझ देशी पामचत्र (विशे १४६६) नेत्रय \$ **?**¥} 1 यागर पू [पामर] हुनीक्ष्य क्वींक क्षेत्री का बाब बरनेशमा नृहरू 'पानरवहबद्दमेवाख रायस दोरापा इनियाँ (पाय बना १३४) क्या है ६ ४१८ दूर (६, ६६)। २ हुन्ती बार्धिका ननुष्य (क्युः का १६०) । ३ दूर्वे बेरर्फ, घळती (सा १६४)) की नाम थानरं दुर्गं, क्या दुर्वकर्तनं (का ११) ।

शत } देखो पाय≖पात्र (तुम १४२ शाद } पर्युद्ध २१—पत्र १४≪)। विभागत

(सूपा२ २०७)। पाधाड पुं[पद्याट] प्रशाह प्रपार, पशाह वक्रक क्या-विशेष (पाम)। पासिक सक कि जनार सेना। पामिक्नेज (सामार, २२३)। पासिक न कि अपमिता १ कार कैना, वापस केने का बाका कर बाक्स करना । २ वि को सकार निया बाय वह (निक ६२ बर्द बाका ठावे ४ ६३ और पर्याद ५, तक १२ धार्षका १३ 🖭 बुदा ६४३) । पामिबिय दि दि ज्वार विद्या हुमा (व्यचा 1 ( 7 7 7 पामुक्त कि [ममुक्त] परिवक्त (पाम क ६२७)। पासूखन [पाद्मूल] पैरका मूच कान पाँच का श्रष्ट काप (प्रमा १ ६) सूर क १६१। पिंड ३२ )। देखो पायमुख = पत्रमूल। पामोक्स देवो पसुद् = प्रपुत्र (स्तावा १ ६) य महा)। पामोक्स पुं[प्रमोश] ग्रुव्हि, कुटकाय (का ६४व ही) । पाय पूंदि ] १ रक-कक, रव का पहिला (१ ६,३७)।२ अस्ती श्रीप (वड)। पान पूर्विषक्षी १ प्राचन-क्रिया। १ एसोई (प्राकृ १३) वर २ व टी)। पाब वि [पास्य] पत्र-धोग्य (बस ७ २२)। पाय देखो पाव (वंड)। पाय प्रिविद्यी १ फ्टब (वंदा २ २१ ∰ १ १६)। २ बंदम्ब 'पूछो पूछो क्षरविद्वि नायकि' (सूर १ ११०)। पाव पूर्विया पान पीने भी क्रिया (भा २१)। पाय पुष्पिक् है समभ विषि (मा १६)। २ पैरः चरल पाँव 'चनका नवा म पाव। (पाष लामा ११)। ६ प्रय का भीना दिश्ला (क्षेत्र १३४: लिए)। ४ निराहा 'शंनू रम्द्रो नामा' (नाथ थानि २०) । १ क्षानु, वर्षेत का कन्क (पान) । ६ एकासन ता(बंदोन र )। धः मेपुर्वो नाएक नार (रक)। "कंचलिया थै है शक्तियाँ) पैर प्रकारन का एक नुवर्श-राम (स्तर)।

क्षेत्रक पुन किम्बस्त पर पॉक्स का वक्स काएड (बन्ह १७ ७)। इक्ट्रब ई िकुशकुट] कुस्तुट-विशेष (खान्य t t+ थै-पन २६ )। धाय दू [धात] वयक प्रहार (पित्र)। चार पूंचियार] पैर से यमन (शाका १ १)। चारिनि चारिम् पैर से वातायन करनेवाला पाय-विहासे (पचन ६१ १६)। बास्र बालगान িজ্ঞান্ত, ভ্লু বিং ভা মাসুভয়-বিষ্টব (মীন द्यवि ११ पर्छ २ १)। साजन "प्राण] चुरा पनस्त्री (दे १ ३३)। यहाँगर् िंगक्षम्ब ] पैर तक बटक्नेनाबा एक मानू पशु (शुक्त १ १—पन १६) । पीड रेको वीड (खामा १ १ महा)। प्रेड्स म व [प्रोक्टन] स्वीवस्त वैन ताहुका एक क्तकरस (बाकाः बोक १११३ ७ १ मन थवा)। व्यक्क्य न विश्वन | पैर पर विश्वन प्रशास-विशेष (पत्रम ६३ १०)। सूस्र स "मृख् १ देवो पाम् छ (क्स) । २ म्हुमॉ की एक सामाराज जाति नर्तकों की एक वातिः 'समायकाः' पायपूचाः "पुचाइन्यमानी पारमुनेहिं पत्तो रहस्मीने 'पराविद्यार पारकृताई 'सङ्गदियाई पत्त्रभूबाई' 'पण-चरेड्रि पावमुसेडिं (स ७२१। ७२२ ७३४)! बिहर्विभा को जिस्तिका पर शॉक्ने का बैन शाबुका एक काइमय काकण्ड (योच ६६) । बंदच वि विक्यक विर पर विरकर प्रखान करतेराता (श्वामा १ १६)। **बक्टा** न [पदन] पर पर भरना क्लाम विकेष (दि १ २७ ) धुनाः सुर २०१ ६) । बंबिया की ["बृच्चि] पार पतन, पैर सूत्रा असाव-विरोध 'बाबबहियाए खेनपुसर्व पुर्व्यक्ति (खला १ २३ बुपा २४) । विद्वार पुँ विद्वार विर हिंग्यीत (भग)। बीब न ["पाठ] पैर रक्टने ना धातन (देर ः दुष्याः मुत्तः t«)। सीसगान [शीर्षेक] पैर के क्रपर का नाव (एम)। ীতভ্ৰম ব [ীবুস্তর] ক্লথদিটৰ (নিৰ)। पाव देवो थक्त = राष्ट्र (ध्यवा: ग्रीप: ग्रीवम ३६, १७४) । "इसरिजा व्य ["इसरिका] वैन शाक्रुयों का एक काकरल वाक-जनार्जन का कपहा (बीच ६६ : विशे १४४१ सै)।

ट्रमण, "ठमण न ["स्थापन] बैन मुनियाँ का एक उपकराय पात्र रखने का वस खएड (विसे २४१२ टी घोष ६६०) : णिज्ञोग, "निज्ञोग दू ["निर्योग] वैत साहुका यह उपकरण-समूह--पात्र पात्रकच पात्रस्वापन पानकेशरिका पटम रजकारा ग्रीर प्रकार (पिंड २६ बृह के विशे २६६२ टी)। "पश्चिमा की "प्रतिमा" पात्र-शंकाभी ध्रमियह—प्रतिका-विशेष (ठा ४ ६) । वेको पाइ = पत्र । पाय (चप) देखी पत्त = प्राप्त (पिग)। पाय स [प्रायस्] प्रायः बहुत करके न्याक्यार्खं बखेद चि (विंड ४४३) । "पाय पुंच ["पाय] पूज्य 'संकुमा सविस र्सरिपायमा (प्रवि ३४)। पायप्रेको पा = पा। थापं केवो पाय (स ४६१ सुपा २८) १६६७ यावक ७३)। पार्चव [प्रावस्] प्रवाद (सूम १ **७** 1 (88 पायंगुद्ध पुं[पादाङ्गुष्ठ] पर का संयुक्त (स्रामा १ ≒)। पार्यक्रकि पूँ [पावज्रस्त] पवज्रज्ञिक काल पातक्रम मोब-सूत्र (ग्रॉव १६४) । पार्यंत न [पादास्त] कीत का एक मेर पाद बृहबीट (एम १४)। यार्यद्वय पू [पादास्तुक] पेर बांको का कञ्चमय संस्करण (बिया १ ६--पन ६६)। पामक देवी पामय = पालक (वव १)। पायक देको पाइक (समात १७३)। पायिक्सप्य न [पाविश्वप्य] प्रश्विका (परुप १२ १२)। पायग न [पातक] नाप (धानक २४८)। थायध्यक्त पुर [प्रायक्रिक्त] पाप-माधन दर्भ पाप-ध्रम करनेवामा कर्म पार्वीवती नाम पामिन्द्रतो धंद्रतो' (सम्मत्त १४४ ब्बाः धीय नव २१)। पायड वेको पागड=प्र+कटम्। पायडह (मनि)। वक्र पायबंत (सूपा २१६)। क्षक पायक्रिजीत (या ६८४)। हेक

पायक्षित्रं (क्रूप्र १)।

पायक्रत दि] ब्रीमण ब्रॉमन (दे६ ४) । पायब वेको पागड ≈ प्रकट (हे १ ४४) प्राप्त भोग ७३ जी २२ प्रासू ६४)। पायह रेको पागह = प्राष्ट्रत: प्रहेपि वान विद्यंशे सम्प्रारं परिकारिय समञ्ज्ञामीयां पास डविश्वचा विच चींत परसरो सद्भुं प्राप्तव्यामि (धवि २१)। पायह वि [प्रायुत्त] प्राच्यावित (विशे २४७६ पायक्रिज वि मिकटित | व्यक्त विश्वाहपा (कुन ४ वेर ४६) मा र्रहर २६। वर स ४१८)। पायबिद्ध पि [प्रकर] चुना (वरवा १ ४) । पायण न [पायन] पित्राना पान कराता (ए।या १ ७)। पायचन [पादास] पराशि-समृह व्यार्थों भा नस्कर (बत्त १८ २ बीयः कम्प) । ।णिय न [ैं।नीक] पदावि धेन्य (पि द )। पायपुंद्धान न [पान्युब्द्धान] पान-विशेष रुपन सकोसाः पायप्पद्रप र्षु [दे] हुनहुट ग्रुना (दे ६ पायय न [पातक] पाप (प्रक्टु ४६)। पायय वैद्यो पाव = पाप (पाप)। पायस देखी पारास (है १ ६७)। पायय देखी पायब (स ६ ७)। पासथ केवी पात्रय = पात्रक (ब्रामि १२६)। पाणम वैको पाम = पान (कृप्प)। भायरास 🛊 [भावराश] प्राव काल का बोजनः ननपाम वजस्या (भाषा शाया १ व)। पायक न [के] चलु, येचा (देव १८)। पायब पु [पादप] कुछ चेह्र (पादा) । पायञ्च देको पा≖पा। पायस पुन [पायस] बूच का मिल्ला बीए भायसो कीर्थ (पामा सुपा ४३०)। पावसो च [मायशस्] प्रापः बहुत कर (अर ४४६ वंबा ह २७)। पाबार पुँ [माधार] किया कोट, दुवै (पामा है १ २६ वा कूमा) । पायास्त्र व [पातास्त्र] रवा-तत्त्र सवी प्रवन (दे १ १ व ) पाय) । यज्ञारा प्रे विकास

समुद्र के मध्य में स्वित कनशाकार वस्तु (प्रसू)। पुर न ["पुर] नगर-निशेष (पराम ४४, ३१)। संदिर न ["मन्दिर] पातास-स्मित मृह् (महा) । इर न ["गृह् ] मही मर्थं (महा)। पायाल ग [पाद्युख] पासरम धेन्य पेरस वैनिक (क्लस्पन्न पन १०१)। पायालं घरपुर न [पाठा बलकापुर] पाठान-र्मका रावस की राजवाती। 'पामार्मकारपुर सिग्यं पत्ता सङ्कामां (परस ६ २ १)। पायावक न [मान्यापस्य] प्रहोस्पत्र का चौद हर्षा मुहर्त्त (सम ६१) । पायायिय वि [पायित] पित्तामा हुमा (परुम tt vt) i पायादिण व [श्रादक्षिण्य] १ केहन (पद ६१)। २ वसिए की मोरा 'पामहिएोस विद्यं पंतिमार्वे स्थएह सदिपर' (सिर्रि १९९) । पायाहिका केवी प्रयाहिकाः 'पायाहिक् करियों (उत्त १ ११ मुख १, ११)। पार शक [ शक्] सकता करने में समर्थ होना । पाछः पारेड (हे ४ =६) पाम) । बक्त पारंत (कुमा)। पार चक्र [पारयू] गार पहुँचना पूर्व करना। पारेड (है ४ ८६ पाम) हेडू. पारिचय (मग १२ १)। पार प्रेन [पार] १ वट, किनास (प्रापा)। २ पर्वाकिनाया 'पर्यार' पार' (पाम) 'किंद नद होड़ी सनवस्तिहपार' (निसा ४)। १ परलेक, बाबामी अन्म । ४ मकुव्य-सीवन मिम नरक धादि (सूध १ ६ २६)। १ मोदा मुकि, निर्वास पार पुरायुक्तर हुई। विदि'(शह४) । स वि ["स] पार काने-नाना (सीपः सुपर ११४)। सस वि ["सद] र पार-माप्त (बका सीप) । २ <u>प</u>्रे वि<del>न-रे</del>व मगवान् चर्तन् (तर १६२ दी )। शासि वि ["गामिन् ] पर प**हुँच**नेवाता (ग्राबाः क्रम धीप)। पाणग न ["पानक] फेन हस्य-विशेष (बामा १ १७) । चित्र विद् पार को वलनेवाला (तूस २१ ६)। स्भोव वि ["शोग] पारशासक (क्य) ।

(पिंग प्रदेश पुत्र १७०) ।

पालक का राज (इह १):
पार्त्तमा की पार्व्यक्रमा ज्यार केवी (लग)!
पार्द्धमा की पार्व्यक्रमा ज्यार केवी (लग)!
पार्द्धमा की पार्व्यक्रमा १ सरकारका सहाराज्य पावस तरिहारीयतारी (पुरा १३१)! २ को शामुक्त तरिहारीयतारी (पुरा १३१)! २ को शामुक्त तरिहारीयता (पीरा कपा)! ३ वेथी सामा (पीर पपा)! पुत्र कावा के गीने स्टब्स्टा बकारका भोडली पार्ली (पार्व्य)!
पार्वक्रमा की पार्व्यक्रमा केवी पार्व्यक्रमा व्यक्तिया व्

पार्कं व [पारुषक्य] तरकारी-विशेष

पांच्या केवा पाखप (कप्प सीच विधे २०१६ चर्चित १ दुर ११ १ )। पाछण न [पाछन] १ एकप्प (लहा सम्ब १)। १ नि पाया-नर्जाः वास्तव पत्रवर्धा वेव (वेत्रोन ११ चं १७) पाछमुद्धाः पु [कं] क्ष्य-निरोत (क्षा

१ ११ दी)। पाछप्प पुँदि]१ प्रविद्यारः २ वि विज्ञुत (१६ ७६)। पाछस वि[पाछक] स्वरू काश-कर्तां(कुम

वर्षा वा रे )। २ व व विषयंत्र का एक प्रामित्रीयिक केद (ठा )। ३ मीक्षण का एक पुत्र (दव २)। ४ मत्काल माहानीर के निर्वाण के कित प्रमित्रिक पर्वती (क्रमेन) का एक एउंटा (विचार ४६२)। १ केद-विमान-विषयंत्र (का २)। पाद्धास मुँ (पिकार) प्रमान-वर्षाणी। २

पास्तस वृं [पास्तरा] यतारा-वान्त्रणाः । १ त त्यारा वृद्ध वा क्ष्म सिद्धुक-क्षम् (काळ)।
पार्तिक सि (पार्ति) है तालार स्वारिक काळा ।
वृद्ध १३ वृद्ध देश स्वर १३ मार्ग्य) । १ प्राच्य स्वर (वा १४१) । वेली पार्ति - पार्ति ।
पार्तिक सि [वृं] है वाप्य मार्ग्य ने सि तारा ।
२ यत्योगस सम्म का पुर्वेत विरासक-विशेष (कार १८, २ । कुळ १ २ )।
पार्तिक स्वर्ध होते विरासक सिक्ष सुद्ध (वाप्य)।

नुक्र (पाम)। पाक्षित्मा देवी पासी ⇒पानीऽ स्वयक्तप्रीत-वार्ष्व परित्तीर्धित बहुस्कर्वार्थि (वर्गीत १९) ।

पाकिकाय न प्राविक्सीय] बीराष्ट्र वेद्य का एक प्राचीन नवर की सालकत की 'पानिद्यारा' का प्राविक है (कुत १७६), पाकिस्टिका की [क्] १ राजकारी १ र पुर-नीती । १ करवार, विक् । ४ नीती प्रकार

(क्या)।
पाक्षिय हि (पाक्षिय) पश्चिय (ता १ स्वा)।
पाक्षिय है को पारिय न पारियाद (राय
१)।
पाक्षिय है (पाक्षिय) गींच्य, मेरिए (च्टड)।
देवो पाक्षिय है (दि (क्या))
पाक्षी की [वि] विद्या (दे ६ १७)।
पाक्षी की [वि] विद्या (दे ६ १७)।
पाक्षीय है (वि (व्या))
पाक्षीय है (वि (व्या)) विद्या (व्या केंग्र)
(मिंग्र १)।
पाक्षय है (पापक्षेप) गिर में विकास ह्याय केंग्र
(मिंग्र १)।
पाक्षय है (पापक्षेप) गिर में विद्या ह्याय केंग्र
(मिंग्र १)।
पाक्षय है (पाक्षेप) गिर में विद्या (व्या) व्यक्ष

र बीच १)। बीक पाषिकस्म (११ १४६)।
हैक पार्चु, पार्वेस (स्थाप ११४) माहा)।
ह पार्वास्त्रक पाषिकस्म (शुर १४) साहा)।
पार्व केरी पक्षांत्रक प्राप्तया। पार्वेस (है ४४)।
पार्व केरी पक्षांत्रक प्राप्तया। पार्वेस (है ४४)।
पार्व केरी पक्षांत्रक प्राप्तया। पार्वेस (है ४४)।
पार्व केरी प्रमुख कर्म-स्थापित्रक (शुर)।
पार्वा सम्बर्ध पुरुषे (पण्या १९)।
पार्वा सम्बर्ध पुरुषे (प्राप्ता १५)।
पार्वा सम्बर्ध पुरुषे (प्राप्ता १५)।
पार्वा सम्बर्ध पुरुषे (प्राप्ता १५)।
पार्वेस प्राप्ता १५)।
पार्वेस प्रमुष्ठ प्रमुष्

भारते। समाग व विमायी बुट बाह्य

(क्त १७ ३ ४) : सुविज पूर्व [रेक्स्र]

क्का पानिसेत पानेकामान (पर्छ १

शास (ठा है) ।
पान (दा है) वर्ष क्षेप (है है, हैत)।
पान (वर) केवी पत्त — प्राप्त (हिन)।
पार्वस विह [ पार्थियस ] यार्थ कुम्पी (म ४ ४—वर १६६)।
पानकत्वास्त्र म [ है पापकास्त्र ] केवी पानकत्वास्त्र म [ है पापकास्त्र ] केवी पानकत्वास्त्र (स ७४१)।
पाना वि [पानक] र पीनक करनेनाने (पत्न)। है पतिन नहिं (तुरा १४२)। पाना वि [पापक] पहुँचगरेवाना (इपा १ )। पानस्त्र सेवो पान व्यवस्त्र (स्वि)। पानस्त्र (वर) केवो पनम्या (पति)।
पानस्त्र (वर) केवो पनम्या (स्वि)।
पानस्त्र सेवो पाय-गहम्म = पान-पतन (स्वर)

कुट स्वप्य (रुप्प) । सुव र ["भूद] हुर

पाषव्डि वेको मार्गक्क (सिरि ११ व 222 ) I पाक्य वि [पाक्न] परित्र करनेताका (धन्द्र ४७ वस ११ )। पाचव न दिशावनी १ येली का प्रवर्ध र २ सरकोर करना (पिंड २४) । पाचन व ब्रियम्य । १ ब्राप्ति वाभ (दुर ४ १११: जन्द क) । २ क्षेत्र की एक फिक्टि पानकाचरीए जिन्ह नेबहरमंद्रबीए **दुर्ज**ि (जुम २७७) । पानकि वैस्रो पारकि (नर्गनि १४४)। याक्य देशी पात्र = पाप (प्राप्त ७३) ! বাশৰ বি মানুৱ মালক্ষ্মিত হবা 🕊 (त्य १ ७ ३)। पासव द्रेन [वे] शाध-विरोध हवरानी <sup>के</sup> पाली (पठम १७ ११)। पायप देको पात्रस = पादक (उप ७३ मैं' भूकर के सूचा भागाम) । पाषसञ्ज वेदी प्रथम (हि. १ ४४ वर्गा) काया १ ११)। पाववित्र वि प्रिवचनित् विकास का

वानकार, वैज्ञान्तिक (वेद्य १२×)।

पाषरभ वेशो पाषास्य (स्वप्न १ ४)।

(धम६)।

पानपश्चिय नि [प्रावचनिक] क्रमर रेकी

पायरण पु [प्रायरण] एक क्लेक्स वाति (मुच्छ ११२)। पानरण न [प्राथरण] बस्त्र, कपड़ा (है है 1 (xog पावरिय वि [प्रायुत्त] बाच्छातित (शुप्र वेद)। पायम देखो पाउस (दूप ११७)। यात्रा की [पापा] नगरी निरोप को बाजकन भी बिहार के पास पानापूरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्पा ती ३) पेंचा १२, १७ पव ३४: विचार ४१)। पायाइ वि [प्रयादिम्] बाबाट, बार्गनिक (मुम २ व ११)। पाबाइअ वि [प्रायाजिक] संन्यासी (प्यस पाषाइम वि [प्रायादिक] देको पानाइ (माना) । पापाइअ ) दि [प्रावादुक] बाबाट- वार्श-पाबाद्य ) निक (मूप १ १ व १३) २ २ = (२२६४)। पाबार पू [प्राबार] १ रेग्रावला वपहा । २ मोध कम्बन (पर ब४)। पाबारय देखी पार्य = प्रावारक (हे १ २७१) पापालिआ 🛍 [प्रपापालिख] प्रपा या व्याक्र पर नियुक्त क्यी (मा १६१)। पात्रामु ) वि [प्रतासिम्, क] प्रवास पात्रामुख करनेराचा (वि १ वे है १ **१**३३ दुमा) । पाविभ वि [प्राप्त] सन्य मिना हुमा (तूर व १६ स ६=६) । पाविभ वि [प्रापित] प्राप्त करवाया हळा (मए मार-पुन्त २७)। पावित्र रि [प्लाबित] सराबीर निया हवा शूब निवादा हुमा (९वा) । **∗र∝ दे** मुर १ २१३ प्राप्त १६६, या १४) । पार्यं द देवो पाय-बीड (पत्रम ६ है है २७ दुमा)। पार्चार्यस रेजो पार्यम (रि.४ 🛭 ४१४) । पायुत्र रि [मा हत] माध्यान्त्र (श्रांत्र ४) । पारप्रमाग रेगो पार = प्र + बार ।

पानेस वि शिथेर्य अवशोषित प्रवेश के सायक (पीप) । पावस 🖞 [प्रामेश] बक्क 🗣 दोनों तरफ सटकता रेखा (सामा ११) । पास सक दिश्ची १ देवना। २ वानना। पाखर, पासेर (कप्प) । पासिम = परम (शाचा १ ३ ३)। वर्गे पासिकाः (पि ७ )। बद्ध पार्मन, पासमाज (स ७३८ रूप)। संइ-पासित्रं पासिचा पासिचार्ण, र्पामिया (पि ४६% क्या पि १८६ महा)। हेरू पासिचय, पानिहं (पि १७०-१७७)। ह पासियव्य (भ्रम्म) । पास व [पारवे] १ वर्तमान ववस्पिछी-काल के वैदेशमें जिल-देव (सम १६ ४६)। २ घयनान् पारवैनाय का चरिद्वायक यस (चीरी व) । ६ त कन्या के बोचे का माग, पांचर (खाबा १ १६)। ४ समीर निषट (सूर ४ १७१) । विश्विद्ध पि शिपरवीयाँ भववान पारवैनाच की परम्पा में श्रीजात (मन)। पास वृं [पाश] फोशा बन्दन-रश्बू (पूर ४ ११७ भीप हुमा)। पासन दि । १ श्राचा । २ श्राच जास । ४ वि. विशोध कुणील श्रीमा-हील (१ ६ ७१) । १ पुनः सम्य वस्तु ना धानः-निष्णु 'निष्णुप्ती देवीसी पायेख विखा न होद वह रंगें (मान २)।

(सर)।
पास र्षु [पारा] कांदा बन्तन-रुद्ध (पूर ४
१९०- सीच हुना)।
पास न [में] १ कांवा। २ वांता। २ दुन्त
प्रसा। ४ विः परियोग दुन्तिन ग्रीम्पर्दीन
(६९ कप)। ४ वृतः स्वय वरत् वास्तविश्वण 'निन्द्रपते संवेशने पारिण निर्यान
होत वह रेसे' (यान २)।
पास वि "पारा] वास्त्यः निष्टु बच्च
दुरिता 'एव पार्विद्यानोते कि करिसाई'
(सम्मत १ २)।
पास्तिम वि [पास्तिक] प्रवेग-सेक्न्यी,
बाद्वांविक (दुस्सच १)।
पास्तिक न [पास्तवक] र वास्तवक समस्य वर्षे
वर्षे कर्येन (सर्द्या १०)।

धात ६) व र वत (सपू)।
पार्सिट } वि [पार्सिवत क] १
पार्सिट } वि [पार्सिवत क] १
पार्सिवयी पार्यमा लोक में पूना पाने के
तिस् वर्ष का की एक्टेनराता (सपूरित ४दून २०६ जुग १६० १ १० (१६२)।२
पूँ धारी लाजु पुनिः "वनार्य सर्रायमा
व समर्थे (१४) वरण तावसे तिनद्र । परितारण
व समर्थे (१४)।

पासंदर्भ न प्रिस्यन्दन मान टपक्ना (बृह पासग वि [दर्फोड] देवनेवासा (धावा) । पासगर्व पाशकी १ कांक्षा बन्बन-रण्या (उप पूरे विस्पुर २१)। २ वासा बुमा खेलने का उरकरछ-विशेष (वं ६)। पासम न शिवाकी रहा-निरोप (बीप) । पामण न दिशीनी बन्तोसन तिरीक्षण (पिंड ६७३) छप १७७। योज १४ सुपा 1 (45 पासगया की कपर देखों (बोप ६६ उप १४= गामा १ १)। पासणिक वि दि । साती (दे ६, ४१)। पासप्पन वि [ग्राश्निक] शरव-कर्ता (बूच १२२,२८ मामा)। पानस्य वि [पार्खस्य] १ पार्खं में स्थित निकट-स्थित (पटम १० १०) स २६७-सुष ११२५)। २ शिक्षिताकाचे साह (बरव∛ स्टील्या १ ४८६ — पत्र २ । सार्वेदद)। पासस्य वि [पाद्यस्य] पात में फँडा हुवा पाणिव (मूच ११२ १)। पामक्षत [दे] १ हार(देश ७६)। २ हि विर्यंक वक्र (दे ६ ७६ वे ६ ६२ वडा)। पासक रेको पास = पार्श (छ १ १ व वरह) । पासक्रमक [विर्येक्क् पान्धाय्] १ वक्र होना। २ पाप पुगानाः 'पानक्रीति महिहरा' (वे ६ ४६) । बह पामस्त (वे६ ४१) । पामहरूभ रेचो पासहित्र (व ६, ७७) । पासद्धि व [पाधिन] पार्च-राधाः 'बतारा गरासकी नेसभी बादि डाए डान्साँ (पर ६७ वंचा १० ११)। पासदित्र वि [पाधिन, विर्यक्त] १ पार्च में किया हुन। २ टेड़ा क्या हुया (यहहा रि १११)। धासयम न [प्रस्तवन] मून, पेराव (नव १ वस कम उस नुसा६२ )।

पासाहय बेनी पासादाय (नन १३० उस)।

पामाइसुम न [पागाइसुम] दूरान्वरेत

मा नरमू (या =१६)।

'ध्यमय कमनु निविद पानाहुनुमहि तार

पारंड≡[के] मनिष्य नामनेका पात्र (के ९ ४१)। पारंगमा कि [पारंगमा] १ पार वालेवाला। २ पारंच्यम (धात्रा)। पारंगमा कि [पारंगल] पारंगमा प्राप्त (प्राप्त नारंगमा (प्राप्त नारंगमा (प्राप्त नारंगमा

पार देशो पापार (हे १ २६०) प्रमा) ।

पारिक कि पाराक्षित्र । क्लेक्ट्र-स्था प्राथमिक करनेवारा 'पार्थमेश केरावृत्ति' (दर्भ) । पार्शिय क [पाराक्षिक] ! कर्वे क्ल्र प्राथमिक विचार करनेवित के प्रतिकारी की पार प्राप्ति (द्वा के अन्य १६२। सीच) । व वि कर्वे क्ष्म प्राप्तिक करनेवाला (क्ष व भ)। पार्थिक विपाराक्षित ] क्रमर केल्रो (क्रक्र

बहु ४)।

पार्रवा क [पारमार्य] ररमय (र्फा १६)।

पार्रवा है [बि] प्रस्त (दे ६ ४४)।

पार्रवा है है [पारमार्य] पप्पण (वस्म

पार्रवा है है [पारमार्य] पप्पण (वस्म

पार्रवा है है । मार्य १६। कांग्रें

१११० १६१७) मार्य १६१० है।

पार्रवा (वपित ११० है। पर्वा है बक्ता

पार्रवा (वपित ११० है। परवा है बक्ता

पार्रवा वप रहे हैं।।

पार्रवा वप रहे हैं।।

पुरु करस्य । १ हिंदा करना पार्रवा । है

वीद्य स्था। पार्रवा (द्वा करना पार्रवा । इक्ता

ज्यहार पारंकानाया (भार) । पारंस वृद्धिका । पारंसिय विद्धिका ।

पार्राक्षक केवी पार्रक (शक ११२)। पारामामन केवी पार्रम = जा + रहा। पारन | न [पारन के ] कठ के हवरे किन पारना | न चीनन जा की वानीक कानकर पारपार | का चीनन (क्या कात नही)। पारका की [पारणा] कार केवा। क्रिया हि

(क्षत् ११२३ पंचा ह, ४१ ११ ७)। पारच्या स [परवा] परकोक में सायागी कन्य में) 'पारच कि-ण्यक्यी यस्मो' (पंचम १ १६६)। पारच्या कि [पारश्र पारतिक] पारवीकिक

१६६)।
पारण वि [पारण पारित्रक] पार्णीकिक
प्रााधी क्या से संबंध रक्षीनाका देशी
पारण[हं सा धीरक के | बंकपुक्तका
(कांकि ६ शोव ६२ स २४६)।
पारित्र की [क्षे] इड्डम-बंग्रेस (करम
ट्रमा)।
पारित्र की [क्षे] इड्डम-बंग्रेस (करम
ट्रमा)।
पारणिय वि [पारणीर्द्ध] वर्षी-मध्यः
(शाव १ क ०)।
पारणारिव वि [पारणीर्द्ध] वर्षी-मध्यः
(शाव १ ह—जन २६६)।

पारद्व मि [मारक्य] है विशवन प्राप्त मिना क्या है। बहु "पारवा व विश्वकृतियन्ते प्रक्ता शासनों (वहा)। र को प्राप्तन करने क्या हो बहु 'क्यो सबस्कृत्यस्य पारवी अभिन्दें' (महा)। पारद्व व [क] पूर्व क्षत्र कर्म का परिखान प्राप्ता १ कि सामेद्रक क्रिकारी। रै गीविष्ठ (दे व ७०)। पारद्वि की [पार्पार्व] शिकार, पुरुष (है १

२३६ दुवार कर ह २३७ हुए। २१६)।

पारवित्रम वि [पापवित्र] रिकाणि रिक्पार करणेनामा प्रवचनी में भारतीं। अञ्चलका-पारवित्रीमाध्यानानीवित्रा (पुण करे। भोषु ७६)। पार्टिमवा की [पारिस्ता] कीव-क्रक-गरि कांप्य आस्त्रिका-निरुश्लावि रिकान्या वर्षिया सार्थि कर्ण (पाप्ति व्यक्त। पारस्म म [पारम्य] परस्ता क्ष्यस्त्वा (धन्य

११४)।
यादक हैंर [यारा] चनने (याका २ १
२ १)।
यादक हूँ [यारा] चनु-विकेश नाय, एककार्य, अस्य म [अदेन] बाबुकें-विकेश रेति हैं पाय का मारण प्याक्त-किरोग आप-विक्रायोंने क विशेष पायकार्यों (व २ १)। २ हैंस् पास्ताव्ह (वृद्ध १)।

पारम न [क] मुद्दा-नाएड काक स्वते का पान (वे ६ ६न)। पारम वेली पार-ग (कप्प मन्द्र संग)।

पारव पूं [माबारक] १ पर, शका । २ वि धाल्यक्रक (हे १ २०१ कुमा)। पारबोह्म नि [पारबोद्धिक] परतोक-केली धालाम नि मा है बेनेल रक्तेशका (स्पर्ह १

देश का हैरान का निवासी। 'बाव्ययनारतज्जा

कार्विका वीर्ता य दार्र (दरम हाः ११)।
कृत म [कूत्र] देगान का निजय रेगान
केत की दोगा (धायन)।
पार्रावित वि [पार्राविक] काय रेगान
केत्रमा गार्विक्युपी वामाओ प्यान्स्यूपी
पार्राविक्य विद्यान्त्रित (द्वार १८० १६)।
पार्रावी की [पार्रावि] १ वारन केत्र की की
विर्मातिक्य प्राप्ति किर्म (विमे ४४४ वी)।
पार्राविक्य विद्यानिक्य विद्यानिक्य

वर्षवा (परहरू २ १)।
पाराव की पारावय (वाय)।
पारावय न [पारावय] १ वार-प्राटेंव (विधे
प्रदेश)। २ पुराज-प्राट-निर्मेश प्राप्ती
(१व )वश्यवपानको वाकायाच्या वायो
(युव १ १३)।
पारावय वेका पार्रवय (गाव प्राप्ता व्याप्ता व्यापता व्याप्ता व

पारावर वं वि]गतान यातायन (दे ६ ४३)। पारियद व [पारिभन्न] बुग विशेग फरहर | पाराचार वे पाराचारी मनुत्र सावर (पाम-बाज १७ )। पारापित्र वि पारित निग्नको पारण करावा गया हो बह (क्यूप्र २१२)। पारामर र्षु [पाराशर] **१ ऋ**षि-निशेष (मृद्य १ ३ ४ ३)। रेन गोप्रतियोगे जो वरिष्ठ मोत्र की एक शाखा है। दे वि उस तीत्र में प्रराज (हा ७--- १४)। ४ र्षु भिग्नुकः। 🔻 कर्म-स्यागी संस्थानी 'धनेनि बारामच धरिष' (मुख २ 👯)। पारिक्रासिय वि [पारिनोपिक] नृति-भनक दान प्रकल्पा-मुक्त दान पुरस्कार (सम्बन्ध १२२: स ११६ मृत १६ १८१: निवार tet) i पारिनद्वा देगी परिनद्धाः व्यवपरिणान विता निहं समर्पानि तानि पारिष्दा (उन १७३) सर प २७६)। पारिश्क्षच रेनी परिश्वच (लाग १ =--वत्र १९२)। पारिज्ञाय देगी पारिय = पारिजार (रुमा) । पारिट्राप्रजिया हो पारिष्टापनिर्देशी समिति विधेर मन प्राप्ति के बन्तर्ग में बस्यर प्रवृत्ति (नप १ धीर कम)। पार्थिड की [प्रापृति] प्राप्तरण बस्न, कपड़ा विशिक्ष मध्यमणील वामधे वाधिश्र सह सेए (च २१ )। षारियामित्र देवो परियामित्र = पारियानिक (बलू नम्प ४ ६६)। पारियामिमा ) रेती परियामित्रा (बार पारिणाभिगी है श राजा है १- वन है है)। पारिनायभिया की [पारिनायनिकी] बुनरे को बरिशा-पूना सामने हे होनेशाय वर्त्र-कथ (तत १)। पारितायमें। की [पारितायनी] क्यर रेनो (ef fp); पारिता सज्ज देवो पारिआसिय (बा॰ गुरा TO KIRL): पार्रित रेका पार्क = ररक का व रिक्स्सो बारी (१८१६)। पारित्य र् [परिन्तर] र्नन स्टिर (सन् t t----- ) ;

ना पेड़ (नण्र)। पारिय वि चिरित्ती पूर्ण क्या हुमा (रवए पारिय वं [पारिजात] १ देव-पूप-नियोग काय-तद-विदेश । २ कराद वा येहा विपार थारियाल व पहिषयते मानईर्वमी (शुभा १ १६)। १ भ पूरा-विशेष करान्यका क्षत्र को रक्त वर्ण का भीर मन्यन्त शोमाय मान होता है, 'मृद्विष् रा विद्यमद पारिवरिष्ठ संदोरलं खंडद बनद सन्दि (भरि)। पारिक्स व [पारियात्र] देश-विशेष 'परि ध्यनंती पत्ती पारियत्तियन्यं (पुत्र ३६६) । पारियक्ष न दि परिवर्ती पहिए के प्रष्ठ मान की बाह्म परिचि (एपि ४३)। पारियाय देखी पारिय = पारिवात (नपा ध्रः से ह १८ महा संध्रह)। पारिवार्याणया रेगो पारिनावणिया (हा २ १--पत्र १८) ह पारियाय जिया हैयो पारियाय विषय (स RRE) I पारियामिय नि [पारियामित] बाबी रवा ह्या (वम)। पारिकाञ्च न [पारियागय] शंन्यांगरन संगास (पडन ६२ २४)। षारिम्याइ क्षी [पाध्याजी, परिवासिया] रायाविमी (दर १ २०६)। पारिस्पाय वि [पारिमाञ] संन्यावि-संबन्धी (U4) 1 पारिसदा वि [पारिपय] सम्य समानव (धर्मीर १)। पारिमाद्वीया थी विशिशात्रनिधी परि राज-परियान के द्वीनवामा कर्म-अन्ब (धार ४)। पारिहरूदी को [रि] शना (१ ६ ४२)। पारिद्रही थी हि | १ प्रतिहास । २ प्रप्रति. बार्ग्या । १ विर प्रमुश महिती बहुत देर विस्तरी दूरिभेग (देश ७३) । पारिद्रशिवय वि [पारिद्रश्चिक् ] वक्त वे

निपुर (श ६ - पर ४११) ।

धीरगर शावद वत्र वरनेराना (वस्) ।

५९१ पाविहासय न पाविहासकी रम-विधेष वैत मुनियों के एक कुछ का नाम (कप्प)। पारी की कि बोउन-माएक विसम दोहन क्रिया बाह्य है बढ़ पात्र-निशेष (दे ६, ६७-वरह १७७)। पारीय वि पारीयी पार यन्त्र योगर मन्यादा पारीको (पर्मीत १३ सिरि ४०६) सम्पत्त ७१)। पारुजना वृं दि । रिपाम (दे ६ ४४) । पारुगङ र् [दे] प्रदुष्ट (वडड़ा (दे ६ ४४)। पार्ट्सिय रेखो फार्च्यमय (माना १ ६ c 2 (P) 1 पारहद्वा दि नातीकृत भेली हर गे स्वातितः 'पानीबंधं च पारतः नोम्बं (दे £ 82)1 पारवह की [पायपती] गुत्र श्रुतर नी मारा (निग्र १ १)। पारचय ५ [पारापद] १ पश्चि-रिक्टेन बहुतर (हेरे द कुमासूरा १२०)। २ इस विदेत । ६ व फन-रिदेश (पएए १०)। पार्यपरा हि [पारान ] पर्यन-रिचयक वरोजनांबन्धी (बर्मसं ५ २)। पारोद देवो पराह हि १ ४४० स्म १७६० पढ्ड) । पार्शिक मिर्गिद्देश प्रवेदराना धरर बाग (यरह)। थास मक [पासप्] पानन करना रसल करना । पानेड (मन महा) । कर पाळ्यंत पार्थन पार्किन, पानमाम (पुर २ ७१) में ४६: गरा भीत कता) । यह पाउन्सा पासित्ता, पानऊण (रूप: मदा) पानचि (बर) (हे ४ ४४१)। ह पामियव्य पानपच्य (गुरा ४३१ १०१ भरा)। पाछ रेनो पार व पारव्। बेह पाछर्ता (रम)। पाम इ [र] १ बारराठ द्वयं देवनेताना । २ वि क्षेत्री कम्पून (१ ६ ६४)। पाय ईन [पान] मनुपान-रिकेट चुर्चर का वालं का रिकार्य का करियुत्तर कर (दीक) । षाधिक एव वि [पार्थिताहरू] करती विदेश २ वि पारक पारतनार्थः को सक्तर्रवश बार्गिसर्वे (वरि)। क्षेत्र (शरप)।

पार्केड न [पाडकस्य ] उरकारी-विशेष पासक का तक (हरू १) । पारकेमा की [पाडक्स्या] उत्तर वेको (ज्या) । पारकेमा की [पाडक्स्या] उत्तर वेको (ज्या) ।

पार्क्षत वेशो पाळ = पालत्।
पार्क्षत वृश्चिम्पल्ला । स्वत्यान्त्रत सहारा
पान्त्रत त्रविस्त्रीयासंस्यं (तुपा १९४)। २
को का पानुकरित्यं (विरूप्त करा)। १
सैर्च नाना (वीर स्वत्या)। ४ पुंच व्याना
के गोचे स्वत्या वद्यान्त्रक्ता प्रोतक्ष्यं पार्वेसं
(पार्य)।
पारक्ष्या व्या प्राप्तक्रमा व्या व्यावस्या
'वस्तुकरोरदमन्त्रारोहसस्ती स पानक्षा

बाहुस्तरारमञ्जारोत्त्रास्ती व गासका (ज्याद १—गास १४)। गास्त्रा केता गास्त्रा (क्या) तीन निर्धे २०११ संस्त्रित १९८१ )। गास्त्रा व गास्त्रत्ती १ प्राप्तु (महा प्रस्तु ३)। १वि कायुन्नती बागस्य गासकी मेन (वीका ११ सं १७)। गास्त्रदुष ३ [वे] इस-स्टिन ( ज्य

पाक्य हुत हु [ क् ] कुल-नदाल (क्य १ ११ दे) ; पाक्यप दु [क] १ प्रदिशार । २ कि विश्रुत (के. क. क.) । पास्त्र कि [पाक्कि] रातक कार्य-कर्ता (युरा १ क्ष शामि (क्षेत्र के ( क. ल.) । ३ वीक्ष्मण कारक दूर (यह १) । ४ क्षान्त्र कार्याक्र कर्

के मिर्चाण के किन यानियन वर्षती (क्लिंग) का युक्त पाना (विचार ५१२) । १ केन नियाननिर्देश (युक्त १) । पाव्यस्त पूँ [पाव्यसा] प्रवास-कार्यामी । १ म पानारा पूर्व वा कार्या किन्दुक-मार्च (कार्य) पाक्ति की [पाव्य] १ तानार धानि का कार्य (पुर १३. ६९) । स्वते पाक्री - पानी चार (स. १४१) । स्वते पाक्री - पानी पाक्ति की [चे] १ मान्य पानी की गारा । १ पानोप्त स्वयस कार्युक्ति पीनास्वकृतिका (कार्य १ पान्य पानी की पाना की

(क्ता १ एवा तुव १व २व)। पाधिका की [वे] बद्द बुद्दि, तनवार की मूक्त (पाप)। पादिका देवी पासी =पन्नी। पन्नवानी वाहि वरित्रतीदि व बहुरबहुदाहिं (वनीव

(#) I

पाक्षियाण व [प्रवृद्धिशीय] चीठणु देश कर एक प्राचीन करत, ची सावकल भी 'पानितारहा' नाम से प्रश्चित है (कुछ १७६)। पाक्षियका ची [वे] रे एजनाची । र पूत चीवी । रे करतार, गिर्च। प्र मेरी प्रकार (कपू)। पाक्षिय वि [पाक्षित] चीवत (ठा रे । महा)।

(क्यू)। पाक्रिय वि [पाक्रिय] परीवत (ठा १ । महारा)। पाक्रियाय केको पारिय = वारिवाद (पत्र १ )। पाक्री कर्षे (पाक्री) पींक, वीरेंग्र (क्वर)। केको पाक्रि। पाक्री कर्षे विम्नी विद्या (१ ६ १७)। पाक्री कर्षे [क्षि] विद्या (१ ६ १७)। पाक्री कर्षे [क्षे] व्यानार क्रफेसर (१ ६

पश्चि । प्राक्षीदस्य न [से] स्थान साह (वै ६ ४१) । प्राक्षीत्रस्य न [से] स्थान साह (वै ६ ४१) । प्राप्ति स हो। प्राप्ति स हो। प्राप्ति स हमा स्थान साह स्थान स्थान

क्क्स पाविर्धत पावेखसाण (पहार १ संघ २)। संघ पाविकस्य (पि १८६)। इह. पणु पीविक्स (पि १८६)। इह. पणु पीविकस्य (पि १८६)। इह. पणु पीविक्स पाविक्स (पुर ६, १४१ व ६ ६)। पाव की पन्नाहा - जानग्। पावेद (रू ४ ४१)। पाव की प्रमाहा - जानग्। पावेद (रू ४ ४१)। पाव पुर पायु १ स्थुन कर्म-पुरुष्ण कुकर्ण (पाया पुरुष्ण हमा इस १ सापु ११)-वस्थापम्य पावे पावे प्रमुष्ण कुकर्ण विराम्भ (पाया पुरुष्ण कुकर्ण पावे पावे प्रमुष्ण कुकर्ण विराम्भ (पाया १९१)। ए

पापी समर्थी पुत्रमी (पहाइ १ १३ कुमा

७ १)। करमा न [कर्मन्] म्यून कर्म (याचा)। करिता पि [कर्मिन्] कुकर्म रूपोसका (क्ष.)। वृंद्ध र्थु [वृण्डा] नारामान-पिद्येद (देक्त १३)। पाह क्ष्मी [फर्मान] ग्रामान १५०)। वारि पि [कर्मान्य] ग्रामान १५०। वारि पि [कर्मान्य] ग्रामान १५०। वारित (क्य. १५० १५)। सुमित्य पुरा व्यक्ता बुष्ट स्त्रण (क्य)। सुधान [िक्रुत] कुट शाला (ठा १)। पान पुँ [के] वर्ग सांप (के ६ ६०)। पान (वप) केवी पत्त जनात (सिन)।

पार्थस दि [पापीयस्] गारी कुनर्ये (स ४ ४—पर ९२६)। पावन्तासम ग [ दे पापझास्तः ] केने पाठन्तासम् (६ ७४१)। पावग दि [पावक] १ पवित्र करनेनका (एस)। द्रुं सरित नक्षे (सुरा १४२)। पावग दि [पायक] पहुँचनेनका (दुरा

पाक्षा रेको पात = पात (प्राप्ता वर्तत १४४)।
प्राप्ता (पर) केको प्रकारमा (वर्ति)।
पाक्षम् वेको पात-वद्यम् = गरू-पठत (त्रप्त-कृता)।
पावशिक् रेको प्रदक्षि (चिरि ११ धः १११)।
पावशिक् रेको प्रदक्षि (चिरि ११ धः १११)।
पावशिक (विक्रम) पृत्रिक करोनामा (वर्ष्य ४७। छन्नु ११ )।

पाबंध व [ज्हाबत] १ याती का प्रवस्त । १ क्षण्यीर करता (सिंप १४) । पाबंध व [प्राप्त] १ शांति कात (दुर ४ ११११ वर्ष क) । १ योत की एक विक्रिंग १११० वर्ष के। १ योत की एक विक्रिंग (क्षण्य २०७) । पाबंधि केवो पार्चिस (वर्षील १४०) । पावंधि केवो पार्चिस (वर्षील १४०) ।

पाथम विश्विष्य हो अल्बाहित का वर्ष

(सूम १ ७ १)।

पाचम हुंग [क] बाध-विस्तेप प्रवाणी में पानमें (पराम १७ १३)। पावम केवी पावमा = पान्क (वन ७१० में बुध १०४० चुना ४० पाय)। पावमाम केवी पावमाम (है १ ४४० वस्त काला १ १३)। पावमिक वि [पावमिक] स्वित्तान वास्त्रात, देवानिक (वस्त १२०)। पावमिक वि [पावमिक] स्वार केवी (सम १)।

पावरक्ष देखो पाचारय (स्वन्य १ ४)।

पायरण पूं [प्रावरण] एक म्सेच्छ बार्डि (मुख्य १५२)। पावरण न [प्रायरण] वस्त्र कपड़ा (हे है 242) 1 पावरिय वि प्राप्नती बाच्छारित (ग्रूप्र ६०)। पायम रेनो पारम (१४ ११७)। पात्रा भी पापा नगरी निरोध को बाजकन भी बिहार के पाम पाबाइरी के नाम ने प्रतिय है (कप्प ती ३ पंचा १६ १७) पव ३४: निवार ४६)। पायाइ नि [प्रशादिन] बाबाट, दार्गनिक (बुध ३ ६ ११)। पापाइत्र नि [प्रायाजिक] सैन्यामी (प्यण २२)। पाबाइअ वि [प्रायादिक] देखी पाबाइ (भाषा)। पायाइम । वि [प्रापातुपः] वावार वार्श पोबोदेय 🕽 निर्के (सूम रे रे वे रेवार २ = ३ वि २६६)। पाचार पू [प्राचार] १ वेद्याराला कपड़ा । २ मोग्र नम्बन (पन व४) । पायारय देखी पारय = प्रावारक क्षेत्र १ १७१ कुमा)। पाचालिया स्मे [प्रपापालिसः] त्रश वा व्याक्र पर निरूष्ट भी (गा १६१)। पाचासु } रि [प्रशासिन, क] प्रशास पोदासभा करनेशिया (वि १ श है १ ११ दुमा)। पाविम वि [प्राप्त] सल विता हवा (सूर ६ १९: M ६=६) i पाषिञ्ज रि [प्रापित] प्राप्त करवाया हुन्छ (बंदा: स्टा-नीबरी ईव) । पाबिश रि [प्याबित] सराबीर विया हुना शुद्ध विशासा हमा (रुमा) 1 -मान्द्र वि [पापिछ] धायन्त वाती (छर वरवधी मुर १ ११का व व शा मुता १६६ मा १४)। पार्थ डे देनो पाय-बिंड (शतक १ १: हे १ २७ दूना)। पार्यार्थस देगी पार्थम (नि.४.१, ४१४) । पायुअ वि [प्रापृत] बान्यान्ति (सन्ति ४) । पारतमा । रेको पार = ४ + धार ।

٧¥

पांचेस वि शिवेश्यी प्रश्तीविक प्रवेश के सायक (पीप) । पावस पूर्विश] बद्ध के दोनों तरह मरकता रेखा (छाया १ १)। पास सक् दिया | १ देखना । २ वानना । पासइ, वासेइ (कप्प) । पासिमै = "परव" (बाचा १ व व ५)। अर्जे पासिकाइ (पि ७ )। बक्र पार्सन, पासमाग (स ७३) रण)। सक्र पासि पासिका पासिकाणं, पासिया (पि ४६६: नप्पः पि १८६ महा)। हेरू पासिचए, पानिर्द (पि १७०-१७७)। **ए पासियस्य (क्य)**। पास प्रे पारव र बर्डमान वयर्तपङ्गे-कास के तेर्देवर्वे जिल-देश (सम १६ ४६)। २ भगवान् पारर्वनाय का मक्तियक यन (संदि व)। १ न करवा के नीचे का माथ पाँगर (शाया १ १६)। ४ समीर निकट (नूर ४ १७१)। विश्वित्त वि ["पिस्पीय] मगरान् पार्शनाम भी परम्पस में संजात (मग) । पास वे पाशी फोबा कवन-एक्स (नुर ४ ११७ भीप दुमा)। पास न [वे] १ य'चा२ तता १ द्रुन्त मान । ४ नि विशोग पूजील शोधा-हील (रे ६, ७१) । १ तुंतः सन्य वस्तु वा सहय नियल 'निक्तुसा तंत्रीचा बानेल विला न होद पह रंगी (मान २)। पास वि ["पाश] बराबर, शिश्ट कमन्य, द्राचित्र 'एस पासंहियशसी हि करिन्सई' (तम्पत्त १२)। पासंगिम दि [पासद्विक] प्रसंव संक्यी बानुसर्विक (बुम्मा २०)। पासंह न [पामण्ड] १ पाधलड शहरव वर्ग यमें का दोन (टा १ राया १ ८ छन

पासम वि [दर्शक] देवनेवाना (दावा) । पासग र्प (पाशकी १ क'सा, बन्धन-रन्द्र (जप प्र १३ सर ४ २६) । २ पामा पूचा सेतरे का छाकरएए-विशेष (वे ६)। थासग न [ प्राशक] नसा-विधेप (धीर) । पासप्प म [दरान] धनतास्त्र निरीक्षण (जिंद ६७१) छन १७०) सीम १४ सुना ₹**७)** । पासमया 🗗 कार देखो (धोप ६३ उप १४व एाया १ १)। पासिविष्ठ नि [दे] सानी (दे ६, ४१)। पासप्पिअ नि [मारिनक] भरत-भर्ता (पूम १२२ २८ घाषा)। पामस्य दि [पार्श्वस्थ] १ पार्शे में स्थित निचट-स्थित (पडम १० १०) स २६७-बुध १:१२ ४)।२ टिपिनावारी साध (बर⊂३३ टीः खाहा १ ४८ ६,—पत्र २ ६ सार्वेदद)। पासरय वि [पाशस्य] पार में चैना हुमा पारित (मूच १ १ २, १)। पासल न [दे] १ हार(देव ७६)। २ वि विर्पंक वक (दे ६ क६ से ६ ६२ गड़ा)। पासह देवी पास=पारचे (से १ ३० यदह)। पासल्डयक [विर्येद्ध पाश्वाय] १ वक होना। २ पाच पुनाना 'पाछक्रीत मदिहरा' (वे ६ ४१)। वह पासहेत (वे६ ४१)। पामहरूअ रेनी पासदिज (वे १, ७७)। पासित वि [पाधिम] पार्थ-श्रावत विज्ञाल मरामुली नैसकी बाहि द्वागु द्वान्ता (पर ६७ वंचा १० ११)। पामदिअ वि [पाधित विर्यक्त] १ पार्थ में क्षिया हुया। २ हैदा क्षिया हुया (ग्रहा fr tet) i पासयम न [प्रस्तवग] बूव पेराह (सब १ वसंबर्भकास्य मृता६२)। थामाईय देवी पामादाय (नव १३० उस)। पामार्मुष न [पास्तर्मुम] पुर्मिस्टेर 'धराच रम्बद् विचिट शबाहुनुवर्द् ताव ना नरमु (दा दहर)।

पासंदण व [प्रस्यम्दन] फरव टरफवा (बृह

5) 1

मार ६)। २ थउ (यल्) ।

पत्र १६२)।

(बचा भीत)।

पामादाय रि मिमादिती महत्त्रकात. ब्रामा भूफ (सूच र ७ १ टी)। पामाय प्रेन शिमादी महत्त हम्बँ (काथ क्रम = ४)। बहिसम ⊈ [ीमर्तसक] चैन महन (स्ट पीर)। प्रासायबहेंसर र् प्रामाश्वनसङ् भेष्टवन महत प्राताक्तिकी (सम ६६)। पासामा प्री [द] क्से छेट मना (१ ६ 1 (4) पामाप १५ दि यगन्न नातानन न्यरोका पामायय ( (वह । दे ६ ४३) । पासि रि [पाधिम] पार्थम्ब शिविताकाचै नाबु 'पानिशारिन्धा' (संबोध १३) । पामिद्ध वैद्यो पमिद्धि (हे १ ४४)। पामिश रि [हरद] दर्शश्रेय, हैद (बाचा) । पानिमं रेनो बाम व रह । पारित्य रि विशासकी फेटे में प्रेमनेशना (बार १ २)। पासिय रि शिष्टी छुपा हुवा (बाका---वर्ष्यम्)। वासिय वि विधित् । पारमुक (धन)। पानिया हो [पारितवा] द्वीय वार (बद्धा) । पानिया रेगी पाम = रय । शास्त्र रि [वर्षिक] रे शन म ध्रतेशता । २ शाध्यये (पर २४ चंदू १६ मन) । धारा ही दि । परा चीने (वे ६ ३७) । पाम देगा पम (हे १ १६ ७ )। पाम्म रेनो प्रमुत्त (ग १९४ नूर १, १ हो है है है र प्रशासूत्र है है । धाराहण रि [प्रमोदित] क्रावेशनुक वर्गाना बाना (मरि) । यार्गाटय रि. पिश्चवन् ] वार्थ-छायी जनन

🛚 बानेताला (स्वर)।

पासाविश्व दि दि चात्री (दि ६ ४१)। पामार देनो पामाय (धीरः स्वप्न ६६)।

पामादिय दि [प्रमादित] १ प्रवय दिया

ह्या। २ म प्रगाप्त करन्य (खाबा १ €---

धामाताच ति विस्तातीयो प्रशासनक

पाद्य (श्रप) सक ग्रि+कार्ययी प्राचैता करना। पाइसि (पि ३४१)। पाइंड वेको पासंद्र (१४ २६४)। पाइक देखी पादाकाः 'धाईते पाता' सर्वे' (धा (२): 'चन्नोका समतीक पा**हलक्**टा व शिम्यवियाँ (वर्षेति इत महार वर्ति)। पाइचा बेबी पाणहा: 'दिविश्रा पाइका वार्' (समा६ ४)। বাহ্তম ৄ গ [মাআন্ব] সমানৱ,ে সমানান पाइक र (प्राप्त दश दीव ७७२)। पाइर एक प्रिम हो सक्ये ने नाया ने भाना। पाइपहि (इस ४ ३ ६)। पाइरिक नि शिहरिक] पहरेकर (ब १२१, नुषा ६१२। ४२१) । पादाचय वेची पामाइय (पुरा १४) ११६)। पादाण दु [पापाण] कार (दु १ २६६) म्बद्धा रे । पादिका देवी पाहेला (पाप)। पाटुड म [स्वयूत] १ क्यार, पाहर, मेंन क्षित्र वेशक व का निया र के कर्युर एक नप्राप्ता कृषा)। २ जैन बन्धाल-विरोध परिच्छेर धन्त्रका (लुझ १ २०६) । ६ अञ्चलका अस्त (कम्म t w) । पहिच्न श्रीसर्वी १ श्रेम्पर-विशेष प्राप्ति का भी एक बंग (तुज ११२) । २ प्राप्त अञ्चल का बान (कम्प १७)। प्रदूषस् माम १९ ["प्राञ्चतसमास] परेड प्राप्त-प्राष्ट्रीं का तान (कम्ब १ )। <sup>क</sup>समास दुंग ["समाम] धनेक मानूनी का जान (बस्द १ ७)। पादक्क व [प्रास्त्रण] १ क्रश कलक् (क्रक क्रक १) । ९ इटियार के पूर्वी का धामाश-विशेष (कन् १६४) । ६ बारच धर्म पार-प्रिया (माना १८३१ थम १)। छय ह [बद्धर] बारहरें शंदनात्व के पूर्वी का त्रकरण-विधेप (वच १) । पाट्टविका धी ["प्राथ्विक] हरिकार का प्रकरण-विकेत (कनुरुष४)। पाइडिमा भी [यासूनिका] १ रहिशार का धोत बाबार (बलु २१४) । १ धर्गीला रितेतन धारि (बर ४) ।

पामोभर्सत (से ६, ४७)।

पासाज—पित्र पातुक्रिमा सी [प्राभृतिका] १ मेंट, प्रवहार (पण ६७)। २ जैन सृति की फ़िलाका एक बोप विश्वक्षित समय से पाले<del> प</del>न में संकल्पित दिला एएकार स्पानि सी मार्गी দিয় (বৰা १६ ২ বৰ ৭৯) হাৰ ৮---पन ११६)। पाहुण वि दि विक्रीय वेचने की बस्तु (वे पादुण ) पूँ [प्राप्तुम क] व्यक्तिप, शाहुगः पाडणता : भरमान (बोजबा १६) सर ६,वध पादुणय ∫ नहा नुपा १३३ द्वत्र ४२ औंग कल) : पाहणिक वृह्मिप्रणिको सर्विक पहन्द मेइमल (कात २२४)। वाहुणिश्च वै [प्रामुनिक] बहु-विशेष प्रा-विष्ठायक वैक-विद्येष (ठा २ ३)। पाहणिका वि प्रिष्टपनीयी प्रकृत देवदान विसको रान रिया नाव नह (शास्त्र रे रै सी-पन ४)। पाष्ट्रध्य ेन प्रिमुख्य की मध्तिव्य-⊱यविषि का सरकार, पहुना⊅ पादुषस्य पाहण्यथः 📗 'क्रमें मंत्ररीय प्रकृतः (? स्छ)में (क्य ४२ वर १ ६१ छ)। पाद्रेश व पात्रेयी छस्ते में भावकरते वी खानमी, बुनारियों में साने का भीवन (वर्ष १६, १८। महार सीच ७६। स. १ पूर्व 13x1 1 पाइटन न [कंपायेम] कपर देशो (के ध 8x)1 पादेवमा (१) श्रेता पद्देलमा (तित्र २ **०**)। पिकेरी अबि (है के शब्द स्वय रूप नुमार्ग चरि)। विजवक[पा] वीका। विवाह (हे ४ १ । भरेका गर १६१)। भूगा, श्रामाण (बाबा) : वह विश्लंत विवसाय (बा १३ य ९४६ से २, ४, वितार र)। वीट विद्या पंचा पिएऊम (बच्चा वत्त एक शा वर्गेकि २४) पिएमिलु (मन) (क्छ)। जनी-दियारए (दन १ १)। थिम 🖠 [प्रप] १ वटि बान्ट शाबी (दुना) : १ ६८ ६७, मीठि-बरङ (कुना) । असर्बु[तम] पति, पत्र्य (य १६)

वक्त (महा ६०)। "सित्त पूर्विस्त्री १ एक कैन सुनि जो सपने पीछले सब में पाँचवां बामुदेव हुमा बा (पटम २ १७१)। "सेक्टप वि "सेक्टिकी १ जिय का फेल---चंगीय करानेवासा। २ न एक शीर्थ (श १११)। "वय नि ["सुप्क] बीवित-प्रिय (बाना)। ायरा वि [ीयत, स्ताक] बारम प्रिय (बाचा) । पित्र देशो पीत्र, 'पीमापीचे पित्रापिसे' (शाहा स्ए मन्)। पिछ देशो पिक (प्राप्तु ७६/१६)। इर न ["गृह् ] पिता का कर, पीहर, मैहर मैका (पटम १७ ७)। पिकामा देखो पिका (पा १६)। पिअइड (धर) नि जिल्लिक् गिरी जन-भानेत्राता, सुरा करनेताना (भृषि)। पिभाइद्विय (अप) वैको पिका (र्चाक)। पिभंदर वि [प्रियंकर] १ वर्गेष्ट-कर्ता इट्ट-क्नक (बत्त ११ १४)। २ पूँ एक वक्नसी राजा (उप १७२)। १ रामचन्द्र के पुत्र सन कापूर्वभागका मान (पडन १ ४ २३)।

(शामा १ १--पत्र १२ भीप)। २ थूं

पिक्षेत् पूँ प्रियक्त र कृत-मिरोप प्रियह कुमा)। स्माक्षी ["दमा] पली मार्गी ककृ वनीकापेड़ (पाधा सीप सम १६२)। (इमा)। अर वि [कर] ग्रीत-नगर २ वंद्र, मासकीकी का पेड़' 'पियेतुको (ताट--पिंग)। स्मरिणी औ ["स्मरिणी] क्षेत्र'(पाघ)। ३ की एक क्षीका माम भगवान् महाबीर की माठा का गाम विराहा (निवार १) । "सङ्याची विद्विपनी क्षेत्री (इट्य) । रॉय वृं [धन्य] एक प्राचीन एक की का नाम (महा)। **बैन** मुनि भाषायें गुस्मित भीर शुप्रतिबद्ध का पिळांबय वि [प्रियंबद] मद्भर भाषी (सुर १ एक शिष्प (कृप्प)। आध्र वि विद्यामी ६१३ ४ ११६- महा)। विश्वको पत्नी प्रिय हो बह (या ११०)। पिर्श्वाइ वि [प्रिययादिम्] अगर केही (एत काञा की ["काया] प्रेम-पात्र पत्नी (बा १६९)। दसन नि [वर्शन] १ ११ १४ सुब्ध ११ १४)। पिक्षण न वि] पुण्य दूव (६६ ४०)। विसका कर्तन प्रिय-प्रीतिकर हो वह पिक्षण न पान विनाः 'तुक्क्षमिष्यक्षनिर्दा' देव-विरोप (ठा २ ३---पत ७१)। (बर्गीव १२६) चुक्त ६ १) जन १६६ दी। देसमा की [वर्रोना] मननात महानीर स २६३) सुवा २४४, नेइय ४७ )। की पूत्रीकर नाम (धानम)। घम्म नि पिकणा 🕸 [पूरुना] छैना चिरोप, चिसर्ने िमर्मेन् १ वर्मभी मद्भावादा (शाया २४३ द्वापी २४३ रण ७२८ चोड़े सीर १ =)। २ पूँभी समझन्द्र के शाय जैन १९११ प्यार्वे हो बह सरकर (पछन ४६ ६)। दीसा बेनेनाचा एक राजा (परम ६१, १)। पिकामा और वि प्रियंत पूरा (दे ६ ४६ भाइग पूर्विभाव् । पति का भाई (उप पाम)। ६४व टी)। सासि वि "सापिम् प्रिव-पिलमाह्न की वि कोनिलाः विकी (हे ९ ११ पाम)। पिश्रम पुं [प्रियक] कुश-किरोप किपवसार कापेड़ (सीप)। पिश्रद पुन [पिन् ] १ माता-पिता मां नापा 'मुखंतु निएग्रमिनं पिमरा' 'पियराई स्वं-कार (बर्मीव १२२)।२ तुं पिता बारा (माञ् । पिछार्रस एक [ यक्षा ] ग्रीक्या वोक्या। पिमर्गम् (प्राष्ट्र ७४)। पिक्षक (बप) क्यो पिका = क्रिय (पिप)। पिमा की [प्रिया] पक्षक काला बार्या (कुमा हेका ११)। पिजामह् र् [पितामह्] १ आहा अपुरानम (से १ १७) पाया कर १६७ टी स २६१)। २ पिताका पिता बादा (क्व)। तणकार्य [ "तनय ] नाम्बनान्, नामर-विशेष (से ४ ३७)। त्यन ["सः] सक्त-विरोप शहासः (से १२, ३७)। पित्रामही के [पितामही] पिता की शास षाधी (धुपा ४७२) । पिमार (मप)। पि [प्रियतर] भारा (दुम ३२ मिका।

पिआरी (भप) की [प्रियसरा] व्यारी प्रिया पर्ली (पिय)। पिमाछ हु [प्रियास] कुत-विरोध पियल चिरौँनी का पेड़ (कुमा पाम है ३ २१) परस १)। पिआलु 🙎 [प्रियालु] 🗫 विशेष विजी विकाशक (सर २१)। पियासा केही पिषासा (पा द१४)। पिड़ देखो पीड़, विर्श पिड्य सिट्टी (पड़म ११ ₹¥) 1 पिइ वृ [पितृ] १ पिता भाग (इस ७२० दी) । २ मना-नतन का प्रविद्वादक देव (सुन १२ वि १८१)। मेह पूर्णिमेघी वक-विशेष विसर्ने बाप का होन किया आय यह यह (प्रज्य ११ ४२)। वग न ["यस] रमधान (मुपा ११६)। हर न िगृह्वी पिता का बर, पीइए (पडम १० ७ सुर १ २१६): वेली पिंछ। पिइस्ट पूँ [पिएड्य] शाचा नाप का गाई। चुपासो बीरजिएपिसम्बी (? एन) (विचार Yea) t पिइय वि [पैतुक] निवा का पितृ-संक्रमी (मप)। पित १५ [पितृ] १ बाप पिता (सूर १ पिंदका रें क्टा बीग च्या हे १ १६१)। ९ प्रेन माँ बाप मावा-पिवाः 'फ्रनमा सङ् पिऊच्छि पार्म पत्ताई" (वर्गीन १४७ सुपा १२१)। इस्मा वू किसी विद्र-वेश पितृ-पुत्र (कुमा) । कुछ न किछे पिता का वैश (पड्)। धर न [ैगृह] पिता का बर, पीहर (बुपा ६ १)। बद्धा बद्धी भी प्रियम् दिवाकी विद्या पूजा कूजा 995 (मा देद देद १४२) पाध-कामा १३१६) कीति विदर्शित (? स्थि) <del>पनकारेद</del> (खावा १ १६—पन २१६)। **ै**पिंड पूँ [ैपिण्ड] मृतक-मोकत थाङ में विया बाता भीतन (बाबा २ १ २)। भगियी की ["मगिनी] पूर्णी विवाकी विद्याल (सुर ३ ६२)। सद्र पूर्व [पिति] सम थमराज (हे १ १३४) । वयान ["यन] रमशान (पदम १ थ, ११ पाम है। १९४)। "सिमाको ["जस्] इसी (ह

( t vi) i र्षिग देवी प्री = प्रह् (कुमा ७ ४१)। विंका । केमो पिकका (सापाः प्रका सूपा चिंग दं [पिला ] १ करिन्त वर्ण, योग कर्ता । (4xt) (4xt) न वि पीका पीत रेंच का (पास कुमा पिंक्रों की [पिच्छी] साबू का एक उनकरश स्परि १४)। ३ पुँठीः करियमः पन्नी । श्री नावि बेस जिला शिक्षी (१७४)' (विचार गा (बूब १ ६ ४ १२)। ₹**₹** ) i पिक्रोडी की दि । शह के पत्त से बनाया मिनित है [दे] सर्वट सम्बर (दे ६ ४८)। वादा प्रस्-वन नास-विशेष (हे ६ ४४)। मिगळ पुं[पिजळ] १ श्रील-पीत वर्ती। व् पिंक एक [पिक्स] पीनमा कई का बुमता। वि गीत-सिम्रत गीत-गर्जनामा (कुमा) हा वक्र पिर्वत (पिंड १७४' बोच ४६२) । ¥ २ भीप)। ३ द्रं महक्तिय (ठा २ पिमण न [पिझन] शीनमा (पिट ६ १) र)। ४ एक यस (सिरि ६६६)। १ चक्र-\$ to \$8) 1 वसीं का एक निनि धामुपतों नी पुरि करने पिंबर इं [पिक्कर] १ पीठ-एक वर्ल एक-नामा एक निमान (कार. का १×६ टी)। पीत विभिन्न रेंग। १ वि. रक्ष-वित कर्तु-९ ४ व्या प्रश्नम-मिरोप (दुरश १ )। ७ बाता (वस्त्रः कुछ ३ ७) s बाहर-पिक्त का क्ली एक कवि (पित)। व पिंबर कर [ विज्ञरण् ] रक्त-विभिन्न पीत-एक वैन क्यासक (मन)। १ न प्रद्वास का वर्श-प्रश्न करना। वह पिंअरचीत (पदन एक धन्त-प्रेन (पिय) । हुआर पुं ["हुआर] 1 (5 33 एक राजपुत्रार, जिस्ती सम्बाम् युपार्त्यसम् पिंअरण म [पिअरण] रक्ष-मिथिय गीव-के समीप बीसा भी की (तुमा हर्ष) । वास वर्शवादा भारता (क्ल)। वि ["स] १ नीनो नीनो सांबदाना (व्य पिकरिक मि [पिक्ररित] पिन्नर कर्णनाता ४ २---पप २ व)। ३ <u>द</u> वशिविधीत फिस इसा (क्षमीर ११ नहरू नुवा (च्यार राग्रीप)। KRY) I

ं भः विशे १ ०)। ३ पुत्र वरीया औ यसी हेर्द केल परंतु, वर्तुसाकार पदार्ग (**१६६** २, ३८)। ४ फिला में मिलता बाह्य ए फिटा (क्याळा ७) । ३. चेद्र काएक क्षेत्र । ६ केट्र रुपीर। ७ पर काएक देखा व यह का भोसा की पितरों के सहेत से विश्व करता है। पुरुष (देर कमा प्राप्त । १२ वस-क्रुम्ब । १६ पंत्रक हुता यसका का यह । १४ थ. ध्यनीतिका । ११ बोह्या ॥१६ घाट विवर्धे भी निया बाला सन्। १७ वि चौद्राः रेव मन निमित्र (हें १:४१)। ऋणिया नि **किरियको धर्मना निर्मान क्रिया केनेना**चा (बंद १) । राष्ट्रा की [शुक्रा] प्रश्नितीय क्यूरव का निकार-विशेष क्षेत्रकर बता के पहचे की सबस्या-विदेश (१५४ २ १)। पर न िश्दा करेंग है बना ह्या बर (नव ४)। रेव इं दिया जिल मध्यान की सवस्य-विरोधा च विश्वत्यप्याचावस्थवस्त्रावामा सम्ब (वंबीय २) । स्थानुं [पेथे] स्प्रशासर्व (थक) : दाय न [दान] विदंश की की क्षिमा बाह्य (वर्गीव २६)। प्रसिद्ध स्त्री मिहर्नता भवान्तर येखाती प्रकृति (कम १ २६)। वक्कण ग विभीन] साहार-वृद्धि क्यत-इति, सम्प्रशासन (संद्र)। बद्धा वजन ["वर्धन] ध्यहार वहावा (गीन) व्यय पूर्व चित्र विकाशताथ, सम्रार प्राप्ति (बाध्य कर)। बास दें बिससी गुरुक्त (चनि)। वि<u>स</u>द्धि, विसादि स "विद्यांकि किया की किर्देशका (प्रेक्त धीषका १)।

करने की चीति (ठा ७)।

पिंडम पूं [पिण्डक] उत्पर देखो (क्स)।

विंडण न [पिण्डन] १ इच्यों का एकन

संस्मेप (संबन्धा २) । २ ज्ञानावराणीयावि

कर्म (सिंह ६६) । पिंडणा की [पिण्डना ] १ समूह (बीब ४ ७) । २ इब्बों हा परस्पर सैयोजन (पिड २)। पिंडय रेको पिंड (बावमा १३)। पिंडरय न [वे] चाहिम सनार (वे ६ ४८)। पिंडसङ्य वि [वि] तिएबीइत पिएवाकार क्रिया हुमा (३ ६ १४ पाम)। पिंडसमान [व] पटमक पूष्पका साजन (হা ৩)। पिंडबाइअवि [पिण्डपातिक, पेण्डपातिक] मक-नानवासाः विश्वती निज्ञा में बाहार की प्राप्ति हो वह (ठा ६१ क्सा भीप মাত ই)। पिद्यार पु [पिण्डार] योग ग्वाला (वा 1 (\$\$0 पिंडालु दू [पिण्डालु] बन्द विशेष (मा२)। पिंडि देवी पिडी (भग एगया १ १ टी-पत्र ३)। पिंडिम वि [पिण्डम] १ पिएड से बना ह्या बहुन (पएह २ १ —पत्र १४)। २ पुरस-समूहरून श्रेवाद्यकार (ग्राया १ १ ही—पत्र ६ घीप)। पिंडिय वि [पिण्डित] १ एकनित वनद्वा क्या ह्या (सूमित १४ : वंशा १४ ७ महा)। २ पुण्डित (मीन)। पिडिया औ [निण्डिका] १ निएडी निडबी कानुके नीके ना सोसन सवयव (सहा)। २ वर्नुनाकार वस्तु (मीर) । वैची पिंडी । विंद्री की [विण्डी] र कुमी अन्छ (बीर भग सामा १ १ का पूरे।। २ वर का धाबार-भून कछ-विरोप पीड़ाः विविध यपिडीबेपस्मित्रपरिलेबिकार्काखम्मोधा (यउड) । ६ वर्गुनाकार करन्, योखाः जिल्लायनिधी (मूस २ ६ २६)। ४ खर्बर-विशेष (शाट-शक् १६)। देवी विद्या । विश्वी थी हि मध्यधे (दे ६ ४०)। पिद्वीर न दि पिण्डीर] साहम बनार (ह 4: Ye) 1

पिंडसिय वि [पिण्डेपिक] निता वी सीन करनेवाला (भग १ ११)। पिंडोसम् )वि [पिण्डावसमङ] मिक्षा से पिंडोस्ट्रग्य निर्वाह करनेवाना निना का पिंडो क्य प्रार्थी भित्र (माना उत्त ४, २२ सुकार, २२ सूचर 🐧 १ १)। विंच (बप) सद [पि + धा] डक्ना। पिकड (चिम) । संक्र- पिंघाउ (चिम) । पिंघण (ग्रप) न [पिघान] डक्का (पिंग)। विंसकी की वि श्रेष्ट से प्रम भएकर बजाया जाता एक प्रकार का तुल-वाद्य (वे ६ ४७)। पिक पूंची [पिक] कोचिल वसी (पिंप)। की की (वेद घर)। पिका**टेको पक्ट**≕ यक्द (हुँ १ ४७३ पान या ५६६)। पिक्छा सक मि 🛨 इक्ष 🕽 वैवाना । पिक्सइ (प्रवि)। वह पिक्तांग (प्रवि)। इर पिक्लेयक्य (शुर ११ ११६) । पिक्सम वि [प्रेक्षक] निरीक्षक ह्या (श्री । १ ३ घर्मीव १६)। पिक्सम न प्रिक्षण | निरीवरण (राम) । पिक्सिय वि प्रिक्षित रह (पि ६६ )। पिग केवी पिक (कुमा)। पिष्पु (पिष्पु) कार्यात वहें (देश ७८)। क्या की जिला प्रशी को की प्रशी (है **%** ሂና) i पिशुमंद पू [पिशुमन्द] निम्म पूच नीम कापेड (मीड १ १)। पिष ) ध प्रिरंगी पर-सोक धागामी जन्म पिचा (या रक्षा मुना १ श मूच १ १ १ ११)। देखो पद्मा। पिका देशो पिश्र ⇒पा। पिचियं वि चि पिचित् ] पूटी हुई छान (ठा ४, ६---पत्र ६६८) । पिच्छ सक दिशा श + इसा दिया। विषया, विष्यंति विषय (कमा प्राप्तु १६ ३३)। का पिक्टांत पिक्कासाण (नूपा १४१: मणि) । कमा: पिषिक्रक्रमाम (नुपा **१२) । संक्र विकिल**ते विकि**ल**क्तम (बाग् **११३ वर्षि)। इ. (वस्द्रविज्ञ (वप्यः गूर** १३ २२३३ एवल् ११) ।

पिच्छ न [पिच्छ] १ पत्र का घरमंद पंच ना हिस्सा (उवा पाय)। २ मयूर-पिच्छ, शिक्यक (शामा १ १)। १ पत्र पीप (उन ७६८ टी वजड)। ४ पूँछ, सांधून (पराष्ट्र) । पिच्छात्र प्रिक्षणी १ वर्शन सवसोकन (पा १४ मुपा ११)। पिच्छ्रण ) न प्रिक्षण, की वमाशा केश पिच्छाणय । भारक 'पारक पिच्छा तहि ताव (नुपा ४०१), तो वनशिमधिइधेहि पिष्यद् वरिवरीय पिष्यस्मार्थ (सुपा २ •) । पिच्छ अधि पिच्छ अधि सिल्ब, स्तेह युक्त । २ मध्य (सए) । पिण्डा औ ब्रिजा निरोधल । भूमि औ िभमि रेव-मएडच रंगमंच (पाम)। पिन्छ व [पिन्छन् ] पिन्छनाता (भीप)। पिच्छिर वि मिक्षित् प्रेजक ग्राग, वेसने बल्ला (नुपा ७० कुमा)। पिष्यस्य वि [पिष्यस्य] १ सोह-प्रकः रिनम्ब । २ मच्छ विकास (गतड हास्य **₹**¥ ¥₹ ¥₹) 1 पिच्यासी की दि वनना शरम (दे ६ ४७)। पिष्यही की दि | पूरा बोटी (दे ६ ६७)। पिक्की सी पिक्किसी पीछी (मा १७२)। पिच्छा सी पूर्णी १ पूर्णी मरित्री चरती (कुमा)। २ वही इसायवी। ६ पुगर्नवा। ४ इच्छा बीरक। ५ क्रियाची (क्रे १ १२८)। पिच्छास्य की दि] बीन बजाने की कंदिका (समझ च पत्र १४६)। पिञा एक पा दोना। दिन्बई (है ४ १)। इ. पिञ्चणिञ्ज (कुमा)। पिञ्ज पुन भिसन् ] ब्रेम सनुराय (सुन्न १ १६ २० कल)। पिञ्च पिज्ञति हैको पा=पा। पिञ्जा 🕸 [पेया] बदाबू (रिंड ६२४)। पिकाषिक रि [पादित] विस्की पान करावा नमा ही यह (तुच २ १७)। पितृ कर दिश्वप दिशा करना । पितृति (नुध २ २ ३१)।

पिट्ट सक [ भौजू ] नीचे पिरना। रिट्टर

(पर्)।

যাখন। বিভারত, বিভারত (বি হই ১ के.

पिङ्क सक [पिठ्य] पौटना टाइन करना।

पिट्टक्, पिट्टेंक (काणा सिंग्ड था १७१ सिर्पि ६११)। बक्क पिट्टेंस (रिंग)।

पितृ न वि दि, तरर (पंचा व १६। भगीव ददा मेरल १३४ वह २६। तुपा १६६। ह रशे। বিহুল ব বিহুলী আছেব আছেল (মুখ খ २ ६२। पिड ६४। पर्लड् १ १। बोच REEL WER & C) 1 पिट्रजन [पीडन] पीड़ा क्लेक्ट (सूच २ २ ११)। पिकृपा की [पिकृता] शहन (मीन ११७)। पिट्टाक्यमा जी [पिट्टना] ठाइम कराना (मग ६ ६--पव ६ २)। पिट्टिय दि [पिट्टिक] पीटा हुआ शाहित (पुज २ ११)। पिट्टन [पिए] क्युड्डब मादिना माटा क्रुड (शास्त्र १ १) शाहे १ ७० वा **1** ) i पिद्र न प्रियो पीठ रागैर के योचे का हिस्सा (भीपा क्य)। को व [तस्] शीचे दे, ग्रह कल दे (उना मिया १ १ और)। करेडरान करण्डकी प्रदर्भरा पीठ की बड़ी हती (तंद्र ६४)। परनि चिर्राक्त-कमी म्लुवाबी (बुना) । वेको पिट्टि । पितृ वि [स्पूर्य] १ क्रुया ह्या । २ ल. स्वरी (पद १६७)। पिक्क विद्यारिष्ठा ह्या। २ क अस्क प्रमात चरित विराध क चरेते पिट्ट (या 64. ( \* K. 3 पिद्वेत न **दि** प्रक्षान्त्री प्रचा वीट (दे 1 (28 B पिद्रलाहरा की हि । पश्च-मुच, वश्रुव मविश (R 4 X ) 1 पिट्रसाडरिक्स की [वे] बरिया वाक (पाय)। पिट्रब्ब कि प्रिष्टक्यों पुक्रते सैन्य - शियक-रबोदीन किक्ये कि पिट्टि (हिं) क्याँ (एंबा)। पिट्रावय पुन [पिद्रावक] रेसर चारि रूक-हम्म (नडक स ७६४)। पिट्रिकी [प्रश्न] पीठ राधेर के गीके ना चाप (देश शरका चालवा १ का रोगाः

कृमा पष् )। गवि िंगी पीक्षे वसनेवासा (मा १२) । चन्पाकी चिन्पी पमा नगरी के पास की एक नगरी (कप्प)। सीस व भिर्मसी परीधार्में प्रव्य के दोष का की**र्यं**गः गीरिट्रमेशं न **भाष्ट्रमा** (दन म ४७)। संसिय वि मिसिको पर्यक्त में बीप बीलनेबाला पीछी जिल्हा करनेबाला (सन १७)। साइया और सितुका दिक धनुत्तर-पानिनी जो 'चहिना पिट्टिमाइमा' (धन् २)। देखो पिक्र = प्रतः। पिट्ठी 🗱 विश्वी बाटा की बनी 🙀 नहिए (FE Q) ( पिंड पुंचिता १ वेश-पन साथि का बना हुमापाक-विरोप । २ क्षम्या संवीतवा भा राव ठैरों मनिर्ध **रेरेरे बाल** शह सिक्क पतियों (सूपा १७६)। पिडग केहो पिड्डब = पिटक (धीप छवा-मुक्य ११)। पिकप्यक्ता की दिंगी सकी (देव ४६) । पिष्टव न [पिटक] १ वंद्यमय पात्र-विदेश चीनधीर (१ रि) वर्ग करेडि' (शासा १ १—नव ८६) । २ को चन्द्र सीर को सूची का समा (पुरुष १३)। पिक्रम नि क्रिजियनिन (यह)। पि**डव कर [ अर्थ**] | वैदा करनाः क्यार्जन करणा । पिष्ठवह ( वह ) । पिडिका की [पिटिका] १ वेश-यम कालन-विशेष (१ ४ ७ ६, १)। २ क्योटी संसूपा पेटी गिटारी (का १८७ ११७ री)। पि**ड एक** [ पीडव् ] पीड़का । पिड्रह (माना) (FT 988)1 पितृ यक [फ्रीस\_] गीने पिशमा । पितृह (पक्)। पिषुद्रश्र नि चि प्रसाना (वस् )। भिर्मय [प्रथक्] मक्तथ पृता(पर्)। फिसर ऐन पिठरी १ माचव-फिटेप स्थाबी (पाय सामा पुगा)। १ वृष्ट-विशेष : १ पुरताः योषा । ४ मन्त्राम-दश्य नवनिया (हे १२१ वह)। पिणद्वसक [पि+नार् पिनि+भा] १ इक्साः ए परिचनाः ६ परिचनाः ४ 🖟

पिणवर्षां, पिणदिस्तर (प्रचि १०१, राम)। पिणळ वि पिनळ र पहना ह्या (शम धीपाचा ६२८)। २ बद्ध मन्तित (एन)। ३ पहुनाबा हुया। 'नियमब्बोबि पिएको सत सिरे रक्शविषद्यों (सुपा १२१)। पिजदाबिर (थी) वि [पिनिधापित] ध-नावा हवा (नाट-राष्ट्र ६४)। पिजाइ दे [पिनाबिम्] महादेव किन (प्रस्ट बर्दा) । पिजाई की दिशामा बादेश (दे ६ ४४) । पिणाग वंग पिलाकी १ क्टिन्मप्रग । २ यहारेत का रुसाल (धर्मीर ६१)। पिजारि देखी पिजाइ (वर्मीव ११)। पिणाब देखी पिणाग (शब्द)। पित्राय पू कि बसास्त्रार (वे ६ ४१)। पिषिक वि पिनक पिनिष्ठिती वेशी पिणाळ = पिनका (पण्ड २ ४--न १३ १ रुप्प प्रीप)। पिजिया एक पिति + या । वेदो पिजद -वि+नह । के पिकिमचप (मीस वि tve) पिण्याग देखी पिसाग (राज)। पिकियमा की वि पिकियमा क्य-प्रच-विशेष व्यामक, बन्द-तुया (स्तानि १)। पिन्ही की हि । शामा प्रश्न की (वेद, प्रदे)। पित्त पूर पित्ती शरीर-स्वित बानु-विशेष-विक नातु (मार इप)। उद्यार पू भिन्द] भित्त से होता हुआर (शामा १ १)। सुच्छा को ["सुच्छा] रित नी प्रकारी धे बोलेनामी नेबोसी (पवि) १ भित्तक ग [पित्तक] बादु-विरोद, पीतन (क्रम १४४)। विचिका ) रू [विद्यास्य] पाना, रिवा ना पिचिय र बार्स (बच्छ सम्बन्ध १७३, सिरि **२टव वर्गीक १२७३ स ४१५, सुपा ३१४)** ॥ विचित्र में चिकित्र कि कर सित संबन्धी (तंतु १६ स्ताया १ १३ मीप) । पिर्भेश [प्रमक्] सका दूरा (है र १ । भूमा) । पिमाण देवी पिद्वाण (बाट-विक १ ६) १ भिकास ? वृं [पिन्याक] बसी दिस मार्थि पिकास है का देव शिकास केने पर को क्याना

पियास (भार) श्री [पिपासा] प्यास (गरि) । भागवणा है वह (सूध २६ २६ २६ २ पिरिकी की कि शहिका विशिवा (दे ६ १4; २ 4 २c) I पिपीसिश व [पिपीसर] बीट-विशेष बीउँटा (कप)। पिपीविका र स्री [पिपीविका ] बीटी विपीतिका । श्रीविदी (प्रवृह १ ६ मी १६) खावा १ १६)। पिट्यह मरु दि ] बहुबहाना को यन में बावें । पिछ बेली पीछ । कर्म, विशिव्यह (नार) । श्रीबक्ता। रिपाट्स (दे६ ६ थी)। पिप्पडा हो दि अर्ज-रिपीसिका (१ ६ Y4) 1 - पिष्पश्चित्र वि [ द ] १ को बहबहाया हो । ए न बहबहाता निरमें उन्हार बहवाब (वे 10 x ) 1 चित्रपय पू [इ] १ सराक (१९ ७४)। २ विशास भूद (पांच) । १ वि. उत्पत्त (दे ६ 9×)1 पिष्पर र्रू [स्] १ ईसः २ कृपम (वे ६ 1 (30 पिएम्धे चौ [पिएम्छी] पीपर का बाह्र (परग्ठ १) । पिप्पछ पन पिप्पछी १ पीपन क्य धरमन्य (उत्र १ ६१ दीः पासः द्वि १ )। २ प्रता सुरङ (निया १ ६ -- यत ६६ धोप ११६)। पिप्पद्यम नि [ पैप्पसक्ति | पीत्रम के पान का बना हमा (माचा २२३ १४)। पिप्पति । ध्ये [पिप्पति, श्री] धोपवि-पिप्पर्छ। । विधे गाउ भारतमान्त्र मलेका साहमें होई' (वंदा दे, १ व्यक्त 149 पिरिपादअ रेगी पिरपहिस (वह )। . विष्यिया धी 📳 ग्रंड 町 मैन (लुहि) । पिय वेगो पिअ = पा । रिकामो (रि ४=६) । सं (पविश्वा (माना)। पिष्य म दि ] जा नाती (दे ६, ४६)। पिन्म पू [प्रेमन] प्रेन ग्रीत बनुसन (साध मुर २ १७२ रथा)। - वियान द्रं [प्रियान ] १ क्य-विदेश किली | बाबेद । २ व चार-विदेश खिल्ही खिली (रव १, २ २४)।

Y0) 1 परिचिरिया रेखी परिचिरिया (चन)। पिरिकी श्री [पिरिकी] १ प्रण्य-निरोप बनस्पति-बिरोप (परुए १)। २ बाय-बिरोप (धन)। पिद्धेन ) प्रियम १ ब्रानिशेप पिस्तक्ति पिलसँन पाक्क का पर (सम ११२ द्योग २६। पि ७४)। २ एक तरह का पीपल कुला 'पिलक्ष्ट्र पिप्पलमेदी' (निष् पिस्तर व वि विभिन्न देश विस्ती बदह (R & YE) 1 पिखा केन्द्री पीखा (पि २२६)। पिछाग न [पिन्क] फोड़ा फुनसी (नूप र 1 Y Y ) 1 पिलिंग्य रेनो पिलंग्य (विचार १४०)। पिखिद्दा की [प्लोहा] शंक-किशेप पिलाही तिस्सी (श्रेष्ट्र १६)। पिलाञ्चन चि । एव । धीर (वह)। पिल्लंक ) ध्यो पिलाम्य (पि ७४ पएए) पिल्यका १-पन ३१)। पिल्लां देशी पिलान्द (धाका २ १ व ३)। पिलुट्टीर पिलुप्टी बन्ब (हे २ १ ६)। विमोम व [प्राप] सह बहन (६ २१ ६)। पिक रेग्रो पक्ष = (अप । रिकार (मरि)। पिछ तक मि 🛨 इरयू 🕽 १ मैरणा करना। २ प्रवृत्त वरना । प्रिक्तेष्ट (वच १) । पिद्यगव वि । प्यो ना बचा। पिद्धम न भिरण मिरला (म ६)। पिहजा औ [प्रेरणा] प्रेरणा (रप्प) । पिद्धि ध्यै दि वान-तिरोप (रमा ६)। पिद्वित्र वि [शिप्त] केंबा हुमा (पामा जीव चुमा) । पिद्धित्र वि किरिन जिन्हों प्रैरणा की गर् हो वह (मुक्त कः १)। विदिशे का 🔁 १ एए-विदेश क्यान कुछ । २ बीरी, बीट निर्देश । ३ वम पर्गमा (दे (3w F

. पिह्ना (१) रेगो पिलुझ (वर २) ।

पित्र न [दे] यो पत्नी के तुस्य (दे ६ 1618 पिय देखो इय (हे २ १८२ हुमा महा)। पिछ सक [पा] पीता । पिनद्र (पिप) । मुका धापितिरका (बाका)। कर्मे पिकीमंति (पि १३९) । शंक पिविञ्ज, पिविश्चा, पिविचा (नाटा ठा १२ महा)। क्र-पिवित्तं, पिवित्तरं (बाहः ४२ बीप)। पियम रेको पिअम=(दे) (मनि)। पिशासय वि [पिपासक] पीते की इच्छा बामा (मग---मत्व") । पित्रासा भी पिपामा व्यास पीने भी इच्छा (घरा पाग्र.)। पिशसिय वि पिपासित । दूपित (स्वा) विश्वविज्ञा देवी विपीष्टिज्ञा (इस स ४२ मा ४१)। पिन्य देखी पिन्य (वह )। पिस सक [पिप् ] पीयना । निसद (यह )। पिसंग र् [पिराङ्ग] १ जिल्ल वर्ण महियाच र्रवः २ वि पियन वर्णवासा (पाप्राद्रप्र 2 2 **3 4**) 1 पिसंडि वि देनो पर्सडि (मुपा ६ ४) ग्रूज ER (8X) 1 पिसह र पिशाच रिशाच ध्यन्तर-धारिक देशों की एक बाति (है १ ११६ हुआ। पाम दा २६४ व ७६० ही)। पिसाजि वि [पिद्याचिन्] भूतप्रीट (है १ १७७ कुमा पर चंड)। विसाय रेवी विश्व (हे १ १६१ परह १ ४। महाः इक) । पिसिज न [पिशित] मांत (पाम महा) । पिसुअ पूर्वी पिशु है दिन शीन-विरोध । धी या (धन) । पिसुण वर [क्यम्] करता । तिपूर्णाः विष्युणेह, विष्युणीत विष्युणीत, विष्युणपु (है ४ शः वा ६०१: पुर १, ११शः वा १११, युवारी १ पिसुन में पिरानी तन स्त्रेन स्टॉक्टर

चुगलसोर (पूर व १६ प्राम् १०-वा

१७० वायो ।

पाद न दि ] १ ईन पर्लोकासन्त्र (दे६

५१)। २ छन्द्र, युक 'उद्रियं क्लाव'दरीई

पणुत्र विस्रो निष्ठो (१४४) कम्पब्रियाँ (स

२३३) । ३ पीठ, रागैर के पीछे का मान

'इत्विपीवसमापदी' (वि ११) । पुतिदग}न [पीठक] देवो पीड≖पीठ पीत्रय } (क्से पन्ध र र रक्ष ७ २०)। पीडरमाइ न पीठरमाण्डी नगेशनीर पर स्वित एक प्राचीन वैन तीचे (परम ७७ **(**4) : पीडाणिय न [पःठामीक] धरव-येना (ठा ३, १—पत्र ६ २)। पीढिमा औ [पीठिका] बास्त-विरोध मध्य 'बार्सरी पीडिबा' (पाम) । देखी पेडिया । पीड़ी की दि पीठिका कछ-विशेष घर ना एक माबार-काह्य ग्रजराती में 'पीडिवें'। 'तती निवतिकर्ण मत्तद्व पवाई जान पहरेह । ठा प्रशासीहिपनचे खग्मेश स्टब्स्य कर्य (बर्मीव १६)। पीण सक [पीलयू] पूर शरता । पीलंति | (चय १ १)। पीण वरु [प्राप्पय्] पुरा करना । 😼 वेशो पीण(पञ्जा पीय रि [दे] चतुरस चतुन्तोल (दे६,११)। पीग वि [पीन] पुर, मांसन कावित (है २ १६४३ पाम दुमा)। पायम न [प्रीयन] पुरा करता (वर्गीक १४८) । पीपाणिक्य वि [ प्रीपानीय ] प्रीक्रिश्वक (बीरा गया पएस १७)। पांजाइय रि कि पेनायिकी वर्ष है निर्मेश मर्वे से विया हुया 'पीएगइपविश्वविद्वविष्यवृत्थे शोबरेठे व संवरतनी (सामा १ १--नम 11) ( पाणाराधी [६ पीनाया] कांबहुनार | (ए।वा १ १)। पीनिञ्ज रि [प्रीणित] १ ठीवित (४०)। २ क्तविक परिवृद्ध (बन्न ४ २३) । ३ वृ क्योतिस्त्रविद्ध योग-स्टिय, वी शहने जूर्य या पाप्र ला निवी प्रद्राया नवात के साथ क्षाप बार में दूसरे सूर्य बादिये बाब उपबय को सात हुमा हो कह योग (गुल्ल १२)। ٠ţ

पीणिम पूंडी [पीनता] पुण्ता भौतसता पीसण न [पेपण] १ पीसना दलना (फ्एड् ( R 2 2 2 2 Y ) 1 रे रे बर पूरेपण रमण रेव)। २ विर पीयमाण देखो पा = पा । पीसनेवासा (मूच १२११)। थीसय वि [पेपफ] पीसनेवामा (पुरा १३)। पीयमाण देशो पी = पी । पीरिपीरिया की [बे] बाध-विशेष (राय पीह सक [स्पूह् , प्र + इह्] प्रमिनावा YX) I करना, बाहना । पीइति पीड्रेज्या (ग्रीप: पीस सक [पीश्रम् ] १ पीमना, वेरनाः दवाना । ता वे वे--पद १४४)। ९ पीड़ा करना हैरान करना। पीलह, पीइस 🛊 [पीठफ] नववात रिज्य को भीताह पीनेद (बारवा १४३, पि २४ )। कब्रह वाली एक वस्तु (उप ६११)। पीसिञ्जत (मा ६) । पु भी [पुर्] छिर (विदेश १५)। पीछण न [पीछन ] बनाव पीसन पेरना पुष्ट व [प्युत] १ तिर्वय् गति । २ म्हापसाः 'ਬਾਹੋ ਚਿਚੀਚ माछी पीसस्प्रदेश व्य माम-गति 'पुरुमामा प्र (१प्र) समाएड्डि दियमाहि' (नाम १६१) -वंतरीसणुकामे' (विसे १४३६ धे)। जुद्ध न ["सुद्ध] (इवा) । भवन हुत का एक प्रकार (विसे १४७७)। पीला देवी भीडा (क्य ४३६: गुपा ११८)। पुर्वं दें कि चरण पूना (रे ६, ११ पाम)। पीस्त्रचय वि[पीडक] १ पेरवेशाचा । २ प्रभाइ दि. [वें] श्वेषण पूजा (१६ व )। पुँ तैसी अंत्र ध तैस निकासनेवासा (बज्जा २ जन्मत्त (वे ६, ४ ३ मह्) । ३ पू पिरमण 11 ) i (६६ = पामापड्)। पीक्षिम वि [पीक्षित] पीना या पेरा दूषा . प्रमाइयी की [रे] १ रिवाय-नृहीत की (मीराधार १३ तक)। मुवर्धित महिसा । २ कमच भी । ६ दुसटा पीडिम वि [पीनावत्] वानवाता वावने व्यविवारिया (दे ६ १४)। से बना हुना (वस नादि की बाहति) पुभाव सक [प्द्रावयू] से वाना । संह (दसमि २ १७)। पुरावइचा (हा १ २)। पीलु १ पिलु १ क्ल-विशेष पीलुका देव र्धे दें दिस् देश मर्र (पि ४१२ कम्म (वएए १ वज्जा ४६)। २ हाथी (रामः १२ टी)। देशो दुगम, दुनाग, दुंबड स ७३१) । ६ न दुका 'एनट्ट' बहुनामं दुउ पादि । नमो पीनु बीर न' (पिड १३१)। र्पार्थं प्रिञ्जो १ काण का सब स्वयः 'तस्त पीलुज 🖠 दि पीलुक] शायक, बचा य वरसा इंद्री विवह बामेल जिल्लामणेल' 'तहबंदिमाणीटेस'वरीनुमारक्याणेश्व दिएएय-(थरीर रण: चर वृ १११)। १ म देर र्ण (चार २)। निमान-विरोध (शम २२)। पीलुह वि [ वे प्लुष ] देशी पिलुद्ध (वे पुरियमन न [द प्रोह्मसर] मुमाना निराह \$ \$8) : वी एक सीति द्वनराती में 'चोंचाएं' (मुना पीबर वि [पीबर] उपनित पुत्र (पामा १ हा पाफ कृत १६१)। सबसा की पुॅरिक वि [पुद्धिन] पूंच-पुक्त किया हुन्छ िंगर्भी जो निकट अविध्य में ही प्रमुख 'पण्डे विन्त्रो तसे दुनियो' (रापु) । करनेवानी ही बह की (धीपका वर्ष) । । पुंचान है [ब] थेट उत्तव (बीर)। पीषस्र देखो पीश्र≃ पीड (हे १: २१३ २. | मुंगप रि [पुह्नव] थेउ उत्तन (नुग शांद । रे १ द्रमा)। म् ४१। वरर) । पीस सक [पिष्] कीमनाः यीगाः (पि र्थुष तक [म+रम्स्य] नॉदना नार ६)। यह पीसंत्र (शिव १७४- छादा करता। बुद्धः (प्रमुक्त हु ४ १ १)। १ ७) : वंश पीसिकन (प्रभर) : र पुंधभीम (ति १०२)।

पिसपिका विकिथिती १ वडा इस्सा १ स्थित (स्पारशः पाम कुत्र २७०)। पिसमय (पै) ए विश्मयी धावर्ष (प्राष्ट्र 1 (858 पिक सक रिप्रक्ष किन्दा रुखा पाता। विश्वाद (अस ३ २--पण १७३) । सीम पिहाइचा (यन १ २)। पिक रि प्रियक्त किल बुश पिक्षिपहारी (विदेवप )। पिक्षं स प्रियक्त भन्त (देह १३७ वर् )। पिश्लंड वृद्धि १ नाच-विरोध । २ वि विकर्ण (84 48) 1 पिद्व देखो पिद्धर (६१ २ १) हुमा छना)। पिद्यान [पिघान] १ डक्लन, विद्यान (सुर १६ १४%)। २ बक्ता आच्छान (वैचा १ ३२: क्षेत्रीय ४६ सुरा १२१)। पिष्ट्रणया औ [पिषात] सान्यका काम (च ६१)। पिद्वय देखी पिद्व = प्रकल (कुमा)। पिहासक [पि + भा] १ दक्ता। २ वेद करना । पिहाद (अन ३ २)। तक पिहाहता पिक्रिकल (मन ६, २ वहा)। पिशाम देशो कि इप (स्र.४) धन २६, कम्प)। पिद्याणिका की [पिद्यानिका] बक्ती (राष्ट्र)। पिद्वाओं की [पियानी] करर रेकी (है)। पिक्तिवि विविद्या र दका हुमा ३ २ वैद किया हुमा (पाम क्या का २ ४--का **६६। मुता ६६ ) । । सम्बन्ध शिक्षण**ी १ निरुपे मालप को ऐपा हो (स्ट ४) । २ र्दुप्त वैत बृति का नाम (पत्रम २ १) ३ पिढिण देशो पिद्दल 'धारहवाले वेस्तवाले निर्दिशे नवपुत मण्डरे भेर' (बा ६ प्रीः)। पिदिमि (घर) की [दृष्टिकी] भूमि करती। पाछ र् ["पाछ] रामा (भीर) । पिद्दीक्य रि पूजनकृती क्लब विद्या हवा (Fix tee) i पिद्वति [पूर्व] र विस्तीओं (दूजा)। २ र्पुएक द्रामा तात्र नाम (प्रत्य ३४ ३४)। राम पू [राम] नीन नात्य (१ % X 80) i

पिह देशी पिश्र = प्रमण (सुर १६ ६६: चयो । पिहु देशां पिहुत्य। पिहुश्राच्या कि मी वर्ष (48 0 BF) पिश्रंड न [ पिड्रण्ड ] नपर-निशेष (अस 47 R) I भिद्रुव्य 賽 देखी पेद्रुष्य (ब्राचाप १७ ६)। इत्यापु [दिस्त] समूद-विकास शिभा तथा पैंका (धाना२ १ ७ ६)। पिह्नच बेक्रो पुरुच (वेंद्र ४)। पिष्ठय प्रेम [प्रश्नुक] साश-विशेष विवस (पाचा २१११४)। पिक्रक वि [पूजुक] विस्तीर्खं (परहार 环 मीत के ६ १४६ जुला। पिष्टस म वि । पृष्ट के बागू से बचावा काला त्तवा-भाष (दे ६<sup>°</sup> ४७) । पिश्व वैज्ञो पिद्या । शिक्षेत्र, पिश्वे (क्या २६ ११ तुष १ २,२ १९)। संकृषिद्वेदला (বি**হৰ**ছ) ৷ पिद्दो स [ प्रवक् ] क्यन जिल (विसे १ )। पिक्रोमर नि कि तदुः इस, पुर्वन (व 8 X )1 पीतक [पी] पानकरमा । वक्क फम्यूक्स-धंकर्वितीञ्चपूरं पीयमाणी (रमस ११)। पीक्र दूर्पीत रेपीत वर्श फीका रेप। २ वि योग मर्खनामा योगा (ह ९ १७६ कुमाध्यात्र)। १ निस्त्रम यज्ञानिक्या धरा क्रीबक्क (छेरे ४ ३ हेर्द १४४) । ४ विस्ते पात किया हो वह (बाय) । पीम कि भिवि भीवि-पूछ, वेक्स (बीप)। पीक्षर (बप) नीचे देखो (पिय)। पीअल केवी पीअव≂ शीत (है २ १७३: auxi)ı पीयसी की विवसी वेन-पान की (कुमा) : पीइ वं वि] यस्य भोड़ा (दे ६ ५१)। पीक ) की [पीति] १ बेंच चतुराय (कथा पीई रेमहा)। २ धपछ की एक क्ली का नान (पत्रम ७४ ११) । बद पून विदरी एक विकासामान बाहरा प्रेमेकर-विमान (रेक्ट १३४) वर १६४) । राम व िरामी महाशुक्र देरेन्द्र का एक यात-विकास (इस्त थीर)। नाथ व [नान] इसे होने के

कारता विदा काटा का पारितोकिक सर ४९१)। वस्मिय न विमर्सि धुमियों का एक दुल (कप्प)। स ि सलस् र श्रीतिनुष्ट विचयावा ए वं शहाराच किसोच का एक बात (हा च---पद ४३७)। बद्धण र्ीि कार्तिक माध का बोकोत्तर नाम (तुरु १६। इप्पो । पीईस व हि इज-विरोध प्रस्म वेद 'पीईन्साराक्यहरकुण्यय छा ब' (पएस १)। पीकस न पियपी धन्त पुना (गम पीड सक पिकायी १ क्रियन करन काला । पीवक गीर्कतु (सिंक है ४ । कर्र, पीविश्वद (पिष) । क्यक पीर्ट पीडिक्समाण (से ११ १ २ म सर्ग)। पीड देवो पीद्या। यर वि विकर कारक (पका १ १ १४१)। पीकरइ की [दे] चोर की की (दे ६ पीका की भिन्नों पैका हैरानी (शाम) । बद नि विद्यो रीहा-ना चितियं न पासियन्त्रं परित्र हस्त्रेपि सं व श्ववीति सं व शक्तं थे परपीडकारं नम (भा ११) ज्ञास पोडिय नि पिडित १ पीका वे में हो वह, समिन्त पराजित ज्याद्रल है **१ दवाना पन्छ (हे १ २ ३ महा** पीक पूर्व (पीठ) १ मालन, पीका विद्वर बावर्स (पला स्थय ६६ बासन निरोप अधी का बासन (ची १६। क्या भीत)। ३ तत नेश्पीर्थं (कुपा) । ४ पू. एक मैन (बहिन्द हो)। बंब इ विम की मनवर्गाणका मुनिका निम व धर्दियं कड्रिजनार्शित देश बानार्व शः १९)। सद स**द**अ **र्थ**ि काम-पुरवार्व में तहाबच बावच का छा पुरुष, राजा साहि का वक्त्य विरोग रेर—पन रटादण)ः की स (शा १६)। सच्चिति सिर्पिन विकेष (बाबा)।

पाद न दि । १ ईख परने का सन्त्र (हे ६, ५१) । २ समूह, पूर्व "उद्ग्रियं बरावर्रदरीवं पणुद्रा विसी दिनी (ति) क्याबियाँ (स २३३)। ३ पीठ, राधर कं पीछे का मान 'हरिनपोरसमाप्दी' (वि ११)। पीदग) न [पीठक] देखी पीद = पीठ पीद्रय } (क्सें मग्द्र १ं १० दस ७ २८)। पीदरस्पंड न [पीठरस्यण्ड] नर्पंदा-वीर पर स्वित एक प्राचीन जैन दीये (परम ७७ **\$**4) 1 पीडाणिय न पिठानीकी बरव-वेना (ठा ४, १--पत्र ६ २)। पीढिजा ही [पीठिका] बासन-किटेप मध्य 'बामंदी पीटिबा' (पाम) । देखी पर्दिया । पीनी औ [दे पीठिया] कछ-विशेष वर , का एक माधार-काला प्रवराती में 'पीडिलें'। 'तती नियतिअर्गं मचट्ट पदाई बाब पहरेह । क्षा प्रशासिक्तिके वादेश प्रवस्तियं तत्व (धर्मिव १६)। पीण एक [पीलय्] पूर करना। वीलंति (धव १ १)। पीय वर [प्रीयय्] पुरा करता। 🛊 वेदो पीण पञ्जा पीण नि [दे] बनुरस बनुभोछ (हे ६,३१)। पीम वि [पीन] पुंछ, भागत अवित (है २ १६४ पाम, दुवा)। पीयम न [प्रीयन] पुरा करना (धर्मीर tva) i पीपनिव्य वि [ भीपनीय ] ग्रीति-वनक (बीरा नम्प पएए १७)। पीजाइय नि दि पैनायिक] वर्ष के निर्मृत मर्वे ने विचा हुया 'पीएएइपविकारिकाइस् कोश्मेर्ते व भौकरतनी (गामा १ १---वत्र 13) 1 पानाचा भी [द पीमाया] वर्षे बहुनार (UNI ( 1)) থীসির বি [মাসিব] ই লীবির (লড়)। २ क्रावित परिष्ठ (दन ७ २६) । ६ 🛊 क्योजिनक्रिक योग-रिटेप, की बहुने कुई मानलाका विक्री पर साललक के बाद होतर बाद में दूसरे सूर्य बात के बाब करवन को प्राप्त हमाहो कह दीन (नुरुष १२)।

पीणिम पूंची [पीनशा] पुत्रवा भौरतवा ( R ? ? ? ? ? ) I पीयमाण रेको पा = पा । पीयमाण रेखो पी = पी। पीरिपीरिया 🛍 📳 बाच-विकेष (राम YX) I पीछ सक [पीक्षय्] १ पीसना देखा दवाना। २ पीड़ा करना हैरान करना। पीलह, पीनेद (पाला १४६, पि २४ )। इतक पीसिञ्चस (पा ६)। पीस्रण न [पीस्रन] बनाव पीतन देएता | भार्णिक्युंग्य माणी पीसक्रमीस व्य दिषयाहि (राज १६१) अंतरीसणुक्रम (छवा)। पीला रेको भीडा (उद ४३६) सुपा ११४) । पीछायम वि [पीडक] १ वेरनेवाला । २ र्ष हैती अंब है हैव निकासनेवाचा (बज्जा पीठिम वि [पीडित] यीताया पेरा हुसा (भीग हा १ १। तक)। पीळिम वि [ पीडावन् ] शवशासा शवने वे बना हमा (नद्भ ग्राविनी माहति) (स्प्रति २ १७)। पालु र् [पीलु] १ दूप्र-किशेष पीलुका देव (पएए १: बज्जा ४९) । २ हाकी (पाम स ७३१)। ६ न दूच 'एनटू बहुनाने बुद पमो पीतु बीरं वं (पिट १३१)। पीलुभ 🖠 [वे पीलुक] शावक, बवा 'तरबंदियाणीटार्गवानुबारक्वणेस्न दिल्लुम-र्ण (या १२)। पासुद्र वि [ वे प्युष्ट ] देवी पिसुद्ध (वे **₹ ₹१)** i र्पवर वि [पीवर] उपवित पुर (रामा १ १ः पाय पुत्त १६१)। सहसा की िंगमी] भो निका भविष्य में ही अनुव करनेशानी ही बहु की (बीचवा वह)। पीवस ठेको पी≫ ≖रौत (दे१ २१३ २, १ १ दुवा)। पीस बक [पिप्] गीनना । गीगर (पि **७६) । वह पीसंद (सिंह १७४**- सामा रै ७)। बंद पीमिक्रण (इस्पर)।

पीसण व [पेपण] १ पीसना, बनना (पस्ट रे रेखा पूरेप॰ स्मर्णरं≋)। २ वि पीसनेवासा (सूध १ २ १ १२)। धीसय दि [येपफ] शेवनेशवा (नुपा ६३)। पीइ वक [स्पूर् , प्र + इह् ] प्राप्तनाचा करना चाहना । पीहंति, पीक्षेत्रवा (सीप का वे वे--पत्र १४४)। पीइन 🛊 [पीठक] नवजात रिख्य को पीलाइ वाती एक बस्तु (उप १११)। प्रभी [पुर्] राधेर (विशे २ ६४)। पुरुष व [प्लुत] १ तिर्वव् सर्वि । २ मर्थवा कम्प-गतिः 'चूरमधमो पू (१ पू) सपाएदि (विसे १४१६ दी)। जुद्ध न ["युद्ध] धान पुर का एक प्रकार (विते १४००)। पुश्रंह र्षु चि वस्ए प्रवा (दे ६ १३ पाम)। पुभाइ वि चि ] १ तरण पूरा (६ ६ ८ )। २ रुपत्त (दे ६ ८ : पड ) । १ पूँ निग्राच (१६ = पामः पर्)। पुजाइणी की [दे] १ फिस्स-गृहीत की भुवप्रिष्ट महिला। २ सम्बद्ध हो। ६ बुनटा व्यमिचारिली (दे ६ १४)। पुन्नाव नक [प्टावयू] से जाना। संप्र प्रयागद्वा (हा १ २)। र्धे दृष्टिन देश कर्ष (विश्वश्र कम १२ थे)। देशो दुगव, दुनाग, दुवड धारि । र्थंग्र र्द्र [प्रञ्ज] १ काल का सब साथ 'तस्य व गरम पूर्व शिवह धनेण विस्तागणेल (पर्याद १७) वर प १११)। २ न देर विमान-पिरोग (सम २२)। र्थुरसमान (दि प्रोह्मग्रह) **प्र**माना स्विद्ध की एक रोजि सुबराती में चॉलगू (सूता ξ**ξ)** ι पुॅश्चित्र वि [पुद्धिन] दूंच युक्त क्या हुस्त 'बगुद्दे जिल्ह्यो मरो पुनिवी' (११५)। पुंगल हु [ब] पेट उनन (भार)। पुंगव रि [पुह्नय] थेठ चनव (गुरा शह ३ स प्रशः गरर) । पुँद तक [श्र+कम्यु] शोदता सार करता वृद्धाः (रह ६४) हे ४ हे हो। र पुंजुनीम (रिश्वर)।

पुंद्ध पुन पुष्पक्ष पुँच, नाष्ट्रन (प्राक्त १२३ t t 34)1 पुंद्राप्त न [प्राध्यान ] १ मधीन (तप्पाठना

नुपार६)। २ रजोद्धरहा वैन मुनिका एक प्रपद्मच्या (रह १) ।

र्पकर्णा औ भोषञ्जनी विकेश कर एक खोज कुरायब प्रथकरल (राम) ।

पुद्धिकारि पिष्टिक्ट्री पेख्य ह्या सूर (पाम-कृषा स्वि)।

पुंज बक [पुन्च् पुज्जप्] १ वक्ट्रा करता। २ फैनाला विस्तार करवा। धूंबद (द्वेप ४ २ चित्र)। कर्म, प्रेलिंग्लंड (कप्पू) । कवकः पुंजक्रज्ञमाणः (श. १२, 1 (32

पुंच पून पुजा हैद, परित (रण रक्त दुमा) 'बारिनर् बनाई कानई' (शिरि 1 (2515 पुंबद्धभागि [पुंजिति] १ एकनित (३ ६,

६३ वडम म, २६१) । २ व्यास, बरपूर (पठम ६, १६१)। पुंजहञ्जमान केही पुंज = पुरुष् ।

পুৰুদ্ধ } বি [পুঞ্জাভ] ং অতি হণ ব পুৰুষ্ঠ (কিচ 'ৰ ভঙ্গুৰুকপুৰুদ্ধ' (বিজ

< २) । २ **वेदो** पुंज = पूज्य । पुंचय पूज कि नदगर, पुजराती में 'पूजो'। 'कामीनि वर्डि पुंचरपु प्रस

धरमेरा विवयपार्थाः।

भवस्थितीयो इव

चार्यनिति निखनेविर्गनसर्वे (भूपा २६ )।

पुंचाय नि दि निएकाकार किया हवा

भूकामे शिक्सपर्म (पाप) ।

धुकायिय वि [पुजिन] एकवित क्याना हुया

(गल)। पुरित्र प्रसिद्ध पुरिक्ति । एकविष्ठ (वे १८ ७२

कुमा कृत्यु)।

पुंड पू [पुण्ड ] र केत-विरोध विकासका कै समीप का मू-काक (सः २३%) अथ १%)। २ इक्-विशेष (वज्य ४२, ११३ व्य ७४ ) । रे 🕅 पुरुष्टियेस (परम श्रेष्ट, ११)। ४ बरन तरेत बडेर (ग्रामा १ १७ ही--पत्र

२३१) । इ. तेब. तिनक (स. इ. पित्रमा ४३ कुत्र २६४)। ६ देव-विमान विशेष (सम २२)। बद्धण न विर्धानी नगर-विशेष (स २२६)। देखो पेडिं।

पुंबद्धा वि वि पिएशका पिएशकार फिना हुया (रे ६ १४)।

र्बुडरिक देवो पुंडरीम (तूम २,११)। पुंडरिकि वि [पुण्डरीकिन्] पुरुशकाना

(सबर ११)। पुंडरिंगियी भी [पुण्डरीकियी] पुण्डनाक्टी

विजय की एक नगरी (स्ताना १ १६ इक' क्य २३६६)।

पुंहरिय केवो पुंहरीक = पुरुवपुंक पौरावपुंक (इका काल पि ११४)। पंडरोम प्रे पुण्डरीको र ग्वाप्ट सा पुरर्गी

में सारावी का (निचार ४७३)। २ एक यना सङ्गलय यनाना एक पुत्र (द्वार २६१ शाया १ १६)। ३ व्याव, राष्ट्रक (पाय) । ४ पुँग. एन-किरोप (पथ २७१) । इ.स्टेन पच छड़ेद कमब (सूचनि १४६) ।

६ कमल पद्मा 'चोड्सां धनवर्त सरोखां पुंडरीसमर्रीवर (पाम सन १) कप्प)। ६ केन-विमान विशेष (सन १३)। ७ वि स्वेस. **एकेद (श्रंग १६२) । शुस्म ग ["शुक्स]** केन-निमान-विशेष (सम ६५) । वृद्ध, इद र्⊈िंद्रक् किमारी पर्वत पर का एक महा-

ऋद (ठा२ ३३ छन १ ४)। पुंडराज वि [पीण्डरीफ] १ स्तेत क्य का रनेत-पद्म-संकन्धे (शृक्षणि १४१) । २ व्रवार, मुक्त । १ कम्त यह, उत्तम (नुमरि १४७-१४०)।४ त सुमालांग सुन के क्रितीय

बुतस्त्रम्य का प्रकृता धन्त्रध्य (नुस्रक्ति १९७) । धेबी पींदरीय । पुंडरीया 🕫 पिण्डरी स्री 🖼 पोंडरी

(धन)। पुंडिय दि] जली (वे६, १२)। पुंड वेकी पुंड (क्य करण)।

र्धुंड पुंदि दे दे पहरू का (दे र १९)। र्युनागर् पुलागी १ क्या-विशेष पूर्य-प्रवान एक बुक्र-अर्थि चुन्याव, चुनाक शुस तान चम्पक पाटन का बाज (क्य दृष्ट्य

७६ की सम्बद्ध १७६)। १ वेड पूर्व

(१) अपन्यम् धलत्त्रभे वा निरोजिये पुन-

वेको पुष्पाम ।

यप्पर साम' (बर्मीय ६७)- फिनस्य मनियए गीरसं पर्शामेड (मक्का ११)]। पुंचा पूर्व [ पुंचायस ] व्याकरहोक संस्कार बुक्त क्राय-निशेष पुर्विय क्रम (पहला ११---पण १६६)।

चत्तमे वर्षे (बस्म १२ टी/ सम्मत्त १७६) t

पुंस पून कि नीरस, स्टोइम का क्रिक्स

पुंपुक्ष पूर्वि संगम (दे €ं ६२)।

पुरिय पुरिवारि पुरुष को की-स्पर्ध का वानिनाय । २ क्सका कारहा-मूच कमें (वि 888) I

पुंस सक [पुंस् सुक्रु] मार्चव करणाः पींचना। पंचद (हे ४ १ ६)। र्पुस देवो पुः। काइस, कोइसगः 🖫 **ैकोकिस** मरदाना को क्या दिक (स १०—लव दश्शालि ४१२}।

पुंसण न [पुंसन] मार्गन (हुमा) । प्रसद् र प्रिराक्त् । 'प्रस्र' ऐसा नाम (क्या) । पुंसकी की [पुंचकी] दुसरा व्यक्तिरिकी 🕸 (वर्णवा ६८३ वर्गीव १३७) । पुंसिक वि [पुंसित] गॉस्त्र ह्या (दे १

22)1 पुक्ष १ वक [पून्+कृ] पुकारका, बॉक्स, पुंचर र पाहान करना । पुनक्रोद (बस्म - ११ दी) । यक पुर्वत पुद्धरंत (पराह १ १००० पन ४२७ बा १२)। केबो पोच्चा पुक्तिय वि [पूत्कृत] पुत्रस्य द्वमा (पुन २व१} ।

पुष्पक्ष वेको पुत्रसाल (परह २, ४--पन 1 (929 पुष्टा की वैको पुष्टार=पूर्वार (बाग

नुपा ६१७) ३ पुष्पार देवी पुष्पर । पुरशारीत (राम) । नष्ट प्रकारत प्रकारित प्रकारमाण (द्वरा

४१%, ६०१३ २४८३ छाला १ १ ) । पुकार है [पुरस्तर] हुमार, शंक प्राह्मम (तुपा दर्शका नद्दाः स्टब्र) ।

पुक्तर वेबी पाक्तर = पुन्तर (कप्प व्हार पि १२१): कण्पिया **वा** किर्णिस] पर्ध का बीज-मोता, कमत वर मन्य माग (ग्रीर)। बरन र्षु [सर] १ विष्णु चीइप्छ। २ करणीर के एक राजा वा नाम (पुता २४२)। राय म ["गन] बाध विशेष का ज्ञात, बसा-विशेष (भीष)। द्व व ["घे] पुण्करबर भागक श्रीप ना धावा हिम्मा (गुज ११)। बर वे विषरी हीय-विशेष (हा रे ६ वि.) । संबद्दत देवो पुत्रगास-सन्दर्व ( राज ) । वित्त देशी पुत्रराज्यधृद्य (धन)।

पुक्रवरिणा देनी पावन्यरिणी (शूम २ १ २ कः चीतः प्राप्तो ।

पुरुरस्तात्र १ वं [पुण्डसात्] ममुन-विरोध पुकारतेत् । (इक ठा ११ छ। मुझ १६) । पुश्रास्त वै [पुष्टर] एक रिजय अन्त विशेष जिल्ली बुक्य नमसे का नाम बोपनि 🕽 (इक्) । २ पध कमसः विसमितमुखाल बुलरत्तार (मूच २ ३ १०) । १ पय में सर (धाचा र १ व—मूत ४०)।

"विमान ["विमान वय-नन्य (बान्य २ १ ६---नूत ४७) । संबद्ध संबद्धय र्ष कियत की मंप-रिटेप जिसके बर सने दे रम इनार वर्ष दह शूपिनी बारित द्शी दै (बर १ श झा ४ ४--वद २७ )। देलो पुक्सरः।

पुकारम र् पुणास्त्री १ एक निमय अदेश-विध्य (हा २, ३---पत्र × )। २ धनार्य दैरानिया । १ दूंधी जा देर में छप्त रवर्षे छनेगामाः नियमीति पुलिशिह वेमाम्यून (३), (थत ६ ३५---तब वर्ग) िरिद्वीर्द्ध वनिर्देशि बारकीरि (१) (अब र राज-नरभर )]। प्रति सम्मन प्रभुत (रूप ४१ )। ६ संपूर्ण, सरिपानुँ (गुपर ११)। पुरेगान रद्धमा ) ईर हि वनग्रन्थित

पुरुष्पर्यन्त्रमय विन वेहेनेशनी बनगति-निर्देश (पूर्व १, 1 १ ११)। देखी पाक्यअस्तिवत् ।

पुरम्य की [पुरमयानी पुण्याना] बहारिहे को का विका-अल्डाविटें (स 2.1 25 a(1): 22 44 [ 45] Cc देश वर्धेत कर एक (एकर (१४) ।

पुक्रमताबहुय र् [ पुण्डरावर्षेक, पुण्डल धर्नेक] मेध-विचेत पुश्तास (?ना) वहुए लं बहायहे एयेए बारेए इस बासमहस्याई यानेति (ठा४४)।

पुक्रवायस व् [पुण्करायर्व, पुण्कवायर्व] महारिवेह वर्षे वा एक विजय-प्रान्त (जै ४)। बुष्ट दे [बुरु] एक्टीन पर्वेश का एक शिखर (इक)। पुरादिया ही [द] बच्चि बारक नेंदू-विहेव (शुष चुया २∈२)।

पुरता पून वि । बाय-विरोध 'सो पूर्यम्य पूर्गगाई बाएइ (इ.स. १)। पुमास पू [पुत्रुख] १ दूप-विशेष । २ व क्टब-विद्येष । ३ म'स (बस १ १ ७३) । पुगाढ देवी पीग्यन्त (विकार १६ वर ४२) रि १२४)। यरष्ट्र परायश्च ( "क्सवर्ते ]

रेको पोगाय परिश्रष्ट (कम्प १ ८६ वे १ मि≯ग∉)। पुष्पञ्च देवी पोदञ्च 'सेवमस्तूरूप (१ व) दम्मी' (तद्व ४)। पुच्छ सक [प्रवेद ] पूछन प्रश्न करनाः

पुन्परं (हे ४ ६०) । मुक्त, पुन्दिन्, पुरुदीम पुरुषे (गिरश्य पुना मन)। कमें पुनियन्त्र (धरि)। कह पुन्ध्तेत (या ४० १२० दुवा)। क्वह पुरिद्य स्थित (मा १४०: गुर १ १११) । संह पुरिद्यक्ता (मर्ग) । हेर पुष्टिक् हे, पुष्टिक অব (বি ২০১ সব)। রু পুরুষ্টাত্র पुण्यामा पुष्यापन्य पुष्यापन्य (बा

th ti soft at wen ent) ! पुष्पत्र रेगोर्पुष्य = म + सम्द् । पुष्पद्र (वष्ट् )। पुनद रेगी ्द्र = पुनद्र (का) । पुण्यम १ वि [ सण्यक ] पूर्यशाना

पुरुद्धरा । प्रश्निका (प्रोचेंबा देवा बूर) १ ६४) । सी: "निज्ञा (याँग १२४) । पुण्या न [प्रचयन, प्रदन] बुच्छा (नृश्रीन १११: वर्गीर टा बारक ११ ही)। पुरुद्वाम । ध्रे [प्ररुद्धता] कार रेलो

पुरुदया 🕽 (का ४६६ चीत)। पुण्द्रभा की [प्रण्युनी] बल वी बला (हा Y ?--47 ₹#?) : पुनद्भव (धा) देशी पुट्ट = श्रृष्ट (ग्रिंग) ।

पुरुखा की [धुरुछा] प्रश्न (स्पा मुर व यद)। पुल्छिश वि [प्रष्ट] पूछा हुमा (धीप-दुमा-

मगकण सुर२ १६८)। पुन्छिर वि [प्रष्टु] प्रशन्तर्वा (गा १६८) । पुद्धान देखो पुण्ड्येन (रिय) । पुळ एक [पूजय] पूजना कान्य करना । पुरुषद् (बुज ४२३) मार) । समी, पुरिवरण्यद (श्रवि) । वष्ट धुर्ज्ञात (दुप्र १२१) । व्यवहः पुरव्यक्षत (मनि)। संष्ट्र पुरिवर्ष पुरिव

कण (रूप १ २ थनि) । इ. पुल्लिमस्ब (खी ७) । त्रयो पुत्रजारद (मनि) । पुञ्ज देखो पृञ्ज ≈पूत्रम् । पुत्रत देशो पुत्रक्षक्ष्य । पुर्खन रेपो पुर = पुरम् । पुळ्य व [पुजन] पुत्रा धर्मा (रूप १२१)।

पुज्रमाण रेखी पूर = पूरवृ । पुज्ञा भी [पुजा] पुत्रा, यर्भा (ठा द २४२)। पुञ्जिय वि [पृक्तित] सैनित मॉबत (मरि)। प्रदेशक [म + प्रम्ह ] पॉप्ला । पृह्य (HE 40) !

पुट्ट न [बें] केंद्र, उबर (या रेवा मोद्द ४१) पत्र १६६ सम्मल २२६। मिरि २४२। ਚਾਹ)।

पुष्टुल } वृत्त [ब] ग्ट्राट, याँड प्रजाती पुट्टलय है से पोराष्ट्र " संस्तापुटनय ब दक्षि (सम्बद्ध ६१)। पुरुष्टिया ध्ये हि दोधे गर्चे पानी बोर्चे (युवा ४६ १४४) ।

पुट्टिस पू [पाट्टिस) १ मनतन् मणतार का एक रिष्य भी भीत्य में वार्में र होने राजा र् (रिवार ४७८) । २ एर धनुमर-रेग्वीर यापी जैन मादि (प्रतृ २)।

प्रदूति [स्ट्रप्ट] १ तथा हुमा (मग भीतः हेर १९१) । २ व रार्छ (छा २ १ नव

पुद्ध विष्ये र बया हुया (बीम मण्ड है १ १४) । २ स. इस्ट (इ. १. १) । द्यभिष रि ['स्रिभिड] बॉर्र-निरेष बाना (बुनि) (धीर बाट २ १)। गणियापरिक्रम इत िश्विमापरिक

मन् दरिगार का एक अर्थाए**य स्टि**क (पद १२०) ।

, **₹**08

पुरुषई वेशी पोट्टवई (युज्य १ ५)।

पुष्ट्रचया की [प्रोद्धपरा] क्वत्र-विरोप (पुण्य १ ५)।

पुट्टि की प्रिष्टी पोषण जरबद (विदे २२१ **केदस व)। २ कोईछा बबा (पराह २ १**— पत्र ११)। संदि सिन् देशहरूला। २ वृं भनपान् महाबीट का एक रिप्प (धनु)।

पुट्टि देनो पिट्टि = पुर 'पाप्रपश्चिमस्य पद्मलो पुद्धि पुत्ते समाध्येतिमा (पा ११: ६६ ८७) प्रफार्चित १६)। ।पुद्धिकी [पुष्टि] प्रचक्त कल । यक्ति [ब] क्ल-वनिद (छ २ १—शन ४ ) ।

पुट्टिकी [स्पृष्टि] स्पर्तः योग कि सर्व-बनित (छ २, १)। पुटिया की प्रिक्तिकों प्रस्त है होनेवाली

क्रिया कर्मबन्द (ठा २ १)। पुढ़िया की [स्पृष्टिका] सर्व से ब्रोगतानी

क्रिया-कर्मकल्य (छ २ १) । पुहिस 🖦 पोट्रिक (मनु २) ।

पुट्टीया 🛍 [स्प्रश्चेया] धेवी पुट्टिया 🕫 स्राह्मि (स्व १)। पुटीया की [पूछीया] एक्स है होनेनाती

क्रिया—कर्मक्त्य (नव १ )। पुढ र् [पुट] १ प रमाश-सिकेश १९ पूठ-

परिनिध क्लु (राज १४)।

पुष्ठ पुन [पुर] १ मित्र संबन्ध परस्पर जीकान निकास निकास 'धीवलियड----'ताहै करक्तपुरेण नीघो धो' (घीप म्यूग) । र काम क्रोस कार्य का चनवा' 'हरकारूक संठालबठियाँ (क्या १४ दी) यउड ११६७: बुमा) । ६ संबद स्तहर, मिका ह्रफा को क्ना 'सिन्गपुरसंदिमो' (क्या) बढड १७६) । ४ ग्रोबर्वि एकानै का पान-विशेष (खाबा १ १६)। इ. वकाकि-योक्य पान केला (देखा)। ६ शास्त्रप्रदेश करून (क्या धरक) १ ७ बस्थ प्रय 'पडस्ती' (लेक १६) । अंचण !

"पाक] १ पूट-नाची से बोचकि का पाक-विरोध । र पाक-विकास सीयब-विरोध वय (१व) वाएड्रि' (खामा १ १६---पव 8=5) 1 पुद्ध (शी) वेबो पुत्त = पत्र (पि २६२३ प्राप्त)। प्रकाम वि [वे] विश्वीकृत प्रतीनत (वे व पुरुष्णीको वि पुरुक्तिनी निवनी क्य लिमी (वे वे इ.स. विक्र २३)। पुरुग पुर [पुटक] देवो पुर ⇒पुट (इस)। पुकपुका की [के] नुष्क के बीटी बनावा एक प्रकार की सकाख धाराज (पर ६α)। पुडम वैनी पुडम (प्रति ७१) पि १ ४)। पुक्रम वेको पुक्रम (कारः सुना ११६) ।

पुर्विगन [थे] ग्रुट्यलमः २ विल्यु (वे ६ पुक्तिया की [पुटिश्वर] पुक्षे, पुक्तिस (वे १०

पुद्ध (शी) वैको पुत्त = पूत्र (प्राप्त) । पुढं फेबी पिहं (पक्) 1 पुढम वि [श्रवस] पहला (हे १ ११) क्रुमाः

स्क्या २६१)। पुढवि वेची पुढवी (धाचानि ११२ भन १६, १। वि १७)। काइम आहाय वि ["समिष्क] प्रसिनी वधीरनासा (बीप) (मस्सार थग १६, ६३ ठा १ आयानि १ १ १)। साम वेशी पुढेव(न्यम (श्रावाति 1 (7 3 7

पुढवी की [पुणियो] १ प्रमियी वरही जूमि (दिव देवर कर १ ४)। एक छे-न्यावि प्रस्तवासा पक्षाचे प्रध्य-विशेष----मृतिका पानारा। नानु साहि (पर्या १)। १ प्रकिरीकाव का जीव (बी. १)। ४ ईशा-नैना के एक बोलागाच की सम-मञ्जूषी (ता ४ १—व⊬ १ ४)। **र***्***क विल्ह्न**गरी केरी (का स-पन ४३६) । **३ सपर**ान् सूपावर्गनाम भी मावा ना शान (राज)। बाइन क्षेत्री पुढनि बाइन (चन) । स्वय मि विश्वयं द्वाचरी सरीरनाता (श्रीव)-(बालानि १११)। यह ई पिति

कुरुत्त बादि (बाबा) । देशे पुरुद्धे, पुरुद्धी। पुढ़ीभून वि [पूचनृभूत] को प्रतन ह्या हो (तुम १६६) । पुद्रम निर्मिश्यमी यज्ञा साच (दे १ ११, भूमा)। पुढ़ो य [ पूचग ] धनव, दिश्च (बुवा १६२) च्यल ६ न्यनक Y ३ धाचा)। इदि वि िक्रम् ] विकिस यस्त्रियक्ता (यानाः रि ७८)। जग दु ["जन] प्रभव स्तुष्य, सावादस मोक (सूच १ ६ १ ६)। जिब र्पं विवि विभिन्न प्राणी (तुप ११२

पुष-पुष

विमाय विमाय विमात्र विमात्र] क्लैक प्रकार का, बहुदिन (एका छ। ४ ४---पम २०)। पुड़ोजग दि [दे प्रधानक] पूरमपूर्व निव व्यक्तित, 'नमिर्ग भएती पुढ़ोजना' (सूच १ R & V) 1 पुढोषमः वि [पुश्चिक्युपम] शृक्ति शे दयः सम सङ्ग करनेवाना (सूध १ ६ २६)। पुढासिव वि [पृथिवीकिय] पृतिवी के धामन में च्हाइस्स (तुम १ १२,१६७ धाला)।

पुण चक [पू] १ पनित्र करहा। २ वल्प बादिको तुवसीहर करना, सन्द्र करदा। পুতহ (ই ४ ९४१)। পুতারি (তালাই )। कर्नपुत्तिमद्गृतुष्पद्गं (१४ १४९)। पुण भ [पुतर ] इन वर्गका का कुक्त सम्बद—१ नेर. रिकेप (रिग्ने att)। २ शवदारल निश्चम : ६ ग्रविशाद प्रस्ताय । ४ क्रिटीय बाद, बादम्बर। ४ पकाश्वर । ६ सङ्ख्य (**१४०४ २.**६ नका भूमा। बीरा की १७३ प्राप्तु र, ५२३ १६०-स्वप्त ७२ चिय) । ७ प्रतपूर्ति में की

क्ष्मका त्रयोष होता है (शिष्क १)। करण ग **"करच] श्रेर से बनाना। २ वि जिल्ली** फिर के क्यानर की नाम बहु। किये संबं न होद पुरुषकार्थ (इन)। ज्यान दि "तन्त्र] किर से बना बना हुआ। ताना (इन ७६ की भण्यू)। "पुर्यास [पुनर्] फिर चिद, वार्रवार। पुणकरण व ["पुनऋरण] व्हिर विकास कार्या विभाग विकास व

[१२) ! कमा पूं ["मन] फिर से सार्थात | किर से जना-महुल (क्यूर ११% सीए) ! कम् की [ मू ] फिर से विनाहित की सिरक पूर्णान हुए हो नह सहित की स्वाक्ष्म प्रमुक्त की प्रमुक्त की हिन्द की [कार्या सी (कार्या की कार्या की कार्या की कार्या की कार्या की कार्या की कार्या के स्वाक्ष्म की कार्या के स्वाक्ष्म की कार्या की कार्य की कार्या की कार्य कार्य की कार्य कार्य की कार्य की

पुष्प (सर) वेको पुष्पः = पुष्यः। संत वि [ सन् ] पुण्यक्यांनी (सर्यः) । पुष्पःसं चकः [ इस् ] देवना। पुण्पाकः (काला

१४%)। भूगहर्षं दि] स्पन्न नारशक (३ ६,३०)।

पुणाइ पुँदि दे क्या नार्यशक (६ ६, ६०)। पुष्पण कि [पयन] पवित्र कछोनाना। श्री गी (दुमा)।

पुण्यक्ष है व इस-४०ए बार्रवार, विश्व-विकट पुण्यक्ष्म है जब पुण्यक पंत्रीत खीराईहि व्यविद्व पुष्पक्षी (है १ १७६: हुमा) 'क वि वह देशस्माधीन हरीत पुण्यक्तप्रस्थान' (दा २७४)।

पुणाः प्रदेशे पुणा = पुनर् (वि १४६) पुणाः वे १ ६२ इसम् पटन ६ १७: पुणाः

पुणु (मत) देवो पुण व्यक्तर (कुमा मि १√२)।

पुणो देवा पुण = पुनर (ग्रीका शुमान माह दर्ग)।

पुजास देवी पुज-रुत्त, पुजरुत्त (ब्राह्न १)। पुजीस सक [ प्र+नोदय् ] र प्रेरणा करता। र स्टेस्ट ह्रार करता। पूरोक्रमानी (ब्राह्म १२, ४)।

पुण्य पूर [पुण्य] १ तुम कर्म सुरुष (पीछ ,यहा आनू ७४८ चाम)। २ वो जनसक वेताः आर् पूर्व (१ वर्ष) सुद्धी (१ दि)व

सहुगतस्य एयद्वां (वंषोण १८)। १ वि विषय चायुरियासम्बुद्धां (कुमा)। कस्ता की किस्त्रा मार्ट के स्था। क्रेस्ता की किस्त्रा मार्ट के स्था। विद्यावर्षों का एक क्याम-क्याय एवा (वंशा १, ११)। मैर्य मेर्स्त वि [ यम्] दूर्यवाका शायवाम् (हे २ ११६ चंश्र)। क्यो पुस्त = पूर्वा

पुल्ल मि [पूर्ण] १ संपूर्ण परपूर, पूरा (धीप सन बना)। २ प्रं श्रीपकूमार देवीं बालिएएम स्टब्स (स्क) । व स्थापर समुद्र **ब्रा प्रविद्यायक केन (राज) । ४ तिथि-किरो**ग वल को पोचमी बतनी भीर पनगतनी दिवि ेरेर)। ५ प्रैकः, शिकार निशेष ( (६%) । इत्तम पू [कदम] इंपूर्ण वर (बेर)। योस वृष्णिय] ऐसल वर्ष काएक भावी जिल-देव (बग १३४)। चौद र्षु ["चन्द्र] १ संपूर्ण चन्द्रमाः २ विद्याबर ब्रेश के एक रामा का नाम (परम ४, ४४) । "प्यम र्वू ("प्रम**े क्यूबर ग्रीप का प्रविप**ति । देश (धन)। सद् पू िंसङ्गी १ स्थनाम क्यात एक गृह-गति किसने मगबान महाबीर के पास धेवा नेकर मुक्ति पार्र मी (बंद)। २ श्रवा-निकास का एक इन्द्र (४ १)। ३ प्रेन श्रमेक कूण-शिक्षाचें का नाम (इक)। ४ यहां का नीय-विशेष (भीम विषा १ १/ जना)। मासी औ ["मासी] पूर्णिया दिवि (१) । सण पू सिनी धना भौतिक का पूर्व जिसने जनगन् महाबीर के पास बीक्षा भी भी । (बन्)। देखो धुस -- पूर्वाः

पुण्यमासिर्णः श्री [पीर्णमासी] विधि-विशेष पूर्विमा (भीषः सन्) ।

पुरुषक्ष में [कि] सामन्द ते क्षुष्ट कक्ष (दे व इ.व. पाम) ।

पुज्या की [यूजी] १ विधि-विकेट पक्ष की श्रूष धीर १ श्री विधि (विशेष १४) पूज १ ११)। २ यूजीय धीर मिजूबर इस दी एक महावेची—धन्त निहित्त हो की स्वतंत्र प्राप्त प्त प्राप्त प्राप्त

तारमा पूर्व मालिमहस्सर्वि (ठा ४ १ः≕ पत्र २ ४)।

पुण्याम } वेको पुक्ताम (पतम ४६ वट छ पुण्याम } ६, ४८ हे १ ११० मि २३१)। पुण्यासी वट [के] संवतीः कुमदा ईबगी (केइ ४३ वड)।

पुण्याह पुंच [पुण्याह] १ यूप्य दिन श्रुप्र प्रियश (वा १६४, घटा) । २ बाध-विशेष पुष्पाह पुरुष् (त ४ १) घ३४) ।

पुण्णिमसी 🗗 [पूर्णमासी] पूर्णमा (संशेष १६) ।

पुणिममा की [पुमिमा] विविनिष्येय पूर्तुं मारी (कार १६४)। यद है ["बम्द्र] पूरिता का बन्त (महा हैका ४०)। पुणिममासिया देवी पुण्णमासियी (सम

६६ चा २६ दुश्य १ ६)।
पुच ई पुत्र ने नक्का (अ १ हुमा चुना
६१। १९४४ प्राप्त २७ ०७। छामा १, २)।
वर्ष की विंदी विंदी वक्कानारी की (सुन)
२५१)।

२०१)।
पुत्रकीषय प्रिजेजीन ही इस-विरोध,
पुत्रकीषय प्रियमिक का देश पुत्रनीकारिष्ट्र
(पद्या १--पत्र ६१)। २ म. विवासीका
का बीज 'पुजेनीकयामानीकिएस' (४
११७)।
पुत्रय पु्रिकिक वेको पुत्र (महा)।

पुनर पुंची [क] गोवि जनतिस्वाम, पुनरे बोनो (बॉक्ट १०)। पुनर पुंची [पुत्रक] पुनरा (सिरि ४६१)

पुणक्रिया | वी.[पुत्रिका]राज्यक्रिय पुणती पुणक्री | (पाम क्रम्या ६ प्रवि १३, सुपा १९१) विदि ८१४)। पुणक्ष देवो पुण (माइ १४)।

पुत्त गुप्तिय वि [पीत्रानुप्राप्तक] पुत्र-पीतारि के योग्य- "पुतापुगुतिय शिवि क्योर्ड (जाय १ १—यन १०)। पुत्तिका की [पुत्रिक] है पूर्व सरकी (स्ति १७८)। २ पूत्रकी (१ १ १३.

कुम्त)। पुत्तिक वेची पुत्त (शक्त देश)। पुत्ता की पुत्री] बहुनी (क्यू)। पुद्ध वि प्रिष्ठ] स्थवित (काना १ व स 1 (338 मुट्ट वेको पिद्ध = प्रष्ठ (बाबः संक्रि: १६) ।

पुरुष वि रिप्रस्पन दिसमे स्पर्ध फिना द्वी नद्व (स्थला १ ७ व व)। पुटुवई देशी पोटुवई (सुन्द १ ६)।

: पुठुबमा भी [प्रोप्तपदा] नजद-विशेष (पुण्य X) 1 पुद्धि औ प्रिप्ती पोबस्य उपचय (विसे १२१ चेद्रस =)। २ प्रहिशा दना (परह २ १---

पव १६)। सर्वि[मन्] १ पृष्टिकाला। २ दुं सम्बान् महाबीर का एक क्रिया (क्यू)। पुट्टि देनो पिट्टि = यह, 'पाच्यविश्वस्य पद्यक्तो पुट्टि पूरी समाराईसम्मि (सा ११) ६६ वका प्राप्तः संविद्धः १६)। पुट्टिकी [पृष्टि] प्रचक्त प्रश्नाः य वि

[<sup>\*</sup>खें] ब्रस्त-मनित (ठर २,१—पत्र ४ )। मुद्रिकी [स्तुष्टि] सर्वः विवि [जि] सर्व-बनित (ठ. २, १) १ पुट्टिया 🛍 [इष्टिका] प्रस्त हे होनेवाली क्रिया-शर्मवन्त्र (ठा २, १) ।

पुष्टिया की [स्पृष्टिका] स्तर्ग से होनेनाकी क्रिय क्रमैंबन्ब (ठा २, १)। पुट्टिस 🖦 पोट्टिक (बहु २) ।

पुद्रीया की [स्पूडीया] केवी पुद्धिया≃ स्पृत्का (नव १०)। पुद्दीया की प्रिष्टीया दिक्क से होनेशासी क्रिया कर्मबन्द (सद १ )।

पुड पूँ [पुन] १ प प्रतक्ता-विशेष । २ पृक्ष-परिषित बस्तु (एव ६४)। पुड पुंच [पुट] १ मिक्य संकल परस्पर प्रोजना मिनाच मिनान 'ध्रेनविपुध---चाहे अरक्तपूरेख नीयो हो' (बीप नहा) : र बाल बीच धारि का परका" 'हुएलएड

संदर्शतंद्रिमां (क्वा १४ दी) पड़ड ११६७। पुत्रा)। ६ र्तवड स्वत्रव, निका ह्या वो क्या 'शिमपुर्वितिमें' (क्या) यक्षत्र १७६) । ¥ धोपवि पनाने का पा<del>व विशेष</del> (लागा १ १३) । १ पत्रावि-पवित पात्र, बोना (रंबा) । ,६ धाल्कारन ६ स्तर (बना) यहहो । ७ बक्त पर पुरस्की (शिक्ष १३)। अञ्चल

िपाकी १ पट-पानों से परेननि का पाक-विरोग । २ पाल-नियास सीमण-विरोगः पुर (१ व) पाएडिं (छाया १ १३---पण **१=१)** । पुड (शी) केबो पुच = पुत्र (पि २६५: प्राप्त)।

न "मेदन] नगर, शहर (क्ब) । बाय प्री

पुढदन वि [बे] पिरुडीइट एकपित (वे ६ पुरुष्पी को [के पुरुक्तिनी] वसिनीः कथ लियो (वे व इदा विकार्य)। पुडम पुन [पुटक] देवो पुर = पुट (क्वा) १ पुक्पुका की [दे] गुँव से सीटी बनावा एक प्रकार की सम्बद्ध कानाव (पद **१**)। पुडम देन्ये पुडम (प्रति ७१) वि १ ४)। पुरुष वेको पुरुष (क्या सुपा ६६६) । पुर्विगम [वे] ग्रीह थलन । २ तिल्हु (वे ६, पुविवाकी [पुटिका] पुकी पुरिचा(११) पुत्र (शी) वेको पुष्त = पुन (शाम) ।

पुढ़ी केवी पिड्र (वक् ) । पुढम नि [भवम] पहचा (हे १ ११३) कुथा रक्प २३१)। पुडिंब देशो पुडियी (बाचानि ११२ सद १३१ हा ३ ४)।२ वाक्षि-

१६ का पि १७)। काइच "काइच वि [कायिक] प्रमिशी शरीरमाशा (शीर)» (क्एल १ सन १६ ३४ ठा१ भावानि १ १२)। वस्य केवी पुरुषा-काय (ध्यवानि 1 (7 3 3 पुरुषी की [पृथियो] १ पृथियी वरती सूमि व्यादि प्रशुपामा परार्थ अवय-विशेष----मृतिका पापारा बादु साहि (वर्ता १)। ६ प्रमिनीकान का जीव (बी २) i ४ हैरा-केला के एक जोकपास की धार-मञ्जूषी (at ४ १ - पन २ ४)। १ एक विकासि वेती (ट्रंड च—पन ४३६) । व अक्ताल बुवारचेनाच की बावा का बाय (राज)। काइय केवी पुरुषि स्वाहय (राज) । काय नि विश्व प्रियो स्टीस्नामा (कीय)-(बाबानि ११, १)। बद् वु [व्यक्ति]

चना (ठा ७) । "सस्य न **"शक**ी १ इविनी क्य शक्त । २ प्रक्रिनी का शक्त, इस पुराक थारि (याचा) । देवो पुरुद्दे, पुरुषी। पुढीमूच वि [प्रथम्मूत] को पलन हमा हो (ब्या २३६)। पुदुम वि[प्रथम] शहरा ध्यय (हेर १६, पुडो य [ पूथम् ] प्रवाद, जिल्ल (बुवा १६१) ध्यल ६ : मानक ४ : बाका) : व्रौत वि [क्रिक्] विभिन्न प्रस्थि। यात्राहा (शावाद वि ভব)। অসে বু (অন) সভব দৰুৰ, श्राचाच्या नोक (सुच १ ६ १ ६)। जिम प्रैं जिला विभिन्न शास्त्री (सूच ११६ १)। विमाय विमाय वि विमात्र] क्लेक प्रकार का बहुविय (राज का ४ ४--पव २८ )।

पुढोजन विदि पूजरजङी इवाजूब विष व्यक्तित विवर्त जवती पुढोजना (सूच १ 4 4 Y)1 पुक्रोपम वि [पुक्रिक्यपम] पुनिश्ची नी तथा धन वहन करतेनाथा (सूच १ ६, २०)। पुढोसिय वि [पुविद्यक्तिकित] प्रविद्यो के धायन में पहा हुमा (तूम १ १२,१३) माना)। पुण सक [पू] १ पवित्र कव्हा। २ वस्य शानिको सुबर्धील करना, खन्न करना। पूछव (६४ २४१) । मर्लाट (कामा १ । कर्त, पुरित्रकड, तुम्बद (१४ २४९)। पुण थ [पुनर्] इन धनों का दुनन <del>प्रक्य-</del> र नेब. विशेष (विशे ११)। २ भववारक निरुप्त । ३ प्रक्रिकार अस्ताच । ४ द्वितीय बाद, बाधनार। र प्रमान्तर । ६ सप्रकार (प्रश्**र,** ६ वरण कृता। भीरा जी ६७। जान ६, १२। १६०० स्वप्त ७१ थिय)। ७ पत्तपूर्ति में मी इक्का प्रनीय होता है (निष्कृ १)। करण न [\*करण] फिर से कराना। २ कि. किस्ती किर से वदानद की बाय बहु। पीर्ज संबं न होद पुराकप्तां (छन)। "क्याबदि ["सर्व] थिर से नमाबना ∦घा, ताका (**ए**प ७६० की क्यू)। पुत्र स [पुनर्] किर कर, वार्रवर। पुजकरण व [पुनकरण]

किर फिर नवान्य, बार्रवार निर्मात (दे र

। ६२)। समत्र प्रिमेत्र किर से स्टलीत फिर से जन्म-प्रहुत्त (बेह्म ११७-धीप) । "बम् की ["म्] फिर दे विवाहित की जिसका पूनमां न इपा हो नह गहिना 'चरिप पर्गासम्बद्धी ति विवाहिया पन्यस्मी (कृष र द २०१)। रिव रिविम लिपी फिरमी (बना थल १ १६० २६) र एतिनि की जिल्लाइचि पन कानचैन (परि)। रचिन [ फेक ] फिर से नहा हमा। २ न पुनसीट (कास १ ८)। स्य स ( अपि ] फिर मा (मैलि १६ माह co) : "कास पुं ["पस्] १ म्छव-विशेष (सम १ ६१)। २ शहर मामुरेन के पुत्र काम का नाम (सम १६६ पतम २ 343)1 भुष्य (सर) देवी पुरुष = पूर्व । शैत वि [ °सन् ] पूर्वकाती (निय) ।

पुणज सक [ इडा् ] रेक्टनाः पुराधद (यहना रथ्य) ।

पुगइ र् दि दिग काएशक (३ ६ ६८)। पुण्य वि [पदन] पवित्र कछोवाता । स्त्री की (दुना)।

पुणनम् हे स १ठ-१एए बार्रशाद, किर-विध पुणरूचे । यह मुमह पेनुनि छोसहेदि शेर्पह पुलपर्च (हे १ १७६ हुमा) 'छ वि छह द्येपन्यारीह इर्रींच पुराश्चरामर्शक्याई ( T 308) :

स. देवी पुण = पुनर (वि ३४३ प्रचाद है है १ ६६ दुमा वस्त ६ ६७ प्रचाई क्या)।

प्रश्न (भा) देवी पुत्र व्यूवर (दुवा वि 1 (54) मुजो देनी मुज अपूनर (धीर मुचा आह

1 (82

मुजाना देवो पुज-दत्त, पुजमना (शह १)। प्रयास सक [ प्र+नादय् ] १ बेरखा बरना । २ स'यन्त्र दूर करना । पूरोझसानी (45 ts x ):

पुण्य देश [पुण्य] १ हुन को जुरत (बीस) महा प्राप्तु कका साम)। एको साताल बेना 'म( 20 (1 एउ) मुर्ग (1 हि)वं |

। सद्वमसस्य पृषद्वाँ (संबोध २०)। १ वि **'बरण्**वियानस**्**रूएणं' (नुमा) । यशिक्ष कससा की [किन्स्या] बार देश के एक बौककाशाम (शक)। घण उं पिनी विद्यावरी का एक श्वनाम-क्यात राजा (पहन x, ६x)। संत, संच वि विमृी पूर्ववासा मान्यवान् (१ २, १५१ चंड) । वेशी पुत्र = धूक्ष ।

पुष्ण वि [पुर्णे] १ संपूर्ण, चरपूर, पूरा (बीप मय बना)। २ वृं शिपकूमार देवी का शासिसास्य एक (न्य) । १ बसुबर समुद्र का व्यक्तिस्यक देव (राज) । ४ तिथि-विरोध यज्ञ की योवकी समर्थी और पशक्की लिपि (बुक १० १६) । १ पुर, शिक्षर-विधेष । (एक) । बद्धस दे विकासी चंत्रले पर (ज १)। योस हं ["पा॥] ऐरतव वर्ष शा एक पानी जिन-देश (धम ११४)। अदि र्षु विक्ट्री १ संपूर्ण कटाया। २ कियाबर । बेरा के एक राज्य का नान (बज्य 🖫 ४४) । ैप्पम १ (अम) श्चुबर दीव का व्यविपति देव (एन)। भार पू िमङ्गी १ स्ववाय क्यात एक गृह-पति, जिसने मनवान् महाबीर के पास धीला सेकर पुक्ति पाई वी (धीरा)। ए मत-निकाय का एक इन्त्र (v १) । ३ ईन्ह धनेक बूट-रिक्क्यें का नाम (इक)। ४ यज्ञ का बैत्य-विरोध (भीष- विचा १ १ उसा)। मासी 🛍 ["मामी] पृश्चिमा शिवि (१)। सण १ [सन] सना भौतिक का पूच क्सिने यपवान महावीर के पास बीखा की थी (धन् )। वेको पुषा = पूर्व । पुण्यमासिर्फा 🛍 [पाणमासी] विषि-विशेष

पूर्वितमा (धीपः मन) । पुज्यवस न [ये] सानम है इंड बस (हे ६ दद याम)।

पुण्या को [यूर्या] १ तिकि-क्रिके यन की र, १ और १९ की विकि (त्रेकीय १४) नुम १ १४)। २ पूर्णमत्र सीर मरिप्रमद्र इन्द्र को कुछ बहारेबी-धव-महिनी (इक छाया २) 'दुएछमहस्स छ मस्बिन्स्य वनपरक्षो चतारि क्रागमहिनीयी वस्यातामी तं नहा-पूराः(१ एए।) बहुर्नतमा असमा ।

वारमा यूर्व माखिबदस्यवि (झ ४ १-== वब २ ४) व पुरुतास ) रेको पुसास (पटम ४१ रेट वे

पुणमाम र १ इट हे १, १६ वि २११)। प्रथमार्क्स की कि प्रश्ती कुत्रय पूंचती (इ.स. १६) वह )।

पुण्याह देन [पुण्याह] १ पूर्व दिन शुम शिवस (का १६%, मजड़) । २ बाध-विरोध व्यक्तावयुरेल' (स. ४. ११ ७३४) । पुर्विमस्ती की [पूर्वभासी] पूछिना (संनीत

पुष्णिमा श्री [पुर्विमा] विकिशिये पूर्व माधी (काप १६४)। यद पू विनद्र] कृतिकाकाक्य (महाईका ४**म**)। पुष्टिममासिणी रेखी पुष्पमासिणी (सम ६६ मा २७ दुरुव १ ६)।

पुचार् पुत्र] नक्का (अ. १० कुमा, सुरा ६६ १६४ मास २७- ७७। ग्रामा १ (२)। बह की [विती] बड़कानली की (मुन् १८१)। युक्तवावय पू [पुत्रजीयक] वृक्ष-विरोध, पूर्वनीया जिन्नागोद्या का पेड़ा 'पूर्वजीवसर्दि (पएख १--पत्र ३१)। २ त विद्यापीता का बीव 'पूर्तवीवक्गातालंकिएस्' (स 199) I पुत्तव र् [पुत्रक] देशो पुत्त (महा) ।

पुचर पूंडी [दे] योनि बत्पविनमानः पुचरे योगी (शंगि ४७)। पुरुक्त र् [पुत्रक] पूत्रशा (सिरि ८६१; 42 4x)1 पुराक्षिया ३ की [पुत्रिका] धाराबाँकस पुरुती

युक्तकी । (पार्थ कुल्मा र प्रति १६, सूपा 1 (#\$= FIR 989 पुत्तह रेको पुत्त (माइ ३१)। पुच गुपुचिव वि [पीत्रातुपुत्रिक] पुत्र

बीनारि के बोमक 'पुताणुपृत्तिये किति कपोर्ति (सामा १ १--पत्र ३७)। पुचिमा भी [पुतिया] १ प्रशे सहसी (यान १७४) । २ प्रतमी (१ १ १९)

कुमा) १ प्रचित्र देशो पुच (शाह ११)। प्रचा को [पुत्रो] सहको (बस्पू) । पुत्ती करें [पोर्वी] १ नक्ष-वएट प्रुव-नक्षिका (पन ६ छंनीच १४)। २ छाद्री गटी-नक्स (वर्मीव १७)। देवों पोत्ती।

पुत्तक पूँ पुत्री पत्र करका (प्राप्त केश)। पुरस्य कि हिंदी सुद्र कोमस (के कश)। पुरस्य के पूर्व (पुरस्य को कि सेन्सारिक कर्म पुरस्य के (स्त्र के)। श्र पुरस्क कोची किताना 'पूर्वस्य निद्यमेक्ष' (पुत्र केश्व)।

'सरहरिनो पूरकरो सहस्र' (सम्मत्त ११०)। केनो पोरका

पुमवी देनो पुरुषी (चंड) ।

पुत्रुणी ) (पे) रेको पुरुषी (त्रक १२४) पुत्रुणी ) पि १६ ) । नाम (पे) पूर्िनाम] पना (त्रक १२४) ।

पुष रेको पिइ = इक्क (छ १ )।

पुर्व देशो पिर्थ (है १ १००) : पुष्प ३ (५) केशो पुद्धम पुदुम (वि पुष्प ३ १ ४ हे ४ ११६) :

प्रस केनो पुरुष - पूर्व (पुर १ १० व्या क रेस दी का १ क प्रमु १) व्यक्त प्रस् [पक्ष के प्रमु निक्त (पुर १) । पाव वि [प्रापत] करीन-करिक विद्वते मुस्त कर पूर्व (वर ४२ दे) । सह ब्रु [प्रसु ] र कर-विदेश (धिर १ १) । १ व्यक्त विद्यत्त वर रह (धिर १ १) । १ व्यक्त व्यक्त रह व्यक्त वर्ष स्थान

धार्वं न्ये संभूतविजय ना एक शिष्य (हप्प) । पुकायप्प पूँ [पुक्यज्ञन] सन्त एक देव-वाति (पार्म) ।

पुनाम | देवो पुनाम (बच्छा हुमा। पद्मा पुनाम | २१ ४१। पाम) । वे ब बुमाय का पुनाम | कुल (हुमा दे १ ११ ) । पुनाब्धिया ) [वे] देवो पुण्याकी (गुपा

पुष्ताकी रेश्हेर १९७)। पुष्तिसा देवी पुष्णिसा (रंग)।

पुष्पुञ्ज वि [वे] योगः, पुष्टः चपवित (वे ६ वर्श)।

पुष्पत्र म [पुष्पः] १ क्रमः नूपुषः (शास्त्रः ११ क्या नुर ३ ६६८ हुमा) । एक विमानाबाब केमरियाल-सिकेय (कीमर १९४३ सम ६ ) । ३ इधे काएगा ४ विकास । ३ घोचा का एक रोग: ६ भूकेर का विनाव (है १ २३६३२ दका ह १२४)। इस्टिपू [मिरि] एक पर्वत का नाम (परुप ७६ १ )। ब्रीत न विस्तरती एक देन विमान, 'पुरच-क्षेत्र (सम १ ) । क्ष्रंबय द्र ['क्रएबक] इस्स्किरीये बनर ना ऐक स्थानः 'पूप्ककरंक्य अन्त्राधे (विपा २,१)। किंट <u>वै किंत</u>ी १ ऐरमत क्षेत्र का शातवी जावी वीचैकर-विन्तरेग (तम ११४) । २ वड्-विरोप प्रदा-विशायक केन-विरोध (छान ६)। धान िं**क्र**ीश्यूल मानः भारतस्य पुण्डनंद्यो स्मेर्वे क्रक्बेड्रियं विकेष्ट्रे (शीव २ १) । २ पुण्य कुल (कुम्म)। १ देशो नीचे य (धीप)। जुळा की ["जुड़ा] १ अनवान् पारचैनाच की सूक्त रिक्या का नाम (बन १६९ इप्प)। २ एक महासदी सम्बद्धानार्थं की सुयोरय शिष्या (पश्चि) । ३. शुंशाह्यप्रमार की कुक्य वर्णीका माम (विधार, १)। चृक्तियाँ की ["पूर्विका] एक जैन वर्ग (गिर १ ४) । विभिन्ना की [ार्चनिका] पूर्वों हैं पुदा(ब्राया १२)। विक्रिया और "वाधिनी क्रम विक्लेवाकी और (पाय)। बुक्तिमा औ ["ह्यादिना] पुष्प-पाष-विशेष (राज)। बस्तय न "आजा एक केन-मिमान (पन ६ )। जींदि पूँ ["शन्दिम्] एक राजाका नाम (अ.९.)। <sup>\*</sup>आरक्किया 🍽 नास्त्रिया (संयु) । वृत्य 🖠 वृत्य १ मनवी जिनमेन भी तुविभिनान (धम 🗷

धार ४)। २ दैशलेलाके इस्ति-नैवस श्रविपति रेव (ठा १, १ इक)। रेकेन ज़िलेव (सिरि ६६७)। देशी की [रामी] दगयन्त्री की भारत का नाम एक एक (पुत्र ४४) । "मास्त्रिया को ["नाकिमी पण कर बैट--- डेठम (हंडू ४)। <sup>\*</sup>निज्ञास डे ["निवास] पुष्प-एस (बीम व) । पुर व ["पुर] पार्टीनपुत्र पटना शहर (धात)। पूरम हें [ पूरक] पूर्त की रचना सिन (लाया १ १६) । व्यस न [मम] रह देव-विमान (सम १०)। बह्मि 🖫 विक्री क्तबाद, यूट्य-यूजा (पाप्र)। बाग 🕏 िंदाप्प कामरेव (रंग्रा)। सद्द 📫 िश्चत्र] भगर-विशेष पटना शहर (चन) । र्जन नि ["बत् ] पुर्यनामा (सामा १ १)। शास्त्र किला की प्रतर मेरिक का एक नवर (इस) ! माध्य की "माम् कर्ण बोड में ध्वतेवाबी एक स्टिब्स्स केमी (ठा ब---पत्र ४३७)। "संदुं विज् १ फेल किस्डीर (गांध) । २ म. ईलानेड का एक पारिवार्तिक निमान वैक-विकास-विरोप (का दः इक पत्नम ७६, २ व्य घीप) । ६ पूप्प छुच (कप्प)। ४ सत्तानका एक पुष्पाकार बानुपछ (व २)। देशो अनर या वर्ष व्ययाची विवसी 🖛 विमनेनाली की (गन्धा दे हैं है) । "ब्रीसं न क्षिट्यो एक क्षेत्र-विश्रात (तम व ) । वर्ष भी विद्यो १ ऋदुमती भी (के ६ ६४ वा ४६ )। २ स्ट्युक्य नामक निपुत्त पेका की एक यस-शक्षियी (द्वाप । सामा २)। १ दीसर्वे जिनदेश की प्रवर्तिनी---प्रमुख साध्योः का नाम (तम १६२) पन श्री । ४ केस्स-विशेष (ध्रम) । क्षण्य ग्र ["वर्ण] एक केर-विमाल (बार १ )। "सिंग त ["श्रृङ्खा] एक देव-विद्यान (तन देव) । सिख् न ["सिख] देन-वियत्त-विरीन (सप १)। सुय पु दिस्की व्यक्ति गच्छ नाम (डव)। विश्व न [ीवर्ष] प्**क देश-वि**शान (सम १४)।

पक केव-सिवान (सम १०)।
पुण्कत व [ह] केवसा, स्तरेर का एकं बीतरी संय (दक्य १ ४, ४४)। पुण्का की [ह] क्रुमी, तिया की महिक (हे ६ ४१)।

ξou

द्वर (मा) रेको पूर -इत्यू । इत्य (रिता) ।

पुरद्धार वृं [पुरस्कार] १ यामे कला घडता पुरुष पुरु १ समय शत्र (कुमा; दूर पुरिकाम नि [पुरियन] नुमुमित संवाद-४१८) । २ शरीर ध्र (रूप्र४१८) । चैद स्थान (धावा)। ? सम्मान पादर पुरत (बर्मीव १४०- कृमा, खामा १ ११ र्दु ("चर्द्र) विधावत वैद्यका एक राजा (सम ४ )। मुद्रा ६६) । पुरवस्त्रह वि [पुरमहुत] १ आये विधा ह्या (पराप १, ४४)। संयग वि "सद्न] पुरिषात्रा स्रो [ दे ] रेको पुरसा (शय) । नपर का भेदन करनवाना। क्षी-- या (बा ६) । २ पूर्वेवर्ती धागामी 'घड्रागु-परिक्रशा की [पुष्पिता] एक वैन बानन (उत्त २ १८)। यद्भु ["पनि] नगर समयपुरस्कारे पींग्यने बर्गिरिति (मग १, १)। द्रंव (तिर १ ६) । का ग्रीकाति (मर्थि)। तर म ["वर] पुरस्का रेको पुरत्या (धन)। पुरिषय पुंडी [पुष्पत्व] पुष्पत्व (हे २, बोद मगर (प्रया; पान् १ ४)। वरी की पुरिश्वम लो पुरस्थिम (इ. र. १--- पत्र (XX) ["वरा] येउ नगरी (छाचा १ ६: इवा ६० नुश्य २०--पत्र २०० वि ५६५)। पुर्व्या [ ह ] देनो पुण्या ( वह ) । बाहिया 🛍 [ दक्षिया ] पूर्व-ब्रांतस मूर २, १६२)। बाल द्व [ पास्त नपर पुरपुर्वा की कि वर्षेष (बोम्प्य) का वरिक আছ হাবা (মৰি)। चिता चरितकोख (ठा १०---पत्र ४७६) । 'कुण्डबर् हेर्मद्रीन्त दुरपयो पुरुष्ट्रधापुर्धनर्खं पुर्यच्छमा देखो पुर्यत्यमा (झ १ ---पत्र पुर केवी पूर्व "पूरकम्मीमा सपूच्छा" (बृह १)। (मा १२१)। YOU ! पुटनुसर न [पुटरासर] एक विवान (बप्प)। पुरणस } वेको पुरवृध (धरि) । पुरवृत पुरस्क्रिमिझ देवा पुरस्यिमिछ (सम ६६)। बहिमत न [ विदेसक] एक देव-विभाग पुरस्य वि [पुरस्य] मागे यहा हमा सह (बन १८)। पुरश्रो च [ पुरनम् ] १ वहतः, बार्प (सम पुरुष्ट्रचरा १६६ (पुरुषाचरा) शकर की बती पुरस्तार 'पूटा होड समार्थ रहे हमें १४१ ठा४ २० च ३२ ३ बुधा बीर)। पुष्पोत्तरा । एक बादि (खामा १ १७--केल' (का १ ३१ टी) जिल विद्यारम्या र पहले पूर्व में भूरको कर्य बंगू त मन १२६, पराय १०--नन १६६)। इत्य परावर्शि हु पूरायाँ (बा १४) । वुरेकम्म (धीन ४=६)। पुरस्य ।व[पुरस्तान्] १ पहले कान पुष्कोद्य न [पुष्पादक] दुष्प-एउ स मिथित पुरंग [पुरम्] १ पहले पूर्वमें। र पुरस्था है। देश की बर्पण से बावे 'सन्दूर बस (ग्रापा १ १--पत्र १६) । समत 'वप रो में बारि सपुरिष्ट सपाने पुरुषा 'युक्तकार (तुरा ३१) भौतास पुरम्बायय ) नि [पुरमापरा ] पूरा गाह पन्छा पूर्व च रहे विजनमीयन्यितिसम्मानके पण्याय पुरस्कारो में (बन्न ३२ ६१), पुरस्तामा वर्गनेनामा (वृत्त) शाबि विद्वतिन्दर्भ (दर २, १---१५ ११७)। 'बारीशियं दुव्हियं पुरस्ता' (सूध १ ५ (छ ३ १—पर ११३)। १ बदे, बाव । सम वि विमा वि १ २) । २ प्रशिक्षा 'पूरामामिमुहे' (क्रप पुस व [ पुंस् ] १ पुरुष कठ भीषपुकारी गमी पूर्ववर्ती (पूप १ व व ६)। देवी भीर मर शामा **१ १**~-वन १**८)** । विमुत्रमंत्रा (पंच १ ७२) 'पुमत्त्रमायस्य पुर, पुरा । पुरस्थिम वि [पीरम्स्य पूर्व] । पूर्व वी मुमार दर्धर ("ता १४ ३०ळा कः बीत) । पुरंत्रव र्ष [पुरमय] एक विचावर चक्र । वरक बा 'उत्तर-पूर्णनिमे हिनामार्' (कपा २ दूरर-देर (सम्ब ६, ६ )। आग्रमणी पुर न [पुर] एक विद्यावर-नगर (१क)। थीर) । २ व, वर्ष रिया 'पुरवो प्रधीचमेर्ज' भी ("शाहापनी) पूरत की बात की तती प्रसंदर्भ (पुरन्य) १ इन वेक्सन । २ (एस्सार १५—पत्र १४) क्या)। बापा बापा-विधेर (बारा ११) । विकायमा क्षान्यनिदेव (हे १ १००)। १ इप ही (प्रशापनी) क्रवानिक्टेच पुरुष 🖹 पुर्यस्थमा की [पूचा]पूर्व किया 'पूर्यत्वनामी विदेय, बम्य वा वेदः 'पूरेसरपुग्यशान वा रिवाधी बागवी (बाबाः मुख्य १६४ हि)। सञ्चलों का प्रतिसाहन करतेवानी बदक मुनिरोग भूरवा मार्वा (इन १८६ हो)। (पर्य ११--पत्र १६४)। यसम व पुरिकामक वि [पीरस्प] पूर्व दिस्त का ४ एक धर्मार (पतम २१ क) । १ मन्दर िबचन] पूनिय राथ का बण्यारण (कान्त्र पूर्व दिशा में विवत (बिना १ नि प्रदूर)। मुख्य नगर का एक विचाधर सामा (पत्रन \$6-42 SO )! पुरद्व र् [पुराइव] स्वागत कान्तिव ६ १७ )। जसाकी विशास रेत्र 'बुरदेर्राविक्ता' (बस्म ४ ६०)। पुरुष (यर) नक [ ए३) ] रेगना । पूजार । राय-मन्या वा भाव (३५ १७६) : "िदि । पुरुष देनी पुरुष (वहर है ४ २७ ११३)। (बाह १६६)। की [ "दिना ] पूर्व विका (कर १४२ श) । पुरस्मर वि (पुरस्मर) बग्रवाबी (हजू) । पुषारी की [ इ ] पूर्व बोध क्यार के जीव पुर्ग्य हे ही पुरन्धी 🕴 बहु कुरम्बरानी पुरा भी [ इर ] मगरी, स्ट्रर (है १ १६) । का मारा पूर्णन कमोत्रेकाले (बन १६--पुरंधी की । र बीर बीर पुरंगनी की पुरा बनो पुरिहा च दूरा (नूस १ ३ बन्न ६७१) । (क्या क्या १ क मुशा ६६ वास) । १ । रण विच १ १)। इव क्य वि [क्ति] पुषावद्यां चेते पुत्राव। दर्ने क क न दर्ने द्वारी हु हैं (क्यू)। पूर्व नान में हिमा हुया (बर्धर दुन्न १११) ह

पुरबंध देवी पुरस्ताध (नूच २ २,१८)।

सद ई [सद] दुर्व बाय (इप्र ४०६)।

पुरामण मि [पुराहल] पुरामा आलील। 500 की की (लट-केंग्र १९१)।

पुराक्त पत्र [पुरा + क] बारे करेगा। AGE (80 ( 80 4 8 5 8) 1

daw & [das] & door som (482. 40 a \$5)1 5 M MINING वीत-सहीत क्षत्र-विक्रेस पुरस्का क

शाय विक्रमें बर्म-तत्व निक्सित दिया बाता हो वह काल (बनीव हैव महिद)। पुरिस वे जिल्ला] म्हलका (बना ६५६)।

पुरिकोचेर दूं व [पुरीकोचेर] का-मिलेन

पुरिस्थिमा को पुरिश्वमा (तृव 📞 १ ९)। (444 Es, 40) ! पुरिस केवी पुरुष व्यूर्व (हे २, १९१८ मारू १वां कर कुमा)ः श्वेषवधी कह बामी पुरित्रसंस व विकास व विकास (पव an qui to 6) | , sa qu [19] १ पूर्वाचे । २ प्रत्यक्तान-विशेष (वेषा श पडि) । १ तम-विद्याप विशिवक्रतिक तम (बनाम ४७) । "विद्या वि ['निमक] 'पुरिमस्ब' प्रध्यक्यांगः करनेवासा (वस्य व

पुरिम मि [वीरस्स्य] शक्तमा, सक्तम सामे क्या वस दुनुसक्को मालेषु वसावुक्ते हु मिन्बर्प । दुरियमुदे सम्मर्त (संबोध ६२)। पुरिम द [के] प्रस्केश प्रतिवेशन की क्रिया-अरोब 'स जुरिला का बीमा (सोब १९१)। पुरिमवास न [पुरिमवास] नवर-विकेच (जिला १ है। धील)।

पुरिमिक्क वि [पूर्वीय] पहुंचे का पुरासन प्राचीमा भागि गया पुरिशिषका, ता कि धान्द्रेमि एक दीवीं (बेदस ११६) । पुरिक र् [के] केल, बानम (बन्)। पुरिकारि [पुरावन] पुरान्त पहले का. पूर्ववर्ती (विके १९९६) है ए १६४)। पुरिष्ठ वि [पीरसन] पुरेन्स पुरेनसी

सकनानी (के रह रा के रू १६३ आता पुरिष्क वि [वीर] पुरुषा नावरिष (अक्ष

10 to 198) 1

पुरिष्ठ के [क] सबर, और (के ब. १६)।

विश्व क्यो परिका = पूरा पूर्वा पूर्वा प्रतिको ( S 5 64 8 48 ) 1

प्रसिक्ष्येय है [के] बहुद्यालय (हे ६ रह) ।

पुरिवास्त्राणा की [के] श्रीम की बाद (के ६,

पुरिक्ष व [पुरा] । निरुवर किया कराव विच्छीर-पीर्श विस्ता करना । २ प्राचीन्

पुराना । १ पुराने समय में । ४ सावी । १ PARE, STREET ! 4 STREET, FORT (E

2 64A) 1 पुरिश्वा व [पुरस ] बाके बबत है र

पुरिस पुन [पुस्म] र पुनान, नर वर्ष हि १ १२४१ मनः कुमा प्रापु १२६)। 'सन्तेखि

मा पुरिसाधित माँ (बाना २ ११ १८)। २ कीय बीबाल्या (विसे २ १ पूछ र १ २६)। ३ इस्तर (त्रुव २,१ २६)। ४ सक हूं कावा लाओं का काहारि-विशित क्रांक । इ पुरस्कितर (श्रीक्र) । स्तर् अगर, नमर्थ ['कार] ह वीबर, पुक्तन तेबर-क्टा नेबर-सक्त (सार्थ रह कार से र, १४८ कार ४७) । १ पुरस्त का स्रोतमाल (सीप) । "साय पु ["बाव] १ पुक्त । २ पुक्त नातीय (सूर्य २ १ ६ छ।

श १ १ १ ४ १)। जुलाव द्विग] क्रम-स्त्रिक पूक्त (सम १॥) । जाह दे [sej 8] nous des (441 64 6 ); ेत क्याम न [क्य] वीका पुरुषान निम् क्रिक्षुवश्सनक्षिया पुरिसा पुरिसणसमुनिति (बार र १४ महात क्या ४)। देख ई िकी वर्ग शर्व कामधीर गोल का पुरुष

श्चामपूरिकामारमारम् नहीं मानुबो बनो एसी (बर्मीन बरा कुना) det ide) ! "Angen & [, Cangge] इस समस्यिकी नाम में स्थान यह वास्तुकेन (पन २१ )। व्यकीय मि ["प्रयोव] १ देश्वर-निर्मित । २ बील-रोबत (मूच २. १

प्र) : "मेह प्रं ["मेथ] यह मिलेप विश्वी कुरत का द्वीम किया जाम वह यह (राज) ! बार देखी कार (बरक्ट मुंद व १६। मुना २७१)। **"अन्यान** न ["**अधान**] कता विकेश प्रका के गुनागुप निवह पश्चानने की

एक सामुद्रिक कमा (वं प) । 'किंग, म' िक्ति पुरवनिष्ठ । "विगासिक र्र [किश्वसिक] पुन्य करोर है को मुक्त हुआ हो वह (विवि) । बयण न [बबन] पुलिय सम्ब (बाबा २ ४ १ १)। बर दे िवर] केह पुरुष (बीप)। वरगंभहरिय पु िवस्तान्वद्धित्त् । पुरस्ते में बेड बल्बहरती के तुस्य । ए जिब्द के (बन्द पडि)। बार्ष्डिय वं ['बार्पण्डियक] १ प्रवर्ग में बेह पच के समाल। १ जिल्लीन सक्त (सन पति) । "विजय पुँ ["विजय विवय] बाम-विरोध (वृथ २ २ २७)। बेस पुषिष् १ सर्व-तिरोग जिसके क्या है पूरन को बी-संग्रेम सी एका व है वह कर्न । २ दूरत नो की-गोर की गर्न बाला (नएक २६) सन ११ )। स्पि सीक प्र ["सिंह] १ पुरुषी में स्वि है बमान, में हे पूछता १ वे किलोब कि असमान् (समा गणि)। १ जनमान् वर्तेतर्थ के प्रवम ब्यावक का नाम (विवाद १७८)।

V इस सबसमित्री काल में करात वीकर बालुकेर (सम १ र, पडार र, १६६) र वर् ) । सेव दं [सेन] र क्ल नेमिनाम के पास क्षेत्रा सेकर मीम वानेस एक सन्तक्ष्य महर्ति औ बागुरेन के सन वेस के (संद ६४) । 5 संस्थान स्टीमी वास बीमा मेकर मनुत्तर विमान में । होनेनाचे एक सूथि को राजा केलि पुत्र के (बल १)। ह्याजिक, "ह्याज ['स्वानीय] क्यांचेत्र पुरंत साप्त पुर ( at a mod ) 1

पुरिसम्बरिका को पुरुपक्ररिक Tent, Nate (48 2, 2 4) पुरिसाम मन [पुरुवाम ] नगरेह करता । वह पुरिसामेत (वा ११६।।। पुरिसारम न [पुरुगनित] निगरेन (66 85)1

पुरिसाहर वि [पुरुपायिषः] करनेकामा 'बरपुरिधामी' विकिती Agens 4 244, (41 x5 AM); इ [प्रक्रमेचम] १ पुरिस्चम १ प्रियोक्त । प्रम के प्रमा

——भोजनीत्यकः (शाकारः ११६२१

४ रे)। सञ्चय वि सिंस्तुतीर पूर्व

परिणितः । २ स्थ-पतः का सगा (माभा २

2 x 2) 1

पुरी—पुरमय देन धहेन् (सम १३ मन पडि) : ६ जीवा विवरणानियति, चतुर्वे वासुरेव (सम ७ ; पतम ४, १११) । ४ मगबान् धनन्तनाच का प्रवस भावक (विचार १७८) । १ मीब्रुयत् (सम्मत २२६)। प्रियो प्रियो नवधे स्वहर (हुमा) । नाह र् [ नाथ] नगरी का समिपति रामा (उप **७**२व टी) । पुरीस पून [पुरीय] विद्वा (लावा १ क च्य १९६ टी. १२ टी. पाम) **पू**लपुरीसे य रिक्विटि' (वर्मीव १६) । पुरु ई [पुरु] १ स्व-राम-स्वात एक राजा (सनि १७६)। २ वि प्रदुर, प्रमुख। इसी, इ (प्राकृ २८)। पुरुपुरिभा को [ब] परवस्ता, प्रामुकता (R & K) 1 पुरुमिछ देवी पुरिमिछ (१७४)। पुरुष } देशो पुष्य =पूर्व 'ख प्रिसी पुरुष । विद्वारती (स्वयन ४४) 'सर्वत-षाखंदपु सनपुरव्यं (सुरा २२ नाट--मृज्य १२१ वि १२१)। पुरुस (ग्री) देशो पुरेस (प्राष्ट्र वर्ष स्वज २६ पवि वश प्रती १६) । पुरुसोचम (ग्री) देवो पुरिसोचम (वि 1 (¥F\$ पुरुद्ध वृं दि ] पूर सम् (दे ६ ११)। पुरमूम पुं [पुरमून] एत, देव-एम (गाउ) । पुनरप 🛊 [पुनरवस ] एक का-वंशीय धना (रि४ ४ ४ १)। पुरे देशों पुरं 'जस्त नास्ति पुरे पनदा मरुके वस्त बुचो वियाँ (माचा)। कह वि [कृत] भागे विमा ह्या पूर्व में किया हुआ (बीप सूप १ १ १ शत १ ।)। कमा न ["बमन] पहते करने का कावा बूबी में को जातो स्थाः 'पुरमीक्यं जे तु ते पुरेकामे' [मोन ४४६ हे १ २७) । बार वृ ["बार]

बन्मात, बारर (बत २१ का मुख पर, ७)।

बारड देवी कड़ (प्राप्त १६-पद ७६६।

पएर रे रे)। याय र् ["बान] रे सन्तेह

बार । २ पूर्व दिशा का परन (स्थान १

tt-ात tot) । संग्रह की वि

पुरेस पूँ [पुरेश] नगर-स्थामी (म्रांष) । पुरा रेको पुर (मोह ४५ हुमा)। अ म वि ["ग] बचगामी, बसैसर (प्रति ४ ३ विसे २१४०) । सम वि विगमी नहीं सर्वे (उप प १११) । साइ वि ["सागिम्] बोप को धोड़ कर गुल-भाव की शहल करने बाला (नाग---विक ६७)। पुराकर सक [पुरस् + क्ष] र याचे करना । १ स्वीकार करना । ३ सम्मान करना । संङ् पुरोकरिक, पुरोकार (मा १६ सूम १, 2 4 5x) 1 पुरोत्तमपुर न [पुरोत्तमपुर] एक निवापर नवर का गाम (इक) । पुरोषग पूर्व [पुरोपक] इत-विरोप (बीप)। प्रवेद र्थ [प्रवेषस् ] प्रवेदित (का ७१० टी ममीन १४६)। पुरोइक वि [दे] १ विषय सवसः। २ पण्डोकर (१) (दे ६ १४) । ३ प्रेस. माकृत भूमि का वाल्यु (दे ६ ११)। ४ ममहार, रखानाना धममाग (बीप ६२२)। १ माडा, माउक क्षेत्रसम्बर्ग पर्ते मण्यः समहा पुणेहरूसंतो । यह रिट्ठीए र्रातिन ठाएकमा' (नुपा १४१८ सुद्ध २)। पुरोद्दिम ई [पुरोदित] पूरोबा बानक होन धारि से शान्त-कर्म करनेनाका बाह्यश (पुना काल) : पुष्क पूर्व [के पुष्क] बोल कोहा कुलता से पुना मिम्बंदि' (ठा १ ---पत्र १२१)। पुळ वि[पुळ] सपुष्तित क्यतः 'पुनिन्दुसाए' 1 (22 9 27) पुछ बक [पुछ ] उत्रव होना (रह १ 1 (23 पुषः ) नवः [दृष् ] देतना। पुनाः पुनासः पुक्षा । (बाह कर है ४ देवहा मान व ६६) । यूनपृष्ट (बज्य १ ६३) यूसर्थि (वा १६१)। का पुर्वन पुरवर्तन पुत्रवर्तन । (बण्ड नाट-मानवि ६ पत्रव ६ ०० व

सुर ११ १२ 17 708 B २१२) । संह. पुछड्ज (स ६८१) । पुल्ज पूं [पुष्क है] १ धेमाब (हुमा)। २ चरन-विशेष, मिछ की एक काति (पर्एए १) बंत १६ ७७) कृष्य)। १ वसवर कर्नु क्रियेय चाह का एक मेव 'सीमानारपुतु(?स)-वर्षपुमार--- (पएइ १ १---पत्र **७**)। र्कंड पूंन ["काण्ड] रत्नध्या नरर-पृथिशी का एक कार्यह (दा १) र पुरूअंग वि [व्यन] देवनेवाला, प्रेसक पुजनण न [पुंखकन] पुननित होना (क्यू)। पुरुमाञ बह [जन्+स्यु] उज्जातित होना ब्ह्नास पाना। पुत्तमामह (हे ४ २ २)। सङ्ग- पुत्रकालमा म (कुमा)। पुछड्छ वि [इप्त] देखा हुमा (गा ११वा सुर रे४ ११ पाम)। पुंजहम वि [पुरुक्ति] धैमावित (पामः कुमा ४ १६ कप्पः महाया २ )। पुत्रक्षम् सरु [ पुत्रकाय् ] रोगावित होता। **ग्रह पुरुश्जीत (तल्)**। पुक्षकृष्ट वि [पुक्षकृष्ट] रोमास प्रक रोमा-विद्य (बक्त १६४) । प्रकर्णत वेको पुरस्य = इत् । पुलंबाध वृ [दे] समर मीरा (वर्)। पुर्लपुष्ड न [वे] बनशरत निरन्तर (पर्छ १ रे-पर ४४, धीर) । पुक्क) देवो पुक्कम = पूतक (पि २ ६ टिः पुछगा । सामार १ समार ४ कमा)। पुछव पूर्व [पुछड़] वीन्विशेष (सामा १ 1 (5 #5 पुत्राग ) पूर्व [पुद्धारः] १ महार सम अस पुलाय हे मनार भन्नह पुनामग्रहेण' (संबोध पेथ पर ११)- 'निम्नास्य होर **परा पुना**ए' (तूष १७ २६) । १ चना मारि गुल्क घन (उत्तद १२ नुवद १२)। ३ सह नुत साहि दुर्गन्य ह्रम्य । ४ दुर रक्षशासा इच्या 'विविद्दं होड पुनायं बालो गीमे यरत पुताय य' (बृद् १)। १ व्रुं माने संबम की निस्सार बनानेशामा मुनिः शिविनामारी तापुर्वी का एक मेर (इस १ २०१८) संबोध १८ पत्र ६३)।

पाइअस**रमहण्यवो** 

106

पुराभव--पुरिसोत्तम

पुस पुं [पीप] मस-विशेष पीव मास 'पुडो' (याह १)। पुस्तक वि [पोडिक्स सृष्ट] पोंखा हुमा

(यउड से १ ४२। मा १४)। पुसिक्ष थुं [प्रपत] मृत्रनिचेष (या ६२१)।

पूस न्युष्य । पुरसदेश्य न [पुरपदेवत] बेनेटर शास्त्र विरोप (संवि ११४)।

पुस्तायण न [पुष्यायण] योज विशेष (नुम १ १६)। पुद्द वेदेश सिद्द = पुत्रक् (दि १ १४०)। पुद्द वेदमूय वि [सूर्य] सिवन को नुवा ह्या हो (साम्बर्ध)।

प्रस् के [प्रियों ] र द्वीन कानुके को प्रदर्भ के प्रसा का बाब (बजन २ रूप) । २ एक कार्य काम (बजन २ रूप) । २ एक कार्य काम (बजन २ रूप) । २ एक कार्य काम (बजन २ रूप) । २ प्रसान दुवाने कि कार्य कार्य (बजन २ रूप) । यह दुवाने प्रसा (ज्या १२०) । यह दुवाने कार्य के बादलें उन्तकी का कार्य के व्याप कार्य कार

पुर्दस्सर पूर्विशिषार] धना (शृत १ ७ २४१) ।

पुरुष न [युपनाव] १ मेर नार्यन्य (साप्)। २ विस्तार (पात)। १ वहरा (सन १ २ टा १ )। ४वि निज सनन भाषाहरूरायाँ (पिते १ ६६)। "पियक न [विकास]

शुक्स क्यान का एक मेर (संदीप ११)। देवी पुतुत्त पोहक्ता।

पुहत्तिय देशो पोहत्तिय (पन)। पुह्य देशो पिह = प्रमण्ड 'पुह्य देशीए' (हुमा)।

(हुना)।
पुत्रिक्त पुत्रक्ती पुत्रक्ति (वि व व दा धाः
पुत्रक्ति हुन्म प्राप्त अन्यू १० ११६ वतः
१११ तः ११२)। इ. अगवान् भेगोलनाव की बीजा-शिविक्स (विचार १५६)। इ. एकः
प्रव्यक्त का नाग (विग्र)। चौर पु [चिन्छ]
१९ व्हर्मास् (चित्र १)। पर्छ पु [चिन्छ]
१९ व्हरम्पत्रकुमार (वन ६०६ वि)। ३ थेगो
पुर्द्रने-पाछ (चित्र ४१)। पुरं न [चुर]
एकः नगर का नाम (वसं चन्छ)।

पुर्विस पुँ [युविषीरा] एवा (है १ ६)। पुरुवि [युव्] विकास विस्तीर्णाकी ६ (प्राप्त २०)।

पुहुत्त न [पुस्तवस्थ] हे को से नार तक नी संक्या (सम ४४ मी के अपने) । र—देखी पुहुत्त (डा हे —यन ४७ हे ४६१) ।

पुहुको केलो पुहुइ (देश १११)। पुरेको पुँ। सुम पुँ[शुरू] दोला नर्र

जिल-पछि (ण १६६ था)।
पूछा छक [पूछायू] पूजा करणा। पूर्वः
(पदा)।कर्षे पूर्वाचि (पदा)। वह पूर्वः
(पदा)।कर्षे पूर्वाचि (पदा)। वह पूर्वः
१)।क पूछाणोळ पूर्वः पर ११६। प्रीपः
एवा १११ के पंचा १ ० वर १११।
पूछा १६१। वह पूर्वः (पदा)।
पूछा विश्व विष्य वही (१६१।।

पूज के [कृत वात व्यक्त (क के रहा)। पूज के [कृत] १ वृत्त विशेश कुताधि ला भारत (ववत)। र ल. कश-रिशेश कुताधि (स क्रेडर)। केले पूर्म। एकसी केले की [क्रिकी] तुराधि ला वेड्र (वडल प्रश्न करूर)।

पूम म चित्री तालाव दूधी बाहि गुरहामा, सम्मन्दान करना, हेर-मीवर बनाना बाहि बन-मुद्द के दिव ना वार्ष न्यपीवाणि रहुकार्षण (व ०१३) । पुम वि चुना १ धीवन गुज (लाख १ ३: भीत्र) २ न. समस्यार व्यास्ति वा जपनास (संबोध १०) । १ वि सूप मारि से शाफ--तूप-रहित किया हुमा (णाया १ ७---पत्र ११६) ।

पूछान [पूर्य] योव दुर्मन्त्र एकः ब्रक्त से निकता हुमा सन्दासस्टेट विमना हुमानून (पर्वह १ र सहाया ३ ०)।

पूजाण न [पूजान] पूजा सेवा (कुमा मौप सुपा १८४ महा)।

पूअन्याकी [पूजना] १ क्यर देखे (पण्ड २ १ से ७६३: इंबीब ८) । २ कास विमुगा(सूचर १ ४ १७) ।

पूजाना की पूजना है कुण व्यक्त से सकत पूजाणी कॉफिनी (सूच १ व ४ १६) रिक्ता ४१ सुपा २३ पट्यु १ ४)।२ याबर, नेही सेपी (सूच १ व ४१व)। पूजाय वि पूजको पूजा करनेवाना (सूर

१६ १४६)। पूजर वैचायोर = यूटर (चा१४ जी१४)। पूजल पुँपूप् अपूर पूजा साध-निरोग (देद१८)।

पृथ्वक्षियाकी [पृषिका] उत्तर देखी (पव ४)। पृथ्वाकी [वे] पिताच-पृष्टीता मृताविष्ट की

(दे ६ दर)। पृशा धी [पूजा] पुत्रन सर्वा देवा (कुमा)। अन्त न [भन्त] पुत्रन के सिद्य निव्यास्ति

सच व [ सक्त पुत्र क साद तिन्तारक कोतन (बहु २)। सह पुं [सह] प्तीस्तर (कृत ८२)। "रह पुं ['रंग] रातान्त्रक में करान पुरु राता का तान पुरु कोतान्ति (पदम १ २११)। 'रिंह, रह वि [ है] बतान्तोष्य (मुता ४६१ सनि ११४)।

पूमाहिक्ष वि [पूजाहाय] पृत्रित-पूनकः (क्ष इ. वे टी---पत्र वेपर) ।

पूर्व [पृति] र दूर्णमी दुर्गयाला (परम भग्न प्रश्न का करत ही तर्द्र ४१) र। बार-वित्र (पंचा १६ प्र)। र की दुर्गया प्र स्वादित्वत्र है हो। र वित्र का ग्राप्क सेंग पुति-कर्ष (नित्र रेदा)। र रोक्निक्टर एक मानिकान्यान माजनीय (नित्रे र हो)। कृत्य, गौला 'पर्नशुप्तिवार' (नहा), पूर बनाहिराम्ण' (प्ररूप्त ४५) च्या बुद्धी पूप देशो पूजा (शिक ११७)।

पूर्वत हैको पूक्ष -- पत्रव्।

पुस्कम्स्सी' (क्या १ ४) । व दूस-विशेष एकास्पिक कुत्र की एक कारिए 'पूर्व य किय कर्म (पएस १-पह ११)। कम्म पून [कर्मम्] मुनि-मिला का एक बोव पवित्र बल्यु में ध्रातिन बल्यु की गिलाकर की वाली मित्राका ग्रहण (टाइ ४ टी ग्रीफ पवा १६ १)। स नि [सन्] ह दुनेनी । २ धावित (तेषु १८)। पुद्र नि [पूर्वि] दूषित सड़ा हसा (साचा १ १ = ४) । पित्राग (न [ विषयाक] मर्गपनान मरमों भी धनी (बप ह, २ पुडल वि [पृथित] कार हेनी (सव १ )। पृश्चालुस न [४ प्रवालुक] बन व हीने-वानी बक्रमान-विदेश (माचा २ १ ००० हिमान भेगी पुश्र = पूजन्। इस वि [पूर्व] पूना बीरव एस्नानतीयः जना व पूरमी हो पच्छा होड सपूरमी इन दि [पृत्रित] सचित मेरित (चीका [म रि [पृतिक] १ सपतिक समूख दुनिस गाहरे र पा इ २१)। र इस्पी ह निषयाना (खाबा १ वा ठंडु ४१)। इति नामक विशासीय है कुछ (हांक \$ = ) t व देशो पोइश = (दे)- वजी वसी पुरसा-। (स्वः ३१ वर्षः) । मध्य देवी पूभ = पुत्रव्। रेम न [क] कार्य काम काळ जनीतन ( 20) ई [पूरा] १ ततूर संवात (बीट १०) ३ (लो पुअ स्त्रूष (न थ । वह) । भी [युर्ता] नुतारी ना बेड़ा फरक न म] नुवारी वर्गमी (स्वल ११)।

भर रहर वह का दह है।

यो पूभप (पंचा ४ ४४)

1) पूजन (पंचा ६ १०) :

पूजानमा की [पूजाना] पूजा कराना (संबोध प्र वक [पूरव ] शृतिकरमा बरबा। युख द्वीप कि ४ १६८ चीप सब महा वि १६९)। वह पूर्व प्रवंत (हुमा क्या बीत) । रवड पुर्वत पुर्वमाण पूरिवात पूरंत पूरमाण (क्य ह १६४७ पुरा ६०-का रश्दे की चीर चा रहत से रह देश द ६७)। तक पृतिका (धन) पृति (मन) (मन)। हेड. पृरिक्चन (सि १७०)। क वृश्चिक्त (व ११ ४४)। पूर व [पूर] १ कत तथा वतन्त्रवाहः कत वारा (इया)। १ बाव-विकेश क्यूरपृथ्वविष वक्ष्म, (बेंद ह है )। इ कि बेंद्र वेद्री प्राणि व वे वर्ग व्यवस्थानिक सम्बोध क्य ग्रहिमा" बरिस्बह व गुए शामिछी विमासिबी' (स ३६३)। पूरवचन्न (शी) वि [पूरवित्र] दुर्खं वरनेवाना पूर्वतिया स्त [पूरविकास] सवा की एक बरिक्श-परिवार (राज)। पूरम रि [पूरक] श्रुणि वरनेवाका (वपा थीर स्पल ७७)। पुरण म [चरण] शूर्व मूर सिरमी का बना एक पात्र जिनने यस नतीरा नाता है (दे इ भो पूम = पूत्रम् । वर्षं वत्रतः (त्रः) । 1(75 इचरेंग (लि १ ) ह पूज पूरवा व [पूरवा] १ पूर्वि अवस्ताहरूनं eine if e Bill de f (निरि ६)। १ पानम (धा<u>न</u> १)। ३ र्षु बहुर्वेश के राजा सम्बन्द्रुव्छि का एक रूप (यो १)। ४ एक स्ट्रनित का कास (बंग) । इ.जि. वृति वरवैशाना (राज) पुरमाण केनी पूरळदूरव् ।

पूजा देवो पूजा = पूजा (उप १ ११)। पुनिय देवो पृष्य म पुनित (धीप)। पूरम रेको पुरसः ऋति कि का वर्ग पूज व [के] इस्ती बार्ची (के द, १६)। क्रिक्स्परमो ब्रिक्सो (मा १४१)। पूजिमा } जो [वे] पूरी पूनी स्वं दी पूरिजन्त } क्लो पूर कृत्। तेव्या विश्व (इ.द. कट इ. दंदे)। हात्राच्या पूरिगा की [पूरिका] बोद्य क्सन (एन)। पूर्वत है [पूर्विक्त्र] इनवार (छवि १९४)। पुरिम वि [पुरिम] दूरने है- को है क्षोनेनामा (लागा १ ११ सम ३६ प्यक्षी औ [वे] रोटी (बाबा २ १ व ६)। धीप) । पूरिमा 🛍 [पृरिमा] सन्तर राम गे 🤻 मुर्ज्या (हा ७--नव ११६)। पूरिय वि [पूरित] वय व्य (बार वर पूरी की [पूरी] क्लूबल वा एक साम ( 4 24)1 पूरेंत देशो पूर = पूरव्। पूर्वेड्डी क्ये [दे] मरकर, रतसर प्र (t 4 20) 1 पूच पून [पूछ] पूला बास की बीटेग (क हर की ब्रेस देहर)। पूर } केको पुसस्स (कता के ६ हो १ 946 | PAR () पुत्रक्रिया } देवो पूजकिया (हर ।) सि पृक्तिमा र १६)। पूस बक [ अपू ] पुष्ट होना । वबह (है % 1 (m) BIR 1959 पूस वेची पुस्स = पूज (कामा १ : १) थर)। वितिर वृह्मिति एक केन वृति (बच्छ)। पत्नी बर [पत्नी] बल्ली-विदेव (थएछ १) । माप्य मानग द्र [धान धानप] नावच नद्भन-नाटना ---बद्धवार्च-वृत्रमालदेशिकनेहिं (वका धीन)। सामा पुं ['मानक] क्वीनिर्वेषका-विशेष ब्यूपि हानक देश-रिटेन (धा १ १)। माजब हेती मात्र (धीर)। मिल ई ["मत्र] है इत्यास-प्रतिष्ठ देन दुनिनय-- है कुन ुष्यमित्रः, २ वस्रमुष्यमित्रः ३ दुर्वनिकः ुष्यमित्र को बार्च चीत्रगृहि है हिस्स (स्ति पृष्ट् । इरत्त्र)। हे एक धार (विचार ४६३) । मिलियन िमपीन एक केन ब्रुनि-नुम (क्या) ।

पूम 🛊 🔁 १ सन्त गावराहर (१ ६ दे) । २ मूक बोता (दे६ दशसा २६६: बामा १६४- पाछ) १ यस वृद्यम्] १ मूर्व धीर (१ ३ ३६) : २ विशि विशेष (पटम १ ११) १ दशा ही [पूरमा] व्यक्तिशब्द नाम कुलह बोलिक बारक की पानी (उस) ह ष्मात्र देती पूम = पूल् (हे ३ ३६)। पृद् ﴿ [अपोद्द] रिकार, भीमांना देहारा माम्यम्बेम्स् करेमस्यस्म (पीतः नि १४३ २६६) । टेगो अपाष्ट्र = सरीह । पृश्म (पे) रेगो पडम 'इप्रमणिनेट्रे (माड १२४) । पञ्ज रू [भेत] १ ध्यावर भव एक देव-नावि (स्वाप्टर प्रदेश प्रवास २१) । र भूतक (पटध प्र. १)। सम्मन [पनमेन] सन्देति किया मृत का कार्या कार्य (पत्रम २१ २४)। करणिया व (वरणीय) धनदेशि जिया (बरम ७१ १) । बाह्य हि विधिकी प्रैत-वीति में जरम बस्तर-रिटेन (बम १ ७) : दिसयराइन रि [दिवतासायिक] मैक-देश्या का मेत सम्बन्धी (पा १ ७) । नाद पू ["नाव] वनपत्र वन (य ११८)। शृशि, शृशी को [भूमि मी] श्मदान (तुरा २६१)। स्त्रव वे ['खब्द] शमदान (पाम दह ४१)। बद्द [ वर्ति] स्व (उत्र ४२४ री) । यम न [यन] स्तरान (राम नुर १६ र ४ वन्या र गुग ११२)। तीटच र्ष (भिष्किष अवस्त्र (रण्ड) । प्रमानि [प्रथम ] ब्लिटा विव की जी। (rest fex) i पम । देशो पा - वा । प्रशास्य (प्रेस) सन्द्र की को कन् शिला (है । नेप्रदान प्रज्ञात (रे) १ इसल (१६ १० हिले १६६ हैं लीं: "") । र विकार (विके ###) । रे मर एल (हा ४ ४ है--ब्रा १ जा इरिका प्रशास क्या

(34) 1

वैज्ञानमा ध्ये [है] प्रमाल-करल न्यस्य वेदमला निषी (निष्ट ६४)। वज्ञाल्य नि वि विवासि (विने १४६२)। पश्चिति पित्की १ तिला से मामा ह्या रिजु-सम-शासः वैष्मो धरमी (पत्रम **८**२ ६३ विरि १४० छ ४६६)। र म ध्वै 🕸 पिता का घट पीतर, नैहर, मैका 'ता भाकृते वर्णतं भी पयद्भवान पेरर रुपं वर्गाव" विवनेश तमी वर्शियं यन्ध निए वैत्यनिवार्धि' (भूपा ६ ०)। वरदर व [पित्रग्रह पत्रसमृह] पेयुर, स्मे क शिक्षा का घर, 'सम विविद्याल क्रिमी वल्लिस्स्रेटर्यन्य सर्वांसवी (सुपा ६ १)। धक्रम न पिर्वय चमूत नुसा (ह १ १०१ वा ६१: बच्द) । सम्म पु [शरान] देव न्द (प्रमा) । वॅग्विश्र वि [प्रद्वित] बन्तित (बल )। देंग्रास घर [प्रदाखय] सूनना दिनना । बह पेराममाय (गाया १ १--पत्र ६१)। वेंद्र देशो पिंद्र ≃िमाद (दे१ «४ आह प्रजात' कृमा)। र्षेष्टन [वि] इथान्ड टूक्झा। २ वसय (दे 4 41) 1 विषय व 👣 यहन सनतार (दे व ११)। वेंडवास वि [ ए ] रेनो वेंडकिश (रे \$ 27)1 वेटय इंदि १ तरण प्रमा २ वल्ड म्बुन्द्र (दे ६ १६) इ पॅटन पु क्रिश्च (१६ रह)। पेटिन्त्र रि दि तिहरीहर तिगातार विश्वाष्ट्रया (१६६४) । पेंद्रव रूफ [प्र+ स्थापम्] १ रतमा स्वान करना । र प्रस्तान कराना । वेंद्रशा (k ( tv) : चेंडपिर रि [प्रस्थापयिश] प्रण्यास करन-बन्धा (बुब्धा) । वेंद्रार 🛊 [दे] १ की। योज्यत्र व्याचा । १ महिरीयाम (देश हा)। वेंदर्भ की [ = ] बरेश (रे ६ ४१) । चेंद्रा के [र] बनुत मूत प्रतानी मान्त (t 1 1) वेष रेगो या = वा ।

पहन्त हरू मि + इस् ] रेपना धरतीयन बरना । पेरवाह, पेलाए (संख्रा निम) । यह प्रापंत (पि. १६७)। काह प्रतियक्षेत शि १४ ६६)। संष्ट्र पहिस्तम, पंचितकण (धनि ४२ राप्त १४०)। इ. पश्याणिका (मार-नेपी ७१)। पश्यम ३ वि विश्वक्रीदेवस्त्रामा निरोत्तक वेक्स्प्रत है इस (युर छ स स ३५६) महा)। पक्रायम (प्रेक्षाम) निधेत्राल बाग्तोरक (मुचा ११६ समि ११)। पश्चात्रम [प्रेक्षात्रक] सम तमारा पागामय रे नाटके (गुर क रें बर, नूच । )। पक्यमाध्य प्रिथमा निर्माण चमशान (धोष ६)। पंकारा की [प्रेगा] कार देवी (बडन ७२) २६) । देवो पद्या । पापमाय देशो पन्छिम (स्वर) । परिवस (बन) वि [महिन्त] १२ (९४१) । पक् ) च प्रित्य । परनोत्तः सामानी कन्द पना रे (काँ धीर)- 'मंग्दी सन् देख दुमहा (व ७६)। संदर्भ ["संदर् धावामी वर्ग परलाइ (बीर)। आविभ वि भाषिकी यामावर-वंशमी (पार 2, 3) 1 पणा रेग्रो विश्र = ना पन्छ नव [दश श + इस्] देलता । नेच्या पेच्या हिंद १८१ वर मण रि ४२७) । वर्षि देन्सिट्य (नि १२१) । बष्ट परव्हेन (या १०३) महा)। संह पन्दिक्ता (वि १८१)। देश पन्दित्तं, पन्दिमाए (का ०२६ ही थीए)। ह पंच्यतिया पण्डिपद्य (ग ११ धीर **पाप्टर देश १ १ १ १ १ १** १ पन्दरिक्षि]हम गाँड चारवादसदी (य कर्य) । पण्या हेगी पश्या (संग ४३ वर्षन well) i परदान रेगीर परस्यत (गरा १७) र पण्याम ३ देवी पश्चरतम् (१ वर १ ११ पण्डांचर है बागी ।

पन्द्रव वि क्रिप्तं होता निर्मण्य (राज

at 48 # 355 m ((a) 1

पेपञ्जन वि चि नो देने नरी को बाहरेगाला इप्रभाव का समित्रायी (वे ६ ६व)।

पेपकाकी ज़िसा प्रेक्ट नगता के गाटक' 'पेन्क्सक्राजे सिरुद्धविद्योगस्तारा वहा मुचीनधीनि न निधिरेम' (क्यूपे १७) सूर १६ ६७ श्रीप)। देखो पेक्छ्या। "घरण िंगुद्दि चेदी दर (ठा४२)। सेद्राप पुँक्षिणक्षप्री गान्य-गृह, क्षेत्र मावि गें देशकों के बेटने का स्वात (एव २६६) । इर न िगृह् बाटच-मृह केल-समाश्च का स्चल (पदम ⊭ ५)।

पेरिक् वि प्रिधित् प्रेशक तरा (वेदव

१ का वा २१४) । पेच्याप वि [प्रेक्षित] १ निपेक्षित सर नोक्ति (कुमा) । २ न निरोक्त्या व्यक्तीका

(मुर १२ १ ≉३) मा २२६) । पेष्क्रित मिश्चित् निरोतन हरा (ना \$88. £85) 1

पे**ट्य रेक्टो** प्रा=का।

पेळा प्रा प्रिमन्] प्रेय धनुसाग (सुध २ ६, २२। बाबा। वस छ। १। वेदम ६६४) । देखि वि [ वर्षिम्] प्लुरुवी (प्राचा) । पेट्य वि प्रियस् ] यतन्त्र प्रियं (ग्रीप) । पका वि [हेक्स] पूरम पूर्वभीत (एक)। पेळा देखो देश = प्र + इंस्तु ।

पेळाल विदी प्रयास (वेद १७)। पे**का किम वि**[पे] संबटित (धक्)। प्तवा देशो पेआ (बीव १४६ हे १ २४ )। प्रकास वि वि निपून निरास (वे ६ ७)। पेट } न [क] फेट छरर (लिक पत्र १)। पेड़

पट्ट देशो पिट्ट = लिए (वेधि ६) प्राप्त ६

पृष्ठ केलो एक्षय नजरेजनिक्।' (संबोध १४)। पंडरूज र् [बे] चल्प ग्राप्ति वेचनेवाला वस्तिक (देव १६)।

पेडका न पिटको समूह बूक भारते करू-पेष्टव डिमिश्रा जारा (स्वील ११ सूपा

५४६। हिरि १६३ महा)। पेडा की पिटा १ मम्बर्ग नेटी (के %,

३ । महा) । २ पेटानार क्यूप्लोबा गृह-पंक्ति में विकासी जमस्त (बता १ १६) ।

पेडास पूर्वि पेटास विशेष मन्त्रुवा मही पैयी (मृता ११)। पेक्षाबङ् वृ [पेटकपरि] बूच का नावक (नुपा

पेक्सिका 🕸 पिटिका निम्मूना (ग्रहा २४)। पद्भाषी दृषि] मधिल भैंसा(३.५,८)। शरकाका। व मिश्रिपी मेंस (वे व व )।

पेक्काकी कि दिशा शिर्धा थेता र झा८, पंद्र वेचीपीडा≔पीठ (डे १ १ ६० कुमा)ः 'काळाळु पेडे टरिया छल्प पूछा पाँचमा' (द्रप्र

११७) । पेढाक वि [के] १ विपुत्त (वे ६ ७) वस्त्र)। २ अर्जुन गोबाकार (दे ६ का गवका पाप)। पेडास वि पीठवत् । पीठ-बुक्ट (यस्त्र) ।

पंडास पुंचिडास्टी १ भारत वर्षका साठवाँ प्राची जिनकेक 'पेकाल' सङ्घर्य घाराज्यवियं नयेसम्प (थव ४६)। २ न्याया सः पुनर्ती में पश्ची (विचार ४७३)। १ एक बाय

वहाँ क्ष्मान् महानीर का विभएक ह्या था पे**डल**रबासमानको क्य**र्च (क्या**नम्) । ४ न एक उचाना 'ताबो सामी बहर्गुमि बच्चो वीसे वार्षि फेडाबी नाम क्यार्श (बान १)। "पुत्त र्षु [पुत्र] १ व्यारतसर्वं का यक्तवी कावी

किन केनः 'बच्च फ्रालप्रसे व' (सम १६६)।

र प्रवास पार्चनात के संवास में करक एक भैन ग्रुनि 'श्रोद्व श्री क्ष्मप् पेकम्बपूर्च भवर्थ पासाविक्ये नियंते नेमक्त्रे गोर्खेर्ग (तुम २ श्र) । ३ भन्दान् महाबीर के पास

बीक्षा केकर चनुसार विमान में अरबा एक शैन सूनि (बगु२)। पेडिया के पीडिजाः 'पतारि मरिएपीक्ष

यामा (ठा४ २--गंत्र २३)। २ ग्रन्थ भी गुमिशन प्रस्थायमा (यसु)। पेडी बेची पीडी (बीन १) ।

पेणी की मिणां] इरिली का एक शेव (परह १४--पन६)।

यबंड वि 👣 नुस-वर्धक पुर्वे को हार यया हो वह जिसका क्षत्र क्या समाही वह

(मुच्या ४६)। पेस पून [प्रेसस्] प्रेय बनुराय प्रीति 🗪 (कमा सीनासंध मुता२ ४° रमस्ट ४२)। पेसालूङ विशिधम् । प्रेमे प्रमुख (c) 2) i येम्म केशो येम (हे २ ६०) ३ २४) हु १२६ मास् ११६) ।

पेम्सा श्री जिसा विश्व-विशेष (ध्व)। पेयाकी पिया । मध्य मिरोप अधी ।

(श्वय ४३)। पेर स**क** प्रि+ईरय्] १ प्रद्रशा वेचल कामा। २ वक्त संदर्भा । कल्स । ३ व्यवेश कला । ४ किसी । कोबना-समाना । १ पूर्वज्या करवा, करना विद्यान्त का विशेष करना विद्याना । पैरह (बर्मेंस ४६ । मृषि)। पेश्स (कुछ ७ ३ दिय)। क्याइर-पर्टि (धुपा २४१: महा) । इ. पैट्स (यह) पेरंत केवी पर्जात (हे १ १६; ६६) थीय गढर)। अञ्चलक न अन्तर शक्त परिषि बाहर का नेरान (परह रै **"क्ब म [ क्यों**स्] सर्वत द्रा निर्मित गृह (श्वव)।

पैरत नि [मंरक] मेरला क्लोबाबा, पु (धर्मर्स ५०७)।

पेरवान दि] १ ऊर्घ्यास्थान (दे६ ३ २ क्वेच ज्याता (स ७२३३ ७२४)। परज न [मेरज] प्रेरखा (रूप ७)। परणा 🛍 जिरणा क्या ध्वा (प t (##)

पेरिक नि [मेरित] जिसनो प्रेप्छानी हो वह (वें व १२, प्रवि)। पेरिकात हि । सम्रास्त्र, सहस्वता मर

( x ) 1 परिवर्धत वेदा पेर=प्र+(रव।

पंदक्षि नि कि विराधिक्य विराधानार है

(\$ £ 2X) 1 पेक्षत्र विशिव्य १ क्रोबल मुरुमाए,

(शाग्रः से २, २७३ धर्मि २६३ धरिप)। पत्तका इतता ३ तुक्य, तबू (फाया रे रे पत्र २१८ हेर २१४)। पेशुक्य [पेशु] पूछी तर्दशी पहला अन्द

वान केन्द्र (निवना १४) । करण ["दरण] पूर्णा—पूर्वा बताने का काका शनाना बाबि (विदेश १)।

पद्द--पोञ पद्ध सक [क्षिप्] केंद्रना। येद्राव् (१४ १४३) । कर्म देक्षिकर (उप) । यह पर्छत (दुमा)। चंक्र पश्चिकम (यहा)। येख देखो पर = म + इरम् । देहोंइ (माइ ६ )। क्षप्र पहिन्नेत (से ६ २६)। संक्र पाँछ (धन), येक्टिश्र (निम)। इ. पक्षेपब्य (द्रोपमा १० ध)। येष्ठ सरु [पीडय] पीमना दवानाः पीइना। वेल्लीम वेक्सिम (स १७४ हि)। पेह सक [पूरम्] पूरता मरता। क्लंक-पहिद्र्यत (से ६ २६)। पेह र्पुन कि विश्व कालक (उर पेद्धा (२१६)- 'धीयम्मि पेलमाई' (उन 37 €) 1 पेद्धम देखो पेरम (निश्व १६)। पेल्लम देखी पेरण (परह १ ६ वजह)। चेह्नण न [क्षपण] फॅक्ना (वर्ष २)। चेह्य वृह्यि देशो चेह = (दे) (क्यि १ २-पत्र १६): क्टाहिमं निवानि (मुत्र २. १६)। चेह्नय देखी पेरग (बह १) । पेक्ष प्र[पेक्क] स्वान् यहादीर के पास बीजा नेकर अनुसर विमान में उपात्र एक पैन मुनि (मनु २)। पेहत्र ) क्यो पेर। यहरह कलाका (शक वेद्धय 📢 🕦 पेडिम वि [दे पीडित] पीड़ित (दे ६ ५७) 'वनिमराहयरेखियाँ (महा) । वैक्षिम देशो परिम (बा १२१ विता १ १)। पेहियम्य देशो देह = प्र + देख्। पेंडबं च मामन्त्रगु-मुबद्ध गम्पव ( पत्र ) १ पेस डक [प्र+एपप्] भेवता, पटाचा। वेगड, वेगेड (व्या गहा) । बाह्न वेशकांत (शि ४६ । रशा) । संह पेसिझ पेसिडी (मा महा)। इ. पसद्रवच्य पशिश्रदय फैसमस्य (मुता १ ) २७८) ६६ । का ११६ थे)। पेस रेगी पीस । का पेसर्थन (श्वक) । पम रूपी [प्रेप्य] १ कर्नंहर, नीवर, शन बारर (तम १६: सूच १ २, ६ ३ करा)। २ वि भेजने योग्य (हु २ ६२)। पेस 🛊 🗣 पेरा] १ किय देख में होनेसानी युक्त बहु-बार्डि (माबा २ %, १ c) ।

चेस वि चि चेश] पेश नामक जानवर के चमके का बनाहमा (वस्र) (धाका २ ५, १ चो । वेसण म [वे] कार्य काम प्रयोजन (६ ६ १७ मूरि सामा १ ७—-पत्र ११७३ पंतर १ व २१)। पेसम म [प्रेपण] १ पठाना, मेजना। २ निमीजन स्थापादण (कुमा) पढड़)। ३ चाहा याचेत्र (मे १ १४) । पेसणबारी ) भी [के] इती इत-कर्म करने-पेसमञान्त्र रे बली की (वे ६ दश पह )। पसमा बी [पेपम] पीतना देख निनाए बबगोहुमपेनएए२ हेळ्**र (उर ११०** दी) । वेसक वि विश्वास र मुन्दर, मनोब (धाराः यतः)। २ मधुर, यञ्च (पाप)। ३ कीमस (मदद) १ पसछ । न दि भिन्द देश के पेश नामक पसल्लास र्रे पर्यो के नुश्म वरण से नियान बस पंतारित वा पंतनाति वा (२ माचा २ ६, १--- सूत्र १४६) पेशाणि बा पेन्द्रेसास्ति वा' (३ धाचा २ ५,१ ८ (धन)। पस**व सक** [प्र+णपय्] नेजवाना । 🗫 पसबेयक्य (वप १३६ दी)। यमयण न [प्रेपण] अजनानः बूनरे के हारा

वैस्रवित्र वि [ग्रेविन] वेत्रवामा हुना प्रस्काः निव (पाम का पृष्ट)। पसाम वि [पेशाय] रिहाच-संक्रमी (बह परि श्री [पे देते] रेको वसी (नुता ४००) । पंशिक्त विशिषिती १ वेका ह्रमा प्रदित (या ११२३ मधिः काम्प)। २ प्रेंचतः (पन्नम € 4K): परिमा ध्यै [पेशिता] बरह टूक्हा; 'संद पेनिया ति वा ध्येतास्योगिया कि वा (धन् ६। याचार ७ २, ७- द १)। परिचार पु [प्रेपितकार] शीकर, जूथ, गर्पंगर (परम १ १४)। पेसिन्पंत (सौ) रि [ प्रचित्रपत्र ] शिक्षते भेशा ही बह (दि १६६)।

त्रेपए (उना परि)।

**5**88 पेसी श्री विशी मोत-पएड मास-रिएड (वंदु ७) । देको पसिमा । प्रमुख्य । न [पैनुत्य ] परोध में दोप पेसुक } कीर्तन कुमसी (धीप सूच १ १६२ खाबार १ घछ सुपा ४२१)। वेसेयब्य रेको पेस = प्र + एपम् । वेस्सिन्बंत रेको पेसिन्बंद (पि १६९)। पेक्ष सक [ प्र + इन्नु ] १ वेबना, निरीक्षण करता व्यात-पूर्वक रेखना । २ चिन्तन करता। वेहर वेहरू (पि = ३ उन) पेहरित (रूप १६२)। मांव पेहिस्सामि (पि ४१ )। मझ देश्वंत, देशमात्र (उपप्र १४४ केन्य २४ ) पि १२१)। श्रृङ पेदागः पेदिया (कसः वि १२६)। पद्द शक् [प्र+इष्ट्र] १६व्या करता भारता । २ प्राचैना करना । पेर्ट्ड (यस 🛭 Y 3) 1 वेद्दण न ब्रिक्षण निर्धारस (वंबा ४ ११)। येहाकी [श्रेक्षण] १ निरीसक्त (इव सम ६२) । २ कामोरसर्वे का एक क्षेप कामोन्सर्व में बन्दर की तरह बीट पूर की हिसले पहल (पर ६)। ६ पर्यानीचन चिन्छन (धाव ४)। ४ बुद्धि मदि (उत्त १ २७)। वेहायिय वि ब्रिक्षित् विशेष विज्ञामा ह्या (साथु १८८)। पहि वि प्रिक्षिम् । निर्पेशक (वाका वर)। की की (शिवरेष)। पेहिय वि [प्रेक्षित] निरोधित (म्बर)। पेट्रण न [वे] १ शिष्य मंद्र (३ ६ ६०-

पाधाः या १७३ ४६% वजा ४४ मध १४१ गटर)। २ मपुर विषद्ध पपुर र्थेज शिक्षण्ड (यगह ११२ १ जे १ शाया १ १) रेवी विद्रुप । पाञ्च वक [प्र+ध] तिरोता कृषमा। पोर्वीत (बच्द ३ १४ सूपनि ४४) । बह्न पायमाम (म ११२)। संह पाइडम (वर्मीष ६७) । योज वि [यान] रिट्या हमा (दे १ ७६)। पाभ 🖠 [पात] १ पदान प्रवरूल मौरा (पाय नुश दब १९१)। २ बालक शिश वश्या (दे ६ ८३ पाम तुरा १६८) । इ ण कार, करहा (धा के र---ाव ११४)।

पोभ ई दि ] १ वन दुल वाय वींका पेड़ा | र कोटा साँप (वे ६ ८१)। पोमझ्याची दि] फिल्कारी बता बता

निरोप (रे ६ ६३) पाय) । पोर्जडिक कि र मन-स्थित निवरा २

पएडः नायरं (१ ६ ६१) ।

पोर्जत पूर्वि हिन्स सीनम (दे ६, ६२)। पोभन व [मन्यन, प्रोतन] पिरोना ग्रुप्तन ह्रवता (भावस)। पोक्षत्रपुर न [पोडनपुर] नवर-विशेष (नुपा

६ છ थमि)। पोलपा 🛍 [प्रचयना प्रोहना] पिचेना

(च्य ११६)। पोभय दि [पोठळ] गोठ से उरका होनेनाका प्राप्ती—इस्ती मार्ग्य (ठा १ १)।

पोअव १ [पोठक] देवो पोझ = गेठ (क्वा) प्रीप) ।

पोञस्तय <u>प्र</u>[वे] १ ब्रास्चित सक्ष का एक

असवा जिसमें पानी के बाच से लेकर पछि मपूरको क्षाचा है। र एक प्रकारका सप्य-बाद-विदेप पूजा। १ वास वक्क (दे६ ⊏१)।

पोक्षाई की पोताकी १ ठर्त की क्लब **करतेवामी विद्या-विरोध २ राष्ट्र**निका पश्चि-विशेष (विशे २४५३)।

पोबाइव वि [पोतायुक पोत**क] के**की पोक्सय (पडन १२६७)।

मोजाय पूर्वि । ध्राम-प्रभात काव का शुक्रिका

( 4 4 ) 1 पोआछ दं [दे] क्यम वडीवर्ड (वे ६ ६२)।

पोआस दि पोत्र । सम्बः रित्रु वासक

(योष ४४७)। पाइय प्र [ इ] १ इत्तवारी पिठाई वेचनेशाला।

२ वर्षात (२ ६ ६३) । ३ विमान, द्वार इमा (मीव १६६) । ४ शन्यतः (इह ६) । पोइन विशिष्ठ रिकेश ह्या (के **४** ४४) कापुर ह पाय)।

पोडभक्तम देखो पाडम = मेरा (योग १३६ ਹੈ)।

पाइआ ) धी [वं] निधाराण नता, वन्ती पाई ) विदेश (वे ६ ६३) प्रवण रे---पद १४)।

पोउठा स्थ वि कराय-मूचा योगर (गोर्डेंडा) का प्रतित (दे ६, ६१) । पोंग 🛊 🕄 पाक पक्रमा (स १८)। पौरिक नि वि पका हवा परिपक्त परि पा**क-पूक्ताः कण्डीः शा**या में 'पॅनिका'-

'फ्रनेनि सईमहिन्द्रमिसीय-त्युप्पन्नक्षित्यस्य वर्गेन्सिलः ।

मिल्लाक्ष सम्पन्नी न्यादय-विग्यहा श्रमुचि द्विवेचि । (स १६ )।

पोंद्र न दि∏ कुल पुल्सः न्यूचं धाणि यसे बं बढी यामेलको होई' (उत्तरि ३)।

पेंडिको पुंडा बद्धान [किर्यत] नवर विशेष (महा)। बद्धाणिया हो विशेषिका] बैन मुनि-मछ की एक शाका (कप)। पोंड 🕽 पूँ 💽 बूच का ब्रॉबवर्सि (वे ६ पॅक्रिय रे १ ) । रेक्न (पर्णा १ ४ — पत्र ॥ १ धनिक्छित प्रवस्तावामा कमक (सिसे १४२१)। ४ कपात का सूधा वर्ष तु पौक्रमाची जाने पुत्तपिक्क सूचर्य नार्श

(सूचनि ६)। पौडरिशियो देवा पुंडरिशिशी (क्ष १ ६) । पोंडरिय केरी पुढरीश≔पुरक्षक (स

YES) I पोंडरी की [पीपड़ी पुण्डरान्धा] बस्पूडीप 🦠 मेर के उत्तर दशक पर स्कृतेशाओं एक

विष्ट्रमाधै वेशे (ठा )। पॅडिशेल ध्वो पुंडशेल ≂पूरवरीक (बीप

खाना १ २, १३। सम ३३ वेकेन्द्र ३१ क्यित १४६) । भोडराध १ व [पीण्डरी इ.] १ परिवत-

पोंडरीग किरोप सम्ब-निर्माप (सुप्रति ११४) । २ वेको पुष्ठरीश = गीएवरीक (तूप २ १ १) सूचित्र १४१) ।

योकसम्ब विषा+इ: पन + की प्रका रता धाक्कान करता । गोरक्द (हूं ४

पोचावि विदेश स्कूम और अन्तर धवा बीच में निज्य (नासिश)। 'पीशनामें' (उस

શ્વા ૧) ા यो**क्तन नुं** [यो**क्तन**] **१ समार्ग केल-विशेष**। २ 🕶 देश में बानेपानी स्वेज्य वानि (पर्यु g 2) i

पोक्कन व विवाहरण पुरस्तरण १ प्रकार पाञ्चान । २ कि पुकारनेवाचा (कुमा)। पोक्सर केवरे पुकार : पोल्करीट (महा) । नह-पोक्सरेत (सूपा १८)। योक्करिय नि [पुल्हल ] १ पुकास हमा (मुर ६ १६४)। एव पूक्तर (देशा १)।

योक्सर वेको युक्तर = प्रकार (स्य प्रश्व**र)**। पोक्तिल देखी पोक्तरिय (क्प १ ३१ वी)। पोक्करन [पुरुदर] १ वन पानी। र प्रचलना १ प्रचलोपा ४ एक तीर्वे सबयेर-नवर के पात का एक क्ताएन---तीची। शहानी की शुँद का यह मानः ६ शास-मारहः ७ मारहा दुवान । द मसि

कोच तलकार की म्याल । श्रमुका पूर्व। १ क्रम दोन की सौपवि । ११ श्रीप-विरोप । ६२ प्रक अकृति। १६ सर, बारह । १४ माम्बर्ग नोक्सर्ट (हेर ११६२ ४) संवि ४)। ११ व् नाय-विरोधः १६ पेन-विकेष । १७ वास्त प्रती । १० एक एका का नाम । ११ पर्वेट किछेव । २ वस्र्य

पूषा नोस्करों (प्राप्त)। देखी पुरुक्तरः। वोक्तकर कि [वीक्कर] १ पुरुदर-ग्रन्थणी। १ प्याकार रचनावाला न्योल्डरं प्यहर्स

(चाय ७ )। वोक्करियो की [पुरुश्रीयो] १ क्वासन विशेष वर्तुंब भागी (खामा १ १<del>- नर्</del>ग ६३)। ए परिनी कमलिनी पद्म-सर्गा **'बले**ण वा पोल्बरियोज्यार्थ' (उत्त ११ ६)। ६ वारी (कुमा) । ४ पप-समूह <sup>। ३</sup> पुष्कर-बूस (हे १ ४) । ६ वीक्सेस नग शय बरेकारी वारी (पशह १ र≀ 🎚 ८४)।

पोक्साङ देशो पुक्साङ (पर्त १—पत्र ३४ भाषा २ (\* 2 E) 1 योक्ससम्बद्धः ) देवो पुरससम्बद्ध

पोक्तकरिक्कय े सब (पर्छ १---गन क्थः स्वत्र) ।

योक्स के पूर्व [पुरद्रक्षित्] एक कैन हरा-यक- निश्वका दूवचा नाग रावज वा (चात्र) । यागार ) देव [पुद्रमाख] १ क्यादि विधि ! पोग्रास रेडम दूर्च हमा, कावाता पराक **पीन्मता (अब १३ डा२ ४**३४ ४)

र १ द) भोगनाहै (पुरुष का गेष १
४६)। २ न मोस (पर १६० है १
१६)। रिसमाय पू [निस्तानाहित १)। परंदु गरियह पू [परिवर्त] १ समस्य पुरुष्ण-सम्बद्धी (गय का १ १)। परंदु गरियह पू [परिवर्त] १ समस्य पुरुष्ण-सम्बद्धी के सार प्रमुख्य का संवित्त-वियोग । २ सम्य का उत्यस्या का संवित-वियोग । २ सम्य का उत्यस्य सम्य (काम्य १, व६। मय १२, ४ का १ ४)।

पोराधिक वि पुरुतादिन व प्रकारका प्रका प्रकाशिक व १०-पन ४६३) पोराधिक वि पिर्वासिक विकास प्रका संक्षा प्रकाशिक प्रकाशिक ४४९) पोर्वादिक वि पुरुतार, क्षेत्रका प्रकाशिक वि पोर्वादिक वि वि प्रकार, क्षेत्रका प्रकाशिक वि पोर्वादिक वि वि प्रकार, निस्सार (जाता १ १-पन १४)। २ व्यक्तिविक (पण्ड १

१—यन १५)। व सर्तिन (निन् ११)। पोच्छछ सक् [भोत् + शत् ] वस्तना र्क्षण जाना। वक्ष पोच्क्कतं (पुर १व

क्रमा जाता । वक्ष पोष्यक्रित (गुर १६ ४१) । पोष्याहण न [प्रोतसाहन] स्रोतन (वसी

भान्यात्वाच [अस्तवाह्म ] वयाना (बस्ता ११) पोच्याहित वि [अस्तवाहित] विशेष क्या हित क्या हुमा, क्लेक्त (दुर १६ २६)। पोह थुं [पुत्र] सहका 'एक्केस बारकड गोस्टेस' (बह १ टी)।

पाहुन [ब] पेट कर, मध्ये में भोटे (के के के जाया है ---वन के हो जीवया कर्ण वा कर्ष रेक्ट, दटा, खे हहरू कर्षवा करण चुन है है, जुला ४४४ जान करण कर हहरू में पे)। साठ वुं [शास्त्र] एक परिवासक का नाग (विशे २४४२ ४४)। सारजी की [सारजी]

सतीवार केम (याम ४)।
योह १ न कि ] योवमा पहुर, पठकीः
योह के प्रिमितिकारिकारिक प्रमुख्य स्थापित ।
व्यक्त केम प्रमुख्य स्थापित ।
विकास स्थापित स्थापित ।
विकास स्थापित स्थापित

पोहुछिय वि [वे] पोटकी जठानेकालाः । यडरी-बाहुक (निष्कु १६)।

(सम १०४)। ४ एक कैन मुनि विसरे पनवान महानीर के समय में ठीजंकर-नाम कने बंबा वा (ठा १)। ४ एक कैन मुनि (पनम २ २१)। ६ देव विसेष (शापा १ १४)। ७ देवो पोडिस (एव)।

पोहिस्स की [पोहिसा] व्यक्तिनाकक नाम पक की का नाम (ग्रामा ११४)। पोहिस प्रे [पोहिस्स] एक किंग का नाम (कप्प्)। पोहिन्स की [मोहपन्ती] १ साम्यक साम की प्रक्रिया। २ मार्च की समासस्या (ग्रम्ब

१ ६) । पोट्ठिस पूर्व [ हिस्स] सम्मान सहसीर के बास क्रीया बेकर समूचर-विमान में उत्पत्न सक्त क्रिय स्वीत (१९३)

ध्य धैन पूर्ति (बर्नु) । पोडाइत न [व्] द्राप्त-निशेष (व्यक्त १०० पम १३) ।

पोड वि [जीड] र वर्ष्य (गाय)। र तिपुछ बदुर। र प्रथम्य। ४ प्रमुख, बीवन के बार की क्षरणास्त्रार (उत्त दुन्द तुना १९४७ पंत्र नारर-मानास १९६)। वास पू [ बाब ] प्रक्रिका-पूर्वक प्रयासनाम (बा प्रश्री। पोडा की [जीड] र तीत से प्रपत्न वर्ग तक की बी (दुप्र १०१८)। र गायिना का एक

प्रकार एक ने काम-कवा वादि शक्की तरह वाननेवामी (शक्क १) । विदेश कुँची ज़िडमन् जीवता, तीवपन (बीक २)

(मोक्स ने)। पोती की [मीति] उत्तर देवो (दुव ४ ७)। पोत्मिक दि [के] पूर्व (दे ६ २८)। पोत्मिका की [हे] मूते के बस हुसा सङ्का (दे ६ ६१)।

पोत देखों मोज = गीठ (मीप बह १ ग्रामा १ =)।

पोतलया देखो पोअणा (उप ६ ४१२)। पोचा पूँ [पीत्र] पुत्र का पूप पोछा (दे २ ७२ चा १४)।

पोत्त न [पोत्र] प्रवह्ण भीका विमानसिम सोसारिपाणि सम्बाधि तेण पोणाधि (दर ११७ दी) । पोत्त [न [पोत] १ वस कप्ता (सा

पोचा ति [पोत] १ सक कपहा (सा पोचार १२ सोव १६० कम्यू स १६२)। २ बोती कटी-बल (गन्स १ १० कस वय ८४ सावक १६टी सहा)। १ बल-बल्ल (ऍक ६ ८)।

पोत्तय दू [वें] कोता कृपण धएडकोश (दे ६ ६२)।

पोसिक न [पोतिक] नम्स, सूबी कपड़ा (अ १,१—पत्र ११० कस २ ११ छि)। पोसिक नि [पोतिक] १ वस-वारी। २ पूर्व नामार्थी का एक मेद (पीत)।

पु नलप्रत्या का एक पद (धाप) । पोलिका की [पोत्रिक] पुत्र की सङ्की (रंगा) ।

पीचित्राक्षी [दे] चनुपित्रिय शन्तु नी एक नावि (एत १६ १४७)। धीचित्रा | की [पीविका पीवी] १ नोवी पीची | पहलने का बक्द, साही (विदे

२६ १)। २ झीटा नक वक्त-बस्क 'चर-प्रक्रवयाए गोटीए प्रृष्टै क्वेटा' (छाया १ १—नव १६ जिस्सा १) 'ध्रुह्गोरियस्य' (विचा ११)।

योची की [दें] काच कीरा (दे व ६ )। योचाह्रमा देवो योचित्रा (खामा १ १८—

वस २६६)। पोस्य |पुन [पुन्न क] १ वस, कपड़ा पोस्यम् (एल्स १ १६—नन १०९)। २ पोस्पम् १ देवी पुरस्य पोलकस्मकस्य प्रिक

विश्वकृतं (बनुः धा १२० सुपा २८६ विशे १४२१० बृह ६ प्राप्तः धीप)। पोरमा की [मारमा] मीलान मुमोरासि

(उत्त २ १६)। पोल्यार प्रै [पुन्तकसर] रोधी विकासस्त, योगी वनाने कर नाम करनेतासा दिस्सी कारति विकासात्र (बीच १)। संबन्धे (स ६४४)।

(मासू १७) । २ पराक्रम (कुमा) ।

चोरिसिमंडक न [पीस्पीमण्डक] एक कैन

बलीत (वर्षेषे ६२ टी) ।

पोस्तस त [पोसास] ! लर्राक्टेर, पोकासपुर (क्या) । २ क्यान्सिरेन (राम)। पुर व ["पुर] तरा विशेष (बार पेपे)। योखासाह न [योखपार] लेजरम नर्ग

के<del>लिय-वेश</del>

ex) i योज्यय पुन 📵 इस्त-परिनर्पेख हान किराना पोरबाङ 🛊 [पीरवार्ट] एक वैन धामक-दुन (सी २)। योज्यस्य न [यूगफरक] सुपारी (हे १ १७ ३ पोराज केको पुराज (क्छन २०- ग्रीम अब-हिथ २०० छन मा३४)। धोरफक्षी की [पूराकक्षी] बुतारी का वेड़ पोराज नि [पीराज] १ पुरु<del>क् क क</del>्री (चन)।२ पूर्वका सामा माता (चन)। योस देखो पडमा 'प्रहा पीन असे नार्व' चोराणिय वि [ चोराणिक ] पुराक्त-काक-

का एक बैस्स (विसे १६१७)। पोक्षिम पुं [व] वीनिक, रवार्र (१ ६,११)। पोक्रिया की [दे पौक्रिय़] वा<del>व रिटे</del>न पूर्व (१)- 'पूछाची हर पीलवातवी' (स ७२८ दीः धन् )। पोर्क रेको प्रभोक्त प्रमेषु शक्तिकोतुः प्रविद्योग प्रति (बार्थ वर्षक्रम) पोरिस व [पीस्प] १ पुकाल पुकार्य वर्षींच ७७)। पोक नि [के] पोमा ग्रुपिट, बाबी, रिका पोरिस वि [पीस्पेव] पुका-कूच पुरुष पीली व्य द्वद्वी बहु है बतार (बत रे

४२। काला १ १—तम ६३। वर वर)

'वंका कोउल्बासा विराजया देश<del>साथ प</del> राज (लंदि २ र)। बद्धा व (महा)। योरिसिय क्या पोरिसीय 'व्यवह्रवतारव पोद्धक कि [के] जगर केकी 'बंध की स्वार गोरिसमेंस कामेस चप्पारा प्रपक्त (धारा विकास प्रेक्टरा व सहस्र वं (सीव करें) १ १४--पर १६ )। विचार ६६६) । पोरिसी को [पीरुधि] १ दुवन-ठरीर-बच्चय पोक्टर न [के] उप-विशेष निर्मित्र विक द्याचा । २ वो शतव में पूचय-गरिनाक स्क्रमा (बंदीय २०)। क्षी शह गाम अहर (ज्याः विपा २ ३३ पीस बन्न [पुप्] प्रष्ठ होना । रोतर (वर्रः सानाः कण का ४)। ३ अवन अहर वस बीजन मारि ना त्यान, ब्रायाकराज-विशेष **त्रानिरीय (पय ४**" संबोध २७) । पोरिसीय वि [ पीरुपिक ] दूरपश्रवाण पूरव-परिवत 'पूंजी महताहियोरिसीया' (तुम १ २, १ १४)। पोरुस 🕯 [ पुरुष ] बध्यन 🚑 🕫 (नुब t ₩ t }ı पाइस क्यो पारिम (व २ ४; सा ७२८

१४६३ वर्षि । पोस सक [पोपय.] १ पुट करना । १ वर्ग (왕); 백 करना । मोदेश (पेचा १ रिवर पीप' (कुम १ ६ ९ ४) वोन्ह (कुस १ ९ १ १६)। क्यक पोसिक (41 642) 1 योख वि [वाप] १ कोक्क कृष्टिकार 'श्राधिकार्त्र गोश्रवत्त्रं गरिहिति (भूप १ १ ६) । २ दू बोपछ पुटि (वंदीन वेट) पास र [पोस] १ माल-देश, प्रस (वर १ ४-- पत्र कथा सीच ४१६। सीप) । बोर्टन (निन्नु ६) । ६ निन, कारन: 'छार क्षरित्या बाँग्रे बर्ल्स, व परा; बोता के लेना के गाला दुई मे

बनोराती बनराति इच्च घर्षे (स ४ १)। चारम वृत्र (पर्वेड) बनराविका एक घेट, बनेतारी बनराउँ (बएड १--वन ३३) । बारगद ने [ मृ ] दुर्वन खन (दे ६ ६१ नाय) । वार्रान्त्रम रेनी पुर्यन्त्रम (तुत्त ४१) । पाराय रि कि नावरी वैमर्टन हेगी (वह)। ···· - 44 ) 44 (44) - ····

(अर पूरेरर)।

22 42)1

(বিদ)।

408)1

ft (44) 1

(समेद्धं ६ )।

(हे १ १**७ ९**मा)।

मार्पारत (आइ १६) ह

धीमहरित (धन) १

(हेर १७) हमा)।

(बल ११, २७) मूच २४, २७ पत्रम

द्मीमर न [रे] धूनुरम-राज क्ल (रे ६, ६३)।

चोमाड १ वि पद्मारी पनाट क्यार

अक्नइ ना पेड़ (स १४४) । देखी यहमास ।

पोमावर्षे औ [पद्मावनी] अन्यन्तिशेव

पोमिणी क्या पडमिजी (तुरा ६४६) सम्बत्त

पोमा देवा पडम (हे १ ५१:१ व ११५

ना ७३। दुना, शक्त १४: कप्यू वि १६६)।

योग्सा केवी पदमा (प्राप्त १०) ना ४०१।

कुमा) ।

थोस्ट केनो पस्ट=सम्मर पाइ व किए खानिबाए बणियं मितुस्पत्रोमहन्तरिवाएँ बीर पू [पूगर] बस में दीनेशना ग्रुप्त कन्द्र पार वि [पीर] पूर वे-नवर वे बनानः थार रेनो पुर = बुरव । कन्त्र न ["कारुप] योर तुंश वि पर्वम् विवि याँठ (स ४ दी गहा) । १ धर्)। बीच दि विशेष वर्गनीय है पोरेक्स } न [पीरन्द्रस्य] पुरस्तारः श्रमाः | पोरेम**व**े निरंप(भीत संस्थाति । ७४)। षारेक्ड व[पीरापूरव] पुरातित्व परेक्स्स (थीफ क्षम ६३ शिस हे ह पण)। पासंद चक [शोन+स्वर्प] विशेष श्रानंबन करना । नीमंद्र (द्यापा १ १---नव ६१) ।

( C ( (1))

वार्ज (बा र-- रन ४२ ) । पासचा धी वि] प्रश्चि पूर्वि इट दरीन वोशन वि [पायक] १ वट्टिनारकः

यास र [पीप] शेर शत (बन ६६) ।

काणमन्तर्वा (पानु १ १) ।

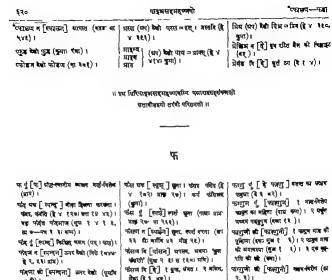
पोसम न [पोपम] १ पृष्टि (परा १ २)। २ पातन । ३ वि. बोपए-नर्ताः 'सीम वर्र वि बहारियोगणी (नप १ २ १ १६)। योसम न [पोसन] बरान दुश (वं १)। योमणया की योपणा र गोपल पृष्टि। ३ भएड प्रश्न (प्रशः)। क्षेसव हैयो चीस = पोम 'पोमए हि' (हा E 원--- (국 삼천이 중점 상) [ धीमव देनी पीमग (चत्र) ! योसह व चिपिय पीपय ? ध्यामी बनुश्री बादि वर्वतिपि वें करन योग्य पैन क्षांच्य का बत-रिकेप माहार मादि के व्याग तुवक दिशा शांता सनुप्रात-रिकेष (तत १६) बरा बीर महा गुरा ६१६ ६१)। १ वर्ष-दिरस-धटमी चनुर्दश्चे बाहि वर्षे विकि 'बोनटगरी रदीए एल पम्पालुकावधी मिराको (गुरा ६१६) : "पहिमा स्ती विश्वतिमा दिन भारक का करने बीरव सनुवान-विदेश क्षत्र-विदेश (वंबा १ १)। बय म दिया विशे पूर्वोक्त पर्वे (पति)। साक्षा की [शाला] पोषप-वत करने का स्पान (लादा १ १--पत्र ६१ थेव महा)। ोपपास पु िोपपारती बनीरन में कर शन-प्रेड शिद्या पाता देन धारक ना बन् शान-विरोध भीन स्वाद्य का न्वाक्तर्या बत (बीत नुता ६१६) । बार्माद्व रि [पार्यपद्व] विक्ते बोषप क्य शिवा हो बंट बीपच बरनेगाना (लाया १ १~ पत्र ६ गुरा६१६ धर्मीर १०)। 5, 53) 1 पानिम रि [पुष्ट] गागा-पुष्ट (वरि) र पारिमारि [पारिम] र पूर्व रिकाइपा। र पारित्र (च्या २० १४)। पार्शिद्र(क्षे) विभिन्नि विशेषान-विशास राह्मा। भगन्ना भी भिन्दा दिवस र्चा प्रशा—गरेदा में दता हा का की (ग्यम १३४)। पामा को [योपा] १ कीप माग की करिया । १ भेग बाग की यात्राका (नुक्र ह ६ 24) 1

योह पूँ वि] बेस बादि की विद्या का बेट-क्लारी भाषा में 'पोह' (पिंड २४%)। पोद्ध वै शियो परच के दूध का मान्त भाग (पदर) । योहण व कि चौटी मछनी (दे ६ ६२)। पोइल न [पुश्रुत्य] बीहारै (भ्रम) । मोइन रेवो पुद्दत्त (पि ७८)। पोहसिय हि [पार्थेक्त्यक] प्रचारत-र्धवन्यी (पगल २२--पन ६३१: ६४ : २३--पन £ ( Y ? } पाइम रेग्रा पोप्पछ (बर ) । व्य रेवो प= व्य "विमोसहितकार्स" (संवि व्यजास रेपो प्यास = प्रवार (धनि ११७)। व्यवस्त रेता पवस = प्रकृत (भा १)। व्यवक्ष रेत्रो पचन (वनि १०६) । प्यान्त (मा) भ्रष्ट मि + तप्री परव होता । व्यव्यक्ति (नि २११) । प्पाटआर देखो पटिआर = प्रतिकार (मा ¥4) i प्यविष्ठा देशी पविद्या = प्रतिमा (रूमा) । प्पणइ रेजी पणइ= प्रश्नामन् (कुमा) । प्यमाम रेपी प्रमाम ≈ प्रणाय (हे र 1 (2 ) "प्यजास रेगी पत्रास=प्रजाश (बुग 520) i ैपपण्या देखी पण्या ≈प्रज्ञा (क्रूमा) । ध्यस्यान देती परबाज (विभ वर्) । ैदपद्स देगो पहम (शार-शिक ४) । ेटपुर्जात्म (धी) देना पट्याहिक (मार---मालशे ५४) । रपदंच रेता वर्षच (रेका) । ध्यार्थान रेगो पश्चिद् (रंगा) । ण्यभूत (धी) देना प्रमूप (नाट-केली 35) 1 एपमत्त हेनो पमत्त (यात्र १८१)। व्यमाय देनो प्रमाय (ति १६६ व्) । ध्यमुक रेनी यमुक्त (का-शतर १६) । व्यम्द्र हेना वर्ग्यद्र (न्या) । त्पगर देशो पगर (इका) ।

"दरपाय देवी पंचाय (ब्रुवा) ।

व्यवास रेको प्रयास=प्रवास (स्पा ६१७)। <sup>®</sup>टवसावि देखी पसायि (धर्म ४६) । **"प्यवस्त्रण देखो पवस्त्रण 'मनिमनिए सुरू** धवत्तर्गं (श्रवि ४)। "द्यवह देखे प्रवह (कुमा) । व्यवेस रेंग्रो प्रयेस (रेम्र)। प्यवसि देखो पर्यसि (बनि १७५)। त्यसर देवो वसर = म + स : दर त्यमरेत (रंध) । प्यसर बेची पसर = प्रसर । प्यस्त देशो पस्तव = (बाइ-माप्ति १७) ३ प्यसाय रेपो पसाय = प्रवाद (रंगा) । °व्यमुख देवो यमुख (रंग्र) । प्यमृद् (शी) देखी पश्च = प्रमृत (प्रमि ैप्पहर देखो पहर=श्रहार (मै२ ४ कि २६७ ए)। प्यहा देपी पहा (दुमा) । प्पद्याम रेकी पद्याग (रंमा) । <sup>1</sup> प्पद्वाय हेती. यहाय = प्रमान 'पहाउ' (1(III)) प्यहार हैगी पहार (रेंमा)। प्यदाय रेपो पदाय (ममि ११६)। व्यनु देशी पहु (रंमा) । ैपार्रम रेंगी पार्रम (रंग्रा) । प्पित्र देती पित्र = तिप (यनि ११c मा tc) 1 विकारियो (युमा) । (देवन बेसी इस (बाह २६) । ध्यम रेथी पम (रि ४ ४)। च्यन्य देशी प्रम्य (कृषा) । व्यान रेता पोड (रेमा)। प्लेम रेवा पंस = स्वर्ते (बाब ७४३) दा 844 444) 1 न्या बेली क्या (न्स १११) ह प्यक्षा देवी प्रका (रूपा) । त्त्रम रेती पत्र ((१२ ) । रवाज दर ( राग्य छन् ] । पानान बरसा ।

२ पद्धाना । स्थानज (रिन) ।



प्रस्तान | प्रस्तान | प्रसाद करा | क्या करा

RRY) I

परि की की (क्या) जागुणी की [फस्गुली] क्वाय-संग्रेप (ज २ व)। जह मक [फस्ट्र] फस्मा हुम्मा। ज्वाद (क्रीम)। फक्ष का एक्स्प्राणीमी (बुग ११व)। क्रेस, फर्टिय (बुग ११व)। फक्ष की फस्म्राणीमी (बुग ११व)। क्रम्स की फ्रम्माणीमी (बुग ११व)। क्रम्स की प्राप्त ११व)। जाव व विचे प्राप्त का वर्ष ग्राप्त (व ६.

फड देन [के फट] बोप को छना (के फ

फकारी [के] केवी फकारी (ग्राप्त प्र)।

फडाबी फिटा वीप की फन वर्ष-क्या

(बाग्र १ स्ट वस्त १२ १८ राधा सीप)।

क वि वित् ] क्लब्बा (हेप ११४)

६३ क्रम ४७२)।

फब्रिम नि [स्फटियं] बोता हुया 'तो नीने सबरेहि नरेहि फडिया महति सा मता" (बुना ₹₹₹) | फडिल ) देवो फलिह = स्पृटिक (गाट---फडिंग रेपना वहे) "फडिंग्याहासनिया" (निष् ७)। फडिक देशो फडान्छ (बंद)। फडिय प् [परिप] १ धर्मना मायल (से १३ ३८)। २ दुवार (वे ४ १४)। फब्बिड़ा देखों फब्बिड़ा=परिका (के १२ 9X) I कृति सर्वे की श्यंत्र **45** माप, निस्ता पुत्रचरी में 'छाडिश' फेंड्रग कम्मियकर्मिस्सा पुत्नी बन्धा य फर्बहरा प्रमुपबुगा व (शिव २४३)। २ संपूर्ण क्य के महिहाता के करावर्ती करा का एक सबुधर दिस्था सबुधाय ना एक श्रीत क्षेत्र विभाग जो धंपूर्छ समुदान कं धम्यन के भवीत हो। 'पञ्चानन्ति हुम्मादुस्मि फुहुफोड्ड' (भीप बहर)। १ द्वार साविका छोटा बित्र विवर । ४ प्रविद्यान का निर्मेन-स्वानः फिहाय मसंबोजां फिहाय साणुसामी (विसे ७३वा ७३६)। १ समुरास शाल पन्नइयना फ्यूमेर्डि एंडि' (स्टबन झाडु १)। ९ सबुदाय-विशेष वर्वणा-समुदाय; निकृत्यक्य-ष्ण्युपमेर्व धविमापक्रक्ता एति (क्रमप २० भारतीय १ २० ४<sub>०</sub>१८३ १८४ सीवस ७६): व श्रीवद्दश्च वर्ते 'वास्त सन् कर दुपाई तुं (पंच १, १७६) (७१)। वद्भ वृं ["पति] वछ के सवान्तर विकास

का नामक (स्ट्र t) । फण पुंकिण] कर, संप की करता (ते ६ इ.इ. वामा वा २४ । सुपा १। प्रान्तु इ.१) । पणा पुं [वे पत्नक] कंगा, केठ सर्वाले का साक्त्या (स्त १९ ३ )। फामञ्जुष पूं [के] बनस्पति-विशेष 'तुवसी करह-धोराने फ्लारबुए धक्रए व मूपलाएँ

(बल्ल १--एव १४) । भागस व [पनम] स्टब्र ना वेड्ड (पर्ल ११ है १ ९३६ प्राप्त) । फना सी [फणा] पन (सूर २, २६६)।

फिणि पूँ [फिणिम्] १ सौप सर्वनाव (उप ३१७ टी: पाच-सुपा ३१६ महा कुमा)। र को कना या एक प्रकासकारकी संज्ञा (चिंग) । ६ प्रतहरा-पिनल का कर्ता पिनला-बार्यं (पिय) । "चिम पू ["चिह्न] भवनाम् पारचँनाच (क्रमा)। पष्ट पुर्विसा है नायरुपार देवीं का एक स्थामी करलेन्द्र (दी १) : २ रोप माग (वर्मीव १७) । सुक्ष 🙎 [राम] १ रोप माग (भूग २७२) । २ पियम-कर्या (पिय)। श्रक्षा की जिला नायकता चक्की-किरोप (कप्पू)। सह पू ["पवि] १ श्या-विरोध बच्छोन्ड (गुपा ११)। २ नाग-राज (बोह २१)। ३ पियलकार (चिंग)। सेहर र् ["रोक्सर] प्राक्त पियन का क्टा (पिय) । फिलिंद पूँ [फिपीन्द्र] १ माय-राज रीप माय (बासु ११६) । २ पिक्बकार (१४४) । फणिष्ठ सक [कोरय्] कोरी करना। फरिएबर (मरना १४९)। फणिइ पुंदि फणिइ] इना केश धन ओ का ब्यक्ट्य (सूम १ ४ १ ११)। फणीसर इं [फणीआर] देखों फणि-बाह (निष्)। फणुञ्चय देशो फणगञ्जूय (राम)। फद्म 🕻 [सभै] शर्मा, दिसें (हुमा) । फद्राक्षी [स्पर्ध] क्रार केली (केल १६४ कुमा १ १०) । फरि वि [स्वर्वित् ] स्वर्धी करनेवाला (श्रष्ट ₹\$) 1 फर ) ई विकस, को १ काष्ठ सावि फरम । का तथा। १ बान । (वे १ ७६१६, वर, कन्द्र सुर २ ११)। देखो फल, पडसम् । फरञ पुन [व १फरक] यज्ञ-विशेष 'फरएहिं भाषान्य तेवि ह विद्यापि बीवर्ष (वर्याव × ) į

पर्रिक्ष्य वि [वं] प्रस्का हुया दिवा हुया कम्पित (क्यू)। परस रेको फरिस = लग्ने (रंभा भाट) । करम् १ [परम्] १वाट १व्हाइट करना (मणि नि२ ४)। सम् पू ["सम] काङ्ग्य विटेन समर्थान ऋषि ना पुत्र (मछ १४३)। १४ वाव वात च्या मा पुहिता पर्

परहर वह [फरफराय्] फरफर धावाब करना । वक्क- फरइर्स्स (भवि) । फर्रत देवो फसिट् = स्ट्रीफ (इर)। फरिस सक [स्पूरा्] छूना। धरिसर (यङ) फरिसइ (प्राष्ट्र २७)। क्रमें फ्रीर सिन्द (कुमा) । क्वकु- फरिसिकांत (वर्मीव ११६) । फरिस ) ट्रेन [स्परी, ह] स्पर्ध धूना फरिसग । (सावा परह १ १ मा १९२) आयं पाधः कमः) 'त य क्रीयः तलुक्तीसं (पण्डा २ ४४)। फरिसण न [स्पर्शन] इन्त्रिक-विशेष स्वकि-निय (कुप २२४)। फरिसिय विस्पष्ट] चुमा इत्या (दूप १३) फरिहा देखो फलिहा = परिवा (सामा १ ₹₹) ( (सुबर १४ ७ २१)।

फरुस वि [परुप] १ कक्ट कडिन (अवा वाष्ट है १ २६२, प्राप्त)। २ न कुनवन, निष्टुर बाल्य अस थानि किभी कस्त्री बरेका' १९ वि पस्य की कुम्बकाद फरुसग े हुनहाद होहाँद हुनाछ भोग्यसमी-वण्डस्तवरते (शह ४)। सास्त्र की ["शास्त्र]

क्रीमकार-पृष्ठ (इत ३)। फर्क्सिया की [परुपता, पारुत्य] कनेरता निप्ट्रला (धाषा) ।

फल यह [फल्] छनमा, बनानिव होना। क्लाइ (पा १७) पश्ची फ्लीव (विदि १२८२)। वड. कर्तत (से ७ ११)। फंड पुँव [फंड] १ बुजावि का रास्य (बाबा

कल द्वार हारा भी १)। २ साम 'पुण्यत है सुमिकार्स प्रसि किमिह मह फरो होर्ड (का ६८६ टी) । ३ कार्य हिन्द्रभमा वधी होति (तंत्रव १३ वर्ष १) । ४ वटानिट-इत कर्म का श्रुम या चतुन कल--परिछाम (सम ७२, १४ ४ १११)। ४ छहेरव। ६ प्रयोजना ७ विक्ताः व वास्त्रका ह बासुकाशक दागा ११ प्रता ११ दाना १२ ग्रुष्कः वाएडकोषः। १६ वस्तः। १४ क्योग कवा-सम्पनियोग (है १ ९६)।

भुेताइफ्लेर्स (भाषा १ २३१)। र्मत विवि [यत् ] पृत्रवादा (लाया १ ४३ वंचा ४ ) । वश्विय वश्विय व विद्विक १ नगर-विशेष फतोबि-नामक मक्देरहेव नगर । २ वहाँ का एक वैश गन्दिर (वी ४२)। फलम ) पुन [फलक] १ नाह कार्यका फक्रम | एक्टॉ (याची ना ६१६ तेब्र २८ दर १ १११ सीप)। २ चूए का एक करकरस्य (चीर वस्त ३२) । ३ दश्त "बरिएड्रि फ्रम्पर्दि (विना १ है) द्वाना सार्व (१) । ४ देशों पन्न (शाचा)। "सद्धा 🛍 ["शप्यां] रह का उच्छा विश्वपर सोमा जाम (भव)।

फक्कम न [फक्कन] धमना (तुरा ६) । फस्स } पून [फस्स क] फनक, कार प्रसद्भा । धारि का क्का: 'बरसंकर मिल्लू-पविचाद पीढें का फलहरों का खिल्डेस्ति का प्युहर्समा ग्राह्यह क्रतिय पुरक्षेण्या (भाषा २ १ ६ १) 'गूनिलेण्या क्टाइ सेम्बा (**धी**प) 'मरफनह' (वे १ = पि २ ६)- 'पेस्बर मन्दियाई फ्रमहदूगमाहिक-पालनवन्त्रातः 'सङ् फ्याहंतरेख वर्णिवय पुरुक्तरवेश्वर (स्रीव)

पिकृततास्यमयम् तुस्तिकरतिक्क्ष्यसम्बद्धेवायं । र्धप्रमिक्तकाणीर्व वीहित्वं द्वविवृषरकरिन्त्री (95 43 78)

फक्कद्विया) और फिक्कद्विमा फरवही । नाठ फर्म्सी । बाबि का सब्ता 'सुरिए बल्बनिय प्रवाहित्रं परेक्नाप्रवर्षं 'स्त्व पहाराफ्नाही विद्वर' (वी. ११), नामावदेए क्वे छिन्ने भावित्यु विश्वकाहीए (दुर १ १११)। फब्बी भी [वे] १ वर्गाव राज्य (३६

दश का १६२० ११**१**) । य क्याब की नवाः 'परकृतिमनेटमाधेयुन्याद स्वर्थाः व काहीय (मा ३६ )।

फसान एक [फ्रायम्] व्यवस्थ स्थाना सकत करनाः 'ठतोति स करकारमा निसय-रमेरां फार्चितं (एत ११) ।

पत्थाबद नि [फकाबद्द] क्यावर, यत को बाप्स करनेनावा (पत्रम १४ ४४)।

पत्रमसम् 🖠 [पत्रमसम्] भच-विशेष (पर्रह ₹**७**) i फिछ युं[के] १ मिय विका २ कृपक, भेत (दे ६, ०६)। पाक्रिश वि [फक्रिय] १ विकतित श्रुविधी प्रमियं च बनियमुक्तियं (पाय) । २ कन बुक्त जिलको छन इसा हो वह (शाधा ₹ ₹₹) i प्रक्षिश्र न [है] बादन, बादन धोजन वाहि शा बाटा बाता छत्रहार (ठर १ १---पथ १४७)। फब्रिभारी को [दे] दुर्ग पुरु तुश (दे 1 (82 8 पाखिजी **की** [काबिजी] विषंशु-कृष (**दे** १ १२ ९ ४६ पाप प्रयाम १६६)। पारिका प्रे [परिच] १ धर्मना, बापना

'भगवना ऋषिक्षे' (पाका धीन) 'द्वसिक-

कमिहा (घप २ १---पद १३४) । २

सक्त-विशेष मोहै का पुत्रर यहि यक्त । ३

मृह् वर । ४ काष-वट । १ श्वीतिप-शा<del>व-</del>

फिछ् प्रशिक्षी १ मण्डिकोच स्वारिक

मिछ (भी ३३ 🛊 १ 🛊 ३ क्यू) । २ एक

विमानाबासः देव-विमान-विशेष (स्वेध्द १६६) इक)। १ राजप्रस्त पृषिषी ना एक स्पर्धटक-

मय क्रमहड (छ १)। ४ गल्बमारन पर्वत

काएक पूट (इक)। ५ कूएकन पर्वत का

प्रनिद्धा एक जोग (हे १ २३२) प्राप्त)।

एक कुट । ६ वर्गक पर्नंत का एक शिकार (राष) । "गिरि दू ["गिरि] कैमास पनेत (पाप)। पश्चिष्क पुनिन्धियों स्वयंक काठ सारिका तका धवेतिको कविद्या (पाम) भाग्री-वनरसम्बन्धः क्विनाक्षमञ्जूष्टिकार्थः (भाप )। म्बंबर पुन [स्करिक] बाकरतः (५५ २ फिक्सिक कि ] कपाक्ष का टेंटा, टेंट बा

क्षि (बस्तु १३ थे)। पःश्रिष्म पु [फविष्सफ] कृष-वितेप (वे ४ १२)। फब्रियाओं [परिका] बाह्य किये वानवर

कुमा)।

के नाधे बोर की तहर (बीस है १ १३**२** 

फिडिड बेब्रो परिष्ठि (ब्राष्ट्र १६) । प्रक्रिही वैद्यो प्रस्क्रही = है (बलू ३४ ही) । फक्री और [फिक्री] काठ मादि भी बौदी रक्को 'रुक्तो चंदलक्सोड बस्डियहरिय विकिन्न क्यूनि (तुता १८६)। पञ्जीयव } वि [फिस्रोपम] पत्र-प्राप्त, पत्र-फक्क वि [फक्रम] सूते का बक्क, सूती क्यम

फर्कोषा र तिहुँ (दा ३ र पथ—११३)। (TE t) 1 फर्क्योह एक [स्रम्] क्येंट बाय भारत कला, बुबच्छी में 'श्रवबु । प्रमीक्षये (gg १)। फम्ब (क्ट प्रवस्त <del>प</del>ृ य य)। पासल वि [दे] १ प्राप, विस्तवया फार्च धवनं सारं किमीरं वितनं च भौतिनं (पादा दे६ ८७ । १ स्वासक (१६ ८४)। फसकाणिक १ वि 📳 इत-विमूप, क्सि फसक्कित्र । विमूर्वा की हो वह श्राह्मारिक (१ ६ ८३)। फमिनासि दुरुमण्यर्थ (च ३१ ।) फल्लाइक विक्रियों प्रकारिया वर्गा फाइ की [रम्प्रति] वृद्धि (मीव ४७)।

फाईक्य वि (स्फीरीकृत) १ फेबाय ह्या । २ प्रशिक्त किया हुमा बाइडेडिय पर्शीर्य ऋदैनवनएखम**रछो**ई' (पिछे २१ ७) । फागुज वेको फागुज (१९ ६२) । फाड पद [फाटय् स्फाटय्] काइमा । क्षतेत्र (हे १ ११ : २११) । बहुः प्रार्थत (क्रुमा) । फाडिय वि [फाटित । फाटित] विशक्ति

काणिय के [काणित] र क्षा नारिकी पुत्री भएकार्षि (निष् ४)। २ द्वर का विकार-विदेश मात्र पुत्र शली है प्राप्तित

द्वयं (बीपा कस पित्र २३१, ६२१) स्व ४)। ६ स्थल (पद्यु १७—-पत्र ४३)। पन्नय विक्तिकी १ इसः १ विलीर्ण । १ क्याय (शिवे २४ ७)।

पन्नर वि [स्टार] १ नक्षर, **गृ**क्त **फारफ**न भारमध्यरमञ्जासम्बद्धाः महाबद्धाः (वर्गीन ५६)। ए विराज्य विदुवा ६ विस्तूत केता हुमा (मुर २ २३६३ काम १७ मुना १६४३ दुम २१)।

पत्राच्य वि [वे स्प्यास्त] स्वरस्त्रव की बारण करनेशावा, 'तं नार्वतं बदह कारनवा नतुःस्वरणयो हुनका' (वर्वति ==)।

पद्मरुसिय म [पारुव्य] पस्तवः कठेरकाः क्रमेरवा 'दाबीहर्य स्थाइनीव' (सामा) ।

स्त्रस्थ केही "एवएड ।

प्राप्त केवो पाड । प्रवेष (हे १ १६०) १६२) । करक प्राप्तिज्ञेष, प्राप्तिज्ञमाण (मा १६६ सम्मय १७४)। वेक. पालेकण (मा ४०६) ।

फाड तुंग [फाड] १ सोक्स कुछ एक प्रकार की लोहे को बानी जीन (करां) २ कस के ही बाती एक प्रकार की करां रोधा उत्पन्तिय (सुता १८६)। ३ क्सोब, नांच थीति व्य विश्वनकर्ता (कुत १२)।

फाइन न [पाटन रफाटन] निवास "कोडी किन सहेदि सीस्पृहको सं सारिसं कावर्ड" (रंग्ड कन १२१)।

प्राचन देवो प्रश्नसम् ।

फास्य की [फास्प] क्याज़ गाँठ (क्रुप्र २७२ दुवक १२)।

प्राविक्र वि [पाटियं स्पादित] विवाधिः (हुमा पर्धाः १--पत्रः पत्रम वर वशः सीप)।

कास्तिम न [क्षे प्रतिकृत कैश-निशेष में होता | बन्न-विशेष "भामवास्ति का बम्बादित वा कार्यकारित का कम्बादित का (साका २, ४, १ ७)।

प्रातिज ] ई [श्याटिक] १ सम्मवित प्रातिम |- (मण्) । ९ वि श्यटिक-सम्म स प्राटिक ) (पि ११६ वप १८६ मुगा वट)।

कृतिसहर पुं[पारिसङ्ग] १ फराइव का पेड़ा २ वेदराय का पेड़ा ३ जिस्स का पेड़ (१ २१२)।

ष्टास सक [सूक्ष सम्प्रेयू] र सम्मे करता कृता २ ताकन करता। फासा, प्रतेष (हे ४ रेट२ प्रयो) कमें फासिक्स (कृता)। वक प्रत्यंत, फास्त्यंत (वेष्य १ वर्ष स्वामाण (चक-में)। वेक्ष प्रस्तव्या, प्रामाण (चक-में)। वेक्ष प्रसक्ता, प्रामिष्ठा (वर्ष २६, १ युक्ष २६, १

फास देन [स्पर्के] १ स्पर्ध, सूना (भग प्राप् १०४) । २ शहर्षकरोच ज्योतिष्य देव-विरोध (हार १---पण ७०)। १ दुःशा-विरोध ्र १ म्यू १ म्यू १ म्यू १ म्यू १ म्यू २ २२)। ४ धम्ब दावि विषय (उत्त ४ ११)। ए स्पर्ध प्रक्रिय स्थला (वर्ग)। ६ रोग। ७ ध्रमुखा द तुन्न, सर्गार्ट। ३ द्वार ५७. आसूदा १ वस्तु, प्यनः ११ धनः १२ भी से सेक्ट भारत के समर। १व वि स्टर्श करनेवाचा (क्षेत्र ६६)। कीव पूँ जितिव विशेषका एक नेव (निष्कृष्ठ)। जाम नाम न नामन् क्रमें-विशेष कर्मरा बादि स्टर्ट का कारणमूर्ट कर्त (एम तम ६७) : भीत वि मित् स्पर्धनाता (ठा १, १ वन) । ीमय वि [मय] स्पर्ध-मय रार्छ हे निष् च फासा नयापी कोक्काओं (छ १ )।

फासर वि [स्परीक] शरी करनेवाला (सम्बर्ध ४)।

प्रसण व [स्पर्धन] १ स्पर्शनीक्या (बा १९)। २ स्पर्धनियतः तथा (पत ६७)। प्रसासमा । वह [स्पर्धना] १ स्पर्धनीक्या १ वह ९ ६ ६ १ १ १३६। जीवस १ वह)। २ प्राप्ति (पत)।

पत्रसिम वि [स्तार] १ कुमा हुमा (त्य ४१ विके २७०२) । २ प्राप्तः "त्विम् काले विक्रिया पत्री वे पत्रसियं सर्व मस्ति" (तव ४)।

फासिक वि [स्पर्झिक] स्वर्धे करनेवाता (विधे १ १)।

पासिक नि [स्परिति ] १ सर्वे पुष्क, स्प्रें । २ प्राप्त (पन ४--पामा २१२) । पासिविय न [स्पर्नेन्द्रिय ] लमिन्द्रिय (मा

आसादय व स्थितान्त्रया जागान्त्रय (भग स्रामा १ कि स्थिता की स्थेलन और

फासु ) वि [प्राप्तु, क] यनेतन और फासुज रहित निर्जीय स्वीतत स्ट्यू (अय-फासुग वेका १ ६ सीमा स्वाम स्वास १ १, पत्रम ८२ १)।

फिक्स वक [फिन्+क] प्रेट—पिशान का निकाला 'चाइ फिनकरीट पेया' (मुपा ४१९)।

फिलिक पूंची [है] हमें खुती (हे ६ ०६)। फिल्ल म [हे स्थित्यु ] मितम्म भूतर, बांचा का तपरि मान (गुंच ८, १६)।

फिट्ट यक [ अंस् ] १ तीचे विज्ञा । र दूरना योजना । ६ व्यक्त होना । ४ ज्यान्त करना व्यवमा । किट्ट (है ४ १०० माइ ०६। ना १०११ मेस्स १००) चिह्नहें (क्व २ १), किट्टीम (चिर १२१) । योद किट्टिब्रेस, किट्टिब्रिस (हुस १९६८) स्थ

फिक् कि [भ्रष्ट] किन्छ 'गासिप्छ तक्क किस न फिट्टा' (पा १९ गरि)।

फिट्टू की [कि] र मार्थ एरता; 'ता फिट्टूब्र्य मिलियं कुट्टूब्यलरिक्सि एर्थ (सिरि २८०)। २ प्रस्तुस-निरोध मार्थ में किया बाता प्रस्तान (प्रकार)। सिंग्य पुन [सिन्न] नार्थ में सिन्नी पर प्रस्तान करते एक को मसनिवासी सिन्नवासात (सुना १०८)।

फिड केरे फिट्ट (के ४ १००)। फिडिय कि [ब्राप्ट स्थिटिव] रे ब्रास्तास

एक बन्न एवं [क्रांट एक्टिटेट] है इस सनाम गर, श्रुष (बोन का हैहें हैदन है प्र १४° ६४) । इस्तिवान्त स्त्तिव्ह (बीलम्ह १७४ बीए) ।

फिक्कु नि [के] बाबन (के क ४४)।

फिट्य वि [वे] इतिय वनावटी (दे ६, ८३)।

फिफिस म [ब] पण्य-पांत रिवत मोक-विशेषः केवम् (पूर्यात ७२, प्याह ११)। चित्र सक [तम्] किरम, बसमा। बहुः, चित्रसं (वर्धीन ०१)।

कुरकुर सक [पोस्कुराम्] कुन कीवना मरनपाना सङ्क्षाना। कुरकुरेन्य (महानि १)। बक्त कुरफुर्यत, कुरकुरेत (बुर १४ २६१ स ६६१ २११)।

पुरिक्ष वि [स्कृरित] १ कम्पित, दिशा तुमा फरका हुमा चितत (वे ६, वक्ष सुर ६, ९२६। या १९७) ।

कुरिका कि [बे] निर्मित (बे वे चर्थ)। कुरसुर वेबो कुरकुर। सङ्ग कुरसुर्तन, कुरु-

कुर्तेत (क्एड १ १ मिंब १६) सुर ७ २३१३ छामा १ ०---पत्र १६३)।

पुरत देशो कुड = स्तुट् । फुतड (नाट) । फुने (बल) (निव)।

कुछ (प्रत) देवी कुद्र = स्कुर । कुमा (पिन) । कुछ (प्रत) देवी कुड = स्कुट (पिन) ।

कुछ (पप) वेती कुछ = इस (सर) । कुछित्र वेती कुछित = स्कृति (वे २,३ )।

पुरस्का (मप) देशो पुरुष्कित्र (पिय)। पुरस्का दुं [स्टुबिक्क] सपित-कस (णागा १

केंद्र सब [ किस्ते ] क्ष्ममा केंग्निक होना विकास [ किस्ते ] क्ष्ममा केंग्निक होना

केसिहिंद्व (ग्राट ८)। बक्तम ६२ ) तैस्तुत्र (ई.५.५४)। मृत् बक्तमा । तैस्तर तैस्तर तैस्तर (द्रमा तैन्ते सके ियेस्कों प्रमा तैन्तर्वेत्र होसा

द्धक के को सन स्थान पुत्रवा (बातवा १४५)। दुद्ध व (दुद्ध) दे द्वस दुष्पा (बुगा वर्गीय दृष्पा दुष्पाच १४१। रहति १)। दुष्पा हुष्पा दुष्पाच (क्या प्राधा १ रे—पत्र १० दुष्पा)। माधिया की [माशिका] कुल वेकोनाली मामाद्या की माशिका (दुर १ ७४)। विक्रि की [कि] दुष्प-सवल सङा (प्राचा १ १)।

पुर्श्वय दे [पुद्धन्यय युष्यन्वय] सन्द, मेरच (बर १०६ टी)।

पुर्द्धपुत्र दूं [क्] मनद, बींस (के, ६, ८१८ पाया दुवा)।

पुरुषा न [पुरुष्ठक] पूरा वी बाहतिवाला नवार ना बायूपण (बीध)।

कुष्टम न [मुद्धन] विकास (वरमा १४९) । मुख्या थी [मुद्धा पुष्पा] नही-विशेष पुष्पाद्वा समुद्राद सोमा का साथ; वेदकुक्तम-

कोनविमा (१ मी)नती व तह ग्रंडवेंदीया' (पत्तह १--पत्र ११)।

पुश्चवह न [वे] पुण-निरोप महिरा-नामक पुन (पुत्र ४६३) । पुन्नविष वे नि [पुन्नवित] पुनामा हुमा

कुद्धायिय । (सम्पत्त १४ विक २३)। फुद्धिज वि [फुद्धित] वृश्चित विश्रवित (शेंव १२ स ६ ३) सम्पत्त १४ २२०)।

फुक्तिम पुंची [फुक्तना] विकास कूननाः 'सम्बद्ध सा फलकासे फुक्तिमसनग्

भन्मा का फवफाश पुरात्तमसमय् विकासिमा बयरी । इस कवितं च पत्तासो कठी

> पतिष्कृं किवियो व्य (सुर ३ ४४)।

कुक्ति नि [कुद्धित] कुननेनामा प्रदेश 'विवस्ते वस्त्रवस्त्रकृष्टिराकुन्नेहि' (सम्पत्त रहा)।

पुरत तक [भाम] भाषता करता। पूराइ (हे ४ १६१)।

संक्र कुसिकण (महा)।

कुस वक [रह्म ] वस्त्र करना कुना।
कुना (क्या मैना वन २ ६) कुनीत (पिन २ २६) मुर्वेत (पिन)। मण्ड कुनीत
कुनीत कुनीत प्रतिक्र प्रतिक्र प्रतिक्र कुनीत प्रतिक्र कुनीत क

दुसंभा की [स्पर्धना] उत्तर केती (विशे ४९२ गव ६९)। क्रमिल केते क्या - १०००

पुत्रिज देवो पुत्त ≈ शहर्। पुत्रिज वि [स्पृष्ठ] कुमा हुमा (बीक्स

१९६)। पुनिका वि प्रिप्ट] योधा हुमा (च्य व १४२) मुका ९११ हुम २९१)। पुनिका पुनिक्ति है विन्तु, कुन, हुस (धामा क्यो)। २ विन्तु-वात (सम्र ६)।

फुसिम वि [श्रमित] हुममा हुया (हुया ७ ४)। फुसिमा वी [वे] बझी विशेष चसविदुनी-

त्तकृषियां (परायः १---पत्र ३३) । कुस्स वेबी कुस ≃ स्प्रयः । फूल ई [प्रे] धोदकार, तोहार (दे ६ ८४) ।

कूम देवी पुत्र । वक् कूमीत (राज) । कूमित वि [कूसकर] कुका हुमा (का द्र १४१) ।

कुछ वेची पुरुष्ठ = पूजा प्रमञ्ज्ञसाईहित्रहा मूसवरापारित वीमाणि (भी १६)। पेक्सर पुंचिरकार्] १ स्थान की घानान (मुर ६ १ ४)। २ घानान चिलाइट (क्यू)।

फेकारिय न फिरकारित] अनर देखों (स ६७)। फेक्क क्षक [स्फेटस्] १ क्लिस करता।

फंडण व [स्फेडन] १ विनासः । २ अपनयन (पन १९१)।

(भारवर)। फेडणपाकी [श्फेटना] अपर देखी (पिट १८७)।

फेडाबणिय न [व] निवाद-समय की एक पीत बच्च की प्रथम बार नवा-परिदार के बच्च विमा जाता क्ष्यार (स == ) !

फेडिक वि [स्फेटिय] १ नट किमा हुमा विनारिका (पडम वेद २२)। २ स्थानिक (सिर्पि १२१)। ३ सपनीय (प्रोपमा ४२)। ४ ज्वस्टित (य ७८)।

केम ई किस फेन] केट प्राव, वस माम वाजी वाजि के जार का बुब्बाकार तवार्क (वाच्य छावा १ १--वन वर कन्न)। माजिया वर्षे [माजिना] मधी-विधेय (जा २, व वक्)।

पामबंब } दे [द] बस्य (दे ६ वर)। फेमबंब है पामब् फेनाय, क्रिया

फलाय सक [ कमायू फेलासू ] केल---फेल का बमन करता, माग निकासना। वह फेलावसाण (प्रयो ७४)।

£20 फिरकार्यन विकासी साथी सार होने-बाली बाली पाडी 'सम्बन्धः वनि वसहा संबर्ध करबंठि स्वसम्परियेपि । श्रष्टवि विभि-प्रवित्ता फिरस्कक्तावि कामंति विधा **888)** 1 फिरिय कि शित्ती पदा हवा भोजनामानी परिसा का के कि प्रमायको विक्रीपता । वं नुस्यद् धासली सुनेशिव ह एस संबद्धों (बर्नीव १६६) । फिरिड केरे फिरिय (से v % )। फिस्सूस सङ दि। विश्वनतः विश्वनता विरता । वह विराधिवसुभिवने पिक्सुस-सामा व बानवामीमा (सर २०११)। रेका केळलस**ा** फीक्ष देखों फाय (सम २ ७ १)। प्रिणिका धी दि एक काल की बीठाई, काराती में 'फेली'। (सम्पत्त १७)। प्टेंग की कि फ्रिंक, यह से बना निकालना (मोड ६७)। प्रशाद वे फिक्कारी प्रकार दक्षित वर्ष धारि भी घारान (गुर २ २३७)। प्रेंग हो हि देश-सन्द (दे ६ वप्र) । पंत्र रेवी पंत्र = सन्द । प्रेयद कि १६ ४७)। **ट्**टिमा । की [दें) करीमानिव जनवस्ते प्रेपुत्रमा नाम्म्या (नाम वे ६ वर ठेव प्रेपुत्रमा ४२, बीप २३ वृद्ध १ नाम १ 38) 1 तुंगमा को कि । र वधैपानित, धारवा रूप्यत

निहर्ष निहार पुरुष मा चिरोनो (जा **७२ डी) । २ क्यपर-गी, बुग्र करण**ट की भाग (मुख t =) ।

प्रीपृत्व । यक हिंदी र बन्पारण करणा । प्रेरीत है दशरों द प्रमार (हर १४४)। पुरेश कर [सूत्र प्र+करहा] वॉधवा: नाक वरना । कुविर (बाह्न १३) । पुरेगम देगी कामम (इन ४ ६४) ।

पुच्च मन [मृत् + क] १ प्रतारश क्री कुमाराज कासाः ५ वट बुँड लेडाः रिकालका कुषिका जुलाइ (शिक्ष) । बहु मुद्री (मा १४६) पुर्वकार्तन (स) (है ¥ 488) 1

प्रक्रमां की दिहें ए विष्या (देव थरे)। २ ক'ক (খন १३)। अव्यार वे कित्यारी कुलबाद, व्हें वें की धाकान (क्य १०३ घवा) १ प्रक्रिय मि फिल्क्टरों कुरुवाच ह्या (बान ×) 1 प्रश्नी की विशेषकारी, भोवित (वे वे, बार) । कुमा और वि रिक्य ी स्पेर का प्रवस्थ विशेष कटि-शेष (संध्यति ७३) ।

पाइअसइसइ फार्चा

प्रमालुका वि दि विभीताँ रीमवासा वरावर प्रतंबत--विकरे एवं वेतासामा शस्त श्वनगर्धी प्राथपायाची (क्या) । प्रदायक हिन्द अर्था रिवसमा छ्ट । श्रीमणा। रेप्रयट होग्य। ३ कुटमा

फटमा टटमा। ४ गर होना। फटह, फटर्स, प्रदेश पुरुष (सीमा १९ आक ६६ हे ४ १७७) २३१) जवा अवि निया का २२ )। अपि प्रदिश्वद बोहिल्यं महिनावणुरहिमार्गत ना (वर्गीव १६) पुन्निविद्य (पि १२६)। वक्ष फ़हेब फ़ुडमाण (परा १ १) पर १ ४) सर ४ १६१: बारव १ १--१व १६) ।

अरह नि न्युटिय आही १ क्रम हमा हम इमा विदीर्ख (का ७१८ टी समास १४६) ect e i tyti tti tt ) i t भ्रष्ट, परित्य (कुमा) । ३ जिल्ह्य प्रदेशका हर्मीत (खाना १ १६) विना १ १)।

9कुण व किन्नुत्रमी १ क्रटना इटना(क्रूप ४(७)। १ वि कुटनेराचा निष्ठार्छ होनेवाना ( Y Y ? Y ? ) 1 पुरिज रि [शुद्धित] विचरित, 'पूर्वुचनेहो'

(ब्बाक ६४)। पुर्विर वि निरुद्धियुँ भागेशमा (शख) ।

पुद्ध देशो पुद्ध = स्पट्ट (शि १११) । पुढ देशो पुरू ≕स्पूर् अश्य । कुल्द (है ४ १७०: १६१: माइ. ६६)- 'कुर्रीत सर्लंब र्षभोषो (जर ७२ टी)। यह पुरस्माण (पुर १ १४१) ।

गुन्त देनी पुटु = राग (पर्रत १६१ हा ७---यत्र १०३३ थीरम २ ३ भग) । पुष्ट विश्वासी स्वयु स्थल मता विका

(गाम है ४ १४= जना) ।

पञ्चल व स्टिटनी ट्रांस, धरिएक धीना (पराक्ष १ १---पत्र २१)। अबा भी रिक्टा विविधायनाम्य स्वोरकेट की एक पटरानी, इन्ह्रासी-विशेष ( हां ४ 2 KW) 1 कता को पिटा शिप की कर, 'स्तरना-

इन दिवासीका कार्यात स्टब्स्ट के स्टब्स्ट कार्या स्टब्स्ट (mm) i पश्चित्र मि किस्टित है। मिनसित, बिसा हमा (पास पा ३६)। २ इस्य १५% निर्देशी (स. १०१) । ३ विकास (नरह रे 3-98 Y ) 1 कुबिज (बप) रेको फुरिश (गरि) । अविका की स्मिदिना केरा केर-

प्रमुखी (बपा १३ )। अनु देखों अह । अनुद (पद् ) । पुरुष कि कि स्प्राप्त दिया हुआ (पक ११० दी। काम १, ६१ दी) । प्रशस्त्रस न हि । बहलती सन-विरेध केंग्रहा (संप्रति ७३) पदम २६ १४)। कुम सक शिम शिम शिमक करका हुनी

(हे ४ १६१) । प्रयो, कुमानद (कुमा) । कुम वक (दे पून् + क) वृंध मारम, प्रीत से बना नरवा। प्रमेम्प (क्स ४ १ ) ! बह्न- फ़र्मात (बह्न ४ १ ) । प्रची, कुमावेश्व

(48 Y 2 )1 5 र थक स्टिट्र देश करका, क्षित्र । २ चड्डाना । ३ विकस्ता प्रीवता। ४ वकारिया होना प्रकार होना "दुर्ह्हा" नीवाद वास्त्रणं शायन्त्रं (ये १६ ४६ वित्र) । वक्त, पुर्दन पुरसाम (मा १६१

शुर १ १२१। बहुत विव से व १४। १४ २६) । चंद्र पुरित्ता (ठा ७) । क्ष संक [अप+ऋ] काइएस क्रम

धीनना र प्रयोद् क्रुयारिति (शव १) । पुर है शिर्दी शक्तिक हुत्क्ववाच्छ

वदिन-- (पत्र १ १--पत्र ४१)। पुर (बन) वेपो पुत्र = स्पूट (निन) । पुरण न [मुरण] र करनमा इच लिन

रंगर करात 'त पुण ब्यंच्या कृष्णे म्य रीर्म धारिया तेला' (नूर १३ ११०) । १ स्ट्री (कुश ६३ वक्षा ६४) सम्बद्ध (६१) ।

व

स र्वु [ब] मोह-स्वलीम स्मम्बन वर्छ-विशेष (प्राप्)। बजर (शी) न [बदर] १ फन-विशेष बेर। २ क्यास का बीज (प्राच वहे) ह बहुट (प्रप) वि [तपविध] वैठा हुमा हि ४ ४४४३ मंदि)। बाल दे दि | केन करन पुक्त (दे ६ ६१) मा २३० प्राक्त ३० १ १७४३ वर्नीव का शाकक २१० टी सु ११३ प्राप्तु ५३; हुप्र २७१ ती १४ के ६ कप्पू)। बद्दस (बप) चक [ डप + विश ] बैठना पुनराती में बिस्तु"। बहतद (अपि)। बद्दस्यम (धाः) न [वपबेरानक] भासन (वी ७)। **बद्धार** (बन) धक [डप÷वेराय्] बैठाना । बहसायह (मनि) । बहुत्स रेको बहुत्स (पि १)। वर्डस (पर) रेपो बहुस । वर्स्स (प्रति) । बईस (मर) न [प्रपवश] बैठ बैठन बैठना 'वीर्षि गोटुवा कराविमा बुढए उट्ट-वर्षेत' ( X X 54) 1 बडजी की [बे] कार्यांडी कर्यांड-बस्सी (R R Xw) 1 बहरू दूं [बद्रुक्त] १ बुझ-विदेश जीलसरी का पेड़ (सम १ % २ पामा खासा १ ६) । १ बरुस का पूजा (वे १ १६)। "सिरी की [की] र बहुत का पेड़ । २ बहुत का बुघ्य (या १२) । **ब**डस दे बिश्वरा र धनार्य देश-विश्वेत । र पुंची, जम देश का किलाडी (पराह दे १--पत्र १४)। भी सी(णापा १ १---वन १७)। १ वि शवत विज्ञानता। ४ मनित परित्रामा शरीर के बरकरण और विभूषा बादि से बैयम की मलिन करनेवासा (टा व पा क्ष्म, का मुक्क व है) सी शाह छे छ। मुनारिया भग्ना छछ छाउसा नाया वानि शेल्पी (छापा १ १६) । ४ दुन. मतिन संबम रिप्रियन कारिक-विशेष (गुन्द 5 () 1

चरहारी की वि बुहारी संमार्जनी फानू (8 & EP) 1 बंग वूं [बक्ष] १ अववान् भाविताय के एक पून कर गाम (धी १४)। २ के<del>छ कि</del>हीप बंपास केरा (उप ७६% ही १४) । १ वंग स्य का राजा (पित्र)। देगळ (६५) पूँ विक्र हो सेग देश का शामा (पिंब) ≀ बंगान दे विद्वार विशेष केंग्र विगासकेंग बन्धो हेरो पुह समुख्यस्य दिन्स 🐔 (बुपा 1 (00# वंक वेको वंक (पि २६६)। वंकि पुँ [ वे ] देको संदि = वन्तिन् (यह्)। यंद्र म [ वे ] वैशे कारा-वद्भ समुख्य अवेपि किंपि (स ४२१) 'बंदाई विन्हद क्यांचि क्ष्मेश विश्वेति वंदाई 'बंदार्ग मोनावग्रकप्' (बर्मेचि ६२)- 'एकस्वचंदराग्योह्यपहियकीर्यक-कवश्यक्तस्यां (वर्गनि १२)। गळा प्र िंगह्यो कैयी क्य से पश्चनकार 'परबोहबट्ट-वाञ्यवंदरमञ्<del>वासका</del>रायपुरुष्ट्र (कुप्र१६६)। दश्यम (वें ] कैटी (नंशीटिया वेनविकी बुद्धि में १३ वां क्यानक)। वंदिकी [वन्दि] देखी वंदी हि १ १४६। 2, (44) 1 वृद्धिः १<u>५ विन्तुम् ] स्तुति-पाठक,</u> नेमब **विद्य** देशहरू भागमा व्यवस्तामध्यापह बारखनेघासिया बेरी' (पाया क्षर २८ ही थर्नेषि ६ ) 'चहामसन्दर्गस्याधासमुग्युद्ध बामाण्ड (स १७६)। वंदिर व दि ] सनुत्र-वाशिश्य-प्रधान नगर, र्थवर (शिरि ४३३)। वंदी भी [यम्दी] १ इठ-इत भी वंदी (दे र मध' यउड १ १, स४६)। २ क्रीद विमा ह्या पशुष्य (वड४ ४२६ था १६६) । थंरीक्य वि [यन्दीकृत] वैव क्या हवा बांच कर प्रानीत (वडव) १ वंद्रत की [पन्द्रत] धलनधार, वन्त्र निजनेदि बंदुरायो, मुधेदि तुरए' (ब ७२४)। ।

बंध सक [बाध्] १ वांत्रना नियन्त्रस करता। २ क्यों का चीव-प्रदेशों के शाय संयोग करना । श्रेषद्र (मन्द्र, महा' क्या हे १८७)। भूत गणिमु (पि ११६)। क्रमें बंधिनमञ्जू बनमञ्जू (हे ४ २४७) ग्रीव व्यविद्विष्ठ, वर्णिमहिष् (हे ४ २४७)। वह बंधंस धंधमाग (कम्म २ व पर्णः २२) । शह यंबद्ता वंधिडे, बॅबिकज, बंधिकणं वंधिचा वधिच्र (मग पि प्रश्न प्रवर प्रवर)। इस विमेर्ड (है र १८१)। इत् वंशियकत्र (पंच १ १)। क्षत्रपुर, क्षत्रमोत, यत्रमानाण (सुपा ११४) कम्म १ ३५ धीम)। वंदा दू [ दे ] मूल्य, नीकर (दे ६ ac)। र्वध दुं [बन्ध] १ कर्म-पुरुषकों का बीर प्रदेशों के दाय क्ष-पानी की तरह निकास शीव-कर्म-संगोग (माबा: कम्म १ १६) ६२)। २ वश्वन नियमणा सैयमन(भा १ आसू १२१)। ३ छन्द-विदेश (रिंग)। सामि वि ["स्वामिम् ] क्रां-वन्त्र करते बाबर (कम्ब ६ ११२४) । बंघह की [बन्बकी] दुरवती मतवी की (नार-मानवी १ ६)।

र्वयस्य वि [यन्त्रक] १ वांबनेकासः। २ कर्मनम्ब करनेवासा शासा-प्रदेश के साब कर्म-प्रकार का संगीय करनेवासा (येव ४, अध्यक्षिक के कि कि अपने प्रीक्ष के प्राथम के कि कि कि अपने कि कस्प ६ ६)। र्थभण न [बग्भम] १ बॉबरो का-संशोध का धावन जिस्त बांधा जाम बहु रिनाय-वारि पुरा (मय ८ १०००म १९४)। २ वी वॉवा जाम नहु। ३ कर्मे कर्म-दूर्मना। अ वर्ग-वन्य वा वारण (सूम t t t १)। १ सेंदमन नियनक्छ (प्रापू १)। ६ नियनशाका सामन रुखू गादि (इत)। ७ कर्म-विशेष निध नर्मे के उत्तम से पूर्व वृहीत कर्न-पूर्वजों के बाद वृद्यमाल वर्म पुरुषों का बापस में सम्बन्ध हो बहु करी (कम्प १ १४८३१ ११८३६)।

फेल्फस) न वि भगे फिल्फिस फेफ्स । फुफ्स (चन इंद ३६) । मेत्रण न नि ने देला, डूमाना द्व क्याकेरह संकारपर्धि (सर २ व) । फेळ सक किया | १ कॅन्सा । २ दूर करना । केनवि (सी) (नार) । चेष्ठ केखिथ (गर) । फेसा की वि मुक्त-मांक्त, बुरून भीवन धे बचा-मूचा वश्चिका 'तस्त व बावर'पाय देशी बाबी व विम्म मुक्तिम । निषं क्षिपंति फेर्न वीर सो विवद पुरस्का । 'ब्रागंबकुबबासी सम्मी जरासीह पावियरमें हैं। र्थ कामरोसरा पदा दे फेनफारसंकार्थ । (क्मीन १४१)। फेक्समा 📽 [वे] मानुसानी जामी (वे ६ 5X) 1 पेद्र**क्ष प्रे कि** शिक्ष शिक्ष सिर्म (के ९८ ०४)। फेरलास एक हि दिक्कामा विस्थाना विश्वकार विरत्ता । केन्द्रवह (वे ६ व६) । **चंक्र** फेक्स्सिकण (दे ६ वदः च १६६) : पेक्क्युसपान वि १ फिपलन पक्ताः २ रिक्थित बनीत वह बयह बड़ी पाँच फिपश पहे(देद १)। पेठब्रसम्ब देवी फेक्स्स्टरम् (श्व ४ दी) । फेस इंकिटी १ काल कर। २ क्षक्राप (के 4 44)1 फोश मुंदि शहा (दे ६, व६)। फोक्रमय हि (के) **१ ५७**३ । व विस्तारित (\$ 4 EW) 1

फ्रीफा की कि वराने की सावाब समीराज्य राष्ट्र (दे ६ व६)। को कसक स्थितेटय देशका विशयन करना। र राई साकि से शाक साकि की बबारमा । फोडेम (बुश ६७) । नक्र- फोडीम फोबेमाण (एपा २ १ ४१६६ औप)। फोड प्रेंस्किटी १ फोड़ा वर्ख-निरोप (ठा १०---पत्र इ.२ )। २ वर्ल-विशेष शब्द-नेद (एन)। ६ वि धश्रकः वहारहेशे (बोबमा १६१)। फोड म (शी) र् [स्फोट हाँ उसर देवो (बन्ह હજા) 1 फोडन म [क्कोटन] १ विद्याच्या (पव ६ टी परक)। २ राई बाबि से शान पादि की बबारमा (शिंड २६ )। ३ राई साहि संस्कारक पदार्थ (रिंड २६४)। ४ रि फोक्नेक्सा विवादम करनेकासः कावर वरणिक्यप्रोहर्स (खाया १ व) धार्म नमञ्ज्ञप्रद्वपश्चिमयन्त्रशुक्तवर्थं पीर्वं (श्व 3=1)1 फोडन केबी फोडज़ (पटम ६३ १६)। प्रेडाव एक [स्फोट्य र फोक्सला। वीक्षाना। २ जुनवाना। संक्र फोकाविकज (B 84 ) i फोकाबिय वि श्रिफोटिया १ ग्रेक्शाय हुम्म । २ कुलवामा हुमाः "बोद्यविना संपूर्वा" (# Y4 ) I फोबि को [स्फोटि] विश्वच्छ नेका आशे फोडील शक्तर कार्म (परि)। कारा व िकर्मम् । १ जनीन सादि का विद्यालय करते वाकाम इस शादिके मुक्ति-वारका कृत वहाय मादि कोरने का बाम ३ २ कक्क काम **कर धामोनिका चलाना (पत्रि) ध** 

प्रोडिश पि [स्फोटित] १ **प्रे**श ग्या विवासित (बार्का १ ७) स ४७२)। २ राई कादि से बनाय हमा (नव १) । को बिक्रमय विकिक्तोदित की परि बवारा हवा शाकारि (दे ६, ८८)। फोडिश्यम हिं छठ के समय वंकार्य विद्यावि से एका का एक प्रकार (दे ६ ० )। माहिया की रिफोटिका केटा फेस (क 1 (f5 n F# फोड़ी की [स्पोटी स्पीटी] 🖬 फोड़ि (क्या पत्र ६) पति) । फाण्डस न हि । शरीर का धनमन सिरोप 'कानिकवयर्थतरितंत्ररक्षियमकोप्यतकेकारि-विक्रोगर— (वंद्र ६६) । फोफक न 📵 पन्ध-क्षम विकेश, एक प्रकार की धीववि "महरविरेडलमेनो काफ्नो फीफ्बाइस्लेक्नि' (मत ४२) । फोफस **रेको** फोफ्सस (क्या १ र— पद ५)। फोरव न [स्फोरन] निफ्टर प्रनर्तक 'विश्वद्यांन बन्तेषि 🛊 शिक्सतिन्त्रेयकेथ फ्बसिडी (स्वर **७४)** । फोरविश वि [स्टोरित ] निरुत्तर ऋष विना ह्या चिहित निन्नित्वचंती कोस्नीना (बम्पच १२७ हम्मीर १४)। फोस केवो पुस्त≈ सहयू; 'त# कोसंवि बर्ग (बीमध १६६)। फास हु [बे] ब्यूबन (दे ६ व६)। फोस 🛊 [ वे पोस] स्तान-के 🗗

फोरतमा की [स्पर्धना" स्पर्धनीका (*बीवप* 

(dg 2 ) 1

tte) i

इस विरिपाद्गमसङ्ग्रदे पः भारतस्वद्गम्बाखोः
 ब्युग्तीसद्गी शर्रमे सम्ती ॥

व र् [व] घोष्ठ-स्थानीय व्यव्यन वर्श-विशेष (प्राप्त)। चक्रर (शी) म [बदर] १ पन-विशेष बेर। २ कपास का बीज (प्राक्त वह)। बब्दु (धप) वि [उपबिध] वैठा हुम्य (हे ४ ४४४ मी)। बहुत वृद्धि केंद्र करण कुरव (दे %, दर्श सा २६का प्राप्त १का है रु. १७४ मनीव । बारक २१० टी यु ११३ मानू १६ कुत २७१ ती ११। व ६। कप्यू)। बहस (घर) धरु डिप + विश्व ] बैठनाः प्रवर्णी में 'बेसपू"। बहसह (परि)। बङ्खण्य (घर) न [उपवेदानक] कासन (दी ७) १ बहसार (धन) सरु [धन + बेराय] बैठाता । बदसारद् (मनि) । श्रान्तसः देशो वङ्गस्स (पि १ )। बद्द्य (दर्प) देगी बद्द्य । वर्श्वद (पनि) । बईस (मर) न [डपबरा] बैठ, बैठन बैठना 'तोर्दि पाटुडा करादिसा मुद्रए ज्हु-वर्देश' (\$ X X5\$) 1 बन्नजी की [बें] कार्पांची कर्पांच-वाली ( \$ 7 20) 1 शहस्त प्रकृति । इत्र-विरोध भीलस्यी का पेड़ (सम १६६) पाचा खावा १ ६)। रबद्रस का दूबर (वे १ १६)। शिंसी स्मे ["मी] रेबर्क्स का पेड़ार बहुका का पुष्प (भा १२)। बाइम्स पू बिक्टरा १ बागार्थ देश-विधेत । २ पूँची जम देश का निवासी (पनाह है १--पन १४)। स्मै सी(खापा १ १--पत्र १७)। ६ वि श्वतः वित्रव्यक्षः। ४ यनित वरित्राता । स्रीर के अस्करन और तिभूषा मादि में सेंबम को मसिन करनेवासा (बरेश ६३ दुव ६१) छो, श्रह

ए सा भूमारिया धरवा स्रहेरब्रह्मा वाया

म्यारिशाची (एरमा १ १६) । ४ दुन,

1 (1 )

धनहारी भी [वें] दुहारी धैमानेंगी धारू (84 64)1 र्बरा पुं [शक्त] १ भगवान् झाविताव के एक वृत्र का नाम (ती १४)। र देश-विशेष श्रेयामा देश (उप ७६% ती १४) । १ श्रीय दशका राजा (पिय)। दंगछ (घर) पूँ [बङ्ग] बंग देश का राजा (पिम)। थेतास पू [बङ्गास) बंबन्य देश 'बंगामदेश बदशो देगो तुद्द ससुरमस्य दिन्ता हूँ (सूदा १७७)। बंग्र देशो वंग्र (पि २६१)। शंकि पूं [ ये ] देशो चंत्रि ≈ बन्दिन् (पर्)। संद म [ दे ] कैसी कारा-वड बगुव्या 'संबंधि किपि (स ४२१) 'बेवाई विक्इ क्यांबि स्रवेश फिर्हेरि बंदाई 'बंदार्ग मोपावशक्र् (धर्मेनि १२) 'एक्टनबंदन व्यक्तिपत्रियकीरीह कव्यास्त्रमध्य (वर्मीव १२)। शाह् पू ['मह] वैश्री क्य से अक्रवना: 'परबोहस्ट वाम्छर्वरायहं बताबराया प्राप्तुहाई (कुप्र१६६)। अक्ष्म न दि | कैकी (नदीटिम्स वनियासी बुधि में १६ वां कवानक)। वंदि को [बन्दि] देवो बंदी (हे १ १४२ 2 (01) गंदि १५ [ वन्दिम् ] स्ट्राप्त-पाठक शंयत-विदिण } पाठक शामधा नगरताक्रयमाधक बारशोधानिया बेरी' (बारा पर ७२८ ही) धर्मीत १ ) 'उद्गमसन्दर्गरिए/वंत्रसमुग्द्रुट् भागान् (स १७६)। वैदिर म [ब्रं] सपुत्र-माशिज्य प्रवान नदर, बंबर (शिर ४३३)। वंदी की [बन्दी] १ इड-इस की बन्दी (दे र मध्ये राजक १ ६, ६४६)। ए श्रेट क्रिया हुवा मनुष्य (पत्रह ४२१ वा ११व) । वैशेक्ष वि [यर्शक्ट्य] पैद रिया ह्या बांब कर वागीत (पडर) । मरिन सैयम शिपित कारिक किशेप (तुन ) र्वदुरा को [बग्हुरा] यरप-शाता, नका निन्देहि बंदुरायो, मुसेहि नुस्र (ब ७११) ।

बंध सक [यन्स्] १ वीमना निमन्त्रस करता। २ कमों का बीच-प्रदेशों के साम संयोग करना । बंबइ (शक महा स्वा ह १००)। जुला व्यक्ति (शि ११६)। कर्मे, बंधिरमञ्ज, बरमञ्ज (१४ २४७) धवि विविद्धि विष्मिष्टि हि ४ २४७)। बह्न बंधीत बंघमाण (कम्म २, ४ पर्ण २२) । संकृ संबद्धा, संबिद, संबिकण, वैचिक्रणं वैभिक्ता मंधिकु (मण) पि ११३ १०१ १०२)। इक वंदेर (इ १ १८१)। इ. अधियस्य (पंत्रः १)। क्यप्र वास्त्रेत वास्त्रमाण (सुपा १६६ कम्म १ १४३ ग्रीप) । र्वध दुंदि विश्वय गीकर (देश, बद)। बंध हुं [धन्ध] १ कर्म-पूर्यमाँ का भीव प्रदेशों के शाब दूध-पानी की तरह निसना <del>श्रीव-कर्म-बंगोप (प्राचा। क्रम्म १ १४।</del> ६२) । २ बन्दन, नियन्त्रसः संयम् (या १ । प्राम् ११.३) । ३ छन्द-विरोध (सिय) । शामि वि ["स्यामिम् ] कर्म-वन्त्र करने शासा (क्रम्प १ १ २४) । र्थमई की [माध्ये] पुरवती मनती की (नाट-मानची १ ६) । र्वधरा वि [बन्धक] १ श्रांपनेताता। २ कर्म-बन्ध करनेवासा, धारम प्रदेश के मान कर्म-पुरुपति का संयोग करनेशाचा (पेच ६, ८४३ मायक १०६ १ ७ वेचा १६ ४ क्रम ६ ६)। श्रंथण व विश्वमं १ श्रीवरे मा---श्रंत्मेफ **या श्रापन** विसने बांबा जाय बहु स्मिन्ध-सावि पुरा (यम = १---ग्र ११४)। २ को बॉबा जाय बद्धा ६ वर्ग कर्न-पूर्णणः। ४ कर्म-जन्म ना नारता (नूस १.१ १)। इ.सीबयम नियम्बल (ब्रामु ६)। ६ नियम्बर्ण कर सामन राज्य साचि (बार) । कर्म-विदेश जिल्ल कर्म के प्रश्न के पूर्व गृहीत कर्मे-पुरुवर्ती के साथ मुद्रागाए कर्म पुरुर्वी का बाराय में बस्काय हो बह बर्म (क्या १ २४ व्हा १६१ १६१ १७) ।

बंधनायास्ये विश्वतीयम्बन (स्य)। बंबणी सी बिन्यनी नियानिकेय (पावम w 272) i

लेक्स देशो संस्ता (विवि ४२)। र्वाचन पंचित्रस्यो १ माई, प्राता। २ विक प्रयास कोस्त । ६ मानेकार संबंधी

क्टील ( ४ माता । १ पिता । ६ माता-पिता का सम्बन्धी यामा जावा साथि (हे है, है ब्राज्य ७६ एत १ १४) ।

संचाप (चरो) सन्न [ पन्यम ] वैदाना बैंबबाता । बंबापवर्ति (पि ७) ।

बंदाविक वि विभिन्न विद्यासा है सार्थ है 1 (858 श्रीक्षक्र देवो बद्ध (सम १ २, १ १≈

क्योंकि एको । द्यंत्र दृष्टिन्द्री १ मार्थः भाषाः। २ माराः। ३ दिला। ४ मित्र दोस्ता। इ. स्थानन मारोबार, मरीत (ब्रमा: मद्या प्राप्त १ वः सुमा १६ : २४१) । ६ क्य-विरोग (पित) । क्रीय व िकीयी इस-विशेष, इनहरिया का देव (स्वप्त ६२) कुमा) । जीवग प्रै िकीयकी यही सर्वे (शाया ११ कम्प क्ता)। वचर्य विची १ एक मेही का काम (सदा)। २ एक कैन मुलिका नाम (चन)। सर्वे बर्वे की [मिती] १ भवतान मस्वितान श्री द्वस्य साम्बी का नाम पद राग्न ११३)। २ (खांच १ स्वलास-क्याद वर्द-विशेष (महा चन)। ासरी और सिरी सीराम पना की नजी (विपार ६)।

बंबर दि विन्त्रर १ सुन्दर रूथ (शम) । २ मन्द्र समन्त्र (शब्ब २ ६) ।

बोमरिय नि [बन्सुरित] १ स्थितक (वश्र व व) । २ नधीन्तः, नमा ब्रमा (वज्र ११६) । र पुरुष्टित शुक्रदेशकः। ४ विवृद्धित (422 233):

बंधुस र् [बर्गुस्त्र] वेरया-पूत्र सक्ती-पूत्र (9 = 3 ) I

र्थम्य दं [बन्सूक] इत-विदेश बुक्तिया का 4 (d 388) ;

र्यमोद्य पं वि ने रेसर क्षेत्र संबंधि वि t at qr) i

र्थाय वे सिक्सन है र काला विकास (का e be Bid C beimun b)to meeter शान्तिनाच वा कासनाविधायक वज्र (सीर्थ u) । व सन्वाय का स्वविकासक देव (तर द १---पत्रपश्यो। प्र पांचर्वे देवलीय का प्रता (ठा २ ६ — पत्र ८१)। १ वास्त्रवे नक्तवर्ती का रिता (बग १६२) । ६ तितीव नलरेव धीर भागरेव का दिना (सम १४.९) हा १---पत्र ४४७)। 💌 ज्योतिय-राख प्रसिद्ध एक कोय (पडम १७ १)। च शकारण निप्र (क्रम ३१)। १ चक्रमधी चना का एक देन-इत्त प्रासाय (जस १३ १६)। र जिल कानवर्षे प्रधर्ते (सर्व ५१)। ११ आस्पर-निरोप (पिन) : १२ ईक्कान्सच प्रविक्री (सम २२)। १६ एक चैन समिका नास (क्प्प) १ १४ प्रेन एक विमानावान रेक-विमान-विद्याप (वेबेन्द्र १६१: १६४) सम ११)। १६ मीका चपवर्ग (पूच २, ६ २ ) । १६ साराचर्त (सम १०० सोचमा २)। १७ स्थ्य कन्छन (त्त्व २, १, १)। १ व निविचन एक (शाचा १ ६ १ २)। १६ बोनगाम-गरिक बराम हार (क्रमा) । कंत न िकान्त] एक देश-दियान (श्रम १६)। क्रम प्रं क्रिन् १ महाविषेत् वर्ष ना एक वक्तरकार पर्वत (बे ४)। २ ग. एक क-विमान (सम ११) । वरन न िवरम ब्रह्मभर्ग (ब्रुप्त १६१)। चारि वि िचारिन् । स्थापर्यं पात्रव करनेवासा (खानार १ छना। २ प्रै धनकान् पास्तै शाम का एक बराबर-प्रमुख मुनि (का ---वन ४२१)। बद, बेर न [बर्स] १ भ<del>ेषुन-विरोध (साचा पराह २, ४) है २</del>

थ¥ कुसा, सक्त स ११३ का छ ३४३)। २ विमेश-सासन जिल-प्रथमन (सुध २०१, रे)। <sup>व्</sup>वस्टन थ [क्लास] एक वेल-विवास (सम ११)। बृक्त वृष्टिका सारतन्त्र में क्ष्मत वासूना नक्नती रागा (अ °८ ४४

थम १६२। वन) । बीज पू विशेष शीव विशेष (एव) । शीविया की [दीपिस] वैव-प्रति क्या में। एक शाक्षा (क्रम) । "प्राप्त

म ियसी एक देश-विभाव (बंग १६) । शह व भिति । एक एका विवीप नाग देव का पिता (पत्रम १ १४२)। सारि वैद्यो जाति (जाता ) र सप रक्षा कथ लुपारकश्चित्रकाराज्ये। की जी (सावा १ १४)। रुप्त पं विद्यपि स्वतान-प्रसिद्ध एक बाह्यान नारव का चिता (पत्रम देश ६२)। होस व (क्षेत्रयी एक देशनियात (सम १६)। लोज स्त्रेग व विद्वेडी एक स्कारी जीवानी वेद्यालीका (प्रातः प्रातः सार १३) । कोतवस्मित्र व िमोद्यपनीसङी एक देव-विकास (सम्र १७) । सः की वि ियतः विद्यानर्वेतस्या (बाना) । बहिसय प्रशिवतसङ्गी सिज-रिका ईक्कारकप वृज्जिति (कास २२)। बच्चान विर्णी the Bulleton (mar te) ; all n िंदरी स्वयंत्र (लाख t t) । वि वि चित्री बद्धाका बातकार (साम्प)। क्यम देशों संग (सं १६) प्राप्त १६६)। "स्ति व "आस्ति । सम्बन्ध महासीर का शामक पद (यस ११) ही १६) । सिंग व िन्द्रक्ती एक केर-विचान (सम १६)। ैसिट न िस्तही एक देव-दिमान (बम १६)। सन्त न मित्री क्रपीत सको-प्लीत (मोक्र का सक्त र १६) । दिस प्रक्रियों एक विमानावास देव-विमान-विरोप (क्षेत्र १३४) | विच न शिक्ते] एक रेन-विपाल (बस ११)। रेको बीमाय धन्छ । वंगेंड व जिल्लाएको बन्दा, संसार (पटाः क्रम क्षा देश १ १ १ १११)।

प्रश्रेष क्षाप्त के प्रश् मध्य)। **चॅमजिला की लिखाजिस**ी करेतीस बन्द्र-विशेष (पुण्ठ ११७) ।

वैमय 🛊 (ब्राह्मय) ब्रह्मस निप्न (ब.२६

र्वभणिका । की विशासिक] कीर र्वभणी । विरुद्ध (के देश हैं । पास के क

445 WZ) 1 } की ज़िस्सम्य ज्ञासाय्य "को र्थमण्यय 🧦 र वक्तल का मैल । रे ब्रह्मक

र्धनानी । १ व ब्राज्ञातनसम्बर्ग 🗸 ब्राज्यस्य

भा<u>त्र सं</u>प्रकेश्य वश्यः (सूग १ १२ ८)।

२ बेंचा हुम्स (प्रति १३) ।

वर्मः बंग्रएएकन्त्रेषु सन्त्रो' (सम्पत्त १४ । कृष्य भीग पि २४ )। वसदीविंग दि [ब्रह्मद्वीपिक] ब्रह्मदीपिक-राता में उत्पन्न (स्वि ११)। संमद्द्राविता से जिसद्वीविका एक वैन-मुनि-राक्षा (एवि ११)। संभक्तिका न विद्यालीयो एक वैश मुनिकुल (क्य) । बंसहर न [दे] कमल पप (दे ६ ११)। र्थमाण देवो वंश (पस्प १, १२२)। "गच्छ में शिरकों एक कैन-मूनि मच्च (सी २८)। व्यक्ति । श्री ज़िल्ली दे भगवान आपमदेव र्थभी है ही एँड पूरी (क्या परन ६, १२ ठा ६, २) सम ६ )। २ किपि-किरोप (सम ३४: भग) । ३ कश-विरोध (सुवा १२४) । ४ धरमती देनी (सिरि ७६४) । धंमुखर वृं [ब्रह्मोचर] एक विमानाधास देश-विमान-विरोध (देवेन्द्र १६४) । शहिसक न ["यर्तसक] एक देव विमान (सम १६)। वंदि दे विद्यु मनुर, भीर (क्सर २६) । वृद्धिण (धप) कार वेश्वी (पि ४ ६)। सक देवी सय (वर्ष्ट १ १--वन म)। बच्चर म [बे धर्कर] परिकास (वे ६, ८१) बुप्र १६७ वर्ष्यु) । बद्धस ॥ [दे] धन-विशेष बद्धस्य मुक्तापा .दिनपिरानित्यप्रवर्मी (गुज व १२) एस **=** 19)1 न्या देशो दय (दे २, १) कुत्र ६१)। -सगदादि पू [बगदादि] देश-विशेष बगताय देशः वयदाविधिसमासुद्वादिकस्य क्लीपमा-मधेमन्तुं (हम्मीर १४)। यगी भी [परी] बपुली, बपुषे शी भाषा (बिरा १ के मोह के)। बगाह पू वि देश-विशेष (ती १६) । मामः वि [बाहा] बाहर का बहिरक्ष (पर्वह रे रे प्राप्त रंघर)। को ब्राहिस ] बाप्त के बहिरंग हैं। गाँद के युक्तीमु बकारते? (माना)। नामः न [बाध] बत्वन, बाबने वा बाहुछ मारि सावन 'महत्तं पहेळ बन्दी, धाँ नरमन्स वा वर्ष (शूच १ १ ५ ८)।

यम्भवः वस्ममाणः | देशो वन्छः = बन्प् । वठर प्रं [वठर] मूर्ण पान (प्रुप्त १६)। बड़ (घप) वि दि वहा महाम् (पिय) । वेची वहा शहबह श्रष्ठ [यि+सप्] विकास करणा, वहबद्दामा । बदबद्द (पह् ) । वक्किक्स की दि देश के मूच में की जाती कील कीलक-किरोप (सट्टि ११६)। वक्रिस देशो विलिस (दे१ २२)। ो पूँ [धटुक] लक्ष्म क्रोच्या (उप वक्षा १ ७१३ मुस २ ०)। बहुबास दि] देवाँ बहुबास (दे कः ४०)। वर्तीस बिचस } (धप) देसो वत्तीस (दिव) । वत्तीस कीन [ द्वाजिसम् ] १ संस्या-वियेष वतीस १२। २ जिनवी संस्था वर्तीस हो वे 'बलीर्थ भीवसंगहा पद्मला' (सम इ.७ द्मीप उन नियो। की सा(सम १७)। वस्तीसङ्ग भी ऊपर देखो (सम १७)। सञ्चय न ["यद्भक्र] १ वतीन प्रकार रचनायों से बुक्त । २ वक्तीम वाजी से निवळ (नाटक) ·वर्तीसहरूक्षपृष्टि गावपृष्टि (सामा १ १--- | पक्र क्टा निपारः १ दी---पत्र ६ ४)। ैवि≰ पि ["विभ∫ बतीस प्रकार का (सप वशासक्त वि [द्वात्रिशचम] १ वसीसर्वा ६२ मी (पत्रम ६५ ६७: पएए) ६२) । २ म. वनस्य विनों वा सवत्तार उपबास (खाया 2 1)1 वत्तीसा देवो वत्तीस । मसीक्षिया भी (द्वात्रिशिका) १ वसीय पद्यों का निवन्य--धन्य (सम्पत्त १४४)। २ एक प्रकार का बाद (बाखू)। बद्ध वि विद्य है वैवा हुया, नियन्तितः बद्धं बेरालियं निमन्ति वं (शब)। र

चेच्छित्र चेपुका (तम नाम)। ३ निवड

र्यंत्रत (बारम)। ८४-७, फल र्डू ["फल]

१ करान का थेर (ई. १ ६०)। रहीत !

कत-पूक्त, कप-र्शयन्त (सामा १ 🛡---पत्र 1 (253 बद्धगर् पुं [बद्धक] तूछ-बाच विशेष (यम Y() I बद्धय 🖫 [दे] कान का एक माभूपछ (4 4 = 4) 1 चक्रेसम } वेको दद्ध (प्रणुप्त महा) । चक्रेष्टम क्षप्प पूर्वि दे दे र सुमद्र, सीखा (दे ६ वय)। २ बाग पिठा दि६ थय दस ७ १४ शादवर छप ६२० धी सुर रे २२१३ कुप्र ४ शः वासः समि निग)। यव्यक्तद्वि र्ष [बय्पमद्वि] एक गुनिस्यात सैन धावार्ये (विवार २१६ ती ७)। क्रपीह व ि वे विपीहा क्रान्ड पत्नी (वे ६ ६ स.६८१ पास है ४ ६८१)। वर्ष्युक्ट वि [ व् ] बेबाराः बीतः सनुक्रमानीय प्रमराको में 'बापड्ड" (हे ४ १ वध: पिन) । बच्छ पून [बायर] १ माफ, स्टमाः बच्होः (इ.२७ पड्) अपर्ट (प्राइ.२३ विसे १४१४) । २ नेत्र-अस ममुः अप्यं नही यनवराजसी (पाप) 'बय्क्यरमाउसबोमसाहि (ब १६१: स्वय्त यह) । बाय्पाइस वि वि वाय्पाइसी विकास वच्छ (दे ६ ६२)। वस्वर पूर्व [यर्थर] १ मनावै देश-विशेष (बज्ज ६व ६४) । २ वि. वर्गर देश का निवासी (पर्याप्त १ एडमा ६६, ४४)। कुछान ['कुछ] वर्धर देश का किन्द्राश (Rife YN ) I सब्बरी ध्ये [बे] केश-रचना (र ६ १ )। बब्बरी की [बर्यरी] बर्बर देश की श्री (श्राया १ १ मीग १४)। बस्युख पूं [बस्यूस] पुत्र-विधेत बहुत का पेड़ (बा वश्व दी पहा) । बदम पुंदि वार वर्ग वर्ग की राज् वामी क्यें (दे ६ वद)- वजी बडी =

(? बामो बड़ो)' (बाध) ।

का मध्या भागकार (क्स)।

थण्भागम वि [बद्वागम] बहुन्पन शासी

विस्मायान त [बाझस्यायन] योश-विशेष

यमाल पृदि ] प्रबंधन कोबाह्य (१६

बस्द् पू [ब्रह्मम्] १ पत्रोतिष्ठ वैत्र-विशेष

(ठा२ ६—पन ७०) । २ देखों वीस (ह

२ ७४। द्वार या वर्षा सन्द्र १३ वना

२६: सम्पत्त ७७ हेर ४६, २ ६३ व

१६)। वरिम केनो बीम-चर (१२ ६३)

१ ७)। सरु देतिरु क्लाक का मेक्

(कुमा) । भ्रमणी हो [धमनी] ऋलाही

(इक्)।

۱( ځ

(सन्द्र =४)।

चक्त्रावनीति (हे ४ ४१६)। वस्र मक [ बज् ] १ थीना। २ सक् आता।

बबाद (है ४ २३६)। **थळ** धक पि**र**्थि बहुत करना । बलह (पक्)। देखो सम्र⇒ प्रहः

बळ पूँ बिस्ते १ वसदेन इसवर, वामुदेन का बंका काही (परुम २ ८४-पाम) । २ इन्ट क्तिय (पिप)। १ एक क्रांत्रय परिशासक (बीप)। ४ न सम्बर्धे पराक्रम (बी ४२) स्वय्य ४२३ प्राप्त ६३)। १ रहरीरिक पराक्रक 'क्डवीरियार्ग क्यो नेयो' (यन्क १६)। ६ शिष्य सेन्य (उत्तर ६ ४ कूमा) । ७ खाय विकेपा 'पासकार्क बमेर्डि बोब्स क्या सामेरि' (सुझ १ १७)। = ब्राप्टम तप निगतार वीन दिनों का करवास (संबीच ६८) । १ पर्वेत विशेष का एक कूट--शिकर (ठा १) । °चिद्रावि [चिद्रम् ] १ वस का नक्तकः। र न वक्षर विच (शे. २,११) । ज्या देखी म (राज) । दिव पू दिवा हमी बायुरेर का कहा लाई, राम (सम ७१ और)। इस वि 👣 क्या को जाननेवाला (घाषा)। सद् प्रै "सन् दि भएक तेत्र का भाकी सारावा वामुकेन (सम ११४)। २ राजा भक्त का एक प्रशीन (पटन १०३)। ३ एक विमानावास वैनविमान-विशेष (देवेना १९९)। रेवी इर । माणु द्र मिल्

**ध्ये [ैंशवनी**] विश्वा-विशेष (पदम ७

१४२)। "मिचार्" ["मिजा इस माम का

एक रावा (विचार ४१४३ कला)। वृति

🙎 ("पवि") क्षेत्रपरित, क्षेत्राच्यक (बहा)।

ैर्यत "वगकेको व (स्त्रायाद दंशीय;

धावा १ ५)। यस न विरुव विश्वहत

(भीपना ६) । बाडय नि ["डबापुरा] शैन्य

वें जनावा द्वारा (धीप)। इ.स. व. वि.स. हो

१ क्यारेय । २ अक्त्य विशेष (विष्) । देखी

२१७ (स्प्न ७१)। बस्नकारिक (शौ) वि [बस्मल्झरित] विद पर बलल्कार किया यथा ही बहु (माट---माबती १२१) ( बस्बद् दूं दि] बसप मैस (बुग १४%) नाट--मन्ब १)। क्छमङ्का की [दे] बनात्कार, जबरहती (वे 1 (83 ) थसमोडि देवी बद्धामोडि 'वरिक्सार्डे कर मोडिचुरिए सम्पत्तेस प्रवतिरे (पा ६१७)। वतमोडिश की बसमोडिश 'रेरेन वस-मोडिप्र तेल समयीन कारिक्ये बहिमां (स tea) t बस्य वृ कि स्वय वेश (परम स १३)। क्क्रवा रेको बस्रावा (हे १ ६७)। **क्का**चड्डिकी (दे) १६और। २ व्यासान को सहन करनेवाची थी (दे ६ ८१)। बळ्ड्टुवा की [के] प्ले की चेटी (कारा 1 (Y\$\$ बळा थ. की [ बळात् ] वदरस्ती स्वास्कार (से १ ७० भोषमा २ )ः 'बबाए' (इस १ ६१ दी) : क्का की [बद्धा] १ सनुष्य की क्या करोमों में जीवी प्रवत्वा टीए से चालीस वर्ष दक की शवरका (तंदु १६) । २ शहि-विदेश यौत की एक इष्टि। र प्रवदाद दुन्तुन्त्रव की रावा स्थापन का भाक्तिय (काष)। शहका रासक्की, भन्ता (एव)। वसम्बद्धाः वस्त्रया (पराह १ १--पन व) । बस्रज्य र हि। १ क्यान शांदि में म्यूज विन् रे बनपाल, बव्हिह (विशे ७३)। को बैठने के लिए बनावा जाता स्वाच- बैंव थापि (वर्षीक ३३) सिरि ५०१)। १ छाउ १ मनूत शैन्यसम्बर्धा (धीम) । १ र्च अक्षोपम बरमानाः 'पनिष्ठंतो केन सत्तालबन्नि हुस्ता भ मध्यमी भूक्ष्यी (पुण्य १ १३) : "बह गिधी हिचा कि चि′ (भेइन १ व)। वस्तर्भाव को वि वस्त्रमोटि वहाकार ( 4 4 27) 1 बस्यमाहिश व [दे बहादामीन्य] वदा-कार हे, वयवाती कि **फे**रेल कामोदिस ठेख व बनरीय कर्नात्री महिया (सम १६७३ क्टार १ का शिवक )।

बदमासा-बसामोदिब

क्काफार 🤰 🛊 [ब्रह्मसम्मर] क्वासस्ती (राज्य

वस्त्रहार कि १८ के ६ ४८ वर्ष

बस्द्रका (शौ) देखो संभप्पा (प्रतष्ट्र 🐠) । ब्राह्मण केवी बंसाय (यन्तु १७३ प्रती १७)। बम्हण्यस वैका बीसण्डस (सर)। क्षमहरू [चे] देवी वंशहर ( वर् )। बम्हास व [बे] धनस्मार, बायू-रोज-विशेष मुद्धी रोच (पड्)। **क्य दृ**षिकी १ प्रति-विकेष क्यूना। २ **बुबेर। १ महादेव । ४ पुन्य-कृत विद्ये**प मॅक्किंग का काळ (शारह)। इंटक्किं मिकेम (बा २६)। ६ समुर-विशेष ककायुर (बेखी १७७)। व्यवस्था देशो नां-पास्य (पन १६)। बरठ व दि वान्य-निरोप (यथ ११४ थे) । क्राह्म कि १ मनूर-रिच्छ (छ ३)। २ प्रभा ६ परिवार (प्राक्ट २ )। आस्त्रो वरिष्ठ । ) ई [बहिन्द] महुद, मीर (पत्न्य बर्राष्ट बरहिण जिल्हा रहा प्रकार २ १२३ कामा १ १० व्याहर १० मीप)। वरिद्देशीयस् (दृशाप)। हरर्पु पिर]मदूर (पर्≯ शकुर ) । वर्रिष् बस्म न [दे] दूर-विरोध प्रदु-तक्ष्य दुस (दे १ १६) ६, ३१। पाछ)। वरहर्द्र [द] रिक्ष्यी-विशेष, वटाई बनाले-शमा रिक्ती (ससू १४६) ।

(पाया ग्रामा १ १-- पत्र ६४ मग 🗈

बद्धामीसि देवो बत्यमीडि (दे १ ४४)। बस्यया की [यद्यामा] बक्रविरेश विश वरिष्ठवा बयुने की एक वासि (ह १ ९० उप १ ११ थि)। चमाइस वृं [बळाहक] धव, धीमृत 'गलिय असबसादगर्दरे (वन् )। बलाहरमा देखी पछाह्या (दा =)। बह्महृय देतो बलाहुग (लावा १ ४) बण गमो। यमाहया स्त्रे [बनाइन्डा] १ वट-विधेय बनाका (उर २६४) । २ देशी-विरोध धनेक रित्रमाधे देनियाँ वा नान (इक---रत म११: २१४) । श्रीत पूँ [विलि] १ सपुरपुमारी का उत्तर दिशामादन (स. २ ६३३ ३६४)। २ स्यनाम प्रतिक्षा एक यात्रा (वा ४३)। व शाननां जनिवासुरेव (यदम १ ११९)। ४ एइ शनव देख-विशेष (बुना) । १ पुँकी क्षाहार, मेंट (शिव १६६ दे १ ६६)। ६ वृत्रोत्तार, देशका की घरा काता नवेच 'मुच्निरिने रणपरतु मुमद्यमम्बिधी राजीह (पत १ टी) 'पॅश्लपूपल्यश्रिक्षेत्रु' (विद्य दर पर १३१ तुर १ छ= पुत्र १७४)। ७ भूत धार्रि नी दिया जाता धीन जनिहान न्यूपर्शनार (रे४६)। ७ पूरा शर्मा मार्ग्या १ स्वन्तास भागा । १ वागर गा स्पर। ११ जनक (हे १ ३४)। १२ सन्दर्भक्षेत्र (लि)। उद्गर्भ विषयी बाद बीया (बाम) । याम व विमेत् १ पुत्रन पुत्रा की जिला। १ देखां की बा हार-नीय धरन की क्रिया (क्या सूच २ १ १६) गावा १ १) ८ वाम थी।)। र्चना थी [भग्ना] बनीन्द्र वी राजवानी (पाग १, ११) । सुर् ५ [भुगः] ब्लर, । वर्ष (राध)। यस्म देखा कृत्य (प्रश 18 46) 1

यसि वि विशित्र] १ वनशम्, वशिष्ठ (नुशा

te tiben fe i (ech th ibit

८६ नुष्ट (शाम १६, १४)।

11) ( विक्रित्र वि [बल्फिम विक्रिक] १ वनवान सूबन पराज्ञी। बरबावि बीवी विनिधी क्तवंत्र बच्चा" हेति बक्तियाई" (शानू १२६) 'श्य सम्ह ताथी क्लियशहरपंक्रियी हमें विद्यमं पश्चिमं समस्मित्रों (महा पड़म ४८ ११७- बूपा २७४, धीप)। २ प्राणुवाचा (श ४ १-- १४ १४६)। बिक्रिक्ष विकित्ती विषयी बस चराम हुआ हो सबस (बुम २७७)। २ वू झन्द विरोध (शिष) । विजिमें हे [बिस्निक्ट] धन्त-बिरोप (निर्द) । विका ही वि विकासी वर्षे पुर सम की तुपादिनाहित करने का एक उपरस्त (धावम) । यखिट्ट वि [यिछिट] बनवान, श्रवन (प्रान् \$\$x) 1 यसिष्ट पूर्वी व प्रधीयत् ] बनव इपम 'दो सारविद्याचि हु' (पुरा २३८) । यक्षिमद्वी क्षी दि] बनान्तार नागह बन्ति नक्रमप् व्यक्तिमणी सीम । एनसियं (उप ७२६ ही) । विख्यह देनो बद्धियह (पटम ११ ११६)। वासिस न [बडिश] मदली पकाने का क्रांट (R 1 9 9)1 बस्तिसह र् बिलिम्सदी स्वनाम-स्वाप एक बैन मूनि धार्य मराबिरि का एक शिष्य (श्प्य)। बनीज वि [ बर्मःयस् ] धपिक वनवाना बनिष्ठ (समि १ १) । बसीयह 🖠 [बर्क्समर्] बेन शुनम (रिता 1 (8 3 बनुदाह (धन) देवी बन्डस्थर (है ४-४३-)। बल व इन घर्न का नूबड शायब---१ मिषव मिर्देव । रे निर्वारण (हे ए १०४ **T**41) 1 बाह्रिप्र दि [रे] रे पीत नांतन रपूर पोटा | बाद व [बाह्य] बातप बातवपन, रिस्पा (दि इस्ते प्राप्ति वे प्राप्ति । ११ (द्वा व ११) । हेवी बास-कार्य ।

पहलीय नि [पहलीफ] देश-विदेव में---बहुती देश में रहनेशाना (पएड १ १~-TR (Y) I बह्ब देवरे बहु बाते समहत्त्रते धन्बद्दे (पतम ४१ ३६), 'सेद्रागतम्बद्धस्तरस्पृहत्तर बा बुराइ बहुबे' (बामत ११०) 'जार्गति बद्दरनेरन्यसामुखाणितो मति (दि ६)। बहरमद्र थूं [बृहरपति] १ क्वेडिय देव विशेष एक बहायह (श र १-- पत्र ४४ मुझ २ --वद २६४)। २ नृरावार्य देव द्वत (दुवा) । १ दुव्य नतान का व्यक्तिला देव (गुम १ - १२) । ४ धानतीति ब्राप्ति एक ऋषि । १ नः नित्र बत का बक्तेक एक विदान (हे २ ११७) (६ एक ब्रम्मान पुरिदेश-पूर । ७ विश्वतपुत्र का एक सच्चान

३७ और इस्)।

बच्च तक [ज् ] बोतना बदना । बन्दर, बनए (वर्) । रेजी मुच यू । वत्र न [वय] व्योतिय शास-मस्ति एक करण (विसे ११४८- मुख्ति ११ मुगा १०८)। वल्लाङ वृं कि विद्या हस्त (वे ६ ८६)। वहड वि विह्नु विहा महान्। रेण्य न

ितित्वी नगर-विदेव (ती १४)। वहत्तरी देखी बाहत्तरि (पन २ )। वहरपड्ड ) देवो बहरसङ् (हे १ ११०- २ यहण्डही ६८, १६७ पर् दूमा समय 1 (015 बहरिय देखो यहिरिय 'वा रत्य गृहरियदिर्मवर' (महा) ।

यहस्त न दि ] पंक कर्रम कारा (दे ६ <१) । मुत्त की ["मुत्त] पंक्राती भरित (3 x, 2) i वद्दा नि [बहुछ ] १ मिबिस मान्त्र निर्रतर, नाव (बउड़ा है २ १७७)। २ स्पृत मीय (ठा४ २) गत्रह) । ६ पूर्णम श्रंदणत (क्ष्म् )। वहतिम र्जुमी [यहछता] १ स्त्रूमता योटाई। २ लालत्य निरंतरता बना ६२ ता ७५६)। बहर्सी भी बहती रे देश-विशेष भारतार्थ

का एक शतारीय देश 'तामासिवाइ पूर्वेप

बङ्गीनिस्ताबयसमूपाएँ (कुम २१२)। २

बर्मी केंग्र की भी (शाबा ह १--पत्र

(विपार १) । इत्त पुंचित्र विकासित के को पर्न (विशा है ३)। शक्षि स [बह्विस्] शहर 'सर्वाहवेशे परिवर्ष' (बाचा) 'बामबहित्ति य र्व टानिक्क्य भागेतरै पनिद्रो सो (स्प १ दी)। ह्वा वि चि वहिम् 🖝 (ग्राड) । बह्रिम वि वि मिन्त निरोधित (पर्)। वर्ति देवी वृद्धि (पाचा एव) । बहिष्मिशः १ की [भगिनी] वर्धन (पर्नि बहिणी 🕽 १६७ कम्यू पाम परम ६ ६। 🛊 २, १२६ कुला) । २ समी वयस्या (इसि ४%) । वज्ञ दुं ["तनय] यक्ति। पुत्र (रे) । बद्र पु ["पछि] बह्नगोर्द (रे) । केवी सङ्ग्रणी। बद्दिना म [बद्दिस्तात् ] कहर (पुण्य ६) । वहिद्धाम [वे] १ नहर। २ नेकुन की-र्शकोग (के २ १७४) हा ४ १<del>--</del>पन ₹ () ( बहिद्धा ध [बहिया] बहर नी धरफ (बस 2 Y) 1 वहिया म [बहिसा वहिस्तान्] बाहर (विशार १३ मान्या क्या भीव) । बहिर 🖹 [बाह्य] बहिन्द्र त कहर का (शक्त ۱ ( ۴ बहिर वि [बियर] खुरा, को कुन न सकता क्रो बद्ध (निपार १ के१ १ चर्च) ताला 1 (\$4\$ बहिरिय नि [बिबिरित] वश्रिर किया हुमा (मुर २ ७६)। बहुवि [बहु] १ प्रचुरु प्रमुख यनेक यनस्य (का ६ ६ क्या ब्रामु ४ (३ बूमा या ५७) । धी, हुई (पद क्राप्त १)। एकिनि मरक्त घरिका (तुना १ ६६) कार्य) । बद्दा 🕻 [फेट्फ] शामप्रस्य 🕆 एक वेद (पीप)। "मृद्ध पूँ "मृद्ध] विद्यालर वंश का एक रामा (पदम १, ४६) । जीपिर वि **ैंब**हिपत् नागट वक्तारी (नाम)। कप पू विना मोध सीम (मन)। र न-मानीनमा ना इक प्रकार (ठा १)। <sup>8</sup>णक देशो मह (सन) । जाग न [मार्गु भवर-रिकेप (परन ११, ११) । विशिक्ष

वि ["देश्व] पुक्र ज्याना जोड़ा यहुत (माचा२ ६,१ २२)। नद्वर्षुनिटी नत की सरह धनेक शेप को बारख करने-बाबा (धावा) । पश्चिपुण्य, पश्चिपुद्धा वि िपरिपूर्णी पूरा पूरा (का ६ वन)। पश्चिम वि "पठिवा शक्त विकास प्रतिक्य रिवित (सामा १ वसाबि वि "प्रस्तिविद्" बक्नावी (का g ६६६) । "पुचित्र न ["पुचित्र] सह-पुणिका देवी का सिंहासण (शिर १ ६)। "पुचिभा को ["पुत्रिक] १ पूर्वाका वामक क्केन्ड भी एक बाह-महियों (ठा ४ १ ब्यावा २) । २ धीपमें देवशोक की एक देवी (मिर १ ६)। व्ययस वि मिर्दशी प्रकृत प्रकेश-कर्य-स्थ शका (मर) । "फोड वि [ैश्फोर] व्यक्तक (मोनमा १६१)। सँगिय न िंगक्किकी दृष्टिकार का सुव-विकेष (सर्व १२८) । समावि मिन् देशव्यन्त वर्षीष्ट् (बीव १)। २ बनुमोसितः संमत्, धनुमतः (कात्र १७१ सुर ४ रब्दा)। साइ वि [सायिन] वर्षि कपरी (बाचा) । शामा पूँ ["सास] वरिष-श्रम बादर (बावमः पि ६ । नाट--विश्व ३)। साम वि ["साम] ब्रव्धि क्यटी (बाणा)। शुक्स, मोस्स पि पिस्पी युरुपनानु, नीमती (यना शर्)। रथ वि िरत] १ वरणना बारनत (बाना)। १ बगानि का वनुसामी। है न बगानि का चवाना द्वारा एक शत—किया की निव्यक्ति क्रमेक समर्थी में ही भागविवाला मद्य (कर १ ३ थीप)। स्थन [स्वस्] श्राच-विशेष विद्यानी तथा का एक बकार का बाध (ग्रामापुरां १३)। देव वि दिवी १ प्रमुख करामाला, कराली (ध्रम ११)। ए ग. एक विद्यापर-नगर (११४)। किया की िक्या | तुक्य नामक भूतेन्द्र की एक वय-विद्यो (सप्त १३ लाग्य २) । "होवाई [कीप] बारव साथि के विकास शांह का वैप (पडि)। वयण व विवास विद्या नीमक प्रस्तव (धामा २, ४ १ व)। भिद्र नि ["विघ] क्लोक जनार का, शामापिक (इमा क्य) । "विदिध वि विच

विभिन्न दिनिय समेक तया ना(सूमनि १४)। संपत्त नि सिंग्यती द्रव का संप्राप्त (प्राप्त) । सच्च चूं [सस्य] महोरान कावतमां मुदूर्व (शुव्य १ १६) । "साम [शस्] बनेक बार (इन भा २०० प्रानृ ४२ १११, स्त्या १६) । स्युव नि [° हरा] शतकार, शाकी का सच्छा नामकार, परिवत (क्षण सम ११) हा ६---पत्र ११ए पुरा १६४) । "हा व ["या] स्त्रेनव (ভৰ খনি)। बहुम १ वि बिहु की कार वेबी (हैं बहुमय र २, १९४४ दुमा। वा २७)। बहुआरिआ } व्ये [वृ] द्वापे व्यव (र बहुआरी } व १७ टी)। बहुद्द केको बहु≔ ई। वहलाज वि विहलायी १ वह-सम्बर्ध खले मेरथ । २ प्रदुष-चित्रहा बनाने येन्य (बरना २, ४ २ ३)। बहुग वैको बहुआ (भाषा ७) । बहुबाज ट्रं [ब्रे] १ बोद तस्त्रर । २ ब्रॅंडे ठम । ३ बारः ज्यपति (पर् ) । बहुण दुं[दे] १ मोरु तस्त्रर। २ दुवै (<sup>१</sup> € €w) 1 बहुजाय वि [बाहुनार] बहुनार-नगर की (पत्रम ११ १३)। बहुत्त वि[प्रमृत] बहुत प्रदुर (देर ९३३) । बहुतुइ दृदि बहुतुइह] दुवैष वय (१६ बहुराया को [वे] बह्द-बारा कामार की गारं (दे ६ द१)। बहुरावा की कि रिका श्रुवामी (वे ६ 1 ( 55 अनुरिया की [दे] धुहारी माह (बह t)। बहुस वि [बहुछ] १ अपूर, प्रवृत्त सर्वेड (कुमान्धार् ) । र बहुनिय समेक प्रकार का (सभय) । ३ म्बद्धा (तुपा ६३) । ४ र्पुंडप्रस्थात (पाद्य) । ३ स्थन्तम स्वार्ध एक बद्धारल (वद १६)। अङ्क्ष पुं [बहुक्य] सामार्थ महामिरि के रिप्ट युक्त प्राचीन **वैल कु**नि (स्ट्रीर ४६)।

बहुता की [बहुता] १ थी मैदा (पाण)। २ इस नाम की एक की (बना)। बया व [यत] महुता नगरी का एक आवीन वन (ती ७)। बहुत्ति हुं [बहुद्धिन्] स्वामन्ववात एक

बहुद्धि हुं [बहुद्धिन्] स्वाग्रम-स्वात एक राज-पूत्र (उप १९७)।

सह्यक्षी की [वि] मासा कमर बम्स (पुण ६३)। बहुतिस्ता की [वि] बड़े मार्ड की की (पड्)। सहुद्धी की [वि] बोहोबिट रहवमकिंग केमने की पुलसी (पड़)।

बहुधी देखो सहुद् (हे २ ११६) । सहुद्धीहिं वृ [बहुदीहिं] स्थानरख-प्रतिव

एक समात (बायु १४७)। बहुआ कि [मुमूब] बहुत प्रहुर (वज्डे)। बहुत कु [बिसीलक] १ बहेडा का येड़ (हु १ ८८ १ ६, २ ६)। २ अ बहेडा

হা তন (ছুবা)। बादि क द्वादि दो को को संख्या-शाबा । इस (बप) देवी कीस (पिग) । ईस देशे थीस (स्व)। पाउइ औ िनवृति बामके, १२ (शम १६ कम्म ६ २६)। पाउम वि [मिश्रत] ३२ वा (पदम १७ २१)। भावत देशो व्यवत (रक्ष ६२)। बाइ, बाह्येस बीन ि यस्तारिहान् ] बन्धतीय जावीय श्रीर को ४२ (बर नक्श मन; सम कहा इन्द, धीप) की याह्य, धानीसा (कान ६ ६ वर्ण)। याद्यासाहम वि जिल्ला-रिशक्तम] वयातीलवां ४२ वां (प्रवय ४५, १७)। ६ रस ६६ व [दराम] बार्य १२। भारमिल्द्राहिमवरी (इंडीव २२, सम्माप दा १६, समादा विक कृत्या मी २० वर्ग)। रस वि [व्या] वादावी ११ वां (मुख २, १७) । इसेंग क्रीन [ दशाक ] बारह बैन संग-संय (वि ४३३) भी गी(एन)। स्तम रि [दस] बाद्दबां (बूम २, २ २१। वन ४६ महा)। रसमासिय ति [ दशमासिक ] काव्ह मान हा बाप्र-भाग-सेबन्धी (कुन्न १४१)। रसय न ["दराक] बायह का सनूह (धीपना

१४) । "रसवरिसिय वि "वशवापिकी बार्यावर्षेका (मोहा१२ कुन्न ६)। रैसविक कि विश्वविद्यो के एक प्रकार का (नग १)। "रसाह न ["दशाह, दशास्त्र रे शारहवां दिन । २ जन्म के बार क्ष्में बिन किया बाठा प्रत्तव वरशे (खाया ११ कप भीप पुर १२१)। रसी की िंदशी बारहवी दिवि बाबसी (सम २६, पत्रम ११७ ६२ ती ७)। रस्तरसय वि ["दशोश्वरशतः] एक सी भारत्यां (पडम . ११२ १६)। रह वेकी रस=४७१ (हैं। १ २१६)। बद्धि भी "पछि" बास्ट, । ६२ (छन ७६, पंच ४८ १वा पूर १६ २६८: देवेल १६७) । क्या (धप) । देखी थक्स (रिम) । बण्या देशो अक्स (कूमा) । यचर वि विसाद ] बहुचरवा, ७२ वा (पस्म ७२, ३६)। वचरि औ ["सप्तिति] बहुत्तर, ७२ (सम चक्र) शरा सीप प्रामु १२६) । विश्व सीम ["पञ्चाराता] नावन पचास और को ३२ (सम ७१ महा) 'बाबर्ग होति विद्यमनदा' (मुख १ t)। बस वि [पद्मारा] वावनदो (पदम १२ ३ )। नीस श्रीन िवरावि बास्त २२ (मण भी १४), भी सा(वि४४७)। बीस वि [विश] बासिबा २२ वा (पटन ्दर पर ४५) पीसक देशो शीस ⇒ विराति (मन्द्र पत्र १०६)। बीसङ्गत वि [विद्याविक्य] १ बार्रका २२ वा (पडम २२, ११ थंव १६)। २ जनाशार वस रिन का अपनास (शाया १ १--पत्र ४२)। यासिवह वि ["विराशिविय] बाह्न प्रकार मा (धम ४ ) । सह वि विष्यु । सम्बद्धा ६२ वर्ग (पतम ६२, ३०)। "सट्टि धी ["पप्टि] कामऊ ६९ (सम ७३० हिंग)। "सी सीइ शी ["अशीति] बगागी = १ (नव २० शम व£ा वपा भन्म ४०१७) । ; मीइम वि ["अशीतितम् | बगारीबा ८२ वॉ (पत्रम वर १९२)। (चर (धर) देशो इचरि (तथ)। इचरि भी सिप्तवि बद्दार, ७२ (बच्दा बुमाः तुवा ११६) । थाश र्र (दि) बान रिग्र (वर् )।

्वार हुन्यान्द्रस्य वांत (सेह १९१) वाण हुन्नि र पाड हुन करहर का रोह । दि त्या हुन करहर का रोह । दि त्या हुन हुन्या हुन्य हुन्य कर पह । वाण हुन्य हुन्

बाध वेडी शाह च वाष्। भवतः याभी अमाण (रि १६१) ।

वाचा की [बाधा] विशेष (वर्गते ११७)। वाधिय वि [चाभित] विशेषवाला प्रयाण विद्या (वर्गते २११)।

वाद्यम रेको बस्त्य (६१ रका पर्)।

काय व [बाक] बक्-सपूर (या २६)। बायर वि [बाहर] १ स्त्रून मोटा समूक्त (याह १ १) पत्र १६२, दे ४४)। २ तरवी शुक्त-सातक (राम १ ६) ४, ७)। "ताम म ["मामान्य] कर्मनियंग स्त्रूपता-हेनु कर्म (सम ६७)।

बार न [द्वार] करनाज (६ १ ७६) । बारमा की [द्वारक] स्वामन्त्रीव्य नगरी को बानकत की कांज्यापन में द्वारमां के द्वी माण के प्रदेश हैं (क्वर २ २ २ ३) । बारमह की [द्वारमांगी] र कार देश (क्वार देश एमार १ ६ का ६४६ देश) । ए मगराम केंग्नियन की दीजा शिरदा (शिवार १२६)।

याद्वि । व [ वदिस् ] बाहर (मुग्ब ११-

बाहि । वन २७१ मेहा बाबा दुमा है रु

बाह्यि न [बाधिये] बिपत्ताः बहुपाव

बाहिरस बिहिस्] बाहर (हे २ १४)

बाहिर वि [बाह्य] बाहर का (माना स

२,१—वद १६: भव २, न टी)। सर्वे

दू[कव्यित्] समोत्सर्वना एक रोप

क्षेत्रों पाय्यि विकासर और पैर को क्रियक

क्षिया बाह्य कामोशसर्वं (बेदम ४४६)।

पासा बाच्ह उन)। जो स [तस्]

१४ ३ वि ४८१)।

(विधे २ व)।

बहर से (क्या) ।

२ वस्त्रक, रिजू (कुमाः प्राप्तु ११६) । ६ (मुपा १४)। वि मूर्तमधानी (पाप)। ४ नया नूतव यास्त्रि वि [वासिन्] बल प्रवान मुद्धर वेश-(कप्पू)। १.पू स्वकाय-स्पात एक विद्यावर भावा (बलुः बृह् १)। राजा (प्रथम १. २१) । ६ वि. सर्वेशव शक्षिमा 🗗 [शक्रिया] नाना 🐒 पाधि पंतम-पहित (ठा ४ ३) । बद् पू ["कवि] लक्की (प्रापु दश महा)। तस्यानवि भयाकवि (क्य्यु) । ऋषि बास्त्रियां की [बास्त्रा] १ बासकपर शिक्ता ["र्क्ड] स्वरित होता पूर्व (हुमा) । स्माह (मप) । २ मूर्वता वेशपुत्री "विश्वा महन्सा र्षु [प्राद] यालक की शार-सम्बाह करते-बातियाँ (दावा) । बाला नीकर (तुर १ ११२) । स्माद्धि पुँ बास्त्रिस वि [बास्त्रियः] मूर्व वेषरुष (पायः िम्नहिन् वही पूर्वीक सर्व (छावा १ (बसुर्द)। २—पत्र ४)। याय दि [ चारा] वाल बाइ चर्ड [बाध्] १ विरोव ४०००। २ ह्म्या करनेवाचा (याया १२१०) । ताव ग्रेक्स । ३ वीहा करना । ४ विनास करना । पूर विपस ] १ मजानी की शपनकी बाह्य, बाह्य (पचा ६ १६, हे १ १ वर्ण (भ्रम, चीप)। २ वि ध्यान-पूर्वेष एप करो-क्य) बर्ल्स (कुम १) । क्यक्र वाश्चित बाल्या (कम्म १ १६) । तबस्सि वि बाहीश्रमाण (परम १० १६ मुता ६४६। ितपस्थिम् विशास-पूर्वकत्य करनेवाला, श्रीप २४४) इ. बाहणिज्ञ (क्यू) ( सुर्वे छपानी (पि ४ ६)। पंक्रिका वि बाह प्रे [बाध्य] यन्, गरित (है २ ७) िपयिक्क विश्व स्थान कालैकाला कुछ पाच कुमा)। धंरो में त्याची भीर हुच में भरवायी (बन)। बाइ दू (बाघ ) वियोष (यस १४)। मुद्धि वि विद्धि मन्द्रीक (वस्तु ६)। बाह देवो वाढ (प्रयी ६७)। मरण न ["मरण] सनिया रहा का वयहा माइ पुंबाह्य इत्य, प्रवा (सम्बर)। मसंबंधी की मीठ (सब्द सुपा ६१७)। कियान. बाइग वि [बायक] १ टेक्नेवासा (पंचा १ बीयण पूंची ["वयञ्जन] नामरः नैवर ४६) । २ विरोबीः 'सन्तुत्रकानकृतः नियमः (शान्त १ ६) वी. 'वनखडामी बावनी-(शक्क १६२) । च्छी (स्र १,१—पद ३३)। द्वार 🖠 िबारी बातक का सार-सम्बाद करनेनामा वाइड र् [बाइड शाग्मट] धना पुपारतक का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (कुद ६) । बास रेबो क्छ । प्यास ति [क्र] वय बाइज न [बायन] १ बाबा निरीम (बर्मर्स को बामनेशासा (बाका १ २ ६, ६) १२७६) । २ विराधन (पंचा १६ १) । बाइमा की [बाधमा] असर केलो (बर्मार्स शास » [बास्य] बालाल बचएन बचकाव 1 (555 बावन्त्र, पूर्वया (श्य ७ ६ ) । देशो शक्क । माहर रेको माहिर (धामा) । शासका वेचो वास्त ≃ नान (शा १३६)। बाह्स पुं [बाह्स ] फेर-फिरेन (धावन) । बासभ पुँ [के] वशिष्ट्युव (वे ६, ६२) ।

tv )ı

पुष्पा पहार कार बीच) ।

ENV

थास प्रशिष्ठ } १ काथ केश (का ≖१४)।

नीकर (मुपा ४६व) ।

शाकमापोदमा औ [रे] १ वल-पन्टि

५ वसरी स्कृतिका (क्ल ६, १४)।

१६) । ६ चन्द-निरोप (रिप) ।

क्ताव मधीर में बन्ताश बाता खेटा मासाव ।

क्तका की [कास्त] १ दुनाये बहुकी

(भूमा)। २ सनुष्य की क्ल धवस्त्रक्रमें वें

नक्षी कता यह वर्ष एक की श्रवस्था (तंत्र

बावा)।

शाहिरी। वि [वहिराहा] बाहर का नाम (क्य २ १ ४२)। बाहिरिय वि [बाहिरिफ, बाह्य] ब्यहर ग बाहर से संबन्ध रखनेवासा (सम वरः एउन १ १३ विष्ट ६६६ औरा कम्म)। वाडिरिया की वाडिरिसी तिने के वर्षी की भृष्ट्-पंक्ति नवर के बाहर का दुरिया (लूम२ ७ १। इ.२६)। वाहिरिक्छ 🕅 [बाह्य] बहर का (स्मः नि **222)** 1 का<u>डु</u> दुंबी [बा<u>ड</u>] १ हान डुना (दे१ ६६३ बाचा हुमा) । २ वृं अनात् अवस्त बाह्य न बिह्हस्य स्कूलता योखई (सम ≹ध्धः —यत्र४४ ग्रीप}। **बाह्य थी [शाघा] १ हरू व हरन**। २ विचेष (बुवा ११६) । ६ वीका वसकर र्शरकेर के होलेगानी पीड़ा (में १) वद मावा की [माबू] बाल, बुना (है १ ३६) (धनम)।

का दुव बाहुबांच (दुन ११ )। विधि र्द [<sup>\*</sup>वस्ति] १ क्लाल, सावितान वर द<sup>व</sup> दुव ध्वतिकाका एक पना (धन है पकर ४ १२३ छन) । र साह्रमसि के स्पीत का पुत्र (पत्रम १, ११)। सूब ४ [मूड] क्या वक्स (वप्यू)। बाहुक दु [बाहुक] स्ववाय-क्वात एक क्री (सप १ 1 Y P) I बाह्यसम्बद्धाः वि कि विश्वति राजीयाः (५<sup>५)</sup> बाहुवा की [बाहुका] गीनिय वन्तु-विकेष (चम) । वाष्ट्रका वेदो बाह्न (टेड्र ११) । बाहुक्षेत्र दु [बाहुहोय] शोनस्य नेव हुनत

बाहुतेर वृ [याहुलेम] काती पाय का वसका (प्रसु २१७)। बाहुस्छ न [बाहुस्य] बहुत्रता प्रमुखा (निष्ठ प्रदा मग मुवा २७ वन ॥ ७)। याइस्ड वि [ वाय्पवत् ] स्यूबत्सा (कृमा मुपा ४६) । दि कि व [दि] को २ किलि (हे ४ ¥रैदा सब ४ का २, २३ कम्म ४ २ १ ३ मुख १ १४)। "अब्द दूं ["जनिम्] एरु महाबह क्योतियक देव-विशेष (बुक्य २०) । देखन [देख] बना प्राप्ति वह बाग्य जिसके की दुक्त करावर के होते हैं अह विश्म पूर्मार्ट (विश्)ः याज केवी या-यास (काम ६ ९०)। "वाससय पुन [ चत्वारिंग्रच्छ्य ] एक ही वेमानीस १४२ (कम २ २६)। विद्वि [विद्वी क्ते प्रकार का (चिंग)। सदि की [चिटि] बास्ट, ६२ (गुण्य १ ६ छ)। सत्तरि, संवरि ती [सप्तिव] बद्धतः, ७२ (पण १६३ जीवस पेंट कस्म ३ ४)। वि ) नि [द्वितीय] दूमरा (शम्म ३ १९ विभ ) रिय)। कसाय दू [ क्याय ] धप्रत्यास्थानापरल नावक क्यांव (कम्म ¥ 35)1 चित्र म [द्विक] शे मा बहुशब हुन्न हुन्त (भगः गम्म १ ६३) जातु १६) । विश्राया ही दि शाद-विशेष संबंध शके बावा बीट-इय (दे ६, ६६) । विद्रज रेपी विद्रग्य (हे १ २३ वर्ष १६४)। बिद्रमा देवो बीआ (राव)। विद्राप्त नि [द्वितीय] १ दूवरा (है १ १४४। प्रानू ११)। ए सहाय अरह करने-बाना (नाम नुर १, १४) 'ने दुर्ग्याम न दुर्दिका, ध्ययदासे विन्यवसानितः। पट्टी व ते ए जिल्ला **पु**ता परमत्पद्ये शेवाँ (ICA SAS) ! विश्व वि [द्विशुप्त] पुत्रमा (हे १ १४० २, ४१ या १४६) । दियानि विशासी बुद्धना करनेराला (क्रीर) ।

विश्व धक [ ब्रिगुणय् ] दुष्टना करना। विरुक्तेष (पि ११६)। क्रिंग न [पुन्त] फलादि का कम्पन 'वपएड बिट (पामा)। सुरा की ["सुरा] मस्रिय दाक 'जिट्युरा पिट्टकारिया महर्च (पाध) । विंत देखों यू = गू। विविध कि [क्वांस्ट्रस] जिसकी स्वका घीर बीम ये दो ही इन्द्रियों ही बहु (बीप) 1 बिंदु पून [बिन्दु] १ सस्य ग्रेश । २ बिन्दी शूका, सनुस्थार । ३ दोनों प्र<sub>य</sub>्दा सच्य भाव । ४ रेजावरियत का एक विन्दू, विद्वाणी, बिहुई (हे १ १४) क्या स्पर २२) स्वप्न १श करा पूना): क्या की [क्या] कारणर, स्थि (विरि १६६)। सारण िद्यार) १ पीखपा पूर्व, पेन शत्यारा-विशेष (सम २६: विसे ११२६) । २ व् मीर्ज बंध का एक राजा राजा चलापुत कर युव (विशे ८६२) । विदुश्म वि [बिन्दुबित] विम्रु-प्रश्त विदु विमिन्त (पामा नजह)। बिदुष्टरजैत वि [बिन्युयमान] बिन्दुशों वै व्याप्त होता (मे ११ १२६)। बिंद्रायन न [बुम्बायन] मनुस के वास का एक पैपलुब-तीर्थ (प्राह्न १७) । विंव एक विस्व ] प्रतिविध्यत करना। कर्म, विविश्वद (गुरु ४६) । बिय न [विम्न] १ प्रतिका, पूर्ति (शुपा) । २ स्ट्रप्र-विशेष (रिय) । ३ ह. विभ्वीफल दुन्दरन का प्रमा (खाया १ व---यव १२६ <sup>1</sup> वाया पूत्रा वे २, ३१)। ४ शरितम प्रतिष्यामा । १ धर्म-सूच्य धाकार, भारती चर्च पस्तिति विषयू वे (शूच र: १३ ०)। ६ तुर्वे तथा चन्द्र का मएडस (यद्धाः मणु)। विवास न [ये] क्यानियेव सितासीः 'बिबरमें मामार्थे' (पाप्र) । विविसार केरी भिनिसार (बंड) । विंपी की विस्था] सता-रिटेय, बुन्यस्य का थाय (तुमा) । क्षक्ष न ["फ्राह्म] कुन्तरन का क्य (मुग २१६)। विंचोयणय न [वें] र श्रीमः २ शिकारः।

व बोलोना जन्मीर्नड (दे ६ ६४)।

विंह सक [ वृंह\_] पीपल करना। इ. देखी बिंहणिग्रा विह्रणिग्ज वि [बृहणीय] पुरि-पना (ठा ६---पत्र १७१८ ए।या १ १---पत्र ११)। विद्वित कि [बू हिंख] 90 उपनित (है १ १२व) १ विग्गाक्षमा ) धी दि । बीर-निधेय संमान बिग्गाइ र पहा गेठ-दूरम हबराती में भगई (वे६ ११)। विज्ञ वेकी कीश किरमें पित बढ़िया बहुने (पत्रम ११ ६६)। बिजाहर व [बीजपूर] फल-विरोप एक तरह का बीड्" 'विरुवस्तिविक्तिक्षिक कुल्क विहा-साई सम्बरद' (बुगा ६३०) । विजय (श्रेप) वेशी विश्वज (सर्वि)। बिहु पूँ [वें] बेटा, महका पूत्र (चेंड) । बिट्टी की बिंदी बेटी पूर्ण सबकी (बीट है Y 33 )1 बिट वि बि बिए विश्व बैठा हवा वपविष्ट (श्रीव ४०१) । विद्यास र् [विद्यास]मार्थाए, विद्यान विमाद, शिवा (पि २४१)। विदाधिया रे की [विदासिय, सी] विश्वासी निम्ती मार्जांचे विभाग विजीवा (सम्मल ११२) पि २४१)। देखी विराक्तिला । विश्विस रेको वृष्टिस (३५ १४२ द्ये) । बिन्नि रेपो विद्रज (उप २७६)। विस्ता क्ये [बन्ता] भारत की एक नधे (पिंड १ ६)। विष्योज इं [विष्याक्र] १ छी की शृंसार चेट्रा-विशेर इष्ट सर्वे की प्राप्ति होने पर गर्व से बन्पम्न धनप्रशर-विया (पर्छा २ ४---पत्र रेवरे छाया रे ८---पत्र रे४२: मत १ १)। र न दाशन, वस्या भौतीनाः "राफ्छोचे गुनिर्घ राष्ट्रियोच" (सम्द्र १ ८)। विष्योअ हुँ [विष्योक] नाम-विनार (पल् 1 (255 विष्वोद्दम न [विस्यादित] हो नी त्रोगार बैहा का एक मेर (परूप १, ४--पत्र १६१)। विष्वायम् व [रे] राशन शरिया धीशीन

(पामा १ १--नम ११)।

बिमेखय देवो बदेडय (पर्ल १--पन ६१) :

क्रिस दे जिकाल ? नियम-प्रसिक्त मध्य विहप्पद् ो समुक्र पश्चि मानामासा दक्षार-समुद्र । २ और विहरमाइ १ १३था २, ६६। वर्गा कुमा)। बिरोप (पिय)। विरास देवो विशास (सर १ १८)। बिराक्षिता) देवो विद्यासिता (धमाच बिहिश देशो विहित्य (प्रश्न ८) । विराकी ∫१२३३ पाप)। २ चुबपीस्तर्प विरोध द्वान से कर्तानाका एक प्रकार का ब्रास्थी (सूथ २ ३ २४)। ६८: सुवा ४८३) । बिराधिया भी [बिराहिश्वा ] स्वय-क्रम निरोप (माचा २ १ ₹) **≀** विस्त न [विस्त] इस्काब पत्नी (बम्मस 1 (388 विस्न विस्ती १ रुग्न विवट सॉप मादि बल्पुर्थों के पहले का स्वान (विपाई क वत्रक) । २ कुत कुमाँ (राग) । स्टेकीकारक नि दि कोसीकारक] इसरे को आसून्त करते के लिए क्लिय बंबन बीमनेवाला (पर्याः १ रूपम ४४) । पंतिसा और पिक्सिक्स बात की प्रकृति (पराह्म २. X-19 (4 ) I विश्वास } केवी विद्यास (प्रव पि २४१)। विद्यास्त्रा को विराधिका (पि १४१)। बिह्न हुँ [बिह्न] र कुछ-विशेष केल का पेड़ (पद्रा १३ वन १ ६१ टी)। २ न वेल का फब (पत्ना)। का सब प्राप (क्य) । बीजकरव न [बीजपूरक] फानिसेन एक

विद्वता पूँ [विरुवक्ष] १ बनावें देश-विशेव । २ व्य देत में प्रोताची मनुष्य-गारि (प्रवह १ र--पत्र १४)। देशो चिक्कक ≈ पिलसः। बिस न बिसी कमब धादि के नान ना दन्, मृजस्य (जस्य १ १३: कुम्छ पान्र) । वठी की किएठी] बबाक्स वक पनी वी पुरु वार्षि (दे६ १६)। वैश्री सिस ⊏ पिस । विसि देवी विसी (देश ४६)। विसिजी की [विसिनी] क्यक्रिनी क्यक्र राक्ट (शिर १)।

विसी की द्विपी दिश का बादन (दे १ 48 (8 R 8) 1 विद्र पद [मी] बला । विदेश (शक्त ६४)

frt t):

विद्व विद्विद्व विद्वार विद्वार महान्। प्यार पू "नरह ] भूग्य-विशेष (पित्र) । वेशो व्यवस्ताइ (हे २, १३४)

विदेखन देवो विभेक्त (दश १२ २४)। बीआ देखों विद्रश क्षि १ १३ २ ७६: सूर १ बोश व विश्व १ वोश वीया चाउपनीय इसे नासक मार्र दुक्त बह सहसा (पानू

१६१ साचाः चौ १६ सीप)। र मूख कारता 'शाधीरमाणसाखेकारववीवमकाम्य बश्यक्रप्रसह (अक्षा) । ६ कीर्य शरीयन्तर्गत सह बाल्यों में से मूच्य बाल्, तुम्र (सूपा मच १) । ४ द्वी मनार (शिरि ११६) । बुद्धि वि चिद्धि सुन सर्व को काकने से दोन सभी कर लिन युद्धि से स्वर्थ भागनेवाला (ग्रीप)ः ग्रीय वि विमृत् बीबगळा (प्राप्ता १ १)। सत्र भी िंद्धिको एक की पत्र से अनेक पत्र और सर्वे का समुख्यान हाय ध्वनेताची कवि । २ वि श्रुट ब्रिक्स भा(पहला १)। इद्वापि िस्ह विव 🖁 क्यान होनेनाची वनस्परि (परका १)। बाक प्रे बापी कर कर-विकेष (यव)। शहस व [सुक्स] विकर्त

क्या का कीह (मा ३६)। वीक्षत्रमण न दि | वीव यत्तने शासक---वास्त्रिम (वे ६, ११)। बीक्षण पृक्ति । नीच देवते (देव ६३ दी)। वीक्षय पूर्व दि वीजक] वृक्त-विशेव यतन कृत विजयसार का माञ्च (वे ६, ३६, पाप)। बीक्रवाचय पू [बीजवापफ] विक्वेतिय

मनुकार्यानाति (प्रमु १४१)। बीआ की कितीया ? ति<del>वि रिके</del>न क्रम (बन २६) का २६, रमस १/ सामा १

१ ३ बुधा १७१) । २ त्रितीय निवृद्धिः (चेदद ६ ६)। वीज वेद्धों वीच = गीः

₹-- (\$\$ ) i

सम्बद्ध राज्यस (सुपा १३१)। क्षीकि ) 🐗 विशिष्ट 🖹 असर वेबके बीडी 'पिक्रारंतचीडीचो कोहेवि प्रार्थम पनिश्ववद्धं (बर्मीद १४ )। वीभण्डा पुं [बीभरस] शाहित्व प्रतिकारण

बीडम न [बीटक] बीदम पत का बीदम

क्त (श्रष्ट १३६) । बीमच्छ् ) वि [वीभस्स] ! ब्राजेशावव बीसरब हे बुखा-जनका द भर्मकर पर कामक (बना तेइ ३ = ) छाता १ २ संवीप ४४) । वे पूँ राज्या का एक तुम्छ (वस्य 18. 3):

बीयक्तिय वि दि श्रीव्यविष्ट्री बीव बीवेरावाः वपन करनेवासा । २ पूँ, शिताः वीवं वीवितः ब्रस्तेव (सूपा १६ : १६१)। बीखब पू [है] ठाइंक कर्जपूक्त-विरोध कल का एक ध्वला (दे ६, ३३) । बीह सक [मी] उरता । बीहर, बीहेर (हैं

४ इक्ष व्यक्ता वि २१६)। बद्ध मीर्टर (बीबमा १६) स्म ७६व द्या कुना) । 🕏 शीविषया (स ६८२) । बीडक्ट केवी वीशक्त (पि १२७) ( बीहरण ] वि[श्रीपण **क] सम्बद्धः** बीक्षणा }- कर्मकर (पि ११३) पश्चा १ ११ बीक्षणव ∫ पत्न १६, ६४)।

बौडबिय वि [शीचित] श्रयश हुमा (शम्बत 11 35 वीहिश रि मिति है उस इस (है ४ १३)। २ न थर. इट चय बीहिये ममानि हूं (मा १४)। बीडिर नि भिन्न बरनेनामा (ब्रमा ६ ३५)। बुआव धक विश्वय | दूनवला । श्रेष्ट. बुधावइत्ता (हा १, १--पत्र १९×)। बुद्रम वि विक् ] नवित (पूर्व १९६ ९४° ६ ६४ ४३/ स्टाइ ८ ४)।

बुँदि पूंडी [दें] १ कुम्पत । २ तुकर, तूपर ( **E & E** ) : बुंदि को [दें] करोड़ के। का पूर्व पुरि भारतका क्य पेंद्रुग किन्मर् (स १ डी—पत्र १४) सळ २ ३ तीप ३३ जला ६४६ चल्य ३

श्रुवीर वृद्धि १ महिय मेखा १२ वि महागढ बदा (दे ६ १८) ।

कुम न [सूच्य] १ दूध का मूल । २ कोई मी मूस मूलमात (हे १ २६: चड्)। श्रीचा की वि ] चिल्लाहर, प्रकार (ब्रुवा ४.६४.)।

श्रुंय पू वि असर देवी (क्य ११) । चुंतुम न [व] कुन, मून समूह (वे ६ १४)।

-बुद्ध वि [वि] विरम्हत (वव १) । श्रुक प्रक [राज पुका ] यर्गन करना

मरनगा । दुद्ध (हे ४ १ u) । युक्त घन [भप् पुक्त } यान-पूरा का

मुक्ता। बुद्धः (पर्): नुषा हुन कि १ तुम सिमका (सुष १६, १७) । २ भाष विशेषा 'बुद्धवंबुद्धवंबुद्धवंबुद्ध इ.ह. (मुपा ६ )।

बुक्कल पूर्व दिहै काफ, कीया (वे.व. १५) नाम)।

वुक्स रेवो बोक्स (यत्र)।

बुद्धा की [रे] १ बुष्टि (रे ६ १४० वाय)। २ बीवियुटि (६ ६ ६४) । ६ बाध-विरोधा क्यानम्बद्धार्थानेन्द्रक्रीवर्गान्देशे मान-

बार्या (बुग १६६) । मुद्धा भी [गञ्जना] गर्नन गर्जारव (बदन ६

६ म बढडी। मुकार दें [रे पृष्टार] वर्गन, धर्मना (पदम

७ १ श स्टब्स्) । युवास दुं [दे] वन्द्रशय, युवाहा (शाना २

\$ \$ 3)1

बुष्यमार वि [वं] मोद बरतेक (दे द ex) :

ब्दिअ वि [गर्जिन] जिस्ते बर्जना नी ही बह, 'बह दुशिया तुद्द मरा' (दुया) ।

-मुग्न सक [ मुद् ] १ जानगः, जान करना समन्ताः २ पाननाः पुरसदः (१३)ः मुक्तः बुरिमोनु (सम्) । स्वरिः, बुरिमोरीह (बीर) । वर धुरमंत्र धुरम्मात्र (रिवः पाता)। थर पुरस (हे र. ११)। ह मुद्र प्रदेश्य भीपत्र (निक पुत्रत नव रेश भए बी २१)।

बुरमिष्य १ वि विधित है जिनको आन बुन्नावित । क्यां क्या ही कह । व सुद्ध देवी सुंध (तुल र )।

षायाया यया (कुप्र ६४) सुपा ४२५ प्राज ₹e} I

युध्मित्र वि [थुद्र] शांत विधित (गांभ)। विभार वि बोर्जु र जाननेवाता । २ भागनेशसा (प्राक्त ६८)।

युब्बुड यह [ बुद्बुडय ] बुद्धुड धानाज करना 'पूरा वहा बृह्युनेह सम्बत्तं' (नेहन YER) I

युद्ध प्रक[ब्रुड , सरज्] द्वना। शुद्ध (क्रि. १ १) सका कृता ग्रावि)। श्रीव दुरियु (यर) (है ४ ४२३)। यह सुर्वत, मुक्कमाण (कुमाः चर रे ११ टी) । प्रयो

वत पुद्वार्थत (प्रेबोच १६) । सुद्ध वि [मुक्तित, यद्य] हुवा हुमा निमान (बाम १२ दी था १७ रंबा २१ बुर १ रेवरे परि ने चमहुप्रवेश्याई (एव ४ हो) : भुक्रम न [बुहन] हुबना (ध्ये २। प्रम्यू) । बुद्धिर दे [क] मीव मेंसा (बह् )

बुब्द नि (पुळ्र] पूर्वा (चिन)। की बढ़ा ब्दी (बाप १६७ सिरि १७३)

युज्य कि [दे] १ और क्या ह्या। २ ब्रिंग्न (रे \* १४ टी) ।

जुकी की [वं] ऋतुमती की (दे ६, १४) । बुद्ध वि [बुद्ध] १ विकान, परिच्छ बात कल (सम १। तर ६१२ दी मा १२। द्वार ४ सूर)। २ जाण हुना, जापृत (तूर **३** २४३)। ३ पूत्र पविष्य ग्रीर वर्तमान का बानकार (केरब करेके)। ४ जिलाव विविध (दा वे ४) । १ वूँ विवन्तेव शहन, क्रीबेस्ट (बार ६)। ६ प्रबंध अगरान् बुद (बाध- के व दर्द वर व क ब्रूप ४४ : वर्षसं (७२) । ७ सामार्च सुरि

(बत १ १०)। "पुत्त पुं ["पुत्र] बानार्य रिप्य (जल १००) । बोहिय वि विश्वासिय माचार्य-बाबिस (बर ४३) । साणि रि [मानिय] वित्र की वीएटत माननेताका (भूष १ ११ २४)। खिष पुंत [ स्वय]

प्रकारि [योख] र बूद बका र बुद-संकर्ता, ध्य वा (वी ए सम्यव १११) । मुद्ध देवी पुरम्ह ।

पुत्र-मन्दिर (पुत्र ४४२) ।

युद्धंन पून [धुष्तारन] सपी-माव मीचे का हिस्सा का राष्ट्र छो की नर्द बासूर्द बा मैत्रामाणे दूरतियाँ विश्विता दुर्वतेयां मुनद (पुज २०)।

युद्धि औ युद्धि १ मित मेगा, मनीपा शक्ता (ठा ४ ४ मी ६) क्षुमा कप प्रापू ४७)। २ वेब प्रतिमा-विद्येष (शामा १ १ टी--पन ४६) । ६ महानुएडऐक हुउ भी सविद्वाची देवी (हा २ ३----१त्र ७२ इक)। ४ धन्य-निरीय (पिय)। १ श्रीवकरो । ६ साम्बी (राष) । ७ शहिसा, बसा (पराह प ६) । वर्षु इस नाम का एक मन्त्री (उप =४४) । कुछ न [कुर] पर्वत-विदेश का शिवर (छत्र)। योदिय वि ("बाधित] १ धीर्षक्यी-धीर्पकर है प्रतिबोधित। २ सामान्य साम्बी से बीवित (धन) । संत वि [मन्] बृदिवाचा (तर ६६८, धूपा ३७२ महा)। स दे िंडी १ वक स्वत्यम-बसिक बेही (यहा) । २ देखों इस (यह) । ल्क कि [क] हुत., पूर्व देशरे की हुदि पर बीनेबाला। 'वाल पंडियमाख(? थि)न्स **बुविस्तरम दुरप्पणी (बोपमा २९ टी २७)।** वंत देखों संत (भाष)। सागर, सामर र्ष ["सागर] विक्रम की प्वारहवीं शताब्दे

का एक गुप्रसिद्ध मैनाबार्ग और प्रत्यकार (पुर १६ ९४२, वार्च ६२ वामा ७६)। सिद्ध र्थ ['सिद्ध] बृद्धि में विबद्धत र्वपूर्ण इडिवाला (मान्य)। श्रुवरी क्षे [ सुन्दरी] एक मन्ती-कारा (का ७२० दी)। युप वेको युद्ध (वर्ष्य १ १ सुम २ )।

बुरमुख वर [बुबूय ] हु हु बातान करना द्यान-परुच का बोलना । दूरस्य (दूत्र १४) । वह सुरमुर्यत (इम २४) ।

युरपुथ र् [युर्पुर] कुनकुना, पानी का कुतवा (के र व्य, भीता विक व्या छाता र राजे अधा मानू दर है रहे।।

बुमुक्तम की [बुमुक्ता] चून चाने की हन्या (यधि २ ४)। युव वि [मूच] थोतनेशमा (नूम १ ७

1 ( 5 पुषाय वैकी पुष । बुक्रंपुटा की [वे] प्रवहता, प्रश्वत (वे ६,

**बुस्स वेको मोस्छ। युद्ध (दुप्र २६**) या

१४)३ वर्षाचि (प्राम् ४) । वयी- वर्षाल्येकः

बुवानेथि बुद्धावए (बुध १२७० सिरि

हुव एक [मू] दोलना। दूबद (पर्

हुमा)। यह- बुर्वन बुयाय बुदान (क्त

२३ २१३ सूम १ ७ १ ३ वस २३ ३१)।

बुस न [बुस] १ जूना वन बादि का कडेगर,

तुष्का भाष्य (शब्द-रमित भाष्य (शब्द)।

बाव का विक्रका (ठा ब---गत्र ४१७) । २

दुमि 🛍 [पूपि सि] दुविका धासनः।

मुख्युस र् [वे] उसर वेको ( पव् )।

W)1

चेवी वृ।

वॉनिक्स कि दि । १ मुच्या बसंक्र्य । १

पुं धाटोप धाक्रमर (वे ६ ११)। बीटण न दि । इड्डन स्तन का मा का (R 4 64) i वों कर्नावी १ प्रपुत्रः स्टन-कृतः (१६

६६)। २ फब-विदेव क्यास का क्स (प्रीप लंदु२): यन विश्वीसूदीयण पूर्व कपद्म (सूच २, २, ७३; चीप) । वॉदन कि प्रवाद (देव १८)।

बोबि को दि । स्म । १ इस प्रेह रि ५ **११)। १ छरीर देह (१ १ ११ पर**ि शक्यां सीर क्वा रेग्र, र विशे दश्दर पद प्रश्न वेचा १ वों दियाच्या [दे] कावा (तुम २ २,४९)! बोक्ड र दें हिं बाद, बक्स पुनस्पे हैं बाक्टड जीकरों (सी २ दे ६ ६६)।

की (देव देवती)। को बास वृक्ति बास र प्रमाप केट-पिटेंग (पद १७४)। २ वर्णसंकर काजि-विकेष नियाय से बंबही की कुछ में उत्तब (दुर्ग

\$ X) 1 वा (भाषा २ १ २,३)। **LE, LY)** 1

बोक्ससक्रिय पू [बे] वन्तुवाम 'बोहान्द्रवार्चि वा नागरस्थाद्रकारित ना नोजवाविगद्रवानि थोकार देशो मुक्तार (पुर १ १२१)। वाकिय व [पूल्कन] वर्तन, पर्नवा (पर्क बोशिएस पि वि वित्तपनता, प्रतबं स्वर्ध सारं किम्मीरं जिल्ला च बीक्सि (पाय)। वाह धक [रे] स्रीमाष्ट करना बुठा करना। बुबरावी में बोटबुं 'रमणीय स्वतिषय **नर्रांत बोर्ट्रांत ब्लाबार्डि (नुवा ४१**१) । बाड रिहिट्टिशानिक वन्छि । ९ वण्ट

पुता (१ ६ ६६)। १ द्वारितन-सावक

प्रिक्त सरू बीडो पुत्रससी में बीडो (विट

११७)।

स संदर्भ सिस् । धंयमी बसी प्राप्त (सुम २ ६ १४ माचा)। मुसिआ की [बुसिका] पन धारिका कर्वपर, मुखा (दे २, १ ३)। सुद् पू [कुथ] १ वह-विरोग एक व्योतिक देश (सुर ६ द६ मनीप २४) । २ वि मस्यत विकास (ठा४ ४० कुर ६ ३६ वर्मेवि २४: कुमा। पास) । सुद्दरपत्र ) केवी बदासदा (हे २ देश १६७) सुद्दरपत्र ) बुदुक्त कर [बुसुस ] बाले गी रण्डा भारता । बृहत्स्वर (हे ४ १८ वर् ) । मुहक्ता केवी बुभुक्ता (एव)। बुहुबिराज वै [बुनुक्षित] मुक्त (द्वमा) । मुक्क[मू] योजना नक्ताः धून दूरा कृष्टि (अस २४ एट, सूच १ १ ६ ६) १११२)। विक्ति वेति, वेति बुका (कम्स ३ १२ वदा १प्य) । नुरा, यत्वती (वत रक प्रश्निका रूप करा हा क रा)। नह किंग धेंग (बाधर बी) नुसा १६ ३ विदे रेरर)। बंद पूर्ता (बा १ १) वैधो

मूर 🐧 [पूर] स्त्रमाठ-विशेष (लावा १

रे—पर ६ वर्ष १४ १८/वरण बीर)।

यम चुन ।

में वेची मि (नमार ३ क्वि ११६८ १९ ३ निय)। आसी (प्रय) की [काशीवि] थवासी बर (पिंग)। इंदिय नि विन्त्रियों त्वणा धीर बीम ये शे ही धनिवयनावा प्राची (ठा १३ मक संबंध भी १३)। विश्व [त्याहिक] से निम का (क्षीयस ११८)। बॅट देखो बिंग् (महा) । वेंदि देवी चेन्द्रेदिय (र्जन १, १६)। बेट्ट क्यो किह (योषमा १७४)। चेत }ुं[दे] गीका महाव (२ ६,६६, वेद्यक पुरश्च १)। वेडा ) डी दि] गीका महाम (का चेकिया bequati सिरि ३०२ ४ ७ चेकी बारर, बन्गर्र टी)ः भाषीक्ष वर्ध धारा वारित्रस्थित केकिन' (वर्गीय ११२)। भक्का क्ये कि । राग्य वाही-पूँच के बाब (वे 4 42) 1 बेबोणिय वि विद्रोणिको या होन्य का होरा-इब-परिमित्त 'कम्पद मे बेबीरिजयाप श्रीवर्गारें द्विरम्बामियाएं संबनहरिहाएं (ज्या)। मैशेष्ट (मिश्रह) निष्याचन के धीचे का एक सैनियेश (मार्ग १ २---पत्र १७१)। बंधासिय वि विधासिको से मात का. से महीने ना बंबल्थ रखनेनाला (पत्रम २२ 4)1 वेकि और दि] ल्यूणा भूँछ (वे ६ ६५) दाय)। बेइल देनी बिच्छ (प्राप्त १)। चरुक्या पूँ चि | वैश वतीवर्र (पारन) ।

वस बद [पिल स्था] बैठना कौतंत

मील्यमि सि बेश्वय पुत्रय य सह बेर' (धीम

201) 1

वेंत देखी मू ।

२ १ ६२)।

(पिप १६ व टी) ।

मुद्द सक [ द्वाह् ] पुष्ट करना। बृहर (सुध

मुद्ध विदि] पुरू वाचा-राक्ति से स्वित

पाकिया नाकिया की ["नासिका पूर

चसक्तिका न [वे] हमान रिप्ता, इसकी

(to 50 mg) (

नीरम सर्जनीय (दश ७ ६२)।

युक्त-कोब

# # 1V

वेतिस वि वि द्वीयकी यो दुक्ते करने

तिला(देश धर्टी)।

बेसण न हि | बक्तांव सोन्यपगर, बीन-

बोडघेर न [वे] पुस्म-विश्वेष (पाय)। बोडिय पू बोटि ही १ दिवन्तर जैन संप्र भागा २ वि दिसम्बर भैन संप्रकायका सन्यामी 'बौडियसिबमुदैयी बीडियर्लिगस्स होइ उपती (बिसे १ ४१ २४१२)। चोडिय वि दि ] गुरिश्त-मन्तक (?)ः बोडिक्मिएर पूर्व गरर्सु (धोकमा ±६ टी)। बोक्ट म वि रमम वाही-वृंब कि । १४)। द्योद्विका की दि क्यविका कीमी कैसरि न बहद बोडियदि यस सक्बेर्टि बेव्यंति (ह Y 98%) 1 बोदर वि दि दु विराम (दे ६ १६)। बीदि देवो वॉबि (धीप)। बोहरू [द] देको बोहरू (पाम)। धोद्ध वि [बीद्य] बुद्ध-मण्ड (संबोध ६४)। बोक्रव्य देखी हुउन्ह । थोइड वि वि तस्य वदल (दे ७ ८)। बोजप न [बोधन] बीव शिखा क्रावेश (सम ११६)। बोबक्य की प्रवस्त । क्षोभि वेनो वर्गहे (ठा २ १—पत्र ४६)। सत्त प्रं सित्त प्रमय रहीन को जाव प्राफी, महर्ग के का मक बीव (श्रेख है)। बोबिज वि [बोबित] बारित समग्रीयत (मर्गर्ध १ १)। बोध्यड वि [दें] सूत्र (देश सक्तल पूर् यम २४३)। कोरन निदर्भिजन-विदेश देर (**बा**न् ः है १७ ३ वर् ३ कुमा) 1 बोरी को [बन्री] देर का गाव (प्राक्त ४ है t tu i gar tur exe) i मोस एक [बाबय] हुमाना, 'तंबीबो त बोलइ क्लिक्सडिड्रिएस बेरा सती (सार्व ११४)। दुइतं मोलए धर्मा (सूक्त ६६) बीनेइ, बोमाए (संबीत १६) कींस च विवास वने विकामी असीसि बीवसि सङ्गानगीरि (सूम १ १ ) गोलीम (स्विर १३०)। **ब**रनामेर्ग सोए बोधेद बहु (एवर १६२)।

बोक्ड धक [क्यति + क्रम् ] १ पसार होना पुनरमा । २ सक उल्लंबन करना 'बुई शु एड, चंदोनि स्त्यको वानिएगीनि बोलेड् (गा < प्रशे पुर्णी सं विकेश स वीक्षक क्याह<sup>\*</sup> (मानक ३३) । बोसए (चंड) । वेश्वी थोखा≂ गम । बोळ प्रे वि] १ कसस्य कोबाह्स (६६ मका व्यक्ति कप्पू व्यव क्या ३६ १) 'इसबोसबहुका' (घीर) । २ समूहः 'कमसा-पुरेख रास्यान भीतले प्रवास्थानस्याति (शब १ कुलक १४)। योजगपुन [दे बाड] १ मन्यन हुनना। २ क्पैश बींचाम 'क्यूडी बोसर्व प्रवेति' (विया १ ६-- पथ ६८)। बांकिम वि [मोडित] हुवाया हुमा (बण्या ₹5) 1 बोर्लियी की [वे] लिपि-विशेष बाह्मी लिपि का एक मेरा 'माहेच'डीकवी वार्मिकवी बोर्कि-क्लीबों (सप ६४)। बोह सक [कसय] बोबताः काता । बोहार (हे ४ २ जा<del>ड़</del> ११६ दुर व १६७) र्माव)। कर्मं, शीरिकसङ् (सप) (कुमा)। बोद्येगम (धप) (क्रुगा) । प्रची, बोह्ना वद् (भूमा)ः योडःज पुंष्टियन] बोधः वचन (या ६ ६) । बोड्डमञ वि [क्यमिए] बोलने का स्वमाक-गांसा (हे ४ ४४६)। बोद्धा की [कमा] नार्चा करा जीवनेसम्बद्ध (कार रेप) ( बोक्काविय वि [कवित] बुसनामा हुमा (स YET TEE) 1 बोडिश विकिथत<u>ी</u> १ बर्का२ तुम्री<del>स</del> (व्यक्ति हे ४ ३६३)। बोध्यन विदेश सेट (देश्य)। वोद् सक [कोघय ] १ समस्रता, ज्ञान करानाः २ वयानाः। बोहेपः (क्य) । कर्ने बोहिण्यह (उप)। यक बोहित बोहित (तुर ११, १४६: महा) : इनहां बोहियांत (पर र १४२, व १६२)। हेळ बोहेबं (शक्ष देशको ।

बोह् वृं [बोघ] १ ज्ञान समऋ (बी १)। २ वायरल (कुमा)। बोह्न वैको वोह्य (४ १)। बोइण देवो बोघव (इस २ ६, सुर १ ३७-**अवर १)** । वोइय वि चोचक] बोच वेनेवाला ज्ञात-बाता (सम १ स्थाया १ १। सन् कृष्य)। मोइहर पुँ वि नागव स्तृति-गठक (दे व 1 (05 बोबारीकी [दे] बुहारी संगानेनी माहू. (4 4 50) वोदिकी [काफि] १ हुछ बमैका नाम सक्रमें की माति 'चुझहा बोही' (उत्त १६ २१८) चोड़ी निर्णेड् मरिएमा भवंतरे सुद्ध बम्मलंपची (बेहर १३२) संबोध १४ सम ११६ का ४०१ हो) । २ समिता सनुसन्धा ववा (पराह २ १) । देखी बोधि । बोहिल वि [बोमित] १ ज्ञापित समस्या हुया (मद) । २ विकासित विकेषिता न्यवि किरसदक्यानोहिससङ्ख्याच- (क्म्प)। बोहिम ई [बोबिक] मनुष्य हरानेनासा चौर (लिब्र है। बेह्य ४४६)। वीहिंत देवों बोह = बीवम् । बोहिस केवी दोहिश = बोबिक (राम) ! बोहिल्म कुन [दे] प्रबह्छ बहाब मानपाब नीका (वेद १६ स २ ६ वेस्म २६४ क्रम २२२३ ब्रिटि १६३३ ब्रम्पत ११७ धुपा ६४३ सदि)। बोहित्यिय वि [वे] प्रवहस्त-स्कित (बक्त ₹**₹**€}1 बर्मस देशो शीस (पुपा १ १)। बमसर देवी समर (नाट-पुदा ११)। कमास देवी सक्मासः किंदु प्रशृह्वा सा विद्विमाधेवि कुछह न हुन्मेहं (नुपा १८७)। "दिम दि [मिल् ] भेदन करनेपाला, वारा-कर्ताः 'सनबांस्म' (साचा १ ६ ४ १)। ओ (थप) केवो सू। वीहि (प्राक्र १२१) ।

म 💃 [म] १ घोछ-स्वालीय व्यव्यन वर्ण निरोप (प्रापा प्रामा)। २ पियम प्रसिद्ध धारि-पुर धौर से हुत्य धक्षरों की संबद्ध मन्दर (तिय)। ६ न नक्षत्र (सूर १६ ४३)। भार दूं [\*बार] १ 'मं मधर। ५ भगए (पिन)। राम 🖠 "राम] धवश (पिंच) ।

सङ्देखी सय = भू। महत्री [भूति] वेतन वनश्राह (शामा १ म---पप्र१६ विपार ४ जवा) । देखों सइ। मइअ रि[सक्ति देवियक (धारक १ %) ध्य ७३)। २ स्रविक्तः न्यंदुनस्थारोडप्य-

एमबार्व पुढो पयरं (र्थव २ १२ औष)। ६ निवरिस्त (बब ६) । सङ्घ्य व [सक्त] मापारार (दव १) । देखो सय = प्रक्। मद्रअस्य 🦠 मइत्र ) वि भिविष्ठी वर्गस्य नौद्य

भशा रे चाकर (एव रें!)। भी [भगिनी] बहित स्वसा (मुगा १३) स्वयन १३३ १७६ मङ्गणिञा निया १ ४ प्रापू 🗢 महन्ती २३६ जूमा)। बद्दु ["पति] बह्नोर्द्र |

(तुपा १६ १३२)। सुञ दूं ["सुत] मानिनेय मानजा (सुरा १७)। वैजी पहिला।

मद्रत्व नि [भरप] ६ जोवर, बीवरू जल-षन∓ (राम नुपा १ २) । २ ⊈ नाटका<del>वि</del>-प्रसिद्ध एक एम नयामक एस । ३ वहाचेन धित । ४ महारेष ना एक बालार । ३ छन-रिटेन भैरक चया। ६ तत-विदेश (है ह १४६३ प्राप्त) । हेनो भरव ।

भद्रश्री भी [भेरती] क्ति-शती नार्वती | (411) 1

मदरद्वि द [मगीरिय] अवर चनवर्ती वा एक पूच, मशीरन (पान ६, १ ३) । भइतारि [र] धवा काइ (रंका ११) । भक्त (थी) देनो मसुदा (रि २२१) । भगदा (बा) देवो भगुरा (रिन)।

भएयव्य देशो सय - धन् । मंदार र् [मङ्कार] काकार, प्रव्यक्त प्राचान विशेष (उप प्र =६)। र्मध्यरि वि [मङ्गारिन्] भनकार करनेवाता (धस)। र्थगर्दु[सङ्ग] १ खेलना, क्यूड कर्यन (धोम ७० प्रापू १७ । बी १२, कूमा) । २ प्रकार, मेर, विकस्प (थया कम्म ३ ४)। ३ विमाश (कृमाः प्रामु २१) । ४ रचना-क्रिकेच व्हर्रगरंगंत्रमेष--- (क्रम्य)। इ.परा **चय । ६** पलायन (रिय) । स्वान (<sup>\*</sup>रत] र्वपुत-विरोप (वण्या १ )। मंग व सिक्की धार्य केल-विरोध किल्मी चयवानी प्राचीन कास में पावापूरी की (इड) ।

भेग (ग्रप) वैश्वो भरग ⇒ शक (पिव)। भंगरय पुं[सङ्गरत सङ्गारक] १ पीया किरोप मृद्धाया भैयरा, भैवरैया। २ स. भैनस नापुन (नन्दा १ : मूना १२४)। भंगाकी [भद्रा] १ वनस्पति-वियोग पाट, कुष्टा 'कप्पद्र शिग्नेवाल वा शिन्**वंदील वा** पंच करपाई बारिक्तए वा परिवृत्तेकपुथा है **बदा** — वॅगिय् मॅमिय् शास्त्रय पोक्तिय सिरीड <del>बहु</del>ए खार्न पंचमएं (ठा ४, ३—पव ११०) । २ वाय-विटेप —नव्याप्त रहे ह वनामेधीमेनापहरिपृत्तिन्वर्मसनुसूत्र- (विक **)** I

संगिकी [मिद्रि] १ प्रकार, जेव (हे ४ ३३१ ४११)। २ व्याप्त सम बहुामाः 'सहिर्योदमस्यासमानियानसङ्ख्' ११३)। ३ निर्मित्रीत, विच्छैर (शर)। ४ १ की देश विशेष नाश धनी वं (पर १७१, विचार ४१) । र्भागज व [र्भाष्ट्र ६. भाद्रिक] १ थया वय, दद तरह का बद्ध बार का बना हुथा क्याहा (इस रे १ इ. १—१४ (रेबा सह) । रे शास्त्र-रिश्चा व्योर्थानुक्ताव संविधमुत्ते शिरिया बसी सींगुर्गा (बेहर १४६)।

श्रीतिद्य रि [ श्रह्मपण् ] प्रशासना, भेर-

वृतिसः 'पदवर्शनिका' (संबोध ११) ।

र्मती की [मही] केवो मींग (है ४ ११ए) या ६१व विचार ४६)। र्थांगी **व्ये [भूजी] बनस्प**ति-विकेश-—रै

भाष विक्या। र महिविषाः महिन ग पाल (पएछा १--पण १६ पएछ १०---पत्र १६१)।

र्थगुर वि [सङ्गर] १ स्वयं प्रोसोनाण-विन्तरवर, विनास-सीमः 'त्रविदेशार्ववरवेड्रेपरे ही विश्वयतीनकार" (क्य ६ दी १६६ १ ४ बुर १ १ सास ११४। वर्षते ११४१ विवे ११४) । २ ब्रुटिशा वक 'ब्रुटिस वेर्व मंहुरं (पाय) ।

मंद्रा के सरमा (पव)।

र्भस्य एक [श्रक्ता] १ मॉक्ना दोहना । १ बसायन कराना, भवाना । ३ पदान्य वस्ता । ४ विलास करना। भंजा, भंजप (हे ४, १ ६३ वर् पि ३.६)। सरि पॅनिसा (पि १९९) । कर्म, मन्बद्द (सरः व्हा) । वक्त संबंद (वा १६७) दुमा ६६ )। ৰুক্ত- মৰ্ক্তন মন্ত্ৰমাস (ই ১, ১৮০ बुर १ २१७। छ ६३)। छंडू-संबिज, मंजिङ संजिङ्ग संजिङ्ग स्त्रीस्म (माद्र) पि दक्ष शास्त्र पि दवश व्या) मिला प्रा) (हे ४ १८१)। हैर-संक्रियप (एम्पा १ ), संज्ञमह (बर) (R Y Y# R) 1

भंडम १वि [सङ्क] बोलेसाः <sup>वेर्</sup> श्रीक्रम }करलेंगाना (वाँ ११२) पर्वा ६ ४) । १ र् वृक्ष पेष्ट पेष्ट्रा प्रेक्षण इव व्यक्तिरेव बी चर्वति' (प्राचा)। र्शक्रण व [मझन] १ वंग प्रदान (पा ३ पुर १ ६१)। २ विकास (514 इ.स. परद्व १ १) । वृद्धि प्रेयन वर्णन बाला चोडुगेयाला रिमाराङा भरतीया (बिरि १४६) 'रिवर्डकांन्यंन्येस' (बुना) । हो, यी (श ४४३)।

अञ्चल ओ [भन्नना] कार रेलो । रिएकी-बबारम-(१र मा-) छारा भेनछा पूर्वण दुबज्ञालनं (बिने १४६१) निष्ट्र १)।

भंजाबिञ ? वि [भक्तित] १ पैनामा ह्या भीकाम 🕽 तुइगामा हुमा; (स १४०) । २ मगाया हुधा (पिन) । ३ धाकान्त (तेषु ३८)। मंजिल देशो भगा = मण (हुमा ६ ७३ पिंग भीते)। मह एक भागहर ने मेंदारा करना संग्रह क्रमत इक्टा करना। मंदिर (मृक्ट २ ४३)। श्रंह सक [ शरह ] ग्रीइना महीना करना याती हैना। संबद्ध (संख)। वह मंद्रेस (गा १७१)। संबूध मंद्रियं (वद १)। श्रीह तुँ [सण्ड] १ विटः मङ्क्षा (पर १८)। २ भौड़ बहुक्पिया मुख धार्वि के विकार से **ए**समे का काम करनेवाला निर्माण्य (घार ६)। अंश्रम दि । शुन्ताक वेंगन भेग वि ६ १)। २ म् भागव स्तृति-पाठकः। ३ सचा मित्र। ४ शोहित पुनी का पुत्र (वे ६ १ ६)। ६ पुत्र मदक्ष्म कामुपारा महना (देद १ श. मनः धीए) । ६ वि किन मुची शिर-कटा (दे ६ १ ६)। w न सुर, सुरा। व सुरे से मुलान (राग)। मंड ) पुन [माण्ड] १ बळन बासन पान मंडरा ) 'पुन्वरपुरुम'डे पडर अन्त्वंडे' (ध्वेन रेप के वे दशे भारका हुवा १६६)। २ क्यालक पहर, बेचने की बस्तू (शासा १ १ — पत्र व कीया पर्छा १ १३ छन्छ द्भग)। १ पृहंस्थान (श्रीप १)। ४ वक-पात्र मादि वर ना असक्यास्य (ता ३ १) कप्प मोप वर्ष शाका १ १)। मेंडन न [दे मण्डन] १ कन्छ काल् कसर्, यासी-प्रचल (दे ६, ११ छन) महा छाया १ १६--- पण २१६ कीच २१४) पा ६६६, ज्या ६९६ (४५.४.) : ९ झोप पुस्सा (सम ७१)। भेडमा ध्ये [ मण्डमा ] गाँहमा, वाली-प्रदान (दा ११६)। संदय देवी संड = क्यार (हे ४ ४२६) । संबय रेजो सबगा 'पायसभवदिवाली शरि क्राले भेडए नदल् (महा व ₹4 €) ( भंडवेशास्त्रिय वि [भाग्डवेचारिक] चरि बाता बेचनेशना (धए १४६) । मंद्रा ध्री [ द ] सम्बोदन-मुचक सध्य (संवि

मंबाबार ) ई [भाण्यागार] भंबार, कोठा भेडागार रे मा कोठाए बखार (पुता १४१) स १७२। सुपा २२१ - २६)। मंबागारि १ प्रवी [माण्डागारिम, क] मेहागारिका मेहारी भेहार का धम्मख (लाया १ ८ प्रुप १ ८)। की रिप्पी (लाया १ <)। संद्वार देवो संद्वागार (महा) । भंडार पू [भागडकार] वर्तन वनानेवासा रिक्री (रान)। सबारि ) देशो संदागारि (च २ ७ सुर भंद्रारिक∫४६)। र्वितिस प्रे माण्डकी मंश्राध मंदार का प्रत्यक्ष (मुख २ ४६)। मंद्रिश की मिण्डिकों स्वामी यनिया (हा ≪—पत्र ४१७) । मंद्रिजा ) की वि ] १ वंकी गानी (बहु कः अर्थित विद र १, धारमा निष्कृ व वय ६) । २ थियेच कुत । ६ घणी अंत्रत । ४ घरती पुरुष (वे ६ १ ६)। मंद्वार पूँ [अण्डीर] कुत्र-विशेष शिरीप कुत्र (ब्रुमा)। वहिस्य वहेंस्यन विश्वसक्ती मसूरा नवरी का एक क्यान, 'महराए रावरीए श्रीड (? बीर)बर्डेसए सम्बारी' (राज रहाया २--पत्र २१६) । बाज व विनी । बहुराका एक वन (ती ७)। २ मनुष्य का एक निम्म (धानम)। भंदान (दे ] मुएल्प (दे ६ १ )। मंद्रह देवी भीड = पाएड (पनि)। र्मत वि[फ्रान्त] १ पूर्मा धूमाः 'मंतो वसी मेईएी (१)" (पत्रम ६ १०)। २ झान्छि बुक्त, भगवला, भूसा ह्या (दे १ २१) । ६ घपेत अनमस्मित (मिसे ६४४**०)**। ४ व प्रमय भरक का सीसरा गरनेन्द्रक----नलागत-विशेष (क्षेत्र १) । र्भत वि [ भगवन् ] भगवान्, ऐश्वर्य-शासी (क्ष ३ १: अन विते १४४०--१४१६)। र्श्यंत वि शित्रम्त् १ वस्थाल-कारकः। २ सुब्ध-सारक । व पुण्य (विशे ६४६६। कृत्यः विया १ १ क्या विशे ६४७४)। भंत वि [ अजन् ] हेवा करता (विशे 1888)1

र्शत कि [भाष्, भाजत्] व्यक्ता मक्ता (बिटे १४४०)। र्भव वि शिवान्त भवका-संसरका बन्त करनेवासा, मुक्ति का काराम (मिसे TYYE) I र्भव वि [अयान्त ] मय-नाराङ (विते ६४४६)। मेंति की भान्ति भ्रम मिल्ल तान (बर्मेस ७२ : ७२३ सुपा ३१२ मिक)। सवि (पप) की भिक्ति भिक्ति भकार (पिष) ६ संग्रह वि [ दे ] १ मधिय, पनिष्ट (दे ६ ११)। २ जुली शकान पायल नेवकुछ (के इह सर दर १६६)। भंगसार पू [भन्मसार] ऋषान् महानीर के समकासीन भीर सनके परम अक्ट एक गमधाविपति में गिक भीर विम्वसार के नाम से भी प्रक्रिय में (ए। या १ १३) धीप) । 🖦 मिंभसार, मिंभिसार । र्थमा और विभन्मा र बाध-विधेय मेधै (वे ६ १ । सामा १ १७- विशे ७८ टी बुर १ ६६। सम्मत्त १ ६। राज- भव ७ ६)। २ 'मा' 'मा' की मानाव (सग् ७ ६---यर ११)। समीकी [वं] १ पक्षती क्षत्रदा (१ ६ ६६)। २ नीवि-विशेष (यत)। र्भस परु [ भ्रीहा] १ नीचे विस्मा। २ नष्ट होनाः ६ स्वतित होनाः। भंगरः (द्वे ४ tua) i मंस प्र [भीरा] १ स्वतना। २ विनासः (बुल ११६ बुर ४ २६ ) फीनाहरू धंपदानंधं (शूत्र ४१)। संसग वि [भ्र शफ] विवादक (वर १)। मंसण न [भारान] अगर देवो: 'को छ त्रवाची विशापमा-संक्ष्णे द्वीरण एईए' (न्या ११३: पुर ४ ११) । मंसणा भी [भाराना] कपर पेपो (परह म, ४ थावक १४) । सरम्य चक [ सक्षय् ] म्हाल करना बानाः। यस्केद (नहा) । कर्ने, मन्दिरगद (नुमा) । वक्ष सबस्रेत (र्ड १ ५)। क्षेत्र सकिए ई

(पहा) । हा सक्स सक्तेय, सक्ताजिक

Y9) 1

SUD

श्रक्त केलो श्रीका (स्टब्स २११२)।

विकास प्रभाव का विकास प्रमाण सर १४ ३४ मा २७)। सबका व सिक्षा महत्त्व भीवन भी कीर **बीरनकरक्षकालको बर्राह** लाव<sup>र</sup> (सपा 286) 1 प्रावस्य देखो शका = भवाय १ भक्त के भिन्नी बरव बाव जीती का बना इया बाध इव्य मिठाई (नक्त २ टी)। भवत्या वि भिक्षकी महत्व कलेवाला (क्य २६)। अक्टब्रज न [अझ्रज] १ मोबन (प्रुख २०)। २ पि कानेशामाः 'सम्मानकार्वा' (शा २=)। भक्तकणका की भिक्रणा विकास वोजन (उना) । भक्तर दें [माल्डर] र पूर्व पीर (बत १३ थनः धरम् १)। २ सरित्र विकेश ६ ধর্ক বুল (ব্যত্ত)। सक्तराम न सारकरासी १ नोव-विशेष भी मीतम दोव की सतका है। २ वृंद्री कत बीव में उत्पन्त (ठा ७--- पव १६ )। भक्त्यवण ॥ मिश्रणी विकास (स्प 2x 2) : सकित वि सिक्षित्र वितेताना (ग्रीप) । भक्तिवर्ष वि [सक्षित] बाना ह्या (श्रवि)। सकरोप केशे सक्ल = मध्य । भगपूर्वभिगी १ ऐस्वर्थः २ व्यः ३ भी। ४ मत्र नौति। इ.वर्षे १ ६ प्रमूलः 'दरनरिक्करतिरिजधवानसम्बद्धाः सवा कत मित्य (दिने १ ४व वेड्य १ )। ७ नर्वे चीर । याद्रसम्ब । १ केशम्ब । १ मृद्धि, बोद्धाः ११ बीर्यः ११ रच्छाः (रया-दी) । १६ ज्ञान (शना) । १४ पूर्वापाल्युनी नगर (भारत)। इ.स. बी. बी.ने क्यारित-स्वान (पट्ड १ ४--पत्र ६० गाउ १ १६ दे:-पिरी पुर्वाचारपुरी नवात ना प्रक्रियाना देव अमेरिएक देश-विदेश (हा २ ६ नुस्य १ (२)। १७ इस सीर बन्ह नोश के धैव वा स्वल (हरू ३) : दश्त पू [\*दण] दुवनिरदेश (दे ४ २६६) । व केचा देत (बर बरा) । बई की विनी र ऐराव्यार-सरम्बा वर्ग्या (पश्चि । व

सरवरी-सत्र पाँचवां केत संय-सम्ब (तंत्र ४. १२४)। मैत कि बित | ऐस्वर्णीक **प्रशासन । १ ए प्रशोहन प्रशासन** (क्रमा विशे १ ४८: क्रमा) । सर्गबर वं ि सगन्तर ने शेव-विशेष--- एका के भौतरी मार्ग में बोलेबका एक प्रकार का फोबा (काबार रा विचार र)। मर्गतिर वि मिगन्तरित ने स्टब्स पेरवाला (मा १६: संबोध ४३)। मर्गवरिश वि [मरान्वरिक] उसर देवी (विपार ७) १ सर्गतन की सर्गतर (राज) ( भगिणी 🖬 बहियी (छामा १ वा कम क्य २३६३ मधा)। मिर्गिरिष्ट } प्रे [मिर्गीरिष्ट] स्वर वस्त्रातीं मगीरिष्ट्र का एक पुत्र स्त्रीरब (रहन १, 1255 801 भमा वि भिन्नी १ वरिक्ट बीच हुया (पुर २,१२, वं ४६ छका)। २ एछ किछ । ६ पनामित माम हुमा 'बह धम्बा पासहाँ (It's total ten men ur ?) ( a वे िजिल् ] श्रीय परिवाधकनीयोग (धीप)। सग्ग वि वि] बिह्न पोता इस्य (दे ६ १६)। सग्गन [साम्ब] वहीव देव (पुर १३ 1 1): भग्गव प्रसित्ती १ इक्क विशेष शुरू प्रद (परम १७ १ )। २ ऋपि-विशेष (तक्र t () i समारंग न [भागेवेश] योक-विशेष (दुस १ १६ शे इक)। भगितम् (धा) । वैनी भगा = भान (गिन) । श्रद्य हुँ [वे] भाष्मिय शत्रवा (पव्)। अधिकाम रिमिरिसनी विस्तान (६१ ८ वया १ वर्ग) । शब देवी भग्रामन । बद्ध- सर्जन सर्जेन भववाण ( वस् ) । ी पराना, कुनना । भन ५ बर्गरी स दिशा १ 1 (# (FIE KNY fett f

श्रास केलो सस्⊏ वचा। प्रकार किये और । शक्ताचा ३ मध्यिकाती र मनग्र प्रमुख अञ्चलका (प्रकार शासन र)। एक्ने कापाथ (समिति = शिवार के)। सम्बासका देवी भीता। शक्ताको शिर्धीपसी की (क्सा प्राप्त \*\*\*\* शक्ति की मिक्कियी क्यो मिलाना। अख्यिक हैले असा≘ क्षता 'त्रवित्यं ना জিবাৰ্ডি ন্নিকাল্বৰ্ডিবৰ বৈল্প (আৰা ৭ 8 8 3)1 मिलास कि सिंह, सर्जिती पूर्वा ह्या वक्रमग्रह्मा (पा ११७ माचा २, १,१ क्षेत्रिपार २ कमा)। र्भाक्सभा की भितिका १ भागी, ताक-मैच पनामार करकारी (पद २३६)। २ रम्परन मार्व-मोचन (क्रम्पकाम्ब वा ३६१**६)**। सकिय रिभिक्तिसी चनी बोग्य (भाग S. R. S. (K) ! शक्तिर वि शिक्षत् विकास अरख्य-ध्वरमञ्जलकाक्षात्रकर्तनुवी महासङ्गी (वर्वीर द्वदा सर्वा । शक्तेंत देखों सका≓ भाग । शहूर्वमहो १ मनुष्य-वादि-विदेव स्तुर्वि-एक्टर हो एक वर्षि अब्द 'न्यनक्त्रन-रंतपुक्त (बिरि १११) कुम २७१ वर पु १२ ) १ २ वेचावित गीएका बाद्याल वित्र (कर १ ६१ ही)। ३ स्वावित्व यहिक्पन, नातकिया (इति ७) ( शहारत हे ई [शहारक] र पूरव पुत्रनीय यहारय रे (भार रे। नहीं)। र नारके भी व्यवः में चना (बाह १६)। सर्हिदेवी संसु≕ बपू(ठा १ रासन वर्ग क्षणा स १४४० प्रति ३ स्वप्त १४)। महिमाई [१] विष्यु थीएल (१ ६ 2 4 2 ) [ ्राक्षी [भर्त्री] स्तामिनी मानिशित <) I

न दिया बदा हो।

भद्दु (शी) देखी अष्टारथ (प्रका ६६)। सदू वि [भ्रष्ट] १ मीने निराहुमा । २ न्युट स्वासित (महा ४४३)। ३ म्ह (पुर ४ २१४, साबा १ १)। सह पून [भाष्ट] मर्बन-यत्र पुनते का वर्तन (६ ६, २ ), 'स्टुट्टियक्रणनो निव धमणीय सीस तहरहरी (पूर ३ १४०)। महि । भी वि । क्ल-रहित गांव (भीव मही ) २१ रे√ से म्य ७ ६ टी—पत्र 3 p) 1 सह रू [भट] १ मोबा सहाका (कुना)। शुद, बीर (संव ३३ स्ताया ११) ३ व म्हेक्सें की एक पाति । ४ वर्ष-संकर पाति-विशेष एक गीव मनुष्य-वार्ति । १ एलाव (ह १ १६५)। अद्रक्षा भी ["काविवा] केंद्या-विरोप (ठा ४ ४)। भक्षम बूंब्री [दें] घारत्वर, एउक-महक दीम श्रम हाजमाठ (बद्धि ४४ हो)। श्रो (स्त) 1 भ्रष्टरा पूँ [सहक] १ धनामें देश-विशेष । २ इस देश में पहलेशकी एक स्<del>तेम्ब मा</del>ति (प्रश्न १ १---पत्र १४- इक्)। क्यों सङ्घ । शहारम (बर्) देश महारम (स्वि)। মতিবা ব মিটিল্লী চুল-বছৰ দায়াৰি, बबाब (स २६२) हुछ ४६२) । महिला नि दिं । संबोधन-शूचक शब्द (स्रोते Y9)1 भाग सक [ यम् ] बहुता, बीलना प्रतिपादन काला। मधार, मरोद (ह ४ २६८ इसा)। क्रमें क्रएड भएएप, मराज्य (पि १४० वक् । रिंग) । भूका, अर्गीम (शुमा) । अवि, मरिप्रीक्ष स्मीपुरसी (ब्रुमा)। वङ्ग आर्थाश भणमाण भणमाण (दुवा; महा बुद १ ११४)। रक्ष भण्यंत भणिजीत

र्षि १४४३ च १४१)। संह मणिस

**१ ११ थै**) ।

सवारा वि स्था 🐐 प्रतिपावन करनेवासा (खबि)। अध्यक्त मध्यम अध्यक्त अध्यक सुगा २०६३ श्रेबोध ६) । अजाबिज वि [आजित] कहबाया हुया (मुपा ४४८) । भणिम पि भिणित विश्वपार (धर)। अणिइ 🗱 [समिति] र्घाक वनन (सुर १, १४% धुवा २१४३ वर्गेक् ६७) । मंजिर वि मिणिए विश्वनिका वर्षा (गा रहण कुमा सुर हरू २४४ मा १६)। की री(कुमा)। भणेमाण क्यो भण । अञ्च एक [अञ्] क्ष्मा बीजना । मर्याद (बाला १४७)। मञ्जामाज देखो सज = प्रज् । मच र्ष [मच्छ] १ धाहार, शोजन । २ समानाव (विपाद्द ठाउ, ४० मझा)। १ बीवनः मात (प्रामा) । ४ सद्यतार शात रिनों का करवास (संबोध ३०)। ५ वि मकि-पुक, मकिमान: 'शा मुखसा बाबपामिति नेव हरिएनेमोनीमत्त्रवा वावि होत्वा (वंत ७ वन पूर्धः महान्तिम्)। शहा वरी िक्या निहार-क्या श्रीवन-संबन्धी शर्ली (अ४४) । नद्धंद छंद वृं [ीपसम्द] रोन-निरोध शीनन की शर्मा करी कारी वाक्षेत्र शतकारी श्रविकारुक्ते (गहा नदा---वि)। प्र**वक्ता**ण न ["प्रत्यादयान] भारूरि-स्वाय-सम धनशन धनशन का एक भेद, भएका का एक प्रकार (ठा२ ४ --- पत्र १४ थीप १ २)। यरिज्या परिश्रा की ["परिका] रे बही पूर्वोत्त प्रर्थ (यस १६६ १ वर १६७)। २ इंच-विरोध (भर्त १)। पाणध न ["पानक] माहार भणिञ्जमाण भणीश्रेत, मण्यमाण (रूमाः पानी बान-पान (क्या १ १) । विद्या की िंबेसा विवय-समय (विशा १ १)। भक्त वि [भूत] प्रताप संवात (हे ४ मणिरं, मंत्रिकण (रूपा; पि १४१)। हेर मणिड भणिड (बब्ब ६४ १६) ¶ )ı पि १७६)। ह सणिशस्य स्रोप्यस्य मित्त देशो भन्त (पित)। (साँव देश मुता ६ ८) । करह अर्थत, भक्ति 🛍 [भक्ति] १ सेवा वित्रम बादर मझमाण (पुर २, १६१: सर ४ २३: स्व (रापा १ c--पण १२२) सन सीवा

मानू ११)। २ रचना (विधे १६३१) और ी

सुपा १२)। १ एकास-वृत्ति-विशेष (धाव २)। ४ करपता अपकार (वर्मके ४४२)। १ प्रकार, भैव (ठा १)। ६ विभिन्नति-विरोप (श्रीप) । ७ धनुराम (वर्ष १) । त मिमास । कृषवस्य । १० स्टब्स (हे २ ११६) । सीत, ैंबैत नि [ सत् ] मक्तिनस्ता मक्त (परम दर रद जब हुता हह हर देरहा भविकार् भाषाच्या स्ताना मार्डका युग (सिरि ७१६, बर्नेवि १२७)। भक्ता नीचे देखी । भ**न्द्र** [भर्ते] १ स्थामी पदि, मदार (शाबा १ १६--पन २ +) 'छनवह उद ध्यमतूर्या (ग्रामा १ ६ पाम स्वयन १६)। २ व्यक्तियदि शब्दकाः ३ ध्रम मध्या । ४ वि पीयक पोपस करनेवासा । १ वारण करनेनाचा (है ३ ४४३४४)। 🖚---मची (पिम) १ मचोस व [मछोप] १ प्रताहमा यन (वैचार, २६ मधा ११)। २ पुकारिका बाय-विशेष (पत्र १४)। मस्य पूंडी [दें] माना तूखीर, तरक्छ; प्रष्ठ सारीविक्वावी पिट्टे दहरूमम<del>रका</del>री शमग्री (वर्गमि १४६) । गरमा की [शका] चमड़े की पॉक्नी गांची (उप १९ दी वर्गीव १६)। भरिपम वि [मर्स्सित] विरस्त्रत (सम्मत सरधी की [सकी] यानी चनके की बीकती पारिय व्य अनिसङ्ग्रमा विश्वविद्यपुर्दर (कुन 1 (785 **अब् चक् [मङ्] १ पुत्र करना । २ क**म्मास्त करणा (विसे १४११)। वह भदेता नीके Ruft t यर्ततः वि [सदम्य] १ वक्काश्र-कारक । २ धुक्रकारकः ३ पुत्रम पुत्रसीम (विश्व १४१६) FYWY) I सह न [ वं ] यामचक ग्रावना-पन-विरोध (R 5 7 ) 1 सर्<sub>) त</sub>[मह्र] १ मंत्रन बस्याणः 'नर् भद्रम } निन्द्रारंस्यसमूद्रगद्दपस्त

शास्त्र विश्ववस्थास्य प्रमुक्ती' (मानश

श**रक्**य ∫कामदीना(प्रका⊏२३ सुर ६

भएप देखी सरस ≈ भग्मन् (हे २,६१) भूमा)।

१६७: प्रापु १६) । २ तुबर्ख कोला। ३ नस्तक भोगा नागरमीचा (हे २ < )। ४ हो ठावास (संबोध १०)। १ देव-विमान क्रिकेच (सम ६२)। ६ शराजन मृह (शाया १ १ टी-पत्र ४३) । ७ महायत बासब-बिरेय (प्रावम)। व नि धाष्ट्र, क्या प्रया स्कर । १ एतम मीह (क्या प्राप्तु १६) सूर १ ४)। १ यु<del>व गण्ड कर</del>वाया-कारक (ब्राया १ १)। ११ दे इस्पीकी एक इन्तम कादि (ठा४ २—-पद २ ≈ सङ्ग)। १२ कारतवर्षं का दीसरा मानी कारेन (सम ११४)। १३ धंपविचा का जानकार द्वितीय च्या पुरुष (निचार ४७३)। १४ ति व-विशेष--- प्रितीया धतवी धीर शक्ती तिषि (स्त्र १ ११)। १३ खन्य-विशेष (पिन)। १६ स्वन्यम-क्यात एक कैन बाचार्य (महावि ६ कम्प)। १७ व्यक्ति-शायक नामक (निर १ ३) बाच १) कम्म)। १ भारतवर्षं का भीनीसवां भावी जिनकेद (पन )। "गुरु दं िगुप्ती स्ववाय-प्रविद्ध प्रकृ बैनापार्व (छोटि सार्व २६) । ग्रस्तिय न "गमिकी एक वैत प्रति-एख (वस्त्र)। बस प्रियासी १ फ्लबल् प्राचेनाच काएक क्छवर (ठाय-पन ४२१)। २ एक वैन पूर्न (कप्प)ः अस्तियन िदशस्के एक वैन प्रति÷रत्त (क्रम्य)। मंदि पूँ ["निन्त्न] स्वनान-काश एक चन-पुमार (विशा २ २) । आहु पू िबाही रानान प्रसिद्ध प्राचीन वैनावार्ने भीर प्रन्यशार (रूप शहर)। भारता स्था िम्स्ता विनश्यक्षि विशेष स्त्रमोबा (पएस t)। वया की "पना नजन-विकेष (गुर १९८): "साम्ब व विद्याली नेव पर्वत काएक कन (ठार १ इक) । सेण र्दासनी १ थळीऋ के बद्यांत शैल्य का मिवरित देर (हा ६ १) इच्छ) । २ एक में ही ना नाम (बान ४)। "इस न ["म्थ] नवर-रिदेप (१६)। [सण न शिसन] मानन-रिटेग विदानन (एरबा १ १) पर्या १ ४ शय योग)। भएदार व [भद्रदारु] देवताद, देवतार वी सम्बो (बर्गान १) ।

**११**€) | महसिरी की दिने वीक्एक जनक (दे ६ t 3) 1 मदाकी मिद्रा १ सम्बद्ध की एक पश्ची (पत्रम ७४ १)। २ प्रथम बलदेन की माता (सम १६२)। ६ तीसरे चक्कर्ती भी वस्त्री (यम १६९)। ४ प्रितीय चळवती की खी (शुन ११२)। १ में के पूर्व क्वक पर्वत पर फुनेवानी एक दिन्तुगारी वेदी (ठा c)। ६ एक प्रदिमा कर-विशेष (हा २ ३---वर ६४)। ७ राजा व शिक की एक पानी (धेत २४)। द विषि-षिकेष-वितीया सन्तयी थीर डाफ्टी विचि (बंधोन १४)। १ कम-বিষ্টাৰ (নিন)। १ কাদৰ্থৰ আৰক্ষ কী कार्यका काम । ११ प्रस्तनीपिता नामक क्नासक वी नाताका नाय (क्या)। १५ एक साम्बद्धक की पर गाम (विपा १ ४)। १६ गोशालक की मध्या का नाम (चय १६)। रेथ स्टिशास्या (पद्यार, १)। १३ एक नापी (रीम)। १६ एक नगरी (बाष्ट्र १)। १७ यनेक कियों का नाम (ग्रामा १ ८, १६ म्यवम) । महाक्री विविधि प्रचान विशे शाना दि 8 8 3)1 महिमा की मित्रिका महार शेक्ना सुन्दर (ब्री) (श्रीचमा १७)। २ गवध-विशेष (4**44**) ( महिकिया की [अप्रीया अप्रीयिक] एक वैव वृक्तिशाक्षा (कप) । भश्चित्र म [भश्चित्रपुर] कार्यार्थ का एक शाचीन बगर (वंश ४३ द्वार ४० दक) । भद्रक्षरवर्षिसम् ४ मिट्टोक्स्यवर्धसङ्गी एक देव-दियान (चय ६२)। सब्दुशर , ही [अत्रोश्तरा] अधिना विदेश प्रतिकाना एक जैद भद्रोत्तर भद्रोत्तरा <sup>|</sup> एक तदाना वत (बीपः बंद ३०- पर २७१)। मह रेगी यह (हे १, प्राप्त १७}। भर्मराय देवो भण≖क्ष्ा

शस तक [अस] भ्रमतुकरना प्रवयः। क्तव (हे ४ १६१) प्रकृति ११)। यह सर्मन समसाण (वा २ २० ३८७ इस) थीप)। चंक्र, भमित्रा, भमिक्रण (वर् वा ७४६)। इ. समिनक्य (सुरा ४३०)। सम प्रेमिनी १ आरख (१प ४)। २ भाग्ति मोड विष्या-बाध (से व ४०) चुमा) । असग न आगा के सबतार एकतीत रिगी का स्वनास (संबोध १८)। शसंख देखो ससं≔ प्रकृ 'गशीना धनका एक्टबिय (मिने १ क्ष्म क्षेत्र ४६६)। भमक्किय वि [भ्रास्त] १ भूमा हुमा फिए क्ष्या (स ४७३) । २ प्रात्ति-प्रक (क्रुमा) । को समित्र। समजन [भ्रमय] चनता चकरता। (<sup>१</sup> ४६: क्या)। सममुद्द दुं **दि**] भारतं (६, १.१)। समयाकी [फ्रू] बीह्, तेत के स्मर री क्त-विक (हे १८ १६७- हुमा) । थमर प्रं[भ्रमर] १ म**प्र**कर, श्रींग (**हे** रै २४४। जुनाः भी १० जात ११६) । २ ई बन्द-विरोप (सिंप) । ३ विट एंडीवान (कप्पु) । रुअ पूं िहच सनामें देश-विदेश (पर २७४)। स्थान्ति की [प्रविकि] र धन्द-विशेष (र्मेन) । २ प्रमद-वृक्ति (चन) ! भमरदेंदा 🛍 📳 १ प्रमर की तर्या महिन योत्तप्रमानी। २ प्रमर नी तर्द्ध सर्तिकर **पापरत्याती । १ तुम्ब प्रता के श**नगर्गी (क्यू) १ समरिना को [प्रमुरिक्य] बलु-क्रिक वर्षे (वी १)। देखो समस्त्रिया। समरी की ['ध्रमरी'] ग्री-प्रमद, भींचे (वे)। गीचे देशो । समस्या, भी भिन्नी सारी ही दिन्द मसरी कि प्रशास क्षेत्रीता रोव-रिरोव चकरा 'नगबी रिकटमाओं बर्मतबद्वितेतर्थे (पेरव ४३१: पडि) । २ वाय-विकेप (धप)। ममस र् कि पूछ-विरोध देव की वच्छ का मुक्त मरार शा भाव (दे ६, ११)।

ह्या (से ३ ६१)।

समाइअ वि [भ्रमित] दुगाया हुवा, कियमा

ममाद्व सङ [अमय्] दुपाना विदाना।

बह भमाइत (पठन १ ६ ११)।

मगारेद (हे ४ ३०) चनारेगु (सुपा ११४)।

समाप्त देशा सम अध्यम् । मगावह (हे ४ १६१: भवि)। समाट दू [अस] धनण बूमना चडर (ब्रोपमा २६ टी वर टी) । भसाइण न भिमम रूपाना (उर प्र २७=) । भगाइम देती भगडिल (हुमा)। शमाः इत्र वि भिम्नती पूराया हुना फ़िरक्ता ह्या (पटम १६, २४)। शमाय देखी समाह = असम्। धमावह, मनानेद्र (ति १६६) है ४ वे )। समान [वे] देखी समझ (वे ६ १ १) पाम) । अभि भी भिमि १ धावरी पानी का वका-कार प्रमेख (धण्डु १६)। २ विक्त-प्रम करने भी शक्ति (विशे १६१३) । वे रोब-विद्येष चहर 'म्हीपरिम्मीनवस्तिये' (हम्भीर अभिज देवो समहित्र (वी ४० प्रवि) : ६ व भ्रमसः 'समियमशिष्टतरेहतीरेसं' (बा दश्द) । भमिश्र देवो समाइस (राग्र)। भमिजस्य } रेवी सम = भ्रम् । भमित्रा भमिर दि [भ्रमियू] भ्रमश करतेवाला (ह R. tyxigt t xx, n ta) i समुद्र म [ का ] मीचे देखी भीड़ाई बमुहाई (पाना २, ११ १७)। भमुद्रा की [ भ ] भी, बॉब के अगर की रोम-रामी (परम ३७ ३ थीए) बाबाः नार्थ)। भमा } देवो सस≃भनः। सन्बद्ध (प्राक् भग्नत देश) भग्नपु (पा ४११ ४४७) । मन्मर (१ ४ १६१) । मन्मरेह (श्रुपा) । सम्मर (था) देवी समर (विष) । भप देवो भर । बह देवो भर्षत्र = नर्वत । र्व अर्थत् वि [अयत्रावः] नव ने बता कानैपाना है

सय थक मिल रिवेश करता। २ विकास से कारता। ३ विमान करना। ४ ग्रहसा करना। भया, नयाह (सम्म १२४ कुमा) भए, मध्बा (इह १) सर्वति (विशे १६१)- तम्हा मन भीन वेरण्ये (ध ६१)। वक भर्यत समाण (विसे १४४६: सूच १ २ २, १७)। क्युड 'सम्बद्धायस्थाणसुदेहि' (कन्न) । संह भश्ता (ता ६)। इ. महल, भइत्रब्य, सप्यक्त भक्त भयणिक (विते ६१० र ४९३ जल १६, २६ ९४ २६ कम्ब प्र ११ विश्व ६१४८ वर ६४ विशे ३२ २ १४८३ १८१ शीवम १४४, गॅव र, का विशे ६१६। जीवस १४७)। अय न [अय] बर, नात थीति (बाचा लावा १ र गारं २ कूमा श्रासुरक्ष रं७३)। अर वि किरी मय-वनक (से ६, ४४) tt ७६) । खणणा भी [धननी] t शास क्रपन्न करनेवाली (बृह्व १) । २ विच्या । मिरोप (परम ७ १४१) । बाह् ट्रं [धाह्] राज्ञस-बंदा का एक राजा एक संकापति (पटम १, २६६)। भय देशो भय (उमा कुना सर्गा पुरा ४२ ३ धरह)। सम वेको भग (धीप पिन)। भर्येष्टर वि [अयेकर] १ भय-जनक भीपरा (हे ४ १३१ वर्ग यवि)। २ प्राप्ति-कव विचा(पछह ११)। सर्गत देवी सम = मन । सर्गत रेको संत = मगत् (मुख रु रु रु)। सर्वत देखी अर्थत (योग ४० उस २ ११ भीप)।

RYXTO RRXY) I

(धीपानूच १ १६ ६) ।

'बम्पमादम्बरी भगेतारो' (सुम १<sup>®</sup> ४ १ २१)। अर्थत् वि जिल्ही देवक देवा करतेवाता संबद्ध ) पूँ सिनकी १ मीकर, कर्मकर भाषा 🕽 (ठाँ४, १ २) । २ कि पोपित (पएइ १ र माना १ २)। भगण न भिम्नती १ सेवा (राज)। २ विजान (सम्म ११६)। ६ ई बोम (सम १ € tchi समज रे**को** भवण (माट---वैत ४ ) । भयणा की [अजना] १ छेवा (तिषू १)। २ विकटन (बरा सम्म १२४' व ११ जन)। भयप्पद् ) रेखी वहस्सद (है २ १३७ मबप्तद् । पर्)। संयथग्गाम पू वि निष्ठेरक प्रकरात का एक शीय (देद १२)। भगाणव वि [भगानक] मर्गकर, धव-जनक (E 141) I भयाकि पू [मयाकि] प्रास्तरपै के भारी धठारहरूँ विनदेश का पूर्व-मनीय नाम (सम ११४) । वेषो समासि । भयाशु वि [भीक] भीड, उत्लोक (दे इ १७ मह)। भगावण (धर) वेश्री भयाणय (धरि)। । समावह वि[भयावह] भय-जनक भव-सरक (सम १ ११ २१)। भर वक भि दे भरता। २ वाळा करता। ह गोपण करना । मरह (महिः सिन), भरमू (बस्य ४ ७६)। बङ्क भारत (चति)। रवड गरंद, मरेंद्र भरिवान (ते १ १८१४ ६ १ १०)। सह अरेजल (धाक १) । इ. शर्राणका सर्गास, मचन्द्र, मरेजन्य (प्राप्तः मार राजः श अर्थत देशो भीतः=चपान्त (विशे १४४१) € 1) i सर एक [स्यू] स्नरहा करना यह बरहा ! भर्यत रेतो भंग = भशन्त (विभे १४६४) थरह (हे ४ ७४ मात्र) । सूर भरत (या रेटर भीर)। बीड मरिझ मरिझणी अर्थत वि [अयथ] मर है रहा क्लोबाला (हुमा)। धर्मा वह सरायंत्र (हुमा)। भर ५व [मर] रे सद्दर प्रकट निकटा 'नदमस्ये हृद् एगानिखानि भीनारि<u>ब</u>ट्टनर'

भरम देखो भरह (पड ) । भरह पूं [भरट] बती विशेष एक प्रकार का (मणु)। भरण न [स्मरण] स्मृति (वा २२२३ १७७)। मरिया (यप) 🖦 मारिया (हुमा)। भरम न [भरण] १ मरना पूरना (वज्रह)। २ पोपरा (मा १२७) । ३ किल-विशेष भरिकी की भिरिक्षी चतुरिनिय कर्तु

भरणी 📽 [भरणी] नवन-विरोप (सन 🖘 इको । मरम (दी) देशो भरह (प्रक्र वर्ष)। मरह र् [भरत] १ भवतान् व्यक्तित का कोह पूर्व भीर प्रथम चक्रमधी ग्रमा (सम **१**ः दूमा दुर २ १६१)। २ राजा द्यमक्त्र का क्षेटा नाई (पटम २६८ १४)। ६ साटब-राजा का कर्ता एक द्वति (सिरि त्रयोः, बक्तः अस्त्रार्वतः (कृपा) । १६) । ४ वर्ष-विशेषः जास्त वर्षे विदेव बंदुशिके दीके सत्त कासा प्रमत्ता तै कहा-

वक्र में देव-पूटा सादि साकार नी रचना

न्हीक्**एं तूपर्ध** भएएं' (म**न्द्र** ३ ७) ।

भरहे हेमबए हरियास महाविधेह समाप द्ररत्त्त्रक्ष्यं प्रकर्षं (सम १२) वर्षः १ विष्कः)। इ भारतमर्थं नाज्ञचम मानी चळ्ळाची (सम १३४) । ६ शबर । ७ तन्तुवाव । व सूप शिरोप समापुरमस्य नापुत्रः १ मस्त**े** र्वत्रव स्थलातः वट(हि ११४४ यह)। ११ केन-किलेप (चे १)। १२ कुठ-विशेष पर्वत-विरोगका शिकार (वेश कार, वे र) । "लिच व ["श्रेत्र] मारतवर्ष (तरह) ।

बास व ["वर्ष] माळवर्ष मार्वावर्ष (प्रस्

१ ४)। सत्य न [शाका] नरापुनि-

बचीव नाटबस्त्रज्ञ (मिरि १६)। विद्य पू [सिप] १ बंदूर्ण मास्त्रस्य ना समा

भरु पूर्विकी १ एक बनार्थे केस । २ एक धरायं यमुष्य-बाति (एक) । अस्थानम् वृं [सूनुक्तम्य] प्रवरत का एक प्रक्रिक रहार की प्राप्तक क प्रमुचि के नाम छे प्रक्रिय है (काला पूनि १ ११) पश्चि । सरोच्छ्यन हि] ताचनाथमः (१६, 8 3)1 सक्ष देनो सर≔ स्य । मनद (द्वी४ २४)।

विदेप (चन)।

भस्र पत्र [ सङ् ] सम्बन्ताः । मनिनानु (बुपा १४६) । सदि मसिस्सामि (कास) । क्र अक्षयक्य (भ्रोग १६ दी)। प्रमी क्षेष्ठ, सञ्जाबिकाम (चिरि ११९) १११) । अर्लात वि दि दि स्वामित होता, विरता (दे ६ t () 1 मस्मिष्य पि [भासन] सींग हुशा सम्हाकों के लिये दिया हुआ (या १६)। मकि पूँची विशेषकाह हठ 'धनुभव्नेष्णका

भाई निम ये निम पूर पर्लिट (है ४ ११६) शक्ष पूर्विष्ठी रमानू रीच (पदहर १)।

२ पून, शक्त विरोध गाला नर**न्हे** (ना ६ ४)

THU TEY) I

(पुर २, २०३ क्रम २७४) दुमा ६६ )। सक्तु वृंबी [बे] मानू, रोब (दे ६ ६६)। अस्तुर्देश की हि] रिना ऋगती (दे ६ १ १३ चछ)ः 'ऋषुंभी चट्टिमा विश्व वी (संया ६६) । भक्कोड पुन [क] बाउ का पूज शरम सर काग इनएकी में 'काचीह्र' 'कदानिस्टें

वर्वपुरुष्ट्रशेषंत्रक्रोडा (नुर २ ७)। भव सक [मृ] १ होना। २ सक नात करना। सन्द्रः प्रदए (कथा महा) कर (बनाठाव १) । भूका वनिषु (वन)। सबि, व्यवस्ति, व्यवस्ति (क्या कर, वि १२१)। बहु, सबंद (यस्त्र १४४) 'तूपका-मिना (१स)भगाय वास्ति (इम ४३७) i वंड- भवित्र संवित्ता सवितामं (धरि १७ क्या घर पि १ १), सह (धर)-

(रिंग) । इ. समियस्य (कास १ १) प्र भ २ ७ बना थरः चुपा १६४)। देखी शवर्द्र[सव] १ संसर (श्र.३ १३ वर्ग चक विवाद १। दूबर्स वी ४१)। २ बंबारका कारण (सम्म १)। १ वन्द क्लांच (टा ४ १) । ४ नरकारि गोनि, <del>वान</del>-स्वान (बाचा-छार ३ ४ ३)। द*व*द्वा 🏴 रिज (पाम) । ६ वि होनेरामा वानी (बारं) । ७ जलका चलपहर समित सरव भनो है नहामाय । (दुपा १व४)। च क- केव-विद्यात-विशेष (बस २)। विश

विखालों भवविलालों (सम्म रे)। द्विव

की स्विति १ देव बादि मोनि में बटाति महादेश (पिय)। नी कास-मर्मारा (अ.२.१)। २ ईसार में भवारिस वि [मधादश] तुम्हारे वैसा सबस्यान (वंचा १)। रेव- वि स्वि] भागके तस्य हि १ १४२, चंड सुवा श्रेमार में स्थित (ठा २ १)। स्यक्टेविक २७१)। वि ["स्यवेषिमः] वीषम्युकः (सम्म ८१)। सवि पू सिविन् अन्य बीव मुस्ति-शर्मी घारणिञ्ज न ["घारणीय] बीवन-पर्वेन्त व्याणी (भवि)। संसार में बारण करने मोरव शरीर (भग मित्रिम क्यो सव = मू । इक)। पचइय नि [ प्रत्यविक ] १ समिश्र वि [सब्य] र मुन्दर (कृमा) । ९ नरकारि-रोनि-ईपूछ । २ म धवविज्ञान का बेंह, बचय (श्रंबीब १) । ३ मुक्ति-योग्य विक-धामी (पर्वत १ इन)। ४ धानी युक्त मेर (ठार १ सम १४१३)। सुद् होनेवाता (हे २ १\_७) यह)। देवी पं भिन्ती संस्ताका एक प्रसिद्ध कवि सिविय सिक्यीय वि भवन = यम्प । (इस्ट)। [ सिद्धिक] उसी बन्ध में या बाद के विसी भविभावि [स्थिक] १ मुक्ति-योग्य मुक्ति कम में बुक्त होनेवाता युक्ति-धमी (सप २ वामी । २ बंबारी वंशार में रहनेवासा (बुर पएछ १ क भग विसे १२६ । बीबस ७१ Y. 4 1 1 माबक ७१८ ठा १३ विसे १२२६)। <sup>®</sup>মযিত ৰি [<sup>®</sup>মযি**ছ] ঘৰ-ৰ'কৰা** (গুড়া)। ामिनंदि हिन्दि वि ाभिर्णीद सविची भी [सवित्री] होनेवाची (पिय)। िभिमन्दिन् सहार की पर्वत करनेवाला भवियव्य देखी सव = भू। संसार का सकता भागनेताचा (राज संबोध भवियम्भवा 🕸 [भवितम्बता] शिवति च १६)। "किमग्रहि न िषप्राहिन् श्रवस्यं मानी होती (नक्का)। कर्म-किरोप (वर्मसे १२६१)। मबिस वि [भविस्त] निष्टुर (रश शयस्य भव रेको भव्य (नम्म ४ १)। भव १ र्ष [ भवन् ] तुम साप (कृताः भवत । हे २ १७४)। भू पत्र १६० सूत्र १२६)। मविस (वप) वेको मनीस । च यत्त पू भर्गत रेखी सह = पू । [देख] एक कवा-गामक (शरि) । भवें (मप) सम = भन्। वर्ष (तल)। मनिस्स र्षु [मनिष्य] १ व्यक्तिय कार्स बहु, अपैन (श्रांत)। सङ्घ सर्वित् (हास्त)। भागामी समय (प्रस्त ११, १६ पि १६ )। २ वि समिष्य काल में होनेबाला साबी अवैन (पर) देशी असम (पवि)। (लामा १ १६--पत्र २१४ पत्रम १४. असम न [अयम] १ बराउंच जन्म (काँचं प्रकृति है देशका कायु ) । १७२)। २ मूद्र मशान वसरि (गाम नुमा) । १ धनुरदुमार थारि देशों शा मणीस (मप) क्यर देखों (जवि) । रिमान (पण्य २)। ४ श्रता (विधे ६१)। सक्य वि [अक्य] १ मूलर, 'बानो सन्ती पर प पिति । एक देश-वाति (भन)। करिस्सामि" (गुपा १३६)। २ जीवस, योगब वासि पू [ वासिन्] वही पूर्वोच क्रवे (विसे २८ ४४) । ३ योष्ठ उत्तव (वञ्जा (दार योग)। शासिणीबी ['बामिना] ta)। ४ होता, वर्तमानः व्ययं धूर्वजा देशे विशेष (पएए १७ महा ६८ १२)। ! मार्ग वा व्यक्तिस वर्ष (एतवा १ १६--मन र्शिदय र् [विषय] एक देर वार्थ (कुल र्राप्त क्या विसे १९४२)। र मारी 49): होनेशना (विमे १८ वंद २ ८)। ६ भवमात्र हैतो सद = भू । मुक्ति-बोग्य, मुक्ति-वाबी (बिने १०२२) हा मनर रेपो भगर (चंड) । भा थ र १)। "सिद्धाच देवी मन-सिद्धीय

पश्यक्षपश्यका सुरुमा कियोहिया मान सिक्कीया (यंच २ ७६)। शब्द दे हि शागिनेय, शानवा (है ६ अस सक अप् रे पूर्वता सात का बोधना । मसद (दे ४ १०६: पद--पत्र २२२) मर्चात (सिर ६२२)। ससम र् [यसक] एक राज-दुमाद, धीरप्ए के बढ़े भाई जरहरूमार का एक पीम (क्रम) । श्रमण देशो भिसंज । महलेमि (पि १११)। असण व मिपणी १ क्ले का राज्य (मा २७)। २ थूँ श्वान कृता (पाप विरि ₹**₹**₹) : असवज (धर) वि [संपित् ] मुक्तेशका जुलव मस्यावं (हे Y YYN) ! असम पु [सरमन्] १ बह-विधेष धन-भग्यक्षेतिकं इमं तिर्दे (सिंदू ४२ टी)। २ राज अमृतः (मनपुर्वृश्वियगती) (महा सम्मत **७६) । देखो आ**स = मस्मन् । असल देनो समर (हे १ २४४) २१४ कुमाः पुषा ४ (पिन) । सञ्जा औ वि विवा ग्रवली विवारित (वे६ १ १३ पाम) । भस्म देवी भसम (बाह ३७)। असेड देन हि | बाग्य मादि का वीरत बन भाव काषिमसत्त्वसरिया से क्यां (उवा)। थमास्त्र कि ससीस्त्र] एक गाट्य-विकि (धन)। भस्य (मा) देशी सङ्ग ( पड् ) । अस्थासम्य (गा) रेखा भट्टारम ( पह् )। भारत देवी मेंस = प्रंश । मत्त्रद्र (शहर ७६) । वह सस्त्रीत (काल) । अस्स पू [ सस्मम् ] १ वह-विशेष । २ राज्य (& R Xt) 1 अस्सिक वि [अस्मित] बतार राज किया हुवा जरम किया हुधा (कृमा)। आधक [भा] चयरना धीपना बरारानाः 'या व्यानी वा रितीए' (रिते १४००)। मा" (कमू) जानि (यज्ञा)। बह देवी अंत = मान् । भा ध्ये [भा] रोहि, प्रमा रान्ति, हेर

(रुवा) । अहस हूं ["मण्डव] रावा बनक

पः विरि १७७)।

(नुपा ४१) ।

(बाइ देशे) ।

(बच २१)।

₹ **₹**) i

(प्राकृ ६४)।

(वंच व १)।

कापुत्र (पस्य २६ ८७)। विसय व

विद्यायी जिल-देव का एक मङ्गाधानिङ्गर्य

पीठ के पीछे एका जाता दीति-संबद्ध (संबोध

भा ) धक भी दिला भय करना। आह.

भाम । बामद्रे माधानि (हे४ १३ वर्)

मद्वाः स्वप्तः ॥ अति (शी) (प्राक्त ३३)

मध्यत्र (बस्य)। अनि महस्त्रस्त्रीं, सहस्ती

(ठी) (नि १३)। वह आर्यत (हुमा)।

म भाइयम्ब (पर्वा २, २) स १९२

माझ देतो भा≂गा। मन्नदि (शी)

माञ्च [भाषम्] व्यक्ताः नामद्

क्क सायमान (मुना २४०)।

भारद (त्रस्त ६४) भारति (कर्पुर २४)।

भाज रेबो भाव=शावम् । इ. सापश्रम्

भाम १ [भाग] १ थाम स्वान । २ एक

देश (के १६ ६) । ६ घंटा विमान शिल्ला

(पत्था सुपा ४ ७) पत्र---मत्था ३ । स्ट्रा)।

¥ भारक नमीब (सार्वं व )। चित्र

द्विभार्त भियी १ भाग्य, नशीव (स

tt au सम्प दश हम्बीर १४° वनि

११७)। २ न८ राज-वेप। ३ वाबाद,

माधीरार, 'भागदेसी, भागदेस' (बक्त बर-

भाग दें कि किट योजी ना पठि (६ ६,

भाषाव केयो साध = भागत्। मानत्वेदः।

नट-- वेद ६ ) । देखो भाग ।

भाञ रेखा भाव (भाँद)।

माइम विभिन्नी रेबरा ह्या। २ व बर, भग (इ.४ १३)।

माइजिञ्ज) पुंची [भागिनेय] परिनी-पुत्र भाइनेश } बहिन का नड़का गानवा (बस्म

मार्गेटा १२ टी गट—धना दर, ध

९७ ३ लाया १ ४--पत्र १३१५ पत्रम १६,३६७ कुत्र ४४ ३ महा)। 🕊 🐿 (पक्रम १७ ११२)।

माइयव्य देखो सा = भी। माश्र वि [भीक्] करलेड (१ ६ १ ४)। भाइत एँ हि हामिक कर्मक क्रमीक्ब क्तिल (दे६ १४)।

माइक्ट वि मागिन, की ग्रामीबार, सामीबार, परा-वाही (बुध २, २ ६६) पकार एक वे र-पवर्रशासाया १ १४)। वेबो मागि।

भाइक्ट व दि भारुभाष्ट्री मार्ट ब्रीहर मारि स्वत्रक ग्रुवराखी में 'माँवड' (क्रम (XX) 1 माइरही की भागीरथी | पंच वर्ध (पड़ब हे ४ १४० बाट-विक २ )।

भाष १ पुँ (आर् गार्ट, कम् (बहा, भाउम प्रिष् किरि १७ हि र रेवर थर)। शाया आराइया**ध्ये विद्या**यां भी बाई, माई नी की (दें ६ १ व पूरा 74Y) I

माउभ रेवी माध = (वे) (वे ६ १ २ थै)। माडल न दि । यापाइ यास में स्वास यादा *वीरी-पार्वदी श*्दर <del>करवद</del> (र \$ 2 P) I भाडग वेकी मात्र (स १४६ टी महा)।

याक्या भी कि भी बाई साई ही कारी (8 9 9 8) भाइ केरो मानि 'तारिम वंत्रवहुमध्यात्राहरी माउराजन र् [मागुरायन] श्रक्तिनानक नाम (पूडा २२३)।

मिना ए इति वह दिहें (बस् वेस का E St): माइ ) दें [भाग] मार्ड, बन्दु (का ४१६) भाइभ निर्मे भारमें) । बीयां स्पे विद्व

तीया वर्ष-विरोध, बैगाइत कार्तिक हुत्त प्रितीना विषि (वी ११)। सुअ पू िस्ता सरीया (तुरा ४७)। देवी साह । भाइम हि [माजित] १ दिनक विना हुया-वांस हुमा (सिंड २ ) । २ खाँगुडत भापभव्य देशो साभ = शत्यः।

याग र् [याग] रे यंत दिल्ला (दुवा) थी २७-दे १ १६०)। २ प्राप्तिस राजि, अनाम नाहारम्या 'नापीपिता तथी स महर-मानो न्याप्यज्ञाची सि' (विसे १ र )। १ **पुत्रा, भन्म (सूग्र १** १२)। ४ माण्ड नग्रीक जिल्ला वयपुत्रा है यहँचनावीवधीवि

बह्न सम्बं (विटि २३)। १ प्रचार, संबी

इंध्र (परम ६ १७-२८ ८१) स रेर बुर १४ ६ पाय) । केलो साभ ≕मन । आम्ब्रुब वि [आगवत] १ मध्वान् से संबन रक्षनेक्ताः २ भश्वान् वा भक्तः (वर्षे ६१२) । ६ ग्र. प्रंक-विशेष (खेरि) । भागि दि भागित्री १ घरनाना, केन

(राज) । ६ धवकाश (दुरुव १ 👫 环

१४)। चिम चिल दिम देशो माज-

करनेवासा 'भारत्य मानी' (घव), कि पूर मराईरि न में संबाद मंदमानमासिस (दुव १४७) १२ मानीसर, समीसर, धरमधी (प्रामा)।

मागिलेखा । देवी भाइणेखा (महाः ग्रंग मारिणेय 🕽 २७१)। सागीरही देवी भाइरही (प्रम्)। सात थक [भ्राज्ञ] नगरया। यर्न सार्वेद, मंद (रिसे १४४७)।

माड पुन [दे] भार नह बड़ा पुन्हा पर् यस पुना बाता 🕽 बट्टी 'आबा बाउदमस्स सन्याञ्चलत्त्रसञ्जया श्रद्धियाँ (वर्गीदारी) चस्र)। साहय व [भाटक] नाझ किएस (इर ५

1 (423 भाडिय नि [ माटकित ] भाडे पर निर्ध हुया, चोदिल्ले घाडिले निमर्ड' (पुर १६ ६६) । माहिया | धी [माटिया ही] बार माही | कुरु किराया, 'स्तरात ध यात्रि सदादि समें रमेश रक्तीम् 'विका-थिखोप् राज्या इत्त्रियं मार्डि (सूपा ३ दे ३ ३० चरा) । कस्म न ∫ कर्मन्∫ **३**४ बादी धारि माहे पर केने ना नाव---मन्दर्भ

'माजियकस्ये' (प **१ उथा २२३ प**क्रि)। भाज देवी सम≈ क्यु। ईकु शामिऊप माणि≲णे (तित्र ६१४३ छक्)। ह आणियक्य (धा४ २) सम्बद्ध क्य ब्बाः शप्पः धीर) । माण वैकी भाषण (बीच ६११) है है २६७३ थया) : भाजित्र वि [माणिन] १ नहासा **ह**वा

नाविकः नारास्थनाई माहिन्ता / राजा

२ २---पण ७७६)।

६८)। २ कहमामा हुया" 'समपुर्शिकामाए छो मन्त्राए भारतचो मंत्री (सुरा १८७)। माणु दू [भानु] १ मूर्ये रवि (पडम ४६, ११ पुण्ड १६४ सिरि १२)। २ किरल (प्रामा) । वे प्रगवाम् वर्मनाव का निता एक राजा (तम १११) । ४ व्ये एक इन्त्राणी शक की एक सप्त-महिती (परम १ २ ११६)। क्या र् [क्यो] सन्त का एक धरुव (परम ७ १७)। सई की [सती] रात्रल की एक पनी (काम ७४ १ )। माखिणा [ माखिनी] विचानींवयेष (पडम ७ १३६)। सिस्त ए ["मित्र] रज्जांक्ती के राजा बसमित का और मार्ड (शल विचार ४६४)। चैस दू [थिस] एक विचायर का शाम (यहा छए)। "सिधी ची ["भी] राजा बनमित्र की बहिल (शास)। भाग देखी समाह = भ्रमम्। भागः (हे ४ १)। वपक्र मामिळीत (सा४१७) । क्र सामयस्य (दी ७)। भामण न [भामण] चुनाना किराना (सम्पत्त \$0Y) I मामर न [भामर] १ न दु-विदेश प्रवधे का बनाया हमा मधु (पर ४)। य यू दोवक धन्द का एक मेद (तिए) । भामरी ध्यै [ घामरी ] १ बीला-विशेष (रामा १ १७--पत्र १९१)। य प्रचलिखा (कप्पाधीर)। मानिज रि [भ्रमित] १ पूरावा हवा (है २ ३१)। २ मान्त शिया ह्या भागत-विक निया हुमा: 'बत्तरमानिभी इत (मन २७) पर्नेषि ११)। मानिर्णा भी [ मागिनी ] भाग्ववारी (ह १११ (मूना)। भामिणी को [भामिनी] १ क्रीनशीला हो। ९ औ मदिता (भा १९ सुर १ ७६ सूत्रा ४३१(मामतः ११६)। भाग देगी भाउ (गृक्त)। सार्थन देनी भा - भी । भाषण 🚧 [भाजन] १ वाव । २ शापार । व बेरव 'मावला भारताह" (हे १ वह २६७) वि विर वजा ने दुवनावनुष्, सामु मीरियं महत्र (सः १६७-कृतः)।

भायर्थत पू [भाजनाङ्ग] बराबुल की एक वाति पात्र देनवामा करावृक्ष (पदम १ र **27** ) 1 मायणिज्य देवी माइणिज्य (वर्गीव १२ सायमाण देवी माञ्र = भावय्। सायर केवा भाउ (हुमा)। मायज प्रे विं जाय बरा ज्लम शांत का थोड़ा (दे ६, १ ४) पाम)। भार र्ष [भार] १ वोका इच्च (पूमा)। २ ग्रारकाती वस्तु, बोमझाली चीत्र (मा ४ )। ३ शाय संगायन करने का धविकारः 'जारत्यमेरि पुत्ते को निवमार' हवितु निमपुत्ते न म साहेद संकारी (प्रामु २७)। ४ परि माण-विशेष 'साउधनीये इंबर्ट नासइ मार्र वुहस्त कह सहसा (प्रामु १२१)। १ परिवह, यन-काल्य सादि का संबह (पराहृश् ६)। ; गामी व ['प्रशस ] बार बार के परिनाश क्षे<sup>-</sup> 'बस्डवलामला' शुरुवनाती थः भारत्वक्षो यं (शाया १: च---पण १२५) । अद्व वि ियह विका दोनेवामा (का ४०)। विह वि शिष्ट्री वही सर्व (पटम १७ २१)। सारह धी [भारती] भाषा बाखी बाह्य वक्त (पाध)। देशो मारही। भारताय ) न [भारताज र नौत-निरोप आरहीय े जो बीतम बीम की एक शासा है (बार-युश्य १ - १६) । २ ई आधाय गोत्र में स्टाझ 'ने नीममा वे गाना वे त्रारहा (१ हामा)- ते चीवरमा' (क्षा ७---पत्र ३६ )। भृति-विरोध (बीयमा ax) । x बुलि-विकेश (रि २३६ २६च) १६६) । मारय रेसी भार (पुता १४ १०१)। मारा न भारत दे पारवर्ग भरत-रोप (उदा)- 'बद्दा नियंते वदराविमानी वजान भेजनगर्भार्थ हुँ (श्ला र १ १४)। २ कान्द्रक कीरवीं का मुख महामारत (पडम) १ ४, १६) । ३ देव-विटेच जिनमें पाएटर बीरर पुद्ध कर कर्नन है, व्यक्त-पुनि प्रणीत । महानारत (दुना वर ३ व)।४ वरतः।

भुनि-प्रशीत नाट्य-शाप्त (भए)। ३ वि मारतवर्ष-सम्बन्धी, भारतवर्षे का (ठा २ १--पन ६८) 'तत्व बसु इमे दुवे सुरिया पश्रसा सं बहा--भारहे वेब मूरिए, एरबए चैव मृद्धि (सुध्य १ ३)। दिल्लान [क्रिक] नारतवर्ष (ठा२ ६ टी---यव 1 (10 मारहिय वि [ मारतीय ] मारत-संबन्धी 'का भारतिहमकहा दब भीमण्डुखनबनसङ्ख्यि कोहिस्सा (नुपा २६ )। भारही की [भारती] १ सरलकी देशी (पि २ ७) । २ देशो भारद (स ६१६) । भारिक कि [मारिक] मारी भारतामा प्रक (वे ४ २) सामा १ ६ वन-११४)। भारिक कि [भारित] १ भारताला भारी (इप पू १३४) । २ जिस पर भार लावा यवा ही बहु, भार-पुक्त निया गया (मुच २ २४)। सारिक्षा देवी सञ्जा (हे २ १ ७ उताः खामा २)। मारिष्ठ वि [ भारपन् ] भाषे कोमशाना (वर्गीव १६७) : मार्ड प्रभारण्डी से मुंह और एक शरीर बाला पछ। पछि-बिरोप (कप्पः भीनः महाः 4 4 8 c) 1 मास व [भारत] सपाट (पामः दुमा) । भलुंधी [वे] रेपो महलुंडी (नव १६)। भाक्ष पुन [ हे ] महन-नेदना काम-गीहा (धींच ४७)। भाष चर [भाषय ] र मामित करता हुला-धान करना । २ किन्तन करना । आवेद (पिने ६c) मानिति (पित १२६) भारेण्य मारएँ (दि ११) भारत् (महा) । वर्ने, वादिन्दर (प्रापु १७) । यक भागेंग, भागमाम, भावमाम (पुर = १८३) पुता २१११ का) । चंद्र, यापेचा, भाषिज्ञ (उना बहा) । इ. भाषणिका, भाषिपच्य आवंपस्य (राष्ट्रा बाला नुर १४ - a४) । साय थक [सास्] १ दिवना सस्ता मालूब होना । २ वनन्य होना, वनित मालूब

आपना की आन्ता है नामता प्रकानात, संस्कार-करका (वीर)। २ व्यूप्रेका क्लिकत । ३ वर्षाको का (वीरा)। २ व्यूप्रेका क्लिकत । ३ वर्षाको का (वीराया के (वीराया के))))))))

बदोराव का तैयाची वा सक्तवाची शहते

(नुकर १६) तक ११)। "प्यासी

िरमा विवास वर्षमान की कुन्य शिष्या

भाविष्ण न [भावित्रप] ७५वोच, अन

यापिर दि [भाषिण अपियु | जरिय्य ने

हेलेनला, धन्तर्वजनीः 'धन्द्रं वान्तरहेट्ट-

(नव १६२) ।

(भन्)।

Ęţ0

भी वेद देवबीयो देवसहस्तोवसोहियी सम्मी।

गुद्ध निर्यद्विमाद इसिङ्क मानद नरभोजनो मञ्चः ।

पिन्दर्वि राहायोद्वर्द्ध में भाषद वें हो वें

भाष पूर्वि भाष है १ पतार्थ बस्तु 'अवो बल्ह्

पक्तवी (पान निष्ठे ७ १६६२)। २

मनिवार बाराम (बाचा पंचा १ १ प्राप्त

४२)। १ विक्त-निकाद सामग्र विक्रति

**हाप बाद**पत्रसिद्धविक्कोदिकासधारितगीर्हि

(पर्राष्ट्र २ ४ -- पत्र १३१) । ४ सन्त

क्टांचि निडी रण्डं बद्धमध्याबार्डं (विसे

१)। १ पर्यात वर्ग वस्तुका परिकास

इस्म की पूर्गपर धवस्त्रा (पराह है है

उत्ती २३ विधे ६८ कस्माप १

)। ६ वारवर्ष-बुक्त पदार्थ निवक्तितः क्रिया

का सनुबन करनेवाली वला पारमाविक

पदार्थ (विशे ४६) 💷 परमार्थ वास्त्रविक तत्त्व

(निये ४६)। = स्नमान स्वस्य (ब्रह्म लीव))

६ मनत बढा (पिसं६ नश्च ६७०)।

११ विद्या (खासा १ व)। १२ विमा,

महत्त्व (प्राप्)। १३ विकि कर्जन्योपदेशः

'व्ययाकाषमञ्जा' (मन ४१--पन ६७६) ।

दुना ७ ३६)। १६ धन्द्रांत बहुमान होयः

राग (बार कुमा ७ वड्ड ८६) । १६ आयशा

नाउप भी मापा में विविध पदार्थी का विन्ताक

परिश्त (सवि १ २) । १० सम्मा (सन १७ -

१)। ११ माल्य क्स (क्यू)। किंक बू

चित्र विरोध महायह-विशेष

(टा२ ६)। रैच र्यू [पेने] सास्त्री

प्रस्थ(न ६)। संस्तुव हि कि∏े

यरितार की कालनेताना (व्यक्ता कट्टा)।

पात्र 🖫 [ प्राप्त ] अने साथि शासा

ना बन्दर्भ द्वाग्र (गरुए १) । संबद्ध

फिन्म (बढा १२ ४) वंदीय २४) । १७ ।

रैथ मन का परिशास (वैचा २ ६६) छन् ।

र बल प्राचीन (माथू १ किने ६ )।।

र्त विवाहनं विमाली राम्ने

नुमए मुक्त बावर

(सर ७ १६)।

(सुर ७ १७)।

(KA AS ) I

मिलक्खपरमल्बिक्दुरियं ।

चहिमानमधन्त्रहाँ नाड् ।"

कर पा (शाका १ पण्ड २ १) । पासि ई [पारेग] बार्श्य प्रेस ( श. २) । स्था । स्था प्राच्या स्थान स्यान स्थान स्य

बह्न, मार्संत (सन्दु १४)।

1 (033

1 (#5 #3 3

मास स्ट [ मीपय ] बरुना। महरू (बाला

मास दे[मास] १ पक्षि-विशेष (क्या <sup>१</sup>

१ दे २ ६२) । २ स्थिति प्रकारा जार-

रिजइ क्यापि । क्दोतायरहम्मिनि वर्ग

मास दु [भस्मम्] १ धर्-सितेष व्योजिन

वेब-विशेष (ठा २, ३ विवार ६ )। <sup>१</sup>

बण्डायश्वमानो वर्ष (विशे ४६८) वर्षि) ।

भामग् वि [भाषक] बेलतेतला बका व्यविशाण (सिन ४१० वंदा १० ६ हा २ २--पत्र ११)। भासल न भागती चमर दीक्ष, प्रचारा 'बरमझिमामणार्खें (घीप) । भासत्त म [भाषण] कदन, प्रतिगदन (महा)। भासलया ) के भाषता है हतर देनों (का भासमा । ११६ विग १४४ वर)। भासन देवो भासग (सिंग १०४ वर्ण \$c) : मासप वि [भाम ह ] प्रवरण (विने 2204)1 साराल नि हि | धीत प्राथमित (हे ६ 2 3)1 भामा धी [भाषा] १ बीली "बहुरवडेनी मानाविधारए (धीर १ ॥ चुना)। २ बार्य बाली गिरा क्वन (पाप)। अह रि किट] बोलने की शक्ति से चरित मद (बार ४)। अध्यक्ति भी वियोति । कुलों को भाषा के ल्या में परिएत करने की श्रीक (मा ६ ४)। (बचय ई विषया) १ माना ना निर्देश । २ इटियाद, बाद्दरी वैव बीग-धाच (दा १०--चन ४८६) । विजय दे विजयी रहिगार (दा १०)। समित्र रि शिमित्री शाली पर संगय बाता (मन)। समिद्र की ["समिति] बादी वा बेवन (तन १ )। देखी आुश्रा भामा की [भाम] बकाए चानांव दीति (गम)। भागि रि[मारिन] बच्च बच्च (वर्गीर १२ में रा। भागित रि [मापित] रे क्या परित

इति। दित्र (बर्ग मार्चा गए नदि) । २ म अंचा दश्चि (क्षावय) । भागित्र दि भागित की यह , बारने रानः (र्दर्)। भासित्र (र [रे] रण यात्र (१६ १०४)। भाषित्र विभिन्न । प्रशासकी प्रकारतका । प्रकारत 4x (feg (1): भारतर रि भिर्मागृही क्या (स्य १६० 47)1

भासिर वि [भास्यर] धेस व्हेप्यमान (कमा)। शामित कि भाषायन भावा-प्रक, बाली-पुत्र (बत २७ ११)। आसीक्ष्य वि भिरमीकृती वसकर राष वियाह्न (अप १८६ श)। भार्न्ट थक [वे] बाहर निवसना । मार्नेटर (\$\$ 2 3 21) 1 भागंदि ही दि निमरण निर्मन (६ ६ भासर विभिन्तरी १ मास्वर, वीक्रियान, चमरता (नृर ६ १०४- सूता ६६ २७२ वर्षेस १६२६ ही)। २ वीट श्रीपण सर्वश्र, पोरा बारणभागरमञ्जूष

शाहरतीयमीयएका (कार्य)। १ एइ देश

रिमान (सम १६)। ४ एटच-विदेश (धनि

भामरिज वि [भामरित] देशियकात किया

ह्या 'मानुरमुगणमामुरियंगा' (यति ११) ।

30)1

मि रेगो (कम (दावा)।

निर्देश "गरीवे व

भिजाप्टड होनी बहरमङ् (वि ११२ वङ )। भिन्नास भिद्र रेवी भद्र = मृति (चत्र)। भित्र 🙎 [भूग] १ स्त्रमान-स्थात ऋषि विदेश । ९ वर्गत-सन्तुः १ शुक्र-सहा ४ महादेव दिए। १ वनशीम : ६ द्वा ग्रधा। ७ मृतु वा वंशवा। ८ वेना शवि (हेर ११० वह)। इन्द्र व [ इन्द्र] नवर-विदेश आहीय (राज) । भित्रदे व [दे] धेय-विदेश स्विद्या स्वरूप विधेर (१) 'ब्रुस्य गुरमानको धार्य

ती वर्गात्र व बार्ग

अभिनाम का ग्राम्म-देश (शीप्र क्र) व बिर्गहर रि [भूपुरित] वितने भी पहारी हो वर् (स्प्टा १ द)। भिष्ठा रेबी भिष्ठी (बस्) । बिगर रि [बिग्रर] रिन्बर (याचा) ।

ब्रिटरफी रिटिंग्स बरहरी (बर्व बन्नही)।

भित्रक्षिकी भिक्षति । भौतेन, भी वर

विधार (शिक्ष १ १ ४) । १ व जनस्त्र

श्चिष्ठक्य पूं [भागेष] मृत्र मृति का पंशक वरिवातक-विशेष (भौप) । भिग वि कि श्रेपण भाता (देव tex)। द शील हुछ । वे स्थीप्टर (पह्)।

शिंग वे भिन्ने १ भगर, मधार (परम के हे प्रश्न पायो । ए पनि-विदेश (परस्प १७--- १२६)। १ शीट-विशेष। ४ विविशत बंगार गोधना (छाया १ १---धव २० थीं।)। बलाकुत की एक मार्चि (सम १६) । ६ इ.स-त्रिधेप (गिन)। ७ वाट, द्धाराति । ल मर्नेवरा का वेड । १ पात्र विशेष भाषे (ई १ १२×)। "निमाध्ये "निमा) एट प्रकारकी (इक)। "प्यमा यो विभानी वुश्वरिक्ती-विकेश (में ४) । भिगा को [भूहा] एक पुष्परिक्षा वागी

विधेय (६६) । भियार र्द्र[भृद्रार क] श्मात्रन विदेश मारी (पट्ट १ ४ भिगारक भीत)। २ विश्व-विदेश मिना भिगारग रत्वैवभेरनरार्थं (स्तामा १ १-- पत्र ६४)। 'मिमारक्षीलक्षियरकम्' (लामा १ १---वय ६६ वल्ड १ १ चीत्र)। ३ ह्यार्ग-नय बन-राष्ट्र हि १ १२८: व २)। भिंगारी थी वि सहारी १ मीन विदेश

विधी निक्षी (वे.६.१ प्रवास उल ३६ १४८) । २ मश्च इति (दे ६: १ ह्र) । भिजा भी कि । मन्द्रंग बातिस (तप १ ४ भिन्ति हो वि पृथ्वाधी बंध वा नाए (#1 1 11 2) 1

भिरिमाय । व सिम्पियारी एप एटेर । भिदिपान । (रगेर १ १ मी। १२न ४ देरे न रेवल पूना है र रेक ब्राप्त)। भिराग [भिर्] १ भाग नोहता। व विवास करना । विराह निराह (क्या पत्र )। अर्थि अंग्राह्म विधिनांति (हे १ १७१) नुसा रि १११) । वर्षे विश्वद (क्या रि १४६) । वर भिरंत भिरमात्र (त १३६

रि १ ६)। १रा थियान, थियाना (वेड ६३ इट ६ व्या६) जब इस: ब्ला १ दर विमे ६११) र ब्रेड मिल्ल.

वि ११२)।

शिम वि शिम र विरारित वरिवत

(ए।या १ वः उन मक पामः महा)। २

प्रस्कृतिक स्फोरिक (का ४ ४) परहाँ २ १)।

१ धान्य विश्वरूप, विस्तवार्ण (ठा १ )। ४

परित्यकः बन्धिय 'जीवजर्व भावयो भिन्नी'

(बृह रैं दाद ४)। ३ कन कम मृत

(मम्)। सहा सी [क्या] गेपुन-संबद

बात, एत्स्वाबाय (ब्रोच ११)। पडवाइय

वि विपण्डपाविकी स्केटित शम मारि

सेने की प्रतिकाशासा (पएड २ १--पन

१ )। सास 🙎 ["सास] पर्धाव दिन का महीना (गांत) । शुहुत्त न [ सहर्त्ते] प्रकर्नुहर्त सून सुहुर्त (अव) I भिएक वूं भीष्म] १ स्वनाव-क्वात एक हुक्तंशीन खाँचय गरिय भीपन निवासङ् । २ शाहित्य-प्रसिद्ध एत-विरोप अयानक रस । १ कि सब-जनक सर्वकर (है २, ३४) प्राप्त ६% दुना)। विषय कि [विद्युष्ट] स्वाकुल (हे १ इदा र े प्रकृ ९४१ कुमार बज्जा ११६) । भिष्मध्य न [बिह् बद्धत] न्यापुस बनाना (भूमा) । मिदिशस वर [भास्+पर्≈वाशास्य] द्यातम् सीपना । यहः विद्यासमाञ् मिकिमसमीण (दाश्य १ १---पत्र १८: श्चव पि ११६)। मिमार इं दि हिमोर दिन का प्रध्य पाप (?) (\$ ? (uy) 1 भिषा देवी भवग (दल)। मिसंग र् [दे] महत् । देवो मिस्टिस (पूर इटान पूत्र २८६ दूर्ली) । भिसमा वेची भिलुगा (रह ६ ६२)। मिसिंग तक [दे] धार्मक करना, मानिश करता । भितियेण (बाका के इक का क्र प्रातिष्कृ रेक)। यह सिकिंग्ले (नियु tw) । प्रपी. त्रिनिश्चवेग्न (तिचु tu) पर भिक्तिगार्थत (विषु १७)। मिकिंग ) प्रे दि वायनीतरेप सन्दर भिक्तियों (क्यों वैदाद ७३)।

सिखित पू वि भागाय, भाषाय-मस्तय-वैश **१)। भवि भिरित्संति (धावा२ १,६८**) महंग (सुधा १४ २, वटी)। भिलुंग पू वि भिलुङ्क । हिंसक पत्ती (राम 22Y) 1 भिल्ला औ दि फी इर्द भगीन, मूमि की रैबा—फाट (श्राचा २ १ ६,४)। भिद्ध र्ष भिद्धी १ धनार्थ देश-विशेष (पब २७४) । २ एक चनार्व कार्रि (सुर २ ४) र १४४ महा)। भिञ्चमाञ्च र्षु [भिञ्चमाञ्ज] स्वनाम रपाठ एक प्रसिद्ध खणिय-वैश (विवे ११४) । शिहायई की [अझालकी] मिनावाँ का देड़ (क्यार ११ टी)। भिक्षित्र वि [भिक्षित ] बरिष्ठ क्षेत्रा ह्या, 'पंचबरव्यवर्तुंबो पामाचे विशिवधो बीर्ख' (ভৰ)।

> शिस्केको आस≔ गत्। सिस्द (ह ४ २ भ वह )। यह भिसंत, भिसमाण भिसमीय (परम ३ १९७ ७१, ३७) काबार राजीन कुमा काया १ रा पि द्वर)। भिस चक [प्लुप्] जनाना (ताइ ६६) बारवा १४७)। मिस चक [भाषध्] बरागा । विसद, विशेष

(মাছ ६४) ঃ भिस न [भूरा] t मलम्ब, धविशय धवि-रावितः 'वर्गतिभगभिग्नदेहे में (शिव १८३ सप १२ टीन्सल ६१: मनि)।

मिस श्रेषो निस (प्राष्ट्र १६, परुछ १ पूप । २.६ १०)। बंदय <u>वं [</u>किन्दक] एक प्रकार की बाने की निष्ट बस्तु (वर्स्स १७---११ १३६)। गुणाकी भी [मृणाकी] कमलिनी (पर्ए १)। शिसम 🛊 [शिपज्] १ वेच विकासक (देर १० कुमा)। २ घनमान् मन्सिनाव नाध्रमम प्रशासर (नर =) ।

मिसन रेशो मिनम (लापा १ १---पण भिसण सक [न] वेंचना, डावना । जिल्लोपि (या १११) ।

भिसंद न [दे] धनर्ष (दे ६, १ १) ।

मिसंद रेवो भिस = मास् ।

गिसमाण **रे**ची मिस≂भाव । मिसए की दि] मल्प पकरने का बाल निरोप (निपा १ ८---पत्र ६१)। भिमाव सक [ भावय ] बराना । भिसानेह (शाह ६४) । मिसिआ ) बी दि वृषिक्रो मासन-श्रिप भिसिगा 🕽 ऋषिं ना बासन (वे ६, १ ६) थप पूत्र १७२३ छ।या १ 🖛 उप ६४८ द्या भीपा सुध **र**े९ ४८) । भिसिण देवो भिसण मिसिस्टेमि (गा ११२ था। विसिनी] क्यांनित पंचिती

(हें १ २१८ कुमार ना १०८ काम ३१ महाः पत्थः)। सिसी की [बूपी] रेकी भिसिमा (पाप)। भिसां व [वे] मुख-विशेष (हा ४ ४-पत्र २८६) । मिइ) यक भी दिला। मिहद (पड)। भी कि भेळव्य (पुता १व४)। सी की [सी] १ मय, भी बंबसी बंब समार मेग्गार्ख (धाषा)। २ वि अरनेवाला धेंद (प्राचा)। भीज दि [भीव] इस हमा (हे २ १६६ ४ ३३ पाय हुमा पदा)। सीय दि िमाव ] बायन्त क्या हुया (मुर १ १६५)।

भीइम वि [भीत] वय हुमा (वर ६४ )। सीहर वि [भेगू] बरमेनाचा 'वा मद्यागीहर' विसर्गेह में वस्त्र(स्तें (बस्)। भीड कि देशों मिड। संक भीडिपि (धर) (धरि)। भीडिल [बे] देवी मिडिय (गुरा १६१)। मीतर [दे] रेखी मित्तर (इमा)। मीम वि भीम] १ मर्वकर, भीपल (पाम

भीड की भीति | बद, धन (नुर २ २३७

सिरि ६३६ प्राप्त २४)।

वय परहरे है। भी ४४ प्राप्त १४४)। र वं एक पाएडव भीमधेन (वा ४४३)। व राजस-निकास का बर्तिस दिसा का सन्द (ठा २, ६--नव ६६)। ४ माळवर्ष का मानी खंडवी प्रतिवानुश्वः 'सररा-ए ॥ भीने नहामीयेव नुत्सीये (तथ ११४)। द राजन-वंश का एक रामा, एक लंकारति

चननेशना प्राणी द्वाच से चसनेशायी सर्वे

वाति (वी २१: पर्यक्ष १: भीव २)। सी.

"रियणी (बीव २)। सुद्ध म शिक्डो

एक पुत्र (पठम ४, १७४) । ७ दमयंती का पिटा(कुब ४८)। «एक कुल-पूत्र (कुब १६२)। 🗷 प्रमरान्त्र का चायाव-नंतीय एक ए<del>का भ</del>ीमदेव (बूघ ४)। १ हत्तिनम्पर नगर का एक कुटशह—राज पुश्य (क्या १ २)। यव प्रे दिवी कुमरस्य काएक पाहरू परासा (कुन्न १)। कुमार पे किमारी एक राव-प्रत्र (बम्म)। टमभ द भिमा चलक्ष्म का एक एका एक चैका-पति (पत्रम १, २११)।

(प्रस्म ६, २६३)। ६ स्वर चन्नवर्तीका

रक्षुं [रेच] एक राजा दसक्कीका मिता (कुल ४=)। सेव्य दं विनी १ एक पाएकव भीम (बारमा १ १६)। २ एक भूतकर पूर्त्य (सम १३ )। श्रेष्टिक पुं [ीवकि] भंग-निया का कलकार पश्चा क्ष पुरुष (विचार ४७३)। शैक्कर व ीसूर**े राज-निरो**प (बख्) । मीमासुरचन [सीमासुरोकः शैव] एक बैनेवर प्राचीन शास (धरा १६) । मीर ) वि [मीरु, क] बररोड (वेदम भीरुभ । ६ एका स्ट २० । आणि < ₹) 1

(पारवा १४७), मीचेद (प्राक्त ६४) । (वी ४६ वर्ग पाव)।

मीमव देखों नंसरा (धन) ।

सीस **एक [**भीपय्] बर्णा। श्रीसर सीसम वि सीपणी सर्वकर, सक-वनक भीसाव केको भीस। ग्रेशनेड (कारवा (wy) मीसिब (शौ) वि [भीपित] भय-बीत किया हुधा बरावा हुया (नाट-नाल १३)। भीद् धक [भी] बरमा । भीद्रद (ब्रह्म ६४) । मुभ वेबी सुंब । पुनद, पुनद् ( बह् ) ।

मुक्त न [व] भूनेनन वृक्ष-विरोध की बाल (दे६ ६६) । इनस दू ["इछ] इस

अभिप्रेकी [सुक] १ हान कर (क्रुशा) ।

र बहिल-प्रसिद्ध रेवा-निरोप (हे१ ४)।

को का (देश भ निकासका है।

444) I

विशेष- भूजीयन का पेड़ (भएसा १--पन ३४)। बचान ["पत्र] मोलपन (वटक

क्या, क्षेत्र (पाप) । सोयग पुँ सोचकी चन की एक बार्ति (बन' बीप) उत्त ६६ **७६७ तंत्र** २)। "सत्य दु ["समें] देखो परिसच्य (पर १६ )। । छ नि [ बन् ] क्तवान् हाववाना (शिर्द ७६६) । अभाग देशो अभाग (बका विकास से क व्ह पाच) **।** भुभईद दे [भुजगन्द्र] १ वेह वर्ष (ववड)। २ रोजनान, धामुकि (प्रच्यू २०)। "युरेस पु ["पुरश] थोक्रया (पन्दु २७)। मुभाषिर ) दु [मुजनेस्वर] उत्तर **व्या** मुभाषसर ) (प्राप्ता र ४--पण वटा **याण्** ३६)। "जभरणाइ र् [ नगरनाव] थी ष्ट्रण्य (चन्द्र ३६) । मुख्या (भूबंग) १ वर्ष क्षेत्र (६ ६, के श्री के प्रकार के नहार पास्र) । २ विट एंडीवाच वेस्सा-कारी (ब्रुमा) मञ्चा ११६) । ३ बाए, कापति (भप्पू) । ४ च्यकार, बुध्यक्षे (का प्र ११२)। १ वीए तस्क्र 🗫 बनोत्तमो नेव यापापधीयकृष्टवी वाशिययवेषकारी मिक्को महात्वधनी (६ ४६ )। ६ वदमारा डमः 'वानसनेसनारिक्षे विक्रमाखनारुयोच-बन्या विवेद्यञ्चमारसंदिया वर्षारी महाभूर्यव र्षि (स ५९४)। "विश्वति क्ये [कृषि] क्षेत्रक (वर ६४ )। प्रभाव (वर्ष) **५वो** "प्यजाय (पिम)। व्यजाय ग "प्रवास] ९ वर्ष-वर्ति । **९ वहच-विक्रेज (वर्षि) । <sup>9</sup>राम** पुं["राज] सेननाथ (पि. २)। "नद्र पुं िपवि] रोबनाय(भक्त) । "प्रभास (धप) वेकी प्यज्ञान (पिय)। भुक्तंगम वृ [भुक्तंगम] १ वर्षे श्रीप (**वर**ण १७०३ (पंप) । २ स्वनात-स्थाद एक चीर (महा)।

अनिर्मिणी } वी [अन्नाही र विचानिर्मय सुरुमी } (पकर के १४ )। र नाविन

भुअसा⊈ [मुक्का] १ वर्गचौप (युर २०

(बुपा१ १३ वस ११७)।

(अ.४.१ शामा श इक)। पिया शतक) । मुखप्पइ मुंभस्यद मुझावेची मुझ ≔ पुत्र । मुत्रकि चेवी भिवक्ति (पि १२४)। भुजनाज मुकिसाज भुजाय (धा<sup>न</sup>) कुमान्त्रिया १ २३ क्रम् ३१३ क्रम्या पि रेक्ष वर्गीय १९७)। क्षत्रक सुकारि (युक्त ३७१)। वीष्ट सुविद्याः सुविद्याः मु जिस्स मु बिकर्ज म किसी मुजियु, मोज्या भाषा मोत्त्य (ह द्रवश्चित्र १ ४ शब्दा सि हे है

भीमासरक-भूब "बर वुं ("बर] होप-बिटेन (एम)। (शावा ११ दी--पत्र ४३ मीगः वर्त)। भुषमा की [भुजना] एक स्वासी वरिकाय नामक इन्त्र की एक सक्त-निर्दे मुजगीसर रेबी मुमईसर (वह २ )। ञुजन वैको अुक्य (क्रेश हास्य १९६ मुअप्तर हे केवो बहरमाइ (पि २१२) वर्)। अद्रक्ष [भृति ] १ वरछ । २ गोमसः। १ वैक्तर। अञ्चल (देश १६१ वर्)। मु गवा न [व] नाच-निरोप (विरि ४१२)। भुकायक [भुक् ] १ ध्येत्रन करता। ₹ पालम करना । १ घोष करना । ४ भद्रक करमा। प्रजार (हे ४ ११ वसा बना)। प्रेरेमी (क्या)- "विश्वपूर्व चूंजनू बुदेखीं (सिरि १ ४४) गुक्र पुरिताला (पि ११७) । असे पुरिस्ट गीरवाधि जोलवामि बोलवारे भीरवं (मि प्रकार कारण है व १ १)। इस्त**े प्रकार** भूतिनमार (हे ४ २४६) । सङ्घ श्रीकीर्यः

२६६। महाः भी ६१) । २ एक देव-मादिः भाग-कुमार केर (पहार १ ४)। १ शक्तवेर देवों की सक जाति सतीरव (६७)। ४ रंडीमाना भी मुद्रम्यास्य प्रवर्गं तुर्वे पनार्थेष श्रतिम्बयछेर्ति (कुन्न ६ १)। १ ति. मीमी विकासी (छापा १ १ टी--पव ४ धौरा)। वरिसिंगेअ न पिरिस्तिवी 🖛 किरोप (यभि १६)। बाई की ["क्री] एक इन्हाली वरिकाय नामक नद्वीरकेंद्र की एवं ∖बक-मी[की (इकाळा४ १) ग्रानार)। **जुअग दि [भोजक] पूजक, ध्वाकार**  चत्त ६, ६३ वि ५ ७३ है २ १६, कुमा

प्राष्ट्र १४)। हेट मुजिलाय मोलू,

भोशां (पि १७० हे ४ २१२ बामा)

मंजय (पर) (प्रमा) । इ भुक्त, मुक्ति

यध्य भुजियदव मोचन्द्र भुचन्द्र भोटन

मोगा (क्षु १३) वर्गीक ४१ उप १३८ ही बा १६ सुपा ४१३) पित्रमा ४१

सम्मल ५१६३ लाया १ १) पत्रम ६४,०६४ है भ ११२ मुक्त ४६६ बस्य १० रश दे ७ २१ मोम २१४) इत ए ७३) सुन १६६ मनि)। अञ्चल वि [भोजक] मोजन करनेवाका (विश **233)** ( मुंबण देवो मुंब = दुन्। भुजाय न [भाजत] भोजन (पिट १२१)। मुंजना भी करर देखों (१व १ १) । र्मुजय वैको मुजग (एख)। भुञ्जान एक [भीक्षय्] । मौतन कराना । २ पालन करानाः ३ मीय करानाः धुनविष (महा)। क्वक मुकाविक्रांत (परुष २ ५)। यंड मुकाविकण, मुकाविका (पि १६२) । हेड स जावर्ड (पेचा १ ४६ थी)। अंजायम वि [भोजक] मोत्रन कराननाता (स २४१)। भुजानिज दि [मोबित] विस्को भोजन कराया यथा हो वह (धर्मीव ३८ शूप्र **१९=)** : मुजिन थेवो सुच = पून्। भुविश्व देखो मुख (मदि)। भुक्तिर वि [मीक्यू] मौजन करनेवाला (नुग ११) । मुंब पूर्व [ब] सुकर, बच्छा प्रमणकी में 'श्रुंब' (देव देव) । बी. बी, 'विर्णा (दे ६ १०६ टी। मनि)। मुबार [दे] कार देशों (दे ६ १ ६)। भुभल म [व] मध-पात्र (बस्य १ ११)। मुद्देश (घर) देशो सूमि (हे ४ ६१४) । मुख सक [बुक्] भूकताः शान का बीनना । पुरुष्ट (वा ६६४ घ) । सुकाम पुंचि है र स्वान पुरता। १ वय भारिका नान (देव, ११) ।

मुक्तिश्र न [बुक्ति] रनान मा राज्य (पाप पिर १)। भक्तिर वि [युक्तिर] भूक्नेशसा (कुमा) । अवस्था की वि जुसुक्षा े मुख सुवा (दे इ १ ६ शाया रै १-- नव २० महा चप १७६ धाय ६६ सम्मत १४७)। लु कि [ कत् ] भूका (वर्गीक ६१)। भुविस्त्रभ वि वि बुभुक्तित पुषा श्रुवापुर (बाब-क्ष्य १२६) धुवा ६ १। एव ४२० क्ष प्रवास के रह)। मुगुसुर वर [सुराभुगाम्] पूर्व पुण याबान करना । वह अुगुमुगेत (पत्रय १ %, KE) 1 मुग्ग वि [मुग्न] १ मोड़ा हुगा वक, ब्रुटिन (शाना १ ८--पत्र १३३/ एका)। कि भाग दूध ह्या (ए।या १ ८)। ३ इन्ड जना हुया। कि मरुक कोविएए। द्वीतहुपरा-भवनियद्वागाए" (चप ७६८ टी) । ४ भूता हुमा 'मलक्क क्रुपु' (रूप ४३२) । मुझ (घप) रेको मुखा । चुबद (बस्त) । मुजंग रेको सुर्मग (मणि) । अज्ञा केवो अञ्चान चुनम (नर्मेति १२४)। मुक्त देवो मु स प्रुप्तद (पर् ) । ञुळा पू [मूर्क] १ इत्र-विदेश । १ श इत विशेष की काल (कप्यू) क्य दू १९७ कुता २ )। यस वसान[पत्र] बहाधर्व (भाषमा नाट विक ६६)। मुख रेको मुज। मुख्य नि [ मूचस ] प्रमुठ धमस्य (बीपः PIYEY) I मुख्यिय वि [दे मुप्र] १ भूगा क्ष्मा वास्य। १ र् बाना जूना हुना वच (प्रश्रह १ ५---पम १४॥)। मुक्ता धक [ शूबम् ] फिर, कुर (छवा नुपा २७२)। मुण्य पू [भ्रूण] १ औ का नर्म। २ बालक, मिम् (बित १७) ।

मुक्त वि[भुक्त] १ मक्रिय (खासा १ १

खरा प्रापू १a)। १ जिसने भोजन किया

हो बढ़ के मामरी न ब्रुना" (नुल १ १६)

पुप्र १९) । ३ छेपित । ४ सनुसूत भाग्य ∫

त्ताय मध् भौगा भूता विश्वकर्तवर्मा (सत १६ ११ छामा १ १)। एन मज्ञास भोजना 'हासमूत्तावियाणि म' (उत्त १६ १२)। ६ विच-विदेष (ठा ६)। मोगि वि िंशोरियर विसने मोनीका सेवन किया क्क बहु (ग्रामा १ १)। **भुक्तवत वि [भुक्तवम् ] विहने** भीवन किया हो वह (पि १९७)। मुखस्य देखो मुखः मुक्ति की [मुक्ति] र भोवन (प्र**ण्डू र**ण् बन्फ ≖९)। र मोन (सूपारः द)। ३ काजीविका के लिए दिया बादा गांव क्षेत्र शादि पिछम्' 'जन्मेणी नाम पुरी दिन्ना सस्य व बुमारक्रेसीएँ (का पशः टी क्रुप्र १९१)। बास पु ["पास] गिरास्तार (वर्गेनि १४४)। भुचु वि [माक्यू] भोक्तेवाता (बा ६ धनीय ६४)। भूच्या है हि ] पूरव गीकर (दे ६ १ ६)। भुरथंस र्थुं [दे] विस्ती को फेंका जाता भीजन (\$\pi\_1\) सस वैची भस ≕ भगः धूमइ (हे ४ १६१ चण)। चंड भूमिनि (धप) (वर्ण)। अपुस ृक्षी[भाू]मी संखाके छपर मसगा की रोम राजि (भवः सबदः है २ मुसया १९७ धीप क्रमा पान्न पर भूमा र ७६)। असिन देवो असिम = प्रान्त कृतिसम्बू (धूमा)। भूम्म (बप) रेखी भूमि (पिक)। मुर्देकमा की [दे] रिकाः श्वासी दिवा क्ति (देद ११)। भुर्रेडिय ) वि [दे] ज्यानित श्रृति-नितः सर्पृतिका - पूनिवृतीकातीह परिगया पि मुख्दुंबिज े वए वसी' (नुवा परद, द द १ ६) 'मूरपुर (? ६) बुंदियंनी' (कुम २६३३ सूत्र इ. पूर्णी मा २०१)। मुक्त सक [ भ्रोदा ] १ ब्युट होना। २ रिस्ता । ३ भूनना "पुल्लीत ते महा। सन्मा हा पणामी पूर्रतमो (पारव ११ हे ४ (44) I

२ पूर्णीकाय, पार्विक शरीरवाला जीव (क्म्म

ाध ६६)। आर ⊈ [ैशर]

मुख-मुख

भूख वि [ब्रह] मूबा हुम, व्यामेवसी कि पत्रमेडि मुल्बी (सृ १६३३ सुपा १९४ मुक्किम कि [अधित] भट्ट विमा हुमा

भक्ति वि भिक्षिण् | भूमनेवाका अथस

ध्रद्रक्तिरदुरवज्ञियमक्तिगुमइस्नतिनवामन्तीर्वि भ्रम्लुंकी [बे] देवो सस्लुंकी (पाय) । मुब देवो दुव ⇔ मू । प्रदर (पि ४७३) । बुवरि (दी) (वात्वा १४७)। भूका दुवि

(<del>का</del>) 1 सुब देखो सञ्च = पुत्र (मवि) । मुन्द्रं देनो मुखद्रं (से १ ७१)। भुक्य न [मुबन] १ वन्द, नोक (भी १)

444

द१६: ४प्पू) ।

(सुगा १२३) ।

(कुमा)।

कुपा २१ दुमा २ १६)। २ जीव प्राणी **'पुन्याम्परायम्बन्धाः' (नुना) । ३** धात्रमरा (प्रास् १ )। क्लाइप्री की [<sup>\*</sup>द्याभनी] निवानिशेष (गुग्र १७४)। शुरु दू ["शुरु] बयद का पुर (सूपा ७३)। नाइ द्रं विनाम । अनद्का काता (का प्र ६६७)। पाछ दुं ["पाका] विक्रम और बार्यहरी क्रवान्धी ना योपपिरि का युक्त

चवा(प्रणि १ ११)। बंबुदु विन्तुः रं मनद्भाषम्बर्धः २ जिल्लीयं (सरं १११ यै)। सोह्रु [\*श्राम] शतवें वलवेव में श्रीमान एक मैन मुनि (पडम २ २ %)। सिकार प्र∫ास्तेशारी चवल का एक मद्रश्रहती (पत्रम २, १११)। मुष्या 🕊 [मुषना] विद्या-विशेष (पदम 🖜

मुन्त्रम् (मा) रेवी मुक्त्वरा (शक्ष १ १) । मुस देशो बुसः 'दुश्यकी हमा बुखरावी हमा' (मन १६)। मुसुंबि की [व मुगुण्डि] <del>राज</del>निशेष

(बख) । मुदेशी सुद⇒मुः भीति (वि ४७६)। र्षक्र भोचा मादूज (शी) (१४९१)। भूकी [भू] भी संख्ये कपरशी रोज-सीक 'स्वा मुख्यार' (दुवा १७६ वा १४-बूश ११६। बूबा) ।

सुक्र ६, धूमर (किरत )। ≪र्म दू िंश्चन्त राजा नर-परि (था २०)। गोस पू िंगास्त्री नोमानार मृतपुरस (कम्पू)। चंद्र पू [चन्द्र] प्रविकाश चना, मृक्षि-वन्ना (कथू)। यर वि विदा

भूमि पर चक्ते फिरनेनाका सनुष्य भावि (क्र १०६६ हो)। व्यक्त पूर विश्वकृती षमस्पति-विशेष (वे १: ६४) । तुष्पग **व्या** बजब (राज)। चल पू [धन] राजा (बार)। बर दु [बर] र एका बरपति (बर्मेनि ६) । २ पर्वत प्रक्रम् (बर्मनि शक्रम २६४) : नाहतु "नाब] सक् (चप ६८१ टी वर्गीय १७)। सहदू िसह | प्राप्तेयन का स्वारिक्ष मुहुर्स (सम

३१)। यणय प्रैन िष्ण क्री बनलाति-

निरोप (परख १--पव ६४)। ६इट्रई

िरुक्त क्षित्र मेह (शहर पूर्ण ११९) वर्गीय १६६): व दूरियी सचा (छाध्य दो दी देखु६६ काव)। बद्र प्री चिति ] रामा (सूर्या ३६ विन)। बास्त र ["पास्त] १ राजा (शहर पूरा १९)। २ व्यक्ति-वाचक वाम (यवि)। विचापु ["विच] छवा (शास्)। दीह न [ैंपीठ] मूलच वृत्यि<del>-सव</del> (गुपा ११३) । हर विको भर (बस्त)। ाषु [मूबस्] कर्नकचका एक मुका हे प्रस्तर (कमा १, ११।२३)। गार

र्पु ["कार] वही सर्व (अस्य ४, २१)। वेशो मुभोगार । भूम पुंदि] नलबाह, फल-बाहक पुरुर (वे 4, t ) i भूज ति [भूत] १ कृत धैनात बना ह्या। २ भरीत, ग्रमध इसा (वहः पिन)। ३ प्राप्त कल्य (ब्हामा १ १ — पण ७४) । ४ धनान, तहरु, तुक्य- 'तसमूर्याह' (सूप्र २ ४ ४ दथे)। १ नास्त्रविक क्वार्थ सर्थः

'मुक्लोह् दिय गुरुहि' (४४४)- 'मुक्लस्टल-

नेबी (सम्मत्त १६१) १ ६ विश्वमाना 'पूर्व

त्वर्थ-ग्रावः 'धोवामे ताराने व हुन वृत्तित जूबसही सि' (बालक १२४)। **६ ६** बङ्गस्पर्वेः न्डम्मत्तमभूपं (ठा ६,१)। १ पुं एक वेश-जाति (परह १ ४ इक छाव १ १---पत्र ३१)। ११ फिराप (पाट दे ४, २४) । १२ समूब-विरोध (क्षेत्र १११)। १६ डीप-मिलेप (सुम्न १६) । १४ पुन- वर्षः प्राक्षीः 'पाद्यारं भूगारं भीनारं स्ता

२२११) । ७ कामा बीराम्य । ८ शास्त्रम्

'जूमालि का बीवप्रति का' (माका १६६ २१२११११११११ 'ब्रियारिं सूमासि विसंवकरिं' (वृद्ध १ % का समय १४८)। १४ श्रुविमी सामि ग्रंम शब्द, मध्यमूत (स १९१), र्नड मने पर कुवा' (मिर्के १६वर) । १६ **१व**ेंद क्तस्पति (माचा ११६२)। **१**९\$ [दिन्ह] भूत-केलों का एक (वि १६ )। ग्राह दूं [मह] भूत का बावेर (का ६)। मास र् ['साम] <del>वीर एहा (न</del> २६)। रेख वि [ीर्थ] सवार्थ शस्त्र<del>वित्र</del> (पछका पछन २०, १४)। 'विष्णा के (ब्ला (पणि)। "दिस वृं ["दिल] १ वर्ग कैन स्तवार्थ (स्त्रेवि) । २ एक वास्*रास-पूर्व* (महा) । (दुक्ता का ["दिक्ता] १ <del>एवं प्रव</del>र्ग कुर्यक्री (शंद) । २ एक वैत्र साम्मी, वर्षे स्कूलमुद्र की भक्ति (क्रम्प)। "संडक्त्रकि शक्ति न [ सण्डक्ष्मविमक्ति] वात्न सिंह काएक मैद (यथ)। "स्थिति आर्थ ["सिवि] विकिमिकेष (यम ६६)। वृश्विस में ['बर्चसा] १ एक श्रासी (बीव १)। २ एक चनमानी (धोष)। बाह, 'बाइब वादिय द्वं ["वादिन, वादिक] १ वर्ष केर-माप्ति (इसा पर्राष्ट्र १ ४० सीप) । १ वि पूर्वनाहका स्थापार करनेवाना, सर्वे त्तम्नावि का कामकार (गुळ १ १४)। "सर्व

पु [बाव] १ क्लाबेबादः। २ इक्लिन्

नारवृत्ता केन प्रेन-प्रन्य (ठा रिज्ञानी

४२१)। वजा केलाकी [किंगी

बाहुर्वेद का एक जेद भूत निवह-विका (विर्ा

१ च—पप ७३ छे) । स्थंद द्र[मिन्द]

१ नानकुनार देशों का स्त्रित्त दिला का दे<sup>स</sup>

(इक धार ६ -- पत्र ६४)। २ समा कृतिएक का पट्ट-इस्ती (सम १७ १)। [अदप्यह र् [ "सन्द्रमा | मूतल्य क्ष्य का एक प्रत्यात-पर्वत (राज) । (याथ देखी बाय (विशे ४४१ पर १२ ही)। अअज्ञा दे [वे] बोती हुई बस मूमि में निया बाता यह (दे ६ १०७) । भूजा की भूता र एक केन साम्बी महर्पि म्थुसम्ब्र ही एक प्रतिनी (कप्पः पडि)। २ इल्ह्रफ्री की एक राजबक्षी (कीव १) । अपूर् की [अपूरि] १ संपत्ति वन, बीसता 'ता परोसे गेन् निधनिता मुरियून्यस्थार' (पुर १ २२३ सुपा ३४०)। २ भ्रम रापा 'बारमधालस्त्रुशस्त्रम्'न्यूकृष्टवनिजिन रैतीए (साधाद साध्य नज्या)। व सङ्गा देश क ध्रीय नी मतमा "मूहमूलिमे हरखयेर" मं (सुपा १४८३ ३६६) । ४ इति (सूध १६६)। ५ मीन-एका (बत्त १२ ३३)। कम्म पून [किमेम्] शरीर बावि की च्या के निए दिया वाता भरमनेपन-पूत्रवेदनानि (पक्ष ७३ टी बुद्ध १)। यण्ण यज्ञ वि िंग्रस रे भोष-एता की बुद्धिपत्ता (उत्त १२ ६६)। २ शान की वृद्धिकामा शतना शानी (सूच १ ६ ६) । देखी "सूई । भृद्दर्पु[भृतस्त्र] पूर्वी का दस्त्र (नि ₹€)1 मृश्ट्र वि [मृथिष्ठ] धवि प्रमूच सत्यन्त (बिमे २ वेश शिक्ष १४१) । मृद्धा की [मृतप्रा] चतुर्रशी विवि (शक)। मूई देखा मृद् (पर २--११२)। कमिमय वि ["कमिक] मुक्तिकर्म करनेवासा (बीत)। भूओ म [भूभस्] १ टिर हे पुनः (पडम ६व २० पंच २, १०) ? न मार्गाट, जिट फिर, मुम्मे स साहितसीचं (बन ६५१)। तार पुं [कार] वर्ध-क्य का एक प्रकार थोड़ी कर्म-प्रकृति के अन्य के बाव होनेवासा माविक-प्रकृति-काम (चेव १ १२)। भूमोद र् [भूतीव] सपुर-विरोध (तुम १६)।

भूमावधाइव वि [भूतोपधातिशः को बीवी

मृं(श (भार) रेवो मूमि (१ ४ १६६ छ)।

की हिंवा करनेवाका (हम १०० मीप)।

**E3** 

भूण देशो मुख्य (शिक्ष १७- सम्मत्त ८६)। भूज देशो सुद्ध = भूग (प्राष्ट्र २६)। मूप देशो मू-य (शव १) । भूमका रेकी भूमया (प्राप्त) । भूमणया भी [P] स्थान भाष्ट्रापन (**थय** 1(5 मुझि की [मुझि] र पृथ्विकी घरती (प्रत्य ६१ ४० यतः)। २ क्षेत्र (कृमा)। ३ श्वल वामीन अवह, स्वाम (वास उवा पुषा)। ४ काल समय (७०२)। ५ माम मेक्सा उपार 'सत्तमूमिय' वासायमक्यी' (महा)। क्रेप पूँ विक्रम] मून्हरूप (पराम ६१ ४०)। "रीम्ह "घर व ["गृह] नीचे क भरु पुरुषक व्यवाना (या १६ महा)। गायरिय वि "गोचरिक स्थापर, नगुप्प माबि (परम ५१ १२)। बरी रा (पत्रम ৬ १२)। "বছার দ বিহার বিদ্যারি-विकेप (वे) । सस्त न ["तुळ] बरा-१% मूछन (पुर २ १ १)। विस पु दियाँ बाह्य ए (मोह १ ७)। फांड पू (स्पोट] बनश्पविनिष्टेप (की १)। फाडी की िरफोटी] एक प्रकार का शहरीना कता 'वाभवर्ण कुरामाणी बहुरे पुरुष्टीम्य मूचि फोशेए (बुपा ६२ ) । "साम व ["साम] मुमि प्रदेश (सहा)। २५६ पूर्व [२५६] मुनिस्फोर बनस्पति-विदेश (मा २ प्रस ४)। पद्र पूर्वि [पिति] राजा (का प्र रेवर)। वास वृ ["पास] रावा (वतर)। सुम पुं ["सुव] मंगव-वह (मृष्य १४६)। इर देशों भर (महा) । ऐसा मुनी । मूर्मिका की [मूमिका] १ तथा गॅक्सि मान (महा) । ए बान्क में पात्र का वेशान्तर पद्दश (कप्)।

भूमित्र पुं, [भूमीन्त्र] चन्ना, नरपति (सम्मत्त

भूमिपिसाय व कि भूमिपिशापी लाग

भूमो देखो भूमि (ने १२ ८० कप्) विक

अपन पत्रम ६४ १ )। तुस्त्रमुद्धात

[ग्रुडगक्ट] एक विधायर-भवर (१७)।

सुर्यंग व ["सुजाह] राजा (लोह दय)।

बुज वाइ का पेड़ (दे ६, १ ७) ।

1 (#99

भूरि कि [भूरि] १ प्रकुर, भारतन्त प्रमुख (नब्ड कुमा सुर १ २४० २ ११४)। २ न स्थली सोना। ३ मन सीमत (सार्म cv)। स्सम् र्री अवस् ] एक चन्त्र वंशीय शता भूरिभवा (नाट-अधी ३७) ४ भूस सक [भूषम ] १ समावट करना । २ शोबाश धर्मष्टत करता । घूसेमि (हुमा)। बहर भूसवत (र्यमा)। इ. भूस (र्यम्य)। मुसण न [मूपण] १ वर्तकार, महना (गाम हुना)। २ सवावट। १ शोमा-करण (म्यह 5 A. 664) 1 भूसा की [भूपा] कार देवी (दे १ ६ कुमा)। असिव वि [सृपित] मधिक धर्महत (मा **६२ जूमा काल)** ३ मूहरी औ [क] तिसम-विशेष (चिरि 1 23)1 स [सोस्] धामक्क्छ-पूक्क सम्पर्धः (धीप)। भव्य पुरा [सद्] १ प्रकार, 'पूर्वनिमेमाह धवार्ष (की ४ १)। २ किटीय पार्वस्य (ठा २ १ शबक कप्पू)। ३ एक धान-नीति भूट 'बागुमाछोत्रवाधेई सामनेधाइपृहि व' (प्रान् १७) 'सामवंडमेयनप्पदाण्योड बुप्पबक्कशुपनिहिल्लू (साधा १ १--पन ११)। ४ मान प्राप्तात भट्ट हि सम्बद्ध विष्युक्तरणमाच वारा प्रमासक अर्थु विका वित्तमेघो' (कप्पू) । ५ मग्रस् का शवान्त-रास बीच का भाग" 'पडिवसीको स्वय यह बाचमरोमु स । धेयवा(१ वा)यो कहाएकमा मुहत्ताल वर्ताति म ॥ (g= 1 1)1 ६ विष्णाः प्रवद्यस्य विदास्य (मीप थमू)। बद्र रि विद्रो रिक्टेस्कर्त (बीप) । पाय पुरिपाती संबत के बीच

में यनन (नुज्ज १ १) )। समावक्र वि

[समापभ] मेर-मम (भग)।

भूमीस वृश्मिमीश] राजा (मा १२)।

भृयिद्र वेचा भूद्रह (हास्य १२१)।

मुमीसर वुं [मूर्माश्वर] धना (वुपा ४०७)।

भोड़ वि भोजिम्] धोवन करनेवाला (धाचा पिंड १२ चव)। मात्र देखो मोगि (सुपा ४ ४ धंबीव 🗓 वित र्या)। मोद १ दे दि मोगिम, की श्रामा भोद्रा । स्वयं द्वाव का मुखिया, यांत का माएक (यम का इ. ९ ८ वस १४% ६ बढ १ द्योषम्य ४३। विष्ठ ४३६ सूच्य १ ६ यह २६६ मॉक्ट सुपा ११४८ या ४४६)। २ बहेरा (यह )। भोश्रम वि [भोगिक] र मोय-युक्त मीवाचळ विमाली (बता १६ दः या १६६)। २ मीग-वंश में कपन्न (सत्त १६ ६)। माइज वि [मोदित] विस्को मोनन क्यमा यमा हो वह (पुर १ २१४) : मोइणी सी [दे भोगिती] शामान्यक नी पल्ली (पिड ४३६ वा ६ वे ७३७: ७७६ निश्व १)। भोद्रमा , की भाग्या । १ भार्य पली भोई बी(बार पिंड १६०)। २ बरबा (बच ७) । माइ देशों सो ≈ धरत् । मोंड रेगे मुड (या ४०२) । मास्तर देवी सु ख । भोग देन [भोग] १ स्पर्ध छ। बाहि विपद, बरानास्य परापे 'सभी शेते बोमा शक्सी' (मग ७ ७--गत्र ६१ ), मीयसंकाई भू नकारो निह्या (विवा १ २)। २ विवय-सेवा (मण ६, १३ भीप) 'क्रूजेला बहुविशार्ड भीगा" (मेपा २४) । ३ मश्त-स्थात्तर, काल-केराः 'काममेषे से यातु झए सन्ताहरु हु (सुध १ १२)। ४ विषयेण्यः विश्वसमिताप (पाचा) । १ विपय-पूचा 'बहलू बीलाई धमानवा" (इस ११ २)- तुष्का व कामबोरा' (प्राप्तु ११)। 'काहिबीने तिय सीने भिरापुत कार्रे मनीव श्वामीचि जन्मेदा' (जुपा < 1) । ६ मोतम आहार (पंथा ४ ४<sup>-</sup> सर २ ४) । ७ पुर-स्पानीय वार्ति-चित्रीप एक शामितनुत्र (वप्तः सम १६१३ इत ३ १---गव ११३ ११४) । च समान्य प्राप्ति दुष-स्वानीय लोक-दुष-वेश में बारख (धीर )।

इ.स.पेट केंद्र (तंद्र २)। १ सर्वे की फुला (बुवा) । ११ सर्वे दा शरीर (वे ६, ८६) । क्स रेखी भोगंक्स (१४) । कुछ म फिल्ही पुरुव-स्थानाय कुम-निशेष (पि १९७) । पुर म (पुर) नगर-निशेष (धानम) । पारेस वे जिस्ता मेग-सलर पुरुष (ठा १ १००-पत्र ११६ ११४)। ैमारि वि [मामिया] ग्रोय-शासी (पडम ११ ८४)। सूस वि विस्ता बीय मुनि में उत्पन्न (पत्रय १०२ १६६)। मूमि सी "मूमि" देवहुद गावि शक्य-भूमि (इड)। आग पुन शाया ने मोनाई राज्यादि-विषय यत्रोश राज्यादि (मग ७ ७ बिचा १ ६) । मास्त्रिया की ["मास्टिनी] धार्वामीक में यहनेवाली एक रित्रकुमारी रेपी (ठा बा इस) । साय पू (पिक्र) मांग-भूम का राजा (दम र ∞) । यहचा भौ [ विदेश ] विदि-विशेष (फास १---पत्र ६२)३ 'जीगरमशा (श्वया)' (यस ११) ६ वर्ष की विवा ] १ प्रकासीक में खुनेकसी एक विक्रुमारी देशी (का द इक्त)। २ पण की इनचे छावती और कारहरी चरित्रतिथि (तुम १ १४)। शिस पू विष] वर्ष की एक बाति (बल्ख १ — पच १)। मोर्गकरा की [मार्गकरा] बचातोड में रहते भागी एक विष्कुतारी देशी (ठा ८) । भोगा की (भागा) देश-विशेष (१७)। मोगि पूँ [मागिम] १ सर्प सौंप (गुपा वेवेट, द्वाप्त वेदक) । २ द्वार शारोप, वेद (मय २ ६४७ ७)। ३ वि जीम-पृथक्त मोबासनः विलामी (मुपा ६६६: पुत्र ११६)। भोगा भोषा सार्द्ध की मुखा योज मार्थ दे [माटामा] १ वेक्सिकेर नेराम के सपीप का एक मार्स्तीय हेश, जीतान । े भोटान वा धूनैराना (विन) । भोज रेषो भामग (वर् ) भोस की मुत्त (बार गुत्त २, ८, नुस

YEE) I

भाषप } क्या मुजा। भाषका शाचादेशो स्≕४ूर≕मृ! भोक्त वि [मोक्यू] प्रोयनवाला (विसे 24481 \$ 7 Ye)1 भोत् } देवो मुख। मोत्त्व } देवो मुख। भोत्तम देवो भूत्रण (दे ६ १०६) । शाक्ष देवो भू= भूव ≈ भू। भोम वि सिमी १ मुनि-कामन्यी (मुप्र १ ६ १२)। २ मुमि में बलम्य (प्रोप २८) की दे)। देशूनिका विकार (ठा ८)। ४ वं धेयल-प्रद्र (पाध) । ए पूं भनधारार विरिष्ट स्थान । ६ मनर (सम्प ११ ७८)। निवित्त-शास-विशेष, मुनि-कम्यावि से शूनानून कम वतनत्तेवाना शास (सम ४६) । व धहोतन ना वतानियाँ मुहत्ती 'श्राप्तर्व व भीग (? म)रिसडे (मृज्य १ १६)। अञ्चिय न शिक्क अपूर्वि सम्बन्धी भुवाबाद (परह १ र)। भोभिट्य देवी भोमद्य (सम २) उत्त २३६ ₹ ₹)1 साबिर देखी अविर 'सम्बद गारमण्डे क्षेत्रारे नुब्रोमियो बीबो' (संबोध ६२)। माप्रका ) वि [भीसेव] १ वृति का विकाद भोझबग ∫ पार्विव (सम र मुता ४८)। २ पूँ एक देव-जाति, शवनपति नामक देव कावि (धम २)। आर्म्ड पुर्वि भारत वनी (६६१ व)। मास धक [दे] इनना (मुना १२ ) । भोक्ष वि [व] बद्र सरल विनदाना पुत्रराना में भाष्ट्री भी कि श्रिया (महानि ६ नुपर ११४) : सादम ﴿ [साद्ध इ] यत्त-विशेष "मोनयनामा वनको धनिनशिवनिद्यता धनि (वर्षस 1 (545 भाक्रप सक [के] उनना प्रनरात्री कें 'मोञ्चर्च । चंह भारतंबरं (बुरा २६४)। मालंपग न [ब्] बम्बन अक्षापण (सम्मत्त 1 (388 भामवित् । वि [वि] विवन दमा हुमा भोलिम । (वृत्र ४११, मुता ४२२)।

## ॥ इस निरिपादअसहसङ्ख्यातीम सम्राप्यस्तरसंस्वाती दीतप्रयो दर्शने समलो ॥

स

मद्रअपि किमति है। धरिनत विकास

(वे६ ११४)। २ व बोर्स इए बीजों के

धाच्यापन 🖩 पान में समग्री एक काल-यथ

वरन भेती का एक भीजार भीवसे सहये

स र् [स] बोह-स्वाधीय व्याजन-वर्ग निरोप (877) 1 सम्बन्धि नद्या (देश ४० व दूसाः

ति ६४ ११४ मित)। मञमा : मि्गाः विकार (वर्षि ११) : मइ धी [गृति] मोत मरण (सुर २ १४६)।

मण्डी मिति १ वर्षि यम मनीया भेग नई महीमा (पास नुर १ ६६) कुमा जागू **७१) । २ जान विशेष** क्रीव्रय भीर मन में प्राप्त होते राजा लाग (हा ४ भागीत नमा १ ४ १०१४

বিব ২০)। সমান ব ["জন্ন] বিষট্ড मर्गिनाग निप्यादर्शन-पुन्द्र बाँठ तान (सम रिमे ११४ काम ४ ४१)। जान प्रमाय नाम व [हात] बात-विदेश (विष्युष्ट प्रश्नेष्ट के किया का प्रश्नेष माजापरा न ["सामाप्रस्म] निजान

ना बापरन नर्म (निते १ ४)। नामि रिक्तिनगी की द्वाराचा (यम) वित्तमा की विश्वविद्यों नह पैत कृति रणा(रण)। स्थित वृधिय स्रोबर्ध बिन्न्छ (भग गुपा १६४) । ला सोप र्दार्शिता दिल्लाम् साव ६३

धाना र्याः। मद्र रेगो वर् मुधे (पुत्र ४) सर्भार विभिन्नी वरनुष, प्रवान (वे क W TI YE 1 45231

महत्र थ्यो मारूया ।

नियाँ (दन ७ २० पएड १ १--पव ८)। सन्त्र वि मिय**ी व्यानए**छ प्रविद्य एक व्यक्ति-प्राप्त निवृत्त बना हुमा 'यानमहतृहि बार्गारपीत' (बन) 'बिरापडिम' गोसीसर्चर एमार्थ (महा)। मन्मा ध्यै [गुगया] रिकार (निरि११११)। मद्रंद पूर्जिल्ली शत का एक पैनिक पानर बिटेप (मे ४ का ११ दर्)। सक्ष्य (स्थित) १ विद्व वैचानव (बाह १ : गुर १६ २४२। वताः) । २ धन्दशः एक भेर (रिय) । मह्यादेगाम अ≖मधेय (वर्)।

सङ्चा व [ सन् ] दुन्दने (शत्र) ।

गरम'र्जा भी हि मनिमार्ती दूरा

मन्ति सन् (दे ६ ११६) वर् )। मशास्त्र [म इस्र] उत्तर देवी (र घ से 2 tt @ to \$4 ttb): मद्रम न [मेरव] इत्तर देतो (गाय) । संस्परिकासनो देना नव-पुर सम्बद्धाः (हेन ने नाम ना नेप' मानू नेपा w(4) t माम र् [रे] नन्तन केम्प्र (दे ६

1 (848) 1

चहित स्प्रेश (दे ६ १४२ ने ३ ४७)। मइस चड़ [ सक्षितम् ] मना वरना, बीवर बनाना । मान्या मानेष, मानिति वानीत (भवि छक पि ११६)। करी महीरामा (सवि पि १११)। बहुः सन्मंत (वर्ष रे, )। इ. सहस्तिपच्य (त १६६)।

मइस यक [द सक्षिताय ] देश-यी। होना फीबा सक्ता । बहु संस्कृत (ह ६ 144 5 4A) I सङ्ख्यान [मस्तिनता] मनित गरमः(नाः)। सङ्ख्या थ्ये [सक्तिनम्] १ जार रेवे (योप ७)। २ थानित्य, मनिक्ता। १ कर्षक 'सहर दूसी महत्ताले बार्ज (दुर ६ १२ ) दनार् मानकार् समुनम्ब वरस्य

सङ्ख्रीत [दे मसिन] वत-तेत्ररू, <sup>हेरू</sup>

कानने मामोत्पामरे वार्मपरीक बतार है परिषयाचे पर्यातको बरहरे हे (स १४)। बहत्तपुर्त्ता क्षे [र] पुरावती, रवराना में (45) सङ्ख्या वि [मोटनिया] करिक विचाय (बारत ६५।शि १६६ माँ।)। सहत्र (हिं।] वस ह्या। श्रे वि<sup>य</sup> धर्म शतु गामी । परमापती देशी व<sup>न्ता</sup>मर्व वर्तरपं नवास । तर् ए रहनाई समा बहीनवार सरिवार शेररो वर्गव वर्गे शोहकद मयक्त्रिण<sup>न</sup> (दाग्य १ १४---<sup>११</sup>

1 (7 9 शहरूर दें दि] बल बतान वार का दु<sup>श्वा</sup> (देश १२१) । देशो सपद्र ।

सङ् की [दे] मरिए, राज (दे ६ ११६)। सह भी सिंगी हरिएी हरिए नी मना हिरुपी (या २०७ से ६ ८ ३ के ६ ४६ नप्र १)। सई देशो सइ = यदि । स, दर्विसन् ] बुद्धिमाना (शि ७३। ११६ सप १४२ हो)। सईक्ष वि [सदीय] मेरा धपना (पर्। हुमा स ४७७। महा) । संदर्भ [द] वर्षत वहाद (१ ६ १११)। संद 3 दि पद की क्रोमस सुरूपार सउछ ] (हे रे रेरेच पढ सम ४१) पुर १ १७: मुना)। सी ठह (प्रात ६८ वडड) । सङ्ख्री [दि] दीत बरीव (दे ६ १०४)। मण्डूम वि [मृदुफ्ति] को वीमस बना हो (गढड) । सड्ट् रेगो सड - पृतु । मन्द्र पु [मुक्त्र] १ विष्णु भीहरूण (एप)। र नाध-क्रिप 'दुहहिमवेषमहम विभिमानपूर्वेण वूरमरेण (मूर १ ९८) 'सहामरं "एंटालुस्डिए' (का)। सउद्या देगी साउदा = मुदुरन ( यह )। **मडह दून [मुक्ट ] शिरो-मूपल किरोट,** सिरपेंच (पन देश है है है छ प्राप्ता कुमा पान भीर)। सब्द ) ई [के] यम्मिस्त क्यरी पूट संदृष्टि । पूरा (पाप दे ६ ११७)। सक्रण देवो सीम (इ.१.१६२) वंड) । सन्दर्ग [सुदुर] १ मलन्द्रपा प्रता की बनी, धीर (पुमा)। २ व ल प्रार्थना शीशा । १ पुनाल-दएड । ४ मपुन वा पेड़ । प्रमणिकानुषा । ६ कोषी-कृषा । ७ इवि क्यों-इम मोरक (दे १ का बाह क)। महर १५ दि ] इप्र-विधेप धनामार्ग महर्र | पान गन्त्रीत, विर्वत्त (१ ६ \$ (×) 1 महत्व रेगी सहद्ध = पुरुट (हे ४ ११) । मास र्व [मुक्त बोही विवरित बती, विता बीर (रेना २१) । २ देह सरीर । १ मामा 'नज सालो' (११७ द्राप्त)।

माउस धक ( मुक्कस्य ) सङ्ग्रमा संदूरियत होना 'मऑित लुपलाई' (गा १)। वह-महस्त, महस्ति (से ११ ६२। पि ४६१)। भारताम म [मक्सन] संकाच 'वे वेप मक्सर्य बोप्रकार्य (ह २ १०४ विस ११ ६ घडा)। भाउत्पात्र कर्क [ मुक्कुअय ] १ सङ्ग्रमा । २ सक् संक्रूबित करना । वर्ष अउठाउँस (बाट-पासवी १४ पि १२६)। मज्यादय वि [मुक्कित] सञ्ज्ञाया हथा संबोधित (बजा १२६)। सप्रदाव रेकी सरस्राक्ष । कर्म महनाविष्टीत (पि १२६)। वह शहस्यवह (पडम १% मदबायज वि [मुक्कमय वे विद्वित करने-बाला 'हरिसविसमी विवसायमी व मदनायमा व बन्धीए (घउड) । मज्ञापिय देखो अजहाज्ञय (उप द ६२१ भवि)। महास्त्र देवी दिवानस्य का वश्यस्तर (\$ 4 22x) 1 मडिंड र् [सुब्र हिम्] सर्निरोप (पर्या १ । १--पम दः पग्छ १---पम १ )। मप्रक्रि पुंची [मीकि] र फिरीन प्राट, फिरी मुप्ता (पार्च) । १ मरहरू निर (पुत्र १८६) वमा धर्मि २२ धन्त्र १४)। १ मिरो-पेष्टम विशेष एक तरह की पगढ़ी (पन केस) । ४ बुहा बाधि । १ संबद्ध बरा ६ व धरोक दूस िक सी सूमि प्रभिक्षे (ह है १९२ शहर )। मप्रक्रिम पि [मुमुख्ति] १ धेपूषित (स्र भद्र था : १३३ में १ ६१) । २ ब्रुस्स बार विवा द्वारा (बीर) । ३ जान हिन्छ (पूपा) । ४ मुद्दम-पूषः विशा-प्रदिश (धव) । सम्बी देवी मनई (हे २ ११३: बूबा) । मकर पुंधी [मयूर] परिनितिटेच और (प्राप्तः ी निवार कारा १ को कि कृ [साह ] व आप । (व व मान) नवर (गडम २७ ६) । मक्र की [मयुरा] एक वर्गा महावध चक्रप्री की बाता (क्रक्र २ १४१)।

भजा पे मियली १ फिरण परिप (पाप)। २ क्रान्ति तेव । १ शिवा। ४ शोमा (है १ १७१ प्राप्त)। १ रागम बंध के एक राजा का भाग एक संका-पति (पडम १ 24X) I मण सक मिक्य मिन्युक करना समाच वनामा। वक्त सर्गत (धे २ १७)। मपआरिस वि [माइरा] मेरे बेसा मेरे तुरुप क्यारिसाएं पूरिवाहमार्खं हमें वशेषियं (स ११)। में (धप) केवी स≂ मा (पद् श हे ४ ४१८। कुषा) । इतर पू ["फार] "मा" सम्मय (हा ? - 94 YEX) ! सँकड वेका सक्तड (प्राचा) । में रूप पूर्विस्क्रमी बटमन खुद कीट-विशेष पुत्रयती में 'मांबल' (भी १६)। र्मक्षत्र पूंची [च् सक्त ] मन्दर, बानर । बी थी 'त्रयमेच मंत्रखीए मछोए ते <del>संक</del>छी वर्का (कुत्र १०१) । अंकाइ पू [मङ्गाति] एक प्रत्यक्त महर्षि (पंत १८) । संकार पूं [संग्रर] 'म' संगर (ठा १०---पम ४११) । संक्रिम न [सङ्खन] दूर कर पता (देव 8X) I संकुण देवो सँगण≔मल्लूख (दे प्रति)। दृत्य पू िहरिनन् क्रिक्मपह प्राक्ति-विशेष (पएग्र १---गम ४१)। र्मकुम (के देखी मंतुम (गा ७६१)। संस्य देखो सदस्य = प्रतात् । यहः संस्यंत र्मार पु चि वानः मुत्रल (दे ६ १११)। र्शन्त प्रस्ति एक निवास पानि को चित्र पट दिलाकर बीदन-निर्दार बरता है (छावा ११वीकीत पट्ट २ का तह १ ६,

कर्ण)। क्रस्टन [क्रम्डक] १ वंत का

शक्ता। २ निर्दाट-देनुक भीत्व (वंबा ६

र्मराय व [ब्रह्मण] १ मापन 'चंगरा व

धार्यय मात्रिश (मूर १२, ≈)।

बुरुमालकरवरणा" (का ६४a री)। २

४१ हो) ।

चहते 🛊 (सुन्न ११—यन २३१) । हर्मण

र्ष शिविमात्र १ मधान के कार का यह

क्रमर क्रमर रखा ह्रमा मंत्र (पीप)। र

विद्यान प्रतिक एक बोच किसमें का है

२ नोबल (छापा १ १)।

441)1

संसुता की [सञ्जूषा] रिप्तिहर्णणी संसुता रिएक नक्षी (द्वार रे—वर्ष म

इक) । २ विटाये घोटी बॉक (इस स्टे

की माता का नाम (सम १६१)।

कानाम (प्राच् १)।

मेंगरमध्या की [मङ्गरसम्मा] एक भवरी

संदाधि पू [सङ्कृति ] एक संब-भियु, बोशा-

बढ़ का पिता। पुन्त पूर्विपुत्र] कोरालक

बाजीवक यह का प्रवर्तक एक मिल्लू की पहुंचे

मनवान् महावीर का निष्य का (ठा १३

ना एक नावन । ४ वन्यवन्ता (विशे ५७)।

मेगण्य पुर [मङ्गस्ड] स्वभित्तत्र व्यक्ति व्याउ

भेग रमगमः न [वे] वह क्षेत्र जिल्<sup>स्</sup> वीज |

मोर्गः नव नवर्ष (नुना ७७) ।

बीमा बाधी ही (ह ६ ११६)।

बादि नक्षत्र एक दूधरे के उत्तर राजी ही मंगस्मवद् पू [मङ्गद्धापातिम्] धीमन्त-पर्यंत चना) । मंची के बाकार से सपरिचत होते हैं (उ काएड कुट (इक वी४)। संत सक [सक्य] १ वाकः । २ सक्या । £4) 1 संगध्यको सी सिञ्जास्त्री । महाविधः वर्ष ३ जानना । एमें मंदिन्स् (विसे २३) । र्मची को मिल्ला] बटिया काटा चायप क्ष्य एक विकास प्रान्त-किलोच (তা **९**३ संग् पुं[सङ्का] १ वर्ग (विसे २२)। २ रैकक-शंकीए (पुर १ १६० १६१)। इच्छ-विधेयः एम के नाम में ब्राता एक हव्य मंशुद्ध (बर) ■ [सङ्ध] सीव, वर्ग र्मगञ्जाचक र्यु [सङ्गद्धमर्थ] १ महाविद्या (सिरि १ ३७)। (মৰি) ঃ वर्षे का एक विवय, शक्त-विवेष (ठा २, ३) संगइय देशी सगइय (निर १ १)। संबद दू [सार्कार] संबाद, विकार निर्मा इद्यो । २ देन विशेष (वं ४) । ६ न एक (हे २ १६५ कुमा) । क्यो सकार, समार मंगरिया भी [ब्रे] बाच विशेष (यव) । देव-विधान (सम १७) । ४ प्रवेत-विरोप का संखरि औ [संजार] क्यो संजरी (भीर)। संतम है [सङ्गद्ध] १ वह-विशेष योगारक एक रिकार (इस)। संबर्धि व [सञ्जरित] सबरी-पूक्क 'वेबर्डि स्ट् (इक्) । २ न करपास शूप, क्षेत्र क्षेत्र संयक्षिक) वि मिल्लिकी १ मेला वर्षात्करें (स ५१६)। मंगुद्धील । बनका विद्यवद्योवनोधमंग्रीहरू-(दुमा) । १ विवाहतूप-बन्दन (स्वया ४६) । र्मेडरिजा } भी [मजरिका रा] नोर्ली ४ विष्य-सद् (ठा ६ १) । ३ विष्य **स**य के बम्मचाइस्त (उत्तर १ । सन्द्र ३६: श्रुपा संबरी 🔰 पुरुमार व्यवसानार राष्ट्र हरे )। २ प्रदेश-शास्त्र वीक्तेवाका 'तुइपं-सिए निया बाना इप्रदेश-नयस्कार झानि नुय (कुमाः वस्त्र) । गुंडी को [गुण्डी] 😎 वसीएँ (तुद्ध १ 😻 २१) १ कार्य। ६ किम्ल-सब का कारहा दुख्ति विरोप 'चोमरिकंडी य मंबधेईकी' (राष्)! मात का निमित्त विशे हैं शु १३ २२) २३ मेंगक वि [मञ्जरूप भाइत्य] पंकर-राध, मंबार देवी संबर (हे १ १६)। २४ भीग समा)। वरासाकास्य प्रतासक मंबन-जनक शांत्रविकः 'परमाको दिलाङ्ग-मंत्रिका की दि ] तुमसी (दे । ११६)। ब्छनि**दश्चर्मकाविकार्र** (बेह्य १६ क्लाबा (तुम १ ७ ११)। इगर्थ-सिद्ध वाध्यिक-मंजिह दि [माक्षिप्त] मजीक रंदर्भ १ १३ बाग १९२३ कथा भीवा पुर १ २६वा प्राति (रूप) । १ हर-विदेश सार्ववित । वलाओं ही (चम)। (वैदीव ३)। १ समादार बाठ किनों का १६ १७१ तुपा ६१)। मंबिट्टा क्ये [मिश्रिप्टा] नवीठ, रक्षेत्रे र्सर्गा 🛍 [सङ्क्षी] पर्व श्रम श्री एक मृच्छीता प्राप्तम (संबोध X )। ११ वि स्था<del>र्थ</del>-सावत नेक्स-प्रारक (प्रार ४)। विस्ताय प् (हा ७---पत्र १६१)। मजीर त [मझीर] १ सूछ 'ईस्वं <sup>हेरी</sup> ["ध्यक्र] बागतिक ध्यक (श्रक) । तुरु व मेंगु 🕽 मिल्ली एक मुत्रसिद्ध 🖣 न वादावै च मंत्रीर (पाम स ७ ४ सुपा ६६)। १ िंतूरी संपत्त-काप (सहा) । दांव पू प्राविभेद्र (लिक्टि वी ४- ब्रास्य २३) । ध्यन्द-विशेष (पित्र)। िंदीप । मार्यानक धैर देर-वन्दिर में बारकी मंगुस व दि । समिष्ट (देव १४६: सुपा संबीर न [दे] शहनक वांच वंदि में मार दिया बाठा दौरक (वर्गीत १२६ ११क बुद्ध व )। २ पार (१ ६ १४%) विकार (दे ६: ११६) । २६) । पाइय 🖠 ["पाठक] बमाद शतक तुष्ड व )। १ वृ. पोर, में हु कि [ मञ्जू ] १ मुखर, वनोदर (गार्ग)। मानच चारण (राघ) । याहिया औ शरकर (दे ६, १४३) । ४ नि शक्तरर, २ बोक्न सुरुवार (मीना कर्ण) । १ विह ['पाठिरा] बीला-बिरोप बेबता के बाले खराव (पाच ठा ४ ४--पत्र १७१। स शपू (श्वकः भं १) । भुष्यु भीर सन्त्या में बताई बाठी बीहा धरेर बंत रे) की. की अंद्रविशित मैनुजा की हि] तुसवी (१ ६ ११६ (धर) । बम्लस्य भगवधो श्रृत्तीरस्य बम्मप्रलुती राष) । मंगप वि [दि] रे बरश, समान (दे ६ (बना)। मंजुष रि [मझस्र] १ मुन्दर, स्वतीर, गु रेरें ६)। रुग मस्ति सानः ६ डीस इनने मंगुम वृ दि । शुक्र न्तीना, पुक्रपारितर्थ-(शन १८१ रूप दिया है क रामा लि।

पिरोप (दे६ ११ व लूब २ ३ २४)।

श्रंप पूँ शिक्की १ वचान द्रवादन (रण

बरवो । १ व्यक्तियाचा जनित दश बीवों में

वीनस बीच, विवर्षे चन्नारि वंशासार से

मंच पू कि] कब (१ ६ १११) ।

मंठ वि वि र राठ, सुबा, बदमारा। २ पू बन्द (दे६ १११)।

संह सक [ मण्ड् ] मृतित करता सवाना । मंदद ( पड् ) मंदित (पि १३७)।

मंड एक दि] १ धाने घरना। २ प्रारम्य-करना, पुजराती में 'मांडबू' 'को मंडब रख धरभुरको **संबु** (मर्बि) ।

मंड पून [मण्ड] त्या 'चपायुंवर' च स्रो वनविद्विपरिमास्त्रे करह, नवल सारहपूर्ण गोधवर्षरेखें (स्वा) ।

संडम देखो संडच = मएडम (नार---रुकु £=) 1

संहल , पुं [मण्डक] बाद-विशेष माहा सहरा रे एक प्रकार की रोटी (ज्य प्र ११% वय ४ दी युप ४३। वर्गवि ११६)।

संख्या वि [सप्यक्ति विमूपक, शोधा वक्ती-भाषाः 'सप्ति 🔻 'कोइलपुड्पंडर्ग'। (字字) 1 मेहम न [मण्डल] १ भूपण भूपा (नवडा प्राप्तु १६२)। २ वि विमूपक शोमा वड़ाने-कामा (धवड कुमा)। की भी (धासू १४)। भाइ को विवादी वामुक्य पहलानेवाली वासी (छाना १ १—-पत्र ३७)।

अंडज रे वि मण्डकी धात पुता (११ ११४ वाष्ट्रं स १६८; सूत्र २८ । सम्बन्ध ₹€ ) 1

**अंडड म [सण्डछ] १ समूह सूच (कुम**ा) मका सम्बद्ध है। र केर (ध्य १४२ टी द्रप्र ४६ १८ )। १ गील द्रशालार पदार्थ (दुमा दड़ड)। ४ धील शाकार हे बेप्टन (हा व ४---पन १६६। शतक)। १ चल-सूर्व धावि का बार-छेन (सम ६१) मब्द्र)। ६ संस्ता, सबद (स्त ११ कृत ४१३,६)। ७ एक प्रकार का <u>प्रष्ठ रोग</u>। व एक प्रकार की शृताकार कार-व्यू (विश ६ )। १ विल्या 'दरमद एक्तिमेक्ककमक हिर्दछचंडायहं मन्यों (पडाः) । १ भूमहों का स्वात-निरोप (धन)। ११ वदक्तालार परिप्रमश्च (पुरन १ का स १४६)। १९ इंक्तिकीय (स ७०--पत्र १६०) । १६ तू मरनावास-विशेष (देवेन्द्र १६)। य वि [ अन् ] मएअन में परिश्रमण करनेनामा |

(पुत्रज १ ७)। हिला पूँ [ीधिप] मध्डमाचीरा (भवि)। विषय 🖞

िंशिपति ] नही मर्ग (मनि)। मेहल पुन [मण्डल] योडा का पुत्र समय का धासन (वन १)। पनेस पु ["प्रवेश] एक प्राचीन वैश शाबा (एवि २ २)।

संबद्धारा पुत्र मिण्डद्धाम् तक्षत्रार, श्रवण

(क्रिक्क क्षेत्र) प्रति । शंकक्रम दें [सम्बद्धक] एक मान काएड्

कर्त-गरकों का एक बाट (चलु १२३)। मंडिंद [मण्डिसम ] १ मएडसामार प्रति बायु, वक्र-बात वर्वेश्वर (वी ४) । २ मार्थक

शिक राजा 'तेनीसं तिल्बंकरा पूज्यमचे मंबनिरायाणो हाल्या (सम ४२)। १ सर्प की एक कार्फ (नरहा १---पन ११)। ४ न नीय-विद्येप को कीरस योगको एक शाका है। १ पूंकी उस पोच में उत्पन्न (ठा

७-पत्र इंट )। दुरी **थी** दिसी वरर विशेष हुवरात का एक नपर, वी साजकन मी 'मोक्स' नाम से प्रक्रिक 🕻 (नुपा ६१६) ।

संहक्षिण नि (सण्डक्षित<sup>्</sup>) नग्रमाकार **ग**रा 'मेडसिमचंडकोर्यडमुक्तकोसिच्यक्ति-सिरोई (सूपा ४ वन्त्रा ६२) गंदक)। संबक्षिण वि सिण्डांशक, साण्डक्कि हैं।

भग्रमाकारकाचा । २ पूँ मंडच रूप से स्थित पर्वत विशेष (का १ ४---पण १६६ पएह २ ४)। ३ मएक्स्रामीय, सामान्य राजा (खाना १ १) पर्यक्ष ४ ४ द्वना द्वय

१२ महा)। मंद्रश्ली क्ये [मण्डकी] १ पंक्ति केशी समृद् (से १, ७१, सम्बद्ध २ १६)। २ ध्रश्र की एक प्रकार की मंदि (वे १६ ६ ६० महर)। १ पुरास्तर गेंड<del>म - ध</del>गृह (संशोध १७-ডৰ)।

मॅबक्रीम वेचो संहस्तिम ≔ सहदत्तिकः "तह् | तसवरतेलादिवकोतादिवमध्यतिवसावति (गुपा #र धार र-पप १२६)।

सं**हर पुं** [सण्डय] १ विचाय-स्थान । प् बाही धारि है वैष्टित स्वान (जीव ६३ स्वप्न ६६। महाः भूमा) । ६ स्थान शाहि वर्गः का पृष्ठ; 'क्रायानंडनंति 'धीयग्रामंडनंदि' (कन्पा मीर)।

शंह्य न शाण्ड्रवय र बोध-विशेष। र पूर्वी **चर्च मीन में ऋएम (ठा ७—पन ३१**)।

सञ्चनिका भी [सण्डपिस] छोटा गएडर (कुमा) । अंडाठशायण व [आण्डाडपायन] पौष-विशेष (सुजार १६ इक):

श्रेंडाचल व [सण्डन] सनाना विस्पित कराना । बाई की ["धात्रा] समलेगकी बाबी (बाबा २ १४ ११)।

सहायय वि [मण्डक] स्वानेशसा (निष् १)। γ वि [समिक्टत] १ पूर्वित (कप्पा संक्रिश ∮क्रमा) ≀र ⊈ू सम्बाद सहावीर के पत्त वशायर का नाम (सम ११ निसे १८२)। ३ एक चोरका नाम (वर्गीक चरा ७३)। कुच्छि पुन ["कुक्कि] मैध्य-क्शिप (बत्त १ २)। पुत्त ई ["पुत्र] भपवान् महाबीर का सतवाँ गराबर (कम्प)।

संविध्य वि [दे] श्रीवतः अन्नायाः हुपाः। २ विद्यादा हुआ

र्चसारे इसविद्यासा महिमाक्येक मंडिए पासे । ৰস্ক্ৰীৰ ৰাজ্যাল্য প্ৰবাজ্যান্তাৰি ৰস্মীত 🗈 (रमख द)।

े बागे वस इस्रां नइ मंडिट रहामरबूखी चंडु (स्थि)। ४ भारत्या 'रसु मंदिर कुण्णादिवेख सार्म (मक्ति एस)।

मंबिद्ध पुं [चे] श्रपुप, पूथा पद्याय-विशेष ( T. 220) 1

संबी की [दे] १ विवासिका, बक्ती (दे ६ १११। पाम)। १ मध्य का सम्र एवं सोहः वे मॉडी कक्षप नेद्रै (बाव ४)। पाहुद्विया की ["प्रासृतिका] एक फिलानोग यस के माँक प्रथमा माँकी को बूसरे पात्र में एककर वी वाती भिता का प्रहुए (प्राव ४)।

र्मबुक) देवी संबुद्ध (था १८८ वर्त्स १ १९ र्मक्षा है है रे. १ थ पर ; पाप) ।

मंबुक्तिया, श्री [मण्डूक्लिंग, की] १ श्री मंदुक्तिया मेंबर मेरी, शहुरी (त्य १४७ संदुक्ति श १३७ टी) । २ साइ-विशेष बनस्परि-विशेष (भ्रम:

थम ३४)।

संब्राधि पु [सङ्ग्रासी] एक संबन्धम् है सोना सब का रिया। पुष्य पु [पुत्र] सेटालक सार्थाक पर का सर्पाठ एक मिन्नु को पाईक सम्बाद सहार्थीर का किया था। (अ १ करा)। सेरा एक [सक्स] १ साला। २ साला। इ साला। वर्षः सीम्बस् (शिसे २२)।

**\$\$**2

मंग वुं [मङ्ग] १ वर्ग (मिले २२)। ए रेजन-हव्य-रियेफ रंग के कार में पाता एक इन्ब (शिरि १ ४७)। मंगह्य केवी मगद्म (निर १ १)। मंगह्य के विशे क्या-रियेक (एक)। मंगह्य हिंदी क्या-रियेक प्रांत्रक क्या एक)। १ वह-नियोग संस्थान क्य (एक)। १ न- क्यान्स जुल, बेस सेम (कुमा)। १ दिवाह सुन-स्वन्त (स्था ४१)।

४ निम्त-सद (ता ३ १) । ५ विध्न-क्षय के श्रिए क्या वाता राजेन-नगरकार यादि गुर कार्य। ३ निम्न-सब का कारल बुरित माराका निमित्त (विदे १२) १३ २२) २३ २४ मीरा क्या) । इतंत्रावाक्य खतानव (सूप १ ७ २१)। इट्रार्थ-सिन्ड वाजिन्दर-प्राप्ति (क्रम्प) । १ दप-निरोप धार्यक्रित (संबीम ६)। १ सवातार घाठ कियो का कानात (संबोध १४)। ११ वि क्यांके धा<del>वन मंत्रब-कारक (मान ४)</del> । *उम्मू*य पू भिन्न मानिक ज्यब (तप)। तुर त िरुष] भंकत-अन्य (महा) । हाल प्र ["दीप] माध्यक **दे**च देव-धन्निर ने क्षारही के शह निया जादा दीएक (वर्गीन १९३) २३) । पाद्य 🙎 ("पाठक) मामच चारात (पाप) । पाडिया की ["पाठिका] गीएल-निरोप वेक्टा के सामे मुख्य भीर कमना में नजाई नाती बीखा (তৰ)। मंगक्ष वि [दे] १ करच, समान (१ ६

कालक कारण (राक्ष) । वाहिया की ["पाठिका] बीधा-निरोध केवा के याने प्रदूष तीर कलता के याने प्रदूष तीर कलता के वाहें कीधा (राज)। मंगल कि [कि] है कारण, क्यान (के के राज)। मंगल कि [कि] है कारण, क्यान (के के राज) केवा अपने पाठी कर कारण है कि वहने कारण कारण । मंगल कि वहने कारण कारण है कि वहने की याने कारण (राज कर)। मंगलमान कि [कि] कर वेंगल कि वीज विकर्त की विवर्ण की विवर

की मता का गां। (का १११)। मंगळाळ्या की [मञ्जळ्या] एक गणी का गांग (कापूर्व)। मंगळावद्य श्री [मञ्जळ्याचित्र] वीमका-गर्वेत का एक कुट (का क्षेत्र)। महाविद्य वर्षे का एक विकास माण्यक्रियेत (ठा २,६)

स्पाध्यम् की [सङ्गासनी] मार्गानिक गर्ने का एक विश्वन प्राप्त-विकेश (ठा २, ३ इन)। संगानान्य थुं [सङ्गासनी] र गत्तिकेक् वर्षे का एक सिन्दर, प्राप्त-विकेश (ठा २ ६) का-नियान (या १०)। भ पर्यंत-विकेश का एक विश्वप (एक)। संगानिका है कि [साङ्गाकिक] र पंक्र संगानिका है कि [साङ्गाकिक] र पंक्र संगानिका है कि [साङ्गाकिक] स्थानिकार्यर्थना-सम्गानिकार्य (उपर १ सम्बु १६) दुसा

)। २ प्रतिषा-वाक्य वीतनेवाला 'सुहर्य-

मंग⊈ वि सि¥स्य साह्रश्यो मंक्ल-राध,

नवीर (सम १७ २१)।

(उना)। मंगुस दु कि | पड्डम लीका, बुक्तरियर्थ-विदेश (वे ६ ११) मुग्न ९,३ २१)। मंग्र पु कि | २०४ (वे ६,१११)। पंकर्य पु मिला १ १ भाग बजावन (क्या-पन्छ)। १ वर्षिएतसम्ब प्रस्तित करा होती है

चीनप योग, जिसमें चन्त्राहि मंचाकार है।

है [शिक्स | दे स्वत के करा का उक्क कर कर रहा हुए। यह (यो न ) विकास कर रहा हुए। यह (यो न) विकास कर रहे हैं हुए। यह (यो न कर रहे हैं कर रहे हैं हुए। यह (यह ) विकास कर रहे हैं हुए। यह (यह ) विकास कर रहे हैं हुए। यह (यह ) विकास कर रहे हुए। यह (यह ) यह (यह )

संकर दूं [मार्कार] संकार, विका विका (हे २ १६२ कुमा) । वैद्योगकार, सम्बद्धाः संबदि भी [मञ्जदि] देखो संबदी (भीत)। संजरिक नि [सश्चरित ] मबरी-नुष्क <sup>श्रेर्डको</sup> वृद्धिकरो (स ५१६) । म्बरिभा १ की [सङ्गरिका रो] कोड्स शंबरी । पुरुषार पहारात्मर वह है (कुमा करह)। शुंबी 🖈 [शुन्की] 💣 विदेश 'डोमरिप्रेडी व मंबरिप्रेडी (गर्थ)। मंबार केरी संबर (६ १ २६)। संजिक्ताको [कि] धूबसो (के ६-११६)। संबिह्न वि [साजित्त मनीड रंगार्ड शतवाश्री, ही (क्रम्पू)। मंजिहा की [मजिस्त] महीठ, रहाँकी (क्या है Y Y र )। सभार म [सऔर] १ ह्युट ईस्त्रे <sup>हेर्न</sup> < वंबीर (प्रसंस क प्र' दुपा६३)। १ क्क्शिवरोप (संब)। संधीर≡[दे] श्रह्णतक डॉक्स <sup>हरूर</sup> सिक्त (दे ६ ११६)। में सु वि [ सङ्घ ] १ सुभर, मनोवूर (राष)।

अवार्ता [ द ] अञ्चलक कर्मा सेंझु कि [ सञ्ज ] र तुम्बर, मनोद्दर (मही) र रोजक सुम्मार (सीरा कम्म) । इसि स्मा (पान में र)। अञ्चल के [ दे] पुनर्श (रे ६ ११६ पाम)। संगुक कि [मज्जन] र नुमर, प्राचीन, पाँ एक रेश्वर क्या दिला र म लाउ कि। र कीवल (पाम र १)। संगुका के [ मज्जन] र किस्त मंदी संगुका के [ मज्जन] र किस्त मंदी संगुका । के [ मज्जन] र किस्त मंदी संगुका । के [ सज्जन] र किस्त मंदी संगुका । के [ सज्जन] र किस्त मंदी

क्जू)।

र्मठ वि [दें] १ शठ, शुवा, बदमारा । २ प्रै बन्ध (वे ६ १११)। मंद्र सक मिण्ड ] भूषित करना सनाना । मंदर् ( पद् ) संबंधि (पि ११७)। मंड सक 💽 १ थाये चरता। २ मारस्य करना नुबराती में 'मांडब् 'को मंबद रख भरतुरहो चेषु (मर्वि)। मंड पूर [मण्ड] रम 'तमालंतर च रा चविषेद्विपरिमार्ग करेड. मद्धल सारवएसं भोपयर्गकेश (दवा)। मंडल देवो संडद = मरुडप (नार---शक्र १ (वर्ड मंडम् , पुं [मण्डरः] दाद-विशेष माम महरा रेक प्रकार की रोधि (जा हा ११% पब ४ दी। बुद्र ४३) वर्गनि ११६)। भंडर वि (शंग्रहरू) विभूपक ग्रीमा बढ़ाने | <sup>े</sup>" ओइसमूहर्म°र्गं । बाबाः 'सरि च (बच्च)। मंडयन [सण्डल] १ मूत्र हा भूगा (पत्रक्र प्राप्त १३२)। २ कि जिल्लाक शोक बहाने-बाला (गडड कुमा)। स्त्री व्या (प्राप्त १४)। घाड यी ["घार्जा] बाधूवल पहनानेशनी शसी (गावा १ १--पत्र ३७)। मंडल पूं [के सण्डल] चान कुला (के ६ ११५ पाक स ११८; दूब २६ । सम्मत्त 1 ( 35 मंडळ न [सण्डस] १ धपूर 💌 (हुमा: गबर मामत १६ )। २ देश (का १४२ द्यो पुत्र ४६ २४ )। १ गोश बुधासार बदामें (रूमा पड़ा)। ४ बोच मानार है बेहन (टा १ ४--नव १६६। सरह)। १ चम-नूर्व थारि वा चार-रोप्र (सम ६१) यका)। ६ संसार, मनप् (क्य ११ शः भार ६)। ७ एक मकार ला इह रोग। ६ )। ६ विष्या 'स्टब्ट ब्रांडिवंशगरसम् डिग्ग्यार्थनम् नवयौ (नडह) । १ सुन्तर्भ ना स्थान-विदेश (राज) । ११ मएस्नानार | परिभाग (तुम्ब १ ७; स १४६)। १२ र्राका धन (स ७---वन १६०)। १२ व मरराशक-विदेश (शिन्द्र ११)। व वि [ बन् ] मएहन ने बरिधनत वस्तेशना [

(गुज्ज १ ७)। ाहिष पू िषिपी (मिनि)। प्रक्रिका प मरक्ताचीश िंधिपति विशेषपं (स्री)। र्महरू पून [मण्डल] योदा का मूद समय का कासन (वद १)। "पयेस वू जिनेश] यक प्राचीन **मैन शास (संदि २**.२) । संश्वतमा पून [सप्त्रसाय] शलकार, सावप (क्केष १४) मनि)। मैंडलय वे जिल्डब्रकी एक गए गएड कर्न-भाषकों का एक बाट (मए। १९६) । मंडक्षिपू [मण्डक्षिम्] १ मगुडशाकार पतता बाबु, चर्ड-बात वर्षेडर (मी ७)। २ गाएड तिक राजा 'तेवीसं वित्वकरा पुरूषके मंबनिरावाओं हात्या (सम ४२)। ३ वर्षे की एक जान्ति (तएह १----पत्र ४१) । ४ न योष-विशेष यो कीरस योष की एक स्तकाहै। ५ पुन्नी जस नोव में छप्पन्न (टा ७-पत्र ३६ )। प्रस्त की प्रिसी भवर विशेष पुत्ररात का एक वयद, जो धावकत भी 'मोडच' नाम से प्रसिद्ध है (सूपा ६१६)। मैडलिम वि [मण्डलिन] गएवमाकार बना 'मेडलियचंडकोचंडमुद्दर्ददेशिस्थंडिय- | सिरीई (मुपा ४ वन्त्रा ६२) यदक) i मंडक्षित्र वि [सण्डलिक माण्डलिक] १ भएडलाकारनाला । २ ई मंडल रूप से स्वित पर्वत विशेष (ठा १. ४~-पण १६६ पर्वह ! २. ४) । १ नएइसामीरा धानान्य राजा (खाया १ १ पर्वह है ४ चुमा चुन १२ व्या)। मंद्रफी की [मण्डली] १ विक, बोली समूद्र (से ४,७६ मण्य २ ४६)। २ शक्यां गी एक प्रशार भी याचि (चे १६ ६६: व्यक्ता) । व मृतानार गॅडल--समूह (संबोध १७-3व)। मंडलील हेवो मंडसिल = मर्वनिक 'तर् त्तपवरपेरणहित्रकोमाहित्रमेक्सीयसार्गते (सूत्रा कर हा र १--- पत्र १२६)। मंद्रप **१** [मण्डप] १ विचाप-स्वातः । २ नहीं बारि से बेटिय स्थान (शीप ३) १५०० ११; मद्राः पूर्मा) । १ स्वान धारि करने का

नुद: 'महाराजंडवेनि 'भीवराजंडवेनि' (बच्या

धीर)।

\$53 मेंडन म [भाण्डरुप] १ बोन-विरोत्र। २ वृंद्री उस गीत में स्थान (ठा ४--- पत्र १६ )। मंडनिआ की [मण्डपिश्च] छोटा मएका (कुमा) । मंडक्त्रायण न [माण्डक्यायत] गोत्र-विशेष (बेंब ६० ६६ हरू)। संदायम न [मण्डल] समाना विमृदिष्ट कराना । आह को [यात्रा] संगतेशांनी बाबी (धाबा २ १६ ११)। मंडाचप वि [मण्डक] धवानेपासा (निष्ट १)। ) वि [मण्डित] १ मृषित (कप्पः मॅडिअ र्रेडमा)।२ वृ प्रयमान् सहसीर के प्छ मखबर का नाम (सम १६/ कि १८२)। ३ एक चीरका नाम (समेकि वरा वर्)। इत्यित हुन [किसि] बैतर-सिवेप (बत्त २ २)। प्रकार ["पुत्र] मननाम् महाबीर का कार्ना मछवर (कप्प) । मंक्रिज कि [वे] चिक्क क्यामा हुन्य। २ विकास ह्या 'र्चबारं ह्यानिक्छा महितालबेक्ट मंक्टिए वासे । बरमंति वालुमासा सवासम्प्रामानि ब**रमाँति ।** (रमण प)। र बाले बरा दूबरा 'बर मंदित राहमरञ्जाको र्थंड (बीर)। ४ भारम्मा 'राषु मंडित र कार्रिकेट कार्र (स्वीर क्या)। मंहित है हैं। यहर, हुमा प्रकात-विशेष (e + ++0) ! मंद्री के [र] १ तिकालका, स्थली (दे ६ ११९। गाम)। १ सन का मग्न एस माना। व मानी रकर, वेर्ड (मान ४)। पाहुकिया थी [प्रास्तिया] एक किलानीय सम के

मीं बन्धा गोरी को दूतरे नाम में रखका

ध बार्च दिया ना बहुछ (बान ४)।

मुद्रेक हैं है इस ग्रह पांछ ।

मंद्रक ) केने मंद्रम (या २०३ वयह । ।

मंदर्कमा थे [मण्डकिमा की

मंदृष्टिता विश्व संग्रही कार्य विश्व संग्रही

tile skifeliem (att

4 (10 4)

मंद्रुयः विश्व विश्व प्रक्रियर होयः विश्व विश्व प्रक्रियर होयः विश्व विश्व प्रक्रियर होयः विश्व विश्व प्रक्रियर होयः विश्व वि

संद न [सान्य] र बोनारी, रोकः 'न न महेरा मध्ये कोह तिरियो सहक मणुस्मे वा' (जुना २२६)। र सूर्वता वेदकूषीः 'वालस्य महर्वे कीत' (तूस १ ४ १ २६)।

संदर्भ न [सन्दाश] बन्ना, शरम (राज) । संदाा ] न [सन्दर्क] देस-विशेष; एक प्रकार संदय } का बान (राज डा ४ ४—पत्र २८१)।

मंदर मूँ मिन्दरी दे पर्यंत-विशेष के कार्यंत (मृत्य धा सर देश है दे दे अप काल सुता ४०)। दे भदरान्त्र विश्वनापक का प्रथम नेपार (सर देश)। दे कार्यादीत का एक राजा नस्समुखार का दुव (गठम दे ६७)। ४ स्वत्य का स्वत्य (शिव)। ३ मन्तर-वर्ष का सारीहासक के (व्यं ४)। प्रदेश चित्र निर्मात करें

मंदा की [मन्दा] १ मन-की (वन्ता १६)। २ मनुष्य की का ध्रद्यकाओं में कीसपी मन्द्रमा २१ से १ वर्ष एक की कहा (वंदु १६)।

संदादर्भाकी [सन्दाक्तिनी] १ पंपा नशे मानोरकी (गठन १ इ.१ पाय) १ २ सम्बद्ध के पुत्र सन नी की वा नाम (पत्रन १ ६ १२)।

संदाय विवि [सम्ब] शनैः बीमे के 'संबार्ध संवार्थ पण्डसम्ह (शिन वे)।

सीनाय म [सम्बाय] वेय-रिकेय (जै १)। भौदार पु [सम्बार] १ कश्यक्ष-रिकेय (मुख १)। २ वारिक्स बुद्धाः १ म महत्त्व बुद्धाः चक्क) । ४ परिक्स शुक्षां चक्क्षां (क्ष्यः १ ।।

सेविक कि [मान्यिक] मन्यताबामा मन्द्र बाले व सेविए मूर्व (उत्त ६ ६)। संक्रिप व [मन्द्रिक] व कर (जनक करिक)।

मंदिर न [मन्निर] १ यह घर (वउडा चरि)। २ नगर विरोध (इका धाष्ट्र १)।

संबर वि [मान्दिर] मिन्दनवर का 'खीह पुरा क्षेत्रा वि य गीवपुरा मेरिया स बहुणामा' (पटन ११, १६)। सेदीर न [वि] १ मोक्स सांबन । २ वन्यान-दवर वि ६ १४१)।

मंदुर पूर्वि सन्द्वक] जनमन्त्र विरोध (पण्ड १ १---पण ७) ।

्र—प्यण्] मंतुराको [मन्दुरा] सस्य-धनमा (नुता ६७)।

मेदोब्धी की [मन्दादर्ध] १ सबस्य-वली । मेदाबर्धी (से १३ १७) । २ एक बस्तिक पत्नी (स्त ११७ थे) ।

संबोधाय (मा) । वि [सम्टोटक] श्वस्य वट्य (प्राप्त १ २) ।

मीभाउ वृह्मा चात् ] हरिबंत का एक राजा (पत्य १२, ६५)।

संबादण प्रै[सम्पादन] नेप शाइठ 'कहा संबादए (१ छे) नाम चिनियं श्लेतती दर्व (पूस १ व ४ ११)।

समाय पुष्टि पाल्क, शीर्थत (वे ६ ११२)। सैसीस (शा)। एक [सा + सी] वाले का लिल करणा पास्त वेला। चेकू सेसीसिक्ति (लिल)।

र्ममीनिय **रेको** मामीसिम्न (भिष्) ।

सीन पूर्व [सांग] मांस, चीरण निशित्त 'स्वस्मारको मेरी धर्म कहें' (युप्त २ १ १६) । प्रत्य प्रियम पर्यंत्र प्रमार है १ १६) । इस्त कि [सम्] मीतनीपुर (युव १ ११)। स्तत्र म [स्वक्क] योग सुनाने का स्थान (याचा २ १ ४ १)। "बस्त्र पुर्व । [बहुसम्] १ मोतन्यय बहु। १ वि मोतन्य बहुराका, स्वान्यनुस्तिक 'स्वहित्ते

मेशकानुतां (सन ६)। समानि नियानी गांतकान्तर (द्वामा)। सि संसान मि िमिसानी बही समें (पतन १६ ४ ४४ पहां) 'मेशिसानुतां (पता २६ ४७)। संस न [मांस] एन का नर्म, एन का प्रता (साचा २ ११ स.६)।

मंसल वि [ मांसन ] पोत्र पुर क्यांबत (पामा है १ २१ वण्डु १ ४)।

संभी की [सांभी] कमन्यव्यनिकेष बदामांची (पद्यह १ १—पत्र ११ )। संसु पून [इसकृ] काई-दूस-पूत्रप के हुना

पर बा बार (मन ६ बीर हुमा) 'मंसू' (हे १ २६ प्राप्त), संमूर्य (उता)। मंसु देवा मंसा संमूर्ति (उत्तुका) (यावा)। मंसु देवा मंत्री संस्थानिक विकास

(पिंड १८६)। मेंसुख वि [सांस्थन्] मास्त्रमा (हे २

१९६)। १९६)। सन्देश दु[साईण्डेय] द्वापन्वरोय (धान

२४४)।
अक्टड्र [प्रकटि] १ कला, बना वन्दर्(गा १७१) तक्द्र पुरेल्स मुदार्(इ. दे २ ७२। कुप्र १. हुमा)। २ मेक्स्स कला कानियाल कीटा (साव्या कमा गारू व

कातियावा बीड़ा (पाचा वच पा ६३ दे ६ ११८) १६ छत्त्व का एक सर (रिया)। वैद्य पूँ [वित्य] बल-विदेश नाएव-बल्य (कस १ ३६)। (ह्यापा पूर्व [व्याना]

नक्या का वाल (पडि)। सक्कार्यक स [दे] शृंकनाकार गीना-मूपण (दे ६ १२७)।

संबंधी की [सर्कटी] बानचे बनचे (कून व व)।

सक्तक (सप) वैकी सक्कष्ट (पिम) । सक्तर वुं [साश्तर] १ 'मा' वर्ण । २ 'मा'

के प्रयोगनामी बदश्तीति निरेब-मुचक एक आचीत बदाब-वीति (ठा ७—-पत्र ३१०)। सकुण केत्रे संकुता (पत्र २६२) हे १ १६)। सकाव वृह्वि १ सन्त्र-पुण्टतार्थ एठि कलाट

करने के तिया बना<sup>त</sup> वासी राशि (है ६ १४९)।२ तुमी बीट-विरोग वीस प्रक-रासी में 'मनो'ने' 'मंत्रोडों' (निच्च १३ सावमा वी १६)। बीट का (है ६ १४२)।

6)1

(बद्धा)।

(सुपा ६४) ।

१९२८) ।

ft x 1) 1

समित्रभ वि [सार्गित] १ धानेतित वहेतित

(से ६, १६)। २ मांगा हुमा, गावित

मिनर पि [भागीयत्] बीट करनेयत

सरिग्रह वि [दे] पारवल्य, पीधे वा (विते

सन्तु दु [सङ्गु] पत्ति-विदेव जत-नार्व

सप दुं[सघ] सेन (धन ६ ३ पर्⊝ २)।

स्यम्पस्य स्थि + स्रो देशमा क्ला

पत्ररमार पुत्रपाती में 'मनमन्द्र नामसे में

'मदमच्छे'। यह सम्मर्धन सम्मर्धिः

मयव द्र [मयवम्] १ १७४, देव-धन (वन

<sup>९ दाका</sup>) । स्टेस दु[\*शाक] रूप्य-

सपक्षपेत्र (सप १६७- वण्य भीर)।

(ब्रय १ ७ ११ है २ ७४) ।

(का १४७ हो) मन्दिरत मस्बेरत (भाषा २, १३ २) । हेर सक्त्राचय (न्त्र) । हः ग्रनिश्चयस्य (योव १८१ दी) । सस्त्राय न (स्राप्ता) १ मन्द्रन नवनीत ६४)। बहुः सम्बंद सन्गनाण (गा२ १-(ड २१६ पमा २२)। २ मानिश सम्बंद पप ६४८ टी यहानुता ६ )। सं≸ मग्गपिलु (घर) ( वि) । 🕼 मग्गिराउँ

144

(निष् १)।

ft 4 4) i

(चन)।

**१२**१) :

दे स ६२ सीत इबर दी)।

मक्जिजा की [सक्षिका] बल्बी (देव

मगण्य वि दि । इन्द-पन्धितः हाय वे बोधा

मगय र्षु [मगय] यन्त्रःशास-वित्व सीन

मर्गातिकाची 💽 १ भावती का कुत ।

र्गाट क्रीत [ मृगारासम् ] बण्य सिरेश

(द्ध २, १---१र ७३) ।

दीर्द-(रहेच (रह) ।

हमा (दिना १ ६---पत्र ४६ ४६)।

न्द बन्नुचें की बंदा (रिव)।

(x3 2, 2 tr (5):

सक्ता सक [स्रम् ] १ प्राक्तः, स्वेदान्ति

करता। २ की, ठेव बादि स्तिरण बच्च से

मानिश करना । मक्बद (यह), सक्बेर्ति

सक्तरपू [सस्कर] १ यति । २ वातः ३ (गण)। ए समित्रसम्ब सम्मायस्य (च बेरा बांग । ४ दिश्रवाना बोट (स्रीत १३, १४ २० सुरा ११ )। मक्तियत्र वि [स्रक्षित] चुत्रहा हुवा (गाया गरग स≆ [मग्] यमन कला⊳ चलना। सम्बद्ध (इ.४.२६)। मक्तिम व [मारिनुक] मधिना-संचित नबु सरग र् [सर्गे] १ रास्त्रा, पत्र (धार १४० दुमा प्रामु ६ ३ ११७३ मत्)। २ धलोक्या

मार्थेका जानकार (का १४४)। स्व वि मियो १ मार्गमें स्वितः १ सोसहसे ण्याच वर्षे की उसराना (लूस २ १ ६)। इय वि विषयी शार्य-पश्चक (वया परि)। वित्र पि शिवा निर्मा का जानकार (योष २)। इ.पि. या अर्थ-नाराष्ट २ मोनगता पूत्र 'तुमुधं वा मदर्शियं' (पू 🕶)। श्रिमार वि [ीनुसारित्] बार्व का सनुवादी (बर्व २)।

कोन (विते १९४१) । भी स [तस]

एसरे से (दे१ ६७)। व्यापि [कि]

शर्मा }र्षु [दि] नरचान, गीक्षे (दे ६. सम्पन्न }रेरा हे १ ११ नुदर १६। बाग्र भव)। मगाञ्ज वि सार ही शंबतेराता (बाम 1 (10 33 सम्मन् व [सामैत] र शहर (गुरा १४)। १ व, धर्मपण् । २ क्षण स्टर (याप)

वयांनोचन (धीर निमे र वर्षानेका प्राप्त प्रत्येका विकासमा वर्षा

भोषक (राम ४ १ १३ फील १)।

हुमा ७ १४)। २ तुत्रीय सम्बद्धी छना (सम १६६ पदम २ १११)। मगर्तिया थी कि मगर्गनका १ वेस सम्म वे (सार्वी १ घारास (मय २ - २---सपराक्षी [सपदा] धळते १८६-दूर्यः मा महिरो का न्या। २ मधि की वती (इस पर ७३१)। २ ध्यवस्पक-सर्गे सामयिक 'सबब दि बायबदि स पुडबोर्ड नाबकेसर् 2 7 27 28)1 धारि बद-वर्गे (बहा ६१) मगर 🐒 [मार] १ मणर नच्छा जनवन्त्र (बीयत १२)। मया धी [मधा] १ कर देनो (स 🕶 क्टिप (प्राप्टर २ की र इस बुर १६ पत्र ३ रही। २ देशो सहा≭वर्ष ¥रेब्ग्गारे¥)। २ छाई (ब्रूग्शार ) (धन)। मधाय 🐒 🔁 संपदन् देशो संपर (गर् ,वा ध्ये [सर्क्षाय] बाध-विट्रेन (श्यव

> सच धक [सक्] धर्म करना। सम्बद्ध (बाः है ४ स्रश्)। बीज (शिन्ते १३ १)। ४ वर्गसा, विकास्ता, समार्थ ) की [मागजा] १ प्लेक्ट

र्मान्य देरियो माधिर महार्थ (ग्राप्त सब (भा) देशो संब संदूरणहार दुव (--पर ७३) की सं भी मानियमी वधर (बरि)। सव न [ये] नत्त मैत (रेक्ट १११)। समानवा शित्र (उर प्र ह कर दहर समाना सेच है) २ समानवा के सम्बद्धाः सम्बद्धः निग्यंत्र [निर्यो] शक }र्द्र मिर्छो नुत्त्व, नुत्तु (व सक्तिप्र ३ रस्य नाग्र नुवर्द माम् । ५. व [साप] रेट स्टिन (हवा)। सार्मा | बरस्द [बर्मम] बन्मक्तिक

लोक (कुम ४११)। खोई य वि किंकेकीय]
मनुष्य-नोक से सम्बन्ध राक्षेत्राता (युगा
१११)।
मध्य पि किं] ममनुष्य (वे ६ १११ थे)।
मध्य पि मित्रिया पर्य करनेताता (कुगा)।
मध्य प्रमुख्य (वे ६ १११ थे)।
मध्य प्रमुख्य १ मीळ मरण (पाषा)
सम्बन्ध प्रमुख्य १ मीळ मरण (पाषा)
समराव (पाष्ट)। वे रावस्त्र का एक शिषक
(पतन १६ ६१)।

सच्छ पुमिल्य] १ मझनी (छावा र र नामा जी २ आसूर)। २ णा (मुन्त २ )। १ केट-विरोप (इन्ह गवि)। ४ सक्तर क्ष्म एक मेद (पिय)। स्राप्ताम िहास्त्री सदस्त्रों को सुबाने का स्वान (जाचा २, १, ४ १)। अध्य प्र [वन्य] मन्द्रीमारः चीषर (परह १ १ महा)। शब्द्ध पून [शस्त्र] मस्त्र के व्यकार की एक बनस्पति (माना २,१ १ ५ ६)। मण्ड(डिआ श्री [मस्यण्डश्व] कर्ज्यकँच एक प्रकार की शतकर (परह २ ४ छात्रा १ १७ पहला १७ विकार सके साथक)। मंच्यंदी थी [मत्स्यण्डी] शक्कर (शयु 3,80) 5 मध्यतं हैको संघ = नन्द् । मन्द्रष्टेच देखो मन्द्र**म्-पंत्र** (विचा १ स---पत्र

न्दे)।
मन्द्रप्र १ [मस्सर] १ केवा हैन वस्तुः
पर्वति की प्रस्तिष्मुक्त (चन)। १
कोन कोन। १ वि हैंच्यां हुन्दे। ४
कोनी इन्छ (है १ ११)।
मन्द्रप्र व [सास्तर्य] हैंच्यों होन (से १ १६)।
मन्द्रप्र व [सास्तर्य] हैंच्यों होन (से १ १६)।
मन्द्रप्र वि [सस्तरिम्] माजरताना (न्यह्र् १ वर्षा सम्बर्ध)। की भी (मा स्था

रहे)।
मन्त्रिरि कि [मत्सिरिम्] मास्वराता (वर्ण्य व व वरा जान)। व्ही की (वा स्था मार)।
मन्त्रिरिक कि [मत्सिरिक, मारसिक्] करार वेदो (वजन स्व प्रदेश क्षा १ वर, व्ही थ)।
मन्द्रिक कि मन्द्रिर स्वारत्त्व (हे २ दश)
स्रो।
सम्बद्ध के देवो मन्द्रिर स्वारत्त्व (हे २ दश)
स्रो।
सम्बद्ध के देवो मन्द्रिक स्वाधिक (वह

सिक्किश्र वि [सास्त्यक] मण्डीमार (था १२ समि१ट विचा १ ६। विव ६११)। सिक्किश्र (मा) देशी सास्ट≔साद (प्राह १२)।

शिष्क्रकृत्र (ता) देवी सास = साद्ध (ग्राह्म १२)। सरिक्ता। देवी सिक्ष्या (ग्रि६२)। सरिक्क्या हवी [सिक्षिक] मन्द्री (खास सम्बद्धी) १ १६ वो १८ वत १६ ६ प्राप्त सुरारवशे।

सक्त सक [शह्य प्रतिमान करना । सण्यक्ष मन्तर्म, गण्यक्ष । एवं सुध १ २ १ १ वर्गम (भद्य) १ स्नान करना । २ कृष्णा । सण्यक्ष (हु ४ १ १) सण्याम (स्वा १७ ७ वर्गम ६१) । वहुः माज्ञस्य (तृ १४६ राज्यमा (श्व १४७ ७ वर्गम ११) । वदेः प्रकृष्णा । स्वा १५० वर्गम (स्वा १५० वर्गम (स्व १५०) । स्व १५० । स्व १५० । स्व १५० वर्गम वर्गम । स्व १५० वर्गम वर्गम । स्व १५० वर्गम वर्गम ।

करका: भवनद (यह प्राफ्ट ६६ है ४ १ १)। प्राप्त न प्रियों नाक निष्य (पीना उपार है १ ९४ जिए। इस्त वि चित्ती अविधानीतुन (तुम १ ११)। य वि पित्री त्रायनान कप्लेसका (नाय)। योक्स कि पित्रीया विसने मध्यान किया हो नह (निष्य १ १—पन १०)।

सम्मन्धं रहीं (शह इ., २ ६६)।
सम्मन्धः स्वा [सम्मनः] १ स्थानः। १ स्थानः
(द्वारः १ ७६। कर्षा पराष्ट्र प्रमाः)। पर्तः
(द्वारः १ ७६। कर्षा वहारः प्रमाः)। पर्तः स्वाः
११)। पाई सी [पानी] सान रुपनेमन्दी सानी (पानाः १ १—पर्वः १७)।
पाठी सी [पाठी] महो समे (कर्यः।।
सम्मणः न सान्धेना १ साङ्कालः स्वि

(क्या)। २ वि सार्वेत करनेताला (कुमा)। यर म ["गृह्य] पुरिय-गृह (कया सीप)। सञ्चर देको मंजर (जाम अ)। की धी को सुनमानकार करियाला परिवासिक सरहें (पुर १ १११)। सञ्चयिका वि सिज्यानी १ क्यांता। २

(पुर १९४)। मञ्जपिम पि [मञ्जित] १ स्थपित । २ स्थातः 'गृष्य सरेरे पेथिय स्वयप्रसहसाज भग्यविया' (बग्यर १)। मक्ता की कि मर्यो ] मर्वाचा (दे ६ ११६ (भ्रीष) ।

सद्या की [सद्या] बाद विशेष वर्ष हुई। के नीतर का दूरा (चरा)। अञ्चलक कि जिस्सीहिती समीवानामा (निव

मस्त्राह्य वि [सर्योदिन्] मर्गमानामा (निम् ४)।

सकाया की [सर्योदा] १ ध्यम्य-पन-विनति व्यवस्था 'रम्यायरस्य मध्यया' (प्राप् ६८) यावन)। र सीमा हव, सर्वाच । ३ कूम किनारा (है १, २४)। सकार पूंची [साखार] १ विका विसाव

सम्बाद धुंबी [साम्बाद] १ विक्रा विकास (ब्हाप्र प्रति)। २ वसम्बादिनीय जिल्हा पोरवमकारपोदक्की य जलहाँ (प्रस्पु १— एव १४)। बी रिस्सा, ची (ब्ह्यू पाप)। सस्वाद धूं[साम्बाद] बाह्य-विरोप (मप ११— एव ६८६)

सक्कापिक वि [सिकिव] स्तरित (महा)। सिकाम वि [चे] १ प्रवसीपिक निरोधिक। २ गीत (वै १ १४४)। सिकाम वि [सिकिव] स्तराहः (गिन ४२१

बहा। पात्र)। मिलाका वि [माजित शास्त्र किया हुमा (पत्रम २ १२७ कम्प मीप)। मिजिला की [माजिता] रसामा भस्म-

विशेष-व्यक्ति शक्तर धाविका वना हथा

बीर सुगम्ब से बासित एक प्रकार का खादा-

मीक्यं (पाय वे ७ २ पत्र १.१८)। मिक्रिय वि [मिक्रिय] नमन करने की बादद बाला (वा ४७३ स्ट्रा)। मामोक्स वि [के] प्राप्तित कृतन (वे ६

११०)।

सम्बद्धाः सम्बद्धाः स्टब्स्स सम्बद्धाः १९७)।

२ तरिक द्भागः वे १६ आणु १. १९७)।

२ तरिक का स्वस्य-पिरोयः (६०५)। १

छंक्या-विद्येग सन्य सीर परास्ये के बीच भी
छंक्या (१२ ॥ आग)। ४ वि मायनती
बीच का (आगु १२१)। परा पुं िक्यां
के का (आगु १२१)। परा पुना के बीच का
स्वस्त, सम्बद्धाः सामा स्वस्त के बीच का

१ बीच का सम्य में रिचत (धाचाः कृप्य) १

२ पुँ धवपिकान का एक नेद (तांकि)।

रामि (उप ७२४ ही)।

मजिम्हमगंद्व न वि । चर, पेट (वे ६ १२५)।

मिश्रमा औ मिश्यमा १ थीप को उन्सी

(बोम १६) । २ एक वैत धूनि-सळ्या

446

भव्यस्य (रक्ष ४ ) । जत्र, व्यस् प्रे

िहा रिन का मध्य माय कोगहर (प्राप्त

प्राप्त १६ कृषा समि ११, है २ सक्ष

महा)। २ न तप किलेर पूर्वी के (अंबीव

u, )। व्यवस्यु ["ह्युन्तुं दुस-विकोध

मध्यात समद में धारवन्त कुननेताने जाल रेंप

के फुनवासा इंग्र (रूमा) । रैंस वि [रेस]

हरस्य (सर स्पर्ध स्थान (सर १६ ६६)।

२ बीव में यहा हुया (मुना २३७) : दिस

के बो एस (मुर ६ १६) । इस देवो व्यव

(इरिक्श क्य)। स वि मि]यव्य

का मधना बीच का (यस ना-निक

k)। रैस्त र्द्र ["रात्र] निकीष (हर १३६

७२ वर्ष)। स्माम औ रिक्रानि निष्य स्ति

(ड १३६) । छोग पूर्विक्रोक्की मेह पर्वेत

(राव)। बांचे वि वितिन् वित्व

(मोध् ६४) । विक्रिश्न वि [\*विक्रित] १

सहस्य १ [वे] याँ ध्राधमान धहेकारः सहस्यर } फरजीन बंदलमहत्त्रप्रदेशे नहर संख्यात विक्रिये (बुवा २६३ क्रुप्र १२१) २००४ प्रश्रुवेद १२ पाम भुगा**र**। प्राशु = ६३ कृप २३३३ सम्मत १०३३ वस्म = टी विश क्लो । सदस वि सिद्दर्भी नुस्य वामन (धव)। सद्देश । पर्व [सद्देशकाय] सङ्ग्रहसङ् प्रद्रभाव करता। २ सक

यह यह बद्धवान हो एवं एवं मारता : महमहमहीर (पद्मप २६ १६) । सनि नहमहरूट भवनवाइस्ट (मा) (पि ४२०-बार १%)। सहसदाइक वि सिहसहायित निर्दे पर पर भाषान हो कत तरह गाय हुमा (स्तर 1 (8 5

सहय न सित्की सुरुष्ठ मुर्चतर (गाम है १२ ६ । तुना२१८) । सिंहन ["शुक्र] क्द (शिष्ट् १)। "बेइडा न ["बीर्स्स] मृतक के शह होने पर या पाइने पर बनाया प्रस <del>पैटर-स्मारङ मन्दिर (माचा २१ ११)।</del> ैंडाइ पूं [ैंदाइ] चिता, जहां पर शब कृषे भावे झॉ (धावा २,१ १६) । धूमिका

🛍 [स्त्पिका] मूलक के स्वान पर बनाया वया आहेग सूप (धावा २,१ १६)। सक्क पूँ विशेषार्थन वसीचा (दे ६ ११४)। भवकोत्रम्य की [के] रिजिकाः पासरी (दे ६ **१२२)** ! सब्द नि दि ! सब्द अरेट (१.६. ११७) पह्य बर्स)। १ स्थलन जोहा(शाह ध्र

वंदश बरुन् ४२) । सबहर वृं वि] वर्ष ग्रमियान (वे ६ १२ )। सबदिय नि [वे] यागीइत सून किया हुमा (वडव) । सबदुक्त वि दि] चत्रु छोटाः भग्नाविताए कि पुरु इसीए कि वा बनेकि तमिश्रीकी

(बच्चा ४०)। शक्तिमा की [रे] समग्रत की, बाह्त महिला (\* \$ 22x) 1 मञ्जूषद्भ वि हि १ इत विभारत। २

वीस्प्र (दे ६ १४६) । सङ्घ बद [सङ्] वर्तन करता । सङ्ग्रह (हे ४ १२६ सम् ६८)।

द्योव में पुदाहमा। २ वित्त में दुन्ति (बज्जा १२)। सप्तक्ष पुं [इ] नारित नाई, इवास (दे ६ ११६)। साम्बद्धार न दि । सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः (दे६ १२१) विक २०) उत्ताबाध निष्ठे शब्द सुर १ अत्र सुना ४६ है है। चा १): 'चमोनविज्याद सरस्यायीमा' (माद **७)** । सक्तरिक्ष व [दे] मध्यन्तिम, सध्यक्ष (३ ६ 22x) 1 सामंदिजन [सध्यम्दिन] सध्यक्ष (१९ ( RY) मानगाम न [सध्यसस्य] ठीक बीच (करा विपार्ध ( पुर १ २४४)। मामगार क्षेत्र मान्स्जार (स्टब) । मामध्यस्य रि[माण्याहिक] नव्यवन्धंवली (वर्षे ११) : सामस्य न [साध्यरच्य] करस्वक, गव्यन्वक

(बन ६११) खंबीय ४४) १

मधिमस है [सच्चम] १ यथ्य-वर्ती बीच का

(६६ ४ व्यव ४३, इमा कमाबीया

सक्तिक्रियद्व वि [सब्दाम] सब्द वर्ती की व का (धरु)। सविक्रसिक्स देखी सविक्रमा (कण) । बक्रिक विस्तिष्य है, सच्चमी पमना, बीच का (पव ३६३ वेलेम्स २६८) । सङ्घि दि]न्त्रज्ञ-पहित (दे ६ ११२)। मक्रिया भी सिचित्रों यही किही नायी (लाख १ १) धीपः धूमाः यहा) । मद्री की सिन् स्चिच्च कर देखों (बी ४ पित्र हो)। सटटुड्जिन र [रे] १ परिएटिट ब्री शा कोप । २ वि वसूप। ६ अग्रुचि नैसा(दे६ 2×4)1 महिदि विवेधनसं धानती शन्द वह दि ६, ११२३ गम् )। म⊊ वि [सृष्ठ] १ मानित तुद्ध (सूध १ ६ १२) बौप) । १ मसरा चित्रना (सम १६७) वे व ७)। ३ विसा द्वाया (श्रीत दे २, १७४) । ४ व निरम मरिम (ई. १. १२. )। सक्कि [देस्त] १ मध द्वमा विशीप (दे ६ १४१) 'मजेन्स सपार्टी (बका १४२) भिष्ठ (मा) (प्राक्त ११) । "दि वि [ विन् ] निर्नीय वर्त्य को वालैयका (भर): सिय पूं ["स्य] श्यतान (भिन्न 1 (# संस दें [व] केंड बसा (दें ६ १४१)। सबंब पुन [वे सबस्य] शाय-विकेप, विश्वके भारी थीर एक शंकन तक कोई नोब न ही ऐसा वॉव (शाया १ १) मच कव्य ग्रीपा पसहर ६ मनि)। महत्त्व 🕯 है रे यह अजियाना भ क्रिस बयस्य धंचनिय शहरह (श्रीव)। २ महक्र,

वक्त वहाः मध्यक्षे में 'महकें' (चरि)। मबक्रिया की [वे] छोटा शक्ता कक्सी

(क्य ११६)।

सङ्ग्रय पुंदि सङ्ग्रक] बत्तव विशेष (चय ¥4) 1 मङ्गा की [दे] १ बसारकार, इठ, वहरदस्ती (३.६,१४ पास्त सुर ३ १३६ सुकार १६)। २ बाजा इक्टम (वे ६ १४ सुपा २७६)। सिक्ति वि [सिर्दित] विश्वस्य सर्वेग किया यमा को बहु (हेर १६ पड्रिप २६१)। सब्बुध देवी सद्दुख (एव)। सह रेबो सबू। महद (हे ४ १२६)। संद पून [सठ] संन्यासियों का बाव्यय विवयों का निरासस्थान' 'सडो' (हे १ ११६ चुपा २३४ वण्या ३४ मंति)ः 'सड' (प्राप्त) । महिअ क्हो महिल (बुमा) । मडिस दि [द] १ वदित पुत्रचली में "मबसु" 'एवाउ घोसहीयो विवाजनविमाउ वारिण्या' (सिरि १७)।२ परिवेष्टित (वे २ ०%) पत्य)। सही की [मठिश] कीन मठ (दुपा ११६)। - भण सद्धित् । १ मलनाः १ वालनाः । १ चिन्द्रन करता। मएक मस्प्रसि (वक् कुमा)। क्ष्मक सामिज्यसाम (सन १३ का विधे = ( \$ ) : सण पून [सनस्] मन, धन्त करण विस (मग १६ ७ विसे १६२६ स्वय्न ४३, इ. २२ इ.मा प्रासू ४४ ४६ १२१)। कार्याच्य औ ["अगुप्ति] मन का चर्चमन (पि ११६) । करण न ["करण] विसानः पर्यासोचन (भावक १३७)। गुच्च वि िशुप्त । भन को संयम में रखनेवाका (सप)। शांख की शिक्षि मन का धंवम (उत्त २४२)। आणुभवि 📆 १मनको बाक्तेबासा मन का बावकार । २ गुलार, मनोद्गर (प्राष्ट्र १॥)। जीविका नि िंधीविकी मन की बारमा माननेवाला (पर्या १ २--पत्र २०)। उत्तोका व [<sup>\*</sup>याग] भन की केटा, मनो-व्यापार (का) । का, प्या प्याम देशो जाणुभ (प्राप्त १८ पर्)। यंमणी की ["स्तरमनी] विद्या-विरोध मन को स्थम करनेवाली दिव्य शक्ति (परम ७ १३७) । लाज न [द्वाल] अन वा साप्तारकार करनेवासा शान यहः

पर्यंश क्राम (अस्म ३ १० ४ ११ १७) २१)। नाणि वि [कानिम्] मनः-पर्यव नामक क्रानशका (कस्म ४४) । पटनचि की पियौति | पुक्तों को मन के रूप में परिख्त करने भी शक्ति (भव ६ ४)। पञ्चव पूं ["पर्यंत्र] ज्ञान-विशेष दूसरे के मन की बांगस्था को जाननेवाला जान (मन ग्रीप विशे ८३) । पद्मयि वि[पर्येविन्] मन पर्यं व ज्ञानवाका (पव २१)। परिः म विद्या की "प्रश्नविद्या" मन के प्रस्तों का उत्तर देने वाली विद्या (सम १२३)। विकिल वि [बस्तिम्, क] मनो-वसवाना रह मनवामा (१एइ २ १ धीप) । माहण वि "मोइन] मन को मुख्य करनेवासा, वित्ताकर्षेक (गा १२०)। योगि वि **ै**योगिन् न की केशवासा (नग)। यसाजा की [यर्गेजा] धन के कप में परिखत क्षेत्रेगामा पुत्रम-श्रमूह (राम)। बट्टन विज्ञी एक विदायर-नगर (इक)। समिद्व की "समिति] मन का संसम् (अ. ६ — पत्र ४२२)। समिय वि िममिख] नन को संयम में रचनेवाचा<sub>।</sub> (मग)। इस पू [दिस] इत्तर-विधेव (पिंग)। इर वि दिरी मनोहर सुन्तर विचाकर्पक (हे १ ११६ सीम कुमा)। €रण पूंन ["€रण] निक्त-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्मित (पिय) । सिराम स्मिरा मेळ वि [ अभिराम ] मलोहर (सम १४६ धीप उप प्र ३२२ इप २२ टी)। ाम वि [काप] गुन्दर, मनोहर (सम १४६ मिपा १ १ सीपः कृप्य) । देशो मणो । मणं वेची शणयं (प्राष्ट्र वेद) । मणेसि वि [मनरियम्] प्रशस्य मनवाबा (दे१ २६)। की वी (दे१ २६)। मर्णसिक्त १ की [मन शिक्ता] काम वर्ण मणेशिका की एक उपवाद, ममशिय मैनशिव (दुमा है १ २६)। मणग पुं[मनङ] एक वैन बल-भूति महर्षि सम्बंधनपुरि ना पुन और शिव्य (कृत्या वर्मीव १८)। रेखो मण्य । भणगुब्धिया औ [रे] योठिका (राव) ।

सण्यान सिन्ती १ झान जानना। २ सममना (विते १४२४) । ३ चिन्तन (भावक ३३७)। मणय पू [मनक] द्वितीय गरक-भूमि का रीसरा नत्केन्द्रक---गरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६) । देखो मणग् । गणर्थः [सनाग] प्रस्थ थोड़ा (हे २ १६७ पाम पर ) । मजस देखो मज = मनस् 'पसन्नमणसो करिस्सामि' (परुष ६ १६) 'बामी पेव तबस्यस्य होइ ब्रह्मेखनखसस्य (घोष ११७)। मणमिल } देशो मणंसिस्म (हुमा, हे १ मणसिखा । २६ वो ६ स्वप्न ६४)। मणसीक्ष्य वि [मनसिक्कत] विन्तित (पर्वा वे४--पथ ७८२ सूपा २४७)। मणसीकर एक [सनसि + कृ ] चिन्तम करना नन में रखना। मणुसीकरे (उत्त २ २४)। मणस्य रेको मणसि (वर्गीव १४६)। मणा देखो मणय (हे २ १६६, हुमा)। समाह (पप) क्यर देखी (कुमा भवि। पि मणार्ड } रेश्भ हे ४ ४१६ ४२६) । मणाग क्यर केवो (उप १६२ महा) । मणास्र बेस्रो मुणास्र (यन) । मनास्थिया औ [मूजास्थितः] पद्म-द्रम्य द्रा मून (तंदु २) । देखो सुप्रास्त्रिज्ञा । मणासिख्य वैको मणेशिक्य (हु१ २६) fi (v) t मणि पुंची [मणि] परबर-विशेष हुत्स बादि राम (कप्पा घीपा कुमा। भी ६ प्रानु ४)। अंग र्जु विल्ला करन-कृत की एक वाति की बानुपरा देती है (बन १७)। आर पं िकार] बीक्स एलों के यहती का व्यापारी (दे ७ ७४- मुद्रा ७१: सामा १ १३ वर्गीत ३६)। क्रांच्यान **किमान**] प्रतिमन्दित का एक शिक्सर (ब २, ६—गद ७)। कृष्ट न [कूट] दनक पर्वेत का एक टिवर (दीव)। बलाइअ वि ["लिपित] एल-मटित (नि १८६)। यहपा 🛍 [प्रविदा] नवरी-

<b>Fuo</b>	पाइमसइमहण्यवो	मणिय—ग्रष्ण
मिरोय (मिना १ ६)। "बृह दूं "पृष्ठ] पह नियान्यर त्य (महा)। 'आस न [आज] मूराज्निकेण सिक्तामार (मिना)। तोराज व [तोराज] नरत-विकेण (महा)। तोराज व [तोराज] नरत-विकेण (महा)। तोराज व [तोराज] नरत-विकेण (महा)। पर्व व सिंग पर्व व सिंग्डिमा सी [मिरीजिया] मिरी-यय सीकिया सी (मिरीजी] मिरी-यय सीकिया सी (स्वाम ४५)। मद्य साथ वि [सय] मिरीजी पर्व व सीम (मया)। मुस्ति सी [मूसि] पर्व व साथ सिंग्डिमा साध-यय, एक मिर्च त (स्वाम १६ व्याम १६	miter (P.3. ) The second	पुं प्रामनिकोय 'प्रतियक्ष प्रोमाधिकार्या प्रमानिकार 'प्रतियक्ष प्रोमाधिकार विकास स्वाप्त क्षेत्र क्षे
		• •

Ęsę

वमें, मिएलान्बद् (कुप्र १०६) । वह मण्गमाण (ताट बैत १६६)। मण्यण । [मानन] मलना चारर (ज्य **१**१४) । मणा रेखो समा (सर्व)। मण्जिय देनो मस्मिय (राज) । मण्यु क्यो सन्तु (बा ११३६ ८३६६ ७१३ बेली १७)।

मण्य देखी संगे (इन्म)। मच नि [मच] १ मर-पूक्त, मदबामा (बपा प्रामुद्दशा १८ भवि)। २ तः सर्घ दाल (ठा ७)। ३ मद नशा (पर १७१)। अच्य की "जला" नरी निरोप (ठा २ ३ वर)। मत्त देवो सन्त ≈ मात्र 'वस्र्यमत्तिदृष्णे'

(रंघा) । मत्त विभाग भागी पत्र साथन (पाया २१६६ छोम २४१)। देखो सत्तव। मच (बार) देखो शब = मध्ये (मनि) । मर्चगवर् मिलाङ्गक, द्वी बलबूग की एक बाति मध देनेताला बस्तवय (सम १७-

बर ६७६)। मर्चंड र् [भारण्ड] नूर्यं र्थाः (सम्मत्तः १४३ चिरि१ ≈)।

मत्तगन दि | देशाव मूत्र (दुलक १)। मत्तरा ) पुत [असत्र सात्रक] १ पात्र मत्तरा । प्राप्तरा २ छोटा पात्र विष्ण्यको

मत्त्रमी होर्द्ध (इट ६ कप्प)। मचय देशो सलग= र (नुमक १३)। मचर्गः क्षा [नि] बतालार (६६-११६) ।

मसदारण र्न [मसदारण] बर्रहा, वरानश यानान (दे ६ १२६) नुर ३ १ मीर)।

मत्तवार र् [द] महराश, मरोग्मछ (दे ६ १११ यह म्युव २ १७- मुसा ४०६)। मचा धी [मात्रा] १ परिपाछ (रिष्ट ६४१)।

१ मेरा मान हिस्ता (म ४=३) । ३ तनय 💌 नुष्य नार । ४ रणमः उचारत् नासरामाः

मणीरयर(रिब)। ५ मतः गैरा नव (पाप)। मत्ता च [सन्ता] जान्दर (न्य १ २ २ **1**(1) मन्त्रपंतर् [दे महाकृष] वर्शन वतः

मळ (दे: १३३ तृत्रु ५७)।

मिल्या की मिसिया मिही (पर्छ १--पत्र २१) । वह भी यिती मारी-विशेष दशार्लदेश भी राजधानी (पर २७१)। पुंत मिस्त, की माथा मिर (से मस्यम } र र स १=३ बीप)। स्य नि "स्य निर में स्वित (म**उड)**। "सणि पू [ सणि] शिरोमणि प्रचान धुस्य

(इस ६४६ टी)। सत्यय पुन सिस्तक निर्मण्य प्रमासि पा मध्यमाय-धन्ताचार (बाषा २ १ ८ 4) 1 मरवययोग नि दि धीतमस्त्र ही बाहरन से बुक्त तुमानी से बुक्त किया हुया (लाया १ १--पम २७)। सर्**पन्**ग ) न [सन्<u>मुलाह</u>] १ मलक-स्नेह

का चित्रमा पदार्वे (पराह १ १: तंदू १ )। २ मेद का रिप्पिस गादि (ठा १ ४—पर १७ मग, तेरु १)। मधिय देखों महिश्र = मधित (पएह १ ४-यम १३ है। सक्के को सम ≔मक (कुमा समी १६ रि

ર ૧) ા

स चुलुय । भिर में से निरंसता एक प्रशार

भाग्या देशी संयथ (स्तन ६६ नार-भूका मक्लमला(गा) रेषा भयगसद्धागा (शन्य १—पच १४) । सद्या रेगी संयणा = मस्त्र (ग्रावा २---रव

सद् (मा) देशो सय = मृत (प्रारू १ ३) ।

२११) । मद्गिज वि [मद्नीय] वाबोरीचक बदम-वर्षक (शाया १ १--वश्व १६ कीत) १ मदिरेणी सण्≕मी (माद्दर पूजावि

१६२) । मश्राम रेगो मन्त्र (श्र २६२)। शहुषा देगी सदह (बंद) ।

मदासी की [दें] पूरी पूर कर्ण करनारी र्षा (पर्)।

सद गर [सुदू] १ पूर्ण करना । कारिया

करना अग्लना सत्त्वा। बहार्ट, (क्ल) : वर्गे महीर्था (माट-पृष्य ११४)। हर महित्रं (ति १८१) ।

महत्तं विविष्टं (उव) । ३ वि अर्थन करने-भाषा (ती १)। सहस्र १ सिर्वेची बाय-विधेष मुरत नृरंग

(देव ११६: सूर १ ६०' सिरि ११७) । महिक्षेत्र वि [मार्दक्रिक] मुर्रग वजनताला (बुपा २१४' ११६) । सदय व सिर्मिची पूरुवा वसदा, रिजय धर्हकार-निवह (प्रीपः कप्प) । महत्रि वि [माद्यिम्] नम्न निनौत 'प्रकर

मावा)। मद्वित्र वि माद्विक, वी कार देशी (इष्ट४ वय १)। महिम देखो महिल (पाप)। सदी व्ये [सादा] १ यमा रिग्रामन की सा कानाम (नूम १:३ १ १ टी)। २ समा

रियं महर्रावयं सामनियं (सूध २१ १७)

पारह नी एक की ना नाम (नेली १७१)। सब्बुज ई [सब्बुड] भवरान् महातीर का चारपुर-निरासी एक उतासक (भग १**व** ०--पत्र ७१ )। सहदूरा पूं[सहसु क] पश्चि-निशेष जस

बायम (मय ७ ६--- १ ६)। देवी मध्य । मर्दुग रेपो मुद्रग (घर) । मधु रेको महु (पड़ । रेमाः रिम्) । मधुपाद १ [मधुपाव] एक म्बेन्छ-जावि (मुक्त १४२) :

मधुर रेपो महुर (निष् १ माह = ६) । मपुमित्य देशो महुभित्व (झ.४..४---तत २७१)। मपूला थी [दे मधूना] बारनातः (धत्र)। मन थ दि ] निरेशर्षक मन्य वत नहीं

(पुमा) । शनुग्य रेगी सनुग्य (वंद पर) । मझ रेनी मण्य पत्रह, नप्तन (पाचा महा)

मम्मते मन्तेनि (रंदा)। सर्मे सदिरमञ् (मरा) । बर सर्वत सप्तमान (पुर १४ १७१ मना मन पुत्त ३ ७ दुर ३ tor) i

बिह् केसरी (परम २ १७ समग्री)। **इंद्रज** पूं [<sup>\*</sup>क्षास्क्षत] चनामा (पाम ड्रमा मुर १३ ४३)। स्थाअमा भी [रीचना] पोरोचन मोरोचना, प<del>ीत ग</del>र्ण हम्य-विशेष (चिम १२७) । । रि पुँ ["रि] सिंह (पाध)। (रिव्मय पु ["गरिक्सन] राज्य-वंश का एक राजा एक सका-पति (पत्रम १, २६२)। "हिंद है ["धिंप] सिंह, केसरी (पाप्र) स १)। वेको मिल मिग=मृद्या सर्वक } केलो सिर्वक (हे १ १७७ १८ सबीर हिमा। यह हगा ३११ रमा)। सर्थत देखो सार्थत ≈ माउँव, व्हूबर वरणी भिउद्यी योगेडी बामस्य पर्यंगी (पन २६)। स्योग पूँ [सूत्रुक्त] बाच-विटेप (प्राष्ट्र ८) । सर्पत्य र्षु [सवङ्गञ्ज] हायी, इस्ती (परम व ६१ उप प्र २६ )। सर्मगा की [स्तगङ्का] बहा पर मंगा का प्रवाह कर गया हो वह स्वान (शाधा १ ४---पत्र १६)। मयैवर न [मतान्वर] क्रिय मत बन्ध मत (भग)। मर्पष् देखो सर्वेष = भूगेन्द्र (सुपा ६२) । श्चर्यभ वि [सद्गन्ध] मद के कारण मन्त्रा बना हुमा मदोल्पत्त (पुर २ ६६)। सबग दि [सुतक] १ मरा हुमा। २ व पुर्व (शामा १ ११) कुत्र २६। सीत)। फियान ["कुल्य] म्यद्ध ग्रावि कर्म (स्राया 1 (F 1 समक्ष पू दि] धारान अभीवा (वे ६ 222) I मयण पूँ मिवन देशकार्य कामकेन (पाधाः मख २३८ दुमा' रंग्रा)। ५ लदमस्य का एक पूत्र (पत्रम ११ २ )। ३ एक श्रीत्रक-पुत्र (सूरा ६१७)। ४ इस्टब्स स्वास्त्र नेद (पिय) । ६ वि सद-कारक मास्का 'सम्रहा रर्योग्यशिया निम्मसिया बङ्ग कोहवा शिक्षिष्ठा (विने १२२)। ६ म. मीन मीम भयगी मक्यों विश्व विक्रीरहीं (बरहा २१, पासः सूर ষ १४६)। घरियी 🛍 ["गृहिणी] नाम प्रिया, रवि (दुत १ १)। वालंड वुं

८५

पाइ**अस**हमहण्णको िंतास**क** सन्ध-विशेष (पिंग)। तरसी श्री ["प्रयादशी] वैत मास की सुक्त नयोवसी तिषि (हुप्र ३७८) : दुम पू [<sup>\*</sup>त्र म] बून-विरोप (म ७ ६६) । <sup>\*</sup>फल म फिछ किम किरोप मैंबदान 'तमी तेसुप्पर्न सम्बर्गान्त्रनेस्य माबियं मलुस्स**इत्ये** दिन्तं एवं **परदास्य देशाहि' (सुब २ १७) । मजरी** श्री ["सक्तरी] १ एका **पर्**क्रमचीत की एक **क्षी दानाम । २ एक मो**हि-कन्या(महा)। "रेहा की ["रेक्स] एक प्रूपस्य की पानी (महा)। वयपू विग] पुरुप-विशेष का नाम (भवि)। संदरी की "सन्दरी एजा बीराल की पक परुध (सिरि देवे)। **ह**रा की "गृह] सन्द विशेष (पिय)। हस देखी फळ 'नवणहत्तर्मच्यो ता स्मानिया अंश हासमुद्ध' (वर्गीव ६४)। मयर्णकुस पुँ [सञ्चाकुरा] श्रीयमचन्त्र का एक पूत्र दुश (पडम रे७ रे)। मयणसञ्चमा 🐧 भी 🍞 सद्तराख्यका भयणαद्वाया जैनेना, शारिका (बीच १ दी-पत्र ४१ वे ६ ११६)। मयणसाक्ष्म की हि मन्नशास्त्र] शारिका-विरोप (नएड १ १--पन ८)। संबंधा 🖈 📳 संबन्ध 🖟 सारिका (बप १२६ टी ग्राव १)। अवणा क्षी [मदना] १ वेरीयन वर्तान्त्र की युवापटधनी (ठा४, १---पच ६ २)। २ शक के बोक्यास की एक की (ठा ४ १---पच २ ४)। समयाय पूँ मिनाकी १ डीप-फिरोप । २ पर्वेत-विशेष (गवि)। सम्बाजिक रेकी सर्वाजिक (रूपा पर्या १७)। संयक्तिवास पू वि ] क्लप् कानवेन (१ ६ १२६) । शयर पूँ[सकर] १ वजनतु-विशेष सनर बच्च (घीपाधुर १३,४६)। ३ धाधि-विरोध मकर राशि (सुर १३ ४६) विकार १ ६)। १ सम्बद्ध का एक शुधन (परुष १६ २१)। ४ अल्ब-विशेष (गिंग)। किश्च वृं **कित्**] कामरेव, कन्दर्ग (कप्पू)। द्वारा र्षे फिसजी बद्दी (पाया क्रमा रंगा)। "सोद्द्रण 🖠 ["स्टाध्यान] यही (कप्यू. वि

५४)। इर प्र िगृह् | वही (प्राप्त से १ १८ ४ ४ मा १३४ मनि)। सवर्रद पुँ [दे सकरन्त्र] पूप्य-रथ पूप्य पराय (दे ६ १२६ पाम कूमा ६ १४)। मबरंद पूँ [मकरन्द] पुष्प रम पुष्प-मधु (र व १२३३ तुर वे १ प्रामु ११वे कुमा)। स्यळ वैको सङ्ग्र = ममित (सुपा २६२)। मयळगा रेको मङ्ख्या (मुना १२४ २ ६)। मध्यकुत्ती हिं] देशो महस्रपुता (दे ६ १२५) । सयक्तिश देवो मस्त्रिणित्य (उन ७२८ टी)। सयक्रिया की मित्रहिक्यो प्रदान थेड़ 'कुडक्सरविद्यो(?ड)ममहित्रमाखं' (रंमा १७)। सयह के सगह। सामिय वं क्षिमिन समय केंद्रका राजा (गढम ६१ ११)। ध्यर न ध्रिर] राज-पृष्ठ नगर (वनु)। ौद्दिषद् र्षु ["थिपति] मनव देश का राजा (पडम २ ४७)। समहर 🙎 [वे] १ धान-प्रवान, ग्राम प्रवर, नौंच का मुक्तिया (पन २६ वा महा पउम ६६ १६) । २ वि वदीत मुख्या नायका **'स्यन्तहत्यारोहपहाणमयहरेख'** (स. २० मक्कानि ४ पर्वम ६३ १७)। ब्री रिगा. "रिया री (**ब्**गरेश स्टी पुर १४३ मका धुपा ७६ १२६)। मयाई की हि] गिपै-नावा (दे ६ ११६)। सपार पूर्विकारी १ वर्ष सलर । र मञ-चरि धरतीस---धराच्य राज्यः 'जस्य बयार मवारं समग्री संपद्म विष्टु चनकारं (तृच्छ 8 Y) 1 मयास (पप) रेको मरास (पिय)। मयाख्रि पू [मया के] वैन महाँच विशेष---१ एक सन्तक्षद् सुनि (संत १४)। २ एक मनुत्तर-गामी पुनि (पनु १)। मयासी क्ये [ब्र] मवा-विशेष निजानरी सवा (देद ११६। पत्र्य) । मरेबक[सृ] मरना। मरक मरुए (क्रिप

२३४) सक इक महार पह ) मरं (है ३

१४१) । यरिमद मरिकट (मनि पि ४७७)।

मुका, मद्दी मर्देस (माना नि ४६६)।

व्यवि मरिस्सिंग (पि १२२)। बहुः सरेत

पर्वत कॅचा महाद (निषु ११)। ४ क्य-

मनः स्वा **६६१** प्रास् = ६) । संक्र सरिकाण (पि प्रत्य)। कि मरिट मरेट (वंशि १४)। इ. मरियस्य (इंत २४ मुपा २१% १ १ प्राप्त १ ६) सरिएकपर्व (बंध) (RY YE) मर दंदि दे मरुका २ वस्तु पूर्व (दे ६ \$¥ ) ( सरअद् १ र्रून [सरस्त] नील वर्णनाना मरगय । छन-विरोक्त पदा (इति ६ है १ १४२। बीप यह या ४१ कार ११) 'परिक्रानियोगि बज्हों बक्सों कि गरक्सो होई (दूस ४ ३)। संस्थीवय र् दि सर्व्यवकी समुद्र के बीतर क्तर कर को नरलू निरासने का काम करता के बढ़ (सिरि १०६)। सरह दे कि निष्ये स्टब्सर (वे ६ १२ मुर ४ १६४ प्रातु =१८ ती १३ अकि वर्षा **इ**४ ४२२३ तिरि **८६२)३ मॉक्स**मड (१र)हर्भरणगरुछे सहयनगणनास्य (धर्मनि 1(#\$ मरहा भी दि। इस्तर्व पहेर व्यक्तिमार्चाणमनव्याः (१६) सम्मासाद्याद्य । विवयताई सम्बंदाई व बस्सीमु विरयंति ।। (नुष २६६)। सरह (भग) वैश्वी सरहटू (रिंग) । भएड देवी मरहरू । ब्री. ही (क्यू) । भरण पुन [मरण] मीच, मृत्यु (धालाः स्ट पास मी ४३। प्राप्तु १ ७। ११६)- शिका मरहा सन्ते कम्बन्नमध्येषु छानन्ता (पन \$80) i मरस्र तक मराज्य = मराज्य 🛊 च (ब्राइट १८) । मख्तक[सूप] यना करताः 'कर्मनू वर्षातु रो वैनागुन्तियां (शामा १ =--दम १११)। मरबद्वपुर्व[सदाराप्यु] १ वहा केता २ बेत-मिकेन बहाराष्ट्र, नराठा 'मस्युरो मराहर्'' (देर ६६) प्राकृष्ठ दुमा)। ३ मुख्यू (दुमारे ६)। ४ दुमहाराष्ट्र रेत का

भरमाज (मा १७३) प्रामु ६४ मुपा ४ ६

निवासी मध्यता (पर्धा ? १—पत्र १४° पिय)। १ अन्य-निरोध (पिय)। गरहदी की मिहाराष्ट्री १ महाराह शी खनेवाली 🛍 ! २ प्रातृत्व याया का एक मेर (R 9XV) 1 मराख वि कि बनास मन्द प्राप्तसी (दे ६ ११९ पाछ)। मरास्त्र क्रियाची १ हंध पत्ती (पान)। २ सन्द-विशेष (पिग)। भराकी को दि । शारमी चारच पदी की मन्दाः २ दूरीः ३ सची (३.६. १४२)। र्मारम वि भित्र विश्व ह्या (सम्बद्ध १३६)। मरिअविदि] १ पृष्टित टूटाह्मया। २ विस्त्रीरी (यह )। मरिक्ष देवो मिरिम (धवी १ ६, काच द दी) । मरिइ देवो मरीइ, भाइ ४०७ने नाखे विखस्य मिंदी छयो व निक्चीतो (पटम २ २४)। मरिस एक [सूप] सहत दरना धमा करना । मरिसद, मरिसद, मरिसेच (हे ४ २३४) महा ध ६७ )। इ. सरिसिकस्य (8 4A )! मरिसायया औ [मर्पैगा] शमा (ब ६७१) । मरीइ दे मिरीचि र भारतम् अपमरेद का एक पौत्र और शस्त्र त≫तस्त्रं कापूत्र को मन्तरमञ्ज्ञानीर का बीच वा (परम ११ १४) ! २ दुंबी. किराप (पराह १ ४ —पन करा धर्मच करशे। मरीक्षां की [मरीचिका] १ किरल-क्यूक्र । २ कुप-कुप्ला, किरया में अस मान्ति (शत्र)। मरीचि वेचो मरीइ (धीप गुज १ १)। मधीचना देशो मरीइया (धीन)। मर्दु[मरुन्] १ परन, शब्रु।२ अन वैषया । १ तुक्की कुत्र-विशेष मस्या सस्या (पर्) । ४ इतुमान का निता (वदम ४३, ७१) । वंदण र्प <sup>(\*</sup>नम्पन् **। स्ट**माप् (परम ११, ७१) । स्तुब वृ द्वित विद् (क्टम १ १ १) । देशो सह्य ≔ मख्यू । ) ⊈[मरु, क] १ मिर्चत केत मरुम ∫ें(सॉमां१ १९—५व २ ३। भीप)। २ वेश-विशेष शास्त्राङ्ग (ती १३ न्यस्य स्वयं १४---वरंद्र)। ३

विशेष सबका सबका (पराइ २, १—४४ १३ }। ६ ब्रह्मस पित्र (नुवार २७) । ६ वर्ष १९ नव नोत । ७ मह-नेतीय राजा राख य वडीए नंदी वरापप्रसर्व व होइ बासार्य । महस्तर्भ बद्धवर्षे (विचार ४६६)। = मह देश का निवासी (परह १ १) । क्रेसार न िकान्हारी निर्मेश लेग्स (पण्ड वर)। रुवा को "स्थसी मद-भूमि (महा)। स की मि बिता (स्य ११)। विव िक्री नद केत में बरुध (पर्या १ ४---प्रम ६४)। सरुझ देवो सरु≔ गक्द (गर्वह १ ४—नव ६८)। २ एक देव-बार्ति (ठा२ **१)**। "क्रमार वे "क्रमार] बानखीप के एक धवाकाक्षम (श्रम ६ ६४)। वसम वै विषयी स्ट्र (स्ट्राइ १ ४—पत्र ६=)। सरुब्रम् ) पुं[सञ्जक]दुत्त-क्रिय भग्मा मरुक्षम 🕽 मस्त्रा (पद्धाः पद्धाः १—पत्र 4Y) ( मक्त्राबी [मस्ता] सता मेरिक की एक क्किये (श्रेष्ठ) ( मरुज्जी की [मरुकियी] ब्रह्मस्त-की, ब्रह्मसी (विदे १२)। स**र्दंड देव**ो <u>स</u>र्दंड (बंध' बीप) सामा १ १---पम ३७)। मस्क्रीत है वि सरकृष्त् ] मध्या मस्ते ना गास (मनि)। मस्य भेवो सस्य = मस्य (पर्छ १ १ — पर (Y इक)। सक्देव 🖫 [सरुदेव] १ ऐक्टर केंद्र में क्रपण एक विनदेव (क्षय १५३)। १ एक दुषकर पुस्य का नाम (सन १३ 1 XX) 1 मरुदेशः) व्यक्तिस्त्रेता वी] । जनल सरुदेवी र प्राथमेंब की माधा का नाम (का सम १६ ३१६१)। २ धवामे हिलामी एक पत्नी निडने घरनानु बहुत्तीर के पांच रीजा केवर पुरिव नहीं भी (यंत) । मरुद्देश की [मरुद्देश] अक्टाल् महतीर 🖥 पास क्षेत्रा केवर कुछ प्रानेशाची धना भेरिएक की एक पत्नी (बांत २१)।

मरुख 🛊 [वे] भूव-पिशाच (वे ६ ११४)। मस्वय देखो सरुअस (गा ६७७ कुमा विक २६)। मस्म देशो मरिस । मर्रास्य (मर्थि) । मस्रक्ष [मस्र] भाष्य करना (मग ६ ३३ टी-पद४८ )। संख्यो सद्दा भन्नद्र, मनेद्र (हि.४.१२६ प्रकृ ६८ सर्वि) समेदि (से ३६३) सर्वेति (पुर १ ट.)। कर्ममसिका (पैचा१६ १) महसर्छेत (ते ४४२)। क्लाइ मस्त्रिचीत (रे १ ११)। एक मस्टिज्य मणिकणं (कुना, पि ४०१)। क्र मस्रेक्य (वै६८) निसाद) । मस पूँ [के] स्थेब, पर्शना (वे वे १११)। सस्त र्युत [सस्य] १ मेल (कुमा बासू २४)। २ पाप (क्रुमा) । १ वैचा हुमा कर्म (केश्य **4**33) i सब्दिश वि [दि] पर्वी सईकाधे (देव **१**२१)।

सख्य न [सर्देन, सख्य] नर्दन नजना (सम १२१८ मक्क के के केश्र सुपा श्रम पैकार६ १)। मस्य 🖠 द सस्यक] धारतरश-विशेष (लागा

रै रि—पत्र रेषे १ १७—पत्र २२६)। मख्य पूर्विसस्यी १ पश्चाद का एक भाग (दे६ १४४)। २ धद्यान वरीणा (दे६ १४४ पाय) । मस्य पूर्[सङ्घय] १ शांतरा केश में स्थित

एक पर्वेष (सुपा ४३,६४ कुमा यह) । २ मनय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष (पन २७६: रिम) । १ द्वन्य-विशेष (रिय) । ४ देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १४६) । ६ व भीवएड चन्दन (जीव ६) । ६ पुंबी सबय <sup>8</sup>रानानिकाती (पर्साहर है) । <sup>®</sup>केख दू किं<u>त</u>] एक रामा का नाम (नुपा ६ ७)। "गिरि पु ["।गरि] एक सुप्रसिक्क जैन धानागे थीर प्रत्यकार (इच राज) । शंह यूं ["चम्द्र] एक वैत उत्तासक का भाग (सूपा ९४२) । हि पु [ द्रि] पर्वत-विशेष (गुपा ४७७)। सव वि "भव] १ ननव देश में क्याम । २ म. चन्दर (परः) । सङ्क्षी | १ ६०२) । "दिस पुन ["दत्त] एक सन्- |

मिती राजा मसमकेत् की क्ये (सुपा ६ ७)।य जिले देशो सव (राज)। रुद्द [स्द्व] चलाका का वेद (सुर १ २८) । २ त. चन्दत-काष्ट्र (पाध)। **व्यक्त** प्रश्चित निषय पर्वेत (सूपा ४६१)। [णिष्ठ पू ["निख] मत्तवाचन से बहुता शीवस थवन (क्रुमा)। "यिस देवो । चल (रंगा) ।

सक्य वि [साख्य] १ मनग देश में उत्पन्त । (म्रणु)। २ न चन्दन (मर्वि)।

मछयट्टी भी [बें] तस्त्री पुत्रति (वे ६ 1 (853 मसदर पुंचि तुमुन-व्यमि (देव १२)। मक्रि वि [मस्त्रिम्] मतनाबाः म**त-पुर** 

(मिन)।

संख्यिक वि [सृदिष्ट] विस्तरा नवन किया नमा हो यह (ना ११ कुनाः हे १ १६६) बीप छामा १ १)। मळिज न [वे] १ लड्ड क्षेत्र। २ दूरह (वे 1 (YY) 1

मक्रिज वि [मस्रिय ] मन-पुष्क, परिन 'मलमलियदेहराजा' (तुपा १६६३ गउड) । मिक्रज़ीत वैको मस = मुद्र ।

मक्रिण वि[मसिन] मैसा मब-पूक्त (कुमा मुपा६ १)। मिक्किणिय वि [मिक्किनिय] मनित दिया इया (स्त्र) । मस्रीमस वि [मस्रीमस ] गविन गैता (पाम)।

मक्षण्य देशो सञ्च = मृह् । मखे**च्छ देवी** मिक्किक्क पि ६४' गट--विक

सक्क सक [सल्ला] देखी सक्क≕ मश् (भग & इष्टी)।

सङ्घु[सङ्] १ पहंचवान पुरती सहने-वाला बाह्न बोका (धीप- कप्पा प्रशुह्न ए ४३ दूमा) । २ पाणः श्रीवश्चिद्वापविधिस्त्रातः मस्से मिल्लीक नीसावे (द्वाप १३१)। ३ भीत का धरप्रमान-स्तम्म । ४ क्ष्मपर् वा बाबार मृत काष्ट (मग = ६--पत्र ६७६)। मुख न ["युद्ध] पुरकी (क्यू हे ४

दुमार (ए।या १ x) । बाद पु विदिम् एक धुनिक्यात आचीन भैन माचार्य ग्रीर र्धनकार (सम्मत्त १२ )।

मञ्जन [माल्य] १ प्रयाकुल (ठा४४)। २ फूल की हुँ भी हुई मासा (पाघा सीप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्पमामा (इ.२. ७१)। ४ एक देव-विमान (धम ११) । ५ विश्वा 'मरुवं कि बक्तीए ग्राम' (बाव वृद्धिः मा १ पत्र ६६२) ।

मझइ पू [महाकि, "दिम्] दूप-विशेष (भग धीफ पि वर् )। सक्तम } न [दे सक्क] १ पात्र विशेष, मह्नय ∫ शराने (विसे २४७ टी॰ पिंड २१ र्वेड ४४३ महाः हुलक १४' ग्रामा १ १ वे ६ १४% प्रयो ६७) । २ चपक पालनाज (देव १४१)।

सस्य व [दे] सपूप-भेद एक उठह का पूधा । २ विद्वसुम्म से एक (देद १४६)। मछाणी की [बे] मानुनानी मामी (दे ६ ११२ पाया शक्ता १α)।

मद्भिष [मद्भिम्] बारए-कर्ता (मन १ 11 台): सद्धि वि [सास्त्रिन्] मास्य-पुक्त मासावासा

(पीप) । मांक की [माकि] १ छनीतने जिन-देव का नाम (सम ४३) शामा १ ६; मॅफ्न १२

मंडि)। २ इस-विरोध मोदिमा का माझ (१९,१८)। पाह, नाइ पू नावी क्रमीसर्वे बिन-देव (महाः हुप्र ६३) । मिष्कि और [मिष्कि] पुष्प-विशेष (मन १

वव थी)। मक्रिअञ्जुस पूं [महिस्तर्जुन] एक धना

का नाम (कुमा) । महिआ भी [महिरा] १ पूप्त-कुत्र-किरोप

(लाबा १ दः दूम ४६)। २ पूरा-विशेष (कुमा) । ३ धन्द-विद्येत (रिय) । सिद्धाय न [साल्याधान] १ पूर्ण-कमान-

स्तान । २ नेश-कनाथ (मग १, ११ टी---पम ४०)। म⊈ी देवो महि (ए।या १ वः पउम २०

वर, विचार १४८३ हुमा)।

(११२१२)। "ध्य पुं ["आरुमन्] महान् **मारमा भहा-पूक्त (पटम ११**६ १२१)। एफ अ वि [ फिस्स ] महान् फबबाबा (सुपा ६२१)। बाहुपूर्वाहुराक्षस्य का एक राजा एक संबद-पति (पत्रम १, २६१)। "बोइ पूं ["अबोघ] महा-सायर, दम बुलंते बोर्ड रएए।

निकासिया तहा सुबया।

महबोहे चैतुर्ए पुराधी नायस स्टब (सम्मत्त १२)।

क्क्स र्जु विका १ एक राज-कुमार (बिपान् भामय ११ ११ मीछ)। २ वि निपुत्त बत्तनाला (ध्या धीय)। देखो महा-वर्छ । असय वि ["सय] सहासद-वनक (परह १ १)। अभूय न मिसु दुविकी भावि पाँच इस्य (सूस २ १ २२)। अरूप पु ["मस्त] एक महर्षि चन्तक्क् मृति-विशेष (प्रेंत २१)। सास पू ["अम्ब] महान यम् (प्रीप)। यर् देखो चर (एएमा १ १--पत्र २७): "रव प्री ["रव] यज्ञछ चैद्य का एक राजा एक सेंग्र-मति (पष्टम ६ २६६)। रिसि पु ["ब्रापि] यहाँव महा-मुनि (तम प्याया १७) : "रिष्कृ मि ["आहे] महे के योग्य बहु-पूल्य कीमती (विपा १ श भीपा पि १४ )। "वाय वु ["बाव] महान् पतन (योग १०७)। ठसङ्गं वि ["व्यक्तिक] महाधवनला (मुपा ४७४)। **ैस्प**य पुन ["इस्त] सहस्य वर्षा 'सङ्ख्या पेच हुँ ति इमें (पटम ११ २६) 'सेसा महम्बरा दे क्लरपुरासंजुदानि व हु सम्मी (सिक्सा ४० शता स्था)। स्थाय 🐧 [क्यय] विप्रशः वर्ष (उप ६ १ c)। संसाग की ["शब्दका] पस्य-विशेष एक अकार की नाप (जीवस १३१)। शिव पू [रिशव] एक राजा यह कतदेव और नामुदेव का रिता (सम १४२) । सुका देशी महा सुष (अन्तर १३४)। संग प् विन] रै माठने निगरेन का पिता (सग १%)। २ एक स्था (महा) । ३ एक मारव (तः रिश्व टी)। ४ न वल-विदेश (विदेश १४४४) । देवी सद्दा-सेज । देवो सहा<sup>ह</sup> ।

भहरूर र्षु [के] गङ्कर-पति निकुषका गाणिक (वे ६ १२६)। महर्षं स मिहाति । १ सति वड़ा। २ सरयन्त बिपुस । अस्त वि "कट पित वही सटा-**भारता (पराप १८ १२)। सङ्गाईवृड्** पू [ "महेन्द्रजिस् ] ध्रवाष्ट्र-वंश के एक राजा का नाम (पत्रम ५,६)। महापुरिस प्रै िमहापुरुष] १ सर्गत्तम पुरुष सर्व-मेष्ठ पुरुष । २ जिनकेव विन प्रयणान् (पटय १ १८)। महास्रय वि [ महत् ] घरमन्त बड़ा 'महदमइस्मर्यीत संदारीत' (उदा सम ७२) । **इरी. "**क्रिया (यद उदा) । सहर्द देशों मह = महत् । महंग पू [रे] उद्धु केंग्र (रे ६ ११७)। महीत वेको सह 🕶 महत् (बाबा धीप कुमा)। महत्व न [माइत्य] १ महत्त्व । २ महत्त्वनाना (हा १ १ -पम ११७)। सङ्ग्रम [वि] पिताका वर (दे ६ ११४) । महप्पन [मयन] १ विकोक्त (चे१ ४६ वकात)। २ वर्षेण (तुप्र १४८)। ३ वि मारनेवासाः 'वरित्रनायसप्यमहस्या' (पर्वह ి ४)। ४ विनाश करनेवासाः 'वार्यं च चराई च भगमञ्जूष (धंनोच ३३) शुर ७ २१५)। श्रीणी (या ४६)। सङ्ग दे [सहन] धनस अंश का एक सबा एक चंका-पवि (प्रथम १८ २६२)। सहिणिका केवो सह = मह । महर्ति **देवो सहद** (का १ ४ ग्रामा १ १ थीप)। महती 🛍 [महती] शिएा-भितेष सौ वांट बाबी बीखा (चय ४६)। सहस्वार ग [वे] १ माएव वाजन। २ भोजन (वे ६ १२४)। सङ्ख्या पूँ चि निष्कातन्त्र प्रमान 'तुह पुहुचरपहाए फरिसाण भहुपुरी एसी' (र्रमा सहसह के समयम । महमहत्र (हे ४ ७६: पड गा ४९) महमद्देद (डव)। वक्क महमहेत (नाम ११७)। सेष्ठ महमहिन्न (दुया) ।

सहसहित्र वि सिस्ती १ ५०० हमा (६१

१४६ः मन्त्रा १४)। र तुर्गितः (राम्र)।

महम्मह देखी महमह, "विपत्तीपसिरी महम्म हर्द्र (ग ६ ४)। मह्या केहो सङ्घा "मङ्गाङ्गिकतमहत्रमनय-मंबर्राकृतसारे' (खाया १ ६ टी--पत्र ६ थीप विपार १३ मन)। सहर वि चि । सत्तमच मलक (दे ६, 1 (#55 महत्वपपक्त रेको महासमस्य (पण-पुष्ठ १७६) । सङ्ख्य विदिसङ्ग् दि बुढ वड़ा (दे ६ १४३ वना मतक पुर १ १४ पंचा १ १६३ संबोध ४७ सोम १३६ प्रामु १४६ वय १२ सुरा ११७)। २ प्रकुल, विद्यास जिल्लीएँ (६ ६ १४६ प्रवि १ स ६६२३ मनि) । सी किया (धीप मुपा **\$**\$1 440)1 महस्र वि दि । १ प्रबद, शबाट, शक्रमारी (दे ६ १४६: यर्)। २ टू. वसनि समुद्र (वे ६ १४१) । १ समूह, निनद्र (दे 4 848: gt 2 24) 1 सहित्र वेची सङ्ख्य 'हरिनहच्चडिलमह्म्बार पयनहरवर्षपद्भव विकराबो' (मुपा ११)। सहय देशो सथय (कुमा प्रति)। महा भी [मधा] करण-विशेष (सम १२) सुरुव १ १, इक) । सदा देशों सद् = भइत् (छ्दा)ः अदह ≋ [<sup>\*</sup>अटट] संस्थानीरचेप व४ सास महामट-र्थंग की धंक्या (मो २)। अंडडॉगन ["सटटाङ्क] सक्ता-विरोध «४ साथ घटट (बो २)। आस्त्र देशों साम्र (नाट--वैत बर)। उत्रह्म किह्न संस्था-विशेष बार साथा महाउद्दीय की संक्या (को २)। कह पूं [किया] में ह कवि समर्थ करि (पतक चेह्य ८४६) रमा)। इदिय व [किन्दित] व्यन्तर देवों शी एक वाति (पराह १ ४१ चीन इक)। कन्छ। द **िंकच्छ**ी १ सहाविदेह वर्ष का एक विजय-धोत्र—सान्त (ठा २ ६।इक)। २ **१**व-विशेष (वीप)। कच्छा सी ["कच्छा] विकास नामक इन्द्र की एक बाब-महिती (हा४ १—पत्र १४ छाना २३ इक)। कण्ड् पुं [किय्म] समा संशिद्ध का एक

पुत्र (निर ११)। कण्डाको "इण्या] राजा बेरिएक की एक वली (बीट २४)। कृत्य व किस्त्य है केन प्रत्य-विशेष (छदि)। २ काच का एक परियास (धन ११)। काला म किमस्य संबद्धानियोग भौराशी काळ महाकमबांप की शंबरा (बो २)। इस्त देवी भइ उच्च (यन्मर्स १४९)। बाय वृं [काय] १ महोत्त देवीं का उत्तर किया का इन्हें (ठा२,३ क्षक)। २ कि सङ्गान् शरीरकाटा (क्या)। कास दू विकास र महाबह-विशेष एक **बह-देवता** (दुण्य २ : ठा २ ६) । २ समिया सरदा-समुद्र के पाताब-कराय का धविशासककेन (ठा४ २—पत्र २२६)। १ एक इन्द्र, रिकान-निकाद का उत्तर दिया माध्यः (इस. २, ३ — यम थ १)। ४ परमा श्रामिक देवों की एक जादि (सम २०)। १. बायु-कुमार देनों का एक शोकनाला (ठा ४ १—नव १६व)। ६ वैस्तरम इन्द्र का एकः नोतपास (ठा४ रे—पत्र १६) । ७ नव विविद्यों में एक निर्मिणों को पानुमों की पूर्ति करता है (का दबद दी हा द---पन ४४९)। सत्त्वर्गनरक-दूनिका **ए**क सरकार (ठा ६, १--एक १४३) सर्ग X )। १ प्रिशाण केनी की पूक नावि (राज)। १ जनमधिनी नगरी का एक प्राचीत बेत शन्दर (दुव १७४) । ११ जिल स्थापेत (मात ६)। १२ चन्त्रमिनी का एक रमदान (धेठ)। १३ एका बेरिएक का म्क पूत्र (तिर १ १)। १४ ल एक केव-विनान (सब ६४) । कास्त्रे एट विज्ञासः] रे एक विद्यान्त्रेवी (वंदि इ) । १ धयवान् **गु**मतिनाव की शा<del>का देवी</del> (हंदि ह) । ६ रामाभी किन नी एक पत्नी (बंट २३)। "फ़िज्हा की ["हु:ज्या] क्य यहा-नवी (ठा धः ६—१४ १६६)। इसुद असुद व [दुगुर] १ एक देव-दिमान (बाग ३३)। रे संस्था-निरोप भीरानी सहद्र महासूनुसाय भी पंच्या (वो ३)। तुमुयक्रीय न [क्रुमु दाह्र] बंब्सा पुदूर की चीयरी कास है। पुस्तने पर भी संख्यासका हो शह (शो २)। कूम्स 🖠 ["कूमे] दूर्तावतार (गाव)।

कुछान ["इ⊊्छ] १ थ हकुम (निचू⊏)। र कि प्रकारत कर्म में स्टरनाः नितर्वाता थे महाभूता (सूर्य १ व २४)। गंगा 🖦 िराक्करों वरिमाल-विशेष (भग १५)। ग्रह र्ने "मह र सूर्य ग्रावि व्योक्तिक (शार्थ वर्ष)। गहारि जामही पायकी **ह**ी (सार्व ८७)। गिरि वं ["गिरि] १ एक वैज मक्षपि (उप कष्प)। २ वका पर्यत (क्तक)। तोच पंितापी १ सहान् प्रतकः। २ जिल गम्बल (जवा विसे २६६६)। मोस प् ["धाप] १ ऐरवत क्षेत्र के एक धारी निश्चेत (सम १९४) । २ एक इस्त स्तमित कुमार केर्ने का उत्तर किलाका इन्ह (ठा२ रे⊶नम ३)। १ एक दुलकर पुरुष (सम १६ )। ४ परमानामिक देशी की वृक्त भारि (सम २६)। १ न, वेगविमान-विशेष (सम १२ १७) । चौत् पूँ [ैचन्द्र] ऐरक्त नर्पे के एक मानी तीर्वेकर (दम ११४)। अधिक पृ[किनिक] पंक्षी सार्ववाह दावि भवर के क्य<del>व</del>-मान्य शीप (कृमा) । असहि ५ ("अस्ति) महा-कायर (मुपा ४४४) । अस वृ वहास् ] १ घटा वक्रवर्ती का एक पीत्र (हा च--पत्र ४२१)। २ ऐरमत क्षेत्र के चतुर्थ धानी तीर्वकर-केर (सम ११४) । १ वि महाल् मग्रसी (प्रच १२ २३)। आह जी [आति] प्रम मिरोप (पएछ १)। "काण न ["यान] १ बहा माल---माहन । २ बारिय, धंयन (शाका) । ६ एक निश्चामर-तपर का नाप (६६) । ४ पूर्वासा श्रुटि (श्रामा) । जुद्धा ल "मुद्ध विशे धहाई (बीन ३)। अपूरम वृत्र विकासी महान् राश्चि (भग १६)। ज देशो अप 'नामकुशारम्बासे धनकस्थीने बहाशनरुके नां(धोन ६६)। आई श्री ["तरी] वही नर्थः (पत्रकः प्रकार ११)। अभियावक १ [सम्बादने] १ क्य नाथक क्षेत्र या एक शोकपास (ठा४ १----पश्रदे)। २ न् एक देशपियान (श्राम १९) । जगर हैकी नगर (राष्ट्र)। र्णाञ्चय केलो नजिय (धन)। जीवान [फ्रीक्र] १ चल-पिरोप । २ पि मरिनौत वर्णनामा (बीव 📧 धीव)। जीध्र देखी

जुमाग वि नीक्षा (स्वा)ः प्रमाध िअनुसारा महानुसार सहस्त्रम (सद---भारती वेश दल्क १ ४ सम सिर्दि १६)। जुजाय वि ["अनुसाम] वही मर्च (दुर २, ३६८ इ. ६६) । तमपहा की विम प्रभा] शतम मरक-पृथिषी (पर १७२)। तसा की ["तमा] नहीं (नेइस ७१६) । वीरा और "जीया नधे-विकेष (का रू ब---वज १६१)। तुक्किय न ["मृटित] यहानुद्रितांप को नौराती साम से इसने पर वी लंबना सम्ब हो वह, शंक्स-प्रितीय (की २) । शमहि दु [वामास्यि] स्थानेत्र के कुरय-सैन्य का महिराति (इक) । ब्रामबिड र्⊈ विशमकि ] वही भवें (छ ३ १ — नव ६ ६) । हुम देवो सङ्-दुदुम (इक) । २ ल. एक देव-विमान (सम १६) । द्रमसेण प्रतिमधेनी धका मेखिक का एक पुच जिस्ते भववान् महातीर के शास दीका बी बी (स्तुर) । देव दं विंदी १ म ह वेष जिल-देव (पदन १ ६ १२) । २ दिल की C-पति (पटम १ ६ १२) सम्मद्ध ७६)। **विकी की ["देकी]** पटरानी (कप्<u>र)</u>)। अग पु ["अन] एक वरिष्ठक (परुप ३३, ३०)। बर्जुद्र [बसुप्] मनके का एक पूर (निर १ ४) । सई सी ["सदी] वड़ी नसे (बम २७) कस) । मंदिआकत्त देवी र्णदियावस (इक) । स्तार ५ [स्तार] बड़ा स्ट्र (परह २ ४)। "तय द्र" "तत्र] बहुत्पुना मान्दि बड़ी नहीं (मानम)। तकिन न ["नक्षित्र] १ संस्था-निशेष, यहानविनाप को भीएसी बास से ब्रुक्त पर को संस्था लक्ष्य हो वह (बी.२) । २ एक देव-विमान (धव ११) । तक्किमी व िनसिनाङ्गी र्श्वपना-विरोध बांसन की बीधासी साथा है प्रक्रमे पर को संक्रम सम्बद्ध ग्राह्म (भी १) । निजासम र् ["निर्धासक] येष्ठ क्छाँचार (क्वा)। "निहा की ["निहा] कुद्ध मध्य (प्रज्य ६ १६ ) । "निनान "निनाय वि ["निनाव] प्रकार, प्रतिक (भीष ६३ व६ दी) । निसीह न ["निशीष] एक धैन सम्बन्धन्द (गम्ब ३ १६)। शोध्य की ["शीक्य] एक महानदी

महा —

(हा १ १---पत्र १११)। परम वृं ["पता] १ भरकोत्र का भावी प्रवम सीवैकर (सम १११) । २ पुँडशिकिसी नयरी का एक राजा भौर पीछे से समर्थि (साया १ १६ — पन २४३) । ३ भारतवर्षे में छत्पन नववां नक्ष्मर्सी राजा (सम ११२ परम २ १४६) । ४ भरतक्षेत्र का मन्दी नवर्षा नक्रमर्सी रामा (सम ११४)। १ एक रामा (हा १)। ६ एक निवि (हा १ -- पत्र ४४१)। ७ एक इह (सम १ ४ व्य २, र—पत्र ७२)। ⊏ राजा विशिष्ठ का प्रक पौष (निर १ १)। १ देव-विशेष (धीव)। १ ब्रुप्र-विरोप (ठा२ १)। ११ न संक्या विशेष महाप्यांय को भीराकी साख से -क्रुगुले पर जो संख्यालव्य हो वह (यो २)। १२ एक रेब-जिमान (सम १३) । पष्टमजैग न ["पद्माङ्क ] सस्या-विशेष पद्म को शीरासी बाह्य से प्रस्ताने पर जो संस्ता नव्य हो वह (भो २)। पद्यमा वर्ष [पद्या] राजा स्रोतिक की पक पुत्र-वक् (निर १ १)। पंडिय वि पिण्डत ब ह विदान् (रैमा)। पट्टण न ["पश्चल] बड़ा शहर (उवा)। पञ्च पद्म वि प्रिक्ष विद्य कुर्जिकामा (उप ७७३ पि २७६)। प्रस्त म [प्रस] एक देव निमान (सम १३) । यसा 🖚 ["प्रमा] एक सकी (उप १ वर दी)। पन्द पूर्व विश्वमा महाविदेश वर्ष का एक विजय-मान्त (ठा २, ६) : परिण्या ैपरिमा की [ैपरिक्रा] सरवारांग शुव के प्रयम भूतसम्ब का शांतवी सम्पर्का (राज न्माक)। "पसु वु ["पशु] समुख्य (बठड)। पद पू ["पय] बड़ा चल्ता चन-मार्ग (सप पर्छा १ ६ सीप) । याण न प्रियाजी **बहुत्तोक-रियत एक देव-विमान (उत्त १८ ९**व) । पायास पु ["पानास्त्र] बहा पातान-कतश (ठा ४ २---पत्र १२६) श्रम पाछि धौ [पाछि] १ अमृ वस्य । २ चामधेरम-पधिमत मद-स्विति--धामु 'महमासि महापाले

चुडमं वरित्यक्षोणमे । चा सा पातिमङ्गामो (रुव्या वरित्यक्षोणमा (उत्त १० २०) । "पित पूं ["पित्] तिताका वड़ा भारी (विषा १ वे—पत्र ४ )। पीड पू िपीठ] एक कैन महर्षि (सिंह = १ दी)। पुरस π [°पुक्क] एक देश-शिमान (सम २२) । पुंड न "पुण्डा एक वेन निमान (सम २२) । पुंडरीय न ["पुण्डरीक] १ निरात श्वेत कमस (राम) । २ पूं प्रह्-विशेष (सम १४)। १वन निरोप । ४ देको पुंत्ररीञ (राज): पुर न ["पुर] १ एक विद्यापर-मगर (एक) । २ तगर-विशेष (विवा २ ७) । पुरा की पुरी महापडम-विकास की राजवानी (ठा २,३--पत्र = )। पुरिस पु [ पुरुग] १ बोह पुरूष (परहर ४)। २ किपूरण निकायका उत्तर विशावन इन्द्र (छ.२, ६—यत्र ८३)। पुरी देशो पुरा (१४)। पोंडरीका न ["पुण्डरीक] एक वेद-विमान (ध ३३) । वेको पुंडरीय (ठा २ ६---पन ७२)। पांछ देखो सह-एफछ (पना)। "फुलियू न ["रफ्.टिक] शिवारी पर्यंत का एक उत्तर-विद्या-स्थित पूट (राज)। वस्त पि विस्त्री १ महान् वसवासः (भव)। २ पूं ऐरल्थ क्षेत्र का एक भाषी वीर्वकर (सम १६४)। ३ चक्क्वर्ती भरत के वंश में स्त्रपद्म एक राजा (पडम १, ४° ठा द---पत्र ४२१) । ४ सोमबँधीय एक नर-पति (पक्रम १८ १)। १ पांचर्वे नलदेव का पूर्ववत्यीय : नाम (पटम २ १६)। ६ मारतवर्षं का मानी बहुनाँ नापुरेन (सम. ११४) । बाहु पूषिक शिम्राज्य वर्षका भागी वनुवे नामुदेव (शम १९४)। २ रावस का एक सुभर (पराय १६ व ) । सपर विशेष-वर्षे में छलक एक बासुरेव (शाव ४) । अह व िंभन्नो तप-विशेष (पन २७१)। शङ्घ-बिमा जी ["मडप्रतिमा] गीचे देवी (धीप) : भद्दा की [ भद्रा] बर विशेष कामीलाई-क्यान का एक का (ठा२ ३—नव ६४)। भय देशो मह-कमय (पाचा) । माध्र, भाग वि [भाग] पहुन्तुमान महाराज (यमि १७४ महा मुपा ११ व प्रम यू ३)। मीम पूर्विमा १ एलमाँ ना बत्तर विशाका⊈म (ठा२ ३---पप ब≭)। २ मारतपर्यं का भाकी बाठको बतिरानुकेक

(सन ११४)। १ वि बहा समानक (रंस ४)।
श्रीमसीन पुरु कुलकर
पुरु का शाम (सन ११)। सुझ पु
िशुमा ने रेप निर्माण (से ४ १)। सुझ पु
िशुमा ने रेप नाम (से ४ ११)। सोमा
की िमोगा पुरु महा-नदी (का १, ६—
पत्र १११)। मर्चेष पुँत [मुक्तन्तु नावविरोध (सन)। मर्चिष पु [मिन्सन्तु नावविरोध समान प्रमाण (सीमा सुमा
१२१ सामान प्रमाण (सम्)। मर्चिष्ठ महानाव्याप्त (सामान)। मर्चिष्ठ [मानाव्या हार्मी (कुमा)। मर्च्य विरामान प्रमाण (हमा)। सन्वयान प्रमाण (हमा)

सिङ्भयिहरुहिस्या । सिङ्भयिहरुहिस्या । स्वतिख्यमञ्जासका सकावि

पनाहमा भ्यति (दुप्र १६४)।

मरुवा भी ["मरुवा] राजा भेणिक की एक पल्पी (बंत) । सह पू ["सह] सहो-लव (बाव ४)। महंत वि[सहस्] विति वहा (नुपा १६४) स ६६६)। साह (धर) की ["माया] अन्य-विशेष (पिय)। साचया भी ["सानुष्ठा] माता की बढ़ी बहुत (विपार १--पत्र ४)। साहर पूर्विगठर] ईरालेना के रब-डीय का सविपति (ठा ४, १---पन १ ६। इक)। मामधिजा को ["मानसिका] एक विदान देशी (वंति ६)। साहण द्रं जाहाजी बहरूप्राण (बना)। मुणि पू [मुनि] व ह चारु (कुमा)। मेह र मिमी बहा नेव (सामा १ र-पन ४ ठा४ ४)। ुमेह् वि [मिघ] बुडिमल् (स्प १४२ टी)। मोक्स वि [मुर्ख] वहा वेवकुछ (उप १ ६१ थी)। यण पूँ ["जन] में छ सीव (नुपा १६१) । यस विको अस (ग्रीपा कष्प)। रक्स्सस पु [राभ्रम] संका व्यक्तीकाएक राजा की वनवाहन नापुत्र मा (पबस १ १११)। सह 🛊 [रिया] १ वहारम (पराह २, ४ — यम १६)। ह पि बड़ा रवनाचा । ३ वड़ा योदा इस

पत्र ११७)-।

(विपा १ c)।

(वेद १२१)।

पक (राम १२१ दी)।

महाणसि वि [महानसिम्] रसोई बनाने-

बाता, रसोशवा । श्री. जी (स्त्रामा १ ७---

महाजसिय हि [महानसिक] उसर हैको

सहाविछ न [दे सहाविछ्] व्योग माफात

महामंति र् [महामन्त्रिन्] महावत हस्ति

महारिय (धप) वि [मदीय] वेरा (बय

महास्त्रं [दे] बार, उपवित्रं (दे ६ ११६) । महास्मरुव वि वि ] तक्या भवान (वे ६ \$**3**\$} 1 महास्वय देशो सह = महत् (सावा १ व- स्वा: धीप) 'मा कासि कम्माई महासवाई' (उद्य १६ २६) । की 'किया (भीव) । महास्थ पुन [महास्य] १ उत्सवीं का स्वान (सम ७२) । २ वड़ा सालग। १ वि बृहत्ताम बहा शरीरवासा (मुख २, ४, ६)। महाज्यक्त १ [दे महास्वपश् ] माउ-पन्न मारिकन (प्रकारती माडपक) मास का हप्या पश्च (दे ६ १२७) । महावद्वी की [ब्रे] निवनी, कमलिनी (वे ६ **१**२२) । महाविजय पु [सङ्घाविजय] ध्रक देवविमान (बाबा २ १६, २)। महासहज दु [दे] छत्तु, पुद्ध-पत्ती (दे ६ 1 (wFf महासदा की दि] रिका जुगानी (वे ६ १९ । पाय) । महासेस वि [माहारीख] महारीव नपर हे संबन्ध रक्षतेवाचा महारोत का (पटम ११) **X 3** ) 1 महि देशो मही (कुमा)। शब्द न ["उब्ह] मु-पैठ, मूमि-ग्रुप्त (बुमा' चडक प्राप्त ४४) । गोपर पु "गोचर] मनुष्य (वनिः चरा)। पहुन ["ग्रुष्ट] मूमि-तन (पड्)। पाळ पू ["पाछ] राजा (वन) । मंडस न [मण्डस] मुनग्रस (प्रवित्र है ४ १७२) । रामण ग् [रमप] राजा (था २७)। बहुर्गु =1

[पिति] त्तवा (छाया १ १ टी धीप)। बहु केलो पट्ट(के १ १२६४ कुमा)। बह्नद् र् पिद्धभी राजा (प्र १)। वास्र र् पार्की १ समा नरपति (३ १ २२६) । २ व्यक्ति वाचक नाम (स्रवि)। "बेड पू ["बेप्ट, पीठ] म**श्-**तन भू-तन (वे १ ४ ४१)। सामि दे ["स्वामिम्] रामा (कुमा) । हर पूँ [धर] १ पर्नंत (पाया से के केद ४ १७३ कुम ११७)। २ रावा (क्रूप ११७)। महिला वि[मधित] निकोणित (से २, १०) पाम)। सहिमान [सहित] १ पूजित सक्कत (से १२ ४७ जना मीप)। रन एक १४-बिमान (सम ४१) । ६ पूजा सत्कार (सामा महिल वि [महीयस् ] बढ़ा पुरु 'राय-नियोची महियो को खान चयावयमिह क्रेंड्र' (मुद्रा १८७)। सक्षित्रयुक्तभाव वि] भी ना विट्ट अरु-सस महिमाकी [महिफा] १ बुक्य कर्पा सूक्त कल-तुपार (पर्ला१ की ४)। २ वृपिका बूंच कुहुरा (योग ३ : पाय)। ३ नेय-समूहः 'क्छनिनक्के काविया महिया' (पाय) । वेवो मिहिआ। सम्बद्ध [सद्देश्य] १ वहा रख वेषाचील (बीप' कप्पा गाना १ १ टी-पन ६)। २ पर्वत-विदेय (से ६ ११)। १ वर्ति मञ्चान, श्रुव नहा (ठा४ २—पन २३)। ४ एक चना (पतम १ २३)। १ ऐरवस वर्षका भागी ११ वर्ष सीर्थंकर (एव ७)। ६ पून एक देव-विमान (सम २२) देवेला १४१)। कत न ["काम्स] एक देव-विमान (सम २७)। किंत पूर्व किंतु हुमुमान के मालामाई कानाम (पडम ३६ ११)। कैमन्य पू [भाक] १ वहा भागः। १ शक्र के स्था के समान ध्यन जेंद्रा इश्रा-ध्यम (ठा ४ ४—पत्र २३)। ३ म. एक केन-विसान (धम २२)। दुविस्था भी [दुविहता] धज्जनानुव्यतः इनुमान की भारतः (पडम ५ २६)। 'विकास पू 'विकास' इत्याह

वंश काएक राजा (पदम ४,६)। सीहा पुं[सिंह] १ कुद केंग का एक राजा (उन ७२८ टी) । २ धनलुमार वस्त्रचीं का एक मित्र (महा)। महिंद नि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्बन्धाः। २ छलात-बिशेप (यस २१६) । महित्त्तरपडिसय न [महेन्द्रोत्तरापर्वसक] एक बेब-बिमान (सम २७) । महिगा रेको महिला (जीवस ११)। महिष्यद्व वि [महेष्यद्व] महत्त्वाकांश्री (सूच 2 2 48) I महिच्छा की [महेच्छा ] महत्त्वकांवा बपरिमित बाम्सा (पर्वह १ ४)। महिट्ट वि [वे ] महा से संस्ट, तक-संस्थारित (विपा १ ५---पत्र ८३)। महिक्टि वि [महर्किक] बड़ी ऋवि सिंहिहरू | बाला महान् वेभववाता (बा सहिद्देशिय । २७ प्रमा भीवमा ६ धीराः पि ७६)। महिम पुंची [महिमन्] १ महत्त्व माहाप्त्य, गौरव (हे १ ३३० हुमा) यस्त्र शवि)। २ वीची का एक प्रकार का ऐस्वमें (हु १ ३१)। सहिद्धा देशो सिहिद्धा (महा चन)। महिका की [महिका] की नारी (इमा हे १ ४१ पाप)। धूस हु [स्तूप] कूप बादिका किमाच (विसे २ ६४)। महिक्किया की [महिक्किम, महिला] अनर श्रेणो (छामा १ २ पत्रम १४ १४% प्रामु १४)। महिस्या 🛍 [मिविस्सि, मिविला] रेको मिहिस्म (कप्प)। महिस पू मिहपी नैया (पदा बीफ गा १४४)। ।सुर १ [ै।सुर] एक बानव (स ४३७) । महिसंद पु [दे] इत-विरोप रिष्युका पेड़ (4 8 45 ): सद्दिक रि [सद्दिपिक] मैंग्राला, मैंस बरानेवला (अगु १४४) । महिसिकान दि] महियो-समूह (१ ६ १२४) सहिसी की [महिपी] र चन-पत्थी (का ४ १)। ९ मेंस (पामा पडम २६ ४१)।

स्वा(बारबालप १४६ टी सुपा ३०)। वीद्ध न ["पीठ] सूमि-तम (पुर २ ७४) । सपु[क] समा(बा१४)। समाप ["शक] नहीं मर्च (मा १४)। 🦏 महिः। सहुदु[सञ्जा १ एक दैश्य (वे १ सक्दुप्)। २ वस्ता ऋहः पुर्यानकः वर्षको (पाक कुमा)। ३ केर मास (कुर ६ ४ १६ र ४ । जिल्)। ४ गोचमी प्रक्रि-बासुबेब राजा (पढम १, १६६)। १ प्रकारका (बुहर्)। ६ तकुत का एक राज-चुमार (पर्वम १२ २)। जन्मती काएक देव-कट स्वध्त (बल १३ १३)। द महुक का पेड महुन्य का पाड़ा (कुमा)। १ शरोब-पुत्र (पत्र)। १ म. मच वाक (से २ २७)। ११ सीक्र शब्द (कुमा पन Y ठा४ १) । १९ पम-रख । १३ नकूर रम । १४ वन गानी (प्राप्त के व १६)। ११ सम्बन्धिये (पिन) : १६ सभूर, निष्ट बल्ड (बरा २,१)। आर पुंकी [कर] भागर, भीरा (शस्त्र स्वच्न **७३ धी**रा कप निष्)। की रिका री (पनि १६ : गार-मृत्य ५७) । अरविधि धी

मास प्रिमान के यस (पनि)। "मिचा पुन ["सिज] कामदेश (सूपा मङ्गराष्ट्रिक दि [व] परिष्ति (दे ६ १२४)। १२६)। मेहज न [मेहन] रोय-विशेष सङ्गरित पूंडी [सञ्चरिमम्] बङ्गळा नाडुर्य नकु बनेब् (भाषा १६१०)। "नेब्रिक वि भिद्यनिम् । यपु-व्येष श्रीमकाका सङ्करेश ई [सधुरेश] महुच का पना (धाना)। मिद्रिप [भेद्रिम्] वही धर्य (<del>क</del>ुमा) । (धाणा)। रायपू [राञ्च] एक राजा सङ्ख्य की [वे] शेन-विरोध पास-नव्य (पमछ ७४)। बाह्रियी विशिष्टि १ मोचनि-विशेष बद्धिपद्ग, पुनेदी बैठी नव । सहस्थित [सञ्चासिकक] १ सका, मीम रस्यु, देश (हेर २४७) । वक्क द्र [पर्क] १ चवित्रकः शब्द्ध, बही सीर शक्य । १ बोक्योप नार पूथा का बढ़ानी जपनार (जल्द १ ६)। बार पृ [ैबार] क्या शल्क (शाय)। ैसिंगी की [ शृङ्गी ] वबस्रवि<del>विदे</del>व (पएछ १—पा ११)। सूबया पू [\*सूवन] विष्यु (बठक ग्रुवा ७) i सङ्कर्ष [सभूक] १ क्वा-विशेष यहसा क्ष बाह्य (या १ ३)। २ न महूमाका क्स (ब्राज़ा है १: २२२)। महुक्त पुदि ] १ पक्ति-निशेष श्रीवद पक्षी । २ मानव स्तुति-पाठक (वे ६ १४४)। सहुण सक [सभ्] १ निनोक्त करता। २ विकास करना । यक 'विमुक्ट्रह्ससा ववित्रक्षक्षप्रिय<del>तके</del>ता अ<u>ष</u>्टुर्णित-जानकरात पिसामा भूमर (यहा)। महुत्त (प्रद) वैची सहरूत (धरि) ।

(क्य इ. ९. १) । २ र्यक-विदेश, आहे के पैर में जबा प्रमा अकता तक बक्तेवामा करा (ध्येषमा १६) । ३ कता-विशेष (स ६ ९)। सङ्कत्सन देवो सङ्गसन (राज)। सहस्र देशो सहस्र=सब्द (कुस्छ है रै 1 (999 सङ्क्ष्य पू [महोस्सव] बढ़ा फलन (दुर व रे व्यं नाट--पुरुष १४)। महेंच् वेची महिंद् (दे ६ २२)। महेंद्र ई [के] पंक कार्य (दे व ११६)। सद्देवस प्र[सद्देवन] बढ़ा रेठ (आ १६) । सहित ई [महेस] बढ़ा हमी (हुमा) । माइका की [माहेका] की नारी (है ? [\*स्टब्रिचे] माङ्कर**े क्या-**बृचि (कुमा १४६३ कुमा) । ३) । अरिगीय न िक्सेगीर नाटक-महेस ई [महरा] केने बेबो (वि १४) परि)। विकि विदेश (महा)। आसक् नि विधानन महेसर इ [महत्त्वर] १ महादेव शिल (पडम सम्ब-निरोपनाचा निक्षके प्रमाय है अवन वेश, वेश वर्षीय १२)। २ जिनकेट, सङ्कष्पञ्च न [सङ्कोरपञ्च] कवब पद्या 'बहुप्पत्त मबुर सपे ऐसी बन्नियाला (पराह 🗞 १---महीन् (पजन १.६.१२)। ३. सीमन्त पर १)। गुलिया की [गुलिका] पंचयं नहिस्तुं (पाप) । बाब्स (विदि ४२)। ४ मूचवानि केवाँ के रक्षकी मोनी (छा४ २)। पडळान महरूष प्रे कि मसुद्रका निमुन, पुनेन **ब्लर दिशा का इन्द्र (इक)। त्राप्ट** ['पटक] मुद्रुवा (देव १९)। सार **भग (दे६ १२१**) i [चित्र] एक पूरोबित (विना १ **१**)।

का राजा (कृमा)।

(बिचू २) ।

(शुपा २६४) हुम ६ )।

(Fing (1))

**७**२व दी) ।

महेसि रेको मह-रिसि (छम १२३ परह

महोअर प्र[महोदर] १ रावण का एक

महोअहि पूर्[महोदभि] महासावर (से १

महोच्छ्यं देखी महस्रव (पुर ६ ११)।

महोवहि देशो महोअहि (परह २ ४ जप

सद्दोरगर्दु[सद्दोरग] १ व्यन्तर देशें की

एक वाति (पर्याह १ ४ -- पत्र ६८३ इरु)।

२ बड़ा सांप । ३ महा-काय सर्पे की एक

मादि (पर्राइ १ स्थान च)। देखान

एक राजा (पराम ६ ११)।

[स्त्र] पत्र विरोध (मक्स)।

२ महा)। रवर्षु ["रव] वानर-वंश का

पार्द(**से १२, ४४)। २ विवह**-सक्षी

१ १ छप ११७ ७२० दी मिन ११०)।

महोरतकंठ पू [महोरतकण्ठ] चन-विशेष (एम ६७)। महोसव रेको सहुसव (नाट--राजा २४)। महोसद्दि हो [महौपदि] यह सौपवि (यतह) । साम सि∏ासत लहीं (वेदस ६≈४० प्रायु २१) । माक्के [मा] १ शक्सी दौचत (छ ६,१६८ पुर १६, १२)। २ शोच्य (से ६ ११)। मा } घक [सा] १ समाना, घटना। २ माञ्ज दिक मार्थ करना । ६ निवय करना चानन्तः। माध्, माद्यद्व, माद्ववा माएका (पव ४ कृमा प्रकादकः संदेप १० ग्रीप)। **पक्र**-सेंद साअंद (कृम⊳ ⊌ ३। खेश ६, पा २७६) । क्यक्र मिर्द्धात मिलामाण (से ७ ६१, सम ७१, भीनस १४४)। इस-माअब्दः 'दावा सहस्त-मह्या', माहम (धे ६, ६: महा कृप्प) । वेश्वी सेक्स = मैय । मामदि र् [मार्वाख] एतः का धार्यव (व tx, xt) i माञ्च देवो माइ = मातृ (कुमा है ६ ४६)। मामस्रिके देशो मामस्रि (से ११, ४६)। मामब्रिया हो [दे] मातृष्यधा माता की बहुत (वे ६ १६१)। माभादी भी [मागभी] काव्य की एक रीति | (क्यू)। देखो मागद्विमा ।

मार्थ [पे] वेबी मार्थव (प्राप्त स ४१६)। मार्थर पुर्मिगम्ह्य सिंह, केवारी 'एएसर

माभारा 🕽 🛍 [मातः] १ माँ, जननी (पर् ∫ठा४ ३३ कृमाः सूपा ३७७)। २ देवता देवी (हे १ १६४, ३ ४६, शुक्र ३ १)।३ की नारी।४ माया (पैपा१७ Y⊂)। १. भूमि । ६. विमृति (७ कदमी। य रेनती। **र भारतकर्णी। १ व**टामांसी। ११ इन्द्र-कारुगी इन्द्रायस (समृद्रि हे १ १३४८ ३ ४६)। घरत शिद्धी केनी-मिचर (सुका ३ १) । द्वाण ठाप्य न िस्वान] १ माया-स्थान (पैका १७ ४८) सम १६)। २ माया क्यट-रोय (पंचा १७ ४=। **उन**र ८४)। "मेह दूं ["मेघ] यत्र-किरोप निसर्ने माता का वब फिया बाद बह सक्त (परुप ११ ४२)। इर वेसी <sup>क</sup>पर (हे १ १९१)। वेबी सांच माया = नातु। माइ वि [श्रासिम्] माया-पुक्त, मामावी (मारकमा ४ ४ )। भाइ स [मा] मत्, नहीं (प्राक्त ७०)। माइ ) वि [दे] १ चैमरा रोमवाला प्रमुख माइज निर्मो से प्रुट (दे ६ १२०० गाया १ १ ब--- नम २३७)। २ समूरित पुष्प विदेववाचा (धीप संग्र छामा १ १ टी---पत्र ६ धंत्र)।

माइम वि [मायिक] गागती (वे ६, १४७) सामा १ १४)। भाइअ वि [मात्रिक] माना-दुख, परिमित (वैदु२ पन्दृ१४ पण्डेद)। माइम केलो मा = मा। माई केवी साइ(≕ वा(द्देर, १६१ कूमा)। माईगरंग न [बे] बुलाक भेटा (उर ११३) ।

माइक वि [मारा] समाया हुमा, बटा हुमा

(स्वाद १)।

प**हर्ग्यारियमार्श्वसर्ग्वनुष्यमानिहिन्** ¥3) I माई (बास ) व मियेन्द्रबास । मायान्यं, मार्चियास । बनावटी प्रांच (तुर २ २२६) स ६६ )।

माईवा की वि] धामसरी- वामसा का गांध

माइण्डिला की [मृगत्ध्यिका] पूप में बस की भ्रान्ति (क्य २२ टी मोह २३)। साइक्षि वि [वे] मुद्र कोमल (दे ६: १२६)। माइख केको माइ ≔ मासिन् (सूप १ ४ १ रेव बाचाः भग योग ४१६ वरत ३१ पराधीप ठा४ ४)। माश्वाह ुर्वं की विसादवाही शीविय

माईबाइ 🕽 बन्तु क्रियेप सुद्र कीन-विशेष (सत्त वद १२६ की १४८ पुष्ट २६४)। की हा (पुकारेय १४ की १४)। माउ देखों साइ = मातु (मग् मुद १ १७८) थीप प्रामाकुमा यहः **हे** १ १६४० १९६)। नगम वृं [माम] की-वर्ग (बृह १)। ऋहादेवी <sup>\*</sup>सिंखा (दे २ १४२ षा ६४व)। "पिट पुं ["पितः] मां-बाप (पुर १ १७६) । स्मही की मिही माँ की माँ नानी (रंभार)। सिंखा सी **ै**स्सिक्स की ["व्यस्] माँ की बहन मौसी

(के २ १४२ क्वना निपार कानुर ११

२१६/वि १४०/ विषा १ १---पत्र ४१)। ) वि[भाव, क] र प्रमावा मावल ∫प्रमाख-इटी स्टम झानवासा। २ परिमाख-कर्वानापनेवालाः ३ पूं. जीव । ४ बाकाराः 'माऊ' 'माउपी' (पर्। हे १ रेवेर माना माच्च वा हेर १३४)।

माउम वि [मावुक] मावा-संबन्धी (हे १ १६१ मध्य प्रस्तुय राज)।

माउम पूर्व [मायुक्त, का] १ प्रकार शाहि ब्यांचीस बन्नरः 'बेमीए खं सिनीए खायांनीस' माज्य**रक्टर्र** (सम ६१) सात ६)। २ स्वर । ६ करण (दे १ १११ प्राप्त प्राक्त प्र)। नीचे देखो । माडमा 🛍 [मात्रस्त्र] १ माता मां (छाया

१ ६ —पव १६०)। २ ऊपर देखी (सम ६३)। पय पून ["पन्] शासी के सार-पूत राज्य- धापास्त व्यय भीर ग्रीस्य (सम ६१) । माबका की दि मादुस्त दुर्गा पार्वती धमा (दे ६. १४७) ।

माठभाकी [दे] १ छत्री सट्देवी (दे ६

१४७ पाय; सावा १ ६--पत्र ११०)। २ कपर के होठ पर के बाल मूँचा पतार्थक

नारक न चितुरन् कोलना (हे रै १९४४)

२. राष्ट्रमा)।

भाषता की [में मादान्यद्र] केवो माद-न्यहा
( पत्र )।

माद्रवा की [में प्रची फरेकी (पत्र )।

माद्रवा की [में] प्रकी फरेकी (पत्र )।

माद्रवा की [में] प्रकी फरेकी (पत्र )।

माद्रवा कि [में] प्रक कोमान (वे इ.
१२६)।

भारतका हि हि पुट कोसम (द ६ १२६)। भारतम को मातका च्यूपल (कुमा दे । भारतम १ शर पद)। भारतम १ शर पद)। भारतक १ सिएइस जॉक्स कार्य का यदिवारि (का संस्थान के एक नियम का यदिवारि (का संस्थान के एक नियम पद्गर पर पंचा महा)। भारतिका के से महा भारता विकास की स्थान (की)। भारतिका के से महा भारता के प्रस्तान के प्रसान के प्रसाम के प्रसान के प्रसाम के प्रसान क

पुत्त है पुत्र | देश (का रेक है) मागसीसी की [मार्गसीयी] १ प्रकृत यक्त को दिख्या। १ प्रकृत की व्यास्त्रवा (दक)। मागद्द | दिल्लाय की १ म्यक् मागद्द है च्हेन, मान के में क्लाम माय

आगाह्य है देवेद, राग के प्र में कंगा गाय केत का, गायकवंश्यों (तीन कहा विशे १४६१ वर्ष १९ तामा ६ व्यवस्थ १६ १४६१ वर्ष १९ तामा ६ व्यवस्थ १६ १४१ । २ वे ल्युवि-गाउठ वर्षो भारत (श्या प्रोत)। सामा ती [माना] केती मागाहिका वर्षा गाये (यह विशे मागाहिका वर्षा गाये (यह विशे वर्षा प्रपा अग्रुत कर्मा ना एक मेदा १३ वर्षा प्रपा अग्रुत कर्मा ना एक मेदा १३

२ ४६३ वनि ४)।

(海岸 46) 1 माइटी को [माठचे] बनलांच-विनेप (क्र्ए t--- 44 ) 1 माडिभ वि मािठेटी धन्नाइ-पुक्त, धनित (क्या)। माडी की [माठी] अवन वर्ग क्लार (वें ६ १९ दी क्या १ ६---वर ४४ वास ॥ १२ ६२)। माण पर्क मानम् ] १ सम्मान करमा आवर करता । २ ब्लूजन करता । मासाइ, मासोइ, मार्खीत कालोम (**हे** १ २२ व महर, कुमा दिरि ११)। क मार्थत गाणेमाण (धूर के रे २ शाया रे १-- पण ६६) i काम. भाजिजीय (बा ६९ ) । हेम्र साजित माजेर्ड (नहाः द्वा) । इ. साजिएका सामग्रीभ भागेरका (का)

जुद १२ दिए चर्चित १० व्ह १ ११ कृद १२ दिए चर्चित १३ । सार्विमी (१६५ १ ४ ३) । मात्र कृत [मान] १ एवँ पहेला, प्रमिनाठ-'सद्दारिक्यालीकियाची' (कृम) 'पूर्व-विद्वारत्वाली ह्रस्की एकल चीम्में माले' (बाया ११८) । १ यन प्रतिकृता कर्ने मा स्वक्, मा स्वक्, मार--मद्दारा व्यक्ति (१४)

१४१)। देव देव दिस्तमि [बत्] मतः बाला (बार हो ए १४६ हेका ७६ वि ४६४) बी. चा, ची (क्या कार)। हीगई [वुङ्क] एक प्राचीन कैन कवि (समि २१) । "बई को ["बठी] १ मानवामी की (से १ ६१)। २ राष्ट्रंग की एक पत्नी (वस्प क्षत्र ११)। संघन ["संघ] एक विद्यावर-नगर (इक)। विशव वि विविधित महकारी (धाचा) । माण वि [मान] मान-धंबन्दी बात का **'अह**र माखाद मायाद' (पत्रि)। सहस्य न दि । परिमाल-निशेष वस शेर की नापा धुनराती में 'मासू" (हर ११४)। यार्जस्य वि दि रे मानानी कपटी (वे ६ १४० वर्)। २ की कप्रनष् (रे६ मार्णिस देवी मर्जिस (इस्त्र १९७ वॉक्स

मारुधापय--माणस

कृष्य<sub>।</sub> वी ६ ४ व्य १४) । ४ प्रमाण स**ृत** (विसे १४६ वर्मसं १२६)। ४ मान्द्र, सस्मर

(कामा १ ११कम)। ६ ई. एड में हि-द्वन (बुपा

१४०)।
प्राथिति केली सार्वसि (कार १६८) वीसि
१७ पर्दः)।
साव्यत्र त [सानन] १ धानदः वासादः
(वासा) । २ सानना (रक्ज न्यः)। ६
व्यत्रसः। ४ बुक्त का स्तुन्यः पुरस्काराज्ये
(व्यत्र १३)।
साव्यत्र वर्षः [सानना] कार केली (पद्धः ६,
१) परस्क वर्षः)।
साव्यत्र केली साव्याः (१) (पुरा ११)।
साव्यत्र केली साव्याः (१) (पुरा ११)।
साव्यत्र वृक्तिसम्बद्धोः साव्यत्र (पद्धः

र एक वर)।

आजव की माग = (१) (प्रता ११)

आजव की माग = (१) (प्रता ११)

आजव की माग = (१) (प्रता ११)

आजव की माग वर्ष ११६१ माग)।

आजवा की सम्मान है एक विशेष

आजवा की सम्मान की द्वित करनेना की सिंद ११ वर्ष ११ वर्ष

आजवा की सम्मान की द्वित करनेना की कि वर्ष ११ वर्ष ११ वर्ष

आजवा की सम्मान की द्वित करनेना की सिंद ११ वर्ष १

वर्ष्य (शय क्रुमा) । ३ वि सन-संबन्धी,

मत का (मुर ४ ७१) । ४ पु. मुखलन्व 🗣 यन्वर्व-रीम्य ना नायक (इक) । मायसिध वि मानसिक वन्नेबन्धी मन शा (चा २४' बीए)। माणसिमा भी [मानसिका] एक विधा-वेशी (संदि ६)। माणि वि मिनिन् रे मान-पुक्त, मानपाला (इ.स. दूब २७६) कस्म ४ ४ )। और णिया (हुमा)। २ व धन्छ का एक नुमन (पतम १६२)। १ पर्वत-विद्योप । ४ । **बूट-विरोप (राजः इक)**। माजिल वि दि मानित क्षुपूर्व (दे ६ १६ पाम)। माणिज वि [मानित] सक्त (गडड) । माजिङ न [माजिङ्य] एन दिशेष माशिङ (मुपा२१७ वका२ क्यू)। माणिज देखी माणि (परम ७३ २७) । माणिसद् पूमाणिसद्वी १ यत निकाय कै। **एतर क्याका इन्द्र (ठा२ ३—नव** ≤३. (क)। २ यज्ञरवीं की एक जाति (शिरि ६६६ इक)। ६ वैत-निरोप। ४ शिवार विद्येप (राज इक)। १ एक देन-विमान (धम)। माजिम देखी माग = मान्यू । मात्री स्मै [मानिका २६६ वर्लीका एक भाप (धणु १६२)। माणुम 🕯 [मानुष] १ मनुष्य, बातव मर्स्य (नूस १ ११ ६ पएह १ १ वन मुर ३ ६६ प्राप्त कुमा) न्यं पुछ हिस्सार्धर्व , क्लेंड र्च बालूर्स जिस्में (बूप १) शयाणि मार्धिप पमु मारगुमाणि सम्बाखि (बुत्र ११)। २ वि पनुष्य-संबन्धी "तिविहं बहाउत्युं ति पुरमर्यास्यासाम, श्र बहा दिन्दे विष्यमाणुसे मापुर्ध 🕇 (६२)। माणुभी की मिलुपा है धी-शतुष्य भावती (पर २४ के ब्रुप्त १६) । १ समुख्य से संबन्ध रचनेरानीः 'सागुरी घासा' (नूप ₹७) I माणुमुक्तर १ र [मानुकोक्तर] १ वर्गत-मानुमोत्तर शिरोप क्युन्यपोर का छोगा बारक वर्षेत्र (राजः ह्या १ ४० मीत ३) । १ न, एक देश-शिवान (सम २)।

पाइञ्चसङ्गङ्ग्णयो साणुस्स देखो साणुम (भाषा' भीप धर्मवि १व छार्थ २३ विके १ ७)३ भागुस्स क्षावें (ठा १ ३—पत्र १४२) 'मासूस्सयाई भोगमोगाई (कप्प)। माणुस्स १ न [मानुन्य, क] मनुष्यस्य माणुम्सय । मानुसपनं मनुष्यता (गुपा १६६, स १६१ प्रामु ४७ पउम ३१ ८१)। माणुस्सी देवो माणुसी (पष २४ )। माणूस वैश्रो माणुम (सुर २ १७२ ठा३ **३**—पत्र १४२)। भाजेसर दू [माजेसर]माणिका वज्ञ (मनि)। माजोरामा (प्रत) 🛍 [सनोरमा] सन्द-विशेष (पिय)। मार्चग देशो मार्चग (पीप) । मार्तश्रण देवो मार्थअप (ठा २,३--पर मातुद्धिम देवो मादुर्खिम (पाचा २,१ व भावसिआ की [पे] नाता, जननी (६ ६ 232) I सादु देनो शाब = सी (प्राक्त प)। माधवी देशो भाहयो = नावनी (हास्य १३३)। मामाइ वृक्षी दि । यमय-प्रकान, प्रमय-प्रान धन्य (दे ६: १२६, पड्) । माश्रीसिम ग 壤 अन्य देशो (दे६ १२१)। साम व कोमच पामन्त्रशुका सुबक बच्चम (परम १८ १६)। माम 🕽 🖠 [वे] माना, नां का भारी (नुपा मामग रे १६ १६६)। मामग ) वि [मामक] १ वरीय वेश यामय 🕽 (बाबी बन्द्रक्र)। २ नगतानाता (सूम १ २ २ २ व)। यामय रेपो मामग = (रे) (परव १८ ५५, स =११)। सामाध्ये 🖲 नामी मामाकी बहु(देद

मामाय ६ [मामाक] 'मा' 'मा' बोचनेरापा,

यामाम र् [मामाय] १ धनावै देश-शिक्षेत्र ।

२ बनार्य देश में रहनेशनी अनुष्य-जाति

निवारक (योग ४३४) ।

(<del>इ</del>क्) ।

सामि व सबी के मामन्त्रए में प्रपुक्त किया बाता बन्ध्य (हे २ ११४) धूमा) । शामिया) धी वि] मामा की बहु (विपा मामी े १ ६—पत्र ४१३ दे ६ रे१२३ पा२ ४८ शक्त १८) । माय वि [मात] समाया हुवा (रम्भ र, ⊏६ दी पूल्ठ १७२ महा)। माय वि [ मायावन् ] क्यटवामा, 'कोहाए मागाए माबाए लोभाए (पडि)। माय देनो मेल = पच 'त्रोमुल्बलुखनायमदि' (सूप२१४०)। माय देखो माया = भाषा (धाषा)। नाय देवो नचा≕मत्रा। झादि [ैहा] परिमाण का जानशार (सूम २:१ ५७)। मायइ की कि नुप्त-विश्वय (पदम 💵 9£) ( सार्थम पु [साराह] १ मनवान् नुपारर्थनाव वा सासनयंत्र । २ मपनान् महानीर का शासन-पन्न (संति ७ व) । १ हस्ती हाची (पाम पूर १ ११)। ४ चाएडास डोम (पाष) । मार्थमा की [मावड़ी] १ पाएकविन (निष् t) । २ विद्या-विराप (माणू १) । मार्थवण पूँ [मावजन] पर्वत-विग्रेप (६६)। मार्थंड पु [मारुण्ड] मूर्वं, धीव (मुपा २४२) ৰুম ৰঙ)। मार्थंद पू [दे मारम्य] पान मान का वेड़ (है २:१७४) माना हे ६ १२८। दुम mt ( 4) 1 मार्थिक रेको मार्गिदेश (मर १८ १)। मार्थरी धी [मादन्ती] गगरी-निरोप (ह ६; कुन्न १ ६)। मार्चदा की दि] श्रेताम्बर साम्बी (हे ६ 1 (383 मायण्डिया की [मृगद्दिगद्य] हिरण में जन की भ्रान्ति कर-मरीविका 'बह बुद्धमधी मायरिह्याए दिनियो करेद बन-पुद्धि । सह निस्तिवेषपरिनी

बुग्रद धपम्मेनि बन्ममाई

(नुगर )।

क्तड १ २ सम् भीत)। यचित्र वचीय। मीतः मुखु (चर १२८)। ति [प्रत्ययिक] कपट से ईमिकाना सम-मारि देवी मार् = मारम् । दुतक (क्वाटार १ ना१७)। प्रेंब कि [पिन्र] माबा<u>त्र</u>कः (वडम बद्दः ११) । और, विभी (नुपा ६२०)। मायि रि [ग्रायित्र] नावा-पूक्त, नावानी । (बरा विश्व ४)। मार नम् [मारय्] १ वाइन क्रांताः १ दिशा करना । शारद शारेद (याचाः पुनाः मग)। मर्थि मारेड्सिंग (गि १२ )। कर्म मारिजद (ज्य) । यह सारंत मारेत (मश

१२। परम १ र. ७६) । वयक सारिवांत

(नदा): इ. मारियस्य मारयस्य (पक्ष्म

११ ४९) मार्राज्य (का १३७ छ)।

मार 1 [मार] १ वाइन (इमा २१६) । २

बरण बीन (बाबा) नुम २ २ १७) का

पृष्य)। इ.सम् मान्(लूस हे हें के

भारि वि [मारिन्] मारनेतना (महा)। मारिकार् [मारीच] रावल का एक सुमन्त (पडम १ ७) । छेवा सारीछा । मारिजि हेतो मध्य (परम ८२, २६) । मारिन नि [मारित] मारा हुना (महा)। मारिशामा की [वे] श्रीक्य की (वे ६ मारिक पूंच [चे] बीरक 'पीरके कारिके' मा**स**णीय **क्षा** सास्र = यात् । (dfa vo) i माख्य देवी मास्र≖ दे. यात (हा दे रे— (नुग १२७)। शंइ. मारेचा (परा) मारि मारिस वि [माध्या] मेरे केवा (दुमा) । (का) (हे र ४१६)। हिन्न मार्ड मारी सी [मारी] रेनी मारि (व १४१) । भासव पुं[भारतव] १ आध्यीय केत-विशेष मारिभ वुं [मारीच] श्वांच-विचेच (चवि १४१) । देखी मारिज । मारीह रे दे [मारीचि] एक निधानर मा**छन** वृं [माछन] म्बे<del>न्स-</del>रितेप, गाराग्रे शायिति । सामना रागा (पटम व १६१)।

रे धनकाना एक नुभट (पञ्च १६ २७)।

(# +) c

(बर इ १६६)।

1 (4E P F

पण १२॥)।

माण वैको माला। गार वि [वार] 🕬

माखड् } की [साध्ती] १ तता-विकेष

साक्षर्क १ द्रप्य-विद्याप (पदम १६ ४४)

भाकंशर र्1[साख्यार] वैरोक्त स्वीट <sup>हे</sup>

(इका कर १४२ ही)। २ मालक केत ना

निवासी मनुष्य (पर्सा १ १—पत्र १४)।

को कठा से बानेवानी एक बीर बाडि (वर

इतिग्रीक का व्यक्तिति (का के 1-नव

पामा क्रमा) । १ क्रम-क्रिकेट (सिंग) ।

मास्रवंत पू [ मारुयवत् ] १ वर्वत-विशेष (हा २ ३ - पत्र ९६ व सम १ ९)। २ एक रामकुमार (पठम ६ २२ )। परि धाग, वरियाय दे ["पर्याय] वर्षत-विशेष (छ २ १-- पत्र हा ६६)।

मास्रविणी भी [मास्रविनी] सिपि विशेष (विदे ४६४ टी)।

मास्त्र की [मास्ता] १ कुन माहिका हार, 'सम्बं माना बार्य' (पाम स्वप्त ७२ सुपा कुना)।२ पक्तिमणी ११६ प्राप्त १ (पाछ) । ३ समूह 'बसमलक्हमास' (सुधनि १६१)। ४ छन्द-निरोप (पिन)। इद्ध नि [ यन्] माना वादा (प्राप्त)। क्यारे वि [कारिम्] मानी पुण-ध्यवसायी श्रेषे. गी (बुपा ११)। सार वि [कार] वही मर्ने (का १४२ टी बीट १० सुपा १६२) उर दृ१६१)। घर ्रं ["चर] प्रतिमा के क्रमर के मान की एवना-विशेष (वेडस **१३**)। यार र केको कार (मैंत १= कापूर्यक्षायश्रक्तां वर्षः, री (कुमा) या ११७) । इस को विस्ति धन्द-विरोप (विष्)।

माह्य की दि विदेशना चलिका (वे प

19=) 1 साम्बद्धेनुसाम [ब्रे] प्रवात ब्रुंबुस (वे व **११**२) ।

मासि पुंची [मासि ] वृश्च-विदेव (सम {\$\$} i

मास्ति र् [मास्तिन् ] १ पाठाव-र्शका का एक राना (पडम ६ २२)। २ वेश-विशेष (६६)। १ कि साली पुरुष-स्थवसायी (दुमा) । ४ शोमनेवाचा (दुमा) ।

माछिअ पू माछिक करा केलो (वे २ ६) 'परहर २, तुना २७३ छन ब्राहरू)। मास्त्रित वि [सास्त्रित] शौमित, विमूपित परलोग् पूल करनालुमानिधामानिधा कमेलेक' (धा २३) पत्थः धम २६४ टी) ।

मासिआ की [माजिया, मासा] केनी माखा = माना (शा २३ स्तव्य १३ सीर घशा)। मास्त्रिक न [मार्क्सय] ए३ वैन युनिनुत (कप्प)।

सालियों की सिक्तिनी १ मानी की की (कुमा)। २ शोमनेवासी (धीप)। १ सन्द विशेष (पिय)। ४ मानाबासी (भवड)।

साक्षिणा) म सिक्टिन्यी मधिनता (स्प भाक्तिम 🕽 प्र रेरः पुशा वैश्व १०६) । मालूग) पूँ [मालुक] १ भोनिय बन्तु

मालूयो मिर्शय (सुवा १६ १६८)। २ शृक्त-विशेष (पर्ता १--पत्र ६१ साचा १ २—नव ७८)।

माञ्जूया की [माञ्जूका] १ बस्बी जला (बुध १ ३ २ १ )। २ वस्मी-विरोप (पएस १--पत्र ६३)। मालुहाणी औ [मालुवानी] सवा-विशेष (यस्ड)। मासूर 🛊 🕞 मासर] कॉफ्ल 🖣 का

माच्च (दे६ १३)। मालूर पू [मालूर] १ विका कृत केन का शास्त्र (दे व १६) या २७६, वतन मुना)। २ त वेश का अल (पाधा गडड)। श्राह्म रे पू [सासुछ] मामा (पूर्णमाना

शास्त्रह १२ स्वी व सलगावना)। माविक कि [मापित] नापा हुमा (ते ६ ६ वेद ४८)।

मास देको संस=नांग (हू १ २६) ७ कृमाः सप ७२८ टी) ।

शास ९ [शास] १ मदिला, डॉस दिन का समय (दार ४ जन ७६८ टी भी ३५)। २६मय कास कासमासे कार्स किल्बा (निपार १३२ कुत ६४) 'पसक्याने' (इम ४ ४)। १ पर्व-वनशाति-विशेष, 'बीम्खा (१ छी) तह इसी व माने व (पएए १--पन ११)। इस वैको तस (राम)। कृष्य पू िकरुपी एक स्वान में महिना तक पहने का साचार (सुद्ध ६)। समय न [क्षपम] नमातार एक वास का करकास (श्रापा १११) विपान १३, मन)। गुरु म ["गुरु] धप-विशेष, एका राम शर (संबोध १७)। तुस पु ["तुप] एक कैन पुनि (विवे ११)। प्रसा की [पुरो] १ नगरी-शिरोत भूती देश की राजपानी (इक) । २ 'वर्त' हेरा वी राजवानीः "पाना पैकी स मानपूरी बहुर" (पर २७१) ह

पृरिया की "पुरिका" एक जैन मुनि-शाका (कप्प)। छद्र म छिप् । तप-विशेष पुरिसद्ध तथ (संबोध १७) । मास र् [माप] १ घनाम देश-विशेष । २ बेश-बिशेप में रहनेवासी मनुष्य-वादि (पएड १ १---पत्र १४)। ६ मान्य-निरोप बहुव (दे १ १a) । ४ परिमाग्न विशेष मासा (बज्जा १६)। पण्जा की विणी नगरपति विशेष (पराय १-पन १६)। मासंख देखी मैंसल (हे १ २६ हुमा)।

मासलिय वि मिसिकिन पूर किया हथा (गडह सूपा ४७४)। मासाहस पू [ मासाहस ] पनि-विरोप 'मासाइससरसिसमो कि वा विद्वामि वेदसिसो' (स्वि६ उका तर १ १)।

मासिञ दूं [दे] पिशून सम दुर्गन (दे ६ £33) 1 सासिक वि [मासिक] मास-धम्बन्धी (उदा धीप) ।

मासिका की [मानुष्यस्] माँ की बहित (वर्गवि २२)। मासुरेको संसुव्यसम् (११ २ ६६)। मासुरी की [दे] रमम् बाही-बूँव (दे ६

१६ । पाम) । माइ पु [माघ] १ मास-विशेष माव का महिना (पापा है ४ ११७) । २ छस्द्रत ना एक प्रसिद्ध कवि । ३ एक इंस्कृत काव्य र्थन शिशुप्तास-भग करूब (हे १ १८७)।

माइ म दि दूर्यका कुन (दे६ १२०)।

माइण पूजी [माइन, ब्राह्मण] प्रसा हे निष्टम ग्रहितक-१ पुनि, साबु अपनि । र व्यापक वैन उपासक । ३ शहरू (ब्राचा सूच २ २ ४८ १४ मा १ ७३ २ १ प्रानु दर्भशो । स्रो आ (क्य) । सुद्ध न [कुण्ड] मध्य देश का एक दान (पाषु १) ।

आइएव पुन [माहासम्य] १ महत्त्र गीरव । रे महिना प्रमार (है है 💵 संज्ञा रूमा) सुर ३ ११३ बालू १७)।

साहण्ययां भी अपर हेगी (बन ४६० टी)। साइय पूँ [मृ] न्यूचिन्त्रय क्षेत्र-विशेष (क्स 14 (YE) 1

साहब र् [सायब] र मीहब्ल गायमध्य (बा ४४६ वरबा रहे) । र बद्धा खुना र केलाह गाव (ज ७०७) सीमा १६)। प्राप्ति के [स्मानिता] बब्बी (ध १९६)। साहबिका थे [सायबिद्ध] गीने केवी (गाय)। साहबी की [सायबी] र नय-विशेष (ध १२२३ धनि ११६)। र एक एम-नशि (पहच ६ १६२ १ १८४)। साहाराया न [बि] र वह कम्मा। र बब्ब-विशेष (६६६ ११२)। र बब्ब-विशेष (६६६ ११२)।

साहियाय है [क] रे रिप्तिर पत्रक (दे ६ १६१)। र बाय का पत्रक (वर्ष्)। साहियों क्षेत्रों महिसी (क्प्प)। साहियों क्षेत्रों महिसी (क्प्प)। साहियों क्षेत्रों महिसी (क्पप)। र मात्र की मात्रकरा। (तुप्त रे ६)। साहुर कि [मानुर] जुन्न का (यह र वर्ष)। साहुर है कि मानुर कहा र वर्ष मानुर र है मानुर के है र वृद्ध र वर्ष मानुर से हमानुर के है र वृद्ध र वर्ष मानुर से हमानुर के हमानुर के हमानुर के साहुर है प्रका। र बाय पत्र के कि फिल प्रकार। (क्षा)। साहुर कि [मानुर्वे] महर्ता (अक १६)। साहुर्विय व [मानुर्वे] मुक्ता (अक १६)।

सीजीरातेषु ना पेत्र (हृ १ २४४० वंग)। १ ॥ सीजीरे ना कम (पत् पुमा)। माहस्रार वि [माहंभर] १ महेल्यर पत्र (सिरि ४)। १ म. नयर-रितेष (पत्रम १ १४)।

मि (यप) वैची अवि-यपि (शवि)। सि "द्यासित मिद्री मद्री व्यवस्थित वाधपनावनावकोगस्यमेन नत्रवादी (विसे ११४२)। "धिंबार्ग "पिण्या मिही का Frei fufte ? ) : suite fe l'artil मिद्री का बना क्षेत्रा (उप १४९ पिंड ११४: सपार्की। सिक्ष देखो स्य = मूक 'चर्चश्वितवोसेर्स नियो यसी वाहवालेश' (मुर **८**१४९, क्तार ३० पर्यार १० सम ६ का४ २। विदेश)। आवान विकास मिचा-विशेष पाम प्रवेश साथि में नवीं के दर्जन आदि से सुमाराम फल बाजने की विका (सम २ २ २७)। प्राप्तको, नवणां भी चित्रनां देशो सय-चदी (तह, सूर ६। १६६) । सवाव विश्वा करतूचे (रंका ३१)। रित्त पूंिरिया बिह (शुपा १७१) । बाहण पू विवाहनी धरतक्षेत्र के एक जानी तीर्वकर (सम १६६)। निश्चर्य जिल्ली इंटिश के माकार का परा-विशेष, को इंग्रिल से ब्रोटा और विस्का पुल्ला करना होता है। स्रोमिश पि िक्रोप्रिकी उन्तक कालों से बना हुया (प्रसु ६६)। मित्र आणो सिक्त ≔िम्म (ब्राप्त)।

शिक्ष क्षा (असू = (क्ष्यू )। सिक्स कि [कि] जम्केष्ठ विश्व क्षित (क्ष्यू )। रिक्स कि [सिल] जम्मेष्ठ वर्षित्व (क्ष्यू १६ : जम ११२) कव्य]। २ वेसा-ज्ञान किस पुर्क्ष (आप)। वाह कि [ब्यादिय] आप्ता व्यक्ति क्ष्यांकी को विशित्य नाम्केशका (ठा व—च्या ४९७)। रिक्स केसो सिक्ष = व्यव (वा १ ६ वा वाट्य)। रिक्स क्षा सिक्षा। व्यवस दूँ [आप]। ज्ञानकियेल (क्षिता १ १)। रिक्समा की [ब्यावज] क्षित्रमा (नाम—

क्कु २७)। मिजंड दृं [सुराहि] र चन्नः चौर (हे १ १३ : त्रात्रः कुमा कम ११४)। २ चन्नः भाषितम् (सुरूप २)। ३ हरमाङ्ग संस में दू सिर्द्धत हैको सर्पत्र = मृतंत्र (कप्पु) । विकासिक केको समस्तित (वि ४४) ।

मिलासिर केवी मासिर (शि रू)।
सिला की सुगा है एवस निवन की पत्ती
(किया है है)। २ एका कम्प्रक की पत्ती
(क्या है है)। उपना स्वाप्तक की पत्ती
है कर्य है है)। उपना महस्त का एक पुत्र
निकल्प हुएत गाम सक्त्यी का (क्य है)। २ एका महस्त का एक पुत्र
निकल्प हुएत गाम सक्त्यी का (क्य है)।
से माता का नाम (क्य है दे)। २ एका
केवालिक की प्रदानी का नाम (क्या है)।
सेवाला का नाम (क्या है)। २ एका
है ही।
सिन्न की मिलि है। मान परिमासा। २
सन्न क्रमी कि सक्तरपनावारी न सिन्न

चतुवायरापेए' (वर्तीव १४३)। सिंह केबी सिंड = पूप (वर्तीच १४३)। सिंहुंग केबी सर्थग = पूर्वप (हे १ १३७) कुमा)। सिंहुंव केबी सर्बंद = पुरेका (पपि १४९)।

सिव को चित्र] मिही मही। गीनव्यं क्लान्स चीनसामान्यंत्रवा कुनान्त्रमं (समान १२४) गीनव्यंत्रको स्वाप्त चुनान्त्र स्व व स्वत्यक्ष गिर्व (स्व १२११ थे)। सिव वि [चुत्र] कोमम सुकूबार (धीन-कुमा सक्य)।

कुमा चक्क)। सिक वि [सुनु] मनोकः सुवरः भिक्रमहर चंपले (स्त्रेरिक्)।

सिंचण न हिं] योचना निर्मालन (वे वे वे )। सिंख | की [सजा] रे सरीर-स्थित बाहु-सिंख | किया सम्बंधित

विश्वा विकास हान के बीच का स्वयक्त सिविया किये (प्याह ह —पन का बहा। क्या प्रीत) ने सम्बन्धी क्रम्बन श्रीयुक्त विश्वा कर्या (पराह हुक्त का सहस्व विश्वा कर्या (पराह हुक्त का सहस्व सिंठिक (पन १२० से, कुत्र कहा अपना स्व

सिंह } पूँकी [सेब्रू] १ लेंडा, मेड केन, माहर सिंहम | (विशेष ४ ४ टी उप ४ २ श्रुष्ट ११९) 'चेव वस सिंहस है व' (वसीव

क्प १९)। वेबी मेंठा

१४)। इसी, विदेशा (पाम)। २ त. पुरुष तिम पुरुष-विक्र (राज)। सुक्ष् पूं ["सुरुष] १ प्रनार्व देश-विशेष (पव २७४)। २ ग. नपर-विरोध (धन) । देखी मेंद्र । मिहिय र् मिण्डिकी प्राम-विशेष (कर्मे १)। सिंग देखो सम = मृद (विपार 🕶 सुर २ २२७ मुपा ११० धर) 'सीहो मियाएँ द्यमित्तास्य वैगा' (सूच १े६ २१) । येथ पुँ [गरघ] पूर्वातक समुख्य की एक वाति (इक)। नाइ पू ["नाय] खिइ (सुपा १३२)। बद् वृं ["पवि] स्टि (प्रसः १ १ दुन १११)। बार्लुकी 🗗 ["वालुङ्की] बनस्पति-विदेश (पर्युख १७-- पत्र १६ )। ौरि दूं [ौरि] सिंह (स्वासुर ६ २७ )। |

क्षित्र पिथिपी सिंह (पर्याद २ ४)। मिगवा की [मृगवा] शिकार (सुपा ११४) कुत्र २३ मोह ६२)। मिगल्य न [मृगक्य] अपर देखी (ज्ल

\$# **{**}1 मिगसिर देवो मगसिर (सम ६० ६क वि

1 (758 मिगावई देवो मिझा-वई (पटम २ १८४ २२ ११ पना संद्रुष्ट्रप्त १८३, पत्रि)। मिनी की मिनी १ इरिएी (मझ)। १ विद्या-विदेश (राज) । पद न ["पद] की का हुस स्वानः योगि (एव)।

मिच्यु देशो सच्यु (पर् । कुमा) । मिच्छ (सप) देखों इच्छा= इप "त उदेह मन्युनिम्बद्धन न बहु (सवि)।

मिच्छ र् [स्सच्छ] यहनः सनार्यं सनुष्य (पटम २७ १० १४ ४१ वी १४, सबीव १९)। पहुर्दु प्रिस् स्टेक्कों का रागा (रेमा)। पिय व ["प्रय] पसास्यु, व्याज त्तरुल "सिच्छप्तियं हुतुते का गंदी तान विस्ति (सह १)। हिंद दुं ['क्षिप] यवर्थेका राजा (पद्धन १२, १४) ।

सिच्छ न [मिच्य] १ सस्त्व वचन, मूठ। २ वि. ससस्य कुठा "मिच्यं ते एवमाकृतु (नन) नर्दद्रशः नेत्र मिल्ल्क्ष्यं (एक्ष्य २३ २६) । १ मिष्याहरि, सस्य पर फिरकास नहीं रकरेगला दल्ब का समझाता 'मिक्की हियाहियविभावनास्त्रसङ्ग्रासम्बन्धी कीर् (भिषे ४१६)।

मिच्छ देखों मिच्छा (शम्म ≒्राप)। कार प्रे किंदार ] निष्या-करस्य (प्रापन) । त्त ग रियो सस्य तस्य पर भगवा सरप वर्गका ग्राविश्वसः (ठा ३ ३ बाष्ट्र ६३ मण भीग्र क्य १९१३ कुमा)। "चिति "स्विम्] सत्य वर्गपर विश्वास नहीं करनेवामा परमार्थ का घमकानु (वं १८)। विद्वि विद्वीय विद्वि विद्विप वि [ दृष्टि, क] सत्त्व वर्ग पर मदा नहीं रखनेवाला जिन-वर्ग से चित्र वर्ग को भागने वाना (सम २६ कुमा का २ २, कीप; ख t)।

मिष्टा च [मिष्या] १ वशय, पूठा (पाय) । २ कर्म-विशेष मिध्यात्व-मोङ्गीय कर्मे (कम्ब २ ४० १४) । १ युक्-स्थानक विशेष प्रचम प्रशु-स्थानक (कम्म २ २ ३ १३)। इंसल न दिशेन दिशेल पर सम्बद्धा(सम ≤ मराधीप)। २ घसरम बमै (कुमा)। नाण व िद्यानी बसत्य क्रान विपरीत भागः सक्रान (मर)। सुध न िंशत असस्य शास, मिष्याहटि-प्रसीत शास (खंदि)।

शिक्त प्रकृम्ि गरना। मिन्नेटि (सूच १ \star 🐮)। बद्ध- मिळामाण (त्रय)।

।भद्मर्घ मित्रमाण }े देची मा≔ गा।

मित्रमः वि मिथ्यी शूचि पवित्र (सप ७२८ दी)।

मिट एक दिं मिटाना, बोप करना । मिटि 🖛 (पिय)। प्रयो निटानश्र (पिय)।

शिष्ट मिए सूप्र] गीठा, मनुरा 'पूर्वमिट्टा । मराबुद्धा वैसा सिद्धारा कहमिद्धा' (वसीव इ.स. कप्पा पुर १२, १७४ है। १ १२०. रमा)।

मिल सक मा, मी १ परिनाल करना नापना रोजना । २ वानना, निरुप्य करना । मिराह (विषे २१८६) मिरानु (पण २१४)। मिष्णण म [माम] मान, माप परिमाण (सर 7 (#F P

· बसाकार, बबरदस्ती (दे ६ मिणाय न १११) ।

सिणां हे बें सुपां (प्राक्त 🖘 रीमा) ।

सिक्त पूँ [सिक्र] १ सूर्यं, चित्र (सूपा ६४४) सुबाध ६। पाम समा १४४)। २ नधनदेन-निशेष प्रमुखमा नशन का प्रनिप्तायक देव (ठा२, ३⊷-पन ७७ सुअः १ १२) : ₹ महोराव का दीसरा मुहर्ता (सम ५१) सुरुव १३)।४ एक राजाका नाम (विपा १ २)। १ पूर्व, शेरत वयस्य सङ्गा मित्ती सही वर्षशे (पाम) 'पहालमिला' (स ७ ७) 'खिनिहो मिलो इनह' (ए ७११) चुन ६४६, प्रासु ७६) । किसी ही कियी व्यक्त पर्वंत पर रहनेवासी एक विवद्धमाधी देवी: ब्यर्लपुसा मित (२त) केसी' (ठा द---पव ४३७ इक)। या को [या] वैदोवन वसीना की एक सप-महियों एक इन्हासी (अ.४.१—पत्र २४)। लिद वृं ["नन्दिम्] एक धना का नाम (विपारः १)। दाम प्रदिशमी एक दुबकर पुष्पका नाम (सम १५)। देशा औ क्षे [च्या] धनुरावा नगत (रात)। स वि [ वन् ] नित्रवाचा (उत्त ३ १८)। सेण 💲 सेन] एक पुरोद्दिव-पून (मुपा ጻ ነ<sup>ታ</sup>ገ

सिच केंद्रों सेच - मात्र (इस्त) की ६१ मासू १४१)।

मिचल र दि ] कन्दर्ग काम (दे ६, १२६ बुर १३ ११ व)। मिश्चि 🕸 मति] १ मान परिमासः । २

**सामेशस**ढ 'वन्धानम्भावासं मितीए यह ए भीम**लं दु**ई।

असम्बन्धवारातं वितीद् तहेन प्रकारती (प्रमुख्य १७)।

मिचिया भी [सृचिका] मिट्टी मट्टी (मिन १४३) । बद को ["बती] पराएँ देश की प्राचीन राजवानी (विचार ४८)।

मिचिळा यक [मित्रीय्] मित्र को बह्ना। वहः सिचिज्ञमाम (उत्त ११ ७)। मिचिय न [मैद्रेय] १ गोन-विरोप को बरम

मोन की एक शाका है। व पूंची कर योज में क्लम (ठा ७---पत्र ३६ )।

मिही व [ मिक्स ] क्रायद, धारक में (का

सीज्ञ व [व] धमकल वसी सवस (दे ६

बीय र्डु [सान] १ वस्त्र सक्ती (राम

बढडा बीच ११६। गुर स ४३) १३ ४६)।

२ व्योतिकश्रातिक साति-विशेष (तुर १ ४१

रक्ता व रशकति १४०)।

विचार १ दा संबोध १४) ।

244) I

(धृषि)।

(वरिष) १

विसम्बद्ध (प्रत्य) केवो सीस सीसा**डि**ज

मिसिमिस के मिसमिस कड़- गिप्ति

विर्मात, विसिविधिति मिसिविधियाच

मिसिसिसीबमाण मिसिवसँग मिसि

मिसेमाय (पीत क्या वि ४४० उकाः

रि ६६ था छाना १ १--पन ६४)।

मिस्राध ) वि स्थिती मिलीन विच्छान

सिक्साज 🕽 (लॉमा र रे~-पत्र ३७ क

्रीताम व [व] वर्माक (?) -वासविवास

सिख्यिक में [ न्सानि ] विष्यावका (का

४२६३ हे २ १ ६ दूमा: महा) ।

राष्ट्रपर्वतप्रविकारिकाराज्यं (बीह) ।

.v2 () :

मीत रेबो भिन्त = मित्र (धींक १७)। मीमंस सक [मीमांस्] विकार करना। कु. पा-मीमंसा प्रश्रं (ए ७३)। मीमंसा की मिमांसा वैभिनीय क्रांन, पूर्वमीमीसा (मुक्त ३ १। घर्मनि ३८)। मीमंसिय वि मीमांसित विवारित (का 2<4 2) 1 मीय की दिंगे की बें ब्रुक्ती बड़ा कुला (सूचनि ७६) । सीख प्रक [सीख़] भीचला बन्द होना सञ्ज्ञाना। मीसइ (हे ४ २३२ पड्)। मीछ देशों मिछ (वि ११)। मीडच्छीकार पू [मीडच्छीकार] १ वश्त देश-बिरोप 'मीलण्डीकारदेसोवरि विविधे कपरकाखरायां (हम्मीर ३१)। २ एक बक्त राजा (हम्मीर ६४) । मीस्रम् न [मीदम] संकोष (कुमा) । मीरूप देखो सिद्धान 'क्याच्यामस्प्रमीलस्थीनमा निस्मा (वि ११: एव) । मीक्किय देखो मिलिश = मिलिस (पॅप)। मीस सक [सिश्रय ] मिलाना निभए कागा। कर्मं, मीचिवद (पि ६४)। मीस वि[सिम्र] १ संपुत्त, मिना हुमा मिनिद(हिर ४६ २ १७ कुमा) कमा २ १६ १६, ४ १६) १७,२४० सम भीप इं २२)। २ न सम्रहार छीन क्लिं का धनवास (संबोध ५८) । मीसासिअ वि[सिम्र] संदुक्त मिला हुना (६२,१७ : कुमा) । मीसिय वि [मिभित] इसंद देवी (हुना क्ष्या धरिता । शुभ पन [ मोदम्] कुत करता। क्यह सुइक्कंव (से ७ ३७) । सुभ सक [सुप् ] कोइना । मुगद (हे ४ रश), पुर्वति (या ११६) । वह- गुर्जत, मुममाय (गा६४१। से व वश्वाप ४०४)। र्चंड- सुब्ता (मग)। मुल वि[सृत] मच हुका (६३ १२ ग १४९, बला १६०; प्राप्त ६७: प्रतम १०: १६८ चप ६४० छ)। "बहुज स ["बहुज] रुव-पान, ठठरी धरवी (दे २ २ )।

पाइअसरमहण्यवो मुझ वि [स्मृत] याव किया हुमा (सूम २ सुवर्वेद पू [सुचुक्त्य] १ नूप-विशेष (धन्त्रु ु७ ३ व शाचा)। ६६) । २ पुष्पकृत-विरोव (कप्पू) । मुर्जक वेको मिर्जक (प्राप्त =)। मुठंद पू [मुक्कर] विष्णु नारायण (नाट-→ मुक्तंग देखो मिर्जन (पर्य सम्मत्त २१८)। रैत १२६)। मुर्कोगी की दि] कीटिका पीटी (दे ६ \$\$X) I मुक्रमा दूँ किं] 'धारमा बाह्य धीर धाम्यशार पूर्वां से बना ह्या है' ऐसा विष्या ज्ञान (ठा ७ टी--पत्र ६८६) । मुभण न [मोचन] कुञ्चाय कोइना(सम्पत्त **७**वा विशे ३३१६; उप १२ ) । मुख्य (धप) देवो मुझ = मृत (पिप)। मुआ भी [ मृन् ] विट्टी (पंक्ति ४) । मुआ की [मुद्द] हुएँ कूसी बालका 'सुरवरशायोगि सुर्व यादिन स्वच्याद तस्त सा प्रत' (रैमा)। मुआप्रणी भी दि ] पुरुषी होनिन चाएहासिन (4 4 242) 1 सुभाविम वि [मोचित्त] भूतवादा हुया (ध 448) I सुद्दवि [सोचिम्] क्षेक्नेवावा (विवे १४ २)। मुद्दम वि [मुदिव] १ इपिव मोद्दमास (तुर ७ १२३ प्राप्त १ १८ व्याचीय) । २ तू चवरा का एक सुभळ (पराम १६ ३२)। सुइम वि 📵 योनिन्युक निर्वोप गाताबासा 'मुहमी की होई कोशिमुद्धी' (बीप-दी)। सुदर्भगा देवो सुर्भगीः 'वदस्यिते समा सुदर्भनाई नवरि छहू" (पिड १११)। मुद्रंग वेको मिर्मग (हे १ ४६ १३७- जाप ध्याः कण पुता ११२) पाछ)। "पुक्शार पुंत [पुष्कर] मुदंव का उत्तरवाला गाव (भन)। गुर्शनकिया है भी हिं] कीटिका वीटी (का रेश्य दी संबादक विशे मुद्दगा

१२ व विष १११ हो)।

सुद्रव्यंत वैको सुक्त = मोरव् ।

मुद वेको सिव (काव)।

(कुमा) ।

मुद्रिय वि [सुदक्षिमः] मूर्वंग वजानेवाला

शुद्दं देवी सर्वद = मृतेन्द्र (प्राष्ट्र =) ।

भुद्रर वि [मोक्त्] सोक्नेवाना (सरा) ।

मुतर वेको सहर जमूहर (पक्)। मुठल वैको भठछ = पुरुत (यह भुदा ६४)। र्भुगायण न [मृङ्गायण]योजनिकोप विरवसा नसम का बीप (एक)। शुंच वेको सुल न पूच्। धुंचर, धुंचर ( यह कुना)। मुका सुवी (मत ७६): सर्वि मोज्यां, गीम्बाहि सुविहिष (हे १ १७१ पि १२६)। कर्म पुण्यका पुण्य, पुणाति (थन्दाहे ४ २ ६ महासन)। सदि जुनिविहिति (सम) । वक्तः मुन्ततः (कुमा) । क्वक सुर्वेष (पि १४२) । संक्रमोर्चु, सो जुआण, मोचूप (हुमा पर्, प्रान्त १४) केंक मोर्च (कुमा) सुंचलहिं (घर) (कुमा)। इ. मोचम्प, ग्रुचम्प (हे ४ २१२ गा ६७२ सुपा ४८६)। श्रुंक पूंच [सुक्ष] मूँक कुछ-विशेष विश्वश्री रत्सी बनाई बाठी है (सूच २ ११६) वच्छ २ ३६, ज्य ६४८ टो)। 'नेहस्स की [मैसका] मूँच हा करियुत्र (ग्राया १) १६-पत्र २१६)। संबद्द व [मीआकिम्] १ नोन-विरोध। २ पुँची योज में उत्पन्त (ठा ७—-पन ३१ )। र्शुजकार पूँ [मुक्तकार] मूँव की एसी बनानेवाचा रिक्पी (बखु १४१)। र्मुजावण र् मीआयर्नी ऋवि-विशेष (ह ११६ मध्य)। अंखि पुं [मीडिस्] स्मर ध्वो (प्राष्ट्र १)। सुट वि [वे] हीन राधिरवासा व्ये बंसवेरमट्टा पाए पाइति बंगवारीएा । वे इति द्वंट्युटा बोहीब सुरक्षरा हैति (संबोध (४)। र्शुंड सक [सुण्डम्] १ मूंबना नान क्ष्याकृता। ए क्षेत्रा हेना संस्थात हेना। पुंबद (सवि) पुंचेद (तूम २ २ ६३)। मयो, बढ़, शुंडामेंत (पंचा १ ४ व टी)। हेक शुंदावेचे, शुंदापित्तप, शुंदावत्तप (पैचा१ ४चाठा २,१ इछ)।

१ ६) । १ वेबी मीग्गर (मात्रा बाद १६)

कम्प)।

मर्थि पुण्यिमिति (धीप) । 🕊 मुजिसमञ्ज

(म्हा ६ ६—मन १४६: जन)।

मुख्यिक्ष वि हिं। क्यन-पुद्ध विद्या हुया,

धनिवन्तित (देर् १३६८) ।

का तन्त्र-पूत्र (पाय- खावा १ १६

धीप)।४ वीरण का मूस । १ पण कमसः

मजाकि ५ [मुणालिन्] १ वच-धपुष्ट । २

मुणाविजा र की [स्याविजा, "स्मे] १

मणि पूर्मिनि । एव हेप-र्राहर मनुष्य,

गढक)। २ मणस्य ऋषि 'अवस्थितं स

मुखिका (पूपा ४८६)। १ पारा की

शंक्या। ४ व्यन्द-विशेष (पिंग)। व्यंत् पू

["जम्मू"] १ एक प्रस्तिक **वे**न शाचार्य शीर

ग्रंबकार, को वासी बेबसूरि के पुर वे (बन्नो

२३)। २ एक धन-पूच (महा)। लाइ 🐧

२६)। पुराव पु पुक्क वेह मूर्ति

(बुग र भ म्रु ४१)। सम द्र ["सम्रो

मृति-शासक (सुपा १६)। बद्ध पू िपति

बद्वीसभै (मुपा १०१ २ ६)। बर्दू

विर नेष्ठ मूर्ति (तूर ४ १६ पुरा

२४४)। विवयंत पू विश्वयम्यी मृहि-

िनाम ] बाकुमों का नायक (धुपा १६

बाखानी' (मुपा ४१३)।

मणास्थिया ।

सुद्धिम पूंची वि] यर्व प्राईकार, पुजराती में 'मोटाई': 'कममुद्रियंबीकारो' (इम्मीर ३१)। रेलो मोट्टिम । सुद्र वि [सुष्ट, सुवित] विश्वकी चौधे हुई हो बह (जिस्प्रेड सुर २ ११२) सुपा ६६१ः महा) । मुद्धि पूंची [मुद्धि] पूटी पूठी पूँचा प्रका पृद्विणां मद्रीयं (वि३७१ १०१। पाया रंभा भरि)। सुभ्यत [ युद्ध] सुष्टि 🖥 की बादी बढ़ाई, मुकामुकी (बाबा)। पुत्वय न ['पुस्तक] १ चार चेव्रस सम्बा बुतानार पूरत्का २ चार धौरूत सम्बा बनुष्कोण पुस्तक (पब ८ )। सुद्रिय पूँ [सीप्टिक] १ प्रकार्य केल-विकेप । २ एक धनायें मनुष्य-वादि (परह १ १---पत्र १४)। १ मुद्री से कड़नेकाका मल्ल (पराह २, ६---पण १४६)। ४ वि मृष्टि-सम्बन्धी (कप्प)। मत्त्रवं मनुष्य वाति (इक)।

मुद्धित्र र्षु [मुप्टिक] १ मस्त-विशेष विस्की मक्रदेव ने मारा था (परहर ४ -- पत्र ७२ पिंड) । २ वलायें देश-विशेष । ३ एक सुद्रिकाकी [व] दिलका दिवकी (वे ध (485) I अबुढ देवो अंड (हुमा) । मुब्द वि [ मुख्य, सूड ] यूवां वेवकृष (शुम्मीर ५१)। मुण धक [इस मुख ] जलना। मुख्यः मूर्णल, मुस्थमो (ह ४ ७ दूमा)। कर्मे. मुखिण्यम् (हे ४ २६२) मुखिल्यामि (हास्य १९८) । बच्च गुर्जंश मुजित (महा परम ४व ६)। इबह सुविज्ञमाण (से २, १६)। सह मुणिय, मुणिर्ट मुणि-क्रण मुणेकर्ज (सीयः महा)। 🕊 मुणिअव्य मुणेअव्य (दुमा से ४ २४° मन ४२) कप्पालन श्री ३२)। सुणप न [काल सुजल] कान बानकारी

(इम रेम्फा संबोध परा वर्गीय १२%)

मुणमुज एक [मुजसुजायू] धन्यक शन

वदवकाराः वक्तः मुज्यमुर्णत

च्छा)।

मुणमुज्ति (महा) ।

प्रवातः बेह भूति (तृषः १ ६, २ )। सीहः दं [ "सिंग् ] येष्ठ मुनि (वि ४६६) । सुब्बय दूं [सूजर] १ वर्तमान काल में सरान मारतवर्ष के बीसर शीर्मकर (सम ४६) । २ जाध्यवर्षके एक गावी **धीर्वकर** (सम ११३)। मुणि पू कि मुनि क्रा-विशेष धवस्ति द्वान (दे ६ १३६) द्वाना) । मुक्तिम वि कात, मुक्ति जाना हवा (हे र, १६६) पाच प्रमात वाकि १६ पराह ૄર **જ**વ (૧૪૧ થી) ા मुणिक वि वि मुणिक विश्वन्तरीय भूता-निष्टु पापल (सम ११—पन ६६१)।

मनुष्यपन । २ पुरुपार्य (हे ४ ३३०) । मूर्चित (क्रुप्र ६२)। **जी २)। छिय पूजी [ै। छय] मुक्त को गॉ** का स्वान, ईंगळाग्यास बामक पुनिनी (इक)। क्यै या (ठा = —पत्र ४४ । सम २२)। भुत्त वि [मृर्व] १ मृतिकामा स्थवामाः बाक्सरनामा (वैध्य ६१) । २ कठिन । ३ सूड । ४ मुच्छा-पुक्त (हे २ ३) । ५ ई करवास एक दिन का उपवास (संबोध **१८)। ६ एक प्राप्त का शाम (कम्म)** । मुर्च देवी मुचा (बीप' पि रेक देख १४)। शुचन्द्र देवो सु 🖘 । अ्चा 🗣 [अुक्त] मोडी भौकित (हुमा) । बास न [ बाख] मुका-स्पृष्ट मोदियाँ की मत्का (मीप पि ६७)। दाम श [ दासन् ] मोतियों की बाह्य (ठा ४ १)। विक, वकी भी [विक की] १ मोसी की माला भोती का हार (सम ४४) पाय) । २ दप-विशेष (धंत ११) । १ ग्रीप-विदेय । ४ समुत्र-विदेय (राज) । सुन्ति की ['शुक्ति] र मोडी की शीप । र मुक्त-विरोध (बदम २४ वंबा ३ २१)। इस म [फस्र] मोती (हे १ २३६४ हुमा प्रासू २)। इक्टिंक वि [फदामत्] मोतीनावा (क्या) १ मुचिकी [मूर्चि] १ व्य माकारः भूति विमुत्तेमु' (शिक्ष १६ विसे ११व२)। ए प्रदिश्यम, प्रतिपूर्णि प्रतिमार चारपुरपूर्णि-

मुजास्त्र कुंत [भूगाक्ष] १ पद्मकृत के उत्पर मुर्णिव वे [मुनीम्द्र] बॅंड मूनि (हे १ व४) मग)। २ किस प्रधानाता। ३ पद्य धादिके नाम मुणिर वि ज्ञित् मुणिद् वाननेवासा (एए)। मुणीरा र्रं [मुनोश] मूनि-नायक (बप्र १४१ 'मुलासो' 'मुलासं' (प्राप्तः 🕻 १ १६१)। मुजीसर र्षु [मुन्तियर] रूपर देवो (बुपा पद्म-युद्ध प्रदेश कमसवाता स्वातः 'मुखासी मुजीसिम (घर) पून [मनुष्यत्व] १ मुणाञ्जी े विश्व-शन्तु, कमश्र-नाल का सूरा मुक्त एक [ मूत्रय्] धूतना पेराव करना। (मार---रामा २६)। २ विश्व का संकूर (पद्ध)। १ कमित्ती (राम)। वैको मुख न [मृत्र] प्रसन्छ पेरान (सुपा ६११)। मुक्त देवो मुझ = मुक्त (सम १३ से २ 📭 संत साबु ऋपि वति (बाचा पाय कूमा

चठर (सबीच २)। ३ शरीय, येह (मूर १

कृ। पाम) । ४ काळिम्य कळिलस् (क्रिके

📭 । प्राप्त)। संव वि सित् ] पूर्त्वनाता

मुत्तं, बपी (धर्मीन ६) मुपा ६=१ व्यू १७)।

पास प्राप्त १११)। २ निर्मोत्रता, खंबीप

(मा ११)। १ द्रुक भीनों का स्वान

र्रपट्यान्यस प्रविको (ठा ब---पत्र ४४ )।

मुच्चि वि [मृत्रिन्] बहु-पूत्र रोवनानाः 'ठवरि

च पास प्रति च पृथ्यियं च रिकासिखं (धाचा)।

मुक्ति वि [मीकिया, मीकिक] गोवी गिरोने

सुचित्र न मिचिक् देखा मोठी सि ३

४८ इम ६ इमा सूपा २४-२४६३ बास

भुक्तोधी भी दि] १ पूर्वकार (तंदू ४१) ।

मुख नि [मुस्त] गोना नावरमोबा (यस्त्र) :

मुद्रग्ग देखो मुझमा (ठा ५—यह ६ २)।

सुदाकी [सुदा] इर्ष कुछी। तर वि

सदरा पू कि बाद-विकेष जल-जन्तु की

**भुर** एक [मुद्रय्] १ मोहर सम्बन्धाः २

बन्द करना । १ धवन करना । युद्देष्ट (बन्न

मुद्गा 🕻 👣 १ क्वान । २ सम्मान (१)

मुद्दग १ पुं [मुद्रिका] पेंद्रशे (७०१): व्यक्षो

सुद्य पर्। तुमे कि श्रह शहतिपुर्शी

[कर] इर्पनमक (मूच १ ६ १)।

एक कावि (भीव १ दी--वन १६)।

११ की)।

(S. RESI ASR) !

एको (पक्क्य ४३ ५४)।

२ वह स्रोटा गोठा भी क्यार नीचे संबोर्स सीर

था धूँ पने वाला (क्य प्र २१)।

१६ १७१)। भेदी मोरिका।

सम्ब में निरुद्ध हो (धन)।

की स्वा (एंबीव ४४ डूमा) ।

४ निस्धैनना (धाषा)।

मृत्ति औ [मृत्तिः] १ मोच निर्नातः (बावा

मुहिस १ की [मुद्रिका] गैहरी (पग्रह १

मुहिजा रे प्रचया ग्रीय संबू २१)। वंश

महिला भी मित्रीका र बका की बता

(पएक १--पत्र ३३)। २ हास्ता पत्र (ठा

४ रे—पत्र २३**९, वस १४** १६, पत

मुबूब देवो मुद्दग (पएछ १ - पत्र ४०)।

संग्र देशों संग्र (धीव' कप घोषवा रहा

कुमा)। स्रवि <sup>[\*</sup>म्य] १ मस्तक में इस्तस।

२ वस्तक-स्व चरोचर। १ वर्षस्वामीय रकार

धावि वर्षे (दूसा)। य द्विष्टे केन्द्र

बाम (पर्वह १ ६---पत्र १४)। स्मृता श

िशास्त्री मस्तव-गीवा चेन क्रियेप (शासा

<u>सद्भवि [स</u>ग्य] १ मूब्द, मो**य्-पूक** । २

सुद्धा की [सुरुधा] ध्रुष्या की नामिका का

एक नेप पान-विद्या-परित श्रीपूरित बीववा

मुमारं विषा १ ७---पत्र ४७)।

मुम्बर, मनौजर, मोक्कानक (है २ ७७ जाता

मुद्दी की दिने पुरुषत (दे ६ १६६) :

¥ 7 ¥ X) 1

१५६)।

वं विन्धा प्रश्चित्रस्य अन्य-विशेष (पीच

मुर्ख्य की [वि] बस्ती दुसरा (वे ६,११४)।

मचि-मस्मद

करता । १ व्यात करता । ६ बोलना । 🗢 वेंक्ना । पुरत्र (बाक्र ७३) । सुरक्षक (स्ट्रेट) चैलकाः सूर्यः (१४४ \$ 5 X- 4X ) 1 मुर 4 (मुर) रेल-क्लिम । रिष्ठ 4 [रिप्र]

बीक्रप्छ (ती ६) । "वेरिय वं ि वैरिम्] बड़ी धर्ष (हुमा) । तरि दूं [पेरि] बही धर्व (बन्ध ११४) ।

मुरळ ) र्षु[मुरक] भूरंप, बाच-विरोद (क्य मुख्य रेपाध-या २१६ मुना ११६ धंव थर्मीचे ११२ कुछ २००३ ग्रीमा कर छ २६६) । वैको सुरद ।

*मुरता पू.च.* [मुरस्र] एक वारतीय वीक्स केत केरब केरा 'नियर छ निद्वा तुए बुखा' (বা ६)। मुरव देवो सुरम (मीरा-का पू २३६)। २

धंव विशेष, गल-वरिएका (शीप) । भुरवि की [के सुर्यातन] यातर<del>हा विदेप</del> (प्रीप) ।

मुरिभ वि [स्टुटित] बीना ह्या (ड्रमा)। मुरिम वि [वे] १ दुव्यः द्व्य हुमा (वे ६ १९६) । २ मुका हुम्य मण्ड क्या हुमा (दुरा

RYW) t १११ टी)। १ मीवें बंध वें बराम 'रामसिक्ते

मू(१ मू)रिपक्समहें (विधे ११८७) । (इक १व २७४) । २ पार्शनासूरि के धामा का एक सवा (पिंड ४६४ ४६४)। है पुँची पुष्पव देश का निवासी मनुष्य (पर्याह र १--पन १४)। और "की (शक)।

₹₹**७)** 1

[वे] बुट केती की तर (दे **६** 

मुरिक पूँ [मीर्पे] १ प्रविद्य विभय-नंद्य (कर सुरंब ई [मुक्त्रब] १ मनामें केल-विकेत सुन्तिक की [क्] पकाव-निरोप (प्रस्त)। मुख्यक केवो मुक्तव = यूवी (हे २, ११२ क्रमाः गुना ६११ मान १७)। सुरुम्ब

भुद्धा (बप) वेको भुद्धा (कुमा) ।

सद्भाग केवी सुद्ध (बचा कमा वि ४ २)। मुख्य १ विकेट के स्मरका शिर्मक् कहा,

पुक्रप्रणी में जोमं (वे ६०१६६)। वैको योक्स । सुनुषस् वि [सुनुष्ठ] सुकाईलेकी पाह

बाखा (सम्बद्ध १४ )। शुस्तुइः }वि[सृक्ष्मुक] १ वयक्तः शूच ।

सम्भ्य हे सम्बद्धभाषी (तुथ १ १२

(क्रमा) ।

૧૮ ૧૦૧૧) દ पुरमुर तक [जूर्णम्] पुरमा पूर्व करना ।

मुम्सूरव (प्राष्ट्र ७१)।

सुरसुर दूं दि] करीय चोर्डल (वे ६, १४७)। मुन्तुर तूं कि सुसुर] १ करीवानित धोईका

की साम (देद १√कः भी ६) । २ तुपानित (पुर १ १८७)। १ **अस्य-व्यक्त**र समित् स्ता विविद्य सरिन-वस्तु (चेप ६४ टी) बी६ जीव १)।

सुब्सुही को [सुरसुरही] म्लूच्य की वस क्लाची में नवनी क्या-- व से १ वर्ष

समार्थनरे हो यह। २ वंद दिया हुआ (कामा १ २—पत्र वर्ष छ ६ १—पत्र

सदा भी [सुद्रा] १ नोहर, काप (मुना १२१ बमा १६६) । १ मीहरी (छक्त) । ६ व्यय-विन्याय-विशेष (वैस्व १४) s मुद्रिभावि [मुद्रित] १ विश्व वर नीहर मुख्य देशो मुस्यन्य ( पर )।

सुस्रासिक पू [बे] स्कुलिंग स्रानिकस (बे

६ १३६ पाछ)।

4 (42) भुन (स्त) देवो भु च । पुन्तर (माङ ११६) । ) दुन [सूक्य] कीमता 'को मुझो' मुद्धिल १ (बका ११२ और पास भूगा प्रयी ७७)। सुव (प्रप) देखी सुञ ⇔ मुच्। सुवद (प्रवि)। मुज्यद् देखो चळबद्द ≔ उद+ वह् । मुज्यद्द (\$ 7 \$ Ym) 1 मुस सक [ भुप ] कोरी करना। मुस्ह (है Y २६६ साथै ६२)। यनि मुस्सिस (वर्मीव ४) । वर्गमृश्चिमामी (विश्वदश्)। वक्र मुसंद (महा) : क्वक्र मुसिकांत मुसिकामाण (नुपा ४% हुत्र २४७)। पंत्र मुभिज्या (स.६६३) । मुसंदि देवो मुस्दि (सम १३७; परह १ १--पम = वत्त ३६. १ पस्या १— मन ३१)। मुसण म [मोफ्य] बोध (सार्व १ वर्मीव KE) i मुख्य पून [मुख्य ] १ मुख्य वा मूबर, एक मकार नी मोटी शक्ती जिससे नानस शांवि शस क्रू विते हैं (बीच क्या पर ) हे १११६)। रे मान-विशेष (सम १४) । घर पूँ ["धर] मतरेव (दुमा) । । वह पू विशुधन क्यरेब (पाप) । शुंसक वि वि] मास्त पुष्ट (यव्)। मुसस्ति पु [मुसस्तिम्] वनवेव (वे १ ११वः स्रु । भुसची वेको मासठी (ग्रीपमा १९१)। मुस्य न [दे] मन की बानुकता (वे ६ ₹ ₹ ¥ } ı मुखाय क्षे [सुपा] निष्या, बन्त कुठ, मस्तव मापछ (खरा थड् ३ है १ १३६ **नक)ः 'प्रवार्णता मुखे वर्ए' (सूम १ १** वै व बर)। बाद केबी बाय (तूस १ भ भ व)। बादि कि "बाविन्। मूठ बैलनेवाता (पद्युष्ट्याया २४१

द)। बाय पु<sup>®</sup>वादी भूठ बीसना सस्टब भाषसा (सम १ भवा कस)। <u>अ</u>साविश्व वि [सोचित] पुरवाया हुया चोचे कराया हुमा (भोव २६ टी)। भुसिय वि [मुचित] प्रस्पा हुमा (सुपा २२ )। असेडि पूर्वी हि । १ प्रहच्या-विशेष राम-बिरोप (धीप)। २ बनस्पति-बिरोप (उत्त 11 11 सुबद्ध १६ १ )। भुसुमूर एक [ अ.आ ] मांमना, वोइना । मुमुपुरक् (हे ४ १ ६)। हेइ दिसं प मुसुम् ? सुम् ]रिश्वमधमत्वो (सम्पत्त १२३)। <u>सुसुसूरण न [भक्षन] तोक्ना चए</u>कर (सम्मच १०७)। मुसुमूर्यविम वि [म्रांड्सर] गँगाया हुया (सम्मच १)। मुसुमृरिक वि [सग्न] भागा हुमा (पाम चुमा सन्त्र)। मुद्द केको मुक्तम् । "इय था पुरुषु मखेल" (बीबा १)। बंक्क सुद्धिम (पिन)। कनक्र मुक्तिकांव (सं ११३१)। सुद्देश[सुक्क] १ ग्रेंह भदन (पाया देश १९४० कुमा सासू १६) । २ मध गाय (सुकार)। १ स्थान (बच २१, १६ पुच २६,१६)। ४ हार, वरवामा । ६ वारव्य । । ६ माटक साहि का सम्बन्धिय । ७ मायह प्रादिका शब्द-विशेष । व सत्त्व प्रथम । **१ प्रचा**त भूक्य । १ शब्द सामान । ११ गान्छ । १२ नेथ-शास (शाप्त 🕻 १ १०७) । १९ प्रमेश (नियु ११) : १४ वे मुख-निशेष बहरू का पाच (पुज १ थ)। वस्ता र्णतय व ["ानन्तक] पुत्र-वित्रम (योषना १त्र≕ापकर)। तुरम न ितुर्यो गुंह है बगया काता नाथ (भग)। भावणिया श्री ["भावनिका] मुद्द चोने को सामग्री, शतका शाबि, 'ग्रह्मीविधियं चिट्नं प्रचल्हमेहि' (उप ६४व थे)। "पत्ती धी ["पत्री] पुक्र-वक्तिका (जनाधीय १६६, इ. १५)। पुलिया पारिया पोत्ता औ ["पातिका] युक्-विकार वीलते समय मुँह के धाने रखने ना <del>यक्त-बा</del>एड (शोबोज प्राप्तिया १ १४ पत्र

१२७)। १५५६ न [५५६] १ वस्तुस का क्रमः। २ विज्ञा-नजन का संस्थानः (सुअः १ वंहत त ["माण्डक] मुखामरण (भीप)। संगक्षिय, संगक्षेत्र वि मान-किही मूँह से पर-प्रशंसा करनेवाबा, जुरा महो (क्या भीप) सूच १ ७ २५)। मक्का मक्किया की ["मर्कटा "टिका] नला पक्रक कर बूँड की मीक्ना सुख कमिकरल (नुर १२ ६७ खावा १ ५--पत्र १४४)। श्रेष्ठ वि [यम्] मुह्दाना (कवि)। बह्न पूं ["पट] पूँह के धापे रखनेका बच्च (से २ २२, १३ ४१)। व≋ग न ["पतन] मुँह से विप्ता(दे६ ११६)। वञ्च पुंचियो प्रतसा सुरामद (निष्कृ ११) । यास पू विवास} भोवन के बनन्तर कामा जाता पान, चुर्ण भादि भूँड को सुमन्दी बनानेवासा पदार्थ (छवा ४२ बर = १)। शीरियमा और [ैंबीजिक्स] धुँह से विक्त स्टब्स करना मुँह से बाद का राज्य करना (निषु १) । सुद्द्य देखो सुद्द्रस्त । सिय म ["शाय] एक नगर (ती १४) । सुहत्थकी की [दे] मुँह से विरना (दे ६ ११६) । शुद्दर देवी सुद्दल = द्ववर (सुपा २२व)। भुहरिय नि [भुक्तरित] बाबाब बना हवा माचान करता (गुर १ ६४) । सुष्रोमराइ की [दे] जू भी (दे ६ १६६) पड (७३) क सुद्द्ध न [रे] पूज हुँ हू (दे६ १३४° पत्र )। मुद्दक्ष वि [मुक्तर] १ वाचाट, बरुवादी (बा प्रथय शुर व देवा सुरा ४) । २ द्री काक. कीधा। १ शंक (है १: २१४ प्राप्त)। रव पूं िरव तुपुत भोताहब (पाय)। मुल व की [मुघा] व्यवं निरवंक (पाध सर ३ धर्में धरेश्य था २० प्राम् भूताइ शारिति प्रत्याली (धंबीब ४६)। अर्थिषि वि<sup>\*</sup>जीविम्] निज्ञा पर निवाह क्रुनेशला (उत्त २६, २४)। मुद्दिश न [प्] पुष्य बिना पूर्व्य नुकत में करना (दे ६ १३४)। मुद्दिमा ध्यै (दे. मुश्यम) स्वर देवी (दे ६ ११४। द्वमा पाम) चि तन्त्रेवि ह दूमरस्य

(तुना १२४) पुत्र (१ छि) याद निष्णु सम्बर्ध (द्वार १२७) । ग्राहु व [ग्रुह्स] बार बार (शाबु १६, ग्रुहु ) है ४ ४४४ वि १२१) । ग्रुहु ) है ४ ४४४ वि १२१) वे बारिया बाल ग्रुहु का प्रमुख्या और ४२१) । ग्रुहु का ग्रुहु (पाप) । ग्रुहुक केसी ग्रुहु पुत्र (पाप) । ग्रुहुक केसी ग्रुहु पुत्र (हि २ १६४ व्यव

वस्त मुक्तिमाद देवन्य कामा (सिरि ४३७); गीवलसासलीय नहवीं कह हारेसि मुक्तिमार

मुझ के हुए कुछ (हे २ ११ जावा गढर पिया ११)। मुझ केरो हुए कुछ 'चल्कर कह ए पूर्यो देवेदी बारवर्ट्सर्य (बचा १४)। मझकु १ वि हिं सुको हुक, बाक-कार्यक मुख्यकु १ वे हुन (हे २ ११७ हुत ११ ११४)।

मुजाक्ष्यं ३ दि दि सुकायिती सुक करा मुजाक्कि ४ हुदा (छ १ ४१) पत्रक र १११)। मईराक्षिया ३ वेदो सुद्देगक्किया (कर १९४ मुद्देश्य १ दी योज १११)। मुद्देश्य १ दि दिती यण हुन्कः

'एनिहें गोध वही सहसा पुरस्को वहिंद नगीः बाहे विशेष नाध

सम्बन्धोबिर नेम्में (ग. ६८१ व) ।

मृक्ष १ (कि) येथ का दक के वे परिमाशः संक्ष १ प्रस्कृतक्षक्तमीयमाने वर्ण सर्वतः सम्बद्धि (कुम ४२७) 'यो ठीवृ लाविको स्रो याद वरुद्वकृत्य सबदेवि (वर्मीके १४)।

युव कि [मूब] मूर्व प्राप्त (प्रध्य कहा प्रक्रम १ ९८ महा; प्राप्त १९) । जहाब व [ संस्थिक] म ४-१९२० जाक-विदेश (प्राप्त)। "विस्ट्रस्स की ["विस्थिका] रोज-विदेश (पुरा १९)।

मूज न [मीन] कुणी (स ४०० प्रक्ष २ ४—पत्र १६१)। मूबग पुँ हिं मूचको नेपान देश में मधिक एक मकार ना एटा (पर्याप्त २ ६—पत्र १२०४):

पुक्त मकार वर पूछ (वराष्ट्र २ च—यण १२व)। सूर तक [अञ्ज] श्रीका छोड़्या। युद्ध (द्वे ४ १ ६)। युवा यूटीय (द्वुसा)। सूरा वि [सञ्जर] संक्लेवला वृद्धीवता (वराष्ट्र १ ४—यत ७२)।

मुख्न मिस्री १ वह (स्र १ वटः दूराः च ११२)। २ निवन्त्रन काएडा (परह १ भ-पण ४२)। १ वर्णी, भारत्य (पर्याः २,४)।४ बाच रास्य (बादानि १२ र---गवा १७६ १ ४)। १ **६**मीन पास निकट (धोव ६०४० सूर १ ८) । ६ नजन क्यिन (पुर १ २२६) । ७ इती वा पुरः स्वातम (चीप वंचा १६ २१)। ८ विष्यशी मूल (याचानि १२ १)। १ वरीकरश्र बार्किके निय विका जाता शोपनि समीध 'धर्मतमुझे वसीकरश (बानु १४)। १ याद्य प्रवय पश्चर । ११ प्रवस (संदोद ३ यानमं सूरा ३६४)। १२ प्रतान पूरी (इस के १४-११)। १६ बरल पर 1 १४ नुरत रूक् विहेप श्रोब । १६ दीना व्यदि से व्यक्तिय प्रम्म (चीत ११) । १६ प्रायक्ति विरोध (विशे १२४१) । १७ पुंच कव विक्रेप बृडी (ध्यु व या २)। द्विज्ञ रि असी मूल नामक धार्यकत से नास-बोग्म (क्रिते १२४६)। वृत्ता व्य विकाी इच्छ-पुत्र शास्त्र की एक वस्ती (शंत ११)। दिव र् दिव विकासि-शबक गामें। (नहा मुका प्रदेश । देवी की दिवी निरि फिरोप (मिसे ४५४ टी) । साकरार्य िभायकी मध्यर की ब्लीक प्रतिमाओं में मुक्य प्रतिमा (धैदोच ३) । प्याद्वि वि िंटरपाटिम् । मूल को क्वाइनेवाला (श्रीध २१)। विवा व [विका] मुख्य प्रतिना (श्रीव १)। धर्म प्रिमी प्रमास का भी<del>युवद वंशी</del>य एक प्रसिद्ध राजा (क्य

४) । वंत नि [ बन् ] मृत्रमधा (धीरा

काना १ १)। "छिरिकी ["भी] शास्त्र-

पुषार नी एक पत्नी (शंत १३) ।

मुख्या ) न [मूनक) १ म्ब्र्सन्तेण मूची मुद्ध्य ) मूखं (वरात ११वी १६)। २ बाल-विशेष (वर १४४१ कुमा) । मुख्यात्तिका को [मुख्यातिक] मूके—मूकी

मुख्याचिमा को [मुख्याचिम] मुहे---मूनी भी वाधी चोह (छ ६, २ २)। मुख्येखि की [वे मुख्येखि] वर के धामर का धावार-जून-स्वाम-निर्मेश (धावा २ २ १ १ डीट वन १११)। मुख्या की [मुख्या] मोगांव विशेष (बन

मुक्तिय व [मीजिङ] मुस्तरमः दुंशे (तत क १६. १९) : मुख्यित [मुख्, मीमिङ] प्रवल मुख्या 'मुख्यत्रावरे' (मिरि ४२९) । मुख्यत्र [मुख्यम] मुख्यत्रवासाः, दुंशी बाखा' केलिव व देवरणाद् वालपुरसी

वावां केलि व वेक्टार वाहायुर्ती पृथ्विते पिरुदेशी व्यवस्थात वाक्टायुद्दी (वहा)। सूर्व की मृद्धी व्यवस्थित (वहा) वाहि के कार्य में बलारी घोटार (वहा)। सूर्व की ग्रुट मूरा १ मृद्ध (वीक क्षे)। सूर्व की ग्रुट मूरा १ मृद्ध (वीक क्षे)। सूर्व की ग्रुट केला हुए । हुए हुए वाह्य पूर्व कुरा। सूर्व हिस्स हुए हुए हुए वाह्य वह कुरा।

१९७)। मूसक वि[वि] उत्तवित (रे ६, ११७)। मूसल देवो मुस्तत = मुल्ब (हे । ११६) बुद्या)।

म्सा वैका मुखा (है १ ११६)। मृशा की [मृपा] मृह बाहु एकरे- स्टाने का

न्ता (क्या कारा १ सुर १३, १४)। मुख्य की हिंदु बहु कार, सोटा बरवामा (वे ६,१४७)। मुख्यक महिंदु कर देखे (दे ६,१६७)। मुख्यक महिंदु कर देखे (दे ६,१६७)।

िंगि नानी, पिक्स (याना) । मं थ [में] १ मेप । १ मुन्दी (लप्त १४) छ १) । मेळ ५ [मेन] १ मनार्य केत-बिटेप (इन)।

२ एक फनार्य क्युप्प-वास्ति (पर्या १ १ — यव १४) । ६ पुंची चल्याम (कम्पद्य १७२) । वी मेई (समद्य १७२) । मेळ वि मियी १ जानने मौरय प्रमेव पदार्थ, बस्तु (उत्त १वः २३)। २ नापने मोग्य (बड़)। झ वि िहा पवार्थ-शासा (सरा १८, २३: मुख १८ २३) । मेश पून मिदस ] राधर-स्पित बातु-विशेष भनी (तेषु ६८ सामा १ १२--पन १७३ यउद्य)। में अरुद्धन [ते] मन्य सप्त (दे६ १६८)। मेशक पू [मेदार्य] मेदार्य योज में कराब (सूब २ ७ १)। सञ्चाद सिवाये र भगनान महाबीर का दसर्वा गरावर (सम ११)। २ एक कैन महर्षि (तव मुपा ४ १, विवे ४३)। मेवय वि शिषकी शका इच्छ-वर्छ (गउड 444) i मञर वि दि । धसहन अस्त्रिष्णु (वे व ११८)। मधस दे मिक्स पर्नत-विरोध । क्रमा की िकम्या निर्मेश नदी (पाप) । मेजबाह्य पुन [मेदपाटक] एक आस्तीय देत, नेवादः प्राप्त बाहुविसे एक्सीप मेश भावयं इस्मीरजीरेकि (इस्मीद २७)। मेइपि ) की मिविनी १ प्रविशे अच्छी मंद्रणी 🕽 (मुना ६२: क्रूमें प्रसाद १६)। २ न्मएकविन (भूपा १६) सम्मत्त १७२)। नेप्रह र्द्र [नाव] धवा (क्य द्र १८६ वृदा रेष)। पद्रपृष्टिवि दिस्ता। ९ नग्राम भी निप्राप्तवपरायोगि गोत्तमेर्द म नेक्सिएपर्सिन मुसाबेती (सुपा ६२)। स्वामित्र [स्वामित्र] राजा (बन ७२८ दी) । मेइणीसर पु [ मेइनीइंडर ] एवा (स्प ा (कि व्हिच मेंट पू [के] इस्तियक महाभव (के ६ रिष्क)। देशो मिठ। में ठी की [के] में दी, मेदी पड़रिया (के व १ व ८)। मेंद्र ईक्षी मिट्टी मेंद्रा मेश मेद, शहर (हा भार)। बी विश् रहत्। सह द्र [भूकः] १ एक भन्तर्शीप । २ सन्दर्शीय विदेप में च्हलेवासी मनुस्थ-सावि (ठा ४

र---पन २१६ इक)। विसाणा की

पाइअसद्दमहण्णत्रो िवेपाणा विमस्यति-विशेष मेहासिगी (ठा४ १--- पत्र १०१)। वेसो सिंह । मेलका देशो मेहस्य (चन)। मेळान मियी मान, तीस बाट बटकरा विससे मापा भाग वह (प्रश् १६४)। मेघ वेको मेह (कुमा मुपा २१)। मास्त्रियी की "मास्त्रिनी अन्यन वन के क्रियार पर राष्ट्रोगाणी एक विषठ्गारी वेची (स्र य---पर ४३७)। यह की ["वती] यह बिल्कुमारी देवी (हा ८—एन ४३७)। वाइज १ विग्रहन । एक नियादर चन-क्रुभार (पत्म १८ ६६) । मेचेक्स भी [मेचक्स] एक रिल्हुमारी भी (हा च--पद ४३७)। मेनक रेवो मिक्क = म्लेक्ब (धीव २४० धीक प्रव ७२= क्षा स्था २६७)। मेका देवो भाग = नेव (पर : स्त्राय १ य---यम १६२ स्या१≖)। मेक्फ़ वेको मिक्फ़ (नहा ४ ११) ४ सेंट देखों सिट। प्रयो नेटाच (पिन)। मेर्डम पू चि ] मृगन्तम्यु (६ ६ १३१)। मेक्टबर् [रे] नजबा एका, प्रवराती में भेडो': 'वस्म य समग्रहाली संचारितकड्रमेड-यस्युवरि' (गुपा १११)। मेक्स क्लो मेंस (क्प प्र १२४)। मेड 4 दि । पश्चिम-सहाय, पश्चिम, को सम्ब क्रांचासा (वे ६ १३४) । मेक्षक पुरिही क्शानिशेष करह का बोटा बंबा (पराह १ १--- पण ध)। मेडि प् मिथि प्राचनकातः स्थे के बीच का काह, नहीं पत्रु को बॉन कर मान्य-मर्दन किया बाता है। हि १ २१% वच्छा १ क शामा १ १---पत्र ११)। २ धानार. स्तरकः 'धयस्य विश्व ए क्यूबस्य केरी पमार्थ बाहारे वासंबर्ध अस्त्रू मेदीमूर् (बना) 'मृत्तश्वविक सम्बर्धमुत्तो नम्बस्य विक्रियो में (या १३ हुए २६१३ संबोध १४)। "मूझ वि ["मृत] १ मावार-शास बाबार-भूत (बंग)। २ नाम-नृत सम्म ने रिगत (दूगा) ।

460 मेणभा ) की मिनका र हिमानम की पत्नी। मेणका है २ स्वेर्य की एक बेरमा (भीम ४२ नाट---विक ४० पिए)। मेच व [मात्र] १ साइस्य संपूर्णताः २ धनगरण 'नोधणुमेत्ते' (हे १ ८१)। मैचछ 📳 वेबी मिचल (बुर १२ ११२)। मेची की [मैत्री] मिक्ता बोर्स्टी (से १ ६४ वा २७२) स ७१६) सक्)। मेजुलिया देखो सेहुविजा (लपू १)। मेर (घप) वि[मदीय] मेरा (ब्राह्ट १२ ঘৰি) ৷ मेरग ई मिरक, मैरेयक] १ इटीय प्रक-बामुकेन राका (पत्रम १, ११६)। २ पून. मध-विशेष (क्या विपा १ २---पत्र २७)। ३ बनस्पति का स्वचा-रहित दुक्का 'रुक्कु-मिर्दर्व (शाका २१ = १)। मेरा की वि मिरा मर्गावा (देव पासा क्रिप १११: सन्मः ६७: सछ। हे १ बक्ध हुमा' सीप) । मेरा 🕏 [मेरा] १ इल-विदेव पुम्न की सतार्व (परह २ ६--पन १२६)। २ दरावें चन्नचीं की माता (सम १६२)। मेरु प्र मिरु १ वर्षत-विशेष (धनः प्राप्त १६४) । २ <del>छन्य वि</del>रोप (पिंग)। मेरु प्रमिरु] पर्वत कोई वी पहाड़ (बाबा & to 3)1 मेख क [मेखप्] १ मिमला। २ इक्ट्रा करना। केमाइ, मेलीवें (भावे पि ४८६)। थंड- मेकिया माक्ष्य (पि ४०६ महा)। सेक प्रसिक्ष देश मिलाप संगम संयोग निसन (सूचनि ११) के ६ १२ सार्थ १ ६) विद्वी पियमेलयो मए सुविशो' (कुम ११ )। मेलप न [सेस्न] बनर देशो (प्रासु ३१)। मेलय पु [सेस्टरू] १ संबन्त स्योग (ब्रुगा) । २ मेला अल-समूह का एकतित होना (के क वश मि वही। में स्वयं सक [संस्वयं , सिमय् ] निसाना मिया करता । मेसका (हे ४ २ )। पनि मैलवेडिय (पि १२२) । चंडः मेस्टवि (सप) ( Y Y ( ) 1 मेखाइयम्ब शीवे देखी ।

<b>464</b>	पाइअसङ्ग्रहणाडी	सुदु—मेभ
वस्स पुष्ट्माइ सेनच बार्या (विदि ४३७)-	मूण न [मौत] पुणी (स ४७७ परमू २	मुख्या ) म [मूखक] १ कम-किरोय मूसी मुख्या   मूख्ये (पएश १ वी १३)। १
जिल्ह्यास्त्रीपि कहमिक सर्व हारेसि सुक्रियाएँ	४—पत्र १९१)।	शास-विशेष (पर १६४३ हुमा) ।
(मुपा १२४)ः भुद्द (१ हि) याद विश्वद्व व्यवस्थी	म्यम ⊈ वि म्यक] मैवाइ देश में प्रसिक	मुख्यत्तिमा थै [मुस्यविद्या] मृते—मृत्री
(कुत्र २३७)।	एक प्रकार का तुरा (पर्याह २, ३पत्र	भी पत्रकी फॉन (स्थ ४, ४ २३)।
सुदुः । प्रदुस् ] बार बार (बालू २३,	<b>₹</b> ₹ <b>\$</b> ) ≀	मूखवेकि को हि मूखवेकि] नर के अपर
सुद्वी है ४ प्रकाति (वर्)।	सूर सक [सङ्ह] बॉक्स क्षेत्रका। सूरद	का बाबार-मूल-स्टान्ब-विदेश (बाबा र, २
सुरुच ) वृत्र [सुदुचे] दो पड़ी का काल सुदुच्चारा ) धड़वालीस मिनिट का समय (ठा	(१४१६)। मूका सूरीय (दुना)।	व र दी पव रहवे)।
रे ४ हैर ६ बीप घर कल मन्	मूरम वि [अक्रक] गांजीवामा पूरनेवामा	मृद्धिमा की [मृद्धिका] योगवि विशेष (का
१ १८ इक स्कल ६० बाबद सीव १२१)।	(परहर ४—पत्र ७२) ।	& 4) I
सुदुसुद्ध देखी सङ्गुसुद्ध (पाम्प) ।	मृक्टन [मृद्धा] १ चड (ठा २ यतक कुमाः ।	মৃভিয়ন [মীভিড়] মুঘৰন খুৰা (কচ,≫
सुदुब वैको सुद्छ – युक्र (पास) ।	ण २३२)।२ निवन्त्रमं दारशं(पर्याहर	रेट २१) र
मुद्रुष्ठ केयो मुद्र = प्रुव (हे २, १९४ वह	<ul> <li>च्या ४२) । ३ वार्ष, वाराम (वर्षाः</li> </ul>	মুভিছে দি [মুভ, মীদিড়] সৰল সুকচ
मनि)।	२ ४)।४ मण्य कारस्य (शाचानि १ २	मि <del>लिक्र</del> वाक्ष्यों (सिरि ४२६)।
मृक्ष केवो सुक्त व्यक्त (हे २, ११, धाला	रगाना १७३ १७४)। इ.समीप पास	मृक्षिक वि [ मृज्यत् ] मृतकाराकाः, पुँची
नडड निपार १)।	निकट (योव रेम्प्र-सुरह १) । ६ लक्षक-	नाला 'सरिव य वेंबबताय, नामायुरतीः
मृभ को सुभ न दुक 'बनाइ का स स स्रो	नितेष (पुर. १. २२३)। ७ क्वॉ का प्रया	नृत्तिको नियसेसी भवतनाना सम्बद्धपुरी
देवेदो यामवाहिकाँ (वज्य १४) ।	स्वापन (सीप पंचा १६ २१) । च पिव्यकी	(महा) ।
समस् १ वि [के सुक] दुध नाज-शक्ति	बूस (समापि १ २ १)। १ वसीकरहा	सूब्ये की [सूब्ये] भोपवि-विशेष करीकरण
मूमक े वे होने (दे र रेश्का पुर ११	स्रादि के लिए किया भारता गोवकि-सर्योग	वादि के कार्न में बपरी घोयनि (सहा)।
(XX) I	सर्गतपूर्ण वसीच्यर्गा (प्रास् १४) । १	सूस वैची सुख = बुप्। मूबद (वैक्रि वैद्)।
मुभक्करभ ) वि [दे मुकाभिक] तुक बता सुभक्किम ) हुमा (वे १, ४१ यवक	सामा अवस पहचा। ११ पुरूप (संबोध वे सामास सुपा वेट४)। १२ मूलवस पूर्वी	मुखेग ) प्रस्मियक, मृथिक] मृशा पृहा मृखेम ) (ज्या देद रेट हे र बड
नि १९१)।	(क्स क १४-११)। १६ वरण पर । १४	पद् कूमा)।
मार्गिक्या } वैको सुर्गिष्ठिया (व्य १६४)	सूच्छ पन्द विशेष स्रोस । १९ टीका साथि	मूसिरिवि [वे] यान धौना हुमा (वे ६,
मूर्यमा े या योच ११)।	से म्यानीय धन्त्र (र्रोति २१) । १६ प्रायन्तिय-	(44) 1
मृद्धः } वि [मृत] नप हुआ मृपक्षित्र	विशेष (विशे १२४१) । १७ पुन. कन्द	मूखक नि [बे] काबित (हे ६, १३७)।
	विचीय पूर्वी (बहु व बा २ )। श्रीका	मूचस वेची मुख्य = मुख्य (है १ ११३)
'परित्र' वाचेद वयो तहना	मि [फिद्य] यून मानक प्राथमित से बारा-	कुमा) ।
दुर्द्धमी वर्द्धवनग्री।	भोगन (पिसे १२४६)। श्रुता और ["ब्या]	मूखा वेको सुसा (हे १ ११६)।
वाहे निर्म व शास	कृष्णा-पुत्र शास्त्र की एक वस्त्री (शस्त्र १६)।	मूर्रेश 🗱 [मूपा] मूख, बातु पाक्नी-पलालेका
तम्मनाहोत्तरं केर्यं	"ब्रेच पुं ["ब्रेच] व्यक्ति-नावक नामी (ग्रह्म	पान (कथ्य धारा १ । शुर १३ १८ )।
(श्र १६६ म)।	चुपा ४२१)। वेबी की विकी किप	म्सा को [व] वष्ट हाए, छोटा बरबाया हि
मुद्री पुँदि क्याका एक धेर्ण परिमालः	ि विशेष (विधे ४९४ टी) । नायस पू	4 540)1

मंद्र । देश्वी स्थाना देश देश तारणात. भंद्र । देशियो स्थाना देश देश तारणात. वार्यायहै (बुपा ४२७)ः 'दो हेहि ताहिनी बो बाई क्छपूडरूम सरकेहि (वर्गीक tr)i

मृद्ध वि[मृद्ध] भूषी मुख्य (ब्राव्यः वद्यः वद्यः रे २ वर्डमङ्कानुस्**र)। न**ङ्गन भिषिकी च छ-विशेष থ্যক্স-বিশ্বস (बारन)। पिसृद्या की [किसृचिता] र्कनियेष (तुरा ११) ।

िनायको मन्दिर भी भनेक प्रतिमासी में मुक्त प्रतिया (संगील ३) । प्यासिः नि िक्तपाटिम्] पूज को कवाइकेशला (वस्ति २१)। विविव न (विश्व न मुक्त प्रक्षिमा (धंबोब ६)। सम पू "राजा पुनसत का पीतुस्य-पंछीन एक प्रतिक राजा (कुछ

v)। यैदानि [ वन् ] जूननामा (सीसः

शामा १ १)। सिरि भी [भी] शाम-

दुनार नी एक शली (यंत ११)।

म्साम न [व] क्रार देवी (दे ६, १६७) : मृशिय केवो सूक्ष्य (मत्त्वा) । । । रिप्न िंगि भागार, विका (पाना)। संघ[से] १ वेघा १ मुक्ते (स्थल ११) ह्य १)। मेम 🐒 [मेष] १ मनावँ देश-विदेव (६७)।

२ एक बनाये कनुष्य-वाति (पर्वाह १ १ —

पन १४) । १ पूर्वी भारतात (समात

१७६) । वी मेई (समात १७२) ।

रेट २३ पुष्प १८ २३)।

बतद)।

(तूप २, ७ ४)।

मेक वि मिय र जाकने योग्य प्रमेश पदार्थ

बस्तु(एक १व: २६)। २ नापने योग्य

(वड) । इस वि िंद्यों पदार्थ-कारता (क्ल

मेल पूर्व [मेब्स ] शरीर-स्वित वागु-विशेष

पर्वी (तंद ३८) स्त्राया १ १२---पत्र १७३

में अञ्चल [वे] बाग्य दान्न (दे ६ १३८)।

मेजिल र् [मेशार्य] मेदार्यं योज में उत्पन्न

मअब्ब ई [मेवाबै] १ भगवान् महाबीर का रस्तिक्छचर (सम ११)। २ एक कैन महर्षि (उका सुपा ४ १ विके ४३)। मेळव वि [मेचक] काता क्ष्म्या-वर्ण (गडड 111) मंत्रर वि [दे] सस्त्रन, बस्त्रिय्णु (देव ₹**₹**=) 1 मञ्च र् [मेक्क] पर्वत-विशेष । कन्ना की [<sup>\*क्रम</sup>ा] नमंदा नदी (पाम) । मेश्रवादय पुन [मेदपाटक] एक मास्तीय देश मेनाइ 'खान बाहरियां समानीप मेश-बाब्यं इम्प्रीरवीर्धेई (इम्बीर २७)। मक्ष्मि १ को मिदिनी । पूजिनी बच्छी महणी 🕽 (दुवाँ १२) हुना प्राप्तु १२)। २ नार्वातिन (मुपा १६) सम्मक्त १७२)। <sup>\*</sup>ला**ड्** र् ['नास] एमा (इप पू १८६ सूपा १६)। पद्र ["पवि] १ छना। २ चारताव की विद्वपृत्रसम्बद्धमिन योक्तमेद <sup>म</sup>े मेहरिहार्शीव व हु मार्यमी' (सुपा ३२)। सामि दु [स्वामिम् ] छवा (इन ७२० दी) । मेइणीसर पुं[मेदनीश्वर] राजा (बन **७२**व दी) । मेंड पुंदि इस्तिपक महाशत (वे ६, ११व)। वेबी सिंठ। मेंटी की [के] मेंदी मेनी महरिया (के ११०)। में त रुंकी [सेंडू] मेंबा मेप चेड़ पाड़र (ठा भार)।की की (हे र १३८)। सह में [मुक्त] १एक मलागि । २ सलागि विदेश में प्रतेवाची मनुष्य-वादि (ठा ४ र--पन २२६ इक)। विसाणा सी

[ विपाणा ] बनस्पति-विशेष मैदाशियी (ठा ४ १---पत्र १व१)। देखो सिंड। मेसस्य रेवो मेहस्य (एम)। मेळान [मेय] मान तीम बाट बटकरा विससे मापा बाव वह (मणु ११४)। मेघ देशों मेह (जुमा सांखिणी भी ["सांबिनी] मन्दन वन के शिकार पर रहनेवासी एक विश्वपारी केही (ठाट—पर ४३७)। वर्द्र **की** [°वती]

एक विक्कुमारी देशी (ठा च--पत्र ४३७)। वाइण पू विद्यास एक विचायर राज कुमार (परम १८ ६१) । मेपेक्स की [मेपहुरा] एक विकृतारी की (हा य-पम ४६७)। मेच्या देवो मिच्या = स्वेच्या (ग्रीव २४-धीप *च*प ७२= दीः दुशा २५७)। मेक रेवी सम = नेव (वड् ३ छास १ ५---यत्र ११२ मा १०)। मेजम देखी मिजम (महा ४ ११: ४

मेट देखों सिट। प्रयो नेटाप (रिंग)। मेर्डम पूँ वि मान्वन्तु (१६१६)। सेहब ए दि निमा तथा प्रवस्ती से नेहो'। 'तस्य य सम्प्रहार्गं संचारितकहुमेह-बस्तवरि' (सूपा ३६१)। मेखड केबो मेंड (वर प्र. १९४) । शेष वं वि विशिष्ठ-सङ्ग्य, विश्वक् को सदस करनेशाचा (दे ६ १६॥) 1 मेशक पृथि अस्तिविषेप काह का स्रोटा अंद्रा (पएइ १ १—पत्र ≒)। मेडि पु [मेथि] प्रमुखन्यन-काश वाले के बीच

का कहा, वहाँ पशुको बांच कर वाल्य-परित

किया बाता है (है १ २१%) वच्छा १ थ ध्यम्प १ १—पत्र ११) । २ भाषार् स्तम्मः 'समस्त विथ ए प्रश्नवस्य मेदी प्रमाणं बाहारे दालंबलं जन्द मेद्येनूएं (धना), 'मुतारवर्गिक सनवासमुख्यो यनकास मेडियुको व (बा १) 🏗 २६१। संबोध १४) । भूज वि [भूव] १ शाबार-परस्त, साथार-बूट (भव)। २ नर्तिकपूट मध्य व रियद (बमा) ।

150 मेणआ ) भी [मेनक] १ हिमासय की पत्नी। मेणका रे स्वर्ग की एक बेरवा (बाम ४२) नाट--विक ४० पिन)।

मेच व [मात्र] १ साकस्यः संपूर्णना । २ सवबारण 'मोमरामेत' (ई १ व१)। मेल छ [दे] देवो मिल्त छ (पुर १२ १६२)। मेची 🛍 [मैत्री] मिक्ता बोर्स्टी (से १ ६० या २७२। स ७१६। छर)। मेमुणिया देवो सेहुणिआ (निषु १)। मेर (क्य) वि [मई।य] वैरा (प्राइ:११

मेरग ( मिरक, मेरेयक] १ वृतीय प्रश्त बामुसेन राजा (पत्रम १, ११६)।२ पुन, मच-विद्येष (क्वा विपा १ २---पव २७)। वे बसन्पति का स्वचा-पहित हुक्का 'उक्क-भैरेषं (बादा२ १ ८ १)। मेराकी [के मिरा] मर्मादा (के । ११३ पत्रस कुत्र ६११८ सनम ६७ सछ है १ वर्ष क्रवा भीष) । मेरा की [मेरा] १ इस्त-किरोप पुत्रक की समाई (एएह २ १—-पन १२६)। २ वस्त्रें पक्क्तां की मावा (सम ११२)। मेरु प्रसिक्त १ पर्वत-विशेष (स्वः प्रामू १३४) । २ झन्द विशेष (पिंग)। मेरु द्व [मेरु] पर्वत कोई मी पहाड़ (बाबा

16 9 9 मेखसङ [मेळय्] १ मिनाना । २ इस्ट्रा करुता। मेमाह, मेसंबि (मनिश्र पि ४८६)। कंड- मेक्सि, मास्य (पि ४०६: महा)। मेख दु [मेख] केल मिलाप संगम संगोन निसन (सूचनि ११। दे ६ ४२) सार्थ १ ६) 'विद्धी पित्रमेखना गए मुनिएगे' (कुम २१ )। मेखण व [मेसन] कपर देशों (प्रान् १४)। मेताय दु [मेसक] १ संबन्ध संयोग (कृमा) । २ वेता, वक्सपूर का एकनित होना (दे ण वदा हि यह)।

STATES OF 1

मेखन सक [ मेखन् क्रिक्ट र क्रिक्ट (क्रिक्ट)

सेहफिकिया की [सेलिकिया] एक वैन

सेहा की सिया | एक इंडावड़ी अनरेज की

मेहा की मिथा द्वीय यद्येषा प्रका (बन

१२थ हे १ रेश हास्य १२४)। बार वि

िंकरों १ श्रीव-वर्षक । २ ई अल्प-विशेष

मेहा के [मेघा] यक्पह-दल (लेरि १७४)।

सेशावच्य व [सेधावजै] एक विश्वावर-

मेहाबि थि मिथाबिश्री दुवियान, प्राप्त

(बाद, १३ क्याबा १ १ व्यापा; मन्य

बीताक्त १४२ दी। कुत्र १४ ) अमेनि

६=}ाकी मी(कट<del>-स्ट</del>्राइ)।

महाबई देवो सेघ-वई (इक) :

एक ब्रय-महिची (ठा ६, १-- १ १ १

मुक्तिशाचा (भग)।

इक्)।

(বিৰ) 1

क्यर (इक)

मेख्य-भो

निरविधा एकावी मेबार्येवि (क्य) १ वैष्ट मेखिया (का)। हुः मेखाइयब्द (बीवजा २२ ही)। मञ्जूब केवो सेस्टब । नेवाबद (यवि) । प्रेख्य वृत्र [मेक] १ मिनापं श्रोपय मिनन (बुपा ४६१) जिल्ले चित्र मेशाने सुमान-निरवास पश्चार (सद्वि १४३)।

**49**6

मेक्सबग वेबो सेक्स्य (धाल्पहि ११) । मेखक्ड (पर) वेडी मञ्जय "पञ्चनसम्बेना-वक्रत वृद्धिद्धि बस्बाह गृहु' (सिरि ७३) । मेद्राबय केर्रा मेद्राका (बुल १६१) वर्षि)। मेखाबिज नि [मेखिया] मिनाया हुना सन्द्रा मिनाइमा(स १ १४)। शक्ति विभिक्ति विकातमा (अ १ १ दी- चत्र ११६, व्हाट व्हा 'एवं स्कीकवंदी' धरीतवंदिक मेलियी संदी।

पानेद कुछपरिकासी कैवन्तरोबालसँगर्ड (बालु १३) । मेस्री क्ये दि । बंदरि अव-स्पृह् का एकतित होता, नेवा (वे ६, १३=) । सेबील रेबी सिक्टीन (परम २, ६)। 'धरखी-एक्क न्यां उपिनमध्यो खरिष्ट्रे पत एवं (वा 4421 9 2 W) 1 मेड देशों सिद्ध । फेलाई (हे ४ ११), फेल्डेनि (रप्र १६)। मह सेखेद (नहा)। बंध-

मेक्का मेक्केप्पिला (बर) हि ४ १६६) पि १००)। श्र मंद्रियक्य (कर १११)। मेक्स व [माचन] बोक्स वरिव्यय (बाह 1 R) 1 मेह्मचिय वि [माचित] क्षुत्राक कुमा (दुर स ६ शास्त्रा)।

मेन केकी एवं (पि १३६) । सेवाड } देवो संभवाडय (ता १६, सेव्ह सेवाड } वर्गा। मेख पूर्मिय है १ मेंद्रा, मेंद्र काइर (गुर १ १६)। २ चरिन्सियेन (विचार १ ६ बुर 2 22) 1

मेद्द मियी १ मध्य वद्यवर (बीप) । १ कारतार, तुर्वेशे कुल्बरकारिये हि है, ४६) । ३ क्लारान् सुमितिनाच का फिडा (ब्रम १५)। ४ एक कैन महर्षि (तश १४)। ५ ]

१३२)। ७ ध्रम्थ-निशेष (पिष)। ≼ एक वरिक-पुत्र (सुपा ६१७) । १ एक वैक्युनि (क्ष्म)। १ कैर-विशेष (च्रम)। ११ वृत्त्वक ग्रीवर्षि-निरोप जीनाः १२ एक शक्तसः। १३ एक विशेष (बाज है १ १८०)। १४ एक विचायर-नगर (इक् )। इसार प्र **"कु**मार देश के शिक का एक पूत्र (शाश १ १ घन)। बस्त्रण पू [विमान] समस वंश का एक सका एक बंकापरि (पत्रम ६, २६६)। व्याच्य पूर्व निताद विशव का व्यव कुर (वे १३ ६८)। प्रत न पुरि रैताम परंत के स्थिए थेती का एक नगर (पक्ष १२)। सुद् र्द्र [शिल] १ के किरोप (एक) । २ एक बल्ह्याँपः १ शस्त-**डॉक्फिरेंव का निवासी क्नूब्य (डा ४** २---वत्र २१६। इक)। स्व न [<sup>4</sup>रब] फिल्य-स्वतीका एक वैन दीवें (पडम ४७ ६१)। बाइल प्रे विश्वदेशी १ ध्याच-पंग का मानि पूरुप की बंदम का धाना का (पढार इ. १६१)। २ शक्तात का एक प्रश (पतम व ६४)। सीवर् पू [पैसिवर] विचायर-पंत का एक दावा (पत्य १, ४३)। 🖬 नप । मेद्द [मेद] १ देवन (बूब १ ४ २ ११)। २ रीय-विशेष प्रमेह (बा १ ) सुद्ध

पत्र ३७)। ६ एक देव-नियाम (देवेन्द्र

मेत्रंकर क्यो मेर्पकर (क्य) । मेक्ष्मिरि ग [वे] वस पानी (वे ६ १६६)। सेक्ष्ण व सिंह्न ] १ फल, टब्बना । १ प्रकारक पूर्व 'महानेक्टर्ड (धाचा १ ६ १ २) । ६ पुक्त-विव (राव) । मेहणि वि मिहमिम् भरनेवावा (प्राचा) । मेहर पुंचि वाम-प्रवर, वॉव का मुखिया (व ६ १२१) ब्रुट १६, १६ )।

2 (2)

E# 55) 1

मेहरि पूर्ण कि क्यानीर, पूर (वी ११)। सेव्रिना रेकी वि नानेनाची की (ब्रुपा मेहरी (१६४)। मेहस्य पू र. [मेलस्क] फेल-विशेष (पहन महि रेको मदि (दे १, ४२)। मेक् वि [मेक्किम्] प्रसम्बद्ध करनेनामा, 'महमेडियाँ (भाषा) । मैक्सि व [मेथिक] एक वैन मुनिकुक (**क**्रम) 1 मेड्डिइ 🕻 [मेथिड] प्रस्तात् पारर्गताम 🕏 र्वत का एक कैन मुनि (सप) । सङ्ख १व [मेजून] रहिनेचा, संबोध सेक्क्य वर्ग (सर्थ १ प्रदाह १४४ प्रथा) यौनः प्राप्तु १७३३ महा) । महत्त्रपर्य हिं] प्रमाना सम्बा (१६, 2xx) 1 सेड्डविव र् डि] नामा का बदका (श्रा ४)।

में इणिमाच्ये [वे] १ तावी भ्रायांकी व्यक्ति (१.६४)। २ मानाकी सदकी (\$ 5, \$ 84 4E X) 1 मेंहुस वेबी मेहुका दिशाविवयोहितके श्वास-परिनद्दे य निसिम्ते' (धोष ४०४) । मैरेख न [मैरिय] वय-निरोप (मास १४४)। मो थ-इत वर्गका तुवक सम्बद—१ यवचारत जिरुवय (तुर्धीत नटा मानक १२४)। २ वा**र-पूर्ण** (पड्या १ ए, **१**, वर्गतं ६४६) धानक १.)।

मोभ सक [मुक्] छोड़नाः व्याकता। मीमह (प्राकृ ७ रे११) । वह मोर्जव (t = 48)1 मोअ सक [मोचय्] कुइवाना ध्वाग कराना । मीमग्रह (शी) (नाट--मात्तवि ४१) । क्यक मोइव्यंत (वा ६७२) । मोल पूर्विश्व हुई कुछी (एवल १३) मद्राप्त्र धिवी। मोअ दि दि । समियतः। २ वै चिमैट धारिका बीजकोत (देव १४८)। ३ मून पैराल (पूच १: ४ २, १२ वित्र ४९० क्स पना ११)। पश्चिमा श्री [प्रविमा] प्रजनश्र-विचयक नियम-विद्येप (ठा ४ २---पत्र ६४ सीप बद १)। मोजह 🛚 [मोचकि] बुल-विरोप 'सन्बद-मीमध्यानुपवक्तपनासे करेंबे व' (पर्या र—पत्र ३१)। मोजन वि [मोप्पक्र] युक्त करनेवाला (सम रै पकि सुपा २३४)। मोमग र् [मोदक] बहु, मिटाल-विशेष (धंव ६) सुपा ४ ६) । देखी मीद्रा । मोभण न मोचन | नीचे देखी (छ ६७६) बढव) । मोजना की [मोचना] १ परिवाद (बादक १११)। र पुक्ति, क्टकाच (सूस १ १४ ta)। १ कुम्बाना मुक्त क्रयाना (ज्य X2 )1 मोअय देवो सोद्धा (चय: परम ११३, 🛍 मुग्र ४ श नाट-निक २१)। मोआ की मिला करती कुछ नेताका শাল (ঘৰ)। मोआर धक [ मोचय् ] पुरुषाता । गीवा वेमि मीमावेदि (गाट-राष्ट्र २१, मुख्य १११)। पवि मोधानइस्तति (पि १२६)। कर्म भीवाविज्यह (कुम २६१) । वह मोयार्थेत (तुपा १०१) । माभावज न [मोचन] धुन्कास कराना (Pert seus www) ; मोभाविञ } दि [मोचित] पुरुषमा हुमा मोइअ (पि १६९, नाट-पूज्य वहा पुर १ पुता Yeek नहार बुट २. देश ६ कल सुना देश्या सृति ।

सोइछ पु दि यस्य-विशेष (नाट)। मोंड रेडी मुख=मुख्य (हे १, ११६) २ २)। मोक पूँ मोको सर्थ-४ दुक साँप का केंद्रम। मोक्द एक दि निजना पुनराती में 'मीक्सक्" मराठी में 'भोकतरों'। मीकस्सद (भवि) । मोक्त देखो मुक्त ≃ मुक्त (पड्)। मोक्कणिजा ) भी दि है इच्छ कॉएका, कमन सोकामी का काला मध्य भाव (६६ {Y ) | मोक्ट देवी मोक्ट निवरिवर भएन तुर्म योक्कत्तद्द केए सिन्धिर्ग (सुरा ६१२) । मोक्स देवी मुक्क (सूपा ६० 444) I मोक्डिय विदि १ प्रेरित, येना हवा (भूपा ५२१)। २ विस्टू (नूपा १४)। मोक्स को मुक्स = गांव (धीप कुगा; है २ १७६३ छप २६४ टी- भक्त, बसु)। मोक्स रेसो मुक्स = पूर्व (६५ १११)। मोक्स न [वे] वनस्रति-विशेष (गूप २, २ ७)। मोक्झण न मोश्रण दिक्त अस्पारा (स ४१ व पुर २ १७)। मोग्गड पूँ [रे] व्यन्तर-विशेष (मूपा ४ व)। रेको सुगगढ । मोगगर है [दे] द्रुहण क्लिका और (दे ६ 1(385 मीग्गर १ [सुब्गर] मुक्य, मेल्से। १ क्सरम का देव (है १, ११६३२ ७७)। १ पुष्पकृत-किरीय भीवराका वास (वर्रा १---पत्र ११) । ४ वेको सुमार । पाणि पुं ["पाणि] एक वैन महर्षि (धंत १४)। मोग्गरिम वि [ वे ] संपूर्णित मुपूर्णित (रे ६ १३६ थै)। मोग्गस्ययम् ) व [मीड्गस्ययन स्या<sup>ण</sup>] मोगगद्वायण १ योज-विशेष (शका हा था सुरुष १९)। २ पूर्वी छत्त को उर्मे धपम्म (हा ७--पत्र १६ )। मोगगाइ देवी मुगगाइ । भीष्याहर (१) (बाला १४१)।

मोध देवी मोद्र अमेग 'मोबमकोखा' (पराष्ट्र १ १--पत्र ११)। सोच देवो सोअ = मोचन । संबद्ध सोचिक्र (मनि ४७)। सोच न दि ] धर्मनेवी एक प्रकार का बूटा (\$ \$ \$ \$ \$ E) मोच देशी मोज = (दे) (सूम १ ४ २ **१२)** 1 भोषग देवो मोभग = मोषक (बसु)। मोहाय बन्ह िस्स | औहा करता । मोहायह (EY (4=): मोहाइस न [रत] रवि-भीड़ा रत नेपुन मोहाइज न मोहायित बिटा-विशेष विक-क्या बादि में भावता से बस्मल बेहा (कुमा) । मोट्टिम न [बे] बनाल्यर (पि २३७)। रेको सहिस । मोड सक [मोटयू] १ मोइना देश करनाः २ स्रोमनाः मोदसि (तुर ७ ६) । बन मोर्डस, मोडिस, मोडर्यंस (मॉक थहा स १३७)। क्यूड मोडिज्यमाण (धा प्र १४) । रहा मोकेट (सुरा १३८)। मोब ई दिं बूट, तट (दे ६ ११७) । मोडय वि[मोटक] मोइनेवासा (पण्ड १ ४--पत्र ७२)। मोडण न [मोटन] मोइन मोइना (बरजा ₹c) t मोडणा की [मोटना] क्यर देखी (१ए४ १ ६—पत्र ५६) । मोडिज वि[मोटित] १ मन भौग्र हुआ (बा १४१ खामा १ १-- पत्र ११७) पस्द १ ६--पत्र १३)। १ ग्रामीरिय मोदा हुवा (विपार ६---पण ६॥ स १११) । मोड 🖞 [मोड] एक वरिएक-कुम (कुप्र २ )। मोडरम न [मोडरक] नगर-विशेष (दे ६ १ राधी ७)। मोण न [मीन] मुनिस्त वाली वा संबद क्रमी (बीप कुत ११७) ग्रहा)। बर प्रि [ चर] नीव बत्रवाचा बाखी का संयन

धंपय भेग्नीच (नृय १ १६ ६)।
सोयापता की हिं अस्य अनुति के जयव रिजा की सोर से निमा बाजा करक-मूर्वक मितन्त्रम् (यर ६६६ दी)। मोणि कि [मीनिम] चीनवाना (स्था चुण १४ वर्षक ११)। मोणि की ग्रुच = ग्रुच (वर्षसं ७१)। सीचक की ग्रुच = ग्रुच (वर्षसं ७१)।

सोसान्य केवो सुच। सोता केवो सुचा (वे ७ २१८ वेलि ४ प्रकृष्ट पर्ट)। सोति केवो सुचि = मुख्य (पर्वा १ १— प्रकृष्ट)। सोतिम केवो सुचित्र (वा ११ स्वय ६१ बीम दुसा १११ सहा पत्रक)। बास व

्षाम्] कर्मारोग (रिप)। मोतुआप मोतु | कोसुय च प्रुप्त। मोत्य रेपो सुर्थ (से १ व्हेंड ४ वि १९३३ अस्त)।

साना)।
सोद्द्रभ देशों सोमान = मोदक (क्या है)।
२ न स्कर-रिटेट (रिय)।
सोदम दिने वैशे मुस्म (दे ४)।
सोदम दिने विशे मुस्म (दे ४)।
सोदम दिने विशे मुस्म (दे ६ १४)।
सोदम दिने विशे मुस्म (दे ६ १४)।
सोदम दिन्म (दे १ पोट रिटेट मुद्द (दे दे १४)।
सोदम दिन्म दिन्म (दे १ पोट रिटेट मुद्द (दे दे १४)।
सोदम दिन्म (दे १ पोट रिटेट मा स्वाप्त (दुन १ ४४)।
सादम स्वी दिन्म (दिन्म )।
सादमा स्वी दिन्म स्वी दिन्म १ १ पालाम स्वी

महोत्तार (ता १)।
महोत्तार (ता १)।
महोत्तार प्रमुक्त स्वर्थ (हे ए. २१४)।
महोत्तार प्रमाण कर—कः
मुत्रीतिकन्दिए)।
महोत्तार (हिंगु किंग ध्यार का नोवक, काथ
हिरोर (या)।
महोत्ता (वा वा वे व ह १ ह १ ह १ हे हिन्दी वे
महोत्तार (याचा वे व ह १ ह १)।
महोत्तार (वाचा वे व ह १ ह १)।
महोत्तार (ह १ ह १ ह १)।

मोरिय ई [मीर्क] र एक समिय-वंदा र प्रेत केट में करना (दि १४)। युद्ध हूं मेरे केट में करना (दि १४)। युद्ध हूं प्रेत केट में करना (दि १४)। युद्ध हुं क्षान (दिन्द (युद्ध १८)। योग्य की स्थान (दिन (युद्ध १८)। एक्षान (युद्ध १८)। एक्षान (युद्ध १८)। योग्या हुं युद्ध (युद्ध १८)। योग्या हुं युद्ध (युद्ध १८)। योग्या कुं युद्ध (युद्ध १८)। योग्या कुं युद्ध (युद्ध १८)। योग्या क्षान (युद्ध १८)। योग्या कुं युद्ध १८)। योग्या कुं युद्ध (युद्ध १८)। योग्या वुद्ध (युद्ध १८)। योग्या वुद्ध युद्ध (युद्ध १८)। योग्या युद्ध १८) योग्या युद्ध (युद्ध १८) योग्या

मोझ देवो ग्रुल (हि १ ११४ वर्षा चय दू १ ४ काम र १—व्य ६ अवर)। मास दूँ [मोय] र वोरी । र वोरी का मामा "पाना वेयद सोसे प्रस्त सम्बद्ध (पुरूप २११। मास)। मोस पूर्व [मूच] चूठ, सरका व्यवस्था "वयक्षित तोचे वयद्यक्ते" क्षापि सीसे यस्कारें (हा ४ १ सीप बच्च)। मोसल वि [मोपण] वोरी करनेवाचा (हुम अग्र)। मोसल कि [से मुग्ली मीराकी)

क्क धादि की प्रतिचेचना करते समय सुसस

की तमु की वा भीचे बीत वादि का रखें करण प्रतिनेक्या वा एक दीव 'क्येक्स्या व गोवनी रावरा' (वाद १६ १६) धोच १६४ १६६) । मोहा केवो सुखा (क्या है १ १६६) । मोह कह मोहस्य दे रखा मा मा ने युग्य करणा । मोहस् (मिर्स) । वह मोहस्य माईस (व्याप १ १११ १६) । इन्हें की मोहिलका । मोह की मान्स्य (है १ १७१ दुना बुव ४१०) । मोह वि शिया है क्विक्न निरुद्ध है ।

कु जब साहाजाका । साह देवी मज्ज (है ? १०१ पूजा कुर ४१०)। मोह कि [बोप] ? कियन निरादेश (के ? ७ ) सा ४०१), 'मोहार नावकार वी पूज तीरह पत्रात्ती' (बिट्ट १०१) साल १)। मिर्फ 'मोदी' पारे वक्की' (बिट्ट ०१) । १ वज्जर, निराज गिल्का मोहे विद्यने समित्र वज्जर विराज गिल्का मोहे विद्यने

सोबार्यसोडा र पुरुषा सक्रमा सक्रम (बाका कुमा पएल १ १)। र मिपरीय ज्ञात (इसा २ १६)। ३ वित की व्यक्तता (कमा ६. ६)। ४ राग प्रेमा १ काम जैदाः निवानस अस्ता व्य कानवा पुर विद्वि' (प्राप्तुरव-पर्वा १ ४)। ६ मुक्की बेहोली (स्वप्रदेश संदर्ध)। ७ वर्ग विशेष मोइनीय कर्म (काम ४ ६ ३ ६१)। < **स्वय-विशेष (रिप**)। ओड्राज्य व [सोम्हन] १ प्राप्त करता । २ सन्त बाहि से वर करना (द्या ११६) । १ सुन्नी केलेटी (निवाह)। प्रतरीकरका क्षम क्रफ़ेशमा नमादि-वर्ग (सुपा १६६) । १ काब का एक बाख : ६ हैम मनुराग (कप्पू)। क मैचन, रहि किया (त ७६ ३ सावा र ) थीर १) । द वि न्यानून मंगलेशाबा (त ११७ अ४४)। ६ मोहक पुग्य करत-बाब्या मीइछी पर्छिपि (बर्मनि ६६) हुए क्ष वदा कर्पर २६)।

१। १८। वर्षे १ रहे।

ग्रीव्यक्तिक वि [मीव्यक्ति] १ पोट्रक्तिक ।

श्रीव्यक्तिक वि [मीव्यक्ति ] १ पोट्रक्तिक ।

श्रीव्यक्तिक मेर्यक्ति ग्रीव्यक्ति (ति १)।

ग्रीव्यक्तिक वि [मीव्यक्ति] एक व्यक्तिक (ति १)।

ग्रीव्यक्तिक वि [मीव्यक्ति] वाचाद्या वक्त्रात्त (त्यक्त्रात्तिक वि [मीव्यक्ति वाचाद्या वक्त्रात्ति (त्यक्त्रात्तिक वि [मीव्यक्ति क्रायक्त्रात्तिक व्यक्त्रात्तिक वि [मीव्यक्ति क्रायक्त्रात्तिक व्यक्तिक वि [मीव्यक्ति क्रायक्त्रात्तिक वि [मीव्यक्ति क्रायक्त्रात्तिक व्यक्तिक व्यक्ति क्रायक्ति क्रायक्तिक व्यक्तिक वि [मीव्यक्ति क्रायक्तिक क्रायक्ति क्रायक्तिक क्रायक्ति क्रायक्ति क्रायक्ति क्रायक्ति क्रायक्तिक क्रायक्ति क्रायक्ति क्रायक्तिक क्रा

(क्स पुन ११०) प्रोहिरि [मादिन] पुन करनेवला(प्र्यंव)। क्रोहिपी की [मादिनी] एक-क्षिप्रेर (स्था)। क्रोहिपी की [मोदिन] रेपुन्य क्षित्र हुमा (प्राप्त १ भा ११४)। १ न निपुत्त नेपुन पंतिनीका (छामा १। ६—पा १९६१)। मोद्विचित्र कि [मीद्विचित्र] क्योजिन-सम्बन्धा सारकार (मुन्न १)। स्मीदिक्ष के सारित क्षिकेट एक छाकुम- खन्द्रभित्रस्य पीप्रियम्भारिष्ट्रायकस्य सक्ष-नम्माकस्य (प्राप्त १ १)। सम्बद्ध (पित)।

> ॥ इस विरिपाद्धसद्भाद्णगपम्य समापदसर्थकमणी युक्तीवद्यो तर्रजो समझो ॥

> > ਹ

चित्र देखो ऋण = बन (बुर १ १२१)। याय एक [ब्रा] कानना । यायाह, बालाह य पूँ यि । तत्त्र-स्मानीय स्पन्नन वर्ध-विरोप थणहण (घप) रेको कमहण 'ती वि ख बालेड, बार्फीत बालामी बालियी (वि सन्तरम मनार (प्राप्तः प्राप्ता) । बेट मध्यस्पार गोपरीहोइ मणस्प (पि १४ ११० ज्या भग वर्गीद १७। वे १३ प्रास् यम[च] १ हेत्-सूचक सस्यय (कर्यर्थ R) : 1 (5 5 t=1): २ देखों च=च (ठा ३ १ वा बक्का देखी करूम - कर्यों (पत्रम ६६, २८)। याण वैको जाण = धान (एव २)। पदम ६, व४: १६, २ आ १२, बाजा विश्विध वि [वात्रिक] वाचा क्रोनांचा, रेमा, करना २ ६३: ४ ६) १० क्रेनेप्स याल वेशी काळ (परुप ६ २४३)। भागता करनेवाला 'समहत्वपति विद्यानक्तिपति रेरे बास २७)। बाब (बा) वैको आब = यावत (कुमा)। ष देवी ज (धारा)। (क्या शह १)। यायदह वि [यायद्वे] स्पेट विक्र की यदावि स [यदापि] धानुषका-मुक्क सम्बद्ध, व नि [ य] देनेवाला (सीपा राग जीव ६)। धाषस्यकता हो क्यता (बस १, २, २)। स्वीकार-बोक्क निरात (वेबा १४ ११)। बरमा देनी जैंडमा (सनि ७) । युक्त देवी सुक्त = युक्ता 'एवन सबूर्त बन्हा' यसीवहर्य वैची अण्गोपश्चिम (३३ ६४० **र्थेचस्क [अक्र्य] १** यसन करना। २ (भाग्य १६७ रथा)। पूना कला। संक चेकिय (ठा १ १---येव 🕽 (पै मा) देखो एस (सि ट 🔉 या विक्रो अस्त ∈ यम 'की घल्याको पर्याः पत्र १ ): येश्वा १६)। (कार १--- पत्र ७७)। ैर्यंत वि <u>यित्रों प्रयत्तरप्रोत क्योगी</u>ड 'य-पति' प्चित्र (गा) ) देशो चिट्ठ = स्वा। दक्ति-बर रेको कर = कर (परह) । (त्रय २, २ ९६)। विभिन्न (वै) े श्रीवे (शाकारी भाषा) (आह बक्र देशो तक ≈ तम (दश)। **पैर् केशे चंद्र (तुपा २२१)**। १ १)। वृष्टिति (पे) (प्राष्ट्र १२६)। या देशो आ ≂ या, 'चुरशारमा य सम्मदिद्री यक देवी चक्क 'विशान्त्रक' (पडम १,७१)। थ्येव (ती) देशो एव (हे ४ २०)। र्थं मंद्रि राज्यसम्पर्ध (विशे ४६१) कृमा वह देशो वह = त॰ (मारा) । ध्येक्य देवो येव (मि ११)। es s) 1

> ॥ इस सिरिपाइअसङ्ग्रहण्यवीन्य यशाणकृष्यक्रकणो अभीवक्रमे सांगी समस्ये ॥

धन्त्रज्ञाञ्चन्त्रसिद्धः मध्य-सबु बदारमाने सीन स्वरों वा समुख्य (शिव)। g, शर-पुरक धम्यय (है २ ११७ कुना)। : ध [दे] निवय-मूचक सम्यय (वसनि १ 222) cइ इमे [रति] १ नाम-नीड़ा, मुख्य मैक्क (के १ ३२) पूजा) । १ वासदेव की की (धूमा)। १ श्रीति प्रेन धनुस्तम (पूचा मुदा ६११) । ४ वर्ग-विरोध (कम्प २ १ )। ६ अगवान् पप्रथम की मुख्य शिप्या (पव | प्रे वृ युतासन्द समय इत्र का एक देशार्थि (इक) । अर. कर वि विस्ती १ रजि-जनक (सा १२६) । २ हु वर्गत रिटेप (परहर १ % ठा १ ) यहा) । कीस्त्र की [मिन्डा] राज-गेश (मत)। किछि ची [कि छि] बदी बर्च (राप्र २ १)। घर न ["ग्रह] मुक्त-मन्दिर, रिनाव-मृद (११ १९६ ए) । जाह, नाह द्र ["नाय] काबरेद (श्रुवा नुर ६ ६१) । यह पू [प्रमु] वही वर्ष (पूजा) । प्यमा स्मै [°प्रसा] विघरतातक इन्द्र की एक सक-महिपी (इक बार १-- वन १४)। "रिपय पू ["प्रिय] १ शामदेश (गुरा ७३) । १ रण इन्द्र । ३ रिचर देशों शो एक व्यक्ति (राव) । जिया ध्यै [जिया] बानव्यक्तरी के राह रिटेप की एक बस-महिनी (गाना २--- १३२)। सपत्र म [भवन] कामग्रेश-न्द्र (बदा) । "मैन वि [ मन् ] इर<del>ान-बनक</del> । २ <u>५</u> क्यादित सन्दर्ग (तेरु ४६) । संदिर व ["मन्दिर] रुक्त **न्द्र (राय) । रसम दू [ रसम] राज्येर** (बुस ४ १ ६ वर्षु) । संस दु[सन्ध] ह बुरच की प्राप्ति । कामदेव (मे हह )। बा १ [पान] नामरेर (च्या: गुरा २११) । र्शिंद की ["बृद्धि] रिपारिटेन (रार ० १४४) । हर्ग के [सन्दर्श] ८४ राम-नग्ध (२७ ७२ - टी) । शृह्य

पुरि वर्ष-स्थानीय व्यक्तन वर्ण-विशेष

(सिर १६६) रिन)। राज पू [गज]

wo R

न दिसमा नामरेन (नुमा) । सेणा की | [सेना] विभरेत की एक बग्र-महिन्री (इस्टाप्ट १—पन २ ४)। इस्त ["गृह्] रुपन-मृह् मुख्यमन्दिर (उर ६४४ क्षीमहा)। रह 1 [र्शिव] सुदै सुरव (ता १४० से १ १४३ वेट् कर्ण्य) । **रहम वि [रिविट]** बनागा हवा, निर्मित (बुर ४ २४४ बुमा धीयः कम्म) । रहम वि [रिचित ] शहस साहि भी पीठ-बिचि (बया १६४)। ख्ञाय प्रथ [ रचय ] वनराना । संद्र रहमापिश्र (धी ६)। रक्रोड़ हि 👣 विभन्तित (दे ७ ६) । खगेडी को बि जिन्दुन्छ। (१७१)। रहजीत देशो स्य = स्वन् । रह्मान्य न [वे] भयन, निवस्त (दे ७ १६) चड्)। रहरूतम न [दे रहिस्का] रहिन्देगोर मेचुन (ये + ११)। रहित्य रि [रजलक] रन हे दुख रजनला (Pr nen) i रक्ताहिया देनो राय-बाहिजाः श्वानिय रहगाविकातमधी (विदि १ ६)। र्ध्यसर श्रूं [रतीयर]वाववेर वन्तर्य (वृषा)। रक्याणिका भी [वि] येगनीकेय गामाः चुनती (विदेश ६६) । रडर थेता राष्ट्र = रीप्ट, 'रमर्जुरेड् बचीद रिएमो (वरि: ४२ भवि)। रप्रत्य वि [रीरव] मनेपट मोर । कास्र पू िश्रक्ष है जाता के जरर में पनार दिया भारत बमय-विदेश 'शवनामद्वि शियपुरुवद्वि वरिवड बूल शहरवद्यालहो बीवरिवर्ड (वरि)। रतमक रि (रजनक) स्थो-पुन, वृति-पुन (काश्र क---पर वे १)। रआंदेको स्थ = स्मन् (तिर ६ दीः कल्)। रंज्ञण व [रक्षम] १ रक्स (सिने १९६१) । रंक रि रिष्टु विरोध दीन (रिन) ।

रैकोड बर्क [दोळ्यू] १ भूतना। २ दिवना चवना, कांपना । रंबोलइ (ह ४ ४वा वना ६४)। रंख्येख्रिय वि [बोसिय] कम्पित (बत्र)। रंत्रोडिर वि [बोडिन्] फूननेवला (वर्गः क्ष्मा वाम) । र्शायक [ रक्ष् ] इवर-उवर पतना । सह-र्रगीत (कम्पापस्य १ 🐧 वरहा ६-नव ११)। रंग एक [रह्नयू] रेंपनाः कर्म रेंपिन्यद (संबोध १७)। वह, 'रायध्रि बरनवर वर नय-ग्रांत-गॅरिरं चरिव' (कुम्बा १०)। रंग कि [स्तक्त] रंग इस्त रंग कर कराया ह्रथा (श्तरि २, १७) । रंग व दि चेन, चना बाहु-विशेष कीता ( 4 t & 2, 74) 1 रंग प्र रिक्की १ धन्द, प्रेम (चिरि ४१४)। २ नाटचरप्रमा प्रैया-धूनि (पायः सुरा १ कृमा) । व युद्ध-नएश्य क्य-शृति (वर्गर्ड ७०१)। ४ संबाम सहाई (रिव)। ६ रख क्टों वाली (से २, २१)। ६ कर्टी, रॅक् (वरि) । ७ रॅवना एंक्ट, रंग पद्मा (परद)। ज रि [रि] मृतुहच-जनक वि <sup>६,</sup> ४२) । "पछि धौ "आपछि] रेंपोसी (बटप्पल दम ६२६ वा ७१४)। रंगम व [रङ्गत] १ चन, रंजा। २५ बीव कारमा (प्रद १ १-- पत्र ७७६)। र्थिए वि [र्यप्रिष्ठ] चलनेराला (तुरा १) । रंगिय वि [रङ्गपन् ] रंगाना (४८६ र्रंज तक [रक्षयु] १ रिव बनामा । २ चुटी करमा। रेनए रेने- (बन्ना १९६) है ४ ४६) । वर्षः रश्चित्रमः (महा) । वक् रंजन (वीर १)। तीक (जिळाल (ति १४६)। हा र्विवयम् (सल्बाह् ६) । र्रज्ञय वि [रफ्रक] रम्बर करतेशला (रंबा) ।

रे गुरी करता 'पर्यवत्तरंत्रते' (वत ६०६

महा हेका २७२)।

बण्बा ४४ कथु (स्प)।

'रावपु" (दे ७ ३)।

दी। स्वि १) । ६ द्वी सन्द-विशेष (विय) !

४ वि. बुरी करनेवाला, रामवलक (कृमा) ।

रंजण दृदि] र वज़ कुम्म (रे७ ३)।

२ भूएका पात्र-विशेष (दे ७ ३ पाघ)।

रंबविय ) वि [रिश्लित] एग-पूक्त विमा

-रिकाओ द्वारा (संखार्स का ४० वडक

रंडा की रिण्डा दिन विवया (वपश्व ३१३

रंडुमन दि] रुख रसी प्रवयती में

रंब एक [रूप, राषय्] रावना वकाना। 'रंबो राजमते' स्मृत' रंबद (प्राक्त 🗷 ) रचेक्कि (स २४१)। वहा रंघंत (खाया है ७—पन ११७) । संकृ रंभिकण (दुप २ १)। र्भन [राज] किस विवर (या ६४२) रंगा र्राच्या व [रम्बन राधन] राधना; वर्षन पाक (मा १४) पव ६८ सूचनि १२१ टी, मुपा१२।४१)। घर म ["गृह्र] श≇∻ वृह (ध्यक्त ६१)। र्रथम त [रम्भन] पान-पृष्ट, रक्षोदीवर (धाणा R \$ \$\forall 1 र्रप सक [तश्रु] विकास भवता करता। र्पद (हे ४ १६४ प्रसुट ६४, यह )। रंपण व [तक्षण] ततुन्वराष्ट्रः पतला करना (चुमा)। र्रफ देको रंप। एंड्स, एंड्स (हे ४ १६४) पद्)। र्रफण क्यो रंपण (कुमा) । रीम प्रक [ गम् ] बाना परि करना। रेवस (१४ १६२) रंजरि (द्वमा) । र्रम देखो रेफ । रंग्डर (बारवा १४६) । रंग सक [बा+रम्] बायम कथा। रंग्ड (पड़ )। रम इ दि प्रम्दोबन-कवर हिंदोले का क्का (रे ७, १)। रमा व्य [रन्मा] १ करती नेता का का *(मुगा नेदंश- ६ १३ पुत्र ११७३ गाम्)* । ने दैनोपना-विरोच एक सप्तारा (बुदा २३४)

चमग्र १)। ६ वैरोजन नामक बसीन्त्र की प्≉ अग्र-मिद्वी (ठा ४, १—पण ६ २। खाया २-पत्र २११)। ४ रावस की एक पत्नी (पडम ७४ व)। रसमाधक [शहु] चडला करना पातन करता । रक्षाइ (उन- महा) । भूका, रक्षीय (कुमा) । वह रक्संत (गा १८० धीप मा ६७) । कनकु- रक्कीलमाण (नाट---मानवी २॥) । इ. रक्त, रक्ताजिका रक्तिपटन, रक्कोयका (हे १ ए) बार्च है गडर मुपा२४)। रक्का प्रैन [राह्मस ] एकस (पाय क्रुम ११६ चुपा १६ सद्धि हटी संबोध ४४)। रक्का वि [रहा] १ एतक रखा करनेनाचा (छर प्र ३६० कम्प) । २ तूं एक कैन पूनि (क्य)। रक्त को रक्त ≃ रहा। रक्काश ) विशिष्ठको स्वयन्त्रशी(सह--रक्कारा । मालीव १६ रशाः क्रुप्त २१६। सार्थ ११)। रसकाण न [राधण] चता, पालन (बुर १३ १६७३ वटड प्रासृ २६)। रक्सला की रिक्रणा कार देखों (का नर ह ६६)। रक्काणिया की वि] एवी हुई की रखेतिक रवागी प्रवात (गुपा १०१)। रक्तवास वि दि रचनावा प्या करनेवासा (महा)। रमसास दूं [राप्तस] १ वेगों की एक वादि (पबह १ ४--पत्र ६०) । २ विद्याचर-धनुव्यी का एक वेश (पक्षम १, २१२)। ३ वेश-किरोध में प्रकास मनुष्यः एक विद्यावरवातिः रोशं विव स्वयद्धशं राजस्वानं कर्य सीर्थ (परम १, २१७) । ४ निशायर, क्यार (स १४, १७३ नाह--मुल्ब १६२) । ५ वहोत्तन भी तीसनी मुहर्स (सग ११: सुमा १ १६)। करी की पुरी] लंका भनरी (से १२, =४)। जमि की [निगित] की धर्व (के १२, ७८) । जाद वृं िमार्च] रावर्षी का राजा (वे 👟 १४)। त्यान भिक्की यक्र-विरोप ७१ ६३)। दीन पू ["द्वीप] शिह्ल

होप (पत्रम १, १२६) । नाह वेदो पाह (पत्रम १, १६)। बहुदूं ["पति] रामसी कामुखिया(पटम ४, १२३३ से ११ १)। ाहित पू भिश्चिप नहीं मर्थ (हे १४. यण £2) I रक्कासिंद 💃 [राक्षसेन्द्र] चलसीका चना (पडम १२ ४)। रक्लासी की [राभुसी] र राजध की की (बाट-गुम्ब २६८)। २ बिपि-विरोप (विसे ४६४ ही) । रक्सार्सेद वेको रक्सासिंद (छ १२ ७७)। रक्ताची[सहा] र स्त्रस्थ प्रक्रन (मा १३ शुपार ६ ११६)।२ एका मस्म 'सो चंदरी शक्तकम् विद्वन्यं (सत्त २४ पुपा 6X#) ( रक्तिका कि [रक्षित] १ प्राप्तित (पडा ना ३३३)। २ द्रंपक प्रसिद्ध वैत शहपि (कमा विसे १२वद)। रक्तिकामा वेको रक्तासी (रंगा १७)। रक्की की रिक्षी निवसन प्रस्ताव की मुक्य चल्ली (सम १६२३ पर द)। रक्कोबग वि [स्बोपग] प्राप्त में क्लर (राम ११३)। रगिछ [दे] केवा खगेड (पर्)। रमारेको रच≠रख (हे ८, १ 481 यक्)। रमाय त 👣 भूगुम्म-वस (१ ७, ६ पाम) पर्स्ट)। रपुस द्व [रपुप] इतिनंद का एक धना (पडम २२ ११)। रख सक [ दे राज् ] रावना, धातक श्लेमा, बनुराय करता । एवइ राज्यंति एअपेइ (ब्रुमा) वका ११२) । अमी, "रखे रक्षिकर सम्बा" (क्रम १६२) । यक्त. रखंत (स्रीत) । प्रजेत रज्वार्वेति (नव्य ११२)। रकण न [के रक्षन] २ मनुष्यः। १ नि धनुष्य करोवासा, राक्नेवासा (कृमा) । रविर वि [दे रिक्ति] धक्लेबार्ना (दुमा)। रच्या रेवी रक्ता (रंबा १६) । रच्या की [रम्या] मुक्ता (वा १११ थीप)

रता केवी स्व = स्वस् (कृमा)। रआक) पुंधी (रअक) मोबी क्यवर मीले रक्षा है का बाबा कर्णनाला (या १६) है 1, 19) 1 m 4 (t ! ! ! !!) रक्षय देखी स्वय = ध्यत (द्रुष्ट) । रखा पक [र.इ.] र अनुराय करना आसक होना। २ रॅबन्स रॅक्-युक्ट होना। उन्बद (शाका क्य) रक्क्ट् (शासा १ क्--यक १४६)। प्रान धन्त्रहित (मीप)। बङ् रव्यांत रक्तमाण (से १ २ ; शस्या १ १७ उत्त २६ ६)। इ. रिकापण्य (परा २ १--- १४६)। रकाव[राज्व] १ यव राजाका शक्किश केट । २ कासन इन्द्रवट (फाबर १ व) नुमा। र Yav पन प्रकात । माजिया की ["पाक्किका] एक केन मृति-शाका (कम्प)। नद्द पू [<sup>प</sup>पवि] धर्म (कप्प) । "सिधी की भी राष्ट्रश्रमस्य (महा) । विस्तेय र्ष (ीमियंक) चनगरी गर बेठले का काल (यतम ७७ ६६)। रक्षप पूर्व गीमें देखी 'कररण्यकेषु बडा' (पट्टम १६, ११६)।

रम्ह् को [रक्ष्म] १ रस्की (गंधा छवा) । २

(पर १४३)।

एक प्रचार की शांप 'चक्काडरक्क् बीलो'

रहाइ वि वि वेचन विचन का कान करते.

बाला (बला)। सभा की [समा] १

रेक्ट मुद्द । २ शुक्त मृद्द पु क्षेत्र मा विश्व

र्योगस्य वेशो एक्सिम = रहित 'धर्यान्यमा-

निरावा **रहती सं**विद्यं (सुख १ %,१ १७) ।

सद्भ म (राष्ट्र) फेर, बनल्द (सुदा ३ ७ महा)।

वर इस ई [ बूर ] रामनियुक्त

प्रतिनिधि सुकेशर (विधा ३ १ टी-वन

रहिम नि [राष्ट्रिय] १ केल-सम्बर्ध । १ र्युग्त≲क की चीता में सभा का सामा

याचरक्ष एमो एन्ब्रुशस्त्रए<sup>\*</sup> (क्रम्प)।

(१: दिना १ १- चन ११) ।

(याँच १६४)।

रच्छामध पु वि रध्याभुग] स्वात कृषा

moß

(t . Y) !

रक्ष भक्ष (रट्) १ रोग। २ मिस्सामा। रबद् (गर्दि)। वक्ष-रखेत (हे ४ ४४१३) ऋषि । श्क्रण व (रहल) जिल्लाह्नाट, चीका (रिक रक्षिय म [रिटिक] १ वरन रोना (पराह १ १ शाबाच काला राध्य-कराय परहर-बहुव रविम कुनुपूर्वहरस्येल (रका)। व विकाल, बीच (शाधा १ १ न्यम ६३): ४ वि वेशायक प्राचान प्रमानक क्रियां क्रमार्थ रविधं (पत्रव) । रहरांडय न [स्टर्सटत] क्षत्र-विरोप नाच किलेप की ध्यक्त (मुपा १)। रह वि कि किएक कर विशे ह्वा, प्रमध्यी में 'फ्रेक्ट्र (क्टूब ४३६) : रक्का की रिक्का किन्द्र-स्थित (पिन)। रप्प पूर्व [रप्प] १ श्रेषाम बदार (क्रुमा, गत्र)। २ दूं सम्बद्ध, शादत्य (पन्न)। संमबर् व [स्तन्भपुर] धनमेर के स्वरीप का एक प्राचीन नगरः 'रशाचीभावरिक्राकृरे वरावित क्रम्यवस्यवस्यां (प्रसि १ ६ १)। रणकार पू (रजस्तार) शन्य-विशेष (पत्रत्र) । रवस्त्र पर [श्वस्त्राय्] 'ल्स्न' धमान करता । रहास्यक्षद्र (वक्का १९८) । **वह रजमार्गद (ध्वि)**। रजम्बीयर वि [रजमःशायित] 'रण वर्जा धामा**न कर्णनाता** (मुदा ६४३) धर्मीय वय)। श्वरण कर [ श्वरपाय ] 'ख रत' मानाम करना । वक्क स्वारव्यंत (विद्य) । श्वारक १ दे कि स्वारक है ? निज्यात रणरणव निर्मात मध्यम् रक्षरवापा दुष्पेच्या दूसहा दुसबोर्या (वच्या ७८)। २ छोत, पीका, अवृतिः 'नस्वन्त्रिक्तंबनावा-**भेदकपुण्यानिकरश्चारतार्थं (पुर ४ २३** । राष्ट्र) । र काचराठा चौतनुष्ट (वे १ १६६) बह्य प्रतिवाधन प्रवे २)।

श्वरवार्यत (पठन १४ ११)।

३-- पण १४)।

नियुक्त राज-प्रतिनिधि सुवैधार (पराह है RY=) I रणिर वि (रिजेन्ट्र) धानाम करनेनामा (मुपा **१२७३ यउड)** ३ रज्ज न [अरज्य] धंगत ध्य्मी-(हे है ६६ ब्राप्ट मीरा)। रचर् (रच्छ) १ नाम वर्णे नाम रैय। २ कुर्मुत्र । ३ कुन्न विकेष हिल्लाम का पेड़ हि २,१)। ४ त. दुदूसः। १ ताल सन्ता। श्किताः दशुन सविरा ३ चय (ब्राप्त) । १ वि रॅम इस्म (द्वेष्म) २७२)। ११ कार रॅक्समा (पान)। १६ धनुरावनुष्ठ (धोन धरधः प्राप् १३३) १६) । इंग्रह्म की ["इम्बद्धा] मेर पर्वत के पहतक इस में स्वित एक रिका, विकास विगदेशों का यक्षिक किया नाता है (हर २ ६ — यद द}। इत्रद्र र (\*इट्रि.) शिकार-विशेष ( चन ) । क्येरिंडन प्र **इस-विरो** (प्रम १६ ७६)। ৰহা, আছু বি হিনু হৈ মাল ঘটিবাসা (यक दूर १ ६)। और विक्री (धोनस २९ डी) । २ ई बहिए वैंबा (वे + १६) । ैट्ट दे [ (वे ] विचानर नंद्र का एक **रा**ना (परम ६ ४४)। साह द्र चाँद्र कुरवन वर्षत हा वह रिकार (शेप) ! "पड र् ["पट] परिवादक क्षेत्राओं (क्षाया र ११--वन ११६)। व्यक्तय दु (विक्रान) **ब्राह्म-विक्रे**य (ठा २ ३—य**र ७३)। दपह** प्रमी प्रमानका का एक किवार (रीम)। रेसमा म [रिक्क] शत की प्रम कारिक पद्म-एम मधि (भीप)। वर्ष की [बदी] एक नर्स (प्रम १७। ४१। ६४)। वह देवी पुत्र (तुव क ११)। भूमहा **के** [सुमहा] श्रीकृष्ट की एक घरिको (पद्ध १ ४-पद ८१)। मिना भिनेत 🖫 [रेशोफ] बाब धरोज़ का देव (वाला रे राज्या)। रच द्वं [चित्र] एवं मिरा (नी १४)। रक्तां के रच = रख (महा)। रक्रकाव 🖬 स्थरण = शहरकाव् । शहर रचेव्य व [रक्तवस्तृत] बाम बस्स (दुत t=t) :

रत्तकसर ग [के] सीपु मद विशेष (वे ₩ Y) I रक्तक प्रदि∏ रहेश । २ व्यान (७ १३)। रचडि (धप) वेडो रचि = रात्र (पि १११)। रक्तयन [देरक्कि] बल्कुक बुध का कुल (R . 1) 1 रत्ता और [रक्ता] एक नधी (सम २७३४३ इक)। बद्दप्याय पू [ वर्तीप्रपात ] इद् विरोप (ठा १, ३---पव ७३)। रचि को दि यात्रा हुमूम (१७१)। रचित्रो रिप्ति । एठ निसा (हे२ ७१ क्रमा प्रासु १ )। अध्य वि [अन्यक] रात हो नहीं देश सकनेवाला (गा ६६७ ोकार६)। अर्वि <sup>\*</sup>चर}१ यत में विद्वरनेनासाः २ प्र राज्यसं (पर्)। "दिवह न ["दिवस] **ए**उ-दिन, धहनिश (पि दव)। देखो राइ = रावि। रिक्तिकर देशो रक्ति = अर (वर्गव ७२)। र्राचिदिअह् न [ रात्रिदिवस ] राज-दिन धहर्तिक निरम्बर (ध**न्द्र** ७०)। रक्तिरिय) न [राजिन्दिय] उसर वैको रचितियो (पठम व १९४ ७१ वर)। रिचित्र वि[राज्यस्थ] को राठ में न देखा सकता हो वह (प्राप्त १७६)। रचील पु दि । भाषित हवान (दे ७ रा पाम । रचम्पञ्ज न [रच्छेत्पाल] नाव नमन (पण्ड ₹ ૪)ા रचीमा भी [रकीदा] एक नदी (क्ल)। रचोप्पक देवी रचुप्पक्ष (ताट---गुन्ब १४६)। रत्याचेको रच्छा (गा४ और १२ पुर ₹ **६६)** 1 रद्ध नि [रद्ध, राद्ध] योवा हुया, पक्त (पिड १६४३ सुपा ६३६) । रिद्धि वि [वे] प्रवान, बेह (वे ७ २)। रक्ष विरूप्ण (सुपा ४ १३ कुमा) । रप्प तक [का + कम् ] भाक्रमशः करता । रपद (प्राक्त ७३) । रप्क र्यु [वे] बल्गील इनराती में 'राजवो' (दे ७ १। पाम) । २ रोब-विशेषा व्यटि वॉपू पाक्युतिनु रप्यमं (सछ) ।

रफडिआ सी [दे] शेवा गोह (रे ७ ४)। रस्वावि दि] सव मनायु (मा १४ चर २ १२ः धर्मेषि ४२) । रमस देशो रह्स = रमस (मा ८७२) ८१४ 1 (YF3 रस सक [रम्] १ कीका करना । २ ईमोग धरमा । स्पद्ग स्मय, स्मति समित्रक समेत्रका (कृमा)। भवि रामस्सदि, रामिषुद्ध (कृमा)। कर्म एपिन्बद (कुमा)। वक्क रसंदा, रस माण (था ४४। दूभा) । संझ- रमिश्र रमिश्र, रमिकण, रंसूण (हे २ १४६ ३ ११६ नहाः पि ११२) रमेप्पि, रम्मेप्पिणु, श्मेषि (श्रप) (पि ४ वद)। हेक् रमिर्व (छप पू ६८)। इ. रमिअव्य (गा ४६१) धेवो एमणिका स्मणीका रम्म । प्रयो रमावेंति (पि ६६२) । रमण न [रसज] र कीब्छ कीबन । २ दुस्त, सबीगः रहि-कीका (पव केल कुमा उर प्र १८७)।३ समर-कृषिका योनि (कुमा)। अ ब्रुंबचन निराम्ब (पाय) । ५. परि वर,

स्वामी (पराम ११ १६ चिय) । ६ अल्ब-विशेष (पिक)। रमणिक वि रिमणीय । सुन्दर मनोहर, धन्य (ब्राध्य पामा मनि २<sup>०</sup>)। २ न्, एक वेश-विमान (सम १७)। १ पू नन्दीरवर द्वीप के सम्पर्ने उत्तर दिला की भीद स्वित एक शक्यम-किर (पर २६६ टी) । ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २ ६---पत्र ६ )। रमणी और [रमणी] र नाचे और (वास) खा प्रदेश मासू १३१ ta )। २ एक पुष्करियो (१५)। रमणीक वि रिमणीय रम्य, यबोरम (प्राप्तः स्वप्त ४ । वज्रात श्रुपा २१६८ मनि)। रमा 🕊 रिमां] बस्पीः थी (कुम्मा ६)। रमिम देखो रम। रमिका वि [रत] १ मी फिट फिसने और का हो बहु (बुमा ४ १)। २ व. एनए कीका (सामा १ १---पण १६४, क्रमा लुपा ३७६३ शसू ६६) ।

रमिक वि [रमित] एमया ह्या (क्रुया व

**≖₹**) i

दिवर वि [दन्य] एमए करनेवाला (कुला)।
रम्म वि [दन्य] ए मनोरम रमएमि मुन्दर
(वाय से १ ४०% सुर १ ६३ प्राप्त ५१)।
२ श्रु विश्वस-विरोध एक प्रमुख (से १ ४०%)। ४ व एक देन-दिवाल (सर १७)।
रम्मा १ व एक देन-दिवाल (सर १७)।
रम्मा १ व एक देन-दिवाल (सर १७)।
रम्मा १ विरोध (ता १ ६—यव ०)।
२ वक युम्सीक-नीव वेश्वनीय का वर्धनियोध (सा ११०)।
१ त्यु प्रमीक-नीव वेश्वनीय का वर्धनियोध (सा ११०)।
१ त्यु एक देन-दिवाल (सा १७)। १ वर्षय विरोध का एक इट्टा (वे ४)।
रम्ब केशो रीक। एनक (आक ११)।

रय चक रिका दिनमा भी बोएका नो रएन्या नी बीधरवाई नत्याई बारेन्या" (भाषा) । रय सक रिचय विनामा निर्माण करना। प्यदः रएइ (ह ४ ६४) पर् महा)। कवडः रहर्म्यत (से = =+)। रय पुन [रखस् ] १ रेणु भूम (प्रौपः पापः दूम २१)। २ पराय, पुश्य-रज (के क ४व) । १ सांस्थ-धर्मन में इन्द्र प्रकृति का एक प्रण (कुम २१)। ४ वस्थमान कर्म (कुमा **७ ४**० वेशस्य ६२२ छन)। चाण न ित्राण] कैन मुनि का एक करकरण (श्रोक ६६८ परहर २ १-पत्र १४६)। स्सद्धा की [ैस्वसा] ऋतुमती की (दे १ १२४)। इर र्न [कर] मैन मूनि का एक क्वकरण (संबोध १३)। इरण ग ["हरण] वही मर्चे (लाग्रा १ १ कस)। रव वि [रत] १ धनुरक भासक (मीप क्या

रस पुँ[रस] वेन (कुमा दे र ७ छए)। रस वेसी रस (पतम ११४ १७)। रसम वेसी रसस्य ⇒ रजक (सा १२, दुसा १९वय)।

पुर १ १२ । पुषा १ ६ । प्रायु १६६) । २

स्वित (से ६, ४२)। ६ न उठि-कर्ने सेवून

(सम १४) क्या वा ११४) साहता अकता

१ । सुपा ४ ३) ।

रसणन [रज्ञत] रैन्ता रैप-पुक्त करना (सुमार १११)।

Jcv.	पाइअसर्गहण्यको	रपज—रवव
रपण वि [रचन ] चरनेवाका निर्माण   नेपीयविद्यासमूर्य (वस्त्र)।	(इक बुर १ २ )। संचया की [संच्या] १ बंदनावरी नामक विकासी	सर, कर पुंकिर] पतामा (११ व टिकम्म)। लाह नाहपुंनाय]
स्याम पू [रद्न] बॉट व्यन्त (वर ६०६ दी पाफ नाव १ २३ नाट शहु १३)।	धनकानी (डा. ९, ६ — पन ८)। २ हैता- नैन्द्र नी बमुज्या-नागत इन्द्राणी की एक धनकानी (इक)। समया की ["समया]	क्नामा (पामा कुत ११)। सच व ["सक्क] एवि में बाला (पुरा ४११)। रसवा दें [स्त्रीण] वरामा (स्त्र)।
द्याम पून [रान] १ मारितय प्रति नशुक्य परेवर मिल 'दुवे य्याणा समुन्यद्या' (निर १ वर्ग १६६ खावा १ १३ खुना	भेगनावती नामक विजय को एक राजवानी (१६)। सार पू ["सार] १ एक राजा	बद्ध र् विद्यम विश्वमा (कप्)। विद्यम र् विद्यम विद्यम दिन्ह
१४७-वी६ दूसाः १२ ११)।२ चेद्र, स्प्रताति में बत्तम (छम २६ कूमा ६	(यम)।२ एक रोठका नाग (चपकरेक टी)। सिंह पुं["सिंह] एक कैन सावार्य स्वेत्रकृतिकाकुमक कर्यां (स्वे १२)। सिंह	(पाप)। श्वर्णिद् थुं [रक्षनीन्द्र] चेन्द्रमा (स्तु)। श्वर्णिद्धय न [वें] कृमुद कमन (दे ७ ४०
४७) तहरि ह चैर-मरिष्म्या विरवा रक- छाबरे रक्छा (वज्जा ११६)। ३ छूच- विरोप (रिंग)। ४ शांग-विरोप (छाना १	्रे [शिस्र] एक तमा (स १ ११ धे)। सेहर दूं [शिलर] १ एक तमा (फाल	वर्)। रमणी श्री[रहनी] देशो स्मणि ≃ प्रीत (स
१ पतम ४४ १)। ४ पर्वत-विशेष का प्रकृष्ट (छा ४ २, )। ६ ⊈.व. वर्ञ-	<ul> <li>क)। २ विक्रम की शनदानी तालकी में विद्याल एक वैन वाचार्य कीर वंतकार (विरि १६४)। "असर, तार पूं ["कर]</li> </ul>	११ तम १२ वीनत १७०१ वी १३ धीर)। रवणी वी [रजनी] १ धीर पतः (पाधः प्रापु १३६१ कुमा)। २ ईरालेन्ट के बोबपान
द्वीप का निवासी (परूप ४४, १७)। छर न ["पुर] नगर-स्टिय (स्रया)। विकार्य [स्थिप्र] निमाधर बंग का एक धाना	१ छन नी कान (यह)। २ समुद्र (नामा नुपा १७: प्रानु १७: व्याया १ १७—वन १२४)। साली [भा] वैको प्यसा	शी एक पटपारी (का ४ १—नव २ ४)। ३ वमरेला की एक यह-महिनी (का ३,१—
(परम ४, ४६)। दीत्र दूं ["दूरव] हीए- विरोप (छामा १ १पत्र १६६)। तिहि दू ["ानचि] समूद्र सामर (मुगा ७	(उत्त ३६ ११०)। ामव वेको सय (महत्त्र ग्रीप) ायरमुम पु [करसुत] १	पत्र ६ १)। ४ नस्यम् याम की एक सूर्व्यक्ता (ठा ७—पत्र ६११)। १ पत्न याभ नी एक सूर्व्यक्ता 'जेंबी कोरक्सेस्य इसी स रह-
१२६) । पुतर्या की ["युविकी] क्ली नरर-मूमि रानप्रधानामक नरक-पुनिर्देश (स	कन्त्रसा । २ एक वरिष्ठ-पुत्र (या १९) । विक्षि, । यस्त्री को ["विक्षिः । कसी] १ राजी नाहार (इस्स्ट २२) । २ सन्दिकेय	क्टोर्() क्यो) सर्पना म' (इर ७—पन १६१)। साजल न ["साजन] एत में बाला (ला २)। सार ल ["सार] बुट्ट
१३२)। पुरकेको ठर(नुत्र ६ महासख्)। "प्यक्षा प्यहाको ["प्रका] १ व्यक्षी भरतकृति(ठर ७—पत्र १० सीराजन)।	(प्रेय २१) । १ बन्य-निरोण (वे व ४४) । ४ एक विद्याबर-पायकन्या (राज्य है, ११) । "वह व "यह" नवर-निरोण (पद्या) ।	मैद्रन (से १४०)। देशो स्थित - स्वर्ता (हे१ ६)।
२ फ्रीस-मानक राख्येत्र की एक बट्टाफी {दा४ र-—पत्र २ ४) । ३ राजका तेत्र (न १३३) । सदारि "सद्यी राजी का	सिन प्र[सिन] चन्छ ना निता (परम ७ १९, १) सिनसुम प्र[सिनसुन]	रमणी की [रबनी] श्रीचिक्-विकेत१ विव्याद। २ इपिए, इनचे (बदानि १)। रमणुक्वम ३ ई [रानोक्क] १ मेर-पर्वेट
वना हुमा (महा) । मास्य की ["मास्य] एन्दर्भकोग (मान २४) । मास्य ई	चवछ (यदन व २२१)। दिन रि [विक्र] व्येष्ठ, व्यवस्या में बड़ा (यन)। स्यापप्पतिय हि [शतनप्रसिक्ष] सम्बद्धाः	रयणांचय र्र (नुज र दी—नन ४७) इत्। २ कुट-विदेश (इ.स.)।
["माहिन] निधारर नंध में बताप्र नीम धत्र ना एक पुर (पत्म १, १४)। "मुम रि [सुपु]रणों नो द्वधनेताना (बस्)।	वंदन्ती (र्दंप २ ६६)। रवजा की [रचना] निर्माख इति (उत्त	रवजावया की [सनोवया] बनुब्रता समझ स्वारती की एक सम्बन्धी (इस्त)। स्वत <sub>ी</sub> न [स्वत] र स्प्य, वांधी (छावा
"रत् पू "रियो तिवावर वंश का यह धना (वत्रव १ १४) । श्रीम पू ["राशि] बहुत (बाव) । यह पू "पति] सर्वों का मानिक	१६ (ट पैरप ६६ पुता ६ ४ रंग)। स्थमा वर्ष [स्त्ना] ध्यमानायक नरम वृषि (पर १७३)।	रवर १ १—पत्र १६ त्राष्ट्र १श त्रात्रा रवय पाना ग्राा नीप)। १ इक्ष देव
भनी योजेत (जुता २८१)। वई की [बिना] दरू सभी (स्पत ३)। बाज्य द्वी	रयमि कृती [रस्ति] एक हाव भी नात बड़ कृष्टि हाव ना चरिताल (क्का पर १८०)	विमान (देशेला १६१)। ६ हाची का दांता: ४ हरण, बाता। ४ तुमछी सोमा। ६ स्थिए, सूत्र। ७ ग्रीट परेता। वास्त नर्तु। ६
[पन्न] नियासर-बंदीन युक्त याण (यान १,१४) । यह नि [बहु] यान-वारक (याग १ घर) । संवय निर्मायनी १	(लावा १ १—वत्र ४६। वर्षा) । आर्यु	शिवर-विशेष ६ १ वि सप्तेष वर्णवाला थेव (बाह्र १२) बाह्र हे १ १००) १ २ १)। गिरि पू मिरि] वर्ष-विशेष
परकपरीजापूर (६६)। रे एक नेपर	िंपर] रेग्नबं (नेरं ९६ <sub>। याव)</sub> ।	े (छाता १ १० मीत) । वस्त न [पात्र]

वादीका वस्तान (गतः)। सस्य वि[स्य] वाँदी का बना हुया (ग्राया १ १--पत्र হা পি ।। रसय प्रतिक नोबी (स २०६३ पाप)। रयमभी की [द] शिरुत्य वास्य (वै ७ व)। रयमाडी रेको राय-वाडिआ (सिरि ७१०)। रयाव एक रिचय निनंता निनंता क्यना । व्यानेव व्यानितिः स्यानेह (कप्प)। संक्र रयावेचा (क्य)। रयाविस नि [रचित्त] वनवाया हुमा (स ¥\$X) | रक्का की दि जियंग्र, मालकरैयनी (दे ७ **?)**; रिक्षे पूंची दि] बम्बा मधुर सम्ब (माल £)1 रथस्क[क] १ अञ्चला शोलना। २ वक करता। ३ पदि करता। ४ सक रोता। ३ राज्य करनाः 'सुद्धं रत्नति परिसाए' (सूध १ ४ १ १०) रन६ (१४ २३३ संस्थि ३३)। वड- रवंड, रवेंड (छाया १ १---पत्र ६६, पिक; धीप)। रव सक [ रावय ] दुववाना आहान करना । **वक्र** रवेंत (ग्रीप)। रव सक कि] बाज करना । अवि—छोद्रिक (संदि) । रव पूं [रथ] १ कम्ट धानान (कम) महा चरामान)। २ वि मद्वर सम्बद्धाता 'रवे प्रवर्ध कलमंशुर्म' (पाप्र) । रव (घप) देखो १य = एकस् (मणि)। रकेंग रक्तम } (मन) देवो रसम (मक्ति)। रक्ण न [रक्ष्य] प्राथान करना 'प्रचाशके न करेणुमा सना रनग्रासीना मासी (महा)। रवण्गे } (घप) वैको रस्म = धम (हे ४ रवस 🕽 ४ेवरंश्यक्ति)। रवय प्रवि] सन्तान-स्त्र विशोनेकी नक्षी. प्रवराती में 'रवैयो' (वे ७ ६)। रवरव पक [रोरूप ] १ भूव धावान करता । २ वार्रशार भाषात्र करता । अङ्ग रवरबंद (ग्रीप)। रवि वि [रिविन्] मानान क्लोबाबा (ध र

RE) 1

रमिन रिवि दियुर्गसूरव (के २, २१ गतक सर्ग)। २ राजस-वैदाका एक राजा (पतम ४, २६२) । ३ सके बुझ साक का पेक (१:१७२)। "तेश्र पू ["तेजस्] १ इस्ताकु वंश का एक राजा (पराग १-४)। २ रासस पैराका एक प्रामा एक अभिष्य (पडम ४, २६४)। "तिया **श**री "तेजा] एक विद्या (पत्तम ७ १४१)। ैनेदण पू िनन्दन } शक्ष-बह (का१२)। प्यम र् [ प्रम ] बानखीप का एड राजा (परम ६ ६०)। शता की "शत्रा एक महीविव (वी ६)। सास पू भास] बबन-विरोप सूर्वहास बहुन (पदम ११, २६) । बार ई [बार] किनिवरेप चीवार (क्रम ४११)। सम्बर्ध विकार राणिकर बह (से द २वा सुवा ११)। २ रामका का एक सेनापति सुधीय (१९१८, ११)। शास र् [ शास] पूर्वहास खरूप (पटन ११ २७)। रविगय न [रविगत] विसपर सूर्य हो वह नसम (भव १)। रविय वि दि । यह किया हुना सिकास ह्मा (विशे १४१६)। रम्मारिम र् [के] पूर प्रकाशतक चेरा सम्बद्धे रज्जारियो चि (सुपा ४२६) । रस सक [रस्] विज्ञाना धावाच करना। रसक् (ना ४३६)। वक्त दर्सत (सूर २ ७४३ सुपा २७३)। रस पुन [रस] १ विद्वा का विषय-अपूर, तिक मादि 'एमे रसे' 'एमें गंपाई रसाई फासाई (ठा १०-पन ४७१ प्रासू १७४)। २ स्वभाष प्रदृति (से ४ ३२) । ३ साम्रिय शास-प्रसिद्ध ग्रांनार साथि शथ रस (पत्त १४ ६२ वर्गीय १६ सिरि ६६)। ४ वाम पानी (से २, २७३ वर्गीन १३)। **४ पुषा (तत्त १४ ११)। ६ मायक्ति** वित्तवस्थी (क्ता 💶 थडड)। ७ छनुस्यग प्रेम (पाम)। द मच थादि अप पदार्थ (पराह १ १ द्वया)। १ पास्त, पास (निच्न १३)। १ भुक्त समान्य जनम परिस्ताम रारीरस्य बातु-विशेष (श्वतः)। ११ कर्म-विशेष (कस्म २ ११)। १२ व्यवस्थान-प्रक्रिय प्रस्तार

विशेष (पिय) । १६ मापूर्व धादि रसवासाः पदार्थं (सम ११ नत्र २०)। नाम न िनामन् ] कर्म-विशेष (सम ६७)। **स** वि कि रस का जानकार (भूपा २६१)। "मेड वि ["मेदिम] रसवानी नीजों का भेल-सेम करनेवाला (पतम ७१ १२)। भैति वि[वस्] रस-पुक्तः (भग ठा र र---पन १११)। वह की विती स्तोई (सपा ११)। छ, छु दि [वस्] रसनामा (हे २ १६६) गुज ३ १)। ीवण पूं [ीपण] सद की दुकान (पर ११२) । रख पुन [रस] निप्याच निषोज सार (बसनि 1(53 F रसण न [रसन] विद्वा बीम (पण्ह १ १-पत्र २३। धावा)। रसण्य भी [रसना] १ नेबता कांची (पाम गबका से १ १०)। २ विक्रा, बीम (पाम)। ैछ वि [ अत् ] रसनावासा (सुपा ११६)। रसाइ न [दे] दुक्की-मूल इन्हेंका मूल भाग (**₹ ७** २)। रसा की [रसा] ग्रनियो नरती (है १ १७७ १व क्रमा)। रसाव 🛊 [ हे रसायुप् ] प्रमर, बाँच (हे ७ रापादा)। रसाय वृं [वे] इसर देखों (रे ७ २)। रसायण न [रसायन] वैद्यक्त प्रतिवद सीपव विरोव (विपा १ ७ प्रान्यु १६२ मवि)। रसास दुं [रसास] माम-दूस धाम का गास (सम्मच १७३) । रसाख्य 🛍 [बें रमान्त्र] मानिवा 🛱 विशेष (के क रुपाय)। रसासुर् [वे रसासु ] मनिका सन-योग्य पाक-विशेष---को पत्त की एक पत्त मञ्ज, साथा बाहम वही बीस मिरवा तथा वत पत्र भीनी या हुतु से जनतापाक (ठर वे रि—पव ११८ सुज २ टी पव 448) i रसि वेको रस्सि (प्राप्त २६)। रसिम नि [रसिक] । रनम रसिना,

वीकीन (से १ १)। २ रस-द्वर्क रसवासा

(युवा रहा २१का वस्म ६१ ४६)।

र्शमात्र विभिन्ते १ रमपुतः रमवासा (पर १)। २ स. शतर सादाम (बउड) पण्हर १)। र्श्तमा प्रांदि समझी १९४ मैर वण में निरमता देश गढ़र पून पुत्रसती में 'रनी' (भारशः तिग्रार अन्तरहरूर)।

२ सन्द-रिशेष (रिग)। र्शित् र् [रमम्ह] भारत, गाउ (बी श ब् (2¢) र्शनग देवो र्शनम = रनिष्ठ (वैचा २,३४)। र्श्वार र [र्शमद] प्राप्तक करनेनाला

(चन्छ)। रसाई (घर) वैद्यो रस-वई (वरि)।

रस्सि पूंची रिहिमी १ किएल 'अरखे समा शियाची माइचे केर इस्सीमी (पडम ब ६४ पामः, त्राप्र)। २ दस्ती रण्यु (शास् 1 (499 स्म भन्न [दे] प्रताः एक स्वरु सोह

(लिंक महा बिरि =११), एक पहर (Wit 922 929) :

**धर्**शक [स्ट्र] ध्याक्तः **श्रो**क्ता (कृष्णु विक्)। यह 🖠 [रमस] सबाह, 'पुलो पुलो हे सन्तई

प्रदेशि (तृष t द १ १व)। देनी सास = रवस । यद प्रेन [यदस्] १ एकान्त निर्मेश 'त्राव्य रही विभागम्बं (दुप्र वर्) नाह व रहे

देव (बुवा १७४। बक्रा १६२) । १ प्रचान बोप्प (ठा६ ४)। रद्व∮त[रप] १ गल-मिटेच स्वचनः 'बस्यस्त भिमाजपहे पार्चि (**४त** १ पाया कुमा)। २ व एक बैन महर्ष (क्या)। कार वृष्टिशर] रथ निर्माता वर्षीक वहर्ष (मुशा ४४)का रप्र १ ४ वरो। भरिया ग्री [\*चर्यों] रव की होकता 'र्वत्यवस्यावस्थितकाले'

(बरा) । "पा भ्रे विवासी क्षत्र-विशेष (ब्रा १४१ तुर १६ १३) बिरि ११७४) । "द्वीहर व ['गुपुर] बबर-विदेव (पडव १८, क रूप)। त्रारथक्यास न [मुपुर िनिसि प्रवत्तन् नेविनाच का माई (उत्त १२ १८)। निमित्र न [निमीय] प्रचय ध्यसम्बद्धाः स्था स्था साम्बद्धाः स्थापन (तस्य २१)। भूगल पु भिसम्बो भएउए<sup>न</sup> की एक प्राचीन बदाई प्रभा कोश्विक घीर समा भेटक का संज्ञान (कल ७ १)। यार वेको भार (पाय)। रेणु पु रिणु पुरु नाप बाठ धगरेणु का एक परिमास (इक)।

बीरफर बीरफुर न [\*बीरपुर] एक नवर (धक पिये २३६ )। रहन्नं ध रिभसा विन वे (व ७६२)। रहित दुंध्ये [रथाञ्च] १ चक्रतक वधी चक्रवा

(पायानुर ३२४० दूना)। भी नी (सुपा ४६८। शुर १ १६६ दुमा)। २ न चक्र परिया (नाय)। रहरू देवी अरहरू (या ४६ पि १४२)। **राइ**ल न दि देशा स्थिति निवास (दर्मीप

२१/ रक्क ६) । राइयाम शिक्ष्मी श्रिकाथ । २ विचित्र विरायः। 'रतख्ड (पिव)। ख्माय⊈ [के] १ करन यत का एक

क्त-भैक्ता (मोह १) । २ भूबा, ब्रस्सा परमेस्बर (वी ११)। रहस प्रियस । धौलुक्ट बल्बरहा (दुन्मः)। २ वेन । ३ इप्यै। ४ पूर्वापर कर धविचार (सिंधि ७ वडड)।

प्रम के प्रसः = प्रदः 'प्रतत्रकाले' (जबाः संबीच ४२ सूचा ४१४)। यहसा म [रमसा] वैष है (पक्र)।

शहरस वि [शहरव] १ प्रम योगबीय (बाब्र) भुपा ३१≈)। २ एकान्स में अर्पन, एकान्स का (हे २, १ ४) । ३ व धरन बारपर्न धावार्ग (धोव ७६ । रंगा १६)। ४ छाव्यार श्चान (बृह ६)। राइस्स वि [हुस्व] १ नवू, खोटा (विपा १

— वर वरे)। २ एक नावाबाना स्वर (इस ६६ ७२)।

ध्यस्स न [हास्त्र] १ कापन घोटाई। संत रि [ बत् ] नेपु. सो⊐ (तूम २ १ १३)। रहाविश्र वि दि] स्वापित रवाना हुमा (हम्मीर १९) ।

रहि वि रिविम् दिया से शहतेवामा योजा (उप ७२ = टो) । २ रथ की इस्तिनेताना (कूब २०७। ४६ : वर्मीव १११)।

रहिआ पि (रिविक) स्पर देशों 'पीहर्सि महारक्षिती (इप ७२८ दी परा २ ४---पत्र १६ ३ वर्गीन २ )। रहिश नि रिहित्ती परिषक्त, मॉक्त कुम

(च्या व ३२)। रहिल नि [रहित] एकारी सकेना (नव १)। रहिकारि हि दिशाहमा स्कित (पर्मेरि २१)।

रह दूरिष्ट्री १ तुर्ववैद्यका एक स्वन्तम स्यात राजा (क्तार १)। २ वृत्र रहु-र्वश में करपन शक्ति (हे प्र. १६)। १ प्र. भीरामक्ता 'ताहे क्वंतवरिती थे ख रिक्क के विदी (प्रकार ११६ पर)। ४ कासिदाद-प्रशीत एक एंट्राच कान्य-प्रान्त (यबड) । धार प्रं िधारी रचुनेरा नामक र्शरक्ष्य काम्य-प्राप्त का नर्रां, कवि कालिदास (पटक)। आह् पूं ["नाम] १ भी समयना (दिश्व १६) पत्रम ११६ ६६)। २ करमल (वे १४ ६२) । वजब ू विसय] बही सर्वे (स २, १; १४ २६)। विसय वं िविस्तः । भीयमस्त्र (सुपा २ ४)। चस दूं विच्नम ] बहा बर्च (पक्रम १ २ १७२) । "पुंत्रव पुं ["पुह्नव] बही (वे ६

["सुत] पही (हे x, १६) : खो 🚧 छ = छह (इसादीत)। इस्म [कर्मन्] एकान्त-कागार (ठा ६---पथ ४६ ) । रा तक [रा] देना दान करना । एक (बारवा (848)

शक्ष १ रेवका १ ७ 🗓 सम 🖠

रावक [रै] राम करता मानाद करता। चर (त्रक १६)।

रायक [क्री] स्टेब करना विस्करा। राष (44())

राइ देलो रचि (हेर बन्द्र काम १८६ महा पड्)। २ अपरेना नी एक यह मक्रियौ (ठा ५ १---पत्र ३ २)। ३ **देश**मेन्द्र **क होम भोडपास की एक प**रसनी (ठा४ १—पत्र २४) । सत्त न ["सक्त] एपि-बोजन एक में साना (सुपा मोक्षण न ["मोजन] वही यर्प (सम १६ कस)। देखी राई व्यापि। राष्ट्र की [राजि] पीक चौरा)। २ रैका ससीर (कम्म १ १६ चुरा ११७)। १ सई, सम-संयंप एक प्रकार का मसाना (दे ६, ८०)। राइ वि रिगिन्त् राय-बुक्त, राजवाबा (वस ६)। की जी(महा)। राइ वि [राजिम्] शोमनेवासा (निष् १६)। राइ देखो राय = धनम् (दे २ १४० ३ दश द६ हुना)। राइभ वि [राजित] शोमित (वे १ १६ कुमा६ ६६)। राइअ वि [राजिक] चनि-सम्बन्धी (अच २६ ४१: मीप पड़ि)। राइआ की [राजिका] यह का नात. गीमाण्डीय सम्बे चनवंती राष्ट्रमाहः पत्ताई (वा १७१ म)। देशो राष्ट्रगाः। पार्थ प्रिमेन्द्र] बड़ा सवा (कुमा) । राईदिअ र् [स्वितिन्वय] एत-किन सहोसन (मगम्बाक्याप्य प्रश्चासम् २१)। राइस वि [राजभ्रय] राज्यसमी (६२ रेथम कुमा)। पर्या थे [शक्तियः] सर्व सक्तारती (বুম ধর) 1 राइनिश वि शिहिनकी १ वारिनवासा, चमपी (पंचा १२,६)। २ वर्यांत्र से अवेदः साबुरत-प्राप्ति थी धवस्था से बड़ा (सम रेका देवा कृष्य) ह राष्ट्रिम रि शिसकस्य । राजा के समान वैमरवला, सीमन्त (पूछा १ २ ३ ३) । राइण्य १५ [राजस्य] राजरंगीय शानिय राइम ∫ (दर्भे १५१) वेष्यः चीर मय)। राइसंस्था सह. भीरकर (अंधीन्यनक वंशिम शास्तिष्ठकवा वैनायशे बुद्धि विययक्त)। | साचि हे ४ ३२१३ ३ ४३ प्राप्तः) ।

राइल नि [रागिन् ] राग-पुट ( वेनेन्त्र | २७६)। राई की [राजी] देखों राइ≔रानि (पड़ा सूपा ३४। बासु ६२ पत्र २३१)। राई थी [रात्रि] देखो राइ = रात्रि (पाय' खाया २-पत्र १६ ३ जीपः सुपा ४**१**१३ क्स)। त्रिवस म ["दियस] राजिरियस धश्चनिश (सूपा १२७) । राईसई की [राजीमता] रामा सम्बेन की पुत्री सीर समयान् मेनिनाण की पत्नी (पत्रि)। राईवन [राप्तीय] कनत पथ (पाम है १ ₹= )1 राईसर पूँ [राजेपर] १ धनावों के नामिक मक्काराज । २ दूबराज (बीपा स्था कप्प) । ধারক 🛊 [ধারমুল ] অবহুর বাদিয (प्रकृष)। राज्ञ द्रश्रिककुछी १ राजामी का दूव धन-समूद् (कुमा है १ २६७ प्राप्त)। २ राजाका वंश ( पड् )। ३ राज-पृह दरवार, 'र्ण देविसस्य राज्यस्य पूरेख प्रकामी कीर्याद

ग्रवसि दूँ रिमर्पि] १ थेड यम ∂२ ऋवि-तुक्व धावा संक्तारमा जुगति (श्राप्त १श विक्र ६वा गीह १) । ग्रमो प [यथी] एव में (लावा १ १---पत्र ६१ सुपा ४६०। रूपा) । रामोस क्षा राज्य 'तो किंगि चर्ण समस्रोति विसंसिय किंदि वाश्चित्रतेष्टि । किंपि यह राघीचे एन

बारव बंभग्रावि एवं विश्वविक्यंति (मोह

राष्ट्रक्रिय वि [राजकुक्तिक] राजकुल-सम्बन्धी

११)। देखो राओज ।

राष्ठक देवी राष्ट्रक (शक्त ११)।

(तुवा २ ३१)।

धपुत्तति माजुद्धम् ॥ (धर्मीर १४ )। राग देवी राय - राग (कप्पः गुपा १४१) । स्ति देवी सङ्च स्तिन् (पडम ११७ ४१)। श्रापन देशो राह्य । परिणी सी "गृहियों] रीता नानशी (परम ४६ १७)। राच ) [पूर्व वै] देवो राय=राजन (ह

राम देवो राव = धनत (हे ४ २६७ ति ₹६ĸ) i राजस वि [राजस] रतो-प्रस प्रवान 'राज समित्तस्य पुरस्त्र' (द्वप्र ४२८)। रावि की [राटि] दूम विस्पाइट (मुख 2 (X) ( यक्ति भी कि सहि संप्राम सहाई (के राखाकी (राखा दिश्वा (वर्गेर्स १ १०० कप्यु)। २ भव्यता (वन्त्रा १८)। १ बंगास का एक प्रान्त । ४ वैपास केत की एक नवरी (कप्पू) । इत्तावि [ बन् ] सन्त चारमाः 'र्नत्रणचिद्यो धरमी चडाइताख र्धपण्ड (पन्ना १=)। सचि पू ["सजि] काच-मस्ति (वत्त २ Y२)। राज सक [वि÷नम्] विशेष नमना। राखद (१) (बारबा १४६)। यन 🕽 [सबन्] चणा सबा (भंड सिरि 2 (v) 1 रागय दू [राजक] १ एखा धना (ती १६ सिरि १२६) । २ सीटा राजा (faft eas ( y ) ) राणिशा } को [राहिका, ही] रती रत राजी रेपली (हुमा के मानक १६ टी) विरि १२४: २६७)। राम चक [रमयु] रमछ कराना। 🕏 रामेयक्य (बस ८१) । यम दू [यम] १ की धमक्त्र धमा बसरा का बढ़ा पून (सा ११ जय पू १७१३ हुमा)। २ वरमुधन (कुना १ ३१)। ३ छानिय परिवासक-विशेष (धीप) । ४ बमदेव वतन्त्र बापुरेर का बड़ा माई (पाध) । १ कि रमने बाला (चर ए ३७१) । इत्यह दूर [कुन्म] रामा थेएिक का एक प्रमु (राम)। कप्रहा की ['इएमा] चना बेणिए ही एक पानी (बंव ११)। सारि पू ["गिरि] पर्वत-निशेष (पत्रम ४ १६) । गुत्त पू [शुप्त] एक धर्मा (बूब १ ३ ४ २)। देव पु विवा यायमध्य (पत्रम ४१, १६) । पुच ई ['पुत्र] एक देन मृति (बर् १) । पुढे की दिस्ती मनीना नवर्ष (वी ११) । रक्तिमाना रिभिना

४२**६ र**क)। যুম্লিজ্ঞাস দ [যুদ্দাযক] ংশ্লীয়তা बीम्बर्वे (विक २६) । रामा भी [रामा] १ की निहला नारी (वंदु र हुमा याम बना १ ६ छप १६७ दी)। २ नवर्षे जिमदेव की माता (बम १११) । व देखानेता की एक पटनानी (ठा द—पत्र ४१६: इत् । ४ ध्रम्पविधेप (শৈণ) ১ रामायण न [शामायण] १ वस्त्रीविश्वत एक संस्कृत साम्प्रास्थ (पतन २ ११६, महा)।२ समस्त्र तथास्त्रलाणी नव्यः (पाम १ ६, १६)। राभिश्व नि [रमित] रमण रचना हुमा (ना १६। बस्म वः ११)। रामेसर पू [शमेष्मर] इतिए माध्य ना एक द्विन्द्र-दीवें (सम्पत्त ८४) । राय धक [ राज्] धमनना, शोमना । एवड (१४१) । यह राम यामभाण (क्य)। श्चय देशो श = रै । यमद (त्रक १६) । द्यय पू [राग] १ मेम मीति (मापू १६ )।

२ वरनए इंडर 'च देनपरद्वार' (देवेन्द्र २४)।६ रॅबना, रंजन।४ वर्णन।३ মনুধাৰ । ६ মানা কংবলৈ । ৬ বন্ধ, কৰি । व शाल वर्श । १ काल र्यवलकी वर्णा। १ वक्क ग्रादि स्वर (हे १:६)। सम ﴿ (सक्त) १ समा बर-१ति, गरेत (बाबा प्रवासा २७) मुपा ६ ६) । २ कार कारमा (या एक हानीर ६ वर्गीत ६) । ६ एर बहायह (तुम ६ ) । ४ १७४ । इ.स. इ.स. इ.स. व्याप्त क्षेत्र । व मेह इत्तम (**हे** र ४२ ६)। ६ इच्छा यां<del>ना</del>मा (वे १ ६) । १ छप विदेश (रिय)। अ रि बिया राज-संक्यी (बार ११) उस ई प्रियो सक्यत राज मुमार (बुर १३ १६%) । अस वैधी शास्त्र (हे हे २६० नुवा बद्धवाल यति १ ४)। रीअ देशो ईअ (शर—ः ;

क्चुर प्र)ः हमा देवी बस्न (शहा)ः

"केर, का वि ["नीय] राम-संबंधी (है। २ १४०-कृमा वड्)। गिह्न ["गुह् यगम देश की प्राचीन राजवानी जो बाजकम 'राजबीर' गाम से प्रतिक है (ठा १ ---पन ४७७: उनाः श्रेत) । "गिहि औ ["गृही] बही सर्व (शी १) । चौपय पू विश्वपकी बुदा-विशेष प्रसम् कम्पक-बूदा (मा १२)। अस्स र् विभी सन्ताना नर्तव्य (सट---क्तर ४१)। घाणी **की** ["घानी] राज नगर, राजा का गुक्स नगर, कहा राजा याता हो (नाट-- वैत १६२) । पत्ती की ["पत्नी] राजी (शुर १३ ४८ धुपा ३७४)। पसेचीय है [ प्रश्नीय] एक कैन भाकर सम्ब (राव) । यह वृ [पन] राजनार्य (महा मार--- वैत १३) । पिंड प् ["पिण्ड] राजा के बर की मिखा—संद्वार (सम ११)। दुन्त केली बन्द (नउब)। पुर व [पुर] नवर-विशेष (परम १ )। "पुरिस 🛊 ["पुरुष] एजा का भावनी चन-वर्मचाचे (परम १ Y)। सरगा हूं िमार्गे । राजपन, सङ्ग (पीपा महा)। मास 🛊 िमाप 🕽 बान्य विशेष वरवटी (बारव बेबीन ४६)। राय प्रे [धाम] शवार्थे का श्रम, समैलर (बुरा १ ७)। **ैरिस देवो रायसि (शाना १ ५—१४** ११६७ वन ७२० टी बुनाम्बल) । रुवस र्षुं ["बृह्म] बृक्त-विरोप (धीप)। सम्बद्धी वर्षे ["छम्मी] धान-वैजव (मनि १६१) नद्दा)। स्रक्षिय वूं "स्रक्षिय" बाटने नसरेव 🔻 पूर्व सम्बद्धां नाम (सम १२३)। सङ्ग्रान [ बार्तक] राज-बंबेची वार्ता-क्षत्र (हे %, वहीं की [बड़ी ] नवा-विशेष श्रिक्य वैद्या राष्ट्रीम = प्राणिक (क्व (पर्व १--पम ६६) । बाहिआ वाही धी [पाटिका "पार्टा] चनुरंत कैय-अव- । स्रयंथी क्यी [सन्नाहरी] विसी, विरुधि का बरएं राजा की चनुवित्र देना के डाव तनाधी (कुमाः कुम ११४) १९ १११) । "सद्दुम र् ("शार्दुस) प्रकारी राजा बीह राजा (दन १४२) : सिद्धि पू [ + द्विम् ] नगर-देळ (शवि) । "सिरी श्री िंभी] एजनसमी (मे १११)। सुभ र् ["मृत] राज्युकार (गण्या उर ७२० हो)। ह्या प्र ["हाक] बसन सेता (स्र ७२४

दो)। सूज र् ["सूच] सम-विशेषः "विशे-हमाहबेहे रामपुर शासनेहवयुमेहे' (परम ११ ४२)। सेण पू [सेन] **क**रविशेष (पिंग)। सोहर दू [शोलर] र महानेन क्षिकार एक छत्रा(सुपा १२६)। १ एक कवि कर्पुरमंत्ररी का कर्ता (बण्डू) । ईस पूँलमें [दिंख] १ कत्तम इंत क्यों । २ म ह शामा (बुद १२ १४) मा ६२४ वज्र मुपा १६६ रंबाः ग्रीन)। ही "सी (युपा ३३४ नाट---शला १३) । इर न िगृह् या कामहर्का(पडम २ ≖१, है २,१४४) । हाणी देखो धार्मे (सम व पदम २ व)। दियन दियम द्वीजिवस्त्र] राजामीका राजा नक्त्रकी राजा (काल बुला १ ४) । हिम दं [फिप] नहीं सर्व (सुपा १ ४) । राय देनी राव = धन (स ६, ७२) । श्य पू [बे] चटक, बीरैया मधी (रे ७ ४) ३ एव पू (एन) यनि यत (प्रमा)। राय वैश्वीशाय=धन्। सर्वहुब्य } कुन [दे] १ वेटन या वेंद का सर्वेषु रेपेंद्र (सभा वे ७ १४) । १ प्र रारव (दे ७ १४)। यर्थस 🖠 [ सम्रोस ] सन-कमा, बद का व्यक्ति (धाषा) । यर्थीस दि [ संज्ञासिन् ] संज्ञानामा खर का रीमी (भाषा)। यथगद्र स्मी [दें] बतीना ऑफ़ (दे ७ १) र शयगास र् [ राजागीस ] स्वीतिषद पह विशेष (का २ व--पत्र ७०) । धीषधा १२३)। देव (बाम प्रम घर)। श्यक्य देको राइएल (धा २ १---पत्र ११४) का ११६ हो)। यवनीय स्त्री [राजनीति] राजा की शक्त करने की चीति (सब ११७)। रायमध्या श्री [राजीमतिशा] रेजी राई-मई (इप १) । रायस वेको राजस (त ३ द ३ ११)।

रिकलानि दिंदि दशुका। २ वृंतम वरिखाम द्वारा (१ ७ ६)। रिकल प्रे चिछी १ माछ, स्वापव प्राविध-विदेप (हेर: १३)। २ व नजन (पाया पुर १ २६ ६ ११६) : पेद्ध वे पित्रों पालाश (पूर ११ १७१) । शब थे िरासी बालर-बंद का एक राजा (प्रका 4 33Y)1 रिक्करण न विशेष प्रथमान्यः चित्रमा । र क्का (रे ७ रे४)। रिक्झा देवो रेहा = रेवा (धोव १७६)। रित ) का [रिक्य ] र रेक्स बीरे-बीरे रिमा मीर बमीन है रवड खड़े हुए क्लना। र प्रमेश करता। रिनष्ट स्टिक्ट (हे ४ २१६) ž) i रिगा नूं [वं] प्रदेश (दे ७ १)। रिच कीन देवी रिज=ऋष् (पि ३३ ३१४)। धरे <sup>क्</sup>ना (नक-कना ३४) । रिण्ड नि [दे] दूर, दूस (१ ७ ६)। रिरम् केनो रिक्जा=मध्य (हे१ १४) २ १६: नाम)। तिव मं तिनिया बास्बदान, राम ना एव हैनापवि हि ४ (# YX) 1 रिन्द्रमञ्जू [रे] महः रोष (१ ० ७)। रिज़ देवो रिव=ऋष् (का)। रिज़ देवो रिड = श्रमु (बिटे ७व४)। रिक देवो रिम = री ! रिक्बर (बावा) । रिक्ट्र केवो रिड= चादु (दे १ १४१: सीव रेकः बुमा) । रिवम क्षक [ क्ष्मभू ] १ वहना । २ रीमहरू पुर्वी होगा । रिकास (श्राम) । क्ति इं [दे बारिय] । बारिय, बुरिय (बस्: ति १४१) । ए केल-मिर्टेच (वर् । है १ १)। १ वाक कीमा (१ ७ ६) सामा १ १-- पत्र १६। वर्षा श्रम्)। नीवि व ["नेमि] बादिवें विवदेद (वि १४९)। रिद्व र्ष [रिद्र] १ केन-विशेष रिष्ट्र शासक निमल ना नियामी केन (काना १ य---पत्र १५१ : २ देसम्ब सीर अस-स्थत नामक इन्हों के चीकपाक (सा ४ !—पत्र ११व) । १ एक एवा वर्षंड, निक्ती |

भौक्रप्रा ने भारा था (परा**६१ ४**—पत्र ७२)। ४ पछि विशेष (प्रस ७ १७)। १ न राम-विशेष जिश्य ६११ धीप सामा १ १ टी) । ६ एक देव-विमान (सम ११)। ७ ईन एक-विशेष रीक्ष (उत्त १४) भागुक १४ ४)। मुरी और विमुरी क व्यावती-दिवय नी राजवानी (छा २ ६--पद द । इक) । सणि पुं [ैसणि] हवाम का विशेष (शिर ११६ )। रिद्वाकी रिक्षा १ महाकव्य विकस की रक्कानी (हर १ ६-- भन द०- इक) । २ पश्चिमी नरक-भूषि (ठा ४---पत्र १८८)। । দৰিত বাৰ (ঘৰ)। खिसमा किटामी १ एक देव-दिमान (तप १४)। र सोकान्तिक वेशों का एक विनाम (पन २६७)। रिद्धि भी [रिद्धि] । बस्द, उनवार (है । ६)। २ व्यामा ६ ई. एक, विवर (धीन १) । रिड एक[ सण्डय् ] विसूचित करना । रिडस् ( वव् ) । रिज न [च्छ्य] १ करनायाक चंत्रकार निमा हुस्स थव (वा ११६, कुमा) बालू ७७)। २ वम पायी। १ पुर्द किया। ४ पुरी दृषि। र बावरमक कार्य प्रतका ६ कर्म (है १ (४१) त्रात्र )। वेची क्षण ≔ ऋसा । रिजिम वि [ऋणित] करवगर, सवसर्थं (78 8E) रिते च [ऋते] सिवाब, विना (पिंड ३०)। रिच वि [रिच्छ] र काली कुछ (दे क ११८ का ४६ : वर्गीन ६ श्रीनमा १६६)। १ न निरेक, सन्तम (क्टा १८, ३३)। रिजुबिक कि [के] क्रकिय क्रमनाथा हुया ( = a) रिज्ञान [रिक्ज] कन, इस्स (सर १९) नक्षत्र हा क्षुच ४ दा व्यक्ति)। रिकारि [काक] अविदिन्तेनम् (धारत १ । (एक कार छ दिहाति [दे] पढ, पलना (वे ७ व)। रिक्ति वृक्षी [कि] क्लाह राजि (के ७ ६) । रिक्रिके [फार्कि] र संपत्ति समुक्ति केल्लु (पाकः विया १ १ द्वा, बुर २ ११

भाग्र १२ ६२)।२ इति । ६ देव-दिवेदः ४ भोषम्-निशेष हिर् १९४८ २ ४१। पंचा =)। १ एमर-विदेश (सिंग)। में, ह वि भिन्नो समुख ऋकि सम्मन (क्रेन धेनक त्रेश की देश थी है है से धार २२६)। संदर्ध को विसर्धी रू विशिक-कम्या (सर ७२८ टी) । रिप श्लो रिव (क्य)। रिप्प न वि दे कर, बैठ वि भ हो। रिभिय न [रिभित] १ एक प्रशार ना ध्रत (हा ४ ४-- पत्र १८१)। १सर ग योजन । ३ वि. स्वर योजना दे दुख (एन खाया १ १--पत्र ११)। रिमिय वि दि रोने की शस्त्रका (१% ভ বহু)। रिरंमा 🛍 [रिरंसा] रवद 🕈 😘 मैक्तेन्छ (सरमः ४६)। रिरिक्ष दि हिं। शीन (दे ७ ७)। रिक्ष सक 📳 ग्रीक्ता । वह रिक्री रिष्यु केवी रिष्ठ=रिष्टु (परम ११ भी ४४ ३ । स १३स स्ट ३ स्टो)। रिसम् र र जिल्ला । सरकि । रिसह र भे ना १६१)। र व्योग मध्यस्त्रमी ञ्चार्च (सम ११) हुम ( १९) : १ संहत प्रतिकास के अर ह वक्याकार वेष्ट्रन-सङ्घ गरिव्हो व होर ही (बीवस ४१)। देवो बसम (बीहरी १४१। सम १४१। कम र १। म २६ )। ैरिसइ पू ["ऋपम] बेह, का (है) रिसि वु [क्क्कि] दुने, का व्य 🥙 क्रमा भूपा दश समि है हा से से थ)। भाय द [भाव] क्रिक्स 85£) ( थिह एक [म+विश्] बनेत वास क्र विद्रह(यह)। tt ] us [t] and mail Da | Car, Cod, Can | 100 f रे २ का स्तारप्रको। 🐔 (बाबा) । वह रीयंत रीस्ट्र 💆 रीव् औ [रीति] प्रशाद वेद स्टेंड विवेवीत निर्व गुरुक्तिमें (क्ये व

FOY) !

रीक सक [ मण्डय ] सम्रहत करना । रीवह (\$ x 122) 1 रीष्ठण न [मण्डल] यसंबच्छा (कुमा) 1 रीह सीन दि। धराग्छन धनावर (दे ७ व)। वी. दा (याम वस्त ११ टी)- येवा र द: इद्ध १)। रीण विशिषा १ व्यक्ति स्तुतः २ पेक्ति (यव २)। धैर दक । राज्ञ | शोक्ता चमक्ता शैक्ता: पैक (हे ४१)। रीरिक वि रिक्तिन | शोमित (कूमा) । रिये की [रीरी] चलु-विरोध गीतन (कुप ११। सुपा १४२) । इंकी [इज़्] रोप बीमारीः व्यव (? क)

उवसाबो (संदू ४६)। स्त्र प्रक [स्त् ] रोता । स्वर (वक् ) संबि १६ प्राप्त ६८ मद्वा)। सनि रोक्स (है १ twt)। भक्र एख", एखंत, एपमाण (ना 214 108 x पुर २, १६, ११२ ४ १२६)। चंक्र रोत्तूण (कुमा प्राक् १४)। हेड रोस् (शह १४)। इ रोस्टब्ब (दे ४ २१२। से ११ १२)। प्रयोग क्यानेड (महा), स्मार्गति (पुण्ठ ४४७) ।

दल म [स्त] शब्द शासान (**दे**१ २० यामा १ १६ पर ७६ दी) । रुम देखी लक्ष = इम (इक) । रुज़ देखों इस्त्र = (दे) (भीष) ३ रुर्मिती की स्टिरती । ब्रह्मी-विदेश (धंबीय

Y#) 1

ęо

रुर्जस देवो स्टर्भस (६०) । रुअग र् [रुपक] १ कारित प्रया (पर्श् t ४ — पण ७०० भीष) । २ पर्वत-विद्योगः 'नपुत्रमो श्लीह पब्नमो स्मर्गे' (बीब)। ६ कीर-किरोप (धीव)। ४ एक शतुक्र (सुक ११)। १ एक विमानावास-केन-विमान (भिन्द १३२)। ६ त इन्हों का एक धामान्य विमान (वेनैन्त्र २६३)। ७ राज विरोप (क्टा २६ ७६ तुम २६ ७६) । स्थक वर्गेत का पांचर्या कूट (बीव) । १ नियम पर्वत का माठकां कूट (इक) । प्यास न [भिस] महाश्विमचैत पर्वत का एक दूट |

(कार १)। वर्षु [वर] १ और विशेष (स्व १६)। २ वर्गंत-विशेष (पर्ह २ ४—कप्रकृतिकोषा ४ श्चकवर समुद्र का एक प्रविद्याता देव (भीव १--पण १९७)। बरसङ् पुं ["बरसङ्ग] वनक्षमर हीए का सचिहासक एक बेन (बीच १--पत्र १६६)। वरसाहास**र र्** ['बर महासङ्गी नहीं धर्च (जीव १)। वरमहावर र्ष [ बरमहायर] रचकर स्थूह का एस व्यविद्वाता देव (श्रीव १)। वरावभास पू िवरावभासः दिशीप विशेष । २ समूह विश्वेष (शीव १)। वराषभासमञ्जू िश्रावसासमङ्गी स्वक्रयणकास हीप का एक प्रविद्वारता देव (बीच ३)। वराधसास-बहासद र् विरारमासमहासद्री वही धर्म (भीव १)। यरावभासमहावर 🖠 **िवराषभासमहावर**े रचक्र संबद्धाः शामक समुद्र का एक मरिहाता केंद्र (बीव वरावमासवर प्रविश्ववमासवर] **पड़ी धर्म (जीन ६---पर्न ६६७) । स्रो**व पुं [किरोन्] प्रमुत्र-विरोप (शुक्र १९)। बरोभास रेवी बरायमास (युव्य १६)। [बद्द की []बनी] एक श्रवासी (खाया २--- वत्र २१२) । ोद् पू िोव् सम्बद्ध-विरोध (बीव १--पत्र १६६)। क्लागिंद पू कि बकेन्द्र ) पर्वंत-विशेष (सम 1 (85 इअगुत्तम न [इपकोत्तम] कूट-विशेष (इक्)। रुभण न [रोबन] स्वन ऐना (वंबोव ४)। क्ष्मय वेकी कुआग (सम १२)। क्जरहामा की वि] वलक्ज (वे w w) । क्षा की किया विष वीमारी (का वर्मंत स्ञाविश्र वि [रेदित] स्नावा हुमा (च 1 (325 स्द्रकी [स्त्रिय] र कान्ति प्रमा तेज (सूर ७ ४- दूमा) । २ व्यवस्ता, मेन (को ५१)।

वापा १ शोमा। ६ दुल्ला, वाले भी

इच्छा । ७ गोरोजना ( वह ) ।

**4**4) 1 ३ भासकि (प्राप्तु १६१) । ४ स्प्रहा, श्राम-

1 (3

uf\$ क्इल वि (क्षित) १ ममीछ पर्धव (सूर ७ २४६ मक्षा)। २ पून विमानावास-विकेष एक देव-विमान (वेनेन्द्र १६२)। काल देवो रुज्य = छरित (घ १२ )। रुद्धर वि [स्विंद] १ सुन्तर, मनारम (पाम) । २ कीम कान्ति-प्रक (तेषु २)। व पून एक विमानेन्त्रक, देवविमात-विरोध (देवेन्द्र १३१) । रुद्र नि चिवित् चेनेनावा । सी दी (पि प्रकृत का २१६ मा)। स्रकावि [ैस्चिर, स्र] १ शोमन पुलर (भीप लाग ११ दो तेनु २)। २ धेत जनकता ह्या (पएह १ ४---पत्र ७८० सूध २१ १)। १ दुन, एक देव-विमान (सम रुहक न [स्वीपर, स्वीमात्] एक देव विमान (सम १३)। वांत म विमान्ती एक वेद-विमान (सथ १६)। "कृश्व न [ कृट] एक देव-विमान (सम १४)। वस्तुय न िष्णस्य देवविमाल-विरोप (सम १५)। प्यम न [प्रम] एक देवविमान (सप ११)। "तेस ॥ ["तेरय] एक देशीयमान (धन १६) । सप्तान [ सर्ग] देवविमान विशेष (सन १४)। सिंगन (\*शहा) एक देवनिमान (छम १६)। सिट्ट न िंचछ ] एक केवनिमान (सम १४)। । अन्त न [रेवर्च] एक देवविमान (धम १६) : फ्रक्लुचरवडिसग न [स्वियेचरावर्धः] एक देववियान (सम ११)। र्दभ क्क [कक्का] वर्ष से उसके बीज को यसम करने की किया करना । वहः कंपीन (विष १७४)। र्श्वण व [रुद्धन] वर्ष छे क्याय की श्रवय करने की किया (चित्र ५ मत) 1 र्श्वणी की दि निष्ट्री दतने का प्रावर-कन्त ( \* " ") 1 र्श्वम पद [स्] धानान करना। धंतद (ह 🗈 १५३ वह )। रुवन है (वे रुझारु) दब पेड़ पाछ: दुस नहीख्दा नण्या रोपमा चंत्रगाई मं (इप्रति

હાર	पा॰अस <b>र</b> शहण्याची	रिक्त-रीव
E - 6 (b)	*-3 ( :	[
रिवरारि [रे] र वृत्र दुवा । २ वृत्र वतः	मीहप्स ने मास का (पस्कृष्ट ४—पक	अस्तु १२ ६२)। २ वृद्धिः। ३ देव-विशेषः।
परितास बुद्धता (हे ७ ६) ।	७२)। ४ पति-पिरोप (पत्रम ७ १७)।	४ बॉविंब फिरोप (हेर्र रिस्ट २ ४८)
रिवरा पूँ [ऋझ ] १ मानु स्वापत मारिए	ध न राम-विशेष विश्य ६१६, सीप	पंचा म)। ३ सम्बन्धिये (पिय)। से, ह
विदेश (देश ११)। २ न नद्यम् (गम	शाया १ १ हो) । ६ एक देव-विभाग (सम	वि[सन्] समृद्ध ऋदि-सम्पन्न (मीप
न्द ३ २६ = ११४) । यह द्व ["यथ]   काराण (युर ११: १०१) । शय व्य	११) । ७ दुन, चन-विशेष, रीठा (उत्त १४	६ च प्रस्ति है, इस्ति सुर १ इस्ति सुना
[राष्ट्र] सन्तर-वंद्य का एक राजा (पद्धन	भ्युष १४ ४)। युरी स्ते [युरी]	१२३)। सुररी की [सुन्दरी] एक
# \$\$X) 1	वण्दावती-विवयं की सम्बाही (धार ३	वरिषक-शम्या (सर ७२८ टी) ।
रिवरणान [दे] र यासस्य, यशियन । २	दण = । इक) । सणि पूर्विमणि] स्यास एल-विरोप (धिरि ११६) ।	चि देवी स्ति (इस)।
क्या (देव १४)।	रिष्टा भी [रिष्टा] १ महारच्या विश्वय की	रिप्प व [दे] प्रत पीठ (हे ७ ४)।
रियान देवी देहा = रेवा (बोच १७६) :	राज्यानी (दा वं ३ नवं द ४४)। २	रिभिय न [रिभित्त] । एक प्रशार ना नाटन
रिग । यह [रिश्रम ] र रहता बीरे-बोरे	वांचवीं बरक-यूपि (डा ७पण वेबच)।	(ठा ४ ४—-पत्र २६४)। २ स्वरं ना पोलनः ३ वि स्वर्णाननासे पूर्छः (राजः
रिगा पेर समीत है रहा बाते हुए जलना।	। १ मधित दाङ (चर)।	खाया १ १—पत्र १३)।
२ प्रदेश बरना । रिगा, रिगाइ (हे ४ १३६	विद्वाम व [रिष्टाम] १ एक केर-विवान	रिमिण वि दिं] रोले वी माज्यशासा (दे थ
R) i	(तम १४)। १ तीकालिक रेभी का एक	a dg.)!
रिगा ई [व] प्रश्ता (दे ७ १) ।	वियात (यव २६७)।	रिरंगा की [रिरंसा] रंगल को चार-
रिचरीन देगो रिउ≠द्वप् (वि ३६३	रिट्रि व्ये [रिहि] ! छर्च, तनवार (है ७	मैद्रांन्द्रा (धरम् ६६)।
३१)।के चा(गद—स्तः३०)।	६)। २ प्रशुप्ता हे वृ रुख, विश्वर	रिरिश वि दि तीन (रे ० ७)।
रिच्छ रे [है] इस दूश (१७ ६)।	(वंधि ३) ।	दिक पन हैं] शाला। वह रिक्टेन (वरि)।
रिण्छ रेगो रिकार=बन (६१ १४)	रिष्ठ एक[ मण्डम् ] विकृतित वच्ना । रिवर	रिंचु देखी रिंड=रिंपु (पत्रम १२ ४१)
र १८ वर्षा। दिव दं िचियी	(गर्)।	अक्ष अंग्रह देशाचर इ १२१)।
मानरान, यम का एक वेनारात्र (वे ४	रिण न [ऋम] १ नरवा शास्त्र विकार	रिमम ] 🕯 [सपम] १ स्वर-स्थित (स
£ 310) i	निया हुमा यन (या ११३; दूना, प्रानू ७७)।	रिसङ् । च-पर १११) । ए अहोत्तर ना
रिण्यमहर्षु [दे] बन्, रोव (दे ० ७)।	ः रेक्स पानी। ३ दुवै, किसा। ४ दुवै दूषि ।	मञालती प्रदुर्व (वस ४१) बुग्ध र
रिज्ञ देयो रिउ≕धन् (थन)।	र माररकड शर्म करन । ६ वर्म (हि १	१९)। १ वेहत शस्त्रिक्षय के करा ना
रितु देनो रिट = इट्र (रिमे ४८४)।	१४१। प्राप्त ) । वेशो अपा = प्राप्त ।	वसमानार वेटन-पट्टा -गरेरद्वी व हो६ वट्टी (बीवम ४६) । वेदी इसम (बीरा है रै
रिय रेवो रिज = धै। रिग्या (बावा)।	रिणिम रि [झुणित] करवचर, धनमर्छ । (१प ४३६)।	रेपरे सम रेपरा सम्म रे रेर मुत
		44)1
रिग्तु रेगो रिव = मञ्जू (हे १ १४१ वर्ण्य १७ वृत्रा)।	रिल य [त्रान] निराय प्रिमा (पिष्ट १७ )। रिच नि [रिकः] १ धाली रूच्य (व ७	ैरिनइ १ किएमी मेह बतन (रूमा)।
रिम्हणर [ऋष्] १ द्याना । २ रीकता	१११ वा ४६ । बमीर ६ शीक्ता १६६)।	रिसि वृं [ब्हारि] बुनि, बंद बाधु (मारा-
पुरी होना । रिज्यद (सर्व) ।	१ म शिरेत प्रमार (क्य रूद, ११)।	द्वा शुक्त देश ब्राह्म है है । ब्राह्म करेब
रिट ई [द मारिष्ट] १ वरिष्ट, दुरित (वहः	रिचृबिज रि [ब] शक्षत्र बहुगाण हुआ	थी) । याय पू ["पात्र] दुनि इरख (रप
रि रेपर)। र शैक्षिय (बहुः श्रेष्ट	(tv ):	1(9)4
<ol> <li>इंशा कीमा (देव ६ छाता १</li> </ol>	रियान [रिवध] बन, इस (जा १६)	रिंद सक [म+विश्] बोस करना कैटना।
! सा शा बहुः राष्ट) मिलि इ	पार्यन €ाशुम्प ४ ६ वला)।	प्रिं (वर् )।
["निमि] क्रांबरें रिनदेश (हि १४२)।	रिख वि [श्रुष्ठ] श्रीय देशन (छाया १	वि । धर्म [री] कारा वननाः। धरा
रिद्व र्द्र [रिष्ट] १ देर-रिटेच रिट्रबावस	१३ दसा थेच) ।	रीम है स्पर्ध सेर्देने रीहना (माना) नुम र र २ मा रूप रथ ॥) । मून्य रीहना
नियम का निर्मा देश (गांध है	द्धिति [द] पर पत्ता(१७६)।	(बाचा) । वहा रीयंत रीयमान (बाचा)।
बन्नार रिर्देश व वेतार और प्रक	र्शिद्ध कि [प्र] स्पूर शिव (१ व ६)।	रीह की [धिति] बराद दंग रशति है कर्य
स्टर रूपड इंडी के शोबतान (sty	रिद्धि की [क्षित देश है वर्गन, बन्दि देशन	feldfe fed morther (mile 12)
१-स्त १६ ) १ दन एक ब्रेड हिन्स्तो	(रफ बिता के है जुना बूर के हैरन	10.0

(\$Y ! !!):

रीड एक [ मण्डम् ] धर्महर्ष करना । रीडह

रीडण न [सण्डन] फ्लंडरस (कुमा)। रीड सीन [दे] प्रवयग्रात धनावर (दे ७ म)। **वर्षः, सा** (पाम चम्म ११ टी<sub>)</sub> पंचा २ =; **११ १**)। रीज वि [रीज] १ व्यक्ति स्पृतः। २ पीक्ति (मत्त २)। रीर सक [ राज् ] शोमना चमकना श्रीपना। ग्रेख (१४१) । रीरिल वि [राखिन] शोबित (कुमा)। परि को [रीरी] मानु-विरोप गीठम (कुप्र रेश पुत्रा १४२) । र्रणी [रुज्] रोव बीमारी काव (१००) वयसन्यो (तंद्र ४६)। रूञ सक [रुत्] रोना। समझ (वड्) सीक्ष ३६ प्राप्त ६० महा) । मनि रोज्यं (हे ३ १७१)। यह स्वा, स्वाद, स्वमाय (वा 884 188 X १११ ३६ १ रष्ट ४ १२१)। संक्र रोत्तूम (दुमाः माह १४)। हेड रोतुं (शह १४)। इ. रोत्तक्व (हिं ४ २१२) से ११ ६२)। प्रयो स्मानेह (महा), स्मार्वति (पुण्ड ४४७) । ক্সাৰ [ক্ব] হ=ৰ লাবাৰ (টাং **ব্**লঃ खमा १ ११ पर ७३ छै)। रुभ देवी रूम = रूप (६४)। रुज़ देखों इस्ज = (दे) (बीप) । रुविनी की [रुव्रती] बद्धी-विशेष (संबोध Yw) 1 रुअंस रेको रूअंस (१४)। रुआग रू [रुचक] १ कान्ति समा (पश्ह र ४--पत्र कर धीप) । २ पर्वत-विशेषा र्णप्रचमो होड थम्बमी स्मर्गी (बीब)। व् डीप-विशेष (श्रेष)। ४ एक समुख (श्रुष १६)। ६ एक विमाना<del>वास-देव-वि</del>मान (धेला १६२)। ६ न इन्हें का एक पानास्य विमान (क्षेत्र २६६)। ७ एल-क्रिकेट (क्या १३ वर पुत्र १६ वर्ष) । स्वक पर्वत का प्रीवर्ग कूट (दीव) । ह नियम पर्वेत का माठवां कुर (इक) : "ध्युम न [मभ] बहामिननेत पर्वत का युक्त पूट

(ठा२ ६)। बर र् विस् रे शीप-विशेष (सुन १६)। २ पर्वेत-विशेष (प्राह २ ४ — पत्र १६)। ३ समूद-किसेप । ४ क्ष्यकवर समुद्र का एक धनिष्ठाता देव (जीव १--पत्र १६७)। वरसङ् वृ [वरसङ्ग] रमकमर द्वीप का धाविष्ठायक एक देव (बीच १--पत्र १६०)। वरसहासद् र्व ["बर महासत्र] वहां धर्वं (वीन ३)। बरसहावर र्थ ["बरमहायर] स्वकार तमुद्र का एक धर्मिष्ठावा देव (श्रीव १)। बराबसास वु [ वरावमास ] १ तीप विशेष । २ सहर विश्वेष (बीव १)। चरावभासमङ् वृ विरावभासमञ्जी ववकवरावमास हीय का एक पविद्वाता देव (बीन १)। वराचमास-मदासद पुं [वरारमासमहासद्र] वही मर्व (बीव ३)। वराषमासमहावर व् [ पराधमासमहाधर] रवकवरावसास नामक समुद्र का एक प्रविहाता देव (बीच वरावमासवर पुं [वरावमासवर] नहीं मर्न (जीन १--पर्न १६७)। बरोद प्र विशेष । समुद्र-विशेष (सूच ११)। वरोमास देवी वरावभास (वृत्र ११)। ीमई की [ीयती] एक क्लासी (स्नास २--पत्र २१२) । ोद् प्र िोव्] समूत विशेष (भीव ६--पत्र १६६) । रुअगित् पू [रुचकेन्त्र] पर्वत-विशेष (सम 44) : कुअगुत्तम न [रुपकोत्तम] कूट-विशेष (**६**७) । रुभण न [रोदन] दबल, रोना (संबोध ४)। एमम देवी फुअरा (सम ६२)। क्ष्मरुक्षा भी वि] अवस्तुहा (दे ७ ॥)। रुआ की [स्मृ] रोव, बीमारी (का वर्गंद्र १६८)। रुआविभ वि [रोदित] स्वामा हुन्ना (गा मुद्र ()। क्द की [कृषि] श्वान्ति प्रमा तेम (पूर ४ - कुमा) । २ सनुराय, ग्रेम (को ११) । ६ मासक्ति (प्रापृ १६१) । ४ स्त्रहा समि-नाय । १ सोमा । ६ दुइम, क्राने की पण्डा । ७ मोरोचना ( वर् ) ।

रुइअ वि [स्वित] १ मधीष्ठ पर्वद (सूर ७ १४३ महा) । २ पून विमानावास-विद्येष एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। रुइञ बेको रुज्य = धवित (स १२ )। रुद्धर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनारम (पाप) । २ वीम कान्ति-पुक्त (तेडु२)। ३ पून एक विमानेन्त्रक, देवनियान-विशेष (देवेन्त्र 1 (5#5 रुइर वि [रोदित्] रेनेनाशाः भी री (पि रहर मा २१६ छ)। रुवल वि ["रुविर, छ] १ शोमन सुन्दर (भीप लाग ११ टी। छद्द २)। २ दीस चनकता हुमा (परह १ ४--पत्र करा सूच २ १ ९) । ९ धुनः, एक देव-विमान (सम ₹**4)** ( रुव्छ न [स्विर, स्विमत्] एक देव विमान (सम ११)। क्येत न [\*स्थन्त] एक देव-विमान (सम ११)। कृष न िकूरो एक देव-विमान (धम १४)। वस्त्रम श िष्यक | **रे**वनिमान-किरोप (सम १४)। प्यस न [फ्रम] एक देवविमान (सम ११)। जैस न [क्तेरय] एक देनविमान (सम ११)। युष्प न ["वर्ण] देवविमान विशेष (धन ११) । सिंगन [श्टक्त] पुक्र देवविमान (सम १६)। "सिट्ट न िसुष्ट] एक दैननिमान (सम १३)। विश्व न [ीवरों] एक देवनिमान (सम १४)। रास्त्रुचरवडिसग न [स्विरोचरावसंड] एक वेगविमान (सम १६)। र्राच कव [स्त्रव] वर्ष से उसके बीज की धारम करने की किया करना । बहुद कंचन (বিৰ হড়৮)। रुवान व [रुद्धान] वर्ष हे क्यास को सबग करने की किया (शिंव ३८६) । र्रजणी की [वे] पर्टी शतने का प्रत्यर-मन्त (देश ⊏)। र्केश सक [6] साराज गरना । रंजद (है ४ १७ वर्)। रजग ई दि रुख हो दुन थेर यादा दुस महीद्या बच्दा धेवता देवनाई मं (इम्दि () t

वि िसस् ] समूद्ध, ऋदि-सम्मन्त (भोप

६वश्री प्रज्या १, १६। सुर २ ६व। सुपा

भी¥ध्यापै माराचा (व**बद्ध १ ४**—पद्य ∣

७२) । ४ प<del>हिन्</del>षिरोप (प्रस्य ७ १७) ।

देन रक-विशेष (वेद्य ६११, धीप

खामा १ १ टी) । ६ एक देव-विमान (सम

३१)। ७ पून एल-विशेष चैठा (तत ३४

४। युव्द १४ ४)। परी अधे पिसी

कण्यानदी-विवयं की संबद्यानी (द्रार्ध्—

पण व । इक) । सणि पुं["सणि] ह्याय

["सम] नानर-नेष्ठका एक सना (पदम # 44X) ( रिक्काण न [के] १ क्यमस्थ, अधिकार । २ क्चन (दे ७ १४) । रिश्ता देशो रेहा = रेशा (भीव १७१)। रिग) यक रिंडगी १ रॅक्स बीरे-बीरे रिम्म र् भीर समीत से रतर सही हुए ससना। २ प्रवेश करता। रिनड रिन्डड (हे ४ २१६, Ēt)ı रिया र् दि निष्य (दे ७ १)। रिच धीन देवी रिउ=श्रूच् (पि १३) ११४)। क्षेटेच्या (शट--राल्ड १०)। रिण्म नि [पे] पढ पूरा (१ ७ ६)। रिन्म के रिन्स=क्स (हे१ १४) र १६: पाप)। सदिव दुं [फेबिय] बाम्बनान् यस ना एक देनापित (द्वे ४ \$41 YE) 1 रिन्द्रमत् र् [दे] मत् चेस (दे ७ ७)। रिञ्ज देखो रिज=ऋष् (सर) । रिजु रैयो रिड = सबु (निमे ७०४)। रिश्म वैश्वो रिश्म = पै । रिश्मह (याचा) । रिम्तुरेको स्टि≖ऋषु (है । १४१३ संधि १७३ दुना है। रिम्म धक [ श्राप ] १ बदना । २ रोजना

पुछी होना । रिज्यह (बर्वि) ।

रिद्ध ई [वे मरिष्ठ] १ मण्टि, वृद्धि (बव्ः ा १४२) । २ देख-दिटेव (यहः छ १

क्षे) । क्षेत्रक कीमा (क्षेत्र के हुए छात्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र के क्षेत्र के क्षेत्र के क

["निमि] बार्रवर्षे जिनदेव (वि १४२)।

दि 1 [रिष्ट] १ देव-रिटेन टिनानक

रिमाप का निवासी के (एएसा है

इतन नामच दाडों के लोकाइन (at y

-पर १५१ । १ नेतान और जन-

!—पर ११ )। १ एक इन्त बंद, विवशे

रिवस्तिवि दि १ दृष्ठ दूरा । २ तूँ वयः

रिवल र् क्षिप्त र मानु स्वापक प्राणि-

विरोध (देश: १३)। २ व नक्षत्र (पाधा

मुर १-२६३ : १११)। यहर्षु [पद्य]

मानारा (दुर ११ १७१) । स्वय <u>प</u>्

परिकाम इक्का (६ = ६) :

क्ता-विशेष (विदि ११६ )। रिहा की रिशा १ महाक्रम कियम की चनवानी (छ २ ३--- भव ८ इक)। २ पश्चिमी नरफ-पूमि (हा ७---पम १००)। व महिए सक (एव)। रिहास व [रिप्राम] १ एक केर-वियान (सम १४)। २ तोकान्तिक देवीं का एक विमान (पव २६७)। रिष्टि के [रिष्टि] ? बन्द, एलबार (है क ९)। २ झनुव। ३ ţ रत्रद, दिवर (संक्षित ३) । रिक सक् मण्डय् ] विजूपित करना । रिकड् (पह)। रिण न [भूदण] १ करवासाकवं क्षतार किया हुन्य कन (गा ११३ कुमा। शस्य ७७)। २ वस पानी। ३ दुवै विकार ४ दुवै दुनि । १ पामसम्ब कार्य करतः ६ वर्ष (हे १ रे४रे। त्राप्र) । भेदी भग्न ∞ ऋगु । रिधिक्ष वि [ऋणियं] करवदार, सवनशी (TR ¥91) 1 रिते थ (ऋते ] सिनाव विना (प्रिंड ३७ )। रिचरि [रिस्तु १ काली कृष (छ ७ ११) वा ४१ । धर्मीच ६ सीमधा १६६)। २ व विरेश समाव (क्ता २८, ३३) । रिलुडिम वि कि रावित धन्नाना हुया (Rv c)1 रिक्ष व [रिक्ष] चन, प्रवा (बन १९) थाय∵स ह युक्त ४ ६३ महा)। रिद्र वि [श्रद्ध] अदि-क्षेत्रन (शामा १ १३ समाः धीन) । रिद्व दि [दे] पत्र पत्ना (देश ६)। रिवि [की [के] सपूर, चारि (के ० ६)। रिक्षि की [माकि] रे लंगीत समृद्धि सेया (शायः क्षित रू १ पुत्रा नुर १ ११व-

संबंधी की ["सन्बंधी] एक विकिक-कम्बा (तर ७२८ धी) । रिप श्रेषो रिष्ठु (क्रप)। रिप्य न दि । एउ पीठ (वै ७ १)। रिभिय न [रिभिष्ठ] १ एक प्रकार का माटन (ठा ४ ४--एव २०१)। २ स्वर का योचन । १ वि. स्वर बोचना से बुख (सवः खाया १ १---पत्र १३) : रिमिण नि 🛊 देने की धान्यनावा (है ७ ७ वह)। रिरंसा 📽 [रिरंसा] स्वल की बाह-मैचुनेन्द्रा (सम्बद्ध ७१)। रिरिअ वि दि बीन (दे ७ ७)। रिक्क वर्ष [रे] शोक्ता । शह. रिश्चेत (क्षेत्र)। रिकृ वेको रिक=रिपू (पटम १२ ४१) ४४ म । स ११वा क्य प्र १२१)। रिसम १ र् [ऋपम] १ स्वर-विशेष (अ रिसंद् र अ-- वन १६६)। २ वहीयत का वकारतमाँ छार्च (सप ११) शुरुव १ १९)। १ संकृत यस्यि-इय के बनार का वनपाकार बेट्टन-पट्टा गरिसको व होत पट्टी (बीवत ४६) । वेद्यो इसमा (धीरा हे १ रेपरा चन रूपश कमा २ रहा सूत्रा 75)1 ैरिसइ पुं ["ऋपम] येश बक्तम (कुमा)। रिसि पूँ [अद्वि] मुनि चंत्र साबू (धीरा द्रमा सुरा ६१३ सबि १ १३ क्षा ७६० दी)। याय वृ ["घात] ध्रुनि-इत्य (उप धिइ वरु [म + विश्व] प्रदेश करना, पैठना। विद्र(पर्)। री १ धर [री] बाना, बसना। रोगाः रीम र पैसर राजेंगे प्रांता (भाषाः चूप र रे २, ३। क्या र४ ७)। नुका, पीरला (बाब्द) । वह रीचंत रीयमान (मावा) । रीह ओ [रीति] प्रवाद, इंप नक्ष्मित से कर्ण

रिवंबंडि निर्धे गरमस्पेर्डर (पनींन ६२)

क्यों।

कृष्ट्रज बेखो रूज्य = चरित (स १२ )।

२ बीम कान्ति-पुष्क (तंतुर )। १ पून.

एक विमानेन्त्रक, देशविमात-विशेष (देवेन्द्र

(बीप सामा ११ टी तंदुर)। २ दीन

चमकता हुया (परह १ ४--पत्र ७८। सुध

२ १ ६) । ६ पूंत, एक देव-विमान (सम

विमान (सम १४)। इतंत विद्यारत]

एक देव-विमान (सम १६)। कृष्टन ["कृट]

एक रेव-विमान (सम १६)। बसाय न

िंब्लुख देवविमान-विशेष (सम १६)।

रपास न [हास] एक देवविमान (सम

१%)। "तेस न ["तेरय] एक देवविमान

(सम १६) । सप्त्र न विर्धी देवनिमान

विशेष (तम १६)। (सगन श्रिक्त)

एक देवविमान (सम १६)। सिट्ट न

**ैस्ट्री** एक देवनियान (सप १६)। याचा

न [ वर्ष ] एक देवविमान (पम १५) :

एक देशविमान (सम ११)।

क्लो की क्या (विड १८६)।

(RE XOY) 1

इद्रक्रमचलाडिंसम न शिवशंचरायतं ही

रुंच क्षर [रफ़्र] र में समय बीज को

शसय करने की बिया करना। वह अंचन

र्वचण न [स्त्रान] व्हीने नपान को धनग

490

रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनारम (गाम)। क्हर वि [रोबिन् ] येनेवाला । ध्री शी (ति स्वक्षावि विश्विर, छी । शोमन मृत्यर रुद्धक्ष व [श्रुचिर रुचिमत्] एक देव वरोमास रेको दरावमास (तुम १६)। ाषह की ["ापनी] एक इन्त्राखी (खाया र---पण २४२) : ोव वृ [\*ोइ] समुद्र

24t) i

**1**4) (

प्रदर्भा २१६ मा ।

निरोप (भीन ६--पम ६६६)। रुमगित् पु [रुपकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सन 29) 1 रुमगुत्तम न [रुपकात्तम] कूट विशेष (इक)। रुभाग न [रोज्न] चरन रोगा (संबोध ४)। कुमय केलो कुआग (सम ६२) । रअरहमा वी [बे] कन्फा (बे ७ a) : रुमा की [ रुम् ] धेम, बीमारी (जन वर्मंधे

साय। १ शोमाः ६ दुवृता साने दी

इच्छा । ७ गोरोचना ( वह ) ।

नपुत्तमो होड पकामो स्थयो' (बीव)। ३ क्षीप-निरोप (क्षेत्र)। ४ एक समुत्र (सुअ १९४)। १६)। ६ एक निमानानास---हैब-विमान क्ञाविभ वि [राहित] प्लामा हुमा (मा (रीज ११२)। ६ व इसीका एक 1 (3=3 क्यू और [कृषिय] १ मान्ति जमा तेज (सूर

पामाम्य विवास (दीन्त्र २६३)। **७** सल-निटेर (क्य १३ ७६ नुस १६ ७६)। थ एक पर्वत का चांचवा कूट (दीक)। 🗷 निरम वर्षत का बाउरा कुर (इक)। "एएस न [ मभ] नहादिनांत नांत ना एक बूट |

ŧ٠

(महा), क्यावंदि (दुव्ह ४४७) ।

रामा १ १६ पद ७३ दी)।

हम देखी स्टा = हप (दक) ।

रजंग देवी मर्जस (इक)।

YW) |

<sup>६अ</sup> देशे स्था = (१) (ग्रीप) ।

रुञन[रुठ] राज्य सावाज (छ १ २०

रुप्तर्भा औ [रुत्यो] बझी-विरोप (संबोध

रञ्जा है [जनक] १ कान्ति प्रजा (पर्व

र ४---पत्र कवाचीर)। ए पर्वत-विशेषा

७ ४० कुमा) । २ बनुसन, प्रेम (को ६१) । ६ मानकि (बाबू १६६) । ४ स्पूर्य, ग्रांब-

रूपणी की [वे] बर्दी दाने वा नरवर-वन्त ( v =) 1 ≼ॅंड थक [ुरु] भाषात्र करना । रंतक (है ल

द्रका सह )। रेजगर्व हिस्त्रप्रहोदन शाया दश महोद्दा बच्छा राज्या रवनाई में (१४५)

कार्यंत वेदी कथा।

६ चोडी रख्य (चे ४) t

(पराहर राष्ट्रम रेक्शाचा देश)।

रूप्प न [रूप्प] नारी रक्ड (धीपा सुर ३ १ कर्जु)। कृष वृ ['बूट'] स्तिम पर्वत का एक कुट (राज)। कुखप्यवाय पू [कुसप्रपात] हरू किशेष (ठा २ के---पत्र ७६) । सूखा की [कूस] १ एक महानदी (टा२ ६—पत्र ७२ व सम २७- इक) । २ एक देशी । १ दनिम पर्यंत काएक पूट (चे ४)। सय वि ["सय] वंदी वा बना हुया (खाया १ १--पत्र **४२ दुगा)। । भास दु [ीमास] एक** वदातिरुक्त महा-बहु (ठा २ ३—पत्र ७०)। रूप हि [रीप्य] का का की का (छाया ११—नम २४′ छर ≈ ४)। रूप्प्य देखो कृप्प = रूपः 'स्पन स्ववं (पाच महा)। रिष्प पुं [रुक्सिम्] १ की विक्य नवर का दकराजा चित्रपत्तीका भाई (खावा र १६--- यत्र २. कुमा भन्नि ४२)। २ दुखान देश का एक धना (खाबा १ व— पन १४)। ३ एक वर्षभर-गर्नत (ठा २ ६--पत्र ६१। सम १२ ७२)। ४ एक क्वोद्रिक महा-प्रह (ठा २ ३---पत्र ७०)। % देव विदेश (अं ४) । ६ व्यक्तिम पवत का एक पूद (में ४)। ७ ति गुवर्खनाला । व चादी वाला (हे स्ं ४२ ⊏१)। कुछ पूल [\*हर] सीम पॉव का एक इट (ठा२ शासमध्य)। र्फापणी सी [रिक्सणी] १ तितीय बागुरेव की एक परस्ति। (पडम क \$ c 4 ) | R ' भीडप्स बानुरेत की एक प्रश्न-बहियी (बडब रे १ वका पहि)। ६ एक साहि-प्रशी (भुगा ६३४)। मरावा (मुरद २ )। ६ वि दवा की त्यः वमन्त्रा (व ४) । क्समान किते क्या र्गमित्रा हैयो हृद्विणी (बह्)। म्बद्द वर विद्यापय विभाग करना सनित करता। ल-स्म्युद्ध वर्त (गे३ ४)। रर 1 [रूर] १ मृत-तिरोत (पत्रम १, ४१। | परा १ र---पम ७) । २ मनन्यति-शिरोप

(पएल १--पत्र १२)। १ एक धनार्थ रैश । ४ एक बनामें मनुष्य-जाति (पराह र १—पत्र १४) । रुख्य सक् िरोस्त्य ] १ सूच प्राथाय करणा। २ वार्रवार विस्ताना। वह रुखेंद्र (स २११)। रुक्त प्रकृ [लुठ] घेटना। यह रहीन, कृतिस (पराइ १ ६--पत्र ४४, 'पहियगय-षद्रतुरचं रुखेनवरनुहत्रबद्धरायाद्यमं (धर्मीप × ) 1 रुलुपुत बक [दे] नीचे सांस नेना निःश्वास हासना । यहः रुलुधुर्लत (मरि) । हव देशा राज = यह । स्वष्ट (हे ४ १९६ प्राकृ ६८ संशि ३६३ वर्गि महा) एकापि (इप्र ६१) । कर्म समय यशिग्यह (हे ४ १४६)। स्त्रण न [रोहन] रीना (ठप ११५)। रुवणाध्ये उत्पर्देशो (मीवमा १)। रुवया हो [राचणा] मारोपणा, अमस्तिच काएक भेद (वन १) । रुबिछ रेजा मन्नळ (धीप) । कुठत देखो राज = वर् । पराष्ट्र (एडि. १६) प्राक्त १८)। क्ष्मा क्षी [रोप] शेष द्वम्मा (हुमा) । रसिय रेक्नी न्यंश्रञ (परम ४२, १४)। **रुह शक** [स्ट्र] । क्लाम होना। २ सक याच की मुरराना। ध्हर (नाट)। कर्म 'जल विकारियद्वीवि यान्वाहरहारी हमीप् पल्यानगोबाग्गंधि पराद्वेषस्यं दाग्यता वैव रम्मद ति (स ४११)। बह वि बिह् | उत्पन्न होनेराना (धाना) । क्ट्रव व चिधन | निवारण (वद १) । क्टपीमास ई [ कटवायभास ] १ वक | रहरह सर [ब्] सब्द कल बहुता जार्थीय नुष्टि स्टाग्य बार्च (वरि) । रहरदय ५ हि । इतग्दा (प्रति)। रभाग[इंसर] र्रातृष(दे७ ६ क्या पत्र का देवेग्द्र देवेदः धर्मसै हुन । भय संगीत ११)। रूज र् [अप] १--२ पूर्णमा भीर विशिष्ट मामक राज्र का एक मोबारास (हा ४ १---नम ११७)। ६ धारति मानार (ता

१३९) । ४ ति गरत पूरव (दे ६३४६) ।

**पंत प्र["काक] १~२ पूर्णमक्र मीर** विशिष्ट शामक इन्द्र का एक सीक्यान (ठा ४ १)। देना सी [ नाग्ना] र भूवानम्ब शायक इन्द्र की एक चय-महिनी (खाया २-पत्र २१२)। २ एक विश्वासी-महत्तरिका (शत)। प्यभ पु [ प्रम] पूर्णस्य मीर विशिष्ट बानक एक साकामा (हा ४ रे—पत्र १६७ १६८)। प्रमाधी [प्रमा] १ भूतासम्ब धना की एक बन्न-महिपो [गामा २---पण २४२)। २ एक दिल्हुमारी देती (ठा६---थन १६१)। दमी स्य=का (धडइ) । रूअंस पु [क्योंश] १~२ पूर्णभद्र धीर विद्यार इन्हें का एक शीक्यान (टा ४-१---पभ १६७ १६म)। रूअंसा क्षे [रूपाराा] १ पूरानव एवः भी एक शत-शहिपी (ए।मा २---रत्र २६२)। २ एक विल्डुमारी वेश (ग१--- नत्र १६१)। स्थ्या}⊈न [स्प∎] १ शाबा (१९४ रुभय र ४२२) । २ प्र प्रस्य (लावा २ पथ ५३२) ः ३ स्यादेशी ना सिद्धानन (लावा २---पत्र २६२)। बहिमय १ [क्संसक] रूप देवी ना नान (फामा २)। (सरी स्त्रे ["माँ] एक गृहत्व हो (णाबा २)। यह ध्री [ यनी] भूतानन्द नामक इन्द्र की एक घन्न-महियी (शामा १)। देवो रूपय = १५४ । रूबस्थमा [रे] देखी रभरद्रमा ( पर् ) । क्रमा सी (क्रपा) १ भूतातव रहा वी एक सक्ष-महिती (ग्रामा २----गत्र २१.४)। २ एक दिस्तुभाधी देवी (ठा ४ १-- व 1 (#35 हमामाना की [ रूपमाया ] धरानीध्य (रिय) । क्षार वि रूपमरी पूर्ति बनानेनासा नोत्तमत्रोधनं नोध्ये शतिए ml कोन शयारी'

(शिंगे १११ )।

ब्रह्मान (नाम) ।

(ठा ४ १-- रव ११६)।

क्यापई की [रूपनर्ता] दर शिहुमारी देता

कड रिक्टि देपरियत्त र्माट निद्या २

व्यक्तिक क्षेत्रकारीया गाम नराहिया साथ कारिद्वाँ (३४ ६४६ धे) । ३ जन्म

रेक्ट एक [प्लाबय ] सराबीर करना। वह

रेकि को हि फिल लोग धनाइ (धन)।

रवहमस्ळल प्रेरिक्तीनश्चा पार्थ नाप-

इस्ती के किया एक चैन मुनि (श्रीर ६१)।

रेबह्य दूर् [रेविटिक] स्वर-विदेव रेक्ट स्वर

रेबइय न (रेबिटिङ) एक छ्यान का नाम

रेबंधमा धी [रेवतिका] पूर-पद फिरेन

रेक्ड की रिक्ती र वबरेव की की (प्रमा)।

२ एक थाविका का नाम (ठा ८---पर

४३६। इत १३४)। ३ एक क्सन (सर्म

रेपई की दि रेमती मातूना, हेगी (दे क

रेक्टर्ड [रेक्टर] पूर्वका एक इस के

विशेषः रिनंतराज्ञास्या इत प्रस्तवितीय

मुलक्किखों (बर्मेरि १४२। मुपा ११)।

रैवक्टिय रि [दें] प्रतासम्ब (रे ७ १)।

रेषज १ रिवली व्यक्ति-शामक नाग एक

बापाएस कल्य-बंध का कर्ता ( वर्गीय

रेश्यन 💽 प्रकाम समस्त्रार (६ ७ ६) ।

रेजन 🙎 [रेजन ] गिरकार पर्वत (सामा

रेजय दु [रेवत] स्वर-विधेत (प्रशु १२०)।

रेविकिता की दिंगे बातुकावती कूल वा

१ १—१२ १३। धीतः कुत्र १४) ।

रेबंद (ब्रमा) ।

(बरा १२४)।

(98 8 48) I

(<del>क्म्प</del>)।

१७)।

१४२) ।

रूस बङ [स्य] द्वस्या करता। स्वद् क्सप् (क्य कुमा। है ४ २३६ आह ६८ वड्)।कमै क्यिक्शइ (हू ४ ४१०)। केंद्र- व्यसितं इत्सेष्ठं (हे ३ ३४३) पि १७६)। इ. इ.सिमध्य हसेयव्य (ग ४९६ वलाव १--वन १६ : स्टाई १४) । प्रयो-, संड्र. क्सविश्न (तुमा) । रूसण न शिवजी १ रोन प्रस्ता (ना १७६) हे ४ ४१८)। र रि इस्साबीर रोष करने-वामा (शुक्ष १ १४- संबोध ४८)। इस्तिञ्जि विक्रियों ऐव-शुक्ष (तुका १ १३ 14)1 रे भ रिी इन भनों का मुक्क भ्रष्यथ—१ परिकार १ प्रशिक्षेत् (सीच ४७) । ६ र्थमनच्छ (दे २२ शब्दमा) । ४ **शब्**देश (शिक्ष ३०)। १ तिरहकार (पन ६०) । रेल रू [रेतस्] नीर्थ कुन (शक) : रअव कर मिची क्रोक्स शाल्या थि बद (है Y 25)। रेमबिम वि [मुक्त] बोग ह्या त्यक (क्रमा⊐देक ११)। रेजनिज वि [देरेचित्र] हरोक्ट कृष

७ ६१) । रेकिट मिं [प] र पातिता। र तीण। ६ शीतित व्यक्ति (१ ७ १४)। रेकार प्र रिकार] 'रे उच्च, 'रे वी पात्राव (पर १)। रेरेंद्र क्यों रिव्हें (चीता ६)। रेपा की रिप्ता पार्की (प्यान वीता)। प्रीक्ती एक मैत पार्की (प्यान वीता)। रेपि प्रकी प्राची (प्यान वीता)।

क्या ह्या बाली किया हुन्सा (दे ७ ११)

रमा≢ी[रै] १ वन । २ पूक्छ छोना

रेक्ष्म वि [रेचित] रिक्ड विमा हुमा (वे

शाय से ११ २)।

(पक्)।

क्रम्बिमियी क्षेट [व] संस्की की (दे रू)। इत्यय देखा रूपग (दुप १२३ ४१३) काल १४)।

٠ţ٩

12) I

₹ )i

श्चा वि [स्वा] प्रवाहपा, सराल (४४ ७

इदि से [रुढि] परमय से बसी माठी

र्व्यक्तमी (सुपा ६११ कप्पू)।

क्रमा = स्य (ठा ६---यत्र १६१) ।

प्रसिद्धिः 'पोसङ्गस्कोश्योदं एतः पञ्चालुनानको

इस्प पूँ (इस्प) पशु, वानवर (पूज्य २ )।

क्षि वृं [इपिन्] सौतिक क्सावै (गुक्क

क्रस्त्य १ [दे] क्लुक्ता रखरत्व (गय)।

रूष पूर [क्य] १ बाइनि बकार (शाया

११ पाम)। २ सीलामै बुल्वच्छा (कुमार

ह्म ४ १ प्रानु४७ ७१)। ३ वर्छ शुक्त

मादि रेंग (बीराडा १ २ ३)। ४ पूर्ति

(विदे१११)। ३ त्वधव (ठा ६)। ६

शुम्प नाम । ७ श्लोकः । ६ वान्क माहि

इरम काला (हे १ १४२)। इ. एकं की

द1)। १०--११ रुपशस्त्रा वर्खनस्त्रा (हे

१ १४२) । १२— वेबो इच्छ इस = इस :

क्या केले कम-क्या (स. ६---पत्र १६१)

इक)। "अक्टन पुंचिश्ची धर्मशब्द

(व्यव मा मा ११४)। बार वि

['धार'] स्प-बाधः 'कसपरमण्डनस्थः' सके-

नगण्डाकंगमारेखें (बा ६)। ध्यंसा वेबी

रूअ-प्यमा (इक) । संव देवी वंद (पत्य १२, १७-११ १६) । यह की विवती

१ मुदानन्द नामक इन्द्र की एक अध-वर्जियी

(हा ६--पत्र १६१) । २ तुक्य नामक

भूनेन्द्र की एक सद-महिची (ठर ४ १---पत्र

२ ४) । १ एक शिरहमाचै महत्तरिका (ठा

६)। वंत सम् वि विमूी कल्लाला

नुष्प (या १ ) प्रशा का द्व ६६२) सुपा

सम्पर्व [स्पद्र] १ क्या (उप दृ २०

बम्म वरी वृत्र ४१४) २ सम्ब्रिक मिस्ट

एक पर्यकार (मूर १ र्थ किले ११६ ही)।

AMA: £1)!

क्रो समग्र = स्पद्धः

संस्था एक (काम ४ ७७) ७३ ७३ व

| 1

रेवा की [रेपा] नगै-रिक्टन नर्मशा (ना १७०-भाषा दुवा प्राप्तु ६७)।

धापर्व (दे रे) ।

रसणिया) भी दि १ करोटिका एक रेसमी 🕽 प्रकार का कास्य-माजन (शास दे ७ ११) : २ मसि-निकोण (दे ७ १५)। रसम्मि देवी रसम्मि जो उस्स सदा-पश्चिमी कर्ण के बनकिचिरेसम्म (स ११७)। रैसि (मा) रेको रसि (है ४ ४२% छए)। रेसिम वि [वे] खिन्न काटा हुन्ना (वे क £) ı र्सि (मप) ग्रीचे देखो (हे ४ ४२१)। रैसिम्मि म. निमित्त निए, बास्ते 'बंग्रागु-न्याजनरिक्तास्त्र एस ऐमिरिम स्वत्स्तार्था (पंचा tt v ) i पेड यक [रास ] दीपना शोभना चमकना। वेद वेद (हे ४ १ कारका ११ महा)। बक्क. रहंस (कप्प)। एक औ रिक्सी १ विक्रविदेश सकीर (भीव ४८१ यतका सूचा ४१) वका ६४)। २ पंक्ति, बोरिए (कृप्यू) । व स्वन्द-विशेष (বিদ) **৷** च्या व्य चित्रना दोमा शीत (क्यू)। चेदिस व [रे] विस पुण्य कटी हुई पूँछ | ( + + ) ; चेंद्रेज वि [राजित] शोमित (पुर १ 2 = 4) 1 रिहर वि [रेन्पावन् ] रेबादाबा (ह २ 1 (32) रहिर } वि [राजिन्त] शोवनेवासा (तुर रहिस १ र मुगा ११) भवर नवरे दिस्ते' (दर ७२= धै )। रहिष्ठ देवो रहिर - देवावन (वन ७२० रोम देश राज = स्त्। रोमइ (सीप्त ६६) ब्राह १)। क रोमंत, रायमाण (गा १४६) का प देशका मूर के परशो। देश शार्थ (स्ति १७) । इ. रोअक्स रोइमस्य (ह रे प्रदाना १४८ हेवा ११) । रीम देशों सूच = स्वृ । रीयइ, रीयप् (सर् का) 'रोहर में पूर्ण है कि बूर्ण है सबसा निक्ष' (रंमा) । यह- रायंत (मा ६) । राम तक [समयू] १ औप कल्या २ वस्य वरशा बाह्ना । सेवद रोहमि रोहद्वि (क्न १८ १३: मन)। स्टेट स्वयहत्ताः (उत्त २६, १)। t (v) :

रोभ सक [रोपय ] निर्लंग करना । रोपए [ (बस १, १ ७७)। रोब दूं रिपा र्राष 'बुक्कररोथा विजना नामा मिलियेपि नेव बुज्यंति । तो मण्डिमान्द्रवीलं वियन्त्रमधी पवासी में (बह्य २६ )। रोअ र् शिया मानव बीमारी (पाध) । रोज्ञान विचित्रकी १ वर्षि-चनकारत सम्बन्ध का एक भेद (संबोध ६४ मुपा १११)। रोकस्य व [रोदन] धेना दरन (दे १. १ कप्र २३६८ २८१)। राक्षण ५ शिवन १ एक दिवहस्तिकट (इक) । २ न योग्रेचन (पढड)। रोअजा और रिक्सा विशेषन (वे ११ ४१ नवर)। रोजांजजा की [वे] बाकिनी बाहन (दे ७ १२, पाम)। राभक्तज रेको रोज = स्त्र । रोमानिम नि चिदिती स्तामा हवा (च ३१७ चुरा ३१०)। रोह दि शिगिम् । धेमनामा नीमार (गतः)। रोह देशो रुद्र = कविं। 'पावि श्रुंश्रेषि दिएले बुस्कररोई कवहमाई' (विट १२१)। रोइज वि शिवित ? पर्धर गामा हमा (मग)। २ विकीपित (टा ६—पत्र ३११)। रोहर वि शिवित् पेनैराना (या ६८६) वद्)। रोक्त वि वि रंक गरीब (देश ११)। रीय क्षक चित्र विश्वताः धेक्ट (१४) 2 (X > 3 राकाम वि [वे] मोशिव पवि विक (वर्) रोक्कणि ) वि दि दिश्योगे श्रांगसमा। राक्षणिक ) २ दूरांग निरंप (१ ७ १६)। रोग र शिग र बीमारी व्यक्ति (प्रशा पण १ ४) । २ एक बाह्मण-नातीय भावक (सप ११६)। रोगि वि शिमिन् | बांबार (बुरा १७६) । रोगिश वि [रागिक व] कार रेजी (नुज

रोगिणिमा की [रोगिणिका] रोप के कारल सी वाती दीशा (ठा १ —पत्र ४७३) । रोगिह देतो रोगि (प्रामा) । रापस वि वि रंक गरीव (दे ७ ११) । राय देवी रॉप । रोण्यह (वड ) । रोग्म ( दि अस्य पर्-विशेश हुनराठी में 'रीम' (देख १२) विसा १ ४ वाम)। चेट्ट **र्न** (दे) १ तंरून-गिष्ट, चावत मारि स बाटा, विशान ग्रुवधाती में 'सोर' (दे । रेश मीम १६६ १०४ हिंड ४४ वह १)। रोष्ट्रगपु [दे] रोध रोग (महा)। रोड पक [द] १ रोक्ता भग्काना। २ बनावर करना। १ हिछन करना । रोडिसि (स १७१)। स्वतः रोडिजीत (एर हु १३३)। धेक्ष वि]वर का मान गृह-प्रमाण (दे ₩ ₹₹) i रोडी की [दे] १ इच्छा धविनाया । २ वर्छी की शिविका (दे ७ ११)। रोचस्य रेखो रुझ = धर् । रोह दु [रोह] १ महोरात्र का पहला मुहुती (सम ११) । २ एक द्वारित तृतीय बनदेश मीर बामुदेव का रिवा (वा ६—१३ ४४७)। ६ वर्तकार-राज्य-प्रतिद्ध नव रखीं में एक रख (पणु)।४ वि दास्त अमेक्ट मीपस (ठा४ ४ महा) । इ.न. ब्यान-निशेष हिंचा धारि कर कमें ना चिन्छन (कीन)। **गर प्र [रुह] पहांचन का पहला मुहर्त** (पुण्य १ ११)। देशो कर ≕ सा। राद्ध वि [वृ] १ वृष्ठिताञ्च । २ न मन (दे v (1) 1 रोम पुन [रोमम्] तोन बात रॉमा (मीन बाय बढड)। कृष हु [कूप] मीन का बिप्र (गाया १ १-- तम १३ मुर २, 1 (5 5 राम न [रोम] सान में होता नवल (दन ₹ <) | रामंत्र 4 [रोमाध्य] रॉमॉ का बहा होता, भव या हर्ष ने रोंसी का छठ नाना, दुनक (दुना काच व्यक्ति संख्)। रामंचर्भ) हि [रोमान्तिन] दुननित समितिक है जिनहीं से से हर ही बर

(पटच ३ १४) १२ ११, पायः

TE()

रोइ पुरिद्वी १ एक कैन मूनि (मन) ≀ २

प्रदेश बास का सूच बाता (दे ६ ६३) । ३ वि धीवन, धेवाय-नर्सा (वर्षि)।

रोव द कि रोपी वीका ब्रमणती में 'रीपी'

क्षा-रोविर्द (स. १.)।

हु [रोमम्म] पत्रयता चनाई हुई वस्तु
र बबाना पाबुर (हे र ८७६ पाका
1
) सक [रोमन्त्रम्] पदारै हुई स } पीजकाफिर से पदाना प्र;-
पुनानी करना । रोमंचद (६४४६) ।
एमयाञ्चयाज (बाद ७) ।
) पूँ [रोमक] १ चनार्व केत-विरोध ) रोम केत (यब २७४)। २ रोम
∫ रोमं देख (यथ २७४)। २ रोम
ं रक्तेवाची संप्रयम्भावि (पदह १,
उन १४) ।
पु [रोसड] पश्चिमिरोद, रोग की
भवायमी (भी २२)।
[की [दे] भवत निकम्म (दे≑ १२)।
गासच न [वे] केट, उत्तर (वे ७ १२)।
नि [रोमरा] रोमनुक, रोननका
.१९ प्राप्त)।
स स [के] समन्द्र निवास (देश १९)।
[रोर] वीशी नरक-सूथि का एक
त्राम (ठा ४ ४—पत्र २६४)। । द्वि] र्यक्र वरील निर्वेत (वे ७ ११३
ा [क्]रक नराम ।नचन (व ७ ११)
भूर २ १ श सुपा २११)।
[रोड] सहसी नरक दुविको का एक
स्वास (देवेना २४ इड)।
ं पुरिष्क, रीरव] १ राज्यका नरक- गी का पूछा नरकेन्द्रक—नरकावास
य (देवेला १) । १ एलप्रसा ना ठेएकी
. च्यूक (देनेन्द्र १) । १ बादावी नरमपुनियी
एक नरराशांच नरक-स्नान (हा ६
-पगरेश तम ५ दक)। १ वीची
इ-सूमि का एक नरकानाम (हा ४ ४
362) 1
र्षु[य] १ वश्रह, स्टब्डा (१ ७ ११)। स्व योजाहतः यजनम सातान (१ ७
अवास दुवा गुरा ३७६ - वेदन १ ४°
[ %) i
म र्रु [दे रासम्य] प्रमट मधुकर (वे
२ दूप ६ )।
। ध्ये [राष्टा] ध्रत्र-विशेष (रिव) ।
रेनो समाप्ता योगः (१४ १२६
संदेश प्राप्तः च वस् महाः नुदृष्ट
<ul> <li>श्रीर) । वह राधन रीयमाम (पडम देश) पुर २, १२४ ६ १६४। वडम</li> </ul>
*** 3. 0 14. 4 440.464

```
रोह पृथि रिश्रमारा । २ वयन । ६ मार्पेड
  (सम्पत्त १४४)।
                                         (P) w f)
 रोक्य न शिक्त शिना (पुर २, ७५)।
                                        रोह्य नि [रोधक] वेश शक्तनेवाता, पटकान
 रोबाज न रिपाजी भएन बीज बीना (धन
                                        करनेवाला 'रीहक्संक्रुसीय रीहियी क्यारेख'
  t) i
                                         (छ ६६६)। 'रोक्रमसंबक्ती क्या औरड' (सर
 रोबाविश को रोआविश (वच्या ६२)।
                                          1 (9 3 88
 देखिल वि चिपिती १ बीमा ह्या । २
                                        रोधन वेको रोह≔योग (स ६१श सुर
  स्वापित (हे देवे वे )।
                                          22 6 6) 1
 रोविंदच व दि देश-विश्वेष एक प्रकार का
                                        रोहग द्र [रोहक] एड नट-चुनार (डन ⊈
  यान (ठा४ ४ — पत्र २८३)।
                                         282)1
 रोबिर देवी रोहर (देश अ कुना है र
                                        केदरच इंक्टिइस्सी १ एक कैव सुनि
   tyr) i
                                         (रप्प)। २ वैदाधिक सद का प्रवर्तक एक
 रोबिर वि शिपयित् नैनेनस्य (हे %
                                         बाचार्य (विदे २४३१) ।
   (44) I
                                        रोहण न [रोधन] १ घटकाव (बारा ७२)।
 रोस वेबो इन्ह । रोवह (१)(वारवा १६ )।
                                          २ वि शैकनेवल्या (स्वय ६४)।
 रोस र् [रोप] द्वस्ता अनेष (हे २ ११
                                        रोहण व [रोहण] १ वहना पारोहछ (दुपा
   १६१)। इस हाद नि [ बन् ] रोप
                                         ४३० व्या ३३६) । २ जलति (विदे
  (संस्थिप प्रेशाला) ।
                                         १७६६)। व व पर्वत क्रिकेट (श्रम ६२)
                                         कुम ६)।४ एक शिष्ठस्ति-कुर्रा (इक)।
 रोसण वि शिवन देव क्रमेनावा द्रस्ताचीर
                                        रोहिल [रे] रेको राज्य (रे ७ १२ पास
   (ज्य १४७ वे स्वा १ १६)।
                                         पर्छ १ १--पत्र ७)।
  रोसबिक वि शिक्ति कीपित कृपित दिया
                                        रोहिल कि [रोबित] वेस हमा, 'रोहिक
   हुमा (पत्रम ११ १३)।
                                         पावनिपूर्र केल' (वर्षीच ४२) क्य १६१ च
  रोसाव दक[मूज] मार्लंग करमा दूड
                                         442) (
   करना । रीवास्त्र (हि. १. १ १८ जन्म १६)
                                        राहिम वि [रोहित] १ शुक्रावा हुमा (वाष)
   वस् )।
                                         (का प्र ७६) । २ वं शीय-विदेश (वं ४) ।
  ग्रेसाजिज नि [मुप्त] शुव्र किया ह्या
                                         व 🙎 मसन्व किरोग (स २१ )। ४ गः हुछ-
   माजिश (शब द्वमा पिय)।
                                         विशेष (यक्षा १--पत्र ११) । १ वृट-
  रासिक्ष वेचो रोसचित्र (परम २६८ ११
                                         विशेष (हा २, ६ )।
   धिक)।
                                        रोहिअंस नुं [रीहिवांस] एक हीन (में ४) ।
                                        रोडिओस ) बी [रोडिनांशा] एक नथे
रोडिओसा ) (शम २७ १७) । प्रवास प्र
  रोह बक रिक्र ी श्रंपम होता। योहिंद
   (988) 1
                                         [प्रपाव] बहु-विदेश (ठा २ १४ वर्ष ४)।
  राह रेको ६ थ । संह राहिका  राहेर्ट
                                        रोड्सप्पनाय वृ [रोड्लाप्रपात] हरू-विरोप
   (कलः बृह १) ।
                                         (वा १ १-- नव ७१)।
  राइ पूरियों १ वेश ननर पानि नासैन्य
                                        रोहिमा की [रोहित रोहिता] एक नदी
   के मेहन (कामा १ --पम १४६) सम्ब
                                         (सन २७) इका झा २ ३—पन १३ ल ) ।
     र दूप ११ ) । २ व्यापट, रोक शरकाव
                                        चहिंसा को [चहिंद्शा] एक नदी (इक) ।
   (पुप्र १३ हमा ४६) । व वैद (पुण्ड १ ६) ।
                                        राहिजिम प्रीदिणय] एक प्रसिद्ध चोर ना
ं रोद्द र्थ [ राधस् ] धटः विनाय (नाम) ।
                                         बान (या ५७)।
```

रोहिजी की [रोहिजी] १ नजन-विरोध (सम १)। २ चन्द्र की पत्नी (का १६)।३ मोपपि-पितेष (एस १४ १ पूर १ २२३)। ४ मनिष्य में भारतवर्य में तीर्थंकर होनेनाची एक पानिका (सम १५४)। १

नवर्षे बलरेव का माता का नाम (सम १६२)। ६ एक विद्या देवी (संविद्य)। राक्रेन्द्र की एक पन्सनी (ठा ६----गन ४२१)। ६ मत्यूच्य नामक कियूच्येन्द्र की एक बाय-समियी (ठा४ १—पत्र २४)।

ह सब्देन्द्र के एक मोक्याम की पटरानी (ठा ४ १--पत्र २०४)। १ शप-विशेष (पव २७१ पंचा १६, २६)। ११ नो मैया (शाव)। रमण पु रिसण] चनरमा (शाव)। रोहीहरा न [ रोहीहरू] नगर निरोप (संना ६८) ।

## ॥ इस विरिपाद्मभसंद्रशहरूगशम्म रघारादमर्श्वकमसी

वेतीसहमो सर्गने समत्तो ।।

ल

पू [ैशोक] एलस वंग्र का एक रावा

(पदम १ २६१)। हिल ई विपी

संक्रा का राजा (उप पू ३७१)। हिस्क

🖷 🐧 छि । मुधैस्थानीय श्रान्तस्य स्थान्तन वर्ग-विरोध (बाप्र)। संद ध. ने धन्छा दीक (मृदि)। सद्देशो स्वय≖ सा। स्थाप विकासिक देश विभिन्न पहना 🖫 । २ औव में पिन्छ (दे ७ १० पिट देश मनि।। **अ**श्लाह पृथ्वि । इत्यान क्षेत्र (के ७ १६) । माभा भी हितिका छना देवो छना (भाग-स्ता ७ यहह एर ७६व टी) । सर्पा) ध्ये दि । शता बल्ली (यहः वे Bश्ली ) ७ १व): **घडम पुं [शकुथ] बुल-विरोध बहर्स का** याध (योग वि १६८)।

**८३४ } र्ष [श्कुट] नरवी साठी दंश नदर,** सउछ । बेटि (दे च १६ बुर २ व कीप)। **धारम** १ पू [सकुरा] १ धनार्व देश-विशेष स्त्रमय रे (पन २७४ इक) । र पूंडी सहस देश का निरासी मनूष्य । की स्संया (ग्राया रे रे—पत्र १०-धीयः इक्)।

र्छम भी (छट्टा) नवधे-विदेश विद्वनतीय शे धारकानी (ने ६ ६२ पत्रम ४६ १८) पण्)। सप वि छिप सिकार्नवामी (वका रेर ) । सुरुधं को ["सुन्द्रुधं] इनुषान को एक पत्थे ( रहन ११, २१ )। सोग संगोध देशो संगुन्द (पुण्य १ - e) ।

र् [क्षिपति] बहो सर्च (पतम ४६ १७)। संस्था विहे समा (गरम ११)। क्षीला हे पूंचीर [छल्ल] बढ़े बांस के अपर बीच सीला। करनेवाली एक नट-वारि (खावा १ १---पत्र २, पर्राप्ट २ ४---पत्र १६२३ धीपा क्ष्य)। की स्वया (उन ११४) । लंगाञ्च न [लाह्नम] हम चित्रेषु महीत शंबनाए। समा (वर्गवि २४) हे १ ११६ पहर )। क्षंग्रक्ति दु [क्षाप्त किम्] बनमा वलरेव (क्या)। संगर्खि ) की [साजुरी ] परनी-निरोप

र्खासी े शाणी तता (कुना) । क्षंग्रिम पूंकी [व] १ जनानी सीतन । २ वामारन नवीनता वितुष्णद वर्णवद्गी संदिन र्वापर्यं च (कप्रु)। स्रोत्तन [सर्ग्य] पुष्प, पूष (है १

**२१६) पाध गण गुमा) ।** लेगुछि वि [सार्ग्शिय] प्रवासाना, वर् (दुमा) ।

संध तक [सक्त्य, सङ्घ्यू] १ नांधना, धतिकमञ्ज करना । २ मीजन नहीं करना । संबद्द संबद्द (सङ्घा वनि) । कर्म संबित्रहरू (कुमा)। बह्न संपंत संपर्धत (मूपा २७१ परम ६७ २१)। शह स्वेभित्ता, स्विक्तन (महा)। हेक्र संघर्त (पि १३६)। इ. क्षंपणिका (स २ ४४) संघ (इमा १ 169 संघण न [सङ्घन] १ भविष्टनस्य (मुर ४,

१६२)। २ व मोजन (इन १६४ दी)। संचि वि [सङ्कित्] संगत करनेवाला (क्यू)। संचिम्न वि [स्रिहित] जिमरा लंबन दिया यना हो बहु (नडड) । संघ वृं वि] दुःसूदः, पुश्च (दे ७ १७)। खंपा की [खड़ा] पुन रिस्तत बरशेष(पाच

पर्द १ वे-नव हुए से १ ६२ ७ १० नुपा ३ ०)। संविद्ध वि [ छाच्चिक ] पूनवंद, रिराव ने कर नाम करते गता (बर १)।

संज्ञ वक [सन्द्र] १ संवता, तोहना। २ कर्नीकतं करना । कर्म, संदिग्जरं (दननि = {Y} I

मंद्र पुं [कप्दा] चोर्छ वो दृष्ट वार्थ (रिया १ १--पत्र ११)।

पानेवासी पीहरण की एक पानी (औत ११)। १ एक समारम की की (धन ७२० टी)।

क्ष्मत्रिय वि सिम्नायिक स्वझण्यी १ सद्यक्षीका भागकार। २ शतलु-मुक्त (शुपा ११६)।

स्वकासमा ) पूं [स्वस्मय] विकास को बार स्राप्तमा । हुनी स्वास्ति का एक बैन भूति स्वीर स्वाकार (सुपा ६४०) ।

छात्रा की [छात्रा] नाव बाह बनु, वरका (छात्रा १ १—नव २४ प्रश्च २ १) । रुप्तित्र कि [<sup>®</sup>रुपित] नाव से रैंगा हुणा (राम)।

छक्तिसभि विश्विष्ठिति । काला हुमा । २ पहचाना हुमा । १ देखा हुमा (पडड नाट — एना १४) ।

खना न [दे] निकट पास (पिन)।

सर्गंड न स्थिएक ] यक काछ (पंचा १० १६ स ११६)। साइ कि [शायिक] यक वस्तु की त्यस् सीनेवासा (क्यह २ १— यम १ असीन स्थापेत १० स्थापेत १,१—यम २०६)। स्थाप न [मिसन] यक्तानिक्षेत्र (प्याप्त १)।

बतुब देवो सउछ (बूम १०१) :

स्था मक [जा] चरना, संप करणा संबंध करना। सरक (है ४ २६ ४२ ४२२ भक्त ६ प्राप्त जव)। सर्व स्थानस्थ स्थित ११२० का ६६६ या १ प्र) संघ ११२। का ६६६ या १ प्र) संघ ११२। का स्थानस्थ (है ४ ६१६)। क स्थानस्थ (पुर १ ११२)।

स्थान [दे] १ विकार विवासकात, धरानक (देश १७)।

स्त्रात न [स्त्रान] १ केन साथि पाकि का उत्तय (सूर २ १० ) मोह ११) १ २ कि चैकतः सक्द (पासः कुमा सुर २ १६) । १ ई. सुक्ति-साठक (है २,६) ।

समाग न [स्थान] सेन संकल 'नक्याय नक्याहरू करोरा' (नुर १२ १४) का १९४१ १९०)। स्थानात्रम् वृ [स्थानक] प्रतिम् समानतः करनवासाः वामीन (पाप)। सम्यागः हेको सम्यास्त्रकाः।

सम्बर्ध देशो समा = सर्थ । जन्मित वंदी जिल्लामा । १ व

स्विधान पुंची [स्विधानम्] १ समुता सामन । २ योग की एक निद्धि नियके प्रमान स ममुद्ध बोटा बन सरता है "विजित्र सिक्मपुर्धारों योकस्सीन साधने समूर्त (दुन २००)। व चिधा-चिरंत (एउम ७ १६६)। स्वच्या म विषी त्यां-चिरोल मस्द्रम् सुस्स (वै

७ १७)। खब्जु देसी स्वन्ता = सदय (मार)।

ভৰত ৰকাভকক = ৰকা(না\*): ভেত্ৰ বিভা ভন। ভেত্ৰেম বিভা ভাৰতো = ৰকাড (নুগা হ'

प्राक्त २२ मार—वीत ४,४)। छन्छि १ की [स्टब्सी] १ संपत्ति वीनवार

ख्यद्धी | वन हेस्या | व नास्ति । ४ वीरय विरोध । इ.प्रविशी बुझ । व स्वनन्यपियी । ७ इप्रिया । बुख्य शोधी । इ.स. तमी नामक स्रोपनि (बुस्मा प्राष्ट्र व हे २ १७) । १ शोधा (वे २ ११) । ११ विष्णु-नकी (पाम से २ ११) । १२ चन्छ की युक

(पाम से २ ११)। १२ राजसा की एक पक्ती (पटम ७४ १)। १६ पह बायुरेल की माता (पडम २ १८४)। १४ दूंबरीक कह की क्षांत्रामी बेवी (ठा २ १—सम ७२)। १४ बेब-सविमा निरोद (छामा १

रे ही—पत्र ४६)। १६ वस्त्र विदेश हिंगा। १७ एक वर्ष विद्यान-गर्ला (७२॥ ही)। १६ विष्याचे पर्वेद का एक वृद्ध (वहा। तिवस्य वृं [तिवस्य] वासुकेत (वहा वेच वंद्र)। तह वर्ष [गर्ला] १ वहार्ष वामुकेत की साला (सम १२२)। १ प्राथमित मानाची का की एल (सम १३२)।

क्षटचे मामुदेव की शाला (सम. ११९)। २ ग्याद्यक्षे चक्क्सती का की राज (सम. ११९)। संदिर न [मान्यिर] नगर निरोग (शुपा ६३२)। «दूर्यु [पिति] सक्सी ना स्वामी

६६२)। अद्भृष्टं ["पश्चित्र] सक्याना स्वामी श्रीद्राप्त (प्राप्तः ६): अद्भृषी [यदी] दक्षिण स्वकृषर स्वतेत्रामी एक विश्वसारी

वैकी (ठा ८--पन ४३६) ६ क्ष्म) । हुद् पूर्व [धर] १ वासुरेव (पतम ६० ६४) २ व्यन्त विदोव (पिंग) । ३ व वयर-विदोव (व्यन्) ।

समुरु (वरो) देनो रवमु=(१) (शय---रन्यु)।

स्टब्स धर्म [स्टरम्] रारणामः । सम्बद्धः (दशः महा) । सर्वे, सरिकामदः (१४४४१०) । काइ खळांत खळामाण (उर पूर्थ महा साका)। इ. खळाणिळा (ते ११ २८ सावा १ द—पण १४३)।

स्वज्ञम् । न [स्वज्ञमे । रूपम ताब स्वज्ञायम् । (सा वः राज)। २ वि मन्त्रा भारक "कि एतो सन्त्रमुर्ग वे मह रिज्यह्मीले वकायमाले पमसे मां (सुना

२१४ शिष)। छक्ता की [छक्ता] १ नाम रारम (बीन कुना शामू ६६। मा ६१)। २ धन्द-विरोद (पिप)। ३ श्रंबन (मन २ ४। बीव)।

खळापद्यस्य (कै) वि [खळविद] सत्राने-नामाः कुन्द्रवेसमञ्जापद्यसं (मा ४२)। खळाळ वि [खळालु] सञ्जानान्, शर्पीमा

(কণ १७१ ठी)। ডফ্ৰালু ক ভিজালু १ লগা-কিটল ডফ্ৰালুজা লাবৰ্থী ন্যৰণী চুদুৰ্ব ডফ্ৰালুজা (বৰ্ ইং १११) २ নাৰবাবাধী কী (पষ্ ইং १११ १७४)

सुर २ १४६०वा १२७ प्राह ३४)। केळालक्ष्म की [द] कनह-नारिणी की (पर)।

(पर्)। क्षेत्राकार ) नि क्षित्रासु नग्नारीस क्षत्राकुर ) रुपैनरा । सी री (सा ४८२ ६१२ छ)।

জআৰ বন্ধ [ জাম্ম ] যাৰ্টাৰয় কমনা নকমনা। নকমাৰ্টাৰ (জী) নাত—মুক্ত্ম ११ )। ছ জামাৰ্টাৰ্টাৰ (জ १६০ পৰি)। জ্ঞাৰ্টাৰ (জ্ঞান্ত হাটাৰ্টাৰ কৰ্মবিদান (ক্ষ্মে १ ६—বন্ধ ২৮)।

सञ्जाविम वि [सन्दित] सम्बाध हुमा (पएह १ १—नव १४)।

खिलाध वि [खेळात] १ सरमा-पुक्त (पाय)। २ त सरमा शरम 'त सरिमर्घ धप्यशोधि पत्तिवारण' (चा १४)।

स्वित्रियः विक्रियः है । १४४१ वा १४ दुनाः वण्या वा विक्रीः। क्षी. री (विश्वरः)।

सामुळी [राजु] १ रस्तो सबुधे केबुधे या नेबुर। २ कि रस्ती नी त्रष्ट् वरन सीचा 'बाई सम्बु सभ्ये तबस्ती' (यसह २ ६—यम १४६ मा)। सम्मुनि [सळायन्] नरशतानाः प्राप्ता-समित्री सम्बू पाने प्राप्तिमी वर्षे (उत्त ६ १७)।

सामु देशो रिम्मु = ग्रंचु (श्य) । साम्म देशो सम ।

छरू ) न [वे] १ बस्बस साविका केन सर्घ (पन्न ११)। २ नुसुरमः कहमन सर्खा (१७ १७)।

सहा की [पे सहा] कान्य विशेष हुसुम्य कान्य (वर १३४)।

छहा की [झट्या] १ वृत्र विकेष (हुमा) । २ शृतुम्ब (इह १) ६ वर्षीया पक्षित-विकेष । ४ असर, जींच । १ वाच-विकेष (वे २, ११) ।

क्टूंचि [चे] र सम्बारण (वे क नद्दे)। व ममोहर, मुक्ट, एस (वे क देदे नाम प्रावा १ दे पहुंच १ में पूर्व १ दे एक इस ११ मुद्दे पुक्त देश वार्य २१) बार्य र मुन्ना १६६)। वे तिर्यवद प्रिय-मानी (वे क ददे)। प्रजास कुला मानिक्का सर्पाम सामित नाहिक्कुल्य (व्या कदेव स्था)। वंद र्जु [च्ला] १ वेन प्रति (सन् १)। वंद र्जु [च्ला] १ वेन प्रति (सन् १)। वंद र्जु [च्ला] १ वेन प्रति (सन् १)। वंद र्जु [च्ला]

स्त्री से भि मुन्दर रमजीय (इव २१)। स्त्री से [मों] नामी समी (वीन कुमा)। स्त्रीक [भी साथ-निर्म क्रिम्स नहिएल भोवा नगर्ने समिति (नुरुव १ १७)।

स्वद् ति [वे] र राम गुनर (७ १७) गुन ६ सिर्ट ४७ कष्टा बड़ा और वक्षा हुमा हुंबा २६१ ता १६) । १ हुमार कोम्स (बाट ७६३ मिर) । १ हिस्स पहुर (१ ७१७) । ४ प्रवान बुक्य (हुमा)। सहद्वरामित्र वि [व] विचटित विवृक्त

(देण र )। स्वद्रा भी [व] विशायनी धी ( वह् )। स्वद्रास नेती जवास (ताष्ट्र १०) शि २६ )। स्वद्रास ) वृं [सद बुके] नहुं नीत्क स्वद्रास ) वृं [सद बुके] नहुं नीत्क स्वद्रास ( वा १४) स्त्री । शृक्ष २ । नीता प्रस्त प्रश्नाद १० ।

सम्बद्धार वि [सम्बद्धानकार] जन्म वनानै | वाला इसवार्ष (दुम २ ६) । सम्बद्धानक [स्स्र] स्तरहा करना याव करना । जन्म (हु ४ ७४) । वह सम्बद्ध (दुमा) ।

जबह (है ४ ७४) । यह कर्वेद (कुमा) । स्त्रीका वि रिस्ता प्राय किमा हुमा (शस्प्र) । स्टब्स् वि प्रिक्रमा है पिकना मस्त्रा (सम १६७ सा ४ २) सीप क्यू) । २ सस्य कोहा । ६ न जोहा चानु-विकेद (है २ ७७) प्राक्त १ ) ।

स्त्र वि [स्मा, स्थित] वत्र, कवित (तृपा २६४)।

कता ॄकी हिं] १ बात पॉब्स्स्ट्रिस्ट्रास्ट्र क्रम्बद्धाः (बुता १९०० क्ष्य २ १ — पत्र ६९) । २ बालोक-विकेश (क्ष. २ ३ बाचा २ ११ ६) ।

छन्य । (मा) देखी रयण = एल (सप्ति छन्न १६४४ मार्क १२)। छन्न कि भार करना वीम्प शक्तन,

नावना प्रज्ञाती में भावनु । हेत स्वदेवें (पुपा २७१)। स्वद्रण न [दे] मार-शेप नावना (च ११७)।

कही को [ते] हानी पानि की पिछा पुनचती में भीषे (तुना १९७)।

स्त्राम् [स्रम्य] प्राप्त (वनः क्या सीरः है ६ २१)। स्रद्धिकी [स्रस्थि] १ अमीरताम सालाधारि

अन्त का [अन्यादा कार साह के सामारक मंद्री का शिताल से हिस्ता (चिन्ने १६६७)। र सामर्थ्य-पिरोण योव स्मिर्ट से मात होगी विश्वल स्मिर्ट (त्यू १ १—तम ६६)। ४ मार्ड साम् (स्म १)। ४ स्मिर सीर सम छ बुनेशनला विज्ञान सुद साम का अन्योग (सिर्ट ४६६)। ४ योगका (स्मु)। पुत्रस्त चुनि स्वाह्मस्य क्रमे

वान्का (बल्यू)। पुब्राम वृ [पुब्राक] कव्य-विरोध संबंध धुनिः र्यावादमस्य करने पुनिराधन्त्रः चहनद्विति सीए। रीप बहीद कृतो बढिनुसारों (संतीय १)।

स्रतिस्थ नि [सम्प] प्राप्त (वे ६६)। स्रतिस्थ नि [ स्रतिस्थान् ] श्रीम-पुन्त (वेच

काद्यकात्र | काल्यसम् | बाल्य-युक्त (त्य सम्बद्धाः | काल्यसम् | बाल्य-युक्त (त्य

स्तर्थं सङ्ज् हे स्था क्रम । | स्रव्यसिया श्री [वे] शवसी एक प्रवार का | वहास (वर ४)।

स्रकार गींचे देशो ।

स्रम् एक [स्र] प्रहुए करमा । सप्द, सर्वेदि

क्रम व [वे] नन-वामति का भागत में नाव क्षेत्र का बरस्व (वे ७ १६):

ख्य वेबी खब = सब (बड़ेडा है ४ १४)। खय दुं [ख्य] १ स्वेद । <sup>3</sup>र मन की शास्ता-बरना (कुमा)। ६ बीमवा शामिता। ४ खिपेकाव (विशे १६६६)। ३ संगीय कर एक श्रेप स्वर-विशेद (स ७ ४) हम्म १२६)।

क्षय देवी छना। इरम न ["गृहक] नक-भूद (दुस १०१)।

ख्या पूँ [छप] क्यों का स्वन-स्वतिनिकेष। सम च [सम] येव काम्य का एक वेद (दपनि २ २६)।

(इयान २ २१)। खरोग न [खनाङ्ग] संस्था-निरोप नौएसी बान्य पूर्व- गुल्याल सनसहस्यं पुलग्रीस्कृष्टं नर्वप्रसिद्ध होर्ड (थो २)।

क्रमण वि [वे] र छपु, इस्त, काम (वे क २०) पान)। २ गृदु कीमवा ३ म वजी असा (वे क २०)।

ख्यपत्र न [ख्यम] १ क्रिप्तेशक विक्रमा (विशेष १७०१ क ५४)। २ सदस्वान (तुर १ २ ९)ः १ केलो संघ्य (रात्र)। ख्यमणीकी [वे] बदा बक्रो (राज्य वर्ष)। स्राप्त्र वि चित्रप्रस्त् ] यक्त्रवानाः ग्रास्थाः | प्रशिक्षो सण्यू वाने मनियमो वरे (उत्त ६ **₹**•} ı

सम्बद्धाः रिक्यु ≈ क्यु (सन) ।

काम देवो सम ।

धक् ) न [वे] १ वसवस सादिका वैवा **ध**र्ये (पर्ये ११)। २ द्वसुम्बः 'शहमग हला (दे ७ १७) ।

सहा ही हि सहा वाम्य विशेष पुस्प भाग्य (पम ११४) १

स्मृत की [सद्धा] १ क्ल किरोप (ब्रुमा) । २ द्रमुख्य (रहार)। १ मीरैया पक्षि-विरोध । ४ समर, श्रीरा । १ शक-विरोध

(हे २ ११)। **छट्टीर [वे] १ सन्यास्टक** (वेश २६) । २ मनोक्षर, मुन्दर, रूप (है ७ २६) पास खाना है देशका है ४० मुद्र है से कुत्र ११ भू र पुष्प १४) सामें २१) वस १ सूपा ११६)। ३ प्रियंत्रत प्रिय-भाषी (दे ७ २६) । ४ ब्रचान युवक 'चमियन्तो प्रवराहो ममावि पाविहुसदूरस<sup>°</sup> (**७**५ ७२*=* दी)। देत है [ दन्त ] १ फैन ग्रुनि (बनु १)। २ इति-विदेष एक भन्तवीय। १ **धोप-विके**ष में प्रतिकास मनुष्य (का ४ २---पण २२५ ४७) ।

स्टूरी 🕏 [रे] चुन्दर, रवलीव (बुन २१)। सर्देह की [यष्टि] नाठी धन्नी (धीरा हुया)। स्रट्रिश न [बे] बाय-निरोपः 'नेट्राह्न बहुएएं। भोषा फनर्व साहिति (गुण्य १ १७) ।

सहस् नि दि ] इ सम्ब, सुन्वर (७ १७ सूना ६ मिर्रि ४७३ - ७३३ पटा धीपा कमा **नु**भा हेना २६% <del>राष्ट्रा ग्री</del>व) । २ सुबुमाए, क्रीमन (क्राप्ट क्ष ६१) प्रति) । ६ विशास फ्टुर (वे ७-१७) । ४ प्रवाम पूका (कुम) । संबद्धकारीमा वि [व] विवरित विद्वा ( w 3 ) (

**धारदा** क्ये [र्ष] विशास्त्रात्री क्षी ( सन् ) । सदास देशो पडास (प्राष्ट्र १०१ वि २६ )। स्रक्रियन [व] नात छोड प्यार (गणि)। सर्द्रभ ; पुं [सददुक] नहू मोतक स्पर्या (बारप्रावरी र स्वार स भवित्र परम्पः ४ ४३ वित्र १८३) ।

**धब् बु**यार वि [स्रद् बक्कार] बद्द बनाने- ] शाबा, श्रूबवादै (श्रूप्र २ ६)।

**ब्रह्म इन्द्र** (समृत्री श्रमका करना, भा**र करना** । श्वहर (हे ४ ७४) । महः सर्वत (कुमा) । क्षतिक वि [श्यूत] याद किया हुया (पाम) । क्षंत्रह वि [इक्ष्मदेश] १ विकास संस्था (सम ११७ इत्र ४ शीपा कम्यू)। २ घनप कोका। ६ न लोहा बालु-विशेष (हे २

कशः आक्रा देव) । श्चर वि [खरा श्चपित] इक, कवित (तुपा 1 (x#F

ध<del>न्ता ) भी दि} १ बात पार्म्या-महार</del> क-चमा∫ (युगा २३०० ठा२ ३—-पत्र ६६) । २ वा<del>कोक-विशेष</del> (क्ष २ ६ बाचा

7 22 9)1 धन्**ण ₃(**शा) **१को** रचण ⇒रात (यदि अञ्चल रें र प्रश्नक र र}।

श्चर एक [रे] श्वर परना नोफ शलना, नावनाः प्रवर्धता में 'साब्द्र' । क्षेत्र खरेडं (भूपा २७३)।

स्रष्ण व [दे] कार-श्य शास्त्रा (स १६७)। खरी भी दि । शर्थ बादि की रिक्ष प्रवर्णती में चीव (नुपा १३७)। **छद्र मिं [क्रम्प**] शात (म्यः **परा भी**यः

1 (89 8 # क्षद्धि की [क्षित] १ क्षत्रेपरस्य ज्ञान गावि के धानारक कनों का निमाश और क्यसान्ति (मिक्षे २६६७)। २ शामव्य-सिक्टेप मोप ध्यवि से प्राप्त इस्ती विशिष्ठ शक्ति (पथ २७ योगाव २)। ३ व्यक्तिया(पर्साप १--पन ११)। ४ प्राप्ति बाम (क्य

२)। १ इन्द्रिय शीर तय से श्लोबेशका विकास भूव क्षान का काशोग (विशे ४६६)। ६ योग्यवा (पद्म) । पुस्तका र् ["पुद्माक्ष] मन्त्रि विरोध संवधः चुनिः न्त्रीवाहजासः कन्त्रो षुविखण्या चल्लाद्वित्रवि कोर् । शीए स**श्री**ह

पुगी समिपुणायों (संबोध २ )। स्रीहरू विस्थिती शास (वे ६६) : स्ट्रिक्ट वि [ स्ट्रियान् ] सम्बद्धः (वेच 1 (0 1

ब्दर्भ } क्षो बग । सद्भ }

क्रव्यसिया की [दे] बपती एक प्रकार का पद्धाय (पद्य ४) ।

सकता नीचे वेची ।

स्थ्य सक स्थिम् । प्राप्त करना । नम्बर्स बाधर् (प्राचाः क्यां विशे (२११)। सवि वाण्यिति शमित्ये समित्सामि (उप महुध पि १२१)। क्ये सम्बद्ध सक्रमह (मध्य १६ के १ १४का ४ २४४३ <u>व</u>िता)। र्शक स्थित स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व १६४- वाचार काल) । हेब्र. संयूच्चे (काल) । 👺 छक्रम (पराह २, १) विते २ ३७ तुपा ११३ २६३ स १७४, स्छ)।

स्वयः एक [स्रा] बहुदा करना । नदर, वर्गीत (उप) । कर्म-- सहरूबह, जिल्लाह (पर्दिश शिरि ६६३)। **वह स्त्र**शंत (वण्या २८) यक्षा विर्दि १७१)। संक्रम स्वर्ध संपन्ति क्रम्पविष्यु (यप) (दिया सविष)। देखी से=वा।

क्षय न 👣 नम-कम्मति का भागत में नान बेर्ने का जरसम (वे ७-१६)।

क्षम देवी क्षम ≕ सव (पर्वतः वे ४, १४) । श्रय पूर्वियी १ स्वेप । र मन नी सम्मान बस्मा (क्रुमा) । १ बीमता तक्कीनवा । ४ तियोगाम (मिसे १६६६)। इ.मंधित का एक श्रेष स्वर-विदेश (ब ७ ४) इस्य १२६) (

क्ष्य देशो छना। हरम न ["गृहक] बरा-भूक (सुदा १८३) ।

क्षम र्षु [क्रम] तन्मी का स्थत--व्यक्तिवितेतः। "सम न [श्वम] क्य काम्य का एक मेर (बसमि २ २३)।

स्रयंत प (स्रवाह) संका-विशेष पीयनी काम पूर्व यूक्तारह समस्हरसं पुत्रसीधाउँ शर्यवस्तिह होदं(यो २)।

क्षत्रकावि कि देश, इन्ह साम (देश २७३ पार्थ) । २ पुरु कोमझ । ३ व वाही बता (दे ७ १७) ।

क्रमण व [क्रमत] हे क्रिक्टमंबर क्रियम (विश्वे नवाकः दे ७ २४)। २ धवस्यम (गुर ३ ९ ६) । ३ वेबा संध्य (स्तत) । धपणी सी [के] बदा, स्त्री (पापः वर् ) ।

सार्टम यह [यि + सम्] विसाप करता, विक्त होकर रोगा । सासंपद (प्राष्ट्र ७३) । स्पर्किपन्नन दि र प्रवास । २ वर्तीन । १ मार्कन्या (दे ७ २७) । स्मर्कम देवो स्मर्त्सप । सार्वमह (प्राष्ट्र ७६) । ब्रास्त्रम न [ब्रान्टन] स्नेह-पूर्वक पानन (परम 34 44)1 बास्ट्रप्य देशो स्मर्क्षय । सालप्यद (प्राक्त ७३) । व्यवप्य सक [व्यक्ष्य्य] १ भूव वक्ता। २ बारबार बोलना । ३ यहिंत बोलना । बालपाद (सम्र १: १ रह) । महाा स्मरूपमाण (उत्त १४ १ : घाचा) । स्मस्टपम न [स्मस्यम] वर्षित बरनन (पर्णा १ ३---पण ४६)। द्यक्तम ) केवा सार्वप । सामग्रह, भागमहर्व स्रातमह } (प्राक्त क्≒ः वात्वा १३ )। स्थल्यम [स्थलंड] ताता तार (देध 1(33 स्राप्तस्य विदि दि मृतु, को समा। २ व्योग इच्छा (दे ७ २१) । द्यास्य नि [स्तस्य] बम्पट सोकुर (पाम \$ X X 8) 1 खास्म की [सास्म] सार, मुँह से निका कर क्षत्र (ग्रीक वा १११ कुमा सुपा २१६)। खाकिन क्यो छक्तिकः कृतुनिगहणिक्छ क्छबर्दकारिरंभकासियंगीयों (मनव)। खाकिय वि [खासिक] सोब्-पूर्वक पासिक (मनि)। स्मिष्ठिच (पप) पू [नाळिच] वृश्च-विशेष (पिय)। स्पविद्व वि [ व्यव्यवस् ] शारवाचा (सूपा 388) I खाव प्रक [ छापय ] दुस्तवाना व्यक्ताना । नावप्रजा (सूछ १ ७ २४)। स्मव देवा स्मयून (उप ६ ७)। द्धावंजा ॥ चि<sub>र</sub>ी सुकनी तुस्स किलेग वसीद, बद (रे ७ २१) । स्मनक) वृद्धिमक्ती १ प्रक्रि-विशेष (विवा साबग है 🖁 🗝 वर्ष ७३३ पराह 🐔 💝 पव व)। २ वि काटनेवासा (विदेश २ ६)। स्पर्वाणञ्ज नि [स्प्रमणिक] सनस से संस्कृत (विषा १ २--पत्र २७)।

सावण्य ) देखो त्ययण्य (धीप: रंथा: नस्सः स्रावम ) प्राप्त ६२३ भवि)। त्मवय रेची द्यावग (जना) १ स्मविय (यप) वि स्मित् ] सामा हुया (सवि)। स्पर्धियाक्षी वि] उपलोधन (सूम १२ र रेदी। व्य बिर मि [उदिया] काटनेवाला (या १४४)। स्पर्स सक [ डास्य ] नावना । साधीत (स्त्य १ १)। स्प्रस न [स्प्रस्य] १ भरतराज्ञ-प्रसिद्ध वेयपद सादि (क्या) । २ मुख्य, नाच (पाय) । १ की का नाच। ४ वादा शुरूप थीर गीठ का समुद्धाय (हे २ ६२) । खरस**क** रूप् [समन्त्र] १ राज गलेगाला । स्मस्या दि जय राज्य बोर्सनेकासा भाएक (ग्रामा १ १ टी—पण २ धीप परह<sup>9</sup> ★─पश्चित्र कव्य) 1 द्यासय दूं [द्यासक इ.स.सक] १ सनार्थ देश-विरोप । २ पु औ सनाये देश-विरोप का खनेवासा । ब्रेट स्त्रंश (बीय खामा १ १---पत ३७ इक संत)। **रेवो स्ट्रा**सिय। सासर्वाधह्य दे [दे द्यासर्वाधहरा] मनुर, मोर (१ ७ २१) । स्त्रहाच क [ अराघ् ] प्रश्तका करना। नाहर (क्षेष्ट १५७)। जाह केलो छाम (जा हे४ १६ मा १२ लामा t t)। ब्सइण न दि] मोन्य थेर, खाच वस्तु की मेंद्र (देण २१ ६ व सिंह कद्दीः रंघा १३)। साहरु रेको जाहरु (ते **१** २११३ **द्वा**गा)। साहत देशो सामन (किरात १७)। स्प्रहृषि देवी उपपणि (मणि) । साहतिय केनो सापविश्व (धन)। सिक्ष सक [सिप्] नेपन करना शीपना। क्षियद् (प्राप्तुः ७१) । खिका कि [जिस] १ औपा हुवा (पा ४२०)। २ न, क्रेप (प्राक्त ७)। विभार 4 सिन्धर] सं वर्ष (शह ६)। सिंह पृष्टि वास बढ़का (वे ७ १२)। खिकिंश कि [वे] १ माधिका २ कीन (दे ७ २व)।

सिमाय देशो श्रेस (सूपा १४९)।

खिंगसक [डिक्स्] १ पालना। २ पति करना। १ शासियन करना। कर्मे सिनिका (संबोध ११)। **छिंगन [कि.]हो पिक निरामी (प्रासू** २४' थउड) । २ दार्तिकों का वेप-बारण साबुका धपने वर्ग के सनुसार केप (कूमाः विदेश्य दि हार १--पन १ ३)। ३ धनुमान प्रयास का सामक हेतू (विसे १४६ )। ४ वृद्धिः पुस्त ना ससामारण विष्ठ (गतड)। १ राज्य का वर्ग-विशेष বুদিৰ লাবি (ভূমা ব্যক্ত)। দ্ৰুখ পুঁ िध्वाज्ञ**े नेपनारी साधु (स्प ४**०६)। [जीव वृं [जीव] बही धर्म (ठा ६ १)। र्जिंग वि [जिक्किय] १ साम्य इतु ध वाशी बासी बस्तु (विसे १५५)। १ किसी धर्म के बैप की घाएड करनेनामा साबू, धन्यासी (पत्तन २२३ मूर २,१३)। 🛍 ण। (पूष्क ४३४) । खिंगिय वि [**सेक्निक] १ मनु**मान प्रमाण (बिसे ११)। २ विसी बर्म के केप की बारख करनेशासा साबु, सम्यासी (मीह ११)। **डिंग्ड् न** वि. १ फुस्ती-स्थान फुस्हा का ध्यक्षमः २ म्राग्ति-विशेष (ठा व टी---पत्र ४११)। देवो जिन्छ । सिकाण [दे] १ हामी मानि की विहार प्रवराती में जीवं (साधा १ १---पन ६३ का २६४ के ही २)। २ होबस-पहित प्रचना पत्नी (पर्याह २, ४—पत्र १५१)। क्रिंडिया औ दि ] सन--- वक्टा शादि की विष्ठा, सेको पुजराती में सिकी' (स्प पू २३०)। स्तिंग वेको छै = बा। क्षिप शक [ छिप् ] सीपना सेप करना। बिपद (हे ४ १४६) प्राक्त ७१)। कर्ने भिष्यद् (भाषा)। बङ्क स्ट्रियेसाज (ग्रामा १ ६)। क्या सिप्पंत, विप्पंताल (योगमा १६४, रमश २६)। किंपण त स्थिपत है से बीपना (विस् २४६) पुपा ६११)। लिंपाबिय वि [स्टेपित] थेप करामा हुमा (TX (Y)) क्षिपिय वि [स्टिप्त] भीपा हुमा (कुमा)।

सद्ग र् [र] वाबी चम्न में पैचा होनेवासा

छक्ण न [स्थन] १ साम प्राप्ति । २ प्रहरू

स्वदर वृं स्विद्दर युक्त विश्वकृत्य (मुपा

सहिर ) सी [सहिर शि] वर्रन नहारेन

स्ट्रापिश रि [श्रीम्थन] प्रारित प्राप्त राप्त

स्वरी } (क्याँ प्रोनु ६६ दुमा)।

हीनिय बीट-विरोप (जी १४)।

स्रीगर (मा १४)।

4 (w) 1

हुवा (हुत्र २६२) । स्वित्र स्वो सद् (स्य रिम) । खडिम देखी खिम (वड )। द्ध । दि [इपुं! स्रोटा करम्ब (दुना सर्भ नुगाँ३६ नम्म ७२ महा)। २ इसका (म ७ ४४ पास) । तुष्य, निःसार (पर्याः १ १ --- पत्र २ पत्राह २ २--- ११६) । ४ रमान्नीय प्रयोगनीय (मे १२ १६) । १ क्येका करूप (सूपा **१**१४) । ६ मनोङ्गर तुल्तर (द्वे २८१२२) । क्यों ई भी (यह प्राक २०३ पत्रत है २, ११३) । ७ त. इच्छापुर सुपन्ति क्य इम्प (इटेप । बीच्छ-पून (हे २ १२२) । **६ शीध, वल्पी** (इ. ४६ पराइ.२, २--पत्र ११६) । १ स्पर्ध-विशेष (प्रण) । ११ बबुराई नामक एक क्यीनेद (कम्म १ ४१) । १२ प्रक्रमात्रात्राक्षा सकर(१३ १३४)। कुम्म वि विभागी निवह यहां ही कर्ने धवरिष्ट धी हो, शीम मुन्दि-कभी (नुपा ११४)। करण ग (करण) स्वता बानुरी (खामा १ ६-- रव ६२३ क्या)। परक्रम दें [परात्रम] रेशल्ड का एक पराठि-देनाराँड (ठा ३, १--पत्र ६ ३ इक)। संक्रिज न ("सम्बद्धी सम्बद्ध-विशेष विकास संस्थात (काम ४ ७२) । इद्ध दक [समय समु + क्वी बहु राजाः द्धारा करना। बहुपीत, सहुएनि (बार ३ मा १४६) । शहः सहस्रेत (म.१६, २७) । सहस्रवट र् हि न्योग कुत बरवद ना वेड़ ( \* w \* ) i स्ट्रभारभ ) नि [स्पृहत] नवु किया स्ट्रभ १ अस्तर)।

शहर देवा सह । सहुत बको सहु (कल इ. १०)। संत्रमा देशो सह । स्राह्अ वि [स्रागित] बयाया हुया (से २ २६ वजा ६ )। स्राप्त्रभ वि दि १ नृहीत, स्वीकृत (दे ण २०) । २ क्ट (वे २ २६) । ३ व. भूपा महद्या (६७ २०)। ४ मूर्विको पावर यादिन शीपना (तय १६७ कम्प सीर कावा १ १ टी--- तथ ३)। ५ वर्मार्थ धावा चमद्रा (दे ७ २÷)। श्राद्वभव्य देश साय = नावम् । क्षाप्रजीन रक्षा स्मय = पावर्य । सान्य वि छिडयी काटने योग्य (दम ७ झाइम वि दि<sup>त</sup>े १ काला के योग्य **कोई** क पीरप । २ धारण क योग्य कीन सामक (धावा२४२,१६)। भावत प्रे विशेषाम वेष (रेण ११)। साम देखी असाउ (ह १ ६६: पर- वन्हा मीप)। क्षात्रहादयन विशेषाय धारि संपृथि का वेपन और बड़ी सर्वि से श्रीत साहि हा पोतना (एय ३१) । खाऊ रेको भठाऊ (ह् १ ६६ कुमा) । झाल (यप) देशो छक्त - सद (पिय) । अध्य १ दि ] इस्सि एक प्रकार का सरकारी कर, नयम प्रवस्तीम 'वालो' (बिरि४६६ X8X) 1 क्षपन न (क्षपन) बनुता कीयाई, तनुपन (भव कम पुता १ १ पुत्र २०७) कियत आर्थाव वि [आपविन्] बनुतानुष, शावर बाबा (उत्त २१ ४२३ छाता) । ध्यथपिश्र न [स्रामयिक] बच्चता सीटापन, तानव (सा≭्र---पव ३४२) विन ७ टी मुद्धा२ १ १७३ घण) : भाव रेवा स्थय = वाश (रे १.१) । आह र्ष [साट] केत विशेष (तुपा ६१<sub>व</sub>- कृष र जनखान बारा (हे १ १७४ १ )। २१४ सत्त ६७ धी मदि सस्य इक)। ब्रास्ट वर्ष [स्राप्टम् ] स्त्रेश्चर्यक शासक सार्टी की [सार्टी] विशि विशेष (विशे ४६४ करुमा । भावति (तंद्र १ ) । करह đ) ( खांक्रिञंत (पुर १ ७१) मुपा २४) ।

साह वे सिरही वह विशेष यक भावें केत (बाबा) वर २७३/ विवार ४१) । स्मद्र वि [वि] १ निर्धेय साह्यर सं मारमा का निर्माह करनेवाला, सबमी साध्य किस्ही (बुध १ रे १) नुबार १)। २ प्रमान पुस्य (उत्त १४, २) । ३ द्री एक क्य याचाय (ध्रम)। ख्यद्र विद्िशेष्ठ उद्यम् (प्राचा√े ३ १ क्षण व स्थिनी प्रहेण प्राचन (४०६)। साय देवा शास (वह )। स्म प्रसिम्ब दिन पुरुष १६): २ ब्राहि (स्त ३ ४) । ३ मुद ब्याव (पर ६१७)। स्राभ्यत्यस्य न [स्रामान्तराधिक] बाम का प्रतिक्षणक कर्ष (धर्में है (स)। खभिष । वि सिभिक्री साम्युक्त साम खानिक । बारों (धीर क्में १७)। ख्यम वि हि रस्य मुक्तर (योग)। लामंजय व दि ] इच-विश्व स्थीर इस बम--पडिर यास नी जड़ (पाय)। खमा 📽 📳 शक्ति शक्त (वे ७ २१)। द्याय शक [स्थानम्] बनानाः बोह्या। नापृत्रि (विशे ४२६) । वक्क स्मर्गत (भारि)। स्नक्क स्वरूजन (स ११ ११)। संक्र ख्यद्रम् (यर) (हे ४ ३३१) ३७ )। खाय तक [स्रायय ] १ कटनाना । २ कारमा, धेला। इ. डान्डम्ब (मे १६, ४१)। स्यय केलो स्पष्टम = (वे)- 'बारहोश्स' (मीर) । स्रय विस्तित्री धात लोइट,गृहेव । २ व्यस्त स्वास्ति (प्रीप) । ६ म सम्बन्ध एक धीर भारतहरोक्ष्यूचर्न भारत प्रश्निक् सर्व (पुता १ व)। व्यय ⊈की [ब्यब] १ मधः तरहुत्त । १६८ घट वान्य पूर्वा हुमा नाम **शोर्ड (कप्**रू)। ख्यपण व [स्थरान] वक्तना (व ४२.४)। कायण्य न[सावस्य] १ तरीर-धीन्दर्ने विशेष, रुपैएकान्ति (पामः कुमाः स्ट्रुः पि १ ६)। स्विध—स्ट

र्चे चिम वि [सुद्रिया] केश-एड्ट किया हुमा पुन्धिका (दुन्न रेटर पुपा ६४१)। बुंदा सक [मूज् प्र 🕂 सम्ब्रु ] मार्चन करता पॉप्टना । पुचाइ (हे ४ १ ४ माक्र ६७ भारता १११)। वङ्ग खूँछेत (बूमा)। सुंद स्व [सुच्ह्\_] सूरन्य । सु श्रीत (मुपा ११२) । बच्च स्टेंट (धर्मीव ११३) ।

क्लाइ स्टिकांठ (सुर २ १४)। सुंटण **ग**िल्प्टन ] दूर (पुर २ ४३ हुमा) । स्टाक वि [सण्टाक] सुग्नेवाना मुन्छ (वर्मवि १२३)।

खुंठा वि [सुम्छक] सम दुर्वन चडवंब बेडिया स्बद्धिस्थमाता चुडासीयण स्रयु कंपिण्यंती बस्सिसम्बद्धेल (सुक्ष २ १)। सुंठिक वि [सुण्डित] बनाद वृहीत बनर ब्स्वी से लिया हुमा (पिन)। र्खुप सक [सुपू] १ कोप करना, जिनाश

करना । २ इस्पीइन करन्ता । सुपद्धः सुपहा (प्राप्त ७६ तूस १ ३ ४ ७)। कर्ने पुण्य (ग्रमा) मुण्य (सुग्र १ २ १ १३)। क्रक्ट सर्पत सुप्पमाण (पि (पि १४२ उस)। संक्र अंभित्ता (पि ६६२) ।

सुपद्म वि [ स्रोपयितः ] बोन करनेवासा (मापान्यसः २६)।

स्र्युपमाधी [स्रोपना ] विशास (१४८६ १ **₹---पत्र ६)** । र्थुपित्त नि [स्ट्रोटनू] बीप करनेकाना

(प्राचा)। र्थुंकी ध्ये [के सुम्बी] १ स्तक्क कर्नोका ४६)। र सद्यायस्यी (देशः २०)।

पुरुष्य (दे ७ २०; दुवा) का ६१२ कुल सुष पश् [नि+सी] पुत्रना विका। पुस्स (हे ४ १६ वह् )। बहुः स्थात (पुनाः पञ्जा ६६) ।

ख्या वि [वे] सुष्ठः सोया हुमा (पण) । सम्बद्धि निर्द्धनी तुकाहुमा विशाहुमा (बा४कः ११चः विष्)। छ्यादि (कृष्ण | १ भन्न (कृषा)। २ भीमार, रोगी (हे २ २)। सुष्ट वि [संज्ञात] मुरिक्त केरा-पहिछ (कप्पः पिष्ठः २१७)।

**११६)** ।

सम्माण देशों छोडा = मोक । ल्लाकिश वि [सुकित] दूटा हुया करियत (≰मा) । स्रक्रिय वि [निसीन] युक्त पूर्या विसा ह्मपा (पिंग)। लक्स पुं [स्प्रा] १ सार्थ विधेन पूजा सार्थ (ਲਾ१ सम ४१)२ विकटास्पर्यनासा स्तेष्ठ रहित सुका क्**का** (ग्रामा १ १—पत्र

स्त्रमा वि चि स्त्रज्ञी १ भाग भाग हुना (के ७ २३ क्ट्रेंच २३ ४ २४०)। २ रोबी बीमार (हेर २३४ २६० पड्)। लुक्द्र देशो होस = तृप्। पुण्यद (पर्)। सद्भावक [स्रुप्तः] बुटना । सुद्वदः (पट) । लुदूरचो स्नाद्द=स्प्। सुदूद (कुमा६

७३ कल धीप)। केको छुह≍ क्रा

स्कृ वि [सुविदस] बुटा पदा (पर्मेवि ७) । खुद्व र् [छोट] रोहा, केना संस्थापिका दुकड़ा (दे ७ २६) । समूद यहाँ जुद्ध (शह २१)। छद्र प्रकृ िछ्ठ ौशुक्कमा भेटना। क्र लहमाण (ध २१४)। संह्रिज वि [सुठिव] नेटा हुवा (बुवा ६ ६)

8 (48) I स्रण देवो सञ्ज∞ दु। युख्यः (द्वे ४ २४३)। कर्म जुल्लिन्बद्ध, कुच्चइ (शाप्त हे ४ २४९)। पंत्र, स्थितरण सुगतरण (प्राष्ट्र ६१)

पह ) समेपिय (धरा) (वि १६८)। स्व्योजज वि [स्कृत] नाटा हुवा (वर्मनि १२६)

Refer d) मुख दि [सूत्र] बीय-प्राप्तः 'वनेद नुद्धो दवाये

त्य' (बेह्म ६७०) ।

जेम को भान्ति (वे ७ २८)।

सुधा की [लूना] १ नाविक रोमन्द्रिय (वंबारेब २७) मुदारेप्रका सहस्र ११)।

सुआ भी [वे] मृत-तूप्णा मृदेश्वरण में

२ जास जनानैशासा कृति सक्सी (धोप १२३३ वे)।

सुरेड, मुध्द (पर्मीव व : संबंध २६; कुछ

७२७

स्रचन [स्रोट्य] पोधेका मान (भावक

खुद्ध पुं [खुरुघ] १ भगव (पर्या १ २

निकु४)। रेवि मोश्रुप सम्पट (पाम

विपार ७--- पत्र ७४ प्राप्त ७६)। ३

स्रद्ध म [स्रोप] सम्मान्य-विशेषा विद्यार्थ

चबुवा कनके मुद्रा प्रजनगासि वा (११४ ६

लुद्ध र्षुन [लोभ] धार-विरोध (बापा २

कुंब्य , धक [ उम् ] ! सोध करना।

स्म 🕽 २ बासकि करना । शुम्मद्र सुरमसि

(इ. ४ १ १ १ मुमा) सुमद (वड )। इट

ख्रांसयक्त्र (परह २ ४--पत्र १४१)।

लुभ देको लुइ = मृन् । श्वमद (सीध १६) ।

खुरणी क्ये [दे] बाय-पिरोप ( दे ७ २४)।

लुख रेको सन्द्र । तुसद् (दिय) । यह अपूर्वत,

खुसमाण (बुरा ११ ) बुर १ २**३१**) ।

सुचित्र दि [स्रिटिन] मेटा हुमा (बुर ४

নুজিন বি [ডাভির] মুত্তির বাদির (ভবচ

खत्र देखो सञ्ज≕ चु। पुत्रद (पारवा १६१) ।

सुद्द सक [सूत्र ] मार्जन करता पोछन्छ ।

स्कृष्ण न [माञ्जन] शुद्धि (हुमा)।

स्थ रेपो सञ = पून (वड )।

लुइड (इ.४. १.४ पद् माळ ६६; मारि)।

€ ₹ ch) i

सूर्पत

**€**<) 1

कुना कात्र द€३) ।

सुरव देखो सुप्र।

न नोम (शृह्द ६)।

५४) । देवो खेद्ध = मोम ।

लुप्पमाण } रेको सुंप।

सुद्द [सप्ट्] मुहता चोरी करता। सुद्द

१६) । देक सर्दर्ज (पुरा १ ७) वर्णीव १२४)। प्रयो नह नशायंत (नृपा ११२)।

स ३६)। श्चिम वि दि] १ कौवसः। २ नम्न (शय १४) । क्ति 🖠 🐧 खिल्को बास्तरस-विशेष (सामा १ १--पत्र १६)। सिंबड (धर) देखो सिंब = निम्ब अनराती में "लिवडी" (क्षेत्र देवक पि २४७) । सिंबोहसी भी हिं निमानक (मून वर)। क्रियार देवी किशार (वि १६)। विश्व पत्र [मि÷स] धिनाः विश्व (ह ४ १६, पर्)। वत्र सिक्टेड (कुमा)। क्रिक्ट व [सेक्य] तेवा प्रिसंक किल्बे यक्षिक्रल क्रिक्ट क्रिट्री (सिरि ४१ ३ सुना ४२६) । देशो छेक्स । स्मिक्त सीम [दे] छोटा मोत (१७ २१)। की कसा (रे ७ २१)। क्षित्सा की [क्षिता] र तब बुक्त क्षेत्र वें शीय-धर के बासों में होता कीया कि ब. ६६ सं १७)। २ वरिमाना-निगीत (६७)। (स्साप (धरो) एक 🕻 स्रेसम् 🕽 विश्वनाना । भीव विकासिंहर्स (रि ७)। विद्यापित (प्रश्चे) वि [**ध**रित्तत] निवानाथा हुमा (वि ७) । **डिय्द्र तक [डिय्म्]** शस्य करते को नाइना। निष्मंत्र (हे २.२१)। तिष्य रेपो सिंह (हा - पर ४३७)। खिच्छनि देगो सम्द्रदृ = नेव्द्रकि (श्रष्ठ) । खिन्छा भी [बिप्सा] भाग नी रूच्या (का ६६ प्राप्त २६) । क्रिन्छु दि [किप्सु] साम नी **नाइनला** (मुख ६ १ भूमा) । ब्रिक्टम (दन) वि [स्तन] गृहित (पिन) । र्किकृश त [वं] ! चार्, पुरामय (दे ७ २२) । २ वि नम्प्रक्ष्यतेमुत्र (गुपा ४६६) । स्टिट् यू देवो सेट् यू (बन्दू) । सिम रि [सिम] १ चेर-पूल किया हुना (दे १ ६० दूमा व्यव) । २ क्षेत्रीहरू (सूच

{ 7 7 (3) (

७ १२)।

रिश्चि र्भो दि । उद्द वादिका क्षेत्र (वे

(स.स.)।

ब्रिय दूं [सिम्ब] क्यू-विशेष, बीम का पेड़

मण्डो में चिन (दे १२०

किएम केबो सिधा (ना १११८ यहाँ)। शिक्ष्य केलो छोट्य (मूज १०४) । । स्टप्त स्टिपमाण } वेको सिंप । विष्यासम् म [विष्यासन] म**री**-प्रायन बोत बोधात बाबात (राम १६)। सिरमंत येको विक् = निव्ह । क्रिकेट कि कि दे इस्स साथ । २ इस्स रेवनाबाः बार्धातनरपट्टनकरामिक्के भोरम् पट्टबर्व व भो पूर्व तरच प्रम्बहर्स (बर्मीन w1) I सिवि ) की [सिवि पी] शकर-केवन प्रक्रिया खिला<sup>∫</sup> (खम ३६ मण)। स्त्रिस **धक** [स्थ्य<sub>]</sub> शेना शूतना रापन कराताः विश्वद् (हे ४ १४६) । द्धिस सक मिर्प ] धार्विका करमा । मनि विशिस्तामो (सूच २ ७ १)। क्रिसम कि दि ] तपुक्त भीना (के २२)। फ़िरस देखो किस = फिए । सिस्पंति (तुप 2 × 2 2) 1 क्रिद्रसक क्रिया १ तिक्या २ चेवा करनाः निहद् (दे १ १०७ शक्त ७ )। कर्म शिक्बाइ ( उप )। प्रयोद शिक्कानेड, स्त्रीह एक [स्त्रिह:] पाल्या । श्रीहर (बुमा) त्राक्त ७ )। वर्ग विद्धिन्तर, विकाद (हे ४ २४६)। यक्क खिद्दश्च (मर्स्ट १४२)। क्लक्ट खिल्मीय (से १ ४१)। इस्तानम्ब (शामा t tw-पत्र २६२)। सिक्ष्म न [सेक्न] चारन (वर १ रंगा ११) बिक्**ण ग** किसारी १ निकास केका (कुछ १६)। र रेबाक्सल (हेंद्र ४)। ६ निवानामा 'पनवस्त्रिक्क्ष्मी सङ्ग्रेसे शक्ती निरामसम्बद्धारमर्लं (संबोध १६)। सिंदाओं [तेका] केते रहा= केता प्रक विय मह भारती मध्या बन्तास पू (१ प्रार बद्धार निर्मृ (सिरि ६ ७) । स्थि(पण न [स्थ्यन] विश्वनमा (स्थ ७२४)। विक्राविय नि [सरितन] विक्रमाया हुया

खिडिश वि चिस्तित र विकाइमा (शत् १०)। २ चरिककित (४म)। १ रेका क्रिया ह्राया चित्रित (क्रुमा)। लिख्या अप्राप्त (यप) ति लियत ] विमा ह्या नुश्रीस (पिन) । सीड वि [क्रीड] १ वाटा हुमा (युपा ६६१) । २ स्प्रूप् 'निक्सिपि (१ ब्रिस्) कुसुमनीवनायनोध' (कुत्र १)। १ एक (पर १२१)। स्रीय विकित्ती सम्बद्ध (हुमा)। क्रीस पूर्वि वह (दे ७ २३)। कीलाकी [कास्त्र] १ विवास मीन। २ **ब्री**का (कृषा पास्त प्रासु **११) । ६ सन्द** विशेष (पिष) । दई की विती र क्थिए-वर्धा की (प्रस्तु ११) । २ क्रम्य-विग्रेग (पिन)। यह वि विहा श्रीवा-नाहक (यउड)। कीस्बह्ञ व [स्रीक्षयित] १ अपेक्ष वेश्वि (कर्ष)। २ प्रश्नव 'बन्नस्य बीसाध्य' (का १ ११ है)। क्षीत्राय प्रकृ [क्रीकाय ] श्रीवा करता। **पष्ट क.स्थापंत (शामा १ १ -- पप १३** क्य) । इ. सी.साइसम्य (गरव) । क्षीत ⊈ कि] शक्त नातक (३ ७ १२ सूर १८ वर्षी। कीहा देवी किहा (कामा १ व—पत्र १४३) कुमा यांच पुराह ६३ १२४)। सुब सक [सु] क्षेत्रका स्वयता । मुद्रका (पि ४७३)। लुब वेका सुंद । सुबद (बक्षः १) । ल अर्थि सिमी काट्य इत्या किछ (दे४ **२३ का या वा का ते ३ ४२।३ ७ २३।** बुर १६ १७६, बुवा ११४)। सुध वि [ब्युस] १ जिल्लास चोप विका भर्मी हो बहु। २ स् सोर (प्राक्त ७७)। खुर्जव वि [ स्<sub>नि</sub>शन् ] विक्रने खेरन दिशा हो यह (भारता १५१)। र्जुरु वि [के] चुन कोम्ब ह्या (के ४२) । र्जुंचमी की [वे] कुच्छा विश्तना (वे ० २४) <sup>३</sup> र्थुत 🛊 [वे] नियम (वे ७ १६)। र्मुकाय र् वि किर्जन (रे ७ २३)।

अक्रिम--- स्व सुंसिक्ष वि [दे] बनुष मसिन (से १%, ૪૨) ા र्खुप सक [स्वस्थ्य] १ वस्य क्यायना। २ ब्रानवन करना बुर करना । शु वह (भवि)। मुका मुभिसु (माका)। संचित्र दि सिद्भात केश-रहित किया हुया मुरिक्त (कुन २१२) मुरा ६४१) । संद्र एक [सूज् प्र+ स्टब्स्] मार्थन इरता पॉब्स्स । सुच्च (हे ४ १ १ माइ ६७ वाला १६१)। वह खंडेत (बूमा)। स्ट सक [ रूप्ट] भूरता । सु टीत (मूना ३१२) । यक्त छोटीय (वर्गीव ११३) । क्लक इंटिकांड (सुर २ १४)। सुंद्रण म [ लुम्दन ] पुर (पुर २ ४६ दुमा)। स्टाक वि [सप्टाक] मुश्रेवासा मुश्रेय (वर्मीक १२३)। स्ट्रिय वि [सुन्द्रक] यह दुर्वन अववंद बेबिया उबद्वरिश्वमाखा नु इबसोएए यश कॅपिन्जेचे पन्निमचरोरा (तुक्त २ ३)। मुंडिम वि [लुण्डित] बताव वृहीत, बकर बस्तो से सिया हुया (पिन)। खुंप एक [ खुप ] १ कोप करना, विनाश करना । २ इत्योकन करना । सुपार, सुपहा (प्राक्ट थर सूक्षर ३ ४ ७)। करो कुल इ (सचा) कुलग् (सूच १ २ १ ११)। इन्द्रह सर्पत खुरामाण (पि (पि १४२) बना)। एंड स्पिका (पि ६८२)। खुपइस्त वि [ छोपयित् ] लोग करनेवामा (पाचामुद्रास् २६)। र्खुपणाध्ये [स्रोपना ] विशास (पद्ध र १—यम ६) । स्पित वि जिल्ही बीव करनवाबा (धाषा) । सुंबी ध्ये [के सुम्बी] । स्तक्क, फर्नों का पुण्या (देण २०० क्रमाध्या ६२२ क्रम ¥६)। २ वटा, वस्सी (दे**७** २०)। स्था पर [नि+सी] पुत्रमा, विद्रमा। पुस्तक (हे ४ ११: वह् ) । वहः स्टब्स

(दुवा, पञ्जा ६६)।

ख्ळा सक [तुद् ] टूटमा। चुक्कर (हे ४ ₹₹\$ 1 लम्ब कि वि । सुद्यः सोया हुमा (पङ् )। समापि निर्देशी सुका हवा विशा हुआ (गा ४१: ११८ गिंग)। रुवानि हिल्ली १ मन्त (कुमा)। २ बीमार, धेभी (हेर २)। लुका वि जिक्काव ] यूपिक्व केश-रहिव (क्रम विक २१७)। सम्बंगाण देशो छोडा = शोक । स्रक्रिश कि [तुकित] हुए ध्रमा वरिकत (•्रमा) । सिक्किश कि निरुद्धिनी सुका हुया किया इया (पिग)। खबस्त वे स्थिती र स्पर्ध विकेप सुबा लाई (स १ धन ४१)२ विदश स्पर्शनासा स्तेष्ठ चीता, पूचा क्या (समा १ १--पन **७३ कम भीप)। रेखो लाह = रख**। लमा कि विरुग्यो १ भन मांग हवा (के ७ २३ के २ २ ४ २४ व)। २ रोबी बीमार (हे २ २) ४ २% व पड )। लुक्क देको छुँछ = मृज् । शुक्कर (पर ) । स्कृतक [सुष्ट् ] चूटमा । सुदृष्ट् ( पत्र )। दुक् रको स्मेट्ट≖स्वप्। ब्रह्म (क्रुमा६ 8 )1 लुङ्क वि [सुण्टित] बुटा यया (वर्षेति ७) । सुद्ध दे [छोट] रोका देना देंट भादि का दुक्सा(दे ७ २१)। समुद्र देशी लुद्ध (पाक्ष २१) । सुष्ट पण [सुरु ] मुहत्रमाः नेदना । नङ्ग ख्डमाण (स २१४)। सुंहम वि [लुटित] वेश हवा (बुपा १ ३) # \$58) 1 सम देवो संभ = है । मुला (है ४ २४१) । कर्म, मुश्रिकेश्वर, मुख्यह (मात्र 🧗 ४ २४२)। बंक्र. सृषिकण सुणेकण (प्राप्त ६१। वस्) सम्मध्य (पर) (पि १६४)। क्ष्मिम नि [तून] नाटा हुवा (वर्मनि १२६, सिरि४ ४}। लुष रि [सून] बोस्त्राक्ष 'क्रोइ नुतो इसरो **१व' (बेर्**स ६७७) ।

**छचन [स्प्रेप्त] पोधैका माम (मानक** रहरी)। स्त्रा पुरुष किया काम (परा १ २) निषु ४) । २ वि सामुप सम्पट (पाधा विपार् ७---पत्र ७३ प्राप्त ७६)। ६ न भोग (सह १)। सद्भ सिम्री धन्य-सम्य-विशेष सिराएएँ पद्भाक्त नुद्धं परमगाणि मं (इस ६ ६४) । देखी स्रोद्ध = सोम । सुद्ध पुन [छोध] द्वार-निरोप (धाना २ 24 2) 0 सप्पंत ब्रुप्यमाण रेडी सुंप । लुब्धः । धकः जिम् । १ नोम करना। छ 🗸 🕽 २ बासिक करना । सुब्भन्न सुब्धिस (३६ ४ १२६ प्रमा) सुनद (४४)। इस क्रीसयडव (क्ला २ ५---पत्र १४१)। खुम देवी खुद = मून्। सुमद (संक्षि ११)। खुरणी भी दि । बाय-विशेष ( वे ७ २४)। कुछ देवो सद । तुन्द (पिंग) । वहा सुसंत बुद्धमाण (सुरा ११ सुर १ २६१)। खें कि में [किंटिन] मेटा हुमा (नुर ४ खुखित्र वि [लखित] पूर्शित विनिद्ध (बक्छ क्रमा कात्र ८६३)। क्षत्र देश्ये सुभ = सु । पुरद् (यहंबा १५१) । ज्ञ्च रेबी छूग। सुद्द सक [सूज्] मार्जन करना गोंधना। प्रश्र (हें ८ ९ ४, पड् । प्राष्ट ६६। मीक) । सुर्ण न [माजन] शूदि (दूना)। लू अ वेधो लाज = भून (पश्)। लमा भी [व] मूप-पूप्णा मूर्व-फिरण में वस की भग्नीत (के ७ २४)। लुआ की [लूना] १ वार्षिक रोम-रिशेय (पेका रेज २७) सुपा १४७) सहस्र ११)। रे जास बनानेवाचा हुमि सक्की (सीम १२१ थे)। सुद्ध [ उपद ] पूरना भोधे करना। पूरव मुदेश, मुद्ध (अमंदि । संदेव १६। रूप 28) । हेट सूटर्ड (तुम रे भा मनीव १२४)। अयो यक नः वार्यन (नुवा ११२)।

में निमित्त-मृत क्षम्शादि ह्रस्य (काः स्वाः धीय वर १४२। श्रीतस ७४। संबोध ४८। प्यक्ष १७ कम्म ४ १: ६१)। सेसा की जिल्ला ज्यामा (यम १६) १७)। क्रेसिय वि शिक्षेपिती स्वेपनुत्व (स ७६२)। क्रेसरक्ष्मसरु ४ दि । क्लोडाः 🗓 प्रवा (भक्तपत पत्र २४६)। छेस्सा देको सन्सा (मन)। संद्र देवो सिद्ध = विद्या सेद्वद (माइक्ष्ण )। सेंड रेको सिंड = चिड्रा चेडाइ (प्राइट ७)। क्केब्र (सप) देशों स्वयु = सम्। बेह्ब (पिय)। केंद्र दे सिंही धनसेह, चाटन (पटम २, ₹=)1 ब्यार्थिक्षी १ सिवान, शेवन यक्य निम्यास (मा २४४ छना)। २ वम चिही (कृत्यु)। ६ देव देवताः ४ विधिः इ.वि. धक्य वो तिखा जाम (हे २ १=१)। **६** सेबक विक्नेतासाः 'सम्बंद देहत्त्वे दखा' (मजा १)। यहिन ["याह्यी निद्वी क्षे जानेवाला पत्र-वाहक (पञ्चन ३१ १ सुपा ५१६)। बाह्य, बाह्य वि [बाह्य] यही सर्थे (दुन: ३३१) ३३२) । साक्ष की ["शाब्द] पाठवाबा (व्य ७२८ दी)। (रिय दें [ भार्य] छपाप्याम विश्वक (महा) । श्रे**इड** वि [दे] सम्पट पुल्प (के ७ २३ छेड्ण न [बेब्न] शाटन धारनादन (पान 1 (# 5 # संदर्भी की [जेसता] काम धेवनी (परम २६ ध मा २४४)। होइस देवी सहक्ष (गा ४५१)। हेर्स्स रेबो जिस्स (पीना कमा कमू कुन | स्राधास (पन) की [स्रोमनर्टा] कनस (ह 148 (49 13) स्परिय वि [स्पेरिति] तिप्रकारा हुमा (ठी w) t संबुद्ध र् [द] साह, रोहा, हेला (दे ७ २४)। स्रोभ देवो रोज=रोषम्। संज्ञ सीव्या (इस)। स्रोध यह [छोष् संबद्ध ] देवता । वह । (नुपा २ ) । साअर्थत (गाट) । काङ्क सफाराज (सा १४२ थे) । सक्र स्रोहत (क्रुव ६) ।

દર

स्रोध वं स्थिकी १ वर्गारितकाय सावि प्रस्मी का धाकार तर धाकाश-धेत्र जनत् संसार, भवन । २ जीव धजीव धादि हम्म । १ समय, भावतिका धावि कास । ४ प्रश पर्मायः धर्मे । र जन सनुष्य ग्रापि प्राण्डि शर्गे (ठा १---पन १६ टी--पन १४ घर के ११० अप्याची १४ मास ४२ ७१ क्ष सुदृ ६६)। ६ बालोच प्रकाश (बका १६)। या व शिप्ती **इंपव्या**ग्यास नामक पुषिकी मुक्त-स्थान (काम्य १ ६ -- पत्र १ ६ इक)। २ सच्छि गोबा निर्वाण (पाप)। गगधाभिज्ञा स्त्री ["प्रस्तृपिका] युक्त-स्थान स्वरंगान्याच पुनिनी (इक)। "गगपश्चित्रगरुमा स्थ िम्मितिवोचना वही वर्ष (इंड)। व्यक्ति र्षु िनासि ] मेर पर्नंत (सुम्र ४)। एपशाय प्रे मियादी जन-मृति कहावत (सूर २ ४७)। मगम् प्रिमध्य विद वर्गत (मुख १)। बाय र् वाइ वन-पति कोकोचि (ब २६ मा ४०)। (गास दू िकारा विक-क्षेत्र, बाजोक-भिन्न बाकारा (भग) । इतायम न िभाज की नकायत बोकोचि (भवि)। देखों छोग्। को व प्रिथा ने मुख्य, शेषका केशों का क्लाटम स्थापना (गुपा ६४१ कुछ १७३ खामा १ १ -- वच ६ ः घोष छवः। क्रोध र् क्रिप] शर्शन, विभव (शहर 1 (33) स्मर्थविय र् [साग्नन्विक] एक देव-वादि (事円) 1 क्रोअग व [क् स्रोजक] प्रज-धांत स्व प्राप्तम गाम (कस) ।

Y Y ( ) |

१-पन १६)।

रे देश रे रेवर पुग्छ पाम नुस २

बरवनी, पदम (से ६ ६ ६)

लोइम नि [लोक्ति] निपैनित हुए (बा २७१ स ७१३)। क्रोइज वि जिक्कि सेक-सक्त्री संसर्धि (धाषा: विपा १ २--पत्र १ णावा १ १--पण १६६) । छोउत्तर वि [ढांकात्तर] सोक्प्रधान सोक्-धेत वसाबारण 'सोउतार बरिय' (वा १६ विके ६७ )। वेकी छागुचर । खोउत्तरिय वि (स्रोक्षतिक) ज्या **रेको** (भार)। कों कि कि [के] मुस सोया हुमा (के ७२३)। क्येग र् [स्त्रफ़] मान-विशेष भेगी से प्रशित प्रवर (मछ १०१)। स्वव १को स्यय (यण १६)। क्षोग रेको स्टोअर≖ नोक (ठा ३ २ ३ र---पश्रथर कवा हमा सुर रे ७३३ हे १ १७७ प्रामु २४ ४७)। ७ न एक वेब-विमान (सम २१)। यदा ग [कान्त] एक देव-विमान (सम २६)। कुछ न [कुट] एक इंचेविमान (सन २३)। रेगापुलिहा सो ीप्रपुक्तिम्। गुज-स्पन विदि:-रिका (सम २२)। जचा 🛍 ियात्रा] सो<del>व श</del>बहार चेत्री (खावा १ २--पव ८०)। द्विष्ट औं ("स्थिति । सोक-व्यवस्था (ठा १ १) । बुष्य न ["तुब्ध] जीव सनीव साहि पदा<del>र्थ समूह</del> (मय)। नामि पू िनाभि ] मेर पर्नंत (मुस्त १ थ-पर ७३)। साह पू [नाब] जन्त का स्वामी परमस्वर (सम १। मन)। वरिपुरणा की ["व रनुरणा] स्वकानमाध वृचिकी मुक्त-स्थान (सम २२)। पाछ व िपाछ देशों के दिशाल देश-विशेष (अ ६ १ मीप)। प्यभ पं विभी एक देव वियान (सम ११) । पिनुसार पून छाञया श्रेन [छोपन] बांच बायू नेन (हे "विन्द्रसार] भौरहरा पूर्व-प्रन्य (सम ४४) । सम्बद्धपश्चित्र पुन "मध्यापश्चित्र] २२१)। यच न [पुत्र] सक्तिसान, यमिनय-विशेष (हा ४ ४--पम २०४)। साम्ब्रवशाणित्र वृत्त मिष्यावसानिक्री स्रभणिक वि [स्रोपनपन्] धःमाना नहीं सर्वे (एव) । स्थ न कियो एक बेब-बिमान (बम २६)। लीख न [स्तर्य] स्रोजाधी स्मै [व] बनस्पति-विरोप (पर्छ एक बेर-विमान (धम २३)। बक्रम न [वर्ण] एक देव-विमान (तम २**४)**।

(ख६--वन ६६४)। ब्लुअ वृ [भक्युस] रक्षप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (जवा) । स्राज्ञीयाधिक वि वि रिषय-पूर्ण किसने क्या की हो वह (दे ७ २१) ।

सोलय देशो सांसज (सूप २ ६ ४४)। स्रोध एक [स्रोपय ] भीन करना विम्नीस करना । बोबेड (महा) ।

छोव वृंत स्त्रोप विम्तंत विनास, घरतेना 'कम-नोबकाएसा (कुत्र ४) 'दा बुद्धे बागु वृद्धि सोवं व दुर्ग प्रदेशसा होतुं (वनेवि

222)1 स्रोह देशो स्टोस = बोम (कुमा) प्राप्त १७६)। साह र्न जिल्ली १ बाहु-विकेश खोशा (बिया १ ६---पत्र ६६: पास्त कुमा) । २ वात, कोई मी पानु, 'बढ़ बोहाया सुवले द्वतास क्षेत्र कार्य क्षेत्र क्षेत्र ११६)। बार ई विदार होहार हिम १वत)। जीप प्रशिक्ती १ आरक में क्लान विजीय प्रतिबादुश्य राजा (सम ११४) । २ धना चएकप्रयोश का एक पूछ (महा)। "जंधदण न "जक्रदनी महरा के समीय का एक बन (ती क) । क्षोह वि जिही बोदे का बोह-निर्मित हि

₹¥ ₹ ) I खेहीराजी की [सहाक्रिकी] धन-विदेव (सिंग)।

स्टब्स र सिंहजी सम्बन्धिय सम्बन्ध

श्रम्ब (पह)। खंडार प्रे (बोडफार) शोहार, शोह का काम क्रप्तेवाता क्रिक्स (६ व, ७१३ इर व---वृत्र

8 (0 18

) वेको छोडा 'क्रमम्य म पपलेम् खोडिस <sup>प्र</sup> सोतिसम् य क्यूसातिक्रीगीपू (शुप्रति वनः ७६)।

क्रोहिल पू क्रिक्टि र काम रंग रच-क्छै। २ वि रक क्लैंगका शक सि २ भ्राज्ञका)। १ स क्षिक्, **सूत** (पतम ३ ७६) । ४ मोत्र-विशेष जो कौशिक गांप की

एक शाबा है (ठा ७---एन ६६ )। व्यक्तिमंत्र दं िकोहित्यक, व्यक्तिका धठाबी महापूर्त में तीयरा महापृष्ठ (मुग्ब

२)। कोहिअस्य १ [ओहिताक्ष] १ एक महागर (ठार १---पप ७७)। र चयरेन्द्र क

बिध्य-सेन्य का समिपति (का ६ १---पत्र ६ २/ इक) । **६ एल** की एक पार्टि (शाया १ (--पत्र इहा कथा उस इद ७६)।

४ एक वैन गिमाल (देशेन्द्र १६२३ १४४) । १ राज्यामा पृथिकी का एक कार्ड (सम

१ ४) । १ एक पर्यंत-बट (इस) । कोशिक्षा १ थक विश्वास्थाय रे साल

संदिकास <sup>)</sup> होना । सोविद्याद, घोविष्यवद क्रिक १६८ क्या)।

बोहिआसुद्ध पुं [स्राहितसुख] कालम क एक मरकागास (क बय) ।

ओह्ब पू [स्रोहिस्य] शाबार्य मृतविक के रिष्म्य एक पैन मुनि (ग्रंदि १३)।

) व जिहित्यायन वित-विशेष व्यक्तिशायण र्र (पुण्य १०१६ टी इक्।

मुख्य १ १६)। व्योहिष्मा १ की वि] बनलाति-विशेष कव

क्टेब्रियोह । विशेष (पएस १--पत्र ११) 'सोड्सिकोड स चीह य' (बत्त १६ ११<sub>।</sub> नुस

1 (33 25

जोतिक वि वि क्षांभिनी समद मुख्य (दे ७ २१ पत्रम ६,१ ७ गा ४४४)।

खोबी को लियेती लोडे का बना हमा भावन-विशेष कराह (पर वर्षश चार्व १) । स्वस्य वेको श्रस = मस । स्वस्य (पाष्ट ४२) ।

सहस्र वर्ष (इसंस् विश्वकता सरकता निरंपक्ता। स्टब्स् (हे ४ १६७ पर )। वश्र लडसंस (वस्या १ )। सहस्रण न [स्त्रसन] विसनना पतन (सुपा

22) 1 स्ट्रसाय स्कृतिस्य विमकाना । संह श्वसाविम (मुपा १ व)।

न्द्रसाविध वि [संसित] विस्कारा हमा (इमा) । ल्ह्सिअ वि [स्नस्त] विश्वक कर निय हवा

(जुद्र १०० वस्त्रा ०४)। इद्वसिक वि दि । इपिट (वेड)।

स्ट्रास्थ केको स्मूल (पक्छ १--पम ४ । पि २१)।

स्वादि भी हि स्रोदि शक्तम, मनोद सुद्री (चम्)।

स्हाय 🖠 [ह्लाह] ब्लर क्यो (कांस 724) I

स्वासिय १ [स्वासिक] एक समार्थ मनुष्य-जाति (परह १ १--वन १४) ।

विद्यापक [नि + की] विदना। स्विकट (हें इंद पहर है)। यह स्थितंत (कुमरा) १

विद्या वि कि १ कि १ कि १ स्था। द मय ( यह )।

॥ इय बिरिपाइअसङ्गङ्क्यान्य समाराहरहर्तकालो चनतीसहमो तर्रवी समलो ।।

बास देवो पास (इ.म. १३५)। विर इ. विंगी मनस्य मार्गार (स्त्र)। विरा ब. (प्रमु पुर वेद-विचान (स्त्र २६)। विरु त (प्रमु पुर वेद-विचान रहा। (हुए म [ [सुत] पुत्र वेद-विचान रसा रहा। हुए म [ [सुत] पुत्र वेद-विचान रसा रहा। हुए म [ [स्तु ] पुत्र वेद-विचान रसा रहा। हुए म [स्त्र वेद-विचान रसा रहा। हुए म [स्त्र वेद-विचान विराम केदि (स्त्र विचान केदि विचान केदि बंद्र वेद प्रमाण (स्त्र विचान केदि विचान केदि त (क्यान) बीचील्ड बन्न विद्यान क्षान क्षान

(१))
स्त्रांता क्यो स्त्रेश्वन व्यक्तिक (वर्षके १९४४)।
स्त्राच्या को जीवच्या व विचय व विचय को जीवच्या व विचय व विचय के विचय क

स्वसुन्तरिय स्वो स्वरुत्त (शांत क्षा)। । सह यक [स्वयू] बोस्त्र सेता। बोहर । (क्षेत्र रेत्त)। यह स्वरूत (स्वा)। सह यक [सह्दू रे केटता २ तत्त्वत्त होता। कोहर कोहती (यह क्षत्र कृष्ण रे रेर रेत)। यह स्वरूत (नृता होत्र)। स्वरू रूप होत्री रक्षण वास्त्र (तिम् स्वरूत्तर प्रे)। रईस्ट होती वा स्वरूत स्व

स्विद्धित हि [ के प्रेस्ति (है क प्रेस्ते) । स्विद्धित [ क्षेत्री (स्वित्ते) । स्वद्धित [ स्वित्ति हेस (है स्वत्ते) । स्वद्धातिक हि [ स्वित्ति हेस (स्वत्ते) प्रकास हस्य (स्व स्वत्ते हि हो क्षास विद्यालया को स्वता

(पान्ध १ १) ।

स्ट्रहारिय हि [स्टेंटर] पूजाय हुया (ना करा)। स्टर्ड नहिंदु क्यात्र निवादना नोहना "रास्त्रीय भोर्यु व्यवस्था (एवा) । स्टर्ड मुंद्रि हो सीहा क्षिमानुष्ट नीस्त्रे या नारद (त्य १ १ ४३ उसा)। १ स्टिब विदेश, बीस्प्रीयन्द्र (१३ २ या)

१ : संशोध ४४) । १ वि समुत । ४ व्यक्तित (है ७ ७२१) ।
औहर पूँ [बै. कोऊक] क्यांस के बीज |
दिख्यानी श्री मण्ड (पत्रम) ।
व्यक्तित्र कि [काठित] केटवामा हुमा,
तुष्पाम हुमा (पत्रम ११ (७) ।
आज म [काज] र पुन- मण्ड । २ सावस्य,
स्क्रीर-काठित (च ११६ हुमा) । १ वूँ,
बुध-किरोप (पत्रम ४२ ७- या २ । यस
४) । ४—वेदो जन्मण (है १ १०१। प्राप्त

शरीर-कान्ति (ख ११६) दुमा)। १ पू. क्क्ष-क्रिकेप (प्रक्रम ४२ ७-धा२ । प्रव ४) । ४--व्यो अथम (हे १ १७१) प्राप्त वक्कः भीप) । स्राणिय वि [स्रावणिक] नवल-पुत्त, प्रवस्त सम्बन्धा (योप ७३६)। खा**ञ्ज** न [ खायण्य] सरीर-कान्ति (शाङ्क १)। त्रांच न जिल्हा नोपै का यान (स १७१)। लोह वं सिम्मी क्व-विधेव (सामा १ १-- पन ६४८ पर्यक्त १३ सूची १ ४ २ च भौक दुवा) । देवो कुटू = तो**म** । म्रोड देशो लड= कुम्ब (पाय पुर १ ०० २२३ प्राप्त)। खाप्य देवो लुपः 'बो एवं शार्य सीमाइ धो विनिध बाय्पर्यतो कि केपानि धरित पारीमझ' (स ४६२) ।

ভান রু ডিনেম্ব বুলবা করেব देशा । क्युक्त स्थाभिक्रीत (सूरा ६१) । क्षेत्र 🕯 [क्षाम] बालन तृष्टा (बावा-कृष्यः सौयः क्वा का ३ ४)। २ वि सोय-बुक् (पडि)। ध्यमणय विश्विभनकी तोबी बासवी (ब्राचा२ १६,३)। स्राधि ) व स्थितिम् । शोगराना (कम्प द्यासिक्षु प्रभागतम् ४४€)। द्धाश पुंत्र [क्षाम] रोम, रॉमी व्यव्य (क्रार)। प्रिमा पू [पश्चिम] येश के वैश्ववामा पची(धा४ ४—पद २७१)। स नि [°श] भोत-पुक (वस्त्र)। इत्थ पू [°इस्त] पीछी येश का क्या ह्या महरू (दिपा १ ७-- १व ७८। धीवा गाया १ २) । इरिस र् [वर्ष] १ नरवारात-निरोद (देवेना २७)। र रोमान्य येथों या शहा होना (शत र,

११)। दार र्र [दार] गर कर चप

नुष्वेत्राना चोर (उत्त १,२)। ।हार नु

िश्वारी केंग्रेटी से वित्या पाठा सक्तार, त्याचा से शी नाती सुराक (घप पूर्वारे १७६)। क्रोमीयम पूँदि नद (शीद टिप्पण वैयोज पुत्रिक्त १६ वो क्यानक)।

बुद्धिका १६ वो ज्यानक)। स्मार्ट्स की बिंदी १ कम्बी कोस्स (उप १ १११)। २ वासी-मिरोप कम्बी का राव (वस १)। स्रोप म चिंदी सुबद कोजन निराम (धाना २,१ ४ ६)। स्रोध १ ई विदेश सांबा २ सप सांबु

(पिय)।

श्चां⊋ सक् [सुरु] १ तेरना २ वक विकोशन करता । खोखड ( विक ४२३) पिय) 'नीतेष रस्वयन्त्र' (पडन ७१ ४ )। वह छोर्जनः छोछमाज (क्या विका वस्य 18, we) ( खोळ वक [स्रोठम्] केटाना। क्षेत्रीह क्षोबेचि (उचा) । खेड वि [छेड] १ कमर, क्षम पासक (क्राया १ १ टी-पत्र १३ भीपः पामा कव्य बुपा १९६)। २ पूँ स्टन-बमानरक का एक नरनावास (ठा ६—वन ६६३) क्षेत्र ३ ३ ३ १ शर्मराज्या नामक दितीय वरन-(वेरेण क) : मस्स्र पूं ["सम्स्र] नररानाध-मिलेप (ठा६ दी—पत्र ३६७)। । सह र्ष [रिराप्ट] गरनामाध-मिरोप (हा ६ दी)। विश्व र् [भियत्ते] नरकमाय-विशेष (झ

६ दी। देवन्द्र ७) ।

૧૧) (

खंखण व [लंडन] १ बेटवा शंखन (शुध केंग्रेण व र्ष [स्वायास्त्र ११]) केंग्रेण व र्ष [स्वायास्त्र] नरक-लाव-रिटेन (१९०१ १)। खंख्या न [कीरन] बरगटता बोजुरता (एवर १ क-ल ४१)। खांक्या र्युक्त (बेटवा) करर रेवो (दुना)। खांक्या र्युक्त (बेटवा) करर रेवो (दुना)। १ व १९, ०९; पार नुर १९ ११)। १ व १९, ०९; पार नुर १९ ११)।

स्राप्तिजन [दि] पाटुः मुख्यमः (दे **॥** 

बहर्दी की विदेशी ? एमा जनक नी की सीवा की मावा (परम २६ ७१)।२ कन कारमञा, चीरा । १ इरिक्राः हस्ती । ४ विव्यक्ती पीपम । विश्वकृत्वी (संदि १) । बट्यमा न विधानी निष्यपर्वता विपर्वत-पन (विसे १२२८)। बद्रमिस्म वि [क्यांतिमिक्ष] वंगिनितः (धाषा 2 8 8 4) 1 यहर देशो बर = बैर (है १ ११२)। बहुर वृंत बिक्कों १ एल-विशेष हीरक, हीरा (सम ६६: भीप भन्मा भया कूमा)। २ इन्द्रका सक्त (पड़)। १ एक देव-विमान (देशेन्द्र १३३) सम् २४) । ४ विचात् विजनी (क्या) । १ ए एक मुत्रसिक वेत महाप (कृप्प के १ ६) बूना) । १ कोकिनाध इस । ७ रहेत कुरा । ८ मीक्टरा का एक স্বীৰ। ইৰ ৰাভক হৈছে। १ বাসী। ११ क्षेत्री । १२ वज्राप्य । १३ एक प्रकार का बोधा । १४ माम-निरोप । १५ व्योतिय प्रचिद्ध एक यीम (है २, १ ४)। १९ कीविका छोटी कीब (सम १४६)। क्री ल विश्रण्डी समदमा प्रविक्षी का एक श्रहरात-भय काराह (एव) । शर्रत न िंध्यन्त**ि एक देव-विमान** (सम २१)। भूतक स**्थि**ट १ एक देव-विसास (सम २१) । २ देशी विशेष का यात्रासन्त एक शिक्र (पन)। अम पु विक्वी १ मध-क्षेत्र में प्रशास सुरीम प्रतिकानुदेव (सम १५४) । २ पुरुषसायद्ये विजय के बोहार्यक नगर का एक राजा (याव): प्राधान प्रिमी एक क्ल-किमान (सम २६)। संस्था 🕊 ["सन्दा] प्रतिपा-विदेश एक प्रकार नांचत (ठा ४ १---पन १६३)। रूप न [रूप] एक देव-विमान (बम २४) : क्रेस न [क्रिय] एक देन विभान (सम २४) । यण्य व विश्व । देवविमान-विशेष (बम २४) । "सिंग न "श्टक्रा एक देव-विमान का नाम (सथ २३) । "सिह पंचित्रीएक समाकिक विकास सिंदू न [स्तु] एक देव-विधान (धन ! अष्ट्रीआण पू [बेराबन] १ वारिन नहि (बुध २१)। सीह रेको सिंह (काल)। सेवा र चिन पुरू प्राचीन केन महर्षि को

पादअसहरमहण्यमी बाहरवामी के शिव्य चे (कृष्य)। सेवा को "सेना १ एक इन्त्राणी वाधिस्ट्य बानव्यन्तरेश्र की एक घन्न-महिपी (सामा २---पत्र २१२)। २ एक विश्वकृतारी वेती (१४)। इर पू [भर] एव (पर्)। ीस्य कि सियी का रक्ते का बना हुआ (शम ६३ सीप वि ७ ३ १३४) की ीमका मती (बीग व पि २ व दि ४)। प्राच म विद्यी एक देश-विमान (सम २६)। विमनासयम् ऋषमनासन् सीहर्गन-विक्रिय (सम १४१) भव) । देखो सक्त्रं ≐ बह्न । बश्य की विका एक क्षेत्र प्रति-ग्राका (**924**) | बद्रसम्म विसम्पी विस्क, उस्तीका (पउम २६, २)। पद्भराज्ञ वं पिराटी १ एक पार्थ देश । २ त. आचीन व्यरतीय नगर-विशेष को महत्व देश की राजपानी थी। "बहरात समझ बहरात धन्द्रभी (पण २७३) । वहराय बेबो वहराग (निष) । वदर ) वि [वैरिम्] इरमण रिपु (नूर यहरिम र क काम प्राम् १७४) । यश्र रिकेन दिनी निवन एकान्य स्थान देवी मधियं मुख्छार निरंबछाइ **वद्याप्तरस्यपृक्तियाद'** (गा ८७ )। षत्रिक कि [क्यविरिक्त] निध मधन (गुर १२, ४४° वेदम ४,१४) । यारी की [यथा] एक बैन मुनि-शाका (कम्प) । वक्का की [बैराट्या] १ एक विद्यानेशी (धरि ६) । २ मधनान् महिलान्धी भी शासन-रेपी (संवि १ )। षद्**रतर्वा**ईसरा *ण* [ पत्रोत्तरावर्वसङ ] एक देश-विमान (सम २४)।

बहरेग रे ११२)। २ बाव्य के प्रभाव में

प्रश्वातिक स्था २२ ४) ।

हेपु का निद्यान्त धायाच (वर्षेत्रे ४६२) जम

१ **६**६)। २ वसि नायक इन्द्र (रोज्य

१ ७)। १ वत्तर दिशा में शानेनावे प्रभूर

निकास के देन (अंग १८१ समे ७४)। ४ वेन, एक बोकान्तिक वेथ-विमान (पव २३७ सम १४)। बहरोअण दें दि हुत देव (दे ७ ५१)। बहराज प्री वि] बार, रूपपति (हेर ४२)। वन्यतस्य वृद्धि संप को एक भाषि कुन्यूम सर्वे (दे छ दरे)। यहवाय वृं [क्वतीनात] ज्योतिय प्रसिक्त एक वीम (राम) । षश्वदा भी [दे] क्षेमा (६ ७ ६१)। यहस्य देखी यहस्स = वेस्प 'बाशिककरियसाइयोरस्बस्पाससेम्' स्त्रुचा । दे ब्रॉहे कावनामा बाबारपराव्यक्त बीच' (पतम १ ११६)। वेष्ट्रसङ्भ वि [वैपयिक] विषय व करान्न विषय-सबन्धी (संति ३) । **वहसं**पावण दू [वैराज्यायन] एक ऋषि जा व्यास का शिष्यं था (हे १ १३१ प्राप्त)। बहसरम र्न विपन्यी नियमता, 'बहस्मी' (विकाय विषय)। यहसम्बंध दे विभवणी प्रवेट (हे १ १४२ थइसस न विरास ी पेमाञ्चनाचै पार-इस्य (वय १७१)। धइसानर देशो धन्तसागर (पम्प १२ मी)। बद्दमाळ देवा [बेराळ] विरामा नै जरप (R ? \$22): वइसाइ र् विशास दे मास-विशेष (पुर ४ १ १ भवि)। २ सन्यत-सम्बादित योद्धा का स्वात-विशेष (हे १ १६१ प्राप्त)। यहमाही देश वसाही (चर्क) । वहसिम वि [पैरिक्त] केव स भौतिका कार्जन करतेवाचा (हे १ १५२) प्राप्त ) । महस्तिह न (वेशिएट्य) विधिद्धाः भेर बश्रंभ १ ५ [ब्यविर्क] १ प्रमान (पर्नर्ध । (पर्नेष ६३)। महसेखिल न [ब्रीशिविक] १ रहेन विरोध क्यावन्द्रतेन (विधे ११ a) । २ विश्वन 'जोएज धामधी वा वन्धेतियशकार्य पत्रहा" (विशे २१७०)। बहरस पूंची बिरयी वर्श विशेष वाशिक यहाजन (विदा १ १)।

य हुँ [ब] १ धान्यस्य स्थानस्य मार्थ-विशेष निवासः स्थारतस्यामः सन्त भीर भेता है (अस अमा)। २ दृत बस्छ (छ १ १४ २,११)।

स (वी केबी द्रव (वें २ दर्श मा है) इंदू ६५७ ७६ कुमा है २ दे ने मात्र दे) कुकेबी मा=म (दें दं ६०) साथ्य देहेश प्रमान सक्त परि)।

द रेको पाया = वास् । कसेयका वि [भीयक] बका का विस्तृत---वरण (स १४२ स)। प्यास्त्राय पू विपतिसाको एक प्राचीन विक्र 'मक्सवर्षा' काल्य का कर्णा (क्या)।

(पर्य) । बज्रगीका के [दे] १ क्यत की १ दु:तीब के (पर्)।

बामस्य धन [प्र+स्] पसरना केवना। बासस्य (पर्)।

सभाड केवो सामाङ = नामाः (शक्ति २)। सद्ग स्व [ ते ] इत समो ना प्रमण सम्बद्धः— १ सम्बद्धारः क्षित्रः (सिर्दे १ )। १ सम्बद्धारः विद्योगाः । ४ सम्बद्धारः (मेड)। सद्ग स [ ते] स्वरं, इस्स्य वसं "क्षानुस्वरः स्वर्धार्थः (स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं

स्कृत् (युना वर्ष)। वह वि [स्रोदिन] दल्लाका समग्री (क्ल सुपा ४३१)। की यी (क्ल २४१)। वह की [साम्य] शस्त्री वनक (सन २१ स्थापका ४ ४ सा ३१ स्थापका

क्ष की [मान् ] काही वनन (धन २२ व्या का ६ ४ सा १६ हुए। देश काल १ ४ सा १६ हुए। देश काल ४ १ १५ १७। २)। ग्रुण कि [मुल] काही वा वेदनामा (धना का ६ ४)। मित्र के प्रिकृत काल स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्र स्वत्य स्वत्र स्वत्य स्य

सब् की [बृति] बाह किट धावि से क्याई धारी: स्वाल्पीयिव येदाः 'धन्यात' स्वरहाः कीरति वहेतो' (धा १) वटा भा है। उप १८८ पटन १ १११। वस्ता था। 'धन्धु धोलति वहें (बार्गिव १३) स्वरीय भरो।

चन्। शङ्केको कड्=वित (पा९६१ से ४ १४ कम्म कुमा)।

स्कृषेको सम≕ कर्। यक्त केको सम≕ कर्।

यहान वि [दे] १ पीत, जिलका पात्र किया सत्ता हो बहु (१ ७ ३४)। २ साम्बर्धास्त इस्त हुमाः नम्बद्धासनृत्तियाई वस्त्याई

(पाप) । वक्षम वि [क्ययित] विस्तका व्यय किया क्या हो वहु "विभिन्न क्लेस वस्त्र वेष्ट्रार्स

(नुता १७०१ ७३ ४१ ) । बहुमस्म पूर्विद्यों १ विदर्ध देश का स्था। २ वि. विदर्भ देश में स्टब्ल (दर्)।

२ वि. निवर्ध देश में कराना (वर् )। बहुक्सर पू [ब्यतिकार] प्रश्चन प्रस्ताय (दुर

४ १६६ महः)। वहसञ्य देशो वय ≃ दव्।

बक्जाकी [झिजक] कोटा नेपुच (पिट १ शुक्र रुध शोच तथ)।

बह्मास्त्रित्र वि [बेताकिक] संस्त-स्तृति श्रीह वे राजा को क्यालेकामा नावम ध्यारी (हे १ ११२)।

बहुआक्रीम कुंग [पैताकीय] क्षम्पीकीय (है (हे १ १११) । बहुपस वि [बैदेश] विदेश-संक्यी, परवेशी (क्षम हुन ३००१ के १ १११, पाल ३) :

(पतन का २४० हर १११) मान है। बहरहाई [बिवेह] र मधिक नेरम । २ हार दुवर और देश की छे जन्म शार्टि स्टेश के छात्र चनका भी है है-दीहर्ग है संक्रम राजीनाता। र मिनिया केत न्य (है १ १११) मान है।

वहंशन्त्र त [वें] वैकन, कृष्यानः पंटा (हे व १)।

बहुक्यह् पु [पेक्स] ज्वापर्यंत्र (धीर) । पहुक्तिका न [पेक्स्य] निक्त्यत (पाप) । बहुईठ पू [पेक्स्य] १ क्सेन्स (पाप) । २ सोक्स्परेत शिष्णु का बाग (जा १ श क्ष) । बहुक्यत निक्सितहान्त्री प्याप्टेस, इन्य

न्यस्था तर हुन्याध्यक्षण जन्मकः हुन्य हुवा (पत्रम २ क्षण वर्गा परि) । बहुद्धम वृं [करितन्स] स्थित व्यवस्था व्यवसीय-विशेष (ठा १ ४—पत्र १११। पर ६ दी। पत्रम ११ ११) ।

बहुगरिवय दूँ [चैक्स्पिक] एज-क्सेब्सीर विकेस (बुग १४८)।

बहुता केवो नद्दा (नुब २, ४, ६६ ६) । बहुतुष्य न [बहुत्या] १ वेषका प्रपेष पूर्वेण, प्रदेशनका (वर्षेषे ४४) । १ पिर पैतरन विपर्वेश (एन) । बहुविका न [बीचिक्य] विविश्वता (निवे

चश्चच न १०।चन्न्य | स्वाधनतः (स्वतः १११:वर्षतं ६४) । वहत्ववण वि चित्रकन्नी धोव-विदोप ने स्वयं

(दे १ १६१)। यक्तादेखी पद्र= इतिन्।

वहत्किम वि [मेतुकिक] तुम्बता-पहित्र (विद्यु ११) ।

बहुत्तप् } केवी बय = मर् ।

पश्चा ) पश्चा देवी वय = वय्। पश्च वि [परिदा] दोक्षतेवामा अर्थ वरता

स्ट्रेंड्स केटो स्ट्रिस्स (हे १ १११)। जन्दि (ठा ७—चन १०१)।

वहिंद्स पूं [वैदिशा] १ धनन्ती देश, जावन वेद्य 'वहिंद्य कम्मग्रीप जिल्लाक्ष्मा एकपण्यी थ' (का २ २) । २ वि जिल्लाक्ष्मा

(श्रू ६) । वहरूस देवो वहण्स (प्राप्त) । वहरूसिम वि [सर्वेशिक] विक्रीय,

नव्येसिम वि [स्वेशिक] विशेशिय, परमेसी (स्वित्र के क्रुप वेच । सिरि वेटका पि देश) ह

वहर्गह देशो बद्दपह (तात)।

बंजुष्टि वि [ वध्युष्टिम् ] वेतस बृश्चवासा । क्यी जी (वत्रक)।

बंस्त वि [धम्ब्य] शून्य वर्षित (कृमा) । वैस्त की यिन्ध्या निम्म की बदुनवती की (पत्रम २६ व शुना ६२४)।

≰ट व [तृन्त] फब्र यापतों कावन्यन (पिड ४४)।

संदर्भ दू [यष्ट्रफ] बाँट विभाग (निष्कृ १६)। #ठ दूं (दे) १ शक्कर-विवाह सविवाहित पुत्रराजी में नादी (दे ७ ८३ शाय २१८)। २ अस्त्र हुक्या। वे सर्व (दे ७ ८वे) र

**४ भूरम दास (देश महे मूर २ ११ व**ा। रम्या वशः सिरि १११४) । इ.वि. निप्लंबः स्तेह-रोहित (दे ७ द३)। ६ भूत ठम<sup>ा</sup> (बा १२)।

≼ठ वि [यण्ठ] बर्च वासन, नाटा, बीना (\$ x xxa) 1

बंठण (चप) न [बण्टन] बांटनाः विमायन (বিশ) ! **श्रंहरूम वि [वि]** मीक्टि (वर् ) ।

वंड्र रेको पशु (धा २६४) ।

बंबुझ न [वे] राज्य (वे ७ १६)। वंड्र देयो पंड्र (मा १७४) :

बंड पूं कि कब (वे ७ २६)।

चंद्र वि [वान्त] पवित्र विद्य ह्रमा (स्त्र १ १ दी)। र्थत पूर्विभत्ती १ जिल्हा वसन किया क्या

हो मह (बन)। २ पूनः यसवा त्वंते इ मा पिरी इ वा (सव)। बंतर पूं [स्थान्तर] एक देश प्राप्ति (वे २७)

महा)। **वेतरिक पुं [क्यग्वरिक] उत्पर वेको (भव)** । र्वतरिणी की [स्थन्तरी] व्यन्तर-वालीय देवी

(सूपा ६१३) । र्वता देवो वसः।

वंति देखो पन्ति (मा २७०३ ४६३) ।

विंद्य क्यो पत्र्य (सं ११६) । ४२०१३ २ (४४३)।

बंद सकं [वन्द] १ प्रशास करना। २ स्तमन करता । नेवह (छन नहाः कृष्य) ।

मक्रु वन्द्रशाण (ग्रोप १व॰ वं १ मि १७२) । कम्ब. यन्त्रिकामाण (उप १८६ टी प्राप् १६६)। संक्र चन्द्रिय सन्दिखी, बन्दिकण पन्तिया, पन्तिया धंदेषि

(काम ११ वंश कम्पाधका है ३१४६ पंड) । हेड्डूबंदिकाए (स्वा) । इट धंज, यंत्, क्षेत्रजिका यंद्याल वंदिस (राजः मनि १४) क्रम्य १ खाया १ १ प्रामु १६२ नाट-मुच्छा १३ दशकूर)।

र्यत्र म (शुरूद्) शपुह युव (पठम ११) भीपा प्राप्त)।

र्वद्या} वि [यन्द्रक] बन्दन करनेरामा र्ववरा 🕽 (पर्वमें ६ ६८) १ १ ७३। महरू

भौपः सुचार ३)। यक्षण गयिन्दनी १ प्रख्नमग प्रख्रामः २

स्तनमस्तुति (कप्यसुर ४ ३२) स्व क्षप्रस पू विद्यारा निर्मातक वट (मीप) । घड र् िघट विद्या वर्ष (धोप) । सास्म, मास्त्रिमा भी [भाष्य] वर के द्वार पर मंथल के लिए वेंबी जाती पन-पाला (सुपा

दश पुर १ अ. वा ६२)। पश्चिमा, विद्या हो ["प्रस्पय] वन्तन-शुतु (पूपा ४१२ पशि। **बंदणाको [धन्दना] १ प्र**खान । २ स्तनन

(पंचा% २ पर्साइ २,१—पत्र १ ३ र्मत्)। **भं**न्जिमा की कि नोरी नासा बनाकाः

मन्दि कंबसी, यांग्रियाय् नेमि । मुद्रो । दमो वीसे विद्यो । वीए थी (? वी) वरिष्ठमाए सुबी (सुचा२ १७)।

वंतर देशो पंत्र = कृष (प्राप्त) ।

**थेवा**प (धरते) वेको येशाब । वेकापवति (पि ) i विवारय पू [पून्यारक] १ क्षेत्र केवता (पाकर कुमा)। २ वि मनौक्तर (कुमा)। व पुरुष प्रचान (हेर १६२) i

थेदाक नि [यम्बाक] नन्तन करनेवासा (वेदय ६२१ सहय)।

वेदाव एक [यन्त्य्] बन्दन करवाना । वेदावद् (ज्ञा) । बस्यजन न [बन्द्स] नमन, प्रसाप (वानन

tus) i

धविक्ष वेको धंद = वन्त् । र्धविक्ष विश्विमित्ते विश्वको बन्दन किया

गया ही यह (कप्प' जब) । वैदिस देखो वेद -- बन्द ।

र्वत्रा धी भिन्त्री भाविकाचा पुरुतास पस्तवधः । र्बद्र गबिद्र चित्रह, पूप (हेर ५३ २

थर पत्रम ११ १२ ३ स ६८१)। र्यंघ वृं शिक्षत्र प्रक महायह ज्योतिषक स्व बिरोप (भूग्ब २ )। थफ धक [स्थ**क्त** ] **पा**हना प्रक्रियाप

करता.। वंकड, बंकर, वंकवि (हे ४ १६२ क्रुमा) । र्षफ बक्र [यस् ] क्रीटनाः वैकद् (हे ४ १७६ प≭)।

वॅफि वि [बिद्धिम्] १ मीटनैवासा। २ शोच भिष्मेबाबा (कुमा) ३

र्धफिक्ष वि [काक्कित] प्रभिव्यवित (कुमा) । ऍक्जिवि दि]पुक्त असमाहमा(देऽ १४ पाम)।

र्थस पू विशेषमंत्र राग विश्व १)। र्थस र्रु [बंश] १ बांच वेसु (फ्रह २ ४---पत्र १४६ पान) । २ बाध-किरोपः 'बाइमी वीचो (कूमा २ ७ राम) । **३** हुना 'कुनुवर्वस्वीवयो' (श्रुमा २ ११) । ४ सन्तान र्धविति । ५ पृत्राचयक पीठ काम्प्रमः । ६

वर्ग । ७ (ह्यु ऊवा । ८ कुछ-विशेष साम्रकुछ (के १ २६ )। इरि प्र िगारि । पर्वत-विशेष (परम ११, ४)। अरिक्स गरिक ⊈न विक्रीको वैशाकुर बीचेका कोसब नकाकमक (था २ ) पद ४) । आह्मी, थाओं की [काउंगे] वॉर्धों का म्यूल कटा

बी ["रोपना] बंडबोन्स (इप्यू) । वंसक्षेत्रसूप पून [वे वंशक्षेत्सुक] वत

व्य १ १६)। राखणा

(सुर १२ २

के नीचे दोनों तरफ तिरह्म रक्षा जाता गांस (शीव ३ स्तय)। यंसग रेको वंसय (चन)।

वंसप्कास वि [वे] १ प्रकट व्यक्त । २ ऋष् बरन (वै ७ ४४) । **वंसय वि [ब्यंसफ] १ क्टी**, टन । २ तू.

बुष्ट हिंदु-विरोध (ठा ४ १---पत्र २१४) ।

थनाना (स ९ ६—पन ४)।

बंधा की [बास्का] स्थ्या पाह (दुना धौकिक कि विकिद्धी वॉका किया ह्या छि । X X) I 4 44) I वंक्तिम वि पिक्किय विक्युक्त (धे ६ १६)। यंक्रिम पूंची विकिमन् निकता कुरिवाता र्शक्क ) देवो संक= वंका विविद्वविस्विक-श्रेक्ता <sup>∫</sup> विभिन्नवर्गेकुइतिशक्तरकटहरू । एया-रिप्तम्यियवर्षे (स २३६) हे ४ ४१ व भवित्र ४)। इंड्रम (शी) क्यर देखी (प्रकृ ६७) । धंग न दि ] बुन्ताक भटा (वे ७ २१)। र्थंग विकित्र विकार विकार विकार वर्तीपश्चित्रवंषकुम्बन्नवावित्रोक्षण्यस्योसम्बद्धाः (परहा १ ४--- पत्र ७३)। बंग्यक वृद्धि प्रमय शिव का सन्वर-विदेश (\$ # \$2) 1 ध्रेगज न (क्यहून) स्त (एक)। वंशिय वि विश्वक्रिया विश्वय स्वर्धश्याचा वंगेबबु दे [वे] सुकद, सुपर (वे ७ ४२)। वेप एक विद्वािष्टनाः वेषद् (हे४ ६ १३ वर ३ महा) । अर्ग गॅपिक्स (मृथि) । क्षेद्र-वंशिकाण (यहा)। इत वंश्वाचीका (श्राप्र)। प्रमो मद्भ नदीको वैचार्विती कुमरपद्वारं बएइ पुरमाद्वि (सुपा ४७२) । र्वच (धप) केवी वश्र = क्या। र्यच्य (श्राह ११६) । शंक-दंचिवि (वर्षि) । वंच एक विवास नमयी हैंचा एठाना। वंबद (१) (बाटरा १५१)। वंच वि [वजा] उपनेपावा वृत्तां श्रुविवत्तरी य बेक्स्स्य च चेच्स्स्ये धरम्य च' (धम्ब्रा ११६६ हे ४ ४१२) । बंधम ) वि विश्वको उसर वेद्यो (गट---वेचरा मलका च्यार)। र्थपण व [क्लाम] १ प्रवाच्या उसरे (सम्मद २१७)। २ वि ठवनेवाचा, ठन (ईवोब ४१)। चल वि <sup>वि</sup>चणी ठकी में क्लर (बम्पच २१७) । र्वचणा के [क्ष्मता] महाएए। (३४ कृप्)। वंचिम वि [वक्तित] १ भवारित (पास)।

२ रहिए, पनिए (पता) ।

वंख सक [वि÷ध्यम ] ध्यक करना प्रकट करना । वर्ग वंशिक्त (विसे ११४) ४६३) वर्मेर्स ६३) । र्वज देवो र्वच = **अर्**+वनम् । वंगद् (?) (बाठ्या १६१)। शंज केहो ६स् ≔ गम् । बंबन देवी वंश्वय (धव)। वंज्ञज न ज्यिष्टनी १ वर्श प्रश्नर पणनवर्ष क्षेत्रव वंबलनवारधी (विसे १७ ) ची नरिच यत्ववेद्यो चंत्रफरवद्या पर विना (शिव्य ६६)। २ स्वर-क्रिप संघट व वे इ तक वर्त (विते ४६१) ४६१) । ६ सम्ब वदा की पूछ समास्त्रों दिस बंक्छनिकारे द शक्तिसम्रोध' (सम्म ३ : सुमनि ६ पिता विसे १७ )। ४ तरकारी कड़ी मानि रब-स्वाबक वस्तु (सुरा ६२६ सीव ११८)। १ सब्द, बीर्स (विसे २२ )। ६ छपीर अन यसा व्यक्ति विष्क (पन २१७) ब्रोप) ! व महा थादि रुपोर दिखे के फूट का उपनेतक तार्क (सम ४१) । य क्या धारि के बाब (रान)। प्रकारत, व्यवधेकरस्य (मिस्रे ४६१)। १ योगानि इतियः ११ तस्य सानि हम्प १२ डब्य भीर इंडिय का श्रंतन्त्र (संदि, निवे २६)। वनमह ोसाहर्ष [नमद] वाल-विशेष चयु धीर मन को कोई कर क्रम्य क्रीवार्वे से होनेनावा क्रान-विशेष (क्रम् 1 8 12 4 1) 1 र्वजय वि [क्यञ्जक] ब्यक्त करनेवाचा (यर्व वंधर वृज्ञिकारी विकास विकास (ह फ १६२। भूमा)। र्थवर न [के] केवी कटी-बस्र (दे ७ ४१) । वंशिक्ष वि [स्वद्भित] व्यक्त विमा [मा मकटिव (कुमा १ १ था २, ६३)। बंशुख र् [परमुख] १ प्रशोक कुत्र (ना ४२२, च १११) । २ केवस क्षा (काम) वंदुवदिस्त विर्तं न प्रमानो सुबह् सो धार्ने (बम्म ११ दी। क्वा ६६। इन ७२४ दी)। वे पर्वत-विदेश (पराह १ १—नम**्)** ।

इतिक वि [ बद्धजुद्धिम् ] वैठस बुखवासा । | भी जी (परक्र)। र्दन्द्र वि [धन्वय] सून्य वर्जित (भूमा)। र्वमाक्षी यिन्ध्या विमानी मात्रवर्तानी (प्रस्त २६ व इ. सुपा १२४)।

< टम [दूल्त] फ्रम या पत्तों का बल्पन (निंड 4X) I

श्रद्धाः दु [वण्द्रक] बॉट विनाव (निष् ११)। र्थंठ प्रवित्ते १ सङ्गत-विनाह श्रविनाहित

पुत्र एतो में लाडी (रे ७ ८३ धोष २१८)। २ इस्टाइस्का। ३ यस्य (१ ७ ८१)। ४ भूतम दास (दे**७** ८३ सुर २ १६ दा रमण क्रश किरि १११४)। ६ मि. नि स्तेह,

लेह-रोहित (दे ७ ८६)। ६ मूर्च ठम (भा १२)। ⊌ठिव [यण्ड] **सर्व** वाशन शाटा वीला

(g. x xx) 1 बॉटज (धप) न [घण्टन] बॉटनाः विस्ववन

(सिंद) १

शंकक्ष वि [बेर्] पीवित (पर्) : र्वं बुबेको पहु (का २६४)।

इंबुझ न [क्] यह्य (वे ७-३६)। वंबर वैको पंबूर (मा १७४) ।

इंड पूं [प्] क्य (वे ४ २१)।

वंद वि [माम्त] पठित मिरा हुवा (वस व १ दी)। र्थंत पूर्विक्ती १ विस्का वयन किया क्या

हो वह (तम)। २ ईनः नमनः भी ह ना पिते ६ वा (भय)।

र्मतर दें [स्थान्धर] एक देव-वार्ति (दे २७) । मक्षा) ।

वंतरिक्ष पूं [क्यश्वरिक् ] क्यर देशो (४४)। धंतरियी की [स्पन्धरी] स्पन्तर-जातीय देवी (बुपा ६१३) ।

चता देखी दम ।

"बंदि देवो पन्ति (या २७८३ ४६१)।

विंध वेको पत्र्य (संदेश के ४२) १३ २ दि (३)।

**थेद धक** [बस्यू] १ प्रकास करणा। २ स्टबन करना। वंदद्र (क्ष्य सहा कृष्य)।

बद्ध बन्द्रमाण (बीप tar सं १ धर्मि १७२) । १४१६. चम्पिकामाण (३५ १८६ टी प्रामु १६४)। संक्र- पन्त्रिश बन्दिखा, बन्दिकव वन्दिसा, वन्दिस वेदेवि (क्रम ११ पंडकमान्यह है ३ १४६ चंड) । हेब्रू विश्विष्ट (स्वा) । इ. यंज, र्वप्, बंदणिका चंदणीय, चंदिम (राजः

धनि १४) इच्य १ एएमा १ १ प्रायु १६२ माट--भू**ण्या १३** वस**प्र** १) । र्बद व [बृत्द] समूद्यः यूष (परव ११ धीप मध्य)। र्यक्षा वि [यन्त्र्यः] बन्दन करनेवासा

र्यवरा 🕽 (पत्रमें ६ दर्देश १ ७३) महार भौगम्बर ६)। यक्षान [बन्दन] १ प्रशासन प्रशास । १

स्तवन, स्तुति (कम्प मुर ४ ६२ वत्र)। **इ.स.** व् ["इस्टा ] योपविक पट (धीप) । च ह पू ["घट] सही वर्ष (बीप) । सावह मासिआ को ["मास्म] पर के द्वार पर मंदल के किए वैंकी जाती पत्र-माला (सूपा **४४ मुर १ ४ वा ६२)। वटिआ**, विचेत्रा 🛍 ["प्रस्थय] बन्दम-क्षेत्र (नुपा

४१२ पृष्टि)। **र्थतणाच्छे (सन्दन्धी** १ प्रणाम । २ स्टब्स (यंका व २३ वर्ष्या २ १ --- पत्र १ यंत्र) ।

र्थत्रणिया की दि] मोधी नम्मा ननासाः 'मणि क्षेत्रको गाँखवाए नेमि । मुद्धो । स्त्रो वीने कियो । धीय में (? वं) वरिष्याय कुद्धे (सुब्ध २ १७)।

र्षवर केको वंद = क्रूब (प्राप्त) । पेदाय (धर्मा) देशो लेदाश । वंदापनित (पि w) !

र्धतास्य पु [पून्यारक] १ वेश वेशता (पाष्प कृमा)। २ वि मनोहर (कृमा)। **३ बुक्य, प्रमान (हि.१. १३२)** ।

पंतास वि [बन्दारु] बन्दर क्रफ्रेमाना (बह्म ६२१ सहूम)। भंदाप सक [सन्ध्य] यन्तन करवाना। बेदाबद् (चन) ।

वद्रायणगन [यम्द्रन] थन्दन प्रसाम (शावक Rus) I

पंदिअ देशो येंद ⇒ वन्द् । र्थंदिक्स कि विभिद्धती जिसको कन्दन किया थया हो वह (कप्पा स्व) ।

वंदिस देखों बंद - बन्द । बदुरा धी [सन्दुरा] बानियाता पुरुशस धरतवस । र्वद्र न विस्द्री समुद्र, मूप (द्वार ४३) २

**७१ पटन ११ १२ ३ थ ६२४)** । र्वाच वृह्मित्रका दिल्ल महाधङ्ग जमीतियन देव विरोप (मुख्य २ )।

वंपः तक [काक्का] पाइना यमिनाय करना । बका , बंफ्य बंफींत (हे ४ १६२ श्रुमार) (

ंबंफ सक [शस्तु] शीटनाः बंफद (हं⊀ १७६ पष्ट )।

र्वेफि कि [बलिस्] १ सौटनेवासा । २ नीचे निरलेकामा (कुमा) । र्बफिअ वि [काक्शित] प्रमित्रपित । कुमा) ।

विकिश्र वि 📳 प्रक्र वामा ह्या (वै ७ ३४, पाम} ।

र्यस वृ [वे] क्संक बान (वे ७ ३ )। र्यस पूर्विशा १ वास केला (पराहर ४---यम १४६ पाध) । २ बाध-विरोधः 'बाइमो वंशो (कुमा २ ७ राम) । ३ कुका 'बुसुगर्वसंबंधेवधो' (कूमा २, ६१) । ४ सन्तान संतरित । ३ पुष्टानस्य पीठ का मान । ६ वर्ष । ७ इत्यु उस्त्व । य कुल-विशेष सामकुल (के १ २६ ) । **इ**दि ग्रे "गारि] पर्वट-

मिलेप (परुप १६ ४) । **प्ररिक्ष** गरिक्ष पुन [करीक] वंद्यकुर वासंका कोमन भवास्यवं (का २० यम ४) । खाउँमी "मासी की ["आफ्री] पॉसीं का व्यूत पदा (युर १२, २ / जर 🛚 १६) । राज्यणा की "राजना" गरकोचन (क्रप्यू) । धंसफबरस्य पुन [वे धंराक्येस्ट्क] बर

के नोचे बीनों तरफ दिरसा रका बाता बीस (बीब ३ राय) । पंसम बच्चा पंसय (एव)।

पंसप्यास वि [वि] १ प्रकट, व्यक्तः। २ ऋतू, प्रवाद (है क ४८)।

वंसय वि [क्यंसक] १ वृतं,ठ्यः २ तू क्रु हेंचु-विशेष (ठा ४ १--पत्र ११४) ।

भ्यक् बंसा को विंशा किया गरक-पृथिकी (ठा च---पत्र ३००३ इक) । वंसि केवो पंसी = पंश (कम्म १ २ )। ६स्छि वि [बीरिक] वैद्य पत्न वजलेशना (देर ७ कुमा)। वंसिम वि विमंसिकी बांबर प्रकारिक (धर्म)। इसी की बिरंगी र मुख-विकेष (का २)। १ वॉस की बाकी (ठा १ १ -- एव १२१)। कर्खराकी किल्क्सी बांद की पासी की क्ली हुई बाड़ (क्लिंग १ ३---पन १c) । पिश्वमा भी [पित्रिता] योगि-विशेष र्वराज्यों के पत्र के आकार जी जोति (का 1 (1 # वंसी की [वंसी] वाम-क्रिय मुख्नी (इह २)। पहिया धी ["र्न्सक] नक्तराज-निरोप (क्रस्ट १--पत्र १ )। <u>सह</u> प्रे-िंसुका द्रीनिवन बीज-विरोध (बीज १ डी---मन वर)। वंसी के [वंस] वास । मूख न [ मूक] बांच शी वह (क्य)। वेसी की हैं] मस्तक पर त्कित माना (वे o 3 )1 बच्च न [बाक्य] पक्-समुद्राय क्रांच-समुद्रा (जर उप ८३३ «X2) : तकान विस्कृति स्वया अस्य (स्वयं च्यव भीरो । श्रेम दे ["बन्ध] शल्क-बन्धन (विशा वद्यारेका मेंफ≓र्मक (खाका १ देवरे संदेश मामें के रेड वेपर)। श्रम म [सनत्र] तुच द्वहि (पन्य १११ \$ w # 154) 1 बच्च न [व] फिट्र, रिवान यहरा (वव )। धकत पुत्र [बकान्त] प्रवय नरक-मूमि ना बसर्ग नरकेण्डक-अरकाकाल-विद्येष (देशन्त्र बबंद वि [अवस्थान्त] जलन (चना वि १४२) । वर्षति धौ [अवकारित] स्तति (क्ल स्र २ः धन)। नक्क म [र] १ दुविन । १ मिक्सर वृद्धि (वे

w. 11) 1

बद्धकांच न विंदे क्यांमरण कल का धानुषश (वे ४ ११)। यद्धम श्रकः [अव + 16मू] उत्पन्न होता । बद्धमद् (भग क्या) । मुका बद्धमिन् (क्या) । पवि बद्धविस्पंति (कटा) । बद्ध, पद्धममाज (भगः सामा १ १--पन २ 🕍 वक्रर (बए) क्यों पश्च = र्यन (त्रवि)। श्रद्ध व विश्वच्छ देश की बाल (प्राप: गुपा २४२ है ४ वे४छ ४१छ प्रति ४)। चीरि ए "बीरिम्" एक महर्षि भी राजा प्रयम्भवता के कोटे माई थे (क्य २ ६)। ) विकिश्च जिल्ली क्या की स्त्रम वक्कक्रिम ) पहणेबाला (दावस) (बुगार समीम २१ पदन १६ ८४)। यक्क व्यक्ति विश्व प्रशास्त्र वाले किया क्ष्मा ( \* & X ! ) I श⊈सम [हे] १ पूराना भाग का चाकसः। २ पुरातन सन्त्र-पिएड । १ बहुत विनों का वाक्षी नोरसः। ४ वेहँ का मात्र (पाचा १ E X 58) विद्या (शी) देवी दंदिम (पि ४४) । स्वत्स देशो शब्दा » दश (वंडा पर ४०१) । यक्त हैनी शक्का = काय (वंदिर १४, शहर २२ बाह---गुच्च १६६) । बक्त देवो परसा (बा ४४२ से ६ ४२, ४ २३: स ६८१)। वस्तामाण देवो वय = १। वक्ताक है। वि याच्याचित, दशा प्रया बस्त्वा स्क [स्पा + क्या] १ विश्वस्य करना। २ करूना। इस् अक्ष्योय (विदेशक)। , बक्ता की (क्याक्या) निक्या विकास के धर्म प्रक्रमण (पिसे १६४)। धरबाज व (ज्याखवान) १ उसर वेको (विद्य २७१: लिंगे १६६) । २ सम्म (हे १, १ ) । व्यक्ताय कर्ण ज्यास्तानम**े १ विवय**क करमाः २ कशुराः वक्कामहरू (प्राप्ति) । व्यथि भक्ताछरस्य (शी) (पि २७२)। करे. वक्सरिक्स ( विधे ६०४ )। पह मक्द्राणयत ( उत्तर १०३ एमण २१)। चंत्र, वक्ष्माणेड (निवे ११)। इ. वक्ष्माध-अध्य (धन)।

वषस्याचि वि डियास्यानिन् विशस्यान-कर्या (पर्वत १२६१)। वक्साजिय वि [स्थाक्ष्मानित] श्राक्साउ (मिसे १ 🕶)। मक्स्यणीम (बप) ऊपर देखी (पित्र ६ ६)। यक्साय वि विवासकाती १ विवृत वर्षित (स १३२: वेद्य ७७१)। २ प्रे मोज पुचि (याचा १ र, ६ ४)। क्क्शार पूँ हिं] बकार, यस मानि रक्ते का यकान, योद्यम (उप १ ६६ छो)। बस्सार वृं [ब्रञ्चार बश्चबद्धार] १ पर्वत-विद्याप वयन्यत के प्राकार का पूर्वत (सर १ १३ इक) । २ जुन्धान मूल<del>देश</del> (पटन र दक्ष दर, दश दल)। यक्तारय त हिं] १ एकिन्द्र । २ मन्तपूर ( \* YX) | **भवजा**य सक िक्ता + क्यापन् ] स्थानान कराना। वश्वापद (प्राप्त ६१)। व्यक्तिकृत्य वि [स्थासिस] १ व्यव व्यक्तिय (धोन १३३ कुत्र २७)। २ किसी कार्य में व्यापुदा (पन २) । वक्कोम रेको वनता न म्हा + स्या । वरतेष र् [स्यादाप] १ नवता । व्यादुषया (उक्ता का १३६ हैं १४ )। र कार्य-चाइस्य (गुज १ १)। वक्केम 🛊 [अवहोप] प्रक्रिय अरस्य (बा २४१ स)। परको केवो सच्चा≍नवस्। दइ ई िस्र स्तित मन (सुपा १ **१**)। बक्तु (धी) रेको धंऊ = वक्षु (प्राष्ट्र १७)। वस्तान (धप) देशो वक्साल = क्यूक्यनम् । वकास (पिन) । वसाणिज (धर) वेशो स्वत्याणिय (पिष)। क्षाका की कि बाद परिवास (करा वर्ग है)। बमा सक [बस्त] रे बाता बदि करता । १ कुमार । बहु-वाक्स करता ४ समिमान-गुनक रुच्च करना बूद्धारसाः। गम्बद्ध (मनित बन्द्राः पि २१६) नामर्थि (प्राप्त २ )। क्यें वस्मीयारि (शी) (पिराय १७)। महः समीय (स रेवध पुषा ४६६ वनि)। **र्यष्ट्र व**स्तिराचा (पि 1 (239

बमा पू [बर्ग] १ समलीय समूह (एकि सुर | ६ ४ हुमा) । २ गखित-विशेष को समान संस्था का परस्पर प्रसान (ठा १०--पन ४१६) १ १ प्रण्य-गरिष्क्रीय ध्रम्यक्त सर्ग (हेर १७० २ ७१)। मूछन [मूछ] वस्तित-विरोप वह भेक विस्त्रम वर्ग किया समाहो वैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता 🗜 १६ का वर्गमूस 😯 दोता है (बीवस १६७)। बारा प्रे विगी परिषठ-विशेष वर्गसे वर्गका प्रस्ता कैसे २ का वर्गे ४ ४का बर्द १६ सह २ का बर्दबर्ग कहमाता

🕽 (छ १ )। बरत सक [ बरोय ] बर्य करना, किसी संक को समान संक से प्रधाना । करनमु (कम्म ¥ ≈¥)1

बरा वि [ब्यम] स्पानुच (स्त १६४) रम्स ६०)। शरा वेची वक्क = कन्त (विने १५४)।

बस्स देवी एक = रास्य भुद्धा चर्छित थहर्न बहु बग्यवाले (रेप्ता)।

बारा नि बारुको बुध-रवना----खान का वना क्षमा (खामा १ १६ -- पत्र ४३)। मगासिक न वि ] दुढ चढ़ाई (६ ० ४६)। ब्याच्छिआ स्रो [बराष्ट्रिक्स] एक प्राचीन कैन ग्रन्थ (एसि २ २)। बमाय न [धारान] बुबना (शेव बुध १ ७) कप्प खाया र र-पश्रध शय)। ध्रगाय न [बलान] बक्नाव (रक्ष) ।

धरगणा की [पर्गेगा] स्वादीय स्त्रा (अ १-पम २७)। यरगय व वि] वार्ती करा (दे ७ ६०)। थम्मा ध्ये [परना] अध्यय (स्य ७६= दी) । यागावरिंग स वर्ष कर हे (सीप)।

बन्गि 🍱 [पार्गिमन्] १ प्रकार वाश्य बोमनेवाचा। २ पू ब्रह्म्पति (प्राप्तः पि २७७)। वस्मिभ वि [बरिन्त] वर्ग किया हुआ (काम

× \* )1 बरिगाम न [बहिरात] १ वह भावण बक्रवाब

(बम्मत २२४)। २ वहादै की शासान (मीइ वय) १ ३ वर्ति कास (सम्म) ।

€3

विभिन्न विक्तिष्ट्री १ चुवार प्राप्ताच करनेशासा । २ यदि-विशेषका (पुर ११ (f#f)

मग्रु केबो याया ⇒ वाच् 'वरवृद्धि' (पीफ कृष्य सम १ सुम्मा ११)।

बस्यु देवो धरग - वर्षः 'बस्यूदि' (पीप) । बागु वि [बह्गु] १ धुन्तर, शोमन (बूध

१ ४ २,४)। २ इला मधुर (याघ)। 🖣 वृं चित्रय-क्षेत्र विशेष प्रान्त विशेष (ठा २ क्----वाद :: )। ४ पूँग, एकः वेव-विमान वैज्ञम्य बोधमाब का विमान (विवेश १६१ २७ )।

बन्तुरा न [शागुरा] १ मृद<del>-मन्त्रन</del> पर्यू फैसाने का जास फिला (पर्याई ११ विपा १ २--पन ११)। र सपूर सपुराना 'सस्तुस्क्रवग्बुरापरि**निक्ते'** (श्रवा प्राप) । बग्गुरिय वि [धार्गुरेक] १ मृग-कास धे बीविका निर्वाह करनेवाला व्याव पार्टी

(क्षोष ७६६) । २ द्रु, मर्खक रिहोस (राज) । बग्रुखि र्रंबी [बल्गुखि] १ पीत-विशेष (प्रमु १ १--पण म)। २ रोग-विशेष (बोचमा २७७ शावक १) टी)। बन्गेळ वि दि] अपूर, प्रमृत (वे ७ ६८)।

वन्गोध प्रै वि] भुषः भौसा (वे ७ ४ )। वय्गोरमय वि दि ] क्या चूळा (१ ७ १२)। बनोड स्ट [ रोमन्यम ] वपुराना चर्बा 🙀 बस्तु का पुना जनलाः प्रजयसी में वानोब्यू । वापीलइ (हे ४ ४३)। वग्गोलिर वि [रोमन्थविष्] पतुरानेशका

(भूमा) । धरप वि विवास वामान को का क्या ह्या (धामा २, १, १ १)।

नग्य पुंक्तियास्र | १ वाच शेर (पास स्वय्न ण त्र पुराप्त ४६३)। २ रखः वृत्त्व का वेदः। ६ करण भूत (है २, १)। निहास से [मुद्रा] १ एक वन्तर्शियः २ वसर्गे वहने वासी मनुष्य-वाधि (ठा४ २—-१व १२६

इक)। यग्पाभ दे दि । १ सम्बद्ध्य, यस्त्रः। २ दि. विकश्चित विकाह्मा (दे छ नई)। यन्पारी की [थू] उत्तरम के विये की

वाली एक प्रकार की मावाज संप्येषहर्गा वन्याक्रीयो **करीत** (स्तामा १ ५—पत्र (m)

वस्पारिक नि [स्माधारित] १ नगरा हुमा सींका समा (नार-पृथ्य २२१) । २ व्यापः 'धीकोवव्यविषश्चनभारियपालिका' (मध ३१)। वे पिपसा हुन्सा (क्टा के वृषु भार मनिया १६७)। वग्भारिअ वि 💽 प्रकृतिवतः 'पश्चिद्धसरीर वग्धारिक्सोरिएमुत्तमम्बदामक्कावे' (सूच २ २ ११)- 'बन्बारियवाजी' (स्त्राया १ ०---

यत्र ११४३ क्या सीमा महा) । वरभावच न (व्याधापस्य) एक गोव, बो वास्तिह नीव की एक शासा है (ठा ७००वन ६६ सुमार १६। इस्यादक)। वस्थी की [क्याजा] १ बाव की मादा (कुमा)। २ एक विचा (विदे २४१४)। वचाय देवी वाचाय 'प्राव्हत कामादवर' नमाप, नकासुमाखे व परस्त बहुं' (सूब १

\$\$ 8 ) i यचा और [यचा] १ इमिमी करती (से २ ११)। २ सोर्यन-विशेष वन (मृच्य १७) (केको धया = वधाः चय एक [ब्रज्] काना नमन करना। बबाइ (हे ४ २२१ महा)। श्रीव वर्षि-

विधि (महा)। महः पश्चंतः यश्वमान (सुर २ ७२। महाः व्या ११)। वक एक [कार्ड] प्राहता प्रक्रिया करता। थचड, बभेड (हे ४ १६२ ड्रूमा) ।

यश्च वैश्वो दय = वर्षः यभ प्रविधासी १ प्रयोग विक्षा (पास-धीन १९७ सुपा १७१ तेनू १४)। ए कुबा-करकटः 'मीन्रो तंत्रोसादः क्रुर्णतो जिख

नरक का चीवा नरनेन्द्रक-नरकरवात-विशेष (वैवेणा १)। ४ देज प्रमाद (स्थाप १ १—पव ६)ः घर, इर न [\*गृह्] पासाना दही (नूच १ ४ २ १६) स

सिंहे कुरहार कर्नी (संबोध ४) । ६ चीमा

#Y() I यव देवी वस = वच्द् (छामा ११ — न× 4) ı

476 वर्षेति वि विपरिवन् । प्रस्ता ववनवावाः (सम्बन्धः १-पनः ६)। वर्षास वि [ वर्षे स्विम् ] शेवस्वी (द्यापा १ १ सम ११२। सीया (१७४)। वश्य पु [इवस्यय] विवर्शन उपट-पुनर (इराष्ट्र २६१ पर १ ४) । वेच्छे बत्तका। बबरा (धार) देवो स्वा (धीर) । बचा रेवी यस = नव्। बब्रामंखिय देखो विद्यासेखिय (विदे tyat): **बबा**स १ (क्यत्यास) विकास विपर्वेश (धोव २ १। कम्म १ वर)। विवासिय वि [स्परपासित] स्वयः क्यि इस्स (विसे ४११)। बबीसम् र् [बबासक] शब-निरोत्र (म्यू) । भवो देवीदव≍वर्षस्(सर ८,२०)। बच्छान हि] पार्श्व समीप (१०१)। वच्छाईन विद्यस्] इत्रती धीना (है २ १७ सचि १३: प्राप्त सा १११ कुमा)। रबस्त म "स्पर्स | ४ए:स्पन काठी (क्रुमाः महा)। सुच न [सूत्र] धानुक्या-विकेष, पक्ष स्वत में पहली की श्रेकवी -- क्रिक्सी सा रिकरो (पन १, १३ टी—पत Y##)। बच्च र् [पृक्ष] वेह खाबी दुन (प्राप-दूपा) है २ १७ पाम)। बच्छ र् [क्स्स] १ बद्धता (बुर २ ६१, बाब)। २ किंदु बच्चा। ३ कासर-वर्ष। ४ वकस्पर काळी (प्राप्त)। १ प्योतियतास-त्रस्थित एक **पळ (न**स १६)। ९ क्ष्म-विदेश (धी १ )। ७ विजय-शेष-विदेव (स. २, १ -- पत्र द.)। न वाक-शिरोप है वि वेप बोल में उपकल (ठा u-राध्य मन्त्र)। इट्युक्ट विटी धूत बला। र बमनीय बद्धारा बाहि। और, री (बाइ २३)। मिलाकी ["मित्रा] १ स्वोत्तक में स्वेतको एक दिस्त्वारी देवी (इ. च--पत्र ४९३) इक्)। २ अर्थनीक य रहतेराती एक दिस्ट्रवाधी देशी (इक राज)। यर केनी न्द (के २, का क १०)। यय ई [यज] एक छना (वी १)। बाउ (धी [पाउ] कीन न्यासा (बाम) । ध्ये, स्म (धारम) ।

वच्छा वि [बारस्य] शहस्य योग का (ग्रंबि वच्छागावर्षे थी [बरसकावतो] एक विवय-कोष (ठा९ ३ - - पण ८ ३ इक) । वस्द्रर पुन [बरसर] साथ वर्ष (प्राप्न सिरि 88X) I बच्चारक वि जिल्लाको स्पेक्षी स्पेक्षश्राक (बा का क्रमान्सर ६, १३०)। बच्चाक्र व [बारसक्य] स्टेक् प्रमुख्य प्रेम (क्रमा, पवि)। बच्चहा औ [बस्सां] १ विजय-श्रेष विशेष । २ एक नवरी (इक) । १ सङ्ग्री (४२५) । वच्चाय है [सद्धन्] वेव वनीवर्वः 'स्तवा वस्त् व वच्छालां (पाध)। श्च्याव है की [ब्रस्तावती] विवय-क्षेत्र विरोध (# Y)1 विकार जेवी बय = क्यू । विश्वत्रह र् वि वर्धायम (१ ७ ४४ टी)। बच्चिम्म र्रुची [बृह्यस्व] बुच्चमन ( ४३ )। विकासन पू कि वर्ष सम्पा (१ ४ ४४)। बच्ची उत्त र्रं हिं । नार्यत हवाम (१ ७ ४७ प्रमात्र ७४)। बच्छीत्र 🛊 📳 गोरु ग्याला (रे ५ ४१) पत्रवं)। बच्छुदक्षिम नि [बे] प्रश्नुदश्च ( बर् ) । बच्छोम न [बद्योग] वक्र-विरोध कुरात बेत मी प्राचीन राजवानी (क्रम्)। यच्छोमी की हिं| काव्य की एक धीरी (**443**) 1 वकायक विसा विस्ताः वस्त्रकः वस्त्रद (हेप १६वा ब्राह्म ७१, वस्था १२१) । क्का देशो यश्च=१३ । १२३६ (गर**--**मृष्य ११६), बमसि (पि ४)। थडर शक [क्षत्रीय] त्याच करणाः। क्याहर विकासी (र्वचा १ २७) । वंक विजय वजीव बिज्जा बजना (महा क्रम र्पपा १९ ६)। इ⊷ बक्रा वक्कणिआप बज्जयका (विश्व प्रदेश क्या वस्ति रे, भा नुपाप सम्बद्धाः पद्धाः देशः द्वेव देरे ३ दर १ ६७)। थ्या सक [वर्] दनमा दाय पार्टिकी धानान होना। नन्तर (हे ४ ४ ६, नुगा

११४) । वक्र वर्जाव, मञ्जसाम (दूर १, ११३८ शुप्ता ६२६) । क्टबर्ग [द्रापा] वाजा वारित (दे ६ ५० જાજર})( बक्क वि [वर्ये] १ थेड, क्लम (दुर १ २)। २ प्रचल मुक्त (द्वे २ २४)। बळा वि [बर्के] १ र्यहेड, गॉनता क्रिसम देशमार्खं न मगद्द थो तस्य ठलुनुद्धी (स्य ६) श्चापनियोधननस्य गर्मे न वहति वानारी' (वेद्रम ४७१) 'श्रीमनबद्धारमञ्जा तुब्ये परमत्त्वमुद्दा यं (वर्गीव «४५ विधे रेवरण मानकर छ। युर १४ ७०)। २ में, क्रोड़कर, विकासियाना (मा ६) वे १७ कम्म ४ ६४: १६)। ६ ई. हिंचा शास्त्रिनव (पद्मा १ १---पप ६)। वळाचेको अन्तळा (तुम १ ४ २ १६, est) i कुळा केवी बहुर = बज्र (कुमा) सुर ४ १६३) ब्राग्रहेर रेक्का ६ र श्र शहर कार १ ६६, बीनका ४६३ कम २४)। १७ प्र विश्वाबर-बंद का एक घना (बब्ब १, १६) १। ६, १३३)। १० दिस प्राप्तिसन्बर (पर्राप्त १ — गर्ग ६) । ११ क<del> व निरोप</del> (पर्या १—पर १६: उत्त १६ ६८) : ९ न कमें-विरोद, बैंबाता हुआ कमें (कूद ६६६६ बर १—या (६७)। २१ पार (कुद्र १ ४ २, ११)। कंड द्र [क्युट] वानर-द्वीप का एक प्रजा (प्रदम ६ ६)। अदिन व [अद्भान्त] एक देव विनान (बम २१) । इंश् नू [ इन्द्र] एक प्रकार का कम्ब, वनस्राति-विशेष (बार )। **ेक्ट न [ंक्**ट] एक देश-वियाल(धय २६) : क्स ई [ कि] एक विद्यापर बंदीन रागा (वचन ८, १३२) : भूष न ["मूड] विधायर-वंद्य का एक धना (पत्नम १, ४६)। "जेप इं ["जड्ड] विधायर-वंदीय एक गरेश (पड़म ४, १४) । जाभ 🛊 ["नाम] व्यवान विकासन-स्वाबी के प्रवत ब्रह्मप (धम ११९)। देशी नाम। इस्त ई िंग्सं] १ विधावर-वंश का एक धार्वा (परम ४,१४)। २ एक जैन द्वति (परव रे हैं)। द्वन हैं [भाम] एक विद्यावर

र्वसीय राजा (पस्य ३ १३)। धर | देखो हर (पदम १ २ १४६ मिनार १ )। नागरी धी [नागरी] एक भैन मुनि-राज्या (रूप)। नाभ प्रै नामी एक क्रैन मुनि (पदम २ ११)। येको \*णासः । पाणि दं िपाणि दे एक (बस ११ २३ टेबेल्ड रदके चप २(१ टी)। २ एक विद्यावर-नरपति (पदम १ १७)। प्यभ न [प्रभ] एक देन-निमान (सन २१)। यादुप्र विदाद्यो एक विद्याभर नेरीय राजा (परम ४,१६)। सूमि सी [सूमि] ताट देत का एक प्रदेत (धाणा १ इ. ३ २)। स (इस) वेको सय (ह Y ३११)। सस्मार् ["सम्य] १ राखस-वंश का एक राजा एक मक्टर (पदम 🌭 २६६)। २ रावसाधीत एक शासन्त राजा (पराम व १६२)। संसम्य 🗱 ["सम्मा] एक प्रतिमा वर्त-विरोध (मीम २४)। सब वि ["सय] क्या का क्या इया (परम ६२ १)। इसे मई (नाट--ज्यार ४४)। "रिस्हनायन ग["म्हपमनायान]सङ्ग्न-फिटेप राधेरका एक तरफ का धर्मोत्तम क्रम (कम्म १ ३०)। "ह्याम क्रिपी एक केन-विमान (सम २३)। क्रेस न िक्षेत्रयी एक देव-वियान (दल २३)। 🎏 (सप) देवी न (दे ४ ११५) । ल्यान विजी एक देव-विदास (स्थ २६)। दिग र्षु चिराी एक विद्याभर का नाम (सङ्घा)। "सिंसज को ["शृद्धा] एक विधा-देवी (सिंठ ४) । सिंग ग ["शृक्ष] एक केन-विमान (धन ११)। "सिंद्र न ["सुरा] एक केम विमान (सम २६) । सुदर पु िसम्बर् विदायर-वंश में स्टब्स्न एक राजा (वरुप ५, १७)। सम्रजहु ई [सम्रह् तु] विधावर-वंश का एक राजा (पत्रम ध १७) । सण पु सिन दिन के पुनि वो सम्बन्ध अध्यक्षेत्र के पूर्व अन्य में धूद थे (पठम २ १७)। २ विकल की बीबहुवीं रातान्ये के एक कैन माचार्य (श्विर १९४१)। हर दे ["धर] र शन्द्र, देवतन (६ १४, ४व धव)। २ वि वक्त की वारत्य करने-बासा (मुपा ११४) । । उद्दर्भ विश्वपनि

१ प्रमा (पत्रम १ १६७ ११ १॥) । २ |

(मृषि)।

विचापर-वैश का एक धवा (परम १ १६)। स 🛊 [भि] एक नियानर वंशीय राजा (पंतम ४, १६)। । पाच न ियसी एक के विमान (सम २४)। स पुं भिश्ची एक विद्यावर-सवा (पटम प्र 1 (03 वर्ळाक हूं [बजाक्क] विचायर-वंश का एक राना (परम ४, १५) । धर्माञ्चरी को [यजाश्वरी] एक विदान्देवी (संवि ४)। यञ्चत देशो वञ्च = वर् । वज्जोबर पुं [वज्रन्बर] विचाधर-वंग्र ध्र एक राजा (परम १ १६)। क्कपट्टिश की वि] मन्द-माग्य की (सींक बज्जण न [बर्जन] परिस्तान परिहार (सुर ४ वर स २७१ सुपा २४% मृद्)। वक्कणञ (वप) नि विदित् वननेवासा 'पब्रह बण्बणव' (हे ४ ४४६) । बकाणया) की विश्वेना विरुदाय (सन बळ्या । ४४ व्या १६ ६ वन)। बज्जमाभ देशो वस्त = वर् । वकाग वि [बर्केंक] ध्यावनवाका (तवा) । बळार धक [कमय्] क्यूना बोसन्छ। नमरक गण्मरेक (क्षेत्र २ वक्ष्महा)। नक्त-वद्मारंत (हे Y २) नेव्य १४९)। संह वज्रारिकण (हे ४२)। इ. यज्जरि अभ्य (हे ४२)। बकार देशो र्वजर = मार्जार (बंड) । यव्यर दूं [सर्वर] १ केश-विशेष । २ कि मेश-विशेष में चल्पना 'परिवाधिया व हैशी बहुने वस्त्रीमनुहन्त्रवश्वराह्या ध्यक्षां (श्व (4) t बज्बरण न [कथत] रहिक क्यत (१४२)। वकरा की [के] वर्रीययी नदी (के के)। बळरिश्र वि [कवित] न्या हुपा प्रश्त (ह ४ २ दुर १ द२ व्यक्ति। बट्या की [वे] शविकार, प्रस्ताव (दे ७ वेश वस्तार)। बळाच (धप) शक [धाच्य्] वचधाना, पहाना । भण्याबद्ध (प्राक्त १२ ) । शक्याय राज [ पाष्म् ] अवाना । वण्यापद

बद्धाविय वि [बादित] ववाया हुया (मनि)। बळिष 🛊 [बिकिस्] इन्ह्र (संबोध व)। ब्रिक्स वि वि प्रदेशकित इट (रे ७ १९, महर)। विकास वि विद्यार विभाग होगा (विदि **५२५)** । विद्यां वि [बर्सिट ] र्यहर (स्वा) घोष मझा प्राप्त ७१)। विक्रियाय पूँ हिंदिनशी (स्थव म्हस्य )। विक्रियाधार पूर्वि देशुक्तम (वय १)। विकार वि विविद्धी अवनेवासा (सुर ११ १७२। बुपा ४४। वध सिरि १४४, सस्) 'पहिन्क' १९व ) बिराजका किवकरियर्व मेह मेही-बर्धे (क्रम २२४)। बरदुत्तरबंडिसग न [बजोत्तरायतंसक]एक ध्य-विमान (सम २५) : वक्तोयरी की [धन्नोवरी] विद्या किरोप (पडम ७ ११८)। धरम्ह वि विवय । भय के योग्य (सुरा २४०-मा २६, ४६६ वे = ४६)। निवस्थिय वि ["नेपच्यिक] मृत्यु-रंज-प्राप्त को पहुनाया बाता वेप वाचा (पर्याह १ व---पन ६४) । शास्त्र की ["मास्त्र] कम्म को प्रहुताई वादी माना करेर के इस्ता की माना (भक्त 22 ) i भक्त कि [आह्य] १ वहन करने योग्य (प्राप्ता च्य १४ थी)। २ न **धरन** मादियान (स ६ ६) । सेनु म ['शेख] क्या-किरोप यान की स्थाय का क्रम (स ६ ३)। बरमध्य की [इत्या] वय वात (मुद्ध ४ ६ वश्यक्यायक म [ वश्यायन ] योत-विरोध (सुमार १६)। वस (प्रप) देखी वध ≔ क्षत्। वसह, वसदि

(पष्)।

वह धक [दृत्] १ वर्षना होना । २ धाच

एस करमा। महार, महार, महाति (सूर ३

१८/व्या क्या) । यह वर्ट्ड यहसाण (क

४१ । कम्म € २ वेदम ७११ महिल

खबार पति कम्पर पि ३१ ) । हे**स** भट्टेर्च

(वेद्य १६०)। ४ महियस्य (स्म)।

क्टू धक [ यत्त्वयू ] १ वरतना । २ विट

क्य से बॉक्सा । वे प्रदेशना । ४ वक्ता भाष्यादन करना । गट्रनीतः (पित्र २३१)।

बहृषि [धृत्त] १ वर्नुव योजाकार (सम

क्षक् धट्टिकामाण (धीए) ।

६३ थील बना) । २ धतील बुजरा हुमा। ६ स्ताप संजात उत्तवा ६ वर्गता ६ इइ । ७ ई कूमें रखना (है २ २६)। च म, वर्तम, वृत्ति सबूति (सूच १ ४ २ २)। बसूर "सुर र्ष [सूर] थेष्ठ प्रस्व (धोष ४३ । राज)। संद्र, लोड चीन (केल) क्ला-विरोध (द्वारा १ १ -- पत रेश साथ के प्रति क्षेत्र है। केपी क्ष्य साइ: देवो पत्त वित्त ⇒ इतः। विश्वस्थ र्ष ["दैताक्य] पर्वत-विदेव (डा १ )। भट्ट पूर [पर्सन्] बाट, मार्थ चल्छा 'पकि-कोएस पनद्वा चला सरपकोधनामिकी नहाँ (धार्ने ११व सुर १ ४ सपा ६३) 'बद्र (शकर)। बादण म ["पावन] कुसा-कियों को पारते में कुन्या 'परश्चेत्रपट्टनाव्यक-र्वरायहण्डलपराञ्चलाई' (इस ११३), क्रो रहपाक्लेड् वंशन्त्रलेडि बत्तकवालेडि (वर्मवि १२६)। बहु पून [दें] १ प्याबा, पुत्रशाली में 'बाटनो'। 'पश्ममु इम्मि चलिया श्रीहा हस्याउ निवरिये **क्ट्र"** (मुप्त ४३६) । २ प्री क्रानि, नुक्रतान दुवराठी में 'बट्टो': 'धप्रह वनकाएउसि सूला बड़ो दर्ब होर्बि (मूरा ४४९)। ३ मोरफ रिल्मा-पुरस्त शीहरू 'बहुदरएए)' (मन १६, ६--- वश्र ६६६)। ८ छाछ-विधेष नाही मदी (पद्ध २ ६ - पत्र १४ )। यह व [यत] रेश-विश्व (बल ६० थी)। बह दे (पड़ी प्रवाह (ब्या) । वेको पह (वे क्ष्र क्षेत्र महित्र महत्र) । बहुत देशा पष्ट = 💷 : बहुक ( केसी पृद्य = वर्तक ( पर्ण १ बहुत है । पत्र विका १ ७ चम थ्यः, तूच २, २, १ ः २६ः ४१) । पद्म्य देवा यत्तम (र्थ्य) । धरूपा देश बचना (सन)। भद्रमान [कर्मड] भार्य, शता (धाधा क्षेत्र) ।

बद्द त वि । पन-विशेष (इह १)। कर बहुआण देवो पट्ट = बृत् । भक्रमाण न विंदेशंन सरीर। २ कच वं विकास मजनगरीय (राज)। करी औ ब्रच्य पा एक तरब्र का मविकास हि अ िक्टी निक्श-निकेष (स्तर) । = E) ( बद दख वि विद्यु र नोब ब्रुताबार पहुर्य केचो मुद्र ⇒ दे (पडन १२१२)। बहुत पू विशेष है पश्चिमिरोप, बटेर (सूच १२ १ ९ छवा)। २ वाधकों को खेलाने काएक बच्च का भग्ने का बना ह्या गोख विभीना (यम् ४३ छाता १ १०--पत्र २११)। बहुन क्यों पड़ (बर्ज) : बड़ा को वि बरमयी देशों बहु = कर्यन् (\$# # F) | बढ़ा को बाक्ती वाट कवा (कुना)। **बहात एक [बर्तेय़] बरदाना काम में** वयाना । पहालेड (७४) । क्यापन व [क्तन] बच्छाना कार्य क्रवाना (क्र)। बहुत्वय 🕅 [यर्जेक] वळलेवाका, प्रवर्तक (बचा कामा १ १४-पर १ १)। व्याप्त वि [बर्व ह्र] प्रविवायक तुम्सक्त (有有 1)) वृत्रि औ [बिति] १ वती शैपफ में क्वनेवाधी शादी। २ समाद्रै सामा में गुरुग जयाने की क्वी या स्थाई । ६ शरीर पर किया बादा एक तरह का नेप । ४ शेख विकास १ १ कर्मण गोची (इ.२.६.)। देवो यस्ति विस्ति। वृद्धिक वि [बर्शित] १ परिवर्तित (है १. २७) । २ वितत (पर २१६ टी) । ३ वर्तुन बोब्र (पर्हा १ ४--- तत्र ७ व- तंत्र १ ) । ४ प्रवर्तित (धवि) । बहिया भी [पर्तिस] देवो बहि (धनि २१७ मार-समा २१ स २३१)। बहुम नि [र] व्यविरिक्त (वे यहिय वि [ब्रे] बुर्ज निवा हुया, विशा हुवार पुनराची म 'बाटेनू' 'परिपार्च साहित्यपट्टिने कोर्छ' (न २६४) । विक्रिय म विदेशियर-नार्म (वे ७ ४ )। पृष्टी और [पर्या] केनो पृष्टि (हे २,३)। बही की [पट्टी] पट्टा 'वाच व बाहिबट्टीकी परिया रक्तुप्रवसी मार्चि (नुशा १४४) (kk)

(पाय) । २ पून प्रकारा - पान के तनान एक तरह का कम्ब-पून (हे २ ३ आह)। क्≲रेको पर्∞श्र (पत्रकामा १६७)हे १ वह १९६)। "बद्धि केवो सद्धिः 'वा-बद्धी' (बस ७३) वेच ६ १८ वि २६१ तर्दे)। भक्त ए हिंदी १ बार का एक देश: दरवाने का एक ग्राम । २ क्षेत्र (वै ७: चर) । ३ मरस्य भी एक वर्तत (पएउ (---पन ४७)।४ निजाप (निष् १) । देखो सङ्गा 'नडसफर परबसार्ख' (सिरि १०२) । वस प्रे विटे १ इक्र-विशेष मरस्य, वह का पेक (पर्वास्त १--- पन ११ मा १४) कन्त्र)। २ म नवा-निरोग, 'नरपूरपञ्जूपार' (छाना १ १शी--पत्र ४३)। तयर म ["कार्] क्यर-विशेष (पटम १ १, वन) । सह न [पद्र] १ द्रमध्य का एक तक्द, बी स्रत्र वक 'वडीचा' नाम से प्रसिद्ध है (क्य ११६) : २ एक बोर्ड (स्प ११७ दी)। साविसी की ["सामित्री]एव सेनी (क्यू)। वड केटो पड न पर्। वह 'काईहरीस इस्प्र वर्षता (वे ७ ७)। वड देवो पड = पटा "पवस्तव्यवप्रदामी **बिल्कीयो तह य सनुवारतं (सुर ४ % है** रह बुर हे ६१: हे ६था श 484) 1 बाह्य व [बटड] त्वत्य-विशेष बद्धा (विड 440)1 पहल देवी यह = बट (धेव)। वंबेप देवी पढेन (वा १६७) वडेर नहीं)। पक्षप्प व [दे] १ वटा-पहन । २ निरुत्तर (K a k) 改 वडस वि[यडम] १ वावन हरून (मोदमा वरे)।२ जिल्लाम प्र**त-नाम नाहर निकल** यामा हो यह (भाषा)। १ वर्गन के उत्तर का जान जिल्ला देशा हो बह (पर्याह ह र---वद २३)।४ वीचे का वा वाले का

संद विश्वक बाहर तिकस पाया हो वह (पव ११ )। १ तिसका देर बहा होकर साथे तिस्तर पाया हो वह । बी भी (पाया १ १—यव ३७) सीछ ति ३८७)। यहार देवी यहार = वटक (पुरा ४८१)। वहार केवी यहार (प्रता)

बहरामि दृ [बहरासिन] पश्चमस्य समुद्र के सीतर की धाव (सा ४ के)। सहबह धक [बि + सम्] विसास करता।

सडवड थक [चि+ छन् ] पिसाप करता। बरवाह (हें ४ १४०) परवर्षत (हुना)। सहया की [घडया] कोडी (पस्य कार्मेंक १४४)। जल्ल, तस्त्र हैं चिन्नु प्रकृत के धीरत की साम बर्ज्यानिन (पि २४ का १६)। गुहून [जुला है क्यी वर्ष (ह १ त)। २ एक महान्यातल (हक)। बुआस वुं [कुतारा] करवालन (हक्र)।

११४)। शहह केवो पडल (धाणा १२१२)। शहह हुँ [वे] पक्षि-विशेष (४७३३)। शहह हेवो पडह (वे १२४०)।

बहारी वेको पस्त्री (पद्मा)।
विद्यासा वेको पद्मामा (या १२ )।
विद्यासा वेको पद्मामा (या १२ )।

सहाडा रेखा पहायाः चनमयगर्धाः (महा) रेखा पहायाः चनमयगर्धाः (महा) रेखा पहायाः चन्द्रस्थाः स्थाः

यहिञ्ज वि [गृहीत] महण किया हुमा (मुर ११६२)।

विवेस दु [यर्थस] १ तेव पर्यंत (तृत्व १ टी—सर ७)। र पूच्य 'प्यपुक्त संख्या वि दुर्गित्वचमा' (व कम्म)। र पूच्य रिपर्हाटन-पूर' (क्श)। ४ प्रमान, युवर। १ रोत उत्तर (कमा महा)। ६ कर्तपूर, कात का पामुख्य (खावा १ १—वव ११)। रहो पर्यंत, प्रस्तिका

बहिजाय पूंछि पर्यंत करात, बैठा हुआ कर्ता (यह )। विक्रिया की [पृत्तिया] बर्चन, 'क्यवंतरीयत बरिक्य' (य १०३ प्राप्त २, ७ १)।

वश्चिमा देखो पश्चिमा च्यातिका (माचार ७१)। मुक्तिसरन वि] मूल्ली-मूल मूल्दे का मूख

(वे ७ ४८) । पश्चिमस्सर्थ पि [परितस्यक] पूत्रक, पूत्रा करोगावा (भाद १) ।

करनेनावा (भार १) । विक्रसाध नि हिं] श्रुव त्यका हुमा (पर्)। बढी की विं] बड़ी एक प्रकार का बाद्य (पर

१व)। वद्यसग वद्यमग

बहुमग) वहेंस पूं[पर्यस] रोबर, बुकुट (भग गाया ११थे—पव १)। देवो वहिंस।

वडेंसा की [कर्यसा] किंगर गामक क्रिक्रोप्टर की एक अधनिवृद्धी (ठा ४ १—पन २ ४३ खामा २—पन २४२)।

लाम २--वन १६२)।
बहेंस्या की [वर्तस्था] धवरंत की तप् करणाः प्रहुटस्थानाश्म करणाः धहुतसर्व क्षणामं गोध्यत्रं धोमावेता मानव्येत्रं पिट्टिय वेस्थिए परिम्रोब्यं (ठा ३ १--पम

t ( # f

सङ्ग कि [में बका सहाज (के क २६० ठंडू प्रक्र, पूर्वा १२५ प्रकार १—वक १३६६ १६० १०१)। अरुस्ता मुं िआस्त्रको ठंडू भी पीठ पर प्रकार बका सहल (वक ४१ हो)। चौंचा मुस्ति, सहस्ता (ह ११ कर कन्ना)। प्रव्य (स्व) मृस्ति

नहीं (है भ १६६, भ्रदेश) जि है है। "यर वि "तर्र विक्रेंत वहां (हे २ १७४)। वहुमान पुर्ति के अध्यक्ष (हे २ १७४)। वहुमान पुर्ति के अध्यक्ष (हे ७ ४७० हुमा)। वहुमान दिल्ला है (है) समास्तर, मानी (हे ७ ४९)।

क्ष्याः (क्ष्यं) वेद्यां वद्यु-यर (श्रीषे) । विद्वार (क्ष्यं) वेद्यां वद्यु-यर (श्रीषे) । विद्वार वि] वेद्यां वद्यु, 'नक्ष्यां व्यवस्थाः वस्त्रं वद्युस

वज्यस्य बहिन्ने फिरि । स्मृत्यियमधीति विट्डे स्यूप्तेने गाणि पुज्यति (पुर ४ २ वचा ६२) । सङ्गुक्तर वेको सङ्ग-यर (वह् ) । प्रसूच प्रकृष्यि व्याप्त । नस्तर (हूं ४ २२ पादा काल) । पूजा मेन्स्स्य (क्ला) । वाद्य प्रसूची , प्रदूचनाम्म (पुर १ १११८ महा या १११) । हेड- महिन्दी (महा) । प्रसूच प्रकृष्टि प्रस्तेष्त ] १ बहाला नित्तप्ता । २ बवाई था। । बरबीय (चन) । नह

यह्रकात (गट-पुण्य १०) । कर्म विहरमति (गिर ४२४) । देवो यद = वर्षम् । वह्यम् १ [वर्षोक्त] वहर्षः पुणाः (सम २७ जय १११३। यामा सर्मसं ४०६। १ ७ ४४)।

बह्दहर्भ ५ [के] बर्मकार, मोबी (६७, ४४)। बह्दण न [बर्धन] १ इंडि, बहाब (कन्नू)। २ वि कृति-समक्ष (महाः पुर १६ ११६)। बह्दवामिर वि [के] पोन, ग्रा (६७ ११)।

वहरूपासर स्व [कृ] पान पूर्व (क छ रहे)। यब्दलसाळ वि [कृ] जिसमी पूर्व कट प्रहें को बहु (के ४६)। बहुदसाण देवो वहुड = हुम्।

वह्दमाण रेको वह्द = हुम्। वह्दमाण ) त विभेगान, की १

बब्देसायम् । पुत्रतिक का प्रकार का स्व धानका पंकराक्ष के धान में प्रक्रित है। पिरिकारकाक्ष्मपर्य पता पुत्रकाधानमार्थे (कम्पत ४४)। २ धानविद्यान का एक प्रकार मेर, कप्रपेषण बहुता काला एक प्रकार का पर्योख करी रूपों का द्यान (का ५—पन १० कम्पर १ क)। १९, क्ष्मप्रकृष्ण स्वामीर

वह्वय केवो वह = है 'नालकीय' वह्वयं विवावयणस्मित्य पीयमाणे वि द्वीए बुट्डूबरं करिमनेनूर्गाई (स १०२)। बहुब्ब सक [स्पेय, वर्षापय्] १ बहुमाः बृद्धि करणा। २ वर्षारे देना सन्त्रस्य का

(ववि) । वैको सञ्चामा ।

विवेदन करना। वयुक्तह (प्राष्ट्र प्र)। वयुक्तमानि [यर्पेक] १ वदानेवामा २ वयाहे देनेवाना (प्राष्ट्र वर)। वयुक्तमान [कृ] यक्त का साहरूस (दे ७

८७)। पब्दुर्वज न [वे प्रभापन] हवार, प्रश्नुस्य निवेक (हे ७ ८७)। वर्डनिम वि [वर्षित, वर्षापित] निचमे बबाई दी नई हो नह (दे ६ ७४) । बहुद्वार (भप) एक विभेग निकास प्रवर्धी में जबारक । महबारह (मनि) । बहराय देवो बहरय । नहरावेथि (धार्ष ६१ पि ४४२) । नव्हापभ रेवी नव्हरमा (शक्त ६१३ वर्ष् बदा) । महबाबिओ वि दि । स्पापित स्थात विशा

Ent (g . As) ! बहिद नि विभिन्नी बहनेपाका (स १ १)। बहिड थी [वृद्धि] बहती बहान (ज्या केनेन्द्र ३६७) क्षीनस २७४) ।

ৰহিতস বি বৃত্তী বলাছলা (পুনাঙ ¥≈≀ना४१ नका)। विश्विक वि [बीचरा] १ वशमा ह्यार महिनीते नप्रविद्यमतीरी समहित्य निरम्पर्द (सिरि १२७) । २ वरिष्टत किया ह्या काटाहुमा (से ११)।

विद्याभा की [वे] कुरतुशा अञ्चल (वे ७) 14) 1

विद्वम १६वे [पृद्धिमन्] इति, वहाव-'पद्या फिले वरिहमा' (शर्फ ६६ कप्पू)। **यह देवो** तह = बट (हे १ १७४: पि २ ७)।

बढ नि [पे] मुक प्राप्त-राधि से छी्छ (tife te) i

बढर १ पूँ [बठर] १ यूवे छन । २ बहस्र है स्थाप पूर्व और वैस्य की वे करण संदानः सम्बद्धाः ६ वि शुद्धः कृती । ४ मन्द्र सम्रव (हे १ ११४ वह )।

क्य वर्ष [यन्] शांन्या, जनमा करता। बरोड (विश्व ४४१) ।

क्यार् दिहे । स्थानकारः ३ दलकं शीवास

(R w R) 1 समापुत्र द्वित्र योग अहार, बारा 'जस्तेच

बलो हालम बेमरा (बाद रा भरते हैं। ४९७ वाष)। विह्र्षु[पृह्] बाग पर बाबी पानी पट्टी (सा ४६)।

वप्प म [यन] १ घरएक अंक्त (क्रम शावा क्या दूषा मानू ६२३ १४३) । ए पानी, मस (पाक्षानमा न) हो मिनाबाउ

याजन (हे ३ ८४ प्राप्त)। प्र नगरपति । \$ 1 (88 pt 48 48) 1 \$ (कम्प ४ १ क्याल वर्षेचा (तप १६८१)। ७ 🕻 देशों भी एक जाति नातन्यतर देन (प्रक: वस्य ३ १) । व शक्त-विरोप (शक्) । कम्प पूर्व विभौती अंतव को कारने या बेक्ने कर काम (धर्म क. ४---पत्र ३७ ३ वरि)। कम्मंत न किमोन्ती कस्पति काकाण्याला (शाचा २, २ २ १)। गभ र् [ीगम] जंगनी शृती (से ६ ६१)। मि। पू भिनि क्वाक्स (पास)। बर पि चिरी पन में राष्ट्रोपाबा, बंबारी (पराह र १--नव १३)। वरी. (प्रमा ६) देशो यर। किया वि िष्यक्ष्या अंपन काटनेवाबा (प्रज १ ४) : रेंबडी की [रेसकी] चरएय-जूनि (ह । ६६)। युष दे ["दुव"] बनानन (शास्त्र १ र---पत्र ११) । वस्थाय पून ["वर्षता] वनस्पति से स्वास पर्वता 'बसारित शा बक्कपन्नवास्त्रि वर्षे (धाचा १ ६८ ६ २) *१* "विराध र् "विद्याधी गेली विद्या (६७) । बार्छन बिस्डि एक रूप विभाग (सम ४१) । साध्य की "माक्सी १ पेर तब काक्नेपानी गला (पीप: यण्ड **६६) । २ एक धन-वर्त्ती (पतम १६ १४)** । १ राजार औ एक पानी (पान १६, ६२)। "य कि ["व्य] बन में जराब नेपनी (कना ११) । बर १९ विरी १ वस्स रानेगावा, ग्नेबा (छामा १ १--१व ६१) क्का) : २ पूर्णाः व्यक्तर देव (विधे ७ ७) नव १६ )। बी दी (त्य प्र ६६ )। शह **ब्रो** शिक्षि धर-पंकि, बुध-समुद्द (चंडा तुर २ ४४ धनि १४)। **धन** रावर् िराजा रे विकास की मालगी श्राप्तकों का पुत्रचाव वस एक प्रशिक्ष चाजा (मोशू १ )। १ सिंह, केटरी (भीत) । स्त्रुपा किया औ ["क्रक्ता] १ एक अधिका शम (सक्त)। २ वह बुध विश्वयों एक ही श्रम्मा हो (कृत्र) राव)। पाछ वि [पाछ] ज्यान-पासक भाषी (का रूवधी)। वास प्रे िवासी धररण में पहना (पि १४१)। वासी सी [बासी] भवपै-पिछेप (धान)। विञ्चात न [फितुरो] नामानिम बुधों का बनुह

(तुष २ २ ≋ामर)ः विरोधि ई िविरोडिम्] शापाड मास (नुन्य १ ११) : संब पुत "पण्डा" सनेकवित पूर्वी भी भटा-समुद्र (ठा १, ४) भग शामा १ २ थीय) । इतिथं पुं विस्तिन् ] चेनव का हानी (धें व १६) । । किं, "ोकि बी ीं कि | वन-वीन्ड (पा १७१, हे २, १७७)। मणह में हि] बन-रात्रि बृज्ञ-रीक हि क वेदा चम् ) र नेपाण ग विनानी सकते को छ।की शांवा है

विव पूछरी नाम से बनामा (प्राप्त १ २---पष २६)। वजन व (के स्थान) दुवना। साम्राची

िवास्त्र देशने का कारणामा (दस १ र वी) । वजिद्ध की दि] मोन्ह्रम, यो-समूह (रे ७

वयनशक्तिक वि [वि] पुरस्कृत माने किया हुषा (वस् )।

वजनश्रसावश्र र् [वे] घरन, स्वापस्तिकेव ( w 47) i क्कप्रदार् [पनस्पति] १ क्क्स-विसेप प्रत

के विका ही निस्तें एवं संपद्म हो गई कुछ (११६ ६८ इस्स)। २ वस्त प्रत्य इस्य यानि कोई भी वास्त के मात्र (थन)। १ स. क्व(हुमा ६,२६)। स्वर्ध हि (कायक) श्नरप्रधि वर गीव (मय)।

बणय पूँ [यतक] हुवरी शरह-वृक्ति का एक नरक्ष-स्थाय (व्हेन्स् ६)।

बणरसि (बच) देशो काष्मारसी (संब वि NKY) I

बजब पूँ [बे] बाशक्स (३ ७ ३७)।

गणसवाई औ हिं। कोक्सिं, कोक्स (दे ७ म्दायाम्)।

पणस्त्रह वेशो पणव्याह (है २, ४१) बी २; ज्यापद्धाः १)।

यणाच वि 🔃 ध्याच से ब्यात (१ ७ १४) ।

मगार पुंचि] समग्रीय वश्वाहा (दे ६७) : पणि वि [स्राचिम्] प्रापनामा विश्वको पान ह्मा क्षेत्रक (के ६ ६३३ वेच्य १६ ११) । ) पू [ वाजिज् ] वाषिया व्यापायी, याणिया है वेसमें (बीरा) क्या ७२= दी: गुर कुपाः महा) ।

रुप्र वि क्रिणिती क्ल-पुक्त, पानवासा ग्र ४१८ १४१ वटम, ७६,११)। प्रापृधिनापको मिशुक निकार 'विश्व विद्या कि बालभो पाक्यायां बरोबि मिंक ४४९) १ ग्रेश न विधिया क्योतिय-प्रसिद्ध एव ल्ल (बिसं ३१४८ सूपानि ११) । णेळा की [वसिका] बाटिका बक्रेका, प्रसोधवरिमधाङ *धरम*न्यार्थन्म' (गा**व** ७ बवा) । पिआ की विनिद्यों की, महिका, मार्थ (सारेण कुमा) तबुरे सम्बच रेण्ये)। णिज देखो पण्यित = वस्तिव (बाद ३४)। जिज्ञ ) न [वाणिक्य] व्यापार, वैरार, जिल्ला पितियामा हुई वह ते विद्रेति व्यक्तिकवर्ष (मुपा ४१ २४२) "उक्केछी-भाषको बल्लिक्ले (परम १६ ६६) स ४४३ सुर १ ६ ३ दुव ३६% सुना ३७४ शस द ग्रीक भा १२)। हरव वि िश्चरको स्थापाचै (सुरा १४१ छन प्र र ४) । पणिम ) देखी वणीसय (दस ४,१ ४१)। वणीमग र बरिद्र, निर्वन (इस ६,२,१)। बणी की [बनी] १ मीब से प्राप्त का (दा ६, १---पन १४१)। २ फ्ली-विरोध जिससे क्यास निकाता है (चन)। धणासरा १ पूर् [सरीपक] धावक विद्वक वजासय } मिक्राचे (द्वा ६ ३) सुपा १६० सत्ता योग ४१६)। बण सः इत वर्षी शर तुषक श्रम्यय--- १ त्रिवय (३१२ २६) क्या)। २ किक्या। ३ भ्यूकम्पनीय । ४ संधानमा (हे २, २ ६) । धणचर देवी वज-पर (ध्यस ११)। वष्ण सक [यण्यू] १ वर्शन करता। २ प्रशंसा करना । १ रॅंक्स । वर्णमानी (पि ४१ )। कर्म विस्तिग्रह (विदि १९८८) बरिक्क्यर (मर) (हे ४ हे४३)। सङ्ग वक्कंड (गा १४)। हेक्कं व्यक्तितं (शि १०१)। स वण्याणिक, वण्येशस्य (ह १, १७६३ वर)।

थळा व विकी १ मर्शना स्वामा (उप **१ ७) । २ मरा, कोर्ल (योप १) । २** शक्स भादि ऐंग (सक् छा४ ४ उता)। ४ धकार मावि धक्कर । १ कक्काल वैरम भावि वाति। ६ दक्षा ७ धीयराम । ८ सूबस्य. स्रोता। ६ विदेपन की वस्ता १ वर्ष-विद्येषः ११ वर्णमः ११ विदेपन-कियाः १३ मीत का कमा। १४ विवा (दे १ १७७) प्राप्त)। ११ कमें-विरोध सुक्त धादि वर्णे का कारख-मृत कर्म (कम १ २४) । १६ शंगप । १७ मोख ग्रीफ (याचा) । १८ न. इंक्स (हे १ १४२)। पास नाम र्यन िमासमा क्यं विशेष (एव क्य ६७)। र्मत वि [ यस् ] प्रकरत वर्शनावा (भप)। बाइ वि विविम् सावा-कर्ता प्रशेषक (बच १) । याच पे विदानी प्रशंसा, स्थामा (पेचा ६ २३) । ह्यास प्र िवास वर्शन-प्रकारत वर्णन-प्रदृष्टि (बीब ३ क्या)। वास दू [क्यास] पर्सन-विस्तार (भयः इवा)। बण्ण वै विर्णी पेचन साहि स्वरः। सम न िसमी केम काम्य का एक नेद (दसनि २ यण्य वि दि] १ सम्बद्धः सम्बद्धाः २ रकः। (to a)) बण्म केलो प्रथम (पा ६ १ यज्ञ)। वण्यम वेको वण्यस (क्वा: सीप) : वण्यम व [वर्णन्] १ स्क्राचा प्रशंसा (क्यू)। २ विवेचन निवद्धा, निकास (ध्यस ४)। बण्यणा की [यर्जना] अतर रेको (दे १ ११३ सामे ४१)। थण्यम पुन कि सणैकी १ बन्दन धीसरह (वै **क क**ण-पंचा ल २३)। २ पिहातक-पुर्णे धंयरान (रे ७ १७; स्त्रप्त ६१) : बण्यस पू विश्वेक] बर्जन-प्रत्य क्लीन-प्रकरण (विपार १ अला ग्रोप)। विषय 🛚 [वर्णित] विसका वर्शन विमा थया हो बहु (महा)। विष्यभा वेचो विभागा (या ६२ )। थिय र विधित है एक राजा, वो सन्तक-

बृद्धिण काम सं प्रसिद्ध या, 'वरिष्क पिया वारिती मामा (ग्रंड १)। २ एक मन्डक्ट् महार्थि 'धक्कोम परेण्ड क्यूही' (पंद)। चल्यक्विमानंश में ज्ञाप यादव (संवि)। व्साक्षी व [व्रा] एक वैन प्रायम-धम्ब (निर १)। पुंगम वू [ पुंगम] मादव-बैह्न (क्त २२ १३ छात्रा १ १६--- पत्र २११) । विकट् पू [बद्दि] १ मन्त्रि साग (पाप महा)। र शोकाणिक देवों की एक जाति (श्राया १ c-यम १६१)। ३ विश्वक बुक्त। ४ मिलाभौ का पेड़ा ६ मीडू का पाख (हेर ७६)। बद देखी यम = धर (भंड)। वित वेको यह = वित् (क्य १०१)। वित देवी यह = वृद्धि (चेड) । बस् पृंदि निवह समूह (रे ७ १२)। यक्त वेको बहु = बूद् । वत्त (मनि) वत्तरि (धौ) (सप्त ६ ) । बत्त देशो वह = बर्देन् । बतह (स्वि) । बर्तेश्र (बाचा २ १६, ४२)। वर्तकाति वर्तहानि (क्याः चि १२८)। वक्त विवर्षी भारतेन्य (वक्त १८, १८)। बच वि [ब्यार्स] केवा हमा मरपूर (क्रम विशेष १६)। यचरेको वह≕ वृत्त (स ३ ०० महुः सुर १ रेण्य वे ७६ बीवा हे र रेप्रय) । वश्च वि [क्यक] शक्द भूमा (बर्मेर्स ४११)। यस ग [यस्त्र] प्रकार्य हिंदि १ व सवि)। वत्त देशो पञ्च ⇒पन (शाद ४ इद्धा ३ यत्रष्ठ) । वस देशो पत्त = पान (महत्र वा १ )। थक्त केवो क्का (भाव)। यार वि ["कार] भारती बक्नेबासा (परिव) । वक्तान पू (क्यलाव) १ विश्वतंत्र विषयति । र व्यक्तिमप ज्यसका (ब्राङ्क २१) । वचप देवी थम = वन् । थचड्डिआ रू (यप) देखी वश्चा (कुमा 🔭 😿 बचर्डा | ४१रा वस्तु । यत्तम व [वर्तन] १ मोविका, विश्राहः 🍺 न तुर्व नव्यर्थि इह वरतार्थ करेवि (इस

२६) । २ मर्जुन परास्त्र (रेवा १२, ४६) । ३ स्विटि । ४ स्वारत । ३ वर्तन, होत्यः ६ वि वृद्धियानाः ० छुनेयाना (र्सात १ )। बस्तमा की विश्वना दिवस देखा। 'बससा-नस्यान्तां (उत्त २६ १ धावन)। ६चमी को दिस्ती। मार्गशन्ता (पर्याः) १---पर १८ वित १२ ३ मुच्छि ६१ क्षा नुषा ६१८) । बत्तद्व विदि दे गुन्दर । २ वह विधित (マッ ×) i बलवाम १ विलयानी १ गान-विदेश, चनताकाल (बाज सी १)। २ वि ষর্প্রাধ-কাদীর বিভাগর। % বু বিভা नातन्त्र (धर्मनं २०३) । मचरि देवा अर्चार (बन वर प्राप्त १२३) ft ret) 1 बक्तस्थ देवा यय = वच् । यश्च ६६ दि ] तुक्र-सन्तरक तुल-सन्तरक (सन्दर्भ-नव्य तद्र)। देवा पचा = (१)। बन्धाओः [यार्था] श्रद्धत, कवा (न ६ ६० दुरा १ ३ प्रानु १ दुना} । २ बुलान्त इंडाब्ड (काम) । ६ वृत्तिः । अपूर्ण । ३ इदिन्दर्भ अनु । ६ जनपति विवदन्ती । भ क्षत्र वह प्रदुवह । वात-वर्गक प्रा-माधादेव ६) स्वत्र वृक्तिये] क्टबंड (बिंट रे रे) यमार वि [४] याँवत यक्ष्युक (१० ४१)। विभिन्न (दी भागान्देश ३१) । याच दर्श प्रीष्ट (च २६२ ६३ 111 र्याल हि विभिन्न देशनियास (सहा) र्द्यान ≌ [यूनि]ब्रह्नेत्रःभूष ३ ४ ३ क्दा दि च र्वानुक्र किया पड़ी ब्युक्ट इंड वर्ण, काशी रानु पद्भाक्ष [प्र'नार] ब्रोगा-विद्वाद विकास समय चार्चा छ. वैकर विद्यापन ता उसके विक्य की विश्वित्व के स्थापना (बहर ११) श्चीनामा है [शांतिक] दशहर र या (\$ ? 8 ) \$ fc, bet #1 fiet (44

ve विने १४२२)। १ ईव की दीवा---ब्यावया (पिने १३४४) । बिश्च रि [बर्शित] १ दुल--पोस क्या ह्या (काया १ ७) । २ धान्यप्रदेश (परि)। विकास देखी प्रवास = प्रत्यव (धीर) । बक्तिमा देखो पट्टिओ (माप्र) । विद्यानी की विद्यानी नार्व चरता (पाव च ४ पूर १२ १३**६**) । बलादेवी पत्ता=धन्त्री (या +१ १६) 1 (80) यसं रको पय = मन्। यक्ताम वि विक्तुकामी बीमने की पाई-बाला (स.६६३ वर्षि ४४५ स्टब्स् ६३ गट---(वक्र ४ )। यसम्बद्ध देखो यदस्य (राज) । बार्चर्य विस्त्री बचहा (धाचा २ १४ २२। उक्क क्यूब १ १। वर इ १३३। मुता क्ष अक्षानुसाम्बद्ध क )। शिक्क न शिंत्र®े बना रिशेष (वं २ दी—पव १३०)। योग वि याथी वस गनेवाना (नुसार २३ १७)। यूम ४ [पुष्य] एक वैन यूनि (पुनक २२) । पुनामित्त पू पुष्पंसकी एक वैत्र दूनि (दी ७)। (पाना क्षे [पिया] रिया-रिटेव शिवह प्रमाय ने पद्ध हार्श कराते ने ही गीमार थच्छाहो जान्य (वर ३)। नाहगानि [ शपक्र] बढ़ पानेगमा (न ४१) । सन्धाः [कश्य] पुत्रम् जिल्य पुता (सुर 24 22) 1 क्षपाद १ वि. यहपुर] संद्व, काइनाट, बक्रम्य (१ ७ ८१) । यान्यतः देशा युग्न क वर्ष १ पर्धम र्र्ज [बस्ताद्व] बरावृत्र को यह जाति जो बढ़ा दन का बाल करता है (शहस १ २, (35) क्षा १ देखो दरभर - प्राप्तर (का १११) । पर्ध्वातात व [यक्तस्तित] स वैव भूति-पूत्री इ.स.च । द्वार क्त्यस्य वि [वानाव्य] राजाताः विशासी

बद्धा) ।

बरबाओं ब्री वि बलो-विधेष (पहरा १---पत्र ६६)। मत्थाणात्र पुत्र 📳 बाय-विरोध, प्रत्येत बल्वालीयस्य योजना चण्यं सार्थेति (सम 2 2)1 वस्थि पृंबिस्ति २ इति मण्ड (मन १ ६ १८ १३ छाता १ १a) 'वरिवस्य नामपूर्वणी चलुक्तरिष्ठेल यक्षा ह्या सगई (संबोध १८)। २ मनान, बुद्धा 'बरबी बरार्ड (राष्ट्र प्रदूष १ ३--पत्र १६)। ३ ६६६ में रज्ञाता--पत्ती--धताई बैठने वा स्वान, यन का एक प्रवयन (पीत) । काम न िंक्सेन दिनर कारिये पर-देखनाए किया बाता देख धादि का पुरत्य । २ वर्त साक करने के लिए यस में बस्ते साहि का क्यि नास प्रमेत (तिस १ १--- १४४ खाबा १ १३)। प्रद्या दून ["पुरुद्ध] वेट का बीवरी प्रमेश (निर १ १)। परिधय पू [यास्त्रिक] बढ क्यने राजा रिक्सी (甲7) 1 पर्वा को [इ] बटन जावीं नो पर्त हुई। (tu 31) : परधु न [परनु] १ वधारे धात्र (वादा दराः यस्य नुसार । प्रानु ३ १६१३ स र १ श—नप्र ( ) । ३ ईस, पूर्व-क्रमा रहारे बल रूप्य १ ७)। पास, बास र्षु [ शास्त्र] राज्य धेरवरण का एक सुर्वाचन नेत मध्ये (धा हम्योर १२)। याधु म [बार]] १ वृह कर 'वत्रतानुधिह परिवासी वरेड' (प्रसा) । २ महर्भाव-स्मितिः सात (द्वाचा १ १३) । १ द्वाव-विदेश (बत)। यदन नि (पाठक्की मान्य-राज्य का यक्तावा (लास १ १३) कर्नी ११)। बच्चा था ['बब्बा] दुर्शनांत-क्या (योग्रज्ञ २)। पशुष्त 🖠 [नगुष] नम्य बोर सीख बनलाति-विशेष साक-विशेष (स्ट्या !-**पत्र ६२३ ६८ पर २३१)** । पण्युन्त र्षु [बानुम्य] ज्ञार रेजोः नाषु (शेषु) (for all he had the

मा बेबारशंबर (जी १)।

क्ष देशी चय = बद । बदछ वसह (उवा) मकुक्पो। मुका बदासी (मरा)। हे≸. विचय (क्य)। यद देशो य्य = वत (प्राष्ट्र १२ माट-विक **32)** 1 वर्षिसा देखी बहेंसा (इक) । यविकासिका वि [ वे ] बलित सीम प्रया ( to X 0) 1 बहमरा देवो महुसरा (धापा) । यहछ न [दे पार्वछ] । सहस्र कारस केय बद्य बुद्धि (१७ ३१ हे ४४१ युप ६६६ राज्य सारमा छ। व व व व १४१)। र दूं ध्वत्रनी गरकका दूसरा शरकेन्द्रक-माब-स्थान (देवेन्द्र १२) । बर्किया की [दे वार्वकिया] बक्ती कीटा बहस बुद्धि (प्रग ६, ३६--पत्र ४६७ इति)। स्ट केलो पहरु = वर्षत् । भने वर्षात् (धुपा 2)1 शद्ध पून [मध्री] नर्स-एन्यू, नण्डो बढी (? बन्मी बढ़ी) (पायः वे ६ मम पन बर्ध सम्मद्ध (७४)। यद देशो पिद्ध = इस (प्राप्त: प्राष्ट्र ७) । बद्धान (पथेल) १ वृद्धि वक्षी (सामा १ १ कम्)। २ दि वहानैवाका (चप ६७३। महा)। वद्यापत्रा ) ध्ये [पर्धनिया, ती] हंगार्वनी यदणी निम्म (देव रक्षात्र पर सी)। बद्धमान पूर्व [यर्थमान] १ जननान सङ्ग्लीर (धाना २ १६ १ । सम ४३; वंड क्या पश्चि)। २ एक प्रविद्ध पैनाबार्व (कार्य ६६ निपार ०६ ही १६ प्रथ)। व स्वन्था-क्षेत्रिक पूरव बाचे वर बहामा हुआ। पूरव (श्रेष्ठ भीर) । ४ एक शास्त्रव निवन्तेत्र । ५ एक ग्राप्ती जिन-प्रतिमा (पर ५६)। ६ व. गृह-विदेष (उस १. २४)। ७ समा श्चापप्र वर एक मेथा-पृष्ठ--नाटकशाना (परम = १)। देशो पहारमाण । पद्भाजन ) 1 [पर्भमानक] । पद्मती पद्भवागय } बहापहो में एक बहापह, ज्योतिएक

देश विदेश (दा २ ६-- ३८) । २ व्ह देश-

£Υ

सारा (रामा १ १--पम प्रश्ना पर्वम १२१२)। ४ र्वृतूच्य पर धास्य पुरूप पुरुष के कन्ये पर चन्ना हुया पूरुष । ३ स्वस्तिकन्यक्रमकः। ६ प्राप्ताव विशेषः एक राध्दकामहभ (लाया १ १ -- पत्र १४४ श-पण १७)। ७ म एक गाँव का माम बारिक्य परमा बादियमामस्य पश्चमं बञ्चमासूर्यं श्चिमार्थ **इरेपा'** (धारम) । « वि पुरा-शियानः व्यविमानी वर्षित (धीप)। बद्धय मि [द] प्रचल-पुक्त (दे ७ ३६)। बद्धार एक [ यर्थेय ] बद्धार, प्रवासी में 'वबारड्ड" । बह्न, यद्भारत (सद्वि १२ श्रेषोय ता इ. द)। बद्धारिय वि [प्रधित] बहाया हुवा (परि)। मदास सक [सघप्, बर्घापय्] बर्गार् देना । बढावेड, बजावेंडि (कम्म) । कर्यं, यबारीयवि (रेना) । २इ. पञ्चावित (गुरा २२ )। चंड यद्याविचा (क्या)। यदावण न [ वर्षन, धर्षापन ] बनाई. सम्पुरव-निवंदन (महिरासुर १ २४ महा सुवा १२२ १३४)। मकामणिया को [बयनिया, बयापनिका] कपर देशों (सिरि १३१६)। यद्वापय वि विश्वीक, ब्रधापकी वक्ती की बासा (बुर १६, ७६) स ६७ 458) I पद्माणिक वि [यथित पर्भापित] विसकी बनाई की गई हा वह (मूना १२२ ११४) । यदिकार्ष विशेष गर्यक गर्यक (दे ७ १७)। २ वर्षसङ-विशेष धोटी प्रश्न में ही धीर वे कर जिसका श्रव्यक्तीय मनामा गया हो यह विवास (पश्र १ १ ही)। यदिभ देशो पश्चिम = इउ (मर्गि) । बढ़ो की दि । घपरय-इत्यः कावश्यक क्सेंब्द (है ७ ३ )। पकासक ) पून [बे यद्धासक] बार-फिरेप बद्धीसम । एक प्रकार का बाजा (क्यू क ૧~- જા (ત વ્યુ() यन देखो यह - सप (पुमा) । यधन देश वहच (मन)। रियात (मेरेप्र १४०) १ १ म बाल-फिट्य, वभू देवो वट्ट (चीप) ।

बाझ देखो बण्ण = वर्णम् । बन्तिः (दूमाः वर्ष) । हेब्रू. विकिन्ते (भूमा) । इ. वसिन्ध (बुद २ ६७) रयस १४)। धक्त देखों २०ग = वर्स (प्रयः स्वयः मुपा १ १ शत देश क्षान ४ ४ १ठा र ४)। सम्भा वेषो सञ्जय (कृष्य या २६) । यभ्रम देशो वणगण (त्य ७६= दी' विरि ७२७) । बसणा देवी युग्यपा (रंभा)। यक्षय रेखो बच्चय (पिंड १ थ इन्न)। पश्चिम देखो वर्णिय अ (मन)। यशिक्षा की विभिन्नी १ बानची नवुना 'सन्वस्त वरिया मिब नगरं ह्यू चरिब पाउसी-पूर्ण (पर्नेति ६४)। २ मान रैन की निद्वी (मी मे) । धन्ति देशो वृण्डि = बृष्णि (क्टा २२ १३)। वस्टि देको पण्डि = वडि (चंड) । शपु रेपो सड=वपुस् (वस १)। वध्य एक (स्थय ?) दक्ता पानधारत क्रमा । क्यह (बारवा १११) । बरुप पू विद्यी १ निजयक्रेत्र-विद्येप बंदुरीय का एक शल्य जिसकी पात्रवानी निजया है (द्वाप २---पण द वर्ष ४)। २ प्रेम किया पूर्व कोड (वी =) । ३ केवार, धरा केवाचे विशय बच्चे शिक्ष भाषा २ १ ६ २ ≋७ = ६ दी) । ४ तट दिनाच 'पीक्षो बच्दी य तही' (पाम) । ६ उन्तर मु-धान केंची-जमीन' 'पणाणि वा धर्मितासि बार्यामाराणिया (माचार १ ५ २)। थप्प कि विशेष छत् प्रसार कारत बसिष्ठ । १ मूल-गोड म्वानिष्ट (वे उ <1) t बव्यन्ताय हैया व-व्यन्ताय । बएपमा कैने यटवा (धन) । यप्पणापद् की [अमध्यपनी] नेहरीर का एक जिनमं क्षेत्र जिल्ली राजमाना का साथ धनधनिता है (ठा२ १---पत्र = १४)। बच्या की [यम्र] समय मुन्यान रेन्द्रा र्जनी जगीन (भग ११**~ पत्र ६६१)**। बंध्या ओ बिया है मगान नर्बनगरकी को

ं बाटा का नाब (दय १४१)। २ ६८३४

२०)। २ मार्गात परावर्तन (वंचा १२, ४६) । ६ स्थिति ।: ४ स्वापन । ४ वर्तन, होता। ६ 🎮 वृधियाता। ७ खनेवाचा (4fa t )1 बत्तमा ही बिर्त्तनों उपर देखें। अच्छा-सम्बद्धो कर्मा (यत २६ १ ३ यामन) । बच्चणी की विचनी नार्प यसका (पर्यक्र १ 1-पर १४। विशे १९ ७) संबंधि ६१ श्री मुपा ३१०)। वत्त्व विदि । सम्बरः २ वह शिक्तित (R w X) 1 बचमाय र् [बर्चमान] १ क्रब-विशेष, चनताकाच (प्राप्त) इंशि १)। २ वि वर्तमाय-कामीन विद्यमान । ६ वृं निद्य मानदा (वर्मतं १७३)। बसारि देवो सत्तरि (हम धश प्राप्तु १३६। वि ४४६)। वत्तक्ष देखी थय = दम्। वचा की दि] चूक बक्रम स्व केट्स क्रम (फ्ट्राइ १ ४ – पद ७ | डीइ २ )। देखो चर्चा ⇔(दे)। वस्ताक्षी [वार्ता] १ नद, नवा (से ६ ६०) सुवा देवका पालु १३ कुमा) । २ इतान्त इनीरत (पास) । ६ वृत्ति । ४ वृत्ती । ३. क्र्यं-नर्न केंद्रो । ६ वनमृद्धि, नियक्ती । ७ मन्द्र ता प्रमुख्य । व काल-पर्युक्त जुत-माण (हे २ ६) । जस दू "काप] बातबीत (सिर २ २) : पत्तार नि [दे] बर्षित पर्व-पुष्ठ (वे७ ४१): विश्व की दि शिमा (दे ७ ६१)। वांच रेगी वांड्र (वा २६२) ६१वा विधे 1 ( 35) र्याच्य वि विचित्र विक्रीनामा (महा)। वित्त भी [युक्ति] प्रवृति (सूय २ ४ २)। देखी पिएच । विश्व भी भिवस्ति भारत इक करा, व्यापी करत्। परदा स्त्रे प्रितिष्ठा प्रविद्धा-विशेष, जिन समय में को शीर्वकर विश्ववान हो उन्नहे बिन्द भी दिन्दिनुष्य स्थापना (नेर्व ११)। र्थाच भाग विश्वचित्र विषयो । (६२३)। ३ क्रेट द्येश भी श्रीका (सव

४६ विसे १४२२)। १ देव की टीका---व्याक्या (विसे १३०४) । विचित्र विचित्री १ वय-गोल किया हवा (सामा १ क)। २ घानकावित (पवि)। बिलाओं वैको पश्चम = प्ररूपम (धीप) । विश्वा केवी बढ़िका (प्राप्त) । बस्तियी भी विस्तिनी नार्ष चस्ता (पत्ना साथ सुर १२ १६६)। बची देवी पची = पली (बा ७१ १६) tub) i म्तं देखी प्य = वयू । वत्त्रशम वि [बस्तुकाम] बीमने की बाह् बरबा (स ३१ । स्रीय ४४० स्वयंत १ । नाट---विक ४ )। बसुद्ध देवो बद्दुह्य (धन) । मत्थं <u>प्रे</u>व [वक्क] कपहा (भाषा २ १४ २२। ज्या प्रमुद्ध १ १। उप दू ६६६। तुपा **७२: ४६३: कुमछ लूट ३: ७: ) । 'केंद्र** व विक्रडी क्या शिक्षेप (वं २ दी—पन १३७)। भोग वि विश्वाची वस बोनेनाचा (इस १४२ १७)। युद्ध र्याप्य एक केन पूर्ति (कुलक २२)। प्रसमित्त ई िपुप्यमित्र | एक वैत प्रवि (d) ७)। "विज्ञा की जिया नियानिकेय विश्वके ब्रमान थे नक स्पर्ध कराने से ही बीमार धन्का हो जाब (वय ६)। शोहरा वि िटोधक] यस बोनेनला (स ४१) : यस्य नि [क्यस्त] पूजन् जिल्ल पूजा (गूर \$4 XX) I यस्थातक है कि कहापुर विष्, कपश्कार, वक्र-पृष्ट (दे ७ ४१) । बस्थयः देखी वस = दशाः यस्थान प्रविद्यालने वनसम्बद्ध भी यक जाति जो नक केरे मा काम करता है (पडमा १ २ 198): ब्रथर देवी प्रभर - ऋतर (वा १११)। बरपरिया न बिकादिया थे बैन बुनि-पूर्वी के सम (क्ष्म) ।

(लिंड ४२७) सूर वे देश सूचा वृद्धाः

मदा)।

परधाणी औ वि | बाली-विशेष (परुश १---पत्र ११)। थरपाणीक पून हैं। बाध-विरोप क्लेब क्रमाधीयरा भोज्या करूने सामेति (स्व \$4) ( वरिय पू (वस्ति । ११४४ मधक (भन १ ६ रेल १३ शामा १ रेच) 'वरियमा नामपुरको चलुक्करिकेश च्या ठका धनई (समीम १८)। २ मगान, प्रशा 'नरनी यकार्ख (पाक प्रश्ना १ ३--पत्र ११)। १ कादे में रुवाया----ससी----समाई हैडने का श्वात, सुव का एक धनम्ब (मीप) । श्रूनमं न िक्सेमा १ सिर स्त्रक्षिये कॉ-केन्स्र शाय किया जाता देश साथि का प्रदेश । १ सम शास्त्र करने के किए इस्त में वस्तों बरादि का किया करता प्रश्लेष (विधा १ १--पत्र १४-खाला १ १६)। प्रकार्त पुरुक्त के का थीवयी प्रकेश (किर १ १)। परिषय र् [पाहितक] नव नगानेनामा रिक्रपी (क्स) । बर की की [व] पटन वापनों को पर्श-कुटी (R w 42) : क्रम्ब न विस्तु । पदार्व कीव (पादा क्रमा) बम्ब क मुपार १। प्रामुक्तः १६१। स ४१टॉ—पव१व)। २ दून, पू<del>र्वपर</del>्वो का सम्मयन—प्रकरहाः परिश्वीर (सम २४, र्शन्द बाग कम्म १ ७)। पाछ, बास्र र्ष ["पाछ] धना बोरक्वत का एक बुधक्कि वैत शंधी (वी २) हम्मीर १२)। यरभु न [पास्तु] १ मृह, घट चेत्तवस्पूर्विह परिमार्ख करेड़' (क्या) । २ वृक्कांव-निकॉस-शास (खामा १ १३)। ३ <del>टाक विरोद</del> (ज्या)। पाडम वि [पाठक] शस्तु राम का यानाकी (सामा १ १३ वर्षीन ३३)। बजाधी विद्या पृष्ट-निर्मातन कता(घीफानं २)। बरबुख पूँ [बस्तुख] पुष्प धौर इंग्लि नक्शति-विकेच काभ-विकेच (पएख t-पम ६९४ १४ पन १४६)। क्रथम्य वि [बास्तक्य] च्यूनवानाः विवादीः

परबुख र् बिस्मुखी कार देवीर 'नरबु (रिप्न)

वा वेदारनंता' (वी १)।

धन् देवो थ्या = वद् । वदि वया (उनाः भना कथा)। भूका वदादो (भग)। हेक वदित्ताय (कथा)। भद्द देवो वया = वदा (प्राकृतः नगट—निक

४६)। वर्षिसा हेको वर्षेसा (१४)। वर्षिकस्थित वि [ ते ] वनित सीटा हुमा

(१ ७ १)। वसमा देशो पद्ममा (मान्य)।

यहात न [वे वार्षक] १ यहान वायल नेव-पदा युक्त (वे ७ वर हे ४ ४ १) युना ६११, एक प्रावमा का वे व नव १४१)। २ पूं सक्ती नरक का बुस्स मरकेनाक— नरक-बनान (वेनेत १२)।

यहाँखवा की [दे बार्यकिया] बरली खड़्या बदल पुरिल (सन १ १६—पत्र ४६७ धीय)। यहा देखो यहाड अर्थम्। कर्म बहाँख (शुपा

द्वी (बढ़िन नर्गु। कुन नवाठ (दुः। द्वे दुन [यद्वी कर्म-एक्दु, कुन्बा बढ़ो (१ सम्मो बढ़ो) (पामा दे ६ यदः पत्र यह सम्मात (७४)।

यद्ध देखो विदा = इद (प्राप्त प्राप्त ७)। यद्धाप न [यर्थन] १ इपि वहसी (शास्त्र १ १ करा)। २ पि वहसनामा (उप ६७६। यद्धा)।

बद्धमाया १ वृ [ पर्यमानक ] १ सकतो पद्धमानय । महारहो में एक पहारह व्योजिक देश विश्व (टा २ १-- अ) । २ एक देन-दिमान (प्रेप्ट १८ ) । १ म पान-विरेष,

संतोष ४१ ६ ८)।
यद्वारिय वि [यपिंड] यहाया हुया (ववि)।
यद्वाय एक [ वर्षप्, वर्षापय ] क्यारे केता। वद्यारेष, क्यारेषि (कप्)। करे पद्माविषि (रेता)। वह यद्यापिय (पुग २२)। धेड, यद्यापिषा (क्या)

'नपारपू"। नहा यद्वारत (सिंद्र १२)

पद्धावण व [वर्षेत, धर्मापत ] बबाई, प्रामुख्यनितेवन (मुंबा दुर ३ २४ प्रश्ना नुता १२२ १६४)। बद्धायनिया को [यघनिका, वर्षापनिका]

बद्धायिकमा को [ययनिका, वर्धापनिका] क्रमर देशा (विदि १६९६) : बद्धापम वि [यर्धक, वर्धापक] बचाई देने

बामा (मुर १२ ७६ व ५७ वृता १९१)। यद्वाविम वि [पर्भित, यभिति] विश्वकी बणाई यो पर्वे हो बहु (बुग १२२ १११)। यद्धिल वृं [वे] र प्यार मधुनक (१७

शासक पूर्ण प्रमुख्य निवृत्तक (४ ७ ६०) । २ ल्युट्यक निरोध चार्मि उन्न में हा केर देकर निवदन प्रस्तुक्येय सनावा प्रया ही बहु विचय (पद १ १ टी) । परिद्धा केसी प्रदिक्तक च्युट्ट (स्विप्ते) ।

वादाज च्या पाइतज्ञ छ वृष्ट (ग्राप्त) । बद्धा ध्ये [ते ] घतस्य-वृत्य - यजस्यक्र वर्तेष्य (१ ७ ३ ) ।

क्तेष्य (१७६)। पदासकः १ वृष (१ पद्मीसः) वान्तिरोत पद्मीसम् १ वृष्ट समारं मा बाना (पसूर २ ४—वम् १४८। सन् १)।

४—वन १४६ छन् ६)। यन देश यह - वस (प्रमा)। मध्य देशो यह (यन)। वम् देशो यह (यीप)। सक्त देखी यण्ण = वर्णम् । वर्गहि (दुवा) वर्षकः यक्तियं (दुवा) । क्ष्र यक्तियं (दुवा) । क्ष्र यक्तियं (युर २ ६७ रमण् ४४) । यक्त वेको वर्णमः = वर्ण (व्यव यक्ता गुमा १ १. व्यव ११ क्ष्रमः ४ ४ । यक्ताण देवो वर्णम्म (दण धा २६) । यक्ताण देवो वर्णम्म (दण धा २६) । यक्ताण देवो वर्णम्म (पंपा) । यक्तिया देवो वर्णम्म (पंपा) । यक्तिया देवो वर्णम्म (पंपा) । यक्तिया देवो वर्णम्म (प्रा) । यक्तिया देवो वर्णम्म (प्रा) ।

वाक्षको कर [पाणका] र बातवा सुना। 'कानक बीत्रा निव त्यरेस्ट्र सारिव वाडमी पुर्व' (वर्षति ६०)। २ सास रेव की सिट्टी (वर्ष व)। बन्धि देको समिद्र = बस्ति (वंद)। वर्षिद केसो वर्षिट्र = वर्षति (वंद)। वर्षत्र वर्षा = वर्षत्र (वंद १)। वर्ष्य वर्षा स्थित् ? डिकमा सामग्रदान

करना । वजह (चारता १११)।
यस्य वृं [यम्र] १ विवयनेक-विरोध बंद्रीत का एक प्राप्त विवयने प्रकारते दिवा है।
इंड एक प्राप्त विवयने प्रकारते दिवा है।
इंड १---यन कं अंभ्र)। पृष्ट हिम्मा बुने केट (वी म)। वे केटार स्वरूप केटार स्वरूप कार्या स्वरूप कार्या है।
वेस्मारी करियों वर्षा (याम्र बाता २ इ.स.) वेश्व वर्षी।। व्रवट किनासा स्वरूप कार्या स्वरूप स्वरूप स्वरूप कर्या स्वरूप स्वरूप

साग कंषी-अमीन 'वप्ताणि वा प्रसिद्धांख वा पापापणि वा (धावा २ १ १ २)। वष्य दि [व] १ ठट्ट इन्छ। २ वनसन्, बतिहार १ मूच-मुरोव म्लानिष्ट (१ ७ ८१)।

वप्पण्याय देशा ध-प्पद्रस्य । वप्पमा बेगो धप्पा (राज) ।

भएपायकः की [तमस्ययती] बेह्नीत का एक विजयतीयः निषको स्वयानी का नाम भएपानिता है (ठा २ १—पत्र ८ ८०)। पट्या की [सम] उनत पुन्ताय टेनका

केषी वामीन (सम् १४---पत्र ६९१)। वाच्या की [यमा] १ भवतानु निमाहजी औ माता वत्र भाम (सम. १११)। २ बरावें

भवनतीं राजा इरियेल की माठाका नाम (पत्रम ब, १४८ सप १६२)। ब्दिश्च वृद्धि १ वेद्य ८ क्षेत्र (यह)। २ महित्र विशेष (पूछ १२१)। व वि एक राम-पुन्ड ( वड )। बरिपय देन हिंदे १ केटाए खेत (दे ७ वध धीय सामा १ १ टी--पत्र २ पाया प्रजम ર શર ભજા ક કરયો ! રહિ स्थित, जिसने बास किया हो यह (वे क 2)1 श्रापित पून विं १ वेदारवाला देश । २ क्टबाबा देश (भन ६, ७---पत्र २३०) । **घ**टपी केलो सच्या≔नप्र (सन १३----पत्र 1611 क्ट्यीओ दृदि] चातक पत्नी (वे ७ ३३)। क्यों दिखन हैं] सेव केंद्र (देश ४८)। **ब**ष्पीइ ⊈ [व] ल्यूप निद्री साविका भूट ( x w f) क्या केशी यड = बपुद् (अस ११--- पत 448) i दारो स [**ह**ै] इन समी ना मुच्छ स<del>म्बन---</del>१ क्यहान-पुषः दक्षापनः २ विस्तव बावर्व (ছম্মি s'\*) i ब्रुप्यादक्ष देखी व्यवसादक (दे ६ ६२ ही)। बफ्द न [ब्] शक्त-विशेष (तुर १३-१६६)। परभ देशों वह = वह । बर्ध में [बज्र] यह-रिकेप (ब ४२७) । बरुभय न [इ] तक्सोदर, कमल का मध्य भाव (देखें है )। पश्चित्रिया वि [क्पश्चित्रित] व्यक्तिकार दोष ने इतित (या १४) । मभिभार को पहिचार (७ ७११)। मभिनारि । [क्प्रभियारिस] १ व्याप-साझेल राव-विशेष में दूषित ऐकान्तिक (वर्तती (२२३ वंचा २ ३७) । २ परव्री-सम्पट (यथ ६ ७) । पश्चिपार देखो पद्विचार (उत्तर ७१) । यम मक [यम्] उत्तरी बरवा कै करना । बहु-ब्रम्त यनमात्र (पत्रम शिक्षा १७)। क्षेत्र- येश (याचा पूज १: ६ २६) । इ

षम्म (इस १७) ।

यसम् वि [बायक] उत्तरी करनेवाका (वहन ष्यण व [धुमन] स्वदीः पानिः 🕏 (प्राचाः खाना १ १३)। बसाद्ध धक पिद्धाय 1 १ इक्टा करना । २ विस्तारमा । वर्गाच्य (हे ४ १२, नवाळ इं दिं क्यक्य क्षेत्राह्य (दे ६ प्राथम संप्रभाग संप्रभाषि)। बमास र् प्रिक्ष चित्र, दव (शए)। यसाख्या म प्रिष्ठांजी १ एक्ट्रा करना । २ विस्तार। १ वि इक्ट्रा करोवाचा। ४ विस्तारनेवाना (नुमा)। सम्म पुर [समेप] क्या संगळ स्कार (प्रका ह्रमा) । क्रमा केली बग । शन्तम 🕽 पूँ [मन्तम] कामरेन अंदर्श मध्यक्ष 🕽 (चक्र) प्रध्ना क्षेत्र १४७ २. ६१३ प्राप्त) । क्क्सावेची शामा (क्रम पच्च २ युक्त २३ १ नव ११)। श्रामाध्य के विभिन्न विकास संवाह-प्रक (मिना १ २--वम २३)। वस्मिक्ष १ वस्मीक वस्तिकक्त कमीम विद्री म स्तूप 🙀 या गीय क्षेत्रकों के खुने की बीनी (सूच २ं१ २६ हेर र शबदा नाम स रहेश सूच 380)1 बम्मीइ र्व विक्रमीकि एक तकित अपि रामायस-गर्धा पूर्ण (क्यर १ ६)। बम्मीसर 🛊 [व्] काम कन्दर्ग (वे ७ ४२) । सम्बद्ध म [वे] सस्तीच (वे ११)। यम्ह पुं [महाम] र इस-विशेष पक्षात का वेत् 'नग्योद्यम्हा तक' (पत्रम १६ ७६) । २ वेची वंभ (प्राप्त)। वस्तुक व [ब] रेबर, क्रियरू (१७ ६३ ₹ ₹ ₹ux) ( पमद्वाण चैयो बंशण (दुना) । यय राज [क्या ] कामना, क्याना । क्याह वस्य (वर्)। मीर वर्णिसीहर, वर्णिसर, वांच्यद्वित वांच्यति वोध्यद्व, वोधियद्विष्, वोष्पिति, वोष्पर्दिति, वोष्पं (वित ६२: वय द्वा [सर] निवन धार्मिक मंतिश (बर-

वह है र रंथरा द्वता) । कर द्वह ो

(कुमा)। कर्म, माँव वक्ष वस्त्रमाण (थिसे १ १६) । तम नक्या, नवा, थोच्या (ठा३ t—पत्र t छ मूप र १ के हे ४ २११/ इस)। हेइ. क्वर. वर्स वीर्च (बाबा: धनि १७२ हे ४ २११/ इना) : इ. वच वचन्त्र वोचन्त्र (विशेष क्षा १३६ दी ६४६ दी। ७६० दी विक्रमण वर्षेत्रे १२२३ सूर Y १७० खपा १६ र भीपर बना 🕏 ४ २११) । स्त्रो वयणिखाः। बय एक विद्वी बोधना करना। बदध वयवि (क्ष्मः कप्प), बहस्य वएव्य (कप्प) । चुका- वर्गाति, वयाती (श्रीपा कप्प स्वा म्हा)। पश्च वर्षेत्र वसमाय, वयमाज (क्यां कास का ४ ४-- यह रेक्४ कान १थ वर ७)। संस् यहचा (माना)। हेक भइचए (क्य) : व्याधक [सञ्जा] जाना यसन करना। वयद (पुर १ २४४)। वयह (महा) बहुब (बच्च १ ६१)। ४ वर्षत (बुर ६ ६७) क्षा ४६२) । इ. बहुयक्द (राजा) । वन पूँ पुरुषे प्रमुखिरोत महिना (पंजन 1 (# = \$\$ वस पूर्व [वि] मूम पत्नी (रेक १६: पाम)। वय ई [पञ्च] १ संस्कार-करछ । २ वयव (धा २३)। वस प्रक्रिक] १ केन्निकेस (सा ११२)। र बोक्स वस हजार योग्नों का बन्ह (स्रामा १ १ थै-- पर ४३) मा १३)। १ मार्च रास्ता । ४ संस्थार-करक्ष । १ एवन, गीर (बार्क)। ६ स्त्रुह्, द्वव (मारक्स रेशका सुपा श्रेटका हो है) । वय इं [क्यय] १ वर्ष (त ४ १)। १ हाति, पुरसाम (बन प्राप्तु १६१) । देशी विभ ⇒ व्यव । वय प [वचस्] बचन, उरीक (नुम १ १ % रहे १ १ १ ११ युव्र १६४४ थासं ६१३ थं २२)। लनिक्र वि [सिनिति] वषन वा स्वयो (सर) । थय 🛊 [यर] करन औष्ठ (या २३)।

र्थवार 🖟 दुमा, ज्या २११ टी; स्रोवशा

२ प्रासू १९४) । संत वि [ वस् ] वसी (शापा २१ ६१)। वयं पूर्व [बयम् ] १ उम्र मस्तु (ठा ६, इ ४ ४३ मा २३२ जरपु १० अधाः प्रासुद्धः सा१४)। २ फ्ट्री (वडड छप पूर्व)। स्थावि [स्य] वस्य पुना (पुच १ १६)। "परिणाम वृ ["परिणाम] बुद्धता बुइला (के ४ २३ पाप)। स्य वृं [पक्ष] वचनः पाक (सा २३)। यय रेको पय = पद (स १४%, या २३ वडड कप्पू से १.२४)। "वय देवो पद्म = पदव् (कुमा) । षद्मा न दि ] फ्रब्र-विराव (सिरि ११६०)। वर्धतरिश्र वि [बृत्वन्तरित] बाद से तियो-हित (दे २ १६)। बर्यस र्रू [थवस्व] धनान समरनाता निन (ठा ३ १ -- यत्र ११४ हे १ २६३ सहा)। वर्धास देखो स्थासि = वषस्वम् (यन)। वर्यही की वियस्या विश्वी तहेकी (क्यू)। स्यक्ष पुंचि । बादिका समीवा (वे ७ ३३)। **ब्**यपान **दि १** मन्दिर, युद्धा २ सम्मा विक्रीना (दे ७ वद्र)। बयज पुंत [यदन] १ पुष पुंक् 'बम्रलो क्सर्ए (प्रक्रु ३६) पि ३१० मुर २ २४३। ६ ४४ प्रमुद्दर)। २ स्. क्यन चौद्ध (विसे २७६४)। बयम पूर्व [बचन] १ व्यक्तिः क्यन 'वयशाः मनसार्व(हेर ३३ पन २ सुर ३ ६४३ प्रापु १४३ १३४३ १६ ३ दुना)। २ एकल धार्वि धंवता का क्षेत्रक क्षाकरण्-शाक्रोक प्रत्य (पर्हू २ २ टी-पन ११=)। वयणिका वि [वयनीय] १ कव्य, कवनीय द्यमिनेय 'बर्चु सम्बद्धिशस्य वयस्त्रिक्' (कृत्य मुख्य २ १ ६ )। २ फिक्कीय (सुपा १ )। ६ ज्यासम्मनीय, ज्याह्य क्रि मीन्य (दुप्र ३) । ४ त. दचन राज्य (8 ४ ११। सम्म १३। काम ८६६) । १ सीलापकार, निन्दा (स ६३१) । यगर वि [दे] पूर्वित (दे ७ ६४)। यगर वेची नइर = वज्र (कम्पा छनः सोसमा

न। पार्वे ३१: पदा धीर) ।

बयर देशो पयर = प्रकर (ते १ २२)।

वयराज्ञ देवो वद्गराज्ञ (सत्त ६७ डी)। बयक वि वि १ विकसता, विस्ता (दे ७ द४)। २ पूँकसकस कोला**ह**ण (दे७ ८४० पाप) । ब्यक्ती भी [पे] शता-विशेष निवाक्षी नता (के क इंग्रा वाय)। ब्यस देवो पय = बयस् । 'सबयर्थ' (पाणा ? # R R)! व्यस्त देशो वर्षस (व ११४ मोह ४७-समि ११ स्वय्न ७१)। स्याक्षे विमा १ विकट किया २ मेक, थएकी (मा २३)। षयाच्ये [यपा] १ धोपवि विशेष । २ मैना सारिका (मा २६) । वेखी यथा। वया की [स्थाता] १ मार्ग-किरोप कय की बीको के लिए रज्युक्त था आदि कामने का मार्ग । २ प्रेराश-करण (या २३) । बर सक [चूं] १ समार्थ करना संबन्ध करना। २ प्राच्यारन करना क्वना। ३ वापना क्ला। ४ सेवा क्ला। अस्त (हे ४. २३४ सुमा १६ प्राप्ता वक्) 'कर वर्षेह्र' (क्रुप चर वस्मू इच्छिये (या १२)। मनि विधिसद (सिरि ६११)। इन् वर्णीज (पक्रम २६ १ ४) । वर सक [ बरम् ] १ शास करने की इच्छा कणा। २ श्रंबर्ट्रकला। वर्ष्य, वस्त्रति (श्रीक: सुरूप ७)३ कि सुरियं करमते' (गुरूप १ १)। वक्क. वरिंद (मूण्य ७)। बर 🛊 [यर] १ पति स्वामी बुसहा (स ७८ स्वपाप र वा ४ ४० ४७१, भविः)। २ बरदान, देव धादि का प्रसाद (श्रमा भा १२ २७: दुप्र ८ म्हिक्)। व वि मोह बचन (कम्म महाः कुमाः प्रामु ५२ १७४)। ४ भ्रमीष्ट (मा१२ कुप्र ८) । प्र. न. कुभ यभीषु सम्बद्ध 'वरं ने सप्ता रेखें (उस १ १६ प्राप् ५२३ ३ का १ ६)। दक्त व ["वृष्य] १ मनवाण् विविशासनी का प्रथम क्रिय्य (सम. १४२ कव्य) । २ एक राज भूमार (मिपा २ १३१) । श्राम श [बामण] एक तीने (छ १ १---प्य १२२) रक क्ला)। भग्राप् (भिन्नप्) एक मन्त्रिकुमार, बहारत पत्रमती का शह

मिन (महा)। पुरिस पु [पुरुव] बासुरेक (पर्यस्य १७---पत्र ४२१ राम, धानम बीन है)। बास्त पू ["मास्त्र] एक देव विमान (देवेना १३६)। "माला की "माछा ] वर को वहनायी जाती मामा भएक-नुबढ़ माबा(क्रुप्र ४ ७) । स्त्र र्डु ["स्वि] शना नन्द के समय का एक विश्वान् बाह्याए (क्रुप ४४७) । बरिया की ["वरिका] समीष्ट बस्तु माँयने के मिए की बाटी बोवराह र्दिशत वस्तु क शान देने की भोपशा (शामा १ ०-- पत्र १११ भागमा सं ८ १ युर १६ १८ मुपा ७२)। सरका र िसर्की काच विशेष (परहर ५---पत्र १४८)। सिंह पून [रिहाट] यन सोक्याम का एक विमान (अय १ ७--पत्र ११७ हेवेन्द्र २७ )। वर देवो बार । विक्रमा की [बिनिका] बेस्या (कृता) । बर देखो परः 'बोबाएाम-ममत्राणुं को देह दमानधे नधे निक्में (नुप्र **१**<**२**) 1 वरहरू वि वि | पान्य-विशेष (वे ७ ४१)। वरइच 🛊 🐧 वर्रायत् 🛮 प्रतिनव वर दुसहा (देश ४४ पर्याद् सारि)। वर्स्य देखो परय = नराक । बरइप्ट वि [ब्रे] मृद (वे ७ ४७)। वरं केबो परं≕परन् असो वरं विस्तुनम्हास इत्य स्वरणार्स्ड (मोड् ६२) स्वरण २ ६) । वरंड र् [वरण्ड] ! धेर्व कहा सम्बे सक्डी। २ मिक्तिभीत (मुन्दा६)। बर्रेड पू [व] १ एए-पूरून यूण संबन (बाब ६)। २ प्राकाद, जिला (के छ हर वक्)। व क्योदातमी, याम पर सपाई वाती करतूरी मावि स्व सद्य (दे ७ ५६)। ४ समुद्ध (या ६३) । थरंबिया की [वें] धोरा वरंडा वरामवा बाबाम (मुपा २ ३)। भरकसा न [सरास्त्र] एक्सच्य निरोप विस्तृत्र (से ६, ४४)। यरकस्त्र दु[पराभ] ह योथी। २ यथा। ३ वि चेह इन्द्रियशक्ता (१ ६, ४४) । **परक्ता की [पराक्या]** निक्रमा (वे **१** 

XX) I

करा व [बर्फ] महामूरव पण कीवती भाजन (भाषा २,१ ११ ६)। क्षडू र् वि] बाम्य-विशेष (पन ११४) । बरबा ) बी वि यरटा र तैवाटी, बीट वाक्षी 🕽 विदेश, येथोली । २ वंश-प्रायय मन्तु-विशेष (मृन्ध १२ वे ७ व४) । बरण पू [बर म] १ सचाई, विवाह-संबन्ध (तूच ११४) सुर १ १२१। ४ १ )। २ वह कियारा (पर्वत)। ३ पुत्र छेनु (शोव १)। ४ प्राकार किना (या २४४)। १ स्वीकार 🗱 (राज)। रेको धीर-धरण। ६ 🕏 देत-विरोग एक बार्वे देश: 'बहराव वर्ष्ट बरला धन्म (सूर्घन ६६ दी) इन) रेखी बस्य । बरजर न [बरफर] पूरा विरोध (वस्त्र)। बरमसि (घप) क्वो वारामसी (वि ११४)। बरया की [बरया] १ कारों की एक नही षस्सा (यन)। २ एष्ट्र केर की जापीन धनवानी (तुम्पीन ६६ टी) : वेको बस्त्रमा । बरणीओ देखी पर = इ ।

ब्रालाम रका पर पड़ा घरक वि [बे] १ मैदा १ र मदिता १ वे वेदित, बंदक (पर्) १ सरका की [बरबा] रज्डु, छत्ती यामा विणा १ ६, ग्रुपा १६२) । सरस द्वे [बरब] बमाई करनेवाना विनाह को

मार्गक पुरस (तुर ६, १११)। बरम पूँ [ब्] स्प्रीब-विशेष एक उत्पादक बाम्य (वे ७ १६)।

सरप रि [सराठ] शैन नरीन नेवाय, रेक (दाय मुद १ हो। ६ हटर, नृता देर ना दरहे)। क्यें रेड् (सीक्ष १ वि )। सरस्य क्यें [सरस्य] क्षेत्रा हक्ष्मधी की संख्य (दाय)।

वर्धस वेदो पर्वसि (तेद्ध १ )। परद्वाद पर्व [निर + स्] बाह्य निकास । बरहात (है ४ ०१)।

परक्षाक्षिम वि [शिल्युन] नहर विकास हमा विकाद (दुना) । पराग देशों पराय (देशा) ।

पराह । पूँ पिराट की र परिता का बराइसा पूर्व देश, जो साजकह थी. परार बराइसा नाज सं प्रशिद्ध है (दुस २४६) पुत्र र १४: एज) । र नवर्षक वीहा—

बड़ी कीड़ी (बस्त १६, १६ : बोब १६४) बा १) । १ स. कीड़ियों का बुधा निवे बाजक केवते हैं (बीह ८६)।

शरक्षियाओं [वर्राटका] क्यक्तिम कीमें (पुना२ ४)।

धरास वैको भरस - वराण (या वशु वर्ष १४१ सङ्ग)। जी राष्ट्रमा राई (वा ४६२। विवेद )। भरावस दुंब- विशासटो केल-विलेण (वस्स

१८ ६४)। वराह्युं [बराह्] १ शुक्रद, सुसर (गम्स)। २ सरकान् सुविधिनाच का प्रवस शिक्स

(सम १६२)। समाही की [समाही] निका-विकेप (मिसे २४६६)।

बरि स [ यरम् ] सन्बा क्षेत्र 'वरि मरणे मा विचारे.

> विष्यो प्रशुक्तो स्व परिवृत्तः। वरि एक्ड किन मध्योः

वेस प्रसम्पति दुश्वारं॥' (तुर ४ १८२ चर्चि)।

सरिज केवो सका - सर्थ (है रु. १ ७ वर्)। सरिका नि [हत] १ स्थानत (वे १२ ८६)। १ क्षेतित (स्ति)। १ निवासी स्वत्तरी की नर्षे हो नह (वरु., सहा)। ४ न, समर्थ करने। स्वतिक सिं/सन् १४ न री/।

वरिष्ठ है [वरिष्ठ] १ वरत-क्षेत्र का पानी वास्त्रकी पक्षणती राजा (तम ११४)। १ यक्ति-क्षेष्ठ (सीप कम्म कर इ. ६४४) मुग

४ ६ थि।)।
वरिद्ध त [व] वश्च-विरोध (क्प्यू)।
वरिद्ध तक् [कूप्] वरस्या वृद्धि करसा।
वरिद्धा (है ४ ९३६, प्राप्त )। वश्च वरिद्धा कर्मास्त्र

हेकु बरिसिंडर (श्र.१३१)। वरिस वृत्र [वर्षे] १ वृत्रि वर्षे (दुत्ता) करणा प्रविशे । २ वेपक्षर, साल (दुस्ता) बुत्ता ४५२-वर्ष १ वे २० करण् क्रम्म १ १) १ वृद्धीय का सार्व शिल्द, प्रायत वाहि भोगा १ वेण (हि २ १ १)। वि "जी वर्षों में अस्थल (वह)। क्रम्बू

व ["कुष्य] १ एक वोष । २ पूधी ज्यायीच

में कराम (ठा ७—पन ११)। वर ई चिर] क्यापुर-एक्स प्रकन्तिरेम (छामा १ र—पन १७ कम्मु भीन ११ कि.) "कर ई चिर] पहा प्रकारणेख धर्म (भीप)। केवो साम नमें।

थरिसिकिञ वि [वर्षित] वरसामा हुमा (बुगा १२६)। वरिसाओ [वर्षा] १ हृष्टि, पान्नों का बरताम (वे २ १ १)।२ वर्षां-कल धानल धीर करो का पहोंगा (प्रती ७४)। काळ दें

(हैं र ११) र वर्ष-कल क्याल कीर काले का पहेंगा (मनी ७४)। कार हूं ["कार्ड] वर्षा क्षेत्र, माहद (कृष ७१)। रख द्व ["चान] वही कर्षे क्षा क्षा है। "-वष ११)। कर्षे क्षा क्षा क्षा वर्ष महा)। देवों पासा। वर्षिति की [बर्षिन] बरक्षेत्रला (क्ष्प्री

वारास्त स्व [वार्यम्] बरस्यवाला (क्या १११)। वरिसिजी <mark>की [वर्</mark>यिजो] विद्यान्तरोच (स्वय

७ १४२)। वरिस्रोक्षक दू वि: वर्षीक्रक] प्रकास-विकेष

्रक प्रकार का बाब (गव ४ थे)। वरिवृद्धिक वेको परिवृद्धिक (क्षेत्र क १)। वस्त ३ पून विंडे वेकी बक्का भीमानको

बक्स के बक्यों कुलांव बुराहेबबांवना (? चा)' (वंबेन ४७)। बस्ट दु [बस्ट्य] एक विशिष्टनावि (चन)।

बरुद्ध र्ष [बरुद्ध] एक प्रकान-वाद्धि (दे ८ बरुद्ध र्ष [बरुद्ध] एक प्रकान-वाद्धि (दे ८

वर)। वस्त्र हुं [बस्य] १ चनर धारि स्त्रों का

पण्डिय विद्या जा लोकराख (ठा ४ ६—पर देवेक देवेक इस्ते) १ वर्षित सादि स्वर्धी क्षा क्षार विद्या का बीकरमा (ठा ४ ६)। है बोकारिक देवों को एक व्यक्ति (उत्तर्धा दें। य—नय ११६)। ४ प्रमारत प्रतिपुत्त्व का स्वारमानिद्याल वस (प्रस्ते )। ४ स्वारिक स्वरूप का व्यक्तिहास १६ (गुल १ १३)। ६ एक देन विद्यान (विदेत १११)। क क्षा की एक वासि (व्य ४)। व सहिपास

क कुल की एक जाति (का ४)। व सहीराव का प्रशादती पुत्रुची (गुळ १ १३) हव ११)। १ एक विधावस्त्रपति (पत्रम ६, ४४) ११ ११ एक वेटिनुम (नुगा १४१) ११ एक्य-विदेश (निम)। १२

१५९) । ११ छन्द-विशेष (पिन) । १२ नक्ष्णवर हीप काएक प्रविद्वाला केर (जीन र—पत्र १४०)।१३ प्रेष एक मार्थ-

एक ग्राविहायक केन ( जीव ६---पन १४८)। २ वक्षा सीक्यास का उत्पाद-पर्वेष (ठा १० --- पत्र ४६२) । "प्पन्नाकी [प्रभा] बरुएप्रम पर्वत की दक्षिए किया में स्टित बदल सोक्याध की एक राजवानी (श्रीव) । बर वृं विर] एस द्वीप का नाम (बीव २-- पत्र १४० सुक्त १६)। यस्या हो [बस्या] १ सम्ब देश की प्राचीन राजवानी (पव २०६)। २ वक्याप्रस पर्वेष की पूर्व दिला में स्थित बरुप नामक लोक-पान की एउ राजमानी (रीन)। वे एक राज-पल्ची (गउम ७ ४४) । वहमी हो [बसमी] विदा विशेष (पटन ७ 2× )1 बरुयोक्ष ) प्रं[बरुयोद] एक स्थूब (ठा यस्योद ) पत्र ४ इक पुरुष १६)। बस्छ पू व [बस्क] चेरा-निरोद (पत्रम १६ €Y) 1 यह्मिं भी [यह्मिनी] तेना रीना (पाम)। षरेक्ष्य न [वे] फ्रम (दे ७ ४७)।

मुपा ६ १)।

समद् (दे ४ ४७ दे ७ *६*६) ।

रेश (पर २७१)। सहय है [ कायक] बक्त सोठपास के मृत्य-स्वानीय वेची की एक (कुमा) । बाटि (भग १ ७--- नव १९९)। देवकाइय तु ["देवसमिक] बहा धर्व (धय १ ७)। "प्रम दू ["प्रम] १ वस्तुवर दीप का (秦祖): 88)1 यस भक्ष [ यस ] र चीटना बारस धाना। २ मुद्दना, देवा द्वांबाट प्रवासी में 'बख्बू' । १ उराध होता। ४ सक हरना। १ जाना समय करनाः ६ सामगाः श्रवह (हे ४ रेकर पत्र । या ४४१३ मस्त्रा ११२) । भवि वित्तसर्थं (सहा) । वह वर्धत वज्रय, यसम्य वसमान (हे v ४२२३ था १॥ । बे ६, ४७ ६, ४२। चीप श रु ४। पत ११७)। ब्वइः विस्त्रांस (१४४ २६)। **धंह. वरि**क्रजण (कार्च) । देख वरिक्रचं (ख ४=४ वि १७९)। **छ पश्चिमध्य** (महा थळ सक [आ + रोपय] अनर वहाता।

(क्रिप्र २०१३ वे च द६)। धळणिका वस्त्र पूँ [यस्त्र] राखी दावि को मध्यूत करने के शिए दिया जाता वस (उत्त २६, २६)। वस्रक्षंगी की हिं] पृतिपातीः वाहपाती (वे ⊌ ¥₹) I पछत्य वि [यळियत] १ वसय---कंपन वी तथा योक्षाकार किया हुया वस्त्र की वस्त् पुका हुधा (पराम २८ १२४ कप्पू)। २ वरित वर्धगणिका की वि] बाइवानी (वे ७ वस्त्रिक्षा वि वि] जारीकित वस्त्रीय-स्थित (यस् १८६)। क्ज़म्म्या वि [यत्स्य] श्वेष स्प्रेय (पाम) । वलक्का न विकास वापूपण-विशेष एक **छए**। भा को में प्राप्तने का बहुन्य (बीप)। बळ्या एक श्चा + स्वर् ] पाण्डास करना कामा । इंगराती में 'कम्ब्यू'' । वसप्तह (देश २६) पट मनि)। वस्तरा वि [भारूक] विस्ते प्राप्ताश किया , हो वह पड़ा हुमा (शाम)। वस्मर्गागणी की वि] पूर्व बाह (रे ७ वक्रियाम रेबो भक्तमा = पाक्स (कुमा)। वस्त्रम वस्त्र । व्यवस्त्रम वस्त्रम (वे१ ४२)। २ प्रध्यापर्यंग पीछे सीटना (से व ध मठव) ∤ ३ वॉम थक्सा(क्रे ¥ ¥33)1 वज्ञान (श्री मा) वैको परण (प्रतष्ठ ६१) है रहर)। मञ्ज्ञाची [थळना] येथी वळण≔ वसन (वस्य)। बस्रस्य वि वि पर्यंश्त (मनि)। यसमय न [व] रहित्र, बल्दीः 'वच वसमयं तत्त्व (देश ४०)। वक्षय पुर्ण [बक्कय] १ व्यंक्स अन्ता (बीपः सार्थशंक्यु, है ४ वरर)। २ gfioli-बेप्टन, मनवात शाहि (हा २ ४००१व < १) । १ वेट्न, थेठम । ४ वर्तुं व वोसाव्यर बस्या देखो यहपा त्योमहिसिबसबपुरको' (बरका कप्पू, ठा५ १)। इ मधी साहि के

के बाक से वेटित भू-माग (पूजर, २ म भग)। ६ माबा प्रपंत्र (सूम १: १२ २२) सम ७१)। ७ झसरम वचन मुपा मुठ (पर्राह १ २---वत्र २६)। ≡ बसयकार दुख गारि केन वादियन बावि (पएछ १ उठ ३६ १६) युक्त १६ १६)। सार, १रअ वृं (कि.द. कारक] कंकरण बनामेवासा रिक्पी(दे = १४)। वस्रय वि (यस्त्रक्र) मोइनेवासाः 'धमलग-वर्त-वशवा (सिंह ११४)। वलस्य न दि देशे क्षेत्र सेटा २ मृद्ध पर ( Ya e F) 1 धक्रय केवरे वक्त = वस् । सयगवि ["सृतक] १ इंबम दे भट्ट होकर जिसका नरण हुमा हो थहः २ भूक साथि संतरकता हुन्। जो मच क्षेत्र (मीप)। सरण न ["सरण] रंपण के स्थूत होनेनाचे का मच्या (भन ર ૧)ા वक्षयजी की [वि] बृति वाह (दे ७ ४३)। पछ बवाहा रे औ [दे] १ दोवें काइ, विसन्द बस्तयबाह् । ध्वना पानि बोना नाशा है वह सम्बर कार्ड 'संबारियास बनायशहास् कविएस् सिएम् सम्बग्नेस् (खावा १ ८---रम १९६)। २ हाम का एक बामुक्स चुक्र कहा (वेध १२ पाध)। वळणा देको यहका । एक ट्रे निस्की दर वारित (हे १ १७७ पर्)। सुद्दात [<sup>8</sup>मुका] १ वहवानच (**हे** १ २०२ प्राकः पि २४)।२ पूँ एक नदा पाता<del>त अस</del>रा (ठा४ २--पत्र २२६। टी---पत्र २२८-श्चम ७१)। यक्षया की [दे] केना समुद-भूतः। सुद्धः न ["मुखा] बेशा का क्या मापा 'वि बसायपुरुम्युक्मे विस्तुती वसयामुद्दे। वि चलक्क्का नाबेलं, तब क्रियोरए बहे ।। एकारिसं वर्ष सर्व सर्व सहिवसहुद्धाः। इच्छाँच मक्षेण मेर्च, यही ते महिरीयमा ।। (विश्व ६३१) ६३१)। षत्रयात्र्य वि [बत्रयायित] यो वसव की तपह बोख हुन्य हो वह (कुमा) । भक्यहि [के] वेची बक्रमहि (वे ६ ११)।

(परम १०२ के छ ४१ इक पि २४)।

क्छवाडी बी दि दि दि बार (रे ७ ४३)। वस्त्रिक्ष न दि । स्ट्रीम, बस्दी (दे ७ ४०)। बलक्षि क्षी वि क्यांस क्यास (१ ७ ३१)। बन्धी । वी बिडिंग भी र मुस्यूग, बस्सी बरना वरामदा। २ महस्र का यदस्य पात्र (प्राप्त)। ६ काक्षिमानाङ का एक प्राचीन नवर, निवको माजकश 'बस्थ' कहते हैं (वी १६, बस्मत ११६) । क्साअ वेची पद्मय = परा + धम् । वक्न. 'रीयह नि पद्मार्थतो (से हः ६)। बसाध देवो पद्मय = प्रसार (से १ ४९)। पछाञ्च वेद्यो यख ≈ वन । सरण वेद्यो पस्तद-मरण 'चंत्रमबोब-विसला गरीत से र्षं बनायमस्य हुई (एव १३७ का २ ४---पन ६३)। विक्र विक्रि १ केट ना सरवय-विकेश 'डबरविमिनिनि' (लिए १ १)। २ विविधः मानि के अपर पेट की सीन रेखाएँ (का ४९६ भवि)। १ वया पावि से होती तिकिका नमही (खाना १ १-- पन ६६)। ষভিম বি [ব] হুক, মনৈত (বৈ ৮ ২২)। विक्रिप्त विकित] १ मुरा ह्या (भाकः । २७ मीप)। र जिस्को बस पहाना नदा हो वह (रस्थि मावि) (क्स २६ २६) । बिक्स देवी पिक्सि = व्यक्तिक (प्राप्त) । परिजा की [व] क्या, क्यूच की गेरी (वे 9 1/4) I र्वासन्ध्रत देवो परिच्छम (धीप) । बहिज्यत देशो बहा 🗷 बहा । बह्रिय देवो पछित्र (का ७३ थै)। बह्मिडम 🛊 [बह्मिटक] बनलांत में बाजि वा बळाकार बेहन (पदश्र १---पत्र ¥ ) ! बहिद नि [बहित् ] बीटनेमाना (मुपा RE) I नदी भी [नदी] रेबो वृद्धि (निर १ १)। बद्दल रेको बस्ल (हु । २१४)। वस व पंगीयक मूचन सम्दर्भ (शाकृ स )।

र-१ धेवो मसे (बर्) ।

229) I

पदाधक [सक्क् ] चयना दिवना(श्रुप्र | 4Y) 1 वश्चार्य (दें) रिस्तु नालक (१९७ वर)। स्क्र⊈ [दे वड] यस-विकेय निष्माव पुज-राती में बाल' (सुपा १३ ६३१ सम्मत ११४३ सम्ब बहुद् भी [बहुवी] नोपी (वे ७ १६ टी)। बन्नाम् 🕸 📳 यो वैद्या (२ ७ १६) । सक्कर ) भी विश्वकी ] बोद्या (पासा दे मसनी इंद की खाना १ १७-- पण १२८)। ब्रह्मा कि [कि] पुलक्का, फिरसे व्हा ह्या-(पद्)। वक्रम केलो वक्क्य (शार ४)। बद्धरन दिवद्धर] १ वन व्यक्त (देण at एक उत्तर र)। १ थांव **के**र (देक की, प्रश्ना १ १--पत्र १४)। दे धरहय-खेन (पाम)। ४ वालुका-पूर्व क्षेत्र (40 १२)। बह्मर न (वें) १ परएव ६८० १। २ मिर्वय देत । व व महिष्य में हार ४ हमी ६ प्रवण । इ. वि. पूर्वा तकत (के ॰ ६) । ६ वेहन-होल । ७ वेड्स दलक क्रालियन-विदेय करते की साम्यत कामा। की, दी (मा १६४)। वक्ररी की बिक्ररी शकी शवा (पामा वक्का पूर्व ११६) । थाइटी इसे [के] नेक बान (के ७ ६२)। बक्कम ईसी बिक्कमी मोग आहीर, न्याचा (पाप)। जी की (वा ६)। बह्नमाय न वि] बीन चेत (वे ६ २६) बहाबिज नि [बे] बाधा से रेना हुया (वर्)। बह्द र् [बह्ममा] १ व्यक्ति पति जलाँ वासम (बक्ट कच्छा का १२का है ४ ३ वर्ष)। र वि धिन, स्मेक्शाक न्य**हे वाना मस्त**हा बार्रंग विश्वरोते (श्राह्म: बा ४२, १७३ श्रुमा पत्रम ११८ ७३३ रक्ख ७१)। शब्द द्रै [ सम् ] १ दुनरात का एक चीतुक्य पंतीय राजा (दूप ४) । २ धनिए के दुलाब देश मा एक रागा (कम्बु)। यक्त देवो यस = वस्। वस्तर (वस्ता वस्ता धी [वस्ता] वरिता पत्ती (य

पद्माद्य गर्दि शाल्द्यात्र इस्नैका वध ( U YZ) 1 यद्वाय प्रदिद्वी १ स्थेन क्यो । २ क्यून⊳ म्यीसा (दे छ वप्र) । विक्रि और विक्रि सिता, देव (कुमा)। विक्रित् वि [बिद्धित्] दिसनेवाकाः च विद्यमद वस्थिएक्टवा वि वस्थित्व चनक्रीया' (पुत्र 4Y) 1 यक्की आहे विक्की नदा केवा (हुमानि रेक्क) । स⊈ और दिं ] केट बात (६ ७ ६२)। वस्तीक वं चित्रहरीकी १ देश-विरोध (ब १६: बाट) । २ वि. नाहीक देश में जराना, शक्कीक देव का (स १३)। वय अक विप्] नेता जे सवस्तितेषु वर्गति निर्धा (एस ७२) । नहः पर्नेत (धारुपीड ७)। क्यक विकास (मा 4X4) I बच एक [बप\_] देशा। नवह (वन १)। कर्र, क्यह (क्य ४१) । क्यप्रसाधक कियम + विस्ती १ नहस प्रक्रियान्त्र करमा। २ व्यवहार करमा। बबद्रसंदि (कर्मसं ४३२) सुमृति १४१)। धश्चे धकावपरातसम्बद्धाः वहनिर्मितिनी मेहा। र्गमानुष्यिक्तिकारा विनिधियुक्तं वयहसंदि ॥ (धामक १६२)। वयास्य पुं [क्यपश्रा] १ कवन, प्रविपालन । रे व्यवस्थार (स. २, २६) । ३ सम्बद्ध महान्य-चम (याः)। वक्रास 🛊 [स्थप्राप्त] ग्रस्ट (धानम) । भवतव वि [क्यपत्रत] १ इर फिला हुमा (गुपा ४१) ३ र मूच (प्रश्ना २ १--पण १४०) । १ नारा-बान्ट, बट्टा 'बबपदविण्या रितर्भ पता विषद्भिष्यचं ठालुं (स्वीप ११) घीप क्य) : पमद्रीत है (अयबद्यम्य) प्रस्तान्त्रम, ब्ह्यारा ( Y Y ( ) ) बनहाबल देवी नपरबाबल (राज)। वनद्विध वि [स्पनस्थित] स्वतस्य प्रान्त

(विष्यु १२)।

क्वण न [यपन] दोना (दद १ः खु १)। ध्वण कीन [वे] कार्यंत तूना करी न्पवही वनएं तूनी क्वी (पाध) । की जी (दे ६ ६२ ७ ३२)। सपत्थभ प्र दि ] बल पराक्रम (दे ७ X5) 1 क्वत्या की [स्थवस्था] र मर्याचा स्थिति (स १व द्वम ११४)। २ म्हिन्स, रीवि । ६ इंडबाम प्रसन्द (बुपा ४१) । ४ निर्णेय (स १६) । पत्तय न [ पत्रफ ] बस्तानेब (ਰ ४१)। <del>वय</del>त्यायण न [ ठववस्थापन ] व्यवस्था ( वर्गर्ध क्छा: श्रीवश्यत्वयस्त्रिक्सं 22 )1 वयत्थायजा न [व्यवस्थापना] उत्पर केवी (धर्मधं ६२ )। सप्रतिस्थ वि ि ज्यवस्थित 🕽 व्यवस्था पूक्त (स ४६। ७२७) सुर ७ २ ६ सछ)।

सप्रतिकारि जिस्सिति विक्रो स्पन्ता की हो बहु (इसिन ४ ६६)। वषदेख देखो स्थएस (स्था: स्थप्य १३२)। क्षत्रकृति वि [स्थपनेशिय] व्यवस्त करने-बाला (भार---रकु ११)।

के बीच का सन्तर (बांब २२२)। धवरोध सक [ स्थप + रोपय् ] विनास करना मार शंसका । वनधेनेति वनधेनेकारि, धवधेनेच्या (उना)। कर्म ववधेर्यक्रवाति (च्या) । इंड. यवसेमिका (च्या) । व्यरायम त विभागीपणी विकास, जिसा

स्यवाण न [स्यवधान] सन्दरः दो पदावी

(स्य)। यसरामिश्र वि [स्यपरोपित] विनारिका मार कामा धना। 'शीविधामो ववधेविमा' (पिंड)।

बबस सक [अयय + सो] १ करना। २ करने की सम्बद्ध करना। वरतास (रहस ₹ 4)1 वयस यक [रुयय + सो] १ प्रयक्त करना

बेष्टा करना। २ निर्श्व करना। वरसङ् (स २ २)। यह घरसीत जयसमाज (तुपा २६०) स १६२) । संक्र अवश्चिक्रण

(सूपा १३१)। कन्ह व्यस्तिकामाण (पत्य १७ १६) । हेब्र. यमसिद्धं (शी) (नाट — सम्बर्धी। वससाय र् क्रियससाय] १ निर्हेग निस्तय । २ सन्द्वान (ठा ३ ३ -- पण १४१ संबि)। ३ जवन प्रवास (से ३ १८ सुना ११२)

स ६०३१ हे ४ - १८१८ तरे र १४ रहे)। ४ व्यापार, कार्य काम (भीत राय)। वदसायसमा 🗱 [व्यवसायसभा] कार्य क्लो का स्थान कार्याखय (राय १ ४)। थवसिक्ष म [वे] बवास्कार (३ ५ ४२)।

वक्तिञ ्रांच [स्वयंक्तितः] १ उदात. ववस्तिक रे ज्यम-पुष्क चेन्सियों नाम राया पदास्के सुद्ध श्वसियो' (बस्, इन्ड २२ १ वय)। २ व्यक्त 'धरी बीरिय वर्गाय' न जेव गुक्तरिसको छहियोँ (उद)। ६ **नि**श्चयनाचा । ४ पराक्रमी (ठा ४ १---पच १७६)। प्र.न स्थवसाय, कर्म (ग्राया १ १—यत्र १)। ६ मेहित (स ७४६)। ७ बद्धम प्रकल (धे १ २२)।

व्यवहर सक [क्यव + हू ] १ व्यापार करना । २ शक वर्तना भाषस्या करना । वबहर्स्ट, थवहरए (बचारेक र्दस्य १ व विशे २२१२)। वक्ष वत्रहरंत वयहरमाण (क्टा२१ २४६ मन = = धुपा१६ YYK) । क्रेक वषहरिते (स १ ४) । १८ वबहुरणिका वयहरियव्य (वय १११ टी-वस १ सुपा २०६)। ववहरमा वि [स्थवहारक] स्वापार करने-

नावा ज्यापारी (पुण २९४)। **भवहरण न [स्यवहरण] स्यवहार (शामा** १ क-१३६ संदेश स्वयं स्वयं की सुपा ४६० विशे २२१२)।

पत्रहरूय देशो वनहरूम (वृपा १७६) । वबहरियम्थ क्यो वबहर ।

ववहार प्रे [कथवहार] १ वर्तन वाश्यरण (थव रा मन व व विशे २२१२। छ। ४, २ वर १२६) । २ व्यापार, क्ला रोजवार (मूपा ११४) । १ भय-विशेष शरत-परीक्षा का एक इक्टिकोण (विशे २२१२ ठा ७── पण ११ )। ४ मुनुतु वी प्रवृत्ति-निवृत्ति का कारण-पूर्व ज्ञान-विशेष (यस व ---पत्र !

३ व व १ पन १२६ x ४१)। X वैत धामम-प्रेय-विशेष (वन १)। ६ दोप के नाशाचे किया जाता प्रायमित 'मापारे-वबहारै पम्मली चेव विद्विवास् में (वसनि ३)। ७ विवाद, मामला पुत्रहमा विवहार वियाच्छे कुछई (परम १ % १ ४६ नेत्रम १६ उप ११७ टी)। द विकार-निर्श्य फैसला चुकारा ( उप प्र २०३)। 🗓 स्थवस्ता (सुध २, १ ३) : १० काम काम (विधे २२१२ २२१४)। ११ बीबराशि-विदेश (सल्बा १)। व वि [ बन् ] व्यवहार-पुक (इ ४१) । ससिय

वि ["राशिक] भोवराशि-विशेष में स्थित (सिरका ६) : षवहार प्रं क्यिषहारी १ पूर्व-वेष । २ भीतकस्य सूत्र । ३ क्**ल**प्सूत्र । ४ मार्ग यस्ता । १ बावरस्य । ६ विन्तुतस्य (वव १)। वयहारि दे [ स्पवहारित् ] १ देखत क्षेत्र में अल्पान एक बिन-देव (सम १६६)। २ वि. स्थापाधी विक्रिक (मोह ६४) मा १४ चुपा १९४) । १ व्यवहार-क्रिया प्रवर्तक (वय १)। वपहारिक वि [क्यावहारिक] व्यवहार सम्बन्धी (भोय २०१ प्राप्त) ।

ववद्दिश वि [स्यवद्दित] स्परवान-पुक्त (प्रकुः धावम)। यबहिश नि दि] मत्त कमत (१ ७ ४१)। वबाँख ध्या यमान (६छ)।

वयिश्व वि [चर्र] बोवा हुमा (वप ७२० द्ये प्राप्त ६)।

विषयांत येथो वय ।

वनेक वि [क्यपेत] व्यवकत (पूध २,१ Yw) I वयेकता की कियपेक्षा विशेष स्पन्न .

परवाह (वर्गसे ११६७) । यध्यय पू [यस्त्रज] तुल-विरोवः न्यूययश्क

(१ वर) स्पूरकास — (पराह २ १---पत १२३ क्स २, ३ )।

अध्यर वि [सर्वर] १ नागर । २ मुखं (कुमा) । षब्बा देवो सम्बय (इस २३)। यम्बाड प्रशिमिन, बन (१ ७ १६)।

बक्बीस रेखा वद्यीसग यद्वीसक (पत्रम ११९, ११)। बक्कमि (मा) देखो समहि≔वस्ति (प्रक्रक

११)।

बरूब (म) देवा बर्फ्य = कुट (माछ १ १) । बस सक [बस ] १ ताव क्रण्य ख्यान । १ सक बोबना । बदद (क्रण्य ख्यान । कुता बसेम (कुट ११ १) । बस्नु बसेन बसमाम (दुर १ २१६) । १० कुम्म (स्थान क्रम) । फेंक्र विस्था बस्तामां (स्थान क्रम) १ १ १४०) । १०

बसियाच्य (ठा १ ६ सुर १४ म७ सुरा

¥\$4) I क्स कि किया १ मानच प्रश्नीत (भागाः के २, ११)। २ पून, सभीनकः परकन्नकः (कुमाः कम्म १ ४४)। १ प्रकुक्त स्वामितः। ४ माक्स (कुमा) । ४ वतः सामध्ये (श्वामा १ १७ चीप)। अंगविगी वधी-मृत पराचीन (पठन १ २ ३ सम्ब ६१ पुर २ २३१ दुनाः सुपा २५७)। ङ्क्रीव [स्ते] पराचीनता ने पीक्षित इन्द्रिय स्त्रीय की परवराता के कारण दुन्तित (बाका शिक्त १ १—पत्र कः बीप) । हमस्य व िर्दिमरणी इन्त्रियादि-वरण्य की मोद (ठा र, ४--पन **११ पन**)। बर्गिति [वर्तिम्] श्लीवृत समीत (इन १३८ द्ये, दुर्गारेके)। इस्त वि [यर्च] सभीव परक्षत्र (वर्गीन ६१)। एपुन नि िल्ला कहा सर्वे (पडम १४ ११) ।

वस दृं[सूप] १ वर्ग (वस्य १४१)। १ वैश्व कृपम (व ११४) वस्त्य १ ४६)। देवो विस्त ⇔कृप।

बस्द्रकी [वशिंदी] र लाम, प्राप्य (क्रुपा)। २ र्यात्र प्रश्न (के ४१)। ३ वृश्च, वर (का १९३)। ४ नम्स विवस्त (हे १ २१४)।

बस्य केवो बस = बस्।

वस्त तुं[वसन्त] १ च्छु-विरोद, चैत्र बीर विरोद साथ ना समय (सास १ १—यव १४) पास्त सुर १ ११) दुवा। कथा प्रातु

क्षेत्र करो । व वीन साथ (गुज्य र १८)। उदा म [गुद्द] स्वस्तिकेट (माहा)। विकास मूं [गुद्धकर्म] र हरियेश में अराध एक पासा (वश्व २२ १०) २ मा एक जवाम बाई मुक्ताम आपनाके में वेद्या की विकास कर्म प्रत्योग में वेद्या की [गिक्स मा क्या-प्रत्येश (विवा )। स्टोपप कि विकास में स्वीम

वसंपय वि [सर्वयम्] शिव को सर्वात । कहनेवाला (वर्गति ६)। पर्यात (वर्गति ६)। ए पुरा २४४३ केरव ४०२३ वर्गति ६)। ए शिवास प्रावा (पुरा ४८४)

वसम्पर्वृश्चिपम् । धर्म-नोत्र पोता (सर १२६ मधः परम् १ ६ विता १ २ मीता कुम १६म)।

नमध्य न [क्यसन] १ कट विपत्ति कृष्ट (पान पुर ६, १६२ व्यस्य अनुत्र २१)। २ राजानिकार क्यान (स्त्रमा १२)। ६ बराम बाह्य-चुठ नच-नान बादि बोसी बाह्य (स्वरू १)।

वसणि वि [व्यसनिम्] चोदी धारकाचा (मुरा ४०)।

बनाम वृं [युराम] रे क्योरिक्सारिक परि-रिशेक क्य पारित (बना १० १ क) । क्रमान् क्रायकेक (बेहम १४१) । रे एक क्रमान् क्रायकेक (बेहम १४१) । रे एक क्रमान् क्रायकेक (बहर १४९) । प्र येक्स क्रमान्य (बक्र) । रे क्यम विश्व (बहर १) । प्र येक्स क्रमान्य (बन्न) । रे क्यम विश्व (क्रम) । क्रमान्य विश्व (बन्न) । येक्स बहर्ग क्रमान्य [क्रमान्य वहर विश्व (क्रमान्य ११ १४) । करोग म [क्रमान्य वहर १४)

बहुँ पर वर्धान्यक में धावार्थ धावि पहें हों वह रवान (वन १ निव्ह १७)। "आग्ना पुँप्तिमां] बाग-विशेष पूरिकत वेश में वनर-पुष्प कींव न्यांकित हूं वर्धान्यसम्म वृद्धिकारियम पुरिश्वहार्थ (वन १)। एक्टाए पुँच्यिकारियमां विशेषिकाल-विदेश

ाणुवाय पूँ ["तुआव] व्योधितास-स्थित कत मोनों में प्रकार गोन, विश्वमें कन्न पूर्व भीर तक्का केंद्र के भारत है दिनत होते हैं (मुख १२—पत्र १९६)। चेको कछाउ

रिसम पस्यः।

थसमुद्ध पु [पे] काक कीया (रेक ४१)। बसम देखो परिम (गज्ञा)।

ब्समाज देवो यस = वब् ।

वसक वि कि की कारा (के क क्षेत्र)। यसह वृं [युप्पा] वेश्वक्रम करनेवाला प्रति (श्रीव क्षेत्र)। र कारमण का एक कुष (प्रव क.र.)। व वेश वाह वाह (पाप)। अकार का विक्राः। अध्येषक्र विद्यान (प्राप्त)। भ्रीव वृं [चित्रुल] यक्त, म्यावेस

(पक्क)। फिज पु किल् इस्ताक्र बंठ

का एक घेजा (परम १, क)। बाह्य पूर् ["बाह्म] १ फेरान देवलोड का स्त्र (वे २—पत्र १४७)। २ महादेव शंकर (क्या ६)। शीही की ["बीधी] तुत्र कह का एक प्रेत्रमान (स ६—पत्र ४६)। वस्त्रिकेकी वस्त्र (हे १ ११४ कृमा स्त्र

१०२१ (१ ३०७)।
वसा की [यसा] १ तपैरस्य वाकुनिकेरः
पेत्रक्वापंच — (राष्ट्र १ १ — पत्र १४सम्बद्ध १ १३)। २ तेरु वस्मी (सामा)।
वसारक्ष वि [मसारक] फैतानेवाला (स. ४ )।

वसारम केनी पसारम (वे ६, ४)। वसाहा की [मसामा] मर्चकार, मामूनस (वे १ १८)।

(दे १ ११)। विश्व वेच्या यसङ्, 'जाचन नकड पद्मि पद्मि सक्रीयमध्यास्त्रसम्बद्धाः' (सुर १ १२)।

विक्षिण वि [चापठ] १ च्या ह्यार निक्सने बारत किया हो गहुं (बास स्व १६६८ चुना भरश वच ११२ के ७) २ वस्ती च्युवित 'प्रमण्डेस प्राधिवतिकों निम्माई सोमाइल्पेस (संबोध ६)।

वसिष्ठ ई [विद्याप्त] १ वयवान् पारवेश्वय का एक व्यक्तपर (का द---यन ४९१, स्वय १३)। २ एक ऋषि (नाट-----वत्तर दर्श)।

र एक काथ (नाट—उत्तर ६२)। विसह वृं [वश्चिप्र] ग्रीमङ्गपार देवों का प्रतर दिख ना एक (दक्ष)।

वसिक्ष व [वशिक्ष] बोब भी एक विक्रि योजन्यक एक ऐस्वर्ग 'बाहुमब्रिक्क्युरोर्ड प्रसर्म कृपानि बंदुसो वंदि' (बुस २००)।

वसिसंग [वं वसिस] श्वाद्यवासा स्वाव (तुर १ १९, सुगा १६४) कुत्र २२४) मझा)। सिर 🖪 [पश्चितृ] बास करनेवासा पहने-बाबा (मुना ६८७ सम्मत २१७) । स्राफ्ट्य ति [बशाकृत] वत में किया हुपा, أ धपीन किया हुए। (नुपा १३ महा)। रशीकरण न [बर्साकरण] वस में करने के <sup>1</sup> क्रिय किया जाता सन्त्र धावि का प्रयोग । (खादा १ १४- प्रानु १४३ महा)। पसायरणी औ [पश्चीकरणा] बग्रीकरण निया (गर १३ =१)। यसीहुज वि [बरीभूत] वा यथीन हुमा हो। बहु (उर १८६ ही)। यस् व [यस् ] १ पन, इस्य (भाषा नूम १ १३ १८ दूमा)। २ संयम कारिक (याका मूच १ १६ १०)। १ ग्रे जिनस्य। ४ बीडराम राम-रहित। १ संयत संयदी शापु(श्रापा १ ६ २ १) । ६ सा**ठ** को संस्था (विश्व १४४ सिंग) । ७ चनिष्ठा नक्षत्र क्स समित्रति देश (द्धा २ ३ मुज्य १ १२)। द एक राजा वर नाम (पत्रन ११ २१ मत १ १)। १ एक पनुरंश-पूर्वी वैश महर्षि (निगे १११४) । १ एक छन्द का नाम (रिच)। ११ की देशनन्त्र की युक्र पटचनी (इक)। १२ म-सावान्तिक देशें का एक रिवान (इक)। १३ नुप्रर्क शामा (इन्स रेक प्रमार्थ उस १२ १६)। गुला को "गुपा] रिक्ला की एक परसमी (हा ६~ पत्र ४२१ इक सामा २--पत्र १६६)। दिख दे जिंदा निवर्ते मानु "र भीष्टप्टा घीर बनदेर का रिजा (ध ६ मन १६२ धत चत्र)। तर्थ ब् िनन्द की एक वर्द्ध की बचन वनजार (नर २ २२ मनि)। पुध्वर्गयुग्धी एक धना, भगान् राष्ट्रास्य हा तिता (सम १३१)। दल दु[बल] क्रमदु∹क व द्धपर एक समा (राज्य ४, ४) । माता वु िभागी एक व्यक्ति-संबद्ध काम (बटा)। भाग्य हो ["भाग्य] रिजनप्र को तुक्र परयन्त्र (१४)। नृह 1 [ नृ[1] ८४ देव हुनि वा साम (प्रसाद १७६०) पारप) : म, र्बत कि [ सन् ] १ |

हरूपवान, सनी भीमंत (पुस ११३ ८) १ १४, ११ साचा)। २ संयनी साभू (सूच ११३ क बाया)। मिला औ "िहा] १ न्यनेन्द्र नी एक पश-गदिवी (ठा ६---पत्र ४२६ ए।या २ इक)। सद d ["शब्द] एवर मिरोप (पिन)। **श**ास धी "भाग १ मानाश से देन-इत सुवर्श-कृष्ठि (सप ११: कम ६० उत्त १२ ६६ बिया १ १)। २ एक बेहिनी (चर ७२४ री)। यसभा । वक [चद्+या] रुप्क होना यसुधाः ∫ नुषना । अनुवाद, अनुवापद । (द्वेप ११३३ १४६८ लाइ ७४)। यह बसुकत (कुमा)। प्रयोत्, क्याहः, बसुआहव्य माण (म्बर) । यसुआअ वि [प्रद्वात] सून्क (पाय: सं १ २ ३ पडड भाइत ७७)। यस्त्राह्म वि [उद्वापिय] युक्त क्या क्या, मुखाया पया (से ६। २२)। यसुभा•ज्ञमाण देवां वसुआ। यमुधर वृं [यमुश्यर] एक वेश बुलि (पत्य tet) i यमुंघरा का [धमुम्घरा] १ प्रविशे वरती (पाम वर्गीक ४१ जानू १८२)। २ रिख नन्त्र की एक सम-नहिंदी (ठा ६--पत्र ४२६ छाया २, इक) । ३ वसरेन्द्र इ सोन यादि वार्धे मोक्यामों की एक पटलबी का नाम (ठा४ १ - पत्र २ ४० इक)। ४ एक रिरहुमाधी देरी (हा ब-अप ४३६ **१७) । १ नार्वे बकार्ती राजा की पटरानी** (तम ११२)। ६ शावलुगी एक पानी (पञ्च ७४ १)। ७ एक वृष्टिनाओं (जर ७२० थे)। यह पूं ["पनि] राजा, भूचीत (न्या १००)। बमुपा (थी) देवा पमुद्दा (त्रव्य ६८) । पसुपुत्र ह्यो वासुपुत्र 'बनुरूक्युरी वेनी बाध्ये वीचे तूमाराप्तायाँ (विचार ११६ र्वपारेट १३०१०) 'शमुरुणविका बहु त्तवो नामी' (पन १३)। **यमुम३ ) ध्र [**धसुदर्जा] १ द्वदिशी धरशी

यमुबद् } (उप ध्ररेश क्षेत्र वायः जुला २६ :

४०१) । २ जनगण्ड राजाप्रवा एक

धार-महिपी एक एन्द्राएने (ठा ४ १---पत्र २ ८ छावा २---पत्र २४२३ ६**४**)। पा**ह**् नाह पूं िनाय] एका (का अद्य क्ष वडम ७४ २१): "सवन न [ सपन] मुनि-गृह, मोंपरा (मुखाप ६)। सह यू िपिष्वि राजा (पदम ६६ २)। यसक पूढ़ी 👣 पूपली १ निष्ट्रका-शायक मामन्त्रण सम्ब 'होनि ति वा सीवि ति वा अनुमि लिया (धामा२ ४२३) 'तह्य होसे बोर्ख कि साखे या यम्बि कि में (दब ७ १४) । २ गीरप धीर बुखा-मोपक धानन्त्रल राज्य 'होन बमुल गोल खाड शहब निव रमण् (ए।वा १ १--पत्र १६४)। धी. ब्री (स्व ७ १६ माना २ ४, ₹ 1 1 यमुद्दा हो थिमुषा दिपरी पत्नी (राष्ट्र) कुमा)। (इ.स. थूं ["ध्यप] सना (नुपा 44) I वसू ध्ये [यम्] रैकन्त्र वो एक परको (ठा ६---नव ४२६) इक खाया २---पत्र २**११)** । यसंग्रे की [ रू ] वनगरण पांच (मूत्रा 1 (FOY यस्स (शी) देवो परिसः। बस्सरि (गाट---मुम्बर १६६/। मरस वि [य"य] यभीन यायश (विश्व =0X) I यमसोक व [वे] एक प्रकार वी बीडा 'बप्नया व बस्डोबेल रमंति यन (१४१) मी चिख्या पोचेख बार्गित' (पान ६ १३ टा)। बद्द वक [बद्द] १ पूपाना । २ बारल करना। वे से बाना वाना। ४ वर बक्तमा 'परित्रपश्चनाथ परका' (स्थान बत बद्धा 'बंबा बा' ग्राप्टरी' (मृत्य २ ∉३) बहबि (हे२ ११४) । वर्षे पहिं≡ वस्या पुरुषः (पूमा पारत १४ हि ४,४१ दे र २४४) पद्म-परा पद्मान (महा पुर ६ ११ थीर)। काह पुरनसाल (📆 २३ ६शः १०) । हेर ्रं विद्रमुख पार्ट (पारवा १३२) ४७ हा ११)। 🕊 यदिशस्य धानस्य (गारा १३२ और 1) (

नामा (देव ६ ती६)।

यद्वा केवी यद्व = थव ।

ग(—ग

४१)।क्से मक्किन्नीत (कुप्र २६)। बक्क-बहुत, बहुमाच्य (पटम २६ ७७) सूचा ६११ यासक १६१)। यनक वृद्धियाँत बश्स्माज (पडम ४६ २ : माचा)। र्शक विकास (महा)। सद्भव क्यिक् रे गैदा कर्णा। २ प्रहार करना । इ. बहुंचक्त्र (परह्र २. १---

बद्धक विभूदन् सरशतनाः गोह

बहेरि (चल रेज के का ध अरुका खेबीब

पच १ )। दह (प्रप) देवो धरिस = दुर ः दहवि (शक्त **221)** ( बद्ध पंची विष्यो गाउँ तथा (क्या) कुना के र ११६ प्रान्तु ११६ १६६)। की बा (मुख १ ३, स २७) । आरी की [किरी] विद्या-विकेष (पडम ७ १६७)।

बद्ध दे दि | १ कम्बे पर का कका ⊦ २ कक शाय (वे ७ ३१)। बहुर्भु बिहु १ दुव-स्थान वैद्याला गणा (बिया १ २--पत्र २७)। २ परीवाह, पानी काप्तरहाइ (दे १ ३३)। बहुर् [क्संध] बहुट स्तरिका प्रहार (तुस t x q (vi wett ts): बह्देको पह=पविन्(से १ ६१३ १४

बहर्म वि दि] पर्वाप्त (वर् १७७) । बहुरा दि [बभाव] पात्रक विस्तर मार बाननेवाला (जवा च २१३) हुवा ३६४ बारक २१२. वा २३)। बहुग वि [ब्बअफ] टाइना करनेवाचा (व २)। सद्द्व पूर् क्वि समग्रीय बक्कहा (वे ७ ६७) । सहजास पुंदि | बारमा काठ-सङ्ग्रा (वे क सहस्र ग [सदन] क्य, कात हरका नाजको

कुना)। क्षरनीवकास्वहरूमियं (भूपा ४२२) वर्गीक रेश मोहर रामहाधानक रेपप २३७० का है देशक मुंचा है। शब्दम अहे पहें)। बद्ध्य व [यद्दन] १ क्षेत्रा (प्रमेषि ७२)। ९ पीत बहाज बामपाद (दाघा छप १६६ कुम्मा ११)। १ राक्ट माथि नाह्न (छल

थहण (ती) देवो पराय = मझत (प्राप्त ६७)। भव्रज (धप) देवी वस्तज = मधम (मवि)। पहण्या की विद्वना निर्वाह (सामा १ २—पत्र €े)। यहणा की विभया जिल्लाहरू, दिया (प्याह ११--पगर)। बहुच्या वं क्रियप्रज्ञो एक नरक-स्थान 'क्रमे थलय विण्ज्यविष्ये तह विष्यानी वि (१व) इएएवु सं (वेदेशा २)। **बह्य देवो बह**स = वयक (सूत्र २ ४ ४३ प्रध्म २६ ४७ व्यादक रे वास्त्रह)। क्युकीय वेषों बद्दकीय (१४)।

बद्धाविक वि [बंदित] गरनामा ह्या (बा 84)1 बहाविज क्यो पहाविभ (६६.१)। बह्चित्र वि [स्प्रीयत] पीनित (पंचा ६ बहिश्र विकित्वी शहन किया ह्या (वाल्या 1 (9#9 विद्यास वि विभिन्न विस्का वर्ष क्रिया क्या हो वह (बांगक १० प्रका १, १६६, विदार १८ वन का २६,२४)। वृद्धिक वि दि प्रथमोनित निरीकितः रोबोलकाश्चिमवश्चिमपुष्टए' (ज्ञा)। महिद्रका देशी सहद्रक्ष (पट )।

बहाय एक [बाह्य] ध्यून कराना । कर्नेः

बहारिक्जर (थावक २१० टी) ।

विद्यास अवस् [स्विमि + चर ] १ पर पुरुष वापर-और से संबोध करना। १ सक निमम-भेग करना । वश्च विद्यारंड (स \*(11# विकार हुं [ब्यभिकार] १ पर-के पा वर-पूक्त वै क्षेत्रोत (छ ७११) । २ त्यानकास-प्रसिद्ध एक हेतु-सोच (धर्में सं ६१)। विश्वजीत वेडो यह = वर्ष ।

યેવઅક યુક્રફ}ા

निर्देश और दिंगे नहीं। दिलान निकाने की कियान (सम्मन्त १/२) क्या १ ४, १ ६)

वर्षियाची देवी वाहियाचीः प्रस्तन्यास धरिहित्यपश्चित्राल्य नेव से निवर्ष (वर्मीय **v)** i विद्या पूर्वि पहिलको 🕉 वैश्व पार्वि परा (चय)। पश्चिम पि कि रोज, शोक्ता-कुटा प्रकारी में 'बोलो' (हे ४ ४२२) कुमा वण्या **१२=)** 1

बहु पूंची थि विकास सम्बन्धनीयोज (\$0 Rt) 1 वह देवी यह (हि रे ४ पत्र ∤ प्राप्त) । पहुचारिणी औ हि | मनोबा, बुलहिन (दे W X ) 1 बहुज्यों की हिं। व्येष्ट-मार्ग पति के बहे गार्द की बहु (दे ७ ४१)। बहुमास र कि रमध-विशेष क्रांश-विशेष जिसमें चेनता हुमा पति क्योबा के अर ते बाहर नहीं निवसता है (दे ७ ४६)। बहुरा की [के] रिवा किवारित (के ४ )। बहक्किया (यन) की बिमुटिका विश्व नन वाची औ वहरिया (निन)। बहुम्बाकी दि विशेष तत्व (१७४)। बहुद्दादिजी की [द] एक की के राह्ये हुए व्याही काठी दूसरी भी (वे ७ १ ३ धर)। बहुकी [बस्] बहु, नार्या नारी (स्वय्य ४२ पायः हे १ ४)। बहास पूँ वि] छोटा क्य-स्वाह, पुनयती में पश्चेमी (रेफ ११)।

बहोकिया की [ब] देवी वहीज (परन्य वच २१४)। बाधक [बा] यदि करना चलना। बद्र (से ६ १७ वा १४६ कुमा) । बासक विस्कृति मुखना। बाद (से ६ दश हु४ १)। बा बक [क्य] कुल्या । इ. बाइस ावेशिय पूरिमदेखिमवाद्मसंवादमं केन्वं (दस्ति २)। वा ग[वा] इन सर्वे का पूर्वक सम्स<del>व</del>— १ विकल्प यथवा ना (प्राच्छ क्रुमा) (२ प्रप्रकर, थीर, तथा (उसे प्र**ं ११ मुख क** ११)। ६ स्थिते को (कुमाः ⊯प्य नुकार, २२)। ४ यवणास्या फिल्बस (का )।

इ वाहरवं क्षमानका (विते १ १४)। इ

(ল ४ ४)।

स्वसा 'कप्पसूत्रां छुछेछेन कास्त्रकाहे छे कामसेणु वा' (दि १७ सूत्र १ ४ रे ११ सूत्र १ व १ १) । च पाव-पूर्ति (का २६० १८) । बास्रक १ हिंगे पुन ठोडा (पर्) । बास्रक १ हिंगे पुन स्वस्त्रपाय (पर ) । बाह्र कि हिंगिईस्ट १ वीक्तेनका चल्छ (साचा पन जन ठा ४ ४) । २ वाल काम सामार्थ में पूर्वपाय का प्रदेशका करनेताता (स्वस १ २ विचे १०२१ हुआ ४४ वेस्स १२०, सम्मत्त १४६। वा ६) । १ सामान्य शिवक स्वस्त्र वर्ग का सहसामी

बाइ वि [बाजिए] गायक स्रीन्यायक कहन-बाला (विदे ८०४) : बाह्य देवी वाजि (एक) । बाह्य वि [बाजिक] वयम-संदर्भी (सीय-स्या २४ पति)।

ध्या २५ पाड़)।
बाह्ब कि [बाजित] रे पाठित पडाया
बाह्ब कि [बाजित] रे पाठित पडाया
ह्या (जय २० १४ मिली २०१०)। २
पदा हुया 'पामिम बाहर एस' (हुपा
२०) 'ममाहि कि बाहरण केहेल' (हु
२,१०६)।

सहित्र वि [वादिक] है बात है उसका सहित्र कि [वादिक] है बात है उसका पत्र है। । वेड्र देहे। २ स्तु है कुमा हुआ सार-रोणाला (विते २६७६ है) हैहें। १ क्यार्थनार, 'पराण्डमप्यानक स्ट्रा होते वर्षोत्रिय निवार (क्या) 'विवाद मुद्दे एसी निवारों कारक्य बुदुमहों' (वर्गने पहे)। ४ वें नहेस्क का एक तेव (व्यक्त २६०) वर्ष है)। साहस्त्र वि [वादिक] है नकामा हुमा (धा

पाइक कुमा २ का १६७ )। २ वर्गका प्रमान का १६७ । २ वर्गका प्रमान कि १६० )। पाइक म [बाय] र वाला कारेक (क्या)। २ वाल काले वी कला (स्म वहा कीय)।

वाह्रभ न [बाय] र वाना कारिक (कव्य) । २ वाना ववाने की भना (क्ष्म = ११ और) । वाह्रभ नि [बाव] बद्दा हुया चना हुया। पुत्रकुंकुक्रभ्यंक्षियपनिध्युक्तास्थ्योर्थे (पुर २, ७९) ।

वाहेगण न विषे विका कृताक भेटा (क्य १९७ टीप्र के क १९)।

वार्डमणी ) की विते वैंगन का याव. वार्डमणी ) बुन्ताको (राज यासा १७---यम १२७)।

पन २९णाः भाइता [तें] देवो बाइया (च्द १०६१ टी)। भाइतांत देवो वाय जनावम् । साइवांत देवो याय जनावम् ।

पाइन्य का पाइन्य नाय दाना (हुस ११ वाइन्य क [वादित] कास दाना (हुस ११ व्यक्ति)।

काष)। वाह्य वि [स्थापिक] विपर्वत है हरावस्त सकट-पुसर एका हुमा (विने स्व.६)।

वाह्यः वि [अधादिन्ध] १ वर्गायन्य ज्यांत्रतः। २ वक्र देशः (अप १६ ४--पत्र ७ ४)।

बाइस देवो वा = म्ये : बाइयड्य देवो वाय = वायप् । बाईकरण देवो वाजीकरण (एज) ।

बाइक्टर केवा वाजी उटप (पान)। श बाल पुं [वायु] १ यक्स बात (कुमा)। १ कामु-राग्टेरकात वि (क्यु वा रें ध १६)। १ कुप्-मिन्टेन (च्य ११)। ४ वीयमेन के प्रश्नेचन का प्रविपति केव (ठा १,१— पन १२)। १ महान नेवे स्थिप स्थापन महान का प्रविपति केवता (ठा १ २—यन ४०० धूस १ १२ थे)। आम पुं

िकायी १ प्रकारत प्रकार (ठा १ ६—पार १४१) १ १ बाह्य छरीरताला कीम (वश्र) काइस प्री क्वियिको बाह्य छरीरप्रकारा बीच (ठा १ १—पार १२१) पि १३४) । कास स्थारे आस्य (बी ७ पि १४४) । इमार प्री हुमारो १ एक वेच-बादि कामारों के एक स्थापत बादि (चये)।

र हुरूमान का पिता (पठम १६ २)। श्राक्तमा की [फिटककिय़] नामुक्तिरोप नीचे नाहुनेशाला पामु (पर्स्स्य १००४ १८)। साहुन्य नेती काहुन्य (मन)। स्क्राय नेती

कार्य रचा कार्य (यव)। कार्य रचा आय (पन)। कारणविस्ता पुन किंच शक्यंसक] एक केन्नियान (स्वर १)। पर्वस पुँ[ प्रवेश] गनाम महोचाः गातावन

पर्वस ्ट्रिमेश्] जनमा करोबाः वातानव (क्षेत्रसा १०) । "प्पड्डाण वि [ प्रविद्वान] नामु के सावार से प्रकेतला (धन)। "सूड्

पु [मूखि] अनगान आगोर का एक परुषर—पुरुष रिष्य (क्य)। बाट पूँ [दें] श्लु, इन्ह (दे ७ १३)। बाइडा वि प्राप्तको १ प्राप्तावित समस

ह्ममा (समा २ १ पंत्र ६१)। तः कपस्यः वज्ञा (ठा ४१—पत्त २६६)। मासक्त पुर्वि १ विट। २ मार स्पर्यात

(वे ७ ८८)। धाराध्यक्षमा क्षी [व बारोस्परिका] पुष्प-परिसर्पे की एक वार्ति ध्राप से बसनेवाबे कलु की एक वार्ति 'शास्त्रवाहकपुष्प स बार्गाहकवागीय (उपह) स्थिरोधिवासिपीय-

कार्याहकराजस्य (२०६) सथारोसिकायिधित-वर्णा यं (पर्रह १ १---पण व)। बाहकसास वृं [बातोब्रुआस] प्रत्यस्थित प्रका 'बाज्यस्य (१२२३) से बाज्यविसा' (पर्रह्म १---पण २१)।

प्रस्तव ( प्राप्त ) विश्वी कार्य में कार कुषा (शाता १ ८ प्राप्त ने १४६ धीर)। बाक्ष्या की [बाह्यय] मूच-मक्क पशु केंद्राने का बात कुका (दका १६७) हैका ११३ था १४७)। वेद्रों सारह्या !

बाधरिय वि [बाह्युरिक] बाब में फैठाते का बाग करनेवाला व्याव (पर्छा १ १) विरा १ १—यम ६४)। बायक वि [ब्याकुक] १ बनकामा हुमा (उबा

स्त पुरर । क्य देश है र ११)। र वृं सोस (पराप्त १ ६—पन ४४)। शहूम वि [ोमून] स्तमुन वना ह्या (स्प २२ ये)।

बारुक्क वि [बात्क्क] र बारु-पैयी चन्यत्तः। २ तुं बाराबगुद्ध (हे १ १२१ प्राक्तः १)। बारुक्कमा व [बें] चेता ध्वीद्य 'निक्को विय बारुक्कमो क्रुवीदि' (चन)।

वाससम्म व [स्वापरम] व्यानुत-क्रिया व्यापार (वच १)। वाससम्बद्धाः

धारसमा की [स्थाकुकना] स्थाकुत करता (वथ ४)। वारुक्षिय वि [स्थाकुविदां] १ स्थाकुत करा

क्षमा (राष्ट्र) । २ निक्रोनित सोम-प्राप्त (पर्यक्ष रे से----पन ४२)। माजकिम्माओ (वि]कोमी धार्व (ना ६२६)।

वातक केवी वातक सम्बद्धाः (हे २ हरू पर्)। बाउद रि दि बार्युन्ते बाबाट प्रतापनीय बद्दराध (रे ७ १६। पादः वर ) बारमध्य प्रेन कि पुरुवा, प्रश्राको में 'बार३ 'बर्गलरियमितिबाससयो व्य स परम्पूर्व ठाइ" (या २१७) "बानिनियमिति बारस्य व न परन्त्रई ठाई (वका १४)। बाउन्ता । हो ि थेथे हाउउमा पाउना पाउनी न्यानिद्धिमस्तिनाक-ह्मय का रा अपूर्व कार्य (या २१० स. वे ६ £2) i माजन रेपो भाउन = बातूनः 'परिशासक बाजनो हमित्रा नयरनीएछ (बर्बेडि १११ য়েছে १।। बाऊस देशो बाइम = म्यापून (शङ्क १)। धाउन्हिञ्ज वि [पानुब्रिन] १ शानुन वना ह्या । २ नास्तिक दननि १ ६६) । याम वह पार्य विकास । बार्ड (बहा) : बह यार्गन (महा) । क्यम बाउज्जन (रूप ११) । देख पाइडे (बहा) । थाण मद्र [या**चय्** ] १ पद्रानाः २ पद्रताः बार्ड, बार्ट्ड (धव करा) । इबहु साह व्यंत (नृपा ११ पुत्र १८) । बार्यास्त्र वि [बानरिन] परन-प्रीत्त हुरा व हिराद्य या चैताया हुमा (ब्य १७६) । बाएमरी ध्री [पर्गाधरो ] बामजी देशी कान्त्रचे पुन्पयरायद्श्वा (वर्षि सम्मत्त 311) 1 यार्थातः । ध्ये विद्यानः, नदीयकः याज्ञान्य है बपुर कि यमनी वारिका चपंदरात्र ? मा) निमहर्दिति (चनीति ६ मदर राख र 1—पत्र ६३) बाद ) ब्लो यक्ष करह (धील विने १० wallen t-retti षा इ. ( विशास) त्यरात्र का तक्षण उ. बाद्यवस्य भ्रा संदर्भ शास व हो प्रसिक्त \$ (12 1) श्राप्त (स्मार्त) क्या क्या ह्या (44 1) यागर ४६ [६३३ + ३) ब्रांडगाल करना कृत्यः क्षान्यः, वानाधा(कृतः हित्रः है)। ध्द = स्माय प्रमस्मान (तुर ३ स त्त कर । क्षेत्र) । यह वागरिया (वन

७२) । 🗱 यागरित्रं यागरित्रप् (🟗 २१४ दम)। वागरण न ज्याबरणी १ क्यन प्रवितक्त, बनरेश (विन ११ कृम रा परवाह ११ थे) । २ निर्मेषन, उत्तर (धीर उना क्या) । **१ शब्दशा**स (पर्वेषि ६८३ मोह २) । पागर्रण वि क्याकर्राणम् प्रावकारम करनशता (सम्म २) । शायरकी 🗱 किया बरभी क्या ना एक मेद, परन के उत्तर वी भाग उत्तर क्य वचन (ठा४ र---पत्र १ ६)। धागरिय वि ज्याङ्को ३० वस्ति (उपा र्थत ६: बर १४२ टी पथ ७६ टो) । देशो बायक्षः = स्वाइतः । যানভাৰ বিদেশতী মুখ কী আৰু (জাল १६--यम २१६)। बागढ वि [पारु इस्ते] बूध की रतका—दास ते बना हुया, 'वायम स्वतिनवस्ये' (यव ११ र--पण **११६)** । यागधी क्षी हिं] बस्ती-विधेय (बस्ख १---पन ३३)। पारिक्ष वि [यारिक्षम्] बहु भाषी, बाचल (गर )। वाशुर द [वाशुरा] मूल-कवन, बाल प्रत्या 'र रे राज नापरे' (नाड ७६) । पागुरि ] वि [ पागुरिन "रिक] रेपो बागुरिय वाहरिय । प्रययम में 'बाबरी' 'माचरमयरोदिए व बादिवि वान्स (१थ) ल' (क्ल्द्र १ र—यक २१ मूच २, २. ३६ रिता १ व—पत्र ६)। पापाइय रि बिरापातिको स्थाधन म स्त्रक (# #-- 4# X15) I या गाउम वि क्याचा नम् । ध्याचात्र न क्ले-पास (सूज र --- पत्र २६६) । २ स. बराय-रिटेच--निट् दशनव वार्ति मे होने वासे भीत (धीर) र धाषाय 🐧 [कशाया र] १ स्थापना (नुश्य १ ) । २ ल्यास (~र ६३१) । ६ प्रतिकण षकारट (अन, घटपना 🐧 ) । ४ दिए राज्यच प्रश्नी व प्रश्निश (चीर) । याप-दिवृति [क्या हिंदी] प्रतस्य सन्ता (iqt 1 qc 4.5) 1

वाष्ट्रिया वि [स्याप्तित] श्रेवायमान, बोसवा (खाया १ १-- पन ११)। बाधक नुं हि | एक शविय-वंश (ती २६)। वाय वैको दाय ⇒ वाचन। करक दाशी समाज (शार---धामति ६१) । संक पाणिकवा (हम्पीर १७) । वाश्य देखो वायग = बापक (इध्य ४१)। वाविय देवो याद्रभ ≔ गवित (स ६२१)। बाज देवी याय - ध्यान (इप २ १)। थाजि १ थि।जिन् स्थ, भोड़ा (विपा १ w) i काकी परव्य न [बाजी करवा] १ जोर्य-पर्यक बीपब-विदेश । २ उसका प्रतिसाहक साहर धापुर्वेद वा एक श्रेष (विदा १ ७---पत्र बर) । श्राक्ष पूर्विटि १ माट कंटक ब्राहिते मी वासी गृहकी की परिवि (क्सा २३ १४) मान १९९) : २ वाहा माज्याची नवटा बृदियासा श्यानः विष्यानगढ्नाडं सद्दर्शनं बंपानेहं (बंबा मा २५अ) वे ७ ११ हि॰ वडड)-'वंदे को बाइले पानाजनियेइले करेडले' (विचार ४ १) । १ इति वर्गात से परिवेधिक गृह-नपुद्व रच्या, पुरस्ता (३५ । **भ्यते श**रिप्रमानातन स्तिसीमध्य' 44) ( शार्ववरा धी [र] दुर्धर, मोरहा वा कारही ( X w S) वाडम देखों बाह्र (बिंह १३४) शिंग रै ४--पम ११, दर द २८६)। बाडण रेको पाइना 'परशेहस्त्रनावलबेसम ह्वावयख्याङ्गाई, (देश ६६४) । बाहर हूं [बाहर] बहरातम मनुर-रिवर ध्यम्ब (ब्राप्त) । बाउदागत हैंग [वारघानक] १ एक बोध यात । इति अन बार का निवानी साहै तेण पार्थापाचा इत्तिया विश्वादवा कर्या (नुष १, १३ पदा) । वाडि देशों पादा≖ यसो (वा ा हामा दे 1 (11) pp-u पाडिजा का [पारिया] बरोपा, प्रधान-

ाण्यादियां (ना ६ चाव ६६ दे ७ ६६।

(40):

(१७ १७)।

यक्)।

48)1

वाडिअ ( र ७ १३)।

थाडिम दुं [वे] प्यु-विशेष पर्वक पेंडा

वाहिक रू [वे] इसि की (वे ७ १६)।

धाडी की दि । इति बाड़ 'बरवारे कारिया

कटएहि बाद्यें (कुत्र २६) दे ७ ४३। १४०

बाडी की [बाटा] क्योबाः उद्यान (बर्गरी

वादि १ पू दि विजय-सहाय वैश्य-मित्र

वाण यक [ त्रि + सम् ] विशेष नमना--

वाय वि [यान] वन में *स्टरन*ा वन-संबन्धी

(मीप सम १३)। यस्य प्यस्त्रार्थ

[प्रस्य] बन में उड़नवाला वापस तृतीय

माध्यम में स्थित पूरुप (धीन हुए ३७७)।

मंत मंतर बंतर पूंछी [क्यम्बर] क्याँ

की एक बादि (सम; अप २) सुर १

१३७ ग्रीफ जी २४ महा सि २४१)।

क्की री (परएए १७---यम ४**३**६ जीन

२)। वासिआ औ [मासिका] सन्द

शाप्य देवापाण ≃पानः वत्त व ["पात्र]

याणय प्रदि] वस्त्रमारः संबद्ध वदानेवासा

वाजर ईन [बानर] १ कलर, कपि यजेंड

(पर्दा ११ पाम)। २ विद्यावर शनुस्यों

का एक बेरा। ६ वालर-बेरा में प्रश्रम

ममुख्य (पश्चम ६ १)। वरी को विद्यारी

किन्त्रम्बा धामक एक घारतीय प्राचीन बगरी

(धेर४ ६)। फिंब दे किसी वाशर वैश का कोई मी धना (पडम स, २३%)।

दीव प्रे विरोपी एक ग्रीप (परमा ६

१४)। अय र् [ व्यम्] स्त्रपान (परुप

१३ ४३)। यह पू [पिति] नुशीय

रामका का एक क्षेत्रापति (वे २, ४१) है,

१२)। देखो बानरः।

क्छेप (सबि ३३)।

रिक्सो (वै ७ ३४)।

पीने का प्याना (ते १ १ ≈)।

नद होना । बासह (?) (पारवा १६२) ।

पाइमसङ्ग्रहणको बाह्रणा = स्थानह

**बाजहा देवो पापहा** । (१४१ मी)

वाणा देशो वायणा = गणना : यरिल र् िचारी] सम्मापन करनेवासा सा**तु,** सिमक 'एसो ज्या था की ज नागुमिणो पद्मी

पुक्र कला( (कप १४२ टी)।

वाप्पारसी की बिरस्थानी मास्तवर्ष की

एक प्राचीन नवरी जो बाब क्या 'दनारस'

बाम से प्रसिद्ध है (है २. ११६ खाया १ ४ जगा एक उद् धर्मीय १० पि ६०१)। माणि देखो विधा = वस्तिव् (धवि)ः उत्त

पुरा व विका वेस्य-धनार, वनिया का सब्का (क्रूम ११, वद २२१३ ४ ४ सिरि १८४३ वर्षीय १ ४) । बाजि 🖶 बाजि बेबी बाजी (संति ४)।

वाणिअ प्रविधानिया व्यापारी बैरव (मा १२) सुर १ - २४० ११, २१ नाट---मृज्या ११३ वसुः सिरि ४)। २ एक भाव का नाम (चवा भावः विपा १ २)। वाणिअ (भप) चेको वाणिख (एक)।

बाजिञ केवो पाजिञ = पानीय (यः १०२ सिरि४ सुपा २२६)। वाणिक्रम दु [बाणिजक] बांनगा, वेरय व्यापाधि (पासा काम ८६६ या १११ क्या

युपा २२६ २७६ प्रासु १**०१)**। बाणिट्य न [बाणिज्य] १ व्यापार, वैपार

(सुपा १४३) पवि)। २ एक वैश पुल-कुक का बाग (क्य) । षाणिका को [बणिक्या] ब्यापारः 'श्रीकृत्तर्त

क्यरं नासिन्नाए धमित्तव्' (साथा १ १६)। वाजिक्य दि [वाजिक] नाग्रिम कर्ता व्यापारी (यदि)। थाणी की [बाजी] १ वकन वाक्य (प्रमा)।

२ नाम्बेनताः सरस्यती देवी (कुमाः संति ४) । ३ **अस्य-विशेष** (पिम) । बाणीय बेबो पायीम (कप्र १२१)।

वाणीर प्रुं [के] कम्यू कृष्ण वापुन का पेड़ (के w X4) i याणीर पुवानीर] वैतस-कुन वित का पेड़

(प्राप्त या ६१६)।

बाणु जुल पु [वे] बिष्ट बेरक 'एसो कृषा क्याको बीसह बास्यु बुध्यो कोवि' (उप ७२८ थै)।

वास देवो वाय=बाद (ठा २ ४--पन < % ) 1

वातिक ) देखो वाइअ = शतिक (प्यह १ वाविय १-पन १८ घोष ७२२)। वाद देवी वाय = नाव (धान)।

वादि केको शङ्क = गदिन् (उपा)। बानर देखो धापार (निपा १ २--पन ३६) विशे ८६६: बुपा ६१८) 'पुरुषमनवानराखि व शार विमयंति विकार (धर्मीव १९१)। वार्पफ देवो वार्दफ । वार्पफ्द ( पड्)। वापिड (शी) देखी शबड = व्याप्ट (नाट ---

वेसी (७)। थाबाहा की ज्याबाधा विरोप पीड़ा (लाया १ ४ वेदम ११६)। शास एक [यसय्] गगत क्याना कै क्याना ।

बागेह, शामेरन (सर पिंट ६४६) । संक्र धामेचा(ध्य प्रवा)। वास विकिश मृद्ध (दे ७ ४७) । २

धाळ्या (पद्)। वास वि विस्ती १ सम्य, वीया (अ.४.२--पन २१६ कुमा सुर ४ १ वडड)। २ प्रक्रिय धननुष्ट्रम (पाम पर्यष्ट १ २---पण २६ परव ६६ १६४ कुमा) : इ धुन्वर, मनोहर, 'बामकोम्प्झा (पाम) । ४ न सम्म पक्ष 'कामत्वो' (पराम ४१, ३१)। थ वाया रापेर (ना ३३)। स्टोक्स**ा को** ["ओपना] पुंदर नेत्रवाची की ध्माफी

"ओक्साविन् । शारीनिक-विशेष प्रयुत् को यसक् माननेवाचे मत का प्रतिपादक वार्शनिक (पराह १ २—पत्र २०)। सङ्ग वि विते प्रतिकृत धावरत करनेवाता (ब्रह्न १)। । भक्त नि [ नर्ते] नहीं मर्च (हा ४ २—पथ २१६) :

(पाध)। स्रोक्त्वादि, स्रोगवादि प्र

बाध पु [ क्याम ] परिमाण-विशेष, बीचे फैनाए हुए दोनों हाचों के बीच का धन्तराज (पव २१२३ भीप) । षामण प्रन [बामन] १ संस्थान-विशेष सरीर का एक तथा का धाराट नितमें

नापरिंव र् [बानरेन्त्र] बानर-वंशीय पूरवॉ वाराजा वस्ती (पदम १, ४)। माभधान पूं [चे] इम पुरन्दर (दे ७ ६ )।

<b>*</b> ***	वाइअसइसक्षण्यनो	बासजिञ्ज—बाय
हाब, पैर साथि सववन कोटे हों सीर काली हर साथि पूर्व या कन्नत हो वह करोर (का	वाप सक [वाश्य] १ वहवा । २ वहाना । वाष्ट्र, वार्षीस (क्रुप्त १६९)। 'साववका	वाय पुं [क्यांच] १ क्यर, मध्यः २ बङ्गाला क्लः १ विक्रिष्ट वीत (मा २६)।
(पत्र १४७ सम् १४)। १ वि उत्तक सामार के ठरीरनामा सुरग सर्वे (पद्र ११ के २ ६ पाम)। की णी	धुमक्तस्त्रस्ती पाक्षस्या पर्यक्षः नामस् वेहें (धर्मीकं ४७) भूतं वास् जनन्यस्मी (बंबीन २१)। कहा बहुर्यस्य (सुना ५२६)। स्टेह	नाय देखो बाग = वस्कं (विषा १ ६—पन ६६)। बास बुं [आस] विवाह, समग्रे (ब्य २६)।
(सीक सासाद १—पन ६७)। ६ पू मीक्स्प्राकाएक सक्तार (से २ ३)। ४	बाइकल (ड्रूब १६८)। इन बायणिख (स ३ ४)।	वास दुं [स्थाद] विकिष्ट पर्यत (मा २६)। वास दुं [वास] १ वयन नीता। २ क्षेत्र-
क्षेत्र-रिक्टेस्ट एकः व्यक्त-रेगता (किरि ९९७)। १.त कर्यो विदेशः जिसके उत्तर हे वासन रादौर की प्राप्ति हो वह कर्य (कम्प १	नाय शक [का] बहुता, यहि करता कवाना। नायंति (अन प्र.२)। वह नायंति (यित बर शुर १ ४) सुध्य ४३। वह प्र	केत (सार्व)। भाग प्रविद्यारी शतमन कवि । २ सूमना।
Y)। बद्धी को [िर्घर्छ] कंग-विशेष (वी १४)।	१ च)। बाय सक [वे स्क्के] युक्तरः। वासदः (स्रीतः वे१ अत्रः)। बहुर, बार्यसः (स्वतः ११६१)।	वे पालना, क्षामा ४ रणका। १ बार्च कमछ । ६ पण्डिकत विनाम (मा २६)। बाय वि [क्यांस] किरोप चहुछ कर्णनामा
हामांजिक्ष नि [दे] नष्ट वस्तु—पस्तिवत्त को   फिर से प्रदेश करनेत्रात्वा (दे ७ १९) । मामांजिक्षा को [दे] दोवें काह नी वाड (दे	वाय सक [बाइम ] बनाना । तक कार्यंत, बायमाण (सुना २६३४ ४६२) । इ.	(यर २६)। बाय वि[बाक्] बच्चा सोसनेवासा(सा २६)।
<ul> <li>१)ः</li> <li>शामद्रण त [क्यामर्वेन] एक तथः</li> <li>स्वायम्य द्वार द्वारि द्वारे न एक दृश्ये थे</li> </ul>	याद्यक्य (४ ६१४) । बाय वि [बात] युक्त, सुवा क्लान (पद्या से १, १७ पास साम्रा कुमा) ।	बाय प्रं [बार्च] १ प्रतन बाग्नु (अन्य खान्य १ ११४ को ७ कुमा)। २ क्रप्यमं (वर्ष १९६८)। ६ पुन, एक वेच-विवान (सर्म
मोइना (सम्बन्धः १ — पत्रः १६ कम्पाः सीत्)।	, याचपुँ [के] १ वणस्पति-विकेश (सूत्र २ के १६)। २ व सम्बंदिक ४१९)। सागपुँ (शादीक्षमुद्ध, संबंदिक १६ समि।।	१)। इंद्र पुंत [कान्य] एक केन-वियक्त (इस १)। कम्प्र म[कर्मम] धराज मानु का तरका, पाक्ता पत्त, नर्जन (धोन ६२१
शामरिष्टु [के] बिह्न नुकेलः (वै ७ १४)। बासब्दर् पु [सामस्ट्] वक्तीक दोनकः (पाद्यः पदनः)।	बाय वि [क्यांस्टु] संवरण क्रलेगाचा (या २वे)।	ही)। कृत पूर्व [कृट] एक देव-विभाव (क्य १)। तीम पुं[स्कृत] कतात वादि वादु (हा २,४पत वर्ष)। उम्ह्रपूर्व
बामा को [यामा] बननार पारकेंगानवी की यादा का कम (नम १२१): यासिस्ट रेको बामीस (पटन १३ ११):	काव वि [कमारास्] मझ्ड सपराची (का २६)। बार्ष प्रविद्या १ पवनः समु। २ क्यम	[क्थज] एक केन-निमान (सम १)। "पिसमा पूं ["निसर्ग] सपल नामुका
बामी बी वि] की महिला (के॰ १९) : बामीस वि [क्यामिभ] मिथित पुत्र, बहिन		छरता, पर्वेत (पत्रि) । पश्चिमस्ताभ पू [परिभाग] इन्छरति सम्बे प्राप्तों को रेका (सम ६ १पत्र २०१) । प्राप्त
(पाम ७२ ४ वर्षु ४४)। बामीसिय वि [स्यामिर्मभव] कपर ध्वी (यवि)।	याप पुँ [बाक] ऋग्वेद वर्धाव वाक्य (वा २१)। वास पुँ [क्याम] १ वित वाम। २ व्यव	पुंत ["प्रस] रेश-विधान विशेष (ग्रम १ )। फब्रिया पूं [ परिषा] ब्रम्पण्यानि (श्रम ६ ४)। रह्य पूं ["रह्य] बनस्पवि-विशेष
बामुक्तय वि [क्यामुक्तक] १ परिहत, पहुंचा हुवा। २ प्रतन्तिक सरवा हुवा		(प्यक्त १—मध १९)। "ब्रस्त वृत "खेदय] एक देव-विमान (बम १)। बच्च वृत ["सर्च] एक देव-विमान (सम
(पीप)। बासूद्र वि [स्थासूद] विषुष्ठ सान्त्र (पुण ह १२६१ १२ १४३१ तुरा छ )।	ward farmed a mar down a nite	१)। "सिंग पुत [" रूप] एक देव-विनास (धन १)। "सिंह पुत ["सुद्ध] एक देव- विमान (सम १)। । । । । पत्त पुत ["सर्व]
वासाइ दु [स्थायोइ] दुवत प्रार्थेत (क	(all 58):	एक देर-विमान (बन १ )। पत्र केर-विमान (बन १ )।

(48 98) |

वाय व [याप] तुक्क्षपृष्ठ (था २६) । भाग वि [वाज् ] १ ध्रेक्नेवाबा । २ नातक

याथ पूर्वाम् १ तस्य-विवाद शासार्थः (योजस्य १७३ वर्गीत व । प्राप्तु ६६) । प्

विद्या वसन (सीर)। ३ नान साल्याः

१ ६२६। दुसा ६३८ मनि) ।

(चर्ष)।

नामाद्रण रि [स्थानाह्न] आणि-जनक

3).0

च्छाद्रसंद्रस्य वर्षं मार्ग (वा १२६)। ४ वनामा प्रमुक्तसम्बन्धन्यवर्षे (विदिष्ट १४०)। ४ स्त्रमं स्थित् (वा १६)। च्या दुं [पी] त्रस्य व्यक्ति देविष्ट प्रमुक्त सामार्थ (व्यक्त ४१ ४०)। स्थि वि [पिया] राज्यार्थं की वाह्यसमा (व्यक्त ४६)। व्यक्ति १८ २६)। व्यक्ति १९ समार्थः। ६ देव्य, व्यक्ति १९ समार्थः। ६ देव्य, व्यक्ति १९ समार्थः। ६ देव्य, वि १९ ४३।। १ व्यक्ति प्रमुक्ति १९ व्यक्ति १९ ४३।। १ व्यक्ति समुद्र (वा १४)। व्यक्ति विद्रास्ति । १ व्यक्ति समुद्र (वा १४)। व्यक्ति विद्रास्ति विद्रास्ति । १ व्यक्ति सम्बन्धन्य । १ व्यक्ति वा १४।

धोनेनासां। स्तूचनेनासा (धारके)। वास केवोः वास (धारके)। "वास ट्वं[पान् ] र सर्वतः। र पर्वतः। के पुत्रकाः भूतः। स्तिरकाः दिस्तः । के चीका साव (धारके)। केवो पास = धावः। "वास केवो पास = वास (सारके)।

बाय है [पाय] १ रका करण । २ वि पीलेबाबा (मा २६)। "बाय केवो कदाय = घराम्य "बहुबाम्मील वि देवे विगुरुकमाणस्य वर मध्ये" (३व)। बायकर हु विहे पहल ग्रह्मयः। १ बार,

बायकच पुष्टि देशक मेहूया। २ बार, बरपति (देशक यह)। बार्यास न [दे] बेंगर, कुताल मेटा (बा। २ । वंदोन ४४ पर ४)।

२ । संबोध ४४ पत्र ४)। सार्थविय वि [बागन्तिक] वयन-शाव वे निर्मात्रत (राज)।

हिन्द्रीय (राज)। बादारा वृं [याजक] १ व्ययकायक, व्यक्तिका वृद्धि है वर्ष का प्रकारक रुख (सम्बद्धा १४६)। २ कान्याय सम्बद्धक पनि (राज

कुछ व सम का अन्याप्तक काम (सम्बद्धः हंग्ने)। व व्याप्त्यम् युभ्नाप्तक पुनि (श्राष्ट्रः संस्थाप रहे. वार्षे १४७)। व यूर्व-प्रमा का मानकार पुनि (व्यक्षणः है—व्यकः प्रमान देशः पंता है, ४४)। अ युक्तः प्रमान केन स्पृति चीर कामकार, वारावी युक्त का वर्षां भी व्याप्तवादिनी (पंता ह ४४)। ४ वि क्याक महीनामा। है वहाने-नामा (व्य १४)। व्याप्ता वि विद्यान है । व्याप्ति विद्यान हिंदि ।

मद्वा)।

वायस पुं वायक विज्वाय बुवाहा (वे १९)।
वायसवंस पुं वायकवंश पर वेम मुनिन्ध्य (प्रांव १)।
वायस्य पुं वि पर वेहिन्ध्य (बुध १४१)।
वायक पुं वि पर वेहिन्ध्य (बुध १४१)।
वायक पुं वि पर वेहिन्ध्य (बुध १४१)।
वायक पि विभाइत्य स्ट्रिंग प्रवन्ध्य वर्षेषामा
(वाधि ७)। वेको वासस्य ।
वायकपड पुं वि वायनिरोध वर्षेष्ठ समक्ष्य वाया (वे ७ ११)।
वायकार पुं वि वर्षे वर्षे पर वायि (वर्ष्य १-अम प्रवान ।

क्का र )।
बायण न [बादन] र बंधाना (तुपा ११
१९६ कुत्र ४१: व्या कृत्यु)। २ वि
बंधानेवाचा (१७ ११ टी)।
साराया न [क्] श्लेम्बोपाशन काम नदार्व अब बंधा माता छाहार, बासन (१७ १७)

वायणया 🗚 [वाचना] १ पठन ग्रस्-

वायणा 🕽 भ्रमीये सम्बद्धन (३५.२६.१) ।

२ ब्राच्यापन, पदाना (सम १६, इन)।

६ स्थानमात्र (वत ६४)। ४ तृत्वन्याठ (क्या)। वायणिक हि [बायनिक] वयत-येक्सी (ताठ--विक ६२)। वायय कैयो वायदा = वायक (६ ४ २व)। वायर कैयो बाराय्य (६ १ २६८; कुमा। यदि यह)।

वायव वि [वायव] वादु रोक्तावा, वाद-रोजी (विपा १ १---पत्र १) : वायव वेको पायब (ते ७ ६७)।

वायक्य वि [बायक्य] वासम्ब कोस्स का (प्रणु २१६)। यायक्य पूं [वायक्य] १ बायूरेरता-संबन्धीः

(कुमा) । एक ८ ४४, महा) । २ ल. वी के चुर के उसे हुई पुसि—एम' 'नायमधाहरसस्हावा'

यायच्या स्में [बायज्या] पवित्र सीर स्तर के बीच नी दिखा, बायच्य कोस्स (स्न १ ---पत्र ४७व सूपा १८३ २१ )। वायस र् [यायस] १ काक कोमा (बनाः प्राप्त १६६ हे ४ ६६२)। २ कायोरसर्प का एक बोप कामोरसमें में कीए की तरह हर्ष्टिको इकर-अवर पुमाला (प**र १**)। परिसंबस न विपरिमण्डस नियानिकोप कीए के स्वर भीर स्वान मादि से शुभाशुम फल व्यवसनेवासी विद्या (सूच २, २ २७)। वाया औ [ बान्य ] १ नाचन नागी (पायः प्राप्त १ पति स ४६२ से १ ६७३ मा ३२ ४६)। २ वास्त्रीकी मनिष्ठायिका वेनी सरस्वती (मा२३)। ३ म्याकरस्ट-राम्म (नजर ॥ २) । देखो सङ्ग = नाम्। वायाह र वि वाषाटी रूक वोवा (दे अ 14) i यायाङ वि [बाचाट] बाचात बकवादी (बुपा १६ वेदय ११७ संक्रि २)।

१६ वेदर १६७ वंदिर २)।
वासाम पूँ [ज्यायाम] क्वारत गांगीरिक
व्य (ठा १—पर १८- जामा १ १—पर
११: क्या बोटः स्वल ११)।
वासाम वक [ज्यायाममू ] क्वारत करम्,
व्यारीरिक सम करमा। वक्व वृद्ध वि
वास्तारीक कार्य कर्म, व्यिष्ट्रणुँ (ज्य)।

वायार्थिको कार्य कर्षक क्रिकेष कुछ" (जा) । बायायण पुर्व [वायावन] १ दवाक क्रम्येका (क्ष्म १६, ११ व ५४१ गण्या महा) । २ प्रे पर्य का एक हैनिक (क्ष्म ६७ १ ) । बायार पुर्व [व] व्रिप्टिएनाड प्रकरतो में बायार्थ (१० ४६)। बायाद्ध वि [वायाद्ध] द्वबर, बक्मार्थ (धा १२ प्राय पुरा ११३)।

वासास केवर प्राथात (त १, १७)। वासासभा वि [वादित] वननामा हुमा

(स १२० क्रुप्त १९६)। वासुधेका बाब म्यब्सू (मुल १ १२ क्रुप्ताः समारको।

चम १६)। चम १६)। चम चक [वारम्] येकनाः नियंत्र करनाः।

कार वह मही। पड़ मार्टा (मुस स्वार (स्वार मही) पड़ मार्टा (मुस १८६)। स्वड मार्टेड (मुद १ २ ८)। इ. मार्टियस्य, सार्टेसस्य (मुता ४४२ २४२)। मार्ट्यु मिंद्रा सार्टेड प्रकार नाम (१७ बार र्ज [बार] १ बयुह, दूव (सूपा ११४)

सुर १४ २४३ सामै ४३३ दुमा सम्मव

१७x) । २ धवत् ८ वेबा वस्त्र (३४ ६२०

मुतादेश लॉन)। इं पूर्व कावि पहासे श्रविकृत दिलः नैवे चीदवाद, सोमबार आवि (बा २६१)। ४ चीना गरक का एक नरक-स्वान (हा ६--पत्र १६६) । ए बारी परिपारी (जन ६४० ही) : ६ कम्प. बता (दब १,१ ५१)। ५ क्य-विदेश। व व. का विशेष (बएस १७ - वय १३१)। प्रयद् 🛍 ["मुन्नति] रायंका वेरता बाम्भवा की चिवना (<del>प्र</del>मा) । नहीं पर्ने (ब्राष्ट्र १४)। तरुमा स्त्री ि दरमी ] वही (बर्ड) । बहु की [ बार् ] बहा मर्न (रुप्त ४४३) । "बिख्या ध्ये ["वनिवा] वही दुर्वोद्ध सर्व (कुमार पुरा **७**व! २ )। विद्यासिणी की विद्या-सिनी] वही (कुमाः पूरा २ )। इ.व्यी की [सन्दरी] बहा सर्व (नुपा ७६)। बार न द्वार] यजाना (प्रकृ २६) क्रुका या व )। वह भी विद्यी हारका वस्यै (क्य १३)। वास व पास्त्री बरवान, वर्ताहार (कुमा) । पार्त रेखे बार = बारव् । बारबार न बारबार | स्थिर फिर कि है। ३२) मा २३४) । बारत दें [बारक] र बाये कर (जर ६४० दी)। २ छोटा बचा संबुक्तश (विक २७)।१ वि निरास्त्र निमेवक (कुछ २६ पर्नमि १६६) : बार्राहर न दि एक वस्त बल क्या (क्क्स २ ४१)। बारकृ वि [बे] श्रीपरोश्ति (वर् )। बारण न बारको । तिरेव रोज बटकान निकारण (दूमा धीम ४४)। २ छन unar 'बारखबबायेर्ध्य बन्वति पुत्रे सहा-नुद्रमा (सिर्दर २३) । ३ वि सेन्नेगवा निशारक (बुझ ६१२) । ४ ई. हाची (शामा प्रमाप्तम ११२)। १ प्रमेश एक वेट (शिष) । यास्त्र देशो मागस्य (हे हे राः पुत्राप्ट 48)1

पारणा की [वारणा] भियारण बटकार (4x t) : वारत्तः व विद्यारत्ती १ एक घन्तका सुनि (संत १ व) । २ एक अर्थि (उन) । ३ एक समास्य । ४ म, एक वनर (थस्म १ ही)। वारबाज यु शिरवाजी अञ्चल जोबी (पत्र्य) । बार्य देशो बारग (रीम स्नामा १ १६---एव १६६३ छन द वे४२। जनाउँ धंत)। वारसिक्षा की 🐧 मस्त्रिक पुन-विरोध ( \* w % ) 1 बारसिय देवी बारिसिय 'बारीस्क्याक्ष्यक्ष' (स्पा ७१) । बारा **को बि**रस्टी १ देगी जिलम्बर यामी किमक करवे व सन्या एतिया कारा' (युपा **४१६)। २ देखा, बच्छ था प्रश्रपनि** निक्मावद वारायी वृधि विक्रि वा बाब (बद्धि श्रे दी) 'वर्ष ग्यहर्ष नापास्तिकस्पर्य' (विद्यानन्दी) । बारायसी केही बाजारसी (बन्त- 🛚 १५४)। बाराबिय वि बारिती विश्वका निवारश कराया नदा ही व्ह (रूप १४)। बासक्द (बासक्टी १ शोवर्गस्वकेन का पुर्वज्ञान शाम (सम १३३)। २ वि एकर के बहुत (उवा) । श्वराही की [बाराही] १ विदा-विरोध (पडम १४१)। २ वराह्मिक्किरका धवामा ह्या एक क्योतिक-शन्द, वर्षाक्-संविद्या (सम्पत्त દેવદો ( पारि व विश्वरि । पानी, वर्ष (पास कुमा: क्ष्य) । २ इदिः हाकी को श्रीवाने का स्वासः भारी वरिवरलकूरणे (पान स १७७ tu )। शहरा र् ["शहरू] विद्वाह की एक वार्थि, शैक्शासी निष्टुक (गूपनि 🛭 )। समृति सिव] पश्चीका वना ह्या। की इ (हर प्रच )। सम्ब [सुप्] केप वक्षपर (वर्)। वर् िंदी शाबी केनेराला भूग्य (स ७४१)। स्थि पू ["स्रशि ] छ्यूब, कावर (नामत १६)। याह् ई ["बाह] क्रेब, धार (उप १६४ मे)। संवार्त्र [विषा] १ वक शनाह क्यूनि, वो सना श्रुपेत के पुत्र वे

बीर जिल्होंने अस्तान् सरिप्तनेमि के पास थीयाची वी (सन्दर्श)। २ एक भनुत्तर यापी पूर्विको राजा मेरिहक के पूर्व के (सन् १)। १ ऐरवत वर्ष में जराब चीबीतर्वे जिनदेव (सम ११६)। ४ एक शासती जिल्ल प्रतिमा (पर १६ म्हा)। सेपा 🖈 भिया । १ एक राभ्यती निमाप्रदिमा (हा ४ २-- पत्र २३ )। २ प्रवीकोश्र में राजे-बाबी एक दिश्कुमारी केनी (ठर ----पत ४३७३ इक २३१ दि)। १ एवा नाम्बरी (स. ६. <del>- त</del>न १११ रक) । ८ वर्णनीक र्वे च्युनेकाची एक विकासाय देवी (इस २६२)। इर पूर्विशी मेव (बडर)। वारिक र् [के] हवाम नारीत (के ४ ४०)। बारिक वि [बारित] १ लिवपीक व्रक्तिक (पाच्छा से २ २३)। २ वेडिल (से २०२३)। वारिमा 🕏 [द्वारिका] छोटा शरवाना, वाचै (वी २) क्यस्त का(का)दिवाए परिकिती खास्त्रामण्डे । **को जलपुरियमिद्रानुमाधो** चा(? वा/रिवाद विकासी। (वर्षेषि १४६)। बारिका पूंच [वे] विवाहः सारी (वे ४ ४६,

वो क्वरिवयमध्यो बोसीए हिन्सो स्थ।

पाच-च्य इ.६ )। वारिसः देवो वरिसा (विता १ १)। वारिसिय दि [वापित्र] १ वर्ष-शंक्तमी

(एव) । २ वर्ध-बंबन्बीः 'बिहुद्द चढ्ये साध्य वारितिया वि**द्वा**र्यसम्बद्धाः (पत्रम**ः** १ 22) ( वारी क्षे [श्रारिका] बारी क्षेत्रा शरनावा ı (₹ 🕏)

वारी 📽 [वारी] देवी 'वर्गर' का दूवरा गर्क 'बडी वारीवंबे व्यक्ति वयी निहले' (दुर क १६६। योष ४४६ ही) । वारी व [धारि] बच वानो (है १ ४० पि

w )ı बारुभ व [दे] ! क्षेप, वस्ती। १ वि सीमानपुष, या शस्मा सम्हे' (ह । 3×) t

शास्त्रम म [वास्त्रम] १ वन पानीः 'निम्मकः बाद्धमुनंबसमंब्रिसराधिकारपाद्यासुपवेसं (सिरि ६६१) । २ वि. वस्तु-संजनी (पराम १२. १२७ सुर ६ ४१, महा)। त्यान [फिस] मक्यामिष्ठित यस (महा)। पुर न [पुर] मनर-विशेष (१६)। वास्त्री की [वास्त्री] १ अविस पुरा का

बासग-बायळ

(बाम से २ १७-सुर १ मध पर्राह २ ६--- १४ )। र ब्रहा-विकेश क्ला बारखी इन्द्रास्त (बुवा)। ३ पश्चिम दिशा (ठा १०---पन ४७६ सुमा २११)। ४ भगवान् मुविविनाव की प्रचन शिल्या का मध्म (सम १६२ पत्र ट) । इ. एक विच्छु-माधे केवी (इक)। ६ कायोरसर्य का एक क्षेत्र--- १ निकास होती मरिया की तयह कायोरसर्वं में 'बुड-बुड' धानाव करना । २ कामोध्यर्थं में नवनाला की वर्ष्ट्र शेलवे खुना (पच ६)।

बारुमा ) त्ये [वे] इस्तिनी हिमनी (स ७३% वास्या रे १४)।

वारेळ देवी वारिळ (स ७६४) ।

**बारेयव्य देवी भार = वारम्**। बाळ क्क [यासम्] १ मोक्ना । २ वापक सोटानाः गमद्भगमेद्द (हे ४ ३३ ३ धनि सिरि ४४२)। क्यहः वास्त्रिकात (सूर १ १६६) । येष्ट्र मास्टेटल (महा) । शास्त्र वे क्यास्त्र १ सर्व साव (कस्त्र) णामा १ १ थे--पश्चामीप)। २ क्ट हायी (पुर १ २१६ वेल्य १८)। ३ हिश्च पतु स्वापद (ग्राम्य १ १ धि---पथ ६ भीप)। देखी विआक्त ≈ व्याध ।

बाल न पास्त्री १ एक गोन जो करवप-गोन की एक राजा है। २ पूँची, ज्या गीव में कराप्य (ठा ७--पत्र ३६ )।

बाढ देशी बाळ - बाब (धीयः पाप)। अ वि चित्रों से बनाइका (प्रस्थ १ २ १२१)। वीयणी की [बीजनी] १ नागर पंत्र रायकतहाई शे शहा-सार्थ पर्च उन्मेर्च बाह्याची शावशीयाँख (श्रीप)। २ धोटा ध्यक्त-चंद्राः श्रेयकामस्त्राक्ष बीमणीदि बोद्दश्यमाखी' (छावा १ १---83

वर क्य बूब १ ६ १८)। ब्रियुं [कि] बही बर्षे (वाष्ट सुपा २८१)। बाख देखो पाळ ≔पाल (कास- प्रवि क्रुमा

1 (37 5 वासंक्रीस न [बे] क्ष्मक, सोना (वे ७ ₹ ) ı

याजग न [वासक] पान-विशेष नी पादि के बक्तों का बनाहुया पान (याचा २ १ = {}! धास्त्रापोधिया रे ही 🔃 वेको बालग्ग-बास्त्रगपोइया । पोइमा (तुल्य ४-पम ७ इत्तर २४ पुचार २४)।

वास्त्रत व वास्त्रन विद्याना (तुर १ २४६)। वास्वयान [वे] प्रथम, बुग पुँच (वे ७ 20) I बाद्धय पुं [यासक] कथ-प्रध्य-विसेप (पाद्म)।

वाख्यास र् [रे] मस्तक का बागूपल (रे ११)। वाळवि वूं [क्याक्रियम्] मदारी धार्यों को पक्को भावि का न्यवसाय करनेवासा सँपेपा (पर्स्तु१ २—पण २१)। बाविद्या पू [धाविसारय] ब्यू से प्रतम पुत्रसम्बद्धाः कं शहर धुनार पुत्रः को श्रीपुद्धः

बार्किकाड । वास्ता प्रेकी विद्या क्षेत्र, मन्त-विदेश 'संपर्धं वासावस्थाओं (या व १२) । माजि प्रीयाखि । एक नियामर-रामा

पर्व के देश-मानवासे में ( मस्क )। देखों

कपिराज (परुम १ ६ ६ १ १ १)। तणाम पं विनयी समानाचिका पुत्र अंबर (वे १९ ०१)। सुभा पूँ [मुख] नहीं यर्षे (मे ४ १२) १३ १२ १२) । बाकि वि बाजिन् विश देवा (से ११४)। वाकि वि [पाकिन्] १ केशनासा। २ वृ

क्षिधव (यसु १४२)। माकिञ वि [थास्त्रित] मोहा हुवा (पाधा स ३१७)।

वाजिमाफोस न [दे] कनक भूवर्श (दे w 4 ) i वास्ति पु [यास्त्रेन्द्र] विद्यावर वेश का एक

यजा (पदम १ ४१)।

देशो पाछी । पाळम पु विस्कृती १ परनावानिक देवी की एक बाठि में नरक-नोबों को तुन्त बासुका--बासू में बने की तरह सुक्ते हैं (सम २६)। र प्रकी-सम्बन्धी (सर द्वार ४)। बाकुअ" ) की [बाळश] पूनि बासू, देत रज वालुआ (स्टब)। पुरुवा की पृथिवी रींसरी वरक-पूजिकी (पडम ११० २)। प्यमा, प्यक्त की ["प्रमा] वीवरी नरक-मूमि (ठा ७---पत्र १०० इक श्रेत १६)। मा भी भा नहीं धर्म (क्त ३६ १५७)। शार्क्ड व वि ] परवान्त-विरोध एक राष्ट्र का बाच बीरब्रिवृश्वस्ट्रासंने पुरुविगवडन-बाधुंके (विड ६३७)।

वाजिक्षित प [बाव्हिसस्य] एक धर्मप

वास्त्रिक्षाक न [वास्त्रधान] पुण्कः पूँध (कामा

बाजिहिछ बेजो बास्टहिछ (मन्य १२ )।

बाजी बंदे कि वाच-विकेश मुहक्ष प्रकास

वाकी की [पान्धे] रचना विशेष पान बादि

पर की वाली करतूरी पावि की सदा (कम्पू)।

बनाया बाता तूरा-नादा (दे ७, १३)।

(परम १४ १८)। रेखो याबिहिछ।

१३ उना)।

याव सक [कि + आप] व्याप्ट करना । बारेड (है ४ १४१)। वाय ध [बाय] धपना या (विसे २ २ )। थास पुॅ[काप] वपन बोना (दे६ १२६)। बावध्या देवा यावद्यः। बाबद्रग्नामि (म्

वार्कुङ 🛮 [बासुङ्क] इनकी भीरा (धनु ६

पार्लक रे की [पासुक्की] कक्की का पाछ

**वास्त्रकी** (मार गर प्र)।

यासून देखो यासूञ (स १ २)।

कुश दव} ।

4X£) 1 ं पाषक सक [क] यन करना। शायकह (kx 4=) 1

वार्थफिर 🕅 [फरिप्पु] यम करनेनासा (भूमा)।

वायज्ञ धक [स्था + ५६] मर जाना। बावञ्जति (भग) १

(स १६६)।

बार्वज--वसि

१ (टी)। २ कियी कर्य में बचा हुमा (देर २ ६ मात्र क्य: श्रूर १२६)। बावड वि विद्यादक्ती सीटाव्य हुन्छ वापस किया हमा (स्त १६४)।

**19**\$3

बाबहर और दि। विपरीय मैक्स (दे ॥ १,व)। इसी सा (पहस्र)। बाबण न (स्थापन) ब्यास्त करना (विसे

**≭€**) | नावणग वि [नामचढ़] दिवलो, दिक्ता बीता, भ्रोटे कर का (चचन्त्र पत्र १६१)। बावणी की हिं] किए विशर (के अ ३१)। बाएण्य देवी दावस (सामा १ १२)। बावाचि 🛍 [स्वापत्ति ] विवास, मध्य (कामारे र--त्वर्द्धा छर में का स

१६१: ४१२ वर्गत ११४: १७१)। शापति 🛍 ब्यापति । व्यापर (का १ १)। बावरित की [क्याकृति] लिहित (ठा व Y--पत्र (७४)। बावस वि बियापस्त्री विराश-प्रान्त (ठा ६,

२—पत्र ६१६ छ २४१ कम्बल २० **せ**६)1 बावय पूर्वि यायुक्त, पाँच का पुल्लिय। (वे 1 (XX) मानर पक [स्था + पू] १ श्राम में नक्ता। २ छन- काम में अन्यान्य । नानरेड (हूं ४ =१) वावरद (भृति), 'स्त्रं दिई परिज्यात

ta tu) । वक्त बाबरंड (दुमा ६ ११) । | प्रवीत हेष्ट बावराबित (स ७६२) । बागरण व कियापरणी कार्य में बनाना (भवि)। मान्ध वेदी बावड = माहत (स्प इ ४७) । बाय उर्दुत दि यावछो राज-विरोध (१५७)। बाबहारिश रि [ब्यानहारिक] व्यवहार से बानल रबनेनाता (इक्ट निमे ६१६) वीवत EX) I पाद्मम (१) धन [ भव + द्वार ] वरवाश

रान्ध जबद्व प्राप्त करना । वाबायक (बारवा

(FX)

परिविद्याम कार्ये (चत्त १० १० गुक

बाबाइ अ नि विवापादिए । मार कना नगः, निनारिक (युपा २४१) 'श्रवागानि(१६)यो वेब विक्तो 🕊 पनी (स ४११)। बाबाका दि क्यापादको दिशक विकास-कर्वा(स २१७)। श्रवायय न विद्यापादनी द्विता पार शतना विकास (स ३३ १ १ १ ३ ६०% प्रस

का नानास्त्रह, नानास्त्रह (स ६७३)

भृषि बाबाइज्यिस्सइ (पि १४६)। वंड

बावारक्रमः (स ४११)। इः बाबाग्रसस्य

22. P24)1 नावायय देशो नावायग (स ७६ ) । श्वार तक [स्वा+पारम्] अस्य में बपाना । सक्र वानारेत (यस्ट १४४)। इ- भावारियम्ब (पुरा १६२) । वाबार व [स्थापार] व्यवसाय (क्ष ३ १

के जब ११४० प्राप्त ६१३ १२१३ **व्य**ा विकाशक)। बाबारण त क्रिवाधारण वार्य में बबाना (विकी के धरे बन इस १)। वाबारि वि क्यापारिन् व्यवस्थाना (व १४ ६६ (स्मीर १६)। बाधारित (श्री) वि [ब्यापारित] वर्ज में

बनाया क्या (बाट-स्ट्रा १२ )। वावि स [शापि] १ सम्बद्ध, वा (२४ ६७)। २ की वेको बानी (पश्चा १ १ -- वय व)। वाबि नि विधापिम्] ब्यानक (विशे २१%) ब्ध २०४ वर्गर्स १२१)। वायिभ वि दि] विस्तारित (वे ७ १७)। वाविभ वि विषित् । श्रीपत शब्द

करवामा हुना (वे ६ ६२) । २ बोमा हुन्स पुनराती ने 'कालंब्र''। 'सं धासी गुन्ममंत्रे बस्मग्रीने वावियं छए शीवं (ग्रारंपद्वि का वे ا (ع م वाविक वि[क्यांस] थए हुमा (कुमा ६ 43) I वायिक वि [ब्रावृक्त] व्यक्तिवाका, निवृत

(वर्ष १२१) ।

वाकित देशी काइत = मासिव मानिक (ठा १८ २--पण ६१६)। वाबिर केवी वाबर । वाक्टिड ( पड् )। बाबी भी बापी निप्तकोक क्वाक्त-विधेव (धीप वज्र प्रमा) । बायुड ) (शी) देशो श्रामड = म्यापूर (गाउ-वार्येष र्रिष्ट पार्व की

वाकोजधन कि निकोर्ल, निकस हमा (दे **७** ५१)। बाश् (आ) की [वास्] नटक की माना में बाला (मुच्च २७)। वास केवी वरिस = इन । नासीव (क्य) ! भूका, बासिबु (कप्प) । इ. बासिबं (हा १ ६---वम १४१ सि ६२। ४७७)।

दास धक [पाछ**़े**! किनेनों स<del>्था</del>र् प्रियों का बोबना: २ माहान करमें 'बीरबुबरिय कासद भागत्मी पामसो पविध-प्रस्को (पडम ११ ३१)- वासह, वासए (कारि क्रम २२३)। यह वासंत (क्रम १२६ १०७)। बास एक [बाधव्] १ प्रस्कार शक्ताः। २ तुर्शन्त्रतः करणाः ६ गाउ करदान्ताः। वाचद (वर्षि) । वह बासंत धासमंत (बीय क्य): इस्वासणिक (विते १९७७ वर्गंचे १२१)।

नास केवी करिस = नर्म (बन २ क्रप्य की वेश पद्मक क्रमात्र भग वे का द्वाम क्रम £१४३।११ छ बर्¥छ बुताह७)। काष्ण व ["याण] अत्र व्याता (वर्ग ध बोव ६)। घर इर दू चिर प्रवेष-विचीत (क्या ४० २१३) व्या १, ६० सम १२३ इका)। वास 🛊 [बास] १ निवास पूला (बाबा) चथ ४ ६ क्रमा; प्राप्तु ३०)। २ कुल्ला (इयाः वर्षि )। १ तुक्की इष्करिरोप (पत्रक) । ४ मुक्तनी पूर्व-विशेष 'प्रश्निम बातवार्ध विद्वित दोशाच विवदेषि (दुपा १ ७३ वंचर)। र ग्रीनिय प्रमुक्त एक

वार्वि (पर्का <u>१</u>---पत्र ४४)। पर म

िशुक् समन-तृह (कारमा १ १६---पत्र

दासण न दि । पान बरतन, गुजराती ने बाप्रयाः विद्ठं च परतद्वाविये चेत्रसम्बद्धे क्मि दिरएशवाङ्यं (स ६१ ६२)। थासण न [बासन] शक्षित करना (स्वानि क वासणा धौ [वासना] शंस्कार (वर्गंधं ६२१)। बासजा को [वृद्धेन] पत्रतोका निरीवण

(विसे १६७७ "प ४६७)। देखी पासणया । बासय देवो यासग । सङ्गा ही विज्ञा कोषियमि' (धर्मसे ४०६) । देशो बासी । नामिका का एक भेद, वह मासिका जो नामक यासिक १ वि विशिक्त वर्णासभागानी थी प्रतीधा में सक-पत कर देखे हो (शुगा)। वासिय (तुम १२-पंत्र २११)।

बासर पुन [बासर] दिनस दिन (पाधा यतका महा)। वास्त्र र् बास्य र एवं देव-पति (पाया स्पा १ ४ वेदस १०)। २०व राज-बुमार (विया ११--पत्र १)। किंत्र व किंत्र इरिवंश का एक शजा शजा जनक का पिता (प्रम २१ १२)। दत्त में दित्ती विजयपुर नगर का एक राजा (निपा २ ४)। वृत्ता औ ["ब्रुचा] एक पावनायिका (एन)। धरा वेन धिलयी इन्न-बनुष (द्वप ४३६)। नगर न [नगर] धमरावती एन्द्र-नवरी (बुवा ६ १)। पुरा की ["पुरा] बही सर्व (उप प्र १७१) । सञ्ज प्र िस्ता इन्द्रका पूत्र जयन्त (पाध)। बासबदत्ता 🐿 [बामबद्त्ता] शवा 🕏 प्रयोग्त की पूर्वी भीर क्यान-नीह्यानस्थ्यान की पत्नी (उत्तरि ३)। बासकार व विशेष तुरल भोका (देश ११)। र मान कृता 'विष्टावित्रवह पंपा क्याद कि नास्पारेंडिं (वेदस १६४)। यासभाइ थूं वि] शान नुता (वे ४ ६ )। बासस न बासस ने बच्च क्यक्ट क्रुगोसखा कुमाससा (परह १ २--पत्र ४ )। वासा केवो परिसा(कृमा पाम पुर २ ७८ गारः १)। रक्तिको देखो परिसारच (हे ४ ३६१)। बास इं विससी पतुर्गात में एक स्थान में किया जाता निवास (शीप कासः कप्प)। बासिय वि विविधि है। वर्षभाग सर्वभी (धाचा २ २ २ ॥ १)। सुपू मि भेक भेडक (देश ५०)। वासाजिया 🛍 👣 वासनिका] कारविक विशेष (शुप र १ १६) । वासायी भी वि । स्या प्रक्रा (६० ११)। बासि वि [ पासिल् ] १ विवास करनेपाका रहतेपाला (मुझ १ ६ ६, उपार सूपा ६१०) क्रमं ४१ थीप) । २ वासना-कारक श्ररकार स्यापक (विसं १६७७) । षासि की [पासि] अमूना वहाँ का एक शहर -- धीताए 'न हि गातिगरहाँग हाई सबेशे ।

वासिकूष [वाशिष्ठ] १ मोत्र-विशेष (ब कव्यः सुरुव १ १६)। ७--पत्र ११ २ वृद्धी, वाशिष्ठ गोत्र में कराम (ठा ७)। बी हा दी (रूप उत्त १४ २१)। वासिट्रिया की [वाशिष्टिका] एक वेन मुनि-शासा (कृप्प)। वासिना वि विपिन् । बरसनवासा (ठा ४ Y--- (18 258) 1 थासिकः ) वि विषयितः । वसामा ह्या वासिय 🕽 निर्वासित (मोह २१) । २ वासी रकाह्मा(बस बावि) (सुपा १२ १६२)। **३ स्पन्तिक किया हमा (कथा पर १३३)** महा)। ४ भावित संस्कारित (मार्व)। वासी भी वासा नमूना, नहाँ मा एक सक्स (पश्चार १ पद्मा १४ ७६ कप्प) बुर १ २० मीः)। सह प्रसिक्ती बनुते के शुल्य बुँहवाता एक तरह का नीट, द्यीरियय बन्द्र की एक नाति (क्क **१**६ (38 J यासुर् १ दूं [बासुकि] एक महानाव. बासुरी । बर्गराज (से २ ११ मा १६ वब्ध सी ७- हुमा सम्मत्त ७६)। वास्त्रेय प्रशिक्षास्त्रे र श्रीकृष्ण नायवण (परह १ ४--पत्र ७२) । २ धर्व-चक्रमधी यबा, जिल्लाएड भूमि का समीदा (सम १७३ १६२३ १६६ शत)। यासुपुत्रा र् [यासु श्रम] भारतवर्षं में जलस बार्ख्य जिल घरवान् (सम ४३) कम्पः पत्रि)। यासुकी की [रे] कुद का यून (दे ७ ४४)। बाइ एक [याइय ] बहुन क्याना बसाना। बाहर, वाहेड (मदि महा) । क्यूड वाहिक्समाण (महा) । हेर्ड बादि र्र (महा) । इन्दोद्द वाहिम (हे२ ७≤ द्याचा२ ¥ 7 8}1 बाइ, पुंची [क्याघ] सुस्पन्न बहेलिया (ह १ रैवका पाम) । इसी द्वा (मा १२१ पि १८६)। बाह् पूर्व विद्वाह देशक भोड़ा (पास नुस १

के के धारण कर करवादी पुत्र १४७३ हम्बीर

१व) । २ जहाज मीका "वाहोद्ववाद तरहाँ

(मिसे १ २७)। १ भारबद्दन योन्ड दीना

(नदार ३ ४८ ४) । ह परिमाल-क्रिकेन

सवाधे (वर्गवि ४)।

पाइनमय (१ ५ ६१)।

साइड कि [र] पूर मरा हुसाः बहुवाह्डा बयाहाँ (रम ७ ११) : बाह्दिया औ दिं] कारद, वहुँगी (शा द \$\$0) I बाहज र्न पाइन र रव धारि वानः 'बह निक्काहरू मोर्च (क्व. १ ३ जवा थीर <del>क्रम्</del>)। २ जहान नीता वानसाद प्रजयती में 'बहार्स' (जनाः सिरि ४२३ कुम्मा १६) । ३ त. वदानाः वाह्यसञ्ज-परिस्तंद्वी (दुत्र १४०) । ४ शक्द, बीम्ड मादि डोमाना, मार नाद कर बढाना (पहड ["झाल्म] यान रवाने ना चर (चीव) । चार्वि डोमला (मानक २६ टी)। \$8) I

षाउसो प्रावक व्या एक मान (श्रेषु २६)। १ शास्त्रिक पाड़ी इन्हिनेवाला (सूच १ २

१ १)। वादिया हो विविद्यो पूर

बाह्रगण १ 🛊 [रे] मन्त्री धमप्रय प्रकान

१ र—पत्र २६७ इ.२६)ः साद्धां 🕏 बाहणा ध्ये (बाहन्त्र) बहुन कराना, बीम्ड साइया सी [र] धेरा शेव क्या (१७ बाह्णा ध्ये [ उपानश् ] पूरा (श्रीरा श्रदापि १४१)। बाह्यिय रि [बाह्नि ठ] बाह्य संक्रको (सा ७२६ दी) । बाइ जिया की [पाइनिशा] बहुश कराना बनानाः न्वासराङ्ग्डियम् (स ६ )। बाहर्स देवा वाहर । बाह्य वि [याह ] वत्रनेशला, हक्किशा (341 \$ 10) 1 बाह्य वि [स्वाह्त] स्थानत-प्राप्त (नीव् १ ७ उर)। यादर नक्र[क्या + क्र] १ बोबवा क्ट्ना । २ बागुलं करना । बाह्य्य (हे ४ २४६ मुपा १२२ वदा) । कर्म पादिप्ता, कार्रारणह (१ ४ २४३)- 'बाहिजंदि पहाला बार्वडक' (मूर १६ ६१) स्टाइ पादिष्ण (हुमा)। **नक्र** साहरेत (खा ३ १ तुर १ १६६) । चेक्र वार्यारचे (सर e) : रेक्न वाहर्ण (111 111)

(दुमा)। २ माज्ञान (न २५२३५ १)। वाहराविय वि [क्याहारित] हुबबाया हुया (क्रुप्र १५३ महा)। याइरिक्ष देखी वाहित्त ≠व्याहत (तुर १ १५ ४ ६ स्युपा१३२ स्वयः)। गाइनार मि वि गारसस्यकार है स्नेती धनुराधी । २ सका पुजराती में 'बाइलेक्सी' धाइ संस्थाहो तमझनायंपि । निकासुन्तं क्लेवो सामेह नाहसास्त्र (वर्गीव १२व)। बाइ किया १ की वि] बूद नदी क्रोटा पक बाइकी 🕽 प्रवाह (बन्दा २२) १४ दे ७ 1(38 याधा की [दे] बालुका रेख (दे ७ ४४) । बाह्यया की चि दुन्न-विरोध- 'समिसंबासिया वि वा वास्त्रामधंचित्रया वि वा स्वतिवर्धस्तिया तिथा (यन् ३)। वाहाबिय वि [बाह्ति] च्याया हुन्ना (सहा)। वाह केवा बाहर । बंह- वाहिचा (याक १ ः पि १व२)। थाहि पूंछी [स्याधि] रोप श्रीयारी 'पर्काशि बम्मी पन्तर्ते (हा ४ ४—यत्र २६३) यहाः दुर ४ ७१ डवा प्राप्तु १६**३ वह**ा)ः 'एवामो वत्त वाद्येमो सम्सामो' (महा) । बाहि वि [पाहिम्] **पन १**रनेवासाः **डानेना**बाः वहा यथे चंदशस्ताही (दन)। बाह्मि वि [पादित] प्रतादा 🛍 पादिवे र्वाम्य बंतरूको वं बार्च (बहा) 'वो देख देख बागेल कातस्थितेल बाग्रियो वामी (नुपा १२७)। नाहिम देवां पादिच = स्याहत (ह २ ६६) पर् शरा छाता १ १—यव ६३)। षाहिअ नि [क्याधित] रोची बीमार (fulk १ ७ ३ लागा १ र—पन १७६ थिपा १ ७—पत्र ४। पर्साई: ३—नद्र इक्ष वादिका भी [काहिना] १ नधे (वर्गीत ६)। २ सेवा नरहरः रेखा वरदिखो गारिको पर्कार्ध । पत्र विमा (पाय) । वे भना-निशेष विवर्ने १ हाथी, वर एक, २४३ चोडे बार ४ ४ प्यार्वे हा बद्ध शैम्प (१३व ६६ ६) पुं["नार] मेना-परि (दिराज १३)। 1 ['tl] wit (frur tt) :

वाहरण न [स्वाहरण] १ प्रक्रिक्यन वाहित वि[स्याहत] १ वस्त कवित (हे १ १२ < २० €€ ब्रह्म)। २ मध्युत,श्रक्तित (पाम्यः कतः १२)। नाहित्ति भी [स्याहृति] १ प्रति, नवन । २ बाह्यान (बन्दुर) । बाहिष्य देखो वाहर। वाहिम रेको वाह = बग्रम । बाह्याक्षी भी [बाझाओं] परत वेवने भी क्चक् (च १३८ सूपा ६२७: महा)। वाहिङ्क वि [ स्वाधिमत् ] येथे (वाम व री)। बाही केने वाह = स्थान । वाहुकिम वि दि] यत विश्वत 'तो बाहुक्सि क्वेस्स (कुन ४१ ) । देवी दाइडिथा । वाहुय वेद्यो दाहित्त = ब्याह्त (पीप) । वि देखो कार्च= प्रसि (हे २ २१ वः श्रूमा स ११ १७:२३ कम्मर ४ १६: ६ - ६१: रंख) ( विष [वि] इन पर्वे का शुवक सम्बय— १ विरोग प्रक्रियकाः "विनद्दा" वियोव (ठा४ २३ वन्द्र ११ सूर २, २(४)। २ विधेवा विस्तिवर्ष (बच र १२ २३) भग ११ हो)। ३ दिविषकाः 'वियत्त्वमारा' 'विसम्पर्य' (बोरफा १००) तर १ टीउ भारत)। ४ दुत्सा बरानीः रिक्न ( पर ४२० दी)। थ सन्धव 'विद्नाह' (वे २१ )। ६ महत्त्वा 'विष्य' (वडा)। ७ निप्रवा' 'विष्य' (महा)। व क्रेचाई, अर्जेका विकास (प्रोपस १६६) । ह पारपूर्ति (परम १७१७) । १ प्री पडी (वं र र मुर १६ ४६) । ११ कि प्रशिष्क, उद्येगक । १२ प्रवश्यक शासक क्षार्य सम्बद्धियासहै पर दिसन परिवाली (स्पि १४३)। विक्यो दि=डि चै पूछ होत्म पिद्राका कुम्माकुषास्था अदम्मणु<sup>\*</sup> (विते ११६१) । विशि [िपिट्रि] बालगर, निक्र (धार्या) लि १)। रूपा ध [जुगुप्ता] विज्ञान की निरुद्ध कांध्र की किस्त (या ६ टी—रम १)। रेक्ट्रन दिया (क्ट्राइ

1 1 1 1/112 4211

विअस प्रित् वानना। विस्ति (विसे १६ )। मनि विन्तं, वेन्तं (पि ४२६ १२६ ब्राप्ट हु ३ १७१)। वक्क विजेत (रंग)। संक विश्वता, विश्वताणं, विश्वत (बाल्या वस १ १४)। विभान विभान दियान प्राच्छात गमन सि ६

४≈)। **बर् वि विर**ो बाकास-विद्वारी। बरार न "घरपुर] एक विचाधर-नवर

(इक) । धिक्ष विद्] १ जानकाट, विद्यान् 'तं प निक्क परिसाव किये तेलु न मुच्यार

(सुद्धार ४२)।२ विकान भानकाधी (चन) । विस् देखो इस (हे २ १६२ प्राप्त) स्वप्त २७ हुमा पदम ११ वश महा)।

बिश्न वृं वृक्ती स्थापक कल्यु-विरोध शेक्सि (माट-च्डचर ७१)। विश्व वे डिग्रस दिना दिनार पंचनिक्के

केस्स्यो पप्रची ते वहा- चनाकेक्स्रे विक्को-बसें (द्रा १, ३-पत्र १४६)।

विश्व वि विगवी विन्यु पूर्व । या और िची पूर्व पारमा का राधेर (ar t-पन ११)।

बिख रेको अविभ - व्यपित (बीव १)। विश्वद्र वि [ यिजयिम् ] विक्वते बीत हर्दे

हो वह (मा २२)। विश्वद् भी [मिगति] विवन विवास (हा ।

1 (38 49-9 विकाद देवी विशाद = निकृति (ठा १---पत्र

१६: राज)। विभारता देशो विश्वास = वि + वर्त्तय।

विजय्त र विविधिको १ प्रमान्त क्रिये। र त. पुण्य-विरोध (हे १ १६६) कृष्या वा

पर कुमा )। ६ वि विकल, विकसिश (ছতা। षिअअविक्य वि [पे] मसिन (१ ७ ७२) ।

विश्रीम एक [स्पक्क्ष्य] और हे कीन

करना-द्वाप कान कादि को काठना। वियेवेद (शामा १ १४--वम १०६)। विभौग नि जिन्हीं चेव-होन "विशेवनंगा"

(परहा १--पकाद)।

धिव (यए) ।

विश्वंतिश वि विश्वकित् विश्वत विश्व (परात १ ६ - पत्र ४४३ टी:--पत्र ४१)। थिलंजण रेको शंजप = व्यव्यन (प्राष्ट्र ११ सम्म ७२)। विभिद्धिक मि क्रियक्षियाँ ध्यक्त किया हुआ

प्रकट किया हवा(सुघ २ १ २७ ठा ४, २---पण १ ७) ( विश्वद्वित कि दि प्रकरोपित । २ प्रक (यम १७७)।

विश्ववि भी विश्वन्ति पन्त क्रिया । धारप रि किएको अन्त क्रिया करनेवासा कर्मी का धन्त करनेवाका सन्धि-सावक (धावा 2 # Y 3) F

विश्रीमधक [वि+ अपूर्भ] १ छलन होगा। २ विकरमा। ३ वॅग्नई बामा। विश्वीक्ष (के.४ १४७ पक्ष धवि) । वक्ष क्रिअंसेट विश्वसिमाण (बाट्या १६२. से

१ ४% मा ४२४८ मक्का)। विश्रंभ वि विवस्भी निव्ययः, श्रवः 'धया-स्तर्थ विर्ययन्द्रस्तर्थ (स.६१.)। विज्ञासण म विज्ञासमाणी १ वैवाद, बनाई

(छ ३३६ लुवा १४१)। २ विकास । ३ जलाचि (मिकि मा**ल** ब४) । विजिभिज वि विजिम्मिती १ प्रकारिक (बा १६४)। २ अरपंग (मान व६)। ६ न

र्णमार्थ (वा ५५२)। विश्रंसण वि (विवसन) वस-एडिट नान 

विश्रस्य प्रे कि व्याप बहेबिया (के ७

यिभक्ष सक [यि + एक्ट्रंग ] विभारतर, पियरी करना भीपांसा करना । बक्क, थिय व्यक्ति विशवकतायः (सुपा २३४४ - उत्र २२

विश्रण पंथी वितर्की विमर्श सीमांबा (बीप सम्मल १४१)। बी का (सूच १ १२, २१ पत्रम ६६ ६)। विभव्यम वि [वित्रवित] विमित्रक, विवा-

षिमस्य सः [वि + इस ] रेपाम । वज वियवस्त्रमाञ् (यावना १८०)।

विश्वकस्त्रण वि चिपक्षणी विद्वान, परिवत बच्च (यहार प्रास् ४१ मनिः माद-नेगी 38)1 विश्वमा विक्यिमी व्यक्त (प्राक्त ३१)।

विकारण देखी सरम = स्थापः ---महिस्सि (शिवा)न्यसम्बदीविया- (पए**ह १ १-**--पम ७ पि (१४)। विकाम वे विवासी व्याप-विशा (परह १

विश्वकास वेको विवद्धाःसः । (नार--पृत्वस 438) ( विवाह एक [पिसं + वर् ] बापमास्त्रित करताः यसस्य प्रापितः करता । विसद्धः (हे

१-- पत्र १८)।

४ १२६)। विवद वर्क सि+पृत् विवरमा विहरता। वस 'पिम्हसमयंति पते विश्वह माण (मु?) वरोसु वराकरेल्विविहरिएस कवर्षस्वाची दर्म (छामा १ १--पन 42) 1 बिसट् वि विश्वची निश्चच ब्याह्चा विस-

बीप पडि)। सोइ विस्मिश्विम् प्रतिक्ति भीजन करनेवासा (भए)। विञह द विवर्ते प्रकम (स १७०)। बिअक् । नि विसंवदित् संबद-धीत विश्राहरू । भग्नमाधिकः विग्रह विसंबद्ध

इन्नरमेर्ग किसेर्ग (सन १ भना कन्न)

(पास-कुमा६ वद)ः विभद्ध विकित्ती १ इर-स्थित । २ किवि इर(स्रामा ११ टी—पत्र १)। विश्रह एक [बि + स्ट्यू ] १ प्रस्त करन्ता २ व्यक्तेचना करना । नियदेश (धा ६ दी-पथ ४०१)। क्वक विविश्यंत

(धन)। विश्व वि व्यर्वी वरिवत वन्त्रा-पद शाया १ ५∼–पत्र १४३)।

विभव वि [विपृत] पुनाहुमा मनाइत (ठा १ १---पत्र १२१: ४, २--पत्र

११२)। त्यहम गिही नाते तत्व नुसा घर, स्थान-मर्शिका (कम्प क्य)। जामन ("यान) गुना नाइन जार व पुना यान (ए।या १ १ दी-पन ४३)।

क्ष. विवाद्य (स्प करू टी)।

देखी बिराप्य अविवस्य ।

(सम्य १४) स १८४) ।

(वर्षसं २१)।

विभएप 🛊 [विश्वस्थ] १ विविव तस्युकी

कारमा। है बगह विकार पित्र विकासकार

कईशार्ख (नडह)। २ विदर्क विचार

(महा) । १ भेट प्रकार वस्मद्रियो स प्रक-

बनको ध देश विकल्या सि (शम्म ६)।

विकप्पण व [विकस्पन] अनर वेबीर

विभवस देवो विद्वस्य (प्राष्ट्र १८३ प्रस्

विअन्द देवो विशंध = वि + वस्त । विस

'एर्गक्रकोपस्थि वि सुद्रदृत्त्वविद्यागत्त्रभूक्तं

१६ : ४, २--पण ६१६: धम ३७। उत्त २ ४ । कम्प) । २ सद्य द्यक (पित्र २३६) । १ प्रानुक बाहार, विशेष बाहार जे किथि पापर्त प्रकर्म ते धतुरूनं नियते देनिका

(बाबार १११) 'वियह वे भीवा' कल्प)।

বিশ্বস্থ বি [বিভূব] বিকাশ লাগ (বাখা) यत २ ४३ क्षच वि २१६)। विश्रह दि [पिन्ट] १ प्रदट भूता (तृष

१२२/२१ वेचार १ पर १५३)। १ श्रिशास पिरतीर्वो —यकोसायेक्परम वेभ्रीधविवत्रमार्थे (क्या भीत का १.६

बज्र) । १ गुन्दर, यमोजूर (वज्र )। ४ प्रमुख प्रपुर (तुम २ २, १८)। र वे एक ज्योतिकः महातह (ठा २ ३---पत्र ७०: 1 मना२ )। ६ एक विद्यावर एवा (पडन १ २)। भोइ वि[भावित] प्रकार <sup>-</sup> क्षेत्रद १९नेपाला दिवाने ही क्षेत्रम राज्यका (सम १६)। त्रिष्ठ ।पाइ.वे.

े गानको वर्देश विशेष (ठा ४ २—वत्र | च्या अ १---पत्र १६ व )। -- राष्ट्रय ] विरतीरहे होना । - 114 )1

u-िक्द :} १ प्रतिपाचे गी <sup>|</sup>

**१ स १ को**।

१ २ ११)। १ पुरा परिष्ठत-वरस 'किरपंपालं कर्युक्विश्यतालं' (एम. १३) । ४ पूँ भगरान् बढाशेर का कर्त्व बखबर---

विभाग वंग विश्व जनी देना वंद्या (प्राप्तः

बिकाण वि विज्ञानी निर्मेश यम-प्रीहरू

विभाषाकी विवना १ काम । २ धूक-

दुःश धारि का धापुमन । ५ विनाह । (भाषा:

हेर १४६)। ४ पीझ दुख बीताप

विश्वांत्रक वि [विद्यानित विद्या विद्यानी

विअणिय वि [बिगणित] अनारत विस्तृत

विभाग्य वि [विषम् ] मृत (या १४१)।

विश्रण्य वि [वितृष्य ] कुन्छा-पीत

हे १ ४६ वर्षा १ १--वण )।

'संबंधि विकासकारां' (यदि ) ।

(पायः वदकः कृमा)।

(भवि)।

(यवि)।

(या १३)।

१ २ २१)। २ यद्भाव निवेधी (सुध १ THE COURSE SALE IN ADMINISTRATION AND

विश्रच विक्रिक्डी १ परिलुट (सूध १

विवास तक [बि + क्संयू ] पून कर बागा। बंद्ध- विवत्त्य विवद्या, विवदा (शाका

74 4)1

म्बद (बाक्र ६४)।

विश्रय देवो विजय = विश्रय (धीरा वहड) । विश्वय वि[बिट्ड] १ विस्टीर्स विस्त (महा)। २ प्रकारित, फेमाना हुन्ना (विदे ९ ६१ भागक २ ६)। परिस्त 🖠 [पश्चिम] मनुभा-सोक हे बहुर श्वनेताहे

पथी की एक बाधि जरतोबको कर्ष वमुग्यनस्थी श्रिमदशासी (भी २२) । देखी विवाद व निवन ।

षिअर सक [य + पर्] विहरता बुम्मा-

विभएपणा श्री विकल्पन्त कर श्री

विकरण न [वितरण] प्रवान वर्षेष्ठ (पैचा | ७ ६ उन ४१७ की वस्त्र)। विकरिय कि [यिचरित] विस्ले किचण्या

क्रिया हो वह विहल (महा)- "विमसीक्रमध्य चर्च्य प्रदूरपथा विमिष्य प्रस्ता तुरुक्ष" (पिड ४६३)। विश्रद्ध प्रकृति हो सुकृती मोहमा चक्र करना।

विद्यमद (बारवा १४२) । विकास कह िये + गस्तु है वस बाबा,

सीस्य होता। २ अकना, ऋजा। वह विश्वस्तंत्र (स १६० पुर १ १२७)। विश्वस्तं सक [ओखस्] मनवृत्त होना (सीस १२)।

त्रिकाळ वि [सिटळ] रे हीन मार्चपूर्ण (प्रवाह रे ी—पत्र ४ )। र प्रविद्ध वृत्तिक, वाल्य (द्या रे)। रे विश्वाच च्यापुत्र विशयपुत्र प्रवाह्याचा हवेति वह वृत्ति स्वपूर्णियां (पा २०४)। देखो विगळ = विकल।

विश्वत स्व [ विश्वत ] विश्व काणा। विश्वत (स्व)। विश्वत स्वो पिश्वत विश्वत (स्व, ११)। विश्वत स्वो विश्वत विश्वत (स्वोप ४४)।

विद्यासंत्रस्य वि [क्] रोग्रे सम्बा (१० ६६)। विस्त्रांत्रिका वि [क्तिस्तित्र] १ नारा-प्रतन्त नष्ट (१२ ४२, स्वरं)। २ परिन, रणक कर निग्र हमा विस्तित्र स्वरं (सुन्न)।

विश्रक्ष सक [वि + पछ ] १ सुम्ब होता। २ सम्पर्नात्मेर होताः 'क्वह बीहा शृह वस्त्य विश्वनाह' (सवि)।

वसमु विकास (स्वि)। विश्वस सक [बि+कस्] क्षिणाः

विश्वसः (प्राष्ट्रं चर्च १ १११)। वष्ट्र विश्वसंत, विश्वसमाण (पीण गुणा २ )। विश्वसायम् वि [विष्यसक्त] विश्वसिक् करवेशका (प्रवत्र)।

कर्णवासा (भगव) । विश्रसायित्र वि [ विश्रस्थित ] विकस्तित विभ्या हुमा (मुना २२१) ।

विक्रसिक वि [विक्रसित] विकास प्रत्य (बादभाषाम पुर २, २२२ ४ १ १ थ भीग)। विकास केको विकाद = वि+ हा । सेक विविद्याल (बादा १ ६ २)।

विञातमा को [विषाविका] रोग विशेष विचार, या वेबाई (दे व ७१)।

विज्ञानरी की [विज्ञानिकी] व्यत्नेनाती प्रसन करनेनाती (साम १ २—पन ७१)। विज्ञानर केनी नागर । विचायरेक, विचानरिक

(धाषा २ २ व ११ पूर्व १ १४ १८) विद्यावरे, विश्ववरण्या (यूच १ ६ २६ विदे वेशवा यूच १ १४ ११)। वह

वियागरमाण (भाषा २ २ ६ १)। विशापाय वेदो वाणाय (माषा)।

विज्ञाण एक [वि + ह्या] बनला. धासून करता। विद्यापह, विधालीत (क्या पा ४८) विवालातीह (व्या पा ४८) विवालातीह (व्या पा ४८) विवालातीह (व्या १८)। कर्म, विचालिक्स (चिट्ठ १९)। वह-विद्यालीत विद्यालयाल (बीच क्या)। वेह विचालिक्स विचालिक्स, विचालिक्स विचालिक

ক্ত বিবাদিবকৰ (কর্ম ।)। বিক্ষাতা ল [বিক্ষান] আপকাটে বাল 'एকটা অম । বুলব্ধ বিভাননবিহিতিত দুনিবার্ড' (বস্তি १९)। ইকা বিভাল।।

विकाण न [यिवान] १ विस्तार, फैसाथ (यक १७६ १ ६ १६२)। २ इति-विकेश १६ स्वयदा १४ स्था (हे १ १७७-प्राप्त)। १ दुव चन्तावप चैंदबा, सम्बद्धारन विकेश (त्यक २ ११० हे १ १७७ प्राप्त)।

विभाजन वि [पिद्यार्यम्] बानसर, विश्व (स्व प्र ११६)।

विभाजन न [विद्वात] जावना, शासून करता (स २१७) पुर १, ७) । विद्यालय केवी विभाजन (सन्द १६ अस

चीन सुर १, २१ सए)। विश्वापिक पि [विद्याव] बाना सुचा, विश्वित (ध २१७: पुना १११ महा सुर ४ २१४ १२, ७१ पित)।

१२, ७१ पिय)। विभाग सक [वि + जनय ] बन्म केना, प्रसम बरनार 'युनराती में 'विश्वादुः' 'विमानस पर्यं ने निर्वाद्धे शारी' (जन १९४टी)। संक्र विश्वाद (राज)।

विजार सक [ पि + कारम् ] विकृत करना। विचारित (सी) (सा ११)। विचार सक [ वि + चारम् ] दिचाला

विभार यक [वि+चारम्] क्वारम क्रिम्स करमः। क्यारेष (माइ को सम क्रिम्स क्षिप करें। कह पियारचेंद्र (मा १६)। क्रम विचारिक्ष (मुम १४०)। यह विचारिक्स (मिन ४४)। कृ विभारिक्स (मा १४)। विभार कह विसे निरस्य] काकम

विधार विक [ाव न दार्य] प्रका वीरता । विधारे (धर) (गिन)। वैद्व-विधारिकाम (च २६)। विधार दूं [मिसर] विद्वति प्रदृति का

क्रिक क्षमका परिणान हि १ २१ पडा पुर १ २१ प्रासु ४१)। विवाद १ विवाद १ तत्त्व-मिर्जुव (मत्रक्र विवाद १ व १)। २ तत्त्व-मिर्जुव क्षम प्राहुत क्षम-त्वात (वो ११)। २ क्षम तेष, प्रस्तुचे वक्षमत्वातो स्तर्को कर्मी-

धारकारी' (कप्पु)। Y विशा-करागत के

तियु बायूर बाता (यय १ १) । १ विषयु । वागन की प्रमुक्तारा (यह १ १) । १ विषयु । ७ शावकारा - स्टिन्टे य रिष्ट्युनियारे मान्ने यावि होस्सा (विचा १ १—यन ६३) । = विमाश मोमांडा । १ यह ध्योकारा (प्रामें) । व्यक्त पूँ चिमान्ते एक एवा वा नाम (या ७२० होत नाम) । मूमि की [मूमि] विध्या-प्रध्यका बाने का स्वान (क्या छर १४९ से)। विभाग्य न चित्रपारणी १ विचार करना

(बुधा ४६४) सार्वे ६ )। २ वि विचार करणेशासाः 'क्य निस्ताह स्वस्त्रकानुपारतक-विचारम् (सून ६२)। ३ वि विचारम् करणेशासाः 'संवरतरविचारस्टिमाहिं (प्रति २६)। विसारम् न [बिहारम] चीरताः फाइना

(धार्ष ४६ च २४१) । पिआरण वेको धागरण (क्रुप २४२) ।

विश्वारण व्या वागरण (कृत २४२)। विश्वारण वि [पैतुरण] विश्वरण-पंत्रकी विद्यारण क्षेत्रसम् क्षेत्रेवामा। वी "पित्रसा (तव १९)।

िषजारणा श्री [पिचारणा] विचार, विवरी (वर ७२८ टी: स २४७ वंचा ११ १४)।

पिइड्रम फेब्रो विद्यक्तिक्य (स्प ११ टी~

विश्वचिक्ष वि [मिनिक] विवासिय (प

विश्व एक [ वि + कृत् ]कारम, केव्य ।

विद्वतिह (क्यामा १ १४ धि—पत्र १४७)।

विश्वंत देवो विश्वंत । वक्ष, विश्वंतत (वस

विद्यक्तिया कि ज्यिति क्षेत्री स्थात केवा

विद्यक्षन वि क्यितिकान्त्री व्यक्तेत इत्रय

इमा (भय १ १--पत्र ३६)।

¥ भारश महा) ।

पच ३७)।

१९१) ।

2wa) 1

t & 2. 4 B) 1 विआयिक देखो वायह = व्याप्य (वर्षेष 244)1 विभास वे विभागी र ग्रेंड कार की प्रश कुपापन, 'कुर्न विवास मुद्दे' (सूच १ ४, २, के)। २ धनकाछ (यब्रह के के) । विभास 🕯 [विकास] प्रश्नाता (पि १ २ anGerìt

के तोर पर स्थित एक प्राचीन चंद्य (क्रम्य) ।

विभागाय व जियापाती भीत गात (वाचा

६ र्यम एक वेष-विमाध (सय ६२)।

विभाद सर्व किया - क्या विश्वका करना । कर्गे विद्याद्विण्यंति (कृषि १२१) । राधी (बा ४७६) नार-सल्लाधी ६)। २ विशिष प्रवाह । ३ विकिट प्रवाह । ४ कि (al gaft fiften & a fint

विक्रिष्ट बंदाक्याका (अन १ १ हो)।

ह्मा (हर ६--पन ४४% चना, कम)। विभासक्तम (शी) वि विश्वस्थित्की ११--पमस्य १ ४० छीप)। षिद्गिता ) वेबो बितिनिक्स (यानाः विद्यागिष्या ) कता स्था । विकस्ति करनेवाला (वि ६ )। निमास र् [व] बोद उस्कर (वै७ ६ )। विभासम वि [विकासक] क्यर **bai** (वुपा विश्वतिक वि क्यातिकारी प्रश्निक, विश्वत् विभास नि [स्पास] पुन भोर्स विवास 42 )1 (बद्ध १) । परिपद्वे देशय अदिन विकाल परिपद्वे देशय. षिधासर मि [पित्रस्पर] निक्सनेपामा विव्यक्तिएम देखो विश्वक्रिएम (क्स) । क्तिकारं विकास सहितहे केहत् (आसा मफ्रम (चय )। विद्रव्यंत केवी बीज - बीजय । ११६ ४)। देखो यास=स्थाता पिभासि ) वि विश्वसिंगी उत्तर केवी पिश्रमीय वेची विकिर । विज्ञासिक (पि ४ श्रम्मा ४ श र)। पिभास पेटी विचास (चन) । विश्वणा वि [विश्वणी] र विकास क्रुपाः पित्राक्ष्म देवो (पत्राख्य = निरादक (ठा "विषय्यकृतेनी" (क्या) । १ विश्वित क्षेत्र 9 3-49 mm)1 विभासम्म देवो विभारतः = सेनारकः (वीन । विभाहः ने विवाहः । १ व्याहः, वरिक्यन हुमा (वे १ १) । हेची विकित्रण विकित्र। ६६: विकेष ह विकास १७)। विश्वण्य वि विद्योजी दिया हुमा परिव

विज्ञास देवो धास = ध्यास (१८४) ।

इति है का देश्य प्रमाण प्रशिष्ट पारितीय [पारिष] रिवाल में बूबनेशका (खाका

46

विभारणा भी [पितारणा]

विभार्य वि विभारको विकार क्रम्बामा

पिआरि वि विचारियाँ उसर देवी (धीप)।

पिआरिअ रि पिपारित | निवस विकार

विभारिम 🕅 [क्लिरिट] १ क्लेक इवा

भारा हमा। 'पूर्णाधारियपुरं महास्थले-

सीडें (एनि १२)। २ क्सिएं विया हवा

विभारिक वि विकारित । विवस विवस

सबा काचि या सिरोहरा विवारिका विटी

(स ६६७)। २ टब्स हमा विप्रकारिक जिस

पुक्क पुत्तास्त मार्थ विद्यारियो (सूपा १२४)।

विधारिभा भी भि प्रशंक ना गोनन वि

विभारत) विविधायन विकासका.

पिञ्चारक विकासक (शाप है २

विश्रास देवी विश्रास = वि + चाप्त । वक्र.

विभास क्यो विधार = वि + वरम । क.

विभाग्न प्रविद्याची सन्त्या साम्, सार्वकान

(to this an first t x-quits:

(42) | W. m (44) t (42)

विवाद्यपिय (नुचनि ३६ ३७)।

विवासन (कार =२)।

किया क्या हो बहु (वे १ १६०)।

ठवाई (चर ६१६) ।

भीरा हमा (भी) ।

9 mt) |

(पारम क दी।

विभिन्नारखा.

विकासमा हैतो विकासका = विभारता (विवे

THE ET HE LED) !

1 1 7 17)1 विद्रशा } देवो विअ≂विद्। विद्रशाणं} भिज्ञा देवो वि-त्रच्या = विद-प्रयन्ता । विइचिद् (री) देवी विविचिय (अज मित्रकाल र् [स्ययच्छेत्] विनास (वेदा

44) (

विश्लु देवी विम = विद् ।

ह्रमा (भाषा)।

(सम्म १२)।

488) i

क्याद (हे १. १११)।

विद्रम देखी विद्यमा = वितीर्ण (मुर४ ११)।

वित्र विद् विदूस् ] विद्याल, परिकरः

श्रामान्य (छामा १ १६) वर ७६व दी। पुर

१ १३४, सूच २ १ ६ । र्रमः)।

"प्यक्तक को ["प्रकृत] १ विद्यान हाय

प्रकारत । २ विद्यान् द्वाया किया द्वारा (सन ७

१ दी-व्यवस्त्रः १० ७--वत्र ४१ )।

बिक्टा वि [विवृत] बिद्धक रवित कर्म

पण्डाबांबाड्या बब्ब विश्वचा य प्रक्रमा मरिबा

बिडअ कि [बिवृत] १ विस्तृत। २ व्या-

विद्रम (घप) रेखो पिशाम = वियोग (हे ४

बिर्शिपक्षा की दि विपर्शिका रोक्शिय

समित्रवा देवया शस्त्रं (सिरि ११७)।

पाना द्येव का एक मेद्ध 'केंबि विजविद्यपाना-

पिडेंच सक [वि+पूज] विशेष क्य स

विषयि भी [म्युटमान्त] प्रतक्ति भ-

मोक्ना। विजेति (नुम २:२ ११)।

20 54)1 विज्ञास संब विस्ट + यम् ने विशेष प्रशंत करना। **बहु, 'वरि**श्वापि चित्रव्यसंताण' विद्मिस्स वि [स्पतिसिध] विक्ति विका

(पत्रम १ २, १३७)। विजनमः धक [वि+सुघू] कापना। विचरसम् (यक्टि एस)।

विडर् सक [ वि + कुर्य] विच्छेर करना विनाश करना । इंड. विवाहिताय (ठा २ १---पत्र रहा क्छ)। विषद् सक वि + श्रोटय ] तोक शवना।

क्षिड्ड (स्थर:२ २ )। क्षेत्र विडड्रिस्ट (अप १ --- पण १६)। विषट् यक [यि + यून् ] १ अलब होना । २ विक्षुच द्वांगा। विक्रुति (कुम २ ६ १) निष्टुं व्य (ठा = श्रे-पन ४१८) । वित्रह सक वि।+वस्य रे विभ्योद करना। २ मूनकर काना। निस्ट्रॉस (स

१७)। संक्र वित्रहाम् (याना १ व १ २)। इक्ष विश्वद्वित्तयं (ठा२ १~-- प्रव वितर केको थिअट्ट = विकृत (कप)। बिडरूज न [बिवर्तन] निमृति (बीच ७११)। यिष्ट्रस्थन [विद्वरूप] १ विष्योगः २ वाली त्रमा यतिचार विष्येत (योध वहरे)। ३

वि विच्छेर कर्ता (बर्नेसं ६६३) । मिक्ट(तिमे चयमार्ग (मन १ ७)। विष्कृता की [विकुट्टना] १ विधिव पुट्टन । २ पीड़ा संसाप (सूम १ १२ २१)। वित्रद्विम वि [म्युरियत] जी विरोध में अस हुमा हो यह निरोती बना हुमा (सुध भित्रक एक [पि + नाराय्] भिन्तरा करमा । विकास (हि. ४ वर)। कार्र विक्रिकिति (६ ६७६)।

वित्रतियक्ष देवो वित्रद्भित्र (दूप २२४) 1(3) पित्रव देशो विदश्च = विश्व (प्राप्त)। विषय वि विषय र बाग्व (मुपा १४ )। २ विकसित (स ७६८)। विरुप्तस्य कि विग्रहमस्टी प्रतिशय प्रकट-व्यक्त (मन ७ १ १२४) । चित्रक्माश्च पक [क्युव् + आज् ] रोमना धीरना चमकना। शह वित्रवभायमाण (सरा ६ २--पत्र १७३)। विज्ञवनाञ्जसक [स्युद् + भ्राज्ञय] शामित करता । वक्र विजनमार्यास (भग ३ २) । वित्रम वि (बिद्रस् ) विहान, विज्ञ । विदर्भ वा प्राप्तिक संबर्ध (सूच १ २ २ ११)। विवर देवो विदर (केवी १३४) । विरुक्त वि (विपुक्त | १ प्रमृत प्रभूर । २ विस्तीर्थं, विकास (स्वयः सीप) । ३ उत्तम भेद्र (भग ६, ६३)। ४ मनाम मन्नीर (श्राप्त)। १ व राजियर के समीप का एक पर्नेत (परम २ ६७)। जम दे विरास् ] एक जिनदेव का नाम (चप १८६ दी)। सङ् स्मे "मिरिडी मन पर्यव नायक आन का एक मध् (करम १ व्ह बाधम)। २ वि चण्ड श्रामनासा (क्या पीप) । उद्यी श्री [श्रामी विद्या विशेष (बाम ७ १६c)। केत्रो थिएस ।

वित्रम वेको वित्रकत् = विक्रिय (राज्य ६ २) ।

वित्रवस्थिय देखो पित्रशस्यिय = व्यवस्थित

(यम)।

(बाघ भूमा उप ७२० टी)।

(8 4 mm):

क्रम प्रया)।

( ec + tau t

भित्रण नि [बिगुन] हुए धीत प्रसन्धिन

यित्रक्त वि [विश्वक्त] विरक्षित विमोग प्राप्त

यित्रका केवा विश्वक व वि + वर्षम्।

१४% मुपा ११

ψij.

विश्वति भ्रो [स्पुटकान्ति, स्वयक्कान्ति] मरशामीव (भग १७)। पित्रदान पत्र विमान + माम ? १ वरियाव करता। २ धरर्भम्य करता। ३ धरः जात होता मट्ट होना मरम्ब । ४ करण्य होना । निकामीत (सन' टा १ १--पन १४१)। चे≱. विक⊷स्स (तूस १११ व बच≭) रेश मोचा १ < १२)। **E4** 

विज्ञाय पूँ [ब्युप्पाय] दिया आणि-वय (मूप २ ४)। विज्ञ्य पत्र [बि + कः वि + कुत्रै] १. वनाया-नित्य धानायं वे कराव करणा। विज्ञाद विज्ञाय (पत्र करणा भीत्रात करणा। विज्ञाद प्रमा विज्ञात्मपुः प्रीन विव्यविक्तायों (वि ३ १-पन्न १११) विज्ञान्त्रयाणि (व्य १)। १९।३। वङ्ग विज्ञान्त्रयाणि (व्य १)। ४२)। वङ्ग विज्ञान्त्रयाणि (व्य १)। ४२)। यङ्ग विज्ञान्त्रयाणि (व्य १)। ४२)। यङ्ग विज्ञान्त्रयाणि (व्य १)। ४२।। यङ्ग विज्ञान्त्रयाणि (व्य १)।

weo

(पर १.)।
विकास न सिंकित्त । राग्येर-पिर्येय ध्येष्ठ
रामको धीर क्षित्रमा को करने में स्वार्थ
प्रोर (परम १ र र र स्था पर १६२ काम
१ २०)। र गांगिरिकेत रेकिन राग्येर का
प्रोर्ध का कारास-पूज करी (स्थार १ १३)।
१ वि पीक्स शायेर से संकल प्रकाशका
(काम ४ र ११)।
विकासन्या की [विक्रिया विकृत्येया]
विकासन्या की [विक्रिया विकृत्येया]
विकासन्या की विकास विकृत्येया
विकासन्या ११ नागान्य, शायि-विक्रेश से
प्रिया परम ११० ११ पर १३)।
प्राय-पिर्यक्त सेक्स-काम्य स्थित (विकास
२६)।
पिराम्याक्त वि [वि] १ पिरारोग्ये। इ.स-पीक्ष

বিদ্বাধীন কলেবার (বন ২৪০ বঁ)। ব বিদ্বাধীন কলিবলো (বল १६ ছবা পুরা १६ হবা)। বিদ্বাধীন কলনা বুলা (বন আনু প্রীণ্ড পুরা বুলা কলনা বুলা (বন আনু প্রীণ্ড বুলা হবা)। বিদ্বাধীন বিদ্বাধীন বিদ্বাধীন বুলা বিদ্বাধীন বাহিন্দান (বন্দা ৮ বং)। ক্ষাধীন বিদ্বাধীন (বন্দা ৭ হবা) বিক্রাধীন বিদ্বাধীন (বাল্ড ব ৯ ব ৪) বিক্রাধীন

(मामा १ १६, १)।

विद्याल्य वि विक्रियिम्, विक्रुविन् ी १

वित्रसाथि विद्यस्य ने विकापिक्ट (पाधा ज्य क्र ६३ स्यार भा प्राप्त ६३३ मॉर्च महा) 'शिरुबेहिं' (वेदन ७७४) "विज्वार्स" (सम्मल २१६) । विश्वसम्य वेशी विज्ञीसम्म (हे २, १७४) यज्ञी। विकस्तवज्ञ न कियुपक्षयन, व्यवश्यमनी १ अपराय प्रस्ताया २ त्रा का व्यवस्थ 'ता से यो पुणि विकासम्बद्धमान्यसि नेरीस्ट सामाधोकां पत्रसम्बद्धाने विहर्णये (तुश्य २ वय १२,६-- वय ४७८)। ६ वि विन्य**तक 'सम्बद्धक्य**शक्षात्र विश्वय मर्गा(फरदा२ १-—पण १: )। विषयमण्या की व्यवक्रमता प्रसम् क्रीय-परियाप (ध्य १७ ३---पष ७२६)। विस्तातिय क्यो विश्वोसतिय (एक)। विकसरण न क्रियुरस्त्रजीनी परियान (वेच

हो।
विचारणवा की [बमुस्तवीला] सगर केवी
विचारणवा की [बमुस्तवीला] सगर केवी
विचारणवा है र—नव ४६)।
विचार केवी विकोसना । वीह, विचारवेण
(का १ १६ हि)।
विकासना केवी विकासमाण (काइ १, ४—
पव १११)।
विचारीय वेवी विकोसनिय (सा ६—प्य
थ )।
विचारीय केवी विकासिका (सामा १ ६
१, १)।
विचारीय पा [वि+च्छ] विग्रेण बोकार।
विकासीय पा [वि+च्छ] विग्रेण बोकार।
विचारीय पह [वि+च्छ] विग्रेण बोकार।
विचारीय पह [वि १ १, २३)।

व्याच्या करवा । विस्त्रीति (तृत्र १ १ २ १) । विषयसमा केती विज्ञोसमा (व्या १ १, व्या १ १) । विज्ञासम्य वि [क्युस्तित क्युस्तिक] व्याविक्षाः, क्यावस्त्रक (तृत्र १ १ १ १) । विज्ञास्तित विक्रम्यक्ति विशेष कर ते व्या

क्षमा (तुमार १२,२६) ।

विवस्तिय कि [क्युच्कित् ] विशेष वाय है जाकित "चार में विवस्तिया" (सूप रे र २३)। विवस्त स्वा है उन्हें हो जाकित है जिस्से में र २३)। विवस्त स्व है विवस्त है विवस्त स्व रे १२)। विवस्त कि [बिचुय] र विरस्त कियान । र १ विवस्त कि [बिचुय] र विरस्त कियान । र १ विवस्तिय कि [बि] व्यष्ट करार-मात रि ७ ७२)। विवस्तिय कि [बि] व्यष्ट करार-मात रि ७ ७२)। विवस्तिय कि [ब] व्यस्त में स्वर्ण विवस्तिय कि [ब] व्यस्त में स्वर्ण विवस्तिय कि [ब] व्यस्त में स्वर्ण विवस्तिय कि व्यस्त में व्यस्त विवस्त विवस्त कि व्यस्त में विवस्त विवस्त कि व्यस्त में विवस्त विवस्त कि व्यस्त में विवस्त विवस्त विवस्त विवस्त विवस्त विवस्त कि विवस्त कि विवस्त विवस्त

विषक्ष वि [ चिते बस् ] चहुन्य प्रकार 'वार्यविष्युरकृषि सम्बन्ध छ 'तिम्बन्धि संक्ष्मा । विषक्षमुद्रमे बहुन्यदेश मेरोह् सम्बन्धि (स्टब्स्) । विषक्षम च [ब] चुन्नम, 'चुन्नसम् विष्यु क्रम्य केरा पुरस्यक्रमुक्त निक्क्ष' (स्टब्स् १—वम् ४)। विषक्ष विषयि ही विकेशों । केरान्यर वरहेल

विषय पूँ विदेशों र केटाकर वरकेत्र वाता १ करकत्वा (वा को प्राण्ड समा वाराव वाता १ करकत्वा (वा को ) विकोस पूँ विषोगों कुर्यार विकोस निष्यु (क्षाच १२) स्वीत पूर्वा है र १४०० सुर १ ११२ सुर्यो। विकोहस वि [वियोसिट] चुच्च क्या बुधा (वे १, ०१ च १२०४ स १ दूर ११, ११, ११०)। विकोस को विसोस (बुर २ ११४ ४, १११)।

(वर्गीक १९१)।
विजीत यह [वि+धान्य] सवन
करता। विधीतमंद्री (वृष्य रे ग्रूर १९)।
विजीतम वि [विगीतम्ब] विधीतनमारक
(य घर)।
विजीतम वि [विगीतमार्थेत, एक वायक्य
(गट-वर्गी १९)।
विजीयमा विचीतमार्थी विधीत

(पुर ११ ११)।

विभोरमण-पिदंप

योष १२६)।

तप-विशेष विधिद्यम से शरीर धावि का स्पन (धीर)। विश्रोसमण देवो विउसमय (पण्ड २ २---पत्र ११व २ ४.—पत्र १४६) ।

विश्रासमिय वि विश्ववरामिती जनगण कियाहमा(कस ६ ६ हि)। बिभोसरणमा देखो विउत्तरणमा (धीप)। विभासव एक ियव + श्रमय् ] उपरान्त करना ठएडा करना, बना देना। संस् 'तं प्रक्षियस्यं ध- विक्रीसवेद्या' (क्य) । विजोसविय ) देखी विश्रासमिय 'विव बिओसिय । बोधनियराहुहे (क्ष १

३४ ४ ४): 'विद्योसनियं वा पूलो छन्नेरि च्चर् (क्स ६ १) ४ ६ वि) । विभोधिका व [ब्युस्तुम्य] परिवान कर (माचा६ ६२ १)। विश्वासिय वि [ब्यवसिव]पर्ववर्तित प्रमात क्याइया(मूच १:१ ६,३)।

विमासिय वि विशेष्टिती क्रेश-धीत निरावरण नेयाः "निष(श्वी)शियवराशि--(मद्या १ १—पत्र ४३)।

विभासिर रेको विकसिर (पि २६६)। विश्राह र् [किसोध] समरत बाग्री

(मनि)। षिस न दि ] बाध-निधेव (सन) । यिचिष्यम वि [व] १ पारित विद्यारित । २ मास (रेक हरे)। विषुत्र र् [बृध्धिक] कनु-विरोध विष्यु (हे

\$ \$₹E> ₹ \$\$ #E): पिंद्र पक वि + घट् | पनव होना । विद्रह (प्राक्त ७१) । विक्रिम १ देवो विजुम (६१ २६२ । विद्वास है १६ दुवा १६ १४ । परव

वेदे देश प्राप्त प्राक्त दक्षांसा २३० छ) । ∫

विजय देवी यंज्ञण खेलीसमिज्ञाई' (चंड)। विञ्रण देखी विञ्रण = स्थलक प्रजयशी में "विक्लो" (रंगार )। विमार्थ विमानी १ मीव कि विमानन (गा११६४ स्थापा १ १—पत्र ६४)। २

ब्याण बद्रेसिया(हे १ २३ २ २६ प्राप्त)। ३ एक बोल पूनि (विसे २४१२) । ४ एक मं हि-पुत्र (मुपा १४०)। किंग सक [ चप्रय\_] बेप्टन करना सपेटना प्रमच्छी में 'निटब्र' 'निटब्र एं सम्माएं ह्यमस्यकृतुबन्धेवीहि (मुपा ५७३)। प्रया चंक्र. पिटाचित्रं (मुपा १८६)।

विंट न [बून्त] फन-पत्र बादिका क्यन

(के १ १ वटा बाहर रोग बान १ २)।

पिंटक ) न दि । वशीकरख-निवा बिटब्रिअ र्रमार्थि कुल्बीक् (टमर्कि)-टबाई करबायनाई कम्माई (शिर्र ६७)। २ विशिध मानि का प्रयोग (बृह १)- विटलि-चारिए पर्दमित (मण्ड ३ १६)। बिंटकिया की बि] गड़री पोटकी पुत्रपती में किट्यू के 'वान पूमरेण बिका समूचता वर्णनिर्देशियाँ 'तीए विटिशियाएं' (मूरा २११)। विटिया की [प] १ यउँ पेटली (नुच २ १८ **३ न १**४२ टी) । २ मूक्तिका **संदर्शीयक** प्रमणकी में 'बीटी' 'जन्माधेवरि मुख्य !

बीघो र्लि (स ७६)। यिवर १ [क्यन्तर] १ विष्यु धारि 😢 बन्तु (उप १९४)- 'दुहाल को न बीहद नितर सन्ताल व बस्ताल, (बका ६५) । ५ धक वेष-वादि। 'मिस्पूनाल' मधरा हि विदश स्त्रीर किकस' (या १२३ वे २) । विंदानी की [बुन्दाकी] वैंपन का भाव वस्मं चंत्र विविधि सत्य सत्यं (सूध ११४

क्रश्चमवर्षिटिया नियवाँ (मुपा ६११)

'पविषयाओ मीखिविधि(१डि)पादि सह धीयु-

भिंद् सक [थिदू] १ जानना । २ प्राप्त करनाः २७)। वह. यिद्याण (खामा १ १---पत्र **२८, विपा १. २—पत्र ३४)** । र्थिय देखो ५६ - कृत्य (भनि वि ३६०) : विवारम ) रेबी वैदारम (मुपा ४ ३ वाट--

विशास्त्र है एक बढ़े । बर वृ विरो एक है

(सम्बद्ध ७३) ।

ৰণ (বী ৬)। विवृश्कि वि वि १ च्यानव देशीप्यमान । २ संपूर्व योगवाजा क्राच्यक । ३ निमाण म्बान । ४ बिस्तुता चैनावि नितृतिहासुर वस्णीविमाणायुसारं सहंतीः (कप्पू) । विन्न देखो बंन्न (प्राष्ट्र ३६)। वितासण देशो सिंदायण (प्राष्ट्र १६) । विंच सक ियम ] वींचनाः ग्रेटनाः वेदनाः ।

विवद् विवेश (पि ८०१, मम)। वह विंघेत (गुर २, ३३)। संक्र विभिन्न (बार---मुच्छ २१३)। हेट- विविधं (स ६२)। इ. विंचयच्य (मुपा २६६)। विषय व कियमती क्षेत्रक वेपना अन्य विष्ण'--(धर्मवि १२)। विधिक्ष वि विद्धी जो देशा समाहा यह षित्र (सम्मत्त १**१**०) । विभव देशो विमहय = पिलय (द्ववि)।

विभर देशा विमहर। निमन्द (पि ११६)। विमक वि [विद्युपत्त] व्याकुल पवदाया हमा 'विस्विमत' (उर ११७ टी क्य १ प्रदः यशि योग ७३) । विभिन्न वि विस्तिती बाइवेन्डिक 'बोबुलइ बेबबा बिन (?बि)बो व्य परला-इमो शीर्स (वन्ता ६६ मन्ति)। विभिन्न देखा विश्वमित्रा 'बाहरपाँचीनवासाए' (बज्जा वद्)। विंसिय (शी) की विंशिती की पर (प्रयो २ )।

विद्य एक वि+ध्यभ विशेषा करता। निवंबाज्य (सूच १ १४ २१)। विषरंप थक [थि + फरप ] हिम जाना विविद्यासामा । वक्त विक्रप्रसामा (मूझ १ १४ १४) । विकंप सक [ वि + कम्पय् ] १ शिताना, वसाना। २ स्थाप करना छोड्ना। ३ धपन मॅडब से बाहर निकमका । ४ भीतर प्रवेश करमा । विचयद (मुख्य १ १) । चंद्र-

विश्रपद्या (मुज्य १ ६)। बिक्रंप वि [बिक्रम्प] कम्प क्रिमन (र्वका ₹4, ₹₹) ι

५५२

कियम देवो विद्यस । विकास (पह ) । विश्वसिय वैको विश्वसिक्ष (कप्प)। विक्रहा रेची विगदा (छन ४१)। विकारिण वि [विकारिम] विकार-पुष्क वाको प्रविकर्माख्यो पद्माप्रीपो (परुम २६ E ): विद्यासर वैको विधासर (के १ ४३)। विविद्य देवी विशाद = विकृष्टि (विसे २६६८)। विकित्रक रेबो विशिषण (वीषक २ ६ हो) 1 विशिचलया देवो विशिचलया (योजम २ १ टी छ द री—क्व ४४१)। विकिट वि विकास १ अवकारा चिकित्रक-वहारियंवी (महा) । २ व. बरादार शार हिमों का उपवास (संबोध १८) । देखी विगिद्ध । विक्रिय सक कि + की वेषमा। विकिशह (ÈY ₹₹) I विक्रियम न विक्रयम विक्य, वेशना (चुमा)। विकिन्स विकित्रीयी १ व्याह, पर ह्या विकीर्श (के) 1 विकिति देशो विगद्ध = विक्रसि (प्रश्नह १२)। विकास वि विक्रीण दे चारष्ट (परा १ १-- व्या १)। २ देशो वित्रण्य = विवीर्त (महा १ १--- पत्र ४६)। विकिय देवो विगिय (योज्य २ ६ दी)। विकिर पण वि + की श्रीकरणा। २ सक केरणा । ३ विकास । क्यक विकास विकिरिटामाण (यक्क ११४) एक)। विक्रिए वेबो विकरण (हंग ४१) । विकिरिया की विक्रिया है विकि किया। २ विधित्र विद्या (राजा)। रेको पिक्सिरिया। बिक्रीण देखी विकित्त । विक्रीसा विक्रीसार ( यम् )। विश्वीरत देखो विश्वर । बिद्धिक वि [बिद्धरिसर्थ] बायव ब्रह्म (व्यक्ति) । विश्वस्त्र धक [विश्वस्त्रय] पुरुष करताः क्सम्य । श्रंक विकृत्रिय (याचा २, ३

2. 5) 1

विश्वयय व्यव [वि+क्क्यू] क्षेत्र करता। विकृष्यर् (या १६७)। विकुत्रत केही विउत्तव विश्व में है, पूर्व । विद्यांति (पि इ )। मुक्रा, विश्वानिक (पि ११६)। यनि विकृत्विसीत (पि १३३) । बह्न, विद्वायपान्। (हा १ १--वन १२)। विकुस र् [विकुश] बल्ब धार्व दुख (धीप खावा १ १ टी---वम ६)। विकृत्य सक वि + कृत्य निर्मात करमा। विकृते (विशं ६३३)। विक्रम बक वि+क्रमयी इक्षा से सुह मोक्ना । किन्स्टेड (विवे १ ६) । विकास र [विकोच] विस्ताद केवान (वर्मधे १६१) सन १, ७ टी---पम २३६) । विकास देनों सिगोय 'को प्रवस्तुं विकोस**र** की नेवी की इसंसाधीं (नेइस व १ ) ! विकोषण व [विकोपत] विकास, प्रवाध फेबाना 'बीसलद्विकोनसमूस्य' (सिंड ६७) । विकायज्ञा 🛍 विशेषना 🕽 विपान **'इवियानविकोक्स्यार'** ( झ. ६---एव 886) I विद्योगित 🕅 [विद्येक्ति] दूरव निर्देश (पिंक ४६१) ह विकोस वि [विकोक] कोश-पहित (तंद्र ₹)ı विश्रंस ) यक विश्लेशय र क्षेत्र विभासाय पीत होना स्विक्ता। २ कैक्शा । विकेश हि. १८ ४९) । यह विश्वसार्थत (पर्या १ ४-- पत्र ४०) । विकसित्र वि [विकेशित] १ विक्रीस्त (इमा) । २ कोक-प्रीत, गंगा (खल्म १ -प्य ११३)। विक तक [वि + भी] वेशना । वह विकर्त (बरम २३ १)। क्यक विद्यासमाज (बर % **₹ ७**₹) ( पिका प्री [पिकार] वेकता (पवि १०४) वरा सं ४६) । विक्रम वैद्यो विद्यव ( वर् )। विकाह वि [पिकासिम्] वेचनेशामा (दे र 8 ) 1

यिष्टत वेदी विश्व ।

विष्यंत वि [विकास्त ] १ पराकशी सूर (छात्रा १ १ — यत्र २१ विशे १ ४१) प्रासु १ ७ कप्प)। २ पूंपहुबी शरक-मूर्त्य का बाँदावां मरकेनक — मरक-स्थान विकेश (देनेत्र १)।

विकासि की [पिकान्ति] विकास पराज्य (एसा १ १६---पत्र २११)। विकास केको विकाससम्बद्धाः च विकासस्य (क्षेत्रस

६ १)। विद्यापन [शिक्स्यण] विकय वेचना (सुग ६ १) सहि इ.टो)।

विद्यस सङ्घ [वि+क्रम्] पराज्य करना युक्ता विश्वसाना। भूदि विक्कमिश्सदि

पूर्वा (स्वार्थ) (तर्थ () ( विक्रस ट्वे [विक्रम] र त्रीमें पराव्य (हुया)। २ सामर्थ्य (स्वार्थ)। २ एक एवं। का मान (सुन १९१)। ४ एक वा विक्रमास्थिय (रोग ७)। उत्तर ट्वे [ देइस ] एक एवं। (म्हा)। पुर न [दुर] एक नवर का नाव (त्री २१)। राय ट्वे [चेंदा] एक एवं। (सहा)। सेण ट्वे [चेंदा] एक एवं। (सहा)। सेण ट्वे [चेंदा] एक प्रवन्दुनार (सुन ११२१)। १इव, १इव ट्वा [विस्त] एक प्रविद्ध एवं। (सुन ११

का बस्मल १४६ चुता १६२ वा ४६४)। विकासमा पुं [वे] चतुर चालवाला बोहा (वे ७ ६७)। विकासि वि [बिहासिन्] पराजमी सुर

(कुमा)। विश्वस वि [सिम्ब्बर] स्मानुस वेचैन (पर १६६ प्राप्त संयोग रहे)।

विद्वायमाण देशो विद्या

विकि देवो पिकड्, 'ते मंद्रविधिकाणे पूछ पिक्यायाचा न ते प्रीण्डो' (वंदोन १६)। विकिस्म वि [चे] चंस्कृत, भूषाय हुया (वत ७ ४६)। विकिस्म नि [चिक्रच] चिक्रण करता हवा

(पराह १ व—पण १४)। विकिन्द केसी विकिन्द्र (संबोध १८)।

विक्रिय सक [पि + म्हे] वेक्या । विक्रिय सक (प्राप्त) । कर्यं, विक्रियोगीत (पि ४४०) ।

बहुत विविद्यांत विविद्यांतित (पि ११७ सुपा २७६) । संकृ विविद्यांगाम (गट---मुच्च १४) ।

विश्विष्टिपाञ } वि [विक्रीत ] वेवा हुमा (सुना विश्विष्ट पे प्रति । विश्विष्ट देशी विडठा = वैक्रिय क्यांव

विश्विस देशो विडल्प = वैक्किय' = व्यक्ति विश्ववन्त्रो मुद्दो वन व्यक्तियस्ति' (सुपा १८७), कर्माविद्यय-कामो देवुण्ड (सम्पद्ध १ ४)। विश्विद सक्द [सि + कृ] विश्वदेशा विद्यसम्बद्ध

फैनाना । बनकुः विकिरिक्समाण (राव १४) । विकिरिया की [विकिया] विकृति विकास

। चाक्कारपाक्ष्य [|चाक्क्कय] प्रकृति व्यवकार चीय नमस्सारपिक् विकारिया । १९४) । देवो विकिरिया । विकासिय वेचो विकिय = विकार (पुर ६,

१६४, पुरा १०४)। विश्वे सक [वि+म्ही] वेषना। विश्वेद विश्वेसद (देश १९। प्राप्त करवा १४९)। इत विश्वेद्या (वे १९४) ७ १९)।

विक्कंप्रमान [क] निक्रेय, केवने यीपय (के ७ ६के): विक्कंप्रमानु [विक्कंप्रमान क्या से प्रकृतिकक्ता (के के देव)।

विक्रोस सक [बि+ कुश्] पिल्लाना। किनकोश (ता) (तृत्वा २७)। विनर्जास दूं [बे] १ स्थान समझ (१७ वट)। २ सवसका बीचका साव (१७ वट) १ २ सवसका बीचका साव (१७

वर)। २ प्रत्यक्षा श्रीच का मान (१ क दक्ष है १७)। १ निवर, विद्वह (३ १ १४)। क्रिक्स भ ट्रे विकास १ दिस्सार (गएका १---पन १२) ठा ४ २---पन १९६ है

७ वन तस्य)। २ चीवारी चीवारी वेदारिन चेदा एमं भीमणणस्य प्राप्तानिकारीय गरहणते (धन २)। १ बाहुब्ब स्कुला, तोटारी (सुन्य १ १—पय ०)। ४ प्रतिवान तिरीय (सम्प्रकारी न)। १ माटब द्वा एक पर्य (क्या)। १ द्वार के दोनों तपक बीवार का धन्तर (छा ४ २—गन २११)।

विकसीमय वि [विक्सिन्सर] निक्स, रोका सुद्धा (सम्बक्ता द)।

पिनस्तम न [पे] नार्यं, काम कान (दे ७,६४)।

धिकस्त्रय वि [विश्वत] वस-दुक्त, इत-वस् (भग ७ ६ — १म ६ ७)। विकस्तर सक्ष वि + क्षी १ विद्याल

थिनसर सक्त [ वि + क्षु ] १ व्हिटरा तिवार-विवार करना। २ फैसामा। ३ दवर कार दोकमा। विस्तारद (क्ष्पु) विस्तारमा (चवा २ हि)। काष्ट्र विकसारिकामाध्य

(एक):
विकासका न [निकासका र निकास । २
वि निकासका कर्म सर्वकारिक कर्मा (
(पुरा ४०):
विकासकार कर्म [विकासकार (प्री):
विकासकार कर्म [विकासकार प्री)
विकास विकास कर्म [विकास विकास प्री):
विकास विका

।वदन्ताय ।व [।वदन्यात] प्राचक, निमुत (पाम पुर १ ४६ रेना नहा)। विकलास वि [वि] विकल कायव कुरिस्त (वे ७ ६वे)।

धिकित्राण्या वि [दे] १ साध्यतः सन्ता। २ सन्दर्भेषुं। १ न वक्त (१ ७ ८०)। वि क्त्राप्य केसी विकित्या (क्तः)। विकित्तत्त्व वि [विश्वितः] १ फॅका हुसा (पायः क्षतः यदकः)। २ स्नास्त्व पास्त

(पाय कर पड़क)। २ प्रास्त पापत 'पत्रवाधिकायकरे परिवर्ते' (कर ७२० टी. हे १ १६६ महा)। विकित्तर केटो पिकसर। विकिटरेका (क्या)। विकित्तर केटो पिकसर | पिकटरेका (क्या)। विकास हुया किंता हुमा (पूर १, २ ६ मुप्त २४६ वहरो।

विक्तिका एक [वि+सिप्] १ हुए करना। २ प्रेरना। ६ कैन्ना। विक्तिबन्द (महा)। दिश्कितवयान [क्सिप्प] १ हुपैक्प्छ। २ प्रेप्छा(यम ६५)।

विकास वुं [सिक्युप] र बोमा 'ब्रोझो' भिष्ववेदी (पाप्प)। २ जगाद, प्रतामि, बेंद्र (वे र १)। १ क्रेंबा बेंक्स क्रम्बेटीस्ट्रा (बोचना १०१)। ४ फॅक्सा केरस्ट्रा (बा १८८२)। १ म्ह्र पाप्परिकेट प्रवक्ता केरस्ट्रा ह्या मध्यम (पार्ष्ट २ ४—पत्र १११)। १ विचानमा (घर्ट २)। ७ वित्तर हेरेटे

(स ७६४)। य सैन्य, बरकर (स २४ ४७९)। विस्तेषयो औं [यिष्यपर्या] कवा का यक भेद (स ४ २—यन २१)।

विगाल व [विगाम] १ वक्तीय, बोकानगर

विगार है [विकार] विकरि प्रकृति का सम्बन्ध

विगारि विश्विकारियाँ निश्व होनेनावा

परिखान (क्य है दे दिने रहे बन)।

(पिष्ट २० । पचम १ १ ४०)।

रहदा वेदय ७१६)।

(देव के)। २ विप्रक्रिपति विदेश (समीधी

वि विभूसी होच-प्रीह्य (शोच ४७६)। स्रोग 🛊 िशास्त्री एक महान्यत्, व्योधिक केन-विशेष (ठा २,३—पत्र ७ ), केवो

२—यम ७३। १ --यम १६६)।

बिराय वि बिराती १ शास-अस्त निन्ध

(सामा १३५८ विशे १९७७ (पित ६१ )।

२ वं एक नरक-स्थाय (देनेन्द्र २६)। भूम

मका)।

विगास देशो विभातः=विकास (तुर १ बीक्स स्रोग । सोगा की शोका विकास 1 (eff विशेष की एक कादी (ठा १, १--पा )। विगासिय वि विगासित् विस्तित प्रदी-किरारण व किञ्चरकी परिवासक, परिवास बिया 'परिपर्मात काले निमा (१वा)निय (कक्ष) । कैस वासाद (सुर ६ २६)। बिगाला सक कि + गाँ ने निम्दा करना । विगाइ वक [वि+गाइ ] र सब्द्रशाय **वक्र विगरम्**गाण (सूच २, ६, १२)। करना । २ प्रवेश करना । श्रष्ट शिगादिका कित्तास्य वि विक्रमान् भीपण भनेकर (धम १)। (बुगरे २ घ. घ. सम्ब्र)। विर्मिश कर [वि+विन्] १ प्रतन विशाह्य स्टब्स [ वि + गख् ] श्यक्ता, बुवा । करण प्रकार करका। २ वरिष्यास कराया। निवस६ (वह)। ६ विकास करना। विशिवक विकिया विगाउ पू विकास र विकासीमान-यो निर्विति (धारणा क्या मानक १६२ ही) दीव का चार क्रानेन्त्रिक्ताला बन्तु (काम क् युष्य ११४ १२: शिंड **१११)** निर्मित रहा ४ वे रहा रहा और ४१)। य 🗺 (सुम्र र**ेश** २१३ <del>क्टा</del> १ १६ विक विशस्त्र≕ निक्या(ज्याचन पूर्≉र पंचा ३३१)। वह विशिषेत विशिवसाण १४ ४७)। विसा⊈ विश्वानिकनास्य (मायक २६२ टी: प्राचा) । सत्र, विशिचि कर्ण विभिन्नचा (वित ६ ४, भाषा)। (ध्रुष्ट ६२)।

-विवस्तिया की विद्योपका विश्वासीय विलेप (शव ६)। विकासीक प्रक वि निम्हा करना प्रवस्ती में 'क्कोडवू" । क्किनोबेद (सिरि वरह) । विसंक्षिप नि विकरिक्त विश्वासिक विश्वा हमा (पद्ध २२ ६२)। वित देखी दिश व्यक्त (क्या १ १---पण ७- एक सामा १ १—वन ६२)। निगइ की विकृति ? विकार-वतक प्रा मादि वस्तु (स्राया १ व---पत्र १२२) क्या चं चरा नर २ )। २ विकार (ज्ल 165 5 55 क्तिक और किरावि विनास (विसे २१४६)। विगद्देगास नि [दिगताङ्गार] धक-धील (ब्रोप १७६)। किंगहरूब नि विगतंत्रको इन्छ-धील निस्ता (का १३ दी ६१३)।

किर्मन देशो विशिच। इंड. विशेषिकं. विगंचिकण (वव २) श्रेवीच १७)। विर्माणम देशो विभिन्नमा 'कार संस्कृत वरूने का चेनरिर्वचर्ता (धंनीन १) । पिरांचिक देनो बिशंचिक (ध १३% है)। विगच्चा पर्कवि + सम् । भट क्रोना। वक्र किरक्कंट (सम्म १९४)। विगरम देशो विगद्ध = वि + वह । बिगाड केरो विस्ता = विकट (पछ १ ४---पण 😻 ः धीप) । बिगड देवो विकड = विवृत (ठा १ १ टी---पव (२२)।

विशाण सम्ब [वि+गजप] १ निका कत्या। २ वद्या करता। क्यक्र विश्वविक्रीत (by ty) I पिगच एक वि + छत् विश्वास्त्र खेला। **र्वप्र क्रिक्टिकर्ण (सूद्ध १ ५, २, )**। विमान नि [विकृत] कारा ह्या, विक (**पबार t—पद t** )। बिरान्तरा वि [विकर्षक] कारवेतावा (शूप २ २ ६२)।

विगर्भणा को [विकर्षमा] फैरन (का)। किल्पन नि [क्रिक्टनक] प्रयोग करनेनाता भारमस्वाचा क्राप्टेनावा (ववि) ।

हेड्ड विगिष्पित्रं (संह ६६८)। ड विगिष्पियम्ब (गि.१७)।

विशिवान व [यिवेधान] परिष्ठापन, परिव्याय (पिंड ४८३ वस) !

विभिन्नणया दे [पियमा] १ तिर्वेष विभिन्नणा (ठा चन्पण विभिन्नणा (४४)। वर्षण्याय(योषया २ १. स ११ योष ६ ६ ८७)।

र रु स्थाप ६ ६ ८०)। यिनि द्वादी [विचिक्तित] संदेह संस्थ

बह्म (या व परि) विविद्ध केने सिन्द्धि पाने वर्ष विविद्ध कार्न पोवास्तेत्रवर्षाण (पटम २ व व व ४ २७ , बस्म २ २७ उत्त ( २४.३)। स्वस्म वृ्द्धि सप्क्षित्र जन्मी तातु (या)। सिप्स विद्यालक्ष्मी महावार पार सा करते प्रिकृतिक उत्तरास करतेना (रूप)। पिराय केरास्त्रा = निद्धत् (पोपस १०६)।।

पितिस्य १ प्यः [चि + स्के] विशेष खान पितिस्यस्य होना चित्र होना । विक्तिह, विभिन्नपूर्वा (चि १६६ स्त्रचा २ ९, ६ २व) । विकास वि पितास्य १ रुण प्रीस्य विशेष

बित्तुच वि [पित्तुज] १ द्वल प्रदेश (विधि १२११ प्राप्तु ७१) । २ सम्बुद्धस्य प्रतिहुत्त (पंचा ६ १२) ।

विगुच नि [रिगुत] १ विष्कृत सम्बोधित (या १२)। २ वो गुना पढ़ नया हो यह विभयी पान गुन गई हा यह, विकस्ते फर्ना-प्त हुई हा मण सहस्त्रीरक्कों (या १४) सर्वेदि ३७)।

शिगुष्प दवासियोगः।

विगुरुपमा देवां विष्ठस्तमा (स १—पत्र १६)।

(द)। विगुम्पिय रक्षो वित्रहितम (प्रम १६ १२)।

विवाहिय वि [दिवहिया] विश्वका क्षेत्र प्रकट विवाह स्था हा वह (क्यु) ।

विगाय मक [ रित + गोपय ] १ प्रकारिय करमा १ रितकार करमा १ ए कोह्य करमा १ प्रिकार करमा १ ए कोह्य करमा १ प्रित चुत्र मु च्यावम्यको भो प्रहित्ति पर्यावद सम्प्रती क्षितिकत्ते (भेष १ ) १ वर्षः विद्यावह (कावि १६४) १

विगुव्यप्ति (प्रत्य) (प्रत्य) । संझ-विगायिशा विगावश्चा (कव्य: सामा १११---पत्र

वितायम म [यिक्षपन] विकासः 'वहनि य वीक्षिम्बेदी वोसमहिनोबस्यमहुदूर' (यावक २२८)।

२२८)। विस्माह् पुं[ियमह्] १ वक्ता, वांक (ठा २ ४—यव वर्ष)। २ शरीर, वेंह (याया स ७२६ जुना १३)। १ पुट सहाई (स

७२६ जुना १३)। १ पुत्र वसाई (व १६४)। ४ धमान प्राविक समान प्राविका १)। ६ बाइति प्रावान प्राविकायास्त्र (वय २ ०)। मङ्ग्रेति द्वीति वीक्सासी पाँत वकार्यस्त्र (ठा १-एक ११ थन)।

विमाहिय कि [ वैप्रहिक्त] शरीर के व्यक्ता निवयदिव उप्रयक्तकार्ध (वरह १ ४—नव ७६)। विमाहाज कि [विप्रहिक्त] युद्ध-त्रिका 'वे विस्महोत्र बनास्त्रको' (युप्त १ १६ ६)।

विमाद्धा (यद) श्री [विमाया] क्षत्र-विकेश (पिम)। विग्रमुख वि [वे] व्यापुत्त विमा द्वया

(पनि)। विग्मुच रयो विगुच (वर्गीव १वः ६वः)। विगम्य देयो विगोव। श्रेष्ट विग्गोविचा (क्य यौर)

विगम्मव दृष्ट्रि मादुनता व्याद्वता (१ ७ ६४ और वस्म २६)। विगम्मवनया स्मे [विगमवना] १ तिरस्कार।

परनापना स्व [परापना] १ वरस्कार । २ फरीहर (चर) । विगय पुर [पिपन] १ वस्तराय, व्यापात्रः

प्रतिक्रम (जुडा वेश, दुसा समू १४ १३६, घम कम्म १ ६१ वर् ) १ वर्ष ११८० प्राप्त के बीचे प्रव सारि प्रतिक्रमें वा पातक क्यों (कम्म १ १२ ५१)। दर्श वि [यू] प्रीत्रक्य-कर्मा (कम्म १ ६१)। इति [यू] विक्रम्याक्त (युक्त)।

वि द्रिया प्रावस्थनका (क्या १ ११)। ६१६ व ] रिच्य-राग्य (पुर १ ४४)। रिरुप रि [रियुट्ट] प्य-पर्व क्या रिरुप रि [रियुट्ट] प्य-पर्व क्या

(प्रामा ११ थे-ना १३१)।

| विश्विय वि [विद्यात] विष्म-पूज (हम्मीर १४)। | विश्वत वि [विद्यात] विस्तावा हवा (विद्या

विम्युट्ट वि [विपुष्ट] विस्ताना हम्म (विना १ २—नव २१) । वेघो विपुट्ट । विपट्ट सक [यि + षह्म्]ेर निमुद्ध

थिपट्ट सक [ यि + भट्ट्य ] १ तिपुक्ष करना । २ निनास करना । निपटटेड (उन) । थिसट्ट्य व [यिसट्टन] विनास (नार) । विपत्त सक्तो विद्वस्य (यन) ।

विधास्त्र वि [भिषस्त विधास्त्र] १ विशेष कप सं मधित । २ व्याप्ता व्यादिनियत्वस्य मध्यम् (मद्दा प्राप्त) । विचार वेको विग्यर (दन) ।

विधाय पुं [विधाव] विकास (हुमा)। विधायम वि [विधावक] विकास-कर्जा (धर्मेर्स १२६)। विधाद व [विधाय] विकास करता

थिपुटु व [थिपुट] विकल सावाज करता (पर्याह १ -- पत्र ४४)। देखो थिपुनुह। थिपुन्स यक [ वि + धूर्णेय्] इसला। बहु- थिपुन्ससाण (तृर १ १ १)। थिपुन्स हिंदिसुरुक् वर्ष्ट्र पर्याह

सन्त (उर ७२० दी)। विषयित्य ध्वे [विषयिक्य] रोन-विशेष भाग (ध्व)। विषयित्व मि [विषयित्व] बतायमान होने

वन्ता (स्कः)। विव्यक्तिय वि [विव्यक्तित] चंत्रमः बना हृद्या

्मात)। मिपार देखो विभार चति + चारम्। थिया-्रेडि (मृष्य १ ४)।

्रात्त (मृष्य १ ४) । विचारम वि[विचार क] विवार-मृत्ती (४३६)। विवारण देयो विभारन = विवारण (दुव

१९७)। विनारणा देवो निभारणा=विभारता (वर्गव १९)।

(धर्मेंबे १ १)। विपाछ व [विपाछ] बन्दरान (१ ७

व्य)। विचिश्रवि [रिविव] द्वताहुवा (१ ७

६१)। विभिन्न मङ [वि+विन्धम्] तिवार

करता। विकरः (गरा)। कह रिजिनेत (तुर १२ १६६)। इ रिजिन्द्रक्य विजित्तक्य (क्वा रु. ४६ इस्प १)।

किन प्रसों से मिथित । २ धस्तान में 🗱 किन हो कर किर प्रवित तोड़ कर शांवा स्यामा ४२)। २ सद्धाः सामग्रेतासः 'ৰিছিতা বিশিতৰ ৰান্ডিজন' (লং ১৯ ह्मा (निसे दर्द)। विकास प्र [किस्सारा] परिवासः नुस्रीस र्डक्प्प)। ४ मनेक विशेषे दुव्छ (कृप्प बीयरार्व भारो विष्कृतः विस्तरिक्वासा (संबोध )।

> विचि की [यःचि] तरंग कल्लोस (राज्य \$ # 21)1 विच्यु } देवो सिंचुअ (छन १६६ 🖷 विक्ताम । इ : वस्स १—वन ४६)। विच्युद्र की [विच्युति] भ्रंत, विश्वत (मिने १): विकाशय न [क्] छत्रवान, सोबीसा (दे ७ विष्क्षं देशों विश्र≕निद्≀ विश्वद्रह्म सङ [वि + द्वर्षय ] परिवास

पिन्द्रत र्थ वि र निवह ब्यूस (दे क

इश्यासास २२६ व्याचा ५ ५)।

(4cot) 1

विच्छाय एक [विच्छायम्] निस्तेत ৰুজ্যে 'বিশ্বয়াত দিবৰ' বুলাদেখিল धापुरुकोनि' (यडह) । वह, विच्छाअंद (<del>2</del>27) 1 विविद्याश्रामि [व] १ गाउँछ विकासित । २ निषित्र भूमा कुमा। वे विरक्ष (वे क 1 (89 विच्छिम केवी विक्रिम (उस १६ १४०-करना । वह- विच्छानमाम ( लाख १ शिर ३११७ व १)। १ --- पत्र २३१)। संब्र- विच्यात्रक्षा थिब्छित् सक [वि+शिद्] तोक्ना प्तवन करना । विनिद्धिर (पि १ ६) । धर्मि विण्यक्ष प्रविच्छरी १ ऋषे, वेबन विश्विदिद्वि (रि १११) । वह विश्विद् बंपति (पामः वे भः ३२ श्री 🛊 १ ३६। साम (भग ३— व ३६६)। वह )। रे विस्तार (दुमाः नुवा १६२)। विक्तिका नि [विक्तिमा] क्षत्र किय

नुष्य वर् ।

हुमा (मुपा १६६) ।

१९७ वहा क्ला)।

विष्याउ देवो विद्यास ( वर् ४ )।

रे पूँ एक गरक-स्वान (क्लेन्स २४)।

विश्वादि [विश्वादि ] १ विश्व प्रावृति-

वाला प्रतीश (परह १ १--पन १४) ।

विच्छाइय वि [विच्छायित] निलीव किया

विच्छाय दि [बिच्छाय] निस्तेव कान्ति-

इच्छ (क्सि १ २ वि—पत्र १८० चार—

प्रदिक्त प्रदेश (नुर ४ १ **६ क**म्यू। प्रामु

विचित्रता का विचित्रता कर्म बोक में ध्यतकानी एक विशासाय देशी (अ ७---**बन्न ४१७)। २ संपालाङ म ध्युनेवाली एक** दिशामाधि देती (चन) । विशिक्षय । [चिचित्रया व कुह (मल)। विपुनिर (शी) का विषिध (गार---मानकी १४१)। पिमुक्षय न [विपूर्णन] पुरुपुर करनाः

दुष्ट्रा-प्रदा करता (इ.३.)।

गढ़ वार्ति (पर्श्य १--- पत्र ४६) ।

४) । ३ घनक रैक्शाला राज्य (खावा १

मुण्य २ )। १ वृ पर्वत-विदेश (प्रश्नेष्ठ १

६--वन १४) । ६ नेश्नेन धौर नेशब्दि

नामक इनों का एक बोकरात (ठा ४ १-

पत्र १६७) । कुछ ई [कुट] रहेवोचा नदी

क किनार पर स्थित पर्यंत किशेष (इक)।

प्रकार वृ [ प्रभृ ] १ नापदेन और न्यूब्सरि

समय इन्हां का एक तीक्सत (ठा ४ १---

पत्र १६७ इत्र)। २ चनुष्टिका जेतु वी

विक्यिति को विक्यिति । विक्याक रवना (पामा स ६१%) सुपा १४४ म्ह २६०। गुउड)। २ प्रान्त नाव (शुर ६ ७०) । ३ श्रीमराम (वा ४००) ।

विक्रिया के विकित्यक्य (भिपा १ र धे-पथ २६) ।

विविद्यम सक [ वि + स्पूरा\_] विशेष क्य से स्पर्ध करना । कवक चिक्किस्पमाण (कप्छ धीप) ।

विक्शिव सक [यि + क्षिप\_] देख्या । संक विक्किविय (शार-केंग्र देव) ।

विकास ) देखा विज्ञास (का २३७ जी विक्यूस रें इस वर्त वर्ष १४८ मानू १६३ खामा १: ब-पन १९६)।

विक्यूडिअ वि [विक्यूटिव] १ विद्वा हमा जो प्रमय हुमा 🖹 विरहिष बहुनि ह बाबस्टेरां सबी समुद्रामी व्हरि विश्व (१७६)(रिस्से' (शन्ता १६६) । र प्रण (चन)।

क्रिक्टरिक नि दि । अपूर्व क्रमुख (वड )। विच्छरित्र वि विच्छरित । बन्धि वहा हुन। 'तिवर्ध विव्यक्तियवं वांडवें' (पाद्य)। २ धंबद, जाड़ा हुया (छे १४ **७१) । ३ म्यास (परम २, १०१ सपा ६** २१२ नुर २ २२१)।

विक्छ्य स्ट [बि+सिप] देवना दर करना। निष्णुहर (ते १ ७३ वा ४२४ म)। इ पिरुद्धक्रम्य (से १ ११)। विष्युद्ध पत्र [पि + सुभू ] विद्योग करता र्षक्य हो उठना । विन्द्रहिर (ह ६ १४२)। मिक्छ वि [विक्षित ] देवेश ह्या हर फिला ह्रम्य (से ६ १६) । २ प्रस्ति (पाध) ।

निष्युत नि [प] चित्रक, विरोक्त विपरिता विष्युश प्राथी (स ६७८) ।

यिवयुक्तका देवो भिवसुङ् = वि + विप । पिष्याम र् पि १ विकास । २ व्यन /हे . 2 )1

विषय प्रिकार दे विश्वास प्रवासक (विते १ ६)। २ विमोध (वा १११)। रे बनुषम्य विनास, प्रसाह-निरोध (कृप्)।

विष्णाभव व [विष्यातन] कार देवो (चन)।

विच्छेत्रम वि [विच्छेत्क] विच्छेरक्षी (44) 1 विकारित वि विकारित् कार देवी (इप

विच्छक्का वि विच्छवित विक्तित किया इया (गाट---विक वर) ।

बिसोइय वि वि विरक्षित (धर्वि)। विकारोज देनो विकारोत । संह्र-विकारोडिवि

(धप) (१ Y Y ११) I

विषक्षाम ए वि विष्मी नगर-निशेषा विषये विषयोगी (प्राप्त १८)।

विच्छाय प्रे वि विच्छ, वियोग (सवि)। वेको निष्यक्षोत्र ।

विच्छोड एक [ कम्पयू ] क्रामा । विच्छो बर (हे ८ ४६)। यह विच्छी छंत्र. विच्छाचित (क्या सर १ 28) 1 विरक्षाविक वि (क्षम्पित) क्षेपाया हवा

(कुम्छ सहस्र) । विच्छोक्रिय वि [पिच्छोसित] बीत बोवा

हवा 'गोम विष्योसियं' (याम)। विच्छीय सक वि विश्वक करनाः विरोहत करता

'कारोग करपेले परोप्पर'

क्रियमनिष्यशिवसाने । भक्तमाञ्चनमा परी

विष्यक्षीवद्य शत्तर्सचाए

(# tc4) 1 विषयां है [वे] वियह वियोग (वे ७ ६२) # x 284) :

विनमोद 4 [विकास] १ विकास जो केनू-हाय वर्षा चरा चरा चिम्नियं विद्याणा विष्यु विद्यार (था वृतस्यक्षणीयमुखा विशृश्चक्रमञ्ज विश्वीहाँ (सम्पत्त १६१)। २ वंबनशा (सर पू ११x)।

विश्वस तक [ वि + क्ष्मप् ] स्रवित करना ठक्या । क्ये विद्यक्तिकाइ (यहा) ।

षिष्ठांच वैची निच्छीन्। विध्येगह (स १८६ हि)।

विश्वद्व निविश्वविष्य विश्वताः जीतनेकाला (क्यू गर-विश्व १)।

यिजांश देशो यिअस=वि+परम । बह विजीसंस (काप्र १०६) ।

विजय नि चित्रको परितक (नत ३६ दशस्य ३६ वर योग २४१)।

सिअक्षा देशो सिक्षा× = विजन । सरकारण ! वेशो बनो विवस्तो (परम ६६ १६) हे १ १७७३ कुमा) ।

भिज्य कर्क थि + जि १ जीतमा फतड करुषा। २ धक अध्कर्षये वर्णना सम्बर्ध युक्त होना । विजयह (पद २७६---पापा १६६६) 'विजयन' हे पएसा विहरेड जल्प बीचिक्छनाहों (बर्मीन २२)। 🛊 चिल्लास्य (पै) (कुमा)।

विजय दे [यिजय] १ निर्शय शास के प्रवे का जात-पूर्वक नियम (ठा ४ १--पत्र १०० २२): २ झनुचिन्तन विसरी मुख्य १ (धीप) ।

विजय र् [चिजय] प्राध्य स्थान (इस ६ विजय ५ विजयी १ नम्, जीव फल्ड (कुमा कम्म १ ६५ समि ८१)। २ एक देव विमान (सनु: सम १७३ १८)। इ विजय-विमान-निवासी देवता (सद १६)। ४ एक शहर्य, धाहोयन का बारहवां या स्तरक्षां पुतर्जे (सम ६१ स्टब्स् कमा खामा १ व-न्यन १६३)। ५ जा बाम् मधिनायनी का शिता (सम १५१)। ६ मारतवर्षं के बीसरें मानी निवदेश (सम १६८ पर ४६)। ७ वृतीय शब्दाती के विचा का नाम (समे १६२) । च माधिन मान (बुब्ब १ १८)। स्टरतवर्षे में उत्पन्न ब्रिसीय बसवेब (सम बार १२% दी। ब्राह्म वस २ १) । १ आरक्षपर्वका भागो इसरा क्तवेत (सम ११४) । ११ ग्याएउने चकार्ती राजा का पिता (सम १४२)। ११ एक राजा

(अप ७६ व धी) । १३ एक समिय का नाम

(विपा १ १--पन ४)। १४ मध्दान् क्या

मेस का शासन-देव (संविष्)। १५ जेब्

बीप का पूर्व बार। १६ वस बार का

समिद्राधा वेन (स ८ २—१न २२६)।

१७ वनश समुद्रका पूर्वे द्वार । १८ वस

हार का व्यक्तियोग देव (द्या ४ २<del>०१</del>३

२२६ न्द्र)। ११ तेर-निरोप महानिष्ठे

वर्षे का प्रान्त-नुस्य प्रदेश (टा --- प्रवाध १६६)

इक् वी ४)। २ उत्हर्म "त्रव्यु विवय्ती

बद्धानद्र (राज्य १ १---रन ६३ धीप-

च्या)। २१ पद्मास करके बहुत करुध

(हमा)। २२ विकासी प्रथम राहाओं के

एक पैन घाचार्य (पटन ११० ११७)। २। प्रभूका (एव) । २४ समृद्धि (एव) । २ प्रवास की बएव का पूर्व हार (इक)। १६ शतोब समूत्र पुष्पर-वर्णीन तथा पुरूषोद समूद्र का पूर्व द्वार (श्वव)। २ अस्वक पर्वत का एक कुट (ठा य-पन ४१६ १४)। २ एक शतकुमार (धमा ११)। २६ छन्द-विशेष (पिय)। ३ वि भीवनेताबाः 'वरनूरम् विद्यादिवनिजयवेथवरे' (समक २१६)। बरपुर म विस्पुर] एक विद्यावर-नगर (६४) । अन्य स्त्री ियात्रा दिवय के लिए किया वाटा प्रयास (क्नोंवि ११)। हता थी हिका] विजय-मुचक बंधे (मुक्त २६ )। "देव दू विदेव] बक्ष पहुंची राजानी का एक वैत्र सामाने (भग्म १)। पुर न पुर] नपर-विशेष DE DE 1(358 0758 858 878) की पूर्व परमनावरी नामक विवय-धन नी प्रज्ञानों (इंट.२. २—पत इक)। साम वूं मान इक कैन बाकाने (इ.)। यंत्र वि [ वन् ] विजयी त्रिमेता (दि १४)। "पच न ["पर्दा] नेम्प-विकेर (कर्माकनक) । वद्यमाण पूर [ यभमान ] दाय-निरोप (दिया १ १)। बाबर्यता क्षे ("«अयरता विजय-नुषक पत्रारा (भीर)। सायर दूं विसामर] एक मुर्वेशकी राजा (पत्रम ६,६२)। "सिंह, मीद १ भिंदी र नुप्रमित्र प्राचीन बैना-मार्थे (तुरा६२) । २ एक विदायर धन नुवार (पत्रम ६ १%)। सुरि **५** विस्ति चग्रपुत क मनय वा एक नेब धावार्य (बर्नीह ४४)। सत्र १ [सन] एक व्यवस्थित माचार्य या माम्रोज नृति के शिष्य में (पत २**०६—∓च** (१६६) विश्वपंता । धी विद्यामी है पद्य की (बाजपंती है बाजरें। यह (कुरेंड १ १४) २ एक एको साबद्रम (३३ ७२ ही) ।

की बीधा-रितिका (विचार १२१)। विजयाकी विजया र भवनान धनित-नावजी की माताका नाव (सम १६१)। २ पांचरें क्यारेव की माठा (धम ११२)। १ देवारक वर्जन पहाँ मी एक पटरायी (का ४ १--पत्र २ ४) । ४ विचा-विदेश (पत्रय ७ १४१) । र पूर्व-स्वक पर ख्लैशको एक विक्तमारो देवी (ठा :---पत्र ४३६)। ६ पो**चर्ने चान**र्टी एका को प्रस्पनी—को-एन (सम १६२)। ७ विजय गामक देश की राजकानी (सन २१) । ८ वना नामक विकय नी राज्यानो (ठा २, १—गव व ३ इक)। ६ पछ की पासकी एस (मुब्ब १ १४)। एक बेहिनी (नुपा ६२६)। ११ संप्रकृत विमानानाओं की शासन-वेशी (पद २७ संदि १ )। १२ मनपान् गुपछिनायनी की देशा-विश्वीदमा (सम १२१)। १६ एक पूर्व्याच्छी (\$4) | वित्रतः वि वित्रतः । स्म-प्रीतः (वरः)। २ व. वात-सीहत पंक (रहा ६, १४)। क्षो विज्ञह। विश्वह पढ़ [वि+हा] परियान करता। विमहर (रि १७३)। संह विमहित् (बत E, 2) 1 विवस्ता के विद्यान] वरिष्याय (क ३ ३-पत १११) । विद्याप्य वि [विद्यारीय] पित पासि का 

चित्रान रेशो विश्वान = वि+ सा । वेड्ड चित्रामिका विश्वापक | व्यक्तेवामा | विश्वापक | वि [विज्ञापक] चाम्नेवामा विश्वापक | विष्कृ विद्यापक | जन्मेवामा विश्वापक विष्कृ विश्वापक | जन्मेवामा (श्वापक | विश्वापक | जन्मेवामा ) । विश्वापक विद्यापक | विश्वापक | विश्वापक | विश्वापक विद्यापक | विश्वापक | विश्वापक | विश्वापक विद्यापक | विश्वापक |

(नर ६, २३: ४ । )।

विज्ञुस कि [विज्ञुस्त | वर्षाक्ष (वर्षेष १४४)।
विज्ञुरि (वर) की [विद्युन्] विस्त्रो
(सिंत्र)।
वर्षेष्ठ कि [विश्वया] समस 'मेडू किनेड्र कीम्युत व' (वरण १४९)।
विज्ञानक रेजो विज्ञान कि मेडि।
विज्ञान कह [वि + पाजम्] किमेड करम यक्त करमा। येह्र विज्ञानिय (वंष १,१२६)।
विज्ञानक व [वियोजन] विशेष विद्यु (सेष १)।

विज्ञयावश्चलु वि [यवाज्ञयिष्] विश्वावश्चलाय करवेशावा (अ ४ ६—यव २१६८ २१६८) ।
विज्ञया के [विज्ञोहा] क्वन्तिरोग (विज्ञोहा) विज्ञया विरुद्ध (विद्या क्षाप्त विज्ञाहा) विरुद्ध (वृष्य १९६१) । वृष्ट विज्ञया (वृष्य १९६१) । वृष्ट विज्ञया (वृष्य १९६१) वृष्ट विज्ञया (वृष्य १९६१) वृष्ट विज्ञया वृष्टा क्षाप्त वृष्टा करा । वृष्टी विज्ञया (वृष्टा १९६१) वृष्ट विज्ञया (वृष्टा १९६१) वृष्ट वृष्टि वृष्टी वृष्टी (वृष्टा १९६१) वृष्टा वृष्टी (वृष्टा १९६१) ।

ह्या (द्रप्र २० )।

विश्व है व कि कैछ-किये (यहन ६६, ६१)।
६१)।
विश्व है [यद्भन्न विश्व परिष्य, बावकार
(है २ १४, द्रवार प्रश्न १६, ३)।
विश्व के व्योत्स्य (परस्य १७ ७ )।
विश्व के व्यो विश्व । स्मर्स्स (या) के वो
विश्व कर्षा (१२१६)। सिन्ध है [पिन्स]
वाव वस्तार्थ (परस्य १२१)।
विश्व के व्यो विश्व (प्रस्य १२१)।
विश्व के व्यो विश्व (प्रस्य ११६)।
विश्व के व्यो विश्व (प्रस्य १९६)।

विजय व विष≱] चिक्किशा (उर द, १ः)

मनि) ।

विद्याल ट्रे [विद्याल] १ मरकावास-विशेव

एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। २ वि जन

रहित (निष् १)। विकास ) न दि विजली कर्मम वैक भिक्तुछ । कार्यो कारा (प्राचा २ १ ४ ₹ ₹ ₹ **२**}! विकाबिया भी विष्युत् ] विवसी (प्रुप २०६) । विज्ञा की [विद्या] ? शक्त कान, यथार्व ज्ञान सम्बग् ज्ञान (उत्त २३ २ ग्रीका धर्मीक ३३ हुमा प्रामु ४३)। २ मन्त्र क्षी-समिद्धित सक्षर पढति । १ शासनावाला सन्त (पिड ४१४ सीप ठा ६ ४ टी---पत्र १५६)। अणुष्यवासन विअनुप्रवादी केन द्रांग प्रत्वाश विशेष, बसवा पूर्व (सम २६)। चारज 🖫 [चारज] रुक्ति-विरोध-संपन्न मुनि (सम २ १--पत ७१६)। भारणसञ्ज्ञ सौ ['नारजसम्ब] ग्रीक किरोप (मन २ १)। <sup>8</sup>गुप्पवाय केकी अगुप्पवाय (चन) । पुताय न िनुवाद इस्सीपूर्व (सिरि २ ७)। भिंड प्र ["(प्रणाह विका के क्या के वर्ष की वर्षका विका । (मिन्दू १३)। संख वि [ सन्दू ] विद्या-संपन्न (पर ४२१)। स्य पुन [क्य] पाठराचा (प्रामा) । "सिद्ध वि "सिद्ध] १ सर्वे विद्यामी का मनिपति, समी विद्याली ; स्रदेशमा २ मिस्सो क्य से क्य एक महानिया सिंद हो पुत्री हो नहः फिल्मास भक्रवड्डी विण्यास्त्रिको छ परस नेगावि सिक्सेन्ज महानिक्जा' (पानम) । **इ**र पू िंघर] **१ श**नियों का एक शंत (पदम ४ २)। २ पुंधी, इन वंश में उत्पन्न (महा)। की, री (मक्षा स्त्र)। १ वि विद्या-वार्धः शक्ति विशेष-सम्पद्म (धीप सम्प्र व्यं ४)। इरगोवाछ पु [घरगापाछ] एक प्राचीत वैन पुनि जो मुस्कित और मुप्रतिबुद्ध बाजार्य के रिप्य में (कप्प) । इस्ते और विश्वती एक पैन मूनि-राजा (कप्प)। हार (यप) न विषयो सन्दर्भवशेष (शिष) । भिज्ञापद (मा) देखी संयायद (प्रति)। विद्याहर वि [पैयाधर] विवासर-वंशलीः थी. 'एसा विश्वाहरी वार्या' (यहा) ।

विक्तु पू [विष्तुत् ] १ विद्यावस्थित का एक राजा (पत्रम १, १८)। २ देवीं की एक वादि मक्तपदि देवों का एक मेद (पस्ह १ ४--पत्र ६०)। ६ वायसक्या शयसे का निवासी एक मृहस्य (सामा २—पन २४१) । ४ एक नरक-स्थान (देनेका २६)। भी, ईशानेन के सोम पादि लोक्पालों की एक-एक बद्रमञ्जूषी--पटयनो (ठा ४ १---पद २ ४)।६ चनर नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा १० १—पत्र ३ २ छाया २—पत्र २ ५१)। ७ पूंबी विजयी विज्युखा विक्यूप् (हे १ वश अमा या १व४) । = सम्ब्या राग्य (दे१ ३३)। इ.वि. विशेष क्य मे चमक्नेवासा "विश्वक्रोयामग्रिप्पमा" (उत्तर२७)। इसर देखो यार (शीव ३—वश १४२)। इतार प्रे डियार एक वेब-आदि (भयः इक)। इसारी की **"जुमारी" विशियमक पर रहनेवाली** दिवसमाधि देवीः 'चलारि विश्वकृतारिगञ्जल रिमाची पएएतामी (ठा ४ १--पन १६०): जिस्स (?) जिस्स ए [ क्रिड्स ] मनुवेसंबर शावराज का एक माचार-वर्षेत्र (इकः राज)। "तेश्र प्रं िते अस् ] विद्यापरवंश का एक राजा(पटम ६,१व)ः वैदार्प [दिन्त] १ एक अन्त र्शीय । २ क्यमें प्रश्नमाची मनुष्य-जाति (हा ४ २—वत्र २२६)। इसा द्रं [इस्त्री विद्यावश्वेद्य का एक राजा (पढम १, १०)। दाह र् [ र्यप्ट] विधानए-नेश में उत्पन्न एक चवाकानाम (पडम ४, १०)। प्रदू प्यभ प्यह वृ ["प्रभ] १ एक व्यवस्थार पर्नेत का काम (सम १ २ धिः ठा २, ६---पत्र ६६३ ६ २ -- पत्र ११६३ वी ४३ छन १ २३ इक)। २ कूट-विशेष विद्यासम वसस्कारकाएक रिकार (जे४) इक्त)। ३ वन-विशेष, विकृत्यम सामक वशस्त्रार पर्वेत का विश्वादा देव (वं ४)। ४ सन्देवंबर नामराज का एक वानास-पर्वत (ठा ४ २---पत्र २२६/ इ.क.)। ३ छन्न पर्नत का निकासी केम (हा४ २—पण २२६) । ६ वेबकूद वर्षे में स्वित एक महत्त्रह्म (ठा १, १ — पत्र

िमास्तिन् १ वं**क्टीब डी**प का समिपति एक यक्ष (महा)। २ स्त्रसम् का एक सुमन (से १६ cv)। ३ बद्धादेवसोक व्य र्देष (चन)। सुद्ध प्रश्निस्त्री १ विद्यापर-नेष्ठ काएक राजा (पटम १८ १८)। १ एक बन्तर्शीप । ४ स्थका निवासी मनुष्य (ठा ४ र—पत्र २२६ इक)। सह वृं [मिघ] १ विश्वकान सेव, यस-एवित सेव। २ विक्सी पिछनेवाला संव (भग ७ ६-- पव ६ ६)। यार प्रं विदार विकासी करनाः विध्य-रचना (मन २ १)। स्रशा "स्या की ["जठा] विष्युद, विजनी (शह—वेसी ६६: काल) । हहाइद न [ छेरायित] विक्वी की तरह माचरल (क्रम् )। "जिल्ल सिम न ["विकसित] १ क्रम-विशेष (पनि २१)। २ निजयीका विद्यास (सं४४)। "सिहा की ["शिस्ता] एक रानी का नाम (महा)। विज्ञुक्षा की [विद्युम् ] १ विजनी (गाट---बेखी ६६)। २ बित नामक इन्द्र के सोम माबि बारों सोक्यामों की एक-एक पटरानी 'निसमा सुमहा विश्वका (? या) घटना' (अ.४.१—पत्र २ ४ इक)। ३ वरणेन्द्र की एक सक्त-महियों (खाबा २---यत्र २६१ विञ्जूमाइचु वि [वियुरस्तु] विजनी करते-वाशा (ठा ४ ४—पत्र २६१)। |केबो विद्यु=विद्युन् (इ. २ विद्यस विञ्चित्रमा रेक्ष यह १६१: भूमा माह ३६ माम वि २४४)। विक् देवो विका। साव्य भी ["माछा] प्रस-विशेष (पिंग) । बिळाध [ब्] १ मार्ने से सत्ता से। २

निए (थवि)।

(दिवर)।

1 (705

थिजोभ 🐧 [विद्यात ] उद्योग प्रसाधाः

विक्रोइय ) वि [पिदातित] प्रकारिक

बिज्ञाबिय । बयश हुमा (जांद्र ११ स

'जोम्बर्ध बीविधं कर्व विरुज्जित्रजोधक्वसं'

३२६)। ७ न एक विद्यापर-नगर (इस्

**१२१)। सई की मिती एक की का** 

नाम (परह १ ४---पत्र ८३)। माछि 🖠

विरुद्ध स्व क्या वी श्रेष्ट वेस अरख मेक्स । विज्ञाति (सम १ ६ ६ ६) विकामी (या ४४१) संक विद्युल (युध १ व १ ६)। इट विस्मा (वस् )। विश्वम सक [वि÷ घट्] शतन होनाः

विकास (बारवा १६२) । जिस्स न चि बीम, पश्च देशा की इस्मी वस्मि पी जिन्हें शुक्रण कुमरमण् मार्थे (वर्षेति १)

'ताब क्याबारखेख य विश्वसाह

(? इं) नरं द्रापायमध्येता

কুৰিত্ত বিহৰতাৰ পতিৰ भागोहबल्बाम्स (स ११३)।

विक्यानि विद्वी विकाहका जार संस्थ देख बास्केख विज्ञाते केख है जिल्ला (पा 278)1 विस्मा देशी विरम्भ = ध्यव ।

विकाहिक वि कि 1 मिनिस म्वास्ता 'बीज्**स्ट**चरपश्चमानमिज्यदिया' ( श्रम ७

६—तम ६ ७ वस्)। वित्रमूख देवी विद्यास = विश्वव (धर ७

६ हो---त्य ३ को ।

विवस्त का वि÷भ्यापयी दुन्नाना बीरक साथि को पुत्त करना देश करना। विकासम् (गढर- कुन ११७)। कर्य विज्ञानिका (बाप का साथ ६)। यहा पित्रस्वेकणं, विवस्तविय (वर्गंचे ६६० स ४६६) । इ. जिस्मिक्स (परम ७० 1(0)

विवस्ताय क्षेत्र [विष्यापन] इस्तानः का शान्ति (स ४४६) सम्मत्त १६२ कुत्र २७ )।

की पा(धवा( ६)।

विक्रार्श्वम वि [विष्यापित] वृष्यक हवा प्रथ किया ह्रमा ठेका किया हुआ। (से व १६) १२, ७७ स्ट ६६६ पस्प २ १२)। विश्ला ) यह वि+ध्ये दुवन्त ठंडा

विवस्ताम होता, क्य होता । निकार (धा ४६ हे २, २ ) । यक्त विकासकति (वा

t () 1 विस्थास ) वि विश्वादी र क्षम क्षम विषया जिल्ला क्रिक्ट कि के कि कि t t—9× ६६ १ १४—9**ग** १६ ऽ !

ब्रह्मा मुपा ४४८ मानू १६७ पतम ६ १=२)। १ संझ्य-विशेषा "विज्ञायनाय वेशं संकामेश्या गुरुमति (सम्बद्धनी २१)।

विकास के विकास । विकास (गा 485) [ विक्रमत्वय देवा विक्रमत्वय (दय २६४ ही)।

विक्रमावित देवी पिरमावित्र (यहा)। विक्रिक्षिय पूँ वि नरस्व की एक वासि

(पहरा १---पत्र ४७)। थितं इ देशो विश्वंड (मल २३४) राज) :

विदास एक दिं। यस्त्रस्य करका प्रश्चिक्ट करना दिवादमा इचित्र करना, यसविष क्टल । व्हिनिर्ध (नुब १ ११) । धर्म

विद्वाचिण्यद येथा कमाद कि गाउपारीई (वेदम १६४)। यह विश्वास्थ्यंत (सिर्दर

११४२) । विहास र् क्वि धस्त्ररान्धर्गं संस्थाना प्रथमिकता 'तह पर्याम चंडाबी, विहासी

कुलाद' बा बरमाहि चिहुद हु बहु य न तेल केर विद्याली (बहुत २४३) के ४ ४२१)।

विद्याञ्ज्यान [वे] असर वेक्टो (य ७ १) : विद्यार्कि वि. वि. विवासनेवाला प्रापित क्रफोबासाः। की जी (क्रम्पु)ः

विशासिक वि [वि] श्रीच्या क्या ह्या स्वाचित्र किया हमा जिनाका हुआ (वर्गीक च्या विक्रि करेशः सुवा १११ः वेशः । वक्का) ।

विक्री की वि] यहरी, पोटवी (मीम ६१४)। देशो विदिया ।

बिष्ट वि प्रिष्ठी वरसा क्ष्या (के १ १३७) बह् )।

मिल्ल विश्वि र प्रमिष्ट पैठा हवा (सुध रंग १ १३)। २ जनमह केट इसा (Kar⊊ )ı

विद्व वि [वे] पुन्तोरिक्त यो कर कठा ह्या (**पद्)**। बिद्धान [बिग्रप] पुनन वयद (नुक्ब

1 (\$ 3

विद्वसम्ब [विकसम्बन्] १ रोक्सा। २ स्मापित करका, धक्का । विद्व श्रीत (बीच) ।

यष्ट्र विट्रंभित्वा (यीप)।

विद्वेभणया 🗱 [पिप्रस्थना] स्थापना (धीप)। विटूर पून (थिग्नर) धासनः 'न्द्रिये' (प्राप्तः, पतमाच ७- यादः सूपा ६ )।

विद्या की बिद्धी बीठ. पुरीप सब (याम्य धोबमा २१६ प्राप्त १४व)। इर म िगृह्य अवोससर्य-म्बाब, स्ट्री (परम ४४ B=) (

विटिकी पिछि र कर्मकान क्यम (दे २. ४३)। २ ज्योतिय-प्रसिद्ध एक करछ. यर्थ लिक् (विदे १३४० स २८६) करा ११) । ३ महा समाप्त (सुर १६ १.) । ४ वेपार, पद्गरी किए विना क्षे वक्रस्ती का वेषव का करावा जाता काम (घर ६, ११)। विद्धिकी सिद्धी वर्षी करिय (है १ १६७ प्राक्ट या प्रेसि १, प्रथम २ - वक् धुवार रामा) । देवो मुद्धि ।

विद्वित नि [चे] भवित ( पर्.)। विदिव व [विदिवत् ] विदिन्न देखीर (वद र १२ ठी-नत्र ४६१)। विक ⊈ं [किंड] १ मॅंड था(कुमा तुर, ६

११६। एनः) । विक्र न विक्र निम्ल निम्ल प्रकारक का बसक (का ६ १)।

विवेक पूर [किउकू] क्योक्सली, प्रासाद मारिके माने की मीर काड का बना हथा पिसम्बं के रहते का स्वात भ्रवचे (धान्य १ १--तब १६१ हे छ सह, बदर)।

विश्वंदिका क्षं दि वेल्ला, वेशे, बीतप (R # 4#) |

विश्वेग वैची विश्वेष (पद्या १ १--पत्र )। विश्रंग पूर्व [विश्वक्त] १ ग्रीमध-विश्वेत । २ वि यक्ति विश्वय

विक्य हा एसी जरूमी म प नामी एस क्रीनि संमुख्ये । ज्यसमह स्वीत्रेतं विज्ञानोमा समरहेर्स (बन्बा १ ४)।

विश्वच सक [वि÷द्वालय ] १ शियकार करमा सरमान करमा । २ हुआ केना । ३ नक्य करा। विश्वेषक विश्वेद्धि, विश्वेदिः (विशः क्षप्र ११४० छ ६१६)। सह

(भूपा ७ )।

मिक्संत (पराम = ३२) । करक विश्वयिक्तंत

विश्व सक [यि + बन्धय ] विवृत करना

वैसाना । विश्वेद (मन १ २-पन १७१) ।

(प्रकि)। २ माया जास प्रयंत प्रशिक्त

धिर्वय पून [चित्रस्व] र तिरस्कार, धपमान

च कामाख संवादिवेदे (सु १ कप्पू) ।

विश्वंतरा वि [विश्वनस्क] विश्वंतरा-अनकः न्बह्रमेसविदेवया नगरं (संदोच १४ सर्)। विश्वंबन १ (विश्वस्थत) ग्रीम देखो (यपि)। 🤌 विश्वयमा की [विश्वम्बना] १ विस्तकार धरमान (दे) । २ दुश्च क्ष्ट (क्छ ४२) । ६ सनुकरस्य नक्तः। ४ वपहासः ३ ६ कपट वेष (कप्यु)। विश्वविद्य वि विश्वविद्यत्वी विश्वविद्या प्राप्त (कम्मा पतका १ २)। विष्ठान्त्रमाण वि [विद्यामान] को जकाया भावा हो बढ़ जसवा हुथा (भाषा १ ६ Y 2) 1 बिहरूद देयो चित्रहर (मा ६७१)। विश्वप्प ) र् [दि] यह (दे ७ ६४, वाह) सिद्धय<sup>्र</sup> गउमः बन्ना १० दे ७ ६५)। विश्वय पू [पिन्य] १ वस्ता (मूर १ ८८)। २ शस्त्रा (पनि ११ ) । ६ पत्त्रवन-विस्तार। ४ स्तम्ब युच्छ (प्राप्त) । विष्ठ व र् [विद्यपन्] यूग्न वह बराक्ष (याचे भूरा व यडक स्ट्रा)। विद्वपिष्ठ १ एक [रचय ] धनाना निर्माण पिष्ठविश्व करना । विश्वविद्या विश्वविद्या (इ. १ १४) पर्)। मुक्त विशिक्षा (गुभा) । विक्रिअ वि [ग्राहित] सम्बद्ध (ग. ११ ६ विवर्ता पिबिनिश [रि दि] विकास श्रीपरा विदिश्वित मनकर (देश ११)। पिडिस **र (र**ी १ बान-मूग (१७ ८१)। रम्बद्दर वैद्य (दे⇒ ≝ न≱ड)। ३ रूप पर्न दूषा व पायम राज्या राज्या स्थला र्शित्मा तक' (क्योंत १ ११) । त शाला (परह १, ८-नव ६६ । योग तह २१) ।

२१ राम)। विव्यव्यान वि दि निपितः प्रतिपित (पड)। विविविद्ध वि [वे] धीपरा भवंकर (मार---मानतो १३७)। विद्यार वृं [थिवृर] १ पर्वत-विशेष । २ वेश-विशेष यहाँ वैशूर्व राल पेरा होता है (कप्पू)। विद्योमिश र् [रि] वयक मूर, वेंका (वे # X0)1 चित्र वि [दे] १ दोनै सम्बा(देश १३) । २ प्रपंत्र विस्तार (दे१ ४)। विद्व वि [श्रीड शाहित] बन्ति शरीमचा 'बाजिया विशिषा विद्वा' (निर १ १ पि २४ )। चित्रर देशो विक्रियः वर्णविक्रियो कि देव पादाँ (स्व ४६८ दी) । विश्वाकी शिक्षा सम्मा शरम (के अ ६१ पि २४)। विद्वार न [पिट्टार] वेखी विद्वीर (धव) । मिक्रिम [क] १ मानीय (के ७ ६)। २ मारोप भाकन्तर (पाम)। ३ वि रीह मर्बकर (दे ७ ६ )। विश्विरिक्षा क्ये दि । एवि निष्य (वे ७ (0) विद्वास देखो त्रितृतुस (पाप) । विश्वदर्श ध्ये विशे पाटोप पात्रम्बर 'कि लियनिव रूपेबारछेले (उप)। विश्वयदिक्ष वि विश्वर्यवन् | वेष्ट्रयं राजवाता (नुपा १६)। विश्वदर म दि विश्वेरी मध्यम-रिशेष पूर्व हारवासे शत्रभी में पूर्व दिया है जाने के बरले परिचम थिसा से जाने पर परता नशन (पिसे १४ १)। देखा विदार। विक्रज (धी) सक चि + वृद्द चितामा । धेइ विक्रिय (वि २१२) । विद्यमाध्ये विशेषार्थः प्रदेशीका ग्रीयता भाग (देश ६२)। विद्वत्त विभाजनी स्वर्धित वद्यक्ति ह्या (हे ४ २३६० याह या ह ७४ मशि।

विश्विमा की [वें] ग्रांका (नगह २ ४º वंड्र | विडक्ति की [ अर्जिति ] धर्मन अरामेंन (भा १२) । धित्रव्य सक [स्थुन् + पद्] स्टूलन हाता । विक्रपंति (प्राष्ट्र ६४) । विश्वयम् शीचे देखो । विद्रशासक [अर्ज ] उपार्जन करना पैदा करताः विक्रमङ् (इ.४.१ ८) महा भवि)। कर्म विवयित्त्वतः विवयमः (इ.४.२५१) त्रुमा भवि)। षिद्धण व [भजनी सगर्मन (मुर १ २२१)। सिद्धवित्र दि [अर्जित] दैश क्यि हुमा (कुमाः सुपा २ व ः मक्षा)। विक्रिम वि [बेप्टिन] सपेटा हुमा (नुग lact I भिनद्व वि [ यिनश्चिम् ] दूर करनेवासा 'पारंग्रीवर्णस्त्र' (मावा) । विषयुष्य वि [वितयवत् ] विनयवासा वितय को ही धर्म-प्रधान माननेवामा (मुचनि **११**€) 1 बिगइस् वि विनस् विनोत बनानवासा षिनयं की शिक्षा केरेबाबा (उच २६**-४)** । विजइन्द्र रको विजा = वि + मी। बिणहर वि विनयित विविद्य क्या. विधापा हुमा (चन) । देखी विष्मय । बिणइड ब्यो विणइस (इमा)। यिमण्स देवा यिथी = वि + मी। बियद्व वि विनष्टी विमास-प्रत्य (बरा अस्य ६१: साट--युक्स १४२) । विगष्ट वर्क वि + नदम् , वि + शुप ] १ अयापूच्य करना। २ विकासना करना। विलुवेद (वडर ६०) विलुवेदि (इन) पिलाब (इंड १६, दि १)। यिमहिल देवो विर्माहक (बा ६३ थे)। नियम न [बान] दुनन्म (दृह १)। धित्रभ वर्ग [सायु] वित्र करमा विशानक (बारम १४३) । पिमन नक [पि+नम्] विधेत कर त वधना । वह विज्ञान (बार-कानवि १दो । विश्रमि रेपी विनिम् (एप)।

(बठड) ।

बिक्सिक कि विनय किये का से का

(सब-धीप सामा ११८) — पत्र ६)।

विजिमिश्च वि विनिमित्ती नगाया ह्या

विजय पं वितय र धम्प्रवानः प्रणाम सादि सन्ति शुक्तवा विवृत्ता, नश्चवा (सावा,

ठाप प्रधी-स्वाद २व३ क्षमाः कवा

बीप सब्ब सङ्घ प्रस ब)। २ संसम

चारित (सम. ११) । ६ वरकारास-विशेष

एक शरक-स्वान (देशेन्द्र २६) । ४ धारनयन इरोकरछ । ६ रिका दीवा ६ मनुष्य । वि विकय-प्रक. विनीत । = निश्च. द्यान्त । ≣ क्रिप्त फॅक्सइमा । १ विदेशिक र्धममी (हे १ २४१) । ११ ट्रे. काकानुसार प्रवा का प्रात्तन (महद ६७) । मेत्र वि वितानिक्य-दक्ष (दय प्रदेश)। विषय वि विनयी १ विशेष क्य से तमा हुम्म (बीप) । २ पुन, एक देव-विवास (बस t (#F विजय केबा विजया । तराय ई है तनयी बरह क्ली (बन्ध १२२) । सुध्र पू 🖺 सुन् बारि धर्ने (राघ) । विजयवृत्त देवो विजवृत्तु (पुष्ट २६ ४) । विजयंबर दं [किनमध्यर] एक केट का गाम (इस ७२ टी)। बिगयन व विनयमी विनय-विभा विवस धान्द्रदेशकाचा मामिता विकासकावा **शमाया' (विशेष ३२ )** । विजया की विनदाी परंड की बाठा का माम (१३४) । दालय 🛊 ["दालय] गवर क्की (हे १४ ६६) हुना ११४) । **बिजस देवो बि**जस्स । विश्वास (**७९** ७ ३ पुषा २१)। पिणासिर वि जिलान्यों विकास-सीव नस्वर ( t t t ) 1 विपास धन वि+नक्ष**े** नष्ट होना विष्यात होना । विख्यात विद्यालय, विक्ति (स्मा महा) धर्में प्रे १) । वर्षि विद्यक्षित्र (बद्धा) । बङ्कः विद्यस्समाण

(उरा) । इ. य.सस्य (वर्षते ४ ६:४ ६) ।

विजरसर देखो ( जसिर (पि दश्य)।

वैद्यमा प्रयाः 'येमविधिकृद्धिमाप्ति पवर्धाः 1281 4 1w) 1 किजासिक (शी) देवो किजसिक = निन्धित (साट-मुक्त २१०)। विज्ञायम व विज्ञायक यम एक वेब-वादिः 'तरनेव प्राक्यों की विकासनो प्रथमी नार्ग' (परम १३, २१)। २ गरापरि, पर्वेश (बरि ७८ टी) । ३ परव (पद्म ७१ ६७) । त्व न िक्यो शक्त विशेष वदशक्त (पडम ખર ૧૫)ા बिजास देवो विश्वदस । विद्यासद (पवि) । बिजास सक वि + नाराय ने श्रीस करना भए करना । विचारिष्ठ (ज्या यहा) । यति विकासिक्की, विकारोक्कामि (वि ६२७) ६२ ) । कमें विशाधिकका (महा)। क्याह- विज्ञा-सिकात (यहा) । क कियासियक (शरा EYR) I बिजास प बिनायों निष्मंस (स्वः क्षे ४ विज्ञासन वि [विज्ञाशक] विकास-कर्ता (ह 1 ( 45 क्रिजासक न [क्रियाशन] १ विचार, विक्रीस (धवि)। २ वि विकास,क्यौ (पराह २ १---पन ६६ वस क ६०)। विजासिक नि [बिनाशिव] विकसनाह (पाम: महाः चित्र) । विधि वेजी विणी। विभिन्नंसम् = विनित्तर्देन विस करवरण विक्रेप प्राप्त (से १२ ६६)। विधिजंसण वि विभिन्नसनी नक्त-धीर. र्मया (वा १२६)। विविद्युत्त देखी विवद्युत् (एक २६, ४)। विजित्त वि [विनियुक्त] भर्म में प्रवृत्तिव (क्य श्राक्ष्म)। विभिन्नोग र् [विनियोग] १ उपमेक बान

(निधे २४६७)। २ कार्वे में समाना (नेपा

५ ६) । ६ विनिमव केनदेन (नुप्र २ १) ।

उप)।

विजिक्किय नि [विनिश्चित] निवित.

निस्पति (शब्द क्याः बच्या गुर २, २ २)।

विजिशेय एक विति + धोजय विशेषक

बनामा । विश्वियोगद् (यनि) ।

विजित देवी विजी = विभिर + ह ।

सामार्जनीर्धि (सपा १००)। विभिक्तम देवो विभिन्नकार । विभिन्नकार (नक्स २७% पि ४०१)। विधिकस एक विति + क्रय विधि कर निकासना। क्रेन विभिन्नस्स (सम. १.६. १ २२)। विभिन्नसंत वि विनिष्कान्ती १ वहर निक्या प्रधाः । २ किसने अब-ध्यान निमा हो बहु, संन्यस्य (उप १४७ दी' कुन्न १६ म्यहा)। विभिन्नसम् यक [विनिस्न + क्रम् ] १ बाहर विकासना । २ धन्यास सेना । विकि-रखमद (पण्ड ११: ११×१) । संब्रु विभिक्किमचा (यन)। विजिक्कमण न विनिष्कमण र नाहर निकतवा। २ संन्यास बेन्य (पंचा १ - २१)। विभिविकत्त वि विनिश्चित्ती क्षेत्र इसा (गाट--प्रवद्ध ११६) । विजिशिका धक विनि + शक् | निवा करना वंड देना । वहा विजिशिपदेव (कर ह २६)। विधिगुद्ध सङ विनि + गुद्ध न दिस्ता दक्ता । विधिन्दिस्या (माचा २,३ १ 3)1 विभिन्नाम 🛊 [विनिर्मम] तिःवच्छ बद्धर निकसना (पदाः)। विजिग्गय वि [विनिर्मेद] बाहर किस्सा **इ**या, बाहर पना हुया (से २ ४, म्यूट) थिए) । विविधाय पू विनिधात । मरख बीत । २ संसार, यन-प्रमण्ड (ठा ३ १---पश 1 (999 विभिन्न सक [विनिस्+चि] किया करमा । विकिन्स्टर (६४४) । ब्रोहर विभि-विकासम् (सम्रा) । विजिम्क्षय रू [विनिक्षय] क्रिबर, निर्हर, भीजान (पर्या १ १—१४ १) हा ३ **१** 

(शौ) (धनि १६)। इ. विज्ञातकम् (शौ) (fr xxe) i विष्णवया धी [पिद्वापना] विद्यापन, निर्दे थन (क्या) । देखो चित्रवामा । विश्याबक स्थि+द्या क्षमना। यंद्र विण्याय (रहे द ११)। इ. विण्णेय (99F) s

विष्यात देवो विभाद (धन)। विष्णाज केवी विज्ञाम ( जनाः मद्राः पर )। विष्णाय न विद्यानी धनाय-शान, जिल्ल-

विशिव्यपण-विज्ञास्त्रक

विञ्ज्यदेश (बाब) । एक, बिज्ज्यविश्व

(बार-संबद्ध २६४)। डेक्ट सिज्यवित

कारमण काम (संबि १७६) । विश्वावि वि [विद्यानिन] निरुद्ध निवबक्त (अमर) । विश्वाय वि विद्वाद र वाता हमा-

विकिस (पास्ट नडड १२ ) । २ स. निज्ञानः (क्यो । विष्याम वेबी विश्यम् । निरुद्धानीम्, निरुद्धान

वेषि (मा ६०: १६)। विष्णास वि वि+न्यासय ने स्थानन करणः रक्षमा । बद्ध विज्यासंक्ष (प्रमा

1 (88 AX विण्यास देवो विकास (ग ११)।

विज्यासमा 🖷 [विन्यासना] स्वत्या (इन RXX) I

विष्णु । वि [विज्ञ] परिका कानकार, विष्णुस रे निहान् (सर्वा शाहरे)।

निष्णेय केवी पिण्या ।

विष्युक्तमञ्ज न [विस्तापनञ्ज] मन्त्र सावि राध बंख्य का है क्या बादा लाग (पर्राष्ट्र १ - प्रव १)।

विविक्रण सक विनि + हम नार रक्षणाः विकासिका, विकासित (सुधार १११ १४-७ १६)। कर्म, विकिश्रम्पंति (उत्त 1 () ( विधिद्वय दि [विनिद्वत] जो शर शबा करा

विधिश्वक्य व [विनियमन] श्रन्ति वाही-

विजिस्सरिय 🕅 [बिनि सन् ] बाहर शिक्सा

विभिन्ता वि विनित्ता वान वका

ह्याः 'कहमानि क्युप्रिस्तमित्रहरुद्धे। वैद्धि-

w

पराच (बढड) ।

इम्स (सम्ह) ।

बल्द सम्बेद' (सूपा १६)।

विकार ट देवी विकास ।

विजिह्न" देखी विश्विद्यम् ।

हो स्वापादित (सहा) । विणिद्यां एक विनि + भाी १ व्यवस्था करता। २ स्थापन करता। संक्र विविधादतः विभिन्नाय विभिन्नित्त (वेडव २६८) सूत्र १ ७ २६: ४८५)। विभिन्नाय देशो विभिन्नाय (शामा १ १४---

पत्र १६)। विभिन्निक ्र नि [विनिद्दि स्नापित (वा विभिक्ति । १६१ मुत्त ६२)। विजिहित्तु केशे विजिहा । विधी सक (विनिर + इ) बाहर निकलना। शिक्षिक विश्वीत (बा ११४ वि ४१९)। बळ, बिजिल (नवड ११ )। विभी दक स्थि + नी दिद्दवरण इसला। २ वित्रक्षप्रहात करावा । विस्तिति (खाना

१ १—पत्र २८, ६) विशिक्षामि विकास विरायम, विकेश (शामा १ १--प्रपार सुमार देवे पर वि ४%। खामा १ (---पत्र ४२) । भूतर, विकर्षपु (सम्राद्ध १२ ६)। मनि किलोहिद (पि १२१)। वह विजेशाण (छाना १ १<del>०</del> प्रव ३३) । कन्द्र सिम्पिक्समाण (स्राया १ १--पन २६) । हेब्र. विजयन्त (धाना १ x 4 Y (T X4 ) | विधीश वि [विभीत] १ धपरीत, दूर विमा इप्त. इरावा इपा (कामा १ १--वव ३१)-'बन्बर्यन् निफीयक्टइ' (बस २६, १६)।

विकास विकास विकास विवेदित (सूच १२)। विकासि की विकासि १ विकेश, प्रार्थका (बूमा)। २ बास (मूम १ १२ १७)। पिष्णाचि की विद्याति विकास विकास (चारि १३४)।

१५१) क्य-पत्रम १२, ५ । ती १)। विकोस कि किनासी विशेष क्रय रेंच का (बजर) ह यिण (प्रय) देशो पिणा (१४ ४ ४१६) यह

पात्रअसरमा प्यापा

हम्पीर २४ कुबक १२ व्यक्ति क्रम र स्ना २६ २७ ६ श्राजना। विषेश वि [चिनच] विक्रमीयः क्रिय G=नेपाकी चेका (धार्थका उप १३१ री) । विराह्मक देवो चित्री = वि + सि ।

विभाञ्च कर्कवि + नावय**ी १ परि**का करना। २ वर करना, बटाना। १ वीम कामा। ४ पतास कामा। विस्तितक विद्योगीत (बद्ध) विद्योचेन (श्री) (स्वय ३१)। स्त्रीत निफोवदस्वानी (रही) (पि १२०)। वक्र विधावर्शत (शी) (वाह---एतर ६६)। अनुस्र विभागीभ्रमाण (श्री) (गाट--मार्मान ४३) । विशोधन वैजिलाकी १ केन अपेका। २ कीतुम, प्रतास (पाक सिरि ३८) धुर ४ REURE ENDI पिजाइक वि विमोदिती निगोद**्**य विमा

इया (शर ११ २३ । छन्।)। विज्ञासकोत देखी विज्ञाश = वि + गोरम् । वियोवको विनादको प्रतासकमा विज्ञोयग र्रे (रमा)। विजायधान विनावनी १ घरायकः इर करताः 'परिस्त्रमविकोयक्तर' (अन १ ३१ टी कुन्न १४७) । २ लुद्ध्य कीतुक (शा Yes) I

पिक्त देखो किळा (दक्षि १६)। विकास क्षेत्र हैको विकास ।

(धाबा क्या संख)।

बिण्ड प्रे [बिप्पू] १ मस्त्रान् बेनांसनाव के

विवा का नाव (सम १९१)। २ धवेशा नशक का व्यक्तियारि देव (का २ १---पत्र ७७) । व स्पूर्वस के राजा सन्यक्ष्मृदिश का नगवाँ पुत्र (यंत १)। ४ एक कैन मुनि विम्याृकृमार बानक ग्रुमि (जुलक ६६)। १ एक घेटी (का १ १४)। ६ वास्टेन नाराक्य भीकृत्स । **⊭ ब्यापका व पक्रि स**न्ति । **१ तू**वा १ एक स्पृति-कर्ता सुनि (है २ ७१) । ११ व्ययं व्यक्ति के शिष्य एक वैन ग्रुमि (सन)। १२ व्याः व्याः स्था वित्रास्य की नावा का नाम (सन १२१)। डुमार द्रं [डुमार] एक विक्यात कैन मुनि (परि)। "सिरी की "मी] एक शार्ववाद्ध-यतनी (यहा)। वसी विम्ह्र । वितंड देखी वितद (धावा)। ৰিবাৰ নি [বিব্ৰুআ] বুদ্ধা-আহিচ দি দয়ৰ (ज्य २६४ थे)। विवत पू [विवयं] १ बाध का एक प्रकार कारान्द्र (कार १---पत्र ६३)। २ एक महासङ् (पुण्य २ --वत्र २६६)। वैको विश्रच। रे देवो विश्रम = वितत (स ४ ४--यम २७१) । वितर्दन दिं] कार्यकास कास वि 48)1 श्विच वि [बितृप्त] निशेष तुन्त (पहरू १ १--पम ६ )। विश्वत्य पूं [विश्वस्त ] १ एक महावह क्योशिक देव विकेष (छ २ १--पत्र वस) । २ विष कामधीरा करा क्षमा (सहा) । विश्वतथा क्षेत्र [पितस्ता] एक महा-वर्षा (क्ष 2 4-44 4X8) 1 विवर पि [ भित्रवे ] १ विवकः । २ प्रतिकृत (बाचा) । वितर देशो विकर=वि+तृ। वितयम विवसमी (मि १ ४३६)। वितर (भप) यक [ वि+स्तारण ] विस्तार करना । नितर (पिन) । विश्वरण देखी विधरण - विदुष्ण (राज)। पितक नि विवक्ती सम्बद्ध निवक्तमध (धम) ।

विविक्रिक्तिश वि विचिकिस्सित फन का तरह सदह गामा (मन)। बितिफिज्य केवो विद्वक्तिच्या (निष् १६)। बितिबात देखों विद्वास (भग)। विविनिक्त एक [वि+िषक्तिस ] १ विचार करनाः विचर्त करना । २ संस्क करता । ३ मिन्दा करता । विविधिवाद (सूच र २, ४६ इ मिलका ११६)। विविगिक्ष का विविगिच्छा (पापा १ क कृ शुः कृ य य, नः वि ७४) । बितिर्गिद्धिय रेबो वितिबिक्यिकास (पि ७४ न्द्र)। वितिगिच्य देशो वितिगिश्च । विविधिन्दानि (पि २१% १२७)। विदिगिकम् से [विकिस्सि] १ संस्व श्रंका सङ्ग (नूच १्र ३ १८ पि ७४) । २ विश्व-विष्यव विश्व-धन । वे निन्दा (सूच ११ किथि शि विविशिषिक्षम देवो विविधिष्यम् (पर्व)। विविधिक्ष केवी विश्वविद्ध (धाव)। विविभिर वि [विविभिर] १ पम्बकार र्चात, विशुद्ध, निर्मेस (श्रम १३७- पर्च्या १७---पत्र ११६, ६६---पत्र तरकः क्या) । २ स्र<del>वान-रहित</del> (धीप) । ६ ई **श्र्या-देन**शेक का एक विमान-प्रस्तुट (ठा ६---पण ६६७)। विविरिष्का नि [विविर्वेका ] रह, देवा (स ११६) पि १६१ मन १ २--पन 1 (803) विश्व वि [दे] शैर्य, श्रम्या (वे + ३१)। विश्व न विश्वी र प्रस्य मन (पास- संघ १ १ १ २२ थीप)। २ वि प्रस्थित, विकास (सूचर ७२ उत्त १ ४४)। "स वि भित्" विशे (x x)। विचन बिची १ धल्द प्रव कविद्या (सम्रांत १८: सम्मत वरे)। २ वरित प्रावस्त (चिरि १ ६३)। ६ इ.स., वर्सन (हे १ १२०)। ४ वि जरपद्य श्रीनातः (स ७३०॥ मक्को । १ मधीर, ग्रन्थ इस्स (महा) । ६ हरू मजबूदा। ७ वर्त्तुल योस । = घडीठा

पठिया १ मूर्त (हे १, १२०) । १० संसिद्ध, पूर्ण (सुर ४ ११, महा)। प्पाय वि ["प्राय] पूर्ण प्राय (पुर ७ ६४)। **रेखो** थर = पुरा । बिचा देवो वेच = देव (मुधनि १ ८)। बिस बेबो पिस (वप १२२)। वित्तइ वि दि १ वर्षित प्रतिमानी। १ र्व विसंधित, विशास । ३ गर्व धर्मकार (हे 1 (13 0 विश्वत पू [बृश्वास्त] धनाबाद, बबर (परम २६ १८ सुपा २ ४३ मनि)। विकास देवो सिंदरम (सुच १ १ नाट--बेखी २६)। शिक्तविय देको वृद्धित, वृक्तिभ ≃र्गातित (यदि) । विचास क्क [वि+त्रासम्] भगवैत करना, कराना। विचासन् (क्व २ २ )। वह विचार्संद (एअम २०/२६)। विश्वास र् [वित्रास] भय भास वर (सुरा AAS) I विचासण व [वित्रासन] भग-प्रकर्तन (भाग)। विचासिक नि [बित्रासित] हरा कर मगया इमा (पुना ६५२) । विचि व विशिम् । बरबाल प्रतीहार (कम्म 1 () 1 विचि की विचि र मीविक, निर्वाह-सामन (शामा १ १--पत्र ३० स ६७६ हुर २ ४६)। २ टीका विकरण (छम ४६ विशे १४२२ छार्थ ७६)। ३ वर्छन भाग एख । ४ स्विति । १ कौरिकी साहि १वस-विशेष । ६ सन्त करन भावि का एक शरह कापरिसाम (हे १ १२०)। अर्थि कि कृष्टि देनेशाबा (मीग्र मंत्र खाना १ १ टी—गग३)। आर ति [\*झर] टीका-कार, विवरस-कर्ता (क्यू) । बस्रम द्विम [बक्केब] श्रीविका:विकास (मानाः सम्र १ ११ २)। देखो विची = दृष्टिः। थिचिश्र वि [पिचिक] वित से पूछ, का-नाबद्ध नैपनशाली (भीप) सन्तर शाया १ १ टी—पत्र १)।

वर्धा (उत्त ११ ६१ मूम १६, ६४)। मुद्रिवरेड (गुमा) विष्ट्य ) वि [विद्यार] १ परिवत विष मिर्वाद्यं क्षेत्रायस्था (दूर १ इंडा पूरा ३६ विषय निवासी क्ला)। शिरार मह वि+म्तरय विशेशकः विष्पारइ (भीव - शिकार्थीव (शी) (माह--ert) सिनार † [विगार] प्रेनान प्राप्त (साक हे ( ११६ मा -- एड्र है)। स्टूबि िर्माची सम्बन्धन रिध्य बाला, बर्च प्रदासी

कारित्यार न जनन का चाररावा बाक

Mel (31 trt) 1

स्थिरण रि [दिनरण] १ फैसलेसका । २

भिरुद्ध । धल (स्ति )। २ स्टिंग सम्ब (पर १५१)। ३ वशीली का एक नव (सम्)। देवा विद्वतः। વિષયા વહી વિષ્મી દેવાનિક લ્યો य विकाय देशमंडाही दुर्विहरी नवर (भूत्र भ ना १) । १ मयरान् नुसार्यनम के दश्चर— ग्या दिव्य वा नाम (बन १६१) । १ ईक्षो रिक्षे देश की प्राचीन सनवाधी कृष्टिनपुर,

वा वादकत 'नागार' 🕸 नाम स प्रतिद्व 🤰

दरेश्याच्या (राज ७ )।

विश्विमी जिम्हिया और (पाचा दि ४१३ वएख १—२६) । २ विषयेत दिखा धर्वयम (धामा)। बियु रेघो निष्ठ (वेचा १६ ७)। विद्रुगुद्धा देनी वित्रनद्धा (पत्र) । । विदुश्य न (विद्या) वपूर्यय (धन १ a)।

चिविष्ठ देखो विक्या विश्वित है (निया है

। विद्धि (बर) को [विद्धा] एक नवसे ना

जिल्ला १६वे [पादन] १ क्रिका,

**२ टी—प≋ २२**। सूर द १ ७)।

नाम (भवि)।

विद्रम वि [विद्रम् ] विद्रल, पानकार [ (स्व १ २ ३ १७)। बिदुर वि [बिदुर] १ विवसण विक्र (कुमा)। २ भीर । नामर, नामरिक (हे १ १७७) । ४ वं कीरजों के एक प्रकरात मध्या (सम्म १ १६-- वश्व २ व)। विद्युक्तान [विद्युक्ताङ्ग] संक्या-विशेष, बार्याह को भीराधी नात स पुनन पर जो शंक्या सम्प हो वह (एक) । विद्रस्ता सी [बियुद्धता ] संस्था-विशेष विद्यासतीय की जीयशी मात से प्रको पर को संबद्धा सम्ब हो गई (इन) । बिदुस देखो विदुः स पमार्थ धरिब विदुसार्ए' (बर्मसंघ= ) । विद्सरा रे पुं [विद्यक] महत्वरा चना के विवसय मान पर्नमाला मुसम्ब (सार्थ ६४ सम्मद ३)। विदस क्यो विषय = विदेश (सामा १६७१ चुमाः प्राप्त ४४)। विवसि कि विवेशिम् विस्थित (मुना ७२)। विदेशिक विदिशको अप देवो (विदि BEA) I

२---पद ७३ धीपः पटन १६३: विशे बिदेह दें [विदह] १ समा ननम (ही १)। २ वं व देश-विशेष विशाद का उत्तरीय प्रदेश को बाजकस 'किएन के नाम से प्रविद्ध है न्द्रिय धारहे नाने पुण्यदेने विदेश छाने क्रप्तबर्ध (ती१७ धंत) । ३ पुन वर्ष विशेष यहानियेह-रोप (पर १६६)। ४ वि विभिन्न श्राधिकाता । ३ निर्धेप केव-पहिष्ठ । ६ वूँ प्रशंप वामीतः ७ वृह-बास (बण ११)। = नियम पाँठ का एक बुद्धः। इ.मीलपैत व त वा एक पूट (छ। १--पर ४२४)। "जैपू भी ि अस्त्र] बारनुब्ध-विदेव जिसके नाम में यह बारनु क्रीप स्ट्रमावा है (जे ४० इस) । जाया वे िवार्ष, यान्य] भगगत बहाबीर (क्रम ११)। 'दिमा भी ['बचा] मगराध मदानीर की माता रागी किराता (कव्य) । हुदिभा को ['दुदिन] राजा जनक की दुवी बीका (की रे)। प्रचार्त [पुत्र] धना कृष्टिक (मन э «)।

विवेद्धविक प्रविदेवका जगवाम् महाबीर | (क्यार टी)। विवेहा की विवेहा ? स्यराम् महाबीर भी गाता. विश्वमा दनी (क्या ११ छी)। र आक्की सीवा (परम ४६ १ )। विवेशि पू [बैबशिय] शिरेड केत का श्रीवर्णत विद्यातका राजा (सुम १ ६ ४ से। विश्वी सी विनेत्री पना अनक सी पानी बीता की माता (पडम २६ २)। विदेशिक वि वि नि नारित नष्ट किया हुमा रिष्ण )। विषय दें विदाय दे एक नरक-त्यान (रदेखा २७)। विश्व एक वि+ प्राथम ? शिगाल करता। २ हैरान करता बनाय करता। **१ क्र करना हुदाना । ४ फरना टपकना :** " विश्वद (द्वप्र २० )। वक्ष विद्यम्पेत (रक्ता ७२) । क्ष्मह, 'रम्मं रक्षप्र न परेप्रि विष्टिष्डिति (ग्राप्त १७ ग्राप्त १३ १७ )। विश्व प्रे विश्वप्री १ उपारक उरासर्थ 'परवस्त्रपटाओराप्रविद्वा दूरमुरएया सम्मे' (इव २)। २ निमाश (छामा १ ६ -- पत्र १६७ धरीन २६)। विश्वित वि [पित्रपित्त] १ विकाशित (से ४६)। २ ∦र किमा हमा हटाया हमा (या बद)। ३ विनाशित (मवि एए)। विदा सक [यि + हा] श्राप्त होना । विहास (8 Y 38) i यिद्याण वि [विद्राण] १ म्बान निस्तेय फेरा 'बिरारामुहा संगोपित्ता' (ब्रुट ह १२४) 'धरीएषिहाणमुद्रस्मक्षो' (यति ४३) 'बारिहमनिहम्रा नजाइ मागार्गानसमो तुम्म (कृष १६६) । २ शोकानुर, दिलयोध 'विद्वाणो परिक्लो' (म ४७३ प्रदर्श चप १२ क्षे)। षिद्राय वि [विद्वत] १ विवट (दुवा) । र पशायित । १ इक-पुत्त, हर-प्राप्त (हे १ १ अप्पर्)। विद्वाय पत्र [विद्वस्य] गुर का विद्वान् |

मानमा । श्रष्ट. विद्यायमाण (भाषा) ।

विशार देशो विशाद (बन १) । विदारण (बर) वि [विदारण] बीरनेवाना फाइनेबाला १ व्ये जी (भवि)। विद्याविय देखो विद्याचित्र (मिर्व)। चिद्रद्रसर्व (चित्रम् । श्वास मूँगा (**उ** रश्चित्रकापी है। र उत्तम क्यां (से र २१)। स्मृत्िमी नार्वे वसदेव का पूर्व-जन्म का पुरा (पराग २ ११३)। विवृद्य वि [विवृत्त] प्रमिन्त पीहित 'वरियमवर्षिष्ठ (?a)या (छान्या १ १---पण ६४)। यिव्वृणां की [दे] शन्त्रा शरम (दे ७, 88)1 विदेश र् [बिद्वेप] हेप मत्सर (नराह १२-पत्र २६)। विदेस वि विद्वेष्य दिप-मोग्य प्राप्तिय (पण्ड १ २--- नव २६)। विश्वण न [बिद्रेपन] एक प्रगर का धमिनार-कर्म जिससे परस्पर में राष्ट्रता होटी है (स ६७६) । विदेखि वि [विदेपिन] इप-का (इप \$40) I यिइसिम देवो विद्सिश (मा १२)। विद्वसिअ वि [बिट्सपिव] इप-पुक्त (भरि)। विद्व एक [स्वध्] बीपना धेर करना। निकद् (धारवा ११६ माट--रला ७)। करहर विद्धिज्ञेत (वं ==) । वंड्र भिद्दापूरा (सुम १ ५ १ ६)। बिद्ध वि [बिद्ध] बीबा हुमा बेम दिया हुधा (से १ १६ मनि)। भिद्ध रेवी युद्द = इड (बच ३२ ३ ह १ १२८ धर्षि) । चिर्द्धम घण चि+ध्यंम विनद्र होना । विश्वसद (ठा १ १-- मप १२१)। बहुर, विद्वासमाम (नुष १ १४ १४)। विद्धस सङ [वि+ष्टसय्]ः विनार करना । यदि विद्विद्वित (भग ० ६---पत्र है दें)। थिदंस पूं [विष्यंस] र विनास (न्द र १२)। २ वि विनास-क्यां; 'बहा हे विभिन्ने वे विद्वति दिशामरे (उस ११

<b>4</b> 66	वा <b>इअस</b> एम <b>इ</b> ण्यत्रो	विद्यंसण—विन्
पिदांस्य म [स्थिस्स] विनास (स्था १ १ वर ४८) यह १ १ वर ११ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	विमुख वि [विश्वत] सुम्यण सम्बन्ध स्क्रूण 'विभूवका' (वाचा १ १ १ ११ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १ १	प्रश्न प्रदेश मेह स्वेश पुणा १६६१ देश) विश्वयण म [पिहापन] विषेदर निहारन (पुणा १६७)। विश्वयण म [पिहापन] ह वालेग, निर्मात (पुणा १६७)। विश्वयण मी [पिहापन] ह वालेग, निर्मात (पुणा १६४)। र महिला कार्य (पुणा १६४)। र महिला कार्य (पुणा १६४)। र महिला कार्य (पुणा १६४)। निर्मात कार्य (पुणा १६४)। निरम्पत कार्य (पुणा १६४)। विश्वयाल कार्य (पुणा १६४)। निरम्पत कार्य (पुणा १६४)। विश्वयाल कार्य (पुणा १६४)। निरम्पत (पुणा १४४)। विश्वयाल कार्य (पुणा १६४)। निरम्पत (पुणा १४४)। विश्वयाल कार्य (पुणा १६४)। कार्य विषय कार्य (पुणा १६४)। कार्य विषय कार्य विषय कार्य (पुणा १६४)। कार्य विषय कार्य वि
_		

विशेष

\$¥**\$**}1

(परह १ ४--पत्र ६६ २, १--पत्र

विपरिक्रम न [विपरिक्रमेंन] शपैर की बिपका वि [बिपक्क] पका हुआ (उप प्र माकृद्धन-प्रशास्त्र वादि क्रिया (भाषा २ २११)। देवो विषयः **≈ ₹)** i विपक्ता देखी विवक्ता विकियनिप<del>रण-</del> विपरिकृषि वि विपरिकृष्टिन् विपरि शक्का (मुश है है रे४ )। कृषित मामक मन्दर-रोपनाताः देवन्द्रा विपविद्यय दि [पिपक्षिक] विशेषी दुरमन निर्दि कहेड सरबंदिर विपरिश्वर्थी (इस ३)। (संबोध ११)। विपरिकृतिय देशो विषयिष्ठत्रचिय (एव)। विप्रसूत्रय न [विप्रस्वयिक] नावाने जैन विपरिकाल यक [विपरि + स्तारू] १ द्यंग क्रम्य का भूत्र-विरोध (सम १२०)। स्वतित होना विस्ता। र मूच फरना। वह विपद्मताम वि विपन्यमान र को पन्नवा बिपरिकार्धत (बण्ड २२)। बादा डो वह (बा२ सं≤१) 'बाबायु विपरिजय धक विपरि+ जम् । १ वर यप्यसन् विपन्नमाग्राम् मंश्वेतीम् (संबोन सना, क्यान्तर को प्राप्त होना । २ विपरीत ४४)। २ दाव होता जनतः। 'तम्बरङ्गान-होना प्रस्टा होना। विपरिखने (विष सञ्जामियक्मालस्य मह निर्वे (ध्यस ३२७)। नष्ट विपरिणनमाण (भप ७ 48) I ६ — पच १२६)। विपञ्जय रेक्षा विवक्तय (एव)। विपरिणय नि [विपरिभव ] काम्बर को विपञ्जास देवो विवश्चास (ग्रह—गुन्ध प्राप्त (पिष्ठ २६६)। २२६)। विपरिजाम सक [बिपरि + प्रमय ] १ विपश्चित्ति देवो विप्पश्चिति (निधे विपरीत करमा, अस्टा करमा। २ वरमयाया २६१४ सम्मत्त २२०)। क्यान्वर को शक्त करना। रिपरिखायेह विपहिसेह सक [ पिप्रति + सिघा ] निवेद (स १११) । हेक. त्रिपरिणामित्तप (उरा) । करता। क्र थिपडिसेक्क्यबन्द (भव ४, ७ — बिपरिणाम प्र विपरिणाम । १ करान्तर पत्र २१४)। प्राप्ति (बानाः सीत) । २ अवदा परिलाय बिपजाश वर्ष विम + माद्य ने मध्या विपरीत सम्बद्धाय (वर्गस ५११) । क्रफा। निप्पक्रप्(श्रामा १३२२) विपरिणामिय वि [विपरिणमित] काल्बर पि २४४)। को प्राप्त (क्य ६ १ टी-—रव २११)। बियण्ण देवो वियण्ण = विवश्न (बाह a) ! विपरिभाव सक [ विपरि + भाष ] इवर विपन्ति देशो वियक्ति = निपति (वा २०२ ख्यर चौहना। विचरियानई (क्य २३ ७ )। क्षा चन)। विपरिवास वेको विष्यरिवास (धन)। षिपस्थापिद (छी) वि [विप्रस्तानित] विपरिषधात धक विपरि + वासम ी धारम्य विश्वका मार्रम क्रिया यस हो वह रक्षमा । विपरिवक्तवेद (शाया १ १२---'एदाए नोरियाए एसम्ह यरे नमझे विपरधा-१७४) । का विपरिवसानमाम क्टिं (इस्य १२१) : (एक्स १ १२)। भिष्यमुस सम् [बिप्रा + मृश ] १ सना- । विपरीम देशो विवरीभ (नूच १ १ ४ १। राज करता हिंसा करना । २ प्रोहा करनाना या १४ व)। देखन करना। १ यह जनस्म होनाः जन-विष्यक्त देवो विषयन (वि १६६)। षिपद्मभ यह [ियस + अव ] हर बना । रिस्पनुतर, रिस्पनुत्रीत विस्तानुत्रह मान्य । यह विपद्धार्शत (बा २६१) । विष्यवस्थित वि [विप्रवस्थित] प्रापन (दाना रि १०१) । देघो विष्यसमुख । विपस्हरथ देवो विष दृश्य (ति २०१)। 12 (4 4 4 4 1) SP

₹**२**)।

विविवस्य देवा निप्पन्स । यह, विविवस्तंत (चन)। विविज देखो विविज (कुमा) । विधिश्व वि वि विकत्तित, विसा हथा वि ⊌ \$₹) i विपुत्त वेद्यो विषयः (स्थाया १ १---पत्र ७५) क्ष्म परह २ १--पत्र ११)। याहण वै िवाहन याद्यपर्य में होनेशासा बारहरा चक्रवर्ती राजा (सम १२४)। विष्य व दि ] पुरुष, दुमं पूँच (दे ७ ५७)। विष्य प्रे विभी बाह्यस दिन हिर १७७ मक्का)। विष्प पूर्विमय , विभी १ त्रव और विद्या क किन्द्र । २ विद्वा सीर मुका 'मृतपुरोधाख विष्युसी विष्या सम्मे विडिप्ति विश्वा भारति य पत्ति पासक्छं (विसे ७०१ औप महा)। विष्पश्च देवो विष्पगिद्व (ए४) । विष्यद्रुपन वि विश्वभीयी विश्वस ह्या इवर ववर पटका हुया (से २ १८ १८छ)। विष्पद्वर धक विम + की दबर उबर पटकना क्यिएम । क्याइयमि (इवा) । बहुः विएय-इरमाण (खाया १ १--पत्र १५७)। विष्यक्रेज सक [बिम + युज़ ] १ विस्त प्रयोग करता । २ विरोध क्या स बोहता बहुरा शामाची विणाईनेति" (ब्राचा १ व ₹ **१)** i विष्यभाभ ) पू [विषयोग] सत्तारा समय विष्यभाग ) पूरा विष्यु वियोग (बतार ११ स २०१ मीत पढम ४२ ४६। जो ४३ उत्तरी 🗠 सद्धा)। विष्यक्ष है [बिप्रकर] विरोध कर से प्रकर (धय ७ १ -- पत्र १२४)। विष्यक्रि हेवो विष्यन्त । वहः विष्यक्रिसाम (खामा १ १-- पत्र ११)।

बिपरिस वि [विदर्शिन्]

विपाग देखी विद्याग (एन)।

(ग्राचा) ।

'बेलाइविष्यपरिष्ठा' (बगैर्स का प्रधान **(२१७)** 1 विष्पगास्त्र विम + गास्त्र | नाम करना । निप्पशासद (हे ४ १३) पि KK4) I

विष्यगास्त्रित्र वि [नाशित, विप्रगस्तित] नारित (कुमा) । विष्यगिद्ध मि विमन्द्रद्वी १ दूरवर्ती दृष्टे पर

लिया (स २२६) । २ वीर्व सम्बग्न द्याह विज्ञानिट**ेडि घडासेडि'** (सामा १ ११) । विष्यवयं सर्वे विष्य + स्पन्न । कोला ध्याय करमा । इ. क्रिप्पचड्रयस्थ (तेड **\$2)** 1

विष्यवय प्रविभागमा १ ध्रव्ह, ग्रंध्य (इस्त २६ २४)। २ वि प्रत्यक्त-प्रवित भविरवसमीव (स्व)।

विष्यवह वि विश्वदीयाँ परिवक्त (खावा १ र—पत्र ४३ वेचा १४ ६ वय 1 (895

विष्यञ्जन सक [विश् + हर] परिवाद करना क्षोड देश । विध्यवहर विष्यवहरी विश्ववहे (मस⊱स्नासूम २१३ वत≪ ४)। मनि विप्यविद्वस्थामा (सि १६ )। बा विष्पतहमाण (अ. २.२--पत्र ३३) वि ३। श्रेक विष्यविद्या विष्यवदाय (क्ट २१ ७३ मन)। इ विध्यबद्धणिक शिपजदियम्य (साधा १ १—वन ४०) पि ४७१३ खाना १ १ ---पव २४१)। विष्पञ्च व विप्रहाजी विष्यावः श्रीक्रिया बार "क्षेणिका वासार्व केन संकवान का एक परिकर्म---थेठ-विशेष (स्थ १२६)।

विष्पश्रहणा । की [विश्रहाणि] शहर । विष्यबद्दभा । त्याव, परिव्याय (जल २१ ७३ धीना विदेश ६। नएक १६--पण

TYP) I विष्यकदियावि [विक्रमीय] परिवास (पि **XXX**) 1

पिप्पजारा ध्वा विष्पश्रीक्ष (वंड) ।

भिष्पविद्व सन [विपरि + इ] विपरीत होना स्वयं होना । निव्यक्तिएह (नुष ११२१) ।

ध्रदकार (सामा १ १३ -- पत्र २४३) । विष्यक्रियह र्ष [विश्रतिप्य] विषयेत मार्वे (इप १ ११ दी)। बिरपश्चिषण्य देवी विष्यश्चित्रम् (पर ७३

विष्यविवधि की विश्वतिपत्ति र विशेष (विसे २४ )। २ प्रतिज्ञा-नेव (चः ४१३)।

विष्यक्रिक्स वि क्रिप्रतिपन्नी १ विसर्वे विरोध क्य से स्वीकार किया हो यह, 'विक्क् चपक्षेत्रि परिवडवंगालेकि २ विकास क्यि विचने बाए कए गानि होतवाँ (शाना १ १३--- पत्र १७०)। रे विशेष-प्राप्त विशेषी क्नाह्मा(बाचार १३/सम १३/

भिष्यक्षितेस ? सक [ विश्वति + नेवस ] बिप्पविवेष र वागना । ए विचारता । विष्यविषेपह (बाषा १ र. ४ ४) विष्यदि वेबॅलि (समार ११६)।

2 (1)

विष्यविभिन्न वि विप्रतिपित्न वाफ्ट में प्रसंत्रत (स्वर ३) ३ विप्पडीय नि [विप्रतीय] प्रतिकृत (शब

two) i बिप्पणद्व वि विभागश्ची प्रकारित, जान-माध्र (त ११६। 🗪 )।

बिप्यजम १ तक [ विश्व + जम् ] १ नक्ता । विष्युजन हेर प्रमें तरपर होना। विष्युजनीत (सूच १ १२ १७)। बङ्ग विष्पणसंत (धन) ।

विष्युजस्स सक [विप्र + तद्यु] क्ष्ट होता विवाश-प्राप्त होगा । विष्यक्तसङ् (ब्रह्म) धीव विष्यक्रसिक्षक (महावि ४) बिष्पणास र् [बिप्रणास] विभाग (वर्गीव

(e) बिप्पतार एक [ विप्र-)-तारय ] ब्यना । विष्णवार्धाः (बर्मीव १४७) । इसे विष्णवा-पैयदि (ही) (नाट---स्क ७३)।

विष्यवीश ) (शै) केवी विष्यवीष (शाट-विष्यवीस ) शावती १ १३ ११६३ मृज्य Yu) I विष्यमास 🖠 [विप्रसाद] विविव प्रमाद (84 t tv t) :

मुख करता । क्ये कियमुभ्यद् (क्य २६ r() i विष्यमुक्त वि विषयमुक्ती विश्वक (धीर पुर २ २६७३ समा ४४६) ।

किएमुंच वक [निप्र+मुच्] केस्य

विष्पगरिस---विष्परियास

थिप्पय व दि दिसन-निका। २ शन । ६ विवापिता ४ थे वैच (देश हर)। विध्यसर एक विश्व + तारय है इन्हा । विध्यवारीके विष्यपारीम (क्रुप्र ६) वि ६ )। कर्मे विष्णयारीमह (क्रुप्र ४४) । संह-विप्पक्षारिक (वि ८ )। विध्यक्षरणा की विध्यतारणा विकास

क्नाई (एम ४४: मोह १४) । विव्ययारिक वि विभवारित विकारक इस्सा(योजर १)। विष्यरक वि कि विशेष गोहिक भारत्राख

र्वतप्रस्तपदार्थेड क्यिएटॉ स्मास्ते वे केव

बहर्ड प्रशीयं पारेचे (१पाचे) बनीयर्थेवे

(सासा ११ — पत्र ६४)। देशो परद्धाः विष्यसभूस देवी विषयमसः कार्यती केवार्यती कोपंकि रिप्परमुशंदि धट्टार् मख्दार् क एएस् वेश विन्यसमूर्वीतं (ध्याचा) । विष्यरिका 🖦 विषयिका । प्रवि विष्यरि एमिस्बर्धि (भग)।

विप्यरिजय केवी विपरिजय (क्षा १, ७ टी-पन १६६ काल)। विष्यरियाम केवो विषरिकास = विषरि + खमव । विप्नरिकार्मेळ क्रिप्नरिकार्मेळ

(मानः) । धंद्रः, विप्यरिजासङ्ग्राः (धर्म) । विप्यरिकाम 🖦 विपरिकास = विपरिकास (धाषाः सम १, ७ दी---पम २१६)। विष्परिवासिय रेको विपरिवासिय (भग र

१--पण ११ )। विष्परियास मक [विषरि + भाधम ] व्यवस्य करमा, क्लटा करना । विपारिकतेत (निष्क ११)। वक्ष विष्यरियासीय (निष्क ₹₹) i

किप्परियास व किपर्योस् । भवतः विपरीचता (धावत पूर्य १ ७ ११)। र परिकारण (सुध १ १२ १६) १ १६)

13) ı

बिप्परुद्ध वि विमरुद्ध हिरस्कृत 'हवनिह

विद्यक्षेत्र स्टब्स् विद्य + स्टम् केन्यना।

विष्पक्षेम ए विश्वक्रम्भी १ बद्धना उपारे

यविष्यरको बुधी (पतम व वर्)।

विष्यसंगेमि (स ६ १)।

धिष्यस देखो थिष्म = निप्न (प्राक्त १७) ।

करता (निष् ११)।

(कर २४) । २ श्राकुतर की एक प्रकल्या---जिसमें उद्दर्ध धनुराम होने पर मी प्रिय समाबम नही होता (सूपा १६४) । ३ विप र्यास व्यापय केरिया(वर्गसे ६ ४)। विचा-वियोग (कप्प)। विष्पसभाधा नि [विप्रक्रमभाक] प्रवारक ठमनवासा (मृच्छ ४०)। विष्यक्रमञ्ज वि विप्रसम्भवी १ प्रवास्ति। २ विरक्षित (मुगा २१६) । बिय्यसङ्क वि विप्रस्कारी बिस्त प्रतारित (बाद ४३ सं ४१८ ६० )। विष्पक्षम पुंत दि विविवता विवित्रता 'तंबद्दु सो सम्बं बाखद संबंधनियासयं', (बमवि १२७)। विष्पष्टविद (शै) न [विप्रश्रपित] निर्पंक बयन बद्धाद (स्वय्न वर्)। बिट्नस्त्र इंडो विपस्त्र । पूना, विप्तता-इत्वा (दिया १ २--यन २१)। वक्ट-विष्यक्रयमाण (खावा १ १-- पत्र ६१)। विषयस्य अर्थ [विमन्त्रप] १ परिवेषन विष्यसम्ब े रोता कन्दतः 'स्विमोनो विष्य वामी (तंद्र वंश रक्या ६४)। २ निर्वंक मचन बंधवार (एत १६ १६) : ६ विरक्षा-सार (परम ४४ ६॥)। विष्पतिष्ठाच्या न [विषरिकृष्टिती प्रक शन्दव का एक दाप संपूर्ण बन्दन न करके बीच में बावचीत करने क्षय काना (पन २---पावा १५२)। विष्पर्वपत वि [विषक्षेपक] नृटनेवाता ब्रुटेस (पश्चा १ १-- पत्र ४४)। विष्पद्धकुण वि विप्रद्धोभनी नुसन्ताता (स ७६३)। विष्यव 4 [बिष्डव] १ केत का उसक कान्ति। २ दूसरे स्था के सम्य ग्राविसे मन (देर १६)। ६ शरीर की विश्वल⊈-त्रवा यस्यस्यवा (तुमा) ।

विष्पवर म दि । मक्कातक निर्वादा (वे ७ 44) 1 थिप्पयस सक [विश्र÷षस] प्रशास में वाना देशास्तर कामा । संक विष्यवसिय (धावा२ ६.२ ६)। भिष्यवसिय मि [विद्यापित] देखनार में यमा हवा अवास में यस क्या (लावा १ २--पम ७६-१ ७---पन ११४)। विष्यवास 1 विप्रवासी प्रवास देतान्तर यमन (प्रवि १)। विष्यसम्बद्धाः विद्यसम्बद्धाः विशेष वस्त्र सरा: २ प्रथम-चित्तका मरण (उत्त १ t=)1 विष्यसर सक विप्र + स् ] केनता । भूका, 'बड़बे प्रायी'\*\* दिसी विसं विप्यसरिका' (पि ५१७)। विष्यसाय सङ [ विप्र + सादय\_] प्रसन्न करमा।" विष्यसम्बद्ध (साका १ ३ ३ १)। । विष्यसीम मक विश्व सही प्रस्त होता। भिष्यधीर्म (उत्त ३,३ सुब ३,३)। विष्पद्व विविधद्वी बाह्य नक्ती (पूर £ 421) | विष्यकात्र्य नि [बिप्रसादित ] निमक बैटा ह्या (ग्रीप) । बिप्पहीय ) वि विप्रहीय विश्व विष्पद्वण रे (सं ७७) ब १६१ पि १२ :

विप्पादग वि वि हास्य-कर्ता उपहास क्लांगाचा (गुक्त १ १६)। विष्पिश्च वृंग [विदिय ] १ अदिय, अतिष्ट (शाया १ १०-- पत्र २१६ या प्र ४ ३६ ६४ ४२३)। २ वपराण गुना**ड** (पाप)। आरम वि कारकी १ प्रशिय-क्दा : २ घपराव-क्दा (हे ४ ३४३)। विस्पिक्तिभ वि कि नागित (दे ज विष्यीइ की [किप्रीति] भन्नोति (प्रवाह १ १---पत्र ४२)। विष्यु ध्ये [विष्रुष ] क्षित्रु, सववन संस्क 'प्रचप्रदेशाया विष्युवा विष्या' (बीपा विदे

R 8) 1

(84 94) 1

बिएइड वि बिरस्ट सिट, व्यक्त (रेवा)। बिप्युक्ष वि [बिप्कृत] उपहुत, उपहन-प्रश

बिच्युस युग देशो विच्यु 'धमुनस्य क्यिन सेखरि' (पिंड ११४) । वियोक्स सक [ विम + इस ] निरीप्तस करना देखना । शब्द-विष्यक्कीत (पर्यष्ट र १---पश्र १८) । विष्येक्टाज कि विप्रेक्षित किरोधित (प्रशास प्र--पम १६१ मन ड ६६---का ४६६)। थिएनास ह अ वित्रीपश्चि प्राप्यारियक-शकि-विशेष विस्ते प्रमाण से मोगी 🕏 विहा और मुखका किन्दु सोपकि का काम करता है (परत २ १---पत्र १.१) धीय विस ७७६, संदि २)। बिएफंड **मक** वि + स्पन्द**े इवर-उ**बर बचना वहरूमा । बहु- विपर्धतमाय

(प्राचा)। विप्रदेविभ वि विस्पन्तित विषय-कार मन्द्रभा हमः परिचान्त अन्त्रवेतेस जनमने सकम्म विष्कृति(१वि)एस भीवेल । विरियमने दुनबाद सुद्दवरहा-धिंख सताई र (परम ६१, १२)। विष्करिस 🛊 [विस्पर्श] विष्क स्पर्ध (प्राप्न) । विष्यप्रका वि विपाटकी चीरनेवासा विदारक (परहार ४-- पत्र ७२)। विष्णादिक वि वि विपाटिती गामिल

थिण्हारिय वि [विश्वारित] १ विस्तारित (क्य द १६२) । २ विकासित (सूपा ८३) । विष्कास एक कि पूछ्या प्रस्ता । विप्रसमेह (वव १)। विष्याक क्यो विकास । संक्षा विष्याक्रिय (धन)। विष्याल प्रति प्रकार प्रता (नव १ क्षी) । विष्यालमा की दि किपर देखों (वथ १ टी)। बिएफाडिय देशो विष्यारिय (राज)।

(tu u ) i

थिएहर पक [ चि + एहर ] १ होना। २ विकस्ताः ३ दङ्क्याः ४ फ्रक्स हिलता । विष्कुरह (संगाम १४' काका ग्रामि)। वक्र. विएक्टरंत ( बत्त १६, ५४) प्रथम 1(# #3

विस्कृत्यः व [विस्कृत्यः] १ विन्तमस्य निकास (यातक २४६) मुद्द २३६७) । ए सम्बन्धः दिवन (ययके) । विस्कृत्यः वि [विस्कृतिस्य] निनृतिमस्य (मुचा २ भाषस्य) ।

وعي

२ ४। वर्ष्ण । विराजुक कि [विष्कुक] शैक्षित अञ्चल 'यह यह पुरहा विष्कुत्वपंत्रीवरंग्न्यही ह्याडे (वन्या ४४) ।

विष्योबध्य हूँ [विस्सोदण] योहा (गट--रुष्ट्र २ ) पि ३११) प्राप्त) । विष्यंत्र देवी विष्यंत्र । यह विष्यंत्रमाण

(दाना १ ४ व व)। विषयस सक [वि + पाटय ] १ विकारह करमा । २ स्कार्ममा । संकृ विकासिय (दाना २ व २ ६)।

विद्युद्ध भक्ष [ वि + स्टुट् ] चटता । वह-प्रदेश प्रदेश के विद्युद्धेय चंद्रमंत्रसम्बद्ध जो' (बुदा प्रदेश) । विद्युद्धा केसी विद्युद्धाय (तथा २४) ।

बिद्धरण देवी विद्धुरण (तुरा १३)। विश्वेभक ति [विश्वन्यक] विशेष कम छे बोक्नेशाहा (पंच २, १)। विश्वद्ध नि [विश्वद्ध] १ विशेष नदा । २

सहित (हुत १, १ १ १) विस्तार कि [क्लियम है] विरोधी कालक (वर्ष ४११) विद्युत कि [क्लियुत काल (विशे ११४) । विद्युत (ही) तीर्ष को (कि १९१) । विद्युत (ही [क्लिय] है के किस्स (क्लिय दूर १ ४४) । २ प्रविद्य विक्रम (क्लिय ४४) । वर्ष है किन्सु एक प्रविद्ध

भूत्र)। चंद दूं [जनहा पर्व अधिक केमायां (पूर्म ६८)। पहु दूँ विद्युत्ती एक (पुर्म ६८)। पहु दूँ विद्युत्ती (पामल १०३)। चित्रांचर दूँ [च्युत्रेम्स्ट] एक (पानक १०)। चित्रांचर दूँ [च्युत्रेम्स्ट] एक (पानक १०)। चित्रांचर दूँ [च्युत्रेम्स्ट] एक (पानक १०)। चित्रांचर वेश्वेस्स्य (७००)।

विकोद्या देशे विकाद्य (क्या) : विकोद्या व [क्शिपन] कल करवा, 'मृद्रुक्खविषेद्रकरस्य' (वय १२३) : विकोद्य वि [क्शिपक] १ विकासक 'मृद्रुक्खविषेद्रयं (वय १० है) । १

शास-प्रवास (विशे १७४) ।

चिक्योध पु [विक्योक] पिनास सीसार हुता नमित्र तीया विक्योधो पिन्ययो विकासो सं (पाय)। केवो विक्योधाः। विकासा केवो विस्ता (पाय पन १९० वस्म ४ १४४४)।

४ रेघा ४ )। विकासि वि [विभक्तिम्] विभव-नावतवा (सर्व)। विकासि वि [विभाग्य] रै विशेष भ्रम्य,

विकासीय वि [विकासण] र विकोग प्रास्त्र, व्यक्त प्रस्तुत (याना रि ४ १)।
पु प्रस्ता पर्याप्त (याना रि ४ १)।
पु प्रस्ता गर्याप्त विकास व्यवस्त्री नर्र केम्प्रस्य—स्थान विकोश (विकास )।
विकासीय प्राप्ति (याना विकास विकास

व्यक्तिय । व ट्रें क्षियपु - वार्यस्य (यद् ४ ) हे २ १ ) । विवस्तिकार वि [विवद् वक्तित] व्यक्तिय किया हुआ (दुमा) । विवस्त्रयम्य व [बें] कावाब, वोतीशा (दे ७ दु ) ।

शहर प्रका १२, १६**०)। २ व्यायक्ट** 

विक्साविय वि [वे] वासित (ववि)। विक्सार केवी वेक्सार (वि २६६)।

विकिशिक्ष पुष्टि मध्य की एक बारि (क्षेत्र १ कि.स. १): विकिशिक्ष कि हिंदे सुद्दे से कि.स. (१ ७ १७): विकिशिक्ष कि.स. १ विकरीत स्वतिस्थान

विभाग वृं [विभाक्ष] १ निवरीय धवविकाय विद्यान धवविकान, निव्याल-कुळ धवविकाय (वर २२६ डी)। २ जन-विरोध (तूच २ २ २३)। ३ तिरावता व्यवस्था ४ तैपुर व्यवस्था (तयम १ ४-पण ६६)। वैशे विद्यांत स्थित्यः। सिमीगु प्रैकी [चै] एक-विरोधः 'परवे दुर्माचे करकार्ष्ट्री तस्य विद्यांत्र (त्यव्य १-पण

पर्पात्ति हि [पिसङ्गुर] विकल्प (मुप १ रा मासू १ रा प्रवाद २२ )। विभिन्न एक [वि + श्रह्म] चीम शक्ता, वीमना। चीक विभिन्निक्ता (काल)। विभवित्ती (का) की [विकातित] विधिष्ट स्व (१४ ४१४)। विभाग कि [विभाग] चीका हुण चरित्त

(प्रमा ११ र २६)।
विभाज थक [वि + अज ] १ वाध्याः
नियाब करणा। २ विक्रमः दे आग्र करणः
प्रमाधः आयि करणा– विमान धीर निवेद करणा। कर्मः नियम्पति (वृंद् १)। करणः विभाजमान (द्यारा १ १ – पत्र ६ वर २६५ थी। धोः, विभाजिकाम (वर्गीर १ १)। केशे विभाजा। विभाजाण विभाजा। विभाजा गाक-वेदादै

(पन ६०)। पिनका केरो विभाजा। विश्वन्य (कृत्य ६, १)। पिनकाबाद ) पृं[वित्यन्यवाद] स्टबार पिनकाबाद ) प्रतिकत्यवाद, वेतः वर्धनः

(बर्गेस १२१: तूम १. १४ २२ जर ११)१ विभाग वि [विभागः] १ विस्तन्युक्त, वांस इया (वाट---एड्र ४६ व्यक्तन्युक्त, वांस स्वार, कुणा विभाग सम्बद्धाराजें (यावार क्रमा कुणा विभाग सम्बद्धाराजें (यावार

क्या वहा । इ.स. स्वास (एवं) । विभाषि वहें [बिमाण्ड] १ तिवास सेवः (सप १२ १—नत्र १७४४ तुमति ६६१ वहाति १६) जीवस्य पर्येनु मर्स्टारपरंपा विभागीर्दे (येव २ १६१ ४ १ ४१) । २ व्याकारक्रमधिक प्रस्तानीक्षेत्र (पीवसा ४४-

नेद्रय २१ वर्ष पूर्वात ६६)। विभागम त [दे] ज्यवान, योगीचा (दे ७,-६० डी)। विभय-विमण

विभयणा की [विभजना] विदान (सम्म ११)।

विभर सक [पि + स्मृ] विस्मरम् करण भूम बाना । विभरद (पि ३१३) । विभव देवो विद्या (स्मा महा) ।

विभवज न [विभवन] विक्य-करण वर्धन करना (एक)।

विभाइम वि [विभाग्य] विभाग-योग्य (ठा ३ २---पत्र ११४)।

विसाइस वि [विसासिस] विश्वव से क्या हुसा (ठा ३ २ — पत्र १३४)। विसास पूर्व [विसास] संदर्भ बॉट (काल

स्त)। यिमागिन देखो विमाइम = विभागिन (इल पृ१४१)।

क १०९/। विभाय केली विभाग (रंग्य)। विभाय व [विभात] प्रकाश कान्ति तेव

(स्त)। (स्त)। विभाग है [विभाव] परिवय 'करस पिस-स्वसाविमाओं न होई' (सं १६०)।

अवसायनाका न हार (व १६०)।
विज्ञाय यक [ वि + भावय ] १ विकार
करमा क्याल करमा । र निवेक से व्यस्त
करमा है समस्त्रा। वक्त विभावत, विसा
वेत, विसावेसाल (तुर्म १७०० का ११०
धे. एए)। कब्ब, विभावित विभा
विक्रमान (दि ६ १२। स ११। हेड़
विभावसार (क्या)। इन्विभावणीय (कुळ
१९४)।

विभाव देखो विभाव 'तथा महाविधावेखं पूर्व्या पेंडिया गया में (महा)। विभावसमु पूं [विभावस] १ सूर्य, रवि। २

रविवार (पडम १७ १७७)। हैको पिद्यानसु। पित्रानिम कि [यिमाधित] विवारित

(क्षण)।
विभास सक [वि + भाप] १ विकेष बस संबद्धा स्पष्ट क्षणा। ३ स्याक्स करणा। विकास से दिवान करणा। विभासद (पर ७३ टो)। इस्ट सिमास्मियक्य (क्षणी ३६

१ वर) । विभासक न [विभावक] व्याक्या व्याक्यान (विस १४२८)।

(बिस १४२८)। विभासय वि [विभायक] व्याव्यावा व्यादया-कर्ता (बिसे १४२४)। विभासा वौ [विभाया] १ विकस्य-विकि

व्याक्या-कता (अस १४५४)। विभासा की [चिभाया] १ विकस-विधि पाक्षिक प्रान्ति, सबना विधि भीर निरोध का का विधान (पिंड १४३ १४४ १४४ २१४, १ २ उप ४१४ टी प्र १३)। २

क्या (वर्षण १३० १३० १३० १०० १ ११४, १ २ उप ४१४ ही हा १३ १ स्थालमा विषयण स्थानिकाण विशेष १९०४ १ १४२१ विक ६३७) । १ विशापन निर्वेश (उप १८) । ४ विशिष भाषण (पिंड ४१८) । ४ विशेषोणि (वेर्षण १९७) । १

परिचापा वंशेष्ठ (कम्म १ २८) २१)। ७ एक मञ्जानकी (ठा ४ ६—पण १४१)। विभासिय वि [पिभासिक ] प्रकाशिक क्यूचोर्वेट (धम्मक ६२)।

विभिन्न ) देखो विद्याण्य = विमित्र (क्टब विभिन्न ) ५७ : ११० : वर्ष १६, ६६)। विभीसम्प १ [विभीपण] १ एवस्र का एक कोटा साई (तस्य = ६२)। ९ विदेश वर्ष

का एक बातुरेन (सक)। विभीसायण वि [विभीपम] सम-जनक धर्मकर (सनि)।

(क्य)। विभुद्गे [विभु] १ प्रद्भु, परसंस्वर (पद्य १ ११२)। २ ताव स्त्रामी सामिक (पद्य ७ १२)। १ एकाकु बंद्य के एक राजा का ताव (पद्य १, ७)। ४ वि स्थापक

विभीमिया श्री [विभिषिक्र] मय-प्रवरीन

(विसे १९८५)।
विभूष की [तिमृति] १ देश्वर्य, वेमव (कर धीप)। २ ठाटवाट बूमवाप 'सहाविभूवेर विभागे निराजवाप' (पुर १ ६२ महा)। १ धार्षिया (वस्तु २,१—वन ११)।

विमूसण व [विभूषम] १ धर्मकार, बाह्या । २ स्टोबाः 'विकालकारीवभूतशाई' (उप

धीत)। विभूता की [विभूषा] १ सिपार की सना वट सरीर पर सर्वकार-वक्त साथि की सना वट स्थान १ २ १ के सीपा भीस की ।

२ स्टरिस्थोभा 'महुष्तापो स्मर्धतस्य कि निमुशद कार्षि' (स्ट ६ २ ६४ ६६ ६७ एत १६ २)। विमृश्चिय नि [विमृषिष्ठ] निमृतान्द्राष्ट

स्वतंत्रत् श्रीभद्ध (भग्न ज्या १६ ६ महण् विशा ११—(व क)। विभेय १ वृष्टिभेत्र] १ मेदन विरुष्ण विभेय (वर्गमं ६२६) च्यासाण्यक्रीन विशेयस्वते (सरव वा ४२६ दी)। २ मेद प्रकार च्यासीतिस्तिनेमं विद्वपणीं (व्यव ६९४)। विशेयसावि विभेयक निस्तककी प्रसम्म

विभोजनी' (चमित ७६)। विभाइ की [विभावि] जन्म-विदेश (गिम)। विभाइज वि [में] मास्तित तिरस्कृत (वे ७ ७१)।

विसवक कि [सिमुकुड] विकरित विसा हुस (प्राया १ १ टी—पन के मौर)। विसंदिय कि [विसन्तित] विसके बारे में मध बहुत—ब्रुप्त क्षी की है। यह (पुर ११ १७)।

विमंसिक वि [विमुद्ध विमर्शित] विचारिक पर्वासोपित (विरि १ ४३)। विमय देवो विमय (एव)।

विसमा सक [ वि + सारीय ] १ विचार करता । २ सम्बेयस्य करना चीनना । ३ प्राप्तेन करना मीनना । ४ इच्छा करना चाहना । दसरयह विमग्नहा (उच उठ १२ ६०)। वक्ष विसमांत विमग्नमाय

यहा)। थिसांत्रमञ्जलि [श्रिमांगिन] १ यानित मांगा हुया (तिरि १२७ पुर ४ १००)। ए सन्धेयित मनेपित (पाम)।

(या १६१ पुर २ १० से ४ १६

२ सम्भेषितः समेषितः (पासः) । शिक्षक्षकः प [शिक्षमण्य] सम्बद्धनः (राजः) ।

विश्वण वि [ विस्तास ] १ विष्णुण विश्व शोक-सन्तर्ग (कप्प सुर १ १६८ महा)। २ शुक्त-विश्व सुन्न विश्वशंसा (विदा १

शाक-कन्त्रभ (कन्य सुर १ १६६ महा)। २ श्रुष्य-विद्य सुन्न विद्यासा (विदा १ २—-पत्र २७)। ६ निरास, हतारा (पा ७६)। ४ त्रिसका मन पत्यक्ष क्या हो वह

(रिच देश गतक)।

400

विसद सक स्थि + सर्वेय , दि संपर्व करना । २ मर्दन करना । करक विस्तरि व्यमाण (धिरि १ ३८)। विसर् र [विसर] १ विकास पांचसप्रिय-र्वतरद्यानिहिमर्वजन्त्यं (मृद्ध ३० मजड) । र बेर्न्ड, ए ७२२ पत्र १६)। विमहत्र व श्विमदत्ती ज्ञार देशो (वर्षि) । विसम्न तः [वि + सम्] यानना विनना। बद्ध 'कार्य मुफ्तिएं व सं विमान्त्रीना' (श्र X 8XX) 1 प्रिमय वृं वि] पर्व-मनसकि-विशेष (पर्छ १---वम २३)। बिमर (या) भीने देवी । विमद्या (पिन) । विमरिम एक [वि+शृञ्ज] विकारण। **इ** पिमरिसिक्**स्य (शी) (प्रति १ ४)** । विमारिस 🖠 [विमर्छ] विकल विवार (धन) । मिमक वि पिमस्ती १ मध-रक्षित विद्या निर्मेश (क्या कीय- सः प्रश्ने प्रश्ने २७। इसा बासुर १५७। १६१)। २ पं. इत धार्मास्त्री-गांच में बल्कन देखां विमहेद (बच ४६) पत्रि )। ६ व्यक्तवर्य में होनेराने वा<sup>र</sup>वय जिल जबरान् (कम ११४)। ४ वह अधिन जन सारावें भीर पनि नियानि दिश्य को प्रवन श्रामधी में 'चरुनचरिश्र' मायक बैत रामायस बनाई है (पड़न ११ ११ ) । ४.ए४ महास्यः स्पोतिन्य रेज-विशेष (द्वार ६---पत्र ७८) । ६ ववरान् सनित-बाब का पूर्वक्लीय श्राम (ग्रम१६१) । ७ वृंश स्टब्सर दरना ६ व इन्द्र का युक्त पारियानिक ियान (दा -- पप ४३७) । ब्राप्टिमान में निवत एक देश-दिमान (सम. १३) वरेन्त्र १४) ह एक ६४मक वेक-शिवान (वन प्रशादिक्य देवरो । हे अव्यक्तार धः दिनों का न्यान । ६६ बकाकर वाउँ रिवा वा प्राप्तन (वंदीव ६०) । १२ व् व्यक्ति बन्न (१०५ व. १---पत्र ११) । "पास प्र [भार] एक पुनकर पूरा (सम १६ )। र्च र पू [ पर्जू ] एक देन धाकार्व (शहा) । त्यहा का [ प्रभा] कारान् शीपनावत्री et curfcitet (freit tag): at

वं विदा पानव-प्रायुक्त देवलोक के इन्हें का एक पारिकाविक विसास (ठा १ ---पम श्रेष)। बाइण प्र विश्वका रे भारत-बर्ध के भागी प्रवस जिनके व जिनके वसरे नाम देवसेन तथा महायथ श्रीदे (ठा ६---पव ४११) । २ कृषकर पुरव-विशेष (सम १ ४º ११३ पन्ना ६ ११)। ६ मारावर्ष का एक मानी पक्तनतीं चना (सन १६४)। ४ एक जैन को जयशब्द धनिक्कान के पूर्व शन्य में तब में (पदान प १२८१७)। ६ परवान् र्यक्काक का पूर्व-जन्मीक भाग (सम १६१) । सामि वं विशासिमा विक्रमकरी का विशासक देव (सिरि २ ४)। संस्री भी विस्तृती का शत्रेष भी पटरामा (पत्नम २ १०६) । विसस्य न [विसर्दन] निस्त वर्गाद की हास पर विस्तराः वर्षेषु (वे १ (४०)। विग्रसहर पूँ [के] क्लक्त कोलाइल (वे क w2) I विश्वसाधी विभक्षी १ दर्ग दिस (स १ — पत्र ४० )। २ वस्त्रे**न्द्र के** लोकपालों रो यद-मॉहवियों के नाम (ठा ४ १—पत्र २ ५३ । १ बीवर्धंत चीर नीवयश नाय 🕏 क्वर्येन्स्री शी शब-महिरिक्ष्वी के शाम (का ४ १--पत्र २ ४)। ४ भीदाचे तिनरेत्र भी बोज्ञा-विविका (सम १८१)। विश्वसिक्ष कि (विसर्दित) विश्वता गर्वत फिया बया हो यह पुत्र (बें १ ७) । पिमसिक्ष विदिश्यिक्षर से बच्चार राज्य सहित शम्पतासा (१ ७ ७१) । विमसमार 🐧 [पिमलधर] शिक्षणज्ञी का मस्तियम स्य (स्थिर ७७३) । विमहासर र् [विमहासर] ऐस्वत वर्ष हर एक कारी जिल्हेर (पन १९४) । रिमहिद (धी) रि (दिमधिन) विकास प्रमन क्या पया हो वह (बाट---मानीर v )। िमाउ ध्ये [विमात् ] धीरेनी वा (वत ३५ {wt) : निमान वर [वि+मानव] धायान करबा, दिखनार करना । रिकालीम्बद्ध (पहा

28) 1

विमाज पूर्व [तिमान] १ देव का तिवान-ध्यम (सम. २०११ हिस्कान १ जबार कथा बेकेन्द्र २४१३ २४३३ पएक १ ४---वक ब बारित १२)। २ देव-बाल मान्याय-पान्ध काकाल में बीत करने में सबने एक (सं ६. **करावन्त्र }। ३ वरमान हिरस्कार**ा¥ वि मान रहित, प्रमास रम्ब (ते Ш ७२)। विभक्ति भी अभिक्रिकि के प्रक विशेष (इन ६६) । सदम्ब न [ अयन] विभानाकार सद्ध (कम्प) । यासि 🕏 िंदासिन्। देशों की एक सदम जाति वैमालिक देव (परहुद्द ४---पत्र ६०) वि विभाजना 🛊 [दिमानना परपणन विचन्दर (भारत १६२)। विमाणिक रि [यिमानिव] परमानिव (रिंड ४१६६ कम्प: यहा ) । विमिस्स व [बिस्इय] विवाद क्रके। शारि वि विशारिम् विवाद-पूर्वक वरने-बाबा (ब १०४८ १२४) । विभिन्छ वि [बिमिश्र] मिथ्क निवा हथा, पुरः (पैष २ ७३ महा)। विभिन्सण न [पिमिभण] पिपल निवास्ट (सम्बद्ध १७१) । विमीसिय वि [विमिश्रित] विविध मिश्रित (धरि)। पिसुडक देगो विमर्डक (यन)। विश्वंच बक [पि+सुच्] र बोहरा कथन-पुक्त करना। २ वरित्याच करना। विश्वेषद् (गल्)। वर्गः निश्वद्व (धावा १ १ ९ ६) । ध्या- विमेचीत (ब्रह्म), विमेची [रेम्प] माज (छामा १ १-नव ११)। **क विमाधका (उन २६४टी) पिनाय** ( (44 FF-1 5 18) विमुक्त-देशा विभाउछ (पर्या १ ४—वर्ग 1 (90 विमुख नि [विमुक्त] १ पुन हवा, ल्ड्रा

कम्बन-धीरा कार्रियुस्तर्णे ब्रामेलं (नहा

प्रदे पाय मानानि १४३)। २ नवियना

विक्रमीयाध्यं (महा ७७) । वेति.संद,

वीव-र्यादेश (याचा २, १६ व) ।

थिमोसका ग्रेमो विस्न ।

विमुक्त र् [विमोस] कुल्बरा मुखि (वे ११ इदा मानानि २१८ २१६ सबि ६)। विसम्बद्धण देखा विमोषस्त्य (उत्त १४ ४ कम १६६) । विमुच्छिक वि [विमृच्छित] पूर्वा-प्राप्त (से 28 28) 1 विमन्त देवी विमक्ष 'मृचिविम्त्रोगृवि' (पिड 24) 1 बिम्लि की विम्लि १ मोब मुक्ति (द्रापानि १४१ कुम १६)। २ सामारीय सबका शन्तिम सम्मयन (साथा २ १६ १२) । व बहिसा (पर्या २ १---पत्र १६) । दिमयण व [पिमोचन] परित्याय (धंबीव 2 ) 1 बिस्ड वि चिस्स्र र पराष्ट्र मुख उदासीन (मरुड पुपा २६ महिंग)। २ पूँ एक नएक-स्वान (क्षेत्र २४) । ३ पून. बाकारा गयन (ध्य २ २--पत्र ७७६)। विस्त पक [ वि + सुद् ] ववराना व्यापुत होता वेचैत होन्छ । यह- विसहित्यांत (श 8 A61 88 A8) 1 विस्त्रिक नि विस्तरको पर्याया हवा छ ४ ४४ मा ७६२) । विमुद्दिल वि [विमुद्धित] एएक पूर्व किया क्या (पर्वा १ १--पत्र ११)। विमृद्ध वि [विमृद्ध] १ वक्यवा ह्या । २ शस्त्रदः, शस्त्रप्तः (वस्त्र) । विमाल वि विभक्तक दोक्रीनामा वर्गमन कर्ता, 'जे मंदन' बाहुबबिस्स झासि रेखस्थिकी मास्त्रिमूरछस्द्वं (मंत्रव्व १ )। किमाइय नि [विमोचित्र] सम्भा हता (खाया १ २--पन वदा सरा)। बिमाक्क देवी विमुक्त (छ १ व)। विमोक्सम व [विमाध्या] १ कुणारा बुदाना मन्त्रन-मोचन (धाषाः सूच २ ७ १ पतम १ २ १वत स १८ ७४२)। २ वि पुरानेपाचा विमुख करनेनासा 'सम्बद्धस्वाधिमोस्कलं (सुध १ ११ २) २ १)। और भी (उत्तर्द्र्र)। विमोक्सय वि [विमोधक] कुलाच वाने-बाला 'ते दुवस-विमोनकमा' (जूस १ १ R X) 1

यिसाय सक [बि + मोचय ] छुत्राना ध्यक्ष करना । संबद्ध विमोशकण (प्रस) । विमोय देवो विमच । विमायम वि विमोचकी छोड़नेवासा दूर करनेवाला 'न ते दुवस्थिमीयवा' (पूछ १ 1 ( 8 3 वियोगण प[यिगोचन] १ छुकारा मुखि । २ वि प्रकृतिशालाः ग्राह्मयवियोगस्तकार्षः (पराप्त २ १--पत्र ११)। विमोयणा 🛍 [बिमोचना] कुरुए (नुष १ १७ २१)। वियोह एक वि + मोहय ी मुख करना मोह उपवाला । विमोद्देश (महा)। र्सह विमाहिचा विमाहचा (मग १ ३---पण ४६७)। विमोह के विमान्स (प्रापा)। विसाह वि विद्योह र नेवर-प्यीत (उत थ. २६) । २ दे. विशेष मोक्क, **पनधा**ट (श्रम्मच १२६) । ३ श्राणायंत्र सुष का एक ध्यममन (सम ११) ठा ६ धि--पत्र ४४१)। विमोइण न [विमोइन] १ मोह अपनामा । (शूर ६ ६=)। २ कि मोक्क छनवानवाचा (क्य ७२व दी)। विमोक्ति वि [जिमोक्ति] मेक्तनात (नक्त २३ १२)। किन्द्र ग विरमनी श्रापर (एन)। विनवहरू वि [विदिश्यत] शायर्थ-विकत चमकारा (मूर १ १६)। विमहस्य धकः वि + रिम ] नगतकत होता विस्मित होला कार्यमन्तित होना । ह विम्ह्यणिका, विम्हयणीय (है १ २४%-प्रमि २ २)। किम्ब्य पूं [किस्तय] धारवर्ग, नगतकार (हे २, ७४' पहात्रात्र समा नका समि १)। विमहर सक [स्यू] यार भएता। विमहरह ( X & AX) 1 विनक्ष धक वि + स्मू विस्मरत करना बाव व बाला भूका बाला। विश्वहरू (हे ४ करा प्राष्ट्र ६३ पर्)। स**क्ष** विस्तुर्रत (मा १६)।

पंदोध ४३ मुक्त ८ )। यिग्हराइअ वि वि र मृष्टित मुर्धा प्राप्त । २ बिस्मापित मि १ ४१)। विम्हरायण वि स्मिरण । स्मरण कराभगाना वाद विमानेवाबा" वावएएवीएकइविम्हरा वसा' (क्रमा) । विमहरिअ वि विरम्ति द्वा इपा पार न क्या हवा (इमा पाय)। विम्हल केही बिक्सक (उप १६ दी)। विम्हिलिल देवो विक्सिक्तिल (प्रकार २२)। विमहारिश्र वि विस्मारिती भूम या हवा (क्या था २५)। शिम्हारिज (बप) देखी विम्हरिज (मसु)। विमहाव सक िम + स्मापय विशासमं यक्ति करना । विम्हानेह (सहा निष् ११)। बक्र बिम्हावेंत (उत्त १६ २६२)। विम्हावण न विस्सापनी प्रावर्थ उपबन्ध विस्तर-कच्छ (भीप)। विम्हाक्जा की विस्मापना अनर देखो (Peg 11) ( विम्हावय वि विस्मापकी विस्मय-वनक (सम्मल १७४)। विन्हाविम वि विस्मापिती शास्त्रपश्चित किया हवा (बर्मीव १४७)। विमिश्च वि विस्मित् विस्मय-धान बगरकृत (बा २०--पन १६ : उब) : चिमिह्य (धर) देखी विमह्य । विमहयह (बरा) । विनिद्द वि [विस्मेर] विस्मय पानवाचा थमरहत होनेनामा (भा १२ २७)। वियवा देवो विज-वा । वियद् पक वि + युम् वि वस्त्रमा शामा। क्षेत्र-वियद्वित्तय (धावा २ २ २ ३)। विषद र [क्यर्व, क्यह ] माकारा, पर्का (भग २ - - पत्र ७७६) । बिर सक [ भड़्तु ] मॉनना, तोड़ना । विरक्त ( T Y ( 1) 1 विर यक [गुप्] म्यापुस होता। विरद (हे ४ १६ ), विरंधि (क्रमा)। विर (भग) देखो वीर (सगु)।

विम्हरण न [विस्मरण] निस्नृति (पन ६

क्षेत्र विरहर (शुपा १)। इ. विरहयम्ब

विरय नि विरत्ती १ निकृत कर हथा

विद्यमन्त्राप्त (अवास्ताना १४१ वे ४६)। २

पार वार्व से निवृत्त संयमी स्वामी (भाषा)

জন)। १ %- বিতরি, বিতম । ४ খবদ

ध्यान (वं ४९ कम्म २२)। विदय वि

(प्रथम ६६ ११) ।

भिष्ठ को विश्ववि रे विषय निवृत्ति । २ धानदा-पाप कमें वे तिकृति, शंक्य ध्याय (उक्त पाना) । ३ धनःग्राक्तश्रीरत निषाय स्थान यति (बह्ब र ७)। विराध वि [विराधित] १ इस्त निर्मित क्नावा इच्छ । २ धनाना इच्छ (पादा: चीनाः कर्मापद्भारे १२१ क्रमा महाध्या क्यो। बिएइक्ष देखी विदाहम (क्रम)। विरहरका देखी विरय = वि + एक्य । विरंचि पू [विरक्ति] चहर, विकास (क्रुस ४ १ वि ७ सम्भत्त ११२)। बिरच । बद [वि+रञ्जू] १ रिक्त डोना बिराज है क्याक्षेत्र होता। २ रॅब-चीहर होता। विरुद्धाः (स्थः यदा २६,२ मदा)। यह विरक्षंत विरवमान विरवसान वि ४ रिश मिन रुच २६ २ वा रेप्स, 244)1 बिरच नि [बिरच ] र क्यमीक निचन नाम (सम ५७ मानू १६६) १६६ मञ्जा)। २ विविध रॅबरासा (धाका १ २, ३ १)। विर्याच की [विर्याच्छ] वैचान ज्वाक्षीका (चन ६ ६२) । षिएम प्रक [वि+रम्] निवृत्त होना बट **क्ताः विरम्ध (ग ७ ) विरमेण** (मामा) विरम विकास (वा १४% १४%)। प्रयो हैक पिरमाचेड (बा १४६)। बिरम ई बिरम विद्यम विद्यम विद्वति (वटक 47 YXE 4 4 9X + 144) 1 विरमय देवो धरमय (यव शका)। दिरमाण धक शिति + पाळ्य । वाका बच्या, चाल बच्चा । विस्मालह (बाला 1 (825 विरमास वर्ष [ प्रति + ईश्र् ] यह देवना बार बीरुवा प्रतीया करना । विरशस्त (है: ४ ११६) । धेङ्ग विरमाख्यि (द्वा) । विरमासिभ रि प्रिनीकियाँ जिस्की प्रतीका वी वहें हो वह (पाम) । पिरय तक वि+रचम**ी १ करता** 

काल्य। १ प्रमाना धनागर करना। विराहर,

विरक्षति विरक्षमानि विरुद्ध (ब्राह्म ७४)

िविरश्ची धारिक श्चेयप खलेगावा कैय स्पातक बावक (श्रम १६)। किरय पूर्वि कोटा क्व वर्षाह, कोटी नरी (रे ७ ३१)। 'विरया क्यूबरिमर्सा' (पाच)। विरुप प्रे विरुप्तस् देश सहस्त्रह, क्योक्कि देव-विरोध (सम्ब २ )। २ एक देव-वियान (वेकेश १४१)। बिरयज क्षेत्र [बिरजन] १ इति किर्मशः। २ स्वावट (नाट---पावची २८; कप्पू)। बी. णा (सूपा ६१ वे १६, ७१)ः 'पडियट्टर विस्र तसर निरमसा (क्यू)। विरया की [यिरमा] १ शे-तोड़ में स्वत रावा की एक बच्ची । २ उत्तके शार से वनी इ.र. एक नदी। 'संनियनिरसायरिक्ष' (प्रण्यु. 8)1 बिरस्ड मि (बिरस्ड) १ धन्म योग्रा परमुक्ये दुन्तिया विकां (है २ ७२) ४ ४१२ दन प्राच १< ः पदक्को)। २ व्यनिविक्रः। ६ विधिद्ध (नुद्धः वयः) । विरक्षि की दिं वस-निरोप शीरका शीरी वाचा कपका विश्विमार मृश्लिमा (१व बप्र दी। १ विरक्षिय वि विरक्षित विश्व वन हुमा निस्म किया क्या (भवत) 1 विराधी वेको विराखी (चन) । विराह्म थक विन् दिश्वारमा, वैन्यामा । विद्याद विक्वोद, विकासी (हे ४ १३७) वदः वच्छ)। बिरक दे जिल्ली विस्ताद, कैनाव (वब ४)। विरक्षण न [तचन] विस्तार, कैनाश 'चट्ट-मयनिष्ठाले समा एनई (उन) !

विरक्षिम वि [तत् ] निस्तारकामाः निस्तारित वि ७ ७१३ वाया कुमार सामा १ १<del>५ --</del> यम २३११ हर ४ ४---यम २७६)। वदा धका साहीया भाषे नुक्क विरक्षिया सर्वी (विशेष: १२)। विरक्षित्र केवी विरक्षिम (राज वर्गि) : विरक्षिभ कि कि बचार औं वा इस्र (है w uth i विरस **व्यक** [वि÷स्तु] विकास अन्तर करना । शक्क विरसंत (शक्त) । बिरस नि [पिरस] रस-धीत कुन (क्षाना १ २—नम १११ः सहय हे १ ७ छछ)। २ विस्ता रतवामा (सर ७ ६—५४ ६ ६) । ६ वं रामधाता मध्य केशाम कैत रीमा बेनेवामा एक रामा (पत्नम र. १) ४ व. उप-विदेश निविज्ञतिक दर (स्वीव \* ) t विरक्ष न [के] वर्ष शक्त बाध्य गांव (के 4 (3) विरसमुद्र पुं [क्] काफ, कीया (रे विरक्षिय पि [बिरसित] रह-हीन, रह-विच्छिट (हम्मीर ११)। विक् सक [वि÷क्क] १ परियास करुप । २ सबय करूत । कशक्र, विरक्षिकांत (गड-राष्ट्र २)। इ. विरहिसक्त (शे) (415 -- 245) विष्यु दें [विष्यु ] १ वियोग, विश्लोह, बुर्का (यदका है रे अप रेरेश शाबु रेयर कुमा न्यहा) । २ घल्तर, व्यवधन (धव) । १ ई इस-विकेश 'पुरवर्ति विरद्भावता सीव्या र्पंचनुस्थार' (प्रवीच ४३) चा ३४), 'वरा-वियो प्यादये विद्यारे नाम दकः बाह्यस्त बीएं पुजाबियो सी (पुत्र १३१) पुनर्गीत विध्विको विरह्मन नदिस्त पंत्रमे हेरि (इ.स. २४०) । ४ यम्रागा १ विकास (धन)। ६ इरिवेश में इस्तब एक एका (पक्षम २२ हर)। विश्वह वि [दिस्थ] स्व-स्ट्रीत (प्रथम १

Serve - Disse	पाइअश्रदसहण्यको	v.Ev
षिया—षिरङ्घ		
स्त्रहर्षुन [च्] १ एकान्त विजन (वै ७	थिराय वि [विस्त्रीन] १ विकीर्यं, विग्रित	विरिंचि पु [ियरिद्धि] इसर देशो (पुर
<b>११ छान्या १ २—पण ७१ प्रथट १४४</b> )⊳	स्पृ(ते ७ ६४ न शतक कुमा ६ ६०)। २	13 04)1
'सामाए, रेक्षीए, धंतरान्छि य विद्रास्ति य	विषसा ह्या (वाम)।	बिरिचिक्ष विदि १ विमय निर्मेता २
विखासि य पविजागरमाशीको २ विहरीते	विराय रेखी विराग (पराह २ ४पम	विरक्त, उवासीम (वे ७ १३)।
(विषा १ १ — पत्र ८१)। २ कुर्सुस के रैंगा	१४१) कुना सुपार ४ वण्या ६ कुन	विरिधिर र्षु [वे] १ सरत मोड़ा। २ ति
हुमा क्यहा (दे ७ ६१) ।	१११) ।	विरत्त (देश १३)।
घेणदास्त्रन [क्] दुनुस्त्र से रैंगा हुनावका (दे ७ ६०)।	विराज केको बिराज (णाया १ १—पत्र ६५ वि २४१)।	विरिचित्त की [दं] वास प्रवाह (दे ७ १६)।
वर्राह् वि [विरहिस्] वियोगी विश्वना हुना	विराक्तिया की विराक्तिका १ व्यारा	पिरिका वि [दे] पार्टिक विवासित (दे <b>७</b>
(हुमा) ।	कृत्व । २ पर्वेदाका क्ला (वस ४ २ १८) ।	(A) I
विरद्भि वि [विरहित] विरह-पुक्त (भग	देखी विराक्तिजा )	बिरिका वि [बिरिका] को काली हुमा हो
उच हे४ ३७७)। विराधक वि+स्क्रें]१ नट होला। २	विराखी की [विराखी] १ बल्ली-विशेष (पव	वह (प्रकार ४४ ३२ सुपा ४२२)।
प्रविद्य होता पिषसमाः १ मध्यमा निकृत	४ शाद संबोध ४४)। २ चनुरिन्तिय	विरिक्त वि [विसक्त] १ बॉट्स हमा चेखे
होना । विराद (हे ४ १६) ।	मंतुकी एक वासि (उत्त ३६ १४६ सूच	चित्तवरार्णं सम्म सममापेडि निरिक्स' (महा)।
विराद्ध वि विशासिम् निरानवासा विरक्ष	१६ १४०)। देखी विराजी ।	दे विश्वने माथ बाँट विमाही वह मापना
क्यासीन । 🛍 गो (नाट) ।	विराव वृं [विराध] राज्य भावाय (गउव)।	हिस्सा से कर जो धवन हुआ हो नह 'प्यमिन सरिएएजेसे वो भासना नस्मिया ते
षिराइ वि [विराजिम्] शोक्नेनासा जमकता (२२ २६)।	विराधि मि [बिराधिम्] धानान क्योनाना । (यडक)।	य परोप्परं विकिका' (मोप ४६४ दी)।
विराद्द वि विरायित् । सम्बद्धक शावान	विराहतक [वि + समय्] १ करान	थिरिकाधी [दे] विलु, बर नेग्र (ग्रुव २
बासा (हे २ २१)।	करना गौधना सोक्ना। विचार्यित (तक)।	₹७) 1
विराइक देवो सिराय = निमीन (से २ २६)।	वक्र विराहेत, विराहेत (ग्रुपा ६२० वक्)।	विरिचिर वि [वे] वास से विरेचन करने
বিয়েপ্ত বি [বিয়মির] যুরীমির (ভবা	विराह्म } वि [विरामक] क्यान करनेनासा	वासा (वर्)।
भीक महा)।	विराहरा वोक्नेवाला भंगक (सन्द सामा	विरिद्धाय वि [वे] बतुषर, बतुरत (वे ७
विराग हुं [वियम] १ यम का सम्बन	र ११पम १७१)।	(46) (
नेरान्य रचाधीतदा (मुख १३ वन ७२०	विराधना भी [विराधना] बर्यन अस	
डी)। २ वि एय-एड्वि बैदिस्य (पण्य १ ४ मीप)।	(सम्बः सामार ११ टी—पण १७३ पर्सार १—पण ६ मोण ७००)।	विदिवसई (माक्क ७६)।
विराह र्षे [विरात] केत-किरोब (कर ६४०		विरीक्ष (भर) वेको विश्वरीक्ष (भिय)।
दी) । नयर न ["नगर] नमर-विदेश (शाया		विरीह एक [प्रवि+पाछन ] पाधन
१ १६—वत्र २ १)।	पया हो नहा 'धनिराधियवेरिएकि' (पराह !	करना रक्षण करना। विशेष्ट्र (प्राष्ट्र ७३३ भारता १२३)।
विराध (मर) ई [विराध] एक राज्यस्का	१ पण १६)। ६ तु. एक विश्वासर-गरेश	
नाम (सिम)।	(पञ्चम ७६, ७) ।	विक् } थक्ष [धि+रु] रोगा विकास ।   विरुम ने वक्क विरुपमाण (क्ष्य १९८ क्षे)।
निराम 🕻 [मिराम ] क्यरन निवृत्ति धनसन (गरक)।	विरिक्ष कि [सरत] चाँचा हुमा चौका हुमा	विकास विकास विकास विकास की साधान
विरामण त [विरमण] विश्व करना	(कुमा)। विरिम्म केमो वीरिज (सुधनि १९ १४	शन्त (या देश- ग्रेंट १ व नार-मुख्य
तिवर्तन, विच्यानाः चैदविद्यासम्बद्धवासम्	सीय)।	t34):
(पद्यहर ४ पत्र १६१)।	विरिंग पण [यि + मज्] विमान-महरा	विरुध दि विरूप] श्वराव कुडीस
विषय मङ् [वि÷श्च्यू] होसना	करणा, पाथ सेना चाँट सेवा 'कामाते fir	दुप्र करनामा कृष्टित (दे ७ ६३ महि।)।
नमनना । विद्यासम् (पाम) । नहः विद्ययंत	य से पोर्नन निरिचड, नेय मासेड (स	२ निष्क्ष, प्रतिकूत (वर्)। देखो पिक्ष्यः।
विद्ययमाण (कप्पः सीराः सामा ११ टी पत्र २ पुर २ ७६) ।		षिरुद्व पु [थिरुस] नरक-स्वान विधेप (देवेन्द्र
35.5. 44/1	विरिक्ष पूं [विरिक्षा] व्यक्ता विवासा (पाम)।	(२व)।

486

(#9 विरुद्ध देवी विरुद्ध (पश्छ १--पण ६६) मार )। विरुञ्ज) वि विक्रपी १ कुक्य थींक, विक्रव करोन कराव दूरिनंद (पा २६३ चनित स्थल ४४३ त्र १ २३३ **छ**र ७२० हो)। २ विकास प्रतिकृत समया (शुर ११

(माना)। विश्व पुन विश्व चित्रक्षित विश्व नाम्य (पव ४)। विरेश्र सक [वि+रेचय ] १ मक को कीचे से निकासना। २ वक्टर निकासना। निरेगद (हे ४ २६)। यह विरेशेत (इमा ६ १७)। विरेक्षण व पिरंचनी १ मध-निवासन ब्लाब (बरङ् २६) छ।या १ ११--पत्र

) । ६ अद्वादन प्रत्यक तरह का शामानिक

१०१)। २ वि मेरक, वितासक व्ययक्त दुश्वनिरेक्टं यक्शक्तवंति (स २७०३ \$ 6 8 ) I विरक्षित्र देवो विधिक्तम = क्य (शामा १ हैंक दी-नव हैंहे त बरड ४६%)।

विरायत व विरायती धान नक्ष (क्य 121)1 पिरोक्ष सक मिन्ध् | विकोधना विनोधन करना । विरोत्तद (हि. ४. १५१) चयु ) । पिरोक एक [वि+क्रम्] १ यनसम्बन <sup>[</sup> करना । २ माधेबुख करना, बहुना । विशेषक्

(धारम १३३)। विराक्तिम वि [मिधित] विनोधित (पास-दुवा मदि)।

विधेद नद ( वि + सेयम ] विशेषक्रणाः

विरोहित (बंबीय है )।

क्षविते । विरोह्नय वि विरोधक विरोक्त कर्ता (पनि)। विरोद्धि वि [विरोधिम ] दूरमन प्रतिपन्धी पि ४ शालट—रुद्ध (६)। बिरोदिय पि विरोधित | निरोक-मन्त (बज्बा ७ ) । विश्व यक श्रीद् ै सण्या करनाः श्रूपीन्था क्षामा। संह विक्रिक्तम (च ३७६)।

विस्तृतिस्त्रीनमण-विशेष एक श्राप्त का नीन (बाका २ १ ६ ६)। क्षिन्द्रश्राणि दि] । प्राधिका क्षुप की कोरी पर चढाना इसा। २ दीन, वरीन (दे ७ ६२) । ६ ज्लर पहाया हवा धारोपित **पाणा वस्य विजन्धा शीधे शेशमा हरिड**रै हिंगि (अश्य २३) 'पहर्म विश्व रहणस्या उनार क्षिक्रद तुलियी मरीला विश्वदर्भी (R & K) 1 विस्ञासन १ [रे] बुराव, कुन्य (यव)। विख्योठी की दि र विस्तर क्या र विधोषना, तबारी (पर्या १ ६--पप

१६) । देशो विकासेकी । विक्रीय सक वित+स्वक्रम**ी अन्तर्**ग करना। विश्वविद्य (वर्मच ४२)। यह विश्वयंत (काल)। विसंघण न विस्तानी उत्संबन धरिक्यणः °शि ही सोसमिष्यर्थं (उप ११७ दी)। विसमञ्ज (सप) देवी विद्युत्तेत्रज्ञ (द्वारा) । विश्वपद्धिम (पा) नि विश्व बस्तरित्व ]

म्यानुबा राधीरवालाः 'युक्बवित्तेवस्तित' (सराः)। थिसीम केसी मित्रीच = वि + ग्रम्बय । यक्न विश्वविद्याल (वर्षेत्री १ १) । विसंत्र प्रकृषि + सम्बूषि १ वेशे करवा। २ वदः सटकामा, बारामु करता । वर्गः विश्ववीयदि (रहे) (नाव--विश्व ६१)। वहा पिस्मर्थन (के १ २६) । क्षेत्र विसंविध (गार-वेसी ७६)। क्र. विद्यापिओ (मा (x) विस्तव वृ [विस्तव] १ वेचे संदीवता (पा

र ) : २ तर-विधेष पूर्वीचे क्य (धेयोष )

३०)। ३ ल. नळन विशेष सूर्य कहारा परि-मील कर छोडा हमा नक्कान (विसे ३४ 🕏 )। विसंदर्भ (व [विस्मवद्भ] बारल करनेवाना (समार्थ ५)। विश्वविद्या देवी विश्वविद्या (प्राप्त १ १) । विश्लंबका की विष्ठम्यता निर्वेर्तना बनावट, क्रिय (सर्व १९१)। विश्ववित विश्वनियमी १ सूर्व के दाए योकर क्रोडा क्या नवन । २ सर्वे निक्पर हो सबके पीछे का तीसचा नदान (वब १)।

विसंविध वि विस्थितियत् १ क्विन्य-इत (क्य)। २ तं नवात-विशेष (वद १)। १ नाज्य-विशेष (राम) । विखयन वि [विस्ध] १ वनिव रापीनका (बेह ७ अन्य १२ ६६ मुना १६०) ३२ वा सहाः यवि) । २ प्रतिमा-सून्यः सूर्व (èt € • ) i विश्वनक थ विश्वमूद्यी विश्वसत्ता, बन्धाः राप्त (पुर १ १७१)। विस्तविकास पेकी क्यार देखो। जनवासमानित

रिचाय--- (मनि)। विक्रमाध्य [पि+क्रम] १ प्रकासन करना चडारा बेना । २ वस्ताः धारोहस करता । ३ पक्षता । ४ विगटना । इतराधी वें 'वष्टवपु"। विकासित (वच्चयेक्टकि (सहा)। थर विख्यांत (पि.४.)। विख्या वि [विद्यान] १ वर्ग इया विच्या हुमा, बंबरन्: 'बहु लोहरिसा सर्वीप बोलए वह विमान्द्ररिसंपि' (संबोध १३। से ४ १ वे १४२३ वा १००३ ६५३३ व्यक्ति । रे भवसम्बद्ध (नुर १: ११४)। १ धास्य ध्यमया यापरिया विज्ञवेत हैल वर्ष बंदय विसम्बर्ध (स्था १ ३)।

विकास कि 🛊 स्टब्स् । स्टब्स् विसन्धिय (दूब १७)। थिखद्वि पृक्षे विषयि । बादे सीव दाव में चार पंत्रत रम चट्टी केन छातुमी का कर-क्रम्प्र-वंड (पथ =१)। विस्तव रिस्टियो यन्त्री तत्त्व हार

मुसम्ब (चित्र)।

बिद्धाप र् [विशास्मन्] एक गरक-स्थान (दिकेट २६)। विस्तान सक दिवया विश्व कथ्या, क्षेत्र अपनाता । विश्वभेद्र (प्रस्त ६७) । विसमा की दि ज्या ज्युव की केसे (वे 0 8x) 1 विद्यम पं कि इर्म का बस्त होना विश् ६३३ ग्राम)। बिस्तय व विस्तयी १ विनास (क्रूप ३१) मुपा११७ ती १)। २ त्रजीनदा (ती १)। ६ पं एक नरफ-स्थान (देवेन्द्र २६) । विस्तया की विनिद्यों की महिचा नापे (पास देर १२वा पदा हुमा रेमा सवि)। क्रिक्ट प्रकृष्टि + क्रम् | ऐना क्रीरण, विकास । विसवद (पर्महर) । वह-बिख्यंत पिछवमाण (महा) स्थामा १ १---पत्र ४७)। विस्तव व [विसपत] रोनेवाका, विज्ञाने-माला। या और ["दा] विमाप क्र≪र (बीप)। विद्धवित्र म [विद्धपित] विनाप सन्दर्ग (पाम्रः भीप) । विश्वविद वि विश्वविद् विश्वविद करनेवाका (दुमा चर्छ)। विश्वस यह थि + छस े १ मीज क्ला। र वसकता । निमध्यः विमधेनः (सङ्गा)। बद्ध विद्वर्शत (क्या सूर १ २२a) : विश्वसण न जिससनी १ विश्वश्र मीज (क्य प्रदेश)। २ वि. शीन करनेवासा (तुर १ २२१ वि)। विकसिय म [बिकसिक] १ क्या-विकेव। २ शीरि, थमक (यहा)। पिकसिर वि विकसित् विभासी, विभास करनेवाला (मुगा २ ४० ११४ वर्गींव १६ संख)। विद्य देवो निरा" 'मक्लें व मलो पूर्णिलीव ह्रेड सिग्चे थिय विकार (मत १८७) "ताशस्त्र न नवणीय निमाद सी उद्धरितांसी (ब्राय **2 %)** 1

विद्यास केवो विरास (पि २४१) ।
दिवार वृं [बिद्याप] करतः विकास-विरास सा
विकास होकर रोगा परियोग (चर) ।
दिवार वृं होन्य गारियेग (चर) ।
दिवार वृं [बिद्यापित] विकार वृद्धा ।
१ की की प्राप्तिकार है की का नेक-विकार ।
१ की की प्राप्तिकार है की का नेक-विकार ।
१ की की प्राप्तिकार विद्यापित है की की विद्यापित है की प्राप्तिकार ।
१ अप की की विद्यापित ।
विद्यापित की विद्यापित है की विद्यापित की निवास विद्यापित है ।
विद्यापित कि [बिद्यापित है । विद्यापित है ।
विद्यापित है । व्याप्तिकार व्याप्तिकार विद्यापित है ।

"जी 'चंद्रविवासिसीयो चंद्रश्रसम्बद्धादायो'

विद्यासिय नि विद्यासिक "सिव" निवास-

(भीप) १

युक्त (बा४ ३)।

विद्यासिकी की [विधितीं] १ नार्थ की ।
२ वस्मा (खा १६६ घ दे खा एउड़ ।
मार—पटना ६ वि ६६६ ६००)। टेक्को
विद्यासि ।
विश्वित विद्यासि ।

(पाधाः पत्)।
विकिशः प [पे क्रीकिय] सका, शरम (वे
७ ६२ छए)।
विकिशःम वि [क्सकीकिय] व्यक्षीक-पुत्तः
विकिशःम वि [क्सकीकिय] व्यक्षीक-पुत्तः
विकिशःम वि [क्सकीकिय] व्यक्षीक-पुत्तः
विकिशःम विकिशःम विक्रियां

पिकिम वि जिल्लि समित रापीनका

विकिंग एक [बि + किस्ता] धावित्रस्य करना एसर्व करना । विक्रिकेस (धावा २, १ थे) । विक्रिक्सराक्षी [ब] बागा, पुने हुए वी (दे ७ १६) ।

विलिय सक [वि + लिप्] वेग करनाः वेशना पोतनाः । विस्तिपत् (स्तु) । तस्य विलियोजन्य (स्तु) । हेत्र विलियोजन्य (क्स) । प्रमो. वक्तः विलियोजन्य (तिषु १७)। विलिया सक [वि + ल्यों १ नस्ट होनाः । २ विकासाः। विशिव्य विमानिक्षित्र (हिस्स्य ४ ४६। ४८: प्राप्ति सम्बन्धः १८ स्वेतेष प्रमु

साम (पनम ६ २ १ २१ रर)।

विक्षित केवो विक्रित्र = वीरिय (वर २१६)।
विक्रिय वि [विक्रित्र] विचा हुमा क्लिको
विश्वपत किया बसा हो वह (बुर १ ६२ १ ६७) मर्पिः।
विक्षित्रकी की [क्षे] केमल और निर्वाव सरीरनासी की, नावुक वचनवाको नाये (वे ७ ७)।
विक्षित्र एक [वि + क्लिक्] १ रेका कचना।
२ विष्य वनन्या। १ कोस्सा। विक्षित्र

२ चित्र बनना । ६ बोरमा । निस्तिह्र (धर्मि) । तक विक्रियामा (पदन ७ १२ ) । क्ल्कु विक्रियामा (पदन ७ १३ ) । क्ल्कु विक्रियामा (क्रम्प) । क्लुड विक्रियामा (क्रम्प) । विक्रियामा (क्ल्यु) । विक्रियामा (क्ल्यु) । तक । विक्रियामा (क्ल्यु) । तक । विक्रियामा (क्ल्यु) । तक । विक्रियामा (क्ल्यु) । वक्रुड । विक्रियामा (क्ल्यु) । वक्रुड । विक्रियामा (क्ल्यु) । विक्रियमा (क्ल

४)। विज्ञिदेश वि [विक्रिक्तित] विक्रिय (दुर १९,२)। विक्रीय वेची विक्रिय = वीक्रिय 'वोग्यव वर्षा विक्रीय' (दुय १६४)।

विश्वीय वेशो विक्रिय - ध्यायीक 'बरुक्क विश्वीय नवस्वस्य परिषयद्व किरि विश्व' (युरा वृ )। विश्वीयर नि [विश्वयं] बरफ्-धीय रिप्यर्थ-वासा (श्वमा)। विश्वीय वि [विद्यंत] र विषया हुमा, बरी-भूग। र निराह्म 'बोर्स हुद स्थायनकारो अपन्यो नवस्य विषय विश्वये' (व्या रू.

वाच्य सङ्गाः घरि)। ३ पुद्धन्तित (पर्गाः १

1-44 \$X) 1

का चन्दर, ईक्रम व्यक्ति पित्र प्रच्या (क्रया)

₹ ¥) I

विश्वेगयास विजि निर्मेल स्टिक्न साम्

'यम विज्ञ क्यामी सिकार' (बाका २ ह

विश्रंचण न (विश्रद्धन) स्थूलन वहते

विस्पृषक [वि+सुप्] १ ऋष्यः। २

बारमा । १ विभाग करमा । रिस्तु पीरा

विद्युषह (धावा-सूच २ १ १६) वि

Yet)) पर्यं पोध स्ति पेंडि' (बडा) 1

वक विसंपमाण (मूपा १७४)। क्यक

बिद्धप्रेन बिल्प्यमाण (परम १६ ६१

विश्वीप सक विश्ववस्त | प्रक्रिकाम करता,

विसीपक्षण वि विकोदर नियोग-कर्ता,

विलेप्य वृद्धि कीट कीश (दे ७ ६७)।

विसंपित है [फाहिसत ] प्रतिवरित

विश्लेपअ र् [वे विद्युत] पारित्र, क्वन्तित

काया इसा परवे क्वतियाँ परिश्व विद्

पिम विकास पाइमी (पाम) । वैको चिल्ला ।

चाउना। किन्नुपद्द(द्वे ४ १६२)।

मुपा की मुद र २१ वदा)।

कारमवाला (मूच २, २ ६)।

(क्रमाण ६ के च ६६)।

स्थास्त्रा (प्रश्न १ १--पन २१)।

विदंपित् रेखो पिलंदहत्तु (सावा)। षिलुक [दे] जिस हुमा (मदि) । विलयः रि [विस्तृत्रित] विदुश्यत, स्वैना **के परिव किया ह्या (रिड २१७)**। विमुत्त रि [पिन्छन] ग्याटा द्वया विद्या "विभूतर्गन" (पड़न १२ १६) क्या १ र—पर ६४)। २ तुष्टित कुट हमा न्द्रमाद्र प्रवरीह वार्ष्युयन्तरथी । मह पुरि द्या विश्वती वर्त वित वर्ष वर्ष (तुर ११ Y ) १६ तिन्द्रा 'तुने क्या जननित्रः सम्पनाइस क्षेत्र नुमर्शत (बण्यू) । विनुधद्भित्र वि [व] या सम्य ॥ सम्य करन को न जानता है। बढ़ (वे ७ ७३) : विमयमाम् | स्वो विनुषः

[बर्गस्य मि [पिर्माधन] अवनित (ने ६

(a) 1

1) 1

उक्त पाय)। २ केश्न किया (ग्रीप)। विद्योगका वि विद्योगित विद्योगन वर्ष (संस्थ) । विशेषिक्षा भी [यिकेपिका] पान-विशेष (सम्)। विस्तिभ वि [विस्तित] वितिष्ठ विद्या हम्म (सुर १२, ११७)। पिक्टोम एक [वि+क्टोक] देशका कर्न विचीप्रज्यति वियोगीयति (पि ११)। काङ विद्धोद्द्यमात्र (का दू ६७) । संह विकोइऊम (क्य १६६)। मिक्रांश व [विक्रोक] यालोक प्रकार (अप य वेदक) । विक्रोभ वेची विद्योग (पुरा ४४ )। विस्त्रभण प्रकृष्टिकोषम् । स्तरं नेप (काल १६१: वा ६७ : पूपा १२१)। विस्थाक्षय न विस्थोदनी १ देखना निध-बस : १ वि वेक्नेनाका चीन्सनीविको-बराने बलनाखेख व्ययक्तरस्य (सूर ४ 44) l यिछोड़ सक विशे + कहा १ स्थमाणित होना मूळ समित होना । २ स्तरा होना विषयित होता। विमोन्नसः विकोन्नयः (हः ४ १२३: मणि स ७१६)। विक्रेट ) विवित्तविद्यी १ वो प्रस विध्योदिया । सार्वित हमा ही (पूना द )। २ वो नहस्र दिर नया हो, प्रतिका--नचार चग**्नदि**भा**रेगे**वररप्रो विश्विती वा' (जा ५६७ दी) । १ विद्य बना हुया 'बबरो स्थूनरमञ्जो विश्वीति (१ द्वि) या वर्रातीय रि बहविद्यो' (नूपा ४३२)। विकास कर [वि + बोहवू] मंदन करना। मिबोरेड् (पूत्र १४०) । पिकाहिय वि [विसाहित] यदित (दुप w ) t षिस्राभ तक [पि + स्रोभय्] १ नुस्य वरता मुख्यना, साथच्छ करना। २ लाल**व** विल्ला (र [किल्ल] कारा हुमा दिख (दुक्त देवा । १ विस्तव उरशाना । इन विद्योगन विज्ञ (दुत्र १६४) ।

य वक्ता विज्ञेष्ठ पक [पि + सुद् ] सेटनाः विश्लो र्जात महित्वो विस्तित्रयेगमेपा (परह र १--पत्र १८) । विक्रोड वि विज्ञों जो चंच्या परिवर (वे २.१९ पत्र क्या)। विजोष व विख्या पूर करेती क्ल-विकोषे वार्थ (सर १६, १**व**)। विक्रोबल व विकापनी कर रेक्ट परन-स्विचोवखाईएँ (उन) । विक्रोचय वि विक्रोपक बुटनेशमा कुटेरा बद्धारुम्य क्विमय् (उत्त ७ १)। विजेब क्या विजय। हेक विजेशहर (शी) (बा ४२)। विद्योहण वि [विद्योसन] १ बारवर्ग-कारक १ २ शुक्षनेकारकः 'ग्रहमहक्तिक्रात्तं नेम' (श्वतक **१३**२)। विक शक [ येदा ] क्वाना दिलनाउ 'निस्वादिः ब्दुनप्रस्थवा (रमा)। विक देवो विज (डे १ ४८) एव)। बिक कि वि । दे पन्द्र स्वच्या । २ विश्वविद्रः विकात-कुछ (दे भ ) । दे पूर, सूर्यची हम्ब-विदेश को बूर वे बाम में पाता है: 'करन्द्रेत्तविस्सङ्ग्युकुर्यवर्षम्यकुमसंस्थापं ( स 44E) I विस्सय देवो चिस्छअ (धीर)। विस्तव केवी वद्वा (तुरा २७६) । विक्रिये की [वे] केत श्राप्त (४ ७ ११)। पिइन ध्यो बिइन (१४)। विद्यस्य वेको बद्धस्य (शरि २६)। विद्धी की [विस्ती] पुष्पाननस्ति विदेश (पएस १--पद ११)। विस्दृ वि [दे] बस्ब स्टोट (दे ७ ६१)। विवयेको इव (३२ १२) वा २६ ३ ६ ६ कः (पा)। विषय औ [विषय] विषयि कट इच (जा ७७३: १४४)। गर वि [ ६र] रुप्तन्तन (रुपा) ।

विषय को चित्रति । व्याक्या, निराह,

श्रीवा (ब्रुप्त १३) । देखो विद्यक्ति ।

विकारण कि चित्रकीर्ण विकास हमा (पडम ७४ रश से १ पर १३ वर)। विश्वेष नि विश्वक दिशेष बांका देवा (स

221) 1

वियोपिया को [विपद्धिका] बाय-वियोग बीसा (पाप) ।

विवयक्ष वि विपत्रवी १ मण्डी एएड पूर्ण किया हता। २ प्रकर्षको प्राप्त धरक्ता पका ह्या । ३ उदम में पायत पक्षामिनुका 'विवस्त्रत्ववंधवेदारां देवारां प्रवानं ववनारां' (छ ६ २—पत्र १११)।

विश्वस्त्र पू [थिपछ] ! पुरुषत्र, रिपू, विशेषीः "विश्ववादेवीति" ( पश्चतः सः १६४८ प्राच्या ६१)। २ म्यास-शास-प्रसिद्ध विरुद्ध पत्र, वह बल बड़ां साम्य मादि का मनाव हो (बर्सान १-- याका १४२) । ३ विपरीत अमे (भए) । ४ वैषार्थं विसहस्रता (छ १

ही-पन १३)। विवस्ता की [विवस्त] वहने की स्का (पच १ १ जास ३१ वसनि १ ७१)।

विधास वि [बिट्याम] व्यव्य के चनके से महाह्या व्याप-वर्ग-पुत्र (श्रावा २ ३) 2 %) 1

विवयपास पू [बिपर्योस] निपर्वेव निप-धेदता, म्यस्यात, प्रस्य (उत्त ३ ४ तुल ६ ४० मोच २६०)।

विवस्ता की विवस्ता र एक महानशी (हा १ -- पन ४७७)। २ वस्त-प्रीत की (धन)।

विवञ्ज धक वि + पद्मी नला, नर होना। विवज्याः, विवज्यामि (स ११६ प्रथ्य १४) सुम २ ४३)। यति विवरिज्ञाति (अप्र १६६)। यह विषद्धत् (गट--एना ७७)। विवास सक [यि + वर्जय] परिष्यात

करता । विवक्तीय (उन) । वहः, विश्वकार्यतः, विषयमाण (स्व वर्गंध १ ६२)। ह **पिवळाणिळा, विवक्तणीश** (क्य ४६७ टीट प्रमि १८६)।

विषय वि [ विषय वे ] १ रहितः वर्जितः, पारवाधितम्बाहराई सम्बं से देव भट्टरहाँ (सूपा २७१) । र परिष्याक परिगर (पिंड १२६) । 101

विंपज्या वि विंपजेकी करेंग करनेगासा (समाय ६ ६)। विवक्ताण न [पिपर्क्षन] परिस्थाय (रहन

२२)। विवक्तव्यवा ) भी [विवर्धना] परिवास, विषञ्जाला । परिवार, भनेन (सम ४४

**छक्ष ३२२ वसमूर ३)**। विश्वज्ञास्य वि [विषयेस्त] विषयीत, स्वादा

(पैचा ११ ३७ कम्म १ ३१)। विवक्तय ए विषयय निषयां स्वत्यास. वैपरीस्य (पाधा जय १४२ टी पव १६६

र्वचाद ३ कम्प १ ४४)। विश्वास वं विषयासी १ विष्वेय, व्यव्यव (प्रक्र पंचा ८, ११)। २ अस निष्याक्रात

(AK & \$#A) I विविधास वि विविधाली प्रस्त सर्वित परिध्यक्त (जन व ३६ सुर ३ १११ रंभाः मृति)।

विवद् सक जि + पून् विरक्ता, रहना। निवद्वद (हे ४ ११=)। वक्क विवद्वराण (कुमा६ द रंख)।

विषक्षिय वि [षिपविद्य] विधा ह्या (वरन १६ २२ मय ७ ६ टी-पत्र ६१४)।

निवस्त भक [ वि + पूर्व ] बद्दा । बद्ध. विवर्द्धमाण (खाया १ १ है---- १४ 1 (90) विषयुद्ध वि विषयीत । यहानेवाला

'सविषयुर्ख' (उत्त १६ ७)। 📦 जी (उस १६ २) । देशो विश्वद्वण । पिनविक की चित्रश्चि नवान बाँद (र्यमा

थियडिडल नि [पिषुद्ध] नदा हुधा (नाट---वियो ।

विविधि प्रेषी [विषयि ] १ वामार (श्रुपा ११)। १ इस्ट पुत्रावः विवसी सह बावको हुई। (पाय) ।

विश्वणीय वि [स्वपनीत] दूर किया हवा. ह्रदावा हुवा (कम्म) ।

विवण्त वेशो विवसः ≕विपन्त (उत्त २ Υश्रामा∜र म)।

विवाज्य वि [पिवाज] १ फूक्स पुरीन (से १ ४७ दे ६७६)। र ग्रीका, गिरतेज म्बान (ए।सा १: १--पन २व में वःवः)। निवण्न वि विषयी है से पाला। २ पुंबुश पह (राज)। भिवन्त प भिवन्ती एक महाग्रह, ज्योतिस्क

वेब-विशेष (सूच्या २ )। विषक्ति की विपक्ति ? विनास (एएस १ ६-- पत्र १५७ विपा १ २--पन ३२ सुपानक्ष्यः स्वा)। २ मरणः मौतः (सुर २ ४१ स ११६)। ३ कार्यंकी परिद्रिय (सरा २१६ वन बद्ध १)। प्रधारदा का (पुपा २३४) ।

विविधिम नि विविधित किएमा हमा-भूमाया द्वारा (से ६ = )। चित्रस र् विवक्ष दिन महाप्रह (मुक्त ₹)। विषयि की विद्वति दिवरण दीका। २ पिस्तार (संक्षि १)।

विषञ्ज्ञण न [विषधन] बृद्धि बहाब (क्रप्प)। वेको विषयसम्। विषयाणा की [विषयेता] दृष्टि बदान (सर६७३)।

विषक्ति पू [विवर्षि] वेष-विशेष (मण 20X) 1

विषय केंग्रे विषण्ण = पित्रएँ (मुपा ११६)। विवक्ष वि [विपन्न] १ नारा प्रत्य जिन्ह (खाया १ ६--यम ११७) स ३४२ लुपा रंदि)। २ मृद्ध, मराहमा (पचम ४४ रें। उत्तर ४४३ स ७१६ सुमनि १६२ मर्गेष १८४)।

थिवय शक [वि+वद्] मध्यहा करता विवाद करता । वङ्ग विवयंत (गुरा १४६) सम्मद्य ५१६)।

विषय वि 👣 विस्तीएँ ( पव ) :

विषया भी [विपन्त] कष्ट दुःवा (इप चरव दी) । विवर सक [वि+यू] १ बाब संवारता।

२ विस्तारमा । ३ व्याक्या करना । विकरक (मणि) विवर्धीह (संघर्ष)। बङ्ग क्रिसे निवस्य वियरन्ती' (रूप २०१)।

क्षिक्र त [नियर] १ कि.स (पायः मन्त्र सन्दर्भ)। २ वन्दर्य, द्वद्वा (संस्थर्थ)।

३ व्यान्त विकतः 'कामरुमयार परित्रगर

बहुति पंतराणि य प्रिहालि य विवयस्ति स

पहित्रागरकारो २ विहर्सतं (विशा १.२---

यत्र १४) । ४ र्वं सामग्रा (ध्य २ १) ।

विषरंमुद्ध रि विषरावमुक्ती विमुख

पराज्ञ पुरा (प्रत्य ७३ वे १ वे ६ ४२)।

बिबरण न वियरण ? व्याक्सन, 'सोऊरा

समिक्यविवरणी' (हुच १०)। ीर न्याच्या

कारक प्रेंब, टीवर्ग (विसे १४२२) पव-

मान्य ३६। सम्बद्ध ११६) । ३ दाव श्रेषारना (देश १६ ३ पत्र ३ )। विवरासुद्ध ) देवा विवर्शसुद्ध (र्यान सं ११ विवराहरू ि १)। विवरित्र वि विद्वाद विकास (विश १३६२ संघरेण)। देखी विवृद्धा विश्वरिक्ष (सप) नीचे देखों (सरा) । विषयीक्ष नि विषयीती बसदा अतिकृत (सन १ १ दी यदव कम्पू, जी १२) लगा ६१ ) । "प्पा वि िश्ची स्टटा, जाननेवासा (वर्मसं १२ ४)। पिपरीर ३ (चप) ज्यर देशा 'वई विवरीरी विवदर प्रदेश होड विद्यानही कर्ति (है ४ ४२४) बाद गम्यू विवरेरयो गीवद' (क्वंच)। विवरूपात्र ) वि [विवराध्य ] पद्येल स-विषराकार प्रत्यक्ष 'कार्यक्षय बहुवयली विष्येत्यो बालीए प्रसर् (पडम ६ ११)। २ त. अजान- 'पात्रस्थि अक्षेपारी होदिह बहु का पुगाएं। निकासकी (पार **७६) । ६ १एधता संत्रस्त्रपत्र** 'इय बाहे भारत्वयरण्यकार्यतस्य रणद्वस्य ।

विवयान्यप्रिव (य जाना क**र्यंत** श्रंबीद्राज्ञानावा

बिराध धक भि+यस् ] ब्रध्या, देश

विवना ) यह [विवर्त + अय\_]क्वायन

विकास अर्थ । भाग जाना । विकास

विवताबद, विवतायीत (पात्र १६४)

रेरेन्ट रि १६०)। यह निरस्तार्जन

क्ष्मा (बद्धाः ४२४) ।

(बडर १२ ४) ।

विवक्षासमाण (है है व या रहा। वक्क १६६३ से १४, १४- वक्क ४०२) । विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां (B 8 8 8 9 9) विवक्षित्र वि [विवक्षित ] योवा स्था. परावर्शित (या ६० । यस ४२४। काज (23) I विकारिक रेची विकरीका 'विकासिकासका' (प्रसु)। विवस्तरम वि [विपर्यस्त विपरीत अवटा (**दे** द च) : क्षिपस वि [विवश] १ सकीन, परावस पराज्य (प्राप्तु र ४ जूमा कम्भ १ ६७)। २ नाम्य माचार (पुत्र १६४)। विषयः सक [वि+यह] विवाह करना खरी करना (प्राया)। विनद्दण न [चिन्यधन] विनास (शासा रे रे---पण ६३)। विवादम व [विपावित] व्यापानित थी व्यान संगर काला क्या हो पहा क्रियेक्ट विवाहको काली (पद्मा क १०० जला १६ 28 88) i विवादग वि [विवादक] विवास-कर्या (ध WEE) I विवास दू [विधाक] १ कर्य-विध्वास सूख-इ.सावि मोन वप कर्म-फल (ठा ४ १---यम १ व्यक्तिया १ १३ व्यक्त सूचा ११ सपा प्राप्त १९२)। २ प्रकर्ण व्यवस्थितन वरिकामा (हा ४ ४ डी--पत्र १०१)। व नावकाम 'यां दे पुराते होत्र कृते निमाने' (बत ६२ ६३) । विजय पूर्व "विवय] धर्मेच्यान का एक मेड करी-एक का सन् विस्तर (का ४ ४--वर १४ )। सुद न भिवा न्यापारी केन धात्रभीन (सम र विद्यार शामीप)। विवासि वि[विपादिन्] विपादनाता (ववक 1 (115 विषात् रे पूँ [विषात् ] फ्यहा शक्तार, शक-विधाय ने बन्द, बनानी शहार (उपा: उसा

स १ श्रमुता रवशः १६१) ।

विवास एक वि + पाइस ] मार सतसा। विकासि (विसे २६०६)। वक् विवासी विवार्यतः (परम १७ ११: २७ १७)। विकास केवी विवास (बर १२, ११६, प २७४३ ६९१ हो ११० हक्का)। 'कर्म चित्र सहदर्भ पुण्यक्तिमस्य क्ष्मपुण्यक्षियासः। चालक विकास वंदा को सेपी सहयउरकोर्ने (का ७२४ धी)। विकासक कि [बिवाइस] विकाद-क्याँ है बोर्डि विवासल म्य सम्बद्धे (वर्जनि २ )। विश्वविद्य व दि] यांठेक यौरव (सीम AM) I विवाह एक वि + बाह्य ] का करता. शाबी करना । विवाहेमी (क्रम १३१)। विवाह देखी विभाइ = विवाह (क्या स्कन थशासम शा )। गणवार्ष गिणकी क्योरिकीः जोशी (वे ६ १११)। जन पुँ ( बहा विवाह-क्यार (मोह ४४)। चित्राह केही विभाह≕ विवास (सम १३ 44) 1 विवाह देवी विज्ञाह = ध्याक्या (धम १) बब) । क्याहाविय वि विवाहित विवक्षी खरी कराई वर्ष हो यह (महा) : विवाहिय वि विपाहिती विवरी धारी हर्षे हरे च्छ (महा तरह)। विविश्वसा की विविधिविधा वालने की रच्छा विवास (धरम ६६)। विविद्य देशो विविध (नृप १ १ १ १७)। विविश्व बक िय + विश्व ने प्रवत्र करता धमन करना । श्रेष्ठ विविधिता (तुम २ Y 1)1 विविधा न [विधिन] बंगत बन (मउक गार--वैत ७२)। विविश्वति [विविश्वत] १ सीहत वर्जित। रेपूबन्भुत (दन क्र. द३ अन् १ देश **उत्त २१, ३१। उन्)। ३ विशिव सन्तरिय**े 'बायवेदि विविद्यति तिपाबाको जिब्राकर । वेबदि निवित्तेदि माउरामस्य वार्ष (माना१: व द शार)।

र्धिनित्तु पून ग्रीम (मन ४) ।

बात (परह २ १---यव ११)।

सामी (स ७४३)।

४ म एकान्छ विकार किंतु विविश्तमाइसक

विविच वि [विविच्छ] १ विवेक-पूर्ण । २

विविद्ध वि [विविद्धित] विरोप का से

विविदिसा देवो विविद्दा (वंका व २७)।

विविद्धि हुं [विकृद्धि] उत्तर मारपदा गावन

क्ट्राप्रिक्शाता देव (दा २ ६-- यत्र ४७) १

शिविद्व नि विविधा सनेक प्रकार का

बहुबिब, मॉर्ति मॉर्ति का (धाषा राव 🕶 मद्भा)। विवृक्त वि [विवृत] १ विस्तृत । २ व्याक्यात (धक्रिप)। सिद्यमद्देशक [वि+मुच्] वायगा। विकुम्मद्भी (शी) (प्राप्त)। विमुद्धिक देवी विविद्धि (योजना १९१८ स १३३)। क्षित्र देखों विज्ञास (प्राप्त = १२)। विवृद्धि देखी वियदि (प्राष्ट्र १२)। बित्रह देखी विद्यह (क्छ) । विवेश रेको विवेग (दूमाः नहा १२ ०७) : "म्द्र वि ("क्ष्म" निवेष-शादा (गण्य सक्ष Te) I विवेश प्रविषय विशेष विशेष वर्ष (मुदा १४)। विवेद् वि [विवेदिन] विवेदकाला (शूपा १४८) कुमा; करा) ।

विवेग द्रश्चिकी १ विध्याय (गूध १

४ ४) । ४ पुगदरश (बीव) ।

देश मियेणिलं (भर्मस १०११)।

teva) 1

विकेश्वित वि कि विकास प्रवस हवा कहुकहुकि विशेषिया में एवली (स ६ ६)। विवोह देवी विवोह (भवि)। विकास सक्ता । साम काया | काम करता वर्षे करमाः नीवरागशिष्यमध्य चेपवद वस्य धारत्यामद्रपार । तं निष्यद् विद्यासम्पर्धे (सुपा १८२)। 🕊 विक्नेयज्या (सुपा ४२४) १०१)। देखो विश्व - पि = यव् । विक्याय वि [वे] १ प्रवर्गीक्ट । २ विभाग्य 1 (32 W S) विच्योज देशो विच्योज (दुना) । बिक्योयण वि] देशो विक्योयण (कृप) । विस सक [ विश् ] प्रवतः करनाः विसन्, निसंदि (नका २६ छक्त यदर)। यह विसंद (बस्र) । रङ्ग. विसिक्तम (शतर) । मिस क्ष [वि+ज् ] ग विशा करणा। २ न्द्र करता। कवडु विशिक्षमाण, विशिक्ष (जिले १४३ । सम्बूधि)। विस प्रेष [किय] १ वहर, थण हवाहन 'मर्जि नहीं युद्धारि विभोध्विक्षी' (क्षम्पत्त २२ ६ जना मठड प्रासू १२ : कुमा) । र पानी भ्रमा (से व ६६)। संविॄर्द िनन्तिम् । प्रथम बनवेश का पूर्वपरीय गान (सम १५६)। का "का विकासिक सम्र (स्प ६४६ ही)। सङ्ग्रम, सम्र वि [मय] विष का बनाहमा ( इ. १. १.) पर्)। विकि[पत्] १ निवसका विष-पुष्तः। २ दू सर्वे सांग (से ७ ६७)। ११ व्यादा२ १ बीचा ग्रामानि १ १)। दर प्रविष्यु काप वर्ष (छ २ २१८ मूर २ द्रीक-दीक वस्तु-स्वरूप का निर्हायः विकिक्ष १ २४६ महा) । इरलाइ व ियरपति । रोम नाम (वे ६, ७)। श्वरिष पुं विरेक्ट्रो (धीय हुना)। १ प्रायधिक (धाना १ % थेप नाथ (बजर)। हारिजी की ["हारिजी] विवेशि बेबी विवेश् (बुता १४६: बुत्र ४७) । पनीहारी पानी मरनेवाली औ (है ४ विनेच सक [वि + वेपय\_] विनेचन 488) 1 करता, क्षेत्र-ठीक किर्देश करता विशेष विस देवो पिस (बा १५६० वराज)। करमा । कमें, विवेषिकद् (वर्मेश्च १३१ ) । विस पूं [कूप] १ केंब्र सांद्र कूरण (सुर १ १४वः मुवा वृद्ध १६०- मुख व १६)। विषेयण व [विषयन] विषेक निर्शय (विषे र ज्योतिक-शिवस एक श्राम्य (नुपार ८ विचार १ ७) । १ मूचव, प्रहा (दे ७ ६१: विवीस पूर्वि विशेष श्रीनाहण वस्त्रका पर्)। ४ वर्गा ६ वस-पूछा। ६ ऋषम बाराज 'विवोतेण सवलगुर्व' (त १७१) । नामक धीवशः ७ पुध्य-विशेष (शुरा ३६३)।

च काम कम्बर्गः १ शुक्र-पूक्तः, वीर्व-पूक्तः। श्रृक्तभाषा कोई भी बालवर (सुपा 280)1 विराद्व मि [निमिनिम् ] निमन्त्रा निय-पुष्ठ (विशे २७६ )। विसंक वि [विशक्त] शंका-रहित निःशंक (इप १वर टी)। विसंक्षत्र है [विश्वद्भवः] सम्बन्धः, लेचे निरंक्त, कक्षत (गाम स १६) से १५ ₹q) i विसंबंध वह विश्वज्ञस्य े तिरहुछ करना प्रव्यवस्थित कर कलना। संह विसंताखेंअज (युव २ १४)। विसंघट्टिय वि [विसंबट्टित] विदुष्ट, विम-टिव (कुब ६) । विसंधड धक [ विसं + घट् ] समग्रहोना बुवा होना । बक्क विसंधवेत (गा ११६) । विसंपंदिम नि विसंपंतिती विद्युक्त को भूषा ह्रमा हो वह (ए।मा १ ६---१४१ महा)। विसंपाइय वि [विसंपादित] संहत विमा ह्या (यसु १७६) । विसंपाय सक [विसं + पावय ] शहर करना । कर्षे विश्वेषादश्यद् (द्रायु १७६) । विसंशुक्त वि [बिसंगुक्त] विशुक्त, वो धराम हुम्य हो (सम्म २२, सूमनि १२१ टी)। थिसंबाध र् [विसं+योजय ] विपुष्ट करना बच्चम करना । विश्वेशोएई (मम) । विस्तिक्रोध र पू (विसंयोग) वियाग विषटन विसंजीग 🕽 प्रथम्मान भुराई (कम्म १ ॥२) वेष वे १४) । विसंदुष्ठ वि [विसंरधुक] १ विश्वतः मानुष (याम से १४ ४१। हे २ ३२। ४ ४३६) मोह२२ थम्मो ४)। २ सम्प्रशिवतः (सः Lee An Afmig & fa)! विसंतव पू जिपन्तव हुन का कालेक्स बुरमन को दैरान करमनासा (है १ १७०) । पिसंशुक्त वेची विसंतुक्त (पडन ४, २ स १११) । पिसंशुद्धिय वि [पिसंस्थुद्धित] प्यापुत सम्ब हुम्स (स्ट्रम्) ।

8 m) I

1 विसंभोग द [विसंमोग] साम बैठकर गोनन सादि का सम्परशार (स. ३ ६) । विसेमोरिय वेको पिन बाइच (छ. १. १.— पत्र १११) । विरुपद्यपि [विसंधरित] १ स्वृत धील

मंत्रकी-वास, समाज-वास (ठा १ १--पत्र

वेसीचर् विसम्बी १ एक सक्षाप्त

#+¥

चत्रनारिएत (पाम स १७६)। २ विवरित, विक्रक (न ११ se) : विसंपय यक [बिसं+यद्] १ सप्रमान्तित होना यस्त्व ठहरूर, सरव से बिक्स न होना।

२ विवरित होना यसय होना । ६ विवरीत होता धन्यचा होता । विसवयह, विसंवयंति (१ ४१६ उन) 'को दारियो सम्बो निवमेख पत्ने विद्यासक्ष (स.६४ ) ७१६) 'बरियान राज्ञ' विशेषयाति' (मन २६)-विमारक्य (महानि ४)। वहः विसंधर्येत (রব রব ৬६ হী ঘনীর विसंवयण न [निसंवदन] विश्ववाद, धरूत शापनात (३० ६ २३)। विश्लेषाइ रि [विसंदादिस्] १ विर्णाटक होन-

बाला विविद्यप्र क्षानवाला (बुना ६ - ६) । २ बनमाणित होनेनला चनुत से विक नहीं होनेसरा प्रमाय **बहरनेसवा (बुध १**६४) बम्पत्त १२६)। पिसंपाद्म वि [पिसंपादित] विशेषात-पूक 

विसंबाद क्या विसंदाय = विश्वेषाय (वर्णके

18)1

388)1 विसंसरिय रि विश्वीतर्त । व्यापय क्ष्मण 'रकायकमण व निर्धसरियर्च नारापर्ध (स 1 (483 विसंहजा केवी विस्संभणना (धापा) । विसक्त रि [विहास्त्र] गीचे वैस्रो (धन)। विसम्बद्धिय वि [विश्वस्थित] दुवन-दुवन क्षिमा क्षमा खरित्रय (धारन) । बिसमा र् [बिसमी] र निषय व्याद्य 'विमिन

छोव गरमनेयमधियाचेनचित्रमं मस्मिक्तिका

प्रमाख-रहित । २ ठमनेवाचा वंचक (बुपा

विक्रशासम्म न विसंवादम निषे केही (क्त

विसंवायणा औ [विसंवादना] १ पटल

कमन । २ वीचना छनाई (ठा४ १---पन

२१, ४ । सुचा २१ ४४)।

**पात्रअसहसहण्या**ने

बिसंबादण देवी विसंबायण (एत १९

(विदे २२०) । २ विकार, क्ष्माण क्षेत्र केत (दि २१६) । १ व्यास्थिय विक्री नीय वर्ख (पिंच)। विस्तता सक शि+धात्र संजया रि विद्या करताः भेजना । २ लाक्या । तिमञ्जा (यहा) । चंद्र, विसञ्ज्ञिकण विसञ्ज्ञिक (बारा प्रवि ४६) । हेक विद्यालयाँ (शी) (पवि ६)। इ. विसम्बद्धा (सी) (समित्रः)। विसञ्ज्ञा भी विसर्जना किया (वर - Y) I

विसंक्षित्र पि [विस्तृ, विसंजित] १ विद क्यि ह्वा नेवा हुमा (बीग पनि ११६)

वारित च विसरिववारित वाईसरम् वेदारित (छव)। विसक्त पक विस्तृतिका प्रध्या, दुक्ती-टक्के होना । विस्टब (हे ४ १७६) वह ) विवर्षति (यज्ञा)। 'तस्य विसद्धा क्रिमी' (क्रुमा) । बद्ध- विसङ्गी (स १७६) । विसङ्ग्रक [वि+कस ] विकास, व्यवना पुत्रका । विसद्ध (प्राक्त ७६) विस्तृ ति (वका ११व)। वक्र विसद्धत. विसङ्गाण (क्या ६ ठा४ ४--- पत 34Y) L विसह तक वि + स्त्रसम् विकास करना कुळाला प्रकृत करना । निस्तर

महा तपा १६ ३३१७) । २ त्पच्छ प्रिकेश

विसंधि—विस्ता

(बारवा १६६)। बिसंद प्रक पित् विरना स्वनित होता। विकासि (सवा २ २६)। विसाह वि वि र विचटित, विस्तिष्ट (पास्क क्कर १ ६)। २ विक्रिक्त प्रकृत क्रिया ह्या (शक्त ७७ वट४ ६६७ - ४. हुना बर १ ४२ भव १)। १ इविस विश्वीर्थः वरिष्य, जिल्हा दक्ता-दक्ता हवा हो वह (से ६ ६। वत्रद ४,६३ भ्रम्)। ४ तरिकट (पत्रव ७) । विसद्यन विकासने विकास प्रश्नकार का । पर्यमण सन्ता एकंग्रह विस्टृक् कंग्रिन-इप्पण्यपित्रों (वर्ग र)। विसंह } वेणो विसम (वहः है १ २४१) विसंह र पूर्मा है । ६२)- 'इंडिस दहा

विश्ववा विश्ववा वह स्वयंतिया कार्या (क्य)। विसक्ष पि [वे] १ मीरान एक-पींच । २ गीरोब, चेय-चीहर (दे » ६२) । ३ विकोई, सक्त किया हुन्य (पत्र) । ४ विश्वीली, दूतनी-दुक्ते किया हुया (से ६ ६६) । १ सार्व ध्याप्त (वे ११ ६)। विसव वि [विशंड] १ मध्येत वंगी भविका मायाचीर 'बेचेड्रि पाडिड्रेर कि व कर्ब पूज विश्वविद्धिं (पडमा १२ ६२) । २ व एक थोहिनुम (मुच्र ११ ) । विसव वैको वसण = कुच्छ (दे ६ ६२)।

विश्रण न विश्रनी प्रश्य (एव)।

विसमिञ वि विपिति । १ वीव-वीव में

विष्येक्ति (से १ ८७)। २ विषय वना ह्रमा

44) 1

(पड४) ।

विसमय वेणी विस-मय ।

यिसण्य वि [विसं**ड] एंडा-रहित वै**तन्य वर्षित (से ६ ६०)। विसणा देवो विस्तन = विषयुक्त (महा) बसुः राष) । षिस्रश्च नि [पिसस्य] सस्य-रवित (वय ६) । विसस्य ध्वी यीसरः। (ग्राया १ १-- पत्र १६ सम्म १६ इस ७२८ दी)। विसद् देखो विसय = विश्व (पग्रह १ ४---पद ७२: कम्पा वि १७)। विसद् 4 [पिशस्त्र] १ विक्रिष्ट राज्य । २ वि विरिष्ट् शम्बदासा (पचन)। विसम विधिपण्यी १ विस शोक-प्रस्त विधारपुष्ट (पण्ड १ १--पत्र ११) सुर ६, १८ धृ१२)। २ माधच≤ तद्वीन (सूच १ १२ १४) । ३ निमाना चितास नेव ध्यंति विश्वन्त (खाया १. १--पत्र ६६)। ४ वृं बर्धसम् (सूच्य १ ४ १ २३)। विसम्ब देखो विस-म । विसन्ना की [विसंहा] विदा-विशेष (परम ७ १३६) । विसप्प मक वि + सूप किसना विस्तरमा म्बात होना । यह विसर्प्यत, विसप्पमाण (कमा भग भीत छंदु ११)। विसप्प पू [विसपे] एक गरक-स्थान (क्षेत्रक २७)। पिसप्ति वि [विसप्तिम्] फेबनेनासा (भूपा 889)1 बिसप्पिर वि [बिमपितृ] कार देशो (स्छ)। विसम देशा चासम = वि + चम् । विसमब् (रंबा ३१)।

विसम वि [विपम] १ सँवा-वैथा कावा-

बन्द (कुमा वर्ड)। २ घसम ससमान

धनुस्य (मंगः पत्रतः)। ३ धनुस्य वृत्ये

संस्था, बेसे--एक दीन, पाँच सात मादि ।

४ धास्ता कठिन कठोर । ३ संकट संकरा

कम चीड़ा संकीर्ज (ह १ २४१) कह् )। इ

द्रेष, बाक्सरा (सर १ २)। क्सार वि

["सर] पपसिद्यान्तवाचा ससस्य निर्ह्य-

गामा (वे ४ २४) : "क्रोमण व ["क्रोपन]

महाबंध रिक्स (बस्ती ११७)। साम्प दे

[बाम] कामरेत (एख)। सर पू ["शर]

वरी (व १: मुपा १६३: छछ) ।

विसमिश्र वि [विस्मृत] भ्रुवा हुवा प्रस्कृत (B & 50) 1 विसमिज [विभमित] विमान क्या हुया विधान-प्रापित (से **१ व**७)। विस्तिमञ्जाव [वे] १ विमन निर्मेश । २ करियत (दे ७ १२)। विसमिर वि [विमिन्तृ] क्विम करनवासा। क्यी री (वा ४२) प्राक्त ३)। विसम्म वक [वि + भम् ] विधान करता माध्य करना । मीर विश्वमित्रहरू (या १७१)। इ विसन्मित्रका (से १ २)। विसय दि [विदाद] १ निर्मत स्वच्य (हुप्र ४१६७ सटिट अब दी)। २ व्यक्त स्तप्ट (पाम)। १ थमक छन्नेद (ग्रीप)। विसय प्रा विराय] १ वृद्ध वर (उन्न व t)। ९ संगव संमानना (बाष्ट्र t)। विसय वृ [विषय] १ गोचर, इतिय साहि से जाना जाता परार्थे—शब्द, रूप रस साहि बस्तु (गमः द्वमा महा)। २ जनपद देश (भोषमा वः क्रमाः पत्तम २७ ११ः सूपा ३१ महा) । ३ काम-भोग, विश्वासः 'शोय-पुरियो सर्गामध्यिसमञ्जूहो (छ १ १ टी---पण ११४३ करूम १ १७ सुपा ६१३ महा) । ४ बास्तः प्रकरण प्रस्ताम 'बोहसविसर्' (ज्य १०६६) सोक्सा६) । विद्युर् ["विपवि] वेश का माजिक, श्रवा (सुपा Yty) I विसर सक [मि + स्यू ] १ लाग करता । २ विशा करना, मेजना । विश्वरह (यह )। विसर धक [वि + स] बरक्ना वसना नीचे विरुग्न विश्वकता । वहा विश्वरंत (सामा १ ६ -- पत्र ११७ से १४ १४)। विसर सक वि + स्सृ] भून वाना याद न माना । विश्वरह (पाक्क ६३) । विसर्पृति सम्य सेना सरकर (दे ७ **53)**1

विसर पू [विसर] धनुह, यून धनात (मुपा व सहर १०४४ १ ₹¥) I विश्वरण न [पिरारण] विनास (सन)। विसरव दून दि । माच-विरोध (महा)। विसरा की [विसरा] मण्डी प्रकाने का जास विशेष (विषा १ द--पन स१)। थिसरिक वि [त्रिस्मृत] याव महीं माया हुमा (शिवश्य)। विसरिया भी [वे] घरट, इनलास विधीप (धम)। यिसरिस वि [विसहरा] मसमान विवा-धीय (चसु) । विसलेस 🖞 [बिहलेग] नुसार, विमोप प्रवय्ताव (चंड) । विसक्त वि [पिराइय] शस्य-रहित (राज्य ६३ ११: वेहम १०७): इस्ली ह्य [करती] विद्या-विरोप (सूच २ं१ २७)। विश्रक्त की [विश्रक्ता] १ एक महीपवि (वी इ)। २ तस्मत्त्र की एक की (पडम 49 98)1 विसस सक [मि + शस् ] क्व करता मार बलनाः 'विस्तेह महिसे' (मोह ७६)। समझ विसंसिर्वात (पार ११६)। विसस रेको पिस्सस = वि + स्वस् । 👺 विससिमव्य (सं १ व)। विसिध्य वि [थिशसिन] वव किया हुमा को मार बाला पना हो यह (सबसा ४७%) ससम्बद्ध १४) ह विसद् एक [वि÷पद्] सद्भ करना। क्सिइंदि (उन) । वह विसद्धंद (से १२ २वः गुपा २६व) । हेड- विसहित (स 884) 1 विसद् N [विपद्] सहन करनेवाला सहिन्छ। वर्षुभरा इव सम्बद्धसमित्रह्" (कृष्णा सीए) । षिसद् थेवा धसम (पउड) । विसद्य न [दिपद्य] १ सहन करना (वर्मधं वर्ष)। २ वि सद्प्यू (पव ७३ विसिद्धिल वि [यियोड] सद्द किया ह्या (से ६ ३३)।

विसाध (वन) 🖨 [निरवा] सन्द-निरोप

(पिप)।

(मजर)। भी व्या (कप्पू)।

विसारियें कि अभावन, बद्धा वि ७

प्रस्त (संबोध १६) ।

(क्टर −न

(939 Es \$2) 1

(मह--मन्द्र १६६)।

पिमाइ वि भियादिम् विशाल्यक कांक

पिसाण न [पियान] १ हासे का धौत

शूप सीम (नुका ३ १ पाम- भीत) । ३

मुक्तर का बांत (उस) । ८ वूं ब. बेरा-विशेष

विश्राम बक [पिराष्ट्रप] विश्रव शास

पर पश्चमा । वर्गः विचालीयवि (शी)

विभावि वि विराधिन है संवत्ता।

५ ऋषय रामक धौराय (बन्त १४२) ।

१ वं हाबी, इस्ती (१ श्वांबादक विचारा ।

बिमाय पद वि + स्वाइय | विधेय वसनाः

पामा । वह विमाणमान (खावा १ ६--

नरा २१)। ५

पत्र १७ ६८)। विसाय ५ विपारी कर शोक विमयीधे धारतीय (उन पडा पात १ ४ **६**१ १११)। यत वि विन् ] क्षित्र शोक-प्रस्त (पा १४)। धिसाय रि (बिसान) । मूप ध्रिष्ठ (विश १६६) । १ र्न. दक देश-रियान (नम १ )। बिमाप वि विस्थारों स्वार-पीट वान-महारि दिनावे विषय्ते अववर्त व वे पूर्व (Ter 234) 1 विसार मक [वि+सारय\_] केनावा। बद्ध थिमार्थत (उत्त २२ १४) । विसार दे दिने मेच्य, देन्य (वह )। विमार वि [विमार] बार चंद्रज, 🛚 स्थार (वज्रा) । विमारय व [ विशास्त्र ] बर्धन (विश 38 11 [बमार्रायप fr [बिग्मार्शयक] स्थाप्ता-र्राटन विवक्ती कह न दिलाच्य देशा हो। यह विमारव रि. हि. ५४ हीत बाह्यों (६ ३ 11): रिकारण कि [किसार] किया श्रीका स्प्रतास्ति । 🗝 🕶 ौ । मध्यो पुर ( १३ बाल्ब ११)

₹**₹**}। विसास कि विश्वाच र विल्वत बहा, विस्त्रीरों, भीड़ा (वामः मूर २, ११६: प्रवि १)। २ वं एक बह-रेवता यक्षती यहा-यद्वी में एक महायह (ठा २ ३--- वक us)। १ एक एउ अभिय-निकास का उत्तर विद्याक्षत शता (ठा २ ३---वर ८३) । ४ पुन्, देव-विमान विशेष (सम ३३, देवेन्द्र १३६: वर १६४) । ६ न. एक क्या-भर-नगर (१६)। विसासय र् 🐧 👣 । जनकि समुद्र (दे ७ विसाला को विद्याच्यी १ एक वर्ग्य का नाम अध्यक्ति सम्बेन (मा ११ जा १ a) । २ मनवान् पार्यनाप की **रीधा-**विक्रिया (विकार १२१)। १ वेश्यूच विद्येप विक्रमे बढ वंश्वीप श्रद्धका है। ४ राजभागी-निरोप (इस )। १ अस्पान् बद्धानीर को बाह्य दा नाम (नाम १ % ३ २२)। ६ एक व्यक्ति (ध्या)। विद्याखित देवो यिसरिश (वस १ १४)। भिसासम दि [विशासन] विवादक दिना शक (भनवरिमामर्ज (गम्य १)। विश्रासिभ वि [विपासिन] १ वाच्यि दिमिन जिन्हा वय दिया हा बहु। २ विशेष का वे वर्शत । वे स्टिनेपित निरुद्ध दिया ह्या। ४ मार मध्या हुमा (दे ≪ ६३) । पिमाह में विशास विश्व कार्तिय

(पाघ) 1

क्ष्य्य (बद्वा) ।

¥{{}}1

रिमादा ध्ये [विगाम्य] १ स्थानविशेष

(नगर) । १ व्यक्ति नायक नाम एक औ

का नाम (काना १२२) । ३ एक विद्यापर

विमादिन वि [वि ग्राधित] । विद्र दिया

पम । २ म. स्वितिः सम्मारमाहितः सि

नहरे दिव तहि देनहि बाह (हे ४ १ वर्ड

निसाही को विद्यारती १ वैद्याप मानशी पुष्टिमा । २ वैद्याचा माम को समारह (सूज्य १ ६)। विश्विको वि निरुद्धिया सम्पर्धि (ह v 411 s विसि रेको विसि (हे १ १२० प्राप्त)। थिसिज्ञमाण देखो विस = वि-ध । थिसिट्ट वि विशिष्ट } र प्रवान पुक्र (पूर्व १६ क वटा २ १---वर ६६)। २ विशेष-पुन्ड (महा)। ६ विशेष रिप्ट, मुक्का (बक्द १६ ) १ ८ वृक्त, संप्रेष्ट (प्रस्तु २३--- वर्ष ६७१) । १ वर्गतरिक, विम विश्वसन्त (विदे)। ६ वृं एक इन्त्र, होपडूमार वेशों का बक्तर विद्या का इन्हों का २ १००० प्रवाहर)। अन बनातार द्वाः स्मितिका कारास (पदीप १०) । विद्वि को "दिहि सक्रिया (भग्रह र १)। विसित्ति की (बिस्प्रि) रिपपेश कर (बिरि बिस्स्य वि 👣 ऐमरा धरुर रोमगाचा (वे 8 Es) 1 विश्वित वर्ज [वि + शिप् ] निरेक्ड पूर्व बच्चा। बर्ग, विरिद्य नित्र(ति)सम्प् पूर्ण नामात्रः गर वध्ये प्रतियो (प्रश्नः १॥) X€Ì I विसिद्द र् [विशिग्द] १ बाह्य और (नाय: पडमं व है । नुता १२। किराद ११)। २ वि किया परिव (बस्ट ४३१) । बिमी क्यो बिसी (हे १ ११ आर) । निमी ध्ये [निरानि] बोन बोन बर नपूरा 'बेसी(१वि)पाया माराराम्यं विनीधी' (दास्य 1(355 विसीम यह वि । सदी १ वेर करना । २ नियम्ब हाता, इरना । निग्रेयद, विद्योद्यति निजीवणु निजीयह (तूप १३४ रा १ वे ४ ६ व्या ४ ४--- यह २७ । वह

विमीयेत (ति १६०)।

विमीर्श्व व्या विस = दि + यू ।

विकाश्य वि [विकार्य] । बीटी, प्रतिका

२ व. हरना अमेरित हाना संचीह रिहारिये

शिव विकेशने सम्माधनीई (दूर १२, १६१)।

षिसीछ वि [विशीस] १ बहावर्व-रहित व्यक्तिपारी (वमु: उप ११७ टी) । २ वराव स्वभावशासा विका शावरणवासा (उदा ₹₹ **₹**)। विसुरम्भ सक [यि + शुभू ] युक्रि करना ।

विसुक्त्य (दन)। वहः विसुक्तिः, विसु-क्स्माम (क्य ६२ टी स्टामा १ १--पन ६४३ ज्ञाह भीत चुर १६, १६१)। विस्पिय वि विभूत] विकाद (पएत् १ ¥-—पत्र **⊏**६) ।

विस्त कि [ विद्यातस्] १ प्रविद्व । २ बराव दुष्ट (अवि)। विस्चिया देशो विसोत्तिया (धाषक १६)

बस ४, १ ६)। बस्द व [बिद्धक] १ निर्मेश निर्मेश (सम ११६ ठा४ ४ टी--पण २०३ बासू २२३ क्षा है है हैय)। २ विश्वत सन्त्रम (पहला १४--पत्र ४०१)। १ ई बहारेव सोह का एक प्रवर (ठा ६-- पत्र १६७)।

विद्वृद्धि 📽 [बिद्युद्धि] निवीयवा निर्मेतवा (श्रीप सा ७३७)। चिस्त्रमद सक (वि + स्मू ) भूव काना वाद न भाषा । विमुत्तरह, विद्युपरानि (बहुछ पि **४१६), विम्मर्थेक (ध २ ४)**। बिस्मारिश वि विस्मृत् विस्मारा

हमाही वह (च २१४, तुम्ब १, २१ तुर 2x 2m)1 बिस्राबिय वि [संदित] किम किया ह्या 'धारदेविकासविशुराविकासा निव्यवद् साहरचे

(बउड १११)। विस्पान [विपुषत्] एवं और दिन की धमानवानामा नाम नह समय वन दिन हीए चत बोभो वरावर होते हैं (दे ७ १ )।

विमुन्या की विमुचिका रेव-विशेष देश (उस पुर १६ ७२। बाचा २, २, १ ४)। विमुणिय वि [यिश्वानित] १ कुला बया. मुकाकुर्या (पराह १ १०—पत्र १८)। २ रामा हुना सङ्घल (सूच १ १,२ १)। षिसृर व्या थिसुमर । विमूद्य (शक्त ६३) । विश्वर प्रक [रितर्] थेर करना । रिनुष्ट (के ४ १९२ प्राप्त दश)। बाह्र विस्तृति

विद्युरमाण (तम मा ४१४- सुपा १ २) वटक)। क्र विस्वित्यस्म (वटक)।

बिश्चरण न [सेदन] १ वह। २ पोड़ा (पण्ड ૧૫---વત્ર ૧૪)ા विश्राचा की जिल्ला कर, अक्सोस दुःच

(d x 1) 1

विश्वरिक्ष वि [सिस्स] केव-पूक्त, विसमीर (रेंद्र ७६)। विश्वविष प्र विष्यविष्य एक देव-विधान

(सम ४१)। विशेषि की विशेषि ? विशिक्ष-एम्बनी मेरित पक्र रेखा। २ वि विकेशित में स्थित

(स्त्रिकिति १९ १४)। विसेस स्ट [वि+शेपय] विरोध-युक्त करना युक्त साथि हारा पूचर से मिल करना विशेषण से सन्वित करना, व्यवन्त्रेत करना। विशेषक विशेषक (मधि सक्षा सूमनि ६१ द्री। ध्रम विशे ७६: महा) । कमे विशेशिनवह (पिसे ११११)। संकृष्टिसीसीसी (पिसे १/१४)। प्रविसंस्याज्य विसंस्य

(पिछे ५१४६ १ ३४)।

बास करके (महा)।

विसेस पुन विशेष र प्रवेद पार्वस्य किन्ता 'ख धंपरानंड विधेशमाल (बुध २ ६ ४६ मगुविते १ ५ छन्)। २ मेर प्रकाट 'दर्शवह विदेशे पन्नले (ठा १ महा जन)। १ धसायाच्या अनुक व्यक्ति बास (का भी ६६ महा सभि २१)। ४ पर्मीय भर्ग ग्रस्त (विसे २६७)। १ व्यक्ति श्रविशय न्याला 'चया विशेशया वे पुर्व (मगः प्रापृ १७६: महा, वी ६१)। ५ तिबन्धः। ७ साहित्यराज्ञ-प्रशिक्त सर्वकार विशेष । व विदेषिक-प्रक्रिक समय प्रश्नर्थ (१११९)। न्तु 😰 विशेष जानने गमा(द'३२ महा)। आर प्रदिस ]

विसेस 🕻 [किस्छेप] प्रवस्तरता (वथ १) । बिसेसण न [विशेषण] इसर वे विश्वता : बतानैवासा पुरु साहि (उर ४४४) मास बद्या पंचा १ १२३ विदे ११५)। मिसेसणिक देवा विसस = वि + होपप् ।

मिसेसम पून [विशेषक] विसक क्यन बाबि जा मस्तक-स्थित बिह्न (पाधाः से १० ७४३ वेली ४१३ मा १६८३ ड्रूप २११)। विसेखिल वि [विदेपित] १ विरेक्ण-पूक किया कुमा अधित (सम्म १७ निसे २६००)। २ श्रविद्यपित (पाम) । विसेश्स देवा विसेस = वि + श्रेपम् ।

बिसाग वि [बिशीक] शोक-प्रीत (बाना) । विसोधिया की [विस्नोतिसक] ! विमार्क यमन प्रतिकृत यदि । २ मन का विमाने में काम, कापकान दुष्ट विन्तन (कावार विशेष १२३ व्याप्तर्मसंबद्दि । के संबंध (पाना)। बिसोपरा र पुन [चे मिरोपक] कीड़ी का

बिसोयरा <sup>‡</sup> शेखर्ग हिस्सा (वर्मनि १७) पंचा ११ ९२)। विसोह सक [वि+शोधय ] १ युव करना, नम रहित करना निर्दोप बनाना। २ ध्याय करना । विस्रोहद, विक्रोहेद (स्व क्याः करो । विशेष्टिण्य (याचा २ ३ २ ३) । क्षेक्र- विसोहिचप (हा २ १—

पन १६)। विसोह वि [विशोभ] शोमा-प्रीष्ट (दे १ 28 )1 विसाहण न [विद्योधन] युद्ध-करण (क्व)। विसोद्याम की [विद्योधना] उत्तर देखी

(स व—पर ४४१)। बिसाइय वि [विधोधक] गुडि-कर्ज़ (नुध

१ ६ ६ १६)। विसंदि भी [विशोधि] १ निग्रिंद निर्मेषता विश्वदेश (पडम १ २ ११६ सवः चित्र ६७१: सुपा १६२) । २ प्रपराव के योग्य प्रावश्चित (धीय २)। ३ धानस्यक सामयित्र यादि पट-वर्ज (पत् ११)। ४ भिशाना एक दौप निस दोनगरे साहार 💵 त्याप अप्तै पर श्रेष विश्वा या भिद्यान्यात्र विशुद्ध हो वह दोव (पिड ११४)। 🚓 🗟 भी ["कांडि] पूर्वोक विशोधि-दोष का

अकार (विज ३१४) । विसोदिय वि [विद्यापित] १ रूप क्रिया ह्याः २ प्रं नोजनार्ग (नृषः १३३) ।

वरोबान्सर (या देश मुता १ है) ।

wir (sr ta &

CT 1 )

विष्यानिक विश्विभाषिको विद्यालया

िम्माय रेजा ब्रामाय (अपू ३६ नार--

रिमाध्य वर्षिय स्था क्या द्वार्थक

व्यवस्त नेदार(प्र.):

(वाचि रेक्ट) । जिम व विभी १ एक मध्य-वेजन "नयनारा स्थाप का अधिकाता देश (या दे. विश्वामी (गुम १ १४) । 1-वर ३३ दल १८६ सुरुव १ विस्मिविय वि [विश्वजून्] बन्दशूरक ११)। २ व. वर्ग नाल नव (विते १६ ६ वट १२ ३६)। ६ दन जयत. (उस व व)। र्रांग्ये (स्या १६६ सन्तर १६ वंशा) । विग्यस्य देवी शासाय (बाट-ग्रह १३)। इ.व. (जन विकासिटेव (शह ६३)। जिलाद रेगो नागद (धनि १६६) प्रच इस्स र् इसन् किमीनंबरेव देव २२३)। evi's IR विस्थम धक थि + ध्या विक्र केया। इत ६)। पर म िंपरी मगर विदेश (अंशा ६३%)। अंड ियापद्र (बाह्र २६)। ह पिस्समित (बार-मानको ११) । र्पु [ नु[]] प्रथम शाबुभर का पूर्व महीस शियम व शिक्षम | रिपाय रिकारिश नान (नन १६) पद्धन २ १०१ अल १६३ शांको। यामरेपो कम्म (स (गरम १ ६)। बाइज र विविद्धी भवशव विस्मामिज रेखा विस्मंत (तुम १७२) । शिवर कर [रि + स्यू] पूचना । विकास मरा र्वार हो एक सार । हा ६--नव ४६१) । (शाचा १३३) । मन र् मन् । बनाव् धानिनावनी विस्मर्थ (विश्वर) श्रप्तव मागवसमा 4) fret me trat (44 tat 123) : २ सहरूप बारड हुई (सब ११) (क्षा २ पटहा १—परा)। रेमा पाम = विश्व शिमका व शिस्मको शिल्ली वास्य शियक्त का रेगाहिद्वय सिम्बर्गको धान्य (तमा ६८ प्रम १८)। रिमारियरि शियमं प्रसार्थ (स दिश्य त स्था वीमंद (ब्राग a है) दि स नाज व [विभागित है] बबुछ बा युट 2 6 11 रिम्मा वह [रिक्या] रिक्य Rai t west ween come forest from भिरदंबर दि स्टन्टी राज्य ३६) । यह विस्तारी (या देती । क्र mer, gere fereichtett e e-re शिक्षमध्याल्या (या १० जन ११) । 2 () शिक्षम् वर्ष [शिक्तका ] शिराम विस्मिति हि [विद्यान] विकास

4 45

mf (t)

1111

इ सिम्बिनिकार या १४

सिमान द्वित हती सिन्य बद्धा असे

I tree or (met 1-41)

सर रहा। याद्र वि चिर्धान्ती

क्षित्रचार व (दिव्यव्यक्ते विकास र र

विस्तारण न ((यसारण) विस्तारण केनाना (97 Eq) 1 विम्याबस् 🛊 [विश्वासस्] एक क्यर्न देव-विरोद (पदम ७२ २६)। शिखास र् शिकामी प्रधेना, प्रशेषि, थदा (नृष १ १ : मुत्त १६२) मात्र) । विस्तासिय वि विभागित विदर्श रिस्ताच करावा वया हो एड (मुरा १७०) । विम्हाइक 🛊 [पिश्चाहक] यंगरिया ग जानकार चतुर्व रह-पुरंप (हिचार ४३६)। विस्तृत रि [विभन] प्रक्रित रिक्स (रामा मीता प्रानु १ ३) । पिग्नुसरिय थ्या विसुम्हित (वर १९७) । ं विश्वति । औं [विभिन्त वा] मिटचेति विभाग विदे (पाना)। विस्मामर 🛊 [रिश्वंधर] अध्येनीतराचन बादों में रिवर बदारर की एक मृति (बन्नम AZ) t विभाजीयज्ञा दत्ता विमासिका (हे र विद्यम विकासी शास्त्र करमा। बहु-विक्षान ("ग २० ३: एव १० १)। विद् देशो दिस अस्ति (याना हि न्देर)। बिद पंत कि दे सार्व द्वारा (पाक ६ ६) । र धरङ दिनो व "रनवनोद वार्व (धारा र र १ ११ र १ र १ ११)। ६ व्यक्ती बादवार्ग (कापा २ ४ २ ३) । विद् 🗗 [विद्यागा ] बारत्य, बस्त (बन रे रे—वर अस्ट स्ट्रंट र रूप)। रेका विद्या विश्वासका

वैको विभाग (नवडा भनि)। विद्यास पु [विद्याम] पश्ची विद्या (गडड मोद्र १२। मु७७ छए)। विहंस स्क वि + मञ्ज | भावता, वोहता, विनास करना। संक्र विश्वजिति (धप) (भृषि)। विष्ठंजिक्ष वि [बिभक्त] बाँटा हुवाः 'वावम-पुक्तिपमाण्यविद्विष्यो (मनि) । विश्वंत सक [वि+सम्बद्धः] विश्लोत करना विनाश करना । विहुद्ध (प्रमि) । विदेशम म [विकायहन] र विकोश, विनाश (सम्मक्त ∜ं)। २ वि. विश्वदेव-कर्या विशासक (सस्)। विष्टंडण दि [बिसण्डन] मांडनेवासा गासि मूचका 'मएलवि रे वह विश्वंदर्श वस्तर्थ' (या ६१२)।

विश्वंदिक वि [विकाण्डित] विनारित (विश

बिह्रा दे [बिह्रा] पत्नी विद्या (पत्न

ty 41 4 464 48 4 4 )1

ाहित र्रं ["पिप] परम पत्नी (सम्मच

विहासस्] बाकाराः स्वतः।

गह भी ["गवि] १ म्यरात में बमन

(वंचा १ ६) । र कर्म-विशेष, बाकाश में

पति कर सकने में कारए-भूत कर्म (सब

पिड्डिश वि [विपट्टि] बर्पिक दिवामूत

(a) and ( 4x. x1):

toq

(से २ ६२)।

मिहरू देवो विघरू । विहरू (भवि) ।

स्प्)।

२१६) ।

विद्य-विदर

वसमि १ २३)।

(t . 42) 1

कप्प)। २ पून भाकारा थगन (मय २

२--पत्र ७७१३ माचा १ ८ ४ १३

यिह्य की दि] कुलाकी वेंग्ल का गास

विद्वार्थ विद्वार पत्नी विद्वार पत्नीक

(पाम' मतड कया सूर १ २४% प्राप्

१७२)। जाइ दं िनाधी नवस वक्षी

विश्वंग पूर्व [विसङ्ग] विश्वाम दुवका चैठ

(पर्छा १ १--पत्र १४ गतत ४ ४)।

(मउड ८२६ ८२४ १ २२) :

विद्व एक वि + घटम ] तोइना वार्यहत करना । संक्षः विद्वश्चिकप्प (प्रस्तु) । विहर देवो विहल = विद्वास (से ४ १४)। विद्रस्य न [विघटन] १ यत्तव होता वियोग (सुपा ११६६ २४३)। २ सवस्य करना । १ बाचना 'तह महेला वह महिल-यसोयसाउद्यक्तिक्त्यों वि प्रसमस्या' (पत्रा दव)। विश्वस्य पूं [क] यनमं (यक् )। विद्वणा थी [विधटना] विमोक्न प्रवत् करना' 'संयवण्डिहरुणावाबदेख विद्याला क्स्रो नहिमो' (वर्गीव ४२)। विद्वरफड वि [दे] १ व्यापूत व्यव (हे १ १७४) । २ स्वरितः सीम (सवि) । विष्या की [विषया] विशेषः धनेका फार क्रिं 'ब्ब्र शह दुहु'वरिहता श सबह कह्यादि रंतक्सहेख' (मुपा ४२१) । विद्वाय सक [यि+घटयू] वियुक्त करना धमन करना । विद्वानद (महा) । बिह्याबण न [बिघटन] वियोजन (ग्रवि) । विश्वायिय वि [विषटिष्ठ] वियोजिष्ठ (सार्थ विद्वविय वि [विघटित] १ क्युक, विक्यम (महा३६ प्र)। २ द्वचा हमा (महा३ ۹)ı विद्या देवो विद्या । विद्यति (पि ४६) । थंक विद्यु(शूय १ ४ १ २१)। विवास्त्र कि [वे] संपूर्ण सकक्क (सक्त)। विद्र्ण्ण न [४] पित्रम पीजना भ्रुतना (दे ७ **(1)** विहत्त देशो विशत्ता (सं ७० ११) वेहस २७४३ ब्रेट १ ४७- व्यव १६६) । मिश्रुचि देखो विसच्चि (पत्रम २४ ३० वप 1 (ex) P विद्यु के विद्या षिह्रस्य नि [बिह्रस्य] १ व्याकुल व्यव (स १२ प्रशास्त्रप्र १ विदि वेवदा वहेदा सम्पत्त १६१) । २ दुरान, बक्रा 'पहरणवि'

(महर-प्राक्त ७१)। वक्त विह्यंत (रे ३

धनप होना टूट जाना ! विहत्त, विहतेह (छन) । ४ वसोब (सम्मत्त १६१) । कुमा घणु (१५७)। वि वैर्य-रहित (संक्रि १)। ( ₹ 0 बाबु बिहम्मस्मि (बिसे २२४१)। विदम्स एक [विधर्मय] धर्म-एड्व करमा। बह्नः विक्रम्ममाण (बिया १ १--पत्र ११)। विद्रमान [मैधर्म्य] १ विष्मंता विद्य वर्मता । २ तकंशास प्रसिद्ध उदाहरस-नेद, वैवस्पै-स्टान्त (सम्म ११३)। विद्रमाणा भी विधमणा विद्रननी कर-वैना, पीका (पर्राहर १—पत्र १३) विश्व २६१ )। विद्य दि [वे] पिनित भूना हुमा (दे ७ विद्याति [विद्व] १ मारा हुमा समुद्र (पञ्चम २७ २०)। २ विन्यस्थित (मदा)। विह्य देवो पिट्रा = रिट्रन (नडड: सण्)। विश्वय वेको विश्वम = निमन (दे । २८८ नाट--गानमि ३३)। विद्याक [यि+डः] र कीड़ा करना क्षेत्रणा। २ चहुनाः स्थिति करना। ३ सकः वमन करना, नान्छ । विहृद्द (हू ४ २११ रुवाः कृष्यः दव) विदृरश्चि (भग) निदृरण्य (पन १ ४) । भूका, पिहरिमु, बिहरिस्का (उत्तरके द्रापि क्षेत्र प्रदेश)। महि विश्वविस्ताह (पि ४२२) । वक्त विस्तान

कृष्यकृष्या (क्रुप्र १ ३ ६) । ३ ई. विशिष्ट हाम किसी वस्तु से मुक्त हाथा 'पडम' उत्तरिक्रएं वनमो वा बाद पाहुद्रहि-हरवी' (सिरि ६६१): 'सहबमासवित्रहमो' मिहरिय पुंच्ये [वितस्ति] परिमाण-विरोव बार्यह बीपुल का परिमाशा (हे १ २१४ विश्ववि की [मिजृति] १ किरोप वैसे। २ विद्वा ) सक [यि + हम्] १ मारता बिहम्म । वाइन करना । २ नारा करना । १ मविक्यस करन्त्र । सङ्घनई (उत्त २ २२)। कर्ने विहसिक्य (क्ला२१)। बङ्ग विद्यन्तमाण, विद्यमाण (पि १६२ उत्त २७ ६): कवक्र विहम्समाण (सुध १ विद्यम्म वि [विद्यमेम्] निप्न वर्मवादा विभिन्न विसन्नासः भारत्यामसङ्ख्यं वस्तरव

विकारमाम (एत २३ ७ पुष्ट २३७ धोव १२४ महा भव)। श्रेष्ठ विद्वरित्ता बिहरिश्च (मन नाट—वक्र १२)। विद्वरिश्चय विद्वरित्र (धन्छ ठा २ १---वर १६। सत् । इ. मिहरियण्य (जन (16 915 बिह्र सक [ प्रति + इक्क ] प्रतीया करणा,

बाट बोहमा । विहरद (धड ) । विद्य केवो विद्यार (प्रच व ६६ टी)।

क्किरण म [विद्ररण] दिहार (दुश २२)। बिह्नरिश्चन दि] मुख्य संमोन (१७७)। विद्वरिभ वि [सङ्कत] जिल्ली विद्वार निया

हो वह (योग २१ । यन कुत १६६)। षिद्वास पन [वि + हृ वस ] स्पानुन होना । बद्ध, बिह्र्जन (स ४१६) । विकास केवा विकास = वि + वट् । वक्र-

विद्वसंद (छ १४ २६)। बिह्रस वि [बिह्र्यस] स्ताकुक स्वय (हे २ इदां बाज रेक पड़न इ.स. गा २ वर, प्रास् र, इस्य १४ वर्णना

२४: पद् : वस्द) ।

विश्वप्रदेशाविश्वस्त = विक्रम (स्वितः ) । विश्वस्त विभिन्नस्त १ लिएका निर्यंक (गवड मुपा ६६६)। २ ससस्य भूठाः निष्मा मोइ निरूपं प्रक्रियं यसमं श्रसम्पूर्ण (पास) । बिद्यस्त पत्र [निफल्प ] निम्बन बनाना निरर्जन करता । विद्वस्ति (धन) । विद्रक्षमार । रि [स्पट् वचाइन] व्याद्रव विद्वार्थिक शिर्मात्रमा (काप्र १६६ व १रफ पुर्व १ । १६। सुर १ १७३ सुपा

४४७) 'निक्याप्रविद्वसम्बना पंतिया' (गुर \$ t, 7 () ( विद्धिन रि [विद्यक्ति] ध्यापुत्र विमा हुम्स (दुमा ३ ४३ प्रतः महा)।

विद्धाविभ वयो विद्वादिय (छ ७ ४६)। बिद्धिभ वि [पिपक्तित] विका क्या ह्या (ਰਹਾ) । विद्रष्ठ यक [पि + रु, वि + रह ?] १ भाराजकान्यः २ स्टब्स् जिलाए करमा ।

**विद्वा**र (बारग १४६) ।

विद्वाद्व प्रविद्वा स्था अधिक काएक पुत्र (पष्टि) । विद्य पू [विभय] समृद्धि, संपत्ति ऐसर्य

(पाष्प्र पद्ध कुमाः है ४ ६ । प्रामु ७२३ wt) 1

बिद्यबण न [विद्यवन] विनाश (एव) ।

विद्वाको [विध्या] जिसका परि गर क्या हो नह की चेंद्र (चीक क्या ना १,३६८) सम्बद्ध मुद्द ४६)।

किह्मि वि विश्वविश् वेवति-राजी बनाव्य (क्या भूपा ४२२३ थउड)।

विद्वाप थेको विद्वाच विमय (गाट-मुच्छ 5E) 1 विद्वस यक [वि+इस] १ विकास

प्रकार का हास्य करना । विहसद विहसप् निक्ष्मेर, निक्षिति (प्राप्त २६ सस्य प्रमाप्त ह्रे ४ १६६)। विश्ववेष, विद्ववेष्य (क्रुया थ्, «१) । अपि पित्रसिक्, विक्रेप्रेड (ब्रमा १८ वर्ष)। वक्ष विश्वकृत विश्वसीत ार, वर)। एक क्षिर १६, द्रमा ६

व्यवना, प्रदेश होना । २ हस्य करमाः मध्यम

विश्वसिकण विश्वसिक्त विश्वसेकण (वर्षा बार ११छ नार-च्या १वः क्या १, २)। क्रेक विक्रसिक विक्रसेट (क्रुमा ર ર)ા

विद्वसाय एक [वि + हासब, ] १ (पान्य । २ निकसित करना । बोह्नः विद्यसाचिकप विद्यापेठप (शङ्क ६१)।

विद्यायिक वि [विद्यासिय] १ (व्यापा हमा । २ निकसिय किया हुआ (श्रह ६१) । विद्वसिक्ष वि [विद्वासत] ( विक्रिक्त विकातमा प्रपुत्तः -विद्यविद्योग् विद्व खिनमुद्दीर्प (महाः धम्मशः ७६)। २ व नम्मम प्रकार का हास्य (नडड ६१६३ ७३१)। विद्वसिष् वि [विद्वसिष्ट] धिवानेगावा विक्रिय होनेमामा ।

विद्वसिक्तिम वि [वि] विक्रसितः विद्वा ह्मा (दे ७ ६१) । शिष्ट्रसम् देवो विष्ट्रसम् (पाया गीप) ।

विद्वा पर [वि + भा] शोधना, चनरमा । विद्यापि (थी) (चि ४०७) ।

विद्यासक [चि+दा] वरित्याय करमा। संक्र विद्यास (सूध १ १४ १)। विहा 🗷 [बुधा] निरर्धक व्यर्च, मुना (र्गचा

22 X)1 विद्वा की [बिया] प्रकार, मेर (क्रमा महा) धक्ट्र) ।

विद्वा देवो विद्या=विद्वावस् (वर्गन 488)1

विद्वाद वि [ पिमायिन् ] वर्षा करनेवामा (केस्स ४ ३ चप ७६० दी वर्गीय १३६)। विद्राप्त वि [विवाद] १ क्यां निर्मातः (विसे १४६७ वंचा १ ६६)। २ वं पर्यापयि-देवों कं उत्तर किछाका इना(स

२ ₹⊷-पथ ५)ः विद्वार पर [पि+घटच ] ! निदुत्त करता वस्तव करता। २ विनासा करता। ६ बोधना जवाइना । विहानेद, विहारेति (एव १ ४३ महा भग)- वस्त्रमधुरपं निहा-वेंसि (बीप राम)। क्षेत्र, 'समायमं सं विद्वादेव" (वर्गीव १३)। इ. विद्वादेवस्य (मद्दा)। विद्याद वि [वियाद] विकट (धन)।

विद्यास नि [विद्याद] प्रकार-कर्ता (सम्प २)। विद्यास्य ॥ वि] मनमें (दे ७ ७१)। विद्याबिम वि [विपटित] १ विद्यावित, सबव किया हुया (बर्मेर्स ७४२) । २ जिला-

रिव्ह (बप १६७ दी)। विद्याविक वि [विचटिक] स्त्वावि बोना ्वमा (क्य प्रद⊁ वस्)।

विद्याद्विर नि [वियन्धित्र] स्वन करनेवाचा

विदेशक (च्छ)।

विद्याल पूर्व हि रे विभि विभागा देश मान्य (दे भ 🛚 ) 'सम्प्रतमस्युहनह निहासनाही करेमाखों (त १३ । प्रकि)। २ विकृतः मकार जुबह (दे ७ ८ । दे ३ ३१ अबि है ४ ६३ ३६६२३ छिटि इ.२६)। ६ दुवन सर्वेत 'यदो केत कृरदेवसाविकालनिर्मित पंचारिक्स वर्षस्मल एयाए बाबाइमो इविस्सर (# 984) I

विद्याल विभान र शासीख रीति (अ १ । पर ११) । १ निर्माल, रचना (पेपा

😼 ४८ रमाऽ महा) । 堵 प्रकार- मंच (से 🤻 ६१ परहु १ १ मन)। ४ व्याकरणोख विधि-विशेष (पराह २ २--पण ११४)। ४ प्रवस्था-शिरोच (सूच २: १ ६२) । ६ विद्येश विद्रमणुसन्यर्थं पहुचे (सम १ १ दी)। ७ रीति (महा)। द इस परिपादी ( **ex** t) i विद्वाय म [विद्वान] परिव्यत (चन)। विदाणिय (देश) वि [विभायित] कर्ता क्रांत्रस्या (एस)। विद्याय प्रक [चि+भा] १ शोमना। २ प्रकाशना चमकना धीपनाः विद्वार्गेति (म १२) । बहु- सिद्यार्थत (विरि २६८) । विद्याय पूँ [विचात] १ धनसान बेठ (से १ (६)। २ विरोधी बुस्मन परिपाली (से व ५४) स ४१२)। बिद्वाय देखी विभाग (गुडुड से १ ३२)। विद्वाय वि विभावी १ प्रकारित, निसा विद्वास चि चद्रियो क्लाहों (कुन २६०)। २ न प्रमात प्रतक्ष्य (से १२ ११)। विकास देवी विकास = विकासस (था २२)। विश्वाय देखी विश्वा = वि + हा । विद्वाय (प्रप) देखो विद्विक (प्रवि)। बहु, बिह्नारंत (पडम ८, १६६)।

विद्वार एक [पि+धारय] १ वर्षका करना। २ निर्देश इस से बायत करना। विद्वार र् [बिद्वार] १ विक्रका व्यानः विद्व (पन १ ४) चना) । २ झीड़ा-स्थान (धम १ )। ३ देन-गृह सम-गन्दिर (अस ३ ७ दुमा) । ४ धवस्थान अवस्थिति 'श्रदा-सर्वे बद्दु इमे बिहार" (एत १४ ७)। ४ सीड़ा (का = कम्म) । ६ पुनि-वर्तन मुनि वर्षां, साम्बाचार (वद १ छवि 🗷)। भूमि स्मे ["भूमि] १ स्वाच्याय-स्थान (माचा १ १ १ ६ मध्य कृष्य)। २ विवरश-मूमि (वव ४) । ३ कीवा-स्थान । ४ च्या भी बन्द्र (क्याः राज) । पिशारि वि [विद्यारित] विद्यार करनेवाका (माचा चना था १४)। विद्यासिय देवी विद्यादिकाः 'दुवारं विद्यातिये

पासद' (एव ६४व दी) ।

विद्वाप केवो विभाव = वि + मानम । विद्वा-वह, विद्वालेमि (ध्रवि" स्तिम १७) । स्वतूर, विद्वाविज्ञमाण (स ४१)। इ. विद्वावियव्य (उप १४२)। बिद्धायण न [विधापन] निर्मापण करवाना (पेद्य ६६)। शिक्षायण न विभावनी वालोचना 'एवं विचितियम्बं प्रसारीसविद्यावर्श परमं (पंचा 8. X4) 1 विद्यापरी की [विभावरी] एवं निरा (पाध उप ७६ दी पूपा १११)। मिश्रापस प् [वियापस] धन्ति द्याव (पाय)। वैद्यो निभावस् । विदाविक वि विभावित है है निरोधन 'बिट्र' विद्वाविद्य' (पाय- या ५ ७) । विद्यावित्र वि [विधायित] सहसित प्रस्कृति (स २७)। विद्वास पू [विद्वास] ईंबी उपहास (मीर)। ) केवो पित्रसाय । संक विदा-विद्वासाय े सिऊज विद्वासेऊज विद्वा सामिकण बिहासावेकण (शह ६१) । विद्वासायिक १ रेको विद्वासामिक (प्राप्त विश्वासिम 🧦 ६१)। विहि दें [विभि] १ आहा चतुरानन विभाता (पास्ट सच्यु ३७: धर्मर्स १२६ कूमा) । २ पुँकी प्रकार, मेर (जना) 'सम्बाह्य नयनि हीहिं (पथ १४१)। १ घाडरेस्ट विवास घतुष्ठान व्यवस्था (पैचा ६ ४८ और)। ४ कम किकसिका परिपादी (बहु १)। १ । धीर्षः। ६ नियोग सावेश भाषाः। ७ धाषाः वृषक वाक्य । < व्याकरण का सूध-विशेष । र कर्म। १ हायौ को चाने का सम्रा(§ १ ३१)। ११ वेश भाग, धालुकुतो शहरा । निही किमार्थ जंग करेह' (गुर ६ ८१) पायः दुमा प्रामु १०)। १२ मीखि न्याय । १६ स्थिति, समाचा (ब्रह्म १) । १४ इस्ति । करण (पंचा ११)। "ल्लुवि ["क्रा] विधि का अभकार (खाया १ १-- पत्र ११) सुर द ११६)। ययण व "यपन] निवि-बावयः विवि-वादः, विस्मृददेशः (चेह्रय ७४४)। वास पुं[यार्] बही पूर्वोक मर्प (माब ७१, नेइम ७४४)। विष्णु धीइम्छ । ३ द्रमा । ४ संहर,

विदिध वि विदित्त १ इत प्रनृतित निर्मित (वाच मात) । २ पेट्रित (चीप) । २ खाद्ध में जिसका विभान हो बहु राजोच्छ (पैचा १४ २७)। विद्विस सक वि + द्विस् ] विविध ज्यामी से मारमा, वयं करना । विश्विसद् (स्थवा १ ११४)। इ विहिंस (परह १२---पन ¥ ) i विश्विस वि विदिस्त हिंसा करनेवासा 'स-विक्षि सम्बद् देवे' (माचा १ ६ ४ ३)। बिदिसम वि चिहिंसकी वय करनेवासा (मापा सच्छा ११)। विश्विसण न विश्विसनी विश्वि प्रकार से मारना (पर्दा १ र---पत्र १०)। यिद्विसा औ [विद्विसा] १ विशेष दिसा (परह १ १--पत्र ४)। २ विविध हिंसा (सुपार २ १ १४)। विव्यापन विभिन्न १ पुरा यसम यिद्रिम ∫ (से ७ ४३ १३ वर्ग मि)। २ लिएडव भाग कर दुक्का-दुक्का बना हुन्छ (PIRK)1 विदिस व [दे] बंगस घरएम (उर ८४२ विदिमिद्धिय वि [वे] विक्रीस्त (पर्)। विद्विष्य देश विद्व = वि + वा । विद्वित सक [य + रचय ] बनाना निर्माण करना । विहिविहाइ (प्राक्त ७४) । चिक्षिण वि [चिहीन] १ वर्षित रहित (बालू १७२)। २ स्वत्तः (ब्रुमा)। यिद्धीर सक [ मिर्वि + इस्त ] प्रवासा करना बाट जोहना। दिहीरह (हे ४ १६६) विद्योख (स ४१०)। षिहीर वि [प्रदीक्ष] प्रवोक्षा करनेशला (दुमा ७ देव}। विद्वारभ वि [मर्वाक्षित ] विस्त्री प्रतीक्षा की यह हो बद्ध (पाछ)। विहीसण देवो विभीसग (न ८ ११)। विद्यस्या केने विभीसिया (गुरा १४१)। बिहु 4 [विभू] १ पन्न चार (पाम)। २

विदेहणा औ विदेठना कर्पना, शहर

(प्रव) १

महादेव । ५ वासु पदन । ६ कपूर (हे ३

प्रत्याती 'नियम्बन्यविहस्ती' (अपि)। 1 (35 विद्वास्थित देशो विद्वार विहोड ६७ विक्रय विकासकाः विद्वय रि [बिद्युत] कम्पित (मा ६६ । विष्ठक वि विभूत है कम्पित (शत्व PURITY (EY RO) I क्षक)। २ जन्यूमित सम्बाह्य ह्या (से १ विद्वोबिक नि [ताबिक] निवका तस्त १७८)। २ वर्जित रिक्ता 'नगरिक्रिये १४) । ६ ध्यक (बढर) । सपमदी' (पडम ११ ४) । देशी विभूय, किया गरा हो वह (कुमा)। विश्ंत्र अ थे दि । एहं बह-विशेष (दे ७ विद्वस । विद्योग (धप) वेची विद्य (भवि) : \$X) 1 शिहृद् रेखी विसृद् (शब्दु १४३ भवि)। थी देशों वि = सर्पि कि 'धक्क' विम नाव न विद्रण एक [वि+भू] १ **व**पाणा विष्टुष्य देवी विदुष्य । चंत्रः विष्टुष्यिया वी इन्हें बोधेइ विद्याप्यिपियां (पत्र क्रियानाः २ दूरं करत्य इटानाः ३ त्याच (धाना१ ७ व २४- सूच ११ ८ to (₹) i करता। ४ द्वेग करता सक्षत्र करता। विद्वासह, १२: वि १ १)। बीक क्षक [बीजय] हमा समय, वंबा विद्वर्शति (ब्रिक्टि नि १ ६) निरूपादि (उत्त करमा । बीपमंति पवि ४६) बीवंदि (दुर विद्वाय देवी विद्वीय (क्यूप्र स्व)। क्ष्मं विक्रमह (वि १६६)। १ १६)। यह बीसीत (या =६ दुर विह्याय न [विद्यास] व्यवन पंचा (सूध वह विहर्णंत विद्यापनस्य (मूरा २७२) ७ वय) । काल विश्वांत वीश्वामाण 2 4 2 2 )1 पान १४ ११)। करक विद्वार्यंत (छ १ (दे ६ ३० शामा १ १--पत्र १६)। ११। ७ २१)। तंत्र विद्वालिय (सूच १ विष्ठस्य देशे विमुख्य (६ ६ १२७) दुरा बीक्ष वि वि १ निवुद्ध मानुसा। २ २ १ १४: व्यक्त २१: छ १ ८)। १देश भूत्र २६) । तरकाश तरकातिक उद्योधनक वा विक विहम्म्य न [वियुतन] १ इधेकरश (गड्य विष्ठसा की विभूषा दिशोग (दुपा ६२१) 23) : के रहेत हैं शिक रावश्वेष हैं। (हेंड है में १११)। २ व्यवन पंका (राव)। बीज देखी बीम = प्रिकीव (दूमा) ना ६ विद्वपित वि [विधृत] धेवो विद्वश (पुता सनावह (पंचा १: २१)। २ शाप शामतः)। बिहसिञ वि [विभूपित] विमूता-पुक, २४३ यक्षि २१)। वीक वि [वीख] विपत्त, वह (पदा सक्क विदूर वि [विदुर] १ विकल व्यानुष, विद्वास भनंतुर (भवि)। **६६)। कन्दर कि**स्सारी स्वीत (स्थम १३ महा दूमा दे १ १६) धुरा विद्वेतक [बि÷ बा] करुदा वक्ता। विदेय । २ ई.की. वर्ष दोत्र में अलगा (ठा देर नवड एक)। २ मील (नवड १ वह)। शिक्षेत्र, निहेरि, निहेरिंग विहेरिंग ( वर्षेषे ७—वन ३६ )। भूस हि [धूम] हैक-६ विनश्त, विश्वस्य विका धाँव १ ११: छ ६६४- ७१२ पत्रका ६६२ थील (स्त ७ १--वर २८१)। ब्यय, किट्टन्मियि जोवन्मि बाहिरे होड विहरमाँ कुमा ७ ६७)। एक. विश्वेत्रण (वि१८१)। भवन [ भव] र नगर विशेष क्रिनुसीवीर केंग्र की प्राचीन राजवानी (वर्गीव १६) २१ 📝 (ग्रीप ११)। ४ विचित्र, निमुक्त (ग्रज क्षेत्र विदेश (दिया १)। इन विदिशमन **प१र)। १ म म्या<u>नुस</u>⊷यन निह्नक**या विक्रम विक्रेमम्य (क्या ११वर वि २२) इक विकार ४ सहा)। २ विकास-पहिच "विमाह्य रिष्ठर्णमा" (स ७१६) वश्या ६२: कम्मो ४ महार मुपा १६६ व्या १९४ हि (वर्षमि २१) । मोह वि "मोह] मोह-१४ प्रामु १ भनि बढ)। २) वज्य ६६, १८) मुपा १६६) । प्रीत (मन्द्र ६१)। युग प्रेम पि विश्व सक [वि+इटय\_] १ शास्त्रः िरागी यग-ध्येष्ठ, श्रीशाध्य (अगार्ध विद्वयद्वभ वि [त्रिभुद्यवित्त] व्याद्वच वस्य विसा करमा। २ पीश करमा। सहरू ४१)। सामा दु ["शोक] एक व्याख्य हुमा (बयह १११ थी) । विश्वेत्रयंत (उत्त १२ १६)। प्रमुद (सुक्य २० छ। २ ६---पत्र ७६) । सामा विदुरिजमाय रि [विश्वरायमाण] व्यक्क 'बिहुम्मलाह्नि विहेड (१ट्ट)थेवा' (बग्रुख १ क्ये शिशा । धिलतावती नामक विजय-बनवा (पूरा ८१६) । र---पत्र ४३)। प्रान्त हो धनवानी, नवधे-विशेष (ग्रामा रे विदृरिय नि (विश्वदित) १ व्याद्व वना विदेश्य वि [विदेठक] ध्यारर-कर्या (छ —पत्र १२१ इकन प्रस्त २ १४२)। ह्मा (नुर २ २१६ ६ ११६, महा) । २ 1 ( ) 1 बीशज्ञमण रेजो याश्रज्ञमण (दे ६, ६६ दी)। रिपुत्र बनाट्टया विद्वाहाट्या निर्राहेख विदेखि वि [विदेटिम्] १ दिवा करीवासा । वीअन न [पीजन] १ इवा∉रता पंचाने (438)1 र धीका वरमैयालाः धंवे नदी धाहित्रमंति इपाक्का (कपू)। २ और पंचा स्वक्त पिट्रशेटय रि [चिपुरीहत] म्यादुव रिया पाणमूर्वा**रहे जिल्हों (तू**प १ Y) 1 (पुर १ ६६। द्वम ६६३: म्ब्रत) । स्ट्रीः भी इमा (इमा)। भिश्च बिद्य कि [ बिद्ध टिख ] गीरिश (पत (भीग पूर्वा ६ ६ स्थापार १००० पिहुछ रेको निहुर (क्रम)। t 44) i पम ११)।

२ टी घम ७ १०—पत्र १९४)। वह-

बीइषयमाज (राम १७ मि ७ १५१)।

वीचि वेकी वीच = वीचि (कृप्प' मन १४

पीप)। २ शाक्तरा गनन (मग २ २ <del>~</del>

७७१)। ३ संप्रयोग, श्रंबल्ड (मन १

२—पत्र ८११)। ४ प्रथम्-नाव पुराई

वीआविय-पीर

(म्प १४ ६ टी--पत्र ६४४)। ब्रुक्त न "प्रक्या प्रदेश संस्था स्वयस्**न**होम बल्दु (सप १४ ६ दी-पब १४४)। यीइ की [बिइन्ति] १ विक्य कृषि दुए किया। २ वि इष्ट कियाबाला (मग रै २-- पन ४१५)। १ देशा विगाइ (कम ४ ६ ही)। सीक्ष्मास्क नि [बीताझार] सम-स्थित (भग | • १-पत्र रेश्य पि १ २)। योद्देश वि [स्यतिकान्त] १ व्यतीत, पुत्रच हुया 'बासीय चाईस्पिष्ट् बीरक्क्वेड् (सम ८१)। २ जिसन अवस्थित किया हो वह (अस १ वे टी--पन ४२१)। बाइम्बस एक क्यिति + अस्म विकासन । करना । बद्धः वीक्ष्यममाण (क्स) । बीइव्यनाम देवो याञ ≔धेनम्। हम्रा (माना)। **बीइय वि [बी**जिंद] निरुद्धे इता की वह हो हह (भीप नहां)। भोडपय धक [स्वति + सञ्] १ वरि भ्रमण करमा । २ वमन करमा, माना । ६ ध्वसंध्न करता । कीद्रमारः बीह्यहरूतः बीइबएका (मुझ २ की भए १ पत्र ४६०)। दङ्ग, बीह्ययमाण (शाया १ र--पथ ६१)। संब्र- सीडवडसा षाइयएसा (सप २ ८ १ १---पत्र 888) I सीइ की देशों वीइ = बीचि (पास सन १ **२२ २)**।

बीई म [विविषय] दुवन् होकर, पुरा होकर

**बीइ य [रिपंचिन्स्य] चिनान करके (**यन

(मग १ र-पत्र ४६%) ।

र र-पश्रद्ध)।

६--पत्र ६४४)। वीचि की दि नदुरम्या लोटा मुहस्सा (80 03) 1 बीज देशो साध = बीजम् ि बीबद्, धीर्जाम (द्विप ७ वर्गे ६६)। वीजण देवो वाजण (भूमा) । की जिय केशो व पूप (स १ a)। वीक्षम } देवो कीवम (स ६७)। बीक्षय बीड्य पूँ [जीडक] सभा राप्प (बसड 1 (580 कींडिम नि [ब्रीडित] बनित रापीन्ता (राम्य १ ६--पत्र १४३)। वीडिआ की [बीटिका] स्वामा हमा पान बीका (यरह) । देखी वीकी । बीड देखो पीड़ (यजर पप दू २२६) मनि)। बीय सङ ियि + चारय े विचार करा। बीखर, बीखेर (बारचा १५३ प्राष्ट्र ७१)। बीण देशो पाप (सुर १३ १०१)। भीइसिस्स वि [स्पतिसिम] मिथित सिता वीणण न [वि] १ प्रस्ट करना (सा प्र ११व)। २ विवित्त अस्ताः आयन (स्व ७६६)। बीमा की [बीमा] बाद-विशेष (बीर कुमा बा १९१ स्वप्न ६७)। वर्रिणा सी [क्री] बीखा-निमुख धनी 'ता सह बीजामधिंश वर्षेषु विषया बीखाबीखी (ध १ ६) । शायरा वि ["बाद्या विश्वा धनानेपासा (भद्दा) । यीव वैको क्षील = बीव (छा २ १ — पप प्रदे पर्वत १०---पत्र ४६४- मुळ २ ---यम २६५)। चीविष्टंस ) देशो वाद्यक्त (मन १ १---थाविकत र्पत्र ४६० लागा ११—पत्र 28 36) I वान्तिषय ) देको बीइयय । वीतिवर्गति (श्व)। यीवीयय<sup> (</sup> बोतीबयद (शाया १ १२—पत्र

१७४)। वह यीतिषयमाण (कप्)।

र्थक्र-सीविषक्षा (धीप) ।

कर्ता (उन) । धीर्मसा 🛍 [मिमर्शे मीमांसा] विचार, पर्यासीयन निर्फाम की बाह्य (मूच १ १ र १७ विस २वटा १६६। १६५ सर ११२ )। योमंसिय वि विमर्शित मीमामित ] विवारिक पर्यासीविक (सम्मक्त १४)। बीर व बिंही १ अनवान महाबीर (परह १ १—पत्र २३ १ २ मुज्य २ ३ मी १)। २ छन्द-विदेप (पिय)। ३ साहिरय-प्रसिद्ध एक रस (चल १३६) । ४ वि पराञ्मी शुर (बाचा सुब १ = २३) कुमा)। १ र्जुन, एक केम-विमान (सम १२ इक)। ६ न विद्यालय पर्वत की उत्तर केंग्री में स्थित एक विद्याबर-नगर (इक् )। कस यून [ ब्यन्त] एक देव-विमान (सम १२) <sup>\*</sup>ब्रज्ह पूर्किया] स्वाभेतिक का एक पूत्र (निर १ १ पि ६२)। क्रणहासी िक्टमा] यजा थेशिक **दी** एक परती (र्यंत २६)। कृष्ट पून [कूट] एक देव-विमान (सम १२) । गव पून मित्री एक बेब-विभान (सम १२)। जस्म दे यशस ] भववान् महावीर क पाछ थीला मेनेवाला एक स्टबा(ठा व----पत्र ४६) । उस्तय कृत ["आवज्र] एक दर विमान (बन १२)। अवस्त नु ("धवस्त्र] गुनरात का एक पविस्त राजा (वा २) क्ष्मीर १६)। "निहाण न ["नियान] स्पान-विशेष (महा)। प्यान विशेष एक केन-विमान (सम १२)। शहर्य ["भन्न] समनाम् पारवैन्यय का एक मरह-बर (तम १३ कम्म) । सई की [मता] एक बोर धनिनी (नहा)। उस दून [ सर्य ] एक दव-विमान (सन १२) । नण्य वृत िंथर्जी एक देर-तिमान (सम १२) वर्म

न ["बरम] प्रतिनुष्ट से ग्रुड का स्तोकारः

'इस बोदा स में सबू वा ऐसी मुद्ध को साव

(इसा६ ८६। १२)। सरमाध्य

थीमंस सक [पि + मूरा, मीमांस्]

थीमंसय वि [विमर्छे रु मीमांसक] विकार

भीमंसिय (सम्मत्त १६) ।

विचार करना पर्माचीचन करना। संक्र

िंबरणी प्रतिमुख्य से प्रचम स**मा**शहार नी बाचना (Paft १२४)। यस्त्र न िंगस्य विश्वद का एक स्वयूपल की प्रव नुषक कथा (कम्मा छंदू २६)। भिराधी धौ विरात्धी क्सी-क्षिप (पएए १--बन ११)। सिग पूर ["शृक्त] एक वेश निमान (सम १२)। सिट्ट पुत्र [सह एक देव-दिमान (धम १२) । सेण व िसेनी एक प्रसिद्ध बीर मादव का नाम (शाका १ इ.—यज १ चैक चप ६४व **এ)। संजय प्रसिक्त अपिक**ी ऐक देश-विमान (सम १२)। विश्व पूर्व ियक्ती देवरियान-विरोध (सम १२)। ीस∞ न {ै।सन} यामन-विदेष श्रीवे पैर रनकर सिद्दासन पर बैठने के लैसा धवरवान (द्यापा १ १--एव ७२: मन)। ीसजिय दि शिसनिकी गीएका छै बैळोनला (छ ४ १—पत्र ११६ क<del>ठ</del>-धीप) ।

वीर्राग दे विराह्मको १ कमान् महानीर कंपांक दीवा वेनेनासा एक राजा (झ. १ कम ४१) २ एक राजकुमार (ज १ ११ थे)। बीराय धीन विराजो एक-विकेग कहीर,

अस्य (अस्य २१२ नाम) ।

बीरश्च वृं [यीरक्क] स्पेन नधी (परहा १ १---वच व ११)।

कीरिक नूं विधे हैं। स्वराल प्रत्यंताय कर एक मुल्तिकार है काराल प्रत्यंताय कर एक मुल्यर (क - चन ४२६)। वे पूर्व कार्यक स्वरास (क्सा कर है। वे पूर्व है। व कार्यक एक सामनकार (शालू पर सहस्य हैंगे)। द स्वरास (कार्य १२)। द एक देव विधान (वेश्य है। है)। कार्यक एक बाहु सुक्र। तेन वेशि (देव हैं। कार्य)।

बीराजा भ्रो [पीराजी] पर्वेनसम्बद्धि किहेब, -पीराजा (१ एडी) क्यू इसके य जाब ये (पराज १—९७ १९)।

वीरभरपंडिमग पुंत [वीराचरापनेसक] - एक देवन्द्रभाग (बन १३) ।

भीरुह्मा भी [बीरुमा] विस्तृत नता (क्रुम ६८:११९): वीक्रम वि [वे] विविद्धत दिनाच महस्तु चित्रमा (वे ७ ७३)।

संख्य केवो बीज्य (वे ६ ११)। भीको की [भूँ] ए तरंग भन्नोस (वे ७ ७३)। र भोगी र्रीक्ष थेछी (यह)। नेवाह केवो पियाइ मिनाह, एता एउना मुगानम्बद्धिता हा प्रशेष बीनाई (सर ७

चुमानस्वर्धिया ता इत्तेष्ट् वीवाह्यं (सुर ७ १९१ सहा)। वीचाह्यं न [नियाह्नं] विवाह क्ष्यत्त विवाह-क्रिया (यव १ ६ टीट विधि १५१)।

विवाह-किया (यव १ ६ दीः विधि १६१)। वीताहितः वि [विवाहिक] विवाह-सम्बन्धः (वर्षति १४७)।

धोवादिय वि [विवादित] विसकी साधी की पर्दे हो वह (वहा)। बीची स्टि कि विकास सम्बन्धित स्टिंग ।

वायाध्य [क्]वाण वस्य (क्क्र)। वीस्त वेचो विस्सः = विज्ञ (सुध प्ंर ६६ वस्य र )।

शीस केवी पिसस = निरण (तुक १६ २२)। इंग्रे व्हें [तुग्नी नगरी-रिश्मेश क्ष्य १६९)। सम हिं [तुन्नी नगरमणी (पर)। 'तेम दूं [तुन्नी श्रामणी (पना। नीहेंचु जार वह निरमेली' (तुम १६ १२)। १ द वहोगण का १० वह ब्रुट्स (दुम्य १ १३)।

(1645 व [विधानित भी हो बद्धा नेपानित भी जिसने रियाणित भी हो बद्धा 'परिस्तेशा नेपिता नम्बोद्धतदनमें (द्वाप्र ६२) यहाय देवे १३ दे है पाधा ख्ला उर ६४ दी):

पीर्धपुण व [विस्यन्युन] यही को तर सीर साहे ते बनका एक प्रकार ना साहा (पृथ क्षा के है)। बोसंस देखो बिस्संस = वि + प्रम्म । वीवंध्य (मूर्यात २१ टी) । बीसंस देखो बिस्संस = रिपम्म (उप माप्तः या ४६७) ।

वा ४४०)। भीवाजित्र केषो पिताजित्र (से ६ ००) १४ ६६ वका १ १२ः वर्गीत ४६)। बीवाल वि [विभाव] विस्ताव-पूर्व (त्राम वा ६ व)। बीवाज वि [विभाव] विकास-प्रक (क

वाद्यक्ष स्व [प्रमण्य] विश्वयक्षक (क १७६) यति ११६: प्रति नाट—पुण्य १६१)। वीधम वेद्यो विश्वयम् = वि + वय् । वीधमह

बीतमानो (वर्म महाः पि ४६६)। वहः थीतमानो (वर्म १२ ४२ पि ४ १)। बीतमाने पितसमान निषम (वर्म)। बीतम देवो पितसमान निषम (वर्म)।

वोद्यस्य विद्यासम् । वोद्यस्य विद्यासम्बद्धः विद्यान करनेशासाः (सन्त)।

वीसर देखो विस्सर - वि + स्पृ । वीक्रपर (वे ४ वटा ४२६। त्राक्क ६६। वर् ; वर्ष), वीक्रपेस (१७८) ।

बीसर देवो भीस्सर = विस्तरा चीयरसर रखते वा वा बोशीप्रदासी निर्मनकर (संदु १४)।

बीसरयासु वि [ शिरमतः ] पून जानेवातः (योष ४२१)।

(यांच ४२१)। वीसरिक केवी यिस्सरिव (या १६१)।

पीसन (धर) एक [पि + समय ] विभान करपाना । नीसनइ (स्थि) । पीसस केवा विस्तास । नीसनइ (पि ६४)

यसस्य व्या १४२० । शेष्ट्रहः (१ ६४ ४६६) । वष्टः बीससंव (४३व ११६ १) । क्ष वीससंविद्या शीससंविद्यः (४४ १६ ४९। वाट-सावित्र १३) ।

पीससाथ [पिससा] स्वकार प्रशिष्ट (अ ३ १—-पन ११२, मन्त्र सावा १ १२)। शीससिय पि [पैससिक] सावानक

े (धास्त्र)। - वीस्त देखो वीसंद्(हुह रादशास र - रे—पव रेरटावद्)।

्र---पष ११६) चर् )। थीखा ध्ये [थिया] दुविरी, चर्छी (धार)। थीसाथ दू [थिप्नाय] चाहार, चौवन (ह्र

\$ ¥4) I

वीहि

🛍 [बीचि, का थी] १ मार्ने

बुगाइ है [स्युक्पह] र स्माह भगहा

शीसाम र् [विधास] १ विदान स्परम । २ वीहिया | रास्ता (धाना पूच : किनी | २१ प्रची १ । गतक ११ वय) । विश्रत सका६ (ठा ४ १ -- पण ६ प्रकृत स्थापार का सवसान, चालु किया का १ यत २६८)। २ वाक क्रम्म (उप द्र बंद (के १ ४३ से २, ३१ महा)। २ श्रेष्ठी पंचित्र (स.१४) । ३ ध्रेत्र माग २४४) । ६ वहकाव (संबोध ४२)। ४ बीमामण रेको विस्सामण (क्य ११)। (हा १---पन ४६०)। ४ नागार (चप २० विष्याभिनिवेश, कदाग्रह (चन)। वीसामणा देशो विस्सामणा (क्रम ११ )। महा)। बुगाइअ वि [ब्युद्प्रादक] वसह-गरक बुक्स वि दि दे दूना हुआ। २ दूनवामा क्षीभाग केवा विसास = वि + स्वास्य । ह-नय वृत्यक्रियं कहं कहिमां (दस १ १)। हुता 'क्स तयहा कीय मध कुप कंत्र विसायणिख (पएख १७---पण ४३२)। बुव्यक्तिन वियुद्महिकी क्षाइ-संबन्धी र्वाह्मयमण्यासि' (पन १२५)। देखो वृसः धीसार केवो विस्सार = नि +स्यु। बीसारेड (वस १ १)। बुध ) विद्याती १ प्रापितः र प्रापैना (बर्मेल ६६१) । बुद्ध रे प्रार्थि से नियम, 'बुघो' (श्रीक्ष र) । बुम्माह् एक [न्युद् + माह्य\_] बहुकान्त विसारिक नि [विस्मारित] भूवनामा शुगा ६ विष्टितः 'कुकम्मनुष्या' (सुपा ६६) । भान्त-चित्त करना । हुग्याईमी (महा)। (कुमा) । बुद्ध्य कि [बक्क] कवित (बक्त १० २६)। वह. बुग्गाइमाण (खाया १ १२--पत चीसाख सक [ मिश्रय ] मिकाना मिला-संस (१) सक जिंदू + नमय दिवाकरमा। १७४ धीप)। बट करना । बीसासइ (ई ४ २८) । वृषद्व (बारमा १६४)। बुगगाहणा ची [ब्युद्माहणा] बहुनार बुंताकी की पुन्ताकी वैपन का पाछ (वे चीसास्त्रिञ वि [मिश्रित] विवादा ह्या (धोषमा २१)। w \$3) 1 (<del>कु</del>मर) । बुमाहिश हि [ब्युद्माहित] बहकारा बुंद देवी वेत् = शुन्द (पा १४८) हे १ १३१)। बीसार्वे (घर) रेको धीसाम (क्रमा)। हवा भ्रास्त्रचित्र किया हथा (क्छ नेध्य र्जुवारय वेको वेदारय (वे १ १६२) कुमाः धीसाम देवो थिस्सास (प्राप्त: हुमा) । ttwः खिरि स् **दर्)** । बोसिया ध्री [विद्यक्त] बीस संक्यानासा । शुक्त केत्रो स्थ≔ वच्। श्रुंदामण देशो निंदामण (हे १ १६१) प्राप्त (वन १)। बुक्साण वि [क्षयमान] जो कहा क्षता हो संबिद्ध ४° कृत्या)। वीसुन [के] पुरुष प्रमम् पुता (के क बद्ध (नूम १ है ३१ मन्द्र कर ११ टी) । बुंद्र देको वंद्र (हे १ २३ कुमा १ ६०)। w8) 1 बचाय विकरवाी वह कर (सम. २.२ **तुष्ध रेको** सुष्य = वे (शरा) । बीसंब [बिष्मक] र समस्तात, सब योर <? (4 X cv) :</pre> बुद्धंत वि विश्वस्कान्त्री १ प्रतिकान्त व्यतीत से । य समस्त्रपन सामस्त्रवि १ २४० ४३ बुच्छ देवी पच्छ = क्स (नाट -- मुक्स १४४)। प्रमय हमा 'मेलीस' इस्केट महिन्द्रमं १२ पक् हुना वे ७ ७३ छी)। बोर्लियं बाइबंदी (पास) 'बुबंदी बहुकासी बुच्छ वेबी योच्छ (कम्म १ १)। षीसंस देखा वासंस = वि + वान् । वोग्-द्यार पमसेवं कृषीस्तर्भ (तुपा ५६१) । २ मुच्य वेयो बोस्पित । मन्या (ठा १ २--पत्र ३ ८० क्या)। निम्नस्त निगष्ट (श्रम्) । ३ लिख्यन्त बाहर बुष्याणा देवा पुष्याम (चर)। वीसंभ पक [व] प्रवय् होताः बुदा होता । निक्या हवा (निषु १६) । वेची बार्खन । बुश्चित्ति देशो वाश्चित्ति (विते २४ ६)। बीसुंबेच्या (ठा ६, २--पण १ व' करा)। शुक्रांति की [ड्युक्झनित] क्यक्ति (एक)। बुध्यस्त्र वि जिम्बिक्स ज्यवध्यस्त १ बीसंसण व दि] प्रवत्यव सत्तव होता (ठा बुष्कम प्रक्रियालका १ इति, बहाव (सम धपमा स्टाह्माः २ विन्द्र (स्व) । १ व. इ. र श---मम ६१)। २ ३ १)। २ अलिख (तूक्ष २ ३ १ भगतार चौद्या दिनों का स्थानस (संबोध भी <u>स</u>ंभण न [।यभस्भण] विश्वाद (क्ष १ २ २ व १७)। दी-पम ६ )। मुक्सस सक [स्पुन्+कृप्] पीखे की का बुक्कम वेको योपकाल (पर २७३) करम बीसुय देशो विस्सुक (क्ल्ह् १ ४—यह । नापस सोधना । कुसराहि (शाना २ ३ र, २२ सूवा २१४)। \$4) t 1 (3 5 बुक्कद्रयण केनो शोकक्रेयण (स १--पन बीसेडि ) वेदो विसेडि (बाब १ संबि बुकार देवा बुकार (क्या) । ११व) । षीसेपि ∫ १४)ः बुद्धार प्रक [ पं चुद्धारय ] पर्वत करना । शुक्त धर्म [ यस ] बर्गा । दुन्द (प्राप्त) । बीहि पुन मि हि बान-बाम्ब-बिरोदा शासीरिए बुध्यदेखि (चम १ १)। देवो बोज्य । मामीदीरिं⊍मा की इमारिक सामदेविं⊍ सा<sup>र ।</sup> मुकारिय व [व युट्टारित] वर्णना (न बुळ्या न [बृ] स्मान धान्द्रासन, स्थना (पूम २२ ११७ कस)। इ.४८) । (धर्में सं २१ दी। ११ २)।

बुप्रस्ति वि चिद्यमानी पानी के देव से कीचा वाता बहु माता (पत्रम १ २ २४) विदि निरम्परहोत्तेषु बुरम्द्रा' (दे बर्) । देखी 48 - 48. t मुप्तमान देवो पुराया (वर्षते १ २१) । तुम्ममाण रेको पुरर्मत (परन ८३ ४) । मुम्प (मर) देवो यद्य = वत् । दृबद (दे ४ २६२ दुषा) । संद्र जुद्धारिय, जुद्धीरियणु ( Y 127) I बुद्ध यक [स्युन् +स्था] छना बड़ा होना । बृहुए (वि ११७) । बुद्ध वि [बुष्ट] १ वरहा हुमा (हे १ १३७३ विया २, १---पत्र १ ुमा १ व₹)। २ व बृष्टि (यम = ६)। बुद्धि देशो विद्धि = वृष्टि(है १ १३४ हुमा)। काय र् िकायी अध्यक्त कल-क्यूड (अय १४ २--वन ६३४ वया)। बुद्रिय वि [ब्युल्बिश] यो छड कर बड़ा इसाहो वह (प्रवि)। बुद्ध देखो पुद्ध = पृष्ट चंपद कर्मवनिवृद्धों (क्बम ६३ २२) र पुरुद पक [ कुम ] बदाय (हरिंद १४)। मुटर्टीस (मन १, )। मुब्ह पत्र [पर्धय ] बद्दमाः। वह पुद्धंत (# ₹¥) : मुद्द वि प्रिद्धी १ वरा धनस्यातानाः क्का(कोपानुर ३ १ भानुसाद२७। बम्बस (६ । प्रान्तु (६६) सङ्) । २ नहा मदान् (दुना) । ३ वृद्धि प्राप्त १ ४ धनुवरी, बुदन बिहुछ । ३ वहित बानसार (हेर रेश्र २ ४ ६) । ६ लियुट शक्त, निवशर (डा ) । ७ ई वहत्त्व **शं**मानी (लामा १ ११---पथ १६३: मलु १४)। एक पैत्र पुनिकाशात्र (क्या)। च चय व [स] दुरात, वयस्या (दुरा ६६ : २४२) । बाइ दू [कादिस] एक समर्थ पैताचार्य को नुप्रसिद्ध गरि विश्वतंत्र रिशावर के युव ये (बामल १४ )। वाय 🕻 ['बाद] स्विक्के स्टाब्त वर्म्पत (ग २ ०) । साक्षा बुं िध्यय हो बक्क (कामा १ ११—वत्र ११३ थीत)। । पुना वि [शुना] 📭 का व्यक्तानो (वी 11) 1

बुद्दह वि [दे] विनष्ट (एव)। बुविह 🛍 बिद्धि १ वहान भवना (बापा) भग, स्थाः कुमार संस्थे । २ सम्पुरम्, स्थारि । ३ समृद्धि संपत्ति । ४ व्याकर**्**शस्ट ऐकार धारि वर्शे की एक धीवा (सूधा १ का हे १ १३१) । प्रयप्रका ५ क्सान्दर, सुर । ७ ग्रोवीय-विशेष । व व क्यास्थिति (हे १ १११) । बद्र वि िंकर] वृद्धि-कर्ता (तुर १ १२२३ ह २४)। भग्मय वि विशेषः वदनेनामा वर्षन-र्थाय (बाचा)। स वि सित् विश्वकाता (विचार ४१७)। बुवाय न [दे] बुनना (सम्मत्त १७३) । बुक्यि नि [दे] दुवा ह्याः 'ध-दुविया बद्रा (ऋत २२६)। बुष्य कि हि । ३ केत बस्त (१ ७ १४ विवा ११--- वश २४) । २ स्रीयन (१७ बुख नि [बक्त] वस्ति (स्वा सनु ३। बद्धा) । बुक्त वि [ब्रम्] बोबा हुमा (ब्रव)। बुक्त न [पूक्त] सन्द, कविता, वश्च (विष)। देखो पह = बूता। **बुच देवो पुच** (श्वो २**३**) । बुर्चत दू [पूर्चाम्त] तबर, स्थाबार, ह्यीक्ट बात (लग्न १३६) बाब है १ १३१) छ युचि देवो शिच कर्तृत 'वायानायाकुतिएएं' (बुगर,१६ । बाइ )। बुस्य वि (प्रतिवि) वक्त ह्वा च्या ह्या (पाया ग्रामा १ क--- १४ वर उर वस ४वे उप इ १२७: मुख ए, १७ के ११ 1 42 5co) 1 नुष् देशो सुभ = बृत (पाछ )। नुवास ﴿ [ब्युशस] नियम (विते १४७१)ः पुर्वि देशो सइ ≠ इति (प्राक्क व)। मुद्ध देशो युद्ध = बुद्ध (वर् ) । नुद्धि देवो मुहिद्ध (बा १०---पत्र १९४) सम [का वीचि ४] । युक्त देवी नुष्य (बुर ६ १२४ बुध २६ ; र्धाव १ । मारि द्वा हे ४ ४२१)।

वुर्धत वि [बप्यमान] बीम बाह्य 'पेन्बर य मंदलक्षपद्धि विभागं स्वीरतकेष्टि कुमेर्च (धारक देश कि इंडेक) १ बुष्याय वि [ स्युत् + पार्य ] गुरुष कला होकियार कला। वह मुप्पाएमाण (जाया १ १२--पत्र १७४३ मीप) । जुष्फ व वि | शेक्ट विध-रिक्त (है » बुक्स केहो कह≃ वहू। धुष्मभाष देखो शुरुम्भगात्र (क्रुप २२१) । "बुर देवी पुर (पन्ह १६) । ैबुरिस देवी पुरिस चपुरून (बन्न ६६, बुद्धाइ दें हिं] शक्ष भी एक प्रतम कार्यि (बम्मत ११६)। ब्सद्ध देवो वसम (बाद ४) वा ४६ 🗷 २ 🗸 नार--गुन्द १ }। बुस्ति की [कृषि] कृति का बाइना साई। राइक वि [राजिन्] संस्थी क्लिन्डिय-ध्यानी बाद्ध (निष्दु १६)। देखी बुधि, बुसी। बुसि वि [वृथिन्] धंनिन बाध धंयमी धुकि 'पुरित बंदिग्यो भरित्यो' (विषु १६)। बुस्सिम वि [वहरा] वर्ष में मानेनावा धर्मन होनेनाता 'निस्पारियं दुप्तिमं मानगरता' (विषु १६)। युक्ती और [यूर्वी] बुलि शाधासनः। सर्वि [ सन् ] बेंबमी माष्ट्र, श्रुनिः 'एड बर्स्स बुतीयद्यों (तृष १ ८ ११) १ ११ १३३ १ १२, ४० वस ४ (८) मूच ४, १ )। वैधो बुसि । युस्याम केवी विभासात- शविवसाई पुष्पाइगीय समास पुष्प पुरसार्ग (३१ १४३। संबोध ११: १२)। बुड देवो धुक्ड-इड (तुना ११ ३ १२ ) । युद्ध वि [ क्युड ] १ भारत किया इक्स 'सीमारिमहेल व इसे ठेलांग लिखेर रोनंधा (त १४२ क्छ २ ) विचार १२६ र्लंदि १९) । २ केया हुमा कुलिको क्षेत्र

मधी विवयस्थात हरित की कोडू (प्रति

क्षित्र हरूरे) । ६ वहा हुम, वेव में जिला

स्या (तत्त १२२) । ४ वर्गकतः ६४ (वे ६ १ ) । १ ति एक निस्सा हुयाः 'कम्बूहमहरहासो दुवानतंसे महगर्दे हुवा । वे सस्दर्शकविरित्यों सम्बे वंशमि मानेस्य' (काइस ४) ।

मूणाक पुन [क्] बातक बण्या (राज) । भूम वि [क्] बुना हुमा व्यं न रायद्वा क्ये नम किराय नेय यहियमन्तर्हि (सुपा ९४९)। केबो सुख क (है)।

बृह् पुत्र [ट्यूबर] १ मुद्ध के लिए की बार्ध्य हैंग्य की एकस-विशेष (प्राष्ट्र १ ३ —पन प्रश्न स्रोप स ६ ३ कुमा)। २ समूह (स्त्र १ ह कुम १३)। के देखों समुच्य के (प्राष्ट्र व पन्त)।

वे सक [सि+इ] नष्ट होना। वह (विसे १७६४)। दे ) सक [क्यें] संवरण करणा। वेद,

वस े वेसस्, वेसप् ( पर् ) । वंश सक विदय दे र स्तृत्व करणा प्रोक्सा । र वारुमा । वेसद् वेद्र, वेद्रीत (स्त्रक्सो श्रे प्रमा) वक्त वेद्राद, वेद्रमाण वेद्रास्य (सन्त्रक्सो श्रे प्रथम घर धर पुता १२६ स्त्रामा १६६०) । क्ष्यक् वेरुक्साय (सग प्रमा १६६०) । क्ष्यक् वेरुक्साय (सग प्रमा १६६०) । क्ष्यक् वेरुक्साय (सग प्रमा १६६०) । क्ष्यक् वेरुक्सा वेद्रस्वत (स्त्र २ रू-णव १७ प्रमा १४ पूर्व ६, १ पूर्व ११४ प्रमा १४ प्रमा १४ पूर्व ६, १ पूर्व ११४ प्रमा १४४ प्रमा १४ पूर्व ६, १ पूर्व ११४ प्रमा १४४

चेपद (छदि ४२ दी) । वह वेशेद (का ७– पन वेनदे) । चेशे सक [संप्]कॉपना । वह वेशोसास

षेअ सक [संपू] करियाः। आहः वेआसाण (पा ११२ स)।

पेस ( विषा १ राज-विरोध आपनेत सावि पोत्र (विषा १ र टी—पत्र ६ १ पाछ स्त्र) १ कर्म-विरोध मेहिनोय कम का पुरु मेह, क्लिके क्या से मेहून की क्या होती है (क्या १ २२) कन हु ११६१) १ सावायस सावि वैक स्त्र (सावा १ १ १ २)। ४ नाम, जानकार (सर्ग)। सुवि

[ बस्] वेशों का वातकार (पापा रे कृर २)। बि, "वित्र वि ["विद्] चयो अभै (पि ४१क मा २०)। युष्य व ["डम्फ्ड] वध्य-विशेष (याचा २ १४ क्ष्म)। सन्त न [स्तरे] देशों युष्य (पाचा २ १४, ४)।

वेश्र म [येषा] कर्म-विशेष मुख समा दु ख का कारस मृत्र कर्म (कम्म १ वे) ।

का कारण प्राक्त (कार्य रही । विश्व प्रिया प्रीक्त विश्व (पाय से १८ ४६ दूसा महार प्रकार १६ १६)। २ प्रवाह । १ रेक्ट् । ४ भूव बादि मिस्सर्यक्त सन्त्र । १ संस्थार किरोग (पाक ४१)। वेको

क्षेत्रंत पु चित्रान्त । सर्गम-विदेश कानियह ना निवाद करनेनावा सर्गम (सण्डु १) । वेज्ञा वि चित्रक है १ योगनेनावा बनुस्क करणेनावा (सम्मरन्ते १२ वीनोय १६ सावक १ १) १ त सम्मरन्त ना एक तेव (क्षमा १ ११) १ वि स्वास्त्य-विनेश नामा वीम (क्षमा ४ १६ २२) । विद्या वि [हिंसानेयक विरास पुसर-विद्या विविध कारा मार्ग हो नहु (सुध २ १६) ।

वेअच्छा न [वेक्छा] र उत्तराधंन, कारी में समीपनीत की तरण पहना बाता कहा, मका पादि। र नम्ब-क्रिय मुक्ट-ब्दन । १ कन्ने के नीचे मन्मना (लासा १ ८— पन १३१)।

वेश्वद्य एक [सम्प्] नदमा । वैधवद् (हः ४ वरु पद्) ।

केळकिञ वि [छाचित] बड़ा हुमा बड़ाऊ (कुमा पाम भवि) ।

वेअडिअ वि [वे] प्रस्तुत्त, फिर से वोगा हुया (दे ७ ७७) । अंअडिअ पूँ [वे] वीकटिक] योगी वेबनेवाला

रिक्षी चौहरी (बप्पू)। नेजाहि केको विश्वहि (बीप्)।

वंश्रद्ध प [व] धन्तावश्रः निमानां (वे ७ ६६)।

वेशव्ह पुंचिताका] पर्वत-विशेष (शुर ६ १० मुख १२१८ महा चरित्र)। बेअब्दान [वेदग्ग्य] निरावता निष-असता (मुगा ६२१) ।

वेक्षणा [वेतन] यबूधे का मृश्य वनशाह (पाक्र विषा १ १—पत्र ४२ छा पू १६०)।

येअलान [येदन] मनुसन भीप (पाणाः कम्भ २ १३)।

संज्ञजा देवो विभागा (स्था ६१ १८६ मानु१४८१११ १७४)। नेअजिल्ला के विद्यानिया १ तीमने यागा।

चकाणस्त्र । च [बदनाय] १ शसन यापा। वैक्षित्र प्रेट्ट च कमें विशेष सुक्-हुव्ह साहिका कारस-मृत कमें (प्राक्टार ४ कम्प कमा १ १२)।

वेक्सय केको वेक्सग (विशे १२०)। वंक्सरणी की [वैदरणी] १ नरक्-मधे (कुल ४६२: वर्ष)। २ परमामासिक देवों की एक वाति को वैदारणी की विकृषेणा रूटक

एक बाति भो वैदारशि की विक्रुपैया करके सर्वर्में नरक-कीर्यों को बस्तवा है (धम २१)। वे विद्या-विरोध (धावम)। वेजाइ वैज्ञों संबुद्ध = विचक्तिस भीमस्तपुरन

नियरण्यकेता इसंदल सिन्हरिक' (मंगीव २)। वैअद्ध वि [व] १ मृहु, कोमस (१७

चअछ व्य [व] १ मृद्धु कोमस (१७ ७३)। २ त सदामध्ये (१७ ७३ पान)। वेसक न [दैफल्प] निकसता व्यादुसता (वस्त)।

वंशस्य वेकी वंश = नेरन्।

दक्षम पूँ [बेतस] वृष्ट-विशेष बेंत वा पह (हु १ २ ७ वहां या ६४१)। बंजानरण वि [बियानरण] चाकरत-संबंधी बंधेर निराकरण से सम्बन्ध रखनेताला

(वेचमा)। वेआर यह [धू] ध्यना प्रकारण करना। वेयास (प्रवि)। कर्में वेयारिकवि(यार र)। वेक्क प्रकारित्रे (या २वर्ष वन्नवा ११८)।

क्ष प्रकारित (या २व६ वनमा ११४)। विवारित वि [वेदारित ] विदारित सम्मनी विदारित से जरान (ठा २, १— पव ४)। वैभार्राणम् वि दि । प्रदारतः सम्बन्धः ठले । से ब्रह्म (स्त्र २ १---पद ४ )। मेआरपिय नि विचारपिक निचार-संबदी (छ २. १--पत्र ४)। वैभारिकावि विी १ प्रताप्ति ठमा हमा (रे ७ इ.स. पठम १४ ४६। मुपा १६२)। २ पुकेश, बाल (दे ७ १३)। बेशाल 🖠 [शेवाङ] १ मूक-फिरोप विक्रव रिशान मेर (परंड १ ३---पत्र ४६) वर्ड मझः पिन)। २ झन्द मिरोन (सिन)। में आरक्ष विदेशियामाः २ ४ प्रेमकार (देश १६)। नेबाक्य नि [निदारक] निवादश-कर्श (मद्यवि ३६)। बंधालय न विदारण करना पीछा (सुग्रमि ३६)। संसाधि व विवाधिम न बन्धे स्वधि-पालक (इप ७१ दी)। वैभाविक देशों बहुआक्रिम (पास है है ११२) नेहम ७४६)। बैआजिय हि बिक्रिय दिश्या है करान (तम १ ६, २ १७)। বিমাভিত নি [মীকাভিড] বিকাশ-রালাটা भपग्र में बना हवा (दवनि १६) १%) । वंश्वाक्षिय व [विशास्त्र] विवारश-किया (नव्यनि ६६)। बंभाडिय देवो पद्भार्जेअ (नुवनि ६ )। बंधा छपा 🛍 [बैठासियी] शहा-विशेष (बीव १)। प्रभावी हो [बैदामी] १ विद्या-निशेष शिवाह प्रमाप से समान बद्धा की तक सहा शोक्षा है—मैतन भी वयह क्रिया करता है <sup>1</sup> (नुय २ २, २३) २ वक्ये-मिरेव (सामा १ ।६—वश्व २१ )। बद्ध की बिदि] परिष्ट्रत भूभि-क्रिकेच श्रीतय (रकाः स्टा) । बंद्र विदिन् दे पाननेताना (वेहम ११६ बका)। २ धनुभर करनेवाता (र्थव ४ t (133 बाभ (र विदिश्ती १ धनुभूत (क्य) । १ । 1) ı

संब्रम केवो विविध = वेपित (गा १६२ घ)। पेत्रक वि विकित्ती १ नेवाचित नेव-शंदनी (ठा १ १-- पत्र १९१)। २ वेदो सा पालकार (बसनि ४ ११)। क्षेत्रम दि चितिस्त वैश्वामाका क्षेत्रमुख (सामा १ १ — यण २६)। बंडम दि क्यंजित | १ कम्पित कॉपा हुमा (यव १ १ दी---पत्र १८)। ए कॅपामा हवा (सम्ब ७४)। भंग्रज्ञा की हिं। प्रशिक्षाची पानी डीनेवाली की (दें क करें)। वंद्रजा की विदिका । परिश्रास पूर्वि विशेष चौतरा (ध्या स्था नहा)। २ क्षेत्रसि-सार, बोपकी (देक ७६ टी)। दे वर्जकीय प्रतिवेक्तन का एक नेश, प्रत्यवेदाणा का एक दोष (उन्ह २६ २६ सुका २६ २६ बोच्या १६६)। भेइतायक [वि⊹ एङ् ]क्रीनय । रङ्ग-वेश्वसमाण (वय १ १ थै-पन १व)। वेद्रक्षमाण देनो वस = व्यव । वेद्रद्रविद्धी १ क्रीवा किया ह्रमा। २ विसंस्कृत । ३ शाक्षित । ४ रिशेक्ट (दे थ वेडल देशो विश्वद्रक्ष (हे १ १६६) २,६० कुमा)। भरंठ वेदो बड्डेंड (बरव) । वेचकियाची विशेषक पुन किर-किर (क्या) । वंदरम देशो विषयः = वि + इ. पूर्व । संह-चे डक्किक्कण (शुपा ४२)। वेत्रका विकियी १ विष्ठ, विकास्त्राच (बिसे १५७६ टी) । २ वेको वित्रव्य 🗢 वैक्रिय (काम १ १६)। सःद्वारी िध्यविश्र] शर्रित विशेष, विकास सरीर क्लाम करने ना सामर्थ्य (वजन ७ ११)। अवस्थि देशो विद्यप्ति (पराप्त २, १---पन **१.६, फ**म्प भीप' सोषमा १७) । वेत्रचित्राञ्च देशोः वित्रच्यिञ्च = विश्वतः, विश्व-निक लेडन्सियं यमुद्दनशर्खं प्रश्चित्रहर्ण चारेख" (स. ७६२: नुपा ४७) । बात नाना हुमा (१४ ४ १ पत्रम ६६ : संबक्षिमान हि सिक्रिय वृद्धिपत्र, वेक्टिय रे शरीर-विशेष अनेक स्वक्षों और जिलाओं

को करते में समर्वे शरीर (सम १४१) मन र्व व)। २ वैक्रिय राधैर बचाने की श्रिप्ताचा (सम १ ३ पव—शावा ३) ; ३ विक्रवैसा से बनावा इद्याः 'विष्यिपिरसमीववर्ष एपं नेत्रशियं च मह भवशे (तुपा १७०) । ४ वैक्रिय शरीरमचा (विशे १७१)। १ वैक्रिय शरीर से बंबन्य स्वावेकाता (भव) । ६ विजु-विद्या(श्रव १ व. १ -- पत्र ७४६)। "स्त्रिका वि विश्वविद्यक्ती वैक्तिय छारेर जलम करने नी राजिनामा (भव)। समग्राम प् िसमुद्राच**े वैक्ति शरीर कराने के किए** धारच-प्रदेशों को बाहर निकासना (धीत) । बेडक्बिया की दिने पुन-पुक: फिर-फिर (**क**प्प) । वेंकड १ विकटी समित देत वें स्वित एक पर्वत (प्रमु १)। आह् पुं िनाम निष्यु की बॅक्टाकि पर स्वित वृद्धि (धन्न, १)। वेंगी औ दि । इतिवासी, शास्त्रामी दि । 88) I वेंक्य की बंजन (प्राप्त ६१) : वेंट केवी विंद = इस्त (मा १४६, हे १ १६८३ ६ ६१ हमा बाह्र ४)। चेंद्रक देवी विद्रक (धीव ४९४)। बेंदली केंद्र बिटक्सिकार 'तमो केल तस्त (कपिटो) पुरको बँटलीकाञ्च परिवार-पुत्तरीय (मका)। वेंडिआ क्यों विटिया (मीव २ ६ छोवना क्का कर १४९ दी। बन १)। बैंड पू विवण्डी हानी इस्ती (शक् १)। केवो पंचड । वेंडसुय 🖏 [वे] नचुव मविच (वे ७ ४४)। बॅंडि ई वि] पहु (वे ७ ७४)। विकिश कि [क] केहित सफेटा हमा (दे अ **कदा सदरो** । विभक्त देवो विभक्त (पराष्ट्र १ ६—वश् ४% पत्रम १, ११२)। वेक्स्स रेको वज्रव्याः वक्स्यवराधेमा (क्रमा)। वेस्थ्यक्षाः केलो सर्गाव्यक्षाः (योषम े ६२वा ग्रीम ६७७) । बंकर्का विकितिकान [च्] रोमन चये हुई धीन को फिर से जवाना (दे ७ वर)।

येक्ट्रं पृष्टिकुफ्ट] १ विष्णु नारासणः । १ इ.स. देशपीरा । १ सदक पत्नी । ४ सर्वेक बूब एटेस करेरी का बाधा । ४ सोक्निकेशेय विष्णु का बास (है १ ११९) । ९ पूर्व अनुस्य का एक विष्णुक शीर्स (शि ७)। वेग देशों वेखा चेला (चला कथा हुसा)।

रा क्षेत्रो चेळा च वेष (उत्तर कथ्य कृमा)। तक् की [बती] एक नदीका नाग (धी ११)। संत कि [बन्] वेगवामा (भूर २,१६७)।

बार्च्य क्यों बेमच्य (क्या)। धराच्या की [बेस्स्टिय छा] क्या बेराक्टी के पर पहरा करा वस, क्यापंत (स्व ६२)' क्यांत्रयों बेगॉक्स साराज्यसम्बद्धान (संग्रेस ६)।

केगाड कीन [क] पोठ-कियेन एक ठाव का बहाब "पक्कड़ी केवागर्र" (ग्रिटि ३-२)। केगार पुंचि होता साँच धावि स निविध सीनी प्राप्ति (उट ४, १)।

केगुल रेको वहराज्य (वर्गर्थ ८०४° मुगा २१ )।

देसा देखा दिश्रमा (श्रष्ट १ )। इसा देखा देगा (गर्व)।

बेसा का का (भार)। बेसाड वि वि बूर-क्वी इबक्की में अवर्ड

(हु४ ६७)। बेचिच केबी बहुचिच (ग्राट ६ ग्रह

४९)। देख देखो विक≃ वि÷ श्रम्। वेकाः (हे ४ ४९६)।

मेच्या देवी विश्व ≈विर् ।

बच्छा देशो संगण्डिया। सुष्ठ व [ सूत्र] दर्मात में तरह पहती मती श्रीमती (मध ६, ६३ टी—४४७) एवं)।

वेकसंस क्षेत्र विवयन्त्र] र एक ध्यूतर केष विभाव (का १६) बीरा ध्यूत) २ ७ व्यू तीरा कराउ ध्यूत्र, पातशी बरण करतीय ध्यूत्र पुरूरण तीरा वाच्य पुरूरोध ध्यूत्र का १ २—तम ११ द्वार २-पम २३६ बीरा १ २—तम १२०६ १२६। ११६। १८०)। ८१९ वृं ब्यूत्रीय सरण बद्ध्य धार के व्यवस्था सार्थ के धार्मकृत्य हैत

४ २---पत्र २२१, वीत १ २--पर २६ ठा४ २---पत्र २२६ वीत २ ---पत्र २२७, ६२१ ६२१ १४७)। ४ एफ प्रमुक्त रेतिशाम का निवाडी के (ध्य ४१)। १४ प्रंकु-स्वार के उत्तर क्षक पर्यंत का एक शिक्षण विवस्स स वि(१ व) वसी (ठा ८---पत्र ४१६)। १६ वि प्रवास बोह (ब्रुस्स १६२)।

वेबर्यंती की विजयन्ती र व्यक्त पताका (तम १३० सूच १ ६ १ पुर १ ७ कूमा)। २ वह वसदेव की गलाका नाम (सम ११२)। १ प्रेमारक वादि महाधारी की एक-एक बायगद्विकी का नाम (ठा ४ १---यह २ ४) । ४ पूर्व १५क पर एक्नेमाची एक विषक्तवारी देनी (ठा «--पण ४१६)। १ विकय-विशेष भी राजवाणी (का २ व-पत । ६ एक विद्यासर-नयरी (गुर % २०४) । ७ यमधनानी की एक समा (पदम = ३)। ⊂ मनदान् पद⊠मंकी दीखा शिविका (सम १३१) । १ जन्म ग्रंबन्तिर विश्वस्य विकास स्थित एक पुरवारियों (का ४ २---वण २३)। १० वज्र की यादनी रामि का बामः विकास स विकासता (? वेजर्यती (मृज १ १४) । ११ यसनातः कुम्ब्रुगांव की रोसा-रिप्रीवका (विचार १२६)। वेका विविधा योगने योगम धनुसद अस्ते योग्य (संबोध ३३) ।

भेज इंचिया १ पिषिन्तक हुकीय (या २९७ ज्यो। २ मुज-निरोता १ वि परिस्थ विद्यात (हे १ १४८० २ २४)। स्टब्स न ["शास्त्र] पिविष्या-शाक (व १७)।

वेक्षम १ म [यदाक] १ चिकिरसा-शास (बीव वक्कय ) ६२२ थी स ७११) १ दे विद संबन्धी क्रिया वैद्यन्तर्म (संस्थु २३४-द्वय १८९) ।

देश्मांत [बेध्य] बीक्ने योग्य (नार—साम्रिध्य ११८)।

बहुण वेचो बढार (बाट—सक्षयी ११६)। बेहुणत पूँ [बेहनक] १ किर वर वांधी जाती एक वर्ष की पंची। २ कात का एक संजुक्त (राज)।

बेहुया देखो बिहुत (पूर १६ १७४)। बेहि देखो बिहि 'रापनेहिन समेर्या' (उत्तर २७ १३। शहर ४)।

वेहिय (री) देशों देखिया (नाट—मूच्या १२)। नेना निर्मा केनो तेला (१.१.१४, १४॥)।

थेड [ब्] देवो वेड (वे ६ ६२ हुमा)। थेडव्स (ह्वें] वार्रिशनक व्यापाये (दे ७ ७०)। बेडवग देवो विडेवगा 'शह वेडवर्गस्वरे'

(संबाद १२) : वडस पूं [बेटस] इथ-विरोप बेंच का गास (पारत सम ११२ कम्म)।

वंडिश हुं [वे] महित्यद, बौद्रेर (दे ब ७७)। वंडिडिश्व वि [वे] संबद सकराः कमबौदाः

संबुक्त } कि [दे] हुनाहि हुक में बराध संबुक्ता रे (ब्रावण गरि ति गा धर्म साम वीविका सा∗राम प्र, र)। संबुद्धा } देखों संरक्षिण (हे र. १३६) सेवाहिका रे प्रसासक सम्बद्धा र १९०

चेबुरिक रिया गर—मुख्य १३६)। चंडस्स वि [दे] चवित स्पतिमानी (दे ७ ४१)।

बद्ध क्यो संद = वस्ट्। वेद्द्द (प्राप्त)। बद्ध्य पुं[ब्ह्यु क्रम्य विदेश (प्राप्त १)। वेद्य सक्द [बद्ध] वर्षक्ताः। वेद्यु वदेद

(हे ४ ९२१) बेबा)। कर्म वेडिन्स्ट (हे ४ २२१) १ थड़- चर्डल चेट्रमाण (पट्य ४० २१ छाता १ १)। क्यार मंडिका माण (नुसा १४)। एंड मंडिका यह का वेडिड चहुड (१९ ४ भाग)। प्रमो वेडावेड (१९ ४)।

वें हैं [बर्स] १ स्वन्दियोग (सन १ ६) सालु २०६: एवि २ १) । २ ६२० कपटन (बा १६ २२१ के ६ ६३) । ३ एक सरमु-विकास साम्य-समूह वर्णन-स्त्य (राज्य १ १६—यम २१६: १ १०—यम २८

धनु) । येड देखो पीड (यउद) । सञ्चन["न] लोऱ्य (वे१६

भा १२ १र हा १६३: पर्ध ४६०)।

र्स्डिय 📳 🖫 🖺 लग्ब हमा (उर याप बुर २ २३ )। भ न्य रि (पाइय) १ *ब्लान* बना हुसा 14 1 1- 111 OM 1 11-बच १३ योत्)। २ द्रेश्च याय-विश्वा (पण्ड २ ४-- स्य १४०: राज)। थन द्रंदि निध का शिक का (दें ७ ¦ wets बात या) देवायामा = क्वन(हु ४ वेनके)। धनाप्तन [धार इ] १ विश्व नम्रत 55 5 5 FR 544 FT-F 5 12) मिट्ट ६ द्वा । ३ निष्यापनीका संबे देशों धीर वर्षों का गरम मानना (श्रंबाच ६२) १ रि रिनय-देश्यो (यह १ ६ घर। तिव को हो बचान गान्सवाता रिश्वन्याचा (तुम १ ६ २०) । बाह दे [ बार्] ब्लिड का हो मुक्त मानवताना प्रदेश (प्रमेश्री १११)। थन ता । ६० [पनविध] स्वित वे बात चन्द्रा रेहानो से दुर्जि (जा**त** ३० ratt-mitti दब्दापा का क्रिकारणी शिक्तिकोण (तत 71-711) दमा अ (६ मा) मार्च स्पूत्रका की एड L 3 (441 1(8) य च क्षे [यम ] १ एक प्रकार हे बक्ष रचना rietgagt var n रित्यं को विषय और बहुबादा संबद स्थापन क्षणात्र[विध्यात्र] estrat \$3 भीवत्र कृत्री स्वयंत्र व क्ष्यव्य (१० च्याच्य[चर] को पश्चित कर पर

411 11

े कराश पूरा

PT-F F 11; \$ 14 II. Cy

\*(

· क) । दिव वृं [देव] १ मुतर्जंदुमार नामक देश नाति का राजिए विशा का धन (स २ १-- वर्ष वर) । २ देर-विधेय (द्वार १-- पत्र १७३ घर)। १ वस पर्धी (मुख १ ६ २१) । याणुजाय पू [ रानुजान] धरितकाल-मित्र दन योगों व रिकाय बोब, जियमें बाज मूर्व मीर बजाब वेशाहार स धपरवान करते 🕻 (मूळ १२---पव २३३)। यतुमास १ **१ [४]** धवर थीय (**१** ७ बर्णुमात्र । उद्देश )। यच्य वि 👣 याहम्स (वर् ) । थण्याध्ये विद्या विदेशिक्षा सह व [ नट] वयर-रिस्टर (वडव ४०, ६३; बद्दर) । ६०इ रेखा चित्र (श्रीय ३१ माइ १)। वनानी की हिंदे र तह, हिमारा 'कर्ज नावा पुरश्चा है व कि स्व देश के बहु है के बहु है के (१एए १६-- १व ४६ )। र क्वी (बार न पत्र १११)। दश न [वि] राष्ट्र रझ (रे ४ ७६)। 4 स र् वियो कार्निये, वेंत वा क्य (930 1-99 81 fent ? 1-98 ६६)। ।तथ व [सन्हेरेंव वास्त ह्या वायन (१३म ६१ १४)। रशस्य हि [५शस्य] जानने बोर्ग्य (बार) । र्याचन र् [वांत्रह] हारण र पायचे (इस ७१) ध्य देशो । अ = शत् देशे देशी देशत का नुष हैं 122 --t ) 4 m (454 fel) 1 yer बर्रेन् (बार्क्ड प्रमात्त प्रदेश बहि नहीं। (धा<sup>३</sup> ४ ४) ४ ४ ५१ मधान (ध to-TV ( ) भाषाया सः न्यार-नार वर्धन १६३३ 47{ 1} रत्य व वस्तुत ८ इरेका न रेड बर्नड १३) रहा देशा नगर रहे 2-TE रत ि च व व १११। r131 ध्व १३ व [प्रवत्थाः] १ वर्षायः भ्राप्त व्यापर महिल्लाहर दर ित कार्य कर अन्य क्षेत्रक crita

वेदरभी को [वैन्की] प्रयुक्त हुमार की एक धी ना नाम (मंत १४)। बेदस (शी) देश पश्चिस (प्राप्त = १ नाउ -राक् १४) १ येदि देशो बद्द = बेरि (एउम ११ ७६)। र्शादम वे । बादक) एक एम्प मनुष्य-जाति, 'बेब्ट्रा य कर्मद्य य वेदेश वेदिगाविका (१ इया ) । इंकिंग पुतुष्ता चेत्र दर्भज्ञ इत्यग्रन्थो।। (# 1-44 1Xc) I थाक्य देखो चेइज = बेरित (मन) : वेदिन व [ बहिशा ] विशिध को तरफ स नकर (क्ल् १४६)। बेर्डाक्य देवो पर्शतम (बंह) । पर्या थी [र] नवा शत्य (१७ ६१)। बेरेमिय रेवा पार्शासन (धन)। प१६ ई [प१६] एक रम्य मनुष्य-जाति (स ६-नव ११ )। देनी वृहस्य । बर्दोह र्र [बिरहिम] विद्यु देव का सम (बस १ ६२)। थधम्म रेगो पद्धम्म (पर्मर्थ १६४)। बचम्प देवो सहस्य (बोह ११) । वेद्या रेको ६०गा (उर ६ १११) । बच्च हि [रि] पूर्व पादि ने ग्रीव प्रस्त (80 06)1 पण्डाव[र] रे क्रियत वस्तार हि मूब-हीत मूब्रीवट(६० ७६)। पदा व दिए 1] निष्मता (रिक्टरी) वर्षेत्रे २३: यान्य १३३) । दश्मक वि [(१६ पन] स्वह व (प्राप्त)। ध्यमार । १ [यमार] परविष्टेत संकारी बबार है हम ११ वर एक बराब (जान 1 -11 (1 (4 ( 1) ) ८न पांचनर। स्वर्(शहधा)। थ्म १ [५मन] कृष्य कार्कशकता ([14 46 ); क्मइनांव[भान] प्रता दुख (दुना ६

Ett Bit &

(- 14 t) t

र देश (प्रा

वेममद्(हे 🗸 १०६) पर्)। माउथ ) वि विमात्को विमाता की भाउम । सेवान (सम्मच १७१ मोह 56) l माणि पुंद्री [मिमानिन्] विमान-वासी देवता एक उत्तम देव-माति (वे २) । की "णिणी (पर्**छ १७--पण १**ा पंचा रु १≈)। (साणिअ पुर्विसानिक] एक उत्तम देव पावि निमानवासी देनवा (भग भौप पराह

सय सक [सब्स्यू] घाँमना, कोइना।

१ ५-- पत्र हक्। बी २४) ः दमाया 🛍 [बिमाया] धनियद परिमाण (भव११दी)। वेक्सि कि [बस्सि] मैं बद्दा है (बंद) । बेबंड दु [देवण्ड] इस्ती इस्मी (स ६३ ७१४)। देवा वेंड 1

श्रुयायम् १ न (वैषायुक्य वैयायस्म) देवाब्रहिय है स्वार्ट सुमया (उद करा छाना १ ४३ थीला बीपया १२१ घाषा सामा १ १--पत्र ७३३ वर्गसे ११३८ मु १६) ३ बेर न [बैर] दुरमगढ़ै यहुवा (वे १ १६२) यंत १२ प्रमु १२३)। केर न [द्वार] क्यांबा (क्यू ) ।

बेरमान (वैदान्य) विधनता प्रदासीला (क्य' स्वया ६ : सुरी १७३) शासू ११९) । घेर्रागाञ्ज वि [पैराग्यिक] वैदाग्य-इक विश्वमी (जबा स १६६)।

बेरकान [वैराम्य] १ वैरिन्सम्य, विस्त राक्स (मुखा २ १ सः कस) : २ आहा पर राजा विद्यमान न हो वह राज्य : ३ लहां पर प्रवान साथि रागा है किरफ रहते हों बक्क राज्य (कसा बक्क १)। बेरचिय वि [बेराजिक] राजि के तुलीय वहर कासमय (ज्वा २६, २ । सोव ६६२)।

बेरमण न [विरशण] नियम निवृत्ति (सम् १ ३ घप उना)। बेसब दूर्मिसटी भारतीय केश-विशेष अस्र वर तया इसके वार्धे और शा प्रवेश (प्रवि)। बैसम (धार) पू [विस्ता] वैसम्ब, स्वासीनवा (मिक्) ।

) केवो सहिर्दे (शतका पुना पि वेरिका | ६१)। वरिका वि 🔃 १ ध्रमहाय, एकाकी । २ स. सहायदा समय (के ७ ७६)।

बेरुक्तिल पुन विश्वार्थ | १ एल की एक पाति 'सुचिर पि बच्चमाएं। वेटनियो कापनएीय जम्मीको (प्राप्तु १२ पान) विकलिये (हे २ १६६ कुथा)। २ जिमानाबाह-विशेष (क्षेत्रा १६२) । १ शक धावि इन्हों का एक धामाध्य विमान (देवल २६६)। ४ महा द्वियरंत पर्वत का एक विकार (हा २, ३---पण कः ह्या ल—पणा ४३६)। **५ रथक** पर्वत का एक धिकर (ठा ८---पत्र ४६६) । ६ वि. वैद्वर्य एलवासा (जीव ३ ४: राय)। सिय कि विया देहाँ एकों का का हुया (पि**७**)। बेरीयण केलो बाइरोक्षण ≈ विरोचन (साया

२ १---पत्र २४७)। बेछ व वि । इन्छ-मांच शत के मूल का नांस (देश প্রস)। वेसंघर पुं [बेस्न्घर] एक वेब-वारिः नान

राज-तिरोप (सम ११) । २ पर्वत-विरोप । ६ म. नपर-विकेष (प्रसम् १४ १९)। बेकंघर दू [बैक्टम्बर] बेबलर-संबन्ध (पतन 12 (w) 1

देखेंत्र पूं विश्वनयी १ बागूकुमार शामक देवीं 🗣 व्यक्तिस्था का ब्ला (ठा २०१०--पन ८३ इक)। २ पाताच-४ कराका द्विष्टाता फेन-फिरोप (ठा ४ १---पण १६० ४ २---पत्र २२६)। मेळ्य प्रक्रिय क्रिक्टिया रिकट्यना (क

 ७ ७१। यदह)। २ वि, पित्रम्बता-कारक (पर्शा २ २-पथ ११४)। यसंत्रगणुं [बिडम्बरू] १ विद्यपक शस्त्रया | (घीषासाधार १ धी—पण राक्या)ः

र वि विश्वस्था कछोवासा (पूर्णः २२६)। येसक्स न [६८५२व] मण्या रारम (यज्ञ)। थेखण्य म [भे: अध्वनक] १ तज्जा, शरम (वे ७ ६१ टी) २ वं गाहिल प्रसिद्ध सा-विशेषः काजा-अनक यस्तु के वर्षात्र आदि दे

उरपद्ध होनेबासा एक रख (दारा १३६) ।

वेद्धव्य सक्त [त्रपा + द्धभ् ] १ उपात्रम देना उसाहना देना । २ कॅपाला । १ स्थापुत करता। ४ न्यावृत्त करना हुटानाः वेशवह (हे ४ १४६) यह )। बहु- देख्यंत (स २ ८)। क्यक बेखविद्यंत (छ १ ६०)। क बेट्यणिख (कुमा) । येख्य सक [बक्रा] १ ठनना २ वीका करना। वेशवड् (हे ४ १६)। कर्म देश

निक्श्रीत (सुपा ४६२ पडड)। वेद्धविधावि विश्वित्ती १ प्रतारित उना प्रया (पास वज्ञा १५२ विने ७७) ने २३)।२ पीवृत्त हैरान किया हमा (बा बेख्य की हिं] दश्व-सीम दांत के मूल का

मसि (के ७४)। वेका की [बच्च] १ समय, धवसर, काम (पाया कप्पू)। २ क्यार, समुद्र के पानी की इस्टि(परवृद्दे १ — पत्र ४४)। १ समुद्र का किमारा (से १ ६२ और मटक)। ४ यर्थाचा (सूच १ १ ११)। ५ बाद, इन्द्रा (वैचा १२ २१)। उछ त ["कुछ] बन्दर, **पश्चामें के ठब्दारों का स्क्रील (सुर १४-१)** अ११६७ यै)। वासि र् [वासिन्] धमुद्र-१८ के समीर प्रश्नामा नामप्रसम (भीप) ।

वस्त्रदक्ष वि दि]म्युकोमसः। २ धेन यरीय (वे ७ १६)। वेजाव (घर) वह [ मि + छन्त्रय ] हेरी करमाः विश्वन्य करना । वेशावसि (पिंग) ।

वेलिक 🏗 [ येकामत् ] वेबा-प्रकः (कुमा) । वेद्यी और विश्वित श्रेष्ठा-निरुप निवासरी सवा (देक ६४)। २ वर के बार कोशों में रका काता धोटा स्तम्य (१व १३३)।

बेंकु देवने पेंधु (हे १ ४०२ ३)। थेलु पूँ [वि] १ मोर, सस्कर । २ प्रुपन (१

0 Ex) 1 बर्स्ड वि [४] विका बराब, कुरिवट (दे

w (1) : थंख्या) दून विशुद्धी १ देन का बाद्या । २ बेल्य बेल का छन (पाना र १ व १४)। ३ वंश वस वेतुयासि द्याणि मं (पर्वा १--पत्र ४३ ति १४३)। ४

बांतुकरिता कनस्पति-विशेष (वस १० २ 2119 बेसरिय ) देवो वस्तिक (प्राप्त वि २४१ । सिक्किय र्रेष ४०)। मेसमा बी हि भगवा, शाव (१ ७ ६१)। बेक्टक्ट बिट्टी १ कलना। २ लेटमा। ६ वृक्त क्यान्य । ४ घेरना । वेस्तह (पि १ ५)) केरवंति (पद्राह)। यक देश्रीय बेह्माच (बन्हें है १६६) वि १ को। मेह धक रिस् ] श्रीहा करता । नेस्बद (है Y १६व)। **च मे**र्क्जिल्ला(नुगा⊎ १४)। वैद्वादि दिने र केश का साम प्रवास के विशास (दे ७ ६४)। ४ मस्त-नेदना, बाम पीदा । ३ वि सविराध वर्ष (वृद्धि ४७)। इ.स. देवी वंद्वा (नुपा २७६) । बेक्डम देवो बेक्सम (वह )। वें हमान [वें] १ एक तर्याकी नागी को क्सर के बनी वह होती है. प्रभएकी में पैष'। २ ग्रारी के अध्यर का उका (बा (R) 1 बेह्न्य व विद्वली प्रेरहा (पवड) । वेक्क्य देशो वेक्क्स (तुका २०१ १ २) : बेहरिम १ वि वेट, शत (वर् )। बेहरिया थी [४] शत्बी, बवा (वर् )। बेहरी दी दिं] देखा, वारांगना (वे ७ ०६। यह ) । यक्क्षित्र क्यों मेहिल (ते १ १६)। बंद्धायिम वि [वे] विक्रित वीका इया वि 1 34)1 पंद्रदक्ष ) नि दि रिशीमा मुद (१७ 411(1 | 11 42 422 431 143) स ७ ४) । १ निज्ञातो (दे ७० ६६। दवः नुपा ३१)। ६ नुस्दर (बा ३६ )। बहाध्ये हिं मही नग्न, क्ली (दे क 20)1 बक्षासभागि वि] बहुवित सहचा हुमा (वे • **4**£) i महि देवो विद्व (दव नगः)। बह्मित [बेहित] १ डॅगमा ह्या (ने ७ **११) । २ मेरिख (तः ६३) ।** 

वेशिर वि विद्या काफानामा (यउह) बैद्धी देखो शृक्ति (या द २ गडड)। बद्धासक [संपू] कापना। नेनह (है ४ १४७ कुमा यह )। बद्धः वेसीय देवसाय रभा कवा हुमा)। वंशस्त्रह्म न [बेंगस्त्रा] क्याह, खबी (राज) । वंदण्या न विवर्णी फोकापन (कुना)। वेदय पून विपक्ती रोग-विशेष कम्य (भाषा)। वेशाइक्ष वि वि अक्षरित अस्वार गाय (8 4 48) 1 वेबाहिक रि बिंबाहिकी शंक्ती विवाह श्रेयम्बराधा (मुरा ४१६) कुर १७७)। बेविश्व वि बिपित्त १ कम्पित (शा १६२ याध)। २ वृ. ए**ड नरक-स्थान (देवेन्द्र** २७)। बेक्स वि बिपित् ] बांक्नेबामा (बमा हे २, श्चिम वे ११४)। दे**व्य** छ [दे] बाय**न्त**छ-तुषक ध्रम्यय (हे २ १६४) कृमा) । बंद्य व दि] इन धर्में का तूपक प्रध्यक-रे मध्, वर । २ वारण कावट । ३ विचार कोर। ४ मामन्त्रज्ञ (हु २ ११३) ११४३ चुना) । बंस वृक्षिप हिर्देश कर बच्च व्यक्ति की सका-बद्ध (कव्या स्वयम देश बुधा देवद ३ ७। यक्रक चुना) । बेस कि (अमेप्स) विशेष व्यासे श<del>्वास्थ</del>य (वय १)। में सुक्षिपी १ विशेष वरा १ क्यार धप्रीति (यत्रका भवि)। बेस वि विषय विशेषक स्व के योग्य श्चिम १ १---पम १३७। मुख्य २०---पत्र २६१)। वेस दि द्विप्त] १ डोप करने गोरण, सक्से विकर (प्रम बद ११/वा १२६) पूर २ वे १ ४१)। २ विशेषी, शहु, बुस्मद (मुचा ११२) जन ७६ टी)। देस देशो वास्स⇒ देख (चनि)। देसक्रम रि विषयिक ] विषय के श्रंकर रक्षनेवामा (वि ६१) ।

वेसंपायक रेको वहसंपायम (हे. १. ११३) यस्)। वेसंय प्रशिक्षम्य] विश्वास (पर्व १० 1883 वेसंस्थ की दि] सूत्रोचा विश्वमी (हे u == ) i वेसविकाण गि] हेप्सर निपेत्र बरमगाई (दे ७ ७१) । बेसप्प न वि ने बच्छीर, बोक्सनार (रे # WE) : बेसण न विपन ने भीरा पानि सवावा (सिंह १४)। बेस्य १ विस्ता का बाद प्रश्य - यन का बाध्य बेसन (रिक २१६)। वसमज द विश्वनणी १ क्याचन क्रूबेर (पाय, ब्यामा १, १--पम ११, नुशा १९०)। र इन्द्र का उत्तर दिशा का बोक्नाक (सम्बद्ध समृद्द ७--- दम् १११)। १ एकं क्यावर-नरेत (परम ७ ११)। ४ एक ध्यवस्थार (निया २ ६); ४ एक कैंड का नाम (नुपा १२८८ ६२७)। ६ ब्यहोपान कर बीबहर्ग शहर्स (युज्ञ १ १३ सब ११)। ७ एक देव-विमान (विका १४४) । व बुद्ध दिपराज् मानि वर्वती के किन्देशेकानाम (अ.२.३---पक्षः) -- TT YEE E--TT YEY) ! काइय र् [ किमिक] देवमत की माना ये व्हनेनाबी एक देव-जाति (यद । ४---ध्व १११)। इत्त ई वित्ती एक गंवा क्य नाम (विमा १ हिल्लाम वह)। वेषमध्य द्रं ["व्यम्पिक] वेपमल के धवीतस्य एक देव-नावि (यह ६ ४---पश १६१)। व्यय दे प्रियो केयपस क क्रमात-पर्वत का नान (बार --पन ४०२)। "सर् पु ["सह] एक केन पुनि (निपा १, ३)। घेसम्म न [बैपम्य] विचनता सवपानका (बञ्द ॥ वर २१६ हो)। वंसर पूंची [वेसर] १ वांच-विकेश (परह र र-पत्र ≈) । २ मराहर, **बल्बर** । 🗯 री (बुर का ११) ।

बेह्य सक [ वस्त्यू ] ठयना । बेह्यद्र (ह

केहब न विभव निमृति ऐस्पर्य (पनि)।

वेक्क्षिक्र प्रिचि १ धनावर, विरस्कार। २ विक्रोपी (देक १६)।

बेह्विज वि [घरूपत] प्रतारित (दे ध

**बंह**डदल [येधडव] १ दिश्रदापन रॅकापा

धीक्षम (या ६६ 🕻 १४०- मरसः

बेहापुरस देको देहायस (धावा २-१

Y 28 44)

શ્ક્ર છે) ા

मुपा १६६) ।

वेसका र् [ व्यक्त] यूत्र धवन-वासीय मनूष्य (सूधान २ ५४)। वेसयम पु [पैभवम] देशो वेसमय (हे १ १४२ चंड देवेला २७ )। वेसवादिय पू [वेशवाटिक] एक वैन गुनि-क्सु (कृप्प)। बेसवार र हिसबार ] पनिया बाबि मसामा (कुम ६८) । देसा रेको येस्ता (अमा गुर १ ११६ स्या २३४)। बेसाजिय व चिपाणिक १ एक बन्दरीय । २ प्रनार्डीप किरोप में रहनेवाली मनुष्य-वाणि (क्ष ४ २—नव २२३)। येसानर देशो वहसानर (सहि है थे)। देखायव देखो देखियायण (एज)। बेसास्त्रिय विशास्त्रिकी १ समूह में **इतन । २ विद्यादास्य पाति में दापल ।** ६ विद्याल बड़ा विस्तीर्गी 'यण्डा वेसानिया चेव (सुद्ध १ १ १) । ४ प्रै मनगार् ऋषमदेश (मुद्ध १ २ ३ २२)। १ भगवान् महाबीर (सुम १: २, ३ २२, भव)। बेसाडी औ [वशाकी] एक नक्री का नाम (कव्यः ६६) । वेसास देवा थोसासः को किर वशानु बेसाधी' (बर्मनि ६६)। बेसासिअ वि विधासिक, विधारवा ] दिश्यास-याग्य विश्वसमीय, विश्वास-यात्र (स. १. ५--पत्र ६४२ विया *१.* १--पत्र १२. कम बीप तंदु १२)। येसाह देवा ध"साह (गम वर १) । पंदाद्रा ध्व [वशास्त्री] १ वेशाय वास की पूर्विया । २ भेराध मास भी ग्रमावस (इक)। यसि वि द्विपिम् देव क्रलेवाका (परम # 1 m 4 t 1 tx) 1 वसिभ व्यो पर्श्विभ (१ १ १११)। बसिम इंधी [पंदितक] १ केरण बालिक (पूप १ ६ २)। २ म. वैमेजर शास-विधेत, काव-धारत (धरा १६। राज) । बसिअ वि [विधिक] वेच-प्राप्तः वेच-प्रवासी (तूम २,१ ४६) याचा २,१ ४३)।

येसिक वि विश्वपिय र विशेष कप छे यभिवयित । २ विविच प्रकार से व्यक्तिपति (भ्रम ७ १--पत्र २६३)। बेसिट बेबो घष्टसिट (वर्मर्स २७१)। बेंसिजा की दिं] बरवा गिएका (श ו (צמצ वसिवा देवो बेस्सा 'कामासको न मुलह क्रमायम्मेषि वेशियाणुल्यं (भेल ११३ ठा ४ ४—पथ २७१)। वैस्तियायण पू [बैस्पायन] एक कान रापध (यत १४---पण १६४ १६६)। वेमी की [बेरवा] बेस्व बादि थी की (मुख 18)1 बेसूम पू [बेश्मम्] यह वर (शाह्र २८)। वेस्स केवो बहरस = केव्स (तूच १ ६, २)। वेस्स देखो बेस ≖ इटिय (क्तार३ १८)। थेस्स वेची बेस = वेष्य (राव) । वस्ता की विद्या ? परमानमा गणिका (विशे १०३ : या ११६ ८१)। र शोपनि विशेषा पाइ का पाञ्च (प्राप्त १६)। देखासिक रेको नेसासिक (१४)। येद्र शक [प्र+इश्] रेखना धरमोकन करनाः 'जहा श्रेनामकाससि पिट्रशा मीव मेहर (पूज tाव कर) । दह सक [ ठ्यभ् ] बीमना खेरना । बेहर (P rat) 1 बेद पूर्वियी देवन केस (सम १२४८ , बण्या १४२)। १ धनुषीय धनुगम मिप्रसः। **१ श्**त-विशेष प्\* तयाका मुखा(मृष १

ठा२ ४---पण देशे सम ३१३ छान्या १ १६---पत्र २ २ भव)। वेद्दाणसिय दि [मेद्दायसिक] श्रांकी मादि से सटक कर गरनेवाला (धीप) । बेहायस वि [बेहायस] १ प्राकाश-ध्रम्बन्धो धाकास में होननासा। २ न, परायु-निरोध फॉसी लबाकर मण्डा (यद १६७) । ३ पू राबा बॉलिक का एक पुत्र (बनू )। महारिय वि [येहारिक] विहार-श्रम्बन्धी विश्वार अवस्तु (मुख २ ४३) । वेदास व [विद्यापस ] १ भाकार परन (खावा १ ५--पत्र १३४)। क्रवराज भीचभाग (सूद १२१६)। बेहास देको येहायस (पर ११७ सन् १)। वंडिम वि विधिक वेच्यी तौकी बोग्य हो दुक्त करले योग्य (बस ७ ६२)। बैरंड ध्वो थडुंड (बद्ध १४ ) । वैभव देवो देह्य (वि १ ६)। बाभस बंदा पायस । इन्ह्रं वायसिजमाण १, १७)। ४ धनुराम शत्मच हेव (पराह (यव)। १ १---पम ४२) । बोइय वि [क्यपेत] व्यति रहित (व्यव)। बेश प्रविधस्] विधि विपाला (नुर बींट रेबो पिंट = क्य (हे १ ११६)। ₹₹ ¥) I बाक्सि वि वि] नृह-गुर, पर वें शेर बबने-देहज म विधन विभन्न धेर करता (सम बासा, पूठा शूर (६७ ४ )। १४३३ वर्गीर ७१) । योकिक व [व] रोमन नदी हुई बीज बेहमा केडी वहपमा (सा १ ६१ टी) को पूना वदान्य (दे ७ =२)। पर्मर्थ १६६ टी) । योध्य सक [वि+द्यपयः] विक्रान्त इरमः। वेदस्य 1 विदस्की तमा बेलिक या एक नोरक्ड (हे ४ रेंच)। यहः शासंत पुष (धनु १ मा निर १ १)। (द्रपा) ।

बोक्त एक क्या + द्वा कब् + नत् ] पुका रता, भावान करता । बोल्क्ड (यह । प्राकृ WY) I **बोक्त** सक [सद्+नट] प्रक्रिय करता। बोक्तइ (प्रारू ७४)। बोर्चन वि विमुख्यान्ती १ विपरीय क्या से रिनत (दे १ ११६) । '२ ग्रतिकालाः 'पन्था कामनोक्तर्य वं चलुं दब्बद्विमास वर्गातुका (सम्म व)। भेदो वृष्ट्य । वोद्यस क्क [क्दप + कुप् ] हास शब्द करता. कमी करता । कक्क **बोक्सिक्**याण (धन १ ६---पन २२ )। गोश्रस देवो बोब्बस (दूप १ ६, १)। भोजस देवो तुक्कस = मूत् + क्रम् । वोनक-शाहि (साचा २ ६ १ १४)। बाब्ब की वि । बाद-विदेश 'क्लानोलकास रवो निर्वीषमी श्रमपंत्रक्षप् (स्पा २४२)। वेदो यद्या। बोब्स 🛍 [ब्बाह्मवि] पुत्रर (उप 👀 दो) । बोद्धार देवो बोद्धार (सर १ २४६) । बोक्स देखो बोक्स = व्य + नव जोलका (माल्या १६४) । बोबसंदय र् [धदस्त्रम्] प्रास्त्रश (महा)। बोक्सारिय वि कि विमुख्ति 'वक्तेबंध-बत्मबोक्कारियक्कसर्वर्ज (स २३६) बोगड नि बियास्त्र र बहा ह्या प्रक्रि पास्ति (तूप २ ७ १० अप इस)। २ परिस्कृट (भाषानि २६२)। बोगाश की कियाक्ता क्रिक्ट वर्ष काली ब्रामा (प्रस्तु ११--पत्र १७४) । बोगस्ति व विप्रदर्भवती विकासित, बाहर निकला हुचा (तंदु २) बोच ) सक [यब्] शेलका क्यूना । बोचड, बाब े रोज्यह (बाला ११४)। बोबत्य वि [क्यरपहर] विषयीय, क्षर्या 'दियमिस्केष (१वत)कुदिशीक्ले' ( प्रशः = मानुखा ४,विके ६३)। बोदस्य ॥ दि विषयेत छ (दे ७ १)। शाम्छ देवो दम = दव्।

बोर्विद्वाद सक क्रियुन क्यम + क्रिक्] १ वाटि वि वि । पद्धः बीन (पदः)। सींगर्ग दोक्ना, अधिकत करना । २ विनाश मोड वि दि] १ <u>इस्</u>। क्रिय-कर्ण, नियका करना । ३ परिस्थाय करना । नो**न्या**र कान कट बया हो यह (ना १४१) । वेबी (सत्त २१ २)। मिय शौच्यार्थीर्वात (पि १६२) । कर्म पुण्यात वीध्यानह, वीध्या-बाए (बस्म २ का दि १४६) काल)। मंदि बोच्चिविहिरि (पि १४६)। बह्न. वो प्यर्देश, वाचित्रदेशमाण वि १६ ६२ ठा ६--पत्र ६१६)। इतक वाचित्रकांत वीरम्भक्रमाण (বি অ. ১১ ভা ৰ १<del>---</del>শৰ **११**६) : योच्छिप्य देशो योचिष्ठक (विपार ५---वव २व)। शोच्छाचि की विश्वविक्रिचि निवास 'र्ववारनोरिष्यती' (मिर्वे १६६६)। जय पू िनवी पर्याय-नय (जुर्वि)। शांचिक्स देवो बुल्बिस (मन कपा पुर Y 48) 1 बोच्छ्रं ) १ [ब्युच्छेड् व्यवच्छेड्] बोच्छेड् ) १ इच्छेड् विनारः वसाओ ज्वेनकरे' (श्वाया १ १—पत्र ६ वर्मर्स १२) । २ धाळाव व्याकृतिः (क्रम्य ६ २३) । ३ प्रतिकन्त रकावट निरोप (क्वा-वेचा १ १)। ४ विभाव (पटक ४४)। योच्छेरयण व क्रियच्छेन्दनी १ निगाय (बेइन १२४ दिश ६६६) । २ परित्राय (ब्र ६ शे-- वन ३६)। बोक्स केलो सुक्का। योकद (हू ४ ११ व धी) । बाक्य एक जिस्स ] इया करता । बीक्य (द्वे ४ १, ४३)। वक्र वाटाँग (क्रुमा)। बाजिर वि [श्रिसित्र] बध्नेनला (कुमा)। बोज्य देशो बह - शह । अपि देखे व्यवेशी देशं समयसं नेवाधिकृतो महानरीको खन्या-वित्वसूची सम्बद्धीयन्यसार्थेसे वर्ध वोरिय-विति' (मन ७ ६—पन १ ७) । स. 'बारालीतासमामनोष्टमं श्रेषुर्य' (स्राया १ १ १—पव २३) राव १ २३ त्राप)। बोडम्ह } वृं [बें] बोब्द, खरु 'बस्थि-बोडमहाङ्क है बोडफ फ़्लक्वोण्यमस्त बं वोज्यस्य विदिशेष शतीय । र अस्य वस्य (\$ 4 85)1 राखा (क्य) ।

चेक्र । वोधदी अर्थ हि | १ तक्छी दुवर्षि । २ अमारी परिचलंत कोम्हीमों (पा १६२)। रेको योशह । बाकु वि कि पूर्व वेषकृष (हव)। बोड वि [ऊड] बहुब किया हुया (बार्स) EKY) ( वाश्व वि [दे] देको दोड (य ११ प)। वोडक्य केले वड = वड । बोबु वि [बाबु ] नइन-कर्ता (गदा) । बोर्ड रेको सह = मह्र। बोक्ट्रण व [प्रकट्या] शहर कर (२ ४८९) । **बोत्तक्ष्य क्षेत्रो** वय = वय । रोजुआय व [<del>ठारश</del>] व्ह वर (दर्—६ (XX) I क्यो वय = वयु । कोराय न व्यवदानी १ क्यें-शर्वात कर्में नानिनास (का १ रे—पन १३६ क्स **१६ १) । २ तुम्हि, क्लिंग क**र हेकर्न क्छोक्त (पंचा १३ ४ वट २६, १ अव)। १ वर वस्वर्थ (सूध १ १४ १७)। ४ वनस्पति-विदेश (पहरा (---पण १४)। चोहद वि दिं । तस्त्र पूरा (देण वं )दे चेत्रद्रश्रद्धीमा पश्चिमा (है २ ६ )। भी की 'विद्वांत्रवेद्वांद्विते (हे २, व )। भागीसम्ब वि वि वराच क्षेत्र वरीव (वे 1 (9 0 भाम व क्योसम् । धाकाल यका (पान विते ६३१)। विस्तु ई [पिन्ह्र] एक राजा का ग्राम (पत्रम ७ १३)। बोमक्रम् र् [बे] प्रनुषित वेष (६ ४ ४ ) । थोसब्दिश्चन दि । बतुष्ति थेप भाष्टि A) ( बोधिस प्रविद्योगिक प्रविद्या (क्या)। कोमिस्स को स्थितिस्स्ती एक केन प्र<del>नि</del> গ

शिक्षाक (स) दृष्टिमाक] यहुका मार्ड | स्थिट (स) केवी चिट्ठ - स्थाः स्थिति स्थला (प्राक्त १३ मुक्का ९४)। (बारवा १२४) प्राकृत १३)।

> श्र विरिपाइअसङ्ग्रहण्यवीम रामायदसर्वक्मलो क्रवीयहमी वर्षनी समयो ।।

> > स

स र्र [स] स्पन्तन वर्छ-विकेष शतका जन्मारक-स्वान गाँव होते से यह कथा बहा माता है (प्राप्त) । उसन सम्बर्द [गिया] रिपक-प्रक्रिक एक परा विश्वर्ष प्रकृप के हो कुल और दोसय पुर स्कर होता है (पिन)। गार प्रकार किया किया (क्रांन 2 7)1 स वैद्यो सं= सम् (पड् पिंड)। सर्थ [श्रन्] पत्त प्रचा (११ १४) व १६। वर्)। पाग दे [पाक] करवान (क्न) । सुद्धि पूंची ["सुक्ति] पूर्च की वयह बायरक कुछेशी तरह भगछ-वृहेक्ता(खाना १ १--पत्र १६ )। क्य प्र ["पत्र] चार्त्रथ (दे १: ६४) । बाग बाब वेशी पाना (वे ६६ पाम) । स व [स्तर ] युक्ता, सर्व (विशे 1 (4 1 स वि [सन् ] १ वेष्ट- प्रतम (ज्ला क्रुपा) कुप (४१) । २ निधासमा नो य अन्यसद य-व (तूष ११ ११)। श्रीरख दे [पुरुष] संध पुरुष, सक्का (सहक)। क्क्य वि [किय] धेमाबिय (प्रश्रह १ ४---पप ६ )। देशो क्लिक्स । बद्धावि ["क्ला] क्रम बच्च (घे १२) : "विकास ["क्रुट] बकार, बनान (क्य १३ १)- वैकी बान।

माध्रु 🕊 ["गति] प्रथम गति—१ स्वर्ग ।

२ पुष्टि, बोब्ब (ब्रिटिएय)। व्याप पू [\*आन] धमाधारमी **प्रशुप्त (वन** है १ ११ बायू ७)। खस वि ["चम] भरित्य बायु, सन्त्रनों में धरिष्टेष्ठ (युरा ६३६८ था १४७ छार्च ६)। स्थाम व िश्यासम्] प्रयुक्त कर (चठड) । धन्मिम नि [बामिक] मेह वार्षिक (बा १२)। श्राण म [बद्धारा] उत्तय बान (धा २४)। व्यास वि[सस] मुक्तर प्रवासका (एव)। "ध्युरिस ई ["पुरुष] १ सम्बन भनामान्यी (मधि २ १। प्रातु १२) । २ किंदुस्त-निकार 🖣 विकास किया का इस (ठा२ १--पम १)। १ योक्कमश् (कृत ४)। प्रकारि (श्रद्धी यह व्यवस्था (सम्ब्रु ६१)। "स्भाव नूं ["शाव] १ क्षमा कराति (का ७२६)। २ वस्य व्यक्तिका (ब्राम १७३१ - ११) । व ब्रुपर च्याथ विशास अञ्चल प्रतिप्रायः व्यवस्थाने पुरा क्ष्म्पुनसम्ब की विवेसे व (प्राप् 🛍 १७२ का है २, १२७)। ४ माना<del>र</del>ी कारपर्ने (पुर ६ १ १)। इ. विद्यमान प्रदार्थ (धपु) । वभावश्ययमा श्री िशावश्यीती सामोचना प्रायश्चित के सिए निभ दीव का दुर्वादि के समक्ष अकडीकरका (धोच **७११)। स्थाविस वि ["सावित] बर** भाम-द्वर्ण (स २१:६६) ≀ प्रमुख वि

["भूत] १ करू, वास्तविक सक्या 'स्म्मू एक्ट्रियनेक्ट्रं (ज्या)। १ विश्वमान (पंचा ४ २४)। याचार पु [आचार] कराल वाष्ट्य (व्यक्त १३)। इस वि [क्य] अस्तर क्यमामा (पत्रम ६)। स्नार् [ख्या] त्रसस्य संगया सम्बन्धायम (सूर्य २.९. ४७)। "वास द्रं ["वास् ] **स्ट**स्त थाद (बूप २, ७ १)। शाया और [ बाष्ट् ] सरामा बास्त्रो (सूत्र २ ७ १)। स ⊈ [स्व] १ थालय पुर (बवा कुना। तुर २ २ ६)। २ ब्रावि मार्च (हेर. ११४) वस् ) । ६ वि भारतीय, स्टीनः विश्वी (स्ता) योषमा६ लुवा शुर ४ ६ )।४ क मन इस्स (पंचा व का दावा २ १ ११)। १ कर्न (माचा २ १६, ६) । अवस्मि "गबरिम वि [कुर्वामव] तिन वे हिम् हुए क्यों का निमालक (पि १८६ प्राचा १ ६ ४ १३४) । अप दु["अस्त] १ स्रॉट सना । २ बारयीव बोच (स्वय्म ६७) वर् )। वैव वि [विन्य] १ श्वाचीन, स्व-वत (विवे ९११२, दे ३ ४३: सम्पु १) : १ व स्वयंत्र क्रिकाच्य (निष्टु ११)। स्थापि ["स्व] १ तंदुक्ता, स्वस्तव-विका । १ सूच ते समस्मितः (पासाः चत्रसः १६ ६१ स्थाप १ व पुर १ १ ४३ पुता २७१३ पहार क्या)। पत्रकार् [पान] १ प्रात्रक्ति

सथ—सर्भ

रव वि दिसी करनों (से १ २७)। रहरा वि [रास] वेय-पुक्त उदावसा (मा १४४) मुपा ६१२ कप्पु)। राग वि िंदारी चय-संतित (ठा २, १---पण १)। रागसंबद, रागसंबद वि रागसंबद बह बादु नियका एवं धीरत न ह्या हो (पहल १७--पण ४१४ चवा)। इत्य वि [ैक्स्स] समान क्यवाना (प्रतम = ६)। सूच वि [स्वयम] सावपय-तुन्ह (बुरा २६३)। स्टेंग वि [श्राक्र] समान सहस्त (बर्द्ध २१ मि)। क्षेत्रंप देखी सन्त (सा ३१६: हे ४ ४४४ क्रमा) । स्ती <sup>8</sup>डमेणी (१४४४२)। यतस्य केता पतस्य (भठकः, प्रति)। सन्ति विश्विता वायवाला बरा-युक्त (सूपा २०)। अस्य वि [ क्यस\_] समान प्रमानामा (के **॥** २२)। बय 🕅 ["झत] बडी (मुपा ४११) "बाय वि [ पाव ] सवा (स ४४१)। बाय वि विश्व नाव-सम्बद्ध (सूथ २ ७ ॥)। बास वि "दास ] समान वासवाबा, एक बैट का रहने तथा (शामुक्त है)। विश्व वि विद्यो विद्यानान्, विद्यान् (क्य प्र २११)। स्थल केवी क्षण (गढडा मा १२)। **स्वयंक्ता वि [ क्यपंता] पूनरे की वरवाय प्र**क्षेत्राचा सर्पेक (भर्मते १३६ ) । स्वाब वि ["स्थाप] स्थापि-यक शायक (यव १ ६-- वन ७७) । कियम ( नि विवर) निरस्य-मध्द, समित्वर (नुपा ६६४)। संकृति विशक्ति संगानुक (६२ मुर १६ ४४, पुत्र ४०२, पत्रक)। संक्रिश वि ["शक्तित] बरी (युर ४ )। शखा की ["सरवा] धनमी नजिली थी (उस ११ ।) । मिरिय स्तरीय वि शिक्षा भी-बुक, शोबा-बुक (वि ६ : खावा १ १ राय)। सिद्ध कि "श्युद्ध स्ट्रशालामा (दुया)। "सिद्ध वि ["विस्तो किया-पुत्रः (धन)। सूग रि [शूक] स्मानु (बर)। मस वि शिप र सम्बोध बारी पत रूपा (दे ब, प्रशः पत्रप्र) । २ शेक्शव-बहित (बार १६)। साग, सांगिक वि शाकी विनवेद, शोब-युक्त (पश्च ६१ ४) मूर ६ ११४)। शिरारिक स्थारीक वैको

सिरिय (पि रूक प्रमि १६१, मण धम | १वेथ खाला १ ६---पथ १५७)। सम धक् [स्पत्] १ प्रीति करता। २ वसाना स्पार क्षेत्राः सभ्रद्भ (प्राकृ ७३३ मारमा (44) I मध न [ सर्स् ] समा ( पर् )। सञ्ज्ञान हि रेसिका मरवरका सक्या। श्वीर भूष्टिश (देव ४६)। सञक्काल ( दि) फिराव कुयारी (दे व ₹१) । समञ्जल रूपी [दे] ग्राविवेह्सक सञ्ज्ञासङ्घ र् पदोती (मा ११४)। 🛍 स्मा (पा १६) १६ म) 'सम्बन्ध्यं रहनेतीए' (या ६६, विक १४२) । वेको सङ्ग्रिकतः । सञ्जाका के सम्बद्धिया (पि २ ७)। सधाइ वृद्धि सम्बा केश (बै ४-११)। सम्बद्ध वृद्धिहरू १ केम-विशेष (माप्र-धींक ७ है १ ११६)। र द्वेण याण-विशेष क्रमी (हे १ १७० १व )। हिर्द िरिरे वर्राज्य भोड्म्फ (कुमा)। वेकी सगब । सभर देशो सन्धर = स्नर, धनर । संभार केने समा (हे २ २६)। सभाव [स्त्रा] १ हमेग्रः निप्तर (ग्राम हे १ ७२। कुमा बासू ४६)। चार दू िचारी मिल्सर गांव (रमख १३)। सभाको [स्रज्] गला (पङ) । संद्र्धको सभा≃ तथा (पास है १ ७२। चुमा) । संदर्भ सिक्टम् दिक्रमारु एक बच्च (हे १ १२ सम्बद्धानुष्ट २५०४)। सङ्ग औ [स्मृति] स्थपन, भिन्तम धार (बा ११)। बाछ र् विवास विका विकार का धमव (वस ४, २,६)। सङ्ग्रेषो स = स्वरं सङ्ग्रीस्मनिस्यप्रियाप् (सपादश मीर्प)। सह देवी सय = शत 'जस्तोयवर्ग बोचावि पुरुष में न कश्योर्ड (पुर १४ २) । क्रोडि भी ['बोदि] एवं थी करोड़ एवं साथ--थस्य ( नष् )। साह देखों साई = स्वयन् (वाका है ४ १६६) ¥1 )1

साइ देशो सई ⇒स्त्रों (मुपा रे∙१)। सक्षत्र विश्विष्ठ हो का वरियालका (ग्राया १ (—पत्र ३७)। वैश्री सङ्गा । सम्भ नि [रामित] पुष्त सोमा कृषा (व ७ २८ वा २१४३ पटम १ १ ६ )। सङ्ख्या देखो स = स्मा काम य पापयो परिमायमा बन्धरेज्यामा **उपरा**स् व्यक्त-पुरिसे नेल्ख' (महा)। सर्द केरो सह = **सह**स् (बाका) । शाई केवो सर्व≭स्वयम् (ठा २ १—पन ६ शः क्षेत्र ४ १ श्रेष्ट ४ २ मणि)। सङ्ग वि [शतिक] धौ (समा धारि) भे कीनत का (दहनि ३ १३)। सञ्चन्द्र 🕠 पूंडी 📵 प्राविवेरिकक, पहोसी सङ्गिक्का रे (हे व १ )। और आ (धुरा २७वा निष्ट ३४२ दी। सम्बद्ध १४)। सङ्ख्या न [वे] प्राविशस्य पर्वेपस्पन १ वे)। सङ्ख्य व [सैन्य] देना सस्तर ( गर्.) । सङ्ख्य वेदा सम = हो। सक्ष्मंसक वि वि स्मृतिवर्श्वनी क्योन्दर. चित्र में सवकोतिक विचार में प्रतिआस्ति (देश १६, पान) । सक्ष्वेह नै [ये स्मृतिद्वय] अनर ध्वी (रै # \$631 सदल केवो सदस्य (हि. १११ दुना)। स्टब्स वि [शुवतम] धीर्वा १ र्धा (हाम 1 14-44 314)1 सद्भवस्थि । संच्या लच्चका (ह १ १६१: प्राप्त खाना १ १०--पर २३६)। २ वि मन्द्र धनात (पाप)। ३ सीरी सम्बन्धी (नाम प्राप्त) । सत्ररवसा इं पि स्वेरप्रयम् सम्बन्ध सक् यमें के थिए छोड़ा जाता बैस (वे १, ₹% = ₹१)। सद्दरि वि [स्वरिन्] स्वन्धन्धे स्वेन्धावार्धे (पच्छा १ ३ व)। सश्रिणी भ्री [स्वरिजी] म्यांभवारिकी भी पुष्पय (प्रम १ १ १)। सहस्र वेशो संज (हे 🗸 ६२६) । खर्कम वि वि स्पृतिकम्भी केती सा-

प्राप्त (देन १६ पाप)।

सराण देखों स उप = स-प्रस ।

सन्दर्शसन्तियो १ प्रदान मन्त्री समाध्य (पाम)। २ सहाय सरद-कर्ता ३ काला बनुस (प्राक्त ११)। सासिस्ति । दि सम्बद्ध वातिनेय (६ ८ ₹)1 सक्ष्मह वि दि स्मृतिसूख] वेको सहर्वसण (देद १६) पाम)। सह ध्री [राषा] एताकी राक्षेत्र नी एक पटरामी (ठा ६--- पत्र ४२६) शाया २---पश्च २५३ पामा सुपर ६० ६२२ दूज २५)। सार्पु[ञ] इन्द्र(दुवा)। रण सची । सङ्गदी सिनी विवयतः स्त्रै (गुप्रा २३) सिरि १४३)। सद्भी [शर्मा] ही १ ३ वंचग्रह (पर्मीव १४)। सईणाध्ये दि] यप्र-विशेष नुवरी यहर (स १ १-- वन १४१) । सङ् } (बर) देनो सहु (स्लाम्बर्व)। सर्वत पू [शकुन्त] १ पधी पाधी (शम)। २ पश्चिमिश्च भारत्यको (स.४३६) । सर्वद्धा ध्ये [राष्ट्रग्नस्थ] विश्वापित ऋषि **को पूर्व कोर राजा दुम्बंह को सम्बर्ध-**जिका दिवा परनी (हे ४ २६ )। सदराय (धी) ज्यार व्या (वर्ष २६ ६ : वि २७३)। साउपादि [दे] क्या प्रसिद्ध (देव है)। सदल पूर्व [शायुन] १ शुक्रशुक्र-पूषक काह स्थान, बाद-स्थान पादि निवित्त गणुक-नुद्रशेयाई बढ्णा वृद्धियाहाई श्वरो व (वर्षे २ मुत्तः १४४८ महा) । २ 🖠 क्या पंचा (पाप या ३२ । १०१३ वस १४ बाँड ह थे) । ६ वीजनिरुव (बल्ह् १ १—११ क)। विश्व वि विश्वी बन्त [१३ ] कर ३ १ (८३) । ए) जानाह १४ रेपधाराच्याच्याचा २ ४ जार्नदोत्त सन्त सार्थाम (उसा १ १—वह ३६ अ 

संउणि पू [शकुनि] १ पथी पर्यक्र पायो (चंडा हेर १६२) । (धीप द्वेशा १ ४३ संबाम १७)। २ पछि विशेष चील पधी (पाधा)। १ व्योखिए प्रसिद्ध एक दिवर करेए को कृष्ण भनूरीके की रात में धवा धवस्थित रहता है (विशे ३३१ )। ४ मांसङ-निशेष चटक की वध्य बारबार मेश्रुक-श्रसफ इरीन (पत्र १ ६ फ्रुफ १२७)। १ दुर्योचन क्य माना (ए।पा १ १६—पत्र २ ८ मूपा २६)। सङ्गिअ देशे साङ्गिख (एव)। सरविश्रा धौ [शक्तिस्य नी] १ संद्रिषित्रा | ध्ये [श्रद्धानस्य ना ] र संद्रियम्य | पश्चिमी पशी पी मार्ग (भ ) वर स्थान हो। २ परित निरोध की माशा पाउली जाया तुमें (धी a) 1 सरफ्य देखो स रुप्य = सपूर्य । सउची को [सपस्ती] एक परि मी दूवरी स्त्री समान परिवामी स्त्री सीट, सीटिन (नुवा ६८) । सउम्र को सन्द्रम् । सधम 🖠 [सदूबन्] १ वृह्, वर। २ वक् पानी (प्राष्ट्र २८)। सडमार वि [मुद्धमार] शोनन (हे १ १४ पर्)। सबर प्रसिरी १ मान्स्थेप शनेपर। २ मन समयान । १ ९४१-विदेश सद्भवर १४ पेड़ा४ दि. सूर्यं वा उपलब्धः । ५ सूर्धः संबन्धी (चंडा है १ १६२)। सप्तरि वृं [शीरि] रिक्यु औरम्य (क्रम्)। संबंधि देवो स असि = बलुख । सङ्ख र् [३३३ वस्त वदना सक्ता बहुए मीएा विभी भागा चांगिविशा बच्छा (पाध)। संबंधिम रि चि ब्री ब्रीख (रे व १२)। सर्शनजा । श्री हि शकुनश्च नी] सउत्ते । १ वीन्सीरश्च भी बारा भीत पत्री नी माधा (ती द छणु १४१३ दे द <)।२ एक वहीचचि (तो १)। विदाह इं [ विदार ] युक्यत कमरीच सहर क एक प्राचीन देन वरिश्य (श्री u) । सर्द्र[काच] १ एव महन संवतानाह का बोधे थें)। रेस्तिम मध्य (विद (पुत्रा) । २ म. का., च'टा । ३ पू पायानु-414) 11 #. TW

संपश्चित देवो संप्रीमाम (क्य १६३)। सभास देखो स ओस = छ-दोप स-दाप। संबद्धिम् देश सर्वे (४ ५११) सुर \$\$ 83 BH A\$#) 1 संब [सम्] एन धनों का सुबक्त सम्बय---१ प्रकर्ष । यातिशय (पर्मंतं ८६७)। २ र्थयति । १ मुम्बरता शोधनता । ४ मनुषय । ४ योग्यता स्वातनीतन (वड् )। सक्ष किस्सी राज्य को स्वास करना संदेश करना । २ यह भय करना उठना । संकट्ट र्वकर, धंकति संक्षि संस्त संक्ष्य, संक्रतः संबाधि संकामा संराम्, संबाम (संदित है )-यसक्याई संबंधि (नूस ११२१) ११) "नं सम्ममुजर्मदाख पाखि (१७)) छ संक्य ह पिहो<sup>ल</sup> (सिरि ६३३) । कर्म, र्शकरबद्द (स. १. १) । भक्न, संबंद, संबंद माप्प (पकः रोगः ६६) । ए. संग्रमिज (डर ७२८ दी) । संबंद वि [संब्रान्त] १ प्रतिविध्वित (वा १ से १ १७)। २ प्रविष्ट पूसाहमा (झ ३ ३। कम: महा) । ३ प्राप्त | ४ श्रंबमण कर्ताः प्रवंशति-युक्तः ६ पिता साहि स दाव का से प्राप्त स्त्री का पन (प्राप्त)। संकृति की [संकारित] १ राज्यल प्रकेश (पर ११६) घरक ११६) । २ तुर्वे धारि का एक राश्चिष प्रतियो पश्चिम जला 'बारम्य सम्बर्धनविदित्यको दिरस्ताह कर' (धर्वेद ६६) । संबद्धा पू सिक्रन्यनी एक देवानीय (साध्ये दी उत्तरी)। संग्रह्म रिस्थियोती कार्यह्माः प्रव संबद्धिसाद्याँ (SI ४ ४—२व २७६) । संस्टू वि [संस्ट] स्वाद (चर) । संस्कृ को संद्भि (चर) । संन्ड विसिच्टी र संरोदी, क्या पीता बस्र बर्द्याधराचा (व १६२ मुचा ४१६

'बम्बाराबि वे परमा बुरिया निस्तीमधक्तिप्रपुता । जे विसमार्थकोगवि पश्चिमि

वे विसमयंक्षेत्र्यक्षि परिवाधि वर्षति छोः वर्म्म ॥

(रमण ७१)। एंकडिय नि [एंकडित] एंकीलं क्या हुवा (कुम ११)। एंकडिस नि वि] निरोत्तम सिस-पीत (१

स. ११ दुर ४ १४३) : संबद्धिय वि [स्विपत] सर्वापत (एव) ।

संक्रम म [राक्ष्मन] ग्रेणा शिक्ष (स्त ६ १६) । संक्रम पूर्व [स्रोक्सम्] १ श्रव्याच्यात, मण-परिकाम निवार (ज्ञा कम्म कर १३३) । १ संक्रम माचार, सक्समार (ज्ञा १३६) । स्रोतिमाल चास (पाटक) । आणि पूर्व [क्षांति] स्राप्तेत कर्मर (साछ) ।

संक्रम सक [सं+क्रम्] १ प्रवेश करना। २ नित्र करनाः बानाः। संक्रमहः संक्रमीतः (सित्र १ सूच २, ४१)। बाक्र संक्रममाण (सन् ११ सुन्त्र २, १ रेग्न)। क्रिक्र संक्रममाण (सन् ११ सुन्त्र २, १ रेग्न)।

संस्था के स्थित नहाँ पार्टिय का ना है।
कारणे के स्थित नहाँ पार्टिय स्थानि है सीवा
ह्या नार्ये (वि १ ६ र का र १ ४)
कारणे हैं (१)। २ र्यंचार नमान कीठः
भासकार धंनकहरूमें (न्या १ ४ २ १ ४)
पार्टिय १३)। योगि जिल कार्नमान्ति
को व कार्या हो कमी का त साम्य प्राहित के
ब्ला को प्रसाद कार्या परिस्ताना वेंकी आपती
कर्मानहर्या ने स्थान ने नाहरी के कारण कर्मानहर्या

संकार क [स्कारक] १ प्रवेशः 'करर' प्राप्ता वर' परवंत्रकले वर्ग देहि' (संवेश १५) १२ चंचार समन (सानु १ प्र) १ व पर्यास, चंदन (साचा) १४ वेशो संज्ञम का संवर्ग संवे (वंच १. ४०) १ प्रजित्तिसम (व्यत्र) ।

संकर पृथि एच्या, प्रह्मा (वे व ६)। मंकर ॥ शिक्कर १ रिज महाचेच (पठम ४, १२१ कुमा: कम्मल ७६)। २ वि मुख करनेवाका (पठम ४, १२२) वे १ १७०)।

संबर १ सिंकर १ मिलावत, मिथाण (मह्य १ ४ - पन २२) । २ त्याकशास-प्रशिक एक वीच (अवर १०४) । ३ शुग्रमुक-क्य मिया मान (शिरि १ १) ४ प्रशुक्ति-र्यंत्र कवरे का हेर (क्य १२ ९)।

स्करण न [सकरण] सन्द्री इति (वंगोव ६)।

संबर्धरसम्प वृ [संकर्षण] माखवर्ष का मावी नववा क्यरेन (यम १६४) । संबरी की शिक्सरी रै निवा-विरोध (परम

 १४२ महा)। २ वेवी-विरोप । १ मुख करनेवाबी (वचा) ।
संक्रम सक [ सं + फुम्प ] संक्रम करवा बोहमा । संक्रमेष (चव) ।

संक्रम हुंग [श्रद्धाम्य] १ सांक्या निषदः। २ कोई का बन्ता हुम्या श्रद्धान्यकः बेह्री (विचार ६—जम ६६ व्यनिति १६६) सम्मत् १६ १ हु १ १ ३)। १ सिक्सी सामुक्कानिकेस (सिरि ११)।

श्रंत्रक्षमः व [संत्रक्षमः] विषयाः विवादः (शासः वक्षः)। संक्रकां की [ग्राह्मका] वेता शंक्रकः = ग्राह्मका

संक्रमां की [श्रद्धक] वेता संक्रम = श्रद्धक (त. १७१ वृत्त २६१: प्रात) । संक्रमित्र विकित्समा देवा विक्रमा

ह्या (अर इ वर्धा तंतु ३)। र प्रुक्त, 'कार व वर्धामां ते पूछ कार्यहुर्तकास्वस्त्रकी क्षेत्रमां (सिरका १)। व मोदिव जोड़ा हुमा (सिर्ध १४४)। प्रचेत्रहित (क्ष्ण)। १.व चंत्रका प्रुम कोड़ (ब्ल १)। चंद्रकीकामा की [चंक्रिका] १ वर्षस्य (चित्र २३६)। चंक्रका । मृत्युक्ताय

तून का प्रस्ता धानस्य (धान)। संबक्षिता । भी शिद्धानिता की बावस, स्वक्षी । विकास नेनीर, निवड़ (मूच १ ४ २,२०- त्रामा)।

(पत्रम ७ ११८-१ ॥ ६) तुर १ ११६, वर प्र २००० चित्र १६४)। संदर्श औ [शक्षां] ॥ बंध्य सम्बद्ध (पत्रि)। २ म्या २९ (क्षा)। क्षेत्रम वि [ मत्

संस्था के [संस्था] संस्था वार्तवत

संजामिकामान (ठा व १ — यव १२) प्रस्कामण व [संक्रमण व ] र संक्रमण व [संक्रमण ] र संक्रमण व्यक्त (प्रत्य) २ २ त्रेष्ण करान (क्ष्ट्र १४) १ वर्ष स्वाप्त वे स्

संकामध्या वर्षे [संकामध्या ] विचानकरेष वितर्वे एक हे पूर्वर में प्रशेष किया था छके वह निवा (पास्य १६—प्रमा ११३) । संकामिश्य नि [संकामत ] एक स्वान हे पूर्वर स्थान में क्षेत्र (पान) । संकार केवो सकार = संकार (कर्मव ११४)।

संशास वि [संबाह्य] १ समाने दुब्ब, सर्वेशां (पाण काला १ ८ कम १४ ४ १ १ ६, कम्पा पंच १ ४ ३ समेति १४४)। १ ई एक व्यावक वा नाम (दप ४ १) ३ संकासिया को [संकासिका] एक केन सुके

वाका (क्य) । वाका (क्य) । यकि वि[शक्ति] एना करनेनाया (मूक

१ २ ६३ वा तक्ष्य संदोग १४७ वस्त्रः)। संक्रिम वि [साङ्क्षित] १ श्रवसासाः श्रवस

शक्क वर्षा प्राष्ट्रिया (क्रियासा, क्रमर युवा (वक वर्षा) २ म. संध्यः वर्षाद् (पिक ४६६ महादः)। ३ सय वर्षा ६६९)ः विक्रियमपि वेद विस्तास्य (या १४)ः। विक्रिय क्रियास्यो सिक्सिक अस्य स्था

संक्षिट्र नि [संस्कृत] निविधित जोता ह्या पेकी निवा हुया (योना शाना १ १ डी— पन १)। सकिएम वि [संदीयों] ? सेंदरा र्तम, बन्मा-

बन्धरावाका (पाध्य महा) । २ थ्याप्त (धान)।

६ विकित विकाश्या (ठा४ २० मध २४,

श्र-पत्र ११६)। ४ प्रे हाची की पृत्र

संक्रिको संक्रिम (पान्य १ १--पन

संक्रियम न [संदीतन] उच्चाध्य (स्वम

पाति (ठा४ २—पत्र २ व)।

5A) !

१७)। संक्रिम देवो संक्रिप्प (ठा४ २ मण २४, ७) । संकित कि [शक्कि] राष्ट्रा करने की सामग्र बाबा शंकारीम (बा २ ६३ ६३३ ३४२ मुर १२ १२४८ मुना ४६४)। संक्रिक्ट रि [संक्रिप्ट] वंश्केण वृत्त, संस्केतवामा (वर मीपा पि १३६)। संदिक्तिस्य प्रक [ सं + क्रियु ] १ क्लेश-पाना दुःची होना । २ मसिन होना । संकि-क्षित्सह, सरिनिस्संति (उच २१, १४' भग बीर) । बह्नः संक्रिकिस्समाण (धन १३ रु---पत्र ५६६)। संविद्यम पू [संक्रश] १ वसमावि दुःक कष्ट हेरानी (छ १ —यत्र स्वर स्व)। १४६ पंचा १४ ४)। संकीतंत्रभ वि [संकीकित] कीस वयाकर बोद्या हुमा (से १४ २०)। संड्र (शिक्ट) १ सम्बद्धाः १ कीसक, ब्रोटा कील "प्रवितिनिद्ध**र्यपुरम**" (द्वम ४ २) निचाधर-नगर (इक्) । संद्र्य वि [संक्रियत] १ वहुवा हुमा संबोध-प्राप्त (भीर) रेमा) १२ न, संबोध (धन)। संक्रम र् [अपूर्व] बंडाब्य वर्षेष्ठ की उत्तर भेरों का एक निदायर-निकार (राज)। संबुध भ्री [राष्ट्रभ] नियानिरोप (यत्र)। संद्रम यह [ सं+क्रम् ] बहुबना संशोध करना । शंकुक्य (पाक्त संबोध ४७) बहु-संक्रुपमाण, संक्रुपेमाल (बाबा) ।

संबोद्ध र् [संबोट] सक्षेत्रना संकोष (पर्वह संकुषिय वेबो संकुद्ध्य (वस ४१)। १ ६-पम ११)। संकुद्ध पि [संकुट] संक्य धंकीर्सं संकृषिक बोदी य संक्रम काहि विल्ला चरपूराएँ (सुरुव १६)। संक्रवित वि [संकृटित] स्कूचा हुमा, संङ्क चित (सम ७ ६--पत्र ६ ७) बमेसं ६८३) स १६क सिरि ७८१)। संक्ष्य वि [संक्ष्य] क्रीय-पुष्क (वश्या १ )। र्शक्तव रेको संख्रुष । संबुधह (वण्या ३ )। बह्न, सकुमीत (बच्चा १) । शंक्रक विस्धिक को व्याप्त पूर्व पर हमा (से १: ४७ इस सङ्ग्रह्मः स्वयन ४१३ मर्गीन ११, मानु १)। संकृष्टि ) देशो सक्द्रांस (पि ७४) हा ४ संकुरी 🕽 ४-- पत्र २२६३ पत्र १६२३ माना २,१४५)। संक्रुसुमिम वि [संक्रुसुमित] यक्की राख पुष्पित (शय ३०)। र्यक्रभ सर्वास + करूपी १ स्टाप करना । २ महसञ्जूत करना । संक्र. संक्रिट्टय षोपिशिमेर्ब (सम्बद्ध २१०)। सॅकेम इं [संक्त ] १ रताय, श्रीका (पूरा ४११, महा)। २ प्रिय-धमानव का पुष्ठ स्थान (बा ६२६ वसक्र)। १ वि विश्व-पुक्त । ४ न. प्रध्याक्यान विश्वेष (बाब)। संक्रम वि [साङ्क्त] १ संदेश-संबन्धी। २ न, प्रत्याच्यान-विद्येष (पव ४)। संकेत्रम नि [संब्रतियो] संबेध-युक्त (या १४ वर्गनि १६० बम्पत्त २१८) । संकेडिय वि [वृ] बनेबा ह्या श्रेष्ट्रां फिमा हुम्ब (या ६६४) । संबद्धम देवो संबिद्धस (उप ११२ ब्रह्म X 48) 1 संक्रांश सक [सं+कापय] वंशूनित करना । वङ्ग संस्थानंत (सम्मक्ष २१७) । संबाध प्रसिधानी बंकोन विवट (राव १४ टाः मर्नतं १६१८ संबोध ४७)। संग्रेयण व [संग्रेयन] संग्रेय संप्रवात (देश, वरा मय; गुर १ ७६। धर्मीक t () : संकोश्य वि सिक्षाचिती शंकचित किया हुमा, क्लेमा हुमा (सर ७२० ही)।

संक्रीडणा की [संक्रीटना] उसर देवी (एक) । संब्देश्विय वि [संब्देटित] सकोग ह्या, र्शकोषित (पर्वाह १ १---पत्र ४३) विपा १ ६---वन ६० स ४४१)। संस्म पुन [श्रञ्ज] १ नाच-विशेष, **रांव** (संदि: राज की १६३ जुना के १ ६)। २ ट्री ज्योतिष्क ध्य-विरोध (दा २ ३---पत्र ७०) । व बहाबिरेड वर्ष कर प्राप्त-विरोध विजय क्षेत्र विशेष (ठा२ ३---पत्र ४) । ४ तर निवि में एक निवि जिसमें विविध दाया क बाजों भी उत्पत्ति होती है (छ ६--- पत्र ४४६ बर ६व६ थी)। इत्तवल समूद्र में स्पित वसम्बर-मायराज का एक बाबास-पर्वत (ठा ४ २---पद २२६) सम ६८)। ६ उक्त बाशस-वर्षेत्र का बिच्हाता एक वेष (झ ४ २--- गव २२६)। ७ भववान् मस्मिनाव के समय का कारों का एक राजा (स्राप्ता १ <--- पत्र १४१)। य समनाम् महाबीर के पास दोक्षा चेननामा एक काछी-नरेश (टा च-पत्र ४३ ]। € दोर्चकर-नामकर्म छपा जिल करनेपाका भवनान् महाबीर का एक ब्यावक (द्ध रे--पत्र ४२१) सम १५७ पत ४६ विचार ४७७) । १ नवर्ने बसदेव का पूर्वकमीय वान (पठम २ १६१) । ११ एक यावा (चप ७३६) । १२ एक शाव-पुत्र (बुपा १६६) : १३ चक्छ का एक सुम्ह (पडम १६ ६४)। १४ खल्क-विशेष (एग)। १२ एक होर । १६ एक सदूर । १७ शक्कर डीप का एक प्रविष्टायक देव (श्रीव)। १व र्जुन, ससाट की हुद्दी (अर्जीन १७३ है १ ) । १६ नकी गरमका एक मन्य-द्रव्य । २ कान के समीप की एक हुनि । २१ एक शाय-शावि । २२ हानी क बांच का मध्य भाग । २३ सक्या-किरोप दस निवार्ग की संस्थापला(हेर १) । १४ ध्येक्ट क श्रमीप का घवनन (सामा १ ६---पत्र १०३)। <sup>क</sup>र देवो पुर (ती । महा)। णाश्च वृ िनाश] स्वेतिष्क महाध्व-विशेष (पुरुव २)। प्यरी ध्यै ["नार्श] धन्द-

मिटेप (निप)। धमरा **१ िम्मायक** 

बानप्रस्व की एक जाति (राज)। घर र्

(<sup>\*</sup>वर) चौकुम्छ विद्या (कृमा) । पास्र

देखी बाझ (ठा ४ १---पन १६७) । पुर

न [\*पूर] १ एक विद्याशर-नवर (दक)।

र नगर-विशेष जो मानरभ पुत्रपत में संबे-

चर के शाम न प्रस्थित है (राज)। पुरी और

िपुरी ] बुदर्जयम देश भी प्राचीन राजवानी

को पीको से धारित्यका के स्थम से प्रसिद्ध

हाँ को (शिरिक)। साख्य प्रीमाखी क्य

भी एक जाति (जीव १---पन १४६) । सप्य व दिनो एव उदान का नाम (उदा)। बण्गाध्य दे ["बर्जाभ"] श्योतिक सङ्ग्रह-विदेश (शुरुव २) । बच्च पू विद्यो चौतियक महावह निरोप (ठा २ ६—पन **४०) । बद्धाम देखी अध्या**म (छ। २ ६—यव ७ )। बर दं विरी १ एक हीप । २ एक समुद्र (श्रेन इक) । वर्धभास र् [बराबमास] १ एव होन । २ एक स्मूह (क्षेत्र)। श्रास्त पूर्विपास्त्री नाव-कृतार-वेत्री के बरश्च और मुदानन्य गामक इन्हों के एक एक बोक्याब र। नाम (इक)। शास्त्र पू िपासकी र क्लेंबर वर्तन का सनुवासी इन्ड व्यक्ति (सन् ७ १०—पन १२६)। द्व बाबीविक यद का एक उपासक (भग १—वय १७)। इटावि वित्री श्रीवनाच्या (स्टाया १ ---पत्र १६६)। ीबई क्षे विवर्ता नगरे-निरुप (ती x) । संदर्भ [संस्थ] संस्थात, जिला हुया, विनयी-माना (कम्प ४ १६) ४१) । संसर [संस्थ] १ वर्रत-विकेप करियपुनि-प्रचीत वर्तन (शास १ १-- पत्र १ १. इता १६६)। र विद्धांकर मतका वस्यायी (भीष: पुत्र २६) । सीप्र 🛊 📳 नामच स्त्रुति-पाक्क (वे संस्कारम मि [संक्यम] विश्वनी श्रेषमा हो बके बहु (क्ति ६७ ) छए। दर दी) । संसद्ध न [वे] कब्द, कनता (पिंड वेश्या सोप (१७)। संदर्शत की दि ] र विषय यादि के जनवस्य न मात-नालेकार धारि को किया वाता चीज

बेशनार (प्राथा२ १२,४ २१३ १३ ३ विष २२८ बीच १२ वटा मास ६२)। संक्षति की सिस्कृति । भोरव-पाक (कप्प) । संसापम प्रक्रिक्तको क्षेत्र संव (स्व ६६ १२६, पर्यक्ष १--पत्र ४४ शीव १ धी--पम ६१)। संकारह दूं [दे] गोवानयी हर (दे व ₹¥) i संस्थादश्च पूं 📢 द्वापद की श्रमकानुसार कर कर खड़ा होनेपाता क्षेत्र (रे व. १६) । संस्रम वि [संस्रम] समर्थ (का १०६ दि) । संस्थाय सिंध्यो जय विभाग्न (से श 87) I संलय वि [संस्कृत] संस्कार-पुष्क प्राप संख्यमञ्जू जीविच" (सूच १ २ २ १ १ २ व १ पि ४२) 'पर्यक्रम' शीविय मा पमामप् (प्रस ४ १) । संसक्ष्य र् दि जनाच युक्ति ने बानार नासा जल-जन्मु निवेष (६ व. १०)। श्रीसद्भ वेजी श्रीषद्भा (यद्य प्रामा) ÷लक्षि वृद्धी किं] कर्ण-प्रवाह विशेष शंक-**पण का यता हुया तहर्डक (६ ७)** । संस्था एक [सं + श्रुपश ] निवास करना। संक्र संक्रवियाण (उत्त २ १२)। संकविक वि [संक्षपित] विगाठित (बन्ह्र संख्याच्या सिं+स्या १ मिनती वरना। ९ जानवा। सञ्चर संख्याय (शून १२२ २१)। इ. संसिक्त संक्रेज (इसा भी प्रशासमा क्या)। संबद्धा शक [सं ना स्टबें] १ ध्यमान करमा । २ ब्रह्म होना सन्द्र होमा विभिन्न बनना। र्धकार, धंकाधर (हे ४ १६ वर् )। स्टेकाकी [संस्था] १ तका बुद्धि (पाणा १ ६ ४ t) । २ जान (यूप १ tb न)। ६ मिर्स्टेंग (धर्मु) । ४ किनकी यसना (मक धरु कम्प कुमा)। र व्यवस्था (सम २ १)। इ.स. नि विति प्रसंदय (भय १ १ टी बीन १ डी--नम १६३ था ४१)। वृधिय नि [विधिक] अतनी ही फिसा

तेने का वतकाता क्षेत्रमी जितनी कि मपुक विने हुए प्रशेषों में प्राप्त हो बाग (छान ४---पण १ ४. १---पत्र २१६ मीरा)। संग्राण व [संस्थान] १ विक्टी परवा, र्चका। रेचियर-रास्त्र (स. ४ ४-- १४ २६१३ शब्द करन सीचा पञ्च स.६.६) णीयस १६६) इ संस्थान कि सिंसपानी १ साल मनक निविद (क्या ६ ११) । २ धावाज कंपनेनावा। ६ संहत करनेवासाः ४ तः लोडः। ६ सिविह पन । ६ प्रेड्डींट ग्रेट्स्ट । ७ ग्रामस्य । व মতিকদ, মতিদ্দলি (ইং ৬৮ ৮ (২)। संख्याय देखी संख्या = धं + क्या । संस्थाय वि सिक्यमी संस्थानक (नुव १ \$ 4 a) 1 र्धकायण व शिद्धाचान । योच विशेष (पुन t (49 t#) i र्सन्तरक र्षु [ब्रे] हरित की एक बादि नांवर मुष (वे = ६)। एंकासम को संबादम ≈ ग्रह-नर्। सं**काष्ट्रं रेको संन्धवर्ड् » वञ्चान्ती** । संवातिय वि [संस्थापित] विस्तर क्रिकी कराई वर्द हो नह (सुरा १६२) स ४१६)। च केन देवी संक्रिप = शांक्विक (स १७३) BH (46): संदित्व देवो संस्य = इ + व्या : संख्यित है [संस्थेयतम] संस्थातमा (मह संजात वि [संद्यित] संदेप-पूर्व, होटा निया क्षमा (क्षमा, वे ३३ और ११) । क्षक्रिय वि [ध्राद्विक] १ संस्थ के किए फरा-चींका तंब की शब में बारत करी-बल्ला । रांख बनानेबाला (कृप्य धीप) । संस्थित देवो संबद = र्यक्य (स. ४४१) वेच २, ११। मीमद १४६) । संकिया की [शक्तिक] क्षेत्र शंव (जीन

र-पारेश्र, में १ ही-पर १ शासन

संसुध्ध सक [रम्] बोक्स करता, संबोध

करना । श्रेषुहर (हे ४ १६४) ।

VK) I

संजुदुण व [रमण] भीवा पुरव-कोदा | (दूमा)। संख्रास (घप) नीचे देखो (निव)। संसद्ध वि [संस्कृष्य] शोष-प्राप्त (स ११८० ६७४ा सम्बद्ध १३१ सूरा ३१७ कुम 20Y) 1 संस्थिम १ वि [संसुच्य, संसुमित] संस्थित उत्पर देखो (सम १२६ पष २७२) पटन ३३ १ ६ पि १११)। संदेख देवा स्थान मं + क्या ्रकेनो संक्षित्रक (प्रणु ६१ संक्षेत्रह संखेळारूम 🤰 विश्व १६ )। संक्षेत्र देवो संख्यित (ठा४ २—पत्र २२६) बेदब १२६)। संक्षेप र सिक्षेप] १ सत्य कम कोहा (वी <sup>1</sup> २१३ ११) । २ निष्ठ संबाद, संबृति (बोयमा ३ स्थान' -वेरसम् श्रीवर्धकेषस्मृ' (कम्प ६, १६)। ४ सामाधिक सम-माव से माव-स्थान (विसं २७१६)। संस्थान [सहोपप] क्या करता सून कएकः (वद २०)। संकेषिय वि सिद्धेपिकी संस्प-पूक्त । इसा **धी व** विद्या विनयन्तिरहेप (श १०---पव ६ ६)। ह्याम । स्व [सं+क्षामय] धूल क्रुदोड | करना । प्रेबोहर (गर्वि) । क्रम् **एं ओ** सिकासाण (एम्प १ ६--- १व 224) I संख्येत व सिक्षाम र यम भाव के उत्पद विश्व को स्पन्नता, क्षीम (इन मुद २ २२३। उपयू १३१: पू वे वि श्वा वस्त्र)। २ चचसता (यडह)। संख्यादिम वि [संसोभित] सूच क्या प्रमा श्रीम-प्रक किया हुसा (वे १ vt) मिप ६)। संग द [श्टर्स] १ चीय, विपास (वर्धसे ६३) ६४)। २ अरक्ष (कुमा)। ३ वर्षत के उद्धार का नाय, रिकार । ४ प्रकारता पुरस्ताः ३ बाय-विरोध । ६ काम का बार क (है है

११)। स्वो सिंग=ऋङ्ग ।

104

र्सन म शार्की ग्राप्त सक्तमा (विश्व २८९)। संग पंत्र सिक्की १ संपर्क संबन्ध (भाषा) महा दूमा)। २ सोइथतः 'तह होसामारज इजलसंगं सद्वारा पश्चिमित्रं (संबोध १६३ बाबा प्रमु १ )। १ झार्साक विषयावि-चप (पुरुष: भाषाः उप) । ४ कर्म अर्थ-वन्य (भाषा)। १ बन्बन्ध 'भोगा इमे संमक्त इवैति' (उत्त १६ २७)। संगद्र की सिंगति १ की बिका सबितता (सूपा ११)। २ यस (प्रति)। ३ नियति (समार १२६)। संगद्धभ वि [साङ्गतिक] १ निवर्धनक्रय नियति-स्वन्ती (सूच १ र २ ३)। २ परिवित: मार्गित का सक्राए कि का संबं? यह)यृति वा (छा ४ १—पन २४३ यव)। सर्गंथ पू [संप्रग्य] १ लगन का स्वजन, स्येकः स्या(धाना)। र संकन्धे प्रशुर दूस से निसंका संकल्द ही बहु (पराहर ४--पत्र १६२)। संगच्छ एक [सं+गम्] १ स्थीकर करना। २ यक संबद्ध क्षेत्रा केल रखना। स्वरूप्त (नेहम ७०१ पर ) संबद्धाः (स १९)। इ. सगमणीश (गळ-विक १.)। श्चाच्छ्रण व [सगमन] स्वीकार, श्रंबोकार (स ११)। र्खगम 🛊 [स्थम] १ मेल मिकाप (पाय महा)। २ प्राप्तिः सम्मापनग्यस्यमोद्यः जिल् देशियो बम्मी (महा)। १ नही-मीसक विषयों का धापस में मिलान (सामा १ १—पन ११)। ४ एक देव का शास (महा)। १ की-पुस्प का संयोग (हे १ १००) r ६ एक कैन मूर्नि का नाम (उथ)। संगमय प्रे [संगमक] भगवान् महत्वीर को क्राधर्वं करनेवामा एक देन (वेह्य २) । संगमी की [संगमी] एक कुछो का नाम (महा)। संगय वि [र] मद्या विकता (रे ६० ७)। संगय न [संगत] १ नित्रता ग्रेशी (नूर १. २ १) । २ संब, सोहबत (उवाद्वप्र १६४) । संगद्धण स्पे [संगद्दण] संबद्ध-प्रन्य, सक्तिक १ पूर्वम वैश मुलिकासास (पुल्क १०२)। ४ वि. युक्त चित्र (विदा १ ए—पव

२२) । १ मिसिल, मिसा ह्या (प्रानु ११) वंशा १ १: महा)। संगयय न [सगदफ] ध्रूप निरोप (ध्रीन u)ı संगर केको संकर = एकर (विधे २८८४)। संगर व च्यार पुत्र एए सक्तर (गम काम १८६ कुम ७६ वर्गीय ८६ हे ४ fixx) ! संगरिया की दि] फ्ली-क्रिपेप निस्की तरकारी होती है सौमधे (पब ४--पामा २२१)। संगळ एक [सं+घटय] मिचना र्चनदिव करना। संगवद (ह ४ ११६)। **पंड. संगध्य (कुमा)** । संतक्ष यक [सं+गेल्] यस बाना होन होगा। वह संगर्खन (से १ १४)। संग्रिक्श की हि प्रको प्रविका धीनी (शव ११--पत्र ६४ मनु ४)। संबद्ध पक [सं≁ प्रद्र] १ संवय करना । २ स्थीकार करना । ६ बामय देना । समहद (धर्मि) । धर्मि संपहित्यं (मोड ६६)। संगद्द प्रीक्षि वर कं उत्पर का विरक्षा काठ (4 × Y) 1 संगद् र्ष [संबद्ध] १ संबद ६४ट्टा करना बढोरमा (ठा ७---पत्र १०४३ वर्ष ३)। २ र्सक्रेप धनास (पाम का ६ १ टी<del>- प</del>त १९४)। ३ सपनि वस साहिका परिषद (ब्रोव ६६६)। ४ वय-विशेष वस्तु-पराद्या का एक हरिकोण भाषान्य कर से बल्तु को देवाना (ठा ७--- नत्र ३६ विस २२ ३)। १ स्मीकार, ध्याप (ठा ब---वव ४२२)। ६ कष्ट वर्धन में सहायता करना (ठा १०---पत्र ४२६) । ७ वि संग्रह करनेवाला (वय ६) । व न. नप्तत्र विरोप 🕎 प्रह से माञ्चल नक्षम (वय १)। संग्रहण न [संप्रहण] संग्रह (विते २२ १ वंबोध १७ महा)। गाहा की [गाया]

बंधहन्त र (कम ११ )। रबो संगिष्हण ।

क्य से पदार्थ-प्रतिपादक ग्रंम सार-संपादक

द्रान्त (संय १३ वर्गते ३) ।

संगद्विक वि सिमिटिकी संबद्धनाना संग्रह बन को माननेवाका (विधे २०६२)। संगक्षिक वि सिंगारित है विकास संगय किमा क्या हो वह (है २ ११८)। २ स्रीइत स्रीतार हिमा इचा (क्छ)। १ पक्का क्या: 'संग्रीहयो हरनी' (चत्र =१)। देवो संग्रितीय ।

संगा एक (सं+गै) भाग करता । करह संविद्यमाण (श १६७ दी) । सीरा की कि बल्ला, बांबे की बलाय कि

८, २)। संग्राम एक [ सबपामय, ] नक्षर करना । धवानेह (सफ तंदु ११) । बद्ध, धरायिमाण (सामा १ १६--- पत्र २२६ निर १ १)। संबंध दें सिक्यामी बनाई दुव (बाजा-पाम बहा)। सूर दं [ैशूर] एक एका काबास (धूर )।

सगामिन वि (साइमामिक) संकार-संबंधी नड़ाई से बंक्त्य रखनेवाला (ठा १, १---पव ६ संबंधि)। संगामिका की सिक्तमामिकी क्षेत्रका मानुषेन की एक नेथे जो बजाई की खबर केने के बिए पनाई वाती थी (विश्वे १४७६)।

संगामहामधे क्षे (सहप्रामोदामधी) विवा-निरोध, विश्वके प्रमान है बढ़ाई में माहानी से विकास निजाती है (तुपा १४४) । सगार 🖠 👣 क्वित (हा ४ ३---१व १४६ सामा १ १। सोपसा २२ सुख २, र सुद्धति २८ कर्नद्र १३०० कर १ ६)। संगाहि नि [संख्रहिम्] संख्र-कर्टा (निसे

1 ( 1 X 1 संगि वि [सक्किन्] धन-पूछ (क्या संगोध कः कम्पु) ।

संनाजनाण केतो सन्तः = च + पै । संगिष्य देवो संगद् = पं + प्रष्ट । वेशिगृहर (दिने २३३)। इ.सॅ. इतिकारी (तिरो २२ ६)। वक्त-संगिष्टमान्य (का ध. ६-- पत्र २३१) । बह्न, संगिष्टिचार्थ (पि

244) 1 संगन्ध्य व [६।व्ह्य] चन्यम्बान (अ ब--वन ४४१) । देशो संग्रहण ।

संगिश्च नि [सङ्गवन्] वड संव-मुक (पास) । संगित वेशो संगेत (धन) ।

संगिकी को संगेही (पन)। संगित्रीय वि [संगृहीत] १ माधित (अ च—पन ४४१)। २ केवा संगक्षिक =

यंग्राति । संगीक व सिंगे हो १ वाना वाल-ठाव (क्या)। २ वि जिसका दान किया क्या हो वहा केस संगीमो तह केन प्रसामाने (मूपा२)।

क्तु**व क्र [सं+**नुवय ] पुक्कर करना । श्रप्रश्च (नुस्य १ ६ ही) । संशुक्त वि [संशुक्त] पून्तित विश्वका प्रस्तवनर किया क्या को नह (युग्य १ ६ टी)। संगुलिस वि [संगुणित] उत्तर देशो (वीच

रशः केला ११६। कम ६ १७)। संगुत्त वि सिग्नाम है । विशव हम्प प्रण्यान रखाह्या (क्य १९१८)। २ प्रनिवनुष्ट सन्धन प्रमुति हे प्रमृत (पन 1885

श्चनेकार्षे कि विश्वद्याः समुकार (देव ४ मन १)। र्श्व 🖈 👣 १ परतर धरवाना 'कुम्बर्डपेनमीप्' (स्टाय्य १ - ३—पन ६३) । २ इत्युद्ध समुद्याय (सय १ ३३ --- पण ४७४१ पीर) ।

क्षेत्रेक्टम 🖟 👣 क्षेत्रच, वक्य-पुरू (वे (4) संगोधक ) दू [साबेफ] क्य-विशेष वर्वट क्षोपेक रेक्न क्य प्रमान (बच २२, १४)। संगोक्क व वि] शंचाय शंपूर् ( पर् ) ।

संगोको की विकास प्रेमात (वे ४)। संगोब एक सि+गोपय ] १ विकास कुरत रक्षमा। १ स्थल करमा। सनोवद (शक्त ६६) । बहुन् सगापमाण संगोपेमाण (काम्बर १-५४ दशः विकार २--पथ ४१)।

संगोषम वि [संगोपऋ] च्याल-कार्ड (कादा १ १<del>० - ४</del>म २४ )। र्संगोधाम केवी संगोप। शंधीनावसु (स 48) (

संगोषिक वि [संगोपित] १ विशास हम्य (स ८१)। २ वर्षकेष (मद्या)। संगोषिच ) वि सिगोपयित् । बळस को संगोबेस् । (ठा ७—पत्र १८१) ।

संध धक [क्य] स्थूना। वंदर(हे४ २) चंबपु (बुमा) । संघ र्ष (संघ] र शाब्द शामाद, मानक भौर वानिकाओं का सनुवास (ठा ४ ४---नर्व २ १) इत्रीयः स्थानि ४० दिल्प १३ ६ ४) ( ९ समान कर्मनानों का समा (नर्नार्स ६ व)। १ समुद्र, समुद्राय (दुदा १८)। ४ माणि-समूह (हे १ १०७) । शास दे [बास] एक केन प्रति और बंध-नदी (के १। धन)। पास्त्रिम बास्त्रिम दु ["पास्त्रिन] एक प्राचीन कैन दक्षि को भारतेस्य प्रति के

रिज्य में (कथ राव)। रुपम वि (संबंद दिवेद सम्बंदि । संबंध प्रसिव्धी १ विद्यास, स्वकः। २ यानाव <del>बन्न</del>य (सामा १ १---पत्र ६६) मा २**द)** t संपद्धक [सं+पद्दी १ एवर्ड करना कुर्य । २ थनः बाराय बचना । चन्द्रस् (वर्ष) संस्कृष (सामा १ १ -- पत्र ११२, भव ६, ६---यम २२६) श्रीमद्भय (दत ७) । यहः संबद्धेत (पित १७१) । संब-

संपद्धिका (पर २)। र्धपट्ट र्र [समरू] १ मामातः क्ला संवर्ष (अवा कुछ १६, जनीव १७) सूचा १४)। २ वर्षे भैगातक का शब्दी (ब्रोक्स १४)। वे हुवारा गरक का सहस्री शरकेन्द्रफ-स्वान विशेष (क्षेत्र ६)। ४ और अध्यक्त अध्यक्त (यवि)। इ.स्पर्ते (ध्रम्)। संबद्द वि [संपट्टित] संबन्त (बर्वि)।

(कामा १ १-- पण ७१३ पिंड ६ १) । २ स्तर्यं करना (राव)। संबद्ध्या को [संबद्धना] संबद्धन संबद्ध 'नवने चंन्द्रकुर व चट्ठदुनेक्रमाखीय' (पिड 1 (805

संपद्भ व [संपट्टन] १ संगर्तन संवर्ष

संपद्दा 📽 [संपद्दा] बल्धे-विकेष (वर्ष १—यम ११)।

संपद्दिय-संपर समद्रिय वि [संपद्दित] १ साउ छुपा हम्स (एएस: १ १—पत्र ११२ पत्रि) । २ संबंबित संगदित (मम ११ १---पत्र 966 980) I संपद एक [सं+ घद्] १ प्रयश्न करना। २ संबद्ध होना युक्त होना । 😮 संघ हयस्य (ठा य-पत्र ४४१) । प्रयो संगडानेइ (मद्भा) । रुपड वि [संपट] निरन्तरः संवदर्शिको (ब्रावा १३४ ४ ४)। संबद्धण देखो संघयण(बंड-पू४० मनि)। संबद्धणा को [संघटना] रचना निर्माण (समु १५६)। संबद्धिम वि [संघटित] १ धंबड मुक (क्रे.४ २४)। २ मध्य बदित (प्रामू २)। संबद्धि (रो) भी [संहति] स्वृह्स (पि २६७)। क्षप्रयान [देसंहतन] १ शरीप, काय ।

(दे व १४' वाघ) । २ मस्त्रि-रक्ता शरीर, के हाही की रचना शरीर का बॉब (सन सम १४६ ११६, स्मा सीपा स्वयः कम्म १ ३८८ पड्)। ३ कर्म-विरोग मन्दि एक्स का कारए-मूख कर्म (सम ६७) कम्म १ २४) । संप्रयणि वि [ दे संह्रननिम् ] संहतन-बाला (सम १६६, धलु व टी) । संपरिस देखा संघंस (उप २६४ थी) । संघरितिद् (ही) वि [संघरित] संवर्ध-युक्त-विताह्मपा(मा ३०)। संघर एक सि + घूप् विषयं करता। शंबस्थि (धाचा २ १ ७ १)। संपर्सिद देशो संपर्शिसद (शाट-भासवि ) 36)1 संभादम वि [संपादित] १ संकार कर से निर्मात (ते १३ ६१) । २ जोड़ा ह्या

(पाष) । ३ इकट्टा किया हुया (एडि) । संपाइम 🖟 [सपावम] इतर देशो (बीप ब्यकार १२ १ वि६२ व्यक्टर-रक्षा २ १७)। संपाद देशो संपाय = सवात (बोबमा १ २८) धन)

संबाह्य रे मुबल (राम ६६ वर्गेसं १ वर-चप यू ११७ सुमा ६ २ ६२३ मोण ४११ छन २७६)। २ प्रकार, नेवः 'सीमाओ ति वा तय ति वा पयारो ति वा एयट्टाँ (तिषु) । ३ आतामगै-कमा नामक वैन धंग-यन्त्र का दूसरा श्रम्पयन (सम ३६)। संपादन देवो सिभादन (कप) । संघाद्यमा की [संघटना] १ संबन्ध । २ रचना 'सन्धरपुखमतिसंपाम (? र)खाएं (सूर्धान २)। संचाही की वि संघाटा र मुग्य मुक्त (देद ७ प्राष्ट्र वेद या ४१३)। २ उत्तरीय वद्य-विशेष (टा४ रे—पत्र रेव€ः खाबार १६---पत्र २ ४<sup>-</sup> बोय**६**७७ विदे २३२६/ वर ६२/ क्छ)। <sup>।</sup> सभाजय प्रे [शिक्कानक] श्वेष्मा नाक में से बहुता अप पदाने (तंदू १३) । संपादिम पेको संघाइम (सम्पार १ 🗝 🗝 १७१ प्रसाहर प्र—पन १४)। संपाय धर्म[ सं + पातय ] ! संइत करना, इकट्टा करना मिलाना। २ दिशा करना माण्यः। संवायद्, श्रंथाएइ (कम्प १ ६६) मग १, ६---पत्र २२६) । 🛊 संघायणिज्ञ (उत्त २१ ११)। संपाय १ [संपात] १ संहति सहत रूप से धनस्यान तिबिद्धा (भनः दशः ४ १)।२ समूह करना (पासा भरता सीप महा)। वंहमम-विशेषः नक्षप्रयम-नाराच नामकः धधर-कवः 'तंबाएएं चंठाऐएं' (द्योप)। ४ भृतकान का एक भेद (कम्प १ ७)। १ संक्रोच, सङ्ग्रवामा (धाचा) । ६ न नामकर्म-विशेष जिस कर्म के उदन से शरीर योग्य पूर्व पूर्व-यूक्षित पुरसी पर ध्यवस्थित क्य संस्थापित होते हैं (कम्प १ ६१ १६)। समास 🛊 ["समास] पूरकान काएक मेद (कम्प १७)। र्संघायत्र य [संघातन] १ वित्रास, द्विस

(व १७)। २ वेको संघाय'का प्रका

सम् (कस्य १ २४)।

न किरण प्रदेशों की परस्तर संहत क्य संस्थाना (विसे ६३ ८)। संधार वृं [संहार] १ बहु-बंदु-सम प्रसय (तंदु ४४) । २ नात (पद्म ११० ८ खप १३६ टी)। १ संक्षेप । ४ विसर्जन । ३. मरफ-विशेष । ६ भैरब-विशेष (हे १ १६४- वड ) । रुपार (बार) देवा संहर = सं+ हा श्रेष्ट संभारि (गिम)। संचारिय वि [संदारित] मास्ति श्यापारित (भवि)। संघासय दूं [ब] स्पर्ध बरावध (र ब 1 (#9 संचित्र देवो संचित्र = संदित (प्राप) । समिद्ध वि [ सप्परत् ] संध-मुक, नमुदिव (धन)। संपादी की हिं] व्यक्तिकर, संकल (दे व संच (प्रा) देको संचित्र । संबद्ध (महि)। संच (घप) र्षु [संचय] परिचय (भवि) । संबद् ) वि [संपयिन्] संबदवाता संबद्धा । संबद्धी संबद्ध कर्णनामा (रसनि १ १। यर ७१ मी)। संबद्ध 🖲 [संबद्धित] संबद-मुक्त (राज) । संबद्धार र्षु [दे] धवकार जबहा **पाविगाणिय कुचक्तंबं इय** कुद्दिपकरंककारले कीस । वियर्धीय संबद्धारं ते नारपविशियदुक्काखः ॥ (इस ७२ व टी)। संबच वि [संस्यक] परिस्वतः (पञ्ज १७८) । संबय पु [संबय] १ संबद्ध (पराइ १ ५---पत्र हरः धत्रकः सहा)। २ समृत् (कव्यः थउड) । ३ बॅक्सन जोड़ (शव १)। ैमास र् (<sup>\*</sup>मास) प्रायधित-वंशना मास-विधेष (सम्) । संपरचक[सं+भर] १वनना सर्व करना । २ सम्यन् पति करना प्रश्मी करह चनना। ६ वीरे और चनना । संबरह ं सेघायणा को [संघातना] चंहति। करण 🗸 (वतः ४२३: पति)। वहः संवरत (४२,

रेश सूर रे ७६३ साठ-- मैद्र १३ )। इस

संपर्राणञ्च संपरिश्रम्म (गाट-नेव्ही

संचरण व सिंचरजी १ वसमा बर्धि। २

संघरित्र वि [संघरित] चता हुया विक्रो

संबद्ध्य न [संबद्धन]बंबार, वृद्धि (वरह)।

संपंजित्र रि सिवविदी बना हवा (न्र

संबद्ध किया हो वह (जर पू १६० सहित

सम्यम् बर्ति (गावः पि १ २) कृत्यु)।

१४ से १४ २व)।

१६: धवि) १

६ १४ व्यव

संपद्ध सर्व [सं+चक्र] बनना धरि करम्य । सच्चाद (मनि) । संबद्ध (घप) देवा संबक्षिय (मणि)। संबद्धिभ देवो संबद्धिम (महा)। संचाइय वि सिराबिटी को समर्थ हजा हो बह (मन १ २ टी-पत्र १७४)। संचाय सक [सं + राष्ट्र] समर्थ होना। र्वपार्ड (भग उनाः क्यः) संचारमो (सम ८, ७ १ । छासा १ १०—पत्र २४ )। संच्यय र् [संत्याग] परिकाय (वंबा १६ \$¥)1 संचार तक [सं + चारय्] बंचार कराता । बंचारः (धनि) । ४३ रोगारि (धप) (चित्र) । संबार पुर्मियार | संबद्धा वर्धा (बद्धा महाः धनि । संचारि वि [मंचारिष्] वति करनेवावा (क्यू) । संया एक वि सियारिकी विकास संयाद करावा दया हो यह (श्रवि) । संपारम रि सिवारिमी वंशर-बोग्य वो एक त्यान से उस नर नुकरे स्वान में स्था ना यके बहु (विक १ । मुता ६६१) । भंपाराध्ये शि श्व-क्रमें करनेताता क्री

(पामः पद् )।

t-41 (16):

संपात पर [सं+ पातव] प्रवासा ।

बंबाबद (मरि) । ध्यक्त संचाक्रियांत

संशास्त्रियमात्र (वे ६ ३६ शासा १

संवाधिम वि [संचाबित] वधाया ह्या (d v २७) i संचिम वि सिविती संबर्धत (धोव १२६ यांगा शास-मेकी १७ गुपा १४२)। संपित्रण व [संचिन्तन] धिन्छन विचार (कि २२)। संचित्रणया की [संचित्रतना] कार केवी (क्छ ६२ ६)। संविक्त वर्ष [सं+श्या] ख्वा व्यक्ता मच्ची तर्या राजा समावि से राज्या। सविश्वह (पाचा १ ६ २ २) । दंदिनचे (बच २, ६३ योव ६३)। संचिक्तमाय देवा संचित्र । संचिद्व देवो संचिक्त । संचिद्वद (भग बना मारा)। संचिद्धण न [संस्थान] यक्त्वान (शि४८६)। संभिज एक [सं+चि] १ प्रवह करना रक्ट्रा करमा । २ करकर करमा । श्रीकरोह वंश्वितः विश्वति (वृ १ कः वि ६ २)। **४४-** संचिणित्ता (नूर्य २, २, ६५: मद) । कम्ब- संचिक्तमाण (स्रचा२ १३२)। संचिषिय वि [संचित्त] समृद्दीत (व ४०६)। र्धिषम वि [संबीज] वाचित (क्य) । संयुष्ण क्व [स+क्लेब ] क्र-क्र क्या श्रक्त क्या दुवस-दुवस क्या। करक संजुविकाओंत (पत्रम १६, ४४) । संपुष्णिक है वि सिव्यक्ति बुरन्दर संबंधिक क्रिया हिया (सहा सीध खाना १ १--नव ४७- दुर १२, २४१)। संयेयणा धी [संजेतना] प्रची तया सुव भाग 'महत्तेक्ष्रहात' (तिरि ६१ )। संबाह्य वि [संपादित] प्रेरित (ठा ४ ३ धि--पत्र २६८)। संबद्ध ) वि [संबद्ध] इशाह्या (क्य स्त्रिका है हरन मुद्द र प्रका भूग संबंध । १६६। वहा। संख्)। संब्दाइय वि [संद्रादित] बना ह्या (शुपा १६२)। संदाय करु [ सं + धार्य ] टक्ना । वह. सीद्यार्थत (परम १६ ४७) ।

कोड़म, इकट्टा करना; 'बंब्रुवर एक्केटिन' (पिंड ६११)। संबोध र सिंह्यपी सम्बद्ध तथा प्रेस्स क्षेपश (पंच १, १११ १व )। संबोभग वि [संबोपक] प्रबेपक (पव)। संबोधण न [संचपन] पर्यस्त (धन)। संबद्ध पूंची [संयदि] उत्तम शाष्ट्र, कृष्टि चनाय समानियीकांतर वेस्परिकातीला (धंपील १६) : संबर्ध भी [संबर्ध] बाल्मी (बोद १६ महा इ. १७)। संख्या वि [संखनक] प्रसम करनेवला (50 tt t42) : संबद्धवान सिक्तनती १ क्रवर्षि । २ कि जनम करतेशामा (पुर ६ १४२) दुगा देवर)।अदे यी(स्टबरव)। संज्ञजन केवो संज्ञजन (नेइन ६१६) सुरा १ । सिम्बर २१)। संबन्धित वि [संजनित] स्थास्ति (प्रमू १४६। एख)। संबन्ध सक [दे] वैदार करना। संबन्धेह (જ ૨૨) ા संबन्ध की [संयाता] बहाब की दुशांपिये (खामा १ -- पन ११२)। संबच्चि क्षे 👣 हैयाधा भारतचा निक पुरिवा संबंधि दुन्त्व सम्बाल' (दुर । रेरे स ६३६ ४३१: महा)। हैसी संबक्तित्र हि दि] डिवार किया हुमा (ह REA) ! संबक्तियः) वि [सांगातिक] बहान से संबक्तिय है याना करनेनामा समूह-मार्ग का प्रवासित (तुवा ६३१) ही 🖽 विदि ४३१३ पथ २७६३ हें १ ७ ३ महाऽसामा **रै**। य-पय १११)। संज्ञस्य वि [वे] १ द्रवित, कुछ । २ ई शोध (दे 1 ( 7 संबद् देवो संबद = बंक्ट (प्राप्त; ब्राज्ञ १३) पहिंद है)। संबद्ध थड़ [सं +यम् ] १ विषुत्त होन्छ । ९ श्याल करना १. १ वट निवस करना । ४ संद्वह का [सं+क्षिप्] एकवित कर क्षण वांत्रसा ६ राष्ट्र में करवा। कर्न,

संज्ञमर्थन, संज्ञममाय (परबन्ध प्रकार स्वार्धि ११ ज्या १८ २६)। क्षा स्वार्धित स्वर्धित स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित स्वार्धित

स्तेम र्पुं सियम र कारिक वह विपति दिवादि परान्तमी ये निवृत्ति (यगः का का धीर कुमा महा)। र शुन महाइन (कुमा का २२)। व पता पर्युक्त (कुमा र न्या का राष्ट्रिया (क्षमा र र र-पाव का र प्रिक्तन्तिकहार वण्णका व निव्यंत्रमा कास्त्रकत्व (वीप)। स्त्रीकाम म स्थिममा उसर केवो (वर्गीय र का १२१ सुमा १२६)। स्त्रीवाम व वि वि संयोगित विद्याका हुमा

(दे द १३)।
संब्रांसक दि [संयमित] बोचा हुया बढ़
(वा ६४६ सुर ७ ४ हुव १८०)।
संब्रय यह [सं + पम्] १ सम्बर् प्रवक्त
करता। २ एक वन्न्यी तथा प्रवृत करका।
संब्रय दिस्पत्र] वातु, पुत्री, बडी (करसोचना १७ गल्ड)। "पंता की [प्राप्ता संबर्धां (पद्मा) "पंता की [प्राप्ता

(धोषमा ३७ टी)। महिना धी

"महिका चाद्र को महुकूस यहनेवाली

४२ )। संबद्ध ई [संजयन्त] एक वैन ग्रुनि (पत्रम २,२१)। पुर न [पुर] नवर-विशेष (एक)।

संज्ञाल पण [सं + नगरह] १ जनमा । २ पाक्रिय करमा । ३ जुड होना । संजने (सूध १ ६, ३१: उत्त २ २४) । संज्ञाल वि [संज्ञालन] १ प्रशिज्ञाल क्रोप

करनेवाबा (तम १७)। २ तुं कवाय-विशेष (कम्म १ १७)। संज्ञास्त्र शुं [संग्र्वाज्य] तीवारी गरक पृति का एक गरक-स्वान (वेकेट १)। स्विद्धार्थ (यर) वि [संग्राबिय] या<del>कोर-</del> युक्त (यवि)। संज्ञाब वेको संज्ञस = तं+यस्। त्रवस्तु

(बा) (बंदि)। संजय केवो संज्ञान = (वे)। संजयह (प्राष्ट्र ६६)। संज्ञियक केवो संज्ञामित्र = (वे) (पाव क्रांकि)। संज्ञादिक केवो संज्ञामित्र = संबंधित (बंदि)। संज्ञादिको संज्ञासित्र = संबंधित (बंदि)।

वजायम हि सिद्धायक विक्र हिकान, वामकार (पन)। सेवाव वेको सेवाय संवाद (दूर २, सेवाव है ११४० ४ ११ । प्राप्त हि १४)। सेवाय पक सिंग बनान होना।

संबाय वि सिंबाती चलन (मरा स्था

महान्यसम् पि ३३३)।

संबोधन की सिंबावनी है बच्छे हुए को सीधि करनेवानी वीधीर (मानू दर)। १। वीधिर (मानू दर)। १। वीधिर वीधिर (मानू दर)। १। सीधिर विधिया है। दिस्तीयन् विधानेवाला भीधिर करनेवाला (क्यू)। संग्राभ (सिंपुत) वीधर, संग्रुख (ह २२ सिक्का ४०। मृत् ६ ११० म्हा)। वेखी संग्रुख।

स्वस्ता प्रता पुर वे ११० व्या। वर्षा संजुष न-[संगुण] १ वहार, प्रूट, थंपान (प्रथ) २ नगरविष्ठेष (प्रम)। संगुंज कह [सं + गुज् ] बोहना। कर्यं 'परिविष्टें सम्प्रके ववेल बगुष्(१ क्रोटी

(सम् १९)। संजुन म [संयुव] प्रत्य-मिषेण (पिम)। वेदो संजुल स्रियुवा] प्रत्य-मिषेण (पिन)। संजुल वि [संयुवा] प्रत्य-मिषेण (पिन)। संजुल वि [संयुव्ध] पंचीपनामा मुझा हुमा (पहा स्रण पि ४ ४ विम)। संजुलि को [त्र] वैक्यपे (सुर ४ १३

१२ ११ ख १ ३ इम २०)। देखो संबत्ति । संज्ञक वि वि सम्बन्धक बोबा दिसने वसनेवासा, फरकनवासा (वे ८ ६) । संबद्ध (न [संयुध] १ व्यवित समूद्ध (क्र १ —पत्र ४६६)। २ सामान्य, सामारखना। संक्षेप समात (सुम २ं२१)। ४ ग्रन्द-रचना पुस्तक-निर्माख (मसु १४६)। ४ दक्षिण के प्रकाशी सूत्रों में एक सूत्र का न्यम (सम १२८)। संबाध वह [ सं + योजयू ] वंद्रव हका संबद्ध करनाः मियण करना । संत्राप्दः वंबोय**इ (लंड ६३**०° मण **ड**का पवि) : नक संजीर्यत (पिंड ६३६) । संक संजा-एऊण (निष्ठ ६३१)। इ. संबारश्रस्य (मप)।

संबाध एक [ सं + दश ] निरोक्तण करना वेबन्ध । संब्रः संबोहकण (मृ १२) । संजाम र् [संपाग] संबन्ध केन-विश्वाप मिभ्नस् (पद् । महा)। संबाध्य व [सरावन] १ बोक्य, विनाना (ठा२ १—पत्र २६)। २ वि बोक्नेशसा। ६ क्याय-विशेष, धनन्तानुबन्धि नामक क्रोबादि-वनुष्क (विसे १२२६) कान ४, ११थी)। चिक्रणिया 🛍 विभिक्रणिकी बज्ज वादि को उसकी मूठ वादि है। जीकी को किया (ठा २, १—पण ३१)। संजोभगा 🕸 [संयोजना] १ विकास मिथल (पिंड ६३६)। २ फिकाका एक बीच स्वाद के लिए विज्ञा-प्रात्न चीकों की पापत में मिश्रमा (चिंद १) । संजाद्य दि [संगाजित] निजास हथा जोड़ा हुया (भक्त महर) ।

संबोदप वि [संदर्ध] हर, निर्धेष्टित (धर्षि)। संबोग देवी संबोध = चंद्येव (हे १ १४६)।

संबोगि वि [संबोगिय] वंबोय-बुक, संबन्धे (पंबोध ४६)।

संबोगनु के [संयोजियतु] बोक्नेमाला (स ६—पत्र ४२१) । संबोध्य (दश) देवो संजोधः = च + योगन् ।

संग्र भोवे 🖦 (सामा १ १--पन ४४) ।

संक्र- संजोचिति (वर्ति) ।

च्छेपावरण वि विच्छेपावरण १ सम्बद्धा विभाव का धावारक। १ तुं चन्त्र चाव (क्ष्यु १२ दि)। दश्म तुंव विभाव इक्र के सोम-बोक्पल का विभाव (सव क्ष ए—पन १७१)।

टीमा की [सम्म्या] रे सं प्रेम, साथ सामेशमा (क्रिया करू महा) र दिस और रावि का संविध्यात । में पूरों का संविध्यम्भा । ४ स्थी-किसेश । १ क्रिय को युक्त प्रकी (है १ है ) । ६ नायाक साम निर्धाद (सहा) गिमा में प्रियात है सिक्त सक्का के सूर्य स्मान्य कर स्थात है स्थान सक्का के सूर्य स्मान कर सामेश्यात है स्वाप्त सक्का है २ सूर्य विवार हो स्वयं भोज्यानी या नाम्याना ।

नवाव। े विश्वके क्या होने पर पूर्व क्षीय हो पह नवाव। ४ पूर्व के पीने के या असे के बना के याद का नवान (वा १)। क्रियायरण नेता संस्कृतकेंद्रपास्यण (का दर्द)। जुपान दु निरुद्धानी एकि के मनका बा रैन (वस्त्र १--पन ११)।

<sup>\*</sup>बक्की **व्या** [\*बक्की] एक नियानर-नव्या का

मान (महा) । "बिगम 🛊 "बिगम) तमि

धर (निष् १६)। "विद्या 🖠 [किराय]

बीच धा समय (बीव ६ ४)। संस्थाय सक [सं + च्ये] क्याल करना पितन करमा स्थान करना। संध्यापति (सी) (पि ४०६ ३१)। वक्ष-संस्थायेत (तुदा ६१६)।

संमाज कह [संभ्याय] बंध्या की वरह सक्तात करवा। संभावह (पात १११)। संदंड ﴿ [संदक्ष] क्षत्र धंक्य (वेहह १८६)।

संठ वि [राठ] कृषे वाताची (कृमा दे ६ १११)। संठ (वर्ष) केली संज (के ४ ३२४)।

संठ (पूर्ष) हेबी संड (हूं ४ वर्ष) । संठय्य वेबो संठय । संठय सक [ सं + स्थापम्] १ ।

संहच सक [सं+स्थापय] १ रक्ता स्थापमा करता । १ धारमाहन नेना उद्योग-पदिय अरखा सानका करता । संहथाई,

स्रोजोद (स्विषः महा)। सङ्घ स्टिबंस (पा ६९)। वस्तुत्र स्टिपिआंत (सूर १२ ४१)। संक्ष संदियेतम्म (महा) संहप्प (चन) संदिबंश्च (पिन)।

संठिषका (पिय)। संठषण वेषो संठायण (मुम्बा१२४)। संठिषण वि [संस्थापित] १ एका हुया (हे १ ६७ मध्य हुया)। २ आरंगामित।

३ ज्योक-रहित किया हवा (महा) ।

संता धक [सं + स्था] ख्या ध्यस्त्रम करणा स्थिति करणाः संद्यद् (पि १ ॥ ४ १)। संद्राण ग [संस्थाल ] १ धकार्यि धकार (मध्येतिक स्थाल स्थापः स्यापः स्थापः स्यापः स्थापः स्थापः

वा चनुत्र वाकार होता है यह कर्म (धम १४ कस्प १ १४ ४)। वे छीनकेर एकम केवो छीन्य। श्रेष्ठ संद्याविक (कार-वेत ४१)। संद्यावण व सिंस्वापमी एकमा चिरित्यन

संकारता (गण वन)। विकार संवारण । संकारता की [संस्थापना ] काशायन भाग्यना (वं ११ १२१)। वेची संधानना । संकारिक विकार संकारता है। १ ६० प्राप्त

प्राप्तः)) संदिधः वि [संस्थितः] १ प्राप्तायाः संस्थवः स्थितः (अग्र क्याः मद्गः ववि)। २ श् प्राप्तारं (प्रशे)ः संदिद्धं वीः [सीस्थिति] १ व्यवस्थाः (सुम्बर

११)। १ व्यनस्था क्या विवास (उप १९६१)। संबंधु [श्रुष्ण पण्ड] १ इव जीन सांध; 'नतसङ्ख्या क्यार विश्वतेह य' (या ११ पुरुष्ट, १४)। २ ईन पण साहित्या

क्या इस यावि थे विकास (सामा (

१ - चन्न १६१ मदा कम्या चीतः वा वः तुर १ १ व्यक्ता प्रातु १४१)- 'तिवस्त्रकारी (चडव) । १ पूंजपुंचन (११२६) । विकास वेस सिर्वेशनी १ सम्बन्धितः स्टेस्से

संबाद पुन [संबंध] र मन्य-स्थित क्षेत्रसे, पित्रस्य (तुम १ ४ २ ११) मिया १ स्थान्यन स्थान १६८०) र इस्त-सीन, लांच भीर इस्त के बीच का सान (योव २ ६) सीच्या १६६०) तीं वर्षु [पुण्ड] पश्चिमित्रसेचेय केंच्छो की यात्र पूचकामा गीव्ये (पश्चार १ स्थान १५)।

(स्वरू ) ( (स्वरूप ) मार्कों का क्रीडा-स्वरूप संक्रिका (प्रकारका ११२)। संक्रिका (प्रकारका ११३)। १९१८ मार्का को। १ प्रकारका १९१८ मार्का को। १ प्रकारका प्रकारका मार्का (स्वरूप)। स्वरूप संक्रास्त्र का मार्का (स्वरूप) संक्रिका। संक्री की हिं] सस्क्रा नामा (संब्रु १)।

संबंध है [पाण्डेय] बंक-त्र पंद, गृहंसक-क्रुक्कस्थ्रेस्स्मयण्डरा (शीण द्यासा १ १ से—प्य १) संबंध न [पाण्डिक्य] १ शीष शिष्य । १ तृक्षी कर वार्ष में करान (द्य क्—प्य १६) १ केने सिंडिंड । स्विध है [से] यार्ग में पर व्यव के शिद् एका बाद्य पत्रस्थ माहित भारत कुन्युक-क्षेत्रस्य (बार) वेशो संबंध मानव कुन्युक-क्षेत्रस्य (ब्यो)

मेडास्त्रिय वि चि प्रतुवत **प्रदुक्**त (वे

संबद्ध व [संत्युस्य] तन व्यक्त वे संस्कार बद्धा वी क्षेत्र (प्रस्तु १६) । संवय्धा प्रकृष्टि + त्युः] १ कान वास्य करना नवदर ब्युनना । १ हैनार दोस्य ।

यंब्राच्याद (वि १६१) ।

हुमाः विद्यप्तित (बनवा ७ )। संगद्ध व [संनद्ध] धंगाइ-पुष्ट, क्वपित (विपा १ २--पथ २३) यस्त्र)। संजय देवो संतप (पन)। र्सणवया ही [संज्ञापना] संज्ञरित विज्ञापन संत्रा की [संद्रा] १ प्राहार घारि का धमिनार (सम शः भरः परंग १ ३--पत्र १५, प्रामु १७६)। २ मति, कुवि (ब्रम): १ संकेटः इटराय (से ११ १३४ दी) । ४ बाक्याः नाम । १ सूर्यं की पछी । ६ गायमी (हे २, ४२)। ७ विद्या प्रधेय (हर १४२ थ्री। इसम्यम् वर्धन (यन)। १ सम्बय् ऋतः (सम् १९६) । इ.भ. वि ["इत] रही फिरा हुमा कराग्य क्या हुमा (बस १ १ टी) । सूमि 🛍 िंसूमि) पुरीयोरसर्जन की जसक (उप १४२ टी वस १ १ थे)। संपामिय पि [संनामित] धक्क विका ह्या (वंबा १२ वृद्ध) । संजाय विस्तिद्वाची १ काट नावकः भाइमी (पंचार १६)। र स्वयन सवा (क्य ६६३) । वेको संताय । संजास १ (संन्यास) देशायनाव, कार्ब *बायम (नाट—*वैत € ) । र्संगामि वि [संन्यासिम्] बंशार-व्याक्षे चतुर्व-धायमी यदि, बती (नाट---वैत ८ )। सेपाइ एक [स+ताइय] बहार क सिए दियार करना, युक्त-सम्ब करना। संखाहेषि (बीव ४ )। संगद्ध र् [संनाह] १ पुत्र की वैशाय (स ११ ११ )। २ काफ स्थातर (गार-वेखी ६२) : पहुत्र [ पहु कियर पर नामने का वस्त विशेष (बृह्व ६)। संजाहिय वि [सांनाहिक] पुत्र की वैवाध से सम्बन्ध रक्षनेवाला' 'संस्थादियाण वेरीप् षदं सोचा' (साना १ १६—पत्र ११७)। सीज वि [संक्रिम्] १ वंशवला, वंशा-युक्तः रेमननामा प्राम्ही (धम २० महा थीत)। ३ व्यवक केन पृहस्य (थीम =)।

**वारअसरमहण्य**के ४ सम्यग् वर्शनवासा धम्यक्की बैन (भग)। ५ त गोज-विशेष को वर्षिक्ष गोज की शास्ता है। ६ वृंद्धी उस योग में उद्दरम (हर ७--पम ३१ )। संपिक्शिस रेको संनिविधास (राव)। संजिगास 🚧 संजियास (खाया १ १ — प्रम ३२)। र्सणियास को संनिगास = वंनिक्यं (एक)। संजिबय देखी संनिचय (धन) । संविधिय केलो सीनिधिय (प्राचा २ १ २ ४)। संपित्रक देशी सेनित्रक (यहर)। संजिजाब रेखी संजिनाय (एक)। संविधाइ वेको संविधाइ (गट--माबतो 4 ( SF संधियाण वेद्यो सनिद्वाण (नाट--उत्तर 44) ! र्राणिपश्चित्र वि [संनिपविदा] निराह्मा (विया १ ६-- वम ६८) । संणिम केने संनिम (राज)। संणिय वि [संवित्त] जिसको क्याचा किया पया हो वह (सूपा वद) । संणियास 🛊 [संनिधारा] चनाम अरच (प्रम २ १००)। देवा संनियास । संविरुद्ध नि [संनिरुद्ध] क्ला हुना, नियम्बद (याचा२ १४४)। संधिरोह र् [संनिरोध] घटकाव स्कारट (क्षेत्र ६४)। संणियम अक [संनि + पत्] पर्यना मिरमा। गह्न, संविधवमाण (धाषा २ t 1 1 ) i संजिमाय र्रू [ संनिपात ] सम्बन्ध (वंचा % ₹**⊑**)। संविषिद्व देवो संनिषिद्व (शाया १ १ धि--पण २) । संनिमेस केने संनिमेस (पाषा १ ८ ६ ६ मनः, भवरः गाट---भाषावी ६६) । संजितिका। संजितेका } क्षेत्र संमितिका (चन) । सं जह रेको संनिह (वा ११६ वाट—पूक्स 48) t

संणिहाइ वि [संनिधायिन] सभीप-स्थायो (मास १२)। संविद्वाण देशो संनिद्धाग (राज)। संणिहि श्रेषो संनिष्टि (पाषा २ १ 2 8)1 संजिद्धि वि [संनिद्धि ] ख्वामता के बिए समीप-स्पित निकट-वर्ती (म्प्रा)। देखो सीनिहिष्य । र्सुण ३५६ वसी सने ३४६ (बस्ड) । र्संत देखों स ≈ छत् (उवा रूप्पः महा)। संदर्भ (शान्त) १ राम-पुरत केव-पीत (कप याचा १ ⊏ ५ ४)। २ ⊈ रह विशेष विद्यार्थना वेन एका बंदिएसा किया च मार्चवा (सिरि ==२)। सीत वि श्रिक्ती यका हुआ। (कासा १ ४) जबा है है। हैहेर बिया है है करेंद 8 a 34) 1 संवद्ध भ्ये सिववि १ मेदान समस्य बङ्गानामा 'बुट्रसीसा ब् इत्निया विद्यासेड चंदर्र (स १६ छ सूता १४)। २ व्यविक्कित नारा प्रवाह (उत्त ३६, १) कर Etet) ı संवच्छाण व [संवक्षया] बिनना (सुद्र १ # \$1 PX} 1 संविच्छत्र वि [संविधित] विका हुआ (प**रह** १ र—पन रंद)। संवद् वि [संत्रस्त] इस हुमा भग श्रीत (पुर ६२३)। संविध केवी संवद्भ (च ६०४)। संवश वि [संवत] १ निच्चर, वनिव्यम । २ विस्त्रीर्त व्यक्तिनीसियनितं गरिप मुद्रं दुन्छमेव संवर्त । नरए नेरह्याएं महोर्गिस पश्चमस्याखं ।' ( ac sa as) 1 संवत्त वि [संवतः] यंदाप-पुष्क (दुर १४ दश्चारक्षात्वा १६ महा)। सेवस्य केवी संवद्व (इन मा १४) । संतष्य बक् [सं+तप्] र क्लब गल

होमा। १ पीसिय होना । स्टब्पइ (हे ४

१४ स २)। यदि वैद्याणसम्बद्धः (स

६०१) । इ. संतर्रियक्य (म ६०१) । बङ्ग संतरपमात्र (नुव १)। संबंध्यिक्ष 🖪 [संबह्न] १ बंबाय-मुख्य (दुवा ६ १४) । २ व सताप (त २) । संद्रमान (संद्रवस) १ धनकार, वंगेय (प्राप्त नुरा २ ३) : २ धन्त-नुप संवेध र्नेषा (नर १ १३) ।

संत्य हवो संनत्त = बंदर (पाय: मर्व) : शंतर सक [शं+तृ] ठेरता, तेर कर गर करता । हरू संनारमण (वस) ।

संदरण न [संनरत्र] देखा देर कर पार करता (माय १४ के पण्डर कुत २२ )। संतम यह [सं + प्रत\_] १ वय-भोत हानाः १ वदिग्न होना । वंदने (वध २

(15 t सेना की ज्ञान्ता) नातवे जिन-प्रवरान की रायम-देखा (वृद्धि ६) ।

संवाय १ (संवानी १ पंछ (क्रम) । २ मर्तिन्द्रम बाच प्रशह (विते २६६० पउर न्य ११≈)। ३ <del>र्टन्</del>शन मक्की वर्षाः वालः 'वक्सात्रसंताल्य्' । (पाचा परि प्रमा)।

मेतात न (मंत्राची करिकाल क्याल (44 1):

संतर्गय र (संतर्गनन) १ वर्गन्यप्र वाच स्थाप प्राथ्य-वर्ती, चंदारिएको न बिएको बद्द मंत्राला व नाम संवाला' (दिन २६६० वर्ष्यं २३४)। २ वदा म प्राप्तम, वर्षका मञ्जलन देर इच्च ब्रॉल्ड चर्चा प्रकारी पामनद्वंताहो । ६क्षे वाम महादुधाँ

(क्योर १) । र्मनार वि [मंनार] र साधनामा, वार बजाध्यसमा (पदम २ 🚁) 🤏 पू बनाटा देखा (रिज) मंतरिज रि [संपर्धता] चार कारण हुणा

(fig) 1 मंतारिय रि [मंत्रारिम] तेस्त कोण्ड (बाचा 2 2 2 15) c

भंगार वर्जासे ∻ नापण ] १ नाव रन्य राज्यः दे देश्व दश्याः वज्रकः इ

क्याह-संनाविज्यमाण (बाट-मृष्य १३७)। संक्षाय दें मिताची १ मन का चेर (पवह १ १-- पत्र ४४ जुमाः नहा)। ए ताप बरमी (पश्च १ व--पत्र वर, महा) । संतामण व [संतापन] संताप संतम करणा

(नुवा २३२)। संवाबणी भी [संतापनी] गरक-पुण्यी (नुम 2 X 7 %) 1

संवायय वि सिवाप के शिवाप-अनक (धरि)। संक्षावि वि [संक्षापिम्] एंदल होनेकामा क्षनेगमा (रूप्)।

श्वाबिय वि [संगपित] बंदत क्या ह्या (काम) ।

संवास पर्क [सं+ग्रासय ] ध्य-धेव क्रमा क्राचा । धंतानह (शिव) । संशास के सिकासी का कर (स ५४४)। श्वेतासि वि [संजासिन] नास-काक (उप

wt= 8) 1 शंतिको जिम्ब र बोब वादि वर स्व एप्रतम प्रधम (धाषा १:१ ७ १ पेरव **१६४) ।** २ शुक्ति, गोध (माचा १ २ ४ ४- शूम १ १३ १ ठाव—वद ४२३)। ३ व्यक्ति (याचा १ ६ ॥ ३) १४

ज्ञान निवारण (निपा १ ६---वम ६१। नुषा १६४) । १ रिक्सी है यन को घोकना । ६ मेन बाराम । ७ स्विस्ता (उर ७२ टी 🍴 र्शिव १)। व बाह्रोस्सम् अधारे (नुस्र १ १ ४२)। ६ देश-विद्येष (वंशा १६ २४) । १ मूं स्रोत्तद्ववें विनदेश का गाम (यम ४६ कमा पति) । उद्यान विवासी

धार्टित के लिए बस्तक में दिया भारता मन्त्रित राज्य (दि १९२) । सहस्र न [ कमन्] उध्यक्तिसत्त्व के विद्या विद्या अता हान पार्ट कर्ने (वस्ट्र १ २--पत्र १ नुस १६२)। धर्मत न [क्सास्त] बहारप्रनिवर्ग विया जाता हो वह स्थान (बाचार २२६)। शिद्ध ["यूट्ड]

एक्ट-बर्न बरन का स्थान (कन)। जन व [अम] प्पा"उद्दर्भ (वर्षे १) । जिल्ल<sup>1</sup> र् ["जिम] शाहरे जिस्टर (वीत १) s सह चा [सरी] एक पारिता ला भाग ।

(बस्य १) भवह संवापित (वस २४ )। (बुपा६२२) । य वि वि] सानि-प्रधान (का ७२० क्षे)। सृरि दृ ["मृरि] ५% जैनावार्ज धौर बल्वरार (श्री १ ) । सीचिव वै । श्रीप क्री एक प्राचीन जैन सूनि (क्य्य)। इर प िगृही सबबान शान्तिनावनी स मन्दर (परम ६७ ६)। होम दं वितेनी शास्ति के विद्यक्रिया जाता इक्त (विदा है ६--पथ ६१)।

संविध ) पि वि सरकी धवनी धंवन संविम (बनमामा) "बागा-पित्रधरिः, ध्वमाले' (कप)- 'नो कपड़ निर्मवात ग विन्वंधीय का सामारियमंतियं केन्यासमार्थ थायाए सहित्यको कर द संपन्नइस्त्यं (क्स्र) बग बद्धा सं ९ हा सूना २७ १२२३ पर्या १ १-- वन ४२)। संविद्याचर देशे संविनीगढ़ (गढ़ा ६६ ६)। संतिष्य वि सिवीर्णी पार-बाह पार स्वय ह्या 'एठिस्ल सम्बद्ध' (यनि १२) । संसुद्ध वि [संतुद्ध] वंदीय-प्राप्त (स्वम्न २

मझो । संतुषद्व वि [संस्थान्द्वस ] जिसने पार्य बुवाया हो बहु, जिसने करवट बच्ची हो बहु थेता हवा (छावा १: १३--वम १७६) । संदुष्टणा ध्ये [संतुष्टना] तुनना, तुस्या-वधेगाई (वार्ष २ ) ।

संतुक्त यक [सं+त्रथ्] १ प्रष्टप्र होन्य १ २ तुव क्षेत्रा । बंदासह (सिरि ४ २) । मेराजापर रेको संविद्यापर (बर्ग ६५

मंश व [अन्दर्] बाद, बीबा 'बंदी बंदी च मध्याचे" (शाह ७१)) ।

संतम यक [सं+वापय ] १ प्रवत

करता, मुक्षे करता । २ तुत्र करूबा वर्गः वंतोसोध्दंद (शौ) (गार---राम ४ ) । संवास है [संदाय] होता शोध का अमार

'इरद धमुदि धरन्छा अध्यक्तिवि छिन्द्रचे न नंदाश' (पाता पुषाः परह १ ४--पत्र हरें। प्रापू १०३३ मूल ४३६) । यं ग्रांस को [संनाप] क्रजोप, मुद्दि पुनि

(दश) ।

मेनासि (संक्रपिन्) t क्लोननुष्ट बोक्स्टिंड नियोंके तुत्र (तुय १ १९

११, मुपा ४३१) । २ धानन्दितः सुरोहे | संवोसिय र् [संवापिक] संवोध वृति (उना 25) I संवोसिअ वि [संवोपित] संगुण किया हुपा (मद्वा: सर्ग)। संप वि [संस्थ] सस्पेत (विसे ११ १)। , वि [संस्तृत] १ ग्राच्यारित, संगढिय र परस्परं के संस्तेत से धान्यास्य (भग्रस्थ ४)। २ वन निविद्ध (बाणा २,१३१)।३ म्याज (उत्त २१ २२ स्रोध ७४७)। ४ समर्थे। १ कृत जिसने पर्याप्त मोजन किया हो वह (वस धावा (भ्राचा२१६१)। संघण धक [सं + स्तन्] धाक्रम करना । संबद्धती (सूच १२३७)। संधर सक [सं + स्तू] १ विद्योग करना विद्याला। २ जिल्लार पाना पार जाता। १ निवाद करनाः ४ मनः समर्थे होना। १ तुन्त होन्य । ६ होन्य पिद्यमान होना । संबद्ध (भव २ १--पन १२७) तथा क्स) 'ए समुच्ये यो संगरे तर्छ' (शूच १ (क्य्या इस ६, २, २ शावा)। वक्र

२ २ १६ प्राचा) संपरित्र, संबरे, संबरेजा संबर", संबद्ध संबरमाण (कार १४२ श्रीप (बरा १८१ माचा २, १ १ ८)। **४इ.** संघरिचा (मयः धाना) । संभर द्र [संस्वर] निर्वाद (नित्र ३७३)। Y )1 संबद्धाः सेवा संधार (तुर २ २४७) ।

संबर्ध व [संस्तरज] १ निर्माह (हह १)। २ विधीना करना (एक) । संपद सक [सं+स्तु] १ लुवि करणा, स्ताचा करना । २ परिषय करना । श्रववेद्या (पुम १ १ ११)। इ. संबवियण्य (नुपार)। संभव र् [संस्तप] १ स्त्रुवि, स्थायाः 'संपनो पुरे (निषु शासन शास्ति स्वार)। २

परिषय धन्तर्व (क्या: शिक्ष विषे । प्रवासी ४०६ भारक ६८) । ३ वि स्तुतिनाती (सामा ११६ थे--पत्र २२ सत्र)।

संबद्धण न [संस्थयन] अपर देखो (संबोध ्र ११ स्प ७६व टी)। संध्यय वि सिस्तावक] स्तुति कर्ता (ए।या १, १६--पत्र २११)। संधविष्ठ केवो संदर्भिक्ष (परम 🕫 १ )।

संघार । ई [संस्वार] १ वर्ग-- द्रश पारि संधारम | की शुरुवा, विद्योग (लाया १ १---संधारय 'वन ३ जना उन भग)। २ द्यपनरक कमरा (धाचा २ २ १ १)। ३ उपाध्या, प्रापु का वास-स्थान (वव ४) ।

४ संस्तार-क्वाँ (पष ७१) । संभाय देखो संहाय । बद्धः संधार्थत (परम શુવ ૨૪)ા २ ४ २ १ इस ७ ६३)। ६ एक जिंत , संधापणु न [संस्थापन ] सान्त्रना समाधासन (पर्स्य ११ २० ४१ क ६५,

> ४७)। देखो संद्रावय । संधाकना को [संस्थापना] पंस्थात रखना (सा २४) । वको संठायणा । संधिव (ग्री) देशो संठिम (ग्रह-पृष्य

संध्रभ वि [संस्तृत] १ संबद्ध संबद्ध (पूच ११२२)। २ मधिचत (जाबा १२

१ १): ३ किसकी स्तुति शी गई हो वह स्तापित (पत्त १ ४६ भवि)। संबद्ध 🛍 [संस्तृति] स्त्रृति स्नाम प्रशीमा (बह्म ४६६ मुपा ६१ )।

ं संग्रुण हरू [सं + स्तु] स्त्रुवि करता । श्रावा करना। सञ्जलह (स्रा गति १)। वह संपुणमाण (गरम ८३ १)। क्यक संपूजिश्वेय, संधुक्षत (द्वा १६ पाप ॥)। संक्र. संधुणिचा (१४ ४१४)। संभुष्ट वि [संस्थुत] रमणीय, राग्य, मृत्यर

(बाद १६)। संधुष्यंत येवो संधुष । संदूषक स्थिम् रिक्तास्पक्ताः

सर्वति (तुम १ १२०७)। संद वृ [स्पम्द] १ फरम प्रका (दे ७, ११)। २ एक 'एवि-छंद्र(१४)म्न प्रमेती (वर्षीय १४४)।

संद्रित सिएट्रीयन अस्ति (धण्ड ६० विक २३)।

संबंध पू [संदंध] बिक्क हुस्य, विशाविमी जिलेगी कोषनसा वहाँच उसस सर्वसी (कुम २३२)। संश्वसण म [संदर्शन] वर्शन, वेपना

साधारकार (उप ६६७ टी)। संबद्ध वि सिंब्धी यो काटा मगाहो गर् विसकी देश सम्ब हो वह (हे २ ३४० ड्रमा ३ च पड्डो।

संबद्ध ) वि दि ? रावण्य संयुक्त संबद्धय र्रहाबद्ध (३ = १= गवड २१६) । २ न क्षेत्रहर्सचर्प (के = १०)। संबद्धाव [संवर्ध] धति जना हुमा (मुर

१ २ ५ सुपा ५१६)। संदुण पू [स्यन्दन] १ रच (पाम महा)। २ भारतकों में चतीत उपस्पिएो-कान में क्रपन्त तेत्रस्था जिनदेश (पद ७)। १ न क्षरण प्रस्तर । ४ महन महना । ३ जन पानी: 'करूप हो नई निक्कोपम्प निक्कसदछा' (क्य) १

संब्द्रम र् [संब्र्म] रचना पंचन (उदर ર ૧ વઝા

संदमाणिया ) श्री स्थिन्दमानिया संद्याणी रेएक प्रकार का भाहन एक तय्त्र की शासकी (धीप शामा १ ४---वक १ श.१ १ ठी—पत्र ४३० मोग)। संदाय एक कि प्रवसम्बन करना सहारा क्षेत्राः। श्रमाणुद् (हे ४ ६७) । वक्क संदर्शित ( दूमा ) । क्यक्क संदर्शिक्रांत

संशाणिक्ष विसिद्यानिती वयः नियम्बित (बाग्रह है है के मुता है। रूप्र ६६ नाट-मासदी १६६)। संशामिय वि [संशामित] क्रार देशा (छ

(बाट—बानदी ११६)।

११६३ सम्बद्ध १६०) । संदाय देवो संदाप = सवार (वा <१७

**११४३ पि २०१ स्थम २० प्रमि ११** माच १७६)।

संताय 1 [संदाय] सप्र, प्रमुक्त (विके 1(25

संबिद्ध नि [संदिष्क] १ नित्रका प्रयस जिल्ली संरेखा दिया नया ही बढ़ अपिए. क्षित (पास कर ३२० दी) सोपदा ११;

संविद्य-संविविधाविध

भवि): २ निसको साला स्टेस्ट्री नहा 'श्रीप्रदेशोदिस्सा सम्मन्यवस्य विद्देशो' (क्या)। रे भूँदा ह्या जिनका निकासा हुया (नावस मानि) (राव ६७)। संदिद्ध नि [सं.क्रम] सराव बुवर, संबद् बाला (पाद्य) । संदिश न [संदत्त ] रक्तीय दिशो का बनातार प्राथास (संबोध १ )। संदिय वि [स्यम्प्ति] खरित इपरा हुवा (पुर २ ७६)। संदिर वि (स्थितित्) भरतेवाला (यस्)। संत्रस सक [सं+विदर्] १ संवेदा केना, धमाचार पहुँचल्या। २ स्टब्स वेना। ६ सनुबादेश, सम्मति केताः ४ दान के विद सक्तम करना। समित्रह (वह यहा) सन्दिक्त (प्रीड) । कन्छः सन्दिस्सीय (पित्र २३६)। प्रवान, सङ्ग संविधाविकण (पंचा 2, 1)1 संदिसय न मिद्दान् । उपहेट, क्या भूकता-इद्विद्दनन्त्रमुद्दारोपन्यभोतस्विद्यार्थे ( बंबोब \$ % ) I संगीप दूं [संशीन] १ होप-विशेष पत्र वा मास बाहि में पानी के बचकोर होता होप। रै मरपकार्थ एक पहलेगावा ग्रीपक । ३ पुरस्ता । ४ घोल्य, धीमश्रोत (पाचा १ 4 4 8) 1 श्रंदीका प्र [संदीयक] क्लेक्क वरीक कामनिवस्त्रीवर्वं (रंख) । संदीयण व (संदीपन) १ वर्चक्नाः वद्यापन (स्थोध ४वां माठ--- उत्तर ११)। २ थि | **ब्रहे**जन का कारण उन्होपन करनेनावा (उत्तम दक्ष)। संशासिक कि [संशीपिक] क्लेकिक क्लिक्स (भिष)। संदुक्त धक [म+कीप्] यसकाः पुनका । संदुक्तह ( यह ) । संदुद् वि [संदुपः] ध्येष्ठराय दुष्ट (क्षील ११) । संदुम प्रक [ म + दीप् ] वधना, बुधकता । संदुबद (इ.४. १६२) हुन्छ) ।

संदुधिश्र रि [मरीप़] जवा हुनाः नुसना

हुव्यः (सस्य) ध

संदेख दृंदि] १ थीमा, मर्यादाः २ नवी भेलाक नदी-संयम् (वे व ७)। संबेख 🛊 [संबंध] विका, समाचार (ना इंदर बहुश हैं ४ प्रदेश मुना है है। 228) I संदेश पु सिवृद्द स्थान शंका (साप्त ६६) यतह यहा)। संदोद्द र्षु [संदोद्द] चपुष्ट, भल्या (पायः पुर २ १४६। विदि १६४)। संघ एवं [र्स + भा] १ श्रीवराः बोहना । २ वक्षीयान करना कोन करना १ ३ वॉक्सर, भा**त**न्। ४ श्रुटि करना वहाना। ३ करना 'सम्बंब संबद यह सो' (क्रम १२) संबद्ध सबय (बाका सुव १ १४ **२१ १ ११ १८ ३१) । यन व्यवस्थानि** शंबद्धिस (रि ४३)। वक्र संर्थन (स क्ष्य २४)। क्ष्मक्र संधिक्षमाण (यव)। क्रेक संविधं (एम १०१)। संब केको संग्रह (केल्प्र २० ) । संघण क्रीव [संघान] १ शाधा, रांचि जीत (बर्मर्स १ १७) । २ प्रमुखंशान (पंचा १९, ४३)। और, जा (बाचानि १ ६ शुप्तनि १९७- भोग ७२७) । संबचना 🖈 [संबन्द] संबना बोहना (**44** t) 1 संबंध कि [संबंध] शवान-कर्या (दत १ ¥ X) I श्रेच्या देशो संघ≂धे+वा। संवयती (शुधा२ ६ २)। संघा और [संबा] प्रविधा, निक्य (या १६) सम्बद्धाः सम्बद्धाः १७१)। संघाण न [संघान] र के शरों का संबंध स्थान (सुर १२ ६)। १ समि कुलाइ (ब्रुस्थीर १३)। । नच पुरा शक (धर्मधे १.६)। ४ कोन् संयोग निवास (धारा कुमा; अपि)। १ धनारु लोगु साहि का वसामा विका बादा-विशेष (पण ४)। संधारण न [संधारण] यान्त्रना, व्यवसातन (# 4\$4) I संभारिक वि वि] योग्य सम्बद्ध (वे = १)। संभारित वि[संपारित] रबा ह्या स्वाधित (सामा १ १ — नग ६६)।

संधाय एक [ सं + धान् ] रोड़ना । संवानद (शत्तर ४६)। संधि वृद्धी [संधि] १ विद्या, विवार । २ संबान, क्लारेकर पराचे परिवान (नृष १ ११९ । रहार्व १३। १४)। १ स्थाकरका-प्रसिद्ध वा स्थापों के संबोन से होने वाका वर्त-विकार (पद्म २ २--वन ११४)। ४ सेंच चोधे के लिए मीत में किया पाठा क्षेत्र (चाद ६ ३ महाः हस्त्र ११ )। ६ हो हाड़ों का एंगोन-स्वायः 'वस्त्रामो स्वय-र्ववीयो' (तुर ४ १६४, १२ १६६) वी १९) । ६ शत धरियाया 'यहवा विवित-श्रीविष्णो क्वि पूरिसा इविर्ति (स २६)। ७ कर्णकर्म-शंतरित (भाषा सूच १११ २ )। व सम्मप् सन की प्रान्ति । **१ पारि**प गोङ्गीय कर्व का क्षयोक्तम । १ सक्दर, धमयः प्रसंघ । ११ मोधनः, संयोग (माना) । १२ को प्रशासी का संबोध-स्वास (विपा १ ब—पन वधः मद्वा)। १३ मेश के विद करिएय किसमें पर जिल्हा स्वासन, मुख्य (क्यू: क्या ६ ४ ) । १४ प्रेन का प्रकरण ध्यव्याय, वरिश्केर (धनि)। "गिर्द न ["गुह्"] दो धोतों के बीच का प्रच्यान स्थान (क्रम्प) । ब्दोबन क्षेत्रन वि [च्छ्रद्रक] बॅर त्तवा कर जोदी कर्णनाबा (द्याया है १व---वय २६६। विमा १ ६---वय ६६)। पास, बास नि ["पास] वो सन्दों की नुबाब का प्राक्त (कर्म) बीवा सामग्र १ 🗠 पम ११)। संविक्त वि [वे] प्रतीत्व प्रतेत्ववाचा (वे ۹, ۹) ۱ संविध वि [संवित्त] स्रांग हुया, बोना हुया (BE EXPERTED BY EST EST) नकां ७ )। संधिम वि [संधित] प्रशास्ति (परः) । सीवमा देवो संदिया (धोव ६२)। संभित्रं देवी संग= सं+ वा। संधित वेबी संधिम = प्रमृत (मन) । संविकिमाहिक र् [साम्बिमाहिक] यवा भी चींच धीर बहाई के बार्च में लिट्टूफ मन्बे

(क्रमा) ।

संधीर एक [सं+धीरय ] माधासन देना धीरत देता । यह संघीरंत (मूपा ४७६) । संधार्ययय वि [संधीरित] जिसको बाबानन दिया गया हो वह बाद्धवित (मुर ४ 2 t t) i संभुक्त धर [प्र+दीप् सं+धुन ] १ प्रसन्धः मुसयन्त्रः। २ सकः वसानाः। ३ उर्धानव करना । वंपुद्रद् (३ ४ १६२ क्ता)। कर्मे संपूर्तिकद् (वका ११) । संप्रद्यान [संपुक्षण] १ मुसरना जनना। २ प्रम्थानन, गुसराना (भवि)। १ वि नुसमनेवासा (स २४१)। संपूर्वित्र वि [संपुधित] १ जनाया हुमा सुनदाया हुया (सुरा १ १) । २ जसा हुया प्रदेश्त नुसमा हुन्य (नाम- महा छ २७)। ६ उत्तेतिका 'स्रिवियपवल्यंपुद्यिको पळ-सिधा म मलम्मि कोयालमा (स २४१)। संचांच्युत (हो) क्रवर देखा (नार--मृन्ध 233 1 संघ्रम ध्या संद्रम । ध्रेप्रवद ( वक् ) । संघ रेका संघ = सं + था । संगेद, संपंति **चंपेब्स** (बा**पा १११** ५ का प्र मूच १ ४ १ ३)। यह संघेत संध्याण । (परम १८ ६१) वंचा १४ २७) मानाः । ft % ) i संन देशे संज (बाबा १ %, ६ ४)। मंत्रदरर न [मंद्राधर] बहार वारि वयर्षे की बाइडि (एडि १६०) ह संलाब्द cut संवाम । बंतरमद (मर्वि) । बंक संभागनात्रण (यहा)। हेक संभागिका (# lat) i संतवन [संवान] रवाय करना बंबा करना (उप २६ ) । संबद देवो संबंध (पद्य १ ४--- पत्र 🗷) । रानद्र देशा रामद्र (योग निच १ २ थै---1 (15 22 संनय 🛭 [संनव] मन हुमा धरमव (धीरा | 401 (X )1 मंतर वड [ मं + शापव\_] कंदरण है बद्ध व ना। वंबरद (एव १४ ) s रांनद रेका मंत्रान्द्र । धंश्रह (व्यंत्र) चंश्रह

(4 14 3 ) 1

संतद्भाग सिन्द्रनी संगद्ध (प्रवम १ \$¥) 1 संबक्षिय देखो संजद्ध (गुपा २२) । संनादेको संगा (ठा १—१३ १६ परा १ ६—पण ११ पास पुर ६ ६७ पिट २४४ चप ७११ दे है)। सेनाय वि सिद्धात विद्याना हुया पीर्याना हचा 'संगामा परिपरोख' ( महा )। देखो संणाय (पर १५३)। संनाह रेखो संजाह = सं + नाह्य, । संनाहेर (बीय- वंद ११) । संक्र मनाहित्वा (वंद 22) I सेनाह देखो संपाह = समाह (महा)। संताहिय वि [मंनाहित] तम्यार विमा हुपा स्वावा हमा (धीप)। संनाहिय रेपो संजाहित (छाया १ १६— पत्र २१७)। सिनि देशो सिण (सम. २००८ २ २ — पत्र ११ की ४३ कम्प १ ६)। संनिद्धस देवो संनिगाम (ठा १---११ ४१६ क्या)। संनिष्टि वि मिनिए ही बारव रखीर वे स्पित (भूष ४ ८)। संनिविध्यच वि [सीनिधिप्त] राजा ह्या, रवा हमा (क्या) । संनिग्यस वि [सं न श रा ] १ वयान तुस्य (मन २ १ छाया १ १—पत्र २६८ मीत स १०१)। २ र्थ पासर (तंत्र)। ३ र्यून खर्मात पास (पत्रम ३६ २**०)** । संनिगाम 🐧 [मंनि इपे] संगोप 🛊 बान वंनियाची परुष संबंध एएट्टा (शहर १२a र्मानपय 🛊 [मंजिपय] १ विषय वपूर (याचा)। २ वंबह् (याचा १ २ १, १)। मानिवयदि [मानिवदि ] निवद् दिया हुया (पर १६८ जीतम १११)। र्मनिर्मेत्र वह [मान+युत्र] बच्छे हयः बोह्ना । कथा सीनजुद्धीत (तिह YXX) I र्मानाम् र [सानिध्य] सहस्त्रा करने क बिर् धर्मीर ने ध्यपनन, निचटता (व १०२)। र्मोनना र 🖠 [मंनिनार] प्रतिप्यति, प्रतिप्रस (927) 1

संनिभ देगो संनिद्ध (ए।या १ १--पत्र डब क्या भीप १)। संनिर्माद्दअ रि [संनिर्माद्दव] १ म्याप्त पूर्वं मध हुमा। २ पूजिल 'पैरानाम नवधै पंहुरवरअवश्वसनिमहियां (धीप शामा १ १ टी-पत्र ३) 'परिय मन्द्रा बखायो यामसनसंनिमद्भियो' (यम्)। सनिय दयो सं जय (सिर्द ६६ ३ भवि)। संनियः वि [संनिष्ट्रच ] इस ह्या विस्त । यारि रि (धारिन्) प्रतिषद्ध का पर्वत इरनगमा (इप्प)। संनियास देखो संनिगास (परम ३३ (333) i र्सनिख्यण न [सांनल्यन] धापन, ग्रावाछ 'लामपत्पा संसार' मर्वितमित समारुम्यसन्-नयर्ख (परह १ ४--- पत्र १४)। र्सनिवश्य देको संजिपिकान (ग्रामा १ ₹---4**प ६**१); सनिषाइ वि सिनिपाविन्। सम्बन्धी सम्पन्धरसंतिबाह्णां (कृपा धीरा) तम्बत्त १४४)। सीनगाइ वि [सीनियादिन] संगत बोतन-बाला, ब्याजबी कहतेरासा (भव १ १--वन **22)**( संनियाइय वि [सांनिपादिक] संनियात रोव वे धम्प्रत्य रखनवासा (छामा ६ १--रम ्वद्र१६ घीर व∌)। २ मार-रिकेट सर्वेड मार्थे क संयोग सं बना हुआ भार (मर् १११ कम्ब ४ ६८ ६०)। १ वृ सनिरंत, मैन संदोन (पर्यु ११३) । संविराह्य वि [संविद्यार्थिक] रक्षा संविर याद्व, मध्यक्षरार्थन्तराद्याल् (मीत्र १६) । संनिपारिय वि [संनिपार्वितः] विधारत ब्या (या (या १ १६-या २२३)। र्मनियाय ५ [मेनियात] बद्धान, बस्य प (क्य- धीर) । मन्द्रिय व [मन्द्रियट] १ माद्र्या रप्या (धीर) । ५ वि जिस्त बहाब शता हा बह क्षर क बादर पहार सामकर पहा हुना (बस) : ३ शहत योर स्थिर यावन व धर्मान्त्र--देश रूख (एका १ ३-----धी दय त्व) ।

# 848) I

(क्त २६, १)।

संनिवेस ५ (संनिवेश) १ अवर के बाहर

का प्रदेश, बाढ़ी साधीर परिश्व सीन खाते

क्षों। २ वॉच नवरदावि स्वान (सम १

१-- क्य ३६) । व यानी धारि का वैश

मार्पेश्च कास-स्वान पहार्व (उत्त के १७)। ४ प्राम कोब (छिटि ३८)। १ रचना (छप

सैनिवसप्या को सिनिवशना वेस्वापव

संनिद्धिक वि [संनिदेशिम्] रवनवाया (बप प १४२)। संजितना नि [संजिपका] बैठा हवा सम्बन्ध स्थित (खान्य १ र---न्य १६ कुत्र १६६ मु (२ स्ट्र)। र्धनिसिज्ञा 🕍 [सैनिएका] कालन-संभित्तेद्वर े निरोप चीड ध्रादि धायन (बार २१: वर्ष ११ । वर्ष) । संतिष्ठ वि सिनियी समान सरवा शास દય છતા)ાં संतिहाय न [संनिधान] १ अन्यवर्ध्य सामि कमें (भाषा)। २ कारक-विशेष सकि-करण नाएक मानार (निखेश हैश) का -- पत्र ४२७)। व सामिन्द, निकासा (स. ७६ १ ७६१) । सत्य न िंगक्री संकारपाप (ध्याचा)। सत्कान दिशासी कर्म का स्वकः नवानेवाला शास (भाषा) । संनिद्ध प्रस्मे [संनिधि ] १ क्यमोन के निए स्पापित नेस्तु (बाचा १:२ 🕻 ४)। २ संस्थापन । ३ सम्बर निर्मि (बाना १ २ १) । ५ हमीपता निकटता (क्य प्र रेट संद्यः स्थारको। श्र**ा**लस संबद्ध (क्या ६ १४, वस १, १ मंतिष्टिथं दे सिनिदिनी चलाति देशे के श्रीमण निरुद्ध का इन्त्र (ठा २ क्---पण व्यो संजिद्धि (कावा १ १ के— 47 Y) 1 मंत्राम रेशा संनिरमः 'जन्मर शि करेड बुभरस्य प्रचेन्थ(? क्यं) (बुध ११) वेहत । . 1) : संप्रभा ) (बन) देशो संप्रमा (पिक पि ४१३) संपद् रे है प्र ११६३ दुना) ।

संपन्न म सिप्रति । १ इस धानग, धारूना अब (पाधामहत्यो १ १ ४ ५ कुमा)। २ यं तक प्रसिद्ध वैन एना सम्बद्ध प्रशोक का दीत्र (राप्त २ वर्मीय ३७) दुष्फ २६ )। काछ प्रे "काछ] वर्तमाथ काक (तुमा १८(४) । काम्रोण वि िकासीनी पर्वगान-ब्राजन्यस्थानी (विशे २२१६) । संपन्नक्य पि विशेष शेकी कारत (राज)। संपक्षक्त वि [संप्रमुक्त] तंत्रक संवत, बोका per (अ ४ १--- पण १८७ सम २ ७० २. ज्या और वर्गेर्स ६३४१ राम १४६)। र्श्वपक्षांग र् [संप्रयोग] संबोध प्रेक्स (स ४ १--वर १८७ व ६१४- वर ७२८ टीः क्या ६७६ थीप)। संपन्नर जेवा संपगर । संस्केष (क्व रह 1 688 संपक्त र सिंपकी धनका (प्रशः ४० कमत १४१)। संपश्चिति (संपर्कित्) सम्बंदना संबन्ध (क्यू कात्र १७)। धेपक्कास्त वृतिप्रकास्त्री सामस्य का एक मेर को मिट्टी वनैयह फिर्स कर राहीर का ज्ञामन करते हैं (धीप) । संपन्नाक्षिय हि सिंप्रश्नासियी गीमा प्रपा संपविकास वि सिप्रक्षिप्ती प्रक्षिप्त, व्हेंका इया, शका हुमा (पंच ४, १४७) । संपगर सक [संघ + क्व] करना । सपनके (## 99 DW) र्धपगाद वि (संप्रगाद) १ मञ्जूत पात्र व (क्लान ४६ मूख २ ६ वर)। २ **व्याप्य (शूघर:३,११७) । ३ (६०४)** व्यवस्थित (ग्रम १ १२, १५)। संपरिक वि सिमगुद्धी यदि पातक (पर्या १ ४-- वन ६४)। संपरमध्या है। सिप्रमुद्धीयों बाद प्रदर्भ वे पृहीत, विरोध मंगिमान-मुखा (सम १ ४ संपद्ध प्रकृति + पह्नी १ संपन्ध होनाः विश्व क्षेत्रा। २ विश्वमा । संप्रवाह (बाहर

मद्वा)। व्यक्ति संपन्तिसम्बद्ध (मद्वा) :

संपञ्चक्षित्र वं [संप्रमानियः] वीरच नवन का नवधी गर्फेन्डक नास्त्रवाद-विकेष (विमेचा ६) । संपटिक केंद्रों संपरिवक्ष = संप्रस्थित (का १४२ टी. बीपा संबोध १४८ सूपा 🕪 प्रमुख १६८) । संपद्म धक [सं+पदा] १ आल्ड होन्य-प्रिक्टण प्रवराती में 'सापक्ष । २ विज होना कियल होना । संपन्ध, संपन्धि (बका ११६ वस ११८ वस्ता १)। वक्त, सीपडीत (से १४ १: दूर १ र्शपिकत नि कि संपन्नी सम्ब मिना हमा मान्त (वे क १४० छ २६६)। संपविषद एक सिप्रति + व €े प्रतीश करका तारीफ करना । सपरिवृद्दति (सूर्य ८ ર થય) ક संपविद्धाः प्रकृतिमाने + संस्था विश्व बायराज् कारायः प्रस्कृतेकातः करमा सम्बद्ध वयह निरोक्तत करना। श्रेपक्रिकेट्र (क्य १६,४६)। 🕊 संपश्चिमेहिकका (वण्ड 1 (3 3 संपद्विशव्य एक [संप्रति + पद्] लोकार करवा । श्रेपविजन्तर (म्प) । संपहिदांच को [संप्रतिपचि] ली#५ धंधेकर (विते १६१४) । संपश्चिमात्रभ नि स्प्रिमितियाविसी स्थित (क्ट २६ ४६) हम २६ ४६)। र स्वापित (रस २, १.)। संपर्दियाय एक [संप्रति + पादथ ] शंगवन करता, प्राप्त करता । श्रेवविकासक (यस व **२२)।** संपथित । वेको संपनाइम (440 संपर्णारिय र क्या)। संख्या देवी संपष्पा (दे ८, ४) । संप्रधाहयः ) नि [संप्रजादितः] सर्धेः संप्रधाहियः जीन तस्त्राक्षाः नुष्टियहर्षे पशास्त्रा' (और १ ४--नत्र इर४) पर्व ११७ के)। संप्रवास पर [संत्र + नामय ] व 🗗 करणा। धपद्यास्य (बतार वा रक्षे)। संपंजिपाञ्च ) द्व [सम्पंजपात] ब्रह्म, संपंजिपाच ) प्रमोदीन बनलार (रंगा र इंबर ब्रेडब २३०)।

बुक्सिमें (उपर्व ४६)।

संपणुष्य वि [संप्रतुक्ष] प्रेरित करे वतः

'प्रक्रं वर्षा निसर्ध प्रमुख्या विशेष वासास वर्षे

संपण्ड ) सन [संप्र + तुत्] प्रेच्णा

संपणाह । क्या । यह संपणुश्चिया,

संपूज्य देखो संपन्न (खाया १ १---पत्र ६)

र्श्वपण्या की हिं बेबर या बीबर (मिप्टान्न

जिल्ला च्**ट**पूर बनदा है (दे = द)।

विरोप) बनाने का घाटा मेर्ड का वह बादा

संपत्त वि [संप्रात] १ सम्बक् प्राप्त (सामा

२ धनशत याया हुमा (मुपा ४११)।

(युवा ४१६)।

संपत्त पून [संयात्र] कुन्दर पान, गुपान

संपत्ति को [संपत्ति] १ समृद्धि वैमन

संपर्णाक्रया (वस १,१ १)।

इका ३३१ वाट---पुण्य र)।

चंपदा (पाध प्रामु १६ १२=)ः २ संस्थितः । ३ पूर्णि तब शोहकस्त संपन्ती अविस्साई (बियाश्य-पण्यक्र)। संपत्ति की [संप्राप्ति] साम, माति (वेदय दश्य सुपा पर )। संपत्तिआ की दि रे माबा हुमारी। नहकी (दे स १४) वज्जा ११६)। पिप्पकी-पन, पीयस की पत्ती (वे म १ म)। संपत्तिक्ष ॥ [वं रिग्रेज, बनचे (व ८, ११)। संपत्त्रिय } वि [संप्रस्थित] १ विसनी संपरियत । प्रधारी किया ही वह प्रमात प्रस्थित (अंद २१ च्य ६६६ तुपा १ ७) ६५१ छात्रा १ २--- पत्र ३२)। अमिक्ट व्यक्तिमारहेहि सहवि ह रनिसम्बद र्यमरोगरस्यहे (? प्यो)वि । वहनि हु भरद निवर्त पुरिसी र्सपरिषद् काबे ॥" (प्रमादद ६६) । संपर्ध म [सम्प्रतम्] १ युक्त, अधिक (प्राक्त १२) । २ घषुत्रा, यब (प्रवि ११) । संपर्त्त नि [संपर्त्त ] विवा हवा, वरित

(मद्दा, प्राप्त) ।

१५ मानार (१.१)।

संपदाय प्रसिप्तवास रेप्य-नरशक उपवेद, वाम्नाय (संबोध १३ धर्मर्स १२३७)। संपदावण न सिप्रदापन संप्रदान निरुक्त विशेष 'तरिया करलिय क्या चन्यी सपदावरों (ठा य-पत्र ४२७)। संपवि देखो संपद्म = संप्रति (प्राक्त १२) । संपत्ति थेको संपत्ति = संपत्ति (संक्षि १, पि 7 Y)1 र्सपथार देखो संपद्वार ≈ एँप + धारय । श्चंपचारेनि (शी) (नाट--मून्य २१६)। क्यं, संपद्मधीवद् (शी) (वि १४३) । संपद्मारणा की सिप्रधारणा विकास निरोप धाराजा-स्वद्वार (वस १ ) । संपदारिय वि [संप्रवारित] विभिन्न, निर्णीत ११ च्या विपार १ सङ्घ्यो ४ )। (ध्रुषु)। संवयसिय वि [संप्रमुमिता] शुः-गासित **बू**न दिया हुमा (कस अध्य**ा सा**चा २ २ 1 (3 3 संपन्न मि [संपन्न] १ संरक्ति-पुक्त (बद महा कम्प)। २ समित्र (विपा १ २---पव 38)1 संपप्प देशो संपाय । संपबुम्मः पक सिन + बुप ी सम बान को प्राप्तकरमा । संपन्तन्त्रसीत (पंचा ७ २६) । संपमक एक [संप्र 🕆 मूज् ] गार्थन करना म्बर्गा साफ्र-एक करना । संपन्नकोड (सीप ४४) । यह संगमकोचा संपर्माज्ञय (भीप माचार, १४४)। संपमार एक [संप्र+भारव्] गुल्बा करना । धीपमारम् (सामा १ १ २, ३) । संपप वि सिंधव विषयान वर्तवान 'पाएस संपर् चिय कामान्त्रि न याक्योहका **धव्**णा (विश्व प्रशः) । संपर्ध देको संपर्द (पायः महा- मुवा ११०)। संपयद् अक [संध्र + पून् ] सम्बक्त प्रकृति करना । संप्रमध्टेकमा (वर्गेर्व १३१) । वक्क संपयद्देश (वैदा ८ १४) । संपयद्व वि [संप्रयुक्त] सम्बक्त प्रवृत्त (पुर Y 98) 1 संपया भी [संपद्] १ समुद्धिः शंपरिः, संपदाण देको संपनाण (शाम्य १ ५----पन बरनी निमद (जना कुमा सुर ३ ६८) महाः मासू १६) । २ वाक्यों का विमाय

स्हान (पथ १)। १ प्राप्ति, भोद्रीबामो जिल्लामार्थपमा (वेदन ६३१ वव ६२)। ६२)। ४ एक विशिष-की का नाम (सप १ (डि बग्रू संप्राप न [संप्रदान] १ सम्बन्ध् प्रदान बन्धी तरह देना समर्पेख (पाचा २ १% १८ वा ६८ मुपा २६८)। रे फारक-विशेष वतुर्वी-शरक विश्वको दान दिया जाय वह (क्सिं २ ११)। संप्रमायण रेको संपदाब्यः शब्दको संप्रमायखे (बसु १११)। संपराइत ) वि [सापरायिक] धरराय-र्सपराश्य ∫ संबन्धी संपद्मव में हरफन (हा २ १—पत्र ११ सूप १ क्यू का अपर धाषक २२६)। संक्यम र् [संपर्धम] १ वसार, क्यह (सूम १ %, २ २३ वस २०४)। २ ओव बादि क्वाय (ठार १ — पत्र ३३)। ३ बाबर कवाय स्तुत कपाम (सुम १ ट. ८)। ४ क्याम का जरम (भीम)। १ प्रज संग्राम सहादै (ए।वा १ ६---नत्र १६७ कुन विक धन दस २ १)। संपरिकित र् [संपरिकित्ति] एप्रस वत का एक धना एक संका-पति (पडम 🌿 २६ ) । संपरिकल एक [संपरि + इस् ] हम्मक परीक्षा करता । श्रंक संपरिकसाय (संबोध २१) । संपरिक्सिच ) वि [संपरिक्षित ] केंद्रिक संपरिक्षित । (मक परम १ २२: खामा १ १ दी-पत्र ४)। संपरिकृत वि [संपरिस्कृत] पुरुष्ट वर्षि व्यक्त (पत्रम ७६, ११)। संपरिवृद्ध वि [संपरिवृद्ध] १ सम्बन्ध वरि बूत परिवार-पूछ (विदा १ १---पव १ उवाः बीप) । र वैद्वित (सूम २, २, ११)। संपरी सक [संपरी + इ] पर्वटन करना अवस्य करना । संपरीह (विशे १२७७) । संपद्ध (धर) घड [ सं + पन् ] या पिछा। श्चंपश्चद्ध (पिन्) । संपन्नमा वि [संप्रकान] १ संप्रक विका हुया। २ जो सहस्र के सिए भिद्र सवाहरे बह् (एएस १ १८--पत्र २६१)।

संपद्धच वि सिंप्रस्थिती बक्क वितर्ध प्रदिशस्ति (एम्स १ २-- १३ ०६) । भंपन्तीस्य वि भिन्नतिस्यो विमुक्त सम्बद्धी **ठाइ बानन हथा हो यह 'मुहरांगर्गावया'** (योग) । संप्रान्धान सिपस्तिती एक वैत महर्षि (**9**⊏4) ι

संबद्धित । सिवयक्ती वदासद (सह भीरा क्या राप १८३)। संपश्चित्त वि [संप्रशाम] प्रश्नान नुमक हमा(काचा १ १ -- १२ १३ पत्रम १२ १६ वर्गरो ६७ ः सूचा २६८ वहा)। रूपस्थित महिंदीर + स्त्री बना वन करना । वक् ६५ हिमञ्जमाण (माना

संपर्ता बद मिप्टि + इ रे बाला, व्हर

1 % Y 1) 1

करना । शर्राचीत (मूज १ १ २ ७) । संपर्य ) यह सिंप्र + च्य रे होपना । संपन्न र बंदबर्ट, बंदबर्ट (बाका न 15 1) 1 सपरस ५ सिहयरा विशेश, कैंड (वडड) । सप्तया वह सिंघ + प्राप्त ] यवन करता. जाना । गाः संपद्भवसाम (सामा १ % र, १ टा ६--स्म १६२)। हेर मंत्रव्य-**584 (44) (** शंपसार र् [शंप्रसार] एवरिक क्षता क्षत-

बाब (धन) । संप्रमारतः । विसिद्दमारकी १ विका संप्रसादय है एक देशानेवाली (तुप १ २२ २) । २ वर्धनाष्ट्रपक्षी (बापा 1 4 ( 3) मंपन्नार्थः १० [६८मारिन्] उत्तर देखा (नूच t ( 14) : सर्पास्त्र हिंदि योगङ | याकन श्रीवड

(वर्ष करेश क्ष्यस्य वर्षा + इस्] १ छ≪छे सञ्च buer l'ent une us afufent (144 क्ष्यार वच [ संग्र + धारव ] १ विज्ञ a et a laga ater leteun er i करतने वर्ष कर इस्तर क्षान्ति हैं

(सब १ १ १४ २३) । संज संदर्धारिकण (# T %): संपद्वार 🕯 (संप्रधार) शिरुषय निर्ह्णय (पत्रम १६ २६ ज्या १ ३१ टी मिन)। संपद्मार प्रेसिमहारी युद्ध, सङ्गई (से ब 11 (14

संपद्दारण न सिंघधारणी निरुव्य (बडन Y (=) 1 संपद्दाय बरू [4म + याय् ] शेइना । संप-इतिह (बाचा २ १ ३ ३)। संपर्देह वि सिप्रकृष्टी श्राप्त अनुवित (चत ({2, 1); संपाध्ये [र] संध्ये नेप्रवा करवनी (वे ब रो ध । संपादभव वि [संपादितवन्] विक्ते सम्पा इत किया हो बहु (है ४ २५४) विशे

rax) i संवारम वि [संपाविम] १ अवर, रीट, वर्तन थावि उद्देशाला जेतु (पाचाः विश रभाववा प्रशासाय १८)। २ वाने-धाला, वित-कर्ता शिरिण्यानंपादणा हा तथा कर्षा (माचा १ १ १ ६.२ ६ १ 14)1 संबाह्य वि क्षिपातिकी १ वायत वाया हुआ। २ निनित्त निका हुदा (परि)। संपादय रि सिंपारिनी ग्राचित क्रिय क्या ह®ः कंगास्पाद्वस्त्र'(मछ) । संग्राज्य वह सिंह + आयी वस्त्री तस्त्र शान्य करमा । संराजनार पंशाजनावि (क्ल २१, १६ वि १ ते) । भवि बाराजिल्लाको (टाया १ १०-- १४ २४१) । अयो. अगुणारो परं ५३ तिथि संचारग्रेस्तान् (बल ११ १२)। संबाभाव सिंधानर ीर वन प्रमात्र लेख

हर प्रात्तकार १ माति प्रमान वहां शुक्त । ३ (र प्रथम (क्षा) १ दी—नव ११)। श्वानकार विभिन्न हो प्रवट पूरा चरा-बर्गांदरी (स र १--प्य १३ ≀ याद्र वद िंसे + पाइप ी १ विज्ञ

करमा, निवास करना । रे प्राप्तित बरनू हेना,

वस्थानियां क्षेत्रहेड वस्त्राच्यास्य (महा), 'संपादीन भगपयो याखं वि' (ब ६व४). बंपादेव (स. १६) । इ. सेपाइयम्ब (स. 1 (v\$F र्मपाइम वि सिंपाइमी वर्डी निर्मोद्या ध्य की सन्नी तस्मुप्तरेश संपात्रयी होज्या (इन FYE A) I संपादण व सिपारनी १ विभारत (व ७४८)। २ करल निर्माल (पंचा६ ६४). 'बरावर्रपावशिक्रार्यस्मर्त' (बा ११)।

धान करनाः ४ प्राप्त करना

संपादिश वि सिपादिती १ किस फिन्ह हवा कियादित (च २१४ दूर २ १७ )। र प्रत्याकिया हक्षा (सप द्रार२४) । १ बच वर्षित (स २३३)। t ( or ) संपाद (धी) देखो संपाइ = व + पादन्। र्धपार्थाद (बाट---शपू ६६) । इ. संपाद प्राथ (बार-विकास )।

संशादक्षभ (धे)। ४ सिनपादविद्यी संपादन-रखीं संपादह (चि.६...)। मंपारिअपर (धी) ध्वो संपादअप (रि 296)1 मेपाय 🛊 [संपाग] हम्यक्पकाः 'हसिव वंशयश्यकतुत्रयोशय" (सर ३ ११६) । १ धंक्य बंदेश दारीकालकालेकाम्बर्धश-बक्तिये वि' (भूर ४ ७३; बढ़ड) १ व्यर्व का कुछ निरवेड भारत-ग्रावण (वधा है ६--पत्र ६२)। तंक तक्ति (या ६, वंदा १ ४१) । १ सायनद (र्याप ७३) । ६ पनन दिचन (दल १० १३। एक १० **44)** i र्वाचय रेको संपाना (एउ)। शंपायम वि शिवार भी संगरतन्त्रवी (वर ¶ नेश वहा: वेदव ह x) i

शेतायश विशिधायको १ आस करनराताः 'विकास्त्रगामवर्था शह (अहब १ १)। १ मान्य पराध्याचा (का ५ ६६)। भेवायन रेक्षे संवादन (पुर ४ ३६) पुता

1 2 tell 4(4 +(+) |

करना । संपासद (धनि) ।

23 (w) 1

संपायणा की [संपादना] क्यर देखों (पंचा

संपाछ एक [सं+परक्षय\_] पायन

संपाय सक [संप्र+आप्] प्राप्त करना।

संपन्निद्र (अवि) । संक्र संपट्य (संवेश १२) ।

संपाषण व [संधापग] प्राप्ति नाम (सामा

१ १६--पत्र २४१ सुर १४ ४७)।

क्षेष्ठ संपाबित (सन १ पर सीप)।

संपाब सङ [संप्र + आपय ]

करवाना । संपावेद (उदा) ।

संपाविभ वि [संपाप्त] प्राप्त सम्ब (गुर २ २२६ सूना १३% सख)। संपाणिक वि [संप्रापित] गीत को से जाया यमा हो वह (राज)। र्स्पार्सन नि [वे] दीके सम्बा (दे ६ ११)। संपिद्धन व सिपिण्डन र प्रव्यों का परस्वर संयोकन (पिकर)। २ समूह (ग्रीव४ ७)। संपितिश वि [संपिण्डित] पिर्शक्त क्या हुया एक्ट क्रिया हुया (ग्रीक की ४७३ संपिक्स देवो संपेड् = संप्र + ईक् । संपि-क्या (वसपूर १२)। संपिद्व वि सिपिष्ट | पिश्वा हुन्या (बूच १ ¥ 4)1 संपिजद वि [संपितद] नियन्तिक 'रण्यु पिणिको व इंबकेट् विद्वब्रोगपुस्तापिणक (पब्हर ४ — पन १६)। संपिक्ष एक [समिप + भा] भाजकारक करता, काला । श्रेष्ट संविद्धिशार्थ (वि X=1) 1 संपीड पू [संपीड] संपीडन क्यामा (गवड)। देको संपीछ । संबोधिक वि सिपीकिसी बनाया ह्या (पबंद १४४)। संपीणिक वि सिप्रीणित ] पुर क्या हवा (एए)। संपीक्ष पूं [संपीड] संचात समूह (क्य १२, **24)**| संपीध्य 🛍 [संपीका] प्रेका कुळानुमव (क्य १२, १८) १२ १३/७८)।

संपुरुष्क्रण कीन [संप्रस्कृत, संप्रश्त] प्रस्त पुरुष्का (सुधा ११ र १ सुपा २१)। की. जा (वस ३ ६)। संपृंद्यपी 🛍 [संपुष्छना] मम् संगार्थनी (राय २१)। संपुञ्ज वि [संयूषय] संमाननीय बावरणीय (परम ११ ४७)। संपुष्ट पुं [संपुत] १ पुढ़े हुए की समाम संश बाली बस्पू, वो समान घरतो का एक बूसरे से बुक्ता 'कवास्त्रोपुरवस्त्रीमा' (वरा ३) 'क्वर्सपृष्ठे' (क्रम्' महार स्रवि' से ७ ११) । २ संचय छन्नुइर (सुधार ४, १२३)। फलग र् [ फलक] दोनों तरफ निस्य वैधी पुस्तक द्विसाम की बढ़ी के समाम विद्याल (पद द )। संपुत्र एक [संपुत्रय ] बोइना बोनों हिस्सों को मिसला । संपूरद (मनि) । संपुर्किञ नि [संपुटिच] बुका हुमा (स्राय: १ १—यम ६३)। संपुष्त्र वि [संपूर्ण ] १ पूर्व, पूरा (उका महा)। २ न वरा दिनों का समातार कपनाथ (संबीध १=)। संपूध सक [ सं + पूजय\_] सम्मान करना सम्बन्धा करना। बहु सपूत्रतम् (वंशा e, w) i संपृष्ठिय वि [संपृष्ठित] प्रमापित (मद्य)। संपूर्ण न [संपूर्णन] पूरन प्रस्पर्वन (तृष ११ ७ वर्गसं६६४)। संपूरिय वि [ संपूरित ] पूर्व क्या हुवा. 'संपूरियदोक्ता' (महाः साग्र) । संपिद्ध पु [संपीड] बबाब (परुम = २७२)। संपेस सक सिंग + इप ] नेजना। सपेसक (महाध्यक्ति)। संपेस र् [संप्रेप] प्रेपश नेजना (ग्राया १ --- 44 £A.0) i संपेसण न [संप्रेपन] उपर रेको (शाना १ च---पत्र १४६ सः ६७६ वटः स्तरि)। संपेसिय वि [संप्रेपित] नेवा ह्या (पुर te ttx) i

संपेष्ट् सक [संप्र + इन्ह ] देवना निरीधरा करमा । संपेद्द, संपेद्देह (बसकू २ १२) पि १२१ थग उस क्या)। db संपेहाए, संपद्धिचा (बाना १२ ४ ४) १ ६ ६ रः शुद्धार २०१ मण्)। संपेदा भी [संप्रेक्षा] पर्याचाचन (माचा १ 2 2 4)1 सफ न [व] दुनुद, चन्त्र-कमन (दे = १)। संफाळ धक [सं+पादय] फाइना, बीएमा । संप्रासद (मान) । संफाछी की [ब्] पंतित, में कि (वे व वे)। संफास धक [सं + स्ट्रस् ] सर्व करन चुनाः 'नाददार्खं संफले' (प्राचा २,१ ३ गरश्यस्य, १६२४५)। संफास र् [संस्पर्ध] लज्जं (बाबा का वेशव दी पव र दी। हे १ ४६ पवि)। संफासण न [संस्पर्शन] इसर हैको 'बाखाबीरिवसच्चसस्यभावतो' (वंदा १ २००)। संफिट्ट र्र [दे] धंयोग मेलन (मा १६)। संप्रश्र वि [संकुड़] विकवित (बाङ १४) । संपूर्वस्य नि [संमृष्ट] प्रगानिक 'रस्पुकर नियच्यक्रियमिरिक्युह्ममा (सुपा २६६) । संव पु [शास्त्र] १ बीइय्स शासुरेत का एक पुन (ग्राम्य १ १ -- पन १ ः श्रेष्ट १४)। २ चना कुमारपाल के समय का एक सेठ (श्रम १४१)। संग र्वन [शम्ब] वज्ञ इना स्म प्राप्नुम (बुर 24, X ) i र्धर्वध स्वयः [सं + वन्यू] १ वोदना । २ नाता करना । कर्म संबरनाद (बेह्म ७२७)। संबंध पू [संयम्ध] १ संसर्व, सब (भृति) । २ संगीत (कम्म १ ३१) । ३ माता समाई. रिसतेवारी (स्वयन ४३)। ४ बोजना, मैस (वय ३)। संबंधि वि [संबन्धिन्] धन्तव रक्षनेवासा (ज्या सम्य ११७) स १३३)। संबर दें [शम्बर] मुक्नविरोच, धूरिए की एक आधि (यहाह १ १—यम ४० के स, ६३ क्रम ४२६)।

(att):

(עליו) ו संपत्रप्रतु [सण्डत] एक देव वर्ष (901) ग्राचंकां ६ वृं [संदुः हु] १४१वन (शह बीप सम्ब गाव १ १) संदर्भ वि [सद्र(प्र] प्रश्नीत पुत्रक र्मालय १-स्वरा ध्या १३ ti utijes mire 971) ( 4 प्रीक्राध्य वर्षी संदर्ध + सूत्र विश्व रव बरना 📭 र प्रतिसञ्ज्ञान (घावर 1 x x 1) मध्य वर्ष शिर्ष ही शक्त संब बद्धाः संत्रेषु तुब्धः १३३)। भारता । वस्तिता चणी व्यवसा भीवतम् । दश्यतेत् अस्थान ग्रह्मा न ts 1) भवरम [सम्प्रा] करण देव (बत्र) । । परपान कर रिशा + प्राप्त है स्वत करता and an eightentim imm f F' र र ग्रास्थलकारका सुर गोल्ल

177144

4 8 1 4]

( = + 1)

t & (%)

(444 1 )

177

धद्धां ६ (

el eit { [iimelt] stes gen un-

ere in fiele illes finde

TIN TENENTHER PROPERTY

trut tite [unut-ter] are bet (gu

कराम वर्षा । ♦ दश्री हे बच्छ प्रस्

क्षेत्र विकास सामा बहु कार्यो हा

autrectence ] the

wife were go eng

್ಷೆಟ್ಕಿ] ಕಾರ್ ಒಡ

£4}

eve en [id+res] | Lea

are, from any & a tax a g are,

द्र नार्पट्य (त्या १ र∽ पव वर्र) ।

संस्थाप विभिन्न ही स्था बच्चे

वरह मानव हुवा हा वह नुरगारानिका

संप्रदार है सिंद्रधारी निरसर निरुप (पहन क्ष २६ २५ व के के की प्रति। संपदार र्षु सिन्नदार] युद्ध, शहार्ष (वे a रे 1 (1 संनद्दारम म [संन्यारम] निरूप (काम ( 2 ) ( सरहार हर [44 + पाष् ] रोहना । सर हारेड (बाचा व १ व व) व संबद्धि वि [संबद्धि] होत्र अपूरित (उत्त (tx 3)) मंग्रक्ष [र] कथी त्वणा दरकी (रे = 3)1 मंग्रह त्य रि (मंचिद्दिर रही विकास क्यान es fem et nu fe / 2121 fen 237)1 मंत्राहम रि [मंत्रातिम] १ भवर, बोट, वर्गन पर्योग प्रप्तेशाचा जीव (पाचा- विक २४ मूरा ४६१: बोच १४४) । २ जान-शका व्यक्तकार्व विशिष्ट्यस्यापा सा वचा चन्त्रां (काचार १३६२ ११ 14)1 सन्प्रदर्गात [सर्पातत] t बारा व्या ह्या । २ वि'वत्र विकाहता (यी) । मंत्राह्य विकिश्व हो। बर्ज्य विक्र विक्र [क कारायुक्त ( तु) । भंगाप्रवादय भित्र आहे । बस्के इस्त स्पर्य करना । बताब्युद क्षेत्रफर्नात । युक्त BR BR fr R e) ande unterreend (Cat to-es fet) i unt agreed he falle des reposted (an tt 11): र्वाचाना विद्याल है है कर करा हात en Ramali dera auch alt detr termentare to-merte ) i शक्त होत् [बीयक्त] बचा पुषः पुणः secretar for a some a si

यात करणा । ४ प्रान्त करनाः वेद को पञ्चरित्रं, संपादेइ वरमामरहाइयं (वदा) 'बारतेबि प्रयक्ता धाले वि (न १०४). **इंसकेट (थ १६)। इ. संपाद्रशस्य (इ.** atrit संपाइम रि सिपाइमी बर्ख निर्माता चा को बच्चो सानुवार नवाको क्षाप्ता (इन tyz (f) i श्रंपद्यव सिंधद्यी १ निगाल (ह ave) । १ करता निर्मात (रेशा ६ १६), **परापर्गतहतिवर्गन्यतः (स. ११)**। संपादित्र वि शिपादिनी १ विद्व किस हवा, किसाँहर (व २१ ८ मुर २ १० )। **र प्रत्य किया ह्या (दर दू ११८) ! १** श्च वर्षेत्र (इ.२३३) । मंपाना रनो संपाधा (ध १ (01) संपाद (शी) देखों में इड = च + वास्त्। बंगर्थेर (बाट—शह ६६)। हः संधर या अ (बार--(रङ ६०)। मंत्राह्मपत्र (को)। वि [संस्वाहरिक्र] थेतारबन्दर्भ संसदद (दि ६ ०) । गंपारिभार (थी) त्या संपाद्रजन (ग tat) : भेराय है भिराती प्रमानकक कीक बाधवायहरूपुत्रशासकी (बुद १ (१६) ह र वंशन बंद्रका बारीरकाद्यक्रदेशालवंग-वर्शवर्वे दि' (गर ४ - ६) गरह) हे म्पर्ने er un, fereie mitte mung fere b 2-49 22) | 114-114 5 (41 \$ 44 १ वर्) । प्रधानवन (५न्द्रा ७ ३२) । ६ पत्रव, दिलव (उन्त हेब, देवे - व हैव 166 मंचर रेक मंचना (घर) । शंपादमा विकित्य हरू । संचर कर्या (स्व \$ 3 C. age age t the thing is [thank] t aik ecent Strate trace (of (all f x) t g Brit 42:19:41 (39 \$ 52) ) बीधका रेजा संस्कृत (नर ४

4. Ban Ren f. je

करमा । श्रेपासद (परि) ।

करवाना । संपावेद (चवा) ।

संपाम स**क** [संप्र+ध्याप्] प्राप्त करना ।

संपन्नेड (प्रवि) । संक्रु संपप्प (संक्य १२) ।

संपाव एक [संप्र+ मापय ] प्राप्त

संपादन न सिप्रापग । प्राप्त वास (सामा

संपाविक वि [संपात ] प्राप्त बन्द (मुर

संपाविक्र वि (संपापित) गीत को से नाया

संपासन कि कि बीके बच्चा (६० ११)।

संपिडण न [संपिण्डन] १ हम्बों का परस्य संयोक्त (पिंड २) । २ समूह (योग ४ ७)।

संपिंडिश दि [संपिध्यत] पिएशकार किया

हुमा, एक प्रभाव हुमा (भीक नी ४७

स्पिक्त देवो संपेष्ट् = संप्र + रैज् । सपि

संपिद्ध वि [संपिप्ट] पिशा हुना (गूम १

संपित्रद्व वि [संपिनद्व] निवन्तिः "१०द्व

पिरिको व इंदरम् विवृद्धक्षेत्रपुरातिग्रह

संपिक्षा सक [समिप + घा] पाच्छारत

करना, रक्ता । संक्र. संपिद्दिशार्ण (पि

संपीड र् [संपोड] संपीक्त बवाना (पडड) ।

संगीदिय नि [संपीदित] बगाया ह्या

संपीतिक वि [संपीपित] कुछ किया हुया :

संपीछ र् [संपोड] संपात समूह (उस १२,

संपीत्य की [संपीडा] पीवा, दुःखानुपव

(44 15 10 Ki 45 84) I

१ १८--पत्र २४१ पुर १४ १७)।

२ २२६ सुना १६% संख्)।

यवा हो वश्व (राज)।

नबर्द (बसच्च २ १२)।

(466 5' A-dx \$5 ) !

<del>ए</del>ख) ।

A =)1

3=1) |

₹1)1

रेवी संपाछ।

(458 5AA) I

क्षेत्र संपाधित (सम १ भक्त सौत)।

पाइ**अस**हसहम्मवो

प्रस्त, प्रथमा (सूमा ११२१ सुपा २१)।

संपुंदञ्जनी की [संपुष्काना] नहां संमानेंनी

संपुद्ध वि [संपूत्रव] संवानवीयः वाषरक्षीय

संपुद्ध वे सिपुट र पूढ़े हुए को समाम बंग

शक्षी बरनू, वो समान घरते का एक दूसरे

थे बुद्दा 'क्वाइसंपुरक्तिम' (बस्त ३)

श्री, पा (श्रम ३ ३)।

(एम २१)।

(पच ८)।

को निसाना । संपूर्व (यवि) ।

११ ७ वर्गचं ६३४)।

'संपूरिनशोहका' (महाः सरा) ।

१ १--पत्र ६३)।

(संबोध ५०)।

= 0)1

(यहा समि)।

। (०३ हरू—३

25 222) 1

(पक्रम ३३ ४७)।

२ २ ६)।

२८)।

संफासण व [संस्पर्धन] स्वर देखो 'बाखाबीरिमस्ख्यसणमन्त्रो' (पंचा १

संफिद्ध 🕻 दि | संयोग नेसन (सा १६)। र्सफुक वि [संफुक्क] विकसिद (बाक्क १४) । संफूसिय वि [संसूष्ट] प्रमानिक 'दशकुर नियरसञ्चियरिविमुन्नसा' (मुवा २६६) । र्सन १ शास्त्र] १ भीकृप्त नामुके का एक पुत्र (स्टाया १ ४ — पत्र १ 😗 मंद्र १४)। २ राजा कुमारराध के शमय का एक सेठ (क्रम १४३)। संघ दुव [शस्व] वज्र इन्द्र का सामुच (गुर \$4 % ) t संबंध सक [सं + बन्ध्] १ थोइना । २ माता करमा । कमें संबरनाइ (बेइम ७२७)।

२ चंगीन (कम्म १ ३१) । ३ नाता समाई

संबर पूं [शस्पर] मुक्तिकेंच इतिह की

एक वार्षि (पर्स्त १ १—पत्र ४- १८, ६)

(जबाद सम्य ११७: स १३१) ।

संबंध पू [संबन्ध] १ संसर्व, श्रंथ (महि)। रिस्तेपाधे (स्वय्व ४६)। ४ योजना, सेव संबंधि वि [संबन्धिन] छन्तन रखनेशसा

(यम २)।

TA 458) 1

a-पत्र १४६। स ६७६ यज्ञ भवि)। संपंतिय वि [संप्रेपिन] येजा हुया (नूर

संवेसण न [संप्रेयम] इतर देवो (शामा १

संपृक्तिअ वि [संपृटिच ] पूका हुमा (खाया संपुष्ण वि [ सपूर्ण ] १ पूर्ण, पूरा (उवट महा) । २ न दश दिनों का समातार उपदास संप्रत तक [सं + पूजय\_] सम्मान करना, बामार्चना करना। संक्र सपूर्कण (पंचा संपृक्षिय वि [संगुजित] प्रम्यक्ति (महा)। संपूर्वण न [संपूजन] पूरन धम्पर्वन (सूध संपरिय वि [संपरित ] पूर्व विमा प्रक संपद्ध र् [संपाड] दबाद (पतम ८ २७२)। संवस सक [संप्र + इव् ] भेजना । सवसर संपेस र् [संपेत] प्रैफ्छ नेवना (छामा १

संपुद्ध सक [संपुरच ] बोइना रोनों हिस्सी

'बससंपृष्ठे' (कम्म महा प्रवि से ७ १९)। २ संक्या चपुद्र (मूग १ ३, १ २३)। फला पू ["फलक] शेमों तरह विस्र वेंबी पुरतक हिसाब की बही के सनान कियाब

६४८ थी पण २ थेर हे १ ४६१ पडि)।

चीरमा । संप्रश्तद (स्वि) । संप्राक्ष को [दें] पेनित बेशि (१ ८ १)। संकास सक [सं + स्ट्रस् ] स्पर्धं करना **पू**ना' 'मारद्वार्**! सं**कासे' (माना २ १ ३ वे २१ ४ ४१२ १ १, २ ४०४)। संफास 🐧 [संस्पर्श] स्पर्ध (बाका अप

६२६ भग क्या कम्प)। संक संपेद्वाए, संपिद्विचा (बाचा १२,४ ४) १ १,३ २३ मुख्य २ २ १ घर्ष)। संपेद्या की [संप्रेक्षा] पर्यात्रोचन (माचा १ सफ न [दे] द्वपुर बन्द्र-क्रमस (दे ८ १)। संफा**ड धर [सं**+पाटय] फार्गा,

संपेब सक [संप्र + इन्ह ] देवनाः निपेष्टस

करणा। सपित्रह, सपिद्वेह (बसकूर १२) पि

CN.

<b>■</b> 8≈	पाइअ <b>सर्गहण्यका</b>	संबद्धसंमद
संबद्ध पूर्त [सम्बद्ध] १ परोय, धारते में शाने का मोजना 'कनाही विस परकोनधंकती मिनद नवासी' (सम्बन्ध १३७ पास, सुर	सं ४८६६ सूच १ २,१ १३ वे ७१)। नक्क संबुक्तमाण (शाचा १ १ २ १)। संबुद्ध वि सिंबुद्धी बान-प्रस्त (अवा) सद्दा)।	संभणिज वि [संभणित] कांक्त, क्का (विष)। संसम सक [सं+भ्रम्] १ परिस्त
१६ १ दे ६ १ दः महा जिम्मुगा १४) । २ एवं नाव्युद्धार देव (दावन) । संबक्षि केवो सिंबद्धि = श्रिम्बर्ग (दावा रः	संबुद्धि की [संयुद्धि] ज्ञान, बोच (धरम्ध १६)।	भ्रमणु करम्। २ घष- घस-पीत होणः क्वमृता। यह संभमंत (पि २७१)। संसम् पु सिंभमं] १ भारण 'र्धममो साम्पे
१ ९ ४)। संबंधि पुंजी [शास्त्रक्षि] कृत-विदेव देशव का पेड़ (बुद क्ंट्रक्प व ४०)। केवो	र्सम्भाषु [शस्त्रक] मन-युष्टि, तुक्ति के साकार का जल-जीतु-विशेष (दे ल १६ कार)।	पमानो व (पान) । २ मन भवणहर क्रांकर 'संकोहो संभागो तमा' (पान- प्रायु १ ६४ महा) । १ जस्युकता (मीप) ।
सिवस्थि। संवाक्षा केवी संवाह्य (पद्धा २ वर्श)।	संबोधि की [संबोधि] धप्य वर्ग की प्राप्ति (वनेसे १९९६)। संबोद्द एक [सं + बोधय ] १ समग्रामा	संभर सक [सं+भू] १ वास्त्य करना । २ पोषस्य करना । २ संस्थे करना संकोष करना । वहाः संभरमाण (से ७ ४१)।
संबद्ध सक [सं+ बायू] १ पोका करना। २ स्वतना चली करनाः संबद्धका (निष्दुष्)।	इन्समा । २ बासम्बद्धा करणा । १ विक्रायि करमा । सर्वाकृत संगोहत (व्यवत व्याहा ) । कमात्र. संबोद्धिकासाय (बाया १ १४) ।	धंडाः संमारे (बन) (निन)। संभर डक [सं + स्मू ] सम्बद्धाः करमाः, नार करमा । संबद्धाः बोधरिनो (महार नि ४४३)।
संबाहर्षु (संबाध) १ नपर-विशेष वहाँ सम्राप्त धानि चारो वर्द्धां की प्रमूत करती हो वह सहर (उस्त १ १६)। २ पीहर	इ. संबोदेशम्ब (अ४ ६—पन १४६)। संबोद ९ [संबोद ] बल क्षेत्र इतस	वड. संगरंत, संगरमाण (पारधः द्वा ११७३ थें ७ ४१)। इ. संगरिमक
'चंत्रम्' व्हले पुल्यो पुरस्तकमा स्वास्त्रस्थे स्वास्त्रयो' (माषा) । ३ वि संकीर्यं सकराः 'संबाहं पंत्रिक्त्यं' (गाम) ।	(बालगर)। संबाद्यान [संबोधन] १ उत्पर केवी (विशे २६६२: मुख १ १३ विस्व ७७३)। २	संसरणीय (शस्त्रो १ । उर १६० छै) । संसरण व [संसमरण] स्वच्छा बाद (व २२२ जाला १ १ — तत्र ७१ है १४
संबाहण न [संबाधन] केनो संबाहण (धावा १ १ ४ २)। संबाहणत में [संबाधना] केने संबाहणा	बामन्त्रश्च (काब) । ६ विवस्ति (शाया १ ६—पत्र १११) । संवीद्विश्वो संवीधि (वर ६१७६ वै ७१)।	चन्द्र १४)। संमरण के [संस्मरण] उत्पर देवो (ज्य १६ थे)।
(प्रीरः)। संबादणी की [संबाधनी] निवानिक्टेक (वस्म ७ ११७)।	संबोद्दिक नि [संबोधित] १ सनम्बन्ध हुमा (यदि ४०)। २ निज्ञापित (सामा १ ८— पन १११)।	संभवनित्र वि [संस्थारित] यह क्यार्थ ह्या (वे १६ क्षुत्र ४२१)। संगरिक वि [संस्कृत] बाद क्रिया हुण
संबाह्य की [संबाधा] १ पीवा (ब्बाबा १ १ ४ २) । २ संब-मर्कट, चानी (बिन्धु १) । संबाह्य वि [संबाधित] १ वीहर (दुध	Bart 460 (40 Err on All' 484)	्यक्क काश १२)। संसक्त क्क [सं+स्य] यात करणा। संसक्त (का पृश्वेश)। वर्ग, सम्मानक
१ ६, १ १)। २ विकासिय (धीप)।	गरकरचाम-विशेष (वेदेना ४)। ३ त. वय. वयपाहर (महा)।	(बन्नाव)। बद्धः संसद्धि (सर) (विय २१)। संसद्धः सक्षः [सं+ सद्धः] १ सुन्नार
संयुक्त पुं शिम्बुकः देशीयः (श्राप्त ५००० यमः १९६४ जुता १ (११४)। ए राजस्य का एक व्यक्तिस-न्यर्श्वस्य का युक्त (पश्रम प्रदेशित)। ६ एक बांच का सामः (राज)।	(तम १६ १पम ७ ६)। संगंदिय वि [संप्रान्तिक] संप्रत से बच्च	हुमराती में 'धांकपुर' । २ सक. बाज्याच धानवान होना । संस्थाद (धारे)। 'सांकपुर 'सद पहल' (धामत २१७) । संब्रा संस्थि (धार) (स्पर २ १)।
ाषपूर की [redi] र्राव के धानते के बनान भिक्ता-क्यों (उन्त के १६) । केबी संबूध्य ।	, ॄ्रिया(थन १६ १.—पत्र ७ ६)।	संमधी के [दे संमधी] र तुरो (दे 10 वन १) र र नुदूती, पर-पुरूत के साम सम्प की का गीन करानेनाओं थी (कुमा) :
संबुद्धम् सक [ सं + सुद् ] वणकाः, बार राजाः। सङ्ग्रस्य, संबुद्धस्य संबुद्धस्य (पहाः		संसव धक [सं + सृ ] १ प्रशन्त होना। संस्थानता होना स्वच्य संस्था होना। संस्था

(सए)।

(मुता ११) । इ. संसब्ध (या १२ सूचनि

संभय-संभोग

EX)I संसय वृ [संभय] १ बलति (यहा- वय- हे ४ ११४)। २ स्रोताकता (स्वि)। ३ वर्तमान धरमुर्तिकी काल में उद्याप क्षीसरे जिनदेश गा बाम (तम ४३ पडि)। ३ एक जैत मुनि जो बुसर बामुरेन के पूर्व-कन के पुत्र में (परम २० १७६) । ६ इसा-विशेष (बीप)। संभव है [के] प्रवर-वरा प्रमृति वे होने-वाता बुड़ाना (दे =, ४) । संभव (घा) देवा संभम = बंधव (मवि)। संभवि वि [ संभविन् ] विस्ता सम्बर्ध बद्ध (पंच ४, २४ मास १४)। संभविय रेपो संभूज (वेह्य ६३६)। संबद्ध रेखो संभव = र्र + भू। संभाजय व [संभाज ह] पुत्ररात का एक प्राचान नगर (रान)। संभार एक [सं+भारय ] नवामा हे बंस्नुत करना वासित करन्य । संगारित, संगा-र्रेडि रामाचे (लावा १ १२-पत्र १७३, १७६)। इंड संभारिय (निंद १६६)। % संभाषीयज्ञ (लम्ब १ १२)। मंभार वृ [संभार] १ बद्दुह, बाबा 'उल्लेब-चेम्बेमारमञ्जनमं करान्य स्वयं (उर ६४६ द्ये भारक १६)। २ नवाला शाह मादि में इत्तर होता बाता मधाता (छाना र १६--वत्र १६६) : ३ परिष्ठ प्रध्य-सथय (स्ट्राह १ ५---पत्र १२)। ४ मध्यपत्रया क्रमें बर बच्च (मूच २: ७ ११)। मेभारभ वि [संस्मृत] याद क्या हुम (वे ty ta) i मेमारित रि मिरनारित वार क्यम हुन्द (याचा १ -- पत्र ७१: पुर १४ २३६) : र्गनात पर [ ले + भारत्य ] चंपाला । वंगलाः (मार्ड) । मेभाव ([संभाव] क्षेत्र कथारा: 'र्जा' मूर्णम्य या न प्रदृष्टोच् श्रायश्चार्यार्थनियाँ क्यमधा बाद राज्यको बाद्यो कान्त, म बर्काह बाह ररणा बर्ड प्रवच्या (१४३) 0):

(सक्ष्म ४) सम्मानेहि मोह २१)। कर्म संगारीयाँव (शौ) (नाट-मुख्य २६ )। वर्ष संभावजंत (गट-सर् ११८)। संह संभावित्र (शह-राष्ट्र ६०)। इ. संभाषणिज्ञ, संभाषणीय (उर ५६६ क्र स दश्या २३)। संभाप चरू [ तुम ] सोम करना चासकि करमा। संभारह (हे ४ १४३ वर्)। संमापना थी [संभाषना] सन्द (व द १६ संभाषि वि सिमाधिन् विषया संघर हो। बह (मा १४)। संभावित्र वि [संभावित] विवरी संगावता को नई हो वह (नाट-विक १४)। संमास वह [ सं+भाप् ] बाउबीव कला, यानाव करता । हा संभासन व (त्रय **1(3)**1 संभास र् [संभाप] संचाप वार्वानार (बर दू ११२ सबीच २१ वट काम नुष ११६, ६८२)। संभासन व [संबापन] बार रेपो (वरि)। संभामा से [संभाषा] संभाषण बाउपीत (घोर) । संमाधि वि [संभाप] संग्राण 'संक्रिक स्वास्तरियो (कास)। संभासिय रि [मंशांपर] विश्वे सच शयास्य-शर्जनार क्या क्या हो बह (च्याः)। संस्थित न [संभएन] पायात (यउर)। संधिका । वि [संभिन्न] १ वरिपूर्ण (पर श्रीक्षप्त हे ११०)। २ विविद्य मून, नूच ६व (रेश्य १/२) । ३ म्बला । ४ स्व दुल शिया—<sup>२०</sup>राशा (पट्टा २ १—पत्र (t) । ३ व्हॉस्त (शर्द्ध t tt) । साज दि ["उन ०१] सन्दरिभागा rates grid enter infat

संभाव एक [सं + भाषय ] १ संभागना संभिन्न न दिं । प्रापात (बउट ६३ ८ टी) । करता। २ प्रमुध सगर स देखनाः "न संभिय वि [मंजून] १ पूर, बार्यवर्षियाँ रामावित सन्दोई' (मोह ६): संनादेशि (नूप १. ६, १)। २ स्टब्स्यर-पूज, संस्कः; 'बहुर्सनारसंनिय (ए।मा १ १६---पत्र १६६ स ६ स विने २६६)। मेल 1 शिम्ली चित्र ग्रंडर (दूस २४ ३ साम १३ र छन् १३ )। २ धरण का एक मुमद (पत्रम ५१ २)। ३ एन्स-निर्देष (रिय)। परित्र हो ["गृहियी] कैए पार्वतो (मुपा ४४२) । संनुज रह [मं+भूज] राष भौतर करता, एक मददती में बैठकर मोजन करना । वंद्रेक्ट (क्य)। 📭 संनंजित्तर (त्र्य २ ७ १६ छात्र १---वस १६)। संनुविता 👊 [संभोजना] एका भारत-ध्यंबद्वार (र्वन्त) । संनक्ष रि हि दुर्वन यन (रे व ७)। संभूत्र वि [संभूत] १ उरात्र संगद (क्रा ८ ६ ३ महा)। २ दू, एक वन मुनि वा प्रचय वानुसर के पूर्वतन्य में पुर वे (सप १४६ पडम २ १७६)। ६ एक प्रतिज्ञ जन बहुबि जा स्पूनमद मुनि क पुर ये (धर्मीक १८: सार्वे ११)। ४ व्यक्तिनायक मान (बरा)। स्वजय द्रं [शिजय] एक देन महर्षि (ब्रुव ४६६ दिना २ १)। संमुद्द ध्व [संभृति] १ बरावि (पाप १० रक्ष प्रश्न कुर ११ १३४ वर २४४)। २ थेन्न विमृति (मार्थ १३)। मेन्न वह [ मं + नृष् ] धरात हरता। संमुक्त (सए) । मेधाज दू [मंजारा] मुख्य ध्रेष (बुता ste क्ष्म)। देखो संभागः में बोइज विकिंगांगिकी बनाव गावाच से ब्यिट्डान होने ४ प्रस्तु विषद्भाव बाक राज महिना स्परहारही पढे हैना नापू (धावमा सं: रंका प्र ४१ प्र प्र )। संभाग र् [संभाग] बगत गाबादोहने नपुष्टी वर एका ध्येतरहरू स्थार (दन दह कीए ४४)।

१६ मीर) :

14) 1

बतश) ३

(बर्मस १ १६६) ।

(मारप र )।

-- 9**4** (**X**())

वय १२१)।

थमध्यक्रुट (मञ्जूष) ।

संभिषिश (पिय)।

(सम १६ १--पत्र ७ ६)।

때상국

8 8 X) I

सिबंधि ।

(Peg %) :

संबद्ध र्थन [प्रस्वक] १ यहरेय, चस्ते में

बाने का बोजक 'कलार्ड जिय परहोयर्डको

विकार नमार्ख (सम्पत्त ११७ पाय: शुर

१६ १० दे६ १ छ महा भवि गुरा

**१**४) । २ एक नाक्कृयार देव (शायन) ।

संबक्ति केवो सिंबद्धि = किनीब (बाबा २)

संबंधि पूंडी शास्त्रकि दूस-विकेष, केवब

संबद्धा देवो संबद्धा (परम २ १) ।

कार्यक (सर २ २६४८ व ६७)। केवी

संबा≰ सक [सं+वाघ] १ पीतः करना।

२ वर्गमाः चन्त्री करुत्र । श्रेतहरूमा

संबाह पू [संबाध] १ नगर-निशेष वहाँ

बाह्यस्य पानि वार्धे वहाँ की प्रमुख करती

हो नह तक्षर (उत्त ३ १६)। २ पीक्ट

विवादा बहुदे पुरनी पुरद्वकरा धनासामी

प्रपासमी (प्राच्य)। ६ वि संदीली सकराः

संबाह्य न [संबाधन] केवी संबाह्य

संबाहणा 📽 [संबादना] केही संबाहणा

संबादणी को [संबाधनी ] विद्या-विदेख

संबाह्य की सिवामा र धेड़ा (कावा १

१, ४ १) । २ ग्रंथ-वर्षेत् चनी (विद्यु १) ।

संचाहिय वि सिंचाधित । योदित (स्व

१ ६, १ (a)। २ व्यो संवाधिक

मेनुषः प्रस्यको १ धंश (२४४ २ ---

यम रहरा नुवा ४ : ११४) । २ वावल

**राप्**क मा<del>क्तिर---प</del>र∦पल कापून (पडक

४३ १) । ६ एक पांथ नहसूत्र (चार) ।

(बहाकी [क्यों] शंच के बारवें के

श्वान निवान्त्रमी (वस १ १६) । देवी

मंतुम्ब बद [ मं + पुथ ] तपम्मा, बान

पाना । राषुण्याः राषुण्यतिः रोषुण्यत् (वद्याः ।

'संबाई संकिट्ट (पाम)।

(याचा १ १ ४ २)।

(पतन ७ १६७)।

(धोष)।

(गीप) ।

संप्रना

करना। सक्र. संभरताथ (वे ७ ४१)। एंड. संभरि (घप) (सम)। संभर एक [सं + स्यू ] स्परतः करन्य, गर्व कराय । संबरेद, संबरियो (महा) पि ४११) । रक्त संभारत संभारताच (गा १८) पूर्व

११७ के ७ ४१) । इ. संसर्गक संगरणीय (बच्चो १० छ। ११० टी)। संभरण व सिस्मरजी स्वरक्त गव (व २२२ छाया १ १---पत्र ७१ वे २३।

क्षप्र १४) । संमरणा 🛍 [संरमश्या] क्यर देखो (न्य X8 23) 1

संभवविश्व वि [संस्मारित] बाद कवना ∦मा(दे २६, हुप्र ४२१)।

संधरिश्व वि [संस्युद्ध] यज्ञ क्रिया हम (बरक काम १२)।

संसद्ध तक [सं+स्तृ] या वरणा।

घंपलद (जर इ.११३) । क्ये, समिवन्बर (बज्जा र )। बच्च संभक्ति (स्प) (सिंब

संबद्ध थ⊈ सि∔ सङ्] १ कुल्स

पुष्पती में 'सामटबू" । २ सक. सम्माना

धारवान होता । शंत्रकड (वर्षि)। धारवर्ष

98 )1

यह पदम्त' (धम्मच २१७) । संझ-संमध्रि (बप) (विव २८६)। संभधी की विस्माधी र इसी (वे वन १) । २ बुटुनी, पर-पुस्त के साम सम्ब की का बोप कराने राली औ (कुमा) । संगवधक [सं+भू] १ करन्थ होना। संगापका द्वांका प्रस्तर राज्य होना । संघनक

संभग्ग रि [संभग्न] पूर्णित (उत्त १६, र्श्यभण एक [सं+भण्] व्यक्ताः संहर

संमंतिय वि [संभानिक] संभय से वन ह्या (त्रव १६ १-- पत्र ७ ६)।

९ पुंत प्रथम तरक या पांचना तरकेन्द्रक-बरम्बरमाम-विद्योग (दिनेश्वर ४) । ६ स. चन्द्र, संयंति की (संभावित) राधम, अधुकता

संगोदि देशो संगोधि (जा ए १७८, मै ७६)। संबोद्दिश वि [संबोधित] १ धनमामा ह्या (मवि ४४) । २ विकारित (ग्रामा १ ८---संगंत वि [संभाग्त] १ गीत, व्यक्ताम ह्मा परा (उस १०.७ सहा, प्रका)।

संगुअ पूं शिम्बुको वन-बुक्ति, बुक्ति के शाकार का <del>गय-जीत-निरोग</del> (वे व १६ संगोधि की [संगोधि] एवा वर्ष की प्राप्त संबाद एक [सं+ बाधय ] १ धममाना इक्टमा । ए भागम्बर्ध फरारा । १ विक्रीय करता । समोदाह, समोतोह ( मनि" नवार ) । **व्यक्त, संबोदिक्समाण** (खावा १ १४) । संबोद्धेजम्ब (स.४ १—पर २४६)। संबोध प्रसिद्योध विकास बोस समस श्रीबाह्य न [संबाधन] १ असर वेबी (विसे रश्करः गुणारं रः चेदन ७७४)। २ धामन्त्रस्य (यहर) । ३ विश्वन्य (साम्य १

संबुद्धि भी सिंयुद्धि बान, बोन (यरफ

संबुद्ध वि [संबुद्ध] सम्बन्धाय (ज्या ग्रहा)।

- 'चंडोहो चंममो वाचा' (पाम प्राप्त १ ए
- २ पोक्स करना। ३ संघेप करना संकोप
- मक्का) । १ फल्युक्ता (धीप) । संसर क्षक [सं+ स्व] १ वायक करना।

- पयलो व (पाध)। २ मन वयस्य स्रोक

- संगम र् [संभ्रम] १ पाष्ट 'र्थभमे प्रामये

- क्ववाना । वह संभानंत (पि २७६) ।

- भगल करता। २ मक भन-गीव होना

संबद्ध-संघव

(सामा १ १४ वि १६१)।

संस्कृत कि [संस्कृत वर्णा वस्य स्था

करनेवाना (ग्रामा १ १८-- पन २४ )।

संरक्कण न [संरक्षण] समीकीन कारा

संरक्तम देनो संरक्ताग (उत्त २६ ३१)।

संस्ट्रमङ सि+राध ो पकाना। इ संर्याद्यस्य (कृत्र १७) । संदंध सक [सं + रूप ] रोक्ना घटकाना । क्यं संदेशिकार, संदक्तरह (है ४ २४०)। भवि संबंधिहरू संबंधिमाहिद (हे ४ २४व)। संग्रह पू [संरोध] मञ्चान (कुल ११ पन , 38=)1 संरोहकी की [संरोहकी] बाव को बन्धने बाबी ग्रीपवि-विशेष (मुरा २१७)। संबद्ध पद [ सं + अध्यः ] पहिचानमा। क्रमें संसक्खीमदि (शी)- (नाट-नेस्डी ७०)। संबन्ध वि सिखन्ती बना हुमा शंयुक्त (मुपा २२१) । संखितार वि [संख्याद] संबुक्त होमेबाला पुरुनेशना (धोष १०)। संबन्ध वि संबर्धित सम्बद्धित एक कवित (मुर ३ ६१ मूचा ६२६८ ६०१८ महा)। संख्या नीवे देखी। संख्य दक [सं + छप ] श्रेमाक्य करना । संसवह, संसवेति (महाः २४ १४८) । वहः संख्यमाण (ए।या १ १--पत्र १३) क्य) । इ. संस्थ्य (चर्न) । संख्य प् सिद्धाप् । संग्रवण नार्जानाप (मूपनि १८)। संद्राव क्य [ मं + स्रापय ] बातबीत करना । संगाविति (कम्प) । संख्यप देनो संख्य = संसाप (बीप से २ रशः समार था ६) । संद्राधिभ वि [संद्रापित] १ उक्त कवित । २ कहमगमा हथा (शा १११)। मंतिद्ध रि [संदिद्ध] संदुष्ट(संगोग १६) । मंख्रिद वक [सं+छिता] १ निजेंग करता । र रायेर यादिका स्रोक्त करता इसक्ता र विकास । र वेबा करता । र्धानिधित्रता(धाचा २, ६ २ ६)। श्रांतिहे (क्या १६ १४६) दल मा ४ ७) । संह्र मंसिद्धि (क्य) ।

से खरीर बादि का शोपरा किया हो वह (E \$1 ) 1 संबोद पि सिबीद विशेषमा-पूर्व (एरि 9 4)1 संस्रोण वि सिन्नीनी जिसने दिनाय तथा कराय धारि को कार्यु में किया हो वह, संबूध (पत्र ६) । संद्यागमा 🛍 [संखीनता] वर्ग विरोप राधैर धादिका संयोजन (सम ११ नव २८) पव () i संखंब एक [सं + सुद्ध ] काटना । कवह संशंकताणा मुख्याह (पाका १ ६ ३ १) । सह संबंधिया (न्ह ४, २,१४) । संखेदणा श्री [संखेखना] राधेर क्याव बादि का शोपए। धनशन-इत से शरीर-ध्यान का बनुद्वाल (सह ११६ मुका ६४०)। "सुभ न ["धत] धन्य-विशेष (**एवि २** २)। संदेश की [संदक्ता] कार देवी (उत्त १६ २६ ३ पुरा ६४८) । संबोध व [संवाह] १ वर्धन प्रशासन (याचा २, १.६ २) उत्त २४ १६ पर ६१) । २ इप्टि-पात इप्टिप्रचार । ६ बगत्, चंपूर्ण लोक । ४ प्रकार (चन)। ५ वि रृष्टि-प्रकारकामा निस पर रृष्टि पह सकती हो 🕬 (उस्र २४ १६)। संक्षेत्र सर्वास [सं+ छोड् ] रेक्सा। इ. संबोक्त जिल्ला (तूच १ ४ १ ३)। संबद्दगर 🐧 [संख्यविद्धर] व्यक्तिसम्ब विषयीत प्रश्लेष (स्व) । संबमा वं [संबंगे ] १ प्रका, व्रक्तावर (बब १: भीवस ११४) : २ ग्रुणित विस्तब्ध पुलाकार क्षिया गया हो वह (राज) । संवयद्वर र् [संवरसर] वर्षे वाव (उन 🛊 २ २१)। पबिछंद्णम न ["प्रतिज्ञान ह्र] वर्ष-पाठ वर्षे नी पूर्णता क दिन किया जाता बरसर (खाया १ ८-पत्र १३१ भगः यंत्र)। संपन्यतिय 🛊 [सापरसरिक] १ ज्योतियो क्योतिय शास का विज्ञान (ध १४ पुत्र १२)। र नि संस्तर संबंधी वाचक (वर्धीत १११) परि)।

618 संबच्छा देवो संबच्छर (हे २ २१)। संबद्ध च कसि + वर्ते यी १ एक स्थान में रबना । २ धेकुचित करना । संबद्धेह (धीर)। संबद्देश्या (प्रापा १ = ६ ३)। संद्र संबद्धशा(अ२ ४---पत्र ८६) संबद्धिशा (पाणा १ = ६ ६)। संपर् व [संवर्ध] १ वीका (जा २६६) : २ भग भीत सोमों का सर्मनाय-समृह (उत्त १७) । १ बायु निरोप सूछ की सङ्ग्रे बासा बागु (पराख १--पत्र २६) । ४ सपनर्दन (ठा २ १---पत्र ६७)। ५ मरा। ६ वर्त पर बहुत गांवों के मीम एकत्रित हो। कर रहें वह स्थान, दुवें धादि (राज)। देशो संवत्तः संबद्धम वि [संबर्वकित] तुवान में कंता ह्मा (का द्व १४३)। संबद्धाः पू [संबर्वक] बायु-बिरोप (सुपा ४१) । रेका संबद्ध्य । संबद्दण न [संवर्दन] १ बढ़ां पर धनेक पार्व निमये हो बहु स्वान (छाना १ २---पत्र ७६)। २ सपन्तैन (विसे २ ४४)। संबद्ध ए मिनवें की यत्रवर्तन (क्ष. २. ३---पत्र ६७) । देखो संबद्ध्या । संबद्धिअ वि [दे संवर्षित] संदृत संशोधित (4 c 22) i संपष्ट्रिय वि [संपवित] १ विश्वेयूत एक्सित (वय १)। र तंबतं-मुक्त (हर १)। समब्द यह [सं + पूर्य ] बहन्त । सबस्दर (महा)। संबद्धम देवो संबद्धम (धरि ४१) । संविष्टिक रि [संदृद्ध] बदा हुया (महा) । संपद्धित्र वि [संपीयत] बहाया हुया (बार-सना २२)। संक्ष्य पू [मंत्रत] १ प्रसय कास (स ६, २२)। र बायु-विदेशः 'पूर्वत-सरिसं संबत्तकार्य विकासितकार्ण (इत १६) । ३ वय । ४ वय वा यक्तिति रिटेश । १ बुध-विधेष, बहेहा वा पेड । ६ एक स्मृतिकार बुनि (वंधि १ ) । देवा संबद्ध = संबन्ध

संपत्तम देवो ६४इम (६२ १)।

et4	पाइञसङ्ग्रहण्या	संगोगि—संरम
संभोगि व [संभोगिम् ] क्लो संभोइण (दूर १०२)। संभोगित केले संभोदर (द्र १ १—पव १९३)। संभोगित केले संभोदर (द्र १ १—पव १९३)। स्मान केलि स्मान्त १ अनुस्मत पवन। १ मानुस्म व स्मान्त १ अ १० १— प्रमान १ [संगान ] संगान करण (लिले १२१)। संगान १ [संगान ] संगान करण जान करण (लिले १११)। संगान व [संगान ] ताक करण जानन (संगान ११६)। संगान व [संगान ] ताक करण जानन (संगान ११६)। संगान व [संगान व संगान व स्मान व संगान व	पाय्यसहमारण्याचे संवारोगे (वर्षाः अगा यहा कण वि ४०)। यदि संवर्षाद्विति (वि १२०)। यदि संवर्षाद्वित्र साणित (व्या कण)। संवर्षात्व (व्या १ १ १व ४ प्या)। संवर्षात्व (व्या १ १ १व ४ प्या)। संवर्षात्व (विस्तान) क्यर केवी (पूण १ ४)। संवर्षात्व वि (संवर्षात्व) व्याप्य व्याप्य वि १	समुचिद्धम वि [संमुच्चिम] बी-पुल्ल के सामाम के तिना करण है हिनेताना मार्थी (शाला का रू. रू.—यह देवें तमा मार्थी (शाला का रू. रू.—यह देवें तमा मार्थी (शाला का रू. रू.—यह देवें तमा प्रश्ने की देवें)। संगुच्चक वह [संम् सुरू ] मेख् करण मुख्य होता संगुच्चक (क्षेत हरू)। संगुच्चक के संगुच्चक (क्षेत हरू)। संगुच्च के संगुच्चक (क्षेत हरू)। संगुच्च के संगुच्चक (क्षेत हरू)। संगुच्च वि [संगुच्च] वामने सावा हुम्म (है! दश्य कर्य वेद्रा)। संगुच्च वि [संगुच्च] वामने सावा हुम्म (है! वामच के (संग्ने वामने सावा हुम्म हैं। संग्ने वे [संग्ने वामने सावा हुम्म हैं। संग्ने वे [संग्ने वामने (संग्ने वामने सावा वामने का वामच्चम सावाक्य पराव के सावा का स्वय का स्वय का स्वर्ण के स्वर्ण का स्वर
		' (द्वमा ३८७ )। अक्षतेत्र प्रत्या (पाद्य)।

(सामा १ १४ वि १६१)।

संरद्भियम्य (कुप्र-१७) ।

संरक्तमा वि [संरक्षक] प्रवर्ध तथा यहा

करनेवाना (सामा १ १८--पत्र २४ )।

संस्कृतक न [संरभ्रण] समीचीन कार्य

संस्काय देनो संस्कारा (उत्त २६ ३१) ।

संरद्ध धक [सं+ राम ] पकाना । इ

संदंध सक सि + रुष ौरोकनाः घटकामा ।

कर्म संबेधकबद्द, संस्थ्याद (हे ४ २४०)।

यनि संस्थिदिह, संदिणमहिह (हे ४ २४०)।

संग्रेड् वृ [संराध] पटकाव (कुत्र ३१ वव

₹₹=)1 संग्रेहणी औ [संग्रेहणी] काव को समाने-बाबी बीववि-विशेष (सपा २१७) । संस्थल सक [सं + स्थ्यम् ] परिवासना। क्म संसक्बीपदि(शौ)- (नाठ-वेछी ७०)। संख्यानि [संख्यान] समा ह्या संयुक्त (सपा २२६)। संद्धीगर वि [संद्धीगत्] संयुक्त होनेवासा पहनेशमा (भोष १०)। संबन्ध नि [संबदिव]संबदित एक क्या (तुर ३ ६१ युवा ३२६ ३०३८ महा)। संख्या ग्रेवे हेवो । संख्य स्व [सं + स्व ] संग्रप्त करना । **पंतवह, पंतविम (महा) पर १४८) । वक्र** संख्यमाण (साया १ १—५७ १३) कम्भ) । इ. संक्रप्य (स्व) । संख्य पू सिद्धप संख्या मार्गामान (मुधनि ६६)। संध्यव एक [सं+ध्यपय ] बातकोत करना । संनाविति (कम्प) । संदाय देनी संदाय = चंताप (धीपः वे २ रेट परंड मा ६)। संस्मिविक वि [संस्मिपित] १ उक्त कविछ । २ कहम गया हुया (भा १११)। सैक्टि वि [संश्वित्र] चंद्रक(दंगीय १६) । संस्थिद सक [सं+श्रिक ] १ निर्मोत करना । २ सपैर मादिका शोवस करना इस्ट करना। १ पिछना। ४ रेखा करना। र्धीनिदिश्या (धाषा २, ३ २ ३)। र्छासी (34 14 5AS) 64 # A. #) 1 6 K संस्थिद्य (क्य)।

संखिद्विय नि [संखितित ] निसने शप्यमी से शरीर काबि का कोपए। किया हो वह (स १३)। संबोद वि सिंबीद विवेचना-प्रशा (गंदि R () 1 संबोध कि [संबोध] जिसमें श्रीवय तका क्याय थावि को कामू में दिया हो वह, धंकुष (पन ६) । संबोगया को सिंबीनता वप-भिग्रेप गरीर दाविका संगोपन (सम ११) नव २० पद ₹) ı संस्थेय एक [सं 🕂 सुद्धाः ] काटमा । कवष्ट संक्ष्ममाणा पुरुष्ट् (पाना १ ६,३ ६) । सङ्घ संस्थिता (१स ४ २,१४) । संदेशमा की [संदेशना] रहीर क्याय धावि का शोपण प्रनशनश्च से श्वीर-त्याप काधनुद्रान (सङ्क ११६ पुपा ६४५)। "पुरुष न ["भूत] एन्य विशेष (शरि २ २)। संखेबाकी [संख्या] कार देवों (उत्त १६ २४ मुपा६४०)। संक्षेत्र व [संकोड़] १ रहन, परतोकर (धावान्, १६२ च्छार४ १६ पव **३१) । २ इटि-पाठ रिट्राचार । ३ वपर्**, र्वपूर्त बोक । ४ प्रकाश (राज)। १ वि हृष्टि-प्रचारमञ्जा निस पर हृष्टि प**र** सक्त्री हो बहु (उस्त २४ १६)। संक्षेत्र तक [सं+क्षेत्र] रेवना। इ. संख्यक्रिया (न्य १ ४ १ १)। संबद्धयर १ (संस्पविकर) व्यक्तिका विषयीत प्रशंस (जव) । संधग्म र् [संध्रमें ] १ प्रक्रम, प्रकाशनर (यथ १: बीबस: ११४) । २ बुल्लिट निसंका पुराकार किया नया हो नह (राज)। संबद्धाः वृ सियरसर | वर्षे शावः (त्रवः हे २ २१) : पडिसंद्रणग न "प्रतिस्रलन हो वर्ष-बांठ वर्षे थी पूर्णता के दिन किया णाताज्ञातव (स्थाया १ ≈---पत्र १३१ भगः यंत्र)। संबद्धरिय प्रसिवरसरिको १ व्योजियो क्योतिय रास्त्र का विद्वान् (स १४३ क्या १२)। २ वि संपत्तर संबंधी यापिक (बयीर १२१)

परि)।

संबच्धाळ वेको संवच्छर (हे २ २१)। संबद्ध सक सिं+ बर्तेय । १ एक स्वान में रकता । र संकृषित करता । संबद्देश (सीप)। संबद्देश्या (बापा १ द ६ १)। सङ्घ संबद्धशा(अ२ ४---पत्र वर्ष) संबद्धिशा (बाचा ्ा⊊ ६ ३)। संबद्ध पे [संबर्ष] १ पीका (ज्य २६१) । २ भग भीत कोमों का समेवाय-समृह (उत्त ३ १७) । १ शायु-विधेयः तुरा को सहाने-बासा बाग्र (पट्टा १---पत्र २१)। ४ मपवर्तन (ठा २ ३---पत्र ६७) । ५ मेरा । ५ वहाँ पर बहुद कोनों के बोध एकपित हो कर रहें वह स्थान दुर्ग प्राप्ति (शाम)। देखो संबच । संबद्धक वि [संबर्तकित] तुम्प्रत में फैसा ह्मा (का पूर्वका)। संबद्धा र् [संधर्वक] बायु-बिरोव (सूपा ४१)। वेका संबद्ध्य । संबद्ध न [संवर्तन] १ प्रहा पर धनेक मार्व मिलते हों यह स्वान (खामा १ २---पत्र ७६)। २ स्तवर्तन (विसे २ ४१)। संबद्ध र् [मंबर्वेफ] धरवर्तन (ठा २ १---पत्र ६७) । देवो संबद्धरा ।

संपष्टिक वि दि संवर्तियों संबंद संक्रीवित (R = 19)1 संबद्धिम वि [संबवित] १ विश्वेषुत प्रकारित (वय १)। २ संवर्त-मुख्ड (१ २ १)। सपद्द पद [सं + वृभ् ] बहना । संबद्धह (महा)। संबद्धम वैद्यो संबद्धण (यदि ४१) । संविद्धान्त [संद्वा] बदा हुमा (महा) । संबद्धिक वि [संवर्धित] बस्तव हुपा (पाट-परना २२)। संबत्त व [मंपर्व] १ प्रतय कात (से ४. णशार २२)। २ बायु-विदेश 'पुनत-सरिसं संबद्धरायं विद्यविद्यार्थं (इत्र १६) । व सप । ४ मेप का मिकाति-सिरोत । १ कुथ-विकेष, बहेदा था पेड़ । ६ एक स्मृतिकार मृति (वंदि १ ) । देवा संयद्ग = संवर्त । मंपत्तम देवो संपट्टा (हे २, १ )।

संबद्धक कि [संबद्धि ] १ क्यन्ति-कर्याः १ पू क्यतेषः । १ वस्ताननः (६ २, ६ प्राप्तः) । स्रोजनाम व [संस्कृतिकृति सन्तर-स्वरः (स

संपन्तुपत्त पू [संपर्वोद्वर्व] स्वट-पुषट (व १०४१ २१ )।

संद्राज्ञ न [संपर्धन] १ इदि वहान । २ वि इदि करनवाना (सर्व संघ९७)। संबंध सक्त सिक्त स्वारी १ क्षेत्रमा

संदय सक [सं+वद्] १ वोसना, कहना । राजधीतत करना स्वय समित करना । संवयद्व संवयंत्रा (द्वार देवक नुष ११४२)। वह संवयंत (पर्नेश १)।

२)। संबय पि [संदुल] याद्रत याञ्चापित (दुव १६)।

संबद तक [सं+यू] १ नियंत्र करना रोजका। १ कर्म को रोकका। १ वेच करना ४ इक्का। १ योज करना। संस्त्र, संस्त्रीत सर्पाम (सन स्त्रीत सर्वा) संस्त्रीत

१६ पत्र २६६ थे)- सन्देशि (द्वाप १११)। वङ्ग संवरमाण (क्ना)ः सङ्ग संवर्षा (यहा)।

संबद वूं स्थित है क के निरोक्त पुत्रव नके क्या ता सरक्ता कर पढ़ा है। ता हो। र साध्या में होनाओं सहायहाँ जिनोत (पत्र भद्द समा ११४)। वे पीने जिनोत क खिता वा ताब (स्व ११)। भूक सैंक दुनि (पत्रव २ १)। द पत्रुपिट (पुत्र १४)। द देख-पिटेश।

क सरस्य की एक नार्ध्य (है र रिक)। संराय म [संदारण है निरोध करनार (वंचा र ४४) धानत्वाच्छा ताराष्ठुँ (धाक)। र मीना (का देश हुता के हो। संराधन्य, संराय (का देश)। राधन्य, द्विचाल (धाका का निर्वे देश रे सारक १३१)। र भागक का माद्य करों मा धानता (सानक १३९)। का स्थायन (धाना का रूप)। धादार चीरायम (चान देश)। का दिस्स सम्बन्ध सार्वे (चान प्रश्न)। का राधनार सामास्य (चान प्रश्न)। का सार्वा करों सामास्य (चान प्रश्न)।

व १४ (एड-रास्त (१४ १२४) । शंदीर ४ (द [संहुत] १ कार्यान्त प्राचीनक 'पुर्वतिचे संरक्षत सार्थ वस्त्र सर्वास्त्र होह

(पराह २, १--पव १ १)। २ संकोषित (१ व १२)। ३ चाच्छारेत (बृह ३)। संपद्धमा व सिंबस्टन] मिनव (परस्स वाट-

मानती १७)। संबद्धिक वि सिवसिटा १ व्याप्त (ना ७४) पुर ६ ७६ व, ४६ क्षेप ६)। २ पुरु प्रिकट पिषित (पुर १ ७० वर्गीन

तुर ६ ७६ च, ४६ च्छेमण ६) : २ प्रुक्त, मिनित मिनित (पुर १ ७०° वर्षीय १९६): 'सरसा वि दुना समारायेण कम्मेति पुरुवसंद्रिता' (बन्दा १४)।

संबद्धार 📢 [संबद्धशार] व्यवद्यार (विशे १९६९) ।

संबस वह [सं+बस्] १ दाय में ध्यमा १ द्याना नास करना १ समोव करना। संबद्ध (क्ल)। वह संबद्धमाण (स्र. २--वेश्ट ११० वन्हा १ वे)। वेक संबंधिता (जन्हा १ २)। वेक संबंधिता (जन्हा १ २)। वेक संबंधिता (जन्हा १ ---वा १९)। हु

संबसेयम्ब (का प्र १६) ।

संबद्ध तक [सं+वह्,] १ ध्यून करता। २ सक सन्व होना उच्चर होना। वक्क संवहसाण (नुता ४६४ छान्य १ ११— वत्र १व )। वंड संवहित्यन (स्छ)। संबद्धण व [संबद्धा] १ डोमा, वहन करता।

(एन)। र वि ग्रहण करनेवाला (दावा २ ४ २, १८ वर ७ २१)। संबद्धालय वि[सांबद्धानक] देवा संबद्धालय (क्या)।

संबद्धिम वि सिंगुड्ड वो कन्न हुमा हो वह स्थ्यार वना हुमाः शामिम पुरिसरोमा सन्दे सन्देशि संवद्धिमाँ (विदि १९६) समस्य १८७)।

संगद्द वि [संगदिन] प्रवाधित करवेतावा कृत केशावा (तुर १२ १७६) । संग्राह्म वि [संग्रादिन] १ धकर दिया हुमा कामा हुमा (व २६६) । २ प्रवाधित (व ६१४) ।

(चंदर्) दें [संवार्] र पूर्वज्ञन का बहर संवार विशेष करणेताला कार्य, बहुत त्रवार (वर्ष रेप । व ३२२, वा ७२ दो)। र स्वार शा-क्यहर "हम बायो धंबायो है बि युक्त कारणे प्रकी। व करेळी चित्रं रास्त्यांने समावस्त्र । (दुना हे । संबाय सक [सं + वान्य ] बदर केय, स्वयाबार कहूना । संवायों में बंबायीं (स १८१ २८६) । संबाय पुं हिं। १ वकुम भीवा । २ स्में प्यी (६ व. ४४) । संबास सक सं न वास्त्य ] साव में प्रमे

पती (वै. . ४४)।
संबास वक सि + बासय ] सता में पते
का। क्रि. संस्थितं (वंदा १ ४० सी)।
संबास क्रि. संस्थितं (वंदा १ ४० सी)।
सेवास क्रि. सिस्ता १ स्वतास बाव में
कियास (वर १२) सा ४ र-वर १४० तीव इक क्रि. सा १४०। २ तेवुव के क्रि. सी के साव निमानं (सा ४ १-वर १६९)।

क्रान्ड पंताहर (स्थि): संवाद सक [सं+यादम्] १ नहर करणा। २ सन्द्रारी करना। संन्यांत्र--क्यो करणा। वंताहर (स्थि)। क्यां संवाहित्रांत (तुमा २ १४६)।

बाधमान दिया क्या हो का विवर्ति

संबाद पुँ[संबाद] १ पुनैनियोव वर्स इत्यक्तवीय वाल्य पार्ट्स को प्या के लिए से बाकर पार्छ हैं (ठा २ ४—पद वर्ध पर्वतु १ ४—पद ६वा ग्रीया करा)। १ बरम, निष्पाद (तुपा २३१)। १ विधिकवारम

पाम ।

संबाह्य व [संबाह्य ] १ संबन्धरे क्यीं (काह १ ४ — का १६१ जुर ४ १४४ या ४६४)। ३ संबाह्य विवास (व ४६४)। १ थूं, एक प्रवास का का (वर)। ४ १ वहन करवेशका (प्राचा २, ४ १,१)।

संबाह्या थी [संबाहना] ज्ञार केवो (४००) योर)।

संवादिवयः हिं [संबाद्दितः] बार-दर्व करने के काम में द्वारा वादन (का)। संवादयः हिं [संबादक] कनी करनेतनां (काद १९)।

में सहिद्ध कि [संबादित ] विषय पैक महिन-क्यी दिसा करा है। वह (इस) ध्यास्त (पर्यापु २—पत्र १० ) ।

संविक्तिया वि सिविकीयी प्रकार तयह

संविक्द्र एक [संवि + ईंग्र ] एम भाग

बद्धः सीवपन्तमाज (चत्त १४ ३३) ।

१, ४१ सर = १६६ कोबमा ४६)।

संविक्तिणा ) वि [संविक्तीणें] संविक्तिः,

संविचित्र मारेवित (सारा १ १ धि--

पत्र १. सामा १ ५ -- पत्र ३३)।

संविक्त वि सिविन्त् । प्रेय-पूक्त, वव-मीव.

से केवना, रामावि-रिक्रिय को कर देखना।

(प्रकि)।

संविक यक [सं+धिद्] विद्यान होता। संवित्त्रह (सुद्ध १ ३ २, १०)। संबिद्ध सक [ सं + वेष्टय ] १ वेटन करना, बपेटमा। २ पोयस्य करना । सङ्घ संचिद्रमाण (खाया १ ३-पत्र ६१) । संविद्वत्त वि [समर्थित] पैरा क्रिया हुमा स्मार्वित (त १)। संकिशीय वि [संकितीत ] विवक्यपूर्य (भोषमा १६४) । संवित्त केवो संबीम (सूम १ ६, १ १७) । संविच वि सिंबची १ संबाद बना हमा (सर ६ ६३)। २ वि सप्तस माच्छा-बाबाः ६ विसपूत्र कोबा (सिरि १ देशे)। संवित्ति को [संवित्ति] संवेदन आन (विशे १९२६: वर्गतं २६६) । स्विद सक सि+विद े जानना 'विष्यमाणी न संविदे' (एस ७ २२) । संविद्ध नि [संविद्ध] । संयुक्त (उवर देवव) । २ सम्बद्धाः व इद्या 'श्रीकापहे' (भाषा १ ६८ ३ १)। संविधा की सिविधा सिविधा रचना मनाबट (चाव १)। संविभुण सक [ संवि + सू ] १ दूरकरता। २ परियान करना । १ घनमञ्जा विरस्कार करना । सह. संविद्यपिय संविद्यपितार्ग (भाषा १ ६,६ ६) तूस १ १६, ४० धीप) । संविभक्त वि [संविभक्त] बांध ह्या 'रेक्प्रस्थविनलं यतं' (कुप्र १६६)।

संविभाग ) प्रसिविमात ] १ विभाव सर ४ २४६)। २ वहन किया हमा संविभाग करेंगा बॉट (ग्रामा १ २--वश क्तर १४१: यहाः संस्) । पम बद जना सीप)। २ मार्ट, सत्कार (स ३३४)। संविभागि वि [संविभागिम्] दूसरे को व 23) i कर योजन करनेवासा (सत्त ११ ट। वस **१.** २ २३)। संविभाव सद्ध [संवि+भावयू] पर्या धोषम करना जिल्हान करना । संक्र. संवि-मुक्ति का धरिस्सायी ज्लाम कान्नु (स्था पंचा भाविकण (राम)। संविराय मर्क सिवि + राख ी कोमना। बद्धः, संविद्यर्थतः (परम ७ १४१) । संविद्ध रेको स्वितः। यह संविद्धाः (वै १५७)। ४२)। एक समिक्तिजन (दूस ११६)। संविक्षित्र वि [संविद्धत ] वावित (हवा) । ૧ (જ ક सं।बद्धिम केबो संबेद्धिया = संबेदित (बना) । संविधित्र केती संवेश्विम = (वे) (उपा wtt) i संविद्ध पू [संविद्ध] वोकाने का एक जगयक (भग = ६---पश ३६६)। १६६ समा ४४१)। संविद्याण न [संविधान] १ रचना, बनावड (सूपा १८६, वर्गवि १२७) माल १६१: १६६)। २ नेष् प्रकार (वे १)। (अ४ २-- यत्र २१ )। संबोक वि सिंदाती १ म्याप्त (सम. १ १ १ १९)। २ परिमील प्रकृत सुमा संगी-णां (ठा४ २---पण २१)। वविष्यवसणी' (दर्गीद १) । संबुज केशो संबुद्ध (६१ ११% संबि ४ र-पन रही। धीप)। संसुष्ट वेको संबुद्ध (रंगा ४४) । कॅगला (के प २१)। संबुद्ध वि [संयुक्त] १ संकट सकता प्रवि पूरा(छा**३ १**~~पण १२१) । २ संचर-पूरा⊱ (है भ २२२, सक्ति १६)। धानधा ब्रवृत्ति के स्प्रीदत (सुमार १२ २१/ पंचा १४ ६ मन्) । ६ निवद, निरीय-प्राप्त (सूम १२,३१)।४ साहुदा ३, र्धमोपित (हे १ १७७) । ६ ग. क्याम सीर इतियों का निक्त्यस (परा २, ३---पत्र १२३)। संजुक्त वि [संशुद्ध] वदा हुधा (गूथ २ तिवर्धमञ्ज्ञियं (पाप्रे देव १२ मण १६ ર ૧૧, થોવ)ા ६--पत्र ७१२: राष ४४)। संबुक्त वि [संबुक्त ] संबाद, बना इयह संबंधिय वि [संबंधित] पवित (ते प 'पन्तरक ते श्रेक्षारंतकरा धेनुता' (बनुः ₹₹) ι

547 कुन्न ४३४ किरात १७- स्वप्न १७३ समि संबद देवी संवद्ध (पाष्ट्र = १२ प्राप्त)। संबुद्धि की [संबुद्धि] संबद्धा (प्राक्र क संबद्ध कि सिंठमहर्ति १ कम्यार वना हुमा, समित 'बड इड नगरनरियो सम्बद्धिरीप एव संबद्धे (सरा प्रवदः सर ६, १६२)। र बाद कर किनारे समा समा बाद कर स्थित 'तब शं ते मार्वादयकारमा तेले फक्षयक्रियो उन् (१०म्)रूप्यासा २ एम्स्सीवंदेश **संबु**-(शिक्षा याचि होस्वा" (ग्रामा १ ६--पत्र संबेध कि [संबेध] धनुमक-योग्य (विसे संबेध ) ९ सिवेगी १ मन बादि के कारण संबेग हैं होती जारा—शीमता (महर)। २ अर-वैराप्य संसार से स्थासीनदा। ६ मूर्ति का शक्तियाप प्रमुखा (इ.६६ सम १२६) भग्ने अन्त सर व १६४८ सम्मत्त १६८. संवेयण न सिवेदनों १ जल (वर्षेतं ४४) कुम १४८) । २ वि मीय-जनकः। की, या संवेदण वि [संबद्धत] संवेद-वतकः स्ट संबेयण वि सिंबतन जिन्द देवी (इ.४ संबंध एक [ सं + पेल् ] नावित करना, संबंध एक [ सं + प्रमू ] वपन्ता । सनेताह संबेख सक [दे] संकारण संगठक संबूदित करणाः सबेक्सेइ (सम १६, ६—पत्र ७१२)। वड संबद्धेत संबद्धमाण (उद्य भग १६ ६)। सङ्ग संबद्धेकण (महा)। संबंधित्र वि कि सदुद, संक्रवितः 'सब

१४६)।  सिंद ( स्विप] स्वीप 'फ्राइवर्णकी' ह्रायहिकां प्रवास (प्राप) 'प्रयास वर्षकी' ह्रायहिकां प्रवास (प्राप) 'प्रयास वर्षकी' ह्रायहर्ष ते प्रवेष क्ष्मित (प्रवास) 'प्रयास वर्षकी' ह्रायहर्ष ते प्रवेष क्ष्मित (प्रवास) स्वास (प्रवास) स्वास (प्रवास) व्यास (प्रवास) स्वास (प्रवास) क्ष्मित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास) क्ष्मित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास) क्ष्मित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास) क्षमित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास) क्षमित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास) क्षमित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास) क्षमित (प्रवास) ह्रायहर्ष (प्रवास)	सारि ) वि दिसारिम्] गण्य धरी धारिका जे जीम में शरिकारक परकेस्वर बीम (बी १), संकारित्यस्य में पूछ नैतस्य बुई तु व्यक्तिसारीखें (नद्य र २, १४४)। सारिक वि [संसारिक] क्रमर केसे (ब ४ श क्या)। सारिक वि [संसारिक] संचार वे सक्य ख्वेगावा (व्यक्त र १ ४१। ब्यू १४१ दी श १४६ विक्वा ४१ व्यक्तियो।
स्तित (स्वेह १३१व नु: १३ का बुद्ध स्वस्तित का स्वेदासन) जनतम स्त्रील (पंज १९६) विस्तान का स्वित्ताल (स्वाह्म स्वाह्म	स्वारिय हिं [संमारिय] एक स्वान से हुयाँ स्थान में स्थापेक (संवारियमू स्वानपार्य) (ध्यान १

बाइपी बण्यलेदि श्रेषरिय । बम्हा विश्लोकविद्वरिय-दियपस्थ, न ब्रोसर्व धर्मा (मुद २ २१६) । संसञ्ज पक [सं + सञ्जू ] श्रेकन करना, शबर्वं करता । संबद्धशि (बम्बल २२ )। संस्रिक्तम वि [ संस्राच्छमम् ] बीच में विरे हुए जोशो के पुस्त (रिष्ठ ६३ )। संसद्ध वि [संस्कृ] १ पर्यन्यतः विभिन्त । २ व घरांस्टत हाब में दो जाती किया

कार (योष) । देश मंसिष्ट ।

संसम्बद्धसन् । १४ वनः । र प्रशंदाः।

३ परकारम न्यूचिवहीयो पूरा नुपनान्त-

संसद् कर [सं+सद्] स्था करता। शसद्द (वर्गर्स ६०२) । संसा की [अंसा] प्रतंता, स्वादा (वर का क पत्ती । मंसाध वि 🔁 १ प्रावतः। २ पूर्णितः। ३ पीत । ४ उदिग्य (वस् ) । ससार र्षु [संसार] १ वरक ग्रारि वर्षि में परिभ्रमश्च एक वक्त से वक्तानर में कृतन नग २१ श स्थानि ॥ ४१८ उत्त २६, १ हर बढहा मी ४४) । र अवन्तु विरव (उपा दुमा बढा बढ्य १ ७ १४१)। वंद

जीर, प्राएप (पराम २, ६६) ।

संस्थित वर्ष [सं+सिम्] क्ला व्य विक होता । सहित्रकीत (स ७६७) । संसिद्ध क्या संसद्ध (क्य)। कॉप्पम वि

['बल्पिक] कर्रास्ट्य हान सन्ता पनिन वे वे वादी विद्या की ही बहुत करने के नियमका प्रति (क्यूड २, १---पव १)। सेंचिक वि [सेचिक] होना इस (पुर ४ रेश महा है प १८१)। संसिद्धित्र वि [सोसिद्धिक] स्वयक्तिक (2 t w ): संविद्धस स्था संवेस (एग) । सींसर्खासय वेबो-सीसर्वासय (धन)। रि [यन्] संबारतावा रासार-स्थित संसीय तक मि + सिव ने कीना कियार क्या । सम्रीहरूमा (पाचा २ % १ १)। संसुद कि [संग्राद] र विद्रुव विमेत (पूरा १९)। र न. बपालार वसीस विन का स्वराहार (संग्रेष १८)। संमुचन वि (संग्रेष १८)। संमुचन वि (संग्रेष १८)। र स्वराही (र न)। संस्तिम वि (संग्रेष १८)। र स्वराही हैं। यानी विच दें क्ल से लियो बाम वह पानी (द्रा १९)। र स्वराही हैं। यानी विच दें क्ल से लियो बाम वह पानी (द्रा १९)। र प्रिय की लोवन (द्रावा १९)। र प्रिय की लोवन (द्रावा १९)। र प्रिय की लोवन (द्रावा १९)। संग्रेष बाम की लोवन (द्रावा १९)। संग्रेष बाम की लोवन (द्रावा १९)। संग्रेष बाम की लोवन (द्रावा १९)। संग्रेष वि (संस्तिमा) र प्रदीन से करान

२ १६, १)। संसेचिय वि [संदक्षेत्रिक] संखेपनाता (बाचा २, १३ १)। संसोधय व [संशोधन] सुद्धि-कटण (विंड

भ्रहे। क्षेत्रं संस्तेहण ।
संस्राचित कि [संगोचित] यच्यी तथा गुरू किया हुना (तृष १ ४४ १०) । संस्रोय यक [सं + शोचन ] ग्रीक कला। इ. संसीयिक्या (तृर १४ १०१) । संसीयिक्या (तृर १४ १०१) । संसीयिक्या (तृर १४ १०१) । संसीयक्या (तृर १४) । क्षेत्रं संसीयक्या। संसीक्षा की [संसीयक्य] क्षेत्रं की श्री(तृरा

१७)। संसाहि हि [संसाधिम्] सोमनेवला (दुरा ४०)। संसाहिय केवे नंसाधित (राज)। संह केवे संप (गट-विक २६)। संहरण केवे संपयण (बंह)।

सहस्य केवो संपयान (बंड)। संहति को [संहति] चतुर (संक्रिंड)। संहय वि [संहति] विता हुया (पर्या १ ४—वर्ष ४)। संहर तक [सं+क्ष] १ प्रपष्टण करना । १ दिनार करना । १ संचरण करना, सक-तना, समेटना । ४ ते पाना । संहर (पर १६१ है १ ६ ४ २१९)। कनक-संहरिद्धनामा (पान्य १ १ -पन १७)। अंक्षर में सिमारों समुद्रा सामार्ग 'संमामो

सहर्रक्षाण (शाय र र—पत्र ४०)।
संहर् पूं [संगार] शशुवात, बवाता 'संपाणो शहरे निषये' (पाय)। संहरण न [संहरण] संहर (पू ०७)। संहार केवो संगार=सं+ यरम्। इ संहार्यक्रम (काय र १२—यन १७६)। संहार्यक्रम संपार (हे १ १९४ वह)। संहारम न संबारण] नारस बनारे रहना।

संदाय केवो संभाव = वंश्यावय् । वह संदायमंत्र (ती) (दि रण्ये । संदित्व केवो संदित्र (आह रेरे । संदिव च सिंद्य ग्रास्त्र में मिलक्ट एक्सिक होकर (वाया र वेट-पन ११) । संदिय केवो संदित्य करीत (क्या नाट--

टिकामा 'कायसंद्वारखद्दार्थ' (धाना) ।

सहिया वही | सिहिता | १ विकित्सा वार्ष सहिया की [सिहिता | १ विकित्सा वार्ष बाकः, 'विनिकार्याधियामी' (स १७)। २ सम्बद्धित क्या के तुम का स्कारण 'धाम्बद्धितमुनुकारस्वकता क्या सहिया प्रश्निममा' (किस्स २०२)। स्रोतृति की [स्तेमृति] बच्छी वार्ष्क पोवस्स (स्थित १)।

(बस्ब ४)। सक्त देवो स्तन = शक्त (बस्ब १ १ र—वत्र १४)। सक्तम केवो सक्तम (स्त्र)। सक्तम केवो सक्तम (स्त्र)।

(शिर १, १)। सक्या केवो सक्क्या 'चेदम्बोनेनु विश्वसक्या संश्चित्वचा विर्वति' (तुरुव १०)। सक्वर्य म [सक्वर्य] एक बाट 'कि सह (१क)वं बोबीरो' (तुर १६ ४४)।

शक्य व [सक्तु-] एक बार का शब्द (१क)में बोलीएर्स (पुर १६ ४४)। यहंक्स वि सिक्स्में] विश्वल्य कानकार (पुर य १४६, १२ ४४)। सरुख वेकी ज्यस्त्र = सक्त (प्राप्त १ ४—

पष ७४)।

६६ बुत ६१० एवं ८१)। सञ्चान देखों स-कान = सभव। सञ्चेत पूं[एकुन्त] पत्री (हुप ६० पणु १४१)।

सक्दा की सिविधम् । परिष इतः (सम

सङ्घ्या वेको सम्बद्ध = एक । सङ्ग्रेथेसे (स करेर)। सङ्ग्रेय वेको सन्देय = सङ्ग्रेय । सम्बद्ध महर्दि | सङ्ग्रा नगर्य द्वारा । सम्बद्ध महर्दि १ र प्राय नाहा)। महि सङ्ग्रेस सम्बद्धानी (सायक

ि १११) क सक संक्रिया सिक्का (प्रीय ११ पूर ११ १४ १२० स ११४१ प्रेगीय ४ मुर १० व१)। सक्य का [सुप्] जाना यदि कला। बक्द (शक्य १६ चाला १२१)। सक्य वण [स्वच्क] यदि कला। का। बक्द (पि १२)।

सक्क कि [राक] समये शक्ति पुरु के सक्के वेसकारिकारें (विशे १०३ है २, २)।
सक्क वेसे सक्क = शकः।
सक्क वेद [राक] १ तीकार्य नामक प्रथम
केसका क १२४ (ठा २०१—पव वधः)
वचा पूचा २६०) १ त्रे वोई धी शत्र वेदववि (कुमा) । ६ एक विधानरयमा (स्वम
१२ वरे) १४ प्रवन्तियोग (निय) । गुद्ध
वै [गुद्ध] क्रमानि (निर्देश)। त्यास
वै [मान] सक्क मार्थ क्याय-नर्वत् (ठा
१०—पव १०३)। सार्थ मितार्थ [स्वार्य एक
विधानर-नर्वर (शह)। वदार (शी) न
[चनारा शोनी-निर्देश (सिन् १०३)।

सक्त शिक्री छव (६६ १४)।

िर बोज पुत्र का शक्त (पिने २८१६) बावक वद पत्र ६४ जिस ८४४)। सक्क (या) वेको सग≕स्तक (यति)। सर्वेद्दस पुंसितन्द्रस्त] इत (पुर १ ६ जिस्का (स्तुर्भ)।

1 (57 R tock

ीवपार न िक्तारी बैत्य-किरोप (श

सक्द (राज्य) १ दुव देव (पाम)। २

al	पाइ <b>अस हमह्</b> ष्यका	सद्या—सवह
सहात (दो) रेघो सनुत । वहार्तित (धार देश हि र र पराने (धार प्राप्ति धार धार धार प्राप्ति धार धार धार धार प्राप्ति धार	सवारि हि [साडारिय] जानार वरित्राला यमनाराज (याड)। सवार्षय हि [सरारिय] यमगित (नुष र शा या)। सवार्षय हि [सरारिय] यमगित (नुष र शा या)। सवार्ष्य हि [सरारिय] यमगित (नुष र स्वार्ष्य हि [सरारिय] येदसर-नुष्ट हिच ह्या (यरेवं वा शे)। सवार्ष्य हे सांस्थार में मंद्राल हिंद्र प्रमाद स्वार्ष्य सांस्थार में मू त्राव वनसर स्वार्ष्य हिंद्र हिंद्र है। सवित्र हे से सांब्र मुंच वन्तर हुण हो वह (या ये व द्वार्ष मुंच वह है। सवित्र हि [सर्व है वो नित्र वा सार्धिक र्व हिंद्र है है। सवित्र है सांस्था ने वनसे हुण हो वह (या ये व द्वार्ष मून वित्र वा सार्धिक रोव (या व दिस्म है)। सवित्र है सांस्था मुख्यार वाहरिये (सार्व से) सवित्र है है। सवित्र है। स	सिरत वि [साधिन] माणो वाणो, नस्य (एट्ट १ र रशः वर्षते ११ । क्यू था १४ १८ वर्षते ११ । क्यू था १४ १८ वर्षते ११ । क्यू था १४ १८ वर्षते ११ । सिरत्य वेद्य रात्राची रात
		(द्वा) । इस्य संभद्द ।

सगडकिम देखो स-गडकिम = स्वहतिक्य । सगराज र् [शक्टाज] रागा गन्द का मूण्सिक मंत्री सीर महर्षि स्तूसमझ का पिता ( 2x xx) 1 सगबिया की [शफटिका] क्षोटी वाकी (मर किया १ १—एव ६० ग्रामा १ १--पन ७४) । सगडी को [शक्टी] यही (खाया १ ७---पत्र ११८)। सगण देवी स-गण = व-व्य । सगम देवो सक्स (कुम ४ ६)। सगय म [दे] बढा विद्यास (दे ८ ६)। सगर र् [सगर] एक वक्कर्ती चका (सन दश क्ल १७ ३६)। सगद्ध देखी समस्य = सक्त (ए।मा १ १६--- तम २१६। सन्द्र तेच १ १६। सुर १ ११६। एव २१६। सिमका ६७)। सगसग प्रक [सगसगाय] 'सकसग' मानान करनाः वह सगसग्रेत (परम **४२, ३१)** । सगार देवो स-गार = सामार, शासार । सगार देवो स गार = इन्हार ! समास न [सन्धरु] पास निनद्ध, समीप (सीर मुपा ४६२) ४वव नहा)। धगुण देवो सन्गुण = <del>सन्</del>युखः सर्गाण देवो सर्गाम (मद्य १ ४--पत्र सगुच दि [सगोध्र ] समान वोत्रवासा एक्याबीव (क्या) । सुरोह व [व] विषय, प्रमीप (वे व ६) १ सगोच देश सगुन (इत ११७)। सता र्ष [स्वर्त] देवी का धावास-स्थान (शास १ ६—पत्र १ ६ मसः सुपा २१३): विराण कामिष्ठ सामी (मृध्य) । वह वृं ["वह] क्लवृद्ध (वे ११ ११) । सामि 🕻 [स्यामिम्] इन्द्र (उन २६४ दो)। बहु धी [ वधू ] देवांक्स देवी (इप ७२= धै)। समा 🛊 [सर्ग] १ मुक्ति मोख बद्ध (प्रीप)। २ एटि रचन्न (रंग्ड) ।

> समा देशों स गा = बाहा। १०८

समा देखो सग = स्वड (उत्त २ 241 धन)। सम्माद् रेको स माद = सम्मित । समाहित [वे] पुक्त पुक्ति-प्राप्त (वे द ४ थि)। समाह देवो सनगह = सन्पह । सम्मीय वि [स्वर्गीय] स्वर्गसम्बन्धी (विसे ₹< ) 1 सम्मु केवो सिन्तु (इव १ ११ वी)। सम्मोक्स र् [स्वर्गीक्स ] देव केवा (धर्मा ६) १ साय सक [ क्य ] कक्षा। सम्बद्ध (वस्)। साम वि [रकास्य] प्रतस्तिय (तुम १ 🔻 २, १६३ विसे ३३७८)। सचिण देवो स-विध = स-वस । सपद्युः सच्चत्युका } देखो सन्धनस्यु = पन्धपूर्व्। सचित्त रेवो स-चित्त = व-वित्त । सचिव देखो सहय (स्ए) । सभी देवो सई = राषो (वर्गीव ६६) गाउ--रुष्ट्र १७)। वर पुं ["वर] एका (विरि 84)1 सुभागा देखो सन्देयण = सन्देतन । सम्बन्धः [सस्य] १ वयार्वं मावस्य समुग-क्या (हा १०--वस ४०१ कुमा पर्याह २ ५—यत्र १४०। स्वय्य २२ प्रासू १६ १७७)। २ शतक क्षापनः। ३ सस्य युवः। ४ विदाला (हे २ १६) । १ वि. वधार्य, सच्चा बास्तविक- न्सञ्बदरक्को (बच १व प्रशंसादर सप र--नत्र १६६। क्रमा) । ६ दू संयम नारित्र (याना- उत्त ६ २) । ७ जिलायम वैन विकास्य (मापा)। व धहोराच का श्वारी मुहूर्त (वय ११)। **१ एक वरिलक् पूच (उन ११६)। कर** स[पुर] मारत का एक प्राचीन नवर, । जो बाजकब 'साचोर' गाय से मारवाह में प्रसिक्त है (तीक सिन्यक)। दरीकी [ पूर्व ] बहा कर्न (पि)। "पीम, "तमि वृ ["निमि] मगवान ग्रीएलिम के पाव दोशा से मुक्ति पानेकाता एक भूमि यो पाना समुप्रस्थित का पुत्र था (धेव॰ धेव १४)। प्यकास म ["प्रवाद] एउता पूर्व-श्रेष (बन

२६) : "भामा की ["मामा] बीइव्या की एक पक्ती (श्रंत १६)। धाइ वि यादिन् सरम-क्क्सा (पतम ११ ६१)। संघ वि [ सम्भ] स्टब प्रविज्ञानासा प्रविज्ञा-निर्वाहरू (सप प्र ३३३) सुपा २८३)। सिरी की [°क्षी] पांचने मारेकी मन्तिम भागिका (बिबार १९४)। सेण ई ["मेन] ऐरवत वर्ष में होनेवासा एक विलवेन (सम १४४)। हासा वेको भामा (वि१४)। लाह देखी बाइ (बाचा १ ८ ६ ५ १ < 0 %) I सुबाइ 🛊 [सत्यकि] १ मामामी नाम में बारहवा टीयंकर होनेवासा एक साम्बी-पुन (ठा ६--पन ४३७) सम ११४। पन ४६)। २ विषय-सम्भट एक विद्यावर (उव उर १ टी) । ३ मीह्य्यम का संबन्धी एक म्ममित (चर्मन ४६)। सुष 🕻 [स्ति] ग्याच्य क्यों में सन्तिम स्त पुरुष (विकार 1 (808 सर्वकार वि [सर्वकार] सत्य साच्य करने-वासा, बेम-देन की सच्चाई के सिय दिया वाता बहानाः 'यहिमो संवयन्यये सञ्बद्धाव क्द विक्रीएँ (मर्नेकि १४) मार ६६३ रमख १४)। स्वयं तथ [इस ] देवना । सन्तरह (हे ४ १व१ वर् शत् । कर्न सम्बद्धिनाइ (क्रुप्र ६८)। समय तक [सत्यापय] सध्य सावित काला । सम्बद्ध ( तुवा २६२ ) । कर्म, वालेक्षपि संबद्धिकार पहुल्यां देश रमस्तिकं (भूक्त ८३) । संबद्ध व [बुर्युन] धवलोकन निर्येष्ट्रस (हुमा सुपा २२६)। सम्बद्ध वि [दर्ज़ेक] प्रष्टा (संबोध २४)। संवर्षिक वि [रूप] वेदा हुमा, विनोतित (का प्रकार का मुक्त प्रकाश पान

सक्षित्र वि [तृ] प्रकार रा (देव

सचा औ (सस्या) १ स्टब्प वचन (पर्यः

११—पर्वे २७६) । २ स्वीस्थ्य की एक

१७३ मूपि) ।

क्ती क्रममामा (कुत्र २१**०) । ६ क्**टासी (बरुपान भाषम-बच्चि) । सोस वि मिया नियम्भाषा सत्य से विका हुआ मूठ वचनः क्वामोग्राणि क्रवह(धन १ )। समित्र देशे स-मित्र = स-मित्र। सचिक्षम नि दि सस्य प्राप्ताः ववार्थ (R =, 2 x) 1 सबीसय र् [दे सबीसक] नाय-विशेष (पहच १ २ (२३)। रेबो बद्धीसङ। सबिधिय वि [दें] योवत निर्मित (हे < १८) । सम्ब्रु वि [स्वयम्] धति निर्मेष (सुरा ३ )। संबद्धेत् वि [स्वय्यन्त] । स्वाचीन, स्व-वश (इस १३१ दी। युर १४ वह)। २ ल **इतेष्यानुगार (ग्रामा १ --वह १३२**३ भीप भाग ४६ शासू १७)। शासि वि [<sup>\*</sup>रप्रसिन**ः] रन्यानु**धार धमन कालेनावा स्वेरी । बी जी (ब्रुप २६१) । बाहि बारि व [ पारिस् ] सन्दर्भ इन्द्रम् सार विद्वारत करनेशका खेरी । बी. जी (स ३६ था १६ वण्ड १ १)। सच्चर एक [ इरा् ] देवना (संविध १६)। सन्दर्श वि सन्द्राय] सरह. ध्यान, कुल्य (दे देखा १४१३ ६ देव ३ ६व१ ≠२१ युर २ २४६३ शर्मीर 20)1 सच्याय वि[सच्याय] १ तपन काळ-षावा तुस्य (वनडः कुन्न २३) । २ वस्त्री शान्तिसमा (नुमा) । ३ सूत्रश श्रामानामा । ४ नाम्द्रभुकः । ३ क्यानुकः (हे १.२४६) । सन्दाद नि [सन्दाय] क्रिनी बाह्य गुन्तर हो नह १ बाही नाता । १ सपान स्वया बाला तुस्य सहस्य (हे १ १४१) । सञ्ज्ञा की [संच्छ्या] वक्स्परि-विशेष (नुमार ३ १६)। संज्ञन देशा स-ज्ञण=स्क-जन। सञ्जय ध्वा सर्व्याप (पुर १२, २१ )। सन्त देना संभूच (स्पि)। सजाद्रदेशांस ऑड्≕ प्र-ज्योतिष्। सक्राम विस्थिमिल् हिम्ब बाविका स्थानारकाया । ३ वृंद- ठेरपुत्रा द्वल्न-स्थानक (ति ४१९६ धन २६) बच्ड २ १७२) । 🚶

समोजिय वैको स-काजिय = स-कोतिक । सञ्जयक[सम्बद्ध] १ याशीख करना। २ सक धार्मियन करना । सम्बद् (क्य २४, २) सम्बद्ध (शाया १ व-पत्र १४६)। वह. सकामत्य (तूम १ ७ २७ स्तह् २, १ ३ वस १४३ ६३ उपर १२)। 🕊 सक्तिमञ्च (पराह २ १---पण १४६)। सकाप्रक[सस्ब् ] १ क्ष्यार होना । २ एक सम्बार करना श्वतका। समेह, सम्मेरि (क्या शामा १ च--पत्र १३२)। समी समीवीत (स्पू)ः स्वतः समिवादि (इन्दु)। क्षेत्र सम्बद्धिकण सम्बद्धि (स ६४-म्ब्रा)। इ. एजियका सम्रोपका (एस ४ च ० )। यदो 👣 छळाचेळव सळा द्र[सर्व] क्य-विक्रेन (खाळा १. १.—. क्षत्र २१८ विके २६ ≋२३ व १११ कुला)। सञ्जा वृं [पड्डा] स्वर-विशेष (दुना) । स्वादि स्विच किया, बहुत (सामा १ व—पश्राद्धपुरा १२२ **११७ हेक** ४६: पिंव) । सजा । य [सद्यम ] तुण्त वाली तीतः सजो । तज्ज्ञानती से कम्मकुनोपं पर्वनापि (बरे को तुबा क, १३ का ४३७ स क्स)। सम्बंधव १ [झप्यन्सव] एक प्रसिद्ध वैक महर्षि (सार्व १२)। शक्काल देनो स-खण = सम्बन्। धव्या को सेवा (पर) । र्साञ्जञ्ज वि [सञ्जित] तमामा ह्या अस्कार क्रिया हुमा (भीतः पुत्राः महा) । सिवाल कि [सिवात] वनावा ह्या (दे १ ₹ **₹ =**) 1 सक्तिअर पूं[रेर] १ नाधित नारी। २ रन≪, कोगी। ३ वि पुरस्कृत आने किया ह्या ह ४ दीवें, बान्ध (वे ४०)। सिक्रिश को [सिक्रिश] वार-स्थित सानी बारा 'सर्व परित्रशकारेल भलुसिपवि' (खाबा १ ६ — वत्र १ ६)। सजीव } देशों स अर्थ अ ≠ व-ओव । सजीव

सर्वाद्ध वर्ग [सम्बो+भू] सम्ब होनाः वस्वार होना । छण्नीहनेश (मा १४) । सुरको देवो सरज = तदप (पुपा १६०)। सक्कोश्च वि चि] प्रत्यक पूक्षक, कामा (वे ⊏ 1()I सम्बद्ध वि [साध्य] १ बाधनीन विक्र करने योग्यः। २ वस्त में करने योग्या 'कवियो ह इमो सस् ताचय सम्बद्धेन युक्तिगायस (सुर व २६३ सा २४)। ३ तमराज्ञास-प्रतिह सनुबेद परार्थ, वैते भूग ते प्राटक प्रश्ने (र्वदा १४ ३१)। ४ ट्रै. साम्यमामा पश्च (विसे १ ७७)। १ वेबस्ता-विशेव : ६ को<del>य-विशे</del>ष ( ७ स<del>न्य विशेष</del> (है २ २६) । श्चनम्ह वृं [सक्क्ष्य] १ पर्यंत-विदेश (स. ६७१) । २ वि चहन-योग्य (हे२ २६ १२४) । सम्मंदिव 🛊 [दे] 🗨 वारी (घन) । श्वमद्वित्या क्ये दि विदेशी क्येन (सन)। सम्बतेशसि १ (स्वाच्याबान्तेशस्मि) विद्या-रिज्य (तुश्च २, १४)। सम्बद्धात्र वि [साध्यमान] विस्तरी शक्ता की बाठी हो वह (पाछ ४ )। सम्बद्ध एक [रे] क्षेत्र करता, समुख्य क्रमा । सन्द्रवेदिः सन्द्रवेदिः (सुव्य २, \$**\$**} ( सम्बद्ध प्र[सम्बस] क्यः बर (३१९६) <del>द्रा</del>या) । सम्बद्ध 🕅 [स्वाच्यायिक] १ विवर्षे कर बाबि स्वास्थ्य हो एके ऐसा खाक्रीक देव, काम वादि (ठा १०--- २व ४७३) । २ त. स्वाध्याय, श<del>ाक्ष-पठन</del> साहि (पर १६८; इन्दि १ ७ छै)। सम्बद्धय र् [स्वाध्याय] शोक्त प्राप्यम् शाकका चळन, धानर्तन मादि (मीपा हे २ २६ दूपा का २६)। सम्बचन रि [सद्यायः] सद्यक्त 🕏 चन थे सम्बन्ध रखनेगाथा, सक्कारि के राजा की (पन्य ११ १०)। सहिम्ब्या ई [के] भारत बार्ड (इन १७४, देवका सिंह ३२४) । स्राज्यसम्बद्धाः स्रो [ब] प्रोक्तीः बद्धिण (पिंड ३१६७ कर २. ७}३ समिनद्भग देवो समिनद्भग (ए३) ।

८५६

सह पूर्व दि १ घट्टा निनमय बदला | (नुपा२३६)। भ्रीट्टी (नुपा२०४। वज्जा १४२) २ वि. सटा हुमाः भीपूरएय सहदं पछबहुदं (भवि)। सह ो पुन [सहफ] १ एवं वधः ना भाटक सह्य } (क्यू, रंभ्र १ ), 'रंनं वं परिखेदि । घट्टमितमे एसम्मि सङ्घ वर (रेमा १)। २ शाद्य-विशेष (रंग्य ११) । सह न [झाट्य] रहता पूर्वता (वर ४२० क्री प्रभा २४)। सह (ग्री) देशों छह (बार ७ १वो ७३ वि । 288) I सद्धि सी [पष्टि] १ संस्था-विशेष साठ. ६ । २ साठ संस्थानाला (सम ७४ कम महाविक्रप्रद)। तंत्र ५तन["तन्त्र] राध-विदेव सास्य-राख (वक् एावा १ ५-- पत्र १ ६, धीरः मणु ३६) । स वि ["तम] सकरो (परम ६ ° १ )। पि [पष्टिक] १ साठ वर्ष की सहिच सहिष १ नवराचा (हंदु १७- राज)। २ सदीअ ) देन, एक प्रकार का बादन (धन-या १=) । सह पद [सद्] १ स्ट्रा । २ दिवाद करना थित्र द्वोता । ३ सक वर्षि करणा जाना। सबद्ध ४ २१६ प्राप्त पहा भारपा **1**22) i सड यह [ शट् ] १ यहना । २ धेर करना । ३ रोन्धे होन्स । ४ सक जाना । सब्द (स्पि ११ पत्र १६)। सर्वत न [पश्चम] क्रिया करा स्वाकरण निरस्द एन बीर ज्योजित । "वि नि ["पिर्] कः क्षेत्री का जानकार (अयः भीत वि ६४१)। सक्ष्म न [शहन] निरुद्ध वस्त्र (ग्रह्म १ १--वन २६) छावा १ १--वन ४८)। मद्यादेशोस्या(ने १५ वि२०) । महिन हि सिन्न शारित] एक ह्या, बिद्धी (बिता १ ७ - पत्र वर्ष व्याहरू पुत्रा) र सर्दिजीनाजे दि [दे] १ ५७४, वहाया [वा । रेप्रेस ( पर् ) ।

सङ्द्रचक[शद्] १ विनास करना । २ **प्रश** करना । सङ्गद्र (पारग १५५) । सङ्द्ध पूंछी [आद्वा] १ मावक, वैन मृहस्य (योग ६ : महा)। की, हर्ता (गुपा ६१४)। २ वि भद्रय वपनवासां निश्चना वयन यद्वेप हो यह (ठा ६ ३—पत्र १३१)। रवो सद्ध = पाद्ध । सद्दरका सब्द = शर्थ। सष्ट्रा पूँ [भादान्टिन] बानप्रस्य वापस्र की एक वाति (बीप)। स**र्**का क्षी [भद्रा] १ स्प्रता यमिकाण बोद्धा (विया १ १ यव २)। २ धर्मे धादि में विधान प्रतीति। १ धादर, सम्यान। ∢ शूद्धि । ३. पित्त को प्रमृता (हुई ४१ पर्)। देवी सञ्चा। सदिव वि [श्रांद्रम्] १ यदानु, बदावान् (हा ६---पत्र ३३२) उत्त ३, ६१ पित्रमा **६३)। २ वं श्रावक जैन गृहस्य (कृत्य)।** सब्दान वि [बाद्विक] देवा सब्दा= याद (पि ३३३ राज)। सब्दी रेको सब्द = याड । संबंधि [शंठ] १ पूर्व भाषाची क्यंटी (दुवा पर २६४ टी बारमा ४०० मधः कमा १ **थ=)।२ दु**टिस यक्र (पिड ६३३)।३ dू वत्या। ४ मध्यस्य पूरत (६ १ १६६, । दंधि ८)। संबर्⊈ [वं] १ पास जहाब का बादरान पुत्रपती व तह (बिरि १ ७)। २ इस बान (देद ४६) । ३ स्तस्य युव्या (देद ∉६ पाम)। ८ वि विषय (१ व ४६)। सहय व [र] दुनुब श्रुष (रे ब. १)। सदा ध्वे [मटा] र बिद्द बारि धी बगरा । २ वटा । वे धडी वा वदा-सपूरू । ४ किया (£ 2 124) s सदाम र् [सटास] नदाराचा, विह् (पूना) । मदि पुं [इं सटिक] किए(देव १): संद्रिक वि [दिश्येक] देवा (६१ १ रूचा)। मन र्ष [राप] १ बाग्य-शिवेष (धा १८ पर १२४ ६०४२ २ - वत्र १४४)। २ नगु-बिदय, पाट, विश्वक तम् शस्त्रा वर्दाह

बनामे क काम में साए जात हैं (ए।मा १ १—पश्च ४४ वर्ष्य १—पत्र १ वर्ष्य)। **६६ण व**िधायनी धन कापूपा-कूट (बीन गुप्प १ १ टो—पत्र ६)। वाडिआ सी ["साटिस] सन का बयोना (गार)। सप्त दूं [स्वत] शब्द घाराज (स १३४) । सजकुमार १ [मनस्कुमार] १ एक चर्नासी राजा (सम. ११२) । र तीसरा ४२माक (बनु बीप) । १ इतिरोद्देशनोक नाइन्द्र (ठार ६--पत्र ४६) । यहिमय पूत ["पर्यमक] एक दर-रिमान (सम ११) i सगप्पय रेशा स-गण्यय = ध-मधरर । समण्डह सम्बद्ध सम्माधा [सन्ध] सद्दा हमेशा। तम यण वि [तन] पदा ध्यतेगमा नित्व रायत (बुम २ ६ ४७) 'विकास क्रायसमा परिकामिको सभ्यमोति युक्तो (संबोध २)। समाम न [स्त्रान] नद्दाना नद्दान परगाहन (उसा)। सगाइ देवा स-पाइ = व-नाव । सम्प्रहि र्षे [मनामि] १ स्वयन बाजि 'बंपू नमछो बखाई। म' (पाध) । २ छनान थरा (रंग) । । सम्पर्ध [शानि] १ प्रदूर-विशेष, सनैवर (पढम १७ ८१) । २ शनियार (नुरा १३ )। सणिभ 🕻 📵 १ साधा वसदः। २ सस्य, प्रामोख (६ ro) i समित्रं व [ गुनम ] बारे, हीन (लामा १ १६-वंद २२६ वा १ : हे र १६० पार पुना) । समिवर र् [ब्रनिधर] प्रश्नित्व स्तर्क ध्य (रि बर) । संरच्यर 🖠 [ संस्तर] वर्ष-सिदेव (धा ५, ६---पत ६८८) । मणिपरि 🕽 🖠 [शनैधारिन] मृद्यंतक सर्विपारि । यनुष्यों को एक नाति (इक भग ६ ७---गम २७६)। सचिवर / वेदो सनिचर (ध ? १--मनिण्दरी पर ३३ इ. १ रह छोत पुमानुस्य १: २ २)।

सणिक देवो सिणिक (६२ १ 💵 प्रमा) ।

संविष्यवाय र् [शने:अपाव] की वे वे वे

हुई वीड्रॉबङ करनु-विशेष (ठा २ ४---पत्र **c()** ( खणह पू [स्तेह] १ मेन प्रीति (धमि २७ कुमा)।२ पुत्र तैल बादि किन्य रसः। १ विकार, विकाहर (प्राप्त है २ १ १)। सक्य **क्यां** सम्र (वे १६ ४२)। सम्बद्ध व [साम्प्याप्य] यन पावि है श्रंस्कारा जाठा बूट बादि (प्राष्ट्र १३) । स्रक्याचित्र वि [ब्रे] वरिवापित (वे ८ २०)। सम्मविभ वि [दे] १ विनिधा। २ गः पानिम्य मदद के लिए समीप-अमव (दे व 2): स्तित्रञ्ज वि [वे] स्तर्व सेवा (वे = ३)। स्रिक्टर केवो समिर (एव)। सम्मुभिभ वि [वे] १ वंतिविद्य । २ वापित, नामा हुआ । ६ अनुनीव अनुनय-बुक्त (६ व स्वज्य मञ देशो सम्तुमिश्र (हे, ६, ४० दी)। सच्चानम् वृ [दे] सह-देशकः (दे स्वद्र वि [ऋस्य] १ मक्क विकास (कमा धीर)। २ धोटा वारोक (क्यि १ क-पत्र वर्ष)। ६ न बोहा(दे २,७४८ पड्)। y वृद्धनीरदेव (सर्ख १--पन ३१) । हरमा की [करणो] पीछने की किया (सब १६ ६--पत्र ७६६) । सच्छ ई [सस्य] मद्यनी को एक जाति (रिया र द---वस दवे पर्वा १--वस ४७)।। सांब्ह्या स्व ["सहित्रता] साठ क्षम्-रास्टरलस्फिका का एक नाप (६क)। सम्बद्ध हि [सूच्य] १ घोटा, बारोक (क्रुगा) । २ स, देशक करहा है दस्त्रात्म । ४ धर्मशार्ट्यस्येय (हे २ ७६) । देशो सुहम मुद्रुष । सम्दाद की [रे] दुवा (रे व रे)। सुर्व bकास्य ≠ स्टब्स्टर (वा ३)। वस्य प्रै [किंग] ध्य (स्त)ः स्वीक्षे [क्रि] क्यांक्राच (वस्त १ १—वत्र का बन्)। द्वि को दि ] एक बहातथी (का म, १—पा १११) (असपाओ [[भपज्]]

<del>बद्धाद-विदेश</del> (सम ११) । रिसम प्रै [ब्रापम] बहोरान का स्टीवर्ग मुहुर्च (सम २१) । वस्त्र पु "वस्स् विश्वनिकरोव (पदशा १--पन १२) । बाह्या धी िंपाविकाी क्षीलिय जन्तु की एक कार्ति (क्ह्यु १--पश्व ४१)। स्त केदो स्तरा≕सत्त्र (पिप) । ह वि **ैब्**युन् स**तरह, १७३ व्ह बांग्रेवप्रदे**पि विश्वज्यक् स्वरवेधक्सवेधं (बिरि १२व इस्य २, १३३ १६)। रसय न [\***इ**सरात] एक सीक्षतपह (कम्म २,१३) । सर्वत रेची सन्देत = स्व-स्टब्स । सतत के समय = एक्ट (राज)। सत्तव केवो सपय = शतक (सम १६४)। सत्तर न [शत्तर] यदि **व्य**ा(योग४०)। सति वेका सङ्ग्रह्मीय (ठा ४ १---पव १०७ धीप) । सती वेको सर्ह = वरी (कुन ६)। भरीया केनो सत्रापा (ठा ६, ६--पत्र 141) [ सतेश और [इतर] विदिष् वषक पर यहने वाक्षी एक विद्युल्याची देवी (का ४ १---पत्र ११ व रण)। सत्त वि (शत्की समर्थ (६२ २) वह)। सत्तु वि शिप्ती शाप-शस्त्र, विस्पर माभेस विका बच्चे हो वह (प्रका ११, ६ पन १ द धैद प्रति ≈६)। सक्त देखो सच = स्त्य (पनि १०६४ विन)। सत्त्व निस्तिकी बासक पूर्व नोक्स्य (तूप ર દરય તુર દશ્યાચαπ)ા सच के सिन्नी १ संसक्त वहाँ हमेशा धन बादि का दान दिया गाता हो वह स्वान (पूर्व १७२) । २ यज्ञ (यनि ) । साक्ष्य ध्ये [शास्त्र] मशक्त-स्थाम, शामक्रोप (क्छ)। । गार व ["गार] पही सर्वे (वर्षेषि २६) । सत्त वि [व] का क्या हुवा (पड्)। सक्त 🗗 [सक्त] १ प्राष्टी, जीव वेतन (मानाः नुरुष १३६ः नुधा १ ३ः वर्णत

क्रम्बाह् (पिंड ६३६ मनुः त्राहु ७१) । ६ विध्यमनता (वर्मेर्स १ १) । १ सम्राह्मर बात दिनों का उपनाध (संबोद १४)। सत्त विश्लम् । सत्त संस्थानामा, **स्ट** (विया १ १--पव २ कम्पः बुबाः वी ६४ vt)। क्षिती तती के [धेर्म] विक्र**मे**स्त्र जिल-दिश्य केन प्राप्त पाड. शास्त्री शासक सीर याविका ये सार्व कर क्यम-स्वात (सी साम् १२६। सत्र) । गत िंकी चात का संपूर्णम (वे ३१) काम दे पुर प्रकाद १६)। चलास वि िंपस्वार्दिरा] <u>सेंदाबीस्वां</u> ४७ वाँ (गर्म ४७ १व) । पचाक्रीस क्षेत्र [ बलारि रात् ] बेंगमोध ४७ (सन ६७)। सहस र् ['बद्धर] इस-रिशेर क्लान का <sup>थे</sup>रे, खरीना (बास्त है १: २३) सामा १ १६--पण २११३ छछ)। "द्वि स्त्रे ["पश्चि १ श्रीक्या-विक्रेण सम्बद्ध १७। २ सम्बद्ध संबद्ध शाला(समाद ३ कमा १२६) ३२/६ ६)। "ट्रिया च ["वस्तिया] स्तृष्ठ <del>प्रवर</del> का(दुव्य १२—-पत्र २२)। आसङ् वेदी ैपाउइ (यक)। वीसहम वि अशासमी सहतीसमाँ ३७ मा (पत्नम ३७ ७१)। वैद्य दं िंदण्त्र] कत (पाघ) । देस वि ['दरान्] स्टब्द १७ (रक्त ११७ ४७)। पण्ण देखों वच्या (राव) : सूस <sup>[8</sup> िभूम] बाद क्वाबता प्रसन्त (श्रा १२) । भूमिय नि ["मूर्मिक] बढ़ी पूर्वीख मर्ग (महा)। स वि [म] बादवां करी (कम)। की. मा (वी २६)। मासिम वि [भासिक] द्वारा मात्र का (क्व) मासिका च्या [मासिकी] बाद माच में पूर्व होनेशाची एक साम्र-विका कठ-विशेष (बन २१) । "सिया सीध्य ["सिम मा १ सीटर्श ७ सी (महास्त्रम २६ भार के उपास के दश्मात रूपर) । र सातवी विश्वविक्ष (वेद्या ६०२। सत्र)। य रेकोर स (कम्बर ६ ६६ दो)। र वि [ैंत] बत्तरवाक वा(पडव ७ ७२)। र वि [दरान्] स्तव्हः १७(कम्प १, ३)। १र्च पुँ ["राप्र] बात रातरित का संबद (नहां) ह ११ ६) । रे प्यापन का मुख्य मुद्रुष (यन रस ति ["इरान्] स्टब्स् १७ (वर)। **२१)। ३ म वन पधकनः ३ कलकिक** ∣ रस, रसम रि [इप्त] काप्र<sup>15</sup> (कमा ६ १६ परम १७ १२३) पण ४६)। रेक्ट्रकेको रसः= स्तल् (यङ्) परे श्री [\*ति] सत्तर, च (सम =१ कप्पापक)। रिसि र् [ क्युपि] सात नवजी का मैक्स विशेष (मुना ६२४)। श्रष्टमा समा पू िपर्णी १ बुल-विशेष धरीला (धोप) याय) । २ देव-विकेष (राय व ) । वश्यय-हिंसय पूं ["पर्णामतंसक] सीवर्ग देवसोक ना एवा विमान (राम ११)। "सिंह वि िविखे सात प्रकार का (की रेशः प्रापु र पि ४३१)। वीसइ, वीसा भी विद्याति] स्वादैन २७ (रि ४४६) भव) : "सद्भाव कि "शक्तिक] सार सी की अंक्या-बाबा (खाया १ १--पत्र ६४)। सङ्ख दि पश्ची सङ्ग्रहकां, ६७वां (पत्रम ६० ११)। सिद्धि देवो हि (सम ४१) सच मिया औ ["सप्तमिका] प्रविद्या-विशेष नियम-विद्येप (धंव) । सिक्कायहृय वि ["दिश्वाद्रभिक] सत्त रिक्क्षतनावा (खाया ११२ मीप)। इत्तर वि ["सप्तव] सत्त्रवरका ७० वा (पडम ७७ ११०)। **"हर्चार को** ["सप्तांत] १ सक्या-विशेष **एतर्वर की** लंब्या ७७ । २ सवहतर संस्था-माचा(सम दशास्य मा २८)। हास [भा] साठ प्रकार कर सन्दर्भिय (नि ४८१)। हुत्तर देखो इत्तरि (नव व)। । इस (इस) देवी कीसा (प ४४%)। ीव्य इस् ६३ [ सवति ] बतानवे १७ (सम ६०)। (अडम वि [ नयदा] १ मधानयनी ६७ वां (पद्रम १७ ३०) । २ जिसमें सठा-नवे यविक हा वह 'सलागुरवकीयगुरूप' (भय)। १८३६ (धरा) बेक्टो रहा (पिय)। रपण्या । पश्च सीन विश्वतरान् ी १ संस्था-विशेष स्टामक १७। २ स्टाधन राष्ट्रपाबाला (पश्चि चिंग स्वय ७३) श्व २)। क्षी पत्रा सा(पिम पि २६६० ४४०)। स्पन्न व ["पद्धारा] संतानना १७वा (परम १७ १०)। श्रीस व [विंगवि] रे सब्बानिकोप समार्थन । र सवार्थन सी सक्यातामा 'पूर्व सलातीले चंदा ग्रीयस्ता' (मा)। शिसद् di ["दिश्ववि] नही पूर्वोकः । पर्न (दुन्य): ।यासद्दम दि ["विश्वविवर्ग]

सलाईसबी २७ वॉ (पटन २७ ४२)। विसर्विष् वि [विश्वतिविध] स्वादेश प्रकार का (परख १७--पत्र ११४): पेशीसा को देशों भीस (हे १ ४ पर्)। सीइ की रिशिति खतासी ५७ (सम १३)। ौसीइम वि [ शिवितम ] सतालेवा वक्ष बहै (पद्धम दक्ष २१) । सत्तंत्र दि [सप्ताइः] १ राजा मधी निष् कीश-भेटार, केश, फिला तथा सैन्य ये सात चन्याञ्चनाता (कुमा) । २ म. इस्टि-गरीर के वे शात धनवन---भार पैट, गुँड, गुण्या बीर सिफ 'श्रचेनपश्चित्र' (ब्बा १ १)। अचला देशो स-चला ज स-चुप्छ । सन्तरम् वि [वे] धरिमात धुनीन (रे व 1 (+5 सत्तम केंद्री सत्तम = प्रद्-तप। सत्तर्देशो सन्तर्वद वर-तरः। सत्तर देशो सत्त-र = सन्त-पर्टन, परा। सच्छ न [स्टांक] पुन्न विशेष (पर्वः) । सत्त्वा ) की सिर्गता विशानिशेष नव-सक्तक्री है मानिका का यात्रा (पायः वा ६१६, प्रस्त १६ ७६)। सत्तकी और नि सप्तका प्रतानीररेप रोपडिवका का गास (वे व ४)। सत्त्रवीसंज्ञायण वेशो सत्त्रावासंब्रोक्षण । (4x) i सत्ता की [सचा] १ स्क्रान मस्तित (तृषि १६६ टी) । २ धारमा के श्वाक संये हुए क्रमी धवस्यान (कम्म २ १३ २१) । सत्तापरी की [शतावरी] कव-विशेष 'सता-वरी विराजी पुमारि तह बोहरी गृसोई व (पच ४- संबोध ४४ भा २)। सत्तावीसकांभव वं वि चन चनमा (वे < २२) 'सत्तावीर्धनीयस्करप्रसरो जाव धन्त्रवि न होद्र' (बाय ११) । सच्च की [बे] १ तिपाई, तीन पामा बाला गीत काम विशेष । २ यहा रचने का वर्धम को तरह और काह-विशेष (दे व १)।

सचि ध्ये [शक्ति] ' यद्म-निरोप (दुना) ।

२ तिशूल (प्रयुक्त १ स्थापन १ क्र.) । ३

सामध्ये (ठा १ १---पत्र १ ६ कुमा प्राप्तु २१)। ४ विद्या-विरोप (पत्रम ७ १४२)। म "संदावि ["सन्] शक्तिवाना (ठा ६--पत्र ११२, संबोध का उप १६१ टी)। सचि प्रसिद्धि प्रस्य चोश (याप्र) । सचिव वि [साच्यिक] सरव-पूक्त सरव प्रधान (मुचनि ६२ हम्मीर १६ स ४)। सच्चित्रणा की [ऐ] धामिनहम दुसीमता (\$ = {\$)1 स्रात्तिवण्यः) वेको सन्त-भण्या (सम. ११२ सक्तियम ∮िता ३ विकार १४८)। सन्तु र् [शश्र] रिन्न, दुरमण, वैधी (खाया १ १---पत्र कर्या मुख ७)। द्व वि [ बित्] रे श्रुषो जीवनेतामा । २ पू एक राजा कर नाम (प्राष्ट्र १६)। स्म वि ["द्रा] १ एपुं को भारतेवाक्षा (प्राकृ ८५)। २ 🕵 रामचन्द्र का एक छोटा धाई (परम १४, १४)। निक्रण निह्म विद्वे पूर्वोस्त धर्ष (पडम १ ६६) । सङ्ग्रह दि ["सर्दन] शक्तुका मर्थन करनेवाचा (सम १३२)। स्रेज र् ['सेन] एक धन्तक्ष्म भूनि (संव ६)। हण देशों ग्यं(प्रजम व , ३ व)। ्र **१ (स**क्तु] धत् सनुधा भूवे सच्छ । पूर्व धारिका वर्ष (पि वेदेश निष्कृते छ २४३ सुर ४, २ ६ मुपा४ ६ म्यहा)। सर्चुत न [राष्ट्रश्च] १ एक विद्यावर-नगर

(१४) । २ प्रे रामचन्त्रमी का एक छोटा भाई, शबुष्त (पदम १२ ४०)।

सत्तवय र् [द्रवृक्षय] १ कादिमानाइ में वासीतामा क बास का एक मुप्रसिद्ध वर्षेत को वैनों का सर्व-नेष्ठ सीर्व है (सूर इ २ ३)।२ एक स्त्राक्त नाम (स्त्रा)। सन्दर्भ र्षु [सञ्चन्द्रम] एक धना का नाम

(पत्रम १व ४१)। सनुष रेनो सन्भ (हुप्र १२)। सन्तरि हो [सप्तसावि] ववस्पर, ७३ (क्षम्प ६, ४५)।

सस्य वि [रास्त्र] प्रशस्त व्यावनीय (बह्य Xw₹) i

सर्भ न [राख] हनियार मानुष प्रहरहा (याचा सामय, शांतू १ १)। ऋसं वृ िकोरा] राज्ञ—पीबार रखने का वैशा |

(खामा १ १५--पत्र १४)। दाग्रह वि िवच्यी इतिकार दे मान्त्री शोग्य (सामा र १६-पत्र १६६) भारत्य न भियपा-टन रेख हे चीरना (छाना १ १६--पन २२ भव)। सस्य दि दि] का नदा हुया (दे ८ १)। सरम रेबो स-स्म - सम्स्य । सत्य न [स्थारध्य] स्वस्थता (शाया १ E-44 (44) I स्टब र् स्तार्वी १ न्यापायै मुहाफिरी का समूह (सामा १ ११---पत्र १६३ उत्त ६ रक्ष्माहर मजुसुर १ २१४)। र प्रा<del>क्ति-प्र</del>मुद्ध (कुसर हेरे ६७)। ६ वि धन्तकं स्वार्वेतामा (वेदम १७२)। वह याह वंदर विवाह यार्च का मुक्तिया संस-नामक (स् ४१) वयाः विदा १ २ -- वय ६१)। और, की (जना-विचा १ -२---वच ११) । "वाद्दिक पूं ["नाव्दिम्] शही पूर्नॉक धर्म (समि)। इह वैको बाह्य (वर्गनि ४१) स्क)। हिंद र् िधिप शक्का (सुर २ १२) सूपा १६४)। । किया से िचिपवि विशेषकी पर्न (सुपा १६४)। साम इंग हिसा हिलोपनेशक क्ष्म हिल-विकास पुरतक रास्त-प्रथ (निशे १६व४) बुमा) बारामस्य गुरुवीनि (शा ४)। प्लुति ["इ] शास का जानकार, "सुनि सक्त्यसम् (ज्य १८६ दी क्य दू ११७)। गार वि विदर्भ शक्त मधेला (कर्मच १ ३ फिल्बा ३१)। रेश द्र जिली द्यान-राहत्व (पुत्र ६) २ ६ अप्रेर) । वार वैश्वी शहर (स.४ वर्मेश १.०२)। "वि: वि: ("विद्रि दामा क्षाता (स ३१२)। सम्बद्ध्य मि [दे] क्वेबिट (वे व ११) । सत्पर १ [वे] भिकर, प्यूह (वे 🕞 ) । सत्पर १ पूर्व [स्तरतर] राम्बा, विश्वीना सम्भरत १ वे ४ दी नुसार वे शक्य

वब् झल्म ३६७ तुर ४ १४४)।

स्टब्स्म देवी स-स्थाम = व-स्वायन् ।

R 44) 1

सरभव देवी सनव=सरका (शक्क ६६)

सल्यात्र देवो स प= संस्तर (प्राप्त १३)।

सरिय च भी स्थिति] १ पाशोर्गन 'सरिन करेड कमियो' (वस्म १४, ६२)। २ क्षेम कारताह संकार । ३ पूर्व पादि का स्वोकार (क्षेत्र ४१८) विकारशे । सई श्री "मता] १ एक वित्र-की कीएकसम्बद्ध जनामनाम पी की (प्रजम ११ ६)। २ एक मच्छी (ज्य १) । १ सनिवेश-विशेष (स १ १) । वेको सारिप । सरिभक्ष र् [स्तरितक] १ माञ्जलिक निन्यास विरोध नकत के लिए की जाती एक प्रकार की चावज वर्धन की एवना-विशेष (या १७-स्पा ६२)। २ स्वस्तिक के माकार का धारान-कम (बड ६) । ६ एक वेश-रिमान (रोक्द १४) । पुर न [पुर] एक नवर वा नाम (था २७) । रेखी सारिधम । सरिबंध वि सिर्विक र सर्प-सम्बन्ध बार्च का मनुष्य अभि (कुत्र ६२) च १२६। तुर ६, ११६ तुरा ६११ वर्गीय १२४) । २ पुरार्णका अधिका (इ.इ.१) । सस्यक्ष न [सक्यक] क्रफ बाब (४२६१)। सरिक्षण के [सक्तिक] दुएँ (श्रप्र) । सरिवार केवो सरिवार = स्वस्तिक (वंदा ब, २१)। सरिवास केवो सरिवाम = सार्विक (गुर १ ₹ =) I सरिवञ्चय केवो सरम = बार्च (महार प्रवि)। सका विश्वास्त्री कावित-वर्ता क्षेत्र की नमा(बाचास्य रॉ.स.४″११६२)ः श्रासुक्ष येको संसुभ (प्राक्त ३३) पि ७६)। धनामेको सभा=धना(धन)। सदावरी वेशो संयावरी ≈ सत्तवरी (इस \$4 (\$E) : सिर्म (शी) देशो सिरिस = धर्थ (नार---मुच्च ११६)। श्रष्ट शक [शम्ब्य ] १ प्रानाय करना । रे सक प्राप्तान करमा, कुराला । सहस (सिंग) । संदर्भ [सम्ब] १ व्यक्ति ग्रामान (हे १ २६ ३२ ७६। क्या सम ११)। धाराधिक विक्यक्यांस्ति' (बूध १४१६), 'धराद' (धाचार ४.२४) । २ दूबस-फिलेस

(ठा७—पत्र ३३ विस २१वर)। १ धुन्द-विशेष (पिय)। ४ न्यम सल्ब (महा)। १ प्रशिक्षि (धीन सामा रै १ टी-~पण १) "बेकि वि विभिन्ती शब्द के बानुसार निकाना भारतेवाचा (साम्य १ १८—पण २६६: बडाइ)। (पाइ द िंगाविन्] एक बूत वैताम पश्त (झ **८**, व---वन ६६३ व ३४ १---वन २२३३ इको। सङ्खन [ब्राट्रुक] इंदित हुए पास (पाश्च खाया १ १--पन २४ नडड)। सङ्ख्यि विशिष्ट्रक्षिती इस शहराया प्रकेत (पढड) । सदह सक [भद्र + घा] थडा करना, विचान करना, मतीति करमा । नरहर, बरहानि (दे ४ थः स्म<sup>ा</sup> ज्या)। भ्रमि, शर्दाहलाई (वि १६)। यह शहरत सहसाम सहरूम (का १६ हे ४ ८: मु२३)। वंड- सर्वाहिया ( बत २६, १ )। ई-सहद्विमध्य (इन चं प्रश्न हुत्र १४६)। सदहण केवो सहहाय (हे ४ २३० कुमा) । सद्द्रज्या १ की [भद्रात] यहा विश्वत संबद्धणा <sup>)</sup> प्रवीति (क्ष**ं—**पर १४१) भव्दा रेको सब्द्रा = महा (दर्ज १२७) । स**रहा**ज न [मद्भान] यदा, निकास (मा<del>नर</del> वेश वर ११६ हे y २१०)। धरहाम येको सहह । सर्दिन नि [सक्कित] जिस पर पक्का की पर्देशे बहु नियस्त (ठा६—पन १६६-पि ६३३): सराइन् (श्री) नि [शक्याविषा] **समू**र्य पुष्पास पूषा (गाठ-मुख्य २०६)। संदाण देवो संबाय । सव्यवह ( वड ) । सदाक वि [ शुक्रवृत्तम् ] राज्यतावा (हे % ११६ परम १ । अध्य पुर १ ६६ पाध, भीप) । सदास्त्र व [दे] बुदुर (देव १ : बद्) ।

पुच पू ["पुत्र] एक बेन ज्यातक (जा)।

माञ्चान करना, कुवाधा । बहानेह, बहाविटि,

**बहार्वेशि (शीप) क्रम्म ५०)। बहार्वेशि** 

सम्बापय ]

श्रदान तक [शब्दन

सप्पद्ध देशो स-एर स = स-प्रम । सरकुत रेको स-एक्त = सद-प्रम

सफर रेखां सभर = शहर (वे २ )। सफर पून कि पुनाकिके 'बबसकराबह कार्स (सिर १०२)।

सप्रम केवी सन्यतः = बन्यतः । सफल क्ष [सफल्लय ] सर्वेड कमा।

बहु, सफर्सन (मुपा १७४) । सफ्रांक्टम वि [सफ्रांक्टित] शफ्रम विम्या हुया (नुपा ३५६) प्रम) ।

सन (दर) देशो सहर = इंडे (रिय)। सदर दूं [शबर] १ एक प्रतार्व देश । २ वत देश में राहतेनाकी एक यहान मन्द्रप-नाति करात, भीन (पहड़ १ १-- पन १४- पाम) यउड)। "पिरसय न "तिवसनी वमान-पत्र (उद्यानि १) । देखी सन्दर्भ

सबदा की [रावदी] १' विद्धा मादि की की (क्षाया १ १---पत्र ६७ धंत वतन चेत्रव ४०२) । २ नामोदसर्व का एक दोल, हान से ट्रा:-प्रदेश मी हककर कायोश्सर्व करना (वेहर ४६२) । सम्बद्ध 🕻 [रावस] १ वरमावर्गनक वेशें की

एक भारत (क्षम २०)। २ वि कर्नुट, विषयमध्य (भाषाः उप २०२ वटः)। ६ म, दुविक पारित्र । ४ वि दुविक परिवर्गमा मुनि (बन ६६) । मर्थास्त्र रि [रावसित] क्यूरित (वतः) । समर्था ३८ण व [ शवर्था ३८ण] वरोष करता,

च्यरित को दुवित बनामा (धान ७७०)। सम्ब (घप) देशो सङ्ग = वर्षे (पित्र) । सञ्बद्ध र्षन [१] राक्ष-रिदोशः 'श्रापनस्त्रतिक बान्यबक्रामकोठेनु' (पत्रम 4 ११) मार्गिक 1 (32

सम्बद्ध देशो स-६३७ = इ-४४ । सद्भ रि [सद्य] १ क्वडर, क्वल (याक बम्बत ११६) । र क्रोड्रिक विट: 'बब्ब्य-भारते (स्त्राह, २ का बूर १, २१%, स 52 )1 सस्भा र देशा सन्दर्भाष अध्यक्षक ।

सम्भाव देवो सन्दर्भाव 🕫 स्व चाव ।

सब्धाविय वि [साव्याविक] पारमाधिक बास्ट्रविक (बयनि १ १३६)। सभव केवो समा 'सम्राखि' (माचा रु सभर वृंधी शिष्टरी मध्य, मध्यी (ड्रमा)।

की. री (हे १ २६६ माझ १४) । श्चभर पूँ विं विष्णा पत्नी (वे व, वे)। सभराइअ न [श्रफरायित] विचने यद्ध्य की उच्छ शाचरण फिना हो वह (कुमा) ।

समञ्जूषेको सन्मञ्जू = व-कार। सभा सिमा 🕽 १ परिवर (प्रताप्तका

वर्ष वर्गीत है)। २ खारी के क्ष्मर की द्यत-रक्त (या १२)। सभाव धक [सभाजय] पूजन करता। हेक सभा अद्वर्ष (शी) (बाब १६ )। सभाव देनो सन्धाव – स्वन्धव । सम प≠ [राम्] र राज्य दौशा धपळान्ड होनाः २ मट्ट होनाः १ व्यसकः होन्यः।

यमद, समीठ (दे ४ १६७ क्रूमा)- 'नद

समद सबस्य (पर्त वा कि पटोनाए" (विदि

**११६)। वह** समग्राण (याचा १ ४ ર ૧∖ા समयक [शमय ] १ कपदाला भरता, स्यानाः २ नातः करनाः। सञ्च ५००० प्रतिप्र बनंदो (बन्धे ६)। सम र् शिमी १ परिचन बागात । २ बेच थकारह (काम अर्थ कार्यस कथा है है

१६१; वर दू ६६३ तुना ६२६, बढक संख्या

हुना)। अस्त न ["जस्त्र] वस्त्रेमा (पाध)। सम र् शिमी शन्ति प्रयम, स्रोप धारि का निग्रह (शुना) । सम पि [सम ] १ क्षमान, तूल्य करिका (यन धरा बक्त पूचा; और १२, कम्ब ४ ४०- ६२) । २ छारण नम्परण प्रशासील, यम-समावे पहित्र (तूसा १ १६ ६४ झा स्वास्त्री स्वास्त्री स्वास्त्री । प्रत्रेत्र,

यक देव-विकास (बाग हो। केवेन्द्र हे४ )। व सामाजिक (बीवीच ४३३ विके १४२१) । ६ यात्रारा, तमा (सम २ १—पत ७३१)। पर्रांस न ["नमुरस] ब्रेस्नान-

विशेष, बारों कीलों के समान शरीर की

धाङ्कति-विशेष (ठा ६---थन ११७ सन १४१ जन कम्म १ ४ )। वद्यान्त व िच्छवाळ देव कोसाक्सर (सूत्र ४)। ताळ व िंदाछ । १ वजा-विरोप (बीव) । २ विश्वमान सम्बद्धाः (ठा७) । भन्मित भि विशिमकी समान वर्गकासा (का ३३ क्षे) । थारपुत पून ["पारपुत] मानस-विशेष विसर्में दोलों पर मिस्नकर बगीन में समाय जाते हैं वह प्राप्तन-बन्प (ठा १ १---पण ३) । पासि वि ("दशिवा) दु<del>स्य</del> इंद्रियांचा समदर्शी (बच्चा १ २२)। प्राम कुन [फिस्स] एक देव-विसान (धम १६)। शाव दे िभाषी बनता (मुना ३२) । या की वित्रों सक्तार का समाप-गच्यस्करा (क्स. ४ १ ) परम १४ ४ था २७)। वस्ति पुं["वर्तिन्] समयन वय (नुषा ४३३)। सरिस वि ['सहरा] प्रस्कृत तुस्य सहस्य (प्रथम ४% १७)। सहियं वि विश्विती दुवन प्रहित (परम १७ १ १)। सुद्ध पुं ["सुद्ध] एक राजा थो सङ्घें केश द का निर्माण

(पडम २ १ व २) । समञ्ज वि [सामधिक] समक्षेत्रकी, सम्बन्ध (भव)। समझ्य वि [समिवित] धरेक्ति (धरेडे R 2) 1 समञ्ज्ञ न [समयिक] शामाबिक कानक क्षेत्र-निरोष (काम ३ १वा ४ ११। १४) । समइक्षित्र देशो समइच्छित्र (हे १२, ४१)।

समद्रकृत वि सिमविकान्त्री व्यक्तेत, इवच

ह्या (नुस २३) ।

rt) i

समइच्छ वक [समदि + प्रमृ ] १ जलंबन करना । १ सक. प्रमध्या वदार होना । वह-समञ्ज्यसमाज (बीच भव्य)। समक्ष्यम हि सिम्बिस्य । १ इक्ट ह्या । १ सम्बन्धि (स. ७२० दी है स र अध्यक्ष्र}। समक्ष्म वि [समदीद] १ प्रवय 🖼 (परम १, ११२) । २ मूं भूत काब (जीवर्ष tat): समर्देभ रेको समर्द्भ = इपरिष् (सम्ब ४

समाउ (प्रप) मीचे देखी (प्रवि) । सर्मस [समम्] धार धइ (गा १ छ | १६४३ २१६६ चत्त १६ ३ महा कुमा)। समंत्रस 🕅 [समञ्जस] चिंक योग्य (बाचा यउद्यामी)। समंत रेको समंताः 'वरियो व्यमु समंत-वीशक्ताकबुधे देखें (पडड) । समंत रेवो सामन्त (पर पू १२७)। समेव (घर) देशो समस्य = समस्त (पिय)। समेवभा स [समन्वतस ] स्वंत पार्चे क्रस्ट (का ६७३ सूर २ २३८)। समंता । च [समन्तान्] उनर देखो सर्मतेय (पाम मण दिना १ २--पत रश से ६ प्रशासर र राम १३ १६४)। समद्भेत वि [समाक्ष्यन्त ] १ विषयर घाइमछ क्या नय हो बहु (से ४, ५७)। २ बास्त रोश हुसा (ग = ३३)। समक्तान [समस्] बबर क सामने अस्पत (या ६७०) सुपा १५ वहा)। देखो समय्द्र । समस्त्राय ) वि [समास्यात ] उत्तः, । समक्तिम र् म्हीबत (उर २११ से १६४) की रश मु १३३)। समर्ग देशो समयं = समस्य (पर २३२) मुक्तः ६३३ बख्)। समगा वि [समय] १ सक्त, समस्त (नुगा १३ पुछ, ब्रिड (पर्द्ध १ १—पन ४४: दुघ ७) । समगाछ दि [समगैक] बार्वापक (स्विर बर्क दुस १६७। ४२ )। सबगाख (धर) दवा सममा (विन) । समाय रि [समर्थ] बल्ता चल मुख्याना (नुस ४४६, ४४७) तम्पत्त १४१)। समस्य व [समध्त] पूर्वत पुरा (गुरा ६)। समिष्य रि [समियत] पुत्रित (परव tts m समन्द्रवद [सम्+भ्रास ] १ हेआ। रेटक संस्तरस्य करना । ३ सप्रेम एक्सा। यह यन होत (जर हरू हा)। समग्द्र वि [समभ्र] द्राच्य का विषय (बीज १४) । हेव्हा समस्य ।

128

समस्द्रायम वि [समान्छाद्क] ब्क्नेशना (स १६) । समका ) सक [सम्+अअ\_] वैदा समित्रिण 🕽 करना चपार्वन करना । समज्यह, क्रमन्त्रिक्यण्ड (संस्**ष्ट** पदा) । यक्त समञ्ज्ञाणमाण (विचा १ १--पव १२)। संक् समजिय (भप) (मण) । समजिलिय ) वि [समाजव] ज्यानिव समिञ्जिय 🕽 (वर्ण का व ११४ मुपार य छए)। समामासिय वि [समध्यासिष] धविद्वित (मुख्य १ १)। समद्रति [समर्थ] संपठ पर्ण व्यावशी न्वाय-युक्त (साया १ १—पत्र ६२ सरा)। स्यो समस्य = समर्थ । समप्पन [श्रमन] १ उपरायन बंबाना शान्त करना (नुषा ३६६) । २ पप्पानुहान (उबर १४)। १ एक दिन का प्रावास (संबोध १.व) । ४ वि चपरायन करनेवाला, दवाने वासा (बर ७६२) पंचा ४ २६। सूर ४ २३१)। समण देखो स-मण≕ ध-वश्व् । समण देखो सपन = धरण (पडन १७ । (मग्र ए १ समज र्षु [समज] स्वत्र जवान प्रवृत्तियाता दुनि सभु (बलु) । समय 🕻 [अमन] १ भवनम् मदावीर (बाबा २ (४.३) । २ वृक्षो, निर्मेश पुनि सापू, बर्कि बिद्धा, सन्यामी तारक 'निर्मंच-गर्भसावसंबंध्ययाजीनं वंबहा संबद्धाः (बन ६४ वर्ग बाचा बना क्या क्या हिना है है। यस रहे नुर १ २२४)। ६३. वा (भक यन्य १ १६)। सी.इ.चे ['सिंह] १ एक नैन पूर्ति यो दूपरे बत्तरेश के पूर्वभरीय एक थे (नडम २ ११२)। २ व्येष्ठ ग्रुनि (नएइ र. १-- पत्र १४८)। "ीवासम "ीवासम इंश्र [ ।पासक] धारक देश न्तुस्व (३व) । भी समया (उसः राज्य १ 1 (ea) 17-15 समय १६ (वर) व [समनम्बरप] वक्तर बाह वे दीथे (बरा) ।

समजबस्त देखो स-मजबरा = स-मनस्य । समणुगच्छ । सङ [समनु+गम्] १ समञ्जाम 🕽 बनुबरण करना। २ पण्डी तरह म्यास्या करता । ३ घळ- संबद्ध होता भूह भागा । बद्ध- सम्पूरारद्धमाण (सामा १ १---पत्र २५)। करकः समणुगार्मत समग्रामाण (बीप मुप २ २ ५६) खाया १ १---पत्र १२; कप्प) । समगुन्य वि [समनुगन] १ प्रवास (स ७२)।२ बर्नुब्द पुढ़ाहुमा (वेचा६, 1 (28 समगुचिण्य 📭 [समनुचीय] धार्याः विद्वित 'त्रशे समस्विष्यो' (पदम ६ 25Y) 1 समगुजाण सब [समनु + हा] १ बनुनोरन करना धनुमति देना । २ घपिकार प्रशन क्ला । समयुनायहः समयुक्तयाहः समस्-पाणेना (पाना) । वह समञ्जागमाम (पाना)। समगुद्धाय वि [समनुद्रात] ज्याप वेशत (परम १ २४ मुग्र ३७०) : समगुनाय वि [समनुज्ञात] प्रत्याः, धनुमोरित (परम 🖘 ७) । ससणुक्ष वि [समनुक्क] स्मृतोदन-हर्वा (याचा ११११)। समणुत्र वि [समनाद्र] १ गुन्दर मनोहर। २ मुन्दर वय मारिवाला (माचा १ ८ १ १) । १ वॅबिंग्न, बंबेय-पूक्त मुनि (गावा १ ६ २ ६) । ४ तमान समामादेशमा---धार्थाविक पुनि (दा १ १—वर १११ यर १)। समणुषा ध्य [समनुद्राः] १ वर्षात संबन्धि रे विविधार प्रशान (दा १ १---पन १११)। समगुन्नापे रथा समनुनाय (पाना २ १ ₹ ¥) ı ममणुपच वि [शमनुप्राय] बंदात (दुर १ १ं∈३ १ १३ विरि४३ व्यक्त)। समणुबद्ध रि [समनुबद्ध] निरम्तर का व स्वतं (गाप १ १—पर ६१ चीर २२)। सम्पुन्य वि [समतुन्त] प्रश्ने बाह् विषया बन्दर विश्व बच्च हा बहु (४ ६२) ।

काव)।

समञ्जूषक वि [समञ्जूषक] वेष्ट, वेषाव (पडम १ १) । समणुदास सङ [समनु+शासग्] १ शासना-मृत करना। २ सिक्क करना। व परिपायन करना 'ध्ययर् ठ धम्मं नमपूत्रासे-अवानि'(बाचा २१६,१२४४ \$ 2. V X ? 4 ? \$): समञ्जनह वि[समनुशिध] मनुष्यत बनुषत (द्याचार ११ ४)। समभुमास सक [समनु+श्रासय] सम्बन्धीय रेगाः यन्त्री तथा विकास । धमजुसल्लयंति (नुष १ १४ १ )। समणुसिद्र वि [समनुशिष्ट] बच्छे तथा रिक्रित (बनु)। देशी समणुसङ्क (पाचा २ 1 (8 3 3 समग्रहा कर [समनु+भू] बनुभव करना । समलुद्दोद् (वय १) । समण्डागय वि [समन्यागङ] १ वर्गव्यव स्रीहत 'वसीसपुरतसम्बद्धामपुरत' (मन्द्र १ १२)। २ तंत्रत (सव)। समण्यादार पु [समन्त्रादार] समाज्यन (राव)। सम्प्रियय देखो समझिय (शास) । समितिकत देवो समञ्जूत (खावा १ १---पत्र ६३) । समनुरंग नक [समनुरंगाय ] नवल बद भी दरह भारत म माध्यक्ष करना चारक्ष बच्च । बङ्क समनुर्गमान्त्र (शास्त्र १ ---वन १६४ पत्र (७४ हो)। समत्त वि सिमल्यी १ बंदर्श (पर्वा १ ४-- वर्ष ६ ) । २ श्रष्टमः साम (विन ४३२) दे समाम-पूरण । ४ विचित्र विमा ह्मा (६२ व्य. वह ) । समस वि [समाप्त] पूर्व, पूर्व विक आ हो पुता हो वह (बसा धीप) । समान भ्रे [सर्मात] पूर्वज (उप १४२ ७२ टी प्रिक्त द्वेष चच⊸न्याचाइ छ। त रापास्य तथ् समस्य वद [सम्+ अर्थव ] १ श्रावित क्या, क्रि. करना । २ तुरु करना । ३ तुर्य करमः । कर्मः बनाधेवदः (च १६१);

समिपिय वि [समिपित] विकाहमा (महः, 'च्यारे जि समस्याह दाहेश सरोद्धास हेर्मतो । परिएडि शुक्रा क्रमो संयोगतोषि सप्पार्ख (पा ७३)। समस्य देखो समच = तमस्य (से ४ २८ सुद १ १वशः १६, ४४) । समस्य वि [समर्थे | कक, क्रांक्यान् (पाया ळा४ ४—पथ २०३३ मासू १६ १०२, पीप) । समस्य वि [समर्थिष्] प्रापंत्र वाहनेवाका (क्रुय वध्र)। समरियभ वि [समर्थित] १ पूर्ण पूछ शिया क्षमा (क्षम ११६८ सूत्रा २६६) । २ पुष्ट किया हुया (मुद १६ १६) । १ प्रमाखित साबित फिया हुआ (धरुक १२१)। समद्वासिय वि [समाध्यासिय] पविद्वित (# 1% EVE) I समृद्धि देखो समिद्धि (स ४२६) । समझागय केही समञ्चागय (बोच ७१४) क्षामा १ र—पत्र ६४३ व्योग सङ्ग्रहा छ। ६ १--पम ११७)। समित सक सिमगु+इ] १ प्रमुख्य करमा। र शक प्कथित होना विकास। समन्देश, धर्मानवि (विष्ठे २११७) ग्रीप)। समिभिभ वि [समिन्यत] प्रवः विदेश (है १ ४६ बुर १ (१ ४ २१ वडा)। समझ केवो समझि। समप्य कड [ममू+अर्पय] वर्पस करता, काम करता थेता । समप्येष्ट (महा) । ४%- समर्पन समप्पर्भव नमप्पेत (अक्ट-अरुचार प्रसमा ४४, पतन ७३ १४) । शहर समस्पभ सर्वाप्यक्रय (गाट—मुच्य ११४ वहा) । हेन्न, समस्त्रित (महा) । 🕊 सर्माण्यसम् (मूना २१६) । समप्त देवी समाद - बद + मातू । समप्पण न [समपण] प्रतेष प्रदान (न्त क देश बेंब हैं। बब्द हैंदी है समप्रमण ध्ये [समर्पमा] ब्रम्द देशो (इर 1 (305)

समस्मस बन्न [समिम + अस ] मन्यव करना । समस्यक्ष (इस्प 🐠 । समक्रमिक वि [समम्बद्धिक] धरका धविक (से १४, वर)। समस्मास 🛊 [समध्यास] निकट, पाव (पद्धप २१ १७)। समहिमादिय नि [वे] मिना हुया, बड़ा हुया (पडम =६ ४४)। समिकानव्य वि [समस्यापम] वंद्रव धाला हमा (सूध १ ४ १४)। धमभिजान सरू [सममि + का] १ निर्देष क्रण्यः । २ प्रतिका-निर्माहं करम् । समित्रा-रिया सम्प्रिकाखाहि (पाचा) । वक् समसिजायमाण (पाना)। सप्तिभिद्द वह [समिन ह ] हैपन करना । समस्तिहर्मात (उस १२ १)। समिभिषंस 🖛 [समिमि 🕈 व्यंसव] 尽 करना । स्वान्त्रस्थिक स्वधिष्रेनेति (भन)। समिवपड थक [समिव + पन् ] धारमह करना । हेक्क, समिमिपक्किचप (पेत २१) । ससमिम्ब वि [समिम्ब] प्रवास पर मूत (क्या वर्मीन ६४)। समिश्व ( [समिह्य] क्क किरेन (स ध--पद ६६ )। समिक्कोश वह [समिश + स्रोक् ] रेवन, निधेक्षत्र करना । सम्बिकोर्ड (वन ta-पत्र 💵 ) । बक्क समिश्रद्धांप्रमाण (**पर्**प १७—यम् ५१०) । समभिक्षांइअ वि [समिक्षकोकित] विधी-वितारह (क्य ११--पन ६७ )। समय बक [सम्+अय ] समूक्ति हो<sup>स</sup> पुत्रनित होता। 'छल्दे धारवति बस्ते चेत्र-साम्रो वया विस्कावि" (विशे २१६७)। समय र् [समय] १ काव वस्त्र, शबबर (धावार मुध्येत २१) दुमा) । २ काम-विकेट वर्वनूष्य काम जिवका दूधरा दिस्ता न हो सके ऐका पूरत भाग (धरा, इस काम दे २३ २४३ ३)। ३ वस स्टॉन (ग्राप)।

४ विकास, शास, यासन (पाचा; रिस्

समय-समस्सिध सूपनि २१। क्रमाः वं २२) । १ क्वार्वे, चीज बस्तु (सम्म १ टी प्रष्ट ११४)। ६ संकेस, स्राय (सूमनि २३८ लिंड ६ प्राप से १ ११)। ७ समीचीन परिणाति चुन्दर परि स्ताम । य माचार, रिवाज । १ श्कनायना (सूम्रानि २१) । १ सामायिक संयम-निरोप (विवे १४२१)। "बलोच, कोच व ["क्षेत्र] क्षाबोपस्त्रित मूमि मनुष्य-सोब, समुष्य-सेत्र (भक्ष सम ६८)। स्वरं, रूप स्रवि [क] समय का जामकार (यहा देश ना ४ ४) वि २७६) । समय देवो स मय = स-मद । समय ) म [समकम्] १ दुवरत्, एक समय ) सम (पन २१६ टी निसे ११६६) १८६७। सुर १ १८ महा मतव ११ ६)। र सक्रु शाय (मा ६१) । समया के समन्या । समया ध [समया] पास, नमशेक (मुपा **t==**}: समर एक [स्यू] ग्रह करना । इ. समरणीय (क्ट २७- नाट राष्ट्र ३) समरियञ्च (रम्या२६)। समर भेको सदर (हे १ ११८) बर् )। ब्ये. 🐧 (कुमा) । ससर कुत [समर] १ द्वा अकार (छ १%, ४७ वर ७२० टी, कुमा)। २ स्टब्स् निरोप (भिय)। १ तोष्ट्रकारशाचा (उत्तः सम्य १ वा २६)। ह्या दू ["दिहा] बनची-देत का एक चना (स ६)। समर वि [स्मार] कामरेव-ईकवी कामरेव का (मन्दिर धार्षि) (इस ४३४) । समस्त्रभू वि [समर्तु] स्मरक्ष-कर्या (शन ₹**%**) ι समरण न [सारण]स्मृति यत्र (वर्गीन २ याः ६०) । समरसर्ह्य वृ [के] स्थान उद्याला (के ब, २३)। समराहम वि [दे] चिट्र, विश्वा श्रुष्य (वर् )। समरी रेपो समर = रुवर।

समलंकर सक [समलम्+क] विभूषित करना। समर्सकरेद्र (भाषा २०१४ ४)। संब्र समस्रोहरेचा (बाचा २ १६, ४)। समञ्जार एक [समस्म् + कारग ू] विभूषितं करना विभूषा-युक्त करना। सम-संकरेद (वीव) । संक्र. समसंकारेचा (पीप)। समल्द (पर) रि [समास्त्रभ्भ] विकित्त (धवि)। समद्विश वक [समा+की] १ वंदर होना। २ सीन होना। ३ सक. धामय कृत्या। समस्थियद् (साक ४७)। वर्ष समक्रिमेत (से १२ १)। समझीण वि [समास्रीन] पच्छी वरह चीन (धोप)। सब्बद्ध्य वि [समब्धीणे] सब्दीणे (शुपा समबद्धाण न [समयस्थान] सम्यन् प्रवस्थिति (सम्बद्ध १४७)। समबद्विष की [समबस्यिति] उत्तर देवीए कोई बिटि दुखीर्छ सहावसमबद्धि है बरापु' (घरमः १४६) । समयक्ति देवो सम-मृक्ति = सम-वृतिषु । समय्य रेको समये। समयसर देशा समोसर=समय+स (प्रामा) । समबसरण रेखो समोसरण (बूपनि ११९)। समबसरिश्र देवो समासरिश = धनवस्त (धर्मीव १)। समयसेम वि [समवसेय] जानने योग्य अध्यक्त (स. ४) । समबाद वि [समवायिम्] धमवाय धंकर्य का तमवाय-बांबन्धी (विश्व १६२६, वर्मेस Yes) I समपाय र्थु [समदाय] १ संबन्ध-विशेष पूर्ण-पूर्णी साथि वा संबन्ध (विसे २१००)। २ संबन्ध (पञ्चम १६, २४८ वर्में स्वर विवे ११६) । १ बनूह, समुख्य (नूप २ १ पर बोच ४ का बसूरिक टी विक राधापाका विकास १४१६ है।। ४ एकप करनाः 'कार्ड तो संपद्मनवार्ष' (वित्रे समरेचु रेको समरत्यु (बार--पत्र ४४४)।

२१४६)। १ वैन धंय-धंव विरोव चौया र्राग-प्रेय (सम १) । समने वक [समव + इ] १ शामिस होना । २ संबद्ध होता । समवेबि (धी) (मोह ८३) समवर्यात (विधे २१ ६)। समन्द (शौ) वि [समवेत] समूदित 🗫 विश्व (मोड्ड ००)। समसम प्रक [समसमाय ] 'सम् 'सम्' शाबाब करना । बद्धः समस्रमेत (श्रवि) । समसरिस रेको समन्धरिस । समसाण देवो मसाया 'समसाखे सुप्रवरे देवताचे वाचितं वस्तुं (सुपा ४ =)। समसीस वि वि । सहय तुल्य । २ निर्मर (देद १ )। देन स्पर्धा (से ६ ५) । ਲਸਦੀ ਦਿਆ ) **औ** [दे] सम्हें, वरवरी समसीसी 🔰 (बुगा 🗸 बन्ना २४- बन्यू) बेब १३ स्ट१ क बज्जा वेर १४४० विके ४६३ सम्मत्त १४६८ हुत्र १६४)। समस्तम सर्भ (समा + मि ) माध्य कला। समस्यम् (पि ४७३)। सं**इ**. समस्यक्रम (पि ४७३)। समस्यस्य वर्षः [समा + ऋस् ] मारग-शन प्राप्त करना, साम्त्वना मिसना । समस्य खप (शौ) (पि ४७१) । हेड्ड समस्प्रसिद्धं (शी) (बाट राष्ट्र ११६) । समस्यसिद (रो) देवो समासस्य (नार--मुच्छ २१८)। समस्या की [समस्या] बाकी का मान बोक्ने के लिए दिया नाटा स्वी<del>त न</del>रण मा पद कार्य (सिरि वर्षका दूस २७३ सुपा tax) : [ समा + श्वासय्] समस्तास पन श्वान्त्रममा करमा, किताचा क्रेना । समस्यासके (शी) (नाट) । यह- समस्सासमंद (पनि २२२) । क्षेत्र- समस्यासिव (शी) (नाद---मुच्या ८१) । समस्यास र्षु [समान्यास] बारवासन (विश्व समस्तरण व [समाधासन] स्तर रेको (मे ७६)। समस्यिभ वि [समाभित] धापन में स्पित वाधित (स ६३१) पर १ ४४० वर १३

२ ४- महा)।

समागृह वि सिमागृह । स्वाविष्ट साविष्य

समाज पुँ [समाज] सपूर् चंचाव (वर्षीन

समाञ्चल न सिमायुक्त संगोवन जोवना

समाहत्त्व वि [समारम्य] १ बारम्य निसम

१२६) । रेखी समाय = एमान ।

स्मिदिश कि [समिथिक] कियेव ज्यावा (बायू १वन यहा कुमा पुर ११६ छरा)। समा देगाय कि [समिथियत] १ प्राप्त मिना हुया १२ बार्ट (चर्छा)। समिदिह एक [समिथिम-स्वा] कहा वे खारा पानेल प्राप्ता। क्वाइक समिदिद्वि-खाराण (एन ११२)। समिदिहात कि [समिथिक्टर] याच्या प्राप्ती

स्राप्तर्पेश (प्राप्ता २, २,३ है। २,७ १ २)। सम्प्रिष्ट्रिक वि [सम्प्रिपित] स्राप्तिक (प्रय ७२० हैं सुरा २ १)। समहित्तिक्षय केलो सन्महित्तिक्य = सन

करत सुपार हो।
समिदिवय को सन्मदिव्हय का समिदिव्हय कि समिदिव्हय का समिदिव्हय का समिदिव्हय का समिदिव्हय कि सिम्मदिव्हय का समिदिव्हय कि दिन्ने संगुक्त प्रदेशक (व्यव्ह्य रहि दि) संगुक्त प्रदेशक (व्यव्ह्य रहि दि) संगुक्त प्रदेशक (व्यव्ह्य रहि दि) संगुक्त प्रदेशक व्यव्ह्य रहि दि संगुक्त प्रदेशक व्यव्ह्य रहि संगुक्त स्वाव्ह्य संगुक्त संग्रेस संग्रेस

२२२)।
सम्म की [समा] १ वर्ष वाद्य नात का
सम्म (वी ४१)। २ कस्म सम्म (सन १७) ठा २ १—-नव ४० कम्म)। सम्मासम देवी समागान (प्रीय २ २) नात

मावती १२)। समाह्यक्क तक [समा + गम् ]१ तमने समा । १ समाहर करना स्वलार करना। वैक समाहरिक्कम (महा)।

समाइम्प्टिन हि [समागत] बाह्य व्यक्त (त १०१)। समाइट्टु वि [समादिष्ट] क्यामा हुवा

(स्ताः)। समाइब्ह कि [समाविकः] वेष किया हुया (ते ६ वे )। समाइव्य कि [समाविके] व्यक्त (वीय-कुर ४ २४१)।

तुर भ २४१)। समाइक्य ) वि [समापीर्य] वन्धी वया समाइम्य ) वि (सम. वर ११) विचार ११)। समाइह् यर्ष [समा+पून्] वम्र होनाः करतः, वर्षेत्र होनाः नुषः क्यार्थहुषु (तृप

\* t t ):

समावह वि [समावृत् ] विनम्न (वव १)। समावत्त्र वि [समायुक्त] युक्त, स्वृत् (वीय) युवा १ १)। समावक वि [समाकुक्त] १ संविद्य, विविद्य

(एव)। २ व्याप्त (पूर्व ६ १)। ६ प्राकृत व्याकृत (६ ४ ४४४) तुर ६ १७४)। समातक्षिक्ष वि [समाकृतित] व्याकृत वना हृष्य (स १६)।

समापस हुं सिमादेश] र वाजा हुनुस (जर १ रहे हो) र विनास वादि के उत्तरह में किंद्र हुए बोक्स में बच्च हुण बहु बच्च विस्त है तिहुंबों में बच्च केंद्र वेक्स किंग्य क्या है (हिंद २२१ २१ ) । समाप्ताण में सिमादेशानी वाजा हुनुस् (मिन)। समाप्रोम हुं सिमायोगी हिक्स्या (वैद्व

१४)। समाजोसिय वि [समावोशिव] संदुर्ग विका हुवा (वर्ष)। समाजीस कर [समा+कृष] बॉर्फ्य।

क्ष्म. समामारिसिर्ट (पि १७१) ।

समाक्रिस्य व [समाक्रमें ] श्रीवार (पुरा ४)। समाक्रार एक [समा + कार्य] बाह्रल करना, कुवाना। शक्क समाख्यरिय (कम्पत

१२६)। समागर**व्यां वेशी स**मागम = इना + गर्। समागरा वेशी समागय (दुर ६, )। समागरा वक [ससा + गस्] १ सावने

वाता । दे वात्रका । ६ वात्रका । धमावश्वाद (महा)। व्यत्न समावश्वित (पि १८१) किंग्यालेख समागम्य (ज्ञाद २६ १८) किंग्यालेख समागम्य (ज्ञाद २६ १८) समामा द्वी समा + गर्म ] १ धेमेल

केम्प (पडार परा)। २ मान्ति (पुष १ ७ १)। समागमण ग [समागमग ] उत्तर हेवो (च्या)। समागम व [समागम] याग पुषा (१४

१६७ म्) ।

त्राप्त्य किमा बसा हो वह (काब पि १२६) १८६)। २ किसने प्राप्त्य किया हो बहु पूर्व परिवर्ष प्रयक्षित (दुर १ ११)। समाज वक [मुज्जू] पोजन कप्प्य, बाला। समासह (हे ४ ११) हुमा)।

(परम ११ १२२)।

(UHY):

बानां व वगायत (है ४ दे १ जूमा) स्थाय कर्ष स्मिन् स्थाप्त व प्रथम कृप करणः व स्थाप्त (है ४ देश) व्याविति (व १७१) । स्थापित (व १७१) । स्थापित (व १७१) । प्रभी । व जुन-प्रकृत प्रवृत्त (वे १ ४६) । व जुन-प्रकृत प्रकृति (वे १ १)। स्थापित है । स्थापित होता ह्या (क्या स्थापित है । स्थापित होता ह्या (क्या स्थाप्त है । स्थापित होता ह्या (क्या स्थाप्त है । स्थापित होता ह्या

समाय के संमाय = इसम (दे ६ ४६)। समायक (दे [समायक] समाय करनेपक (दे ६ ४६)। समायक व[मोजन] क्याप्त काटा 'उंदोक-क्यास्क्रपण्डाक्तरत्वमा,' (द ७९)।

क्याक्करण्यान्त्रवरहामार' (द ४२)। समाजक वि [समाजक] विसको हुन्न विद्या नगा हो यह (सहा)। समाजिम वेतो संसाजिम (क्षेत्र १४)।

उभागिक बन्न स्थानिय (इ. १४)। स्थापिक वि स्थितियो द्वार क्या क्या हो वह सामेव (यहा द्वार १.१) समापिक वि स्थिता द्वार १ — वन ११३ व १ ११ हुमा ६ ११)। समाणिक वि हिं] साम किया हुमा, स्था

र्वे जन्म हुमा 'तिव्यस्य क्षमक्ष्यं वेष बमाधिमं मंद्रकरण (च २४२) । समाधिन्य कि [मुक] श्रीमक बाना हुमा (च ११२) ।

(प ११४) : समाप्तिमा स्थै [समामिका] स्टब्स्टरोप (पिन)। समायी चत्र [समा+नी] वे पाना। समारीह (विसे १६२४)। समागा देखो समाग=स्त् । समाणु (प्रप) देवो समं(१४ ४१क कुमा) । समाद्द सक [समा+द्द] जनाना मुजयानः । वहः. समाद्द्रमाणः (याचा १ 8, R (Y) 1 समादा सक [समा + दा] बहुछ करना। संइ. समादाय (व्यवा १ २, ६ ३) । समादाय व [समादान] ख्रुण (राव)। समाहिट्ट हि [समाहिए] करवाया हुमा (मोद्ध⊏६)। समादिस सक [समा+दिश ] यजा । करना । सङ्ग समाविधित्र (ग्रह) । समार्स भी समापस (शह—माबदी 84) I समाधारणया 🛍 [समाधारणा] समाव भाव से स्थापन (बच २६ १)। समाधि देखो समाहि (हा १०--पत्र ४७३)। समापणा की [समापन्त] समाप्त (विसे ३५६५) । समामरिज वि [समाभरित] सामप्त-पुर्व (मसु२३६)। समाब रू [समाज] १ समा परिन्त् (अच ३ (७: शर्च्यु४)। २ व्यू-विश्व सम्बॉ कासमूह संबद्धाः व हाव्यः (पद्)। समाय पू [समाय] शामधिक श्रेमम-विशेष (निषे १४२१)। -समाय देवी समनायः 'एठे वन य दीसा पुरिस्तामाय्दि शरिवमाय्दि (लूपनि ६३) समार्थ देशो समर्थ (ऋ २६, १—४४ €¥ ) i समायण्य सङ [ समा + फर्मेंग् ] मुनना । **४४** समायण्यकण (महा) । समायण्यत्र न [समाञ्जीत] धन्छ (बडह)। समापण्यय वि [समाकर्णित] गुना इथा (क्सव)। समापय पद [समा + दद्] प्रहण करना स्वीकार करना । समायमंति (क्य ४ २) । समायय थेयो समागय (मरि)।

समायर सक [समा + चर्] माधरण करना । समामरा (उनाः सन) समापरेसि (निसा १)। इ. समायरियक्य (उपा)। समायरिय वि [समानरित ] धाषीळ (यस्ड) । समाया देखो समादा। संह समायाध (याचा१ व १४)। समायाय वि [समायात] समायत (सप ७२व थि) । समायार 🛊 [समाचार] १ माच्या (विपा १ १---पत्र १२)। २ वदाचार (यख १ २)। ६ रि वाचएस क्लोबाना (संदि ११)। समार तक [समा+रचय्] १ क्षेक क्रमा दुस्साकरना। २ करवा बनामा। समार्थ्य (हे ४ १६) महा) । मुख्य- समारीय (कुमा) । बहु, समारीत (पढम ६५ ४ )। । समार वर्ष [ समा + रम् ] प्रारंब करूत । समारइ (पड्)। समार पि [समार्यपद] गमना हुमा, 'बाइसमारीमा वरकुक्षरीमा' (मूर २ ६६)। समारंग सक [समा + रम्] १ श्रष्टन करता। २ द्विमा करनाः समारंगेरना (बाका) । वह समार्थित समार्थमाण (बाबा) । बची समार्थपावेग्या (प्राचा) । समारंभ र् [समारम्भ] १ पर-परिवार हिसा(धानाः परहर र --पन ४३ वा ७)- 'परिवासकरो अने समार्रमो' (संबोध ४१) । २ मार्रम (क्ष्म्) । समारचम ) म [समारचन] t क्षेत्र करना, समारण र पुस्त करणा 'कारेड जिला-इसले समाच्या पुरस्कानपाविषाणी (परम ११ मे)।२ वि विधायक, वसाँ (कूमा)। समारद्व वेको समाहत्त्व (नुर १ १ स समारम हे थेगे समार्रभ = समा + रम्। समाधः र्वताये स्मायेन समायेन्यपि समारक्ष (मूस १ ४, १, नि ४३ ३ वह)। संक्र समारक्य (१९ १६ )। समारिय नि [समारिया] दुस्त दिया हुष्य (क्रुप्र ३३४) ।

समारुद् सक [समा + रह् ] पाधहर्ष करता बढ़ना। समास्ट्रइ (मनि पि४६२)। नहः समार्ख्य (य ११) । सहः समार्ख्य (मद्वा) । समारहण न [समारोहण] पारोहण चढ्ना (मूचा २६३) । समारुख वि [समारुख] वदा हुया (महा) । समारोव सक [ समा + रापय ] बहाना । संह समारोभिय (पि ११)। समाइचिर)देशो समर्थसर≕यम्ब+ समाबंकि 🥬 कारम् । समानंकारेक समानंकर (बीप बाका २ १६, १६)। संझ समा-र्खंबरचा, समाक्रकचा (प्रीप पाचा २, ₹X, ₹a) 1 समार्थन 🛊 [समाञ्चन] व्यवस्त्रम, शहाय (संबोध ४ ) । समार्जभण न [समाजन्मन] प्रकरण विज्ञा करना 'सेयमसमार्थमणासि विराहित' (पनि १२७)) देशो समास्रमण । समाख्य वि [समाख्यित] बळ, व्यव 'परएक्यो समावता' (पडम १६, ६म)। समासभय व [समाजमत] विदेवन र्ययपप (पूर १६ १४) । देखो समाईस्था समाखन यक [समा + छप्] विस्तार से कहना। समासरेग्या (मूच १ १४) २४) । समाख्यमा 🛍 [समाख्यनी] शाद-विदेव 'बल्ड्बीखासमामबस्डिश्बर्ध्वर' मञ्जरिकोससंगी सकरपुव्हिसर" (मुख ३ )। समासमिय देशो समाउच (भाष)। समाज्यः सक [समा+क्रम्] १ विशेषन करना । २ विमुधा करना धर्तकार पहुनना । संक समास्त्रहृषि (सर) (मृषि) । समास्त्रण देवो समास्त्रमम (मुता १ ८) बस ३ १ टी मार-सङ्ग ७३) : समाज्ञत्र पु [समाज्ञप] बावबोतः बंबापण (पडप ६ १)। समासिंगिय 🖟 [समासिनित] मानियत, पारिषट् (पवि)। समाग्रद वि [मनारिखर] जार देवो (विष) ।

3) 1

समक्रिश्र वि [समिकि ] विशेष प्यापा (शागू

१७६) महा दुमा बुर ४ १९१) रुख) ।

समीहराम वि [समिथिरात] रे शाया निवा

समद्विष्ट सक [समिव +स्था ] काहु में

समहिद्वाउ वि [सम्बद्धार] सम्बन्ध भूकी

ग्रिक्षिरति (याचा २, २ ३ ३ २ ७ %

रक्षना, यथीन रक्षना । क्रमक समहित्ति-

हुमा। २ इसत (छछ)।

खनाण (एम १६२)।

समहिद्वित्र रि [समदिद्वित] व्यन्ति (उप ७२ टीसुपार १)। समाइडिडय देवो स-महिद्दिहर≃ छ-यद्वदिकः। समहिजेदिय वि [समिजिमित्त] धान-मिक्कः मुक्के विश्याह्मरा (धर १६ टी) । सम्बद्ध वि [समितिष्ठ] बच्च समस्त (बढर) १ समङ्क्त वि [दे] संपुत्र योजपुत्र (प्रकृ २२२) 1 सम्प्रकी [समा] १ वर्ष कार्यानास का धमय (मी ४१)। २ काम समय (सम ६० का २ १--- रम ४३ नव्य)। समाजन देवो समागम (प्रीव २ २) बाट मानदी १२)। समाइच्य पत्र [समा + गम्] १ धानने बाना । २ समावरं करना अस्त्रारं करना । र्डङ्ग समाध्यक्किक (बद्धा)। समाइच्छिप वि [समागत] चात, उद्भत (# \$u2) t समाउट्ट वि [समादिप्र] ऋत्याचा ह्रवा (मक्द्र)। समाइड्ड वि [समाविद्ध] वेच विना ह्या ( C C 1 ) 1 समाइञ्ज वि [समाकीमें] ब्यान्त (बीप; नुर ४ २४१)। समाइण्य ) वि [समाचीचे] बच्ची तथा समाहम । बाबीरत (मर्ग पर १६) विचार १३)।

**₹ ₹ ₹:)**:i

समारह दि [ समातृत् ] दिवस (दद t)। समाउत्त वि [समायुक्त] पूज, स्र्वाहर (बीप मुक्ता हे हैं)। समाउक वि [समाकुक] १ संविध विभिन्न (राय) । २ व्याप्त (तुपार्∜ ४) । ३ मानुष व्यक्ति (हे ४ ४४४ व्यूट १ १७४)। समारक्षित्र मि [समाकुव्यत] व्यापून वना इष्य (स ११)। समापस र् [समापेश] १ माना, हुटुम (चप १ २१ टी)। २ विवाह धावि के उपलब्ध में फिए हुए बीमन में बचा हुया पश्चाच किसको निर्माणों में बॉटने का संकल्प किया बना हो (चित्र एर १२)। समापसण व [समादेशन] प्राथा इकुम (थमि)। समायाग 🛊 [समाधान] स्थिता (वैद् समाषासिय नि [समातोपित] चंदुर क्या ह्मा (धरि)। समार्थरस 🕶 [समा+कृप] बॉब्ला । हेक्. समाद्धिसर्थ (पि १७१) । समाइदिसम् न [समाइदेम ] बीचार (मुपा ४) । धमानार सम् [समा+द्वारम्] धाह्वान करमा बुक्सना । यह समाद्वारिय (सम्पत्त 274) t समागण्या देशो समागम = धना + नम् । समागव भेवो समागव (बुर २, ४ ) । समागम बन [समा+गम्] १ तानी पाना । २ शापमा क्रमा । १ कानना । समाजन्द्रश्च ( महा ) । अवि. समायमिस्ताह (पि १२३)। संक्रसमागण्डिका (पि ११), फिल्मक्षेण समानन्म (ज्या २६ समागम 🖠 [समा+गम्] १ संपोद, धंक्ष्य (कार महा)। २ प्राप्टित (तुम १ # R ): समागमण व [समागमन] अवर देशो समाबह्यक[समा∔पृत्] नव होनाः ॑ (महा) 1 न्त्रवा, धरीव होता । भूषा, सवार्धीदृषु (बूच । समागव रि [समागत] धावा हुवा (रि 1 (p 075

समागृह दि [समागृह] समाच्छि प्राविधि (पजम ३१ १२२)। समाज र् [समाज] समूह बंधाव (वर्गीव ११६) । वेदो समाय = प्रमान । समाञ्चल म [समाञ्चल] धंनीयम भीड्ना (सम्प्र)। समाहत्त्व वि [समारक्य] र मारब्य विषया आराज्य किया गया हो बहु (काल पि ११६) २०६)। २ विसन् । धारम्य क्रिया हो गर न्वं चाँखर्वं समावको (सुर १ ११)। समाज इंड [मुक्] भोकन करन **वाना । बनालद (हे ४** ११ ३ कुमा) ३ समाप्य एक [सम्+ आप् ] समान्त करम्प्र, पूरा करना : समावह (हे ४ १४२) वमालेमि (स १७६) । समाप वि [समान] १ सरक तुम्ब हरिका (क्या)। २ मान-सम्बद्धाः सर्वकारी (**वे** ३ ४६) । ३ पून एक देव-विमात (सम १६)। समाय वि [सत्] विवयन होडा हुमा (क्या; विपा १ २--- १४)। और मी (पन क्य)। खमान 🖬 संमाज = संमान (से १ 📢 । समापञ्ज 🕅 [समापङ] सबादा करनेनाचा (8 4 Y4) I समायक व भोजनी प्रवास सामा संबोध च्याज्ञज्ञचनसम्बद्धमार् (स ७२) । समाज्य वि सिमाध्या विवको 🖼 विमा नमा हो बहु (महा)। धमाणिस केवी संग्राजिय (के व १४)। समाणिक विसिमानीकी जो बास्त वस हो नह, धानीव (महा: मुपा १ १)। समाणिक वि [समाप्त] पूर्व विमा 🖼 (के व वरा सामा १ क-- वय १६३) छ वे १ **प्र**मा ६ ६४) । समाणिश्र वि हि स्यान क्या हवा स्पर में बाबा हुया। 'विशिक्ष क्रमार्थ वेप धगाशिवं बंडलायं' (ब १४२) । समाजिञ्ज वि [मुख] प्रमित्न वारा 👫 (व ३१६) । समाजिता 🗱 [समानिका] क्रक्रिके (पिय)।

समाहिथ मि सिमाइस- व्यक्ति (बाचा १ C. X 2) 1 समाहिश्र वि सिमास्थाती सम्यव कपित (मध १ ६ २६ घाषा २,१६ ४)। समाहस (यप) नीचे देखो (मवि)। समाहक वि [समाहत] दूसाया ह्या यादा रिव (मार्थ १ १)। समाइ एक सिमा + या । स्वस्य करना श्रहरुकार्यं समाहेड' (संबोध ६१) । समि औ (शमि विको समी (क्ला पाय)। ्विशिमिम्, की १ शम-यूफः। समिश्र रिवं साथ, मृति (सुपा ४३६) ६४२ डप १४२ ही)। समिश्र देशो सत = शान्त (सिरि ११ ४)। समिश्र वि सिमिती सम्बन्ध प्रवृत्ति करने-बासा सावपान डोकर यदि मादि करनेवासा (बन उप ६ ४ कन बीग्र बन सब १ १६ २ पर ७२)। २ छम-मावि से स्वित (सुग्र १ ६ ४)। ६ छपपन (सुव्य ६)। ४ सम्बन्धत (सुध १ ६ ४) । इ. स्टब्स (ठा २ २--पत्र १०)। ६ सम्यम् व्यवस्थित (समार प्र वर)। समित्र वि [ सम्पद्भ ] १ सम्बद् प्रवृत्ति बाना (भव २ ६--पत्र १४)। २ सन्सर मुन्दर, शोधन समीचीन (मुख २ %, ३१)। समिश्र कि शिमित्री ग्रान्त किया हमा (विवे २४८८ मीर पराइ २ ४--- वव १४= स्टा समिल दि शिमिली यम-प्रक (मग २ द---पद १४ )। समिश्र विभिन्निक्षी सम समाजेब-परिता 'सनियमाये (परह २ ६---पत्र १४६)। समिभ न साम्यी समका समाविका ममाव सप-भाव (सुध १ १६, १, धावा 1 = = (v)1 समित्र वि [सीमत] प्रमानतात (प्राया १ १--१व ६२, भग)। समिश्र वि [सामित] येहूँ के बाटा का बना हुमा प्राप्त-विशेष महाक (पित्र २४४) । समिश्रं व [सम्यत् ] यन्ध्रः वयः (यानाः मधार १--१४ (१६)।

मसिक्षा की घ उसर देखों जिन २ ६ ⊶पत्र धाषा १ प. प्र. ४) 'समियाए' (धाचा १ ३ ४,४)। समिका की सिमिता रे थे का पाटा (लाया १ ब-पन १३२। समा ४ ४)। समिका की सिविका, शक्तिका, शक्तिका बार धाकि सब धनों की एक धाम्यनार परिवर्त (भव ६ १ दी-पत्र २)। समित्र की सिमिति । सम्यक् प्रवृत्ति क्ष्ययोक-वर्षेक मधन-भाषण वार्षि किया (सम धोषमा वे उदा चर ६ २. रवण ४)। र समा परिपक्त गरिप किर देवलोनेकि देवसमिर्देश योगासी (विवे १६६ टी तंद २४ टी) । वे यह, सकाई (रवण ४) । ४ निएतर मिलन (बस् ४२)। समिक्को स्थिति । स्वयका । श्याक विरोध मनुस्पृति धादि (सिरि ६६)। समित्रम वि सिमितियाँ के कियारे की बनी हुई मंडक धारि बस्त (पिंड २ २) । समिला पुंसिमिझको ग्रीनिय वस्त्की एक बाठि (बल १६ १३१)। समिक्स एक सिम् + ईस्र ी १ पाषोपना करताः युक्करोप-विचार करता । २ पर्याचीचन बच्ना बिन्तन बच्चा । १ धन्मी तथा देशमाः मिधियास करमा । समिक्कप (सत २३ २४) । योज समिक्का (नुम १ ६ ४ उत्त ६ २ मझा उपने २६)। संभिक्ता स्री सिमाक्षा वर्षानीयना (नुष १ व व १४)। समिक्टाम वि (समोधित) भागोवित (वर्षे ११११)। समिष थेनो समे। समिक्त्रण न [समीक्षण] बमोबा (यरि)। संसिविद्धय देवो समिषिनाञ (परि)। समित्रस्य सङ् [सम् + १२५] चारां वरत से बनवना । समिन्धाद (हे २, २०) । वह-समिगमन्त (बुगा ६ ४)। समिता रेका समिआ = वनिषा (ठा १ २---पव १२ : मव वे १ ---पत्र वे २) । ी

समित विसिद्ध र प्रतिस्थ संपत्तिकाला (धीप सामा १ १ टी-पत्र १)। २ वजः बह्म हमा (प्राप्त १३)। समिति की समिति र परिश्य संपति। र बांड (के १ ४४) वड कमा स्वप्न ६६३ प्राप्त १२८)। छ वि किरी सप्रदिवासा (HC ? YE) I समिर व सिमिरी प्यन शाद (सम्मत्त exa) i समिरिहज ) देवी स-मिरिहम=समरी-समिला को जिसिता, सम्या विषक्तिक गाडी की बॉसचे में बोनों सोर बाना जाता सकते का बीला (क्य प्रश्चित सुवा २४ व)। समिक देवो समिक्त । समिक्र (पर् )। समिद्याच्ये [समिघ] कहा, नक्की (शंत ११ पडम ११ ७६ पिक्र ४४ )। समी भी शिमी १ क्य विशेष स्रॉक्टका पड़ (सुमार: २२ १६ दी ज्यार ३१ टी बका १६)। २ जिला किसी, फली (पाप)। अस्त्रय न दिही मॉक्स को पत्ती रामी इस का पत्र-पूट (सूम १२, ११८ दी पृद्ध १)। समाध रेको समाय (नाट-पात्तवि १)। समीक्ष वि [समीकृत] समान क्रिया हमा. 'व किकि प्राणन वाव वंदि समोक्त' (सुम १ वे २ ≈ यतक)। समाचाण वि सिमीपानी साथु मृत्यद शोमन (पाट---वैद ४३)। समीर सक [सम् + इरय ] बेच्छा करना। समीरए (घरचा १ ॥ ८, १७)। समार दें सिमार विषय बाहु (शय, बढह)। समार्थ पू [समारण] जार देवा (नडह) । समास वयो संबाद । समीमद (पर )। समीच वि [समाव] निष्ट पाद (परम हर का महा) । समाइ सक [सम + ईड्] पारका बोध्य करना । नक्न समीहमाम (उप ३२ टी)। समदाक्षी सिमोदाी इच्छा चोळा (उन

1 (0 11 1

२ एककित करना । बंड समाइद दु (इप

१ व २६: १ १ १४) समाइरिन

(प्राप) (समि) ।

(इस ३६३)।

का क्लंब (विशे २७६)।

समाध्ययण व सिमाद्योपनी प्रामान्य वर्ष

समाद क्ड [सम्+आप्] प्रच करना।

द्यमानेह (हे ४ १४२) । कर्म, समयह (हे ४ ४२२)। समाविक्य नि सिमाविक्ये प्रसन्त किया हुमा (सद्धा) । समाबद्ध धक [समा+पत्] १ तंत्रुव साकर पत्रमा निरमा । २ अस्ता । ६ सम्बन्ध करना । स्वाप्तर (पनि) । समाधक्य व [समाप्तन] पहना विस्ता (भवव) । समाविषय वि [समापविव] १ धेवुच माकर विराह्म (सुर २ ६ सूपा २ ६)। २ वड (बीप) । ३ को दीने बनाक्को लक्क 'समान्यक्रियं बार्ब' (त ६ ६ समा)। समाचव्य मि सिमापक्षी संबाध (धम १९४ वन) । समावाचि भी समान्याचि समावि प्रतीवाध 'दे व बमावचीय विद्वरंडा' (तुब्ब २ ७)। समानद् धन [समा + धर्] दोवना ज्ञाना। सम्प्रमकेक्स (याचा १ १३ ३४)। समाबन्न देवो समाबण्य (च ४७६) छ्वा ठार १—नव १० दक्ष ६,२ २)। समावन देवो समावन् । जनानद्रमा (वाचा ₹ १%, ₹)। समादय देवो समावड । वड समावर्गत (रवास्त्र ३)। समाविभ वि [समापित] पूर्ण क्या बुधा (W 57 8 W YE) 1 समास मर्फ [समू+आस ] १ वैदना। २ चर्मा। समावद (कवि)। समास सङ [ समा + अस ] प्रन्धी तप् चैक्या । वर्षः समाधिकांति (एवि १२६) । समास (सिमास) १ बंबेप बंबोप (क्षेत्रक १) जी २१) । २ बाबायिक, ब्रंबय-विशेष (विते ९ ६६)। ६ व्याकरण-प्रसिक्त एक प्रतिका समझ परी के केल करने की रीति

(महाह २ २—पण ११४) वर्ग निर्मे | समाद्याच १ [समाद्योच] विचार, विवर्श | १ ३)। प्रस्तीय (क्य के इस्स यम)। समासंग प्रसिमासङ्ख्या प्रयोग (ना 1(1 588 समासेगय वि सिमासेगर् । चंत्रतः चम्बद (**(**HI) | समासम्ब वेदो समासार । समासस्य पि [समाश्रस्त] १ पापासन बास (पत्रम १०० २ से १२ ६७) सूचा २ ३)। २ स्थस्य बना इया(स १२ बुर ६, ६६)। समासय र सिमाभय । यामय स्वान (परम ७ १६८ ४२ ६६)। धमास्य वर्ष स्थिमा + स्वा देशना पायम् करमा । संयासर्वाच (बन्द ६१) । श्रमासस रेको समस्यस । 🕵 समाससि-ध्यव्य (से ११ १६)। समास्रव (गै) पर [ समा + सार्य\_] भारत करणा । समासावेदीह (स्थण २७) । इस-धमासार्थस्य (मा १६)। श्रेष्ठ, समा-सका समासिका (भाषा १.८८ ६) पि वश)। समासादिक वि [समासादित] प्रात (का 1 (2) धमासासिक कि (समापासिक) विकास भाग्यासन मिया बना हो यह (गहा) । धर्मास एक (धरा + कि) सम्बद्धायय करना । कमें, समाहित्यह, समाहित्यदि (श्रीक्ष १२६)। सम्प्रसिद्ध 🖬 समाद्याव । धमासिय वि [समाधित] धावकवात (१६० 4 4x)1 समासिय वि [समासित] क्षेत्रिक बैठावा हुमा (भिषः)। समासील वि [समासीन] केश ह्रमा (महा)। समाददद्ध प्रतो समादर । समाइक वि [समाइत] १ विश्वक, विर्मेश 'मरापाइराय बेस्याय' (धाषा २, १ ६ ६)।

२ स्थिक्त (एन)।

(गीपः बुर ४ १९७- क्या)।

समाह्य वि [समाह्त] वाष्ट्रकाश ब्राह्त

समाहिक वि [समाहृत] बाहुत कुमान हुमा (वर्गीन ६) । समाद्राण व [समाधान] र समावि (ज **१२० थे) । २ घोल्नुस्य-निवृत्ति क्य त्वास्थ्य** यामधिक शान्ति चित्त-स्वरवता (सह ११८ युवा ६४८) । समादार ⊈ सिमादारी १ सन्दर '**वर्**च-समझाचे माविका एस जिस्कोचा (मू ११४) । विद पु चिन्द्र] स्थानरस्त्रभविक धमास-विरोप (वेदन ६६ )। समाहारा के [समाहारा] र र्यक्रिय क्ल **९९ राजनेगामी एक स्मिष्ट्रमारी केरी (स** य-- प्रवास क्षेत्र क्ष्मो । २ एक की नामनी यति (दम्ब १ १४)। समाहि 🙀 [समाभि] १ वित्त 🕏 स्वरच्याः, मारोतुःश्व का ग्रामान (क्षम १७-वत १६ १ स्ट्रांट १ वेहर ०००)। २ स्थरनका 'साहादि काचो बजी समाहि विकासि सङ्ग्रीह तमन बारतु (बत्ते १४ ११)। १ थमें। ४ शुर्व स्थान, विश्व सी एकात्रता-कम् व्यानावस्या (सूध १ ६ ६) मुपा ६) । १ सम्बद्धा, राज सामि का सम्बन (छ १ दी—पद ४७४) । ६ व्राव्या ७ चारित श्रेयमानुद्राल (ठा४ °—ात १६१)। वर्षे प्रशासिक के ब्रह्मचूर्वे वाली धीर्वेकर (सम ११४ पश ४६)। पश्चिमा 🕏 िंधरिया | समापि-विकास प्रत-विकेष (स ४ १)। याण न ["पान] **शब**र मारि कापनी (क्ता४) । सरम्य व [मरज] धमधीन-पुष्क मीत (पृष्ठि)। समाहित्र वि [समाहित] १ दर्गान्तुष (बूध १२,२ ४) तूसनि १६ वस १६ १९, परम ६ २४। सीया महा)। **१ सम्ब** वर्षा व्यवस्थापित । ३ क्यरतीयत (बार्चा रै व ६ ३)। ४ समापित (निते ३४६३)। <sup>५</sup>

रोजन, सुन्दरः ६ शरीमस्ट। ७ निर्देश

(तुष १३११)।

**4 %.** 3) 1

समाहिल वि सिमोहती महीत (बावा १

समाहिक वि सिमास्यावी सम्यग कवित

समाहञ्ज वि सिमाहती दुवामा हथा याच्य-

(सम्र १ ६ रह माना २, १६ ४)।

स्माहल (धव) गीचे देखो (गणि)।

रित (सार्थ १ ४)। समाह सक सिमा + था। स्वत्व करना भाइतमार्ग समाहेद (संबोध ११)। समि 🛍 शिमि देशो समी (मज गर्म) । ्विशिमित्र, की १ शम-पूर्णः। समित्र रिवंशाया पूनि (मूपा ४३६) १४२ व्य १४२ थे)। मसिश्र देशों संत = शस्त (सिर ११ ४)। समित्र वि सिमित्री सम्बन्ध प्रवृत्ति करन-बाला सारमान होकर यदि माहि करनेवामा (स्थाउन ६ ४ कमा सीना जबासम १ १६ २ पर ७२)। २ छन-मादि हे सीत (सुम्र १:६ ४)। १ जपरम (मूज १)। ४ सम्बन्धन (सुध १ ६,४) । ३ सम्बत (ठा २ २--- पत्र ४०) । ६ सम्बय् व्यवस्थित (सम २ ४ ३१)। समिअ वि [ सम्बद्ध्य\_ ] १ सम्बद्ध प्रवृत्ति-वाना (सम २०६---पत्र १४)। २ समझ मुन्दर, शामन समीवीन (सुम २ ६, ३१)। समिअ व शिमित्री वान्त किया हवा (विसे २४३ छ भीप पढ़ा २ ४--पत्र १४८ वर्षाः समिश्र वि [अमित] यम-पुक्त (भन २ **र—**यथ १४ ) । समिश्र वि [समिश्र] सन, चय-डेब-च्युता 'समिवकार (पर्दा र ६--पत्र १४६)। समिभ व [साम्य] समहा रामादि का यमान सनभाव (मूच १ १६ प्र याचा 1 = = (4)1 समिन रि [संमत] प्रमाणंतेत (जाया १ १—पद ६२ भग)। समिभ वि [सामित] 💆 के बाहा का बना ह्मा पकाम-रिक्टेप महत्त्व (विष्ठ २४६) । समित्रं व [सन्दर्ग] बन्धे क्या (वासा प्यार १—१४ १११)।

क्रकिआ भी घ. क्यर देशो (सप २ ४---पत्र प्राचा १ १ १ १, ४) 'समियाए' (uner 2 x, x x) i समित्रा की सिमिता े भेर्ड का बाद्य (शापा १ =-- पत्र १३२। सक्त ४ ४)। सविभा की सिविका, शविका, शविका चनर प्रावि सब इन्हों की एक सम्बन्धर परिवद् (मरा ३ १ टी---पण २ २)। समित्र को सिमिति । सम्पन प्रतित सरवोध-वर्षेष यदन-आपण धार्षि विमा (सम योजना । स्वास्त्र ६ २ रवल ४)। र समा परिपदा 'मरिच किर देवसागीन देवसपिर्देश योगासी (निवे १३६ ही तंत्र २१ टी)। १ युट चड़ाई (रमश्र ४)। ४ ! मिरन्तर विसन (बस ४२)। समित्रको स्थिति । स्थरण । २ शास-विशेष महस्मति बादि (सिरि ४४)। समित्रम वि सिमितिसी थेरें वे बाटे की बनी 📑 मंडक बाहि बस्तु (पिड २ २)। समिला 🐧 [समिजह] चीन्त्रिय क्लू की एक बारि (बल ३६ १३६)। सक्रिक्स एक सिम + इस ी १ पायोचना करनाः बूलकोय-विचार करना । २ पर्यासोचन करता विश्वत करता । १ मण्डी वर्ष देशामा निरीदास करना । समिक्सप (उत्त २६ २४)। संक्र समिक्स (युप १ ६ प्रचलाद्दर। महाचलपंदर)। समिक्ता हो [समाक्षा] पर्याक्षेत्रना (गूच 8 2 2 2×) 1 समिक्सिज वि [समीधित] प्राचीवित (बर्मसं ११११) । समित्र बेली समे । समिन्द्रपान [ममीभ्रण] समोत्रा (मरि)। समिन्द्रिय देखो समिनिग्राथ (गर्वन) । समितम् धर सम् + स्थ्] वारी वर्ष ते चयक्या । समिनमाह (हे २ २४) । वक्र-समित्रमन्त (रूमा १ ४)। समिता रेका समिआ = वनिना (हा १ २—पत्र (२) मन ३ १ —पत्र १ २)।

समिद्ध 🏗 [समृद्ध] १ प्रतिसय संपत्तिकासा (पीप लासारे रेडी-पत्र रे)। २ वडा बंबा हमा (प्राप्त १६)। समिति औ सिस्ति । प्रक्रिय संपत्ति । र बार्सि क्षेत्र है ५५८ यह समा स्थल ६४. प्राम् १२०)। छ वि "छी सम्द्रिवासा (HE 2 YE) 1 समिर वं सिमिरी पत्रन बासू (सम्मत्त exe) i ममिरिर्डका देशों स-मिरिड्डा = समरी-सिमिरीय पिता ਦਸਿਲ ਵੀ ਬਿਸਿਗਾ, ਦਸ਼ਾ } ਪੂਰ-ਵੇਸ਼ਵ पाड़ी की बॉसरी में दौनों धीर डाला जाता खकको का बीसा(उप पूरेवेद सूपा२४८)। समिछ ध्यो संभिद्ध । समिक्कर (वर् ) । समिद्दाधी सिमिघी कछ सक्ती (बंद ११ पतम ११ ७६ मिक ४४ )। समी की शिमी र पश्च विशेष क्येंबर का वेष्ट(सूच १२२ १६ दी उन १३१ टी, बाबा १४ )। २ जिला किसी क्यी (पाय)। स्रक्रम न दि । फॉक्रकी पत्ती रामी बाज का पश्चाट (समा १२ २ १८ टीः शुक्ष १)। समीअ देखी समाय (नार-पाविष १)। समीक्य वि [समीक्ट्रव] उमान क्या हवा 'ने विकि वर्णन' तात टॉप समोक्ट' (सूच १ ३ २ = यबह्र)। समीच य नि [समाचान] सपू. नुन्हर, शोमन (नाड-भव ४०)। समीर बन्ध (सम + इस्य ] प्रेयका बरना। समीरद्(धाषा १ ॥ ॥, १७)। समार व [समार] प्रश पात्र (राम, महर्ष)। समार्ग्य वृ [समारत] जार देखो (१४४) । सम स देवो संपातः । मगीनद् (वर् ) । समाय वि [समाव] निष्ट चन (परन ६६ = महा)। समाह सक [सम + ईह् ] चारता श्राद्धा करमा। वह समाहमात्र (कर १२ क्ष)। सम हा की [समस्त] रच्या शब्दा (उत

१ ६१ यो।

समीहिय 🕨 सिमीहिती 😻 नास्ति (महा)। समीडिय वैद्यो समिक्तिय (वन ६)। सम्भाषार र सिम्पराचारी समीचीन माचयव (दे २ ६४)। समुद्रक्ष वि [समुचित ] योग्य अचित (से ११६ स्थापा)। समुद्राय नि चिमुनित । परिपृत प्रश-समुद्रको' (जन: स २०६)। २ एकपित (मिसे १६२४)। समुद्दम वि [समुद्दीजें] उत्तर-प्राप्त (सुपा 484) I समुद्रंद वेशो समुद्रोद । कर्न श्वह पुरुवपुष्ठ मोबो स्प्रीयः निन्दु उच्छारः (नन्त्र ३ 22) i समुद्धस देवी समुद्धरिस (एस २१ ००)। समुद्धतिय वि [समुत्करिय] कार शना हवा (बंद १४ ४१) । समुद्धिरस र् [समुरूपे] यक्तिम जनम (ब्रष्ट २६ वया मुख २६ वय) । समुद्रस यक [समुन् + इत्] १ अकट ननारा २ सकः पर्वे करनाः सप्रदेशसा (बा १ १--पन ११७), समुख्यंति (मास् 24K) 1 समुक्तिह नि [समुस्कृष्ठ] अन्तर (स. १ १—पन ११ )। समुक्तिय न [समुरुधियेन] क्वाच्छ (तुपा 8×8) 1 सञ्चनकाम नि [सञ्चनकाम] क्याना ह्या (भार २०६)। समुबद्धन वर्ष [समुत् + कन्] स्वाहना । स्पूतकार (ग ६×४) । वक्र समुक्तकार्यः (पुत्रा १४१)। समुक्तपाण न [समुस्तानन] प्रभूकन, प्रत्यादन (कृष १७४) । समुक्तिक नि [समुक्तिया ] का कर केंग्र इषा (वे ११ ७२)। समुक्तिम एक [समुन्+क्षिप्] का कर केंग्या । एकुल्बन्द (वि ३१६) क्या ) । समुग्ग र् [७मुद्र] १ किया, धेरुट (धम

पश्चिम् विशेष (थी २२ ठा४ ४--पत्र 968)1 समुमाद (हो) वि सिमुद्रव विश्वपूर्व सपुराक (नाट-पाकवी ११६)। समुमास वृ [समुक्ताम] धनुषक (गाट---रक्ता १३)। समुभिएल पि वि] प्रतीमित (वे व १३)। श्चमस्थितक विशिधनुत्रीर्थी उनामा द्वार क्तोसित ज्यर प्रक्रमा हुया (परम १४, a (w) | 44)1 समुग्तिर चन [समुद् + गृ ] अगर स्टाना क्यानमा । का समुन्तिरीत (पटन ६३, 84)1 समुन्यविश्व रि [समुद्भादित] कुना ह्या (वर्गीय १%)। समुख्याका नि [समुद्रुपातित] विनाधित (प्रासू १६%)। समुग्याय र् [समुत्यार ] क्रां-निर्वय बिरोप जिस समय सारवा वेका क्याय भारि से परिवाद क्षोता है उस समय बह भागे प्रदेशों को बाहर कर उन प्रदेशों है केरपीय, कमान ग्रांचि क्यों के प्रदेशों की जो निर्मेप-निराग करता है वहा दे प्रमुख्याध शास के-विकास कराय, मध्या विकास रैकर बाह्यरक धीर केनकिक (प्रदेश ६६----तम ७६६। प्रकट भीग निसे ६ १ )। समुग्यायण न [सञ्जूषातम ] निगन (मिक्के ६ ६)। समुग्पुट्र वि [ समुक्षुभोषित ] अश्लोकित (सर ११ २६)। समुपाय वेबी समुख्याम (४ १) । समुख्य दे [समुख्य] विकिष्ट चरित हर, धपुर (सम =, १--पम ३१४, धनि)। सप्तुवर धक रिम्मून + वर् } अवस्था करमा, बीधवा । सञ्जूषाद (वेदन ६४१) । **च्युवक्रिश वि [स्युवक्रित] क्या ह्या** (क्षप पुरस्य गरि)। प्रमुक्तिय एक [समुत् + कि] इक्द्रा करना रश ब्लू पाया है रेक देव क्लींप रेश संपद करमा। सङ्ख्यालह (धा १ ४)।

श्रमुचिय वि सिमुचिती एक क्रिया पर्याप में धन्वत (विधे १७६)। समुद्रम् अपूर्व (समुत् + विद्रा र अपूर्व क्या क्याक्ता । २ दूर क्या । स्टूक्ने (सूध १:२ २ १३)। प्रणि समुण्यिक्ति (ग्रथ २ १ ४)। एक समस्किता (पुष १ ४ १ )। समुच्यक्ष वि [समक्ष्यादित ] स्तर याच्यास्ति (पदम ६३ ७)। समुख्याओं की दि संगर्जनी भाव (६ समुद्धक सक [समृत्+शक] १ ज्यक्तना, उत्तर कठना । २ विस्तीको होन्छ । सङ्ख्या (पञ्च १ ११) । वहः समुख्यासंद (शूर २ २३६)। ससुच्यक्तिभ नि [ससुच्यहस्ति] १ स्वयः **इया । ९ जिस्तीर्थं (शब्द १ ६) महा)** । समुख्यारण व [समुस्तारण] हर क्ला (নৰি ६ ) ৷ सञ्जाधिकांका नि [बेर] १ तोबित, संतुष्ट निमा ह्या । २ धमार्ययतः । ३ म. धेवनि-क्ष्यः नमन (दि ४६)। समुच्छित् (ही) वि [समुच्छित] की **क्ल**त (पि २०७)। समुच्छित्र वि [समुच्छित्र ] केंट, विक्तु(बा४ १ पन-१०७)। समुच्युरीम नि [समुच्या ज्ञित] सेव <sup>इर</sup> बढ़ा हुआ (इम्बीर १६) । समुभाग वि [समुस्मक] शवि-उत्वरित (86 8 8521 X 500) 1 समुच्छेर १ ई [समुच्छेर]सांदा विकर समुख्येष (छ ब-या ४२६) एव)। पाइ वि विश्वादिन् दिशार्वको प्रतिक्य सर्वेद्य विनद्दर मानवेदावा (ठा क--वर्ष ASE CLAUS I समुख्यम वन [समुद् + पम ] प्रजन करमा । वहः, समुख्यमंत्र (पष्टम १०% (७६) मेदन १४ )। समुख्यम द्रं [समुद्यम] १ धनीचीन क्यन। ९ मि. समीचीन स्वयन्त्राचा (बिरि २४६)। प्रमुख्य में [समुख्यक] प्रकृत *प्रमूच* (बद्धाः ग्रंद) ।

समुज्ञाय वि [समुधात] १ तिवैष (विसे २६ ३) । २ औं वायया हुया (कप्प) । समुख्योध पह [सनुद्+शृत्] पपडना प्रशासना । यह समुख्योयंत (परम ११६ (w) समुद्राभ र् [समुद्दात] प्रदार दोन्ति (मृका ४ ३ महा)। समुजायय सङ [समुद् + चातय] त्रराधित करता । बद्धः समुद्धावर्थेत (स 14)1 समुभ्यत् स्वयं [सम्+ वश्यः] स्वान करमा । संह समुग्निक्रण (व ६०) । समुद्वाधक [समुन् + स्था] १ बङ्गाः। र ब्रम्सन करना। ६ प्रद्वेश फरना। ४ बरपम इत्या। संइच् समुद्धिकण (क्य) समुद्राण, समुद्धिजल (बाबा १ े २ २ ११३३ ६ १ ४७)। समुद्राइ वि [ समुखादिन् ] सम्यम् अन करतरासा (द्याचा) । समुद्राह्म को समुद्रिम (६ १२३)। समुद्राप न [समुपस्थान] फिर वे नाव प्रस्ता। सूचन [मृत] वन शास-विशेष (लंदि २ ३)। समुद्वान न [मसुरधान] १ सम्बग् बन्धल । २ विनिष्ठ कारण (राज) । देखो समुस्थाण । ममुद्वित्र वि [समुस्थित] १ सम्बन् प्रकार-धील (पूम ११४ २२) । २ उपस्थित । रेबाद्य (नूष १) १२ १) । ४ वटा हुमा, यो एका हुमा हा बहु (पुर १ ९६)। द अनुष्टित, विद्वित (मूच १ व व ११)। र क्राय (ग्राय १ ६—१३ १३६)। ७ माधित (स्व)। रामुद्राय वि [ममुद्राय] दश 🕬 (१२४) ६३। बद्ध ६६) । ममुञ्जक्ष्य स्थो समुत्तक्षय (एज) । 8मुच व [संमुक्त] १ कार्यस्था । १ ईभी उब बोर ने उत्तम 'प्रमुख (१०१)' (य ⊶-१र ११ )। वेश समुख्य । मनुषद्दा वि [र] वर्षत (विकासक) । धद्वर दद [सदुन्+नृ] १ तर माना । र महत्र अव उद्यक्ता । ३ मन्द्रती ।

tt.

**पार्थसर्महण्मया** होना । समुत्तरह (यहह १४१ १०६६) । बंध समुचर्य (धर) (धर)। समुचार्यायेय वि [समुचारित] १ पार पहुँचाया हुन्ना। २ दूर मादिस बाहर निकासा हथा (स १ २) । समजास सक सिमुन् + प्रासः ] परि श्रय मय क्राजाना । समुलासेवि (शी) (नार ---यामती १११)। समुचिष्ण नि [समयन'ण] पनतील (परप ₹ **६ ४२)**1 सञ्जूषुग वि [सञ्जूषाङ्ग] व्यंत जॅबा (प्रवि)। सञ्जूष वि 🔏 विवेत (वडह) । सम्राय रि सिमुस्य] क्लम (व ४० ठा ४ ४ ग्रे-पत्र २०३३ पुर २ २२६३ मुवा ८७ )। सुनुरभइत्रे रक्षो सुनुरद्ध ≠ त्रपुष + स्थवत् । समुत्थण न [समुर्यान] क्शति (लापा १ ६---पत्र १५७)। समुरभय सब [समुन् + स्थाय] बाच्छ-बन परमा अस्य । हेइन समुख्यद्वर्त (पा १६४ छ, पि १ र)। समुत्थय वि [सम्बस्कृत] बान्दर्भरत (दुव t&3)1 समुरभन्न वि [समुद्धाकित] बदना ह्या I (Bef B) समुरधान न [समुरधान] निर्मतः नारण (वित २०२०) । देवी समुद्धान । समुध्य देवो समुद्रिभ (याँर) । समुदय वं [समुदय] १ बहुरय, महात सपूर (बीप मय, प्रवर १०६) । १ शपुप्रति धम्पुण्य (बुध २२) । erry menken und f michen समुदानार र्र ४६ सार—शहू ३३ घीर स १११)। समुद्राम व सिमुदानी १ थिया (बीर) । २ थिधा-बदुर (भग) । ३ क्रिया विटेश प्रशेष-गृहत क्यों को प्रहरित क्याशास्त्रक वे ध्यासिकः करनेराताः क्रिया ( मूयतः १६६)। ४ बनुसाय (बाय ४)। चट् वि [ पर] निज्ञा को बाज करनयत्ता (काह २,१—वर १ )।

समुदान सङ [समुदानप्] भिन्ना 🕏 निर्भवत् करना। इंड समुद्राणेकण (पर्यार १---पप ११)। समुदाणिश देवा सामुदाणिय (धीर नव च १--या २६३)। समुदाणिया श्रे [सामुदानियी] क्या-विद्येत समुद्रात-क्रिया (नूपनि १६८) । समुराय र् [समुराय] मनूह (मण् २७० टी' जिन ६२१)। सनुबाहिय रि [सनुबाहत] प्रतिकारित कवित (उत्त ६६ २१)। समुद्धि देवां समुद्धा = प्रपृत्ति (नूपनि १२१ में मुर ७ २६)। समुक्तिग बसो समुद्रम (धन)। समुरीर वर्ष [समुद्र + इरय] १ ब्रेएका करना। २ कमों को सीम कर अहब में बाना उद्येरखा इरहा। वह [श्वा] रमाण (छावा १ १७--पत्र २२६) । थंड समुदारिकण (सम्बसने समुद्र र्ष [समुद्र] १ शापर, जनवि (बाम्ध थासारे ⊂—पत्र १३३१ मनः सार् २१३ हे २० इल् प्रानुद् )। २ क्रम्यक्तुव्यि का क्येष्ठ पुत्र (धत १) । १ माठर्ने बतदेव और बानुदेव क पूर्व जान क बर्म-पुर (तम १४३)। ४ बेलम्बर नगर का एक राजा (पद्म १४ ११) । १ शाहितस मुनि क शिव्य एक वैन बुनि (एरि ४१) । ६ वि नूप-महित (क्षे १ २१) । रच ४ दिखी १ चौरे बागुरेर का पूर्वनमीय नाम (सम १५३) : रे एक मन्द्रामार का नाम (दिशा है ब---वर बर) । इसा भी ['इसा] र इस्तिल बाबुदर बरू वह करनी (यहा ४४)। २ बनुररभवण्द्रवार श्री भागों (श्रित १ व)। लागा च [लाग] शर्मा के से युक्त वार्ष (भागा १--मन ४४)। (प्रत्या 1[स्त्रय] र चेचे पश्चनी सन्ना का रिश (बन १६२) । २ मदशन चाँछन्त्रीय वास्तित (वय रेयस क्ष्म क्षेत्र) । सुन्धा भ्य [ सुना] नवा (बच्च १६३) । द्या ममुद्र ।

समुद्रपद्योभ न [दे समुद्रनवनीत] १ समृत सुपा।२ चन्द्रमा(देद ४.)।

समुद्दम सक [समुद्द + द्रावय] १ भनेकर क्याब करना। २ यार शासना। पद्भवं (नच्य २ ४)।

समुद्दर न दि] वाधीय-पृष्ट वाली-बर (है # Rt) |

समुदास वि [समुदास] प्रवि स्ट्राम प्रबद् "पूर्व प्रमुशमसरेख" (बेह्न ६१ )।

समुद्दिस पन [समुद्द + दिशु] १ पछ नी लियर-परिविद्य करते के खिए स्पवेश देशा। २ व्याच्या करना। ३ प्रतिका करना। ४ प्राप्तय सेना । १. प्रविचार करना । कर्ये, स्मृहिस्सइ (इना), समुद्रित्सकर्गात (बाल ६)) वंक समृद्दिस्स (माना १ १ २ २ १ ४ ३)। हेड समुद्धिसम् (ध्र १, १--नत्र १६)।

समुदेस र [समुदेश] १ पाउँ को स्विर परिकित करने का अनदेश (प्रस् ६)। १ भारता, सूत्र के सर्व का सम्बादन (वदा १)। १ वेन का एक विकास, सम्बद्धन प्रकरण परिच्छेर (पदम २ १२) । ४ ओकाः

'जन स्पूरेक्यांबे' (मध्य १, १६)। **घनुरेच नि [समुदेश] ध्वा समुदेखिन** (चिंक्ष २६)। समुदेसन व [समुदेशन] वृत्ते के प्रते का मन्यान (स्टिंद २ ६) ।

समुद्दस्य व [समुद्देशिक] १ स्थार कारानी। र विश्वास समित के प्रत्यक्ष में किमें की मीमन में बने हुए वे आरहा प्रशानी निकारे सब साबु-सेम्सासियों में बॉट क्षेते का पंतर विमा बया हो (विक १२६)।

समुद्रार धक [शमुद्र + ह्रा] १ हुछ करना । रे बीर्यों मन्दिर सादि को क्षेत्र करना। **स्पृक्रपः** (प्राप्तु ६) । **पष्ट्र समुद्धरंत** (गुपा ४० ) । एक समुद्धरेकम (विकार ) । कि समुद्रम् (क्य २६, )।

समुद्राण न [समुद्राप] र उद्यार : २ नि बढार करनेवामा (इस्) ।

सञ्जारम है [सञ्जूषुक] कार-कास (बाददश प्रजः)।

समुद्धाइभ वि [समुद्धायित] धपुरिवत वटा हुमा (ब ५६६ ४६७) ।

समुद्धाय वह [ समुद् + भाष् ] करना । **बह- समुदार्थत (परा १ १—पत्र ४२)**। समुद्धित्र देशो समुद्धारित्र (मन्द्र १ २६) । समुक्तुर वि [समुक्तुर] इक वगाव (ज्य

१४२ थे)। समुद्रपुरिक दि [समुद्रुभुषित] दुवस्ति, रोमाजिकः न्यसाययं शर्यबद्भुयं व सपुरदु-(?व्यू) विये वरीय' (यूप २१ स १०)

वर्गीव (व)।

समुद्र पुं [समुद्र] १ एक देव विवास (स्तेम्ह १४६)। २ केवी समुद् (हे २ व )। समुधा की [समुप्ति] धम्पूरप (कार्ब 47) I

समुद्रात वि [समुद्रात विकास वे गरीयमा सम्बन्धिका जिएस्स **यचेतस्यसमूदद**्धः

**वेद्ध विष्ण्**ख रहा विविध्य गार्थ विशिष्टम्यन्तिर्वे (श्वास ६१६) । समुबंध वि [समुबंद] परि स्वा (बार)। समुपेश वर [समुन्य + ईस ] १ वन्ही

त्रपा देवना निरीक्षण करना । २ पर्याचीचन क्या निचार कथा। वक्, समुपद्गाप (सूम १ १६,२६)। श्रेष्ठ सञ्पक्तिया समुपहियाण (रह 💌 ११८ ग्रहा) । सञ्चयका यक [सपुत् + वक्] अवक

होगा । <del>धनुष्यक्त</del> (भर, महा) । सनुष्यक्रिका (क्या) । गुका क्ष्युपाकित्वा (श्रव) । समुष्पच्या ) वि [समुख्यम] अलग्र (वि

समुप्पन्न र श यम वर्षे)। <u>धमुप्पवण न [समस्पदम] जैना पाना.</u> अप्ने-यमन्, जनुमन (श्वतः) । समुष्याभभ वि [समुत्यादक] क्यांत-करो

(**च १** )। समुप्पात तक [ समुत् + पात्य ] उत्पन्न क्ला । स्पूर्वामेत् (क्त ११, ७१) ।

सञ्जूष्पाय र्षु [सञ्जूष्पाच्] क्लक्ति आनुर्वाय (सूच १११ शाचा)।

सञ्जिता व वि] धवर, सपनीति। १ धनः वृत्ति (दे ४)।

समुच्यित्व वि वि अत्यक्त मन-भेत (इर 1 (88 83

सम्प्रेषका । सम्पेषः । यहः समुप्रकरः समुष्यद्व । माण समुष्यद्वमाण (परः वाचा १४४४)। वेह समुप्पई (रह ६) । वैको समुबंक्तः । सम्प्रसम्बद्धाः वि [समुख्यदक] स्टब्स् कोन

वाला 'वहूप जमितिरसपुन्यावय अस्कारे' (स २२)। समुष्याक्षिय वि [समुल्यासित] धारकारित

समुप्रम् वर [समा + इम्] बाव्सर करना । वष्ट्र समुद्रप्रभूत (से ४ ४३)। समुप्कोडण व [समुत्स्प्रोटन] कल्प्रवर (परम ६, १४ )। समुख्यक नि [समुद्भट] प्रचेत (प्राप्तु

समुब्भयश्रह [समुद् + भू ] अराह होना। सपुरमसंवि (अपर्य २६) । समुक्ताव 🖠 [समुद्भव] अपित (म्बः

व्यक्ति)। समुद्रिमय वि [समूर्जित] ईंबा क्रिय **इ**य (मुपा ददा परिष) ।

समुब्सुय (धर) गोषे देवो (धरा) । समुब्भूष वि [समुद्भृष] सरम् (व ४७६, बुद २ २३३ बुपा २६६) । सञ्जयाण वैको सञ्ज्याण = समुदान (निम

१ २--वन ११८ घोष १४४)। सञ्चयाण देवी सञ्जाभ = बहुरामन् । 😎-समुपार्थित (मुच 🐧 १) ।

समुपाणिक रेको समुदाणिय (वीव ११२)। समुयाय पत्र समुदाय (राष)। समुद्धव वक [समुन् + स्रम् ] योजनाः नम्भा। धरुक्रमह (स्वर)। महः, समुद्रमंद

(पुर २ २६) । क्लाइ- सञ्जादिकात (दुर ९, २१७)। समुक्षकण न [समुद्धपत] भवन, विक (वे

1 (v# F5

समुख्यम वि [समुद्धपित] ४७. वर्नि (पुर व १९१ ६, देवका प्राचु ७)।

समुष्टस पत्र [समुत्त + स्वस् ] ब्रह्मस्य होनाः विकासाः। सङ्कासस्य (काट-विका ७१)। वहः समुद्धासेत (कामः सुर २ ६१)।

समुद्धसिय वि [समुद्धसित] बद्धास प्राप्त (क्य) । समुद्धास्त्रिय वि [समुद्धास्त्रित] उक्कामा हुमा

(शाया १ १व---नव २९७)। समुद्धाव वृं [समुद्धाय] सामाप संमावस (विता १ ७---नव ७ मद्धाः सामा १ १६---नव १८०)।

समुद्धान पुं [समुक्तस] निकास (गवन)। समुद्रपृद्ध वि [समुपविष्ठ] वेठा हुमा (बा

२००) । समुद्रज्यः वि [समुप्युक्त] अपयोकपुकः सारकान (जीवस १६१) ।

समुष्याय वि [समुष्यात] सनीय कामा हुया (वद ४)। समुष्याच्याय वि [समुष्याचित] क्यांनिय, वैशा किया हुया (पुणा १ स्थ)।

वैश्व किमा हुमा (सुना १ छए)। समुवस्थिय वि [समुपस्थित] शासिर क्सीयत (स्प ४९४)।

समुब्धत देशो समुव ।

समुबनिट्ट नि [समुपनिष्ट] कैस हुन्छ (सम ७१)।

समुबस्पास वि [समुपसंवक] स्थीप वे समानत (वर्ष १)।

समुक्दसिज नि [समुजदसित] निवन कृत वन्दात किया क्या हो नह (क्या)।

समुचानस रि (समुचानस) स्वीप में सम्ब (फाव्य ! १६---वम ११६४ एक)। समुचे वक [समुचा + इ] १ गत में पाना। १ प्राप्त करुता। समुचेत, क्षूत्रीत (बॉठ १२) (४ ११६)। वक्ष समुचवेत (स

समुवेदमा पण [समुक्त + मृष्ट ] १ समुवेद } निरोक्तक करना । १ व्यक्तार करना काम में बामा। वक्क समुवेदकाराज समुबंदमाज (सामा १ १ — ज्य १० माना १ १, १ ३)।

समुद्राष्ट्र कि [समुद्रुश्त] देना किया हुता (हे १९ ६१)। समुद्रुतित क्षिमा हुता

बक्ट सम्बन्धात (वृद् १ वाट—समा करवा । ४ होता । समुद्र + बद्द ] ६ वाटल करवा । वृद्धात (वृद्ध १४ १) । समुक्षात व्यवस्थात वृद्धात । प्रभाव हुआ

सन्। समुख्यहण व [समुद्रहरू] सम्यम् वहन---कोना (उन) ।

समुक्तिया वि [समुद्धिया] अध्यक्त वह प-बाला (गा ४६२) ।

ससुब्बृह वि [ससुवृद्ध्युड] १ विवर्धाह्य (चर दृ १२७)। २ उक्तांन्त जैवा विव्य कृषा (दे ११ ६)।

समुक्तेक कि [समुद्दे किन] यक्तर कैनामा हुआ वेषापित गड़्ड्रस्यादिविधयाय युगोक्कामसर्थयाय (परम १४ ४२)। समुसरण वेका समोसरण (पिड २)।

समुस्मय वृं [समुख्यूय] १ क्रेंबाई कर्मता (सुव २ ४ ७)। २ क्यों क क्वान्स (सुव १ १४. ७)। ३ क्यों का वस्त्य (साया)। ४ संबास बद्धा, यशि वर्ष (वय ६ १७ स्रमु २)।

समुस्यक्षिय वि (समुख्युत्या) क्रेंबा क्रिया हुवा (पवन ४ ९)। समुस्यस्थित वि [समुख्युत्यस्य] १ व्यक्ताय प्राप्त 'शमुस्यस्थितरामपुत्य' (क्ष्य)। २ क्ष्युत्यस्थाय (पवन १४ १८)। वैशो समस्यस्था

समुस्तिक वि [समुष्टिब्बुत] ज्याने विषय अना प्राः हृत्या (यूत १.४.१११ वि ६४) । समुस्तिका वर्षाः [समुस्तिका विवायाः करणा कालाः । २ बेस्कार करणा विवायाः सोस्तु त्रित्य स्वरित्त के ठीव करणा । युत्तियाः साम्रि स्वरित्तस्यापि (याचा १८२१) ।

कारि क्यूरिक्कानि (वाना १ ८ २ १३)। सञ्चासुन् } केने समुद्धान (व. ४८) गर्सा।। सञ्जासुन् केने संस्कृत् (व. १ २८) गर्सा १४८। कुनाः कुना ११। महान्याम्।।

समुद्दम वि [समुद्रस] पनुद्दात-श्रष्ट (श्रावक ६५)।

समृद्धि को सन्मृद्धि = चनुन्धि ।

समूसन न [समूचम] निम्द्रक र्ष्ट्रिट पीपव तथा मरिच मा मिरचा (शति १) : सम्मवय वेको समुस्सविय (परह् १

१---पन ४४)। सम्स्थल यन [समुत् + भस् ] १ वैना नागा। १ कप्तित होग्य। १ व्यन्त नास नेता। व्यन्तित (४४)। यन सम् सस्य सम्स्यामान (गा ६०४ नवन दे ११ १९२)।

स्तृससिक्ष व [सतुष्क्ष्यसित] १ तिषाय (वं ११ १६)। २ वेबो सतुस्ससिय (खावा ११---पत्र १६) कमा पत्र )। सत्तृसिक्ष वेबो सतुस्सिक्ष (मण्ड वीप तृष १ १ १ ११ थे परहु १ १--पत्र ४४)।

समृद्धाक (स्यान्युक्त) प्रति उत्करित (दुगा ४००। नाट-निर्म ६२)। समृद्धार्युन (समृद्धा) चक्रुयस्य याचि, वंषाकः 'मंधीहि य चवधीमं दुर्गक्मार्यं समृहं व' (वस्म १ ६ १४। स्रोप ४ ७। यचक

समृह (वर) देशो समुह (भनि) ।

मिन)।

समे एक [समा + हू । यायमा करता समा चंद्रक पार्थ । र बानमा । र मान्य करमा । र मान्य चंद्रय समा सम्ब्रह होना। समेह समेति (मिन) विदे २२६६) । मान्न समाय पार्था १ व १ २)। चंद्र समित्र पार्था १ १ १ १ १ दि ११ समाय १ १ १ १ १ दि समेत्र | विस्तित | र धानक चमायात समेत्र | विस्तित | र धानक चमायात

महा) । समेर वैश्वो सन्भर = यनमर्गव ।

समीक्षर पत्र [समय+तृ] १ तमानाः समावेश होता भन्तमीय होता। २ श्रीक

गहिद्वीय (भा १६)। २ युक्त सहिद्व सेहि

स्पेक्षे बहुर्य वयानि जा निर्श्तियंपि मुम्हर्य

(ब्रुष्ट १ १६३) वे यक पूर्वा २५६।

रि ६७३ भग शासा १ १--- पण वरः धीयः सूपा ११)। समासर कर सिमव + धी १ ववारका पाथमन करना । २ गीचे निरमा । समीयरेका (धौप पि २६३)। 🗽 समोसरिज (धौप)। **क** समोसरंत (धे २ ३६)। समोसर एक सिमप्सस् । विश्वे हटना। २ वधायन करवा । समोशरद (काम १९६) क्रमोधर (हे २ ११७) । वह समासर्व (**वा १६**२)। समोसरण 🗗 [सम्बस्थय ] १ एक विचन सेवापक मेका (सूधनि ११७ राय ११९)। ९ समुद्धाय सम्बद्धाः समृद्धः 'समोसरहा निश्व क्याच्य बए व बूम्मे य शसी वं (ब्रोध ४ ७)। इ शाबु-शबुदाय, बार्च-समृक् (पिंड २ ६ २ व दी)। ४ वहाँ पर सरक्षम धानि के प्रसंध में धनेक स्टब्स भीन इकट्ठे होते हाँ वह स्थान (सम २१) । १ वर्कावकों का समुदान, कैनेतर दार्तनिकों का समजान (मूध १ १३,१) । ६ ६०ई-विचार, धायम-विचार (त्या २,२ ०१) २)। ७ 'तुम्ब्रकाञ्च सूत्र के प्रथम मुक्तकंच का बार्ख्य सम्बग्न (सुन्नि १२)। ॥ **पनाच्ना मायम्त (इसाः सीपः रिपा १ ७-- पन ७२) : १ तीवंकर-केन की एवंव ।** १ महा गर <del>जिल्ल धनरान्</del>ट क्यारेस **ध्ये हैं** वहत्वाल (शासमायेचा २ १७) तो ४३)। वच 🖞 [वपस्] क्य निशेष (पत २**७१**) i समोसरिक वि [समक्तृव] १ विश्वे हटा **इ**मा (बा ६३६) पत्रम १२ ६६)। २ क्यापित (से १ ३) । समोसरिज वि [समवस्त ] बनावार समाक्त (से ४ ४१ उका)। समोसब सक 🔃 टुक्स टुक्स करना । बनीववेंति (तूम १ ४, २, ५)। समासिक पङ [समन + सन्] सोस होना थस्य यस्तः गृह होन्य । शृह समासिश्रंत 1 (w B) समोभिक्ष प्रे वि १ मालिकेलिक वहीची ४ दे। बास्र) । २ प्र**दीचा** ३ दि वस्य वय-बोध्य (दे ४१)।

समोद्रण एक [समुद्र + द्रम् ] रमुख्य करता. बारम-अदेशों को बखर निकास कर रुन्धे कर्य-निर्मेश करना। समोङ्ग्रहरू समोद्द्रशित (कम्पः ग्रीपः मि ४६६) । से**इ**. समोहणिचा (मगः सम्म धौप)। समोह्य वि [समुद्रुश] विश्वे सङ्ग्रह विशा हो वह (ठा २, २-- पव ६१)। समोह्य वि [समबहर्त] सावात-बाज (दूर ७ २०)। सम्बद्ध अम् । अम् ] १ केर पाना । २ वरचा । सम्बद्ध (बत्त १ ३७)। सम्म वर्ष [राम्] रान्त होना स्त्रम होना । सम्मद् (बत्ता ११६) । सन्म व [शर्मन्] मुक्क (हे १: ३२ क्रुमा)। सन्म रि [सम्प्रम्भ ] १ प्रत्य, सन्य (सुर २३) कम्प क्रमादक वसु)। १ समिनरीत संविद्धाः (हा १—नम २४) व ४--- पथ १४६)। ३ मस्तिवीय क्तवतीय (कम्म ४ १४३ पर ६)। ४ होधन सुन्दर। १ इंबट स्त्रित मासमी (बुच २ ४ ६)। ६ त सम्पन्-सर्वन (क्रम ४ ६३ ४१)। चन [ति] ! सम्बद्धित सम्बद्धित, सत्य दश्य गर थाद्या (छन्। सन् पन ६६) भी ४ । कस्म ४ १४) । २ स्टब परमार्थ 'सम्मद्यवंतिस्त्रों (बार्वा सुबारा च २१) । विव्रयः विद्वीय वि ["दृष्टिक] स्टब तस्य पर पदा रक्षमधाला (ठा १०--पण २७) १ २०--पण ११) । इंस्त्य व ["ब्रह्मेन] स्टब धरव पर बका(धारं⊶–पत्र ३ ३)। दिद्विमि [ कांग्रे को शिद्धिय (सुप्रति १२१)। शाय व कायो सत्य बान ववार्व सम (अस्य ७३ थतु)। "सूय व "भूत] १ साय शरकाः ९ ५०० स्टब्स-साम् (धारी)। ामिच्छहिंदू वि [शमस्याद्धि] विव इक्टियना तरप मीर सप्तरत तत्त्व पर अज्ञा रखनेवामा (बध २६ झ १--पम २ )। ।बाय पूं विश्वकृति समिक्क गर्वा रे दक्षिणात, बारहरी वैत्र संकारण (ठा १०---पण ४६१)। ३ शामान्त्रिकः श्रेषम-निरोधः ·बामादर्गं यनदर्गं शामातायो समाव पंचेत्रे (धाव १)।

समाइ देवो सम्मुद्द=सम्मितिः स्वमिति (उत्त २८ १७ माचा)।

सन्मध्य देवो सामाध्य (संबोप ४६)। सम्मंद्र सम्बत् ] बन्दी तयह (प्राप्त सूष १ १४ ११ महा)।

सम्मुद्द और [सम्मति] १ संगत मति । २ मुन्दर बुद्धि निराम बुद्धि (उस्त २० १७ मुखारव १७ कमा बाचा) ३ १ वूँ एक बुबकर पुरुष (पत्रन ६ - ६२) ।

सम्बुद्ध हो [स्यमति] स्वकीय बुद्धि (बाषा)। सम्बंदिश्र वि [संस्मृत] प्रच्छे तथा यात्र किया हुच्च (सन्दु ३४)।

स्वयं धक [शी स्वयं] सोताः रायनं करना। सवद्व सर्प सर्ज्या (कम्पः साचा १ ७ द १३ २ २,३ २४ २६) समित (मम १६ ६--पत्र १७)। वङ्ग सम्माण (प्राचा २२ ३२६) । हेड सङ्ख्य (नि १७०)। इत्रेको समिपिका संयम्भ ।

सब प्रव [स्वद्] प्रवताः वीर्णं होनाः नाषिकः माना। समह (भाषा २०११ ११)। सय प्रक [सू] मतना, टरकना । सवद (मूध २, २ १६) ।

स्य सक [भि] सेवा करता । स्र्यंति (सय । १३ ६--नम ६१७)। सप देको स = सन् 'वंदिए स्वो समार्ग'

(च ६९५) । संवदको स≔स्क (तूम ११२ २३

39 FP-49 9 IND धाषाः उपा स्वप्त १६)।

सम देशो सग=स्कत्। (करि सी ['सप्तिवि] स्वह्वर, ४४ (था २०)।

संय म [सदा] हमरा, निरन्तरा 'मस्तुतो बन करेड केरूपे' (अन) । बास्त न ["बास्ते]

इमेरा निरुत्तर (बुगा बर) । सम्पूर्व शिवा १ संस्था-विशेष सी. १

रे धी की बंदनानासा (जना चना बाद देः मी २६७ वं ६)। ६ बहुत, मूरि, सनस्य बंब्नावासा (सामा १ १—पत्र ६३)। ४ मध्यपनः येव प्रकरशः सम्बोश-विशेषाः विवाहनवारीय एकासीव वहानुस्वस्था

पमता (सम ८०)। इतंत न [कान्त] १ एल-पिरोपः २ विशतकान्त एवी से बनाह्या(क्षेत्रमा२६८)। किसी र्ष ["ब्ह्रीर्ति] एक भागी जिन-देव (पन ४६)। 'सच (१य) किसी' (धम १४३)। गुणिअ भि [गुणितं] सीप्रना(बा**१ गुर** ३ २६२)। नवी की ["ब्ली] १ यम्म-विशेष पापास-रिजा-विशेष (सम १३७) वंश वीप)। २ चड़ी पोता(रेव १ टी)। व्यचन िक्वलं ] १ वस्तु का निमान (देवेन्त्र २० )। । देखो सर्वज्रस्थ । २ एक की एक पाति । ६ वि राजम्बन-राजों का बना हुया (केनेन्द्र २६१) । ४ पुनः विद्युष्टाम नामस्य बदास्कारः । पर्वत का एक शिकार (इ.क)। तुवार न [द्वार] एक नयर (धैत) । थणु प्री ["धनुष् ] १ ऐरस्त वर्ष में होनेतला एक बुक्तकरपुरव (सय १६६)। २ माण्य वर्षः। में होनेवामा बसवां दुसकर पुरूप (ठा १०---पत्र ११६)। यह की [परा] सुप्र कनाः ं की एक जाति (बार३) । पत्त देका यच (शाया १ १--पत्र १६)। पाग न [ पाक ] एक सी योपनियों से बनता एक तरह का उत्तम तेला (शाया १ १ — वक्ष १८० हा के १.—पत्र ११७)। पुण्छा को [पुट्या] बनस्पति-विशय सीथा का बाइब (पर्स्स १ —पत्र ३४ व्हान ३)। पार # (पमैन्) इसू, उत्था (पम १७४ <sup>†</sup> क्षे) । बाहु दूँ [बाहु] एक धननि ! (परुष १ ७४) । शिसमा भिसा 🕸 ["मिपञ्] नशक-निशेष (११% पडम २ ६व)। यम वि [तम] शीवां १ ६४)। यह वृ [रिम] एक कुलकर पुरुष (सम १४) । रिस**र् १** ["बूपम] ध्योग्यन का वैदेशकी मुदुर्ज (गुज १३) । बह देखों पह (देर ६१) । बत्तन विपन्नी १ पथ कमन (पाध)। र सौ पशीबाजा कमल पद्म-विशेष (मूपा ४१) । व र्यु पधि-विद्योग जिल्लाम रक्षिए 🖯 दिशा में बोलना प्रथमुक्त बाना जाता है (परम ७ १७)। सहस्य 🗐 विहस्ती

संक्या-किरोग साम्रा (सम २ मनः नुर ३

२१: बानु कः १६४)। सहस्सद्ग वि

िसहस्रवमी बाबर्श (ग्रामा १ ८— पत्र १३१)। साहस्स नि [साहस्र] १ धावा-संक्ष्मा का परिमाणकामा (खामा १ १—पत्र १७)। २ ताच रूपमा निसंका मुख्य हो शहू (पन १११) दसनि १ १३)। साइस्सि वि "सहस्तिन् वक्पति, बधानीस (बा पू ११४)। साह्रस्सिय नि िसाइसिंह देवां साइस्स (च १९६४ चन)। साहस्सीकी ["सहस्रा] वस बाबा(वि ४४७ ४४०) । सिक्सर वि िशर्करी छउ बंडवासा सौ दुक्कावाना (बर ४ २२ १३३)। दाय विगीसी प्रकार सं, सी हुक्या हो ऐसा (मुर १४ २४२)। दुर्चय [दुरुवस ] सो नार (हेर १६ दाबा बढ़)। उर्द [ियुप्] १ एक कुसकर पुस्य का नाम (सम १९ )। २ महिरा-विशेष (कुन्न १६ चन)। लिंग स्पोश दूं [ौनोक] एक राजाका नाम (विपा १ ४<del>—</del>पत्र ६ धंवाती १)। सम बन्नो सर्थ = १३वं समग्रमणा व एत्वं

(पंचा १ ३१) ।

सर्व देवा सई = सहन् (वे ८०)। सर्वे स [स्वयम् ] धाप नुद, वित्र (माचा १ ६ १ ६ मृर २, १६७ भन- प्रापू তংঘনি ২২ তুনা)। হয় বি [তুর] शुर किया कृषा (मन)। नाह पूं भाही १ वबरवस्तो प्रहुण करता । २ विवाह-निरोप (दे १ १४)। १ वि स्वयं प्रह्मु करने-बासा (बच १) । पम पूं ["प्रम] १ क्योतिष्क श्रह्न-विदेश (द्या २ ६---पत्र ध्रह्न)। २ भारतवर्षं में प्रतोत कर्स्सारणी कार में कराध चीवा पुत्तकर पुरुष (सम. १४.)। ३ धाधामां स्थापिता नाम में भारत में हानेशता चीना कुलकर पूरप (तम ११३)। Y बायामी बरवित्ति काच में इस भारतवर्ष में होनेवाते चीचे जिन-देव (प्रय ११३)। इ एक जैल मुनि को धपराण संगरनाज क पूक-जन्म में द्वापी (पडम २ १७)। ६ एक हारका नाम (पत्रम १६, ४)। ७ नेप पर्वत (शुक्र ६) । द नन्दोचर द्वीत के मध्य

में पविष-विद्या-स्थित एक श्रेत्र-विदि (पव

सर्वजय—स्थ

विश्वर्ते कृष्या नियम्बित विवाहास्त्रियाँ में से

सपनी इंच्यानुसार सपना पति वरण कर से

(अनः भक्तक श्रीव ६१) । यदी भी [पैरा]

धपनी **रण्डानु**सार वरस्य करनेनाची (पदम

१ ६, १७) । संबुद्ध वि [संबुद्ध] स्वर्ग

२६६ टी) । ३ 🔳 एक शपरकालाम

रामा रामछ के जिए पुनेर हारा बनाया

इच्चाएक भगर (प्रसम्भ १४३)। १ मि

द्याप से प्रकाश करनेवाला (पञम १६ ४)।

"पना की "मना" १ प्रथम बाबुदेव की पटरानी (पटम २ १=६)। २ एक शामी कानान (क्य १ ६१ टी) । पह केवी पस (पदम च २२)। सुद्ध वि "सुद्धी सन्य के बर्पण्य के जिला ही जिल्ला रारत जान रूप रोच्च (ल ४३)। सुर्व [भू] १ म्ह्या (पर्वा १ २ — नत्र २८) । २ कारत में प्रश्नम क्षीसचा शानुकेत (प्रम १४)। १ स्टब्रॉ निन्देन का क्लबर<del>—पुर</del>ूष रिज्य (समं११२)। ४ जीव सालवा जेतन (स्थ २ २—-पत्र ४७६) । १ एक महा-सावर, स्वयंपुरमध्य समुद्रः 'बाहा श्रयंगु उत्तरीया संदर्जे (सूम १ं६२)। ६ पून⊾ एक देव वियान (सम १२) । देखी आू हे मुनोहिया की ["सुगाहिनी] सदलती केमी (प्राच्य २)। मुरमण र् [ मुरमण] आहे भूरमण (पएड २ ४--पथ १६) पडम १ २ देशंबर ७ सूब रेद, की ३,२—स्थ १९० क्षेत्र २११)। सुव सूर्व[मा] रै समावि-दिव सर्वक्र 'नय वन नाव् सर्वपूर्ण' (स.६४७ इनर १२२) । २ ऋद्या (शास-पडन २ ४ ती ७ से १४ १७)। ६ धीस्य बामुबेब (पठम १८११) । ४ ध्रवस्त का एक योखा (पचन १६, २७) । १ अल्लान् विमयनाथ का प्रयम शासक (विचार ३७ )। **इ.इ.स.** स्वन (प्राक्त ४ )। देखी सु। "मूरमण 🖠 ["मूरमण] १ ध्युव-विशेष । २ डीप-विकेष (बीच ३ - २---पण १६७) १७) । १ एक देव-वियाश (शत १२)। भूरमजसद् र् [ मूरमजस्त्र ] स्वतंत्रसम् द्यीप का एक घरिष्ठाला देव (जीव ३ ए----पत्र १६७) । मूरमणमहाभद्द 🖞 🔭 भूर मणमहाभद्गी वही धर्व (बीन ३ २)। मूरमणमहाबर 1 [ मूरमणमहाबर] स्वयंपुरमञ्ज सपुत्र का एक शनिहातक देव (भोग १ २--पण १९७)। मुरमण्डर 1 ["भूरमधावर] वही धवन्तर प्रेन्ड वर्ग (क्षेत्र २ ३)। वस् वृं [क्षर] क्रम्याका 🛭

बात-तरम (क्षम १) । सर्वज्ञप र् [शतस्त्रज्ञय] एवं का ठैपहर्ग विषय (सुषय १ १४)। सर्वज्ञस्त र्ष [शतकत्रस्त र एक कुककर-पुरुष (सप १६) । २ वस्य कोकशब का वियान (भव ६ ७--- नत्र १८व)। वेशो सय-व्यक्त । ६ ऐरमत वर्ष में प्राप्ता भीनाई जिन्हेन (पद ७)। सर्वमधि को [झाइन्मचे] केन्ववेद (द्वीष 1 (84 ) सकारेको समय (पर ८६ कम्प ४, ६ )। स्याबी 🛍 💽 वांडा, परमी पोसने मा क्य (दे स, ६)। सवद पुंग [शास्त्र ] १ याही (पत्रम २६ २१) 'श्रमको पैदी' (पाय) । २ म. मकर विशेष (परम १ २७) । "मुद्द न ["मुख] छ्यान विशेष वहाँ नववान् ऋषधेव की नेमक्कान प्रथम इया था (परन ४ १६)। संबद्धान देवी सगदान (क्रम ४४ )। समज देशो स-भग = स्व-जन । क्ष्मचल विद्या र मुक्क वर (वता पुपा १६१) । २ अस-मानिः सरीर-पीड्रा (राष)। स्रयण व [शतन] १ वस्ति स्वान (भाषा १ ६,१ ६) । २ ६ म्याः विश्वीसः (यउकः क्रुबाः गा६३) । ६ निशा (क्रुबाः ४ स्वाप क्रोमा (पर्यक्ष २ ४३ धुपा १५१) । संयणिका न [शयनीय] सम्या विश्वीतः (सामा ११ --- पण ११ मदा)। सम्बद्धान केलो सन्यण = १न-वनः 'स्त्रास्य सर्वातुरमञ्जा मानमा" (योषमा १ हो)। संपर्णाम श्रेमी संपन्तिम (स्वप्न १९) १०३ धुरवस्)। संयण्य केशे संज्ञण्य (महा) । समृष्ट् केवी स-मृष्ट् = ब-तृष्तु । सक्तावि [वि] मुक्ति, ह्यांत (रे व १)। समझ केनो समझ (वृता २ २)।

समय वि [सवव] विशवर (अन नु १३३ पदा) । सयय पूर्विश्वकी १ वर्तमान मनर्सा काल में जरकन ऐरवत क्यें के एक वि (ब्रम १६६) । २ घामामी उट्यानिय बारतवर्ष में होनेवाचे एक जिनवेव के 📳 याम की अवदान महाबीर का भार (ठा ६-- पद ४३६) । १ स. र्स समुदाय (का **गा सम्ब** ११)। सबर देवो सायर = शनर (विवे १६: सवर्ध्य केनो सवराई (व ७६१)। समरा देवो सक्ता 'कबर' दक्षि चं दूब' दुशनु सक्तिस (प्रज्ञन ११४६ ≈)। सयराई । य [व] १ श्रीक, जन्मै ( सवराहो 🕽 ११ कुमा गरक नेहर ६ **९ पुत्रस्तु, एक साम (मिसे ६४६)** यक्तनाव् (धीप) । समिर देवी सन्द-रि= सन्दर्ध (नि ¥44) 1 सवरी की शिवायरी क्य-किटेक र का बाह्य (पर्या १— पद ३१)। संस्कान (शक्क) बंद दुक्ता (दे १ ा सक्छ वि सिक्छी १ चंत्र्र पूर्व । २ समग्र (का ६३ अनुग्र तुपा १६ वेदः भी १४० प्राप्तु १ व्य १६४)। र्द्र ( पश्त्र) 'पुरास्तार' सः स्वी 🙉 बुनि (भारे ६६)। भूसप्प 🖠 🖁 स् एक केनकशानी दुनि (पबस १२ । रवेस दूं [ ।वंश] स्वरिक्षी वाक्य, प्र गामच (प्रकट ६२)। सबस्ति है [ध्रत्रस्तिम् ] मीन मक्का ८, ११) । सपहरिवय वि [सीवहरिवक] १ 🖽 चे जल्ला ⊨ २ न. <del>राज विरोध</del>ः मि**र्**म वर्षियो विकास प्रवासिको सङ्ख्येती । YER YER) ! समाचार वैको सन्याभार = प्रश्नचार । सना बार वेद्यो सक्षा-बार = प्रवा-वार

सयाज देवी स-याज = स-वान ।

स्थाकि ई [शवाकि] भाष्ट्रसर्व के

यहारहर्षे किनदेश का पूर्वजन्मीय नाम (पव ४६। छम ११४) । वेबो संगास्ति ।

स्यालुनि [स्यास्तु] सेने की भावतकार्का भावती (कुम)। स्यापरी की सिदायरी जैतिका चन्तु की

ययावरा का [सर्वाया] शास्त्रव गाँउ न एक वाति (उत्त ३६ १३१: शुक्र ३६ १३१):

सवाबरी देवो सवरी = राजावयै (राज) । सवास देवो सनास = स्वयंश (कास यीम

१२४ ताट—जुम्म ४२)। समासम वि [रातासम सदासम] सुम्म सिमनामा (मन)।

सम्बं केहो सक्क = छ्यत् ; 'सम्बंभद्रति छन्यं क्लोब्स्यापरका बसी देखें (वर्मीव १८)। सम्बंधन देखें सर्वाधन (वर्मीव १०)।

सन्दि इच्छा स्वयः = स्था (ई. ४. १२४. बर्)।

सर पक [स] १ तरता विश्वकता। २ भवत्वत्वत्र करता व्याप्य वेता। १ व्युष्टरण कण्या। यद्ध (हे ४ २१४) सर्पेक्षा (चल्ये २३)। इ. सर्प्याक्ष (चड २७) सर्पेक्ष्य (युषा ४१४)।

सर वक [स्तु] बाद करमा । वस (दे भ भग कुद्द रश प्राप्त) । कुट सर्गत (बुध १६५) सरमाण (कामा १ १—गन १६६) क्या व १६५ कुत १६६) । हुक्र सर्ग चय (वि १७०१) इ. सर्ग्यो ३ । बुध सर्गर (व १००१) माने १ । बुध १ ॥)। प्रची सर्गित (बुध १ १, १ १६)।

सर तक [स्वर्] व्यक्तम करना। बर्यः वर्रति (विशे ४६२)।

सर कुंग [रार] १ बर्ग्य भगने स्वर्धित कारे स्वर्धित (शाया १ ४४—गण १६११ कुमा पुर १ ६४१ स्वरूप ११ । २ त्यु विरोज यो बरसाई विभागो रोह्यीय विश्वास स्वर्ध्यों (वर्धात १२ ०व्यु १—गण १६ (कुम १) १ ६ यस्पेत्रिया १ ४ भी से से स्वर्धा (विष) । पण्यो धी विष्यों ] युक्तिक्रेय, —प्रत्य स्वर्धात्यों। युक्त विष्ये स्वर्धात्येय (विशे १११) युवन विष्यु

मनुष (सूध १४ १३) शिसण पूर्व [भासन] बनुष (निषा १ २—पण २४" पामा भीप)। सिणपट्टी "सणबहिया 🕷 िसनपट्टी ।सनपट्टिटा र धनुपेष्टि बनुष्एड । २ मनुष बॉबने के समय हान की एमा के लिए बीचा जाता चर्मपट्ट-चमके का पहा (विपा १ र<del>—पत्र</del> २४ मीप)। ौसरिन भिशारी पाए-पुर (सिर्प 1 (5# 3 सर प्रे स्मिरी कामधेव (भूमा- से १ ४३) । सर वि सिरी यमन-कर्ता (५४ १ १ ९)। सुर इंस्विरी १ वर्ध-विकेष 'घं वे 'घीं' तक के प्रधार (पराह्व २ २३ विसे ४६१)। र बीत साबि को प्यति सावाय नाव (मुपा १३ कुमा)। ३ स्वर के यमुक्त फबाफ्त को बतानेवाधा साझ (सम ४६) । सर पूर्व [सरस्] तकान तमाय (से १ अभाग्य कृता सुपा ६१६)। पंदिः श्री विक्षित्रे समान्यक्रि (क्र १ ४---वस वह)। स्त्रहत [स्त्रह] कनक वर्ध (प्राप्ता के १: १६६ कुना) । सरपंतिया की ["सर पश्चिति वेशि-वह ध्हें हुए धनेक

वासाम (पद्मार १.—पम १४)। सरकेशो सरय = श्राप्त (गा ७१२)। विंदु वृष्टियुर्वे श्राप्त अस्तुका अन्त्र (तुर २ ७ ) १६ २४६)।

सरक की [सरमू] नदी-क्टिंग (क ६, १---पन ६ का वी ११: कस)।

सरंग (बप) पू [सारङ्ग] फल्टनिकेय (पिष)।

सर्थ पू शिरम्ब हाब वे बतनेवाचे वर्ष की एक जावि (स्वतः १ १---पव व)। सरकशा शक सि + रक्ष् वे सम्बद्ध कराई

स्थलका । सल्याप् (त्राप्तः ११४) । ११४४) ।

सरक्छावि [सरजस्क सरस्य] १ शैव-मर्ग शिव-अक, तीत शैत (योग २१०- मित्रे १४ कत ६७०)। २ वि रमो-युक्त (याव ४)।

सरक्स द्रंब [सन्दर्जस ] १ बृति रजः 'कपरक्सीद्रं पार्ग्यः' (वर्धः १,१ ७)। २ अस्म (विक १७- ग्रीय १११)। सरा। रेखो सरय = शरक (ग्रामा १ १८---यद २४१) ।

सरंग वि [शारक] शर-तृश से बना हुमा (सूर्य वाकि) (साथा २ १ ११ ३)। सरिगका (वर) की [सारिक्चम] प्रन्य विशेष (विष)।

सरह पूर्विस्टो इन्नास, निर्माट (जावा १ य—ता १३६ रोध ३२६१ कुछ २६७१ वे द १११ तप यू २६८ तुमा १७७)। सरह ्रम शिखाद, की बहु कत नियमें

सरक् ृत [श्रुझाटुः क] बङ्ग्लल निसर्ने सरक्ष्य } प्रस्थि—ग्रुष्ट्यी न वेशी सा कोमक फस (पिड ४४। सामा २ १ ८,६ पि बरा २११९)।

सरण पूर्व [शरण] १ नाख रक्षा (माना ध्या १ मानू ११६ डूमा) २ माराज्यात (पाना डूमा २ ४२)। १ मुत्र मान्य स्थाना 'मिनासहराराज्यादेशीय विष्य' (बेबीब ११)। व्या वि [व्या] माराज्यात (पान्यात)। मारा वि [गात] राराज्यात (पानू १)।

क्षरण म [स्वरण] स्तृति वाच (धोष द) विवे ४१६ महा वर ४६२ द्वीप वि ६)। सरण म [स्वरण] ग्रामान करना व्यक्ति करना (विवे ४६१)।

सरण न [सरज] बनन-(राक)।

सर्पण पूंची [सर्पण] १ नाई, एस्टा (तास-नुता २ कुत्र २२) 'स्त्रने बरणो सन्य कहियों (सार्व ७१)। २ मानवास क्यारी (पत्र)।

खरण्य वि [द्धारण्य] श्रास्त कास्त क निष् वाध्ययणीय (तम १४३ वर्षकृ १ ८०० वत्र ७२ नुषा २६१) सन्तु १४८ संबोध ४८)।

सरिच म [वं] शीम, जस्य सर्वा (वे स वं)।

सरव वेबी सरथ = राज्य (अप)।

सरभ देशो सरण्य (दुता १८३) । सरभ देशो सरह = घटण (त्रसः शासा १

सरम्बद्धासम्बद्धाः चरत्यः (अन्तः श्राबाः १ १---पणः ६४ः पद्धः १ रे—-पणः कानाः कदरे पिणे)ः

a 23)1 सामय रूब, [अर्मेक] केत-विशेष (पट्टम 24 (2)1 सहय प्रेन शिरद् ने ऋतु-विक्रेफ वासीय--स्मीरवन क्या कार्यिक ना महीन्य (परह २ २---- एव ११४ सब्द्रा से १२७ सा १६४ स्त्रप्त ७ ३ कुमा है १ १a)३ 'मूत्र वार्या माना पियं पिमनाप्यं नाव नक्ष्य स्टार्न (नजा ७४)। यंद्रपुं विम्तु तस्य स्तुना चांद (छामा १ १--पन ३१)। देखो सर = शह। सरप र् [शरक] कह-क्छिप धरित ऋता करने व किए प्रतिश का करा जिल्ले विका भारत के बाह (स्तान्ध १ १०--- नम २४१)। सरम प्रक्रिको १ मध-विकेष ६६ वर्ग बादवी का क्या हुए। क्या १, इ---पन १३ दुना ४ ६ का ३३१ स इस १)।२ मच-नान (बळा७४)। धरव देवा स-स्य = ध-रत । सरय (प्रव) पू [सरस] क्ल-विकेप (पित्र) । सरक र् सिरकी १ का-किरेप (परवा १---पष १४)। २ ऋतु, माद्य-राहित (रूमा क्छ) । १ धीना, धनक (नुमाः नवड) । सर्पक्रम विस्थिति शैवा विमा हमा (दुनाः स्टब्ह) । सरकी भी [व] चीरिकः युह्न कीट-विशेष भ्येंद्रुए (देव )। सर्काभा ध्ये 📆 १ कन्-विशेष नाही । निवडे शरीर में बारे होते 🕻। रे कुछ काश का चीड़ा (वे (# ) t सरव र् [शरप] दुरग्रीकों की एक प्रशास (तुप २ ६,२१)। सरस विस्ति । स्टब्स्ट (धीनः धीनः बार)। रव्या र् िरव्या प्रमुद्ध शावर (વેદ ૪૬) ા सर्पसन्त्रभ [सर्पसंज] कवल, वध मर्राम्य 🕽 (इम्मीर ३६: राम) । सरसिन्द् व [सरसिन्द्] कनन वस (ता oर री: बम्बल w६)।

सरभाग वि दि स्पृत याद किया हुमा (दे

सरसी औ सिरसी देश कवाव-वहाव (बीया अस प्र वेदा सूपा ४ववे) । स्थान िस्क्रीकमस (समस्य १२ १६६)। सरस्य प्री सिरस्य भी १ वाली प्राची, भाषा (पाध- धीप) । २ वाली की प्रविद्वाची देशी (पुर १ १६) : ६ मीशारीत मायक श्वाकी एक पटरानी (ठा४ १--पन २ ४ बामा २---पत्र २१२)। ४ एक राज-क्की (विपार २---पत्र ११२)। १ एक वेन साम्बी को मूर्यास्ट कालकाचार्य की बहीत को (काक) । समा वे [शरम] १ किनारी पश्ची एक वादि (तुपा ६३२)। र हरिबंध का एक धवा (परम २२ & a)। १ सस्यक्त के एक प्रवासाम (बढ्य ११ १)। ४ ध्<del>क</del> सामन्त नचेश (प्रवन 212) L Z एक वानर (दे ४ १)। ६ अन्दरिक्षेप (पिंब) । सरक पंति १ इथ-विशेष वेत्रस्था बेंद का पेड़ (देव ४७)। २ सिंहः सम्बाला (दे Yo सुर १ २२२)। सरक (वर) वि दिख्या वि । त्रतीय विकास सम्बद्ध देखो सन्धास = सन्दर्भ । सरका 📽 सिरमा नधु-नविका (१२) सर्ग वृत्री [सर्ग ] तूरीर, तीर रक्ते का भ्रमा—दरक्त (ये ७ )। संग्रंकी वी नावा (दे २)। सराग देवो स राग = स-राव । सर्राष्ट्र भी [शराटि, सर्राष्ट्र] वही की एक बावि (गउड) । सराव दे [राराव] निद्री का नाव-विशेष **इन्हो**स पूरना (दे २ ४० भूपा २६६) ; सरासण स्थो सरनसण = रायस्त्र । सराह वि [व] क्लींबूर- वर्ष न प्रवत (है सराह्य र् कि सर्व शव (है सरि वि [सहश् ] बहर, वरीका तुर्व (भन सामा १ १--पत्र ६६। ब्रीत हा \$ 6 68.61 Lat) 1 सरि ध्ये [सरिन्] नचे (त १ २६) नूना ६१४४ पुर प्रकृति स्टा)।

नाइ प्रे "नाथ ] समूर (वर्गीप t t) । वेको सरिजा। श्रद्धिक कि स्थित यह किया क्षय (प्रम ३ ६४ सुपा १२१) ४६२)। सरिक्ष वेचो सदि ≈ बस्य । 'सोमेपासा सरियं संपरिषया विश्वसा देवियाँ (धीए)। श्रीकोन सित्रमी प्रश्नीय क्या अहर्ध्वराएस भरिषे (रमस १ )। श्रीका की सिरिती नहीं (क्या के र १६ लक्षा) । बहुपु पिति । सपूर (क ₩ ¥8 € ₹) 1 संरिक्षा की [क] पत्रता द्वार (पर्याद र ४--वर ६०३ हुत १ सुरा १४३)। श्ररिक्छ } वि िस**रक्ष**ी **भरत,** परा<sup>द</sup> सरिष्य हेतुम्य (प्राप्त वर्ध प्राप्त है है १४२) २ १७३ इस्मा (। सरिक्त वि सिन्हें दिलरक कर्ता (ब ५---पम ४४४)। सरिमरी की दिन समन्तर क्येक्ट्री प्रवर्णी में 'सरवर'ं सभी वाया सेसारि खरिमधी (महा १)। सरिर धेवी छरीर (पव २ ४)। धरिवाय व विशे प्रत्याद वेक्नामी इप्रि (t १२): सरिस विसिद्धी स्मान प्रदेश दुन (हे १ १४२) मन वर हैना ४ )। सरिस र्बंच [दे] १ श्रष्ट साम्य का धमशोबी तिर्मातकाल वडवाबाहरू तरिहम्म । **उपस्पिम्धिस्क्रेपस्**चे श्यक्रिये इंबर्स बस्ह । (बळा १६४)। "बादशो बंधानी क्वबस्ता तेया वरितोति (बाह्य) । २ सुस्वताः समानता (वंश्वि ४०)<sup>०</sup> "कीरसाधियं पनोइनं नरबर्रिक्ट (ब्हा) । सरिसरी थेवो सरिमरी (म्प्रा)। सरिसय र् [सर्वेष] करने (चंडा बोर्ग त्र हो के दर- देनी। संस्ते तः कर-कर्

४७३ सामा १ र—रम १ ७) ।

4 4)1

सरिसादुक वि दि समान, बहुत (र

सरिस्सय देवो सरोसय (पत्रव १ १९)।

सरी की [में] मन्ता, हार (मुना ६६१) ।

सरीर र्नुन [शरीर] बेह, काय छन्न (सग ६७ छवा कूमाः जी१२)ः कइ छो मेर्रे सरोय पर्णाचा (पर्णा १२)। जाम, ैनाम पून नामन् ] कर्म-विशेष शरीर का कारण-मृत कर्म (राजः सम ६७)। बंघण न ["बन्धन] कर्म-विशेष (सम ६७)। "धंपाथण न ["संपादन] गाम कर्मका एक सेव (सम ६७)। सरीरि र् [ शरीरिम् ] त्रीव बारमा (पवन ११२ः १७) । सरीसम् १ दूं [सरीस्प] १ सर्वे साप (का सरीसिव रेश सूच १२२२ १४)। २ **सर्प भी क्षाब्र** केट से <del>प्रस</del>नेकाला प्राणी (सम ६ )। सङ्ग्र सस्म } **ध्या** स-रूप = स्व-रूप। सङ्घ केदो स-इस्त = सङ्क्य सङ्घ। सक्षिप स्वरूपिम् विशेष शाली (ठा २ १--पम ३०)। सरेबब्द देखों सर ≃ छ. 🗐। सरेवय दृदि] १ इंछ । २ वर का थल-मबद्धाः मोरी (देव ४०) । संरोध न [संरोध] इन्स्स पण (हुमा मन्द्र ४२ तुमा १७ २११। क्रुप्र २१०)। संपेद्धन [संपेद्ध] इनर देखी (प्राप्त) इस्प इप्र १४)। सरोवर न [सरोबर] बढ़ा छाताब (मुपा २६ महा) । संख्य देशो सम्बद्ध = स्वयं (राज) । सम्बोधी दि सेवा(देव १)। संबद्ध सक [रुज्यप] प्रशंसा करना । सनहरू (देश वद) । कर्यः सत्तरिज्यव (पि ११२)। 🔻 सम्मद्भिक्ष (दूना) । वैको सस्प्रह् । सन्दर्भ (गाया याज्य (गाया याज्य पुषा १४२)। २ एक वस्तिक-पुत्र (मुपा **520)** 1 संस्क्ष्ण न [इत्स्रपन] त्रर्शना शताना (शा ११८ वि ११२)। सम्बद्ध र् दे दि दुन्दी यादिका हाना (R = 88) 1 सस्यक्ष वि [स्स्मिपित] प्रशंकित (हुमा) । 111

सल्डिक रेडो सल्ड् = रमाप्। साध्यम व [शास्त्रक्य] विकित्सा-शास--बायुक्ट का एक धंग जिसमें अवसा शावि शरीर के कर्म भाग के सम्बन्ध में विधिरसा का प्रतिपादन हो वह साम्र (निपा १ ७---प्रमुख्ये)। सद्धाया) और शिक्यका १ सभी समाहि सदाया (पूष १४२ १ कपू)। २ पश्य-विशेष एक प्रकार की नाप (भीक्स १३८ कम ४ ७३ ७३)। पुरिस दू [पुरुष] २४ विनवेष १२ वक्नर्सी ह बामुदेश । १ प्रतिबासुनेष तथा १ वस्तरैय ये ६३ महापुरुव (संबोध ११)। स्टब्स् रेको सन्दर्भ भाग् । समाहर (प्राप्त २८)। वक्र सद्धाइमाण (या १४६) सम्म १११)। इन्सब्बद्दणिखा, सञ्चाद्दणिय, सकार्यीज (प्रष्ट २० काया १ १६---पण २ १ सुर ७ १७१ रम्या १४। पुजम ६२ ७३ पि १३२)। सर्वाह्ण ग [रस्त्रघन] कावा प्रयोगा (साररभाषा १ ६)। सद्भश्च की [रखमा] नरांस (प्राप्त है र ११ पष्)। सद्यद्वित्र वेशो सस्वद्वित्र (द्वृता) । स्रक्रिक पूर्त (स्रक्रिक) पानी जन 'सरिवा ए सर्वति ए वंति नामा (तूम १ १२ क क्रमा शमु ३१)। "जिह्नि पुँ ["निधि] सायद् समुद्र (वे ६ १) । नाइ ( दे [ नाम ] सहि (पतम ८, ६६)। "बिक न ["पिक] मुधि-निमेंट जमीन से बहुता भरता (भन र्क ६—वद ६ ४)। यसि दृ[यसि] संदूध (पाध) । वाक् पू [बाह्] नेव (परम ४२ ३४)। इर ई ["धर] वही (से १ १४) । । वह । वर्षा**भी** ["मजी] विजय-क्षेत्र-विशेष (श्वाम शाया १ व----पत्र १२१)। त्रचय [ीमर्स] वैद्या≪ पूर्वंत पर उत्तर किता-दिक्त एक विद्यापर नगर (४४) । संब्रिया की [संस्क्रिय] महानको बड़ी नरी (धम १२२)। सस्तिक्ष्याय वि [सस्तिकोच्छय] प्यावित, हुबोम्स हुम्स (पाम) ।

668 सक्रिस पड [स्वप्] सोशा रुपन करना। सिवसिद्ध (पद्)। सस्य वेचो स-स्य = स-सग्रा। सस्रांग र् [स्बाक] श्रावा प्रशास (मूप १ १६ १२)। देको सिख्येग। सस्रोग रेको सन्ह्येग = सनोष्ट्र । सस्रोण रेको सन्स्रोज = ए-मस्छ । सस्रोय देशो सस्रोग = फोर्क (सुम १ 🗈 सक्त पुन शिक्ष्यी १ घक्त-विशेष तोमर, शांक 'तमी सस्त्रा परण्यां (ठा 🖡 ६—पत्र १४७)। २ शरीर में चुना हुमा कॉटा शीरकादि (सूप २०२२ २ पंदा **१ १६**। प्रस्तु १२ ) । १ पापानुद्वान पास-किया 'पार्थाद्रमस्य स्था' (उन सुध १ ११, २४)। ४ पापानुद्रान से सबनेवासा कर्ने (बूध १/१४, २४८ मद १) । ५ दू भक्त क नाय क्षेत्रा नेनेवाले एक स्था का (पडम वर २) । ६ न प्रम्थ-विरोध (पिन) । गिवि [क] सस्यक्षा तून मादि सस्य वे पीवित (पद्ध रु. र---वन १६)। ग न [ैंग] परिकान जनकारी (सूथ २ २) X9) 1 सङ्घ 📢 📵 हाम हे महतेमाने हर्ग-आहोद जन्तुकी एक जाति (सुधारु, १२६)। सखरूप नि [राज्यकित] राम्पपुष्ठ, निसको क्य पैच हुवा हो 📭 (खामा १ ७—पत्र 1 (253 सङ्गई की [सङ्गी] बृध-विशेष (सामा १ धे—पथ ११६३ चप १ ६१ हो) पुनाः वर्नीव १६ सुपा २६१)। सञ्चन देवी सञ्चना⇔ इस्थन्द इस्यन्त । सत्तम देशा सन्द्रमा = सन्नाम । सख्य पुन [खाल्यहरय] प्रापुनेंद का एक ध्रंय जिसमें राज्य निकासने ना प्रतिसदन किया गया हो वह शास्त्र (विदा १ ७---मद्धा की [शक्या] एक वहीवनि (दी १)। सविधानि [रास्थित] राज्य-पीरित (पुर १२ १४२ नुपा २२७३ महाः सनि)। सिद्ध देवी संख्यः = चं + सिद्धः स्वीदारि (पाच ११)।

८८२	पा <b>र्</b> कस <b>र</b> म <b>र</b> ण्यको	सस्डुद्धाण सम
सानुदाल व [ यह वादाया ] र सम्य को वाद रिकानका (रिता र व - पव को) । र पालीचना प्राणित के लिए पुत्र के वाय हुएल-निरंगर (पीत के कीए प्राणित के वाय के कीए प्राणित के की कीए प्राणित के की	सबन (मा) है [अयुने] एक बाल का नाम (नोह १ है) । देवों सनम = धरख । सनम देवां सवज्य (हम्मीर १७) । सन्द बचों मन्यय = एन्यम् एन्यर । सन्द देवों सन्यय = एन्यम् एन्यर ।	स्वस् दृ [रापण] र साम्मेरा-नवर वासे (शामा र र
नवस्त्राः श्यारगानगणुष्यः तद्वाः (वस्त्र ४३) वसः व स्मृत्युद्धिनं संस्थायसे सदरहुताः (पत्रनः १३४) ।		के तुष (पंतु है)। हे चरु निरोद, शुक्रपूत
स्त्रज रेज सम्बद्ध अस्त्र (शास देश	संश्चिता के निर्मित्तव का वह आधेर	क आरत कर नापर-मृत एक पक (ति ६)। अ सरस्यक हैयारक में जिल्लाकर जिल्ला

संबंधिया कि [वि] मधन का एक प्राचीन वेन निवद (नीए दें देवे)।

ब महाशुक्त देशनाक में तिया पुत्र विभाव (तथ १३) । प्र प पत्र विकेश विभाव

सदन रेजा समन प्रस्त (बाध ११

र्मा ।

वृंसि (केश्य ३४१)। द्वा और गिद्वाी

सम काम सतीत सावि सर्व समय (भय)।

(मन ११४)। ६ एक नगर का नाम (विभा १ ४ — पत्र ६१)। ७ सक्युतेनक का एक पारिवर्धनक विमान (हा १ -- पत्र ४१ व मीप)। व इटिवार का एक सूत्र (सम १२०)। हर्ष्ट्रं स्थाकी एक वाति (राज)। र देन-विमान-विशेष (रेवन्द्र १३६ १४१)। बोमदा व्य [तोमन्त] प्रविमा-विशेष एक कर (प्रीमा ठा २ ६--- नव ६४ व्यव २६)। स्त्रमसमिद्ध पुं ["स्प्रमसमुद्ध] पत्रकास्त्रको दिवस पही विभि (सुरुक रै १४)। कामा की [कामा] विद्या विरोगः विस्की साथमा से सर्व इ**च्छा**एँ पूर्छ होसी है (पडम ७ १ ७) । ताय वि ["गत] व्यापक (शक्द्र + )। साइधे [गा] उत्तर इचक पर्वत पर पहनेवाली पण विन्द्रुमारी केवी (ठा ब---पण ४३७) । गुच है [गुप्त] एक बैन मुनि (पडम रै १६)। का वि ["ह्य] १ सर्वे पताची का जानकार । २ वूँ जिल स्थवान् ३ के पुढदेव । ४ महादेव । १ परमध्य (ह २ <sup>६६</sup> पर्। प्राप्त) । इतुं["प्ये] र साहे-यन का काठीसमां मुहत्ते (सुजन १ १३)। १ पून, प्यकार देवचीन का एक विशान (सम १ ४) । १ सनुत्तर देवसोक का छर्पार्थसिङ नामक एक विमान (पन १६)। ४ पूंछक मर्प (माचा १ ८ ८ २३)। हुसिद्ध पुर [गर्यसिद्ध] १ स्वरोधन का <del>प</del>नदीसर्वा <u>मृह</u>र्त्त (सम ६१) २ एक सर्व-पेष्ठ देश-विवास समुक्तर वेबसीक का पांचभा विमान (सम २)मग संख सीव)। ३ वुं देख्य वर्ष में स्टब्स होनेवाले अवधे जिल्हेव (१व ०) । द्वासद्धा भी ["असिटा] मन-नेल् वर्मनायजी को दोशा-रिप्रविका (विकार १९१)। दुसिद्धि भी [विसिद्धि] एक देव-विमान (देवेन्द्र १६७)। वजु देखों जा (६१ ४६: पद्ध्योप)। पादेको स्थ (स्पूर्भ)। ची देखों आं (गम)। देथ ष [\*त] सब स्वयव में सत्र में (वडवा प्रासू १९ १०)। वृत्ति, वृत्तिस वि [ वृद्धिन्] रेसव कानुसों को केसलेनासा। २ वृंजिल मनरान् बाह्न (यजा मदः सम १। पश्चि)। "रेन र ["रेन] १ एक महिन्द मैन व्यानार्थ

भक्ता की [यक्ता] स्थापक सर्वे-प्राहरू (विसे १८६१)। न्तु थ्यो छा (सम १) प्रासू रंक महा)। प्यनावि ["सम्ब⊊" १ व्यापका २ पूँ सोम (सूध १ १ २ १२)। "प्रमा श्री ["प्रमा] उत्तर वश्रक पर्वेष पर च्हानेशासी एक विस्कृतारी देवी (चन)। सक्तावि ["सम्र] सबसे काने नामा सर्व मोबो 'मरिएमिव स्वत्रमस्त्रे' (स्राया १ २--पथ ७१)। सङ्गासी [ भट्टा] प्रतिका विशेष वर्त-विशेष (पव २७१)। मायविष्ठ 🖞 [भाषविद्व] ध्यगामी काम में महत्ता वर्ष में होनेवाचे बाहरवें जिल-वेच (धम १५३)। य वि [<sup>8</sup>त्] सब वेनेबाबा (पराह २ १—पत्र १९)। याच [श] श्मेश परा (रमा)। रैयण द्रं [रिस्त] १ एक महा-निर्मय (ठर **६**—मन ४४६) । २ वृतः पर्वत-विशेष का एक शिक्स (१८)। स्थणा ध्ये [ैरस्ता] हैरामेन्द्र की पसुनिया नामक इन्हाली की वृक्त चनवानी (इक्त)। स्वयासय वि िंग्रनमय] १ सर्व चर्ली का वना द्वचा (पि जीन १ ४)। २ **नक्स्सीं का** एक मिषि (का १०६ दी)। "दिगादिश वि िविप्रहिक्ती सर्व-चंतित्व स्वसे ध्रोटा (मन १६ ४--पत्र ६१६)। विरक्त स्वी िविरति । पाप-मने से सर्वेषा निवृत्ति पूर्ण संबम (विशे २६०४) । संगय "सञ्चन] मृत्यू (पर्रम---पथ ३२१ पर्व ११ वा ४४)। संबम पू विश्वमी पूर्ण र्थयम (राम)। "मद वि ["सह] सब सहन करनेवासा पूर्णं सहित्या (पडम १४ ७१)। "सिक्का की ["।सका] पथ का **जी**नी नवर्श योर चौबहुरी यमि-तिबि (गुज्ज १ १४)। सो म [शस\_] सब धार है. समाप्रकार सं (जस १ ४ माचा)। स्स न ["स्त] सबम प्रध्य, अस्त बन (१ ८६६ क्रमि ४ वर्ष्य)। इस्म विश्वासिक प्रकार है, सर तम् से (भा वर्षा पर्वा प्रापृ ३

१व१)। १र्णवृ तुं ["नम्य] ऐरवत श्रेष के एक मानो जित-देव (सम ११४) । । गुमुद् पुँ ["।तुमूर्वि] १ मारत वर्ष में होनेवासे परिवर्गे जिन धनवान् (सम १६३)। २ भय-वाल् महाबीर का एक शिष्य (भय १४---पश ६७८)। स्हा भी [ीस्हा] विद्यानियोग (पक्षम ७ १४४)। यि वि [प] संपूर्ण (मध) । संगर्व शिशन प्रतिक प्रात (Ex 161) i सब्बंह्स वि [सर्वेह्य] १ सर्विशायी सर्व से विसिष्ट (क्यू)। २ म पाप (माद)। सर्व्या वि [सर्वाङ्ग] १ संपूर्ण (ठा ४ २---वन २ व)। सर्व-सरीर-म्यापी (राज)। र्श्वर वि ["सुन्दर] १ तर वर्ग में बंद्र। २ पून सर-विरोप (राजा पत २७१)। सम्यगित्रः ) वि [सनाङ्गीण] धर्वं भागती सर्विगीण 🕽 में ब्याप्ट (हे २ १११ हुमा) वे १६, १४)ः 'सम्बंदीलामयतं पत्तेनं तेस वाख कर्य (कुन २३४, धर्मीव १४६) । सम्बण रेको स-म्यण = स-ब्रण् । सम्बयह्य नि [सार्वराध्यक्त] संपूर्ण पनि वे सम्बन्ध रक्षनेवाला धारी रात का (सूध २ २ ३३८ कव्य)। सम्बरी की [क्षर्वंधि] चनि, चत्र (पामः वा ६१६ चुपा ४६१)। सम्बद्ध दू [व रावेष] कुछ वर्धा (राजः न्त्रस् । देखी सञ्जस् सम्पत्म की [दे रायस] दुशी सोहे का एक इपियार (दे व ६) । सम्यवेषस्य देशो सन्म्यवेषस्य = सन्मवेदा । सञ्चाय देवो सदय १५ = सर्वाप । सब्धाव देवी सन्ब्याव = सन्धान । सम्पावित च [द] सर्व संपूर्त 'एया वृद्धि सम्बार्वति सोववि (माचा) बस्तारंति च एरं वीतं एरं पुरस्मीरणीय्' (सूच २ १ ६), समार्थेति च छं सोवंडि' (ग्रूम २ १ १) सम्बं वि सम्मानीव कुतमाणकाश्वसमयीव वावतियं योचं प्रसरं (भग १ ६—प्रव ww) : सम्बद्धिः स्ट [मर्वदि] स्ट्रालं केन्द (खावा १ च-पत्र १३१)।

सक्तीसहि की [सर्वोत्रीय] र तांक्न रिशेष विकार प्रकार है तरीर की क्या गांति तर्व भीत सीतीर का काम करती है (रायह न, (न्यार १६)। र नि कल्पिनिकेश को प्राप्त (प्रक)। सस्स पक [बास्त] स्ताव नेता परित्या। स्वाद (प्रकार १)। वक्त ससंद (राज्या। १ न्यार १६ या १४६ युर १२ १६४ काम नहां व्याप्त (राज्या)। सस्स में शांता विकास १ १ न्यार

सक्तिपार केता स-विषया = स-विवर ।

(संतक): इर दूं मिर्मे क्षांस्य (द्यास)
१ ११ दूर १६ ६ : ई व वह कुमा, करवा १६ १ रागे: सर्वा ६ १ रागे: सर्वा ६ १ रागे: पुर १६ १ ११ गुणा २ कप्पु १ रेफो): व हुम्मिकेर (दक्ता १ ४६ १, २): भागत (दक्ता १ ४४) सर्वा (दक्ता १ ४४): सर्वा (दका १, ४४):

२४ ६१)। इंध दू ['विद्वा करणा

सर्विका केवो स-संक्रित स्वास्त्रीहुत । सर्वाग केवो मर्वक स्टामकू । सर्वियण केवो स-संवेषण = स्व-संवेषण । सर्वियण केवो स-संवेषण = स्व-संवेषण । सर्वियण केवो स-संवेषण = स्व-संवेषण । सर्वे ।

सस्त दृं [सराव] वेदी सस्य = का (का)। सस्त्य दृं[कसन] १ दुश्या-वरण हत्ती

यो गुँह (रंडु २ सीत) । २ श्रापु, प्रथम । | ३ म मिश्रास (राम) । स्थानमा केले स्थानमा करणाला ।

ससता केते ॥ मता = ल-तरवा। सस्तरका वि [सरबल्क, सरस्क] १ रुको-वृत्त, कृतवला (सार्व १ १ १ १ २ २, १ ११ आप १)। २ दुंबीस वटका स्था (तृत्त १ ४१ यहा)। सस्तरका व्या (तृत्त १ ४ यहा)।

१)। समा क्षा (स्पार्) बहुद, प्रक्रिये (शित ११७) हे १, ११ इस)।

सिंधि है [साविश्त] र कमा वर्ष (पुण्य स् २ — वर २११ जल कप्पन हुमा। पि ४ १) २ एक विश्वाची का मान्या (पान स् १.१) १ ५ कमान्या का मान्या (शिव्य १९१) १४ एक विश्वचात (शिव्य १४६) । १ सक्करियेक् (स्थि) । १ एक प्राचा का गाम स्

(प्रथ) । ७ वक्षिका क्यक वर्णेश का एक प्रद (ठा ८---पण ४६६) । श्रंद पू विकास्त] जन्दकान्त गरित (शन्द्र १४) । अन्य प्री िश्रक्षा विश्व की कमा होतहर्य यात (पर्का)। व्यंत देशों क्षेत्र (कृमा संग्र)। पभ यह दे मिमी र याज्ये जियके मकाल् चनात्रकां। २ इत्याकः वैद्याका एक राजा (परम १, १) । प्याह्य 🗱 िश्रमा 🕽 एक राजी कर्युरअंबरो की माता (पराय र, ६१: कव् )। सचि तुर्धा मिणि ] पताकान्य गणि (सं ६,६७)। **ध्रहाकी "क्षेता] पण की क्या (बुपा ६ ६)**। वक्क्य न [वक्क] ग्रामुक्छ-विशेष (बीप) । नेग प्र विग एक एक क्यार (कार पर मि)। संबद दू ["फेसर] महानेन शिव (धुपा ४६)। चित्रम पश्चिमित) याच बांस (वे १६, 82)1 ससिष क्यो ससि (भूग)।

स्विचित्रह वि [सिस्मान्य, सिस्मान्य] स्तेष्क-मुळ (सारा २ १ ० ११: क्या) । सिस्मित्र व [सिम्मिन्य] बारा वावि वे क्या स्त्राण साराम वावि का केवल (गीर्ज) । सिसिप्य } क्यां स-सिस्मित्र = वन्नीव । सिस्मान्य केयां स-सिद्ध = वन्नाव । स्त्रीव । स्वस्मान्य वि स्वर्था स-सिद्ध = वन्नीव । स्वस्मान्य विस्तिस्मान्य अप्ताल विकास स्वर्था क्षा

निया (पदम १४ हिमा वेश द्वारा गुरा १७७) । सस्ता केवो सन्द्वा = चन्तुक । ससीम है वेदों सन्साम = बन्दोंक । ससीमा है वेदों सन्साम = बन्दोंक ।

सस्स व [रास्त] १ धन-तत काम्ब (ज १ ४ व्या गूक ३२) । २ वि प्रशंकीक, स्वाम्य (बुत ६२) । वैद्या सास ≠ तस्य ।

सस्तवण वि [सम्रवण] सन्दर्भ, निपृष्ठ (द्रण १,८%) । सरिसय वृं [श्रास्त्रक] इनोवत, इन्स (एज) । सरिसरिक वेको सन्दिसीरम = ए-मीक ।

सरिसरिकी केनो सिन्सिरिकी (उत्त १६ १८)। सरिसरिकी केनो सन्सिरीम = धन्मीक। सरस्य की [न्युम्] बाब, वित या पर्यो की भारत (शाकृ १० सिन्सि ३३३)। सह शक्ष हाजा ] शोबना विरानना। मुझ्के (हुं ४ १ पर्यस कुमा बुत्त ४)।

सह यह [राख ] डोम्या निरामना । सहरं (है ४ ६ वास्त कुरा रहा रहा । सह वक हिस्सू ] सहय करना । खाद । सह वक हिस्सू जित रहे। खाद रे सहिए अपना । खाद । सह वक हिस्सू वाह हिस्सू वाह हिस्सू वाह । सह सहिए अपना । हे सह सहिए किया है कि सहिए अपना । है सह सहिए कराई (वाह वाह वाह किया है किया है

चव ( [ च] र वान्य, वानक ( के. ) () । सद् वि [ चवड़ ] देवों स = व्य (वाना) । वैद्य दू [ चेरा] स्वयंत्र, त्ववंत्र देव (विच) । संस्कृत वि [ चेतुव ] र विच वे हो बान को सच्च । २ वू विक-देव (वीच) । सद्ध वि [ च्या ] र वार्य व्यवंत्र कर्य (व्यव्यं) । १ व्यक्तिक स्वयंत्र कर्य (व्यव्यं) । १ व्यक्तिक स्वयंत्र कर्य व्यवंत्र (व्यव्यं) । १ व्यक्तिक स्वयंत्र कर्य

(ध्यार) १ व कुळील स्तुष्ट की हल भागि (श्या घन) । प्र यः साथ संग्र (स्था भेग भागा भी ४१। मार्च । । प्र इस्त । एक हाम (धन) । स्पाद [क्या] है धान का पेड़ (क्या) । स्पाद [क्या] है धान का पेड़ (क्या) । स्पाद [क्या] है भागे के स्वस्त पाहस्य (है है १ क्या) भागि कि [नारित] है साहस्य-कर्य (भीम है है हैं) । इ.स्टब्स्टिट्स (विसे हैंईका धारक है है) । तन, गर्म वि

िंगर्व) पंपूर्क (नश्स २१-नम ६६०) वन)। रेगरिं गारिम देवो कारि (नर्नेबे १ श.का ४०श मनर ७६)। अर देवो यर (कुमा) । चरण न ["चरण] सङ्बर,

स्त्रव स्थान मेबाप 'स्मिएनिहासीहि भवड सहप्रदर्श (यूद्र )। चर्च [च] १ स्वयाव (कुमाः दिय) । २ वि स्वामायिक (नेम्प ४३१)। जाय वि [जात] एक साय उत्पन्न (णाया १ १ —पत्र १ ७)। "देस पु ["देस] १ एक पाएडव साडी-पुत्र (वर्गीव ८१)।२ राजपूर नगरका एक चन (स्व ६८८ टी)। दिया की विवा म्रोपपि-विशेष (बर्मीव द१): वृंबी की [<sup>\*</sup>र्वा] १ भनून चक्रवर्ती की माता (सम ११२ महा)। २ एक महीपाँच (ती १)। षम्मज्ञारणा की [धमषारिणा] वाली भार्या (प्रति २२) । पंसुकी विज वि ["पाञ्चक्रीडित] बाल-मिन (मुपा २५४) याग्य १ ५—पद १ ७)। "य देखी स (केस्स ४४६) राज)। यर कि [किर] १ स्माप, नाम्भन्य-कर्ता। २ वयस्य दोस्तः। १ क्युवर (याध" ब्रुप्न २ । शक्यु १ गद्ध—एड्र ६१)। यरी की [चए] परनी, मार्था (कुम १६१: स.स. ६६)। यार देवो कार (पाम ह १ १७७)। सग वि विगा सन-सम्बद्ध (पडम १४ है )। (द देखों कार (पदम १३ ७१)। सह रेवा सहा = सवा (ड्रमा) । सद्दर्शियमा इसे [क्] दूरी (वे ८, १) । सहग्रह दे दि । इक सम्बू पांत्र-विकेष हि # 25) L सहरापुर न [शस्टापुरः] वेताल की | चतर येणि में स्थित एक विद्यावर-नगर (इइ)। सङ्ग्रम [क] ब्रह्म श्राप में (बृत्र प्रिंग मद २६७)। सद्यन[मदन] १ विविधा वर्षेषा २ वि महिष्णु सर्ग करनेराचा (स २१)। महर रूप (राष्ट्रर) मध्य मध्यी (पाय: मरह)। स्त्रे स (हे १ २१६) गरह)। सहर वि चि । बाह्ममानको सहस्य भावस्य माना न रियान भाषा नास्तित तस्ति (३व्या) चन्नच मधीते (ब ४३) । सहस्र रि [सफ्स] फर-पुत्र, सार्वस्र(का

सहस्र देवी सहस्स (बा ४४ वि ६२ १९)। लेइरण वृं [°क्डिरण] मूर्य रिश (सम्मद्ध ७६) । क्ला पूं [श्ला] इत्र (सुपा १३)। २ धावसा वस एक सोहा (पन्नम ५६ २१)। १ सन्द-विरोप (पिन)। सहस्रकार पू [सहस्राध्यर] १ विचार किय विना करना (घाषा) । २ घाषस्मिक क्रियां, शकत्मात् करना (भग २४ ७---गत्र ११६)। व कि विकार किए विमा करनेवासा (पाचा)। सहसन्दिय प्रकल्पान् ग्रीय जन्मे तुण्त (पास प्राष्ट्र वरे) । सहसा च [सहसा] घक्तगर, रोध, वस्ये (पाष्ट्र प्रामु १११ प्रांव)। विचासिय न ["विद्यासित] सबस्याद् सी के नव-स्व-मन प्रावि भीवा (उत्त १६ ६) । सहस्स पुन [सहस्र] १ इंक्या-विधेय १४ । २ दि. हवार की संस्थानासा (बी २७ डा ११ टी-पा ११६, मानू ४१ कुमा) । ३ प्र**प्**ट, कहुत (कम्म: यात्रम है २ १३ ८)। किरण पूर्विकरण] १ मूर्प, र्शन (सुपा ३७)। २ एक राजा (परुप १ ३४)। क्स पू [ीम्] इटा देवाचित्रति (कपा प्रचारश्यक्ष) । प्रयंग नयप पुं["नयन] १ इन्द्र (उर हम्मीर प्रः महा) । २ एक विद्यावर राज-कुमार (पडम ४, ६०)। पच व [°पत्र] हजार सर वासा कमले (कम्प) । पाग पून [\*पाक] हुआर बोविंद स बनता एक प्रकार का तैस (आधार र—पत्र १६ ठा ६ र—पत्र ११७)। रस्सि दुं ["र्राशम] नूर्य र्याव (लाया १ १--पत्र १० घन स्वल वरे)। क्रायम पूं ["सापन] एम (व ६२२)। सिर पि [ "शिरस ] १ प्रमुख मस्त्रा-बाला।२ वृं विष्यु(दे२ ११व)। युच क्षेत्रे वस (व ६, १ द्वा १६)। सा स [ शस ] हैनार-हमर, धरोड हमर (बा १२) शा श्र ["वा] मर्श्व प्रधार न (बुस १३)। दुर्च व ["स्टब्स ] इन्सर बार (आर इ. २ १४)। रेजी सदस र सद्भाय १ र ११ टी है। २३६ द्वमा स्वल १६)।

ं सहस्यंबलम न [सहस्राम्रमम] एक उपान, धाम के प्रमुद्ध वेडींगाबा बन (स्राया, १ ८--पत्र १६२ और उना)। सहस्सार पूं [महस्रार] १ ब्राइची देवसाड (सम ६४ मण; यंत)। २ प्राठमें देशसोक का सम्ब्र (ठा२ १—पण ८४)। ३ एक ' हेस-विमान (देवेन्द्र १३४) । बहिंसच पून [\*[वर्तसः 5] एक देव-विमान (सम. ३४) । सहा की [समा] समिति परिपत् (कुमा स १२६ ११६७ मूज १८४)। संय वि िस्त् विषय भदस्य (पामा स्व १०४) । सहारेको साहा = साबा (वा २३)। सहाअ देवी स हाअ = रर-ग्रव । सहाक्ष र् [सहाय] श्राह्मय-कर्ता (ग्रामा १२--पत्र दय पाम से व व स्वन्त १६ बहाभग)। सहाइ दि [साहाय्यवन्] इतर देवी (सिरि **१७- मूपा २१३)** । सहाइया की [सहायिश] यदर करनेत्राती (उदा) । सहार देशो सहनर = वहन्सर। सहाव देको सन्हाद = स्वन्माव। सहास देको सहस्स (मिंद)। हुन्तो म [ शहर ] हवार बार (पर्)। सहामय देवा सहा सब = वना-वर। संहि वि [सहित्र] नित्र दोस्व (पाद्रा दर २६)। वेद्यो सर्वा। सिंह देवी मही (दूमा)। सहित्र वि [साढ] सहन क्यि हुमा वि १ २१, शस्त्र १४२)। संदित वि [संदित] १ युन्त, समन्पित (सर कुमा जुरा ६१)। २ दिव-पुक (भूम १ २ २ २६) ३ १ प्रे प्रवातिक पर्-निधेर (द्वार १—-पण्या)। सहित ई [सिंभक] प्त-शरक पूपा धेन-समा (१६ ४२) पाप दुरा ४८६) । सहित रेथ महित = स दित । संद्रित हेवो सह #सहू। सिद्धा । दि मिद्धा रे पुण्ट विक सदिने हैं। बार्गी। वे परमहें पुद्धिसम्ब (हे १ २६६, दे १ ११ कात्र ४२१) ।

**१६ ₽**) i

१४१ इसा) ।

संक्रिमा देवो सही (यह)।

सहिन्न वि वेको सहाअञ्चलका द्विति

सहित्रका विहरे कृषिवाणि सहोमरा केने (सूपा

४२७ महार पत्र १२)। 🛍 वदी (युना

सिंद्रिण देवी सम्बद्ध + स्मरत (प्राचा २, ३

सिंदिण्यु वि [सिंदिप्यु] खल करने नी

संबिर मान्डनमा (राजा पि ११६)।

सकी 🛍 [ससी] सोबी संतिनी (स्तब्ब

स्वद्वी देवो सहि । बाय पूर्व दावी नित्रधा-

t w # 347 338 333))

# 8 (10 Yo ft 124) 1

w 3(1)1

माठ-मध्द ४३ वि १८४) । साइ वि [शायिम्] धोनेनामा राजन-कर्ता (गुध १४ १ २८) शाचा दस ४ २६)।

साप्र वि सादि । भाषि-संदिव स्थाति युक्त (सम्य ६१)। २ व संस्थान-विशेष शरीर भी पाक्रित-विदेश जिस हारीर में वाधि से योचे क सवसव पूर्ण छोए लागि

साइन [साचि ] १ नेमच का पेट राज्यकी क्स । र र्सलान-विकेष देखी साइ – सादि क दूधरा भीर तोमचा अर्थ (श्रीव १ टी---पण ४३)। साइ ऐकी स्थिति १ नवन-विशेष (सन २६ क्य)ः साहार्द्धं च वर्षं वत्तविदेवेतु

मेठरं यद्भ' (प्रानु ६३) । २ वृं भारतपर्य

**में होनेवारी एक जिल्हान का** पूर्वकरकेय बाय

(सम ११४)। ३ एक कैन पुनि (एनि ४६)। ४ द्रेमचळ-वर्ष के सम्बापानी पर्वत का शमिश्रामक देव (ठा२, ६—नम ६१ # } i

साइ 🙎 [सादिम्] दुक्क्वार (स्प । (कि १७

साइ प्रे∎ सिावि र मच्ची पीन ≇ शन बाराम कीम का मिकका उत्तय वस्तु के धाम द्वीप परमुकी निकारत (तुम १ २,

६४) । २ समियम, समिरमान । ६ घसरम वचन **भ**ुड (**पराह** १ २—पभ २६) । ४ साविका तस्य यपेता इस यक्ती

चीज (राज ११४)। असेग ⊈ विशास] १ मोजूनीम वर्ष (तम ७) । १ धच्ची चीन से हीन चीन की मिसायह (सम

११४ क्ष) । संयक्षीय 🕻 [सम्मान]

नहीं यने (राग ११४)। साइ बुंबी 💽 केबर, 'बालकी सारितिया क्षान्य नीड शताश्यत्रमेषि (वे स, ११) ।

साश्चविद्यां नि [कृष्ट] कोचा हथा (कृमा साइज वर स्वाद सारमी + फी र स्वाद बेना, कामा । २ चाइमा प्रक्रियात करना। १ स्थीकार करना प्रकृत करना। साजव (धी) देशो सागद (धनि १ २ Y शास्त्रिक करना । १ धनमोदन करना । ६ क्यबोय करन्त्र । बात्रज्याः सात्रज्यानी (याचा) कया कमा-न्द्री भग १४--पत्र ६८ और) प्राप्तरबंग्य (भाषा २ १ । २)। भवि छात्रियस्त्रापि (दाका)। हेर साइव्याचम (मीप) । (विश १६व१)। कार के धनपन क्षीन क्षी ऐसी क्षीएक्सि (सम १४६३ माणु)। व कर्म-विशेष साकि-(बाद दश-पत्र १८७)। धेरवाव की प्राप्ति का कारख-प्रद करी (NEED 8 1/2 ) |

साइज्ञय न (स्वार्त) प्रक्रियल प्राचिक साइकायमा और स्वाइमा ] कामीम, देवा साइजिज वि वि अवसम्बद्ध (दे व २६)। साइध्यिभ रि [श्वारित ] १ राहुक (क्य-धि)। २ उरद्वत-राक्ती। भी या (कप्प)। स्प्रदूस वि (स्युव्सि) पान, धुपाचे सावि

बुखवास (ठा ४ २-- पत्र २१६) ग्राचा क्षण चीपा बम २६)। साहय वि [सादिक] धारिशका (कम्प १ का गय क्ये) । न्यास्य केनो सागय = स्वाक्त (बुर ११ २१७)।

साइप व [दे] संस्कार (दे = २६)। खाइपेंग्रर वि [ प् ] ए-मत्त्वर, विश्वत (पिश्रमा ४२)। धावरेग वि [साविरेक] क्राविक, क्राविक

(धम र) मन)। साइसच वि [साविश्वव ] धवितवनावा । (०३१ मधू याम)

साई ध्वी सई = राची (इक)।

साठ वि [स्तातु] स्वावनला मदुर (विश ffer ad fo ! # 5 fer Ball f. ( x ) i

सावग वि [स्वायुक्त] स्वाविक्ष श्रोबनदावा नपुर भोजनगरण कुमाई जेवानह साक्र्याई (तुष १ ७ २६)।

र्षात्रकान [सामुख्य] सम्बोन साहस्य (शब्द ६३) ।

तुषक नयन (सुझ १ ॥ २७)। सारीय वि स्थितीन दिशक स्थ-का (पदमार १०) जना वस व ६) । सद्घ वि [सद्घ] धमन्दै, रुक्तिमान् (बोक

७७- ग्रीममा ६०: ज्यर १४२: वन ४): सह (प्रव) देखो संघ (देखि १६)।

सर्द्ध (मन) म [स्तइ] साथ और (१४४

४१६ दूवा)। सहेक वेको सहिक्त (महा) ।

सहर (प्रा) र् [ग्रेसर] बद्ध्व क्रव क एक मेर (पिंग)।

सहस्र है सिहेस्टी हेवा-पूछ धनागाव होनेपाला बच्च प्रजस्ति में "बहेल्" (प्रसि ११) ।

सकोश्यर वि [सक्षांत्र] १ कुन्द, व्यस्त (हे ६४)।२५ समा भाई (प्रशा कास)। सहोजरी 🖈 [सहोदरी] स्था गरीव (राव)। सहाड वि [सहोड] बोधे के नास से

दुर्खस-वीद (शिंड ३ : स्तुन्या १ २ — पत्र ६)। महोदर देवी सही अर (पूपा २४ महा)।

सहोत्सभ वि [सहोपित] एक स्वान-वासी (R E ( Y4) 1

साधवृद्ध सक [इद्] १ चान करवा, कृषि केरना । २ बीचना । सामद्वद (है ४ र्बका वयु ) ।

सार्वाच्य-सावित सार्राणम वि [गाकुनिक] १ पशि-वातक पश्चिमों के बच का काम करनेवाला (पराह १ १ २—पत्र २६ छल्। १२६ कि विपा १ द---पत्र वरे)। २ सङ्ग्रन-साझ का बानकार (मुपा २६७ कूत्र १)। १ ग्येन पक्षी द्वारा किकार करनेवाचा (प्रस् १२६ टि)। साइय देवो साउग (यन) । साउव 🖟 [ सायुप ] ब्रायुवाना प्राणी (कार १—तव देव)। साउछ वि [संबुद्ध] ब्यान्त भरपूर (सुर **₹**⊑3) ( साइस्य वि [ साकुळद ] धारुवता युक स्रोमि संदार (पडम १ २ १६७)। पड्)। ₹> ₹) I

व्याकुम व्यवः (व्यानुद्वतास्थवो पर्णिहर्वः सातभी की [द] १ वद्याचन (मा २९१)। २ वस कपड़ा (सा६ ३) । देखो साहुस्त्री। साइड र् कि अनुसर, प्रेम (१ व २४ साएक रेनो शाहरू । साएरवह (भी सापय व [साक्त ] प्रयोग्या नवधे (इक, ति ६३): पुर न [ पुर] मुपा ३३ बाह्री सर्वे (उन ७२० टी)। पुरी की ["पुरी] वही (पदम ४ ४)। देखो साक्य। सापना 🕏 [सायना] धनोच्या नवधै (प्रमाप १ सम्मार =--पत्र १३१)। संदियम म [सान्द्रपत] बद-विशेष (प्रवी w\$) i साइ थेवो साग (वे ६, १३)। सारुप न [साफेत ] १ नपर-विशेष घपोम्पा (दी ११) । ए वि वृक्त्व-वेकची । रे न. प्ररपाक्यान-विद्येष (पत्र ४) 1 साफ्य वि [साङ्व] १ वीक का धेवेत-**इंड**न्सी (रन प्रत्याक्यान का एक शेव (42.8): स्माग ५ [शाक] १ ६७-विशेष (पराम ४२ ण दे १ २७)। २ तक-सिज वहा माहि धाय सामा सी तरककियों में (पन नर्र)। १ शाह करवाधी (वि र १ः 1401

सागडिअ वि [शाकटिक] वादीवान वादी | पसा कर निर्वाह करनेवाका (पुर १६ २२३ स २६२० क्ता १, १४० मा १२)। सागव न [स्वागत] १ शोमन प्रानमन प्रस्ति धाममन (भग)। २ घतिष-मत्कारः बावर बहु-माल (मुवा २१६)। ३ हुरात (**9**PR) 1

सागर वूं [सागर] १ सबुह्र (परह १ रे---पम ४४' प्रामू १३४)। २ एक राज-पूच (तप ११७)। १ राजा धन्त्रकृतिस का एक पुत्र (यंत १) । ४ एक वास्यापारी (उप ६४व टी)। १ सात्रवें बनदेव तथा बामुद्धा के पूर्व भव क वर्ग-पूर्व (सम १५३)। ६ पूंज कूट-विरोप (६७) । ७ समब-परियाण विरोप क्य-कोटाकोटि-यस्योतम-यरिमित कास (नव हा बी इद्दायव २ ४)। व एक स्व विमान (सम.२) । अर्डन पून विशस्ती एक देव-विमान (सम २)। चंद द्र ["अन्त्र] १ एक वेन माचार्य (कास) । २ एक व्यक्तिताचक नाम (दवः पशि राम)। चित्त पूर ["चित्र] ब्हट-विशेष (शर्व) । वस दूं ["वस] १ एक कैन पूनि (तम ११३)। २ दीसरे वसके का पूर्वजनीय नाम (सम ११६) । ६ एक बेहि-गुव(महा) । ४ एक सार्ववाह का गाम (विपा १ ७)। १ श्रुरियेख चक्रवर्ती का एक पूच (महा ४४)। "दत्ता स्मे ["ब्ता] १ ध्यवान् वर्वनापनी की क्षेत्रा-शिविका (सम १६१)। २ मणवान् विमसनाथनी की बोधा-शिविका (विचार । २१)। दिस र् [ दश ] इरियेल पत्र-क्लीका एक प्रव (व्यक्ष)। बृद्ध प्रं विक्यूद्र] क्षेत्र्य की रचना त्रिरोप (महा)। वक्षी सायर = मायर । सागरिअ देवा सागारिय (विष १६४) पत्र

660) 1

सागरायम पुन [सागरोपम] बनव-परिमाख विकेष वत-कोटाकोटि-नस्यापम-परिनित कास (हार, ४—पत्र ह सूप र या हाता ११ जन विं ४४८)।

सामार नि [सामार] १ पानार-विदेश बाइतिकासा । २ शिक्षेत्रीय की बहुत करने की शक्कि निशेष-पहरा अपन (योग मनः) मनिरासर्वयक्षी (नुता ११)।

सस्म ६५) । ३ सन्तर-पुक्त (सव ७ २---पत्र २१%, इप ७२० टी)। पस्सि वि ["वृश्चिम्] बानशाचा (पर्वा ३ —पत्र 1 (320

सागार वि [सागार] गृह-पुक्त, गृहस्य (धारम) । सागारि ) वि सागारिम् रिकी १ सामारिय 🕽 मृह् की माधिक उरापम का मासिक, साधू का स्थान ध्नेनामा मृहस्य शस्यातर (पिंड ११ सावा २ २ ३ % सूच १ ६ १६ बोघ १६१)। २ सूसक प्रवब बोर वरख की बतुद्धि, सरोव (सूब १ १ १६) । १ पृहस्य से पूछ सामाण्य बदस्बर्' (बाचा२२१४०४)।४ मः ग्रीकृत (याचा १ ६, १ ६)। १ दि शुरुवात्तर पृत्स्व का उपायम के मासिक है संबन्ध रखनेवासाः 'सानारियं विकं चूंबेवाणें (सप ११) । सारोय देखो साक्षम = सादेव (शाया र

<--पन १६१ उर ७२< थी)। साह एक [शाटय , शावय ] सङ्गा विनास करना । हेड्ड साबंध्य (विपा १

१-पन १६)। साष्ट्र (शाट शाव) १ शाटन दिवास (विशे १६२१)। २ साटक उत्तरीय वस पहर (पथ ६०) । १ वस करहाः प्रवाध बद्दा बनेते (माना मुना ११)।

साहत ) दुन [शाटक] बक्र काड़ा (मुपा साहत } ११६१ छन)। साहज न [शाटन, श्रावन] १ विशयक विभाग (वित्र १११६) छ ११६) । २ फ्रेस्न (बूबनि ७२)।

साहमा थी [शाउना, शाउना] पर्छ-वर्ष होकर विश्वे का कारल श्वित्व-कारण (दिया १ १-- रण १६) ।

साहित्र वि [सादिव सादिव] वहाहर विराया हुया, विशासित (शुर १४, ६) है 1 (> 0

। साहिभा भी [शाटिस] रक्ष काहा (बोर: क्ट्र) ।

साहित रेवा माह = शास निर्मावयवातान-

स्ताजी और द्विरादी निका, नपना (कुल ४१२)। साक्षे की फिक्नी नामे । कम्म पूर्व िकर्मन् विशेषनाताः, वेषना पताना धादि शकर-वीविका (उवा: मा २२)। साक्रीया देवो साहिका 'यह ख्वा सावैया बार्स् सुबद निर्यक्षण सर्वी (निसे ६ ६२)। माहोह्य देशो साहभ (शामा १ १०---पद २३३)। साथ एक [साथय] राज्य पर चढाना क्षीक्ष्य करना । बारिएनवर्स्स (शी) (गाउ) । साम 🗱 [मान] १ दुत्ता (पाय पर्श्व १ र-पत्र का प्रान्त १६६ हे १ प्रश्)। और र्जा(तूपा ११४)। २ द्वं अध्य विशेष (पिंक)। साज वि [स्पात] निविष वनीभूत (ना ६व२) । साज र् [छाज शत] शक को विश्व कर वीक्षत करले का यन्त्र (चक्रव र्गा)। साध्य वि शिष्यों दन का क्या हमा बाद का क्लाइमाः और या (स्थ र. १ १०)। साज देवो सासायण (कम १ २१)। साजक्रम वि [दे शांजित] व्लेबित (दे = 88) i साज्य व श्रीचक स्थ का इस वस (छ १ १--पर ११६ क्छ)। सोवि सौ [शामि] स्वकाका ह्या क्यका (यस र ११) । साजिश नि [क्] कत्व (पर् ) । साम्बी केरी साम = श्रन : साजी की [आयी] वेशो साचिः 'काशीया-बार्ताधियाँ (बस १, १ १ )। साजु बुंब [सातु] पर्वंद पर का क्यान मुक्ति-बला बदेश (पाय; मुर ७ २१४० स १६४)। मंत रे ["मत् ] परेत (कर १ वर दें) । "र्राह्म से "पहिन्त सन-विशेष (स्वा)। साजुबोस लि [सानुकारा] कानु (का ४ ¥—नव २ को क्या १ ४---वव ७३३ स्वप्त २६ ४० वन्) । सामुख्या व [सानुप्रत] बात काव प्रवादunu (eg t) :

सावर्णच वि [सानुबन्ध] भिरुवर, प्रविक्रम प्रवाह्मवाच्या (उप ७७२)। सामग्रीय वि [सानुवीख] विसर्वे प्रशासन-राक्ति नष्ट न हुई 🗊 मधु बीज (याचा २ १ α **૧**) ι साणुवाय वि [सानुवात] धनुनुव पनम-गमा (श्य)। सञ्जसम वि [सामुराय] सनुदाप-मुखः/(पवि १११३ ग्याम) । साजुर व [क्रे] क्वेच-मृह, देव-मन्दिर (वे व सात गिसातो १ दुव (ठा२ ४)। २ वि बुखबाना । की. ता (पद्या ३३--पम ७०१)। वियक्तिकान चित्नीकी पुच क्य कारशा-मृत कर्म (ठा र ४ — पत्र १६) । सावि वेको साइ = स्वावि सावि पावि पावि (सम रा ठा २ ६---पण व ्६---पण ६६७) बीव १---पन ४२) वस्तु १ २--पन २६) सम ७१)। साविकाणया वेको शाहरजनमा (ठा १ ६---पण १४७)। सार् र् [सार्] घरतार, केर (१ १ १६०)। साहित्व वि [सहैव] देवता-प्रमुक्त, देव-इय (पग २६)। सावित्रव देखी सावेज्य (पिट ४९७) । सार्वाम वेको साह्य = वानिक (यदः धीत) । सारीजर्ममा औ [सारीनगङ्गा] मानीविक मत में **प्रमात एक** परिमाण (मण ११---पत्र 444) 1 साबेज्य न (साविक्य) देन का बनुष्य-सामित्रक 'बारेक्नावि व केम्पायो करीव क्<del>रव्य</del>वको स्थास्त्र' (वस्त्र २<sup>ि २</sup>—पत्र ११४३ 8) 1 सार्व्यसङ् (यर) वेले सर्व्यसङ् साथ देशो साह् = तावव्। सामेति (युक (w) 1 साधा ध्यो साहम (वर्ग्य १४७ १२१)। सापम्म रेखो साह्तम (वर्षतं वक्त) ।

साधिमाश्र देवी साहित्मश्र (परम ११

ww) I

साधारण रेको साहारण = सामारक (वि साधारणा को [संभारणा] नक्ता, भाष्या स्मरहाकृषित (होन्दि १७६) । साधीज देखो साप्तीज (नाठ -नासवी १११)। सापद (शौ) देखों सावय = प्रापद (नाट---शका)। साफ्का } केवी साहस (विषे २४वए) साफक्षा । क्य ७६० दी वर्गीव ६६) व w e) : साबाह नि [साबाय] साबाबा-सदित (स १९६ थी) । खामरग दे वि साभरको कामा धोनह ध्यने का क्रिका (पर १११) । शासक्य देवी साहक्य (विशे ११६)। सामाबिक ) केबो साहाविज (मुर्म्म १६) सामाविष क्या भारक रहन हो)। साम पूर्व [सामम्] १ तत्रु को वत करने वर्ग क्ताय-विशेष एक चन-नीदि (छाना र १---पत्र ११: प्रानु २७) । २ प्रिय वास्त (ब्रमा- शक्स १४) । ३ एक नेव-राज (वन् क्य) । ४ मेवी निवता (विते ३४ १) । **र सर्वेश माथि मिट्ट बस्टा 'महरपरिद्धाने** साम' (बाव १)। ६ सामानिक श्रेषक-विशेष (वंदोव ४३)- 'साम सर्व च सम्म इमम्ब धामात्रकास एकड्डा (पात १)। कोड्र ई िकोशी पैरनत वर्ष में करपम **एकाश**र्ने विनयेव (चम ११६)। देखी स्त्रमिन्डस्ट । साम र्षु [इयास] १ इस्स्ट वर्ष्ट, क्रमा रंद । रे इस गर्छ मीबा रंग । १ वि बाबा वर्छ-नावर । ४ इस वर्तनावा (बाचाः दुमा' दुर ४ ४४) । १ पू परमावयी देवीं की वृक्त वार्धि (सम एक मूस्टीन ७२)। ६ एक केन बुनि, स्पामार्थे (स्वीव ४१)। ७ म. तुश्च-विशेष क्ष्य-एस (तूप २ २ ११)। व दुन. याच्यात पदन (तप २ २—पत्र ७७६)। इत्वि र् [ इस्तिन् ] प्रमान महानीर का किया एक पुनि (तम १ ४—पन द १) ı सामद्रभ वि [प्रतीक्षित] विकास प्रवेका वी वर्ष ही वह (द्वारा)।

¥ 44)1

सामक्ष्य केवो सामाइक्ष (विते २६२४)
२६६ २६६४-२६३६)।
सामइक्ष पुर्व (सामित्रक) १ एक पृत्र के सामक्ष्य (सामित्रक) १ एक पृत्र के सामक्ष्य (सामक्ष्य १, १६१)। १ कि सामक्ष्य (स्वत्य ६)। १ किस्त्रक का सामक्ष्य (स्वत्य ६)। १ सामक्ष्याचित्र (स्वत्य ६)। १ सामक्ष्याचित्र (स्वत्य ६)।

सामका केवो सामाइक्ष (विसे २०१६) । सामक्री वि [ सामाचिकिम् ] सामाचिक बाबा (विसे २०१६) । सामंत पुंत [सामन्त] १ तिकट, सवीप पास चिस से समस्कार्ति (जासा ३ २ ———

सामंत र्ष्ण [सामन्त] १ तिष्कः, स्वरीप वास्य जिल्ला स्वर्ध समुद्रासार्थः (स्वराम १ ९—क्ष्य अन्य अस्य १ १ आसी। १ १ स्वर्ध अस्य १ १ स्वर्ध अस्य १ १ स्वर्ध १ स्वर्य १ स्वर्य १ स्वर्ध १ स्वर्ध १ स्वर्ध

४ (-चड ४ जर १८)।
सामंत्रामायिप्य वृत्त (क्षामम्तापपातिन्छ)
स्रोमार्थन्थेप (अ ४ ४--वन २०११)।
सामन्य देखा सम्मन्यक संतरिय विश्व वस्त्तर्थ,
वें वेषस्रप्रकृतिस्तापन्य । सीत्रिय विश्व वस्त्तर्थ,
वें वेषस्रप्रकृतिस्तापन्य । सीत्रिय वर्षाय वस्त्राप्त (राम १ ४४)।
सामा देखा सामय = रामाण (राम)।
सामगा वस्त्त (हिस्स्य ] सामित्रुल करमा।
सामन्य (ह ४ १६)।

सामक्य (हं ४ १६)।
सामक्य १ व सामक्य सम्बंध संद सामक्या १ व सम्बद्ध (१ १, ४० स्वय २ १ १ सम्बर्ध । सामक्या १ व सम्बद्ध (१ १, ४० सामक्या १ सम्बद्ध । सामित्र (१ १, ४०)। १११२ १११६ ११४ (१ ४ १४)। सायार्गा श्री [साममी] १ समस्तता । २ कारण-प्रमुद्ध (सम्भव २२४ माहः कप्यु रंगा) । सामच्छ सक [वे] मन्मणा करना पर्या वीचम करना । संक सामच्छित्रज्ञ (पर्यम ४२ १४) । सामच्छ न [सामच्ये] समर्येता श्राच्छ (है २ २२ हुमा) ।

४२ ६%)।
सामच्छ प [सामच्ये] धमर्पता राण्ड (हे
२ २२ हुमा)।
सामच्छ्रण देवो सामस्थण (एव)।
सामच्छ्रण देवो सामस्थण (एव)।
सामच्छ्रण १ (अव १२७ ठी)।
सामण ) वि [धामण गिक्क] धमस्य
सामण्य हे वेश्वली (एव)।
सामण्य देवो सामण्य धामस्य (पृष १
० २३ वड ७ १६)।

खामणेर पुं [मार्माण] धमख का करळ बाबु की बेराण (मुब १ ४ २ १६)। साम्राज्या म [मार्माण्य] धमखेरा बाबुक्त (क्या क्व २ १ व्या)। साम्राज्य पुं [सामान्य] १ माप्त्रको केर्ते का व्यक्त क्वार्डा २ १—व्यन ८१)। २ त. हेरोपक क्योन में सरिक्ष बच्चा व्याप्त्र (वर्षके २२१)। ३ कि मानाय्य (मा ८११)

सामस्य केवी सामच्छा (व) । संक्र सामस्ये जन्म (क्रम्ब) । सामस्य केवी सामच्छा = सामध्ये (हे २ २२ हुआ ठा वे १—नव १ ६। मुपा २६२ प्रामृ १४८) ।

**१६६** बाट--एला वरे) ।

सामस्य ) व वि प्राक्षिण सम्बद्धाः सामस्यकः । ज्यास द्वारामीक सम्बद्धाः स्रीत सामर्थ करीत दुन्तः (पद्यह १ १— पत्र ४६ विष्ठ १२ १६ १) । सामक्ष क्ष्रो सामग्र = ध्यावप्य (अवः क्ष्य सुद्ध १ १) । सामक्ष क्ष्रो सामग्र = सामय (वदः स

सारक्ष को सार्वाच (वर देश के स्टर्श कोरिय स्ट करण है है है?)। साराय सक [प्रति + इस्ते ] प्रतीया करना काट कोर्या (हुं ४ हेर्ड वड )। साराय पुँचियाताक] बाम्य-विवेच संभा (हुं १ ७११ ह्या)। सामरि पुंत्री [मृ शास्त्राख] शास्त्रसा वृक्ष चेतर का वह (दे व २६ वाय)। सामारिस कि [सामर्प] देव्यांत्र, प्रवाहेच्यु (सुर २ १)। सामछ कि [स्थामख] १ कस्त्रा इच्छ कर्यु बाबा (वे १ १६) सूर ३ ६१ हुमा)। २

सामज्ञह्य वि [इपामस्ति] काता किया हुषा (में ८ ६६)। सामस्य वि [इपामस्यः ] १ वाता । २ कामा पानीवाता (से १ ११) : ३ वृ वात्मवातिकाय (पान)। सामस्य की [सामस्य] १ इन्या वर्णनावी

प्रं एक वरिष्य्—वनिधा(सूपा १११) :

की। २ छेन्ह वर्ष हो को स्थापा (वका ११२)। सामांख दुंधी [शाल्मांख] सेमम का याद्वा (वृष १ १ ६ का स्थाप)। सामांख्य बचो सामाख्य (पूर ४ १२७)। सामांख्ये वेचो सामाखा (यवडा या १२३ २३का ७६० पूरा १०१)। सामांख्य दुंशा स्वयं

सामस्य र्[शावस्य] सम्वर्धनतः गी—निव क्वपै गाव ना वस्त (यसु २१७)। साम की [इयामा] १ देखाँ विनाय की माजा (सम १६१)। २ तृतीन जिनदेव हो प्रचम किया (सम १५२)। ३ समि, सत (बूम २१ द६ छे१ दर कोम ६००)। ४ शक की एक सम्र-महियी--पटपनी (पडन १०२ १४१)। १ त्रिगंद्र दृक्ष (पएण १--नम ११ १७---पम १२६ मह ४)। ॥ एक महीपनि (ती १)। ७ सता-निरोर साम-मता (धीप)। व साम मता (से १ ४८) । देनारी की (संदृद्ध प्रमु १६६) । १ स्थान वर्णकाली की (दूमा) । ११ संबद्ध वर्ष की जनवानी क्ये (कम्मा १४) १२ पुन्दर सी स्मली (मे १ ४८) यउद)। १३ समुनानचीः १४ मील का नाम्बः। ११ प्रस्तुन का मास्यः। १६ प्रप्रती नवा। १७ प्रन्या। १४ इस्ला। १६ व्यक्तिकाः २ कस्तूरी। दे१ यण्पशिः। २२ नम्बाकी संद्राः २३ **इ.स.** पुतर्नदाः २८ पिथाली का बाद्या २४ इ.चिया, इत्तादी।

२६ भोज दुर्सा२ तुत्तको । २८ पद्मीता

(unt two) i

Riet) i

१६--पत्र १ )।

सामुदाइय 🕅 [सामुदायिक] धपूराय का.

समुद्धान के बंदान्य राजनेताका (स्ताना ह

WHI.

धनम ना एक शहरण निश्वके ऋषुगानिका बड़ी के फिनारे पर स्कित क्षेत्र में मनकान महाबीर को केन्द्रशान हुया था (कथा)। वेदी सामाय = स्थानाक । सामाविक रेको सामाइक = बागाविक (greatt / 1 सामाण देवी सभाज = दमल 'लेकी अवि **१व्यवरा**क्ट्रमतिमिद्यपद्यमाखी (क्रम्म १ २ । दुव्यः २०७) । सामान पुन [सामान] एक केन-विमान (धन ६६)। सामाणिक विसामानिकी १ संविधन निकट-वर्ती नक्योक में स्वित (दिने २६७६)। २ दूं. इन्ह के धमाल प्राविकाचे वेशो की एक माठि (सम ६७ का ६ १ — पत्र ११६

क्या भीक प्रथम २ ४१)।

सामार्थत (पबद्ध) ।

क्रेंगेयाचा (३४) ।

1 (37) PF

सामाय भक दियामाय किला क्षेत्रा।

धामाय ध्वी सामय = स्थानक (धव)।

बिक (सिने १४३१ छैकोच ४४)।

सामाय र् सिमाय । ध्रेयम विशेष सामा-

सामापरि रि [समाचारिन् ] वाषण्ड

सामायारी की [सामायारी ] बाह्य का

मानार-क्रिया-नवास (क्ल्ब्र १ १६) छन

सामाद, सामाबद, सामाबंधि (यस्त्र) । बहुः

रक्षीयेयाः ६ व्यवसाः ६१ विसपा

सीसमानमा पेका। ६२ परित-विशेष (हे १

२६)। सर्विशी स्वीत-भोजन (सम

सामाइअ व [सामायिक] संबम-विशेष

सामाद्रभ नि [सामाजिक] बगाथ रा

समा से संकल रक्नोनामा सम्म (यस ११

सामाइभ वि [स्यामायित] धनि-ज्यतः (वा

सामारा पू [इयामाक] मनवान वहालीर के

२ १, ४६: बाचा १ २ ४ १)।

सप-प्राप राथ-प्रेय-परित सपस्याम

રા દ રા ઝ રા≈ા રાશ

चौफ नव)।

24 ) 1

२६) तुस ११ २६) ।

सामि ) वि स्विमिन् १ वावक धवि सामिका पति। १ प्रैस्पर, माथिक (सम वदः विपा १ १ टी---पव ११; सकः भूमा प्रामुबद)। इसी मी (महा)। ३ पूर्वप्रदु क्षमपान (क्रमा १ १३७ १७३ सूपा १४)। ४ राजाः नूप। ६ वर्ता परि (सङ्घा)। कुद्र र्ी किछ] देख्ला वर्ष में अस्त्रन एक्सियार्वे विज-देश (पर ७)। देशा साम-कोट। त्त न िखा गामकियत व्यक्तिरत्य (संय वदः ध २२) । पुर व िपुर] नवर-विश्वेष (स्प ११७ दी)। सामिक वि 🔃 वन्त्र बनाय ह्या (व व २३)। सामित्र विश्विति । सम्बद्धाः स्था (मुपा ६६)। सामिक्कि की सिमुकि । १ वर्षि संपत्ति । १ कृषि (प्राप्त है र ४०४ कुमा) । सामिष्य व [सामिष्य] कात-समुद्र (संत et extell सामिकी न स्थिमिसिन र गैन-पिरोन भी बास को मुकी एक शासा है। २ वंशी बच बोग में बरनन (वर ७---नम ६१ ) : सामिसा**ड व्यो** सामि (पत्न व ६ ) सूपा २६६ जीर छछ)। भी, स्में (स ६ ६)। सामित्रेय वेदा सामित्रव (स १४ : १४४) महा)। सामीर वि [सामीर] वगीर-धंकवी (यवड) । साम्ब्रिय दें हिं] इस-विशेष वर दूस नियकी शक्षम की पार्टी है (पाम)। सामुग्य वि [सामुद्राः] संप्राकारणावाः 'सामुग्यविमायतुक्तमाम्' (क्षीप) । धामुच्छेत्व वि [सामुच्छेतिक] वस्तु की एकान्त लखिक मान्नेवाला एक यह धीर क्षमका समुवानी (का ७—पण ४१ ३ विसे

सामुदाणिय पि [सामुदानिक] १ पिया संबन्धी मिला से शब्द (ठा ४ र---नत्र २१२ सदार १ १६)। २ फिटा मैश (बग ७ १ टी--पत्र २६६)। सामुद्द र्थ [के] इतु-वनाम दुश-विदेश (के = **2**1) | सामुद्द ) विसिम्बद की १ व्यूप सामदय प्राचली सापर का (खाद्य र क—पण १४६८ धन १ र<del>--प</del>ण २११ दस ६ व): २ त इस्ल-विरोध (समीत 1 (38) सामुद्दिश्च न [सामुद्रिक] । शाक्र-विशेष राधेर पर के विक्रों का सुवाशुक्ष पता भरकाने-बाबा कांब्र (था १२)। २ शरीर की रेबा यापि चित्र, 'सापुरियसम्बद्धारा बस्वीन' (धंबोव ४२) । ६ वि समुद्रिक टाइस मा शासा (क्रुप्र ३)। सामुराजिय देवी सामुदाजिय (उत्त १ 1 (95 साय केवी साइक्स = स्वाद, सक्सी + हा। वायर (श्राचा २ १६ १) श्रारण्या (वच १)। साय देवी साग = ताका 'मोत्रम' संकरण धनियं व ताममुनाहिकाँ (पद्धा २ १--पव ११% पर्य १---मा १४)। माय व स्थित । एक (कट प्रव)। र तुष का कारण्ड-मृत कर्ष (काम १ १३) ४१)। ३ एक देश-विमाल (श्रय देश)∤ बाइ वि [ पादिस् ] सुबा-छेवन स ही सुब की जराति भावनेताला (क य-न्यम ४२३)। थाइप्प पू विश्वहती एक प्रक्रिक धना (कल) । स्मारव देन "गीरव" १ तुब शीवशा (बम =)। २ मुख का वर्ष (राज)। ानुकल न "सीक्या धठिराव पूज (बोन क्षो साव = स्रव । साय पू [स्थाद] रव का धनुबन (विधे थरेश पत्रम रेड्र इंक्स करन हो) i सायन [के] १ महाराज्य केत का एक लगर। २ दूर (दे क, ६१)। सार्य व [सायम्] १ सम्बाधान सन (पाम वज्राह्म क्यू)। २ शस्त्र स्वया (अ

करमा। र प्रकाश करमा, प्रक्रिय करमा।

६ प्रेरणाकरमाः ४ धन्नतकरमा चत्कृष्ट बताना 🖂 सिद्ध करना । 🧸 घल्नेपरा करना खोजना। ७ सरकाना विस्तकाना एक स्थान स सन्य स्थान में से बाना। सारद (सुपा ११४) सारीत सारमद (सुम १२२२६२६४) 'सार्थहियोर्स' (स ३ १) सारेष्ट्र (सूध १ ३ १ १)। і कर्म, 'ईसारा' सरेडि सिरि सारिज्यह यह सरास (श्रिहि (था १४३ काप्र ८६२)। क्यकः सारिग्जंस (मुना १७)। सार तक [स्वरय] १ दुसवामा । २ उभ्यारण-योग्य करमा। सार्रीत (विसे 842) I सार वि [शार] १ रवत वितकवरा (पामा बद्ध ३७८ १३)। २ पूँचार पासा क्षमने के किए काठ गावि का भीपहच र्भिकरंग सोचा (सुपा १३४) । सार पुन [सार] १ बन बोसव (पामा से २ १३२६ सुक्षा२६७)।२ ल्यास्ट,ल्याम कुछः 'प्रांखु माणियो सार्यंत हिसद क्रियल' (तुस र ी ४१) । ६ वस वराक्रम (वामः सं १ २७)। ४ वरमार्थ ( सामानि २६१)। १ प्रकर्ष (पामानि २४)। ६ कस (धाचानि २४१)। ७ परिस्तान (स ४ ४ टी-पत्र २६३)। ब रस नियोद (कृप्यू) । १ एक देव विमान (क्षेत्र १४३)। १ स्पर प्रेश (से ६ २७- वडह)। ११ व क्य-विशेष (पर्छ १—पत्र ३४) । १२ दल्द विशेष (सिंग)। १३ वि ग्रेष्ठ इतमः यह वंश सायाणी मिलाकी साम्रा प्रदिश्या, (बध्ना ह स इ २६)। देता की [काम्ता] पर्व धाम शीएक पूर्णना (ठा७—पत्र १११)। स वि [व] बार बनेशवा (वे ६, ४)। बहु को [यता] सम्ब विशेष (तिण)। दत रि [ यम् ] सार-पुष्ड (हा ७---पष १९४३ वदर)। वंशी वदो वह (पिय)। सारम्य वि [शार्थिक] यस् ऋतु वा (बच १ १ वहल १७-- पत्र प्रतेशः, क्षे ६, ३ग) । सारंग वि [साद्व] १ संव का क्या ह्या । न्यर थक [सारव ] १ ठोड करना दुस्ता

। प्राप्तः)। ४ विष्णुकः क्तुपः(हेर मुपा १४८)। पाणि दु ["पाणि] बिच्यू (प्राष्ट्र २७)। सारंग दे [सारंग] १ विष्, भूपेन्त्र (पुर १ ११ सूपा ३४८)। २ चातक पक्षी (पाम क्षेत् वर)। व इतिला मून (ने ६ वरः क्ष्णु)।४ हाषी। ३ भ्रमर। ६ धरा ७ राजहंस । = विष-पूर, वितक्षा हरिए । **१ वास-विश्वेत 🖹 १ राज । ११** मपूर । १२ कन्ता १३ केटा १४ मामस्य यसंकार । १५ वस्त्र । १६ वस्त्र कमन । १७ चमना १८ कपूरा १३ फूना२ कोवलः। २१ मेप (सुपा १४०)। सःअपः, रूप ह (यप) पून ["का फ] धन्त-विशेष (বিৰ**)** ৷ सारंग न [साराङ्ग] प्रवान बस श्रेष्ठ प्रवयन (परहर ४--पव१४ : सुपा३४०)। सार्रग र् [शाहिंग् ] विखु मीइम्छ (क्या) १ सार्रिया ) की [ सारक्षिका ] एन्द-विरोप सारंगिकाँ र् (पिंग) । सारंगी ध्वै [सारद्वा] १ इच्छि (पाष) । २ पाच विशेष (मुना १६२)। सार्यभ देवो संरंभ (ठा ७---१४ ४ ३)। सार ब्ह्याय 🛊 🛛 सार ब्रह्म्याण 🛚 बनवाबार वनस्पति विशेष (पएछ १---पन ६८)। रेबी सासक्काण । सारपदा सक [सं+रण ] परिपादन करना बच्ची वस्त् चाल करना। माराजद (वंदु १६)। वङ्ग सरक्तंत सारकामान (पि का रत)। सारपन्त्रण न [संरक्षण] बम्दन् सारा पाल (कामा १ २--पत्र १ सूम १ ११ १८: घीप) । सारपराणया ध्वे [संरक्षमा] स्वर देवा (Pt of) 1 मार्पवस्त्र वि [संरक्षित ] धरप्रस्नाती (रिक्ष भी)। . सार्याभ्यक्ष वि[संरक्षित] विवस बंख्या क्तिमा नमा हो यह (तरह २ ४---वन २ व बनुषा ३ मात्रक भाग्रे (हेर **tt)** 

८६२ सारक्लेच् वि [ संरक्षेत् ] संख्या-कर्ण | (झ ७—पत्र ३०३) । सारग रेको सारय = स्मारक (बाका) पीन)। सारज व स्वायम्य स्तर्गे का राज्य (विसे t= 1) 1 सारण र् [सारण] **१ एक** यक्त-पुगार (संत ६ पूप १ १)। २ रावछातीय एक सामन्त राजा (परम = १३३) । ३ राजस कामली (दे १९ ६४)। ४ रामखाका इक इच्छ (ते १४ १६) । ३ न वे बाना प्रापश (ग्रोप ४४ )। स्प्ररण न स्मिरण र ग्रन्थ कराना (बोक ४४८) । २ मि बार विकारेरामा । 🛝 । जसा बी (ठा१ -- नद ४७३)। सारणा न [स्नारणा] १ याद विचाना (शुर १६, २४० विचार २३वा कस्ट)। सार्यक) हो [सार्यक जी र प्राक्तक सारजी । श्रेक कियाचे (बल २६) क्रुप्र १)।२ पर्रपरा (सम्मत्त 🕶) । साराय व [सारप्य] सार्यकान (शास १ १६ पत्न २४ ३८)। सारवा के बो सारवा (एक)। सार्यक्ष देशे सारहय (धनि ६६)। सारमिश्र वि दि । स्माप्टि, बाद कराया हुमा(दे २६)। सारमञ्जू [सारमेव] धान, ब्रुता (इन **४६** दर्श दूस स्थान स्थान है । शासू \$% ) I सारमई से [सारमेवी] इसे कुरी (धुर tri tax) i सारय विधियत् । सन्द ऋतुका (सन रेडेश्य ग्रीहा स्थापन प्रमाणिक राज्य रहा है मनि ११ कमा ग्रीप)। मारय वि [मारज] १ वेह करनेश्रवा (ध १ ४ ) । २ तायक, स्टिड करनेवाला (कप BEY): सारप दि [श्मारक] १ अतः कालेपादाः ३ यर क्षिमेनाना (मनः ध्यका १४४ श क्ष्य)।

सारव पि स्थारती पासस्य भूग भीन (धाचा १ ४ ४ १)। सारव श्रेषी सार-य । सारमा की [झारहा] श्रष्टत्वती केनी (सम्मच सारव देखो सार = सारम । वर्षि वार्यभस्त्र (वव १)। सारव धर्क [समा +े रच्] प्राच करना होक-श्रद करना, दुक्त करना । सार्पाइ ( ¥ ४ ११) 'शास्त्र चनवपरकीयो' (पुर १४. वर् । वक्र सार्वेत (परव) । कवक्र सारविभ्यंत (५७)। सारव धक [समा 🕂 रम् ] तुक्यात करना प्राच्या करना । शारवद (दस् ) । सारका व [समारकन] संगानंद, साध करना (योष ७३)। सार्यक्षम वि [समार्ययत] दुवल विन्य हमा साथ किया हवा (दे < ४६: क्या मोपना व)। **धारस र्1 [धारस] १ पवि∗विदेर (क्**य ग्रीक स्वयम ७ कुमा ऋका)।२ अइन्स-विकेष (सिंग) । सारसी 📽 [सारसी] १ वर्व दान की एक पुर्वनेष (ठा७—नव १११) । नावा छारत⊢ पत्नी । १ सन्द-विदेश (गिय) । सारसम्ब र् सारस्वत र बीचान्यक क्रा की एक वार्ति (स्ताना १ व-- वत्र १६१; भि कश्की। सारह व [सारव] शहु टक्ट (क्रमा है सारहि 🛊 [सार्थि] रथ शक्त्रेशामा (ह्य १ वाम महा)। सारावि इंग्री वि विश्व-विशेष शरारि वर्गा ( E E, PY) 1 साराय वक [साराय] सार-इम क्षेत्रा। **पष्ट सारा**र्यत (दर ७२ टी)। साराज एक [सारयू] विषयवादा, सकावा धील कराना । संहः साराविद्धात सक्ता बीर'वर्ष क्य' (वर्गंव १)। सारि औँ [शारि] १ परित-विकेष भैका (क **४**४२)। २ पास क्षेत्रमे कारंक-किर्शा

श्रीचा(बा१३व)। ३ शुद्ध के किए मन-वर्गास (१ ७ ६१ भूमि) । सारि रेको सारी (रे) (पाम) । सारिक नि सारिको सारगनाः मारोप-तारियं मासुबत्तर्सं सन्सारियो बम्मो (म ξ≪}ι सारिक नि [सारित] निपकाया ह्या, तील क्या ह्या छत्ते क्येए निक्विक्रम वेद क्रम्ये सुद्धं पृथ्विक्स स्वर्धार कारियाएँ (सम्बन्ध २२६)। सारिया ) 🕏 सारिया नैना, चीन सारिक्क्स | विशेष (या ५८६ वामा दे क 5A) 1 शारिकस न [साद्यय] समानता सरीबाई (हे २ १७) कुमा: बर्मेर्स ४२३८ सञ्च १*०* ३ विते ४६६)। सारिक्स ) वि सिद्दारी प्रमान पर्येच्य सारिक्स । 'वारिश्वदिव्यवंत्र द्या वेरे किर्मिक सारितको (बर्मेस ४२६) सन् १७६८ श्रम हेर ४४० इसाचा र ३३ र४)। शारिक्क देवो सारिक्क ≠ प्रश्नम (हे ८ १० सर १२ १२२)। स्प्रियिक्क सामा कि दि देवा है व ₹७)। शारिकात देशो सार = शारव् ! धारिस आची सरिस=बात (धंना ६ बक्स ११४) । सारिस ) **व सिहरू**यी स्वाक्त,स**र्वकार** धारिस्स 🕽 (राषा वार – राषा ७९)। सारी भी दि ] बूबी, ब्राह्म का सामान (वे विनः वरे) । २ संशिक्तः, मिद्री (दि कः २२ की। सारी की शारी ें आयो सारि = धारि 'सन्विमी क्षेत्रजुराखरीहि हत्या (दुर्ग 83 ) I सारीर वि [शारीर] सरीर का, सरीर संबन्धे (क्स दुर ४ ७५)। सारारिय वि [राग्रिरिक] ज्लर वेली (दुर्प १२ १ उच्छ)। खारुवि ) पूं [स्त्रुविष्ण, व] वैव साई खारुविया । के समाम वेच को बारख करने नामा स्त्रीकृष्य-ननिव स्रो-सीव पृहस्य- छातु प्रोर पृहत्व के दीन की धनस्वानाका कैन पुरुष (प्रयोग ३१: १४) बहु १ वय ४)। साहस्थित न [साक्रप्य] छमल-कमता (पूप २३२१)।

सारंग्ड देशो सारिग्छ = सारस्य (गडः)। स्प्रोहि वि [संग्रेहिम] सरोहस-कर्ज (पि ७६)।

साल दृष्टिताल, शास्त्री १ क्वीक्रिक्स महत्त्वह् विरोग (छा २ ६—पत्र ७६)। २ वृत्र विरोग सामू का पेड़ (सम १४२ सीयः कृता)। १ वृत्त पेड़ । ४ किसा प्राकार

(मुना ४६७) । १ एक राजाः साल महासाल सालवाहो म' (पशि) । ६ पश्चि-विशेष (पश्च - ११ थे-पत्प १) । ७ वृंत एक देव विराल (सम १९) । थेद्नुया न "कोस्क" कैया-विशेष (राज) । याहण, ॥इण

[वाह्न] एक युप्रसिद्ध राजा (विचार १६१) हे १ २११ प्राया पि रेश्व वह दुमा)। साठ देवो सार = बार (युपा १०४) एम्सा १ १६—पत्र १६६)। इस वि [विच]

बार-पुक्त (एक्स १ १६) : स्राक्त (शास्त्र) वर, पृष्टा 'माम्यामक्षाचीप हु वामेर्स सस्क्रमुक्क्स' (पुरा १०४) । स्राक्त पुरियास्त्र) स्रामा, वह वस गाउँ (मोक्

स्य निर्देशका प्रशिक्तार मुक्त के प्रोधे साम्र पुँचे साम्र (के) 'पास सामस्य स्मार परितामी व से सामें (पर्य १-पन के स्मार स्माप प्रश्रे। 'मैंन वि[वन्] सामानामा (सामा १ १ १-पन प्रश्रोति।

साक देवो साझा = शाका । शिक्ष, घर न [गृद] १ मिन-पीट्ट घर (निष्क २) । २ पणनशास्त्रा वर (शत) । साखर्य देवो सारद्वय = शायोग्र (गाया १

चाध्यम् दशा सारद्यः = शार्थकः (साम रेर- पत्र १६९) ।

सार्वसम्बद्धाः म [ग्रास्तृह्यस्त] १ कीशक क्षेत्र वा एक श्रास्तुनोत्र । २ वृंबी, उस केवरामा (स ७---पत्र ११ )।

सार्क्ये की [बे] सारिका मेना (देव २४)। सार्क्षमंत्री की [बे] सोदी किया सी (देव २६ दुव १२)। सार्क्षमंत्री कि सारुक्यों स्वसंस्थ्य-स्वय सायव

सार्ज्य वि [साजस्य] धरतस्यन-गुकः पापव पुषः (गठकः रान) । सारावकन्द्राग वृं [जाकस्याण] वृध-विषय (भ्रमः च शे—पत्रः १६४) । देवो साराकस्थाग । साराविकाश की विने वर्गरका देना (पत्रः) ।

(भय ६ य टा--पन १९४) । वता सारध्यस्था की [क] सार्रा सैना (पन )। सार्ख्या न [क] १ कुत्र की बाहरी सान (निन्दू ११) । र सन्त्री राज्या (राज्य १)। इ १सा 'प्रेस्थासन' वा स्वाचनले वा कोचर का पायर वा' (साचा गर ७ २ ७)।

सक्षमय न [सारणक] कही के समान एक

ठरह का बाय (गरि)।
साजभंती देवी साव्यर्की (वर्गिर १४७
पूरा)।
साव्यर्की साव्यर्की (वर्गिर १४७
पूरा)।
साव्यक्तिया। की श्राव्यक्तिक की साव्यर्की कियी।
बनाई हुई दुवनी (नुसा ४६ १४)।
साव्यक्तिया। की हिंदी सारक येवा (गयः व

चीहा पर (कुमा उत करत दी)। वे स्वत्र विरोध (चित्र)। सास्त्र स्वर्ध दिन्नी शास्त्र (वेत देर पर्यष्ट हैं १- पत्र १४ वर्ष के वेहे सम्बन्ध)। सारक्ष्यपूर्व के सस्त्रमा (चार)। सारक्ष्यपूर्व कि चित्री है कुछ निवसी स्पृति

साध्यकी [ग्रास्त] १ पृद्ध वर । १ विकि-

भी वर्ष हो नहा । र लुख स्पृष्ठि-योग्य (र ८ २७)। साराहण देखा साउनहण = शास-माहर ।

सार्वार्ष्ण बंधा सार्वनांष्ण व वालनावून स्तार्षिष्ठ कृत शिक्ष वाल, चारण (सूत्र २ ६,११) वह १६६१ हुमा; वृत्रक) । २ वकवाकार बनलावि-विवेश बुद्ध विकेष (यहण १—पत्र १४) । यह वृ स्थित पुरस्त विकास विक्रियन विकेष स्थाराम् ब्रह्मोर क पात्र वोष्ण ती वी (उब

पि)। असेल अगढ़ 🕻 🔁 चन

के करिएए — बाल का तीक्षण सरकार (एवं ज्या)। रिकेट्सआ की [रिकेट्स ] पत्र का राज्य करियाती की कमानेगीरी (पाम)। वाहण पूं [याहन] एक मुशीक एवा (सम्मत १९७)। देवो साल-बाहण। सर्वेट्स पूर्व [सायिक] मध्य की एक बाति (प्रांत १- एवं ४७)। सिस्स पूं [सिक्य] मध्य-वेंबरेव (पाप

६६)।
साढि हि [याखिन] रोमनेवाना (मडडः कुमा)। साढिजा की [शाखिना] वर वर वनस्य प्रस्त्र पृष्ठी वस्त्रविक्रमानियम् (मन्)। साढिजा को साडिजा (पन)। माढिजा को द्वी शाखिनम्म, ता] १ माढिजो हो रोमनेवानी पीएनीस्वन

्णवर्षसीखमाई (स्रांत २६)। २ सम्ब विशेष (विश्व)। साविक्रमिया स्री [शाकिमक्षिम] दुवर्षा (वज्य १६ १७)। साविक्ष वृ [शाकित] क्ष्युवाद, भूतदा

(पिछे २६ १)। साजिय वि [सास्माछिक] सम्मास्य दुवं का केमल कमाया का 'एवं सावियारी' वं कडी समेलमो होते' (उस्ति १)। साक्षित्र केकी सारिस = बहरा (कामा १

१—नव १६। का ४ ४—नव १६४, इन्छ)। साव्धिदीपित १ [साव्धिदीपित] एक कैन मृहत्व (उत्ता)। सार्क्ष थी [स्पाद्य] पानी यपिनो मार्यों की सहन (१ ६ ४४८)।

सासूत्र 🕍 [शासुत्र] बनन्दर विशेष

कमेन कर्प (धार्चा रे १ व ६ वज्र ४, २ १०)। साहुअ न [दि] १ छन्द्रक रोजा। नृत्रे पर धार्वि कम्प का सब मन्त्र (दे द ४२)।

बाद बाम्य का यव पत्न (दे ६ १२)। सासूर पुंचे [शासूर] रे थेड मेंडड (वाय नूर २ ०४० चा १२१ डापे रे श. मूज २ )। धी श. (वा १११)। २ न. एस विशेष (विक्)।

CER	पाश्वसस्महण्यना	साव-सासप
साव सक [श्रावय ] मुनाना। सार्वेषि (प्रीप)। बक्क सार्वन सावित सार्वेत (प्रीप सव पर्स्म १ १७)।	सावणा को [भाषमा] चुनाना (कुत्र ६ )। सावणी की [स्थापना] देवो सावणा (ठा १०पर १११)।	साविषद्य वि [सापेक्ष] क्षेत्रा-पुत्र क्षेत्र- वाला (भा ६) धंबीव ४१)। साविगा देवो साविआ (ठा १ —न्त
साव वृद्धार] १ तयार मान्नेस (यीपः क्रमात्र प्रति ११)। २ शस्त्र सीर्वत्र (याप्र- हे १ २९१)। साव वृद्धार्थी सम्बद्धारम् (सन् ११९	सावतेळा केवी सावपञ्ज (सामा ११ सावतेच ) पत्र १६ मीरा सुम्र २, १ १९)। सावच देवी सावच्छ (६ १ २१) पति विदि	४९६७ खाना १ २ — पत्र ६ महा)। साथिद्वी व्या [माभिर्छा] १ भाषक मास क्षे पूर्णिमा। २ भाषालुकी समावस (मृक्ष १) ६। इक्ष)।
प्राक्त वर्ष)। साम पुँ[स्थाप] स्वयन श्रम्भ कोना (विदे १७११)। साम (यप) देवी सम्बच च धर्म (१४४२)।	४६ कम्यू)। सापारिका की [झावरिन हा] एक वैत्र बुनि लावा (क्ला—द्वार)। सापारवी की [मावस्ती] हुस्तान देत ही प्राचीन एकवारी (एतका १ द—पन १४	स्मविची को [स्मविदी] स्था को सन्ते (त्य ११० टी) कुत्र ४ १)। स्मविद्ध पुं[स्मविद्य] सन्तर स्युक्तियेन स्मविद्ध पुं[स्मविद्य]
सायद्रक्त केवी सायरुक्त (कन्म) । सायद्रज्ञ वि [भाविषय] गुरुपनेतमा (सूच २ २, ७१)। सायपञ्ज व [स्वापतेय] वन बन्म (कन्म)।	करा)। सावज्ञ (वद) देखो सामज्ञ=चासाम्ब (वदि)। सावय देखो सावग (वदा छवा चट्टा) 'दर्द	सामेक्स केबो साविक्स (पदम १ ११) यप वक्ष )। सास स्व [शास्त्र] १ स्वता करता। २ शीव देता। १ हुकूम करता। पूत्र, वासिक्स (कुम १४)। कर्म, साविक्स, तीस्स (नाट
सावका व [सारास्य] स्वर्तभावन वीतिकारन (द्वाप २६६)। सावका वि [सापस्त] वीतेनी मां वी वंतान (कामि ४७)।	क्षेत्रं स्थार स्थापनारं राज्यानामा गुरूपं (रहम १३ १६)। सामय युं स्थापन्। शिक्सपे प्रमु, व्हिलक बालम्य (शासा ११—नन ६१। रहस मानु १४४ महा स्था।	पुत्रमं १०) १००० ता विकास ता विद्युप्ति । पुत्रमं २ कृप्त १२१) । वृद्ध सीत । सास्त्रमं (वृद्ध होता वि १११०) । वृद्ध क सास्त्रमं (वृद्ध — विद्युप्ति । वृद्ध होता । सास्त्रमं (वृद्ध हो) ।
साबको को [स्पारती] चौतेनी में विनाशा पुनराती में 'शान्ती'। स्वाम्बा पुनराती पानत्या विद्य नावर नेहैं (नमीत ४०)। साना पुन [साय ने] १ वेन कारक वाहैन प्रक पुनरात (स. १०—पन ४१६ जन।	सामय १ [म] १ रारच, धानव प्रमु-विशेष (दे १६) । २ वालों की जह में होनेवाला एक बच्च का बुत कीट (बी १६) । सामय १ [शायक] बलाक, बच्चा शिल्यू	सास चक [काय ] क्षूया। कार्य ( पर्)। कर्य, तासर (ताझ ७०)। सास पु [प्यास] १ ए च (ता १४१।१४०)। २ ऐक-विशेष कास-पोन (छास्च १ ११
खाबा १ २नव १)। २ वाह्यस्य । १ इड स्रावक (शाबा १ ११नव १६३) प्रसु २४)- तथी धागरवरी नमकानेका य सदिसस्युक्तसम्बद्धि साववस्ति श्रेषुतास्त्रि	(नझ)। सावधी और [शावधी] निषा-विशेष (नूस २ ९,२७)। सायसेस वि सावक्षणी सर्वाध्य, बाकी वचा हुमा शावाज कानसेस (क्य)।	पण देश जवा जिला दे हो। इस्त की विस्तु भीवन बारस्य करनेवानी (क्स्स बुधि पण देश दे। सास दुन [तस्य सस्य] दे केम-नट मान्स (प्याद दे ४मा कर। स्व १११) 'सास्य
(बाक ६१)। ४ वि मुक्तेनामा। व मुक्के बाबा (६ रे १७०)। यस्म वृ ियमें] अञ्जातनार्थनंत्रस्य साथि न्याय कर, येन मृहस्य ना वर्षे (श्रामा ११०—यन१११)। सावद्य वि [सान्तय] नारमुक्त पारमाना	साबद्याच्य वि [सावधान] स्ववधान-पुष्ठ, बचेत (बाटा रेगा)। साबिध्य वि [शायित] । त्रितको सात विचा यवा हो बहु। २ जिसको लोबेस दिशा क्या	धकिटुबाबां (पत्नम ६६ १४)। २ बुझं चार्वि का फला। ६ वि बख-बोरम (है हैं ४९)। देखों सस्स – रहत्य। सासम पून [सस्य क्र] स्टन की एक वर्बर्ट,
(अय वर सीच करें। विशेषक्ष मूर ४ २)। स्राप्य व [आदम] १ तुनाना (जर करें श मुद्रा रंं)। २ तुनान विदेश कारण बा स्त्रीता (ब्यंव ६० क करा है ४ १६७०	हो मह (जापाः १—नव २६) स्नद ११— यव ६ २ सा १२६)। स्मापित्र वि [भाषित] नुनाता हुमा (वस ११—पत्र २१ जासा ११—पत्र २१) यवस १ २१४, ६६। सामे १)।	'कुणनगर्हिक्शेवशस्यक्रदेव्यावीह्यस्य — (क्या)। स्रास्ता [[मासक] दुन्न-विशेष बीवक सम का पंक (काटा १ र—्या २४)। सामान्य व [सासन] १ हास्तान्त्री वाषा
१६८) १ ति भारतिन्यनास्त्रको भारतन् प्रायश्च सा दिस्य जो दश्य के तृता जाव यह (बर्मेंद्र १२ )।	साविधा थी [धावितः] देन नुदस्य वर्षे वान-प्राणी थ्ये (वन प्राध्या १ १६—प्रथ १ ४ कम्पः बद्धा)।	नैव धेन प्रत्य, सावन निज्ञान्त श्राप्त संसू वाक्युमेर प्रत्ये (नूस १ १, १ ११) सन् १ सम्ब १० १२ - १४) । २ प्रतिशासन

(CIRC at 1 to a) to 5 from what

(मञ्) । ४ माद्रा हुकुम (पर्राह २,१—यव १ १ महा)। १ प्राप्त निर्वाह-सामनः भोर्बद्धमामिपविमाए सासर्थे विद्यरिक्**र** मतोर्थ (कूमक २३)। ६ वि प्रतिरादङ प्रतिसारत-इन्हों (सम्म १ यख २२) खंबि Ya) । ७ प्रतिगद्य जिसका प्रतिपादन किया माम बद्द (पराद्व २ १ — पत्र १.१)। "तृथी क्ये ["द्वा] शासन की प्रविद्वाको देवी (रूप)। सुरा की ["सुरी] बहा धर्ष (पंचा ₹**२)** 1

सामग देवो सासायण (कम्म २ २ % १४८८ २६ ४, ११ ६ ४१ वेंच 3 K2)1

सासणा की [जासना] रिका (परहर | **र—यम १** - ) ı

सासपावण न [झासन] बाबापन (स 1 (\$\$8

सास्य वि [शाद्य] निस्म, प्रविकार (भगः पामाचे २ ३ मुर ६ ६८३ ब्रामु १४१)।

स्प्रस्य पु [स्प्रभय] निज का बाबार (ध ર ૧) ા

सासप र्वु [सर्पैर] बरलॉ (बाका २ १ = १)। नाजिया ध्री ["नाजिका] कद-विशेष (मत्या२ १ = ३)।

सासमूख दृष्ट्रि करिकच्याका पेड़ कींग्रह क्विंच, कवास (दे = २१) ।

सासाम ) न [सास्यादन] १ प्रण-स्थानक सामायज ) विद्येष, द्वितीय प्रेश-स्थान (कम्ब र १३ (१)। २ वि द्वितीय प्रशास्त्रात में बदमान बीब (मृम्य १६ सम्म २६)।

स्मिनि वि [ भ्यासिन् ] प्रास-रामशाना (तेषु 3 ) i

मानियु (सी) वि [शासियु] समान-कर्ता रिव्या-वर्ता (मभि २१४) ।

षासिञ्च रका सासि (विकार ७—पव 33) 1

सामुया देखा साम् (मुर ६ १४७) ह रेरेश लिर १८६) ।

सामुर व [ प्रागुर ] यञ्चर-वृष्ट (बुर व ter) i

सामुर (धा) रेपो समुर = प्रशुर (गरि)।

सास्का [ सम्] माग्र पात वया परनो की माता (पाम पउम १० ४ मा १३६)। सासूय वि [सासूय] धनुत्रा-रूक मध्यरा (नुर १ १६० का ७२व ही)।

सासेरा श्री [र] यान्त्रक नाक्नेवासी यन्त्र की बनी हुई नर्संकी (सन)।

साइ वक [कथ्यू श्रास्] कहना। शाहार साहेद (हे ४ र उन काथ महा)। सार्मु, साद्रेमु (महा)। यथि सादिस्सर, साहित्सामो (महा साचा १ ४ ४ ४)। बह्न साहेत साहर्यत (हंका रेक्ट काम । सुर १ ११२)। स्टब्ह साहिण्यंत, माहिप्पेत साहिङ्यंत साहियमाण नुवा २ ४, चंक मुना। (चंडा गुर १ ३ २६६ सर दूधर अंड)। सह साहिज्य साहेचा (काम)। हेइ-साहितं (कात महा) । 🕏 साहियस्त्र, माहस्रस्य (गहाः मुद्द १६४)।

साह देखो ससाह = धार् । इ. साहणीध (धाप) ।

साह सक [ साध ] १ सिद्ध करना बनाना। २ वरा में करना। सम्बद्धः सम्बद्धः साहरि (मनः कम्पाधव प्रामु २७) यहा)। वक् माईत साईत साईमान (सिर ६२० महा पुर १६ ८२)। स्वष्ट साहित्रमाम (भार) । हेड. साहिष्ठ (महा) । इ. साह गित्रा सा**ह्**णीअ साह्यक्य (गाःश पत्रम १७ १ मूर ३ २८)। साइ वृंदि । शानुका बाद् । २ उनुक क्ष्मू । ३ वशिसर, दही की मबाई (दे क **११)** । ४ त्रिय पछि (धीवि ४७) । साह (बाप) देखा सक्य = वर्ष (हे ४

३६६ द्वमा) । साई अग रेपं [ ए ] नोपुर, गोपक (व

साइंच्या विव्यक्ति २०)। साइंजण की [साभाजना] नवधै-निधेर

(विपाद ४--पद ६४)। साह्य वि [सामङ] विदि क्रांगला

नायना वरनगाना (गाम्य १ व डी—पत्र १९६० कम नव २६० मुख वट वर्षन હાં શિૄ₹)ા

साह्य वि [ शाम इ, इ.स. ] क्युनेशना (बुर १२ ३ म स्६१) । साहक्त न [साहायन] पहायना मरद (निने

२११६ वर्ण १ रवण १४ विरि १६८ कुम १२) । साहरू वड़ [सं + पृ] वंरच्य बरना, संयेग्या । साहट्ट६ (६ ४ वरे) ।

माइट्टिअ वि [सर्व] वर्षेत्र इया चंहर किया हवा रिबोइट (कुमा)। साइटट्र व [संहत्य] स्पट कर संदुषित कर 'राष्ट्रिएं कायु वर्षाय उसेनि सम्दुर्दु' (क्रण) 'साहर् दु पार्व रोएन्बा' (माचा २ १६) 'वियवेश सक्षद्र य ने सिसाई' (नुष १ ७ २१)।

साहटू वि [संहर] पुनफ्ति (यव) ।

साहण धक [सं+इम् ] संग्रत करना सङ्घ करनः, चित्रसमा । साङ्ग्रंसि (भ्रम) । कर्म. साहानंति (भव १२ ४---पव १६१)। इन्ह साइष्णंत साइप्रंत (चन क्र २,६--- पन ६२) । श्रेष्ट साङ्गिता (पन): श्राह्म व [साधन] १ स्ताय, कारह 😈

(रिसे १७ ६)। २ छैन्य, सरकर (क्रमा मुर १. १२१)। ३ वि सिद्ध करनेवालाः 'जह बीशाय पमामी मयस्पत्रमगहली होई' (द्वि १६ मूर ४ ७)। स्ते या, जी (क्षेत्र वह पद्)ः

साहभाग म [संश्तन] संगत पायरी का धारत में विरक्ता (मन ८, १—१४ ११%) १२ ४—पत्र १६७) ।

साइणिश्र र्रू [मापनिञ्ज] स्ना-पति (दुरा २६५)। साइनिञा रशो साइ ⇒ साथ्।

साइपा रेको साइन ≭सावन । साइणाज देवी साह = रपाप् छाष्। साहण्येत रेवा साहम = च + हुन् । साइत्थं च स्टिह्स्तन है। चरन हाव में। र बाजार (छाना १ ६-- तर १६३) बगा) ।

साहरि ।या ३ औ [साहरित क्री] स्थानीरका साहरवी 📑 यस्त हाब म नुरीत बाद पाहि हाय दिना करने य होनगरा कर्य-कद

(स्र २ रे—पत्र ४ ३ नर १०) ।

(ग्रीप राजा परुष १

स्पन सक भावय | भूताचा । सार्वेशि

(मीप) । वह सार्वत सावित सार्वेत

साम व साव व साव व साव का क्षेत्र (धीय

भूमाः त्रवि ११) । २ रूपकः सीर्पण (प्राप्तः

I ( WE

पाइअसद्गहण्यका

साक्जी की श्चिपना | केबो सायणा (ठा

वासा (बा ६- संबोध ४१)।

1 (585 3 % साव दें [शाव] शबक, एका (चपु ११६) माञ्च ६६)। स्थव दूं [स्वाप] स्वयंत रूपन, सोना (विधे (4XX) साव (धन) देवो सन्ध = सर्व (हू ४ ४२ )। धारहळ देवी साप्तपळ (क्य) । सावइत्त् वि [भावियत्] गुनावेवावा (सूच २२ वर)। सावपट्य न [स्वापतंच] वन हम्म (क्रम्य) । सावस्य न [स्प्रपत्स्य] इपर्रापन, तीरिनामा (क्य २११)। सामक 🕅 [सापरत] बीतेची नां की क्रीता (मनीव ४७)। सावका की [सपरती] सीतेकी मी विमाता इक्सती में 'बानकी'। सामग्रा सुवनकाशी पासल्य बहिब बायर नेहें (वर्गीव ४७)। सामा प्रव [भाव इ] १ केत ब्यावक प्रकृष्ट मक मूहरूव (हा १०---एन ४६१) समा<sub>र</sub> काया १ २—यन १) : २ बक्का । ३ बुद्ध ब्यानक (कामा १ ११—ाम १६३) मए २४) वसी सागरवंदी <del>का</del>सामेसा व<sup>े</sup> यरिवा<del>ङ्ग्ल</del>स्बरिड धाववारिड संबुक्ताक्षि (सक ११) । ४ वि युक्तेशस्ता । १ सूनाने-बाबा (हे १ १७७) । सम्म बु विसी प्रान्हाविपाल-विरम्भल साहि बारह यह केन गुहल्य का वर्षे (हामा १ १४--पश् १६१) । सापळ वि [साउच] काव-पुकः वावनासा (मन एन मीच ७६३ दिने १४३६ तूर ¥ ₹); सावण न [भावत] १ नुनाना (उर ७२ 🕅 नुसार 🕦 १९ दू माम-विशेष शावन ना नहीना (परन 🕮 का कर्ण है 🗑 १९७ १६६) ६ वि सवस्त्रीत्रय-प्रावन्ती धावस्त-प्रत्यक्ष वा विकास भी काल के गुला जान कह

(यमें धे १२ १)।

१ —पत्र १११)। सावतंत्रा ) केवी सावएका (खाया १ १---सामतेय जेपन ३६८ ग्रीयः सुग्र २ १ ₹¶) i सावश्च देवी सावद्य (दे १ २४) त्रीण सिर्दि ४१ क्या)। सापरियगा 🖈 [बावस्तिक] एक 🖣 पुनि राण (क्य-प द१)। सायत्यां की शावस्ती प्रकृत्य देश की प्राचीन राजवानी (खावा 🕻 व—पन १४ चवा)। सावज (पर) वेडो सामज्ञ प्रामान (धरि)। स्थापन केको सावना (अच्छ छवा महा), 'पूर्व क्येमि गुंबर समित्वरं सक्तावसी तुत्र्यं (पक्षम ३३ २६)। सामय र् [मापद] किम्मरी पर् वृक्षक मानवर (खाना १ १—यम ६१) क्या प्राप्तु १९४४ महा सत्। । सावय पूं [दे] १ शरब, बावब प्रयु-विशेष (रे व २१) । २ वालीं की बढ़ में होनेसाला एक वच्छ का चुन कीट (बी १६)। सावय 🕻 [झावक] बाबक, बच्छ किय सावरी को [शावरी] विदा-वितेष (तूच २ २ २७)। सावसेस वि [साबग्नेप] धर्यान्छ बाकी बचा हुमा 'बाराऊ साबदेस' (उन)। सामग्राण वि [सावधान] स्वयान-दृष्ट. वनेश (नारा रंगा)। सामिज मि [शापित] १ निस्को शाप दिसा थवाहो वहः २ जिसको बीवव विदानधा हो नह (छाता १ १--- पत्र २१: शव १४---पण ६व२ स १२६)। साविक वि [बावित] गुनामा हुम्ब (धन १४--पण ६ २ छान्य १ १--पण २६। पत्रम र १ १४, ६६३ सामी १)। साविभा की [भाविसा] वैन पूर्वनकों

वाकनेवालो की (जवा शासा १ १६---पव

१ ४। कमा सहा)।

साविमा रेबो साविजा (छ १ -- नव ४६६ सामा १ २--पत्र ६ महा)। साविद्री की [मानिक्षी] १ यात्रस मास सै प्रिया । १ पाष्ठ की बनावस (दुन १) Crewit. सावित्ती 📦 [सावित्री] आहा को कथी (का ११० टी। कुम ४ १)। समिद् पुं [चाविष्ट] दापर पशुनिकेत सम्रो(के२ ५ ≈ १५)। सावेक्त वेदो साविक्त (पहर १ 183 चप वश्व )। चास सक [शास्] १ छ्या कला। २ धीख बेना । ३ हकुम करना । मुक्त, सास्त्रिया (क्रम १४) । कर्ने, सास्त्रिक्ड, सीसड (बाठ---पुच्चा२ कुन्ना३१११)। यक्तसास सासंद (क्य १ १७) भीग वि ११७)। सासजीक (नाद—शिक्ष १ ४)। भग्छ सासिकांत (स्म १४६ वे) । सास पत्र किथ्य किला। ( थर् )। कर्न, सारह (प्राप्त ७०)। सास र् [कास] १ व न (बा १४१। १४७)। २ रोक-विरोध कास-दोय (स्ताबा १ ११--पथ है है। क्या मिता है है)। ह्या औ [ चय ] भीवन बार्ड करनेवासी (बर वृद्धारियम १४४२)। सास १ न [रास्त्र सस्त्र] १ क्षेत्र-वर्ष वान्त्र (पराहर ४---गम ७२) स १३१)ः वाका मस्दिवायां (पत्नम ३३ १४) । २ शुर्व भाविकाप्रमा ३ वि वध-योग्य (है रै ४६) । वेचो सस्त - रूख । सासन पुन [सस्य क्र] छन की एक वादिः पुष्पवद्धिमोत्रतास्याक्ष्येयस्थानिकाच — (कथ)। सासग र् [सासक] रूज-विधेन ग्रेमक ग्रम का पेत्र (खावा १ १-- वत्र १४)। सासण न [शासन] १ छक्तकी गण केंच यंत्र-पत्य, धायम विकास शाका 'मर्च्

सम्बद्धमेन पद्धमे' (तुम र<sup>ि</sup>२ १ ११) मनु

रेन्द्र सम्बर्ध निसे वर्ष)। ए प्रतिकारन

(स्थिति क्या इ. १७४)। १ विकार, सीक

(0) 1 ह्यारण न [सम्रारण] क्षेत्र तरह से बारक इरहा, टिकानाः 'ग्रामिक्से परिकक्षमे संबुच्य दहारए कामसाद्वारक्रद्वार्' (साचा १ **व ८**, ₹**%**) i

ग्रमन्] रेको उत्परका दूसरा प्रयं(सम

अक्षारम—सिमम

अहारण म स्थिपारणी सहारा करना अल्लार करता (सम ६१)। प्राहारण न [संहरण] संकोचन संकेटन (मिसे ३ ४२)।

BIद्वारिश्च वि [संचारित] क्षेत्र ठख् वारण निया हुच्च (च्येष)। साहाकिथ वि [स्वामाविक] स्वभाव सिक्र,

नैसर्निक पुरस्की (या २२%) बढका क्षम्पा पुत्र ४६३)। साहि दें [शास्त्रिन्] बुक्त पढ़ (पाम, बख च्य इ १६६)।

साहि दे दि । रुक देश का सामन्त राजा 'पठो धक्यूचे नाम कुछ । तत्व ने सामेका हे चर्चिको मर्स्याचि (मन)। २ देखी साही (रे य, दा है १२ हर)।

साहि (प्रा) रेको सामि = स्वामिन (पिष)। खाहित्र वि (इधित, झासित स्वास्थात) नहा हुमा, चचा प्रतिपादित (मुपा २७१ पुर १ ९ ४ वाला पाक सावा)। सम्बंध कि [साधिव] किंद्र किया हुया

निमारित (संत १६) सुर ६ ६६ मार्च)। सादिम दि [साधिक] स्वरूप, साविरेक (कम्प्ट नुपा २७१)। साहिम वि [स्वाहित] स्वहित से विच्य

निव का प्राहित (सुपा २७३)। साहिकरण वि सिहिकरण १ व्यक्तिस्छ-इष (निष् १)। २ कतह करता ग्रयहता (स ३--पत्र १४२)।

स्पर्वत्रस्यि वि [साधिकरणिन्] विविकरण 环 रुपैर पारि भविषरज्ञाना (अप १६ t-44 (ta): समित्गरण देशो साहित्करण (सन)।

सादिगर्राण देशो सादिकर्राण (का १६, १ ध-वन ६११)।

साष्ट्रिकांत वेको साह = कपर् । साहिकासाण रहा साह = धाप्।

यस्य कृत १३)।

साहिण (घप) वि [ कथिम् ] क्र्येनमा (स्रु) ।

साहित्र देवो साह्य (वेत १६ मुपा २ ६)

साहित्त न [साहित्य] चर्चकार-छात्र (नुपा \$ 2 XX8) I साहिप्पंत

साहियमा ग रेको साह = कन्य । साहिप्पंत

साहिर वि [शासिए, क्यपिए] रासन करनेवासा, कहनेवासा (पउट) । साहिसम्य न [दे] यपु, राहर (वे ॰ २७)।

साहो की हिं] १ रच्या. बुहला (वे य, ६ धे १२ ६२)। २ वर्तनी मार्ग रास्ता (पिंड ३३४)। ३ राजमार्ग (से १२ ६२)। ४ विक्की, सीटा दरवाया (भीव ६२२)। साद्दीण वि स्थापीन] स्वायत स्वतन्त्र

(बाल, वा १६० जाद ५३ और ३ दंदी प्राप्त ६६)। साहीय वैको साहिश = साविक

(भीषस २२१)। साहु वु [साधु] १ पूनि यदि (विसे १६ धाषाः भूपा १४२)। २ सम्बन सपुस्य 'साहको सुमाणा' (पाम)। ३ वि सुन्दर, शासन, समहा (शापा स्वप्न ६७४ दुन ४४९)। क्रमा व [क्रमम्] वा-विशेष

्री [ कार] बाजवाद सामुराद प्रशंसा (केणो ११ श का ४ ४ ठी--यम २०६ पराम १६ २६ स १३ १६ महात्मिक विकार र)। | साह र्षु ["साथ] वेष्ठ दूमि वाचार्य (दुरा १४१)। याय पुत ["सात् ] प्रशंकाः न्त्रामं च बाहुबार्य' (स्थिरि इक्ष्मा स इक्स्म गुरा

1 ( wg

निविष्टतिक तप (सबीव १८)। कार बार

सार्द्र्य की [सान्ती] १ की सापू, पनली यविष्ये। २ वती स्वै। ३ सब्द्री (प्राप्त २०)। साहुणो स्पे [सप्या] धी-शपु व्यविशे (बाला पर १ १४। मुता १७ ११२। साथै २६ क्य २१४)।

पाद्य सुपा २२ २४६)। २ शिरो<del>वझ बं</del>ड (एंगा)। ३ शाका कामी (३ ८ १२ पड्ः पाय)। ४ जूर्मी। इ. पुन इत्पः ६ पिकी कोमल । ७ शहरा समान । य समी सहचरी (देद १२)। १ मगूर-विश्वस (स १२३ टि)।

साईकी रेज देर, या ६ ६ प कर्णू

साहेळ देखो साहळ (दे ७ =६ मुपा १६२: वजह महा स्वर्ग २०)। साइक्ष वि [दे] स्तुगृहोत (दे वः २६)।

साहमाण देको साह = साम् । सिक्स देखो सिख = किन (चंति १७)। सिम्न दिक्ति वापित (से ६ ४८) उस

१६ १४ मुद्र र ७ व)। सिझ देखो सिक्सा = ध्यात् (मग मादक १२८ वर्गचे २४८ १११२३ मण ४ दूप

सिश वि शित विभन्न वारवामा (मुपा YOX) I सिम वि स्थिती सच्ची तरह प्राप्त (विस EXXX) I

क्यीतामा सम्मेमा दृष्टि धनस्त्रम्माण । सिञ्च दृं[सिस] र गुम्ब वर्ण । २ वि सेट स्केर गुस्ब (बीप) उर नाठ---विक्र ७१३ ल्या ११: यवि) : १ वज्र वैषा श्या (विसे ३ २६) । ४ सः नाम-कर्मवा एक घेट. धेव-बर्ण का कारण-मृत कर्म (कम्म १ ४)। किरम प्रे किरणी कर पार

(बर १६६ थी)। गिरि ट्र ["गिरि] वैद्याद्य पर्वंद की उत्तर भें शि में स्पिद एक विधावर-नवर (इक्)। उन्ध्रण व [ध्यान] नवैश्वष्ठ व्याव, गुस्त व्यात (नुपा १)। वक्का वूं ["पञ्ज] शुक्त पद्म (मुपा १७१)। यर पूर्व (स्र विश्वास (स्र विश्व स्था)। बह्र पूर्णिया पान बहान का बादकार 'बंकोइयां शियवशे पारका बनवाछ निप्रती' (बय ७२= झ)। बास वृं [ बाससः ]

शताम्बर वैन (को १४)। सिम (या) देशो सिर्ध = भी (पनि)। देत वि [ सम् ] सरपी-इरिध वनाव्य (भवि)। सिमात्र देवो सिषय (या बाउठा बहेका

क्ष्यु)।

111

835 पाइअसहमहण्यवो साहम्नेव—साहारम साहबंद रेवी साहज - वें + हन्। साइक न साफक्यों सफलता (योग ७३) : शीबक्ष बासी (माना २१७ ६) उस साहरमा व साधार्थी १ धमान मर्थ दुस्य साह्य देवो साह् = साबू, 'यह पेन्बह साह्य भीप प्राप्तु १ २) । १ देव 🖭 एक देव को (सम्य ११६) दिह १६६) । २ साहरय, तिह कार्बि (पद्म ६, ६१:७७ १४)। (यच४ ६)। लंग व भिक्की सम्ब तमनता (विधे २३०६ सोण ४४३ साहब न [साधन] साबुता, बाबुतन (पद्मन वेचा १४ ११)। 2 E ) i साहरिय वि सिर्धामम्, साधमिन् । स्वान साहरू व [स्वाभावय] स्वमावता स्वभाव वर्षेत्रका एक-वर्धी (रिष्ठ १९६. १४६) पन (वर्गल ६६) । १४७) की पी(पाचा २ १ १ १२) साइस न [साइस] १ विना विकार किया मद्या)। बुझ वेड़ (सुवा ६६)। वादाकाम (क्व महा) । २ वृं एक दिला-साइम्पिन ) वि [सावर्मिक] कवर वेको बर नरेन्द्र साइस-बरि (पस्म ४७ ४७)। साबस्मिग । (धोष १६, ४०६) बीपा उठ गह प्रे गिहि विशे सर्वे (पत्रम ४७ २६ १ कस मूल ११२) वंशा १६ २२)। ¥धः यक्तो । साहय केको साहग = धावक (उप ३६ संहस 🖦 साहस्य = बाह्न (एउ) । स ४६८ कलो । यस्यदं (कास)। साइसि वि [साइसिव] सक्षय कर्न करते-साहय रखो साहग = कावक कमक (सम्म नामाः सम्बन्धिकः 'दे चीप साहब्दिलो क्लम-\$Y\$) I बता" (इस ७२व ही फ़िरात १४)।

साहय वि [संहृत] संदिय्य, समेदा हुया (परहर्ष ४--पथ थव शीफ तंबू २ )। साहर चक [सं+धृ] संबरक करना। साइरइ (है ४ =२)। साहर वह [से+डू] १ वंकोण करनाः संबेद करमा, सरेसमा समेनमा। २ स्वात्यन्दर में बे नाना। १ प्रदेश कराना। ४ विसना। ५ म्यासर-प्रीत करता।

कम्बर सम्बद्धे, सम्बद्धिः (मन ३,४---पन रेराकल क्वानुसार स १७३ वि ७६)। साहरित्र (स्थ १,४)। श्रीप धार्द्धिंग्यस्वानि ( रूप ) । करहः साह् रिश्जमाज (बचा चीत)। वेड साहरिया (भ्य)। हेड्र साहरिचय (अव १, ४---यम २१ )। साहरण न [सहरण] एक ल्वान के बूपरे स्थान म से जाना, स्थानान्तर-नवन (स्थि 4 4 4 4)1 35)1

सादश्य रि [व] का-भाइ, बोह-राहित (हे साहरित्र वि [संद्वत] १ स्थानान्तर में नीत (सब ६ कम्प)। २ धम्यव थिप्द (विश ११ )। १ संत्रीय किया हुआ, संशोधित (पीरा) । सार्हारत № [संहत] बंदरल-पुक्त (दुवा: कव)।

परिमान्सवामा 'कोन्यस्यसम्बद्धाः विकिएसी मेक्नानीमी (शीवस १०१)। ६ व. हुनार (बोनस १०१)। सञ्ज द्र [सञ्ज] व्यक्ति-वाचक नाम (क्व)। साइस्सिय वि [साइझिक] ! इवार का वरिमाखनाचा (खामा १ १—पन १७ क्या) । १ हनार धारमी के बाद अक्नेशाला मक्ष (धन)।

साहस्ती 🗯 [साहसी] इवार, एव की

साइसिम ति [साइसिक] जार देवी

(भीक सुमार ए ६२ चाद ३७ क्रम

**छादस्स वि [साद्**स्र] १ विवरा मुस्य

हवार (बुबा, क्षमा वाकि) हो वह वस्तु

(रसनि १ १६४ जन्म सङ्ग्र) । २ इनार का

A\$\$) 1

विक्रमाण वरोपायो सार्क्सोमो समावता (ज्ञारक १८ सम २६ जना सीपन्यत २२ २३। इ. १ १२३)। सामा 🛍 [भगमा] मर्चना (सन ११) । साहा म [स्वाहा] क्वता के स्वरेश से प्रथ्य-त्याव का नुषक सन्तर- साहति-मुक्त राज्य

(हा द---वम ४२७ व्यक्ति १५०)। सम्हास्य [राजा] १ एवं ही याचार्यकी र्वतित में सराम्य पहुच्च कृषि की साधान-पण्नस संबंध (क्य) । २ <del>दूस</del>

का दुक्का परवय (माना २, १ ७ ६)। मय, मिश्र मिग द मिगी रतर कबर (पाधा की २ मुपा २६२। ६१८)। र, छ नि भिन् देशाधानाम, राजा-मुक्त (शस्य १२ दी' तुपा ४७४)। २ ई साहाञ्चसाहि ई दि शक देश का समाह बाबरमङ् 'पत्ती सम्बूतं बाम कुन कर्न वे सम्बंदा वे स्वक्रिया महत्त्रांत को स्वमंत्र-हिंगई समागरिकांदबुद्यमानी सो स्ट्राल्स्सी साहार सक [सं+ भारत] मन्द्री तक बाराज करना । साझरफ (अवि) । साहार ई सिहकारी पान का नाब, 'होना फिल साहारी साहारे संबद्धानन बहु वे' (बन्ह १६ ३ दुपा ६६॥) । साहार प्रे [के साधुशर] साहबर, मह-वन (वस्त १२ दी)। साहार र्द्र [सहावाद, सहस्रर] वन्स बाबार, धहारा, प्रवचनवन, शहायता, वर्ष, करकाए 'पर्यवत्तरं महोद्या व वेदवेतेष

चाहारो' (क्या पुण्ड १२१) 'धुनको स्प्रकार' प्रशंतवारसंघरतार्थं (भीव १०६) व ४२६ वस्य १६ : सहा) i साहार विस्तिहरूरी बान के बाव के जनम याम-बृध-प्रमन्ते (कृष्)। साहार 🔐 दुंव [साधारण] १ वनस्परिन सादारण रे विरोप, यहां एक सरीर में सन्तर थीर ही यह मनस्पति कर पार्ट । २ कर्न-विरोप, जिसके स्थम है सामाराज-मनश्मी वे जन्म होय वह कर्य (काय २, २०) सद्द १ र—पन ≒ काम १ र७ जी व क्यल १---पन ४२)। ३ क्मरल (माद्र t)। ४ ई काभारक वसपविन्तास का जीव (प्रत्य १—पत्र ४२)। इ.वि कामला ।

<sup>व संस्</sup>रु तुस्य (वस्य १—वत्र ४१)। <sup>क</sup> र्न- काकार, बहायता मक्छ क्याराजा<sup>1</sup> थ केंद्र विलाखीम स्मा<u>र्</u>द्रम् । बन्नु स दुस्ट क्षि (बन ११) । सर्गरनाम न विशेष

(tc 1)1

₹)1

सिंवल र् [शाल्मक] तेमन का नाम (रेमा

<sup>२</sup> ई प्रथनिरोग (हे १ वधः संधित ३)।

सिन्दिम वि [सिन्द्रित] सन्दर-पुन्ड किया

[पा(चा १ )।

१ ७३) । शास्त्रम पुन [स्यासक] र क्लीको वालो। २ क्लो ना पाक (बावा १) । देवो संबद्धि । 3 1 5 बचाबशन) । सिंचा की [चिन्दा] फसी छीमी कोसी समीय सिका (पाम)। सिंबाड़ा की [दे] ताक की मानाव (दे क २६)। सिंबीरन [व] पनान मास (देव २व)। सिंग र् [सम्यान ] रनेम्मा कड (हे २, ७४ तंदू १४ महा) । सिमांक रेवो सियकि = स्टम्पसि ( मुपा सिंधि वि [रताप्मन्] स्वेग्न-पुक्त, स्वेप्म रोपी (मुपा २०१)। सिंभिय वि श्लिप्सिकी स्वेप्य-सम्बन्धी (बंदु १६ गाया १ १--पत्र ४: ग्रीप) पि २६७)। सिंह् पूं [सिंह] १ शार प्रशु-विशेष मूध-राज केसपी (प्रामु १६४' १६६)। २ एक शक्षकार (बारेबर्डी)। १ एक शका (१४ए) २६) । ४ मंगवान् महानीर का एक शिष्य, पुनि-विधेष (धन)। १ वर्त-विधेष विविधाहार का समयना-निरिदाय (संबोध १<)। असाअय (घप) न [ ।प्रस**्**रत] १ सिंह की शरत पीछे देखना। २ सन्त-विशेष (स्व)। इर न ["पुर] पंजाब केश का एक प्राचीन नदर (भीव)। इस्पर्मी और िकर्गो} वनस्रवि-निरोप (परागु १—पत्र १४)। "दिसर व दिसरी एक प्रकार का उत्तम मारफ-सर्द्व (उर २११ दी)। ∢खर्ष[द्वीर व्यक्ति-वाव⊊नावः २ विविद्य स्थि ह्या (हे १ १२)। द्वार न [हर] यवनार (नंद १ ३)।

C33

<b>c</b> 84	वर् <i>षस</i> ्यस्याचा	सिश्री—सिनान
सिक्षेण कुँ किंगु करण केंद्रण (के कहे)। सिक्षेण कुँ किंद्रणाकर है किंद्रणाकर है किंद्रणाकर है किंद्रणाकर है किंद्रणाकर है किंद्रणाकर है किंद्रणाकर केंद्रणाकर करणा है केंद्रणाकर करणा केंद्रणाकर केंद्र	पाइसस्यस्मा पायो  सिंक्स केवो सेक्स (यण्ड ४)।  सिंक्स केवो सेक्स (यण्ड ४)।  सिंक्स केवो सेक्स (दे १ १ प्रम देव)।  सिंक्स केवो सेक्स (दे १ १ प्रम देव)।  सिंक्स केवो सेक्स (दे १ १ प्रमाय)  स्था-पूष्प वर्।।  सिंग व १ १ मु १ वर्गायार स्थानि दियाँ  के उलाव (संगीय १०)। १- केवो सेत =  प्रमू (स्था पाया पाय ४१। ६०० जा  ११ ११)। पाइय व िन्सित्री  सेवल वर्गाया पाया पाया १ ११  ११ ११)। पाइय व विस्तित्री  सेवल वर्गाया पाया पाया १ ११  ११ ११)। पास द्वी पाया पाया १ ११  ११ ११)। पास द्वी पाया (पाया १ ६१  ११ ११)। पास द्वी पास (पाया १ ६१)।  सेवल वर्गाया प्रमाय पाया १ १ १ प्रसाय विस्तित्री  सेवल वर्गाया प्रमाय १ १ व्या १ प्रमाय १ १ १ प्रसाय १ १ १ व्या १ १ प्रमाय १ १ १ व्या १ व्य १ व्या	सिंगि हि श्रिमिम् रे संस्थाम (कुल क. १६ १० १६) १ ए १६) १ दू वेद वेद १६ १ एवंट १४ मा १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६ १६
रि ४ )। सिञ्जाद्धीस चौन [ यद्श्रात्वारिंग्रम् ] खेवा- शीय, श्रांबीस पीर कः (विदे १४६ डी)।	किन्द्राय पूर्व, पूरा ६ कामा समय। ७ सात क, सामे । हानी का पून्या । इ सम्बन्द मुक्त (हे ११२३ प्राप्त) । १	श्लेष्या (दा १ १ - या १४२। या १ । प्रवृह १ ४ - या १४८ थींग कृत, रहे यह व १०। पि २६७) । २ दुः सम्बद्ध प्रक्रमन्त्रिय (बस्त २ ) ।
सिक्षासिक मुं [सिक्षासिक] १ काव्य स्वराय । २ सि रहेप वीर क्षम्य (तात्र) । सित्र मुख्य (त्रुक्त) । सित्र को [दि सित्रों को को तन्त्रीत्र (प्रित्र भ्रम) । सित्र को [दि सित्रों को को तन्त्रीत्र (प्रित्र भ्रम) । सित्र को [दि सित्रों को को तन्त्रीत्र (प्रित्र भ्रम) । सित्र भ्रम) वर्ष (हित्र को तर्जा को तर	ध्यस्याँक्यविभूतियां - 'च्यूह्र' (क्य)। सिंधार सक [ श्रृद्धारम ] सिनार करमा स्थानट करना। स्थित्यद्ध (प्रति)। रिमारि नि [श्रृद्धारित्र] सिनार करमेवाला	प्रकारका (चन र)। सिंपाय के की विद्याय (च ११०)। सिंपा वह [सिंच] वा (६ ६, ११)। सिंप वह [सिंच] वो गा, स्थान । स्थार (६ ४ ६ १ स्था)। सुर्थः सिंप (क्या)। स्थी स्तरिस्थ (हि ११६)। स्तरिस्थ सिंपी संस्थात (हि ११६) व स्तरिस्थ
सिर्ड (धर) वेबो समें (मिष)। सिर्डटा की [च्रे-कसिकुण्टा] कानारव बनसर्वि-विदेश (एस्ट्रा १—नव ६१)।	स्प्रेमा करनेवासा (शिरि ४४)। सिंगारिम कि [म्ह्यूसरित] विवास क्ष्मा धनावा क्ष्मा (शिर १४०)।	की वा १४६)। सिंचण व [सेचन] क्रिकान (वृत्त रे ४) १ २१ जीव ११)।

सिमारिक वि [शृजारिक] शृज्जस्मुक

(ज्या) ।

सिएधर पि [सितंतर] इप्य कला

(गम) ।

१ २१ और ११)। सिंबाय दु [वे] वस्त-विरोध संग वर्षे बाब, दुवराती ने पित्रासी (क्य)। सिंपाविद्य कि सिंबित विवक्ताया हुमा (स १ ६१ थे छ २व । १४६)। सिपिम 🖪 सिक्त स्था हुया विदस्य ह्मा (क्मा) । सिंव पक शिक्ष वै यस्त्रद्र पावान करना । का सिर्जद (सुरा १ स्तु ) । इस सिंजि भवत्र (सः ३१२)। भिज्ञान न शिक्तन र यस्यट राज्य, नृषस दी पादाव । २ वि सस्तर सादाज करने-गमा (मुरा ४) । सिंबा की [शिक्षा] मुक्छ का राज्य (क्या) त्राप) । सिंबिया भी [शिक्षित] बनुपु स बनुप भी होदी (मा १४)। सिंजिय व [शिजिन] सम्बक्त समान (एव १ ३१ टी, क्यू)। सिंबर वि [शिक्षित् ] बस्युट बावान करने बाला 'सहास' सिविट' कखिर' (पाछ)। सिंम्ह दूब [सिध्मम्] कुछ रोय-विरोप (मन सिंड वि दि] मोटित मोड़ा हुसा (वे म ₹₹) 1 सिंद पुचि निमूठ मोर (दे च, २)। सिंडा की वि] नासिकानाद, नाक की मानाम (रेच २६)। सिंश्राप्त न [ब्रे] विमान (उप १४२ ही)। सिंशी की दिहें बदुरी बदुर का यास (दे म, २६ पाम धावन)। सिर्दार न [व] नुदूर (दे =, १)। सिंदु की [र] राज्य राखी (रे व, २०)। सिंदुरयन दिहे (राज्यु ससी। २ धान्य (8 # 4x) 1 सि<u>द</u>्रवल पूर्वि । साम्य साम (दे व १२)। सिनुपार पू [सिन्नुपार] बूश-विधेष निपृक्षी धम्बान् का बाध (बरुड कुमा बार रहा पुत्र रूर्थ)। संदर दि चित्र (६ व १ )। सिन्दर विन्त्री १ छि.ए, एक वर्ण. प्री-विधेव (बरव २, ३ वर्ड महा) । रे प्रै पुत्र-विटेच (हे १ ≪ ४३ वंजि ३) ३ सिंद्रिम वि [सिन्द्रित] सन्दरन्त क्रिया इमा (चार )।

सिंदोस न [दें] चबुर, फब-विधेय (पाप)। सिंशेकाकी वि] कारी, बहुर का थेर (देव २१)। सिंचय न सिंचन १ सिंच देश का नवए सुवाभोव (या६७३ अपूरा)। २ पूँचोड़ा (\$ 2 2x2) 1 सिंचविया श्री [सेंग्चविद्य] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टो)। सिंह की [सिन्यु] १ मधे-विशेष सिन्यु सिवक्रिकाकी [सिन्यक्रिया] येक्पै (विन मधी (धर्मीय वर्ष वर्ष ४--- तत्र २६ २७)। २ नदो 'सरिका सर्विकी निक्लमा ' नई यानया सिष्टुं (पाघ)। १ सिन्धु नदी की 🖟 धविद्यापिका देवी (जै.४)।४ प्रै समुद्र सावर (राग्र क्रूप २२ मुका १ २६४) । इ देश विशेष शिम्ब देश (पूरा २४२ मॉब कुमा) । ६ द्वीप किरोप । ७ पय-किरोप (व ४—पत्र २६)। "शहन ["तह] पनर विशेष (पत्रम 🛪 १६०)। पाद 🖠 ["नाथ] समुद्र (समु १५१) दिवी की ["ब्रेया] रिल्यु गरी की वर्षितारिका देवी (उप ७२= दी) । विवीकृष्ट र् [ विवीकृट] सुद्र द्विमनंत पर्नत का एक विकार (वे ४---पत्र २६६) ध्यवाय पून ["प्रपाव] कृषः निशेष बाह्य पर्नत से सिन्धू नये पिरतो है (हार १—पत्र ७२) । सप 4 विजी क्षिमादेशका एका (द्वार २४२)। यह पु विवाद] १ समूत्र सामर (स २ २)। २ सिम्ब देश का राजा (दुना)। सामीर 1 ["सीबार] सिन्तु नदो के समीर का देश-विशेष (भग १व ६ मशा)। सिंपुर पू [सिम्बुर] इस्तो हानो (नुपा क्ष सम्बद्ध १८७३ कुमा) । सिंप देवो सिंप। स्पिष्ठ (१४४ १९)। कर्मे लिया (६४ २११) करह सिप्पंत (अस्था)।

सिंपित्र देवो सिंपित्र (रुगा)।

(tx 1)1

**२**)।

सिपुअ वि [ब्] पायब भूव-पृगीत भूगाविष्ट

सिंबां के बेका संयक्ति = शास्त्रीत (है र १४६। व २३ पासः मृर १४ ४३ पि १ सः संपादभः उत्त ११ ५२) । सिंब कि भी [शिम्बलि, शिम्बा] क्रमाय शाहि की फनी भीमी फनियाँ (मन ११---पण ६ व । भाषा २ ११ । इस ६, १७३)। शास्त्रम पुन [स्थाबन्ड] १ फ्लोका याची: २ फ्लो ना पाक (माना २,११३) । देशो संविति । बचाबरात)। खिंचा की [छिन्दा] फनी धीमी कीसी समी व स्विगं (राम)। सिंधाडा का [द] नाक की धावान (रे द २१)। (संचार न दि] पसल मास (४ = २=)। सिंग १ शिलप्पम् ] स्नेष्मा कठ (हे २, ७४ वेड् १४ महा)। सिमिंड रेडो निवंडि=शास्त्रवि ( गुरा ex) t सिमि वि [स्ताप्मन्] स्वेध्न-पुक्त, स्वेध्न-रोदी (बुपा ४७६) । सिंगिय वि रिलिप्सिडी रहेप्प-शम्बनी (तंद् १६ गाया १ १—पत्र ४ पि २६७)। सिंह र् [सिंह] ? धार पशु-विशेष मूय-यब नेखये (प्रानु १६४) । २ एक यम-क्रमार (बर १८६ टी) । ३ एक द्यमा (रपछ २६) । ४ मनवानु महावीर का एक शिन्य, पुनि-विशेष (यम)। १ वर्ष-विशेष विविवाहार का सारचना-परिष्यम (बंबीय १४)। अस्यात्रम (पन) न [ (यसक्त] १ सिंद की तरह पोधे देवन्य । २ क्रम-विदेश (निय) । उर व [गुर] पंजाब रेख का युक्त प्राचीन नवर (प्रति)। उपनी और िकर्मी बनस्रक्ष-विदेश (पएग्र १---प्रम १४)। "कंसर दू ["केसर] एक प्रकार ना उत्तन मोरक-सर्ह (का २११ के)। रच दं दिली १ म्यक्ति-नावक नाव । सिंबज रू [शास्मज] सेमन का माध (रेमा र निर्देश दिया हुमा (देह ६२)।

। पद्मेच व (\* पिक्सेच्हे १ विक्र की तयह पीचे की तरफ केवना। १ सम्बन्धिन (शिय)। । सण व िसनी का<del>टन</del> विशेष राजासन राज-पत्ती (महा) । वेको सीह । सिंहस र फिल्स र केर-निरोप सिहक शीप जंका-द्वीप (इका धूर १३ - २१३ २७)। २ देखी, सिक्कनशीप का निवासी (धीप)। श्री °श्री (श्रीप स्ताचा १ १---पण ६७)। सिंहास्त्रिया की वि किया, बोटी (पाय)। सिद्रिणी को सिद्धिती कद-विशेष (विष)। सिंदीमूय म [सिंदीमृत] क्व किटेव क्ट्रॉनिक प्राप्तर भी एंडेक्ना-परित्याप (धनीय २४) ।

सिक्ता) 🖷 सिक्ता | नामु रेत (यस सिक्तमा १९७ दी परम ११२ १७ विसे 1 (2805 सिकार् (स्का) होट का मन्त्र मान (दे १ ६≈)। सिक्रग र्न शिक्यक किरहर, सेका चौका, रखी ही नहीं कोबहुना एक भीव को करा में सरकामी अस्ति है और रूपमें चीजें रख यै बाटी है क्लिसे स्वर्मे बीटिकों न कहें धीर क्से दिस्की न बाव (श्रम ६३ उका)

निष् १३ मानक ६३ से)। सिष्डड पून [दे] बर्डिया श्रीवया 'कोन मनग्राम्य वर्णनाम्बन्दने वहत् वरिप्रमा (सुपा ६) । सिक्स वेदो सिक्सा (धम ६३ थानक ६३ क्षेत्र स्वर्धि ।

सिष्मप के [शकेंद्र] बंद दुवन्छ श्वन-विक्डपे (च ६६६) : सिष्टरिम न [सीत्कृत] धनुधन दे स्टान्न धानस्य (पर १६२) । **डिक्टरिमा की [क्रुं भीकरी]** व्यवस्थ का ध्यवराज-विकोध (विदि १००) ।

सिष्पर १ सित्यारी १ काराव को प्राचान (बा ७२१ प्रवि: बरा नाठ-भूज्य १३१)। ९ हाची 🗊 विस्वाहर अ्ट्रेडिशिएकिमार्गीक-स्वतुत्रकवित्रकारतप्रयोग अगरीय' (लुपि **₹**\$) :

की बनी हुई एक भीज थे। पढ़ने के फाय में पादी है (सिरि ४२४)। शिक्स एक दिशा शिका शिका पहल धम्यास करना । सिक्बइ (धा ४७०- १२४) सिनबात सिनबाह (ना ३६२) इस्त ४)। मिंद, सिविकस्सामि (स्वय्न ६७)। पत्र सिक्तांत सिक्तामाय (भार---पृत्ता १४१)

पि १३७ सूच १ १४ १) । संक्र सिक्सिक (भार---व्यना २१) । हेइ. सिक्सिड (या व≰३} ः सिक्सा 🖦 सिक्साय । मा.सिक्सारीत (पचन २ १२)। इ. सिक्काणांश्च (पचन

कर प्र.)।

ર ⊌)ા

सिक्का वि [दिश्व क] किशा-कर्ता, बुक्कार्य सिक्श्वर्य ते परिवादिमङ्ग मे बुक्क्यं (रंगा) । शिक्तकार्य शिक्षको तुरुत विश्वय (तुर्वात **22** ) i स्थिकार्यं शिक्षायी र घण्यत प्रक (कुप २६)। २ श्रीच, अपरेश (शुर ८, ३१)। ३ भ्रष्यायन पाठन (शिरि ७०१)। स्मिकाप केवो स्मिकायः। शिक्कोपु (श ७३ ३ ६४ )। इसम्र सिक्साविकाराज

(मुपा ११६) । इ सिक्क्षवियव्य (पुपा

**स्विक्त्यक्ष विकाश्चिमको सिकाश्चिमाना** पदानेवाका क्रियक (त्राह्म ६१)। सिक्सविश्व वि शिक्षियी १ विवास ह्मा, पढ़ानाह्मा (वा ३४२)। २ व क्षित का, घम्यस करात घम्यान (तुरा २४) । सिक्ता वै [शिक्षा] १ तमा पर्व (पुत्र ११)। २ नेदका एक स्रक्त क्यों के

क्ष्मारत समानी संग-विरोप, सक्षरों के स्वका को वत्तमानेनामा स्थवः 'तिनवाना बरलबंबकम्परको (वर्षीय १८, धीवा कृत्या सेत)। ३ शतक और शाचार शस्क्र**य** रिक्य यम्पास तीस विकार, क्यदेश (चीपः शृह १ः नहाः कुम १३७)। क्यान िंग्रत वित-विकेष केन गृहस्य के शामधीक वादि चारकत (बीपः सहा नुपाद्यः) । "बब न ["पर्] किया-स्थान (धीर) ।

सिक्ता (थप) ध्री [शिक्ता] धन्द-विकेष (पिय)। सिवज्ञाय व शिक्षाय] प्राचार-सम्बद्ध सपदेश देनेशमा श्रव (क्रम्प) ।

सिक्काव छक [शिक्षय ] छिकाम पहास, श्रम्पास कराना । शिक्सावेद (पि ११६)। यथि विकासिविति (योप) । यहः सिक्स बेक्स (धौप)। क्षेत्र सिन्द्रस्वित्तर्थः सिक्सायेचयः सिक्सावेदं (स २ १—यव १६: इस्टर्वदार ४८ टी)।

सिक्कावज देशो सिक्कवज (वा ११५ प्रमुक्त ६१) । सिक्सापन न [शिक्षण] त्विता, धेव, क्रिकेटबेक (युक्त २ ११) प्राक्त ६१। भण्डो। सिक्कावणा को [शिक्षणा] इनर देखे (सुमनि १२७: उप ११ टी)। सिक्कापिक वि शिक्षित विकास हमा (सन पुरुष १७ २२; स्त्रमा १ १—नर ६३१ १<del>० - पर</del> २३६) ।

सिक्जिश रि [शिक्षित] क्षेत्र 💵 💵 वानकार, विद्वान् (शामा १ १४--पर १८७। मीप) । शिक्तिसर कि [शिक्षितः] सीको से वाकामा, वामसी (व ६६१)। सिका की शिक्षा कर-विदेव (पित)। सिवित देवो सिहि-तिबित् (गठ-विड 88) 1

सिगया 🖦 सिक्या (एव)। सिगास भा सिमास (पर) । सिगासी देवो सिमासी = गुवाही (पर £ (\$ 3 सिमा दि दि १ दान्ड क्ला ह्या (६ ६ रेव्ह औष २३)। २ वृंग परिमन मनाम

(वब ४) । सिग्गु दे [शिम्] क्य विकेष वर्षिका वी पेक् (देव २ ; पाम)। सिन्ध व [र्गोग्र] त्वानी पुरंद । ९<sup>६६</sup> रोज्यानुष्य (सार-प्रथ (सार- साम १४) चैका कृत्या सहात सुर १ २१ । ४ ६६

युपा ६ )। विषय र् [सिषय] वह, क्यम (वर्ष) च प्टरे दूप ४३३)।

1 (25

48) t

सिच्छा और सिच्छा ने सम्बद्ध (मुना

सिका प्रक [स्पिद्] परीन्य होना । सिन्मह

(पर् २०३) । वह-सिर्क्षत (नाट-जतार

```
सिज रेबो सिजा (सम्मत्त १७ )।
सिर्ज्ञमण पुं [शब्दांमण] एक सुप्रसिक
 प्राचीन कैन सहर्षि (कप्प-द ४४ रहिंदे)।
सिर्जन देशो सेटांस = भैगांस (क्रम्प पश्चि
  याना २ १४, ३)।
मिला की [राष्या] १ विद्यीमा (सम १६,
  दशा सुमा ६७९)। २ उतासय वस्ति
  (मोच १६७)। वर्षे, यस क्षे [वर्षः]
  बरापय थी माजनित (सीघ १६७ वि
   tot)। वार्क्स की ["पाक्ती] विक्रीमा का
   काम कप्नेवाची दासी (सुपा ६४१)। देखी
   सेखा।
  सिजिब (पर) वि [स्य] उत्तर किया हुया
   क्तामा हुसा (पित्र) ।
  सिजिर नि [स्वेस] विस्त्रे पद्योग हुमा
    करता 🐧 वह, पद्योगावासा (पा ४ ७
    ४ व वन्राक्ता)। की ही (ह ४३२४)।
   सिम्बर्द न [व] सन्य (रे ६ १ )।
   स्विम्स पत्र [सिथ] १ जिल्ला होना
    दनसः । २ पक्ता । ३ मुक्त होन्सः । ४ मीमस
    होता । १ सक यदि करना भागा । ६ शासन
     ≰रमा। सिन्सा६ (हे४ २१७ भग सहा)
     सिरमंदि (कम्प) । पूका सिरिमंपु (क्क
     रि ११६) । भ्रवि सिजिमहिंद, विजिमस्बेरि
     बिरिमहिति सिरिमही (दवा भयः वि
      ५२७३ महा) । यह-सित्रम्धेन (दिव २५१)।
     सिगम रेपो सिम्ह (धन) ।
     सिम्स्नमा ) औ [सेथता] १ सिंड पुष्टि,
     सिमस्या विरोध निर्माण (सम् १४७-
      बर १६१। ७१६। पर बच मर्गेंब १६१:
       विधे १ १०)। २ निव्यक्ति सावनाः
          बम्बो परोश्यारं करेड
                 नियक्षकिमस्त्रामिरधी ।
          निर्धातको शिवस्ये
                  परांतपादी ह्यह मन्त्री ॥
                             ( total 14) 1
```

```
सिहू वि [ब्रेप्ट] प्रति उत्तम (स ८०६)।
सिंह वि [स्पृष्ट] १ रिषत निर्मित (जन
  चरब टी।∜मा)। २ मुक्ता३ निचित्तः । ४
  भूषितः। प्रवहसः प्रपुरः ६ व्यक्तः (६१,
  १२८)।
सिटू वि [शिष्ट] १ कवित जनत उपविष्ट
  (मुर १ १६४। २ १८४ थी ४ वर्षा
  (३६)। २ स्टब्स समामानस, प्रतिष्ठित
  (बर व्हेंब की कुछ हर बिरि प्रशः मुपा
   yw )। । यार पूं [*।चार] शतमनको
   सदाचार (वर्ग १) ।
 सिंह वि [रे] सो कर रहा हुया (वह )।
  सिट्टि की [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण जना
   स्थमा (मुदा १११ः महा)। २ नियोख
   रचनाः ३ स्टम्पदः। ४ जिसका निर्माण
   होता हो यह (हे १ १२०)। ए शीषा जन
   ग्रविषयीत समा अवहाई यंत्रवीयेणं पिटि
   विविद्विकमेणं एवंडरियं धर्मताई (विरि
    KWH) I
  सिट्टि वृं वि भेडिन] बबरनेठ नवर श
    बुक्त समूकार, महाजन (कप्प नुपा ६८ )।
     पय न विन्दी नवर-नेठ की परवी (नुपा
    १४२) । देवो संद्वि ।
   सिट्टिप्या की [भस्तिना] थेहि-पानी वेठानी
    (बुवा १२)।
   सिद्शीकी [इ] बीहो नियेणि (सम्ब
     9)1
    सिहिस नि [शिथिर, शिथिस] १ अस,
     क्षीसा। २ महरू भी समयुक्त व हो यह।
      ६ सन्द (हे १ २१६८ २१४ आप दूसका
     प्राप्तु १ २३ वटक) ।
    सिवित सर्व [शिथिसम् ] विवित्त करना ।
      सिक्तिक सिक्सिति, सिक्तिति (क्य पत्ना
      १ : हे ६ ६१) सक्षिमी (बली ५४६:
      रि ४६०) । वह सिविचेंत्र (६ १ ८१) ।
```

क्राया हुमा (बाइ ६१) ।

हैवर (देवा: वंडड- मृत्)।

fent Ent (Ac s fe fas) :

```
बारनेसो' (संबोध ४७): 'कारियमुरनुंरांर्राय
                                   खगार" (सिरि १६व) ।
                                  सियायक स्ति स्तान करमा, महाना।
                                    शिलाह (बूध १७ २१ प्राप्त २००)।
                                    र्श्वन्न, सिपाइसा (मुम २ ७ १७)। इंड-
                                    सिवाइचए (मीप) ।
                                  सिगाउ वृद्धी [स्तायु] नाबो-निरोप बार्
                                    बहुत करनेवासी नाही (प्राष्ट्र २८)।
                                  सियाण ३ [स्तान] नहान प्रत्यहर (मम
                                    ३४, बोच ४६६। रवछ १४)।
                                   सिजात रेको सिजाय = स्नाइ (अ. ४ १---
                                     पर १६६ ४. ३.—पत्र १३६) ग
                                   सियाय देशो सिया। विद्यामंति (दह ६
                                     ६३)। बद्धः सियार्येत (ब्ल. ६ ६२ पि
                                     1 (883
                                   सियाय ) वि[स्तात, क] १ प्रयान
सियायम } थेड (मूम २ २ ६६)। २
                                   सिग्रायप ) युनि-विशेष केनलहान प्राष्ट
                                     बुनि केनभी धवनान् (यन २४, ६ छंदि
                                     १६⊂ श क्षा २ — यत्र १२६ पर्मर्स
                                     १६१८: उस २४, १४)। १ दुव रिप्य
                                     बीचि बस्य (मूच २, ६ २६)।
                                    सियाप वर [स्तपय] स्त्रत कराना।
                                     शिलाबंदि (शी) (बाद-चेत ४४) ।
                                     शिलाबंदि बिलाबंदि (माना २ २ ३
                                     १ (र १३३)।
                                    सिवि से [स्वाव] पंदुर (नुत ३३० विरि
                                     2 X ) 1
                                    सिविशन्द्र यक शिनद्र न बीठि करमा।
                                     बिलिन्दर (शह २४)। वर्न, निनद (१
                                      ४ २२६) । काङ सिप्पंत (रूपा ७
सिडियाविभ वि [सिपिकिन] सिविन रे
                                      2):
                                     सिजिद्ध वि स्तिग्धे । श्रीतनुष्त स्तर
सिडिसिअ वि [शिपिसिव] विवित्र विमा ।
                                      युक्त (स्वय्य ४३) समृहरी) । र पार्ट
                                      रक्ष-युक्त (हुमा) । १ मद्याप्त कोमन । ४
सिविस्तरण वि [शिधिसीश्व] दिविष
                                      विद्या। १.स. मात्रकाशाह (हे २.१.५
                                       2EZ) I
```

सिडिडीभूग वि [शिधिडीभृत] ग्रिपिड

सिष्य देखो सप्य = शख (बी १ मुपा १०६८

सिजगार देवो सिंगार = ग्रुहार 'तिस्मार

बना ह्या (पत्रम १६ २४)।

या व्हेव)।

सियोह रेखो समेह (तक सामा १.११— पत्र १८१ स्टब्स १५, कुमा; प्राप्त ६)।

१०३

सिजेद्दासु नि [ स्नेद्दवन् ] स्नेद्दवाना (स ७६१)। सिज्य नि [स्टिस्स] स्नेद-युक्त (या २४४)।

सिञ्ज देवी सिम = ग्रीग्री (गाट--मृत्य ११)। सिम्बर पुंत [शिरम] पुंत्रिक, पुक्त-निव

(ग्राप्त के ४ प्र.)। सिष्पदा को [के] रे दिन ग्राकात वे निष्पा नव-नव्य (वे न. १९)। २ प्रवस्तान, कृदण, दुहासा (वे न. १९। तस्त्र)। सिन्दाक्त पूर्व [के] क्य-निवेश (स्त्रू ६)।

सिवि केलो सिद्द = (दे) (वन १)। सिव्य मि [सिव्य] सोंचा इमा (पुर ४ १४४) हुमा)।

सिषुक क्यो सेचुंक (दुन्त १२)। सिन्द न [वै] इस्त, कृत की कोई सिन्द व सरोहन ने यह सम्बंदित होने (दुन १४) गाय)। सिन्द । न [सिन्दम] र वन्य-क्रस्त (पाह सिन्दम] र १—पा ११ कमा भीका स्मृह १९११ र नोच (१) १३। गाय

दर ७२ टी)। इ कोप्यनिन्तरोन, गोसी कीम (है २ ७०)। ४ पूर्व, कमस कास मार्थ मार्थ कमा स्वता एप्यक्तिको गायाँ (कम्म ३ २ प्राप्त)। विकास सी कि विकास १२ सीमा, समा

स्तिनाकी [यू] १ वालाः २ वीनाः वनुष यो गोपै (१ ४ १६)।

सिरिय दें दिं परस्य, मध्यमी (के १)। सिद्ध में [कें] परिवारित क्रिकारित कीच इस्स (के व के )।

ह्मा (दे व व ) ।
सिन्न प्रि [सिन्न] पुन्न, पोकस्तात मिलांक्रिया
स्मार्थ (जा १ — पन्य २२, वह, काम विशे व रहा प्रमार है भी प्रश्न प्रमार है थी प्रश्न प्रमार है भी प्रमार है । प्रमार है भी प्रमार है । प्रमार है भी प्रमार है । । प्रमार है । प्रम

किया ह्रमा । १ प्रतीत कात (पंचा ११ २६) । ११ पूर्विया मंत्र कर्म रिक्प बादि में जिबने पूर्वांदा प्राप्त भी ही यह पुरुष (ठा१—पत्र २४; विशेष १ ९० मणा १८) । १२ समय-परिमास विशेष स्वीक-विकेश (क्या) । १६ ग, सनावार पनयह रिकों के करवास (संबोध १०)। १४ पूंच-बहादिमधंत दादि यनेक पर्नतों के शिक्षरें कानाम (ठाट--पन ४३६ १---पत ४६४ **६४**)। क्लार पुन [रिश्वर] नागे मरिश्तामा यह बल्द (यांव)। गिबिया की "गण्डिसा दिव-र्शकनी एक कन-प्रकर्णा (धन) । वक्क व [चा6] पर्हर भ्रत्यनिवयद (शिरि६४)। सन्द["का] क्कामा ह्रमा यस (बुवा ६६६) । पुच दू िंधुच] पैन सामुधीर नृहस्य के दीप ही श्रमस्मामामा पुरुष (श्रमेषा ३१: लिख् १) । मजोरम १ "मनोरमी पत्र का इत्तर किन (चुन १ १४) । धाय **१ 'धा**जी निक्रम की भारतुर्वी क्यांग्यों का बुजराव का एक शुप्रसिद्ध राजा जो विश्वराज वर्णासङ् के माम वे प्रसिद्ध वा (कुप्र २२३ वाघ १५)। बार प्री पाछी बायानी रायानी प्रा

सान्य-विश्वसास सन्द (बास ८१) । 🛚 सावित

संस् र् [ "रीख] क्षुका पर्वत शीयपूर केक में पाकीकाण के पाय का कैन प्या-तीर्थ (तुक र व स्विरि ११२)। "हैम क्ष्र [ हैस्स] प्राप्तमं हेपक्टर विश्विध अस्टिड स्वारूपण-प्राप्त (मोह १)। स्विद्धीत र्षु [सिद्धान्त्र] र वाक्स शाक (क्या

पुनराय का एक प्रक्रिक कैन वर्षि (दुन

(७१) : सेण वृं [सेन] एक पुत्रसिक्ष प्राचीम नेन महत्त्वनि सीर हास्त्रिक धान्समें

(समत १४१) "सेजिया श्री ("अजिया)

बाध्यवें कैन संग्रहत्व का एक संश (स्त्रवि) ।

द्वार धौषे)। १ कियम (स.१.३)। सिद्धायपुष्टिको च्या देन-विशेष (दे ११)। सिद्धारण पि सिद्धार्थी १ क्याणी का

सितास्य वि [सिताये] १ क्यार्थं क्वाराय (पतम्य घर ११)। २ वृं सम्बान् महासीर के विद्या पा बाम (बन १११ क्वार्य पतम् १ २१ पुर १ १)। ३ वृद्धाय वर्षः क्व सावी हुयरे विमन्देव (सम १२४) । ८ एक पीव दुवि जो नगरें कारोप के रीमान्द्र के (पत्रम १ १ ६) । १ हुव-विरोद (पुरा काश कि ११६) । ६ सर्वेच सरसीं (सप्टू २३ कुम ४६ पत्र ११४४ है ४ ४२१। या दू ६६) । क अववाद स्वापित के स्वस्त है है) । व एक वैन-दिमान (बम १६ सावा ११, १३ केन्द्र १४१) । १ कार-विरोद (सावा) । १ पार्मीवांड नगर नग एक पार्व राजा साथ (वस ११ — या ६९४) । ११ एक वॉर

हैं रहे। धन न भिना वननिर्देश (क्या)। धन न भिना है जननान प्रिक्त क्या की [सिद्धार्था] है जननान प्रिक्त क्या नहानी की प्राप्ता का त्या (ब्या १११)। इस्के निष्ठा (दिन ७ १४१)। इस्के निष्ठा (दिन ७ १४१)। इस्के निष्ठा है प्राप्ता व से स्वाचारियों की प्राप्ता की स्वाचारियों (विचार १२६)। सिद्धारिय की [सिद्धार्य की [सिद्धार्य की [सिद्धार्य की इस्के सिद्धार्थ सिद्धार्थ की इस्के सिद्धार्थ सिद्धार्थ

िंपूर} श्रंप देश का एक प्राचीन नगर (नुर

चिद्धस्य पू [सिद्धस्य] १ इस-स्थित विदुवारं कृष चार्क्स्य का काम्मः १ राज्य कृषं (है १ १ ७)। चिद्धा की [सिद्धा] १ स्थानन् महानीर की चायन-रेती चिद्यानिका (स्थि १ )। १ प्रकार सिरोण प्रकारका रोज्य-रिका (स्थ

२२)। सिकाइका की [सिकायका] वजनन् स्वा वीर की शासन-वेशे (कहा १२)। सिकाववका के [सिकायनान] १ स्थलकी

बीर बी राज्य-नेदी (बढ़ा १२)। सिद्धाध्यय पुंच [सिद्धाध्यतः] १ स्मरूर प्रमित्र-केद-पृद्धः। २ तिन-प्रमित्र (ठा ४ २-प्या २२६, एकः पुरु ११२)। १ स्मृह् वर्षतो के शिवार्ये डा बाग (क्ला वं ४)। सिद्धाक्ष्य क्षेण [सिद्धाक्य] युक्त-सान्,

विक्र-तिका (योग प्रकार ११ १२१ एक)। वी. या (का —्यन ४४ सम २१)। विक्रिय की [विक्रि] १ स्क्रि-तिका प्रविनी-निकेप, वहाँ पूर्व कीम पहले हैं (स्कारण स्थ ब---पद४४ मौरा इक)। २ मुख्य, निर्वाश मोम (दा १---पत्र २१ पाँडा धीरा कुमा)। ३ कर्न-सर्व (सूचर ५, २४, २६) । ४ यिएमा थारि मोरा की शक्ति (ठा १)। १ इवार्यवा, इवश्रयका (छ १--पत्र ५% क्या धौपी । ६ तिध्यक्ति 'त क्याह ब्रावि यीची सक्त्रविद्धि समायोध' (वर)। ७ सम्मन् (दत्ति १ १२२)। व ग्रन्त विशेष (पिय)। गाइ की "गति ] मुक्ति-स्थान में मन्त्र (क्या धीप परि)। र्राक्षिया की "गणिकका प्रमान्यकारण-विशेष (मन ११ र---पत्र ४२१)। पुर न ["पुर] नमर विदेश (कुन २२)।

सिकावि शिर्षी जोसी नक्षा ह्या (पुग ११ विक कर हो) ह

सिम वेको सिज्य = स्विद्ध (पुरा ११) । सिक क्येन सियी १ मिसा इसा हाकी बोहा मारि । २ सेनाका सम्रक्तमः (द्वेश १९३ कुमा)। और 'ता सम्मस्ति नगरे पनेक्षिये **बचुविकार (धुर १२ १ ४)**।

सिप्य देखों सिंप। सिमाइ (पड्)। सिप्पन विदेश प्रशास पुरास कुछ-विद्येप (वेद २५)।

सिप्प न [शिक्ष्य] काव-कार्य, कांग्रेवधे, विवादि-विकास कता, क्षार, विवा-कुरावरा (परहर ६ – पत्र दश क्याः प्राप्त व )। २ वेक्स्काद, ग्राहित-शंकातः। ६ धरित का भीव । ४ पुंदेबस्थ्यम का समिद्राता के। (छ **प १—गम** २६२)ः सिद्धार्थ ["सिदा क्या में सर्वक्रमा (ग्रावम) । ब्सिय कि ["श्रीम] कारीवर, क्या---हुकर धे बोबिया-निर्वात क्रांगेबाला (ठा १, १~-4# # #) I

सिप्पा की (सिमा) नही-विशेष को उन्हेंन के पाच सं ग्रमस्ती है (छ २६३ वर छ रहेव बूद्ध इ.)।

सिप्पि वि [फ़िक्सिम्] कारीवर, हुवरी वित्र मादि कहा में कुछब (चीप) मा ४) । सिरिय की [शुन्ति] श्रीप, जीवा (है २, रेरे क्या; पत्र कुमार भागू देश 🕅 444) |

सिव्यित्र मि [शिक्षित्र ] फिली कारीगर | (**ug**t) t

सिर्पिर न वि । तुल-निरोप प्रवास पुधान (पर्या १—पन 💵 भा ६६)। सिप्पी और दिने सुन्ताः सुर्वे ( पह )। सिप्पीर **रेवो** सिप्पिर (या १६ का पि 2(8):

सिंगिर वैजो सिंगिर (बडम १ १७)। सिवम रेको सिम (पैव) ।

सिमाकी शिपन्ने कृत्र वा बटाकार धूक (क्षेत्र २१६)।

सिस स सिम सर्वे सर्व (प्रामा)। सिम" रेखो सीमा। 'जान विमर्धनिहासं क्टो

नवरस्य बाह्रिकवारों (सूपा १६२)। शिमसिम 🔰 घड [सिममिमाय\_] 'रिय सिमसिमाय है हिम प्राचान करना । हिम शियायंति (बब्धा ८२)। बङ्का सिमसिमंत

(या १६१ म)। सिमिण के सो सुमिय (हे १ ४६ २५६)। सिमिर (वन) देवो सिविर (पनि)।

३ वेको सिमसिम। वर्ष सिमिसिम सिमिसिमाञ्ज े सिमिसिमंत, सिमिसि-। मार्शन (बा १६ । वि ११८)।

सिमिसिय वि [सिमिसिमिय] विम सिय' शाबान करनेवाका (परम १ ६, ५६)। सिर संक [स्वा] १ वनाना निर्माख करता । २ बोममा ध्याम फरमा । सिर्फा (पि २६४) सिरामि (विसे ६२७६)।

स्टिर म शिरस ] t मस्तम, माबा विर (पाया मुमा मश्रम)। २ प्रमान मोहः ३ ध्य भाग (दे १ १९)। अत्र कि क्षिपक्षाणा भरतकाना वर्षे वन्तर (वं ४, ६१) **बुमाः बुध २१२)। ताण ताण न** िश्राण विद्यो पूर्वीक वर्ष (पूर्वा स १८**४**)। "बरिय औ ("बरित") विकिरसा विशेष सिर में बर्ज-बोश देखर जबमें प्रस्तुत क्षेत्र धारि वरने द्य काषार (विद्य १ १--पन १४) 'चिराहेदेरि (१विराहमीदि)यः (लावा १ १९-- वन १०१)। सचि वेशो सिरो सणि (नुषा १६२)। संपू ["अ] केश काला (क्युट क्युट धीप, साम्र्यंट) । हरू न } िगृह्यी मकान के उत्पर की श्राप्त, चनासाबा (वे व ४६)। वेको सिरा ।

सिर क्यों सिय (भी १)।

कथा सीप)।

सिरंग ३ वेको सिर = शिरस् (कम्पः नग्रह "सिरस ∫१ ४—पत्र ६० ग्रीप)। सिरसायच वि शिरसायवै, शिरस्यायवै थस्तक पर प्रविक्षा कानेवाताः स्टिर पर वरिश्रमण करता (खावा १ १--वन १३

सिंग की थिए, सिंगी रेल नव नाड़ी / (खामा १:११—नद १८१ की १ जीव १) । २ वायः प्रवाहः (कुमाः उर दः ३६६)।

सिरि देवी सिरी (दुन्ता वी ५० प्रापू <sup>६२ द क</sup> कम्म १ १ पि १व)। उत्त पू पुत्र मास्त्रवर्ष में होनेनाबा एक वक्रमची यजा (सम १६४)। सर म ["पुर] नगर-विशेष ( इप ११ ) । ब्रेंड प् [किम्ठ] १ धिव महादेव (<u>इ</u>सा)। २ शनरप्रीयका एक राजा (पटमा६ ३)। र्कत पून [कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। इता की [कान्ता] १ एक राज-पली (पडम व १९७)। २ एक हुसकर पशी (सम १६)। ६ एक स्वय-कृत्या (महा)। ४ एक पुष्करिखी (इक)। इंद खग 🐒 ["कम्पळक] परा-विशेष एक-भुरा कानकर की एक जाति (पहला १०---पन ४६)। करण न ["करण] १ न्याया-या**व**य न्याय-मन्दिरः। २ *वैसना (पू*रा १६१)। करणय वि [करणीय] बी करण-वंबन्धी (पुरा १६१)। सूत्र देश िकटी विमर्गत पर्वत का एक किसर (धन) । सिंह व "साग्ह] पलन (शूर २, ११, कम्यू)। गरण देशो करण (भूपा ४२१)। तीम द्रै[माण] राज्य-मंश्र का एक समा एक बंका-पति (पत्रम ४, १६१)। गुच्च र्च [गुप्त] एक वैत महर्षि (क्रम्)। धर व [ गृह] वंशर, धवाना (ए।सा १ १--- वन १६ नूपनि १४)। परिश्र वि [गृहिक] येटाचे बाजानची (हिन्ने

१४२१)। यंद वुं ["बन्तु] १ एक ग्रीवर

वैभाषार्थं सीर प्रत्यकार (पत्र ४६ मुपा

६६०) । २ ऐरमय सेम में होनेगाने एक

वितरेष (सम. १३४: पण ७) । ३ धाकरें ब्रह्मदेश का पूर्वमशीय नाम (प्रका २ १६१)। चंदा को "चन्द्रा] १ एक परवरिक्षी (इन्ह) । २ एक राज-मत्त्रो (उप १ वर् हो)। इन्द्र पृत्रिमालया एक वैन क्षत्र (क्ष्म) येवर न िनगरी वैद्यालय शो शब्दिल-चेली का एक क्विवायरमधर (इक)। रेको मयर। "जिक्क्य प "निकेवन] वेताव्य की प्रचर-प्रोणी में रिक्त एक विदावर-वयर (इंब्र)। "जिस्तर व "निस्तर] वैकाम पर्वंत की दक्षियान्यों सि में स्थित एक तपर (इक) केवो सिखय । जिस्रया श्री िनितना ] एक पूर्वारिक्षी (रक)। जिहुबय र्वे "कामक] किया मीइम्प्ड (दुना) । ताकी भी विक्री दश-विदेव (कर्यू)। बच दं [बच] ऐरवड वर्ष में असम पोचर्वे निन-देश (पण ७)। दास न िदासन् दि शोक्षशती माना (मे १)। र बावरज-विदेश (बायम)। १ पूँ एक द्यवा (विमा १ ६---पत्र ६४) । इस्मक्षेत्र दामगंड पुन ["दासन्धण्ड] १ धोनानानी मामामाँ का क्यूड़ (अंध)। २ एक देव विवान (सम ६६)। त्रासरीक तुन िदामगण्ड**े १ शोसावाची मानामी** का दरसदार स्पूर् (अंद)। दिवी की ["देवी] र देनी-निशेष (राज) । २ सहनी (धर्मीर १४७) । "दुर्बालंड्य वृ ["देवी-मन्दन] कामरेव (क्वींप 1 ८७) । प्रीयुण र्[नन्दन] १ वामध्यः १ १६ वी हे समुद्र (गुपा ११८) यस्त्र ११ हो)। "लयर न [सगर] धंधल केत वा एक स्वर (१मा)।ध्यो वयर । "निखयर् ["निखय] बादुदेर (बच्य १६, ३ )। देला "जिख्य । पर् र्र [ पर्] नवर-प्रेस्टर का नूचक एक राक-विक (भूता २ ३)। यद्याय र्थ विषती पर्वत विदेश (कामा स्.)। प्रद र्च मिली एक प्रश्वित केन भाषाने चीर बन्बकार (क्जीर १४२) । यास वैश्रो शास (त्रिरे १४) "पञ्जार्थ [पञ्जा स्टिन्द्र (पूर्मा)। ध्यो इसः। सृद्ध पू [भूति] भारतस्य में हानेसाचे छठते पहाची पता (दम (६४)। स देश

मैत (उप प्र १७४) । सई की मिती | १ इन्द्र-शामक विद्यावर-राज की एक पानी (पत्रम ६ ६)। २ एक राज-पत्नी (महा)। ३ एक सार्ववाष्ट्र-कच्या (महा)। संगठ वं भिक्रको श्रीतास भारत का एक हैत (क्ष ७६ च टी)। संद कि [सन् ] १ रोगानामा ग्रोमा-पूछ (धुमा)। २५, क्षिक पूजाः स्टब्स्ट कुछ । ४ मिन्छु । १ शिव महादेव। ६ मान भूता (है २ ११६। वर्)। सम्बन्त सिक्क्यी वैताल की चाँशका-चेपड़ी में स्थित एक विचायर नवर (इक)। महिल पुन "महिक्त एक केन-विमान (सम २७) : महिया की "महिता एक पुकारियी (इक)। सास्त्र पुँसाइको एक प्रक्रिया वर्ष (द्वप्र १४३) । सास्त्रपुर व "सास्त्रपुर] एक बगर (वी ११)। पैठ देखी बंद (गहर) । येद्ध वेशी क्षेत्रसम् (पर्शा १ t-पन ७)। यह रू ["पवि] बीड्रम्स वानुतेष (सम्मक ७१) । बष्द्ध र् द िशस्त्री १ जिन्नोप मापि महापूर्यों के हृदय का एक ळेंचा घरमनाकार चित्र (धीपा सम ११३ महा)। २ महेन्द्र वेक्लोक के इन्द्र ना एक पारियामिक विमान (ठा ८---पव ¥३७): ६ एक वेक-विमान (गम ३**१** वेनेना १४ और)। शब्द्धा की [बरसा] मनवान् धेयासकानशे नी सासन-वेनी (चिट ६)। विश्वमय न िंशवर्धसङ्गे सीवर्गः देवबोक वा एक विमान (राम)। यश न [क्ल] एक प्रयाम (येर ४) । यण्णा क्षे विक्री क्षा-क्रिकेव (वस्था १---पत्र ६१)। यश (यश) देशो मंद (मणि)। बद्धाप पृथ्विमी एक समा (पत्रम ४, २६)। वय पू [यक्] प्रति-विशेष (६ १ धर थै)। **बारिसण १ विश**रि पण्डी ऐरतस वर्ष में होनेताने श्रीबीत्वर्वे त्रिवदन (वथ ७) । बास्कर्य विश्वको १ एक प्रक्रिक नेन राजा (सिरि ३१)। व रामा विज्ञथन के समय का एक देन बहुएति (पुत्र ११६) । संभूजा की ["संभूता] वस की सक्ती शत (नुज्य ह हुए)। ीसबय 🛊 ['सिबय] ऐरस्य वर्ग 🗟

जल्बन बूचरे जिस्केन (पत्र ७)। "सेवन व चिया एक एवा (स्प १०६ थे)। सेस र्वे "द्वीक्षी इप्रयान (पत्रम १७ १२)। सोस पु सोमा माळवर्ष में होनेकता शासनां पत्रवर्ती राजा (धम १३४)। "सोमजस प्रा िसोमनस**े प्रा**क्त विमान (सम २७)। इर न रिग्रही भंगर (था २०)। इर ई [ भर] १ धनवाल पत्थेनाव का एक प्रवि-पञ्छ । २ यथवाल पाधनान का एक वरावर-पुरुष शिष्य (क्या)। ६ माध्ययं में प्रदेश বংগলিতী কৰে বঁবংগৰ হাত বঁবিকৰৈ। ४ धेरवद वर्ष में बर्तगान सवस्थिती कार्य में जरपन बीसमें निमदेन (पन भ) उप रूबई दी) । ५ बालुदेन (पराम 😘 ४३) पर)। इर दि। ["इर] भीका इरख करनेवासा (कुमा)। इन्छ व "फक्की निसन प्रस्त (पाधा) 🧺 प्रद्रहा सिरिज पूं [धीक, धीयक] स्कूबध्य का क्षेत्र भाई सीर तब शका ना एक नन्धे (पक्षि)। सिरिश्न र स्विये | सम्बन्द्या (वै ७६)। सिरिंग र्र [के] विट, सम्पट, सम्प्रक (वे < 83) i सिरिइइ पूंडी दि पिक्सी का प्रमन्यान (पासा दे व ११)। सिरिमुद्द वि दि] सब्युक्त विश्वते पूर्व में सद हो नह (वे व ६२)। सिरिया देवो सिरी (सम १६१)। सिरिक्री की [ब्रे श्रीन्त्री] कम्ब-विरोध (क्ट

16. 6 11

1 (##

सिरिषय देवी छिरिनम् ।

शिरकाका पूज (क्वना)।

सिरिपच्छीय र् [वे] बोपान स्वासा (वे

सिरिवय र् [वे] इंड क्यों (वे क, १२)।

सिरिस ई [शिधेप] र इक्र-विशेष विरक्षा

सिरी ध्ये [भा] र सस्मी कमता (बायः

कुवा)। २ क्षेत्रीत बबुद्धि निमर (राघ

कुष्य) । १ शोव्य (धीरा सद; नमा) । ४

गापेड़ (सम १६२० हे १ १ १)। २ क

पत्र ७२)। ५ उत्तर स्वक पर स्वृतेवासी एक विश्वकृतारी देशी (ठा य--पत्र ४९७)। ६ केन-प्रतिमा-किरोप (खाया १ १ टी---पण ४३)। **७ भगवान् कृत्यु**नाय की की माता । कानस्य (पद ११) । ८ एक घोछि-कस्या (कूप १६२)। १ एक स्टेप्टिन्सनी (कूप २२१)। १ देव द्वव द्वादि के नाम के पूर में सदाया जाता धारर-सूचक राज्य (पद ७० कूमा नि १०)। ११ वाणी। १२ वेब-रचना। १३ धर्म प्रावि पुरुवार्थै। १४ प्रकार भेद । १६ इसकरण शायन । १६ दुद्धि मधी । १७ भविकार । १० शस देवा १६ कीर्तिक्या २ स्टिका २१ कृतिकः। २२ विजूतिः। २३ सम्बंग क्षींगः। २४ सफा कुछ । २६ विल्य-बुस । २६ मीलवि विशेष । २७ कमस वर्ष (इ.२ १४)। रेखो सिश्र सिर्दसी ≕ थी। सिरीस देवो सिरिस (सामा १ ६—पण १६ / चीत कुमा) । सिरीसिय वृ [सरीस्प] सर्वे साप (वृष 1 \* (15) | 25 | 25 | 24 | 3 | 4 | 5 | सिये केदो सिर≖ग्रियम्। घरा (धी) केतो इत्स (नि १४७) । सणि पु ["सणि] प्रदान संप्रती पुरूप 'समर्खनरोमधी' (बाह्क सुपादेश प्रानुदक)। उद् पु ["स्व] केन शास (पास) । विश्रणा च्चे ["वंदन्य] सिर की पीड़ा (हे <sup>१</sup> ११६)। वस्यि रेखो सिर-वस्यि (एउ)। इस की "घरा] धोबा, क्ला और (पाम शामा १ ६ ८ ६ धाम २२४)। सिछ देशी सिका (नुमा)। ध्यथाङ न िप्रवास्त्री विद्रम (धीप) । सिस्टेंब रेको सिस्टिंब (पाम) । सिसप दु [व] सम्बद्ध मिरे हुए सन्त-कर्णी मा बहुछ (दे ब, ३)। सिंखा थी [शिव्य] १ सिक्ष- बट्टान पत्वर (पास प्राप्त कच्च कमा) । २ ग्रीका (वस **द ६)। अठपुन ["बहु] शिनानि**र पर्वतों से उत्पन्त होनेनाचा प्रध्य-विशेष, वो रवा के काम में धाला 🐧 विकानक (उप **७२व दी। वर्जीव १४१)** ।

पपत्रव की प्रविद्यानी देवी (ठा २ १--- | सिल्लाइब पु [शिखावित्ल] वसकीपुर का | एक प्रसिद्ध राजा (वी १४)। सिखाना देवो सदाना (सं वर) । सिटाय (शी) श्रेष रेखो । 🖫 सिख्यपणीअ (प्रयो १७)। सिव्या सक [ ऋग्रच् ] प्रशंसा करना। **इ** सिडाइणिज (खण ११)। सिकाहा 🛍 [रुठाघा] प्रशंसा (मै 🖙)। सिविंद पु [ द्यिक्टिन्द ] मान्य-विशेष (पव १५६ स्वोव ४३ मा १० दर्शन ६ ०)। सिसिंग पुन [शिकी मे] १ कुछ-निरोप खन**क कुछ** मूर्गिस्काट **बु**स (ग्रामा १ १— पम २१८ १—पन १६ ३ सीम कुमा)। २ वं पर्वत-विसेष (स २४२)। निस्नय पू ["ानतस्य] वर्षतं विशेष (छ ४२४)। सिस्मि पुर्वि सिप्नुन्यम्या (वे ८, वे मुर १३ २ ६३ मुपा ६४)। सिस्ट्रिव [दिस्स्ट] १ मनोज सुन्वरा 'सहस्त'तविशयमाण्यक्यमुख्यासकृत्यसंतिम सिविद्वपरणा (पर्ड १ ४--पत्र घर)। २ संबत सुरुक (बीप)। अ श्रामिष्टितः। ४ संबर्ट । र स्थेवासंकार-पुक्त (हे २, १ ६) श्राप्रो । सिबिपइ देखो सिक्किपइ (चन)। सिक्तिम् पूर्व्य [ रहस्मन् ] खेष्मा क्ष्र (हेर प्रकृति हो हि देवते)। केलो सम्हा सिक्या की [फ़िक्सि] १ विधा मारि क्ल बायबि-विशेष। २ पापाल-विशेष, शक्ष को वीक्छ करने का पापास (शाक्ष १ ११--पम १८१)। सिविसिक्ष केवी सिविद्ध (बूमा ७ ११)। शिक्तिवह वि [ इह्मप्रविम् ] स्तीपद गामक रोवनाचा जिससे वैर पुत्रा हुमा भीर कठिन हो जाता है उस रोप से मुक (याचा सूत्र १)। सिकीमुद्र र्ष [क्षिक्रमुख] र वास चौर (बाह्य सुर ६ १४)। १ सम्बद्ध का एक योखा (पत्रम १९ ३६)।

(मवि) । सिक्षोरीति (मूच २ २ ११) ।

(सुम १) । २ वर्गत प्राहाड (रेपा) ।

९०५ सिस्टेक्सिय र् [शिक्टिशिक] मस्य-विधेष (बीव १ टी - पत्र ३६) । सिक्षेम्ह देखो सिक्षिम्ह (वर् )। सिखेस सक [ दिखय ] धाविञ्चन करना भेंटमा । सिबोसद (हे ४ १६ )। सिद्धेस 🛊 [इद्धेप] १ बक्रतेप मादि धंधान (मुचलि tax)। २ मानिकून मेंट (मुर र्द २४३)। ३ ससर्गा ४ काइ (दे २ १६ पड्)। इ.एक शन्दानंत्रर (पुर \$ 18 \$6 8X8) I सिक्स रेको सिक्निह (मनु ६)। सिखोळा) पुरिखांकी १ क्षिता प्रय सिकोग 🕽 डाम्ब (मुत्रा १६० मुपा १६४) द्याचित्र सङ्का)। २ स्टब्स् कीर्ति (मूर्घ १ १३ २२ हेर १६)। ३ क्या-किरोप कवित्व काव्य बनाने की क्या (प्रीप)। सिक्षोचय रेको सिक्क्यय (पाम मुर १ क चन)। सिक् र् [दे] १ फून्त बरका, शक्र-विशेष (तुपा १११ क्रुप्र २०३ काम विदि ४ १)। २ पोल-विद्येष, एक प्रकार का बहान (सिरि ६८६) । खिद्धा केलो सिद्धा। र र्षु ["क्सर] रिका-बट, परवर पढ़नेवाचा दिल्पी (द्ये १६)। सिद्धा न [सिद्धानक] पन्न-प्रमानिशेष (धव)। सिस्हाकी दिं] शौत जाना (से १२,७)। सिष व [रीय] १ यज्ञन कस्यादाः २ मुख (पायः कुमाः सब्ब) । ३ व्यक्तिश (पर्स्ट २ १—पण ११)। ४ ईन. मुस्कि मध्य (याध- धान्यस ७६३ सम १३ कन्य) सीचा पक्ति)। १ वि सङ्गत-पूच्य, उपप्रव-राहित (कप्ट बीप' सम १ पडि) । ६ वे महादेव (एम्सा १ १---पत्र ३१, पाद्याः क्रमाः सम्मत्त ७६)। ७ जिनहेव शीर्वकर, धार्मन् (पबन १.१.१२)। व एक एवर्षि विसने वयवान् बहाबीर के वास बीसा सी भी (ठा सिकीस केवी सिक्तंस=किय्। विकीसद <---पत्र ४३ सम ११ **१**)। **१** पांचर्ने बानुदेव तवा वमदेव का पिठा (सम ११२)। सिक्षणम प्रशिक्षणम्] १ मेर पर्यंत देव-विधेष (एमः च्लु)। ११ गीव मास का नोकोचर न्यम (सुक्य १ १३) । ७)। व्रिट्भन (<sup>\*</sup>टर्भी काओ वनाच्छ (१४ ४४२) । नंदा को जिल्ला ग्रामन्द्रभावक भी वत्ती (उदा) : "मृह द्री ["मृति] १ एक वैन सहस्य (क्रम्य) । ३ बोटिक मत--विर्ववर केन खंडवाय वा स्मापक एक मुनि (चिन २१६१)। र्राचि को िर्शात्र) फल्द्रन (इनएवी याक) मास भी क्रम्स चतुर्वेको वि.स (सद्वि धै)। सेण वृ [सन] ऐएक वर्ष में। क्रपम एक बर्दन (तम ११६) । सिषंक्र पू [शिक्कर] प्रोक्त नेराव ना पिवा (गक्स २ १२)। सिवक्र १ पूर् [शिवक] १ पद्म वैदार होने सिवय के पूर्व में एक धनस्वा (विश्व २६१६)। २ वंडम्बर नावधक का एक धामान-पर्नेत (६७) । सिया की शिया १ भनवान वैभिनान की नी नावाकानाम (मन १६१) ⊧२ सीवर्थ

१२ एक देव-विधान (रेवेन्द्र: १४६) । १६

क्रुश-विद्येष (विष्) । इस व विदर्श १

ग्रहेशी धमस्या की माति। २ मुकिन्मार्वे (मूमनि ११६)। गइ की [गिर्वि] १

मुक्ति मोदा। २ वि मुक्त, मुक्ति-प्राप्त

(च्च्य) । १ र्चु मास्टबर्य में धरीत ज्वस

रिकी रात में असन पोस्टर जिल्लेक (पर

देखोड के स्त्र की एक ध्रुड-मश्चिपी (का —नम ४१६६ खाद्या २—नम २४६)। पनयार्थे किनकेर को प्रवासकी पुक्त साम्बी (पन १)। ४ ग्रामाली मान्य निवार (भ्रम् वस्ता ११)। १ पार्वेद्धे (ग्रम्)। सिवापीश 🖛 सिन संश (३वा) । सिकासि व (शियपादिमा विश्वतीत में बसीव प्रामृतिहो-अस में उद्धान बारहरें जिनतेन (परक)ः सिवित्र देवी सुमित्र (दे ६ ६६ ब्रांट रेमा कुना कपू)। fetिषया ध्ये [शिषिक्र] नुवासन, पानशी, समी (क्य सीनः बहा) :

मिथिर न [डिजिर] १ स्वन्यतार, कैन्द-

निरत्य-स्थान, धारमी (दुना) । २ केन्स केना, नरहर (मुख ६) ।

सिम्ब सक सिंध] धीला सीवना। सिम्बद्ध (यह विसे १३६०) । मॉर्थ सिम्ब स्रामि (धाना १६३१)। सि**ञ्च देवो** सिय=शिव |प्रक्र २६ धींब (w) सिक्षित्र वि [स्यून] छिया ह्या (वन ६२)। सिव्यामी } क्ये कि नुकी पूर्व (वे व

सिक्ती (२६)। सिस रेको सिस्टेस - रिमप् । विश्वद (वश् ) । क्षिमिर न [दे] यी रही (दे स, ११ पाय) । सिमिर 🛊 [शिक्षिर] १ ऋनुनिक्षेप पाप तया प्रापुन का -मीहिना (चन ७२० टी हे ४ ११७)। र याच गाड वा नोक्टीचर (सुन्य १ ११) । १ प्राप्तन माल- विकिधे फ्रयूफ-माहो (पाय)। ४ कि बक्, ठंका, बीहर (पास प्रम ७६८ टो) । ६ इनका

(स ७६ व यै) । ६ म. द्विप (का १०६ दी)। क्षेत्रण पं िक्टिएम् कन्नमा (बर्गीक श्र)। सद्वीप्र पृ मित्रीचरी दिवासय पर्वंद्य (उप १व६ टो) । सिसिरकी रेको सिस्टिरिकी (धन)। सिम् प्रेन [शिश्] बालक, बच्चा (नूपा १ सम्मत्त १२२); 'सा श्राह पायपेकत शिमुम्बा बीर्य वहमव्यूरे (द्वत्र १७३)। आछ पं विश्व विश्व वाक करता (नाट---

केव १०)। नाग पु िनागी ब्रुप्त कीट

विकेश समस (सत्त १, १)। प्रस्त पू

[भास] एक प्रस्ति धना (खामा t ११---

मुख रे हे हैं। इस ६४व धी कुत्र २१६)। यस दंग विश्वी तुल क्रियेच (वस्त्व १ – वस ११)। बाह्य केटो पस्डि(नूप १ १ १ १ १)। सिस्स वृत्री [शिष्य] १ वेसाः धाप विकार्शे (खाया १ १—वक ६ । मूपनि १२७)। ६६६. स्सा स्स्त्रणी (बाधः खाया १ १४--पत्र १ )। सिस्स देवो सास = धोर्व (यह १)।

सिसिसिकी को [वे] कन्दरिकीय (वस ₹€.E.) i सिद्ध वन [स्पूद् ] इच्छा करना चाहना । सिद्द (१४ व४ आक्र २व)। इस्सिद्ध

णिज (वे ६, ३१ हो)।

सिह पु दि दुनगरित की एक बार्टि (समार ३ २६)। सिहंड दू [शिसण्ड] किया पूरा, पेटी (वाद्या द्यपि १११)। सिर्वडकृष्ठ पुंदि] त्वाथक छिपुः २ वर्ष-

सर, बही शी मलाई। समूरः मोर (दे क 22) [ सिह्यहिष्ठ पू दि] शतक बच्चा (वर )। सिव्हि कि [शिक्षण्डिम्] १ स्थिकापि धीप)। २ दे महर-पत्री गीर (पाय- उप ७२ व दी)। १ विप्सू (शुपा १४२)।

सिक्ष्य वैको सिक्क्ष्मि (रेमा)। सिक्टन [शिक्ट] १ पर्वंद के ब्रनरण श्राद श्राष्ट्र (पास, महका सुद ४ . ३६० में १२ ३ । २ कडमाप (खाका १ ६) । ३ सपातार बडाईस दिनों के स्तरास (संबोध ६०)। अत्र वि चित्रा रिक्टों से बस्टि ( 4 2, 24) 1 सिद्दरिपुं[शिक्तरिम्] १ पद्मक पन्छ (पास पुरा ४९)। २ वर्षंबर वर्षत-विधेन (बार ६—पद ६८ स्म १९ ४३) । ३ **ईद. कुर-विरो**प (इर २, १---पश ७ )।

4इ प्रिकि दिवालय पर्वत ति व

सिव्हरियों । भी वि शिक्तरियों निर्माय

**23)** (

सिइरिक्स । बाय-सिंग रही-शीरी पारि वे बनका एक दास्का मिट कासा (दे १ १९४० व ३३ पछात्र ६—पम् १४८३ पर्व ४ पद्मा १३: व्यक्ता छन्।। सिंहची } औं [शिका] १ नोटी मार्चक सिक्षा रिक्ट वाची का ग्रुक्ता (रंबा १ वेश वस १४वेः वासः जाना १ ४—वप १ क बंदोब ३१)। २ प्रतित्वी ज्वासा

(पाच पुमा सन्तर)। सिवास्य वि [शिक्सवन् ]रिज्यावासः रिकान

दुष्क (शहर) । सिद्धि दूं [शिल्पन्] १ घर्तन, धान (श

१६० थाम पुत्रा प्रदेश)। र मञ्जूष, मोष (बास्ट हैका ४२, वा दशः १७६)। ३ चक्छ का शृक्ष शुक्तर (करन १६ १)। ४ पर्वती इ. साहस्त्रा ६ दुर्धा ७ केन् १)। फास र् ["स्परा] टंड जाहा सरी

(प्रापा) । सोआ भी ["भोवा स्नावा]

मधी-विरोप (इका दा १ ४--पण १६१)।

(स्रोधध पूं["स्रोकक] १ वसमा। २

शीतकाल हिम ऋतु (स व ४०)।

ध्दाव बुद्धा १ परश । १ विवय-बुद्धा <sup>।</sup>

११ मपूर्णतथा-नृद्धाः १८ वकरे का रोगः। ११ वि शिया-युक्त (प्रणू १४२) । सिद्दि वृं [रे] हुनहुट मुर्चा (वे ८ २८)। सिद्धि रि [स्पृहित] यमिनपित (दुमा) । सिद्धिण पून दि । स्तन धन (वे ८, वे१ मुर ह ह पाय पद रंगा मुगा १२ मनि इत्योर ६ सम्मस १६१)। सिद्गि द्री [शिव्यती] सन्दर्भशेष (रिय)। सिही (वप) स्त्रे [सिही] सन्य-विशेष (বিৰ) **৷** सी (बर) और [का] एन्स-बिरुवेंग (पिन)। वेवो सिरी। सीभ्रचक[सद्] १ विवाद करना क्षेत्र करना। २ बढ़ना। ३ पीड़ित होना हुन्यी इस्प । ४ इतना इत सगना । सीयह, धीपंति (पि ४६२३ मा ६७४) जया सीवीप धोम६' (चिड ८२) 'सामवि स सन्दर्भगाङ (नुर १२ २)। यह सार्थंद (पाम १ ७ मुपा देश । हुत्र ११८) । सीम न [दे] सिल्पड मोम (देव ११)। सीअ वि [स्वाय] स्वक्षेय, नित्र का 'सीयन सबेत्सार्राहसाङ्ग्रह्मार्' सोमोसिला वेय मेस्या' (पद १४---पत्र ६६६) । सीअ देखों सिअ = सिव शोबाडीबी (बाज) । सीभ पून [शाद] १ त्पर्शनीवदेव देश हरत (छ १—पद २४) पत ६) । ३ दिन मुद्दिन (स. १ ४३) । ३ श्रीत-काल (स्थात) । प्रदेश, आहा (हा ४ ४----रब २८७ था)। पढा उस २ ६)। इ.शर्म-सिटेन राव रार्थं का कारण पूत्र कमें (कम्म १ औ ४१)। ६ रि शांतर ठंडा (वप, यो। रामा १ १ टी-च्यत ४) । धर्व प्रथम मरक का एक शरक-स्थान (देशका ४)। « ब. कार्नियेत कार्रावन का (वंबाय रूक)। र्राष्ट्रप्रम् (सूच १ २ २,२१)। t म.मूप(बापा)। घरन [\*गृह] षद्भारती का क्योंक्रिकिना का पर, नहां नहें द1वें सर्व के प्रश्नुतका हको है (वव ३)। ब्याप्रति ["ब्याप] स्टब्स सक्यामा

सीअ देवो सीआ = ग्रेंडा । प्पसाय पू ["प्रपान] ब्रह्न-विशेष जहां शाता नद्ये पहा**र** पर ग विस्तो 🕻 (ठा २ ३ — पत्र ७२)। सीअ देवो सी आ = होता (हुमा) । सीधात्रस्य र् [व र्शामारस्क] गुम्म-विशेष 'पलउरमीयबरए हवड कर जगसए य बोध थे' (पराग १--पत्र ६२)। सीअज न [सर्वन] हेरानो (बम्मत ११६)। सी अजय म [पे] १ दुण्य-भारो पूप धोहने का पात्र । २ समग्रात, यसाव (रे ८ ११) । साभर प्रशिष्टी १ पान न विम बन कुहार जल-कछ (इ.१ १०४ गउर-दुमा मछ)। २ बार्ड, परन (११ १६८ माई av) i साअरि वि [श]करिम्] शोकर-पुक (पर्वत्र)। सी अस र् [शीवस] । वर्तमान धश्विराणी बास कं दर्गों जिन-देश (तम ४६ पति)। २ उच्छा पुरत-सिदंव (पु≋ २ )। १ वि ठंदा (हे १ १ प्रमा गहर यस्त्र १३)। साअसियाधी[श्रोवन्स्य] १ देश स्राज्यः नीयसियं श्रमोत्यं सिनयमि (नव ११--वत्र ६६६) । २ नूजनियोग (धन) । साजीत र्फ़ा [४] १ दिवदान का दुरिन । र मूल-विकेट (4 a 24)। साधा क्री [ईता] १ तक वण-नधी (सन २० १ २ ६६) २ दिव्याग्यस-नामह पूरिता निजनीयरा (१६) हे स्टेजारमाज हरू की व्यप्तितानी देश (ई त)। इ काल परंत्र का एक शिवरः य मा परंदू व ज का एक हूं (इक) । ६ वाधिय दशक वर सूके याता विद्यास दसे (हा ब-नव वर्ष हो )। हुद् न [ हुन्र] एक दब (वे ४) । साजा क्य [स ॥] १ अस्त्राम, एवं एश (बाब १ ८६)। २ वर्ण समुध्य को

मातानानाम (पउम २ १०४ सम १६२)। ३ साङ्गन-पद्धति यत में इस बसान से हाडी भूमि-रेबा (दे २ १ ४)। ४ ईपरप्रध्याग्यास नामक पूषिको (उस ३६ ६२ चेद्य ७२४) । १ । श्रीत वरा मास्य बन् पर्नेतों क शिगार-पिशेष (इक्)। ७ एक दिस्पारो रथी (छ =)। माआ देखा सियरा (क्या कीर सम १६१) । साआज देना मनाण = श्मग्रन (हे २ ८६ यव ७)। मीआ**र देशो सिद्यार** (ग्रामा १ १—नत **\$3)** ( सीआद्य ध्व [सत्रथापारिशम् ] बैंबानीम ४७ (कम्म ६ २१)। सीआखीस ध्येत, जार देवां (वि ४८६) ४४६)। ध्ये सा (मुख्य २ १--- १न 28) I सी जाय शक [ साइय ] स्विपन करना, सीपावेद विदार' (मन्दा १ २६)। धीइआ भा [दे] मनी निरुद्धर बृटि (हे c (1x)1 साइय रि [मझ] वित्र परियाद (१ ६१)। साइ अ [वे] सोबी निष्पति (विष्टः)। सांडमाय वि [दे] मुत्रात (६ व. ६४) । साबद्व न [रें] दिमन्त्रात का दुव्ति (यह )। माष्ट्रय [शीतान्त्र] १ ठंश त्या वस्त । २ मनुद्वायस्य बर्विद्व (मूर१२० २२ रि (११)। मीउन त्या साउर् ( यह )। साजाज रण सजाजा। दरवाव 🖠 [मिपार] रूगर-विदेश नहीं स्टेशस नव वराइन विराम दे (वे द—१व ३ ३)। 4 4 1 [ 217] Anfron (a s-47 1 (c 1 साजाजा ध्व (च प्रस्त) हे पुरू बयनच हार हे भारत करा इह सब १३ १ रे)। रेनियर्थक्य दृहत्व t—41 (t/) 1 मास्त्रप्रज[र] तथ, ध्वः संत्य (विद 16 31

>02	पा <b>इ</b> टसर्म <b>र</b> ण्यको	सीत-सीविव
ह०८  सीत को शीभ = सीत (ठ १ ४ — यव १११)। सीता को सीमा व सेता बीता (स ६ — यव १४६) १ — यव १४४)। सीता को सोमार्कस (युक्त २ १ —	एपम पूँ भिमा धीमतक गरकाशस की पूर्व तरफ स्थित एक गरकाशक श्वेशक २ )। मिनक्रम पूँ मिरपम धीमतक को उत्तर तरफ स्थित एक गरकाशस श्लेशक २ )। शिक्षिद्व पूँ [शिक्षिक्ष] धीमतक	सीरियु सिरिस्त व्यवस्य कावेल (पन्न)। सीरिक्ष वि चि जिल 'शीरिको निर्मा' (पाय)। सीछ तक शिक्षम ] र सन्त्रमा करणा पायत सन्त्रमा । र पानन करणा 'पीनेला तीलपुल्ला' (रिट ११); 'सल्लाची खैनाइ
वत्र रहे। श्रीतीत् क्ष्ये साजीद (क्ष. २ ६—यत्र ७२)। श्रीतात् हेक्षे सीक्षीआ (व्य. २ ४— श्रीतात् हेक्षे सीक्षीआ (व्य. २ ४— श्रीतात् । वत्र ११ । वद वत्र)। सीत्रज व (स्वत्) हैक्किद, प्रवत्तता (वैचा	को व्यक्तिल फिता में स्थित एक गएकाराथ (बेटेन्द्र २१)। वण्ड दू [ कर्तर विधानक के बांबन तरक का एक गरफानाव (केटेन्द्र ११)। सीमीतय न चि विधान - यानों की रेखा- कितेच में पहला वाद्य व्यक्तार विदेश (वे	पण्डमस्त्रितं (धा १६)। वेची संन्यातः। सीखः न (श्रीखं) १ पितः का सम्प्रमान, श्रीलं चित्तसमङ्ग्रमकारं मस्त्रितं एवं (जा १६० स्त्री)। २ स्त्रुच्यं (माई २१) ११ ११४) १६६। सा १६ क्षित्र ११)।
साय के [च्या] जिल्ला के किया है है पूरी   सीधु देशा सीडु (जार्या है है स्थान के वे स्था) । सीभार देशों सीभार (जाजा क्या) है है हे क्या कर ) । सीभार कि [क] च्यान, तुब्ब (मसु हे है है) ।	क, ११)। श्रीमंतिका कि [श्रीमानिततं] ब्रियक्त विका (पाप)। श्रीमंतिका कि [श्रीमानिततें] के वारी महिका (पाप; तर ७२० रीप सम्मत्त १९१ मुना ७)।	६ सब्बेट, स्वयाना 'सीम' पन्हें (राम) स्वन्नप्रदेश' (कृत्य)। प्रशासनार, चारिक, स्वया वर्षम (द्वारा पंचा १४ १: स्वया २ १जन ११)। १ स्वयंत्र गर्जन (१ २, १ ४)। ६ स्वयंत्रा (पाइ १ १जन ११)। इ.प्र. जिल्ला विकास प्रयोधनार
सीमा में कि सिमारी । १ सर्वोष्ठा । १ सर्वोष्ठा । १ सर्वोष्ठा । १ सर्वेष्ठा । १ सेवा, द्वापत्र । १ सेवा, द्वापत्र । १ स्वर्गेष्ठ । १ सेवा, द्वापत्र । १ स्वर्गेष्ठ । १ स्वर्गेष्ठ । सीमा । सीमोक्ट ई सिमानूरी १ स्व सर्वार्वेष्ठ । स्वर्गेष्ठ ई स्टामानूरी १ स्व सर्वार्वेष्ठ ।	सीमंदर पुंचितिस्वार विकास प्रेम करात एक कुतार पुरुष (एवर वे ११)। र देशका वर्ष कर एक पानी कुतार (यह १११) १ तुर्व-विदेश में कर्यना एक साहैन केंद्र (काल)। ४ एक केंद्र पूर्वन, को कामाना गुम्मितास के पूर्व कार में पुरुष से (एवन र १०)। ४ कमाना शीकामा की का मुख्य	का एक मेर (यीण)। "बुद्ध वि [क्या] श्रीक-मूर्क (योण घडण)। परियर दुवं ["परियुद्ध है चारिक-स्थान। र व्यविश (यद्ध र १-पन १६)। मंत, "व वि [ बार् ग्रीक-पुक (याण्य, योण घडण) वा १६)। "करम व [मत] ब्रियुक्त वेश शरक के राजने योण व्यविश वामि
(पडन ६ १६)। २ ऐप्तय संक के वाणी विरोम दुक्कर (वन ११६)। ६ वि नर्माया- वर्षा (दुम १ १६)। सीमंत ई [सीपस्त] १ वालों से क्वाई हुई रेमा-क्टेस (सं ६ २ : बडमा कर करेन	बातक (विचार १७)। ६ वि नयाँचा को बारण करनेकावा नर्याचा का पालक (सूच २, १ १९)। सीमा की [सीमा] देवो सीमामा (वामा या १६८, ४११) काबा पढा।। नार ग्रुं	पांच कर (वय) । सास्ति वि [*कास्तिम् श्रीव वे श्रीमनेपाला (कुप २४) । श्रीकाच कर [श्रीक्रम्] संदुक्त करवा। कर्म, तोक्रम्प (वव १) । श्रीकृत्व वि] महुत क्षीप मन्त्री (व 4,
द्वी)। १ स्वरंद काय (बडढ बरे)। १ घाम ये तती हुई पूर्वि देश सम्बद्ध कीमा बाँड का पर्यन्त पात (बडढ २७६ रेफा) एवं भरेत दो)। ४ मीमा दा प्रस्तु, हुए 'पूर्वी केस बीमेडी कुटाल दूर पूर्वकार्ण (बडढ)। सामेंत दुं [सीमास्त्र] १ खीमा का सम्ब	(स्त्रहु १ १—२००)। बर वि [चर] मर्याया बारफ (पीट हे वे १९४)। स्त्र वि [क्कि] सीमा के पात का बीबा के विकट वर्ती। शीमाला तरकारहो सके से तेवमानका' (पुरा १२२) १४२। ४५३। वर्षीय ४९)।	सीय तक [सीय ] योज्य विकार करण, तोबता । प्रति: सोविष्यामि (भाषा) । वेष्ठं सीविज्ञम् (व १३ ) । सीवजा भ्ये [सीयना] बोनाः विवार (क्व इ. २१ व) ।
सन संदर्भ वर्षण सन् (वडड ३६७ ४ १) १ ६६९ (वडड ६८६) १ सीमोन कह [प्रेसीमान्तवयू] वेचण संह्रासमिक्तन (यन) १	(परम ११६ ६२ दूना पढि): 'खंतपन्तु	सिक्तियो । सीनक्षो ३ को [शोपर्यो ] बुल-विकेद (सीप

पावित्र ["पावि] सह (६ २, १३।

कुमा) । सीमीत पु [सामन्त] इस हे

काही हुई जवीन की रेवा (४) ।

१ देश की ।

ं ७- ग्रोपम्ब १११)।

खाविज रेबी सिक्सिम (पे १४ र ३ दे <sup>४</sup>

सीमेना [र[मामनक] वयन नरक-पृथि

सीमं १व के करता-गांव नरक-स्वान (विषु १ द्वा १ १ -- रत्र १२६) सूत्र ६०)। सीस सक [शिय्] १ वय करना विसा | करना। २ ऐप करना बाकी रखना। ३ विशेष करना । सीसद (हू ४ २३६ पड्)। सीस सक [क्रमय] क्यूना । सीसइ (है ४२ मिकि)। सीस व [सास] बाह्य-विशेष शीशा (दे २ सीस देवो सिस्स = रिप्ट (हे १ ४६ कृषाः दं४७३ सामा १ ३ —पत्र १ ३) । सींस दुन [शीर्प] १ मस्तक मान्य (स्वज ६ प्रापृष्)।२ स्तरक पुच्छा(धारा २१ ८६)। ६ छन्द-विरोध (सिंग)। अन[46] ग्रिरध्यस्य (वेस्त्री ११)। "मक्षा की ["पटी] सिर की हुई। (वैड्र ta)। पर्दापेक्ष व ["प्रमुक्तियत] संस्था-विशेष मञ्जालका को भीरासी बाज से पुनने पर यो संक्या सम्बद्धी बहु (इक)। पहुँ जिल स्रोन ["प्रकृष्टिक] श्रंबमा-विशेषः योर्पप्रह विकाय को भौरासो बाब से प्रकी पर जो दस्य क्व हो वह (इक)। की. आ (ठा २,४---पत्र ८६ सम् ६३ सस्यु ६६)। "पहेंचियंग व [प्रहेकिकाल] संस्मा-विशेष कृषिकाको सीरासी सम्बस्त पुत्रने पर को <del>पंच्या सम्बद्धी बहु (ठा २ ४—-</del>पण दर्ग म्यु ११)। पूरा पूरव दु [पूरक] मस्तक वा बामस्या (राजा हेडू ४१) । स्पन्न । स्टब्स (सप) । पुन [क्सपक] धन-विशेष (पिम)। विश्व पु ["विश्व] केंने चमड़े धादि से मस्तक को नपेटना (सम १)। सीस" रेबो सास = ग्रास्। सीसचात्र [दे शीर्पफ] शिरकाण मरतक मानवस (दे ८ ६४-दे १४ ६)। सीसम दुव [क्] छोतम का बास, फिराग (वर १ वर द्या) । सीसय रि [प] प्रवट ब्लॅंड (वे व ३४) । सीमय व [मास∓] देखो सीस≖सोस (गहा) । सीसपा थी [शिशपा] सीसन ना नास (परा १--पत्र ३१)। साद् रेको सिरप = सम (राज) ।

सोह दु [सिंह] १ धापद बन्दु-विशेष असरी मृग-राज (पएइ ११—पत्र ७ प्रानू दरै १७१)। २ बूल-विरोप सर्विजने का पढ़ (हे १ १४४ प्राप्त)। १ राग्ति-विशेष मैप से पोचनी राशि (मिचार १६)। ४ एक समुक्तर देवको क-गायी थैन मुनि (समु२)। ५ एक कैन मुनि, जो धार्य-धर्म के छिप्य वे (कम्प) । ६ सपवान् महानीर का रिप्प एक मुनि (घर १४—पत्र ६०४) । ७ एक विद्यापर सामन्त राजा (पटमं व १६२)। चएक सष्ठि-पुत्र (युग्त ३ ट)। ≣ एक देव-विमास (सम. ६३ देवेला १४) । १ एक कैन ग्राचार्य का रवदीनक्षय नामक भाषार्वं के शिव्य से (गुरि ११) । ११ सन्द विशेष (पिष) उर न ["पुर] वयर-विशेष (क्य)। बंत पुंत ["स्रान्त] एक देव विमान (सन ६६)। इदि पू विद्विती स्वरण का एक योद्धा (पत्रम १६ २७)। क्ष्मण र्ष ["कमें] एक घन्तर्रीय (६७)। कृण्या सी ["कर्णी] कम्स्निकेष (उत्त १९ १)। क्रिसर इं[क्सिर] १ मास्तरण-विशेष बटिन बन्दम (एाया १ १--पन १३)। २ बोहरू-विधेष (बंत ६) विष्ठ ४६२)। सङ् वृ [ शति] वनित्रवि तथा समितवाहन नामक एन का एक-एक सोक्पल (ठा४१—एत१६०)। गिरि व ["रिगरि] एक प्रसिक्त केन यहाँव (सर बर १४२ दी। पत्रि)। गुहा की ["गुहा] एक बोर-पक्की (ग्रामा १ १६--- नव २३६)। बुक्ष पू [बुक्क] विद्यावर वेश का एक राना (पत्रम १,४६) । अस 🕻 ["परास ] भरत चल्लासी का एक पीन (पटन १ ६)। वाय वूं ["नाव] विद्वनर्थन, विद्व की वर्षमा के मुख्य धाराज (धय)। विषयी छियः। व ["लम्दीक्त] १ तिइ की मति। र तन-विशेष (बंद २०) । व्यसाद **वे**यो ानसाइ (राज) । तुपार न **ि**द्वार] राजनारः राज प्रकार का पूक्त करकारा (क्ष ११६) । यस प्र [\*धव] १ विचावरनेश का एक चना (प्रज्ञ ४, ४१)। र हरियेल बक्तार्थी क रिवा का नाम (पतन e, १४४) नार देखा जाय (परह १

१—पत्र ४४)। (ने ग्रेकिय, निकीक्रिय देखा जिस्कोस्तिय (पण २०१३ घंत २० णस्या १ ≪—पत्र १२२)। निमाइति "निपादिन] सिंह को **उधा बै**डनेबासा (सुन्ब १ व दी)। गिसिक्ता भी िनियस] भरत पकरतीं हारा मागपर पर्वत पर अनवासा हुया जैन मन्दिर (ठी ११)। पुच्छ न [पुच्छ] इत्र-मर्भ पोठको नगरी (नुर्धात ७३) । पुरुष्ठाम न ["पुच्छन] पुरव चित्र का डोइना सिक-बाटन (पराह्र २ १—नव १६१) । पुन्धिज्ञय वि ["पुष्टित्व ] १ जितका पुस्प-चित्र तीड़ दिया नया हो बहु। २ जिलको क्रुकारिका से बेकर पूछ-प्रदेश---नितम्ब तक की अमड़ी क्काइ कर सिंह के पूच्य के तुस्य की जाय बह (बीप)। युध पुरे की ["पुरे] नवरी-विशेष विजय-रोत्र को एक राजवानी (हार ६---नव व : इक) । सह प्रै ["मुख] १ यन्तर्शीर-विशेष । २ अपूर्वे **ख्**नेवाकी वनुष्य-वावि (ठा ४ २—पत्र २२६ इक)। स्व पू [रिव] विदु-पर्नना खिह-नार खिह की तरह मानाज (परम ४४ ६१) । रह दूं ["रथ] क्यार देत के द्वा क्ष्मैन नवर कर एक छना (महा)। साह र्द्र['बाह्र] वियापर-पंग्न का दक राजा (परम १, ४६) । बाहण वूं ["वाहन] रासस्त्रीस का एक राजा (पढम ४, २६६) । वाहणा यो ['याहना] यन्त्रिम देशे (धव) । विकासगइ दू ["विकासगिव] विविद्यस्य स्था अभिक्षताहुन नामक इन्द्र का एक-एक गोकसम (स.४.१---एव.११८) इक)। बाध पून ["बीन] दक देव-विमान (बय ६६) । संग र् [सन] पीयहरू जिनदेव का रिजा एक धारा (यम १८१)। २ भगरान् चरित्रताप का एक महापर (शब ११२) । वे शका अशिक्ष का एक पुत्र (बदुर) । इ. धना महापेत का एक 📺 (बिना १ १--पत्र वर)। १ ऐराव धत्र में जरात्र एक बिनरेन (सन)। शाजा ध्रा ["स्राना] एक नये (स २ ३—नत्र व ) : विकास व [विक्रिक्ति] विद्यालात निह की तथह यता हुए पाये को तरह

देखना (नड्डा) । ।शम न [ इसन] पानन-

विदेव विद्वारार बायन मिहाद्वित बासन

सीक्र दिस्तिहित्सक्ती। भी हा

सीह ने "सिंह] बें हु, उत्तव (गुम १३ पाँड)।

सीइंडय ﴿ [रे] मध्य, मदसी (दे व २०)।

सीहणही की दि ] र ब्यानियेय, करीये वा

सीहपुर ति [संहपुर] तिहपुर-वंदन्धी (पण्य

ग्राच्छ । २ वर्षीचं का प्रस्त (वे ३४) ।

धनासन (पन) । देखा सिद्ध ।

(ग्रामा १ १--पत्र ३१)।

X2, 33) 1

e (2) 1

सम्बर्ध है है है है है है

है (नय

मृतिकारी ।

LI-TILL

(बाइ)

सीक्षर वेचा माभर (इ.१.१=४ कुमा) ३ सीक्षरय दें दि] बासार, बीर की इटि (है स्वास्त देवो सिद्ध (भए १ १--पत्र १४० इक वदम ६६ १२) । मंद्रिका १ हि नेत्र साहि को पूर की का साइविज्ञास्त्र [इ] १ छित्रा वारी । २ c 7 (1) : दर् दय धारतर मा ४३)। (बामाह ६) करी मुगह (हे ६ १३१)।

धरुवरि

नप्रयाचिता नगरी ता पाय (दे १६)। सीइविदासन दुन दि उन ना बना हुया रंडर जा बेला दायन के बाग म स्रोता भाई। ध्री [सिंहा] धोर्नमा निह नी मान मीह र्न । सीघी १ नय राज्य २ नथ-ब्रिटेच (बराइ १ १---पन १४ दे १ H व [म] श्र वर्षे रा नुषद्र सम्बद—१ इस्टेनाफ्यमा(निक्षी४४३ मूर्यातः )। ३ प्रतिकृत, प्रायन्त्रका । य ११) । १ समानीयता (स्र्वि १६)। ४ महिलाम क्षेत्रका (स्व.) ६ १वा। ६ वट सपुत्रि (वर (3) स्थापक 🖟 (४६६ 🕴 ६६६६) un ae ! erd ] mut Ant (f. s. रेटर ब्राइ ६६ वि १० वर), बुकाबि (विता १) चंद्रियानुष योगची

सुम 🛊 [सुत] पूर चढ़का (तुर t 🕇 ः प्रापृ १ लूमा उप)। सुअर्द [शुरू] १ पणि-विकेष कोना (पहार १ १-- पत्र का बत्त ६४ ७ मूरा ६१)। र रावस्त्रका मन्धी (से १२ ६३): ३ चरलादीय एक गामेत रावा (पत्रम व १११)। ४ एक परिशासक ( खाया १ १-- पत्र १ १)। १ एक यनार्थ देश (पद्मप २७ ७)। शुक्ष वि [भूत] १ तुमा द्वामा साम्रोतित (दे १ २ हे। घना ब्राह≕पत्र ६)। २ न जाल-विद्येत्र सम्बद्धान शास्त्र ज्ञान (रिद्धे we at ax as every to र्शेदि, बलु)। १ तब्द, व्यक्ति पातान । ४ धयोरतन म तजान के धानरक क्यों का मारा-रिक्रेप । ५ बारमा भीतः 'चै देख' तथा तम्म व कुछा सो वा नुबं तेलुँ (विने १)। ६ भाषम शास, विदान्त (पगः र्शिक्षण वे ४ २० कम्म ४ ११३ १४ री इदि । भी द)। क बायकर, स्वाम्याय (क्रम ११) के ४ २०)। बरए (बाह ७ )। "देवदि १ ["देवदिम] पीस्त पूर्व-सभी वा जाववार भूति (राज) । वर्मप राप 🛊 स्क्रियो १ वेशक्त का मध्यपन-अनुहारमञ्ज्ञ महान् यात-व्यक्ष (पूपर, ४ । शिवा १ १-- पत्र ३) । २ बार्यक्षकपंत्रीया मधुरू । ३ बारपूरी वंत-वंत्र हरिसा (चन)। यात्र रेला नाम (स्न १ टी-प्रमा)। प्रापि वि [ग्राविन] राग्र-श्राव-योग्य राह्नी वा जानकार (मन)। "मिरिसय न ि।निधिन निक्रमान का एक घर (शिरि)। । तर्द भी [। त्रांघ] शुक्त वंचनी तिब (१९७२)। यर 🖠 [स्वतिर] ५४४ धीर पर्च धंन-रंप सा जानगर पुनि (छ १ र)। "(पया और ["(पता] केत

को ["देवी] वही (सुना १ कुमा) । धन्म पं विष्मी १ वैन भंग्नांव (छ २ १— पत्र १९)। २ शाझ-बान (मानव)। ६ वायमीं रा यम्पननः शास्त्रम्यास (तृष्टि) । घर विधिरी समझ (नपा ११२: पराह २, १--पण १६)। नाम पून जिनी राध्यम (**ठा** २ १—१४ ४६ मग)। त्यांचि हैस्रो पापि (बर १ )। निस्सिय हेपो "णिस्निय (हा २ (--पत्र ४६)। पंचनी स्तै [पद्ममा] কাৰ্ত্তিক দাশ কী যুক্ত দ'বৰ্গী বিশ্বি (দানৈ)। पुरुष वि [पूर्व] ग्रामे नुना क्रूपा (स्प १४२ दी) । सागर प्र [ सागर] ऐरवह क्षेत्र के एक मानी जिनदेश (सम ११४)। सुज वि [स्मृत] यद किया हुमा (भ्रम) । सुर्भेष पूर्व [सुरान्य] १ मच्छी क्या पुरुष् (या १४)। २ वि मुक्त्वी (ते ६, ६२) पुर १ २०)। सुर्अधि वि [सुगरिय] मुक्तर कथवाना (वे १ ६२ दे द. व) । देखो सम्प्रीध । सुभक्ताय वि [स्यादयात] मच्यो तयः **पहाह**या (पूर्वा र १ १४) १६। २ 38) 1 सुभव्द रि [स्तरद] तिसँत स्मृद्ध (मरि)। सुध्य १ (सूचन) धरवन प्रशास्त्रकी (मा २२ ८ मामा प्रानुबा ४ । नुर रु वद्या भवतः) । सुभन व [स्थपन] बोना, रायव (बुक्ट ६१)। **मुजया को [प] वांत्रुक्त पुर्व-किरोप** (ta ta): मुज्जु वि [मृतन् ] १ पुनर क्रपेरमधा। १ औ. मारी महिला (बा २६६) ६०४) 2561 ft 645 424) 1 सुभव्य रेका सुरवन्न (शह १ )। सुधम वि [सुगम] नुवोष (शक्र ११) । सुभर विस्ति हो की बनागत ने हो वर्ड बहु तरव (धिन ६६)।

सुअर प्रे शिक्सी तुषर, वसह (शिंग t

७—नत्र ७४। सह—मुख्य ११२) ।

क मुर्यत सुयमाय (गुर १ २११, हेड सोर्च (पि ८६ ) । स माण्या (यप) (Ir cla)1 मुभ सक [सु] गुक्ता। बद्ध-सुर्शक (बारवा १५६) ।

सुत्ररिष—सुवरी

\$\$3

पुष्रदंकिय वि स्विक्षंकृत] सम्बद्धी वर्षः विकृतिव(साम्याः १ — रत्र १३)। सुम्याक्ष्ये सिता] पत्री वर्षकर्यः (गाः २)

सम्बद्धी (सुना) । अरहे (कुना) । सुन्ना (सी) बक्की (साह रहे

पुष्पिर (प्राइ १४) । सुत्रा की [स्तुष्र] यत का सरकरण-किशेष भी व्यक्ति जसने की कबकी या बनाओं (वस १२ ४६ ४४) ।

सुआन्कस्त वि स्थायन्ये ] मुख से— धनायस से कहते योग्य (का ४०१— पत्र २१६)। सुमाउन्त वि स्त्रायुक्ती समझी तरह स्थाय

क्यमंत्राता (क्ये) । सुर हैं [सुचि ] १ पवित्रता निर्मेसता निरुक्तमञ्ज्ञा सुविद्यों य वण्डी वीडीले इरिपेह्मा (नुरा १६६) । २ कि स्वेत क्षेत्र (हुमा) १ पवित्र त्रिपेड (बीच बच्च या १२ महा कुमा) । ४ की श्रम

की एक प्रयम्पदिशी (१६०)। प्रदेश मिति] १ समस्य प्राक्तस्य मुनमा काम (ता ६४१ चुर ११ १७४ मुम्मत क्षम पुरा ५५५)। १ वेष-ताब (ताम मण्ड ४ कुमा)। ४ शाक्त स्थितन्त्र (संमा भाग्र ४६)।

अह की [स्कृति] स्तरस्त (विमा १ २—मण । १४)।

सुरम देवो सुद्दम = सुविक (दे १ ६६)। सुद्दम देवो सुमिण (सुद ६ दश उप ७२० ध १४ ४६४)।

संबंधि की [सुक्ति] १ पूरमा । र मझन नक्त्रस्य । १ स्त्र-को (प्राया पि २ ४) । सहमान्याया की [पे स्विकारियां] सुष्टि-

सुरेशांवयाको [दे सृधिकारिका] युष्टि कर्मकरनेत्रको को (पुषा ४७८) । सुरुत्त [सुचिर] धरकत कीर्यकाल का काल (सारक्षक ४१ ; सुषा १ १९७

म्या)।

सुइक वेबो सुका = मुक्त (ह २ १ ६) । सुइक्य कि [म्यस्तन] बागायी क्या से संबक्त प्रकारताता कक होनेवाला (रिंव २४१) । सुई की [वे] द्वीद पति (वे ८, ३६) । सुई की [सुकी] शुक्र पत्नी की भाषा मैना (तपा ३१) ।

(तुपा १८)। सुत्रवजुत्पार वि [सुश्चासुकार] बाविष्ठय संयम में स्कृतेवाला पूर्वयमी (सूप ११७)। सुत्रवज्ञार वि [सुश्चासुबार] बाविष्ठय सरक सावरण्याला (सुध ११७)।

सुप्रमार ) देखो सुकुमाछ (स्वप्न ६ सुप्रमाछ ) कुमा )। सुप्ररिस दुं [सुपुरुष] सरवन कमा बादमी

(प्राप्त हें १ ट हुमा)। सुप स [स्वस्त ] सामामी कस (स ६६ के ४१)। सुंक न [सुरुक] १ मुख्य (णासा १ ८—पन

१३१ विचा १ १ — यह १३)। २ पूरी विक्रोस करतु पर सकता राजनाम् (सम्म १२ द्वी सुपा ४४७)। ३ वर-सन के पास के कन्न्या पत्रसम्भी को क्रेने योग्स वन (विचा १ ९ — यन १४)। ठाण न [स्थान] बुगी-सर (यम्म १२ दें)। पांड्या वि [पांडक] बुखे पर निमुख राज-पुस्स (सुना ४४०)। वेबो सुक्ष = पुरूक।

सुंका ) पुन वि] विशाद, बाल पासे का सुंका े बार बाद (वे ८ वेट)। सुकांक पुन [के] सुस्तु-विशेष (पएए १— । पत्र वेवे)। सुकांबिय वि [शुक्तिक] विश्वकी पुनी थीं।

बहैं हो वह (ब्रिया ४४७)।

हु-प्रतिकातु चि नाम का बाद खेनेवाला व्यक्ति, स्ववार चवानेवाचा (सिरि वया)। सुंब्रस्ट प्रास्तिकारी बाच्यक राज्य-विशेष (सुर २ वा पडक)। सुंक्रिय वि श्रीक्रिको सुरक्त केमेवाला चुंकी

पर निमुद्ध पुरस (उप प्र १२ )। मुंबा देवो मुख्या = सुरस (संक्रि ११)। मुंग देवो मुख्या = सुरस (सं २ ११: कुमा)।

र्सुन देखो सुवा = युस्क (व ४ ११० इना) । सुन्यायण न [शीक्कायन] योज-विकोष (मुख्य १ १६) ।

६२२)। सुधिकावि वि] ब्राट पूँचा हुमा (दे स, ६७)। सुंबद्धन [दे] काता समक 'मुस्स्मितार्थ

पुन्त व [वे] काता समक 'पुन्तिपुंचकार्य (कुत्र ४१४)। सुठ तुंव [शुष्ट] पर्व-बनस्पति-विशेष (परस्ट १—पन ६१)।

सुंद्रय पूर्व [शुण्डक] भावन विशेष 'मीरासु स सुंद्रपत्न थ कंड्रमू म पर्यव्यक्त स पर्वेडि' (शुम्रति ७६)। सुंद्री की [शुरुद्धी] सुंद्र सा संद्र (पमा १४

कुष ४६४ वेचा ६ ६): मुझ्डिक [शीण्ड] १ नच मचन बारू पोने-बाला (हे१ १६ प्राष्ट्र सेख्रि ६)। २ वस कुण्य (कुमा) । वेडो सोंडि।

२ वस कुछ्च (हुमा)। वेद्या सांद्रः। सुद्रा केनो सादा (मापा २ १ ६ २) सावम)। सर्वाच्या (जिल्लाहर्) सम्बन्ध साम्य

सुंबिक पूँ [शोप्बिक] क्यांगर, बाक केपने बाला (प्राक्त १ : पेक्षि ६) । सुंबिक्षा की [शोप्बिका] पविरान्तान में बार्वाक (बस १ २ ६८) ।

सुंबिक देवो सुविज (दे ६ ७६)। सुंबिकिणो की [सोण्डिकी] क्वनार की की

(प्रयो १ ६)। सुंदार देवी सोंदार (प्रवि)। सुंद १ (सन्द] एका एकए का एक प्राप्ति-

तीय बार्युराण का पुत्र (रबस ४६ १८)। श्रीदर वि [सुन्दर] १ मनोहर, बाब, बोक्त (भारत १ ४ पुत्रा १२स १८१, कम्मू कास ४ व)। २ पु. एक छेठ का नाम (सुन्त १४१)। १ छैरहर्वे विनवेद का पूर्ववस्त्रीय

नाम (सम १६१) । ४ न. चय-विद्येग हेसा, तीन विनों का बयातार चपवास (संबोध १८) । बाहुर्षु ["बाहु] सार्वचे विनदेश का पूजवम्मीय नाम (सम १६१)।

सुंदरिक वेको सुंदर (ह २ १ ७) । सुंदरित पूंकी- वेको सुंदर (हुव २२१) । संवरी को सिकरी १ क्तम को (पान :

ह्युंदरी की [सुदरी] र कतम की (प्रानू १७) वि १०)। र समवान ऋषमरेत की एक पुनी (ठा ६, र—पन वेर६। छन ॥ पडम क्को (रवम ७४ ६)। ४ प्रक्निशेष (भिष)।१ क्येष्टा, क्रेम्सा 'मृंदी खे देशसुर्णिया सेस्कारस्य स्थलितृत्तस्य सम्बन्ध्यस्य (ज्ञा)। सुंदर् ३ व स्थित्युरी सुन्दया करेट सुद्दित्ता का भशहरक (प्राप्त है १ १७) सुत्त तुम ४ २१३ वस्म ११८०)।

**११२ वि१)।३ समल की एक** 

हुन्। राज्य के निव्हरण (तान वृद्ध के निव्हरण (तान वृद्ध के निव्हरण के प्रभाव के प्रभा

स्तेभ ई रिक्त में १ वह न्हरूव को हु खा समझ हमार्थ्स ना हुर्ग नाम में रिखा (उपार १ - क्य १११) १ उपाय स्टिक् (ति १६ १६७ ए) वहासध्य म (उपाय १३) मार्थी के स्ति का एक प्रका रिखा १३) मार्थी के स्ति कुला देवी की हुर्ग-वामीय मारा (उपाय २ १)। मंत्रा की पुरुष्या) वर्गन स्थापक हम की एक बटपार्थ (उपार १ २—पत १३१)। स्त्राम की स्तिमानी कम व्यवस्त्र की क्या ना नाम (उपार १ ४—पत १३१)।

संस्तार ६ [संस्तार शिशुमार] र जब चर माठो शे दक वाकि नुके क्षेत्र सा सुकर (ध्यान १४ १४ १४)। २ महन्दिकेत (ध्या १६)। ३ वर्षक स्क्रिकेत १४ स. एक व्यापत (त ६) देवो सुस्तार। सुके वेश सुस्त कुरु (दुना २४४)। व्याहा की [मना] स्वकार नृश्विकच्य की खेळा-व्यिक्त (विचार १२६)। सुदेश दुस्तिकों विच्या विवार ॥ ६ व्याहा

t t fram)

एक पानी (श्रंत रहा)। सुक्रम केने सुरुष (विंत हो। सुक्रमाण हि सुक्रमण्डी पत्रका कर्म करने-वाचा (हे व दे व बहु)। सुरुष व [सुक्रम्य] १ पुरुष (ववह १ ४६)।

सुक्तम (सुक्ता) र प्रध्या (व्यक्त र प्रप्रच प्रकार)। र प्रचार (व १ ४६)।
१ ति सम्बर्ध तयह विशिष्ठ (यत्र)।
आधुत्र वर्षु, व्यक्ति हिंदी सुक्त
पा वागकार, व्यक्तर स्त्री करत करोताला
(साइ १ उठ वर्षक हो)।
सुक्त्यत्र रि सिक्तावी स्वकृत क्रवक्रय
(साइ १ १६६)।
सुक्त केते सुगत (साचा १ १, १)।
सुक्तक हो सुक्तावी यत्र संतिक का एक
प्रवादित हो।
सुक्तक हो सुक्तावी यत्र संतिक का एक
प्रवादित हो।
सुक्तक हो सुक्तावी यत्र संतिक का एक
प्रवादित हो।

सुविका केनो सुद्धा (है ४ १२६) चित्र)।
सुविक्व वि सुक्या चण्की ताम लेता हुमा
(यामा १ ४१)।
सुविक्व दि सुक्या चण्की ताम लेता हुमा
होनिक्व दि सुक्या चण्की ताम लेता हुमा
होनिक्व दि सुक्या चण्का (वय
है)।
सुविक्व दि सुक्या दि भूवय-चलते। २
वक्ता-नार्धा (रेक)।
सुविक्व दे केना सुक्य = चुलत (है ५, १ ६)
सुक्रमार १ वि सुक्या दि स्विक्व साल (क्या क्या सुक्या क्या हुमा हुमार स्वयन्यासमा
(सार है १ १०१ वि १२३ १६)।
सुक्रमासिम वि ही नुष्येत पुण्या कर्या

सुम्ब कृष [सुम्म] यसन कृष (स्वि)।
सुम्मुत्य म [सुम्मुत्य] १ जुन्दर दुना।
दुन्दम्पत्र कृष्टा १ कृष्टर दुना।
सुम्मुत्यित वि [सुम्मुत्यित विकार सम्बद्धः
वर्ष कृष्टन स्वत्या हो यह (जुन्द स्ट)।
सुम्मुत्य कृष्ट सुम्मुत्य १ वेट्ट कृष्ट कृष्ट स्वर्धः
वर्ष कृष्ट स्वर्धः
वर्षः सुम्मुत्य (सुम्मुत्य कृष्ट)।
यह नेत कृष्ट (सुम्मुत्य कृष्ट)।
सुम्मुत्य क्ष्ट्र (सुम्मुत्य वर्षः)।
सुम्मुत्य क्ष्ट्र (सुम्मुत्य वर्षः)।

सुष्ण धक [ शुष्ण ] सुष्णाः। पुरुष्ण (स्थि १ १२ एवर ७ ) पुरुष्णि (१ ८, १० क्षे)। सुष्ण वि [सुष्ण ] तुषा हुमा (१ २ ६) पुरुष १६८१ २२६१ बाला ११६)। सुष्ण व [सुक्ष ] १ भूमी वेचने की बस्तु पर स्थला एम-कर (खासा १ १—चन १७ पुरुष वा १४ सम्बद्ध ११६१)। २ स्टेन्सन विदेश । वार पक्ष के क्ष्मा स्थलां की

संवेर-सक्द

बमता राज-कर (खाया १ र---पत्र १७-क्रमाम्बा १४- सम्मत्त १६६) । २ स्टेन्स विशेष । ६ वर प्रस्न से कम्या प्रस्तानों की सेने योग्य बन । ४ की को संबोद के किए विकास का का १ १ सूच्य (हे २, ११) । वेवो संख् । समार्थिक रिवारिक स्थिति स्थापिक स्थापि पव ७०८ सव ३६३ वण्या १ )। २ देन-एक देव-विमान (सम ६३) देवेन्द्र १४६)। १ न. बोर्य राग्रेयन भार-विरोप (ठा १ ६—यम १४४ पर्यक्षे १०४१ नम्म १ )। सुकार् शिक्षा १ वर्छ-विकेष, ब्लोब एँग। २ समेन कर्णमाना, श्लेख (हे १ १ ६) कुश: सम २६)। १ त. शूम म्यान-विरोध (बीप)। ४ रि विश्वका बेंबार सर्वे द्वाप परानर्त काल से कम रह क्या हो वह (वैका १२)। बस्ताल स्ताल र दियानी तुम व्यात-विशेष (सम १। तुपा ३७) यत)। पक्का वृश्यिक्ष है विश्वर्षे भन्न की क्या कमराः नवेदी है वह साथा महीना (दन

४ वक्ता, वह नहीं है र १)
पक्तिया विश्विक्ष है यू स्वानिकक्ष
वैवार सर्वे हुइन-रावर्त व कम खू नवा हो
(स र र—नव रह)। स्वस्त को स्वेस्स्य
(स्वा)। 'सेसा को स्वस्य (व्य रो)
पुरूष वेरावाका (रख्त रे—नव ररेरे)।
स्वस्ता से [स्वरा] सरवा श सम्बद्ध व्य-रावे हिन्दा है।
स्वस्त के स्वानिक्ष है।
स्वस्त के स्वानिक्ष है।
सुक्त वेरा सुक्त सरम्माणित (व्य रे र—नव रेरे)।
सुक्त के सुक्त सम्बद्ध (वह रेश नाव सुक्त है।
सुक्त क [सारव] नुस्ता वर्ष सुक्त क [सारव] नुस्ता वर्ष सुक्त क [सारव] नुस्ता वर्ष

२८) बुना) ३२ ईव वर्षी ३१ काक, कीमा १

विजयक्षेत्र (१६%) ।

बर-नवर (६३) ।

(पद्)।

सुद्धालय न [दे] आहाज के धाने का ठैंचा कह, सुबत्तती में भुकाम (सिरि ४२४)। सुद्धाम न [शुक्राम] १ एक सोकान्तिक देव-विमान (पन १६७)। २ मेटाव्य पर्वस भी रक्षिण भेरित में स्वित एक विद्याचर ननर (इक) । मुक्किय देखो सुरुष (ग्रवि)।

सुक्तिय रेको सुक्तिम (राज)। सुधिस्त ) देखो सुद्धा⊐नुस्त (वयः सुविध्यत्य }बीय हेर १ ६ वंच ४ ो क्का संयु १ **१)। उ**र्ज मुक्तिमक्त्वे (तक्स २ ४३ कम्प समे ४१ वर्में ४१४)। औ, 'एमो मुक्तिमाणे एपो सकार्यं वन्यो कमी (माक ७) ।

सुदील दि [सुकीत] सम्बद्धी तरह वरीय हुया 'तुम्होर्स शानुनिम्होर्स (इस 🗢 📆 )। सुक्स केलो सुच्छ=शूप् । वक्ष सुक्सांत

(ग ४१४ रवा १४६) । प्रुप्त देवी सुक्क ≔ शुब्द (हेर ४, गारे ९३ मा ११। उप १२ हो)।

सुक्छ न [सीक्य] सुच (६प्या कुमा) साथै **दे**१ प्रानुद≈ १४६)।

सुरुक्षप देवो सुद्धव । कर्ग, गुरुप्रवीविधि (पि ११६८ १४३)। सुक्तिय वि [स्यादयात] मध्यी तव्ह व्हा हुमा प्रतिकातः 'तमो सूरवद्वयवंक्ले वं ते पुनिषयमाधि बुद्धियेण मञ्जयस्यं विनिरित्त-

मेचो पेरियो पामीसराहरूची हारी दि बोत् धर्मान्यतं च हारकरेडियं मधी वासनेडी (म्यहा) । सुलम (वै) देशो सजह = मूच्या मुख्यवरियो

(प्राक्त १२४)। सुगदेवो सुभ ≖ शुक्र (उत्त ३७२ स व∜

पर १८ ७ कुत्र ४३८३ हुमा) । मुगद्द थो [मुगवि] १ सब्दी अवि (ठा ३

५—पर १४६)। २ सम्मार्थ समग्र मार्थे (पूर्णा ११४)। वृक्षि सन्दी परिको

मात्र (पावन)। सुगंप चेयो सुद्र्यंप (क्रमा क्रुमा क्रीफ सुर विवर्णित (दे व १६)।

सुम्माप वृ[मुमीच] । बागपुमार देवों के

सुरोधा को [सुराम्धा] पव्यम विदेश का एक सुगंधि देवो सुअंधि (धीप) । पुर न ["पुर] मैताक्य की उत्तर व्यक्ति में स्थित एक निया

सुराण वि [सुराण्] चन्द्री एएए निननेवामा सुराम वि [सुराम] १ सम्य परिषम सं वामा वा सके वैसा पुष-यम्य (घोषमा ७३)।

२ सुबीच (चेदम १६३) । सुगय वि [सुगन] १ वन्नकी परिवासा (झ ४१—यव २ २४ कुब १)। २ सुस्य। ३ वर्ग्धा४ द्वरणी(ठा४ १—पव २ २० राज हे १ १७७)। १ पू बुजरेन (पाछ

प्य १४)। सुगय वि [सीगत] दुब-घक, बीब (सम्मत 12 ) i सुगर वि [सुकर] युवा-शाध्य धवर परिचम ते हो तके ऐसा (भाषा १ १ १ व)।

सुगरिट्ट नि [सुगरिप्त] वति बङ्ग (ब् ११) । सुगिम्स् वि [सुपादा] युव सं प्रदेश करने याग्य (पटम ३१ १४) । सुगिन्ह र्थु [सुमीव्म] १ देव मास की

पूछिमा (छ ३ २ — पथ २१३) । २ प्रास्कृत का सरसम (दे ६० १६) । सुगिर वि [सु।गर] प्रच्छी वाखीवासा (पर्)। स्/गहिय | वि [सुगृ(ोत] विकाल,

सुनिहीय है विश्वत (स दश १३)। सुगी क्यों सुरू = गुकी (दुमा) । सुगुक्त 🛊 [सुगुप्त] एक मंत्री का नाम !

सुगुरु पुं [सुगुरु] प्रतम पुर (दुमा) । सुमा न [व] १ चाला-पुराव (वे थ, १६) परण)। र वि निर्मिष्य विष्य-रहिता व

(महा) ।

मुगाइ देवो मुगइ (नुच १६१: चं ८१) । सुराय का मुनय - मुन्त (ठा ४ १-- पण

सुम्पाइ यह [प्र+स्] केनगा । कृष्यद्द (बारवा १६६) ।

इन्द्र भूतासम्द के धरव-पैन्य का घरिताति

(ठा ३. १ — गण ३. २)। २ भारतवर्षी में होनेवासा सवर्ष प्रतिवासुरेव एका (सम ११४) । ३ राक्षस-बंश का एक राजा एक सङ्ग्रा-पति (प्रस्य १, १६) । ४ नरवें जिनदेव के पिता का नाम (सम १६१)। ५ राजा वालि का ग्रोटा भादै (परम 🗈 🤻 क्षे १ ४६ १४ ११)। ६ एक यना रा नाम (सुर १ २१४)। ७ न समर-विशेष (बल १६ १) । सुय (यप) वेद्यो सुद् - पुत्र (हे ४) ३६६) ।

सुबद्ग वि [सुपूर्] बच्छी ठच्ह पिसा हुमा (राय द दी)। सुचरा श्री [सुगृहा] माश-परी की एक वादि वो धपना घोंसता भूव सुरुर बराही है (बादूर)।

सुपास र् [सुपाप] । एक कुनकर-पूरव (सम १४)। २ एक प्रौद्धिक का नाम (खर =२ द टी) । ३ पून धनरकुमार देवलोड़ का एक विमान (सम १२)। ४ सान्तक नायक देवलोक का एक विमान (धन १७)। **५ वि मुन्दर धावाजनाता (श्रीव ३ १** थिष)। ६ एक नगर कानाम (विपा २ =)। सुयोसः श्री [सुयोपा] १ शेवर्यत नायक क्ष्यवेंना की एक पटयंगी (ठा४१—राम २ ४) । २ गोतगरानामस यन्त्रवंकी एक थटरानी (ठा४ १—पत्र २ ४) । ३ 

१४६) बुरा ४६) । ४ बाय-तिरोप (चय 44) I सुचंद दू [सुबन्द्र] ऐरनद वर्ष में प्रशास बुखरे जिल-देव (सम १६६) । सुचरिश्र न [सुचरित] १ सध्यरण स्वा-बार (कव्या यज्ञा) । २ वि श्रदाबरहा

र्शंपन (बरह) । ३ घन्छे राख धानित (पत्रम ७१, १८ छावा १ १६--- १त्र २ १)। श्**षिण्य ) नि [सुयाज] १ सम्बद्धाः व** सुचिम्र कि उपन्त्री गुनिर्णार

(प्रमाध ६४,६४ १३) ठा ४ २—७४ २१) । २ क पूनव (धीरा दश) । मुचिर न [मुचिर] प्रत्यन विर कान नुधेर्यं काल (नुरा २ नद्या प्रानु ६२)।

**११**४

₹, ₹c) ;

मै परतनी—शोसरा स्वीन्सन (सम १६२) महा) । ३ मृतानन्द घाषि इस्त्रों के खोकपासीं भी बदयहिषियों के शाम (हा ४ १---पण २ ४३ इक)। सुजनसम् ( सुनक्षत्र ) १ एक वैन पूर्वि (मनु२)। २ भगताम् महावीरका शिष्य एक मृति (भव १४---वव ६७८)। मुगन्सना भ्री [मुनभ्रवा] परा वी दूसरी रात (मुख्य १ १४)। मुक्त रेको मुलय (धाषाः वि २ ६)। मुयम म [भवपा] मुनना (स १३)। सुत्रव 🛊 पुँको [शुनक] १ दुनकुर कुछा (ह सुप्पद्द∫१ द्रशास द्रम ६०० ६**०**३ खाना १ १—नव ६६ ना १३≈। १७३ नुर रुं ११ १ २ ४ मा १६ नुप्र १६३ रंबा)। श्री.सुत्रइ, सुनिआ(कुमा मा ६व१) । २ वृं सन्दर्भवरोव (संय) । सुपहिद्वया श्रे [झुनश्रे] दुशी माश-दुगरुए (पण्या व६)। मुल्हा की [स्तुपा] दुव-वर्ष (ए।या १ ७--सुनायम न [भाषम] सुनाना (विशे २४०३)। सुपाविष्य वि [स्म्यवित] मुनाया हुमा (मुपा सुतणु को [सुननु] नारो की (मुर २ ₹ ₹) i सुजासीर र्र्य [सुन्यसीर] इन्न, रेष-धन मुतरं म [सुनराम्] निब्ति सर्व के परिराय (पाध- हम्मोद १२) । सुष्पद्द देवी सुनाम (चन)। सुनिभ देखो सुत्र। सुणिम वि [सत] नुना हुन्ना (नुनाः ध्यण ् सुत्वपरिम वि [ सुनपरितम् ] सन्द्र्या तपस्ती सुणित्र र् [शौमिक] बसाई (स्टिंश ७७)। सुणिइन स्थो सुनिइन (राम)। सुणिप्पक्षंप देशो सुनिष्मक्षंप (धन)। सुणिन्सिय वि [स्तिर्मित] बाद क्य से बना हुमा (कृप्प) । सुणिब्बुब वि [सुनिभृत] प्रत्यन्त स्वस्य (यासा १ १ --- पद ६२)। सुष्मितं है। [मृतिहास्त] बच्छी वर्ष पुना हमा, 'स्हमनेनि धावारमोवरे हो। मुक्तिसंवे मनर्जि(प्राचा १ ८१२२२,२ - {**%** {**%**} | स्युस्त्राय धक [ सुनसुनाय ] 'मून' 'मून'

यमाय करमा । वष्टु, सुणुसुजार्यत (महा)।

सुण्णान [शून्य] १ निर्यंत स्थान (मउह १२४) । २ नि रिक रीता बासी (स्वप्न ११ मत्रष्ठ) । ६ निष्यस्य ध्यर्ग, निष्ययोजन (गत्रष ८४२: १७२) । ४ म. तप-विशेष एकासन-वर्ष (संबोध १७) । देवा सुम । मुण्यभार रचे मुण्यार (दे १ ५४) । ) वि [श्रान्यत] सूच्य किया सुण्यविश्व देशा (न ११ ४ ) वर्जाना 1 (3 7 137 ) सुरुवार वृ [सुरुवे दार] मुनारः सोनी (वे ६, स्वह देखो सव्ह≃नूदम (हे १ ११०० मुण्यसिअ वि [व] स्वपन-सोच सोने की धारतवाता (दें = ३१ वर्)। मुण्हा क्ये [सारना] यो का मध-कम्बन्न (हे १ अर दूमा)। उर्दू ['छ] दूरम, देस (क्या)। त्रविष पूं ["छचिष्क] १ मयवान् ञ्चयमदेव । २ महावेव (कुमा) ।

मुनवसिय न [मुनपसिन] नुन्दर तप हपरवर्षा का मुन्दर धनुष्ठान (राज)। (सम ११)। सुनार नि [सुनार] १ घरमन्त निर्मेश । घति-श्य क्रेंबर । व संबद्धा देखेवला । पासूच सावाजनाचा (हे १ १७७)। सुतारया ) 🛍 [सुतारा] १ ययनाम् गुनिध-सुतारा । नाननी की शासन-वेनी (संति १)। २ सुबीलाकी पत्नी (पदम १ १)। ३ द्यानुषस्य विशेष (दुमा) । मुविविकसाणि [सुविविक्त] पुत्रा थे सञ्ज

पत्र ११७ सुर ४ ६८)।

का शुचक प्राध्यय (जिसे यह १)।

α٩) ١

करने योग्य (ठा ३ १---गण २१६)। मुनोसभ वि [सुनांच्य] गुब से तुए करने योग्य (बस्र ४, २ व४)। सुस सक [सूत्रय ] बन्धना । नुषद (नुपा २६४)।

मुत्त देवा सुभ=भूतः पक्तवमोहिमण-केवलं प परोक्त महमूतं' (भीवस १४१) । मुच देखो सोच - मोतस् (र्माव) । मृत्य देखों सीच = बोब (रंमा) गवि)। सुच वि [सुप्र] होया, शमित (ठा ६ २ — पत्र १११, स्वप्न १ ४′ प्राप्तु १८ मा २४)। मुक्त वि [मुक्त] १ मुबार का सं वहा हुया । २ व सुप्रापित मुक्तर बचन' मुक्क्स्य मुक्त-उत्तीए (मुपा ३३)। सूच व[सूत्र] दूता वाया वस-सन्दु (विश १ ६--पन वर, सुपा २८१)। र नाटक का प्रस्ताव (मोद्ध ४ म' सुपा १)। १ शास-किरोप (भग्नाका ४ ४—पत्र २८३ जी ११)। आर र्वु [स्तर] प्रपशर (कप्यु)। कंड प्रे किन्डी बाह्याण वित्र (परम ४ ६१) । इंड न [ इंद्र ] क्रिकीय चैन मायप-६व (लूबिन २)। रान िंकी यक्षोपनीत (धीर)। घार पू [धार] वेको शार (बुपा १ मोह ४=)। पत्रसिपणिश्<u>त</u>ुचि की ["सार्रिकनिर्युक्ति] सूत्र की व्यास्ता (बल्)। दह की ["दृषि] शास-पदा (बीस)। हार पूं विवार] १ प्रवान नट बाटकका मुक्य पात्र (प्रानु १६६)। २ पुदार, बढ़ाई (कम्म १ ४८)। सुचि की [ग्रुकि] धोप नॉना (हे २ १६० कुमा)। सह अधि मिती विशि देश की प्राचीन राजवानी (छामा १ १६—नव ર વ) ા

सुचिकी [सृच्छि] गुम्बर वका मुमान्दि । "भश्चिया की [प्रस्यया] एक फैन सुनि शाबा (क्य-यु ७१ टि: राम) 1 सुचिय देशों सोचिञ = श्रीविक (देश १)।

सुचिय वि [सृत्रित] सूक्ष्मिक्क (राव) । सूरवि [सूर्य] १ स्वस्य वन्द्रक्ताः २ मुखी (चेनि १२ पा ४७३३ मञ्जूष केइच २६६ इप १ ३१ टी)।

मुस्य न [सीस्थ्य] १ तंत्रुसको स्वस्त्रका । २ सुचित्त (पीर्वा १२) कुम १७६) सुना रेटा रेडेटा स १६६० उप है रा समेकि २२) ।

सुरिवय वेको सुद्धिम (पुना ६६२) । सुरिवर नि [सुरिवर] चांडक्य रिवर, वांत-निरम्ब (प्राप्त ११ सुपा ६४०) कुमा) । सुभेय वि [सुस्तोक] प्रस्तक (परुम यः

११२)। सुर्वेदी और [सुर्वा] पुन्दर शौरवाली (जन ७६व दी) । सुरंधन 🖠 [सुरक्षेत] १ भक्तात् सरमान

🕏 पिदाका नाव (सन १६१)। २ सीधरे बानुके तमा स्वदेश के वर्ग-द्वय (सम १५६)। के मारदावर्ष में क्षेत्रेनाका पाचवर कतरेव (सन १६४)। ४ वर्गलेख के हरित-रीमा का चक्रिपेडि (कार, १—पन ६२) । ३ एक धन्तक्रम् पुनि (बीठ १०)। ६ मेश पर्वत (तुम १ ६ हा तुम्ब १) । ७ एव विस्तात मेटी (परि: पि १६) । व देन-विशेष (हा २ ६—पष ७१) १ विष्णुका चक्र (तुपा ६१) । १ वक्ताव् सरसाव का पूर्ववधिय नाम । ११ सम्बन्धः पार्वकम् का पूर्वजन्मीय नाम (सम १६१)। १२ पून, एक देव-विमान (देवेला १३६): १६ वि निसका दर्शन गुन्दर हो वह (वि १६)। १४ व. पश्चिम समझ पर्वत का एक क्रिकार (बर य-नम ४६६)। सुर्रसमा क्षे [सुर्छन्त] १ कन्द्र गामक एक दूध जिससे यह हीप चंदुहोप क्यूबाया है (दव १६) परहर ४—पव १३)। २ मक्त्रम् बहाचीर नी ब्येष्ठ बॉहन का गाम (माना २८१६ ३ कल्प) । ३ वट्या शाहि स्त्रों के कलनाव भावि लीकपालों की एख-एक मत्रविदेशी (ठा ४ १० --वस २ ४) । ४

सम्मद्विपनी के भाष (ठा ४ १----पण २ ४)। १ मपदान स्थापनदेव नी वीसा धिनिका (विचार १२१)। ६ जनुनै सक्तरेत नी नाठा (बय १६२)। सुर्विसम्प्र वि [सुराक्षिण्य] वाजिवसमाना (मम्म ११, सं ३१)। सरका हर [सर्भ ] बहुद कोट (वैदा 286) 1 सुद्रिय वेंद्रों सुद्रिय (हेद १३) पस्य २ १७६३ १६ ३ पर १६४३ १७) ।

नाम तना महानाम-नामक पितानेको नी

सुराम 🕯 [स्वाम] प्रवेश प्रश्रिणी-काम में जलमा भारतका का दूसरा कुबकर पूका (धम १६)। सुरारु न [सुरारु] तुन्दर काह (वडड) । सुवासम र् दे दि । बंबास (दे = १६) ।

सुविद्व वि [सुद्दर] सम्ययु विक्रोकिय (का 998)1 सुविष्य धक [सु+वीप] व्यविशन नपनना । वह- सुदिएश्त (सुपा ६११) । सुरीह ) वि [सुरीचें] चरकत बन्दा (सर सरीवर र १२६ र १६०)। साधीय रि [कासिक] मुदोर्च-काल-सम्मती (नुर १ १२)। इसि वि[ वर्सिन्] परिखाम का विकार कर कार्य करनेशका (सं ६२) । सुदुष्टर वि [सुदुष्टर] यो सक्तल दुष्ट है किया वा सके वह, शरि ग्रुटिक्स (ज्य ह 24 ) 1 मुदुक्ताच वि [मुदुक्तावे] वर्तत कुल वे

<u> सुतु</u>ष्टिकाम वि [सुदुःक्तित] प्रस्पत दुःक्तित (शुपा ३ ४)। सुदुश्ग वि [सुदुर्ग] वहाँ दुःव 🕯 दशद किया था सके बङ्ग (पका ६ ४६)। सुदुषय वि [सुदुसमञ्ज] धूरिका थे विश्वका त्यान हो सके वह, श्वहानो नि पुरुषको (ध्य १२)। सुबुक्तार नि [सुबुस्तार] कठिनता वे निकरी पार किया मा सके मह (धीप, 🏗 ३ ७)। सहकर वि [सहकीर] यदि पुत्र वे को बारक किया वा सके वह (बा ४३। प्रायू

पीविव (नूर ११)।

सुतुष्मिकार वि [सुतुर्मिकार] यक्ति कक्रिनाई से जिसका निवास्य किया का सके वह (भूपा १४)। सुतुष्यिक्त कि <u>सितु</u>र्वेशी विशेष्य भूक्तिक के केवने बोरम (पुर १२ १९६) । सुबुबर्भभ वि [सुबुर्सेष्] बाँठ पुष्प के

विकास भेरत हो सके वह (का २१६ हो)। सुबुम्यणिभा की [वे] क्यवती की (वे 4 Y ) I

सदब्द नि सिद्छैमी प्रक्र दुर्तन (एन)। स्युसह विस्युप्तही भवन्त पुत्र है सक्तन करनी योग्य (सुर ६ ११ व)।

सुर्व पूँ [सुदेघ] उत्तम रेव (युपा २५१) । सद प्रिञ्जी मनुष्य भी सबम काशि चनुर्व वर्ण (विधा १ ४---पत्र ६१ पत्रम ६ ttw q ta): t #1 t 4) t

सहय 4 शिहरू विश्व एवा का नाम (नेव सुदिशी (धप) की [शुद्रा] कूलातीन की (पिंद)। सद्ध 🛊 चि योगकः त्वल्या (वे = ३३) । सब विद्धि है । शुक्त करूक विद्याद नुक्रपंचमिरतीर संप्रतं कार्म ( गूर ४ र है। बाब का प्रेचा है, क्रिक्रो । २ प्रविद्या १ निर्दोप । ४ केवल, किसी से समितिस । १ व शेंवा भूत-नमक। ६ मरिच मिर्चा (हे १ २६)। ७ वयदार १० दिनों के उपनात (चंदीन १.) : व 🗓 क्रम्ब-विशेष (सिंग)। र्गपास की [गम्बारा] क्यार-हाम की एक प्रकार (का ७---पत्र १६६)। इंड 🕯 [बन्द] १ भारतकर्व में होनेनाने कीने विनवेष (तम ११४) । २ एक बनुतर-समी वैन पुनि (मनु २)। ३ एक सन्तर्धन । ४ **प्रतम प्रकेशनी एक मनुष्य-वादि (इक)।** पक्ता है [पश्च] सुन्त क्या (परम ६ २७)। य्यु शिक्ष्मन् विभव्यक्षस्य (क्य)। प्यवस नि "प्रदेश्य] प्रविष भीर प्रवेश के जिए धर्मत (क्य) । व्यवेश वि ["रमवर्य] प्रीवय तथा वेतोपित (थम) । बाय पु ["बात"] बा<del>पु वि</del>रोग यन्त पथन (भी ७)। विवस न विकटी ज्यन पन (क्य)। स्रक्षः की ["पह्ना] वर्त्र प्राप की एक गुल्कोंग्र (का क—ात्र वश्य) । मुद्रव र्र [मुद्रान्त] धन्त दूर (का ४६० दी। दुल १४- हुम्सा २६: इस) ।

सुद्धवास्त्र वि [दे] तुब-पूद्य, तुब सीर प्रवित्र ६व)। सुक्ति की [शुद्धि] १ युवना क्लिंग्डाः निर्मेचता (बम्बच २३ । हुना) । १ वर्गा, सुद्रेसपिअ-सुपरुष

(भवम २६ ६२)। सुनिरूविय वि [सुनिरूपित] पन्धी **उप** त्रसासा हुमा (मुपा ४२३)। मुनिविक्त वि [मुनिविंग्ण] यदिशय विन्त (सुर १४ ५वा क्य)। सुनिस्युद्ध देशो सुवित्रसुय (इ ४७)। मुनिसाय वि [मुनिशाव] धरम्य वीव्य (सुपा १७ )। सुनिसिश वि [सुनिशित] स्नर 🖦 (रव सुनिस्तंक वि [सुनिःशाङ्क] विवरुष शङ्का र्यक्रित (बुकार ≖)। सुनीविका की [सुनीविका] धुन्दर नीवी---वस-प्रन्यियानी की (शुमा)। सुनेत्ता की [सुनजा] पीनमें मासुदेन की पटरामी (पदम २ १व६)। सुस्र न [शूस्थ] १ किथी (पुर १६, १४६)। १—ोबो सुण्ण (शसू १ : बहाः भरः बाचा सं १६३ (मा)। पत्तिया की **"**प्रत्ययिका विश्वमा] एक वैत्र ग्रुनि-राजा (क्य) । सुस्रवार देखो सुण्यसार (नुपा १६४- वर्मवि 1(2) सुमार देवो सुष्णार (पुषा १६२)। सुम्हा देवी सुम्हा (वा १४० थनि)। सूप सक [ मुख् ] मार्जन करना, शोवन करणा । सुपद् (प्राप्त) । सुपद्द 👣 [सुप्रविष्ठ] १ ग्याय-मार्ग में क्लिटार प्रतिका-सूर (क्रुया १ २**०**)। ३ व्यक्तिसम् प्रसिद्धः । ४ वित्तवनी स्वापनाः विवि पूर्वक की गई हो यह (द्वमा २ ४ )। र र् भवनान् महानीर के पास दीक्षा सेकर सुचि पालेमाचाएक युद्धस्य (संघ १व) । ६ संस-₹**₹**₹} i विचा का बातकार पाचनां का पुरूष (विचार ४७३) । ७ मननात् सुरास्थनात् के पिता का इस्पनामा (बम ११४)।

सुनिष्क्षय वि [सुनिष्मय] रह निर्णयनासा सुनिरपर्कंप वि [सुनियाकस्प ] धरपना सुनिस्मस् वि [ सुनिर्मेस ] प्रक्रिय विर्मेत

विशेष (शम)। १ न. एक नकर का नाम विषा १ १ — पत्र ८८)। । भापून [भा] एक देव विमान (सम १४ पत्र २६७)। सुपर्ह्यय वि [सुप्रविधित] मन्त्री ठव्ह प्रतिष्ठा-प्राप्त (सव राम)। सुपक्क वि [सुपक्क] प्रव्यक्ती तरह पका हमा (प्रायु १ २) शह<del>्या पुरुष</del> (५७)। सुपद्याय वि [सुपक्षाक] युक्तर व्यजानाका सुपविषुद्ध वि [सुप्रतिषुद्ध] १ कुबर चेठि संप्रतिबोध को प्राप्त (माभा १ ४, २ ३)। २ पूर्व वैन महर्षि (क्य)। सुपडिवस वि [सुपरियुत्त] वो धन्की तरह हवा हो वह (यसम ६४ ४६)। सुपणिहिय वि [सुप्रणिहित] धुन्दर प्रस्ति धानवासा (परञ्ज २ १--पम १२६)। सुपण्य देवो सुप्पम (धव) । सुपञ्ज } वृं [सुक्यो] परत पत्नी (नाटः हुन्न सुपन्न } ९१)। सुपन्न वि[सुप्रक्रत ] १ मुभर क्य से कपित (बाचा १ व १ ३)। २ सम्बर् मारोपित (यस ४ १)। मुपम रेको सुप्पम (धव)। सुपम्ह र्ष [सुपस्मन्] १ एक विकाशीय (ठा२ ६—पत्र व )।२ द्रम, एक देव-निमानु (सम १३६) । सुपरिकस्मिय वि [सुपरिकर्मित ] कुन्दर र्थस्कारवामा (शामा १ <del>७ - ११ १)</del>। सुपरिक्तिय ) वि [सुपरीक्षित] प्रवाहे सुपरिच्छिय । वया विवसी परीक्षा सी वर्ष हो वह (उका प्राप्तु १४) । सपरिणिहिय ) वि [सपरिनिष्टित] पन्नी सुपरिनिद्विञ । धयः निरूष्ण (राजः घव)। सुपरिष्कुत वि [सुपरिस्कृत] दुस्पष्ट (पत्रम XX 35)1 सुपरिसंत वि [सुपरेमान्त] परिद्य पन हुमा (पत्रम १ १४४)। सुपरुष व [सुपरुषित] विक्ने जोर हे रोने का बारम्म किया हो वह (खादा १ १०---पचर४)।

नाम (सुपा १२)। च भारपद मास का

नोकोत्तर गाम (गुण्य १ ११)। १ पान-

488) 1 भियाद मुद्रीय (सूपा ११७ कुछ २ २ सम्मत्त १७२ कुम्मा १)। (सुपा ४६८) । सुदेसिक्स वि [ सुद्धैपिक ] निर्वोप पाहार भी क्षीच करनेवाला (परह २ १---नियस (सूपा ६६६)। पण १)। सुद्रोधज र् [शुद्रोदन] बुद्रदेव 🕏 पिता का नाम । तणय पू विनय दुव देव (सम्प १४१) । देखो सुद्धोदण । सुद्धाञ्चलि वृ [शीद्धोवनि] दुवरेव (पाम)। सुदोर्य देवो सुद्रोक्षत्र । पुत्त 🛊 [ पुत्र] कुद केन (दूस ४४)। सुबन्म र् [ सुबर्मेन् ] १ मनवान् महाबीर कापट्टबर शिष्य (कुना)। २ एक कैन मुनि (विमा २ ४)। १ तीसरे बसदेव के प्रच-एक चैन मुनि (पदम २: ३०३)। ४ एक बैग पूर्तिका सासवें क्रमदेव के पूर्व-जल्प में प्रयमे (पटन २ १८३)। ३ एक कैनावार्यः तह प्रस्त्रमंत्रन्ति सन्दनुषस्य च वस्मरमें (सार्व २२) । देखी सुहस्स । सुना देवो हुद्दा = नुपा (बुना) । सुनंद र् [सुनम्द] १ म्हरतक्त के कवी रसर्वे किनदेव के पूर्वधव का नाम (सम ११४)। २ एक कैन मूनि (पडम २ २) । वेको सूर्यद् । **श्चनकत्त्व देनो मुजनसन्त्व (भग**ाद्र—पद ५०८३ ६०७) । सुनविरं। ध्ये [सुनर्विनी] धन्ध्ये ठए। गुरम क्लबाबी की (मुपा २८१)। **सुनक्य ५** [सुनयन**] १ एजा रा**कण के मधीनस्य एक विद्याबर सामन्त राजा (परान म १६६)। २ वि सुन्दर घोषनवाता (पानम)। रिनाम पु [सुनाम] धमध्येका नगरी 🗣 पेना पर्यकाल का पूत्र (कामा १ १६---पत्र 284) I र्श्वनक्ष्म व [सुनिपुण] १ वशकत सूक्त (६म ११४)। २ झटि चतुर (तुर ४ सुनिक्य कि [सुनिसूच] प्रतिस्व विविध

सुप्रविक्त वि [सुप्रविक्त] पराकृत विदुध (पुणा १९४)। सुप्रविद्ध [सुप्रविक्ति] घराकृत वर्षिण हिम्म कृपा (पुणा १)। सुप्रका पृ [सुप्रविष्ण १ देव । २ व सुक्तर वर्ष (पुण ४२)। सुप्रसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] सम्बद्ध तथ्य सुप्रसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] स्थित विकास (व्याप्त वि [सुप्रसिद्ध] स्थित विकास प्रस्त वि [सुप्रसिद्ध] स्था विकास (श्रा १८०४)। सुप्रसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] स्था विकास विकास (व्याप्त वि [सुप्रसिद्ध] सम्बद्ध व्याप्त विकास विकास स्था व विकास विका	सुरेशक कि सुरेशक विस् मनोहर (जय १,११)। सुर्य यक [स्वप्] सीना। पुणव (है २,१४)। सुर्य यक [स्वप्] सीना। पुणव (है २,१४)। पुर्य प्रक [स्वप्] पुर साज विरक्षी का बना एक पान विरक्षे यस पक्कोरा नाता है (जना पूर्व १ र—पन ८)। गह कि [नका] पुण्व के कि ब्लाना (लाग १ र—पन्य १)। सुर्याहर के सुर्याहर (पाय)। सुर्याहर के सुर्याहर विरक्षात (प्रव १ रूप)। सुर्याहर के सुर्याहर वक्र विक्रमार्थ है प्रव १६१ रूप) १ ४६। सुर्यावक कि [सुराशका] सामार क्यार क	के (बस ११४)। १ सारावर्ध का अधि तीवाय कुमकर पुरस (वस १११)। ४ हरि कुमक तथा हिप्पत नामक रहते के एक-एक वीकायक का नाम (ठ० १ र-०-११४)। ४ हरि कुमक तथा हिप्पत नामक रहते के एक-एक वीकायक वा नाम (ठ० १ र-०-११४)। १ तीवर कुमके की माता (वस ११२)। १ तरात वसके की पहले वस्त्रीवियों का नाम (ठ० ४ र-०-१४)। १ कमावान नामक किसावर-मेरेंट की पहली (पदम १, १३॥)। ४ तमावा प्रविच्छा की सोक्रा-कियाक (विचार १२६। पर ११९)। सुरुपमुख वि [सुप्रमुख] यहि सहुर (एक १९६९)।
सुपह पूं [सुपस] युव नार्वे (व्या बुण ६७०)। सुपक्षाय न [सुप्रसाठ] पाङ्गीबक प्रायंकात (हे २ ४)। सुपावय वि [सुपायक] ब्राट्टव्य वाणी (क्ट	सुर्वाकृता है की सुमितिशा विशेष वयक सुर्वाकृता है वर व्यक्तिका एक विश्वनारों की दिवार हों। स्थान हके। सुर्वाकृत न वीतहारक वक्किकेन (पर व वव विश्वनारों की एक व विश्वनारों की एक व्यक्तिका एक विश्वनार है। सुर्वाकृति है सुर्वाकृति है सुर्वाकृति क्षाकृति का विश्वनार है। सुर्वाकिश्वाकृति है सुर्वाकृति के मानवेशका (श्व ४ १—वक १४ )। सुर्वाकिश्वाकृति है सुर्वाकृति (यम) । सुर्वाकिश्वाकृति की सुर्वाकृति (यम) ।	२ ४)। वे सनवाहन तामक विश्वायर-मरेत को पत्ती (पदम १, १३॥)। ४ अवनार प्रमित्तवाल की बोधा-विभिन्न (विचार १२६ धर १९६)। सुप्तमूच वि सुप्रमृत् सेस प्रदुर (सम्ब
अक्षापदान्त्रात म श्वापाय स्थापहर विकास (सम १६८) एव ७) । ७ मास्टक्त्रीके ग्रामी		सुरम्पूच वि [सुप्रसृद] धन्यम् कराव (पीत)।

बूचरे निश्वेम का पूर्वजन्मीय नाम (तम 622) ( मुपामा धी [सुपार्था] एक वैन शाजी (हा E--- 44 AKA) 1 **१--- पम १ १)।** सुर्पाभ द्र [सुपीय] यहोराज का वालको कुर्द (धम ११)। 1 ( # # 9 ) सुपुरत 🚰 [सुपुत्त] एक देव-विमान (सम (देनेन्द्र १३६ पथ १६४)। २२)। सुपुंड र्न [सुपुण्डू] एक देव-विमान (बम सुप्पवृद्धा की [सुप्रशुद्धा] चीवार वचकपर

मुपुरक 🗗 [मुपुरप] एक दक्षिणान (सप

सुपुरिस र [सुपुरुव] सम्बन साम् पुरुव

(हेर हे ४) नरह शानु है) ।

२१) ः

1)1

सुप्पपिश्राण न [सुप्रणियान] कुप मान (बाद १--- यम १५१)। सुव्पिविश केशो सुपनिदिय (पराह २, सुष्यम रि [सुत्रद्र] कुम्बर बुद्धिनामा (बुध सुष्पबुद्ध पूर्व [सुप्रबुद्ध] एक वैवेदक-विद्यान

ध्युनेवासी एक रिश्तुमारी देवी (का च--पम

मुप्पम पू [मुप्रम ] वर्तवान सवस्पिती क्रम

में सरपा चनुर्व वसदेश (सम **७१)**। १

धानामी उर्व्यापकी में होनेनाना जीवा 💵 "

1 (## 138X

सुरपुरिस 🖦 सुपुरिस (रक्श २४)। सुकाणि और सिकाणि जिसमें उक्रधानि बनाया जान ऐसा बदुना धारि पान (पूर्म रै X 3 8 ) 1 सुर्वेषु पूँ [सुरुव] १ इतरे व्यापेन में पूर्वजन्दीय भाग (सम. १३३) । २ माध्यर्व का नानी प्राथवां नुषकर (प्रम ११३)।

# GAL Ads) !

(धम ११)।

सुष्यकृष (बप) देखो सुष्यभूष (मर्वि) ।

सुव्याहोस र् 🛊 🛊 मन्द्र पहार (मा २४) ।

सुध्यिय वि [सुप्रिय] **प्रत्मन** विव (वर्ष ११

सुर्वम पुन [सुनदान्] एक रेप-विमान

२१ )।

सुर्वमण र्षु [सुत्राद्मण] प्रसस्य वित्र (पि

सुबद्ध वि [सुबद्ध] सब्द्धी तरह बैंबा हुमा सुबद्ध (सुबद्ध) १ सोम-बंश का एक एवा (पटम ४, ११) । २ पहुची बलदेव का पूर्व-क्मीय नाम (पटम २ १६)। सुविद्धेद्व [सुविद्धिष्ठ] भ्रतिश्रय बसवान् (मु १८) । सुबद्ध वि [सुबद्ध] स्रवि प्रमुख (स्व) । सुबहुत वि [सुबहुत अगर देशो (बन्यू)। सुबाहु दूं [सुबाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २ १ -- पद १ ३)। २ 🕸 अस्मिराज की एक कन्या (छाया १, ५---पत्र १४)। सुदृद्धिको [सुदृद्धि] १ सुन्दर प्रका (बा १४)। १ र्यु चम-प्रतामस्त के साव शीका वैनेनाकाएक राजा (पतम =११ ३)।३ एक सम्बी (महा)। सुष्म वि [ग्रुप्न] १ स्केट, येत (नुपा ४/६)। २ व- एक प्रकार की चाँबी (श्रय ७३)। सुष्भ न [शीभूय] एक्नेश घेटता (वंगोव **₹**₹) i सुविम पु [सुरमि] १ तुक्त्य कुरकू (सम Yरे भन खाया १ १९)। २ वि. सुक्रमी दुगम-पुक्त (उस १६ २०- झाना १ ६ 📞 ३) । ६ मनोहर, मनोज्ञ सुम्बर (छाया १ (२००१ हरू---१३ १ सुविमक्स ॥ [सुभिक्ष] मुक्सक (पुपा 124)1 मुम्मु स्व [सुम्नू] बारी महिला (र्थमा)। सुम 🖠 [हुम] १ धनवान् पार्धवाव का प्रवर्ग म्प्रवर (का स—सम ४२६ सम १३)। रे मनका निमास का प्रथम राणुकर (सप <sup>११२</sup>)। १ एक <u>म</u>ुस्तै (पद्म १७ ८२)। Y ब. न्यम-कर्म का एक भेद (सम ६७- कम्म १ २६) । ४ मेल्स, कम्पासः । ६ वि मेवल-बनड मोनसिक प्रशस्त (कम्प मगः <sup>कुम्म</sup> १ ४२० ४३)। घोस वृं ["घोप] मपनाम् पारचनाय का दिलीय परापर (सम ११)। एपसम व ["तुमुमेन ] यवस-रंड का एक राजा (पत्रम ४, २६२) । देखी सुद्र = गुम।

सुर्यक्त व [शुर्यक्त] वस्त नावक बीकान्तिक इवों का नियान (राज) । देवो सुर्द्कर । सुसग वि [सुसग] १ वानव-जनक (कप्प) । २ सोमान्य-पुष्ठ बहाम जन-प्रिय (मुज्ब २ ) । ६ स. पथ-विशेष (सूघर: ३ १०० राग बर)।४ कर्म विशेष (सम ६७ वस्म १ २६३ ६ वर्गसे ६२ छै)। सुसमा की [सुसमा] १ लका-विकेप (पर्ण १—यम ३३)। २ मुक्य नामक भूतेमा की एक पटरानी (ठा ४ १---पत्र २ ४ साया २—यच २४३ इक)। सुसम्म वि [सुभाग्य] मान्य-ग्राची विसका माग्य सच्छा हो वह (उद १ ६१ थी)। सुमह रेबो सुद्द (गट--मानती ११८) । सुमणिय वि [सुमणित] क्वन-कुरुस (स्व)। सुसह वृं[सुभद्र] १ दश्ताष्ट्र-वंश का एक राजा (परम २० १३६) । र दूसरे बामुदेव तका समयेग कं बर्ग-पुत्र (सम १६६) । ६ र्पुन, एक केन-विमान (विवेता १४१)। ४ ४ मगर-गिरोप (उप १ वर धी)। सुभद्दा की [सुभन्ना] १ वृत्तरे वनदेव की माता (सम १६२) । २ प्रचम इसी-रतन मध्य ( **चक्रकर्तीकी धय-महियी (सम ११२)**। १ वति नामक इन्त्र 🤻 सोम सादि चार्से सोस्त- । पाको की एक-एक बयमहियों का नाम (ठा ४ १---पत्र २ ४) । ४ गूतलम्ब सर्वि पूर्वों के कामबास गामक सोकपास की एक- । एक प्रश्न-महियों का शाम (ठा ४ रे—पत्र २ ४)। ५ प्रतिमा-विद्येष एक वत (ठा४ १—पत्र २ ४)। ६ सम के माई शस्त्र की पानी (पदम २०, १३६) । ७ राजा कोश्यिक की क्ये (बीप)। व राजा बेखिक की एक क्ये (संत २३)। १. एक सतीकी (पष्टि)। १ एक सार्ववाह-पश्नी (विषा १ २---पत्र २२)। ११ वस्तुकुत्र-निशेष जिसके यह शीप वेंचू होप प्रह्मसाता है (१६)। सुसप देखो सुसग (यग १२ ६—पत्र मुभरिय वि [मुभूत] बच्चो तया वरा ह्या धरपुर, वरिपूर्ण (उन) । सुभा भी [शुभा] १ वैदोचन वतीम नी एक

द्मप्र-महिपी (ठा**४०१—पद३**३)। २

एक विजय-क्षेत्र (ठा२ ६ -- पत्र द )। ६ रावस्य की युक्त परनी (पडम ७४ ११)। सुमासिय रेखो सुशासिय (उत्त २ ً १ चस € १ tu) : सुवासिर पि [ सुभाषितः ] सुन्दर पोबने-भासा। की. स (मुपा ४६०)। सुभिक्स रेको सुविभक्स (उक्त सार्थ १६)। मुमिब र् [सुभूत्य] पञ्चा नौकर (नुपा 44x1 & A 44A) 1 सुमाम वि [सुमीम] यवि मर्गकर (पुर ७ सुधीसण र् [सुधीपम ] यनस का एक बुगट (परम १६ ३१)। सुभूम र् [सुभूम] १ माळवर्ष में अराध बाठवां चक्रमचीं चना (छ २ ४---पन ११)। २ चारतवर्षं के भावी दूसरा जुसकर पुरुष (सम १४३)। भगवान् समरनाव का प्रथम भावक (विचार १७४)। सुनुसण पुं[सुनूपण] विभीव्य का एक वुष (परम ६७-१६)। सुभागा को [सुभोगा] पर्यासोक में रहते बाली एक विश्वजुनारी देवी (ठा द---पव ४१७ १६)। सुमीयण व [सुमोखन] इट विशेष एकाग्रह तप (धंबीब १८)। सुम न [सुम] पूच पूज (सम्मत्त १६१)। सर पू ["झर] कामध्य (रंस्स)। लुबइ पूर्वित्रमिति । र पंचरा निर सम्बाद (सम ४६) । २ ऐरवत धेत में होनेदाला वसवां कुलकर पुस्त (क्षम १६६)। ३ एक वैश चपासक (महानि ४)। ४ वि शुन दृद्धि शासा (परह) । १ वूं एक नैमितिक विद्वान् (नुर११ १३२)। सुमंगल १ [सुमन्नस] ऐराध वर्ष में होने बाबे प्रथम जिनशेष (सम १६४)। मुख्याच्या ध्ये [मुमङ्गाचा] १ भगवान् ऋषय-देव की एक परती (प्रतम ३ १११)। २ मूर्वेषेशीय राजा विजयतावर की परनी (पडन થ, દર)ા मुमगा 🖠 [ सुमार्गे ] मध्या चला (भुगा

) व [सुमनस ] १ दूवर क्रम

६२०

मुमणस ) (हे १ ६२ मुग ब६)। २ व रेप भूर (मुरा बदा १३४) । ३ मि युन्दर मनवासा, सकत (सूपा ६६४) पठन ६६, १३ ३७७ १७३ रस्ट ६) । ४ इपेशह. मलन्दित पुद्धो (ठा३ २—पत्र १३)। १ पून, एक देव-विमान (देवेन्त्र १६६)। भइंदू[ भद्र] १ भनतान् स्थानोर के पास केवा लेकर पूर्विक पाने नाला एक भृहत्य (या १०) । २ यार्व संयूक्तिनिक्य के एक रिप्प, एक कैव बुनि (बप्प)। मुमणसा 🛍 [सुमनस ] ख्क्री-विशेष (पस्स १--पत्र ३३)। सुसया क्षी [सुसनस ] १ वकाल क्लाव की प्रथम किन्या (सन १६२) पन १)। २ मुक्तमन्द पार एवाँ इ एइ-एक मोक्यास की एक-एक सङ-अभिन्यों का बाम (छा४ १—नव २ ४)। १ राजा श्रेष्टिक की एक मस्ये (वंत २३)। ४ एक कम्यू क्षुत का मान (इक्)। १ राज की प्या नायक स्त्रास्थी सी एक स्रवसाती (इक्र)। ६ मासको सम्बद्धाः स्था (स्थलः ६१)। सुमयो देवो सुमज (वद द १०)। सुमजाहर 🕅 [ सुमनाहर ] बावन्त मनोहर (स्पष्ट )। सुमर वह [ग्यू] बार करना । नुमरह हि ¥ +¥)। मांच नुनरिस्मांड (वि इ.२२)। क्ष नुगरिकद् (हे ४ ४२६ नि १६७)। नक सुमरत (तूर ६ ६८ तूस ४ पत्रम ७ १६)। बमङ्ग सुमरिक्षांत (प्रज प tat वार-नावती ११)। वंड सुर्मारअ सुमरिक्रण (दुशा काष) । हेड सुबर्द्र, सुबरस्थव (वि १६३३ १७ )। सुमारियम्ब सुमारेयम्य सुमारचीअ (तुष १३३ १ २ २१०- धर्म १२ )। सुमर १ [स्मर] कानवेर (बार-केश १) । मुम्पराज ध्येन स्मिराजी नार, स्वृति (दुना, हे र ४३६ वन आस नुस कहा हेश्र १६० म ११४) ह हो जा (४६० नुषा २२ )। सुमधार गढ़ [स्मारय] बाद दिवासा । वर मुमयवंत्र (दुश १६)

मुमरायिय वि [स्मारित] सव कराबा हथा | (सुर १४ ४वा २४१)। सपरिख देखो सुमर =स्मृ । सुमरिज्ञ वि [स्मृत] वाव क्षिमा हुमा (पाय)। सुमरुवा की [सुमरुन् ] व्यवल, महाबीर के पास कीमा चेकर पुष्टि पानेवाची राजा म्बेरिएक भी एक पश्ची (श्रंत २१)। मुगहर मि [सुप्रपुर] यति वश्वर (विपा १ ৬--- प्**ष** ७७)। सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्य मनवाता धमन (परम १ २ २७)। सुमाजुस 🛊 [सुमातुप] सम्बद्ध, स्तर्थ सनुव्य (भूषा २६६) ! मुपाछि दे [सुपाछिन्] एक चक्कार (पक्य ६ २२ )। सुमित्र पूर्व [स्वयन] १ स्वयन संपना (हे १ ४६३ कुमा' महार पतिः मुद्द ३ . १३ . १७) । २ स्थ्य के प्रमा को बठवानैवाचा छाछ (सम्ब ४१)। पाडय वि विशुद्ध स्वरूप प्रश्न वदानेश है शासी का वालकार (छाया १ १--- वन २ ) । वेशी स वेज । सुमित्त र्षु [सुमित्र] १ भवतन् पुनिनुष्ट-स्वामी का पिठा---एक शवा (सप १६१)। २ वितीय चन्नकों का निता (धन ११२)। ६ फ**्ने कार्यन क** पूर्व अन्य दर नाम (पदम २ १६)। ४ १६०वें बस्तरेव के वर्षपुर --एक वैज्ञ ब्रुति (पडव २ १ ४) । १ एक विक्रिक का मान (तप ७२० दी) । ६ दाच्या मित्रः नुमित्तास्य निखबन्मो (नुपा २६४)। मदबान् इप्रन्तिनाव को प्रथम निका देने गुनै एक मुद्रस्य वर मान (नल १११) । मुनिश्वा क्षी [मुनिया] बक्कण की माता धीर राजा ब्रहरण नी युद्ध प्रश्नी (प्रवय १४ तथ्य र् [तन्य] ब्रह्मस् (१४ 12, 21 12) i मुर्मात्त 🛊 [सीमित्रि] नुम्या शा प्र-सहन्त्र (१३म ४८ १६)। सुमुद्दय वि [सुमुद्दित] विश्व द्वित (वीत)। मुमुन्त्र केवा मुमुही (निष) । मुमुणिश्र वि [मुद्रा 1] धनदी तथा बाना [या (रूपा २ ३) ।

रीक्षा तेकर पुष्टि पानेवाशा एक रा<del>ष प</del>्र (श्रंत ६) । २ राजसानीत का एक सन्। श्रंका-पश्चि (पञ्चम ४ २६१)। ६ ल. स मिधेप (प्रमि २)। समुद्धी की [समुद्धी] अन्य-विशेष (रिय) सुमेचा बर्र [सुमेचा] अर्थ शोक में ध्लेब एक विषकुमारी बेनी (क्ष ब----गब ४३०) सुबेह र्षु [सुमेह] येव-पर्वंत (पार- प 4X, \$<) 1 सुमेद्दा देवो सुमेघा (६७) । सुमेदा ध्ये [सुनेधा] नुन्दर दुदि (स \$2a) 1 सुम्मंत रेवो सुग = मु । सुन्द र् व [सुद्ध] देश-विशेष (हे २, ४४ सुर १ सिरी १ देन देवता (प्राप्त । ४ पत्र ६८ कृष्ण जी १३३ हुना)। २ राजाका नाम (इप ७१६)। आ िंदन किन्दुन (से १ ६)। अस् [शक्] करप श्रुत्र (ग्रुट) । करवि िंक्रिटिम् | देखनल हाचो (सुना १०१ करि दे किसीस् । बही धर्च (तुपा रही ≰मि पू [ क्रस्मिम्] **रहा** (दुना २ । कुमर १ किमार | स्पनान नानुकृत्व श्रावन-द्रश्च (पव २६)। "हुनुम न [ **इ**सु क्षबंब, बींय (नि १४) । शब पू ["म इन्द्र-इन्डी ऐस्टब्स (राघ- से २ ११ "गिरि पू "गिरि] मेर पर्वत (नुग ३१३ ३१४४ छछ)। (सङ्क्षी पर ७६< ये) । गुह दू ['गुइ] t दर्र (शया गुरा १७१)। २ नारिनम सर प्रवर्तक एक ब्रावार्य (मोद्र ११)। <sup>‡</sup> पू [ैगोप] कोट-किरोप इन्ह्रकाप (स १ र-पर१६ पाय)। परवर्षि १ देश-पश्चिर (दूस ४) । २ देव-वि (क्छ)। चनुक्री [नमृ] धर-(बुवा ८१)। याय पु ["पाप] । क्यूप (वा ५ वर: व दा मूरा ११४ अञ्चन [आञ्ज] इन्द्रमञ्जूष (धर)। ' ध्ये ["नर्गा] वंता नदी (पाय)। वार्ष [नाथ] रण (बर बद्दर- रे)। तरी

कुम्मा १४) । ४ पून एक रेव-विमान

की ["तरिक्कियी] भेगानदी (सए)। तक रेको अरु (बए) । ताम पू ["त्राम] क्षक्यूप सुसदान (दी ११) । दास्त्रन िंदा**र्ड देवदार की सक्यों** (स.६.३)। र्षसी 🛍 ["ध्यंसिनी] विद्या विशेष (परम १६०)। घणु, घणुद्द व [ घतुप्] **१९१-कपूर (हुमा छ**ए) । न**इ देशो** ण**इ** (मृ७०)। नाह देखो जाह (प्रण)। पहु पू ["प्रमु] इन्द्र, देव-राव (पुपा ४ ३ चप १४२ की चळ्छ)। पुर न [ैपुर] देव पूरी समरापदी स्वर्थ (परम १ १ छछ)। पुरी की ["पुरी] बही धर्म (पाय हुमा)। ैरिपश्र दूं िशिय दिक्क क्छ (बंद)। यंदी क्यो ["बन्दा] देवी देव-की (से ८,४)। मबज म "अवन] देव-प्राचाद (अक च्छ)। संकि वृ ["मान्त्रम्] **र**हरमवि (युग १२६)। संदिर न ["मन्दिर] १ देश्य मन्दिर (दुम ४)। २ देव-विमान (स्स) । मुख्यि दुं ["मुनि] नारद मुनि (पडम ६ व) । समय न [रसम] पवस का एक बन्नेचा (पठम ४६, १७)। राम पूर्विको इन्ह्र (मुपा ४% सिरि २४)। रिउ पू ["रिपु] देख ग्रानव (गम)। स्रोध वृं ["उपक] स्वयं (महा)। स्पेद्दम वि ["क्वीकित] स्वर्गीय (पुण्ड २१६)। स्रोग देखी स्रोध (पटम १२ रैप)। यह पूँ ["पछि] १ इन्ह दे<del>न-</del>धन (समापुरा ४४-४ था वट ४२)।२ स्त्र नामक एक विद्याबर-नरेश (पटन क रैण)। बण्ण दूद विश्वर्थों] एक वस विमान (सम १)। यसू देखो स्त्रू (गि६८०)। मभावये [पर्वा] पूनाग द्वव (पाध)। पर १ वर प्रचम स्व (भव)। वरिय र्द्र[परन्द्र] इन देव-राज (बा ७)। वह की विभू देशहरू, देशे (कुमा)। बारण वृ [ बारण | ऐरांबल इस्ती (बन रे११ थे)। संगीय न ["संगीठ] नगर निरोम (परम = १८) । सरि की [सिरिन्] समीरवी यद्वा नवी (यहण ण १ १६, मुता ६६: २०६) : सिहरि पूर्व िक्किरिम्] मेव पर्वत (सए)। सुन्दर

विद्यावर-नरेश (पराम व ४१)। भूंद्री की ["सुन्त्ररी] १ देव-वपु वंबाह्रणा (सुर ११ १११८ मुपा२ )। २ एक राज-कृषी (पुर १० १४३) । ३ एक राज-कृमारी (धिर १३) । "सुर्राष्ट्र की ["सुर्राम] काम-क्षेत्र (रमण १३) । सेव दु ["शीव्र] मेर-वर्षत (सुवा १३) । इतिथ पु ["इस्सिन्] ऐराक्छ हामी (सं ६ ६) । ⊠इस्स ∣ ["गुष] बच्च (राष) । । एव पु ["। एव] एक भावक का नाम (उमा)। (देवी की [ीवृर्या] परिवन सबक पर स्कृतेका**वी एक** विद्या-पूनारी देवी (ठा द---पत्र ४३६ दक)। ारि प्रति प्रतास्त्रीय का एक पनाः एक संबा-पवि (परम ४, २६२)। स्डम पून [ील्डप] स्वयं (पास सूच १६७ मुता १६१) । हिराय वृं ["पिराज] इन्द्र (इप १४२ ही)। हिंच पुं["विप] इन्न (से १२, ११) । हिस्पइ दु ["भिपति] बही (मुपा ४१) । सुरा की [सुर्तत] कुष (परा १ ४—पत्र €a) 1 मुख्य वि [सुरचित] प्रमधी तथा किया हुमा (पर्याह १ ४--पत्र ६८)। सुरंगमा को [सुराह्मना] देव-वद् (मुपा २४१)। सुरंगा भी ["सुरहा] गुरंग वर्गान के धीतर का मार्ने (इत दूरका सहस्र सूमा ४६४)। मुर्रात पूंची [व] क्षा-विशेष विषु क्षा सम्बंदियना का मास्त्र (शे ८, १७)। सुरबाहु दूं [ब] बक्ल देनता (दे ८, ११)। सुरदु र् व [सुराष्ट्र] एक भारतीय देत की धानक्स काठियानाड़ के नाम से प्रसिद्ध है (शामा १ १६--पत्र २ टा **हे** २, हरा तिहर २)। (81 K, 8-44 388) I

(शेन्द्र १४)। गॅग नि [गम] युक्की (धापा) । पुर न ["पुर] नयर-विशेष (सन)। रेको सुरहि । सुरमणीअ वि [सुरमणीय] प्रत्यन्त मनोहर (मुद ३ ११२) । मुरम्य वि [मुरम्य] उत्तर देशो (धीत) । सुरव न [सुरत] मैपुन धी-धंनोप (मुर १३ २ या १६% काज ११६)। सुरवण न [सुरत्न] मुन्दर रहन (नुना १ र७) ॥ सुयरणा 🛍 [सुरचना] पुन्तर रपना (मुरा **३**२) । मुरस वि [मुरस] १ वृत्रर रस्वामा (ग्रापा रै रैर—पन १७४)। २ म⊾तूस किरोप (दे१ १४)। जग की ['सउा] तुमती-नवा (दे ४, १४) । मुरसुर र्षु [सुरसुर] व्यति-विशेष अपूर सूर बादाव (बोम २०१)। सुरसुर मण [सुरसुपम्] 'नुर नूर' धाराज करता । वहः सुरसुरंत (ना ७४)। सुरह एक [सुरमय ] मुपन्तित करना । मुखेर (पुनछ प्रानू ६)। सुरवा क्षेत्र [सीरम] मुन्तर कल नृश्यू, 'गबोन्बिस पुरहो मानहेंह महस्र पुरा विकासां (भव १२१)। सुष्द १ [सुरथ] सानेदार का एक राजा (महा)। सुर्वे पूंछी [सुर्वभ] ! वस्त ऋतु (रंगा पाम, कप्पू)। २ चैत्र मास (सार्ट) ; व बुध-विशेष समञ्जू बुध (भाषा २ १ व ३)। अ की- वी वैगा (प्रान्त १३) वर्गवि ६१, पास प्रानु १६०)। ६ न नाम-कर्न का एक मेरु जिसके स्वय स प्राप्ती के रारो र में मुक्तम अध्यन होती है (बस्त १ ४१) । ६ वि गुक्कभ-पुष्ट (उदाः कुमा, या ६१० वदद पुर ६, वस्त हे ६, १४१)। देखो मुर्पम । सुरा की [सुरा] मीरदा चक (क्या)। (स पु ["रस] पगुर-विशेष (धीव)। मुख्ति ई [मुरम्द्र] १ रतः का-सानी (मुर

999

समज १ म [समनस ] १६व 🗺 समाणस } (के हैं के सूर्य व्हाँ। हुई देव सूर (बुधा बदा ३३४) । ३ वि सुन्दर मनदावा संभान (मुपा १६४) पतम ११ १६:७७ १७:रवस ६)। ४ ह्योबान्, मान्त्रीका नृत्ती (दा १ २--पत्र ११ )। १ पून, एक देन-विभाग (वेवेना १६६)। सद् र्षु [ सह ] १ अपरान् महानोर के पास बीका बेकर मुद्रि पाने बाला एक पृक्कन (संद १ a) । २ साथै संपृतिकिका के एक रिष्म एक कैन मुनि (कम)। समज्ञा की [समनत ] वक्की-विकेष (पएछ १--पत्र ११)। सुराया हो [सुमनस ] १ वकान् क्लाव की अक्स रिक्सा (सम १६२) पत्र हो। २ मुदानन्द धार्य इन्हों के एक-एक बोक्यान भी ए<del>क-एक मध-</del>मदिल्येका नात (छा⊻ **१**—पन ₹ं४) । १ सना मेरिक की एक पल्डी (संत १३)। ४ एक अल्डाक्टका नाम (इक)। ६ शक्की पद्मा नामक स्वापी में एक राजवानी (इक्)। ६ मासकी का पुरू (स्तप्त ६१)। सुमयो वेदौ सुमज (स्प दृ १ )। सुमयोहर वि [ सुमनोहर ] क्रक्त नकेहर (18 90) सुसर वर्ष [स्यू] बल करना । नुमरह 📳 ¥ +¥) । वॉच सुमरिस्टिंख (पि १२१) । कर्म पुरक्तिक (दे४ ४२६ पि १६७)। **पड़**, सुमर्रत (सुर १ ६८ सूना ४ परम ७ १६)। क्ष्मक्र, सुमरिखाँद (वरम र, १ ६, व्यर-नामती ११ )। तंत्र मुमरिक सुमरिक्त्य (ब्रुमा काक)। क्रेक समरेष समारखय (वि ४६३) इक )। सुमरिक्क समर्थक समर्गाभ (सुवा १३३ १ तरु २१७- ग्रामि १२ ) । सुमर र् [स्मर] काक्देव (नाट-केश १) । सुमरण ध्येत्र [स्मरम] कात स्मृद्धि (बुगा Ex Add all this dit all bas Add १६७ न ११४)। की या (स.६७३ पुता २२)। सुमरात वक [स्मारय ] बाद विकास । वक्र, सुमधर्बन (दुव १६)।

समराषिय वि स्मिरित वि वर करावा हुया ! सुसुद्ध 🛊 [सुसुद्धा | १ भवनान् नेविनान के पात देशा बेक्ट पुष्टि पानेनावा एक एक-कुग्रह (सर १४ ४८) २४३) । (र्वत ३) । २ राष्ट्रत-नंत का एक एना, एक सुमरिष्य रेको सुमर=स्नु । सुमरिअ वि [स्युव] याव विका क्रुया (पाय)। समस्या 🛍 [समस्त् ] भगवान् शहावीर के पास क्षेत्रा बेकर पुरिक पानेनावी राजा थ सिक्त की एक पत्नी (बीत २१)। समाहर कि [समानुर] धारी मधूर (विपा १ ७--पन ७७)। समायस वि सिमानस्य प्रकल यनवासा सम्बन् (परम् १ २ २७)। सुमाञ्जूस र्षु [सुमानुष] स्टब्स, स्तव समुख (सुपा २६€)। समास्ति प्रसिमास्त्रिम् । एक राज-द्वरार (प्रस्य ६ २२ )। मुभिय प्रेन स्विष्यो १ ल्प्य स्वता (हे १ ४६ दुमाः सङ्ग्रापिः सुर ३ ६१३ १७) । २ स्वय्त के फन को बरुवानैवाला शास (सम्ब ४१) । पाइय वि <sup>वि</sup>पाठक्के स्थव छव वदालेगाने शासों का बातकार (शाया ११-पत्र २)। वेबी संवेषा । सुर्मित्त पूर्विमा १ मन्त्रान् प्रतिबृद्धाः स्वामी का पिठा---एक प्रका (सम. १६१)। २ कितीय चक्क्कर्सीका शिता (स्वर १६२) । ३ 🕶 वे बनकेर 🕏 पूर्व कम्म का नाम (परम २ ११ )। ४ छठवें वस्तरेत के धर्मपुर --ए≢ कैन पुनि (वडम २ २ ३) । ३ एकः वरिकम नाव (बप ७२ थै)। ६ शब्द मिना सुमित्ता व्यविखनमी (बुपा ११४)। स्वस्थान् शान्तिमाच को प्रवस मिला क्रेनेगाचै एक पृक्षम का मान (सन १६१)। सुभिचा की [सुमित्रा] बक्सल की पाठा बीर राजा बहारन की एक प्रति (प्रतम २५ ४) । तथय प्रतिसयी सध्यक्ष (से ४ \$X \$X \$3)1 सुर्मित्त 🕻 [सीमित्रि] मुभवाका प्रम— करमञ्ज (पत्रम ४४ ११)। सुगुइस वि [सुमुवित] व्यक्तिवर्त (धीप) :

सुमुद्धी देवो सुमुद्धी (पिव) 1

इया (नुपा २०२)।

सुमुणिक वि [सुकार] शब्दी तथा बाता

र्चका-पति (पठम ४, २३१): १ व सम-विशेष (स्रवि २ )। समुद्री की [समुक्ती] धन्द-क्लिप (निन)। समेपा ध्व [समेपा] उन्हें बोह में खनेतारी एक दिस्कुमाधे देशी (ठा य-- नव ४१७)। सुमेरु र् [सुमेरु] मैक-पर्वत (पाम-पत्न ध्य १८) । सुमेहा केवा सुमेघा (१५)। सुमेदा की [सुमेघा] दुन्दर पुन्द (प्राप्त ६६म) । सम्मंद देवी सुप = ध् । सम्बर्ध व [सुद्धा] देश-विरोध (हे २ ४४) । सर्विसरी १ के रेवता (क्या १ ४-पव ६० कम्पानी १३। क्रमा)। २ एक ঘৰাকাৰান (হণ ৬৪২)। আৰু হ चिनी <del>लच्य-वन</del> (देश ६)। अदर् चिन्हों अस्य बूख (माट) । **अर्थि** ई ["करटिन्] ऐरानक्ष हान्ये (क्या १७६) । कार व किरिन् विशेषमें (सुना १८१)। इसि पु [इस्सिन्] वही (सुम २ १)। **"कु**मर दु ["कुमार] धनवात् शतुपुरंत स कावन-कड (पर २६)। "इसुम न ["इसुम) नवंव बॉन (पि १४)। शब वू [गब] इन्<del>ड इ</del>न्द्रीः पैरानखः (शमः से २ ११)। गिरि प्रशिरि मेव पर्वत (पुपा २) ११। ११४ छछ)। तक्क्ष्मी पर (वर **७६**व थे) । गुरु पु [गुरु] १ शास्त्री (पाधा सूपा १७१)। २ म्यस्तिक यद स व्यवर्षेक एक पराचार्व (सीक्षु ११) । स्मेच पू भोप] सेठ-विटेप स्त्रकेर (बान १ ६ -- वत्र १६ काष)। यर न [\*ग्रह] १ वेच-मन्दिर (कुत्र ४) । २ वेच-विनाम (थरा)। "पसृक्षा [ नम्] केन्सेना (तुध ४२)। बाब दु विषय प्र ः नुपा १२४)। বনুৰ (বা ৭বং।

बास र ["बास] इत्रवाद (धर)। नर्ने

की ["सर्वा] थेवा करी (वाम) । लग्न प्र

["नाम] श्रद्ध (श्रा ६४° रे)। उद्योगि

सुषयम् । [सुषयम] मृत्यर वचन (मन) । सुन्त्) (यप) देको सुमर्। पुनच्छ, सुनैर्धिः सुनर्दे (स्रोका पि २११) । ञ्जनहु वेची सुपहु (प्राप)। सुवास (व [सुवात] एक देव-विमान (सम मुनास र् [स्वर्ष] १ मुनद ब्रुटि (जा बर्ध) । २ छन्द-विशेष (निर्ण) । मुपासका देखो सुबासिकी (बर्मीव १२३)। सुपासय र् [सुपासय] एक राज-पुनार (विया २, ४)। सुषासिका हो [ इ सुपासिनी ] विश्वका पति बोनित हो वह स्रो (सिरि १६६)। भुगहा च [स्याहा] देवता को हवित माहि यान्य का मुक्क सम्बद्ध (स्तिर ११७)। सुविधाजभवि [सुरुपाजित] किरोप क्य वे बस्तियत (तद् १६)। सुविभव रि [सुविद्याय] बय्यन बहुर (गर-समा ६) । सुविद्य वि [सुविदित] सन्ती वद्य बात । (बर भूस ४ ४) । मुन्दि वि [मुनियू] सन्ताः वानवार (या 1 (28

नुवर्स ।

(इम ४) ।

₹~98 = ) I

भाष-बोटा धारि (रूप्र १४ )।

२ दूप १ दुमा) । २ वि मुख्यर प्रवारताला सुविश्वस वृ [सुविष्ट्रस] मूलाक्न भागक इन्द्र के हस्ति रीम्प का धविपति (ठा ४, (इम t)। कुमार दें ("सुमार] भगगपति देनों की एक जाति (मयः सम वक्ष)। १---पश ३ २ एक)। सुविकसाय वि [सुविक्यास] सुत्रसिद्ध (सुर कुतप्पश्रम प्रे [कुद्धमपात] एक हर न्यां से नुवर्णकृतानदी महती है (ठार 4 ev) 1 सुविता की [सुरिका, शुद्धी] वैवा (उप र-स्व ७२)। गार प्रिटारी सानी 1 (203 F03 (शासार ब--पत्र १४ उप पुरुष् १)। मुक्तिज्ञा की [मुविधा] उत्तम विधा (शमू स्दिया की [ यूभिका ] नता-विशेष (परस १७—पत्र ५२१)। यार देखा 14) t स्थिण रेको स्मिण (गुर १ १ महा) ैग्रर (मुपा ४६४)। देखो सूयण्य == रंगा)। स्तुरि [ हा सम्बन्धाः स सुरभ दि [सीयर्ज] क्षेत्रे का कना हुआ वानवार (उर प्र ११६ गुर १० ६८)। सुविष्यु वि [सुविनष्ट] विवर्षन नट (या सुपनाञ्चय की दि] रहरन करने का ्र सुविणियित्वय वि [सुविनिश्चित] धन्धी सुकप्प पू [सुबद्र] एक विजय-धेव (ठा २, বয়ে নিতাব (३४)। मुविणिस्मिय 🕅 [ मुविनिर्मित ] मन्द्री त्तर्यः क्यायाः क्या (खायाः १ १—पत्रः १२)। मुविजीय हि [सुविनीत] १ प्रतिस्प 📭 क्या ह्या (उस १ ४०)। २ व्यक्त दिनय-पुष्क (दस ६, २ ६)। मुविस न [मुप्त] । प्रायन्त योलासर । २ सराबार वन्त्रा माबरल (बुर १ २१) ह मुविस्था वि [मुविस्तृत] प्रति विस्तारपुन्त (समित्र प्रामु १२८। इ.६५)। सुविरिवा कि [सुविश्लीकी] उत्तर देखी (पुर **१ ४६ १२** ३) । मुविबि देवा मुर्ग्याइ (सम ४३) । स्विभाज वि [सुविभाज] विश्ववा विश्वव धनायान हो तक वह (ठा ६, १---पत्र 785) I मुविभक्त वि [मुविभक्त] धच्छी वर्धाः र्शिवक (रामा १ १ थि—पत्र प्राचीप चम)। मुपिनिश्म वि [मुपिसिव] परिण्य धावपन्तित (यत २ १६)। मुविषयस्य र [मुविषक्षत्र] वर्तत बहुर (नुपा १४ )। मुवियाय न [मुशिकान] बच्छा बानः नृत्यर पानराधे परिवार (शह १६) ।

मुचिर वि स्थिप्तृ हापन-रामि सोने भी धारतवाला (धोपमा १३३ वे स १८)। सुविरहर वि सिविर्रापती प्रमुखे हुए पटित गूर्पाटत (उसा २ ६)। मुपराइय नि [मुपिराजित] मुराबित (नुस ३१०)। सुविरादिय वि [सुविराधित] प्रक्रिय विराधित (उद)। मुविद्यस 🖟 [मुविद्यस] दुन्दर विद्यस्तराक्षा (45 # 7P) मुविषद्य वि [मुख्यांचत] सम्वत् विश्वत (चव) । मुबिबच वह [ मुवि + विच् ] दक्के हरह व्यास्या करना । संङ्ग स्विविधित (१व) (वर्षेश्च १३११) । सुविसद्द 🖟 [सुविद्यसित] यन्त्री तयः विश्वित (मूर १ १११)। सुविसस्य पूँ [दि] स्वभिवाध पूरव (बजा मुविसाय र्न [सुविसात] एक देव-विमान (स्थ ६८) । मुचिद्दाणा थ्री [मुायघाना] विदानिक्टेच (पडम ७ १६७)। स्विहि वृं [सुविधि] १ नवर। जिन वनरान (सम बधा परि)। २ वृक्षी मुन्दर सनुदान म हा (३४३ मन-13 म ह बुग्रम) यमचन्त्र देवा सध्यण का एक यान 'चंक्रमणे इवह मुविद्-नामार्ड (पटम ॥ ४)। सुषिद्धि व [सुषिद्वि नुसर बाबरत-बासर, समाचारी (सम १२३) बाल १ उर स १६ : बार्च ११२: " १२)। सुर्पर वृं [सुपर] १ बरुत्तत्र का एक बीक (र्थत) । २ दुनः एक दय-शिमात्र (ग्रम १२)। मुर्पसाथ वि [मुपियन] प्रमाह ठाइ विश्वासमात्र (पुर ६ १४६ पुता २११) । मुक्ता भ्रे [रे] क्ल स्टाय (रे ब 14)1 मुर्नारस रेका मुपुरिस (१३४) : मुक्ष थ [ थस ] मानायो कम (इ.र (१४ पंश बुवा) : मुरेष १ [मुरेव] १ वर्रक्रिकेट (ब ब

क }। र म नवर-सिदेश (बदम १८४३)।

(कुमा) ।

विदावर नरेश (पडम ७ २१)। ब्रुख प्र

["रुच] एक पत्र-पूपार (वर ११६)।

मुरिंद्य पू [मुरन्द्रक] विवालेगक वेव

मुख्या देवो मुख्या (परप ब. ११६) ।

मुख्यप पू [स्राप्त] देश-विशेष (हे १ ११का

बर्)। जीर जि रेश-विशेष में ब्रह्म

सुरुट्र वि [सुरुट] धायन्त चैपनुष्ट (परम

रियम-सिटेव (सेन्द्र १९३) ।

मुध को [मुखे] रेशे (दुवा)

4 4 11) I सहया 🖨 [सुरूपा] एक स्ट्राणी (छान्य २—वत्र २६२) । देवो सुन्दद्य । म्मार दें [मुख्य] १ मूट-निकाद के बीवल रिकामारचं(ठा२ १---पण ४१)। २ म सुन्दर का। ३ दि सुन्दर कानाना (बदाः भव) । मुख्या हो [मुरग] १ नुकर तक व्यक्तिका शासक भूतेनहीं की एक एक सथ-वर्तियो (स ४ र—नप्र २४)। २ प्रतन्त्र नावक इन्द्रकी एक बड़-यदियों (१४)। ६ एक विद्यान्त्रमाधी देवी (द्याप्र १--पन १६ ६--पत्र १६१) । ४ एक प्रसक्त पान्धे (तम १३)। ३ मुन्दर काबाबी (यदा) १ मुरेस 🕻 [मुररा] १ हर-पति स्था। १ उत्तम देव (मृता ६१४) । मुरसर ﴿ [मुरधर] एउ वर-एव (नुध २७ इप्र ४)। मुरकार्याण वि [गुन्ध्यापन्] उत्तव बधार बामा (धर्नीव १४२)। मुलमा वि [सुरुप्र] घष्टी ठटा बना ह्या (मद्भा) । सुन्ध रि (सुनस्प) सम्बन्ध शास्त्र (शास १ १-- वर्ग २० वरा)। गुलस्थ । दि [गुरुव] पुत्र से अन्य हो परे शुरुव वर (या १२ नुष २, १६,वदा)। मुख्य र् [मुख्य] १४३५व्टेश (६७) । मुदम व [र] रुनुग्व-१-४ वस (रे १७)। मुन्मामंत्ररा हु को [र] दुलको (हे «, ४ : र्व (च्य) । मुन्द्रमा

सुलसा की [सुक्रधा] १ नवर विनक्षेत्र की श्रवन शिष्मा (सम ११२)। २ समदान् य**हातीर भी** एक पाविका विश्वका सारमा धारापि काम में तीर्वकर होगा (ठा १---पण ४११, सन ११४)। ३ नान नायक गृहपति की को (बीच ४)। ४ शक की एक घड महिली, एक इन्हारकी (पराम १ २, १४१)। १ शबपूर के राजा सुन्दर की परंग (महा) । सुबाद देवो सुन्ना (स्थम ४ व्याह द X4) I मुखा६ ई [सुन्धम ] यच्छा नवा (नुपा YY1) | मुद्धी और 💽 अस्ता याच्यत हे पिरवी थाय (रे = १६) । मुसुस्र १ वर्ग[मुज्युसाय ] 'पूव' 'पूव' मुख्याखाय रे पायान करना । नुनुनुनायद (वेर् ४१)। वह सुमृतुक्ति, सुबूसुकेर (संबं ४४३ महा) । मुद्ध वि [मुन्छ] धरकड पुषा--क्वा (गुप 1 (11 (9)) मुखाभ देखो सिस्त्रोज = स्लोक (धरि १६)। मुख्ययव र् [मुख्रेपन] एक विदावर-नरेड (पडम १, ६६)। मुख्यक्ष वि [मुओक्क] वर्षि वर्षा (क्यू) । सुद्धन (शुरुष) सूचा-श्रीय मांस (दे व १६३ पाय) । सुव बक [स्वप्] बोना । नुबद, नुवंदि (हेर ६४) वर् बहारमा)। मीर मुक्तियां (वि १२६) । वहां सूर्यंतः सूचमान (शय) है १: २१ भव) । धंक्र मुविकाय (रुप्त २६)। मुष वेष्रो स = स्व (हे र, ११४० वह उद्गया)। मुर (घर) देखी मुश्र = पूत, युत (घरि)। मुपंछ 🛊 [मुपंग्र] १ सम्बद्ध श्रोतः । २ वि मुमार पूना में जराज्य, पानचनो (हे ४ \* (33 × सुरम्यु र् [मुत्रस्यु] एङ विवय-धेत्र विश्वती राजवानी धन्तपूरी है (दा २ ३---पन

4 1 £4) 1

पुरुष्टर (स.२. १—१२ ४) । २ एक | सुवत्त देवो सुकात (धन) ।

विवय-क्षेत्र, प्रान्त-विरोप, विवयी सवदाये कुँववा तरपी है (छ २ १---पत्र ८ १ एई)। सुबच्हा की [सुबस्सा] १ प्रशेषीक में रहनेवाको एक दिशा-चुमाधे देखे (स ---पत्र ४६७) । २ बीमनस पर्मेट पर **प्**लेसाची एक देशी (इक) । सुबळा र्षु [सुबजा १ एक विद्यावर-वंदीय राजा (पत्रम ४, १६) । २ दुन, एक केन-विधाय (सम १६)। सुवक्तिय वि [सुवर्कित] प्रक्रियंय क्षेत्र विमा 🛍 (धन)। सुबल व [स्तपन] शमन (स्रोव बक्तः वेचा १ ४४१ वर ७६२) । सुबज्ज रू [सुयर्ज] १ वरह नहीं (बंच १४) vo)। २ भगवर्गत केनों की एक वर्गत (बीस) । ३ धारित्य, नूर्व (पडर) । क्रमार र्ष [कुमार] मरवपदि देशों की एक कार्ति (£4) I सुबच्च वं 💽 प्रमुदं क्या (६ ४ ३७) । सुबल्ज व [सुवर्ष] १ बोना, हेन (स्का: बक्क लागा १ (७) गरह)। २ 🕏 वर्ग-वृद्धि केलें की इस जानि (क्स)। १ बीव्यह कर्म-भावक का एक बांद (मालु १६५)। ४ बुन्दर क्छे । इ. वि. बुन्दर कर्छनाका (मन) । आर, कार दे ["बार] डोन्धे, नुबार (वे गहा)। कुम दु [कुनम] प्रवम बतादेन के बर्ष-पुत्र एक वैन पुनि (पतन २ १ ६)। "इस्तम न [ इसम ] ब्रूमर्स-वृत्तिका कडा का प्रन (राय ११)। पूरश को [फूर्य] नध-विशेष ( बन २०) १४ )। "गुद्धिमा थ्ये ["गुर्किस) एक दावी व्य नान (नदा)। "सिख्य औ ["शिख्य] एक पदीवर्षि (व्य ध राव)। गर र् [१३८] की से यान (स्त्रम्य १ १<del>७ -रन</del> ११॥)। <sup>व</sup>रि र् ['कार] बोधी (वर व १११)। देवी गुषम = नुष्णे । सुबण्यसिंदु वृ [च] विण्यु (दे सुवविज्ञभ्र 🕅 [सीर्वायक] गुक्त-वद, बोने का क्लाह्या (देर १६ पर्। प्राप्त मुख्यान मिसमी १ प्यापनेत का 14) 1

सुवम व [सुवर्ण] १ सोना (सं ४० प्रायू र दुन र हुया) ८२ वि सुन्दर शकरणाता (इम १)। इमार पू ["इमार] मनकाति केर्ने की एक कार्ति (मन सम ८३)। क्त्रप्यशय र् [क्टूबपपाव] एक सुर पद्मी से पुनर्रोकुमा मधी बहुतो 🕽 (ठा २ १-- व ७२)। सार पूं विसरी धोनी (सामा १ य--पत्र १४ इस पुरुष)। "जुदिया को [ युधिका] नवा-विशेष (पर्य १७—पत्र ४२६)। यार वेशो गार (कुमा १६१)। देखी सुषण्या⇒ युक्त । सुवस वि [सीयर्ण] सोने का बना हुया (\$ EE) सुरमाञ्चय की दि । बस्तम करने का पन-बीटा मावि (दूप १४ )। सुष्य इं [सुस्प्र] एक विजय-क्षेत्र (ठा २ र-पव व )। सुवयम न [सुवयम] सुव्हर बचन (भव)। सुपुर १ (मन) देशो सुसर । युवरह, गुवरहि सुर्वेर रे (स्वकं वि २६१) । सुवह केवी सुबहु (प्राप)। सुवाय कृष [सुवास] एक देव-विमान (सम ₹)ı सुवास वृ [सुवरे] १ पुन्वर वृष्टि (छा बार) । २ सम्बन्धिरोय (पिम) । सुषासची देवी सुवासिची (वर्मीव १२३)। सुवासव र् [सुवासव] एक राज-कुमार (विदार ४)। सुवासिजी 🛍 🛛 द् सुवासिनी 🕽 विस्त्रम परि बोवित हो वस की (सिर ११६)। रुवाक्त व [स्थाक्त] देशवा को इत्तिव मादि धभ्य का सूचक प्रम्पय (बिर्द ११७)। र्शिवधाळक वि [सुक्यांजर] विशेष वय वे क्लानिक (तंद्र १६) । मुनिमद वि [मुदिशाय] सरकत बनुर (गर-एम ६)। सुविषय वि [सुविदित] सम्मी तया बात (44) Adi X X) 1 सुविष् वि [सुविष्] प्रश्ना थालकार (वा ₹4)1

सुवितक वि [सुविधुक्त] वर्षि विकास (उव)। सुविकाम पू [सुविकास] मूहानव नामक इन्द्र 😘 हस्ति रीन्य का धविपति (छा ६, १---पण वे २ इक)। सुविक्साय वि [सुविक्यात] वृत्रविद्ध (वृर € €x) 1 सुविगाकी [सुकिया, ग्रुफी] मैना (उप EUR EUX) I सुविज्ञा की [सुविचा] उत्तन विचा (पानू X ( ) : **ज़्बिण रेको** सुर्मिण (मुर ३ ११ महा) र्रमा)। स्तुषि [अत्र] स्वप्न-शास्त्र का थामकार(अस दु ११६ सुर रू ६७)। सुविणह वि [सुविनष्ट] विषष्ट्रभ क्ष्ट्र (वा WY ) 1 । सुषिणिषिद्धय वि [सुविनिश्चित] बच्ची বহার নির্ভাব (রুব)। । सुविजिम्मिय वि [ सुविनिमित ] पन्धी तरह बनाया हुमा (खाया १ १---पन १२)। सुविषोय वि [सुविनीत] १ वरिशय पूर किया ह्या (उत्त १ ४७)। २ मध्यत विनय-पूष्ड (बस ६, २ ६) । सुविश्वन [सुबुश्व] १ सरक्त नीवाकार । २ सवाचार- सम्बद्ध मानरण (सुर १ २१) । सुविकाद्य वि [सुविस्तृत] प्रति विस्तायुक्त (ब्रजिप प्रामु (२६) इ.६६)। मुविस्थित व [सुविस्तीर्थ] उनर देशो (गुर t 42 ta 1) 1 सुविधि वेलो सुविह (स्य ४३)। सुविभक्ष वि [सुविभन्न] विश्ववा विश्वय धनायास ही सके बहा (का १, १--वश 384) I सुविश्व वि [सुविश्व ] यव्य शब्द विक्थित (शाया १ १ थी-पत्र का भीपा चम)। स्वितिका वि [सुविस्तित] धरिसम धावपनिवत (प्रतः २ १३) । मुवियक्ताम वि [मुवियक्षण] परि पनुर (नपा १२)। सर्विवाण व [सुविद्यान] घण्या श्रामः मृत्यर वानकारी ५विवाई (बद्धि १६) ।

सुविर वि [स्वप्त्] स्वपन-शोत होने ही बाबतवासा (घोषमा १३३ दे ८ ३१)। सुविराय वि [सुविर्यच्छ] प्रच्यी करह मटिव भुमटिव (स्वा २ ६)। सुम्बराह्य वि [स्वियाजित] पुरोन्ति (भूवा ३१ )। स्विराधिय वि [सुविराधित] परिरूप विद्यमित (स्व)। सुविध्यसनि [सुविद्यस]नुन्दर विनासनामा (सुर ३ ११४) । स्विवद्य वि [सुविव्यायत] सम्बद् विश्वविष्ठ (क्र) । सुविषण एक [ सुवि + विष् ] मण्डी तरह व्यास्था करना । संक्र. सुविद्याचित (१४) (बर्मेंसं १६११)। सायसङ् वि [सुविश्वसिव] प्रकारी वयह विक्षित (पुर व १११)। सुविसाय र्थ 📳 व्यक्तिकारी पुरूप (बजा सुविसाय पूर्व [सुविसात] एक वेंब-विमान (सम १०)। सुविद्याया की [सुविधाना] विद्यानिक्षेत्र (पथम ७ १३७)। सुविद्धि पू [सुविधि] १ नवर्ग जिन भक्तान (सम बश पाँड) । २ पूँछी सुन्दर सनुद्रान (परह २ ४ टी--पत्र (४६)। ६ न रामचन्द्र तथा सहस्रष्ठ का एक वान' 'चंकपर्छ इबद पुविद्यहु-मामेख<sup>4</sup> (पदम ६ ४) । मुविद्यि वि [मुविद्वित] मुभर वावच्या बाला सम्बन्धि (सम १२% मास १ दन स १३ सामे ११% ह १२)। सुवीर वृं [सुवीर] १ मदुरान का एक पीन (शंद)। २ पुन एक बेक-विमान (सम १२)। सुर्वासाय वि [सुवियस्त] प्रष्यो वयः विश्वासमास (पुर ६ १३६ पुरा २११)। सुनुष्णा की [रे] बकेंत क्लाय (हे व 1608 मुबुरिस बेबा मुपुरिस (महर)। सुषे ध [यस ] मामानी नम (है र ११४३ चंडः दूमा) । सुबक वृ [सुबक] १ वर्षत-विदेश (ह ब

सर्सपियक वि सिर्सपिनकी श्रव पन्धी

मुपा रेको मुच (पर् प्राः) ।

प्रयक्ष कार्न (है २ ४६)।

संबर्धन देनो सत्र ।

मुक्त न रिक्ति १ तांबा ताल (ती प) ।

२ रस्य रस्यो । १ जल-समीप । ४ मानार ।

मुस्मत रेनो मुस्पत (छ १ १--पन ७ )।

मुब्धन वि [मुक्यक] स्ट्रुट, शुस्तप्ट (यंत

२० धीम नार-पुरुष २ )। मुख्यमात्र रेखी सुग्र । स्कान वृह्मियनी १ धारतार्थ में सरपा बीलवें जिनदेव पुलिमुद्दत स्थानी (ती so पव १३)। २ ऐरनत नर्थं के एक व्यक्ती जिनदेर (बम १९४) । १ छठने जिनकेन के कड़बर (११२)। ४ एक वैन धूनियो तीक्षरे बलरेर के पूर्व प्रत्य में बुक ये (पटक २ १६२)। १ घाठने बनारेव के वर्त-प्रव (पद्यप २ ६)। ६ क्यकान् पार्लनाव ना पुरुष भारक (क्या) । ७ एक अयोधिक बदा-इह (दान)। च एक विवस का नाम (ब्राच्या २ १६ ६,६८००) । ३ ल एक बीम (कर्मा) । १ जि. मुन्दर क्रानामा (यम ६६)। "गिरा पू ["शिस] एक विश्व का माम (क्या) । मुध्यया क्षे [सुद्धता] १ धववान वर्गनाव की नाता (नवं १६१)। २ एक वैन साम्बो (मूर १४, २०७ महा) : सुष्यिमा भी [र्ष] यन्य, बाह्य (है सुस देवाभूस शुक्क व वंडेन वहींद निरमय बर्ग्यापी न मध्येति (नजा ११४ र्थार)। इ. सुसियम्ब (दुर ४ १२६)। मुसंगर् रि [मुसंगर] यविनांबद्ध (शङ्क मुमुं अभि अ वि [मुसंपर्जन] प्रक्रिनिक्रिक (4) 1 गु⊣िं साध्य [वि] गरा-शत वात (वे 14) 1 गुमंत्र हि [मुनहरू] बाँठ कुल्ह 'ध्या क्या दूराई तर मुनंतर्य (वडन X1) 1

सुर्धानीय वि [मूर्मानीयप्त] बच्छे वया

fers (grt 111):

तथा बैंचा हवा (राम) । सर्वर्भव वि सिर्धभाग्वी पविषय व्याप्तव (ज्लास १३)। मुसमिश्र वि [सुर्वसूत] सम्बद्धे वर्ष्य वंस्कृत (स १८६३ वर ६४८ टी) । ससंगव वि [ससंगत] धन्नो एक बंगवि-बुक (तुर १ २)। मुसनुष १ कि [मुसंइत] १ परिका सर्तिक व्यवसार र अच्ची उत्तर पहला **इमा** (खाधार १—पग १२ ∰ २१६) : वे विदेशिय । ४ वका हवा (उत्तर ४२) । सुसंह्य वि [सुसंह्य] परित्य धरिकप् (धीप)। सुसंज वि [सुसंज] प्रच्छे तथा तथार (नुवा ६३१)। सुसम्पप्प देशो मुसभ्रप्प (राज) । लखद्र वि लिखन्द्री १ क्ष्यर वाक्षत्रकाता । २ अस्तिक, विकास (सुरा १६१) । मुसब्रध्य वि [सुसंद्राप्य] पुत्र-वीष्य (क्रा)। सुसमस्य वि [सुसमर्थ] गुरुक परिकरन सामर्भ्यामा (त्र १ २६२) । सुसमबुरसमा 🕽 🛍 [सुपमदुष्यमा] कन सुसम्बुसमा विशेष प्रवर्षाच्छी-बाल का तीसराबीर उपस्थित का कोका स्वरं ( \*\* 52 \$ 1-48 W) 1 सुसमसुसमा को [सुपमसुधमा] काव-किरोब धवस्य रिलीका पहला और उत्साविकीका षटनी मारा (१क' ठा १—१४ १७) । मुसमा भ्री [मुपया] १ काम-विशेष धाम-वित्रही का दूषरा बीर उत्प्रीतिकों का पांचवा बार्च (दा २ ३ — यह ७६ १६)। २ धन्य विदेश (पिय) । सुमगादर पर [मुममा + द्व] यन्यो तरह बद्ध वस्ता। नुबन्धाहरे (नूष १ 🕫 २ )। मुसमाद्वित्र रि [सुममादित] घन्द्री तथ बनाविधेका (सम. १ ६ उत्त २ ४)। मुसमित व [मुरायुक् ] पाकत सनुव (गार---पृष्य (१११) ।

सचे—संसिर सुसार पून [सुस्वर] १ एक देव-वियान (स्व १७)। २ व नामकर्मका एक थेर, विश्वके ज्यस से स्टबर स्वर की प्राप्ति ही वह कर्न (सव ६७- कम्प १ २६/ ५१)। वेची सस्यर सुन्ररः सुसा की [स्पन्त ] बिह्न धरिकी (तूप ! त ११६ी। ससा देशो संपदा = स्त्रुवा (दुमा)। सुसागय व [सुरवा/शि] सुबर स्वास्त मुसागर र्न [सुसागर] एक रेक्निमन (सम २)। सुसाय व [ रमशान ] दुर्शवाद, नरक (खाला १ २--- तम ७१ है २ ८६। व १६७ वा १४ वहा) । सुसामण्य व [सुप्रामण्य] धन्मा बादुन (बधा) । सुसाय वि [सुसाव] स्वाच्छ, कुवर स्वाक वाचा (वब्स बरा दश है से १ र, १२२)। सुसाळ र्न [सुराख ] एक वेद-विवास (सम ११)। सुसावग रे वे [सुमावक] सम्बद्ध शावक-मुखाबय र वैत बृह्दन (कुमा" परित ह २१)। मुसाइय देवी सुसंहय (पराह १ ४--१४ 48) i सुसादु पू [सुसायु] उत्तव दुनि (पदा र १--पद १ १ पत्र)। सुसिक्ष वि[धुष्क] सूचा क्ष्मा (तुम २ ४) E# (4) : मुसिश्र नि [शापित] नुवास हमा (म्पर्

वज्या १६ ३ दूप्र १६)।

शिकाकी माश्व (मा २)।

(38 x 566) 1

देव-विवास (बस १७) ।

वर्द्ध) ।

मुसिरिकाम 📧 [संशिक्षित] पण्ये पर्य

मुसिजिद्ध व [मु स्तर्भ] श्रस्तक लेइनुड

मुस्प्रिय रेपी मुख = चीस्व (वंशि १२)।

मुसिष्न वि [मुश्रीर्थ] पति बहा हुमा (गुरा

मुसिर वि [गुपिर] १ रोबा बाली। एप

(ज्य कर बी: दुम १६२)। २ तुब एक

गैनसकारी (कुमा)। कम्मिय वि ["कर्मिक] सुसोह वि [ सुशोस ] बच्छे शोभावाना ुसिब्द्धि वि [सुरिख्यः] गुर्धमन पवि पूर्वपराक्षी (मनि)। इतम नि [स्त्रम] चंदक (पुर १ वश पंचा १व २३)। (सुवा २७५) । मणून की बाह्यामा (सुपा ३२६)। गर सुसोहिय वि [ सुरोभित ] ग्रोमा-र्यवध प्रसिस्स पुं [सुशिष्य] उत्तम देवा (उप वि [कर] मञ्जूम-वनक (कुमा)। गामा समसंद्रद (उप ७२व थे)। की "नामा पक्ष की पाँचनी बसनी तना 4 x 5) 1 सुरस अब [ शुप्] सूचना । सुस्ते (सूच पमाञ्जूबी राजि-क्रिमि (सुरुव १ सुसील वि [सुसीत] पवि शौदव (कुमा)। १२११६)। वह सुस्तंत (स १६६)। ास्थि वि ["धिन] १ गुने**ण्य**क (मन)। सुसीम न [सुसीम] बनर-विरोप (उप सुस्समण र्रु [सुम्ममण] उत्तम साम्रु (उन) । २ शूत्र धर्मनाबा (सामा १ १—यण ७४)। **७२**व दी) । सुस्सर वि [सुस्वर] कुत्वर यानाववाचा व्यक्तो अ (कुमा)। सुसीमा 🛍 [सुसीमा] १ भवनात पर्याय (सुपा २८१) । वेको सुमर । सुद्दत[सुरुव] १ धानन्द चैत्र मना। २ की माला (सम १६१)। २ इस्प्ल बासुरेज सुरसरा की [सुरवरा] वीवयीः तवा वीवयत बारान शान्ति (ठा २ १—पत्र ४<del>४</del>- १ की एक परनी (संख १६)। ३ वरस नामक नाम के वन्यवंत्रों की एक एक सममहियों का १—पत्र ११४ ययः स्कल २३ प्रास् विवय-क्षेत्र की एक शतकाती (हा २ नाम (ठा४ १---पत्र २ ४) इक)। १३३ हेर १७७ कुमा)। ६ लिगीस <del>१--पत्र</del> ॥ )। सुस्सार वि [सुसार] सार-पुक्त (पवि)। युक्ति। ४ वि त्रिवेन्त्रिम (विधे १४४६) सुद्धान न [सुर्राञ्ज] १ उत्तम स्वयाद (पराम ३४४४)। १ युवा प्रदः युवा-नगर्न (ग्राम्य सुस्साबन } क्को सुसाबन (क्का था १२) । सुन्साबन १४ ४४)। २ वि कत्तम स्वमादवामा १ १२--पत्र १७४ माना कम्म १ स्थानारी (प्राप्तु =)। वंद वि [ विस् ] । सुस्सीख केनो सुखोद्ध (बुपा ११ 省 व)। ११) । ६ धनुकून (श्रामा **१**:१२) । ७ स्राचारी (पत्नम १४ ४४ प्रामु ३६)। युक्ती (हे १ १६) । स्न वि वि सुक्त-सुसुद देशो ससुछ (धन) । सुसु ६ [शिक्ष] बण्या बातक। सार पुं शासक (बुर २ १६ सूचा ११२) कुमा)। मुस्सुबाय वक [ सुसुध्यय स्टब्स्य्] [सार] क्याचर प्राखी की एक जाति इत्तक नि[यत्] युक्ती (नि ६)। मुसुग्रामान करना शुरकार करना। संघ मग्रियाकार मरुल-विकेष (पि ११७)। बर वि ["कर] युक्क-यनक (हे १ १७७)। मुस्सुबाइचा (स्त २७ ७)। मारिया और [ मारिका ] बत्य-विदेष कामि वि [ कामिम्] सुवासिताची (योव मुस्तृ की [ श्वभू ] सम् (सर १)। (राम ४६) । वेको सुंसुमार । ११६)। स्थिति ["र्गभन्] नही सर्प सुस्तस सक [शुक्ष ] देश कला। सुसुम्ब पुन [सुमूर्य] एक देव-विमान (सम (धाना)। तृति ["तृ] मुख-रावा (वै मुस्सूतह (ज्जा महर)। यक सुस्सूसीत **(%)** 1 १ व कुमा)। दाय नि [दाय] वही सुरस्यमाण (कुन्न १४ वनः योप)। सुसुमार दुं [सुसुमार] बढबर कन्दु की एक (पकार ३ १६२)। पंस्ति [स्मिक्टी] क्ष ग्रस्स् सिर्द (शी) (मा १६)। वावि (बी २ )। देखो सुसु-मारः कोमस (पाप)। यर देखी कर (हे है सुस्युसंज वि [श्रुमृषः] शेवा करनेवामा १७७३ कृता तुपा ३)। संस्त्र अधि सुर्यव है [सुसूर घ] १ अस्पन्त पुरूषी िसन्दर्भो गुच-जनक प्रायंकास (क्रम्)। (पस्म ६ ४१ सब्द्र) । २ 🖞 धारसन्त सुरस्राण व [शुक्ष्पण] सेवा सुन्या (क्रुप |काह वि ["समह] १ युक्त-अनक (भा २०) चुराबू (बडर) । २४७३ का ११)। अन्य सं ६७) । २ दुन. एक पर्वेत-शिकार (स्र सुसुर देको समुर (वर्मीव ११४) बिरि सुस्सूराणया १ वर्ष [शुक्षूपणा] जनर देखो २ ६—-पाद)। "छणान ["स्तन] \$\$% \$4X \$4 1 Ecs) ( सुस्सूसणा ) (उच २६, १३ धीन ग्रामा धासन-विशेष वासकी (सूर २, ६ ३ सुपा सुप्रदेशर है [सुशुमक्कर] स्थव का एक जेव ६ हेंह—पस १ क)। २७६३ कम)। "सिया औ ["सिका] (सिंब)। सुस्सूटा के [शुज्या] स्वर को (बुवा सुवा से बैठना सुबी स्विति (प्रामु ८४)। सुस्र पुत्र [सुस्रूर] एक इव-विमान (सम सुद्धिक्षा वी [वे] दुवी (वे = ३)। सुद्द देन्यो सोब् = युम् । मुद्दः (बन्या १४-सुसेज रू [सुयज] १ नुद्रीय का समुर (ध सुद्देष्टर वि [सुलकर] नुबन्धरक (विरि ४ ११ र३ व४)। ए एक संधी(विपा पिय) । सुद् तक [सुक्रय] तुबी करना। तुद्दद ११८ दुमा) । रै ४—पत्र १४)। ६ वर्ड पत्रमधीं का (पिंग) मुद्देषि (सी) (यमि ८१) । सुर्वकर वि [शुभकर] र शुवकारक (कुमा) । कभी (सम्)। मुद्द केलो सुध (६३ २६) ३। दूर्या; २ हुं, एक वरिष्क् का शाम (चप ४ ७ ठी)। सुसेणा की [सुपेजा] एक वहां नहीं (ठा युपा १६ कम १ ६ )। असि [वि] सुर्हमर वि [सुखन्भर] गुनी (पहड) । **₹. ₹--पत्र ३**५१) ।

सुधा देखी सुन (वह आन) ।

मुब्बन [स्ट्रव] १ तांबा, ताझ (की २)। २ रज्यू रखी । ३ वय-समार्थ । ४ बाचार । ३ यज्ञ वा कार्ये (इ.२ ७१)। सुद्धान देगी सुद्ध । मुद्यात देवा भूम्पा (द्या १ १—११ ७ )। सस्यन विस्थित सुद्धः, सुत्यट (धेव २ सीयान्तर-पुण्य २०)।

मुख्यमात्र वेको मुख । सुकाय र् [सुप्रत] १ चारतर्थं में जराब बीस वे जिनवेश मुनिन्युवत स्वामी (तो पत्र ११)। २ ऐरवत वर्षे के एक मानी जिनदेव (सम १६४)। १ छठवें जिनवंच के क्छबर (११२)। ४ एक वैत्र पुनि थी। हीसरे बनदेव के पूर्व जन्म में पुत्र थे (पत्रज २ १६२)। १ माठर वसेच के नर्न-प्रद (बदम १ १६)। ६ समराम् पार्लनाव वा कुद्द यावक (क्रम) । ७ एक अवेतिक मझा-८इ (राज)। व एक दिश्य का गाम (ब्राक्ष २ १६, ४, कल्प) । हे के एक दोन (क्या) ३१ वि. मृत्यर बत्रवासा (वय काम (दम्म) ।

३३)। स्मित् [पिन] एक विशवाना मुख्या 🛱 [मुद्रश] १ अवसन् वर्गेताव की बाठा (मन १९१)। २ एक मैन सत्यो (मुर १४, २४७ महा) । मुस्यिका प्री [४] धम्बा माता (१ ० १०)। मुस देखो भूग शुक्क व पंडे व व्यक्ति बिरफ्य संग्रियो न नन्मति (गण १६४) र्थार) ( इ. मुलियस्य (तुर ४ . १२६) । मुभगद् वि [मुसंगर] प्रविनश्च (धाङ मुन् मिश्र वि[मुसंयमित] पक्षिकिशीचा 15) 1 मुर्ने इश्राच्य [द] गवान्दात वक्त (ह 11) ( मुमं । प्र वि [सुनरह] यति मूनर यहा

feet (fit \$11)

नगा पुराह वरं मुनेवर्ग (पत्रमः 🕳 ५६) । सुर्मार्वावद्व वि [मुर्मार्वावद्व] चण्के क्या

मुर्सपरिमादिय वि [सुर्सपरिगृहीस] वव युष्की तर्वा श्राप्त किया ह्या (राव ६३)। सुसंपिणक वि [सुसंपिनक] वृत्र घणकी तरह बेंबा हुमा (सम्)। मुसेमेर नि [मुख्यान्त] परिस्य न्या**पुर्व** (स्त्र १३)। मुसमित्र वि [मुसंभूत] बच्छो वचा वंस्तुव (स १८६) उप ६४८ थी) । मुसंसव वि [सुसंगत] सन्दो तया संगति-बुक्त (नूर १ 3)1 मुसनुषः ) वि [मुसीहत] १ पणितः, सुसनुषः ) व्याप्तः । २ शब्द्धः तराह्यः यहना ह्या (खाबा १ १--पन १६ पि २१६)। हे विदेशिय । ४ सम्बद्धा (उठ २, ४२) ।

मुसंद्र्य वि [मुसंद्र्य] परिष्ठ परिष्ठ (बीव) ३ मुसद्भावि [मुसद्भा] प्रश्ली क्या क्यार (पुत्र ६३१) । संस्थाप वेदी संस्थाप (एव)। <u>मुसद वि [मुद्राव्य] १ मुन्दर व्यवागयका ।</u> २ प्रक्रिक विकास (दश १६६) । मुसस्रक वि [सुमेशाव्य] गुक्र-बेय्य (क्स)। मुसमस्य वि [मुनमर्थ] वृक्क वरिक्य धामध्येशाचा (तुर १ २६२) ।

मुसमबुरसमा १ 🛍 [मुपमनुष्यमा] धन मुमगर्ममा विशेष प्रवर्गित सम छोप्य भीर जर्राग्छी का नोवा थाय (दक्टा२ ६—- पत्र ७६)। सुमममुसमा धी [सुपमसुपमा] काव-विकेषः अवस्थिति का पहुमा धीर जरशनियों का प्रवर्ग बारा (१४" हा १--- पर २७) । मुसमा भी [मुपमा] t भाग-विशेष धर-बर्गिएरी का दूसरा भीर उत्परिक्षी का पांचर्ड

वारा (ठा २ ३---वर ७६१ इस्) । व धन्द विशेष (पित्र) । मुममाहर सर्वः [मुममा + ह्र] वच्छे वछ प्या १ रमा । मुनमपूरे (नूप १ मुसमाहित्र वि [मुसमाहित] यन्त्री तत्त्व बनाबियोग्न (श्वार १ क्रायक २ ४) । मुमनिक वि [मुसमूत्र] बाक्य वनुत्र (गर-नृष्य १४१)।

मुसर पुंच [मुस्बर] १ एक देव-विपान (दन १७) । ए त नामकर्म का एक पेट, निवारे अस्य से मुक्तरस्वर की प्राप्ति हो वह कर्न (सम ६७० काम १ २६३ ६१)। केने सस्सर समर। सुसा की [स्वस्] बॉक्न भॉक्नी (बूप ८ 1 (13 9 9 मसा देवी मुख्या = स्तुवा (कुमा)। भुसागय व [सुस्वा<sup>3</sup>त] मुन्दर स्वान्त

(भग)। मुसागर पुन [मुसागर] एक केन्द्रिनान (समार) । सुराज र [ रमशान ] दुर्शकर, नरस (साया १ ए---पम थर है र वर्श ह १६७-धा १४-महा) । सुरामण्य व [सुप्रामण्य] प्रणास वाहुस (श्रमा) ।

सुसाय वि [सुस्याय] स्वादिह, कुचर स्वास काबा (बडम बरा देश १ २ १२२) । सुसाख र्न [सुराख] एक देव-विधन (सम ६१)। सुसायम रे दे [सुधायक] क्षत्र वापर--सुसावय र् येन मृहत्व (दुमा' पश्चि ह २१)। सुमाइय **रेको** सुसंहव (महरू १ ४—**१**४ 48) | सुसाहु र् [सुसाधु] ब्लम इति (१९६ ८ १---पद १ १ चर्ग)।

मुश्चिम्र वि [सुरङ] नुबा हुया (बुच २ ४) TH (8) 1 मुसिम्र वि [शापित] तुबाय हुम्म (भर्म) शभ्या १६ ३ पूछ १६)। मुसिक्किम लि [मुशिशिव] धन्छ स्पर् शिक्षाको सस्य (मार्)।

भुमिणिद्ध वि [मुस्ताप] प्राक्त स्वे**र**्ड (ACA SES) 1 मुश्रिस्य देवो सुरुध = बीस्व्य (बीव ११)। मुसिम्न वि [मुद्रीजें] धरि बरा हुमा (5म 724) I

मुक्तिर वि शिपिर र शेला, बाबी । पू व (जर करन दी: बुक्र १६२) । १ दुव्य पृष्ट देव-विभाग (बच ६०) ।

सुभ र् [शुक्र] मान्य सादि का ठीवछ अस भ्रम (पत्रमः मा १६८)। सूच वि [सून] कुसा हुया सूबनवासा 'सूब मूर्व सूबहरू मूक्तार्थ (विदा १ ७---पण **98**) 1 सूल र्यु [सूप] शत (पन ६१ टी जना पर्याप ६--१२६ सूपा ४७)। गार बार, ार वृं ["स्त्रर] रक्षोदमा (स १७ क्रुप १६) १७- यासक ११ टी)। "रिणा की "कारिजी रक्षो**र्व क्यानेवाकी की** (पराम 1(5 3 84 सूत्र देशो सुत्त = श्रुव । सङ्ग्रव [किंख] दूसरा जैन संय-प्रन्त 'सायारी सूबमके (सूब २१२७ सम १)। वि [सूचक] १ सूचना करनेवासा स्थल | (वेस्टी ४१८ मा ११० पुर ७ स्वता । २२१)। २ दे पिशुन कस, दुवन (महा १ २—तम २०)। ३ ग्रह हुँछ बामुख (प्राप्र) । सूमग रू म [सूतक] सूतक, बनन सीर मध्या सूबय की प्रशुद्धि (पंचा १३ १८) वर्ष स्मज्≡[सूचन] सूचना (ज्ञ सुर ८ 438) I स्थर ई [श्रूकर] तुमर बराह (स्थाः विपा १ १---पत्र ५३ प्रमी ७)। बाह्य प्रै

्वह्य प्रतरकाय बतस्ति क्येप (वर ४ च २)। स्वरित्र कि चि क्य-पीक्ष (वे ४ ४१ दी) । स्वर्धिया कि चि क्य-पीक्ष्म (युर १६ स्वर्ध ३ १३०-३ त, ४१)। स्वर्ध क चि क्यान्त वाम का टीक्स स्वर्ध क चि क्यान्त का टीक्स स्वर्ध क चि क्यान्त का टीक्स

स्या को [च्या] सुम्बर प्रथम (रिव (रिकासने प्र. पूर्वाचे हो। कर वि चित्र] नुषक (कर करेश)। चैत्रों के स्थिती अवग्र प्रवृत्ति कम्ब चैरे। (राय २६, क्या १ वर्श पुता रेश) कम्ब व किसोनी अवक्यीक्यां (प्रय् १ र प्राप्त १)। इर व [गृह्य] अगृति-गृह (राव २६ व्यू);

सुद्र की [सूचि] देवो सूद्र (भाषा सन १४६ एवं २७)। सूद्रअ वि [सूचित] विश्वती सूचना की वर्द हो वह (महो)। २ एक, करित (पाय)। ६ स्वकारि-प्रक (बाय) (यद ४,१ १०)।

व ध्यक्रावि-पुक (बाय) (रव ४, १ १०)।
सूद्ध वि स्ति प्रति प्रशि बाग विया
हो वब ध्यापीः वसर्थ गृहसं यावि (दव
४, १ १२)।
सूद्ध वु दिश्वक वर्षो (द्वप ४१)।
सूद्ध वु दिश्वक वर्षो (द्वप ४१)।
सूद्ध व सुमा विवा देव वर्षोः
सूद्ध व सुमा विवा देव वर्षोः
स्वा व सुमा विवा देव वर्षोः
स्वा वि सुर्य, सूर्यक विवा व्या
स्वा वि सुर्य, सूर्यक विवा ह्या
स्वा वि सुर्य, सूर्यक वर्षाः
स्व द्विस वा सुव वा (याचा)।
सूद्ध वि सुर्य वा सूर्य वा द्वप वर्षोः

स्हर्म की [स्विद्ध] अपूर्विक्स करनेवाली की (वस्तव १४४)। मुद्दे की [स्वित्ती] करना वीले की समादे पूर्व (वस्ता १ १—वम ४४४ ना १६४४ ४ २)। २ वरिमाया-विशेष एक बोइल बम्मी एक अरेशनाची में यी (बहु ११८)। १ ने वे वस्तों ६ बोदने के कान में वादी एक उपद के पत्ता केल (स्वा २०)। फल्क्स व [फल्डक] करने का च्या विस्ता वहाँ पूर्वी-क्षेत्रक बसमा वसा हो (एय २०)। फुट थु [मुख] १ पवित्रिक्त (राध ११ १—वम व)। २ होशिया बलु की एक बाति (वस्ता १—व्य ४४)। १ न बहु पूर्वी-केतक वस्ते का केत कर पीतर हुवाई वसके व्योग की वस्तु (एस २१)। सुद्द की [ब] संबंध (१८ ४१)।

सह तक [ अर्झ सूच ] धावना दोहना विनास करता। मूदर्स (ह ४ १ ६ १) व वर्ग पृथिकंटु (स्या १ २ --- पण २६) । सूच्या व [स्यून] १ पक्ष स्थितस्य (स्वस्त) । २ विश्वस्यक (पण २०१) । सूच्या वि [स्यून] हे पक्ष निकात् हुआ । पद्म १ १ १४ व. या १६६१ स्व १०१)

सूई देखों सूह व वृति (नुना २६६)।

स्या वि [सून] युक्त हुमा कुम व कुक्त हुमा ( (पत्म रे १ १४० सा १६६० सा १०१० १४०) भी [सून्य] वयन्त्रण (तिर १ रा सूर्णा) जा १४४ कुमा १७१० सह यु [पति] कसार (१ २ ७)।

स्विय वि [मूनिक] र मूबन का रोगवाचा नियक्त शरीर मूब ममा हो यह। र न. मूबन (वाषा)। स्वा दे [स्तृ] पुत्र सदका (कृत ११६)। स्वाद केबो स्कार = मूबक (वन १)। स्व केबो स्कार = मूब (प्याह २ १—पन १४०)। स्वादा केबो समागा 'मूबय हुमकामये मूबर वह बुवर केब (कर्मदे १२) स्वाब्ब २६)।

देश (सम १९४)। १ एक भैनावार्ग (उप

७२० द्या ४ भववान् माहिनाव का एक

पुत्र (दी १४) । स्र इं[स्र, स्वें] १ नूर्व यन (६२ ६४३ हा २ ६--पम दश दब मुख २१२, ६२२ कम: हुना) । २ क्टप्ट्रॉ निन-देर का मिला (तम १६१)। ३ इत्राकु-थेय का एक राजा (पत्रम 🐛 ६)। ४ एक संबद्ध-विश्व (पत्रम ४, २६३)। १ एक धोर का नान (नुज्य ११)। ६ एक चर्या (नुपा १११) । ७ एन्ट का एक भेद (रिव) प पुंच एक देर-विमान (सम १)। भीत बंध वूं ["ब्रान्ध] १ मिछ-विधेष (मे ६, धानसम्बद्धाः प्रमुख्यः १—पत्रः **१५** उत्त ७३) । २ पून एक दब-विमान (देवेन्द्र १४० वन १)। कुड क्वा [फूट] एक देव-विदान-केर-परन (बन १ )। उन्हरा तुत्र ["ध्यञ्ज] एक देव-विकास (सम. १.)। माठ---माध्यवि २०) ।

মার ৬४ বড়া।

इस्स (रस ७ ४१) ।

सुरस के सुद्रस्ता है र जन्म हान्यका, हान की बहुक्याना हान से रीजनीम नाम करने में स्वत्य कि है ? ११) १ र राजा, सम्प्रीय (पनि)।
सुरुष्ति है [सुरुष्तिम ] १ जन्म इस्त्री (पनि)।
सुरुष्ति है [सुरुष्तिम ] १ जन्म इस्त्री (प्रकार १ - जन्म १ वर्षा)। २ राज्य सेन महर्स्त्र (क्या-पनि)। सुरुष्त म् [सीमार्थ] १ रुष्त्र, १० (स्वति)।
सुरुष्त्र म [सीमार्थ] १ रुष्त्र, १० (स्वति) १ १९) २ रेको सुरुष्त्र म सुरुष्त म सुरुष्त स्वति।
सुरुष्त्र म सुरुष्त म सुरुष्त म सुरुष्त (स्वति) १ रुष्त्र सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त (स्वति) १ रुष्त्र सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त (स्वति) १ रुष्त्र सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त (स्वति) १ रुष्त्र सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त (स्वति) १ रुष्त्र सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त सुरुष्त (स्वति) १ रुष्त्र सुरुष्त सुरुष

सुद्रगचेको सुसम्। (च्यकः ४ वा६

सम्बद्ध व सिमटी योडा (मूर २ २६) कुमा।

सहर नि सिहर्त पन्नी तयह हफा किया

सुद्रम्म ई[सुबर्मन] १ प्रथमान् स्थानीर कापट्टबर क्षिम्य (निपार १ — पत्र १)। २ वार्यक्षे निक्तेन का प्रकथ किया (सम १६२)। ६ एक सभाकानाय (निपा १ १-- नव ४ १ २-- पत्र २१)। सामि प्रसिम् वन्त्र महाबोर का पट्टबर किन्य (का) । रेको सुधन्छ। छ्यस्म केवो सुप्तमाः। शर्द्र ("पछि") इन्द्र (महा) । सुहम्ममाण वि [सुहम्बमान] को वन्ही वयः मायः भावा हो बह् (पि ३४)। सुद्दम्मा क्षी (सुभर्मा) चयर प्राप्ति क्षताँ की सम्ब देव-सम्ब (यम ११, ४४)। सुद्द्रम देशो सुर-वर = युवा-र, गुव-र । सुद्रव देवो सुभग (गरक बड़ा हेक १७२) सुद्द वि [सुद्द ] यच्छी ठाला थी याच क्या हो वह (दुल २२६) । सुद्दर वि [सुभर] मुख के भागी बोग्व (स्त्र 32)1

सुद्दम देवा सुद्धराय ( वर् ) ।

(t =, 14) i

सुद्दा में [व सुगृहा] वीक्षांचरेन, गुन्छे

सुरुप्तव र्ष [दे] १ केश्य का बर । २ व्हक विरेमा प्रती (वे ८ १६) । सबकी की हि | शुक्र धारम्य (दे ८ ६६)। सहय देशो सुमय (भण्या १६ सीम ६)। भ्री बी(बाइड१७)। सक्राधक सि÷भाी सच्छा स्थला, "प सकाह बोमईए सालू (इस १४२)। समाकेको छुद्धा≈गुणा(स २२ दुसाः स्स्)। सम्मत् र [स्मन्ति | इते का बारकामा (बाचा २ २ २, १)। हार प्रै शिहरी वेष केल्डा (स ७११)। यक [ सुरुपय ] १ पुत्र पान्त । २ तक पुत्री करना। पुहाद, सदाध े बुद्धाधर्द, बुद्धाबद, बुद्धाबेद (भावा या ६१७। वि ६१० से १२ ६ वज्ला १६४) भ्रीषः ३४) । वहः सहार्थतः (व १ १वः गाट—रहना ६१)। सुद्राच केवी सद्भाव = स्वयम् (या ४ ०; वण्या १)। ह्यावण वि [<u>स्</u>कायन] युव-वक्क (धस्र-सुद्दावय वि [सुद्धायक] स्मर वेको (धरवा ४६४ मणि)। सहाधिक कि [सुभाषित] १ यन्त्रक क्ल (पर्या १ १ — पत्र १) । २ व स्वयर क्या, सुख (च कर्श लूना दश्य) । स्विति मि सिकिए ] पूक्का (पूपा ६११ \*88) i सुदि १५ [सुद्रप्त] मिन्द्र शोसा (स ४ सक्रिया रे-पन रेपरे शाया ! २---पर का चार का सुर ४ करा सूचा १ ७ ४१६, जमी २६, ब्रुट २ ११४ मुहिन वि [सुक्ति] तुवी दुव-दुक्त (दे २, का को प्रदेश कुछ ४ ६३ क्या कुमा) ३ सुम्बद्धम [सुम्बित] १ तुम्र (के२ ⊲)। २ तृत्वर हिश्रवाका (वर्ग २)। सुविद्व वि [सुब्राप्ट] परि वृद्धि (ज्य ७५० की) । सुविर वेको सुसिरा 'प्रमुखनेतो पूर्वा धेती गुहिरं व चरतानागृहि' (वर्गीन १२४) र्षमा) ।

सुर्ग-सूत्र ्यो [मुद्दिरच्या चिपन्न] मु**हिरण्या** सक्रिर्णिया र बनस्यति-विरोध, पुष्पनागम महिरक्षिया ) दूध-विशेष (राम ११) एन पर्ह् १७--पत्र ५२१)। सविधेमण वि सिद्धीमनस् विकल्प बन्जान, बरिक्स शर्यमन्दा (सूम १ ४ ८ १७ सम्)ः सुविधिया केनो सुवैधिः 'बुविधियं प्रदिनं / रखं युख्यों (मत १४२)। सुद्धी वि [सुन्नी] पीक्य, विद्यान (विर्वर ४ )। सहम वि [पुरुम] १ शारीक सम्बन्ध केये। २ धीमण (के १११ २, ११६३ क्वा भी १४)। १ वृं भारत वर्ष के एक प्राणी कुलकर पुरुष (सम १६६) ४ एकेलिय वीव-विकेष (साद्यं काम ४२ ६)। ६ ग, कर्म-निरोप (सम ६ )। संपर्या संबद्धव दुव ["संपराय] १ शारिक विकेप (बा १, २-- २व १२२) । २ वर्गा प्रक स्थानक (सम २६) । देशो सम्बद्ध सुद्दस 🖺 सुहुष वि [सुहुत] सच्छे तयह होय विक इया (बर २० दी। कप्पा ग्रीप) । अहेडि की दि सम्बद्धेकि मुख्य मार्ग्य नका(वेब, ६६) पामाचा १ व २११ २५१: २००: ३६ : १११, वरेप व ७२) । सुद्द्धि वि [सुद्धैपिन्] क्षुवानिवानी (क्षुवा २२७)। स् य, क्लिं-शूचन यध्य (शह) । सुध तक [सूचय ] १ तूकता करवा । ९ बालना ३ ६ ब्रह्म करुद्र । सूर्युक्त सूर्वाक सूपनी (विशे १९६७: स १४७; वस्य; निश ४१७) । कर्ने सुप्रम्बद् (वा १२१) । वर्ष-स्वंत स्वधंत (स्वकः स १६६)। क्लार भुइत्रांत (शाय ६ १)। इ. सुपश्रम (ह ર રવ) ક सुख पुँ [सूद] रक्षोदम्ब (महा)। स्म 🛊 [स्व] १ सार्थः, रव हाल्केशवा (पत्र्य)। १ वि प्रमुख, निस्नवे कमा दिन शो नहां पु(१ स्)ब्यकेन्य सङ्गरप् (तुम १ ३ २ ११) । भाद क्ष [\*हत] रूवण बैन धंप-प्रमा (सूप्रमि १) ।

११६ पत्रम २ १७३)। देखो से अस्ति ।

सेंश्रंस रेको सभ ≃वेयस् (स ४ ४—पद

सेम्रज न [सप्त] हेरू सावना (दुमाः प्राप

४७ सामा १ ११—पद १व१ मुपा

१ ६)। यह दू [प्य] गोड (धाया रु

सुअपन १९ [सचन ही १ सना व शिका

शासा १ १---पण २२)। २ वि सीयने :

सेश्रविय पि [संवर्गाय] वैशा वीत्य, वष्ठ

शिक्तायों सेमनियस्य विश्वि' (पूर्व १ १, १

सभविषा थी [ब्देनविद्य] दववार्व देश को ।

प्राचीन राजवानी (विकार १ पर रेकर,

सेजा की [चेतना] बढेरान (नृत्र १ १)।

संभा रेजो सेवा (नार-अव ६२) ।

सेभगय } स पृष्ठ हाथा (शा २६४ ध

बाला (द्वा) । ब्लो सचत्रय ।

२६१) ।

१ (हा पु

1837

४६) हुमा) ।

\$\$) 1

A-42 48x) 1

सभ दु[स्वव्] पद्मीना (या १७८३ वे ४

सम्पृ[सेक] स्थन शीवना (वै ६४८ था

सेभ व [भेयस ] १ श्रुप क्रवाण (मण)।

रेवमें। १ बुक्ति मोलं (हेर १२)। ४

वि पांत प्रशस्त व्यक्तिसम् शूमा 'दम संग

मारि देवां (वंशा १४ कुमा वंश १६)।

¥भ दि सिञ्जो सक्तन कान-पूर्व (भग %

में अर्थि [१४४ ] १ युक्त सफेद (छाया १

रै—पत्र द्रम्, सम्बद्धः, स्वः)। २ 🖞

एक रन्द्र, कुमंड-निकास के बर्जिए दिशा मा । भा (ठा२, ६ — यम ८१) । वे शक्र मा

<sup>बड-हेना</sup> का प्रवित्रति (६६)। ४ वामन

<sup>प्रता</sup> नम्यो का एक सामा, जिसने मनवान्

बहाबीर के पाप बीधा की की (अ य-पत्र 114

१ दे प्रशेषम् का शुक्षय मुद्रवं (गुज्ज १

परेश हमा रश ग्रीम ६६)।

सेपय वि [सेयफ] वेबान्दर्स (बन्द ८१) ।

संबूद देवो सिंबूद (प्रायः वीच ६)।

सेंघप रची (सघप (विक ८६) ।

£1) I

सेंभ देवो सिभ (इस रि २६७)।

(बाद २०) । रखी सभपय ।

(निम) । रची सेम = रनेन ।

स्वामी गृहस्य (पण बार) ।

सैंभिय रेवा सिमिय (मव' पि २६७)।

सेंबाहर दे [दे] पुटकी की माक्षत (दे व

स्वप्य व [स्वयनक] विषय विद्वार

सचाण (६व) वृं [रयन] धन विध्य

संब न [सैस्य] धोवान ४६१९न (भार) ।

सञ्ज रको सेन्सा। यह वृ[वात] वहति-

साजीभव क्यों सिजीभव (क्या दर्शन है

सेजंस दू [अयांस] १ ग्याप्टरे मिन्हर का

शाम (तम ६३ वम) । २ एक सक-पूत्र

सुरक्षप पु [वे] विन विकस (वे

प्रक्रकीय ३ ४० राज)।

यष्)।

बीच व दिविया द्वाप-विशेष (इक) । "देश पु विवा पायामि अस्तिराती-कान में होने-बासै मारतवर्षं के बूसरे जिनवेब (क्षम १९३)। प्रमुचि भी ["प्रक्रांति] एक भैग प्रशास-इंब (द्या ३ २--पत्र १२६) । परिचेस प्र ["परिवर्ष] नेव ग्राप्ति हे होता सूबे का क्य-मान्सर मेक्स (चरतु १२)। प्रकास पु ["पर्नेत] पर्नेत-निक्टेय (ठा २ **१**र—पण स्था की विपासी पूर्व के किएए। श्चे होश्याची एकोई (कुत्र ६१)। य्यस पुन ["प्रस] एक केर-विभाग (सम १)। व्यक्षा प्रभा प्रभा दिया दि तुर्वे की एक बार-महिपी (इक खाना र--पश २४२)। २ ग्यारक्ष्म जिनकेन की कैका-क्रिमिका (सम. १५१)। ३ प्राप्तकों निमकेत की शैक्का-रिजिक्स (विचार १२१) । महिला 🗱 ["मिक्कियाँ] बनहर्गत-विदेश (राम ४६)। "सास्त्रिमा **था** "मास्त्रिना" यामर<del>ू विदेश</del> (बीप)। ब्रेस कु [केर्य] एक का निमान (बम १) । वृक्तय न (बक्तव्य) बामुच्छ-विकेप (प्रीप) । बर पू [बर] र एक द्वीप । २ एक स्थार (पुत्रव १६)। क्रियास १ विराधभासी १ ग्रीप विदेव। २ समुद्र-विदेव (भूग्य १३)। विक्री की विक्री नवा-विकेष (पर्वता १----बम १९)। दिस पू [दिस] एक राज दुवार (क्य १ ११ द्वी) । "खिल दुव [श्राह्म] एक देव-विमान (सन १ )। मिंह 🗗 [सुद्र] एक वेष-विवास (सम १)। स्तिरी की भिी क्राउने पडमती शीकी (सम (६२)। सुक्र पु[म्<sub>र</sub>त] क्षेत्रवर सह (हार-पूजा १६२)। सा पून [भ] एक वैन-विमान (शम 🕼 🖙 १६७) । "मच पुन ["मठ"] युक्त केर | निवान (बन १) । देखी सुद्धा । म्रांग र्व [४] प्रधेप, धैपक (वे इक् )। **६६गम १ [मुराक्वण] एक राजा (क्व** 2 22 a) 1 भूरत्र पूं [र्व. भूरण] शमान्तिक भूरत, बाल

(वेक, प्रशास्त्र र न्या १६ एक १६

44,441 2, 9 ) 1

केन का विद्वारत (राज १४): "वास्त वृं [ | मर्त ] मेर वर्गत (मुण्य १। इफ्) "| यूरण पुं [ीजरण] मेह पर्नेश (मुज्ज ४ इक) । मृरिक्ष 4 कि] स्वनुष पथ (?) 'काई वे बंधी मर्श कि साबिक्य गुरिवास समावधी नेव" (स प्रशः) । शृरिस वेको सुद्धरिस (है १ व)। स्रचरवरिसग (न [स्येचशक्तसङ] एक देव-विमान (सम १ )। स्रुक्ति वेशो सूर्यक्त (एव व ये)। स्राव पु [रूराव] एक समूत्र (गुक्त ११)। स्रोदय ४ [स्रोदय] नयर-विशेष (वज्रव tat) i स्रोपराग पू [स्रापराग] नृतं-गर्य (थम) । सून ईव [शूक्र] १ सोहे का सुब्रोहल कांटा, सूची (दिना १ ६--वप १३३ दीन) । समा-विकेप विश्वल (क्यूड १ १---वन १०० कुमा)। १ शेव-विदेश (ब्रागू१ ६)। ४ बहुत साथि पः धीस्का सम सायशाला कोटा

सुरक्षि पुंची [वे] १ मध्यान, बुपहर का समय (वे = १७- वड़ )। २ चीठ-विशेष महान के समान साक्रितिनामा कीट (वे व १७)। ६ तुल्-निष्टेश यामग्री नामकं पूल् (दे व सूरि पू [सूरि] बाषार्व (भी १ छछ)। भृतिकः वि [श्रद्धां] चीचा ह्वारा (प्रुपा) । लुरिम केलो सुला (इ. ए. १ ७) सम ३६/ मर तप ७२≡ थे)। **इंत पू** [\*घन्त] प्रवेशि-नामक राजा का पूच (भव ११ ६--वर १,१४ दुव १४६)। क्वाओ ["भ्रम्ता] प्रदेशी एना भी पत्नी (**प्र**प १४६) । यूग पुंची िपाकी वर्ष के दाप धे होन्देवाओं रही दें (पूत्र ७)। की ना (कुन ६०)। जस्सा ध्ये [फेर्या] सूर्व की प्रमा (मुक्त र-∼नन ७६) । । सार्दिमा} रे प्रवम के बोकका एक देव (राम १४) वर्गकि रे} । २ पूं≉ एक देव-विमाव । ३ व् धूर्याम

Y41

भूपा—सूसिय (ब्रुप्र १७) । वृं व केल-विशेष (पत्रम १ व ६१) । पाणि पु ["पाणि] स<del>थ विधे</del>य (कमै १)। घर पूर् ["घर] दिन महादेन (Tin) 1 स्क्रथ्यान [दे] परनमः क्रोसः वालावः (रे # Y3) I स्बस्याधिकी [वे] वराधी पार्वधी (वे व स्वा 🕸 [श्वा] तूमी वरोध्य वाक्ष्यंत्र (बा ६४' वर १११ दी वर्षीन ११७)। इ्यावि [चित्र विग] तूकी परचक्रमा ह्या (साम्रा १ ६--पर ११६) १६६) यम (१४)। स्वाधी हि वेश्वा शपमा (वे व 41)1 सुद्धि वि [सुद्धित्] १ जून-रोजनला 🔫 विवर्ष सुवीरों (वि ३)) २ ई रिण महाके

(शम्प) । स्क्रिया 🗯 [शुक्तिक्ष] सूनी विकार वन्त्र को चढ़ाना वाला है (पर)ह १ १---पन 4) ( सुब वूं [सूप] शब (क्या; मोन ४१४ वार रे/ विश्व रेरेड यंचा १ १७)। चार (र वृ [कार] रहोहस श्लोतं वंक्लेगका बीकर (परम ११३ ७ दुर १६ ३४)

क्य १९)। स्य शक [ राप् ] स्वमा । सूच्य, सूर्वीय, मुंबर्ड (हे ४ नहेदा प्राष्ट्र देश क्रिया हेक्स) है है (४४) ह

शुसर वि [सुस्मर] १ मुक्तर मानावनम्बा (पुर १६, ४६)। २ श भागमने का एक मेक जिससे भूतर स्वर की प्रान्ति हो पह क्ती (वर्तेचे ६२ । मानव २३: कम्म 📞 २२) । परिश्वादियों श्री ["परिधादिनी] युक्त तरहा की बीरशा (प्रशाह के १-- पर 844) t मुक्षास वि [साध्यक्षास] अर्थ स्वापनाया

(इ. १ १६०५ इस्सा) । स्थित व [शोपित] नुवास हमा (तर

देश दल हैं।

हुन्छ । २ दश्यों तरह बात (बज्जा १ ६) ।

६ 4 देशक प्रन्य-विशेष (बज्जा १ ६)। सूदम रे देवो सुभग (देखि २ स्रोहेष १ ११२ रे१२)। सं रेको सेअ = स्वेड । बढ पू ["पट] श्वेतास्वर केन (सम्मदा १३७) । से व [र] शन सर्वो का सूचक क्रम्पन--१ शास्य का उपन्यासः । २ प्रका (अगः १ १ उदा)। १ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श (बत्त २ ४ वरि)। ४ झक्त्वरता (ठा र —ाम ४६१)। से } सक [शी] सोना। तेर, समझ सेम ( वर् )। सेल एक [सिम्] शोचनः। सेमद् (है। 1 (85 8 संख दु [दे] गखनति बखेर (वे स. ४२)। सेक्ष पू [सेय] १ कर्रम कावो पंक (सूम २१ राष्ट्रांबा ११—पत्र ६३)। २ एक प्रथम मनुष्य-आति 'बंदाका मुद्रिया हैमा वे धाने पावकाम्मास्त्रों (हा ७—पत्र 1 (838 संअर्थ [स्वेद] पढ़ीना (वा २७६३ हे ४ ४६ कुमा)। सम्बद्ध [सेक] सेक्न श्रीवतः (नै ६४८ ना **४६६ हेमा ६६: मानि ६६)** । सेम न [श्रेयस\_] १ श्रुय कम्यास (श्रव)। २ वर्षा ३ सूचिक मोक्स (इ.१. ३२)। ४ नि प्रति प्रशस्त प्रतिशय गुरु 'इन सेन मोवि सेवा' (वेबा ० १४' क्रमाः वेब २६)। म पू. वाहोराम का बुखरा श्रातं (मुज्या १ 1 (#3

पाइअसइमहण्यवी राज र)ः ५८ ई [सण्ठ] भूतातन्त्र नामक इन्त्र के महिप-गीय का प्रक्रिति (ठा ४ १<sup>----पण</sup> १ २) इक) । प**ड सड** दुं[पट] चेतालर **मै**न पैन का एक क्षेत्रकाय (मुपा ६४१ विस २४०४ धर्मधं ११ ६) । संभ वि [ एट्यम् ] घाषाची भविष्या 'पमृ र्ग नित केवली सेमकालिस वि रीमु केव धागासपरेसेसु इल्लं वा शाव धामाहिताओं चिट्ठित्तए' (यग ४ ४---यण २२वः झ १०--पण ४१४ व्यक्त २१) । विकर्त [\*হান্ত] খৰিতাকান (ঘণ রত বং ৬१)। संसंबर दु [अयस्कर] क्योतिया प्रहासिरोप (धार १—पत्रक्ष)। सेमंबार वृं [अयस्वार] वेय-करण 'वेयस्' का उचारण (ठा१०---वत्र ४६४)। सेअंवर वृं [केवास्वर] १ एक केन संप्रशय (वं २ सम्मत १२३ मुना १६६)। २ व सकेत मझ (परम ६६ म् )। सेअंस पु [केवांस] १ एक चन-पुनार (क्छ १५) । २ चतुर्व सामुदेव तमा वसदेव के पूर्व काम के वर्ग प्रक-एक केन ग्रुनि (सन ११६ वजम २ १७६) । देखी सेर्जिस । सेअंस देशों सेज = भवस् (ठा४४—पत्र २६६) । सेअज न [सेपन] हेक होषना (कुमा; पनि ४७ क्यांग १ ११—वश् १०१ः पुना १ ६)। यह दु [प्या] ग्रेड (धार्वा २) १ २)। संध्यमा } पृ[संचनक] १ रागा वेशिक संध्यमा } का एक हाना (सा २९४ ध शहासा १ १००० वस् । २ वि. सीचने-बाबा (दुमा) । देखो सेबाग्य । सेअविय वि [सेवनाय] हेवा योग्य, व्य सिक्**ब**को सेपनियस्य बिचि (नूप १ ६, १ 8)1 रोखपियां की [चीतनिका] वेकवार्व देश की प्राचीन राजवानी (विकार १ पव २७१, सेवा को [बोराता] तकेदरण (पुत्र १ १)।

सेभा देवो सेवा (गाउ-वित १२)।

सेआछ देशो सेवाल = रोगान (से २ ६१) । सेआल रेको सेथ ।ळ = एप्पत्-पत । सेआ छ र्वृद्धि १ सव का मुख्या। २ संभिन्य करनेवासा यक्ष धावि (दे व १८)। व क्रवज, बोबी करनवासा यूक्टब (वाघ) । सेआबी थी [दे] दुवर्, दूव दूम (वे ८ २७)। संआलुम दू [दे] मनौती भी सिद्ध के विए सरहा बेस (वे स ४४)। सङ्घ र [स्वित्ति] पर्शाना (भवि)। सेइबा १ औ [सेतिका] परिमाण-विधेय, सेंझ्या वे प्रचित्र नी एक नाप (तेतु २६ लप द ११७ मागू १५१)। सेड दुन [सेतु] १ वॉव दुव (से ६ १७० कृत्र २९ कृमा)। २ दशकाला कियायै वांक्का । वे कियारी के पानी सं सींकी सोग्स **बं**स (धीप, छाया १ १टी--पत्र १)। ¥ मार्ग(ग्रीफ छामा १ १ ठी—पत्र १ कम बर्ट) । "बीम पुं ["ब"म] पुत बोबना (क ६, १७)। सह वृ [ पभ] पुस्ताना मार्ग (से **ड १**८) । सेड वि [सेक्ट्र] स्वड स्थित करनेवास्य (क्य ८१)। सेत्रय वि [सेवक] स्वान्दर्स (कप्प ८६) ३ सॅशूर देको सिंदूर (माज संवि ३) । सेंचय देशो सिंधव (नित्र वर)। सेंग देशों सिंग (३१० नि २६७)। सुँसिय देखो सिंभिय (मयः पि २५७)। सेंबाइय वूं [व] पुटबर नी मानाव (वे व 48) ( सेपायस त [सेचनफ] सिषद पिड्डाव (बोद् २७) । रेखो सेक्षमय । सेचाय (६प) र् [१येन] प्रश्व-विधेष (पिन) । रेबो सेण = स्पेन । सेच व [ईस्प] रोतपन ठंडापन (प्राप्त) १ सेका क्यों सेळा। यह पृ[पात] वस्ति-स्वामी मृहस्य (पष व४)। सेकांश्व रेका सिर्जामप (क्रम्य) रवनि १ 1 (53 सेझंस पूर्व [केंबांस] १ ग्या**ध्**र जिनके का नाम (सम बच्छे कम्म) । २ एक सक-पुत्र

**७—यत्र २३**४) ।

सेम वि [सेज] सक्त्य कम्पनूक (मा ३,

सम वि [स्वतं] १ दुवन सक्य (णाया १

रे—पत्र ४६; समि ३६) वर्ष)। २ 🖠

एक इन्द्र, क्रुमेट-निकास के ब्रिप्टिंग दिसा कादणः (ठार, ६—यव त≭्)। ६ स# की

मट-देन्य का प्रविपति (इक)। ४ सामस

मना कारी का एक राजा, जिसने अवनार्

		~- <del>-</del>
विश्वसे पानाम् ध्यानान को क्ष्युन्य से प्रकम गारता करामा वा (क्षम क्षुप २१२)। व मार्परीयं मान का बोकोचर नाम (कुब १ ११)।॥ ममनाम् महानीर का पिता राजा दिवार्ष (भाषा २ १८०६)। वेको	१४ माते हों (पडम ४६ ४)। मिय, भी, जब पंनिती सेका-प्रकार अस्वर	सेमाडिमा से [शेफाडिका] स्टानिये
सिर्वास मोक्रीस = बेबाह । सेट्यास देखों मेश्रीस = बेबस (धावम) । सेट्या की [राज्या] १ सेट विश्वीमा (ध १ १७) कुमा) । २ मक्रान वर, वस्ति उपायव	व क्योंक ८४ राज्य १४ र )। मुद्द व [सुद्ध] वह देशा सिवर्ते १ इत्यों व रह, २७ वोड़े और ४५ यादे हो (यदम १६ १)। बादु है [पिठि] देशा का मुख्या देशा-शायक (क्या राज्य वेण १	सेमुती । धी [शेमुका] वेदा, श्रीव (एव, सेमुदी ) व्याद १६३ हम्मीर १४ २३)। सेम्बू पृथ्व [स्क्रेप्यमानी क्यू. केम्बा पर्की (शृक्ष २२ पि २६७)। सेदा कि हिंदैर ] सम्बन्धी साठल लोग्ब
(क्व १३२ मुख १ १४)। यर पूँ ("तर]	- 28 · · · · · · · · ·	HELL FEEL THANKS HOW WAS

पाइअस**रमहण्य**नी

(क्व १३२ मुख १ १४)। यर पूँ [तिर] सम २७ लुगा२४४) ≀ हिवाह पू यह-स्थानी उपाध्य का मध्यक सामुकी िचिपति विश्व वर्गीक सर्व (सुरा ७३) । याने के बिए स्वान देनेवाना गुल्ल (योग सेणायचा (सैनापट्स) संस्थित समा २४२ पक्ष ११२ वंबा १७ १७)। वास का नेतरव (क्या भीप) । प विदासी धन्या ना काम करनेवाला बाकर (मुना २०४) । देखी सिद्धा । सेट्यारिक न हिं। प्रनोतन दिशेचे नै (---पथ वेश)। पूजना (देव ४६)। से दि वृद्धि अधिन् विकास

संचित्र की बिलिंदि एक्टिं। २ छन्ता(यहा)। १ कुम्बकार धावि भनुष्य-गावि (साथा १ सेणिस र् [केणिक] १ मका देश का एक केंद्र-महाजन (दे ४२, श्रम ११ छाया रंश—पत्रस्थः क्ला) । संबिध न [दे] दुध-निरोध (पर्व १—पन (अभ्य)। (明日) 1 सेणिका मेन (मिन)। संवित देवां शेजिस (संवेत ११) ।

tat) i १४६३ वज्ञा ।

का र--वर प्राप्त प्रयु रहेक क्या वेत वकार, १४८ कमा)। २ एक वैवसनि शेणिजा 🛍 [शेणिक्य] एक 🖣 प्रशिक्यश सेविका) के सिनिका कर कर एक सेपिय र् [शैनिक] बरकरी विपादि (ब सेणी की जिली देशी (महा सामा सेण्य केशी शिक्ष = केन्द्र (काश १ a---कर सेश क्यो सिश = विष (इप १६)। धेच (घप) वैश्वा सेम = वैष (५५०)। संस्था ् [राजुस्काय] एक प्रक्रिय वर्गेष (सामा १ १६ — तम २२६३ वंद) । सेंग्रंको सेध=और (१४ ३४ स्वर्

धेय देवो सेह = देह (बीप १—१० ६२)।

सेन व्यासिन=शैथ (६१ १२ : प्रमा

क्रका बुर १६,१ प्रक्रि)।

🕮 (क्यू) । क्षेत्रहरू [दे] सरश्बी एक क्लाम अप्री (सम्मच २१६)। प्रकाश राजा (सामा १ १--वर ११ ६७) सेरिय प्रिकृति पूर्व कुनम, यामी का कैन ( \* # XX) 1 धेरिम केमे सेचिइ (पुण ४ १६) वे थ ४४ थी। सेरिय पूजी वि भाद-विशेष, 'करविर्मक शेरियद्भक्तभेंह्र (स्था) 1 चेरियय प्र [वे] क्रम-निकेर (परश t--पत्र १२)। सेरिह १ की सिरिमी में सा महित (मा १७१ ७४२) गाउ-पुष्प १३४)। की **ध्री** (शम) । धेरी को बिरि बन्दी शाक्ति। २ मा माइति (देव, १७)। ६ रम्मा फ्राह्मी (सिरि ११व )। ४ यम्ब-निर्मित वर्तमी (चन)। सेरीस पून [सेरीरा] पत्र बार का नान (वी ११) । खेळ दू [रीछ] १ वर्गत वहाड़ (स २, ६१) गामा सूर ६ १२६)। २ **शासास पान**र

सेन्धंस—सेष

(स्थण ७७: निस १७) ।

सेर वि स्मिर् विकास (है र ७४) हुमा)।

सेर प कि देर परिमाय-विकेष (सिंब) ।

सेरंबी के सिराओं की विसेष, प्रमा के

वर में ध्युकर शिका-कार्य करनेवाओं स्वसन्य

(क्य १ ६१) । १ मा पत्त्रयों का **बहुद** वि

६ ११)। बार ट्रं [बार] परवर वाले

मामर रिक्शी, विचायड (असु १४६)।

।गड्त "गृह् ] एवंत में बना हुआ वर

(क्प्प) । जाया **को** ["जायाँ] ग<sup>हे</sup>

88)1 संदिया की दि सेटिशा क्लेब किया जारी (द्याना२ १ ६ ६)। सेंद्रि की भिन्नि देशों सेंद्री = वेशी (सर \$ \$100 TO \$24) 1 संदिया । देवी सेव्हिया (वह ३,३ ३४० सेश ( भी ६)। संबो को [भेपी] १ पाँछ (तम १४२) मद्या) । २ पास्य (दाणु) । ३ श्राप्टंबन गोजन केशकोटी को एक नाप (वालु tot)। धेवी संभि । संभ र् [इयन] र प्रिक्रीपर्शेष (पञ्च क थर देण ब्या वै थ४)। द विद्यापर बग्र का एक धना (परम ६, १६)। सभ देन्ये सच्या चललकारको मध्ये नर्रात मेलाई इस्थिनवाई (बारा ६ )। संजा स्ट [संना] १ क्लपान् संजननकती **नी माता (मंत्र १११) । ए व्यवस्य, हैल्य** (दुमा) । १ एक कैन कामी, जी नहीं स्तूलका नी बहित थी (कम्पा परि) । ४ वह

٤٩

(रंग)। ध्यंस पू [\*स्तम्भ] पापास का **बो**मा (क्रम्म ११ व)। पाछ वाल पू ["पाञ्च] १ पण्ण तना भूतानम्य गामक इन्हों इस एक एक सोकपास (ठा४ १ — पत्र ११७- इक) । २ एक दैनेतर वर्गानकम्बी पुस्स (सय ७ १०—पद १२३)। साल ["स] नप्र (से ३ २७)। "सिद्धर न (शिकर) परंत का शिक्षर (कृप्य) । सुखा ध्ये ["सुवा] पार्वती (पाध) । सेक्स रृषु [रीक्क] १ एक शबरि (कामा सेक्स ११ १—पत्र १४३ १११)। २ एक पत्त (पि १६६) खाया १ १—पन १६४)। पुर न ["पुर] एक नगर (सामा १ ५)। संख्या न [शैक्षकञ्ज] एक मोत्र (ठा ७---বদ ३६ হেৰ)। संबा को [रीवा] तीसरी नरफ-पूजिकी (हा **७—एव १**८० इक) । सेळाइच्य पु [शैद्धादित्य] वसक्षेपुर का एक प्रसिद्ध ध्यम (वी १६) । सेह्न पू [ रोज़ ] स्वेच्य-नारक बृद्ध-विशेष (पएछ १--पन ११)। सेक्स वृ [दे] सित्तव बुमावी (वे व २१)। सेलेय नि [रीलंय] पर्वंत में उत्पन पर्वंतीय (वर्मीव १४)। सेक्सस दु [रोहेरा]मेब पर्वंत (विसे १ ६४)। सेक्सरी को [राक्सरी] मेर की ठएइ निवस

(पण्डा (-चन ११)।
हेतेय मि [चीलय वर्षण में करणा पर्वतीय
(प्रमिष्ट १९)।
हेतेय मि [चीलय] वर्षण में करणा पर्वतीय
(प्रमिष्ट १९)।
होत्रीय मि [चीलय] क्षेत्र में करणा पर्वतीय
(प्रमिष्ट १९)।
होत्रीय द्वारिया] मेन वर्षण (मिण्डे ११)।
होत्रीय ११ १९० पुण ६११)।
होत्रीय ११ १९० पुण ६११)।
होत्रीय ११ १९० पुण ६११)।
होत्रीय में स्वर्णण स्वर्णण स्वर्णण
स्वर्ण में सेस्व = हैल 'म ह विज्ञ्य हाल्ला
स्वर्ण हेल्ल मिन प्रसित्तपुरिय' (प्रमा ११)।
होत्रीय १ वि १ मुस्तिलु । २ हर, माण्ड
हेल्ल मिन प्रसित्तपुरिय' (प्रमा ११)।
होत्रीय १ वि १ मुस्तिलु । २ हर, माण्ड
हेल्ल १ १ स्वर्णण १ १ १००० माण्ड
हेल्ल १ विह्नायों प्रमा हिल्ला १ १ १०००।
होत्रीय १ विह्नायों प्रमा हिल्ला १ १०००।
होत्रीय १ विह्नायों प्रमा हिल्ला १ १०००।
होत्रीय १ विह्नायों प्रमा हिल्ला १ १०००।

सेक्जि की [दे] रज्जू, रस्सी (बच २७ ७)। सेव सक [सेथ] १ बासका करना। २ धापय करना । १ उपमोप करना । नेक्ट् सेक्ष् (झाचा उव महा)। भूका सेक्षिका क्षेत्रमु (साका)। वह सेवमाण (सम ३३: भग)। इन्ह सेविज्ञंत, सेविज्ञमाण (सुर १२ १३१ कृष्ण)। संक्र सेविक, सेविचा (मारु—मुच्च २५१८ चाना)। **इ.** सेसंबब्ध (मुवा ४१७ दुवा) सेवणिय (तुपा ११७)। सेवन देवो सेवय (पंचा ११ ४१)। सेवह रेको से = लेत। संबंग न [संबन] १ सीना सिवाई करना (क्य प्र १२३)। २ छेवा (श्व १६, १)। सेवणगा र की [सेवना] सेवा (उत्त २६, संबंधा रियम हरे)। सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता (दुप्र ४ २)। २ वृ नीकर, भूष्य (पामा कुम ४ २ सुपा द ३२)। सेवछ न [श्रीवछ] देवार, देवान, एक प्रकार की बास जो नवियों में सकती है (पास)। सेवाकी [सेवा] १ वजन पर्द्रपासना शक्ति। २ उपयोगः १ मानमः। ४ मारपनन (हेर ११ कुमा)। सवाड १ न [रीपाछ ] १ सेनाय, सेनाथ सेवाळ वास विशेष (एव प्रश्व पाय, भी ६) । २ पूँ एक तापस विसको **गी**तम स्वामी ने प्रक्रियोध किया था (पूत्र २६३)। |व्याद प्रं [ दिशायाम्] सम्मान महामीर क समय का एक समिन पुरुष (सन ७ १०--पथ १२६) । सेवाछ पूंचि] पक्क भारा कांदी (वे व ४६) सेबाकि र्डु [रीपाकिम्] एक तापक्ष विसको गीतम स्वामी ने प्रतिबोध किया वा (उप १४२ थे)।

क्षिया हुया (सिंच व रहे)।
व्याद्ध (सिंच व रहे)।
वेद्ध (सिंच व रहे)।

सेविय वि सिविती विश्वकी सेवा की नर्दे हो वह (काष)। सेव्या देवो सेवा (हे २ १६४ प्राप्त) । सेस वृं[ग्रोप] १ क्षेप-नाग मर्प सक् (व २ २८)। २ सन्दका एक भेद (पिंग)। ३ विशवसिष्ट याकी का (ठा३ १ टी~~ पण ११४३ वसनि १ १६४' है १ १०२ भउड)। सङ्, यई की ["यना] १ सातने बसुबेब की माठा (सम १४२)। २ वश्चिया वचक वर रहनेवाली एक विषक्तमारी देवी (ठा ८---रव ४३६ इष्ठ) । ३ वस्तो-विशेष (पर्या १---पत्र ६६)। ४ मस्वान् महावीर को बौदिकी—पुन्नीकी पुनी (भाषा २१४, १६)। यन [यत्] घनुमान का एक वेद (बालु २१२)। स्ताम पूं ["राज] क्टब-विशेष (पिय) । सेखब व [श्रीक्षव] बात्यामस्या (दे ७ ७६)। सेंसा 🐿 [फ़ेपा] निर्मान्य (छर ७२० धै खिरि ५५६)। सैसिक्ष वि [ग्रंपिव] १ बाकी वनाया हुन्ना (बाध्६१) । २ ब्रह्म क्रिया ह्या वतन किया द्वारा (विशे ३ २६)। सेसिक वि [इस्पित] संबद्ध किया हमा, चिपकाया हुमा (विते १ ६६) । सेड् शक [ नञ् ] पतायन करना, भागना । संहद (हे ४ १७८ ड्रमा)। सेंद्र तक [शिक्षय] १ विवास सीक रैमाः २ धनाक∪ता। तेइति (सूप्राः २ १ ११)। ववक सेहिक्षांत (तुपा १४१)। सेंद्र वृद्धि सेंद्र] प्रवपरिसर्व की एक बाहि साबी जिसके शरीर में काटे हीते हैं (पबाह १ १—पच वा पर्छ १—पत्र १६)। सेंब प्रशिक्षी १ नव-बीभिय साबु (नय १ व १ ६ सम प्रया घोष १६५, १७०० वन कत)। २ जिसको दीसादी भागनानी हो नह (पद १ ७)। ३ हिन्दा चेसा(मुख १ १३)। सेंद्र पू सिघाँ पिक्र (स्वा) ।

विसने संस्थान स्मरियात को इस<del>्</del>टा है। ब्रम्म पारला कराया वा (रप्प- रूप्र २१९) । ३ मार्पदीर्थमास का घोकोत्तर नाम (नृज्ञ १३) १ ८ धनवानु महानीर का निवा शका विकार्ष (याचा २ १६ १) । देखी विश्रांत संभीत व सेवात । क्षेत्रस देखो सर्थम = वेयन (प्रावम) । क्षेत्राची शिष्या र प्रज विक्रीमा (से १ १७। जुला) । २ सकार वट, ब्लिट ज्यापन (पन १४२ गुज १ १४)। यर वै [कर] ब्रह्म-स्वामी अपासम का मधीनक साब की रहने के निए स्वान देशवाला गृहस्य (योज २४२ वह ११६ वंबा १७ १७)। वास्त पु ("पाठ) धन्य ना नाथ करनेनाना

मार्कर (मुना ६८७) । देखी सिक्या । सैजारिक १ दि यन्तेतन विशेषे में मूलना (देव ४६)। श्चर्दिद् दिन्न हिन्दी और का कृत्विस देळ-महाजन (दे ४२ तम ४१) स्ताबा १ १--वर १६ छवा)।

संदिय न दिने एए-विरोध (बर्फ १---पण 11)1 सहिया की हि संदिशी एकेंद्र विदेश जारी (श्राचार १६६३)। संदि भी [भन्नि] देखों संद्री = मेल्री (नूर

\$ {wi 2 224); संदिया। देवो संदिया(दस ६ १ ६४० सेवा ( बी १)।

संक्षे क्री [भर्जा] १ वॅडि (इन १४२) महा) । ९ स्त्रीय (क्षत्र) । ६ वार्यस्य योज्या क्षमाकोटी की एक शहर (बालु to b)। रेको सक्ति।

संज र् इयनी र र्वाच-विशेष (वड्य ६, se ga way 1 Ash i didina बस का एक राजा (पराव ६, १६) । स्था देश संप्र्या महास्त्रात्तवहो नरहि नरिः

भणाई इत्तिवस्थाई (धारा ६ )।

समा 🖨 [सना] १ क्यशन् वंबस्तावनी शी वाक्षा (बच १६६) । २ करकर, रीव्य (रूपा) । ३ एक पैन बाज्यो, को गश्चि स्तूनक्द की बहिन की (क्षण) की) । ४ वह

बरकर जिसमें १ हानी १ एक १ जीवे भीर १६ व्याहे हों (पडम १६ ६)। विषय, की काथ वं िंती सेमा-परित परकर का मक्रिया। 'हेलाशियोर्डि ताहे येलश विशेषा नुस्तदस्य (पद्म ६ ७७ सुपा धर्मीर बर- परम १४ २ )। सह न "मुक्की बहु केवा शिसमें र हाकी र रब २७ बोड़े सीर ४१ व्यावे ही (पडम १६१)। तह्रु ["पशि] छेना का युक्तिया केना-भावक (कम्पा प्रवस देश २ क्षम र⊌-धुना ६६)। क्रिमश्च <sup>व</sup> विपति वि वि पूर्वास्त वर्ष (तूपा ७६) । शेणायम् । सिन्धपत्र । स्थारतिकः स्था का नैतृस्य (कथा धीप) । सेप्पिकी भिजि १ पेकि । २ समूह (यहा)। ३ ⊈म्बदार धादि प्रमुख-वाति (छाता १ १--पद ३७)। संजिम पं कि जिकी १ मक्त के का एक प्रकार रामा (छाया १ १−-वद ११ ३७। ब्र रे—पन ४३३८ स्य ११४४ स्मात्र बीट परम १, ११३ कुमा)। २ एक दैव दुनि (कम्प) । सेणिमा को सिणिया देन केन प्रतिन्ताका (**क**म) 1 संबिधा ) को [संनिज्ञ] कर क एक संविधा } नेप (पिन)।

रांणिग वेबा सेपिश (संबोध ६४)। सेपिय र [रीनिक] सरक्री क्रिपाही (क सेणां की मियी देशों सेण (मात सामा 1 111 सेष्ण केशो सिमा = ग्रैन्य (सामा १ —-पच \$ 441 ass) 1

सेच वेको सिना = विक (दूब १६) । सेच (घप) रेको संभ = पैरा (पिन) । सेल्ज र् [राजुरू अय] एक प्रक्रिय वर्गत (छान्द्र १६—नप्र २२६ः वंत)। संदर्भेगो सेअः≂लेव (१४ ३४-सम्ब

14)1 संभ वेको सेइा≖केइ (बीव २—पत्र ४२)।

सेचाध्यो निज्ञ=शैन्य (१११५) दुनाः कका पुर १२, १ ४ वि)।

येण्ड } केवी सेम्ब (इ.२४१) वर् द्वमा सेन्ड } शक्त २१)। स्रोपह पून (बाफ पूक्त-चिक्क, जिन (बाक्र १४)। सेमादिका की [शेफाकिका] तटा-विटेव (हेर २३६ शक्त १४) । सेमसी ) श्री [शंसुपी] नेवा इदि (धव

सेमही है का व देश हम्मीर रूप रेश)। होम्ब वृद्ध शिक्षप्राम् ] क्या केन्द्रा स**क्त**े (बाह्र १२) पि २६ )। सेर वि स्थिर ने सम्बद्धाः स्थलन संग्र (स्टब्स ४७) विक १७) । सेर वि स्मिर् विकल्पर (हे २ ७ । कुमा)। धेर पु दि ] हेर, गरिम्राया-विकेश (सिंग) । सेर्रभी की सिर्फी किश्विक कर के वर में धाकर रिका-मार्थ करनेवाची शरण की (क्यू)।

सेराइ द्र [दे] धरर की एक इतन कार्य (सम्बच २१६)। सेरिय इ. हिंदि पूर्व क्षाब, मानी का केंद्र ( = XX) 1 सेरिम देवां सेटिइ (तुवा व ११ देव

४४ दी। सेरिय पूजी हि | शाद-विशेद, 'कर्यंडर्गक शेरिमधुक्तिहैं (स्थ) । धेरियथ १ 👔 🗫 भिग्ने (न्यल १— वस १२)।

सेरिक १ की सिरिमी भेंडा अमेर (व १७२- ७४२) सह—हुन्स १३३)। 🕏 श्री (बाध)। सेरी आहे दिहे । सन्ती शक्तकी । १वड शाकृति (देव १७)। १ राज्या, प्रश्ना (शिरि ११८)। ४ क्या-निविध नर्दनी (पन)।

सेरीस प्रवस्तिरीशी एक योग वा वान (eft 8 8) a संस्कृत [रीख] १ पर्वत च्यान (वे २, १३) मामा नुर ६ २२१)। २ वरणाचा क्लार (बर १३१) । इन सरवर्षे का **बद्धा** (है

६ ११)। बार व [कार] शबर मने नावा रिक्शी रिज्यावड (यस १४३)) त्येद व ['गूद] पर्वत में क्या [या वर (क्य) । जायां भ्रो ["जाया] ध

(छाया १ ६ -- पत्र १ ६)।

२६ ६ स २४)।

सोगंधिया को सिंगिधिया नवरी-विशेष

सोमाइ देखो सुमाइ (उन्ह २० ६ पडम

सोगमङ रेको सोअसङ (दस २ ४)।

सोमाह (१) यह व्रि+स्] परला फैसमा । सोरवाहद् (बात्वा १३६) । सोच देशो साभ≖गुण्। बङ्क सोपंत, सोपमाण (नाट-भूज्य २०१ छाया १ र-पत्र ४७)। **संद्र,** सोचिक**ण इरप**गए पारेग्नमिश्ररबरोश घोनिवधी रागा (स १६७)। ३ साम् (उन्)। सोपिय वि शिचित्री दृढ किया ह्या प्रवानित (स १४८)। संब क्षेत्र साच। ਦੀਖ स्त्रेका देशो सुण=धुः सोच्छ" । सोष्मिम देवी सोरिधक (इन) । स्पेबल्य । न [सीखन्य] युवनक संबनका सोबभ क्रिमनसी (उप ७२८ ही) सुर १. 1 (57 सोळ क्यो सोरिस = तीर्य (प्राष्ट्र १६)। स्रोक्त वि [शोध्य] सूद्धि-योग्य, शोक्नोय (दुव १ ६ दी)। स्रोगमस्य पृष्टि] रजक क्षोकी (पास)। देवो सुरमस्य । घोडिम देवो सोंडिस (स्पूर १४)। स्वीर वि शोटीर देशो सीहीर = गीगशिर (क्या गीर मोहर ४ क्या बाद ६६)। धोडीर व [फीटीचें] देखो सोंडीर = गीवडीयें (Zeil gif A. S. St St Antient माक्र ११)। धोड वि [सांड] सङ्ग किया हुम्स (बर २९४ दे; बाध्या १६७) । सोदध्य सोदं } देशो सद्द = सह । स्प्रेण वि [श्रोण] बात एक वर्णवासा (पाप) । सोपंत्र कि सीनन्दी विकाशिका विपाद (मदार ४—नम् ७०। सीर संदूर)।

सोपहित्र रिहीनकिक] १ धान-पायक । २ क्लों से शिकार करनेवाला (स २४३)। सोजार देखो सुज्जार (मा १९१ पि ६६ १६२) । सोणि सी [भोणि] क्टी कमर (कप्प उप १६६)। सत्तरान [सूत्रक] कटी-सूत्र करमनी (धीप)। सोणिअ व शिनिक क्याई (वे ६ ६२): सोणिश्र न शिष्यिती स्वर, मून (उनाः मवि)। सोणिम एं की शिणिमन् रकता बाबी (विकार≈)। सोणी को [क्षेत्री] देवते सोजि (पद्याः १ y--- तम ६०० €)। सोजीम देखों सोजिश = खेलिव, 'ब्रंबरी मंसरोसीयं स परते स पनव्य (धान्य १ ददशाविष्य)। सोध्य त [स्वयं] सोना धुवर्छ (मार्क ६ श्रीका २१)। सोज्ह देखी सुन्द = युक्त (वर् : वा ७२६)। स्रोवहा देखी सूवहा = स्मृता (संवि १४) वस्त ३७, या १ ७- काल व६३) । सोत्त न [मोत्र] कान, अवखेनिय (याचा, एकः विकासकः)। सोत्त देखी साक्ष=श्रोतम् (हे २ ६०) मा प्रकृति १ वर क्रमा)। सोचि वेवो सुचि = गुकि (वव्ः का ६४व सोचिक्ष व [बोत्रिय] वेद्यान्यासी वाह्मण (लिंड ४३६, नाट-पुण्ड १३४' प्राप) । सोचित्र वि [सीत्रिक] १ पूप-निर्मित पूर्व का बना हुमा (योषमा वर्श्व योष ७ १) । २ सुद्रे का व्यापारी (वर्ष्यु १४६)। सोल्चम पूं [शौकिक] शिनाय बन्दु-विशेष । (४४ मन—१ फ्राफ्र) सोशिक्षमर्रे ) वी [शुक्तिरावती] वैक्स सोच्यित्रवर्ष है है से प्राचीन चनवानी (रामः इष) । सोची की दिं] नहीं (है व ४४ पर्)। सोरिय दंब [स्वस्ति] १ एक वैव-विमान (क्षेत्र १११) । २—वेषो सस्य (वीष

२१ वार४४ समि १२८३ तट-एना सोस्थित्र पुस्तिस्ति ३ । व्योतिक पह-विशेष (ठा २, १--पत्र ७०) । २ न शाक-विशेष एक प्रकार की हरित बनस्पति (पएस १--पन १४) । १--रेको सत्यक्ष सोवरियञ = स्वस्तिक (पशृष्ट् १ ४---पव ६६० खाया १ १--पत्र १४)। सोवाम 🕻 [सोवाम] रेको सोवामि सोवामणी देवा सोध्यमणी (पदम २६ < () I सोदामि र् [सीदामिन्] वमरेन के परव-क्षेत्र का वाविपति (ठा ६, १--पन **१ २)।** सोवामिणी देखों सोधामिणी (नाट---माचवी द)। सोदास ( [सीदास] एक चना (पान २२ दशे। सोघ (शी) देखों सबद = शीव (पि ६१ ए)। सोपार १ 💃 व [सापार, क] 🐯 सोपारच किछेप (पंचम ६० ६४) सुपा २७१) : २ न नवर-विशेष (सार्थ ३६ ती ११) । सार्वप्रय दि [सीवन्धव] सुक्तु बावक कवि का बनावा ह्या प्रेव (मटड) । सोस शक दिसी शोक्ता चनक्या। बोर्मित (सुन्य १६) मुक्त, बोपिन, तीर्येस (सूरुव ११)। वर्षि छोमिस्डेटि (स्था १६) । यक सोमंत्र (ए।मा १ १--पत्र २६३ क्या धीप) । सोम एक [शोमय] शोमाता शोकपुछ करना । सोमेद (मन) । बद्ध- सोमर्यंद (रि ४६ )ो धंड सोभिचा (क्य) । **धोसम विद्योगकी र ग्रेम्लेक्टा**। ९ शोगानेवासा (क्या) । सोधमा रेको सोहमा (स्वप्न ४१) । सोभण वेको सोहण = कोमन (परम ७० १६ स्वय ४१)। स्रोभा देवो सोहा≔रोमा (पाष्ट्र १७) उत्त २१ = क्या शुरुव १६)।

(तथा)।

(उप)।

वहबंदमाराज्येहणायो कापी परिन्दहे वर्रिव सेंबर दे शिक्सरी १ शिकाः 'कनसेंबर्च' (विड १६१ पाप)। २ सम्बन्धिय (निव)। १

मस्तक-स्वित माबा (बूमा) । सेहरम र् [दे] बहराक पत्री (दे व ४३) । संवार्तिमा देवो संगाबिमा (लग ६३

स ४१२। दुवा हे १ २३६)। सेहाकी की [ शंफाक्षी ] बता-विशेष (वे ೬ ∀) | सेबात क्यो सेंड = रिजन । नेक्स केंड (पि ३२३)। पनि संहानेदिति (सीप)। संक्र

सेहाबेचा (१६ १०२) । हेड सेहाबेचय (क्त) । इ. संदावेयस्य (मत १६ ) । सेहार्विभ वि शिक्षित | विद्याल ह्या (भन्द्र ग्राम्य १ १ -- पत्र ६ ३ पि १२६)।

सेडि रेबो सिद्धि (घाषा) । सेहिज रि [संदेक] १ ग्रुक-शम्बन्ध । २ निव्यक्ति-पंदन्ती (सूध १ १ २, २)।

सेविक वि वि] का क्या इया (वे = १)। स्रोधक [स्रो १ श्रक्त क्लाना। २ पीका क्रम्प्राः १ मन्त्रन करनाः ४ वद् स्नाव करुद्ध। सोद्द (वड्)।

स्रो ) सक लिय ] सोन्ध तुलनाः सोद् सोअ प्रेन्सर (गला १२७) बाङ् ६६) । सोभ पर [शुप्] १ सेव करना २ तुन्नि करवा। शोमद, होय्द शोदीत शीयीत (वे t to ta v a new, one two १७१, तूम २ २ ११): 📦 सीईट सार्थेष (क्य १४६ की प्रस्त ११० ६३) । क्षक सार्व्यत (स्य) । इ साक्रमिक सोमणीम सोइयब्द (बिंध १ ४, तुच ४ श परम ६ ६३) । देवो स्रोच ∞ सुन्। सोम व [शीच] १ शुद्धि, पनित्रता निर्मेदता

(बायम बीर गुर र ६२, वर ७६० डी-मुरा २०१) । २ चीचे का समझ्य वरनाव्य हाम्पर्याः (दन १२ । तन १६। था ६१) । सोअ वं [शांक] प्रक्रोड विवक्षेत (पूर ९ १६। वहर दुवा बहा) ।

सोअन [भोत्र] कार सक्लेमिय (बाबा मक सीप पूर १ १३)। । सम वि "सय] धोनेन्द्रिय-सम्ब (ठा १०---पत्र ४७६) । सोभ 🗗 स्त्रावस ] १ प्रवाह (प्राचाः શ ૬) ા शाभव न [स्पपन] रूपन (स्न) ।

का ६६२) । २ धिक्र (ग्रीत) । १ केप (कामा सोक्य व [शापन] १ तोक, क्ष्विमीपै (सम २ २, ११, संदीय ४१)। २ सूचि प्रशासन (च ३४०)। साभवया ) धी [शोधना] १ स्तर 🖬 सोखवा (धीर धम्ब १७४) । २ दोनताः देन्य (ठा ४ १--पत्र १६६)। सोधमञ्ज व [सीकुमार्थ] वृद्भवाच्या वित कीमक्टरा (हृ १ १ ७ प्राप्त कुमा)। सोधर पूँ[सोक्र] क्या भार्ष (प्रकी २८)

मुक्त १६६ रंग्य)। स्रोजरा 🕏 स्रोदरा | स्नी श्रृत (क्रुमा) । सोभरिय वि [शीवरिक] १ शूक्रों का २ जिल्लाकी जुल्ला करनेवादा । ३ क्याई (पिंड ११४३ कवा सूपा २१४)। सोव्यक्ति विशिष्टी खोवर, एड ज्यर सै उलख (ब्या ११११)। धोमक 🖦 सोजमक (बन्दि २)। सोअनिय कीन [शीच] युद्धि, प्रवेचता (पूर्व २,१ ३७)। 🗱, बा(बाषा)। साभव्य केनो सुध = १।

धोबामणी अब सीयामनी मिनी १

७ प्रकाशक ४ १४३ स ११३ महार पास)। **₹₹**≤} ; सोक्षभ क्षियित् विका विवाद (पूर क १४ तुना २६१)। देशी छोबिय। सोइविय न [धोत्रेन्द्रिय] धक्छेन्द्रव, काव (क्य) । सोइभिम स्था सोगाजम (१७)। सोड मि [मोत्] मुक्तेसम्ब (त १३ प्रासू २)।

पि १६३)।

सोधाधियां निवृत्त विवदी (क्ट ११ साड**णिश रेको सावधिश** (पूप २ २, २४।

38 )1

क्सवार (श्रीव १८४)। सोडिया की [शुण्डिका] श्रक का पान-विशेष (इ. ब--यम ४१७) १ सोंबार वि [शीपडीर] १ तूर, बीद, वयडमी (क्रम सूर २ १३४) सूना । )। २ वर्ष-पुष्ठ, व्यवित (महा)। सोंकारन[शीणकी वै] १ पराधन शुख्या। २ वर्ग( हेर ६६) पर्)। सोंग्रीरम १वी [शीप्तीरिमम्] ज्ञार देवी (नुवा २१२) । सोंद्ध (शै) देशो सुंद्र (पि ४४)। धोक वैद्यो सुक्क = शुक्क (पर्)। सोक्ल केटो सुक्का≍सीका (ब्राह्म १३४६ ११का तुरा ७ । कुमा) ।

सोंड देवो सुंड (पाप) । मगर पू [ मफर]

सोंडा की शिण्डा र पुर, सर (मार्ग

सोंडिय प्रीणिडको सक वेपनेनामा

२१ ३२):२ शामीकी नाक सूँड

यपर की एक काति (परस्त १---पन ४८)।

सोर्गय ) व [सीराज्य] १ वदावर छानंत्रिक है बीबोद दियों के प्रपत्नह (संयोद ६)। १ सुक्तिबक्तः, सुसन्ताः क्षोर्वनिर्म परिकृतियं देवीलं (सम्पत्त २२ )। धोगंभिक n [सीगश्चिक] १ ए<del>व विदे</del>प चन की एक बादि (स्रावा १ १--- पत्र **१**६) पर्वा रे-पर रह बत १६ ४४३ वर्गी कुम्मा १३): २ शंख्याबा बामक **नरक**-पुष्तिनी का एक सीवन्तिक-राजनाय कार्य (धम १) । १ अस्त्रार, शनी में होनेसमा चेत क्थव (तूस २,३१ व राज ८२)। ४ पूर्वसकत्व एक मेर, शक्ती जिन <sup>की</sup> र्वेषनेवामा नर्द्धक (यथ १ ६३ पूज्य १२४)। ३ पून एक देश-विद्याल (क्लेन्ड (४२) ! ६ वि नुक्कारा, तुक्सी (स्वार सम्बद्ध

सोक्स क्यो सुक्त = कुन ( दर् )।

स्रोग वेदो सोध = स्टेक (पत्रव २ ४<sup>१८</sup>

तुर २ १४ ३**३ २११,** प्रातु दशक्त) ।

२१३ मा २४४° समि १२८ नाट--- प्रमा

૧૫૨) ા

करपनी (घीप)।

(विक्र २८)।

२६६ । स २५)।

सोगमह देशों सोअमह (दस २ %)।

सोगाइ के सुमाइ (उत्त २० ३) प्रम

सोमप्रह (?) यह [प्र+स्] पराला

फैनना । धोरयाङ्गइ (बारवा ११६) । शोष केवो सोअ≍ग्रुप्। यक सोचंत, सोबसाम (ग्राट--पुच्च २०१ छाना १ १---पत्र 🐠)। संब्र, 'सोचिकण हत्वगर यारोग्यमस्तिरक्लेख मोमन्त्रमो चर्गा (स १९७)। इ. साब (उन)। सोचिय वि [शाचित] तुद्ध किया हुमा म्बान्तित (स १४८)। सोब क्या साचा सार्च वेको सुण=धुः। सोवा सास्त सोस्मित्र देशो सोत्यिम (६७)। स्रोबच्या । न [स्रीजन्य] पुत्रकता सकनता, सोबज रे क्समन्ती (उप ७२८ टी गुर २० 1 (57 सोवा क्यो सोरिव = शौर्य (प्राप्न १६)। स्रोक्स दि [शोब्स] युद्धि-शोग्य शोबनीय (उन १ ६ छ)। भोरक्षय वृद्धि एजक क्षेत्री (पाछ)। रेको सुरमस्य । घोडिम देवो सॉडिस (क्ट्रूंट १४) । संबंदित [शोटीर] देवो सोंबीर = शीएमैर (क्या भीग सोखं १ ४) क्रयूर काव ६३)। धोबीर ग [ब्रोटीयी] क्यो सोंबीर व शीववीय (किसा मुहर र के की की लका मा (१) साम धोड वि [साउ] सहन किया हुमा (का २६४ थ, पाला १६७) । सोदध्य सोद सोण वि [धाज] सन्त रका वर्णवाला (पाय) । धोर्णद न विसीनन्दी विकाशिका विपाद (मधार ४—-पत्र ७६ सीप संबुर )।

¥—-पत्र ६०० €)। सोजील देवी साजिश्र = सोवित, 'पूर्वते यसकोषीयं स्त्र छात्रे स्त्र पमकप् (धाषा १ 1 (fe 17 is m = सोज्ज व [स्वर्ज] सोना सुक्याँ (शास्त्र व संक्षि २१)। सोज्ह देखो सुन्ह = सूक्त (वर् वा ७२३)। सोजहा देखी सुग्रहा = स्मुचा (वंदित १४८ प्राकृ ३ का या १ क काल वर्गे)। सोत्त व [मोत्र] साल, अवस्त्रीनाय (घाणा, रंग्राः विक ६८) । सोच देशो सोम = बोवस (है २ १ थ) वा इक्षा हे १ वत क्रमा)। सोचि केलो सुचि = गुव्हि (वन् वन ६४० सोशिज ्रं [बोत्रिय] वेद्यान्याची वद्यस्य (पिश ४६६, बाट-पुरुष १६४ प्राप) । सोसिअ वि [सीत्रिक] १ सूक्त निर्मित क्रो क्य बना हुमा (ग्रीवमा ८१, ग्रीव ७ १)। २ सूरो का व्यापाची (चयु १४६)। सोल्विञ पूं [शौकिक] धीमान कमुनिशेष (44. Mb—2) (Milbb) सोशिक्षमई ) 🐧 [शुक्तिग्रमती] 🧤 व सोचिअवर केंग्र की प्राचीन चनवानी (समः १४) । सोची की [के] नहीं (वे ८, ४४ वर्)। सोस्यि पून [स्वस्ति] १ एक वेव-विमान

सोरियञ्ज प्रशिक्तको १ व्यातिष्क प्रकृ विशेष (ठा २ ३---पत्र ७०) । २ न शाक-विशेष एक प्रकार की हरित बनस्पति (पर्या १-पन १४) । १--रेबो सस्यिक सोयरियञ = स्वरितक (वर्ष १ ४---वर्ष ६८३ श्राया १ (---पत्र १४) । सोबास 🕻 सिोदामी देखी सोदामि सोबामणी देवां सोधामणी (परम २६ **4१) ا** छोदामि र् [सीदामिम्] वमरेन के घरन श्चीन्य कर्य प्रविपति (ठा ४, १---पण **1** (2) i सोधामिजी क्या सोआमिजी (नाट---माचरी ८)। घोदास पू [सीदास] एक एका (पडम २२ दश)। सोध (ही) रेको सटक् = धीव (पि ६१ ए)। सोपार 🕽 🕵 व [सोपार, 👟] ध्य-सोपारय । विशेष (पंडम १० १४) सुरा २७१)।२ स नवर-विशेष (बार्व ६६, ती ११) । सोबंधन वि सिवन्यन दिनम् गानक कवि का बनाया हमा बेच (मदड)। सोस यक [छुस] होक्या वसक्या। बोर्मित (पुण्य १६) भूका, बोसिन, बोर्मेन् (पुण्य ११)। भनि पोमिस्वीत (पुण्य १६)। यक सोमंद (सम्मा १ र न्या २६८ कम सीम) । सोम एक [शोमम\_] शोधानः स्रोधा-इस करना । घोनेइ (भव) । नक्क- स्रोभर्यत (पि ४६)। धंड सामिचा (क्य)। सोसमावि [सोसक] १ द्योमनेवाला। २ ग्रीमनेवाचा (क्प्प)। सोममा देवी सोहमा (स्वप्न ४१) । सोमण रेको सोइण=सोमन (पटन ७० १६ स्क्ल ४१)। स्रोमा देवी सोहा≕शोग (प्राष्ट्र १७ उत २१ = क्या गुरुव ११)।

२ कुर्ती से शिकार करनेवामा (स २१३)। सोजार रेखो सुज्जार (वा १६१ पि १६) सोणि औ [बोणि] इसी कमर (कप्प उप १४६)। सुसमान [सूत्रक] कटी-सूत्र

1 ( 5

सोणिश र् [शीनक] क्यार (१६ ६२)। साणिश्र न शिषित र्यपर, बून (अग सोणिम पुंची [शोणिमम्] एकता बाली सोणी के [भोजी] स्वा सोणि (परहार

(क्षेत्र १६३)। २—देवो सस्य (विध

माहिन्द्र देखों सोडिश क शोबित (शाया १ १ टी--पत्र १) : स्रोम (स्रोम) १ क्य, वाद, एक व्यो-विष्क महाबद्ध (हा २ ३---एम ७७) निसे १८६३ पट्टा)। २ ध्रमदान पार्शनाथ का गोंक्बी परावर (सम १३ ठा ब---धन ४२६)। ६ एक प्रशिष्ठ श्रामिय-मेश (वसम ५ २)। ४ चतुर्व बसदेन सीर वासुकेन का रिता (ठा १---पत्र ४४७- पत्रम १ १=२)। १ एक विश्वावर वर-पतिः यो ज्योकि:पुर का स्वामी वा (प्रथम ७ ४३)। ६ एक टेंड का सम (नुपा ५६७)। ७ एक बाह्याच्या वस नाम (खामा १ १६---वर १६६) । व चमरेन्द्र, बबोन्द्र सीवर्मेन्द्र तना ईस्टरेन्द्र के एक-एक सीक्याबर के गांग (ax ४ १—रन २ ४ मन ३ ७—रव १६४) । १ लग-विशेष, श्रोमक्ता । १ बक्क रस । ११ घनुत (पा ) । १२ मार्थ-गुद्रस्ति दुरि का एक शिष्य---वैत्र बुनि (क्या) । १३ एंन्. देव-निमान-विदेश (क्षेत्र १६३: १४६ १४६) । १४ वि मीलिमाल, स्टस्से (क्य) । काइय पुं [कायिक] धीन सोक्याब का धातानाची देश (बन ३ च—तत्र १६४)। "सक्षण व शिक्षणी कानाह्य (हे ४ ११६) । चौद वे िंथन्द्री १ ऐरवच जेन में बलाब तातवें निन-देव (सम १६६) । २ प्राप्तामें क्षेत्रफळ ना बीका समय वा शाम (कुत्र २१) । अस्य प् [ यरास ] एक धना (तुर २ १६४)। काह केवो नाह (धन)। दशा ई दिची रेयक स्थान्छ वानाम (क्यामा र १६---वर १६ प्र २ एक वैस वृत्ति को शह-बादु-स्वामी का शिष्य था (कम्प)। ३ अनवान् बन्द्रपत्र स्वामीयो प्रवय निवध-यामा पुरस्क (बन १६१) । ४ रागा शतानीक का एक परोक्षित (बिया १ ६---पत्र ६ )। दिया व [सूथ] र सीम मानक बीक्यम का सावा-तिक देर (अन् ३ ७—-पण १६४) । २ भनपान् पद्मन को प्रयत्न निकान्यता गुरूक (वन १६१) । लाह व ["मान्ड] बीख देश की मुझाबद मारोप-दृष्टि (वी १३, कम्बल ७६)। एएस छाहुर्व[प्रभ]

१ समियों के सोधर्गरा का माबि पुरुष बाह विश्व का एक पूत्र (पत्रम १ २१२) । २ तेराती राताची का एक पैन धानार्वे और ग्रंबरूगर (कुप्र ११४) । ३ कारोज के चीम-बोक्याच का उत्पात-पर्वत (छा १० ---पण ४०२)। भृद्र पूर्व [मिति] एक प्रभाग का नाम (गामा १ १६—पत्र १६६)। महत्वन भिविकी एक क्रम कामाय (क्रम्य) । यन विक्री एक गोत्र को बीरह योग की शस्त्रा है (हा च--पन क्टो। संस्त लिंप या सोम-रक्ष रीनेनाला (यह) । "सिरी की जिरी] एक ब्रह्मणी (चेत्र) । संतर प्रं िसन्दर] एक प्रशिव वैधावार्य तथा क्रमकार (संति १४ इक्क ४४)। सूरि दु [सूरि] एक कैनानार्थं वारायमा-प्रकरण सा कर्ता एक वैद्याचार्य (शाप w )। साम वि [सीन्य] १ थरीड, प्रमुप (छ ६ अब १२, ६---वष ३७०)। २ मीरीय. रोम-पहित (मय १२, ६)। ३ मणस्त रमान्य (कम्प) । ४ जिय-करीन विश्वका वर्शन प्रिय शासून हो यह। १ नवेह्नए कुन्दर । ६ शान्त मा। विवादा (मोलमा २२। क्या सूपा रेग । ६२२)। ७ शोबा-पू**य**ः विक्रियाम् (वं २) । देखी स्रोध्यः । सोमहज नि दि] धेने भी शास्त्रनाता (रे # 88) i सोमंगळ र् [सीमङ्गक] धीनक क्यू की एक वासि (बच १६, १२६) । सामर्थविय वि [स्वापनान्तिय स्वापना-न्तिकी १ सोने के बात किया पाछा प्रति-क्मास-पानरिकस-विशेष । २ स्वय्त-विशेष में किया जाता प्रतिक्रमशा (ठा ६---वन 1 (3#) सोमणस र् [सीमनस] १ महानिश्चनये था एक श्रमसमाध्यक्त (हा २ ३—पश् ६६८ समाह २, वंड)। २ ज्वा पर्नेत पर धानेत्रामा क्षत्र सहस्तिक केव (अ<sup>र</sup> ४)। ३ पण का बाठपाँ पिन (मुख्य १ १४) ४ र्नेत-संस्थुनार नामक दश्र का एक नारि यानिक विवास (झा च--पत्र ४६७; धीप) ।

१ त्व देव-विभाग, **क**ठवाँ ग्रेदेसक-विभा<del>ग</del> (क्षेत्रेश्वर १३७ १४६ पद १६४)। ६ सीम-नत-वर्णकाधक क्षेत्रकर (स्न. २ <del>१ - वर</del> दी। ७ व सेव-पर्वेत का एक वन (स्न २ क—पण ≝ीः सोमणस न [सीमनस्य] १ तुःचर मन शीतव मन (एकः कप्प) । सोममसा 🛍 सिमनसा । वनानव विलेश, जिससे यह और धन्मश्रीप करवाता है (इन)। २ एक राजवानी (इन)। ३ सीमनत यन की एक नापी (मैं ४)। ४ पक्ष की पांचनीं चाचि (मुख्य १ १४)। सोयणसिय वि सिमनस्यित । ५५% मध्याला । २ प्रकात मनवाला (क्य) । सोसणस्य देवो सोस्ययः = सौधनस्य (कन्दः धीप) । सोमगरिसय देवी सोमण्डीस्य (क्या चीन) सामार १--पर ११)। सामक 🖦 सोधमक (प्रकार 🕫 🕽 । स्रोमहिंद न दि इसर, केट (रे न ४६)। सोमहित्र 🖫 📳 पंक समय (वे ८, ४१)। सामा 🖷 सिोमा 🖁 राक्ष कोम मार्दि वार्धे श्रोकपालों सी एक-एक पटराबी स श्रम (छ ४ १--पन २ ४)। २ सक्दे किनवेष की प्रथम किया (सम. १६२) पर्प **१) । १ शोध तोकपास औ राजग्रायी (वर्ग** N W-74 182) | योगा भी सिन्या । उत्तर विद्या (व १ 🖚 पण ४७०३ मन १ १---४१४)। शामाण न [इमसान] मदान, वरनढ (६ व 48) 1 सामाणस व [सीमानस] सादवी हैनेन विमान (पथ ११४) । सामर } वेबी सुबुमार (या र ध व सामाज ११९ में ७ वर्ग माण है रै १७१३ कृषा ब्राह्म २ ३ ६ ३ कथि)। सामाळ न 📳 मांच (१ = ४४)। सामित्ति पे सिक्षित्रि एम प्राप्ता का का (या ६४) । सामिचि की [सुमित्रा] क्षत्रण की बाता। पुष्ठ वृ [पुत्र] बदम्मा 'पन्दर्गित पुला (परम १ १७) सुव 1 [स्वा] यहि सर्वे (परम ७२-१) ।

सोमिन प्र[सोमिन] एक बाध्या (धंत

e) i -सामेचि देवी सोमिचि =सीमिणि (स **₹₹, 55)** 1 सामसर र् [सोमेचर] धौराष्ट्र का बोमनाव महादेव (सम्मश्च ७३)। -सोम्म वि [सौम्य] १ रम्राजीय मुक्तर (हे १ २७)।२ ठ्या शोक्य (से ४ व)। रे योजन प्रकृतिशासा, साम्य स्वयानशासा वि १, १६ विन्ते १७३१)। ४ प्रिय-क्टांन विस्कादर्शन प्रिय अधि बहुः १ किस्ता भविग्राता सोम-देवता हो बहु। ६ ग्रास्वर, कन्दिकस्य । ७ पुंकुत प्रहः य शुस्र प्रहः **१ कु**र भावि सम राशि । १ अदुस्थर बुध । ११ हीप-विशेष । १२ सोम-रस पीनेवासा बाइस्ट (प्राप्त) । देवी स्रोस=शीस्त्र । सोदिव (बन) घ [स एव] वही (शाङ \$ (\$ 5 \$ सारह ई [सीराप्ट ] १ एक भारतीय केत, बोध्द, कादिमानाइ (इक दी ११) । २ वि बेंग्ज देश का निवासी (धावक १९)। १ म सन्द-विशेष (चित्र)। स्प्रेरिडिया स्त्रे [सीराष्ट्रिका] १ एक प्रकार भी मिट्टी विस्कृति (भाषा २ १ ६ ३ वर ६,१: ३४)।२ एक वैसं द्वतिन्छाका (FFF) ( स्रोरवस। म [सीरम] सुमन कुछदू (विक स्रोरम ११व पुत्र १२६३ जीव प्रय छोरम । १व६ थी। स्रोरसणी भी [शीरसेनी] गूरके का की शाचीन वाषा प्रमुख भाषा वस स्वाभीर (FIR EW) 1 सारक् देवो सारम (परव) । कोरिस व [रागि] सूरता, परावम (प्राप्त माक्र ११) : सोरिम न [शीरिक] १ कुछावर्त केए वी भाषीन राजवानी (इक) । २ एक दख (विपा र्ष चल्य दर्शादस दू ["इस्तुरि एक मच्चीमार का पुत्र (तिया १ १ -- यत ४३ किंग ( द्र) । २ एक राजा (विगार च~चत्र ८२)। पुर व ["पुर] एक तपर ं

(विपार ८)। वश्चिमान शिवरंसकी एक छयान (विपा १ ८---पत्र ८२)। सोक्स वि व [पोडराम्] १ संद्या-विशेष, धोसङ, १६। २ सोसङ संबयात्रासा (प्रय क्र, १--- पत्र १६४° १६७° जन: सुर १ ११, प्राप्त ७७३ पि ४४१) । १ वि सोसहबं १६ वां (राज)। स नि "श्री र सोबहर्वा १६ वॉ (खाया १. १६ -- पत्र रेडे ६ जुर १६ २ ११ पर ४६)। २ थना तार सात्र किमों के उपनास (सामा १ १---पत्र ७२)। यन "कि सोआह कासभूद (चल ३१ १३) । बिह वि [पिय] बोचह प्रकार का (पि ४५१)। सोवस्था की पोडरिका र रस-गन-विशेष शोनकृपवाँ की एक वाप (क्क्सु १४२)। सोवद थेवी सोवस (गरः परि)। सोब्धावत्तव वं दि । शंब (रे ८, ४६) । स्रोक्ष सक [पच् ] वकाना । संक्रद (हे ४ श्रामा ११६) । क्या सोद्धंत (विपा 6 d---da x≠): सोक्क बन्ध [श्विप ] क्लमा । योक्कर (हे ४ १४३: वर् ) । करें, बोक्रिक्क (कुमा) । साठ वड [इर् सम्+इर्] प्रेखा क्ला। श्रीक्रम (बारवा ११६ माक्र ६६) । सोद्धन दि] संख (देव ४४)। देखा सुद्ध = शूक्य । स्रोक्क कि [युक्क] प्रकास ∦मा (असा विपा १ २--पम २७ १ ज-पम वर्ध वर्ध धीप) । श्रोक्तिय कि पिक्की १ पकामा हुया 'ईनाक बोधियाँ (धीप) । २ ग. पूप्प-विशेष (धीप) । सीस केही सुच = स्थप् । सीवड, घोर्णति (**१** १ ६४० चला मिकि पि १६५)। जीवका ) पि सापक्रमी निमित्त-कारण सीच अस्स र्रेस वो नष्ट बार्जन हो सके बह YEE) I सोवश्चिम वि [सोपधित] स्वयन्त्रकः लक्षेत्र पुष्ट (क्या) । सोयबंध र्म [सीपचेंछ] एक वरह का नान मस्ता नमक (यस १० व्य चीर) ।

सोबण व [स्वपन] रायन सोना (दर प्र २१७) । सोयग न (वे) १ वास-गृह, राम्या-गृह पवि मन्दिर (देद १६ स. १.३ पाम)। २ स्वयमा १ थूं महा (देव १८)। सावण (धर) देखो साम्रज्य (म्राव) । सायणिअ वि शिवनिकी १ स्वाय-पत्तक कुतों को भावनवासा। २ कुतों से शिकार करनंबासा (सूच २ २ ४२)। सोषणा 🛍 स्थापना | विद्यान्वरोप (पि सोषण्य वि [सीयर्थ] स्वर्श-निर्मित सोने का (महार सम्मत्त १७३) । सोबण्गमस्तिमा सी [व] महुमसिका की एक बार्डि एक तरह की शहर की गस्की (R 4, 84) 1 मोपिएगाओ } वि [सीवर्णिक] दोने का सामिन्या 🕽 सुवर्णे-बदिश (प्रति ॥ स ४९<)। परूपमा 🐒 ["पर्वेट] मेर पर्वेट (पत्रम २,१४)। सोषण्णेक्ष पुंची [सीपर्जेय] नवत्पक्षी । सी. भा इ (पर्)। क्षोबस्य व दिने १ वरकार । २ वि. स्थामेन्स **उपयोक्योग्य (वे ८, ४४)** । सोवस्थि } वि[सीवसिद्ध] १ माजुलिक सीवत्यक । वचने बोबनेवासाः नागव सावि स्वरित-वा**वक** (ठा ४ २—पत्र २१६ बीप) । २ द्रै क्योदिक्क सङ्ख्या-विशेष (छार. १---नप्र थव)। १ मोनिस्स क्यु की एक बार्सि (पस्पा !—पत्र ४३)। सोपरियम पु [स्वस्तिक] १ बापिया, एक मञ्जानिक (यीम) । २ वृत्तः, विद्युरमम् मानक वबस्कार पर्वत का एक रिकार (इक)। ३ पूर्व वयक-पर्वंत का एक विकार (राज) । ४ एक देव-विमान (देवस्त्र १४१) । देन्री सारिवास, सारिपभ = स्वरित्रह । कर्म बापु, धापना धानि (मुना ४१२३) सांवक्ष केबी सांवण्य (संत १७ का २८० विदि ८११३ मधि)। सावभिष्म केवो सायण्यत्र अ (छामा १ १ — पण १२)। सोवरिश्र वेको साझरिश्र = सीवरिक (नूम र, २ २०)।

साभिय देवो सोहिज = रोम्ब (हामा १

१ टी-पत्र १)। साम इंस्प्रिमी १ पनः चौदः एक ज्यो-क्षिप्ड महाप्रह (इस २ ३---पण ७७) विदे १ ६३ थडाई)। २ भगनान पार्शनाम का पांचको बद्धावर (सम १६ ठा च---पण ४२१)। ३ एक प्रशिक्ष श्रांत्रसम्बंदा (प्रवय ४ २) । ४ **प्रमुखं बबकेन धी**र कामु**के**न का दिवा (क्ष १--पन ४४७- परम २ १०२) । १ एक विद्यावर वर-पछि को क्योति-पुर कास्पानी था (पडम ७ ४३)। ६ एक छठ का साम (मुपा ११७)। ७ एक রচে<del>তা দাবান</del> (ভাবা ° १५—৭খ १३६)। चमरेना, मधीना शीवर्वेश्व तका ईक्तकेड ६ एक-एक बोक्याब के नाम (हा ४ १--वर १ ४ मद १ ७--वर ११४) । १ बद्ध-विदेव सोमबता। १ बक्कारसः। ११ प्रमुत (वक् ) । १२ पार्थ-नुद्रशिक्ष पूर्विका एक शिष्य---कैन यूनि (कम्प) । १६ पून, देन-निमान-विरोध (ध्वेश्व १६६ १४६) १४६) । १४ वि. कींचिमाना यक्तरी (क्षम्)। काइय र् ुकाविकी द्वीत बोद्धपान का प्राह्माराधी देव (अब ६ ७—- वत्र ११४) । सम्बद्धान निव्हर्णी **पद्रभारत (१** ४ १६६) । यह व िंचन्द्री १ ऐप्यव बोर्ग ने जलक छात्रमें नित-चेर (सन १६६) । २ याचार्न हेनचन्द्र वारीकाक्ष्मयं नानानं (कुप्र २१)। उद्यक्त र्विशास किस्प्रमा(शुरु १६४)। जाइ देखा माइ (धन)। दूस पू विक्ती १ एक बन्हरूल का नाम (खाना १ १६--- वस १६६)। २ एक कैन गर्मन, जो भट बाह-स्वामी वा सिम्ब बा (कप्प)। वे अगरान् कमात्रक स्थानीयो अथम किसा-सरहा ग पत (सम १६१)। ४ यामा स्वतनीक का तक न्तिहित (विना ११---पण ६ )। "स्थात <sup>\*</sup>देयी १ क्षेत्र नावक लोका संका शाका-निक्र देश (क्या ३ ७—वत्र १६१) । २ | भवरान् रूपप्रव का प्रवय विशानकता गृहत्व (नव १६१)। नाइ वं [\*शंघ] सीग्रह रेश की मुत्रकित महादेश-पूर्ति (ती । इ. क्रमत कर)। त्यम "त्यह व मिनी

बक्षिका एक पूर्व (प्रस्त 😎 १ २१२)। २ क्षेत्रहर्शस्त्रामधे काएक वैन बाचार्यं सीर वंगकार (एम ११६) । ३ बमरेज्य के भीम-मोक्याल का उत्पात-पर्वत (का १०----पव ४०२) । भृष्द पू ["मृति] एक बाह्मा का बाग (शाया १ १६-- पत्र ११६)। भूक्य व ["मृतिक] एक क्रम का नाम (कप्प)। यन किंग्रिक एक गोत्र. वो कील्स कोच की शावा है (ठा क-पण ३६)। यदा पि विपासि रस पीनेपाचा (पड़)। "सिरो वी शी] एक ब्याप्रणी (धेरा) । संतर प्रं िसन्तरी एक प्रसिद्ध कैनाचार्य तथा क्रमकार (सीत १४ इंबर ४४)। सृरि वृ [सृरि] एक वैवाक्षरे, बारावमा प्रकरत ना कर्ता एक वैनाचार्ने (याप **४**ः) । स्रोम विस्तिन्यी १ वरीड, प्रपूप (ठा ६ मय १२ ६ — यत्र १७०)। २ शीरीय रोय-प्रीय (वय १२, ६)। ६ प्रकार स्माप्य (क्य) । ४ प्रियं-क्रीन निचका वर्शन प्रित्न मासून हो बहु। १, मनोक्सर, सुमार । ६ शान्त साक्षरियामा (योगमा २२) <del>वनः श्रुपादेवः ६२२)। ७ शोधा-क्रुक</del>ः चैतियाम् (व १) । वेको साम्म । सामद्रज वि दि | बोने भी बारक्सला (दे = 98) I सामंगक र् [सीमङ्का डीलिय क्लू की एक शारी (बच १६ १२६)। सामणंविय वि श्विपनान्तिक, स्वापना-न्तिको १ सोने के बाब शिया जाता प्रक्ति-<del>व्यक्त--प्रावस्थित-विरोत् । २ स्वय्य-विरो</del>त में किया चार्क प्रतिक्रमण (हा ६—पण 166): मामणस 🖞 [सीमनस] १ म्यापिके वर्ष का एक वक्तरकार-पर्वत (डा २ ६—पत्र **६६**: तम १ २, पं४)। २ उच्च वर्शत पर खनेतासाएक नद्रसिक केद (वं ४)। ३ पम नामक्रवांपित (तु≎न १ पुंत-तमस्प्रमार नातक इन्द्र वा एक पारि यानिक विवास (का ---पत्र ४३७; ग्रीप)।

१ एक देश-विमान, सुरुवी धेरेस<del>क</del>-विमान (देवेला १६७-१४६) पन ११४) । ६ सीम-वस-पर्वत का एक दिकार (का २, १-- नव = )। ७ त⊦ मेक-पर्यंत काएक बन (ठा**८** ६—वन )। सोमणस व स्तिमनस्य । सम्बर्गन र्श्वतृष्ट सन् (चमः कप्प) । सोमजना को [सौमनसा] १ पन्यू का विशेष विक्रमें गढ़ होंग जम्बुहीन कहनाहर है (इस): १ एक धनवानी (इक)। ३ शीननम्ब बन की एक असी (वं ४)। ४ पक्ष की पांचमी राजि (सम्ब १ १४)। सामजसिय मि स्वीमनस्थित । संदर मनवासा । २ प्रसन्त मनवासा (कप्प) । सामणस्य देखा सोमणसः = बीमनस्य (कण्डः धीप) । धोमणसिम् देवी सोमणसिय (क्या धीर) सामा १ १--पत्र १६) : सामह 🖦 साञमह (प्राप्त २ ३ र )। सोमहिंद न दि । स्वर, फेट (दे ब, ४१)। सामहितु पुंदि] पंक काछ (दे व ४३)। सामा 🛍 [सामा] । तक के बोम पार्वि चारों सोक्याओं की यक-एक प्रदानी स्थ नाम (ठर४१ — यत्र २४)। २ शासर्वे विनदेव की प्रवस निरम्या (बस १६२) पत १)। १ शोम बीकपास की प्रवसकी (क्न. ३ ७—पत्र १६६)। सोमा औ [सीम्मा] क्तर किया (स १ 💳 पण प्रकार मन १ १--५६६)। सामाज व [इमसान] महान, मरवड (६ व सामाजस र् [सोमामस] प्राची वैश्वक विमान (पर्व १६४)। सामर ) रेशो सुभूमार (पा १ छ 🕊 सामाळ 🕽 ३५६; मैं ७३ वंदा प्राप्त 🕻 🕻 १७१३ कूमा' प्राक्त २ ३ ६४३ मनि)। सामास न हि] नास (र ब, ४४)। सामिचि वे [सीवित्रि] राम भारत बम्मच (જાયમો દ सामित्ति 🕰 [सुमित्रा] बश्यक् वी काळा।

ਪੂਚ ਹੈ [ਰੋੜ] ਵਦਸਤ 'ਰਸਵੀਵਿਤਿ-

पूर्वा (परव रेव १७) सुब र् [सुव]

वही सर्व (पडम ७१ ६)

निरुप (रिय) ।

स्पेद्राय कर [ राोचय ] सका क्याना ।
स्पेद्राय कर [ राोचय ] सका क्याना ।
स्पेद्रायित नि [ओपिस] चाक क्याना हुम्मा
(क १३) ।
स्पेद्रि की [अस्ति, होगिय] । निर्मनता
(क्यान १ ४ -चन १ ४ वंबीय १३) ।
र सालोचना प्राम्बित (क्षीय ७११ थर)
वर्ष साला) ।
सोहि नि [सोचित्ता] मुस्ति क्यां (सीय) ।

सोहा स्रे झिमा । शेरित चनक (वे १

४६ दूमा मुना ६१ रंघा)। २ छन

सोहि वि [सोशिम् ] शोक्तेशमा (वंतीन ४६) कृष्णुं भ्रति)। की णि (नाट---प्रता १६)। साहि प्रेकी वि] १ मूत कास १ २ मनित्य काम (दे य, १८)। साहिका न [ने] विष्ट भ्राटा नानक पावि का पूर्ण (यह)।

सोहिज वि [शोभित] शोधा-पूर्व (पुर १ ७२: महार बीप मय)। सोहिज वि [ सोवित ] सुठ विया ह्या (ययह २ १ प्य)। सोहिष केंद्रे सोहप (वरण्य-एड १ १)। सोहिर वि [ सोमित् ] होफोनाथा (या १११)।
सोहित वि [ सोमायत् ] स्पेय-पुक (या १४४) वृद १११ व १ व्यक्टे १११६,
बंद स्वर्थ सक्त)।
सोमारिक वेचो सोस्रारिक = सीवर्य (व्यः)।
सीमारिक वेचो सीमारिक = सीवर्य (व्यः)।
सीमारिक वेचो सीमारिक = सीवर्य (व्यः)।
सीमारिक स्वर्ध सम्बद्ध स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वय्यय स्वयय

स्स वैको स ≈स्र (धा २१६)। स्सास बेको सास ≈श्वास (धा बश्रेर)। "हिस्सी बेको सिरी ≈को (गा ४७४)। "हसंअ वेका सेअ ≈स्वेष (ग्राम २१)।

#### ॥ इस विरिपाइअसइम्मइम्मविम स्थायहरहसम्बद्धाः सन्तरीसहस्ये सर्वते स्थायो ॥

### g

विदेष (प्राप प्राप्ता)। २ संदूष सम्बद्धीका पूर्वक संस्थान-श्रंबोधना 'से-दिनकु विस्तार, टेहर इ.ए. उत्साहरह (सावा २ १ ई १ रै से मि २७६]। व वियोध । ४ क्षेप मिन्द्र । ५ तिबद्ध । ६ प्रसिद्धि । ७ पारपृति ( 2 350) 1 इतेको हा = बर. (हे १ ६७) । ६६ की [हर्ति] हमन वस मारत (बा २७)। 🕻 प 🛮 हम् 🗎 इन वनी का सुनक सम्पर्ध---रै और (बना) । २ यसमावि (क्वण २१)। **रेग**य दे कि राधर-शर्त-पूर्वक किया बाता साम-सीमेच (६ = ६१) । श्री स. इन धवीं का कुषक सम्मय—१ वाकी क माहान (हे ४ २०१ हुमा। पिन)। १ छवी का धामन्त्रक (छ ६२२) बाग्यक 1 (50) र्षेड देवी संदेह (हम्मीर १७) ।

116

₹ ई [इ] १ ९७-स्याधीय व्यवस्थ वर्ण

**हरण देशो मंदण (गा ११२ वि ४०५)। (** होत देखो होता (वर्णते २ २ ध्या २६ स्र्या क्ट्रब वि २७३)। इत्या है से इस हमा। इस हुँता य (इस्त) इन यूनी का मुनेक सम्बंध---१ क्रम्यूनम्म स्थीकार (क्या औराः मगः dg tv बाणु १६ ३ खाला १ १—पत्र uv)। ३ कोवल सामन्त्रण (यस, मण् क्षेष्ठ १४३ और)। ३ वास्य का धारम्य । ४ प्रव्यवसारकः । १ श्रेप्रेक्कः । ह क्रोप ३ % निर्मेश (पत्र)। < ह्य**ी**। ह क्ष्मिमा (प्रम्) । १ संस्मृ (क्या) । श्रृति [क्ला] मारोबाना (वापा पदः पत्रम प्रदेश कर है। विशे प्रदेशको । श्रीतृत्व देवते द्या । इंकि थ. 'बहुल कर्र' इस धर्म का गुणक सम्बद्ध (हे २, १६१ दुना सामा २,१ १६ १३ स्ट वि २७६)।

**इंदि य, इन यमें** का मुनक सम्मय—१ विपाद, श्रेषः। २ विकासः। ३ परवादायः। ४ मिरूपा १ स्ट्या ६ 'स्ट्रॉ' 'प्रइस कर्षे (पाक्षः है २ १० १ पड्ड कुमा) । ७ मामन्त्रस्य संबोधन (चिंड २१) वर्मसं ८४) । व उपस्रांत (शंचा ६ १२ इन्नि 1 (0) 1 होंनी देवों एंड्रा (बुर ११ २६४ प्रापट समार २. वरी । र्श्वस केवी हस्स = हस्य (शक्त) । ह्म प्रश्नि (स्प) १ पश्चि-विदेश (खादा १ १--पन प्रकार है रे--पन व कुना प्राप्तु १६ १६६)। ए रजक, बीजी 'बरव बोबा इवंति ईवा वर्ग (मूख १ ४ २ १७) : ३ बेम्पासिनियेन (से १ २६ धीप)। ४ मूर्व एन (शिर १४०)। १ यशि-विशेष हैंसबमें नामक राज की एक-जाति (पश्ल १---पत्र २६)। ६ सन्द का एक मेव (पिन)। । जिलाँमी चना। क

सोवरी की [शास्त्ररी] विद्या-विशेष (पूर्व २ २ २७)। सोबविक मि [सोपपण्डिक] स्पृष्टिक पुष्टिन्दर (अर ७२६ धे) । सोशाञ्ज 🖩 [सोपाय] ज्याव-प्राप्य (वस्त्र) ।

सोबाग र् [धपाक] बार्डका होन (बान्ड सुपा १७ । हुन २६२। तर १ १६)। साधारातं की विद्यापात्री निचा-निकेष (सूब २ २ २७)।

स्क्रेबाज न [सोपान] धीकी निसंगी पैड़ी (समार कारक सम्बद्ध सुर १ ६२)। सोबासिकी वैको सवासिकी (भीत)। सोविञ वि स्विपित् दितास क्ष्य ध्यानिक 'भनवक्रियक्षरहर स्टबरए होन्स्रो हैख'

(धूर ४ १४४ व्य १ ११ हो)। स्रोनियक पूंडी स्रोभियकी क्रमान्द्र का च्याक (शतक)। स्त्री "दुवे (सूरा ७)। क्के वीन्द वंव सिौबीरी १ केश-विशेष (पन रक्ष्य सुद्धा १ ६८ १ रु-दी)। २ % काकिक, क्रोंगों (ठा ३ १---पत्र १४७)

बाम) । यानम-विशेष बौबीए वेश में होता दुष्मा (भी ४) । ४ वष-मित्रेष (कत) । स्प्रेक्टर को सिकारी क्यम ध्या की एक श्रुकेष (ठा ७---पत्र १६६) । सोम्ब वि [बे] परिच एक विक्रश रांत निर बना हो नह (दे क ४४)। स्पेस अन [शीपम्] गुकामा सोनख करक । बोबद (ध्येष)। वह स्रोसर्थव (\*\*\*\*\*) L सास वेदो सुरस । वीवन (है ४-१६१) ।

स्पेस ( अभि ) र स्पेत्रस्य (पञ्ज तानु ६४) : २ चे<del>न रि</del>डेफ का चेन (बहुस (X) 1 स्वास्त्रव पूं [दे] परान्, वानु (दे छ ४४) । मोसज न [शोपज] १ नुबाला । २ नामध्य का एक काए। (कप्पु) । वे कि स्टोपशा-कर्सा नुषानेरामा (परम ९४, १. - पुत्र ४०) । मासनवा } चे [धोपत्रा] शेवछ (ब्ह स्थापना । बता १ १) ।

सोसविज वि [शोपित] मुबाम हुया (ह १ ११ वर्गा सो साम केवी सो स = कोमप् । हेक. सो साम है (शी) (सट) । सोसास वि शिक्यवारी उम्मे शबनुष (वर् )। सोसिभ क्षेत्रो सोसनिभ (हे ३१४ पुर **६ १८६ महा**)ः सोसिक वि [साचित्र्त] 💵 विमा ह्या सोसिक वि शिफ्यत् । शोफ बुक, चुक्त रोधनासा (विधा १ ७---पन ७३)। सोह सक [हुम्] रोक्ता चनक्या। बोबाद सेक्सर सोहीत हिंद १० पास बुमा) । वक्र. सोहंच सोहमाप्य (४५८ पुर १११) गाट--उत्तर व) । स्प्रेष्ट् सम् [क्षोप्रय\_] शोबा युक्त करना ( धोडेड (बना) । शोद कर शिथय ] १ श्रवि करना । २ बीन करना वरेपछा करना । ६ एंग्रोकन करना । रोहेड (क्य) । नक्क. ज्विकी परिर्श्व बद्ध सोविंको वर्ध निर्मा (बा १२)। सोब्रेमाण (क्या विचा १ १---पण ७)।

४१ माट-नामती १३०)। सीर्धभण र् दि होभाक्षत क्षानिक सम्बन्धे का देश (रे यू १७ क्यू)। स्रोह्न वंबी स्रोमग (कण १ टी)। सोहग र्[होयफ] कोरी रक्क (छप ह २४१) । रेवी सोहय = धोषक ।

क्लक सोहिजांत (उप ७१ थे)। इ-

सोइणीम सोइयम्ब (सापा १ १५---

यव २ शः शास<del>्य शब्द १६</del>। तुरा ६१७) ।

सोब् केवा शहाइ = सीन (बनिय ६१ प्रति

बंध्र. सोब्द्रशा (क्य १६/१) ।

साहमा व [सीमारम] १ बुक्तमा लोक-विकता (भीप: प्रामु **३%)** । 🔻 वर्षि-प्रियता

(दूर ११ प्रापू ६)। ६ सून्दर कार्य (क्षेत्र प्र अच्छ १)। इटप्रह्मसा र्षे [करपहुरू] एक-विधेष (पर २७१)। गुडिया की [गुटिका] शीधाय-अवक यन्द-विशेष सं चेत्रुत योबी (तूपा १२७) ।

जनक श्रजम (श्रुपा ५१०)। सोद्दिगञ्ज वि [सीमागिरा] प्राप्त-शानी, सुमार गाववामा (का द्र ४७३ १ ८)। सोहण पुँ [शोमन] १ एक प्रसिद्ध 🚧 शुनि (बामाच ४१)। २ नि श्रीमानुष्ठ, बुन्दर (बुर १ १४७) वे १०४, प्राद १३२)। की या शी(प्रक्राप्रश)≀ वर न विराधिकाम की जलर मेरिक का एक विद्यावर-नयर (इक)। सोइण पश्चिमनी १ इदि. स्पार्ट (क्र

ৰি বৃত্তি-কল্ড (মা ६)। सोहणी की हिं] संपानींगी कान (वे द-सोइड व [सीइड] १ मित्रता। १ स्कुता (पथि २१ अन्द्र १)। सोइस्म 🖦 सुपना, सुइस्म - पुनर्गर (**E4 (4)** )

११७ द्वीर बुक्त १: ६ दी कमी)। १

सोइन्म ९ [सीघर्म] प्रकर वेबलेक (स्व २, राया प्रसु) । ६०५ ई [ कस्प] पहना देनकोक स्वर्ध-विदेश (महा)। वह प्र िपति अपम देवबोक का स्वामी कडेना (सूत्र ६१)। विश्वित्य क्ष शिक्ष्यंसक] एक वेष-विमान (सम ६ २३) एवं १६) । सामि वं दिमामिक् विका देशके का इक (युरा ६१)। सोहम्म" भा सुहम्मा (महा)। साबन्सण देवी साक्षण = क्षेत्रक 'दक्केरि प्रयुक्तपरिश्चं धनेष्ट् श्रीकृत्मसञ्ज्ञकेश्चं (क्रम

4 4 (2): सोब्स्सिब् पू सिवासँग्द्रा शक्त अस्य 🖛 बोक का स्वामी (महा) । सावन्त्रिय नि [सीयमिषः] सीवर्य-देनकोण का (प्रकृ) । सोव्य वि [शोधक] ग्रीव-क्यां समर्वे ण्णेनाचा (विधे ११६१) । देवो साह्य ¤

धोषक ( साह्य केवा सोहग = शोशह (का दूर१६)। सोब्ज वि [ शोभाषत् ] होया-दुक (ब्बर

भिषा)।

विधेय (सिंव) ।

(स ६२)।

**पर्**का दास्तो ।

बोदावेद (स ११६) ।

सोद्या की जिस्ती १ शेल्ड वनक (स १

४ से द्विपार सुपा ६१ (शा) । २ यन्य

सोद्याय सक [ शोधय ] सफा कराना।

सोदायिय वि शिधित । सन्द क्यम हुना

सोदि से [गृदि, होपि] १ निर्मनता

(साम्र १ र---पत्र १ ४३ संबोध १२) ३

२ धामोपमा प्रस्तवित (दीप ७६%

साहि वि [शोधिम्] श्रुदि-स्वा (यीप) ।

॥ इस विरिपाद्रअसद्गद्दण्यवित्र समाराहसर्वस्थलो 🛍 🖫 📳 १ ५'ठ-स्थानीय व्यव्यन वर्णे विशेष (प्राया प्राथा) । १ व व्य व्यवस्थी का तुषक सम्बद्ध-- खंबीयना 'चे-जिसम् विकाद वे हंद इ सं तस्साहराई (बाबा २ १ ११ १ २० वि २७१) । व नियोग । ४ लेप

निम्दा । १ विश्वत्र । ६ प्रसिद्धि । ७ पानपूर्वि

६६ की [इति] इनम कम माराण (भा १७)।

**ई** स [ इस्] इन धनी का सुवक सम्बन्ध---

१ मोच (क्या) । २ असम्मवि (स्वण २१)।

रंक्य दे [के] रारीए-सर्श-पूर्वक किया बाता

(ते थ. इन प्रश्ने का सुचक सम्मव--१ वासी

म पाश्चाम (हे ४ एवड्। हुमा विय) । र

पत्ती का यामन्त्रम् (स ६२५) सम्मक्ष

**व्हें केतो हा**⇔ घ. (हे १ ६७) ।

राम-सीवंच (दे थ ६१) ।

र्बंड देशो स्रोड (हरमीर १७)। 116

( Test & 3)

1 (945

सोहि वि शोसिष् ] ग्रोसनेतला (वंबोय Yes कर्यु भाव)। दी वी (नाट---धना १३) १ साहि वृद्धी [वि] १ पृक्ष काव । २ गविष्य श्रास (रे व १८)। सोहिम न [न] पिए बाटा बायस मारि का भूतों ( पर् )। सोदिश वि [शोशित] ग्रीमा-पुष (पुर १ ७२ मराः धीव चय)।

सोविश वि [ शोधित ] युव किया ह्या

सोदित देवा सोदद (ना-- एड़ १ ६) ।

동 हुंडण देखो संद्रण (या ११२) वि ४०४) ।

सोहिर वि शोभिय योगनेवाना (पा 422) I सोहिस वि [ शोभावत् ] शोमा-पुक (वा प्रकासूर व ११ म १ म हेर १४६ र्वतः मुक्तिः सुग्रो । सीकरिअ देवो सोअरिम = सौदर्ग (भंड)। सींघरिश्र म [सीन्दर्य] वृत्रका(ह १ १)। सीइ रेको सउद्द = सीम (दिश्म १६ शह-धामती ११६)। स्स देखो स = स्व (ग २३६)। रैसास रेको सास = पास (या =१६)। °(स्तरी देखें सिरी = भी (या १७०) । "स्सअ देखों सेज ≈ स्नेद (मनि २१) ३

### वृत्ततीसस्यो तर्रश्रे समतो ॥

(परमूर १ मन)।

ह्रंत केलो होता (वर्षेष्ठ २ २ चय २६ सर्छ) क्रम्युः पि २७६) । इतम्म } क्ते इप । ह्या प्र [इन्त] हा धर्मों क पूर्वक प्रकार---१ अम्यूपस्य स्तीभर (क्या सीप) मरा हेरू १४ अक्षु १६ समा १ १—पन ७४) । १ कोमस सामानक (शन; ससु हेंद्र १४३ ग्रीप)। ३ शास्य का धारामः ४ प्रत्यक्षारसः। ५ संप्रेयसः। ६ केटा ७ शिर्देश (राम)। द हर्नाह समुक्तमा (राध) । १ सस्य (समा) । होतु नि [हम्तु] भारतेवाचा (भाषा भाष पक्रम पर १६८ ७३ १६८ विशे २६१७)। इतिक हमा बना इंदिस 'प्रहल करो' इस मर्चका सुवक प्रकार (के. ए. रंबर प्रमात मान्या र र ११ ए। फ वि २७३)।

इंडिय, इन यपींका सुपक सम्पद—१ विपाद केद। २ विकास । ३ प्रवाहाए । ¥ शिरुषय। ३ वस्य। ६ 'की' 'प्रस्टा क्षे (पास हे १, १४ । पह कुमा) । ७ मामन्त्रस्य संवोजन (पित्र २१ ४४) । « उपर्दर्श (पंचा ३ १२) वसूनि 8 80) 1 इस्में केने इंदो (पुर ११ २३४) धावा सुमार २, ≈१)। **धं**स केवो इस्स = स्नाम (प्राप्त) । ह्रस पू हिस्स र पश्चि-निमेष (शाक्षा १ रे---पण श्रीः पर्वा १ (---पण कः कृत्वत प्राप्तु १३ १६६)। २ रजक, बोबी 'मरूक-को वा **व्यंति इत्या** वा (सूछ १ ४ २ १७)। १ संन्यासिनिकीय (से १ २० बीप)। ४ धूर्व र्राव (शिर १४७)। १ मिरा-विशेष इसियमें नामक रत्य की एक-वासि (पर्याः १—पव २६)। ६ छन्य का एक बेद (पित्र)। ७ निकॉमी राजा। ल

किम्छ । ६ परमेघर, परमारमा । १ महत्तर। ११ मन्त्र मिरोप । १२ शरीर-रियत बादु की भेष्टा-विशेषः। १३ मेड पर्यतः। १४ स्थि महादेगः १४ सध्यकी एक जाति । १६ भोता १ सतुसा। १० विशुष्ताः ११ मन्य भएं-निरीप (६ ३ १८१)। २ पर्यंत, बहुरिन्धिन कन्तु विशेष (बहुत १४) । शहस d [भी] रल की एक बादि (ग्राना १ १--वर १० १७--वर १२१ कव क्त १६ ५७)। त्त्वी की ['त्की] शिक्यीने की पत्ती (सुर १ १वदा ६ १२व)। हाब पुं ["द्वीप] डीए-विशेष (पदम १४ ४१) । समज्ञाम वि ["सम्बन्ध"] र तुल्य सफेर (संद) । २ विशव निर्मेण (4 1) |

1 (058 इसम र् [४] मानुमग्र-फ्रिय (मग्रु)। ध्या इसिए। हुंसा की [इंसी] १ इंड पक्षी की माध (प्राप्त)। २ स्टब्स काएक नेद (पिन)।

इसव इन [इसक] धुरू (पाम नुपा

र्धमुच्य र् [ईस] प्रथ की एक उत्तन वाति (सम्बद्ध २१६)। रंडा ध [रंडा] स्न प्रची कानुषक क्रम्पर—

१ त्रंबाचन प्रात्मवस (नुच २३ १ नर्गीव १६, उर १६० दे) । २ विस्तार (बाम ११ क्षिता के बर्ग नवीं। अ बंब करता है प्रश्न (इ.२.२१७)। ह्तुन व [ह्तुन] प्रवन्तिर (स्तु १) ।

**इक्ष एक [**नि+दिष्] विदेश करना friites stell good (E v 15v वह )। वह हक्ष्माण (हुमः)।

द्रधः तत्र वि दिन्दा—१ प्रकारना बाह्यान करता। २ वेप्साकरताः १ स्टेब्साः इन्हर्द (सूना १०१) । यह इन्हरेंड (सूर १४, २ १) पुरा ११ ) । करङ हक्तिजांत (नुपा २३३)। धंड- इक्षिम इक्षिपे इक्टिज्ञ (तुर १, २६१ जुल २४०-महा)। TELL A [4] E/4-? Tell's Beille. मातान । २ प्रच्छा- 'बन्ती भूचीन बूची न

कुरा १६१ सिरि ४१ ्यपुद्ध ७००)। हफ्तर सक [आ+कारम ] दुकारमा बाङ्काब करना दुसाना । इन्हमरह (यहाः

भक्ति) । इतकादह (सुपा १००) । कर्म, हरकारिकांतु (बुद १: १२६ मुपा २६१)। नहः इकारेत, इकारेमाण (पुर १ ६वा लामा १ १६---मत्र २४ )। मं**ड हका** रिक्रम स्वारेङल (द्वय ४ मुना २२ )। श्रमो. इक्कारावह (मुवा ११व) । हकार सक दि] अँव क्षेत्राता। क्ष्मै हतका रिज्योग्नि (सिरि ४२४) । इक्सर वृह्मिकार] १ पूर्णमध्यों के समय की एक बएडनोरिं (छ। ७--पन १६४)। १

इक्टरण व जिल्लास्य विद्यापार (स.२६४) क्रम ११६) । इच्छारिअ वि [आतारित] शक्का (मुता २६१ भोष ६२२ धै महा) । इक्टिम नि दि] इनित ह्या-१ वर्षह हुना 'हिन्स्मी करी' (महा)। 'बेस तमी पासल्यावरेखनेखानि इतिकास समर्ग (सार्थ १ १)। २ माह्य (कुत्र १४१)। ३ जेपिक (बुग २६१)। ४ छन्तव (बद्)। विका नि निपिक्त निवारित (क्या) ।

हाको की प्राचान (पुर १ २४६)।

इकोद्ध वि हि] शक्तिका (दे ६)। इक्तुच विदि अस्तिध्य काया ह्या करियास (के ६ ) पत्रम ११७ ४, पाधा W Sty) I इक्स्नव बक जिल् + द्विप ] १ अन्त करना कक्षाना । २ व्हेंश्रमा । ह्वच्युवह (है ४ १४४)-त्रशुभरवेद्वी देशो इत्युवद व कि महारीयाँ (Pre sau) i इक्ज़ुविश वि [ इरिक्रुस ] अरपारित (पूना) ।

ह्यां की [हस्यां] तम मात (हुव १६७) वर्गेवि १७)। हर र्थ हिट्टो र मापाए बाबार (या ७३४-मवि)। २ दूरान (गुपा ११ १≪६) । शाह्र नानी की ["गर्गा] व्यक्तिपारिक्षी की मुक्तस्य (मुपा ६ १ ६२) । हरिया रे थी [हरिया] बोग्रे हुमन (नोह हर पुता १०६) ।

इद्वर वि[द्वर] १ इर्व-द्वर, मानन्य ३ २ विस्मित (जवा विपा १ १) धीमा यत्र)। ६ मीरोम चेय-चहित हिरेख विमानेस व धमुक्तको समुबद्दिशामिम निममेर्स कासन्ती (पण ४—पाशा १६२)। ४ राजिसाची बनान समर्वे तक्स (क्रम्म) । १ हरू मन-बुत (धोम ७१) । हर्द्ध रेको भट्ट (गा ६१४ म)। बटसबट वि दि देशीरोग। २ वस, च्युर (दे व ६४) । १ स्वस्य द्वरा (वह ) । श्रद्ध कि कि इस्ते विस्का इस्स क्रिया क्या

हो वह (दे १६: क्या)। हडक ) (मा) देखों हिअय = इस्प (प्रक हाइका १ १८ १ राजाम नाट-मुच्च 42 (T Z 1 22 ): इक्टप ) पुँदि है र पात्र-विशेष अन्य इक्टप्त ) सामि का पात्र । र कानून मानै का पाथ (धीप) । ३ थामरहा का करहरू (कान्य ११ टी-- पद २७ २०)। इक्टर प्रीदे र धनुरान प्रेम (द

(वस्)।२ ताप (देव, ७४)। इडरूड दू [इडरूड] 'इड-इड' धानान (सिरि 1 (500 इकाइक नि कि बाध्यमं प्रध्यन्त (निपा र १—पन १ खाना १ १६—पन १६६) । इक्टि वृद्धिको साह का सम्बन्धिक <sup>काठ</sup> की बेड्री (फ़ास्त १ २ -- पन व६) निरार ६---पत्र ६६३ ग्रीपः क्रम्म १ २६) १ **बद्ध** व कि ] हात, प्रतिच (के प्र ३८८ व्हें ३वा सूचा ११६, सु १ )। इक्ट वे हिंदी १ क्लारकार (पामः पण्ड १ १--पत्र प्रशा है १ (१)। २ वस म होते-वाची वनस्पति-विशेष कुरवी व्यवपुरमी काहै 'काबाइडो व्य इस्तै प्रद्रियम्य पर्व स्त्रति (उत्तर २४ तुमार्ं ३ र≝

पर्वा १--- पत्र १४)। इ.ण. छक् [इ.स.] १ वय करना। २ जान£ विव करनः । इस्तरः इतिहास (कुमाः) सम्बा)। मुक्त. इतितु इतीय (बावाः हुना)। थरि, इतिहो (नुवा) कर्म, इति ण्यह, इत्थित्रवर, **इस्टाए, हुन्यह, ह**न्मह (हेथ २४० कुमा प्राप्तु १६ माचा)। माचा)।

र्मन हम्मिद्दिर, हरिकदिद (दे ४ २४४)।

रह. इर्णत (प्राचा कुमा) । क्लक्क हरुणु,

इणिञ्चमाण, इन्मंद, इन्ममाण (शृध १

**८२ ६ मा१४ सुर १ १६ वि**लाह

र—पत्र २४' पि १४ )। संद्र- होता,

देत्ण, देत्लं इत्त्या इतिकल, इलिस

(भाषा प्रासू १४० प्राष्ट्र १४३ माट) ।

**देक इं**ट्रिक्णिक (मह्या चप प्र ४०)।

**इ. इंतब्ब (8 ६ ३) हे ४** २४४०

इण वन [भू] पुनना । इलाइ (इ/४ ४०) । ६ण नि [दे] दूर, प्रनिकट (देव १६)। इप केरो हणन 'ह्याच्यापनवस्तरारण---(फ्लर व २३१)। €ण केको भग= वन (मा ७१३३ स १) । इजन र [इनन] १ मारण स्थ पाठ (भुगा रेप्रके स्छ । २ विनाश (पराह २ १--- । पण १४ म)। ६ विष वयस-कटी। इसि जी (कुन्न २२) । इणिस वि [इत] क्सिक्त वय किया यथा हो वह (या २७) कुमाः प्रास् १६: पिंग) । इणिञ देवो इ.य = हन्। ६णिज वि [कृष] युना हुमा (कुमा) । इणिव देवो हिम्मिद (या १६३)। ६णिर वि [इन्द्र] वय करनेवाचा (बुगा 1 (0 } **र्**णिक्षि । स्र [अक्ष्यहित] १ प्रतिकित दिपिद्यि । हमेला (पर्या २ ३-पन १२२)।२ सर्वेशासन सर्व्ह से (पर्राहर 4-44 (YE) I रेणु वि [दे] सावरोप वाली कवा हुआ। (दे = ২৩ রড)। **ए**णु (क्षे [हतु] चितुक होठ के तीचे का बान, हुई। केड़ी बाड़ी (बाना परह है ४---पत्र ७व)। व्य, स, संत यंत प्र [ मत् ] ह्युमान, रामधनप्रजी का एक मस्यात धनुषर, प्रथम तथा सम्बनासुन्वधी म पुत्र (शक्त १ प्रशाहक १२१) ४० रिकेट रे १४८। कुमछ प्राक्र वचन ११ १६ ४६,२१)। छह स्वर्ण[स्वर]

ममर-विशेष (पत्तम १ ६१) १७ ११८)। य, र्वत देखो स (पडम ४७ २१ १ **८ उर प्र ३०६)** । इण्याकी इत्या १ द्वा केशी कशी (बागु ५)। २ देश-विशेष बाबा-विशेष (स्था) । हुणु की [हुनु] देशो हुणु (पि १६८३ १६८)। इच्छा देशा इम = इन्। इत्त देखो इय ≈ हत (पि १६४० १६४)। इचरि येवो सचरि (प २६४) । इसु वि [हर्स] इरण-क्वा (प्राञ्च २ )। इन्त्र देशो इप = इन् । इत्य वि [दे] १ स्त्रेप, वस्वी करनेवाला (दे ≈ ३.६)।२ क्रिये **भस्दी** (घोप)। इस्ब पूंज [इस्त] १ हाच धरिपतछेछ हुत्वं पशारियं बस्त करहेलुं (क्षमा १ ६ भाषाकृत्यकृताचे ६)।२ द्वे **क्या**प-मिक्षेप (सम र ३१७) । ३ चौबीस मीप्रस का एक परिमाण । ४ हानी की पूँड (हे २ ४३ प्राप्त)। ३ एक दैन मुनि (कम्प)। कृष्य न ["कृद्ध] नगर-विशेष (शामा १ १६--पत्र २२६ विक ४६१)। सन्मान [कर्मम्] हस्त-क्रिया दुरचेहा-विशेष (पूम १ ३ १७ ठा १ ४—यम १६२ सम ३६ क्स)। ताक तास्त्र ("ताक) हाव हे तावन (शक कस ४ ६ दि)। पहें क्षिम बीन [ प्रहेकिक] संबदा-विदेप शीर्पप्रकारित को शीराची काम से पूछने पर को संबद्ध सम्ब हो वह (इक) । प्या<u>ह</u>क न ["प्रामृत] हाम से विया हुया धरहार (है द ७३)। साख्य न ["साक्षक] धामणा विशेष (धीष) । सनुत्तरण न ["उपुस्य] १ इस्त-कावव । २ जोरी (पराष्ट्र १ — पत्र v4)। सीस न [शीपै] नवर-विशेष (स्राया १ १६ -- यज २ व)। स्थरम न ["स्मरण] हाय का यहना (मग) । स्यास र्षु [ताड] केवी ताड (क्य) । स्थ्रेन र्व[ीक्रम्ब] हाय का शहारा भवत (वे १ १६ सुर ४ ७१ क्स)। इल्लंकर पुं [इस्तक्कर ] बनस्पति-विशेष (धाया २१२)।

इत्येषु ) पून [इस्तान्युक] हाम बांबने इत्येषुय है का काठ मादि का क्यन-विशेष (सिंक १७३ विपार ६ — पण ६६)। इत्थन्द्धुइणी की [दे] नत-वपू, नतोड़ा (के ८ ५४)। ब्रायक (धा) वेको ब्राय (हे ४ ४४१ वि **428) 1** इस्थय न [इस्तक] क्साप-धमूह (इस समस्य मुक्त ६१ पक् ८१)। इत्यक्ष पुंचि १ कीवा के लिए हाम में शी हुई चीज । २ वि हस्त-सोस चद्यप हाय पाणा (वे व ७३)। इस्यक्ष वि [इस्तक] १ वर्चन हायराना । २ पूंचीए, वस्कर (मराह १ ३---पश्र ¥\*) I इस्थक्तिज्ञ देशो हरिथक्तिल (राज)। इस्यक् वि [दे] लोडा से हाव में निया हुआ ( t a f ) 1 €रयक्तिअ वि [वे] इस्त्यपवारित, हान हे इटाया हुमा (दे व ६४)। इत्यक्षी भी वि] इस्त-पूछी हान में स्वित बासन-निरोप (देव ६१) I ब्रियार न [चे] सक्तमता मदद (दे = ६)। हत्यारोह र् [इस्त्यारोह] इस्तियक हाथी का महाबद्ध (विया १: २---पत्र २६)। क्रवाबार । [ब्] स्थायवा मदद (भवि)। इत्थाहरिय की [इस्ताहस्तिका] हाबोहाय-एक हान से दूसरे हान (मा १७६)। ब्रयाब्दिय म अपर देवो (गा २२९ ५८१) विश्व ४६३)। इत्थि पूर्व्य [इस्तिन] १ हामी (मा १ ६ ङ्गमा प्रमि १८७)। स्टे. यो (स्राज्ञा १ १---पण ६३)। र पूं. तूप-क्रियेप (दी १४)। आरोह र् [भारोह] हानो का महाबत (धर्मीव १९) । कल्या, समानु [कर्ण] २ एक वस्तर्वीयः। २ वि उत्तका निवासी मनुष्य (इकटा ४ २—१व ६२६)। कारण न ["कारण] देशा इस्य प्रत्य (धन)। शुक्रमुख्यस्य न [शुक्रमुख्ययित] हाथी का राज्य विशेष (राम) । यागपुर व िनामधुर] नयर-विशेष इस्तिमापुर (का ६४≈ क्षेत्र कक्ष)। वापस वृं [\*वापस]

११ मन्द्र-विशेष । १२ शरीर-रिवट बाद की

चेत्रा-विद्येष । १३ येव पर्यंत । १४ वित

मद्रादेषः। १५ धप्रभीयक्रणातिः। १६

भौहाः १ सबुद्धाः १८ विकुताः ११ सन्त-

वर्ष-विशेष (इ.२. १=२) । २. प्रवेच,

चन्चित्रम बन्तु-विशेष (धना १४)। गुरुस

र्वीभी एन की एक जाति (खाना ह

१--- ११ १७--- पत्र २२६ कव

पत १६ ७७)। तुन्ति की [तुन्ती]

इसय—इन

विक्रीत की बड़ी (पुर के ३ ⇒ ६ १२ ): इस्य व दिवा शेष-विशेष (परम १४ ४१) । स्कलाम वि विद्यार्थी १ तुक्त सफेब (बर्त)। २ किशक निर्मेश (4 **1** 3) i इस्प इन [इसक] दूर (गाम नुग 120)1 इसक र् [द] मानुष्मा-विशेष ( यलु )। वेदो इस्डिस 4[सी और [इ[सी] १ इ[स पदी की मान्य (पाम) ६२ फल्द नाएक मेद (पान)। इस्सम्बर्ध [इस] पद की एक उत्तन वादि (सम्मच २१६)। **र्द्धा** म [**र्द्धा**] इन यमी ना मुचक शव्यय— १ संबोधन, सामन्त्रख (सुख २३ १ वर्गक ११, उप ११७ थी) । २ तिरान्तर (वस्त्र ! ११ थे। १ वर्ष वर्ष । ४ वंच क्यट । ४ मका (हे ९, २१७) । इक्ष न [इक्षम] का-निरोप (बनु १)।

**इच** सक [नि+पिथ्] क्रियेव करना

निवास्त्र करता | इसम्ह (के ४ १६४-

द्व वत्र [रे] श्रीनग—र पुनरका वाह्याव

क्ला। २ प्रेच्याकलाः **३ वक्**षाः।

इन्हर्र (सूपा १ १)। यह इन्हरंत (सूर

१४, २ ३: गुरा ११४) । कसक हक्किम्बंद

(सुपा २४३)। पंडर इक्टिय इक्टिय

इव्हिज्ज (तुर २, २३१ तुमा २४०

EREI ER [4] Ein-t gete, Beifer

माञ्चान । र त्रेपणा 'क्शको कुर्यान जुली न

यहा) ।

पर्)। 💵 इकमाय (कुमा)।

मयो. इनकाधनद (सूपा ११व) । हकार एक हिं। जैंदे फैमाना । कर्म हरका रिग्वंबि (सिरि ४२४) । इकार प्रे [हाशार] १ दुविकों क समय की एक बएक्पीति (ठा ७--पत्र ६१०)। २ इम्बे की प्राचान (तर १ २४६)। इबारण न [भारतण] पाञ्चल (स २६४) क्रम ११६)। इक्सरिम वि [आसारित] प्रमूख (बुरा २६८ थोष ६२२ टी महा) । इकिम वि [दे] होता ह्या-१ वरेदा हुमा 'हिन्समी करी' (यहा): 'वेख वयो पास्त्रमात्रकेत्रमेकाचि इपिक्रमा सम्मं' (सार्थ १ ३)। २ बाह्य (क्रुप्र १४१)। ३ लेक्टि (मुपा २६१) । ४ सम्बद्ध (बह )। **श्**षिञ वि [निपिद्ध] क्षिप्रति (क्रुमा) । इकोद्ध वि वि चित्रवरित (दे ६)। इक्लुच वि [व] जनाटित उठामा हथा वरिकास (के अ. ६ ) प्रसम् ११७ ४ पासा W Sty) i इक्सुव वक [सन् + क्रिय्] १ डीवा करना क्काना । १ फ्रेंगना । हश्मुबद (हे ४ १४४); ठणुवरदेशो देवो इत्युवद व कि नहासेव" (विशे ६६४)। इक्सुविभ वि [४ तन्तर] जलादित (दुवा) । इत्थाकी [इस्या] तब भाग (कुम ११७) थर्मीय १७) । **ब्ह्र प्रं ब्ह्रा** र भागाल नागार (ना ७१४-मनि)। २ दूष्पन (सूत्रा ११३१ ६)। साझ गांची वर्ष [ गर्भा ] व्यक्तिचारिक्यी क्या पुष्पा (पुषा १ (३ १ २)। इष्टिया १ की [इष्टिका] कोटी हुकान (मीक्र ∫ ६२ मुपार ६)।

स्पा१ ५१ सिरि ४१ सन्य कदो।

**रकार** सक िया + कारय ी प्रशासन

भाद्वान करनाः कुनाना । हक्कारद (महाः

मिन) । इतकारह (तुरा १००)। वामी

इस्कारिज्यंतु (गुर १ १२६, सूपा २६२)।

**वह हकारें**त हकारमाण (तर १ ६=

कानार र — तव २४)। क्रीक-क्रकटा

रिकण इकारकथ (क्रम ६, गुना २२ )।

बद्धारि द्विष्ठी १ हर्ष-पुष्ठ, मानन्दितः २ विस्पित (उदार विपा १ १) सीच चर्न)। ६ मीरोन रोप-रहितः 'हरूक' फिराबोस व वस्यत्वो अस्वविद्यान्य नियमेसं कामनो (पर ४--पाना १६२)। ४ शक्तिशबी ववान समर्थे तस्य (क्या) । १ इड मक-बूत (धीम ७१) । इह वेको सट्ट (वा ६१४ म)। हृदसहुद्ध विश्वि श्री सेवा २ व्या क्यूर (वे ब. ६१) । वे स्वस्य द्वरा (वर ) । इक कि कि इस्ती विश्वभा इस्सामित करा हा बढ़ (रेंद ५१) फुप्र)। धंडक ) (ना) देशो दिखय = ह्रस्य (शक् इंडब रे १ १ राजार नाट-मुम्ब ६१३ वि १ ३ ११ )। **इड**प्प } थूं दि] १ पाध-विशेष, डम्ब इडप्को पार्वका पाचा २ शासूच पार्व का पाच (भीप)। ३ सामच्याका करहरू (खासार १८३—नन १७-४) ः इबहब र् [दे] १ घनुरान, प्रेम (६ ४ ४४) (पड्)। २ ताप (देद, ७४)। ६६६६ दे [इड६६] 'हर हर' मानान (विदि 1 (300 **इटाइड** वि [दे] सरवर्षे प्रत्यन्त (विपार रे—पण य कामा १ १६—पण १६६)। इडि र् इडि काह का कक्क-विदेश कार की बेबी (शासा १ २---पण वर्ध निपार ६--- पत्र ६६३ शीय कम्म १ २३)। बद्धान दिहे हात, बल्प (दे न, देश नेंद्र देव्हें सुरा देशक सुर )। इक्ट में डिटी र क्लारूबार (पाक परहा र १---पश्च ४४३ वे १ १६) । २ जवास होने-वाली वनस्परि-विद्येष कुम्मी जनकुम्मी-काई 'दायादको व्याहको प्रदूष्णया पनि स्वर्षि (उत्त २२ ४४ वृद्ध २, ६, १८ पक्छ १--- तम १४)। ह्म क्षक [हुन्]१ थव करना।**२** वाक-वर्षा करनर । इसाइ इस्तिया (क्रूबा) मान्म)। मुक्तः इन्द्रियुः इतीय (प्रापाः **प्र**मा)। मा<sup>क</sup>, इरिज़री (दुमा) कर्म, इस्<del>टि</del> ण्या, इतिहरूत हुएएए हुन्स, हुम्म**र** (है ४ २४४- हुम्छ प्रामु १६ माणा)।

र्मन हम्मिहिर हांग्रहिर (हे ४ ९४४)।

वह, ह्रजंस (प्रापट कुया) । क्वड ह्रण्यु, इणिज्ञमान, इस्मंत, इस्ममान (सूच १ २२ ४ मा१४ सूर १ ३ छ। विपा१ र---पण २४ पि १४)। संइक्त ह्रंता, **(सूप, इंस्पे इत्त्**ण इमिकण, **द**ाणअ (मापा प्राप्तु १४७ प्राष्ट्र १४ माट)। हेक्क होतुं, हियाब (महा चप पू ४०)। इर. इतिहल (के ३ ३ ई. ४ २४४ माचा)। इल सक[भ्र] मुनना । इल्ड (हे ४ ३८)। इ्या वि दि] इर, सनिक्ट (वे ८ ४६)। इय देवो हुणन 'ह्लक्युगुपमसमारण--(पटम = २३२)। ह्य देखो खण = धन (मा ७१६८ = १)। **इज्ज न [इ**त्तन] १ साध्या वब, भात (सुपा २४३३ छरा)। २ विनास (पर्स २ 🔻 — पत्र १४०)। ६ वि वय-कर्षा और णी (क्ष २२)। इजिस वि [इत] क्लिश्न वय किया गया हो बह्न (था २७) कृता प्राप्तु १६: पिय) । इनिञ देखो हुण ⇒ हन्। इजिञ्ज वि [६व] सुना हुवा (कुमा)। **इजिद देवो हि**जिद (या १६६) । इजिर वि [इन्तु] वय करनवाला (गुपा 1(# 7 इणिइणि । म [अहन्यइनि] १ प्रतिकिन इमिहणि । इमेठा (क्या व १२२)। २ सर्वमा सब सरक्ष स (प्रा**व** २ ५---पव १/८)। इल्ला विं विचारिय बारी बंधा हुया (वे द ६६३ स्तु)। स्पुर्दश्ची (स्तु] पितुक होठ के कीचे का मान, दुद्दी ठोड़ी बाड़ी (बाना पराह र ४—-पत्रधव)। इस स संख थैल पू [सस्] स्तुमान, रामवन्त्रमो का एक प्रस्पात समुक्ट, प्रका हमा सम्बन्धानुन्वधे रापुत्र (पदम १ १६/१ \$ 351 Ro रेश है रे, १४६८ कुमाः प्राप्ता पत्रम १६ १७ १८, २१)। यह सद व [ध्यः] |

नम्द-चिशेष (पडम १ ६१३ १७ ११ष)। य, बीत देखों मं (पडम ४७ २३ ३ 🛭 उप पू ३०६)। हणुयाओ [हनुका] १ दुवी ठोवी वावी (बानु १)। २ बंध्रा-विशेष बाब्रा-विशेष (त्रमा) । ह्य की [हुनु] देवी ह्यु (पि १८८० ३१८)। हुच्या देशा हुण ≈ हन्। हल देखो इय = इत (पि १६४- १९१)। इचरि देखों सचारे (वि २६४)। इस्तु वि [इर्षे] इरए-कर्वा (शङ २ )। इत्त्य देवो इण = इत्। इत्य वि दि र शोग वस्ती करनेवाला (वे ८ १६)। २ किथि वस्सी (योग)। इस्थ पून [इस्त] १ हाम बरियक्रणेण इस्ते प्रशास्त्रि जस्त वरहेरां (वन्ता १ ६) बापाः कथ्य कुमा र्थ६)। २ ⊈ नलव विशेष (सम १ १७) । ३ **चौबीस सं**पूस का एक परिमाण । ४ हाची की गूँव (हे २ ४ ६ प्राप्त)। १ एक देन मुनि (क्रप्प)। कृष्य न ["काय] नगर-विशेष (खावा १ १६---पन २२६ विक्र ४६१)। सन्मान [\*कर्मन्] इस्त-क्रिया दूरचेतृत-विशेष (पूष १ १ १७ ठा १ ४--पत्र १६२ सम ११, रस)। ताइ तास र् [°ताइ] हाब से बाइन (सन अस्य ४ वेटे)। पह जिञ्ज कीन [ प्रह्तिक] संस्था<del>-विद</del>ोप क्षेपंप्रकरित्व को बीरासी बाख स पूर्णने पर बो संक्षा सक्य हो वह (इक्) । प्या<u>त</u>ृत्व न [ प्राञ्चन] क्षण न रिया क्षण बरहार हि ■ ७३)। सालय न ["मालक] पानरण-विदेव (धीप)। तहुत्तण न ["उपुरव] १ इस्त-सायव । २ जोरी (वस्त्र १ १--पत्र ४९)। सास न [शीर्वे] ननर-निरोप (लावार १६—रश्र २ व)। भिर्मान [अरण] हाब का यहना (अन)। स्यास्त व [ [ताड] देखो ताड (क्स)। छित्र र्वु [स्टब्ब] हाव का नहारा मदद (व १ (६३ मुर४ ७१ क्स)। हत्यंग्र र् [हस्तद्वर] वनस्त्रीवनिवदेव

(धाया २१३)।

हर्स्यदुः ) पून [इस्तान्दुकः] हाम बाबने इत्यंतुम ) का काठ मादि ना बन्यन-विशेष (पिंड १७३ विपा १ ६--पत्र ६६)। हत्थच्छुहणी भी [दे] मतन्त्रपू, नवोदा (दे = {x}: इत्थड (पा) रेखो हत्य (हे ४ ४४३) नि हरथय न [इस्तक] कमान-समूह (दरान सनस्य मूत्र ३१ पत्र **८१)**। हत्यस पूर्वि १ की इस के सिए हाय में सी हर्द थीत । २ वि हस्त-सास बज्ज हाय-बाला (वे < ७३)। हर4स्र वि हिस्त्वस्त्री १ वर्षम हामशाना । २ वृं चोर, बस्कर (पर्याः १ ३---पत्र ¥4) ( हर्वास्त्रज्ञ रेको हरिवस्त्रिज (एव)। इत्यद्ध वि [दे] भोड़ा सं द्वाप में सिया हमा इत्थक्तिञ वि [व] हत्तापसारित, हाम से ह्यया हुमा (रे = ६४) । इत्यही धी [रे] इस्त-इसी हाय में स्थित पासन-विशेष (वे व ६१)। ह् शरण [चे] बहामचा मदद (देव ६) ⊦ हरथाराह पू [इस्स्याराह] इस्टिपक हासी का बहाबत (विपा १ २ -- पत्र २३)। हरमाचार न वि] सहायता यदद (भार)। श्रुरभाइत्यि श्री [इस्ताइस्विमा ] हानोहाप एक हाय थ बूमरे हाय (गा १७६)। हर्त्वाहरिन ध, जार देखी (बा २२६ ४८१) क्ट ४६३)। इस्पि द्री [इस्टिम्] १ हाची (बा१ ६) पुमा प्रसि १६७)। झी, जी (शासा १ र---वश ६६)। २ पूँ गुर-विशेष (ती १४)। आधह र् [आधह] हानी हा महाउठ (पर्वेषि ११) । इत्य इस दृ [क्य] २ एक वस्तर्जीय । २ वि उत्तरका निशासी मनुष्य (इकट्य ४ २--- रत्र २२६)। कृष्य न [क्स्प] देवा इत्यक्रम (धर)। गुलगुम्बद्दय र [ गुलगुन्द्रयित] हाथी का राज्य निर्देश (सर्व) । जागपुर न [ नामपुर] वयरुनियेत इस्तिनापुर (का ६४= थी बए)। वापस र् विषय

बीड साधु-विधेय, हामी को मारकर उसके

मांच से जीवत-निर्वाह करने के सिदान्तवासा

संग्यासी (पीर मुर्वात ११) । नायपुर

रेको मागपुर (मि)। पास पूर्विपास]

भवतानु महातीर के समय का पातापुरी का

पुत्र राजा (कथ्य)। पिष्पस्त्र 👊

[<sup>\*</sup>पिएपर्स्थ] बनस्रति-विशेष (बत्त ३४

११)। सुद् वृ [सुस्र] १ एक प्रवर्शन ।

२ दि, इम्ला विवासी मनुष्य (ठा ४ २--पत्र २२६: इक)। रक्यान ["रस्त] बत्तम हाबी (बीप)। राय 🛊 चित्र विका शकी (बुरा ४२६)। बाउँप दें ["क्याप्रती महाबत (चीप) वास्त्र देवी पास (कम्प) । पिजम न ["विजय] वैकाम नी चकर <sup>)</sup> मेणि ना एक विद्यावर-नवर (इक)। सीख न दिर्गियों एक नवट जो सका बनकत की राजवानी को (उप ६४० छै)। सुंदिया रेको सोडिगा (एव)। सोंड इ [शीपष्ट] ग्रीन्द्रय जन्द्र-विरोप (पर्स् र--ात ४३)। सोडिया को ["शुन्डिक] यायन-विदेश (का १, १ ही--तम २६६)। इरियमचनम् न [व] यक धरवोषन (वे # {X}1 इतियक्ता वि [इस्तीय इसय] इत्यं ना हाव-शंबन्धी (शिंड ४२४) । इतिपत्रतर , न [इतिनापुर] नवर-विशेष इतिभवपुर रे (छा १०—यत्र ४७४० सुर इत्थिणाउर १ १२६ महा यस्कानुर इत्थिपापुर<sup>1</sup> १ ६४: शह—शङ् ०४३ यंव) । इरिथमी देवी इस्थि। इरियम् हु [ द् ] रथ-इस्के पैछरत हारी (8 = \$3) I इस्थियार न दि । दक्षियाद, राज (वर्नेश्वे t २ र ११ ४३ म/र)। २ द्वासकाहै, वा वनेहि संतर्थ करेडि इन्स्वित है कि "रेव शोरने देवेछ मह इत्तिमारहर्की (स ६३०-11 )1 इप्रिश्निक्र व [इस्तिक्षैय] एक वैतनुति दुन (रूप) । इरियय र् क् कि दर-वेद (हे क ६३)।

इस्पिइरि**ड 1 [रे]** वेष (रे 👟 ६४) ।

**(त्युत्तरा को [ह**स्तोचरा] प्रचयक्रमुको | मध्य (क्या)। इत्युद्ध देशो इत्य (द्वेर १६४ वर्)। इरबोडी की [वे] १ इस्टायरस इत्व का मानुवस्त । २ इस्त-प्राप्तुव इत्य से दिया माधा प्रमहार (दे ८ ७३)। दमकेष व कि इस्त-वहरू, पाशि-वहरू (सिरि १६द)। ह्य देवो इ्य≂इत (प्राप्तः प्राप्तः १२)। इद ] वे [के] बावक का मध-पुत्रापि (पिव ur frot) इत्य रे वि इत्त विकास (द ८, ६२)। इस्ति } व [हाधिक् ] १ केर । २ ब्लूबाप इंडी ∫ (प्रक्रिकेट, वर् । स्वच दर नारे— क्यू १६३ हे २, १६२)। हमार (वन) वि [अस्मवीय] इगाय, इयर्थ श्वम्य रखनेवाचा (निव) । हमिर देखो ममिर (पि १००)। इन्स सक [इस्] दब करता। इध्यद (हे ४ २४४ कूमछ इंदि ३४ मक्क ६४)। इस्म एक [इस्पृ] जाना। इस्पइ (दे ४ 147)1 हुम्स न [हुम्बे] क्षेत्र-पृष्ठ (से ६, ४१) । हमादेशो हवा≖हन्। हम्मार देखो हमार (पिन) । इम्मिज वि [इम्मित] क्ट, क्या क्या (त #X\$} I इम्मिश्र न [दे इस्में] मृद्द शकार, महत्त (दे ६२ पाक पुर ६ १६ । बाचा २, 211)1 इम्पीर वे इस्मीर विकास की क्षेत्रकी रकाम्बे का एक पुगवनान धाना (ती ध हम्बीर २३३ रिव)। इय वि [इत] या गास क्या हो बहु(सीर मे १, ११। बद्दा) । माओह र् [मस्ब्रेट] एक नियापर-नरेष्ठ (श्रम १ १)। स्त नि भिरा निधन (परम ६१ ७४ म २ १ हेर २ ६, २, १६१, अर)। ह्य 🕻 हिया बध बोहा (बीच से २, ११ रूपा)। यह र विष्ठे सन्तिकेव मध के रेक जिल्ला बहा एत (राय ६७)। क्षण दस्तर् [दिल] १एक सन्दर्शनः।

२ वि. उपका निवासी मनुष्य (६६) ठा ४ २—यत्र २२६) । १ एक धनार्थ थेत (पर २७४)। सह वृश्चिस्ती १ एक मन्द्रीन (इक) । २ एक धनार्य देश (पर २७४) । ह्य रेखो हिम=हुत (महा धनि एव YY)ı ह्य देशो हर ≕ बहा वेडिसीय दुं[पुण्ड रीक्ष] पक्षि-विशेष (पर्स्ट १ १--पत्र व)। ह्य रेडी यय (या रेड )। इयमार 🖠 🖹 हतमार] क्लोर का बाह (पाच)। इर छक [क्रु] १ इएड १एम⊳ ग्रोममा। २ प्रसम्ब करन्य, कुछ करन्य । शुरह (श्वे Y २१४ वर, बदा) । कर्म, हरिका, द्वीरा, **क्ष्मिक, होरिण्यक (के ४ २६०० गरदा** १२७)। यहः इर्रद (रि ३१७)। समझः **६**रित, दीरमाण (ग १ ६, दुर १२, १११ वृद्ध ६३६)। बंद्ध- हरिकाम (मदा) । हेक्क हरिटं(मदा) । इस हिस्स, हेज (सिंह ४४६) ४६६) १ इर कर [सह्] ध्रहण करना केस । इर्टर (8 8 X 3) **इ**६ सक [हुन्द्र] बाबान करना । हव्द (दे શ્ર કર) દ इट दू [इट] १ महादेव संबद (बुरा १६६ कुमार पर् । हे १ दश का ६००। ७६४)। २ क्ष्म्ब विशेष (शिष्)। "मेहक व "मेलक] क्या-विधेष (छिरि १६)। सञ्चरा वर्षे [बक्कभा] बीधे, पार्वेखे (तुपा १९७) । **१**र हुं [हुर] बहु दश क्लास्त्र (वे ६ €**₹**)1 इर देखो घर ≔ वृक्ष् 'छ। वय पश्चिम मामान भातवे वृत्य सरम्द्र (दरजा १ । दुन्धाः नुपा वृद्दव हे २ १४४)। इर देवो घर ≂ थुः इम्ब्रिक्ट (मे ६, हुर देखो भर⇒भर (पडन १ १४३ दुवा ४१२) । इर पि [ैइर] इरछ-इर्ध (इछ) ।

हुत नि विपर] चारल क्रोनाचा (वा ११४

1 (##F

इरमई , की [इरीतकी] १ हरें का पास । इरडाह∫ २ फस-विशेष हर्रे (य**ड्**३ दे१ ११ कुमा)। इरज न [इरण] १ दीनमा (पुपा १८ ४३६ हुमा)। २ वि छीलनेवाला (कुप्र ११४) वर्गिव ६)। हरण न [प्रह्मा] स्वीकार (क्रुमा)। इरण न [समरज] स्पृति याचा 'प्रक्रिप्रश्रुविद्यपि क्यमंतुर्येव मं क्षेत्र मूह्य म्यू अंतो । राग्य विपद्मग्रा हुएथे स्पानि ए उन्हों छ। दूविमा (सा १४१)। **ैं**दरण देवो सरज (या ४२७ घ)। इरतजुरु [इरनतु] केत में भीने इस केई जी सारि के बाकों पर होता जल-विन्दु

(क्या चेहत १७६; वी १)। इर्ए केते हरन (भागे। इर्एमण्युक्त कि [वे] र स्तृत नात किया हुमा: र नाम के जरेश से दिना हुमा (वे व ७४)। इरस मुंहिदी बड़ा बसारम बह (मामा

सन पर्राष्ट्र र —पन १४६ क्या १२ ४१। ४६ हे २ १२ )। इराइरा को [वे] युक्त प्रक्षंत्र योग्य सबसर पनित प्रस्तावः

'तिस्मतं व मार्च महिसा-पूर्व व मुराएमं बद् हु । मीर्च व काम मीर्पितं भाग निवकतत हृद्याप (मिर्च २ १४) । हृद्याद्य न [हृद्यापित] नृहृद्द् सावान (मृह् १ १ — वर ४३) ।

(प्रस् १ - जम ४ मे)।
स्याधिम मि [हारित] हराय हुआ विशवन
स्पास किया समा हो यह (है ४ ४ १)।
स्रितुं हि हरितुं पुन्न, ठोठा (वे क. ११)।
स्रितुं हिरितुं हि स्टूतुमार-वेगी की व्यवस्य
रिया का एक (ठा २ ६—वक ४४)। २
एक महायद् (ठा २ ६—वक ४४)।

रम, देर-धन (कुमा: पुत्र २३ सम्मत

२२६ बदुब६)। विष्यु भीक्षय्य (या ४ ६। ४११। सुवा १४३)। ३ रामकत (से ६ ६१)। ६ सिंह मुमेन्द्र (से १ ३१ कुमाः कुत्र १४६) । ७ वालर, वन्दर (से ४ २५ ६ २२ मर्गकि ६१ सम्मत्त २९२)। ८ शक्ष भोड़ा (उन १ ६१ टीः सी या दूस २३ तुक्त ४ ६)। श्यास्त के साव वैत रीजा तेनेवाचा एक राजा (परस वर ४)। १ ज्योतिपशा<del>स</del>श्च सत् एक योगः; 'पुरदृरि विद्ठे वंडविद्याएँ (संबोध ४४) । ११ क्रम्ब इस युक्त मेद (सिंग)। १२ सर्गसाँप। १३ मेक मस्युका १८ चलाः १६ सूर्यः। १६ बागु, परन । १७ यन जमराजः १८ हुर, बहारेवा १६ छहा। २ किया। २१ वर्ष-**पिरोप** । २२ समूर, बोर ।२३ कोफिस कोयस । २४ भतु हॉर नायक एक भिक्राज् । २५ पीला रॅंग । २६ पिक्क वर्णै । २७ ह्यारॅंगः २८ वि पोत वर्णवालाः २६ पियस वर्णनासा (दे ६ ९८)। ६ हुए वर्णुंगाना 'हुरिमखिसरिश्वाजिसस्र' (सच्यु ३२) । ३१ पुन, महादिमनंत पर्नत का एक शिकार (ठाय-- १४ ४३६)। ३२ विवृक्षम पर्वत का एकशिवर (ठा ध इक)। ६३ निवस पर्वत का एक शिक्षर (ठा ६ — पुत्र प्रदेश: इक) । ३४ इरिवर्य-दोष का मनुष्य-विशेष (कम)। अंद् पूं ["भग्र] स्मान प्रक्रिक एक समा (है २ दक्ष पड़) गतङ कुमा)। अंदण व [पन्यत] १ बम्दन की एक बादि (से ७ १७) युवा सुर १६, १४) । २ दू यक वर्ण्ड का करा क्ष (नुपा बका परः) । देखी अंत्या । भण्य देखों और (संधि १०)। आल र्पुण ["सार्क] » पीत नर्एंगाबी कावागु-विश्वेष इरहास (सामा १ १-पत्र २४ की रे पर ११४ दूमा उस रेश का ३६ ७१) । २ वृं पधि-सिशेष (इ. २.१२१) । रेको ताछ। एस र्चु [फिरा] १ वंदान (बोप ७६६) युद्ध १ १ महा) । २ एक चरशस मुनि (उत्त १२) । यसवळ पू ["केशवम्द] चएशलपुर्माशस्य एक पुनि (बर क्या १२ १) । वृक्षिण वि

"फेर्साय] १ वरहान-संबन्धी । २ इरि

केशवत नामक पुनि का (बत १२)। कंसिन न ["काक्किस्न ने नमर-किरोप (वी २०)। क्टब पु [केबन्त] विष्कृतार देवों सी द्धिल दिसा का स्थ (रहे)। क्रापनाय. व्हेवच्यवाय वृ [ ग्रम्वाप्रपाव] एक छ (ठा२ ६—पत्र ७२३ टी--पत्र ७६)। क्ष्मा क्षी [कान्दा] १ एक महा-नदी (ठा २ ३—पम ७२ सम २७ इक)। २ महाद्विमवान् पर्वेत का एक शिक्षर (इक' ठा a—वद ४६६) । "केन्द्रि पू ["केन्द्रि] भारतीय देश-विरोप (कप्पू) । यस्यवस् देखी एसयस (दुसक ३१) । केसि पू [किशिम्] एक जैन पुनि (यु १४ )। गोअ न ["गीत] छन्दका एक येद (रिंव)। म्मीय **र्द (**"मीय) राजस-रंत का एक राजा (परम ४, २६ )। दंद दुं ["चग्रू] १ विद्यापर-वंश का एक राजा (प्रजन प्र ४४)। २ एक विदावर-द्रमार (महा)। चंदण पूं ["बन्दन] १ एक प्रन्तक्रम् कैन धुनि (धैव १८) । २ देखो अङ्ग्प (प्रानू १४२३ च ३४१)। ययर न ["नगर] वैकाञ्च को क्षिप्रसम्बद्धियाँ मि स्थित एक विचायर-नगर (६४)। तास र् ["वास] श्रीप-विशेष (इक)। देवो आछ। दास र् [ "ब्रस्त] एक बिएक का नाम (पडम ४ च्यो। प्रश्नान [ धतुप ] एत-स्तुतः (बग १६७ थे)। पुरी स्त्रे ["पुरी] एन पूरी पमरावडी स्वयं (मुता ६३४) । सह र्षु ["मत्र] एक मुनिक्यात वैन प्रापार्य हवा धन्यकार (बहर रेटा कर १ रेटा मुत्त १)। "मेंच र् ["सम्ब] पान्य-विदेश शाक्षा पन्न (बा १वा पर ११६ स्वोद ८३)। मिळा ध्ये ["मस्य] इपनियोग (योग)। यह वृ ["पति] बानर-पांत मुबीब (के १ १६) । र्थस वृं ['र्थस] एक मुत्रविक धनिव-मुख (कप्प पडम १ २)। वस्सः बास र् ["पप] १ धेव-विदेश (पलु १६१ टा र रे—पत्र ६० सम १२ परेंग १⊱२ १ ६३ दर) । २ पूनः नहर्महनरातः वरोत का एक शिवर (क्ष ब-ात ४३६)। ३ निषय पर्वत का पृष्ठ विनार (क्ष र-ना रहत एक)। वाह्य ई [वाह्य] १ मनुष का एक

EÃo	पाइधसङ्ग्रहण्याचे	इत्यिभणसु— इर
बीव बादु-स्थिए, हात्रों को मारकर वरके नाय से जीवन-निवांद करने के विवानकार संस्कृती (तीन दुर्धन १६) मार्चिद्र रहे के विवानकार संस्कृती (तीन दुर्धन १६) मार्चिद्र रहे को नायपुर (वर्ष) । याव दु [याक] स्वतान नहात्रीर के सम्बन्ध मार्चिद्र प्रकृत कर पत्राच्य की व्यवक्ष मार्चिद्र प्रकृत है स्वता १९ वर्ष प्रकृत है है स्वता १९ वर्ष करवार्थि । दुर्धन है एक करवार्थि । १९ वर्ष वर्ष वर्ष होत्री । १९ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष होत्री । १९ वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष होत्री वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष होत्री (वर्ष प्रविद्य)। याव वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्	स्वास (स्प्य)। इन्ह्यां केवी हरण है र १९४४ पर्य)। इन्ह्यां केवी हरण है र १९४४ पर्य)। इन्ह्यां केवी हर्य है र १९४४ पर्य । इन्ह्यां केवी हर्य हर्य अपूर्ण हम्य है दिवा बातां प्रवार है र १९४४ प्रवार हर्य है दिवा इन्ह्यां केवी ह्या कहर (अध्या मान्न १९)। इन्ह्यां है कि विकास (वें सा, १९)।	२ वि शहर शिवारी प्रमुख (का ठा ४ २—वव २व६) । दे दक्त प्रसार देश (जा २०४) । युद्ध दु युज्जी र वक्त प्रसार १६७) । २ वक्त ध्यारी देश (जा १४४) । वृध देशो द्विच = ह्य (म्हा चर्चर एम ४४) । वृध देशो द्विच = ह्य (म्हा चर्चर एम ४४) । वृध देशो द्विच = ह्य (म्हा चर्चर एम १६) विक्वितियेय (क्ष्यू १ १—वव ८) । वृध देशो च्या (श्रा देश ) । वृध देशो च्या (श्रा देश ) । वृध वह वृद्धि है इत्यार क्षेत्र क्षा क्षा
महाबत (बीप)। बास्त देखी पास (क्रम्प)।	क्रिको स्टिशास्त्रिक्टो क्रमेस । २ व्यक्ताप	प्रयम्भ करमा, कत करना। तरह विरूप

हिता (अ. हिरायणा प्रमाण करा नाह— हिता ) (प्रतक्ष करे पर् । इतम रेश नाह— विजय न विजयी नैराजन की उत्तर मेरित का वक नियावर-नगर (इक)। शीख er te & ? (e2): न शिपी एक नवट को सका बनकत इमार (वप) वि शिश्यवीय े हमारा, इपने की राजकारी के (स्प ६४० हो)। संदिया श्रंबन्य रक्षवेशामा (शिव) । देशो सोडिया (राज) । सोड थे हमिर वेको भमिर (चिर्वक)। शिएको धोन्त्रम भन्द्र-विशेष (परस इस्स एक इंडम् । यम करता । इस्मद (है ४ र--वर ४२)। सोंडिगा के "मुण्डिमा २४४ क्या सीच ३४ मा ६४)। यासन्विरोग (स १, १ थै--- तम २६६)। हम्म एक हिम्मू] जान्छ। हम्मद (हि.४ इतिकायकञ्जून [दे] यह प्रवद्यानन (६ 1 (883 इत्म म [इस्यें] क्षेत्रा-पृष्ठ (दे ६, ४१) । इत्विद्या वि [इस्तीय इसय] इमे का, इस्म क्यो इण व्हान्। शाय-संसमी (पिंड ४२४)। हम्मार देखो हमार (शिव) । इस्थिजंडर , व [इस्तिनापुर] नवर-विदेश इन्मिल वि [इन्सित] का वया हुया (स इतिक्यपुर । (ठा १०—पन ४७७ जूर #V()1 इत्तिकासर १ ११६ महर, वच्छ स्र इन्मिश्रम [दे इस्थे] पृष्ठ, प्रकार, श्राम इत्थिवापुर १ ६४ गाट-एक ७४। (वेद ६२ पाफ पुर ६, १४ ; बाका ६, 1 ( 9 8 8 इत्थियी को इत्थि। इस्मीर पुं[इस्मीर] विकास की तेपानी इत्पिमक में दि । श्रम हाली, ऐरावया हानी शतान्त्रे का एक मुख्यमात्र राजा (श्री रा इम्बीर २७३ पिन)। क्रियवार म कि १ क्षिकार, शम (भनीकी **इ**स नि [इत] भी नारा प्रसा हो नह (सीरt २२; ११ ४० चर्म)। २ **द्वा स**न्दर्भ, वे ६,१६, मकः)। साओड द्रं सिरहोटी त्या उद्रीक्ष संपर्न करेक्षि इत्याचार कि' फिर एक विद्यावर-गरेश (पत्रम १ २ ) । सि नोइसं देनेश सह इत्थिमारकरहाँ (ब ६३७ वि [ीरा] निधरा (पत्त्य ६१ ७४ वा र र हेर २ र,२ १८४, ७४)। इरिअसिका व [इस्तिकीय] एक वैश-प्रशि इत्य 🖫 [इत्य] मण्ड चोत्रा (बीब, छे२ ११

4 53)1

पंत्र) ।

(\$ to \$\$) 1

दुव (क्या) ।

इस्थिय र वि प्राचीय (दे स, ६६)।

इस्प्रहरिष्ठ र् [दे] देव (दे 🛶 ६४) ।

२३४४ का महा) । कर्म, हरिक्ट, क्षेरद, इप्रेयह, होरिज्यह हि ४ २६ शरपा १२०) । नक्क. हर्रेस (पि १९०) । कन्द्र. द्वीरंत द्वीरमाण (ना १ ४, दर १६ १११ जुरा ६११)। संक्र हरिकन (मदा) । देश इरिडं (मदा) । इ. दिजा हेका (सिंग ४४६) ४६६) । हर धर्क किट् ] बहुत क्या केता। हय (Eve eli हर कर [हुनू] प्रायम करना। हरा (हे E 48)1 हर दें [हर] १ बहारेव शंकर (दुरा १६६ क्रमात्र प्रदृश्चे १ ११३ धा ६००३ ७६४)। र करनिरोप (पिन)। मिह्न व [मिलन] क्या-विदेश (बिरि १६): बहुद्धा की िवक्रभा निर्धे, पानंदी (क्रुप १९७)। बर्द्ध क्रियों हर, क्या क्वास्ट्र (वे १ 98)1 ≣र वैकी घर⇔ प्रश्ना का वच पहिलामा सन्व पासर्थ युक्त सम्बद्ध हरे (बणना १ 🗦 हुन्स) **ब्रुवा ६६% है २ १४४)**। हर केदो घर ≕ हु। **इ. हि**रेअक्टा (से **व** योग **ब्रा व्यो** भर = वर (पडन र इ.४) सुरा ¥₹?) I इमा)। केट इ ["इच्छ] एक-विशेष ब्रर वि [ब्रूर] इच्छ-कर्ता (सछ) । यप के नंठ निक्षणाबद्धा एटन (एस ६७)। ब्र वि "बर] वारक करनेवामा (बा ११६८ कप्प, कम र् [कियों] १ एक सन्तर्शितः t (xsf

(पिम)।

**श्वार केते हछ-हर≔ हव-नर** ।

इल्ल्ब्स देवो इवहड=(वे)। (गा २१)।

इस्टब्स्ट रेपुन वि] १ तुमुस कोलाहस

इंड्राइअ शिलुन (दे दे ७४ से १२

≖९)। २ कौतुक कुतूइस (दे < ७४°

य ७ ४)। ३ त्थरा **हर्वकी** हसफन

की जा 'इसइसमी तरा' (पामा स ७ ४)।

इञ्चलिय नि [वे] कम्पित कॉपा ह्या

इस्र प [इस्र] स्वीका सामन्तर हे स्वि

(हेर १६३ स्वप्त ४ । सनि २० कुमा

इस्राइस [इस्साइस] एक प्रकार का स्थ

मा४३ । मुपा ३४६) ।

बहर विप-विशेष (प्रामु १४)।

४ घौतपुरुष इस्टरंडा (बा २१ ७८ ) ।

इसाइस की [इ] बंघणिका काम्हरी अन्द्र शिक्टेप (१ व ६३) । क्षित् [इस्तिन्] बसराम बक्तमा (पर्वम ७ ३५ कुन्न १ १)। इंडिज वि [इंडिक] इस बोवनेवासा इनक (देर ६७ पास, प्राप्त का १७ ६१७ 16 78 **इंडिम रेडो** फ़ड़िम (पा ३)। इसिमा क्ये [इक्किया] १ विश्वकती। २ बाम्हनी चल्तु-विशेष (क्य)। ·इस्मिर देवो इरि-आस = इरि-ताव (है २ १२१ पड्)। इजिंद पू [इरिज्न हारिज़] १ इस-विशेष (११ २ १४ स्टब्स्) । २ वर्ग विशेष पीसारंवा ६ त नात-कर्मका एक भेव, विसके स्थ्य से बीव का शरीर हरूवी के समान पीता हीता है वह कर्म (काम १ Y)। पत्तपु["पत्र] पतुधिकामन्तु की एक च्यापि (पद्या १—पत्र ४६)। मण्या पू [सल्य] मण्डमो की एक आधि (প্ৰত <del>( — ৭</del>ল ১৯) ৷ इंडिया ) सी [हरित्रा] सीपवि-विकेप इन्ही इतिही । (हे १ वन) २६४ वा दव व 3×4) 1 🕬 सागर ९ [इजिसागर] मसय 🕸 💖 षावि (पर्या १—पत्र ४७) ।

ह्युअ वि [उधुक] इश्वका (देर १२२ E WYX) I इस्स्रीक [के] सतुष्या सस्त्राह (केव ६२)। इस्डेंब [इस्डे] है सकि सकी का संबोधन (हे २ ११ श क्या)। इत्त प्रकृ[इ] हिसना चसमा। हस्तीत (सिट्ट ६८)। बद्ध इस्टिंग (तबक्र २१) सूचा **१**४ २२**३ वश्ता** ४ केंब ४४)। इस र् [इड] एक धनुत्तर-मामी वैन मुनि (बनुर पक्षि)। हक्काल [हहरू] पद्म-विशेष रक कहार (विक्र २३)। ह्द्वपवित्र वि [वे] लाखि सीव (पर्)। हद्वण्ठल न [द] १ हमप्रव हक्की मीरपुरव त्वरा गीमता (हे २ १७४ स ६२ कूमा)। २ झाटुसता 'सह उदस्ते करियो हस्तप्तकाए' (सुपा ६३६)। १ वि कम्पनसीस काँपता चरूवस 'पास द्वियोषि बीवो शहरा इस्लप्सको बाधी (शण्या १६) । ह्हुएफक्किम वि [दे] १ शोक वल्पी। २ न साकुमता व्याकुचपन (₹ व ६६)। : १ वि स्थाकुस (धर्मवि ३६) । ह्यक्रस वेचो ह्युटक्स (मा ४६) । **इड**एफसिअ देखो **इड**एफसिअ 'दिनसो बाह कोहैए तो इस्कडनिमी दर्म (या १२)। डडाधिय वि [के] हिसामा हुमा (सुर व इक्टिम वि [दे] दिला हुमा चलित (देव ६२ छवि)। श्रुजिसर वि [व] वासन-शोध श्रिवनेवाला (स १७६ कुत्र स्पर् । ह्यांस र्थं वि रासक सर्वनतकार होकर क्षियों का साथ (वेद ६१) प्रवि)। ∎सुत्ताल }न [दे]सोमता अस्पी लगा हत्त्वावस र हमराती में 'सताबज' (अवि' मुर (१ व्य)।

इक्टुएकसिय देशो इद्धएकसिय (वय १२)।

६७ सहा मधि)।

€83 इस्रोहक्षित्र देवो हहुएफब्रिश (सिरि ६६४) **११४** मणि) । हक्कोहरित्रय पूंची [वे] सच्छ गिर्यगट । भी या (कप्प)। ह्वस्क[भू] रक्षेता। २ सक् मत्त्र करना । इनद हनेद हनेति (हे ४ ६ क्रमाख्य महाकार १—पग१५)-कि इस्तुराहमणमहियो नमी इन्ह महरले (बार्शि १७) हुवेज्य हवेज्या (पि ४७६)। बद्ध-हर्यत इवेमाज (पर्)। ह्य देखो भव = सब (उप ४६४)। इष्यण न [इष्यन] होम (विसं १६६२)। इस्थि पून [इसिस ] १ इत की। २ ह्वनीय बस्तु (स १३ ७१४ क्सनि १ 8 X) I ∎विञ्जिष [वं] प्रक्षित पुपड़ा हुमा (दे ६) २२ व ६२)। इड्य वि [इड्य] इरबीय पदार्थ होन-बोरय बस्तु (बुपा १६३) । "यह दूं ["बह् ] ग्रानि याग (ज्य ११७ दी) सुपा ४१६) वडह) । बाह् र्दू ["बाह्] वही (माचा) पाम सम्मत्त २२ व वेणी १६२३ वस ६ ३६)। इच्च कि [अर्थाच्] १ सबर, पर दे सन्धः 'नो हम्बाय को पास्त्य' (मा**प**छ सुम २ १ शब्द १ १६ २४ २व १६)। र स स्थित, यस्त्ये (स्तागः १ —पनः ६१ जनाः सम १६३ विपार रि—पत्र व⊤ दी रुः धीप कम्प कस्र) ३ न गृहवास (सूच-क २१६ पूर्वि)। हरूप देवो सरम= मन्य (गा३६ ३ ४२ ३ 204) I इस्स सक [इस्स\_] १ इसिंग इस्स्य करना । २ धकः उपद्यक्ष करना मनाक करना। इसर इमेर, इसर, इसरित इसित इसरे. हतिल्या, हसह, इसाथि इत्तरि इसायी इसामु हसाम, हसेम हमेनु (हे १ १६६) - ERE ERSI ERBI ERR, EXP. ११८: दुमा) । हत्वेच इतन् इतन् इतन्त्र इस्रोहस्य केलो इस्राप्तस्य (का इ. ७३) था इत्तर्थाह, इत्तरने इत्तरन इत्तरना (४ व १४०,१७३:१७४,१७६) । मनि हसिहिद १६ हे ४ ११६। जा भरत थी। गुळ १०० हरिस्थामी, हथिदिनो हविहरता, इचितिरवा,

क्य-विशेष (पर्राप्त १--पन ११) ।

हरिज वृहिरिज] १ दिल भून (अपा)।

२ सम्बन्ध एक येव (पिन)। आसी भी

राजा (पत्रम १२, २) । २ मन्दीचर श्रीप के

धपराचै का ग्राविकाता देव (जीव ३ ४)।

सह देवो ससह(चन)। सेज दे चिया]

१ बहर्ना पश्चर्सी राजा (सम ६६३ १६२)।

२ मक्तान् लियतावती का प्रकम भावक

िक्षी प्रभार नेवनस्थी बंधे (कप्पू)। हिर (निचार १७०) । स्तह्र द िसहि १ मुं[ (रिं] सिक् (उप प्र २१) । । विकार् प्र विकास गार देवों की क्षेत्रास विकास का क्ष्म िधिप शासि (के के रव )। (इस २ ३ --- एक ६४) इ.स.)। मारफारत पर्वत का एक रिज्यर (ठा १---पत्र ४३४)। इदि पं दिन्ती १ इस एँक, कर्ल-विकेश । १ वि इस रेनवाला (शाया १ १६ पत्र २२×)। ६ व्ये चक्र नडा-नद्ये (स्थ २७-इक्स द्वार ३---पत्र ७२)। ४ य**्**क सम की एक कुल्योग (का ७---पण ११९) s पवात, प्यनाय द्र [प्रपाव] एक व्या, यहाँ से इरिय नसी निकतती है (ठा २ ३---पम ७२ दी--पमक्र) । हरि देवो हिरि (मन पि देव उत्त ३२, t (F \$ इरिक्ष हे ["इरिक] १ वर्छ-विशेष इस रेंब। रिरि**इप** क्छैंगता(भीच खाया १ १ टी--पत्र तर १ ७--पत्र ११६ के ब ४१ मा ६१६) । ३ तुंदक व्ययं अनुव्य-। नाडि (का ६--पम ६६०) । ४ पून बमानति-रिधेय इस एक छात्री (पहल १--रम १ श्रीम पास्टपंत्र २ १ । **द**6 ( %) । हरिभ देशो दिश = हुट (वस महा)। इरिअ देखा मरिम = ग्रीख (ग्र ११२)। इरिअग ) व [इरितक] जीस पावि के इरिअय े पत्ती में बना हुआ भीन्य किरोप (ब्रम २६६) सुम्ब २ कि)। इरिभा स्मे [शरता] पूर्वी, पूर्व पूर्व-विशेष (4 \* \*\* \* \* \* \*); हरिभा देवो हिरि (रमा) । इरिशास रेको द्वीर आस । इरिप्रार्थ थे [र इरिवासी] इसे हा (रेव ६४ कामा मत कम्प्र मानु १३)। इरिएस थ्या इरिन्एस । हरियंदम देखो हरिन्यंदम । इरिपद्ग व [इं इरिचम्दन] १९४ वेशर (**k (x**) i

हरियं इ.पे. हिरिशक्ती चन्द्र वांव (है व **क्रा. बख**)। श्रीजंक्स पू [द्धिणाकुरा] चीचे वचचेन है द्वर एक कैन पुनि (पडमें २ १ ६)। हरिजानेसि वेची हरिजेगमंसि (पदम व इरिजी की [इरिजी] १ नावा हिरन हिस्की (पाध) । २ धन्य-विदेश (पिन) । इरिजेनमंसि पु [इरिनैनमैपिन्] श्रम के पवादि-वैम्य का कविपति केत (ठा ४, १---१ २ वंद का इक्)। हरिहा वेको हाखदा (श वक्ष) । इरिमंब ई वि काबा पना यक्ष-विशेष (भारकायकरप्रस्थितिक प्रशास का थि)। वेची बिरिसंध । इस्मिमा र् दि नद्भार बद्दी बाडी बंबा (t a, 58) 1 इरियंशपुर व [इरियम्प्रपुर] वंबर्वतवर (चरम्पस श्वनश्वरिक्त)। हरिकी वेदों हिरिकी (उस ३६ 🗜 )। इरिङ्ग नि ["भरवत् ] भारतामा बोम्बनमा (या १४१) । इतिसमा [इत्] वृत्ती होगा। हरिका (E v 441, mm ung)- milliaux क्ष नदानो वहरुकाछोवनवविद्यो' (श्रंबीम ४६)। हरिस सक [हुए] हुए है थेन यहा करना कीमार्थि वि स **व**रिते मुख्यमारकामी **पुर्वी** (ब्रुप १ २ २ १६)। इरिस है [इपे] १ मुक्त । २ वास्पर, प्रकेट, मुश्री (हेरु ११ मात्र कुमान्त्र) । ३ बामुच्छ बिरोव (सीप) । "उर बू ["पुर] एक केर नव्य (गुदा ६१०) । स्क्रिय इसमान ﴿ [दे] भतकत ग्रीपुन कोमार्थ ि बन ] इर्ल-पुन्छ (माझ १३) । इरिसण र् [इर्थेय] ज्योतिक प्रक्रिक एक

बोन (नुसा १ व) ।

इरिसाइय नि [इस्ति] इन्जाः (नम 42 ut) : #रिसा**स के**गे सरिस-18 ≈ **१वे-वद** । इरिसिम वि [इपित] हर्ष ता प्रार्थेण (धीप सबि' महार सरा)। करी केको क्रियी (ब्रम १ १६ ६) क्या) । हरीवई रेको हरवई (माह १२)। हरे य [बारे] एत पनों का तुवक प्रवन-१ बाओपः निन्ता । २ संबादस । ३ एवं रच्य (दिन पृत्र क्रमास्थ्य । शिह्हेस्)। हरेडगी क्यो हरीडई (वंबा १ ११)। इरेजुया 🐗 [इरेजुम] विषुद्ध वावसंस्थ (बलि व) । हरेस वक [हुप्] की करला(ल⊅— वेशी ६७) । क्छ ग [क्छ] हर, जिसमें केंद्र बोड़ते हैं (क्स्ट मीस)। उत्तय द्वा द्विका हस कोतनाः 'बसूने समयमित क्यों छेड इसन्त्रमो बिचे (तुपा १३७) २३६) दुर २ ७७)। इन्हाल, इदाव 🕻 (इदान) इस के उसर का नाम (इसा)। भर ई [बर] क्योन यन (नक्स १०-ना इर्दा दे २ ११)। बारण दु ['बारण] वसम्बद्धः राम (पचम ११७ ६)। विद्या पि [बाह्क] इत्यान इस बोठनेनाता (भा२४)। इटबेबी घर (धन ११६८ पर-पाण ४० सीम क्रम २१७)। ाबब् ई [ायुष] स्त्रक यम (पत्रन १ २६ ७६ २६)। **दस्य देव**रे पर्स्य = फल (पूपा ३८६) प्रति विद्यो। व्यक्त (गा) देवो विभय = ह्र्यम (बाह ११ गार-जुल्ह ११)। इस्रउत्तम देवी इस उत्तम । इंश्वरा } देवो इंश्विरा (हें ! वदा क्रिया बस्सरी (पर )। इस्टप वि [व] वह-मानी वात्रम (दे

**(1)** 

(33) I

६४ नाम द्वार दुवा तक १६३)

एडि देन । युत्र वृद्दश सिरि प्रवृद्ध समाव

इत्हर देवो इत-इर=इव-वर। इट्स्ड देवो हरहड = (वे) । (पा २१) । इस्रह्म रेपून दि] १ तुमुक्तः कोनाह्य (द्वाराज ) शोरम्स (१ ८ ७४ से १२ ८६)। २ कीतुक कुतूहस (वे ८ ७४ स ७ ४)। ३ त्वरा हदवड़ी हत्तपुत श्रीकताः 'हमहमयो तरा' (पाधः स ७ ४) । ४ घौरमुख्य च्यरंठा (बा २१ ७० ) । इस्रहेकिय वि [द] कम्पित कोपाहुमा (रिय) । इस्र म [इस्र] सबी का मामनण है सबि (हेर १६६ स्त्रण ४) ग्रांग २६ क्रुमा ल ४३ ३ सुना ३४६)। इस्सह्य र [इसाइस] एक प्रकार का उप बद्धाः क्य किरोग (प्रामु ६४) । इस्टब्स की [व] बंबिएका बाम्हरी बातु क्टिम (दे = ६३)।

इकि पू (इक्टिन्) बसराम बसमा (पउम ७० ११८ दूस १ १)। **इ**किअ वि [हास्किक] हत बोठनेवाका *कृपन* (हेर ६७ गास, मात्र सा १ ७ ११७ \$4 ) i

\*इक्रिम रेको फस्तिम (वा ६)। इस्तिओं की [इक्किंक] १ विश्वमी। २ बाम्बुनी चलु-विरोष (क्या)। कृष्टिमार देवो इरि-आल = इरि-ताल (है

२ १२१: पड्)। इक्टिपुं [इरित्र दारित्र] १ वृक्ष-क्रियेय (हे १ २१४ मा ६६)। २ वर्स निरोप पीका रंगः ६ न नाम-कर्मका एक नेव, विसके स्ट्रंप से बीन का शरीर इसी के समान वीला होता है वह कमें (कम्म १ ४)। पत्तपु [पत्र] चतुरिन्तिय अनु की प्रकरणांति (पर्यक्ष १—पण ४९)। "मणस् रू ["मस्त्य] मझको की एक कार्षि (पहल १—पत्र ४७)। इधिए। १ वर्ष [इरिट्रा] सीयवि-विशेष, इस्से

इक्किरी (हे १ बदा २१४) वा १व व १ 384) 1 **इ.सं.**सागर पु [इस्तिमागर] <del>पतम की</del> एक नावि (पएछ १--पत्र ४७)।

ह्युअ वि [स्युक्त] इतका (हेर १२२ E WYX) 1 ∎स्त्रवि [वे]सतुष्ण सस्क्रा(वेद ६२)। इस्तेय [इस्ते] हेसचि सचीका संबोधन (इ. ११५ हुमा)। हक्क सक [दे] हिमाना चवाना। हस्संति

(सिंदू ६व)। वक्क स्ट्रेंस (उवकू २१ सुपा १४० २२३ वस्त्राप से ⊏ ४४)। इस पुं[इस] एक प्रनुत्तर-मामी 👫 मुनि (अभू२ पृष्टि)। हक्कान [इ.सक] पद्म-विशेष रक **'वहार** 

(विकारक)। इक्डपंचन वि [दे] खण्डि रोज (पइ)। ह्दण्यस्य न [१] १ इसका इस्मिस झीरनुक्य रक्स शीवता (हे २ १७४ स ६२ कूमा)। २ बाक्कबता "बहुज्बसी करिएतं हस्तप्तकाएं (सुवा ६३६) । व वि कम्पनशीस कीपता प्रकास पास द्वियोवि वीवो बङ्गा इस्यण्डवी वार्या (ब्रुक्स ६६) । ह्युप्पतिकाश वि [वे] १ शीम वस्ती। २ न झानुसता व्यादुत्ताम (देव १६)।

६ विकास्त्रक्त (भर्मेवि १६) । ह्वपन्न देवो ह्वप्पन्न (ग ४१)। इक्टप्स्रक्रिक रे**को इक्ट**प्स्रक्रिक 'विगयो बाह्य खीहेण तो इन्स्यक्रियो इमें (बा १२)। इद्यां क्ये कि [दे] हिकाया हुया (पूर के 1 (3 3 इक्किंश वि [वे] दिवाहमा चमित (वे व ६२ धर्मि)।

इक्तिर वि [व] चनम-श्रेष श्रिक्तेनावा (स प्रथम क्षुप्र दश्रह)। **एक्ट**स ई [४] यसक अवस्थाकार होकर

शियों का बाज (केंद्र ६१३ प्रति)। इत्तुत्ताळ हेन [इ] स्प्रेयता जन्मे सरक हानुचापछ । गुजराती में 'उतामज' (भीगः

TC 12, ec) ! इसुफ्रस्थि केही इसम्प्रत्तम (ग्य १२)। इस्त्रहरू देशो इस्टिम्ब्ड (या द्वाधाः) या १६ हर १६६। जा भरत ही मुख हत **१७३ सम्**। मक्रि ।

इहोहर्कित्र दे**तो. इक**ण्मक्रिश (सिरि ६६४) ११८ मणि)।

इक्कोइस्क्रिय पुंची [दे] सट्ट मिर्यगट । स्री या (कप्प)। ह्य सक[सू] रहोता। २ सकं मान्त

करता । हनद हनद इनकि (हे ४ ६ ३ कृष्य उदा महाका १ (--पन १ ६)-र्फ इस्सुराडमण्म्यद्वियो ससी हवड मङ्गरस्र<sup>4</sup> (धर्मीव १७) हुनेजन हुनेजना (प ४७६)। बहु-ह्यस ह्वंमाण (पर्)। ह्य देखो अथ = भव (उप ४६४)। ह्वण न [ह्वन] होम (विसं १४६२)। इधि पून [इदिस ] १ इत की। २

हुवशीय बस्तु (स १ ७१४ दसनि १

8 A) I ह्यिओ दि[द] प्रजित द्वपदाह्मा(देध २२ = ६२)। हुच्य वि [हुच्य] हुवबीय पहार्य होम-योग्य वल् (बुपा१६६)। वहर्षु ["बह् ] मनिय ग्राम (उप १६७ दी) मुपा ४१६) वज्रह) । बाह्न वं विवाह्नी शही (मान्का पामा सम्मस २२० वर्गी १६२ वस ६ ६४)। ह्रस्व वि [ अर्थोच् ] १ सवर, पर वे सम्ब नो इच्याय नो पार्थिय (सामा) सूम २ १ शंदार १६ २४" २व ३३)। २ % शीब, वश्ची (छामा १. १---पत्र ३१. उता तम १६ विपाद १—पत्र यः दी है। बीप कप्प कर्य)। ३ न गृहवास (तुक-क २१६ थ्रॉख)। हरूय देखी सरूब = ऋम (या १६ ४२

1 (FWK

इ.स. बफ [इ.स.] १ इसिया इस्ति करना। २ सक. उपहास करना भवाक करना। हमर, हमेर, इक्ट, इक्ट इक्ट इक्ट इम्डे, इतिचा, हमह, हमानि इसनि हसामी, इयामु न्याम, हतम इतेमु (हे ६ ११६: te typiter typityr tre

१५०३ वृथा) । इसव इतंत्र इतत्, इतेन्त्र, इतेबदि इसम्बे इसम्ब इसम्बा (है १ १४वा १७३३ १७४, १७६) । मनि हसिहर हक्षित्वानी, हविद्विनी इतिदिश्या, इतिदिल्या

RYE) I

gfüret ift b. 1993 19ws 19ws

१६१) । कमें इसीमद, इतिज्ञाह, इतिजीति

(हे १ १६ ३ १४२) । यह इसीत, इसीत,

इसमाण (यौफ हे ६ १५०) १८१

( पर )। कन्द्र-इसिट्यंग इसीअंग्र,

इसीधमाण इसिकामाण इसेब्समाण

(हेरे १६ : चप १६७ टी मुर १४

१व )। संब्र इसिऊज, इसेऊज,

इसिडआप इसिडआण, इसेडआण,

इसेडवार्ण इसिकणं (हे ६ १६७) वि

१व४ १०१)। क्षेत्र इसिएं इसेट

(है । १६७)। इ इधिश्रक्त इसेशक इसमीध (महाइ २ १--पन १४६ है है १२७ वर पीम १४ नाट-शब्द {{**x**}}} इस मन [हुस ] हीय होना कम होना। इस६ (पेच १, १६) । इस इं दिस्सी इस्स (क्य १ ३१ टी) । इसम कीन [इसन] हास्त हैंसी (मन्द्र क्य ३६ २६२ वंचार व)। क्षी. व्हा(का ष्ट्र २७६) । इसइस सक [इसइसाव ] १ ज्लेकित होता । २ तुक्यता, "क्यारणस्य (१) इस मोदमान्त्र दुना इख्युचेद (दुक ह नक इसहसित (क्यान २ ३१)। प्रक इसइसेक्स (चष)। इसाव देशो हास = हाधव । हसावह, हसावेह ( 4 4 (4) इसिक्ष वि [इसिव] १ क्विका क्वाइड किया करा ही गए (जन ११३)। २ नः हास्य श्वी (वय २१४)। इसिअ नि [इसिव] हाक्यात क्षेत्र (४५ **% %%):** इसिर वि [इसिए] इस्थ-कर्या हैक्ने की धाक्यवाचा (प्रायट ना १७४३ छप २० सी। मुर २, व कूना) । और री (क्सा) । इसिरिया से [दे] इस ईसे (दे ८,६६)। इस्स यक [हुस ] क्य होग्य, भूग होगाः बीस होन्य । वह इस्समाण (सींच वर् å) ı

इस्स व [इस्स ] १ (चि. (प्राचा १२ १ शापन ७२। बारु—मुख्य १२)। २ वृ महाजनित बामक देवों का परितास दिशा का ¥न (ठा२ ६—पण व१)। तसान िंगत किता-विकेश (स ६ ६)। रहर्ष िर्सत् । एकः विशेष सङ्घामन्दितं विकास का प्रसर विशा का इना(ठार वे—श्वास्)। इस्स वि [हुस्व] १ वद्भ औरा (सूब २ १ १६७ पर १४)। २ बाक्स, सर्वे (पास)। वे सक्य कोवा (सकार्यक रु. १ ३० कम्प ४, ४४)। ४ <u>ई</u> एक मानाशाला स्वर (परसा १६--पम ४६) विशे १ ६४) । इस्सम वि [इर्पम] इर्ब-कारक 'रोमहरसको ब्रुडर्पमहों (विक वक्) । इस्सिर वेबी इसिए, 'य-इस्सिर क्या स्टि' (क्व ११ फा सुचा ११ ४)। ददद }थं[६६६८ ६४] १ दन पन्धेका बहरा र तुम्ब प्रमार-१ प्राप्त (प्रती ७४)। २ केर, निवाद (सिरि व१२)। दवार् दिक्की १ क्यमें केरी की एक कार्टि (हे १ १९१)। २ म सेन-पुषक सकत (स्प्रिट ११४- ७१७) । द्राय दिह्यो धन समीका तुमक सम्मक— दे निवाद, क्षेद्र (शुर १ दशः स्वया २७) मा २१व अद्देश १६ । प्रापु १८)। २ तोच विमयोधी । १ पीड़ा । ४ प्रवस्त निम्मा (देर ६००२, २१७)। अस्य ग्रीकृत्या इस्ताकार (पित्र) । स्व पू "रवा] नही धर्म (955 % 25€) 1 बाबक [बा] १ ज्यान करन्ता २ वरि करमा है व बीख करमा हीन करमा कम करणा । हाद ( वस् ) । कमें हातद, हार्थति (बनाधन) हिच्या६ (प्रति) हिच्याच (प्रती १ ७) । कनक दार्गत (कामा १ १ री---पव १७१), दीयसाण (क्सब) । क्षे**ड्र**-शार्व (क्षम<u>त्र</u> १ ११)- दिवा दिवाण (भाषा १४४१ विं १०७) हेचा द्येचा(पुसार २,३ १ बदा १ ३१),

हेबाण, हंबार्ज (पि १८७)। इ.स्ट (स १६६) वंचा ६ २७) घन्त्र क बारो । हा वैको भा-की (भवत)। हास देवी हा-सब। हामर, हामर (वर् )। हाअ वक हिंहाइय ने प्रविचार रोह को क्लम करना । हाप्रश्न (पित्र ६४६) । हाअ देशो भाभ = भाग (से ८ ८२/वह )। हाअ वेषो पाय = शात (हे ७ ११)। हाओ केको भाग = मान (छ ६ ११) । **हाउ के** को भाग भड़ नमसे महत्त्रीयाँति हाया तुई भक्तई' (बा वक्षर)। हांसड वेबो हंसड (राव)। हार्फन देवो हान्द्रत । हाबनि की [हाबन्धि] सन्द का एक केर (पिय)। हाडहड न हि] तत्काब क्याद्ध (नग t)। हाडहडा की हिं] बारोपका का एक केंद्र प्रापक्कि विशेष (का १, र---पत्र ११६, निकार है। हाजि की [हानि] श्रीत, सरचन (धनि)। द्यास थ थिं इस क्या, इस प्रकार, इस् क्षान क्खं (प्राष्ट्र व १)। हायज १ (हायज) वर्ग संस्थर (क्षेत्र खाया १ १ दी—यत्र ६७)। श्चायपी को [शुक्ती] मनुष्य को का करायाँ में बहनों सरस्य (हा १ -- पत्र ११६ पेंड्र 8)1 द्वार सक [द्वारय ] १ क्षत करवा। २ हारना परामव पाना। हारेड हाप्दु 🖛 नहा)। नक्ष शारंद्ध (मूना १६४) । दार दृ[दार] १ मल्या मकत्वद्व वर की मोची बावि की माश्रा (कम्प राव रे फै बनार कुमा: मनि)। २ इराए सम्बद्ध (स्थ १) । १ होप-विदेव । ४ धपुर-विदेव (बीव ६ ४---वय ६६७)। ह **हरस-म**र्दार भवत-इसर्प (धाचा १२३६)। प्र≇ 🗗 [पुढ] बह्य-विदेप क्षेत्रा(धाना ६.६ ११)। "सद्द्र[मद्र] शास्त्रीप का समित्राता एक देव (बीट ६ ४ – वर्ग ६६७)। सहासद्द्र ["सहासद्र] हारू श्रीपकाएक समिद्वातादेव (नीव ६,४) । महावर दु ["सहावर] हार-पन्नर क प्

इ।िक ज्ञान [इ।कीय] एक देन मुनि-दूस

श्रविष्टायक देव' हाएतपुद् हारवर-हारवर (?हार)महावरा एत्प को देश महिद्वीमा' , (बीय ३ ४---पत्र ३६७)। यर पूँ ["वर] **१ हार-समुद्र** का एक समिश्राता देव । २ धीय-विशेष । १ समूद्र-विशेष । ४ शास्त्रर समुद्रका एक धनिहाता देव (जीव ३ ४) । बरमद् र् ["बरभद्र] हारवर-होन का एक समिद्वासक देश (श्रीय ३ ४)। वरमहाभद्द ५ विरमहाभद्र } हारवर क्रीप का एक श्रविहाता देव (पीत ३ ४)। बरमहाबर पू ("बरमहाबर) हारावर समूत्र का एक पश्चिष्ठायक देव (कीश वे ४)। षराषमास र् ["बराबभास] १ एक क्षेप। २ एक समूत्र (जीव १ ४) । वरायमास-मद् र् [वरायभासभद्र] इत्वरामास-**द्या**प का एक प्रविद्वाता देव (बीद ३ ४)। वरावनासमहाभद्द व विरावमासमहा-सङ्ख्यो द्वारतराजभारा-द्वीप का एक प्रविद्वारक के (नीव १४)। वरावमासमहाकर पू **िवरावमासमञ्जावर** हारवरामान-समुद्र का एक मचिहाता देव (बीव ३ ४)। "क्रावभासकर दे ["क्रावभासकर] हार गरावमास-समुद्र का एक प्रविश्वायक देन (श्रीव ३ ४--पत्र १६७) । क्षार केकी सार (सूचा ६६१ भनि)। शास्त्र वि [शारक] नात-कर्ता (पवि १११)। हारज दि [हारण] अनर देखोः 'कामध्य-कामधोपाल हाएएं काएलं बुहस्यालं (पूज २६२३ वस्त १ दी)। हारव देशो हार = हारवृ । हारवह (हे ४ ६१) । वरि, हार्चनस्त्र (स ६६१) । क्षारविभ वि [क्षारित] गारित (कुमाः गुपा **413**) i **हारा को दि**ं सिक्षा अनु-किशेष (वे व 14): हास देशो भास (कम्प या ७०४)। शारिको [सारि] १ सर, पराजय (का प्र १२)। २ विक, बेसिए (कुन्न १४४)। ३ प्रश्वनिरोप (पिप)। हारि वि [हारिम्] १ हरफ-कर्ता (विके

हारिश्न न [हारीत] १ गोत-थिटेन चो कील योग की एक शाका है। २ पूंची, उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७---पत्र ३१ ४१ कम्प)। माजगारी भी ["माछाकारी] एक पैन मृति-राज्या (कप्प) । हारिक्ष वि [हारित] १ हाच हुमा चुत बादि में परानित (पुपा १११ महा मादि)। २ कोमा हुमाः कुमाशा हुया (वद १ सुपा 1 (335 हारियद वि [हारियन्त्र] हरियन का हरिचन्त्र-कवि का वनाया हथा (पत्रह) । हारिया की [हारीता] एक कैन पुनि-शाका (एव) । रेवो हारिज-माम्रागारी । हारियायण न [हारितायन] एक योज (क्प)। द्वारी की [द्वारी] केनो द्वारि - ह्वारे (उर ग्रद्भ क्षेत्र १४०० विक्)। हाराय पूं [हारीत] १ वृति-विधेव । २ व योभ-विरोध (राज) । वंध पू ["वस्थ] चन्त्र-विशेष (विष) । हारोस प्रशिक्षाचा १ भगार्थ का किलेप २ वि. उस देशाका निवासी (पदशा १ — पण ३०)। हाछ प्रीके शास्त्री राजा शास्त्रकान याथा-बस्तराती का कर्या (के न इ.इ. २. ३६, वा ६ वसा १४)। हाजा हो [हासा] गरिय चक (शम्ब हुप ४ ७ रमः)। हास्महस्र १ वि । मनाकार, मान्ये (दे व हालाहरू रेकी [हालाहरू] १ वन्तु-विरोध **बहा**सर्पे बाम्हणी (वे ६ ६ पाया या ६२)। आधी वैद्य (देव ७१)। २ मीलिया | जन्दु मिटेव (पर्शा १--पण ४३)। ३ र्जुन, स्थावर विष-विशेष (वस १,१ ७-यच्या २ ४) । ४ ई. एवछ का एक सुमह (पच्य १६ ६३)। शासाहरू के शिक्षाहरू । एक वाजीवक-मत्तानुवायिको कुम्हारिक (भग १५---पत्र (32) i शाखित्र देवो शक्तिम = शासिक (हे १ ६७०

(क्य)। हाजिह पुं [हारित्र] १ हस्से के तुस्य रंग पीनावर्षु(सस्य १ टटा ४ १ — पत्र २६१)। २ विं पीचा, विसनारंगपीला हो वह (पएस १--पत्र २४: सूच २ १ १२ भया भीष) । ३ दुन, एक देव-विमान (रेनेन्द्र १६२)। हाकिया की [हाकिया] देखी हरिका (धन)। हाकुल वि [वे] बीव मत्त (रे ८ ६६)। हाव क कि [हापय ] १ हानि करना । २ व्याप करना । १ वरिक्स करना । ४ शोप करना 'वंडिमसामाधारि हानेह' (बद १) इत्वए (क्ल. १, २३ सद्वि २१ दी) । हाद-इण्या (दस ८, ४१)। यहः, हावितः (विसे २७४६) । हाव र् [हाव] युक का विकार-विशेष (क्छ् ९ ४---पण १६२३ मणि)। दाथ वि दि ] जनाव दुतपानी वेग से बीड़ने-बाला (वे ८ ७१)। €ाय देको साथ = भाग (सर्वादेख' (प्रक्रू २४)। **इ**।यण वि [इ।पन] हानि करनेवाला (हे २ ₹**8**4) 1 हाविर वि [दे] १ अभावः दुतमामी। २ दीर्थं सम्बर्ध । ३ सन्बर । ४ विद्या (दे व 1 (xe हास देवो इस - इष् । वह 'न हासमागा वि पिरं वहरुवा' (रह 28) I हास वक [दासय] हैसना। रानेद हैं वे १४१)। कर्ष हास्तेमह, शास्त्रज्ञ (हे ६ १४२) । वक्ष दासेंव (पीर) । स्वक्ष शासिञ्जेत (नुपा १७)। शास प्रं[शास] १ शास्य हॅडी (घोग वश्य २ ४२। बराबा ११ ११२)। २ कर्न निरोप जिसक उदय से हीसी माने वह करी (कम्म १ २१: १७) । १ यत्तं रार-धाद्योख रक्ष-विरोध (मणु १३४)। बर रि [\*बर] हास्य-पारक (नुवा २४१)। सारि कि ["प्रस्ति | नहीं (गडर)।

(परह) ।

१२८६, दूना)। २ मनोहरु विद्यावर्षक

प्राप्त)।

१६१) । कर्ने, इसीयद, इसिज्जह, इक्सिकीरि (हे १ १६ ३ १४२) । भन्न इसंत, इसेंब, इसमाज (पीपा है १ ११वा १०१ ( पद )। क्स्ब इसिर्जीय इसीशिय. इसीध्रमाण इसिकामाण इसेकामाण चप १६७ टी सुर १४ (F 1 11) १व ) । संख्र इसिऊल, इसेऊल, इसिच्याज इसिच्याण, इसेड्याज इसेक्काणं, इसिकणं (हे १ १६७) वि रदार रदर )। रेक प्रसिवं असेतं (हे १ ११७)। इ. इसिअव्य इसेमव्य इस्रजील (पराइ १ ४—४व १४२, हे ६ १९७३ वर्ड सीचा ६४० गाट<del>- गुण</del>्या 1 (899 इस्स [हुस्] हैन होना कम होना। इस्टर् (पंच ६, १३) ।

प्रमुख्य की व १६६३ १६७ १६७ व

ह्मा (१९६८) । इसमा ब्रोम (१९६१) । इसमा ब्रोम (१९६१) । ब्रो (१९१९) का १६,१६९ यंका १ व) । ब्रो (१९६९) व १९६८) । इसमा १९ इसमा प्रक्रिया ] । क्योंक्स इसमा १९ इसमा प्रक्रिया (१९४१) इस मोद्रवर्षकुमा इस्स्वेर्ड (१९४१ ) । वह इस्स्वेरित (१९४१ । व्रोह. इस्स्वेरित (१९४१ । व्रोह. इस्स्वेरित (१९४१ ) ।

इतिम वि [इतिन] १ मिनम व्यवस्थ भिना भग दो व्य (व्य ११६)। २ ग. इत्या इति (व्य २१४)। इतिम वि [इतिय] इत्यानाम द्वेत (व्य १ १६)। इति वि [इतिय] इत्यानम्या हुने को सम्बन्धमा (त्राम वा १७४) व्य ७१० दे

इसिंद हि दिसियी हारू-मधी हैं होने हो सम्बन्धमा (प्राप्त पा १७४४ कर १०६० क्षेत्र पुर २ कुमा) वर्षी हैं। (१०४४) इसिरिया की [बे] इस हैंग्रे (१०६२)। इस्स पत्त [हुस ] इस होगा मून होन्या बीख होग्या वह हस्सामाम (प्रीप्त बरे की)।

१२७) । अर्थे, हृस्सह (मारना १२७३ है ४ RYE) I इस्स म द्विस्यी १ हैंसी (प्रापा १२१ रुपव ७२३ नाठ—मु<del>च्</del>या १२)। २ व महाशन्दित नामक केवें का विद्यास दिया का क्ता (ठा२ ६--पत्र वर्)। समाप िंगत<sup>े</sup> कमा-क्लिप (स.६.४) । रहर्ष िरित एम-विशेष महाक्ष्मित-विकास का रत्तर विधा का एस (ठा २ ३---१० ४१)। इस्स वि [इस्व] १ थाई, ब्रोजा (सुध ३१ १४८ पर १४)। २ बासन, श्रार्थ (पाद)। र मन्य भोदा (मधार्थच ३,१ ३) कृत्य ४, ६४)। ४ ⊈्रं एक मानानामा स्वर (पर्छ ३६--पत्र ४४६३ विशे १ ६८)। इस्सण वि [इर्पेज] इर्ग-कारक 'रोमहरतको बुढर्पवहाँ (निक वक)। इस्डिर वेको इसिट, चन्दरिसरे सरा वर्ष (बच ११ ४ सुब ११ ४)। **धरद** ∤म दिसद. दाी १ पन वची क इंदेडा । युवन पन्यम् । पान्यं (प्रयो ७४)। २ केंद्र, निवास (शिरि ६१२) । इदार् [इद्यों] १ क्ला देवीं की यक व्यक्ति (क्षेत्रे १२६)। २ व केर-पूर्वक प्रकार (Reft Rem wew) |

दाथ [दा] इन यथीं का पूचक स<del>वस्</del>— रे निपाद, केर (युर १ १६) स्वयन २७ म ११ ७३४४ धा मासूर )। १ धोष कितवीरी । १ वीहा । ४ कुछा, लिखा (देर ६०-२ २१७)। क्षेत् प्रे किन्त् क्षाक्रमार (पिन)। रण पुं ["रण] नहीं धर्म 1 (\$\$\$ 9 PP) द्वासक दिही १ व्यान करणा। २ वर्षि करना। ६ सीसाकरना हीन करना क्य क्षणा । क्षांद ( पक् ) । कर्मे हायध, हार्यात (बना थन) विष्माद (मौर), विष्माउ (मौ १७)। क्यकः शासेत (सामा १ १ टी-पर १७१) शीयमात्र (शक्त)। संह्र-दार्थ (बन्द्र १ ११)- विचा क्रियाणी (भाषा १४४१ पि १८७), ह्रेब देवा(पूजर २ १ उत्तर ६४),

(स. १९१) वेथा ६ २७३ सण्ड का बडको । हा देखों भा-न्धी (नवड) । हाअ देवी हा<del>- एक</del>ः हायद हायद (पर )। हाम वक हिदय न मितवार ऐन को उत्पन्न करना । हायस्य (पित्र ६५६) । हाज देवो भाभ = भाग (छे = वरः पदः)। दाभ वैचो पाय = चाउ (से ७ ११)। द्वाम केको भाग∞ भाग (से ३१%)। काउ के भाग भाग भाग महासमियंति हामा तुई भक्कई' (या ४७२)। हांसक देवा हंसक (चन)। शार्थन देशो शान्त्रन । शास्त्रिक की [शास्त्रिक] भूग भा एक वेर (पिप) । इरबद्द न [क्] तत्काच प्रत्यस्य (स्व १)। हाबहुडा की हि । पारोपछा का एक केंद्र प्रावस्ति-विशेष (अ. १. २--पत्र ११६. विष्ठ २ ) । हाकि की हिन्ति क्षित क्ष्यक (क्ष्मि)। द्याम च दि देत तत्त्व, इच प्रकार, प्रके श्वाम क्ये (बाझ वरे) । हायण 🖠 हिहासती वर्ग तंत्रकार (श्रीक) खाना १ १ टी--पद ६७)। हायणी को [हायनी] समध्य की शर कराओं र्वे बळ्यों प्रसत्त्व (ठा १ --- १४ ११६, व्ह t ) i इतर तक [इतरय ] १ व्यव करका। २ हारना पराश्व पान्न । हारेड हारह (अ महा)। पक्ष धारीत (तुपा १६४)। बार पं बारी र माना सकाचा बर की मोठी पावि नी माबा (क्या धन १ % काट भूमा' मनि)। २ इराइः धराइच्छ (वव १) । १ द्वीप-विदेश । ४ प्रमुद-विदेश (श्रीम १ ४—पथ १६७)। ४ हरल-क्वर्ड भवत-हार्च (शतका १२३ ४)। प्रदर्भ [पुद्ध] बाक्स-विद्येष कोद्वा (माचा ६ **६** ११)। "सद्र्यु[सद्रु] शर-धिर

का सन्दिशका एक देव (कीम ३ ४ - वर्ग

१६७)। नहासद् व सहासद् दिए

धीप का एक धरिहातादेव (जीव ६ ४) ।

महाबर पु "महाबर] हार-पपुर क एक

धारिष्ठायक देव 'हारसमुद्द झारवर-हारवर (?हार)महाकरा एत्प को देवा महिट्टीमा (जीव ३ ४---पत्र ३६७)। यर हुं ["वर] १ द्वार-समुद्रका एक समिप्रातः केन । २ द्वीप-विशेष । १ समूद्र-विशेष । ४ हारवर समुद्र का एक धपिष्ठाता देव (जोव ३ ४)। बरमङ् र् [ वरभद्र] हारवर-द्वीप का एक प्रपिष्ठायक देव (वीव ६ ४)। वरमहाभइ वृं ['बरमहाभइ] हारवर द्वीप का एक समिहाता देव (कीव ३ ४)। बरमहावर दुं ["बरमहावर] हारार समूत्र का एक प्रविद्वापक देव (बीव ३ ४)। बरावभास दूं ['बराबभास] १ एक हीप। २ एक समुद्र (बीब १ ४) । बरावमास-मइ 🙎 ["वरायभासमद्र] इत्त्वरामास-द्वीप का एक प्रक्तिप्रदादेव (शीव ३ ४)। वरायमासमदाभद् वं [वरावमासमदा-सङ्ग हारवरावधास-द्वीप का एक व्यवहायक केव (बीच १ ४)। वरावसासमहावर प्र ['बरायमासमहावर] हारवराम<del>ास सङ्</del>व का एक समिद्वाता देव (जीव ३ ४)। "वरावभासवर व ["वरावभासवर] सर वरावमास-समुद्र का एक ग्राविहासक देव (बीव ६ ४---वर १६७)।

१ ४—-पर १६७)। हार केवी सार (दुन १६१) मिने।। हारज में [हारज] नाठ-नर्ज (विने १११)। हारज में [हारज] कर केवी, 'कम्मक-कम्मनेतरह हार्च्य कर्ज हुस्समर्खें (दुन इस्टा क्या हुस -हार्च्य। हारज है

११)। यदि शार्तमस्त्रम् (छ १६१)। हार्यभ्रम् विश्वारितः निराणः (कुमा। पुणा ११२)। हारा की विशेषिता जला-विशेषः विश्व

हारा की हि] बिया जनु-विशेष (वे व ६६)।

हारा देशो चारा (क्य गा ४८६)।

हारिकी [हारि] १ हार, पराक्षम (क्या प्र १२)। २ विचित्र, बेरिए (ब्रुग्न १४४४)। १ सम्बन्धिय (चिम्र)।

चरारा (१४४) । इति वि [हारिन्] १ हरक्ष्मा (विशे १२४४, दुना)। २ मनोहरु विशावनंत्र (परह)।

हारिय न [हारीत] १ गोन विशेष को कीरत गोन की एक शका है। २ पूँकी, कर गोन में उराज (ठा ७—पन ११ : ग्रीव ४६ कम)। मान्यगारी की [भाषाकरि] एक कैन पुनि-शाका (कम)।

हारिश्र वि [हारिष्ठ] १ हाच हुमा खूत साहि में पचित्रत (पूजा १९८ महाग्यावि)। २ बोमा हुसा पुत्रासा हुसा (वव १ सुजा १६२)।

(१६) ।
हारियह वि [हारियन्त्र] हरियन का
हरियन की [हारिया] एक वैन प्रतिन्ताका
(एक) । देवो हारियानासम्बर्धिया

हारियायण न [हारितायन] एक बोन (कम्म)।

हारी की [हारी] वेको हारि = हारि (वर दु प्रशःदुन स्पर्ध निम)। हारीय पुं [हारीय] १ मुनिन्सिये। २ न योजनीरतेय (धन)। बीच पुं विक्यो

सुन-निकोष (निक)। हारोस पुँ [हारोप] १ सनायं वेश-विशेष। २ जि. उस वेश का निवासी (पहेण १— पन ४=)।

हास पुँचि हास या पातनमून भाषा-सहराती का करों (देन १६) २ १६, या ६) नवा ६४)।

हाज्य की [हाज्य] गरिया, याक (शस्य दुव ४ ७ रंगा)। हाज्यहरू दूं हिं] पानाकार, याखी (हे व

कर)। इस्मिद्ध पुंची [इस्मिद्ध] रे बन्दु-विरोध, इस्मुल वास्कृष्टी (वे व हैं। पाना पा व?)। श्री स्म्रा (वे व न्यं)। र त्रीनिय बन्दु विरोध (पएए १ न्यंप ४४)। वे तुन, स्वावर विवनियोध (एवं वे, १ क वन्कार १५)। ४ त्रू रावस्य का एक सुनक्ष

(वज्य १६ ६६)। हाजाहस्य को [हाजाहस्य] एक पानीविक-मतानुवायियी कृत्यपित (स्व ११—पत्र ६११)।

हासिम देवो हसिम = हामिक (दे १ ९७-प्राप्त)।

हाळिळा म [हाळीय] एक पैन मुनि-दुस (क्या)।

्रान्ता । इतिकार् पुर्विद्यारित्र र हस्यों के तुस्य रंग पीला वर्षों (मणु १ ट टा ४ १—पन २६१)। २ वि पीला निष्णा रंगपीला ह्या वह (वएस १—पन २४१ सूस २.१ १४ भग-भीप)। ३ तुन, एक वेन-विमान (वेवेन १९२):

हास्थित की [हास्थित] केने हस्थित (पन)। हास्त्रम नि [ते] बोन नत (दे व ६६)। हान सन [हापय] १ हान करना । २ स्थाप करना १३ व्योक्त सन्तर । २

प्रभुवन १ मा जात १ व १ व १ १ १ ) । इस्त कर [हापय ] १ हानि करणा । २ स्थाय करणा । ३ पीरक्ष करणा । ४ दोर करणा 'वंश्वियानस्थार हावेद (वच १) हरूस (क्ट १ २३ वहि २१ दो) । हार-इस्स (क्ट १ ११) । वह. हाविट (विदे १७४६) । हाव १ हावो सब का विकार-विजेग (कार-

हाय पूँ [हाथ] पुत्र का विकार-विदेश (पराह २ ४--- प्रकृष्टिश मिल)।

हाय वि [दें] बंबास हुतवामी वेन से बौदते वासा (दे वः ७३)। हाय देवो आय = अन देससावेस्त (सन्द्र

२१)। क्षमण वि [क्षपन] हानि करनेवाना (है २ १७०)

१७०)। हायिर वि [दे] १ वंपास हुउनामी। २ वीचे सम्माः ३ सम्बर। ४ विस्त (वे स्

७१) । द्वास केवो इस = इस् । वह 'न दासमायो कि विशे वदनमां (तम भ गण्डे :

वि विषे बहुरेयां (स्त ७ १४) । हास बक्ष शिसयां विकास । उसेन

क्षास बण [क्षासप्] हैवाना । हायेप्र (ह । १४१) । वर्षे हातीया, हासिन्यह (है । १४२) । वह्न हासिंत (थीप) । ववङ्ग हासिज्ञांत (नुपा १७) ।

हास पुँ [हास] र हास्त हुंडी (योग प्रस्त २ ४४) जग जा ११ १३२)। मु लिक्षेत्र विश्व कर्य के हुंडी मार्ग क्यू कर्य (क्ष्म १ २१। ४७)। व मार्गसर-प्रस्तेष्ठ स्वत्यिक्ट (ब्लू १३४)। क्रार्ट [क्रूर] हास्त-स्तक (ब्रुस २४५)। क्रार्ट कि [क्यारिय] मुर्ग (स्वत्य)।

हास में हुस्से व्यक्त क्षेत्र हर्गा क्षेत्र हर्गा में विशेष में व

यम्थ (उप प्राप महा)। श्रंक्ष हिंकिय (महा) । देक. हिंचित्रं (महा) । ब्रिंडन वि [दिण्डक] १ प्रमण करनेवासा (पंचा १ व व)। २ पसनेवाचा (धरा १२६) । हिंडण म [हिण्डन] १ परिप्रमण पर्यंटन (पदम १७ १० स ४१)। २ यमण मीत (चर १ १७)। ३ वि अमरा-श्रीम (दे २ 8 8) i दिवि की [दिण्डि] परिश्रमका पर्यटन चापुरेवाहणो हिंदी राय-बंपुरमहाण वि । वास्स्रोवि कई हुंदा न हुत सद कम्मये (कर्न १६)। हिंडि इं [हिज्डिम्] रावस का एक सुमट (फ्ला १६, ३६) । हिंडिय दि [हिण्डित] १ वता हुमाः चनितः फ्द (महा६४)। अहां पर कामा समा हो पहा दिनियं मसे सं पार्म (महा ६१)। ६। ने पति समन, मिहार (छापा १ ६ -- क्य १६४) योष २१४)। मिं<u>युक्त</u> दे दिप्युक्त धाला जीव बन्नान्तर माननेवाचा धारमा हिन्दू (मन र २--पत्र ७७६)। विंदोड पृथि १ चेट में प्रदूषों को रोकने की मानावं। रे क्षेत्र की एका का मन्त्र (वे 4 (8) 1 दिंबांछ देवो हिंदोछ (स १२१) । दिंबोजन व 🔃 १ क्लावची कलमाना । र क्षेत्र की पक्षा की धावान क्षेत्र में प्रय मानि को रोक्नी का राज्य (दे व ३६)। विंडोडय **था** हिंडोड (रे = ९१)। बिवास र् [बिम्बास) क्या-विधेष (१९४ रे ११ दी जुन्म)। हिंद एक [ प्रद् ] स्त्रीकार करना, बहुए क्ला। द्विद (प्रस्तु ७ ३ वाला १२७)। करी, दिविकाद (बारवा १६७) । खेष्ट बिंदिकण (प्राष्ट्र ७ ; बाला १९७)। विवोध सक [ विन्दोक्तय ] सूनना । वह-विवोज्यात (क्यू) । विंदोक पं [दिन्दोक] विकास पूजान रोबा (क्यू) ।

हिंदोछम न [हिम्दोछन] मुनना दोनन ] (1494g) I हिंथिअं न दि] एक पैर से चवने की बाल सीशा(देव ६८)। क्रिंस सक [क्रिंस\_] १ वथ करला। २ पीक्र करना । विसद्ध विसदै (थाना पन १२१) । मुका. हिसिमु (झाका पक १२१) । श्रीव पिष्टिस्यर विशिक्षित दिखेडी (पि ११६) बापा पर १२१)। ब्रष्ट हिंसमाण (धाषा)। ण क्रिस. हिंसियच्य (अप १२६) पश्चा १ रि—पत्रधः २ र⊸पत्र र ाउका)। हिंस वि हिंसी १ हिंसा करनेनाचा हिंसक (बत्त ७ ४, पर्यह १ १—यन ४, मिसे १७६३: वंशा १ २३ कर इरहा संध् ) : प्पदाण प्ययाण न भिदान दिशा के शाक्य-मूट बाइन मादि का दाल (धीप: चक्र)। हिंस देवो हिंसा (पदा १ १ -- पत्र ५)। प्येति वि विश्वित् किया को **क्षेत्र**नेवासः (ठा १८ १—पत्र ३ )। हिंसभ ) वि [हिंसफ] हिंचा करनेनाका ब्रिस्म । (मर्ग बीम "४५२: क्य १६ २१९ उका क्रम २९)। द्विस्तय १ द्विस्तनी द्विष्ट 'पर्विष्ट एन वियास कमी (सत्त ४२)। क्रिंसा की [क्रिंसा] t वर्ष कात (चना महा प्राप्त १४३)। २ वर्ग शम्बन धादि है भीन को नी बाखी पीड़ा, हैचानी (ठा४ १---पश् १८५)। क्रिसा की क्रिया विकास का राज्य, अवस्थि सर्गोहरो च क्यूरमी केबि कुम्मंसा (सुपा (433 क्रिंचिय वि क्रिंसिस हिसान्यास (पाय) । क्रिंसिय न डिपिती ध्य-तव्य (परम ६ रूव उक्त के देवी)। ब्रिंसी और ब्रिसी | वता-विशेष (वडव)। हिंद्व पं कि विश्व, विश्वप्रताल का निवासी (पिप)। हिक्स की दि रजभी वीवन (दे ८ ६६)। क्रिका की शिका रेग-विशेष, दिवासे (सुपा Y44)1

विकास व [वे] पन्न काचा (वे = ६१)। विविधान [दे] हेपा-रन सथ-राज्य (के स **ξ**α)ι हिस्स वेको हर = हु । बिक वेचे हा : हिस्सा १ व [दे इस्स् ] मध्यम (बहा हिट्यों दें दें पूर पोम, प्रमी १३ पि tty) : हिल्हों स [वे] सामामी कम (दे स ६०)। बिद्ध दि [दे] बाष्ट्रम (दे स ६७)। बिद्धि केवी बेट्स (बुर ४ २२४, महान्धुपक (इंड क्यो हट्ट = इप्र (क्या सम्मत्त ७३)। बिट्टादिक वि [दे] साङ्गत (दे ॥ ६७)। हिडिस रेको हेडिस (सिरि ७ ८ सुका १ १ कि । हिट्टिक देवो हेट्टिक (सम वक)। विकिंद पूर् [बिकिन्त] १ एक विद्यानर राजा (पडम १ २)।२ एक रुमस (केग्री १७७) । व वेस-विशेष (पचम १० ६१) । हिडिया की [हिडिम्मा] एक राखकी विकिन्स चलस की बहिन (हे ४ २११)। हिंदोक्रणय देवा हिंदाक्रण (रे न ४६)। बिक्क वि [वे] बागत वर्ष (वे स ६७) : हिणिद वि [भणित] उक कविका 'कणपा-क्षणिया केमरबामा ए पुरुष कि दि हे ह (हि)कियां (पा १६६)। ब्रिज्य एक [ मब् ] प्रमुख करना । ब्रिक्छङ (बारवा १२७)। बिक्य (धय) देशो हीय (निम)। विष्ण रेको सिष्ण (या १९३)। हितम ? (वै) देशो हिश्रध = ह्वय (प्राप्ताः बिराप । यह बाम १६, वि ११४ है ४ केरै कुमस शक्त १२४) । हिल्ल कि [के] १ वजित (के द ६७ वस ६)। र मत्त व्यान्धीत (रेड । धार्ट्स २ १२६ प्राक्त का केवर ७१३ पुर १६ **११। क्रमा) । ३ (इमिट नास क्रमा) क्रिको** व स्व दिल्यों में सको अधिव व म स्वरियं गोर्घ' (वच १) । बिरमा की दि] समा, रारम (वे ब. ६७) ।

(विकेर २२)।

बर विच इमा (पर्)।

द्विष् य द्विष्टि द्वस्य में दिशि निस्द्वराज्या

द्विक वि वि । सरकः विस्तरम हमा विवय

क्रिम न क्रिम र तुपार, बाक्स्ट से विच्छा

**व्यव-१८७** (पान्न पानाः छे२ ११)।२

**प्रत्म श्रीक्ष** (रे. २, ११) । ३ शीरा

ठंडी बाजा (बहु १) । ४ वर्ष, जमा ह्या क्रम (क्रम्य वी १): १ ई व्यक्तनी नरक-र्याच्यी का पहला वरकेन्यक-नरक-स्थान (देनेन्द्र १२) । ६ ऋतु-विदेश मार्पकोर्य स्था पीलाकामधीवा(स्त ७२८ थी)। इदाई िकरी क्लामा, चौद (सूपा ११) । "मिरि दे गिरि क्रिमाचन पर्नंत (क्रूपा) क्रीम क्क)। भास 🖠 "धासन् ] छ्दी (कम **९ दे**) । लगर्प ("सर्गावद्रा (अप ६ ३४०)। घर केवी कर (पास)। व बंश पु ["बस् ] १ वर्षकर पर्वत-विरोध जिल्लो स सहाहिमनो (पडम १२,१३) जना कम्म इक) । १ द्विमाचस पर्वत (पि ३३६) । वै राजा धन्यवस्थान्त का एक पुत्र (यंत वै)। ४ एक प्राचीन जैस गुनि, को स्कव्यिकाचार्य के निष्य थे, 'दिननंतक्षप्रास्थयो चेथे (शृथि ३२) । बाय पूं ["पादः] तुकार-वतः (बाबा) । सीवछ ए ब्रिटिस स्था ਉਵਵਰ-ਵਿਹੇਧ (ਜੁਲ ਵ ) । ਲੇਲ ਵੁੱਟਿੰਡੀ ब्रिमाचन पर्वेठ (चप २११ टी)। । शास पू िमामी ऋतु-विरोप हेमन्द्र ऋतु (श ६६)। |णी और [तिग्री] हिम-प्रमुक्त (ब्रथ १६७) । विस्त व िषस्त्र विभागवय पर्वत (बुरा ६६२)। । छन्न द िक्स मही वर्ष (प्रकार १६) वरण । हिर वेवी फिर = फिब (हि १ १०६) कुस) । हिरकी भी दि | भीन पत्नी की नास (दे **1(**4) ι हिरण्य) व हिरण्यी १ रक्त, वांधी बिरस र (बना कम्प) । २ बुनरी, सीना (सापान्यन) । ३ द्रध्य, वन (तुस्य १ ३ र =)। वस्त प्रिने एक देख (हे ४ २२)। गम्भ वृश्मिमें] १ व्यक्त । २ प्रवत्न जिन भगरान् (प्रवत्न १ ६, १२)।

'क्व्यद्विपसः वस्त प विराह्म**बद्धी सर्वत्रक्षा** ग्रीव्या । हैएँ हिरद्शसम्बो वयस्य जनपित्रए उसनो । (पठम ॥ ६८)। क्षिरि प्रकृष्टि। सम्बद्ध क्षेत्राः। क्षिरकानि (মুখি ব্যুখ্)। द्विरि देखो हिरी (शासा १ १६--- तत्र २१७ वय)। स वि मित्री वकान् सरिम्बा (बस ११ १३) ६२. १ व विक १२६) । बेर प चिरी छछ-विशेष सक्तवाबा (पाधा उचित १)। ब्रिरि व [ब्रिरि] पासूक भागु का राज्य (परम विरिक्ष विशिद्धी धरिवय (हे २, १ ४)। द्विरिक्षा 🖷 [द्वीका] बच्चाः शरम (शर ७ ६३ कूमा)। हिस्लिन (के) पल्पम, ब्रुट क्लान (के व 18)1 हिरिशंक प्रं कि | चक्र, यम-विशेष (वे व )ा वेको द्वरिप्तंत्र । ब्रिटिकी की [वे] कम्ब-वितेष (उस १६ ब्रिरियंग प्रं वि] बब्रुड, नही (वे ८, ६३)। ब्रिंगी की [हां] १ सन्त्रा, शरत (बाला; हे २ १ ४)। २ जहारच-इत्र की शक्छानी केरी (हा २ १--पण ७२) । १ क्टर क्यक-पर्वेद वर रहनेवाची एक विक्युनारी केवी (का र--- पत्र ४९०) । ४ सरपूक्त नामक किपूक्टेन्ड की एक यस महिनी (स्त ४ १---पण २ ४) । १ म्यापियमान् पर्वतः का एक पूर (६क) । ६ वैनप्रशिका-विद्योग (ब्रामा ११६) - पण ४३)। हिरीक्ष वेची हिरिक्ष (दे २ १ ४)। ब्रिटे वेची हरे (प्राप्त) । बिद्धा की हि प्रशा दाना चवामी वच्छेता चलकापानरसा-वाहिसहिकायरे । (प्रणी चं न्हारिनुरि) बाह्मिदिसायो छि गाबाहुना ।

दिला ) की [दे] शहुका, शकु रेती (देव दिका ) ६६)। ब्रिक्टिय पुंधी [वं] फीटनिसेप भीतिक पापु की एक बाद्य (पहल १--पत्र ४६)। हिचिरी की हि मधली पञ्चले का बात-विद्येष (विदा १ य---वत्र व**६**) । बिस्स्टी की विशेषहरी तरम (वे ८ ६०)। डिटाडण न विधित में प्रामी को सेक्नी की बागाय (रे व ६१)। हिंद केको इत्य = मु । हिनद (६ ४ २६८)। विसोविसा को हिं। सर्वा (६ व. ६६) । ही प [ही] शर क्यों का सुपत क्या-र विकास, धानार्थ (स्थिर ४७३) । २ दु:स (उप १६७ दी) । १ विपाद, भेद । ४ दीन रिसरीचे (या १६ क्रम ४३६) क्रमा रेका गम ३७)। १, फिल्मी (चिरि २६)। ६ कम्बर्गका समिरिक । ७ प्रथमच-मान का विश्वय (बयु १३१) । ही वेदी हिंदी (विदेश ६)। सनि ["सत् ] चन्त्रातीत सन्तापु (सूच १ २ २ १४)। हीं य [क्षी ] मंत्राखर-विकेच पानाबीम (विक्रिट १२६ )। क्षीय कि क्षित र सूत्र कर सपूर्ण (क्या) काबा १ ६४ -- पम १६)। २ चीक विका 'हर्य नास कियाहीस' (हे १ १ ४)। ९ यथम, इसका । ४ लिया किकीन (मासू १२६) वन ७२= दी)। ५ ई मिवाबि-विदेश (हे १ १)। आहर्स वि [बाविक] प्रथम बावि भर, बीभ भाषि का (इस ७२ टी)। नाइ ई चित्रियाँ बाहिर्भवकेष (एपा २०२)। हीय वि हिएए पेट (विकार र सी-पच २०)३ ≰म्मान्यदे ३ (श्री) य. १ विस्मय याच्याँ । हीमादिका<sup>)</sup> २ विवेद (दे ४ १०**२, प्र**मा प्रक्राक्ट मुच्छार राप ६)। श्रीममाण वेको हा । शीयमाच्या १ १ [ शीयमान इ.] वर्गापद्यम ⊾हीयमाणय<sup>∫</sup> का एक मेर **क्रमराः क्य होता** नाता यशिक्षान (ठा ६००-पश १७ (हम्मी च जनमका देनेतकार राजप्रशाहरा)। यंग्रि )।

तूरा कृत्य भावि में होती वारिक रेखा (आव । व ४° की १२)। व दून होरा मरिस विदेव (स.२.२ सिरि ११ **०६ क**ल्यू) । , ४ व्यक्त-विक्टेप (पिय) । १ वाडा का यश भाग (से ४१४)। क्षीर पूर्व [द] १ सुर्द की तर्म्य तीव्या प्रीव बाबा कछ मादि पदामें (दे द ७ करा)। २ मस्य (दे कः ७ ) । ३ प्रान्त भाग भाग (पउड)। शीरंत देखों हर = हं । हीरणा की [वं] काब, शरम (देव ६४) वड्)। श्रीरमाण देखी हर = हा। हीं संबंध (इंस्प्र्] १ घरता करता. विस्कारकाताः २ तिमाकाताः । १ कवर्षन करना पीड़ना। होतह (स्त्र सुख २ १६), होसीत (इस ६, १२ प्रामु २१)। वह दीखंड (सहि ८६)। क्यह-हीक्रिजंत हीक्रिजमान (व्य दू १३३ णस्य १ च—पत्र १४४ मानु १६६)। इीसंपज्ञ (काया १ ६) दीसियम्ब २ ४--वर (पर्याहर १—पत्र १ 2× ) 1

हीर देवी इर = हर (हे १ २१ दुमा पड्)।

हीर है [हीर] १ विषय भेंग, घसमान ग्रेप

(पर्ख १—पद ३७)। २ वारीक दूरिसद

बीय; स्वाबस १ १ ७ १-न्यम १ सहि 🐫 )। हीसाक्ष [इस्स] ज्यर देश (कर व्य इ २१६ वर १४२ ही)।

क्षीतम्ब क्षीत् [क्ष्मिन] १ मध्याः तिरस्कार ।

२ निन्धः (नुपार ४)। इस्रे प्या(पर्धा२

होक्टिय वि [होक्टिय] १ विक्टिंग २ प्रत्यामित, विरस्**ष**त (युव १, १७ प्रोप १२६ क्या वस ६, १ ६)। १ वीहित क्राचित (माना २, १६ ६)।

शीसमण व [दं शापत] हेवाला अच— बोड़े का राम्य (दे क, ६८) है ४ २५०)। हीकी ) (शी) स विद्युपत का हुये-मूचक हीवीभो ) यन्त्रन (हे ४ २०१८ प्रमा; आह र अग्रह पर) ।

१ निषय (हे २, १६८ से १ १४८ दूमा, प्राक्ष ७८३ प्रापु १४)। २ ठव, विवर्ष (इ.८. १९० कुमान्न प्राष्ट्र ७०)। संस्थ विष्कृ (हे २ ११८८ हुमा) । ४ वेमामना <sup>(</sup> (हे २, १६०: कुमा: प्राष्ट्र ७८) । १ विस्मय सामर्थ (हिर ११० क्रुमा) । ६ किन्द्र वर•पु(प्रायु११)। ७ यपि मीर्ज्या धविसहरवम्नि व लि' (वर्मेर्स १४ टी)। द बाक्य की सोन्स (वंचा ७ ३६)। E वास्पूर्णि पार-पुरण् (पत्नम क १४६) दुमा) । हु } देशो इव = पूं। इसक इयक इंति हुआ हुइरे, हुस्टरे, हुण्य नएव, हुएहरे, हुएक्बर्ट (वि ४७६ हे ४ ६१ वि ४६% ४६६)। यदि हुन्सानि होन्सानि हुन्स

(क्ला२ १२ सुकार,१२)। यक दुर्स ( \* \* 41) if 44) ! हुआ रेको हुण-हु। हुयर (प्राष्ट्र ११)। वस्त्र पूर्वात (बारवा १६ )। हुआ वि [हुत] १ होनाहुबा हुमन दिया हाथ (पुण २६३ स ११८ माझ ६६) । २ न होन हमन (सूच १ ७ १२ प्राप्त ६१)। वह र्ष ["यह] ग्राम ग्राम (ग २११। वायद् स्त्रामा १ १—यत्र ६६ वदर)। सि 🖁 [सि] व्यक्ति (वदर द्यक्र रूप ३ वर्षि हि १३)। पुसन पू [शरान] बही बर्ष (पक हे ४,१७ पाप) । हुआ देखो हुमा—भूत (प्राप्त) हुमार स्रीत स्य)। हुआंग देवो सुअग, न्यंशवद्विन दुवैवद्वविद्या कि सुदूर्मान (या १२६)।

हुआग देवी जुलग (या व है, पि १वव) । हं य [हुम्] इत वर्षे का तूचक करान— , १ बागा र प्रच्या प्रस्त (हे २, १६०) भाग पूपा)। ३ विशवस्य (हेर १६०-रूपा)। ४ शिवस्ति (प्राप्त रेमा)। १

स्रीकार (या १२ द्वार १४४) । ६ हुन्छाद पु<sup>\*</sup> सक्त 'हुं करीत बुधार' (पुता ४१२) । ७ धनावर (मिरि १५३) । हुं क्रम पूर्व [वि] श्रीत्रति, प्रस्तान (वे ८ ७१)।

हु य [शास्तु] रत वर्षी का चोतक सम्पर--- ¦ हुंकार दूं [हुद्वार] १ बनुवरि-प्रकारक सन्द, हो (विशेष १६६ स १ १४ वा ११६ बाल्यानुर)। २ 'हुं द्यावाज 'हुं ऐवा शक्द (है. र रेंडर कर्टी सेंद ६ डर्स)। हुं सारिय न [हुइहारिन] 'हुं' ऐसे की हुई पात्रात्र (प्र ३३३)। हुफुरस वृ [दे] धंत्रति, प्रखान (दे ४, ७१)। हुँड ल [हुण्ड] १ छधर की माइन्दि-विरोप रातेर का बंदब धवयन (ठा ६—पत्र ११७) सम ४४० (४६)। २ कर्न-क्रिये जिसके **एरंग से शरीर का धनमन प्रश्नेपूर्ण केहन**— प्रमाणु-गून्य ध्रम्यवस्थित हो वह कर्म (कम्म १४)। दक्षि वेड्ड संप्रताला (विपा १---पत्र ४)। दसपिपणा धौ ["वसर्पिन्छ] वर्तमान्त्रीव समय (विवार પ્ર₹)ા हुंकी की [दे] करा (पाम)। हुंबरह दूं [के] बानप्रत्य द्यारत की एक वर्षात (सीप भय ११ ६--पन ११६, ute) : हुंदूच धक [हुहु+क] 🕻 省 धाराव करता। बङ्क दुहुर्यत (चेदम ४६ )।

"हुच देशो पहुच=प्र÷भू। हुटू देखो होह (धाष्मा पि दर्श ११०) । हुइट पूर्वि दिनेष मेहा (देव, ७)। र श्चान, ब्रुता (मृच्य २६६) । हुदुम्ब दूं [दें] प्रसाह (वे व., ७ )।

हुबुक्ष वृंद्धी [दः हुबुक्ष] बाय-विशेष (यीगः क्यू स्तुः विक २७)। की ब्रा (चक नुपा ६ ३ १७६, २४२) । हुबुन पूर्वि] पदाक्षा व्यवादि य, घ पायो । हुकू पूंची [व] हाद बानी पश गर्छ, धीव :

की हा (रें के का युग्त रेक्टा पर ३०)- 'हरावृष्ट् गुर्ववेदि' (बस्पच १४३)। रेको क्षाङ्क हुण सक 🛐 इंग्स करना। हुए ६ (६ ४

२४१ मय ११ ६--यम ४१६ दुया)। कर्मे हुन्दर हुन्तिन्बर, हुन्तिन्बए (हे ४ २४२ डूमा)। क्वड हुमिञ्जनाय (पुरा ६७)। बंड हुमिजन हुमेजन हुनिया (बहुः भग ११ १ --- तत्र २१६) ।

हद्वअ पूर्व [हतुक] देवो हहुआ (धलु हर

इट्टबंग र्जुन [इट्टब्स) देवो हुनुअंग

शहरू थ ( हृद्वरू ) अनुक्**रशः-श**क्य-विशेष

'हद्दर' देशा राज्य (हि.४.४२३ कुमा) ।

मा १४३ १६३ वातः वाने १ १)।

हुआ देको भूमा≕ मृत (द्वेप ६४४ दुमाः

इस्म विद्वितो स्थलत, शाकरित हिर

हुआ केवो हुआ अहरा जाने वंकरचे प्रच

हमार्थ[हम]र एक बनार्ग¥का २ वि

सम्प्राहरोषि खिद्यामने (रेग्द्र २६) ।

भक्तपा रिस्त हुतो सर्व कोईचेश स्थानुयोगि

यम्पत्त १६)।

(पसु ६६) १७६)।

1 (305

हपण-इम

१६ जवा परह २ २---वन ११४ वन्यः वराज की ६१३ लाहा वि ६६४)। २ वर्षमान-बानग, वंबारवय बास्य (उत्त १, ८; गुच ६,

=) । ६ धनुगान का सामन (वर्षेष्ठं 🕶 अ ४ ४ टी--पद २=३) । ४ प्रमाख (म्लू)।

याय है विश्व है नाधुन देन मेन सन इष्टिबास (ठा १०--पन ४६१)। ए उनेवाद, बक्तिवाद (यम्प १४ ३ १४२)।

हेज्य वि हिंतुकी १ हेनुबादको मानीयाया, शक्रवाधीः 'को हेज्यायपस्त्रात्यहेजयो मानने य ब्यार्क्वमधी (श्रम्म १४२ जनर १६१)।

२ केल का, केल् में सबस्य रखनेनाता । ची उर्द (निसं १२२) । हेवार्ण 🤊

}ेचेचो दा≃हा। हेज देशों हर 🖛 🛭 ।

हेह की अनस ] भोने, इनराती में 'हेर्ट 'नाबोह्रोद्राम्म' (नुद १२ थ, वि१७) है र १४१३ कुमा सरक) 'हेट्टमी' (महा)। की द्वा (भौपा महा पि र ७) ११४)। ीसुद्र वि मिला प्रचार तुका किलो पुँद नीचा फिया हो वह (निया १: ६---वम ६०) देश देश धर्मि)। घणि वि कियनी] शहाराष्ट्र केत का निमानी अ**याना—नपदम** 

(शिंख देश्य) । तका चन्नः सीप) र श्रक्ता (बस्म १२ टी) ।

देद्भियः ३ वि [अवस्तन] नीचे का (वन बोडिख रे १६१ परा मगाँ हु २, १६६१ छन **बेक्श और दि**हे समस्य समुद्र (सूपा १०६) **१९)। २ गृह मादि केवते का स्था**ध-वेबिस } (भरो) केवो परिस् (नि १९१)। हेपिथ वि हिं] छनत, बॅवां (वह )। इस्स म (इस्स) र बुक्की क्षोत्र (प्रकार वे ४० थीप पॅक्षि १७)। र मञ्जूषा। इ.म.चे व्य परिमाचा ४ दें, नाना बोहाः ५ वि

पॅक्टिय (बॅम्बि 😺) । ६ 🚮 एक निवासर

धना(प्रतन १: २१)। चंद्र दू["चम्द्र]

१९ विजय की वास्त्रवी स्थानकी के से

ज्यका निवासी अनुच्य (प्रवृष्ट् १ -- १४ हुस दक दिन् निर्मान करना, साथ करना। १४- इसा)। हुण केलो ही प⇔ होन (हे ११ पर्)। हुस्प वि [मार्चन] एक क्रेक्समा (क्रम हम वृश्वि बेम्बर वि ७१)। हुसण वेको मूसण (बा ६१६) रि १४४)। हुत प्र हिन्दी कवने देशों की वाद्य (वर्षीन ¥क्रियमि थिं] १ स्रोप वेक्शका का ४वः गुपा २६) । पमयाद्रमियं (देव ११)ः २ तः सीधः ह्या पूर्व हिंहुक] संस्था-विशेष 'शहयंय' बस्दे दुरंत (क्यह १ १--का १४ ब को चीएवी बाजा है कुको पर वी वंदया क्रमादी सद्ध (ठा२ ४—पन वर्षः सस् इक्नुकि से [दे] क्या रस्य (गार--मृत्य 580)1 इस्था र्व इतिकाल प्रकारिक हुषुष्पी क्षे [दे] जनन्य निष्टक्षीय 'श्रमध' की भीराधी काम से प्रमुखे पर जो श्रीचना वाल्या हो। बहु (का २,४---पण ६ इ.स. इ.स. इ.स. १ स्टब्स अव्यय — १ ह्य केशो ह्य ≠ भू। तुनंति (हे ४ ५) माम)। मूच्य हुवीस (दुन्स ६ **थ)**। योग इतिस्थात (पि १२१) । शहर हर्यंत इटल देवो हा≈हा।

शक्ति १४७)।

तेवीच्य । २ धाक्षम । ३ घतुमा देशी (हे

२ ११७ दि, पि ७१३ ४ ३३ मणि)।

क्रेअंगमीय न क्रिय**त्रा**मीनी १ मनगैत

मन्त्रमा २ समा मी (नार-स्क्रीहरन

हेमाछ 🛊 📳 इस्त-विरोध से विशेषः प्राप

**"ह्रेज के**बी अ**ध्य =** नेद (फा १)।

EΫ

2 %) 1

ह्याय न हियन होम (हुपा ६१)।

हेर (४ वा वतक प्रवि)।

सावि (पुत्र ४२ )।

(युवा १८६, ४७३)।

m, w?) :

१४३ वह )।

1 (a) i

२ २)।

हरत्थास [दे] बहर (शावा १ शाहेर १ हे राज्या

इवह (हें ४ १ १, पर्)।

देर । उप धरेन हो। ।

**इस्टम** न (क्षेप**म**) केंद्रमा (क्था) ।

में प्रतय करनेशली की (देव ७१)।

हुम रेको हुन्द = हु । हुन्द (शक्त ६६) ।

हुव (श्रव) देखी हुआ = पूर्व (वरि) ।

हुव (धन) वेबा हुआ = हुट (धवि)।

हुषमाण हुमेमाण (पर्) । लेक्क क्रविक

👪 देवो पुरुष 🗢 पुरुष (परि) ।

(बाट--बेस १७)।

हुस्य देशो हुण = हु ।

मुख देवो इत्य-इत ( हे २ ६६)।

हणिक देवो हळ - इष (मून २१७ मोह

हुन्त वि कि समिनुक समुक्त (वेल ७)

हुत्त वेची हुआ = मृत (या २४३ वर्ड)।

हुमभा वेको सुमना (का १ ॥ पि १००)।

हुर देवो कुर = स्पुर्। यह 'वंदीए हरतीए'

हरद पुर्वा वि पूछ मारि वे पुत्र सूच

पकामा ह्या चना बारि बाग्य होखा-होरहा

हरूबी क्ये [दे] विपादिका चैन निशेष (वे

हुए दक [क्षिप्] फॅननाः हुनाः (हे ४

सुप्रसिद्ध वैन मानार्य तथा प्रश्यकार (वे य

us सूपा ६६ थ)। ६ विकम की पनशक्ती

शताब्दी का एक जैन पुनि (सिरि १३४१)। खाळ न िंजाळी मुबर्खं की मामा (भीन)। "विजय दे "विजर्ज विकास की चौरहरी शतानी का एक वैतावार्य (सिरि १६४ )। पुर न िपुरी एक विद्याबर-मयर (६७)। सय दि मिथी सोने का बना हमा (बुपा दद)। महिहर दू ["महिचर] मेर पर्वत (वड़ड)। मास्त्रिजी की ["मासिना] एक विक्कुमाधी देशी (इंड) । बंद्री [ बंगा ] फास्तुन मास (मुन्त १ ११)। वियस्त पू [किस**स**] एक कैन ग्राचार्य (कुम्मा ३३)। । स पूं [ीस] चौदी नरक-पृतिको का एक नरक-स्वान (निर १ १)। हेर्मत र् [हेमन्त] १ ऋतु-विरोप मंगसिर या द्मपहुन तथा पीस या पूस मद्भिना (पाम- द्माचा-कम्प' कुमा)। २ शीवकास (दस ३ १२)। हेर्सत वि हिंसन्त ] हेमन्त अनु में उराध । (सुव्य १२-- पत्र २१६)। हेर्मतिभ वि [हेर्मन्तिक] ब्यर रेखो (कप्प मीय या ६६: एव ६८) । इंसरावि [इंसफ] हिन कर, दिम-संबन्धी (स ४ ४--पन २०७)। इमबद् १ पुन (इमबद) १ वर्ष-विशेषः सेव-हेमबस र विशेष (इका सम १२) वी ४---पत्र स ६३ ध-पत्र ६७। 788 4 पदन १२ १६)। २ हिनवंत पर्वत का एक किवार । ३ कूट-विदोप (६क) । ४ वि हिमबंद वर्वेद का (एव ७४' बीप)। १ पू हैमस्त धंत्र का व्यक्तिहाता देव (व ४--पत्र ) i हुम्म रेखो हुम (सींब १७)। इरसक [र] १ देखना निरोत्तरा करमा। २ वाजना सम्बेपस करना। वह इर्रेस (रिय) । श्रेष्टः श्रुरिऊय (वर्मेषि १४) । **प्र**रंग प्रदित्र । १ मधिला मसा । २ विशिष्टमा बाय-विशेष (दे = ७६)। इरण्यय हैन [इरव्यवत] १ वर्ष विशेष, एक पूर्णावकश्चन (इक पत्रम १२ १६)। २ र्यानम पर्नेत काएक दिखार । वे शिक्यी पर्वत का एक शिक्षर (इक २१०)।

हेरिकाञ 🛊 [हेरिकाक] सुबर्खेकार (छा વુર₹)ા हेरभयन देवो हेरण्याचय (ठा २, ३--पण ₹u: u₹) : इरिक्ष दृष्टिरिक] प्रमापर, मानूस (मुना 4**5**4 X46) I श्वरिंच प्रविद्वारम्य विनायक यक्षेश (क्ष ∈ ७२ः पर्)। इस्पास सक [ब्रे] कृद करना गुन्सा करवाना । क्रेयासीत (शाया १ ६—पत्र १४४)। इटा ही दिया ? की की ग्राह्मार-वंकती बहा-किरोप (पाच)। र मनावर (पाचः से १ ११) । १ वनायास चल्प प्रयास सङ्खाई, बरबता (से १ ११) क्यू प्रवि ११ प्रि 3 m X ) 1 इत्स की [दे हेला] देन सीमशा (दे स, ७१ अल्यू प्रणि ११ वि ३७६)। इस्डिय प्रीइक्टिकी एक तरह की मधली (बीव १ धी-पण १६)। इक्लाव [वे] कुट ध्रीक (रें ८ ७२)। इल्लंका की वि] दिशा हिच्ची (रेट ७२)। इक्कि (प्रप) व [इक्कि] सकी का पामल्या ब्राचीक (क्रेप्ट ४२६) स्वरूप से करू हुर्च (बस्ते) रेखो हुर्च (पि ३१६) । ह्याग 🛊 [ह्याक] स्वयान धारत (धन)। ह्समण दि दि] स्वतः जैना ( पर् )। **इ**सा **हो [दे**पा] ध**रत-राज्य** (तुपा २४८) या इसिम न दिवित] जनर देवी (वे व ६८) परम १४ १ ३ ग्रीप सङ्ग्रह भवि)। इसिक्ष न कि इपित] रहित, नीलपर (पद् )। इंड्रियुआ हि [हे] पुस्त-दोप के द्यान से पहित धोर निर्देश्न, प्रश्न फिन्नु निश्राषय (गव १)। हृह्य पुं [हेह्य] १ एक समा (सन)। २ क्रिय हैं [किंग्य] एक नियामर राजा (पद्मप १ २)। हा देवो इत = पू। होट होबट होबए होपर होति होस्टे होस्स्टे (हे ४ ९ ३ यहाकरा वस यहा नि ४६०; ४७६)। क्षेत्र होता होएक होएक, होउ (ह व

१९६६ १७७ सक ब्राप्ट कि ४६६)। मुका होरमा, हाहोस (कम्पा प्राप्त)। भवि क्षेत्रिक बोर्डिति क्षेत्रामि क्षांत्रिमि क्षेत्स्त होस्सामि होरसाइ, होनबं(हे ३ १६६ १६७ १६६: प्राप्त वि १२१) होसह (सप) (हे ४ १००) । कर्म होइलाइ-होत्रकार्, होईपह (यह : पि ४७६) । वह, होंत हामाण (हे व १८ ४ वश्र १७२ हुमा पि ४७६)। संझ्र होऊपा, होकर्ष हाअकण, होइडल हमिय, होत्ता (वटा पि १०५० १०६० कुमा)। हेष्ठ होडं, होचए (महा पि ४७६ क्य) । होयन्य (कप्प महाः उत्तः प्रापृ १६. 58) 1 हो म [इं] इन यजी का सूचक कस्पय—१ विस्मय, बाखर्य (पाम' नाट--मुच्च ११२)। २ सबोबन, ग्रामन्त्रस्य (संज्ञि ४३ उप ११७ थे)। क्रेड वि [क्रोन्] होम-इर्ता (या ७२७)। हाँड रेको हुड (विचार ५ ७)। हाइ र्षु [भाष्ठ] शॅंड, बोड (वाचा)। बोड्ड केवी तुड्ड 'तो ई कोबीन होडूपी (मुपा २७७ २७०)। होन ई [होड] मीव बीधे की बस्तु (ग्रामा १ २—पद द६ पिंड ३४ )। होष देवी दूम=हुल (पद २७४ दिवार 84) I होचिय 🛊 [हात्रिक] १ बानप्रस्य द्वापर्से का एक वर्ष, ग्रानिहोतिक वालग्रस्य ( ग्रीता थन ११ ६—यथ ११४)। २ स् तूछ-क्रियेप (पएछा १--पन ३३)। काम पुं[कोस] इवन धरिन में मन्त्र-पूर्वक बूत बादि का प्रदोन (बर्मि १६६)। होम सक [होमय\_] होम करना। हुए श्वामित्रं (दी ब)। होसिम वि [हायित] हरत क्या त्या 'सस्रकः।डियङ्कबन्द्रविद्योगियो' (स.७१४) । होर्रमा ध्य [होरम्भा] शच-विधेव महा-हक्का, बढ़ा होत (एव ४६)। हारण व [वे] वस करड़ा (वे ८, ७२ स

An () 1

हुद्द थ [हुदुक् ] व्युक्तल-सम्बन्धिय

'श्राप' देश श्र=व (दे४ ४२६ कुमा)।

हुआ के बो मूक्ष ≃ पूर्व (हे ४ ६४) हुम द

हुआ वि [हुत] व्यक्त, भाष्यरित (हे २,

हुम देवो हुक्ष = हुए सन्ते वंचवये प्रस

हुज पुं[हूच] १ एक यनार्थ देता। २ वि

उद्धका निवाधी समुख्य (पर्वह १ ए--पव

हुण केबो इतिज≕ इति (हे१ १ ६ प¥)।

इसम के असम्बद्ध (च ६१६) पि १ )।

हुत प्रशिव्द किया की नाश (वर्गीय

हरू अ पून [हरू के] शंक्या-क्लिप 'हरूपंग'

को शीरती सामा है कुल पर का संक्रा

बम्म द्वी यह (छ २ ४०—नव वदः शखु

इहअनेग प्रेम [बृहक्ताला] श्रेषणा-निशेष

हम पुँदि ] लोहर (दे ७१)।

धवलुईहोनि स्थितानमें (राज २५)।

१४ कुमा)।

४वा नुषा ११) ।

520)1

वनवा रिक्त ह्यो सर्थः कोईबेल स्थापुरोनि

बारपारसम्बद्धार्थर र)।

(मसा दशा दश्वा)।

हुत्त देवो हुअ - हुत ( है २ ६६)। हर्द्वअंग पूर्व [हर्द्वकाल] केवो हर्द्वअंग

हुत्त केवो हुअ = पूर्व (ग २४४, ८१६)। हुममा 🖦 मुमआ (य १ १: पि १८व)। हर केशो पुर≈स्पुर्। यद्य 'इतिय् हरतीय' यावि (द्वाप ४२ )।

हुषण व [इवन] होम (६४१ ६३)।

٤ķ٥

हुरब इच्छे [दे] इंछ पानि वे कुल कुछ पक्रमा ह्या करा शांदि वान्त, होला—होरहा (पुपा १८१, ४७३)। हुरत्था च [दे] नद्धर (घाचा १ = २ शाहर १३ राक्टा

हरूरी सी [वे] विपासिका, रीत विशेष (वे c, wt) : हुक वक [क्षिप्] फॅनना : हुबह (हे ४ १४३ वर् )। हुल सक [सूज् ] कार्यन-करमा, साम्र करमा। इबद (हें ४ १ ४, वर् )। हुबज वि [मार्जेन] एका करनेशका (कुरा

1 (x); हुस्त्य न [श्चपण] बॅनना (बुमा)। हुव्यभाषि [ब्रि] र स्त्रेज, क्षेत्र-पूक्तः सह पमराष्ट्रविद् (दे व ११)। २ त. सीम,

देश । सर करवादी) । 347)1

पस्यै, तुर्रव (परह १ १--पत्र १४ स में प्रथम करनेनाती की (दे ७१)।

(मार---रह ६७) ।

हुभ्य विशाह्य ∞ हु ।

हुप (धा) रही हुआ = भूत (सरि)।

हुप (धर) देशा हुआ = हुत (धरि) ।

हुनुमुक्ति क्षे [क] क्यार वस्त्र (गार-मृत्यू हुनुस्ती की दिने प्रतय-पद निषठ-व्यविका हुँछ देवी पुरुष = कुरब (बरि) । हुप देवो हुन = हु । हुबह (बाह्न ६१)। द्वयं क्षेत्र अप कत्र । इसीत्र (क्षेत्र ४ ६ ३ प्राप्त)। भूता दूरीय (दूबर ३, ० )। र्व्या हुन्स्विति (पि ६२१) । वक्क, हुर्वता दुपमात्र दुवसाय (वड्)। वेष्ठ हुविश्र

'प्रवर्ष' को भीरासी प्राचा है पुराने वर औ संख्या क्षम्य हो नहु (ठा २, ४---वन ०६ पसुरक्र)। हेर्य है दिन सम्बोधा सूचक सकाय--१

धंनीयगः १ साङ्क्षातः । ३ समूद्यः ईम्बी (ह २ २१७ डिंबि ७१:४ १:इदि)। हम जेते हा नहा। <sup>°</sup>हेम देवो भग ≠ नेद (च ≈२७) । हेर्भगरीय व [हेराक्रपीन] १ नवरीय, मनवन । २ धाना थी (माट—धाहिस्य 418) I

हिभास 🛊 👣 इत्त-रिशेष है जियेका साथ

परिमर्खाः ४ 🕵 रावा भोद्राः ५ वि पंडिय (पंडिय ७)। ६ ई एवं विदासर यजा (परम १ - ११) । चंद दु [ चम्द्र]

ह्म न हिम्मी १ पुनर्ख होना (नाफ ने ४) ग्रीप बॉक्रि १७)। १ वर्**छ। १** मले म

(Fra 4te) 1 बका वदा मीप)। क्षेत्राको कि दि स्था समुद्र (द्वाप १०६) १६)। ९ युष्ठ सादि <del>क्षेत्र</del>ी का स्थल-पकारा (बम्म १२ थी)। बंबिस } (बस्ते) ध्वो परिस (व १२१)। श्वंपिक्ष वि [दे] क्लत क्षेत्रां (वर् ) ।

ख्या दि ["सुका] धनाइ कुका जिस्ते हुँ ह नीचा किया 🗗 नह (विचा १: ६---पत्र ६०) देश #क भने)। ।यणि वि [भक्ती] महाराष्ट्र देश का निवासी मरहूहा--- मरहूसा इंडिस ) वि [अवस्तत] श्रीचे का (बन हेडिस ) १६ ४११ पन है २, १६३१ तर

१ र विजय की बार्स्स शताब्दी के से

९ हेलुका हेतु से सबस्य स्वानेनाचा । स्मी कई (विशे द२२)। वेको हा = हा । हेकार्ज 🤊 हेळा देशो हर ⇒ हु। हेड की [अवस ] नीने, इनक्री में दिये। **कारोब्रहे**ट्रन्विं (तुर १२ ४, पि १७) के २ १४१ कुमा; पडक)ः 'हेड्डमो' (**म्हा**) । की हा(बीपां महापि १ का ११४)।

हेच 4 हिंतू रे कारण निर्मिता हिर्क्स (राम रुद्धा छन्।" पहाड २ २---वत्र ११४ कम यदबः की ११: शहाः पि ११८)। २ सनुपान-बाबय, पंजानयन वात्रय (उत्त १, ८- पुंच १ ) । ३ शतुमान का ताथन (वर्में थे ४७: झ ४ ४ थैः-नत्र २८३) । ४ प्रमाख (म्बु)। **ेदाय दं िवाइ) १ वास्त्रवा वैन सेन-**शन्त इष्टिबाद (ता १०--पत्र ४११)। २ तर्बनाद, बुक्तिबार (सम्म १४ १४२)। हेज्या वि [हेतुक] १ हेतुबादको माननवाता शर्पकारीः 'जी शुरुनायपन्त्राच्यिक्षेत्रमी मानमे य धार्ष्यमधी (सम्य १४२ जनर १३१) ।

(R = v2)1

हुधज-हेम के फल की तरह फिए हुए हान से निनारण

### इस कोप के विषय में कतिषय सुप्रसिद्ध विद्वान् और पत्रकारों के

## कुछ अभिपाय

# A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRAKRIT DICTIONARY.

Prof Earnest Leumann (in the journal of Royal Asiatique Society London, July 1924

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Prikrit Dio tonary However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen Only recently, towards the end of 1993, there has appeared a new start, which is no longer a simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 360 iarga size pages. In this volume all words beginning with yowals are included. And, if the following parts, which is embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same fines, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its completion Indian philology will certainly be congratulated from all sides, and Präkrit literature, which is so immensely not may than be studied as it ought to be in intimate connexion with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds.

The title of the forthcoming dictionary is Pāia-sadda-mahannavo, "the great ocean of Pukrit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prakrit in the Calcutta University

The meaning of the words are given both in Hinds and in Sanskrit, and each entry is famulaid with references to test passages. Sometimes also the test passages are fully quoted (forming generally a verse called Gäthä or Äryä).

Comprehensiveness and accuracy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality. I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred. Titles are quoted. (Accn., Aji, Apu.:: Anuyogadvāra-atira, Anta:: Anatkrd-dasā, Abbi, Acā:: Acaranga. Aca:: Acāra-cūlīts, Ava:: Avadyaka, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the relations mistakes are scarcely detectable. Also arrors in the quoted editions are corrected, as early as the second entry of the first page we are for Pkt. a:: Skt. ca, rightly referred to Palima-cariya 113, 14 where the edition has by mistake Avishbio instead of a Virabio.

Consequently I may be allowed to recommend Pandit Sheth s Präkrit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities."

होता की होता ? बाही या कर्ता है की ही रेका (का ४४६) ने क्योतिय-प्रकार में तक बात (मेंबू है ?) ने होत्यानारूक स्वया (च ६ ने) होंक पुंची में ? नाय-रिकेट होने नायह में स्वया (कांग्रि ४४) भारती क्याप्त मानकोड़ होंगें (चार है) ? प्रतार निकारण 'शिलामिडकुरकुर्व्हस्तरगार्ड्ड एठण गार्ड्ड । व पुरुष्ठेश प्रवा विभिनाई तेल बागेपि (बा १३)।

६ एक प्रस्का काली अपनात-सुबक शस्त्र-मुर्क वेषकुछ (धाषा २ ४ १ १) ११३ स्त्र ७ १८१६) । धास्त्र युं विषयुं दुर्वेषय बोक्सना वासी-मधान (बुध १ १, २७)।

होकिया की [होकिया] होती । इस वर्ष विदेश (सिंदू ७ व दी)। होस देशों हो = मू। हुए देशों वृह् (सिंग वर्ष वि १६६ हुस्स देशों सहस्त = हुस्य (वि १३

हास देखे हास = हास (लेवि :

। इस पाइम्ससङ्ग्रह्ण्याक्षीन हृषाराइश्वर्षक्रमशो म्हुतीयहमो श्रं की
 । सनतो व स्त्यनशील वृक्ष वंशे ।।

### पसरवी [प्रश्नस्तः]

वासाइ पश्चिमाए माख-गर्छ झारिय वड-रम्भो । वस्सचर-विभिन्माय पुरं पुरानं पुरानमा पर्रः। धम-वक्र-सेथाच्छेद्धं चिक्रेदेशं । विद्या-पाय-क्यासेणं वासेज व बास-पास-नेर्या । वरुवत्त्रका आसी सिद्री सिरिमाक-संस-वर-स्वर्ण। बावय-संपत्तीमं संपत्तीय वि खेल विश्ववित्ते। भयवद्य-इक्ष-सञ्जा बन्म-मणा धन्मपत्ती से बणिश्र । वेसि वा वध्यक्या भावत स्व-धम्म-सञ्चर । सस्य-विसारय-बद्दणायरिएह विवयमना-स्टिह् । गताज सोजर्रीह तीह चेत्रीपि सत्य सत्याजं। सम-विट्र-बद्द भाषं संशार सार-बिक्रमे पार्च । पश्चिमीका प्रकार अगुभा प्रविधाना-विदेशो। संद्रो रूप सरवार्ण जाय श्वायरक्षशाक्ष-विसयार्ण । इंगर सिक्ष्मी पाक्ष-भाषात्र सगव-समयाणे । कविन्त्रमाप पाप वागरणे अब स्वत-तिरश-पद्यो । क्रमेन निस्सिनिज्ञाजगमिन सम्बन्धमाइ सेणीए। तेज च पामय-मासाहिहाज गंधास विश्वसमाणेज 1 पाजारसीड वरिसे सिम्बद्धमन्त्रमन्त्रविदयक्षनीय । क्र्यक्रमवाय व्यापा पाषय-वसु-क्षेत्र-शृंदु-परिग्राणिए । तस्स सभदारंगी-जामाद संयम्मित्रीड यस्य वर्ड । धारंगे बाठणे बारिस-गासार था धर्मासा । वश्यासमञ्ज्ञानेणं सो सही वस्ति अस्वय विक्रियो । पाईज-पाइआर्ज भासाज बहत्त-शंश-शिष्याज । ने रूप धन-पर्दा सर्थ तक्कासियों व ब-सदाया । जब मेथोन इनजा हैसिं गम्बेजलेण उपमारी। भाजपालेय महिए भनेच वा एक विशेष बमस्य ।

गुज्बर-पामा देखो पुरुषं आही चि विक्लामी ॥१॥ राहणपुरं दि अच्छाइ सच्छान जिलिद-मननार्ण ।।२। पश्चिमेद्दं पिष वं जिम्र-ग्रसि-वजे शहम्माओ ।।३।। वं पुत्र कर्म पविश्वं अयन्तुरूपमुद्रोद्धं स्पीहं ॥४॥ [ णामेज विभवन्ते वृ<del>षित्रकान्याम् गुजन्मिने</del>जो ॥५॥ दिण्यो जेव क्याइ विशाय-इरिशाय अपयासी ॥६॥ [ सीस्प्रदुन्।जन्मदाणा प्रदाणदेशि कि अ श्रद्धसि ।।औ क्रणिट्रओ वृद्धिक्**र**ो ओ ।⊨। **बिद्धो** इरग्रार्थियो संक्रपिय ॥शा श्रमीड महेसीहिं विकासस्मि **सक्त-**परयग्रदार्थ धक्यामो श्चरमाध्यो ॥१ ॥ पर्वतिभ-वर्षतिभ-धोक्सं मोक्सं च नाय-पर्वः ॥११॥ विक्रह वै पार्कियो पिसास्त्रविज्ञा चि पचिमिद्रो ॥१२॥ बर्जक्याबाय-संस्थेरजाइ-स्टब्स्स विज्य-मणे ११११। धम्भास-परिक्तारी पारं पचोच्य-भाग्नेण ॥१४॥ व्यापाड परिवक्यप विज्ञो दश्चनकाय ।।११।। <u>पायय-सम्बद्ध सम्बद्धाः क्रम्य</u>निम विभिन्नतो ॥१६॥ विर-प्राप्तत क्षमार्थ व्यावर जोमास्त्र विवृद्दाणं ॥१७॥ विकासमाओं प्रशस्य गंबास ॥१८॥ विशिक्षो स्वयंक्रमे बरिधे सदय गासे शिव-सच्चमीए स्वयत्ती को ॥१६॥ **मावरिश्रं** साविश्व विकासम्बद्धानुरत्तापः ॥२ ॥ यो छदा बाद्ध अस्वे बार्य मधि छ प्रयुक्तो ॥२१॥ रागाम्य-राजनंसक-प्रम **जिउपे** विक्रमेचा ॥२**२॥ स्टब्ब्ब्-पार्र के गया तयरों ज पश समी ।।२३।।** वार्ण इत्ला**ध्यम दा**णापदस्य ŒΤ पश्चिममेचेर्ज सण्ये धाबाध-धारकं ॥२५॥ र्व सोर्मि<u>त</u> परार्थकारूम समासदा स-पदा ॥२६॥

### इस कोप के विषय में कतिषय सुप्रसिद्ध विद्रान् और पत्रकारों के

## कुछ अभिप्राय

## A few Opinions of some Savants & Journalists regarding the PRAKRIT DICTIONARY

Prof Earnest Leumann (m the journal of Royal Assatique Society London, July 1924

"During recent years several scholars in India have tried to bring out a Präkrit Diotionary. However no one seems to have succeeded in publishing more than a small specimen
Only recently, towards the end of 1923, there has appeared a new start, which is no longer a
simple specimen, but an elaborate first part comprising no less than 160 large size pages. In
this volume all words beginning with vowals are included. And, if the following parts which
are to embrace the words beginning with consonants, carries on the Dictionary in the same
lines, it will be finished in about seven such parts and will contain nearly 2000 pages. On its
completion Indian philology will cartainly be congratulated from all sides, and Präkrit literature,
which is so immensely rich may then be studied as it ought to be, in intimate connexion
with Sanskrit lore, which has long possessed Lexicographic aids of all kinds

The title of the forthcoming dictionary is Pāla-sadda-mahappavo, "the great ocean of Prākrit words. Its compiler is Pandit Hargovind Das T Sheth Lecturer in Prākrit in the Calcutta University

The meaning of the words are given both in Hindi and in Sansknt, and each entry is furnished with references to test passages. Sometimes also the test passages are fully quoted (forming generally a verse called Gatha or Arya).

Comprehensiveness and securacy are the qualities most desired in a dictionary. As to the first quality I may mention that the texts worked up in the dictionary seem to number about 200 or more. Even in the first ten pages a full hundred Tritles are quoted. (Acou, Aij, Aqu=Annyogadvāra-stūra, Anta=Anakkṛd-dasī, Abbli, Aca=Acarānga, Acu=Acāra-culikā, Ava=Avašyāka, and others). And, as to the second quality it may be stated that in the reference mustakes are scarcely detectable. Also errors in the quoted editions are corrected, so early as the second entry of the first page we are for Pkt. a=Skt. cz, rightly referred to Patima-cariys 118, 14 where the edition has by mistake Avishio instead of a Virabic

Consequently I may be allowed to recommend Pandis Sheth a Prakrit Dictionary to all Sanskrit scholars as well as to Sanskrit libraries—and, what will probably do more to secure the final success of the undertaking, to the Government authorities.

Sir George A. Grierson, K.GLE., PH.D., D LITT, LL.D.

"I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent cook. I have already been able to make use of it and have found it a help in my work

Jainacharya Shri Vijayendra Sureshwarjoo. Itshiis-tativa mahodadhi

"A big dictionary named Phia-sadda Mahannavo (पाइय-पाइ-पाइयापी) is being composed and edited by Nyays Vyakarana-tittha Pandit Hargovind Das Trikamohand Shath, Prakrit Lecturer, Calcutta University Three of its parts have already been brought into light. On soung these parts and the work done therein one cannot but may that it is excellent.

We cannot help saying frankly and importially that smidst all dictionaries of the type in existence this Koaha takes its first place. In absence of such a good Präknt dictionary Präknt-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immonse pains in producing this work and has put Präknt-scholars at large to great obligation Pandit Haragovinddas deserves all honour for such a nice work

We are conversant with Fandit Halgovinddes's vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can without the least heatation, say that Pandit Hargovinddes can well stand in the category of high oulture. \*\* \* \* It is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain samaj to encourage by extending their helping hand towards such learned man rendering services to Jain literature and Jain Religion."

Dr Gemeppe Tucz, Professor of sanskrit Rome University "The Präkrit Dictionary is very useful in my study

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University "Many thanks for the first two parts of the Prikmt Dictionary which is very useful to me.

Dr F W Thomas M.A. PH.D., Ohief Librarian, India office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts.

Prof A. B Dhrava, Pro Vice-chancellor Hindu University Benarcs, "I have seen Mr Hargovinddas Sheth a Prakrit Dictionary It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves.

Dr Sumti Kumar Chatterji ma. PLITT Professor of Calcutta University (in the Calcutta Review February and December 1924). The work is not a mere compilation of glossance. It contains ample evidence of Pandit Sheth a wide reading in Präkrit literature and of his wart labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Präkrit and of modern Indo-Aryan languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Sheth, is an extremely labourous one requiring not only great scholarship, but also great patience. ... Pandit Sheth ought to receive entire support from all interested in Präkritio and Jain studies.

Those who have had occasion to use this work and can testify to its excellence and usolulness will be pleased to see that it has received proper approciation from competent scholars in the domain of P skrit and Indian Philology both in India and Europe. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an erudate scholar of Prakrit in Pundit Hargorinddas,

Dr B. M Barus, M.A D LITT., Professor of Pall, Calcutta University "I can quite understand that the task undertaken by you is a self imposed one and you are sure to render a permanent service in the cause of Indology by completing the same. A handy and at the same time comprehensive Präkrit dictionary has been a long felt desideratum. After going through the printed parts of your lexicon I find reasons to hope that your single-banded labour will go to remove it to a great extent. I have not seen elsewhere an attempt of this kind. What I sincerely wish is the consumanation of the noble task you are engaged upon with the indefatigable zeal and unflinching devotion of a scholar like yourself who has been born and brought up in a religious tradition footing the oulture of Präkrit languages."

Prof Vidhushakhar Bhattacharya, M.A. Principal Vishva Bharati Shanti Niketan, Bolour (in the Modern Review April 1925).

The author hardly needs introduction to those who have aquaintance with Yasovijaya Jama Granthamala. His present work is Präkrit-Hindi Dictionary We extend our hearty velcome to it

A Prakrit Dictionary of this kind was a desideratum and every Prakrit lover should feel thankful to Pandit Haragovindadas who has now supplied it. We have not the least doubt in saying that the students of Prakrit will be much benefited by it, it supplies sanskrit equivalents so far as possible quotes authorities and gives references. The words are explained in Hindi, yet the language is so simple that it can be used by any one knowing some vernacular of northern India

Indian Antiquary February 1925 This is the first part of a dictionary of the Präkrit language intended to be completed in four parts. It is a comprehensive dictionary of the Präkrit language giving the meaning of Präkrit words in Hindi. It provides at the same time the Sanskrit squivalents of the Präkrit words. The dictionary as a whole contains about seventy thousand words. The author Pandit Hargovinddas T Sheth, Lecturer Calcutta University has taken care to support the meanings that he gives by quotations from the original sources giving complete references. It removes one of the desiderata for a satisfactory study of the vast Präkrit literature which still remains unexplored but inadequately by scholars Indian and European. It is likely to be of great assistance in promoting this desirable study. The author deserves to be congratulated upon the result of his labours in this good cause. The work is a monument of his learning and effort and it is to be hoped that this industry will be suitably rewarded to encourage him to go on with his work and complete it as originally projected in four parts.

Sir George A Grierson, E.G.E., PH.D., b. LIFT, LL.D.

I must congratulate you on the success you have achieved in compiling this excellent I have already been able to make use of it and have found it a help in my work.

book.

Isinacharva Shri Vijayendra Suroshwarloo. Itihiis tattva-mahodadhi.

"A big dictionary named Pain sudda-Mahannavo ( पाइथ-सह-महायस्थो ) is being composed and edited by Nyaya Vyakarana tirtha Pandit Hargovind Das Trikamehand Sheth, Prikrit Lecturer, Calcutta University Three of its parts have already been brought into light, On easing these parts and the work done therein one cannot but say that it is excellent.

We cannot holp saying frankly and importially that amidst all dictionaries of the type in existence this Kosha takes its first place. In absence of such a good Prakrit ductionary Prakrit-scholars had great many difficulties. To remove them Pandit Hargovinddas has taken immense pains in producing this work and has put Prakrit-scholars at large to great obligation. Pandis Haragovinddas deserves all honour for such a nice work

We are convergent with Fundit Hargovinddas a vast knowledge and originality. It gives us a great pleasure to note that these two things in him have gone a great way to make the dictionary very valuable and useful. We can, without the least hesitation, say that Pandit Hargovindas can well stand in the category of high culture. x x x it is the duty of all scholars in the field of learning and specially that of Jain same to encourage by extending their belong hand towards such learned man rendering services to Jain interature and Jain Religion.

Dr. Gemeppe Tucci. Professor of sanskrit. Rome University "The Prükrit Dictionary is very useful in my study

Dr M. Winternitz, Professor of Prague University "Many thanks for the first two parts of the Prakrit Dictionary which is very useful to me.

Dr F W Thomas M.A., Ph.D. Chief Lubrarian, India office London. "I have myself consulted the book and found it useful. It is based upon a very large number of texts.

Prof A. B. Dhrave, Pro Vice-chanceller Hinda University Benarcs, "i have seen Mr. Hargovinddas Shoth s Prakrit Dictionary. It represents a genuine attempt to supply a need which has long been felt and I am sure it will receive the appreciation which it so well deserves.

Dr Sumil Kumer Chatterff, MA II LITT Professor of Calcutta University (In the Colonita Review February and December 1904). The work is not a more compilation of glossaries. It contains ample evidence of Pandit Shoth s wide reading in Pratrit literature and of his va t labours in the field. ... It will be a very useful publication and no student of Prakrit and of modern Indo-try an languages can afford to be without it. The work so far accomplished by Pandit Steth, is an extremely laborious one requiring not only great scholarship, but also great patience, ...... I and t Sheth ought to receive entire support from all interested in Prakritio and Jain studies

Those who have had occasion to use this work and can testily to its excellence and usefulness will be plea ed to see that it has received proper appreciation from competent scholars in the domain of Italirit and Indian Philology both in India and Europa. The Calcutta University can well be congratulated in possessing such an emulate achelar of Prakrit in Pandit Hargovindda.





थोय र् [बोफ] एक देश का नाम (परम 2= (4) पोरपक्ष वि वि विष्ण पुना (वे थ = )। वारमण व [बयुपरमण] दिता प्राणि-वध (पर्वा १ १--पत्र १)। बोराधी को दि । धारल मान को दुक चन्ररेशी विधि में होमेबाबा एक उत्सर। २ बारल मात की शुरू बतुरंधी (रे ७ 42) ( वोर्श्विअ वि क्यिपरोपित जो मार रामा पया हो बढ: 'सद्वारिका जुयमं दिन्ने विद्युण बोर्सविभी (बन १) । बोर्स्झ की दि दि है मय हमा नम्र (पन 5Y) I बोध सक शाम् ] १ मति करना, वसना । २ पुतारना पतार करना । ३ व्यक्तिमण करता, उस्तंपन करता । ४ मक पुत्ररता पसार झाला । बोलड (प्राष्ट को है ४ १६२: मद्धाः मर्मेसे ७१४) 'कालं कानद्व' (बुन्न २२४) बोलींत (बज्जा १४८ वर्मींव ११) । वह योखंद योखंद (रमान दश दश पत्रव ६ ४४ से १४ अर मूपा २२४: वे ६ ६६) । वेइ भाविजय यांछता (महा धार) । इ योछेत्रस्य (व २१ स : ६६) । प्रयो., शह वास्त्रवित्रे, वाळवंडं (नुग १४ : वा १४६ व ?)। देवी बास = व्यति + वन् । यास देवी बोस = दे (दे ६ १)। वास्ट्रपक [स्पुप+तुर्] बतक्या । वा पासरुमान (वप) । पास्प्रविभ रि [गर्मात] प्रतिकानित (रका १४ प्रा ३३४ वर ३१)। यांकिञ । वि [गर] १ वया ह्या (शह वासील । ७३)। र पुत्रराहुया जो स्थार हुमा हा वह व्यवीत (मूर ६ १६ महा) ना रेश पूर १ ११) । रे प्रतिस्था

उस्तमित (पास; सूर २ १ क्रूम ४४ से १ का ४ ४ व्यामा १७ २१२३ वे४ हे ४ २४व क्या महा)। योद्ध सक [ आ + ऋष् ] धाक्रमण करना । बोस्सइ (धारवा १६४)। बोद्धाइ पू [बोहाइ] देश-स्टिव (स बर)। योहाइ वि [योहाइ] देश-विशेष में इसाम (E c ?) 1 बोवास र् [व] कुरम, बैन (१ ७ ७१)। वोसमा र् [स्युत्सम] परित्यान (विश 35 %) 1 वोसमा ) धङ [चि+फस्] र विकतना बोसङ् । विसना । २ बङ्गा । बोसामङ बोसद्रइ (वर् हे ४ ११३) प्राष्ट्र ७६)। बङ्ग बोसङ्गाण (भय-ग्र बर्ब)। योसट सक [वि + ग्रासय\_] १ विनान करना । २ बढाना । बोलहर (पारवा १ ४४)। थोसङ्गी विश्वसित् विकास-अञ्चल (के ४ २१वा प्राकृ ७३) । योसङ्घ वि दि भर कर धानी किया हुमा (fu #8): पासहित्र नि [पिर्धासन] निकास प्राप्त (क्या) । पासह वि [स्युत्स्य] १ परिवर, ग्रोहर हुधा (क्या क्य धोव ६ १ वस ६१, रेट धाना २: द १ पेना रेद ६)। २ वरिष्कार-पहित साध्युक्त-वर्जित (शुम १ १६ १)। १ बाबोरसर्व में स्वित (द्य 4, 2 22)1 धासमिय वि क्यियशमिती उपस्थित राम्य दिया हवा यामिय नीतिया" पर्दिषस्त्रार्देन् अ उद्योरेति । तेवारा वासमा (स ६ थे-नव १०१) । यामर ) तक [क्युन् + सूज् ] नरिस्थन यासिर करना पाइना । बोन्नरियो, वर्धनरह, बोबिस्पनि (पर २३०० महाः भवा

ग्रीन) बोसिरेजा बोसिरे (पि २३४)। क वोसिरंत (क्य दर) । संक्र योसिञा, बोसिरिका (नुबर ३ ३ ७ नि २३१)। क वासिरियक्य (पत्र ४६) । बोसिर वि व्यत्मर्जनी घोड़नेबामा (उन प्र २६८) । योमिएव न [स्पुस्सजन] परिवान (हे २ १७४३ वा १२३ मारक १७१३ योग वर) । धासिरिश्र देशो वोसट्ट (परम ४ १२ पर्वतं १ ५ महा) । वासभ वि दि उन्तर-गत (दे ७ वर्)। बोहिन न विदेशी प्रवहण बहाब नीरा (गा ७४६) । रेवो चाहित्य । बाह्यर न दि ] जल-बहुन (दे ७ ८ )। क्युड र् [दि] निट, भट्टम (वह् )। शंद देखा ६४ = पून्य (शाह) । शक (बर) देवा यथ = वत (ह ४ १६४) । द्यामास (भर) 🖠 विवासासी १ सार १ २ निन्दा १ रे विस्त्र विस्तृत (प्राष्ट्र ११२) । ध्रामरण (पर) रेखो वागरण (श्रष्ट ११२) । प्रांडि (या) वे कियांडि बंदहत स्वाहरण धीर कोप का कर्ता एक मूर्ति (प्राकृ ११२)। ग्रास देवा वास = ध्यास (हे ४ १६६: बाई ११२ः वडः भूमा) । स्य देवो इप (हे + १=२ कम्पा रंशा)। का देवां यां = व (बाह २६)। क्षम देवो यय = वड (इना)। क्यवसिअ देशे पर्यासय = व्यवदित (प्रवि 23v) 1 म्याज देखी पाय नध्यान (मा २)। ब्यायार बेचो पात्रार - व्यासर (मा १६)। स्यायुद्ध देयो पातुष्ट (यम २४८) । ब्याहि रेवो पादि (या ८८)। क्तिन देवा इन (शह २६)। क्यं च [रे] संसंवर-पूचक पस्तव (शह E ) :